वाला गुरु और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना बहुत दुर्लभ है, जिनोक्त तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त्व है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों को भी होता है, यह सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढने से जीवको मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म का क्षय और शुभकर्म के बढने मे यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभको बढाने के लिये धर्मके सेवाय और कोई भी यत्न नहीं है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्मके वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण की धर्मी (धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इंद्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अपना जन्म सफल करते हैं, इतनी ऋद्धि पाके भी उनको धर्मका सेवन दुर्लभ है, और भी धर्मी को त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु आप से दास हो मिलते हैं, तो पुत्र, कलत्र, घर, सवारी और राज्य मिलजाना क्या बडी चीज है, धर्म साधन करनेवालेका दो घडी का जीना भी सफल और कार्य कारक है, परंतु धर्म हीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य, औ भक्ष्य इत्यादि विचार रहित) का कोटा कोटी वर्ष जीना भी निष्फल औ अकिंचित्कर है, पशुवत अपना आयु पूर्ण कर मरता है. इंद्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "विना मतलब पराये

गणधर सुधर्म स्वामि बद्धांगत सूत्र, [तदुपरि श्रीमदभयदेव सूरि कृत संस्कृत टीका] और मेघराजगणि कृत भाषा टीका युत

पहिली दफे १००० पुस्तकें
फी पुस्तक दाम २००)

५०० जैनबुक सुसाइटी से
५०० राय धनपतिसिंह बहादुर

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर कृत आगमसङ्ग्रह के

॥ पञ्चम भाग भगवती सूत्र ॥

॥ अथ भगवती सूत्र पंचमाङ्ग प्रारम्भ ॥

लौंकागच्छीय श्री रामचन्द्र गणि कृत संस्कृतानुवाद युत

ऋषि नानकचन्द्रजी से संशोधित होके मुद्रित हुआ ।

इस पुस्तक पर रजिस्टरी हुई है [बनारस जैन प्रभाकर प्रेस नानकचन्द्र जती] संवत् १९३८ । सन् १८८२ ईसवी ।

दुख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैन दर्शन में दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबंधदया,, भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्व दर्शनी दया का उपयोग रखते है परन्तु सर्वांशों दया का उपयोग तो जैन दर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैन मत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यह है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होने पर भी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिकवस्तु हो जाने से कदापि वैसा पक्वान्न नही होता तैसेही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय यद्यपि सर्व दर्शनों मे दयाका मान है परतु उस के स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर वृथा) है, जब के उसका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नही जानशक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो शकै, फेरफार असा के—कोई कहते हैं पशुप्राणघात अर्थात् पशुजन्मसे छोडाना दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो असे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकरदेना भी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक में प्राणिवधकरने से भी पुण्य मानते है और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया

का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम है, और एकरीत से—आचारधर्म दयाधर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मों के दान शील तप और भाव चार कारण हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिससे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और संरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारों अनुयोग का विचार, सप्तभंगी, षड्द्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी तथा भरत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सो ही अवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि करनेसे भी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एकस्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के पान जैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पांच भेद—मति श्रुत अवधि मनपर्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत

परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश आज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इस्से शुद्धात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल में श्रीगौतमादिक केवली हो संसार से मुक्त हुए वर्त्तमान में महाविदेह क्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते है, आगामिकालमें पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोंसे सुन अनेक जीव मुक्त होंगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छाना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमें धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और संवेदिनी, जिस्से तत्व मार्ग में प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उसको विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसको निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उसको संवेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उप्पन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं, और त्रिपदी से ही गणधर द्वादशांग की रचना करते हैं (उसको सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इसकी वृद्धि और संरक्षणके हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो

के पूर्वाचार्योंने वडे परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ वनाये है छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है, यही सव कारण सोंच श्रीमुर्शिदावाद निवासी श्रीराय धन पतिसिंह वहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये है आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

वनारस जैनप्रभाकर
नानक चन्द्र यती

भूमिका।

श्रीभगवती नामक पंचम अङ्गका अनुयोग समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्गानुयोग के अनन्तर क्रमसे प्राप्त हुआ है।

विवाहपण्णत्ति पंचम अगानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भावशत्रुओं की सेना के दलन करनेसे तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक निसवाद रहित वचन होने से त्रिभुवन रूप घरके आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यशकी राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम करुणावन्त श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर वर्द्धमानस्वामि चौवीसमें तीर्थंकर महाराजने जैसा कहा उनके पांचवें

गणधर आर्य सुधर्मास्वामी ने श्रीश्रमणसंघ और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है।

तहां अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मगल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारों के निरूपण करने से होती है।

तहां पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कंटक शाखा मर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अर्थ का अवगम (ज्ञान) है इसको अनन्तर फल कहते हैं, दूसरा अर्थावगम होने के वाद तत्पूर्वक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है।

योग अर्थात् संवन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहां कौन इसके देनेका काल और कौन इसके देने के योग्य है औसा अवसर लक्षण सबध जानना चाहिये।

मङ्गल जो विघ्न निवृत्ति के हेतु ग्रंथ के आदि मध्य और अंत में किया जाता है।

विवाह प्रज्ञप्ति इस पदका समुदायार्थ यह है कि—अभिविधि करके कथंचित्समस्तज्ञेयव्याप्ति अथवा मर्यादा से जो पूछे हुए जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सो व्याख्या वही सुधर्मा स्वामीने अपने शिष्य जबू को प्ररूपण की सो इस ग्रथमे कही है, अथवा विशेष तया जीव अजीव आदि अनेक अभिलाप्य पदार्थों की वृत्ति इसमे कही है, अथवा व्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रथमे है, तथा

विशिष्टनयप्रवाह अर्थप्रवाह इस ग्रंथ में कहने
व्याख्या में विशेषतया बुद्धि की प्राप्ति इस ग्रंथसे होने और विशिष्टनयप्रवाह अर्थप्रवाह इस ग्रंथ में कहने
से व्याख्याप्रज्ञप्ति ऐसा नाम इसका हुआ। भगवती, व्याबाध प्रज्ञप्ति, यह पर्याय हैं।
नाम यथार्थ (जैसा प्रदीप) अयथार्थ (जैसा पलाश) अर्थशून्य (जैसा डित्य) भेद से त्रिधा होता है
परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति वहांही होती है।
व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद से १५ प्रकार का होता है सो स्थानांग के समान
इहांभी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहां अङ्ग का निक्षेप क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अंग की तरह
अंग होने से हुआ है इसलिए व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग ऐसा नाम हुआ। यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य
और भाव भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहां केवल भावांगहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रंथ क्षायो
पशमिकादि भाव का कारण है।
इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पंचम अङ्ग का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और
नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ से सबन्ध अथवा सूत्र का अर्थ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अ
र्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसे नगर में सुख से प्रवेश करने को चार द्वार
होते हैं तेसे इस प्रवचन मे प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं। शास्त्र को न्यासदेश
के समीप करदेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

द्रव्य क्षेत्र काल भाव और आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता अर्थाधिकार और समवतार भेद से छ प्रकार है, निक्षेप अर्थात् न्यास स्थापन, ओघ नाम सूत्रालापक से तीन भेद हैं। तहां सूत्रांलापकनिष्पन्ननिक्षेप सूत्र के आलाओं का नाम देना जैसे कि व्याख्याप्रज्ञप्ति इत्यादि। अनुगम सूत्रका स्थापनानुकूल परिच्छेद। नय अनन्तधर्मात्मक वस्तुके एक अंशका ज्ञान को कहते हैं जो उपक्रान्त नही है उसका निक्षेप नामादि नही हो सक्ता जिसका निक्षेप नही हुआ नयों से विचार भी नही होता है इसलिए इन अनुयोगद्वारों से एकश्रुत स्कन्ध, सातिरेक अध्ययनज्ञातस्वभाव, ४२ शतक १०००० उद्देशा रूप व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रकथित जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्वज्ञानरूप परम पुरुपार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये। परन्तु पढने का अधिकारी वही होगा जो के मोक्षमार्ग अभिलापी गुरूका आज्ञाकारी औदीक्षालिये जिसको १५ वर्ष व्यतीत हुआ होय। व्याख्याप्रज्ञप्ति अग सूत्रदेनेका अवसर भी वही है इति शम्।

मकसूदाबाद

अजीमगंज

राय धनपतसिंह बहादुर—

॥ विज्ञापनम् ॥



आसीद्दूगड़गोत्रज·पृथुयशाः श्रीवीरदासाभिधस्तत्पुत्रोबुधसिंहऊर्जितयशास्सूनुस्तदीयोगुणी । ख्यात श्रीलप्रतापसिंहविजयी भार्यातुरीयासती तस्यश्रीमहतावनामविदिताकुक्षेस्तदीयादभूत् ॥ १ ॥ उद्यत्कीर्त्तिरुदारधर्मदृढधी लक्ष्मीपते सोदर श्रीमद्रायबहादुरोधनपति सिंहोगुणग्रामणीः । श्रीजैनागमसङ्ग्रहसमकरोल्लोकोपकृत्यैचिरम् टीकावार्त्तिकसयुतसुलिपिभि समुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कृत्वापञ्चशतस्यलेशुचपुनस्तावन्त्यहोपुस्तका गाराण्यपुचपुस्तकानिसकलान्यस्थापयत्सादरम् । कुर्वन्त्वागमपाठनञ्चपठन सत्साधव·श्रावका· स्थित्यैश्रीजिनशासनस्यचपुनर्विज्ञानधर्मद्धये ॥ ३ ॥ भागस्तस्यचतुर्थकोभगवतीसूत्राभिधानोधुना नानापुस्तकपाठभेदबहुलोलेखप्रमादापि । दुर्वाच्य खलुवृत्तिवार्त्तिकधृतपाठतयाप्राक्तन श्रीमत्पूजितरामचन्द्रगणिभिर्ज्ञातबुध्वामया ॥४॥ सशोध्यातिपरिश्रमेणनितरा चार्वक्षरैर्मुद्रते स्यात्तत्रापिचकिञ्चिदीक्षणगतोन्मादादशुद्धयदि । तान्त्वाशोध्यमुदारबुद्धिविभवैर्विज्ञै कृपादृष्टितो मिथ्यादुष्कृतमस्तुनम्रवचसासम्प्रार्थये सज्जनान् ॥ ५ ॥



बनारस

जैनप्रभाकर

मानकचन्द यती

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैतालिसो जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच२सो कापी छपे और साधु श्रावको के पठन पाठन के लिये पाच सो स्थानमे पुस्तकालय स्थापित हो सो यह अति आनदकी वातहै, परतु जिन महाशयो को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगो के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो वेचने के वास्ते पाचसो कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तकै मे अजीमगज से प्रकाश करूगा अग्रे शुभम्, सवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

अजीमगज — सुबुद्धिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याधिचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादकमहाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगो के लिये सुसाइटी की ओर से पैतालिसो जैनागम की पाचसौ पुस्तके छपवा लेने की आज्ञा के विषय मे आया सो मै स्वीकार करता हू कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच२ सौ पुस्तके वेचने के वास्ते छपवा लेवे, परतु पाचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मै नही देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योकि इन ग्रन्थो पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

सवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

अजीमगज

॥ श्रीमदाभाय नम ॥ श्रीजिनायनम ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनन्तमसङ्गमग्र्य सार्वीयमस्मरमनीशमनीहमिद्धम् । सिद्धशिवशिवकरकरणव्यपेत श्रीमज्जिनजि तारिपुप्रयत.प्रणौमि ॥१॥ नत्वाश्रीवर्द्धमानाय श्रीमतेचसुधर्मणे । सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो वाण्यैसर्वविदस्तथा ॥ २॥ एतट्टीकाचूर्णी जीवाभिगमादिवृत्तिलेशाश्च । सयोज्यपञ्चमाङ्ग विवृणोमिविशेषत किञ्चित् ॥ ३ ॥ व्याख्यात समवायाख्य चतुर्थमङ्ग मथावसरायातस्य विवाहपण्णत्ति' सञ्ज्ञितस्य पञ्चमाङ्गस्य समुन्नतजयकुञ्जरस्येव ललितपदपद्धतिप्रबुद्धजनमनोरञ्जकस्य उपसर्गनिपाताव्ययस्वरूपस्य घनोदारशब्दस्यलिङ्गविभक्तियुक्तस्य सदाख्यातस्यसल्लक्षणस्य देवताधिष्ठितस्य सुवर्णमण्डितोद्देशकस्य नानाविधाद्भुतप्रवरचरितस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्रप्रमाणसूत्रदेहस्य चतुरनुयोगचरणस्य ज्ञानचरणनयनयुगलस्य द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकनयद्वितयदन्तमुसलस्य निश्चयव्यवहारनयसमुन्नतकुम्भद्वयस्य योगक्षेमकर्णयुगलस्य प्रस्तावनावचनरचनाप्रकाण्डशुण्डादण्डस्य निगमनवचनातुच्छपुच्छस्य कालाद्यष्टप्रकारप्रवचनोपचारचारुपरिकरस्य उत्सर्गापवादवादसमुच्छलदतुच्छघण्टायुगलघोषस्य यशःपटहप्रतिरवापूर्णदिक्चक्रवालस्य स्याद्वादविशदाङ्कुशवशीकृतस्य विविधहेतुहेतिसमूहसमन्वितस्य मिथ्यात्वाज्ञानाविरमणलक्षणरिपुबलदलनाय श्रीमन्महावीरमहाराजेन नियुक्तस्य बलनियुक्तकल्पगणनायकमतिप्रकल्पितस्य मुनियोधै रनाबाध मधिगमाय पूर्वमुनिशिल्पिकल्पितयो र्वहुप्रवरगुणत्वेपि ह्रस्वतया महतामेव वाञ्छितवस्तुसाधनसमर्थयो र्वृत्तिचूर्णिनाडिकयो स्तदन्येषाञ्च जीवाभिगमादिविविधविवरणदवरकलेशाना सङ्घट्टनेन वृहत्तरा मतएवा महता मप्युपकारिणी हस्तिनायकादेशादिव गुरुजनवचना त्पूर्वमुनिशिल्पिकुलोत्पन्नै रस्माभि र्नाडिकेवय वृत्ति रारभ्यत इति शास्त्रप्रस्तावना' अथ विवाहपण्णत्ति त्ति क शब्दार्थ ? उच्यते त्रिविधा जीवाजीवादिप्रचुरतरपदार्थविषया आ अभिविधिना कथञ्चि न्निखिलज्ञेयव्याप्त्या मर्यादयावा परस्परासङ्कीर्णलक्षणाभिधानरूपया ख्यानानि भगवतो महावीरस्य गौतमादिविनेयान् प्रति प्रश्नितपदार्थप्रतिपादनानि व्याख्या स्ता. प्रज्ञाप्यन्ते प्ररूप्यन्ते भगवता सुधर्मस्वामिना जम्बूनामान मभि यस्याम् १ । अथवा विविधतया विशेषेणवा आख्यायतइति व्याख्या अभिलाप्यपदार्थ

वृत्तय स्ता प्रज्ञाप्यन्ते यस्याम् २ । अथवा व्याख्याना मर्थप्रतिपादनाना प्रकृष्टा ज्ञप्तयो ज्ञानानि यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्ति ३ । अथवा व्याख्याया अर्थकथनस्य प्रज्ञायाश्च तद्धेतुभूतबोधस्य व्याख्यासुत्रा प्रज्ञाया आप्ति प्राप्ति आत्तिर्वा आदान यस्या सकाशा दसौ व्याख्याप्रज्ञाप्ति र्व्याख्याप्रज्ञा द्वा भगवत सकाशा दाप्ति रात्तिर्वा गणधरस्य यस्या सानया ४ । अथवा विवाहा विविधा विशिष्टावा र्थप्रवाहा नयप्रवाहावा प्रज्ञाप्यन्ते प्ररूप्यन्ते प्रबोध्यन्तेवा यस्या विवाहावा विशिष्टसन्ताना विबाधावा प्रमाणाऽबाधिता प्रज्ञा आप्यन्ते यस्या विबाधा चासौवा प्रज्ञप्ति श्चार्थप्ररूपणा विवाहप्रज्ञप्ति र्विवाहप्रज्ञाप्ति र्विबाधप्रज्ञप्ति र्विबाधप्रज्ञाप्तिर्वा ५ । इयच "भगवती" त्यपि पूज्यत्वेना भिधीयतइति' इह व्याख्यातार शास्त्रव्याख्याना रम्भे फलयोगमङ्गलसमुदायार्थादीनि द्वाराणि वर्णयन्ति तानिचेहव्याख्याया विशेषावश्यकादिभ्यो ऽवसेयानि' शास्त्रकारास्तु विघ्नविनायकोपशमनिमित्त विनेयजनप्रवर्त्तनायच शिष्टजनसमयसमाचरणायवा मङ्गलाभिधेयप्रयोजनसम्बन्धा नुदाहरन्ति' तत्रच सकलकल्याणकारणतया ऽधिकृतशास्त्रस्य श्रेयोभूतत्वेन विघ्ना सम्भवन्तीति तदुपशमनाय मङ्गलान्तरव्यपोहेन भावमङ्गल मुपादेय मङ्गलान्तरस्या नैकान्तिकत्वा दनात्यन्तिकत्वाच्च भावमङ्गलस्यतु तद्विपरीततया ऽभिलषितार्थसाधनसमर्थत्वेन पूज्यत्वा दाहच–किपुणतमणेगतिय मच्चतचणजत्तभिहाणाइ । तव्विवरीयभावे तेणविसेसेणतपुज्जं ॥ १ ॥ भावमङ्गलस्यच तप प्रभृतिभेदभिन्नत्वेना नेकविधत्वेपि परमेष्ठिपञ्चकनमस्काररूप विशेषेणो पादेय परमेष्ठिना मङ्गलत्वलोकोत्तमत्वशरणत्वाभिधाना दाहच–चत्तारिमंगलमित्यादि ॥ तत्र नमस्कारस्यच सर्वपापप्रणाशकत्वेन सर्वविघ्नोपशमहेतुत्वा दाहच–एयपञ्चनमस्कार सर्वपापप्पणासन । मङ्गलानाचसर्वेषा प्रथमम्भवतिमङ्गलम् ॥ १ ॥ यतएवाय समस्तश्रुतस्कन्धाना मादा वुपादीयते अतएवाय तेषा मभ्यन्तरतया भिधीयते

श्रीश्रीपरमात्मनेनम ॥ देवदेवजिननत्वा श्रुत्वाचश्रुतदेवता । वार्त्तिकपचमागस्य यथेहब्यनुसारतः ॥ १ ॥ समवायनामे चौथोअग कह्यो, हिवे विवाहपन्नत्तीनाम पचमागकहीयेछे ॥ ते विवाहपन्नत्ती स्युकहवे ? विविधकहता नानाप्रकार जीवादिपदार्थ श्रीमहावीर देवें गौतमादिशिष्यैपृच्छा प्रश्नपदाधे तेप्ररूप्य. तेविवाहपन्नत्तीकहीये, अथवा विविधकहता समूहअर्थना प्रवाहनयना प्रवाहप्ररूपीये जेहनेविषे तिका विवाहपन्नत्तीकहीये, वली एह भगवती

॥ टीका ॥

यदाह—सोसव्वसुयक्खंधब्भंतरभूओत्ति ॥ अत· शास्त्रस्या दावेव परमेष्ठिपञ्चकनमस्कार मुपदर्शयन्नाह ॥ नमोअरहंताणमित्यादि ॥ तत्र नमइति नैपा तक पद द्रव्यभावसङ्कोचार्थ माहच—नेवाइयपदद व्वभावसंकोयणपयत्थो ॥ नम' करचरणमस्तकसुप्रणिधानरूपो नमस्कारो भवत्वित्यर्थ । केभ्यइत्या ह अर्हद्भ्य अमरवरविनिर्म्मिताशोकादिमहाप्रातिहार्यरूपा पूजा मर्हन्ती त्यर्हन्तो यदाह—अरिहंतिवंदणनम सणाणिअरिहंतिपूयसक्कार । सिद्धिगम णचअरहा अरहंतातेणवुच्चति ॥ १ ॥ अत स्तेभ्य इहच चतुर्थ्यर्थेषष्ठी प्राकतशैलीवशा दविद्यमानवा रह एकान्तरूपो देशो न्तश्च मध्यं गिरिगुहा दीना सर्ववेदितया समस्तवस्तुस्तोमगतप्रच्छन्नत्वस्या भावेन येषान्ते अरहोन्तरो ऽत स्तेभ्यो ऽरहोन्तर्भ्यो ऽथवा ऽविद्यमानो रथ स्यन्दन सकलपरि ग्रहोपलक्षणभूतो न्तश्च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषाते ऽरथान्ता अत स्तेभ्यो, ऽथवा ऽरहंताणंति क्वचिद प्यासक्ति मगच्छद्भ्य क्षीणरागत्वा, दथ वा ऽरहयद्भ्य· प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषयसम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकस्वभाव मत्यजद्भ्य इत्यर्थ·' अरिहंताणमितिपाठान्तरम्' तत्र कर्मारिहंत भ्य आहच—अठविहंपियकम्म अरिभूयहोइसयलजीवाण । तकम्ममरिहंता अरिहंतातेणवुच्चति ॥ १ ॥ अरुहंताण मित्यपि पाठान्तरम्' तत्रा रोहद्भ्यो ऽनुपजायमानेभ्य क्षीणकर्मबीजत्वा दाहच—दग्धेबीजेयथात्यन्तं प्रादुर्भवतिनाकुर । कर्मबीजेतथादग्धे नरोहतिभवाकुर· ॥ १ ॥ नमस्करणीयता चैषा भीमभवगहनभ्रमणभीतभूताना मनुपमानन्दरूपपरमपदपुरपथप्रदर्शकत्वेन परमोपकारित्वादिति ॥ नमोसिद्धाणति ॥ सित बद्ध मष्टप्रकार कर्मेन्धन ध्मात दग्ध जाज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा, अथवा पिधुगता विति वचनात् सेधन्तिस्म) पुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्

॥ मूल ॥

॥ऍ॥ णमोअरहंताण णमोसिद्धाण

॥ भाषा ॥

पणिकहीये, भगवतीकहता पूछा ॥ हिवेपचपरमेष्टि नमस्कार मगलअर्थेकहीयेछे ॥ नमोकहीये नमस्कार हुओ केहने? अरहंताण कहता अरहंतनेकाजे ते अरहंतशब्दनो अर्थ कहेछे, देवकृत अशोकादिमहाप्रातिहार्यरूप पूजानेयोग्य ते अरहत कहीये । तथा अष्टकर्मरूप वैरी हण्या ते अरिहत । तथा अरुहंताण इत्यपिपाठ ॥ नमोकहता नमस्कारहुओ केहने ? सिद्धाण सिद्धनेकाजे अष्टप्रकारकर्मबध शुक्लध्यानरूप अग्निकरी ज्वालीने जे मोक्षपहुता

॥ टीका ॥

अथवा षिधुसंराद्धाविति वचना त्सिध्यन्तिस्म निष्ठितार्थां भवन्तिस्म, अथवा षिधूञ्शास्त्रे माङ्गल्ये चेति वचना त्सेधन्तिस्म शासितारो ऽभूवन् मङ्गल्यरूपता चानुभवन्तिस्मेति सिद्धाः, अथवा सिद्धा नित्या अपर्यवसानस्थितिकत्वा त्प्रख्याताया भव्यै रुपलब्धगुणसन्दोहत्वा दाहच–ध्यातसितयेनपुराणकर्म्म योवागतोनिर्वृतिसौधमूर्द्धनि । ख्यातोनुशास्तापरिनिष्ठितार्थो य सोस्तुसिद्ध कृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ अत स्तेभ्यो नम नमस्करणीयता चैषा म विप्रणाशिज्ञानदर्शनसुखवीर्यादिगुणयुक्ततया स्वविषयप्रमोदप्रकर्षोत्पादनेन भव्याना मतीवोपकारहेतुत्वादिति ॥ नमोआयरियाणति ॥ आ मर्यादया तद्विषयविनयरूपया चर्यन्ते सेव्यन्ते जिनशासनार्थोपदेशकतया तदाकाङ्क्षिभि रित्याचार्या उक्तञ्च–सुत्तत्थविऊलक्खण जुत्तोगच्छस्समेढिभूओय । गणतत्तिविप्पमुक्को अत्थवाएइआयरिओभि ॥ १ ॥ अथवा आचारो ज्ञानाचारादि पञ्चधा आ मर्यादया वाचारो विहार आचार स्तत्र साधव स्वयकरणा त्प्रज्ञापणात् प्रदर्शना च्चेत्याचार्या आहच–पचविहआयार आयरिमाणातहापयासता । आयारदसता आयरियातेणवुच्चति ॥ १ ॥ अथवा आ ईषत् अपरिपूर्णाइत्यर्थ चारा हेरिका ये ते आचारा चारकल्पाइत्यर्थो युक्तायुक्तविभागनिरूपणनिपुणा विनेया अत स्तेषु साधवो यथावच्छास्त्रार्थोपदेशकतये त्याचार्या अत स्तेभ्यो नमस्यता चैषा माचारोपदेशकतयोपकारित्वात् ॥ नमोउवज्झायाणति ॥ उप समीप मागत्य अधीयते इड्ग्रध्ययने इतिवचना त्पठ्यते, इणगताविति वचना द्वा अधि आधिक्येन गम्यते, इक्स्मरणे इतिवचना द्वा स्मर्यते, सूत्रतो जिनप्रवचन येभ्य स्त उपाध्याया यदाह–बारसगोजिणक्खाओ सिज्झाओकहिओवुहे । तउवइस्सतिजम्हा उवज्झायातेणवुच्चति ॥ १ ॥ अथवा उपाध्यान उपाधि सन्निधि स्ते

॥ सूल ॥

णमोआयरियाणं णमोउवज्झायाणं

॥ भाषा ॥

सिद्धपदवी पाम्या ते सिद्ध कहीये ॥ नमोकहता नमस्कार हुआ केहनेकाजे? आयरियाण आचार्यनेकाजे जिनशासनना अर्थ उपदिशे मर्यादादि तेहने वाछके विनयादिकरी सेवीये ते आचार्य कहीये, अथवा ज्ञानादि पच आचार पोते आदरे उपदिशे पलावे ते आचार्य ॥ नमोकहता नमस्कार हुवो केहनेकाजे? उवज्झायाण कहता उपाध्यायनेकाजे जे द्वादशांग बारेउपाग २३ भणें २४ भणावें २५ पचवीसगुणें सहित । तथा जेहने समीपे भ

नो पाधिना उपाधौवा ध्यायो लाभ॰ श्रुतस्य येषा उपाधीनावा विशेषणाना प्रकर्मा च्छोभनानां मायो लाभो येभ्यो; ऽथवा उपाधिरेव सन्निधिरेव आय इष्टफलदैवजनितत्वेन आयाना मिष्टफलाना समूह स्तदेकहेतुत्वा द्येषा, अथवा आधीना मन पीडाना मायो लाभ आध्याय अधियावा नञ कुत्सार्थत्वा त्कुबुद्धीना मायो ध्याय ध्यैचिन्तायामित्यस्य धातो प्रयोगा न्नञ कुत्सार्थत्वा देव दुर्ध्यानवा अध्याय उपहतो ऽध्याय आध्यायोवा यै स्ते उपाध्याया अत स्तेभ्यो नमस्यता चैषां सुसम्प्रदायातजिनवचनाध्यापनतो विनयेन भव्याना मुपकारित्वादिति ॥ नमोसव्वसाहूणंति ॥ साधय न्ति ज्ञानादिशक्तिभि र्मोक्षमिति साधव॰ समतावा सर्वभूतेषु ध्यायन्तीति निरुक्तिन्यायात्साधवो यदाह–निव्वाणसाहएजोए जम्हासाहेतिसाहुणो । समायसव्वभूएसु तम्हातेभावसाहुणो ॥ १ ॥ साहायकवा सयमकारिणा धारयन्तीति साधवो निरुक्तेरेव सर्वचते सामायकादिविशेषणा प्रमत्तादय पुलाकादयो जिनकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालदकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक स्थविरकल्पिक स्थितकल्पिक स्थितास्थितकल्पिक कल्पातीतभे दा॰ प्रत्यकबुद्धस्वयबुद्धबुद्धबोधितभेदा भारतादिभेदा सुखमदु समादिविशेषितावा साधव सर्वसाधव सर्वग्रहणाच् सर्वेषा गुणवता मविशेषनम नीयताप्रतिपादनार्थं इदचा ऽर्हदादिपदेष्वपि बोद्धव्यम्' न्यायस्य समानत्वादिति' अथवा सर्वेभ्यो जीवेभ्यो हिता सार्वा स्तेच ते साधवश्च सार्वस्य वा ऽर्हतो नतु बुद्धादे साधव॰ सार्वसाधव ' सर्वान्वा शुभयोगान् साधयन्ति कुर्वन्ति सार्वान्वा ऽर्हत साधयन्ति तदाज्ञाकरणा दाराधयन्ति प्रतिष्ठा पयन्तिवा दुर्नयनिराकरणादिति सर्वसाधव सार्वसाधवोवा; अथवा अव्येषु श्रवणार्हेषु वाक्येषु अथवा सव्यानि दक्षिणा न्यनुकूलानि यानि कार्या

णमोलोएसव्वसाहूणं

चोइ ते उपाध्याय कहीये ॥ नमोकहता नमस्कार हुओ केहनेकाजे "सव्वसाहूण सर्वसाधुनेकाजे जे ज्ञानादि शक्तिकरी मोक्षमार्ग साधे ते साधु, इहा स र्वशब्देकरी सामायिकअविशेष अप्रमत्तादिक पुलाकादिक जिनकल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथालिंगादिकल्पिक प्रत्येकबुद्ध स्वय बुद्ध बुद्धबोधितप्रमुख जोजापणि जे गुणवत सर्व तेहने अविशेषेकरी नमस्कार कह्यो। ए सर्वमोक्षमार्गसहायकरवेंकरी उपगारीछे ॥ नमो कहता नमस्का

॥ टीका ॥

खि तेषु साधवो निपुणा. अव्यसाधव सव्यसाधवोया' ऽत स्तेभ्य ' नमोलोएसव्वसाहूणमितिक्कचित्पाठ ' तत्र सर्वशब्दस्य देशसर्वतायामपि दर्शना दपरिशेषसर्वतोपदर्शनार्थ मुच्यते' लोके मनुष्यलोके नतु गच्छादौ ये सर्वसाधव स्तेभ्यो नमइति' एषाच नमनीयता मोक्षमार्गसाहायककरणेनो प कारित्वात्' आहच—असहाएसहायत्त करेतिमेसजमकरेतस्स । एएणकारणेणं नमामहंसव्वसाहूणाति ॥ १ ॥ ननु यद्यय सक्षेपेण नमस्कार स्तदा सि द्धसाधूनामेव युक्त स्तद्ग्रहणे न्येषा मप्यर्हदादीना ग्रहणा द्यतो ऽर्हदादयो न साधुत्व व्यभिचरन्ति ? अथविस्तरेण तदा ऋषभादिव्यक्तिसमुच्चारण तो ऽसौ वाच्य स्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ऽर्हदादिनमस्कारफल मवाप्यते' मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारफलवदिति' कर्त्त व्यो विशेषतो ऽसौ प्रतिव्यक्तितु नासौ वाच्यो शक्यत्वादेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता त्र सिद्धाना सर्वथा कृतकृ त्यत्वेन सर्वप्रधानत्वा ? नैव मर्हदुपदेशेन सिद्धाना ज्ञायमानत्वा दर्हतामेवच तीर्थप्रवर्त्तनेना त्यन्तोपकारित्वा दित्यर्हदादिरेव सा' नन्वेव माचा र्यादे सा प्राप्नोति क्वचित्काले आचार्येभ्य सकाशा दर्हदादीना ज्ञायमानत्वादिति अतएव तेषामेव धात्यतोपकारित्वा ? नैव आचार्याणा मुपदे शदानसामर्थ्य मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा आचार्यादय उपदेशतो ऽर्थज्ञापकत्व प्रतिपद्यन्ते अतो ऽर्हन्तएव परमार्थेन सर्वार्थज्ञापका स्तथा ऽर्हत्प रिषद्रूपाएवा चार्यादयो ऽत स्ता न्नमस्कृत्यार्हन्नमस्करण मयुक्त' उक्तच—णयकोइविपरिसाए पणमित्तापणमएरणोत्ति ॥ एव ताव त्परमेष्ठिनो नम स्कृत्या धुनातनजनाना श्रुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्वा त्तस्यच द्रव्यभावश्रुतरूपत्वा द्भावश्रुतस्यच द्रव्यश्रुतहेतुकत्वा त्तस्ञ्चाक्षररूपद्रव्यश्रुतनमस्कुर्वन्ना ह ॥ नमोबम्भीएलिवीएत्ति ॥ लिपि. पुस्तकादा वक्षरविन्यास. सा चाष्टादशप्रकारापि श्रीमन्नाभेयजिनेन स्वसुताया ब्राह्मीनामिकाया दर्शिता ततो ब्राह्मी त्यभिधीयते' आहच—लेहलिवीविहाणं जिणेणबम्भीएदाहिणकरेणं । इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषण लिपेरिति' नन्वधिकृतशास्त्रस्यैवमङ्गल

॥ मूल ॥

णमोबम्भीएलिवीए

॥ भाषा ॥

रहुश्रीकेहने १बभीएलिवोए ब्राह्मीलिपिने पुस्तकादिकनेविषे अक्षरस्थापनारूप ते अठारेप्रकारे ऋषभदेवें पोतानीपुत्री ब्राह्मीने देखाडी तेमाटें ब्राह्मी

॥ टीका ॥

त्वात्किमङ्गलेनानवस्थादिदोषप्राप्ते ? सत्यं किंतु शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्युक्तमेवेति ' अभिधेयादयः पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रज्ञप्तिरिति नाम्नैवोक्ताइति तेपुनर्नोच्यन्ते' ततएव श्रोतृप्रवृत्त्यादीष्टफलसिद्धे स्तथाहि' इह भगवता ऽर्थव्याख्याअभिधेय तयोक्ता स्तासाच प्रज्ञापना वोधोवा ऽनन्तरफल परम्पराफलतु मोक्ष ' सचा स्या प्रवचनत्वादेव फलतया सिद्धो' नह्याप्त साक्षात् पारम्पर्येणवा यत्र मोक्षाङ्ग तत्प्रतिपादयितु मुत्सहते अनाप्तत्वप्रसङ्गा' तथा यमेव सम्बन्धो यदुतास्य शास्त्रस्येद प्रयोजनमिति ? तदेव मस्यशास्त्रस्यै कश्रुतस्कन्धरूपस्य सातिरेकाध्ययनशतस्वभावस्य उद्देशकदशसहस्त्रीप्रमाणस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्त्रपरिमाणस्या ऽष्टाशीतिसहस्त्राधिकलक्षद्वयप्रमाणपदराशे र्मङ्गलादीनि दर्शितानि, अथ प्रथमे शते ग्रन्थान्तरपरिभाषयाध्ययने दशो द्देशकाभवंति, उद्देशका आध्ययनार्थदेशाभिधायिनो ऽध्ययनविभागा. । उद्दिश्यते उप धानविधिना शिष्यस्या चार्येण यथै तावत्त मध्ययनभाग मधीष्वेवमुद्देशा स्तएवो द्देशका स्ताश्च सुखधरणस्मरणादिनिमित्त माद्याभिधेयाभिधानद्वा रेण सङ्गृहीतु मिमागाथामाह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ अधिकृतगाथार्थो यद्यपि वक्ष्यमाणोद्देशकदशकाभिगमे स्वयमेवावगम्यते' तथापि वालाना सु खावबोधार्थ मभिधीयते' तत्र रायगिहेत्यादि लुप्तसप्तम्येकवचनत्वा द्राजगृहेनगरे वक्ष्यमाणोद्देशकस्यार्थो भगवता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये य' एव मन्यत्रापी ष्टविभक्त्यन्तता वसेया ॥ चलणत्ति ॥ चलनविषय प्रथमोद्देशक चलमाणेचलिए इत्याद्यर्थनिर्णयार्थइत्यर्थ ॥ दुक्खित्ति ॥ दु

॥ मूल ॥

रायगिह चलण १ दुक्खे २

॥ भाषा ॥

लिपि कहीये । आहच लेहलिवीविहाण जिणेणवभीइदाहिणकरण इति । ब्राह्मीलिपिनो स्वरूप विशेष जाणवो, हिवेग्रन्थनोमानलिखीएछे, एभगव तीसूत्रे १३८ शतकछे, प्रश्न छत्रीससहस्त्रप्रमाणछे, पद वेलाखअठ्यासीसहस्त्रप्रमाणछे ॥ हिवे प्रथमशतके दश उद्देशा श्रीमहावीरदेवे राजगृहनगरनेविषे क ह्या तेहना नाम गाथायेंकरी कहैछे, चलण ॥ चलमाणेचलिए इत्यादि । चलण विषयअर्थनो निर्णयरूप पहिलोउद्देशो नव प्रश्ननो जाणवो १ । दुक्खेत्ति ॥ हेभगवत जीव आपणा कमायाद्दुक्खकहता कर्मवेदै ?इत्यादि प्रश्ननो निर्णय पूछनो ते वीजोउद्देशो २ । कखपओसेय काचा मिथ्यात्वमोहनीयकर्मनेउद

॥ टीका ॥

खविषयो द्वितीयो जीवो भदन्त । खयकृतं दु ख वेदयतीत्यादि प्रश्ननिर्णयार्थइत्यर्थ· ॥ कखपउसेत्ति ॥ कांक्षा मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थो ऽन्यान्यदर्शनग्रहरूपो जीवपरिणाम सएव प्रकृष्टो दोषो जीवदूषण कांक्षाप्रदोष सद्विषय स्तृतीय ' जीवेन भदन्त । कांक्षामोहनीय कर्म कृत मित्याद्यर्थनिर्णयार्थइत्यर्थ ' चकार समुच्चये ॥ पगइत्ति ॥ प्रकृतय कर्मभेदा श्चतुर्थोद्देशकस्यार्थ ' कतिभदत। कर्मप्रकृतय इत्यादिश्चासौ ? ॥ पुढवीउत्ति ॥ रत्नप्रभादिपृथिव्य पचमेवाच्या ' कतिभदत। पृथिव्य इत्यादिच ? सूत्रमस्य॥ जावतेत्ति॥ यावच्छद्दोपलक्षित. पष्ठ, ' यावतोभदता। वकाशान्तरा त्सूर्य इत्यादिसूत्रश्चासौ ॥ नेरइएत्ति ॥ नेरयिकशद्दोपलक्षित सप्तमो नेरयिको भदत । निरये उत्पद्यमानइत्यादिच तत्सूत्र ॥ वालेत्ति ॥ वालशद्दोपलक्षितो ऽष्टम ' एकान्तवालो भदन्त। मनुष्यइत्यादि सूत्रश्चासौ ॥ गुरुएत्ति ॥ गुरुकविषयोनवम कथ भदन्त। जीवागुरुकत्व मागच्छन्तीत्यादिच ? सूत्र मस्य च समुच्चयार्थ ॥ चलणाउत्ति ॥ वहुवचननिर्देशा च्चलनाद्या दशमोद्देशकस्यार्था स्तत्सूत्र चैव मन्ययूथका भदत। एवमाख्याति चलत् अचलित मित्यादीनि प्रथमशतोद्देशकसग्रहणिगाथार्थ ॥ तदेव शास्त्रोद्देशे कृतमगलादिकृत्योऽपि प्रथमशतस्यादौ विशेषतो मगलमाह ॥ नमोसुयस्सत्ति ॥ नमस्का

॥ मूल ॥

कंखपओसेय ३ पगइ ४ पुढवीउ ५ जावते ६ णेरइए ७ वाले ८ गुरुएय ९ चलणाउ १० ॥ णमोसुयस्स ॥

॥ भाषा ॥

ये अन्यअन्य दर्शनग्रहणपरिणाम तेहिज प्रकृष्टमोटो जपजे दोष जीवदूषण तेकांक्षा प्रदोष हेभगवन् जीवें कांक्षामोहनीयकर्मकीधूं ? इत्यादि। अर्थनिरूपण तीजो ३ । च शब्द समुच्चयमा ॥ पगइ॥ प्रकृति कहता कर्मनाभेद, हेभगवन् केतली कर्मप्रकृति ? इत्यादि प्रश्न चौथो ४ । पुढवीओत्ति ॥ रत्नप्रभा पृथिवी हेभगवन् केतलीछे ? इत्यादि अर्थनिर्णय पचमो ५ । जावतेत्ति हेभगवन् जेतले आकाशे अतरे सूर्य जगताहोय तेनिर्णयरूप छट्ठो ६। णेरइए॥ हेभगवन् नरकनेविषे नारकी जपजे किंवा अनारकी जपजे ? इत्यादि प्रश्न सातमो ७। वाले ॥ काहियेए कातवाल हेभगवन् मनुष्यइत्यादि ? प्रश्न आठमो ८ । गुरुएय ॥ हेभगवन् किंयो जीवभारीहोय ? इत्यादि प्रश्ननिर्णय ते नवमो उद्देशो ९ । चलणाओ॥ हेभगवन् अन्यदर्शनी इमकहे, चलमाणे अचलिए इत्यादि प्रश्न ? निर्णय ते दशमोउद्देशो १० ॥ इत्यादिक प्रथमशतोद्देशक गाथार्थ ॥ णमोसुअस्सेत्ति ॥ नमस्कारहुओ केहने श्रुतने ? श्रुत द्वादशांगीरूप

॥ टीका ॥

रोस्तु श्रुताय द्वादशाङ्गीरूपाया र्हत्प्रवचनाय । नन्विष्टदेवतानमस्कारोमङ्गलार्थोभवति नचश्रुतमिष्टदेवतेतिकथमयमङ्गलार्थइति? अत्रोच्यते श्रुतमि ष्टदेवतै वार्हता नमस्करणीयत्वा त्सिद्धव, न्नमस्कुर्वंतिच श्रुत मर्हंतो नमस्तीर्थायेति भणनात् तीर्थंच श्रुत ससारसागरोत्तरणासाधारणकारणत्वा त्त दाधारत्वेनैवच सङ्घस्य तीर्थशब्दाभिधेयत्वात् तथा सिद्धानपि मङ्गलार्थ मर्हंतोनमस्कुर्वंत्येव—काऊणनमोक्कार सिद्धाणमभिग्गहंतुसोगिण्हे । इतिव चनादिति' एवंताव त्प्रथमशतोद्देशकाभिधेयार्थलेशः प्राग्दर्शित स्ततश्च यथोद्देशं निर्देश इतिन्याय माश्रित्यादित· प्रथमोद्देशकार्थप्रपंचोवाच्य स्त स्यच गुरुपर्वक्रमलक्षणं सम्बन्ध मुपदर्शयन् भगवान् सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिन माश्रित्येदमाह ॥ तेणकालेणंतेणसमएणमित्यादि ॥ अथ कथ मिदमव सीयते यदुत सुधर्म्मस्वामी जम्बूस्वामिन मभिसम्बन्धग्रन्थमुक्तवानिति? उच्यते सुधर्म्मस्वामिवाचनायाएवा नुवृत्तत्वा दाहच—तित्थञ्चसुहम्माउ निर वच्चागणाहरासेसा ॥ सुधर्म्मस्वामिनश्च जम्बूस्वाम्येव प्रधानशिष्यो ऽत स्तमाश्रित्ये यंवाचना प्रवृत्तेति' तथा षष्ठाङ्गे उपोद्घात एवदृश्यते यथाकिल सु धर्म्मस्वामिनंप्रति जबूनामा प्राह ॥ जइणं भते । पञ्चमस्स अङ्गस्स विवाहपणत्तीएसमणेण भगवया महावीरेणं अयमठे पणत्ते छठस्सणं भंते' के अठे पणत्तेत्ति ॥ तत एव मिहापि सुधर्मैव जम्बूनामान प्रत्युपोद्घात मवश्य मभिहितवा नित्यवसीयतइति' अथ चोपोद्घातग्रन्थो मूलटीकाकृता समस्तशा स्त्र माश्रित्य व्याख्यातो प्यस्माभि प्रथमोद्देशक माश्रित्य व्याख्यायते प्रतिशत स्प्रत्युद्देशक मुपोद्घातस्येह शास्त्रे नेकधाभिधानादिति, अयञ्च प्राग् व्याख्यातो नमस्कारादिको ग्रन्थो वृत्तिकृता न व्याख्यात कुतोपि कारणादिति ॥ तेणकालेणति ॥ तेइति प्राकृतशैलीवशा त्तस्मिन् यत्र तन्नगर मा सीत्, ण कारो न्यत्रापि वाक्यालङ्कारार्थो । यथा—इमाण भते । पुढवी इत्यादिषु, काले अधिकृतावसर्प्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे ॥ तेणति ॥ तस्मिन् य त्रा सौ भगवान् धर्म्मकथा मकरोत् ॥ समएणंति ॥ समये कालस्यैवविशिष्टे विभागे अथवा, तृतीयैवेयं तत स्तेन कालेन हेतुभूतेन तेन समयेन हे

॥ मूल ॥

तेणंकालेण तेणसमएणं

॥ भाषा ॥

वीतराग प्रवचन कह्यो ये, हिवे भगवत श्रीसुधर्मास्वामी पोतानाशिष्य जबूप्रते इमकहेछे ॥ तेणकालेण॥ णशब्दालकारे ते अवसर्प्पिणो कालना दुखम

॥ टीका ॥

तुभूतेनैव ॥ रायगिहेत्ति ॥ एकार प्रथमैकवचनप्रभव । कयरेआगछइदितरूवेइत्यादाविव–ततश्च राजगृहनाम नगरं ॥ होत्थेति ॥ अभवत् नन्विदानी मपि तन्नगर मस्ती त्यत कथमुक्त मभवदिति ? उच्यते वर्णकग्रथोक्तविभूतियुक्त तदेवा भव न्नतु सुधर्मस्वामिनो वाचनादानकाले ऽवसर्प्पिणी त्वा त्कालस्य तदीयशुभभावाना हानिभावात् ॥ वणउत्ति ॥ इहस्थानके नगरवर्णको वाच्य ' ग्रथगौरवभयादिह तस्यालिखितत्वात् ' सचैव–रिद्ध त्थिमियसमिद्धे ॥ रिद्ध पुरभवनादिभि वृंद्ध स्तिमित स्थिर स्वचक्रादिभयवर्जितत्वात् समृद्ध धनधान्यादिविभूतियुक्तत्वा त्तत पदत्रयस्य कर्मधार य ॥ पमुइयजणजाणवए ॥ प्रमुदिता हृष्टा प्रमोदकारणवस्तूना सद्भावा ज्जनानगरवास्तव्यलोका जानपदाश्च जनपदभवा स्तत्रायाता सतो यत्र त त्प्रमुदितजनजानपदमित्यादि रौपपातिका त्सव्याख्यानो ऽत्रद्दश्य ॥ तस्सणति ॥ पष्ठया. पचम्यर्थत्वा त्तस्मा द्राजगृहनगरात् ॥ वहियत्ति ॥ वहि स्तात् ॥ उत्तरपुरच्छिमेत्ति ॥ उत्तरपौरस्त्ये ॥ दिसीभाएत्ति ॥ दिशा भागो दिग्रूपोवा भागो गगनमडलस्य दिग्भाग स्तत्र गुणसिलकनाम ॥ चेइय त्ति ॥ चिते र्लेप्यादिचयनस्य भाव कर्मवेति चैत्य सज्ञाशब्दत्वा द्देवबिंव तदाश्रयत्वा त्तद्गृहमपि चैत्य तचेह व्यतरायतन नतु भगवता मर्हता माय

॥ मूल ॥

रायगिहेणामं णयरेहोत्था वणओ तस्सणरायगिहस्सणयरस्स वहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए गुणसिलएणामंचेइएहोत्था

॥ भाषा ॥

सुखमानाम चौथा श्रारानेविषे ॥ तेणसमएण ॥ णवाक्यालकारे जेसमयनेविषे भगवत कथाकहे ते समये ॥ रायगिहेणामणयरेहोत्था ॥ राजगृह,, इसेनामे णयरेकहता नगरहोतो हुयो, इहा वर्त्तमानकाले राजगृहनगरछे तोपणि अतीतकाले नगरनो जेहवो वर्णकहतो तेहवो वर्त्तमानकाले नहीं अवस र्पिणी काल माटे हुयोकह्यो ॥ वणओ ॥ वर्णकतेवर्णनरायपसेणीथी जाणवो ॥ तस्सणरायगिहस्सणयरस्सवहिया ॥ णवाक्यालकारे इमसर्वेजाणवो तेहने राजा राजगृह नगरने बाहिर ॥ उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए ॥ उत्तरपूर्वना दिशिना भाग विभागनेविषे एतलेईशानकोणनेविषे गुणशिल इणेनामे व्यन्तरयच्च नो चैत्यशब्दे बिंब अथवा बिंबवत श्रायतन स्थानगृह हुयो ॥ तथणसेणिएराया ॥ तिहा राजगृहनगरे श्रेणिकनामें राजाछे, बेपद किणही एक पुस्तक

॥ टीका ॥

तनं ॥ होत्यत्ति ॥ वर्णूव इहच यन्नव्याख्यास्यते तत्प्रायः सुगमत्वा दित्यवसेयमिति ॥ तेणंकालेणंतेणंसमएणंसमणेत्ति ॥ श्रमतपसिखेदेचेतिवचनात् श्राम्यति तपस्यतीति श्रमण अथवा; सह शोभनेन मनसा वर्त्ततइति समना शोभनत्वच मनसो व्याख्यातं स्तवप्रस्तावान् मनोमात्रसत्वस्या स्तव त्वात् संगतवा; यथा भवत्येव मणातिभाषते समोवा; सर्वभूतेषु समण इत्यनेकार्थत्वा द्धातूना प्रवर्त्ततइति समणो निरुक्तिवशात् ॥ भगवति॥ भगवा नैश्वर्यादियुक्तः पूज्यइत्यर्थ ॥ महावीरेत्ति ॥ वीर. शूरवीरविक्रातावितिवचनात् रिपुनिराकरणतो विक्रात सच चक्रवर्त्यादिरपिस्या दतो विशि ष्यते, महा श्चासौ दुर्ज्जयातररिपुतिरस्करणा द्वीरश्चेति महावीर एतच्च देवै र्भगवतो गौणनाम कृत यदाह–श्रचलेभयभेरवाण खतिखमेपरीसहोवस ग्गाण देवेणकएमहावीरेत्ति ॥ आदिगरेत्ति-॥ आदौ प्रथमत श्रुतधर्म्माचारादिग्रन्थात्मक करोति तदर्थप्रणायकत्वेन प्रणयती त्येवशील आदिक र ॥ आदिकरत्वा च्चासौ किंविधइत्याह ॥ तित्थयरेत्ति ॥ तरति तेन संसारसागरमिति तीर्थ प्रवचन तदव्यतिरेका चेह सघ स्तीर्थंच तत्करणशी लत्वा त्तीर्थकर. तीर्थकरत्वच तस्य नान्योपदेशपूर्वक मित्यतआह ॥ सहसबुद्धेत्ति ॥ सह आत्मनैव सार्द्ध मनन्योपदेशतइत्यर्थ ' सम्यक् यथाव द्बु द्धो हेयोपादेयापेक्षणीयवस्तुतत्व विदितवानिति सहसबुद्ध ' सहसबुद्धत्व चास्य नप्राकृतस्य सत' पुरुषोत्तमत्वा दित्यतआह ॥ पुरिसोत्तमेत्ति ॥ पु रुषाणा मध्ये तेन'तेन रूपादिना तिशयेनोद्भूतत्वा दूर्द्ववर्त्तित्वा दुत्तम. पुरुषोत्तम , अथ पुरुषोत्तमत्वमेवास्य सिंहाद्युपमानत्रयेण समर्थयन्नाह॥ पु

॥ मूल ॥

तत्थणसेणिएराया चिल्लणादेवी तेणकालेणं तेणंसमएणं समणेभगवंमहावीरे आदिगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे

॥ भाषा ॥

माहि नथी ॥ चिल्लणादेवी ॥ चेलणानामे राणीछे ॥ तेणकालेण ॥ अवसर्प्पिणीनाम चौथाआरानेविषे ॥ समणेभगवमहावीरे॥ श्रमणतपस्वी ऐश्वर्यादिगुण युक्त पूज्य इत्यर्थ' महावीर इसेनामे ॥ आदिगरे ॥ श्रुतधर्मआचारागादिसूत्रनो आदिना करणहार ॥ तित्थगरे ॥ तरीयें जेणे तेनेतीर्थ प्रवचन तथा संघ तेहना कर्त्ता ॥ सयसंबुद्धे॥ आपहीज परउपदेश विना हेयोपादेयवस्तुस्वरूप जाण्यूं ॥ पुरिसुत्तमे ॥ पुरुषमाहि उत्तम रूपादिअतिशयेकरी अथवा उच्च त्वपणेंकरी ॥ पुरिससीहे॥ पुरुषमाहिसिंहनीपरें सौर्यगुणेकरीसहित तेमाटें पुरुषसिंह ॥ परिसवरपुडरीए ॥ पुरुषमाहिवरकहिये प्रधान श्वेतकमलनी परें

॥ टीका ॥

रिससीहेत्ति ॥ सिंहइव सिंहः पुरुष श्वासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहो' लोके नरि सिंहे शौर्यं मतिप्रकृष्ट मभ्युपगत मत' शौर्यं स उपमान कृत ' शौर्यं तु भगवतो बाल्ये प्रत्यनीकदेवेन त्राप्यमाणस्या प्यत्रीतत्वात्' कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरीरकुब्जताकरणाच्चेति' तथा ॥ पुरिसव रपुंडरीएत्ति ॥ वरपुंडरीकं प्रधानधवलसहस्रपत्र पुरुषो वरपुंडरीकमिवेति पुरुषवरपुंडरीक' धवलत्व चास्य भगवत. सर्वाशुभमलीमसरहितत्वात्' सर्वैश्च शुभानुभावै शुद्धत्वात्' अथवा, पुरुषाणा तत्सेवकजीवाना वरपुंडरीकमिव वरच्छत्रमिव य सन्तापातपनिवारणसमर्थत्वा' द्रूपाकारत्वा च स पुरुषवरपुंडरीकमिति तथा ॥ पुरिसवरगंधहत्थित्ति ॥ पुरुषएव वरगंधहस्ती पुरुषवरगंधहस्ती यथागंधहस्तिनो गंधेनापि समस्तेतरहस्तिनो भ ज्यते' तथा भगवत स्तद्देशविहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षमरमरकादीनि दुरितानि नश्यतीति पुरुषवरगंधहस्तीत्युच्यत इत्यत उपमात्रया त्पुरुषो त्तमो' सो नचाय पुरुषोत्तमएव किंतुलोकस्या प्युत्तमो लोकनाथत्वा देतदेवाह ॥ लोगणाहेत्ति ॥ लोकस्य सञ्ज्ञिभव्यलोकस्य नाथ प्रभु र्लोकनाथो नाथत्वच योगक्षेमकारित्व योगक्षेमकृन्नाथइतिवचनात्' तथा स्या प्राप्तस्य लोकस्य सम्यग्दर्शनादे र्योगकरणेन लब्धस्यच परिपालनेनेति' लोकना थत्वच यथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपना देवेत्यतआह ॥ लोगपईवेत्ति ॥ लोकस्य विशिष्टतिर्यग्नरामररूपस्या तरतिमिरनिराकरणेन प्रकृष्टप्र

॥ मूल ॥

पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगहिए लोगपईवे

॥ भाषा ॥

शुभभावेकरी सर्वअशुभ पापरहित तनाटे ॥ पुरिसवरगंधहत्थी ॥ पुरुषमाहि प्रधान गन्धहस्तीसमान जिमगंधहस्तीनागन्धे अनेरा हाथी नासे तिम भ गवत जेजेदेशनेविषे विचरे तिहातिहा ईतिदुर्भिक्षादिपरचक्रनासे ॥ लोगुत्तमे ॥ भव्यजीवनेमाहि स्वभावेकरी उत्तमछे ॥ लोगनाहे ॥ इहालोकशब्दे श्रासन्नसिद्धिक मोक्षगामी सघलाई भव्यजीव जाणवा तेहभणी नाथकहीये योगक्षेमना करणहारछे जिणेआगे धर्मप्राप्यूंनथी तेहने पमाडेछे ते योग कहीये अनेजिणे आगे धर्मलाधोछे तेहने लाधाथकी खडहडतानहीये मनतूंखिरपणू उपजावेते क्षेमकहीये तेवेहूवाना स्वामीकर्ते तेभणीलोकनाथ कहीये ॥ इहालोक षट्विधजीवनिकाय तेहने रषाने करवे हितुवाछे ॥ लोगपईवे ॥ इहालोककहीये सन्नीपचेंद्रीजीव जेहने धर्मनो अवस्थाछे तेह

॥ टीका ॥

काशकारित्वा त्प्रदीपइव प्रदीप· ' इदंविशेषणं द्रष्टृलोकमाश्रित्योक्त' मथदृश्यलोकमाश्रित्याह ॥ लोगपज्जोयगरेत्ति ॥ लोकस्य लोक्यतइतिलोको नया व्युत्पत्त्या लोकालोकस्वरूपस्य समस्तवस्तुस्तोमस्वभावस्या खण्डमार्त्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थकेवलालोकपूर्वकप्रवचन प्रभापटलप्रवर्त्तनेनप्रद्योत प्रकाश करोती त्येवशीलो लोकप्रद्योतकर , उक्तविशेषणोपेतश्च मिहिरहरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेन भवती ति कोस्यविशेष? इत्याशङ्कायां तद्विशेषाभिधानायाह ॥ अभयदएत्ति ॥ नभयं दयते ददाति प्राणापहरणरसिके प्युपसर्गकारिप्राणिनी त्यभयदय अभयावा, सर्वप्राणिभयपरिहारवती दया नुकम्पा यस्य सोऽभयदयो हरिहरमिहिरादयस्तु नैवमितिविशेष ' नकेवल मसावपकारिणा तदन्येषावा, ऽनर्थपरिहारमात्र ङ्करोती त्यपि त्वर्थप्राप्तिमपि करोतीति दर्शयन्नाह ॥ चक्खुदयेत्ति ॥ चक्षुरिवचक्षु श्रुतज्ञान शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात् यदाह–चक्षुष्मन्तस्तएवेह येश्रुतज्ञानचक्षुषा सम्यक्सदैवपश्यन्ति भावान्हेयेतरान्नरा ॥१॥ तद्दयतइति चक्षुर्दय , यथाहि–लोके कान्तारगताना ञ्चौ रैर्विलुप्तधनाना स्बद्धचक्षुषा ञ्चक्षुरुद्घाटनेन चक्षुर्दत्वा वाञ्छितमार्गदर्शनेनो पकारी भव त्येव मयमपि ससारारण्यवर्त्तिना रागादिरिपुविलुप्तधर्म्म धनाना कुवासनाच्छादितसज्ज्ञानलोचनाना तदपनयनेन श्रुतचक्षुर्दत्वा निर्वाणमार्ग यच्छ त्युपकारीति दर्शयन्नाह ॥ मग्गदएत्ति ॥ मार्ग सम्यग्द र्शनज्ञानचारित्रात्मक म्परमपदपुरपथ न्दयतइति मार्गदय , यथाहि–लोके चक्षुरुद्घाटन मार्गदर्शनञ्च कृत्वा चौरादिविलुप्ता न्निरुपद्रव स्थान प्राप यन् परमोपकारीभवती त्येवमयमपीति दर्शयन्नाह ॥ सरणदएत्ति ॥ शरण त्राण नानाविधोपद्रवोपद्रुताना तद्रक्षास्थान न्तच्च परमार्थतो निर्वाण

॥ मूल ॥

लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए

॥ भाषा ॥

ने एहप्रदीपसमान ॥ लोगपज्जोयगरे ॥ इहा लोककहता गणधर तेप्रते पज्जासूर्यसमानछे जिमसूर्यनोथाडोईकातेकरी जगमाहि सघलेउद्योतहोय तिम स्वामीने उपन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा, एतले त्रिपदीने वचनेकरी द्वादशागी रचे। अथवा, समस्तलोकालोकस्वरूपनेविषे प्रद्योतकरे ॥ अभयदए ॥ उ पसर्गना करणहारनेपणि भयनदे। अथवा, दयाप्रतेदीयेते ॥ चक्खुदए ॥ श्रुतज्ञानरूपचक्षुदे तेभणी ॥ मग्गदए ॥ ज्ञानदर्शनचारित्ररूप मोक्षमार्गना दा

॥ टीका ॥

तद्दयतइति शरणदय, शरणदायकत्वञ्चास्य धर्म्मदेशनयैवेत्यतआह ॥ धम्मदेसएत्ति ॥ धर्म्मं श्रुतचारित्रात्मकं दर्शयतीति धर्म्मदेशक. ॥ धम्मदएत्ति ॥ पाठान्तर; तत्र धर्म्मं श्रुतचारित्ररूपं दयत इतिधर्म्मदय ' धर्म्मदेशनामात्रेणापि धर्म्मदेशक उच्यत इत्यतआह ॥ धम्मसारहित्ति ॥ धर्म्मरथस्य प्रव र्त्तकत्वेन सारथिरिव धर्म्मसारथि', यथा रथस्य सारथी रथ रथिक मश्वाश्च रक्षति एव भगवान् चारित्रधर्माङ्गाना सयमात्मप्रवचनाख्याना रक्षणो पदेशा द्धर्म्मसारथि र्भवतीति' तीर्थान्तरीयमतेनान्येपि धर्म्मसारथय सन्तीतिविशेषयन्नाह ॥ धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीति ॥ त्रय समुद्रा श्चतुर्थ श्च हिमवान् एतेचत्वारोन्ता पृथिव्यन्ता एतेषु स्वामितया भवतीति चातुरन्त सचासौचक्रवर्त्तीच वरचातुरन्तचक्रवर्ती राजातिशयो धर्म्मविषये वरचा तुरन्तचक्रवर्त्ती धर्म्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती, यथाहि–पृथिव्या शेषराजातिशायी वरचातुरन्तचक्रवर्त्तीभवति तथा भगवा न्धर्म्मविषये शेषप्रणेतृणा मध्ये सातिशयत्वा त्तथोच्यतइति । अथवा, धर्म्मएव वर मितरचक्रापेक्षया कपिलादिधर्म्मचक्रापेक्षयावा, चातुरन्त न्दानादिभेदेन चतुर्विभाग त्वात सुगावा, नरकादिगतीना मन्तकारीत्वा च्चतुरन्त तदेवचातुरन्त यच्चक्र भवारातिच्छेदा त्तेन वर्त्तितु शीलयस्य सतथा, एतच्च धर्म्मदेशकत्वादिविशेष णकदम्बक मुत्कृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्याह ॥ अप्पडिहयवरनाणदसणधरेत्ति ॥ अप्रतिहते कटकुट्यादिभि रस्खलिते अविसंवादकेवा; ऽतएव क्षा यिकत्वाद्वा, वरे प्रधाने ज्ञानदर्शने केवलाख्ये विशेषसामान्यबोधात्मके धारयति य सतथा, छद्मवान प्येवविधसवेदनसम्पदुपेत कोपि दभ्युपगम्य

॥ मूल ॥

बोहिदए धम्मदए धम्मदेसिए धम्मनायगे धम्मसारहिए धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहय वरणाणदसणधरे

॥ भाषा ॥

तारछे। सरणदए ॥ नानाविधउपद्रुत जीवने रचास्थान एतले निर्वाणदीये तेमाटे सरणदए ॥ बोहिदए ॥ सम्यक्त्व चारित्ररूप तेहना देणहार ॥ ॥ धम्मदए ॥ चारित्ररूप धर्मना देणहार ॥ धम्मदेसिए ॥ श्रुतचारित्ररूपधर्मना उपदेसक ॥ धम्मनायगे ॥ धर्मना नायक ठाकुरछे ॥ धम्मसारहीए ॥ ध र्मरूपरथ प्रवर्त्तावनाने सारथीसमान ॥ धम्मवरचाउरतचक्कवट्टी ॥ जिम पृथिवीनेविषे समस्त राजामाहि चक्रवर्त्ती प्रधान तिम धर्मनायकमाहि भ गवान् चक्रवर्त्ति । अथवा, चक्रवर्त्ति च्यारदिशिनो अंतकारे आण मनावे तिम भगवत च्यारिगतिनो अतकारे ॥ अप्पडिहयवरणाणदसणधरे ॥ भिला

॥ टीका ॥

ते सचमिथ्योपदेशत्वा न्नोपकारीन्नवतीति निश्छद्मताप्रतिपादनायाह–अथवा–कथमस्याप्रतिहतसवेदनत्वसम्पन्नम् ? अत्रोच्यते आवरणान्नावा देतमे वास्यावेदयन्नाह ॥ वियट्टछउमत्थेत्ति ॥ व्यावृत्त निवृत्त मपगत छद्म शठत्व मावरणवा; यस्यासौ व्यावृत्तछद्मा, छद्मान्नाव श्चास्य रागादिजयाज्जात इत्याह ॥ जिणेत्ति ॥ जयति निराकरोति रागद्वेषादिरूपा नराती नितिजिन , रागादिजय श्चास्य रागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएव न्नवतीत्ये तदस्याह ॥ जाणएत्ति ॥ जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक , ज्ञायकइत्यनेनास्य स्वार्थसम्पत्त्युपायउक्तो ऽधुनातु स्वार्थसम्पत्तिपूर्वक परार्थ सम्पादकत्व विशेषणचतुष्टयेनाह ॥ बुद्धेत्ति ॥ बुद्धो जीवादितत्वम्बुद्धवान्, तथा ॥ बोहएत्ति ॥ जीवादितत्वस्य परेषा बोधयिता, तथा ॥ मुत्तेत्ति॥ मुक्त बाह्याभ्यन्तरग्रन्थबन्धनेन मुक्तत्वात्, तथा ॥ मोयएत्ति॥ परेषां कर्मबन्धना न्मोचयिता । अथ मुक्तावस्था माश्रित्य विशेषणान्याह ॥ सव्वण्णू सव्वदरसीत्ति ॥ सर्वस्य वस्तुस्तोमस्य विशेषरूपतया ज्ञापकत्वेन सर्वज्ञ , सामान्यरूपतया पुन. सर्वदर्शी, नतुमुक्तावस्थायां दर्शनान्तराभिमतपुरुषव ज्जविष्य ज्जडत्व, एतच्चपदद्वय क्वचि न्नदृश्यतइति । तथा ॥ सिवमयलमित्यादि ॥ तत्र शिवं सर्वबाधारहितत्वा, दचलं स्वान्नाविकप्रायोगिकचलनहे त्वभावात्, अरुज मविद्यमानरोगं तन्निबन्धनशरीरमनसोरन्नावात्' अनन्त मनन्तार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात्, अक्षय मनाशसाद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात्

॥ मूल ॥

वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहिए मुत्ते मोयए सव्वन्नू सव्वदरिसी सिवमयलमरुअमणं तमक्खयमव्वाबाह

॥ भाषा ॥

टिकरोहणाजायनहो एहवा प्रधान केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धारकछे भगवत ॥ वियट्टछउमे॥ निवर्त्तंययोछे छद्मस्थपणो जेहथकी॥ जिणे॥ रागादिक जीत्या जिणें ते जिन छाद्मस्थिकज्ञानचारोथी अधिक ॥ जाणए ॥ जाणें जीवादितत्व ॥ बुद्धे॥ बूझ्या ॥ बोहिए॥ जीवादितत्व अपरनें बूझवे॥ मुत्ते॥ बाह्या भ्यतर ग्रन्थथी मूकाणा ॥ मोयए ॥ औरजोवाने कर्मबन्धथी मूंकावे ॥ सव्वण्णू॥ सर्वजाणें ज्ञानेंकरी ॥ सव्वदरिसी ॥ सर्वदेखे दर्शनेंकरी । मुक्तिअवस्थाआश्री कहेछे ॥ सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाह॥ सर्वथाआबाधारहित चलवानो अभाव रोगरहित अनतअर्थविषयस्वरूपथकी सादिअपर्यवसितथकी अनेरा नेपीडा न करे॥ अपुणरावत्तिय॥ पुनरपिआवर्त्तनहो वोजोअवतार नहोकरे॥ सिद्धगइनामधेय॥ मोक्षजावानी गति सकलअर्थपूरा जिहा प्रशस्तनामजेहनो

॥ टीका ॥

अदितवा, परिपूर्णत्वा त्पौर्णमासीचन्द्रमण्डलवत्, अव्याबाध परेषा मपीडाकारित्वात् ॥ सिद्धिगइनामधेयति ॥ सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति यस्या सा सिद्धि साचासौ गम्यमानत्वा द्गतिश्च सिद्धिगति स्तदेव नामधेय मप्रशस्तनाम यस्य तत्तथा ॥ ठाणंति ॥ तिष्ठति अनवस्थाननिबन्धनकर्माभावेन सदावस्थितो भवति यत्र तत्स्थान क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूप लोकाग्रवा, जीवस्वरूपविशेषणानितु लोकाग्रस्य आधेयधर्माणा माधारे ऽध्यारोपा दवसेयानि तदेवभूत स्थान ॥ सपाविउकामेत्ति ॥ यातुमना नतु तत्प्राप्तस्तत्प्राप्तस्याकारणत्वेन विवक्षितार्थाना प्ररूपणासम्भवात् प्राप्तुकामइतिच यदुच्यते तदुपचारा दन्यथाहि निरभिलाषाएव भगवन्त केवलिनो भवन्ति–मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनादिति ॥ जावसमोसरणंति ॥ ताव द्भगवद्वर्णको वाच्यो याव त्समवसरण समवसरणवर्णकइति सच भगवद्वर्णकएव ॥ भुयमोयगभिंगनेलकज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिकुरुंब निचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरए ॥ भुजमोचको रत्नविशेषो, भृङ्ग कीटविशेष, अङ्गारविशेषोवा, नैल नीलीविकार, कज्जल मषी, प्रहृष्टभ्रमरगण प्रतीत, एतएव, स्निग्ध कृष्णच्छायो निकुरुंब. समूहो येषान्ते तथा, तेच ते निचिताश्च निबिडा कुञ्चिताश्च कुण्डलीभूता प्रदक्षिणावर्त्ताश्च मूर्द्धि शिरो जायस्य सतथा एव शिरोजवर्णकादि ॥ रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतले ॥ इति पादतलवर्णकान्त शरीरवर्णको भगवतो वाच्य, पादतलविशेषणस्य चायमर्थ, रक्त लोहित मुत्पलपत्रव, त्कमलदलवत् मृदुकमस्तब्ध, सुकुमालाना मध्ये कोमल, तल पादतल यस्य स तथा' तथा ॥ अट्ठसहस्सवरपुरिसलक्खणधरे आगासगएणंचक्केणं आगासगएणछत्तेण आगासगयाहि चामराहि आगासफलिहामएणं सपायपीढेण सीहासणेण ॥ आकाशस्फटिक मतिस्वच्छ स्फटिकविशेष स्तन्मयेन उपलक्ष्यतइतिगम्यं ॥ धम्मज्झएणपुरउकढिज्जमाणेणं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चउद्दसहि समणसाहस्सीहि छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धिसपरिवुडे ॥ साहस्त्रीशब्द सहस्रपर्याय सार्द्ध सह तेषा विद्यमानतयापि सार्द्धमितिस्या दत उच्यते सपरि

॥ मूल ॥

मप्पुणरावत्तिय सिद्धगइनामधेय ठाणसंपाविउकामे जाव समोसरणं

॥ भाषा ॥

॥ ठाणसपाविउकामे ॥ लोकाग्रस्थान जेजीवनाकर्मक्षयगया ते जीवनास्थान तिहाजावानेइच्छावत ॥ जावसमोसरण ॥ यावत्समोसरणनो वर्णकजिम उ

वृत परिकरितइति, ॥ पुव्वाणुपुव्विंचरमाणे ॥ नपश्चानुपूर्व्यादिना ॥ गामाणुगामंदूइज्जमाणे ॥ ग्रामश्च प्रतीतो ऽनुग्रामश्च तदनन्तरग्रामो ग्रामानुग्राम तद्व्रवन् गच्छन् ॥ सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागछित्ता अहापडिरूव उग्गहं उगिण्हइ उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइत्ति ॥ समवसरणवर्णकेच, समणस्स भगवओ अंतेवासी बहवे समणा भगवतो अप्पेगइया उग्गपव्वइयाइत्यादि ॥ साध्वादिवर्णको वाच्य, स्तथा असुरकुमारा शेषभवनपतयो व्यतरा ज्योतिका वैमानिका देवाश्च, भगवत समीप मागच्छन्तो वर्णयितव्या' ॥ परिसाणिग्गयत्ति ॥ राजगृहा द्राजादिलोको भगवतो वन्दनार्थ निर्गत स्तन्निर्गमश्चैव ॥ तएणं रायगिहे णगरे सिंघाडगतिगचउक्कच च्चरचउम्मुहमहापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवखलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे इह गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गह उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणेविहरइ त सेय खलु तहारूवाणं अरहताणं भगवताणं नामगोयस्सविसवणयाए किमंगपुण वदण णमसणयाएत्तिकट्टु बहवेउग्गाउग्गपुत्ता ॥ इत्यादिर्वाच्यो' याव द्भगवत नमस्यति पर्युपासतेचेति एवं राजनिर्गमो त पुरनिर्गमश्च तत्पर्युपासना चौपपातिकवद्वाच्या ॥ धम्मोकहिउत्ति ॥ धर्म्मकथेह भगवतो वाच्या साचैव–तएणं समणे भगव महावीरे सेणियस्स रण्णो चिल्लणापमुहाणयदेवीण ती सेय महइमहालियाए परिसाए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए धम्म परिकहेइ तजहा अत्थिलोए अत्थिअलोए। एव। जीवाअजीवा बधेमोक्खे ॥ इत्यादि' तथा ॥ जहानरगागम्मती जेणेरयाजायवेयणाणरएसारीरमाणसाइदुक्खाइतिरिक्खजोणीए ॥ इत्यादि ॥ पडिगयापरिसत्ति ॥ लोक स्वस्थान गत प्रतिगमश्च तस्या एव वाच्य' ॥ तएणसामहइमहालिया ॥ महच्च परिसा ॥ महति ॥ महती आलयप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा दतिशयातिशयगुर्वी महत्पर्षत् प्रशस्तताप्रधानपर्षत् । महार्चानावा सतपूजाना महार्चावा परिषत् महार्चपर्षदिति, समणस्स भगवओमहावीरस्स अतिए धम्म सो

परिसाणिग्गया

वाई उपांगेछे तिम कहवो॥ परिसाणिग्गया॥ पर्षदा बारह वेठी चार देवनी चारदेवीनो चतुर्विधसंघ॥ धम्मोकहिओ॥ भगवतेधर्मकह्यो ॥ तजहा अत्थि

॥ टीका ॥

घानिसम्मरठतुछासमण ३ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं पकरेइ २ वदइनमसइ २ एववयासी सुयक्खाएण न्नते । निग्गथेपावयणे वात्तियण अणेकेइ समणेवा माहणेवा परिसधम्ममाइक्खित्तए एववइत्ता जामेवदिसि पाउभूया तामेवदिसि पडिगयत्ति ॥ तेणमित्यादि ॥ तेनकालेन तेनसमयेन श्रमणस्य नगवतो महावीरस्य ॥ जेठेत्ति ॥ प्रथम ॥ घातेवासित्ति । शिष्य अनेन पदद्वयेन तस्य सकलसङ्घनायकत्वमाह ॥ इदन्नूएत्ति ॥ इन्द्रन्नूतिरिति मातृपितृकृत नामधेय ॥ नामति ॥ विन्नक्तिपरिणामात् नाम्नेत्यर्थ.' अन्तेवासी किल विवक्षया श्रावकोऽपि स्यादित्यतआह ॥ अणगारेत्ति ॥ नास्यागार विद्यत इत्यनगार , अयञ्चा १ वगीतगोत्रोऽपि स्यादित्यतआह ॥ गोयमगोत्तेणति ॥ गौतमसगोत्रइत्यर्थ , अयञ्च तत्कालोचितदेहमानापेक्षयान्यूनाधिकदेहोपि स्यादित्यतआह ॥ सत्तुस्सेहेत्ति ॥ समहस्तोछ्रय अयञ्च लक्षणहीनोपि स्यादित्यतआह ॥ समचउरससठाणसठिएत्ति ॥ सम नान्ने रुपरि अधश्च सकलपुरुषलक्षणोपेतावयवतयातुल्य तच्च तच्चतुरस्रञ्च प्रधान समचतुरस्र, अथवा समा. शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसवादिन्य श्चतस्रोऽश्रयो यस्य तत्समचतुरस्र अश्रयस्त्विह चतुर्दिग्विभागोपलक्षिता शरीरावयवाकृति, अन्येत्वाहु –समा अन्यूनाधिका श्चतस्रो प्यश्रयो यत्र तत्समचतुरश्र अश्रयश्च पर्यकासनोपविष्टस्य जानुनो रन्तर आसनस्य ललाटोपरिन्नागस्य चान्तर दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुन आन्तर वामस्कन्ध

॥ मल ॥

धम्मोकहिद्ध परिसापडिगया । तेणकालेण तेणसमएणं समणस्सन्नगवन्नमहावीरस्स जेठेअतेवासी इदन्नूतीणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसठिए

॥ भाषा ॥

लोए एव जोवा अजोवा बधमोखे इत्यादि ॥ परिसापडिगया ॥ पर्षदासवधोलोक सर्वदेवदेवी पोताना स्थानकनेविषे गया ॥ तेणकालेण ॥ तेकालनेविषे ॥ तेणसमएण ॥ तेसमयनेविषे ॥ समणस्सभगवओ महावीरस्स ॥ अनणतपस्वो ऐश्वर्यादिगुणयुक्त महावीरस्वामोनो ॥ जेठेअतेवासी ॥ वडो समीपने विषेरहेणारो प्रथमशिष्य ॥ इदभूतीणाम ॥ इन्द्रभूति एहवू मातापितानू दीधोनामछेजेहनो घररहित एतावतासाधु ॥ गोयमगोत्तेण अणगारे ॥ गौतमनामा गोत्रनो धरणहार ॥ सत्तुस्सेहे ॥ सातहाथजचो शरीरछे जेहनो ॥ समचउरससठाणसठिए ॥ सकलपुरुषलक्षणसयुक्त सम तुल्य चारे असछे जेहना एहवे समचतु

स्यदन्निगज्ञानुन ध्यान्तरमिति' अन्येत्वाहु-र्विस्तारोत्सेधयो समत्वात् समचतुरस्रं तच्चतत् सस्थानञ्चा कार' समचतुरस्रसस्थान तेन सस्थितो व्य वस्थितो य सतथा' अयञ्च हीनसहननोऽपि स्यादित्यतआह ॥ वज्जरिसहणारायसघयणेत्ति ॥ इह सहनन अस्थिसञ्चयविशेष वज्रादीना लक्षण मिद-रिसनोयत्तोद्दपट्टो वज्जपुणकिलयवियाणाहि । उभनोमक्कडवधो णारायतवियाणाहित्ति ॥ १ ॥ तत्र वज्रञ्च तत्कीलिका कीलितकाष्ठसम्पुटोपम सामर्थ्ययुक्तत्वात् ऋषभश्च लोहादिमयपट्टवद्धकाष्ठसम्पुटोपमसामर्थ्यान्वितत्वा दृष्भश्च' सचासो नाराचञ्च उभयतो मर्कटबन्धनिबद्धकाष्ठसम्पुटोपम सामर्थ्यापितत्वात्' वज्रर्षभनाराच तत्सहनन मस्थिसंचयविशेषो नुत्तमसामर्थ्ययोगा द्यस्यासौ वज्रर्षभनाराचसहनन ' अन्येतुकी लिकादिमत्व मस्था मेव वर्णयन्ति अयञ्च निन्द्यवर्णोऽपि स्यादित्यतआह ॥ कणयपुलयनिघसपम्हगोरे ॥ कनकस्य सुवर्णस्य ॥ पुलगत्ति ॥ य पुलको लव स्तस्य योनि कष कषपट्टकेरेखालक्षणा ' तथा ॥ पम्हत्ति ॥ पद्मपद्माणि केसराणि तद्वद्गौरो य. सतथा, वृद्धव्याख्यातु-कनकस्य न लोहादे र्य पुलक सारो व र्णातिशय स्तत्प्रधानो यो निकषो रेखा तस्य यत्पक्ष्म बहुलत्व तद्वद्गौर। य सतथा' अथवा, कनकस्य य पुलको द्रुतत्वेसति विन्दु स्तस्य निकषो व र्णात नदृशो य सतथा' ॥ पम्हत्ति ॥ पद्म तस्य चेह प्रस्तावा त्केसराणि गृह्यन्ते तत पद्मवद्गौरो य सतथा' तत पदद्वयस्य कर्मधारय ' अय ञ्च विशिष्टचरणरहितोपि स्यादित्यतआह ॥ उग्गतवेत्ति ॥ उग्र मप्रधृष्य तपो अनशनादि यस्यसउग्रतपा' यदन्येन प्राकृतपुसा नशक्यते चिन्तयितु

॥ मूल ॥

वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे

॥ भाषा ॥

रस्र सस्थाने सस्थितछे ॥ वज्जरिसहनारायसंघयणे ॥ हाडनासचारविशेष तेसघयण वज्रकहीये कीलिका ऋषभकहीये पाटो नाराचकहीये विहुपासे मर्कटबध एहवा वज्रऋषभनाराचना धरणहार ॥ कणगपुलगणिघसपम्हगोरे ॥ सुवर्ण कसोटो जिम वसोहीय पद्म कमलनीपरे गौरवर्णछे जेहना शरी रनो ॥ उग्गतवे ॥ अनेरे जिणही कायरपुरुषे चीतव्या नजाय तपजेहना एहवा उग्रतप अनशनादि ॥ दित्ततवे ॥ दीप्त जाज्वल्यमान कर्मरूपीया वनदहवा भणी अग्निसरीखा जेहना तप ॥ तत्ततवे ॥ जेणेतपेकरी कर्म तपावीयेते तप्ततप कहीये ॥ महातवे ॥ आशसादिदोषरहित तेमोटातप ॥ उराले ॥ प्रधानतपे

॥ टीका ॥

मपि तद्विधेन तपसा युक्तइत्यर्थ ॥ दित्ततवेत्ति ॥ दीप्त जाज्वल्यमानदहनइव कर्मवनगहनदहनसमर्थतया ज्वलितं तपो धर्मध्यानादि यस्य सतथा ॥ तत्ततवेत्ति ॥ तप्त तपो येनासौ तप्ततपा' एवहि तेन तत्तपस्तप्त येन कर्माणि सन्ताप्यन्ते' न तपसा स्वात्मापि तपो रूप· सन्तापितो यतो ऽन्यस्यास्पृश्यमिव जातमिति ॥ महातवेत्ति ॥ आशंसा दोषरहितत्वात् प्रशस्ततपा· ॥ उरालेत्ति ॥ तीव्र उग्रादिविशेषणविशिष्टतप करणात्पार्श्वस्थाना मल्पसत्वाना भयानकइत्यर्थ ' अन्येत्वाहु ॥ उरालंत्ति । उदार प्रधान ॥ घोरेत्ति ॥ घोरो निर्घृण परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दयइत्यर्थ ' अन्ये त्वात्मनिरपेक्ष घोरमाहु ॥ घोरगुणेत्ति ॥ घोरा अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य सतथा ॥ घोरतवस्सित्ति ॥ घोरै स्तपोभि स्तपस्वीत्यर्थ ॥ घोरबंभचेरवासित्ति ॥ घोर दारुण मल्पसत्वै र्दुरनुचरत्वा द्यद्ब्रह्मचर्य तत्र वस्तु शील यस्य सतथा ॥ उच्छूढसरीरेत्ति ॥ उच्छूढ उज्झित मिवोज्झित शरीर येन तत्संस्कारत्यागा त्सतथा ॥ संखित्तविउलतेयलेसेत्ति ॥ संक्षिप्ता शरीरान्तर्लीनत्वेन ह्रस्वतागता विपुला विस्तीर्णा अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थत्वा त्तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य सतथा' मूलटीकाकृतातु ॥ उच्छूढसरीरसंखित्तविउलतेयलेसेत्ति॥ कर्मधारय कृत्वा व्याख्यातमिति ॥ चउदसपुव्वित्ति ॥ चतुर्दशपूर्वाणि विद्यन्ते यस्य तेनैव तेषा रचि

॥ मूल ॥

दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेस्से चउद्दसपुव्वी

॥ भाषा ॥

पासत्यादि अल्पजीवने भयउपजे ॥ घोरे ॥ निर्घृण परीषह इन्द्रियादिरिपुविनाशवाभणी निर्दय ते घोरकहीये ॥ घोरगुणे ॥ अनेरेजीव आदरी नसकै एहवा आचारना मूलगुणछे जेहना ॥ घोरतवस्सी ॥ घोरतपेकरी तपस्वीछे ॥ घोरबंभचेरवासी ॥ घोरदारुणअनेरे अल्पसत्व जीवे आचरता दोहिलो एहवा ब्रह्मचर्यनेविषे वसवानो शील ॥ उच्छूढसरीरे ॥ शरीरनो शोभारहित छाडाछे देहनो शुश्रूषा जिणे ॥ संखित्तविउलतेयलेस्से ॥ शरीरमाहिसंकोचीछे अनेकयोजनप्रमाण क्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थ तेजोलेश्याजिणे एविशिष्टतपथी ऊपजे ॥ चउद्दसपुव्वी ॥ उत्पादादि चउदे पूर्वना धरणहार ॥ चउणाणी

॥ टीका ॥

तत्वा दसौ चतुर्द्दशपूर्वी अनेन तस्य श्रुतकेवलितामाह' सचावधिज्ञानादिविकलोपि स्यादतआह ॥ चउनाणोवगएत्ति ॥ केवलज्ञानवर्ज्ज्ञानचतुष्क समन्वितइत्यर्थ'' उक्तविशेषणद्वययुक्तोऽपि कश्चिन्न समग्रश्रुतविषयव्यापिज्ञानो भवति' चतुर्द्दशपूर्वविदा षट्स्थानकपतितत्वेन श्रवणादित्यतआ ह ॥ सव्वक्खरसन्निवाइत्ति ॥ सर्वेच ते अक्षरसन्निपाताश्च तत्सयोगा. सर्वेषा चाक्षराणा सन्निपाता सर्वाक्षरसन्निपाता स्तेयस्य ज्ञेयतया सन्ति स स र्वाक्षरसन्निपाती, श्रव्याणिवा, श्रवणसुखकारीणि अक्षराणि साकल्येन नितरा वदितु शीलमस्येति श्रव्याक्षरसन्निवादी सच एवगुणविशिष्टो'भगवान् वि नयराशिरिव साक्षादितिकृत्वा शिष्याचारत्वाच्च' समणस्सभगवओमहावीरस्स। अदूरसामते विहरतीति योग स्तत्र दूरंच विप्रकृष्टं सामन्तञ्च सन्नि कृष्ट तन्निषेधाददूरसामन्त तत्र नातिदूरे नातिनिकट इत्यर्थ , किंविध सस्तत्र विहरतीत्यतआह ॥ उड्ढजाणुत्ति ॥ ऊर्द्ध्वं जानुनी यस्या सावूर्द्धजानु शु द्धपृथिव्यासनवर्जना दौपग्रहिकनिषद्यायाश्चभावा च्चोत्कुटुकासनइत्यर्थ ॥ अहोसिरेत्ति ॥ अधोमुखो नोर्द्ध तिर्यग्वा विक्षिप्तदृष्टि किन्तु नियतभू भागनियमितदृष्टिरितिभाव. ॥ झाणकोठोवगएत्ति ॥ ध्यान धर्म्यं शुक्लवा, तदेव कोष्ठ· कुसूलो ध्यानकोष्ठ स्त मुपगत स्तत्र प्रविष्टो ध्यानकोष्ठोपगतो यथाहि–कोष्ठके धान्य प्रक्षिप्त मविप्रसृत भव त्येव सभगवान् ध्यानतोऽविप्रकीर्णेन्द्रियान्त करणवृत्तिरिति॥ सजमेणति॥ सवरेण॥ तवसत्ति॥ अनशना

॥ मूल ॥

चउणाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्सभगवओमहावीरस्स
अदूरसामते उड्ढजाणू अहोसिरे झाणकोठोवगए सजमेणतवसा

॥ भाषा ॥

वगए ॥ केवलज्ञानवर्जित चारज्ञानना धरणहार ॥ सव्वक्खरसन्निवाई ॥ सर्वअक्षरना सयोग तेहना जाणछे । अथवा, श्रवणसुखकारी अक्षरनी सगाथे करीने कहवानो शीलछे जेहनो, समर्थछे ॥ समणस्सभगवओमहावीरस्स ॥ श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने ॥ अदूरसामते ॥ अतिवेगलोनही अति ढूकडोनही ॥ उड्ढजाणू ॥ ऊचा जानुछे जेहना एतले उकडूआसनवेठाछे ॥ अहोसिरे ॥ अधोदृष्टि भूमिनेविषे ॥ झाणकोठोवगए ॥ धर्मध्यान शुक्लध्या न रूपी कोठो तेहनेविषे उपगत पैठा जिम कोठामाहिधान्यो धान उरहोपरहो वीखरैनही तिम ध्यानमाहिरहता इन्द्रियमननोविकार पसरेनही ॥

॥ टीका ॥

दिना चशब्द समुच्चयार्थो लुप्तो ऽत्रद्रष्टव्य' सयमतपोग्रहण चानयो' प्रधानमोक्षाङ्गत्वख्यापनार्थं प्रधानत्वञ्च सयमस्य नवकर्मानुपादानहेतुत्वेन त पसश्च पुराणकर्मनिर्जरणहेतुत्वेन भवतिचाभिनवकर्मानुपादानात् पुराणकर्मक्षपणाच्च सकलकर्मक्षयलक्षणोमोक्षइति ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइत्ति आत्मान वासय स्तिष्ठतीत्यर्थ ॥तेणंकालेणंतेणंसमएणंसेत्ति॥ ततो ध्यानकोष्ठोपगतविहरणानन्तर णमितिवाक्यालङ्कारार्थ ॥ सेइति ॥ प्रस्तुतपरामर्शार्थ स्तस्यतु सा मान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थमाह ॥ भगवगोयमेत्ति ॥ किमित्याह ॥ जायसड्ढेइत्यादि ॥ जातश्रद्धादिविशेषण सन्नुत्तिष्ठतीतियोग स्तत्र जाता प्रवृत्ता श्रद्धा इच्छा वक्ष्यमाणार्थतत्त्वज्ञानम्प्रति यस्यासौजातश्रद्ध' तथा जात' सशयो यस्य स जातसशय सशयस्त्वनवधारितार्थज्ञान सचैव तस्य भगवतो जातो भगवताहि महावीरेण चलमाणेचलिएइत्यादौ सूत्रे चलन्नर्थ श्चलितोनिर्दिष्ट स्तत्रच यएव चलन् सएवचलितइत्युक्त' स्ततश्चैकार्थविषया वे तौ निर्देशौ चलन्निति वर्त्तमानकालविषय. चलितइतिचा तीतकालविषय ' अतोऽत्र सशय कथन्नाम यएवार्थोवर्त्तमान सएवा तीतो भवतीति? वि रुद्धत्वा दनयो कालयोरिति' तथा ॥ जायकोऊहल्लेत्ति ॥ जात कुतूहल यस्य सजातकुतूहलो जातोत्सुक्यइत्यर्थ. ' कथ मेतान् पदार्थान् भगवा न् प्रज्ञापयिष्यतीति' तथा ॥ उप्पन्नसड्ढेत्ति ॥ उत्पन्ना प्रागभूतासती भूता श्रद्धायस्य सउत्पन्नश्रद्ध', अथ जातश्रद्ध इत्येतावदेवास्तु किमर्थ मुत्पन्न श्रद्ध इत्यभिधीयते प्रवृत्तश्रद्धत्वेनै वोत्पन्नश्रद्धत्वस्य लब्धत्वा न्नह्यनुत्पन्ना श्रद्धा प्रवर्त्ततइति? अत्रोच्यते, हेतुत्वप्रदर्शनार्थ, तथाहि—कथ प्रवृत्तश्रद्ध

॥ मूल ॥

अप्पाणंभावेमाणे विहरइ तएण सेभगवगोयमे जायसड्ढे जायसंसये संजायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे

॥ भाषा ॥

॥ सजमेण ॥ सयमेकरी नवाकर्मउपार्जैनही॥ तवसा ॥ तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरे एहवा श्रीगौतमस्वामी॥ अप्पाणभावेमाणेविहरइ॥ आत्मानेभावताथ का विचरे ॥ तएणसेभगवगोयमे ॥ तिवारे ते भगवत गौतम ॥ जायसड्ढे ॥ प्रवर्त्तीछे श्रद्धा तत्वजाणवानी वाछा जेहने ॥ जायससए॥ प्रवर्त्तीछे ससय श्रीमहावीरदेवे" चलमाणेचलिए" इहा वर्त्तमानकाल अने अतीतकाल सरीखोकिमवोल्यो एसशय ॥सजायकोउहल्ले ॥ प्रवर्त्तीछे उत्सुकपणो,जेहने स्वामी एअर्थकिणपरिप्रकासस्ये एहवोउतावलो ॥ उप्पण्णसड्ढे ॥ तत्कालऊपनोछे श्रद्धाजेहने जिणकारण ऊपनाविनाप्रवर्तैनही ॥ उप्पण्णससए ॥ ऊपनोछे सदेह

॥ टीका ॥

उच्यते यत उत्पन्नश्रद्धइति हेतुत्वप्रदर्शन. ञ्चोचितमेव वाक्यालङ्कारत्वा त्तस्य' यदाहु –प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तभास्करा म्प्रकाशचन्द्राम्बुबुधेविभावरीम् । इह यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा प्रवृत्तभास्करत्व मवगत तथापि अप्रवृत्तभास्करत्वं प्रवृत्तदीपत्वादे हैतुतयो पन्यस्तमिति॥ उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्लेतिप्राग्वत्' तथा सजायसड्ढेइत्यादि पदषट्क प्राग्वत्, नवर मिह सम्‌शद्ध प्रकर्षादिवचनो यथा–सञ्जातकामोवलभिद्भिभूत्या मानात्प्रजाभि प्रतिमाननाच्च । ऐन्द्रैश्वर्यप्रकर्षेण जातेच्छ कार्त्तवीर्यइति, अन्येतु–जायसड्ढेइत्यादिविशेषणद्वादशक मेवं व्याख्यान्ति' जाताश्रद्धायस्य प्रष्टु स जातश्रद्ध किमिति जातश्रद्धइत्यतआह' यस्माज्जातससय इद वस्त्वेवस्या देववेति' अथ जातसशयोऽपि कथमित्यतआह' यस्मा ज्जातकुतूहल ' कथनामा स्यार्थ मवभोत्स्ये इत्यभिप्रायवानिति, एतच्च विशेषणत्रय मवग्रहापेक्षया द्रष्टव्यमेव, सुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नश्रद्धत्वादय ईहापायधारणाभेदेन वाच्या , अन्येत्वाहु –जातश्रद्धत्वाद्यपेक्षयो त्पन्नश्रद्धत्वादय समानार्था विवक्षितार्थस्य प्रकर्षप्रवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन ग्रन्थकृतोक्ता, नचैव पुनरुक्तदोषाय, यदाह—वक्ताहर्षभयादिभि राक्षिप्तमना स्तुवस्तथानिन्दन् । यत्पदमसकृद्ब्रूते तत्पुनरुक्तनदोषायेति, ॥ १ ॥ उठाएउठेत्ति ॥ उत्थान मुत्था ऊर्द्ध वर्त्तन तया उत्थया उत्तिष्ठति ऊर्द्धो भवति, उठेइइत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वक्तु मुत्तिष्ठतइति, तत स्तद्व्यवच्छेदायो क्त मुत्थायेति, ॥ उठाएउठेइत्ति ॥ उपागच्छती त्युत्तरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियाया. पूर्वकालताभिधानाय उत्थायोत्थायेति, क्त्वाप्रत्ययेन नि

॥ मूल ॥

उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले सजायसड्ढे संजायसंसए सजायकोउहल्ले उठ्ठाएउठेति उठ्ठाएउठेत्ता

॥ भाषा ॥

विशेष जेहने ॥ उप्पन्नकोउहल्ले ॥ऊपनोछेकौतूहलविशेषजेहने ॥ सजायसड्ढे ॥ सजातकहियै विशेषथी प्रवर्त्ती श्रद्धा वाछा जेहने ॥ सजायससए॥ सजात विशेषथी प्रवर्त्त्योछे संदेहजेहने ॥ सजायकोउहल्ले ॥ विशेषथी प्रवर्त्त्योछे कौतूहलजेहने ॥ समुप्पणसड्ढे ॥ विशेषथी ऊपनोछे श्रद्धा जेहनै ॥ समुप्पणससए ॥ विशेषथी ऊपनोछे सशयजेहने ॥ समुप्पन्नकोउहल्ले ॥ विशेषथी ऊपनो कौतूहल जेहने तिणैंकारणै ॥ उठ्ठाएउठ्ठेत्ति॥ स्थानकथकी ऊठे ऊठीने ऊभा थया ॥ उठ्ठएउठ्ठेत्ता ॥ ऊठीने ऊभाथईने ॥ जेणेवसमणेभगवमहावीरे ॥ जिहा श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीछे ॥ तेणेवउवागच्छइउवागच्छइत्ता ॥ ति

॥ टीका ॥

र्द्दिशतीति ॥ जेणेवेत्यादि ॥ इह प्राकृतप्रयोगा दव्ययत्वाद्वा ॥ येनेति ॥ यस्मिन्नेव दिग्भागे श्रमणो भगवान् महावीरो वर्त्तते ॥ तेणेवत्ति ॥ तस्मिन्नेव दिग्भागे उपागच्छति, तत्कालापेक्षया वर्त्तमानत्वा दागमनक्रियाया वर्त्तमानविजक्त्यानिर्देश कृत, उपगतवानित्यर्थ, उपागम्यच श्रमण ३ कर्म तापन्न ॥ तिक्खुत्तोत्ति ॥ त्रीन् वारान् त्रि कृत्व ॥ आयाहिणपयाहिणकरेइत्ति ॥ आदक्षिणा द्दक्षिणहस्ता दारभ्य प्रदक्षिण परितो भ्राम्यतो दक्षिणएव आदक्षिणप्रदक्षिणो ऽत स्तकरोतीति ॥ वंदइत्ति ॥ वन्दते वाचा स्तौति ॥ नमसइत्ति ॥ नमस्यति कायेन प्रणमति ॥ नच्चासन्नेत्ति ॥ न नैव अत्यासन्नो ऽतिनिकट अवग्रहपरिहारा न्नात्यासन्नेवा स्थाने वर्त्तमानइति गम्यम् ॥ नाइदूरेत्ति ॥ न नैवा तिदूरो ऽतिविप्रकृष्टो नौचित्यपरिहारात् नातिदूरेवा स्थाने ॥ सुस्सूसमाणेत्ति ॥ भगवद्वचनानि श्रोतु मिच्छन् ॥ अभिमुहेत्ति ॥ अभि भगवन्त लक्षीकृत्य मुखमस्ये त्यभिमुख., तथा ॥ विणएणति ॥ विनयेन हेतुना ॥ पजलिउडेत्ति ॥ प्रकृष्ट प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलि र्हस्तन्यासविशेष कृतो विहितो येन सो ऽन्यान्लि

॥ मूल ॥

जेणेवसमणेभगवमहावीरे तेणेवउवागच्छइ उवागच्छित्ता समणभगवंमहावीर तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे

॥ भाषा ॥

हाथावे तिहाआवीने ॥ समणभगवमहावीर ॥ श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामाप्रते ॥ तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणकरेइकरेइत्ता ॥ तीनवार दाहिणे हाथथको आरंभी प्रदक्षिणा घउफेर करे करीने ॥ वंदइ ॥ स्तुतिकरे वचनेकरे ॥ नमसइ ॥ कायायेकरी नमस्कारकरे ॥ वंदित्ता ॥ वांदीने ॥ णमंसित्ता ॥ नमस्कारकरीने ॥ णच्चासण्णे ॥ अतिआसन्नढूंकडानही । णातिदूरे ॥ अतिदूर वेगलापणि नही ॥ सुस्सूसमाणे ॥ भगवत श्रीमहावीरस्वामीना वचनसाभलवा वाछता ॥ णमसमाणे ॥ नमस्कारकरता ॥ अभिमुहे ॥ भगवतदिशे मुखकरी ॥ विणएण ॥ विनयथी आशातनाटालताथका ॥ पंजलिउडे ॥ हाथजोडमाथेलगाडो ॥ पज्जुवासमाणे ॥ सेवाकरताथका, एविशेषपणेसाभलवानो विधिकह्यो ॥ एववयासी ॥ इमकहताहुया । सेणूणभंते ॥ तेनिश्चे

॥ टी॰ ॥

दिदर्शना त्प्राञ्जलिकृतः ॥ पज्जुवासमाणेत्ति ॥ पर्युपासीनः सेवमानो ऽनेनच विशेषणकदम्बकेन श्रवणविधि रुपदर्शित, आहच-णिद्दाविगहापरि व ज्जिएहिगुत्तेहिपजलिउडेहि । भत्तिवहुमाणपुव्वं उवउत्तेहिसुणेयव्वंति ॥ १ ॥ एववयासित्ति ॥ एव वक्ष्यमाणप्रकार वस्तु अवादी दुक्तवान् ॥ से इति ॥ तत् यदुक्त पूज्यै श्चलच्चलितमित्यादि ॥ णूणंति ॥ एव मर्थं तत्र तत्रा स्यैवव्याख्यातत्वात्, अथवा; से इति शब्दो मागधदेशीप्रसिद्धो ऽथश प्दार्थे वर्त्तते, अथशब्दस्तु वाक्योपन्यासार्थः, परिप्रश्नार्थोवा ; यदाह-अथप्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु, ॥ नूनमिति निश्चित भंतेत्ति ॥ गुरो रामन्त्रण ततश्च हेभदन्त! कल्याणरूप सुखस्वरूपेतिवा; भदिकल्याणेसुखेचेतिवचना त्प्राकृतशैल्यावा भवस्य ससारस्य भयस्यवा भी ते रन्तहेतुत्वा द्भवान्तो भयान्तोवा; तस्यामन्त्रणं, हेभवान्त! हेभयान्त! भान्! वा; ज्ञानादिदीप्यमान भादीप्तावितिवचनात्, भ्राजमान! वा; दी प्यमान भ्राजृदीप्तावितिवचनात्, अयञ्च आदित आरभ्य भंतेत्ति पर्यन्तो ग्रन्थो भगवता सुधर्म्मस्वामिना पञ्चमाङ्गस्य प्रथमशतस्य प्रथमोद्देशक स्य संबन्धार्थ मभिहित, अथा नेनसम्बन्धेना यातस्य पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्ये दमादिसूत्रम् ॥ चलमाणेचलिएइत्यादि ॥ अथ केनाभिप्रा येण भगवता सुधर्म्मस्वामिना पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्या र्थानुकथन कुर्वता वमर्थवाचक सूत्र मुपन्यस्त नान्यानीति ? अत्रोच्यते इह चतुर्षु पुरुषार्थेषु मोक्षाख्य पुरुषार्थो मुख्य सर्वातिशायित्वात्, तस्यच मोक्षस्यसाध्यस्य साधनानाच सम्यग्दर्शनादीना साधनत्वेना व्यभिचारिणा मुभ

॥ मूल ॥

पज्जुवासमाणे एववयासी सेणूणभंते चलमाणे चलिए १

॥ भाषा ॥

हे भगवन् कल्याणरूप सुखरूप एहवो गुरुना आमत्रण सवत्र जाणवो, अत्र परासको आसुधर्मास्वामीये "चलमाणेचलिए" एहवोशब्द सूत्रनो आदि आ ख्या अनेराशब्द काईनआख्या इसपूछ्या ? उत्तर, पुरुषार्थ चिहुमाहि मुख्य मोक्ष, तेहनो साधवो सार ततो कर्मनेक्षये ऊपजे ते कर्मनाक्षयनोअनुक्रम क हिवाभणी एअर्थप्रकाश्या तेकहेछे "चलमाणेचलिए" चलमाणेकहिये जेकर्म आपणी स्थितिथकी चलवामाड्या भोगवा सन्मुखथया तेकर्मचलिएकहिये उदेआव्याज कहीये। ते किम चलनकालथको भोगवणकाल असख्यातसमयलगेंछे तिहाजे पहिलो चलनसमय तेहनेविषे चलवामाड्यो तेचल्योकहीये जि

यनियमस्य शासना च्छास्त्र मङ्गि रिष्यते, उजयनियमस्त्वेव सम्यग्दर्शनादीनि मोक्षस्यैव साध्यस्य साधनानि नान्यस्या र्थस्य, मोक्षश्च तेषामेवसा धनाना माध्यो नान्येषामिति, सच मोक्षो विपक्षक्षया ह्वविपक्षश्च बन्ध सचमुख्य कर्मभि रात्मन. सम्बन्ध स्तेषातु कर्मणा प्रक्षये यमनुक्रम उक्त, चलमाणेइत्यादि ॥ तत्र ॥ चलमाणेत्ति ॥ चलत् स्थितिक्षया दुदय मागच्छत्, विपाकाभिमुखीभव द्दत्कर्मेति प्रकरणगम्यम्, तच्चलित मुदितमिति व्यपदिश्यते, चलनकालो ह्युदयावलिका तस्यच कालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दादिमध्यान्तयोगित्व कर्मपुद्गलाना मप्यनन्ता स्कन्धा अनन्तप्रदेशा स्ततश्च ते क्रमेण प्रतिसमयमेव चलन्ति तत्र योसा वाद्यचलनसमय स्तस्मि श्चलदेव तच्चलित मुच्यते कथपुन स्तद्वर्त्तमानस दतीत भवती ? त्यत्रो च्यते –यथा– पट उत्पद्यमानकाले प्रथमतन्तुप्रवेशे उत्पद्यमानएवो त्पन्नोभवतीति, उत्पद्यमानत्वच तस्य प्रथमतन्तुप्रवेशकाला दारभ्य पट उत्पद्यन इत्येव व्यपदेशदर्शना त्प्रसिद्धमेवो त्पन्नत्व तूपपत्त्याप्रसाध्यते' तथाहि–उत्पत्तिक्रियाकालएव प्रथमतन्तुप्रवेशे ऽसावुत्पन्नो यदि पुन

नोत्पन्नोभविष्य त्तदा तस्या क्रियाया वैयर्थ्यमभविष्य न्निष्फलत्वा दुत्पाद्योत्पादनार्थाहि क्रियाभवन्ति, यथाच प्रथमेक्रियाक्षणे नासावुत्पन्न स्तथो त्तरेष्वपि क्षणे ष्वनुत्पन्नएवासौ प्राप्नोति, कोह्युत्तरक्षणक्रियाणा मात्मनि रूपविशेषो येन प्रथमसमये नोत्पन्न स्तदुत्तराभिस्तूत्पाद्यते, अत सर्वदैवा नुत्पत्तिप्रसङ्ग, दृष्टाचोत्पत्ति रन्त्यतन्तुप्रवेशे पटस्य दर्शनात्, अत प्रथमतन्तुप्रवेशकालएव किञ्चिदुत्पन्न पटस्य यावच्चोत्पन्न नतदुत्तरक्रिययोत्पा द्यते, यदि पुनरुत्पाद्येत तदा तदेकदेशो त्पादनएव क्रियाणा कालानाञ्च क्षय स्यात्, यदिहि तदंशोत्पादननिरपेक्षा न्या क्रिया भवन्ति तदोत्तरांशानुक्रमण युज्येत नान्यथा, तदेव यथा पट उत्पद्यमान एवोत्पन्न स्तथैवा सङ्ख्येयसमयपरिमाणत्वा दुदयावलिकाया आदिसम या त्प्रभृति चलदेव कर्मचलित, कथ यतो यदिहि–तत्कर्मचलनाभिमुखीभूत मुदयावलिकाया आदिसमयएव नचलितं स्या त्तदा तस्या द्यस्य चलनसमयस्य वैयर्थ्यस्या त्तत्रा चलितत्वात् यथाच तस्मिन् समये नचलित तथा द्वितीयादिसमयेष्वपि नचलेत्, कोहि तेषा मात्मनि रूपविशेषो

॥ टीका ॥

येन प्रथमसमये नचलित मुत्तरेषु चलतीति ? अत सर्वदेवा चलनप्रसङ्ग, अस्ति चान्त्ये समये चलन स्थितिपरिमितत्वेन कर्मांशावाभ्युपगमात्, अत आवलिकाकालादि समयएव किञ्चिच्चलित यच्च तस्मि श्चलित तन्नोत्तरेषु समयेषु चलति, यदितु तेष्वपि तदेवाद्य चलन भवे त्तदा तस्मि न्नेव चलने सर्वेषा मुदयावलिकाचलनसमयाना क्षय स्यात्, यदिहि तत् समयचलननिरपेक्षाण्यन्यसमयचलनानि भवन्ति तदो त्तरचलनानुक्रमण युज्येत नान्यथा, तदेव चलदपि तत्कर्म्मचलितम्भवतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ उदीरणानाम अनुदयप्राप्त चिरेण गामिना कालेन यद्वेदितव्यं कर्मदलिक न्तस्य विशिष्टा ध्यवसायलक्षणेन करणेना कृष्योदयेप्रक्षेपण, साचा सङ्ख्येयसमयवर्त्तिनी तयाच पुनरुदीरणया उदीर णा प्रथमसमयएवो दीर्यमाण कर्म्म पूर्वोक्तपटदृष्टान्तेनो दीरित म्भवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेइज्जमाणेवेइएत्ति ॥ वेदनं कर्म्मणो भोगो ऽनुभव इत्यर्थ, तच्च वेदन स्थितिक्षया दुदयप्राप्तस्य कर्म्मण उदीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य भवति, तस्यच वेदनाकालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दाद्यसमये वेद्यमानमेव वेदित म्भवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहाणंतु जीवप्रदेशैः सह सश्लिष्टस्य कर्मण स्तेभ्य पतन, एतदप्यसङ्ख्येयसमय परिमाणमेव तस्यतु प्रहाणस्या दिसमये प्रहीयमाण कर्म्म प्रहीण स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ छिज्जमाणेछिन्नेति ॥ छेदन तु कर्मणो दीर्घकालाना

॥ मूल ॥

उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेदिज्जमाणेवेदिए ३ पहेज्जमाणे पहीणे ४

॥ भाषा ॥

म कपडा वुणते जे पहिले ततु वुण्या तेवुण्यानकहीये पहिलाततुनीअपेक्षाये एपिणजाणवू ॥१॥ उदीरिज्जमाणे उदीरिए ॥ जेकर्म उदयआव्यानथी घणें आ गामी काले वेदस्ये तेहकर्मने शुभाध्यवसायलक्षणेकरी आकर्षी उदयआणीये तेउदीरणाकहीये ते असख्यातसमये वर्त्ते ते तिणे उदीरणायेकरी प्रथमसम ये जे उदीरवामाड्यो कर्म ते उदीर्योकहवाय तेप्रथमसमयनीअपेक्षाये पूर्वकह्यो वस्त्रनोदृष्टात तिणनीपरे जाणवो ॥ २ ॥ वेदिज्जमाणेवेदिए ॥ तथाकर्मनो भोगवो अनुभवइत्यर्थ, ते असख्यातसमयसीमवर्त्ते तिहा प्रथमसमये वेदवामाड्यो जेकर्म तेवेद्योज कहीये प्रथमसमयनीअपेक्षाये पूर्वकह्यो वस्त्रनो दृष्टात ते हनीपरे ॥ पहेज्जमाणे पहीणे ॥३॥ तथा जीवप्रदेशसहितमिल्यो कर्म तेहनो जीवप्रदेशथको पतनते पुण असख्यातसमयेवर्त्ते तिहा प्रथमसमये प्रहीयमा

॥ टीका ॥

स्थितीना ह्रस्वताकरण, तच्चापवर्त्तनाभिधानेन करणविशेषेण करोति, तदपिच च्छेदनमसंख्येयसमयमेव तस्य त्वादिसमये स्थितित च्छिद्यमानं कर्म्म च्छिन्नमिति ॥ ५ ॥ तथा ॥ भिज्जमाणेभिण्णेत्ति ॥ भेदस्तु कर्म्मणः शुभस्याऽशुभस्य वा, तीव्ररसस्यापवर्त्तनाकरणेन मन्दताकरणं, मन्दस्य चोद्वर्त्तनाकरणेन तीव्रताकरण, सोऽपिचासंख्येयसमय एव, ततश्च तदाद्यसमये रसतो भिद्यमानं कर्म्मभिन्नमिति ॥ ६ ॥ तथा ॥ डज्झमाणेदड्ढेत्ति ॥ दाहस्तु कर्मदलिकदारुणां ध्यानाग्निना तद्रूपापनयनमकर्म्मत्वजननमित्यर्थः तथाहि—काष्ठस्याग्निना दग्धस्य काष्ठरूपापनयनं भस्मात्मनाच भवनं दाहस्तथा कर्म्मणोऽपीति, तस्याप्यन्तर्मुहूर्त्तवर्त्तित्वेनासंख्येयसमयस्यादिसमये दह्यमानदग्धमिति ॥ ७ ॥ तथा ॥ मिज्जमाणेमडेत्ति ॥ म्रियमाणमायुः कर्म मृतमितिव्यपदिश्यते, मरणं ह्यायुःपुद्गलानां क्षयस्तच्चासंख्येयसमयवर्त्ति भवति, तस्य च जन्मनः प्रथमसमयादारभ्यावीचिकमरणेनानुक्षणं मरणस्य भावान्म्रियमाणं मृतमिति ॥ ८ ॥ तथा ॥ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णेत्ति ॥ निर्जीर्यमाणं नितरामपुनर्भावेन क्षीयमाणं कर्म्म निर्जीर्णं

॥ मूल ॥

छिज्जमाणेछिन्ने ५ भिज्जमाणेभिन्ने ६ दज्झमाणेदड्ढे ७ मिज्जमाणेमडे ८ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ९

॥ भाषा ॥

नकर्म ते प्रक्षीण कहता प्रक्षेप्याकहीये पूर्वोक्त पटदृष्टान्त तेहनोपरे ॥४॥ छिज्जमाणेछिन्ने ॥ तथा छेदनकहता दीर्घकालस्थितिकाकर्मनो ह्रस्वकालकरिवो ते अपवर्त्तननामकरणविशेषे करी करे ते पणि छेदन असंख्यातसमयेवर्त्ते तेहने पहिले समयेस्थितिथकी छेद्यमान छेद्योकहीये ॥ ५ ॥ भिज्जमाणेभिन्ने ॥ तथा भेदकहिये शुभनो अथवा अशुभ कर्मनो भेदवो तीव्ररसने अपवर्त्तनाकरणेकरी मंदपणे करवो मंदरसने उद्वर्त्तनाकरणेंकरी तीव्ररसकरवो ते पणि असंख्यातसमये वर्त्ते तिहा पहिले समये रसथी भिद्यमानकर्म भेद्योकहिये ॥ ६ ॥ डज्झमाणेदड्ढे ॥ तथा दाहकहिये कर्मरूपियाकाष्ठनो ध्यानाग्नियेंकरी तद्रूप अपनयन अकर्मपणोकरिवो जिम काष्ठअग्निकरी बाल्यो तेभस्मरूप तिम कर्मने पणि ते पणि असंख्यातसमये वर्त्ते तेपहिले समये बालता माध्यो कर्मतेबाल्यो कही ये पूर्वपट दृष्टान्त ॥ ७ ॥ मिज्जमाणेमडे ॥ तथा मरणकहिये आऊखापुद्गलनो क्षय जे मरवालाग्यो ते मूर्योकहीये तेपणि असंख्यातसमयेवर्त्ते तेहना जन्मना प्रथमसमयथी आरंभी आवीचिमरणेंकरी प्रतिक्षणमरणना भावथकी मरतामाड्यो ते मूयो पूर्वोक्त पटदृष्टान्त ॥ ८ ॥ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ॥

त्तीणमिति व्यपदिश्यते, निर्जरणस्या संख्येयसमयत्नावित्वेन तत्प्रथमसमयएव पटनिष्पत्तिदृष्टान्तेन निर्ज्जीर्णत्वस्यो पपद्यमानत्वादिति, पटदृष्टान्तश्च सर्वपदेषु सम्भावनिकोवाच्य ॥ ८ ॥ तदेव मेतान्नवप्रश्नान् गौतमेनभगवता भगवान् महावीर पृष्ट स नुवाच ॥ हतेत्यादि ॥ अथकस्मा द्भगवन्त गौतम. पृच्छति? विरचितद्वादशाङ्गतया विदितसकलश्रुतविषयत्वेन निखिलसंशयातीतत्वेनच सर्वज्ञकल्पत्वा त्तस्य, आहच-सखाईएउनवे साहइजवाप रोउपुच्छेज्जा । णयणअणाइसेवी वियाणईएसछउमत्थोत्ति? ॥ १ ॥ नैव मुक्तगुणत्वेपि छद्मस्थतया नाभोगसम्भवात्, यदाह—नहिनामानाभोग छद्मस्थस्येहकस्यचिन्नास्ति । यस्माज्ज्ञानावरणं ज्ञानावरणप्रकृतिकर्मेति ॥१॥ अथवा, जानतएव तस्यप्रश्न सम्भवति, स्वकीयबोधसंवादनार्थं मङ्गलो कबोधनार्थं शिष्याणावा स्ववचसि प्रत्ययोत्पादनार्थं सूत्ररचनाकल्पसम्पादनार्थंचेति, तत्र ॥ हतागोयमेत्ति ॥ हतइति कोमलामन्त्रणार्थो, दीर्घत्वच मागधदेशीप्रभव मुन्नयत्रापि, चलमाणेइत्यादे· प्रत्युच्चारणन्तु चलदेव चलित मित्यादीना स्वानुमतत्वप्रदर्शनार्थं, वृद्धा पुनराहु –हतागोयमाइत्य त्र हंतइति, एवमेतदि त्यभ्युपगमवचनं यदनुमतं तत्प्रदर्शनार्थं च्चलमाणेइत्यादि प्रत्युच्चारितमिति, इह यावत्करणलभ्यानि पदानि सुप्रती तान्येव, एव मेतानि नवपदानि कर्माधिकृत्य वर्त्तमानातीतकालसामानाधिकरण्यजिज्ञासया पृष्टानि निर्णीतानिच, अथै तान्येव चलनादीनि प रस्परत· किं त्तुल्यार्थानि भिन्नार्थानि वेति ? पृच्छा निर्णयच दर्शयितुमाह ॥ एएणभंते ॥ इत्यादिव्यक्त नवरम् ॥ एगट्ठत्ति ॥ एकार्था न्यनन्यवि

हतागोयमा चलमाणेचलिएजावणिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे एएणभंतेनवपदाकिएगठा

तथा जीवप्रदेशथको कर्म निर्जरवामांड्यो वेगलोकरवामांड्यो ते कर्मनिजर्यो वेगलोकीधो कहीये तेपणि असंख्यातसमयभावीछे, प्रथमसमयनी अपेचाये लेवो पूर्वोक्तपट दृष्टाते ए वस्त्रदृष्टात नवेइपदे जाणवो ॥ ८ ॥ इसे गौतमेपूछ्या ? भगवते वोल्या ॥ हतागोयमा ॥ चलमाणेचलिए जावणिज्जरिज्जमाणे णिज्जिणे ॥ हत इसो कोमलामंत्रणे,अथवा हंत कहता हेगौतम ये अर्थ इमहीज चलमाणेचलिए, चालवामांड्यो ते चाल्योजकहीये यावत् निर्जरवामा ड्योते निर्जर्योजकहीये, वलीगौतमकहे एभगवतनवकर्मअधिकारीने वर्त्तमानअतीतकालसमानाधिकरणेंपूछ्या तेनिर्णयकीधा पणि॥ एएणभंतेनवपदाकि

॥ टीका ॥

पयाणि एकप्रयोजनानिवा ॥ नाणाघोसत्ति ॥ इह घोषा उदात्तादय ॥ नाणावंजणेत्ति ॥ इह व्यजना न्यक्षराणि ॥ उदाहुत्ति ॥ उताहो निपातो विकल्पार्थ. ॥ नाणट्ठत्ति ॥ भिन्नाभिधेयानि, इहच चतुर्भङ्गीपदेपु दृष्टा, तत्रच कानिचि देकार्था न्येकव्यंजनानि, यथा क्षीरक्षीरमित्यादीनि ॥ १ ॥ तथा न्यानि एकार्थानि नानाव्यजनानि, यथाक्षीर पय इत्यादीनि ॥ २ ॥ तथा नेकार्था न्येकव्यञ्जनानि, यथा कंगव्यमाहिपाणि क्षीराणि ॥ ३ ॥ तथा न्यानि नानार्थानि नानाव्यञ्जनानि' यथा घटपटलकुटादीनि ॥ ४ ॥ तदेव चतुर्भङ्गीसम्भवेपि द्वितीयचतुर्थभङ्गकौ प्रश्नसूत्रे गृहीतो, परिदृश्य माननानाव्यञ्जनतया तदन्ययो रसम्भवात्, निर्वचनसूत्रेतु चलनादीनि चत्वारिपदा न्याश्रित्य द्वितीय, छिद्यमानादीनितु पञ्चपदान्याश्रित्य चतुर्थ इति, ननु चलितादीना मर्थाना व्यक्तभेदत्वा त्कथ माद्यानि चत्वारि पदा न्येकार्थानी? त्याशक्याह ॥ उप्पन्नपक्खस्सत्ति ॥ उत्पन्न मुत्पादो भावे

॥ मूल ॥

णाणाघोसा णाणावजणा उदाहु णाणट्ठा

॥ भाषा ॥

एगट्ठा णाणाघोसा ॥ हेभगवन् एनवपदस्यं एहना एक अर्थछे, एकप्रयोजनछे घोषशब्द इहांउदात्त अनुदात्त स्वरित एशब्द शास्त्रोक्त जाणवा उच्चारण रूपतेजुदाजुदाछे, णाणा ० तेहना जुदा२ वजणा० व्यंजनछे ॥ उदाहु०निपात विकल्पार्थछे एतले अथवा णाणट्ठा० नानाप्रकारना अर्थछे ॥ णाणा० नानाप्रकारना घो० उच्चार, णा० नानाप्रकारना व० व्यजनअक्षर इहा चउभगी जाणवी के एकशब्द एकअर्थ एकव्यञ्जन जिमक्षीरक्षीर इत्यादि १ तथा एकअर्थ अनेकव्यजन यथा क्षीरपय इत्यादि २ तथा अनेक अर्थ एकव्यजन यथा अर्क गाय महिषीना क्षीर ३ तथानाना अर्थ नानाव्यजन यथा घट पटादि ४ इहा चउभगीनो सम्भवछे तोपणि वीजो चौथोभागो ग्रह्यो, वीजादोयभागाना असंभवथकी एसूत्रनेविषे चलनादि चारपद आश्री वीजोभागो अनेछिज्जमाणे इत्यादि पचपदआश्री चौथोभागो जाणवो ॥ भगवतकहे हेगौतम च० चलवामांड्यूं तेकर्म चल्यूंकहिये एपहिलो १ ॥ उ० उदीरवा मांड्यूं तेकर्म उदीरियोकहीये एवीजो २ ॥ तथा वे० वेदवामांड्यो तेकर्म वेद्यूंकहिये एत्रीजो ॥ कर्महीनथावामांड्यूं तेकर्म प० हीनथयूं कहीजे एचोथो ४ ॥ ए० एह च० चारिपद ए० एकार्थजांणवा ॥ एहोनो एकअर्थछे, णा० अनेक प्रकारना घो० घोष उदात्तादिक तथा णा० नानाप्रकारना व० व्यजन

॥ टीका ॥

क्तप्रत्ययविधानात्, तस्य पक्ष परिग्रहो ऽङ्गीकार पक्षपरिग्रहइति धातुपाठादिति, उत्पन्नः पक्ष इहच पञ्चमी स्तृतीयार्थत्वा दुत्पन्नपक्षेण उत्पा दाङ्गीकारेण उत्पादाख्य पर्याय परिगृह्यै कार्था न्येता न्युच्यन्ते, अथवा; उत्पन्नपक्षस्य उत्पादाख्यवस्तुविकल्पस्या भिधायकानी तिशेष, सर्वेषा से या मुत्पाद माश्रित्यै कार्यकारित्वा देकान्तर्मुहूर्त्तमध्यभावित्वेन तुल्यकालत्वा चैकार्थिकत्व मितिभाव, स पुन रुत्पादाख्य पर्यायो विशिष्ट केव लोत्पादएव, यत कर्मचिन्तायाङ्कर्म्मणः प्रहाणे फलद्वय केवलज्ञानमोक्षप्राप्ती, तत्रैतानि पदानि केवलोत्पादविषयत्वा देकार्थान्युक्तानि, यस्मात् केवलज्ञानपर्यायो जीवेन न कदाचिदपि प्राप्तपूर्वो यस्माच्च प्रधान स्तत स्तदर्थएव पुरुषप्रयास स्तस्मा त्तएव केवलज्ञानोत्पत्तिपर्यायो भ्युपगत, एषा ञ्च पदानामेकार्थानामपि सता मयमर्थ ' सामर्थ्यप्रापितक्रमो यदुत पूर्व न्तच्चलति उदेतीत्यर्थ, उदितञ्च वेद्यते अनुभूयत इत्यर्थ ' तच्च द्विधा स्थितिक्षया दुदयप्राप्त मुदीरणया चोदयमुपनीत ततश्चा नुभवानन्तर तत्प्रहीयते दत्तफलत्वा ज्जीवा दपयातीत्यर्थ ' एतच्च टीकाकारमतेन व्याख्या त, मन्येतु व्याख्यान्ति स्थितिबन्धाद्यविशेषितसामान्यकर्म्माश्रयत्वा देकार्थिका न्येतानि केवलोत्पादपक्षस्यच साधकानीति चत्वारि चलनादीनि प दा न्येकार्थिकानी त्युक्ते शेषा ण्यनेकार्थिकानीति सामर्थ्यादवगतमपि सुखाववोधाय साक्षा त्प्रतिपादयितुमाह ॥ छिज्जमाणेइत्यादि ॥ व्यक्त नव

॥ मूल ॥

णाणाघोसा णाणावजणा । गोयमा । चलमाणेचलिए उदी रिज्जमाणेउदीरिए वेइज्जमाणेवेइए पहेज्जमाणेपहीणे एएणं चत्तारिपया एगठा णाणाघोसा णाणावजणा उप्पन्नपक्खस्स

॥ भाषा ॥

ते अक्षर चलनादिक पदने अर्थ व्यञ्जभेदथकी जिम पहिला चारिपद एकार्थकह्या इसी आशकाये कहेछे ॥ उप्पन्नपक्खस्सेत्ति चलमाणेचलिए इत्यादि चारिपद उत्पादपक्षे वर्त्ते जिणकारण इहाविनाशनथी तेउत्पादनामपर्यायविशेष केवलउत्पाद होज जेकारणथी कर्मचितानेविषे कर्मने क्षयहुवे फल थाय एककेवलज्ञान बीजोमोक्ष, तिहाएचारिपद केवलउत्पादविषयथकी एकार्थ कह्या, जेकारणे केवलज्ञान पर्यायजीवे पहिलेकिवारे पाम्योनथी अ

॥ टीका ॥

रं ॥ नाणठत्ति ॥ नानार्थानि नानार्थत्वं त्वेव छिद्यमान छिन्नमित्येत त्पद स्थितिबन्धाश्रय' यत सयोगिकेवली अन्तकाले योगनिरोधं कर्तुकामो वे दनीयनामगोत्राख्याना न्तिसृणा प्रकृतीना दीर्घकालस्थितिकाना सर्वापवर्त्तनया न्तर्मौहूर्त्तिक स्थितिपरिमाण करोति, तथा भिद्यमानभिन्नमित्येत त्पद मनुभावबन्धाश्रयं, तत्रच यस्मिन् काले स्थितिघात करोति तस्मिन्नेव काले रसघातमपि करोति, केवल रसघात स्थितिखण्डकेभ्य क्रमप्रवृ त्तेभ्यो ऽनन्तगुणाभ्यधिको ऽतो ऽनेन रसघातकरणेन पूर्वस्मा छिन्नार्थपद भवति, तथा दह्यमान दग्धमित्येत त्पद प्रदेशबन्धाश्रय, प्रदेशबन्ध स्त्वन न्तानामनन्तप्रदेशानास्कन्धाना कर्मत्वापादन, तस्यच प्रदेशबन्धकर्मण सत्काना पञ्चह्रस्वाक्षरोच्चारणकालपरिमाणया ऽसङ्ख्यातसमयया गुणश्रेणीरचनया पूर्वंरचिताना शैलेश्यवस्थाभाविसमुच्छिन्नक्रियध्यानाग्निना प्रथमसमयादारभ्ययावदन्त्यसमय स्ताव त्प्रतिसमय क्रमेण सङ्ख्येयगुणवृद्धाना कर्मपुद्ग लाना दहन दाहो ऽनेनच दहनार्थनेद पूर्वस्मा त्पदा भिन्नार्थपद भवति, दाह श्चान्यत्रा न्यथारूढोपी ह मोक्षचिन्ताधिकारा न्मोक्षसाधन उक्तलक्ष णकर्मविषयएव ग्राह्यइति, तथा म्रियमाण मृतमित्येतत्पद मायु कर्मविषय, यत आयुष्कपुद्गलाना प्रतिसमय क्षयोमरण, मनेनच मरणार्थेन पूर्वपदे भ्यो भिन्नार्थत्वा छिन्नार्थपद भवति, तथा म्रियमाण मृतमित्यनेना यु कर्मवोक्त, यत कर्मैव तिष्ठ ज्जीवती त्युच्यते कर्मैवच जीवादपगच्छ न्म्रियत इत्युच्यते, तच्चमरण सामान्येनो क्तमपि विशिष्टमेवा भ्युपगन्तव्य, यत ससारवर्त्तीनि मरणा न्यनेकशो ऽनुभूतानि दु सरूपाणिचेति, किन्तैर्मरणैरिह पुन

॥ मूल ॥

छिज्जमाणेछिखे भिज्जमाणेभिखे दज्भमाणेदड्ढे मिज्जमाणेमए णिज्जरिज्जमा

॥ भाषा ॥

नेकेवलज्ञान प्रधान वली जीवनो मवासपणि केवलज्ञाननिमित्तेजछे तेकारणथी तेहिज केवलज्ञानोत्पत्ति पर्यायकह्यो ॥ जेकमपहिलो तेचले जेचल्यो ते उदयआवे अने उदयआव्यो ते वेदीयें अनुभविये इत्यर्थ ॥ तेवेजस्थितिक्षयथकी उदीरणाविकारी उदयआव्यो ते अनुभव्यापाछे प्रक्षीणथाय, तेमाटे उत्पाद पक्षे एवारिपदएकार्थकह्या । अथवा स्थितिबधादि अविशेषित सामान्यकर्म आश्रयथको एकार्थछे, केवलोत्पादपक्षना साधकछे ते उत्पन्नपक्षे कर्मचिता ये तेहनूं प्रक्षीणपणूं तेहयो ॥ छि० एपदनेविषे स्थितिनोविगमकह्यो । तथा भि० इहा रसनोविगमकह्यो ॥ द० इहाकर्म दाहरूप विगमकह्यो ॥ मि०

॥ टीका ॥

पदे पुनर्नव मरण मन्त्य सर्वकर्मक्षयसरचरित मपवर्गहेतुभूतमिति विवक्षितमिति । तथा निर्ज्जीर्यमाणनिर्ज्जीर्णमित्येतत्पद सर्वकर्माभावविषय, य त· सर्वकर्मनिर्जरण न कदाचिद् प्यनुभूतपूर्वं जीवेनेति, अतो ऽनेन सर्वकर्माभावरूपनिर्जरणार्थेन पूर्वपदेभ्यो भिन्नार्थत्वा द्भिन्नार्थं पद भवति, अ थैतानि पदानि विशेषतो नानार्थान्यपि सन्ति सामान्यत कस्यपक्षस्या भिधायकतया प्रवृत्तानी ? त्यस्या माशङ्कायामाह ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥ विगत विगमो वस्तुनो ऽवस्थान्तरापेक्षयाविनाश ' सएव पक्षो वस्तुधर्म स्तस्यवा,पक्ष परिग्रहो विगतपक्ष स्तस्य विगतपक्षस्य वाचकानीतिशेष', विगत त्विह शेषकर्माभावो भिमतो जीवेन तस्या प्राप्तपूर्वतया त्यन्तमुपादेयत्वा त्तदर्थत्वाच्च पुरुषप्रयासस्येति, एतानि चैव विगमार्थानि भवन्ति, छिद्य मानपदे हि स्थितिखण्डन विगम उक्तो, भिद्यमानपदे त्वनुभावभेदो विगमो, दह्यमानपदे त्वकर्मताभवन विगमो, म्रियमाणपदे पुन रायु·कर्माभावो विगमो, निर्जीर्यमाणपदे त्वशेषकर्माभावो विगमउक्त, स्तदेव मेतानि विगतपक्षस्य प्रतिपादकानी त्युच्यन्ते, एवञ्च यत्पञ्चमाशङ्कादिसूत्रोपन्यासे प्रेरित यदुत केनाभिप्रायेणेद सूत्र मुपन्यस्तमिति ? तत्केवलज्ञानोत्पादसर्वकर्मविगमाभिधानरूपसूत्राभिप्रायव्याख्यानेन निर्णीतमिति, एतत्सूत्रसवादि सिद्धसेनाचार्योप्याह–उप्पज्जमाणकालं उप्पन्नविगयंयविगच्छंत । दवियंपणवयंतो तिकालविसयंविसेसेइत्ति ॥ १ ॥ उत्पद्यमानकालमित्यनेन आद्य समया दारभ्यो त्पत्त्यन्तसमय याव दुत्पद्यमानत्वस्ये ष्टत्वा द्वर्त्तमानभविष्यत्कालविषय द्रव्य मुक्त, मुत्पन्न मित्यनेन तु अतीतकालविषय, मेव वि गत विगच्छदि त्यनेनापीति, ततश्चो त्पद्यमानादिप्रज्ञापयन् सभगवान् द्रव्यं विशेषयति कथ त्रिकालविषय यथा भवतीति सवादगाथार्थ' ' अन्येतु

॥ मूल ॥

णेणिज्जिक्ष एएणपंचपदा णाणट्ठा णाणाघोसा णाणावजणा विगयपक्खस्स

॥ भाषा ॥

इहा आयुकर्मनो अभावएविगम ॥ तथा णिज्जरिज्जमाणे० द्धहासर्वकर्मनो विगमकह्यो इणेकारणे विगतपत्रे एकह्या ॥ ए० एह प० पाचे ई० पदने णाणट्ठा० नानाअर्थपणूंहीय ॥ णाणा० नानाप्रकारना घोसा० घोषउदात्तादिक ॥ णाणा० नानाप्रकारना वजणा० व्यंजनअक्षर ॥ विगयपक्खस्स० वि गतवस्तुनो अवस्थातरा पेहाये विनाश तेहनोईजपक्ष परिग्रह ते विगतपक्षकहीये एपचपद विगतपक्षनो वाचकछे ए नवपदने विषे अर्थपणोछे ॥

॥ टीका ॥

कर्मेतिपदस्य सूत्रे नभिधाना च्चलनादिपदानि सामान्येन व्याख्यान्ति न कर्मापेक्षयैव, तथाहि ॥ चलमाणेचलिएत्ति ॥ इह चलन मस्थिरत्वपर्यायेण वस्तुन उत्पाद. ॥ वेइज्जमाणेवेइएत्ति ॥ व्येज्यमान कम्पमान व्येजित कम्पित एजृकम्पन इतिवचनात्, व्येजनमपि तद्रूपापेक्षयो त्पादएव ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ इहो दीरणा स्थिरस्य सत. प्रेरणा तदपि चलनमेव ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहीयमाण प्रभ्रश्यन् परिपतदित्यर्थ , प्रहीण प्रभ्रष्ट परिपतितमित्यर्थ, इहापि प्रहीण चलनमेव चलनादीना चैकार्थत्व सर्वेपा गत्यर्थत्वात् ॥ उप्पण्णपक्खस्सत्ति ॥ चलत्वादिना पर्यायेणो त्पन्नत्वलक्षणपक्षस्याभिधायका न्येतानीति , तथा छेदभेददाहमरणनिर्ज्जरणा न्यकर्मार्थान्यपि व्याख्येयानि, तद्व्याख्यानच प्रतीतमेव, भिन्नार्थता पुनरेपामेव–कुठारादिना लतादिविपयश्छेद, स्तोमरादिना शरीरविपयो भेदो, ह्ग्निना दार्वादिविपयो दाहो , मरणन्तु प्राणत्यागो, निर्ज्जरा त्वतिपुराणीभवनमिति ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥ भिन्नार्थान्यपि सामान्यतो विनाशाभिधायका न्येतानीत्यर्थ , नच वक्तव्य किमेतै श्चलनादिभि रिह निरूपितै रतत्वरूपत्वादेपामिति अतत्वरूपस्यासिद्धत्वात् , तदसिद्धिश्च निश्चयनयमतेन वस्तुस्वरूपस्य प्रज्ञापयितु मारब्धत्वा–त्तथाहि–व्यवहारनय श्चलितमेव चलितमितिमन्यते, निश्चयस्तु चलदपि चलितम्, अत्र बहुवक्तव्य तच्च विशेषावश्यका दिरेवा भिधास्यमानजमालिचरिताच्चावसेयमिति , इहाद्ये प्रश्नोत्तरसूत्रद्वये मोक्षतत्व चिन्तित, मोक्ष पुन जीवस्य, जीवाश्च नारकादय श्चतुर्विंशतिविधा, यदाह––नेरइयाअसुराई पुढवाइवे दियादउचेव पचेदियतिरियनरा वतरजोइसियवेमाणी २४ ॥ १ ॥ तत्र नारका स्तावत् स्थित्यादिभि श्चिन्तयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ निर्गत मयमिष्टफल कर्म येभ्य स्ते निरया स्तेपुभवा नैरयिका नारका स्तपा नेरयिकाणा ॥ भतेत्ति ॥ भदन्त ॥ केवइयकालति ॥ कियाश्चासौ कालश्चेति कियत्काल

॥ मूल ॥

णेरइयाणम्भंतेकेवइयकालठिई पणत्ता। गोयमा। जहण्णेणदसवाससहस्साइंठिई

॥ भाषा ॥

पछि मोक्षनी वार्त्ताकही तेमाच तो जीवनेहोय जीवते नारको आदिदेई चउवीसदंडकवर्त्तेछे तेचउवीस दंडकना नाम ॥ नारको असुरादि ११ पृथिवीआदि १६ बेइंद्रीआदि १९ पचेंद्री तिर्यंच २० मनुष्य २१ व्यन्तर २२ ज्योतिषी २३ वेमानिक २४ इति ॥ हिवे नारकोनी स्थितिपूछेछे ? णेरइयाण

॥ टीका ॥

स्तं कियत्कालयावत् ॥ ठिइत्ति ॥ स्थितिरायु कर्मवशा न्नरके ऽवस्थान ॥ पण्णत्तत्ति ॥ प्रज्ञप्ता प्ररूपिता भगवद्भि रन्यतीर्थकरैश्चेति प्रश्न ॥ गोयमे त्यादि ॥ निर्वचन व्यक्तमेव नवर ॥ दसवाससहस्साइति ॥ प्रथमपृथिवीप्रथमप्रस्तटापेक्षया ॥ तेत्तीससागरोवमाइति ॥ सप्तमपृथिव्यपेक्षयेति' मध्य मातु जघन्यापेक्षया समयाद्यधिका सामर्थ्य गम्येति' अनन्तर नारकाणा स्थितिरुक्ता तेचोच्छ्वासादिमन्त इत्युच्छ्वासादिनिरूपणायाह ॥ णेरइया णमित्यादि ॥ व्यक्त नवर ॥ केवइकालस्सत्ति ॥ प्राकृतशैल्या कियत् कालात् कियता कालेनेत्यर्थः ॥ आणमतित्ति ॥ आनन्ति अनप्राणनेइतिधातुपाठा न् मकारस्यागमिकत्वात् ॥ पाणमतित्ति ॥ प्राणन्ति वाशब्दौ समुच्चयार्थौ' एतदेवपदद्वय क्रमेणार्थत स्पष्टयन्नाह ॥ ऊससतिवा णीससतिवेति ॥ यदेवोक्त मानन्तितदेवोक्त मुच्छ्वसन्तीति' तथा यदेवोक्त प्राणन्तितदेवोक्तं नि श्वसन्तीति' अथवा, आनमन्तिप्राणमन्तीति णमुप्रह्वत्वे इत्यस्या ने कार्थत्वेन श्वसनार्थत्वात्' अन्येत्वाहु.–आनन्तिवा प्राणन्तिवेत्यनेना ध्यात्मक्रिया परिगृह्यते' उच्छ्वसन्तिवानि श्वसन्तिवेत्यनेन वाह्येति ॥ जहा ऊसासपएत्ति । एतस्य प्रश्नस्य निर्वचनं यथोच्छ्वासपदे प्रज्ञापनाया सप्तमपदे तथावाच्य तच्चेद ॥ गोयमा सययसतयामेव आणमतिवा पाणम

॥ मूल ॥

पण्णत्ता । उक्कोसेणतेत्तीससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । णेरइयाणभंतकेवइयका लस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीससंतिवा ॥ जहाउस्सासपदे

॥ भाषा ॥

नारकोनी । भंते । हेभगवन् केवइयकाल केतलाकालनी । ठिई । स्थिति । पणत्ता । कही स्थिति ते मर्यादाकाल गयाछ सुभकर्मना फल तेहने नारकीक होये इतिप्रश्न १ उत्तर, हेगोतम । जहणेण । जघन्यथकी दसवाससहस्साइ । दशसहस्रवर्षनी ठिई पणत्ता स्थितिकही । एह रत्नप्रभा पृथिवीना प्रथम प्रता र आश्रीस्थितिजाणवी ॥ उक्कोसेण । उत्कृष्टी तेत्तीस । तेत्रीस ॥ सागरोवमाइं । सागरोपमनी । ठिईपणत्ता । स्थिति । कही ते सातमी पृथिवीनी अपेक्ष ये जाणवी ॥ ते आउखो सासोसासे हुवे ते भणीपूछेछे १ णेरइयाणं । नारकीने । भते । हेभगवन् । केवइयकाल । केतलेकाले । आणमंतिवा पाणमति वा । अभ्यतर सासलेणो । ऊससंतिवानीससतिवा । वाहिरऊसासले । अथवा आणमंतिवा ऊससतिवा अनेपाणमतिवा एहनो पर्याय नीसस

तिवा ऊससतिवा नीससतिवा इति ॥ तत्र सततं अनवरतं अतिदु.खितारि ते ऽनिदु ख्व्याहस्यच निरन्तरमेवो च्छ्वासनि'श्वासौ हश्येते' सतत त्वच प्रायो वृत्यापि स्यादित्यतआह ॥ सतयामेवत्ति ॥ सन्ततमेव नैकसमयोपि तद्विरहो स्तीतिभाव. दीर्घत्वञ्चेह प्राकृतत्वात्' आयामन्तीत्यादे पुनरुच्चारण शिष्यवचने आदरोपदर्शनार्थं गुरुणि राद्रियमाणवचनाहि शिष्या सन्तोषवन्तो भवन्ति' तथाच पौन पुन्येन प्रश्नश्रवणार्थनिर्णया दिषु घटन्ते लोके चाटुवचना भवन्ति' तथाच भव्योपकार स्तीर्थाभिवृद्धिश्चेति' अथ तेषामेवाहारप्रश्नयन्नाह ॥ णेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त न वरम् ॥ आहारट्ठित्ति ॥ आहार अर्थयन्ते प्रार्थयन्त इत्येवंशीला अर्थोवा प्रयोजनमेषामस्ती त्यर्थिन' आहारेण भोजने नार्थिन आहारस्य भोजन स्या र्थिन आहारार्थिन ॥ जहापण्णवणाएत्ति ॥ आहारट्ठी' इत्येतत्पदप्रभृति यथा प्रज्ञापनाया चतुर्थोपाङ्गस्य ॥ पढमएत्ति ॥ आद्ये ॥ आहारउ द्देसएत्ति ॥ आहारपदस्या ष्टाविंशतितमस्य उद्देशक. पदशब्दलोपा दाहारोद्देशक स्तत्र भणितम् ॥ तहाभाणियव्वंति ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति' व्या तत्र नारकाहारवक्तव्यताया बहूनि द्वाराणि भवन्ति' तत्सङ्ग्रहार्थं पूर्वोक्तस्थित्युच्छ्वासतत्वाद्द्वारद्वयदर्शनपूर्विका गाथामाह ॥ ठिइगाहा ॥ स्या स्थितिर्नारकाणा वाच्या' उच्छ्वासश्चतौ पोक्तावेव' तथा ॥ आहारेत्ति ॥ आहारविषयो विधिर्वाच्य ' सचेवम् ॥ णेरइयाण भते' आहारट्ठी ए ताआहारट्ठी ३ णेरइयाण भते! केवइ कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? ॥ आहारार्थं आहारप्रयोजन साहारार्थित्वमित्यर्थ. ॥ गोयमा! णेरइयाण

णेरइयाणन्ते आहारट्ठी । जहापन्नवणाए पढमसए आहारुद्देसए तहाभाणियव्व ॥ गाहा ॥
ठितिउस्सासाहारे किंवाहारेइसव्वउवावि । कइभागसव्वाणिव कीसवभुज्जोपरिणमति ॥ १ ॥

तिवा ऊसासपदे। एजिमपन्नवणा माहि सातमेंपदे कह्याछे तिमजाणवा, ते इम। सतत सतवा ॥ ओनिरतर समयमाचना विरह विनाले घणा दुखमाटे ॥ णेरइयाण। नारकीने। भते। हेभगवन्। आहारट्ठी। आहारनाअर्थीछे, आहारना वाछकछे ॥ जहा। जिम पन्नवणाए। पन्नवणाना अट्ठावीस मा पदना। पढमसए। पहिला शतकना। आहारुद्देसए। आहार उद्देशामाहि जिमकह्योछे। तहाभाणियव्व। तिमजाणवा॥ गाहाठिति। स्थितिनारकी

दुविहे आहारे पणत्ते ॥ अभ्यवहारक्रियेत्यर्थ. ॥ तजहा आभोगनिव्वत्तिए अणाभोगनिव्वत्तिए ॥ तत्रा भोगो ऽभिसन्धि स्तेन निर्वर्त्तित' कृत आभोगनिर्वर्त्तित आहारयामीती च्छापूर्वकइत्यर्थ' अनाभोगनिर्वर्त्तित आहारयामीति विशिष्टेच्छा मन्तरेणापि प्रावृट्काले मचुरतरपस्त्रवणाद्यभिव्यग्य शीतपुद्गलाद्याहारवत् ॥ तत्थण जेसे अणाभोगनिव्वतिए सेण अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ अनुसमय प्रतिक्षण सन्ततातितीव्रक्षुद्वेद नीयकर्मोदयत ओजआहारादिना प्रकारेणेति ॥ अविरहिएत्ति ॥ चुक्कस्खलितन्यायादपि न विरहित.' अथवा ; प्रदीर्घकालोपभोग्याहारस्य सकृद्ग्रहणे पि भोगो नुसमयस्या दतो ग्रहणस्यापि सातत्यप्रतिपादनार्थ मविरहितमित्याह ॥ तत्थणं जेसे आभोगनिव्वतिए सेण असखेज्जसमइए अतोमुहुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ असख्यातसामयिकः पल्योपमादिपरिमाणोपि स्यादतआह ॥ अंतोमुहुत्तिएत्ति ॥ इदमुक्तंभवति आहारयामी त्यभिलाष एतेषा गृहीताहारद्रव्यपरिणामतीव्रतरदु खजननपुरस्सर मन्तर्मुहूर्त्ता न्निर्वर्त्ततइति ॥ किंवाहारेतित्ति ॥ किंस्वरूपवा ; वस्तु नारका आहारय

न्तीति वाच्य ? वाशब्दः समुच्चये तत्रेद प्रश्ननिर्वचनसूत्र ॥ णेरइयाण भते ! किमाहारमाहारेति ? गोयमा ! दव्वउ अणतपएसियाइ ॥ अनन्तप्रदेशवन्ति पुद्गलद्रव्याणीत्यर्थ , स्तदन्येपा मयोग्यत्वात् ॥ खेतउ असखेज्जपएसावगाढाइ ॥ न्यूनतरप्रदेशावगाढानिहि न ग्रहणप्रायोग्यानि अनन्तप्रदेशावगाढानितु न भवन्त्येव सकललोकस्या प्यसङ्ख्येयप्रदेशप्रमाणत्वात् ॥ कालउ अणतरठियाइ ॥ जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थितिकानीत्यर्थ , स्थितिश्च आहारयोग्य स्कन्ध' परिणामेऽवस्थानमिति ॥ भावउ वणमताइं गंधमंताइं रसमताइ फासमंताइ आहारेति ५ । जाइ भावउ वणमताइ आहारेति किं ताइ एगवणाइ आहारेति जाव किंपचवणाइ आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवणाइंपि आहारेति जाव पचवणाइंपि आहारेति विहाणमग्गण पडुच्च कालवणाइंपि आहारेति जावसुक्किलाइंपि आहारेति ॥ तत्र ॥ ठाणमग्गण पडुच्चत्ति ॥ तिष्ठत्यस्मि न्निति स्थानं सामान्य यथा – एकवर्ण द्विवर्णमित्यादि ॥ विहाणमग्गण पडुच्चत्ति ॥ विधान विशेष कालादिरिति ६ । जाइ वणउ कालवणाइ आहारेति ताइंकिं एगगुणकालाइं आहारे

ति जाव दसगुणकालाइं आहारेति सखेज्जगुणकालाइ असंखेज्जगुणकालाइ अणतगुणकालाइ आहारेति ? गोयमा । एकगुणकालाइपि आहारेति जाव अणतगुणकालाइपि आहारेति ७। एव जावसुक्किलाइं ११। एवं गधतोवि १३। रसतोवि १८। जाइ जावत्ते फासमताइ ताइ ठाणमग्गण पडुच्च नोए गफासाइ आहारेति नोदुफासाइ आहारेति नोतिफासाइ आहारेति ॥ एकस्पर्शानां मसन्नवा दन्येषा चाल्पप्रदेशिकतासूक्ष्मपरिणामाभ्या ग्रहणा योग्यत्वात् ॥ चउफासाइ आहारेति जाव अठफासाइ आहारेति ॥ वहुप्रदेशिकतावादरपरिणामाभ्या ग्रहणयोग्यत्वादिति ॥ विहाणमग्गण पडु च्च कक्खडाइपि आहारेति ॥ जाव लुक्खाइपि आहारेति १८। जाइ फासत्ते कक्खडाइ आहारेति ताइंकि एगगुणकक्खडाइं आहारेति जाव अण तगुणकक्खडाइ आहारेति ? गोयमा । एगगुणकक्खडाइपि आहारेति जाव अणंतगुणकक्खडाइंपि आहारेति २० । एव अठवि फासा भाणियव्वा अणतगुणलुक्खाइपि आहारेति २७ जाइभते। अणतगुणलुक्खाइ आहारेति ताइकि पुठाइ आहारेति अपुठाइं आहारेति ? गोयमा! पुठाइ आहा

रेति नो अपुठाइं आहारेंति २८ । पुठाइति-॥ आत्मप्रदेशस्पर्शवन्ति तत्पुन रात्मप्रदेशस्पर्शन मवगाहक्षेत्रा द्वहिरपि भवति अत उच्यते ॥ जाइं भते। पुठाइ आहारेति ताइ कि उगाढाइ आहारेति अणोगाढाइ आहारेति ? गोयमा। उगाढाइ नो अणोगाढाइं ॥ अवगाढानीति आत्मप्रदेशै स्सहै कक्षेत्रावगाढानीत्यर्थ २९ ॥ जाइ भते। उगाढाइं आहारेति ताइं कि अणतरोगाढाइ आहारेति परपरोगाढाइं आहारेति ? गोयमा । अ णंतरोगाढाइ नो परपरोगाढाइ आहारेति ॥ अनन्तरोवगाढानीति येषु प्रदेशे ष्वात्मावगाढ स्तेष्वेव यान्यवगाढानि तान्यनन्तरावगाढानि अन्तरा भावेनावगाढत्वात्, यानिच-तदन्तरवर्त्तीनि तान्यवगाढसम्बन्धात् परम्परावगाढानीति, ३० ॥ जाइ भंते! अणतरोवगाढाइं आहारेति ताइंकिं अणूइ आहारेति वायराइ आहारेति ? गोयमा! अणूइपि आहारेति वायराइंपि आहारेति ॥ तत्राणुत्वं वादरत्व चापेक्षिक, तेषामेवा हार्यो ग्याना स्कन्धाना प्रदेशवृध्या वृद्धाना मवसेय ३१ । जाइ भते! अणूइपि आहारेति वायराइंपि आहारेति ताइ कि उर्ध्वं आहारेति एवं अहेवि

तिरियंपि ? गोयमा । उड्ढंपि अहारेति एवं अहेवि तिरियंपि ३२ । जाइं भंते । उड्ढपि आहारेति अहेवि तिरियपि आहारेति ताइ किं आइंआहा
रेति मज्झे आहारेति, पज्जवसाणे आहारेति ? गोयमा । तिहावि ॥ अयमर्थ' आभोगनिर्वर्त्तितस्या हारस्या न्तर्मौहूर्त्तिकस्या दिमध्यावसानेषु स
र्वत्रा हारयन्तीति ३३ ॥ जाइ भंते । आइ मज्झे अवसाणेवि आहारेति ताइ कि सविसए आहारेति अविसए आहारेति ? गोयमा ! सविसए नो
अविसए आहारेति ॥ तत्र स्व स्वकीयो विषयः' स्पृष्टावगाढानंतरावगाढाख्य स्वविषय' स्तस्मि न्नाहारयन्ति ३४ ॥ जाइ भंते । सविसए आहा
रेति ताइकि आणुपुव्वि आहारेति अणाणुपुव्वि आहारेति ? गोयमा ! आणुपुव्वि आहारेति नोअणाणुपुव्वि आहारेति ॥ तत्रा नुपूर्व्या यथासन्नं ना
तिक्रम्य ३५ ॥ जाइं भंते ! आणुपुव्वि आहारेति ताइकि तिदिसि आहारेति जाव छद्दिसि आहारेति ? गोयमा ! नियमा छद्दिसि आहारेति ॥
इह नारकाणा लोकमध्यवर्त्तित्वेन षसा मप्यूर्द्ध्वादिदिशा मलोकेना नावृतत्वात्' षट्सु दिक्ष्वाहारग्रहणमस्ति' तत उक्तं नियमात्' षड्दिशि दि

क्त्रयादिविकल्पास्तु लोकांतवर्त्तिषु पृथिवीकायिकादिषु दिशा त्रयस्य द्वयस्य एकस्या श्चालोकेना वरणे भवन्तीति' यद्यपि वर्णत पञ्चवर्णानी त्या
द्युक्त' तथापि प्राचुर्येण यद्वर्णगन्धादियुतानि द्रव्या ण्याहारयन्ति, तानि दर्शयति ॥ उसण्णकारणं पडुच्च ॥ बाहुल्यलक्षणकारण माश्रित्य तत्र
प्रकृत्यशुभानुभावएव कारणमिति ॥ वण्णउ कालनीलाइ गन्धउ दुब्भिगंधाइ रसउ तित्तकडुयरसाइ फासउ कक्खडगरुयसीयलुक्खाइ ॥ एतानिच प्रा
यो मिथ्यादृष्टय एवा हारयन्ति' नतु भविष्यत्तीर्थंकरादयइति' अथ तानि यथास्वरूपाण्येव नारका आहारय न्त्यन्यथावे ? त्यस्या माशङ्काया म
भिधीयते ॥ तेसि पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामयित्ता परिपीलयित्ता परिसाडइत्ता परिविद्धसइत्ता ॥ विपरिणामादयो
विनाशार्थत्वे नैकार्थाएव ध्वनय ॥ अन्नेय अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहार
माहारेति सव्वप्पणयाएत्ति ॥ सर्वात्मना सर्वै रात्मप्रदेशै रित्यर्थ. ३६ व्याख्यात सूत्रे' सङ्ग्रहगाथाया किंवाहारेतीतिपद' मथ सव्वउवावीत्ति व्या

॥ टीका ॥

रयापते ' तत्र सर्वत सर्वप्रदेशै नैरयिका आहारयन्तीति ' आर्पोसियचना दनीक्त माहारयन्ती त्यपिवाच्य , तथैव ॥ नेरइयाणं भंते ' सव्वओ आहा
रेंति सव्वओ परिणामेंति सव्वओ ऊससंति सव्वओ नीससति अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं नीससंति
आहच्च आहारेंति ? ४ हंता गोयमा ! नेरइयासव्वओ आहारेंति १२ सव्वउत्ति ॥ सर्वात्मप्रदेशै ॥ अभिक्खणंति ॥ अनवरत पर्याप्तत्वेसति ॥ आह
च्चत्ति ॥ कदाचि दमहर्दा ' अपर्याप्तकावस्थायामिति ३१ तथा ॥ कइभागंति ॥ आहारतयोपात्तपुद्गलाना कतिय भाग माहारयन्तीतिवाच्य ' त
थैव ॥ नेरइयाणं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसि णंभंते पोग्गलाणं सेयालंसि कइभागं आहारेंति कइभागं आसाइंति ? गोयमा !
असंखेज्जभागं आहारेंति अणंतभागं आसाइंति सेयालंसित्ति ॥ एष्यत्काले एष्योत्तरकाल मित्यर्थं ' असंखेज्जइभागमाहारेंतीत्यत्र केचि द्व्याचक्षते
गवादिप्रथमवृहद्ग्रासग्रहणवत् काचित् गृहीतासंख्येयभागमात्रान् पुद्गला नाहारयन्ति, तदन्येतुपतन्तीति' अन्येत्वाचक्षते' ऋजुसूत्रनयदर्शनात् स्वश
रीरतया परिणतानामसंख्येयभाग माहारयन्ति , ऋजुसूत्रोहि – गवादिप्रथमवृहद्ग्रासग्रहणवत् गृहीताना शरीरत्वेना परिणताना माहारतानेच्छति'
शरीरतया परिणतानामपि केषाञ्चिदेव विशिष्टाहारकार्यकारित्वा त्त मभ्युपगच्छति ' शुद्धनयत्वा त्तस्येति , अन्ये पुनरित्थ मभिदधति ॥ असंखे
ज्जइभागमाहारेंतित्ति ॥ शरीरतया परिणमन्ति' शेषास्तु किट्टीभूय मनुष्यान्ययत्ताहारस्य न्मलीभवन्ति ' न शरीरत्वेन परिणमन्तीत्यर्थ. ॥ अण
न्तभागमासाइंतित्ति ॥ आहारतया गृहीताना मनन्तभाग मास्वादयन्ति तद्रसादीन् रसनादीन्द्रियद्वारे णोपलभन्त इत्यर्थ ३८ सव्वाणिवत्ति ॥
द्वार ' तत्र सर्वान्येवा हारद्रव्या ण्याहारयन्तीतिवाच्यं ' यादृशा' समुच्चये ' तथैवं ॥ नेरइयाणं भंते जे पोग्गले आहारत्ताए परिणामेंति ते किं सव्वे

॥ भाषा ॥

नो कहवो जघन्ये १०००० उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम उत्कृष्टमाहारे। मासोक्षम कहवो निरंतर आहारे अहारनो अर्थी किम आहारे। कांइ आहार
करे सदेतोवावि। सगले भागने प्रदेशेकरी आहारसे॥ कतिभाग। केतला आहारे आहार निमित्त जेतला पुद्गल ग्रह्या तेहनो असंख्यातमो भा

आहारेति णोसव्वे आहारेति ? गोयमा । सव्वे अपरिसेसिए आहारेति ॥ इह विशिष्टग्रहणगृहीता आहारपरिणामयोग्याएव ग्राह्या उज्झितशेषा इत्यर्थः' अन्यथा पूर्वापरसूत्रयो विरोध स्यात्' इष्टाचैव व्याख्या' यदाह, जंजहसुत्तेभणिय तहेवजइतंवियालणानत्थि। किंकालियाणुजेगो दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ३८ ॥ १ ॥ कीसवजुज्जोपरिणमतित्ति॥ द्वारगाथापद' तत्र ॥ कीसत्ति ॥ पदावयवे पदसमुदायोपचारात् ॥ कीसत्ताएत्ति ॥ दृश्य किं स्वतया किं स्वभावतया कीदृशतयावा; केनप्रकारेण किंस्वरूपतयेत्यर्थ', वाशब्द समुच्चये ॥ भुज्जोत्ति ॥ भूयोभूय पुन.पुन. परिणमन्ति, आहारद्रव्याणीति प्रकृत' इत्येत दत्रवाच्य' तच्चैवं ॥ नेरइयाण भते ! जेपोग्गले आहारत्ताए गेण्हति तेण तेसि पोग्गला कीसत्ताए भुज्जोभुज्जो परिणमति ? गोयमा । सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ता अणिट्ठत्ताए अकतत्ताए अपियत्ताए अमणुन्नत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभि ज्झियत्ताए अहत्ताए नोउच्छत्ताए दुक्खत्ताए नोसुहत्ताए एएसि भुज्जोभुज्जो परिणमेति ॥ तत्रा निष्टतया सदैव तेषा सामान्येना वल्लभतया' तथा–ऽकान्ततया सदैव तद्भावेना कमनीयतया, तथा–ऽप्रियतया सर्वेषामेव द्वेष्यतया, तथा–ऽमनोज्ञतया कथया प्यमनोरमतया, तथा–ऽम नोम्यतया चिन्तयापि अमनोगम्यतयां, तथा–ऽनीप्सिततया आप्तुमनिष्टतया, एकार्था वैतेशब्दा ॥ अभिज्झियत्ताएत्ति ॥ अभिध्येयतया तृप्तेरनुत्पा दकत्वेन पुनरप्यभिलापनिमित्ततया, अहृद्यत्वे नेत्यन्ये अशुभत्वेनेत्यर्थ. ॥ अहत्ताएत्ति ॥ गुरुपरिणामतया ॥ नोउच्छत्ताएत्ति ॥ नोलघुपरिणामत येति सङ्ग्रहगाथार्थ. , इदच सङ्ग्रहणिगाथाविवरणसूत्रं क्वचित्सूत्रपुस्तकएव दृश्यतइति , अथ नैरयिकाहाराधिकारा त्तद्विषयमेव प्रश्नचतुष्टयमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ पुव्वाहारियत्ति ॥ ये पूर्वमाहृता· पूर्वकाले एकीकृता. सङ्गृहीता इतियावत् , अभ्यवहृतावा ; ॥ पोग्गलत्ति ॥ स्कन्धा. ॥ परिण

ग आहरे अनता भाग सास्वादें । सव्वाणिवा । सगला आहारना द्रव्य आहरे आहारपरिणाम जोग पुद्गलजाणवा ॥ कीसंव । किसप्रकारेकरीने। भुज्जोभु ज्जो । वलीवली। परिणमंति । १ परिणमे इंद्रियपणे दुःखपणे परिणमे एहनो विस्तारपन्नवणा माहिथी जाणवी॥ हिवेनारकीना आहाराधिकारथकी

॥ टीका ॥

यन्ति ॥ ते परिणता पूर्वकाले शरीरेणसह सम्पृक्ता परिणतिं कृता इत्यर्थ इतिप्रथम प्रश्न. १। इहच-सर्वत्र प्रश्नत्वं काकुपाठा दवगम्यते, तथा ॥ आहारियन्ति ॥ पूर्वकाले आहृता सङ्गृहीता अभ्यवहृतावा; ॥ आहारिज्जमाणासि ॥ येच वर्त्तमानकाले आह्रियमाणा सङ्गृह्यमाणा अभ्यवह्रियमाणावा; पुद्गला ॥ परिणयन्ति ॥ ते परिणता इतिद्वितीय २। तथा ॥ अणाहारियन्ति ॥ ये ऽतीतकाले ऽनाहृता ॥ आहारिज्जस्समाणात्ति ॥ ये चानागतकाले आहरिष्यमाणा पुद्गला स्तेपरिणता इतितृतीय. ३। तथा ॥ अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणेत्यादि ॥ अतीतानागताहरणाभियानिषेधा चतुर्थ ४। इहच यद्यपि चत्वारएव प्रश्ना उक्ता, स्तथा प्येते त्रिषष्टि सम्भवन्ति, यत पूर्वाहृता आह्रियमाणा आहरिष्यमाणा अनाहृता अनाह्रियमाणा अनाहरिष्यमाणाश्चेति षट् पदानीह सूचितानि, तेषुच एकैकपदाश्रयणेन षट्द्विकयोगे पञ्चदश, त्रिकयोगे विंशति, श्च

॥ मूल ॥

णेरइयाणन्तेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जमाणापोग्गलापरिणया २ अणाहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ३ अणाहारियाअणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ४

॥ भाषा ॥

आहारविषय प्रश्नचारि कहेछे १ णेरइयाण। नारकीने भते। हेभगवन्। काइं पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया। जेपूर्वकाले शरीर सघाते एकीबोधा स ग्रह्या अथवा आहारा जेपुद्गल शब्दें स्कधते परिणाम्या एपहिलोप्रश्न १ तथा आहारिया अणाहारिज्जमाणा। पूर्वकाले आहारा सग्रह्या आ० व र्त्तमानकाले आहारकरेछे अथवा सग्रहेछे ते पोग्गला। पुद्गल परिणया। परिणम्या ए बीजो प्रश्न १ २ तथा ॥ अणाहारिया। अतीतकाले सग्रह्यान हीं आहारानही आहारिज्जस्समाणा। अनागतकालें आहारस्ये सग्रहस्येत पोग्गला। पुद्गल परिणया परिणम्या एत्रीजोप्रश्न १ ३ तथा ॥ अणाहारिया। अतीतकाले आहारानही सग्रह्यानही अने अणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया। अनागतकाले पणि आहारस्येनहीं सगृहस्येंनही ते पुद्गलपरिणम्या एचौथोप्रश्न. १ ४ इहां सूत्रने प्रश्नचारिकह्या तथा त्रेसठिभागा एहनाथायते देखाडेछे अतीतकाले आहारया १ वर्त्तमानकाले आहारेछे २ आगामिकाले आहारस्ये ३ इम अनाहारा ४ अनाहारेछे ५ अनाहारस्ये ६ ए ६ पदकह्या। तेहनेविषे सयोगी ६ द्विकयोगी १५ त्रिकसंयोगी २०

तुष्कयोगे पञ्चदश, मञ्चकयोगे षट्, षड्योगे एकइति , अत्रोत्तरमाह ॥ गोयमेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ये पूर्वमाहृता स्ते पूर्वकालएव परिणता, अ
हणानन्तरमेव परिणामभावात् १। ये पुन राहृता आह्रियमाणाश्च ते परिणता, आहृताना परिणामभावादेव परिणमन्तिच , आह्रियमाणाना
परिणामभावस्य वर्त्तमानत्वादिति २। वृत्तिकृतातु द्वितीय प्रश्नोत्तरविकल्प एवविधो दृष्टो, यदुत आहृता आहरिष्यमाणा पुद्गला परिणता' प
रिणस्यन्तेच' यतो य तेनैव व्याख्यातो' यदुत येपुन राहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्तेषा केचित्परिणताः परिणताश्च ये सम्पृक्ता. शरीरेण सह ,
येतु नतावत् सम्पृच्यन्ते, कालान्तरेतु सम्पृदयन्ते, तेपरिणस्यन्तइति, येपुन रनाहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्ते नोपरिणता , अनाहृताना सम्य
क्भावेन परिणामाभावात्, यस्मा स्वाहरिष्यन्ते, ततः परिणंस्यन्ते, आहृतस्या वश्यपरिणामभावादिति , ३ चतुर्थ स्त्वतीतभविष्यदाहरणक्रि
याया अभावेन परिणामाभावा दवसेयइति, एतदनुसारेणैव प्राग्दर्शितविकल्पाना मुत्तरसूत्राणि वाच्यानीति, अथ शरीरसम्पर्कलक्षणपरिणामा

गोयमा णेरइयाणपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला परिणयापरिणमं
तिय २ अणाहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला णोपरिणयापरिणमिस्संति ३ अणाहारियाअणाहारिज्ज

चतुष्कसयोगी १५ पचस० ६ छस० १ इमसव ६३ इहा भगवत उत्तरकहेछे—हेगौतम । णेरइयाण । नारकीने । पुव्वाहारिया । पूर्वकालेआहारया सग्रह्या
पोग्गलापरिणया । पुद्गलते परिणम्या ग्रहणातरेज परिणामना भावथको १ ॥ अने आहारिया । जे पूर्वकाले आहाराछे । आहारिज्जस्समाणा पोग्गला
अने वर्त्तमानकाले आहारेछे ते पुद्गल । परिणया । परिणम्या अने परिणमेछे । परिणमंतिय । २ आह्रियमाणने परिणमभावनो वर्त्तमानछे २ तथा
अणाहारिया। अतीतकालेआहारयानही सग्रह्यानही अनेअनागतकाले। आहारिज्जस्समाणा । आहारस्ये सग्रहस्ये। पोग्गला। ते पुद्गल। णोपरिणया। प
रिणम्यानहीछे पूर्वं अणगृह्याथी अने। परिणमिस्संति। परिणमस्ये गृह्याने अनतरे ३ ॥ अणाहारा तथा अतीतकाले आहारयानही सगृहियानही अने
अणाहारिज्जस्समाणा । अनागतकाले पणि आहारस्ये नही । पोग्गला । तेपुद्गल । णोपरिणया । परिणम्यानही । णोपरिणमिस्संति । परिणमस्यें पणि

॥ टीका ॥ त् पुद्गलाना च्चयादयो भवन्तीति, तद्दर्शनार्थं प्रश्नयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ चयादिसूत्राणि परिणामसूत्रसमानीति कत्वा तिदेशतो ऽधीता नीति, तथाहि ॥ जहापरिणया तहा चियावीत्यादि ॥ इहच पुस्तकेषु वाचनाभेदो दृश्यते, तत्र न सम्मोहः कार्यः, सर्वत्राभिधेयस्य तुल्यत्वात् केवल स्परिणतसूत्रानुसारेण प्रश्नसूत्राणि व्याकरणानिच मतिमता ध्येयानीति, तत्र चिता· शरीरे चयगता, उपचिता पुन र्बहुश प्रदेशसामीप्येन शरीरेचिताएवेति, उदीरितास्तु स्वभावतो ऽनुदितान् पुद्गलान् उदयप्राप्ते कर्मदलिके करणविशेषेण प्रक्षिप्य या न्वेदयते, उदीरणालक्षण च्चेद जकरणेणाकड्ढिय उदएदिज्जइउदीरणाएसा-॥ तथा वेदिता· स्वेन रसविपाकेन प्रतिसमय मनुभवमाना अपरिसमाप्ता शेषानुभावाइति, तथा निर्ज्जीर्णा कात्स्न्येना नुसमयमशेषतद्विपाकत्वानियुक्ताइति ॥ गाहत्ति ॥ परिणतादिसूत्राणा सङ्ग्रहणाय गाथा भवति, साचेय परिणयेत्यादि व्याख्यातार्था, नवर एकैकस्मिन् पदे परिणतचितोपचितादौ चतुर्विधा आहृता, १। आहृता· आह्रियमाणाश्च, २। अनाहृता आहरिष्यमा

॥ मूल ॥ स्समाणापोग्गलाणोपरिणया णोपरिणमिस्संति ४ णेरइयाणंभंतेपुव्वाहारियापोग्गलाचिया ॥ पुच्छा ॥ जहा परिणया तहा चियावि एव चिया उवचिया उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा ॥ गाहा ॥ परिणतचियायउवचिया

॥ भाषा ॥ नही ४ हिवे शरीर संपर्कलक्षण परिणामथकी पुद्गलनो चयादिक हुवे ते देखाडवाने प्रश्नकरेछे—णेरइयाणभंते। नारकीने हेभगवन्। पुव्वा हारिया। पूर्वेआहारिया। पोग्गलाचिया। जेपुद्गल ते चियाकहीये चयपणूंपाम्याछे शरीरकेविषेचिण्णा। पुच्छा ॥ ए प्रश्न पूछ्यो हिवे उत्तर कहेछे— जहा। जिम। परिणया। परिणम्या। तहा। तिहातिम। चियावि। चयपाम्या। एवं। इम। चिया। चयपाम्या। उवचिया। गाढाघिणा घणूंवृद्धि पाम्या। उदीरिया। स्वभावे उदयनहींआव्या अनेते उदयआण्या। वेइया। पोताने रसविपाके प्रतिसमये भोगव्या। णिज्जिणा। रसपरिणामेकरी निर्ज रा जीवप्रदेशथी जुदाकीधा। गाहा। परिणय। गाथा। जिमपरिणामे परिणम्या। चिया। चयपाम्या। उवचिया। घणूंवृद्धिपाम्या। उदीरिया। भावेकरी उदी रिया। वेदियाय। भावेकरीवेदिया। णिज्जिणा। इमचयकीधा तेहनो हानिवृद्धि करीने। एक्किकम्मिपदंमि। एकेकापदनेविषे चारि चारिभेदेंपुद्गलकहवा

णाश्च ३ । अनाहृता, अनाहरिष्यमाणाश्चे ४ । त्येवं चतूरूपा पुद्गला भवन्ति, प्रश्ननिर्वचनविषया· स्युरिति, पुद्गलाधिकारादेवेमा मष्टादशसू त्रीमाह ॥ नेरइयाण भते । कइविहा पोग्गलाभिज्जतीत्यादि ॥ व्यक्तं नवर ॥ भिज्जतित्ति ॥ तीव्रमन्दमध्यमतया नुभागभेदेन भेदवन्तो भवन्ति, उद्वर्त्तनकरणापवर्त्तनकरणाभ्या मन्दरसा स्तीव्ररसा, स्तीव्ररसास्तु मन्दरसा भवन्तीत्यर्थ, उत्तर ॥ कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्चत्ति ॥ समानजातीयद्र व्याणा राशि द्रव्यवर्गणा साचौदारिकादिद्रव्याणा मप्यस्ती त्यतआह—कर्म्मरूपा द्रव्यवर्गणा कर्म्मद्रव्याणावा; वर्गणा कर्म्मद्रव्यवर्गणा तामधिकृत्य तामाश्रित्य कर्मद्रव्यवर्गणासत्काइत्यर्थ.' कर्मद्रव्याणामेवच मन्देतरानुभावचिन्तास्ति न द्रव्यान्तराणा मितिकृत्वा कर्मद्रव्यवर्गणा मधिकृत्येत्युक्त ॥ अणूचेवबायराचेवत्ति ॥ चैवशब्दः समुच्चयार्थ स्ततश्च अणवश्च वादराश्च' सूक्ष्माश्च स्थूलाश्चेत्यर्थः सूक्ष्मत्वं स्थूलत्व चैषा कर्मद्रव्यापेक्षयैवा वग न्तव्य नान्यापेक्षया, यत औदारिकादिद्रव्याणा मध्ये कर्म्मद्रव्याण्येव सूक्ष्माणीति, एव च्चयोपचयोदीरणावेदननिर्ज्जरा· शब्दार्थभेदेन वाच्या'

उदीरितावेइयायणिज्जिस्सा । एक्किक्कम्मिपदम्मि चउव्विहापोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ णेरइयाणंभते कतिविहा पोग्गलाभिज्जंति गोयमा कम्मदव्ववग्गणमहिगिच्च दुविहापोग्गलाभिज्जंति तंजहा अणूचेव बायराचेव १

तेकिम । चउव्विहापोग्गलाहोति । आहारा १ आहारेछे २ अणाहारा ३ अणाहारस्ये ४ एचारकहवा ॥ हिवे पुद्गलना अधिकारथकी ए अठार हसूत्रकहेछे—णेरइयाणभते । नारकीने हेभगवन्। कइविहापोग्गला। केतलापुद्गल किसेप्रकारे करीने ? भिज्जति। अनुभाग भेदेकरी ने भेदायछे तीव्रम दमध्यभेदेकरी भेदपामे पुद्गलभेदथाय इत्यर्थ, उद्वर्त्तन अपवर्त्तन करणथी मन्दरस तीव्ररसथाय, तीव्ररस मंदरसथाय इतिप्रश्न ? गोयमा । हेगौतम। समान जातीय द्रव्यानी राशिते द्रव्यवर्गणाकहीये तिका औदारिकादि द्रव्यनेपणिछे तेमाटे कहेछे—कम्मदव्ववग्गणमहिगिचदुविहा। कर्मरूप द्रव्यवर्गणा अथवा कर्मद्रव्यनो वर्गणा ते आश्रीने कर्मद्रव्यनेज मदतरानुभावचिताछे पणिद्रव्यातरनेनथी तेमाटे कर्मद्रव्यवर्गणा अधिकरीने इमकह्यो ए विहु प्रकारेकरीने। पो गलाभिज्जति। पुद्गलभेदपामे। तंजहा। तेकिम। अणूचेव। अणुते सूक्ष्मपुद्गल। वादराचेव। वादरते स्थूलपुद्गलकहीये सूक्ष्मपणू स्थूलपणूं ए होते कर्मद्रव्य अपेचा

॥ टीका ॥

किन्तुचयसूत्रे उपचयसूत्रेच ॥ आहारदव्ववग्गणमहिकिच्चेति यदुक्तं तत्रायमभिप्राय , शरीर माश्रित्य चयोपचयौ प्राग्व्याख्यातौ , तौचा हारणा द्रव्येभ्यएव भवतो नान्यतो , ऽतआहारद्रव्यवर्गणा मधिकृत्ये त्युक्तमिति , उदीरणादयस्तु कर्मद्रव्याणामेव भव , न्त्यत स्तत्सूत्रे पूक्त कर्मद्रव्यवर्ग मधिकृत्येति ॥-उवट्टिंसुत्ति ॥ अपवर्त्तितवन्त , इहापवर्त्तनं कर्मणा स्थित्यादेरध्यवसायविशेषेण हीनताकरण , अपवर्त्तनस्य चोपलक्षणत्वा दुद्व

॥ मूल ॥

णेरइयाणन्नंतेकतिविहापोग्गलाचिज्जंति गोयमा आहारदव्वमग्गणमहिकिच्च दुविहापोग्गलाचिज्जंति तजहा अणूचेव बायराचेव २ एव उवचिज्जंति ३ णेरइयाणन्नंतेकतिविहापोग्गलाउदीरंति गोयमा कम्मदव्ववग्ग णमहिकिच्च दुविहापोग्गलाउदीरंति तजहा अणूचेव बायराचेव ४ सेसाविएवचेव भाणियव्वा । वेदंति ५ णिज्जरंति ६ उयट्टिंसु ७ उयट्टंति ८ उयट्टिस्संति ९ संकामिंसु १० संकामंति ११ सकामिस्संति १२ नि

॥ भाषा ॥

र्ये जाणवा पणवोजा अपेवायेनहा, जेमाटे ओदारिकादि द्रव्यमाहि कर्मद्रव्यहोज सूक्ष्मछे । णरइयाणभंते । नारकोने हेभगवन् । कइविहा । केतले प्रकार पोग्गलाचिज्जंति । पुद्गल चिये इतिप्रश्न १ गोयमा । हेगौतम । इहांए अभिप्राय शरीरआश्रयीने चय उपचय पूर्वं वखाण्याछे ते चय उपचय आहारद्रव्यथीज हुवे, अन्यथा नहुवे तेहीज कहेछे—आहारदव्वमग्गणमहिगिच्च । आहारद्रव्यवर्गणा आश्रयीने अधिकरीने । दुविहापोग्गलाचिज्जंति । बिहुप्रकारेपुद्गल चिये। तजहा । तेकहेछे—अणूचेव । अणुकहता सूक्ष्म केवलीगम्य १ । बादराचेव । बादर कहता स्थूल चरमचक्षुर्ग्राह्य इत्यर्थ २ । एवं । इम । उवचिज्जंति । उपचयपामे वृद्धिपामे ३ । णेरइयाणभंते । नारकोने हे भगवन् । कइविहेपोग्गले । केतलेप्रकारे पुद्गल । उदीरेंति । उदीरणापामे इति प्रश्न १ । गोयमा उत्तर हे गौतम । उदीरणादिका कर्म । दव्ववग्गणमहिगिच्च । द्रव्यनेज हुवे तेमाटे कह्यु कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रयीने । दुविहे पोग्गले । बिहुप्रकारे पुद्गल उदीरणापामे तेकहेछे—अणूचेव । सूक्ष्म । बादराचेव । मोटा ४ । सेसाणविएवचेव । शेष थाकता सगलाईबोल इणिपरे । भाणियव्वा । कहवा ए इम । वेदेंति । वेदे ५ । णिज्जरेति । कर्मस्थितिनू हीन करवू ते निर्जरवूकहीये ६ । उयट्टिंसु । अपवर्त्तितवत इहा अपवर्त्तनते कर्मस्थिति आदिकनू अध्यवसाय विशेषेकरी हीनकरवू इहा

॥ टीका ॥

र्त्तनमपीह दृश्यं, तच्च स्थित्यादे र्वृद्धिकरणस्वरूपं ॥ संकामेसुत्ति ॥ संक्रमितवन्त, स्तत्र संक्रमणं मूलप्रकृत्यभिन्नाना मुत्तरप्रकतीना मध्यवसायविशे षेण परस्पर सञ्चारण, तथाचाह — मूलप्रकृत्यभिन्नाः सक्रमयतिगुणउत्तरा प्रकृती नत्वात्मामूर्त्तत्वा दध्यवसायप्रयोगेण ॥ १ ॥ अपरस्त्वाह मोत्तूणआउयखलु दसणमोहचरित्तमोहच । सेसाणपगईण उत्तरविहिसकमोभणिजे ॥१॥ एतदेव निर्दिश्यते यथा कस्यचि त्सद्वेद्य मनुभवतो ऽशुभ कर्म्मपरिणाति रेवविधा जाता, येन तदेव सद्वेद्य मसद्वेद्यतया सक्रामती त्येव मन्यत्रापि योज्यम् ॥ निधत्तेसुत्ति ॥ निधत्तान् कृतवन्त, इहच वि श्लिष्टाना परस्परत पुद्गलाना निचय कृत्वा धारण रूढिशब्दत्वेन निधत्त मुच्यते, उद्वर्त्तनापवर्त्तनव्यतिरिक्तकरणाना मविषयत्वेन कर्म्मणो वस्था नमिति ॥ निकाइसुत्ति ॥ निकाचितवन्तो नितरा वद्धवन्तइत्यर्थ, निकाचनञ्च तेषामेव पुद्गलाना परस्परविश्लिष्टाना मेकीकरण मन्योन्यावगाहि ता, अग्निप्रतप्तप्रतिहन्यमानसूचीकलापस्येव सकलकरणाना मविषयतया कर्म्मणो व्यवस्थापनमिति यावत् ॥ भिज्जतीत्यादि ॥ पदाना सङ्ग्री

॥ मूल ॥

हत्तिसु १३ निहत्तति १४ निहत्तिस्सति १५ निकाइसु १६ निकायंति १७ निकाइस्संति १८। सब्वेसुवि

॥ भाषा ॥

अपवर्त्तनना उपलक्षणथको उद्वर्त्तन पणिलेवूं उद्वर्त्तनते स्थित्यादिकनू वधारवू। उयट्टिसु। स्थित्यादिकनू हीनकरवूं अतीतकाले१ उयट्टेंति। स्थित्यादिक ही नकरे वर्त्तमानकाले २। उयट्टिस्सति। स्थित्यादिकहीन करस्ये अनागतकाले३। सकामेंति। मूलप्रकृति अभिन्न उत्तरप्रकृति योने अध्यवसायविशेषेकरी मा ही माहि सचारिवो संक्रामण कहीये सक्रमायो अतीतकाले।१० सक्रमावे वर्त्तमानकाले। सक्रमावस्ये अनागतकाले ११। णिहत्तिसु। वीखरया पुद्गलकर्म ने माहो माहि निचय कहता एकठो धारवो तेहने रूढिशब्दे निधत्तकहीये अतीतकाले एकठाथाप्या १२ णिहत्तिति। २ वर्त्तमानकाले एकठाथापेछे णिहत्तिस्संति ३। १३ अनागतकाले एकठा थापस्ये। निकायसु ४।१४ निकाचितकर्म जिम सुईना गुच्छा अग्निमाहि तपावीजे ठपीजे तिवारे गाढा कठिनहोय निकाच्या अतीतकाले। निकायति। निकाचे वर्त्तमान काले। निकाइस्सति ३। १८ निकाचस्ये अनागतकाले। सव्वेसुविकम्मदव्ववग्गणमहि गिज्ञ। एव सर्वकर्मद्रव्यवर्गणा अगीकार करीने कहवो। गाहा। गाथा। भेदिय। भेदिया। चिया। चिणा। उवचिया। पुट्ठकीधा। उदीरिया। उदीरि

॥ टीका ॥

यथा ॥ भेदयइत्यादि ॥ गाथा गतार्था नवरं अपवर्त्तनसकमनिधत्तनिकाचनपदेषु त्रिविध कालो निर्देष्टव्य , अतीतवर्त्तमानाऽनागतकालनिर्देशेन तानि वाच्यानीत्यर्थ ' इह च अपवर्त्तनादीनामिव भेदादीनामपि त्रिकालता युक्ता, न्यायस्य समानत्वात्' केवल मविवक्षया न तन्निर्देश सूत्रे कृतइति' अथ पुद्गलाधिकारा दिद सूत्रचतुष्टय माह ॥ नेरइयाणमित्यादि व्यक्त नवर ॥ तेयाकम्मत्ताएत्ति ॥ तेज' कार्म्मण शरीरतया तद्रूपतये त्यर्थ ॥ अतीतकालसमएत्ति ॥ कालरूप समयो नतु समाचाररूपः कालोपि समयरूपो' नतु वर्णादिस्वरूपइति, परस्परेण विशेषणा त्काल समय ' अतीत' कालसमयो ऽतीतकालस्य चोत्सर्प्पिण्यादे· समय, , परमनिरुष्टो शो तीतकालसमय ' स्तत्र ॥ पडुप्पण्णत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो वर्त्तमानो ' नो

॥ मूल ॥

कम्मदव्वमग्गणमहिकिच्च ॥ गाहा ॥ भेदियचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिसा । उव्वट्टणसंकामण णिहत्तणिकायणेतिविहकालो ॥ १ ॥ णेरइयाणंभंतेजेपोग्गला तेया कम्मत्ताएगिरहति तेकि तीतकालसमए गिरहति पडुप्पन्नकालसमएगिरहति अणागयकालसमएगिरहति गोयमा णोतीतकालसमएगिरहति पडु

॥ भाषा ॥

यावि। दियाय। वेदिया । णिज्जिया । निर्जरा । उयट्टण। छोनकरा । सकामण । सक्रमाव्या। णिहत्तण। समूहकरा। णिकायण । निकाच्या एसवपदे ति विहकालो १। अतीतअनागतवर्त्तमानरूप त्रिविधकालकहवू ॥ हिवे पुद्गलना अधिकारथको एचारसूत्रकहेछे— णेरइयाणंभते। नारकी हेभगवन् ! जे पुग्गलातेयाकम्मत्ताए। जेपुद्गल तेजस शरीर तथा कार्मणशरोर तथा कार्मणशरीरें करीने ग्रहेछे एतावता तेजसकार्मण शरीररूप पुद्गल। गिण्हति। ग्रहेछे। तेकिं। तेस्यूं अतीतकालरूप समयपणि समाचाररूप नही कालनो समय ते परमपणि समयरूपपणि वर्णादिरूपनही तेमाहोमांहि वि शेषणथकी कालसमयइति अतीतकाल जे उत्सर्पिण्यादिकनो समय ते परमनिकृष्टअश ते अतीतकाल समयकहिये तेअतीतकाल समयेग्रहेछे। पडुप्पण काल समए गिण्हति। ग्रहेछे। अणागयकालसमए गिण्हति । अणागतकालसमये ग्रहेछे इतिप्रश्न १। गोयमा। हेगौतम । णोतीतकालसमए। अतीतकालसमये। गिण्हति। ग्रहेनहीं १। पडुप्पणकालसमए। वर्त्तमानकाल समये करीने। गिण्हति। ग्रहे। णोअणागयकालसमए। अनागतकाल

॥ टीका ॥

तीतकालेत्यादौ अतीतानागतकालविषयग्रहणप्रतिषेधो विषयातीतत्वा' द्विषयातीतत्वञ्च तयो र्विनष्टानुत्पन्नत्वेना सत्त्वादिति ' प्रत्युत्पन्नत्वे प्यभिमुखान् गृह्णाति नान्यान् ॥ गहणसमयपुरक्खडेत्ति ॥ ग्रहणसमय पुरस्कृतोवर्त्तमानसमयस्य पुरोवर्त्ती येषान्ते ग्रहणसमयपुरस्कृता प्राकृतत्वा देव निर्देशो,ऽन्यथा पुरस्कृतग्रहणसमया इतिस्यात् ' गृहीष्यमाणाइत्यर्थ ' उदीरणाच पूर्वकालगृहीतानामेव भवति ' ग्रहणपूर्वकत्वा दुदीरणायाः ' अतउक्त अतीतकालसमयगृहीता नुदीरयन्तीति ' गृह्यमाणाना ग्रहीष्यमाणाना चागृहीतत्वा दुदीरणाभाव ' स्ततउक्त ॥ नोपडुप्पणेत्यादि ॥ वेद

॥ मूल ॥

प्पन्नकालसमएगिरहति णोअणागयकालसमएगिरहति १ णेरइयाणन्नंतेजेपोग्गला तेयाकम्मत्ताएगहिएउदी रंति तेकिं तीतकालसमयगहिएपोग्गलेउदीरंति पडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपोग्गले उदीरंति गहणसमय पुरक्खडेपोग्गले उदीरंति गोयमा तीतकालसमयगहिएपोग्गले उदीरंति णोपडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपो ग्गलेउदीरंति णोगहणसमयपुरक्खडेपोग्गलेउदीरंति २ एव वेदंति ३ णिज्जरंति ४ णेरइयाणन्नंतेजीवाओकिंच

॥ भाषा ॥

समये करीने । गिण्हंति । गृहेनही । णेरइयाण भंते । नारकीने हेभगवन् । जेपोग्गला । जेपुद्गल । तेयाकम्मत्ताए । तैजस कार्मणपणें । उदीरेंति । उदीरे । तेकितीयकालसमयगहीए । तेस्यूं अतीतकालसमये गृह्या । पोग्गले । पुद्गल । उदीरेंति । उदीरे । पडुप्पणकालसमए । वर्त्तमानकालसमये । घि प्पमाणे । लेताथका । पोग्गले । पुद्गल । उदीरेंति । उदीरे । गहणसमय पुरक्खडे । गृहणसमयथकी आगलसमयें । पोग्गले उदीरेंति । पुद्गलनी उ दीरणाकरे इतिप्रश्न , उत्तर।गोयमा । हेगौतम । तीयकालसमय गहीए । अतीतकालसमय गृहीत । पोग्गले । पुद्गलप्रतें । उदीरेंति । उदीरें । णोपडुप्प ण्णकालसमए घेप्पमाणे । वर्त्तमानकालसमयें गृहीष्यमाण कहता गृहीता । पोग्गले । पुद्गल तेहनी । उदीरेंति । उदीरणाकरेनही । णोगहणसमय पुरक्खडे पोग्गले । जेगृहणसमयथको पुद्गल आगल्यू जेसमय तेहनेविषे गृहस्ये जेपुद्गल तेहनी । उदीरेंति । उदीरणानकरें । एव । इम । वेदेंति । वेदे । णिज्जरेंति । इमजनिर्जरे वेदनानिर्जरा सूत्रेपणि उत्पत्तिएहीज जाणवी ॥ हिवे कर्माधिकारथकी एअष्टसूत्रीकहेछे—णेरइयाणंभंते । नारकी हेभ

॥ टीका ॥

नानिर्ज्जरासूत्रयो रप्येवं चोपपत्तिरिति' अथ कर्माधिकारादेवेय मष्टसूत्री ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्ताच नवरं ॥ जीवाणंकिंचलियंति ॥ जीवप्रदेशेभ्य श्चलित' तेष्वनवस्थानशील तदितर श्चचलित' तदेव बध्नाति, यदाह—कत्स्नैर्देशै स्वकदे शस्थरागादिपरिणतोयोग्य। बध्नातियोगहेतो क संस्नेहात्कइवचमल ॥ १ ॥ एव मुदीरणावेदनापवर्त्तनासक्रमणनिधत्तनिकाचनानि भाव्यानि' निर्जरातु पुद्गलाना निरनुभावीकृताना मात्मप्रदेशे

॥ मूल ॥

लियकम्मवंधंति अचलियंकम्मंवंधंति गोयमा णोचलियकम्मबंधंति अचलियकम्मवंधंति १ णेरइयाणंभंतेजीवाणंकिंचलियकम्मउदीरंति अचलियंकम्मंउदीरंति गोयमा णोचलियकम्मउदीरंति अचलियकम्मउदीरंति २ एव वेदंति ३ उयट्टंति ४ संकामंति ५ निहत्तंति ६ णिकायंति ७ सव्वेसुअचलियंणोचलियं ॥ णेरइयाणंभंते जीवाणं किं चलियकम्मंणिज्जरेंति अचलियंकम्मंणिज्जरेंति गोयमा चलियकम्मंणिज्जरेंति णोअचलियकम्मं

॥ भाषा ॥

गवन् । जीवार्था । जीवप्रदेशथकी । किंचलियकम्म । स्यूंचल्यूंकर्म ते । बंधंति । बंधे अथवा । अचलियकम्म । जीवप्रदेशथी चल्यूंनथी तेकर्म । बंधंति । बाधे । इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णोचलियकम्म । तेजसकर्मने योगेकरी चलितकर्म । बंधंति । बाधेनहीं । अचलियकम्म । अचलितकर्म । बंधंति बाधे । एसूत्रपहिलोकह्यो १ । णेरइयाणभंते । नारकी हेभगवन् । जीवाथी । जीवप्रदेशथी । किंचलियकम्म । चलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे अचलियंकम्म । अथवा जीवप्रदेशथो अचलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णोचलियकम्म उदीरेंति । चलित कर्मनी उदीरणा करेनहीं । अचलियकम्मं । अचलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे एवीजोसूत्रकह्यो २ । एय । इम । वेदेंति । वेदे एत्रीजो ३ । उयट्टिंति ४ । हीनकरवो । सकामेंति ५ । संक्रमावे । णिहत्तेंति ६ । धारवो । णिकायेंति ७ । निकाचे । सव्वेसु । एसर्वनेविषे । अचलित । अचलितकर्मलेवो णोचलित । नहीचलितकर्म ॥ हिवे आठमो सूत्रकहेछे—णेरइयाण भंते । नारकीने हेभगवन् । जीवाथी । जीवप्रदेशथी । किंचलियकम्म । स्यूंचलित कर्म । णिज्जरेंति । निर्जरे । अचलियकम्म । वाअचलितकर्म ८ । णिज्जरेंति । निजरे इतिप्रश्न, । उत्तर । हेगौतम ! चलियकम्म । चलितकर्म । णिज्जरेंति ।

न्यः शातन' साच नियमा चलितस्य कर्म्मणो नाचलितस्येति' इह सङ्ग्रहणीगाथा' बन्धोदये त्यादि अविताथी' केवल मुदयशब्दे नोदीरणा गृहीतेति' उक्ता नारकवक्तव्यता, अथ चतुर्विंशतिदण्डकक्रमागता मसुरकुमारवक्तव्यतामाह ॥ असुरकुमाराणामित्यादि ॥ तत्रासुरकुमारवक्तव्यता नारकवक्तव्यताव न्नेया, यतः ॥ ठिइऊसासाहारेत्यादि ॥ गाथोक्तानि सूत्राणि ४० ॥ परिणायचिएत्यादि ॥ गाथागृहीतानि ६ ॥ नेइयचिएत्यादि ॥ गाथा गृहीतानि१८ ॥ बधोदयेत्यादि॥ गाथागृहीतानि ८। तदेव द्विसप्तति सूत्राणि नारकप्रकरणोक्तानि, त्रयोविंशता वसुरादिप्रकरणेषु समानि,

णिज्जरेंति ८ ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोवट्ट संकमणणिहत्तणिकाएसु । अचलियंकम्मतुनवे चलियजीवाउणि ज्जरए ॥ १ ॥ असुरकुमाराणंभंते केवइयंकालं ठिई पसत्ता गोयमा जहस्सेणंदसवाससहस्साइठिई पसत्ता

निर्जरे पणि । णोअचलियकम्म । अचलितकर्म । णिज्जरेंति । निर्जरेनहीं एआठसूत्रकह्या ॥ इहागाहा । संग्रहणीगाथाकहेछे—बधंत्ति । नवाकर्मनो ग्रह ण १ । उदय । उदयतेविपाक वेदनकर्म उदयेनथी पाम्यो ते आकर्षी उदयेंआणीये तेउदीरणा २ । वेद । तथा वेदवो ३ । अवट्ट । कर्मनाखित्यादि अध्यव साय विशेषकरीहीनकरवू ते अपवर्त्तन ४ । संकमे । सद्देद्यकर्मते असद्देद्यपणें संक्रमावे ते संक्रामणकहीये ५ । तह । तथा । णिहत्त । वीखरया पुदग लनो माहोमाहि समूहकरी धारवूं ते निधत्त ६। णिकाए । वीखराजे पुदगल तेमाहोमाहि एकीभावकरीये एनिकाचन जिमसूईनो समूह अग्निसू त पावे कूटी एकीभावेकाजे तिम ए सातने विषे ७। अचलियकम्मतुभवे । अचलितकर्मलीजे अने आठमो सूत्र निर्जरा । चलिय । चलितकर्म । जीवाथी जीवप्रदेशथी । णिज्जरए । निर्जराकरे ८ एनारकीनी वक्तव्यताकही ॥ हिवे चउवीस दंडक क्रमागत असुरकुमारनी वक्तव्यता कहेछे—असुरकुमारा ण । असुरनिकायने विषे ऊपना अने कुमारनो परेखेलें तेहवा देव ते असुरकुमारदेव कहीये, असुरकुमारनो । भंते । हेभगवन् ! केवइयकाल । केत लाकालनी ठिइ पसत्ता । स्थिति कही इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । जहस्रेणं । जघन्यतो । दसवाससहस्साइ । दशसहस्रवर्षनी । ठिई पसत्ता । स्थिति कही । उक्कोसेणसातिरेगसागरोवम । उत्कृष्टथकोतो एकसागरोपम झाझेरो स्थितिकही ते उत्तरश्रेणोना बलीन्द्र ने आश्रीने, जाणवी । वली गौ

॥ टीका ॥
नवर विशेषोय ॥ उक्कोसेणं साइरेग सागरोवममिति ॥ यदुक्त न्तद्बलिसञ्ज्ञ असुरकुमारराज माश्रित्योक्त यदाह—चमर १ वलि२ सार१ मद्दियं१ तिसत्तपरयोवाणत्ति ॥ समाना स्तोकाना मुपरी तिगम्यते' स्तोकलक्षण चैव माचक्षते—हट्ठस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स जंतुणो ॥ एगेऊसासणी सासे एसपाणुत्तियुच्चइ ॥ १ ॥ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिमेलवे । लवाणमत्तहत्तरिए एसमुहुत्ते वियाहिएत्ति ॥ २ ॥ इद जघन्य मुच्छ्वासादि त ज्जघन्यस्थितिकाना श्रित्या वगन्तव्य मुत्कृष्ट चोत्कृष्टस्थितिकाना श्रित्येति ॥ चउत्थभत्तस्सत्ति॥ चतुर्थभक्त मित्येकोपवासस्य सञ्ज्ञा' तत स्त्र्यो

॥ मूल ॥
उक्कोसेणसाइरेगसागरोवमं । असुरकुमाराणन्नंते केवइयकालरसआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । पुच्छा । गोयमा जहणेणसत्तणहथोवाण उक्कोसेणंसाइरेगरसपक्खस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । असुरकुमाराणंन्नतेआहारट्ठी हता आहारट्ठी । असुरकुमाराणन्नते केवइयकाल रसआहारट्ठेसमुप्पज्जइ गोयमा असुरकुमाराणदुविहे आहारे पणत्ते तजहा आभोगणिव्वत्तिएय अणाभो

॥ भाषा ॥
तमपूछेछे । असुरकुमाराण भंते । असुरकुमार हेभगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आणमंतिवा । सासोसास लेछेके ४ । पुच्छा । इसोप्रश्नकी धो तिवारे भगवतकहे । गोयमा । हेगौतम । जहणेण । जघन्यथकी । सत्तण्ह थोवाण । सातस्तोके एजघन्यस्थिति आश्रयीकह्यु ॥ रोगरहित पुरुषने सा ते सासोस्वासे एक स्तोक कहीये । उक्कोसेणं । उत्कष्टथको तो । साइरेगस्सपक्खस्स । एकपखभाभेरे । आणमंतिवा । स्वासोश्वासलीय उत्कष्टस्थिति आ श्री जाणवो ४ । असुरकुमाराण भंते । असुरकुमारदेवता हेभगवन् । आहारट्ठी । आहारार्थी भोज्यवाछकछे आहारनो अर्थकहीये प्रयोजनछे जेहनेते आहारार्थीकहीये । इतिप्रश्न, उत्तर । लोभीछे । हता । हामहानुभाव । आहारट्ठी । आहारनाअर्थीवाछकछे, वली गौतमपूछेछे—असुरकुमाराणभंते । असुरकुमारने हेभगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आहारट्ठे । आहारनीवाछा । समुप्पज्जइ । ऊपजेतिवारे भगवतबोल्या—गोयमा । हेगौतम । असुर कुमाराण । असुरकुमार देवताने । दुविहे । बेप्रकारनो । आहारे । आहार । पणत्ते । कह्यो । तजहा । तेकहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । जाणता जेआहारकरी

गणिव्वत्तिएय । तत्थणं जेसेअणाभोगणिव्वत्तिए सेअणुसमयंअविरहिएआहारट्ठेसमुप्पज्जइ । तत्थणंजेसेआ भोगणिव्वत्तिए सेजहन्नेणचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणंसाइरेगस्सवाससहस्सस्सआहारट्ठेसमुप्पज्जइ । असुरकुमा राणभंतेकिमाहारमाहारिंति गोयमा दव्वओअणंतपएसियाइदव्वाइ खेत्तकालभावपन्नवणागमेणं सेसजहाणेरइ याणं जाव तेणंतेसिपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा सोइंदियत्ताए सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए इठ

निर्वर्त्तितकरीये ते आभोगनिर्वर्तित कहीये। अणाभोग। अजाणता आहार ते अनाभोगथकी। णिव्वत्तिएय। निवर्त्यो ते अनाभोगनिर्वर्त्तित कहिये। तत्थण। तिहांछे आहरमाहे, णइसे वाक्यालंकारे। जेसेअणाभोगणिव्वत्तिएसे। जेजीव अणाभोग अणजाणता आहारनकरे ते अनाभोगनिर्वर्त्तित आहार। सेअणुसमय। ते जीव समयसमय प्रते। अविरहिए। अविरहितथका करे तेहने समये २ अनाभोगनिवर्त्तित। आहारट्ठे। आहारनुं अर्थ समुप्पज्जइ। उपजे। तत्थणजेसे। तिहाजे। आभोगणिवत्तिए। आभोगे जाणता आहारनो निहत्तिकरे। सेजहण्णेण। ते जघन्यथकीतो। चउत्थभत्त स्स। चतुर्थभक्तते एक उपवासनो सन्नाछे एकदिनेआहारकरो पछे वीजोदिन अतिक्रमी त्रीजेदिनवली आहारकरे। उक्कोसेण। उत्कृष्टथकीतो। साइरे गस्स। सातिरेककाई अधिक। वाससहस्स। वर्षसहस्रे। आहारट्ठे। अहारनोवाछा। समुप्पज्जइ। उपजे चतुर्थभक्तते जघन्यस्थिति आश्रयीछे अनेसा धिकवर्ष सहस्र ते उत्कृष्टस्थितिआश्रयी जाणवो, वली गौतम पूछेछे—असुरकुमाराणभते। असुरकुमार हेभगवन्। किमाहार। काइ आहारभक्ष आहारेति। आहारेग्रहे इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा। हेगौतम। दव्वओ। द्रव्यथी। अणतपएसियाइदव्वाइ। अनतप्रदेशात्मक द्रव्यप्रते आहारे। खेत्तकाल भावपन्नवणागमेण। खेत्रकाल भावथी जिम श्रीश्यामाचार्यकृत पन्नवणा चौथाउपांगमाहे कह्यूछे — तिम विचारवो। सेस। शेष थाकतो। जहा। जि म। णेरइयाण। नारकोने पूर्वकह्या विचार तिम इहांपणि करवो। जाव। यावत्। तेण। तेकारणथको। तेसि। तेअसुरकुमारदेवताने। पोग्गला। पुद गल। चयोपचयधर्म कोसत्ता। भुज्जो२। फिरीफिरी वारवार। परिणमति। परिणमे पुष्टहोय। इमपूछ्या, उत्तर। गोयमा। हेगौतम। सोइंदियत्ताए

॥ टीका ॥ परि एकत्र दिने भुक्त्वा होरात्र मतिक्रम्य तृतीये भुञ्जत इतिभाव॰ ' नागकुमारवक्तव्यतायां ॥ उक्कोसेणं देसूणाइं दोपलिउवमाइति ॥ यदुक्तं तदु

॥ मूल ॥ त्ताए इच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए णोअहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । असुरकुमाराणंभंतेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया असुरकुमाराभिलावेणं जहाणेरइयाणं जावचलियंकम्मंणिज्जरेंति णागकुमाराणंभंते केवइयंकालंठिईपण्णत्ता गोयमा जहण्णेणंदसवाससहस्साइंठिईपण्णत्ता उक्कोसेणंदेसूणाइंदो पलिउवमाइं । णागकुमाराणंभंते केवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । गो

॥ भाषा ॥ श्रोत्रेयें करीविशेष रागादिकशब्द साभलिवा । सुरूवत्ताए । सर्वोत्कृष्ट मनोहररूपेकरी । सुवण्णत्ताए । सर्वोत्कृष्ट मनोहरवर्णेकरी । इट्ठत्ताए । सवअंगो पागसुखकारि पणायकी । इच्छियत्ताए । ईप्सितकरी अत्यंत सुखदायीपणाथी । अभिज्झियत्ताए । वारवारदसोईजथाय तोभलाइसीवाञ्छाये । उड्ढ त्ताए । ऊर्द्धताये जेंइदेव प्रधानइयो । णोअहत्ताए । नहीअधोलोकपणें नारकोनीअपेचाये । सुहत्ताए । सुखभाये मनुष्यनी अपेचाये । णोदुहत्ताए । सुहत्ताए । सुखभाये मनुष्यनीअपेचायें । णोदुहत्ताए । नही दुखकरी सर्वमनसाधकपणायकी । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वारवार परिणमे अशाताये नभो गवे वली गौतमपूछेछे—असुरकुमाराणभंते । असुरकुमारने हेभगवन् । पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया । पूर्वग्रह्या पुद्गल पुष्ट अपुष्टरूप ते परिणया उदयआया । असुरकुमाराभिलावेण । असुरकुमारना आलावानेविषे । जहाणेरइयाण । जिम नारकीने आलावे पूर्वकह्या तिम असुरकुमारने विषे पणि कहवू जाव यावत् जीवप्रदेशथी । चलियकम्मणिज्जरेंति । चलितकर्म निर्झरे चयकरे इत्यर्थ, ए असुरकुमारनी वक्तव्यता कही ॥ हिवे नागकुमारनी वक्तव्यता पूछेछे—णागकुमाराण भंते । नागकुमारदेवने । हेभगवन् । केवइयकालंठितीपणत्ता । केतले कालनी स्थिति कही ? एसे प्रश्नकीधे उत्तर भगवान बोल्या हेगौतम । जहण्णेणदसवाससहस्साइं । जघन्यथकी दश सहस्र वर्षनी । ठिईपणत्ता । स्थिति कही ए सामान्यदेवनी अपेचायें । उक्कोसेण देसूणाइं दोपलिओवमाइं । उत्कृष्टथकी देशेऊणा दोय पल्योपमनीस्थिति एह उत्कृष्टस्थिति उत्तरश्रेणीना इंद्रआश्रयी कहवी , वली गौतम पूछेछे—

तरश्रेणि माश्रित्या वसेय यदाह—दाहिणदिवड्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणमिति ॥ मुहुत्तपुहुत्तस्सत्ति ॥ मुहूर्त्तं उक्तं तदाणएव पृथक्त्वन्तु द्विप्रभृति रा

॥ मूल ॥

यमा जहन्नेणंसत्तण्हंथोवाणं उक्कोसेणंमुहुत्तपुहुत्तस्सञ्चाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । णागकुमाराणंभंतेञ्चाहारट्ठी हंता ञ्चाहारट्ठी । णागकुमाराणंभंतेकेवइयकालस्सञ्चाहारट्ठेसमुप्पज्जइ गोयमा णागकुमाराणंदुविहेञ्चाहारेपन्नत्ते तंजहा ञ्चाभोगणिव्वत्तिएय ञ्चणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्थणंजेसेञ्चणाभोग

॥ भाषा ॥

णागकुमाराणभंते । नागकुमारदेवने हेभगवन् । केवइयकालस्सञाणमंतिवा ४ । केतलेकाले सासोसास हुवे इतिप्रश्न , उत्तर । गोयमा । हेगौतम । जहन्नेणसत्तण्हथोवाणं । जघन्ये साते स्तोके सासोसास जाणवो जघन्यस्थिति आश्रयीने । उक्कोसेणमुहुत्तपुहुत्तस्सआणमंतिवा ४ । उत्कृष्टथकी तो तेत्रीससे तिहुत्तर सासोसासे एक मुहूर्त्त ते पृथक्त्वके बेथकी माडी नवताई सख्याविशेषनी सिद्धांतमांहे पृथक्त्व संज्ञाछे ए उत्कृष्ट स्थितिनाधणीने हुवे , वली गौतम पूछेछे—णागकुमाराणभंते । नागकुमारने हेभगवन् ! आहारट्ठी । आहारनी वांछाछे ? हंता । जिम तूं कहे ते तिमज इसे अर्थे हंता इसो कहीयेछे आहारट्ठी । आहारनीवाछा , वली गौतम पूछेछे—णागकुमाराणभंते । नागकुमारने हेभगवन् । केवइयकालस्सआहारट्ठे । केतलेकाले आहारनी इच्छा समुप्पज्जइ । ऊपजे इसे पूछाथका उत्तर । गोयमा हेगौतम ! णागकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते । नागकुमारने बिहुभेदे आहार कह्यो । तंजहा । ते कहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । पर्याप्ता वस्थायें तदणावस्थाये जाणता आहारकरे ते आभोगनिवर्त्तित । अणाभोगनिव्वत्तिएय । ऊपजवाने समये अपर्याप्ता वस्थायें अथवा जाणतां आहारकरे ते अनाभोगनिवर्त्तित । तत्थणंजेसेअणाभोगनिव्वत्तिए । तिहा जे अणाभोगनिवर्त्तित आहारकरे । सेअणुसमयविरहिए । तेजीव समय समय प्रतें अविरहितथका करे निरंतरकरे । आहारट्ठे । ते अविच्छिन्नपणे निरतर आहाराभिलाष । समुप्पज्जइ । ऊपजे । तत्थण जेसे आभोगनिव्वत्तिए । तिहा जे आभोगनिवर्त्तित आहार करे । सेजहन्नेण चउत्थभत्तस्स । ते जघन्ये चतुर्थभक्त एकांतरे आहारनी इच्छा ऊपजे । उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स । उत्कृष्टथकीतो दिवसपृथक्त्व बेथीमाडी नवताइ पृथक्त्व कहीजे तेनले । अहारट्ठे समुप्पज्जइ । आहारनी इच्छा ज

॥ टीका ॥

नवरन्य सङ्गाविशेष समयेप्रसिद्ध ॥ एव सुवणकुमाराणति ॥ नागकुमाराणामिव सुपर्णकुमाराणामपि स्थित्यादि वाच्य' इदञ्च कियद्दूरं यावद्वाच्य मित्याह ॥ जावथणियकुमाराणति ॥ यावत्करणात् विद्युत्कुमारादिपरिग्रह एषा चेहायक्रमो यसेय –असुरा १ नाग२ सुवणा ३ विज्जू ४ अग्गी य ५ दीव ६ उदहीय ७ । दिसि ८ वाऊ ९ थणियाविय १० दसभेयाभवणवासीण ॥१॥ अथ भवनपतिवक्तव्यतानन्तर दण्डकक्रमादेव पृथिव्यादीना स्थित्यादि निरूपयन्नाह ॥ पुढवीत्यादि ॥ व्यक्त भावनस्पतिसूत्रा नवरं ॥ अंतोमुहुत्तत्ति ॥ मुहूर्तस्या न्त रन्तर्मुहूर्त्त भिन्नमुहूर्त्तमित्यर्थ ॥ उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइंति ॥ यदुक्त' तत् खरपृथिवी माश्रित्या वगन्तव्य, यदाह–सण्हाय१ सुद्ध१२ वालुय १४ मणोसिला १६ सक्कराय १८

॥ मूल ॥

णिवृत्तिए सेअणुसमयंअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ तत्थणंजेसेआभोगणिवृत्तिए सेजहन्नेणंचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणंदिवसपुहत्तस्सआहारठेसमुप्पज्जइ सेसंजहा असुरकुमाराणं जाव चलियंकम्मंणिज्जरेंति ॥ एवं सुवणकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणंति ॥ पुढविकाइयाणंभंते केवइयंकालंठिईपन्नत्ता गोयमा जहन्नेणंअं तोमुहुत्तं उक्कोसेणंबावीसंवाससहस्साइं । पुढविकाइयाणंभंतेकेवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊ

॥ भाषा ॥

पजे । सस जहा । थाकता सर्व जिम । असुरकुमाराण । असुरकुमारने कह्या तिमसर्वकहवो । जाव चलिय कम्म । यावत् चलितकर्म । णिज्जरेंति । नि जरे चयकरे इत्यर्थ । एव सुवणकुमाराणवि । इम सुवर्णकुमारनेपणि कहवो । जावथणियकुमाराणंति । यावत् स्तनितकुमार ताइं कहवो । ए भुवन पतीनी वक्तव्यताकही ॥ हिवे दंडकक्रमागत पृथिवीनी वक्तव्यता कहेछे—पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकायनी हेभगवन् । केतलाकालनीस्थिति कही इतिप्रश्न । उत्तर । गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्त । हेगोतम । जघन्यथको अंतर्मुहूर्त्त । उक्कोसेणबावीस वाससहस्साइं । उत्कृष्टथको बावीससहस्रवर्ष खरपृथिवीकायआश्री कह्यो । पुढविकाइयाणभंते । पृथिवीकाय हेभगवन् । केवइयकालस्स आणमतिवा । केतलेकाले सासोसास ल्ये मूंके इसे गोतम पूछ्याथका भगवत उत्तर करेछे–गोयमा वेमायाए आणमतिवा ४ । हेगोतम । जेहना सासोसासनो मर्यादानही विविध मात्रा काल विभाग एतले

॥ टीका ॥

खरपुढवी २२ । एगवारसचोदस सोलसअठारवावीसत्ति ॥ १ ॥ वेमायाएत्ति ॥ विषमा विविधावा मात्रा कालविभागो विमात्रा तया' इदमुक्तं भवति' विषमकाला पृथिवीकायिकाना मुच्छ्वासादिक्रिया इयत्काला दिति न निरूपयितु शक्यते ॥ जहानेरइयाणमित्यतिदेशात् ॥ खेत्तउ असंखेज्जपएसो गाढाइ कालउ अन्नयरठिईयाइं इत्यादि ॥ दृश्य ॥ निव्वाघाएणं छद्दिसिंति ॥ व्याघात आहारस्य लोकान्तनिष्कुटेषु सम्भवति' नान्यत्र ततो निष्कुटेभ्यो ऽन्यत्र षट्सु दिक्षु कथ चतसृषु पूर्वादिदिक्षु ऊर्द्ध मधश्च पुद्गलग्रहणं करोति, तस्य स्थापना ॥ वाघायपडुच्चत्ति ॥ व्याघात म्प्रतीत्यव्याघातश्च निष्कुटेषु' तत्रच ॥ सियतिदिसिंति ॥ स्यात्कदाचित्तिसृषु दिक्षु आहारग्रहणं भवति, कथं यदा पृथिवीकायिको ऽधस्तने उपरितनेवा;

॥ मूल ॥

ससंतिवा नीससंतिवा गोयमा वेमायाएआणमंतिवापाणमंतिवा ऊससंतिवानीससंतिवा । पुढविकाइयाणं भंतेआहारठी हंतागोयमा आहारठी । पुढविकाइयाणंभंतेकेवइयकालस्सआहारठेसमुप्पज्जइ गोयमा अणुसमयंअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ । पुढविकाइयाणंभंतेकिमाहारमाहारेंति गोयमा दव्वउजहाणेरइयाणं

॥ भाषा ॥

पृथिवीकाइयाने एतलेकाले सासोसास एहवो कही सकीये नही ४ वलो गौतम पूछेछे । पुढविकाइयाणंभंते आहारठी । पृथिवीकायना जीवने हेभगवन् । आहारनीइच्छाछे ? भगवत कहेछे—हंतागोयमा आहारठी । हांगौतम पृथिवीकाइया आहारना अर्थीछे । पुढविकाइयाणं भंते केवइय । पृथिवी काइया जीवने हेभगवन् । केतले । कालस्स आहारठे समुपज्जइ । काले आहारनीइच्छा ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणुसमय अविरहिए अणुसमये सातत्यपणे अविरहित निरंतरे । आहारठे समुपज्जइ । आहाराभिलाष ऊपजे । पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकाइया जीव हेभगवन् । किमाहार माहारेंति । स्यूं आहार आहारे छे इत्यर्थं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दव्वओजहा णेरइयाणं । हेगौतम ! द्रव्यथी जिम नारकीने पूर्वकह्यो तिम इहांपणि जाणवो । णिव्वाघाएणं छद्दिसिंवाघायपडुच्च । व्याघात आहारनो लोकातनिष्कुटनेविषे संभवे बीजेस्थानके नही तेमाटे लोकना निष्कुटटालो बीजेस्थानकें छदिशिनो आहारहुयेते किम पूर्वादि ४ ऊर्द्ध ५ अधो ६ एव छदिशिनो पुद्गलग्रहण करे व्याघातआश्री लोकातने खूणे । सिय

॥ टीका ॥

कोणे वस्थित स्या त्तदा ऽधस्ता दलोक पूर्वदक्षिणयो श्चालोक इत्येवं तिसृणा मलोकेना वृतत्वा त्तदन्या सु तिसृषु पुद्गलग्रहण मेवमुपरितनकोणे पि वाच्य, यदा पुन रध उपरि चालोको नवति' तदा चतसृषु दिक्षु यदातु पूर्वादीना मेणा दिशा मन्यतरस्या मलोकोनवति, तदा पञ्चस्विति ॥ फासउकक्खडाइति ॥ इह कर्कशादयो रूक्षान्ता. स्पर्शा दृश्या ॥ सेसतहेवत्ति ॥ शेष नणितावशेष तथेव, यथा नारकाणा तथा पृथिवी कायिकानामपि, तच्चेद ॥ जाइ नते लुक्खाइ आहारेति ताइ कि पुठाइ अपुठाइ जइ पुठाइ कि उगाढाइ इत्यादि ॥ नाणत्तति ॥ नानात्व नेद, पुन पृथिवीकायिकाना नारकापेक्षया हार प्रतीदं, यथा ॥ कइनागमित्यादि ॥ तत्र ॥ फासाइतिति ॥ स्पर्श कुर्वन्ति स्पर्शयन्ति स्पर्शेन्द्रि

॥ मूल ॥

णिव्वाघाएणंछदिसिंवाघायपडुच्च सियतिदिसि सियचउदिसिं सियपंचदिसिं वन्नउ कालनीलपीत्तलोहियहालिद्दसुक्किलाणं गधउ सुब्भिगधदुरब्भिगधाइं रसउ तित्ताइं फासउ करककडाइं ८ । सेसतहेव णाणत्तं कइभागं

॥ भाषा ॥

तिदिसि । कदाचित् तीनदिशिनो आहारले जिवारेजिवारे पृथिवीकाइयो जीव नीचले तथाउपरलेखूण उपजे तिवारे नीचे अलोक पूर्वादि विदिशियें अलोक हुवे तिवारे तीनदिशिनो आहारले तथा । सियचउदिसिसियपचदिसि । उपरे तथा नीचे अलोक नहुये तिवारे चारिदिशिनो आहारले तथापि छदिशिमाहिलो अनेरो एकदिशें अलोकहुवे तिवारे पचदिशिनो आहारले जिहा लोकात निष्कुटहुवे तिहा विचारी भजनाकरवी । वन्नओकालनीलपीअलोहियहालिद्दसुक्किलाण । पृथिवी काइया पचवर्ण तेकहेछे—वर्णथीकाला आकाशतुल्य १ नीला नीलकमलसरीखा २ पीला सुवर्णसरीखा ३ लोहित हसपाकमन सिलसरीखा ४ शुक्लस्फाटिक रत्नादिक सरीखा ए पचप्रकारे पुद्गलआहारे । गधओसुब्भिगध० २ । गंधथकी सुगध १ दुर्गंध २ बेहुप्रकारे आहारे । रसओतित्ताइ ५ । रसथी तिक्तादि पाच सूठ आदिदेइ तेनीपरे । फासओकक्खडाइ ८ । स्पर्शथी इहा कर्कश आदिदेरूक्षपर्यंत आठेइग्रहवा । सेसंतहेव णाणत्त । कह्याथी शेष नारकीनीपरे जाणवो एतलोविशेष आहारआश्री एह । कइभाग आहारेंति । केतलाभाग आहारें । कइभाग फासाइ ति । केतला भाग आस्वादे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । असखेज्जइभाग आहारेंति । पुद्गलनो असख्यातमो भा

येणाहारपुद्गलाना कतिभागं स्पृशन्तीत्यर्थं , अथवा; स्पर्शेना स्वादयन्ति, प्राकृतशैल्या फासायन्ति स्पर्शेनवा आददति गृह्ण न्त्युपलभन्तइति फासाइति॥ इद मुक्त भवति, यथा रसनेन्द्रियपर्याप्तिपर्याप्तका रसनेन्द्रियद्वारेणा हारमुपभुञ्जाना आस्वादयन्तीतिव्यपदिश्यते, एव मेते स्पर्शने न्द्रियद्वारेणेति ॥ सेसंजहानेरइयाणंति॥ तच्चैवं॥ पुढविकाइयाणंभंते । पुव्वाहारियापोग्गला परिणया इत्यादि ॥ प्राग्वद्व्याख्येयमिति॥ एव जाव वणस्सइकाइयाणंति ॥ अनेन पृथिवीकायिकसूत्रमिवा प्कायिकादि चत्वारि सूत्राणि समानी त्युक्त, स्थितौ पुन र्विशेषो तएवाह, नवर ॥ ठिई वन्नेयव्वा जाजस्सत्ति॥ तत्र जघन्या सर्वेषा मन्तर्मुहूर्त्त , मुत्कृष्टा त्वपा सप्तवर्षसहस्राणि, तेजसा महोरात्रत्रय, वायूना त्रीणि वर्षसहस्राणि, वनस्पतीना

आहारेंति कइभागंफासाइति गोयमा असखेज्जइभागंआहारेंति अणतभागफासाइति । जाव तेणंपोग्गला कीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिमंति । गोयमा फासिदियवेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति सेसजहाणेरइयाण जाव णोअचलियंकम्मणिज्जरेंति एवंजाववणस्सइकाइयाणं णवरं ठितीवसेतव्वा जाजस्स उस्सासोवेमायाए वेइं

ग एतावता अतिसूक्ष्म स्तोक आहारे। अणतभाग फासादिति । अनतभाग असख्याताथकी पणि अतिसूक्ष्मतर स्पर्शवत पुद्गलप्रते आहारकरे । जाव तेण तेसिपोग्गला कीसत्ताए भुज्जो २ परिणमति । यावत् तेपृथिवीकायिक जीवाने पुद्गल किसीरीते बार बार परिणमें अगेलागे इतिप्रश्न । उत्तर । गो यमा । हेगौतम । फासिदिय । स्पर्शनेन्द्रिये पहिलीये । वेमायाएभुज्जो २ परिणमति । विषममात्रा अथवा विविधमात्रा कालविभाग तिणेकरी एत ले मर्यादा कहीनजाय इम बारवार परिणमे। सेसजहाणेरइयाण । कह्याथी थाकतो जिम नारकीने कह्यो तिम जाणवूं तेइम । पुढविकाइयाण भंते पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया । इत्यादि किहावाई । जाव णो अचलियकम्म णिज्जरेंति । यावत् नहीं जीवथी अचलितकर्म निर्जरे चयकरे एतलाता इ कहवो । एवजाववणस्सइकाइयाण णवरं ठितीवसेतव्वा । इम पृथिवी सूत्रनोपरे अप्कायादिक चारिसूत्र सरीखा कहवा यावत् वनस्पतीकाय लगे एतलोविशेष स्थितिने विषे भेदकहवो तेकहेछे—तिहा जघन्यतो सर्वनी अतर्मुहूर्त्तनी स्थितिछे अने उत्कृष्टीतो अप्कायनी सातसहस्रवर्षं ते

॥ टीका ॥
दर्शेति, उक्ताचेयं पृथिव्यादिक्रमेण—बावीसाइंसहस्सा १ सत्तसहस्साइं २ तिन्निहोरत्ता ३। वाएतिन्निसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारुक्खत्ति ५॥१॥ वेइंदियाणठिइत्तणिऊणऊसासोवेमायाएत्ति॥ वक्तव्य इतिशेष , स्थितिश्च द्वीन्द्रियाणा द्वादशवर्षाणि, द्वीन्द्रियाणा माहारसूत्रे, यदुक्त—तत्यणजे से आभोगनिव्वत्तिए ॥ सेण असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइत्ति ॥ तस्या यमर्थ , असङ्ख्यातसामयिक आहारकालो भ वति, सचा वसर्प्पिण्यादिरूपो प्यस्ती त्यत उच्यते, आन्तर्मौहूर्त्तिक स्तत्रापि विमात्रयान्तर्मुहूर्त्तसमयासङ्ख्यातत्वस्या सङ्ख्येयभेदत्वा दिति ॥ वेइं

॥ मूल ॥
दियाणठितीभाणियव्वा ऊसासोवेमायाए। वेइंदियाणंआहारेपुच्छा अणाभोगणिव्वत्तिएतहेव। तत्थणजेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ सेसतहेव जाव अणंत भागआसायंति। वेइंदियाणभंतेजेपोग्गलेआहारत्ताएगिण्हंति तेकिंसव्वेआहारेंति णोसव्वेआहारेंति गोयमा

॥ भाषा ॥
ऊकायनी तीन अहोरात्रि वाउकायनी तीनसहस्रवर्ष वनस्पतीकायनी दशसहस्रवर्ष पृथिवीआदिदेई पांचेईनी भेली स्थिति कहेछे—बावीसाइंसह स्सा १ सत्तसहस्साइं २ तिण्णिहोरत्ता ३ वाएतिण्णिसहस्सा ४ दसवाससहस्सियारुक्खा। वेइंदियाणठितीभाणियव्वा। पंचथावरनी वक्तव्यताकही ॥ हि वे बेइंद्रियादिकहेछे—बेइंद्रीनो स्थिति बारेवरसनी कहवी। ऊसासाबेमायाए। सासो स्वासपणि मर्यादा रहितहोय। वेइंदियाण आहारे पुच्छा। शंखादिने आहारनी पृच्छा आहारनो प्रश्नकीधो। अणाभोगणिव्वत्तिए तहेव। अजाणता आहार करेते लोमाहारनी अपेक्षायेंकह्यूं अन्यथा ओजा हार तो सगलाईनेछे तोत्रलोस्यूं कहवो। तत्थण जेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणअसंखेज्जसमइए। तिहांजे जे आहारग्रहे तेअसंख्यातसमयिक आहारका लहुवे तेतो अवसर्प्पिणीकालपणि असंख्यात समयिकछे तेमाटेकहेछे—अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ। तिहांपणि बेमात्रायें अंतर्मुहूर्त्तने वि षे समय असंख्यात पर्णेकरी। सेसतहेव। शेषथाकतो तिमहीजकहवो। जावअणंतभागआसायंति। यावत् पूर्वोक्तसर्वकहवो अनंतभाग आस्वादेताल गें कहवो। वेइंदियाणभंते जेपोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति। वेइंदिय हेभगवन्। जेपुद्गल आहारपणे ग्रहे खाय। तेकि सव्वेआहारेंति। तेस्यूं सर्व

द्रियाणं दुविहे आहारे पन्नत्ते लोमाहारे पक्खेवाहारेयत्ति ॥ तत्र लोमाहार: खल्वोघतो वर्षादिषु य: पुद्गलप्रवेश: ससूत्रादवगम्यतइति , प्रक्षेपाहारस्तु कावलिक स्तत्र प्रक्षेपाहारे बहवो ऽस्पृष्टाएव शरीरा दन्तर्बहिश्च विध्वसन्ते , स्थौल्यसौक्ष्म्याभ्यां , अतएवाह ॥ जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गेण्हंतीत्यादि ॥ अणेगाइंचणं भागसहस्साइंति ॥ असङ्ख्येयाभागा इत्यर्थ ॥ अणासाइज्जमाणाइंति ॥ रसनेन्द्रियत ॥ अफासाइज्जमाणाइंति स्पर्शनेन्द्रियत ॥ कयरेत्यादि ॥ यत्पठ तदेव दृश्यम् ॥ कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावत्ति ॥ व्यक्तञ्च ॥ सव्वत्थोवापो

बेइंदियाणंदुविहेआहारेपन्नत्ते तंजहा लोमाहारेयपक्खेवाहारेय जेपोग्गलेलोमाहारत्ताएगिरहंति तेसव्वेअपरिसेसिएआहारेंति जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताएगिरहंति तेसिणंपोग्गलाणंअसंखेज्जइभागंआहारेंति अणेगाइंचणंभागसहस्साइंअणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति एएसिणंभंतेपोग्गलाणंअणासाइज्जा

पुद्गल आहारे। पासव्वेआहारेंति। किंवा सवआहारेनहीं एप्रश्नकीधा उत्तर। गोयमा। हेगौतम। बेइंदियाणं दुविहे आहारे पन्नत्ते तंजहा। बेइंद्रियने स्पर्शन रसनवंतने बेप्रकारे आहार कह्यो तेकहेछे—लोमाहारेय पक्खेवाहारेय। लोमाहार प्रक्षेपाहार तिहांलोमाहार निश्चे ओघथकी वर्षादि कालने विषे जेपुद्गलप्रवेश होय तेसूत्रगम्यछे प्रक्षेपाहारते कवलरूप तिहां प्रक्षेपाहारनेविषे घणा अणफरस्याथका जेशरीरथकी माहि तथा बाहिर विध्वसपामे स्थूल सूक्ष्मथकी अतएव आह—जेपोग्गले इत्यादि। जेपुद्गल लोमाहारपणे ग्रहेछे। तेसव्वेअपरिसेसिए आहारेंति। तेसर्व अपरिशेष आहारे समस्तनो भक्षणकरे। जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति। प्रक्षेपाहारते कवलाहार जेपुद्गल प्रक्षेपाहारपणे ग्रहेछे। तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइभाग आहारेंति। तेह पुद्गलाप्रते अपचय उपचयरूपेकरी असंख्यातमोभागप्रते आहारग्रहे। अणेगाइंचणंभागसहस्साइं। अनेक घणा भागसहस्र। अणासाइज्जमाणाइं। अनास्वाद्यमानरसनेंद्रियेकरी आस्वादियानहीं। अफासाइज्जमाणाइं। अस्पृश्यमानस्पर्शनेंद्रियेकरी स्पर्शानहीं। विद्धंसमावज्जंति। विध्वसप्रतेपामे। एएसिणंभंते पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं। एहोने हेभगवन् पुद्गलाने रसनेंद्रिये अनास्वाद्यमानाने। अफासाइज्जमाणाणय। स्पर्शने

॥ टीका ॥

ग्गला अणासाइज्जमाणेत्यादि ॥ ये अनास्वाद्यमाना केवलं रसनेन्द्रियविषया स्ते स्तोका अस्पृश्यमानाना मनन्तभागवर्त्तिन इत्यर्थं , ये त्वस्पृश्य माणा केवल स्पर्शनविषया स्तेनन्तगुणा रसनेन्द्रियविषयेभ्य सकाशादिति ॥ तेइंदियचउरिंदियाणं नाणत्त ठिईयत्ति ॥ तच्चेद ॥ अन्नत्तेणं अ तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेइंदियाणं एगूणपन्नासराइंदियाइं चउरिंदियाणं छम्मासा ॥ तथा आहारेपि नानात्वं तत्रच ॥ तेइंदियाणं भंते । जेपोग्ग

॥ मूल ॥

माणाणं अफासाइज्जमाणाणय कयरे२हिंतोअप्पावा ४ जावा तुल्लावा विसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवा पोग्गलाअणासाइज्जमाणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा बेइंदियाणंभंतेपोग्गलाआहारत्ताएगिण्हंति तेणं तेसिंपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा जिब्भिंदियफासिंदियवेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति । बेइंदियाणंभंतेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणयातहेव जाव चलियंकम्मंणिज्जरेंति । तेइंदियचउरिंदियाणणाणत्त

॥ भाषा ॥

न्द्रिय अणास्वाद्यमानाने पणिनुमाहिं । कयरे २ हिंतो अप्पावा । कुण २ थकी थोडाहोय । बहुलावा । घणाहोय । तुल्लावा । सरीखाहोय । विसेसाहियावा । विशेषाधिकहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम । सव्वत्थोवापोग्गला अणासाइज्जमाणा । सर्वथी थोडा पुद्गल जे केवल रसनेंद्रियने विषयछे ते अस्वाद्यमान पुद्गलने अनंतभागवर्त्तीछे तेमाटे तेहथी । अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अस्पृश्यमान केवल स्पर्शनविषयछे ते अनंतगुणा रसनेंद्रिय विषय पुद्गलथको । बेइंदियाणं भंते पोग्गला । वली गोतम पूछेछे—बेइंद्रियजीव हेभगवन् । पुद्गलाप्रते । आहारत्ताएगिण्हंति । आहारपणे भक्ष्यपणे ग्रहे । तेणंतेसिंपोग्गलाकीसत्ताए । ते ते पुद्गलबेइंद्रियजावाने किसोतरे । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वारवार परिणमेए प्रश्न । उत्तर भगवंतकहेछे—गो यमा । हेगोतम । जिब्भिंदिय फासिंदियवेमायाए । रसनेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये विमात्राये अनेकप्रकार कालविभागपणें । भुज्जो २ परिणमंति । वारंवा रपरिणमे । बेइंदियाणं भंते । बेइंद्रियजीवने हेभगवन् । पुव्वा हारिया पोग्गला परिणया तहेव । पूर्वेआहारायाथकापुद्गल परिणमे इत्यादिक पूर्वे कह्योछे तिमजकहवो । जावचलिय कम्मं णिज्जरेंति । यावत् चलितकर्म निर्जरे क्षयकरे । तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्त ठिईए । तेइंदिय चउरिंद्रियने

ले आहारत्ताए गेण्हंति इत्यत आरभ्य तावत् सूत्र वाच्यं' यावत् ॥ अणेगाइंचणं भागसहस्साइं आणाघाइज्जमाणाइं इत्यादि ॥ इहच द्वीन्द्रियसूत्रापेक्षया ऽनाघ्रायमाणानीति' अतिरिक्तं मतो नानात्व एव मल्पबहुत्वसूत्रे परिणामसूत्रेच' चतुरिन्द्रियसूत्रेपुतु परिणामसूत्रे ॥ चक्खिंदियत्ताए घाणिंदियत्ताए ॥ इत्यधिकमिति' नानात्वमिति पञ्चेन्द्रियतिर्यक्सूत्रे ॥ ठिई भणिऊणंति जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइं

ठिईए जाव अणेगाइंचणंभागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति । एएसिणंभंतेपोग्गलाणंअणाघाइज्जमाणाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाणयपुच्छा गोयमा सव्वत्थोवापोग्गलाअणाघाइज्जमाणा अणासाइज्जमाणाअणंतगुणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा ते इंदियाणंघाणिंदिय जिब्भिंदियफासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । चउरिंदियाणंचक्खिंदियघाणि

नानात्व स्थिति ते इम जहन्नेण अंतोमुहुर्त्त उक्कोसेण इ दियाण अणगमन्नदिणाइं ४८ दिनचउरिंदियाण छमासा आहारनेविषेपणि नानात्व जाव अणेगाइं चणभागसहस्साइं । यावत् अनेक एतावता घणा भागसहस्र । अणाघाइज्जमाणाइं । अनाघ्रायमान ते घ्राणेंद्रिये । अणासाइज्जमाणाइं । अनास्वाद्यमानते रसनेंद्रिये । अफासाइज्जमाणाइं । अस्पृश्यमानते स्पर्शनेंद्रिये । विध्वसमावज्जंति । विध्वसविनाशपामे । एएसिणं भंते । एहने हेभगवन् । पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाणं । पुद्गलाने अनाघ्रायमानाने । अणासाइज्जमाणाणं । अनास्वाद्यमानाने । अफासाइज्जमाणाणय पुच्छा । अस्पृश्यमानाने माहोमाहि अल्प बहुत्वछे इत्यादिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम । सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा । सर्वथी थोडा पुद्गल अनाघ्रायमान घ्राणेंद्रिये । अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अनास्वाद्यमान रसनेंद्रिये ते अनंतगुणा । अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अस्पृश्यमान पुद्गल स्पर्शनेंद्रिये ते अनंतगुणा । तेइंदियाणं । तेरिंद्रीने । घाणिंदिय । घ्राणेंद्रियने । जिब्भिंदिय फासिंदिय । जिह्वेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये । वेमायत्ताए । अनेकविध कालविभागपणे । भुज्जो २ परिणमंति । वारंवार परिणमे । चउरिंदियाणं । चउरिंद्रियने । चक्खिंदिय । चक्षुरिंद्रिये । घाणिंदिय । घ्राणेंद्रिये । जिब्भिंदिय । जिह्वेंद्रिये ।

॥ टीका ॥

इत्येतद्रूपा स्थिति र्भणितव्या ॥ उस्सासोत्ति ॥ उच्छ्वासो विमात्रया याच्यइति तथा तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां माहारार्थमति यदुक्तं ॥ उक्कोसेणं छट्ठभत्त इत्येतद्रूपा स्थिति र्भणितव्या ॥ तद्देवकुरूत्तरकुरुतिर्यक्षु लभ्यते, मनुष्यसूत्रे यदुक्तं अष्टमभक्तस्येति, तद्देवकुर्वादिमिथुनकनरा नाश्रित्य समवसेयमिति, ॥ वाणमंतराण रसाति ॥

॥ मूल ॥

दियजिब्भिंदियफासिंदियत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणठिईभणिऊण ऊसासोवे मायाए आहारोआणाभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयअविरहिए आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेणअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स सेसंजहाचउरिंदियाणं जाव चलियकम्मंणिज्जरेंति एवमणुस्साणवि णवरं आभोगणिव्वत्तिए जह ण्णेणअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंअट्ठमभत्तस्स सोइंदिय ५ वेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति सेसंतहेव जावचलियंकं

॥ भाषा ॥

फासिंदियत्ताए । स्पर्शेन्द्रिये । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वार २ परिणमे । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण । पचेंद्रियतिर्यचयोनिकने । ठिई भणिऊण । स्थिति मते कहवो ते जघन्येअतोमुहुर्त्त उक्कोसेणं तिणिपलिओवमाइ एटलीस्थिति कहीये । ऊसासोविमायाए । उत्स्वास विमात्राये मर्यादारहित कहवो । आहारोअणाभोगनिव्वत्तिए । आहारते अध्य ते अनाभोग अजाणपणे करता । अणुसमइय अविरहिओ । अनुसमय प्रतिसमय तेसातत्यजणावयानेअर्थे विरह विना ते निरंतरकरे । आभोगनिव्वत्तिओ । आभोगे जाणपणे करे ते आभोगनिवर्त्तित कहीये । जहण्णेण अंतोमुहुत्त । जघन्यथी अतर्मुहूर्त्तं करे उक्कोसेण छट्ठ भत्तस्स । उत्कृष्टथी षटभक्त ते देवकुरुउत्तरकुरुना तिर्यचआश्री जाणवो । सेसंजहा चउरिंदियाण । शेष कह्याथी बाकी ते जिम चउरि द्रिय कह्या तिम जाणवू । जावचलियं कम्म णिज्जरेंति । यावत् जीवप्रदेशथी चलितकर्मनो निर्जरे क्षयकरे । एव मणुस्साणवि । इमहीज तिर्यचनीपरे मनुष्यनेपणि जाणवो । णवरं आभोगणिव्वत्तिए । एतना विशेष जाणता आहारनिवर्त्तकरे । जहण्णेण अतोमुहुत्त । ते जघन्ये अतर्मुहूर्त्त । उक्कोसेणअ ट्ठम भत्तस्स सोइंदिय । उत्कृष्टो अष्टमभक्त एपणि देवकुरु उत्तरकुरु मनुष्यआश्रीजाणवो युगलने हुवे पाथमो थोत्र कान तेहीज इन्द्रीय । वेमायाए भुज्जो २ परिणमंति । वेमात्राइ वार २ परिणम शरीर पुष्टकरे । सेसंतहेव । शेषआकतो तिमहीज । जावचलियकम्मं णिज्जरेंति । यावत् चलितकर्म

॥ टीका ॥

मित्यादि ॥ वाणमतराणा स्थितौ नानात्वं ॥ अवसेसंति ॥ स्थितेरवशेष मायुष्कवर्जं मित्यर्थं , प्रागुक्त माहारादिवस्तु यथा – नागकुमारादीना तथा दृश्य व्यन्तराणां नागकुमाराणाञ्च प्राय समानधर्मत्वात्, तत्र व्यन्तराणा स्थिति जंघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेणतु पल्योपममिति ॥ जोइसियाणपीत्यादि ॥ ज्योतिष्काणा मपि स्थिते रवशेषं तथैव, यथा – नागकुमाराणा, तत्र ज्योतिष्काणा स्थिति जंघन्येन पल्योपमाष्टभाग, उत्कर्षेण पल्योपम वर्षलक्षाधिकमिति, नवर ॥ उस्सासत्ति ॥ केवल मुच्छ्वास स्तया न नागकुमारसमान , किंतु वक्ष्यमाण स्तथाचाह ॥ जहन्नेण मुहुत्तपुहुत्तस्सेत्यादि ॥ पृथक्त्व न्द्विप्रभृति रानवभ्य, स्तत्र यज्जघन्य मुहूर्त्तपृथक्त्व' न्तद्द्वित्रा मुहूर्त्ता , यच्चोत्कृष्ट तदष्टौ नववेति, आहारोपि

॥ मूल ॥

म्मणिज्जरेंति वाणमंतराणठिईएणाणत्तं अवसेसंजहाणागकुमाराण एवजोइसियाणवि णवरं उस्सासोजहण्णेणमुहुत्तपुहुत्तस्सउक्कोसेणविमुहुत्तपुहुत्तस्स आहारोजहण्णेणंदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणविदिवसपुहुत्तस्स से

॥ भाषा ॥

निर्जरेचयकरे। वाणमतराण ठिईएणाणत्त। वाणव्यतरने आयु कर्म वर्ज्यो सर्व सरीखु स्थितिने विषे नानात्वभेद जाणवो। अवसेस जहा णागकुमाराण। शेष आहारादिक वस्तु जिम नागकुमारने कह्यु तिमज जाणवो व्यतरने नागकुमारने प्राये समानधर्मछे अने स्थिति जघन्य व्यतरने दशसहस्रवर्ष उत्कृष्ट एकपल्योपमनीछे। एवजोइसियाणवि। इमनागकुमारनो परे ज्योतिषो जाणवा स्थिति जघन्ये पल्योपमनो आठमो भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम लाख वरसे अधिक। णवर उस्सासो जहण्णेण मुहुत्तपुहुत्तस्स। एतलो विशेष उत्स्वास जघन्येपणि मुहूर्त्त पृथक्त्व बेथकीमाडी नवताई न पृथक्त्व सघाळे पणिइहा जघन्ये मुहूर्त्त जाणवा। उक्कोसेणविमुहुत्तपुहुत्तस्स। उत्कृष्टथको पणि मुहूर्त्त पृथक्त्व सासो स्वासछे इहा उत्कृष्टेमुहुर्त्त पृथक्त्व सघाळे तेजघन्ये ते आठ तथानव मुहुर्त्त जाणवा। आहारो जहण्णेण दिवसपुहुत्तस्स। आहारपणि जघन्ये दिवस पृथक्त्व बेथी माडी नवताई पृथक्त्वसघाळे तेजघन्ये बे तथा तीनदिवस जाणवो । उक्कोसेणवि दिवस पुहुत्तस्स उत्कृष्टापणि दिवसपृथक्त्व ते आठ तथा नवदिन जाणवा। सेसतचेव । शेषथाकता ति मज पूठिलीपरे। वेमाणियाणठिई भाणियव्वा ओहिया । वेमानिकनी स्थिति कहवी औघिक एतले सामान्ये सर्व आयो तेहम जघन्यथी एकपल्योपम

॥ टीका ॥

विशेषितएव, तथाचाह ॥ आहारोइत्यादि ॥ वेमाणियाणठिईत्राणियव्वाउहियत्ति ॥ औघिकी सामान्या साचपल्योपमादिका, त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्ता, तत्र जघन्या सौधर्म माश्रित्यो त्कृष्टा चानुत्तरविमानानीति, उच्छ्वासप्रमाणतु जघन्य जघन्यस्थितिकदेवा नाश्रित्ये तरत्तु उत्कृष्टस्थितिका नाश्रित्येत्यर्थ, अत्रगाथा–जस्सजइसागराइ तस्सठिईतत्तिएहिपक्खेहि ॥ ऊसासोदेवाण वाससहस्सेहिं आहारोत्ति ॥ १ ॥ तदेतावता ग्रन्थेनोक्ता चतुर्विंशतिदण्डकवक्तव्यता इयञ्च केषुचित् सूत्रपुस्तकेषु ॥ एवठिईआहारोइत्यादिना ॥ अतिदेशवाक्येन दर्शिता साचेतो विवरण

॥ मूल ॥

संतचेव वेमाणियाणंठिईत्राणियव्वाउहिया उस्सासोजहस्रेणंमुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएपक्खाण आहारोआभोगणिव्वत्तिउ जहस्रेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएवाससहस्साणसेसतचेव जावणिज्जरेंति एवठितीआहारोयत्राणियव्वो ठितीजहाठितीपदेतहात्राणियव्वा सव्वजीवाण आहारोयजहापन्नवणाएपढने

॥ भाषा ॥

आदिदेई उत्कृष्टथी तेत्रीस सागरोपम पर्यंत ते जघन्य सौधर्मआश्री उत्कृष्ट अनुत्तरविमान आश्रीने जाणवो। उस्सासोजहस्रेण मुहुत्तपुहुत्तस्स। उत्सास जघन्ये मुहूर्त पृथक्त ते जघन्य सौधर्मनीस्थिति आश्रयीने जाणवो। उक्कोसेण तेत्तीसाएपक्खाण। उत्कृष्टो तेत्रीसपक्ष ते उत्कृष्टस्थिति अनुत्तर देव आश्रयीने जाणवो। आहारोआभोगणिव्वत्तिओ जहस्रेण दिवसपुहुत्तस्स। इम आहारपणि जाणता निवर्त्तित जघन्ये दिवस पृथक्त्व होय ते जघन्य स्थिति आश्री जाणवो। उक्कोसेण तेत्तीसाएवाससहस्साण। उत्कृष्टथी तेत्रीससहस्रवर्ष ए उत्कृष्ट स्थितिआश्री जाणवो इहां गाथा जस्सजइसागराइ ठिईतस्सतत्तिएहिपक्खेहि। ऊसासोदेवाण वाससहस्सेहिंआहारोइति ॥ १ ॥ सेसतचेव। शेषसर्व तिमज जाणवो। जावणिज्जरेंति यावत् चलितकर्म निर्जरे। एवठित्ती आहारोय भाणियव्वो। इम स्थिति आहारपणि जाणवो। ठितीजहाठितीपदे तहा भाणियव्वा। स्थिति जिम स्थितिपद जिम पन्नवणामाहि कह्योछे तिम कहवू। सव्वजीवाण। सर्वजीवने। आहारोय जहा पन्नवणाएपढमे आहारउद्देसए तहा भाणियव्वो। आहार जिम पन्नवणानामे चौथा उपांगनेविषे पहिले आहारने उद्देशे जिमकह्योछे तिम इहापणि कहवो। एत्तोआढत्तो। इहांलगे जाणवो यावत् चउवीस दंड

॥ टीका ॥

ग्रन्था दवसेयेति , उक्ता नारकादिधर्मवक्तव्यते यच्चारम्भपूर्विकेति आरम्भनिरूपणायाह ॥ जीवार्णभंते ! किं आयारम्भेत्यादि ॥ आरम्भो जीवोपघात
उपद्रवणामित्यर्थ ' सामान्येनवा, अवद्वारप्रवृत्ति स्तत्र आत्मान मारम्भन्ते आत्मनावा; स्वय मारम्भन्ते इत्यात्मारम्भा, स्तथा परमारम्भन्ते परेणवा;
रम्भयन्तीति परारम्भा' स्तदुभय मात्मपररूप तदुभयेनवा, रम्भन्तइति तदुभयारम्भा आत्मपरोभयारम्भवर्जिता स्त्वनारम्भा इतिप्रश्न , अत्रोत्तरं
स्फुटमेव' नवरं अस्ति शब्दस्याव्ययत्वेन बहुत्वार्थ त्वादस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थ ' अथवा; अस्ति अत्र स्पष्टो यदुत ॥ एगयत्ति ॥ एकका एके केचने
त्यर्थ ' जीवा आत्मारम्भा अपीत्यादा वपिशब्द उत्तरपदापेक्षया समुच्चये' स चात्मारम्भत्वादिधर्माणा मेकाश्रयताप्रतिपादनार्थ.' भिन्नाश्रयताप्रति
पादनार्थोवा, एकाश्रयत्वञ्च कालभेदेना वगन्तव्य' तथाहि-कदाचि दात्मारम्भा. कदाचि त्परारम्भा. कदाचि त्तदुभयारम्भा अतएव नो अनारम्भा

॥ मूल ॥

आहारुद्देसएतहाभाणेयव्वो एत्तोआढत्तोणेरइयाणभंतेआहारट्ठी जावदुक्खत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति जीवा
णभंतेकिंआयारम्भा परारम्भा तदुभयारम्भा अणारम्भा गोयमा अत्थेगइयाजीवाआयारंभाविपरारम्भावितदुभ

॥ भाषा ॥

क । णेरइयाणभंते आहारट्ठो । नारकी हेभगवन् । आहारना अर्थी छे । जाव दुक्खत्ताए भुज्जा २ परिणमंति । यावत् दु.खपणे अप्रीतिपणे बार २ परि
णमे पहिला नारकीनो वक्तव्यताकह्यो ते आरंभ पूर्वकछे तेमाटे आरंभनिरूपण करेछे । जीवाण भंते किं आयारंभा । जीवा ण इसे वाक्यालकारे हे
भगवन् । स्वजीवनो घात आपणपे करे ते आत्मारंभी छे । परारंभा । अनेरापास जीवघातकरावे ते परारंभीछे । तदुभयारंभा । आपणपेंपणि जीव
घातकरे अनेरापासेपणि करावे ते तदुभयारंभी छे । अणारंभा । जीवनोघात नकरे न करावे न अनुमोदें ते अणारंभीछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हे
गौतम । अत्थे गइया जीवा आयारंभावि । केईएक जीव पोताने अर्थे आत्मारंभी पणि छे आपणपेज सकल्पीने जीवनो घातकरे छे । परारंभावि ।
परारंभीपणि जीवघात करावेछे । तदुभयारंभावि । तदुभयारंभीपणिछे आपणपे जीवघातकरे अनेरापासपणि जीवघात करावे । णो अणारंभा । प
णि अनारंभी नही । अत्थेगइया जीवा । छे केईएक जीव । णोआयारंभा । नहीं आत्मारंभी आपणपे जीवनो घातनकरे । णोपरारंभा । नही परार

॥ टीका ॥

जिनाश्रयत्व त्वेव, एके जीवा असयताइत्यर्थ, आत्मारम्भावापरारम्भावेत्यादि गर्थैकस्वज्ञावत्वात् जीवाना जेद मसम्भावयन्नाह ॥ सेकेणठेणाति ॥ अथ केन कारणेनेत्यर्थ ॥ दुविहापसत्तत्ति ॥ मया चान्यैश्च केवलिजि रनेन समस्तसर्वविदा मताजेदमाह' मतजेदेतु विरोधिवचनतया तेपा मसत्य वचनतापत्ति ' पाटलिपुत्रस्वरूपाजिधायकाविरुद्धवचनपुरुपकदम्बकवदिति, प्रमत्तसयतस्यशुज्ञो ऽशुज्ञश्च योगः स्या त्सयतत्वात् प्रमादपरत्वा च्चेत्य

॥ मूल ॥

णारम्भा । सेकेणठेणं यारंभावि णोआणारम्भा अत्थेगइयाजीवा णोआयारम्भा णोपरारंभा णोतदुभयारंभा अणारम्भा । सेकेणठेणं भंतेएवंवुच्चइ अत्थेगइयाजीवाआयारंभावि एवंपडिउच्चारेयव्वं गोयमा जीवादुविहा पसत्ता तजहा संसार समावसगाय असंसारसमावसगाय तत्थणंजेतेअसंसारसमावसगाय तेणसिद्धा सिद्धाणंणोआयारम्भाजाव अणारंभा । तत्थणंजेतेससारसमावसगा तेदुविहा पसत्ता तंजहा संजयायअसजयाय । तत्थणजेतेसंजया

॥ भाषा ॥

भो अनेरापास जोवघात नकरावे । णातदुभयारभा । नहो तदुभयारभो आपजोवघात नकरे अनेरापासपणि नकरावे । अणारभा । एतलामाटे अना रभीछे । सेकेणठेणभते एववुच्चइ । गौतम पूछेछे तेस्ये अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यूं । अत्थेगइयाजीवा आयारभावि । कोतलाएक जीवप्राणी आत्मारंभी पणिछे पोताने अर्थे आरभकरे । एवपडिउच्चारेयव्व । इमसर्व पूर्वकह्यो तिमपाछिलूं कहवूं इमप्रश्न आगलपणि सर्वत्रापि कहवूं उत्तर । गोयमा । हेगौतम! जी वादुविहापणत्ता तजहा । जीव बेप्रकारना कह्या मैं अथवा अन्य केवलीयें एतले समस्त तीर्थंकरना मतने विषे भदनही इमकह्यूं तेकहेछे—ससारसमा वणगाय । एकजीव देव १ मनुष्य २ तिर्यंच ३ नारकी ४ रूप चारिगतिने विषे ससरणकरे तेससारसमापन्नकहियें । असंसारसमावणगाय । बी जा जीव चारिगतिसूं बेगलाछे एतले मुक्तिगया ते असंसारसमापन्न कहिये । तत्थ ण जेते अससारसमावणगा । तिहा ण इसे वाक्यालंकारे जेजीव चारि गति रूप ससार तिहा अनतीवार भमीभमीने समस्त कर्मक्षयरूप स्थानक पाम्या । तेणसिद्धा । ते पनरभेदे सिद्ध थया । सिद्धाण णो आयारभा जाव अणारभा । तेसिद्ध आत्मारभी नही एतले परारभी पण नही तदुभयारभी पणि नहीं एतावता सिद्ध सर्वथा आरभ रहितछे । तत्थण जेते संसारसमा

तत्राह ॥ सुहजोगंपडुच्चत्ति ॥ शुभयोगउपयुक्ततया प्रत्युपेक्षणादिकरणं अशुभयोगस्तु तदेवानुपयुक्ततया आह च — पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइ तसाण । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपिविराहओहोइ ॥ १ ॥ तथा — सव्वोपमत्तजोगो समणस्सउहोइआरंभोत्ति ॥ अतः शुभाशुभौ योगावात्मारम्भादि

तदुविहा पसत्ता तंजहा पमत्तसंजयाय अपमत्तसंजयाय तत्थणंजेतेअपमत्तसंजया तेणंणोआयारंभा णोप रारंभा जाव अणारंभा। तत्थणंजेतेपमत्तसंजया तेसुहजोगंपडुच्च णोआयारंभा णोपरारंभा जावअणारंभा। असुहंजोगंपडुच्च आयारंभाविजावणोअणारंभा तत्थणं जेते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभावि

वक्षगा । तिहा अनन्तरेकह्या, वेपच तेमांहे जे ससार चतुर्गति लक्षण तेहनेविषे रह्याजीव । तेदुविहा प०तं । तेबेप्रकारे बेभेद कह्या तेकहेछे—संजया य असंजयाय । एकजीव संयता कहता संयमी बीजाजीव चारित्र रहित पहिले गुणठाणे वर्त्तें ते । तत्थणं जेतेसंजया तेदुविहा प०तं । तिहा संयती असंयती मांहे जे संयती चारित्रवंतछे ते बेप्रकारे कह्या तेकहेछे—पमत्तसंजयाय । प्रमत्तसंयत छट्ठागुणठाणानेविषे वर्त्तें ते । अपमत्तसंजयाय । अप्रमत्त संयतप्रमाद रहित साधु सातमा आदिदेई गुणठाणानेविषे वर्त्तें । तत्थणंजेते अपमत्तसंजया । तिहां प्रमत्त अप्रमत्तबेउ मांहेजेते अप्रमत्तसंयमी सप्त मादिगुणठाणें वर्त्तें तेसाधु । तेणंणोआयारंभा । ते साधु नही आत्मारंभी पोते आरंभ नकरे अप्रमादी पणांथी । णो परारंभा । ते परारंभी पणि नही जाव अणारंभा । यावत् तदुभयारंभीपणि नहीं एतावता अनारंभीछे । तत्थणंजेतेपमत्तसंजया । ते बिहुपचमांहे जे प्रमत्तसंयती ते शुभ अशुभ वियोग होय तिहा । तेसुहजोगंपडुच्च । ते पडिलेहण आदि सावधानपणें करें ते अंगीकार करीने । णो आयारंभा णोपरारंभा जावअणारंभा । नही आत्मार भी नहीं परारंभी नही तदुभयारंभी सर्व आरंभरहितछे एतावता अणारंभीछे । असुहजोगंपडुच्च आयारंभावि जाव णोअणारंभा । पडिलेहण आ दि उपयोग रहित असावधान पणेंकरे यथा—पुढवीआऊकाए तेऊवाऊवणस्सइतसाण । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपिविराहणाहोइ ॥ १ ॥ तथा सव्वो पमत्तयोगी समणस्सहोइआरंभोत्ति ॥ तेआत्मो आत्मारंभो छे परारंभो छे तदुभयारंभो छे पणि अणारंभोनही एतले शुभ अशुभ योग तेहोज आरंभ

॥ टीका ॥ कारणमिति ॥ अविरइंपडुच्चत्ति ॥ इहा यन्माभावो यद्य प्यसंयताना सूक्ष्मैकेन्द्रियादीना नात्मारम्भकादित्वं साक्षादस्ति तथा प्यविरतिं प्रती त्येत दस्तितेषा नहि ते ततो निवृत्ता अतो सयताना मविरति स्तत्र कारणमिति, निवृत्तानातु कथञ्चि दात्माद्यारम्भकत्वे प्यनारम्भकत्व, यदाह – जा जयाणस्सजवे विराहणासुत्तविहिसमग्गस्स ॥ साहोइणिज्जरफला अज्झत्थविसोहिजुत्तस्सत्ति ॥ १ ॥ सेतणठेणाति ॥ अथ तेन कारणेनेत्यर्थ , अथ आत्मारम्भकत्वा दित्वमेव नारकादि चतुर्विंशतिदण्डके निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त नवर ॥ मणुस्सेत्यादी ॥ अयमर्थ. मनुष्येषु

॥ मूल ॥ जाव णोअणारंभा सेतेणठेणंगोयमा एवंवुच्चइ अत्थेगइयाजीवा जाव अणारंभा ॥ णेरइयाणंभंतेकिंआया रंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा गोयमा णेरइया आयारंभाविजावणोअणारंभा सेकेणठेणंभंतेएवंवु च्चइ गोयमा अविरतिपडुच्च सेतेणठेणंजावणोअणारंभा एवजावपंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्साजहाजी

॥ भाषा ॥ ना कारणजाणवा। तत्थण जेते असजयाते अविरति पडुच्च। तिहा पूर्वे कह्या जे वेपचमाहे असयती छे ते अविरति आश्रीने एतावता अविरतीछे ते आयारभावि जाव णो अणारभा। आत्मारंभीछे यावत्शब्दे तदुभयारंभी छे पणि अनारंभी नहीं। सेतेणठेण। तेणें कारणे करी। गोयमा। हेगौतम! एववुच्चइ। इणे प्रकारे कह्यु। अत्थेगइयाजीवा जाव अणारभा। केतलाएक जीव आत्मारंभी आदिदेई यावत् शब्दे आरंभरहितछे एतलातांई कहवा णेरइयाणभंते किंआयारभा परारभा तदुभयारभा अणारभा॥ हिवे आत्मारंभकादि पणू तेहीज नारकादि चउवीसदण्डकें कहेछे—नारकी हेभगवन्! स्यूं आत्माने अर्थें आरंभपापकरे अथवा परारंभीछे पारकेवास्ते सावद्यकार्यकरे बेजने अर्थें पापकार्यकरे अथवा अणारंभीछे आरंभरहितछे इतिप्रश्न भगवत कहेछे—गोयमा। हेगौतम। णेरइया आयारभावि जाव णोअणारभा। नारकी आत्मार्थेपणि आरंभवतछे इम यावत् परारंभीपणिछे तदुभ यारंभीपणि छे पणि आरंभरहित नहीछे एतावता अणारंभी नही। सेकेणठेणभंते एववुच्चइ। तेकिसे अर्थे हेभगवन्! इमकह्यु इतिप्रश्न भगवतकहेछे— गोयमा। हेगौतम! नही विरति जेहने ते अविरती कहिये अविरति पणाथी आत्मारंभी आदिदेई तोनेईछे पणि अनारंभीनही। सेतेणठेणजाव णोअ

॥ टीका ॥

संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तभेदाः पूर्वोक्ताः सन्ति तत स्ते यथाजीवा स्तथा ऽध्येतव्याः, किन्तु संसारसमापन्ना इतरेच ते न वाच्या भवर्तित्वा देव तेषा मित्येतदेवाह ॥ सिद्धविरहिएत्यादि ॥ व्यन्तरादयो यथा नारकास्तथा ध्येया असयतत्वसाधर्म्यादिति, आत्मारम्भकत्वादिभि धर्मै जीवा निरूपिता स्तेच सलेश्या अलेश्याश्च भवन्तीति, सलेश्यां स्तां स्तैरेव निरूपयन्नाह ॥ सलेसाजहाओहियत्ति ॥ लेश्या कृष्णादिद्रव्यसान्निध्यजनितो जीवपरिणामो यदाह—कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मन । स्फटिकस्येवतत्राय लेश्याशब्द प्रयुज्यते ॥१॥ तत्र सलेश्या लेश्यावतो जीवा ॥ जहाओहियत्ति ॥ यथा नारकादिविशेषणवर्जिता जीवाअधीता ॥ जीवाणं भंते ! किं आयारम्भा परारम्भेत्यादिना ॥ दण्डकेन तथा सलेश्या जीवा अपि वाच्या, सलेश्याना मससारसमापन्नत्वस्या सम्भवेना ससारसमाप्पन्ने त्यादिविशेषणवर्जितना शेषाणा सयतादिविशेषणाना तेष्वपि युज्यमानत्वा त्तत्रचायं पाठक्रम ॥ सलेसाणं भंते ! जीवा किं आयारम्भेत्यादि ॥ तदेव सर्व नवर जीवस्थाने सलेश्याइति वाच्यमिति, अयमेको

॥ मूल ॥

वाणवरसिद्धविरहिताभाणेयब्वा वाणमंतराजाववेमाणिया जहाणेरइया सलेस्साजहाओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स काउलेसस्स जहाओहियाजीवा णवरपमत्तअपमत्ताणभाणियब्वा तेउलेसस्सपम्हलेसस्ससुक्कलेस

॥ भाषा ॥

णारभी । तेणेकारणे यावत्शब्दें एभाव ज विरतिवत ते अणारभी हुवे अने जे अविरती ते अनारभीनही इत्यर्थ । एवजाव पचिदिय तिरिक्खजोणिया । इम यावत् शब्दें असुरकुमार आदिदेई पचेंद्रिय तिर्यच योनिक लगें जाणवो अविरति पणाथी आत्मारभी परारभी तदुभयारभी होय पणि अणारंभी नही इमकहवो । मणुस्सा जहाजीवा णवर सिद्धविरहिया भाणेयव्वा । मनुष्यनेविषे सयतासयत प्रमत्ताप्रमत्त एचारभेद पूर्वे कह्याछे—तेमाटे जिमसग ले जीवआश्रीकह्या तिममनुष्य जांणवा पारेभागे एतलोविशेष सिद्धपारेभागे रहित तेमाटे सिद्धविना कहवा । वाणमतरा जाव वेमाणिया जहाणेरइ या सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स । वानव्यंतरआदिदेई यावत् वैमानिकताई तिम कहवा जिम नारकीकह्या तिमज जाणवा एस र्व अविरतिपणे साधर्म्यछे तेमाटे आत्मारभपणेंकरी जीवकह्या तिके सलेशी अलेशीहुवे तेमाटे सलेशी कहेछे—लेश्यासहित तेजिमओघे सामान्येकरी

॥ टीका ॥

दण्डक कृष्णादिलेश्याभेदात्, तदन्येषद्, तदेव मेते सप्त, तत्र ॥ किण्हलेसस्सेत्यादि ॥ कृष्णलेश्यस्य नीललेश्यस्य कापोतलेश्यस्यच जीवराशे र्दण्डको यथौघिकजीवदण्डक स्तथा ध्येतव्य प्रमत्ताप्रमत्तविशेषणवर्ज्जं, कृष्णादिषुहि अप्रशस्तभावलेश्यासु संयतत्व नास्ति यच्चो च्यते ॥ पुव्वपडिवन्नउपु णअन्नयरीएउलेसाएत्ति ॥ तद् द्रव्यलेश्या मतीत्येति मन्तव्य, तत स्तासु प्रमत्ताद्यभाव स्तत्र सूत्रोच्चारणमेव ॥ किण्हलेसाण भंते । जीवा किं आया रंभा ? ४ गोयमा आयारंभावि जाव नो अणारंभा से केणट्ठेण भंते । एववुच्चइ ? गोयमा आविरइं पडुच्च ॥ एव नीलकापोतलेश्यादण्डका व पीति तथा तेजोलेश्यादे ३ जीवराशे र्दण्डका, यथौघिकाजीवा स्तथावाच्या, नवर तेषु सिद्धा नवाच्या. सिद्धाना मलेश्यत्वा, त्तंचेव ॥ तेउलेसाण भंते । जीवा किं आयारंभा ? ४ गोयमा अत्थेगइया आयारंभावि जाव नोअणारंभा अत्थेगइया नो अणारंभा अत्थेगइया नो आयारंभा जाव अणारंभा से केणट्ठेणं भंते। एवंवुच्चई ? गोयमा दुविहा तेउलेस्सा पन्नत्ता तजहा सजयाय असजयाएत्यादि ॥ भवहेतुभूत मारम्भनिरूप्य भवाभाव हेतुभूत ज्ञानादिधर्म्मकदम्बक निरूपयन्नाह ॥ इह भविए इत्यादि ॥ व्यक्त नवर इहच भवे वर्त्तमानजन्मनि यद्वर्त्तते नतु भवान्तरे तदैहभविक काकुपाठा च्चेह प्रश्नतावसेया, तेन किमैहभविक ज्ञान मुत ॥ परभविएत्ति ॥ परभवे वर्त्तमानानन्तरभावि न्यनुगामितया य द्वर्त्तते तत्पारभवि

॥ मूल ॥

रस जहाओहियाजीवा णवरसिद्धाणभाणियव्वा इहभविएभंतेणाणे परभविएणाणे तदुभयभविएणाणे गोयमा

॥ भाषा ॥

कह्या सूत्रतिमजाणवो कृष्णलेशी नीललेशीने कापोतलेशीने। जहा ओहियाजीवा णवर पमत्त अपमत्ताण भाणियव्वा। जिम औधिक समुच्चये जीवक ह्या तिम जाणवा पणि एतलो विशेष प्रमत्त अप्रमत्त वर्जितकहवा कृष्णआदि तीन अप्रशस्तभाव लेश्याने विषे सयतपणू नथी अने जे कह्यू पुव्वपडिव न्नओपुण अन्नयरातेउलेशी इति ॥ ते द्रव्यलेश्या आश्री कह्यू। तेउलेसस्स पद्मलेसस्स सुक्कलेसस्स। तेउलेशीने पद्मलेशीने शुक्ललेशीने। जहाओहियाजीवा। जिम औधिक सामान्यसूत्रे जीव कह्या तिमकहवा। णवरं सिद्धाणभाणियव्वा। एतलोविशेष सिद्ध नकहवा सिद्धलेश्यारहितछे तेमाटे। इहभविएभंतेणा णे परभविएणाणे। भवहेतुभूत आरंभ कहीने भवअभावहेतुभूत ज्ञानादि कहेछे—वर्त्तमानभवनेविषे हेभगवन्! जेज्ञानहोय तेइहभविकज्ञान कहिये वर्त्त

॥ टीका ॥

क आहोस्वित् ॥ तदुभयभविएत्ति ॥ तदुभयरूपयो रिह परलक्षणयो र्भवयो र्यदनुगामितया वर्त्तते तत्तदुभयभविकं, इदञ्चैव नपारभविका द्भिद्यत इति ' परतरभवेपि यदनुयातितत्ग्राह्य, इह भवव्यतिरिक्तत्वेन परतरभवस्यापि परभवत्वात्, ह्रस्वतानिर्देश श्चेह सर्वत्र प्राकृतत्वादिति, प्रश्ननिर्वचनमपि सुगम नवर ॥ इहभविएविति ॥ ऐहभविक यदिहा धीत नानन्तरभवे ऽनुयाति, पारभविक यदनन्तरभवे ऽनुयाति, तदुभयभविक तु यदिहाधीत म्परभवे परतरभवेचानुवर्त्ततइति ॥ दसणपि एवमेवत्ति ॥ दर्शन मिह सम्यक्त्व मवसेय मोक्षमार्गाधिकारात्, यदाह– सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग., यत्र ज्ञानदर्शनयोरेव ग्रहणास्या त्तत्र दर्शन सामान्यावबोधरूप मवसेयमिति ॥ एवमेवेत्ति ॥ ज्ञानव त्प्रश्ननिर्वचनाभ्या समवसेयं चारित्रसूत्रे, निर्वचने विशेष, स्तथाहि, चारित्र मैहभविकमेव नहि चारित्रवा निह भूत्वा तेनैव चारित्रेण पुन श्चारित्री भवति यावज्जीवतावधि कत्वा त्तस्य, किञ्च चारित्रिण' ससारे सर्वविरतस्य देशविरतस्यच देवेष्वेवोत्पादा, त्तत्रच विरते रत्यन्त मभावा न्मोक्षगतावपि चारित्रसम्भवाभावा

॥ मूल ॥

इहभविएविणाणे परभविएविणाणे तदुभवभविएविणाणेय । दंसणंपिएवामेव । इहभविएभंतेचरित्ते परभविएचरित्ते गोयमा इहभविएचरित्ते णोपरभविएचरित्ते णोतदुभयभविएचरित्ते । एवतवेसंजमे । अ्रसंवुडेणं

॥ भाषा

मान अनतर भवे जेज्ञान ते पारभविकज्ञानकहीये । तदुभयभविएणाणे । इणभवपरभव बेजनेविषे ज्ञान ते तदुभयभविकज्ञानकहीये ? उत्तर । गोयमा हेगौतम । इहभवे भण्यु परभवे साथे नजाय ते इहभविकज्ञानपणिहोय । परभविएविणाणे । जेअनतरभवे ज्ञानहोय तेपणि ज्ञानहोय । तदुभयभविएविणाणे जेइहा भण्यु तेपरभवे परतरभवेपणि अनुवर्त्ते तेपणि ज्ञानहुवे । दसणपिएवामेव । जिमज्ञानकह्यु तिम दर्शनपणि जाणवूं । इहभविएभतेचरित्ते । इहभविक हेभगवन् ! चारित्रहोय अथवा । परभविएचरित्ते । परभविक चारित्रहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । इहभविकहोज चारित्र होय यावज्जीवअवधिपणाथकी । णोपरभविएचरित्ते । नहीपरभविक चारित्रहोय चारित्रवतमरी वली परभवे तेहोज चारित्रवतनहोय । णोतदुभयभविए चरित्ते एवतवेसजमे । नही तदुभयभविक चारित्रहोय एचारित्रकह्यो ते तपसयम भेदथी बेप्रकारेछे तेमाटे इम तप इमहीज सयमपणि जाणवो ॥ वली

॥ टीका ॥

चारित्रहि कर्मक्षपणाया नुष्ठीयते मोक्षेच तस्या किञ्चि त्करत्वात् यावज्जीवमिति प्रतिज्ञासमाप्ते स्तदन्यस्या शाग्रहणात्' अनुष्ठानरूपत्वाच्च चारित्रस्य शरीराभावेच तदयोगा दतएवोच्यते ॥ सिद्धे नोचरित्ती नोअचरित्ती ॥ नोअचरित्रीतिच अविरते रभावादिति, अनन्तर ञ्चारित्रमुक्त न्तच्च द्विधा तप संयमभेदादिति, तयोर्निरूपणायातिदेशमाह ॥ एवतवेसजमेहि ॥ प्रश्ननिर्वचनाभ्या चारित्रवत्तप संयमौ वाच्यौ चारित्ररूपत्वात्तयोरिति, ननु सत्यपि ज्ञानादेर्मोक्षहेतुत्वे दर्शनएव यतितव्य तस्यैवमोक्षहेतुत्वा द्यदाह—भट्ठेणचरित्ताउ सुट्ठुयरदसणगहेयव्व ॥ सिज्झंतिचरणरहिया दसणरहियाणसिज्झतीति ॥१॥ योमन्येत तन्निरासाय प्रश्नमाह ॥ असवुडेणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवर ॥ असवुडेणति ॥ असवृतो ऽनिरुद्धाश्रवद्वार ॥ अणगारेत्ति ॥ अविद्यमानगृह' साधुरित्यर्थ ॥ सिज्झइत्ति ॥ सिध्यति अत्यासवरमभवतया सिद्धिगमनयोग्यो भवति॥ बुज्झइत्ति॥ स एव यदा समुत्पन्नकेवलज्ञानतया स्वपरपर्यायोपेता न्निखिलान् जीवादिपदार्थान् जानाति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यते ॥ मुच्चइत्ति ॥ सएव सञ्जातकेवलबोधो भवोपग्राहिकर्म्मभि प्रतिसमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिव्वाइत्ति ॥ सएव तेषा ङ्कर्म्मपुद्गलाना मनुसमय यथा यथा क्षयमाप्नोति तथातथा शीतीभवन् परिनिर्वातीति प्रोच्यते ॥ सव्वदुक्खाणमतकरेइत्ति ॥ सएव चरमभवायुषोन्तिमसमये क्षपिताशेषकर्म्मांश' सर्वदु खानामन्त करोतीति भण्यत इतिप्रश्न ' उत्तरन्तु कण्ठ्य न्नवर ॥ नोइणट्ठेसमट्ठेत्ति ॥ नोनैव ॥ इणट्ठेत्ति ॥ अय मनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोर्थो भाव', समर्थो

॥ मूल ॥

भंतेअणगारे सिज्झति वुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतंकरेति गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेणं

॥ भाषा ॥

पूछेछे ? असवुडेणभते अणगारे। असंवृत जेणे आश्रवद्वार रूध्या नथी हेभगवन्। एहवो साधु। सिज्झति वुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति। सिद्धगमन योग्यहोय केवलज्ञानेकरी जीवादिपदार्थजाणे भवकासकरी छूटे कर्मपुद्गलचयकरी सीतलीभूत हुवे। सव्वदुक्खाणमतकरेति। आऊखाने छेहडे शेषकर्मानो अन्त करे इम गौतम पूछ्या थका उत्तर भगवत कहेछे—गोयमा। हेगौतम। णोइणट्ठेसमट्ठे। एअर्थ समर्थनही वलयत नही। सेकेणट्ठेण भते जावअतंनकरेति। ते स्येंकारणें हेभगवन्। यावत्शब्दे अतनकरे? भगवतकहे उत्तर। गोयमा। हेगौतम। असंवुडेअणगारे। असंवृत जेणें आश्रवद्वार रूध्यान

बलवान् वदयमाणदूपणमुद्गरप्रहारजर्जरितत्वात् ॥ आउयवज्जाउत्ति ॥ यस्मादेकत्र भवग्रहणे सकृदेवान्तर्मुहूर्त्तमात्रकालएवायुषोबन्ध' स्तत उक्तमा युर्वर्ज्जाइति ॥ सिढिलबंधणबद्धाउत्ति ॥ श्लथबन्धनं स्पृष्टतावा, बद्धतावा; निधत्ततावा; तेन बद्धा आत्मप्रदेशेषु सम्बन्धिता. पूर्वावस्थाया मशुभतर परिणामस्य कथञ्चि दभावादिति शिथिलबन्धनबद्धा' एता आशुभाएव द्रष्टव्या, असंवृतभावस्य निन्दाप्रस्तावात्' ता किमित्याह ॥ धणियबंधणब द्धाउपकरेइत्ति ॥ गाढतरबन्धना बद्धावस्थावा; निधत्तावस्थावा; निकाचितावा; प्रकरोति' प्रशब्दस्यादिकर्मार्थत्वा त्कर्तुमारभ्यते' असंवृतत्वस्या शुभयोगरूपत्वेन गाढतरप्रकृतिबन्धहेतुत्वा' दाहच–जोगापयडिपएसंति ॥ पौन पुन्यभावेत्वसंवृतत्वस्य ता करोतीत्येवेति, तथा ह्रस्वकालस्थि तिका दीर्घकालस्थितिका प्रकरोति' तत्र स्थितिरुपात्तस्य कर्म्मणो ऽवस्थानं ता मल्पकालामहती करोतीत्यर्थ' असंवृतत्वस्य कषायरूपत्वेन स्थिति बन्धहेतुत्वा' दाहच–ठिइमणुभागकसायउकुणइत्ति ॥ तथा ॥ मंदाणुभावेत्यादि ॥ इहानुभावो विपाको रसविशेषइत्यर्थ ' ततश्च मन्दानुभावा' परिपेलवरसा. सती गाढरसा' प्रकरोति' असंवृतत्वस्य कषायरूपत्वा देवा नुभागबन्धस्य च कषायप्रत्ययत्वादिति ॥ अप्पपएसेत्यादि ॥ अल्प स्तोक

भंते जाव अंतंनकरेंति गोयमा असंवुडेअणगारे आउयवज्जाउसत्तकम्मपगडीउसिढिलबंधणबद्धाउ धणिय बंधणबद्धाउपकरेइ हस्सकालठितीयाउ दीहकालठितीयाउपकरेइ मंदाणुभावाउ तिव्वाणुभावाउपकरेइ अ ॥

॥ भा ॥ ही एहवोसाधु । आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडोओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ हस्सकालठितीयाओ दीहकालठितीयाओ पकरेइ । आयुकर्मटालीने सातकर्मनी प्रकृतिबांधीहुवे जेमाटे एकभवनेविषे एकवार अंतर्मुहूर्त्तकालने विषेहीज आउखानोबंधछे तेमाटे आउखुं वर्ज्यूं तेकेहवी बांधीछे सिथिल बंधणेकरीने बांधीहुवे ते गाढा अथवा निकाचितबंधन करे वली ह्रस्वकाल कहता थोडाकालनी स्थितिहती तेहनी दीर्घकाल घणाकालनी स्थितिकरे एतावता घणीस्थिति बांधे । मंदाणुभावाओतिव्वाणुभावाओपकरेइ । कर्मना जेमंद अनुभावकर्म मंदरसकर्मनो हुवे ते तीव्रअनुभाव तेकर्मनो तीव्ररसक रे । अप्पपदेसगाओबहुपदेसगाओपकरेइ । अल्पथोडो प्रदेश भाग कर्मदलिक परमाणू हुतो ते घणाप्रदेशभागकरे कर्मबंधारे इत्यर्थ । आउवचणंकम्मंसि

॥ टीका ॥

प्रदेशाग्रं कर्मदलिकपरिमाणं यासांता स्तथा' ता बहुप्रदेशाग्राः प्रकरोति' प्रदेशबन्धस्यापि योगप्रत्ययत्वा दसंवृतत्वस्यच योगरूपत्वादिति॥ आ उयचेत्यादि॥ आयु पुन कर्म्मस्यात्कदाचि द्बध्नाति स्यान्न बध्नाति, यस्मा त्रिभागाद्यवशेषायुष परभवायु प्रकुर्वन्ति' तेन यदा त्रिभागादि स्तदा बध्नाति' अन्यदा नबध्नातीति' तथा॥ असाएत्यादि॥ असातवेदनीयञ्च दु:खवेदनीय ङ्कर्म्म पुन र्भूयोभूय पुन रुपचिनोति' उपचित ङ्करोति' ननु कर्म्मसप्तकान्तर्वर्त्तित्वा दसा तवेदनीयस्य पूर्वोक्तविशेषणेभ्यएव तदुपचयप्रतिपत्ते किमेतद् ग्रहणेन? त्यत्रोच्यते, असंवृतोत्यन्तदु खितो भवतीति प्रति पादनेनभयजनना दसंवृतत्वपरिहारार्थं मिद मित्यदुष्टमिति॥ अणाइयंति॥ अनादिक अविद्यमानादिक मज्ञातिकवा, अविद्यमानस्वजन ऋणंवा, अतीत ऋणजन्यदु. स्यतातिक्रान्तदु स्यतानिमित्ततयेति ऋणातीत, अणवा, अणक पापमतिशयेनेत गत मणातीत॥ अणवयग्गंति॥ अवयग्गति दे शीवचनो तवाचक स्तत स्तन्निषेधात् अणवयग्ग अनन्तमित्यर्थ.' अथवा, अवनतमासन्न मग्र मन्तो यस्य तत्तथा, तन्निषेधा दनवनताग्र मेतदेव णकारा दनवताग्रमिति, अथवा; अनवगत मपरिच्छिन्न मग्र म्परिमाण यस्य तत्तथा, अतएव॥ दीहमद्धंति॥ दर्घाद्धदीकालदीर्घाध्ववा, दीर्घमार्ग॥ चाउरंतत्ति॥ चतुरन्त देवादिगतिभेदा त्पूर्वादिदिग्भेदाच चतुर्विभाग, तदेव स्वार्थिकाणप्रत्ययोपादाना च्चातुरन्तम्॥ संसारकंतारंति॥ भवा रण्य॥ अणुपरियट्टइत्ति॥ पुन. पुन र्भ्रमतीति, असंवृतस्य तावदिद फल, संवृतस्य तु यत्स्या त्तदाह॥ संवुडेणमित्यादि॥ व्यक्त नवर, संवृतो

॥ मूल ॥

प्पपदेसगाउ बहुपदेसगाउपकरेइ आउयचणकम्मंसियबंधइ सियनोबंधइ असायावेयणिज्जंचणंकम्मं भुज्जो भुज्जोउवचिणइ अणाइयचणंअणवदग्गदीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारंअणुपरियट्टति। सेतेणट्ठेणं गोयमा

॥ भाषा ॥

यबंधइ। चपुन णवाक्यालंकारे आयुकर्म किवारे बांधे। सियनो बधइ। किवारे नबांधे। असायावेयणिज्जंचणंकम्मं। असातावेदनीय चपुन णवाक्यालंका रे कर्म। भुज्जोभुज्जो उवचिणइ। बारबार बलीबली पुष्ट बलिष्ट करे। अणाइयंचणं अणवदग्गदीहमद्धं। जिण संसारनी आदिनथी चपुन णवाक्यालंका रे आगे अंतनही दीर्घकाल। चाउरंत संसारकंतार अणुपरियट्टति। चारगतिरूप भव संसार अरण्य उजाड बारबार परिभ्रमण करे। सेतेणट्ठेण गो

॥ टीका ॥

नगार., प्रमत्तसयतादि', सच चरमशरीर स्या दचरमशरीरोवा, तत्र य श्चरमशरीर स्तदपेक्षयेदं सूत्रं, य स्त्वचरमशरीर स्तदपेक्षया परम्परया सूत्रार्थो वसेयो, ननु पारम्पर्येणा संवृतस्यापि सूत्रोक्तार्थस्या वश्यन्नावो यत शुक्लपाक्षिकस्यापि मोक्षोवश्यं नावी, तदेव सवृतासवृतयो फल तो न्नेदाजावएवेति ? अत्रोच्यते, सत्य किन्तु यत्सवृतस्य पारम्पर्यं त्तदुत्कर्षत सप्ताष्टन्नवप्रमाण यतो वक्ष्यति ॥ जहन्नियं चारित्ताराहणं आरा

॥ मूल ॥

सेकेणठेणंन्नंतेएववुच्चइ असंवुडेअणगारेणोसिज्झइ सवुडेणं न्नंतेअणगारेसिज्झइ हंतासिज्झइ जाव अंतंकरेइ । गोयमा सवुडेणंअणगारे आउयवज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ धणियबधणबद्धाउ सिढिलबधणबद्धाउपकरेइ दीहकालठितीयाउ हस्सकालठितीयाउपकरेइ तिव्वाणुन्नावाउमंदाणुन्नावाउपकरेइ बहुपदेसगाउ अप्पपदेसगाउपकरेइ आउयचणंकम्मनबंधइ असायावेयणिज्जंचणंकम्मणोनुज्जोनुज्जोउवचिणइ अणादीयंचणं

॥ भाषा ॥

यमा असवुडे अणगारेणोसिज्झइ । ते तेणेअर्थे हेगोतम । जेणे आश्रवद्वार रुध्यानहो तेअणगार साधु सोझेनहो इत्यादि पूर्ववत् कहवा यावत् अतकर नहीं बलो गौतम पूछेछे—सवुडेणभते अणगारेसिज्झइ । जेणे आश्रवद्वार रुध्याछे वसिकीधोछे आत्मा जेणे हेभगवन् । एहवो घररहित अणगार साधु सोझे इत्यादि सर्वकहवो इतिप्रश्न उत्तर । हंतासिज्झइ जाव अतकरेइ । हागोतम सहत अणगार सोझे यावत् अतकरे इम सर्वकहवो । सेकेणठेण भते एवबुचइ । तेस्यामाटे हेभगवन् इम कह्यु सहतअणगार सोझे । गोयमा । हेगोतम । सहतअणगार वसिकीधोछे आत्माजेणे एहवोसाधु आठकर्म माहि ली पाचमो आयुकर्म टाली सात कर्मप्रकृति ते । धणियबधबद्धाओसिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ । निविड चीकणे बधणे बाधीछे तेप्रते सिथिलबधनकरे तेकर्मढोलाकरे इत्यर्थ । दोहकालठितीयाओ । दोर्घकाल बहुकाले वेद्यस्थितिछे ते । हस्सकालठितीयाओ पकरेइ । ह्रस्व थोडाकालवेद्य स्थितिकरे । तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ । तीव्ररसछे जेमदरसकरे । बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ । घणाप्रदेश हुवे ते अल्पप्रदेश करे शुभ अशुभ प्रदेशवत प्रते अल्पप्रदेशवतकरे । आउयंचण कम्म नबधइ । प्रकृतिचारिवत आयुकर्म तेहने नबाधे । असायावेयणिज्जचणकम्म णोभुज्जोभुज्जो उव

॥ टीका ॥

रित्ता समछन्नवगहयोदि सिज्झइत्ति ॥ यथा ऽसंवृतस्य पारम्पर्य तदुत्कर्षतोपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तमानमपि स्या द्विराधनाफलत्वा त्तस्येति ॥ वीईवय इत्ति ॥ व्यतिव्रजति व्यतिक्रामतीत्यर्थ, अनगार संवृतत्वा त्सिध्यतीत्युक्त, यस्तु तदन्य स विशिष्टगुणविकल सन्, किन्देव स्या न्नवेति ; प्रश्न यन्नाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवरं ॥ असंजएत्ति ॥ असाधु संयमरहितोवा ॥ अविरएत्ति । प्राणातिपातादिविरतिरहित, विशेषेणवा, त पसिरतो यो न भवति सो विरत ॥ अप्पडिहयेत्यादि ॥ प्रतिहत निराकृत मतीतकालकृत, निन्दादिकरणेन प्रत्याख्यातञ्च वर्जित अनागत कालविषय पापकर्म प्राणातिपातादि येन स प्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, तन्निषेधा दप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, अनेना तीतानागतपापक र्मानिषेधउक्त, असंयतो ऽविरतश्चे त्यनेन वर्त्तमानपापास्रवरण मभिहित, अथवा ; न नैव प्रतिहत तपोविधानेन मरणकालादारात् क्षपित, प्र त्याख्यात ञ्च, मरणकाले प्यास्रवनिरोधेन पापकर्म येन सतया, अथवा ; न नैव प्रतिहत सम्यग्दर्शनप्रतिपतित, प्रत्याख्यातञ्च, सर्वविरत्यङ्गी

॥ मूल ॥

अणवदग्गदीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारंवीईवयइ सेतेणठेण गोयमा एवंसंवुडेअणगारेसिज्झइ जाव अंतं करेइ । जीवेणंभंतेअसंजएअविरएअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इतोचुते पेच्चा देवेसिया गोयमा अत्थेग

॥ भाषा ॥

विषइ । असाता वेदनीयकर्मप्रते नही वारंवार पुष्टकरे । अ णादीयवर्णं अणवदग्ग दीरमद्ध चाउरंतसंसारकंतार वीतीवयति । इमजेहनो आदि नथी जेहनो पारनवो एहवा दीर्घ चातुर्गतिक संसारकांतारप्रते व्यतिक्रमे एतले जे संसार ते अक्षकरे इतिभाव नोपजायइत्यर्थ । सेतेणठेण गोयमा एवंसंवुडे अणगारे सिज्झइ जावअंतंकरेइ । ते तेणेकारणे हेगौतम । एणेप्रकारे संवराछे इंद्रीजेणे एहवो अणगार साधु चरमशरीरी सोझे मोचप्र तें जाय इत्यर्थ यावत् सर्वदु खनोअंतकरे अणगार ते सहतपणाथी सीझे इसोकह्यो तेहथी वीजो तेविशिष्टगुण विकलयको स्यु । जीवेणंभंते असंजए अ विरएअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे । देवहुवे अथवा नहुवे इसो प्रश्नकरेछे—हेभगवन् असाधु संयमरहित प्राणातिपातादि विरतिरहित नथीहण्या पाप निंदायेकरी तथा पच्चक्खाणेकरी पापकर्म जेणे । इतोचुते । इहांथी मनुष्यतिर्यंच मरी । पेच्चा देवेसिया । परभवे देवहोय । गोयमा । हेगौतम ।

॥ टीका ॥

कारणात् पापकर्मज्ञानावरणाद्यशुभं कर्म येन स तथा ॥ इओत्ति ॥ इत' प्रज्ञापकप्रत्यक्षात् तिर्यग्भवात् मनुष्यभवाद्वा च्युतो मृत ॥ पेच्चत्ति ॥ जन्मान्तरे देव स्यादिति प्रश्न. ॥ जेइमेजीवत्ति ॥ य इमे प्रत्यक्षासन्ना पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्यावा, ॥गामेत्यादि॥ ग्रामादि ष्वधिकरणभूतेषु, तत्र ग्रामो जनपदप्रायजनाश्रितस्थानविशेष, आकरो लोहाद्युत्पत्तिस्थान, नकर कररहित, निगमो वणिग्जनप्रधान स्थान, राजधानी यत्र राजा स्वयं वसति, खेट धूलीप्राकार, कर्बट कुनगर, मडम्ब सर्वतो दूरवर्त्ति सन्निवेशान्तर, द्रोणमुख जलपथस्थलपथोपेत, पत्तन विविधदेशागतपण्य स्थान, तच्च द्विधा, जलपत्तन स्थलपत्तन चेति, रत्नभूमि रित्यन्ये, आश्रम स्तापसादिस्थान, सन्निवेशो घोषादि' एषा द्वन्द्व स्तत स्तेषु, अथवा;

॥ मूल ॥

इएदेवेसिया ञ्चत्थेगइएणोदेवेसिया सेकेणठेणं जाव इतोचुते पेच्चाञ्चत्थेगइएदेवेसिया ञ्चत्थेगइएणोदेवेसिया गोयमा जेइमेजीवा गामागरनगरनिगमरायहाणिखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु ञ्चकामतण्हा

॥ भाषा ॥

केतलाएकदेवथाय । अत्थेगइया णोदेवेसिया । केतलाएक देवता नथाय । सेकेणठेणजावइतोचुते । ते स्येंअर्थ हेभगवन् । इमकह्यु यावत् इहांथकी चवी मरीने । पेच्चाअत्थेगइएदेवेसिया । पछे केतलाएक जीव देवताथाय देवतापणेऊपजे । अत्थेगइएणोदेवेसिया । केतलाएक जीव देवता नथाय । गोयमा हेगौतम । जेइमेजीवा । जे ए प्रत्यक्षजीव पचेंद्री तिर्यंच मनुष्य । गामआकरनगरनिगमरायहाणिखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु । जे ए प्रत्यक्षजीव पचेंद्री तिर्यंच मनुष्य गामदेशने पामरजन आश्रितथाय जिहा रह्या वृद्ध्यादिगुण ते ग्राम लोहादि सातधातुना उत्पन्न स्थानक तेआगर कर रहितनेनगर जिहा वाणिया प्रधान तेनिगम जिहा स्वयमेव राजावसे कोटसहित तेराजधानी जिहा धूलिनो कोटकोट तेखेटक कुत्सितनगर ते कर्बड वसतीथी दूरथाय नगरथी कोसअढाई तथा तीन सराय होय तेमडंब जलमार्गना नगरे जलथको वस्तु आवेछे द्रोणमुख पट्टण ते नानाप्रकारना देशथी किरियाणा आवे तेबेप्रकारे एकजलपत्तन बीजोस्थलपत्तन एहने कोइएक रत्नभूमिपण कहेछे—आश्रम तापसादिस्थान होरादिकना ग्राम ते अकामनिर्जरा मनअभिलाषविना तृषा खमे मनअभिलाषविना क्षुधाखमे भूखेपीडाता कर्महलुथापडे । अका हनेविषे । अकामतण्हाएअकामछुहाए ।

॥ टीका ॥

ग्रामादयो ये सन्निवेशा स्ते तथा तेषु ॥ अकामतगहाएति ॥ अकामाना निर्ज्जराद्यनभिलापिणा सतां, तृष्णा तृट्, अकामतृष्णा तया, एव मका मक्षुधा ॥ अकामबभचेरवासेणति ॥ अकामाना निर्ज्जराद्यनभिलापिणा सता' अकामोवा, निरभिप्रायो ब्रह्मचर्यण स्त्र्यादिपरिभोगाभावमात्रलक्ष णेन वासो रात्रौ शयन मकामब्रह्मचर्यवासो ऽत स्तेन ॥ अकामअण्हाणगसेयजल्लमपकपरिदाहेणति ॥ अकामा ये ऽस्नानकादय स्तेभ्यो य. परिदाह स्तया, तेन तत्र स्वेद प्रस्वेद , यातिच लगतिचेति यल्लो रजोमात्र' म्मल कठिनीभूत रजएव, पङ्को मलएव स्वेदेनार्द्रीभूतइति ॥ अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालति ॥ प्राकृतत्वेन विभक्तिपरिणामा दल्पतरवा भूयस्तरवा बहुतर ङ्काल यावत्, वाशब्दौ देवत्व प्रत्यल्पेतरकालयो समताभिधाना र्थौ, केवल देवत्वे सामान्यत सत्यपि अल्पतरकाल मकामनिर्ज्जरावता मविशिष्ट त दस्या दितरेषान्तु विशिष्टमिति ॥ अप्पाणपरिकिलेसितित्ति ॥ विबाधायति ॥ कालमासेत्ति ॥ कालो मरण, तस्य मास प्रक्रमादवसर कालमास, स्तत्र ॥ काल किच्चित्ति ॥ मृत्वा ॥ वाणमतरेसुत्ति ॥ वनान्तरेषु वनविशेषेषु भवा वर्णागमकरणा द्वानमन्तरा , अन्येत्वाहु —वनेषु भवा वाना स्तेचते व्यन्तराश्चेति वानव्यन्तरा स्तेषा, मेते वानमन्तरावा , अ

॥ मूल ॥

ए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेण अकामसीतातवदंसमसग अण्हाणगसेयजल्लमलपकपरिदाहेण अप्पत रोवाभुज्जतरोवाकालअप्पाणपरिकिलेसति परिकिलेसइत्ता कालमासेकालंकिच्चा अन्नयरेसुवाणमंतरेसुदेवलो

॥ भाषा ॥

मबभचेरवासेण। अणमिलते स्त्री प्रमुखना भोग चितवतो ब्रह्मचर्य पाले। अकाम सोतातव दसमसग। वली मनअभिलापविना शीत टाढि आतप तावडो डास मसा इत्यादिकना पराभव खमे। अणहाणगसेयजल्लमलपकपरिदाहेण अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालअप्पाणपरिकिलेसति। स्नानने अण करवे मलैंकरी कष्टपामे परसेवो कठिनमल। प्रस्वेदकरी गीलोमल एकपासे वलू इम चींतवे अथवा जनमे बूड कादामे खूतु एकवार अथवा बेवार इमविचारोने थोडोकाल अथवा घणोकाल आत्माने कलेशकरे। परिकिलेसइत्ता। कलेशकरीने पीडाकरीने। कालमासे। मरण तेहनो अवसर तेहनेवि षे। कालकिच्चा। कालप्रते करीने। अणयरेसु वाणमतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारोभवति। अनेरा वाणव्यंतरमाहे बननेविषे रहे तेमाटे वानव्यं

तस्तेषु देवलोकेषु देवाश्रयेषु ॥ देवत्ताएउववत्तारोभवतित्ति ॥ जेइमेइत्यत्र यच्छब्दोपादाना त्ते देवतयोपपत्तारो भवन्तीति द्रष्टव्यं ॥ तेसिंति ॥ ये देवलोके प्रकामनिर्ज्जरावन्तो देवतयो त्पद्यन्ते तेषामिति ॥ सेजहाणामएत्ति ॥ सेत्ति ॥ अथ यथा येनप्रकारेण ॥ नामेति ॥ सम्भावने वाक्यालङ्कारेवा, ॥ एइति ॥ आमन्त्रणार्थं अलङ्कारार्थएववा, ॥ इहति ॥ इह मर्त्यलोके ॥ असोगवणेइवत्ति ॥ अशोकवन, इतिशब्द उपप्रदर्शने, ऽनुस्वार लोप सधिश्च प्राकृतत्वात्, वाइति विकल्पार्थं, अथवा; असोगवणेइत्यत्र प्रथमैकवचनकृत एकार, इवशब्दस्तु वाक्यालङ्कारे, अशोकादयस्तु प्रसिद्धाएव, नवर ॥ सत्तवणत्ति ॥ सप्तपर्ण सप्तच्छदइत्यर्थं ॥ कुसुमियत्ति ॥ सजातकुसुम ॥ माइयत्ति ॥ मयूरित, सञ्जातपुष्पविशेषमित्यर्थं ॥

एसुदेवत्ताएउववत्तारोभवंति । केरिसाणभंते तेसिंवाणमंतराणदेवाणदेवलोगा पण्णत्ता गोयमा सेजहानामए इहमणुस्सलोगंमि असोगवणेइवा सत्तवण्णवणेइवा चंपयवणेइवा चूयवणेइवा तिलगवणेइवा लाउयवणेइवा निग्गोहवणेइवा छत्तोहवणेइवा असणवणेइवा सणवणेइवा अयसिवणेइवा कुसुम्भवणेइवा सिद्धत्थवणे

तर कहीये ते व्यतरनेविषे देवतापणें ऊपजणहार होय ऊपजेइत्यर्थं । केरिसाण भंते तेसिं वाणमतराण देवाण देवलोका पन्नत्ता । केहवाछे हेभगवन् ! ते अकामनिर्जरायको व्यतरदेवता माहि ऊपना ते वानव्यतरदेवताना देवलोक कह्या एतले व्यंतरीकदेवताना भवन केहवाछे इतिप्रश्न । गोयमा । हेगौतम । सेजहानामए । ते यथानामेति कोमलामत्रण । इहंमणुस्सलोगंमि । एह मनुष्यलोकनेविषे । असोगवणेइवा । अशोकवृक्षना वने इ वाक्यालकारे वा अथवा । सत्तवण्णवणेइवा । सप्तपर्ण साटो पुष्पजातिविशेष तेहना वन अथवा । चंपयवणेइवा । चंपकवन अथवा । चूयवणेइवा । आमवन । तिलगवणेइवा । तिलकवृक्षनावन । लाउयवणेइवा । वृक्षविशेष तेहनो वन पाठातरे लौगवन । निग्गोहवणेइवा । वडवृक्षना वननेविषे । छत्तोहवणेइवा । छत्राहवन । असणवणेइवा । असनवृक्षविशेष तेहना वन । सणवणेइवा । शणवृक्षनावन । अयसिवणेइवा । अलसीवृक्षनावन । कुसुभवणेइवा । कुसुभवन । सिद्धत्थवणेइवा । धौलासरसव तेहनावन । बधुजीववणेइवा । दोपहिरियाफूल विशेष तेहनावन । निच्चकुसुमिय । सदैव बारेमास फूलाथका । मा

॥ टीका ॥

लवइयत्ति ॥ लवकित सञ्जातपल्लवलव, प्रकुरवदित्यर्थं ॥ थवइयत्ति ॥ स्तवकित सञ्जातपुष्पस्तबकमित्यर्थं ॥ गुलइयत्ति ॥ सञ्जातगुल्मक, गु लमकुच्च लतासमूह ॥ गुच्छियत्ति ॥ सञ्जातगुच्छ गुच्छश्च पत्र समूह यद्यपिच स्तबकगुच्छयो रविशेषो नाम कोशे धीत स्तथापीह पुष्पपत्रक तो विशेषो भावनीय ॥ जमलियत्ति ॥ यमलतया समश्रेणितया तत्तरूणा व्यवस्थितत्वा त्सञ्जातयमलत्वेन यमलित ॥ जुवलियत्ति ॥ युगलतया तत्तरूणा सञ्जातत्वेन युगलित ॥ विणमियत्ति ॥ विशेषेण पुष्पफलभरेण नमित मितिकृत्वा विनमित ॥ पणमियत्ति ॥ तेनैव नमयितु मारब्ध त्वा त्प्रणमित प्रज्ञाद्यस्या दिकमांघेत्वा दिति तथा सुविभक्ता अतिविभक्ता सुनिष्पन्नतया पिण्डयो लुम्ब्यो मञ्जर्यश्च प्रतीता तास्ता वतसका शेखरका स्तान् धारयति, य स तथा सुविभक्तपिण्डीमञ्जर्यवतसकधर, तत कुसुमितादीना कर्मधारयइति ॥ सिरीएत्ति ॥ श्रिया वनलक्ष्म्या ॥ उव

॥ मूल ॥

इवा वधुजीववणेइवा निच्चकुसुमियमाइयलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमिय सुविभत्तपिंडिमंजरिवडिंगधरे सिरीए अतीवअतीवउवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिठइ । एवामेवतेसिंवाण मंतराणंदेवाणंदेवलोया जहण्णेणं दसवाससहस्सठिईएहिं उक्कोसेणं पलिओवमठिईएहिं वडुहिं वाणमंतरेहिं

॥ भाषा ॥

इ लवइय । नवरा फूलजपना पल्लव । थवइय । निचल फूलआति । गुलइय । लतासमूह । गोच्छिय । पत्रसमूह । जमलिय । समश्रेणीइचारह्या । जु वलिय । दोयदोयहच एकठाछे । विणमिय । फूलफलने भारेनम्या । पणमिय । भारेअरो प्रकर्षेनम्या । सुविभक्त । अतिप्रगट । पिंडिमंजरिवडिंगधरे लुंबिया मजरा नवकपलना धरणहार प्रगतम मुकुट तेहपते धरे । सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिठइ । वनलक्ष्मीकरी अतिही अतिही इ हानिविचनछे ते अत्यर्थेहि एतलेअणी सुदरपणे रहे । एवामेवतेसिंवाणमंतराण देवाण देवलोया । इमज निश्चे तेहना वानव्यतर देवताना देवलोक पूर्व कह्या तेहवाज जाणवा । जहण्णेण दसवाससहस्स ठिईएहिं । जघन्यदशो दससहस्र १०००० वर्षनी स्थितिजाणवी स्थितिकहीये । उक्कोसेण पलिओव मठिईएहिं । आजघो उत्कृष्टथको पल्योपमनी स्थिति जाणवी । वडुहिं वाणमंतरेहिं । घणे वाणव्यतर । देवेहिय । देवकरी । देवीहिय । देवीय

सोन्नेमाणेत्ति ॥ इह द्विर्वचन मात्रीदण्ये भृशत्वे इत्यर्थ ॥ आइरात्ति ॥ क्वचित्प्रदेशे देवाना देवीनाञ्च वृन्दै रात्मीयात्मीयावासमर्यादानुलङ्घनेन व्याप्ता, आङ्शब्दोत्र मर्यादावृत्ति, तथा क्वचित्तु ॥ विइराइत्ति ॥ तैरेव वृन्दैर्निजावाससीमोल्लङ्घनेन व्याप्ता, विशब्दो विशेषवाची, ॥ उवत्थडत्ति ॥ उपस्तीर्णा उपशब्दः सामीप्यार्थ स्तृञ्च आच्छादनार्थ, स्ततश्च उत्पतद्भि र्निपतद्भिश्चा नवरतक्रीडासक्तै रुपर्युपरिच्छादिता ॥ सथडत्ति ॥ सस्तीर्णा सशब्द. परस्परसश्लेषार्थ, स्ततश्च क्वचि तैरेव क्रीडमानै रन्योन्यस्पर्द्धया समन्तत श्चलद्भि राच्छादिताइति ॥ फुडत्ति ॥ स्पृष्टा आसनशयनरमणपरिभोगद्वारेण परिभुक्ता स्फुटावा, सप्रकाशा व्यन्तरसुरनिकरकिरणविसरनिराकृतान्धकारतया ॥ अवगाढगाढत्ति ॥ गाढ बाढ मवगाढा स्तैरेव सकलक्रीडास्थानपरिभोगनिहितमनोभि रधोपि व्याप्ता, गाढावगाढा इतिवाच्ये प्राकृतत्वा दवगाढगाढा, इहच देवत्वयोग्यस्य जीवस्याभिधानेन तदयोग्य सामर्थ्या दवसीयतएवेति ॥ अत्थेगइए नोदेवेसिए इत्येतस्यादा वुक्तस्य पदस्य निर्वचन कृत द्रष्टव्यमिति, अथो द्देशकनिगमना

देवेहिय देवीहिय आतिस्सा वितिस्सा उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढसिरीए अतीवअतीवउवसोभेमा णा उवसोभेमाणा चिठंति । एरिसगाणं गोयमा तेसिवाणमंतराण देवाणदेवलोगा पसत्ता सेतेणठेणगोय

करीने । आतिस्सा वितिस्सा उवत्थडा सथडा फुडा अवगाढसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिठंति । आपणी मरजादालगी देव देवीने वृंदकरीने व्याप्या आपणीभूमिको मरजादालघो व्याप्या क्रीडादेवदेवी ऊपरआछाद्या परसर घणो दूरलगो रमता सथारानी परे पाथरा फरस्या आसन सयण रमण भोगद्वारेकरी भोगवता तथा अधकार उद्योत सकलक्रीडा अभिलाषा देवता नीचालगे व्याप्या गाढ प्रछन्नपणेरह्या लक्ष्मीइकरी अतीव २ शोभता २ थका रहेछे । एरिसगाणं । एहवा प्रेमप्रकर्षालाप कहे । गोयमा । गौतम । तेसिवाणमतराण देवाण देवलोगा पसत्ता । तेहना वानव्यंतर देवना देवलोक भवन कह्या । सेतेणठेण गोयमा एवमुच्चइ । ते तेणेकारणे हेगौतम इम इणेप्रकारे कह्यु । जीवेण असजए । जीव असयती । जावदेवेसि या । यावत् देवतापणेऊपजे । सेवभते २ त्तिभयव गोयमे । जोमै पूछ्यु सोभगवतेकह्यु इसो इमजछे अन्यथा नथी । एतले भगवतनो बहुमान देखाड्यो

॥ टीका ॥

र्यमाह ॥ सेव भंते । सेवभंतेत्ति ॥ यन्मया पृष्टं तद्भगवद्भिः प्रतिपादितं, तत् एव सित्यमेव भदन्त । नान्यथा, अनेन भगवद्वचने बहुमानं दर्शयति' द्विर्वचनञ्चेह, भक्तिसम्भ्रमकृतं, एवं कृत्वा भगवान् गौतम श्रमणं भगवन्तं महावीर वन्दते नमस्यतिचेति ॥ प्रथमशते प्रथमोद्देशकविवरणं समाप्तमिति ॥ १ ॥ व्याख्यातः प्रथमोद्देशको, ऽथ द्वितीय आरभ्यते, अस्य चैवं सम्बन्धः, प्रथमोद्देशके चलनादिधर्म्मकं कर्म्म कथितं' तदेवेह निरूप्यते' तथो द्देशकार्थसङ्ग्रहगाथा ॥ दुक्खेयत्ति ॥ यदुक्तं तदिहोच्यते' तत्प्रस्तावनार्थञ्च पूर्वोक्तमेव ग्रन्थं स्मरयन्नाह ॥ रायगिरे इत्यादि ॥ पूर्ववत् ॥ जीवेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ सयकडदुक्खति ॥ यत्परकृतं तन्नवेदयतीति प्रतीतमेवातः स्वयकृतमिति' पृच्छतिस्म ॥ दुक्खति ॥ सांसारिकं सुखमपि वस्तुतो दुःखमिति' दुःखहेतुत्वा दुःखं कर्म वेदयतीति काकुपाठात्प्रश्न.' निर्वचनंतु यदुदीर्णं तद्वेदयति' अनुदी

॥ मूल ॥

माएववुच्चइ जीवेणभंसंजएजावदेवेसिया सेवभंतेभंतेतिभयवंगोयमे । समणंभगवमहावीरवदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता संजमेणतवसा अप्पाणभावेमाणेविहरइ पढमसएपढमोउद्देसोसम्मत्तो ॥ १ ॥ रायगिहेणयरेसमोसरणं परिसाणिग्गया जावएववयासी जीवेणंभंते सयकडंदुक्खं वेदेइ गोयमा अत्थेगइ

॥ भाषा ॥

इमकह्यो भगवंत गौतम । समणं भगवं महावीरवदइ । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने वांदे । णमंसइ नमस्कारकरे वंदित्ता । वांदीने । णमंसित्ता । नमस्कारकरीने । संजमेण तवसाअप्पाण भाविमाणे विहरइ । संयमेकरी नवाकर्मउपार्जनथी तपेंकरी पुरातनकर्म निर्जरे एहवा श्रीगौतमस्वामी आत्माने भावताथका विचरे । पढमसए पढमोउद्देसो समत्तो । १ । प्रथमशते प्रथमउद्देशनो विवरण समाप्तमिति ॥ १ ॥ चलनादिक कह्या तेकर्म दुःखना हेतुभणी दुःखनो अधिकार कहेछे—तथा उद्देशकार्थ सग्रहणि गाथानेविषे । दुक्खेत्ति । इसोजेकह्यो तेकहेछे—रायगिहेणयरे समोसरणं । राजगृह नगरे श्रीमहावीरस्वामी समोसर्या । परिसाणिग्गया जावएववयासी । परिषदा वांदीने आपआपणे घरेगया पूर्वलीपरे गौतमस्वामि श्रीमहावीरस्वामीने वांदीने यावत् इम कहे तालगे कहवो । जीवेणभंते सयकड दुक्ख वेदेइ गोयमा । जीव हेभगवन् । जेने जे कीधो कर्म ते

॥ टीका ॥

संस्यहि कर्म्मणो वेदनमेव नास्ति' तस्मा दुदीर्णंवेदयति नानुदीर्णं, नचवन्धानन्तरमेवोदेति, अतो वश्यं वेद्यमपि एकं वेदयति, एक नवेदय ती त्येव व्यपदिश्यते, अवश्य वेद्यमेवच कर्म्म—कडाणकम्माण नमोक्खो अत्थीतिवचनादिति ॥ एव जाव वेमाणिए इत्यनेन चतुर्विंशतिदण्डक' सूचित , सचैव ॥ नेरइएणं भंते ! सयकडमित्यादि ॥ एव मेकत्वेन दण्डक स्तथा वहुत्वे नान्य , सचैव ॥ जीवाणं भंते सयकड दुक्ख वेयतीत्या दि ॥ तथा नेरइयाण भंते ! सयकड दुक्खमित्यादि ॥ नन्वेकत्वे योर्थो वहुत्वेपि सएवेति किं बहुत्वप्रश्नेनेति ? अत्रोच्यते क्वचि द्वस्तु न्येकत्ववहु

॥ मूल ॥

यंवेदेइ अत्थेगइयनोवेदेइ सेकेणठेणंभंतेएवंवुच्चइ अत्थेगइयंवेदेति अत्थेगइयनोवेदेति गोयमा उदिण्णंवेदे ति णोअणुदिण्णंवेदेति । सेतेणठेणंएवंवुच्चइ गोयमा अत्थेगइयंवेदेइ अत्थेगइयणोवेदेइ एवंचउवीसदण्डएणं जाववेमाणिए । जीवाणंभंतेसयंकडदुक्कवेदेंति गोयमा अत्थेगइयावेदेंति अत्थेगइयाणोवेदेंति । सेकेणठेण भंतेएववुच्चइ गोयमा उदिण्णंवेदेंति णोअणुदिण्णवेदेंति एवंजाव वेमाणियाजीवेण भंतेसयंकडआउयंवेदेंति

॥ भाषा ॥

नवेदे इसोतो प्रसिद्धछे पणि पोतेकीधा दुक्ख नवेदे इतिप्रश्न । हेगौतम । अत्थेगइयवेदेइ । केतलाएकजीव स्वकृतकर्मवेदे । अत्थेगइयनोवेदेइ । केतलाएक जीव स्वकृतकर्म दु ख नवेदे । सेकेणठेणभंते एवंवुच्चइ । गौतम पूछेछे—ते स्यामाटे हेभगवन् । इम कह्यु । अत्थेगइएवेदेति । केतलाएक वेदे । अत्थेग इयनोवेदेति । केतलाएक स्वकृतदु ख नवेदे । गोयमा । भगवतकहेछे—हेगौतम । उदिण्ण वेदेति । उदयआव्युतेकर्म वेदे । णो अणुदिण्ण वेदेति । नही उदय आव्यो तेकर्म वेदेनही । सेतेणठेण एववुच्चइ । तेणेकारणे इमकह्यु । गोयमा । हेगौतम । अत्थेगइय वेदेइ । केतलाएक जीव स्वकृतदुक्ख वेदे । अ त्थेगइयणोवेदेइ । केतलाएकजीव स्वकृतद् ख नवेदे उदय नाव्या तेमाटे । एवचउवीसदण्डएण । इम चउवीसदण्डकनेविषे कहवो । जाव वेमाणिए । याव त् वैमानिकलगे जाणवा ए एकवचनआश्री कह्यु ॥ हिवे बहुवचनआश्री कहेछे—जीवाणभंतेसयकडदुक्खवेदेति । जीव हेभगवन् । पोते कृतदुक्खवेदे इ तिप्रश्न भगवतकहेछे—गोयमा । हेगौतम । अत्थेगइयावेदेंति । केतलाएक जीव स्वकृतकर्म वेदे । अत्थेगइयाणो वेदेंति । केतलाएक जीव स्वकृतदुक्ख

॥ टीका ॥

त्वयो रर्थविशेषो दृष्टो, यथा–सम्यक्त्वादेरेक जीव माश्रित्य षट्षष्टिसागरोपमाणि साधिकानि स्थितिकाल उक्तो नानाजीवा नाश्रित्य पुन सर्वाद्धेति, एव मत्रापि सम्भवे दितिशङ्काया स्वहुत्वप्रश्नो नदुष्टः, अत्यन्ताव्युत्पन्नमतिशिष्यव्युत्पादनार्थत्वा द्वेति, अथा यु प्रधानत्वा न्नारकादिव्यपदेशस्या युराश्रित्य दण्डकद्वयम् ॥ जीवेणमित्यादि ॥ एतस्य चेय वृद्धोक्तभावना, यदा सप्तमक्षिता वायुर्बद्ध पुनश्च कालान्तरे परिणामविशेषा त्तृतीयधरणीप्रायोग्य निर्वर्तितं वासुदेवेनेव, तत्तादृश मङ्गीकृत्योच्यते, पूर्वबद्ध काश्चि न्नवेदय त्यनुदीर्णत्वा त्तस्य, यदापुन र्यत्रैवबद्ध तत्रैवो त्पद्यते, तदा वेदयतीत्युच्यते, तथैव तस्यो दितत्वादिति, अथ चतुर्विंशतिदण्डक माहारादिभि र्निरूपयन्नाह ॥ नेरइएइत्यादि ॥ व्यक्त न्नवर ॥ म

॥ मूल ॥

गोयमा अत्थेगइयवेदेंति अत्थेगइयणोवेदेंति जहादुक्खेणंदोदंडगा तहाआउएणवि एगत्त पोहत्तिया एगत्तेण जाव वेमाणिया पुहुत्तेणवितहेव । णेरइयाण भंते सव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा सव्वेसमुस्सासणिस्सासा गो

॥ भाषा ॥

गोयमा । हेगौतम । उदिणंवेदेंति । उदयआव्या ते वेदै । णोअणुदिण नवेदे । सेकेणट्ठेणभते एववुच्चइ । गौतमकहैछे— ते स्यामाटे हेभगवन् इमकह्यु । गोयमा । हेगौतम । अत्थेगइ वेदेंति । नही उदयआव्या ते नवेदे । एवंजाववेमाणिया । इम चउवीस दंडक यावत् वेमानिकलगे । जीवेणभते सयकड आउय वेदेंति ॥ हिवे नार काटिकने आयु'कर्म प्रधानछे तेमाटे आजखा आश्री दडकविषे कहैछे—जीव हेभगवन् स्वयकृत आयुप्रते वेदे भगवत कहैछे—हेगौतम । अत्थेगइ य वेदेंति । केतलाएक वेदे उदय आव्यू ते वेदे इत्यर्थ । अत्थेगइयणो वेदेंति । केतलाएक नवेदे उदयआव्या विना नवेदे । जहादुक्खेणं दोदडगा । जिम दुःखनेविषे बेदडककह्या एकवचने बहुवचने अथवा उदयआव्यू वेदे उदयनाव्यो ते वेदेनही । तहा आउएणविदोदडगा । तिम आजखानेविषेपणि दोय दडक कहवा । एगत्त । एकवचनआश्री एकजीव । पोहत्तिया । बहुवचनआश्री घणा जीव । एगत्तेण जाव वेमाणिया । एकवचने एकजीव आश्री याव त् वेमानिकताई आणवा । पुहुत्तेणवि तहेव । पृथक्त्वे घणा जीव आश्री पणि तिमहीज एतले वैमानिकताई कहवा ॥ णेरइयाणंभते सव्वेसमाहारा । हिवे चउवीसदडक आहारादिकरी कहैछे—नारकी हेभगवन् ! सगला सरीखा आहारवतछे । सव्वेसमसरीरा । सगला सरीखे शरीरेहोय । सव्वेसमु

हासरीरायअप्पसरीरायेत्यादि ॥ इहाल्पत्व महत्त्वञ्चा पेक्षिक तत्र जघन्यमल्पत्व मंगुलासङ्ख्येयभागमात्रत्व मुत्कृष्टन्तु महत्त्व म्पञ्चधनु शतमा नत्व मेतच्च भवधारणीयशरीरापेक्षया, उत्तरवैक्रियापेक्षयातु जघन्यमंगुलसङ्ख्यातभागमात्रत्व मितरत्तु धनु.सहस्रमानत्वमिति एतेनच किंसमस रीरा इत्यत्र प्रश्ने उत्तरमुक्तं शरीरविषमताभिधानेसति आहारोच्छ्वासयो वैषम्य सुखप्रतिपाद्य भवतीति' शरीरप्रश्नस्य द्वितीयस्थानोक्तस्यापि प्र थम निर्वचन मुक्त' अथा हारोच्छ्वासप्रश्नयो र्निर्वचनमाह ॥ तत्थणमित्यादि ॥ ये यतो महाशरीरा स्ते तदपेक्षया बहुतरा न्पुद्गला नाहारयन्ति महाशरीरत्वादेव' दृश्यतेहि लोके बृहच्छरीरो बह्वा शयल्पशरीरश्चा ल्पभोजी हस्तिशशकवत् बाहुल्यापेक्ष चेदमुच्यते ' अन्यथा बृहच्छरीरोपि

यमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते एववुच्चइ णेरइयाणोसव्वेसमाहारा णोसव्वेसमसरीरा णोसव्वेसमुस्सासणि स्सासा गोयमा णेरइयादुविहा पण्णत्ता तजहा महासरीरायअप्पसरीराय तत्थणंजेतेमहासरीरातेबहुतराए

स्सासणिस्सासा । सगलाने सरीखा ऊसास नीसासहोय एहवै प्रश्नकीधा भगवत कहे—गोयमा । हेगौतम ' णोइणठेसमठे । एअर्थ समर्थनही युक्तनही इत्यर्थ । सेकेणठेणभंते एववुच्चइ । ते किसेकारणे हेभगवन् । इमकह्यु । णेरइयाणोसव्वेसमाहारा । नारकी सर्व सगला सरीखा आहारवंत नहीं । णो सव्वेसमसरीरा । सगला सरीखे शरीरें नहोय । णोसव्वेसमुस्सासणिस्सासा । सगला सरीखे ऊसास नौसासें नहोय इसेपूछ्या भगवत कहे । गोयमा । हेगौतम । णेरइया दुविहा पण्णत्ता तजहा महासरीराय अप्पसरीराय । नारकी बेप्रकारे कह्या ते कहेछे—इहां अल्पपणू तथा महत्वपणूं अपेक्षा स हितछे तिहा जघन्य अल्पपणूं अगुल असख्यातमो भाग शरीर जे उत्कृष्ट महत्वपणूं पाचसे धनुषमात्र ए भवधारणीय शरीरनी अपेक्षायें कह्यु उत्तर वे क्रिय शरीरनो अपेक्षायें जघन्य अगुलने असख्यातमें भाग शरीर उत्कृष्ट सहस्रधनुष हुवे तेमाटे नारकी महाशरीरवतछे बीजा अल्पशरीरवतछे एवं बेभेदें । तत्थण जेतेमहासरीरा तेबहुतराए पोग्गले आहारेंति । तिहा पूर्वोक्तबेपक्षमाहें जे महाशरीरीछे ते अत्यंतघणा पुद्गलनो आहारकरे लोकमाहि पणि दीसेछे मोटाशरीरनों घणी घणा पुद्गलनो आहारकरे हाथीनोपरे तथा ससलानोपरे ते नारकी असातावेदनीय कर्मसहितछे तेजिम मोटाशरी

॥ टीका ॥

कश्चि दल्प मश्नाति अल्पशरीरोपि कश्चित् भूरि भुंक्ते तथाविधमनुष्यवत् नपुनरेवमिह बाहुल्यपक्षस्यैवा श्रयणात्' तेच नारकाउपपातादिसद्वेद्या नुभवा दन्यत्रा सद्वेद्योदयवर्तित्वेनै कान्तेन यथा—महाशरीरा दुःखिता स्तीव्राहाराभिलाषाश्च भवन्तीति ॥ बहुतराएपोग्गलेपरिणामेतित्ति ॥ आहारपुद्गलानुसारित्वात् परिणामस्य बहुतरा नित्युक्त, परिणाम श्चापृष्टो प्याहारकार्य मितिकृत्वोक्त', तथा ॥ बहुतराएपोग्गलेउस्ससतित्ति ॥ उच्छ्वासतया गृह्णन्ति ॥ निस्ससतित्ति ॥ निःश्वासतया विमुञ्चन्ति महाशरीरत्वा देव' दृश्यतेहि—बृहच्छरीर स्तज्जातीयेतरापेक्षया बहूच्छ्वासनिःश्वासइति, दुःखितोपि तथैव, दुःखिताश्च नारकाइति, बहुतरा स्तानुच्छ्वसन्तीति, तथा हारस्यैव कालकृत वैषम्यमाह ॥ अभिक्खणआहारतित्ति ॥ आभीक्ष्ण्य पौनःपुन्येन यतो महाशरीर स्तदपेक्षया शीघ्रशीघ्रतराहारग्रहणाद्दत्यर्थ ॥ अभिक्खणऊससतिअभिक्खणनीससतित्ति ॥ एतेहि महाशरीरत्वेन दुःखिततरत्वा दभीक्ष्ण मनवरतमुच्छ्वासादि कुर्वन्तीति, तथा ॥ जेतेइत्यादि ॥ येते इह ये इत्येतावतै वार्थसिद्धौ यतेइत्युच्यते तद्भाषामात्रमेवेति, ॥ अप्पसरीराअप्पतराएपोग्गलेआहारातित्ति ॥ ये यतो ऽल्पशरीरा स्ते तदाहारणीयपुद्गलापेक्षया ऽल्पतरान् पुद्गला नाहार

॥ मूल ॥

पोग्गलेआहारेंति बहुतराएपोग्गलेपरिणामेंति बहुतराएपोग्गलेऊससंति बहुतराएपोग्गलेणीससंति अभिक्खणंआहारेंति अभिक्खणंपरिणामेंति अभिक्खणऊससंति अभिक्खणणीससंति तत्थणजेतेअप्पसरीरा तेणं

॥ भाषा ॥

रना धणीछेंय तिमहादुखीयका तीव्रआहारना अभिलाषीहुवे । बहुतराए पोगलेपरिणामेंति । मोटाशरीरना नारकीने घणापुद्गल शरीरे परिणमे आहारपुद्गलनें अनुसारथको परिणामने बहुतरपणूंकह्यु । बहुतराएपोग्गले । इम नारकी घणापुद्गल वारवार । ऊससति । ऊससें उस्वासरूपें ग्रहे । बहुतराए पोगले णीससति । अत्यंत घणापुद्गल वारवार नीससै निस्वासरूपेंधरे तथा आहारनोज कालकृतवैषम्य कहेछे । अभिक्खणआहारेंति । वारवार आहारग्रहे । अभिक्खण परिणामेंति । एमोटाशरीरना धणी अने अतिदुक्खितथका वारवार परिणमे । अभिक्खणऊससति । वली अतिदुःखथको वार वार ऊसासचे । अभिक्खणणीससंति । वारवार नीसासादिकरे । तत्थणजेतेअप्पसरीरा । तिम पूर्वोक्त भेदमाहि जे अल्पशरीरी छोटाशरीरनाधणी जे

॥ टीका ॥

यन्ति अल्पशरीरत्वा देव ॥ आहच्चआहारंतित्ति ॥ कदाचि दाहारयन्ति कदाचि न्नाहारयन्तीति, महाशरीराहारग्रहणान्तरालापेक्षया वहुतरका लान्तरालतयेत्यर्थ॰ ॥ आहच्च ऊससति आहच्च णीससतित्ति ॥ एते ह्यल्पशरीरत्वेनैव महाशरीरापेक्षया ऽल्पतरदु॰खत्वा दाहत्य कदाचि त्सातर मित्यर्थ, उच्छ्वासादिकुर्वन्ति, यच्च नारका सन्ततमे वोच्छ्वासादिकुर्वन्तीति, प्रागुक्त तन्महाशरीरापेक्षये त्यवगन्तव्यमिति, अथवा, अपर्याप्तका ले ऽल्पशरीरा सतो लोमाहारापेक्षया ना हारयन्ति, उच्छ्वासापर्याप्तकत्वेनच नोच्छ्वस त्यन्यदा त्वाहारयत्युच्छ्वसन्तिचे त्यत आहत्याहारयन्त्या हत्योच्छ्वसन्तीत्युक्त ॥ सेतेणठेणगोयमा । एववुच्चइ नेरइया सव्वेनोसमाहारेत्यादि ॥-निगमनमिति, समकर्म्मसूत्रे ॥ पुव्वोववसगायपच्छोववसगा यत्ति ॥ पूर्वोत्पन्ना॰ प्रथमतरमुत्पन्ना स्तदन्येतु पश्चादुत्पन्ना स्तत्र पूर्वोत्पन्नाना मायुष स्तदन्यकर्म्मणाञ्च वहुतरवेदना दल्पकर्म्मत्व, पश्चा दुत्पन्ना

॥ मूल ॥

अप्पतराएपोग्गले आहारेंति अप्पतराएपोग्गले परिणामेंति अप्पतराएपोग्गले ऊससंति अप्पतराएपोग्गले णीससति आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससति आहच्च णीससति सेतेणठेण गोयमा

॥ भाषा ॥

नारकीहोय । तेणअप्पतराए पोग्गले आहारेंति । तेनारकी ण इश वाक्यालङ्कारे अल्पतर छोटापुद्गलनी अहारकरे तेछोटा शरीरमाटे महाशरीरनो अ पेचायें थोडा दुखना धणी छे तेमाटेज इम तेनारकीनें । अप्पतराएपोग्गले परिणामेंति । अल्पतर थोडापुद्गल परिणमें थोडा आहारमाटे तेनारकी । अ प्पतराए पोग्गले ऊससति । अल्पतर थोडापुद्गल ऊसासपणे ग्रहें । अप्पतराएपोग्गलेणीससति । अल्पतर थोडा पुद्गल नीसासपणे धरे ॥ आहच्च आहारें ति । रही २ आहारकरे अतरासहित आहारकरे । आहच्च परिणामेंति । अतरासहित परिणमें रही २ परिणमे । आहच्चऊससति । अतरासहितऊ ससे ऊसासग्रहें । आहच्चणीससति । अतरासहित नीसासग्रहें । सेतेणठेण गोयमा । ते तेणेप्रयोजनें हेगौतम । एववुच्चइ । इमकह्यु । णेरइयाणोसव्वे स माहारा । नारकी सगला सरीखा आहारवत होयनहीं । जावणोसव्वेसमुस्सासणीसासा । यावत्शब्दें सगला समशरीरनहीं सगला समऊसास नीसास वतनहीं ॥ हिवे नारकीने कर्मस्वरूप पूछेछे । णेरइयाणभंते सव्वेसमकम्मा । नारको हेभगवन् । सगला सरीखा कर्मवतछे उत्तर । गोयमा । हेगौत

॥ टीका ॥ नाश्च नारकाणा मायुष्कादीना मल्पतराणा येदितत्वा न्महाकर्मत्व , एतच्च सूत्र समानस्थितिका ये नारका स्तानङ्गीकृत्य प्रणीत, मन्यथाहि रत्नप्र भाया मुत्कृष्टस्थिते नारकस्य बहु न्यायुषि क्षयमिते पल्योपमावशेषेच तिष्ठति तस्यामेव रत्नप्रजाया दशवर्षसहस्रस्थिति नारको ऽन्य कश्चि दुत्प न्न इतिकृत्वा प्रागुत्पन्न पल्योपमायुषं नारक मपेक्ष्य कियक्तु शक्य महाकर्मेति, एव वर्णसूत्रे पूर्वोत्पन्नस्या ल्पं कर्म्म तत स्तस्य विशुद्धो वर्ण

॥ मूल ॥ एवं वुच्चइ णेरइयाणोसव्वेसमाहारा जाव णोसव्वेसमुस्सासणीसासा । णेरइयाणं भंते सव्वेसमकम्मा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते एवं वुच्चइ गोयमा णेरइयादुविहा पसत्ता तजहा पुव्वोववसगाय पच्छोवव सगाय तत्थणंजेतेपुव्वोववसगा तेण अप्पकम्मतरागा तत्थणंजेतेपच्छोववसगा तेणमहाकम्मतरा सेतेणठेण

॥ भाषा ॥ म । णोइणठेसमठे । एमय समर्थनथी । सेकेणठेणभंते । ते स्येअर्थे हेभगवन् इमकह्यो । एवंवुच्चइ । सर्व नारको सरीखा कर्मवंत नथी उत्तर । गोयमा । हे गौतम । णेरइया दुविहा पसत्ता तजहा । नारको बेभेदे कह्या तेकहेछे—पुव्वोववसगाय । एक पूर्वे पहिला ऊपना ते पूर्वोपपन्नक कहीये । पच्छोववस गाय । जेनारको पछे ऊपना एवोजो भेद २ । तत्थण जेतेपुव्वोववसगा तेण । जेपूर्वोक्त बेपक्षमाहेँ तेपूर्वे ऊपना तेनारको अल्प थोडा कर्मवंतछे ते किम जेपूर्वे ऊपना तेहने आयु.कर्म तथा बीजाकर्म घणा वेदाछे थोडारहे तेमाटे । अप्पकम्मतरागा तत्थणजेते पच्छोववसगा तेणमहाकम्मतरा । अल्पकर्मी कह्या तिहा पूर्वकह्या ले बेपक्षमाहेँ जे पछे ऊपना तेनारको महाकर्मना धणी कह्या तेकिम पछे नारकोने आऊखा आदिदेई कर्म थोडा वेद्याछे घणा रहे तेमाटेमहाकर्मो कह्या एसूत्र सरीखो स्थितिना धणी जेनारको ते अंगीकारकरीने कह्योछे अन्यथा रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कोई एक नारक जीवनी उत्कृष्टी एकसागरोपमनो स्थितिछे तेमाहेँ घणीस्थिति भोगवी शेष एकपल्योपमरह्योछे एतले तेहीज रत्नप्रभा नारकीनेविषे दशसहस्रवर्षनी स्थिति वो बीजोव ऊपनो ते पूर्वे ऊपनापल्योपमशेषआयुष्कनारकोनी अपेक्षायें स्यू महाकर्मी कहिसकिये एतावता कहीनसकिये इम वर्णसूत्रनेविषे पणि कहवो सेतेणठेण गोयमा एवंवुच्चइ । से तेणेकारणे हेगौतम इमकह्यु । वली गोतमपूछेछे —णेरइयाणंभंते सव्वेसमवसगा । नारको हेभगवन् । सगला सरीखेंवर्णे

पश्चादुत्पन्नस्य च बहुकर्मत्वा दविशुद्धतरोवर्णइति, एवं लेश्यासूत्रेपि, इहच लेश्याशब्देन भावलेश्याग्राह्या, बाह्यद्रव्यलेश्यातु वर्णद्वारेणै वो क्तेति ॥ समवेयणाति ॥ समवेदना. समानपीडा ॥ सन्निभूयत्ति ॥ सञ्ज्ञा सम्यग्दर्शन, तद्वन्त सञ्ज्ञिन, सञ्ज्ञिनोभूता सञ्ज्ञित्वङ्गता, सञ्ज्ञी

गोयमा एवंवुच्चइ णेरइयाणंभंतेसव्वेसमवन्नगा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणतहचेव गोयमा जेतेपुव्वोव वन्नगा तेणंविसुद्धवन्नतरागा तहेव सेतेणठेण गोयमा णेरइयाणं भंते सव्वेसमलेस्सा गोयमा णोइणठेस मठे सेकेणठेणं जाव णोसव्वेसमलेस्सा गोयमा णेरइयादुविहा पन्नत्ता तंजहा पुव्वोववन्नगाय पच्छोववन्न गाय तत्थणजेतेपुव्वोववन्नगा तेणंविसुद्धलेसतरागा तत्थणंजेतेपच्छोववन्नगा तेणञ्चविसुद्धलेसतरागा सेतेण

होय उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णोइणठेसमठे। एअर्थ समथनही युक्तनही। सेकेणठेण तहचेव गोयमा। ते स्येकारणे हेभगवन्। इमकह्यु इत्यादि सर्व पूठिलीपरे कहवो हेगौतम। जेते पुव्वोववन्नगातेणविसुद्धवन्नतरागा। जेपूर्वे ऊपना ते तेहने अल्पकर्म बाकीरह्याछे तेमाटे भलोवर्णछे जे पछे ऊपना ते हने घणाकर्मछे तेमाटे विशुद्धवर्णछे तेहने। तहेव। एसव तिमजकहवो। सेतेणठेण गोयमा। त तेणेकारणे हेगौतम। नारकी सर्व समवर्ण नहीं। णेर इयाणभंते सव्वेसमलेस्सा। नारको हेभगवन्। सगला सरीखो लेश्याना धणीछे लेश्याशब्दे भावलेश्या कहवी। गोयमा। हेगौतम। णोइणठेसमठे। एअर्थ समथनही युक्तनहीं। सेकेणठेण। ते स्येकारणे हेभगवन्। इम कह्यु। जाव णोसव्वेसमलेस्सा। यावत् नारको सगलाई समलेश्यानही। गोयमा। हेगौतम। णेरइयादुविहा पन्नत्ता तंजहा। नारको बे प्रकारना कह्या ते कहेछे–पुव्वोववन्नगाय। एक नारको पूर्वे उपनाछे। पच्छोववन्नगाय। बीजा नारकी पछे उपनाछे। तत्थणजेते पुव्वोववन्नगा। तिहा बेपचमाहि जे नारको पूर्वे उपनाछे। तेणविशुद्धलेसतरागा। ते नारकी विशुद्धलेश्याना धणी थेष अल्प कर्ममाटे निर्मललेश्यावतकह्या। तत्थणजेतेपच्छोववन्नगा। तिहा बेपचमाहे जेते पछे ऊपनाछे। तेण अविशुद्धलेसतरागा। ते नारकी अविशुद्धलेशीछे घणाकर्ममाटे निर्मललेश्यावतनही। सेतेणठेण गोयमा। तेमाटे हेगौतम। नारको सर्व समलेशीनही। णेरइयाणंभंते सव्वेसमवेदणा। नारकी हे

तेषा सुप्रत्ययचोगात्, मिथ्यादर्शन मपहाय सम्यक्दर्शनजन्मना समुत्पन्नाइतियावत्, तेपा भूता, अथवा ; असञ्ज्ञिन सञ्ज्ञिनोभूता सञ्ज्ञीभूता स्त्रिप्रत्ययचोगात्, मिथ्यादर्शन मपहाय सम्यक्दर्शनजन्मना समुत्पन्नाइतियावत्, न कृतो भगवदर्हत् प्रणीत सकलदु खक्षयकरो विपर्यवि पूर्वकृतकर्म्मविपाक मनुस्मरता महोमह दु खसङ्कटमिद मकस्मा दस्माक मापतित, न कृतो भगवदर्हत् प्रणीत सकलदु खक्षयकरो विपयवि पमविषपरिभोगविप्रलब्धचेतोभि धर्म, इत्यतो मह दु ख मानस मुपजायते, ऽतो महावेदना स्ते ऽसञ्ज्ञीभूतास्तु मिथ्यादृष्टय' स्तेतु स्वकृतक र्म्मफलमिद' मित्येव मजानन्तो ऽनुपतप्तमानसा अल्पवेदना स्युरित्येके' अन्येत्वाहु सञ्ज्ञिन सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रिया' सन्तो भूता नारकत्व गता सञ्ज्ञीभूता स्ते महावेदना' स्तीव्राशुभाध्यवसाये नाशुभतरकर्मबन्धनेन महानरकेपूत्पादात्' असञ्ज्ञीभूतास्तु अनुभूतपूर्वासञ्ज्ञिभवा स्तेषा सञ्ज्ञित्वा

गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते गोयमा णेरइयादुविहा पन्नत्ता तंजहा सण्णिभूयाय असण्णिभूयाय तत्थणंजेतेसण्णिभूयातेणमहावेदणा तत्थणंजेतेअसण्णिभूया तेणं ठेणं गोयमा । णेरइयाणं भंते सव्वेसमवेदणा

तेस्यैं भगवन् । सगलासरीखा वेदनावत पोडावत होय । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णाइणठे समठे । ए अर्थ समर्थनही युक्तनही । सेकेणठे णभंते । कारणे हेभगवन् इमकह्यु उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णेरइयादुविहा पन्नत्ता तंजहा । नारकी बेभेदे कह्या तेकहेछे—सण्णिभूयाय । सम्यग्दृष्टी नारकी तथा सन्नी । असण्णिभूयाय । मिथ्यादृष्टी नारकी तथा असन्नी । तत्थणजेतेसण्णिभूया तेण महावेदणा । तिहा बेपक्षमाहि जेनारकी मिथ्यादर्शनछाडो सम्यग्दर्शने उपनो तेहने पूर्वकृत कर्मविपाक सभरवाथी महादुख ते । किमम्हे । अकस्मात् सकटमाहे पड्या तेहम पश्चात्तापकरे मैं अरिहतप्ररूप्यो धर्म नपाल्यो तो तिणकारणे सम्यग्दृष्टीनैं मानसी दुखघणा । तत्थणजेते असण्णिभूया तेण अप्पवेयणतरागा । तिहा पूर्वोक्त बेपक्षमाहि असन्नीभूत कहिये मिथ्यादृष्टी ते पोताना कोधाकर्म एहसो अजाणता मानसीपीडा थोडोवेदें तेमाटे अल्पवेदनावतकह्या अथवा केइएक इमकहेछे—सन्नी पंचेंद्रिय थका तीव्रअशुभअध्यवसायें घणू अशुभकर्मनो बधकीधो तेणेकरी नरकनेंविषें उपना ते सन्नीभूत कहीये ते महावेदनावत कह्या तेकिम मरी नारकपणू पाम्या ते सन्नीभूत कहीये ते महावेदनावत कह्या तेकिम असंज्ञीनी अ ना अने असन्नीभूत जे उपना तेणे पहिला असन्नीपणो भोगव्यो तेमाटे अत्यत अशुभअध्यवसाय नहता ते रत्नप्रभाने विषे उपजे तेमाटे

देवा त्यन्ताशुभाध्यवसायाभावा दल्पप्रभाया मनतितीव्रवेदननरकेषू त्पादा दल्पवेदना, अथवा; सञ्ज्ञीभूता पर्याप्तकीभूता असञ्ज्ञिनस्त्वपर्याप्तका स्तेच क्रमेण महावेदना इतरेच भवन्तीति प्रतीयतएवेति ॥ समकिरियत्ति ॥ समा स्तुल्या क्रिया. कर्म्मबन्धनिबन्धनभूता आरम्भिक्यादिका येषान्ते समक्रिया. ॥ आरम्भियत्ति ॥ आरम्भ पृथिव्याद्युपमर्द्द स प्रयोजन कारण यस्या सा आरम्भिकी ॥ पारिग्गहियत्ति ॥ परिग्रहोधर्मोपकरणवर्ज्जवस्तु स्वीकारो धर्मोपकरणमूर्च्छाच, स प्रयोजन यस्या सा पारिग्रहिकी ॥ मायावत्तियत्ति ॥ माया अनार्ज्जव मुपलक्षणत्वात् क्रोधादिरपिच सा प्रत्यय·

अप्पवेयणतरागा सेतेणट्ठेणं गोयमा । णेरइयाणं भंते सव्वेसमकिरिया गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेणं भंते गोयमा णेरइयातिविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मद्दिट्ठीय मिच्छद्दिट्ठीय सम्मामिच्छद्दिट्ठीय तत्थणजेतेसम्म द्दिट्ठी तेसिणं चत्तारिकिरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा आरम्भिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया

पेचाये अल्पवेदनावत होय अथवा सन्नोभूत जेपर्याप्ता तेहनें महावेदना होय अने असन्नोने अपर्याप्ता तेहने अल्पवेदनाहोय ते तेणेअर्थे हेगौतम । इम कह्यु नारको सगला सरीखा वेदनावतनही । सेतेणट्ठेण गोयमा । वलो गौतम पूछेछे—नारको हेभगवन् सगला सरीखी क्रिया कर्मबधनहेतु आरभिको आदिदेई होय । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णोइणट्ठे समट्ठे । एअर्थ समर्थनहो युक्तनहीं । सेकेणट्ठेणभते ते स्येअर्थे हेभगवन् इमकह्यु नारको समक्रि यनहो उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णरइयातिविहापन्नत्ता । नारको तोनेंप्रकारें कह्या । तजहा सम्मद्दिट्ठीय । तेकहेछे—सम्यग्दृष्टी समकिती चौथे गुण ठाणें वर्त्ते ते । मिच्छद्दिट्ठीय । मिथ्यादृष्टी पहिले गुणठाणे ते । सम्मामिच्छद्दिट्ठीय । सम्यग्मिथ्यादृष्टी मिश्रभावे वर्त्तें । तत्थणजेतेसम्मद्दिट्ठी । तेपूर्वोक्त तोनप्र कमाहि जेनारको सम्यग्दृष्टीछेसमकितीछे । तेसिणचत्तारिकिरियाओपणत्ताओतजहा आरंभिया । तेहनें तेनारकोने चारक्रिया कर्मबधनहेतु कह्या तेक हेछे—पृथिव्यादिकने उपद्रव तेहोज कारणछे जेहनो तेआरंभिको । पारिग्गहिया । परिग्रह ते धर्मोपकरणवर्जित वस्तुनो अगोकारकरवो अथवा धर्मो पकरणनेविषे मूर्च्छा ते पारिग्रहिकी क्रिया । मायावत्तिया । अनार्जवपणो उपलक्षणथी क्रोधादिकपणि तेहोज प्रत्ययकहीये कारणछे जेहने तेमायाप्र

॥ टीका ॥

कारण यस्या. सामायाप्रत्यया ॥ अप्पच्चक्खाणकिरियत्ति ॥ अप्रत्याख्यानेन निवृत्त्यभावेन क्रियाकर्मबन्धादिकरण मप्रत्याख्यानक्रियेति पचकिरियाउ कज्जंतित्ति ॥ क्रियन्ते कर्मकर्तृरिप्रयोगाय तेनजवन्तीत्यर्थ. ॥ मिच्छादंसणवत्तियत्ति ॥ मिथ्यादर्शनं प्रत्ययो हेतु र्यस्या सा मिथ्यादर्शनप्रत्यया, ननु मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगा. कर्मबन्धहेतव इति प्रसिद्धि, किन्तु आरम्भादयस्ते भिहिता इति कथनविरोध? उच्यते' आरम्भपरिग्रहशब्दाभ्या योगपरिग्रहो योगाना तद्रूपत्वा च्छेषपदैस्तु शेषबन्धहेतुपरिग्रह. प्रतीयतएवेति, तत्र सम्यग्दृष्टीना चतस्रएव मिथ्यात्वाभावात्, शेषाणान्तु पञ्चा पि सम्यग्मिथ्यात्वस्य मिथ्यात्वेनै वेह विवक्षितत्वादिति ॥ सव्वेसमाउयाइत्यादि ॥ प्रश्नस्य निर्वचनचतुर्भंग्या भावनाक्रियते, निबद्धदशवर्षसहस्र

॥ मूल ॥

तत्थणंजेतेमिच्छद्दिट्ठी तेसिंणपंचकिरियाउकज्जंति तंजहा आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया एवसम्मामि च्छद्दिट्ठीणपि सेतेणट्ठेणं गोयमा। णेरइयाणंभंतेसव्वेसमाउया सव्वेसमोववणगा गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेके

॥ भाषा ॥

त्ययिकी क्रिया कहीये। अपच्चक्खाणकिरिया। अपच्चक्खाणे निवृत्तिने अभाव जेक्रिया कर्मबधादिकारण अप्रत्याख्यानकीक्रिया ४। तत्थणजेते मिच्छद्दिट्ठी तिहा पूर्वोक्त तीन पक्षमाहि जेमिथ्यात्वीछे। तेसिणपचकिरियाओकज्जति तजहा आरभिया जावमिच्छादसणवत्तिया। तेहने पांचक्रियालागे तेकहेछे आरभकीक्रिया इत्यादिक चारनो अर्थ पूठिलोपरे कहवो यावत् जालगे मिथ्यादर्शन कारणछे जेहनो ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी कहिये ५। एव सम्मामि च्छद्दिट्ठीणंपि। इम सम्यग्दृष्टीनेपणि पाच इहा मिश्रदृष्टीनें मिथ्यात्वकरीज विवक्षा कोधीछे। सेतेणट्ठेणगोयमा। तेनाटे हेगौतम नारकी सगला समकि यायतनही। वली गौतमपूछेछे—णेरइयाणभतेससमाउया। नारकीहेभगवन्! सगला बरोबर आउखावंतछे। सव्वेसमोववणगा। सगला सरीखा उप नाछे एकसमें उपनाछे भगवन्त कहेछे—गोयमा। हेगौतम। णोइणट्ठेसमट्ठे। एअर्थ समर्थनही युक्तनही। सेकेणट्ठेणभतेएववुच्चइ। ते स्यामाटे हेभगवन् इमकह्यु नारकी सगला समाउया समोववणगानही उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णेरइयाचउव्विहापन्नत्तातजहा। नारकी चारप्रकारे कह्या तेकहेछे— अत्थेगइयासमाउयासमोववणगा। केतलाएक नारकी सरीखे आउखेछे जिम केजीव दशसहस्रवर्षने आउखेछे अनेउपनापणि केज जीव एकसमे उ

॥ टी० ॥ प्रमाणायुषो युगपच्चोत्पन्ना इतिप्रथमभङ्ग , तेष्वेव दशवर्षसहस्रस्थितिषु नारके ष्वेके प्रथमतउत्पन्ना अपरेतु पश्चा दिति द्वितीय , अन्ये विषममा युर्निबद्ध, केचिद्दशवर्षसहस्रस्थितिषु, केचिच्च पञ्चदशवर्षसहस्रस्थितिषू त्पन्ना पुनर्युगप दितितृतीय , केचि त्सागरोपमस्थितय , केचित्तु दशव र्षसहस्रस्थितय , इत्येव विषमायुषो विषममेव चोत्पन्ना इतिचतुर्थ , इह सङ्ग्रहगाथा—आहाराईसु ३ समा कम्मेवसेतहेवलेसाए । वेयणाएकिरि याए आउयउववत्तिचउभङ्गी ॥ १ ॥ असुरकुमाराणं भंते । इत्यादिना असुरकुमारप्रकरण माहारादिपदनवकोपेत सूचित , तच्च नारकप्रकरणवन्नेयं , एतदेवाह ॥ जहानेरइएइत्यादि ॥ तत्र हारकसूत्रे नारकसूत्रसमानेपि भावनाविशेषेण लिख्यते , असुरकुमाराणा मल्पशरीरत्वं भवधारणीयशरी

॥ मूल ॥ णट्ठेणभंतेएवंवुच्चइ गोयमा णेरइयाचउव्विहा पंपत्ता तंजहा अत्थेगइयासमाउयासमोववन्नगा अत्थेगइया समाउयाविसमोववन्नगा अत्थेगइयाविसमाउयाविसमोववन्नगा अत्थेगइयाविसमाउयाविसमोववन्नगा सेतेणट्ठेणं गोयमा । असुरकुमाराणंभंतेसव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा जहाणेरइयातहाभाणियव्वा णवरं कम्म

॥ भा० ॥ पनाछे ते समाउया समोववन्नगा कहीये एपहिलाभागो १ । अत्थेगइया समाउया विसमोववणगा । कईएक नारकीना जोव सरीखे आउखेछे जिम विजजीव दशसहस्रवर्षने आऊखेछे विषम ऊपनाछे एकपहिलेसमये उपनो बीजो बीजेसमये अथवा समयातरे ऊपनो एबीजोभांगो २ । अत्थेगइया विसमाउया समोववणगा । केतलाएक नारकीनाजोव विषम आऊखेछे जिम एकजोव दशसहस्रवर्षने आऊखेछे बीजो इग्यारसहस्रवर्षे आउखेछे अ ने एके समये उपनाछे एत्रीजोभागो ३ । अत्थेगइया विसमाउया विसमोववणगा । केतलाएक नारकीना जीव विषम आयुछे जिम एकादशसहस्रव र्षने आयु अने एकसागरोपमने आयुछे उपनापणि विषमछे एकपहिले समये उपनो बीजो समयातरे उपनों एचौथोभागो ४ । सेतेणट्ठेण गोयमा । ते तेणेअर्थे हेगौतम । नारकी सगला समाउया समोववणगा नहीं ॥ हिवे गौतम अनुक्रमथी असुरकुमारना प्रश्न करेछे—असुरकुमाराण भंते सव्वेसमा हारा । असुरकुमार हेभगवन् । सगला सरीखाआहारवन्तछे । सव्वेसमसरीरा । सगला सरीखे शरीरछे इत्यादि तिहा असुरकुमार प्रकरणनेविषे

॥ टीका ॥

रापेक्षया, जघन्यतोंगुलासङ्ख्येयभागमानत्वं' महाशरीरत्वन्तू त्कर्षत सप्तहस्तप्रमाणत्व मुत्तरवैक्रियापेक्षया त्वल्पशरीरत्व जघन्यतो ऽंगुलसङ्ख्येयभाग मानत्व, महाशरीरत्वतू त्कर्षतो योजनलक्षमानत्वमिति' तत्रैते महाशरीरा बहुतरान् पुद्गला नाहारयन्ति' मनोभक्षणलक्षणाहारापेक्षया देवा ना सुखसौख्यात्प्रधानश्च प्रधानापेक्षयाच शास्त्रेनिर्द्देशो वस्तूना विधीयते' ततो ऽल्पशरीरग्राह्याहारपुद्गलापेक्षया बहुतरा स्ते ता नाहारन्तीत्या दिप्राग्वत्' अभीक्ष्ण माहारयन्ति अभीक्ष्ण मुच्छ्वसन्तिचे त्यत्र ये चतुर्थादि रुप याहारयन्ति स्तोकसप्तकादे श्चोपरि उच्छ्वसन्ति तानाश्रित्या भीक्ष्ण मित्युच्यते, उत्कर्षतो ये सातिरेकवर्षसहस्रस्यो परिआहारयन्ति, सातिरेकपक्षस्यचोपर्युच्छ्वसन्ति' ता नङ्गीकृत्यै तेषामल्पकालीनाहारोच्छ्वासत्वेन पुन पुन राहारयन्तीत्यादि व्यपदेशाविषयत्वादिति' तथा अल्पशरीरा अल्पतरा न्पुद्गला नाहारय न्त्युच्छ्वसन्तिचा' ल्पशरीरत्वादेव यत्पुन स्ते षा कादाचित्कत्व माहारोच्छ्वासयो स्तन्महा शरीराहारोच्छ्वासान्तरालापेक्षया बहुतमान्तरालत्वा, त्तत्र ह्यन्तराले तेना हारादि कुर्वन्ति, तद

॥ मूल ॥

वन्नलेस्साउपरिवन्नेयव्वाउ पुव्वोववन्नगा महाकम्मतरा अविसुद्धवन्नतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगाप सत्था सेसंतहेव एवजावथणियकुमाराणं पुढविकाइयाणं भंतेसव्वेसमवेदणा हंतासमवेदणा सेकेणठेणंभंतेसव्वे

॥ भाषा ॥

नवपद कहवा। जहाणेरइया तहा भाणियव्वा। जिम तेनारकीना प्रकरणनेविषे कह्या पणि एतलोविशेष असुरकुमारने शरीरनी अल्पपणो ते भव धारणीय शरीर जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग मान अने महाशरीरपणु उत्कृष्टथी सातहाथ प्रमाण उत्तरवैक्रियशरीरनी अपेक्षाये अल्पपणूं ज घन्यथी अंगुलनो असंख्यातमोभाग महाशरीरपणु उत्कृष्टथी लक्षयोजन मान तिहा जे महाशरीरवंत ते घणापुद्गलप्रते आहारे मनोलक्षण आहारनी अपेक्षाये। अभिक्खण आहारेंति। इहा चतुर्थआदिदेइ आहारे। अभिक्खण ऊससति। ते सातस्तोक आदिदेइ आहारे उत्कृष्टथी जे साधिकवर्षसह स्रे आहारे तेसाधिकपक्षे ऊसासले इत्यादिक नारकीनो अपेक्षाये असुरकुमारने विपरीतकहवा तथाहि नारकी जेपूर्वे उपना तेलघुकर्मक शुद्धतरवर्ण शुभतरलेशी कह्या अने असुरकुमार जेपूर्वे उपनाते। महाकम्मतरा अविसुद्धवन्नतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगापसत्था। महाकर्मी अशुद्धवर्ण अ

न्यत्र कुर्वन्तीत्येव विवक्षणादिति, महाशरीराणा मप्याहारोच्छ्वासयो रन्तरालमस्ति, किंतु तदल्प मित्यविवक्षणादेवा भीक्ष्ण मित्युक्त' सिद्धञ्च महाशरीराणा तेषा माहारोच्छ्वासयोरल्पान्तरत्व' अल्पशरीराणान्तु महान्तरत्व' यथा—सौधर्म्मदेवाना सप्तहस्तमानतया महाशरीराणा तयोरन्तर क्रमेण वर्षसहस्रद्वय पक्षद्वयञ्च, अनुत्तरसुराणाञ्च हस्तमानतया ऽल्पशरीराणा त्रयस्त्रिंश द्वर्षसहस्राणि त्रयस्त्रिंशदेवच पक्षाइति, एषाञ्च महा शरीराणा मभीक्ष्णाहारोच्छ्वासाभिधानेना ल्पस्थितिकत्व मवसीयते, इतरेषान्तु विपर्ययो वैमानिकवदेवेति, अथवा ; लोमाहारापेक्षया अभीक्ष्ण मनुसमय माहारयन्ति, महाशरीरा पर्याप्तकावस्थाया उच्छ्वासस्तु यथोक्तमानेनापि भवन्परिपूर्णभवापेक्षया पुन पुन रित्युच्यते, अपर्याप्तकाव स्थाया त्वल्पशरीरा लोमाहारतो नाहारय न्त्योजआहारतएवा हरणादिति' कदाचि त्त आहारयन्ती त्युच्यते, उच्छ्वासापर्याप्तकावस्थायाञ्च नो च्छ्वस न्त्यन्यदातू च्छ्वसन्तीत्यतउच्यते' आहत्योच्छ्वसन्तीति ॥ कम्मवसलेसाउपरिवसेयव्वाउत्ति ॥ कर्म्मादीनि नारकापेक्षयाविपर्ययेणवाच्यानि तथाहि नारका य पूर्वोत्पन्ना स्तेऽल्पकर्म्मकशुद्धतरवर्णशुभतरलेश्या उक्ता, असुरास्तु ये पूर्वोत्पन्ना स्ते महाकर्म्माणो ऽशुद्धवर्णा अशुभतरलेश्याश्चेति' कथ येहि पूर्वोत्पन्ना असुरा स्ते ऽतिकन्दर्पदर्पाध्मातचित्तत्वा न्नारकान् अनेकप्रकारया यातनया यातयन्त प्रभूत मशुभ ङ्कर्म्मसञ्चिन्वन्तीत्यतो ऽभिधीयन्ते ते महाकर्म्माण ' अथवा, ये बद्धायुष स्ते तिर्यगादिप्रायोग्यकर्म्मप्रकृतिबन्धना न्महाकर्म्माण, तथा अशुद्धवर्णा अशुभलेश्याश्च ते पूर्वो त्पन्नाना हि क्षीणत्वा च्छुभकर्म्मण शुभो वर्णो लेश्याच ह्रसतीति, पश्चादुत्पन्ना स्त्वबद्धायुषो ऽल्पकर्म्माणो बहुतरकर्म्मणा मबन्धात् शुभकर्म्मणाम

शुभतरलेश्यावतछे तेकिम जे पूर्वे उपना ते घणा कदर्पना दर्पथी घणा अशुभकर्म सचेछे तेमाटे महाकर्मी अथवा तिर्यच प्रमुखनो आयु बाधो तेमहा कर्मवत तथा अशुभवर्ण अशुभलेश्या ते पहिला उपना शुभकर्म क्षीणथया माटे पछेउपना तेणे तिर्यचादिकनो आयु बाधानथी अथवा शुभकर्मक्षीणथया नथी तेमाटे वर्णादिकशुभवेदना सूत्रनेविषे नारकीनी परे असुरकुमारछे तथापि भावनानेविषे विशेषछे तेकहेछे—जिकेसज्ञीभूत ते महावेदनावतछे

॥ टीका ॥

क्षीणत्वाच्च शुभवर्णादय स्युरिति, वेदनासूत्रञ्च यद्यपि नारकाणामिवा सुरकुमाराणामपि तथापि तद्भावनायां विशेष, सचाय ये सञ्ज्ञीभूता स्ते महावेदना श्चारित्रविराधनाजन्यचित्तसन्तापात्, अथवा, सञ्ज्ञीभूताः सञ्ज्ञिपूर्वभवा पर्याप्तावा, ते शुभवेदना माश्रित्य महावेदना, इतरे त्वल्पवेदनाइति, एवं नागकुमारादयो प्यौचित्येन नवदण्डकावाच्या. ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्मवण्णलेस्सा जहा णेरइयाणंति ॥ चत्वार्यपि सूत्राणि नारकसूत्राणीव पृथ्वीकायिकाभिलापेना धीयन्त इत्यर्थ, केवलमाहारसूत्रे भावनैव, पृथिवीकायिकाना मङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्रशरीरत्वे प्यल्पशरीरत्व मितरच्चेत आगमवचना दवसेय ॥ पुढविकाइए पुढविकाइयस्स ओगाहणठयाए चउठाणवडिएहिं ॥ तेचमहाशरीरा लोमाहारतो वहुतरान् पुद्गला नाहारयन्ती त्युच्छ्वसन्तिचा भीक्ष्णमहाशरीरत्वादेव अल्पशरीराणा मल्पाहारोच्छ्वासत्व मल्पशरीरत्वादेव, कादाचित्कत्वञ्च तयो. पर्याप्तकेतरावस्थापेक्ष मवसेय, तथा कर्मादिसूत्रेपु पूर्वपश्चादुत्पन्नाना पृथिवीकायिकाना कर्म्मवर्णलेश्याविभागो नारकै समएव, वेदनाक्रि

॥ भाषा ॥

जे पूर्व जन्मनेविषे चारित्रविराधनाथी उपनो चित्तसतापथी अथवा पूर्वभवे सञ्जीहता अथवा पर्याप्ताहता ते शुभवेदनाआश्री महावेदनावतकह्या अने असञ्जीने अल्पसाता वेदनीहुवे तेमाटें अल्पवेदनावतकह्या। सेसतहेव। थाकतो सर्व तिमज कहवो। एवजावथणियकुमाराण। इमनागकुमार आदिदेई नवस्तनितकुमारपर्यंत कहवा। पुढविकाइयाण आहारकम्मवण्णलेस्सा जहा णेरइयाण। पृथिवीकाइक जीवने आहार कर्म वर्ण लेश्या एचारेई सूत्र नारकसूत्रनीपरे कहवा पर आहारसूत्रनेविषे एहवी भावनाकरवी पृथिवीकाइयानो अगुलनो असख्यातमो भाग शरीरछे तेमाटें अल्पशरीर महा रीरपण आगमवचनथी प्रमाणकरवो वेदना क्रिया सूत्रनेविषे नानात्व देखाडेछे। पुढवीकाइयाणभते सव्वेसमवेदणा। पृथिवीकाय हेभगवन्! सर्वने सरीखी वेदनाहोय इतिप्रश्न उत्तर भगवत कहेछे—हतासमवेदणा। हा गौतम पृथिवीकाइया सर्वने सरीखी वेदनाछे। सेकेणठे णभते सव्वेसम वेदणा। ते स्ये कारणे हेभगवन्! पृथिवीकायिक सगला सरीखी वेदना भोगवे भगवंत उत्तर कहेछे। गोयमा। हेगौतम। पुढवीकाइया

यथोस्तु नानात्व मतएवाह ॥ पुढविकाइयाणंभंते । सव्वेसमवेयणेत्यादि ॥ असण्णित्ति ॥ मिथ्यादृष्टयो ऽमनस्कावा , ॥ असण्णिभूयत्ति ॥ असञ्ज्ञीभूता असञ्ज्ञिना या जायते तामित्यर्थः , एतदेवव्यनक्ति ॥ अणिदाएत्ति ॥ अनिर्द्धारणाया वेदना वेदयन्ति वेदना मनुभवन्तोपि न पूर्वोपात्ताशुभकर्म्म परिणति रियमिति, मिथ्यादृष्टित्वा दवगच्छन्ति विमनस्कत्वाद्वा, मत्तमूर्च्छितादिवदितिभाव ॥ माईमिच्छद्दिठित्ति ॥ मायावन्तो हि तेषु प्राये णो त्पद्यन्ते यदाह—उम्मग्गदेसणुम्म ग्गणासणुगूढहियय माइल्लो सढसीलोयससल्लो तिरियाउवंधइजीवोत्ति ॥ १ ॥ तत स्ते मायिन उच्यन्ते , अथवा ; मायेह अनन्तानुबन्धिकषायोपलक्षण मतो ऽनन्तानुबन्धिकपायोदयवन्तो ऽतएव मिथ्यादृष्टयो मिथ्यात्वोदयवृत्तयइति ॥ ताणंणियइयाउत्ति ॥ तेषा

समवेयणा गोयमा पुढविकाइयासव्वेअसण्णिभूया अणिदाए वेदणवेदेंति सेतेणठेणं पुढविकाइयाणं भंतेसव्वेस मकिरिया हंता समकिरिया सेकेणठेणभंतेपुढविकाइया गोयमा पुढविकाइयासव्वेमाईमिच्छद्दिठी ताणंणेय तियाणंपंचकिरियाउकज्जंति तंजहा आरंभियाजावमिच्छादंसणवत्तिया सेतेणठेणंपुढविकाइयासमाउयासमो

सव्वे असण्णीसण्णिभूय अणिदाएवेदणवेदेंति सेतेणठेण । सगलाजीव असञ्ज्ञीछे असञ्ज्ञीभूत मिथ्यात्वीछे मनरहित असञ्ज्ञीयाछे जेहवोहोय तेहवो वेदे तेहीजकहेछे निर्द्धारविना वेदना भोगवेछे पणिपूर्वेउपार्या जेअशुभकर्म तेहनोएपरिणामछे एहवू नजाणे मिथ्यादृष्टिपणाथी मनरहितपणाथी ते तेणे अर्थे इमकह्यु वली गौतम पूछेछे—श्रीमहावीरस्वामी प्रते । पुढवीकाइयाणंभंते सव्वेसमकिरिया हंतासमकिरिया । पृथिवीकायिकजीव हेभगवन् सग ला समक्रियावतछे हांगौतम पृथिवीकायिक सगला सरीखाक्रियावतछे गौतमकहेछे । सेकेणठेणभंते पुढविकाइया । ते किसेअर्थे हेभगवन् पृथिवीका यिक सर्वेसमक्रियछे उत्तर । गोयमा । हेगौतम । पुढवीकाइया सव्वे माईमिच्छद्दिठी । पृथिवीकायिक सगला मायावतहोज प्राये उपजे मिथ्यादृष्टीछे य था उम्मगदेसणाम ग्गणासणागूढहिययमाइल्लो सढसीलोयससल्लो तिरियाओवधणजीवो ॥ १ ॥ ताणणेयतियाण पचकिरियाओकज्जति तजहा । ते पृथि वीकायिकने निश्चे निरतरे पचक्रियालागे ते कहेछे—आरंभियाजाव मिच्छादिट्ठी । आरभकीक्रिया १ यावत्शब्दे परिग्रहकी २ मायाप्रत्ययिकी ३ अप्र

॥ टीका ॥

पृथिवीकायिकाना नैयतिक्यो नियता नतु त्रिप्रभृतय पञ्चैवेत्यर्थः ॥ सेतेणट्ठेणसमकिरियत्ति ॥ निगमन ॥ जावचउरिंदियत्ति ॥ इह महाशरीरत्व मितरच्च स्वस्वावगाहनानुसारेणा वसेय, श्राहारश्च द्वीन्द्रियादीना मक्षेपलक्षणोपीति ॥ पचिंदियतिरिक्खजोणियाजहानेरइयत्ति ॥ प्रतीत नवर मिहमहाशरीरा अभीक्ष्ण माहारयन्ति उच्छ्वसन्तिचेति यदुच्यते' तत्सङ्ख्यातवर्षायुषो ऽपेक्ष्येत्यवसेय' तथैव दर्शना न्ना सङ्ख्यातवर्षायुष स्तेषा प्रक्षे पाहारस्य षष्ठस्यो परि प्रतिपादितत्वात्' अल्पशरीराणा त्वाहारोच्छ्वासयो. कादाचित्कत्व वचनप्रामाण्यादिति, लोमाहारापेक्षयातु सर्वेषा

॥ सूल

ववसगा जहाणेरइयातहाभाणियव्वा जहापुढविकाइयातहा जाव चउरिंदिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहाणेरइया णाणत्तकिरियासु। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते सव्वेसमकिरिया गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेके णट्ठेण भंते गोयमा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पसत्ता तजहा सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छा

॥ भाषा ॥

त्याख्यानको ४ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिको ए एकहवो। सेतेणट्ठेण पुढवी काइया समाउया समोववसगा जहाणेरइया तहाभाणियव्वा। ते तेणेअर्थ इमकह्यु वली गौतम पूछेछे—पृथिवीकायिक सर्वसरीखे आऊखे सरोखाऊपनाछे जिमनारकोकह्या तिमपृथिवीकायिकनाजीवपणि कहवा तिमहीज इहा प णि चउभगी कहवी। जहापुढवीकाइया तहाजावचउरिंदिया। जिम पृथिवीकायिक कह्या तिम यावत्शब्दे अप्कायतेजकाय वाउकाय वनस्पती काय बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिंद्रीलगें इमजकहवो इहा महाशरीरपणू अनें अल्पशरीरपणू पोता पोतानी अवगाहनाने अनुसारे कहवूं आहार बेइन्द्रीने आ दिदेईने एहने प्रक्षेप लक्षणपणिहुवे। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहाणेरइया णाणत्त किरियासु। पचेंद्री तिर्यंचयोनिक जीव जिम नारकीकह्या ति म जाणवा इहा मोटाशरीरना घणो अभिक्खणआहारेति इत्यादि जेकह्योये ते सख्यात वर्षायुषनी अपेक्षाये जाणवो विशेष ते क्रियाने विषे जाणवा तेहीज देखाडेछे। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणभंते सव्वेसमकिरिया। पचेंद्री तिर्यंचयोनिक हेभगवन्। सगला समक्रियछे सरीखो बेक्रिया कहता क र्मबंध जेहनो भगवतकहेछे—गोयमा। हेगौतम। णोइणट्ठेसमट्ठे। एअर्थ समर्थनहीं युक्तनहीं। सेकेणट्ठेण भंते। ते स्यंअर्थ? हेभगवन् तिर्यंचयोनिया

मप्यत्रोक्त मिति घटत एव, अल्पशरीराणान्तु य त्कादाचित्कत्व त दपर्याप्तकत्वे लोमाहारोच्छ्रासयो रभवनेन पर्याप्तकत्वेच तद्भावेना वसेयमि ति, तथा कर्म्मसूत्रे यत्पूर्वोत्पन्नाना मल्पकर्म्मत्व मितरेयान्तु महाकर्म्मत्व, तदायुष्कादि तद्भववेद्यकर्म्मापेक्षया वसेय, तथा वर्णलेश्यासूत्रयो र्य त्पूर्वोत्पन्नाना शुभवर्णाद्युक्त तत्तारुण्यात्, पश्चादुत्पन्नाना मशुभवर्णादि वाल्यादवसेय, लोके तथैव दर्शनादिति, तथा ॥ सजयासजयत्ति ॥ देश विरता स्थूला त्प्राणातिपातादे र्निवृत्तत्वा दितरस्मा दनिवृत्तत्वाच्चेति ॥ मणुस्साजहानेरइयत्ति ॥ तथा वाच्या इतिगम्य, नानात्व भेद पुनरय

ट्ठी तत्थणजेतेसम्माद्दिठी तेदुविहा पन्नत्ता तंजहा असंजयाय सजयासंजयाय तत्थणंजेतेसंजयासंजया तेसिणंतिन्निकिरियाउकज्जंति तंजहा आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया असजयाणचत्तारि मिच्छद्दिठी णपच सम्मामिच्छद्दिठीणपंच मणुस्साजहाणेरइया णाणत्तंजेमहासरीरातेबहुतरागंआहारेंति ४ जेअप्पसरीरा

सर्व समक्रियनहो । उत्तर । गोयमा । हेगोतम पचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पन्नत्ता तजहा । पचेंद्री तिर्यचयोनिकजाव तोनभेद कह्या ते क हेछे—सम्मद्दिठी । सम्यग्दृष्टी चौथे पाचमे गुणठाणें रह्याते । मिच्छद्दिठी । मिथ्यादृष्टी पहिलेठाणें रह्याते । सम्मामिच्छद्दिठी । मिश्रदृष्टी त्रीजेगुणठाणे हुवे । तत्थणजेते सम्मद्दिठी । तिहा पूर्वोक्त तीनपचमाहे जे सम्यग्दृष्टी समकितीछे । ते दुविहा पन्नता तजहा । तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—असं जयाय । एक असंजती विरतिरहित चौथेगुणठाणे रह्या । सजया सजयाय । बीजादेशविरती स्थूल प्राणातिपातथकी निवर्त्याछे तेमाटे सयती सूक्ष्म थकी निवर्त्यानहीं तेमाटे असयती कह्या । तत्थणजेतेसजयासजया । तिहा पूर्वोक्त बेपचमाहें जिके सयतासयती देशविरतीछे । तेसिणतिण्णिकि रियाओ कज्जति तंजहा । तेहोने तीनक्रिया उपजे ते कहेछे—आरभिया । आरभकी क्रिया । परिग्गहिया । परिग्रहकीक्रिया २ । मायावत्तिया । मा याप्रत्ययिकीक्रिया ३ । असजयाणचत्तारि । असयती चौथे गुणठाणें तेहने तीन पहिली चौथी अप्रत्याख्यानकी एवंचारिक्रियालागे । मिच्छद्दिठीणप च । मिथ्यादृष्टीने चारि पहिली पचमी मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी एवं ५ लागे । सम्मामिच्छद्दिठीणपच । मिश्रदृष्टी तृतीयगुणठाणें रह्या जीवने मिथ्या

॥ टीका ॥ तत्र ॥ मणुस्साणं भंते । सव्वेसमाहारगा इत्यादि ॥ प्रश्न ॥ नोइणट्ठेसमट्ठेइत्या ॥ युत्तरं ॥ जाव दुविहामणुस्सा पणत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरी राय तत्थणं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारंति एव परिणामंति ऊससंति णीससंति ॥ इह स्थाने नारकसूत्रे अभिक्खणंआहारंती त्यधीत मिह तु आहच्चेत्यधीयते, महाशरीराहि देवकुर्वादिमिथुनका स्तेच कदाचिदेवा हारयन्ति, कावलिकाहारेण, अष्टमभत्तस्सआहारोत्तिव चनात्, अल्पशरीरा स्त्वभीक्ष्ण मल्पञ्च बालाना तथैव दर्शनात्, सम्मूर्च्छिममनुष्याणा मल्पशरीराणा मनवरत माहारसम्भवाच्च, यच्चेह पूर्वोत्प

॥ मूल ॥ तेअप्पतराएपोग्गलेआहारेंति ४ अभिक्खणआहारेंति सेसंजहाणेरइयाणं जाववेदणा। मणुस्साणंभंतेसव्वेस

॥ भाषा ॥ मनुष्यने जिम नारकोने कह्यो तिमजाणवो एतलाविशेष छे ते कहेछे— मणुस्साणंभंतेसव्वसमाहारगा इत्यादि प्रश्न । गोयमा णोइणट्ठे समट्ठेत्यादि । उत्तर । जाव दुविहा मणुस्सा पणत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय तत्थणंजेते महासरीरा बहुतराए पोग्गले आहारेंति एव परिणामेंति ऊससति णीससति। इणे स्थानके नारक सूत्रनेविषे अभिक्खण आहा रेंति इसोकह्यो अने इहा आहच्च इसो कह्यो तेमहाशरीरयत देवकुरु युगलक्षेत्र आदि युगलियाकह्या ते किवारे ते आहारेछे कावलिकाहारेण अष्टम भत्तस्स आहारोत्ति वचनात् । जेअप्पसरीरातेअप्पतराए पोग्गले आहारेंति ४ अभिक्खणआहारेंति । जे अल्पशरीरना धणी ते अल्पतर पुद्गलआहारे वा रवार आहारे एभल्पतरनें वारवार ते बालकनी अपेक्षावि ते तेहवो लोकनेविषे पणिदीसेंछे सम्मूर्च्छिम मनुष्यनें अल्पशरीरीनें निरंतर आहारना स भवथकी जेइहा पूर्वे जपना तेहने शुद्धवर्णादिहोय ते योवनपणाथी जाणवो अथवा संमूर्च्छिमनो अपेक्षायें जाणवो। सेसजहाणेरइयाणं जाववेदणा। याकतोसर्व जिम नारकीने विषे कह्यु तिमकहवो यावत् वेदनासूत्र तालगे । मणुस्साणंभंते सव्वेसमकिरिया । वली गौतमपूछेछे मनुष्य हेभगवन् सगला सरीखा क्रियावंतछे । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णोइणट्ठेसमट्ठे । एअर्थ समर्थनहीं युक्तनहीं । सेकेणट्ठेणंभंते । ते स्यामाटे ? हेभगवन् इमकह्यु उत्तर । गोयमा । हेगौतम । मणुस्सातिविहा पणत्ता तंजहा । मनुष्यना तीनभेद कह्या ते कहेछे—सम्मद्दिट्ठी । सम्यग्दृष्टी समकिती १ । मिच्छद्दिट्ठी । मिथ्या

॥ टीका ॥

नाना शुक्रवर्णादि तत्तारख्यात्सम्मूर्च्छिमापेक्षयावेति ॥ सरागसंजयत्ति ॥ अक्षीणानुपशान्तकषाया ॥ वीयरागसंजयत्ति ॥ उपशान्तकषाया' क्षीण

॥ मूल ॥

मकिरिया गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणज्ञंते गोयमा मणुस्सातिविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मद्दिठी मिच्छ
द्दिठी सम्मामिच्छाद्दिठी तत्थणजेतेसम्मद्दिठी तेतिविहा पन्नत्ता तंजहा संजयाय असंजयाय संजयासंज
याय तत्थणजेतेसंजयातेदुविहा पन्नत्ता तंजहा सरागसंजयाय वीयरागसंजयाय तत्थणंजेतेवीयरागसंजया
तेणअकिरिया तत्थणजेतेसरागसंजया तेदुविहा पन्नत्ता तंजहा पमत्तसंजयाय अपमत्तसंजयाय तत्थणजेते
अपमत्तसंजया तेसिणंएगा मायावत्तियाकिरियाकज्जइ तत्थणजेतेपमत्तसंजया तेसिणदोकिरियाकज्जइ तंजहा

॥ भाषा ॥

दृष्टीमिथ्यात्वी २ । सम्मामिच्छाद्दिठी । सम्यग्मिथ्यादृष्टी मिश्रदृष्टी ३ । तत्थण जेते सम्मद्दिठी । तिहा पूर्वोक्त तीनपचमाहे जे ते समकितीछे ते । तिविहा पन्नत्ता तंजहा । तेहना तीनभेद कह्या तेकहेछे—संजयाय । संयती सर्वविरती प्रमत्तआदि अयोगीगुणठाणेवर्त्तेते । असंजयाय । असंयती केवल सम्य ग्द्दष्टी ते चतुर्थगुणठाणे वर्ते । संजयासंजयाय । संयतासंयती तेश्रावकदेशविरती पांचमे गुणठाणे वर्तेते ग्रहवेषधारी ते । तत्थणजेतेसंजया ते दुविहा प० तंजहा । तिहा पूर्वोक्त तीन पचमाहि जे संयती सर्वविरती प्रमत्तादि गुणठाणे वर्त्ते तेहना बभेद कह्या ते कहेछे—सरागसंजयाय । चयनहुया अथवा उपशम्यानथी कषाय ते सरागसंयती कहिये । वीतरागसंजयाय । जेणें कषाय उपशमाव्या अथवा खपाव्या हुवे ते वीतरागसंयमी कहिये । तत्थणजेते वीतरागसंजया । तिहा पूर्वोक्त बेपचमाहे जेणे कषाय उपशमाव्या तथा खपाव्या होय ते वीतरागसंयमी । तेणअकिरिया । तेहने वीतरागपणेकरी आरंभादिकनो अभावछे तेमाटे अक्रियछे । तत्थणजेतेसरागसंजया । तिहा पूर्वोक्त बेपचमाहे जेणे कषाय उपशमाव्या तथा खपाव्या नथी ते सराग संयमी । तेदुविहापन्नत्ता तंजहा । तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—पमत्तसंजयाय । प्रमत्तसंयती छठे गुणठाणे वर्त्ते ते कहीये । अपमत्तसंजयाय । अप्रमत्त संयमी जे सातमेगुणठाणें वर्त्ते तेकह्यो । तत्थणजेते अपमत्तसंजया । तिहा पूर्वोक्त बेपचमाहे जेअप्रमत्तसंयती सातमेगुणठाणे वर्त्ते । तेसिण एगा माया

॥ टीका ॥

कषायाद्य ॥ अकिरियत्ति ॥ वीतरागत्वेना रम्भादीना मभावादक्रिया. ॥ एगामायावत्तियत्ति ॥ अप्रमत्तसयताना मेकैव मायाप्रत्यया क्रिया ॥ कज्ज इत्ति ॥ क्रियते भवति कदाचि दुम्काहरणप्रवृत्ताना मक्षीणकषायत्वादिति ॥ आरंभियत्ति ॥ प्रमत्तसयतानाञ्च सर्व प्रमत्तयोग आरम्भ इतिकृत्वा आरम्भिकी स्या दक्षीणकपायत्वाच्च मायाप्रत्ययेति ॥ वाणमतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारत्ति ॥ तत्र शरीरस्या ल्पत्वमहत्वे स्वावगाहनानु सारेण वसेये, तथा वेदनाया असुरकुमाराः ॥ सण्णिभूयाय असण्णिभूयाय सण्णिभूया महावेयणा असण्णिभूया अप्पवेयणा इत्येव मधीता व्यन्तराश्च

॥ मूल ॥

आरंभियाय मायावत्तियाय तत्थणजेतेपमत्तसंजया तेसिणंआदिमाउ तिण्णिकिरियाउकज्जति असंजयाणं चत्तारिकिरियाउकज्जति मिच्छदिट्ठीणपंच सम्मामिच्छदिट्ठीणपंच वाणमंतरजोइसवेमाणियाजहा असुरकु

॥ भाषा ॥

वत्तिया किरियाकज्जइ । तेहने कदाचित् उड्डाहराखण निमित्ते प्रवर्त्याने एक मायावत्तिको क्रिया लागे कषाय चोणनहुवाछे तेमाटे । तत्थणजेतेप मत्तसंजया । तिहा पूर्वोक्त बेपचमाहें जे प्रमत्तसयतीछे । तेसिण दो किरियाकज्जते तंजहा आरंभियाय मायावत्तियाय । तेहने बेक्रियाहुवे तेकहेछे सर्व प्रमत्तयोग आरंभरूपछे तेमाटे आरंभको क्रियाहोय १ अक्षीणकषायपणाथी मायाप्रत्ययिकोहोय २ । तत्थणजेतेमसंजयासंजया । तिहा पहिला सूत्रने अ नरे कह्या तोनपच तेमाहे देशविरतिना धणी पांचमेगुणठाणे वर्त्ते । तेसिणमादिमाओ तिण्णिकिरियाओकज्जति । तेहने पहिलो तीनक्रिया लागे आर भको १ परिग्रहको २ मायाप्रत्ययिको ३ एव तीनलागे तथा । असंजयाणचत्तारिकिरियाओकज्जति । असयती कोनल सम्यग्दृष्टो चौथे गुणठाणे वर्त्ते ते हने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकोटाली चारक्रिया लागे । मिच्छदिट्ठीणपंच । मिथ्यादृष्टीने आरंभकोआदि पाच क्रिया लागे । सम्मामिच्छदिट्ठीणपंच वाणम तरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा । सम्यग्मिथ्यादृष्टीने त्रीजे गुणठाणे छै तेहनेपणि पाचक्रिया लागे वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक ए जिम असु रकुमारकह्या तिमजाणवा तिहा शरीरनो अल्पपणु तथा महत्वपणु ते पोतापोतानो अवगाहनाने अनुसारे जाणवा । णवर वेदणाए णाणत्त । एतलो विशेष ज्योतिषी वैमानिकनेविषे कहवो सातावेदनो आश्रो नानात्व । मायोमिच्छदिट्ठोउववण्णगाय अप्पवेयणतरा । मायीपणे मिथ्यादृष्टी ऊपना तेहने

॥ टीका ॥

पि तथैवाध्येतव्या, यतो ऽसुरादिषु व्यन्तरान्तेषु देवेष्वसञ्ज्ञिन उत्पद्यन्ते, यतो ऽत्रैवो द्देशके वक्ष्यति ॥ असण्णीणं जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसुत्ति ॥ तेषां सुरकुमारप्रकरणोक्तयुक्ते रल्पवेदना भवन्तीत्यवसेयं, यत्तु प्रागुक्तं सञ्ज्ञिनः सम्यग्दृष्टयो ऽसञ्ज्ञिन स्त्वितरइति, तं वृद्ध व्याख्यानुसारेणैवेति, ज्योतिष्कवैमानिकेषु त्वसञ्ज्ञिनोनोत्पद्यन्ते, ऽतोवेदनापदेतेष्वधीयते ॥ दुविहाजोइसियामायिमिच्छाद्दिठीउववन्नगायेत्यादि ॥ तत्रमायिमिथ्यादृष्टयो ऽल्पवेदना इतरेच महावेदना· शुभवेदनामाश्रित्येति, एतदेवदर्शयन्नाह, नवरं ॥ वेयणाएइत्यादि ॥ अथ चतुर्विंशतिदण्डक मेव लेश्याभेदविशेषणमाहारादिपदै र्निरूपयन् दण्डकसप्तकमाह ॥ सलेसाणभंते ! णेरइया सव्वेसमाहारगत्ति ॥ अनेना हारशरीरोच्छ्वासकर्म्मवर्ण लेश्यावेदनाक्रियोपपाताख्यपूर्वोक्तनवपदोपेतनारकादिचतुर्विंशतिपददण्डको लेश्यापदविशेषित सूचित, स्तदन्येच कृष्णलेश्यादिविशेषिता पू र्वोक्तनवपदोपेता एव यथासम्भव नारकादिपदात्मकाः षड्दण्डकाः सूचिता स्तदेव मेतेषां सप्तानां दण्डकानां सूत्रसङ्क्षेपार्थं यो यथा ध्येतव्य स्त तया दर्शयन्नाह ॥ ओहियाणमित्यादि ॥ तत्रौघिकानां पूर्वोक्तानां निर्विशेषणानां नारकादीनां, तथा सलेश्यानां मधिकृतानामेव, शुक्ललेश्यानां तु सप्तमदण्डकवाच्यानां मेषां त्रयाणां मेकोगमः, सदृशः पाठः, सलेश्य· शुक्ललेश्य श्चे त्येवंविधविशेषणकृतएव तत्रभेद, औघिकदण्डकसूत्रवदनयोः

॥ मूल ॥

माराणवरं वेदणाएणाणत्तं मायीमिच्छद्दिठीउववन्नगाय अप्पवेयणतरा अमायीसम्मद्दिठीउववन्नगाय महावेयणतराभाणियव्वा । जोइसवेमाणियाय । सलेस्साणं भंते णेरइयासव्वेसमाहारगा ओहियाणं सलेस्साणं सु

॥ भाषा ॥

अल्प थोडीवेदना ते सातावेदनी आश्री जाणवी । अमायीसम्मद्दिठीउववन्नगाय महावेयणतरा भाणियव्वा । अमाईपणे सम्यग्दृष्टी ऊपना तेहने विशे पे सातावेदनीय अधिकतर होय उत्कृष्टी स्थितिमाटे सम्यग्ज्ञान माटे । जोइसवेमाणियाय । ए ज्योतिषी वैमानिकनेविषे असुरकुमारथी विशेष जाणवो । सलेस्साणभंते णेरइया सव्वेसमाहारगा । लेश्यासहित जे नारकीप्रमुख जीव ते सलेशी हेभगवन् । नारकीसगलानो एकसरीखो आहारछे । ओहियाण । समुच्चयजीवनो पूछ गौं । सलेस्साण । लेश्यासहितने । सुक्कलेस्साण । शुक्ललेशीने । एएसिण तिण्ह एक्कोगमो । ए त्रिहुनो एक कहता सरीखो गमो कहयो

॥ टीका ॥

सूत्रमितिहृदय तथा ॥ जस्सत्थि ॥ इत्येतस्य वक्ष्यमाणपदस्येह सम्बन्धा यस्य शुक्ललेश्यास्ति सएव तद्दण्डके ध्येतव्य, स्तेनेह पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चोमनुष्या वैमानिकाश्च वाच्या, नारकादीना शुक्ललेश्याया अभावादिति ॥ किरहलेसनीललेस्साण पि एगोगमो ॥ औघिकगवेत्यर्थ, विशेषमाह, णवर ॥ वेयणा एइत्यादि ॥ कृष्णलेश्यादण्डके नीललेश्यादण्डकेच वेदनासूत्रे ॥ दुविहा णेरइया पणत्ता सन्निभूयाय असन्निभूयायत्ति ॥ औघिकदण्डकाधीत ना ध्येतव्य, असञ्ज्ञिना मप्रथमपृथिव्या मेवोत्पादा दसन्नीखलुपढममितिवचनात् प्रथमायाञ्च कृष्णनीललेश्यायो रभावा त्तर्हि कि मध्येतव्यमित्याह ॥ मायीमिच्छद्दिठिउववरणगायेत्यादि ॥ तत्रमायिनो मिथ्यादृष्टयश्च महावेदना भवन्ति' यत. प्रकर्षपर्यन्तवर्तिनी स्थिति मशुभा तेनिर्वर्त्तयन्ति, प्रकृष्टायाञ्च तस्या महती वेदना सम्भवतीतरेषान्तुविपरीतेति' तथा मनुष्यपदे क्रियासूत्रे यद्य प्यौघिकदण्डके ॥ तिविहामणुस्सा पणत्ता तजहा सजया ३ तत्थण जे ते सजया ते दुविहा पणत्ता तजहा सरागसजया वीयरागसजयाय तत्थणजेतेसरागसजया ते दुविहा पणत्ता तजहा पमत्तसजया अपमत्तसजयायत्ति ॥ पठित' तथापि कृष्णनीललेश्यादण्डकयो नाध्येतव्य कृष्णनीललेश्योदये सयमस्य निषिद्धत्वा' द्यचोच्यते–पुव्वपडिवन्नउपुण अन्नयरोएउलेस्साएत्ति ॥ त त्कृष्णादिद्रव्यरूपा द्रव्यलेश्या मङ्गीकृत्य नतु कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यजनितात्मपरिणामरूपां भावलेश्या' मेतच्च प्रागप्युक्तमिति' एतदेव दर्शयन्नाह ॥ मणुस्सेत्यादि ॥ तथा कापोतलेश्यादण्डकोपि नीललेश्यादण्डकव दध्येतव्यो' णवर नारकपदे वेदनासूत्रे नारका औघिक

॥ सूत्र ॥

क्कलेस्साण एएसिणंतिरहंएक्कोगमो करहलेसणीललेस्साणपिएगोगमो णवरं वेदणाए मायीमिच्छद्दिठीउववरण
गाय अमायीसम्मद्दिठीउववरणगायजाणियव्वा मणुस्साकिरियासु सरागवीतरागअपमत्तापमत्ताणजाणियव्वा

॥ भाषा ॥

पाठकहवो । कएहलेस णीललेस्साणपि एक्कोगमो । कृष्णलेशी नीललेशी ए बेहुनो पणि एगोगमो एतले सरीखो पाठ कहवो । णवर वेदणाए । एतलो विशेष वेदनानेविषे । मायीमिच्छद्दिठीउववरणगाय । मायीपणे मिथ्यादृष्टी ऊपना तेहने महावेदना हुये उत्कृष्टी स्थितिप्रतें पामें तिहा मोटी वेदनास भवे अने । अमायीसम्मद्दिठीउववरणगाय भाणियव्वा । अमायीपणे सम्यग्दृष्टी ऊपना तेहने अल्पवेदना होय इत्यादिकहवूं । मणुस्साकिरियासुसरागवीत

॥ टीका ॥

दण्डकवदेव वाच्या, स्तेचेवं ॥ नेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूयाय असण्णिभूयायत्ति ॥ असञ्ज्ञिनां प्रथमपृथिव्युत्पादेन कापोतलेश्यास्त्र स्भवा दतएवाह ॥ काउलेस्साणवीत्यादि ॥ तथा तेजोलेश्यापद्मलेश्याच यस्यजीवविशेषस्या स्ति त माश्रित्य यथौघिको दण्डक स्तथा तयो र्दण्ड कौ भणितव्यौ, तदस्तिता चैव नारकाणां विकलेन्द्रियतेजोवायूनांच आद्या स्तिस्त्रएव, भवनपतिपृथिव्यम्बुवनस्पतिव्यन्तराणा माद्या श्चतस्र, प ञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणां षट्, ज्योतिषां तेजोलेश्या, वैमानिकानां तिस्र प्रशस्ताइति, आहच–किण्हानीलाकाऊ तेऊलेसायभवणवतरिया । जोइ ससोहम्मीसा णेतेउलेसामुणेयव्वा ॥ १ ॥ कप्पेसणकुमारे माहिंदेचेवबम्भलोगेय । एएसुपम्हलेसा तेणपरसुक्कलेसाउ ॥ २ ॥ तथा पुढवीआउवणस्सइ बायरपत्तेयलेसचत्तारि [तेजोलेश्यान्ता] गब्भयतिरियनरेसु छल्लेसातिन्निसेसाण ॥ १ ॥ केवलमौघिकदण्डके क्रियासूत्रे मनुष्याः सरागवीतरागवि शेषणा अधीता, इहलेश्याप्रकरणेतु तथा न वाच्या, तेज पद्मलेश्ययो र्वीतरागत्वा सम्भवा च्छुक्ललेश्यायामेव तस्यवीतरागस्यसम्भवा त्प्रमत्ता अप्रम

॥ मूल ॥

काउलेस्साणवि एमेवगमो णवरं णेरइए जहाओहिएदण्डए तहाभाणियव्वा तेउलेस्सापम्हलेस्साजस्सअत्थिजहा

॥ भाषा ॥

राग अपमत्ता पमत्ता णभाणियव्वा । मनुष्यपदे क्रियासूत्रनेविषे यद्यपि आधिकादंडके सराग वीतराग अप्रमत्त प्रमत्त कह्याछे तथापि कृष्णनीललेश्या द डकनेविषे ए न कहवो कृष्णनीललेश्याने उदये सयमना अभावथको । काउलेस्साणवि एमेवगमो णवर णेरइए जहा ओहिए दडए तहा भाणियव्वा । कापोतलेश्यानो दंडकपणि नीललेश्यादंडकनीपरें कहवो एतलोविशेष नारकी जिम औघिकादंडके कह्या तिम कहवा ते इम णेरइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सण्णिभूयाय असण्णिभूयायत्ति । असन्नीया पहिलो पृथिवीयें उपजवेकरी कापोतलेश्यानो सभवछे तथा । तेउलेस्सापम्हलेस्साजस्स अत्थिजहाओहि ओ तहाभाणियव्वा । तेजोलेश्या पद्मलेश्या जेजीवविशेषने छे तेआश्रीने जिम औघिकादंडके कह्यो तिम ते बेजनो कहवो ते लेश्या जिमछे तिम कहेछे नारकीविगलेंद्री तेऊवाऊ एहनेपहिली तीनलेश्याहुवे तथा भवनपती पृथिवी अप् वनस्पती एहने तथा व्यंतरने पहिली चारलेश्या हुवें पचेंद्री तिर्यंच म नुष्यने छलेश्याहुवें ज्योतिषीने तेजोलेश्याहुवे वैमानिकने छेहलीप्रशस्त तीनलेश्याहुवे । णवर । एतलोविशेष केवल औघिकदंडकनेविषे । मणुस्सासराग

॥ टीका ॥

ता स्तूच्यन्तइति, एतदेव दर्शयन्नाह ॥ तेउलेसापम्हलेसेत्यादि ॥ गाहत्ति ॥ उद्देशकोदिता सूत्रार्थसङ्ग्रहगाथा गतार्थापि सुखबोधार्थं मुच्यते, दुःख मायुश्च उदीर्णं वेदयती त्येवत्वपृथुत्वाभ्या दण्डकचतुष्टयमुक्त, तथा ॥ आहारेत्ति ॥ नेरइयाकिसमाहाराइत्यादि ॥ तथा ॥ किसमकम्मा ॥ तथा ॥ किसमवण्णा ॥ तथा ॥ किसमलेस्सा ॥ तथा ॥ किसमवेयणा ॥ तथा ॥ किसमकिरिया ॥ तथा ॥ किसमाउयासमोववण्णगत्ति ॥ गाथार्थ, ॥ प्राक्त लेश्या नारका इत्युक्त, मथ लेश्यानिरूपयन्नाह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्र लिनि कर्मपुद्गलाना लेशनात् सश्लेषणा लेश्या, योगपरिणामा, श्चैता यो गनिरोधे लेश्याना मभावात्, योगश्च शरीरनाम कर्मपरिणतिविशेष. ॥ तेस्सणबीउउद्देसउत्ति ॥ प्रज्ञापनाया लेश्यापदस्य चतुरुद्देशकस्येह द्विती योद्देशको लेश्यास्वरूपावगमाय भणितव्य, प्रथमइति क्वचित् दृश्यते सोपपाठइति' अथ कियद्दूर यावदित्याह ॥ जावइड्ढी॥ ऋद्धिवक्तव्यता याव त् सचाय सक्षेपत ॥ कइण भते । लेसाउ पण्णत्ताउ गोयमा ? छल्लेसाउ पण्णत्ताउ तजहा कण्हलेसाई ॥ एव सर्वत्र प्रश्न उत्तरच वाच्य ॥ नेरइयाण

॥ मूल ॥

उहितहाभाणियव्वा णवरं मणुस्सासरागवीतरागाणभाणियव्वा गाहा दुक्खाउएउदिणे आहारेकम्मवण्णलेस्सा य समवेयणसमकिरिया समाउयाचेवबोधव्वा ॥ १ ॥ कइणभंतेलेस्साउपण्णत्ताउ गोयमा छलेस्साउपण्णत्ताउ

॥ भाषा ॥

वीतरागा अभाणियव्वा । सराग वीतराग विशेषणे कह्या इहा ते नकह्या तेजूपद्मलेश्यानेविषे वीतरागपणाना असभवथको शुक्ललेश्यानेविषेज वीत रागपणानो सभवछे प्रमत्त अप्रमत्त कहवा । गाहा । दुक्खाउएउदिणे । बीजा उद्देशाआदिथी माडी सूत्रार्थ गाथा तेहनो अर्थतो अनुक्रमे कह्यो तेहीजछे पणि सुखावबोधभणी वली कहियेछे—दुक्खआउखु उदय आव्यू ते वेदे ए एकवचन बहुवचनेकरी दडक चारकह्या तहा आहारेत्ति णेरइ य.णभते कि समाहारा तथा किसमकम्मा तथा किसमवण्णा तथा किसमलेस्सा तथा किसमवेदणा तथा किसमकिरिया तथा किसमाउयासमोववण्ण गत्ति इत्यादि जाणवो पूर्वे सलेशीनारकीछे इसोकह्यो तेमाटे तेलेश्या कहीयेछे—किहा आत्मानेविषे कर्मपुद्गलना सश्लेषणथकी लेश्याकहीये । कइणंभते लेश्याओपण्णत्ताओ । केतली हेभगवन् । लेश्याकही इतिप्रश्न । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । छलेश्याओ पण्णत्ताओ तजहा । छलेश्या कही ते कहेछे—

॥ टीका ॥

ति तेषा द्विविधो' मनुष्यदेवानांतुत्रिविधो प्यस्ति' आहच–सुन्नासुन्नोमीसो तिविहोससारचिट्ठणाकालो । तिरियाणसुन्नवज्जो सेसाणहोइतिवि
होवि ॥ १ ॥ तत्रा शून्यकाल स्तावदुच्यते' अशून्यकालस्वरूपपरिज्ञानेहि सती तरो सुज्ञानो भविष्यतइति, तत्र वर्त्तमानकाले सप्तसु पृथिवीषु ये
नारकावर्त्तन्ते, तेषा मध्या द्याव न्नकश्चि दुद्वर्त्तते नचा न्यउत्पद्यते, तावन्मात्रा एवते आसते सकाल स्ता न्नारका नङ्गीकृत्याशून्यइतिभण्यते, आह
च–आइट्ठसमइयाणं नेरइयाणनजावएक्कोवि । उव्वट्टइअन्नोवा उववज्जइसोअसुन्नोउ ॥ १ ॥ मिश्रकालस्तु तेषामेव नारकाणा मध्या देकादय उद्वृत्ता,

॥ मूल ॥

णेरइयसंसारसंचिठ्ठणका
रक्कजोणियसंसारसंचिठ्ठणकाले मणुस्ससंसारसंचिठ्ठणकाले देवसंसारसंचिठ्ठणकाले।
लेणं भंते कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुन्नकाले असुन्नकाले मिस्सकाले । तिरिक्ख

॥ भाषा ॥

ए संसारसचिठ्ठणकाले। नारकीनाभवने जोवरहे ते ससारसंचिठ्ठणकालकहीये इम । तिरिक्खजोणियससारसचिठ्ठणकाले। तिर्यंचना भवनेविषे जीव
नो रहवो ते तिर्यंचससारसचिठ्ठणकाल कहीये । मणुस्ससंसारसचिठ्ठणकाले । मनुष्यना भवनेविषे जोवनो रहवो ते मनुष्यससारसचिठ्ठणकाल कहीये
देवससारसचिठ्ठणकाले । देवना भवनेविषे जीवनोरहवो ते देवसमारसचिठ्ठणकाल कहीये। णेरइयससारसचिठ्ठणकालेणभंते कइविहेपन्नत्ते। वली गौ
तमपूछेछे—नारकीसंसारसचिठ्ठणकाल हेभगवन् । केतलाप्रकारनोकह्यो इतिप्रश्न भगवतकहेछे—गोयमा । हेगौतम । तिविहेपन्नत्तेतंजहासुन्नकाले ।
नारकीससारसचिठ्ठणकाल तीनेभेदे कह्यो ते कहेछे सून्यकालकहता विरहकाल १ । असुन्नकाले मिस्सकाले। अविरहकाल २ मिश्रकाल ते उभयकाल ३
तिहा अशून्यकालनोस्वरूप जाण्यापछे बीजा बेजसुखे जणाये तेमाटे पहिला अशून्यकालनोस्वरूप कहीयेछे तिहा वर्त्तमानकाले सातवी पृथिवीनेविषे
षे जेनारकीवर्त्तेछे तेमाहियी जेतलाताइं कोईचवेनही अनेनवोकोई बीजो उपजेनही जेतलाछे तेतलाजरहे तेकालनरकगतिआश्री अशून्यकालकहीये
ये १ आहच—आइट्ठसमइयाण णेरइयाणनजावएक्कोवि उव्वट्टइअन्नोवा उववज्जइसोअसुन्नोउ ॥ १ ॥ मिश्रकालतेकहीये तेहे जे सातेहे नरकनेविषे तेना
रकी माहियी जीव एकादिनीकलो गयतरमे उपना यावत् एकशेषरह्यो तेतलाताइ मिश्रकालकहीये २ शून्यकाल ते कहीये जिवारे कह्या समयना

॥ टीका ॥

तिन्निकण्हलेस्सा ३ तिरिक्खजोणियाणं ६ एगिंदियाणं ४ पुढविआउवणस्सईण ४ तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं ३ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ण ६ ॥ इत्यादि वहुवाच्य यावत् ॥ एएसिणं भंते । जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणं कयरे २ हितो अप्पड्ढिया वा, महिड्ढियावा ? गोयमा । कण्हलेसेहितो नीललेस्सा महिड्ढिया नीललेसेहितो कावोयलेसेत्यादि ॥ अथ पशवः पशुत्व मश्नुवते' इत्यादिवचनविप्रलम्भा द्यो मन्यते अनादावपि भवे एकधैव जीवस्या वस्थानमिति' तद्बोधनार्थं प्रश्नयन्नाह ॥ जीवस्सणमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं द्विविधस्य जीवस्येत्याह, आदिष्टस्य अमुष्य नारकादे रित्येव विशेषितस्य ॥ तीनद्धाएत्ति ॥ अनादा वतीतेकाले कतिविध उपाधिभेदा त्कतिभेद संसारस्य भवा द्भवान्तरसञ्चरणलक्षणस्य संस्थान मवस्थितिक्रिया तस्य कालो वसर' संसारसंस्थानकाल, अमुष्य जीवस्या तीतकाले कस्यां कस्यां गता ववस्थान मासीदित्यर्थ, अत्रोत्तरम् चतुर्विधउपाधिभेदा दितिभाव, तत्र नारकभवानुगतसंसारावस्थानकाल स्त्रिधा शून्यकालो ऽशून्यकालो मिश्रकालश्चेति, तिरश्चां शून्यकालो नास्ती

॥ मूल ॥

तंजहा लेस्साणबीओउद्देसओभाणियव्वो जावइड्ढी । जीवस्सणं भंते तीयद्धाएआदिठस्स कइविहेसंसारसंचिठ्ठणकालेपन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहेसंसारसंचिठ्ठणकाले पन्नत्ते तंजहा णेरइएसंसारसंचिठ्ठणकाले २ तिरि

॥ भाषा ॥

लेस्साणबीओ उद्देसओ भाणियव्वो जावइड्ढी । पन्नवणानेविषे लेश्यापदना बीजा उद्देशाथी जाणवो । एएसिणभंते जीवाणं कण्हलेस्साणं जावसुक्कलेस्साणय कयरे कयरेंहितो अप्पड्ढिया वा महिड्ढिया वा गोयमा कण्हलेस्सेहितो नीललेस्सामहिड्ढिया नीललेस्सेहितो काउलेस्सा महिड्ढिया इत्यादि ॥ हिवे के ई एक एहवोमानेछे पशुमरी पशुपणोजपामे तेहने समुझाइवाने कहेछे—जीवस्सणभंते तीयद्धाए आदिठस्स कइविहेसंसारसंचिठ्ठणकालेपन्नत्ते । जीवने हेभगवन् ! अनादि अतीतकालनेविषे कहवोछे जीव ए नारकोआदि एहवे विशेषणे सहितने केतलेभेदे संसार एकभवथको बीजेभवे संचरणलक्षणनो रहयानीक्रिया तेहनोकाल अवसर तेससारसस्थानकाल कहीये एतले एजीवने अतीतकालनेविषे केहीकेहो विषेरहवो कह्यो ? भगवंत कहेछे—गोयमा हेगौतम । चउव्विहेसंसारसंचिठ्ठणकालेपन्नत्ततंजहा । चारेप्रकारे उपाधिभेदथको संसारभवथको भवांतरनेविषे संसरवो तेलक्षणकह्यो तेकहेछे—णेरइ

॥ टीका ॥

याव देकोपिशेष स्ताव न्मिश्रकाल:, शून्यकालस्तु यदा तएवादिष्टसामयिका नारका: सामस्त्येनो द्वृत्ता भवन्ति, नैकोपि तेषा शेषोस्ति स शून्य कालइति आहच—उवट्टेएक्कमिवि तामीसोधरइजावएक्कोवि । निल्लेविएहिसव्वे हिवट्टमाणेहिंसुणोउ ॥ १ ॥ इदच मिश्रनारकससारावस्थानकाल चिन्तासूत्र, न तमेव वार्त्तमानिकनारकभव मङ्गीकृत्य प्रवृत्त, मपितु वार्त्तमानिकनारकजीवाना गत्यन्तरगमनेन तत्रैवोत्पत्ति माश्रित्य, यदिपुन स्तमेव नारकभव मङ्गीकृत्ये द सूत्र स्या, तदा शून्यकालापेक्षया मिश्रकालस्यानन्तगुणतासूत्रोक्ता न स्यात्, आहच—एयपुणतेजीवे पडुचसुत्तमि

॥ मूल ॥

जोणियसंसारसंचिठणपुच्छा ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते तंजहा असुन्नकालेय मिस्सकालेय । मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाणं । एयस्सणं भंते णेरइयसंसारसंचिठणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीस

॥ भाषा ॥

खिसे नारकी समस्तचव्या गत्यतरे पहुता तेमाहिलो जीव एकही शेषरह्यो रह्यो ते शून्यकालकहीये आहच—उव्वट्टेएक्कमिवि तामीसोधरइजावएक्कोवि वएहिंसव्वेहि वट्टमाणेहिंसुणोउ । १ । इहा एतलो विशेषछे एमिश्रनारक ससारावस्थानकाल चितासूत्रकह्यो तेहीज वर्त्तमान नारकभवआश्री कह्यो नछे वर्त्तमानकाले जेनारकीना जीव ते गत्यतरे जाइने वली नरकगतिनेविषे ऊपजे ते जीवआश्री कह्यो जोतेहीज नारक भव आश्री कहीये तो आगे अल्पबहुत्व सूत्रनेविषे अशून्यकालनी अपेचाये मिश्यकालने अनतगुणोकह्योछे ते नथाय आहच—एयपुणतेजीवे पडुच्चसुत्तनतभवचेव जइहोज्जतभवंतो अणतकालीनसभवइ ॥ १ ॥ ए तीने भेदे नारकीससारसचिठ्ठणकाल कह्यो । तिरिक्खजोणियससारसचिठ्ठणपुच्छा । तिर्यंचससारसचिठ्ठणनो प्रश्नकीधो तिवारे भगवतकहेछे—गोयमा । हेगौतम । दुविहेपन्नत्ते तजहा । बिहुभेदे कह्यो तेकहेछे—असुणकालेय । अशून्यकाल । मिस्सकालेय । मिश्यकाल २ होय तिर्यचने शून्यकालनही उक्तच—सुणासुणोमीसो तिविहोससारचिठ्ठणाकालो तिरियाणसुणवज्जो सेसाणहोइतिविहोवि ॥ १ ॥ देवाणय जहाणेरइ याणं । मनुष्यने तथा देवताने नारकीने तीनेभेदे ससारसचिठ्ठणकालकह्यो तिममनुष्यने देवनेपणि शून्यकाल १ अशून्यकाल २ मिश्यकाल ३ ए तीनेभेदे जाणवो एहने हेभगवन् । नारकीससारसचिठ्ठणकालने शून्यकालने । अशून्य । असुणकालस्स कालने । मीसकालस्स । मिश्यकालने । कयरेकयरेहितो अप्पे

॥ टीका ॥

तद्भवचेव । अइहोज्जतब्भवतो अणतकालोणसन्नवइ ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? दुच्यते येवार्त्तमानिका नारका स्ते स्वायुष्ककालस्यान्त उद्वर्त्तन्ते ' अ सङ्ख्यातमेवच तदायु रत उत्कर्षतोद्वादशमौहूर्त्तिकाशून्यकालापेक्षया मिश्रकालस्या नन्तगुणत्वाभावप्रसङ्गादिति, आहच – किंकारणमादिठा नेरइ याजेइमम्मिसमयम्मि । तेठिइकालस्सते जम्हासव्वेखविज्जति ॥ १ ॥ सव्वत्थोवेअसुणकालेत्ति ॥ नारकाणा मुत्पादोद्वर्त्तनाविरहकालस्यो त्कर्षतोपि द्वादशमुहूर्त्तप्रमाणत्वात् ॥ मीसकालेअणंतगुणेत्ति ॥ मिश्राख्यो विवक्षितनारकजीवनिर्लेपनाकालो ऽशून्यकालापेक्षया ऽनन्तगुणो भवति, यतो सौ नारकेतरे ष्वागमनगमनकाल , सच त्रसवनस्पत्यादिस्थितिकालमिश्रित. सन्ननन्तगुणोभवति, त्रसवनस्पत्यादिगमनागमनाना मनन्तत्वा त्सच नारकनिर्लेपनाकालो वनस्पतिकायस्थिते रनन्तभागेवर्त्ततइति, उक्तञ्च – थोवोअसुणकालो सोउक्कोसेणबारसमुहुत्तो । तत्तोयअणतगुणो मीसोनि ल्लेवणाकालो ॥ १ ॥ आगमणगमणकालो तसाइतरुमीसिओअणतगुणो । अहनिल्लेवणकालो अणतभागेवणद्वाएत्ति ॥ २ ॥ सुणकालेअणतगुणेत्ति ॥ सर्वेषा विवक्षितनारकजीवाना प्रायो वनस्पति ष्वनन्तानन्तकाल मवस्थानात् एतदेव वनस्पति ष्वनन्तानन्तकालावस्थान जीवाना नारकभवान्तरकाल उत्कृष्टो दर्शितः समयेइति, उक्तञ्च – सुन्नोयअणंतगुणो सोपुणपायवणस्सइगयाणं । एवचेवयणारय भवतरदेसियजेठति ॥ १ ॥ तिरिक्खजोणि

॥ मूल ॥

कालस्स कयरेकयरेहिंतोअप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुणकाले, मी

॥ भाषा ॥

वा कोण कोणथकी थोडाहोय । बहुएवा । घणाहोय । तुल्लेवा । सरीखाहोय । विसेसाहिएवा । विशेषाधिकहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौत म । सव्वथोवा असुणकाले । सर्वथी थोडो अशून्यकालनारकोना जीवनो उत्पादकाल उद्वर्त्तनाकालनो विरह उत्कृष्टो बार मुहुर्त्तनोछे तेमाटे तेहथी । मीसकालेअणतगुणे । मिश्रकाल अनतगुणोछे मिश्रनामविवक्षित नारकजीवनिर्लेपनाकाल ते अशून्यकालनो अपेक्षाये अनतगुणोछे जेमाटे नारकीथी बीजीगतिनेविषे जावबू आववू ते काल त्रसवनस्पत्यादि स्थितिकाल मिश्रित थको अनतगुणो हुवे ते मिश्रकालथी । सुणकालेअणतगुणे । शून्य काल अनतगुणोछे ते किम सर्वने विवक्षितनारकजीवने प्राये वनस्पतीकायनेविषे अनतकालरहवाथी तेहीज वनस्पतीनेविषे अनतकालरहवू ते

॥ टीका ॥

याण सव्वत्थोवे असुरणकालइति । सचान्तर्मुहूर्त्तमात्र, अयच यद्यपि सामान्येनतिरश्चा मुक्त, स्तथापि विकलेन्द्रियसम्मूर्च्छिमानामेवा वसेय', ते
यामेवा न्तर्मुहूर्त्तमानस्य विरहकालस्योक्तत्वात्, यदाह-भिन्नमुहुत्तोविगलिं दिएसुसंमुच्छिमेसुविसएव । एकेन्द्रियाणातू द्वर्त्तनोपपातविरहाभावे
न शून्यकालाभावएव, आहच-एगोअसखभागो वट्टइउव्वट्टणोववायमि । एगनिगोएणिच एवसेसेसुविसएव ॥ १ ॥ पृथिव्यादिपु पुन ॥ अणुसमय
मसखेज्जाति ॥ वचना द्विरहाभावइति; ॥ मिस्सकालेअणंतगुणेत्ति ॥ नारकवत् शून्यकालस्तु तिरश्चा नास्त्येव, यतो वार्त्तमानिकसाधारणवनस्पती
नां ततउद्वृत्ताना स्थानमन्यन्नास्ति ॥ मणुस्सदेवाण जहाणेरइयाणंति ॥ अशून्यकालस्यापि द्वादशमुहूर्त्तप्रमाणत्वा, दत्रगाथा -एवंनरामराणवि
तिरियाणनवरिनत्थिसुसद्धा । जनिग्गयाणतेसि आयणमन्नतउणत्थि ॥ १ ॥ एयस्सेत्यादि व्यक्त किंसंसारएवा वस्थान जीवस्य स्या दुत मोक्षेपीति

॥ मूल ॥

सकालेअणंतगुणे, सुन्नकालेअणंतगुणे, तिरिक्खजोणियाणंसव्वत्थोवे असुन्नकाले, मीसकालेअणंतगुणे,
मणुस्साणयदेवाणयजहाणेरइयाणं, एयस्सणं भंते णेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स जावदेवसंसारसंचिट्ठणका

॥ भाषा ॥

नारक भवनो अनतकालरहवू ते नारकभवनो अनतकाल उत्कृटो कह्यो । तिरिक्खजोणियाणसव्वत्थोवे । तिर्यंचयोनिकने सर्वस्तोक अशून्यकाल ते
किमअतर्मुहूर्त्त मात्रछे एसूत्र यद्यपि सामान्ये तियचने कह्योछे तथापि विगलेद्री अने सम्मूर्च्छिमने जाणवो एहोनेज अतर्मुहूर्त्तमात्र विरहकालकह्यो
छे तथा एकेंद्रीनेतो उद्वर्त्तन उपपात विरहने अभावेकरी । असुण्णकाले । अशून्यकालनो अभावहोजछे पृथिव्यादिकनेविषेवलीअणुसमयम संखेज्जाइ
तिवचनथी विरहनोअभावछे । मीसकालेअणतगुणे । नारकीनीपरे शून्यकालनो तिर्यंचने नहीजछे जेमाटे वर्त्तमान समय साधारण वनस्पतीना
जीवने तिहाथी चव्याने बीजो स्थानक कोईनहोछे । मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाण । मनुष्य तथा देवने जिम नारकीनेकह्यू तिमजाणवो एहने
पणि अशून्यकाल वारमुहूर्त्तनोछे । एयस्स णभते णेरइयससारसचिट्ठणकालस्स जाव देवससारसचिट्ठणकालस्स जावविसेसाहिएवा । एहने हेभगवन् !
नारकी ससारसचिट्ठणकालने यावत्शब्दें तिर्यंचससारसचिट्ठणकालने मनुष्यससारसचिट्ठणकालने देवससारसचिट्ठणकालने केहा केहा थकी थोडाहोय

॥ टीका ॥ शङ्कायापृच्छामाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यक्त नवरं ॥ अंतकिरियंति ॥ अन्त्याच सा पर्यन्तवर्त्तिनीक्रिया अन्त्यस्यवा; कर्मान्तस्य क्रिया ऽन्त्यक्रिया ता कृत्स्नकर्मक्षयलक्षणा मोक्षप्राप्तिमित्यर्थः ॥ अतकिरियापय णेयव्वति ॥ तच्च प्रज्ञापनाया विंशतितमं, तच्चैव ॥ जीवेणभते । अतकिरियंकरे ज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा अत्थेगइए नोकरेज्जा एवंनेरइए जाव वेमाणिए ॥ भव्यः कुर्यान्नेतरइत्यर्थ ॥ नेरइएणं भते । नेरइएसु वट्ट माणे अतकरेज्जा ? गोयमा ! नोइणठे समठेइत्यादि ॥ नवर ॥ मणुस्सेसु अतकरेज्जा ॥ मनुष्येषु वर्त्तमानो नारको मनुष्यीभूत इत्यर्थः, कर्मले शा दन्तक्रियाया अभावे केचित् जीवादेवेषू त्पद्यन्ते, अत स्तद्विशेषाभिधानाया ह ॥ अहभतेइत्यादि ॥ व्यक्त नवर मयेतिपरप्रश्नार्थ ॥ असंज

॥ मूल ॥ लस्स जावविसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवेमणुस्ससंसारसंचिठ्ठणकाले णेरइयसंसारसंचिठ्ठणकालेअसं खेज्जगुणे देवसंसारसंचिठ्ठणकालेअसंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियसंसारसंचिठ्ठणकालेअणंतगुणे । जीवेणं भंते अंतकिरियंकरेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइएकरेज्जा अत्थेगइएणोकरेज्जा अंतकिरियापदणेतव्वं । अहभंतेअसं

॥ भाषा ॥ घणाहोय सरीखाहोय विशेषाधिकहोय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगौतम । सव्वत्थोवेमणुस्ससंसारसंचिठ्ठणकाले। सर्वथी थोडा मनुष्यसंसारसंचिठ्ठण कालकह्यो तेहथी १। णेरइयसंसारसंचिठ्ठणकाले असंखेज्जगुणे। नारकीसंसारसंचिठ्ठणकाल असंख्यातगुणोछे तेहथी २। देवसंसारसंचिठ्ठणकालेअसंखे ज्जगुणे। देवसंसारसंचिठ्ठणकाल असंख्यातगुणोछे तेहथी ३। तिरिक्खजोणियसंसारसंचिठ्ठणकालेअणंतगुणे । तिर्यंचयोनिक संसारसंचिठ्ठणकाल अ नंतगुणो ४। सू १ संसारनेविषे जीवरहै अथवा मोक्षनेविषेपणि जीवरहै इसीआशकाये पूछेछे—जीवेणंभंते अंतकिरियं करेज्जा। जीव हेभगवन्। स मस्तकर्मक्षयलक्षणमोक्षप्राप्तिरूपक्रिया करै इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगौतम। अत्थेगइएकरेज्जा। केतलाएकभव्यजीव मोक्ष जाय। अत्थेगइएणोकरे ज्जा। कईएक अंतक्रियानकरे अभव्यमोक्षनजाय। अंतकिरियापदणेतव्व। पन्नवणानो वीसमोपदअंतक्रियापद जाणवो कर्मलेपथकी अंतक्रियाने अभावे कोईएक जीव देवगतिनेविषैऊपजे तेकारणै विशेष देखाडेछे। अहभंते असंजयभवियदव्वदेवाणं अविराहियसंजमाणं विराहियसंजमाणं। अथ हेभग

॥ टीका ॥

यत्राविय दव्वदेवाणति ॥ इहप्रज्ञापनाटीका लिख्यते, असंयता श्चरणपरिणामशून्या भव्या देवत्वयोग्या, अतएव द्रव्यदेवा, समासश्चैव, असयताश्च तेत्रव्यद्रव्यदेवाश्चेति, असयतभव्यद्रव्यदेवा स्तत्रैते असयतसम्यग्दृष्टय किलेत्येके, यत किलोक्त–अणुवयमहव्वएहिय बालतवोकामनिज्जराएय। देवाउयंनिबंधइ सम्मद्दिट्ठीयजोजीवो ॥ १ ॥ एत च्चायुक्त, यतो मीषा मुत्कृष्टत उपरिमग्रैवेयके पूपपात उक्त, सम्यग्दृष्टीना तु देशविरताना मपि न तत्रासो विद्यते, देशविरतश्रावकाणा मच्युता दूर्द्ध मगमनात्, नाप्येतेनिह्नवा स्तेषा मिहैव भेदेनाभिधानात्, तस्मा न्मिथ्यादृष्टयएवा ऽभव्या भव्यावा; असयतभव्यद्रव्यदेवा श्रमणगुणधारिणो निखिलसामाचार्यनुष्ठानयुक्ता द्रव्यलिङ्गधारिणो गृह्यन्ते, ते ह्यखिलकेवलक्रियाप्रभावतएवो प रिमग्रैवेयके पूत्पद्यन्तइति, असयताश्चते सत्य प्यनुष्ठाने चारित्रपरिणामशून्यत्वात्, ननु कथ ते भव्या, भव्यावा श्रमणगुणधारिणो भवन्ती? त्यत्रोच्यते, तेषाहि महामिथ्यादर्शनमोहप्रादुर्भावे सत्यपि चक्रवर्तिप्रभृत्यनेकनृपतिप्रवरपूजासत्कारसन्मानदानात् साधून् समवलोक्य तदर्थं प्रव्र ज्याक्रियाकलापानुष्ठानस्प्रति श्रद्धाजायते, ततश्च यथोक्तक्रियाकारिणइति, तथा ॥ अविराहियसजमाणति ॥ प्रव्रज्याकाला दारभ्या भग्नचारित्र परिणामाना सञ्ज्वलनकषायसामर्थ्यात् प्रमत्तगुणस्थानकसामर्थ्याद्वा; खल्पमायादिदोषसम्भवे प्यनाचरितचरणोपघातानामित्यर्थ, तथा ॥ विरा हियसजमाणति ॥ उक्तविपरीताना ॥ अविराहियसजमासजमाणति ॥ प्रतिपत्तिकाला दारभ्या खण्डितदेशविरतिपरिणामाना श्रावकाणा ॥ विरा

॥ मूल ॥

जयत्रवियदव्वदेवाणंअविराहियसंजमाणं विराहियसजमाणं अविराहियसजमासजमाणं विराहियसंजमासं

॥ भाषा ॥

वन्। चारित्रपरिणामथको शून्यमिथ्याद्दष्टी भव्य अथवा अभव्य नि केवलक्रियाना करणहार द्रव्यलिगधारीग्रहवा १ तेहने प्रव्रज्याकालथी आरभी निरतीचार पूरोचारित्र पाले ते अविराधितसयमीकहीये तेहने साधुसयमने विराधे पहिलाकह्या तेहथी विपरीतते विराधितसयमीने। अविराहिय सजमासजमाण। श्रावकव्रतलईने विराधनारहित अखंडपालें ते अविराधितसयमासयमीने ४। विराहियसजमासजमाण। श्रावकव्रत लेई विराधे पू र्वोक्त थी विपरीत ते विराधितसंयमासयमीने ५। असन्नोण। मनोलब्धिरहितने ६। तावसाण। पडियापानखाय बालतपस्वीने ७। कदप्पियाणं।

॥ टीका ॥

॥ असन्नीणंति ॥ मनोलब्धिरहिताना मकामनिर्जरावता, तथा ॥ तावसाणंति ॥ पतितपत्राद्युपभोग हियसंजमासजमाणंति ॥ उक्तव्यतिरेकिणा ॥ असन्नीणंति ॥ कन्दर्प्प परिहास स येषामस्ति तेनवा; ये चरन्ति ते कान्दर्प्पिका कान्दर्प्पिकावा; व्यवहारत वता वालतपस्विना, तथा ॥ कदप्पियाणंति ॥ कन्दर्प्प परिहास स येषामस्ति तेनवा; ये चरन्ति ते कन्दर्प्पिका कदप्पकराकहणं कदप्पुवएससंसाय १॥ चरणवन्तएव कन्दर्प्पकौत्कुच्यादिकारका, तथाहि गाथा—कहकहकहस्सहसण कदप्पो अणिहुयायउल्लावा कदप्पकहाकहण कदप्पुवएससंसाय १॥ भमनयणवयणदसण च्छदेहिकरपायकन्नमाईहि । ततकरेइजहजह हसइपरोअत्तणाअहस ॥ २ ॥ वायाकुक्कुइपुण तजपइजेणहस्सएअण्णो । नाणा विहजीवरुए कुव्वइमुहतूरएचेवेत्यादि ॥ ३ ॥ जोसजत्तविएया सुद्धप्पसत्थासुभावणकुणइ । सोतव्विहेसुगच्छइ सुरेसुभइत्तचरणहीणोसि ॥ ४ ॥ अतस्ते पाकान्दर्प्पिकाणा ॥ चरगपरिव्वायगाणंति ॥ चरकपरिव्राजका धाटिभैक्षोपजीविन स्त्रिदण्डिन, अथवा, चरका कच्छोटकादय, परिव्राजकास्तु क पिलमुनिसूनवो ऽतस्तेषा ॥ किब्बिसियाणंति ॥ किल्बिष पाप तदस्ति येषा ते किल्बिषिका स्तेच व्यवहारत चरणवन्तोपि ज्ञानाद्यवर्णवादिनो य थोक्त—नाणस्सकेवलीण धम्मायरियस्ससव्वसाहूण । माईअवण्णवाई किब्बिसियभावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ अत स्तेषा, तथा ॥ तिरिच्छियाणंति ॥ तिरश्चा गवाश्वादीना देशविरतिभाजा ॥ आजीवियाणंति ॥ पाखण्डिविशेषाणा नाग्न्यधारिणा, गोसालकशिष्याणा मित्यन्ये ॥ आजीवति वा, ये अविवे किलोकतो लब्धिपूजाख्यात्यादिभि स्तपश्चरणादीनि ते आजीविकास्तित्वेना जीविका अतस्तेषा, तथा ॥ आभिओगियाणंति ॥ अभियोजन विद्या मन्त्रादिभि. परेषावशीकरणादि अभियोग सच द्विधा, यदाह—दुविहोखलुअभिओगो दव्वेभावेयहोयनायव्वो। दव्वम्मिहोइजोगा विज्जामतायभावम्मि

॥ मूल ॥

किब्बिसियाणं तिरिच्छियाणं आजीवियाणं जमाण असन्नीणं तावसाणं कदप्पियाण चरगपरव्वायगाणं

॥ भाषा ॥

जेजती हासी मसकरी कदर्पकथाना कहणहारने ८। चरगपरिव्वायगाण। त्रिदंडिया कपिलमुनिना सतानीयाने ९। किब्बिसियाण। ज्ञानादिना अवर्णवादवोले तेहने १०। तिरिच्छियाण। तिर्यंच गाय अश्वादि श्रावकधर्मपाले तेहने ११। आजीवियाण। पाखंडीविशेष अथवा गोशालाना शिष्य तेहने १२। आभिओगियाण। व्यवहारे चारित्रवत थका मंत्र यत्रादिकना करणहार १३। सलिंगीदसणवावण्णगाण। रजोहरणादि साधु वेषछे प

न मूलगुणविराधनेति, सौधर्मोत्पादश्च विशिष्टतरसंयमविराधनाया स्यात्, यदिपुन र्विराधनमात्रमपि सौधर्मोत्पत्तिकारकस्या, त्तदा बकुशादी ना मुत्तरगुणादिप्रतिशेवावता कथ मच्युतादिपू त्पत्ति स्या त्कथञ्चि द्विराधकत्वा त्तेयामिति ॥ असन्नीण जहन्नेण भवणवासीसु उक्कोसेण वाण

म्मेकप्पे, अविराहियसंजमासंजमाण जहन्नेणसोहम्मेकप्पे उक्कोसेण अच्चुएकप्पे, विराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणंजोइसिएसु, असन्नीणजहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणंवाणमंतरेसु, अवसेसा सव्वेजहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणंवोच्छामि—तावसाणजोइसिएसु, कंदप्पियाणसोहम्मेकप्पे, चरगपरि व्वायगाणं बंभलोएकप्पे, किव्विसियाणंलंतगेकप्पे, तिरिच्छियाणंसहस्सारेकप्पे, आजीवियाणंअच्चुएकप्पे,

थी सोधर्मनामा देवलोकनेविषे ऊपजवोहोय। अविराहियसंजमासंजमाण। अविराधित संयमासंयमी एतले श्रावकने। जहन्नेणसोहम्मेकप्पे। जघन्य सौधर्मदेवलोकेऊपजवोहोय। उक्कोसेण अच्चुएकप्पे। उत्कृष्टथकी अच्युत बारमे देवलोके ऊपजवोहोय। विराहियसंजमासंजमाणं। विराधित संयमा संयमीने एतले विराधित श्रावकने। जहन्नेणभवणवासीसु। जघन्यथी भवनपतीनेविषे ऊपजवोहोय। उक्कोसेणजोइसिएसु। उत्कृष्टथी ज्योतिषीने विषे ऊपजवोहोय ५। असन्नीण। मनरहितने। जहन्नेण भवणवासीसु। जघन्यथी भवनपतीनेविषे ऊपजवोहोय। उक्कोसेणवाणमंतरेसु। उत्कृष्टथी वानव्यंतरनेविषे ऊपजे। अवसेसासव्वे जहन्नेणं भवणवासीसु। थाकता सगलाईनो ऊपजवो जघन्यथी भवनपतीनेविषेजाणवो। उक्कोसेण वोच्छामि। उत्कृष्टथी ऊपजवो कहीयेछे—तावसाणजोइसिएसु। तापसने उत्कृष्टथी ज्योतिषीनेविषे ऊपजवोहोय। कंदप्पियाणसोहम्मेकप्पे। कामोद्दीपनादिप्रवृत्ति नाकरणहारने उत्कृष्टथी सौधर्मनामा देवलोकनेविषेऊपजे। चरगपरिव्वायगाण। चरकपरिव्राजकने उत्कृष्टथी। बंभलोएकप्पे। ब्रह्मनामा पंचमेदेवलो के ऊपजे। किव्विसियाणलंतगेकप्पे। किल्विषीने उत्कृष्टथी लातकनामा छठा देवलोकनेविषे ऊपजवोहोय। तिरिच्छियाणसहस्सारेकप्पे आजीवियाणअ च्चुएकप्पे। तिर्यचनेउत्कृष्टथी सहस्रारनामा आठमादेवलोकनेविषे ऊपजवोहोय। आजीविकने उत्कृष्टथी अच्युतनामा बारमे देवलोके ऊपजवोहोय।

॥ टीका ॥

त्ति ॥ १ ॥ सोऽस्ति येषा, तेनवा, चरति ये ते भियोगिका आभियोगिकावा, तेच व्यवहारत श्चरणवतएव मन्त्रादिप्रयोक्तारो यदाह–कोउयभूईक म्मे पसिणापसिणेनिमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अहिओगत्नावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ कौतुक सौभाग्याद्यर्थ स्नपनक, भूतिकर्म ज्वरितादिभूतिदा न, प्रश्नाप्रश्नच स्वप्नविद्यादि ॥ सलिगाणति ॥ रजोहरणादिसाधुलिङ्गवता किंविधाना मित्याह ॥ दसणवावन्नगाणति ॥ दर्शन सम्यक्त्वं व्यापन्न भ्रष्ट येषाते तथा, तेषा निह्नवानामित्यर्थ ॥ एएसिण देवलोएसु उववज्जमाणाणति ॥ अनेन देवत्वा दत्त्रापि केचि दुत्पद्यन्तइति प्रतिपादित ॥ विराहियसजमाण जहन्नेण भवणवईसु उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ॥ इह कश्चि दाह–विराधितसयमाना मुत्कर्षेण सौधर्मे कल्पे इति यदुक्त त त्कथं घटते द्रौपद्या सुकुमालिकाभवे विराधितसयमाया ईशानउत्पादश्रवणा ? दित्यत्रोच्यते, तस्या. संयमविराधनोत्तरगुणविषया बकुशत्वमात्रकारिणी

॥ मूल ॥

आभिओगियाणं सलिंगीदंसणवावन्नगाणं एएसिणंदेवलोएसु उववज्जमाणाणंकस्सकहिंउववाए पन्नत्ते ? गो यमा ! असंजयभवियदव्वदेवाण जहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु, अविराहियसजमाणं जहन्नेणंसोहम्मेकप्पे उक्कोसेणंसव्वठसिद्धेविमाणं, विराहियसंजमाणं जहन्नेणंभवणवासीसु उक्कोसेणसोह

॥ भाषा ॥

णि सम्यक्त्वथी भ्रष्टछे एतले निह्नव तेहने १४ । एएसुणंदेवलोएसुउववज्जमाणाणकस्सकहिंउववाए पन्नत्ते । एहने हेभगवन् । देवलोकनेविषे ऊपजता ने केहने किस्यास्थानकनेविषे ऊपजवोकह्यो ? एतले देवगति टाली बीजास्थानकनेविषे पणि केईएकऊपजे इसो जणायो इतिप्रश्न भगवतकहेछे—गो यमा । हेगौतम । असंजयभवियदव्वदेवाण । असयतो भविकद्रव्यदेवने । जहन्नेणभवणवासीसु । जघन्यथकी भवनपतीने विषे ऊपजवोकह्यो । उ क्कोसेणउवरिमगेविज्जएसु । उत्कृष्टथकी ऊपरिले ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकेऊपजे । अविराहियसजमाण । अविराधित साधुने । जहन्नेणसोहम्मे कप्पे । जघन्यथकी सौधर्मनामा देवलोके ऊपजवो होय । उक्कोसेणसव्वठसिद्धेविमाण । उत्कृष्टथकी सर्वार्थसिद्ध विमाननेविषेजाय ऊपजे । विराहिय संजमाण । विराधित साधुने चारित्रविराधे तेहने । जहन्नेण भवणवासीसु । जघन्यथी भवनपतीनेविषे ऊपजवोहोय । उक्कोसेणसोहम्मेकप्पे । उत्कृष्ट

मतरेसुत्ति ॥ इह यद्यपि चमरवलिसारमहियमित्यादिवचना, दसुरादयो महर्द्धिका, पलिउंवमसुक्कोसं वंतरियाणंतिवचनाच्च, व्यन्तरा अल्पर्द्धिका, स्तथा प्यतएव वचना दवसीयते, सन्ति व्यन्तरेभ्य सकाशा दल्पर्द्धयो भवनपतय केचनेति, असञ्ज्ञी देवे पूत्पद्यतइत्युक्त, सचा युषा इति तदायु र्निरूपयन्नाह ॥ कइविहेणमित्यादि ॥ व्यक्त नवरं ॥ असन्निआउएत्ति ॥ असञ्ज्ञीसन् यत्परभवप्रायोग्यमायु र्बध्नाति तदसञ्ज्ञायु ॥ नेरइयअसन्निआउएत्ति ॥ नैरयिकप्रायोग्यमसञ्ज्ञायु नैरयिकासञ्ज्ञायु रेव मन्यान्यपि, एतच्चा सञ्ज्ञायु सम्बन्धमात्रेणापि भवति, यथा—भिक्षो पात्र, मतस्तत्कृतत्व

आभिओगियाअच्चुएकप्पे, सलिंगीदंसणवावन्नगा उवरिमगेविज्जएसु ॥ कइविहेणं भंते असन्नियाउए पन्नत्ते गोयमा ! चउव्विहे असन्नियाउए पन्नत्ते तंजहा णेरइयअसन्नियाउए तिरिक्खजोणियअसन्नियाउए मणुस्स असन्निआउए देवअसन्निआउए, असन्नीणं भंते! जीवेकिंणेरइयाउयपकरेइ तिरिक्खजोणियाउयंपकरेइ मणुस्सदेवाउयंपकरेइ ? गोयमा ! णेरइयाउयंपकरेइ तिरिक्खमणुस्सदेवाउयंपकरेइ। णेरइयाउयंपकरेमाणे

आभिओगिया अच्चुएकप्पे। आभिओगिक उत्कृष्टथी अच्युतनामा बारमा देवलोकने विषे उपजै। सलिंगीदंसणवावन्नगा। स्वलिंगी दर्शनथी भ्रष्टन उत्कृष्टथी। उवरिमगेविज्जएसु। नवमाग्रैवेयकताई उपजवूंहोय। कइविहेणभंते असन्नियाउएपन्नत्ते। असन्नी देवनेविषै उपजै इसोकह्योते आउखैकरी तेमाटे असन्नीआउखो कहियेछे—केतलेप्रकारे हेभगवन्! असन्नीथयो परभव प्रायोग्य आउखोबांधे। उत्तर। गोयमा। हेगौतम। चउव्विहेअसन्निया उएपन्नत्ते तंजहा। चारप्रकार असन्नीयानो आउखो कह्यो ते कहेछे—णेरइय असन्नियाउए। नारकीअसन्निआउखू १। तिरिक्खजोणियअसन्निया उए। तिर्यंचयोनिक असन्नि आउखू २। मणुस्सअसन्निआउए। मनुष्यअसन्निआउखू ३। देवअसन्निआउए। देवअसन्निआउखो ४। असन्नीणभंते जीवे किं णेरइयाउय पकरेइ। असन्नीयाजीव हेभगवन्! स्यूंनारकीनो आउखो बांधे? तिरिक्खजोणियाउयपकरेइ। अथवा तिर्यंचयोनिकनो आउखोवां धे २ अथवा। मणुस्सदेवाउयपकरेइ। मनुष्यनो आउखो करे ३ अथवा देवनोआउखो करे वांधे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णेरइयाउयपक

॥ टीका ॥

लक्षणसम्बन्धविशेषनिरूपणायाह ॥ असणीत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ पकरेइत्ति ॥ बध्नाति ॥ दसवाससहस्साइंति ॥ रत्नप्रभाप्रथमप्रतर माश्रित्यक्को उ ॥ सेण पलिउवमस्स असंखेज्जइभागति ॥ रत्नप्रभाचतुर्थप्रतरे मध्यमस्थितिक नारकमाश्रित्येति, कथ यत प्रथमप्रस्तटे दशवर्षाणां सहस्राणि जघन्या स्थिति, रुत्कृष्टा नवतिसहस्राणि, द्वितीयेतु दशलक्षाणि जघन्या, इतरातु नवतिलक्षाणि, एवंव तृतीये जघन्या, इतरापूर्वकोटी, एवंव चतुर्थे जघन्या, इतरातु सागरोपमस्य दशभाग, एवञ्चात्र पल्योपमासङ्ख्येयभागो मध्यमा स्थिति र्भवति, तिर्यक्सूत्रे यदुक्त ॥ पलिउवमस्स असंखेज्जइभागति ॥ त न्मिथुनकतिरश्चो ऽधिकृत्येति ॥ मणुस्साउएविएवचेवत्ति ॥ जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तं उत्कर्षत. पल्योपमासङ्ख्येयभागइत्यर्थ, स्तत्रचा सङ्ख्ये

॥ मूल ॥

जहस्रेणंदसवाससहस्साइं उक्कोसेणपलिउवमस्सअसंखेज्जइ भागंपकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयपकरेमाणे जहस्रेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंपलिउवमस्स असंखेज्जइभागंपकरेइ, मणुस्साउएविएवचेव, देवाउए जहाणेरइ

॥ भाषा ॥

रेइ । नारकीनो आउखो बांधे १ । तिरिक्खमणुस्सदेवाउयपकरेइ । तिर्यंचनो पणि आउखोबाधे २ मनुष्यनोपणिआउखोबांधे ३ देवतानोपणि आउखो बांधे ४ । णेरइयाउयपकरेमाणे । असन्नीयो नारकीनो आउखो बांधतोथको । जहस्रेणदसवाससहस्साइ । जघन्यथी दशसहस्रवर्षनोबांधे तेरत्नप्रभाना पहिलाप्रतरआश्री जाणवो । उक्कोसेणपलिओवमस्सअसंखेज्जइभागपकरेइ । उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमोभाग आउखोबाधे ते रत्नप्रभाना चौथा प्रतरनेविषे मध्यमस्थिति नारकआश्री जाणवु यत. पहिलेपाथडे जघन्य दशसहस्रवर्ष उत्कृष्ट नेउसहस्रवर्ष बीजे जघन्य दशलाख उत्कृष्ट नेउलाख तीजे जघन्य नेउलाख उत्कृष्ट पूर्वकोडि चौथे जघन्य पूर्वकोडि उत्कृष्ट एकसागरोपमनोदसभाग इणप्रकारे इहापल्योपमनो असंख्यातमोभाग ते मध्यम स्थितिहुवे । तिरिक्खजोणियाउयपकरेमाणे । तिर्यंचनो आउखो बांधतोथको । जहस्रेणअंतोमुहुत्तं । जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्तनो आउखो बांधे । उक्कोसेण पलिओवमस्सअसंखेज्जइभागंपकरेइ । उत्कृष्टथकी पल्योपमनो असंख्यातमोभागबांधे ते युगलिया आश्रीने जाणवो । मणुस्साउएविएवचेव देवाउएजहाणेरइयाउए। मनुष्यनो आउखोपणि इमज जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमोभाग ते युगलियाआश्री कहवो देवतानो आउखो जिम

यभागो मिथुनकनरानाश्रित्य ॥ देवाजहानेरइयत्ति॥ देवाइति असञ्ज्ञिविषय, देवायु रुपचारा तथा वाच्यं ॥ जहानेरइयत्ति॥ यथा असञ्ज्ञिविषय नारकायु स्तच्च प्रतीतमेव, नवरं भवनपतिव्यन्तरानाश्रित्य तदवसेयमिति ॥ एयस्सणं भंते इत्यादिना ॥ यदसञ्ज्ञायुषोः ल्पबहुत्वमुक्त तदस्य ह्रस्व दीर्घत्वमाश्रित्येति ॥ प्रथमशतद्वितीयः ॥ २ ॥ द्वितीयोद्देशकान्तिमसूत्रे ह्यायुर्विशेषो निरूपितः, सच मोहदो

याउए । एयस्सणं भंते ! णेरइयअसण्णिआउयस्स तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स मणुस्सअसण्णिआउयस्स देवअसण्णिआउयस्स कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवेदेवअसण्णियाउए, मणुस्स असण्णियाउएसंखेज्जगुणे, तिरियअसण्णिआउएअसंखेज्जगुणे , णेरइयअसण्णिआउएअसंखेज्जगुणे , सेवंभंते भंतेत्ति ॥ बिइउउद्देसोसम्मत्तो ॥ २ ॥ जीवाणंभंते ! कंखामोहणिज्जेकम्मेकडे ? हंताकडे

नारकाने कह्यो तिम जाणवो जघन्यथी दशसहस्रवर्ष उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एतलोविशेष ए भवनपती व्यंतरोक आयोने कहवा। एयस्सणंभंते णेरइयअसण्णिआउयस्स । एहने हेभगवन् ! नारकी असन्नीआउखाने। तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स। तिर्यंचयोनिक असन्नी आउखाने। मणुस्सअसण्णिआउयस्स। मनुष्य असन्नीआउखाने। देवअसण्णिआउयस्स। देव असन्नीआउखाने। कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिएवा। किहा २ थकी थोडाहोय घणाहोय सरीखाहोय विशेषाधिकहोय इतिप्रश्न , उत्तर। गोयमा। हेगौतम। सव्वत्थोवेदेवअसण्णियाउए। सर्वथीथोडो देवअसन्निआउखो १ तेहथी। मणुस्सअसण्णियाउए संखेज्जगुणे। मनुष्य असन्निआउखो सख्यातगुणो २ , तेहथी। तिरियअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे। तिर्यंचयोनिक असन्नीआउखो असख्यातगुणो ३ , तेहथी। णेरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे। नारकीअसन्नीआउखो असख्यातगुणो ४ , एअसन्नी आउखानो अल्प बहुत्व कह्यो , ते एहनो स्वल्पपणो आयोने कह्यो। सेवंभंतेभंतेत्ति। गौतमकहेछे जे में पूछ्यु ते भगवन् कह्यु सो इमजछे अन्यथानथी , ए पहिला शतकनेविषे बीजाउद्देशानो विवरणकह्यो ॥ २ ॥ बीजा उद्देशाने अते आउखानो विशेष कह्यो तेमोहनेदोषे हुवे ते मोहनोस्वरूप कहीयेछे—पहिलो संग्रहगाथाने

॥ टीका ॥

पेसति भवती त्यतो मोहनीयविशेषं निरूपय न्नादौव सङ्ग्रहगाथाया यदुक्तं ॥ करणपउसत्ति ॥ तद्दर्शयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवरं जीवाना सम्बन्धियत् ॥ कखामोहणिज्जत्ति ॥ मोहयतीति मोहनीय कर्म तच्चारित्रमोहनीयमपि भवतीति विशिष्यते' काङ्क्षान्यान्यदर्शनग्रह, उप लक्षणत्वा चास्य शङ्कादिपरिग्रह, स्तत काङ्क्षाया मोहनीय काङ्क्षामोहनीय' काङ्क्षामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीयमित्यर्थ ॥ कडेत्ति ॥ कृत क्रिया निष्पाद्य मितिप्रश्न' उत्तरन्तु ॥ हताकडेत्ति ॥ अकृतस्य कर्मत्वानुपपत्ते, इहच वस्तुन करणे चतुर्भङ्गीदृष्टा, यथा देशेन हस्तादिना वस्तुनो देशस्या च्छादन करोति, अथवा, हस्तादिदेशेनैव समस्तस्य वस्तुन, अथवा; सर्वात्मना वस्तुदेशस्या थवा; सर्वात्मना सर्वस्यवस्तुन, इत्येता द्वाङ्क्षामोहनीयकरणप्रति प्रश्नयन्नाह ॥ सेजनेइत्यादि ॥ सेत्ति ॥ तस्य कर्मण ॥ भदत ! किमितिप्रश्ने, देशेन जीवस्यांशेन देश काङ्क्षामोहनी यस्य कर्मणोंश कृत इत्येको भङ्ग, अथ देशेन जीवांशेनैव सर्व काङ्क्षामोहनीय कृतमिति द्वितीय, उत सर्वेण सर्वात्मनादेश काङ्क्षामोहस्य कृतइति तृतीय, उताहो सर्वेण सर्वात्मना सर्वकृत मितिचतुर्थ' अत्रोत्तरम्, ॥ सव्वेणसव्वेकडेत्ति ॥ जीवस्वात्माव्या त्सर्वस्वप्रदेशावगाढतदेकसम

॥ मूल ॥

सेभंते ! किंदेसेणदेसेकडे देसेणसव्वेकडे सव्वेणदेसेकडे सव्वेणंसव्वेकडे ? गोयमा ! णोदेसेणंदेसेकडे णोदेसेण सव्वेकडे णोसव्वेणदेसेकडे सव्वेणंसव्वेकडे । णेरइयाणभंते ! कंखामोहणिज्जेकम्मेकडे ? हताकडे, जाव सव्वेणं

॥ भाषा ॥

विषे जेकह्यू, कखपर्श्नासत्ति, ते देखाडेछे। जोवाणभंतेकखामोहणिज्जेकम्मेकडे। जीव हेभगवन्! मिथ्यात्वमोहनीयकर्म कीध क्रियानीपजावे, इतिप्रश्न, उत्तर। हताकडे। हागौतम करे। सेभंतेकिंदेसेण। देसेकडे देसेणसव्वेकडे॥ ते कर्मने हेभगवन्। इहा वस्तुने करवानेविषे चउभगीछे, यथा हस्तादिदेशेकरी वस्तुनोदेश आच्छादे१ अथवा हस्तादिदेशेकरी समस्तवस्तुनेआच्छादे२ अथवा आत्मायेंकरी वस्तुनोदेश आच्छादे३ अथवा समस्तआत्मायेकरी समस्तवस्तुने आच्छादे४ इमचउभगी, कांक्षा मोहनीयकर्म प्रकरणनेविषे कहवो तेदेखाडेछे—देश ते जीवनोअंश तेणेंकरी देश तेकांक्षामोहनीय कीधू १ ए एकभागो, अथवा देश ते जोवनाअंश ते बीजाभागो २ तथा। सव्वेणदेसेकडे सव्वेणसव्वेकडे गोयमा णोदेसेणदेसेकडे। सर्वजीव कांक्षामोहनीयनो देश कीधो एत्रीजोभा

॥ टीका ॥

यवन्धनीयकर्मपुद्गलवन्धने सर्वजीवप्रदेशानां व्यापार, इत्यत उच्यते, सर्वात्मना सर्वं तदेककालकरणीयं कांक्षामोहनीय कर्मकृतं कर्म्मतया वद्ध मतएवच भङ्गत्रयप्रतिषेधइति' अतएवोक्त—एगपएसोगाढ सव्वपएसेहिकम्मुणोजोग्ग । वधइजहुत्तहेउ तिएपएसोवगाढति ॥ १ ॥ जीवापेक्षया कर्म्मद्रव्यापेक्षयाच य एके प्रदेशा स्तेष्ववगाढ, सर्वजीवप्रदेशव्यापारत्वाच्च तदेकसमयवन्धनार्हं सर्वमितिगम्यं, अथवा, सर्वं यत्किञ्चि त्काङ्क्षामोह नीय तत्सर्वात्मना कृत नदेशेनेति, जीवाना मितिसामान्योक्तौ विशेषो नावगम्यत, इतिविशेषावगमाय नारकादिदण्डकेन प्रश्नयन्नाह॥ नेरइया णमित्यादि ॥ भावितार्थमेव क्रियानिष्पाद्य कर्मोक्तं, तत् क्रियाच त्रिकालविषया तस्ता दर्शयन्नाह ॥जीवाणमित्यादि॥ व्यक्त नवरं ॥ करिसुत्ति॥ अतीतकालेकृतवन्त, उत्तरन्तु हन्ता ऽकार्षु' स्तदकरणे अनादिससाराभावप्रसङ्गात्, एव ॥ करति ॥ सम्प्रति कुर्वन्ति ॥ एवंकरिस्संति ॥ अनेनच

॥ मूल ॥

सव्वेकडे, एवं जाव वेमाणियाणंदंडओभाणियव्वो ॥ जीवाणंभंते ! कखामोहणिज्जकम्मकरिसु ? हताकरिसु तंभंते ! किंदेसेणदेसंकरिसु ? एएणंअभिलावेणंदंडओ, जाव वेमाणियाणं, एवंकरति, एत्थविदंडओ जाव

॥ भाषा ॥

गो ३, अथवा सर्वआत्माये सर्वकांचामोहनीयकर्म कीधो एचौथोभागा ४, हेगौतम । जीवदेशेकरी कांचामोहनीयनोदेश नकोधू। णोदेसेणसव्वेकडे णोस व्वेणदेसेकडे। जीवदेशेकरी कांचामोहनीय सर्वनकरे, सर्वआत्मायेंकरी कांचामोहनीयदेश नकरे। सव्वेणसव्वेकडे। सर्वआत्मायेंकरी सर्वकांचामोहनीय कर्मसर्वकरे ४। णेरइयाणभंते कखामोहणिज्जेकम्मेकडे हताकडे। नारकी हेभगवन्! कांचामोहनीयकर्मकरे इतिप्रश्न, हागौतम करे। जावसव्वेणसव्वे के। यावत् सर्वात्मायेंकरी सर्वकांचामोहनीयकर्म करे। एवजाववेमाणियाणंदंडओभाणियव्वो।यावत् वैमानिकतांई चउवीसदंडक कहवा, वली गौतमपृ छेछे—जीवाण भंते कक्खामोहणिज्जकम्मकरिसु । जीव हेभगवन्! कांचामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीयकर्म अतीतकाले कीधू? हताकरिसु। हागौतम कीधो । तंभंतेकिंदेसेणदेसकरिसु । तेहेभगवन्! मिथ्यात्वमोहनीयकर्म स्युंजीवने देशेंकरी मिथ्यात्वमोहनीयकर्म देशेंकीधो ? एएणअभिलावेणदंडओजाववेमा णियाण। इणे आलावेंकरी दंडक कहवा यावत् वैमानिकने तांलगे कहवो। एवकरेंति।इमवर्त्तमानकालेपणि करेछे। एत्थविदंडओजाववेमाणियाणएव

॥ टीका ॥

भविष्यत्कालताकारणस्य दर्शितेति, कृतस्यच कर्मणः श्चयादयो भवन्तीति, तान् दर्शयन्नाह ॥ एवचिएइत्यादि ॥ व्यक्त नवर चय प्रदेशानुभागादे वर्द्धन मुपचय स्तदेव पौन पुन्येन, अन्येत्वाहु —चयनं कर्म्म पुद्गलोपादानमात्र, उपचयनन्तु चितस्या बाधाकाल मुक्त्वा वेदनार्थ निषेक, सचै व—प्रथमस्थितौ बहुतर कर्म्मदलिक निषिञ्चति, ततो द्वितीयाया विशेषहीन, एव यावदुत्कृष्टाया विशेषहीन निषिञ्चति, उक्तञ्च—मोत्तूणसग मवाह पढमाइठिईइबहुतरदव्व । सेसविसेसहीण जावुक्कोसतिसव्वासि ॥१॥ उदीरण मनुदितस्य करणविशेषा दुदयप्रवेशन' वेदन मनुभवन, नि र्जरण जीवप्रदेशेभ्य कर्मप्रदेशानाशातनमिति, इह च सूत्रसङ्ग्रहगाथा भवति साचगाहा ॥ कडचिएइत्यादि ॥ भावितार्थाच नवर ॥ आइतिएत्ति ॥

॥ मूल ॥

वेमाणियाण, एवंकरिस्सति, एत्थविदंडर्ज जाव वेमाणियाणं, एवं चिए चिणिसु चिणंति चिणिस्सति, उवचिए उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिस्संति, उदीरेंसु उदीरंति उदीरिस्सति, वेदेंसु वेदेंति वेदिस्संति, णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्संति, गाहा ॥ कडचिएयउवचिए उदीरियावेदियायणिज्जिस्सा । आ

॥ भाषा ॥

करिस्सति । इहापणि वर्त्तमानकालेपणि इमजनारकीआदि यावत् वैमानिकपर्यन्तदडक कहवा, इम आगामिकालेपणि करस्ये । एत्थविदडओजाववेमा णियाण । इहापणि अनागतकाले नारकीआदिदेई यावत् वैमानिकताई दडक कहवो । एवचिए । इम चयते प्रदेश अनुभागादिकथी वधारवो १ । चिणिसु । जे अतीतकाले चिख्या २ । चिणति । वर्त्तमानकालें चिणेछे ३ । चिणिस्सति । अनागतकाले चिणस्ये । उवचिए । उपचय तेहीज वारवार पुष्टकरवो १ उवचिणिसु । अतीतकाले उपचय कीधो २ । उवचिणति । वर्त्तमानकाले उपचय करेछे ३ । उवचिणिस्सति । अनागतकाले उपचय करसे ४ । उदीरेंसु उदीरणा ते अणउदयआव्याकर्मने करणविशेषें उदय आणीये उदीरणा १ । उदीरेंति । उदीरेछे । उदीरिस्सति । उदीरस्ये २ । वेदेंसु वेदेंति वेदिस्सति । वेदववूं अनुभववू भोगववू इत्यर्थ, अतीतकालें वेद्यू १ वर्त्तमानकाले वेदेछे २ अतीतकाले वेदस्यें ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्सति । निर्जरवो ते जीवप्रदेशथी कर्मप्रदेश दूरकरे, वा अतीतकाले निर्जरा १ वर्त्तमानकाले निर्जरे २ अनागतकाले निर्जरस्ये ३ । गाहा ॥ हिवे पूर्वोक्त सग्रहणीगाथा

कृतचितोपचितलक्षणे ॥ चउभेयत्ति ॥ सामान्यक्रियाकालत्रयक्रियाभेदात् ॥ तियभेयत्ति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पच्छिमत्ति ॥ उदीरितवेदितनिर्ज्जी र्णा मोहपुद्गलाइतिशेष ॥ तिण्णित्ति ॥ त्रय स्त्रिविधा इत्यर्थ , नन्वाद्ये सूत्रत्रये कृतचितोपचितान्युक्ता न्युत्तरेषु कस्मान्नोदीरितवेदितनिर्ज्जीर्णानी ति ? उच्यते, कृत चित मुपचित कर्म्म चिरमप्यवतिष्ठत' इति करणादीना त्रिकालक्रियामात्रातिरिक्त श्चिरावस्थानलक्षण कृतत्वाद्याश्रित्य कृता दी न्युक्ता' न्युदीरणादीनातु नचिरावस्थानमस्तीति, त्रिकालवर्त्तिना क्रियामात्रेणैव तान्यभिहितानीति' जीवा काङ्क्षामोहनीय कर्म्मवेदयन्तीत्यु क्त, मथ तद्वेदनकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयन्नाह ॥ जीवाणन्तेइत्यादि ॥ व्यक्त नवर ननु जीवा काङ्क्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्रागिनर्णीतं कि पुन प्रश्न ? उच्यते ' वेदनोपायप्रतिपादनार्थ ' उक्तञ्च—पुव्वभणियविपच्छा जन्नइतत्थकारणऽत्थि । पडिसेहोयअणुन्ना हेउविसेसोवलन्भोत्ति ॥ १ ॥ तेहितेहिति ॥ तैस्तै दर्शनान्तरश्रवणकुतीर्थिकससर्गादिभि र्विद्वत्प्रसिद्धै' र्द्विवचन चेह वीप्सायां, कारणे शङ्कादिहेतुभि , किमित्याह शङ्कि

दितिएचउभेया तियभेयापच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ जीवाणंभंते ! कंखामोहणिज्जंकम्म वेदेंति ? हंतावेदेंति । कहण्णंभंते ! जीवाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेंति ? गोयमा ! तेहिंतेहिंकारणेहिं संकियाकंखिया वितिगिच्छि

कहेछे—अर्थ पूर्वेकह्यो तेहीज छे । कडचियउवचियाय उदीरियावेदियायणिज्जिणा । आदितिएचउभेया तियभेयापच्छिमातिण्णि ॥ १ ॥ कीधा चिण्यो २ उपचय कीधा ३ उदीरियां ४ वेद्या ५ निर्जर्या ६ पहिला कृत चित उपचित लक्षणत्रिकने चारभेद तीनकालआश्री एक समुच्चये एवचार ते स्यो वि शेष एहने चिरकाल अवस्थानछे उदीरित वेदित निर्जरित ए तीनेभेदे तीनकालहीज कहवा, एहने चिरकालअवस्थाननही एविशेष जीवकांक्षामोहनी यकर्म वेदे इसोकह्यो ॥ हिवे तेहना वेदनाकारणकहवानेकाजे । जीवाणभंते कंखामोहणिज्ज कम्म वेदेंति । जीव हेभगवन् । कांक्षामोहनीयकर्म वेदे इ तिप्रश्न । हंतावेदंति । उत्तर हांगौतम । वेदें । कहणभंते । किसेप्रकारे हेभगवन् ' जीवाकंखामोहणिज्ज कम्म वेदेंति । जीव कांक्षामोहनीयकर्म वेदें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम । तेहितेहिकारणेहि संकियाकंखियावितिगिंच्छिया । तिणेतिणेकारणेकरी मिथ्यात्वीनी सगतिथकी तथा परदर्श

॥ टीका ॥

ता जिनोक्तपदार्थान्प्रति सर्वतो देशतोवा; सञ्जातसंशया', काङ्क्षिता देशत सर्वतोवा; सञ्जातान्यान्यदर्शनग्रहा' ॥ वितिगिच्छियत्ति ॥ विचिकित्सिताः सञ्जातफलविषयशङ्का ' न्नेदसमापन्नाइति, किमिद जिनशासन माहोस्वि दि दमित्येव जिनशासनस्वरूपं प्रति मते द्वैधीज्ञाव गतो ऽनध्यवसायरूपंवा; मतिन्नङ्गङ्गता ' अथवा; यतएव शङ्कितादिविशेषणा, अतएव मते द्वैधीज्ञावङ्गता., कलुषसमापन्ना' नैतदेव मित्येव मतिविपर्यासङ्गता ॥ एवमिति ॥ उक्तेन प्रकारेण ॥ खलुत्ति ॥ वाक्यालङ्कारे, निश्चये अवधारणेवा; एतच्च जीवाना काङ्क्षामोहनीयवेदन मित्यमेवावसेयं, जिनप्रवेदितत्वा त्तस्यच सत्यत्वादिति ' तत्सत्यतामेव दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवर तदेव नपुरुषान्तरै' प्रवेदित रागाद्युपहतत्वेन तत्प्रवेदितस्या सत्यत्वसम्भवा ' त्सत्य सूनृत तच्च व्यवहारतोपि स्यादित्यतआह, नि शङ्क अविद्यमानसन्देहमिति, अथ जिनप्रवेदित सत्य मित्यज्ञिप्रायवा न्यादृशो न्नवति, त दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवर नून निश्चित ॥ एवमणधारेमाणेत्ति ॥ तदेव सत्य नि शक यज्जिनैः प्रवेदित मित्यनेन प्रकारेण मनोमानस मुत्पन्न स द्धारयन् स्थिरीकुर्वन् ॥ एवपकरेमाणेत्ति ॥ उक्तरूपेणा नुत्पन्न स त्प्रकुर्वन् विदधान ॥ एवचि

॥ मूल ॥

या न्नेदसमावन्नगा कलुससमावन्नगा , एवं खलुजीवा कंखामोहणिज्जंकम्मं वेदेंति , सेणूणंन्नंते ! तमेवसच्चं णीसंकं जंजिणेहिंपवेइय , हंता गोयमा ! तमेवसच्चंणीसकं जंजिणेहिंपवेइयं , सेणूणंन्नंते ! एवंमणेधारेमा

॥ भाषा ॥

नीना वचनश्रवणथकी श्रीवीतराग देवे जेपदार्थ प्रकष्या तेहनेविषे शकाऊपजे देशथकी तथा सर्वथकी अन्यदर्शन ग्रहवानी वाछा देशथकी तथा सर्वथकी फलप्रतें सदेहऊपजे, अथवा । भेदसमावन्ना । स्यूए जिनशासनछे अथवादूजो तेजिनशासनमतिनो द्वैधीभावपाम्यो । कलुससमावन्ना । कलुषऊपजे मतिभ्रमऊपजे एनहोज एहवो मतिविपर्यास पाम्यो । एवंखलुजीवा । इणेप्रकारे खलुवाक्यालकारे जीव । कखामोहणिज्ज कम्मवेदेति । काचामोहनीयकर्मवेदे एजीवने काचामोहनीयनोवेदवो इमहीज जाणवो । सेणूणभते तमेवसच्चणीसकं जंजिणेहिपवेदियं । जिनप्रणीतथी जिनवचनसत्यथकी ते साचपणाप्रतें देखाडेछे—ते निश्चे हेभगवन् तेही जेसाचो नि'सदेह जेजिनप्रवेदित जिनेकह्यु, भगवतकहे । हंता गोयमा । हागौतम। तमेवसच्चणीस

ठमाणेत्ति ॥ उक्तन्यायेन मन श्चेष्टयन्' नान्यमतानि सत्यानी त्यादिचिन्तायां व्यापारयन्' चेष्टमानोवा; विधेयेषु तपोध्यानादिषु ॥ एवसवरेमाणेत्ति ॥ उक्तवदेव मन सवृखन्' मतान्तरेभ्यो विवर्त्तयन्, प्राणातिपातादीन्वा, प्रत्याचक्षाणो जीवइतिगम्यते ॥ आणाएत्ति ॥ आज्ञाया ज्ञानाद्या सेवारूपजिनोपदेशस्य ॥ आराहएत्ति ॥ आराधक' पालयिता भवतीति' अथ कस्मा त्तदेव सत्य यज्जिनै प्रवेदित ? मित्यत्रोच्यते, यथाव द्वस्तु परिणामाभिधानादिति, तमेव दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ अत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइत्ति ॥ अस्तित्व मङ्गुल्यादे रङ्गुल्यादिभावेन सत्त्व, उक्तञ्च सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच । अन्यथासर्वभावाना मेकत्वसम्प्रसज्यते ॥ १ ॥ तच्चेह ऋजुत्वादिपर्यायरूप मवसेय, अङ्गुल्यादिद्रव्यास्तित्वस्य कथञ्चि दृजुत्वादिपर्यायाव्यतिरिक्तत्वात् अस्तित्वे ङ्गुल्यादेरेवा ङ्गुल्यादिभावेन सत्त्वे वक्रत्वादिपर्यायइत्यर्थ, परिणमति तथा भवति, इद मुक्त भवति, द्रव्यस्य प्रकारान्तरेण सत्ता प्रकारान्तरसत्ताया वर्त्तते, यथा—मृद्द्रव्यस्य पिण्डप्रकारेण सत्ता घटप्रकारसत्तायामिति' ॥ नत्थित्तनत्थित्तंपरि

णे एवपकरेमाणे एवं चिठेमाणे एवं सवरेमाणे आणाए आराहएभवइ ? हंता गोयमा ! एवं मणेधारेमाणे जावभवइ। सेणूणंभंते! अत्थित्तंअत्थित्ते परिणमइ णत्थित्तंणत्थित्ते परिणमइ? हंतागोयमा ! जावपरिण

जजिणेहिपवेदिय। तेहीज निश्चै सत्य नि सदेह जेजिनकह्यु जेजिनपणीत सत्य इसा अभिप्रायनोवणो तेहवो हुये तेदेखाडेछे—सेणूणभतेएव मणे धारेमाणे। ते निश्चै हेभगवन् । इम मननेविषे धरतोथको इम मननेविषे सारमानवो धारणाकरवो। एवपकरेमाणे। इम नि सदेहकरीने। एव चिठेमाणे। इम तपध्याननेविषै प्रवर्त्तै। एव सवरेमाणे। इम पोताने सवरवोप्रवर्त्तै, अथवा प्राणातिपातादिक सवरतो। आणाए आराहएभवति। श्री वीतरागनोआज्ञा ५ आराधे पाले, आज्ञायेकरी जिनोपदेशनो आराधकहोय इतिप्रश्न। हता गोयमा। हागौतम। एव मणेधारेमाणे जावभवति। इणेप्रकारे तेहीज सत्य नि शक जेजिनकह्यु इम मननेविषे धारतो यावत् आराधकहोय। सेणूणभते अत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ। ते निश्चै हेभगवन्। छतीवस्तु ते छतापणे पर्याय पलटाणे पणि नपलटाय जिम आगुलोआगुलीपणे परिणमे ते आगुलो ते आगुली ऋजुवक्रपणूधरे तिवारे पर्यायपर्याय प

॥ टीका ॥

णामइत्ति ॥ नास्तित्वं मङ्गुल्यादेरङ्गुष्ठादिभावेनासत्त्वं तच्चाङ्गुष्ठादिभावएव, ततश्चाङ्गुल्यादे र्नास्तित्वमङ्गुष्ठाद्यस्तित्वरूपं मङ्गुल्यादे र्नास्तित्वे ऽङ्गुष्ठादेः पर्यायान्तरेणास्तित्वरूपे परिणमति, यथा मृदोनास्तित्वं तन्त्वादिरूपं मृन्नास्तित्वरूपे पटेइति, अथवा, अस्तित्वमिति धर्म्मधर्म्मिणो रभेदात्सद्वस्तु अस्तित्वे सत्त्वे परिणमति सत्सदेवभवति, नात्यन्तं विनाशिस्यात्, विनाशस्य पर्यायान्तरगमनमात्ररूपत्वात् दीपादिविनाश स्यापि तमिस्रादिरूपतया परिणामात् यथा नास्तित्व मत्यन्ताभावरूपं यत् खरविषाणादि तन्नास्तित्वे ऽत्यन्ताभावएव वर्त्तते नात्यन्तमसतः सत्त्वमस्ति खरविषाणस्येवेति, उक्तञ्च–नासतोजायतेभावो नाभावोजायतेसतः । अथवा, अस्तित्वमिति धर्म्मभेदात्सदस्तित्वे सत्वे वर्त्तते, यथा–पट पटत्वएव नास्तित्वं चाऽसन्नास्तित्वे सत्वे वर्त्तते, यथा ऽपटोऽपटत्वएवेति, अथ परिणामहेतुदर्शनायाह ॥ जंतमित्यादि ॥ अत्थि त्तं अत्थित्ते परिणमइत्ति ॥ पर्यायः पर्यायान्तरता याती त्यर्थः ॥ णत्थित्तंणत्थित्तेपरिणमइत्ति ॥ वस्त्वन्तरस्य पर्याय स्तत्पर्यायान्तरता यातीत्यर्थः ॥ पओगसत्ति ॥ सकारस्यागमिकत्वात् प्रयोगेण जीवव्यापारेण ॥ वीससत्ति ॥ यद्यपि लोके विस्रसाशब्दो जरापर्यायतया रूढ स्तथापीह स्वभावा

॥ मूल ॥

र्थः ॥ जंतंभंते ! अत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइ, नत्थित्तंणत्थित्तेपरिणमइ, तंकिं पओगसा वीससा ? गोयमा पओगसावि तं वीससावि तं ॥

॥ भाषा ॥

अस्तीवस्तु ते अस्तापणे परिणमे, इहांवारवार प्रयोगेकरी अथिपणूं अथिपणेपरिण मे जिमकुंभकार मृत्तिकापिंड करी मूंके ते पिंड घटपरिणामे परिणमे, स्वभावे शुभ अशुभ पणि वर्त्ते, स्वभावपर्यायांतर इतिभाव । हंता गोयमा, जा ते अथित्तअथित्ते परिणमइ । जेते हेभगवन् । छतीवस्तु ते छतापणें परिणमे, पर्यायते पर्यायान्तरपणांप्रते जाय । नत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ । नास्तिपणूं नास्तिपणे परिणमे, अछतीवस्तु ते अछतापणें परिणमें, जिम कुंभारने व्यापारथकी माटीथी घडोकरे, आगुली सूवीवांकीकरी घडो निपजावे । तंकिंपओग सावीससा । तेस्यूं प्रयोगे जीवनेव्यापारेकरी, परिणामे स्वभावेंकरी परिणमे, जिम आकासेवादल ? उत्तर । गोयमा पओगसावितं । हेगौतम । प्रयोगेक लटाय पणि सत्ताभाव नपलटाय । नत्थित्तनत्थित्ते परिणमइ । अछतीवस्तु ते अछतापणे परिणमे, इहांवारवार प्रयोगेकरी अथिपणू अथिपणे परिण वपरिणमइ । हागौतम आगुलीने आगुलीकहीये, पट ते पटहीजपणे परिणमें, आगुलीने अगूठारी नास्तिछे, पटनही ते पटनहीज एसत्यछे । जंतभ

र्थो दृश्य ' इहप्राकृतत्वा द्वीससाएतिवाच्ये वीससेत्युक्तमिति, अत्रोत्तरं ॥ पउंगसावितति ॥ प्रयोगेणापि तदस्तित्वादि, यथा – कुलालव्यापारा न् मृत्पिण्डो घटतया परिणमति, अङ्गुलिऋजुतावा, वक्रतयेति, अपि समुच्चये ॥ वीससावितति ॥ यथा – शुभ्राभ्र मशुभ्राभ्रतया, नास्तित्वस्यापि नास्तित्वपरिणामे प्रयोगविस्रसयो रेता न्येवो दाहरणानि ' वस्त्वन्तरापेक्षया मृत्पिण्डादे रस्तित्वस्य नास्तित्वात्, सत्सदेवस्यादिति व्याख्या नान्तरे प्येता न्येवो दाहरणानि, पूर्वोत्तरावस्थयो सद्रूपत्वादिति, यदप्यभावो ऽभावएव स्यादिति व्याख्यात, तत्रापि प्रयोगेणापि, तथा वि स्रसयापि अभावो भावएवस्यात्, न प्रयोगादे साफल्यमिति व्याख्येयमिति, अथो क्तहेत्वो रुन्यत्र समता भगवदभिमतताञ्च दर्शयन्नाह ॥ ज हातेइत्यादि ॥ यथा प्रयोगविस्रसाभ्यामित्यर्थ , तेइति तव मतेन, अथवा ; सामान्येना स्तित्वनास्तित्वपरिणाम , प्रयोगविस्रसाजन्य उक्त ' सा मान्यश्च विधि , क्वचि दतिशयवति वस्तु न्यन्यथापि स्या, दतिशयवाश्च भगवानिति ' तमाश्रित्य परिणामान्यथात्वमाशङ्कमानआह ॥ जहातेइत्या दि ॥ तेइति तव सम्बन्धि अस्तित्वञ्च शेषं तथैवेति ' अथो क्तस्वरूपस्यै वार्थस्य सत्यत्वेन प्रज्ञापनीयतां दर्शयितुमाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ अस्ति

पउंगसावितं वीससावितं । जहातेभंते ! अत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइ, तहाते णत्थित्तंणत्थित्तेपरिणमइ जहा तेनत्थित्तंनत्थित्तेपरिणमइ तहातेअत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइ ? हंता गोयमा ! जहामे अत्थित्तअत्थित्तेपरिण मइ तहामेनत्थित्तंनत्थित्तेपरिणमइ, जहामेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ तहामेअत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइ, सेणूण

रो ते अस्तित्वादि जिमकुंभकार इत्यादि पूर्ववत् । वीससावित । स्वभावेंपणिहुवे बादलनीपरे । जहातेभंतेअत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ । जिम ते हेभगवन् ! प्रयोगेंकरी तथा विस्रसायें करी तुम्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमै । तहातेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ । तिम ते तुम्हारेमतेनास्तिपणू नास्तिपणे परि णमै। जहातेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ । जिम तुम्हारेमते नास्तिपणू नास्तिपणे परिणमै । तहातेअत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ । तिमतुम्हारेमते अस्तिपणू अ स्तित्वपणै परिणमे भगवतकहेछे—हंतागोयमा । हागौतम । जहामेअत्थित्तअत्थित्ते परिणमइ । जिम अम्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमै

॥ टीका ॥

त्व मस्तित्वे गमनीय सद्वस्तुसत्त्वेनैव प्रज्ञापनीयमित्यर्थः ॥ दोआलावगत्ति से णूणं भंते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज मित्यादि ॥ पज्जगसावितवी
ससावित ॥ इत्येतदन्त एक परिणामभेदाभिधानात् ॥ जहा ते भंते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जमित्यादि ॥ तदा मेअत्थित्त अत्थित्तेगमणिज्ज ॥
इत्येतदन्तस्तु द्वितीयो ऽस्तित्वनास्तित्वपरिणामयो समताभिधायीति, एव वस्तुप्रज्ञापनाविषया समभावना भगवतो भिधाया थ शिष्यविषया
ता दर्शयन्नाह ॥ जहातेइत्यादि ॥ यथा – स्वकीयपरकीयताऽनपेक्षतया समत्वेन विहितमिति प्रवृत्त्या उपकारबुद्ध्यावा; ते तव भदत ॥ एत्थति ॥
एतस्मि न्मयि सन्निहिते स्वशिष्ये गमनीय वस्तु प्रज्ञापनीय, तथा तेनैव समतालक्षप्रकारेण उपकारधियावा ॥ इहति ॥ इहा स्मिन् गृहिपाखण्डि
कादौ जने गमनीय वस्तु प्रकाशनीयमितिप्रश्न , अथवा; ॥ एत्थति ॥ स्वात्मनि यथागमनीय सुखप्रियत्वादि, तथा इह परात्मनि, अथवा, यथा

॥ मूल ॥

भंते ! अत्थित्तंअत्थित्तेगमणिज्जं जहापरिणमइ दोआलावगा तहागमणिज्जेणविदोआलावगा भाणिया,
जावतहामेअत्थित्तंअत्थित्तेगमणिज्जं । जहातेभंते! एत्थंगमणिज्जं तहातेइहगमणिज्जं, जहातेइहगमणिज्जंत

॥ भाषा ॥

तहामे नत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ । तिम अम्हारेमते नास्तिपणू नास्तिपणे परिणमै । जहा मे नत्थित्तनत्थित्ते परिणमइ । जिम अम्हारेमते नास्तिपणू
नास्तिपणे परिणमै । तहामे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । तिम अम्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमै । सेणूणभंते अत्थित्तअत्थित्ते गमणिज्ज जहाप
रिणमइ दो आलावगा तहागमणिज्जेणवि दोआलावगा भाणियव्वा । ते निश्चै हेभगवन् ! अस्तिपणू अस्तिपणे गमनीय, छतीवस्तु छतीपणेहीज प्रका
शवा योग्यछे, परनैजणावीये जिम परिणमननेविषै, बेआलावाकह्या, तिम प्रकाशवायोग्यनेविषै, पणि बेआलावा कहवा । सेणूणभंते, अत्थित्तअत्थित्तेगम
णिज्ज इत्यादि, जाणवै पओगसावित ए भंते एक आलावो गमणिज्ज भेदकहवाथी, तथा । जहातेअत्थित्तअत्थित्ते गमणिज्ज इत्यादि । जावतहामेअत्थित्त
अत्थित्तेगमणिज्ज, यावत्, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तिम अम्हारे मतै अस्तिपणै प्रकाशवायोग्य, एपर्यंत कहवो । जहातेभंतेएत्थगमणिज्जं ।
जिम तुम्हारेमते मुझ सुशिष्यने विषै वस्तुप्ररूपो । तहा । तुम्हारेमते गृहस्थ पाखण्डिकादि जनविषै प्ररूपै । जहाते इहगमणिज्ज । जिम तुम्हारेमते

प्रत्यत्ताधिकरणार्यतया एत्य मित्येत च्छव्दरूपमिति गमनीय, तथा इह मित्येत च्छव्दरूपमिति, समानार्थत्वा द्वयोरपीति, काङ्गामोहनीयकर्म वेदन सप्रसङ्ग मुक्त मथ तस्यैव बन्धमभिधातुमाह ॥ जीवाणन्तेकखेत्यादि ॥ पमायपच्चयत्ति ॥ प्रमादप्रत्यया त्प्रमत्ततालक्षणा द्वेतो प्रमादश्च मद्यादि, अथवा, प्रमादग्रहणेन मिथ्यात्वाविरतिकषायलक्षण बन्धहेतुत्र्य गृहीत' इष्यतेच प्रमादेन्तर्भावो स्य, यदाह – पमाओयमुणिदेहि भ णिओअठभेयओ । अन्नाणससओचेव मिच्छाणाणतहेवय॥१॥ रागोदोसोमइभ्भसो धम्मम्मियअणायरो । जोगाणदुप्पणीहाण अठहावज्जियव्वउत्ति ॥२॥ तथा योगनिमित्तञ्च, योगा मन प्रभृतिव्यापारा स्तेनिमित्त हेतु र्यत्र त त्तथा, वध्नन्तीति क्रियाविशेषण चेद, एतेनच योगाख्यश्चतुर्थ कर्म्मबन्ध हेतुरुक्त, च समुचये, अथ प्रमादादेरेव हेतुफलभावदर्शनायाह ॥ सेणमित्यादि ॥ पमाएकिंपवहेत्ति ॥ प्रमादो ऽसौ कस्मा त्प्रवर्त्तति प्रवर्त्ततइति

हातेइत्थगमणिज्जं ? हता गोयमा ! जहामेइत्थंगमणिज्जं तहामेइहगमणिज्जं । जीवाणंभंते ! कंखामोहणिज्जंकम्मंबंधति ? हता गोयमा ! बंधति । कहणंभंते ! जीवाकंखामोहणिज्जंकम्मंबंधंति गोयमा ! पमाद

गृहस्थ पाखडोनेविषे वस्तुप्ररूपीये । तहातेइत्थगमणिज्ज । तिम तुम्हारेमते सुशिष्यादिकनेविषे प्ररूपीये ? भगवतकहेछे—हतागोयमा । हा गौतम । जहामेइत्थगमणिज्ज । जिम अम्हारे मते सुशिष्यादिकने प्ररूपीये इत्यादि । जावतहामेइत्थ गमणिज्ज । यावत् तिम अम्हारेमते सुशिष्यादिकने प्ररूपीये इत्यादि ॥ हिवे कांचामोहनीयनो बध कहेछे—जीवाण भते कखामोहणिज्ज कम्मवधति ॥ जीव हेभगवन् । कांचामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय कर्म बाधे भगवतकहेछे—हतावधति । हागौतमबाधे । कहणभते जीवा कखामोहणिज्ज कम्मवधति । सेंकारणे णइसो वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीवमिथ्यात्वमोहनीयकर्म बाधे ? उतर । गोयमा पमादपच्चय । हेगौतम । प्रमादप्रत्ययथी प्रमत्ततालचणहेतुथी प्रमाद ते मद्यादि अथवा मिथ्यात्व अविरति कषायलचण बधहेतु तीनग्रह्या, एहोनो प्रमादनेविषे अतर्भावछे यदाह—पमाओयमुणिदेहि भणिओअठभेयओ अन्नाणससओचेव मिच्छाणाणंतहेवय॥१॥ रागोदोसोमइभ्भसो धम्मम्मियअणायरो जोगाणदुप्पणीहाण अठहावज्जियव्वओत्ति ॥२॥ जोगनिमित्तच । योगप्रमुखना व्यापार तेहोज निमित्त हेतु

॥ टीका ॥

किं प्रवह, पाठान्तरेण किं प्रभव. ॥ जोगप्पवहेत्ति ॥ योगो मन प्रभृतिव्यापार, स्तत् प्रवहत्वञ्च प्रमादस्य, मद्याद्यासेवनस्य मिथ्यात्वादित्रय स्यच, मन प्रभृतिव्यापारसद्भावे भावात् ॥ वीरियप्पवहेत्ति ॥ वीर्यन्नाम वीर्यान्तरायकर्मक्षयक्षयोपशमसमुत्थो जीवपरिणामविशेष. ॥ शरीरप्पवहे त्ति ॥ वीर्यं द्विधा, सकरण मकरणञ्च, तत्रा लेश्यस्य केवलिन कृत्स्नयो र्ज्ञेयदृश्ययो. केवल ज्ञान दर्शन चोपयुञ्जानस्य योसा वपरिस्पन्दो ऽप्रति घो जीवपरिणामविशेष स्तदकरण, तदिह नाधिक्रियते, यत्तु मनोवाक्कायकरणसाधन, सलेश्यजीवकर्तृको जीवप्रदेशपरिस्पन्दात्मको व्यापारो सौ सकरण, वीर्यं तच्च शरीरप्रवह शरीर विना तदभावादिति ॥ जीवप्पवहेत्ति ॥ इह यद्यपि शरीरस्य कर्मापि कारण न केवलएव जीव, स्त

॥ मूल ॥

पच्चयं जोगनिमित्तंच । सेणंभंते ! पमादेकिंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । सेणंभंते! जोएकिंपवहे ? गो यमा ! वीरियप्पवहे । सेणंभंते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । सेणंभंते ! सरीरे किंपवहे ?

॥ भाषा ॥

जिहांछे इसकर्म बाधे, एतले योगनाम चौथोकर्मबंधनाहेतु कह्या । सेणभंतेपमादेकिंपवहे । ते णइसोवाक्यालंकारे, हेभगवन् प्रमाद किणसूंप्रवर्ते अथवा ऊपजे इतिप्रश्न । गोयमा जोगप्पवहे। हेगोतम। योगते मनःप्रमुखनो व्यापार तेहथी प्रमादऊपजे। सेणभंतेजोगेकिंपवहे । ते णवा० हेभगवन्। योग स्येका री प्रवर्त्ते ऊपजे ? गोयमा । हेगोतम । वीरियप्पवहे । वीर्य ते वीर्यांतरायकर्मक्षयोपशमथी ऊपनो जीवपरिणामविशेष तेहथी ऊपजे । सेणभंतेवीरिए किंपवहे । ते णवाक्या हेभगवन्।वीर्य जीवपरिणामविशेष स्येंकरी प्रवर्त्तेछे, गोयमा । हेगोतम । वीर्य बेप्रकारनो छे सकरणवीर्य १ अकरणवीर्य २ ति हा अलेशीकेवलीने समस्तजाणवो तथा देखवो तेहनेंविषे केवलज्ञान केवलदर्शन प्रयुंजताने जे भावपरिस्पंद अप्रतिघाती जीवपरिणामविशेष ते अकर णवीर्यकहीये १ तेहनो इहां अधिकार नथी, इहां जे मनवचनकरणसाधन सलेशीजीवप्रदेशात्मक व्यापार ते सकरणवीर्य ते शरीरप्रवहे शरीरविना तेह ना अभावथी । सेणभंतेसरीरेकिंपवहे । ते णवा० हेभगवन् । शरीर स्येंकरी प्रवहे ऊपजे ? गोयमा । हेगोतम । जीवप्पवहे । जीवथीप्रवर्त्ते इहां यद्यपि श रीरनो कर्मपणि कारणछे निःकेवल जीवहीज कारण नछे, तथापि कर्मनो कर्त्ता जीवछे तेमाटे जीवप्राधान्यथी जीवप्रवह शरीर इसो कह्यो, । एवस

॥ टीका ॥

यापि कर्म्मणो जीवकृतत्वेन जीवप्राधान्या ज्जीवप्रवहं शरीर मित्युक्तं, अथ प्रसङ्गतो गोशालकमतं निषेधयन्नाह ॥ एवंसइत्ति ॥ एव मुक्तन्याये न जीवस्य काङ्क्षामोहनीयकर्म्मबन्धकत्वे सति अस्ति विद्यते नतु नास्ति, यथा गोशालकमते नास्ति, जीवाना मुत्थानादिपुरुषार्थासाधकत्वा न्नियतितएव पुरुषार्थसिद्धे, यदाह— प्राप्तव्योनियतिबलाश्रयेणयोर्थ., सोवश्यन्नवतिनृणाशुभोशुभोवा । नूतानामहतिकृतेपिहिप्रयत्ने, नान्नाव्यन्नवति नन्नाविनोस्तिनाशइति ॥ १ ॥ एवंहि अप्रमाणिकाया नियते रभ्युपगम कृतो भवति, अध्यक्षसिद्धपुरुषकारापलापश्च स्यादिति ॥ उठाणेइवत्ति ॥ उत्थानमिति वेतिवाच्ये प्राकृतत्वात्सन्धिलोपाभ्या मेवन्निर्द्देश, तत्र उत्थानमूर्द्धीन्नवन, इति रूपप्रदर्शने, वाशब्दो विकल्पे समुच्चयेवा, ॥ कम्मेइवत्ति ॥ कर्म्मउत्क्षेपणापक्षेपणादि ॥ वलेइवत्ति ॥ बलं शारीर. प्राण. ॥ वीरिएइवत्ति ॥ वीर्यं जीवोत्साह ॥ पुरिसक्कारपरक्कमेइवत्ति ॥ पुरुषकारश्च पौरुषाभिमान, पराक्रमश्च सएव साधिताभिमतप्रयोजनः पुरुषकारपराक्रमः, अथवा; पुरुषकारः पुरुषक्रिया, साच प्राय. स्त्रीक्रियात प्रकर्षवती न्नवति, तत्स्वन्नावत्वादिति विशेषेण तद्ग्रहण पराक्रमस्तु शत्रुनिराकरणमिति, काङ्क्षामोहनीयस्य वेदन बन्धश्च सहेतुक उक्त, अथ तस्यैवोदीरणा मन्यच्च तद्गतमेव दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ अप्पणाचेवत्ति ॥ आत्मनैव स्वयमेव जीवो ऽनेन कर्म्मणो बन्धादिषु मुख्यवृत्त्या त्मनएवा धिकार उक्तो नापरस्य, आहच— अणुमेत्तोविणकस्सइ बधोपरवत्थुपच्चयाभणिउत्ति । उदीरयति करणविशेषेण कृष्य न्नविष्यत्कालवेद्य क्षपणाय उद

॥ मूल ॥

गोयमा ! जीवप्पवहे, एवसइ अत्थिउठाणेइवा कम्मेइवा बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कारपरक्कमेइवा सेणूणं न्नंते ! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणाचेवतंचेव

॥ भाषा ॥

इअत्थिउठाणेइवा । इमयका छे जभाथी, इवाइति रूपनिदर्शने, वाशब्द विकल्पार्थे, । कम्मेइवा । कर्म गमनादि उत्क्षेपणादि अवक्षेपणादि । वलेइवा । शरीरनीसमर्था, । वीरिएइवा । जीवनोउत्साह, । पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । पुरुषनो अभिमान पराक्रम एहनी साधना काम पूरोकीधो ते । सेणूणभंतेअप्पणाचेवउदीरेइ । तेनिश्चे हेभगवन् आपणपै निश्चे उदीरै एतलै पोतेज जीव कर्मबधादिकनैविषे मुख्यछै, बीजोकोईनही, । अप्पणाचेवगरहइ ।

॥ टीका ॥

यावलिकाया प्रवेशयति, तथा ॥ गरहइत्ति ॥ आत्मनैव गर्हते निंदती त्यतीतकालकृत कर्म स्वरूपत स्तत्कारणगर्हणद्वारेणवा; जातविशेषबोध ससन्, तथा ॥ संवरइत्ति ॥ संवृणोति नकरोति वर्त्तमानकालिक कर्मस्वरूपत स्तद्धेतुसंवरणद्वारेणवेति, गर्हादौच यद्यपि गुर्वादीनामपि सहका रित्वमस्ति तथापि न तेषा प्राधान्य जीववीर्यस्यैव तत्रकारणत्वा, दुर्वादीनाञ्च वीर्योल्लासनमात्रएव हेतुत्वादिति, अथोदीरणामेवा श्रित्याह ॥ जतन्नतेइत्यादि ॥ व्यक्तन्नवर, अथो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकेपि कस्मात् तकिंउदिण्णउदीरेइइत्यादिना द्यपदस्यैव निर्देश कृत ? उच्यते उदी र्णादिके कर्मविशेषणचतुष्टये उदीरणामेवा श्रित्य विशेषणस्य सद्भावादितरयो स्तु तदभावा' देव तदुद्देशसूत्रेगर्हते संवृणोती त्येतत्पदद्वय कस्मा दुपात्त उत्तरत्रानिर्देश्यमानत्वात्तस्येति ? उच्यते, कर्मणउदीरणाया गर्हासंवरणे प्रायउपाया वित्यभिधानार्थ, एवमुत्तरत्रापिवाच्यमिति, प्रश्नार्थ श्चेहो त्तरत्रव्याख्याना द्बोद्धव्य ' तत्र ॥ नोउदिण्णउदीरेइत्ति ॥ उदीर्णत्वादेव उदीर्णस्या प्युदीरणे उदीरणाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोअणुदिण्णउदीरेइत्ति ॥

॥ मूल ॥

उच्चारेयव्वं। जंतंभंते! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ, तकिंउदिन्नंउदीरेइ १ अणु दिन्नंउदीरेइ २ अणुदिन्नंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ ३ उदयाणंतरपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ ४ ? गोयमा ! नोउ

॥ भाषा ॥

आपहीज अतीतकालेकर्मकीया तेगरहै, बार२ निंदा ते गरहा। अप्पणाचेवसंवरइ। आपहीज संवरै, वर्त्तमानकाले कर्म नकरै। हतागोयमा। हागोतम। अप्पणाचेवतचेवउच्चारियव्व। आत्मायेकरीज कर्मचयकरै इम पूर्वपूर्वे कह्यो, तिमज कहवू। जतभतेअप्पणा। जेते हेभगवन्। आपणपेज। चेवउदीरेइ। नियेउदीरै। अप्पणाचेवगरहइ। आपणपेज निये गरहै। अप्पणाचेवसंवरइ। आपणपेज निये संवरै। तंकिंउदिण्णउदीरेइ। ते स्यूं उदयआव्यूं उदीरै। अथवा। अणुदिण्णउदीरेइ। अणउदयआव्यूं ते उदीरै। अथवा। अणुदिण्णउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। उदयनथीआव्यूं उदीरवायोग्यछै उदयपामवाने ज जमाल यई रह्याछे तेकर्म उदीरै। उदयाणतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ। जेकर्म उदयने अनतरसमय तेहनैंविषे पश्चात्कृत अतीतपणाप्रतै पहुतो तेकर्म उ दीरै। गोयमा। हेगोतम। णोउदिण्णउदीरेइ। उदयआव्यूं ते उदीरै नही, उदयक्षयमाटे उदयआव्यानूं उदीरवू ते नहुवे। णोअणुदिण्णउदीरे

इहा नुदीर्णं चिरेण नविष्यदुदीरणा मनविष्यदुदीरणाञ्च तन्नो दीरयति' तद्विपर्योदीरणाया सम्प्रत्यनागतकालेवाभावात् ॥ अणुदिसंउदीरणानवियं कम्मउदीरेइत्ति ॥ अनुदीर्णं स्वरूपेण किं त्वनन्तरसमयेएव यदुदीरणाभविक तदुदीरयति, विशिष्टयोग्यताप्राप्तत्वात् तत्र नविष्यतीति नवा सैवन विका उदीरणानविकास्येति, प्राकृतत्वा दुदीरणानविक, मन्यथा नविकोदीरणमिति स्या' दुदीरणायावा भव्य योग्य मुदीरणानव्यमिति ॥ नोउ

दिसंउदीरेइ १ नोअणुदिन्नंउदीरेइ २ अणुदिन्नंउदीरणानवियंकम्मंउदीरेइ ३ नोउदयाणंतरंपच्छाकडंकम्मउदीरेइ ४ ॥ जंतन्नंते ! अणुदिन्नं उदीरणानवियंकम्म उदीरेइ तंकिंउठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिन्नउदीरणानवियंकम्मंउदीरेइ , उदाहुतंअणुठाणेणं अकम्मेणं अबलेणं अवीरिएणं

इ। उदयनाव्यू तेपणि उदीरै नही, घणेकाले उदयआवस्ये तेहनैंविषै उदीरणानूं साम्प्रतअभावछै। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। स्वरूपै उदय आव्यूं नथी किंतु अनंतरसमयनैंविषै जे उदीरणाहुस्यें तेकर्म उदीरै, विशिष्टयोगनी प्राप्तिथी, अथवा उदीरणानै भव्य कहता योग्य ते उदीरणाभव्य कहीये उदीरणा भावे कर्मउदीरै। णोउदयाणंतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ। जेकर्मनै उदयनै अनंतरसमय तेहनैंविषै पश्चात्कृतकर्म अतीतपणाप्रतै पहुतो जे तेपणि उदीरैनही, तेहनै अतीतपणाथकी अतीत ते गयूं, गयूं ते अनुदीरणीय थयो, इहां यद्यपि उदीरणादिकनैंविषै कालस्वभावादिकनो कारणछै, तथापि प्राधान्यपणैं पुरुषवीर्यनैंज कारणपणो देखाडेछै—जतभंतेअणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। जे ते हेभगवन्! उदयआव्यूं नथी अनंतरसमयें ते कर्म उदीरस्यें तेकर्मउदीरैं। तंकिंउट्ठाणेण। तेस्यूं उभोथाइवो। कम्मेण। कर्मगमनादि। बलेण। शरीरनोसमर्थाई। वीरिएण। वीर्य ते जीवनो उत्साह। पुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार अभिमानविशेष पुरुषक्रियानैंविषैहीज नीपजाव्यो पोतानोविषय। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। एतले प्रकारेकरी अनुदयछै, अनैं उदीरणानूं भूतछै जेकर्म ते उदीरै, उक्तंच—अत्ताकत्ताविकत्तावा। इतिवचनात्, उदाहुतंअणुठाणेण। अथवा ते उत्थानविना। अकम्मेण। कर्मविना। अबलेण। बलविना। अवीरिएण। वीर्यविना। अपुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार पराक्रमविना। अणुदिन्नउदीरणाभवि

॥ टीका ॥
दयाणतरंपच्छाकडंत्ति ॥ उदयेमा नन्तरसमये पश्चात्कृत मतीतता नीतं य त्त तथा तदपि नो दीरयति' तस्यातीतत्वा दतीतस्यचा सत्त्वा दस तश्चा नुदीरणीयत्वादिति, इहच यद्यप्युदीरणादिपु कालस्वभावादीना द्धारणत्व मस्ति तथापि प्राधान्येन पुरुषवीर्यस्यैव कारणत्व मुपदर्शयन्नाह ॥ जतमित्यादि ॥ व्यक्त म्नवर, उत्थानादिनो दीरयतीत्युक्तम्, तत्रच यदापन्न तदाह ॥ एवसइत्ति ॥ एव मुत्थानादिसाध्ये उदीरणे सतीत्यर्थ, शेष तथैव, काङ्क्षामोहनीयस्यो दीरणोक्ता, अथ तस्यैवोपशमनमाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ उपशमनं मोहनीयस्यैव, यदाह—मोहस्सेवोवसमो खउवस

॥ मूल ॥
अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिन्नंउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ ? गोयमा ! तउठाणेणवि कम्मेणवि वलेणवि वीरिएणवि पुरिसक्कारपरक्कमेणवि अणुदिन्नंउदीरणाभवियंकम्मं उदीरेइ, णोतअणुठाणेण अकम्मेणं अवलेणं अवीरिएणं अपुरिसक्कारपरक्कमेणअणुदिन्नउदीरणाभवियंकम्मंउदीरेइ, एवंसइअत्थिउठाणेइवा कम्मेइवा वलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । सेणूणंभंते ! अप्पणाचेवउवसामेइ अप्पणाचेवगरह

॥ भाषा ॥
यंकम्मउदीरेइ । उदयआव्यू नथी अने उदीरणाभूतछे ते कर्म उदीरे । गोयमा । हेगोतम । तउठाणेणवि । तेकर्म उत्थानेंकरी पणि । कम्मेणवि । कर्मेंकरी पणि । वलेणवि । वलेंकरीपणि । वीरिएणवि । वीर्येंकरीपणि । पुरिसक्कारपरक्कमेणवि । पुरुषाकारपराक्रमेंकरी पणि । अणुदिणउदीरणाभवियकम्म उदीरेइ । अनुदयछे उदीरणा भव्य कर्मप्रतें उदीरें । णोतअणुठाणेण । नही ते अनुत्थानेंकरी नहींचेष्टाविशेषें, अकम्मेण । नहीभ्रमणादिक्रियाकरी । अवलेण । नहीशरीरसामर्थ्यपणें । अवीरिएणं । नहीजीवउत्साहें । अपुरिसक्कारपरक्कमेणं । नहीं पुरुषाकार पराक्रमेंकरी । अणुदिणउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ । उदयरहित उदीरणा भविक उदीरणाविनापणि स्वयमेव कर्म उदयआवें । एवमसइ । इम थका । अत्थिउठाणेइवा । छे उत्थानेंकरी । कम्मेइवा । कर्मेंकरी । वलेइवा । वलेंकरी । वीरिएइवा । वीर्यें करी पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । पुरुषाकार पराक्रमेंकरी अनुदय उदीरणा भविक कर्म उदीरें, ए कांक्षा मोहनीयउदीरणाकही ॥ हिवे कांक्षामोहनीयनोज उपशम कहेछे—सेणूणभंतेअप्पणाचेवउवसामेइ । ते निश्चे हेभगवन् ! आपणपेंज निश्चे कांक्षामोहनी

॥ टीका ।

मोचउरहघाईणं । उदयक्खयपरिणामा अट्ठरहविहोतिकम्माण ॥ १ ॥ उपशमश्च उदीर्णस्य, क्षयो नुदीर्णस्य, विपाकतः प्रदेशतश्चा ननुभवनं, सर्वथैव विष्कंभितोदयत्वमित्यर्थ, अयञ्चा नादिमिथ्यादृष्टे रौपशमिकस्य सम्यक्त्वस्य लाभे उपशमश्रेणिगतस्यवेति' ॥ अणुदिन्नउवसामेइत्ति ॥ उदीर्णस्य त्ववश्य वेदनादुपशमनाभावइति' उदीर्णसद्वेद्यतइति वेदनसूत्र' तत्र उदिन्नवेएइत्ति ॥ अनुदीर्णस्य वेदनाभावात्, अथा नुदीर्णमपि वेदयति, तर्हि उदीर्णानुदीर्णयोः को विशेषः स्यादिति, वेदितश्च निर्जीर्यते इतिनिर्जरासूत्र, तत्र ॥ उदयाणतरपच्छाकडेति ॥ उदयेना नन्तरसमये यत्पश्चात्कृत मतीतता ङ्गमित तत्तथा' त निर्जरयति प्रदेशेभ्य' शातयति, नान्य दननुभूतरसत्वादिति, उदीरणोपशमवेदननिर्ज्जरणसूत्रोक्तार्थे

॥ मूल ॥

इ अप्पणाचेवसंवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थवितहेवभाणियव्वं, नवरं अणुदिन्नंउवसामेइ, सेसापडिसेहियव्वातिन्नि । जंतंभंते ! अणुदिन्नंउवसामेइ तंकिंउट्ठाणेणंजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा, सेणूण भंते ! अप्पणाचेववेदेइ अप्पणाचेवगरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थविसच्चेवपरिवाडी, णवरं उदिन्नंवेदेइ नोअणुदिन्नं वेदेइ, एवंजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा । सेणूणंभंते ! अप्पणाचेव णिज्जरेइ अप्पणाचेवगरहइ ? हता

॥ भाषा ॥

यकर्म उपशमावे । अप्पणाचेवगरहइ । आत्मायेकरीनेंज गरहै निंदै । अप्पणाचेवसंवरइ । आत्मायेकरीनेंज सवरै इतिप्रश्न, । हता गोयमा हागौतम । एत्थवितहेवभाणियव्व । इहांपणि तिमज पूर्वोक्तविधि कहवो । णवरअणुदिन्नउवसामेइ । एतलोविशेष उदयनाव्यू तेकर्म उपशमावे, उदयआव्योते अवश्यें वेदाय पणि उपशमपणानों अभावछे । सेसापडिसेहियव्वातिण्णि । थाकता वरजवा तीन भागा, उदिन्नउवसामेइ इत्यादि ३ । जतभतेअणुदिन्नउवसामेइ । जे ते हेभगवन् ! उदयनाव्यू ते उपशमावें । तंकिंउट्ठाणेण । ते स्यू उत्थानेंकरी । जावपुरिसक्कार परक्कमेइवा । यावत् पुरुषाकार । पराक्रमेंकरी उपशमावे तालगें कहवो, उदयआव्यं तेकर्म वेदै तेमाटै वेदनासूत्र । सेणूणभतेअप्पणाचेववेदेति । ते निश्चे हेभगवन् ! आत्मायेकोधो शुभाशुभकर्म ते उदयआव्यो आत्मायेंकरीनेंज वेदै । अप्पणाचेवगरहइ । आत्मायेकरीनेंज गरहै । एत्थविसच्चेविपरिवाडी । इहां पणि इसहीज सगलोही परिपाटी कहवी ।

मत स्तेषां विशेषेणातद्वेदनप्रकारदर्शनायाह ॥ पुढविकाइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त न्नवरं ॥ एवं तक्काइवत्ति । एवं वक्ष्यमाणोल्लेखेन तर्को विमर्श , स्त्री लिङ्गनिर्देशश्च प्राकतत्वात् ॥ सण्णाइवत्ति ॥ सञ्ज्ञा र्थावग्रहरूप ज्ञान ॥ पण्णाइवत्ति ॥ प्रज्ञा अशेषविशेषविषयं ज्ञानमेव ॥ मणेइवत्ति ॥ मन स्मृत्यादिशेषमतिभेदरूप ॥ वईइवत्ति ॥ वाग्वचन ॥ सेसतचेवत्ति ॥ शेष तदेव , यदौघिकप्रकरणेधीत तच्चेदं ॥ हता गोयमा । तमेव सच्च नी सकं ज जिणेहि पवेइय, से णूण न्नते एव मणं धारेमाणेइत्यादि ॥ तावद्वाच्य यावत् ॥ सेणूणं न्नते अप्पणाचेव निज्जरेइ अप्पणाचेव गरिहइइत्या दे सूत्रस्य पुरिसक्कारपरक्कमेइवत्तिपदं ॥ एवं जाव चउरिंदियत्ति ॥ पृथ्वीकायप्रकरणव दप्कायादिप्रकरणानि चतुरिन्द्रियप्रकरणान्ता न्यध्येयानि,

याणंन्नंते ! कंखामोहणिज्जंकंमंवेदंति ? हंतावेदंति । कहणंन्नंते ! पुढविकाइयाकंखामोहणिज्जंकंमंवेदंति ? गोयमा ! तेसिणंजीवाणं णो एवं तक्काइवा सन्नाइवा पन्नाइवा मणेइवा वइइवा अम्हेणं कंखामोहणिज्जं कमं वेदेमो वेदेंति । पुणते, सेणूणंन्नंते! तमेवसच्चंनीसंकं जंजिणेहिपवेइयं , सेसतंचेव जाव पुरिसक्कारपर

गोतम । वेदे । कहणभंतेपुढविकाइयाकंखामोहणिज्जकम्मंवेदेंति । किसेप्रकारे हेभगवन् । पृथिवीकायना जीव कांचामोहनीयकर्म वेदे ? । गोयमा । हेगौतम । तेसिणजीवाणणं । तेह जीवने इम आगे कहीये ते नही । एवतक्काइवा । तर्क कहिये विचार तेणें रहितछे । सन्नाइवा । अर्थग्रहणरूप ज्ञा न ते नथी । पन्नाइवा । समस्त विशेषज्ञान ते नथी । मणेइवा । मननथी जातिस्मरणविशेष मतिभेदरूप नथी । वईतिवा । वचननथी । अम्हेणकंखा मोहणिज्जंकम्मवेदेमोवेदेंतिपुणते । अम्हे कांचामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय कर्म वेदूछूं एतलो तेजीव नजाणें, पुणकहता वली ते जीव कांचामोहनीय कर्म वेदे । सेणूणभंतेतमेवसच्चणीसंकजंजिणेहिंपवेदित । ते निश्चे हेभगवन् । साधुने इम कहवो तेहीज साचू शंकादिदूषणपंचरहित जेजिनकेवलीऐं प्र रूप्यो । सेसतचेव । शेष थाकतो तेहीज जेऔघिकप्रकरणनेंविषे कह्यु । जावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा । यावत् पुरुषात्कार पराक्रमतांई कहवो । एव जावचउरिंदियाण । इम अपकायथी मांडी यावत् चउरिंद्रीलगे कहवो । पचिंदियतिरिक्खजोणियाजाववेमाणियाजहाओहियाजीवा । पचेंद्रीतिर्यंचथी

॥ टीका ॥

तिर्यक् पञ्चेन्द्रियप्रकरणादीनि तु वैमानिकप्रकरणान्तानि' औघिकजीवप्रकरणवदभिलापेनाध्येयानीत्यतएवाह ॥ पचेंदिएत्यादि ॥ भवतु नाम काङ्क्षा १ मोहजीवाना काङ्क्षामोहनीयवेदनं' निर्ग्रन्थाना पुन स्त न सम्भवति, जिनागमावदातबुद्धित्वा त्तेषामिति प्रश्नयन्नाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ काङ्क्षा ध्येय अस्तिविद्यते, ऽय पक्षो यदुत श्रमणा व्रतिन ' अपिशब्द श्रमणाना काङ्क्षामोहनीयस्या वेदनसम्भावनार्थं, स्तेच शाक्यादयोपि भवन्तीत्या ह' निर्ग्रन्था सबाह्याभ्यन्तरग्रन्था न्निर्गताः साधवइत्यर्थः ॥ नाणंतरेहिति ॥ एकस्मा ज्ज्ञाना दन्यानि ज्ञानानि ज्ञानान्तराणि तै ज्ञानविशेषै ज्ञानविशेषेषुवा, शङ्किता इत्यादिभि सम्बन्ध, एव सर्वत्र, तेषुचैव शङ्कादय स्यु, यदिनाम परमाण्वादिसकलरूपिद्रव्यावसानविषयग्राहकत्वेन सङ्ख्यातीतरूपा ण्यवधिज्ञानानि सन्ति तत्किमपरेण मन पर्यायज्ञानेन तद्विषयभूताना मनोद्रव्याणा मवधिनैव दृष्टत्वा ? दुच्यते चागमे, मन.पर्याय ज्ञान मिति, कि मत्र तत्त्व मिति ज्ञानत शङ्का, इह समाधि , यद्यपि मनोविषय मप्यवधिज्ञानमस्ति, तथापि न मन पर्यायज्ञान मवधा वन्तर्भवति,

॥ मूल ॥

कामेइवा , एव जाव चउरिंदियाणं , पंचिंदियतिरिक्खजोणियाजाववेमाणिया , जहाओहियाजीवा । अत्थि णंभंते ! समणानिग्गथा कखामोहणिज्जकम्मवेदंति ? हंताअत्थि । कहणंभंते ! समणानिग्गंथाकंखामोहणिज्जंक म्मवेदंति ? गोयमा ! तेहिंतेहिंकारणेहिं, नाणंतरेहिं

॥ भाषा ॥

निकप्रकरणनें आदिदेई यावत् वैमानिकप्रकरणपर्यंत जिम औघिकजीवप्रकरणें कह्यु तिम इहांपणि कहवो, शेष जीवनें मिथ्यात्वमोहनीयनो वेदवो थावो, पर ते निर्ग्रंथनें न सभवै, जिनागमनें निर्मलबुद्धिछे जेहनी इसो पूछतो कहेछे—अत्थिणभंतेसमणाणिग्गथाकखामोहणिज्जकम्मवेदंति । छे एहसे वाक्यालकारे, हेभगवन् । श्रमण तपस्वी शाक्यादिकपणि हुवे तेमाटे कहेछे—बाह्याभ्यतरग्रंथरहित एहवा साधु ते कांक्षामोहनीयकर्म वेदे, तेहनो उत्त र भगवत कहेछे—हंताअत्थि । हांगौतम वेदेछे । कहणंभंतेसमणाणिग्गथाकंखामोहणिज्जकम्मंवेदंति गोयमा तेहितेहिकारणेहि णाणतरेहि । किसेप्र कारें हेभगवन् । श्रमणतपस्वी निर्ग्रंथ बाह्याभ्यतरपरिग्रहरहित मिथ्यात्वमोहनीयकर्म वेदे इतिप्रश्न, हेगौतम । तेणेतेणें कारणेकरी तेकारणकहेछे—णा

भिन्नस्वभावत्वा, तथाहि—मन पर्यायज्ञान मनोमात्रद्रव्यग्राहकमेवा दर्शनपूर्वकञ्च, अवधिज्ञानन्तु किञ्चि न्मनोद्रव्यव्यतिरिक्तद्रव्यग्राहक किञ्चि दुभयग्राहकं दर्शनपूर्वकञ्च, नतु केवलमनोद्रव्यग्राहक मित्यादि बहुवक्तव्य मतोऽवधिज्ञानातिरिक्त भवति मन पर्यायज्ञानमिति' तथा दर्शन सामान्यबोध' स्तत्रच यदि नामेन्द्रियानिन्द्रियनिमित्त सामान्यार्थविषयो बोधो दर्शन तदा किमेकं चक्षुर्दर्शन मन्यस्त्वचक्षुर्दर्शन, यथे न्द्रियानि न्द्रियभेदा द्भेद स्तदा चक्षुष्इव श्रोत्रादीनामपि दर्शनभावात् षडिन्द्रियनोइन्द्रियजानि दर्शनानि स्यु र्नद्वेएवेति' अत्रसमाधि, सामान्यविशेषा त्मकत्वा द्वस्तुन क्वचिद्विशेषत स्तन्निर्द्देश· क्वचिच्च सामान्यत, स्तत्र चक्षुर्दर्शनमिति विशेषतो ऽचक्षुर्दर्शनमितिचसामान्यतो, यच्च प्रकारान्तरेणापिनि र्द्देशस्य सम्भवे चक्षुर्दर्शन मचक्षुर्दर्शनञ्चे त्युक्त-तदिन्द्रियाणा मप्राप्तकारित्वप्राप्तकारित्वविभागा न्मनस स्त्वप्राप्तकारित्वेपि प्राप्तकारीन्द्रियवर्गस्य

दसणतरेहिं

णंतरेहिं, एक ज्ञानथकी बीजाज्ञाननेंविषे शंकाऊपजे, तेकिम ? अवधिज्ञाननांधणी परमाणूआदि सकलद्रव्य रूपी अवधिज्ञानेंकरी जाणे चउदराजलो कना, अनें मनपर्यवज्ञाननाधणी मन:पर्यायज्ञानेंकरी अढाईद्वीपमाहि सन्नीना मननीवार्त्ता जाणें, एतले अवधिज्ञानी अवधिज्ञानेंकरी मननीवार्त्ता जाणे, तिवारें मन.पर्यायज्ञाननो विशेष कांईनही, एतले ज्ञानआश्री शंकाऊपजे एहनो उत्तर लिखीयेछे—यद्यपि मननाद्रव्यनो जाणपणो अवधिज्ञा नीनें छे, तथा ते मन·पर्यवज्ञान नथी, तेहनो भिन्नस्वभावछे, तेकिम मन पर्यायज्ञान मनोद्रव्यग्राहक दर्शनपूर्वक नहीछे, अनें अवधिज्ञान क्योहीएक मनविना द्रव्यग्राहीछें, क्योंहीएक उभयग्राहीछें, अनें दर्शनपूर्वकछे, पुण ते केवल मनोद्रव्यग्राही नहीं, इणकारणमाटे अवधिज्ञान मन:पर्यायज्ञान जु दा कह्या ते ज्ञानांतरकहीये ॥ १ ॥ दसणंतरेहि। दर्शनसमुच्चये इद्रीसमुच्चयविषे करि जाणीयें ते दर्शनकहीये नोचक्षुर्दर्शन अचक्षुर्दर्शन जुदा क्योकही यें, इहा शंकानो उत्तर अचक्षुर्दर्शन शरीरादिकसामान्यथकी देखे, अनें चक्षुर्दर्शन विशेषथी देखे इति विशेष, दीयदर्शन जाणीयेंछे, इहा सर्वइद्री नोइ द्री देखणनो स्वरूप कहीयेछे अथवा दर्शनसम्यक्त्वनेविषे शंकाऊपजे, उपशमक्षयोपशमनेविषे मिथ्यात्व जे उदेआयो ते क्षीणकीधो जे मिथ्यात्वउदे आ

॥ टीका ॥

तदनुसरणीयस्य बहुत्वा त्तद्दर्शनस्या चक्षुर्दर्शनशब्देन ग्रहणमिति, अथवा; दर्शन सम्यक्त्व तत्रच शङ्का – मिच्छत्तजमुदिन्न तखीणंअणुदियंचउवसत मित्येव लक्षण, क्षायोपशमिक मौपशमिक मप्येव लक्षणमेव, यदाह – खीणम्मिउइणम्मि अणुदिज्जतेयसेसमिच्छत्ते । अतोमुहुत्तमेत्त उवसमस म्मलहइजीवो ॥ १ ॥ ततो नयो र्नविशेष उक्त श्चासाविति' समाधिश्च, क्षयोपशमोह्युदीर्णस्य, क्षयोऽनुदीर्णस्यच, विपाकानुभवापेक्षयाउपशमस्त्र देशानुभवतस्तूदयोस्त्येव, उपशमेतु प्रदेशानुभवोपि नास्तीति, उक्तञ्च – वेएइसतकम्म खओवसमिएसुनाणुभावसो । उवसतकसाउपुण वेदेइणसत कम्मपि ॥ १ ॥ तथा चारित्र चरण' तत्रच यदि सामायिक, सर्वसावद्यविरतिलक्षण, च्छेदोपस्थापनीयमपि, तल्लक्षणमेव महाव्रताना मवद्यविर तिरूपत्वा, त्तत्को नयो र्भेद उक्त श्चासाविति अत्र समाधि , ऋजुजडवक्रजडाना म्प्रथमचरमजिनसाधूना माश्वासनाय च्छेदोपस्थापनीय मुक्त, व्रतारोपणेहि मनाक्सामायिकाशुद्धावपि व्रताखण्डनात्, चारित्रिणो वयञ्चारित्रस्य व्रतरूपत्वा दितिबुद्धि स्या, त्सामायिकमात्रेतु तदशुद्धौ भग्नं नश्चारित्र, चारित्रस्य सामायिकमात्रत्वा दित्येव मनाश्वास स्तेषा स्यादिति, आहच – रिउवक्कजडापुरिमे यराणसामाइएवयारुहण । मणयम

॥ मूल ॥

चरित्ततरेहि लिंगतरेहिं

॥ भाषा ॥

ध्यो नही ते उपशमे ए लक्षण चायोपशमना, उपशमपणि इणे लक्षणे एहने परस्पर विशेष नकह्यो तो इहा सदेह ऊपजे तेहनो उत्तर कर्महीजनो का रण चायोपशम उदयनोच अनुदयविपाकनो उपशमपणि प्रदेशनो उदयछे, उपशम प्रदेशनोपणि उदय नही इतिविशेष ॥ २ ॥ चरित्ततरेहिंइति । चारित्रआश्रो तिहा सामायिक सर्वसावद्यनो पञ्चक्खाण, तिहा वली छेदीने छेदोपस्थापनीय कहता महाव्रतआरोपीये ते किस्यूं कारण इहा शका ऊ पजे, तेहनो प्रतिउत्तर आदिनाथने वारे ऋजुजडजीवछे, अने श्रीमहावीरजीनैंवारे वाका अनैं जडछे, तिणाने समभाविवाने कारण सामायिकछेदो पस्थापनीयचारित्रदीधा, हिवैं तुमे पचमहाव्रतचारित्र जावज्जीवलगे पालो, आहच—रिउवकजडापुरिमे यराणसामाइएवयारुहण । मणयविसुद्धेविज श्रो सामाइएहुतिहुवयाइ.। १ । इतितृतीयपदार्थः ॥ ३ ॥ लिंगतरेहिंइति । लिगते साधुनो वेष तिहा बावीसतीर्थकरने वारे जिसा वस्त्रपामै तिसापहि

सुद्दीयजडं सामइयाएहुंतिदुवयाइं ॥ १ ॥ तथा लिङ्गंसाधुवेष, स्तत्रच यदि मध्यमजिनै र्यथालब्धवस्त्ररूपं लिङ्गं साधूना मुपदिष्टं' तदा किमिति प्रथम चरमजिनाभ्या सप्रमाणधवलवसनरूप तदेवोक्त, सर्वज्ञाना मविरोधिवचनत्वादिति ? अत्रापि ऋजुजडवक्रजडऋजुप्रज्ञशिष्या नाश्रित्य भगवता तस्यो पदेश' स्तथैव तेषामुपकारसम्भवा दिति समाधि' तथा प्रवचन मत्रा गम, स्तत्रच यदि मध्यमजिनप्रवचनानि चतुर्यामधर्मप्रतिपादकानि, कथं प्रथमेतरजिनप्रवचने पञ्चयामधर्म्मप्रतिपादके सर्वज्ञाना मविरुद्धवचनत्वा?दत्रापि समाधि' श्चातुर्यामोपि तत्त्वत पञ्चयामएवा सौ चतुर्थ व्रतस्य परिग्रहे न्तर्भूतत्वा द्योषाहिनामपरिगृहीता भुज्यत इति न्यायादिति, तथा प्रवचन मधीते वेत्तिवा, प्रावचन कालापेक्षया बहागम पुरुष स्तत्र एक. प्रावचनिक एव कुरुते, अन्यस्त्वेवमिति किमित्यत्र तत्त्वमिति ? समाधिश्चेह, चारित्रमोहनीयक्षयोपशमविशेषेण उत्सर्गापवादादिज्ञावि

पवयणतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पतरेहिं

रे, अनै पहिलानै तथा चउवीसमा तीर्थंकरनैवारै साधुनै धवलावस्त्र तेपणि प्रमाणसहित पहिरैं, इहा परस्परविरोध दीसैछै, इहा परस्पर शंका ऊ पजै तेहनो उत्तर इहा पणि ऋजुजड वक्रजड ऋजुप्राज्ञ शिष्य प्रबोध उपगारकरणरै वासते भगवत उपदेशदीधा ते लिगतरकहीयै ॥ ४ ॥ पवयणतरे हिंइति । प्रवचन ते आगम तिहा बावीसतीर्थंकरनैवारै च्यार महाव्रत कह्या, अनैं प्रथमचरमतीर्थंकरनैं वारै पचमहाव्रतधर्म कह्यो, इहा जिनवचननै विषै विरोध दीसैछै, अत्रपणि शका ऊपजै, तेहनो उत्तर पूछ्यो, पुरिमाउज्जुजडाओ इतिवचनात् जे च्यारिमहाव्रत ते तत्वथकी पचमहाव्रतछै, तेकिम स्त्री नें परिग्रह एकीभूतछै, तेमाटै च्यारमहाव्रतछै, अनै जुदाजुदाविचारीयै तो पचमहाव्रतछै, ए प्रवचनातरकहीयै ॥ ५ ॥ तथा पावयणातरेहिं, इति । प्रवचनभणैं अथवा जाणै ते प्रावचनकहता गीतार्थ तेहमाहि एक इमथोडेरी क्रियाकरै, एक अनेरा घणेरी क्रिया करै, इहा स्यूं प्रमाण ? इम श का ऊपजै तेहनो प्रति उत्तरपूछ्यो, इहातो चारित्रमोहनीयकर्मक्षयोपशमविशेषै करी अपवादादिभावेंकरी गीतार्थाको विचित्रप्रवृत्तिप्रवर्त्तवो स वैथापि प्रमाणछै, एप्रावचनातरकहीयै ॥ ६ ॥ कप्पतरेहिंइति । कल्पकहतां जिनकल्पादि सामाचारी तिहा जिनकल्पीतो नगनादिमहाकष्टे प्रवर्त्तै अ

॥ टीका ॥

तत्वेनच प्रावचनिकाना विचित्रा प्रवृत्तिरिति, नासौ सर्वथापि प्रमाण मागमाविरुद्धप्रवृत्तेरेव प्रमाणत्वादिति' तथा कल्पो जिनकल्पिकादिसमाचार, स्तत्र यदिनाम जिनकल्पिकाना नाग्न्यादिरूपो महाकष्ट· कल्प कर्म्मक्षयाय तदास्थविरकल्पिकाना वस्त्रपात्रादिपरिभोगरूपो यथाशक्तिकरणात्मको कष्टस्वभाव· कथ कर्म्मक्षयायेति ? इहच समाधि·' द्वावपि कर्म्मक्षयहेतू अवस्थाभेदेन जिनोक्तत्वा, त्कष्टाकष्टयोश्च विशिष्टकर्म्मक्षयप्रत्यकारणत्वादिति, तथा मार्ग पूर्वपुरुषक्रमागता सामाचारी, तत्र केषाञ्चि द्वि चैत्यवन्दना नेकविधकायोत्सर्गकरणादिकावश्यकसामाचारी तदन्येपान्तु नतथेति, किमत्र तत्वमिति ? समाधिश्च, गीतार्थाशठप्रवर्त्तिता सा सर्वापि नविरुद्धा आचरितलक्षणोपेतत्वा, दाचरितलक्षण चेदं – असढेणसमाइन्न जंकत्थइकेणईअसावज्ज । ननिवारियमन्नेहि बहुमणुमयमेयमायरियति ॥ १ ॥ तथा मतं समान एवागमे आचार्याणा मभिप्राय' स्तत्रच सिद्धसेनदिवाकरो मन्यते, केवलिनो युगप ज्ज्ञान दर्शनञ्चा, न्यथा तदावरणक्षयस्य निरर्थकता स्या, ज्जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणास्तु भिन्नसमये ज्ञानदर्शने जीवस्वरूपत्वा, द्यथा तदावरणक्षयोपशमे समानेपि क्रमेणैव मतिश्रुतोपयोगौ नचैकतरोपयोगे इतरक्षयोपशमाभाव' स्तत्क्षयोप

॥ मूल ॥

मग्गंतरेहिं मयंतरेहि

॥ भाषा ॥

नें स्थविरकल्पीतो वस्त्रपात्रादिकसहितप्रवर्त्ते, तिणेंकारणे थोडो कष्टछे, तो ते कर्मक्षय किमकरे, अठे शंका ऊपजे तेहनो प्रतिउत्तर कहेछे—जिनकल्पी अनें स्थविरकल्पी दोइ ए कर्मक्षयनिमित्ते तीर्थंकरे कह्याछे, अवस्थाभेदेंकरीनें कल्पातरकहीये ॥ ७ ॥ मग्गतरेहिंइति । पूर्व जे आचार्य तेहनी सामाचारी ते किसी तिहा एक आचार्य दोयचैत्यवदनाकरे, अनेकविधि काउसग्गकरे, तथा बीजाआचार्य ते पुनि नकरे, इहा आचार्याकी सामाचारीकी शंका ऊपजे, तेहनो उत्तर गीतार्थथी जे सामाचारीप्रवर्त्ते ते सर्वथा निषेध नही, आचरितलक्षणोपेतत्वात् आचरितलक्षण ते कहीये गाथा—असढेणसमाइण जकत्थइकेणईअसावज्ज। ननिवारयमन्नेहि बहुमणमयमेयमायरियति ॥ ८ ॥ तथा मयंतरेहिंइति । मत ते समानहीज आगमनेविषे आचार्यनो अभिप्राय ते मत कहीये ते जुदा २ ते कहेछे—तिहा सिद्धसेनदिवाकर इसो माने केवलीने ज्ञानदर्शननो उपयोग एकठोछे एकँसमये हुवे, तथा जिन

रुद्धञ्च, रागादिविरहितत्वात्, आहच—अणुवकयपराणुग्गह परायणाजंजिणाजुगप्पवरा । जियरागदोसमोहा यणन्नहावाइणोतेणंति ॥ १ ॥ शमस्यो त्कृष्टत· षट्पष्टिसागरोपमप्रमाणत्वा, दत कि तत्व मिति ? इहच समाधि·, यदेवमत मागमानुपाति तदेव सत्यमिति मन्तव्य मितर त्पुन रुपेक्षणीय, मया वहुश्रुतेन नैतदवसातु शक्यते तदैव भावनीय, आचार्याणा सम्प्रदायादिदोषा दय मतभेदो जिनानान्तु मत मेकमेवा वि तथा भङ्गाद्यादिसयोगभङ्गका, स्तत्रच द्रव्यतो नामै का हिंसा न भावत इत्यादि चतुर्भङ्ग्युक्ता, नच तत्र प्रथमोपि भङ्गो युज्यते, यत किल द्रव्यतो हिंसा ईर्यासमित्या गच्छत· पिपीलिकादिव्यापादन, नचेय हिंसा तल्लक्षणायोगा, तथाहि—जोउपमत्तोपुरिसो तस्सउजोगपडुच्चजेसत्ता । वाव ज्जतीनियमा तेसिंसोहिंसओहोइत्ति ॥ १ ॥ उक्ताचेय मत· शङ्का नचेय युक्ता एतद्गाथोक्तहिंसालक्षणस्य द्रव्यभावहिंसाश्रयत्वा द्रव्यहिंसायास्तु मर णमात्रतया रूढत्वादिति, तथा नया द्रव्यास्तिकादय, स्तत्र यदिनाम द्रव्यास्तिकमतेन नित्य वस्तु पर्यायास्तिक मतेन कथ तदेवा नित्यं विरुद्धत्वा

भंगतरेहिं णयतरेहिं

भद्रक्षमाश्रमण इमकहे ज्ञानदर्शनना उपयोग जुदा २ छे समे समेनेविषे, इहा शकाऊपजे तेहनो प्रत्युत्तर कहीवेछे, जेमत आगमनै अनुसारे हुवे ते हीज सत्यछे वीजो छाडवायोग्यछै, अनै आचार्योना सप्रदायआदिदोष मतभेदछै, तथा श्रीवीतरागनो मत एकछै, तिहा विरुद्धरागादि नथी तथाचो क्तं—अणुवकयपराणुग्गह परायणाजजिणाजुगप्पवरा । जियरागदोसमोहा यणन्नहावाइणोतेणति ॥ ८ ॥ तथा भगतरेहिंइति । बेभगी चउभगी तेह नो विचारवो, तिहा द्रव्यथकी एकहिंसापणि भावथकी नही इत्यादि चउभगी कही तिहा पहिलोभागो जोडीयेछे ते किम ईर्यासुमतिसेती साधुचाल तायका पिपीलिकाआदि विणसै ते हिंसा नकहीये, भावथकी हिंसालक्षण अयोगथकी द्रव्यभावनो ए लक्षण तथाहि—जोउपमत्तोपुरिसो तस्सउजो गपडुच्चजेसत्ता वाविज्जतीनियमा तेसिसोहिंसओइत्ति ॥ १ ॥ तिहा शका ऊपजे तिहा उत्तर एगाथामाहे हिंसालक्षणछे, ते द्रव्यभाव उभयलक्षणआ श्रयछे, अनै जिहा निरङ्कुशपणै जीवनै हणै ते हिसाकहीये, द्रव्यहिंसातो मरणमात्रपणै रूढिछे ॥ १० ॥ तथा णयतरेहिंइति । नयनो विचार, तिहा

॥ टीका ॥

दितिशङ्का' इयञ्चा युक्ता, द्रव्यापेक्षयैव' तस्य नित्यत्वा त्पर्यायापेक्षया चानित्यत्वात्, दृश्यते चापेक्षयै कत्रे कदा विरुद्धानामपि धर्म्मोणा समावेशो यथा – जनकापेक्षया यएव पुत्र सएव पुत्रा पेक्षया पितेति, तथा नियमो ऽभिग्रह, स्तत्र यदिनाम सर्वविरतिसामायिक, तदा किमन्येन पौरुष्यादिनियमेन सामायिकेनैव सर्वगुणावाप्ते रुक्त श्चासाविति शङ्का, इयञ्चायुक्ता, यत सत्यपि सामायिके युक्त पौरुष्यादिनियमो प्रमादवृद्धि हेतुत्वादिति, आहच – सामाइएविहुसावज्ज चायरूवेउगुणकरएय । अपमायवुड्डिजणग त्तणेणआणाउविसेयति ॥ १ ॥ तथा प्रमाणं प्रत्यक्षादि, तत्रा गमप्रमाण मादित्यो भूमे रुपरि योजनशतै रष्टाभि सञ्चरति, चक्षु प्रत्यक्षञ्च तस्यभुवो निर्गच्छतो यात्क्रमिति' किमत्र सत्यमिति सन्देह,

॥ मूल ॥

णियमंतरेहिं पमाणतरेहि , संकिया कंखिया वितिगिच्छिया भेदसमा।
वन्ना कलुससमावन्ना , एवखलुसमणानिग्गंथाकंखामोहणिज्जकम्मवेदंति

॥ भाषा ॥

द्रव्यास्तिकनयमतेंकरी नित्यवस्तुछे, पर्यायास्तिकमतेंकरी किमइकअनित्यछे, इम विरुद्धथकी इहा शंका ऊपजे, तेहनो उत्तर ए जुगतछे, द्रव्यनी अपेचायें नित्यछे, पर्यायनीअपेचायें अनित्यछे, दीसेछे अपेचायेंकरी एकठा एकदा विरुद्धधर्मनो समावेश, जिम पितानीअपेचाये पुत्र तेहीज पुत्रनी अपेचाये पिता इति ॥ ११ ॥ तथा णियमतरेहिइति । नियम अभिग्रहविशेष ते किम जो सर्वविरतिसामायिकछे ते पोरिसीआदि बीजापच्चक्खाणनो किसो विशेषछे, इहा शका तेहनो उत्तर पोरिसीआदि पच्चक्खाणविशेष तपप्रमादटालवाभणी युक्तछे, आहच – सामाइयआदिविहु सावज्जचागरूवेउ गुणकर एय । अपमायबुड्डिजणग त्तणेणआणाउविसेयति ॥ १२ ॥ तथा पमाणतरेहिइति । प्रमाण प्रत्यचादिक, तिहा प्रत्यच अनुमाने आतरो तेकिम जिम आगमप्रमाणें भूमिथी ऊपरि ऊचो आठसेंयोजन सूर्यचाले, अनै ते चक्षुप्रत्यचे भूमिथी नीकलतो दीसेछे, इहा सदेहऊपजे तेहनो उत्तर दूरथकी सम्यक्जाणीयेनही, तिहा दृष्टिभ्रम ॥ १३ ॥ सकिया । जिनप्रणीतपदार्थनेंविषे शकाऊपजे ॥ १ ॥ कखिया । मिथ्यादर्शनग्रहवानी वाछा ॥ २ ॥ वितिगिच्छिया । धर्मना फलनो सदेह ऊपजै ॥ ३ ॥ भेयसमावणा । ए जिनशासनछे अथवा दूजो जिनशासनछे तेमाहे स्यू साचो एहवो मतिनोभेद ऊपजे

॥ टीका ॥

अत्र समाधि, नहिसम्यक्प्रत्यक्षमिद दूरतरदेशतो विभ्रमादिति ॥ प्रथमशते तृतीयोद्देशक ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके कर्म्मण उदीरणावेदनाद्युक्तमिति, तस्यैवभेदादीन्दर्शयितु, तथा द्वारगाथाया ॥ पगइत्ति ॥ यदुक्त तच्चा भिधातु माह ॥ कइणमित्यादि व्यक्त नवर ॥ कम्मपगडी एत्ति ॥ प्रज्ञापनाया त्रयोविंशतितमस्य कर्म्मप्रकृत्यभिधानस्य पदस्य प्रथम उद्देशको नेतव्य, एतद्व्याख्याना चार्थाना सङ्ग्रहगाथा स्तीत्यत आह ॥ गाहा॥ साचेयं॥ कइइत्यादि॥ तत्र॥ कइपगडीति ॥ द्वारं, तच्चैव–कइणं भंते । कम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा । अठ त० नाणावरणिज्जमित्यादि

॥ मूल ॥

सेणूणभंते ! तमेवसच्चंनीसंकजंजिणेहिंपवेइयं , हंता गोयमा ! तमेवसच्चंनीसंकं,एवं जावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा ,सेवंभंते ! भंते ! त्ति॥ पढमसए तइओ उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥ कतिणभंते ! कम्मपगडीओपन्नत्ताओ ? गोयमा ! अठकम्मपगडीओ पन्नत्ताओ ! कम्मपयडीए पढमोउद्देसोनेयव्वो , जावअणुभा

॥ भाषा ॥

कलुससमावन्ना । मतिनेविषे भ्रम उपजे ए सर्वथानही एहवो मतिविपर्यास पामे । एवंखलुसमणाणिग्गंथा । इम निश्चे श्रमणतपस्वी निर्ग्रंथ बाह्य अभ्यंतरग्रंथरहित । कंखामोहणिज्जकम्मवेदेंति । मिथ्यात्वमोहनीयकर्म वेदे । सेणूणभंतेतमेवसच्चं । ते निश्चे हेभगवन् । तेहीज साचो । णीसंकं । शंकारहित । जंजिणेहि । केवली भगवते । पवेदित। प्ररूप्यो इतिप्रश्न । हंता गोयमा । हागौतम । ए सबोधनवचन । तमेवसच्चं । तेहीज साचो सत्यछे । णीसंक । शंकारहित । एवजावपुरिसक्कारपरक्कमेतिवा । इम यावत् पुरुषात्कार पराक्रमलगें । सेवंभंतेभंतेत्ति । श्रीभगवंते कह्यो ते तिमज सर्व सत्यछे पणि अन्यथा न होंछे । पढमसयस्सतइओउद्देशो । ए पहिलाशतकना तीजाउद्देशानो टव्वो लिख्यो ॥ ३ ॥ पाछिलाउद्देशानेविषे कर्मनी उदीरणा वेदना कही, हिवे तेहनाज भेद देखाडेछे, तथा संग्रहणिगाथानेविषे कह्यु। पगइत्ति । तेदेखाडेछे, गौतमपूछेछे । कइणंभंतेकम्मपगडीओपन्नत्ताओ। केतली हेभगवन् । कर्म प्रकृति कही इतिप्रश्न, गोयमा । हेगौतम । अठकम्मपगडीओप० । आठ मूल कर्मप्रकृति कही, अमे अथवा अनंततीर्थंकरे । कम्मपगडी एपढमोउद्देशोणेयव्वो । पन्नवणानो त्रेवीसमो पद कर्मप्रकृति तेहनो पहिलो उद्देशो जाणवो । जावअणुभागोसम्मत्तो । यावत् अनुभागलगे कहवो, ए

॥ टीका ॥

किहवधइत्ति ॥ द्वार, मिदचैव—कहणं भंते ! जीवे अठकम्मपगडीओ वधइ गोयमा ? नाणावरणिज्जस्स कम्मस्सउदएणं दंसणावरणिज्ज कम्मं निगच्छइ ॥ विशिष्टोदयावस्थ जीव स्त दासादयतीत्यर्थ , दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिज्ज कम्म निगच्छइ ॥ विपाकाऽवस्थ करोतीत्यर्थ ॥ दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्त णिगच्छइ, मिच्छत्तेणं उदिणेणं, एव खलु जीवे अठकम्मपगडीओ वधइ ॥ इत्यादि नचैव मिहेतरेतराश्रयदोषः कर्मबन्धप्रवाहस्या नादित्वादिति ॥ कइहि च ठाणेहिति ॥ द्वार, तच्चैव—जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्ज कम्म कइहि ठाणेहि वधइ ? गोयमा ! दोहि ठाणेहि तजहा रागेणय दोसेणये त्यादि ॥ कइवेएइवत्ति ॥ द्वार, मिद चैवं—जीवेणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ वेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए णोवेएइ जे वेएइ से अठ इत्यादि ॥ जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्ज कम्मंवेएइ ? गोयमा ! अत्थेगइए वेएइ अत्थेगइए नोवेएइ ॥ केवलिनो अवेदनात् ॥ नेरइएणं भंते ! नाणावरणिज्ज कम्म वेएइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ इत्यादि ॥ अणुभागो कइविहो कस्सत्ति ॥ कस्य कर्मणः कतिविधो रसइति द्वार, इदच्चैव—नाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स कइविहे अणुभागे पणत्ते ? गोयमा ! दसविहे पणत्ते तंजहा सोयावरणे सोयविणाणावरणे इत्यादि ॥ द्रव्येन्द्रियावरणो भावेन्द्रियावरणश्चेत्यर्थ ॥ अथ कर्मचिन्ताधिकारा न्मोहनीय माश्रित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ मोहणिज्जेणति ॥ मिथ्यात्वमोहनीयेन ॥ उदिणेणति ॥ उदितेन ॥ उवठाएज्जत्ति ॥ उपतिष्ठेत् ॥ उपस्थान स्परलोकक्रिया स्व

॥ मूल ॥

गोसम्मत्तो ॥ गाहा ॥ कतिपगडीकहिंबंधइ कतिहिंठाणेहिंबंधएपगडी । कइवेदेइचपगडी अणुभागोकति विहोकस्स ॥ १ ॥ जीवेणंभंते ! मोहणिज्जेणं कडेण कम्मेण उदिणेणंउवठाएज्जा ? हंतागोयमा ! उवठाएज्जा ।

॥ भाषा ॥

अर्थनो सग्रहगाथाछे तेकहेछे—गाथा । कतिपगडीकहवधइइति । केतली कर्मप्रकृतिना केतला भेद १ , प्रकृति केम वाधे, ए बीजो द्वार २ , कतिहिठाणेहिवधएपगडी । जीव केतले स्थानके वाधे कर्मप्रकृति ३ , कतिवेदेइचपगडी । जीवे केतली प्रकृति वेदीये ४ , अणुभागोकतिविहोकस्स ॥ १ ॥ अनुभाग कहता रस ते केतलाप्रकारनो किसाकर्मनो, हिवे कर्मचिताअधिकारथकी मोहनीयआश्री कहेछे । जीवेणभतेमोहणिज्जेणंकडेण । जीव हे

॥ टीका ॥

वीर्यमेव स्वार्थिकप्रत्यया द्वीर्यता वीर्यत्वावा ज्ञावो वीर्य
्युपगम कुर्यादित्यर्थः ॥ वीरियत्ताएत्ति ॥ वीर्ययोगा द्वीर्य प्राणी, तद्भावो वीर्यता, अथवा; वीर्यमेव स्वार्थिकप्रत्यया द्वीर्यता वीर्यत्वावा ज्ञावो वीर्य
ता तया ॥ अवीरियत्ताएत्ति ॥ अविद्यमानवीर्यतया' वीर्याज्ञावेनेत्यर्थ. ॥नोअवीरियत्ताएत्ति॥ वीर्यहेतुकत्वा दुपस्थानस्येति ॥ वालवीरियत्ताएत्ति ॥
वाल सम्यगर्थानववोधा ,त्सद्वोधकार्यविरत्यज्ञावाच्च मिथ्यादृष्टि, स्तस्य या वीर्यता परिणतिविशेष', सा तथा तया ॥ पंडियवीरियत्ताएत्ति ॥
पण्डित' सकलावद्यवर्जक, स्तदन्यस्य परमार्थतो निर्ज्ञानत्वेना पण्डितत्वा द्यदाह – तज्ज्ञानमेवनज्ञवति यस्मिन्नुदितेविज्ञाति रागगण । तमस
कुतोस्तिशक्ति र्दिनकरकिरणाग्रत स्थातुमिति ॥ १ ॥ सर्वविरतइत्यर्थ ॥ वालपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ वालो देशेविरत्यज्ञावा त्पण्डितो देशएव
विरतिसद्भावा दिति, वालपण्डितो देशविरत' इहच मिथ्यात्वे उदिते मिथ्यादृष्टित्वा ज्जीवस्य वालवीर्येण वोपस्थान स्या न्नेतराभ्या मेतदेवा

॥ मूल ॥

सेन्नंते गोयमा ! किं वीरियत्ताए उवठाएज्जा अवीरियत्ताए उवठाएज्जा ? गोयमा ! वीरियत्ताए उवठाए
ज्जा , नोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा , जइ वीरियत्ताएउवठाएज्जा , किंवालवीरियत्ताएउवठाएज्जा , पंडित

॥ भाषा ॥

भगवन् । मिथ्यात्वमोहनीय कोधा । कम्मेणउइसेण । कर्मनें उदयेकरी । उवठाएज्जा । परलोकक्रिया अगीकारकरे, अन्यदर्शनीहोय । हता गोयमा । हा
गौतम । उवठाएज्जा । परलोकक्रिया अगीकारकरे रहे । सेभंतेकिंवीरियत्ताएउवठाएज्जा । ते हेभगवन् । स्युं वीर्यसहित अगीकारकरे रहे, अथवा ।
अवीरियत्ताएउवठाएज्जा । अवीर्यपणे वीर्यनेअभावे अगीकारकरे इतिप्रश्न, गोयमा वीरियत्ताएउवठाएज्जा । हेगौतम ! वीर्यपणे परलोकक्रिया अगी
कारकरे पणि । णोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा । अवीर्यपणे परलोकक्रिया अंगीकार नकरे, वली गौतम पूछेछे—जइवीरियत्ताएउवठाएज्जा । जो वीर्यहेतु
पणाथीज अगीकारकरवो थाय । किंवालवीरियत्ताएउवठाएज्जा । तो स्युं भलाअर्थनो ज्ञाननही अथवा विरतिरहित मिथ्यादृष्टि तेहनो जिका वीर्यता
परिणतिविशेष तेणेंकरी अगीकारकरे । पंडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । पंडित जेणें समस्तसावद्यछांड्यो तेहथी वीजाने परमार्थथकी अज्ञानपणू कहो
वे, अथवा । वालपंडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । देशे अविरतिपणाथी वालक कहीये, देशेंहीज विरतिपणाथी पंडितकहीये, तेमाटे वालपंडितकहता

॥ टीका ॥

ह ॥ गोयमाइत्यादि ॥ उपस्थानविपत्तो ऽपक्रमण मत स्तदाश्रित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ अवक्कमेज्जति ॥ अपक्रामे दपसर्प्पेत्, उत्तमगुणस्थानका द्धीनतर गच्छेदित्यर्थ ॥ वालवीरियत्ताएअवक्कमेज्जत्ति ॥ मिथ्यात्वमोहोदये सम्यक्त्वात्सयमा द्देशसयमाद्वा ? ऽपक्रामे न्मिथ्यादृष्टि र्भवेदिति ॥ णोपण्डियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जति ॥ नहि पण्डितत्वा त्प्रधानतर गुणस्थानक मस्ति' यत पण्डितवीर्येण पसर्प्पेत् ॥ सियवालपण्डियवीरियत्ता

॥ मूल ॥

वीरियत्ताएउवठाएज्जा, वालपंडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा ? गोयमा ! वालवीरियत्ताएउवठाएज्जा णोपंडियवीरियत्ताए उवठाएज्जा नोवालपंडियवीरियत्ताए उवठाएज्जा। जीवेणंभंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मे णं उदिन्नेणं अवक्कमेज्जा ? हंता अवक्कमेज्जा। सेभंते ! जाव वालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोयमा ! वालवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा नोपंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा सियवालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा

॥ भाषा ॥

देशविरतश्रावक तेणे अगीकारकरे इतिप्रश्न,। गोयमा वालवीरियत्ताएउवठाएज्जा। हेगौतम ! मिथ्यात्वना उदयथी मिथ्यादृष्टिपणाथीज जाणे वाल वीर्यकरीज अगीकारकरवू होय स्थितिरहेछे पणि। णोपडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा। सर्वविरति साधु परलोकक्रिया करे नही, इमपणि स्थिति जाय वी। णोवालपडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा। वालपडित वीर्यपणे पणि एतले देशविरतीपणि परलोकक्रिया अगीकारकरे पणि स्थितिनरहे, उपस्थान र हवो तेहना वेपच अपक्रमण पाछोउसरवो तेकहेछे। जीवेणभतेमोहणिज्जेणंकडेणकम्मेणंउदिन्नेणअवक्कमेज्जा। जीव हेभगवन् ! मोहनीय अट्ठावीसभेदे कर्मकीधेछते ते कर्मने उदयवसे अतिक्रमे उत्तमगुणठाणाथकी अतिहि हीण गुणठाणे जाय इतिप्रश्न, उत्तर। हतागोयमा अवक्कमेज्जा। हागौतम अति क्रमे जाय उत्तमगुणठाणाथी हीनगुणठाणे जाय, वली गौतम पूछेछे। सेभतेजाववालपडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा। ते हेभगवन् ! यावत्शब्दे वीर्यपणे अतिक्रमे, अथवा पडितवीर्यपणे अतिक्रमे, वालपडितवीर्यपणे अथवा अतिक्रमेगुणठाणाथी हीनतरगुणठाणेजाय इतिप्रश्न,। गोयमा। हेगौतम। वाल वीरियत्ताएअवक्कमेज्जा। मिथ्यात्वमोहनीयने उदयथये सम्यक्त्वथी अथवा सयमथी अथवा देशविरतियकी अतिक्रमे मिथ्यादृष्टीहुवे ते वालवीर्यपणेहुवे, प

ए अवक्कमेज्जत्ति ॥ स्या त्कदाचि च्चारित्रमोहनीयोदयेन संयमा दपगत्य बालपण्डितवीर्येण देशविरतो भवेदिति, वाचनान्तरेत्त्वेवं ॥ बालवीरियत्ताए नोपण्डियवीरियत्ताए नोबालपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ तत्रच मिथ्यात्वमोहोदये बालवीर्यस्यैव भावादितरवीर्यद्वयनिषेधइति, उदीर्णविपक्षत्वादुपशान्तस्ये त्युपशान्तसूत्रद्वय तथैव, नवर ॥ उवठाएज्जपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ उदीर्णालापकापेक्षया उपशान्तालापकयोरय विशेष, प्रथमालापके सर्वथामोहनीयेनो पशान्तेनसता उपतिष्ठेत, क्रियासु पण्डितवीर्येणउपशान्तमोहावस्थाया पण्डितवीर्यस्यैव भावादितरयोश्चाभावात्, वृद्धैस्तु काञ्चिद्वाचना माश्रित्येद व्याख्यातं, मोहनीयेनो पशान्तेन मिथ्यादृष्टि र्जायते, साधु श्रावकोवा, भवतीति, द्वितीयालापकेतु ॥ अवक्कमेज्जबालपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ मोहनीयेन त्युपशान्तेन सयतत्वा द्बालपण्डितवीर्येणा पक्राम न्देशसयतो भवति, देशत स्तस्य मोहोपशमसद्भावात्, नतुमिथ्या

जहा उदिन्नेणं दोआलावगा तहा उवसंतेणवि दोआलावगा भाणियव्वा, नवरं उवठाएज्जा, पंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा बालपंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । सेभंते! किआयाएअवक्कमइ अणायाएअवक्कमइ?

॥

णि । णोपडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । नही पडितवीर्यपणे अतिक्रमे, पडितपणाथी अतिप्रधान गुणस्थानकछे, तेमाटे पडितवीर्यपणे अतिक्रमे नही । सियबालपडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । कदाचित् चारित्रमोहनीयने उदयेकरी संयमथी भ्रष्टथई बालपंडितवीर्यपणेकरी देशविरतीहुवे, वाचनातरे इम छे, बालवीरियत्ताएणोपडितबालवीरियत्ताए णोबालपडितवीरियत्ताएत्ति, तिहा मिथ्यात्वमोहनीयनेउदये बालवीर्य होजहोय, बीजा दोयवीर्यनोनिषेधछे उदीर्ण विपक्षथको उपशात, उपशातसूत्र बेछे । जहा उदिन्नेणं दोआलावगातहाउवसतेणविदोआलावगा भाणियव्वा णवर उवठाएज्जा। जिम उदये बेआलावाकह्या तिम उपशातनेविषे पणि बेआलावा कहवा । णवर उवठाएज्जा । पडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । उदीर्ण आलावानी अपेक्षाये उपशातना बे आलावानेविषे एतलोविशेषछे, पहिलाआलावानेविषे सर्वथामोहनोय उपशातथयारहे क्रियानेविषे पडितवीर्येकरी तेमाटे उपशातमोह अवस्थानेविषे पडितवीर्यनोज भावछे, बेनोअभावछे, बीजाआलावानेविषे । बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । मोहनीयउपशम्या सयतपणाथी बालपडितवीर्ये करी

॥ टीका॥ दृष्टि मोहोदयएव तस्य भावा न्मोहोपशमस्य चेहा धिकृतत्वादिति, अथा पक्रामतीति यदुक्त' तत्र सामान्येन प्रश्नयन्नाह ॥ से भंते ! किमित्या दि ॥ सेत्ति ॥ असौजीव , ध्ययार्थावा; सेशब्द ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना ॥ अणायाएत्ति ॥ अनात्मना परतइत्यर्थ', अपक्रामति अपसर्प्पति, पूर्वस्पचिभतत्वरुचि र्भूत्वा पश्चान्मिश्ररुचि र्मिथ्यारुचिर्वा, भवतीति' कोसावित्याह, मोहनीय कूर्म मिथ्यात्वमोहनीय चारित्रमोहनीयं वा, वेद यन् उदीर्णमोहइत्यर्थ ॥ सेकहमेयभंतेत्ति ॥ अथ कथ केन प्रकारेण एतदपक्रमण ॥ एवति ॥ मोहनीयवेदयमानस्येति ? इत्योत्तर ॥ गोयमेत्यादि पूर्व मपक्रमणा त्प्रागसा वपक्रमणकारी जीव, एतज्जीवादि अहिंसादिवा; वस्तु, एव यथाजिनै रुक्त रोचते श्रद्दत्ते करोतिवा; इदानी मोहनी योदयकाले सजीव, एतज्जीवादि अहिंसादिवा, एव यथा जिनै रुक्त नोरोचते नश्रद्दत्ते नकरोतिवा, एव खलु उक्तप्रकारेण एतदपक्रमणं, एव

॥ मूल ॥ गोयमा ! आयाएअवक्कमइ णोअणायाएअवक्कमइ , मोहणिज्जं कम्म वेदेमाणे । से कहमेय भंते ! एव ? गोयमा ! पुव्विसे एयंएवरोयइ इयाणिसे एय एवंनोरोयइ एवंखलु एयं । एव से णूणं भंते ! नेरइयरसवा ति

॥ भाषा ॥ अतिक्रमतो देशविरतीहुवे, देशथी तेहने मोहनीयकर्म उपशमना सद्भावथको, पणि मिथ्यात्वी नहुवे, मोहने उदयेज मिथ्यात्व भावभजे, अनेइहा मोहकहता मिथ्यात्व तेहना उपशमनोज अधिकारछे ॥ हिवे अपक्रामतिइसो जे कह्यु ते सामान्ये पूछेछे । सेभंतेकिआयाएअवक्कमइ । ते जीव हेभ गवन् । स्यूआत्मायेंकरी अपक्रमें ? ओसर इहा नथाय, अथवा । अणायाएअवक्कमइ । पराये आत्मायें अपक्रमें होनथाय इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौ तम । आत्मायेंकरी अपक्रमें होनथाय, पहिला पडितरुचियईने पछे मिश्ररुचि अथवा मिथ्यात्वरुचिथाय । णोअणायाएअवक्कमइ । पणि नहीं पराये आत्मायें करी अपक्रम होनथाय, ते कुण । मोहणिज्जेणकम्मवेदेमाणे । मिथ्यात्वमोहनीय अथवा चारित्रमोहनीय कर्म वेदतोथको, उदयआव्यो मोह इत्यर्थ । सेकहमे यंभंतेएव । तेकिम एह हेभगवन् । मोहनीयना वेदणहारने इम कांइ जे पूर्वें पडितपणानो रुचिहुतो अने पछे मिथ्यात्वनो रुचिहोय इतिप्रश्न, गोय मा । हेगौतम । पुव्विसेएयएवरोयइ । अपक्रमणथको पहिलाअपक्रमणकारो जीव एजीवादिपदार्थ अथवा अहिंसादिवस्तु जिम जिनेश्वरकह्यु सद्दहै

॥ टीका ॥

मोहनीयवेदनेइत्यर्थो, मोहनीयकर्माधिकारा त्सामान्यकर्म्मचिन्तयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ नेरइयस्सवेत्यादी ॥ नास्तिमोक्ष इत्येवसम्बन्धा त्षष्ठी जेकडेत्ति ॥ तैरेव यद्बद्ध ॥ पावेकम्मेत्ति ॥ पाप मशुभ नरकगत्यादि, सर्वमेववा, पाप दुष्टं, मोक्षव्याघातहेतुत्वात् ॥ तस्सत्ति ॥ तस्मा त्कर्म्मण सकाशात् ॥ अवेइयत्तत्ति ॥ तत्कर्म्माननुभूय ॥ एव खलुत्ति ॥ वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु वाक्यालङ्कारे ॥ मएत्ति ॥ मया अनेनच वस्तुप्रतिपादने सर्वज्ञत्वेना त्मन स्वातंत्र्य म्प्रतिपादयति ॥ पएसकम्मेयत्ति ॥ प्रदेशा कर्म्मपुद्गला जीवप्रदेशे घ्योतप्रोता स्तद्रूप ङ्कर्म्म प्रदेशकर्म्म ॥ अणुभागकम्मेयत्ति ॥ अ

॥ मूल ॥

रिक्खजोणियस्सवा मणुसस्सवा देवस्सवा जे कडेपावे कम्मे णत्थि तस्स अवेइयत्ता मोक्खो ? हंता गोयमा ! नेरइयस्सवा तिरिक्खमणुस्सदेवस्सवा जाव मोक्खो । सेकेणट्ठेणंभन्ते ! एवंवुच्चइ नेरइयस्सवा जाव मोक्खो, एवखलुमए ? गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते तजहा पएसकम्मेय अणुभागकम्मेय, तत्थणंजंतं प

॥ भाषा ॥

तथाकरे । इयाणिसेएयएवंणारोयइ । इदानी हिवे मोहनीयना उदयकालनेविषे एजीव एजीवादिपदार्थ अथवा अहिंसादिवस्तु इमश्रीतीर्थंकरे कह्यु नरुचे । एवखलुएयएव । इमनिश्चे उक्तप्रकारे अपक्रमण मोहनीय वेदवे इत्यर्थ, मोहनीयकर्मना अधिकारथकी सामान्यकर्म चिंतवतो कहिछे—सेणूणभते णेरइयस्सवातिरिक्खजोणियस्सवामणुस्सस्सवादेवस्सवा । अने निश्चे हेभगवन् । णेरइयस्सवा इत्यादि नत्थिमोक्खो, इण सबधथी षष्ठिविभक्तिछे, नारकीनेतिर्यचयोनिकने, मनुष्यने देवने । जेकडेपावकम्मेणत्थितस्स । तिणे जेबाध्योपापकर्म पाप अशुभनरकगत्यादि सगलोही पाप दुष्टछे, मोक्ष व्याघातहेतुथकी नही, तेहकर्मने । अवेइयत्ताएमोक्खो हतागोयमा णेरइयस्सवातिरिमणदेवस्सवाजावमोक्खो । भोगव्याविना छूटिवोनहीं इतिप्रश्न, हागोतम नारकीने तिर्यचने मनुष्यने देवने जेपापकर्मकोधा ते भोगव्याविना । नत्थि । नहीं मोक्ष, एतावता कीधाकर्म भोगव्याविना छूटिवोनही । सेकेणट्ठेण भंतेएववुच्चइणेरइयस्सवाजावमोचो । तेस्येंअर्थ हेभगवन् । इम कह्यु नारकीने यावत्देवताने कीधा कर्म भोगव्याविना मोचनही छूटिवोनही । एव खलु मए,गोयमादुविहेकम्मेपण्णत्तेतजहा । इम खलु वक्ष्यमाणप्रकारे में हेगौतम । बेप्रकारे कर्मकह्या तेकहेछे । पएसकम्मेयअणुभागकम्मेय । कर्मपुद्गल तिके जी

॥ टीका ॥

नुभाग स्तेषामेव कर्मप्रदेशाना सवेद्यमानताविषयो रस स्तद्रूपं कर्मा नुभागकर्म्म ' तत्र यत्प्रदेशकर्म्म तन्नियमा द्वेदयति , विपाकस्या ननुभवने पि कर्म्मप्रदेशाना मवश्य क्षपणा त्प्रदेशेभ्य प्रदेशान्नियमा च्छातयतीत्यर्थो , ऽनुभागकर्म्मंच तथाभाव वेदयतिवा नवा , तथा मिथ्यात्व तत्क्षयो पशमकाले ऽनुभागकर्मतया न वेदयति, प्रदेशकर्म्मतयातु वेदयत्येवेति ' इत्थ द्विविधेपि कर्म्मणि वेदयितव्ये प्रकारद्वय मस्ति, तच्च ईतैव ज्ञाय तइति दर्शयन्नाह , ज्ञात सामान्येना वगत मेत द्वक्ष्यमाण वेदनाप्रकारद्वय , अर्हता जिनेन ॥ सुयंति ॥ स्मृत मप्रतिपादित अनुचिन्तितवा , तत्र स्मृतमिव स्मृत केवलित्वेन स्मरणाभावेपि जिनस्यात्यन्तमव्यभिचारसाधर्म्यादिति ॥ विण्णायति ॥ विविधप्रकारै र्देशकालादिविभागरूपै र्ज्ञात विज्ञात , तदेवाह ॥ इम कम्म मयजीवेत्ति ॥ अनेन द्वयोरपि प्रत्यक्षतामाह , केवलित्वा दर्हत ॥ अब्भोवगमियाएत्ति ॥ प्राकृतत्वात् अभ्युपगम , प्र

॥ मूल ॥

एसकम तंनियमा वेदेइ , तत्थणं जंतं अणुभागकंमं तंअत्थेगइयंवेदेइ , अत्थेगइयनोवेदेइ , णायमेयंअरह या सुयमेयअरहया विण्णायमेयंअरहया इमंकंमं अयजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ , इमंकंमं अ

॥ भाषा ॥

वप्रदेशनेविषे मांया तेरूप कर्म ते प्रदेशकर्म कहोये, तेहोज कर्मप्रदेशानो संवेद्यमानताविषयरस तेरूप जे कर्म ते अनुभागकर्म । तत्थणजतपएसक म्मतणियमावेदेइ। तिहां पूर्वोक्त बेपचमाहे जेते प्रदेशकर्म ते नियमस्यू जिसाकर्मकीधाछे तिसावेदे। तत्थणजतअणभागकम्मत। तिहा पूर्वोक्त बेपच माहे जेते अनुभागकर्मछे, ते कर्ममध्ये। अत्थेगइयवेदेइ। केतलाएक तथारूप वेदे। अत्थेगइयणोवेदेइ । केतलाएक तथारूप नवेदे, जिम मिथ्यात्वच योपशमकाले अनुभागकर्म नवेदे, प्रदेशकर्मवेदे, प्रकार कर्मवेदवाना अरिहंतजाणे। णायमेयअरहया। जाण्योअरिहंते । सुयमेयअरहया। उपदेश्यो अरहते, अथवा अनुचितन कीधो। विण्णायमेयअरहया। अनेकप्रकारे देश चेत्र काल द्रव्यादिविभागकरी विशेषेजाण्यू छै अरहते ते स्यूं ते कहेछे—इम कम्म अयजीवे । एकर्म ए जीव, कर्म अने जीव दोनूं केवलीने प्रत्यक्षछे। अभोवगमियाएवेदणाएवेयइस्सइ। अभ्युपगम प्रव्रज्याकालथी माडी ब्रह्मचर्य भू मिशयन केशलोचनादिकनो अगोकार, तिणे निर्वृत्त ते अभ्युपगमकी तिणेकरी वेदना वेदस्ये, अथवा। इमकम्मअयजीवेउवक्कमियाएवेदणाएवेयइस्सइ

प्रज्याप्रतिपत्तितो ब्रह्मचर्यभूमिशयनकेशलुञ्चनादीना मङ्गीकार स्तेन निर्वृत्ता आभ्युपगमिकी तया ॥ वेयइस्सइत्ति ॥ भविष्यत्कालनिर्देश. भविष्यत्प दार्थो विशिष्टज्ञानवतामेव ज्ञेयो ऽतीतो वर्त्तमानश्च पुन रनुभवद्वारेणा न्यस्यापि ज्ञेय. सम्भवतीति ज्ञापनार्थं ॥ उवक्कमियाएत्ति ॥ उपक्रम्यते ऽनेने त्युपक्रम कर्मवेदनोपाय, स्तत्रभवा औपक्रमिकी स्वय मुदीर्णस्य उदीरणाकरणेनवो ; दय मुपनीतस्य कर्मणो नुभव स्तया औपक्रमिक्या वेदनया वेदयिष्यति, तथाच ॥ अहाकम्मति ॥ यथाकर्म्म बद्धकर्म्मानतिक्रमेण ॥ अहानिगरणति ॥ निकरणाना नियताना देशकालादीनां करणाना विप रिणामहेतूना मनतिक्रमेण, यथा यथा तत्कर्म भगवतादृष्ट' तथा तथा विपरिणस्यति, इतिशब्दो वाक्यार्थसमाप्ताविति, अनन्तर ङ्कर्म्म चिन्ति त न्तच्च पुद्गलात्मक मिति परमाण्वादिपुद्गलां श्चिन्तयन्नाह' अथवा, परिणामाधिकारात् पुद्गलपरिणाममाह ॥ एसणंभंतेइत्यादि ॥ पोग्गलेत्ति ॥ परमाणु रुत्तरत्र स्कन्धग्रहणात् ॥ तीतति ॥ अतीत इहच सर्वध्वनावकाला इत्यनेना धारेद्वितीया, ततश्च सर्वस्मि न्नतीत इत्यर्थ. ॥ अणतति ॥ अण

यंजीवे उवक्कमियाएवेयणाएवेयइस्सइ, अहाकम्मं अहाणिगरणं जहाजहा तंभगवयादिठ्ठ तहातहा तंविप रिणमिस्सतीति, सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! नेरइयस्सवा जावमोक्खो । एसणंभंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं सम

एजीव एकर्म स्वयमेव कम उदयआव्या वेदस्ये, उपकूम कहीये कर्मवेदनोपाय तिहांहुवे ते औपकूमको,पोते उदयआव्यो अथवा उदीरणाकरणेंकरी उदयआव्याकर्मनो भोगववो ते वेदना वेदस्ये । अहाकम्मअहाणिगरण । जिम कर्म वांध्याछे तिम, जिम कर्मना देशकालादि अन्यथा नथाय जिणदेश कालनें परिणामें होवणहारछे । जहाजहा कम्मतभगवयादिठ्ठ । जिम जिम तेकर्मप्रतें भगवतें दीठांछे । तहातहा तविपरिणमिस्सतीति । तिम तिम विशेषपणें परिणमस्ये, इतिशब्दो वाक्यार्थसमासें । सेतेणठ्ठेण गोयमा णेरइयस्सवाजावमोक्खो । ते तेणें अर्थें हेगौतम । नारकीनें यावत् देवताने कीधा क र्मविनाभोगव्यां मोक्षनहीं छूटिवोनहीं इत्यर्थ, अनतर कर्मचितव्यू ते कर्म पुद्गलरूपछे तेमाटे परमाणू आदि पुद्गल चितवतोकहेछे—अथवा परिणाम अधिकारथकी पुद्गल परिणाम कहेछे—एसणभतेपोग्गलेतीतमणतसासयसमय । एह हेभगवन् । सर्वपुद्गल अतीतकालनेविषे अपरिमाण अयंतपणाय

॥ टीका ॥ रिमाणमनादित्वात् ॥ सासयति ॥ सदा विद्यमान, नहि लोको ऽतीतकाले न कदाचि च्छून्यइति ॥ समयति ॥ कालं ॥ भुविति ॥ अभूत् इति, एतद्वक्तव्य स्यात् सद्भूतार्थत्वात् ॥ पडुप्पण्णति ॥ प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानमित्यर्थो, वर्त्तमानस्यापि शाश्वतत्वं सदाभावादेव मनागतस्यापीति, अनन्तर

॥ मूल ॥ यं भुवीति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! एसण पोग्गले तीतमणतं सासय समय भुवीति वत्तव्वंसिया । एसणंभंते ! पोग्गले पडुप्पन्नसासय समयं भवतीति वत्तव्वंसिया ? हंता गोयमा ! तचेव उच्चारेयव्वं । एसणंभंते! पोग्गले अणागयमणतं सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं । एवं खंधेणवितिन्नि आलावगा, एवं जीवेणवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा । छउमत्थेणं भंते !

॥ भाषा ॥ को सदाविद्यमान इमनही अतीतकालनेविषे कदेई शून्य समयकाल । भुवीतिवत्तव्वंसिया । पुद्गल पाछेहुता ए कहवो होय इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गोयमा एसणपोग्गलेतीतमणतसासयसमय भुवीतिवत्तव्वसिया । हांगौतम एपरमाणूपुद्गल सदा अतीतकाले अनत अपरिमाण अनादिपणायवो सदा विद्यमान इमनहीं जे लोक अतीतकालनेविषे कदेई शून्यसमयकाल हुयो एहवो कह्योजाय । एसणभंतेपोग्गलेपडुप्पन्नसासयसमयभवतीतिवत्तव्वंसिया । एह हेभगवन् ! पुद्गलकहता खंध ते वर्त्तमानकाले सासता समयनेविषे हुवेछे एहवो कहवो हुवे इतिप्रश्न, उत्तर । हता गोयमा । हांगौतम । तचेव उच्चारेयव्व । जिम पूर्वकह्यु तिमहीज सर्वकहवो, । एसणंभतेपोग्गलेअणागयमणतसासयसमयभविस्सतीतिवत्तव्वसिया । एह हेभगवन् ! परमाणुखंध चय अपचय रूप अनागत अनत शाश्वतादिविशेषण सहित काल हुवे इम कहवो हुवे इतिप्रश्न, उत्तर । हता गोयमा तचेवउच्चारेयव्व । हा गौतम जिमपूर्व कह्यु तिमज कहवो । एवंखधेणवितिन्निआलावगा । इम स्कन्धसघाते पणि अतीत वर्त्तमान अनागत ए तीन आलावा कहवा, अनतरे खंध कह्यो ते खंध पोताना प्रदेशनी अपेक्षायें जीवपणि हुवे तेमाटे जीवसूत्र कहेछे—एवंजीवेणवितिन्निआलावगा भाणियव्वा । इम जीवसूत्रपणि तीन आलावा अतीत वर्त्तमान अनागतकाल आश्री कहवं, हिवे इहा जीव अधिकारथकी प्रायें यथोत्तर प्रधानजीवनी वक्तव्यता उद्देशक अतपर्यंत कहे

॥ टीका ॥

स्कन्ध उक्त, स्कन्धश्च स्वप्रदेशापेक्षया जीवोपि स्यादिति जीवसूत्रं, जीवाधिकाराच्च प्रायो यथोत्तरप्रधानजीववक्तव्यता मुद्देशकान्तयावदाह ॥ छउ मत्थेणइत्यादि ॥ इह छद्मस्थो वधिज्ञानरहितो ऽवसेयो, नपुन रकेवलिमात्र मुत्तरत्रा वधिज्ञानिनो वक्ष्यमाणत्वादिति ॥ केवलेणंति ॥ असहायेन शुद्धेनवा, परिपूर्णेनवा, असाधारणेनवा, यदाह–केवलमेगसुद्ध सगलमसाहारणअणंतच ॥ संजमेणंति ॥ पृथिव्यादिरक्षणरूपेण ॥ संवरेणंति ॥ इन्द्रियकषायनिरोधेन ॥ सिज्झिसुइत्यादौच ॥ बहुवचनं प्राकृतत्वादिति, एतच्च गौतमेना नेनाभिप्रायेण पृष्ट यदुत–उपशान्तमोहाद्यवस्थाया सर्व विशुद्धा संयमादयोपिभवति, विशुद्धसंयमादिसाध्याच सिद्धिरिति, सा छद्मस्थस्यापि स्यादिति ॥ अंतकरेत्ति ॥ भवान्तकारिण स्तेच दीर्घतरका

॥ मूल ॥

मणूसे तीतमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं केवलेणं संवरेणं केवलेणं बंभचेरवासेणं केवलीहिं पवय णमायाहिं सिज्झिंसु बुज्झिंसु जाव सव्वदुक्खाणमंत करिंसु ? गोयमा ! नोइणठेसमठे। सेकेणठेणंभंते! एवं वुच्चइ तचेव जाव अंतं करिंसु? गोयमा ! जेकेइ अंतकरावा अंतिमसरीरियावा सव्वदुक्खाणमंतं करिंसुवा

॥ भाषा ॥

छ—छउमत्थेणभंते मणूसेतीतमणंतसासयसमय। इहा छद्मस्थ अवधिज्ञानरहित ते जाणवो पणि केवलानही ते छद्मस्थ इम नजाणवो, स्यामाटे आगे अवधिज्ञानीनो अधिकार कहस्ये तेमाटे छद्मस्थ, हेभगवन्। मनुष्य अतीत अनंते शाश्वतेकाले। केवलेणसंजमेण। संपूर्ण असहाय एकशुद्ध संयमेकरी केवलेणसंवरेण। असहायादि इन्द्रियकषाय निरोधेकरी। केवलेणबंभचेरवासेण। असहाय एकशुद्ध ब्रह्मचर्यने वसवेकरी। केवलीहिंपवयणमायाहिं। असहाय एकशुद्ध आठप्रवचन माता पांचसमिति तीनगुप्ति तिणेकरी। सिज्झिंसु। अतीतकाल सीधा। बुज्झिंसु। प्रतिबोधपाम्या। जावसव्वदुक्खाणम तकरिंसु। यावत् सर्वदुःखनोअंतकीधो, एतावता मोक्षपहुता इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा णोइणठ्ठेसमठ्ठे। हेगौतम। एअर्थ समर्थनही बलवंतनही, युक्तन ही, गौतमकहे। सेकेणठ्ठेणभंतेएवंवुच्चइ। ते स्येअर्थे हेभगवन्। इमकह्यो ते छद्मस्थ केवल संयमादिगुणेकरी सीधा। तचेवजावअंतकरिंसु। तिमहीज या वत् अंत नकीधो, मोक्षनगया इतिप्रश्न, भगवनकहेछे–गोयमा जेकेइअंतकरावा अंतिमसरीरिया। हेगौतम। जेकेई संसारना अंतना करणहारछे ते

॥ टीका॥

लापेक्षयापि भवन्तीत्यतआह ॥ अंतिमसरीरियावत्ति ॥ अन्तिम शरीरं येषामस्ति तेन्तिमशरीरिका चरमदेहाइत्यर्थः, वाशब्दौ समुच्चये ॥ सव्वदु क्खाणमंतकरिंसुइत्यादौ ॥ सिज्झंसुसिज्झंतीत्याद्यपि द्रष्टव्यं, सिद्धाद्यविनाभूतत्वा त्सर्वदुःखान्तकरणस्येति ॥ उप्पन्ननाणदंसणधरा ॥ उत्पन्ने ज्ञान दर्शने धारयन्ति, ये ते तथा नत्वनादिससिद्धज्ञाना, अतएव ॥ अरहत्ति ॥ पूजार्हा ॥ जिणत्ति ॥ रागादिजेतारः, स्तेछद्मस्थात्र्अपि भवन्तीत्यतआह ॥ केव लीति ॥ सर्वज्ञाः ॥ सिज्झंतीत्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमाननिर्द्देशस्य शेषोपलक्षणत्वात् ॥ सिज्झिंसुसिज्झंतिसिज्झिस्संती त्येव मतीताद्दिनिर्द्देशो द्रष्टव्य,

॥ मूल ॥

करिंतिवा करिस्संतिवा सव्वेते उप्पन्ननाणदंसणधरा अरहा जिणेकेवलीभवित्ता तउपच्छा सिज्झंति बुज्झं ति मुच्चंति परिनिव्वायंति जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवा करिंतिवा करिस्संतिवा। सेतेणठेणं? गोयमा! जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिंसु, पडुपन्नेवि एवंचेव, नवरं सिज्झंति भाणियव्वं, अणागएवि एवंचेव, नवरं सि

॥ भाषा ॥

पण कालनो अपेक्षायेपणि हुवे, तेमाटे कहेछे—केहलोके सरीरजेहनो चरमशरीरो इत्यर्थ, वाशब्द समुच्चयने अर्थ। सव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवाकरिंतिवा । तिण सर्वदुःखनो अंतकीधो अतीतकाले, वर्त्तमानकालेकरेछे। करिस्संतिवा । आगामिकाले करस्ये । सव्वेतेउप्पण्णाणदंसणधरा । सगलाइते ऊपनू केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धरणहारपणि अनादि संसिद्धज्ञाननथी । अरहाजिणेकेवलीभवित्ता । एतलामाटेज पूजानेयोग्य राग द्वेषनाजीपणहार इसा छद्मस्थप णिहुवे एतलामाटे कहेछे—सर्वज्ञ थईने। तओपच्छासिज्झंति । तिवारपछो सिद्धिगमनयोग्यहोय । बुज्झंति । बोधपामें । मुच्चंति । केवलज्ञानेकरी त पकर्मेकरी मूकाय। परिणिव्वायंति । कर्म पुद्गल चयकरी शीतलीभूतहोय । जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवा । यावत् सर्वदुःखनो अंतकीधो अतीतका ले, अथवा । करिंतिवा । वर्त्तमानकाले अंतकरेछे। करिस्संतिवा । अनागतकाले अंतकरस्ये । सेतेणठ्ठेण गोयमा जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसु । तेणे अर्थे हेगौतम । इमकह्यु यावत् सर्वदुःखनो अंतकीधो एतलालगे सर्वकहवो । पडुप्पण्णेविएवचेव । वर्त्तमानकालेपणि निश्चे इमज कहवो । णवरसिज्झंतिभा णियव्व। एतलोविशेष सिज्झंसुने स्थानके सिज्झंति कहवो। अणागएविएवचेव। अनागतकालनेविषे पणि निश्चे इमज कहवो। णवरसिज्झिस्संतिभाणिय

॥ टीका ॥

अतएव ॥ सव्वदुक्खाणमित्यादौ पञ्चमपदे सौ विहितइति ॥ जहाछउमत्थोइत्यादे ॥ रिय जावना ॥ आहोहिएणन्नते । मणूसेतीतमणतसासयमित्यादि ॥ दशकत्रय तत्र छाध परमावधे रधस्ता द्योवधि, सो ऽधोवधि, स्तेन योव्यवहर त्यसा वाधोवधिक , परिमितक्षेत्रविषयावधिक ॥ परमाहोहिउ त्ति ॥ परम आधोवधिकाद्य स परमाधोवधिक , प्राकृतत्वाच्च व्यत्ययनिर्देश ॥ परमोहिउत्ति॥ क्वचि त्पाठो व्यक्तश्च सच समस्तरूपिद्रव्यासङ्ख्यातलो कमात्रालोकखण्डासङ्ख्यातावसर्प्पिणीविषयावधिज्ञान. ॥ तिन्निआलावगत्ति ॥ कालत्रयवेदिन. केवलिनो प्येत एव त्रयोदण्डका विशेषस्तु सूत्रोक्त

॥ मूल ॥

ज्झिस्संति न्नाणियव्वं , जहाछउमत्थो तहा च्चाहोहिज्जवि, तहा परमोहिज्जवि, तिन्नितिन्नि च्चालावगा न्ना णियव्वा । केवलीणं न्नंते ! मणूसेतीतमणंतं सासयं समयं जाव च्चंतंकरेंसु ? हंता गोयमा ! सिज्झसु जाव च्चंतंकारिंसु एते तिन्नि च्चालावगा न्नाणियव्वा, छउमत्थस्स जहा नवर सिज्झंसु सिज्झति सिज्झिस्संति । से

॥ भाषा ॥

व्व । एतलोविशेष सिज्झिस्सति कहवूं सोझस्येइति । जहाछउमत्थोतहाआहोहिओवि । जिम छद्मस्थ कह्यो तिम आधोवधिक पणि कहवो, एभावना क रवो आहोहिएणंभतेमणुस्सेतीतमणतससयमित्यादिक, तीनदंडक आधोवधिक परमअवधिथको अध कहतां जे जणो ते अधोवधिक कहीये, ति णसहित विचरे ते आधोवधिक, परिमितक्षेत्रविषय अवधि तेपणि नसीझे । तहापरमोहिओवितिन्नितिन्निआलावगाभाणियव्वा । तिम परमाव धिक उत्कृष्टअवधि ते परमावधिक तेसमस्त रूपीद्रव्य असख्यात लोकमात्र अलोकखंड अवसर्प्पिणीविषय अवधिज्ञानवत एपणि नसीझे, एपणि छ द्मस्थनीपरे जाणवो, अतीत अनागत वर्त्तमानकाल तीनतीन आलावा कहवा । केवलीणभतेमणूसेतीतमणतसासयसमयजावअंतकरेंसु । केवलीनापणि एहीज तीनदंडक कहेछे—केवली,ण वाक्यालंकारे हेभगवन् । मनुष्य अतीत अपरिमाण अनत शाश्वतोकाल तेहनेविषै यावत् अंतकीधो एतलाताई क हवो, इतिप्रश्न । हंतासिज्झिसु । हा गौतम सीधा । जावअंतकरेंसु । यावत् अंतकीधो मोक्षगया । एतेतिन्निविआलावगाभाणियव्वा । एतीनेइंपणि आलापका कहता अधिकार सविशेषछे कहवा अतीत वर्त्तमान अनागतकालभेदे । छउमत्थस्सजहाणवरसिज्झिसुसिज्झतिसिज्झिस्सति । जिम छद्म

॥ मूल ॥

णूणंभंते ! तीतमणंतं सासयं समयं, पडुप्पन्नंवा सासयं समयं अणागयमणंतवा सासयंसमयं, जेकेइ अंत करावा अंतिमसरीरियावा सब्बदुक्खाणमतं करिंसुवा करितिवा करिस्संतिवा सव्वेते उप्पन्ननाणदंसणधरा अरहा जिणे केवली भवित्ता तओपच्छा सिज्झति जाव अंतंकरिस्संतिवा ? हंता गोयमा ! तीतमणंत सासयं जाव अंतंकरिस्संतिवा । सेणूणंभंते ! उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ?

॥ भाषा ॥

स्यन कह्या तिम केवलीने पणि कहवा, एतलोविशेष अतीतकाले निष्टितार्थ हुया, वर्त्तमानकाले निष्टितार्थ हुयाछे, अनागतकाले निष्टितार्थहुस्ये इ त्यर्थ । सेणूणभंतेतीतमणतसासयसमयपडुपन्नंवासासयसमय । वलीगौतम पृछेछे—हेभगवन् । तेनिश्चे अतीत अनत शाश्वतो समयकाले वर्त्तमान वा अथवा शाश्वतो सदातमसमयकाले । अणागयमणत वा सासयसमय । अनागत आगामि अनत अपार वा अथवा शाश्वतो अविनासो समयकाले जेकेइअंतकरावा । जेकेइ एकजीव सर्वदुखना अंतनाकरणहार एतावता मुक्तिगामो । अंतिमसरीरियावा । अंतिम छेहलो प्रात शरीरछे जेहने एत ले चरमशरीरी ते । सव्वदुक्खाणमतंकरेंसु । सर्वदुखनो अत केतले एकजीवें कीधो अतीतकाले, वर्त्तमानकाले । करतिवा । केतला एक करेछे । करिस्सं तिवा । आगामिकाले केतला एक करस्ये । सव्वेतेउप्पणणाणदसणधरा । ते सगलाई ऊपनो केवलज्ञान केवलदर्शन जेहने तेहना धरणहार । अर हाजिणेकेवलीभवित्ता । पूजाने योग्य राग द्वेषना जीपणहार सर्वज्ञ थईने । तओपच्छासिज्झति । तिवार पछो सीझे । जावअंतंकरिस्संतिवा । अंत करस्ये एतावता मुक्तिजास्ये इतिप्रश्न । हता गोयमा । हा गौतम । तीतमणतसासयसमयजावअंतकरिस्संतिवा । अतीत अनत शाश्वता समयकाल यावत् आगामिकाले अंत करस्ये मोक्षजास्ये इत्यर्थ । सेणूणभते उप्पण्णणाणदंसणधरे । तेनिश्चे हेभगवन् । ऊपनो केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धरणहा र । अरहाजिणेकेवली । इन्द्रकृत पूजायोग्य राग द्वेषना जीपणहार सर्वज्ञ । अलमत्थुत्तिवत्तव्वसिया । पूर्ण केवलज्ञान पाम्यो एहथी उपरात कांई ज्ञा न पामवानथी पर्याप्त भवन् स्वरूपथयोछे जेहनो एहवू कहोवे इतिप्रश्न । हता गोयमा उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहाजिणेकेवली अलमत्थुत्तिवत्तव्वसिया ।

॥ टीका ॥

एवेति ॥ सेणूणमित्यादिषु कालत्रयनिर्देशो वाच्यएवेति ॥ अलमत्थुत्ति ॥ अलमस्तु पर्याप्तं भवतु नात परं किञ्चि ज्ज्ञानान्तरं प्राप्तव्य मस्यास्तीति, एत द्वक्तव्य स्या द्भवे त्सत्यत्वा दस्येति, ॥ प्रथमशते चतुर्थउद्देश ॥ ४ ॥ अनन्तरोद्देशकस्यान्तिमसूत्रे प्वर्हदादय उक्ता स्तेच पृथिव्या भ्रवन्ती त्यथवा; पृथिवीतो प्युद्वृत्ता मनुजत्व मवाप्ता· सन्त स्ते भ्रवन्तीति पृथिवीप्रतिपादनायाह, तथापुढविति ’ यदुद्दे शकसङ्ग्रहण्या मुक्त तत्प्रतिपादनायचाह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्र रयणप्पभ्रत्ति ॥ नरकवर्ज्जं प्राय.प्रथमकाण्ड इन्द्रनीलादिबहुविधरत्नसम्भवात् रत्ना ना प्रभ्रा दीप्ति र्यस्या सा रत्नप्रभा यावत्करणा दिद दृश्य, शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभ्रा धूमप्रभा तम प्रभ्रेति, शब्दार्थश्च रत्नप्रभ्रावदिति ॥ त मतमत्ति । तमस्तम प्रभ्रेत्यर्थ स्तत्र प्रकृष्ट तम स्तमस्तम स्तस्येव प्रभ्रा यस्या· सा तमस्तम प्रभ्रा, एतासुच नरकावासाभ्रवन्तीति, ता नावासाधिका

॥ मूल ॥

हंता गोयमा ! उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्व सिया ॥ सेवंभ्रंतेभ्रंतेत्ति पढम सए चउत्थोद्देसोसम्मत्तो ॥ ४ ॥ कइण भ्रंते ! पुढवीउ पसत्ताउ ? गोयमा ! सत्तपुढवीउ

॥ भाषा ॥

हा गौतम सकलकर्मना जयथको उपनो केवलज्ञान अनै केवलदर्शन तहनाधरणहार बारैगुणसहित जिन समय सरणादिक अतिशयवत राग द्वेष ना जोपणहार केवली सर्वपदार्थना जाण पर्याप्तथया एहथो उपरात ज्ञान बीजो कोई पामवा योग्यनथो एहवो कहीये एसर्व सांचोछै। सेवभतेभतेत्ति। भगवत कह्यो ते सर्व साचोछै तहत्तछै अन्य भ्रानतथो। पढमसयस्स चउत्थोउद्देशो। ए पहिला शतकनो चौथो उद्देशो विवरणथोलिख्यो ॥ ४

कइणभतेपुढवीओ पणत्ताओ गोयमा सत्तपुढवीओ पणत्ता तंजहा रयणप्पभाजावतमतमा। पाछिला उद्देशाना अतनेविषे अरहतादिक कह्या ते पृ थिवीनेविषे हुवे अथवा पृथवीथकी पणि चवीने मनुष्यपणू पाम्याथका ते अरहंतादिक हुवे अथवा पुढवित्ति इसो उद्देशक सग्रहगाथानेविषे कह्यु ते माटे ते पृथिवीनो स्वरूप कहीयेछे केतलो हेभगवन्! पृथिवीकही इतिप्रश्न, हेगौतम सात पृथिवी कही तेकहेछे—रतनानीकाति ते रत्नप्रभा १ काक रानी प्रभा तिणरैविषै ते शर्करप्रभा २ इमवेलूनीप्रभा ३ कादमनीप्रभा ते ४ धूमसरीखोप्रभा ५ अन्धकारनीप्रभा ६ महाअंधकारनीप्रभा ते तमतमप्रभा

॥ टीका ॥

राव शेषजीवावासान् परिमाणतो दर्शयन्नाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ अस्या मत्यवायां ॥ नरयावाससयसहस्सत्ति ॥ आवसन्तियेषु ते आवासा नरका श्चते आवासाश्चेति नरकावासा' स्तेषा यानि शतसहस्राणि तानि तथेति, शेषपृथिवीसूत्राणितु गाथानुसारेण ध्येयानि, अतएवाह ॥ गाहत्ति ॥ साचेय–तीसाएइत्यादि ॥ सूत्राभिलापश्च सक्करप्पमाएणमंते । पुढवीएकइनिरयावाससयसहस्सा पणत्ता ? गोयमा। पणवीसनिरयावाससयसहस्सा पणत्तेत्यादिरिति ॥ छचहुपिजुयलयाणंति ॥ दक्षिणोत्तरदिग्भेदेना सुरादिनिकायो द्विभेदो भवतीति युगला न्युक्तानि, तत्र षट्सु युगलेषु प्रत्येक षट्सप्तति भवनलक्षाणामिति, यथा असुरादिनिकाययुगलाना दक्षिणोत्तरदिशो रयविभाग –चउतीसाचउचत्ता अठतीसचसयसहस्साउ । पणा

॥ मूल ॥

पणत्ताउ तंजहा ! रयणप्पभा जाव तमतमा । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कइनिरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! तीसंनिरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता । गाहा । तिसायपन्नवीसा पन्नरसदसेवयसयसहस्सा । तिणेगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानिरया ॥१॥ केवइयाणभंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता ?

॥ भाषा ॥

कहीये ७ इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीए । आ गंधा० हेभगवन् । रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे । कतिनिरयावाससयसहस्सा पणत्ता । केतला नरकावासा नारकी रहवानास्थानक तेहना शतसहस्र लाख कह्या इतिप्रश्न । गोयमा तीसनिरयावाससयसहस्सा पणत्ता हेगौतम । आरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे चोसलाख नरकावासाकह्या, शेष पृथिवीनेविषे नरकावासानो सख्या गाथानुसारेकहवी तेगाथाकहेछे गाहा, तीसायपणवीसा । रत्नप्रभानेविषे त्रीसलाख १ । शर्करप्रभानेविषे पचवीसलाख २ । पणरसदसेवयसयसहस्सा । वालुकाप्रभानेविषे पनरेलाख ३ पकप्रभानेविषे दशलाख ४ धूम्रप्रभानेविषे तीनलाख ५ तमप्रभानेविषे पचे ऊणा एकलाख ६ तमतमाप्रभानेविषे पचछीज नरकावासाछे पूर्वकाल १ पश्चिमेमहाकाल २ दक्षिणेरोर ३ उत्तरे महारोर ४ बीचिमें अप्रतिष्ठान ५ एमात नरकमिलो ८४ लाख नरकावासासर्वथा एनारकीना नरकावासाकह्या ॥ हिवे असुरामयो असुरकुमार दश कना भवननी सख्याकहेछे—केवइयाणभंतेअसुरकुमारावाससयसहस्सापणत्ता । केतलाहेभगवन् । असुरकुमारआवासना लाखकह्या, असुरकुमार निका

॥ टीका ॥

चत्तालीसा दाहिणउहोंतिभवणाइं ॥ १ ॥ चत्तालीसत्ति ॥ द्वीपकुमारादीनां पसां प्रत्येकं चत्वारिंशद्भवनलक्षाणि–तीसाचत्तालीसा चोत्तीसचेवसय सहस्साइं । छायालाछत्तीसा उत्तरउहोंतिभवणाइं ॥ १ ॥ छत्तीसत्ति ॥ द्वीपकुमारादीना पसा प्रत्येक षट्त्रिंशद्भवनलक्षाणीति, अथा धिकृतोद्देश

॥ मूल ॥

एवं , चोसठ्ठीअसुराण चउरासीईयहोइनागाण । बावत्तरिसुवन्नाणं वाउकुमाराणछन्नउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण । छण्हपिजुयलयाणं बावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ केवइयाणंभंते ! पुढविकाइयावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! असखेज्जावाससयसहस्सा पन्नत्ता , जाव असंखेज्जाजो

॥ भाषा ॥

य नेजिये ऊपना अने कुमारनो परें क्रीडाकरें तेमाटे असुरकुमारकहीये इतिप्रश्न । एवचउसठ्ठीअसुराण । इम चउसठलाख असुरकुमारना भवनछे, तिहां चउत्रीस दक्षिणें त्रीसलाख उत्तरे एवसर्व चोसठलाख भवनथया । चउरासीतीयहोइणागाण । चउरासीलाख नागकुमारना आवास तिहां च माळीसलाख दक्षिणश्रेणें चालीसलाख उत्तरश्रेणे एवमिलो ८४ लाख भवनथया । बावत्तरिसुवन्नाण । बहुत्तरलाख सुवर्णकुमारना आवास तिहां३८ लाख दक्षिणश्रेणि ३४ लाख उत्तरश्रेणें ७२ लाखथया । वाउकुमाराणछन्नउई । वाउकुमारना ९६ लाख आवासछे तिहां ५० लाख दक्षिण श्रेणिने विषे ४६ लाख उत्तर श्रेणिनेविषे एव ९६ लाखथया १ । दीवदिसाउदहीण । द्वीपकुमार १ दिक्कुमार २ उदधिकुमार ३ । विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण । विद्युतकुमार ४ स्तनितकुमार ५ अग्निकुमार ६ । छण्हपिजुयलयाणं बावत्तरिमोसयसहस्सा २ । जुगल एतले दक्षिण श्रेणि तथा उत्तर श्रेणि बेऊ मिलीने प्रत्येके प्रत्येके छहुत्तरलाख भवनथया, एवम असुरकुमारादि सर्वना भवनमिली सातकोडि बहुत्तरलाखथया चारिकोडि ६ लाख दक्षिणे तीनकोडी ६६ लाख उत्तरे २ ॥ हिवे पृथिव्यादिकना आवासनीवार्त्ता कहेछे–केवइयाणभंतेपुढविकाइयावाससहस्सा पन्नत्ता । केतला हेभगवन् । पृथिवीकायिक जीवनेरहवाना आवासस्थानक कह्या इतिप्रश्न । गोयमा असखेज्जापुढविकाइयावाससयसहस्सा पन्नत्ता । हे गौतम । असख्याता पृथिवीकायिकादल तेहना लाखकह्या, एतले पृथिवीकायिकजीवना असख्याता लाख सस्थान जाणवा, पृथिवीयी माडी । जावअसखेज्जाजोइसियविमाणावा

॥ टीका॥

कार्यसङ्ग्रहाय गाथाह ॥ पुढवीत्यादि ॥ तत्र पुढवीति लुप्तविभक्तिकत्वा निर्द्देशस्य पृथिवीषु उपलक्षणत्वा चास्य पृथिव्यादिषु जीवावासेष्विति दृष्ट

॥ मूल ॥

इसियविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता । सोहम्मेणंभंते ! कइविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? गोयमा ! बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता , एवं , बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । पन्नाचत्ताली सा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तविमाणसयाइं चउसुवि एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमएसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेयउवरिमए पचेवयअणुत्तरविमाणा ॥

॥ भाषा ॥

ससयसहस्सा पणत्ता । यावत् पचप्रकारना ज्योतिषी चद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा तेहना विमान आवासस्थान असंख्याता लाखकह्या, मैं अथवा अनत तीर्थंकरें, वलीगौतम बारदेवलोक नवग्रैवेयक पच अनुत्तरविमान आश्रीने पूछेछे । सोहम्मेणभतेकइविमाणावाससयसहस्सा पणत्ता । सौधर्मदेवलोके हे भगवन् । केतलाविमानावासस्थानना लाख कह्या इतिप्रश्न । गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा पणत्ता । हेगौतम । बत्तीसलाख विमान तेरेप्रतर छे, प्रतरें प्रतरें भिन्नविमानछे, तेपूर्व केवलीए अम्हे कह्या, इम सर्वत्र गाथायकी जाणवा, । गाहा । बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । पणावत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ सौधर्मे छत्तीसलाख विमान, ईशाने २८ लाख विमान, सनत्कुमारे १२ लाख विमान, माहेंद्रे आठलाख विमान, बह्मेंद्रे चारलाख विमान, ए पंच देवलोकें थई ८४ लाख थया, लातके पचाससहस्र, शुक्रे चालीस सहस्र, छसहस्र आठमें देवलोके विमानजाणवा । आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइ चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ आनत नवमोंदेवलोक प्राणत दशमोदेवलोक एबेउ मिली ४०० विमानछे, आरण ११ मे देवलोके अच्युत १२ मेंदेवलोके एबेउ मिली ३०० विमानछे, एसातसे विमान चारदेवलोके मिलीनै थया २, हेठिलै ग्रैवेयकनेविषे एतलै पहिले बीजे त्रीजे ग्रैवेयकमिली । एक्कारसुत्तर हेठिमएसत्तुत्तरंचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ ३ ॥ एकसोइग्यारे विमानछे मध्यम ग्रैवेयके एतलै चौथे पचमे छट्ठे एतोनेमिली एकसोसात विमानछे, ऊपरले ग्रैवेयक त्रिकें एतले सातमें आठमें नवमें एतो

॥ टीका ॥

व्यमिति ॥ ठिइत्ति ॥ सूचना त्सूत्रमिति न्यायात् स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिज्ञेय ॥ एवंउग्गहणत्ति ॥ अवगाहनास्थानानि, शरीरादिपदानितु व्यक्तान्येव, एकारान्तञ्च पद प्रथमैकवचनान्तन्दृश्य, इत्येव मेतानि स्थितिस्थानादीनि दशवस्तूनि इहो द्देशके विचारयितव्यानीति गाथासमा सार्थ , विस्तरार्थन्तु सूत्रकार स्वयमेव वक्ष्यतीति, तत्र रत्नप्रभापृथिव्या स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपयन्नाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ व्यक्त, नवरं ॥ एगमेगसिनिरयावाससित्ति ॥ प्रतिनरकावासमित्यर्थ ॥ ठिइठाणत्ति ॥ आयुषो विभागाः ॥ असखेज्जत्ति ॥ सङ्ख्यातीतानि, कथ प्रथमपृथिव्यपेक्ष या जघन्या स्थिति दशवर्षसहस्राणि, उत्कृष्टातु सागरोपम मेतस्या ञ्चैकैकसमयवृध्या ऽसङ्ख्येयानि स्थितिस्थानानि भवन्ति, असङ्ख्येयत्वात् सागरो

॥ मूल ॥

३ ॥ पुढविठिइउगाहण सरीरसंघयणमेवसंठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाएपुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठि

॥ भाषा ॥

ने मिली एकसोविमान, अनुत्तरविमान पचछेजके पूर्वादि विजय १ वैजयत २ जयत ३ अपराजित ४ विचमें सर्वार्थसिद्ध ५, एसर्वमिली ऊर्द्धलोके ८४९७०२३ विमानयथा । पुढविठिइउगाहण सरीरसघयणमेवसठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणे ॥ ४ ॥ हिवे उद्देशकार्थ सग्रहनेकाजे द्वारगाथा कहेछे—पृथिव्यादिकजीवना वासनें विषै स्थितिस्थान कहवा २, शरीर कहवा ३ संघयण कहवा ४ निश्चे संस्थान कहवा ५ लेश्या ६ कहवी, दृष्टी ३ कहवी ७, ज्ञान ते कहवा ८, योग ३ ते कहवा ९ उपयोग २ ते कहवा १०, च पादपूरणे ए दशस्थान द्वार कहवा, पृथिवी आदिदेई सर्वनेविषे । इमीसेणभंतेरयणप्प । पुढवीए । गौतमपूछेछे—एहने हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे । तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु । त्रीसलाख नरकावासानेविषे । एगमेगसिनिरयावाससि । एकेका एतले प्रत्येकें २ नरकावासनेविषे । णेरइयाणकेवइयाठिइठाणा पणत्ता । नारकीना केतला स्थितिकहता आउखाना स्थान कहता विभागकहवा इतिप्रश्न । गोयमा असखेज्जाठिइठाणा पणत्ता तंजहा । हेगौतम । सख्याथी अतिक्रम्या उलंघ्या तेमाटे असख्याता आउखाना स्थानकविभाग कह्या तेकिम ? पहिली पृथिवीनो अपेक्षायें जघन्य दश सहस्रवर्षनो स्थितिछे ते एक समय वधारता उत्कृष्ट एक सागरो

॥ टीका ॥

मथमप्रस्तटनरकेषु जघ
पर्मसमयाना मित्येव नरकावासापेक्षया ष्यसङ्ख्येया न्येवतानि, केवलं तेषु जघन्योत्कृष्टविभागो ग्रन्यान्तरा दवसेयो' यथा—प्रथमप्रस्तटनरकेषु जघ
न्या स्थिति र्दशवर्षसहस्रा ण्युत्कृष्टातु नवतिरिति, एतदेवदर्शयन्नाह ॥ जहन्नियाठिईत्यादि ॥ जघन्यास्थिति र्दशवर्षसहस्रादिका इत्येक स्थिति
स्थान' तच्च प्रतिनरक भिन्नरूप सैव समयाधिकेति द्वितीय मिदमपि विचित्र, एव यावदसङ्ख्येयसमयाधिका सा सर्वान्तिमस्थितिस्थानदर्शनाया
ह ॥ तप्पाउग्गुक्कोसियत्ति ॥ उत्कृष्टा सा वनेकविधेति विशेष्यते, तस्य विवक्षितनरकावासस्य प्रायोग्योचिता उत्कर्षिका तत्प्रायोग्योत्कर्षिका' इत्य
पर स्थितिस्थान मिदमपि विचित्र विचित्रत्वा दुत्कर्षस्थितेरिति, एव स्थितिस्थानानि प्ररूप्य तेष्वेव क्रोधाद्युपयुक्तत्व नारकाणा विभागेन दर्श

॥ मूल ॥

ठिईठाणा पसत्ता? गोयमा! असंखेज्जा ठिइठाणा पसत्ता तंजहा जहन्नियाठिई समयाहिया, जहन्निया
ठिईदुसमया हिया, जाव असंखिज्जसमयाहिया जहन्नियाठिई, तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई। इमीसेणं भंते!

॥ भाषा ॥

पमनी स्थितिछे ते सागरोपमना असख्यातासमय हुवे तेमाटे असख्याता स्थितिस्थान कह्या, इम नरकावासानी अपेचायें पणि असख्याताहुवे, इहा
जघन्य उत्कृष्ट विभाग ग्रन्थान्तर थी जाणवो, जिम रत्नप्रभाना पहिला पाथडानेविषे जघन्य दशसहस्रवर्ष उत्कृष्ट नेऊ सहस्रवर्ष स्थितिछे, एहीज दे
खाडेछे—जहन्नियाठिई इत्यादि तेकहेछे—जघन्यस्थिति ए एकस्थितिस्थान कह्यो, तेपणि प्रतिनरकें भिन्नभिन्नछे, वलो तेहीज एकसमय अधिक एबीजो
स्थितिस्थान थयो, तेपणि अनेकप्रकारनोछे। जहन्नियाठिई समयाहिया जहन्नियाठिईदुसमयाहिया। इमबीजो स्थितिस्थानथयो, एपणि विचित्रछे
एवजावअसखेज्जसमयाहियाजहन्नियाठिई। इम यावत् असख्यातसमय अधिक जघन्यस्थान, एपणि विचित्रछे, प्रतिनरकें भिन्नभिन्न स्थितिस्थानकछे,
अने पाथडे २ पणि भिन्नभिन्न स्थितिस्थानकछे तेमाटे, हिवे सर्वथो छेहलो स्थितिस्थान देखाडेछे। तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई। विवक्षित नरकावास
ने योग्य उचित उत्कृष्ट स्थितिस्थान तेपणि अनेकप्रकारनोछे, उत्कृष्टस्थितिस्थानना विचित्रपणाथो इम स्थितिस्थान प्ररूपीने तेहीज स्थितिस्थानन
विषे क्रोधादिसहित नारकोने विभागेकरो देखाडतो इसो कहेछे—इमोसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएतोसाएनिरयावाससयसहस्सेसु। एहीज हेभगवन्!

यन्निदमाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ जहन्नियाएठिईएवट्टमाणाति ॥ या यत्र नरकावासे जघन्या तस्यां वर्त्तमाना ॥ किंकोहोवउत्तेत्यादि ॥ प्रश्ने ॥ सव्वे वीत्याद्युत्तर, तत्रच प्रतिनरक जघन्यस्थितिकाना सदैवभावा, तेषुच क्रोधोपयुक्ताना बहुत्वा त्सप्तविंशतिर्भङ्गका, एकादिसङ्ख्यातसमयाधिकजघ न्यस्थितिकाना तु कादाचित्कत्वा त्तेषुच क्रोधाद्युपयुक्ताना मेकत्वानेकत्वसम्भवा दशीति र्भङ्गका, एकेन्द्रियेषुतु सर्वकषायोपयुक्ताना मप्रत्येकं बहूना भावा दभङ्गक, माहच— सत्तवइजहिविरहो असीतिभगातहिकरेज्जाहि । जहियनहोइविरहो अभगयसत्तवीसावा ॥ १ ॥ अयम्च तत्सत्तापेक्षो वि रहो द्रष्टव्यो, नतू त्पादापेक्षो, यतो रत्नप्रभाया चतुर्विंशतिर्मुहूर्त्ता उत्पादविरहकाल उक्त' स्ततश्च यत्र सप्तविंशति र्भङ्गका उच्यन्ते तत्रापि विर हभावा दशीति- प्राप्नोति' सप्तविंशतेश्चा भावएवेति, तत्र ॥ सव्वेवितावहोज्जकोहोवउत्तत्ति ॥ प्रतिनरक स्वकीयस्वकीयस्थित्यपेक्षया जघन्यस्थिति काना नारकाणां सदैवबहूना सद्भावा न्नारकभवस्यच क्रोधोदयप्रचुरत्वात् सर्वएव क्रोधोपयुक्ता भवेयु रित्येको भङ्ग' ॥ अहवेत्यादिना द्विकत्रिचतु.

रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ठिईए वट्टमा णानेरइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज कोहोव

रत्नप्रभा पृथिवीने विषे त्रीसलाख नरकावासानेविषे । एगमेगंसिनिरयावासंसि । एकेक एतले प्रत्येक नरकावासानेविषे जिका जे नरकावासानेविषे जहन्नियाएठिईएवट्टमाणाणेरइया । जघन्यस्थितिछे, तेहनेविषे वर्त्तमान नारकीमा । किंकोहोवउत्ता । स्यूं क्रोधवाला घणाछे ? माणोवउत्ता । स्यू मा नवालाघणाछे ? मायावउत्ता । स्यू मायावाला घणाछे ? लोभोवउत्ता । स्यू लोभवाला घणाछे ? इतिप्रश्न, । गोयमा सव्वेवितावहोज्ज कोहोवउत्ता । हे गौतम । प्रतिनरकें पोता पोतानी स्थितिनी अपेक्षायें जघन्यस्थिति नारकीनो घणानो सद्भावछे, अने नारक भवनेविषे क्रोधनो उदय घणोछे तेमाटे सगलाईं क्रोधसहित । अथवा इत्यादि । द्विकत्रिचतु: संयोगना भांगा देखाड्या तिहा द्विकसंयोगनेविषे क्रोधवत घणा तेमाटे क्रोधे बहुवचनहोज होय, क्रोधवतघणा मानवतएक एकभागो १ । सव्वेवितावहोज्जइत्यादि । उत्तर तिहा प्रतिनरकें जघन्यस्थितिना नारकीनो सदैव सद्भावछे विरहमथी, तेहनेवि

॥ टीका ॥ संयोगजङ्गा दर्शिता, स्तत्र द्विकसयोगे बहुवचनान्तं क्रोधमुञ्चता षड्भङ्गा कार्या, स्तथाहि ' क्रोधोपयुक्ताश्च मानोपयुक्तश्च तथा क्रोधोपयुक्ताश्च मा

॥ मूल ॥ उत्ता १, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय २, अहवा, कोहोवउत्ताय माणोवउत्ताय ३, अहवा, कोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय ४, अहवा, कोहोवउत्ताय मायोवउत्ताय ५, अहवा, कोहोवउत्ताय लोभोवउत्तेय ६, अहवा, कोहोवउत्ताय लोभोवउत्ताय ७। अहवा, कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय मायो

॥ भाषा ॥ पे क्रोधवंत घणाछे तेमाटे सत्तावीस भागा हुवे, अने एकआदि सख्यातसमयाधिक जघन्यस्थितिना नारकीछे तेहने कदाचित्पणोछे, तेहनो अविचारे कविरहपणि हुवेछे तेमाटे तिहा क्रोधसहित एकपणिहुवे—अने अनेकपणोपणि सभवे तेमाटे असीभांगापणिऊपजे, अने एकेंद्रीनेविषे चारेई कषायस हित प्रत्येकें घणापामिये तेमाटे। अभंगय। भागोनऊपजे यतः—सभवइजहिंविरहो असीइभंगातहिंकरिज्जाहि। जहियनहोइविरहो अभंगयसत्तवीसा वा ॥ १ ॥ एविरहपणि सत्तावीसनो अपेचायें कहयो पणि उत्पादनो अपेचायें विरहनकहयो, तेकिम रत्नप्रभायें चउवीस मुहूर्त्तनो उत्पाद विरहकह्यो पणि जिहा सत्तावीस भागा कह्या तिहा पणि चउवीस मुहूर्त्त विरहना संभवथी असीभांगा पामस्यें तिवारें सत्तावीसनो अभावथईजइस्ये, अहवाको होवउत्ताय। अथवा क्रोधवंतघणां तिणें क्रोधें बहुवचनपामो। माणोवउत्ताय २। अने मानवंत पणि घणापामीये एबीजोभागो २। अहवाकोहोवउत्ता य माओवउत्तेय ३। अथवा क्रोधवंतघणा अनेमायावंत एक एहिक संयोगीनो त्रीजोभांगो ३। अहवा कोहोवउत्ताय माओवउत्ताय ४। अथवा क्रो धवंतघणां तेमाटे अने मायावंत पणि घणा तेमाटे बहुवचन एचोथोभागो ४। अहवा कोहोवउत्ताय लोहोवउत्तेय। क्रोधवंतघणा तेमाटे बहुवचन अने लोभवंत एक तेमाटे एकवचन ए पांचमोभागो ५। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंत घणां तेमाटे बहुवचन अने। लोभो वउत्ताय। लोभवंतघणां तेमाटे इहापणि बहुवचन ए द्विकसंयोगी छट्ठोभागो ६। एव ७। भागाथया ॥ हिवे त्रिकसंयोगी बारेभागा देखाडे छे—सगलेभागे क्रोधे बहुवचनहोय। अहवाकोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय माओवउत्तेय १ अथवा क्रोधवंतघणां मानवंत एक मायावंत एक एत्रिकस

नोपयुक्ताश्च २, एवं माययैकत्वबहुत्वाभ्यां द्वौ, लोभेनच द्वौ, एव मेते द्विकयोगेषट्, त्रिकयोगेतुद्वादशभवन्ति, तथाहि—क्रोधे नित्यं बहुवचनं मानमाययो रेकवचनमित्येको, मानैकत्वे मायाबहुत्वेव द्वितीयो' मानेच बहुवचन मायाया मेकत्व मितितृतीयो' मानबहुत्वे मायाबहुत्वेच चतुर्थ', पुनः क्रोधमानलोभै रित्थमेव चत्वार 'पुन' क्रोधमायालोभै रित्थमेवचत्वार, एव मेते द्वादश, चतुष्कसंयोगे त्वष्टौ, तयाहि—क्रोधे बहुवचनेन मानमा

वउत्तेय १, कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय मायोवउत्ता २, कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्तेय ३, को होवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता ४, एवं कोहेणं माणेणं लोभेणं चत्तारि भंगा १२। अहवा, कोहो वउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउ

यागीनो पहिलोभागो १। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। माणोवउत्तेय। मानवत एक। मायोवउत्ताय।२ मायावत पणि घणा एबीजो भागो २। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। माणोवउत्ताय। मानवतघणा। मायोवउत्तेय। मायावत एक ए त्रीजो भागो ३। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवतघणा। माणोवउत्ताय। मानवंतघणा। मायोवउत्ताय ४। मायावतपणि घणा एचौथोभागो। एवकोहेणमाणेणंलोभेणंच त्तारिभगा ८। इम क्रोधमानमायासू चारभागा कहवा त्रिकसंयोगे, तिवारे आठभागा थया ८। एवकोहेण। इम क्रोध माया लोभसू चारभागा कहवा, इहांपणि सगलेक्रोधे बहुवचन कहवो, एव भागा १२ थया त्रिकसयोगीना सर्वमिली भागा १८ थया, चारिसंयोगे आठ भागा हुवे ते देखाडेछे कोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधसहित घणा तेमाटे क्रोधे वहुवचन। माणोवउत्तेय। मानसहित एकवचने। मायोवउत्तेय। मायासहित एक वचने। लोभोवउत्तेय १ लोभसहित एक ए चतुःसयोगीभागो। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। माणोवउत्तेय। मानवत एक। मायोवउत्तेय। मायावत एक। लोभोवउत्ताय २। लोभवत घणा एचतुःसयोगीनो बीजोभागो। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। माणोवउत्तेय। मानवंत एक। मायोवउत्ताय। मायावत घणा। लोभोवउत्तेय। लोभवत एक ए त्रीजोभागो ३। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंत घणा। माणोवउत्तेय।

॥ टीका ॥

यालोभेषु चैकवचने नैकः' इत्यमेव लोभेबहुवचनेन द्वितीय' एव मेता वेकवचनान्तमायया जातौ, एवं बहुवचनान्तमायया ऽन्यौ द्वौ, एव मेते चत्वार एकवचनान्तमानेन जाता, एवमेव बहुवचनान्तमानेन चत्वार इत्येवमष्टौ, एव मेते जघन्यस्थितिषु नारकेषु सप्तविंशति र्भवन्ति, जघन्यस्थितौ

॥ मूल ॥

त्ता २, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ८, एवं सत्तावीसभंगा नेयव्वा। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासंसि सम

॥ भाषा ॥

मानवंत एक। मायोवउत्ताय। मायावंत घणा। लोभोवउत्ताय ४। लोभवंतघणा ए चोथाभागा ४। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंतघणा। माणोवउत्ताय। मानवंतपणि घणा। मायोवउत्तेय। मायावंत एक। लोभोवउत्तेय। लोभवंतपणि एक एपांचमोभागो ५। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंत घणा। माणोवउत्ताय। मानवंत पणि घणा। मायोवउत्तेय। मायावंत एक। लोभोवउत्ताय ६। लोभवंत घणा एछट्ठोभागो ६। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंत घणा। माणोवउत्ताय। मानवंत घणा। मायोवउत्तेय। मायावंत घणा। लोभोवउत्तेय ७। लोभवंत एक एसातमों भागो ७। अहवाकोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंत घणा। माणोवउत्ताय। मानवंत घणा। मायोवउत्ताय। मायावंतघणा। लोभोवउत्ताय ८। २७। एवंसत्तावीसभंगाणेयव्वा। लोभवंत घणा एचतुःसयोगीनो आठमों भागो ८। इम असंयोगी १ द्विकसंयोगी ६। त्रिकसंयोगी १२। चतुः संयोगी ८। ए सर्वमिली २७ भागा जघन्यस्थिति नारकोनें विषे हुवे, जघन्यस्थितिना घणो नारको घणाहुवे तेमाटे क्रोधनेविषे बहुवचनहीज हुवे, क्रोधी घणाहुवे तेम.टे, वलीगौतम पूछेछे—इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीए। एहीज हेभगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसिनिरयावास

॥ टीका ॥

हि वहवो नारका भवन्त्यत क्रोधे वहुवचनमेव ॥ समयाहियाएजहन्नठिईएवट्टमाणानेरइयाकिंकोहोवउत्ताइत्यादि ॥ प्रश्न' इहो त्तर ॥ कोहोवउ त्तेयइत्यादयोशीतिर्भङ्गा, इह समयाधिकाया यावत्सङ्ख्येयसमयाधिकायां जघन्यस्थितौ नारका न भवन्त्यपि भवन्तिचे देकोवा, अनेकेवे; ति' तत कोधादि ष्वेकत्वेन चत्वारो विकल्पा, वहुत्वेन चान्ये चत्वारएव ४, द्विकसयोगे चतुर्विंशति' स्तथाहि—क्रोधमानयो रेकत्वबहुत्वाभ्या चत्वार'

॥ मूल ॥

याहियाए जहन्नठिईए वट्टमाणा नेरइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तेय माणोवउत्तेय मायोवउत्तेय लोभोवउत्तेय, कोहोवउत्ताय माणोवउत्ताय मायोवउत्ताय लोभो वउत्ताय, अहवा, कोहोवउत्तेय माणोवउत्तेय, अहवा, कोहोवउत्तेय माणोवउत्ताय, एवं असीइभंगा नेयव्वा, एव जाव संखेज्जसमयाहियाठिई असंखेज्जसमयाहियाठिईए तप्पाउग्गुक्कोसियाएठिईए सत्तावीसं

॥ भाषा ॥

हिसमयाहियाए जहन्नठिइएवट्टमाणा णेरइयाकिंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता । लोभोवउत्ता । त्रीस नरकावास शतसहस्र कह्या तेहने विषे एकेका नरकावासाने विषे एतले प्रत्येके २ नरकावासे एक समय अधिक जघन्यस्थितिस्थाने वर्तमान नारकी स्यूं क्रोधसहित घणाहुवे इत्यादि, इहा समयाधिक यावत् सख्यात समयाधिक जघन्यस्थितिने विषे नारकी नहुवे, पणि अनेहुवे तो एकपणि हुवे अनेकपणिहुवे तेमाटे क्रोधादिकें ए कहो होय, अनेकहोहोय, तिवारे असीभागा उपजे ते देखाडेछे स्यूं क्रोधवंत घणाहोय अथवा मानवतघणा होय अथवा मायावत घणाहोय अ थवा लोभवंत घणाहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । कोहोवउत्तेय । क्रोधवत एकहोहोय ए एकभागो १ । माणोवउत्ताय । अथवा मानव त एकहो हुवे एबीजोभागो २ । मायोवउत्तेय । अथवा मायावतहोज एक होय एत्रीजोभागो ३ । लोभोवउत्तेय । अथवा लोभवतहोज एकहोय ए चौ थो भागो ४ । कोहोवउत्ताय । अथवा क्रोधवतहोज घणाहुवे एपाचमोभागो ५ । माणोवउत्ताय । अथवा मानवतहोज घणाहुवे एछठोभागो ६ । मा योवउत्ताय । अथवा मायावत घणाहोज हुवेएसातमों भांगो ७ । लोभोवउत्ताय । अथवा लोभवत होज घणाहुवे ए आठमोंभागो ८ । एआठभागा

॥ टीका ॥

४, एवं क्रोधमाययो· ४' एवं क्रोधलोभयो·, एवं मानमाययोः ४, एवंमानलोभयो· ४' एवं मायालोभयोरिति, द्विकयोगे चतुर्विंशति, त्रिक योगे द्वात्रिंश, तथाहि—क्रोधमानमायाना मेकत्वे नैक, एवेव मायाबहुत्वेन द्वितीय, एव मेतौ मानैकत्वेन द्वावेवा, न्यौ तद्बहुत्वेन' एवमेतेच त्वार'' क्रोधैकत्वेन चत्वारएवा' न्येक्रोधबहुत्वेने त्येव मष्टौ, क्रोधमानमायात्रिकेजाता, स्तथैवा न्ये ष्टौ क्रोधमानलोभेषु, तथैवा न्ये ष्टौ क्रोध

॥ मूल ॥

भंगा भाणियव्वा। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासं

॥ भाषा ॥

असयोगी कह्या॥ अथवा क्रोधवत एक मानवत एक एपहिलो भागो १। तथा द्विकसयोगी भांगा २४ ते देखाडेछे—क्रोधमान एकवचन बहुवचनेकरी भागा चारहुवे, इमक्रोध माया सूचार, क्रोधलोभसूंपणिचार, इम मानमायासूचार, मानलोभसूचार, एचउवीस द्विकसयोगीकह्या। त्रिकसंयोगी ३२। भागाहुवे, तेदेखाडेछे—क्रोध मान माया एकवचने एकवचनें पहिलोभागो १। क्रोधमान एकवचने माया बहुवचने २। इत्यादि यत्रथी जाणवा। चतुष्क सयोगी भांगा १६। क्रोधादिकचारेई एक वचनें १ क्रोधादिक ३ एकवचनें लोभे बहुवचन २ एपणि भागा यत्रथी जाणवा। एसर्वमिली ८० भांगाथाय, अहवाकोहोवउत्तेय। अथवा क्रोधवत एक। माणोवउत्ताय २। मानवत घणा एबीजोभागो २। एवंअसीतिभंगाणेयव्वा। इमअसीभागा जाणवा। एवजावअसंखेज्जसमयाहिया। इम यावत् जघन्यस्थितिनेविषे एकआदिदेई सख्यात समय पर्यंत असीभांगाथया। ठितीअसखेज्जसमयाहिया ठिईए तप्पाउग्गुक्कोसियाएठिईएसत्तावीसंभगाभाणियव्वा। अने सख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिथकी आरभी यावत् उत्कृष्टस्थितिछे तिहां सगले सत्तावीस भागा होय पूर्वे कह्या तेहीज विरहनो अमभयछे सत्तावीसहीज भागा जाणवा द्वार एककह्यो १॥ हिवे अवगाहना द्वारकहेछे—। इमीसेणभतेरयणप्पभाएपुढवीए तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु। हेभगवन्। एहीजरत्नप्रभा पृथिवीने विषे त्रीस नरकावासाना शतसहस्रकहतालचने। एगमेगसिनिरयावाससि। एकेका नरकावासानें विषे। णेरइयाणभतेकेवइयाउगाहणट्ठाणापण्णत्ता। नारकीने हेभगवन्। केतला शरीरनो आधार भूत क्षेत्र तेहनांस्थानक प्रदेश वृद्धेंकरी विभाग ते अवगाहना स्थान कहीये ते अवगाहना स्थानक केतला कह्या इतिप्रश्न। गोयमा असंखेज्जाउगाहण

हिवे सत्तावीसज्ञांगानो यंत्र				३	३		१	७	३	३	३	३ ४	१	१	३
असयोगी १				३	३		३	८	द्विकसयोगी ज्ञांगा २४				१	३	१
क्रोधोपयुक्ता. क्रोधेबहुवचनम्			१	क्रोध	माया		लोज्ञ		क्रोध	मान	क्रोध	माया	१	३	३
द्विकसयोगी ६				३	१		१	९	१	१	१	१	३	१	१
क्रोधोपयुक्ता	मानोपयुक्त		१	३	१		३	१०	१	३	१	१	३	१	३
३	३		२	३	३		१	११	३	१	३	१	३	३	१
३	मायोपयुक्त·		३	३	३		३	१२	३	३	३	३	३	३	३
३	मायोपयुक्ता·		४		चतुः सयोगी ८				क्रोध	लोज्ञ	मान	माया	क्रोध	मान	लोज्ञ
३	लोज्ञोपयुक्त		५	क्रोध	मान	माया	लोज्ञ		१	१	१	१	१	१	१
३	लोज्ञोपयुक्ता		६	३	१	१	१	१	१	३	१	३	१	१	३
त्रिकसयोगी १२				३	१	१	३	२	३	१	३	१	१	३	१
क्रोध	मान	माया		३	१	३	१	३	३	३	३	३	१	३	३
३	१	१	१	३	१	३	३	४	मान	लोभ	माया	लोभ	३	१	१
३	१	३	२	३	३	१	१	५	१	१	१	१	३	१	३
३	३	१	३	३	३	१	३	६	१	३	१	३	३	३	१
३	३	३	४	३	३	३	१	७	३	३	३	३	३	३	३
क्रोध	मान	लोज्ञ			एवं २७				त्रिकसयोगी ज्ञांगा ३२						
३	१	१	५	क्रोध	मान	माया	लोज्ञ		क्रोध	मान		माया			
३	१	३	६	१	१	१	१	४	१	१		१			

क्रोध	माया	लोभ
१	१	१
१	१	२
१	२	१
१	२	२
२	१	१
२	२	२
२	२	१
२	२	२
मान	**माया**	**लोभ**
१	१	१
२	१	२
१	२	१
२	२	२
२	१	१
२	१	२
२	२	१
२	२	२

चतुःसंयोगी १६ ॥

क्रो	मा	माया	लोभ
१	१	१	१
१	१	१	२
१	१	२	१
१	१	२	२
१	२	१	१
१	२	१	२
१	२	२	१
२	१	१	२
२	१	१	२
२	१	१	१
२	१	२	२
२	१	२	१
२	२	१	१
२	२	१	२
२	२	२	१
२	२	२	२

॥ टीका ॥

मायालोभेषु, तथैवा न्ये ष्टौ मानमायालोभेष्विति द्वात्रिंशत्, चतुष्कयोगे षोडश' तथाहि–क्रोधादि ष्वेकत्वे नैको, लोभस्य बहुत्वेन द्वितीय, एवमेतौ मायैकत्वेन, तथा न्यौ मायाबहुत्वेन, एवमेते चत्वारो मानै कत्वेन, तथा न्ये चत्वारएव मानबहुत्वेन, एवमेते अष्टौ क्रोधैकत्वेन, एव मन्येऽष्टौ क्रोधबहुत्वेनेति षोडश, एवमेते सर्व एवा शीतिरिति, एते च जघन्यस्थिता वेकादिसङ्ख्यातान्तसमयाधिकाया म्भवति, असङ्ख्यातसम याधिकायास्तु जघन्यस्थिते रारभ्योत्कृष्टस्थितिं याव त्सप्तविंशति र्भङ्गा, स्तएव तत्र नारकाणा बहुत्वादिति, अथा वगाहनाद्वार', तत्र॥ उगाह णठाणत्ति॥ अवगाहन्ते आसते यस्यां सा वगाहना तनु, स्तदाधारभूत वा ; क्षेत्र तस्या. स्थानानि प्रदेशवृध्या विभागा अवगाहनास्थानानि, तत्र ॥ जहण्णियत्ति॥ जघन्यागुलासङ्ख्येयभागमात्रा सर्वनरकेषु ॥ तप्पाउग्गुक्कोसि यत्ति ॥ तस्य विवक्षितनरकस्य प्रायोग्या या उत्कर्षिका सा तत्प्रायो

॥ मूल ॥

सि नेरइयाणं केवइयाउगाहणठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जाउगाहणाठाणा प० तं० जहण्णियाउगाहणा

॥ भाषा ॥

ठाणापणत्ता तजहा। हेगौतम। असख्याता अवगाहना स्थानक आवासकह्या तकहेछे। जहण्णियाउग्गाहणाअंगुलस्सअसखेज्जइभाग। जघन्य अवगा हना अगुलनें असख्यातमें भागे सगलेई नरकेछे। पएसाहियाजहण्णियाउग्गाहणा। ते एकप्रदेशअधिक जघन्य अवगाहना स्थानक। दुपदेसियाजहण्णि याउग्गाहणा। बेप्रदेशे अधिक जघन्य अवगाहनास्थानक। जाव असखेज्जपदेसियाजहण्णियाउग्गाहणा। यावत् असख्यात प्रदेशाधिक जघन्य अवगा

ग्योत्कर्षिका, यथा—त्रयोदशप्रस्तटे धनुःसप्तकं रत्नित्रय मङ्गुलषट्कञ्चेति ॥ जहन्नियाएइत्यादि ॥ जघन्यायां तस्यामेव चैकादिसङ्ख्यातान्तप्रदेशाधिका या मवगाहनाया वर्त्तमानाना नारकाणा मल्पत्वा त्क्रोधाद्युपयुक्त एकोपि लभ्यते तो शीतिर्भङ्गा ॥ असखेज्जपएसेत्यादि ॥ असङ्ख्यातप्रदेशाधिका या तत्प्रायोग्योत्कृष्टायाञ्च नारकाणा बहुत्वा त्तेषुच बहूना क्रोधोपयुक्तत्वेन क्रोधेबहुवचनस्य भावा न्मानादिषु त्वेकत्वबहुत्वसम्भवा त्सप्तविंशति भङ्गाभवन्तीति, ननु येजघन्यस्थितयो जघन्यावगाहनाश्च भवन्ति तेषा जघन्यस्थितिकत्वेन सप्तविंशति भङ्गका प्राप्नुवन्ति, जघन्यावगाहकत्वेन

अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, जहन्नियाओगाहणाएगपदेसाहिया, जहन्नियाओगाहणादुपदेसाहिया, जहन्निया ओगाहणा जाव असंखेज्जपदेसाहिया, जहन्नियाओगाहणा तप्पाउग्गुक्कोसिया उग्गाहणा। इमीसेणं भंते!

हनास्थानक। तप्पाउग्गुक्कोसियाउग्गाहणा। जेविचागा नरकावास तेयाग्य उत्कृष्टो अवगाहना जुदीजुदी जाणवी जिम पहले नरके उत्कृष्टी अवगाहना तेरमें पाथडे सातधनुष तीनहाथ छआगुल। इमीसेणंभतेरयणप्पभाएपुढवीए। एहीज हेभगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु। त्रीसलाख नरकावासानेविषे। एगमेगंसिनिरयावासंसि। एकेका नरकावासानेविषे। जहन्नियाउग्गाहणाएवट्टमाणाणेरइयाकिंकोहोवउत्ता असीतिभगाभाणियव्वा जावसखेज्जपदेसाहिया जहन्नियाउग्गाहणा असखेज्जपदेसाहियाए जहन्नियाउग्गाहणाए तप्पाउग्गुक्कोसियाउग्गाहणाएवट्टमाणाणेरइयाणदोसुविसत्तावीसभगा। जघन्य अवगाहनाये वर्त्तमान नारकी स्यूं क्रोधवंत घणाहुवे? इतिप्रश्न उत्तर जघन्य अवगाहनानें विषे तथा यावत् एकादि सख्यातप्रदेशाधिक पर्यंत जघन्यअवगाहनानेविषे वर्त्तमान नारकीना जीव थोडा पणि पामीये तेमाटे क्रोधवत एक पणि पामें तेमाटे असीभागा हुवे यावत् सख्यातप्रदेशाधिक जघन्यअवगाहनास्थान असख्यात प्रदेशाधिक अवगाहनानेविषे वर्त्तमानने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अवगाहनानेविषे वर्त्तमान नारकनो बहुलछे तेमाटेनारकीनेविषे घणाक्रोधवत पामीये क्रोधनेविषे बहुवचननोज सभवछे तेमाटे सत्तावीस भागाहुवे इहांकोइ एकपूछस्ये जेजघन्यस्थितिना नारकीजघन्य अवगाहनाये हुवे तेहने जघन्यस्थितिपणे सत्तावीसभागा पामें अने जघन्यपणे करी असीभागाकह्या इहा विरोधकिमति

षा शीति रिति विरोधः ? अत्रोच्यते, जघन्यस्थितिकानामपि जघन्यावगाहनाकाले ऽशीतिरेव, उत्पत्तिकालभावित्वेन जघन्यावगाहनाना मल्प त्वादिति, याच जघन्यस्थितिकानां सप्तविंशतिः सा जघन्यावगाहनत्व मतिक्रान्ताना मितिभावनीय, शरीरद्वारे ॥ सत्तावीसभंगत्ति ॥ अनेन यद्य पि वैक्रियशरीरे सप्तविंशति र्भङ्गका उक्ता, स्तथापि या स्थित्याश्रया ऽवगाहनाश्रयाच भङ्गकप्ररूपणा सा तथैव दृश्या, निरवकाशत्वा त्तस्या,

रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाओगाहणाएवट्ट माणा नेरइया किंकोहोवउत्ता असीइभंगा भाणियव्वा, जाव सखेज्जपदेसाहिया, जहन्नियाओगाहणा, असंखेज्जपएसाहियाए जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं तप्पाउग्गुक्कोसियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं ने रइयाण दोसुवि सत्तावीस भंगा। इमीसेण भंते! रयणप्पभाए जाव एगमेगंसिनिरयावासंसि नेरइयाणं कइसरीरया पन्नत्ता? गोयमा! तिन्निसरीरया पन्नत्ता तंजहा—वेउव्विए तेयए कम्मए। इमीसेणं भंते! जाव वेउव्वियसरीरे वट्टमाणानेरइया किंकोहोवउत्ता सत्तावीस भंगा; एएणंगमेणं तिन्निसरीरया भा

हा उतर जघन्यस्थितिना नारकीने पणि जघन्यअवगाहना कालनेविषे अशीहोजभागा हुवे, उत्पत्तिकाल भाविपणेकरी जघन्य अवगाहनापणि थो डो हुवेछे, जेजघन्यस्थितिने सत्तावीसभागा कह्या जेजघन्य अवगाहना अतिक्रांतने हुवे इसी भावना करवी, ए बीजोद्वार कह्यो ॥ हिवे शरीरद्वार कहेछे—इमीसेणभंतेरयणप्पभाएजावएगमेगसिनिरयावाससिणेरइयाणंकइसरीरियापणत्ता गोयमा। एहीज हेभगवन्! रत्नप्रभापृथिवीने विषे त्रीसला ख नरकावासाने एकेका नरकावासानेविषे नारकीना जीवने पचशरीरमाहि केतला शरीरकह्या इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। पाचशरीर माहिला। ति णिसरीरयापणत्ता तजहा। तीन शरीर कह्या अनते केवल ज्ञानीए तेकहेछे—वेउव्विय। वैक्रिय शरीर १। तेयए। तैजस शरीर २। कम्मए। कार्मण शरीर ३। इमीसेणभंतेजाववेउव्वियसरीरेवट्टमाणाणेरइया किंकोहोवउत्तासत्तावीसभगा। वलीगौतमपूछेछे—एहीज रत्नप्रभा पृथिवीने विषे यावत् वैक्रिय

शरीराश्रययायाश्च सावकाशत्वा, देव मन्यत्रापि विमर्शनीयमिति ॥ एएणंगमेणंतिखिसरीरयाज्ञाणियव्वत्ति ॥ वैक्रियशरीरसूत्रपाठेन त्रीणि शरीरका
णि वैक्रियतैजसकार्मणानि ज्ञणितव्यानि, त्रिधपिन्नङ्कसप्तविंशति र्वाच्येत्यर्थः, ननु विग्रहगतौ केवले ये तैजसकार्म्मणशरीरे स्यातां तयो रल्पत्वेना
शीति रपि ज्ञङ्कानासम्भवतीति कथमुच्यते तयोः सप्तविंशतिरेवे ? त्यत्रोच्यते, सत्य मेत त्केवलं वैक्रियशरीरानुगतयो स्तयो रिहाश्रयण केवलयो
श्चा नाश्रयणमिति, सप्तविंशतिरेवेति, यच्च द्वयोरेवा तिदेश्यत्वे त्रीणीत्युक्तं, तत्त्रयाणामपि गमस्या त्यन्तसाम्योपदर्शनार्थमिति, सहननद्वारे ॥
छण्हं सघयणाण असंघयणित्ति ॥ पसा सहननानां वज्रऋषजनाराचादीना मध्या देकतरेणापि सहननेना सहननानीति, कस्मादेव मित्यनआह ॥

णियव्वा । इमीसेण ज्ञंते ! रयणप्पज्ञाए जाव नेरइयाणं सरीरया किंसंघयणा पसत्ता ? गोयमा ! छण्हसं
घयणाणं ञ्चसंघयणी, नेवठीनेवछिरानेवरहारुणि, जेपोग्गला ञ्चणिठा ञ्चकंता ञ्चप्पिया ञ्चसुहा ञ्चम
णुस्सा ञ्चमणामा, एएसिंसरीरसंघायत्ताएपरिणमंति । इमीसेणं ज्ञंते ! जाव छण्हं संघयणाणं ञ्चसंघयणे व

शरीरे वर्त्तमान नारको स्यू क्रोध सहित घणा हुवे ? इहा सत्तावीस भागा जपजे इहा यद्यपि वैक्रियशरीरने विषे सत्तावीस भागा कह्या तथा जि
कास्थिति आयो अवगाहना आयो भांगानी प्ररूपणाकही तिका तिमहीज कहवी, बीजू किहाईं तेहनो अवकाशनहीं अनेशरीरा श्रयात सावकाशछे
इम सगले विमासी युक्ति कहवी। एएणंगमेणतिखिसरीरयाभाणियव्वा। इणे प्रकारे वैक्रिय तैजस कार्मण तीनशरीर कहवा, तीनांहूरे विषे सत्तावीसभा
गा कहवा, इहा कोइक पूछस्ये विग्रहगतिनेविषे केवल जे तैजस कार्मणशरीरछे जेहोने अल्पपणकरी अशोभागा संभवै तो तैजस कार्मणशरीरने विषे
सत्तावीसहीजभागा किमकह्या इहा उत्तर तुह्मेकह्यो तेमाचो, पणि इहा केवल वैक्रियशरीरानुगत तैजसकार्मणशरीर आश्रीकह्याछे, अनै केवल तैजस
कार्मण शरीरनो इहा अनाश्रयणछे तेमाटे सत्तावीसहीज भागाकह्या ॥ हिवे चोथासघयणदारकहेछे—इमीसेणंभंतेजावणेरइयाणसरीरयाकिसंघयणा
पणाता। एहोजरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे हेभगवन्। यावत् नारकोना शरीर स्यें संघयणेकह्या इतिप्रश्न उत्तरं हेगौतम! वज्रऋषभ नाराच आदिदेई छ

॥ टीका ॥

नेवठीत्यादि ॥ नैवा स्थ्यादीनि तेषासन्ति, अस्थिसञ्चयरूपञ्च संहनन मुच्यतइति ॥ अणिठत्ति ॥ इष्यन्ते स्मेनीष्टा स्तन्निषेधा दनिष्टा, अनिष्टम पि किञ्चि त्कमनीय न्नवतीत्यतउच्यते' अकान्ता, अकातमपि किञ्चित्कारणवशा त्प्रीतये न्नवतीत्याह [ग्रन्थ २०००] अप्रिया अप्रीतिहेतवो, ऽप्रिय त्व तेषा कुतो यत ॥ असुन्नत्ति ॥ अशुन्नस्वन्नावा' स्तेव सामान्याअपि न्नवन्ती त्यतो विशेष्यन्ते ॥ अमणुन्नत्ति ॥ न मनसान्त सवेदनेन शुन्नतया ज्ञायन्त इत्यमनोज्ञा, अमनोज्ञता चैकदापि स्या दतआह ॥ अमणामत्ति ॥ न मनसा अम्यन्ते गम्यन्ते पुन पुन स्मरणतो ये ते ऽमनोमा, एका र्थिका श्चैते शब्दा अनिष्टताप्रकर्षप्रतिपादनार्थाइति ॥ सघायत्ताएत्ति ॥ संहाततया शरीररूपसञ्चयतयेत्यर्थ , सस्थानद्वारे ॥ किसठियत्ति ॥ कि सस्थित सस्थान येषा त्तानि किसंस्थितानि ॥ न्नवधारणिज्जत्ति ॥ न्नवधारण निजजन्मातिवाहनप्रयोजन येषा त्तानि न्नवधारणीया न्याजन्मधर णीयानीत्यर्थ ॥ उत्तरविउव्वियत्ति ॥ पूर्ववैक्रियापेक्षया उत्तराणि उत्तरकालन्नावीनि वैक्रियाणि उत्तरवैक्रियाणि ॥हुनसठियत्ति॥ सर्वत्राशुन्न सस्थि

॥ मूल ॥

इमाणाणं नेरइया किंकोहोवउत्ता सत्तावीसन्नंगा । इमीसेणं न्नंते ! जाव सरीरया किंसठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तंजहा—न्नवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय, तत्थणंजेतेन्नवधारणिज्जा तेहुंडसंठि

॥ भाषा ॥

सघयणके हाडनो सचयरूप तेसघयण कहीये । गोयमा छण्हसघयणाणअसघयणीणेवट्ठीणेवछिरा । ते सघयणछहूमाहिलो कोई सघयणनहीं तेमा टे असघयणी नारको कहीये स्याथकी तेकहेछे—नारकोने हाडनहीं नाडीनही । णेवण्हारूणि । नसाजाल नहीं । जे पोग्गलाअणिट्ठा । जेपुद्गल वाछ्या जेहनी नकीजे ते अनिष्ट कहीये । अकता । महाकुरूप । अप्पिया । अप्रीतिना कारण अलखामणा । असुहा । जेदीठा थका रीसऊपजे । अम णुण्णा । मनेहीकरी तेहीने शुभन जाणिये । अमणामा एएसिमरोरसंघायत्ताएपरिणमति । हूस वणीकरे पणिएकोपूरोघायनहीं, एहीने दुखभोगवता माटे असघयणीछे पणि जाणियेछे सघयणके एहवा दीसेछे इतिभाव । इमोसेणभते जावछण्हसघयणाण । एह हेभगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीने विषे या वत् छ्रसघयणेकरो वर्त्तमान । असघयणेइमाणाणेरइयाकिकोहोवउत्तासत्तावीसभगा । ऊपसघयणेकरी असघयण जेनारकी ते स्यूं क्रोधयुक्तछे ? इहा

तानि, दृष्टिद्वारे ॥ सम्मामिच्छादंसणेअसीइभंगत्ति ॥ मिश्रदृष्टीना मल्पत्वा तद्भावस्यापिच कालतो ऽल्पत्वा देकोपि लभ्यत इत्यशीति र्भङ्गा, ज्ञानद्वारे ॥ तिणिणाणाइंनियमत्ति ॥ ये ससम्यक्त्वा नरके पूत्पद्यन्ते तेषा मप्रथमसमया दारभ्य भवप्रत्ययस्या वधिज्ञानस्य भावा त्त्रिज्ञानिनएव ते येतु मिथ्यादृष्टय स्ते सञ्ज्ञिभ्यो ऽसञ्ज्ञिभ्य श्चोत्पद्यन्ते, तत्र ये सञ्ज्ञिभ्य स्ते भवप्रत्ययादेव विभङ्गस्य भावा दज्ञानिनो, ये त्वसञ्ज्ञिभ्य स्तेषा माद्या

इमीसेणं जाव हुंडसठाणे वट्टमाणा नेरइया किंकोहोवउत्ता ! सत्तावीसंभंगा । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा सत्तावीसं या पण्णत्ता, तत्यजेतेउत्तरवेउव्विया तेविहुंडसठिया पण्णत्ता । इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं कइलेस्साउ प० ? गोयमा ! एगाकाउलेस्सा पण्णत्ता ।

हिवे सस्थान द्वार पाचमो कहेछे—इमोसेणभतेजावसरीरयाकिसठिया पण्णत्ता । एहीज रत्नप्रभा पृथिवीने ह भगवन् । शरीर स्युं संस्थानें आकारें कह्यो इतिप्रश्न । गोयमा दुविहा पण्णत्ता तजहा । हेगौतम । नारकीनें बेप्रकारना शरीरकह्या तिकहेछे—भव धारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय । भवधारणीय शरीर ते जन्मताई धारवा योग्यते, पूठिला वैक्रियनी अपेचायें आगिलेकाले थाय ते उत्तर वैक्रिय कहीये तत्यणजेतेभवधारणिज्जा । तिहा ण वाक्यालकारे भवधारणीय उत्तर वैक्रियशरीर बेमाहे जेभवधारणीयशरीरवत । तेहुडसठियापण्णत्ता । तेहुड सस्थाने छठे सस्थानेकह्या । तत्यणंजेतेउत्तरवेउव्विया तेहुडसठिया पण्णत्ता । तिहा बेभेद माहे जे उत्तर वैक्रियवत तेपणि हुडसस्थानवतहोय नारकीनो सगले विरुयो ज सस्थान कह्यो, वलोगौतम पूछेछे—इमोसेणभतेजावहुडसठाणेवट्टमाणाणेरइयाकिकोहोवउत्तासत्तावीसभगा । एहीजरत्नप्रभापृथिवीनेविषे हेभगवन् । यावत् हुडसस्थाने वर्त्तमान नारकी स्यूं क्रोधकरी सहितछे ? सत्तावीसभागाहुवे ॥ हिवे लेश्याद्वारछठोकहेछे—इमोसेणभतेरयणप्पभाएपुढवीएणेर इयाणकइलेस्साओ पण्णत्ताओ । एहीज हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे नारकीने केतली लेश्या कही, छलेश्यामाहिलो जिणकरी कर्मकरी आलि गीये तेलेश्याकहीये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगाकाउलेस्सा पण्णत्ता । हेगौतम । रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे एक कापोतलेश्याकही वलीगौतम पूछेछे—

॥ टीका ॥

दन्तर्मुहूर्त्ता त्परतो विग्रहस्यो त्पत्तिरिति' तेषां पूर्व मज्ञानद्वयं पश्चा द्विभङ्गोत्पत्ता वज्ञानत्रय मित्यत उच्यते ॥ तिण्णिअणाणाइंभयणाएत्ति ॥ भजन या विकल्पनया कदाचि द्वे कदाचि त्रीणी त्यर्थ' अत्रार्थे गाथे स्याता र्-सण्णीणेरइयस्सु उरलपरिच्चायणंतरेसमए । विब्भंगऽज्झिवा णविग्गहेविग्गहे लहइ ॥ १ ॥ असण्णीनरएसु पज्जत्तोजेणलहइविब्भंग । णाणातिन्निवतंउ अण्णाणादोन्नितिन्निव ॥ २ ॥ एव ॥ तिण्णिणाणेत्यादि ॥ आभिनिबोधिकज्ञा नव त्सप्तविंशतिभङ्गकोपेतानि आद्यानि त्रीणि ज्ञाना न्यज्ञानानिवेति, इहच त्रीणि ज्ञानानीति यदुक्तं, त दाभिनिबोधिकस्य पुन र्गणनेना, न्य

॥ मूल ॥

भंगा । इमीसेणं भंते ! जाव किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी ? गोयमा ! तिण्णिवि । इमीसेणं जाव सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया सत्तावीसंभंगा, एवंमिच्छदंसणेवि, सम्मामिच्छदंणे असीइभंगा । इमी सेणं जाव किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नाणीवि , अन्नाणीवि , तिण्णिनाणाइं नियमातिण्णिअन्नाणाइं

॥ भाषा ॥

इमीसेणंभंतेजावकाउलेस्साएवट्टमाणासत्तावीसभंगा । एह हेभगवन् । रत्नप्रभापृथिवीनेविषे कापोत लेस्यानेविषे वर्त्तमान नारकी स्यूं क्रोधयुक्त हुवे इतिप्रश्न उत्तरं इहापणि सत्तावीस भांगाहुवे एलेस्या द्वार छठो ॥ हिवेदृष्टि द्वारकहेछे— इमीसेणभंतेजावकिंसम्मदिट्ठीमिच्छादिट्ठी । एह हेभगवन् । र त्नप्रभा पृथिवीनेविषे वर्त्तमान नारकी स्यूंसम्यग्दृष्टीहुवे ? अथवा मिथ्यादृष्टी हुवे अथवा । सम्मामिच्छदिट्ठी । सम्यग्मिथ्यादृष्टी हुवे, इतिप्रश्न । गोयमाति ण्णिवि । हेगौतम । तीनेंई दृष्टी हुवे सम्यग्दृष्टिआदिदेई, वलीगौतम पूछेछे—इमीसेणजाव । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे यावत् । सम्मदंसणवट्टमाणाणेरइ यासत्तावीसभंगा । सम्यग्दर्शने वर्त्तमान नारकी स्यूंक्रोधवंत हुवे इतिप्रश्न उत्तर पूर्वली गीते सत्तावीसभांगाजाय सम्यग्दृष्टीना निरतर पणाथी । एवं मिच्छदंसणेवि । इम मिथ्यादृष्टीनेविषे पणि निरतरथी सत्तावीसभांगा हुवे । सम्मामिच्छदंसणेअसीतिभंगा । तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टी एतले मिश्रदृष्टिने विषे असीभांगा कहवा, मिश्रदृष्टी नारकी थोडाछे मिश्रभावनो कालपणि अल्पछे तेमाटे दृष्टीद्वार सातमो ॥ हिवेज्ञानद्वार आठमो कहेछे—इमीसेणभं तेजावकिंणाणी अण्णाणी । एह रत्नप्रभापृथिवीनेविषे हेभगवन् । यावत् नारकी स्यूं ज्ञानीछे ? अथवा अज्ञानीछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणीवि अ

॥ टीका ॥

था द्वेएव ते वाच्ये स्यातामिति ॥ तिन्निअन्नाणाइं ॥ इत्यत्र यदि मत्यज्ञानश्रुताज्ञाने विभङ्गात्पूर्वकालभाविनी विवक्ष्येते, तदा अशीतिर्भङ्गालभ्यन्तेऽत्र ल्पत्वा त्तेषा, किन्तु जघन्यावगाहना स्ते, ततोजघन्यावगाहनाश्रयेणैवा शीतिर्भङ्गका स्तेषा मवसेयाइति, योगद्वारे ॥ एवकायजोएत्ति ॥ इह यद्यपि केवलकार्म्मणकाययोगे ऽशीतिर्भङ्गाः सम्भवन्ति, तथापि तस्या विवक्षणा त्सामान्यकाययोगाश्रयणाच्च सप्तविंशति रुक्तेति, उपयोगद्वारे ॥ साग

॥ मूल ॥

भयणाए । इमीसेणंभंते ! जाव आभिणिबोहियणाणे वट्टमाणे ? गोयमा ! सत्तावीसं भंगा , एवंतिण्णि णाणाइं तिण्णिअन्नाणाइं भाणियव्वाइं । इमीसेणं जाव किंमणजोगी वयजोगी कायजोगी ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

णाणोवि । हेगौतम । ज्ञानापणिछे अज्ञाना पणिछे । तिण्णिणाणाइं णियमा । जे सम्यक्ती नरकने विषे ऊपजे तिणने प्रथम समयथी आरंभीकरी भवप्रत्यय अवधिज्ञानहोय तेमाटे तीनज्ञान नियमेंकह्या । तिण्णिअन्नाणाइं भयणाए । तथा तीन अज्ञाननी भजना ते कदाचित् दोय कदाचित् तीन, तेकिम मिथ्यादृष्टी एक संज्ञी ऊपजे एक असंज्ञी ऊपजे जे संज्ञीथा ऊपजे तेहने प्रथमसमयथी आरभीकरी विभंगसेती तीन अज्ञानहोय भवप्रत्ययथी, अनेजे असंज्ञीथो ऊपजे तेहने अन्तर्मुहूर्त्तथी परें विभंगज्ञाननी उत्पत्तिहोय, तेमाटे तेहने पूर्वेबेअज्ञान हता पछे विभगज्ञान ऊपनो एभजना जाणवी । इमीसएभंतेजावआभिणिबोहियणाणेवट्टमाणासत्तावीसभंगा । एह रत्नना पृथिवीनेविषे हेभगवन् । यावत् आभिनिबोधिक ज्ञाननेविषे वर्त्तमान नारकीस्य क्रोधवंतहोय इतिप्रश्न, इहांपणि सत्तावीसभांगा हुवे । एवंतिण्णिणाणाइं । इम आभिनिबोधिक ज्ञाननीपरे तीनज्ञान तीनअज्ञान कहवा, इहां तीन ज्ञान इसूंकह्यू ते अभिनिबोधिकज्ञान फेरो गण्यू अन्यथा बेहोज कहवा। तिण्णिअन्नाणाइं भाणियव्वाइं । इहांजो मति अज्ञान श्रुत अज्ञान एबेइ विभंगनथी पूर्वकाले भावना विवचाकाजै तो अशीभागा पामीये तेहना अल्पपणाथकी, किन्तु ते जघन्य अवगाहनाछे अने जघन्य अवगाहना आश्रीज अशीभागा जाणवा, द्वार ८ । इमीसेण जावकिमणजोगी वयजोगी कायजोगी । एह रत्नप्रभापृथिवीने विषे नारकी यावत् स्यूंमनयोगीछे, वचनयोगीछे, काययोगीछे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा तिण्णिवि । हेगौतम । तीनेइ एतले मनोयोगी पणिछे, वचनयोगीपणिछे, काययोगीपणिछे । इमीसेण जाव मण

॥ टीका ॥

रोवउत्तत्ति ॥ आकारो विशेषांशग्रहणशक्ति, स्तेन सहेति साकार, स्तद्विकलो ऽनाकार, सामान्यग्राही त्यर्थ ॥ णाणातलेसासुत्ति ॥ रत्नप्रभापृथिवीप्रकरणव च्छेषपृथिवीप्रकरणा न्यध्येयानि, केवल लेश्यासु विशेष स्तासा स्भिन्नत्वा दतएव तद्दर्शनाय गाथा॥काओइत्यादि॥ तत्र॥ तइयाए

॥ मूल ॥

तिसुवि । इमीसेणं जाव मणजोए वट्टमाणा सत्तावीसंभंगा, एवं कायजोए । इमीसेणं जाव नेरइया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि । इमीसेणं जाव सागारोवउत्ते वट्टमाणा सत्तावीसभंगा, एवं अणागारोवउत्तेवि सत्तावीसभंगा, एवं सत्तविपुढवीओनेय

॥ भाषा ॥

जाए वट्टमाणा सत्तावीसभंगा एवं वयजोए कायजोए । एह रत्नप्रभापृथिवीनेविषे यावत् मनोयोग वर्त्तमान नारकी स्यूं युक्तहुवे इतिप्रश्न, उत्तर हेगौतम । सत्तावीस भांगा हुवे, इम वचनयोगे पणिसत्तावीसभागा, इमकाययोगे पणि सत्तावीसभागा, इहां यद्यपि केवल कार्मण काययोगे असीभागाहुवे, तोपणि तेहनी विवचा नकीधी सामान्य काययोग आश्रयीने सत्तावीसभांगा कह्याछे—द्वार ९ ॥ हिवे उपयोग द्वार १० मो कहेछे—इमीसेणं जाव णेरइयाकिसागारोवउत्ता । एह रत्नप्रभापृथिवीनेविषे यावत् नारकी स्यूं आकार कहता विशेषार्थ ग्रहणशक्ति तिणे सहित ते सागार एतले ज्ञानोपयोग कहीये तथा । अणागारोवउत्ता । अनाकार ते सामान्यार्थ ग्राही ते दर्शनोपयोग कहीये तेमाटे तेनारकी ज्ञानोपयोगीछे किंवा दर्शनोपयोगीछे, इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा सागारोवउत्तावि । हे गौतम । साकारोपयुक्तपणिछे, एतले विशेषार्थग्राही ज्ञान तेणे सहितपणिछे । अणागारोवउत्तावि । अनाकारोपयुक्त पणिछे, सामान्यार्थग्राही दर्शन ते सहितपणिछे, वली गौतमपूछेछे—इमीसेणजावसागारोवउत्तेवट्टमाणासत्तावीसभंगा । एह रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे नारकी यावत् साकारोपयोगे वर्त्तमान स्यूं क्रोधेकरीसहितहुवे, इतिप्रश्न, उत्तर हे गौतम । सत्तावीस भागाहुवे । एवं अणागारोवउत्तेविसत्तावीसंभगा । इम अनाकारोपयुक्त पणि सत्तावीस भागाहुवे, तेकहेछे—द्वार १० । स्थिति आदिदेई दशद्वार रत्नप्रभायें कह्या । एवं सत्तविपुढवीओ णेयव्वाओ णाणत्त लेसासु । इम रत्नप्रभा पृथिवीप्रकरणनीपरे सातेई पृथिवीनेविषे दश दशद्वार जाणवा कहवा, निष्केवल लेश्यानेविषे विशेष

मीसियत्ति ॥ वालुक प्रज्ञाप्रकरणे उपरितननरकेषु कापोती अधस्तनेषु नीली भवतीति, ते यथासम्भव मश्नसूत्रे उत्तरसूत्रेचा ध्येतव्ये इत्यर्थ·, यद्य सूत्राभिलापेषु नरकावाससङ्ख्यानानात्व, तत् ॥ तीसायपन्नवीसाइत्यादिना ॥ पूर्वप्रदर्शितेन समवसेयमिति, एवञ्च सूत्राभिलाप कार्य – स क्करप्पभाएणंभंते। पुढवीए पणवीसाए नरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि कइलेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता, सक्करप्पभाएण भंते ! जाव काउलेसाए वट्टमाणा नेरइयाकिंकोहोवउत्ता ? इत्यादि ॥ जाव सत्तावीसभंगा ॥ एव सर्वपृथिवीषु गाथानुसारेण वा

व्वाउ , णाणत्तंलेसासु ॥ गाहा ॥ काउयदोसुतइयाइ मीसियानीलियाचउत्थीए । पंचमियाएमीसा कराहात त्तोपरमकराहा ॥ १ ॥ चउसठीएणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगसिअसुरकुमारावासंसि असु रकुमाराणं केवइयाठिइठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तजहा—जहरिणयाठिई जहा

ते जुदीजुदीछे, तेमाटे गाथाये देखाडेछे—काउयदोसुतईयाए मीसियाणीलियाचउत्थीए पचमियाएमीसा कण्हातत्तोपरमकण्हा ॥ १ ॥ कापोत लेश्या पहिली बीजी पृथिवीनेविषे हुवे, तीजी वालुकप्रभाने ऊपरिले पाथडे कापोतलेश्या हुवे, नीचले पाथडे नीललेश्या हुवे, ते यथासभवे प्रश्नसूत्र कहवा, चौथीनेविषे एकलो नीललेश्या हुवे, पंचमीने विषे नीलकृष्ण मिश्र, छठीरेविषे एकलो कृष्णलेश्याहुवे, सातमीनेविषे परमकृष्णलेश्या हुवे, ए नारकीनो अधिकार कह्यो ॥ हिवे अनुक्रमथी भवनपतीनो अधिकार कहेछे—चउसठीएणभंते असुरकुमारावाससयसहस्सेसु । चउसठ हे भगवन् ! असुरकुमारना आवास लाखनेविषे । एगमेगंसि असुरकुमारावाससि । एकेका असुरकुमारना आवासनेंविषे । असुरकुमाराणंकेवइयाठिइठाणा पण्णत्ता । असुरकुमारने णवाक्यालंकारे केतला स्थितिस्थान आउखाना विभाग कह्या, इतिप्रश्न । गोयमा असखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तजहा जहरिणयाठिईजहाणेरइयातहा । हे गौतम ! असख्याता स्थितिस्थान कह्या तेकहेछे—जघन्यस्थिति इत्यादि जिम नारकीकह्या तिम असुरकुमार पणिकहवा, । णवरपडिलोमाभगाभाणियव्वा । एतलोविशेष प्रतिलोम कहता उपराठा भागा कहवा, ते किम नारक प्रकरणनें विषे क्रोधमानादि अनुक्रमे भागा भागानो निर्दे

॥ टीका ॥

व्य' असुरकुमारप्रकरणे ॥ पडिलोमभंगत्ति ॥ नारकप्रकरणेहि क्रोधमानादिना क्रमेण भङ्गकनिर्द्देश कृतो, ऽसुरकुमारादिप्रकरणेषु लोभमायादिना सौकार्यइत्यर्थोऽतएवाह ॥ सव्वेवितावहोज्जलोहोवउत्तत्ति ॥ देवाहि प्रायोलोभवन्तोभवति, तेन सर्वेप्यसुरकुमारा लोभोपयुक्ता' स्यु', द्विकसयोगेतु लोभोपयुक्तत्वे बहुवचनमेव, मायोपयोगे त्वेकत्वबहुत्वाभ्यान्द्वौभङ्गका, वेव सप्तविंशति र्भङ्गका कार्या ॥ णवरणाणत्तजाणियव्वंति ॥ नारकाणा मसुरकुमारादीनाञ्च परस्पर नानात्व ज्ञात्वा प्रश्नसूत्रा ण्युत्तरसूत्राणि चाध्येयानीति हृदय' तत्र नारकाणा मसुरादीनाञ्च सहननसस्थानलेश्यासू त्रेषु भवति, तच्चैव – चउसठीएण भंते । असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावाससि असुरकुमाराण सरीरगा किसघयणी ? गोय

॥ मूल ॥

नेरइया तहा, नवर पडिलोमाभंगा भाणियव्वा, सव्वेवितावहोज्जा लोभोवउत्ताय माणोवउत्तेय एए णंगमेणनेयव्वं, जाव थणियकुमारा, नवरं नाणत्तंजाणियव्व, असंखेज्जेसुणं भंते! पुढविकाइयावासस यसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयाणं केवइयाठिइठाणा पन्नत्ता? गोयमा! असंखे

॥ भाषा ॥

यक्रोधी अने असुरकुमारादि देव प्रकरणविषै लोभ माया आदिदेई भागानो निर्देश करवो, तेहीज कहेछे—सव्वेवितावहोज्ज लोभोवउत्ता । देवता प्राय: लोभी घणाछे, तिणेकारणे सगलाई असुरकुमार लोभवतछे, ए असयोगी एकभागा थयो ॥ हिवे द्विकसयोगेभागा ६ हुवे, लोभवत घणाज हुवे तेमाटे लोभे बहुवचनहीज हुवे, । अहवा लोभोवउत्ताय माओवउत्ताय एएणगमेण णेयव्व णवरं णाणत्त जाणियव्वं । मायानेविषै एकवचन तथा बहुवचनथो भागा हुवे, इम सर्व सत्तावीसभागा करवा, एतलो विशेष नारक अने असुरकुमारादिकने माहो माहे नानात्व जाणो प्रश्नसूत्र कहवा, नारको अने असुरकुमारादिकने सघयणसस्थानलेश्यासूत्रनेविषै नानात्वहोय, एविशेषछे तेविचारीने कहवा । जाव थणियकुमारा । यावत् स्तनितकुमार ताई कहवो । असंखेज्जेसुणभंतेपुढवीकाइयावाससयसहस्सेसु ॥ हिवे पृथिवीकायनो अधिकार कहेछे—असंख्याता हेभगवन्! पृथिवीकायिक आवास लक्षने विषै । एगमेगसिपुढविकाइयावाससि । एकेका पृथिवीकायिक आवासने विषै । पुढविकाइयाण केवइयाठिइठाणा पन्नत्ता । पृथिवीकायिकना केतला स्थि

॥ टीका ॥

मा । असंघयणी जेपोग्गला इट्ठा कंता तेतेसिं संघायत्ताएपरिणमंति एव संठाणेवि णवरं भवधारणिज्जासमचउरससंठिया उत्तरवेउव्विया असुयर संठिया एवंलेसासुवि णवरं कइलेसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा । चत्तारि तंजहा कण्हानीलाकाऊतेऊलेसा चउसट्ठीएणं जावकण्हलेसाए वट्टमाणा किंकोहो वउत्ता ? ४ । गोयमा । सव्वेवितावहोज्जलोहोवउत्ताइत्यादि ॥ एवं नीलाकाऊतेऊवि ॥ नागकुमारादिप्रकरणेषु तु—चुलसीएनागकुमारावाससयसहस्सेसु, इत्येवं, चउसट्ठीअसुराणंनागकुमाराणंहोइचुलसीति ॥ इत्यादि वचना त्प्रश्नसूत्रेषु भवनसङ्ख्या नानात्व मवगम्य सूत्राभिलाप कार्यइति ॥ एवंपुढविकाइयाणंसव्वेसुठाणेसुअभंगयंति ॥ पृथिवीकायिका एकैकस्मिन् कषाये उपयुक्ता बहवोलभ्यन्त इत्यभङ्गक दशस्वपि स्थानेषु, नवरं ॥ तेउलेसाएअसीइभंगत्ति ॥ पृथिवीकायिकेषु लेश्याद्वारे तेजोलेश्या वाच्या, साच यदा देवलोका च्च्युतो देव एको नेकोवा, पृथिवीकायिके पूत्पद्य

॥ मूल ॥

ज्जा ठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा—जहण्णियाठिई जाव तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई । असंखेज्जेसुणं भंते! पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि जहण्णठिईए वट्टमाणा पुढविकाइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तावि माणोवउत्तावि मायोवउत्तावि लोहोवउत्तावि , एवं पुढविकाइयाणं सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगयं , नवरं तेउलेस्साए असीइभंगा , एवं आउकाइ

॥ भाषा ॥

तिस्थान कह्या, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा । हे गौतम । असंख्याता स्थितिस्थान कह्या तेकहेछे—जहण्णियाठिई । जघन्य स्थिति । जावतप्पाउग्गुक्कोसियाठिई । यावत् तेयोग्य उत्कृष्ट स्थितिस्थान । असंखेज्जेसुणंभंतेपुढविकाइयावाससयसहस्सेसु । असंख्यातानेविषे हे भगवन् । पृथिवीकायिकावास शतसहस्र लक्षनेविषे । एगमेगंसिपुढविकाइयावासंसि । एकेका पृथवीकाइकावासने विषे । जहण्णठिईएवट्टमाणापुढविकाइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता । जघन्यस्थितिनेविषे वर्त्तमान थका पृथिवीकायिक स्यूं क्रोधवत हुवा मानवत हुवा । मायोवउत्ता । मायासहित हुवा । लोभोवउत्ता । लोभसहित हुवा, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । कोहोवउत्तावि । हे गौतम । क्रोधवतघणाहोय । माणोवउत्तावि । मानवतहो घणाहोय । मायोव

॥ टीका ॥

ते तदा भवति' ततश्च तदेकत्वादि भवना दशीति भङ्गका भवन्तीति, इह पृथिवीकायिकप्रकरणे स्थितिस्थानद्वारं साक्षा लिखितमेवास्ति, शेषा णितु नारकव द्याख्यानि, तत्र च णवर नाणत्तजाणियव्वमित्येतस्या नुवृत्ते नोनात्व मिह प्रश्नत उत्तरत श्चावसेयम्, तच्च शरीरादिषु सप्तसु द्वारे ष्विद – असखेज्जेसुणंभते । पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु जाव पुढविकाइयाणं कइ सरीरा पणत्ता ? गोयमा ! तिन्नि तंजहा उरालिए तेयए कम्मए ॥ एतेषुच ॥ कोहोवउत्तावि माणोवउत्तावीत्यादि ॥ वाच्य, तथा ॥ असखेज्जेसुणं जाव पुढविकाइयाणं सरीरगा कि सघयणीत्यादितथैव, णवरं ॥ पोग्गला मणुणा अमणुसा सरीरसघायत्ताये परिणमति' एव सस्थानद्वारेपि, कितूत्तरे – हुडसठियाएतावदेववाच्य, नतु दुविहा सरीरगा पन्नत्ता तजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियायेत्यादि॥ पृथिवीकायिकाना तदभावा दिति, लेश्याद्वारे पुनरेव वाच्य पुढविकाइयाण भते – कइलेसाउं पन्नत्ताउं ? गोयमा ! चत्तारि तजहा कण्हलेसा जाव तेउलेसा ॥ एतासुच तिसृष भङ्गकमेव, तेजोलेश्याया त्वशीति भङ्गका, एतच्च प्रागेवो क्तमिति, दृष्टिद्वारे इदं वाच्य – असखेजेसु जाव पुढविकाइया कि सम्मद्दिठी मिच्छद्दिठी सम्मामिच्छद्दिठी ? गोयमा ! मिच्छदिठी, शेष तथैव, ज्ञानद्वारेपि तथैव, णवर पुढविकाइयाण भते ! कि नाणी अणाणी ? गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी नियमादुअन्नाणी, योगद्वारेपि तथैव, नवर पुढविकाईयाणं भते ! कि मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! नोमणजोगी नोवइयोगी कायजोगी ॥ एवआउकाइयाविति ॥ पृथिवीकायिकव दप्कायिका अपि वाच्या' स्तेहि दशस्वपि स्थानके षभङ्गका स्तेजोलेश्यायान्त्वा शीतिभङ्गकवन्तो, यत स्तेष्वपि देव उत्पद्यतइति॥

॥ मूल ॥

याचि, तेउकाइया वाउकाइयाण सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगयं, वणफ्फइकाइया जहा पुढविकाइया, वेइं

॥ भाषा ॥

उत्तावि। मायावंतहो घणाहोय। लोभोवउत्तावि। लोभवतहो घणा होय। एवपुढविकाइयाणसव्वेसुविठाणेसुअभगय। इम पृथिवीकायिक सर्व स्थानकनेविषे अभंगकछे, स्यामाटे पृथिवीकायिक एकेक कषायसहित घणा पामीये तेमाटे दशेई स्थानकनेविषे अभगकहवे। णवरतेउलेसाएअसीइभगा तलोविशेष तेजोलेश्यानेविषे अशीभांगा कहवा, पृथिवीकायिकनेविषे लेश्याद्वारे तेजोलेश्या कहवी, तिको जो देवगतियी चवी दे्वता एक अथवा अ

॥ टीका ॥

याश्च, तत्रैयच सङ्ख्येयान्तप्रदेशवृद्धायां ३ मिश्रदृष्टौ ४ च नारकाणा मशीति र्भङ्गका उक्ता, विकलेन्द्रियाणा मप्येतेषु स्थानेषु मिश्रदृष्टि वर्जे ष्वशीति रेवाल्पत्वा त्तेषा मेकैकस्यापि क्रोधाद्युपयुक्तस्य सम्भवात्' मिश्रदृष्टिस्तु विकलेन्द्रिये ष्वेकेन्द्रियेषुच न भवतीति न विकलेन्द्रियाणा न्तत्रा शीति भङ्गकसम्भवइति, वृद्धै स्त्विह सूत्रे कुतोपि वाचनाविशेषात् यत्राशीति स्तत्रा प्यभङ्गकमितिव्याख्यात, इहैव विशेषाभिधानायाह ॥ नवरमि त्यादि ॥ अयमर्थः' दृष्टिद्वारे ज्ञानद्वारेच नारकाणा सप्तविंशति रुक्ता, विकलेन्द्रियाणान्तु ॥ अब्भहियत्ति ॥ अभ्यधिकाऽन्यशीति र्भङ्गकाना भवति, क्वेत्याह, सम्यक्त्वे अल्पीयसाहि विकलेन्द्रियाणा सास्वादनभावेन सम्यक्त्व भवति, अल्पत्वाच्च तेषा मेकत्वस्यापि सम्भवेनाशीतिर्भङ्गकाना भवत्ये व माभिनिबोधिके श्रुतेचेति, तथा ॥ जेहीत्यादि ॥ येषु स्थानेषु नैरयिकाणा सप्तविंशति र्भङ्गा, स्तेषु स्थानेषु द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणा भङ्गकाभाव

॥ मूल ॥

यासम्मत्ते आभिणिबोहियनाणेसुयनाणे एएहिंअसीइभगा, जेहिठाणेहिं नेरइयाणं सत्तावीसं भगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभगयं, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहाभाणियव्वा, नवरं जहिंसत्तावीस भगा,

॥ भाषा ॥

तहा नारकीने एकादि सख्यातात समयाधिक जघन्यस्थितिनेविषे एक तथा जघन्य अवगाहनानेविषे दोय तथा सख्येयात प्रदेशवृद्धि जघन्ये प्रवगाहनाने विषे तीन, मिश्रदृष्टिनेविषे चार, असीभागा कह्या, तेविकलेंद्रीने पणि ए मिश्रदृष्टि वर्जितस्थानकनेविषे असीभागाजथाय, तेहना अल्पपणा थकी ते हनेविषे एकेकनो पणि क्रोधादिसहितनो सभवछे, अने मिश्रदृष्टिनो विकलेंद्रिय तथा एकेंद्रियनेविषे नहुवे। णवरं अब्भहियासम्मत्ते। एतलो विशेष दृष्टि द्वारे तथा ज्ञानद्वारें नारकीने सत्तावीसभागाकह्या, तिहा विकलेंद्रीने अधिका एतले असीभांगा, तेकिम विकलेंद्रीने सम्यक्तसासादनभावे हुवे ते अपर्या प्ता लगेरहै पणि तेअल्पहुवे तेहने एकनोपणि संभवछे तेमाटे असीभांगा कह्या । आभिणिबोहियाणाणेसुअणाणेएएहिंअसीइभगा। मतिज्ञाननेविषे पणि इमहीज असीभागा कहवा, श्रुतज्ञाननेविषे पण इमहीज असीभागा कहवा, । जेहिंठाणेहिणेरइयाणसत्तावीसंभंगा। जेणे स्थानकें नारकीनेविषे सत्ता वीसभांगाहुवेछे, । तेसुठाणेसुसव्वेसुअभगय। तेह स्थानकनेविषे बेइंद्री तेइंद्री चउरिद्रीनेंविषे भागानो अभावछे । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया। पचेंद्री

॥ टीका ॥

स्तानिच प्रागुक्ताशीतिभङ्गकस्थानावशिष्टानि मन्तव्यानि' भङ्गकाभावश्च क्रोधाद्युपयुक्ताना मेकदैव बहूना मभावादिति, विकलेन्द्रियसूत्राणिच पृथिवीकायिकसूत्राणी वाच्येयानि, नवरमिह लेश्याद्वारे तेजोलेश्या नाध्येतव्या' दृष्टिद्वारेच ॥ बेइंदियाणंभंते । किं सम्मद्दिठी मिच्छद्दिठी सम्मामिच्छद्दिठी ? गोयमा । सम्मद्दिठीवि मिच्छद्दिठीवि नोसम्मामिच्छद्दिठी सम्मदंसणेवट्टमाणा बेइंदिया किं कोहोवउत्ता? इत्यादि प्रश्ने उत्तरमशीतिर्भङ्गा, तथा ज्ञानद्वारे ॥ बेइंदियाणं भंते । किं नाणीअन्नाणी ? गोयमा । नाणीवि अन्नाणीवि जइनाणी दुन्नाणी मइनाणी सुयनाणीय ॥ शेष तथैव अशीतिश्चभङ्गा इतियोगद्वारे ॥ बेइंदियाणं भंते । किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा । नोमणजोगी वइजोगी कायजोगीय ॥ शेष तथैव एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसूत्राण्यपि ॥ पचिंदिएत्यादि ॥ जहिंसत्तावीसभंगत्ति ॥ यत्र नारकाणा सप्तविंशति र्भङ्गा स्तत्र पञ्चेन्द्रियतिरश्चा मभङ्गक, तच्च जघन्यस्थित्यादिक पूर्वं दर्शितमेव' भङ्गकाभावश्च क्रोधाद्युपयुक्तानां बहूना मेकदैव तेषु भावादिति, सूत्राणि चेह नारकसूत्रव दध्येयानि, नवरं शरीरद्वारे अयं विशेष ॥ असखेज्जेसुणंभंते पचिंदियतिरिक्खजोणियावासेसु पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा । चत्तारि तंजहा–उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए॥ सर्वत्र चाभङ्गकमिति, तथा सहननद्वारे ॥ पचिंदियतिरिक्खजोणियाण केवइया संघयणा पण्णत्ता ? गोयमा । छ संघयणा तंजहा–वइरोसहनाराय जाव छेवट्ठत्ति ॥ एव सस्थानद्वारेपि ॥ छठाणा पण्णत्ता तंजहा–समचउरसे ६ ॥ एव लेश्याद्वारे ॥ कइलेसाउ पण्णत्ताउ ? गोयमा । छलेस्सा पण्णत्ता तंजहा–कण्हलेसा ६ ॥ मणुस्साविति ॥ यथा नैरयिका दशसु द्वारे ष्वभिहि

॥ मूल ॥

तहिंअभंगय कायव्वं , जत्थ असीइ तत्थअसीइंमणुस्सावि , जेहिंठाणेहिं नेरइयाण असीइभंगा तेहिंठा

॥ भाषा ॥

तिर्यंचयोनिक । जइणेरइया । जिम नारकी कह्या । तहाभाणियव्वा । तिम जाणवा । णवर जहिंसत्तावीसभंगातहिंअभंगयकायव्व । एतलोविशेष जिम नारकीने सत्तावीसभागा कह्या, तिहां पचेंद्री तिर्यंचने अभगक ते जघन्यस्थित्यादिक पहिला देखाड्याछे— तिहा भागानो अभावछे। जत्थअसीईतत्थअसीइंचेव। जिहा नारकीने असीभागाकह्या, तिहा पचेंद्रीतिर्यंचने पणि असीभागाकहवा । मणुस्साविजेहिंठाणेहिंणेरइयाणअसीतिभगा । जिम

ता, स्तथा मनुष्याअपि भणितव्या इतिप्रक्रम' एत देवाह ॥ जेहीत्यादि ॥ तत्र नारकाणा जघन्यस्थिता वेकादिसङ्ख्यातान्तसमयाधिकाया ॥ १ ॥ तथा जघन्यावगाहनाया ॥ २ ॥ तस्यामेव सङ्ख्यातान्तप्रदेशाधिकाया ॥ ३ ॥ मिश्रेच ॥ ४ ॥ अशीति भङ्गका उक्ता, मनुष्याणा मप्येते ष्वशीतिरेव, तत्कारणञ्च तदल्पत्वमेवेति' नारकाणा मनुष्याणाच सर्वथा साम्यपरिहारायाह ॥ जेसुसत्तावीसेत्यादि ॥ सप्तविंशतिर्भङ्गकस्थानानिच नारकाणा जघन्यस्थित्यसङ्ख्यातसमयाधिकजघन्यस्थितिप्रभृतीनि' तेषुच जघन्यस्थितौ विशेषस्य वक्ष्यमाणत्वेन तद्वर्जेषु मनुष्याणा मभङ्गकं, यतो नारकाणा वाहुल्येन क्रोधोदयएव भवति, तेन तेषा सप्तविंशति भङ्गका उक्तस्थानेषु युज्यन्ते, मनुष्याणान्तु प्रत्येक क्रोधाद्युपयोगवता बहूना भावा न्न कषायो दयं विशेषोस्ति' तेन तेषा तेषु स्थानेषु भङ्गकाभावइति, इहेव विशेषाभिधानायाह ॥ नवरमित्यादि ॥ येषु स्थानेषु नारकाणा मशीति स्तेषु मनुष्याणा मप्यशीति, स्तथा ॥ जेसु सत्तावीसा तेसु अभगयमित्युक्त केवल मनुष्याणा मिद मभ्यधिक, यदुत-जघन्यकस्थितौ तेषा मशीति

नतु नारकाणा, तत्र सप्तविंशति रुक्त त्यभङ्गक, तथा आहारकशरीरे अशीति राहारकशरीरवता मनुष्याणा मल्पत्वा न्नारकाणान्तु तन्नास्त्ये वेत्येत दभ्यधिक मनुष्याणामिति, इहच नारकसूत्राणामनुष्यसूत्राणाञ्च प्राय शरीरादिषु चतुर्षु ज्ञानद्वारेष्वेव विशेष, स्तथाहि ॥ असखेज्जेसुणं भते ! मणुस्सावासेसु मणुस्साण कइ सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पच तजहा-ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए असखेज्जेसुणं जाव ओरालियसरीरे वट्टमाणा मणूसा किं कोहोवउत्तावि ४ ॥ एव सर्वशरीरेषु नवर नाहारकेशीति भङ्गकाना वाच्या, एवं सहननद्वारेपि नवर मणुस्साण भते कइसघयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! छ सघयणा पण्णत्ता तजहा-वइरोसहनाराए जाव छेवट्ठे ॥सस्थानद्वारे॥ छसठाणा पन्नत्ता तजहा-समचउरसे जाव हुडे॥ लेश्याद्वारे ॥ छलेसाओ तजहा-कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ॥ ज्ञानद्वारे ॥ मणुस्साण भते ! कइनाणाणि ? गोयमा ! पच तजहा-आभिणिबोहियनाण ॥ एषुच केवलवर्जे ष्वभङ्गक केवलेतु कषायोदयएव नास्तीति ॥ वाणमतरेत्यादि ॥ व्यन्तरादयो दशस्वपि स्थानेषु, यथा-भ

वनवासिन स्तथावाच्या, यत्रा सुरादीना मशीति र्भङ्गका यत्रच सप्तविंशति, स्तत्रच व्यन्तरादीना मपि ते तथैव वाच्या, भङ्गका स्तु लोभमादौ विधाया ध्येतव्या, स्तत्र भवनवासिभि सह व्यन्तराणा साम्यमेव' ज्योतिष्कादीना तु न तथेति, तै स्तेषा सर्वथा साम्यपरिहारसूचनायाह ॥ णवर् नाणत्त जाणियव्व जजस्सत्ति ॥ यल्लेश्यादिगत यस्य ज्योतिष्कादे र्नानात्व मितरापेक्षया भेद स्तज्ज्ञातव्यमिहेति' परस्परतो विशेष ज्ञात्वा एतेषा सूत्रा ण्यध्ययानीति भाव, स्तत्र लेश्याद्वारे ज्योतिष्काणा मेकैव तेजोलेश्यावाच्या, ज्ञानद्वारे त्रीणिज्ञाना न्यज्ञानान्यपि त्रीण्येव, असञ्ज्ञि ना तत्रोपपाताभावेन विभङ्गस्या पर्याप्तकावस्थायामपि भावात्, तथा वैमानिकाना लेश्याद्वारे तेजोलेश्यादय स्तिस्रो लेश्यावाच्या, ज्ञानद्वारेच

॥ मूल ॥

णेहिं मणुस्साव्वि असीइभंगा भाणियव्वा, जेसुसत्तावीसा तेसुअभंगय, नवरं मणुस्साणं अब्भहियं जह

॥ भाषा ॥

नारकी दशद्वारनेविषे कह्या, तिम मनुष्य पणि कहवा तेहीज कहेछे—जिण स्थानके नारकीने असीभागा कह्या । तेहिंठाणेहिमणुस्साणविअसीइभ गाभाणियव्वा । तिणे स्थानके मनुष्यनेपणि असीहीजभागा हुवे सेंकारणे एहना अल्पपणामाटे नारकी अने मनुष्यने सर्व समपणो परिहार करतो कहेछे—जेसुसत्तावीसातेसुअभगयं । जिहा नारकीने सत्तावीसभागाकह्या, तिहा मनुष्यने अभगक भंगानो अभाव । णवरंमणुस्साणअब्भहियंजहन्नठियाए ठिईएआहारएअसीइभंगा । एतलोविशेष मनुष्यने अधिको मनुष्यने जघन्यस्थितिनेविषे असीभागाहुवे, तथा आहारकशरीरनेविषे पणि असीभागाहुवे, आहारकशरीरवत मनुष्यना अल्पपणामाटे तेआहारकशरीर नारकीनेहोजछे, तेमाटे मनुष्यने एतलो अधिकोछे । वाणमतरजोइसवेमाणियाजहाभ वणवासी । वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक एतीन जिम भवनपती कह्या तिमकहवा, जिहां असुरादिकने असीभागा अथवा सत्तावीस भागा तिहा व्यतरादिकने पणि तिमज कहवा, लोभआदिदेई कहवा, भवनपती व्यंतरनेतो सरीखापणोछे पणि ज्योतिषीने नहीं तेहने सर्वथा साम्यपरिहा र करतो कहेछे—णवरणाणत्तभाणियव्वंजजस्सजावअणुत्तरा । एतलोविशेष नानात्व जाणवो जे जेहनेंविशेष जाणवो लेश्यादिगत जेहने बीजानी अपे क्षायेभेदछे, तेविशेषथी एहना सूत्र कहवा इतिभाव । सेवभंते भंतेत्ति । यावत् अनुत्तर देवलगेकहवा, गौतमकहे तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछे

त्रीणिज्ञाना न्यज्ञानानिचेति, वैमानिकसूत्राणिचैवमध्येयानि ॥ सखेज्जेसुणं भंते ! वेमाणियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणिया वाससि केवइया ठिइठाणा पन्नत्ता ! इत्येवमादीनि ॥ इति प्रथमशते पञ्चम उद्देश ॥ ५ ॥ अथ षष्ठो व्याख्यायते, तस्य चाय मभिसम्बन्धो, नन्तरोद्देशके न्तिमसूत्रेषु ॥ असखेज्जेसुण भंते जोइसियविमाणावासेसु ॥ तथा ॥ सखेज्जेसुण भंते ! वेमाणियावाससय सहस्सेसु इत्येतदधीत तेषुच ज्योतिषकविमानावासा प्रत्यक्षाएवेति, तद्गतदर्शन मतीत्य' तथा जावन्ते इतियदुक्त मादिगाथाया तच दर्शयितु माह ॥ जाव इयाउइत्यादि ॥ जावइयाउत्ति ॥ यत्परिमाणात् ॥ उवासतराउत्ति ॥ अवकाशान्तरात् आकाशविशेषा दवकाशरूपान्तरालाद्वा, याव त्यवकाशान्तरेस्थित इत्यर्थ ॥ उदयतेत्ति ॥ उदय नुद्गच्छन् ॥ चक्खुप्फासति ॥ चक्षुषो दृष्टे स्पर्शइव स्पर्शो नतु स्पर्शएव चक्षुषो ऽप्राप्तकारित्वादिति चक्षु स्पर्श स्त ॥

ख्रियठिईए आहारएय असीइभगा, वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं नाणत्तं जाणियव्वं जंजस्स, जाव अणुत्तरा, सेवभंते भंतेत्ति ॥ पढमसए पचमोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ जावइयाउणं भंते ! उवासंतराउ उदयते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ अत्थमंतेवियण सूरिए तावतियाउ

पढमसयस्सपचमो ५ ए पहिला शतकना पाचमा उद्देशानो टव्वार्थ लिख्यो ॥ ५ ॥ हिवे छट्ठो उद्देशो कहेछे—तेहनो ए सबंध पाछिले उद्देशे अतसूत्रनेविषे ज्योतिषीना विमानकह्या ॥ हिवे तेहनी प्रत्यक्षगति कहेछे—जावतियाओणभंते । जिण परिमाणथी हेभगवन् ! अवकाशांतरथकी अवकाशरूप अतरालथकी । उवासतराओउदयंतसूरिएचक्खुप्फासहव्वमागच्छइ । उगतो सूर्य दृष्टिस्पर्श शीघ्रआवे सोकिम जिवारे सूर्य सर्व अभ्यतरमडले होय तिवारे ४७२६३ योजन चौसठीया २१ भाग उगतो सूर्य दृष्टिआवै । अत्थमतेवियणसूरिए । आथमता पणि इमज सूर्य । तावियाओ चेवउवासतराओचक्खुप्फासहव्वमागच्छइ । तेतलोहीज योजन ४७२६३ चौसठीया २१ भाग अवकाशातरथकी चक्षुस्पर्श उतावलोहीज आवे तथा बीजामंडलनी विगतिअनेरा सूत्रथकी जाणवी इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । जावतियाओणउवासतराओउदयतेसूरिएचक्खुप्फासहव्वमागच्छइ । हांगी

॥ टीका ॥

हवति ॥ शीघ्र' किलसर्वाभ्यन्तरमण्डले सप्तचत्वारिंशतियोजनानां सहस्रेषु द्वयो शतयो स्त्रिषष्टौच साधिकायां वर्त्तमान उदये दृश्यते, अस्तसमयेप्येव, एव प्रतिमण्डल दर्शने विशेषोस्ति सच स्थानान्तरादवसेय ॥सव्वउ समतत्ति॥ सर्वत सर्वासु दिक्षु समन्तात् विदिक्षु एकार्थावेतौ ॥ उन्नासेइइत्यादि ॥ अवभासयति ईषत्प्रकाशयति' यथा–स्थूलतरमेव वस्तु दृश्यते उद्योतयति भृशम्प्रकाशयति, यथा–स्थूलमेव दृश्यते, तपति अपनीत शीत करोति, यथावा, सूक्ष्म पिपीलिकादि दृश्यते, तथा करोति प्रभासयति, अतितापयोगा द्विशेषतोपनीतशीत विधत्ते, यथावा; सूक्ष्मतर वस्तु दृश्यते, तथाकरोतीति, एतत्क्षेत्रमेवा श्रित्याह ॥ तन्नतेइत्यादि ॥ यत्क्षेत्र मवभासयति उद्योतयति तपति प्रभासयतिच' तत्क्षेत्र किं भदन्त !

॥ मूल ॥

चेव उवासंतराउ चक्कुप्फासं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! जावइयाउण उवासंतराउ उदयंतेसूरिए चक्कुप्फास हव्वमागच्छइ, अत्थमंतेवि जाव हव्वमागच्छइ, जावइयाण भंते ! खेत्त उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वउसमंता उहासेइ, उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंतेवियणंसूरिए तावइयचेव खेत्त आयवेणं सव्वउसमंता उभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ ? हंता गोयमा ! जावइयाणं खेत्त जाव पभासेइ तंभंते

॥ भाषा ॥

तम। जिण परिमाणथी अवकाशांतरथकी जगती सूय दृष्टि सर्श शीघ्र आवै ४७२६३ योजन २१ भाग । अत्थमतेविजावहव्वमागच्छइ । आथमता पणि इमज यावत् उतावलो चक्षुस्पर्श आवै ४७२६३ योजन २१ भाग। जावतियाओणभंतेखेत्त। जेतलू हेभगवन् ! क्षेत्र । उदयंतेसूरिएआतवेणंसव्वओ समताओभासेइ। ऊगतो सूर्य आतपेकरी सूयने तेजेकरी सगली दिशिनेविषै विदिशिनेविषै थोडोसो प्रकाशै, जिमवस्तु दृष्टिआवे। उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ। घणो उद्योतकरै शीतदूरकरै जिम सूक्ष्म कीटकादि दीसै विशेषशीतदूरकरै जिम सूक्ष्मवस्तु पणि दृष्टिआवै। अत्थमतेवियणसूरिए। आथमतो पणि सूर्य। तावतियचेवखेत्त। तेतलोज निश्चै क्षेत्रप्रतै। आतवेणसव्वओसमताओभासेइ। सूर्यने तेजेकरी सर्वदिशिनेविषै विदिशिनेविषै थोडोसो प्रकाश करै उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ।। अत्यत प्रकाशै उद्योतकरै शीतदूरकरै जाज्वल्यमान तपै इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हा गौतम! जावतियणखेत्त।

॥ टीका ॥

स्पृष्टं प्रकाशयति अस्पृष्टं प्रकाशयति, इह यावत् करणा दिद दृश्य–गोयमा । पुठं ओभासेइ नो अपुठं तन्नते । ओगाढं ओभासेइ अणोगाढं ? गोयमा । ओगाढं ओभासेइ णो अणोगाढं एवं अणंतरोगाढं ओभासइ णोपरंपरोगाढं तन्नते । किं अणुं ओभासेइ बायरं ओभासेइ ? गोयमा । अणुंपि ओभासइ बायरंपि ओभासइ तं भंते । उड्ढं ओभासइ तिरियं ओभासइ अहे ओभासइ ? गोयमा ! उड्ढंपि ३ तं भंते ! आइं ओभासइ मज्झे ओभासइ अंते ओभासइ ? गोयमा । आइंपि ३ तं भंते । आणुपुव्विं ओभासइ अणाणुपुव्विं ओभासइ ? गोयमा । आणुपुव्विं ओभासइ णोअणाणुपुव्विं तं भंते । कइ दिसिं ओभासइ ? गोयमा । नियमा छद्दिसिंति ॥ एतेषाञ्च पदानां अयमोद्देशकनारकाहारसूत्रव्याख्यादृश्येति ॥ जए ओभासइ इत्यनेन सत्र सूत्रप्रपञ्च उक्त, सएव उज्जोएइइत्यादिना पदत्रयेण वाच्य इतिदर्शयन्नाह ॥ एवं उज्जोवेइइत्यादि ॥ स्पृष्ट क्षेत्र प्रकाशयती त्युक्त मथ स्पर्शनामेव दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ सव्वतित्ति ॥ प्राकृतत्वात् सर्वत सर्वासु दिक्षु ॥ सव्वावंतित्ति ॥ प्राकृतत्वादेव सर्वात्मना सर्वेणवा, तपेना पति व्याप्ति यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप्ति, अथवा, सर्वं क्षेत्र, इति शब्दो विपयभूत क्षेत्र सर्वं नतु समस्तमेवे त्यस्यो पप्रदर्शनार्थं, स्तया सर्वेणा तपेना पो व्याप्ति यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप' इतिशब्द सामान्यत सर्वेणातपेन व्याप्ति, नंतु प्रतिप्रदेश सर्वेणत्यस्या र्थस्यो पप्रदर्शनार्थो, ऽथवा, सत्त्व व्यापे

॥ मूल ॥

किपुठं ओभासेइ अपुठं ओभासेइ जाव छद्दिसिं एवं उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ, जाव नियमा छद्दिसिं सेणूणं भंते ! सव्वति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावइयंखेत्तं फुसइ तावइयंफुसमाणे पुठेत्तिवत्तव्वं सिया ?

॥ भाषा ॥

यावत् प्रकाशे एतलोजक्षेत्र आथोछे । तंभंतेकिंपुठ्ठओभासेइ । वे क्षेत्रप्रते अवभासे उद्योतकरै तपै प्रभासै तेक्षेत्र हेभगवन् । स्यूं फरस्यो उद्योतकरै अपुठ्ठओभासेइ जावछद्दिसि । किंवा विना फरस्यो उद्योतकरे यावत् छदिशि ऐसो पाठ तालगै कहवो । एवंउज्जोवेइ तवेइ पभासेइ । इम उद्योतकरै तपै प्रकाशै । जावणियमाछद्दिसि । यावत् नियय स्यूं छदिशि तिम कहवूं । सेणूणभंतेसव्वति । ते निश्चे हेभगवन् । सर्वथी सगलीदिशिनेविषै । सव्वावंति । सगले आतपेंकरी अथवा सर्वक्षेत्र । फुसमाणकालसमयंसि । फरसता काल समानेविषै । जावइयंखेत्तंफुसइ । जेतलोक्षेत्र स्पर्शै सूर्य । तावइयंफुसमाणे

ना तपव्याप्या यत्र तत्स्पृष्टं इतिशब्दस्तु तथैव ॥ फुसमाणकालसमयसित्ति ॥ स्पृश्यमानक्षणो ऽथवा ; स्पृशत सूर्यस्य स्पर्शनाया कालसमय स्पृ गतकालसमय स्तत्र आतपेनेति गम्यते, यावत्क्षेत्र स्पृशति सूर्यइति प्रकृत' तावत्क्षेत्र स्पृश्यमान स्पृष्टमिति वक्तव्य स्यादिति प्रश्न ॥ हतेत्याद्युत्तर म्, स्पृश्यमानस्पृष्टयो श्चैकत्व म्प्रथमसूत्रा दवगन्तव्यमिति स्पर्शनामेवा धिकृत्याह ॥ लोय ते भंते । अलोयतमित्यादि ॥ लोकान्त सर्वतोलोकाव मान अलोकान्तस्तु तदनन्तरस्यवेति इहापि पुट्ठफुसइइत्यादि सूत्रप्रपञ्चो दृश्यो, ऽतएवोक्त ॥ जावनियमाछद्दिसित्ति ॥ एतद्भावनाचैव, स्पृष्ट मलोका न्त स्पृशति, स्पृष्टत्वञ्च व्यवहारतो दूरस्थस्यापि दृष्ट, यथा–चक्षु स्पर्श इत्यत उच्यते, अवगाढ आसन्नमित्यर्थ , अवगाढत्वञ्चा सत्तिमात्रमपि स्या, दत उच्यते, अनन्तरावगाढ मव्यवधानेन सम्बद्ध नतु परम्परावगाढ शृङ्खलाकटिकाइव परम्परासम्बद्ध, तञ्चा णु स्पृशति, अलोकान्तस्य क्वचिद्धि वक्षया प्रदेशमात्रत्वेन सूक्ष्मत्वात् वादरमपि स्पृशति, क्वचि द्विवक्षयैव बहुप्रदेशत्वेन वादरत्वात्, त ऊर्द्धं मध स्तिर्यक्च स्पृशति, ऊर्द्धादिदिक्षु लोकान्तस्या लोकातस्यच भावात्, तञ्चादौ मध्येन्तेच स्पृशति' कथ मधस्तिर्यगूर्द्धलोकप्रान्ताना मादिमध्यान्तकल्पनात् तञ्च स्वविषये स्पृशति,

हंता गोयमा ! सव्वंति जाव वत्तव्वंसिया । तंभंते ! किं पुट्ठं फुसइ जाव नियमा छद्दिसिं । लोयंतेभंते ! अलोयंतं फुसइ अलोयंतेवि लोयंतं फुसइ ? हंता गोयमा ! लोयंते अलोयंतं फुसइ अलोयंतेवि लोयंतं

पुट्ठेत्तिवत्तव्वमिया । तेतलो चेत्र फरस्यो कहीये इम कहवो होय इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हा गोतम । सव्वतिजाववत्तव्वंसिया । सर्वथी सगली दिशिनेविषे यावत् फरस्यो इमोकहवोहोय । तभतेकिपुट्ठफुसइ । ते हेभगवन् । स्यूं फरस्यो फरसेछे ? जावणियमाछद्दिसि । यावत् निश्चेस्यूं छदिशि फरसे लोअते भतेअलोअतफुसइ । लोकनो छेहडो सर्वथी लोकना अवसान हे भगवन् । अलोकना अतसूं फरसे अलोकनो अतते तेहने अतरहीजछे । अलोअंते विलोअंतफुसइ । अलोकात अलोकनो छेहडो तेपणि लोकनाअन्तप्रते फरसे इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हागोतम । लोअतेअलोअतफुसइ । लोकनो अत अलोकना अन्तप्रते फरसे । अलोगतेविलोगंतफुसइ । अलोकना अंतपणि लोकनाअन्तप्रतें फरसै तभतेकिपुट्ठफुसइ । ते हेभगवन् । स्यूफरस्यो ? फर

॥ टीका ॥

स्पृष्टावगाढादौ नाविपये अस्पृष्टादाविति तच्चानुपूर्व्या स्पृशति, आनुपूर्वी चेत् प्रथमे स्थाने लोकान्त स्ततो नन्तरं द्वितीये स्थाने अलोकान्तऽस्ये व मवस्थानतया स्पृशति' अन्यथा तु स्पर्शनैव न स्या, तच्च षट्सु दिक्षु स्पृशति' लोकान्तस्य पार्श्वेन सर्वतो ऽलोकान्तस्य भावात्, इतरच विदिक्षु न स्पर्शनास्ति' दिशा लोकविष्कम्भप्रमाणत्वा द्विदिशाच्च तत्परिहारेण भावात्, एवं द्वीपान्तसागरान्तादिसूत्रेषु स्पृष्टादिपदभावनाकार्या, नवरं द्वीपसागरान्तादिसूत्रे छद्दिसिमित्यस्ये व भावना, योजनसहस्रावगाढा द्वीपास समुद्राश्च भवन्ति, तत उपरितना अधस्तना च द्वीपसमुद्र प्रदेशा नाश्रित्यो ध्वंधो दिग्द्वयस्य स्पर्शना वाच्या, पूर्वादिदिशास्तु प्रतीतैव, समन्तत स्तेषा मवस्थानात् ॥ उदयंतेपोयंतंति ॥ नद्याद्युदकान्त. पो तान्त नौपर्यंवसान मित्ता प्युच्छ्रयापेनया ऊर्ध्वदिक्स्पर्शना वाच्या, जलनिमज्जनेनेति ॥ छिद्दंतेदूसंतंति ॥ छिद्रान्तोदूष्यान्तं वस्त्रान्त स्पृशति, इहापि षड्दिक्स्पर्शना भावना, वस्त्रोच्छ्रयापेनया, ऽथवा: कम्बलस्पाशपोट्टलिकाया तन्त्वन्तरस्थजीवनमनेन तन्त्वन्तरस्थापेनया लोकान्त सूत्रवत् षड्दिक्स्पर्शना भावयितव्या' ॥ छायंतेआयवंतंति ॥ एवं छायान्तेन पदेनाभिलापनवत्, आतपे व्योमवर्तिपक्षिप्रभृतिद्रव्यस्य या छाया तदन्तमातपान्त स्ततस्तपु दिक्षु स्पृशति, तथा तस्यामेव छायाया भूमे सकाशा सद्रव्य यावत् उच्छ्रयोऽस्ति, ततः छायान्तमातपान्तमूर्ध्वगतमस्पृश

॥ मूल ॥

फुसइ । तंभंते ! किं पुट्ठं फुसइ अपुट्ठफुसइ ? जाव नियमा छद्दिसिं फुसइ । दीवंते भंते ! सागरंतं फुसइ सागरंतेवि दीवंतं फुसइ ? हंता जाव नियमा छद्दिसिं फुसइ, एवं एएणं अभिलावेणं उदयंतेपोयंतं, छिद्दंतेदूसंतं, छायंतेआयवंतं, जाव णियमा छद्दिसिं फुसइ अत्थिणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं कि

॥ भाषा ॥

से । अपुट्ठफुसइ । अथवा अणफरस्यो फरसे । जावणियमाछद्दिसिफुसइ । ... यावत् नियमा छदिशि फरसे ॥ गोतम पूछे छे- द्वीपात डोपनो अंत हे भगवन् ! सागरनो अंतप्रते फरसे । सागरनेविद्वीपांतफुसइ । सागरनो अंतपणि द्वीपनापरतांतें फरसे ? इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गोतम । जावणियमा छद्दिसिफुसइ । यावत् नियमे छदिशि फरसे ते सहस्रयोजन द्वीप समुद्र उंडा छे तिणिथको ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि पूर्वादि ४

॥ टीका ॥

ति, अथवा, प्रासादवरशिखरादे र्याछाया तस्या भित्ते रवतरन्त्या आरोहन्त्यावा; अन्तआतपान्त मूर्द्ध मधश्च स्पृशतीति भावनीयं, अथवा; तयोरेव च्छायातपयो पुद्गलाना मसङ्ख्येयप्रदेशावगाहित्वा दुच्छ्रयसद्भाव स्तत्सद्भावा च्चोर्द्ध्वाधोविभागस्ततश्च च्छायान्त आतपान्त मूर्द्ध मधश्च स्पृशती ति स्पर्शनाधिकारादेव प्राणातिपातादिपापस्थानप्रभवकर्मस्पर्शना मधिकृत्याह ॥ अत्थीत्यादि ॥ अत्थित्ति ॥ अस्त्ययमर्थ ॥ किरियाकज्जइत्ति ॥

॥ मूल ॥

रिया कज्जइ ? हंता अत्थि । साभंते ! किं पुठा कज्जइ अपुठा कज्जइ ? जाव निव्वाघाएणं छद्दिसि वाघा यं पडुच्च सियतिदिसिं सियचउद्दिसिं सियपचदिसि । साभंते ! किंकडाकज्जइ अकडाकज्जइ ? गोयमा ! कडाकज्जइ नोअकडाकज्जइ । साभंते ! किं अत्तकडा कज्जइ परकडाकज्जइ तदुभयकडाकज्जइ ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

दिशि इम छदिशिनी स्पर्शना कहवो । एवएएणअभिलावेणउदयतेपोअत । इम इणैप्रकारैकरी पाणीनो अत नावनाअतप्रते फरसै । छिद्दतेदूसत । छेद ना अतते कपडाना अतप्रतै फरसै । छायतेआतवंतजावणियमाछद्दिसिफुसइ । छायानूअत धूपनाअतप्रतै फरसै जइ अधो प्रासाद भीतनेविषे धूप चढती उतरती जाणवी यावत् निश्चै छदिशि स्पर्शनाहुवै, स्पर्शनाना अधिकार थकीज प्राणातिपात आदिदेई अठार पापस्थानक थकी उपनो कर्म स्पर्शना तेहप्रतै अधिकरी कहेछे—अत्थिणभतेजीवाणपाणाइवाएणंकिरिया कज्जइ । अस्ति कहताछै णंइति वाक्यालकारे णपच हेभगवन । जीव प्राणातिपा तिकी क्रिया आपणपैं जेकीजे सोक्रिया कहीये, कर्मकरी क्रियाहोय इतिप्रश्न । उत्तर । हता अत्थि । हागौतमछै । साभतेकिपुट्ठाकज्जइ । तिका हेभग वन् । स्यूं फरसीयकी होय । अपुट्ठाकज्जइ । अथवा अणफरसी होय । जावणिव्वाघाएणछद्दिसि । यावत् जिहां अलोक नेडोनथी तिहा छदिशिनै फरसी क्रियालागै । वाघातपडुच्च सियतिदिसि सियचउदिसि सियपंचदिसि । व्याघात आयो अलोक नेडोछै तिहा किहा एक तीनदिशि शेषदिशि अलोकमाटै नहुवै, किवारैके चारदिशि किवारैके पंचदिशि एसर्व आहारनी परे विचारीने कहवो । साभंतेकिकडाकज्जइ । ते हेभगवन् । स्यूं प्राणातिपातिकी क्रियाकीधी हुवै अथवा । अकडाकज्जइ । अणकीधी हुवै प्राणातिपातिकी क्रिया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कडाकज्जइ णोअकडाकज्जइ । हेगौतम । की

॥ टीका ॥

क्रियतइतिक्रिया कर्म्म, साक्रियते भवति, पुठेत्यादे व्याख्यापूर्ववत् ॥ कडाकज्जइत्ति ॥ कृताञ्च त्यकृतस्यकर्म्मणोऽभावात् ॥ अत्तकडाकज्जइत्ति ॥ आत्मकृतमेव कर्म्मभवति नान्यथा ॥ अणाणुपुव्विकडाकज्जइत्ति ॥ पूर्वपश्चा द्विभागो यत्रनास्ति तदनानुपूर्वी शब्देनोच्यतइति ॥ जहानेरइयातहा

॥ मूल ॥

अत्तकडाकज्जइ णोपरकडाकज्जइ णोतदुभयकडाकज्जइ । साभंते ! किं आणुपुव्विकडा कज्जइ अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ? गोयमा ! आणुपुव्विकडाकज्जइ नोअणाणुपुव्विकडाकज्जइ । जायकडा जायकज्जइ जायक ज्जिस्सइ सव्वासा आणुपुव्विंकडा नोअणाणुपुव्विंकडातिवत्तव्वसिया । अत्थिणभंते ! नेरइयाण पाणाइवाय

॥ भाषा ॥

धो क्रिया लागे अणकीधा कर्मना अभावमाटे, पणि अणकीधो प्राणातिपातको क्रिया नलागे । साभतेकिअत्तकडाकज्जइ । तिका हेभगवन् ! स्यू आपणो कोवोक्रिया लागे अथवा । परकडाकज्जइ । पारकोकोधो प्राणातिपातकोक्रिया लागे अथवा । तदुभयकडाकज्जइ । आत्मपर ते बेउ कृत प्राणातिपाति को क्रिया लागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्तकडाकज्जइ । हेगौतम । आपणो कोधो प्राणातिपातको क्रिया लागे पणि । णोपरकडाकज्जइ । पारकोकीधो प्राणातिपातको क्रिया नलागे । णोतदुभयकडाकज्जइ । बेउमिलो क्रियाकोधो ते एकने दुष्टध्यान नहोय जेहनो मन प्रभिको तेहने घणो । साभतेकि आणुपुव्वीकडाकज्जइ अणाणुपुव्वीकडाकज्जइ । तिका हेभगवन् ! स्यू आनुपूर्वीयं अनुक्रमेंकोधो लागे पहिलाकीजे पछे पापलागे अथवा अनानुपूर्वीने कीधी ते क्रियालागे केपहिले पापलागे पछेक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आणुपुव्वीकडाकज्जइ । हेगौतम । आनुपूर्वीयेकोधो क्रियालागे पणि णोअणाणुपुव्वीकडाकज्जइ । अनानुपूर्वीकृतक्रिया नलागे । जाइकडा । जिका क्रिया पूर्वेकोधी अतीतकाले जिकाकीधी । जाइकज्जइ । जिका वर्त्तमान काले करेछे । जाइकज्जिस्सइ । जिका आगामिकाले करस्ये । सव्वासाआणुपुव्विकडा । तेसगलो आनुपूर्वीये अनुक्रमेकोधी पणि । णोअणाणुपुव्विकडा तिवत्तव्वसिया । अनुक्रमरहित अनानुपूर्वी तेको तो इम कहोये, नलोगातमपछेछे—अत्थिणभतेणेरइयाण । छै प्राणातिपात हेभगवन् । नारकीने । पा णाइवायकिरियाकज्जइ । प्राणातिपातरूप जीवहिंसारूप क्रिया करता कर्मलागे इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हा गौतम छे । साभतेकिपुट्ठाकज्जइ ।

॥ टीका ॥

एगिंदियवज्जाभाणियव्वत्ति ॥ नारकव दसुरादयोपिवाच्या, एकेन्द्रियवर्ज्जा स्तेत्वन्यथा, तेषांहि दिक्पदे– निव्वाघाएण छद्दिसिं वाघाय पडुच्च सियतिदिसिइत्यादे विशेषाभिलापस्य जीवपदोक्तस्य भावादतएवाह, ॥ एगिंदिया जहाजीवातहाभाणियव्वत्ति ॥ जाव मिच्छादसणसल्ले ॥ इहया वत्करणात् ॥ माणमायालोभेपेज्जे, अनभिव्यक्त मायालोभस्वभाव मभिष्वङ्गमात्रम्प्रेम, दोसे, अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूप मप्रीतिमात्रन्द्वेष, कलहो राटि, अब्भक्खाणे, असद्दोषाविष्करण, पेसुन्ने, प्रच्छन्न मसद्दोषाविष्करण, परपरिवाए, विप्रकीर्ण परेषाङ्गुणदोषवचन' अरइरइ' अरति,

॥ मूल ॥

किरिया कज्जइ ? हंता ! अत्थि । साभंते ! किं पुट्ठाकज्जइ अपुट्ठाकज्जइ जाव नियमाछद्दिसि कज्जइ सा भंते ! कि कडाकज्जइ अकडाकज्जइ तंचेवजाव नो अणाणुपुव्विंकडातिवत्तव्वंसिया । जहानेरइया तहाएगिंदियवज्जा भाणियव्वा जाव वेमाणिया । एगिंदिया जहा जीवा तहाभाणियव्वा, तहापाणाइवाए तहामुसावाए, तहाअदिन्ने, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे, जाव मिच्छादंसणसल्ले । एवं एएण अट्ठारसचउव्वीसं दंडगा

॥ भाषा ॥

तिका हे भगवन् ! स्यू स्पृष्टथकी लागे ? अपुट्ठाकज्जइ । अथवा अस्पृष्ट लागे । जावणियमाछद्दिसिकज्जइ । यावत् निश्चै स्यू षटदिशि प्रते लागे । साभते किकडाकज्जइ । तिका क्रिया हे भगवन् ! स्यू कीधी लागे । अकडाकज्जइ । अथवा अणकीधी लागे । तचेव । तिमज सर्व कहवो । जावणोअणाणुपुव्विकडातिवत्तव्वसिया । यावत् अनानुपूर्वीये नकीधी एहवू कहवू । जहाणेरइया तहा एगिंदियवज्जाभाणियव्वाजाववेमाणिया । जिम नारकीकह्या तिम एकेंद्री वर्जी असुरकुमारादिक यावत् वैमानिक पर्यंत सर्व कहवा एकेंद्रीवर्ज्या तेमाटे एकेंद्रीने दिशिपदें । निव्वाघाएण छद्दिसिवाघाय पडुच्चसियतिदिसि इत्यादि । एगिंदियजहाजीवातहाभाणियव्वा जहापाणाइवाए । एकेंद्री जिम जीवकह्या तिम कहवा, जिम प्राण दश तेहनो वियोग तेहनें प्राणातिपात कहीये बीजूनाम हिंसाकहीये जिमप्राणातिपात । तहामुसावाए । तिम मृषावाद जाणवो । अहाअदेणादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे । तिमज अदत्तादान अणदीधी वस्तुनो लेवो, इमज मैथुन स्त्रीनोभोग, परिग्रह मूर्च्छा, क्रोध जीवखेद । जावमिच्छादसणसल्लेएव एएअट्ठारसचउव्वीसदडगाभाणियव्वा

र्मोहनीयोदयाच्चित्तोद्वेग तत्फला, रति र्विषयेषु मोहनीयोदयात् चित्ताभिरति अरतिरति', मायामोसे, तृतीयकषायद्वितीयाश्रवयो' संयोगो ऽनेनच सर्वसंयोगाउपलक्षिता' अथवा; वेषान्तरभाषान्तरकरणेन यत्परवञ्चन तन्मायामृषेति, मिथ्यादर्शनं शल्यमिव विविधव्यथानिर्वन्धनत्वा न्मिथ्यादर्शनशल्यमिति, एव ताव द्गौतमद्वारेण कर्म्म प्ररूपित' तत्प्रवाहत शाश्वत, मित्यत' शाश्वतानेव लोकादिभावान् रोहकाभिधान मुनि पुगवद्वारेण प्ररूपयितु मस्तावयन्नाह ॥ तेणकालेणमित्यादि ॥ पगइभद्दएत्ति ॥ स्वभावतएव परोपकारकरणशीलः ॥ पगइमउएत्ति ॥ स्वभावत एव भावमार्दविको, ऽतएव ॥ पगइविणीएत्ति ॥ तथा ॥ पगइउवसन्तेत्ति ॥ क्रोधोदयाभावात् ॥ पगइपयणुकोहमाणमायालोहे ॥ सत्यपि कषायोदये प्रतनुक्रोधादिभाव' ॥ मिउमद्दवसपन्नेत्ति ॥ मृदु यन्मार्दव अत्यर्थ मनःकृतिजय स्तत्सम्पन्न प्राप्तो गुरूपदेशा द्य सतथा ॥ भल्लीणेत्ति ॥ गुरुसमा

भाणियव्वा। सेवंभंते २ । भगवं गोयमे समणं जाव विहरइ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ म हावीरस्स अंतेवासीरोहेणामंअणगारे पगइभद्दए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमा

इत्ता यावत् शब्दे मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशून्य परपरवाद परतिरति मायामोस मिथ्यादर्शनशल्य इमएह अठार पापस्थानक पउवीसदउके कहवा । सेवभते भतेत्ति । तहत्ति, हे भगवन् । तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे अन्यथानथी एसोकही । भगवगोयमे समणभगवंमहावीरवदइजाववि हरइ । भगवंत गौतम श्रमण भगवत श्रीमहावीरने वादी यावत् विचरवालागा, इम पहिला गौतमने अधिकारे कर्म प्ररूपणा कीधी ते कर्म प्रवाहथी शाश्वताछे एतला माटेशाश्वता लोकादिकना भाव रोहकनामा साधु तेहने प्रश्नोत्तरकहेछे—तेणकालेण । तेकालनेविषे । तेणसमएण । ते समयने विषे समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण तपस्वी भगवत ज्ञानवत ऐश्वर्यादिवत श्रीमहावीरनो । अंतेवासी रोहेणामअणगारे । शिष्य रोहानामे साधु पगइभद्दए । स्वभावे पर उपकारी । पगइमउए । स्वभावथी कोमलभाव । पगइविणीए । स्वभावे विनयवत । पगइउवसते । स्वभावे क्रोधउदयनही । पग इपयणुकोहमाणमायलोभे । स्वभावे पातला थोडा क्रोधमान माया लोभछे । मिउमद्दवसपन्ने अत्यंत भद्दए विणीए । मृदु जे मार्दव पत्यर्थ अहकारनो ज

णमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अलीणे भद्दए विणीए समणस्सभगवओमहावीरस्स अदूरसामंते उड्ढं जाणू अहोसिरे झाणकोठोवगए संजमेण तवसा अप्पाणंभावेमाणे विहरइ। तएणसे रोहे अणगारे जायसड्ढे जाव पज्जुवासमाणे एववयासी पुव्विंभंते ! लोए पच्छाअलोए पुव्विंअलोए पच्छालोए ? रोहा ! लोएय अलोए य पुव्विंपेते पच्छापेते दोवेएसासयाभावा अणाणुपुव्वीए सारोहा। पुव्विंभंते ! जीवा पच्छा अजीवा

य सपन्न गुरुउपदेशथी गुरुसमीपरह्यो, अथवा सलीने गुरुदत्त व्रताराधक गुरु सेवा गुणाप्रते। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने। अदूरसामते। अतिवेगलोनही अति ढूकडोनही। उड्ढजाणूअहोसिरे। ऊचा ढीचण नीचो माथो। झाणकोठोवगए। ध्यानरूप कोठाने विषे धर्मध्यान विषे स्थिरचित्तथको। संजमेणंतवसा अप्पाणभावेमाणेविहरइ। सतरेभेदे संयम तेणे नवा आवता कर्मवारीये तेणेकरी तथा तप बारे भेदे तिणे मूलगा कर्म निर्जरिये तेणे करी आत्मा जीव ते प्रते भली भावनाये भावतायका विचरे। तएणसेरोहेणामअणगारे जायसड्ढे। तिवारे तेरोहा नामे साधुऊपनी श्रद्धा एतले आस्थाये सहित। जावपज्जुवासेमाणे। यावत् शब्दे सेवा करतायका एसर्व गौतमनीपरे कहवो। एवंवयासी। इम वक्ष्यमाण कहता हुया। पुव्विभंतेलोए। पहिले हेभगवन्। लोकछे। पच्छाअलोए। पछे अलोकछे। पुव्विंअलोए। अथवा पूर्वं अलोकछे। पच्छालोए। पछेलोकछे इतिप्रश्न उत्तर। रोहा लोएअ अलोए। हेरोहा लोक वपुन अलोक। पुव्विंपेते पच्छापेते। पूर्वं पणिए पछेपणिए। दोविएसासयाभावा। एकलोक तथा अलोक बेहु शाश्वताभावछे इहां संदेह नही। अणाणुपुव्वीएसारोहा। पहिले पाछे जिहां अंतर नही एतले दोनूं बराबरछे एहमाहे पहिला पाछे कोई कहवाय नही। पुव्विभंतेजीवा। वलीरोहोपूछेछे—पहिला हेभगवन्। जीवछे। पच्छाअजीवा। पछे अजीवछे अथवा। पुव्विंअजीवा। पूर्वं अजीवछे। पच्छाजीवा जहेव लोएय अलोएय। पछे जीवछे इतिप्रश्न उत्तर कहेछे—जिमहीज लोक अने अलोक पहिला पछे नकह्या। तहेव जीवाय अजीवाय। तिमहीज जीव अजीव एदोनूं शाश्वताभावछे एहोनेविषे पूर्वापरविभागज्ञानी पणि करी नसके। एवंभवसिद्धियाय। इमचुस्ये सि

॥ टीका ॥ श्रिल सलीनोवा ॥ जइएत्ति ॥ अनुपतापको गुरुशिक्षागुणात् ॥ विणीएत्ति ॥ गुरुसेवागुणात् ॥ जवसिद्धियायत्ति ॥ जविष्यतीति जवा, जवा सि

॥ मूल ॥ पुव्विं अजीवा पच्छा जीवा? जहेवलोएय अलोएय तहेव जीवाय अजीवाय, एव जवसिद्धियाय अजवसि द्धियाय सिद्धीअसिद्धी सिद्धा असिद्धा। पुव्विंजंते! अंडए पच्छाकुक्कुडी पुव्विंकुक्कुडी पच्छा अंडए? रोहा! सेणं अंडए कर्न? जयव कुक्कुडीर्न, साणंकुक्कुडी कर्न? जंते! अंडयार्न एवामेव, रोहा! सेयअंडए सायकुक्कुडी पुव्विंपेते पच्छापेते दुवेएसासयाजावा अणाणुपुव्वीए सारोहा। पुव्विंजंते! लोयंते पच्छाअलोयंते पुव्विंअलो

॥ भाषा ॥ द्धि जेहनै ते भवसिद्धि कहता भव्य इत्यर्थ। अभवसिद्धियाय। नहीवाय सिद्ध जहनें त अभव्य इत्यर्थ। सिद्धि असिद्धि। सिद्धि मुक्ति असिद्धि संसार तेमा है। सिद्धा असिद्धा। सिद्धासिद्धजीव असिद्धा ससारीजोव तेमाहे एमवे, वलीरोहो पूछेछे—पुव्विभतेअंडए। पूर्वे हेभगवन्! इंडू। पच्छाकुकुडी। पछे कूकडीछे। पुव्विकुकुडी। अथवा पूर्वे पहिला कूकडीछे। पच्छाअडए। पछे ईडूछे प्रतिप्रश्न उत्तर। रोहासेण अंडएकओ। हेरोहा। ते एवाक्यालकारे इंडू किहाथी थयो इसोस्वामीये पूछ्यो। भयवकुक्कुडीओ। तिवारे रोहो कहेछे—हेभगवन्! कूकडीथी ईंडू छओ, वलीभगवतकहे—साणकुक्कुडीकओ। कूकडी किहाथी हुई? तिवारे रोहा कहे—भंतेअडयाओ। हे भगवन्! इंडाथी कूकडीहुई। एवामेवरोहा सेय अडए। इमज हेरोहा। ते ईंडू। साय कुकुडी। तिका कूकडी। पुव्विंपेते पच्छापेते। पहिला पणिण पछेपणिण। दोपितेसासयाभावा। दोनूए शाश्वताभाव शाश्वता पदार्थ। अणाणुपुव्वीएसा रोहा। एहहा पूर्वे पछे एहवो आनुपूर्वीये रहितछे हेरोहा। पुव्विभतेलोयते। वलीरोहो पूछेछे—हेभगवन्! लोकनो अतछे। पच्छाअलोयते। पछे अ लोकनेअतछे अथवा। पुव्विअलोयते। पूर्वे अलोकनो अतछे। पच्छालोअते। पछे लोकनो अतछे इतिप्रश्न। रोहा लोअतेअ अलोयंतेय। हेरोहा! लोक नोअत अनै अलोकनो अत एदोनू पहिला पछेनही। जाव अणाणुपुव्विएरोहा। यावत् अनानुपूर्वीछे पछे पहिलू एहवो कहो नसकोये हे रोहा, वली रोहो पूछेछे—पहिले हेभगवन्! लोकनोअत। पच्छामतमेउवासतरेपुच्छा। पछे सातमी पृथिवीनो हेठिलो आकाशातर इसेप्रश्न कीधे भगवतकहेछे—

द्वि र्निर्वृति र्येषान्ते भवसिद्धिका भव्या इत्यर्थ ॥ सत्तमेउवासतरेत्ति ॥ सप्तमपृथिव्या अधोवर्त्त्याकाशमिति सत्रसङ्ग्रहगाथे ॥ उवासेत्यादिके, तत्र ॥ उवासेत्ति ॥ सप्तावकाशान्तराणि ॥ वायत्ति ॥ तनुवाता घनवाता ॥ घणउदहित्ति ॥ घनोदधय ॥ सत्तपुढवित्ति ॥ नरकपृथिव्य सप्तैव ॥ दीवायत्ति ॥ जम्बूद्वीपादयो ऽसङ्ख्येया, एव सागरा लवणादय ॥ वासत्ति ॥ वर्षाणि भरतादीनि सप्तैव ॥ णेरइयाइयत्ति ॥ चतुर्विंशतिदण्डक ॥ अत्थियत्ति ॥

यंते पच्छालोयंते ? रोहा ! लोयंतेय अलोयंतेय जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा । पुव्विंभंते ! लोयंते पच्छा सत्तमेउवासतरे पुच्छा, रोहा ! लोयंतेय सत्तमेय उवासतरे पुव्विंपेते जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा, एवं लोयंतेय सत्तमेय तणुवाए एवघणवाए घणोदहिसत्तमापुढवी, एवं लोयंते एक्केक्केणसजोएयव्वे, इमेहिंठाणेहिं तंजहा—उवासंवायघणउदहि पुढवीदीवायसागरावासा नेरइयादीअत्थिय समयकम्माइंलेस्साउ ॥ १ ॥ दि

राहालोअतेयसत्तमेउवासतरेयपुव्विंपितेजावअणाणुपुव्वीएसारोहा । हे रोहा । लोकने अंते अने सातमो पृथिवीना २० आकाशने माहोमाहि पहिला पणि एकके पणि यावत् अनुक्रमरहित पहिला पछे एहवो कहीनसकीये पहिलाए पछेर इमनहीं इहा पूर्व पश्चात्नो अनुक्रम नही हेरोहा । एव लो अंतेय । इम लोकनाअंत अने । सत्तमेयतणुवाए । सातमो पृथिवीनो तनुवात एहनो प्रश्न तथा उत्तर कहवो । एवघणवाएघणोदहि । इम लोकांत अने सातमो पृथिवीनो घनवात घनोदधि कहवो इम लोकनो अंत अने । सत्तमापुढवी । सातमी पृथिवी जोडवी । एवलोअंते । इम लोकनाअंतस्यू एक्केक्केणसजोएयव्वे । एकेकस्थानक जोडवो । इमेहिंठाणेहिं । तजहा । एह स्थानकना नामकहे तेकहेछे — गाथायेंकरी । उवासवातघणउदहि । आकाश अंतरा १ तनुवात बीजो घनवात घनोदधि पाणी,सात । पुढवीदीवायसागरायवासा । नरकनी पृथिवी सात जबूद्वीप आदिदेई असख्याता द्वीप असख्याता समुद्र लवणसमुद्र आदिदेई भरतक्षेत्रादिवास । णेरइयादी अत्थिय । नारकी आदि चउवीसदडक पचास्तिकाय चपुन । समयाकम्माइ लेस्साओ ॥ १ ॥ कालविभाग आठ लेश्या छ १ । दिट्ठीदसणणाणे सण्णसरीरायजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोअंते ॥ २ ॥ दृष्टि ३ दर्शन ४

॥ टीका ॥

अस्तिकाया पञ्च ॥ समयत्ति ॥ कालविभागाः, कर्माण्यष्टौ, लेश्याः षट्, दृष्टयोमिथ्यादृष्ट्यादय स्तिस्रः, दर्शनानिचत्वारि, ज्ञानानिपञ्च, सञ्ज्ञा श्चतस्र, शरीराणिपञ्च, योगास्त्रयः, उपयोगौद्वौ, द्रव्याणिषट्, प्रदेशा अनन्ता, पर्यवा अनन्ताएव, ॥ अद्धत्ति ॥ अतीताद्धा अनागताद्धा सर्वाद्धा चेति ॥ किंपुव्विंलोयंतेत्ति ॥ अथ सूत्राभिलापनिर्द्देश स्तथैव, पश्चिमसूत्राभिलाप दर्शयन्नाह ॥ पुव्विंभंतेलोयंतेपच्छासव्वद्धेत्ति ॥ एतानिच सूत्राणि शून्यज्ञानादिवादनिरासेन विचित्रबाह्याध्यात्मिकवस्तुसत्ताभिधानार्थानि, ईश्वरादिकृतत्वनिरासेन चानादित्वाभिधानार्थानीति, लोकान्तादिलो

॥ मूल ॥

ट्ठीदंसणणाणा समसरीरायजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोयंते ॥ २ ॥ पुव्विंभंते ! लोयंते प च्छासव्वद्धा ? जहालोयंतेणं संजोवया सव्वेठाणा, एते एव अलोयंतेणवि संजोएयव्वा सव्वे, पुव्विंभंते ! स त्तमे उवासतरे पच्छा सत्तमेतणुवाए एव सत्तमं उवासंतरसव्वेहिं समं संजोएयव्वे, जाव सव्वद्धाए पुव्विंभं ते ! सत्तमेतणुवाए पच्छासत्तमेघणवाए, एवंपि तहेव नेयव्वं, जाव सव्वद्धा, एव उवरिल्लं एक्केक्कं संजो

॥ भाषा ॥

ज्ञान ५ सज्ञा ५ शरीर ५ चपन योग ३ उपयोग २ द्रव्य ६ प्रदेश अनता पर्याय अनता अतीतअद्धा अनागतअद्धा सव्वद्धा एतला स्थानक पूछवा स्यू ? पहिला लोकात २ अथवा । पुव्विंभंतेलोअंते । एहोज विशेष छेहलोसूत्र देखाडेछे—पूर्वं हे भगवन् । लोकात । पच्छासव्वद्धा । पछे सर्वअद्धा इत्यादि स र्व कहवो । जहालोअंतेणसंजोइयासव्वेठाणा । जिम लोकनाअंत स्यू मेल्या जोड्या सगला स्थानक सातमा अवकाशातरादिक तिम । एतेएवअलोअंतेण विसंजोएयव्वा । ए इमज अलोकना अतथको पणि भलीपरेविचारीने जोडवा मेलवा, वलीरोहो पूछेछे—सेपुव्विंभंतेसत्तमेउवासतरेपच्छासत्तमेतणुवाए । ते पहिला हे भगवन् सातमीपृथिवीनो आकाशातरछे पछे सातमीपृथिवीनो तनुवात अथवा पहिला सातमो आकाशातर इमपूछ्या भगवंत कहेछे—द्व हा पहिला पछे कहो नसकोये । एवसत्तमउवासतर । इम सातमो आकाशातर । सव्वेहिसमसंजोएयव्वजावसव्वद्धाय । सगले ठामे जोडवो जालगे स र्व्वद्धा तालगे कहवो, वलीरोहोपूछेछे—पुव्विंभंतेसत्तमेतणुवाए । पहिला हेभगवन् सातमो पृथिवी अथवा सातमो तनुवातछे । पच्छासत्तमघणवाए ।

॥ टीका ॥

कपदार्थप्रस्तावा' दथ गौतममुखेन लोकस्थितिप्रज्ञापनायाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ आकाशप्रतिष्ठितो वायु स्तनुवातघनवातरूप स्तस्या वका शान्तरोपरिस्थितत्वात्, आकाशन्तु स्वप्रतिष्ठितमेवेति' नतत्प्रतिष्ठाचिन्ताकृतेति, तथा वातप्रतिष्ठित उदधिर्घनोदधि, स्तनुघनवातोपरिस्थित त्वात् २, तथा उदधिप्रतिष्ठिता पृथिवी, घनोदधीना मुपरिस्थितत्वात् ३, रत्नप्रभादीना बाहुल्यापेक्षया चेदमुक्त, मन्यथे षत्प्राग्भारापृथिवी

॥ मूल ॥

य तेणं जोजोहेठिल्लो ततंछल्लेतेणं नेयव्वं, जाव अतीयअणागयद्धा पच्छा सव्वद्धा, जाव अणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवंभंते२ जाव विहरइ। भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं जाव एवंवयासी, कइविहाणं भंते! लोय ठिई पन्नत्ता? गोयमा! अठविहा लोयठिई पन्नत्ता? तंजहा! आगासपइठिएवाए १, वायपइठि

॥ भाषा ॥

पछे सातमा घनवातछ अथवा पहिलोसातमा घनवातछे पछे सातमा तनुवातछे? भगवतकहेछे—एवपितहेवणेयव्व। एमणि तिमज जाणवो पहिला पछे न कहवो। जावसव्वद्धा। यावत् सर्वअद्धा एतलो कहवो। एवउवरिल्लएकेक्कसजोय। इम ऊपरिलो एकेकछोडवो मेलवो। तेणजोजोहेठिल्लो। तिहथी जेजे हेठिलो। ततंछड्डेएणंणेयव्वं। तेते छोडवो परहोमेलवो, इम विचारी लेवो, तालगेकहवो। जाव अतीतअणागयद्धा। यावत् पहिला अतीत अद्धा पछे अनागतअद्धा, अथवा पहिला अनागतअद्धा पछे अतीतअद्धा। पच्छासव्वद्धा। इम पहिला अनागतअद्धा पछे सर्वाद्धा, अथवा पहिला सर्वाद्धा पछे अनागतअद्धा जावअणाणुपुव्वोएसारोहा। यावत् एसर्व अनानुपूर्वीछे हेरोहा एसर्वने पहिलापछे कहीनसकोये, सदा शाश्वता भावछे हेरोहा। सेवभंतेभंतेत्तिजाव विहरइ। रोहो कहेछे—तहत्ति। हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे अन्यथानही इसोकहो यावत् विचरे। भंतेत्तिभगवगोयमे समणभगवमहावीर जावएवव यासी। लोकातादि लोकपदार्थ प्रस्तावथी कह्या ॥ हिवे गौतम मुखद्वारे लोकस्थितिनो स्वरूपप्रकाशे कहेछे—हे भगवन्! एहवो ज्ञानवत गौतम, श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतेवादो यावत् इमकहे। कइविहाणभंतेलोअठिईपणत्ता। केतलेभेदे हेभगवन् लोकनोस्थिति कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अठविहालोअठिई पणत्ता तजहा। हेगौतम आठभेदे चउद राजलोकनो स्थिति रहवो कह्या तेकहेछे—आगासपइठिएवाए १। आकाशऊपर तनुवात

॥ टीका ॥

आकाशप्रतिष्ठितैव, तथा पृथिवीप्रतिष्ठिता स्त्रसस्थावरा: प्राणा: इदमपि प्रायिकमेवा, न्यथा आकाशपर्वतविमानप्रतिष्ठिताअपि तेसन्तीति ४, तथा अजीवा शरीरादिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिता, जीवेषुतेषास्थितत्वात् ५, तथा जीवा: कर्मप्रतिष्ठिता:, कर्मसु अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदाय रूपेषु ससारिजीवानामाश्रितत्वात्' अन्येत्वाहु –जीवा: कर्मभि: प्रतिष्ठिता नारकादिभावेना वस्थापिता ६' तथा अजीवा जीवसङ्गृहीता मनो भाषादिपुद्गलाना ज्जीवै: सङ्गृहीतत्वात्, अजीवाजीवप्रतिष्ठिता, स्तथा अजीवाजीवसङ्गृहीता इत्येतयो कोभेद ? उच्यते पूर्वस्मिन् वाक्ये आधाराधे यभावउक्त, उत्तरेतु सङ्ग्राह्यसङ्ग्राहकभाव इतिभेद, यच्च यस्यसङ्ग्राह्य तत्तस्या धेयम प्यर्थापतित स्या, द्यथा–अपूपस्य तैल मित्याधाराधेयभा

॥ मूल ॥

एउदही २, उदहिपइठियापुढवी ३, पुढवीपइठियातसाथावरापाणा ४, अजीवाजीवपइठिया ५, जीवाकम्मपइठिया ६, अजीवाजीवसगहिया ७, जीवाकम्मसगहिया ८, सेकेणठेणंभते! एववुच्चइ अठ

॥ भाषा ॥

घनवात रह्याछे, आकाशपोतेज प्रतिष्ठितछे तेमाटे आकाशप्रतिष्ठितनो चिता नकोधो आकाशकिणही ऊपर रह्यो नथी। वातपइठिएउदहो २। तनुत घनवात ऊपर घनोदधि प्रतिष्ठित कहतां रह्योछे २ घनोदधि ऊपर रतप्रभादि पृथिवीरहीछे। उदहिपइठिएपुढवी। तेमाटे उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी कही, ए रत्नप्रभादिक सात पृथिवीआश्रयीने कह्युं बहुलपणामाटे, अन्यथा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी आकाश प्रतिष्ठितछे २। पुढवीपइठियातसथावरापाणा ४ पृथिवी ऊपरिरह्या त्रसस्थावरजीव ए पणि प्रायवचने कह्युछे, अन्यथा आकाशपर्वत विमाननेविषे पणिरहेछे ४। अजीवा जीवपइठिया ५। शरीरादि पुद्गलरूप अजीव ते जीवनेविषे प्रतिष्ठित रह्याछे जीवाश्रितछे तेमाटे। जीवा कम्मपइठिया ६। जीव ससारी कर्म पुद्गलरूपनेविषे प्रतिष्ठितरह्या, अथवा जीवकर्म प्रतिष्ठित नारको आदिभावेरह्या ६। अजीवाजीवसगहिया ७। मन भाषादि पुद्गल जीव ग्रह्याछे, पूर्वकह्या अजीवाजीव पइठिया तिम अजीवजीवे सग्रह्या ७। जीवाकम्मसगहिया ८। संसारीजीव कर्मसग्रह्या उदयपाम्या कर्मनेवसे गयछे जेजेह्नेवसेछे तेतिहा प्रतिष्ठित कहीये जिम घटने विषे रूपादिकछे ८ गौतम कहेछे—सेकेणठेणभतेएवंवुचइ। ते स्ये कारणे हे भगवन् इम कहो। अठविहाजावजीवाकम्मसगहिया। पाठभेदे लोकस्थिति

वो प्युतरवाक्ये दृश्यइति १, तथा जीवा कर्म्मसङ्गृहीता संसारिजीवाना मुदयप्राप्तकर्म्मवशवर्त्तित्वात्' येच यद्वशा स्तेतत्रप्रतिष्ठिता, यथा–घटे रूपादय इत्येव मिहाप्याधाराधेयता द्रष्टव्येति ॥ सेजहानामएकेइत्ति ॥ स यथानामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थ , अथवा ॥ सेइति ॥ स यथेति दृष्टान्तार्थ , नामेति सम्भावनाया, ए इतिवाक्यालङ्कारे ॥ वत्थिंति ॥ वस्तिदृति ॥ आफोवेइत्ति ॥ आटोपये द्वायुना पूरयेत् ॥ उप्पिसियबंधइत्ति ॥ उपरिसित, पिङ्बन्धन इतिवचनात् क्तप्रत्ययस्यच भावार्थत्वा त्कर्म्मार्थत्वाद्वा, बन्धङ्गथिमित्यर्थ ' बध्नाति करोतीत्यर्थ ' अथवा ॥ उप्पिसियत्ति ॥ उपरि तमिति वस्ति ॥ सेआउयाएत्ति ॥ सो ऽप्काय, स्तस्यवायुकायस्य ॥ उप्पिंति ॥ उपर्युपरिभावस्य व्यवहारतोपिस्या दित्यत आह ॥ उपरितले सर्वोपरीत्यर्थ', यथा–वायु राधारो जलस्य दृष्ट, एव माधाराधेयभावो भवति, आकाशघनवातादीनामितिभाव , आधा

विहा जाव जीवाकम्मसंगहिया ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे वत्थिमाफोवेइ२ त्ताउप्पिंसिइबंधइ२ त्ता मज्झेगंठिंबंधइ २ त्ता उवरिल्लंगंठिंमुयइ२ त्ता उवरिल्लदेसंवामेइ २ त्ताउवरिल्लंदेस आउयायस्सपूरेइ२त्ता उप्पिं सियबंधइ २ त्तामज्झिल्ल गंठिमुयइ। सेणूणं गोयमा ! सेआउयाए तस्सवाउयायस्स उप्पिं उवरितले चिठइ ?

कह्यो यावत् जीवकर्म संग्रह्याछे गौतम इसे पूछायका भगवत कहेछे—उत्तर। गोयमा सेजहानामए। हेगौतम ते यथा दृष्टांतें नामइति कोमलासन गे। केइपुरुसेवत्थिमाडोवेइ। कोई देवदत्तनामे पुरुष दीवडोवायेकरी फूंकेकरी पूरे। वत्थिमाडोवेत्ता। दीवडोवायेकरी पूरीने पछे। उप्पिसियबंधइ२ त्ता ऊपरथी तेहनोमुख वाधे मुखे ग्रथवाधे वांधीने। मज्झेगठिबंधइ२ त्ता। मध्य गाठि दीवडीने विचे वाधे वाधीने। उवरिल्लगठिमुयइ २ त्ता। पछे मुखकी ऊपरिली गाठ मूकें गाठिखोले खोलीने। उवरिल्लदेसवामेइ २ त्ता। ऊपरिला देशथी वायरोकाढे काढीने पछे। उवरिलदेसआउयाएसपूरेइ २ त्ता। ऊ परिलादेशनेविषे अईनेविषे पाणीसू भरे पाणीसू भरीने। उप्पिसितबंधइ २ त्ता। ऊपरली मुखनी गाठिवाधे वाधीने तिवारे पछे। मज्झिल्लगठिंमुयइ। विचलोगाठि खोलै छंडे। सेणूण गोयमा। ते निश्चे हेगौतम। सेआउयाए। ते अप्काय। तस्सआउआयस्सउप्पिउवरिमतलेचिट्ठइ। तेहने वाउकायने

॥ टीका ॥

राधेयत्नावश्च प्रागेव सर्वपदेषु व्यञ्जितइति ॥ अत्याहमतारमपोरुसियसित्ति ॥ अस्ताघ मविद्यमानस्ताघ मगाधमित्यर्थ , अस्ताधोवा , निरस्ताध स्तलमित्यर्थ ' अतएवाऽतार तरीतु मशक्य , पाठान्तरेण अपार पारवर्ज्जित , पुरुष प्रमाणमस्येति पौरुषेय ' तत्प्रतिषेधा दपौरुषेय , तत कर्म्मधारयो ऽत स्तत्र मकार श्चेहालाक्षणिक , एव वाइत्यत्र वाशब्दो दृष्टान्तान्तरतासूचनार्थ , लोकस्थित्यधिकारा देवेदमाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ अन्येत्वाहु. – अजीवाजीवपइट्ठियाइत्यादि , पदचतुष्टयस्य भावनार्थ मिदमाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ पोग्गलत्ति ॥ कर्म्मशरीरादिपुद्गला ॥ अण्णमण्ण

॥ मूल ॥

हताचिठइ। सेतेणठेणजाव जीवा कम्मसगहिया , सेजहावा केइपुरिसे वत्थिमाफ्नोवेइ २ त्ता कडीएवधइ अ त्याहमत्तारमपोरिसियं उदगंसिउग्गाहेज्जा। सेणूण गोयमा ! सेपुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चि ठइ ? हंता चिठइ । एवंवा अठविहा लोयठिई पण्णत्ता , जाव जीवा कम्मसगहिया । अत्थिणभंते ! जी

॥ भाषा ॥

ऊपर ऊपरलेतले पाणो रहै इसै श्रीमहावीरदेवे कह्या गौतमकहै । हंताचिठ्इ । हा भगवन् रहे , तिवारे भगवतकहै—सेतेणठ्ठेण जावजीवाकम्मसगहि या । हे गौतम । जिम वायुने आधारे जलनेरह्यु दीठूं तिम आधाराधेयभावे आकाश घनवातादिक पणिकहवा , यावत् जीवकर्मे संग्रह्या तालगे कहवूं वलो बोजो दृष्टात कहेछे—सेजहावाकेइपुरिसे । ते जिम कोइ पुरुष देवदत्तादि नामे । वत्थिमाडोवेइ । दीवडी वायेकरीपूरे पछे ते दीवडी । कडिएव धइ । कडिसेतीवाधे पछे । अत्याह मत्तार । ऊडीपाणी अगाध तरीनजाय पाठातरे अपार पाररहित । मपोरिसियसिउदगसि । पुरुषप्रमाणथी अ धिक पाणीनैविषे ते पुरुष । उग्गाहेज्जा । अवगाहे पाणीमाहिपैसे । सेणूणगोयमासेपुरिसे । भगवतकहै तेनिश्चे हेगौतम । ते पुरुष । तस्सआउयायस्सउ वरिमतलेचिठ्इ । तेह पाणीने ऊपर रहै पाणी अवगाहनो रहे ऊचो रहे इसो भगवतेकह्यो तिवार गौतमकहै । हता चिठ्इ । हाभगवन् तेपुरुष पा णी ऊपररहै । एववाअठविहालोयठिई पण्णत्ता । तिवारे भगवतकहै इम वा शब्द दृष्टाता तर सूचनार्थछे , इम इणेप्रकारे आठभेदे लोकस्थिति कही । जा वजीवाकम्मसगहिया । यावत् आकाश पइठिएवाते इत्यादि जोवकर्मे संग्रह्या एतला लगे कहवो , लोकस्थिति अधिकारथोज कहेछे—अत्थिणभतेजीवा

॥ टीका ॥

वद्धत्ति ॥ अन्योन्य जीवा पुद्गलाना पुद्गलाश्च जीवाना सम्बद्धाइत्यर्थ , कथं वद्धाइत्याह ॥ अणमणपुठा ॥ पूर्व स्पर्शनामात्रेणा न्योन्यं स्पृष्टा स्त तो ऽन्योन्य वद्धा गाढतर सम्वद्धाइत्यर्थ ॥ अणमणमोगाढत्ति ॥ परस्परेण लोलीभावगता अन्योन्य स्नेहप्रतिवद्धा इत्यत्र रागादिरूप स्नेह , यदाह स्नेहाभ्यक्तशरीर स्यरेणुनाश्लिष्यतेयथागात्र । रागद्वेषक्लिन्न स्यकर्मवन्धोभवत्येवमिति ॥ १ ॥ अतएव ॥ अणमणघडत्ताएत्ति ॥ अन्योन्य घटासमुदायो

॥ मूल ॥

वाय पोग्गलाय अणमणवद्धा अणमणपुठा अणमणमोगाढा अणमणसिणेहपडिवद्धा अणमणघडत्ता ए चिठंति ? हंताअत्थि । सेकेणठेणभंते ! जाव चिठंति , गोयमा ! सेजहानामए हरदेसिया पुसे पुसप्प

॥ भाषा ॥

पोग्गलायअणमणवद्धा।। छे एवाक्यालकारे हेभगवन् । जीव अने कर्म शरीरादिपुद्गल चपुन. माहामाहि वाध्या जीव पुद्गलने पुद्गल जीवने । अणमणपुठा । माहोमाहि स्पर्शनामात्रकरी फरस्या, तिवार पछे । अणमणमोगाढा अणमणसिणेहपडिवद्धा । माहोमाहि ओगाढा लोलीभावे मिल्या चीर नीरनी परे माहोमाहि स्नेहे रागादिकें वधाणा जिम शरीर चोपड्या रेणु विलगे तिम । अणमणघडत्ताएचिठ्ठति । माहोमाहि समुदायभावे करी रहे इतिप्र श्न उत्तर । हताअत्थि । हा गौतम सर्व तिमहीजछे । सेकेणठ्ठेणभंतेजावचिठ्ठति । गौतम कहे—तेस्ये कारणें हेभगवन् । जीव अने पुद्गलसमुदायभावे करी करीरहे यावत् एतलालगे कहवो इतिप्रश्न,उत्तर । गोयमा सेजहानामएहरदेसियापुसे । हेगौतम । ते यथाद्दष्टाते, नामए इतिवाक्यालकारे, जिम कोई द्रहपाणी भर्यो । पुसप्पमाणेवोलट्टमाणे । पूरो भर्यो लगार जणोनही पाणीनो सरता जलटतल उल्लासपामतो तलो जेहनो । वोसट्टमाणे । जलना वढ्ढ ल पणाथी विकसतोछे । समभरघडत्ताएचिठ्ठति । विषमनही घडीपरे जल समुदाय जिहा चिहुंदिशि पाणी पसर्यो तेमाटे प्रमाणें दीसतो रहेछे । अहे णकेइपुरिसेतसिहरदसि । अथ कहता ॥ हिवे एवाक्यालकारे, ते भर्या द्रहने अनतर कोइएक पुरुष तेहनेविषे । एगमहणावसदासव । एक महती मोटी नाव, पणि ते केहवोछे, नान्हे सईकडेछेद पाणी आवणने ते सहितछे । सतछिद्दंउगाहेज्जा । मोटाछेद तिणेंसहित एहवो नावेंकरी तेपाणी अ वगाहे प्रवेशकरे । सेणुण गोयमा साणावा । तेनिश्चे हेगौतम । तेनावा । तेहिआसवदारेहि । तिणे आश्रवद्वार छिद्रेंकरी । आपूरमाणी पुणा २ । जले

॥ टीका ॥

येषान्ते ऽन्योन्यघटा, स्तद्भावस्तत्ता तया ऽन्योन्यघटतया ॥ हरएसियत्ति ॥ ह्रदो नद, स्या द्भवेत् ॥ पुण्णेत्ति ॥ भृतो जलस्य स किञ्चित् न्यूनोपि व्यवहारत· स्यादतआह ॥ पुण्णप्पमाणेत्ति ॥ पूर्णप्रमाण· पूर्णवा, जलेना त्मनो मान यस्य सपूर्णात्ममान ॥ वोलट्टमाणेत्ति ॥ व्यपलोठ्यन् अतिज लभरणा च्छर्द्यमानजलइत्यर्थ· ॥ वोसट्टमाणेत्ति ॥ जलप्राचुर्यादेव विकसन् स्फारीभवन् वर्द्धमानइत्यर्थ· ॥ समभरघडत्ताएत्ति ॥ समो नविषमो घ टैकदेश मनाश्रितत्वेन भरो जलसमुदायो यत्र स समभर·, सर्वथा भृतोवा, समभर, समशब्दस्य सर्वशब्दार्थत्वात् समभर श्चासौ घटश्चेति स मास, समभरघटइव समभरघट स्तद्भावस्तत्ता तया समभरघटतया, सर्वथाभृतघटाकारतयेत्यर्थ ॥ अहेणति ॥ अहेशब्दोऽथार्थ, अथशब्दश्चा

॥ मूल ॥

माणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताएचिठइ। अहेणंकेइपुरिसे तंसिहरदंसि एगंमहंनावं सदासवं सय च्छिद्दं उग्गाहेज्जा सेणूण गोयमा! सानावा तेहिंआसवदारेहिं आपूरमाणी २ पुन्ना पुन्नप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताएचिठइ ? हंताचिठइ। सेतेणठेणं गोयमा! अत्थिण जीवाय जाव चिठति। अत्थिणभंते! सदासमिय सुहुमेसिणेहकाये पवडइ ? हंताअत्थि। सेभंते! किंउड्ढेपवडइ अहेपवडइ ति

॥ भाषा ॥

करी भरती थकी २ पूर्णथाय। पुण्णप्पमाणा। लगार पाणीकरीऊननथी। वोलट्टमाणा। तिहा पाणी उल्लासपामेछे। वोसट्टमाणा। नखातो पाणी भ लकतो एहवी नावछे। समभरघडत्ताणचिट्ठति। इह चेपघ्योघडो पाणीभर्यो जिम तलेवैसे तिम ते नावा पाणीथी भरीथकी पाणीमाहि रहे, तिवारे गौतम कहेछे—हताचिट्ठति। हा भगवन् रहै। सेतेणट्ठेणं गोयमा। भगवतकहै ते तेणै अर्थे हेगौतम। अत्थिण जीवायजावचिट्ठति। अस्ति छे एंद्रसोवा ढालकारे, जोव अने पुद्गल यावत्रहै एतलालगे कहनो। अत्थिणंभतेमदासमितं। वलीलोकस्थितिनेविषैज कहेछे—अस्ति छे हेभगवन्। सदा सर्वदाका ले प्रमाणमित सगली ऋतुनेविषे। सुहुमेसिणेहपडवडइ। सूक्ष्मपाणी ओस अप्काय विशेष इत्यर्थ, पडेछे इतिप्रश्न, उत्तर। हंताअत्थिसेभतेकिउड्ढेपव डइ। हागौतम पडेछे, वली गौतम कहेछे—ते हेभगवन्। स्यूंवाट्ला वैताढ्यादि पर्वतनेविषै पडेछे। अहेपवडइ। अधोलोके अधोगामादिकनेविषै

नन्तर्यार्थो, णमिति वाक्यालङ्कारे ॥ महति ॥ महतीं ॥ सयासवति ॥ आश्रवती प त्तरति जलं ये स्ते आश्रवा', सूक्ष्मरन्ध्राणि सन्तो विद्यमा ना सदावा; सर्वदा ज्ञातसद्भावा; आश्रवा यस्या सा सदाश्रवा, ऽत स्ता, एव ॥ सयच्छिद्द ॥ नवर छिद्र स्महत्तर रन्ध्रम् ॥ उंगाहेज्जत्ति ॥ अवगा हये त्प्रवेशयेत् ॥ आसवदारेहिंति ॥ आश्रवच्छिद्रै ॥ आपूरमाणीति ॥ आपूर्यमाणा जलेनेतिशेष, इह द्विर्वचन माज्ञीदण्ये ॥ पुणेत्यादि ॥ प्राग्व त्नवर ॥ वोसट्टमाणाइत्यादौ वृद्धै रयविशेषउक्तो–वोसट्टमाणा ञतासती या तत्रैव निमज्जति सोच्यते ॥ समभरघडत्ताएत्ति ॥ हृदच्छिमसमभरघ टवत् हृदस्या घस्त्योदकेन सह तिष्ठतीत्यर्थ, यथा–नौश्च हृदोदक चान्योन्यावगाहेन वर्त्तते, एव जीवाश्च पुद्गलाश्चेति भावना, लोकस्थितावेवे दमाह ॥ अत्थीत्यादि ॥ सदा सर्वदा ॥ समियति ॥ सपरिमाण नबादराप्कायव दपरिमितमपि, अथवा, सदेति सर्वर्तुपु समितमिति, रात्रौ दिवसस्यच पूर्वापरयो प्रहरयो, स्तत्रापि कालस्य स्निग्धेतरभाव मपेक्ष्य वहुत्व मल्पत्व ञ्चावसेयमिति, यदाह–पढमचरिमाउसिसिरे गिम्हेअद्धं तुतासिवज्जेत्ता । पायठवेसिणेहा इरक्खणठापवेसेवा ॥ १ ॥ लेपितपात्र स्वाहि नं स्थापयेत् स्नेहादिरक्षणार्थायेति' सूक्ष्म स्नेहकायइति अप्काय विशेषइत्यर्थ. ॥ उड्ढेत्ति ॥ ऊर्ध्वलोके वर्तुलवैताढ्यादिपु ॥ अहेत्ति ॥ अधोलोकग्रामेपु ॥ तिरियंति ॥ तिर्यग्लोके ॥ दीहकालचिठइत्ति ॥ तडागादिपू

रिएपवडइ ? गोयमा ! उड्ढेविपवडइ अहेविपवडइ तिरिएविपवडइ जहासे बादरे आउयाए अन्नमन्नसमा उत्ते चिरंपि दीहकालं चिठइ , तहाणंसेवि नोइणठेसमठे सेणंखिप्पामेवविद्धंसमागच्छइ सेवंभंते भंतेत्ति ॥

पडे। तिरिएपवडइ । अथवा तिरिछा लोकनेविषे पडे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा उड्ढेविपवडइ। हेगौतम । ऊर्द्धलोकनेविषे पणि पडेछे । अहेविपवडइ। अधो लोकनेविषे पणि पडेछे । तिरिएविपवडइ। तिरिछालोकनेविषे पणि पडेछे। जहासेबादरे आउयाए । जिम तेबादर अप्काय मेहना पाणी सरोवरादि भरा ते अप्काय । अन्नमन्नसमाउत्ते। माहोमाहि मिलतोथको । चिरंपिदीहकालचिठइ। चिर दीर्घकालपणि रहै तडागादिकना पूरणथी । तहा णसेवि । तिमसूक्ष्मओस पणि घणोकालरहे इतिप्रश्न भगवतकहे—णोइणठेसमठे। ए अर्थ समर्थनही युक्तनही। सेणखिप्पामेवविद्धसमागच्छइ। ते णवाक्या

॥ टीका ॥

रणात् ॥ विद्धसमागच्छइत्ति ॥ स्वल्पत्वा त्तस्य ॥ इति प्रथमशतेषष्ठ उद्देश ॥ (६) ॥ अथ सप्तम आरभ्यते, तस्य चै वंसम्बन्धो विद्धसमागच्छती त्युक्त प्रा, गिहतुतद्विपर्यय उत्पादोऽभिधीयते, अथवा, लोकस्थितिः प्रागुक्ता, इहापि सैव, तथा नेरइएत्ति यदुक्त, सङ्ग्रहण्या न्तचा वसरायात मिहोच्यतइति, तत्रादिसूत्र ॥ नेरइएणभते ! नेरइएसुउववज्जमाणेत्ति ॥ ननू त्पद्यमानएव कथ नारकइति व्यपदिश्यते ऽनुत्पन्नत्वा त्तिर्यगादिवत् ? इत्यत्रोच्यते' उत्पद्यमान उत्पन्नएव तदायुष्कोदया, दन्यथातिर्यगाद्यायुष्काभावान्नारकायुष्कोदयेपि, यदि नारको न सौ तदन्य कोसाविति ॥ किंदेसेणदेसउववज्जइत्ति ॥ देशेनच २ यदुत्पादन प्रवृत्त तद्देशेनदेश, च्छादसत्वाद्वा व्ययीभावप्रतिरूप समास, एवा मुत्तरत्रापि, तत्र जीव' कि देशेन स्वकीयावयवेन देशेन नारकावयविनो शतयो त्पद्यते, अथवा; देशेन देशमाश्रित्यो त्पादयन्वे, तिशेष, एव मन्य त्रापि, तथा ॥ देसेणसव्वत्ति ॥ देशेनच सर्वेणच यत्प्रवृत्त तद्देशेन सर्व, तत्र देशेन स्वावयवेन सर्वत सर्वात्मना नारकावयवितयो त्पद्यत इत्यर्थ.

पढमसए छठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥

॥ मूल ॥ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेण देसं

॥ भाषा ॥

लकारे ओस जतावलो विध्वसपामै तेहना विशेषथो अल्पपणामाटे जतावलो विलयजाय गोतम कहेछे—सेवभते २ त्ति । तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हे कह्यु तेसत्य तेसत्यछे अन्यथानही । पढमसयस्सछट्ठोउद्देशो । एपहिला शतकनो छठा उद्देशानो विवरण कह्यो ॥ ६ ॥ हिवे सातमो उद्देशो प्रारंभियेछे तेहनो एसबध पाछिला उद्देशानेविषे विध्वसनो वार्त्ताकही, इहाती तेहथो विपरीत उपजवानो वातकहेछे—णेरइयाणभते णेरइए सुउववज्जमाणे । नारकी हेभगवन् ! नारकीनेविषे उपजवा माडोथको इहा कोइएक पूछस्ये उपजतोथकोज नारकी किमकहीये उपनोनथी तेमाटे तिर्यंचादिकनी परे तिहा उत्तर उपजवामांडो ते उपनोज कहीये तेहाना आउखाना उदयथको अन्यथा तिर्यंचादि आउखाना अभावथको नारकना आउखानो उदययथा, पणि जो नारक नकहीये ते तेहथको वोजोकुण कहीये । किंदेसेणदेसउववज्जइ । जीवनोअश नरकनोअश तिहाजीवस्युं पोताने देशेकरी अवयवेकरो नारकोने अवयवपणे उपजे ए प्रथमभगो १ देसेणसव्वंउववज्जइ । जीवनोअश नरकनो सर्व एतले जीवनो अवयवमात्र अ

॥ टीका ॥

आहोस्वि; त्सर्वेण सर्वात्मना देशतो नारकांशतयो त्पद्यते' अथवा; सर्वेण सर्वात्मना सर्वतो नारकतयेति प्रश्न, अत्रोत्तरं, न देशेन देशतयो त्पद्यते, यतो न परिणामिकारणावयवेन कार्यावयवो निर्वर्त्त्यते, तन्तुना पटाप्रतिबद्धप्रटप्रदेशवत्' यथाहि—पटदेशभूतेन तन्तुना पटाप्रतिबद्ध पटदेशो न नि वर्त्त्यते, तथा पूर्वावयविप्रतिबद्धेन तद्देशेनोत्तरावयविदेशो न निर्वत्त्यत इतिभाव, तथा न देशेन सर्वतयो त्पद्यते, अपरिपूर्णका रणत्वा तन्तुना पटइवेति, तथा न सर्वेण देशतयो त्पद्यते, सम्पूर्णपरिणामिकारणत्वा त्समस्तघटकारणे घटैकदेशवत्, सर्वेणतु सर्वं उत्पद्यते, पूर्णकारणसमवायात् घटव दितिचूर्णिव्याख्या, टीकाकार स्त्वेवमाह—किं मवस्थितएव जीवो देश मपनीय यत्रोत्पत्तव्य तत्र देशत उत्पद्यते, अथवा, देशेन सर्वत उत्पद्यते, अथवा, सर्वात्मना यत्रो त्पत्तव्य तस्य देश उत्पद्यते, अथवा, सर्वात्मना सर्वत्रेति, एतेपु पाश्चात्यभङ्गौ ग्राह्यौ, यत सर्वेण सर्वात्मप्रदेशव्यापारेण लिकागतो यत्रो त्पत्तव्य तस्य देशउत्पद्यते, तद्देशेन उत्पत्तिस्थानदेशस्यैव व्याप्तत्वात्' कन्दुकगतौवा, सर्वेण सर्वत्रो त्पद्यते, विमुच्च्यैव पूर्वस्थानमिति, एतच्च टीकाकारव्याख्यान वाचनान्तरविषयमिति, उत्पादे चाहारक इत्याहारसूत्र, तत्र देशेन देश

॥ मूल ॥

उववज्जइ १ देसेणं सव्वं उववज्जइ २ सव्वेणं देसं उववज्जइ ३ सव्वेणं सव्वंउववज्जइ ? ४ गोयमा ! नो देसेणं देस उववज्जइ १ नो देसेणं सव्वं उववज्जइ २ नोसव्वेणं देसं उववज्जइ ३ सव्वेणं सव्वंउववज्जइ ४ जहानेरइए एवंजाववेमाणिए १ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं आहारेइ देसेणं सव्वं आ

॥ भाषा ॥

नै नरक सर्वपणा ऊपजै। सव्वेणदेसं उववज्जइ। अथवा जीव सगला नरकनोअश तेहपणे ऊपजे एत्रीजोभागो ३। सव्वेणसव्वउववज्जइ। जीवसर्व नरकनो उत्पत्तिस्थान सर्व तेहपणे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोदेसेणसव्वउववज्जइ णोसव्वेणदेसउववज्जइ। हेगौतम। जीवनै अवयवैकरी नारकने सर्वपणेंकरी ऊपजैनही २। जीवसर्व अनै नारकने देशपणे ऊपजे नही ३। सव्वेणसव्वउववज्जइ। जीवसर्व अनै नारकने सर्वपणे ऊपजै ४। जहाणेरइए। जिम नारको कह्या। एवजाववेमाणिए। १। इमहीज यावत् वैमानिक पर्यंत चउवीस दडक कहवा।१। वलीगौतमपूछेछे—णेरइयाणंभंते णेरइ

॥ टीका ॥

प्राग्दण्डकाभ्यां युक्तो, चोत्पादप्रतिपक्षत्वाद्वर्त्तमानकालनिर्देशसाधर्म्याच्चोद्वर्त्तनादण्डकः सदाहारदण्डकेन सह, तदनन्तरञ्च नोद्वर्त्तना ऽनुत्पन्नस्या दित्युत्पन्नतदाहारदण्डका वुत्पन्नप्रतिपक्षत्वा च्चोद्वृत्ततदाहारदण्डकाविति, पुस्तकान्तरे तु उत्पादतदाहारदण्डकानन्तर मुत्पादे सत्युत्पन्नस्या दित्युत्पन्नतदाहारदण्डकौ, तत उत्पादप्रतिपक्षत्वा दुद्वर्त्तनाया उद्वर्त्तनातदाहारदण्डकौ, उद्वर्त्तनाया श्चोद्वृत्त स्या दित्युद्वृत्ततदाहारदण्डकौ, क्वचिद्यथोक्तैवेति, एवं तावद् दशापि दण्डका देशसर्वाभ्या मुत्पादादिविचिन्तिताः, अथार्द्धसर्वाभ्यां मुत्पादादीनेव चिन्तयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ अद्धेणमित्यादि ॥ यथा—देशेन, ननु देशस्यार्द्धस्य च को विशेषः ? उच्यते, देश स्त्रिभागादि रनेकधा ऽर्द्धं त्वेकधैवेति, उत्पत्ति रुद्वर्त्तना च प्रायो गतिपूर्विका भवतीति गतिसूत्राणि ॥ विग्गहगइसमावन्नएत्ति ॥ विग्रहे यत्र तत्प्रधाना गति र्विग्रहगति, स्तत्र यदा वक्रेण गच्छति

॥ मूल ॥

वेणं उववण्णे उव्वट्टेवि नेयव्वं ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ अद्धेणं सव्वं उववज्जइ सव्वेणं अद्धं उववज्जइ सव्वेणं सव्वं उववज्जइ जहा पढमिल्लेण अट्ठ दंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा, णवरं जहिं देसेणं देसं उववज्जइ तहिं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ त्तिभाणियव्वं, एवं णा

॥ भाषा ॥

आहार दण्डकनेविषे पूछिनो परे येभागा निषिध्या अने वेभागा लेवा ते देखाडे छै—सव्वेणं वा देसमाहारेइ सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ। सर्व जीवआहारनो देश आहारे सर्वजीवआहार सर्वआहारे एसमे पूछिलापरे पहा तेहने दृष्टांत जाणवा। एएणं अभिलावेणं उववज्जंतेऽवि उव्वट्टंतेणवि भाणियव्वं। ए इणेप्रकारेकरी जिमवेअलावा उपनानेविषे कह्या तिम चव्यानेविषे पणि वेपनाया जाणवा जिमदेश अने सर्वथी आठ आलावा कह्या तिम अर्द्ध अने सर्वथी पणि आठ आलावा कहवा, ते देखाडे छै—नेरइएणंभंते नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ। नारकी हे भगवन्। नारकानेविषे उपजतो थको स्यूं जीव अर्द्ध नारकीने अर्द्ध उपजै। अद्धेणं सव्वं उववज्जइ। अथवा जीव अर्द्ध नारकी सर्वदेश उपजै २। सव्वेणं अद्धं उववज्जइ। अथवा जीव अने नारकीनो अर्द्ध देस उपजै ३। सव्वेणं सव्वं उववज्जइ। अथवा जीवसर्व अने नारकीना सर्वदेश उपजै ४ ए चउभंगी जाणवी। जहा पढमिल्लेण अट्ठ दंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठद

॥ टीका ॥

तदा विग्रहगतिसमापन्न उच्यते अविग्रहगतिसमापन्नस्तु ऋजुगतिक स्थितोवा; विग्रहगतिनिषेधमात्राश्रयणा द्यदिवा विग्रहगतिसमापन्नऋजुगति कएवो च्येत, तदा नारकादिपदेषु सर्वदेवा विग्रहगतिकाना य द्बहुत्व वक्ष्यति' त-त्र-स्या-देकादीनामपि तेषू त्पादश्रवणात्, टीकाकारेणतु केना प्यभिप्रायेणा विग्रहगतिसमापन्न ऋजुगतिकएव व्याख्यातइति ॥ जीवाणं भंते इत्यादि ॥ प्रश्न, स्तत्र जीवाना मानन्त्या त्प्रतिसमय विग्रह गतिमता तन्निषेधवताञ्च बहूना स्भावादाह ॥ विग्गहगइइत्यादि ॥ नारकाणा त्वल्पत्वेन विग्रहगतिमता कदाचि दसम्भवा, त्सम्भवेपि चैकादी नामपि तेषा स्भावा द्विग्रहगतिप्रतिषेधवताञ्च सदैव बहूना भावादाह ॥ सव्वेवितावहोज्जअविग्गहेत्यादि ॥ विकल्पत्रय, असुरादि ष्वेतदेवा तिदे

॥ मूल ॥

पन्न एव सव्वेवि सोलस दंडगा भाणियव्वा ॥ जीवेणं भंते ! किं विग्गहगइसमावन्नए अविग्गहगइसमा वन्नए ? गोयमा ! सियविग्गहगइ समावन्नए सियअविग्गहगइसमावन्नए एवं जाववेमाणिए ॥ जीवाणं

॥ भाषा ॥

डगाभाणियव्वा । जिम देशेकरी आठदंडककह्या तिम अर्द्धकरी पणि आठदंडक कहवा, इमकांई एक पूछस्यै देश अने अर्द्धमाहिस्यो विशेषछे तिहा इम कहीये देशना त्रिणभागादिक अनेकभेदछे अने अर्द्धनो एकहीज भेदहोय एविशेष जाणवो । णनरजहिदेसेणदेसउववज्जइ । एतलोविशेष जेस्थानकने विषै देसेणदेसउववज्जइ एपदकह्यो । तहिंअद्धेणअद्धउववज्जइ । तेणेस्थानकै अद्धेणअद्धउववज्जइ । इइभाणियव्व । इण प्रकारे कहवो । एवणाणत्त । इम एतलो भेदछे । एवसव्वेविसोलसदंडगाभाणियव्वा । इम सगलाई सोलैदंडकविचारीने उपयोगसहित कहवा ॥ जीवेणभंतेकिंविग्गहगइसमावणए । उप जिवो चविवो प्राग्गतिपूर्वक हुवेछे, तेमाटे गतिसूत्र कहेछे—एकजीव हेभगवन् । स्यूवाकोगतिकरी जीवचलै तिवारे विगृहगति समापन्नकहीये । अ विग्गहगइसमावणए । सूधीगतिकरे जीवचलै अथवा गतिनेविषै रह्योथको, पणि अविगृहगति समापन्नकहीये श्यामाटे इहा विगृहगति निषेधमात्र आश्रयीने अविगृहगति समापन्नकह्योछे, जोविग्रहगतिसमापन्न कहीये ऋजुगति कहीज जीवकहीये तोनरकादि पदनेविषे सदाई अविग्रहगतिक जी वनो जेवहुत्वकह्यु तेनहोय एकादिकनो पणि नारकादि गतिनेविषे उपजवो हुवेछे तेमाटे इतिप्रश्न उत्तरं । गोयमा सियविग्गहगइसमावणए । हेगौत

[illegible]

णो । ठि ठिमागद समा [illegible] समा[illegible] ४ [illegible] । ठिमागद समायमाणि य
ठिमागद समायमाणि [illegible] । ठि ठिमागद समायमा [illegible] समायमा [illegible]
समा । [illegible] ठिमागद समायमा [illegible] समायमाणि ठिमागद समा
[illegible] ठिमागद समायमाणि ठिमागद समा समाय ४ एव [illegible] ठिमागदीणि

[illegible]

॥ टीका ॥

न्येषुतु त्रयमेवेति ॥ तियभंगोत्ति ॥ त्रिकरूपो भङ्ग स्त्रिकभङ्गो भङ्गत्रयमित्यर्थ , गत्यधिकारा च्च्यवनसूत्र ॥ महड्ढिएत्ति ॥ महर्द्धिको विमानपरि वाराद्यपेक्षया ॥ महज्जुइएत्ति ॥ महाद्युतिक. शरीराभरणाद्यपेक्षया ॥ महब्बलेत्ति ॥ महाबल शारीरप्राणापेक्षया ॥ महाजसत्ति ॥ महायशा बृह त्प्रख्याति. ॥ महेसक्खेत्ति ॥ महेशो महेश्वर इत्याख्या भिधान यस्यासौ महेशाख्य. ॥ महासोक्खेत्ति क्वचित् ॥ महाणुभावेत्ति ॥ महानुभावो विशिष्टवैक्रियादिकरणाचिन्त्यसामर्थ्य ॥ अविउक्कंतियचयमाणेत्ति ॥ च्यवमानता किलोत्पत्तिसमये प्युच्यते इत्यतआह' व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति स्तन्निषेधा दव्युत्क्रान्तिक , अथवा ; व्यवक्रान्ति र्मरणन्तन्निषेधा दव्यवक्रान्तिक , तद्यथा भवत्येव च्यवमानो जीवन्नेव मरणकालइत्यर्थ ॥ अविउक्कंतियचयचय माणेत्ति क्वचिद्दृश्यते , तत्र चय शरीर ॥ चयमाणेत्ति ॥ त्यजन् ॥ किंचिकालंति ॥ कियन्त मपि कालं याव न्नाहारये दितियोग , कुत इत्याह , ह्रीप्रत्ययं लज्जानिमित्तं , सहि च्यवनसमये ऽनुपक्रान्तएव पश्य त्युत्पत्तिस्थान मात्मनो , दृष्ट्वा च तदेवभवविसदृशा पुरुषपरिभुज्यमानस्त्रीगर्भाशय

॥ मूल ॥

यभंगो॥ देवेण भंते ! महड्ढिए महज्जुइए महब्बले महाजसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कंतियं चयमाणे किं

॥ भाषा ॥

हगतिवंतजीव एकादिपणिहुवे तेमाटे विग्रहगतिवंत एकपणिहुवे एहनो युक्तपूर्वेलिखीजछे । अहवाअविग्गहगइसमावण्णगाय विग्गहगतिसमावण्णगा य । अथवा अविग्रहगतिवंत घणाहुवे अने विग्रहगतिवंत पणिघणाहोय ए तीनभागा ऊपजे असुरादिकदंडकनेविषे पणि इमहीज भागाहुवे ते देखा डेछे—एवजीवेएगिंदियवज्जोदयभंगो । इम जीवने एतले विशेषरहितजीवने तथा एकेंद्रीने ए बेजनेविषे विग्रहगतिवंत तथा अविग्रहगतिवंत घणाहो जहुवे, तीमटे तीनभागा नहुवे, एतलामाटे जीव एकेंद्रीवर्ज्जी बीजा सर्वदंडकनेविषे तीनभागाहुवे गतिना अधिकारथी च्यवनसूचकहेछे—देवेणभंतेम हड्ढिए । देवणवाक्यालंकारे हेभगवन् । विमानपरिवारनी अपेचाये करी । महज्जुइए । महर्द्धिक शरीर आभरणनी अपेचाये ज्योतिवंत । महब्बले । शरीरनी अपेचाये महाबलवंत । महाजसे । मोटा यशवंत मोटोप्रसिद्धछे । महेसक्खे । महाईश्वरछे अथवा मोटा सुखनाधणीछे । महाणुभावे । प्रधा न वैक्रियादि करणनेविषे समर्थ । अविउक्कंइयचयचयमाणेकिंचिकालंहिरवत्तिय । देवता मरणनेविषे शरीरछोडता एतले जीवतोथको पणि मरणका

॥ ११० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ टीका ॥

जीवेणमित्यादि ॥ गब्भवक्कममाणेत्ति ॥ गर्भे व्युत्क्रामन् गर्भे उत्पद्यमान इत्यर्थ. ॥ दव्विंदियाइंति ॥ निर्वृत्त्युपकरणलक्षणानि तानिहीन्द्रियपर्याप्तौ सत्या मविष्यन्ती त्यनीन्द्रिय उत्पद्यते ॥ भाविंदियाइति ॥ लब्ध्युपयोगलक्षणानि तानिच ससारिण सर्वावस्थाभावीनीति ॥ ससरीरित्ति ॥ सह शरीरेणेति सशरीरी, इन् समासान्तभावात् ॥ असरीरित्ति ॥ शरीरवान् शरीरी तन्निषेधा दशरीरी ॥ वक्कमइत्ति ॥ व्युत्क्रामतिउत्पद्यत इत्यर्थ ॥

॥ मूल ॥

जोणियाउयंवा मणुस्साउयंवा ? हंता गोयमा ! देवेण महड्ढिए जाव मणुस्साउयंवा । जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ अणिंदिएवक्कमइ ? गोयमा ! सियसइंदिए वक्कमइ सिय अणिंदिए वक्कमइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ सेतेण ट्ठेणं । जीवेणं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सरीरीवक्कमइ असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सियससरीरी व क्कमइ सियअसरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! उरालियवेउव्विय.आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कम

॥ भाषा ॥

पजे तेमाटे एकादिक तियचनो आउखो भोगवे तथा । मणुस्साउयवा । मनुष्यनो आउखो अनुभवे इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हेगौतम । देवेणमहिड्ढिए जावमणुस्साउयवा । देव महर्द्धिक यावत् भवे मनुष्यनो आउखो अनुभवे भोगवे इत्यर्थ । जीवेणभतेगभवक्कममाणे । उपजिवाना अधिकारथकी एकहेछे—जीवहेभगवन् । गर्भनेविषे उपजतो थको । किसइदिएवक्कमइ । स्यु सइन्द्री इंद्रियसहित उपजे अथवा । अणिदिएवक्कमइ । अनिद्रिय इद्री रहित उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियसइदियवक्कमइ । हे गौतम । कदाचित् इद्रीसहित उपजे । सियअणिदिएवक्कमइ सेकेणठ्ठेणभते । कदाचित् इद्रियरहित उपजे तिवारे गौतमकहे तेस्यामाटे हेभगवन् । इमकह्यु इतिप्रश्न उतर । गोयमा दव्विदियाइपडुचसइदिएवक्कमइ । हेगौतम । निर्वृत्युपकरण लक्षण स्पर्शनरसनघ्राण चक्षु श्रोतेंद्रिय ते पर्याप्त थका हुवे ते द्रव्येद्री कहीये,वाह्येद्री आश्रीइद्रिय रहितउपजे । भाविदियाइपडुचसइदिएवक्कमइ सेतेणठ्ठेणं गोयमा । लब्ध उपयोग लक्षण अंतर्गत ज्ञानरूप इन्द्रिय ससारीजीवने सर्व अवस्थानेविषे हुइछे ते आश्री इद्रियसहित उपजे भगवत कहेछे—

॥ टीका ॥ तप्पढमयाएत्ति ॥ तस्य गर्भव्युत्क्रमणस्य प्रथमता तत्प्रथमता तया, किमिति प्राकृत्वा त्कथं ॥ माउओयंति ॥ मातुरोजो जनन्या आर्त्तव शोणित मित्यर्थः ॥ पिउसुक्कंति ॥ पितु शुक्र इह यदितिशेषः ॥ तंति ॥ आहार मितियोग ॥ तदुभयसंसिठंति ॥ तयो रुभय द्वय तदुभय तच्च त त्स श्लिष्टञ्च संसृष्टवा, संसर्गवत् तदुभयसंश्लिष्ट तदुभयसंसृष्टवा ॥ जसेत्ति ॥ या तस्य गर्भसत्त्वस्य माता ॥ रसविगईओत्ति ॥ रसरूपा विकृती र्दुग्धाद्या

॥ मूल ॥ इ तेयाकम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ सेतेणठेणं गोयमा ! जीवेणं भंते ! गब्भंवक्कममाणे तप्पढमया ए क माहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं त तदुभयसंसिठं कलुसंकिब्बिस तप्पढमयाए आहार माहारेइ । जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे कि माहारमाहारेइ ? गोयमा ! जंसे मायानाणाविहाओ रसविगईओ

॥ भाषा ॥ तेणे कारणे हेगौतम । इत्यादि पूर्ववत्, वलीगौतमपूछेछे—जीवेणंभंतेगब्भंवक्कममाणे । जीव हेभगवन् । गर्भनेविषे उपजतो थको । किंससरीरीवक्कमइ । स्यू शरीर सहित उपजे अवतरे अथवा । असरीरीवक्कमइ । शरीररहित उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियससरीरीवक्कमइ । हेगौतम । कदाचित् श रीर सहित ऊपजे अवतरे । सियअसरीरीवक्कमइ । कदाचित् शरीररहित अवतरे गौतमकहेछे—सेकेणठेणभंते । तेस्यामाटे हेभगवन् । इमकह्यु इत्यादि पूर्ववत् उत्तर । गोयमा ओरालियवेउव्विय आहारयाइ पडुच्च असरीरीवक्कमइ । हेगौतम । औदारिक वैक्रिय आहारक ए तीन शरीरनी अपेक्षाये शरी ररहित ऊपजे जेमाटे वाटवहता जीवने ए तीनशरीरनो अभावछे तेमाटे अशरीरीकह्या । तेयाकम्माइ पडुच्चससरीरीवक्कमइ । तैजस कार्मणएवे शरीर जीवने संसार अवस्थानेविषे सर्वत्रापि हुवेछे तेमाटे । सेतेणठेण गोयमा । तेसिणे अर्थे हेगौतम । इमकह्युं किवारे शरीरसहित किवारे शरीररहित ऊप जे वलीगौतम पूछेछे—जीवेणभंतेगब्भंवक्कममाणेतप्पढमयाए आहार माहारेइ । जीव एवाक्यालकारे हेभगवन् । गर्भनेविषे उपजताजीवने गर्भनेविषे ऊप नाने तेप्रथमथीज स्यू आहारप्रते आहारे ग्रहेछे इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा माओओय । हेगौतम । मताने ऋतुसंबधीरुधिर । पिउसुक्क । पिता तानो शुक्र । ततदुभयसंसिठकलुसंकिब्बिसतप्पढमयाए आहारमाहारेइ । ते आहारते मातानो ऋतुसंबधी रुधिर, पितानोवीर्य, ते बेउ माहोमाहि

॥ टीका ॥

रसविकारा स्ता ॥ तदेगदेसेणं ॥ तासां रसविकृतीनां मेकदेशं स्तदेकदेशं, स्तेनसह ओजं आहारयतीति ॥ उच्चारेइवत्ति ॥ उच्चारो विष्टा इतिरूप प्रदर्शने, वाविकल्पे, खेलो निष्ठीवनं, सिङ्घाण नासिकाश्लेष्मा ॥ केसमसुरोमनहत्ताएत्ति ॥ इह श्मश्रूणि कूर्चकेशा, रोमाणि कक्षादिकेशा ॥ जी

॥ मूल ॥

आहारेइ तदेगदेसेणय ओयमाहारेइ। जीवस्सणं भंते! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थिउच्चारेइवा पासवणेइवा खेलेइवा सिंघाणेइवा वंतेइवा पित्तेइवा? गोयमा! णोइणट्ठेसमट्ठे, सेकेणट्ठेणं? गोयमा! जीवेणं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तंचिणाइ तं० सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए से ते

॥ भाषा ॥

मिश्या मलिनसहित किल्बिषरूप तेने प्रथमथी जीव एहवा आहारप्रते आहारेग्रहै इत्यर्थ। जीवेणभंतेगभगएसमाणेकिमाहारमाहारेइ। वली गौतमपूछेछे—जीवण इसे वाक्यालंकारे हेभगवन्। गर्भमांहे ऊपनोथको स्यु? आहारआहारे ग्रहै इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जंसेमायाणाणाविहाओरस वइओआहारेइ। हेगौतम। जेगर्भगतजीवनी माता अनेक प्रकारनी रसरूप विकृति घृतदुग्धादि रसविकार आहारग्रसेकरे। तदेगदेसेणओयमाहारेइ। तिणि विकृतनो कछु एकदेश थोडो तिणिसहित ओज आहारे आहारग्रहै, वलीगौतमपूछेछे—जीवस्सणभंतेगभगयस्ससमाणस्सअत्थिउच्चारेइवा। जाव ते णवाक्यालंकारे हेभगवन्। गर्भनेविषै ऊपनाथका मैं एतावता गर्भनेविषै रह्याथकाने वृद्धिनीतोकरे इतिरूप प्रदर्शने वा विकल्पे। पासवणेइवा। लघुनीतिकरे परिश्रवणकरे। खेलेइवा। थूकनिष्टीवन्। सिंघाणएइवा वतेइवा। नाकनो श्लेष्म,ग्रे वमनकरै। पितेइवा। पित्तनाशे इतिप्रश्न। भगवतकहेछे—गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगौतम एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी। सेकेणभंतेएववुचइ। गौतमकहेछे—तेस्यामाटे हेभगवन् इमकह्यु गर्भगत जीवनै उच्चार,दिकनथी। गोयमा जीवेणगभगएसमाणे जमाहारेइ। हेगौतम जीवगर्भनेविषै रह्योथको जे आहारकरे। तचिणाइ। ते पुष्टिकरै। तंजहा सोइंदियत्ताए। ते कहेछे—श्रोत्रेंद्रियरणे कानपणे। जावफासिंदियत्ताए। यावत्शब्द चक्षुरिंद्रियपणे घ्राणेंद्रियपणे रसनेंद्रियपणे स्पर्शनेंद्रिय पणें। अट्ठिअट्ठिमिंज। अस्थिहाड हाडमाहिली मीजोते चौगटपणे। केसमसुरोमनहत्ताए। केश डाढीमूछरनाकेश छनावाल रोमकक्षादिवाल नखपणे पुष्टकरै एतलेओकोपरिण

॥ टीका ॥ देशमित्यादि ॥ सव्वओत्ति ॥ सर्वात्मना ॥ अभिक्खणंति ॥ पुनः पुनः ॥ आहच्चत्ति ॥ कदाचि आहारयति, कदाचि न्न आहारयति, तथा स्वभावत्वात् यतश्च सर्वत आहारयतीत्यादि, ततो मुखेन न प्रभुः कावलिक माहार माहर्तुमितिभाव, अथ कथमयं आहारयतीत्याह ॥ माउजीवरसहरणी त्यादि ॥ रसो ह्रियते आदीयते यया सा रसहरणी, नाभिनालमित्यर्थं, मातृजीवस्य रसहरणी मातृजीवरसहरणी, किमित्याह, पुत्रजीवरसहर

॥ मूल ॥ णठेण ॥ जीवेणं भंते ! गप्भगए समाणे पभूमुहेणं कावलियआहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णोइणठेस मठे सेकेणठेण ? गोयमा ! जीवेणं गप्भगए समाणे सव्वउ आहारेइ , सव्वउ परिणामेइ सव्वउउस्ससइ स व्वउ निस्ससइ , अभिक्खणं आहारेइ , अभिक्खणं परिणामेइ , अभिक्खणं उस्ससइ , अभिक्खणं निस्सस इ , आहच्च आहारेइ , आहच्च परिणामेइ , आहच्च उस्ससइ , आहच्च निस्ससइ , माउजीव रसहरणीपु

॥ भाषा ॥ णं । सेतेणट्ठेणं गोयमा । तेणअर्थे हे गौतम आगले कह्याने आहारादिक नहुव चनगोतमपूछेछे—जीवेणंभंतेगब्भगएसमाणेपभूमुहेणं । जीव हे भगवन् गर्भनेविषे रह्योथको समर्थछे मुखेकरी । कावलियआहार आहारितए । कवलाहारनो आहारकरवाने एतलेजीव गर्भमाहिंथको कवलाहार लेवाने समर्थछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी । सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ । तिवारे गौतमकहेछे—तेस्यामाटे हे भगवन् एम कह्यु यावत् कवलाहारनथी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवेणंगब्भगएसमाणे । हेगौतम । जीव गर्भावासमाहे गर्भनेविषे रह्योथको । सव्वओआहारेइ । सगले आत्माविषेकरी आहारे । सव्वओपरिणामेइ । सर्व आत्माविषेकरी परिणमावे । सव्वओउस्ससइ । सर्व आत्माविषेकरी उस्सासले । सव्वओनीससइ । सर्व आत्माविषेकरी नीसासले । अभिक्खणं आहारेइ । वारंवार आहारे । अभिक्खणं परिणामेइ । वारंवारपरिणमावे । अभिक्खणंउस्ससइ । वारंवार उसासले । अभिक्खणंनीससइ । वारंवार नीसासले । आहच्चआहारेइ । कदाचित् आहारे । आहच्चपरिणामेइ । कदाचित् परिणमावे । आहच्चउस्ससइ । कदाचित् उससे । आहच्चनीससइ । कदाचित्नीससे । माउजीवरसहरणी । मातानाजीवनी कहता नाभिनाल । पुत्तजीवरसहरणी । पुत्रना जीवनी रसहर

॥ टीका ॥

णी, पुत्रस्य रसोपादाने कारणत्वा त्कथमेवमित्याह, मातृजीवप्रतिबद्धा सती सा यत ॥ पुत्तजीवंफुडत्ति ॥ पुत्रजीवं स्पृष्टवती, इहच प्रतिबद्धता गाढसम्बन्ध स्तदशत्वात्' स्पृष्टताच सम्बन्धमात्र मतदशत्वा, दथवा; मातृजीवरसहरणी पुत्रजीवरसहरिणीचेति, द्वे नाड्यौ स्त स्तयो श्चा द्या मातृजीवप्रतिबद्धा पुत्रजीवस्पृष्टेति ॥ तम्हत्ति ॥ यस्मा देव तस्मात्' मातृजीवप्रतिबद्धया रसहरण्या पुत्रजीवस्पर्शनात् आहारयति ॥ अवरावियत्ति ॥ पुत्रजीवरसहरण्यापिच पुत्रजीवप्रतिबद्धासती मातृजीवरपृष्टवती ॥ तम्हत्ति ॥ यस्मा च्चिनोति शरीर, उक्तञ्च तत्रान्तरे—पुत्रस्यनाभौमातुश्च हृदिना डीनिबध्यते । ययासौपुष्टिमाप्नोति केदारइवकुल्ययेति ॥ १ ॥ गर्भाधिकारादेवेदमाह ॥ कइणमित्यादि ॥ माइअंगत्ति ॥ आर्त्तवविकारबहुलानीत्य

॥ मूल ॥

त्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिवद्धा पुत्तजीवफुडा, तम्हा आहारेइ तम्हा परिणामेइ, अविरावियणं पुत्तजीवपडिवद्धा माउजीवफुडा, तम्हा चिणाइ तम्हा उवचिणाइ, सेतेणट्ठेण जाव नो पभूमुहेणं कावलियं आहार आहारित्तए ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तओ माइयंगा पन्नत्ता तंजहा मंस

॥ भाषा ॥

णी नाभिनाल । माउजीवपडिवद्धा । माताजीव प्रतिवद्ध थको। पुत्तजीवफुडा । पुत्रजीवसो फरसी। तम्हाआहारेइ तम्हा परिणामेइ । जेकारणथी इमछेते कारणथी मातृजीव प्रतिवद्ध रसहरणीयेकरी पुत्रजीव स्पर्श नथकी आहारकरे तेमाटे जेपरिणमें। अविरावियणं। बीजी नाडि पुत्रजीव रसहरणी पणि पुत्तजीवपडिवद्धा । पुत्र जीवते प्रतिवद्ध थको । माउजीवफुडा । माताना जीवसो फरसी । तम्हाचिणाइ । तिणथी शरीर । तम्हाउवचिणाइ । तिणइ शरीर पीछिकरेवधारे। सेतेणट्ठेण गोयमा जावणोपभू। तेतेणें अर्थे हेगौतम । यावत् नही समर्थ। मुहेणकावलियआहारमाहारित्तए । मुखेकरी कवलाहार करवाने एतावता मुखे कवलाहार करे नही इत्यर्थं गर्भना अधिकारथकीज एहवूं गौतमपूछछे—कइणंभंतेमाइअगापन्नत्ता। केतला णइतिवाक्यालंकारे हेभगवन् । मातानाअग ऋतुसबधी विकार बहुल कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तओमाइअगा पन्नत्ता तजहा। हेगौतम। तीन माता सबधी अग कह्या ते कहेछे—मससोणिएमत्थुलुग। मास १ रुधिर २ माथानो भेजो अथवा फेफसादि अथवा कालेजो वलगौतमपूछेछे—कइणभंतेपेइअगा पन्नत्ता। के

॥ टीका ॥

र्थ ॥ मत्थुलुगंति ॥ मस्तकभेद्यकं, अन्येत्वाहु मेंद पिफ्फसादि मस्तुलुगमिति ॥ पेइयगत्ति ॥ पैतृकाङ्गानि शुक्रविकारबहुलानीत्यर्थ ॥ अट्ठिमिजत्ति ॥ अस्थि मध्यावयव, केशादिकबहुसमानरूपत्वा देकमेव' उभयव्यतिरिक्तानितु शुक्रशोणितयो. समविकाररूपत्वात् पितृमात्रो साधारणानीति ॥ अम्मापेइएणति ॥ अम्बापैतृक शरीरावयवेषु शरीरोपचारात्, उक्तलक्षणानिमातापितृङ्गानीत्यर्थ जावइयसेकालति ॥ यावन्तकाल ॥ सेत्ति ॥ त त्स्यवा, जीवस्य भवधारणीय भवधारणप्रयोजन मनुष्यादिभवोपग्राहकमित्यर्थ ॥ अव्वावणेत्ति ॥ अविनष्ट ॥ अहेणति ॥ उपचयान्तिमसमया दनन्तर मेतत् अम्बापैतृक शरीर ॥ वोयसिज्जमाणेत्ति ॥ व्यवरुध्यमाण हीयमानं, गर्भाधिकारा देवापर सूत्र ॥ गब्भगएसमाणेत्ति ॥ गर्भ ङ्गत सन् गृहीत्वे

॥ मूल ॥

सोणिए मत्थुलुंगं ॥ कइणं भंते ! पेइयगा पणत्ता ? गोयमा ! तत्र पेइयगा पणत्ता तंजहा अट्ठिअट्ठि मिंजाकेसमंसुरोमनहे ॥ अम्मापेइएणं भंते ! सरीरए केवयं कालं संचिठइ ? गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ, एवतियं काल संचिठइ, अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरि

॥ भाषा ॥

तला हेभगवन् । शुक्रविकार बहुलपिताना अगकह्या । गोयमा तओपिइअगा पणत्ता तजहा । हेगोतम तीन पिता सबधी अगकह्या ते कहिछे—अठि अठिमिजा । हाड हाड माहिली मीजी अस्थि मध्यावयव । केसमसुरोमनहे । केशादिक बहुसमान रूपथकी एकहीज अगकह्योये केशमसुरोम नख के श ते माथाना मसुते दाढो मूछना बाल रोमते कचादि बाल नख ए तीनअग ए बेउथकी व्यतिरिक्त अगछे तिके शुक्र शोणित समविकारथकी मा ता तथा पिताना साधारण अगकह्योये । अम्मापिइएणभतेसरीर एकेवइयकालसचिट्ठइ । माता पितानाअग हेभगवन् । शरीरते केतलो एक काल रहै ए तावता मातापिताथी ऊपनो जेशरीर ते केतलो एक कालरहै इतिभाव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावइयसेकाल भवधारणिज्जेसरीरए । हेगोतम जेत लोकाल तेजीवने भवधारणप्रयोजन मनुष्यादि भवोपग्राहक तेशरीर । अव्वावणेभवइ । विणसै नही जेतलालगे ते शरीर विनाशपामैनही । एवइयकाले सचि.इइ । एतलाकाल लगे तेमातापितासबधोअग रहै एतावता मरणपर्यंतरहै । अहेणसमएसमएवोयसिज्जमाणे २ चरिमकालसमयसिवोच्छणेभवइ ।

तिक्षेप' ॥ पगएइत्ति ॥ स गर्भोराजादिगर्भरूप', सञ्ज्ञित्वादिविशेषणानिच गर्भस्थस्यापि नरकप्रायोग्यकर्मबन्धसम्भवाभिधायकतयो क्तानि' वीर्य लब्ध्या वैक्रियलब्ध्या सङ्ग्रामयतीतियोग, अथवा, वीर्यलब्धिको वैक्रियलब्धिकश्च, सन्निति परानीक शत्रुसैन्य ॥ सोच्चत्ति ॥ आकर्ण्य, निशम्य मन सावधार्य्य ॥ पएसेनिच्छुभइत्ति ॥ गर्भदेशा द्बहि क्षिपति ॥ समोहणइत्ति ॥ समवहन्ति समवहतोभवति' तथाविधपुद्गलग्रहणार्थं सङ्ग्रामसङ्ग्राम

मकालसमयंसि वोच्छिन्ने भवइ ॥ जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थे गइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा, सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! सेणं सन्नीपंचिंदिए सव्वाहि पज्ज त्तीएहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणिय आगयं सोच्चा निसम्म पएसे निच्छुभइ, वेउव्वियस मुग्घाएणं समोहणइ समोहणइए, चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ विउव्वइत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणी

॥ छिव एइति वाक्यालकारे उपचयना अतिमसमय थको अनतर ए मातापितासबधी शरीर छायमानथाताथको छेहलाकाल समयनेविषे वो च यपामे एतावता जेजीवने आऊखाने छेहले समये शरीरमिटे जाय इत्यर्थ, गर्भाधिकारथकीज वलीगौतमपूछेछे— जीवेणभंतेगब्भगएसमाणे । जीवहेभग वन् गर्भमाहेथको । णेरइएसुउववज्जेज्जा। जेमरी नारकनेविषे नारकीपणे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अत्थेगइएउववज्जेज्जा। हेगौतम कोईएकजीव नारकीनेविषे ऊपजे । अत्थेगइएणोउववज्जेज्जा । केतला एक जीव नऊपजे तिवारे गौतमपूछेछे—सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ। तेस्यामाटे हेभगवन् इमकह्यु को। ईएक ऊपजे कोईनऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेणसन्नीपचिंदिएसव्वाहिपज्जत्तीहिपज्जत्तए वीरियलद्धीए पराणीय आगयंसोच्चा णिसम्म पएसे नच्छु भइनिच्छुभइत्ता। हेगौतम कोईएक जीव राणीना गर्भनेविषे आवे एतलै राजपुत्रहुये ते जीव णवाक्यालकारे सन्नीयो पचेद्री सर्व जेपोतानी पर्याप्तिति णे करी पर्याप्ति भावप्रते पाम्यो तेजीव वीर्यलब्धिकरी तथा वैक्रियलब्धिकरी अथवा वीर्यलब्धिवत तथा वैक्रियलब्धिवंतथको शत्रुनी सेना कटक आवत साभलीने मनमे अवधारीने जीवना प्रदेश गर्भथी बाहिर काढे काढीने। वेउव्वियसमुग्घाएणसमोहरणइसमोहरणइत्ता। वैक्रिय समुद्घातेंकरी समवह

॥ टीका ॥

यति, युद्धकरोति ॥ अत्यकामएत्यादि ॥ अर्थे द्रव्ये कामो वाञ्छामात्र यस्या सा वर्थकाम, एव मन्यान्यपि विशेषणानि' नवरं राज्यं नृपत्व, भोगा गन्धरसस्पर्शा, कर्मौ शब्दरूपे, काङ्क्षा गृद्धि रासक्ति रित्यर्थ, अर्थकाङ्क्षा सञ्जातास्येति अर्थकाङ्क्षित, पिपासेवपिपासा, प्राप्तेप्यर्थेऽतृप्ति' ॥ तच्चित्तेत्ति ॥ तत्रार्था दौचित्त सामान्योपयोगरूप यस्या सौ तच्चित्त ॥ तम्मणेत्ति ॥ तत्रैवा र्थादौ मनोविशेषोपयोग रूप यस्य स तन्मना ॥ तल्लेस्सेत्ति ॥ लेश्यात्मपरिणामविशेष. ॥ तदज्झवसिएत्ति ॥ इहा ध्यवसायो अध्यवसित, तत्र तच्चितादिभावयुक्तस्य तस्मिन्नर्था दावेवाध्यवसितं, परिभोगक्रियासम्पादनविषय मस्येति तदध्यवसित ॥ तत्तिव्वज्झवसाणेत्ति ॥ तस्मि न्नेवार्थादौ तीव्रमारम्भकाला दारभ्य प्रकर्षयापि अध्यवसान म्प्रयत्नविशेषलक्षण यस्य सतथा, ॥ तदठोवउत्तेत्ति ॥ तदर्थ मर्थादिनिमित्त मुपयुक्तो वहित स्तदर्थो पयुक्त ॥ तदप्पियकरणेत्ति ॥ तस्मि न्नेवार्थादा

॥ मूल ॥

एणं सद्धिंसंगामंसंगामेइ सेणंजीवेअत्यकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए अत्यकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए अत्यपिवासिए रज्जपिवासिए भोगपिवासिए कामपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेस्से तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसिणंअंतरासिकालकरेज्ज

॥ भाषा ॥

तह्वे तथा विधि पुद्गल ग्रहवाने अर्थे ग्रहाने। चाउरंगिणीएसेणाएविउव्वइ विउव्वइत्ता। हाथी घोडा रथपाइकरूप चतुरंगिणीसेना विकूर्वे विकुर्वीने। चाउरंगिणीएसेणाए। चतुरंगिणी सेनासहित। पराणीएणसद्धिं। पराई सेना कटक ते सघाते। संगामसंगामेइ। संग्रामप्रते संग्रामेंयुद्धप्रते करे। सेणजीवे वेअत्यकामए। तेजीव द्रव्यनो काम कहता अभिलाष वाछाछे, तेहने। रज्जकामए। राज्यनीवाछाछे, जेहने। भोगकामए। गधरस फरसनी वाछाछे जेहने। कामकामए अत्यकंखिए। शब्दरूप तेहनी वाछाछे जेहने अर्थनी कांचाकहता आसक्तिथईछे जेहने। रज्जकंखिए भोगकंखिए। राज्यनी आसक्तिथईछे जेहने भोगनी आसक्तिथईछे जेहने। कामकंखिए। कामनी आसक्ति थईछे जेहने। अत्थपिवासिए। पाम्याथका पणितृप्तिनथाय ते पिपासा कहीये अर्थनी तृप्ति नथाय। रज्जपिवासिए। राज्यनी अतृप्तिछे जेहने। भोगपिवासिए। भोगनी अतृप्तिनथी जेहने। कामपिवासिए। कामनेविषे जे अ

वर्प्पिता न्याहितानि करणानी न्द्रियाणि कृतकारितानुमतिरूपाणिवा; येन स तथा ॥ तब्भावणाभाविएत्ति ॥ असकृ दनादिससारे तद्भावनया र्थादिसस्कारेण भावितो य स तथा ॥ एयसिणअंतरसित्ति ॥ एतस्मिन् सङ्ग्रामकरणावसरे काल मरणमिति ॥ तहारूवस्सत्ति ॥ तथाविधस्य उचि तस्ये त्यर्थ , श्रमणस्य साधो , वाशब्दो देवलोकोत्पादहेतुत्व म्प्रति श्रमणमाह' न वचनयो स्तुल्यत्वप्रकाशनार्थ. ॥ माहणस्सत्ति ॥ मा हने त्येव मादिशति, स्वय स्थूलप्राणातिपातादिनिवृत्तत्वा द्य· स माहन·, अथवा, ब्राह्मणो ब्रह्मचर्यस्य देशत सद्भावात्, ब्राह्मणो देशविरत स्तस्यवा;

नेरइएसुउववज्जइ सेतेणठेणं गोयमा ! जावअत्थेगइए नोउववज्जेज्जा । जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे देव लोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा २ सेकेणठेणं ? गोयमा ! सेणंसन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहि पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एगमवि आ

छिछे । तच्चित्ते तम्मणे । अर्थादिकनेविषे चित्तछे जेहनो अर्थादिकपर मनछे जेहनो । तल्लेसे तदज्झवसिए । अर्थादि परलेश्याछे जेहनो अर्थादिविषे अ ध्यवसाय भोगादि निमित्त विषयछे जेहनो । तत्तिव्वज्झवसाणे । तिसा अर्थादिकने तीव्र आरभ जतन विशेषकरे । तदट्ठोवउत्ते । तिसा अर्थादिकनेविषे उपयुक्त । तदप्पियकरणे । तिसा अर्थादिकनेविषे इन्द्री स्थाप्या अथवा करण करावण अनुमोदनारूप । तब्भावणाभाविए । तेहीज अर्थादिकनी भावना भावतोछे अनादिससारनेविषे तेजीव । एयसिण अतरसि । एहवा सग्रामकरण अवसरनेविषे अतरनेविषे । कालकरेज्जा । मरणधर्मप्रते पामे तो तेजीव मरीने । णेरइएसुउववज्जइ । नरकनेविषे नारकपणे ऊपजे इत्यर्थ । सेतेणट्ठेण गोयमा जावअत्थेगइएणोउववज्जेज्जा । ते तेणे कारणे हेगौतम इमकह्यो याव त् कोई एक जीव गर्भमाहियको नारकीनेविषे ऊपजे कोई एकजीव नऊपजे । जीवेणभतेगब्भगएसमाणेदेवलोएसुउववज्जेज्जा । वलीगौतमपूछेछे—जीव हेभगवन् । गर्भमाहिरह्योथको देवलोकनेविषे देवतापणे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइएउववज्जेज्जा । हेगौतम । कोई एकजीव गर्भमाहियको मरी देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे । अत्थेगइएणोउववज्जेज्जा । कोईएक नऊपजे । सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ । गौतमपूछेछे—ते स्येकारणे हेभगवन् । इमकह्यु

॥ टीका ॥ अतिएत्ति ॥ समीपे एकम प्यास्ता मनेकं आर्यं आराद्यात पापकर्मभ्य इत्यार्यं अतएव धार्म्मिकमिति ॥ तउत्ति ॥ तदनन्तरमेव ॥ संवेगजायसड्ढे त्ति ॥ संवेगेन भवभयेन जाता श्रद्धा श्रद्धान धर्मादिषु यस्य स तथा ॥ तिव्वधम्माणुरागरत्तेत्ति ॥ तीव्रो यो धर्म्मानुरागो धर्म्मबहुमान स्तेन रक्त इव य: सतथा ॥ धम्मकामएत्ति ॥ धर्म्म श्रुतचारित्रलक्षण , पुण्य तत्फलभूत शुभकर्मेति ॥ अवग्गुज्जएवत्ति ॥ आम्रफलवत्कुब्ज ॥ अत्थेज्जत्ति ॥

॥ मूल ॥ रियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तउ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुरागरत्ते सेणं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्गपिवासिए मोक्खपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तदट्ठोवउत्ते तदप्पियक

॥ भाषा ॥ कोइ एक ऊपजे कोइएक न ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गायमा सेणमणपचिंदिए । हेगौतम ते जोव गर्भावस्थानकारे सन्नीपचेंद्री । सव्वाहिंपज्जत्तीहिंपज्जत्त ए । सगलीही पर्याप्तिकरी पर्याप्तभावप्रतें पाम्या । तहारूवस्स समणस्सवा । तथाविध उचित योग्यने तपस्वीने । समणस्सवा । माहण इसोकहै तेसाधु अथ वा स्थूल प्राणातिपातथी निवृत्त थयो । अतिए एगमविआरियं धम्मिय सुवयण । ते श्रावक तेहना समीपथी कोइएक पणि आर्यभला धर्मनो भलोवच न । सोच्चाणिसम्म । सांभलीने चीतेधरीने । तओभवइ । तिवारपछो हुवे । संवेगजायसड्ढे । संवेगे भवभयेंकरी धर्मादिनेविषे ऊपनी श्रद्धा जेहनी । तिव्व धम्माणुरागरत्ते । तीव्र धर्मने अनुरागेकरी रंग्यो मन जेहनो । सेणंजीवेधम्मकामए । ते गर्भावस्थानकारे जोव धर्म श्रुतचारित्रनेविषे वांछाजेहनी । पुण्णका मए । तेहनो फलभूत शुभकर्म तेहनो वांछक । सग्गकामए । स्वर्ग देवलोकनो वांछकछे । मोक्खकामए । समस्तकर्मक्षयरूप मोक्ष तेहनो वांछक । ध म्मकंखिए । धर्मनी आसक्तिछे जेहने । पुण्णकंखिए । पुण्यनी आसक्तिछे जेहने । सग्गकंखिए । स्वर्गनी आसक्तिछे जेहने । मोक्खकंखिए । मोक्षनी आसक्ति छे जेहने । धम्मपिवासिए । धर्मनेविषे अत्यंततृषित । पुण्णपिवासिए । पुण्यनेविषे अत्यंततृषित । सग्गपिवासिए । स्वर्ग देवलोकनेविषे अत्यंततृषित । मोक्खपिवा सिए । मोक्षनेविषे अत्यंततृषित । तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए । एतला पदार्थनेविषे चित्तछे जेहनो तिहाजमनछे जेहनो तेहीज लेश्याछे जेहनो

आसीत सामान्यत, एतदेव विशेपत उच्यते ॥ चिट्ठेज्जत्ति ॥ ऊर्द्धस्थानेन ॥ निसीयज्जत्ति ॥ निपदनस्थानेन ॥ तुयट्टेज्जत्ति ॥ शयीत ॥ सममागच्छ इति ॥ समं अविपम सम्मतिपाठे सम्यक् अनुपघातहेतुत्वा दागच्छति मातुरुदराद्योन्या निष्क्रामति ॥ तिरियमागच्छइत्ति ॥ तिरश्चीनो भूत्वा ज

रणे तब्भावणाभाविए एयंसिण अंतरंसि कालं करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणठेणं गोयमा ॥ जीवेण भंते गब्भगए समाणे उत्ताणएवा पासल्लएवा अंबखुज्जएवा अच्छेज्जवा चिठेज्जवा निसीएज्जवा तुयट्टेज्जवा माऊए सुयमाणीए सुयइ जागरमाणीए जागरइ सुहियाए सुहिए भवइ दुहियाए दुहिए भवइ ? हंता गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए भवइ , अहेणं पसवणकालसमयंसि सीसेणवा

तेहीज अध्यवसायछे जेहने। तदट्ठोवउत्ते। तेहीज अर्थे करी सहितछे। तदप्पियकरणे। तेहीज अर्थनेविषे अर्पित दीधाछे करणइंद्रीय जेहना। तब्भाव णाभाविए। तेहीज भावनाये करी भावितछे। एयंसिण अंतरंसि। एहवा अंतरनेविषे एतले एहवी भावनाये भावतोथको। कालकरेज्जा। कालकरे मर णपामें तो तेजीव। देवलोएसुउववज्जइ सेतेणठेण गोयमा। देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे ते तेणे अर्थे हेगौतम। इमकह्यु कोई एकऊपजे कोईएक न ऊ पजे, वली गौतम पूछेछे—जीवेणभंते गब्भगएसमाणे। जीव गर्भाकालकारे गर्भनेविषे रह्योथको। उत्ताणएवा। ऊंधोपड्यो छत्र तेहने आकारे। पासिल्लएवा। पासाने भारे। अंबखुज्जएवा अच्छेज्जवा। अंबुफलनीपरे कूबडो सामान्ये वैसिवो एहीज विशेपथी कहेछे—चिट्ठेज्जवा। ऊर्द्धस्थानके खडो होय। निसीएज्जवा। भलीपरे वैसे। तुयट्टेज्जवा। शयनकरे सूये। माउएसुयमाणीएसुयइ। माता सूवतायका सूये एतले मातासूये तिवारेसूये जागरमाणीएजागरए। जागतायका जागें एतले माताजागे तिवारे गर्भपणिजागे। सुहियाए सुहिएभवइ। माता सुखिणीये पुत्र पणि सुखियो हुवे दुहियाएदुहिए भवइ। माता दुखिणीये पुत्रपणि दुखियो हुवे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हांगौतम। जीवेणगब्भगएसमाणे जाव दुहियाएदुहिए भवइ। जीव गर्भमाहि रह्योथको यावत् माता दुखीये पुत्रपणि दुखीहुवे एतलालगे कहवो। अहेणपसवकालसमयंसि। अथ हिवे गर्भाकालकारे प्रसूति

॥ टीका ॥

ठरा न्निर्गन्तु म्प्रवर्त्तते, यदि तदा विनिघातं मरण मापद्यते निर्गमाजावादिति, गर्जो न्निर्गतस्यच य त्स्या तदाह ॥ वस्रवज्काणियत्ति ॥ वर्ण श्लाघा, वध्यो हन्तव्यो येषा तानि वर्णबध्यानि, अथवा, वर्णा द्वाह्यानि वर्णबाह्या न्यशुजानीत्यर्थ ' चशब्दो वाक्यान्तरत्वद्योतनार्थ ,॥ सेत्ति ॥ तस्य गर्जनिर्गतस्य वद्धाइति सामान्यतो बद्धानि ॥ पुठाइति ॥ पोषितानि गाढतरबन्धतो निधत्तानि उद्वर्त्तनापवर्त्तनकरणवर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थ , अथवा, बद्धानि कथ यत पूर्व स्पृष्टानीति ॥ कडाइति ॥ निकाचितानि सर्वकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थ ॥ पठ्ठवियाइति ॥ मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातित्रसादिनामकर्म्मादिना सहोदयत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थ ॥ अजिनिविठाइति ॥ तीव्रानुजावतया निविष्टानि ॥ अजिसमन्नागयाइति ॥ उदयाजिमुखीजूतानि, ततश्च ॥ उदिणाइति उदीर्णानि स्वत उदीरणाकरणेन वो, दितानि, व्यतिरेकमाह ॥ नोउ

॥ मूल ॥

पाएहिंवा आगच्छइ सम मागच्छइ तिरिय मागच्छइ विणिहाय मावज्जइ वस्रवज्काणिय सेकम्माइं ब द्धाइ पुठाइं णिहित्ताइं कडाइं पठवियाइं अजिनिविठाइ अजिसमन्नागयाइ उदिन्नाइं णोउवसताइ जवति

॥ भाषा ॥

काल समयनेविषे। सोसेणवा पाएहिवा आगच्छइ। मस्तकेंकरी वा अथवा पगेकरी वा अथवा आवे समविधमनहीं अथवा। सम्ममागच्छइ। भली प रै वातनो हेतुनही तिमआवे माताना उदरथो योनिकरीनिकले। तिरियमागच्छइ। तिरिछोहोय नीकले। विणिहायमागच्छइ। तो मरणपामे नीकलवाना अभावथी गर्भयको नोकल्याने जेथाय ते कहेछे—वस्रवज्काणियसेकम्माइ। वर्ण श्लाघा ते वध्य हणवायोग्य जेहने ते वर्णवध्य अथवा वर्णथको बाह्य अशुभ चशब्द वाक्यांतरपणानो सूचकछे, सेति। तेह गर्भने कर्म तेहमते। बद्धाई पुठ्ठाई णिहत्ताइ कडाइ पठ्ठवियाइ। सामान्यथको बाध्या गाढा बाध्या अयोगेंकरी स्थाप्या निकाचितकर्म बाध्या मनुष्यगति पचेंद्रीजाति त्रसादिनामकर्मे करी जेसहोदयपणे व्यवस्थापित कोधा। अभिनिविठ्ठाइ। तीव्र अनुभावे करी स्थाप्या। अभिसमणागयाइ। उदय सन्मुख हुया तिवारपछो। उदिन्नाइं णोउवसताइ भवति। आपणोज उदीरणा करणेकरी उद य आव्या, हिवे व्यतिरेक कहेछे—उपशात नथया हुवे। तओभवइ दुरूवे दुगधे दुरसे दुफासे अणिठ्ठे अकंते अप्पिए असुभे। तिवारपछे हुवे जेकर्मना उद

वसंताइति ॥ अनिष्टादीनि व्याख्यातान्ये वैकार्थानिवा ॥ हीणस्सरेत्ति ॥ अल्पस्वर ॥ दीणस्सरेत्ति ॥ दीनस्येव दु स्थितस्येव स्वरो यस्य स दीनस्वर ॥ अणादेयवयणपच्चायाएविति ॥ इहैव मत्सरघटना प्रत्याजातश्चापि समुत्पन्नोपिचा नादेयवचनो भवति ॥ इति प्रथमशते सप्तम ॥ ७ ॥ गर्भवक्तव्यता सप्तमोद्देशकस्यान्त उक्ता, गर्भवास आयुषि सती त्यायुर्निरूपणाय, तथा दिगाथायां यदुक्त ॥ वालेति ॥ तदभिधानाय चाष्टमो द्देश

तत्ते भवइ, दुरूवे दुवन्ने दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुन्ने अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुन्नस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणं पच्चायाएविभवइ वन्नवज्झाणिय सेकम्माइं नोबद्धाइ पसत्थं नेयव्वं जाव आदेज्जवयणं पच्चायाए वि भवइ सेवं भंते भंते ॥ पढमसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ एगंतबालेणं भंते!

यथो दुष्टरूप भूंडो गध मुखवासै भूंडोरस भूडो फरस जटकटालानो परे अनिष्ट असुखकारी सुंदरता रहितहुवे देखवायोग्यनही दीठा भयउपजावे । अमणुन्ने अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे । अगोपागे वामणासरीखो सर्वने अमान्य अल्पस्वरहुवे भूंडो दरिद्रीसरीखोस्वर काकनीपरे असुखकारी सुंदरतारहित ज टनोपरे स्वर शृगाल शब्दनी परे अप्रीतिकारी स्वर । अशुभस्सरे । अशुभस्वर काने असुहामणो लागे । अमणुन्नस्सरे । अमनोज्ञ स्वर कुर्कर घर्घराटनीपरे । अमणामस्सरे । सर्वने अमान्यस्वर । अणाएज्जवयण पच्चायाएविभवइ । अनादेयवचन इसाहुवे ते वचन कोईआदरैनही तेहनो वचनकोई मानेनही एतले अशुभ कर्मनो फल एकह्यो । वन्नवज्झाणियसेकम्माइ ॥ जिणे वर्णवध्य अशुभकर्मनेनथी बाध्या तेजीवने पोबद्धाइ पसत्थणेयव्व । एतले शुभकर्मनो उदयछे जेहने तेहनेभलो जाणवो सुवर्णस्वरूप सुगध इत्यादि सर्व भलाकहवा । जावआदेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ । यावत् आदेय वचन सर्वमनुष्यादिने मानवायोग्यहुवे, एतले शुभकर्मनाफल कह्या । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । ए पहिला शतकना सातमा उद्देशानो टब्बोलिख्यो ॥ ७ ॥ पाछिला उद्देशानेविषे गर्भनी वक्तव्यता कही, तेगर्भ आउखेहुवेछे तेमाटे आउखानो प्ररूपणा

॥ टीका ॥

क स्तत्र च सूत्रम् ॥ एगतवालेत्यादि ॥ एकान्तवालो मिथ्यादृष्टि रविरतोवा; एकान्तग्रहणेन मिश्रता व्यवच्छिनत्ति, यच्चै कान्तवालत्वे समानेपि नानाविधायुर्बन्धन त न्महारम्भाद्युन्मार्गदेशनादितनुकषायत्वाद्यकामनिर्ज्जरादितद्धेतुविशेषवशादिति, अतएव वालत्वे समाने प्यविरतसम्यग्दृष्टि मंनुष्यो देवायुरेव प्रकरोति न शेषाणि, एकान्तवालप्रतिपक्षत्वा देकान्तपण्डितसूत्र, तत्रच ॥ एगतपण्डिएणंति ॥ एकान्तपण्डित साधु ॥ मणु ६ ४

॥ मूल ॥

मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ तिरिक्खाउयपकरेइ मणुस्साउयपकरेइ देवाउयंपकरेइ नेरइयाउयंकिच्चानेरइए सुउववज्जइ तिरियाउयंकिच्चा तिरिएसुउववज्जइ मणुयाउयंकिच्चा मणुएसु उववज्जइ देवाउयं किच्चा देवलो एसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंतवालेणं मणुस्से नेरइयाउयंपि पकरेइ तिरिमणुदेवाउयंपि पकरेइ नेरइया उयंपि किच्चा नेरएसु उववज्जइ तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ। एगंतपंडिएणं भंते! मणुस्से

॥ भाषा ॥

कहेछे – एगंतवालेणभंतेमणूसे। एकात वालक मिथ्याद्दष्टी तथा अविरतीकह्यु एकात ग्रहणेकरीने मिश्रपणू गयो एहवो हेभगवन्। मनुष्य। किंणेरइयाउये पकरेइ। स्यूंनारकीनो आऊखोकरे १। तिरिक्खाउयपकरेइ। अथवा तिर्यंचनो आऊखोकरे २। मणुआउयपकरेइ। अथवा मनुष्यनो आऊखोकरे ३। दे वाउयपकरेइ।देवतानो आऊखोकरे ४। णेरइयाउयकिच्चा। नारकीनो आऊखो करीने। णेरइएसुउववज्जइ। नारकनेविषे नारकीपणे उपजे। तिरया उयकिच्चा। तिर्यंचनो आऊखो करीने। तिरिएसुउववज्जइ। तिर्यंच गतिनेविषे तिर्यंचपणे उपजे। मणुयाउयजावदेवाउयकिच्चा। इम मनुष्यनो आऊखो करी मनुष्यगतिनेविषे मनुष्यपणे उपजे यावत् देवतानो आउखो करीने। देवलोएसुउववज्जइ। देवलोकनेविषे देवपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगतवालेणमणूसे। हेगौतम! एकात वालक मिथ्याद्दष्टी अविरती मनुष्य तथा। णेरइयाउयपिपकरेइ। नारकीनो आऊखो पणि करे। तिरिमणुदेवाउ यपिकरेइ। तिर्यंचनो आउखोपणिकरे मनुष्यनो आऊखो पणिकरे देवतानोआऊखोपणिकरे। णेरइयाउयकिच्चा। नारकीनो आऊखोकरीने। णेरइएसुउ ववज्जइ। नारकीनेविषे उपजे। तिरिमणुदेवाउयकिच्चा। इम तिर्यंचनो मनुष्यनो देवनो आऊखो करीने। देवलोएसुउववज्जइ। देवलोकनेविषे देवताप

स्सेत्ति ॥ विशेषणं स्वरूपज्ञानार्थमेव' अमनुष्यस्यै कान्तपण्डितत्वायोगा तदयोगश्च सर्वविरते रन्यस्या भावादिति ॥ एगतपण्डिएणंमणुस्सेआउय सियपकरेइसियनोपकरेइत्ति ॥ सम्यक्तसप्तके क्षपिते न बध्नात्यायु' साधु , अर्वाक् पुन र्बध्नाती त्यतउच्यते , स्या त्प्रकरोती त्यादि केवलमेव॥ दोगईउ

किं नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगंतपण्डिएणं मणुस्से आउयं सिय पकरेइ सिय णोपकरेइ जइ पकरेइ णो णेरइयाउयं पकरेइ णोतिरियाउयंपकरेइ णोमणुयाउयपकरेइ देवाउयं पकरेइ णोणेरइयाउयं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि नोमणु देवाउयं किच्चा देवेसु

णे जपजे। एगतपडिएणभंतेमणूसे किंणेरइयाउयंपकरेइ। एकातबाल प्रतिपक्षथकी एकांत पंडितसूत्रकहेछे—एकातपडित ते साधुमनुष्य, मनुष्य एहवो विशेषणछे स्वरूपजाणवाने अर्थे मनुष्य विना एकात पंडितपणाना अयोगथी अने मनुष्यनविषे पणि सर्व विरतिटाली बीजाने एकातपणानो अभावछे इम एकातपडित मनुष्य हेभगवन् ! स्यूं नारकीनो आउखोकरे ? इम तिर्यंच मनुष्य देवनो आउखोकरी तथा नारकीनो आउखोकरी नारकीनेविषे उपजे। जावदेवाउयकिच्चा । देवलोएसुउववज्जइ । इम यावत् तिर्यंच मनुष्य देवनो आउखाकरो देवलोकनेविषे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगतपडिएणमणसेआउयंसियपकरेइ सियणोपकरेइ। हेगौतम ! एकातपडित मनुष्य सर्वविरती साधु आउखो किवारे बाधे जिणें मनुष्ये सातप्रकृति क्षेपवीहुवे अनतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ मिथ्यात्वमोहनी ५ मिश्रमोहनी ६ समकितमोहनी ७ ते आउखानो बंध नकरे अने दर्शन सप्तक क्षयकीधा पहिला बाधे तेमाटेकह्यु किवारे बाधे किवारेनबाधे। जइपकरेइ णोणेरइयाउयपकरेइ। जोबाधे तो नारकीनो आउखो नबाधे। णोतिरियाउयपकरेइ। वली तिर्यंचनो आउखो नबाधे। णोमणुयाउयपकरेइ। वली मनुष्यनो पणि आउखो नबाधे तीन आउखा नबाधे। देवाउयपकरेइ। एक देवतानो आउखोबांधे णोणेरइयाउयकिच्चा। नारकीनो आऊखोकरीने। णेरइएसुउववज्जइ। नारकपणे नऊपजे, इम तिर्यंचनेविषे नउपजे। णोतिरि णोमणुस्स देवाउयकिच्चा। इम मनुष्यनेविषे पणि नऊपजै, देवतानो आऊखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिनेविषे ऊपजै। सेकेणट्ठेणभंतेजावदेवाउयंकिच्चा। गौतमकहै

॥ टीका ॥

पन्नायंतित्ति ॥ केवलशब्द सकलार्थ, स्तेन साकल्येनैव द्वेगती प्रज्ञायेते अवबुध्येते केवलिना तयोरेव सत्त्वादिति ॥ अंतकिरियत्ति ॥ निर्वाणं ॥ कप्पोववत्तियत्ति ॥ कल्पे अनुत्तरविमानान्तदेवलोकेषू पपत्ति रुत्पत्ति र्या सैव कल्पोपपत्तिका, इहच कल्पशब्द सामान्येनैव वैमानिकदेवावासाभि

॥ मूल ॥

उववज्जइ, सेकेणठेणं जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा! एगंतपंडियस्सणं मणुस्संस्स केवलमेव दोगइउ पन्नायंति तंजहा—अंतकिरियाचेव कप्पोववत्तियाचेव सेतेणठेणं गोयमा! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ बालपंडिएणं भंते! मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ? गोयमा! णोणेइरयाउय पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसुउववज्जइ, सेकेणठेणं जाव देवा

॥ भाषा ॥

छे—स्ये अर्थ हेभगवन्। इमकह्यु यावत् देवतानो आउखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवलोकनविषे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगंतपंडियस्सणमणूसस। हेगौतम। एकांत पंडित मनुष्य सर्व विरती साधु। केवलमेवदोगतिओपणायइ तंजहा। केवल शब्द सकलार्थवाचकछे, तेमाटे एकांत पंडितने सगलीछी बिगतिजाणिये तेकहेछे—अंतकिरियाचेव कप्पोववत्तियाचेव। सकलकर्म क्षयकारी मोक्षजाय ते अंतक्रिया कहीये, अनुत्तरविमान पर्यंत देवलोकने विषे उपजे, इहां कल्पशब्दें सामान्य देवलोक कहीये भगवंतकहेछे—सेतेणठेणं गोयमा। ते तेणेअर्थे हेगौतम। जावदेवाउयंकिच्चादेवेसु उववज्जइ। यावत् देवतानो आउखो करीने देवगतिने देवपणे उपजे, एकांतपंडितने द्वितीयस्थान वर्त्तिपणाथको बालपंडितनो सूत्रकहेछे—बालपंडिएणभंतेमणूसेकिंणेरइयाउयपकरेइ। श्रावक मनुष्य देशविरतो पंचमगुणस्थानवर्त्ती ते बालपंडित हेभगवन्। मनुष्य स्यू नारकीनो आउखो करे बांधे? जावदेवाउयंकिच्चा। यावत् शब्दे देवतानो आउखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिनेविषे देवपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोणेरइयाउयपकरेइ। हेगौतम। नारकीनो आउखो नबांधे, तिम तिर्यंचमनुष्यनो आउखो नबांधे। जावदेवाउयकिच्चा। यावत् देवतानो आउखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिनेविषे देवपणे उपजे, गौतमकहेछे—सेकेणठेणभंतेजावदेवाउयकिच्चा। देवेसुउववज्जइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। बालपंडित श्रावक ते नारकीनो आउखो नबांधे

धायकइति' एकान्तपण्डितो, द्वितीय स्थानवर्त्तित्वा द्वालपण्डितस्य वालपण्डितसूत्रं, तत्रच ॥ वालपण्डिएणंति ॥ श्रावक ॥ देसंउवरमइत्ति ॥ विरक्तिपरिणामात् देशा दुपरमते विरतो भवति, ततो देश स्थूल स्प्राणातिपातादिक म्प्रत्याख्याति वर्जनीयतयाप्रतिजानीते, आयुर्बन्धस्य क्रि या कारणमिति क्रियासूत्राणि पञ्च, तत्र ॥ कच्छसिवत्ति ॥ कच्छे नदीजलपरिवेष्टिते वृक्षादिमति प्रदेशे ॥ दहसिवत्ति ॥ ह्रदे प्रतीते ॥ उदगंसिवत्ति ॥ उदके जलाशयमात्रे ॥ दवियसिवत्ति ॥ द्रविके तृणादिद्रव्यसमुदाये ॥ वलयसिवत्ति ॥ वलये वृत्ताकारनद्याद्युदककुटिलगतियुक्तदेशे ॥ णूमसिवत्ति ॥

उय किच्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! वालपंडिएण मणूसे तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चानिसम्म देसं उवरमइ देसं णोउवरमइ, देसं पच्चक्खाइ देसं णोपच्च क्खाइ, सेतेणं देसोवरमइ देसपच्चक्खाणेणं णो णेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ

यावत् देवतानो आउखो करीने देवगतिनेविषै देवपणें उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वालपडिएणमणूसे तहारूवस्स। हेगौतम। वालपडित मनुष्य एतले देशविरती श्रावक तथाविध तथा रूपने। समणस्सवा माहणस्सवा। श्रमण तपस्वीने माहणने। अंतिए एगमवि। समीपे एकपणि। आरि य धम्मिग सुवयण सोच्चा। आर्य उत्तम धर्मसंबधी भलोवचन सो साभलीने। णिसम्म। मनमे अवधारीने। देसंउवरमइ। देशथकी निवर्त्तै। देसणोउव रमइ। देशथकी ननिवर्त्तै। देसपच्चक्खाइ। स्थूलप्राणातिपातादिनो पच्चक्खाणकरै। देसणोपच्चक्खाइ। देशे एक आरंभ सूक्ष्मनो पच्चक्खाण नकरै। सेतेणं देसोवरमइदेशपच्चक्खाण। ते वालपडित जिणें कारणे देशथकी निवर्त्तै देशथकी स्थूलप्राणातिपातादिकनो पच्चक्खाणकरै तिणेकारणें। णोणेरइयाउयंपक रेइ। नही नारकीनो आउखोकरै नवाधै। जावदेवाउयंकिच्चा। यावत् देवतानो आउखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिनेविषै देवपणें उपजै। से तेणट्ठेण गोयमा जावदेवेसुउववज्जइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम। वालपडित यावत् देवतानो आउखो वाधी देवगतिनेविषै देवपणे उपजै। पुरिसेणभंतेक च्छसिवा दहसिवा उदगंसिवा। आयुबंधनो क्रिया कारणछे तिणेकरी क्रियासूत्रपचककहेछे—कोई एक पुरुष हेभगवन्। नदी जले वीट्या वृक्षादि प्रदे

॥ टीका ॥

नूमे अवतमसे गाढतमसे ॥ गहणंसिवत्ति ॥ गहने वृक्षवल्लीलतावितानवीरुत्समुदाये ॥ गहणविदुग्गंसिवत्ति ॥ गहनविदुर्गे पर्वतैकदेशावस्थितवृक्ष वल्ल्यादिसमुदाये ॥ पव्वयंसिवत्ति ॥ पर्वते ॥ पव्वयविदुग्गंसिवत्ति ॥ पर्वतसमुदाये ॥ वणंसिवत्ति ॥ वने एकजातीयवृक्षसमुदाये ॥ वणविदुग्गंसिवत्ति ॥ नानाविधवृक्षसमूहे, मृगैः हरिणैः वृत्ति र्जीविका यस्य स मृगवृत्तिकः, सच मृगरक्षकोपि स्यादित्यतआह ॥ मियसकप्पेत्ति ॥ मृगेषु सङ्कल्पो वधाध्यवसायश्छेदनवा, यस्यासौ मृगसङ्कल्पः सच चलचित्ततयापि भवती त्यतआह ॥ मियपणिहाणेत्ति ॥ मृगवधैकाग्रचित्तः ॥ मिगवहाएत्ति ॥ मृगवधाय ॥ गतत्ति ॥ गत्वा कच्छादा वितियोग ॥ कूडपासत्ति ॥ कूटञ्च मृगग्रहणकारणं गर्त्तादि पाशश्च तद्बन्धनमिति कूटपाश ॥ उद्दाइत्ति ॥ उ

॥ मूल ॥

रोतेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ पुरिसेण भंते ! कच्छंसिवा दहंसिवा उदगंसिवा दवियंसुवा वलयंसिवा णूमंसिवा गहणंसिवा गहणविदुग्गंसिवा पव्वयंसिवा पव्वयविदुग्गंसिवा वणंसिवा वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंताए एमिएत्तिकाउ अन्नयरस्समियवहाए कूडपासउद्दाइ ।

॥ भाषा ॥

गने द्रहप्रसिद्धनेविषे अल्पजल जेहनेविषे । दवियंसिवा वलियंसिवा णूमंसिवा गहणंसिवा । तृणादि समुदाय द्रव्यनेविषे वाटुले आकारे नदी जल कुटिलगति सहित प्रदेशे निवाण भूमिनेविषे वृक्ष वल्ली लतादि समूहनेविषे । गहणविदुग्गंसिवा पव्वयंसिवा । पर्वतने एकदेशे वृक्षवल्ल्यादि समूहनेविषे पर्वतनेविषे । पव्वयसिवा पव्वयविदुग्गंसिवणंसिवा । पर्वतनेविषे पर्वतना दुर्गमप्रदेशनेविषे एकजातिवृक्षसमुदायनेविषे । वणविदुग्गंसिवा मियवत्तीए । नानाप्रकारना वृक्षनासमूहनेविषे मृगकहता हरिण तेणेकरी वृत्ति आजीविकाछे जेहने । मियसकप्पे । मृगनेविषे संकल्प वधनो अध्यवसाय जेहने । मियपणिहाणे । मृग वधवाने एकाग्रचित्तछे जेहनो । मियवहाए । मृगनाहन भणी । गंताएएमिएत्तिकाउ । जाये एए मृगछेमिछे इम कच्छादिकनेविषे-इतियोग इमकरी । अन्नयरस्समियस्सवहा॥ । अनेरा कोईएक मृगना वध भणी मृग मारवानेकाजे । कूडपासउद्दाइ । कूटते मृग ग्रहवानो कारण गर्त्तादिक पाशते मृगबाधवानो रचें । तएणंभंतेसेपुरिसे । तिवारे हेभगवन् ! कूटपाश करणथी तेपुरुषने । कतिकिरिए । केतली क्रियाकही कि

॥ टीका ॥

हृदाति रचयतीत्यर्थ ॥ तउणति ॥ तत' कूटपाशकरणात् ॥ कइकिरिएत्ति ॥ कतिक्रिय' क्रियाश्च कायिक्यादिका ॥ जेभविएत्ति॥ यो भव्यो योग्य· कर्त्तेतियावत् ॥ जावचणमितिशेष , यावन्त ङ्कालमित्यर्थ , कस्या कर्त्तेत्याह ॥ उद्दवणयाएत्ति ॥ कूटपाशकरणतया स्ता प्रत्यय श्चेह स्वार्थिक' ॥

॥ मूल ॥

तउणभंते ! से पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ सियतिकिरिए तियचउकिरिए सियपंचकिरिए ? गोयमा ! जेभविए उद्दवणयाए णोबंधणयाए णोमारणयाए तावंचणसेपुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए तिहिंकिरियाहिं पुट्ठे जेभविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि नोमारणयाए तावंचण सेपुरिसे काइयाए अहिगरणयाए पाउसियाए

॥ भाषा ॥

याते कायिक्यादि इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए। हेगौतम। कदाचित् तीन क्रियालागे। सियचउकिरिए। कदाचित् चारिक्रियालागे। सियपचकिरिए। कदाचित् पाचक्रियालागे गौतमकहेछै—सेकेणट्ठेणंभतेएववुच्चइ। ते स्ये कारणे हेभगवन्। इमकह्यु। सियतिकिरिए। कदाचित् तीन क्रियालागे। सियचउकिरिए। कदाचित् चारि क्रियालागे। सियपचकिरिए। कदाचित् पाचक्रियालागे। गोयमा जेभविएउद्दवणयाएणोवधणयाए। हेगौतम। जिको भव्ययोग कर्त्ता इति यावत्, जावचण इतिशेष, जेतलोकाल इत्यर्थ, स्यानोकर्त्ता ते कहेछै—कूटपाशकरणनो भाव पणि नहीवधननो कर्त्ता। णोमारणयाए। नही मारणनोकर्त्ता। तावचणसेपुरिसे। तेतलोकाल तेपुरुष। काइयाए। गमनादि चेष्टा रूप ते कायिकीक्रिया। अहिगरणियाए। कूटपाशकरी जे नीपनी अधिकरणकी। पाओसियाए। प्रद्वेषने मृगनेविषे दुष्टभाव तेणेनीपनो ते प्राद्वेषिको। तिहिकिरियाहिपुट्ठे। एतीन क्रिया सवाते फरश्यो। जेभविए उद्दवणयाएवि। कूटपाश करणनो पणि कर्त्ता। बधणयाएवि। बधनना पणि कर्त्ता। णोमारणयाए। पणि मारणनो कर्त्तानही तावचणसेपुरिसेकाइयाए। तेतलोकाल ते पुरुष कायिकीक्रिया। अहिगरणियाए। अधिकरणकी क्रिया। पाओसियाए। प्रद्वेषकी क्रिया। पारितावणियाए। पारितापन तेहीज प्रयोजनछै जेहने ते पारितापनकी। चउहिकिरियाहिपुट्ठे। चारिक्रिया संवाते फरस्यो मृगबाधेछै। जेभविएउद्दवण

॥ टीका ॥

तावचणत्ति ॥ तावन्तकाल ॥ काइयाएत्ति ॥ गमनादिकायचेष्टारूपया ॥ अहिगरणियाएत्ति ॥ अधिकरणेन कूटपाशरूपेण निर्वृत्ता या सा तथा तया ॥ पाउसियाएत्ति ॥ प्रद्वेषो मृगेषु दुष्टभाव स्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी तया ॥ तिहिंकिरियाहिंति ॥ क्रियन्तइति क्रिया श्चेष्टाविशेषा. ॥ पारितावणियाएत्ति ॥ परितापनप्रयोजना पारितापनिकी साच बद्धे सति मृगे भवति प्राणातिपातक्रियाच "घातितेइति"॥ ऊसवियत्ति ॥ उत्सर्प्य ॥ उसिक्कि

॥ मूल ॥

पारियावणियाए चउहिंकिरियाहिं पुठे जेभविए उस्सवणयाएवि बंधणयाएवि मारणयाएवि तावंचणसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचहिं किरियाहिं पुठे। सेतेणठेणं जाव पंचकिरिए । पुरिसेण भंते ! कच्छसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा तणाइं ऊसविय २ अगणिकायंसि निसिरइ तावंचणं भंते ! से पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए । सेकेणठेणं गोयमा ! जेभ

॥ भाषा ॥

याएवि । जेभव्ययोग्यकर्त्ता कूटपाश करणनो पणि कर्त्ता । बंधणयाएवि । बंधननो पणि कर्त्ता । मारणयाएवि । मारणनो पणि कर्त्ता । तावचणसेपुरिसे काइयाए । तेतलोकाल ते पुरुष कायिकी क्रिया आदिदेई । जावपाणाइवायकिरियाएपचहिंकिरियाहिंपुठे । यावत् प्राणातिपातिकी क्रिया मृगवध थीलागे प्राणीने घातकीधे एपचक्रिया फरस्यो, एतावता तेहने पचक्रियालागे । सेतेणठेण गोयमा । ते तेणें अर्थे हेगौतम ! जावपचकिरिए । सियचउकिरिएसियपचकिरिए इमकह्यु, वलीगौतम पूछेछे—पुरिसेणभंतेकच्छसिवा । पुरुष हेभगवन् । नदी जल वीट्या वृचवत प्रदेशनेविषे । जाववणविदुग्गसिवा । यावत् नानाप्रकार वृचनासमूहनेविषे तृणपदताई समस्त कहवो । तणाइऊसविय २ । तिणाप्रत ऊचा करी २ ने । अगणिकायंनिसिरइ । अग्निकायप्रते माहेघाले । तावचणभंतेसेपुरिसेकइकिरिए । तेतलाकालताई चपुन एवाक्यालकारे हेभगवन् । ते पुरुषने केतलीक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियतिकिरिए । हेगौतम । कदाचित् तीनक्रियालागे । सियचउकिरिए । कदाचित् चार क्रियालागे । सियपंचकिरिए । किवारेकै पांच क्रिया लागे । सेकेणठेणभंते । तेस्यामाटे हेभगवन् । इमकह्यु । गोयमा जेभविएउस्सवणयाए। हेगौतम । जेभव्ययोग्य कर्त्ता इत्यर्थः, जेतलोकाल तृणां

॥ टीका ॥

ऊर्णेत्यादि, ऊर्द्धीकृत्येतिवा ॥ निसिरइत्ति ॥ निसृजति क्षिपति यावदितिशेषः ॥ उसुंति ॥ वाणं ॥ आययकणायययंति ॥ कर्णं याव दायतः आकृष्टः कर्णायत आयत स्प्रयत्नवत् यथा भवतीत्येव कर्णायत , आयतकर्णायत स्त ॥ आयामेत्तत्ति ॥ आयम्या कृष्य ॥ मग्गउत्ति ॥ पृष्टत ॥ सयपाणि णत्ति ॥ स्वकपाणिना स्वहस्तेन ॥ पुव्वायामणयाएत्ति ॥ पूर्वाकर्षणेन ॥ सेणजतंपुरिसेत्ति ॥ सशिरश्छेत्ता पुरुष ॥ मियवेरेणत्ति ॥ इह वैर वैरहेतुत्वा द्वध पापवा ; वैरं वैरहेतुत्वादिति, अथ शिरश्छेतृपुरुषहेतुकत्वा दिपुनिपातस्य कथ धनुर्द्धरपुरुषो मृगवधेन स्पृष्ट इत्याकूतवतो गौतमस्य तद

॥ मूल ॥

विए उस्सवणयाए तिहिं उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं जेन्नविए उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि दहणयाएवि तावंचणं सेपुरिसे काइयाए जाव पंचहिंकिरियाहिं पुट्ठे सेतेणट्ठेणं गोयमा ! पुरिसेण कच्छंसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंताए

॥ भाषा ॥

उ चाकरे तेतला कालताइं प्रद्वेषकी । तिहिउस्सवणयाएवि । तीन क्रियालागे पहिलालागे कायिका १ अधिकरणयकी २ प्रद्वेषकी ३ जिवारे त्रिणा उं चा पणकरे । निसिरणयाएवि । अने अग्निपणि मांहिघाले पणि । णोदहणयाएविचउहिं । वालतोनथी तेतला ताइं चारिक्रियाने फरसे कायिका दि । जेभविएउस्सवणयाएवि । जेभव्यकर्त्ता तृणांपणि उ चाकरे । निसिरणयाएवि । अग्निमाहि पणिमूके । दहणयाएवि । अने वालेपणि । तावचणसे पुरिसे काइयाए जावपंचहिंकिरियाहिंपुट्ठे । तेतलोकाल तेपुरुष कायिकी आदिदेई यावत् प्राणातिपातकी क्रियाताइं फरस्यो एतावता तेहने पचक्रि यालागे । सेतेणठ्ठेणं गोयमा । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इमकह्यु । सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए इत्यादि । वलीगौतमपूछेछे—पुरिसेणंभ तेकच्छंसिवा । पुरुष हेभगवन् । णवाक्यालकारे नदीजलवेष्ट्या वृक्षादिवत प्रदेशनेविषे यावत् नानाप्रकार वृक्षना समूहनेविषे । मियवत्तीए । मृगनी वृत्ति आजीविकाछे जेहने । मियसकप्पे । जालमाहि पाडस्यू अथवा शरेकरी हणस्यूं एहवोज मृगनो सकल्प करता वधनो अध्यवसायछे जेहने । मिय पणिहाणे । मृगमारवानोज प्रणिधान चितवनछे जेहने एकाग्रचित्त । मियवहाए । मृगवधभणी । गंता एएमिएत्तकाउ । मृगला दीसेछे इमकरीने । अ

एमिएत्तिकाउं अन्नयरस्समियस्स वहाए उसुंनिसिरइ, ततोणं भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए, सेकेणठेणं गोयमा ! जेभविए निसिरणयाए तेहिं जेभविए निसिरणयाएवि विद्धंसणयाएवि नोमारणयाए चउहिं जेभविए निसिरणयाएवि विद्धंसणयाएवि मारणयाएवि तावंचणं सेपुरिसे जाव पंचहिंकिरियाहिं पुठे सेतेणठेणं गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा जाव अन्नयरस्समियस्स वहाए आययकणायय उसुं आयामेत्ता चि

णयरस्समियस्सवहाए । अनेरा कोई एक मृगना वधभणी मृगने मारवाभणी । उसुनिसिरइ । तीरप्रते काढे प्रत्यंचा मेले । ततोणभंतेसेपुरिसे । तिवारे हे भगवन् । तेपुरुष । कइकिरिए । केतलोक्रियानो करणहार कहीये इतिप्रश्न । गोयमा सियतिकिरिए । हेगौतम । किवारेके तीनक्रियानो करणहार कहीये । सियचउकिरिए । किवारे चारक्रियानो करणहार । सियपंचकिरिए । किवारे पांच क्रियानो करणहार, गौतम कहेछे—सेकेणठेणंभंते । तेस्या माटे हेभगवन् । इमकह्यु । गोयमा जेभविएनिसिरणयाएतिहि । हेगौतम । जेभव्यकर्त्ता बाणकाढेछे तेहने कायिक्यादि तीनक्रियाये फरस्यो कहीये । जे भविएनिसिरणयाएवि । जेभव्य कर्त्ता बाणकाढे पणिछे भुयाण थको । विद्धंसणयाएवि । अने विध्वंस पमाडे वीहाडवानेकाजे । णोमारणयाएचउहि । पणिमारे नहींछे तेतलाकाललगे तेहने कायिक्यादि चारक्रियालागे । जेभविएनिसिरणयाएवि । जेभव्यकर्त्ता तीरपणि काढे । विद्धंसणयाएवि । विध्वंस नास पमाडेछे । मारणयाएवि । अने मारे पणिछे । जावंचणसेपुरिसे । तेतलोकाल ते पुरुष । जावपंचहिंकिरियाहिंपुठे । यावत् कायिक्यादि पंचक्रिया सूं फरस्यो तेहने पचक्रिया लागे । सेतेणठेण गोयमा । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इमकह्यु । सियतिकिरिए । किवारे तीनक्रिया लागे । सियचउकिरिए । कदाचित् चारक्रियालागे । सियपचकिरिए । कदाचित् पाचक्रियालागे, वलीगौतम पूछेछे— । पुरिसेणंभंतेकच्छंसिवा । पुरुष हेभगवन् । कछादिकनेवि षे । जावअण्णयरस्समियस्सवहाए । यावत् अनेरा कोई एक मृगना वधभणी मृगमारवानेकाजे । आययकणायतउसुआयामेत्ता । दीर्घ कानताई ते तीर

॥ टीका ॥

भ्युपगतमेवार्थं मुत्तरतया प्राह, क्रियमाणं धनु काण्डादिकृतमिति व्यपदिश्यते, युक्तिस्तु प्राग्वत्, तथा सन्धीयमान मत्यञ्चाया मारोप्यमाणं काण्ड मनुर्वा, रोप्यमाणप्रत्यञ्च सन्धितकृतसन्धान भवति' तथा निर्वृत्यमान नितरां वर्तुलीक्रियमाण प्रत्यञ्चाकर्षणेन निर्वर्तित वृत्तीकृत मण्ड लाकार कृत भवति, तथा निसृज्यमान निक्षिप्यमाणं काण्डनिसृष्ट भवति, यदाच निसृज्यमान निसृष्ट तदा निसृज्यमानतायां धनुर्द्धरेण कृत त्वा तेन काण्डनिसृष्ट भवति' काण्डनिसर्गाच्च मृग स्तेनैव मारित, स्तत श्चोच्यते ॥ जेमियमारेत्यादीति ॥ इहच क्रिया प्रक्रान्ता स्ताश्चा नन्त

॥ मूल ॥

ठिज्जा अन्नयरेपुरिसे मग्गउ आगम्मसयपाणिणा असिणा सीसछिंदेज्जा सेयउसूताएचेव पव्वायामणयाए तं मियंविंधेज्जा। सेणभंते! पुरिसे किं मियवेरेणयपुठे पुरिसवेरेणंपुठे? गोयमा! जेमियंमारेइ सेमियवेरे णंपुठे, जेपुरिसंमारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे। सेकेणठेणंभंते! एववुच्चइ जाव सेपुरिसवेरेणं पुठे। सेणूण गो

॥ भाषा ॥

प्रतें खाचीने आकर्षीने। चिट्ठेज्जा। खडोरहै एतले। अण्णयरेपुरिसेमग्गओ। अनेरो कोई एक पुरुष पूठाथी। आगम्म। आवीने। सयपाणिणाअसिणा। आपणे हाथेकरी तरवारेकरी। सीसछिंदेज्जा। तेहना मस्तकप्रतें छेदें तिवारे। सेउसूताचेव पुव्वायामणयाए। तेतीर जेमृगनेउद्देशीने पूर्वें आकर्षो ह तो ते पुरुषनाहाथथी छूटो तिवारे निश्चे। तमियविंधेज्जा सेणभतेपुरिसे किमियवेरेणपुठे। ते मृगप्रतें वीधे ते णवाक्यालकारे हेभगवन् पुरुषमाथानो छेद णहारो स्यू मृगनोवैरी इहां वैरते वैरनाहेतु भणी वधकहीये अथवा पाप ते फरस्यो अथवा। पुरिसवेरेणपुठे। पुरुषने वैर पापेकरी फरस्यो इतिप्रश्न उत्त र। गोयमा जेमियंमारेइ। हेगोतम जिणे पुरुषे मृग वधवानेकाजे तीर साध्योहतो। सेमियवेरेणपुठे। ते पुरुष मृगनेवैर पाप तिणेंकरी फरस्यो। जेपु रिस मारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे। अने जेणे पुरुषे पुरुष मारो तेपुरुष पुरुषनेवैरेंकरी फरस्यो तेहने पुरुष वैरलागे। सेकेणठेणभते एववुच्चइ। तेस्यामाटे हेभग वन्! इमकह्यु मृगना मारणहारने मृगनो पापलागो। जावसेपुरिसवेरेणंपुठे। यावत् पुरुषना मारणहारने पुरुषनो पापलागो इतिप्रश्न उत्तर। सेणूण गोयमा कज्जमाणेकडे। ते निश्चे हेगौतम धनुषतीर करवामांड्यो तेकीधोकहीये। सविज्जमाणेसधिए। धनुषनेविषे तीर सधवामांड्यो तेसाध्यो कहीये

॥ टीका ॥

रोक्ते मृगादिवधे यावत्यो यत्र यत्र कालविभागे भवन्ति तावती स्तत्र दर्शयन्नाह ॥ अंतोछण्हमित्यादि ॥ षण्मासान् यावत्प्रहारहेतुकं मरण परतस्तु परिणामान्तरापादितमितिकृत्वा षण्मासा दूर्द्ध्वं न्प्राणातिपातक्रिया न स्यादिति हृदय, मेतच्च व्यवहारनयापेक्षया प्राणातिपातक्रियाव्य

॥ मूल ॥

यमा ! कज्जमाणेकडे संधेज्जमाणेसधिए निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए निसिरिज्जमाणेनिसिठेत्ति वत्तव्वसिया । हंता भगवं ! कज्जमाणेकडे जाव निसठेत्ति वत्तव्वंसिया सेतेणठेणं गोयमा ! जेमियंमारेइ सेमियवेरेणंपुठे, जेपुरिसंमारेइ सेपुरिसवेरेणंपुठे , अंतोछण्हंमासाणंमरइ , काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुठे ,

॥ भाषा ॥

आरोप्यां कहीये तथा । निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए । धनुषनेविषे जेपुणच तेखाचीने धनुषमाडवानाकार करवा मांड्यो ते कीधोकहीये । निसिरिज्जमाणेनिसिठेत्तिवत्तव्वसिया । धनुषथकीनीसरवामांड्यो बाण ते नीकल्यो कहीये एहवी वक्तव्यता कहवी हुवे, इसो भगवंत गौतमनेकह्यु तिवारे गौतम कहेछे—हता भगव । हाभगवन् । कज्जमाणे कडे । धनुषतीर करवामांड्यो तेकीधो कहीये । जावनिसिठेत्तिवत्तव्वसिया । यावत् धनुषथी तीरनीसरवा मांड्यो ते नीसर्यो कहीये, ते नीसरवानी क्रियानो करणहार धनुर्द्धरछे तेमाटे काडना नीसरवाथी मृग तेणेंहीजपुरुषे मार्यो । सेतेण गोयमा जेमियमारेइ । तेमाटे हेगौतम । इमकह्यु जेमृगमारे तेपुरुष । सेमियवेरेणपुठे । तेमृगने वेरेकरी पापेकरी फरस्यो । जेपुरिसमारेइ । अने जेपुरुष खड्गवत तेणे पुरुषे धनुर्द्धर मार्यो । सेपुरिसवेरेणपुठे । तेहने पुरुषनो पापलागो तेमाटे पुरुषनेवेरकरी फरस्यो । अतोछण्हमासाणमरइकाइयाए जावपचहिंकिरियाहिंपुठे । छमासमाहि जोमृगमरे तो तेहने यावत् पचक्रियालागे छमासताई मृगने प्रहार हेतुक मरणछे, तिवारपछे परिणामातरथकी मरण इसो करी छमासथी उपरात प्राणातिपातको क्रियाते धनुर्द्धरपुरुषने नही एपरमार्थ जाणवो, णपणि व्यवहारनो अपेचाये प्राणातिपातकीक्रिया व्यपदेश मात्र देखाडवाने कह्यो, अन्यथा जिवारेही प्रहार हतुक मरणहुवे तिवारेहो प्राणातिपातको क्रिया लागे यावत् कायिको आदिदेई पचक्रिया स्पू फरस्यो कहीये । जाहिछ्हमासाणमरइकाइयाए जावपारियावणियाए चउहिंकिरियाहिंपुठे । जो वाहिर छमासजे मरेतो तेपुरुषे कायिको आदि

॥ टीका ॥

पदेशमात्रोपदर्शनार्थं मुक्त, मन्यथा यदाकदा प्यधिकृतप्रहारहेतुकं मरणं जवति तदैव प्राणातिपातक्रियेति ॥ सत्तीएत्ति ॥ शक्त्या प्रहरणविशेषेण ॥ समन्निधसेज्जेत्ति ॥ हन्यात् ॥ सपाणिणात्ति ॥ स्वकहस्तेन ॥ सेत्ति ॥ तस्य ॥ काइयाएत्ति ॥ कायिक्या शरीरस्पन्दरूपया आधिकरणिक्या शस्त्रिखड्गव्यापाररूपया प्राद्वेषिक्या मनोदु प्रणिधानेन पारितापनिक्या परितापनरूपया प्राणातिपातक्रियया मारणरूपया आसन्नेत्तिइत्यादि, श

॥ मूल ॥

वाहिं वरहमासाण मरइ, काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिंकिरियाहिं पुठे। पुरिसेणं भंते! पुरिसं सत्तीए समन्निधंसेज्जा सयपाणिणावा से असिणा सीसंछिंदेज्जा। तएणंभंते! सेपुरिसे कइकिरिए? गोयमा! जावचणं सेपुरिसे तंपुरिसं सत्तीए समन्निधसेइ, सयपाणिणावा सेअसिणा सीसंछिंदइ। तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवाए पचहिंकिरियाहिं पुठे। आसन्नवहएणय अणवकखवत्तीएणं पुरिस

॥ भाषा ॥

देई यावत् पारितापनकी क्रिया ताई चारक्रियासौं फरसे एतलेस्योभाव छमासपछे मरेतो तेमृगवाणथी मूआंनही तेमाटे प्राणातिपातकी क्रिया लागेनही, वलीगौतमपूछेछे—पुरिसेणभंतेपुरिसं सत्तीएसमभिधसेज्जा। पुरुष हेभगवन्! पुरुषप्रतें शक्ति भालो तिणें हणे अथवा शक्ति प्रहरणविशेषेकरी हणें। सयपाणिणावा। अथवा पोताने हाथसूं। सेअसिणासीसंछिंदेज्जा। तेपुरुष तरवारेकरी माथो छेदे। तएणंभंतेपुरिसेकइकिरिए। तिवारे एत्नाक्या लकारे हेभगवन्! तेपुरुषने केतली क्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जावचणसेपुरिसे। हेगौतम। जेतलोकाल तेपुरुष। तपुरिस सत्तीए अभिधसेइ। तेपुरुषप्रते शक्ति प्रहरण विशेषेकरी हणे। सयपाणिणा। अथवा पोताने हाथेकरी। सेअसिणासीसछिंदइ। तेपुरुष तरवारसघाते। तावचणंसेपुरिसे। ते तलोकाल ते पुरुष। काइयाए। कायिकीक्रिया। अहिगरणियाए। अधिकरणकीक्रिया। जावपाणाइवायकिरियाए। यावत् प्राणातिपातकी क्रिया। पंचहिंकिरियाहिंपुठे। पचक्रिया सघाते फरस्योकहीये तेहने पचक्रियालागे। आसन्नवहएणय अणवकंखवत्तीएणपुरिसवेरेणंपुठे। आसन्न ढूकडो वधकने जेहवधक एतले तत्कालवध्या जेजीव तथा जे पुरुषनो बधकोधोछे तेहथकी भावी जे पापटालिवानेविषे निरपेक्षवृत्ति आपणा पराया प्राणनी

॥ टीका ॥

वीरियवज्झाइति ॥ वीर्यंवध्य येपान्तानि तथा' वीर्यप्रस्तावा दिदमाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सिद्धाणअवीरियत्ति ॥ सकरणवीर्याभावादवीर्या सिद्धा' ॥ सेलेसिपडिवन्नयायत्ति ॥ शीलेश सर्वसंवररूपचरणप्रभु तस्येय मवस्था शैलेशी शैलेशोवा, मेरु स्तस्येव या वस्था स्थिरता साधर्म्या त्सा शैलेशी

॥ मूल ॥

एपराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ। सेकेणठेणं जाव पराइज्जइ? गोयमा! जस्सणवीरियवज्झाइं कम्माइं णोबद्धाइं णोपुठाइं जाव नोअभिसमन्नागयाइं णोउदिन्नाइं उवसंताइ भवंति सेणं पराइणइ, जस्सणं वीरियवज्झाइं कम्माइं बद्धाइ जाव उदिन्नाइं नोउवसंताइं भवंति सेणंपुरिसे पराइज्जइ, सेतेणठेण गोयमा! एववुच्चइ सवीरिएपराइणइ अवीरिएपराइज्जइ। जीवाण भंते! किं सवीरिया अवीरिया? गोयमा! सवीरियावि अवीरियावि, सेकेणठेण भंते! एववुच्चइ? गोयमा! जीवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा—

॥ भाषा ॥

पामें हारे, गौतमपूछेछे—सेकेणठ्ठणभतेजावपराइज्जइ। ते स्यामाट हेभगवन्! इमकह्यु यावत् सवीय जीपे अवीय हारे। गोयमा जस्सणवीरियवज्झाइका म्माइ। हेगौतम! जेपुरुषने णवाक्यालकारे, वीर्यनध्य वीर्यहणवायोग्य एहवाकर्मंप्रते। णोबद्धाइणोपुठ्ठाइं। बांधानही फरस्यानही। जावणोअभिसमन्नागयाइ। यावत् साहमानथी आव्या। णोउदिणाइ। उदय नथी आव्या। उवसंताइभवति। उपशांत थयाहुवे। सेणपराइणइ। ते पुरुष जयपामे जीपे। जस्सणवीरियवज्झाइ कम्माइ बद्धाइ। जेपुरुष वीर्यनउ वीर्यहणवायोग्य। एहवा कर्म बांधाछै। जावउदिणाइ। यावत् उदय आव्याछै। णोउवसताइ। उपशम्यानथी हुवे। सेणपुरिसेपराइज्जइ। ते पुरुष णवाक्यालकारे, पराजयपामे हारे इत्यर्थ। सेतेणठ्ठेण गोयमा एववुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम! इमकह्यु। सवीरिएपराइणइ। वीर्यसहित जेपुरुष ते जयपामे जीपेइत्यर्थ। अवीरिएपराइज्जइ। अवीर्य वीर्यरहित तेपुरुष पराजयपामे हारे इत्यर्थ वीर्यना प्रस्तावथी एकहेछे—जीवाणभते किमवीरिया। जीव णवाक्यालकारे हेभगवन्! स्यूसवीर्यछे? वीर्यसहितछे अथवा। अवीरिया। अवीर्यछे वीर्यरहितछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सवीरियावि। हेगौतम। वीर्यसहित पणिछे। अवीरियावि। वीर्यरहित पणिछे। सेकेणठ्ठे णभतेएवंवुच्चइ। ते स्ये अर्थे

॥ टीका ॥

मान सर्वथा योगनिरोधे पञ्चह्रस्वाक्षरोच्चारकालमाना ऽप्रतिपन्नका ये ते, तथा ॥ लद्धिवीरिएणमवीरियत्ति ॥ वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमतो या वीर्यस्य लब्धि, सैव तद्धेतुत्वा द्वीर्यं लब्धिवीर्यं तेन सवीर्या, एतेषाञ्च क्षायिकमेव लब्धिवीर्यं ॥ करणवीरिएणंति ॥ लब्धिवीर्यकार्यभूता क्रिया करण

॥ मूल ॥

संसारसमावन्नगाय, असंसारसमावन्नगाय, तत्थणंजेते असंसारसमावन्नगा तेणंसिद्धा, सिद्धाणं अवीरिया, तत्थणंजेते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सेलेसिपडिवन्नगाय असेलेसिपडिवन्नगाय, तत्थणंजेतेसेलेसिपडिवन्नगा तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया, तत्थणं जेते असेलेसिपडिवन्नगा तेणं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरियावि अवीरियावि, से

॥ भाषा ॥

हेभगवन्। इम कह्यु जीव सवीर्यपणिछे अवीर्यपणिछे इतिप्रश्न उत्तर। गौतम जीवा दुविहापण्णत्ता तंजहा। हेगौतम। जीवना बेभेद कह्या तेकहेछे - संसारसमावन्नगाय असंसारसमावन्नगाय। जेजीव नारकतिर्यचादिरुपा ते संसार समापन्न कहीये, जे जीव चतुर्गति भ्रमणरुपसंसार तेणेंकरीसहित जाणवा ते असंसारसमापन्न एतले मोक्षपहुता ते भावकहीये। तत्थणंजेतेअसंसारसमावन्नगा। तिहा जेअसंसार समापन्नजीव चतुर्गतिसंसार भ्रमणरुपथी रहितथयाछे मुक्तिगया। तेणंसिद्धा सिद्धाणंअवीरिया। ते सिद्धभगवान करणवीर्ये रहितछे, सिद्धने करणवीर्यना अभावथी अ वीर्यछे। तत्थणंजेतेसंसारसमावन्नगा। तिहा जेमाहे जे चतुर्गतिसंसारभ्रमणरुप संसारसमापन्न जीवछे। ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा। ते पणि बे प्रकारना कह्या तेकहेछे। सेलेसिपडिवन्नगाय। चउदमेंगुणठाणें अयोगीना जीव ते शैलेशी प्रतिपन्न कहीये। असेलेसिपडिवन्नगाय। तेहथी विपरीत ते अशैलेशी प्रतिपन्न कहीये, प्रथमगुण ठाणाथी मांडी तेरमांताईं। तत्थणंजेतेसेलेसिपडिवन्नगा। जे तिहामांहि जेजीव शैलेशीप्रतिपन्नछे तेअयोगपणे पाम्याछे तेणंलद्धिवीरिएणंसवीरिया। वीर्यान्तरायना क्षयथकी जेवीर्यछे ते लब्धिवीर्य कहीये तेणे सवीर्यछे। करणवीरिएणंअवीरिया। उत्थानादि जे कीजे ते करण वीर्य कहीये ते करणवीर्य अवीर्यछे। तत्थणंजेतेअसेलेसिपडिवन्नगा। तिहा जेमाहे जे अशैलेशी प्रतिपन्नछे। तेणंलद्धिवीरिएणंसवीरिया।

तद्रूपं वीर्यं करणवीर्यं ॥ करणवीरिएणसवीरियावि अवीरियावित्ति ॥ तत्र सवीर्या उत्थानादिक्रियावन्तो, ऽवीर्यास्तु उत्थानादिक्रियाविकला, स्तेचा

तेण० गोयमा ! एवंवुच्चइ जीवादुविहा पसत्ता तजहा—सवीरियावि अवीरियावि । नेरइयाणंभंते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया करणवीरिएणं सवीरियाय अवीरियाय, सेकेण० गोयमा ! जेसिण नेरइयाण अत्थिउठाणेकम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तेण नेरइया लद्धि वीरिएणवि सवीरिया करणवीरिएणवि सवीरिया, जेसिणं नेरइयाणं नत्थिउठाणे जाव परक्कमे तेणं नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया करणवीरिएण अवीरिया, सेतेणठेण जहा नेरइया एव जाव पचिंदियतिरिक्ख

ते गराक्यालकारे, लब्धिवीर्यं करी सवीर्यछे । करणवीरिएण सवीरियावि अवीरियावि । करणवीर्यं करी सवीर्यपणिहुवे, उत्थानादिक्रियावत ते सवीर्य अने उत्थानादिक्रियायेंकरी विकल ते अवीर्यपणिहुवे, ते अपर्याप्त्यादिकाले जाणवा । सेतेणठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणेअर्थेकरी हेगौतम ! इमकह्यु जीवा दुविहा पणत्ता तजहा । जीव बेप्रकारना कह्या, ते कहेछे—सवीरियावि अवीरियावि । एकवीर्यसहितपणिछे एकवीर्य रहितपणिछे, वलीगौत मपूछेछे—णेरइयाणभंते किसवीरिया अवीरिया । नारकी हेभगवन् ! स्यूं वीर्य सहितछे ? अथवा वीर्यरहितछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइयालद्धि वीरिएणं सवीरिया । हेगौतम ! नारकी लब्धिवीर्येंकरी सवीर्यहुवे, एतले वीर्यसहितहुवे, अने । करणवीरिएण अवीरियाय सवीरियाय । करणवीर्य करी अवीर्यपणिछे वीर्यसहितपणिछे । सेकेणठेणभंते । ते स्यामाटे हेभगवन् ! इमकह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेसिणणेरइयाणअत्थि । हेगौतम ! जेह नार कीनेछे । उठाणे कम्मे बलेवीरिए । उत्थान कर्म बलवीर्य । पुरिसक्कारपरक्कमे । पुरुषाकार पराक्रमछे । तेणणेरइयालद्धिवीरिएण सवीरिया । तेणे नारकी लब्धिवीर्य करी सवीर्य वीर्यसहितछे । करणवीरिएणवि सवीरिया । अने करणवीर्यकरी पणि सवीर्यछे, तथा । जेसिणणेरइयाणणत्थिउठाणे । जेह नार कीनें नथी उत्थान । जावपरक्कमे । यावत् पराक्रम ताइं कहवो । तेणणेरइयालद्धिवीरिएण सवीरिया । तेणे नारकी लब्धिवीर्य करी वीर्यसहितछे । कर

पर्याप्तादिकालेऽवगन्तव्याइति ॥ णवरंसिद्धवज्जाजाणियव्वत्ति ॥ औधिकजीवेषु सिद्धा सन्ति, मनुष्येषु तु ते नेति, मनुष्यदण्डकेवीर्यम्प्रतिपिद्धस्वरूप नाध्येयमिति ॥ प्रथम शते अष्टम उद्देश ॥ ८ ॥ अष्टमोद्देशकान्तेवीर्यमुक्त, वीर्याच्च जीवा गुरुत्वा द्यासादयन्तीति गुरुत्वादि प्रतिपादनपर, स्तथा सद्भहण्या यदुक्त ॥ गरुएत्ति ॥ तत्प्रतिपादनपरश्च नवमोद्देशक स्तत्रच सूत्र ॥ कहण्णमित्यादि ॥ गरुयत्तति ॥ गुरुकत्व मशुभ

जोणिया, मणूसा जहा ओहियाजीवा, नवरं सिद्धवज्जाभाणियव्वा, वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा नेरइया सेव भंते२ त्ति ॥ पढमसए अट्ठमोद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ कहण्णभंते! जीवागरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवाएण मुसावाएण अदिन्नमेहुणपरीसह कोहमाणमाया लोह पेज्जदोसकलह अब्भक्खाण

णवीरिएण अवीरिया सेतेणठ्ठे ण जहाणेरइया । करणवीर्येकरो वीर्यवतनथी, ते तेणें अर्थ हेगौतम । इमकह्यु इत्यादि पूर्ववत् जिम नारकीकह्या । एवजा वपचिंदियतिरिक्खजोणिया । इम यावत् पचेंद्री तिर्यंचयोनिकताई कहवो । मणूसाजहाओहियाजोवा । मनुष्यविषे जिम समुचे औघेजीवकह्या तिम मनुष्य कहवा ।.णवरसिद्धवज्जाभाणियव्वा । एतलो विशेष समुच्चय जीवदण्डकमाहे सिद्धछै ते दण्डकमाहे सिद्धनकहवा । वाणमंतरजोइस वेमाणियाजहा णेरइया । वानव्यतर १ ज्योतिषी २ वैमानिक ३ एतीनदण्डक जिम नारकीकह्या तिमकहवा । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछे अ न्यथा नही । पढमसयस्सअट्ठमो । एपहिला शतकनो आठमो उद्देशो अर्थयो कह्यो ॥ ८ ॥ आठमा उद्देशाने अंते वीर्यकह्यो तेवीर्य थो जीव गरुआदिहावे तेकहेछे गौतमपूछेछे—कहण्णभंतेजीवागरुयत्तहव्वमागच्छंति । किणेंप्रकारे शीघ्रकालकारे हेभगवन् । अशुभकर्म उपचयरूप अधोगतिगमनरूप ते गुरुपणू जतावलोपामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणाइवाएण । हेगौतम । प्राणी जीवने अतिपात हणवेकरी १ । मुसावाएण । झूठ वचन ना बोलवाथी २ । अदिण्णादाणेण । अणदीधोवस्तुना लेवाथी ३ । मेहुणेण । मैथुनथी ४ । परिग्गहेण । परिग्रहथी परिग्रहते द्रव्यरूप ५ । को ह माण माया लोभ पेज्ज दोस कलह अभक्खाण । पेसुणअरइरइण । क्रोधेकरी ६ मानेकरी ७ मायायेंकरी ८ लोभेकरी ९ प्रेमेंकरी १० द्वेषेंकरी ११

कर्मोपचयरूप मधस्ता द्गमनहेतुभूतं लघुकत्वं गौरवविपरीत ॥ एवं आउलीकरेतित्ति ॥ इहेवंशब्द· पूर्वोक्ताभिलापसंसूचनार्थ, सचैवं–कहण्णंते जीवाससारंआउलीकरेंति ? गोयमा । पाणाइवाएण मित्यादि ॥ एव उत्तरत्रापि, तत्र ॥ आउलीकरेतित्ति ॥ प्रचुरीकुर्वन्ति कर्मभिरित्यर्थ ॥ परित्तीकरेतित्ति ॥ स्तोक कुर्वन्ति कर्म्मभिरेव ॥ दीहीकरेतित्ति ॥ दीर्घप्रचुरकालमित्यर्थ ॥ हस्सीकरेतित्ति ॥ अल्पकालमित्यर्थ ॥ अणुपरियट्टंतित्ति ॥

पेसुन्न रति अरति परपरिवाए मायामोसमिच्छादंसणसल्लेण एवंखलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेण एवंखलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति । एव संसारआउलीकरेंति , एवंपरित्तीकरेंति दीही

कलह राड तिणकरी १२ पारकाटापकहवाथो १३ राजद्वारादिकनेविषे चाडीकरवाथो १४ । ७ । दुखाइ दुर्भागीइ सुखीइ १५ । परपरिवाएण । परप रवादेकरो १६ । मायामोसेण । छदेदुष्ट मुखेमिष्टपणू परने दुखमाहे पाडवू १७ । मिच्छादसण सल्लेण । देवगुरुधर्मग्रके पणि मनने मिथ्यात्व पणू न मिटे तेमिथ्यादर्शनशल्यकहीये १८ । एवखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । जीवागरुयत्तहव्वमागच्छति । जीव गुरुकपणू अशुभकर्मोपचयरूप नीचोगमनहेतु जतावलो पामे, वलोगौतमपूछेछे—कहणभतेजीवालहुयत्तहव्वमागच्छति । किसेप्रकारे हेभगवन् । जीवलहुयत्त कहता गुरु पणाथो विपरीत हलूआपणो जतावलोपामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणाइवायवेरमणेण । हेगौतम । प्राणातिपात जीवहिसा तेहथो वेरमण कहता निवर्त्तवू । जावमिच्छादसणसल्लवेरमणेण । यावत् मिथ्यादर्शन शल्य वेरमणतांई अढार पापस्थानक कह्या तेहने निवर्त्तवे करी । एवखलु गोयमा इम निश्चे हेगौतम । जीवालहुयत्तहव्वमागच्छति । जीव गुरुपणाथो विपरोत ते हलूआपणू जतावलोपामे । एवआउलीकरेंति । इम कर्मकरी ससार प्रचुरकरे । एव परित्तीकरेंति । इम कर्मथोडा हलूआकरे । एवदीहीकरेति । इम दीर्घकालकरे । एवहस्सीकरेति । इम ह्रस्व अल्पकालकरे । एवअणुपरियट्टति । इम ससार वार २ भमे । एवनीईवयति । इम ससार तरे । पसत्याचत्तारि । लघुत्व १ परित्त २ ह्रस्वत्व ३ ससार लघन ४ एचारि मोचना अगछे तेमाटे प्रशस्त

॥ टीका ॥

पीन पुन्येन भ्रमन्तीत्यर्थः ॥ वीईवयतित्ति ॥ व्यतिव्रजन्तिव्यतिक्रामन्तीत्यर्थः ॥ पसत्थाचत्तारित्ति ॥ लघुत्वपरीतत्वऊर्ध्वत्वव्यतिव्रजनदण्डकाः प्रशस्ता मोक्षाङ्गत्वात् ॥ अपसत्थाचत्तारित्ति ॥ गुरुत्वाकुलत्वदीर्घत्वानुपरिवर्त्तनदण्डकाअप्रशस्ता अमोक्षाङ्गत्वादिति, गुरुत्वलघुत्वाधिकारा दिद माह ॥ सत्तमेणमित्यादि ॥ इह चेय गुरुलघुव्यवस्था—निच्छयओसव्वगुरु सव्वलहुवानविज्जएदव्व । ववहारओउज्जुज्जइ वायरखंधेसुणाणेसु ॥ १ ॥ अगुरु

॥ मूल ॥

करेंति, हस्सीकरेंति, एवं अणुपरियहंति, एवंवीईवयंति, पसत्था चत्तारि अप्पसत्था चत्तारि, सत्तमेणं भंते! उवासंतरे किंगरुए लहुए गरुयलहुए अगुरुयलहुए? गोयमा! नोगरुए नोलहुए नोगरुयलहुए अगुरुयलहुए। सत्तमेणंभंते तणुवाए यलहुए? गोयमा! नोगरुए नोलहुए गरुयलहुए नोअगुरुयलहुए। एव सत्तमेघणवाए सत्तमेघणोदही सत्तमापुढवी उवासंतराइं सव्वाइं जहा सत्तमेउवासंतरे जहातणुवाए, एव गरुयलहुएघणवाय घणउदहिपुढवीदीवायसागरावासा। नेरइयाणंभंते! किंगरुया जाव अगुरुलहुया?

॥ भाषा ॥

जाणवा। अपसत्थाचत्तारि। गुरुत्व १ आउलो २ दीर्घत्व ३ अनुप्रवर्त्तन ४ एचारि मुक्ति हेतुनही तेमाटे अप्रशस्त जाणवा। गुरुत्व लघुत्व अधिकार यो एकाहेछे—सत्तमेणंभंतेउवासंतरे। सातमो एतले सातमी पृथिवीनो नीचलो हेभगवन् अवकाशांतर। किंगरुए लहुए गरुय लहुए। स्यूं गुरुछे? लघु छे गरुलघुछे। अगुरुलहुए। अगुरु लघुछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोगरुए णोलहुए णोगरुयलहुए अगरुलहुए। हेगौतम गुरुनही एकांतगुरुपणे वहवा ने असमर्थ हुवे गुरुलघुनही अगुरुलघुछे। सत्तमेणंभंतेतणुवाए। सातमो हेभगवन् तनुवात सातमी पृथिवीनो नीचलो तनुवात। किंगरुए लहुए गरुय लहुए अगुरुलहुए। स्यूं गुरुछे? लघुछे गुरुलघुछे अगुरुलघुछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोगुरुए णोलहुए गुरुयलहुए णोअगुरुलहुए। हेगौतम गुरुनही लघु नही गुरुलघुछे अगुरुलघुनही। एवसत्तमेघणवाए। इम सातमो घनवात। सत्तमे घणोदही। इमही सातमो घनोदधि। सत्तमापुढवी। इम सातमी पृथिवी। उवासंतराइं सव्वाइं। अवकाशांतर सगलाई जिम सातमो अवकाशांतर कह्यो तिमकहवो, गुरुनही लघुनही अगुरुलघुछे। जहातणुवाए।

॥ टीका ॥

तनुवातप्रभृतीनि लघुगुरुकाणि अष्टविधद्रव्याद्यर्थवर्णनाधिकारात् । शेषाणि ऽष्टप्रकाराणि गुरुलघूनि अष्टभावनिश्चयमिति ॥ २ ॥ चतुःस्पर्शानि ॥ सूक्ष्मपरिणामानि ॥ अष्टस्पर्शानि ॥ बादराणि गुरुलघुद्रव्य रूपि, अगुरुलघुद्रव्यत्वरूपिरूपवेति, व्यवहारतस्तु गुर्वादीनि चत्वार्यपि सन्ति तत्र निदर्शनानि गुरुर्लोष्ठो धोगमना, लघु धूम ऊर्द्ध्वगमनात्, गुरुलघु वायुस्तिर्यग्गमनात्, अगुरुलघ्वाकाश तत्स्वभावत्वादिति, एतानिचा वकाशान्तरादिसूत्रा ण्येतद्गाथानुसारेण वगन्तव्यानि, तद्यथा–उवासवायघणउदहि पुढवीदीवायसागरावासा । नेरइयाईअत्थिय समयाकम्माइलेसाउ ॥ १ ॥ दिट्ठीदंसणणाणे सन्नसरीरायजोगउवओगे । दव्वपएसापज्जव तीयाआगामिसव्वद्धत्ति ॥ १ ॥ वेउव्वियतेयाइपडुच्चत्ति ॥ नारका वैक्रियतैजसशरीरे प्रतीत्य गुरुकलघुकाएव, यतो वैक्रियतैजसवर्गणात्मके ते' एताश्च गुरुकलघुकाएव' यदाह–उरालियवेउव्विय आहारगतेयगुरुलहूदव्वत्ति ॥ जीवंचकम्मंचपडुच्चत्ति ॥ जीवापेक्षया कार्म्मणशरीरापेक्षयाच नारका अगुरुलघुकाएव, जीवस्या रूपित्वेना गुरुलघुत्वात्, कार्म्मणशरीरस्यच कार्म्मणवर्गणात्मकत्वा त्कार्मणवर्गणाना चागुरुलघुत्वा, दाह

॥ मूल ॥

गोयमा ! नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुयावि अगुरुयलहुयावि । सेकेणट्ठेणं गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुया नोअगुरुयलहुया । जीवंचकम्मंचपडुच्च नोगुरुया नोलहुया नो

॥ भाषा ॥

जिम तनुवात कह्यो । एम गुरुयलहुए घणवाय घणउदहि । इम गुरुलघु घनवात घनोदधि । पुढवीदीवायसागरावासा । पृथिवी द्वीप सागर समुद्र वा सा भरतादि क्षेत्र एमज गुरुलघु पदे कहवा, वलीगौतमपूछेछे—णेरइयाणभंतेकिगुरुया जावअगुरुलहुया । नारको हेभगवन् ! स्यूं गुरुछे ? अथवा लघुछे अथवागुरुलघु यावत् अथवा अगुरुलघु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोगुरुया णोलहुया । हेगौतम ! गुरुनहो लघुपणिनही । गुरुयलहुयावि । एतले गुरुलघु पणिछे । अगुरुलहुयावि । अगुरुलघु पणिछे, गौतम कहेछे –सेकेणट्ठेणंभंते । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यु । गोयमा वेउव्वियतेयाइं पडुच्च । हेगौतम । नारकोने वैक्रिय तैजस शरीरछे ते आश्रयोने । णोगुरुया णोलहुया । गुरुनही लघुनही । गुरुयलहुया णोअगुरुलहुया । गुरुलघुछे अगुरुलघुनही जेमाटे वैक्रियतैजस वर्गणात्मक ते एतला गुरुलघुकह्योजेछे । जीवंच कम्मंच पडुच्च णोगुरुया णोलहुया णोगुरुयलहुया अगुरुलहुया । जीवनी अपेक्षायें वपुन कार्म

॥ टीका ॥

च-कमगमगाञासाई सयाइंअगुरुलहुयाइति ॥ नाणत्तजाणियव्वंसरीरेहिंति ॥ यस्य यानि शरीराणि भवन्ति तस्य तानि ज्ञात्वा असुरादिसूत्रा ण्य ध्येयानी तिहृदय, तत्रा सुरादिदेवा नारकवद्वाच्या , पृथिव्यादयस्तु औदारिकतैजसे प्रतीत्य गुरुलघवो, जीव कार्म्मणञ्च प्रतीत्या गुरुलघवो, वाय वस्तु औदारिकवैक्रियतैजसानि प्रतीत्य गुरुलघव, एव पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चोपि, मनुष्या स्त्वौदारिकवैक्रियतैजसाहारकाणि प्रतीत्येति ॥ धम्मत्थि कायेत्ति ॥ इह यावत्करणा दहस्मत्थिकाए आगासत्थिकाएत्तिदृश्य ॥ चउत्थपएणाति ॥ एते अगुरुलघुइत्यनेन पदेन वाच्या, शेपाणान्तु निपेध

॥ मूल ॥

गुरुयलहुया अगुरुयलहुया । सेतेणठेणं एवं जाव वेमाणिया । नवर णाणत्तं जाणियव्वं , सरीरेहिं धम्म त्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएणं। पोग्गलत्थिकाएणं भंते! किं गरुए लहुए गरुयलहुए अगुरुयलहु ए ? गोयमा ! नोगुरुए नोलहुए गरुयलहुएवि अगुरुयलहुएवि । सेकेणठेण गोयमा ! गुरुयलहुयदव्वाइ

॥ भाषा ॥

ण शरीरनी अपेचायें नारकी गुरुनही लघुनही गुरुलघुनही अगुरुलघुहोज छै, जीव अरूपीछै तेमाटे अगुरुलघुछै, अने कार्मणशरीर कार्मणवर्गणात्मक पणाथी कार्मणवर्गणाने अगुरुलघुपणोछै। सेतेणट्ठे णं गोयमा। ते तेणें अर्थे हेगौतम। नारकी गुरुलघुछै, अगुरुलघुपणिछै। एव जावबेमाणिया णवर णाण त्तजाणियव्व सरीरेहि धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएण। इम यावत् वेमानिकातांई चउवीसदंडक कहवा, एतलोविशेष नानापणू शरीरे जेह ने जेतलाशरीरहुवे तेहने तेतला जाणीने कहवा, असुरकुमारादिदेवता नारकीनीपरे कहवा, पृथिव्यादिकने तो औदारिक तैजसआश्री गुरुलघुजीव अने कार्मणशरीरआश्री अगुरुलघु इति, वाउकाय औदारिक वैक्रिय तैजसआश्री गुरुलघुजीव कार्मणआश्री अगुरुलघु, इम पचेंद्रीतिर्यंच पणि, मनुष्य औदारि कवैक्रिय आहारक तैजसआश्री गुरुलघुजीव, कार्मणआश्री अगुरुलघु। धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ जीवास्तिकाय ४ एहने अरूपी पणाथी अगुरुलघु इणिपदे जोडवा बाकी तीनपद निषेधकरवा। पोग्गलत्थिकाएणभंते। पुद्गलास्तिकाय हेभगवन्। किंगुरुए लहुए। स्यूं गुरुछे? अथवा लघुछै। गरुलहुए। अथवा गुरुलघुछै। अगुरुलहुए। अथवा अगुरुलघुछै इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोगुरुए णोलहुए। हेगौतम। गुरुनही लघुनही

॥ टीका ॥

कार्यो, धर्मास्तिकायादीना मरूपितया अगुरुलघुत्वादिति, पुद्गलास्तिकायसूत्रे, उत्तरं निश्चयनयाश्रित मेकान्तगुरुलघुनो स्तन्मतेना भावात् ॥ गरु यलहुयदव्वाइति ॥ औदारिकादीनि ४ ॥ अगरुलहुयदव्वाइति ॥ कार्म्मणादीनि ॥ समयाकम्माणियचउत्यपएणाति ॥ समया अमूर्त्ता कर्म्माणिच का र्म्मणवर्गणात्मकानी त्यगुरुलघुत्वमेषा ॥ दव्वलेसपडुच्चतइयपएणाति ॥ द्रव्यत कृष्णलेश्या औदारिकादिशरीरवर्णं, औदारिकादिकञ्च गुरुलघ्विति कृत्वा गुरुलघ्वित्यनेन तृतीयविकल्पेन व्यपदेश्या; भावलेश्यातु जीवपरिणति, स्तस्या आमूर्त्तत्वा दगुरुलघ्वित्यनेन व्यपदेश इत्यतआह ॥ भावले सपडुच्चचउत्यपएणाति ॥ दिठीदसणेत्यादि ॥ दृष्ट्यादीनि जीवपर्यायत्वेना गुरुलघुत्वा दगुरुलघुलक्षणेन चतुर्थपदेन वाच्यानि, अज्ञानपद त्विह

॥ मूल ॥

पडुच्च णोगरुए णोलहुए गुरुयलहुए नोअगुरुयलहुए, अगुरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च नोगुरुए नोलहुए नो गुरुयलहुए अगुरुयलहुए, समयाकम्माणियचउत्यपएणं। कण्हलेसाणं भंते! किं गरुया जाव अगुरुय लहुया? गोयमा! नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुयावि अगरुयलहुयावि। सेकेणठेणं गोयमा! दव्वलेस पडुच्च तइयपएणं, भावलेससपडुच्च चउत्यपएण, एवं जाव सुक्कलेस्सा। दिठीदंसणनाणअन्नाणसन्नाचउ

॥ भाषा ॥

गरुयलहुणवि। गुरुलघुपणिछे। अगुरुलहुयावि। अगरुलघुपणिछे। सेकेणठे णंभते। ते स्यामाटे हेभगवन् ! इमकह्यु इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा गरुयलहुय दव्वाइ पडुच्च। हेगौतम। औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ द्रव्यआश्रीने। णोगुरुए णोलहुए गरुयलहुए। नही गुरु नहीलघु गुरुलघुछे। णो अगुरुलहुए। अगुरुलघुनही। अगुरुलहुयदव्वाइ पडुच्च। कार्मण मन भाषा एतीन आश्रीने। णोगुरुए णोलहुए। गुरुनही लघुनही। णोगुरुयलहुए। गुरुलघुनही। अगुरुलहुए। अगुरुलघुछे। समयाकम्माणिय। काल अमूर्त्ती कार्मणवर्गणा एवेने। चउत्यपएण। अगुरुलघुपणे पदें कहवा। कण्हलेसा णभतेकिगुरुया जाव अगुरुलहुया। कृष्णलेश्या णंवाक्यालकारे हेभगवन् ! स्युगुरुछे ? अथवा लघुछे अथवा गुरुलघुछे अथवा अगुरुलघुछे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोगुरुया णोलहुया। हेगौतम। गुरुनही लघुनही। गरुयलहुयावि। गुरुलघुपणिछे। अगुरुलहुयावि। अगुरुलघुपणिछे। सेकेणठे णंभंते। ते

॥ टीका ॥

ज्ञानविपक्षत्वा दधीत, अन्यथा द्वारेषु ज्ञानपदमेव दृश्यते ॥ हेट्ठिल्लेत्ति ॥ औदारिकादीनि ॥ तउयपएणति ॥ गुरुलघुपदेन गुरुलघुवर्गणात्मकत्वा त् ॥ कम्मगचउत्थपएणति ॥ अगुरुलघुद्रव्यात्मकत्वा त्कार्म्मणशरीराणा मनोयोगवाग्योगौ चतुर्थपदेन वाच्यौ तद्द्रव्याणा मगुरुलघुत्वात्, काययो ग कार्म्मणवर्ज्जं स्तृतीयेन गुरुलघुत्वा त्तद्द्रव्याणामिति ॥ सव्वदव्वेत्यादि ॥ सर्व्वद्रव्याणि धर्म्मास्तिकायादीनि सर्वप्रदेशा स्तेषामेव निर्विभा अंशा सर्वपर्यवा वर्णोपयोगादयो द्रव्यधर्म्मा गते पुद्गलास्तिकायवद्व्यपदेश्या, गुरुलघुत्वेनागुरुलघुत्वेनवेत्यर्थः, यत. सूक्ष्मा ण्यमूर्त्तानिच द्रव्या ण्यगुरु

॥ मूल ॥

त्थपएणणेयव्वाइं, हेट्ठिल्ला चत्तारिसरीरा नायव्वा, तइएणंपएणं। कम्मय चउत्थएणपएणं, मणजोगे वइजोगे चउत्थएणंपदेण, कायजोगो तइयएणंपएण, सागारोवउगो अणागारोवउगो चउत्थपदेणं, सव्वदव्वा सव्वप देसा सव्वपज्जवा जहा पोग्गलत्थिकाउ, तीतद्धा अणागयद्धा सव्वद्धा चउत्थएण पएणं। सेणूण भंते! लाघ

॥ भाषा ॥

स्यांमाटे हेभगवन्। इमकह्यु इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा दव्वलेस्सपडुच्च तइयपएण। हेगोतम। द्रव्यथी कृष्णलेश्या औदारिकशरीर वर्णं छ अने औ दारिक गुरुलघुछे तेमाटे गुरुलघु एतोजेपदे कहवो, जीवपरिणाम विशेष ते अमूर्त्तपणाथी। भावलेस्सपडुच्च। भावलेश्या आश्रीने। चउत्थपएण। चौथे अ गुरुलघु इणे पदे कहता। एव जाव सुक्कलेस्सा। इम यावत् शुक्ललेश्या ताइं कहवी। दिट्ठीदसणणाणेअणाणसण्णाओचउत्थपएणेयव्वाओ। दृष्टि १ दर्शन २ ज्ञान ३ अज्ञान ४ सञ्ज्ञा ५ ए जीवपर्याय पणाथी अगुरुलघुलक्षण चौथेपदे कहवा, अज्ञानपद इहांकह्यु ते ज्ञानना विपक्षपणाथी कह्यु, अन्यथा द्वारनेवि षे ज्ञानपदहीज दीसेछे। हेट्ठिल्लाचत्तारिसरीराणेतव्वा तइएणपदेण। हेठिला एतले औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४ एचारि पहिलाशरीर गुरुलघुपदे कहवा। कम्मयचउत्थएणपएण। कार्मणशरीर चौथेपदे अगुरुलघु द्रव्यपणाथी कार्मणशरीर ने। मणजोगे वयजोगे चउत्थएणपएण। मनयोग वचनयोग ए बेउ द्रव्यने अगुरुलघु पणोछे तेमाटे चौथेपदे कहवा। कायजोगोतइएण पदेण। काययोग कार्मणवर्जीने गुरुलघुपणो तेहना द्रव्यनेछे ते माटे त्रीजेपदे। सागारोवओगो। ज्ञानोपयोग। अणागारोवओगो चउत्थपएण सव्वदव्वा। दर्शनोपयोग एबेउ चौथे अगुरुलघुपदेंकहवा, धर्मास्तिकाया

लघूनि, इतराणितु गुरुलघूनि' प्रदेशपर्यवास्तु तत्तद्द्रव्यसम्बन्धत्वेन तत्तत्स्वभावाइति' गुरुलघुत्वाधिकारादिदमाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ लाघवियति ॥ लाघवमेव लाघविक मल्पोपधित्व ॥ अप्पिच्छत्ति ॥ अल्पोभिलाष आहारादिषु ॥ अमुच्छत्ति ॥ उपधा वसंरक्षणानुबन्ध ॥ अगेहित्ति ॥ भोजनादिषु परिभोगकाले अनासक्ति रप्रतिबद्धता स्वजनादिषु स्नेहाभाव, इत्येत त्पञ्चक मितिगम्य, श्रमणाना निर्ग्रन्थानाम्प्रशस्त सुन्दर मथ

वियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! लाघवियं जाव पसत्थं । सेणूण भंते ! अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्त समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ? हंता गोयमा ! अकोहत्त जाव पसत्थ । सेणूणं भंते ! कंखापदोसे खीणे समणे णिग्गंथे अंतकरेभवइ अंतिमसा

टि षट्द्रव्य । सव्वपदेसा सव्वपज्जवा । सगलाप्रदेश जेहना भावकीवानजाय वर्णादिक तथा उपयोगादिक द्रव्यधर्म । जहांधर्मास्तिकायत्रो । जिम पुद्गलास्तिकायनो कह्यो तिमकहवो, तथा सूक्ष्मद्रव्यछे तेहने अगुरुलघुभाव अनेरा बादर लघुद्रव्यने गुरुलघुभावप्रदेश अने पर्याय ते जेद्रव्य संबंधिपणें करो तेहने स्वभाविकहवा । तीतद्धा अणागयद्धा सव्वद्ध। चउत्थपदेण । अतीतअद्धा अनागतअद्धा सर्वाद्धा एचौथेपदे एतले अगुरुलघु कहवा, गुरुयकोज एकहेछे—सेणूणभतेलाघविय । ते निश्चे हेभगवन् । लघुभूत अल्प उपधि । अप्पिच्छा । आहारादिकनेविषे अल्पइच्छा । अमुच्छा । उपधि आदि राखवामा मूर्छारहित । अगेही । भोजन आदि जोमणवेला लोभरहित । अप्पडिबद्धया । स्वजनादि सनेह रहित । समणाण । श्रमण तपस्वीने । णिग्गंथाण । वाह्याभ्यंतर ग्रथरहितने । पसत्थ । सुंदरछे इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गोयमा लाघविय । हा गौतम ' जती लघुभूत अल्पउपधि यावत् प्रशस्त सुंदरछे एलाघविकने सुंदरता कही, ते क्रोधादिकनाभावविना थाय तेमाटे क्रोधादिदोषनो अभाव देखाडेछे—सेणूणभते अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणाणंणिग्गंथाण पसत्थ । ते निश्चे हेभगवन् । अक्रोधपणों मानरहितपणो मायारहितपणों लोभरहितपणो श्रमणने निर्ग्रंथनें सुंदरछे इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गोयमा अक्रोहत्त । हा गौतम अक्रोधपणो । जावपसत्थ । यावत् प्रशस्तपणो सुंदरछे । सेणूणभतेकखा । ते निश्चे हेभगवन् ' अन्यदर्शननीवांछा तथा

॥ टीका ॥

वा; लाघविक मप्रशस्तं, कथम्भूत मित्याह ॥ अप्पेच्छा ॥ अल्पेच्छारूपमित्यर्थ, एव मितराण्यपि पदानि, उक्तालाघविकस्य प्रशस्तता, तच्च क्रोधा द्यभावाविनाभूत मिति, क्रोधादिदोपाभावप्रशस्तताभिधानार्थ क्रोधादिदोपाभावाविनाभूतकाङ्क्षाप्रदोपत्तयकार्याभिधानार्थञ्च क्रमेणसूत्रे व्यक्तेच नवर काङ्क्षादर्शनान्तरग्रहो गृद्धिर्वा, सेव प्रकृष्टो दोप काङ्क्षाप्रदोप काङ्क्षाप्रद्वेपवा; रागद्वेपावित्यर्थ, काङ्क्षाप्रदोप प्रागुक्त, प्रदोपत्वञ्च काङ्क्षाया स्तद्विपयभूतदर्शनान्तरस्य विपर्यस्तत्वादिति, दर्शनान्तरस्य विपर्यस्तता दर्शयन्नाह ॥ अणउत्थियत्यादि ॥ अन्ययूथ विवक्षितसङ्घा दपर सङ्घ स्त दस्तियेपा ते अन्ययूथिका स्तीर्थान्तरीयाइत्यर्थ, एवमिति वक्ष्यमाण ॥ आइक्खतित्ति ॥ आख्यान्ति सामान्यत ॥ भासतित्ति ॥ विशेपत ॥ पण्ण वतित्ति ॥ उपपत्तिभि ॥ परूवतित्ति । भेदकथनतो द्वयो र्जीवयो रेकस्य वा, समयभेदेना युद्धयकरणे नास्ति विरोध इत्युक्त ॥ एगेजीवेइत्या

॥ मूल ॥

रीरिएवा बहुमोहेवियणं पुव्विविहरित्ता अहपच्छा संवुडेकालं करेइ तओपच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ जाव अंतंकरेइ ? हंता गोयमा ! कंखापदोसे खीणे जाव अंतंकरेइ । अणउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं दोआउयाइ पकरेइ तंजहा—इहभविं

॥ भाषा ॥

रक्षपणो तथा राग द्वेष चीणकीधा जिणें एहवो । समणेणिग्गथे । श्रमण निग्रथ । अंतकरेभवइ । कर्मना अतनो करणहार हुवे अतिमसारीरिएवा । छेहला शरीरनो धणी । बहुमोहेवियण । घणो मोह्ने करीने पणि वपुन ण वाक्यालङ्कारे । पुव्विविहरित्ता । पहिला विचरीने । अहपच्छासवुडेकालकरेइ । अथ तिवारपछे मोहरहित लघुभूत सहुद्यो छतो कालकरे तेमरे । तओपच्छासिज्झइ । तिवारेपछे सीझे । जावअतकरेइ । यावत् ससारना अंतप्रते क रे मोक्षजाय इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गोयमा कखायदोसेखीणे । हा गोतम । क्रोधादि दोप चीणथया चरमशरीरी । जावअतकरेइ । यावत् संसारनो अतकरे मोक्षजाय इत्यर्थ ॥ हिवे दर्शननो विपरीतपणो कहेछे—अणउत्थियाणभते । अन्यतीर्थी ण वाक्यालङ्कारे हेभगवन् । एवमाइक्खति । इम सामान्य एपणेंकहे । एवभासति । इमविशेषपणे कहे । एवपण्णवेंति । इम हेतुसेतीकहे उपपत्तिकरे । एवपरूवेंति । इम प्ररूपे भेद कहवायी । एवखलुएगेजीवे

॥ टीका ॥

दि दोआउयाइपकरेइत्ति ॥ जीवोहि स्वपर्यायसमूहात्मक, सच यदैक मायु पर्याय करोति तदान्यमपिकरोति, स्वपर्यायत्वा उज्ञानसम्यक्तपर्या यवत्, स्वपर्यायकर्तृत्वञ्च जीवस्या भ्युपगन्तव्यमेवा, न्यथा सिद्धत्वादिपर्यायाणा मनुत्पादप्रसङ्गइतिभाव, उक्तार्थस्यैव भावनार्थमाह ॥ जमि त्यादि ॥ विर्जाक्तपरिणामा द्यस्मि न्समये इहभवो वर्तमानभवो यत्रायुषि विद्यते फलतया तदिहभवायु, रेव परभवायु रप्यनेनचेहभवायु कर णसमये परभवायु करण नियमित, मथ परभवायु करणसमये इहभवायु करण नियमयन्नाह ॥ जसमयपरभवियाउयमित्यादि ॥ एव मेकसमय कार्यता द्वयो रप्यभिधाये कक्रियाकार्यतामाह ॥ इहभवियाउयस्सेत्यादि ॥ पकरणयाएत्ति ॥ करणेन एव खल्वित्यादि निगमनं ॥ जसतेअणउत्थिया

॥ मूल ॥

याउयंच परभवियाउयंच, जंसमय इहभवियाउयं पकरेइ तसमयं परभवियाउयं पकरेइ, जंसमय पर भवियाउयं पकरेइ तंसमय इहभवियाउय पकरेइ, इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयपकरेइ परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउयंपकरेइ, एवखलु एगेजीवे एगेणं समएणं दोआउयाइं पकरेइ तजहा—इहभवियाउयच परभवियाउयंच। सेकहमेयं भते एवं गोयमा! जणंते अणउत्थिया एवमा

॥ भाषा ॥

गेण समएण दोआउयाइ पकरेइ तजहा। इम निश्चै एकजीव एकसमये आउखोबाधै तिहा विराधनहो जोवछै ते स्वपर्याय समूहात्मकछै ते जिवारै आ उखोबाधै तिवारै बेभवनोबाधै तेकहैछे—इह भवियाउयच। इणि भवनो आउखोबाधै चपुन। परभवियाउयच। पर भवनो आउखोबाधै पूर्वे कह्या अर्थनोज भावना कहैछे—जसमयइहभवियाउयपकरेइ। जेसमयनेविषै वर्त्तमानभवनो आउखो बाधै। तसमयपरभवियाउयपकरेइ। तेसमयनेविषै आ गामिभवनो आउखोकरै बाधै। जसमयपरभवियाउय पकरेइ। अनै जेसमयनेविषै पर भवनो आउखो करै। तसमयइहभवियाउयपकरेइ। ते समयने विषै इह भवना आउखानो बधकरै। इहभवियाउयस्सकरणयाए। इम एकै समये कार्यपणो बेहुनोकहोने एकक्रिया कार्यपणे कहैछे—एह भवना बा धवानी क्रिया करता। परभवियाउयपकरेइ। परभवनाआउखानोबधकरै। परभवियाउयस्सपकरणयाए। पर भवना आउखानो बधनपणू करता। इ

॥ टीका ॥

एवमाइक्खंतीत्या ग्रनुवादवाक्यस्यान्ते तत्प्रनीत, नकेवल मित्यय वाक्यशेषोदृश्य, जेतेएवमाहंसुमिच्छतेएवमाहंसुति ॥ तत्र ॥ आहंसुति ॥ उक्त वन्तो यच्चाय वर्त्तमाननिर्देशे ऽधिकृते तीतनिर्देश, समर्वो वर्त्तमान कालो तीतो जाती त्यस्या र्थस्य ज्ञापनार्थो, मिथ्यात्वञ्चा स्येत्र-एकेना ध्यवसायेन विरुद्धयो रायुषो र्बन्धायोगात्, यच्चोच्यते, पर्यायान्तरकरणे पर्यायान्तरं करोति स्वपर्यायत्वादिति, तदनैकान्तिक, सिद्धत्वकरणे स सारित्वाकरणादिति, टीकाकारव्याख्यानन्तु, इहभवायु यदा प्रकरोति वेदयत इत्यर्थः, परभवायु स्तदा प्रकरोति प्रबध्नातीत्यर्थ, इहभवायु रूप

॥ मूल ॥

इक्खंति जाव परभवियाउयञ्च जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु, अहंपुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, एवंखलु एगेजीवे एगेण समएणं एगंआउयं पकरेइ, तंजहा—इहभवियाउयंवा परभवियाउयं वा जंसमय इहभवियाउयंपकरेइ, णोतंसमय परभवियाउयं पकरेइ, जंसमय परभवियाउयं पकरेइ णोतं समय इहभवियाउयं पकरेइ, इहभवियाउयस्स पकरणयाए णोपरभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स० णोइहभवियाउयं पकरेइ एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं एगंआउयं पकरेइ तंजहा—इहभवियाउयंवा पर

। भाषा ॥

इभवियाउयपकरेइ। इह भवना आउखानो बन्धकरे। परभवनु पणीवार। इमनिचे एकजीव एकसमयने। एक समयनेविषे। बेआउखाउपकरेइत जहा। बे आउखाना बन्धप्रतें करे तेकहेछे—इहभवियाउयंच। इह भवनो आउखो पण। परभवियाउयंच। परभवनो आउखो। जेतेवमे यमतेण्वं। तेकिमछे एह हेभगवन्। इम इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जणते अणउत्थिया। हेगोतम। जेअन्यतीर्थी ते पाखण्डी वीतरागना शासनथी अनेरा ते। एव माइक्खंति। इम कहेछे सामान्यथी। जाव परभवियाउयंच। यावत् परभवनो आउखोबांधे एतला तांई सर्वकह्यो। जेतेएवमाहंसु। जे अन्यतीर्थी इमकह्यु। मिच्छते एवमाहंसु। मिथ्याभूठोतेकहेछे—अहंपुण गोयमा। हुं वली हेगोतम। एवमाइक्खामि। इम कहुं सामान्यथी। जावप रूवेमि। यावत् प्ररूपणा भेदकहवाथी। एवंखलुएगेजीवे। इम निश्चे एकजीव। एगेणसमएणं। एकेसमये। एगंआउयपकरेइ। एक आउखानो बंध

॥ टीका ॥

भोगेन परभवायु र्बध्नातीत्यर्थः, मिथ्याचेत त्परमतं यस्मा ज्जातमात्रो जीव इहभवायु र्वेदयते' तदैव तेन यदि परभवायुर्बद्धं तदा दानाध्ययना दीना वैयर्थ्य स्यादिति, एतच्चा युर्बन्धकाला दन्यत्रा वसेय, मन्यथायुर्बन्धकाले इहभवायु र्वेदयते' परभवायु स्तु प्रकरोत्येवेति' अन्ययूथिकप्रस्ता वा दिदमाह ॥ तेणमित्यादि ॥ पासावच्चिज्जेत्ति ॥ पार्श्वापत्याना पार्श्वजिनशिष्याणा मयं पार्श्वापत्यीय. ॥ थेरेत्ति ॥ श्रीमन्महावीरजिनशिष्या

॥ मूल ॥

भवियाउयवा सेव भंते भंतेत्ति ॥ भगव गोयमे जाव विहरइ ॥ तेणकालेणं २ पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुते णामं अणगारे जेणवथेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरं भगवं एवंवयासी, थेरासामाइयणया णंति, थेरासामाइयस्स अठ्ठं णयाणति, थेरा पच्चक्खाण नयाणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अठ्ठं णयाणति

॥ भाषा ॥

करै। तजहा इहभवियाउयवा। ते कहेछे—इण भवनो आऊखो बाधै। परभवियाउयवा। पर भवनो आऊखो बाधै। जसमयइहभवियाउयपकरेइ णोतसमयंपरभवियाउयपकरेइ। जे समयनेविषै इणि भवनो आऊखो बाधै नही ते समयनेविषै परभवनो आऊखोबाधै। जसमयपरभवियाउयंपकरे इ। जे समयनेविषै परभवनो आऊखोबाधै। णोतंसमयइहभवियाउयपकरेइ। नही ते समयनेविषै इहभवनो आऊखोबाधै। इहभवियाउयस्सपकरण याए। इह भवना आऊखाने बांधवैकरी। णोपरभविया उयंपकरेइ। पर भवनो आऊखो नबावै। परभवियाउयस्सपकरणयाए। पर भवनाआऊखाने बाधवैकरी। णोइहभवियाउयपकरेइ। नही इहभवनो आऊखोबाधै। एवखलुएगेजोवे। इम निश्चे पूर्वोक्तप्रकारे एकजोव। एगेणसमएण। एके समये एगआउयंपकरेइ तंजहा। एक आऊखोबाधै इम श्रीकेवलज्ञानीनो मत जाणवो तेकहेछे—इहभवियाउयवा। इहभवसबधी आऊखोबाधै। परभवि याउयंवा। परभवसबधी आऊखोबाधै। सेवंभते २त्ति। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हेकह्यु ते सत्यछे अन्यथानही। भगवगोयमे जावविहरइ तेणकालेण। भग वत गोतम यावत् अप्पाणभावेमाणे विहरइ एतला लगेकहवो, तेकालनेविषै। तेणसमएण पासावच्चिज्जा। पार्श्वनाथना अपत्यशिष्य। कालासवेसिय पत्तेणाम अणगारे। कालासवेसित पुत्रनामै गृहवास रहित साधु इत्यर्थ। जेणेवथेराभगवंता। जिहा स्थविर महावीरना शिष्य श्रुतवृद्ध भगवत ज्ञानव

श्रुतवृद्धा ॥ सामाइयति ॥ समभावरूप ॥ नयाणतित्ति ॥ न जानन्ति सूक्ष्मत्वा त्तस्य ॥ सामाइयस्सअठति ॥ प्रयोजन कर्मानुपादाननिर्ज्जरणरूप ॥ पच्चक्खाणति ॥ पौरुष्यादिनियम तदर्थञ्चा अवद्वारनिरोध ॥ सजमति ॥ पृथिव्यादिसरक्षणलक्षण तदर्थञ्चा नाश्रवत्व ॥ सवरति ॥ इन्द्रियनोइन्द्रियनिवर्त्तन, तदर्थन्तु अनाश्रवत्वमेव ॥ विवेगति ॥ विशिष्टबोध तदर्थञ्च त्याज्यत्यागादिक ॥ विउस्सग्गति ॥ व्युत्सर्ग कायादीना तदर्थञ्चा

थेरा संयमं णयाणति, थेरा संजमस्स अठ्ठ णयाणंति, थेरा सवरं णयाणंति, थेरासंवरस्स अठ्ठ नयाणंति, थेरा विवेगं णयाणति, थेरा विवेगस्स अठ्ठ णयाणति, थेरा विउस्सग्ग णयाणंति, थेराविउस्सग्गस्स अठ्ठं नयाणंति। तएण तेथेरा भगवतो कालासवेसियपुत्तं अणगार एववयासी, जाणासोण

त। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। थेरभगवएववयासो। स्थविर भगवतप्रत इमकहे। थेरासामाइयनजाणति। स्थविर समताभावरूप सामायिक ते नजाणे। थेरासामाइयस्सअठ्ठणयाणति। स्थविर सामायिकनो अर्थप्रयोजन नजाणे कर्मअनुपादानरूप। थेरापच्चक्खाणणयाणति। स्थविर पोरसी आदि नियम नजाणें। थेरापच्चक्खाणस्सअठ्ठणयाणति। स्थविर पच्चक्खाणनो अर्थ आश्रवद्वार निरोध नजाणें। थेरासजमणयाणति। स्थविर पृथिवी आदि रक्षालक्षण ते नजाणें। थेरासजमस्सअठ्ठणयाणति। स्थविर सयमनो अर्थ अनाश्रवपणो ते नजाणें। थेरासवरंणयाणति। स्थविर इन्द्री अने नोइन्द्रीयनो निग्रह ते नजाणे। थेरासवरस्सअठ्ठणयाणति। स्थविर सवरनो अर्थ अनाश्रवपणो ते नजाणें। थेराविवेगणयाणति। स्थविर विवेक कहता विशिष्ट बोध ते नजाणे। थेराविवेगस्सअठ्ठणयाण ते। स्थविरविवेकनो अर्थ त्याग अत्यागादि ते नजाणे। थेराविउसग्गणयाणति। स्थविर काउसग्ग नजाणे कायानो त्यागरूप। थेराविउसग्गस्सअठ्ठणयाणति। स्थविर काउसग्गनो अर्थ वाछारहित ते प्रते नजाणे। तएणतेथेराभगवतो। तिवारे ते स्थविर भगवत। कालासवेसियपुत्तअणगार। कालासवेसित पुत्र अणगारप्रतें। एववयासो। इम कहता हुया। जाणिामोर्णअज्जो सामाइय। जाणाछा ण वाक्यालकारे हेआर्य। समपरिणामरूप सामायिक। जाणासोणअज्जोसामाइयस्सअठ्ठ। जाणाछा ण वक्यालकारे हे आर्य। सामायिकनो अर्थ कर्म अनुपादा

॥ टीका ॥

नभिघङ्गता ॥ अज्जोत्ति हेआर्य । ऊंकारान्ततासम्बोधने प्राकृतत्वात् ॥ केभेत्ति ॥ किम्भवता मित्यर्थ ॥ आयाणेत्ति ॥ आत्मानो ऽस्माकं मते सा मायिकमिति' यदाह—जीवोगुणपडिवणो नयस्सदव्वट्ठियस्ससामइयति ॥ सामायिकार्थोपि जीवएव कर्म्मानुपादानादीना जीवगुणत्वात् जीवाव्य तिरिक्तत्वाच्च तद्गुणानामिति, एव प्रत्याख्यानाद्य प्यवगन्तव्य ॥ जइज्जेअज्जोत्ति ॥ यदिभवता हेआर्या । स्थविरा सामायिक मात्मा तथा ॥ अव

॥ मूल ॥

अज्जोसामाइय , जाणामोण अज्जो सामाइयस्सअट्ठं, जाव जाणामोणं अज्जो विउस्सग्गस्स अट्ठं । तए णसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे तेथेरे भगवंते एवंवयासी , जइणंअज्जो तुब्भेजाणह सामाइयं , जाणह सामाइयस्स अट्ठ, जाव जाहण विउस्सग्गस्स अट्ठं । के भे अज्जो सामाइए, केभे सामाइयस्स अट्ठे, जाव केभे विउस्सग्गस्स अट्ठे ! तएण तेथेराभगवंतो कालासवेसियपुत्त अणगार एववयासी , आयाणेअ ज्जो सामाइए , आयाणेअज्जो सामाइयस्स अट्ठे , जाव विउस्सग्गस्सअट्ठे । तएणसे कालासवेसियपुत्ते

॥ भाषा ॥

न निर्जराकप । जावजाणामाणअज्जोविउसग्गस्सअट्ठ । यावत् जाणोछा ण वाक्यालकारे हे आर्य । काउसग्ग कायात्यागरूप तेहनो अर्थ । तएणसेकाला सवेसियपुत्तेअणगारे । तिवारे तेकालासवेसित पुत्रनामें साधु । तेथेरेभगवते एववयामी । ते स्थविर भगवतप्रतें इम कहताहुया । जइणअज्जोतुब्भे । जो ण वाक्यालकारे हे आर्य । तुम्हे । जाणाहसामाइय । जाणोछो सामायिक । जाणहसामाइयस्सअट्ठ । वलो जाणोछो सामायिकनो अर्थ । जावजाणहविउ स्सग्गस्सअट्ठ । यावत् जाणोछो काउस्सग्गनो अर्थ । केभेअज्जोसामाइए केभेअज्जोसामाइयस्सअट्ठे । तो स्यू तुम्हारे हे आर्य । सामायिक स्यू तुम्हारे हेआर्य । सामायिकनो अर्थ । केभेअज्जोजावविउस्सग्गस्सअट्ठे । स्यू तुम्हारे यावत् काउस्सग्गनो अर्थ । तएणतेथेराभगवतो कालासवे सियपुत्तअण गारं । तिवारे ते स्थविर भगवत कालासवेसित पुत्रनामें साधुप्रते । एववयासी आयाणेअज्जोसामाइए । इम कहताहुया अम्हारेमते अहोआर्य । आत्मा जीव सामायिक गुण प्रतिपन्नहुवे, तिवारे सामायिकहीज कहीये । आयाणेअज्जोसामाइयस्सअट्ठे । आत्मा अम्हारे हेआर्य । सामायिक

॥ टीका ॥

रहुत्ति ॥ अपहृत्य त्यक्त्वा क्रोधादीन् किमर्थं गर्हध्वे ॥ निंदामि गरहामि अप्पाणं वोसिरामी ॥ त्यतित्वना क्रोधादीन्, प्रवजः अवद्यमितिगम्यते प्र यमभिप्राय, य सामायिकवान् त्यक्तक्रोधादिश्च सकथ किमपि निन्दति निन्दादि किमर्थमभवंतीति २ प्रश्नोत्तरं, संयमार्थमिति, अवद्ये गर्हिते संयमो भवति, अवद्यानुमते र्व्यवच्छेदनात्, तथा गर्हासंयम स्तद्धेतुत्वा च केवल ममो, गर्हाकर्मानुपादानहेतुत्वा त्संयमोभवति ॥ गरहाविय त्ति॥ गर्हैवच सर्वं ॥ दोसत्ति ॥ दोष रागादिकं पूर्वकृतपापवा, द्वेषवा; प्रविनयति क्षपयति, किमत्येत्याह ॥ सव्वं बालियंति ॥ बाल्य अज्ञाता मिथ्यात्व मविरतिञ्च ॥ परिण्णायत्ति ॥ परिज्ञाय ज्ञपरिज्ञया ज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया प्रत्याख्यायेति, इह गर्हाया संवृत्त श्चनेदा देशसर्वत्वेन,

॥ मूल ॥

अणगारे थेरेभगवंते एवं वयासी, जइभेअज्जो आयासामाइए आयासामाइयस्स अट्ठे, जाव आयावि उस्सग्गस्स अट्ठे, अवहट्टु कोहमाणमायालोभे किमट्ठं अज्जो गरहह ! कालासा ! संजमट्ठयाए । सेभंते? किं गरहासंजमे अगरहासंजमे कालासा ! गरहासंजमे नोअगरहासंजमे, गरहाविय णं सव्वं दोसं पविणेइ सव्वं बालियं परिण्णाए । एवं खुणे आया संजमे उवहिए भवइ, एवखुणे आया संजमे उवचिए भवइ ,

॥ भाषा ॥

ना अर्थ । जाव विउस्सग्गस्सअट्ठे । यावत् काउस्सग्ग नो अर्थ । तएणं ते कालासवेसियपुत्ते अणगारे । तिवारे ते कालासवेसितपुत्र साधु तेथेरेभगवते एवंवदासी । ते स्थविर भगवतप्रते इम कहतो हुवो । जइभेअज्जो सामाइए । जो तुम्हारे केमार्यों सामायिक । आयासामाइयस्स अट्ठे । वली आत्माहीज सामायिकनो अर्थ । जाव आयाविउस्सग्गस्सअट्ठे यावत् काउस्सग्ग [illegible] आउस्सग नो अर्थ त्यजीने क्रोध मान माया लोभ किमेपर्थे केमार्यो ! गरहहा । निंदामि गरिहामि पचाण वोसरामि इत्यादि, निंदा दोषादि सर्व गरहा जे जीवने सावद्य लागे ते गरहीये गुरुसाखे आलोवे इतिवच. । कालासा संजमट्ठयाए । हे कालासवेसितपुत्र । संयमनेपर्थे अ जापाप गरहिये संयमहुवे सेभंतेकिंगरहासंजमे । ते हेभगवान् स्यू गरहा संयमछे गरहाहो पचा । अगरहासंजमे । अगरहा संयमछे । कालासागरहासंजमे । हेकालासवेसित

॥ टीका ॥

परिज्ञायेत्यत्र क्त्वाप्रत्ययविधि रदुष्टइति ॥ एवखुत्ति ॥ एवमेव णेइत्यस्माकं ॥ आयासंजमेउवहिएत्ति ॥ उपहित प्रक्षिप्तो न्यस्तो भवति, अथवा, आत्मरूप संयम उपहित प्राप्तोभवति ॥ आयासजमेउवचिएत्ति ॥ आत्मा सयमविपये पुष्टो भवति' आत्मरूपोवा, सयम उपचितो भवति ॥ उवट्ठिएत्ति ॥ उपस्थितो ऽत्यन्तावस्थायी ॥ एएसिणभतेपयाण इत्यस्य अदिठाणमित्यादिना सम्बन्ध., कथमदृष्टाना मित्यतआह ॥ अणाणयाएत्ति ॥ अज्ञानो निर्ज्ञान स्तस्य भावो ऽज्ञानता तया ऽज्ञानतया स्वरूपेणा नुपलम्भादित्यर्थ, एतदेव कथमित्याह ॥ असवणयाएत्ति ॥ अश्रवण श्रुतिवर्ज्जित स्तद्भाव स्तत्ता तया ॥ अबोहीएत्ति ॥ अबोधि जिनधर्मानवाप्ति रिहतु प्रक्रमा न्महावीरजिनधर्म्मानवाप्ति स्तया अथवौ; त्पातिक्यादिबुध्यभावेन ॥ अणभिगमेणति ॥ विस्तरबोधाभावेन हेतुना अदृष्टाना साक्षा दस्वय मनुपलब्धाना, मश्रुताना मन्यतो नाकर्णिताना ॥ अस्सुयाणति ॥ अस्मृता

॥ मूल ॥

एवंखुणेआयासजमेउवहिएभवइ, एत्थणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारेसंबुद्धे थेरेभगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसइत्ता एववयासी, एएसिण भंते! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं असुयाण अविण्णायाण अव्वोगडाणं अव्वोच्छिण्णाणं अणिज्जूढाण अणुवधारियाणं एयमट्ठं

॥ भाषा॥

पन गरहा सयमछै। णोअगरहासजमे। पणि अगरहा सयमनही। गरहाविषण। गरहा तेहोज सवेदोष रागादिक अथवा पूर्वकृतपाप। सव्वंदोसपविणेइ। अथवा द्वेष तेहप्रते खेपवे। सव्वंबालियपरिणाय। ज्ञपरिज्ञाये जाणीने प्रत्याख्यान परिज्ञाये पचक्खी। एवखुणेआयासजमेउवहिएभवइ। इम निश्चे अम्हारे आत्मा सयमनेविषे अत्यत स्थिरहोय। एत्थणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे। इहां ण वाक्यालकारे, ते कालासवेसितपुत्र अणगारसाधु पार्श्वनाथनो अपत्य। सबुद्धे थेरे भगवते बदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एववयासी। भलीपरे बोधपाम्यो स्थविर भगवंतप्रतें वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कारकरीने इम कहताहुया। एएसिणभतेपयाणपुव्विअणाणयाण। एहना णवाक्यालकारे हेभगवन् पदाना पहिला इणा पदानेविषे जाणपणोनथी स्वरूपेओलखानथी। असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अदिट्ठाण। पूर्वे सुखानथी जिन धर्मनो अप्राप्ति श्रीमहावीरना धर्मनेविषे विस्तार बोधरहित

॥ टीका ॥

ना दर्शनाकर्णनाभावेना ननुध्यानाना अत एवा विज्ञातानां विशिष्टबोधाविषयीकृताना एतदेव कुतइत्याह ॥ अव्वोकडाणंति ॥ अव्याकृताना विशे दतो गुरुभिरनाख्याताना ॥ अव्वोच्छिन्नाणंति ॥ विपक्षादव्यवच्छेदिताना ॥ अनिज्जूढाणंति ॥ महतोग्रन्थात् सुखाववोधाय सङ्क्षेपनिमित्त मनुग्रह परगुरुभि रनुद्धृताना अतएवा स्माभिरनुपधारिताना मनवधारिताना ॥ एयमठेत्ति ॥ एवप्रकारोर्थो ऽथवा, ऽयमर्थो ॥ नोसद्दहिएत्ति ॥ नश्रद्धि त ॥ नोपत्तिएत्ति ॥ नो नैव ॥ पत्तियति ॥ प्रीति रुच्यते, तद्योगा त्पत्तिएत्ति ॥ प्रीत· प्रीतिविषयीकृतो ऽथवा, न प्रतीतो, न प्रत्ययितोवा; हे तुभि· ॥ नोरोएइत्ति ॥ न चिकीर्षित ॥ एवमेयसेजहेयतुब्भेवयहत्ति ॥ अथ यथा एतद्वस्तु यूय वदथ एवमेव तद्वस्त्वितिभाव· ॥ चाउज्जामाउत्ति ॥

॥ मूल ॥

णोसद्दहिए णोपत्तिइए णोरोइए, इयाणिभंते ! एएसिणपयाणं जाणणयाए सवणयाए बोहियाए अभिगमेण दिठाणं स्सुयाणं सुयाणं विन्नायाणं वोगडाणं वोच्छिन्नाणं णिज्जूढाण उवधारियाणं एयमठ सद्दहामि पत्ति यामि रोएमि एवमेय सेजहेयं तुब्भे वयह। तएण तथेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवंवयासी, सद्दहाहि अज्जो, पत्तियाहि अज्जो, रोएहिअज्जो, सेजहेयं अम्हेवयामो । तएणंसेकालासवेसियपुत्ते

॥ भाषा ॥

इत्यादि हेतुयेकरी पूर्वे माचात् पाते अर्थथो लह्यानही। असुयाण असुयाण अविणायाण अव्वागडाण। किणहीने समीपे सुण्यानही दर्शन आकर्णन अभावेकरी एतलामाटेज विशिष्ट वोधरहितने विशेषथी गुरे कह्यानही। अव्वोच्छिन्नाणं अणिज्जूढाण। मोटाग्रंथथी सुखाव बोधभणी गुरे कह्यानही। अ णउवारियाण। एतला भणीज अम्हे पूर्वे एअर्थ अवधारोनथी। एयमठणोसद्दहिए णोपत्तियए। इणे प्रकारे अर्थ अथवा एअर्थ सद्दह्योनही प्रीति विषय न कीधा। णोरोइए इदाणिंभते एएसिणंपदाण जाणयाए। रुच्यानही ॥ हिवे हेभगवन् एह पदनाअर्थ जाण्या ज्ञानेकरी। सवणयाए वोहियाए अभि गमेण दिठाण स्सुआण सुआण विणायाण वोउगाण वोच्छिणाण। सुण्या श्रवणे करी वोधिपाम्यो सम्यक्पणें विस्तारवोध थया अर्थथी लह्या सुण्या अर्थ दर्शन आकर्ण नथया विशेषे जाण्या विशेषनो गुरेकह्यो विपक्षादि सन्देह छेद्या। णिज्जूढाण उवधारियाण एयमठसद्दहामि पत्तियामि रोएमि। मोटा

॥ टीका ॥

चतुर्महाव्रतान् पार्श्वनाथजिनस्य हि चत्वारि महाव्रतानि, ना परिगृहीता स्त्रीभुज्यत इति मैथुनस्य परिग्रहें तर्ज्जावादिति ॥ सपडिक्कमणंति ॥ पार्श्वनाथधर्माहि अप्रतिक्रमण कारणएव प्रतिक्रमणकरणा दन्यथा त्वकरणा, न्महावीरजिनस्य तु स प्रतिक्रमण कारण विना प्यवश्य प्रतिक्रमणाक

॥ मूल ॥

अणगारे थेरेभगवतो वंदइ नमंसइ वं० त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, इच्छामिण भंते! तुब्भे अतिए चाउज्जामाउ धम्माउ पचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्म उवसपज्जित्ता णविहरित्तए अहासुह देवाणुप्पिया मापडिबंधं करेह, तएणंसे कालासवेसिएपुत्ते अणगारे थेरेभगवते वंदइ नमंसइ वं० त्ता नमंसइत्ता चाउज्जामाउधम्माउ पचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणंविहरइ, तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सा

॥ भाषा ॥

एथयी सुणाव बोधथया एअर्थ अवधारी एअर्थ सद्दहकू प्रीति विषय करूं रोचेछे। एवमेत्ते सेजहेय तुब्भेवदह तएणतेथेराभगवतो। अथजिम एवात तुम्हे कहोछो तेसर्वं तिमजछे इतिभाव तिवारे ते स्थविर भगवत। कालासवेसियपुत्तअणगार। कालासवेसित पुत्र साधुप्रतें। एववयासी सद्दहाहिअज्जो पतिया। हेअज्जो रोएहिअज्जो। इम कहता हयातूं। सद्दहाहि। अद्धावत याओ हेआर्य प्रतिविषय करिहेआर्य रुचिकरि हेआर्य। सेजहेयंअम्हेवदामो। एअर्थ अम्हे कहहकू तिम। तएणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे। तिवारे तेकालासवेसितपुत्र अणगारसाधु। थेरे भगवतेवंदइ णमसइ २ त्ता। स्थविर भगवतप्रतें वादे नमस्कारकरे वादीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम कहता हूवा। इच्छामिणभते तुब्भअतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमणधम्मउवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। वाछूकू हेभगवन्। तुम्हारे समीपे चारि महाव्रत थकीजेमाटे पार्श्वनाथ स्वामीने चार महाव्रतछे, मैथुननो परिग्रहनेविषे अतर्भावछे तेहथी पचमहाव्रतरूप श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना साधुनेकारण उपना पडिक्कमणो कह्यो अने श्रीमहावीरस्वामीना साधुनेकारण वना पणि अवश्ये पडिक्कमणो करवो ते आदरीने विहारकरू। अहासुहदेवाणुप्पिया। जिम सुख उपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय। मापडिबंधतएणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे। प्रतिबंध व्याघात मकरस्ये तिवारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। थेरेभगवते वंदइ णमसइ २ त्ता। स्थविर भगवंतप्रतें वादे नम

॥ टीका ॥

रणादिति ॥ देवाणुप्पियत्ति ॥ प्रियामन्त्रण ॥ मापडिबधति ॥ माव्याघात कुरुथे तिगम्यं ॥ मुण्डभावेत्ति ॥ मुण्डभावो दीक्षितत्वं ॥ फलगसेज्जत्ति ॥ प्रतलायतविष्कम्भवत्काष्टरूपा ॥ कट्ठसेज्जत्ति ॥ असंस्कृतकाष्टशयन कष्टशय्यावा; अमनोज्ञा वसति ॥ लद्धावलद्धोति ॥ लब्धश्च लाभो ऽपलब्धिश्च लाभो ऽपरिपूर्णलाभोवा, लब्धापलब्धि' ॥ उच्चावयत्ति ॥ उच्चावचा अनुकूलप्रतिकूला ' असमञ्जसावा, ॥ गामकंटयाति ॥ ग्रामस्येन्द्रियसमूहस्य कंटका इव कंटका बाधका शत्रवो ग्रामकंटका, कएतइत्याह ॥ बावीसपरीसहोवसग्गत्ति ॥ परीषहा क्षुधादय स्तएवो पसर्गा, उपसर्जमा द्दुर्मन्त्रश

॥ मूल ॥

मस्सपरियागं पाउणइ पाउणइत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतधुवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोइ बन्भचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटया बावीसपरीसहोवसग्गा अहिया सिज्जइ, तमठं आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सासनीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणभगवमहावीरं वंदइ नमंसइ वं०त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, सेणूणं भंते! सेठिस्सयतणुयस्स किवणस्सय खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण

॥ भाषा ॥

स्कारकरे वांदीने नमस्कार करीनै। चाउज्जामाओधम्माओ पंचमहव्वइय। चार महाव्रतरूप धर्मथी पंचमहाव्रतरूप धर्म। सपडिक्कमणंधम्म। पडिकमणासहित धर्म। उवसंपज्जित्ताणविहरइ। आदरीने विचरे। तएणसेकालासवेसियपुत्ते अणगारे। तिवारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। बहूणिवासाणि। वणा वरस। सामणपरियागपाउणइ २ त्ता। साधुनो दीक्षानो पर्याय पाले पालीने। जस्सट्ठाएकीरइ। जेहने अर्थे करे। णग्गभावे। वस्त्ररहित पणो मुंडभावेअण्हाणय। दीक्षापणो शरीर प्रक्षालवोनही। अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा। छत्र नराखवो उपानह रहित पगे उलवाणो फिरे भूमि सूइवो। फलगसेज्जा। कट्ठसेज्जा केसलोउबंभचेरवासो। फलग पाटीये सूइवो काष्टसेज्जाये सूइवो केशनो लोचकरिवो ब्रह्मचर्य वसवो पालवो। परघरपवेसो लद्धावलद्धी उच्चाव गामकंटया। आहारने अर्थे परघर प्रवेशकीधे लाभे अथवा नलाभे अथवा परिपूर्ण नलाभे अनुकूल प्रतिकूल अथवा असमंजस इंद्रीय

॥ टीका ॥

ना त्वरीषहोपसर्गो, अथवा; द्वाविंशतिः परीषहा स्तथा उपसर्गा दिव्यादय॰, कालास्य वैशिकपुत्र प्रत्याख्यानक्रियया सिद्धइति, तद्विपर्ययभूता प्रत्याख्यानक्रिया निरूपणासूत्र ॥ भंतेइत्यादि ॥ तत्र ॥ भंतेत्ति ॥ हेभदन्तइति एव मामन्त्र्येतिशेष , अथवा, भदन्त इतिकत्वा गुरु रितिकृत्वेत्यर्थ ॥ सेठिस्सत्ति ॥ श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितशिरोवेष्टनोपेतपौरजननायकस्य ॥ तणुयस्सत्ति ॥ दरिद्रस्य ॥ किवणस्सत्ति ॥ रङ्कस्य ॥ खत्तियस्स

॥ मूल ॥

किरियाकज्जइ ? हंता गोयमा! सेठियस्स जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, सेकेणठेण! भंते ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च , सेतेणठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ , सेठिस्सय तणु जाव कज्जइ । आहाकम्मं णं भुंजमाणे समणे निग्गथे किं बंधइ किंपकरेइ किंचिणाइ किंउपचिणाइ ? गोयमा ! अहाकम्मे णंभुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ , जाव अणुपरियट्टइ । केसेण

॥ भाषा ॥

समूहने नाटानीपरे बाधक किसा तेकहेछे—बावीसपरीसहोवसग्गा अहियासिज्जइ। बावीसपरीसह क्षुधादिक तेहीज धर्म थकी परीसहोपसर्ग अथवा बावीस परीसह तथा उपसर्ग देवादिकना कीधा ते अपना थका खमेमहे। तमट्ठआराहेइ २ त्ता। ते आत्माने अर्थ आराधे आराधीने। चरिमेहिंऊसासनीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिणिव्वुए। छेहले ऊसास नीसासेकरीने सिद्धथईने तत्वना जाणथईने कर्मथी रहितथईने शीतलीभावथईने। । सव्वदुक्खप्पहीणे भंतेत्तिभगवंगोयमे। सर्व दुःखथी रहितथया मोक्ष पहुताइत्यर्थ हेभगवन् इसो आमंत्रण अथवा भदंत इसो गुरुप्रते कल्याणकारी वचनकह्यो भगवंत गौतम। समणभगवमहावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइ णमंसइ २ त्ता एववयासी। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने इम कहता हूया। सेणूणभंतेसेठियस्सयतणुयस्सय किवणस्सय खत्तियस्सय। ते निश्चे हेभगवन्। श्रीदेवीनीमूर्त्तिनना पाटा जेहने मस्तके तेसेठ तेहने तथा दरिद्रीने किरकने राजाने। समाचेव अपच्चक्खाणकिरियाकज्जइ। सरीखी निश्चे अप्रत्याख्यानक्रिया नो अभाव अथवा अप्रत्याख्यानथी अपनो कर्मबंध ते रूपक्रियाकरे। हंता गोयमा सेठियस्सय। हांगौतम। श्रेष्टिने। जाव अपच्चक्खाणकिरियाकज्जइ। यावत् अप्रत्याख्यान क्रि

॥ टीका ॥

त्ति ॥ राज' ॥ अपच्चक्खाणकिरियत्ति ॥ प्रत्याख्यानक्रियाया अभावो ऽप्रत्याख्यानजन्योवा ; कर्म्मबन्ध' ॥ अविरइत्ति ॥ इच्छाया अनिवृत्ति सारि स वैंपा समैवेति, अप्रत्याख्यानक्रियाप्रस्तावा दिदमाह ॥ आहाकम्ममित्यादि ॥ आधाय साधुप्रणिधानेन यत्सचेतन मचेतन क्रियते, अचेतनवा; पच्य ते, चीयतेवा, गृहादिक, व्यूयतेवा; वस्त्रादिक' त दाधाकर्म ॥ किवधइत्ति ॥ प्रकृतिवन्धमाश्रित्य स्पृष्टावस्थापेक्षयावा, ॥ किपकरेइत्ति ॥ स्थितिव

॥ मूल ॥

ठेणं जाव आहाकम्मंणं भुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ ? गोयमा ! आहाकम्मं णभुंजमाणे आयाए धम्मं इक्कमइ आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ , जाव तसकायं णावकंखइ., जेसिंपियणं वाणं सरीराइं आहारमाहारेइ तेविजीवे नावकंखइ सेतेणठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ आहाकम्मं णभुंज

॥ भाषा ॥

गौतम कहे छे—सेकेणठेणभंते । ते स्यें अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा अविरइ पडुच । हेगौतम । इच्छानी निवृत्तिते सर्वनेछ त अविरति आश्री । सेतेणठेण गोयमा एव वुचइ । ते तेणें अर्थे हेगौतम । इमकह्युं । सेठियस्सय तणयस्सय जावकज्जइ आहाकम्मेणंभुंजमाणे । अेटिनेट : नि यावत् अप्रत्याख्यान क्रियाकरे अप्रत्याख्यानक्रिया प्रस्तावथी एकहेछे—सचित्त फेडीने अचित्तकरीनेदेइ ते जोमतोयको । समणेणिग्गंथेर्कबंध धु वाह्याभ्यंतर ग्रथरहित प्रकृतिवध आश्रयीने स्युंबाघे । किपकरेइ । स्थितिवधनी अपेक्षाये स्युंकरे । किंचिणाइ किउवचिणाइ । अनुभागवधनी धँ तथा निधत्त सूई चेपट्टीयत् प्रदेशवधनी अपेक्षायें इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा आहाकम्मेणभुजमाणे । हेगौतम । आधा कर्मीआहार जोमतोयको बद्धाश्री । आउखो कर्मवर्जीने । सत्तकम्मपगडोओसिढिलबधणबद्धाओ । सात कर्मनी प्रकृति मिथिल बधणे बांधाहुया । धणियबधणवद्धाओपक । दृढबधन बाधे हलुया कर्मने सूधा ताणेबांधे जिम रेशमनो गाठ बांधीये । जावअणुपरियट्टइ । यावत् ससारनेविषे अनतीवार भमे । सेकेणठेण जा वआहाकम्मेण भुजमाणे जावअणुपरियट्टइ । ते स्यें अर्थे हेभगवन् इमकह्यु यावत् आधाकर्मी आहार जोमतोयको साधु यावत् चतुर्गतिक संसारनेविषे अनतीवारभमे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा आहाकम्मेणं भुजमाणेआताएधम्मेअयक्कमइ । हेगौतम । आधाकर्मी आहार जोमतोयकोसाधु आत्मायेंकरी चारि

माणे आउयवज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ जाव अणुपरियट्टइ । फासुएसणिज्जंभंते ! भुंजमाणे किंबंधइ ? ४ जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे आउयवज्जाउ सत्तकम्मपयडीउ धणियबंधणबद्धाउ सिढिल बंधणबद्धाउ पकरेइ , जहा सेसवुडेणं , णवर आउयचणं कम्मं सियबंधइ सियनोबंधइ सेसं तहेव जाव वी ईवयइ । सेकेणट्ठेणं जाव वीईवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणेनिग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्क

म धर्म अथवा श्रुतधर्म अतिक्रमे एतावता धर्मथीपडे । आयाएधम्मअवक्कममाणे । आत्मायेंधर्म अतिक्रमतो उल्लंघतो थको । पुढविकाइयणावकखइ जाव तसकायणावकखइ । पृथिवीकायना जीवनी अनुकंपानावें दयापरिणाम रहितथाय, यावत् अप्काय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय बेइंद्रि यादिकपणि विनासे तेहने दयानावे । जेसिपियणजीवाण सरीराइं आहारेइ । जेहना पणि चपुन णं वाक्यालंकारे, जीवना शरीरना आहारप्रतें आ हारें आहारकरे इत्यर्थं । तेविजीवेणावकखइ । ते जीवनी पणि अनुकंपानावे । सेतेणट्ठेणं गोयमा एववुचइ । ते तेणे अर्थें हेगौतम ! इमकह्यु । आहाक म्मेणंभुंजमाणेआउयवज्जाओ जावसत्तकम्मपगडीओ । आधाकर्मी आहार जीमतोथको साधु आउखो वर्जीने यावत् सात कर्मनी प्रकृति सिथिलबंधण वाली तेगाढ बंधणे बांधे । जावअणुपरियट्टइ । यावत् संसारमाहे परिभ्रमणकरे । फासूएसणिज्जेणंभंते भुंजमाणेकिंबंधइ । फासूएषणीय हेभगवन् ! आ हार जीमतोथको साधु स्यूं बांधे । जावकिंउवचिणाइ । यावत् स्यूं प्रदेशबंधनो स्यूं बंधारे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा फासूएसणिज्जंभुंजमाणेआउवज्जाओ । हेगौतम ! फासूएषणीय जीमतोथको साधु आउखोवर्जीने । सत्तकम्मपगडीओधणियबंधणबद्धाओपकरेइ । सिथिलबंधणसातकर्मनी प्रकृति गाढै बंधणें बांधी हुवेते सिथिलबंध बांधे । जहासेसंवुडेणं जिम ते संवृड अणगारनेकह्यो । णवर आउयं चणं कम्मं सियबंधइ सियणोबंधइ सेसंतहेव जावविईवयइ । एतलो विशेष आउकर्म चपुन णं इसो वाक्यालंकारे, किवारेकै बांधै किवारे कोनबांधै जोआउकर्म नबांधै तो सूत्रानुसारी जीव हुवे, शेषथा कतो सहुतनीपरें कहवो यावत् संसार तरे मोक्षजाय इत्यर्थं । सेकेणट्ठेणंभंतेजीववीईवयइ । ते स्ये अर्थें हेभगवन् ! इमकह्यो यावत् व्यतिक्रमे संसार

न्यपेक्षया बद्धावस्थापेक्षयावा; ॥ फिविणाइत्ति ॥ अनुभागबन्धापेक्षया निधत्तावस्थापेक्षयावा; ॥ किउवचिणाइत्ति ॥ प्रदेशबन्धापेक्षया निकाचना पेक्षयावेति ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना धर्म्मचारित्रधर्म्म श्रुतधर्म्मवा, ॥ पुढविकायनावकखइत्ति ॥ ना पेक्षते ना नुकम्पत इत्यर्थ, आधाकर्म्म विपक्ष श्च प्रासुकैषणीयमिति, प्रासुकैषणीयसूत्र, अनन्तरसूत्रे संसारव्यतिव्रजनमुक्त' तच्च कर्म्मणो ऽस्थिरतया प्रलोटने सति भवती त्यस्थिरसूत्र, तत्र ॥ प्र थिरत्ति ॥ अस्यास्तु द्रव्य लोष्टादि प्रलोटति परिवर्त्तते, अध्यात्मचिन्तायामस्थिर कर्म्म तस्य जीवप्रदेशेभ्य प्रतिसमयचलनेना स्थिरत्वात् प्रलोट

मइ, आयाए धम्म अणइक्कममाणे पुढविकायं अवकखइ, जाव तसकाय अवकखइ, जेसिंपियणंजी वाणं सरीराइं आहारेइ तेविजीवे अवकखइ सेतेणठेणंजाववीईवयइ । सेणूणं भंते! अथिरे पलोहइ नो थिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ नोथिरेभज्जइ सासए बालए बालियत्तं असासयं सासए पंडिए पंडियत्तं असा सयं ? हंता गोयमा ! अथिरेपलोहइ जाव पडियत्तं असासयं सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढम

तरे। गोयमा फासूएसणिज्जभुंजमाणे। हेगोतम। फासूएषणीय आहारकरता आमतोनतो साधु। भजेविणिगय। श्रमण निग्रंथ। आयाएधम्मनाइक्कम इ। आत्मानेंकरी धर्मचारित्र श्रुतधर्म उल्लंघेनही। आयाएधम्मअणइक्कममाणेपुढविकायंअवकखइ। आत्मानें श्रुतचारित्ररूपधर्म अनतिक्रम करतोथको, पृथिवीकायनी दयापाले जोवनीरक्षाकरे। जावतसकायअवकखइ। यावत् त्रसकायनी दोंद्रियादिक जोवनी रक्षाकरे। जसिंपियणंजीवाणसरीराइंआ हारेइ तेविजोवेअवकखइ। जेहना पणि वपुन शवाकायनेंआहारे, जीवना शरीरनो आहारकरे तेपणि जीवनोरक्षाकरे विनाशें नही। सेतेणठेणंजीववी ईवयति। ते तेणि अर्थे हेगोतम। इमकह्यो यावत् संसार पारपामें मोक्षजाय इत्यर्थं। सेणूणंभंतेअथिरेपलोहइ णोथिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ। पाछे स मार लघनकह्यो ते कर्मने अस्थिर पणेथाय तेकहेछे—ते निश्चे हेभगवान्। अथिरद्रव्य लोष्टादि प्रावर्त्ते पलटे अध्यात्म चितानेंविषे अस्थिर कर्मजीव प्रदेशथो समये २ चले पाथरनो शिलादि चलेनही प्र यात्मचिन्तानेंविषे कर्मरहित जीवना उपयोग चलेनही, अथिरे पथिरआजनस्व

॥ टीका ॥

ति, १ बन्धोदयनिर्जरणादिपरिणामे परिवर्त्तते, स्थिरं शिलादिनप्रलोटति, अध्यात्मचिन्तायातु स्थिरोजीव कर्म्मक्षयेपि तस्य अवस्थितत्वा न्नासौ प्रलोटति, उपयोगलक्षणस्वभावा न्नपरिवर्त्तते, तथा अस्थिरं भङ्गुरस्वभावं तृणादि भज्यते विदलयति, अध्यात्मचिन्तायां मस्थिरं कर्म्म तद्भज्यते व्यपैति, तथा स्थिरं मभंगुरं मय शलाकादि न भज्यते, अध्यात्मचिन्तायां स्थिरोजीव, सच न भज्यते शाश्वतत्वादिति, जीवप्रस्तावा दिदमाह ॥ सासएवालए त्ति ॥ बालको व्यवहारत शिशु र्निश्चयतो ऽसंयतो जीव ' सच शाश्वतो द्रव्यत्वात् ॥ बालियत्तंति॥ इहे कप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा द्वालत्व व्यवहारत शिशुत्व निश्चयत स्त्वसंयतत्व तच्चा शाश्वतं पर्यायत्वादिति, एवं पण्डितसूत्रमपि' नवरं पण्डितो व्यवहारेण शास्त्रज्ञो जीव निश्चयतस्तु संयत ॥ इति प्रथमशतेनवम. ... ॥ अनन्तरोद्देशके ऽस्थिरं कर्मेत्युक्त, कर्मादिषुच कुतीर्थिका विप्रतिपद्यते, अत स्तद्विप्रतिपत्तिनिरासप्रति

॥ मूल ॥

सए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति जाव परूवंति, एवं खलु चलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिस्से, दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति, कम्हा दोपरमाणुपोग्गलाणं णत्थि सिणेहकाए तम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति, तिन्निपर

॥ भाषा ॥

भाव तृणादिकतेभाजे, अध्यात्मचितानेविषै अस्थिरकर्मभाजे, अभजन स्वभाव लोहमई शलाकादिक तेनभाजे, अध्यात्मचितानेविषै जीवभाजैनही शास्वत पणाथी । सासएवालए बालियत्तंअसासय सासएपडिए पडियत्तंअसासय । व्यवहारथी बालक शास्वता तथा निश्चयथी शास्वतोजीव द्रव्यथी बालकभाव अशास्वतो निश्चयथी असंयतभाव अशास्वतो व्यवहारथी पडितशास्त्रना जाण शास्वता निश्चयथी संयतोजीव शास्वता द्रव्यथी पडितभाव अशास्वतो निश्चयथी संयतभाव अशास्वतो इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा अथिरेपलोट्टइजाव पडियत्तं असासयं । हांगौतम । अथिर पलटै यावत् पडितपणू अशास्वत इमसर्वकहवो । सेवभंते २ त्ति जावविहरइ । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु तेसर्व सत्यछै अन्यथानही यावत् वादीने विचरै इमसर्वकहवो । पढमसयस्स नवमोउद्देसोसम्मत्तो । एपहिला शतकनो नवमो उद्देशो टब्बार्थो लिख्यो ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियाणंभंते०एवमाइक्खंति । नवमे उद्देशे अ

पादनार्थ, स्तथा सङ्घटणया, चलणाउत्ति, यदुक्त, तत्प्रतिपादनार्थश्च दशमोद्देशको व्याख्यायते, तत्रच सूत्र ॥ अन्नउत्थियाणमित्यादि ॥ चलमाणे अ चलियत्ति ॥ चल त्कर्म्मा चलित चलता तेन चलितकार्याकरणात् वर्त्तमानस्य चातीततया व्यपदेष्टु मशक्यत्वा देव मन्यत्रापि वाच्यमिति ॥ एगयओ साहणंतित्ति ॥ एकत एकत्वेन एकस्कन्धतयेत्यर्थ ' न संहन्येते न संहतौ मिलितौ स्याता ॥ नत्थिसिणेहकाएत्ति ॥ स्नेहपर्यवराशि र्नास्ति सूक्ष्म

माणुपोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, तिण्णिपरमाणुपोग्गला णं अत्थि सिणेहकाए तम्हा तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति, दुहाकिज्जमाणा एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ,

स्थिरकर्मनेविषे कुतीर्थी प्रवर्त्ते तेमाटे कुतीर्थीनो अधिकार कहेछे—अन्यतीर्थी कुतीर्थी णं वाक्यालंकारे हेभगवन्। इम सामान्यथी कहे। जावएवपरूवेति। यावत् इम भेदथीकहे। एवखलुचलमाणेचलिए जावणिज्जरिज्जमाणेअणिज्जिणे। इमनिश्चे चलवामांथी जेकर्म ते चल्यूं नकहीये, वर्त्तमानकालने अतीतकालपणें कहीनसकीये, यावत् निर्जरवामांथी निर्जर्यो नकहीये, एतले चल्यो ते चलवो कहीये निर्जर्यो ते निर्जरोकहीये, वली अन्यतीर्थी इमकहे दोपरमाणुपोग्गलाएगयओणसाहणंति। बेपरमाणू पुद्गल एकत्वपणें स्कंधपणें इत्यर्थ, मिलित नहुवे भेलानथाय। कम्हादोपरमाणुपोग्गलाएगयओण साहणंति। स्या थको एतले बेपरमाणू पुद्गल एकठा स्कंधपणें किम नमिले ते कहेछे—दोण्हपरमाणुपोग्गलाणणत्थिसिणेहकाए। बे परमाणू पुद्गलने नहो स्नेह पर्यायनो राशिनहो सूक्ष्मपणाभणी, तीन प्रमुखने योगे स्नेह पर्यायनो राशिछे स्थूलपणाथो। तम्हादोपरमाणु पोग्गलाएगयओणसाहणंति। तेमाटे बेपरमाणु पुद्गल एकठा नमिले स्कन्धपणनथाय इत्यथ। तिण्णि परमाणु पोग्गलाएगयओसाहणंति। तीन परमाणु पुद्गल एकत्वपणें मिले स्कन्धपणेथाय। कम्हातिण्णिपरमाणुपोग्गला। स्यामाटे तीन परमाणु पुद्गल। एगयओसाहणंति। एकत्वपणें मिले स्कंधपणेंथाय, ते कारण कहेछे—तिण्हपोग्गलाणअत्थिसिणेहकाए। तीन परमाणु पुद्गलने छे स्नेहपर्यायनो राशि बादरपणाथकी। तम्हातिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओसाहणंति। तेमाटे

॥ टीका ॥

त्वात्, त्र्यादियोगेतु स्थूलत्वा त्सोस्ति ॥ दुक्खत्ताएकज्जतित्ति ॥ पञ्चपुद्गला संहत्य दु खतया कर्म्मतया क्रियन्तेभवन्तीत्यर्थ ॥ दुक्खेवियणंति ॥ कर्म्मापिच ॥ सेत्ति ॥ तत् शाश्वतं अनादित्वात् ॥ सयत्ति ॥ सर्वदा ॥ समियति॥ सम्यक् सपरिमाणंवा, चीयते चययाति, अपचीयते अपचयंयाति तथा ॥ पुव्वित्ति ॥ भाषणा त्प्राक् भासति वाग्द्रव्यसहति ॥ भासत्ति ॥ सत्यादिभाषा स्या तत्कारणत्वात् विज्ञद्भुवानित्वेन वा, तेषा मतमात्र मेत

॥ मूल ॥

तिहाकज्जमाणातिन्निपरमाणुपोग्गला हवंति, एव जाव चत्तारिपंचपरमाणुपोग्गला एगयउ साहणंति, एगयउ साहणित्ता दुक्खत्ताएकज्जति दुक्खेवियणं सेसासए सयासमियं उवचिज्जइय अवचिज्जइय पुव्विं भासा भासा भासिज्जमाणी भासाअभासा भासासमय वितिक्कतं चणं भासिया भासा जा सा पुव्व भासा भासा भासिज्जमाणी भासाअभासा भासासमयवितिक्कतचणं भासियाभासा साकि भासउ भासा अभासउ

॥ भाषा ॥

तीन परमाणु पुद्गल एकठा मिले स्कधपणाभजै इत्यर्थ । तेभिज्जमाणादुहावि तिहाविकज्जति । ते तीन परमाणू पुद्गलरूप स्कधभेदायका बेप्रकारे हुवे, तथा त्रिविध तीनप्रकारे पणिहुवे । दुहाकज्जमाणे एगयओदिवड्डेपरमाणुपोग्गलेभवति । एकपासे दोढ परमाणु पुद्गल हुवे । एगयओविदिवड्ढेपरमाणुपोग्गलेभवति । अर्थात् बीजेपासे पणि दोढपरमाणू पुद्गलहुवे । तिहाकज्जमाणे तिण्णिपरमाणुपोग्गलाभवति । तीने प्रकारे करता थका तीनेई जुदा २ परमाणू पुद्गल हुवे । एवं जाव चत्तारि पंचपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहणति । इम यावत् चारि पाच परमाणूपुद्गल एकठा मिले स्कंधरूपथाय एगयओसाहणित्ता । एकत्र थईने । दुक्खत्ताएकज्जति । दुक्खरूप कर्मपणे परिणमे हुवे । दुक्खेवियणंसेसासए । ते कर्मना अनादि पणाथी ते दु.ख पणि शाश्वता तिर्णेकरी । सया समियउवचिज्जइय । सदा सर्वदाकाले सम्यक् परिणामे चयपामें चिणीवे अवचिज्जतिय । अपचयपामें, वली अन्यतीर्थी इम कहे । पुव्विंभासाभासा भासिज्जमाणीभासाअभासा । जे पूर्वें बोल्या पहिलीभाषा ते भाषा कहीये, अने वर्त्तमानकाले बोलीते भाषा नकहीये, वचनथी भाषाना द्रव्य नीकलता भाषाकहीये वर्त्तमानसमय अतिसूक्ष्मके तिर्णेकरी । भासा समयंवितिक्कतचणभासियाभासा । अने भाषा समयथी अतिक्रात

॥ टीका ॥

निरुपपत्तिक मुन्मत्तवचनव दतो नेन्नो पपत्ति रत्ययं गवेषणीया एवं सर्वत्रापीति' तथा ॥ भासिज्जमाणीभासाभासत्ति ॥ निसृज्यमानवाग्द्रव्या ण्यभाषा वर्त्तमानसमयस्या तिसूक्ष्मत्वेन व्यवहारानङ्गत्वादिति ॥ भासासमयविइक्कंतचणति ॥ इह क्षमत्ययस्य भावार्थत्वात्, विभक्तिपरिणामाञ्च, भाषासमयव्यतिक्रमेच ॥ भासियत्ति ॥ निसृष्टा सती भाषा भवति, प्रतिपाद्यस्या निर्णये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति ॥ अभासमत्तंणभासत्ति ॥ अभाषमा णस्य भाषा भाषणा त्पूर्वं पश्चाच्च तदनभ्युपगमात् ॥ नोक्खलुसानुत्ति ॥ भाष्यमाणाया स्तस्या अनभ्युपगमादिति' तथा ॥ पुव्विंकिरियेत्यादि ॥ क्रि या कायिक्यादिका सा याव न्नक्रियते तावत् ॥ दुक्खत्ति ॥ दुःखहेतु ॥ कज्जमाणत्ति ॥ क्रियमाणा क्रिया नदुःखा नदुःखहेतु, क्रियासमयव्यतिक्रान्त श्च क्रियाया' क्रियमाणताव्यतिक्रमेच कृता सती क्रियादुःखेति, इदमपि तन्मतमात्रमेव निरुपपत्तिक मथवा; पूर्वं क्रिया दुःखाऽनभ्यासात्, क्रिय

॥ मूल ॥

भासा अभासत्तण भासभासा णो खलु सा भासत्त भासा पुव्विंकिरिया दुक्खा कज्जमाणी किरिया अदुक्खा कि रिया समयवीतिक्कंतंचणं कडा किरिया दुक्खा जासा पुव्विंकिरिया दुक्खा कज्जमाणा किरिया अदुक्खा कि रिया समयवीइक्कंतंचणं कडा किरिया दुक्खा साकिं करणत्त दुक्खा अकरणत्त दुक्खा अकरणत्तणं सा दुक्खा

॥ भाषा ॥

बोल्या ते भाषा इम कहीये। भासापुव्विंभासाभासा। बने बलो तेहने जे भाषा पहिलो भाषा ते भाषा कहाये। भासिज्जमाणीभासाऽभासा। बोलतो भाषा कहवाय तेभाषा अभाषा कहीये। भासासमयवीतिक्कंतचणंभासियाभासा। भाषा समये अतिक्रांतेथये बोल्या जेते भाषा कहीये। साकिंभासओभासा। ते स्यूं भाषकनी भाषा। अभासओभासा। अथवा स्यूं अभाषकनी भाषा इतिप्रश्न। अभासओणंभासा। तिवारे तेहनो उत्तर अन्यतीर्थी इम कहे, ते अभाषकनी भाषा कहीये। नोखलुभासओभासा। पणिन तो निश्चे तेभाषकनी भाषा न कहीये, वली अन्यतीर्थी इम कहे। पुव्विंकिरियादुक्खा। कायिकादिकक्रिया जांलगे नकरीये तांलगी दुःखनो हेतुछे। कज्जमाणीकिरियाअदुक्खा। करतासाओ ते क्रिया पदुःखनो हेतु तेहना अभ्यासमाटे। किरि यासमयवितिक्कंतचणंकडाकिरियादुक्खा। क्रिया समय व्यतिक्रांत थया पछे पुन ण वापरता नथी, ओ ओहनी क्रिया। दुक्खत्ति। दुःखहेतु कहीये। जासापुव्वि

॥ टीका ॥

माणा क्रिया नदुःखा अन्यासात्, कृता क्रिया दु खानुतापप्रमादे ॥ करणउदुक्खत्ति ॥ करण माश्रित्य करणकाले कुर्वतइत्यर्थ ॥ अकरणउदुक्खत्ति ॥ अकरण माश्रित्य अकुर्वत इतियावत् ॥ नोखलुसाकरणउदुक्खत्ति ॥ अक्रियमाणत्वे दु खतया तस्या अभ्युपगमात् ॥ सेवंवत्तव्वसिया ॥ अथ एव पूर्वोक्त वस्तु वक्तव्य स्या दुपपन्नत्वा दस्येति, अथा न्यपूयिकातरमतमाह ॥ अकृत्य मनागतकालापेक्षया अनिर्वर्त्तनीय जीवैरिति गम्य, दुःख मसात तत्कारणवा; कर्म्म, तथा अकृत्यस्या देवा स्पृश्य मवन्धनीय, तथा क्रियमाणं वर्तमानकाले कृत चातीतकाले तन्निषेधा दक्रियमाणकृत कालत्रयेपि कर्म्मणो वन्धनिषेधा दकृता ऽकृत्वा आभीक्ष्ण्ये द्विर्वचन दु खमिति प्रकृतमेव, केइत्याह, प्राणाभूतजीवसत्त्वा' प्राणादिलक्षण चेदं–प्राणाद्वित्रिचतु प्रोक्ता भूतास्तुतरव स्मृता । जीवा पञ्चेन्द्रियाज्ञेया शेषा सत्वाइतीरिता. ॥ १ ॥ वेयणत्ति ॥ शुभाशुभकर्म्मवेदना पीडावा; वेदयं त्यनुभव

॥ मूल ॥

णोखलु सा करणत्त दुक्खा सेवं वत्तव्वंसिया अकिच्चं दुक्ख अफुसंदुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्ख अकट्टु अकट्टु

॥ भाषा ॥

किरियादुक्खा । जे पहिला क्रिया दुखनो हेतु । कज्जमाणीकिरियाअदुक्खा । करवामाडी तेक्रिया दुखनोहेतु नही । किरियासमयवितिक्कतचणकडा किरियादुक्खा । क्रिया समय व्यतिक्रांतयया, चपुन ण वाक्यालकारे, कीधी क्रिया दुखनो हेतु । साकिंकरणओदुक्खाअकरणओदुक्खा । ते क्रिया स्यू करण आयो दुखनोहेतु, अथवा अकरण आयो अकरता दुखनो हेतु । अकरणओणमादुक्खा । अणकरता ते दुखनोहेतु । णोखलुसाकरणओदुक्खा । नहीनिश्चे ते क्रिया करता दुखनोहेतु । सेववत्तव्वसिया अकिच्चदुक्ख । हिवे एव इम पूर्वोक्तवस्तु वक्तव्यता हुवे, एअर्थ जपजे अणकीधो दुख । अफुसदुक्ख । न फर्श्यो दुख एतावता करि पहुता ते दुख । अकज्जमाणकडदुक्ख । अक्रियमाणकीधो दुख । अकट्टु । अकरीने । पाणभूयसत्ता । इहा प्राण भूत जीव सत्त्व । वेदणवेदतीतिवत्तव्वसिया । शुभ अशुभकर्म वेदना पीडाप्रते वेदे अनुभवे एवक्तव्यताहुवे । सेकहमेयभतेएव । अथ ते किम एह हेभगवन् । इम गोयमा जणतेअणउत्थिया । हेगोतम । जेमाटे ते अन्यतीर्थी । एवमाइक्खति । इमकहे । जाववेदणवेदतितिवत्तव्वसिया । यावत् शुभ अशुभकर्म वेदनाप्रते अनुभवे एहवो वक्तव्यताहुवे । जेतेएवमाहसु । जे अन्यतीर्थी इम कहेछे—मिच्छतेएवमाहसु । मिथ्या भूठो ते इम कहेछे—अहपुण गोयमा । ए

॥ टीका ॥

ति इत्येत द्वक्तव्यं स्या दस्यैवो पपद्यमानत्वा, यादृच्छिकानि सर्वलोके मुपद्दु गमिति' यदाह–अतर्कितोपस्थितमेवमर्व निर्गानानामुपदुगजात काकस्यतालेनयथाभिघातो नबुद्धिपूर्वीत्रवृथाभिमान ॥ १ ॥ मेकत्मेयति ॥ अथ कथमेतत् भदन्त । एव मन्ययूथिकोक्तन्यायेनेति प्रश्न ॥ जणते अण्णउत्थिए ॥ त्याद्युत्तर, व्याख्याचास्य प्राग्वत्' मिथ्या चैतदेव, यदि चलदेव प्रथमसमये चलित न भवे तदा द्वितीयादिष्वपि तदचलितमेवेति, न कदाचनापि चले दतएव वर्तमानस्यापि विवक्षया अतीतत्व नविरुद्ध मतत्र प्रागेव निर्णीतमिति नपुनरुच्यते' यच्चो च्यते, चलितकार्याकरणा द चलितमेवेति, तदयुक्त, यत प्रतिक्षण मुत्पद्यमानेषु स्यासकोशादिवस्तु घन्त्यक्षणनावि वस्तु प्राद्यक्षणे स्वकार्यं न करो त्येवा मन्चा इतो यदत्य समयचलितकार्यं विवक्षित, परेण तदाद्यसमयचलित यदि नकरोति तदा कश्च दोषो न कारणानां स्वस्वकार्यकरणस्वभावत्वादिति, यच्चोक्त, द्वौ परमाणू न मतत्येते सूक्ष्मतया स्नेहाभावा, तदयुक्त, मेकस्यापि परमाणो स्नेहसद्भावा दर्धाद्वपुद्गलस्य सन्तत्वेन तैरेवा भ्युपगमाच्च, यत उक्त ॥ ति

॥ मूल ॥

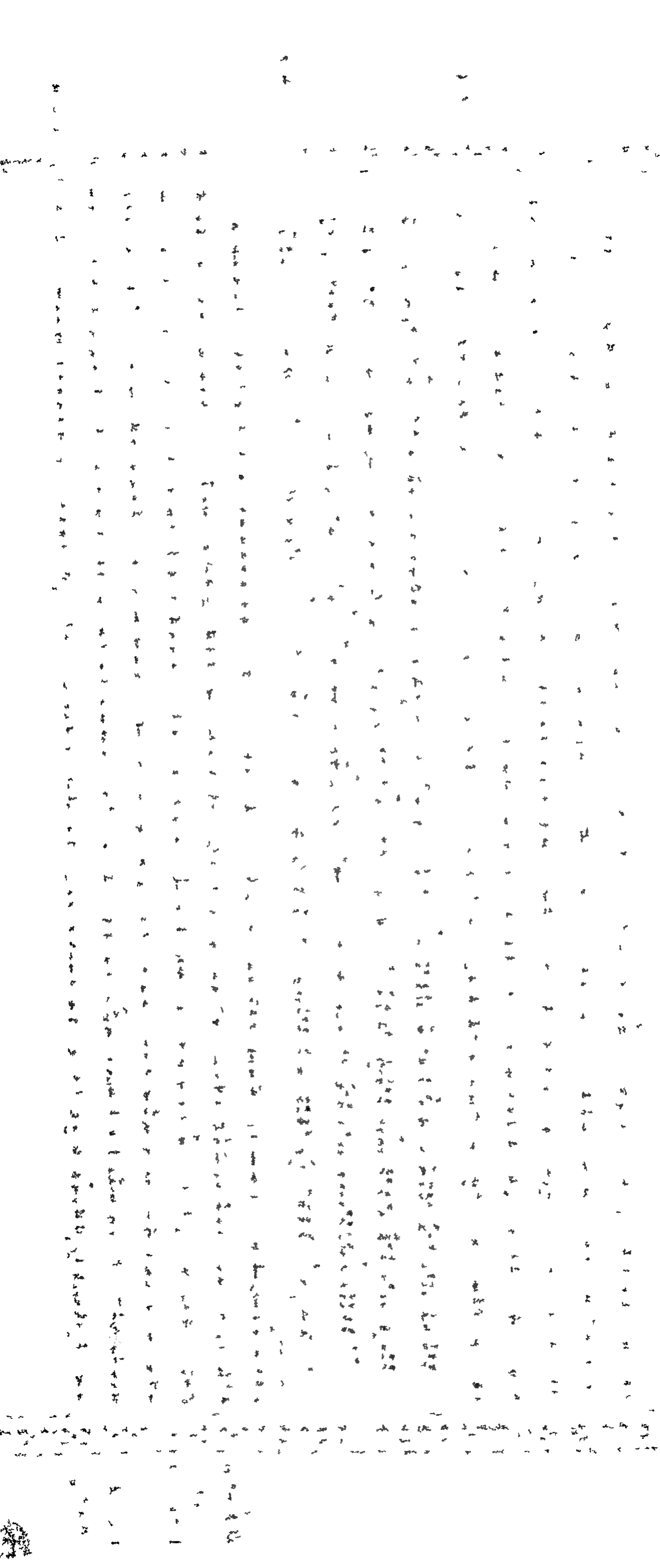
पाणन्भूयजीव सत्तावेदण वेदंतित्ति वत्तव्वंसिया, से कहमेयं भंते! एवं? गोयमा! जणं ते अण्णउत्थिया एव माइक्खंति जाव वेदणं वेदंति वत्तव्वंसिया, जेते एव माहंसु मिच्छंते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि ४, एव खलु चलमाणे चलिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, दोपरमाणुपोग्गलाएगयन्ते

॥ भाषा ॥

यमातिखामि । हे प ण हेगौतम । इम कहुछ सामान्यथी । एवखलुचलमाणेचलिए । इम निश्चे चलवामांड्यो ते चल्यू कहीये प्रथमनो अपेक्षायें । जाव णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिणे । यावत् निर्जरवामांड्यो ते निर्जर्यो कहुं तिम जाणवा । दोपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहण्णति । बेपरमाणू पुद्गल एकठा मिले कम्हादोपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहण्णति । स्या माटे दोपरमाणू पुद्गल एकठा मिले । दोण्हपरमाणु पोग्गलाणअत्थिसिणेहकाए । दोय परमाणू पुद्गलने छे स्नेहकायपर्याय नी राशि एकठी, परमाणूने शीत १ उष्ण २ स्निग्ध ३ रूक्ष ४ एचार स्पर्शमांहेला अविरोधी स्पर्शदोयहुवे एकवार तिवारे स्नेहने प णि स्नेहरागिछे ए परमतोनो अनुवृत्ति कही, अन्यथा बेपरमाणू किमपणे एकठामिलेछे । तम्हा दोपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहण्णति । तेमाटे बे

न्नि परमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति तेन्निज्जमाणादुहावितिहाविकज्जति दुहाकज्जमाणाएगयओदिवड्ढेत्ति ॥ अनेन हि सार्द्धपुद्गलस्य सद्रतत्वाभ्युप गमेन तस्य स्नेहोऽभ्युपगतएवे त्यत कथ परमाणवो स्नेहाभावेन सङ्घाताभावइति ? यच्चोक्त मेकत सार्द्ध एकत सार्द्धइति, एतद प्यचारु, परमाणो रर्द्धीकरणे परमाणुत्वाभावप्रसगात्, तथा यदुक्त पञ्चपुद्गला सहता॰ कर्म्मतया भवन्ति, तद प्यसङ्गत, कर्म्मणो नन्तपरमाणुतया नन्तस्कन्धरूपत्वा त्पञ्चाणुकस्य च स्कन्धमात्रत्वा, त्तथा कर्म्मजीवावरणस्वभाव मिष्यते, तच्च कथ पञ्चपरमाणुस्कन्धमात्ररूप सदसख्यातप्रदेशात्मक जीव मावृणुयादि ति ? तथा यदुक्त कर्म्मच शाश्वत तद प्यसमीचीन, कर्म्मण शाश्वतत्वे क्षयोपशमाद्यभावेन ज्ञानादीना हाने रुत्कर्षस्य चाभावप्रसङ्गाद् दृश्यतेच ज्ञाना दिहानिवृद्धी, तथा यदुक्त, कर्म्म सदा चीयते अपचीयतेचेति, तद प्येकातशाश्वतत्वे नो पपद्यतइति, यच्चोक्त भाषणात्पूर्व भाषा तद्धेतुत्वा, त्तदयु क्तमेवौ, पचारिकत्वा दुपचारस्यच तत्वतो ऽवस्तुत्वा त्किचो पचार स्तात्विके वस्तुनि सति भवतीति, तात्विकी भाषास्ती तिसिद्ध, यच्चोक्त भाष्य

माणा अभाषा वर्त्तमानसमयस्या व्यावहारिकत्वा, त्तदप्यसम्यक्' वर्त्तमानसमयस्यै वास्तित्वेन व्यवहाराङ्गत्वा दतीतानागतयोश्च विनष्टानुत्पन्नतया सत्वेन व्यवहारानङ्गत्वादिति' यच्चोक्त, भाषासमयेत्यादि, तदप्यसाधु, भाष्यमाणभाषाया अभावे भाषासमय इत्यस्या प्यभिलापस्या भावप्रसङ्गात्' यश्च प्रतिपाद्यस्या भिधेये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति हेतु, सो नैकान्तिक, करादिचेष्टाना मभिधेयप्रतिपादकत्वे सत्यपि भाषात्वासिद्धे, तथा यदुक्त मभाषकस्यभाषेति, तदसङ्गततर, मेवहि सिद्धस्या चेतनस्यवा, भाषाप्राप्तिप्रसङ्गइति, एव क्रियापि वर्त्तमानकालएव युक्ता तस्यैव सत्वादिति, य च्चानभ्यासाभ्यासादिककारणमुक्त, तच्चा नैकान्तिक, मनभ्यासादावपि, यत काचित्सुखादिरूपैव, तथा यदुक्त मकरणात क्रिया दु खेति तदपि प्र तीतिवाधित, यत करणकालएव क्रिया दु खावा, सुखावा, दृश्यते न पुन पूर्व पश्चाद्वा, तदसत्त्वादिति, तथा यदुक्त मकिच्चमित्यादि, यदृच्छा वादिमताश्रयणा त्तद प्यसाधीयो, यतो य द्यकरणादेव कर्म्म दु ख सुखवा, स्या त्तदा विविधैहिकपारलौकिकानुष्ठानाभावप्रसङ्ग स्यात्, अभ्युपग



॥ टीका ॥

बधोउत्पद्यमाणाति ॥ १ ॥ खधेवियणसेअसासएत्ति ॥ उपचयापचयिकत्वा दतएवाह ॥ सयासमियमित्यादि ॥ पुव्विंभासाअभासत्ति ॥ भाष्यत इति भाषा भाषणाच्च पूर्वं न भाष्यत इति न भाषेति ॥ भासिज्जमाणीभासत्ति ॥ शब्दार्थोपपत्ते ॥ भासियाअभासत्ति ॥ शब्दार्थवियोगात् ॥ पुव्विकि

॥ मूल ॥

न्ने साहणंति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणा तिन्निपरमाणुपोग्गला भवंति, एवं जाव चत्तारि पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति साहणित्ता खधत्ताए कज्जंति, खंधेवियण से असासए सयासमियं उवचिज्जइय अवचिज्जइय। पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीतिक्कंतंचणं भासिया भासा अभासा, जा सा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीतिक्कंतंचणं भासिया भासा

॥ भाषा ॥

माणुपोग्गले। बभेदे करोतायका एक पासे परमाणू पुद्गलहुवें। एगयओदुपदेसिएखंधेभवइ। एक पासे बेप्रदेशीखंध हुवे। तिहाकज्जमाणा। तीने भेदे करोतायका। तिण्णिपरमाणुपोग्गलेभवइ। तीन परमाणू पुद्गल हुवे। एव जावचत्तारिपंचपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहणंति। इम यावत् चार परमाणू पुद्गल एकठा मिले। साहणित्ता। मिलीने। खधत्ताएकज्जंति। खधपणे हुवे। खंधेवियणसेअसासए। खधपणि अशास्वतोछे, उपचय अपचय पणाथी। सयासमियउवचिज्जइय अवचिज्जइय। एतलामाटेज कहेछै—सदैव समयभावे ऊपजे वृद्धकरी सकोये हीनकरी सकोये। पुव्वि। पहिला भासाअभासा। भाषा बोलीयें ते अभाषा कहीये। भासिज्जमाणीभासाभासा। भाषतायका बोलीये ते भाषा कहीये शब्द अर्थनो उपपत्ति थाय तेमाटे भासासमयवीतिक्कंतचणभासियाभासाअभासा जासापुव्वि भासा अभासा। भाषा समय व्यतिक्रांतथया पणि चपुन णं वाक्यालंकारे, भाषित जे भाषा अभाषा ते कहीये शब्दार्थना वियोगथी जिका पूर्वे भाषा ते अभाषा कहीये। भासिज्जमाणीभासाभासा। बोलती जे भाषा ते भाषाकहीये। भासा समयवीतिक्कंतचणभासियाभासाअभासा। भासा समय व्यतिक्रांतथया पणि चपुन ण वाक्यालंकारे, भाषित जे भाषा ते अभाषा कहीये। साकिंभासओ

॥ टीका ॥

रियाअदुक्खत्ति ॥ करणा त्पूर्वं क्रियैव नास्ती त्यसत्त्वादेवच न दुःखा सुखापिना सा वसत्त्वादेव, केवल परमतानुवृत्त्या दु क्खेत्युक्तम् जहाभासेति वचनात् ॥ कज्जमाणीकिरियादुक्खा ॥ सत्त्वात् इहापि य त्क्रियमाणा क्रिया दुःखे त्युक्त, न्त त्परमतानुवृत्त्यैवा, न्यथा सुखापि क्रियमाणैव क्रिया, तथा ॥ किरियासमयवितिक्कतचणमित्यादिदृश्य ॥ किच्चदुक्खमित्यादि ॥ अनेनच कर्मसत्ता वेदिता प्रमाणसिद्धत्वा दस्य' तथाहि– इह यद्यो रिष्टा शब्दादिविषयसुखसाधनसमेतयो रेकस्य दुःखलक्षण फल मन्यस्ये तरन्नतद्विशिष्टहेतु मन्तरेण सम्भाव्यते कार्यत्वा द्घटव, यश्चा सौ विशिष्टो हेतु' सक र्मेति, आहच–जोतुल्लसाहणाणं फलेविसेसोणसोविणाहेउ कज्जत्तणओगोयम घडोव्वहेऊयसेकम्म ॥ १ ॥ पुन रप्यन्ययूथिकान्तरमत मुपदर्शयन्नाह ॥

॥ मूल ॥

अन्नासा, सा किं भासउ भासा अभासउ भासा? भासउणं भासा सा णोखलुसा अभासउ भासा। पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणउणं सा दुक्खा नो खलु सा अकरणउ दुक्खा, सेव वत्तव्वंसिया किच्च दुक्खं फुसं दुक्ख कज्जमाणकडं दुक्ख कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्तावेदण वेदतित्ति

॥ भाषा ॥

भासा। ते स्यू भाषकथी भाषा। अभासअोभासा। अभाषकथी भाषा। भासओणसाभासा। भाषकथी तिकाभाषा। णोखलुअभासओभासा। नही नि श्चे ते अभाषकथी भाषा। पुव्विंकिरियाअदुक्खा। पहिला क्रिया दुखनी करणहारी। जहाभासातहाभाणियव्वाकिरियावि। जिम भाषाकही तिम क हवी क्रियापणि। जावकरणओणसादुक्खा। यावत् करणथी ते दुख। णोखलुसाअकरणओदुक्खा। नही निश्चे तिकाक्रिया अकरणथी दुख। सेववत्तव्वं सिया। इम वक्तव्यता हुवे। किच्चदुक्खंफुसदुक्खं। कीधो दुख सर्प्यो दुख। कज्जमाणकडदुक्खकट्टु। करवामाणो कीधोदुख इम करोने। पाणभूतजीव सत्तावेदणवेदंतित्तियवत्तव्वंसिया। प्राण भूत जीव सत्त्व वेदना वेदे इम वक्तव्यतारूपे। अणउत्थियाणभंतेएवमाइक्खंति ४ जाव। वली अन्ययूथिकातरनो मत कहेछे– अन्यतीर्थी णं वाक्यालकारे, हेभगवन्। इम कहे सामान्यथी यावत् भेदकरी कहेछे–एवखलुएगेजीवे। इम निश्चे एकजीव। एगेणंसमएणं दोकिरियाओपकरेइ तजहा। एक समये दो क्रिया करेछे ते कहेछे–इरियावहियच सपराइयच। जावी ते विषय पंथा मार्गते इर्या पथ कहीये ते

॥ टीका ॥

अन्नउत्थियागामित्यादि ॥ तत्र ॥ इरियावहियंति ॥ ईर्या गमनं तद्विषयः पन्था मार्ग ईर्यापथ स्तत्र भवा ऐर्यापथिकी, केवलकाययोगप्रत्यय क र्मबन्धइत्यर्थं ॥ संपराइयचत्ति ॥ सम्परैति परिभ्रमति प्राणी भवे एभि रिति सम्परायाः कषाया स्त त्प्रत्यया या सा साम्परायिकी, कषायहे तुकः कर्मबन्धइत्यर्थः ॥ परउत्थियवत्तव्वयंणेयव्वंति ॥ इहसूत्रे अन्ययूथिकवक्तव्य स्वयमुच्चारणीय, ग्रन्थगौरवभयेना लिखितत्वा त्तस्य' तच्चेद—जं समयं संपराइयं पकरेइ तं समयं इरियावहियं पकरेइ इरियावहियापकरणयाए संपराइयं पकरेइ संपराइयपकरणयाए इरियावहियं पकरेइ एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाओ पकरेइ तं० इरियावहियंच संपराइयंचेति ससमयवत्तव्वयाए णेयव्वं, सूत्र मितिगम्यं, सा चैव—सेकहमेयं

॥ मूल ॥

वत्तव्वसिया । अण्णउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवखलु एगेजीवे एगेगसमएणं दोकिरियाओपकरेइ तंजहा—इरियावहियंच संपराइयंच, जंसमयं इरियावहियं पकरेइ तंसमयं संपराइयं पकरेइ, जंसमयं संपराइयं पकरेइ तंसमयं इरियावहियं पकरेइ, इरियावहियं पकरणयाए संपराइयं पकरेइ, संपराइय पकरणयाए इरियावहियं पकरेइ । एवखलु एगेजीवे एगेणंसमएणं दोकिरियाओ पकरेइ तजहा—इरियावहि

॥ भाषा ॥

जने विषेहुवे ते ईर्यापथिको कहीये, केवल काययोग प्रत्ययकर्मबन्ध इत्यर्थ, भवनविषे परिभ्रमे प्राणी इणेकरीने ते संपराय कषाय तेहथी हुई ते संपरायि की कहीये, कषायहेतु कर्मबन्ध इत्यर्थ । जंसमयइरियावहियपकरेइ । जे समयनेविषे इरियावही क्रियाकरे । तंसमयसंपराइयपकरेइ । ते समयनेविषे स परायिकी क्रियाकरे । जंसमयसंपराइयपकरेइ । जे समयनेविषे संपरायिकीक्रियाकरे । तंसमयइरियावहियपकरेइ । ते समयनेविषे इरियावहीक्रिया क रे । इरियावहियपकरणयाए संपराइयपकरेइ । इरियावहीक्रिया करतोथको संपरायिकी क्रियाकरे । संपराइयपकरणयाए । संपरायिकी क्रिया करतो थको । इरियावहियपकरेइ । इरियावही क्रिया करे । एवखलुएगेजीवे । इम निश्चे एकजीव । एगेणसमएणदोकिरियाओपकरेइ तंजहा । एक समये दो वेक्रिया प्रते करे ते कहेछे—इरियावहियंच संपराइयंच २ । इरियावहीक्रिया चपुन संपरायिकी क्रिया चपुन । सेकहमेयंभंतेएवं । ते किसे प्रकारे एअर्थ

भते १ एव गोयमा ! जणते अणउत्थियाएवमाइक्खति ४ जावसपराइयच जेतेएवमाहसु मिच्छातेएवमाहसु अहपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४
एवखलुएगेजीवेएगेणसमएण एगकिरियपकरेइ तजहा, इत्यादि पूर्वोक्तानुसारेण ध्येयमिति, मिथ्यात्व चास्यैव-ऐर्यापथिकीक्रिया अकषायोदय
प्रभवे, तरातु कषायोदयप्रभवेति, कथ मेकस्यैकदा तयो सम्भवो विरोधादिति' अनन्तर क्रियोक्ता क्रियावता चोत्पादो भवती त्युत्पादविरहप्र

यच १ संपराइयच २ । सेकहमेयं भंते ! एवं? गोयमा ! जणते अणउत्थिया एवमाइक्खंति तंचेव जाव
जेते एवमाहंसु मिच्छातेएवमाहंसु। अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४ । एवंखलु एगे जीवे एगसमए एक्कं
किरियं पकरेइ ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं, जाव इरियावहियं संपराइयंवा॥ निरयगईणं भंते ! केवइयंकालं

हेभगवन् । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जणते अणउत्थिया । हेगोतम । जेमाट अन्यतीर्थी । एवमाइक्खति । इमकहे । तचेवजावजेतेएवमाहंसु मिच्छा ते
एवमाहसु । तिमहीज कहवो यावत् जिणे इमकह्यो मिथ्या भूठो तिणे इमकह्यो ते किम इरियावही अकषाय प्रभवछे अने सपरायिकको कषाय प्रभ
वछे ते एके समये एकठो किम ऊपजे ए विरोध । अहपुण गोयमा एवमाइक्खामि ४ एवंखलुएगे। हू वली हेगौतम। इम कहूछू इम निश्चे एक । जीवे ए
गसमयेणक्क किरियपकरेइ ससमयवत्तव्वयाए णेयव्व । जीव एके समये एक क्रिया करे ते कहेछे—जइरियावही अथवा सपरायिकी, जे समयनेविषे इरि
यावही क्रियाकरे ते समयनविषे सपरायिकीक्रिया नकरे, जे समयनेविषे सपरायिकी क्रियाकरे ते समये इरियावही नकरे, पूर्वोक्त अनुसारे पोताना
सासननो वक्तव्यता कहवो । जाव इरियावहियंवा सपराइयवा णिरयगईणभते केवइयकालविरहियाउववाएणपणत्ता गोयमा जहणेणएक समय उक्को
सेणवारसमुहुत्ता एववक्कतीपय भाणियव्व णिरवसेस सेवभते २ त्ति जावविहरइ । यावत् इरियावही अथवा सपरायिकीक्रिया एककरे वीजीनकरे, अ
नतरे क्रिया कही ते क्रियावतनो उत्पादहुवे, ते उत्पाद विरहप्ररूपवाकाजे कहेछे—नरकगतिनेविषे हेभगवन् । केतलोकाल विरह अतरकाल ऊप
जवानोकाल कह्यो इतिप्रश्न,हेगौतम । नरकगतिनेविषे ऊपजवानो विरह जघन्ये एक एकसमय उत्कृष्टो वारहमुहूर्त्तनो कह्यो, इम व्युत्क्रांति जीवनो

रूपगाथाह्न ॥ निरयगईत्यादि ॥ वक्कंतीपयति ॥ व्युत्क्रान्ति जीवाना मुत्पाद स्तदर्थ पदं प्रकरण व्युत्क्रान्तिपद, तच्च प्रज्ञापनायां षष्ठं, तच्चा र्थले शत एव द्रष्टव्य—पञ्चेन्द्रियतिर्यंगतौ मनुष्यगतौ देवगतौ चोत्कर्षतो द्वादश मुहूर्त्ता, जघन्यत स्त्वेकसमयउत्पाद विरहइति, तथा—चउवीसई मुहुत्ता १ सत्तअहोरत्त २ तहयपन्नरस ३ । मासोय ४ दोय ५ चउरो ६ छम्मासा ७ विरहकालोउ ८ ॥ १ ॥ उक्कोसोरयणाइसु सव्वासुजहन्नउनवेसमउ । एमेवयउव्वट्टणा सखापुणसुरवरतुल्ला ॥२॥ साचेय—एगोयदोयतिन्निय सखमसखाचएगसमएण । उववज्जंतेचइया उव्वट्टताविएमेव ॥ १ ॥ तिर्यग्गतौच विरहकालो यथा—भिन्नमुहुत्तोविगलि दियाणसमुच्छिमाणयतहेव । बारसमुहुत्तगब्भे उक्कोसजहन्नउसमउ ॥ १ ॥ एकेन्द्रियाणातु विरहएवनास्ति मनुष्यगतौतु—बारसमुहुत्तगब्भे मुहुत्तसमुच्छिमेसुचउवीस । उक्कोसविरहकालो दोसुवियजहन्नउसमउ ॥ १ ॥ देवगतौतु—भवणवणजोइसोहम्मीसाणेचउवीसईमुहुत्ताउ । उक्कोसविरहकालो पचसुविजहन्नउसमउ ॥ १ ॥ नवदिणवीसमुहुत्ता ३ बारसदसचेवदिणमुहुत्ताउ ४ । बावीसाअद्धचिय ५ पणयाल ६ असीइ ७ दिवससय ८ ॥ २ ॥ सखेज्जमासआणय ९ पाणएसु १० तहआरण ११ चुए १२ वासा । सखेज्जाविसेया गेविज्जेसुअन्नवोच्छ ॥ ३ ॥ हेट्ठिमिवाससयाइ मज्झिसहस्साइउवरिमेलक्खा । सखेज्जाविसेया जहासखेणातीसुपि ॥४॥ पलियाअसखभागो उक्कोसोहोइविरहकालोउ । विज

विरहिया उववाएण पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कसमयं, उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता, एवं वक्कंतीपयं

ऊपजवो तेअर्थनो जे पद प्रकरण व्युत्क्रांतिपद पन्नवणानो छठोपद तेहथी जाणवो, तत्रार्थ लेसतएवद्रष्टव्य, पचेंद्रिय तिर्यंच गतिनेविषे मनुष्यगतिनेविषे देवगतिनेविषे उत्कृष्टथी बारह मुहूर्त्त जघन्यथी एक समय, तथा रत्नप्रभा आदिदेई चउवीस मुहूर्त १ सात अहोरात्रि २ पनरह अहोरात्रि ३ मास ४ एक दोयमास ५ चारमास ६ छमास ७ विरहकाल उत्कृष्टो जघन्यथी एक समय जाणवो, इमहीज चविवानो विरह जाणवो, अने उपजवा चविवानो सख्या जघन्ये दोय तीन उत्कृष्टथी सख्याता असख्याता चवता पणि इमज तिर्यंचग तिनेविषे विरहकाल भिन्न मुहूर्त्त । विगलिंदियाणसमुच्छिमाणय। तहेव, बारसमुहुत्तगब्भे उक्कोस जहन्नओसमओ, एकेंद्रीने विरहकालछेज नही इत्यादि पन्नवणाथी सर्व कहवो, तहत्ति हेभगवन्! तुम्हे कह्यु तेमवे सत्यछे अन्यथानही यावत्

याइसुनिद्दिठो सव्वेसुजहन्नउसमयउ ॥ ५ ॥ उववायविरहकालो इहएसोवरिणउदेवेसुं । उव्वट्टणाविएव सव्वेसुविह्वोइविसेया ॥ ६ ॥ जहन्नेणएगसमए उक्कोसेणतुहोतिछम्मासा । विरहोसिद्धिगईए उव्वट्टणवज्जियानियमत्ति ॥ ७ ॥ प्रथमशतेदशमोद्देशक ॥ इतिगुरुगमजङ्घे सागरस्याक्रमस्य । स्फुटमुपचितजाडय पञ्चमाङ्गस्यसद्य । प्रथमशतपदार्थावर्त्तगर्तव्यतीतो विवरण वरपोत प्राप्यसद्धीवराणा ॥ १ ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्य विरचिताया भगवतीवृत्तौ प्रथमशते दसम उद्देश समाप्त ॥ १० ॥ ॥ * ॥ * ॥

व्याख्यात प्रथमशत मथ द्वितीय व्याख्यायते तत्रापि प्रथमोद्देशकस्य चायमभिसम्बन्ध प्रथमशतान्तिमोद्देशकान्ते जीवाना मुत्पादविरहो निरूपित इह तु तेषामेवोच्छ्वासादि चिन्त्यतइत्येव सम्बन्धस्या स्येद सुपोद्घातसूत्रानन्तरसूत्र ॥ जेइमेइत्यादि ॥ यद्य प्येकेन्द्रियाणा मागमादिप्रमाणा ज्जी

जाणियव्वं निरवसेसं, सेवं भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥

ऊसासखंदएविय १ पुढविं २ दिय ३ अणउत्थि ४ भासाय ५ । देवायचमरचंचा ७ समय ८ खित्त ९ त्थिकाय १० बीयसए ॥ १ ॥ तेणकालेणं तेणंसमएणं रायगिहेनामंनगरे होत्था, वण्णओ, सामीसमोसढे,

विचरे। इह दसमो उद्देसो सम्मतो। दशम उद्देशानो टव्वा लिख्यो। पढमसयंसम्मत्तं। एपहिला शतकनो टव्वोपूरो लिख्यो ॥ १० ॥ १ ॥

ऊसासखदएविय । अने जीवनो उत्पाद विरहकह्यो । हिवे बीजा शतकने विषे तेहनाज उसासादि कहेछे—पहिला उद्देशानेविषे ऊसास अने खदकनो अधिकारछे । पुढविंदिय अणउत्थिभासाय देवायचमरचचा समयखित्तत्थिकायबीयसए । पृथिवी अधिकार बीजो २ इन्द्रियनो त्रीजो ३ अन्यतीर्थी अधिकार ४ भाषानो अधिकार ५ देवनो अधिकार ६ चमरचचानोअधिकार ७ समयक्षेत्रनो अधिकार ८ क्षेत्राधिकार ९ अस्तिकाय १० एबीजा शतकने विषे दश उद्देशा जाणवा १ तेणकालेणं तेणंसमएणं । तेकालनेविषे ते समयनेविषे । रायगिहेणामणयरेहोत्था । राजगृहनामा नगरहुवे, तेहनो वर्णक उवाई उपागने विषे कह्योछे । वण्णओ । तिम कहवा । सामीसमोसढे । श्रीमहावीरस्वामी आव्या। परिसाणिग्गया । पर्षदा वादवा नीकली आवी

॥ टीका ॥

वत्व प्रतीयते तथापि तदुच्छ्वासादीना साक्षा दनुपलम्भाज्जीवच्छरीरस्यच निरुच्छ्वासादेरपि कदाचि द्दर्शना त्पृथिव्यादिषू च्छ्वासादिविषया ग्राशं स्यादिति तन्निरासाय तेषा मुच्छ्वासादिक मस्ती त्येतस्या गमप्रमाणप्रसिद्धस्य प्रदर्शनपरमिद सूत्र मवगन्तव्यमिति, उच्छ्वासा द्यधिकारा ज्जीवादि

॥ मूल ॥

परिसानिग्गया धम्मोकहित्ते , पडिगयापरिसा । तेणकालेण तेणंसमएण जेट्ठेअंतेवासी जाव पज्जुवासमाणे एवंवयासी , जेइमे भंते ! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया जीवा एएसिणं आणामंवा पाणामंवा उस्सासंवा निस्सासंवा जाणामो पासामो जेइमे पुढविकाइया जाव वणप्फइकाइया एगिंदिया जीवा एए सिणं आणामंवा पाणामवा उस्सासवा निस्सासंवा णजाणामो णपासामो, एएसिणं भंते ! जीवा आणमं

॥ भाषा ॥

धम्मोकहिओ । विविध धर्म प्रकाश्या कह्या । परिसापडिगया तेणकालेण तेणसमएण । धर्म साभलीनेपर्षदा पाछी वली घरेगया मनुष्य इत्यर्थ, तेकालने विषे ते समयनेविषे । जेट्ठेअंतेवासी जावपज्जुवासमाणे । वडा शिष्य यावत् भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें सेवताथका पर्युपासना करताथका । एवंवयासी । इम कहता हुया । जेइमेभते बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचिंदियाजीवा । जे एह हेभगवन् ! स्पर्शन रसन बेइन्द्रीछे जेहने ते बेइन्द्री, स्पर्शन रसन घ्राण तीनइन्द्रीछे जेहने ते तेरिन्द्री, स्पर्शन रसन घ्राण चक्षु चारइन्द्रीछे जेहने, स्पर्शन रसन घ्राण चक्षु श्रोत्र एपाच इन्द्रीछे जेहने ते पंचेंद्री । आणामवा पाणामवा ऊसासवा णोसासवा जाणामोपासामो जेइमेपुढविकाइया जाववणप्फइकाइया एगिंदियाजीवा । आणम पाणम ते भीतर सासोसास लेवा ऊसास नीसास ते बाहिरो सास ऊसास लेवा अथवा आणाम एपदनो पर्याय ऊसास पाणाम एपदनो पर्याय नीसास, तेह जाणूछू देखूछू, एतले त्रस जीवनो सासोसास जाणूछू देखूछू, जे पृथिवीकायिक अप्कायिक तेऊकायिक वाऊकायिक यावत् वनस्पतीकायिक एकेन्द्रीजीवछे जापणि एहनेविषे आगमादि प्रमाणे करी जीव पणानी प्रतीति जरजेहे तोपणि । एएसिणं आणामवा पाणामवा उस्सासवा णिस्सासवा णजाणामो णपासामो । एहनो भीतर सासछे ते भीतर ऊसासछे ते बाहिर सासछे ते बाहिर नीसासछे ते नजाणु नदेखूं । एएणभतेजीवा आण

॥ टीका ॥

पु पञ्चविंशतौ पदेषू च्छ्वासादिद्रव्याणां स्वरूपनिर्णयाय प्रश्नयन्नाह ॥ किण्णंतेजीवेत्यादि ॥ किमित्यस्य सामान्यनिर्देशत्वा त्कानि किं विधानि द्रव्याणीत्यर्थं , ॥ आहारगमोनेयव्वोत्ति ॥ प्रज्ञापनायाअष्टाविंशतितमाहारपदोक्तसूत्रपद्धति रिहाध्येयेत्यर्थं , साचेयं-दव्वणाइंतिवखाइंजावपच्वणा

॥ मूल ॥

तिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा ? हंता गोयमा ! एएविण जीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, किण्णं भंते ! एतेजीवा आण० पाण० उस्स० निस्स० ? गोयमा ! दव्वउणंअणंत पएसियाइं दव्वाइं , खित्तउअसंखेज्जपएसोगाढाइं कालउअण्णयरठिइयाइं , भावउवणमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्संतिवा जाइं भावउवणमंताइं आणमंति वा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा ताइं किं एगवणाइं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा नि

॥ भाषा ॥

मंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीससंतिवा। तेमाटे एह हेभगवन्! जो भीतर सासले भीतर ऊसासले बाहिर सासले बाहिर नीसासले इतिप्रश्न। हंतागोयमा। हांगोतम। एतेविणजीवा आणमंतिवा। एपृथिव्यादिक ण वायानेकारि, जीव भीतरसासले। पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीस संतिवा। भीतर नीसासले बाहिर सासले बाहर नीसासले। किण्णंतिवा, एतेजीवा आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीससंतिवा। कि इसां पद सामान्य निर्देशपणाथी किसा किसा प्रकारनाद्रव्य हेभगवन्! पृथिव्यादि एकेंद्रीजीव भीतर सासले भीतर ऊसासले बाहिर सासले बाहिर नीसासले इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दव्वओणअणंतपदेसियाइंदव्वाइं। हेगौतम! द्रव्यथी अनंतप्रदेशी अनंतपुद्गलद्रव्याने। खित्तओअसंखेज्जपएसो गाढाइं कालओअण्णयरठिइयाइं। क्षेत्रथी असंख्यात आकाशने प्रदेशे पुद्गलअवगाह्या तेप्रते, कालथी एक समयना यावत् असंख्यात समयनी स्थितिना तेह प्रते। भावओवणमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंतिवा। भावथी वर्ण ५ सहितद्रव्य गंध २ सहित रस ५ ते सहित स्पर्श ८ तेसहि त द्रव्य सासोसास पणे ग्रहे ४। जाइंभावओवणमंताइं। जिके भावथी वर्ण सहित पुद्गल द्रव्य। आणमंतिवा ४ ताइं किंएगवणाइं। सासोसास प

इंपिजाइंवगणंकालाइंताइंकिंएगगुणकालाइं जावअणंतगुणकालाइंपि इत्यादिरिति, ॥ जीवेगिंदिएत्यादि ॥ जीवाएकेन्द्रियाश्च ॥ वाघायनिव्वाघाय त्ति ॥ मतुब्लोपाद्व्याघातनिर्व्याघातवन्तो भणितव्या, इहचैवं पाठेपि निर्व्याघातशब्द पूर्वद्रष्टव्य स्तदभिलापस्य सूत्रे तथैव दृश्यमानत्वात्, तत्र जीवानिर्व्याघातसव्याघाता सूत्रएव दर्शिता, एकेन्द्रियास्त्वेव-पुढविकाइयाणंभंते। कइदिसिंआणमंति? गोयमा! निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिमित्यादि, एवमप्कायादिष्वपि, तत्र निर्व्याघातेन षड्दिशं षड्दिशो यत्र नमनादौ तत्तथा' व्याघात प्रतीत्य स्या त्रिदिशं, स्या च्चतुर्दिशं, स्या त्पञ्चदिशं' आनमन्ति, यत स्तेषा लोकान्तवृत्तावलोकेन त्र्यादिदिक्षूच्छ्वासादिपुद्गलाना व्याघातः सम्भवतीति ॥ सेसानियमाछद्दिसिंति ॥ शेषा नारकादित्रसा· षड्दिश मानमन्ति तेषाहि त्रसनाडयन्तर्भूतत्वात् षड्दिश मुच्छ्वासादिपुद्गलग्रहोस्त्येवेति, अथै केन्द्रियाणा मुच्छ्वासादिभावा दुच्छ्वासादेश्च वायुरूपत्वा त्किवायुकायिकाना मप्युच्छ्वासादिना वायुनैव भवितव्य, मुतान्येन केनापि पृथिव्यादीनामिव तद्विलक्षणेने

ससंतिवा आहारगमो नेयव्वो, जाव पचदिस, किंणंभंते! णेरइया आणमंतिवा पाणमतिवा उस्ससंति वा निस्ससतिवा तंचेव जाव नियमा छद्दिसिं आणमतिवा पाणमतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा, जीवेएगिंदिया वाघाया निव्वाघाया भाणियव्वा, सेसा नियमा छद्दिसि। वाउयाएणंभंते! वाउयाएचेव आणमं

गें ग्रहे. तिके स्यू एक वर्ण द्रव्य प्रते। आणमतिवा ४। सासोस्वास पणे ग्रहे। आहारगमोणेयव्वो। पन्नवणाना अठावीसमा पदनेविषे कह्यो तेसूत्रपद्धति इहाकहवी। जाव पचदिसि। यावत् पचदिशि व्याघात आश्री जाणवा। किंणंभते णेरइया। किसा प्रकारना द्रव्य हेभगवन्! नारकी। आणमतिवा ४। सासोस्वास ग्रहे। तचेवजावणियमाछद्दिसि आणमतिवा ४। तिमहीज यावत् निश्चे छदिशिना पुद्गलना सासोस्वासले। जीवेगिंदिया वाघाय णिव्वाघाय भाणियव्वा। जीवपदे तथा एकेंद्रियना पचपदनेविषे व्याघाते तथा निर्व्याघाते दिशिना विभागथी सासोस्वास कहवो। सेसाणियमाछद्दिसि। शेष उगुणीस नारकादिकनेविषे नियमथी छदिशिना कहवा। वाउयाएणभंते वाउयाए। वाउकाय हेभगवन्! वाउनेहीज। चेवआणमतिवा ४। निश्च

॥ टीका ॥

त्याशङ्कायां प्रश्नयन्नाह ॥ वाउयाएणमित्यादि ॥ अथोच्छ्वासस्यापि वायुत्वा दन्येनो च्छ्वासवायुना भाव्यं, तस्या प्यन्येनैव मनवस्था, नैव मचेतनत्वा त्तस्य' किञ्च योय मुच्छ्वासवायु सवायुत्वेपि नवायुसम्भव्योदारिकवैक्रियशरीररूप, तदीयपुद्गलाना मानप्राणासञ्ज्ञिताना मौदारिकवैक्रियशरीर पुद्गलेभ्यो नन्तगुणप्रदेशत्वेन सूक्ष्मतया एतच्छरीराव्यपदेश्यत्वा, तथाच प्रत्युच्छ्वासादीना मभाव इतिना नवस्था ॥ वायुकाएणभंतेइत्यादि ॥ अय च प्रश्नो वायुकायप्रस्तावा द्विहितो, न्यथा पृथिवीकायिकादीनामपि मृत्वा स्वकाये उत्पादोस्त्येव, सर्वेषा मेषां कायस्थिते रसङ्ख्याततया नन्ततया चोक्तत्वा यदाह—असखोसप्पिणिउस प्पिणीउएगिंदियाणायचउगह । ताचेवऊअणता वणस्सइएउबोधव्वा ॥ १ ॥ तत्र वायुकायो वायुकायएवा नेक शतसहस्रकृत्व ॥ उद्दाइत्तत्ति ॥ अपद्रुत्य मृत्वा ॥ तत्थेवत्ति ॥ वायुकायएव ॥ पञ्चायाइत्ति ॥ प्रत्याजायते उत्पद्यत ॥ पुट्ठेउद्दाइत्ति ॥ स्पृष्ट स्वकाय

॥ मूल ॥

तिवा पाणमंतिवा उस्ससतिवा नीससंतिवा ? हंता गोयमा ! वाउयाएणं जाव नीससतिवा । वाउयाएण भंते ! वाउयाएचेव अणेगसयसहस्स खुत्तो उद्दाइ उद्दाइत्ता, तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइ ? हंता गोय मा ! जाव पच्चायाइ। सेभंते! किंपुठे उद्दाइ अपुठेउद्दाइ? गोयमा! पुठंउद्दाइ नोअपुठेउद्दाइ । सेभंते! किं

॥ भाषा ॥

सासोस्वास पणे ग्रहे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हांगौतम। वाउयाएणजावणीससतिवा। वाऊकाय वाउकरीने यावत् नीसास मूंके इम सर्व क हवो। वाउयाएणभंतेवाउयाएचेव। वाउकाय हेभगवन्। वाउने विषेज निश्चे। अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइ २ त्ता। अनेक शतसहस्र लक्षवार मरीम रीने। तत्थेवभुज्जो २ पच्चायाति हंता गोयमा। तिहांज वाउकायनेविषे वारम्वार ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। हंतागोयमा। हांगौतम। जावपच्चायाति। यावत्ऊपजे। सेभंतेकिंपुट्ठेउद्दाइ। ते हेभगवन्। स्यूं स्वकाय शस्त्रे फरस्या मरे। अपुट्ठेउद्दाइ। अथवा अणफरस्या मरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पुट्ठे उद्दाइ। हेगौतम। फरस्या सोपकर्मीनी अपेक्षायें। णोअपुट्ठेउद्दाइ। नहो अणफरस्या मरे। सेभंतेकिंससरीरीणिक्खमइ। ते हेभगवन्। स्यूं शरीर सहित नीकले पोताना कलेवरथको, अथवा। असरीरीणिक्खमइ। पोताना कलेवरथको शरीररहित नीकले इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियससरीरी

॥ टीका ॥

आश्रेण परकायशस्त्रेणवा, अपद्रवति म्रियते ॥ नोअपुट्ठेति ॥ सोपक्रमापेक्षमिदं ॥ णिक्खमइत्ति ॥ स्वकलेवरात् ॥ सियससरीरिति ॥ स्यात् कथञ्चित् ॥ उरालियवेउव्वियाइं विप्पजहायेत्यादि, अयमर्थः, औदारिकवैक्रियापेक्षया अशरीरी तैजसकार्मणापेक्षयातु सशरीरी निष्क्रामतीति, वायुकायस्य पुनः पुन स्तत्रैवोत्पत्ति र्भवतीति' उक्त मथ कस्यचि न्मुनेरपि संसारचक्रापेक्षया पुनः पुन स्तत्रैवोत्पत्तिः स्यादिति दर्शयन्नाह ॥ मडाईणंभंते ! नियठस्सादि ॥ मृतादी प्रासुकभोजी उपलक्षणत्वा दैषणीयादिचेति दृश्यं निर्ग्रन्थः साधु' रित्यर्थः ॥ हव्वं ॥ शीघ्र मागच्छतीति योगः, किंविध स

॥ मूल ॥

ससरीरीनिक्खमइ अ्सरीरीनिक्खमइ ? गोयमा ! सियससरीरीनिक्खमइ सियअ्सरीरीनिक्खमइ, सेकेणठेण भंते ! एवं वुच्चइ सियससरीरीनिक्खमइ सियअ्सरीरी ? गोयमा ! वाउकायस्सणं चत्तारिसरीरया पन्नत्ता तंजहा—उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । उरालियवेउव्वियाइ विप्पजहाय तेयकम्मएहिं निक्खमइ, सेतेणठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ सियससरीरी सियअ्सरीरीनिक्खमइ । मडाईणं भंते ! नियठे नोनिरुद्धभवे

॥ भाषा ॥

निक्खमइ । हेगोतम । कथंचित् प्रकारे शरीर सहित नीकले । सियअसरीरीणिक्खमइ । कथंचित् प्रकारे शरीर रहित नीकले । सेतेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ । ते स्याभाटे हेभगवन् ! इम कह्यु । सियससरीरीणिक्खमइ । कथंचित् प्रकारे शरीर सहितनीकले । सियअसरीरीणिक्खमइ । कथंचित्प्रकारे शरीर रहित नीकले । गोयमा वाउकायस्सण । हेगोतम । वाउकायने । चत्तारिसरीरया पन्नत्ता तंजहा । चार शरीर कह्या तेकहेछे—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४ । ओरालियवेउव्वियाइ विप्पजहाय । तिहां औदारिक १ वैक्रिय २ एवेशरीर छांडीने नीकले । तेयकम्मएहिंणिक्खमइ । तैजस कार्मणनो अपेक्षाये सशरीरी नीकले । सेतेणट्ठेणं गोयमा एववुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगोतम ! इमकह्यु । सियससरीरीणिक्खमइ । कियारेके कथंचित् प्रकारे शरीर सहित नीकले । सियअसरीरीणिक्खमइ । कियारेके कथंचित्प्रकारे अशरीरी नीकले । मडाईणंभंतेणियंठे णोनिरुद्धभवे णोनिरुद्धभवपवंचे । प्रासुकभोजी हेभगवन् ! निग्रंथ कहता साधु जेणें भवरूप आश्रवो भवनो विस्तार जेणें रुध्योनथी । णोपहीणसंसार । चतुर्गति गम

॥ टीका ॥

न्नित्याह ॥ नोनिरुद्धभवेत्ति ॥ अनिरुद्धागेतनजन्मा चरमभवाप्राप्त इत्यर्थ , अयंच भवद्वयप्राप्तव्यमोक्षोपि स्यादित्याह ॥ नोनिरुद्धभवपवंचेत्ति ॥ प्राप्तव्यभवविस्तारइत्यर्थ , अयच देवमनुष्यभवप्रपञ्चापेक्षयापिस्या दित्यतआह ॥ णोपहीणससारेत्ति ॥ अप्रहीणचतुर्गतिगमनइत्यर्थ , यतएव म तएव ॥ नोपहीणससारवेयणिज्जत्ति ॥ अप्रहीणसंसारवेद्यकर्मा ॥ अयंच सकृच्चतुर्गतिगमनतोपि स्या दित्यतआह ॥ नोवोच्छिन्नससारेत्ति ॥ अत्रुटि तचतुर्गतिगमनानुबन्धइत्यर्थ ' अतएव ॥ नोवोच्छिन्नससारवेयणिज्जत्ति ॥ नोनैव व्यवच्छिन्न मनुबन्धव्यवच्छेदेन चतुर्गतिगमनवेद्य कर्म यस्य स त

॥ मूल ॥

नोनिरुद्धभवपवचे णोपहीणससारे णोपहीणसंसारवेयणिज्जे नोवोच्छिन्नसंसारे नोवोच्छिन्नसंसारवेयणिज्जे नोनिट्ठियट्ठे नोनिट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इच्छत्तं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! मडाईणंनियंठे जाव पुणर विइत्थत्तं हव्वमागच्छइ। सेणंभंते ! किंवत्तव्वंसिया ? गोयमा ! पाणेतिवत्तव्वंसिया भूतेतिवत्तव्वंसिया जीवे तिवत्तव्वंसिया सत्तेतिवत्तव्वंसिया विन्नुयत्तिवत्तव्वंसिया वेदेतिवत्तव्वंसिया ? पाणे भूये जीवे सत्ते विन्नूवे

॥ भाषा ॥

नरूप ससारक्षयकोधोनथी। णोपहीणसंसारवेयणिज्जे। ससारमाहि वेदनीकर्म क्षयकोधोनथी, वली केहवो। णोवोच्छिन्नससारेणोवोच्छिन्नससारवेय णिज्जे। नथी तूटो ससार चतुर्गति गमनानुबंध जेहनो, चतुर्गति ससारने तूटवेकरी वेदनीयकर्म जेहनो तूटोनथी। णोणिट्ठियट्ठे। जेहने प्रयोजन पूरा नथी। णोणिट्ठयट्ठकरणिज्जे। प्रयोजननी करणी पूरीकीधीनथी जेणे। पुणरविइच्छत्तहव्वमागच्छइ हंतागोयमा। ते वली मनुष्यादि गतिने भतावली आवे इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम। मडाईणंणियंठे। प्रासुकभोजो निर्ग्रंथ साधु। जाव पुणरविइच्छत्तहव्वमागच्छइ। यावत् वली चतुर्गतिरूप ससारमें भ तावला आवे। सेणभतेकिंवत्तव्वंसिया। तणं वाक्यालंकारे, तिहा हेभगवन्। निर्ग्रंथजीव स्यूं कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पाणेत्तिवत्तव्वंसिया। हेगोतम प्राण एहवूं तेहने कहीये। भूतेत्तिवत्तव्वंसिया। भूत एहवूं तेहने कहीये। जीवेतिवत्तव्वंसिया। जीव एहवूं तेहने कहीये। सत्तेत्तिवत्तव्वंसि या। सत्व एहवूं तेहने कहीये। विणुत्तिवत्तव्वंसिया। विज्ञ विशेषे जाण एहवूं तेहने कहीये। वेदेतिवत्तव्वंसिया। वेद एहवूं तेहने कहीये। पाणे १

॥ टीका ॥

था, अतएव ॥ नोनिठियठेत्ति ॥ अनिष्ठितप्रयोजनो ऽतएव ॥ नोनिठियठकरणिज्जेत्ति ॥ नोनैवनिष्ठितार्थानामिव करणीयानि कृत्यानि यस्य स तथा, यत एवंविधो सावतः, पुनरपीति' अनादौ ससारे पूर्वं प्राप्त मिदानी पुन र्विशुद्धकरणावाप्ते' सकाशा दसम्भावनीयं ॥ इच्चत्थंति ॥ इत्यर्थ मेतमर्थ अनेकशस्तिर्यङ्नरनाकिनारकगतिगमनलक्षणं, इत्थत्तमितिपाठान्तरं, तत्रा नेन प्रकारेण इत्य तद्भाव इत्यत्व मनुष्यादित्व मितिभाव ' अनुस्वारलोपश्च प्राकृतत्वात्, ॥ हव्वति ॥ शीघ्रं ॥ आगच्छइत्ति ॥ प्राप्नोति अभिधीयते च कषायोदया त्प्रतिपतितचरणाना चारित्रवता ससार सागरपरिभ्रमण यदाह–जइउवसतकसाओ लहइअणंतं पुणोविपडिवायं ॥ सच संसारचक्रगतो मुनिर्जीवप्राणादिना नामषट्केन कालभेदेन युगप च वाच्य स्यादिति विज्ञप्सु प्रश्नयन्नाह ॥ सेणमित्यादि ॥ तत्र सनिर्ग्रन्थजीव , किं शब्द प्रश्ने, सामान्यवाचित्वाच्च नपुसकलिङ्गेन निर्दिष्टइति, एवं अन्वर्थयुक्ततयेत्यर्थो वक्तव्य'स्या' त्प्राकृतत्वाच्च सूत्रे नपुसकलिङ्गतास्येति, अन्वर्थयुक्तशब्दै रुच्यमान' किमसौ वक्तव्य. स्या दितिभाव , अत्रो र ॥ पाणेत्ति ॥ वत्तव्वमित्यादि ॥ तत्र प्राणइति, एतत् तत्प्रति वक्तव्य स्यात्, यदो च्छ्वासादिमंत्त्वमात्र माश्रित्य तस्य निर्देश क्रियते, एवं भव

॥ मूल ॥

देतिवत्तव्वंसिया । सेकेणट्ठेणं पाणेतिवत्तव्वंसिया ? जाव वेदेतिवत्तव्वंसिया , जम्हा आणमंतिवा पाणमंति वा उस्ससंति नीससंतिवा तम्हा पाणेतिवत्तव्वंसिया । जम्हा भूएभवइ भविस्सइ तम्हा भूएत्तिवत्तव्वंसि

॥ भाषा ॥

भूये २ जोवे ३ सत्ते ४ विणू ५ । प्राण भूत जीव सत्व विज्ञ । वेदातिवत्तव्वसिया । वेद ६ ए छबोल तेहने कहीये । सेकेणट्ठेणभते । ते स्यें अर्थें हेभगवन् इ म कह्यु । पाणेतिवत्तव्वसिया । प्राण इम तेहने कहीये । जावविणूत्तिवेदातिवत्तव्वसिया । यावत् विज्ञइसो वेदइसो तेहने कहीये इतिप्रश्न उत्तर । गो वमा जम्हाआणमंतिवा । हेगौतम । जेमाटे भीतरसासले । पाणमंतिवा उस्ससतिवा णीससतिवा । भीतर उसासले, बाहिर सासम्हे, बाहिर उसा स म्हे । तम्हापाणेतिवत्तव्वसिया । तेमाटे प्राण एहवू तेहने कहीये । जम्हाभूए भवइ भविस्सइ । जे कारणथी अतीतकाले हुयो वर्त्तमानकाले छे आग मिकाले हुस्ये । तम्हाभूएतिवत्तव्वसिया । तेमाटे भूत एहवू तेहने कहीये । जम्हा जीवेजीवेइ । जे कारणथी जीव तेआत्मा एजीव प्राणप्रते धारे । जीव

॥ टीका ॥

नादिधर्मविवक्षया भूतादिशब्दपञ्चकवाच्यता तस्य कालभेदेन व्याख्येया, यदा तूच्छ्वासादिधर्म्मा युगप दसौ विवक्षते' तदा प्राणो भूतो जीव. स त्वो विज्ञो वेदयिताइति, एत त्प्रति वाच्यं स्या दथवा, निगमनै वाक्यमेवेद मतो न युगपत्यक्षव्याख्याकार्येति ॥ जम्हाजीवेइत्यादि ॥ यस्मा ज्जीव आत्मा सौ जीवति प्राणान् धारयति, तथा जीवत्व मुपयोगलक्षण आयुष्कच कर्म्म उपजीवति अनुभवति तस्मा ज्जीवइति वक्तव्य स्यादिति ॥ जम्हासत्तेसुभासुभेहिकम्मेहिति ॥ सक्त आसक्तः शक्तोवा, समर्थ सुन्दरा २ सुचेष्टासु अथवा; सक्तः सबद्ध शुभाशुभै कर्मभि रिति' अनन्तरो

॥ मूल ॥

या, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्तं आउयंच कम्मं उवजीवइ तम्हाजीवेतिवत्तव्वंसिया, जम्हासत्ते सुहासुहेहिं कम्मेहि तम्हा सत्तेविवत्तव्वंसिया, जम्हा तित्तकटुकसायअंबिलमहुरेरसेजाणइ तम्हा विसूतिवत्तव्वंसिया, वेदेइय सुहदुक्खं तम्हा वेदातिवत्तव्वंसिया, सेतेणठेण जाव पाणेतिवत्तव्वंसिया, जाव वेदातिवत्तव्वंसिया। मडाईणं भंते! नियठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवचे जाव निठियठकरणिज्जे, णोपुण रविइच्छत्तं हव्व मागच्छइ? हता गोयमा! मडाईणं नियठे जाव नोपुणरविइत्यत्त हव्वं आगच्छइ सेणं भंते

॥ भाषा ॥

त्तआउयचकम्मउवजीवइ। तथा जीवत्व उपयोग लक्षण चपुन आयुकर्म उपजीवति अनुभवे। तम्हाजीवेतिवत्तव्वंसिया। तेमाटे जीव एहवू तेहने कहीये। जम्हासत्तेसुभासुभेहिकम्मेहि। जे माटे शक्त आसक्त अथवा समर्थछे सुदर असुदर चेष्टानेविषे शुभाशुभकर्मक संबधछे। तम्हासत्तेतिवत्तव्वंसिया। ते माटे सत्त्व एहवं तेहने कहीये। जम्हातित्तकडुकसायअंबिलमहुररसे जाणइ। जेमाटे तिक्त कड़वो कसायलो अंबिल मधुर ए पाचरस जाणे। तम्हा विसूतिवत्तव्वंसिया। तेमाटे विज्ञ एहवू तेहने कहीये। जम्हावेदेइयसुहदुक्ख। जेकारणथी वेदे अनुभवे सुख प्रते तथादुखप्रते। तम्हावेदातिवत्तव्वंसिया। तेमाटे वेद एहवू तेहने कहीये। सेतेणठेणजावपाणेतिवत्तव्वंसिया। ते तेणे अर्थे यावत् प्राण एहवं तेहने कहीये। जाववेदातिवत्तव्वंसिया। यावत् वेद एहवं तेहने कहीये पूर्वेकह्यो जेअर्थ तेहनो विपरीतपणो कहेछे—मडाईणभंतेणियंठेनिरुद्धभवेनिरुद्धभवपवचे। प्रासुकभोजी हेभगवन्! निर्ग्रंथसा

॥ टीका ॥ त्कस्यै वार्यस्य विपर्ययमाह ॥ महाईत्यादि ॥ पारगएत्ति ॥ पारगत' संसारसागरस्य भाविनि भूतवदुपचारादिति ॥ परंपरगएत्ति ॥ परंपरया मिथ्यादृष्ट्यादिगुणस्थानकाना मनुष्यादिसुगतीनावा; पारपर्येण गतो भवाम्भोधिपार प्राप्त परम्परागत, इहा नन्तरसंयतस्य ससारवृद्धिहानी उ

॥ मूल ॥ किं वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! सिद्धेत्तिवत्तव्वंसिया , बुद्धेत्तिवत्तव्वसिया , मुत्तेत्ति वत्तव्वसिया , पारगएत्ति वत्तव्वंसिया , परंपरगएत्ति वत्तव्वसिया , सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिवुडे अंतकडे सव्वदुक्खप्पहीणे त्तिवत्तव्वसिया सेव भंते भंतेत्ति , भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमसइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाण

॥ भाषा ॥ धु करयांछे आगिला जन्म करवाछे भवनो विस्तार जेणे। जावणिट्ठियट्ठकरणिज्जे। यावत् निष्ठितार्थ करणी प्रयोजननो करणी प्रकोधो। णोपुणरविइ च्छत्तहव्वमागच्छइ। नही वली मनुष्यादि भवप्रतें आतावलो आवे पामे इतिप्रश्न उत्तर। भंता गोयमा। हांगोतम। मडाईणियंठे। मृतादि प्रासुक भोजो निग्रंथसाधु। जावणोपुणरविइच्छत्तहव्वमागच्छइ सेणभंतेकिंवत्तव्वसिया। यावत् नहीवली मनुष्यादि भवप्रते आतावलो आवे पामैं, तिहा ते निर्ग्रंथजीव ए वाक्यालंकारे, हेभगवन्! स्यूंकहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सिद्धेत्तिवत्तव्वसिया। हेगौतम सिद्ध एहवू तेहने कहीये। बुद्धेत्तिवत्तव्वसिया। बुद्ध एहवू तेहने कहीये। मुत्तेत्तिवत्तव्वसिया। मुक्त एहवू तेहने कहीये। पारगएत्तिवत्तव्वसिया। ससार सागरनेपारे पहुंता एहवू तेहने कहीये। परंपरगएत्तिवत्तव्वसिया। मिथ्यात्वादि गुणस्थानकने तथा मनुष्यादि गतिने परंपराये गया एहवू तेहने कहीये। सिद्धे १ बुद्धे २ मुत्ते ३। सिद्ध बुद्ध मुक्त। परिनिवुडेअंतकडे। परि निर्वृत थया ४ ससारनो अंतकीधो। सव्वदुक्खप्पहीणेत्तिवत्तव्वसिया सेवभंते २ त्ति। सगला दुख प्रक्षीणथयाछे ज हने एहवू तेहने कहीये, गौतम बोल्या तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु तेसत्यछे अन्यथानही। भगवं गोयमे। भगवंत गोतम। समणं भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइ णमसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। संजमेणतवसाअप्पाणभावेमाणे विहरइ। नवा आ वता कर्मरोकीये जेणेकरी ते सयम कहीये मूलगा कर्मछेदिये जेणेकरी ते तपकहीये ते सयम उपसघाते। तएणसमणेभगवमहावीरे। आत्माने भावता

॥ टीका ॥

क्तो सिद्धस्थ चेत्यधुनातु तेवा मन्येषा वार्योना म्युत्पादनार्थं स्कन्दकचरितं विवनुरिदमाह ॥ तेण कालेण मित्यादि उप्पन्ननाणदंसणधरे ॥ इह यावत् करणात् ॥ अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण छत्तेण मित्यादि ॥ समवसरणान्तवाच्यमिति ॥ गद्दभालस्सत्ति ॥ गर्द्दभालाभिधान

॥ मूल ॥

भावे माणे विहरइ , तएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहाउ नयराउ गुणसिलाउ चेइयाउ पडिनिक्खम इ पडिनिक्खमइत्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणकालेण तेणंसमएणं कयगलाणाम नयरीहोत्था , व ण्णउ, तीसेणं कयगलाए नयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए छत्तपलासए णाम चेइएहोत्था , वण्णउ तएणं समणे भगवमहावीरे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव समोसरण परिसा निग्गया , तीसेण कयगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थीणामं नयरी होत्था , वण्णउ, तत्थण सावत्थीए णयरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी

॥ भाषा ॥

थका वीचरे तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । रायगिहाउणयराउ गुणसिलाउचेइयाउ । राजगृहनामा नगरथी गुणशीलकनामे यक्ष ना चैत्यथको । पडिणिक्खमइ २ त्ता वहियाजणवयविहारंविहरइ । नीकले नीकलीने बाहिर देशजनानेविषे विहारकरे । तेणकालेण तेणंसमएण । ते कालनेविषे तेसमयनेविषे । कयगलानामणयरीहोत्था वणओ । कयगलानामे नगरीछे वर्णक उवाईनो परेकहवो । तीसेणकयगलाएणयरीए । तेह ण वाक्यालंकारे कयगला नगरीने विषे । वहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । बाहिर उत्तर पूर्वनादिशि विभागे एतले ईशानकूणे । छत्तपलासएचेइएहोत्था वणओ । छत्रपलाश इसेनामे यक्षनो चैत्य हुतो तेहनो वर्णक उवाईथी जाणवो । तएणसमणे भगवमहावीरे । तिवारे श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी । उप्पण्णणाणदंसणधरे । उपना केवलज्ञान अने केवलदर्शन तेहना धरणहार । जावसमोसरण । यावत् समोसरण ताई कहवो । परिसाणिग्गया । परि षदा वांदवा नीकली । तीसेणकयगलाएणयरीए अदूरसामंते । तेह ण वाक्यालंकारे कयगला नगरीथी घणूं वेगलनही घणूं निकटपणनही । सावत्थी णामणयरीहोत्थावणओ । तिहां सावत्थीनामे नगरी हुई ते नगरीनो वर्णकउवाई उपांगनीपरे कहवो । तत्थणसावत्थीएणयरीए । तिहां सावत्थी नगरी

॥ टीका ॥

इतिहास परिव्राजकस्य ॥ रिउवेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयत्ति ॥ इह षष्ठीबहुवचनलोपदर्शनात् ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदानामितिदृश्यं, इतिहास पुराणं सपञ्चमो येषाते तथा तेषा ॥ चउण्हवेयाणति ॥ विशेष्यपद निघंटुछट्ठाणंति ॥ निर्घण्टो नामकोश ॥ संगोवंगाणंति ॥ अङ्गानि शिक्षादीनि षट्, उपाङ्गानि तदुक्तप्रपञ्चनपरा प्रबन्धा ॥ सरहस्साणंति ॥ ऐदंपर्ययुक्ताना ॥ सारएत्ति ॥ सारको ध्यापनद्वारेण प्रवर्त्तक स्मारको वा, न्येषा विस्मृतस्य सूत्रादे स्मारणात् ॥ वारएत्ति ॥ वारको ऽशुद्धपाठनिषेधात् ॥ धारएत्ति ॥ क्वचि त्पाठ स्तत्र धारको ऽधीताना मेषा धारणात् ॥ पारएत्ति ॥ पारगामी षडंगविदिति' षडंगानि शिक्षादीनि वक्ष्यमाणानि साङ्गोपाङ्गानामिति यदुक्त' त द्वेदपरिकरज्ञापनार्थ मथवा; षडङ्गविदि त्यत्र तद्विचारकत्व ङ्गृहीत विदविचारणइतिवचनादिति' न पुनरुक्तत्वमिति ॥ सट्ठितंतविसारएत्ति ॥ कापिलीयशास्त्रपण्डित ' तथा ॥ सं

॥ मूल ॥

खदएनामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ, रिउव्वेय जजुव्वेय सामवेय अहव्वणवेय इतिहासपंचमाण निघंटुछट्ठाणं चउण्हंवेयाण संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए वारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अन्नेसुय बहूसु बंभण्णएसु परिव्वायएसु

॥ भाषा ॥

नेविषे। गद्दभालिस्सअंतेवासी। गद्दभालो इसेनामे परिव्राजक तापसनो शिष्य। खदएणामकच्चायणस्सगोत्ते। खदक इसे नामे कात्यायनगोत्रछे जेहनो। अथव्वणवेय। अथर्वण वेदनो। इति परिव्वायगेपरिवसइ। परिव्राजक वसेछे। रिउव्वेय। ऋगवेदनो। जउव्वेय। यजुर्वेदनो। सामवेय। सामवेदनो। चउण्हवेयाण। चारि वेदनो। संगोवंगाण सरहस्साण। गणितशास्त्रना जा हासपंचमाण। इतिहासनामै पुराणछे पांचमो जेहने ते। णिघट्छट्ठाण। नाम संग्रह छट्ठोछे जेहने। णे अग तथा तेहनेविषे जेप्रबंध कह्याछे तेहनो युक्ति। सारए वारए धारए पारए। तेहने वार २ समरे अशुद्धपाठ निषेधकरिये हीये धरै पारगामी। सडंगवी सट्ठितंतविसारए। छअंगना जाण कापिलीय शास्त्रना जाण। संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते। गणितशास्त्रना जाण अक्षरस्वरूप शास्त्रना जाण शब्दना जाण पदनुलक्षण शास्त्रना जाण शब्दनी उत्पत्तिना शास्त्रना जाण। जोतिसामयणे अन्नेसुयबहुसु बंभणएसु परि

॥ टीका ॥

रणोत्ति ॥ गणितस्कन्धेषुपरिनिष्ठित इति योग', षडङ्गवेदकत्वमेव व्यनक्ति ॥ सिक्खाकप्पेति ॥ शिक्षा अक्षरस्वरूपनिरूपकं शास्त्रं, कल्पश्च तथा विधसमाचारनिरूपक शास्त्रमेव, तत समाहारद्वन्द्वा च्छिक्षाकल्पे ॥ वागरणेत्ति ॥ शब्दशास्त्रे ॥ छन्देत्ति ॥ पद्यलक्षणशास्त्रे ॥ निरुत्तेति ॥ शब्दव्युत्पत्तिकारकशास्त्रे ॥ जोइसामयणेत्ति ॥ ज्योति शास्त्रे ॥ बम्भण्णएसुत्ति ॥ ब्राह्मणसम्बन्धिषु । परिव्वायएसुयत्ति ॥ परिव्राजकमतकेषु ॥ नयेषु नीतिषु दर्शनेष्वित्यर्थ ॥ नियण्ठत्ति ॥ निर्ग्रन्थ श्रमणइत्यर्थ' ॥ वेसालियसावएत्ति ॥ विशाला महावीरजननी तस्या अपत्यमिति, वैशालिको भगवांस्तस्य वचन शृणोति तद्रसिकत्वा दिति वैशालिक' श्रावक' स्तद्वचनामृतपाननिरतइत्यर्थं ॥ इणमक्खेवत्ति ॥ एत माक्षेप प्रश्न ॥ पुच्छेत्ति ॥ पृष्टवान् ॥

॥ मूल ॥

नएसु सुपरिनिठ्ठिए यावि होत्था , तत्थण सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए परिवसइ , तएणं से पिंगलए नाम नियंठे वेसालिसावए अण्णया कयाइं जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदय कच्चायणसगोत्तं इण मक्खेव पुच्छे , मागहा ! किं सअंतेलोए अणंतेलोए

॥ भाषा ॥

व्याकरण तणु । ज्योतिष शास्त्रना जाण वाजाइनेविषे चपन प्रणाइनेविषे ब्राह्मण संबंधिनेविषे परिव्राजक मतभोनेविषे नोतनेविषे । सुपरिनिठ्ठिएया विहोत्था तत्थणसावत्थोएणयरीए । भलोपरि निपुणवेंनो जाण एहवो खंदकपरिव्राजक हुतो तेहनेविषे ण वाक्यालंकारे, सावत्थो नामे नगरीये । पिंगलएणामंणियठे वेसालियसावए परिवसइ । पिंगल नामे निर्ग्रंथ साधु श्रमण इत्यर्थ विशाला श्रोमहावोरनो माता तेहनोपुत्र श्रोमहावोर तेहना वचननो रसिकछे । तएणसेंपिंगलएणामणियंठे । तिवारे तेपिंगलनामे निर्ग्रंथ साधु । वेसालियसावए । श्रोमहावोरना वचन सुणिवाने रसिक । अण्णयाकयाइ जेणेवखंदए । एकदा प्रस्तावे जिहारेके जिहां खंदक परिव्राजक । कच्चायणसगोत्ते । तेणेउवागच्छइ२ त्ता । कात्यायनगोत्रोय तिहां आवे तिहां आवोने । खंदयकच्चायणगोत्त । स्कंदक कात्यायनगोत्रोय प्रते इणमक्खेवपुच्छा । इण आक्षेपे प्रश्नपूछे । मागहा । मगधदेशनो उपनो ते मागध । किंसअंतेलोए अणंतेलोए सअंतेजोवे अणंतेजोवे । स्यूं लोक अंत सहित एतावता लोकनो अ ।छे अथवा अनंतलोकछे लोकनो अतनथो, जोव अंत सहि

थिविपञ्चसूत्राणि, देवलोकसूत्राणि द्वादश' ग्रैवेयकसूत्राणि त्रीणि, अनुत्तरेषत्प्राग्भारासूत्रे द्वे, एवं द्विपञ्चाशत्सूत्राणि' धर्मास्तिकायस्य किं सङ्ख्येय भाग स्पृशन्ती त्याद्यभिलापेना वसेयानि, तत्र वकाशान्तराणि सङ्ख्येयभागं स्पृशन्ति' शेषा स्त्वसङ्ख्येयभागमिति निर्वचनं, एतान्येव सूत्रा ण्य धर्मास्तिकायलोकाकाशयोरिति, इहो क्तार्थसङ्ग्रहगाथा भावितार्थैव ॥ इतिद्वितीयशतेदशम. ॥ १० ॥ समाप्तचद्वितीयशतं ॥ २ ॥

सोहम्मेकप्पे जाव इसिपब्भाए पुढवीए तेसव्वेवि असंखेज्जइ भागं फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एवं अध म्मत्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाहा ॥ पुढवोदहीघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी संखेज्जइभागंअं तरे सुसेसाअसंखेज्जा ॥ वितियस्सदसमो उद्देसोसम्मत्तो ॥ १० ॥ वितियंसयं सम्मत्तं ॥ २ ॥

तमोनरक पृथिवीताई सर्वकहवा । जवूद्दोवाईयादीवा । जवूद्वीप आदिदेई असख्यातादोप । लवणसमुद्दाइयासमुद्दा । लवण समुद्र आदिदेई असख्या त समुद्र । एवसोहम्मेकप्पे । इम सौधर्म आदिदेई बार देवलोक नव ग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान । जावईसिप्पभारापुढवीए । यावत् सिद्धि शिला ई । तेसव्वेविअसखेज्जइभाग फुसइ । ते सगलाई धर्मास्तिकायनो असख्यातमोभाग फरसेछे । सेसापडिसेहेयव्वा । शेष संख्यातमोभाग आदिदेई चारभागा प्रतिनिषेध करवा । एवअहम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्तिकायनो पणि स्पर्शना कहवी । एवलोयागासेवि । इम लोकाकाशनो पणि नास्पर्श कहवी । गाहा । संग्रहगाथा कहेछे—पुढवोउदहिघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी सखेज्जइभागअं तरेसुसेसाअसखेज्जा ॥ १ ॥ सात पृथिवी सात घनोदधि सात घनवात सात तनुवात । बार देवलोक नव ग्रैवेयक पच अनुत्तरविमान सिद्धसिला एसर्वमाहे जे आकाशांतर ते धर्मास्तिकायादिक नो सख्यातमोभाग फरसै गाथा पचसूत्रकहवा, पृथिवी १ घनोदधि २ घनवात ३ तनुवात ४ आकाशांतर ५ तिवारे सातेई पृथिवीना ३५ सूत्रथया वा रदेवलोकना १२ सूत्र नव ग्रैवेयकना ३ सूत्र पचअनुत्तरनो १ सूत्र ईषत्प्राग्भारानो १ सूत्र इम ५२ सूत्र थया ते धर्मास्तिकायनो सख्यातमोभाग फरसै इत्यादि आलावेकरी कहवा, तिहां आकाशातर संख्यातमेभागे फरसै बीजा सर्व असख्यातमेभागे फरसे । विइयसयस्सदसमोउद्देसो सम्मत्तो । एह बी जा शतकनो दशमो उद्देशो अर्थथी लख्यो ॥ १० ॥ वितियसयसम्मत । एबीजो शतक अर्थथी पूरोलिख्यो ॥ २ ॥

फुसइ । णोसंखेज्जेन्नाणं फुसइ , णोत्र्प्रसंखेज्जेन्नागं फुसइ , नोसव्वं संखेज्जइन्नागं फुसइ , त्र्प्रसंखेज्जइन्नागं फुसइ । इमीसेणं न्नते ! रयणप्पन्नाए पुढवीए घणोदही धम्मात्थिकायस्स किं सखेज्जइन्नागं फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पन्नाए तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि । इमीसेणं न्नते ! रयणप्पन्नाए पुढवीए उवासंतरे धम्मात्थिकायस्स किं संखेज्जइन्नागं फुसइ, त्र्प्रसखेज्जइन्नागं फुसइ पुच्छा? गोयमा ! संखेज्जइन्नागं फुसइ णोत्र्प्रसंखेज्जइन्नाग फुसइ नोसंखेज्जे नोत्र्प्रसंखेज्जे नोसव्वं फुसइ । उवासंतराइ सव्वाइं जहा रयणप्पन्नाए पुढवीए वत्तव्वया न्नाणिया एवं जाव त्र्प्रहे सत्तमाए जबूद्दीवाइयादीवा लवणसमुद्दाइया समुद्दा एवं

असंखेज्जइभागफुसइ । असंख्यातमो भागफरसे एकलाख अगोमइस्र योजन पिंड माटे । णोसंखे णोअसंखे णोसव्वफुसइ । सख्यातमोभागनेविषे सर्व नही असंख्यातमोभागनेविषे स्पर्शेनही सर्व स्पर्शेनही यनोपूछे छे—इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएघणोदही । एह हे भगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनो घनोदधि । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जभागफुसइ । धर्मास्तिकायने स्यू संख्यातमोभाग फरसे पर्याय । जहारयणप्पभातहाघणोदहि घणवाय तणुवायावि । जिम रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कह्यो तिम घनोदधि १ घनवात २ तनुवात ३ एतीन कहवा, एतले प्रत्येके असंख्यातमेभागे फरसे । इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएउवासंतरे । एह हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनो आकाशांतर ते । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइभाग फुसइ । धर्मास्तिकायनो स्यू संख्यातमोभाग फरसे किंवा । असंखेज्जइभागफुसइपुच्छा । असंख्यातमो भाग फरसे इत्यादि पूछ्यू । गोयमा संखेज्जइभाग फुसइ । हे गोतम । संख्यातमे भागे फरसे ए असंख्यात योजनछे तेमाटे । णोअसंखेज्जइभागफुसइ । असंख्यातमो भाग फरसेनही । णोसंखेज्जे णोअसंखेज्जे णोसव्वफुसइ । संख्यातमोभागनेविषे फरसेनही असंख्यातमोभागनेविषे फरसेनही सर्व फरसेनही । उवासंतराइंसव्वाइं । आकाशांतर सर्व । जहारयणप्पभा० पुढवीए वत्तव्वया भाणियव्वा एवंजावअहे सत्तमाए । जिम रत्नप्रभा पृथिवीनो आकाशांतर कह्यो, तिम सातेइ नरक पृथिवीना कहवा, एतले संख्यातमोभाग फरसे इत्यर्थ, इम यावत् नीचे सा

॥ टीका ॥

रा दधोलोकादीना धर्मास्तिकायादिगता स्पर्शना दर्शयन्निदमाह ॥ अहेलोएणमित्यादि ॥ सातिरेगमद्धति ॥ लोकव्यापकत्वा द्धर्मास्तिकायस्य सा तिरेकसप्तरज्जुप्रमाणत्वा चाधोलोकस्य ॥ असंखेज्जइजागति ॥ असङ्ख्यातयोजनप्रमाणस्य धर्मास्तिकायस्या ष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्लोको सङ्ख्य तजागवर्त्तीति तस्या सा वसङ्ख्येयजागं स्पृशतीति ॥ देसोणअद्धति ॥ देशोनसप्तरज्जुप्रमाणत्वा दूर्द्धलोकस्येति ॥ इमाण जते । इत्यादि ॥ इह प्रतिपृ

॥ मूल ॥

त्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ञ्चाजिलावा । अहोलोएण जते ! धम्मत्थिकायस्स केवइय फुसइ , गोयमा ! सा तिरेगं अद्ध फुसइ । तिरियलोएणं जंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइजागंफुसइ । उड्ढलोएणं जंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसइ । इमाणं जते ! रयणप्पजाणं पुढवी धम्मत्थिकायस्स किंसखेज्जइ जागं फुसइ , असखेज्जइजागं फुसइ , संखेज्जेजागं फुसइ , असंखेज्जेजागं फुसइ , सव्वफुसइ ? गोयमा ! णो

॥ भाषा ॥

प्रतें स्पर्शनेरहे एहवी अनतरे कह्यु तेस्पर्शना धिकारथी अधोलोकादिकने धर्मास्तिकायादिगत स्पर्शना देखाडेछे—अहेलोएणभंतेधम्मत्थिकायस्सकेवइय फुसति । अधोलोक हेभगवन् । धर्मास्तिकायने केतलू स्पर्शे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सातिरेगंअद्धफुसइ । हेगौतम । धर्मास्तिकाय लोकव्यापकछे अने अ धोलोकसाधिक सातराज प्रमाणछे तेभणी साधिक अर्द्धस्पर्शे । तिरियलोएणभते पुच्छा । तिर्यग्लोक हेभगवन् । केतलो फरसे इसू पूछू । गोयमा अस खेज्जइभागफुसइ । हेगौतम । धर्मास्तिकाय असख्याता योजन प्रमाणछे अने तीर्छोलोक १८०० योजनछे तिवारे असख्यातमे भागे फरसे । उड्ढलोएण भतेपुच्छा । ऊर्द्धलोक हेभगवन् । केतलो फरसे इम पूछो । गोयमादेसूणअद्धंफुसइ । हेगौतम । देशेऊणा सातराजप्रमाण ऊर्द्धलोकछे तेमाटे देशोन अ र्द्धफरसे । इमाणभतेरयणप्पभापुढवीधम्मत्थिकायस्सकिंसखेज्जइभागंफुसइ । एह ण वाक्यालकारे, रत्नप्रभानामा पृथिवी धर्मास्तिकायनो स्यू सख्य तमो भाग फरसे । असखेज्जइभागफुसइ सखेज्जेभागेफुसइ । अथवा असख्यातमोभाग फरसे अथवा संख्यातमोभागनेविषे फरसे अथवा । असखेज्जेभागेफुसइ । असंख्यातमो भागनेविषे फरसे अथवा । सव्वफुसइ । सर्व फरसे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोसखेज्जइभागफुसइ । हेगौतम ' नही, सख्यातमोभाग फरसे ।

॥ टीका ॥

घुयगुणेहिंति ॥ अनन्तै स्वपर्यायपरपर्यायरूपै र्गुणै रगुरुलघुस्वभावै रित्यर्थ ॥ सव्वागासे अणंतभागूणेत्ति ॥ लोकाकाशस्या लोकाकाशापेक्षया ऽन न्तभागरूपत्वादिति, अथा नन्तरोक्तान् धर्मास्तिकायादी न्प्रमाणतो निरूपयन्नाह ॥ धम्मत्यिइत्यादि ॥ केमहालएत्ति ॥ लुप्तभावप्रत्ययत्वा न्निर्दे शस्य' कि महत्त्व यस्या सौ किमहत्त्व ॥ लोएत्ति ॥ लोको लोकप्रमितत्वात्' लोकव्यपदेशा द्वा, उच्यतेच॥ पचत्थिकायमइयलोयमित्यादि ॥ लोके चासौ वर्त्तत इदचा प्रश्नित मप्युक्त शिष्यहितत्वा दाचार्यस्येति, लोकमात्रो लोकपरिमाण सच किञ्चिन्न्यूनोपि व्यवहारत स्या दित्यत आह ॥ लो यप्पमाणेत्तिलोकप्रमाणो लोकप्रदेशप्रमाणत्वा त्तत्प्रदेशाना सचा न्योन्यानुवधेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुडेत्ति ॥ लोकेन लोकाकाशेन सकलस्व प्रदेशै' स्पृष्टो लोकस्पृष्ट स्तथा लोकमेवच सकलस्वप्रदेशै. स्पृष्ट्वातिष्ठतीति, पुद्गलास्तिकायो लोक स्पृष्ट्वा तिष्ठती त्यनन्तर मुक्त मिति स्पर्शनाधिका

॥ मूल ॥

अगुरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे । धम्मत्थिकाएणं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयचेवफुसित्ता णंचिठइ , एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे , जीव

॥ भाषा ॥

जीवा इत्यादि, तथा एक अजीव द्रव्यनो देशछे तेकिम अलोकाकाशने देशपणो लोकालोकरूप आकाशद्रव्यनाभाग रूपीछे। अगुरुय लहुय अणंते अगुरुय लहुय गुणेहिं सजत्ते सव्वागासे अणतभागूण धम्मत्थिकाएणभते केमहालए पणत्ते। गुरु लघुपणाथी अभावथी अगुरुलघुछे अनत स्वपर्यायरूप अगुरुलघु स्वभावेकरी सहितछे लोकाकाश अलोकाकाशनी अपेक्षाये अनतभाग रूपछे, तेणें ऊणो अलोकाकाशछे तेभणी सर्वाकाशने अनतमेभागे ऊ णो ॥ हिवे धर्मास्तिकायादिक प्रमाणथी कहैछे—धर्मास्तिकाय हेभगवन्। केतलो एकमोटो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा लोय लोयमेत्ते लोयप्पमा णे। हेगौतम। लोकपंचास्तिकायमय तेतलोछे लोकमात्रछे लोकप्रदेश प्रमाणछे। लोयफुडेलोयचेव फुसित्ताणचिट्ठइ। धर्मास्तिकायनाप्रदेश लोकाकाशे क री सकल स्वप्रदेश स्पृष्टछे तथा लोकप्रतें समस्त स्वप्रदेशे स्पर्शी रह्योछे। एवअहम्मत्थिकाए। इम अधर्मास्तिकाय पणि कहवो। लोयागासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पचविएकाभिलावा । इमलोकाकाशपणि जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एपाचेइना एकसरीखा आलावा कहवा, पुद्गलास्तिकाय लोक

एव धर्मास्तिकायादिदेशनिषेधायाह ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोअधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति ॥ चूर्णिकारो प्याह, अरूविणो दव्वा समुदय सद्देण भणंति नीसेसापएसेहिं वा नीसेसाभणोओ नो देसेण तस्स अणवट्ठियपमाणत्तणओ तेण नदेसेण निद्देसो जोपुणदेससद्दो एएसु कओ सो सवि सयगयववहारत्थं परदव्वफुसणादिगयववहारत्थचेति ॥ तत्र स्वविषये धर्मास्तिकायादिविषये यो देशस्य व्यवहारो–यथा धर्मास्तिकाय स्वदेशेनों ऊर्द्ध लोकाकाश व्याप्नोती त्यादि स्तदर्थ, तथा परद्रव्येण ऊर्द्धलोकाकाशादिना य स्वस्य स्पर्शनादिगतो व्यवहारो यथा ऊर्द्धलोकाकाशेन धर्मास्तिका यस्य देश स्पृश्यते इत्यादि स्तदर्थमिति ॥ अद्धासमएत्ति ॥ अद्धाकाल स्तल्लक्षणः समयः क्षणो ऽद्धासमय सचैकएव वर्त्तमानक्षणलक्षण , अतीतानाग तयो रसत्त्वादिति, कृत लोकाकाशगतप्रश्नपदकस्य निर्वचन, मथा लोकाकाशप्रतिप्रश्नय न्नाह ॥ पुच्छातहचेवत्ति ॥ यथा लोकाकाशप्रश्ने तथाहि– अलोकाकासेण भंते। किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसत्ति ॥ निर्वचन त्वेषा मषामपि निषेध, स्तथा ॥ एगेअजीव दव्वदेसेत्ति ॥ अलोकाकाशस्य देशत्व लोकालोकरूपाकाशद्रव्यस्य भागरूपत्वात् ॥ अगुरुअलहुयत्ति ॥ गुरुलघुत्वाव्यपदेशत्वात् ॥ अणंतेहिं अगुरुयल

काए नोअधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपदेसा । अद्धासमए । अलोयाकासेण भंते ! किंजीवा ? पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नोजीवा जाव नोअजीवप्पदेसा । एगेअजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं

से नो अधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति । ते देश शब्द धर्मास्तिकायादिकने कह्यो, ते स्वविषयगतव्यवहारनेअर्थे तथा परद्रव्य स्पर्शनादिगतव्यवहारनेअर्थे तिहा स्वविषयेजे देशव्यवहार ते कहेछे—जिम धर्मास्तिकाय स्वदेशेकरी ऊर्द्ध लोकाकाशप्रतें व्यापे, तथा परद्रव्य स्पर्शनादिगतव्यवहार कहेछे—जिम ऊर्द्धलोकाकाशेकरी धर्मास्तिकायनो देशस्पर्शीये तेहने अर्थे देशकह्यो । अद्धासमए अलोयागासेणभंतेकिंजीवापुच्छा तहचेव । काल ते लक्षण समय क्षण ते एकहीज वर्त्तमान लक्षणहुवे, अतीत अनागतनेविषे असत्वथकी लोकाकाशगतप्रश्ननो उत्तर कह्यो ॥ हिवे अलोकाकाश प्रतें पूछेछे—अलोकाकाशने विषे हेभगवन् । सूजीव इत्यादि प्रश्न तिमजपूछा । गोयमा णोजीवा जाव नो अजीवपदेसा एगेअजीवदव्वदेसे । हे गौतम ! छएनो निषेध कहवो, नो

॥ टीका ॥

वि अजीवप्पएसावि, इत्येत दर्यत.स्या दशूनां स्कंधानाञ्चा जीवग्रहणेन ग्रहणात् ॥ जेअरूवीतेपंचविहेत्यादि ॥ अन्यत्राप्यरूपिणो दशविधा उक्ता स्तद्यथा–आकाशास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेश श्चेत्येव धर्माधर्मास्तिकायौ समयश्चेति दश, इहतु सन्नेदस्या काशस्या धारत्वेन विवक्षितत्वा त्तदाधे या सप्त वक्तव्या भवन्ति, नच तेत्र विवक्षिता वक्ष्यमाणकारणा, घेतुविवक्षिता स्तानाह' पञ्चेति, कथमित्याह ॥ धम्मत्थिकायेत्यादि ॥ इह जीवाना पुद्गलानाच बहुत्वा देकस्यापि जीवस्य पुद्गलस्यवा, स्थाने सङ्कोचादितथाविधपरिणामवशा द्बहवो जीवा पुद्गलाश्च तथा तद्देशा स्तत्प्रदेशाश्च सम्भवन्ती तिकृत्वा जीवाश्च जीवदेशाश्च जीवप्रदेशाश्च, तथा रूपिद्रव्यापेक्षया अजीवाश्चा जीवदेशाश्चा जीवप्रदेशाश्चेति सङ्गत मेकत्रा प्याश्रये भेदवतो वस्तुत्रयस्य सद्भावात्, धर्मास्तिकायादौतु द्वितयमेव युक्त, यतो यदा सम्पूर्ण वस्तु विवक्ष्यते, तदा धर्मास्तिकायादी त्युच्यते, तदशविवक्षायान्तु तत्प्रदेशाइति तेषा मवस्थितरूपत्वात्, तद्देशकल्पना त्वयुक्ता तेषा मनवस्थितरूपत्वादिति' यद्यपिचा नवस्थितरूपत्व जीवादिदेशाना मप्यस्ति तथापि तेषा मेकत्रा श्रये भेदेन सम्भव. प्ररूपणाकारणा, मिहतु त न्नास्ति, धर्मास्तिकायादे रेकत्वा दसङ्कोचादि धर्मकत्वाच्चेति, अत

॥ मूल ॥

वी तेपंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा । अधम्मत्थि

॥ भाषा ॥

स्सपदेसा । इहा जीवना पुद्गलना वहुल थकी एकजीवने तथा पुद्गलने स्थानके सकोचादि तथाविध परिणामवशथकी घणाजीव तथा पुद्गल तेहना देश तेहनाप्रदेश संभवे इमकरीने जीव १ जीवदेश २ जीवप्रदेश ३ तथा रूपोद्रव्यनी अपेक्षायें अजीव १ अजीवदेश २ अजीव प्रदेश ३ हुवे, ते स्याभणी एक आश्रयने भेदवत वस्तु तीनना सद्भावथी, तिम धर्मास्तिकायादिकनेविषे बेहीज भेद युक्त जेमाटे जिवारे संपूर्णवस्तु विवक्षिये तो धर्मास्तिकाय एहव कहीये अने तेहना अंशनी विवक्षाकीजेतो तेहना प्रदेश इम कहीये, तेहने अवस्थितरूप पणाथी तेहनोहानि वृद्धिनही पणि तेहना देशनी कल्पना अयुक्त ते देशने हानि वृद्धिपणांथी यद्यपि अनवस्थितरूपपणो जीवादि देशने पणिछे तथापि एकत्र आश्रये भेदेंकरी संभवे प्ररूपणानू कारण तेहहानही धर्मास्ति धर्मास्तिकायादिकने एकपणाथी असंकोचादिपणाथी एतलामाटेज धर्मास्तिकायादि देशनिषेधवानेकाजे कहेछे–णोधम्मत्थिकायस्सदे

॥ टीका ॥

व भवन्ति, जीवाद्यव्यतिरिक्तत्वा द्देशादीनां, ततो जीवाजीवग्रहणे किं देशादिग्रहणेनेति? नैव निरवयवाजीवादयइति मतव्यवच्छेदार्थत्वा दस्येति, अत्रोत्तर ॥ गोयमा! जीवावीत्यादि ॥ अनेन चाद्यप्रश्नत्रयस्य निर्वचन मुक्तं, अथा त्यस्य प्रश्नत्रयस्य निर्वचनमाह ॥ जेअजीवेत्यादि॥ रूवीयत्ति ॥ मूर्त्ता पुद्गला इत्यर्थः ॥ अरूवीयत्ति ॥ अमूर्त्ता धर्मास्तिकायादय इत्यर्थ ॥ खधत्ति ॥ परमाणुप्रचयात्मका स्कधा, स्कधदेशा द्व्यादयो विभागाः, स्कधप्रदेशा स्तस्यैव निरंशा अंशा ' परमाणुपुद्गलाः स्कधभाव मनापन्नाः परमाणवइति, ततो लोकाकाशे रूपिद्रव्यापेक्षया, अजीवावि अजीवदेसा

॥ मूल ॥

अजीवपदेसावि । जेजीवा तेनियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया, जेजीवदेसा तेनियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा । जेअजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—रूवी य अरूवीय, जेरूवी ते चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । जेअरू

॥ भाषा ॥

देसा । ते निश्चे एकेंद्रीजीवना देश इत्यादि । जावअणिंदियदेसा । यावत् सिद्धनादेशछे । जजीवपदेसातेणियमाएगिंदियपदेसा । जे जीवना प्रदेशछे ते निश्चे एकेंद्रीना प्रदेश । जावअणिंदियपदेसा । यावत् अनिंद्रीना प्रदेश सिद्धना प्रदेशछे । जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीय अरूवीय । जे अजीवछे तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—रूपी अजीव अरूपी अजीव अमूर्त्त धर्मास्तिकादि इत्यर्थः । जेरूवी तेचउव्विहा पन्नत्ता तंजहा । जेरूपी अजीव ते पुद्गल तेहना चारभेद कह्या तेकहेछे—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । परमाणु प्रचयरूप १ द्व्यादिक विभाग २ तेहनानिर्विभाग अंश ३ स्कंधभाव प्रतें नपाम्या ते परमाणु कहीये ४ एतले लोकाकाशनेविषे रूपी द्रव्यआश्रीने अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि एअर्थ थको अणु, ने अथवा स्कंधने जीवग्रहणेंकरी ग्रह्या । जेअरूवी तपचविहा पन्नत्ता तंजहा धम्मत्थिकाए । जे अरूपी ते पंच प्रकारना कह्या ते कहेछे—बीजे स्थानके अरूपी दशप्रकारना कह्या तेकिम आकाशास्तिकाय १ तद्देश २ तत्प्रदेश ३ एव धर्मना ३ अधर्मना ३ अद्धासमय १० ते इहां तीनभेद सहित आकाश ने आधारपणें कह्यो तेहना आधेय सात भेद कहवा, पणि जे इहां नकह्या वक्ष्यमाण कारणथकी ते कहेछे पचेति । नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकाय

नन्तरं जीवचिन्तासूत्रमुक्तमथ तदाधारत्वेना काशचिन्तासूत्राणि ॥ कतिविहेणं भंते । इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो र्लक्षण मिदं—धर्मा दीनावृत्ति र्द्रव्याणां भवतियत्र तत्क्षेत्र । तैर्द्रव्यैः सहलोक स्तद्विपरीतह्यलोकाख्य मिति ॥ १ ॥ लोगागासेणमित्यादि, षट्प्रश्ना, स्तत्र लोकाकाशेऽ धिकरणे जीवति सम्पूर्णानि जीवद्रव्याणि ॥ जीवदेसत्ति ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादयो विभागा. ॥ जीवप्पएसत्ति ॥ तस्यैव बुद्धिकृता एव प्रकृष्टादेशा प्रदेशा निर्विभागा भागा इत्यर्थः ॥ अजीवत्ति ॥ धर्मास्तिकायादय ' ननु लोकाकाशे जीवा अजीवा श्चेत्युक्ते तद्देशप्रदेशा स्तत्रोक्ता ए

॥ टीका ॥

गोयमा ! जीवे सउठाणे जाव वत्तव्वंसिया । कइविहेणंभंते ! आगासे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० तं०—लोयागासेय अलोयागासेय, अलोयागासेणंभंते ! किंजीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि

॥ मूल ॥

वचिनासूत्रकह्यो ॥ हिवे तेजीवना आधार आकाशचितासूत्र कहेछे—कइविहेणंभंते आगासेपणत्ते लोयागासेय अलोयागासेय । केतले प्रकारे हेभगवन् ! आकाशकह्यो इतिप्रश्न, हेगौतम ! बिहुभेदे आकाश कह्यो ते कहेछे—लोकाकाश १ अलोकाकाश २ तिहा लोकाकाशनो एलक्षण धर्मास्तिकायादि द्रव्य जिहाहुवे ते लोकाकाश, तेहथी विपरीत ते अलोकाकाश कहीये । लोयागासेणंभंते किंजीवाजीवदेसाजीवपदेशा । लोकाकाशनेविषे हेभगवन् ! स्यूं जीव इत्यादि छप्रश्न तिहा लोकाकाश अधिकरणनेविषे 'जीवत्ति, सपूर्ण जीवद्रव्य जीवदेश जीवनोबुद्धि कृत प्रकृष्ट देश ते प्रदेशनिर्विभाग इत्य र्थ। अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिकायादिक ४ अजीवदेशद्व्यादिक विभाग ५, अजीवनिर्विभाग ६ । गोयमा जीवावि । हेगोत म । जीव पणिछे १ । जीवदेसावि । जीव देशपणिछे २ । जीवपदेशावि । जीवना प्रदेश पणिछे ३ । अजीवावि । अजीवपणिछे ४ । अजीवदेसावि अजीवनादेश पणिछे ५ । अजीवपदेसावि । अजीवना प्रदेश पणिछे ६ । जेजीवातेनियमाएगिंदिया । जे जीवछे निश्चे एकेंद्रीजीव । बेइंदिया तेइंदि या चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया जेजीवदेसा । बे इंद्रीजीव ते इंद्रीजीव चउरिंद्रीजीव पचेंद्रीजीव सिद्धजीव जे जीवना देश । तेणियमा एगिंदिय

॥ भाषा ॥

शिष्टचेतना पूर्वकत्वादिति ॥ अणंताणमाभिणिवोहियेत्यादि ॥ पर्यवाः प्रज्ञाकृता अविभागा पलिच्छेदा, स्तेचा नन्ता आभिनिवोधिकज्ञानस्या तो ऽनन्ताना माभिनिवोधिकज्ञानपर्यवाणा सम्बन्धिन मनन्ताभिनिवोधिकज्ञानपर्यवात्सकमित्यर्थः, उपयोग चेतनाविशेप गच्छतीतियोग , उत्थानादा वात्मभावेवर्त्तमान इतिहृदयस्य, अथ यद्युत्थानाद्यात्मभावे वर्त्तमानो जीव आभिनिबोधिकज्ञानाद्युपयोगं गच्छति' तत्कि मेतावतैव जीवभाव मु पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दित्याशङ्काह ॥ उवउगेत्यादि ॥ अत उपयोगलक्षण जीवभाव मुत्थानाद्यात्मभावेनो पदर्शयतीति वक्तव्यं स्या देवेति, अ

बोहियनाणपज्जवाणं एव सुयनाणपज्जवाण उहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणं मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणं चक्खुदंसणपज्जवाण अचक्खुदंसणपज्जवाणं उहिदसणपज्जवाणं केवलदसणपज्जवाणं उवउगंगच्छइ , उवउगलक्खणेण जीवे सेएणठेणं एवं वुच्चइ ,

ण आभिणिवोहियणाणपज्जवाण। हेगौतम। जीव अणता मतिज्ञान पर्यायात्मकछे उपयोग चेतना विशेष प्रते जाइ, इतियोग, उत्थानादिक आत्मभाव नेविषे वर्त्ते जेहनो वीजो भाग नहोय ते पर्याय कहीये। एवसुअणाण पज्जवाण। इम अनन्ता श्रुतज्ञानना पर्याय। ओहिणाणपज्जवाण। अनन्ता अव धि ज्ञानना पर्याय। मणपज्जवणाणपज्जवाण। अनन्ता मनपर्यव ज्ञानना पर्याय। केवलणाणपज्जवाण। अनन्ता केवलज्ञानना पर्याय। मइअणाणपज्ज वाण। अनन्ता मति अज्ञानना पर्याय। सुअअणाणपज्जवाण। अनन्ता श्रुत अज्ञानना पर्याय। विभगणाणपज्जवाण। अनता विभगज्ञानना पर्याय। चक्खुदसणपज्जवाण। अनना चक्षुदर्शनना पर्याय। अचक्खुदसणपज्जवाण। अनता अचक्षुदर्शनना पर्याय। ओहिदंसणपज्जवाणं। अनता अवधिदर्शन ना पर्याय। केवल दसणपज्जवाण उवओगगच्छइ। अनंता केवलदर्शनना पर्याय उपयोग चैतन्यभाव प्रते जाय, उत्थानादि आत्मभावने विषे वर्त्तमा न। उवओगलक्खणेण जीवे। उपयोग लक्षणजीव एतलामाटे उपयोगलक्षण जीवप्रते उत्थानादिक आत्मभावेकरी देखाडे एहवू कहवाय। सेतेणट्ठे ण गोयमा एवंवुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम। इम कह्यु। गोयमाजीवे सउट्ठाणे जाववत्तव्वसिया। हेगौतम। जीव सउत्थान यावत् कहवाय अनतरेजा

॥ टीका ॥ णादीनां पुनः प्रदेशा अनन्ता वाच्या, अनन्तप्रदेशकत्वा त्तयाणामपीति, उपयोगगुणो जीवास्तिकाय प्राग्दर्शितो ऽथतद्देशभूतो जीव उत्थानादि गुणइति दर्शयन्नाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ इहच सउठाणेइत्यादीनि विशेषणानि मुक्तजीवव्युदासार्थानि ॥ आयभावेणति ॥ आत्मभावेन उत्थानशय नगमनभोजनादिरूपेणा त्मपरिणामविशेषेण ॥ जीवभावति ॥ जीवत्व चैतन्य मुपदर्शयति प्रकाशयति इतिवक्तव्यस्यात्, विशिष्टस्यो त्थानादे र्वि

॥ मूल ॥ काएवि एवचेव, नवरं, तिराहंपि पएसा अणंता भाणियव्वा। सेस तंचेव। जीवेण भंते! सउठाणे स कम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदसेईति वत्तव्वंसिया? हंता गोयमा! जीवेण सउठाणे जाव उवदसेईति वत्तव्वंसिया। सेकेणठेणंजाव वत्तव्वंसिया? गोयमा! जीवेण आणंतिणि

॥ भाषा ॥ ही प्रदेश आछादायता तेहने धर्मास्तिकाय नकहीये। एवमहम्मत्थिकाएणवि। इम धर्मास्तिकायनी परे अधर्मास्तिकाय पणि कहवो। आगासत्थिकाय। आकाशास्तिकाय पणि। जीवत्थिकाय। जीवास्तिकाय। पोग्गलत्थिकाएविएवचेव। पुद्गलास्तिकाय पणि २ ए तोनेइ इमहीज जाणवा। णवरंतिण्हं पि पएसाअणताभाणियव्वा सेसंतंचेव। एतलो विशेष धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ एबेहुना प्रत्येके असंख्यातापदेश कह्या, अने ए तोनना अन तापदेश कहवा, यावत् सर्व तिमज कहवो। जीवेणभंते सउठाणेसकम्मे। योग गुण जीवास्तिकाय पूर्वंकह्यो ॥ हिवे तद्देशभूत जीवने उत्थानादि गुण ते देखाडेछे—जीवहेभगवन्। सउत्थान ऊंचोथयो ते सहित गमनादि क्रियासहित ते सकर्म। सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे। शरीरनो समर्थता इंसहित जीवनो उत्साह तेसहित पुरुषनो अभिमान ते सहित कामपरी कीधो। आयभावेणजीवभावेणउवदसेतोतिवत्तव्वसिया। आत्मभाव उत्थान शयन गमनादिरूप आत्मपरिणाम विशेष तिणेंकरी जीभाव जीवपणो एतावता चैतन्यपणो देखाडे प्रकाशे इतिकहवो कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हां गौतम। जीवेणसउठाणेजावउवदसेतीतिवत्तव्वसिया। जाव उत्थान शयनादि आत्मपरिणामविशेष तेणे यावत् जीवभाव चैतन्यपणो दे खाडेछे—एहवो कहवो हुवे। सेकेणठेण जाववत्तव्वसिया। ते स्ये अर्थे यावत् चैतन्यपणो देखाडेछे इम कहवा इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवेण अणंता

॥ टीका ॥

ऽधिकर्णोपि श्वाश्वैव, नगातिच–एकदेशविकलमनन्यवदिति ॥ सेकिखाइति ॥ अथ किं एकदेशो नोनमपि वस्तु वस्त्वेव' यथा खण्डोपि घटो घटएव' छिन्नकर्णोपि श्वाश्वैव, नगातिच–एकदेशविकलमनन्यवदिति ॥ सेकिखाइति ॥ अथ किं एकदेशो नोनमपि वस्तु वस्त्वेव' यथा खण्डोपि घटो घटएव' पुनरित्यर्थ ॥ मव्वेत्ति ॥ समस्ता स्तेच देशापेनयापि नवन्ति प्रकारकात्स्न्र्येपि सर्वशद्दप्रवृत्ते रित्यतआह ॥ कसिणत्ति ॥ कृत्स्ना नतु तदेकदेशापे क्षया सर्वइत्यर्थ, स्तेच स्वस्वभावरहिता अपि नवन्तीत्यतआह, प्रतिपूर्णा आत्मस्वरूपेण विकला, स्तेच प्रदेशान्तरापेक्षया स्वस्वभावन्यूनाअपि त थोच्यन्तइत्याह ॥ णिरवसेसत्ति ॥ प्रदेशान्तरतोपि स्वस्वभावेना न्यूना , तथा ॥ एगग्गहणगहियत्ति ॥ एकग्रहणे नैकशब्देन धर्म्मास्तिकायइत्येव लक्षणेन गृहीता ये ते तथा, एकशब्दाभिधेया इत्यर्थ, एकार्था श्चेतेशब्दा ॥ पएसाअणंताभाणियव्वत्ति ॥ धर्म्माधर्म्मयो रसङ्ख्या प्रदेशा उक्ता' आका

॥ मूल ॥

मोयए । सेतेणट्ठेण गोयमा ! एववुच्चइ एगेधम्मत्थिकायपदेसे णोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया जाव एगपदे सूणेवियण धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया। सेकिखाइएणभंते ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया? गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपएसा तेसव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एक्कग्गहणगहिया एसणं गोयमा ! धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया । एवंअहम्मत्थिकाएवि आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थि

॥ भाषा ॥

यावत् एक प्रदेशे ऊणो धर्मास्तिकाय नकहीये, एनिश्चे सम्हनेमते कह्यो पणि व्यवहार नयनेमते एक देशेकरी न्यून पणि वस्तु ते वस्तुहीज कहीये जि मखाडो पणि घडो घडोहीज कहीये , छेद्या काननो पणि कूतरो कूतरोहीज कहीये, इम खोडापुरुष इत्यादि जाणवा । सेकिखाइएणभंतेधम्मत्थिका एत्तिवत्तव्वसिया । ते स्याने ख्याति प्रसिद्ध अर्थे हेभगवन् ! धर्मास्तिकाय इसो कहवाय, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जाधम्मत्थिकायपदेसातेसव्वे कसिणापडिपुण्णाणिरवसेसा । हेगोतम असंख्याता धर्मास्तिकायना प्रदेश ते सर्व समय प्रतिपूर्ण आत्मस्वरूपे करी विकलनही ते पणि प्रदेशान्तरथकी पणि स्वस्वभावेकरी न्यून नही एतले एक प्रदेशनो पणि अंतरनही । एगग्गहणगहिया । एक शब्दे धर्मास्ति एहवे लक्षणेकरी जे एसर्व शब्द एकार्थछे। एसणं गोयमा धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एहने हेगोतम । धर्मास्तिकाय कहीये इहा एभावार्थ धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशछे तेमाहि जो एक

॥ टीका ॥

सम्बन्धेन जीवेन वा; औदारिकादिभिः प्रकारैरिति ॥ खण्डचक्केइत्यादि ॥ यथा खण्डचक्रं चक्रं न भवति खंडचक्र मित्येव तस्य व्यपदिश्यमानत्वा दपितु सकलमेव चक्रं चक्रं भवति, एवं धर्मास्तिकायः प्रदेशेना प्यूनो न धर्मास्तिकायइति वक्तव्यः स्यादेतच्च निश्चयनयदर्शनं, व्यवहारनयमतन्तु

॥ मूल ॥

नोधम्मत्यिकायेत्ति वत्तव्वं सिया, जाव एगपदेसूणेवियणं धम्मत्यिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वंसिया। सेणूण गोयमा! खंडेचक्के सगलेचक्के? भगवं! नोखंडेचक्के सगलेचक्के। एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे

॥ भाषा ॥

कायप्रदेश। धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया। धर्मास्तिकाय इम कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगोतम। एअर्थ समर्थनही युक्तनही। एगपदेसूणेवियणभतेधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया। एक प्रदेशे ऊंणो पिण चपुन ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय इसो कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगोतम। ए अर्थसमर्थनही युक्तनही, तिवारे गोतम कहेछे—सेकेणट्ठेणभतेएववुच्चइ। ते स्यें प्रयो जने हेभगवन्। इमकह्यु। एगे धम्मत्थिकायपदेसेणोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया। एक धर्मास्तिकायमां प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय एहवू कहवायनही इ त्यादि। जावएगपदेसूणेवियणधम्मत्थिकाए। यावत् एक प्रदेशे ऊणो पणि, चपुन णवाक्यालकारे, धर्मास्तिकाय तेहने। णोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया धर्मास्तिकाय एहवू नकहिये इतिप्रश्न। सेणूण गोयमा खडेचक्के सगलेचक्के। ते निश्चे हेगोतम। चक्रनाखडने चक्र कहीये, अथवा सगला चक्रने चक्र कहीये, खडकहता तेहना कटका इमा भगवतेपूछ्यो तिवारे गोतम बोल्या। भगवणोखडेचक्के सगलेचक्केएव छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोयए। हेभगवन्। नही चक्रनोखडने चक्र कहीये सर्वने चक्र कहीये, इम छत्रना खडने छत्रनकहीये सर्वने छत्र कहीये, इम चर्मना खडने चर्म नकहीये दडनाखडने द डनकहीये, वस्त्रना खडने वस्त्रनकहीये, आयुधखडने आयुध नकहीये, मोदकना खडने मोदक नकहीये, एतावता सर्वचर्मने चर्म इम दड वस्त्र आयुध मोदक सर्वनेकहीये जेमाटे हेगोतम। जिम चक्रना खड खडज कहीये पणि तेहने चक्र नकहवाये सगलोहोज चक्र तेहने चक्रकहीये। तेणे अ र्थे हेगोतम। इम कह्यु एक धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय नकहीये इत्यादि। जावएगपदेसूणेवियणधम्मत्थिकाएनोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वंसिया।

यइति ॥ अवर्णेइत्यादि ॥ यतएवा वर्णादि रतएवा रूपी अमूर्त्तः' नतु नि:स्वभावो नञ पर्युदासवृत्तित्वात् शाश्वतो द्रव्यतो ऽवस्थित प्रदेशात ॥ लोगद्रव्यति ॥ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्या ग्रभूत द्रव्यं लोकद्रव्य भावतइति पर्यायत ॥ गुणओत्ति ॥ कार्यत ॥ गमणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलानां गतिपरिणतानां गत्युपष्टम्भहेतु मंत्स्याना जलमिवेति ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलाना स्थितिपरिणताना स्थित्युपष्टम्भहेतु मंत्स्याना स्थलमिवेति ॥ अवगाहणागुणेत्ति ॥ जीवादीना मवकाशहेतु बंदराणां कुण्डमिव ॥ उवओगगुणेत्ति ॥ उपयोगश्चैतन्य साकारानाकारभेद ॥ गहणगुणेत्ति ॥ ग्रहण परस्परेण

णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, खेत्तउ लोयप्पमाणमेत्ते, कालउ नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावउ वण्णमते गंधरसफासमंते, गुणउ गहणगुणे, एगेभंते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णोइणठेसमठे, एवं दोन्निवि तिन्निवि चत्तारि पंच छ सत्त अठ नव दस संखेज्जा असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे, एगपदेसूणेवियणं धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? णोइ० सेकेणठेण भंते ! एवं वुच्चइ, एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

अणताइं दव्वाइं खेत्तओलोयप्पमाणमेत्ते। पुद्गल द्रव्य अनन्ताछे क्षेत्रथी लोकप्रमाण मात्र एतले चउद राज प्रमाणछे। कालओनकयाइनआसि। कालथी कदेईनथो इमनथी तीनेकालेछे। जावणिच्चे भावओवण्णमते। यावत् नित्यछे भावथो वर्णसहितछे। गंधमते रसमते फासमते गुणओगहणगुणे। गंधदोयसहितछे रस पांचसहितछे फरस आठसहितछे कार्यथो परस्पर संबंध करवो जोवे औदारिकादि प्रकारे धर्मास्तिकायना अधिकारवोल कहेछे—एगभंतेधम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकायेत्तिवत्तव्वसिया। एक हेभगवन् ! धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहप्रतें धर्मास्तिकाय एहवूं कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणठेसमठे। हेगौतम ! एअर्थ समर्थनहो युक्तनथो। एवंदोन्निवितिन्निविचत्तारिपंचम छसत्तअठनवदससंखेज्जाअसंखेज्जाभंतेधम्मत्थिकायप्पदेसा। इम दोयप्रदेशने तीनप्रदेशने चारप्रदेशने पांचप्रदेशने छप्रदेशने सातप्रदेशने आठप्रदेशने नवप्रदेशने दशप्रदेशने सख्यातप्रदेशने असख्यातप्रदेशने हेभगवन् ! धर्मास्ति

गंधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवठिए लोगदव्वे सेसमासत्ते पंच विहे पन्नत्ते तजहा—दव्वत्ते जाव गुणत्ते, दव्वत्तेणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं, खेत्तत्ते लोगप्पमा णमेत्ते, कालत्ते नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावत्ते पुण अवन्ने अगंधे अरसफासे, गुणत्ते उवत्तगगुणे, पोग्गलत्थिकाएणं भंते! कइवन्ने कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अठफासे रूवी अजीवे सासए अवठिए लोगदव्वे, से समासत्ते पंचविहे पन्नत्ते तंजहा—दव्वत्ते खेत्तत्ते कालत्ते भावत्ते गुणत्ते, दव्वत्ते

हगुणे। यावत् गुणथी कायथी जीवादिकने अवकाशहेतुछे। जीवत्थिकाएणभंतेकइवणे। जीवास्तिकाय ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ! केतलावर्ण। कइग धे कइरसे कइफासे। केतला गध केतलारस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अवणेजावअरूवी। हेगौतम। वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त्त। जी वेसासए अवठिए लोगदव्वे सेसमासओ पचविहे पणत्ते तजहा। चैतन्यरूप सदा कालीन स्थिर नियत अवस्थित लोकद्रव्य ते जीवास्तिकाय संक्षेपथी पाच भेदछे ते कहेछे—दव्वओ जावगुणओ दव्वओणजीवत्थिकाए। द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथो जीवास्तिकाय। अणताइ जीवदव्वाइ खेत्तओलोगप्पमाण मेत्ते। अनन्ता जीवद्रव्य क्षेत्रथी जीव लोकप्रमाणमात्रछे। कालओनकयाइनआसि। कालथी कदेई जीवद्रव्य नही हमनही। जावणिच्चे भावओपुण अवणे। यावत् नित्यछे भावथो वर्णपर्यायथी वर्णरहित। अगंधे अरसे अफासे गुणओउवओगगुणे। गधरहित रसरहित फरसरहित कायथी उपयोग चैतन्य साकार अनाकार तद्रूपजीव। पोग्गलत्थिकाएणभंतेकइवणे। पुद्गलास्तिकाय ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। केतलावर्ण। कइगंधरसफासे। केतला गध रस फरसकह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पचवणे। हेगौतम पांचवर्णछे। पंचरसे दुगधे अठफासे रूवी अजीवे सासए। पाच रसछे दोयगधछे आठ फरसछे रूपीछे चैतन्यरहित शाश्वतोछे। अवठिए लोगदव्वे सेसमासओपचविहे पणत्ते तजहा दव्वओ। अवस्थितछे लोकद्रव्यछे ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पाचभेदछे ते कहेछे—द्रव्यथी। खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओणपोग्गलत्थिकाए। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

॥ टीका ॥ पत्वा द्धर्मास्तिकाय' स्ततश्च तदाधारत्वा दाकाशास्तिकाय, स्ततो ऽनन्तत्वाऽमूर्त्तत्वसाधर्म्या ज्जीवास्तिकाय, स्तत स्तदुपष्टम्भकत्वात् पुद्गलास्तिका

॥ मूल ॥ दव्वत्र खेत्तत्र कालत्र भावत्र गुणत्र, दव्वत्रणं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तत्र लोगप्पमाणमेत्ते, कालत्र नक याइनआसि नकयाइनत्थि जाव निच्चे, भावत्र अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणत्र गमणगुणे। अह म्मत्थिकाएवि एवंचेव, नवरं, गुणत्र ठाणगुणे। आगासत्थिकाएवि एवचेव, नवर खेत्तत्रण आगासत्थि काए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणतेचेव जाव गुणत्र अवगाहगुणे। जीवत्थिकाएणं भंते ! कइवसे कइ

॥ भाषा ॥ वर्णादिकनही तेमाटे अरूपीछे, चेतन्यगुणरहित द्रव्यथी सास्वतीछे, प्रदेशथी अवस्थितछे, लोकजे पचास्तिकायात्मक तेहनो अशभूत द्रव्यछे। सेसमासत्रोपंच विहे पणत्ते तजहा। ते धर्मास्तिकाय सक्षेपथी पाचभेदे कह्यो ते कहेछे—दव्वत्रो खेतत्रो कालत्रो भावत्रो गुणत्रो। द्रव्यथी १ क्षेत्रथी २ कालथी ३ भावथी ४ गुणथी ५। दव्वत्रोणधम्मत्थिकाए एगेदव्वे। द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे। खेतत्रोलोगप्पमाणमेत्ते। क्षेत्रथी धर्मास्तिकाय चउद राजलोक प्रमाणछे, कालथी धर्मास्तिकाय। कालत्रोनकयाइनआसिनकयाइनत्थि। अतीतकाले कदापि नहुतो इमनही वर्त्तमानकालेनछे आगामिकालेनहुस्ये इमनही। जावणिच्चे भावत्रो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे गुणत्रोगमणगुणे। यावत् नित्यछे, भावथी धर्मास्तिकाय पर्यायथी वर्णरहित गधरहितछे रस रहितछे स्पर्शरहितछे गुणथी कार्यथी जीव पुद्गलने गति परिणतने गतिउपष्टम्भ हेतु जिम माछलीने जल तिम। अहम्मत्थिकाएविएवचेव। अधर्मास्तिकाय पणि निश्चे इमज पचप्रकारे धर्मास्तिकायनो परे कहवो। णवर गुणत्रोठाणगुणे। एतलोविशेष गुणथी कार्यथी जीवपुद्गलने स्थितिपरिणतने स्थितिउपष्टम्भ हेतु जिम मत्स्यने थल तिम। आगासत्थिकाएविएवचेव। आकाशास्तिकाय पणि पाचभेदे इमज कहवो। णवरखेत्तत्रोणआगासत्थिकाएलोयालोयप्पमाणमेत्ते। एतलोविशेष क्षेत्रथी आकाशास्तिकाय लोक तथा अलोक एवेऊ प्रमाणमात्र कहवो। अणतेचेव। अनन्तछे निश्चेसू। जावगुणत्रोअवगा

[illegible] ॥ इति द्वितीयस्याष्टमउद्देश ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ किमित्यादि ॥ [illegible]
[illegible] परतोऽपि नास्त्या [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] मित्यादि ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] प्रत्येकं [illegible]
[illegible] २ [illegible]

पमाणस्स वत्तव्वया ॥ इइ बिईयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ किमिदं भंते ! समयखेत्तेत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा दोयसमुद्दा एसणं एवइए समयखेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थ

[illegible] सामानिक [illegible] यावत् [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

धिकानि भवन्ति, एतेभ्य प्रासादेभ्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि सभा सुधर्मा सिद्धायतन मुपपातसभा, ह्रदो ऽभिषेकसभा, लङ्कारसभा व्यवसायसभा चेति, एतानिच सुधर्मसभादीनि सौधर्मवैमानिकसभादिभ्य प्रमाणतो ऽर्द्धप्रमाणानि, तत श्चोच्च्य इहैषा षट्त्रिंशद्योजनानि पञ्चाशदायामो विष्कम्भश्च पञ्चविंशतिरिति, एतेषाच विजयदेवसम्बन्धिनामिव, अणेगखम्भसयसन्निविट्ठा अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयाइत्यादि वर्णको वाच्य , तथा दारार्णां उप्पिबहवे अट्ठट्ठमंगलगाझया छत्ताइछत्ता इत्यादि रलङ्कारश्च सभादीना वाच्य, सर्वञ्च जीवाभिगमोक्त विजयदेवसम्बन्धिचमरस्य वाच्य, याव दुपपातसभाया सङ्कल्प श्चाभिनवोत्पन्नस्य किं मम पूर्वं पश्चाद्वा, कर्त्तु श्रेय इत्यादिरूप अभिषेक श्चाभिषेकसभाया महर्घ्यो सामानिकादिदेवकृत, विभूषणाच वस्त्रालङ्कारकृता ध्यलङ्कारसभायां, व्यवसायश्च व्यवसायसभाया, पुस्तकवाचनतो ऽर्चनिकाच सिद्धायतने सिद्धप्रतिमादीना, सुधर्मसभागमनच सामानिकादिपरिवारोपेतस्य चमरस्य परिवारश्च सामानिकादि ऋद्धिमत्त्वञ्च, एवं महिड्ढिएइत्यादिवचनं वाच्य मस्येति, एतच्च वा

१६ ६२॥ यो० । ६४ ३१। यो० । २५६ १५। ५ भाग सर्व ३४१ थया एह प्रासादथी ईशान कूणि सुधर्मा सभा सिद्धायतन उपपातसभा ह्रदअभिषेकसभा अलङ्कारसभा व्यवसायसभाछे, एसुधर्मासभा आदिदेई सौधर्म वैमानिकसभादिकना प्रमाण अर्द्धप्रमाण एहनो जांणवो तिवारे एहने उंचपणें ३६ योजन ५० योजन आयामे २५ योजन विष्कम्भे एहने विजयदेवसर्ववीनोपरे अनेक खम्भसयसन्निविट्ठा इत्यादि, वर्णक कहवो एजीवाभिगमेकह्यो, विजयदेवसवधे तिम इहा चमरने संवधे कहवूं यावत् उववाओसकप्पो इत्यादि, । उववाओसंकप्पो । देवता उपपात सय्या उपजे कवण पहिली करणी कवण पछेकरणी इत्यादि । अभिसेय विभूसणाओ ववसाओ अच्चणिज्जसुहम्माय चमरपरिवारइड्ढित्त जावविहरइ । अभिषेक कीधा देवते ठकुराइ इत्यादि वस्त्र अलकार पहिरा अलंकारसभा व्यवसायसभा पुस्तकवाच्या सिद्धायतन प्रतिमादिकनी पूजाकीधी सुधर्मासभा जिहा परिवारमिलै सामानि

सर्वस्यो च्छ्रयादिप्रमाणं सौधर्म्मवैमानिकविमानप्राकारप्रासादसभादिवस्तुगतप्रमाणस्या र्द्धं नेतव्यं' तथाहि–सौधर्म्मवैमानिकाना विमानप्राकारो योजनाना त्रीणिशता न्युच्चत्वेन एतस्यास्तु सार्द्धशतं, तथा सौधर्म्मवैमानिकाना मूलप्रासाद पञ्चयोजनाना शतानि, तदन्ये चत्वार स्तत्परिवार भूता. सार्द्धे द्वे शते प्रत्येकच तेषा चतुर्णां मप्यन्ये परिवारभूता श्चत्वारः सपाद शतं, एव मन्ये तत्परिवारभूता सार्द्धा द्विषष्टि, एव मन्ये सपादै कत्रिंशत्, इहतु मूलप्रासादः सार्द्धे द्वे योजनशते एव मर्द्धार्द्धहीना स्तदपरे यावदन्तिमा पञ्चदशयोजनानि, पञ्चच योजनस्या ष्टाशा, एतदेव वा चनान्तरे उक्त–चत्तारि परिवाडीओ पासायवडिंसगाण अद्धद्धहीणाउत्ति' एतेषाच प्रासादाना चतसृष्वपि परिपाटिषु त्रीणि शता न्येकचत्वारिंशद

पन्नासं जोयणसहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, सव्वप्पमाण वेमाणियस्स

पसयाइं उढ्ढउच्चत्तेण। ते वारणा अढाईसे योजन ऊचा ऊ चपणेछे। एगपणवीसजोअणसए १७५ विक्ख भेण। एकसो पचोत्तर योजन विक्खंभपणे १७५। उवारियलेणसोलसजोअणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं। घरना पीठ बधसरीखो १६००० सहस्र योजन दीर्घपणे पिहुलपणेछे। पण्णासजोअणसहस्साइं पचयसत्ताणउइजोअणसए। पचास सहस्रयोजन पाचसे सत्ताणवे योजन। किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेण। कांइक विशेषे ऊणो परिधि जाणवो। सव्वप्पमा णं। एअर्थ जे ते राजधानीनेविषे प्राकारगढ प्रासादघर सभादिकवस्तुछे, ते सर्वनो उचादिक प्रमाण ते सौधर्म वैमानिक प्राकार प्रासादादिकनो जे प्रमाणकह्योछे तेहथी अर्द्धजाणवो ते देखाडेछे–सौधर्म वैमानिक चार विमानना प्राकार तीनसे ३०० योजन ऊ चपणेछे तेमाटे एहनो १५०, तथा सौ धर्म वैमानिकने मूलप्रासाद ५०० योजनना तेहथी वीजा ४ तेहनो परिभूत २५० योजन, ते चारिना प्रत्येके वीजा चार २ विमान तेहना परिवारभूत २५० योजन इम वीजा ते परिवारभूत साढीवासठयोजन इम वीजा सवाइकत्रीस योजन इम विमान परिपाटी सौधर्म देवलोकनेविषेछे, इहां मूल प्रा साद २५० योजन तेहथी अर्ध २ हीन करता छेहला पनरेयोजन अने एकयोजनना आठभागकीजेएहवा पांचभाग प्रमाणछे, एहीज वाचनान्तरे चत्ता रि परिवाडीओपासायवडिंसगाण अद्धद्धहीणाउत्ति। एह प्रासादनी चार परिपाटीनेविषे तीनसय इकतालीस प्रासादहुवे, १ २५० यो०। ४ १२५ यो०

॥ टीका ॥

उमलयनतिचित्ते जाव सव्वतवणिज्जमए अच्छे जावपडिरूवे, भूमिवर्णक स्त्वेव–तस्सणं पासायवडिंसयस्सबहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पणत्ते तंजहा आलिंगपुक्खरेइवेत्यादि ॥ सपरिवारति ॥ चमरसम्बन्धिपरवारसिंहासनोपेतं तच्चैव–तस्सणं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थणं चमरस्स चउसठीए सामाणिय साहस्सीणं चउसठी भद्दासणसाहस्सीउं पन्नत्ताउं, एवं पुरच्छिमेणं पचण्हं अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं पचभद्दासणाइं सपरिवाराइं, दाहिणपुरच्छिमेणं अभितरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीणं चउव्वीसं भद्दासणसाहस्सीउं, एवं दाहिणेणं मज्झिमाए अठावीस भद्दासणसाहस्सीउं, दाहिणपच्चच्छिमेणं बाहिरियाए बत्तीसं पच्चच्छिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्तभद्दासणाइं, चउद्दिसि आयरक्खदेवाणं चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसठीउंत्ति, ॥ तेत्तीसं भोमति ॥ वाचनान्तरे दृश्यते, तत्र भौमानि विशिष्टस्थानानि, नगराकाराणीत्यन्ये ॥ उवरियतलेणंति ॥ गृहस्य पीठबन्धकल्प ॥ सव्वप्पमाणं वेमाणियपमाणस्स अद्ध नेयव्वत्ति ॥ अयमर्थो यत्तस्या राजधान्या प्राकारप्रासादसभादि वस्तु तस्य

॥ मूल ॥

रसाइं उग्गाहित्ता, तत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचचानामं रायहाणी पन्नत्ता, एगं जोयणसयसहस्स आयामविक्खंभेणं जंबूद्दीवप्पमाणा उवरियतलेणं सोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,

॥ भाषा ॥

अहेरयणप्पभाएपुढवीए। हेठे रत्नप्रभा पृथिवीने। चत्तालीसंचजोअणसहस्साइंउग्गाहित्ता। चालीस सहस्रयोजन अवगाहीने। एत्थणचमरस्सअसुरिंदस्सअसुररणोचमरचचानामरायहाणी पणत्ता। इहा ण वाक्यालकारे, चमरेन्द्रनो असुरेन्द्रनो असुरराजानो चमरचचानाम राजधानी कही। एगजोअणसयसहस्सआयामविक्खभेण। एकलाख योजन लांबपणें तथा पिहुलपणेछे। जंबूदीवप्पमाणा। जंबूदीप जेवडे प्रमाणेछे। दिवड्ढंजोअणसयउड्ढउच्चत्तेण। एकसोपचास योजन १५० ऊंचा ऊंचपणेछे। मूलेपन्नासजोअणाइं विक्खभेण। मूलने विषे पचास योजन पिहुला। उवरिअद्धतेरसजोअणाइं कविसीसगा। ऊपरि साढीबारे योजन कांसीसा कागडा। अद्धजोअणआयामेण कोसचविक्खभेण। अर्द्धयोजन लांबपणे एककोस पिहुलपणे। देसूणअद्धजोअणंउड्ढंउच्चत्तेण। देशे ऊणो अर्द्धयोजन ऊचा ऊचपणेंछे। एगमेगाएबाहाएपचपचदारसया। एकेकी बाहा पाचसेपाचसे बारणांछे। अड्ढाइज्जाइंजोअ

॥ टीका ॥ वणउत्ति ॥ प्रासादवर्णको वाच्य, सचैवं–अब्भुग्गयमूसियपहसिए, अभ्युद्गत मत्यर्थोद्गतंवा यथा भव त्येव मुच्छ्रितो ऽथवा, मकारस्या गमिकत्वात्' अभ्युद्गत श्चासावुच्छ्रित श्चेत्यभ्युद्गतोच्छ्रित, अत्यर्थमुच्च इत्यर्थ, प्रथमैकवचनलोप श्चात्र दृश्य, तथा प्रहसितइव प्रभापटलपरिगततया प्रहसित प्रभया वासित शुक्ल सम्बद्धोवा, प्रभासितइति ॥ मणिकणगरयणभत्तिचित्ते ॥ मणिकनकरत्नाना भक्तिभि र्विच्छित्तिभि श्च चित्रो विचित्रो य. स तथा इत्यादि ॥ उल्लोयभूमिवणउत्ति ॥ उल्लोकवर्णक, प्रासादस्यो परिभागवर्णक, सचैव–तस्सणं पासायवडिंसगस्स इमेयारूवे उल्लोए पन्नत्ते प

॥ मूल ॥ उमलयभत्तिचित्ते जाव सव्वतवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे इत्यादि, उल्लोकवर्णक तथा भूमिवर्णक ते इम—तस्सणंपासायवडिंसयस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते आलिंगपुक्खरेइवा इत्यादि,

रूक्त्तेण, पासायवन्नउ, उल्लोयभूमिवन्नउ, अठजोयणाणि मणिपेढिया, चमरस्स सीहासण सपरिवारं भाणियव्वं, तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स दाहिणेण छक्कोडिसएए णवणंचकोडीउ पणतीसंचसयसहस्साइं पन्नासंच सहस्साइं जोयणाइ अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीतिवइत्ता अहे रयणप्पभाएपुढवीए चत्तालीसं जोयणसह

॥ भाषा ॥ उद्ढ उच्चत्तेण। अढाईसै योजन २५० ऊचो ऊंचपणेंछै। पणवीसजोअणसयं विक्खंभेण पासायवडओ। एकसो पचवीस योजन १२५ पिहुलपणेंछै प्रासादनो वर्णक कहवो, ते इम अब्भुग्गयमूसियपहसिए। अतिही ऊचो इत्यर्थ, इत्यादि। उल्लोय भूमिवणओ अठजोअणाणिमणिपेढया चमरस्ससीहासण सपरिवार भाणियव्वं। प्रासादना ऊपरिभागनो वर्णक ते इम—तस्सणंपासायवडिसयस्स इमेएयारूवे उल्लोएपन्नत्ते पउमलयभत्तिचित्ते जावसव्वतवणिज्जमए अच्छेजावपडिरूवे इत्यादि, उल्लोकवर्णक तथा भूमिवर्णक ते इम—तस्सणंपासायवडिंसयस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते आलिंगपुक्खरेइवा इत्यादि, आठ योजननी मणिपीठिकाछै, चमरसंबधी परिवारना सिंहासन सहित कहवा, ते इम—तस्सणंसिंहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तर पुरच्छिमेणएत्थणं चमरस्स चउसठ्ठीए सामाणियसाहस्सीएण चउसठ्ठीभद्दासणसाहस्सीओ पन्नत्ताओ इत्यादि। तस्सणंतिगिच्छिकूडस्सदाहिणेण। तेहने, ण वाक्यालंकारे, तिगिच्छिकूट उत्पातपर्वतने दक्षिणदिशि। छक्कोडिसएणवणंचकोडीओ। छसय कोडो पंचावनकोडी। पणतीसचसयसहस्साइं। पैंत्रीसलाख। पन्नाससहस्साइं जोअणाइं। पचास सहस्र एतला योजन। अरुणोदयेसमुद्दे। अरुणोदयनामा समुद्रनेविषे। तिरियवीतिवइत्ता। तिरछा अतिक्रमता जाताथका

पचपन्नसयाइं विक्खंभेणं सव्वरयणामइंतिगिच्छगकूडउवरितलपरिक्खेवसमापरिक्खेवेणं तीसेणं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वणावासे पणत्ते, वर्णक व्यासो वर्णकविस्तर , वइरामयानेमाइत्यादि ॥ नेमत्ति ॥ स्तंभाना मूलपादा , नवरं, वनखंडवर्णक स्त्वेवं–सेणं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं पउमवरवेइयापरिक्खेवसमे परिक्खेवेणं किण्हे किण्होभासे इत्यादि ॥ बहुसमरमणिज्जेत्ति ॥ अत्यन्तसमो रमणीयश्चेत्यर्थः ॥ वण्णउत्ति ॥ वर्णक स्तस्य वाच्य ' सचाय–से जहानामए आलिंगपुक्खरेइवा' आलिंगपुष्कर मुरजमुख तद्वत्समइत्यर्थ ' मुइंगपुक्खरेइवा सरतलेइवा करतलेइवा आयमसंडलेइवा चदमंडलेइवेत्यादि ॥ पासायवडिंसएत्ति ॥ प्रासादो ऽवतंसकइव शेखरकइव प्रधानत्वा त्प्रसादावतंसक ॥ पासाय

८

॥ १९९ ॥

खंडेणयसव्वओसमंता संपरिक्खित्ते, पउमवरवेइयाए वणखंडस्सयवणाओ , तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पणत्ते , वन्नओ, तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासायवडिंसए पणत्ते, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं , पणवीसं जोयणसयाइं वि

अने वनखंडनो वर्णक कहवो, तिहां पद्मवरवेदिका अर्ढ योजन ऊंची पांचसे धनुष निष्कंभे सर्वरत्नमयछे ते वेदिका तेगिच्छिकूट पर्वतनो ऊपरलो तलो तेहनेपरिविनीपरे वींटी रह्योछे, ते पद्मवरवेदिका एहवीछे सेणंपउमवरवेइयाए इमेएयारूवेवणावासे पणत्ते। वर्णकव्यास। वर्णक विस्तार। वइरामया नेमाइत्यादि नेमा थांभाना मूलपाया वनखंड वर्णक ते वनखंड देसे ऊंणा दोय योजन, चक्रवाल विक्खंभे, पद्मवरवेदिका वींटीरह्योछे इत्यादि। तस्सणंतिगिच्छिकूडस्सउप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जेभूमिभागेपणत्तेवण्णओ। तेहने तिगिच्छकूट पर्वतने ऊपर घणू अत्यन्त सरीखो रमणीक मनोहरभूमितल कह्यो, तेहनो वर्णक इस कहवो, सेजहानामए आलिंग पुक्खरेइवा, मुरजवाद्य विशेष तेहना मुख सरीखो सम इत्यर्थ, इत्यादि वर्णक कहवो। तस्सणंबहुसमरमणिज्जस्सभूमिभागस्सबहुमज्झदेसभाए। तेहने, णं वाक्यालंकारे, घणूंसम रमणीक भूमिभागनेविषे घणू मध्यदेशभागनेविषे एतले वेचाले इत्यर्थ। एत्थणंमहंएगंपासायवडिंसएपणत्ते। इहां ण वाक्यालंकारे, मोटो एक प्रासादावतंसक प्रासादसाहे प्रधानपणाथी मुकुटसरीखो प्रासादछे। अड्ढाइज्जाइंजोयणसयाइं

…दोण्णिजोयणसहस्साइं दोन्नियछलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, पुस्तकान्तरे त्वेतत्सकल मस्त्येवेति ॥ वरवइरविग्गहि वेगां उवरिं दोण्णिजोयणसहस्साइ दोन्नियछलसीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं … मध्यक्षाम इत्यर्थः; एतदेवाह ॥ महामउदेत्यादि ॥ मुकुदो वा एहि ॥ वरवज्रस्येव विग्रह आकृति र्यस्य स स्वार्थिकप्रत्यये सति वरवज्रविग्रहिको मध्यक्षाम इत्यर्थः; … लण्हे, मसृणः, घट्ठे, घृष्ट इव घृष्टः खरशाणया प्रतिमेव, मट्ठे, मृष्टइव मृष्टः सुकुमारशाणया प्रतिमेव प्रमार्जनिकयेववा; अतएव 'नीरए' नीरजा रजोरहितः, नि म्मले, कठिनमलरहित, निप्पंके, आर्द्रमलरहित, निक्कंकडच्छाए, निरावरणदीप्तिः, सप्पभे, सप्रभावः, समिरीए, सकिरणः, सउज्जोए, प्रत्यासन्नवस्तूद्योतक, पासाईए ४ ॥ पउमवरवेइयाए वणखंडस्सय वण्णओत्ति ॥ वेदिकावर्णको यथा—साणं पउमवरवेइया अद्धं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं … ॥ खच्छ आकाशस्फटिकवत्, यावत्करणा दिददृश्य, सण्हे, श्लक्ष्ण, श्लक्ष्णपुद्गलनिर्वृत्तत्वात्, …

हस्सं तिण्णियइगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, उवरिं दोण्णियजोयणसहस्साइं दोण्णियछल सीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं, जाव मूले वित्थडे मज्झे संखित्ते उप्पिं विसाले, मज्झे वरव इरविग्गहे, महामउदसठाणसठिए, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे, सेणं एगाए पउमवरवेइयाए वण

न परिधि जाणवी विचाले एकसहस्र तीनसे इकतालीस १३४१ योजन। किंचिविसेसूणपरिक्खेवेणं। काइक विशेषो नपरिधे जाणवो। उवरिंदोण्णि यजोयणसहस्साइ। ऊपरि दोय सहस्रयोजन। दोण्णियछलसीएजोयणसए। दोयसे छयासी २८६ योजन। किंचिविसेसाहिएपरिक्खेवेणं। … ग्रेषो नपरिधे जाणवो। जावमूलेवित्थडेमज्झेसंखित्ते। यावत् मूलनेविषे विस्तारवंत मध्यभागे साकडो। उप्पिंविसालेमज्झेवरवइरविग्गहे। … विस्तीर्ण विचाले प्रधान वज्रनीपरे आकारछे जेहनो एतलेविचे साकडोछे एहोज देखाडेछे। महामुउदसठाणसठिए। मोटामृदंग वाद्य विशेष … संस्थाने रह्योछे। सव्वरयणामए अच्छेजावपडिरूवे। सर्वरत्नमयछे स्वच्छ निर्मल आकाश स्फटिकनीपरे यावत् … प्रतिरूप छे। सेणंएगाएपउमवरवेइयाएवणखंडेणयसव्वओसमंतासंपरिखित्ते पउमवरवेइया। … तिगिच्छिकूटपर्वत … तांइ कहवो।

॥ टीका ॥

ग्लोकगमनाय यत्रा गत्यो त्पतति स उत्पातपर्वतइति ॥ गोथूभस्सेत्यादि ॥ तत्र गोस्तुभो लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजावासपर्वत स्त स्यचादिमध्यान्तेषु विष्कम्भप्रमाणमिद–कमसोविक्खंभोसे दसवावीसाइजोयणसयाइ १ । सत्तसएतेवीसे २ चत्तारिसएयचउवीसे ३ ॥ १ ॥ इहैव विशे पमाह ॥ नवरमित्यादि ॥ तत श्चेद मापन्न मूलेदसवावीसे जोयणसएविक्खम्भेण । मज्झेचत्तारिचउ वीसेउवरिंसत्ततेवीसे ॥ १ ॥ मूले तिन्नि जोयण सहस्साइं दोन्निय बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्झे एगं जोयणसहस्स तिन्निय इगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खे

॥ मूल ॥

पव्वए पन्नत्ते , सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उद्धं उच्चत्तेणं चत्तारितीसे जोयणसए कोसच उव्वेहेणं गोथूभ स्स आवासपव्वयस्स पमाणेणं णेयव्वं , नवर उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं , मूले दसवावीसे जोयण सए विक्खंभेणं , मज्झे चत्तारिचउव्वीसे जोयणसए विक्खंभेणं , उवरिंसत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेणं , मूले तिन्निजोयणसहस्साइं , दोन्नियबत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं , मज्झे एगं जोयणस

॥ भाषा ॥

व्वेण । सतरेसै इकवीसयोजन १७२१ ऊंचो ऊंचपणेछे । चत्तारितीसेजोअणसएकोसचउव्वेहेण गोथूभस्सआवासपव्वयस्सपमाणेणणेतव्व । चारिसै तीस योजन ४३० अनै एककोस धरतीमाहे जडो लवणसमुद्रनेविषे पूर्वदिशि नागराजनो आवासपर्वत तेहना प्रमाणसरीखो जाणवो तेहनो प्रमाण आदि एकसहस्र वावीसयोजन मध्ये सातसै त्रेवीस योजन ऊपर चारसै चउवीस योजन ते इहां पणि जाणवो । णवरंउवरिल्लपमाणमज्झे भाणियव्वं । एतलो विशेष गोथूभपर्वतनेविषे जे मान ऊपरकह्योछे ते मान तेणिचिक्कूट पर्वतनेविषे मध्यभागे जाणवो एहीज देखाडेछे—मूलेदसवावीसेजोअणसएविक्खभेण । मूले एकसहस्र वावीस योजन विस्तारछे १०२२ । मज्झेचत्तारिचउवीसेजोअणसएविक्खभेण । मध्यभागे चारसै चउवीस योजन विस्तारछे ४२४ । उवरि सत्ततेवीसेजोअणसएविक्खभेण । ऊपरि सातसै तेवीस ७२३ योजन विस्तारछै ॥ हिवे परिधि कहैछे—मूलेतिण्णिजोअणसहस्साइ । मूले तीनसहस्र योज न । दोणियबत्तीसुत्तरेजोअणसए । दोयसैबत्तीस योजन । किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेण मज्झेएगजोअणसहस्स तिणियइगयालेजोअणसए । कांइक विशेषो

॥ टीका ॥

रा ते माणासंठियत्ति, उक्तार्थस्य शेष मतिदिशन्नाह ॥ जीवाजिगमेइत्यादि ॥ सच विमानानां प्रमाणवर्णप्रभागंधादिप्रतिपादनार्थ ॥ इतिद्वितीय
शतेसप्तम ॥ ७ ॥ अथ देवस्थानाधिकारा चमरचञ्चाभिधानदेवस्थानादिप्रतिपादनाया ष्टमोद्देशक स्तस्य चेदं सूत्र ॥ कहिणं
मित्यादि ॥ असुरिंदस्सत्ति ॥ असुरेन्द्रस्य स चेश्वरतामात्रेणापि स्यादित्याह' असुरराजस्य वशवर्त्यसुरनिकायस्येत्यर्थ ॥ उप्पायपव्वएत्ति ॥ तिर्य

॥ मूल ॥

व वेमाणिउद्देसो नाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ कहिणंभंते ! चमर
स्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सभासुहम्मा पन्नत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहि
णेणं तिरियमसंखेज्ज दीवसमुद्द विईवइत्ता अरुणवरदीवस्स वाहिरिल्लाउ वेइयताउ अरुणोदय समुद्द वा
यालीसं जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो तिगिच्छिकूडेनाम उप्पाय

॥ भाषा ॥

णिय सर्व विमाननो प्रमाण वर्णप्रभा गंधादिप्रतिपादक वैमानिक उद्देशो जाणवा । वितियसयस्ससत्तमओ । एबीजा शतकनो सातमो उद्देशो टव्वा
थी लिख्यो ॥ ७ ॥ पाछिले उद्देशे देवस्थानाधिकार कह्यो, इहा चमरचंचाभिधान देवस्थानाधिकार कहेछे—कहिणंभंते चमरस्सअ
सुरिंदस्स असुरकुमाररणोसभासुहम्मापणत्ता । किहा णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । चमरेंद्र असुरेंद्रनो असुरकुमार राजा वशिवर्तीछे असुरनिकाय जे
हने तेहनो सभासुधर्मा कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जंबूद्दीवेद्दीवेमंदरस्सपव्वयस्सदाहिणेणं । हेगौतम । जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे मेरुनामा पर्वतने
दक्षिणनेपासे । तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्देवीतीवइत्ता अरुणदीवस्स । तीछा असंख्याता द्वीप तथा समुद्रप्रते अतिक्रमीने लंघीने अरुणद्वीपनो । वाहि
लाओ वेइयताओ । वाहिरलो वेदिकाथी । अरुणोदयसमुद्द । अरुणोदकनामा समुद्रनेविषे । वायालीसंजोअणसहस्साइं उगाहित्ताए । वायालीस स
हस्रयोजन अवगाहीने उल्लंघीने । एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररणो । इहा णं वाक्यालंकारे, चमरेंद्रनो असुरेंद्रनो असुरकुमार राजानो । तेगिच्छिकू
डेणामउप्पायपव्वएपणत्ते । तेगिच्छिकूटनामे तिर्यग्लोके जाइवाने जिहा आवीने वैक्रियशरीरकरी जचो आवे ते कह्यो । सत्तरसएक्कवीसजोअणसएउड्ढ

प्यागापइठाणा, कल्पविमानाना माधारो वाच्यइत्यर्थ , सचैव सोहम्मीसाणेसुणं भंते कप्पेसु विमाणपुढवी किं पइठिया पणत्ता । गोयमा ! घ णोदहिपइठिया पन्नत्ता इत्यादि' आहच–घणउदहिपइठाणा सुरभवणाहोंतिदोसुकप्पेसु । तिसुवाउपइठाणा तदुभयसुपइठियातिसुय ॥ १ ॥ तेण परउवरिमगा आगासंतरपइठियासव्वेत्ति ॥ तथा ॥ वाहल्लेत्ति ॥ विमानपृथिव्या पिण्डोवाच्य , सचैवं–सोहम्मीसाणेसुण भंते । कप्पेसु विमाणपु ढवी केवइय बाहल्लेण पन्नत्ता ? गोयमा ! सत्ता वीस जोयणसयाइं इत्यादि ॥ आहच–सत्तावीससयाइं आइमकप्पेसुपुढविबाहल्लं । एक्केकहाणिसेसे दुदुगेयदुगेचउक्केय ॥ १ ॥ ग्रैवेयकेषु द्वाविंशति योजनाना शतानि, अनुत्तरेषु त्वेकविंशतिरिति ॥ उच्चत्तमेवत्ति ॥ कल्पविमानोच्चत्वं वाच्यं, तच्चैवं– सोहम्मीसाणेसुण भंते । कप्पेसु विमाणा केवइय उच्चत्तेण पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचजोयणसयाइं इत्यादि, आहच–पंचसउच्चत्तेणं आइमकप्पेसुहोंतिउ विमाणा । एक्केकवुड्ढिसेसे दुदुगेयदुगेचउक्केय ॥ १ ॥ ग्रैवेयकेषु दशयोजनशतानि' अनुत्तरेषुतु एकादशेति ॥ संठाणंति ॥ विमानसंस्थानं वाच्य , तच्चेव–सोहम्मीसाणेसुण भंते । कप्पेसु विमाणा किंसंठिया पणत्ता ? गोयमा ! जे आवलिया पविठा ते वट्टा तंसा चउरंसा जे आवलिया बाहि

रपइठियाछे, कल्पविमाननो आधारकहवो ते इम सौधर्म ईशाननेविषे हेभगवन् । कल्पनेविषे विमान पृथिवी स्येआधारछे हेगौतम । घनोदधि प्रति ष्ठितकही इत्यादि । वाहल्लुच्चत्तमेवसंठाण । विमान पृथिवीनो पिंड कहवो, ते इम हेभगवन् । सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमानपृथिवी केतले बाह ल्यपणे कही हेगौतम । सत्तावीससय योजन इत्यादि उच्चत्व कहवो, सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमान केतला उच्चपणेकह्या, गौतम पंचसय योजन इत्यादि तथा संठाणत्ति विमानना संस्थान कहवा, ते इम सौधर्म ईशानना विमान स्ये आकारेछे गौतम जे आवलिका प्रविष्टछे ते त्र्यस चउरस वाट लाछे जे आवलिका बाहिर ते नाना प्रकार संस्थानेछे ॥ हिवे कह्या अर्थनो शेष देखाडेछे–जीवाभिगमेजाववेमाणियउद्देसोभाणियव्वो । जाव वेमा

॥ टीका ॥

त्तसहस्स उगाहित्ता हिठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं भवणवासीणं देवाणं सत्तभवणकोडीओ वावत्तरिंच भ
वणावासमयसहस्सा भवतीति मक्खाय इत्यादि' तद्गतमेवा भिधेयविशेषं विशेषेण दर्शयति ॥ उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागेति ॥ उपपातो भ
वनपतिस्वस्थानप्राप्त्याभिमुख्य तेन उपपात माश्रित्येत्यर्थं, लोकस्या सङ्ख्येयतमे भागे वर्त्तन्ते भवनवासिनइति ॥ एवं सद्धं भाणियव्वंति ॥ एव मु
क्तन्यायेना न्यदपि भणितव्य तच्चेद-समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, मारणान्तिकादिसमुद्घातवर्तिनो भवनपतयो लोकस्या सङ्ख्येयएवभागे व
र्त्तंते, तथा ॥ सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जे भागे, स्वस्थानस्यो क्तभवनावासातिरेककोटीसप्तकलक्षणस्य लोकासङ्ख्येयभागवर्तित्वादिति, एव असु
रकुमाराणां, एव तेषामेव दाक्षिणात्याना मौदीच्याना, एवनागकुमारादिभवनपतीना यथौ चित्येन व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां वैमानिकानाच स्था
नानि वाच्यानि, कियद्दूर यावदित्याह, यावत्सिद्धगण्डिकासिद्धस्थानप्रतिपादनपर प्रकरणं साचेवं ॥ कहिणं भंते। सिद्धाणं ठाणा पन्नत्ता इत्या
दि, इहच देवस्थानाधिकारे यत्सिद्धगण्डिकाभिधान तत् स्थानाधिकारवला दित्यवसेयं, तथेद मपरमपि जीवाभिगमप्रसिद्ध वाच्य, तद्यथा-क

॥ मूल ॥

दि, इहच देवस्थानाधिकारे यत्सिद्धगण्डिकाभिधान तत् स्थानाधिकारवला दित्यवसेयं, तथेद मपरमपि जीवाभिगमप्रसिद्ध वाच्य, तद्यथा-क

वं सद्धं भाणियव्वं, जाव सिद्धगण्डिया सम्मत्ता। कप्पाणपइठाणं वाहल्लुच्चत्तमेवसंठाणं ॥ जीवाभिगमे जा

॥ भाषा ॥

मध्ये एकलाख अथोतर सहस्र योजन पिंडछे इहा भवनपती देवताना सातकोडो वहुत्तरलाख भवनकह्या, वली विशेष कहेछे-पनवणाथोज भवन
पती ऊपजवा आश्री लोकने असंख्यातमेभागे ऊपनाछे इम उक्तन्यायेकरी सर्ववोल पणि कहवो, ते इम समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, मारणां
तिकसमुद्घात वर्ती भवनपतीलोकने असंख्यातमेभागे वर्त्तछे तथा समठाणेणंलोयस्स असंखेज्जइभागे, स्वस्थान सातकोडो वहुत्तरलाख भवन कह्या ते लो
कने असंख्यातमेभागे वर्त्तछे इम असुरकुमारना इम तेहनाईज दक्षिणना उत्तरना इम नागकुमारादिक भवनपतीना तथा व्यन्तरना तथा ज्योतिषी
ना तथा वैमानिकना स्थानक कहवा। जावसिद्धिगंडियासम्मत्ता कप्पाण पइठाण। यावत् सिद्धिगंडियात्ति, सिद्धिस्थान प्रतिपादक प्रकरणताई कहवो,
ते इम किहा हेभगवन्। सिद्धनोंस्थानकह्यो इत्यादि, इहा देवस्थानाधिकारथकी सिद्धिगंडिकानाम ते स्थानक जाणवो जीवाभिगम उपांगनी ए गाथा

भेदे रप्येव बहुनि पर्याये विचार्यते ॥ इति द्वितीयशतेपष्ठम उद्देश समाप्त ॥ ६ ॥ भाषाविशुद्धे देवत्व भवतीति देवो द्देशक समारभ्यते, तस्यचेद सूत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ कइणति ॥ कति देवा जात्यपेक्षये तिगम्यं, कतिविधा देवाइति हृदयं ॥ जहाठाणपयत्ति ॥ यथा यत्प्रकारा यादृशी प्रज्ञापनाया द्वितीयेस्थानपदाख्ये पदे देवाना वक्तव्यता सेति, तथा प्रकारा भणितव्येति, नवर ॥ भवणापन्नत्तति ॥ क्वचिद्दृश्यते, तस्यच फल न सम्य गवगम्यते, देववक्तव्यताचैव ॥ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोय

भंते ! मणामीति उहारणीभासा , भासापदं भाणियव्वं ॥ विईयसए छठोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ कइविहाणंभते ! देवा पन्नत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता तंजहा—भवणवइवाणमंतर जोइसवेमाणिया । कहिणंभते ! भवणवासीण देवाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए जहाठाणपदे देवाणं वत्तव्वया सा भाणियव्वा , नवरं भवणा पन्नत्ता , उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , ए

णे पर्यायेकरी विचारिये ॥ इति ए बीजा शतकनो छट्ठो उद्देशो पूरोथयो ॥ ६ ॥ भाषा विशुद्धथी देवताहुवे, तेमाटे सातमो उद्देशो देवनो कहेछे—कइणभतेदेवापणत्ता । केतला हेभगवन् । जाति अपेक्षाये देवताकह्या, अर्थात् केतलेभेद देवकह्या इतिप्रश्न । गोयमा चउव्विहादेवा पणत्ता तजहा भवणवइ वाणमतर जोइस वेमाणिया । हेगौतम । चारभेदे देवकह्या ते कहेछे—भवनपती १ वाणव्यतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ । कहिणभतेभवणवासीण देवाण ठाणा पणत्ता गोयमा । किहा हेभगवन् ! भवनपती देवना स्थानक कह्या इतिप्रश्न, हेगौतम । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए जहाठाणपदेदेवाणंवत्तव्वयासाभाणियव्वा णवरभवणा पणत्ता उववाएणलोअस्स असखेज्जइभागे एवंसव्वंभाणियव्व । एहीज रत्नप्रभानाम पृथिवीनेविषे इत्यादि, जहा ठाणपदेत्ति यथा जेहवी पन्नवणाना बीजास्थान पदनेविषे देवनीवक्तव्यताछे, सेत्ति तेहवी कहवी, णवर भवणा पणत्ता ए पाठछे तेहनोफल भलीतरे न जाणिये ते वक्तव्यता इमके भारत्नप्रभा पृथिवीनेविषे एकलाख अशीसहस्र योजन ऊपर अवगाहिये हेठे एकसहस्रयोजन वर्जीये

॥ टीका ॥

नव उत्पादो यस्या सौ महातपोपतीरप्रभव· प्रश्रवति क्षरतीति प्रश्रवण· प्रस्यन्दनइत्यर्थ ॥ वक्कमंति ॥ उत्पद्यन्ते ॥ विउक्कमंति ॥ विनश्यन्ति एत देव व्यत्ययेनाह च्यवन्ते उत्पद्यन्तेचेति उक्तमेवार्थ निगमयन्नाह ॥ एसणमित्यादि ॥ एपो नन्तरोक्तरूप एपवा' अन्ययूथिकपरिकल्पिता प्यसञ्जो महातपोपतीरप्रभव प्रश्रवण उच्यते, तथा एप योय मनन्तरोक्त· ॥ उसिणजोणिएइत्यादि ॥ स महातपोपतीरप्रभवस्य प्रश्रवणस्या र्थो ऽभिधाना न्वर्थ प्रज्ञप्त· ॥ इति द्वितीय शते पञ्चम उद्देश समाप्त ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्देशकस्यान्ते अन्ययूथिकामिथ्याभापिण उक्ता·, अथ षष्ठे भापास्वरूप मुच्यते, तत्र सूत्र ॥ सेनूणंभंतेभासामीति ॥ ओहारिणीभासत्ति ॥ सेशब्दो ऽथशब्दार्थ सच वाक्योपन्यासे नून मुपमानावधारणत र्कप्रश्नहेतुपु इहा वधारणे, भदन्तइति गुर्वामन्त्रणे, मन्ये अवबुध्यइति, एव अवधार्यते अवगम्यते' अनये त्येव धारणी अवबोधबीजभूतेत्यर्थ·, भाष्यतइति भापा तद्योग्यतया परिणामितनिसृष्टनिसृज्यमानद्रव्यसहतिरितिभदय, एप पदार्थो, ऽय पुन वाक्यार्थ, अथ भदन्तएव मह मन्ये ऽवश्यमवधारणीभापेति, एव ममुनासूत्रक्रमेणभापापद, प्रज्ञापनाया मेकादश भणितव्य मित्स्याने, इहच भापाद्रव्यक्षेत्रकालभावै· सत्यादिभिश्च

॥ मूल ॥

सवणे, एसणं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते, सेवंभंतेभंते ! त्ति, भगवं गोयमे समणंभगवं महावीर वंदइ नमसइ ॥ बिईयसए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ सेणूणं

॥ भाषा ॥

पोवतोरप्पभवस्सपासवणस्सअट्ठेपण्णत्ते । महातपोपतीरप्रभव प्रश्रवण झरणानो अर्थ कह्यो । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे । भगवगोयमे । भगवत गौतम । समण भगवं महावीर वंदइ णमसइ । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे । बितिअसयस्सपचमयो । ए बीजा शतकनो पाचमोउद्देशो पूरोथयो ॥ ५ ॥ पाछिले उद्देशे मिथ्याभाषीकह्या, तेमाटे भापास्वरूप कहेछे—सेणूणभंते मणामी तिओहारिणी भासा भासापद भाणियव्व वितियसयस्सछठो । ते निश्चे हेभगवन् । हमहमानू छोयए भापाअवबोध बीजभूत इत्यर्थ, अवश्ये अवधारणी भापा भाषीये ते भापाकहीये इणप्रकारे सूत्रानुक्रमे पन्नवणानो इग्यारमो भापापदकहवो, इहांभापा द्रव्य क्षेत्र काल भाव इत्यादिक भेदेकरी अनेरे

प्रवचनविरुद्धत्वा व्यावहारिकप्रत्यक्षेण प्रायो न्ययोपलम्भाच्चा वगन्तव्यं ॥ अदूरसामंतेत्ति॥ नातिदूरे नाप्यतिसमीपइत्यर्थं ॥ एत्यणाति॥ प्रज्ञापकेनो पदर्श्यमाने ॥ महातवोवतीरप्पभवेनामपासवणोत्ति ॥ आतपइव आतप उष्णता महाश्चासा वातपश्चेति महातपो महातपस्य उपतीरं तीरसमीपे प्र

णयरस्स वहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते एत्थण महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पण्णत्ते, पंचधणु सयाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमखंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, तत्थण वहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति, तव्वतिरित्तेवियणं सयासमियं उसिणेउसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसण गोयमा! महातवोवतीरप्पभवे पा

भाखूंछूं इम प्रज्ञापन करूंछूं इम प्ररूपूंछूं। एवखलुरायगिहनगरस्सवहिया। इम निश्चे राजगृहनामा नगरनेबाहिर। वेभारस्सपव्वयस्स। वेभार नामा पर्वतने। अदूरसामंतेएत्थणमहातवोवतीरप्पभवेनामपासवणेपणत्ते। अतिदूरनही अतिढूकडो पणिनही इहा ण वाक्यालंकारे, महातप अत्यंत उ ष्णस्थानक क्षेत्रविशेषछे तेहना तीरने समीपे ऊपनोजे ते महातपोपतीरप्रभवनामे प्रश्रवण झरणोछे ते झरणो। पंचधणुइसयाइं आयामविक्खंभेणं। पांचसे धनुष आयाम लांवपणो पिहुलपणोछे। णाणादुमसंडमंडियउद्देसे। अनेकप्रकारनावृक्ष वनखंडशोभित प्रदेशछे। सस्सिरीए पासाईये दरसणिज्जे। शोभायतछे प्रसन्नचित्तथाय देखवायोग्य। अभिरूवे पडिरूवे तत्थणवहवे। अतिमनोहर प्रतिरूपछे देखता तृप्ति न पामीये तिहा ण वाक्यालंकारे। उसिणजोणिया जीवायपोग्गलायउदगत्ताएवक्कमंति। उष्णयोनिया जीव वली पुद्गल उदकपणे पाणीरूपे ऊपजेछे। विउक्कमति चयति उवचयति। ख पे विणसेछे चवेछे पुष्टि पामेछे। तव्वतिरित्तेवियणंसयासमियं। ते भरीने जे पाणी अधिकोहोय ते पाणी सदासदैव समित। उसिणेआउयाएअभिणि स्सवति एसणं गोयमा। आतापकाले अप्काय झरेछे। ण वाक्यालंकारे, हेगोतम। कह्या अर्थनो निगम कहेछे—महातवोवतीरप्पभवेपासवणेएसणं गोयमा। ए अन्ययूथिक कल्पित आपसन्न महातपोपतीरप्रभव प्रश्रवण कही जे तवा एहीज अनन्तरोक्त उसिण जोणिए इत्यादि, हेगोतम। महात

॥ टीका ॥ अघेइत्यस्यच स्थाने अप्येत्ति दृश्यते, तत्रच शाप्य प्रापा प्रनव एदृश्यवेति ॥ उरालत्ति ॥ वस्तीर्णा ॥ वलाहयत्ति ॥ मेघा ॥ ससेयतित्ति ॥ सस्वि द्यन्ति ॥ उत्पादाभिमुखीभवन्ति ॥ समुच्छतित्ति ॥ सम्मूर्च्छन्त्युत्पद्यन्ते ॥ तव्वउरित्तेयत्ति ॥ हृदपूरणा दतिरिक्तम उत्कलितइत्यर्थ ॥ आउयाएत्ति ॥ अप्काय ॥ अभिनिस्सवइत्ति ॥ अभिनिस्रवति चरति ॥ मिच्छंतेएवमाइक्खंतित्ति ॥ मिथ्यात्व चैतदाख्यानस्य विभङ्गज्ञानपूर्वकत्वा त्प्राय सर्व

॥ मूल ॥ अभिनिस्सवइ, सेकह मेयभंते ! एव ? गोयमा ! जणंते अणउत्थिया एव माइक्खंति जाव जेते एवमा इक्खंति मिच्छंते एवमाइक्खंति, अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भा० प० परू० एवंखलु रायगिहस्स

॥ भाषा ॥ नगरस्स बहिया । इम निश्चे राजगृहनामा नगरने बाहिर । वेभारस्सपव्वयस्सअदूरे । वैभारनामा पर्वत छेठे । एत्थणं कहनेकरी वाहे । एवखलुरायगिहस्सणयरस्सबहिया ... मोटो एक द्रह छे, जलनो उत्पत्तिनो स्थानक ... पाणी भरते ते द्रह । अणेगाइंजोयणाइं आ यामविक्खंभेण । अनेक योजन दीर्घपणे विस्तीर्णपणेछे । णाणादुमसंडमंडिउद्देसे । अनेक प्रकारना वृक्ष वनखंड मंडित शोभित उद्देश प्रदेश एहवो शो भा सहितछे । सस्सिरिए । शोभायमानछे । जावपडिरूवे । यावत् प्रतिरूप चोहवा योग्यछे एसर्व कहवा । तत्थणंबहवेउराला । तिहां घणा विस्तीर्ण । बला हया । मेघ बादला । ससेयति समुच्छति वासति । उपजवाने सन्मुख थायछे उपजेछे वरसेछे । तव्वतिरित्तेयणं सयासमियं २ उसिणेआउकाएअभिनि स्सवइ । ते द्रहने भरीने अधिको पाणीहुये, ते पाणीद्रह थकी झरे सदैव नयमा ... उष्णयोनिया अपकाय ... भरतो थको ... निकल्यो ऊहवो अप्काय नवेछे झरेछे । सेकहमेयंभतेएवं । ते किम एवचन हेभगवन् । एम इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जणतेअणउत्थिया एवमाइक्खंति । यावत् जिके इम कहेछे मि च्छंतेएवमाइक्खंति ... इम कहेछे—जावजंतेएवमाइक्खंति मिच्छंतेएवमाइक्खंति । हेगोतम । जेमाटे ते अन्यतीर्थी अर्हद्वचन व्यतिरिक्त मानताथका इम कहेछे ... पणाथी ते झूठो कहेछे अन्यतीर्थीनामत निरास करवानेअर्थे प्रश्नने उत्तर थ्या झूठो एवचनने विभंग ज्ञान पूर्वक पणाथी प्राये सर्वत्र वचनाश्रित पणाथी ते झूठो ... करवेकरी गोतमप्रते श्रीमहावीरस्वामी इम कहेछे—अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि । हूं वलो हेगोतम । इम कहूं छू । भासेमि पण्णवेमि परूवेमि

॥ टीका ॥

त्हि पुरातनं कर्म्मं निर्ज्जरयति ॥ अकिरियाफलेत्ति ॥ योगनिरोधफलं कर्म्मनिर्ज्जरातोहि योगनिरोधं कुरुते ॥ सिद्धिपज्जवसाणफलेत्ति ॥ सिद्धिल चणा पर्यवसानफल सकलफलपर्यन्तवर्त्तिफल यस्या सा तथा ॥ गाहत्ति ॥ सङ्ग्रहगाथा एतल्लचण चैत द्विपमाचरपाद वेत्यादि छन्द शास्त्रप्रसिद्ध मिति' तथा रूपस्यैव श्रमणादे पर्युपासना यथोक्तफला भवति' ना तथारूपस्या सम्यग्भापित्वा दित्य सम्यग्भापितामेव केपाञ्चि द्दर्शयन्नाह ॥ अन्नउच्छिएत्यादि ॥ पव्वयस्सग्रहेत्ति ॥ अधस्ता त्तस्योपरि पर्वतइत्यर्थ ॥ हरएत्ति ॥ ह्रद ॥ अक्रेति ॥ अघाभिधान क्वचित्तु हरएत्ति' नदृश्यते'

॥ मूल ॥

अकिरिया किंफला ? सिद्धिपज्जवसाणफला पसत्ता गोयमा ॥ गाहा ॥ सवणेणाणेयविसाणे पच्चक्खाणेय संजमे । अणराहएतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ अस्सउच्छियाण भंते ! एवमाइक्खंति भासंति प सवति परूवंति एवखलु रायगिहस्स नयरस्स वहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्यणं महं एगेहरए अप्पे पसत्ते, अणेगाइंजोयणाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमखंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे, तत्यणं वहवे उदारा वलाहया ससेयंति संमुच्छियंति वासंति तव्वतिरित्तेवियणं सयासमिउं उसिणे आउकाए

॥ भाषा ॥

हुइ योगरूंधे । सेणभंतेअकिरियाकिंफला । ते हेभगवन् ' योगनिरूंधथी स्यूं फलहुइ ? सिद्धिपज्जवसाणफलापसत्ता । सिद्धलचण समस्तफलमांहि छेह लो उत्कृष्टो फल एतले समस्तकर्मचयरूप मोचफलपामे। गोयमा गाहा । हेगौतम ! एहीज अर्थनी सग्रहगाथा कहैछै—सवणेणाणेयविसाणे पच्चक्खा णेयसंजमे अणगहयतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ सेवाथी श्रवणफल १ श्रवणनो ज्ञानफल २ ज्ञानथी विज्ञानविशेषफल ३ विज्ञानथी विरतिरूप फल ४ पच्चक्खाणथी संयमफल ५ संयमथी अनाश्रवफल ६ अनाश्रवथी तपफल ७ तपथी व्यवदानफल ८ व्यवदानथी अकिरियासिद्धिफल । १० तथा रूप साधुनीसेवाथी यथोक्तफलहुवे, पणि अयथारूप नी सेवाथी नही विपरीतभापवाथी तेमाटे विपरीतभाषी केईएक देखाडेछै—अणउच्छियाणभंते एव माइक्खंति भासंति पणवेंति परूवेंति । अन्यतीर्थी ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ' इमकहे सामान्यपणाथी कहै विशेषपणाथी कहे हेतुकरी कहै भेद

॥ टीका ॥

वाशब्दोंसमुच्चये ॥ अथवा, श्रमण साधु मॉहन श्रावक ॥ सवणफलत्ति ॥ सिद्धान्तश्रवणफला ॥ णाणफलेत्ति ॥ श्रुतज्ञानफलं श्रवणाद्धिश्रुतज्ञान, फल श्रवणा द्धि श्रुतज्ञान मवाप्यते ॥ विन्नाणफलेत्ति ॥ विशिष्टज्ञानफल श्रुतज्ञाना द्धि हेयोपादेयविवेककारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ पच्चक्खाणफलेत्ति ॥ विनिवृत्तिफल विशिष्टज्ञानोहि पाप मप्रत्याख्याति ॥ संयमफलेत्ति ॥ कृतप्रत्याख्यानस्यहि संयमो भवत्येव ॥ अणण्हयफलेत्ति ॥ अनाश्रवफल संयमवान् किल नव कर्म नो पादत्ते ॥ तवफलेत्ति॥ अनाश्रवोहि लघुकर्मत्वा त्तपस्यतीति ॥ वोदाणफलेत्ति ॥ व्यवदान कर्मनिर्जरण तपसा

॥ मूल ॥

एसमठे णोचेवणं आयन्नावक्तव्ययाए। तहारूवेणं भंते ! समणवा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ? गोयमा ! सवणफला, सेणं भंते ! सवणे किंफले ? णाणफले। सेणंभंते ! नाणे किंफले ? विन्नाणफले। सेणं भंते ! विन्नाणेकिंफले ? पच्चक्खाणफले, सेणंभंते ! पच्चक्खाणे किंफले ? संजमफले। सेणभंते ! संजमे किंफले ? अणण्हयफले, एव अणण्हए तवफले, तवे वोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, सेणंभंते !

॥ भाषा ॥

पज्जुवासणापणत्ता। स्यूं फलहइसेवानो, एतले साधुसेवा कोधा स्यूं फल कह्यो। गोयमासवणफला। हे गौतम। सिद्धांत साभलवानोहुइ। सेणभंतेसवणे किंफले णाणफले। ते ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। सिद्धांत साभलवानो स्यूं फल कह्यो? साभलवाथी श्रुतज्ञानपामवानो फल। सेणभंतेणाणेकिंफले। ते ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। ज्ञान पामवानो स्यूंफलकह्यो। विन्नाणफले। ज्ञानथो हेय गेय उपादेय विवेककारी विज्ञानफलहुइ। सेणभंतेविन्नाणेकिंफले। ते णं वाक्यालंकारे, हेभगवन्। विज्ञानथी स्यूं फल पामिये। पच्चक्खाणफले। विशिष्टज्ञानपाम्या पापनो पच्चक्खाणकरे ते फलहुइ। सेणभंतेपच्चक्खाणेकिं फले संजमफले। ते ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। पच्चक्खाणनो स्यूं फल कह्यो? पच्चक्खाणकीधा संयम पामिये तेफलहुवे। सेणभंतेसंजमेकिंफले। ते णवा क्यालंकारे, हेभगवन्। संयमनो स्यूंफलकह्यो? अणण्हयफले। संयमवंत नवा कर्म उपार्जेनहीं ते अनाश्रवफल। एवंअणण्हयतवफले। इम अनाश्रवनो तपफल लघुकर्मथको तपस्यावंतहुइ। तवेवोदाणफले। तपकरी पुरातनकर्म निर्जरेछेदे इत्यर्थ। वोदाणेअकिरियाफले। पुरातन निर्जराथी क्रियारहित

॥ टीका ॥

मणपर्युपासनासविधानक मुक्त मथ सा यत्फला तद्दर्शनार्थमाह ॥ तहारूवमित्यादि ॥ तथारूप मुचितस्वभावं कञ्चनपुरुषं श्रमणवा, तपोयुक्त मुपलक्षणत्वा दस्यो त्तरगुणावन्तमित्यर्थं ॥ माहनवा, स्वय हननिवृत्तत्वा त्परम्प्रति माहनेति वादिन मुपलक्षणत्वा देव मूलगुणयुक्त मितिभाव

॥ मूल ॥

वं, अवसेसिय जाव पन्नूसमियं आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चेण एसमट्ठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए। अहंपिणं गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पन्नवेमि परूवेमि, पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वतवेण पुव्वसंजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चेणं

॥ भाषा ॥

थाकतो सर्व यावत् समर्थ अभ्यासवत। आउज्जिय पलिउज्जिय। उपयोगवत समस्तपणे उपयोगवत। जावसच्चेणएसमट्ठे। यावत् साचू एअर्थ। णोचेवणआय भाववत्तव्वयाए। नही निश्चे ण वाक्यालकारे, आत्मभाव वक्तव्यतायें अहंबुद्धिभावे एअर्थकह्या। अहंपिण गोयमा। हु पणि हेगौतम। एवमाइक्खामि। इम कहहु। भासामि पन्नवेमि परूवेमि। भाखूहू विशेषेकरी कहहू प्ररूपूहू। पुव्वतवेणदेवादेवलोएसुउववज्जति। पूर्वतपें एतले सरागसयमे देव ता देवलोकनेविषे ऊपजे। पुव्वसजमेणं देवादेवलोएसुउववज्जति। पूर्वसयमे सरागसयमे देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे। कम्मियाएदेवादेवलोएसुउवव ज्जति। शेष कर्मापेंकरी देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजें। सगियाएदेवादेवलोएसुउववज्जति। मनुष्य द्रव्यादिकनेसगे देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे। पुव्वत वेणपुव्वसजमेण। पूर्वतपे पूर्वसयमे। कम्मियाए सगियाए। कर्मांश रह्याछे तेणेंकरी द्रव्यमनुष्यादि सगेकरी। अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति। अहोआर्यो। एतलेथोके देवता देवलोकनेविषे ऊपजे। सच्चेणएसमट्ठे। साचूछे एअर्थ। णोचेवणआयभाववत्तव्वयाएतहारूवेणभतेसमणमाहणवा पज्जुवासमाणस्स। न ही निश्चे एअर्थ आत्मकल्पनाथी कह्यो, परमार्थथी कह्योछे अनन्तरे साधुसेवा करवीकही ॥ हिवे ते सेवानोफल देखाडवानेकाजे कहेछे—तथारूप यो ग्य स्वभाववत णवाक्यालकारे, हेभगवन्। श्रमण तपयुक्त पोते हणवाथी निवृत्तथया अनेराने कहे हणोमत तेहप्रते सेवताने सेवा करताने। किफला

उपयोगवन्तो ज्ञानिनइत्यर्थं , जानन्तीतिभाव ॥ पलिउज्जियत्ति ॥ परिसमन्तात् योगिका' परिज्ञानिनइत्यर्थं , परिजानन्तीतिभाव' , अनन्तरं अ

उज्जियाण भंते ! तेथेराभगवंतो तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ वागरेत्तए । उदाउ , अणाउज्जिया पलिउज्जियाणं भंते ! थेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाणं इमाइ एयारूवाइं वागरणाइं वा गरेत्तए । उदाउ , अपलिउज्जिया पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, सच्चेणं एसमट्ठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए पभूणं गोय मा ! तेथेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए णोअप्पभू तहचेव नेय

भते । एहवा उपयोगवत ज्ञानवतछे जाणेछे हेभगवन् । ते थेराभगवंतो । ते स्थविर भगवत । तसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइं । एहवा एताद्दगरूप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रश्न प्रते जबावदेवाने । उदाउ अणाउज्जिया । अथवा उपयोगवतनहो जाणेनही । पलिउज्जियाण भतेतेथेराभगवतो । जाणपणाथो दूकडा जिम दूकडो सम्यक्भावजाणे एहवो जाणे समस्तपणेजाणे हेभगवन् । ते स्थविर भगवत । तेसिसमणोवासया ण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ वागरणाइं वागरेत्तए । एहवा एताद्दगरूप प्रश्न प्रते जबावदेवाने । उदाउअपलिउज्जिया । अथवा किंविशेष ज्ञानवतनहो । पुव्वतवेणअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति । पर्वापि एतले सरागतपे अहोआर्यो । देव देवलोकनविषे ऊपजे । पुव्वसंजमेण । पूर्व संयमे सरा ग संयमे । कम्मियाए संगियाए । शेष कर्मांशेंकरी संगपण द्रव्यादिसंगेकरी । अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति । अहोआर्यो । देव देवलोकनेविषे ऊपजे सच्चेणएसमट्ठे । साचू ए अर्थ । णोचेवणआयभाववत्तव्वयाएपभूण गोयमा । नहो निश्चे ए आत्मानाभाव, आत्मभाव वक्तव्यताने अहंबुद्धिभावे एअर्थ कहवा छे इतिप्रश्न, समर्थछे हेगौतम । तेथेराभगवतो । ते स्थविर भगवत । तेसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइंवागरणाइ । एहवा एताद्दगरूप प्रश्न प्रते । वागरित्तए । जवाव देवाने । णोअप्पभू तहचेवणेयव्व । नहो असमर्थ इत्यादि, तिमहोज जाणवो । पयसंसियजाणपभूसमिय

॥ टीका ॥ निपात , एव ममुना प्रकारेणेति, वहुजनवचनं ॥ पन्नूणंति ॥ प्रभव समर्था स्ते ॥ समियाणति ॥ सम्यगिति प्रशंसार्थो निपात स्तेन सम्यक्ते व्या कर्त्तुं स्वततं अविपर्यासा स्तइत्यर्थं समन्चन्तीतिवा, सम्यन्च ममितावा; सम्यक् प्रवृत्तय अमितावा, न्यासवत. ॥ आउज्जियत्ति ॥ आयोगिका.

॥ मूल ॥ वच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहिं इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ पुच्छिया , सजमेणं भते ! किंफले , तवे किं फले ? तचेव जाव सच्चेण एसमठे णोचेवण आयभावववत्तव्वयाए तपभूणं भंते ! तेथेराभगवंतो तेसि समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । उदाहु, अप्पभूसमियाणं भते! तेथेराभगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । उदाहु, असमिया आउज्जियाणं भते ! तेथेराभगवतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइ वागरणाइं वागरित्तए। उदाहु, अणाउज्जियापलि

॥ भाषा ॥ नगरीने वाहिर । पुप्फवतीएचेइए । पुष्पवतीनामा चैत्यनविषे । पासावच्चिज्जा । पार्श्वनाथना सतानिया । थेराभगवतो । स्थविर भगवत । समणोवास एहिं । श्रमणोपासके । इमाइ एयारूवाइ । गहन अर्थसहित ज्ञानीना वचनतन्य । पसिणाइपुच्छिया । प्रश्न हेय गेय उपादेय वस्तु पूछ्यूं। संजमेणभतेकि फले । सयमनो हेभगवन् हेपूज्य । स्यूं फलछे ? तवेकिंफले । तपनो स्यूंफलछे ? तचेवजावसच्चेणएसमठ्ठे । तिमहीज सर्वकहवो, यावत् एअर्थ सत्यछे सम र्थछे पणि । णोचेवणआवभाववत्तव्वयाए । नही निश्चै ण वाक्यालकारे, आत्मवुद्धि करीने नथी कह्या एअर्थ । तपभूणभतेथेराभगवतो । ते भणी प्रभू स मर्थछे हेभगवन् । ते स्थविर भगवत । तेसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासक अनन्तरोक्त श्रावकना । इमाइएयारूवाइ । ए सिद्धान्तोक्त ज्ञानी भाषित रूप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रश्न जनावदेवाने एतावता स्थविर त श्रावकाना सदेह टालिवाने समर्थछे इत्यर्थ । उदाहुअप्पभू । अथवा कै समर्थनही अर्थ कहवाने । समियाणंभतेथेराभगवतो । भलीभात अभ्यासवत हेभगवन् । स्थविर ज्ञानवन । ते सिसमणोवासयाण । तेश्रमणोपासकना । इमाइए यारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । एहवा एताद्दशरूप प्रश्न ते प्रतें जनावदेवाने । उदाहुअसमिया । अथवा ममाअर्थ. कहवाने समर्थनही । आउज्जियाण

गिण्हइत्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ अतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवंमहावीरे तेणेवउवागच्छइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ एसणमणेसण आलोएइ, भत्तपाणं पडिदंसेइ २ समणं भगवं महावीरं जाव एवंवयासी, एवंखलु भंते! अहंतुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ एवंखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए नगरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासा

जेइने। जावसमुप्पणकोउहल्ले। यावत् उपनो कौतुक अचरज जेहने। अहापज्जत्तसमुदाणगेण्हइ २ त्ता। यथा पर्याप्त एतले भिक्षा आहार सपूर्ण ते प्रतें ग्रहे ग्रहीने। रायगिहाओणयराओपडिणिक्खमइ २ त्ता अतुरियजावसोहेमाणे। राजगृहनामा नगरथको नीकले नीकलीने कायथी उतावलानहीं मनथी उतावलानहीं यावत् ईर्यासमिति सोधतायका। जेणेवगुणसिलएचेइए। जिहां गुणशिलानाम चैत्यछे। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने। अदूरसामंते। घणू वेगलानहीं घणू ढूकडानहीं। गमणागमणाएपडिक्कमइ २ त्ता। गमनागमन जावो आविवो आलोवे निश्चल थईने जेजीव विराधनाथईहुवे, ते सभारी पडिक्कमे पडिक्कमीने। एसणमणेसणआलोएइ। जे कांई शुद्ध अथवा अशुद्ध थयो तेदूषण आलोई। भत्तपाणपडिदंसेइ। भात पाणी निर्दोष विहरी ते देखाडे देखाडीने। समणभगवमहावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वांदी। जावएववयासी। यावत् इम कहतायका। एवंखलुभंतेअहंतुब्भेहिं। इम निश्चे हेभगवन्! तुम्हे। अब्भणुण्णाएसमाणे। आज्ञादीधायका। रायगिहेणयरे। राजगृहनामा नगरनेविषे। उच्चणीयमज्झिमाणिकुलाणि। ऊंच नीच मध्यमकुलनेविषे। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए अडमाणे। घरसमुदाय भिक्षा आहारनेविषे फिरतायका। बहुजणसद्दनिसामेइ। घणा मनुष्यानेमुखथी शब्द सांभल्यो। एवंखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे हेदेवानुप्रिय देववल्लभ? तुंगियाएणयरीएबहिया। तुंगिया

॥ टीका ॥

प्रलोकयति यामा युगान्तरप्रलोकना तया दृष्ट्या ॥ रियति ॥ ईर्यागमनं ॥ सेकहमेयंमणेणवति ॥ अथ कथमेतत् स्थविरवचनं मन्ये इति वितर्कार्थो

॥ मूल ॥

गाइं पुच्छिया , संजमेणंभंते! किंफले तवे किंफले ? तएणं तेथेरा भगवंतो समणोवासए एवं वयासी संजमेणअज्जो! अणण्हयफले , तवे वोदाणफले , तंचेव जाव पुव्वतवेणं पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति , सच्चेण एसमठे णोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए । सेकह मेयं मन्ने एवं ? तएणं भगवगोयमे इमीसेकहाए लट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाणं गिरहइ

॥ भाषा ॥

ननुधना मुपवो वचन साभले। एवमलुइन्नाणुप्पिया। इम निचे हेदेवानुप्रिय। तुगियाएणयरीए। तुगियानाम नगरीने। बहियापुप्फवतीएचेइए। बाहिर पुष्पवतीनामा चैत्यनेविषे। पासावच्चिज्जाथेराभगवंतो। पार्श्वनाथना संतानिया प्रशिष्यादिक स्थविर भगवंतप्रते। समणोवासएहि। श्रमणो पासके यारके। इमाइएयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया। एहवा एतादृगरूप आगे कहसे ते प्रश्ननाअर्थ पूछ्या ते कहेछे—संजमेणभंते किंफले। संयमनो हे भगवंत। स्यूं फल । तवेकिंफले। तपनो स्यूं फल ? तएणथेराभगवंतो। तिवारे ते श्रमण भगवंत । ते समणोवासए। श्रमणोपासक श्राव कप्रते। एवंवयासी। इम कहता हुवा। संजमेणअज्जो। संयमनो अहोआर्यो! अणण्हयफले तवेवोदाणफले। अनाश्रवफल नवा आवताकर्म वारीवे त पनो मूलगा कर्म छेदीवे ते फल। तंचेवजावपुव्वतवेणपुव्वसंजमेणकम्मियाए। इम तिमहीज कहवो, यावत् सराग तपेंकरी सरागचारित्रेकरी कर्माय शेष रह्यां तेणेंकरी। संगियाएअज्जो। मनुष्य द्रव्याने संगेकरी अहोआर्यो। देवादेवलोएसुउववज्जंति। देवपणे देवलोकनेविषे ऊपजे। सच्चेणएसमट्ठे। सर्व ए पद सत्य छे पणि। णोचेवणआयभाववत्तव्वयाए। नहो निजे ण आत्माना भावे, आपणो कल्पनाये अहंभावबुद्धि अम्हेनयो कह्या एमथे परमार्थयो कह्या छे—सेकहमेयमणेणेव। किंवि किम ए स्थविरनो वचनमानोवे एहवो वितर्कऊपनो इणिप्रकारे बहूजन वणा मनुष्यनो वचन साभल्यो। तएणंसेभगवंगोय मे। तिवारे ते भगवंत गौतम। इमोसेकहाएलद्धट्ठे समाणेजायसड्ढे। एहवी कथावार्त्ता तेहनो अर्थनावाचका एतले एवात साभलोने ऊपनो यथा श्रद्धा

॥ टीका ॥

नाय ॥ भिक्खायरियत्ति ॥ भिक्षासमाचारेण ॥ जुगंतरपलोयणाएत्ति ॥ युगं यूप स्तत्प्रमाण मन्तरं स्वदेहदेशस्य दृष्टिपातदेशस्य व्यवधान

॥ मूल ॥

अहासुहंदेवाणुप्पिया मापडिबंधं । तएणं भगवंगोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाएसमाणे सम णस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता अतुरियमच वलमसंभंते जुगमंतरपलोयणाए दिठीए पुरओरियं सोहेमाणे सोहेमाणे जेणेव रायगिहेनयरे तेणेव उवाग च्छइ उवागच्छइत्ता रायगिहेनयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ , तए णं सेभगवंगोयमे रायगिहेनयरे जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ , एवंखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए न यरीए बहिया पुप्फवईयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा थेराभगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागर

॥ भाषा ॥

कहैछे—अहासुहंदेवाणुप्पियामापडिबंध । जिम सुखऊपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय । कांईनो प्रतिबंध मकरस्यो व्याघात मकरस्यो । तएणंभगवंगोयमे । तिवारे भगवंत गौतम । समणेणंभगवयामहावीरेण । श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी । अभणुण्णाएसमाणे । आज्ञादीधाथका । समणस्सभगवओमहा वीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ । समीपथको गुणशिलानाम चैत्यथको । पडिणिक्खमइ २ त्ता । नीक ले नीकलीने । अतुरियमचवलमसंभंते । कायायेकरी उतावलानही मनेकरी चपलनही असंभ्रांत ज्ञान यका । जुगंतरपलोयणाएदिठीएपुरओरियंसोहे माणे । धूंसरी तेहप्रमाण अंतर आपणाशरीर देश अनेदृष्टिपात देशने अंतरान देखे एहवी दृष्टिकरी आगे ईर्यासमिति सोधता पालताथका । जेणेव रायगिहेणयरे । जिहां राजगृहनामा नगरछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । रायगिहेणयरे । राजगृहनामा नगरनेविषे । उच्चणीयमज्झिमाइंकुलाइं । ऊंच नीच मध्यम कुलनेविषे । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियंअडइ । घरनेविषे समुदान भिक्षालेवानेअर्थ अटे फिरे । तएणं सेभगवंगोयमे । तिवारे ते भगवंत गौतम । रायगिहेणयरे । राजगृह नगरनेविषे । जावअडमाणे । यावत् फिरताथका । बहुजणसद्दंनिसामेइ । घणा

॥ टीका ॥

स्तेषा भाव आत्मभाववक्तव्यता अहमानिता तया, नवय महमानितयैव ब्रूमो पितु परमार्थगवा य मेवविध इतिभावना ॥ अतुरियति ॥ कायिक त्वरारहित ॥ अचवलति ॥ मानसचापलरहित ॥ असंभंतेत्ति ॥ असम्भ्रान्तज्ञान ॥ घरसमुदाणस्स ॥ गृहेषु समुदान भैक्ष गृहसमुदान स्तस्मै गृहसमुदा

॥ मूल ॥

सीए सज्झायं करेइ , बीयाए पोरिसीए ज्झाणं ज्झियाए , तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपो त्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइं वत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइं उग्गाहेइ , उग्गाहेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ , उवागच्छइत्ता समण भगव महावीर वंदइ णमंसइ, वदइत्ता णमसइत्ता एववयासी इच्छामिणभंते! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे छठ्ठक्खमणपारणयंसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ?

॥ भाषा ॥

ए। बीजो पोरिसोये। ज्झाणंज्झियाए। ध्यानध्यावे अर्थविचारे। तईयाएपारिसोए। त्रीजो पोरिसो थई तिवारे। अतुरियमचवलमसभंतेमुहपोत्तियप डिलेहेइ २ त्ता। कायाये करो उतावलानहो मने चपलनहो असभ्रांतज्ञान थका एतले जयणा पूर्वक हलवे २ मुख वस्त्रिकाप्रते पडिलेहे पडिलेहीने। भाय भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ २ त्ता। भाजन तीनपात्रा वस्त्र पडिलेहे पडिलेहीने। भायणाइ पमज्जइ २ त्ता। भाजन पात्रा प्रमार्जे पूजे प्रमार्जीने। भाय णाइ उग्गाहेइ २ त्ता। भाजनपात्रा ग्रहे ग्रहीने। जेणेवसमणे भगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइउवागच्छइत्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। समण भगव महावीर। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामोप्रतें। वदइ णमसइ २ त्ता। वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्का र करोने। एववयासी। इम कहताहुआ। इच्छामिणभंतेतुज्झेहिंअब्भणुन्नाएसमाणे। वाछू कू। हेभगवन्। तुम्हे आज्ञादीधाथकां एतले तुम्हारी आज्ञा होयतो। छठ्ठक्खमणपारणगसि। षष्टभक्तना पारणानेविषै। रायगिहेणयरे। राजगृहनामै नगरनेविषे। उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइ। ऊंच नीच मध्य लक्षुम दिवने। घमुसदूरस्साणभिक्खायरियाए। घरनेविषे समुदान ते भिक्षा तेहनेअर्थे एतले आहारनेअर्थे भिक्षालेवानेअर्थे अटूं विचरू, इसपूछा भगवत

॥ टीका ॥

णमित्यादि ॥ नैवा त्मज्ञाववक्तव्यतया ऽयमर्थ ' आत्मज्ञावएव स्वाभिप्रायएव न वस्तुतत्वं वक्तव्यो वाच्यो ऽजिमाना द्येषा ते आत्मज्ञाववक्तव्या

॥ मूल ॥

मइत्ता जामेवदिसं पाउप्रूया तामेवदिसं पमिगया । तएणं तेथेरा ज्ञगवंतो अन्नयाकयाइं तुंगियाउ नयरी उ पुप्फवईयाउ चेइयाउ पमिनिग्गच्छंति , पमिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति , तेणका लेणं तेणसमएणं रायगिहेनामं नयरे जाव परिसापमिगया , तेणंकालेणं तेणसमएणं समणस्सज्ञगवउ महा वीरस्स जेठेअंतेवासी इदज्ञूइणामं अणगारे जाव संखित्तविउलतेउलेस्से छठंछठेणं अनिखित्तेणं तवोकम्मे णं संजमेणं तवसा अप्पाणं ज्ञावेमाणे विहरइ , तएणं सेज्ञगवंगोयमे छठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरि

॥ भाषा ॥

सिपडिगया । ते दिशिने मार्गे पाछागया । तएण तेथेरा । तिवारे ते स्थविरसाधु । अणयाकयाइं । एकदा प्रस्तावे । तुंगियाओ णयरीओ । तुंगिया नाम नगरी थकी । पुप्फवतियाओ चेइयाओ । पुप्पवती नाम चैत्यथकी । पडिणिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । वहियाजणवयविहार विहरति । बाहिर जनपद देशनेविषे विहारेकरी विचरे एतावता बीजे स्थानकेजाय । तेणकालेण तेणंसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । रायगिहेणामण यरेहोत्था । राजगृहनामे नगर हूयो, तिहां श्रीवर्द्धमान स्वामी समोसरया । जावपरिसापडिगया । यावत् पर्षदाआवी धर्मकह्यो परिषदा पाछीगई इत्या दि सर्वकहवो । तेण कालेण । ते कालनेविषे । तेणसमएण । ते समयनेविषे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीनो । जेठे अतेवासी । वडोशिष्य चेलो । इंदभूतीणामअणगारे । इंद्रभूती इसेनामे साधु इत्यादि । जावसंखित्तविउलतेउलेस्से । यावत् संचेपीछे विपुल जोरावर तेजोलेश्या जेणे । छठंछठेणं । षष्टषष्ट तपे पारणोकरेछे । अणिक्खित्तेणतवोकम्मेण । अतरारहित निरन्तर इत्यर्थः, तपकर्मेंकरी । संजमेण तवसाअप्पाण भा वेमाणेविहरइ । संयम सतरेभेदे तप बारेभेदे ते संयमे तपेकरी आत्माप्रते भावतायका विचरेछे । तएण सेभगवगोयमे । तिवारे तेभगवंत गौतम । छठक्खमणपारणगंसि । छठभत्तना पारणानेविषे । पढमाएपोरिसीए । दिवसनी पहिली पोरिसीनेविषे । सज्झायकरेइ । सज्झायकरे । बीयाएपोरिसी

॥ टीका ॥ यस्यास्ति स सङ्गी तद्भाव स्तत्ता तया संगितया, द्रव्यादिषु सत्सङ्गोहि संयमादियुक्तोपि कर्म्म बध्नाति तत. सङ्गितया देवत्वावाप्तिरिति' आहच– पुव्वतवसजमोहो तिरागिणोपच्छिमाअरागस्स । रागोसङ्गोवुत्तो सगाकम्मजवोतेणं ॥ १ ॥ सच्चेणमित्यादि ॥ सत्योयमर्थ. कस्मा दित्याह ॥ नोचेव

॥ मूल ॥ ज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, सच्चेणं एसअट्ठे नोचेवणं आयभाववत्तव्वयाए । तएण तेसमणोवासया थेरेहिं भगवंतेहि इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा थेरेभगवंते वदंति णमंसंति, वदइत्ता णमसइत्ता पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवाहियंति, उट्ठाएउट्ठेंति, थेरेभगवंते तिक्खुत्तो जाव वंदंति णमंसति, वदइत्ता णमंसित्ता थेराणंभगवंताणं अंतियाओ पुप्फवईयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्ख

॥ भाषा ॥ सगकरतो सयमादियुक्तहतो कमबाधे देहथो देवहुवे । पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मयाए । इम सरागतपकरी सराग सयमचारित्रेकरी कर्मशेषेकरी । स गियाए । मनुष्य द्रव्यादि सगेकरी । अज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति । अहोआर्यो । देवपणे देवलोकनेविषे ऊपजे । सच्चेणएसअट्ठे । साचू ण वाक्यालकारे, एह अर्थ सत्यछे एह अर्थ यथार्थ कह्याछे । णोचेवणआयभाववत्तव्वयाए । नहो निश्चै ण वाक्यालकारे, आत्मभाव वक्तव्यतायेकरी कह्या, एतले आपणी कल्पनाये अहभाव बुद्धि अम्हेनथी कह्या एहअर्थ परमार्थेजो कह्याछे इत्यर्थः । तएणतेसमणोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक । थेरेहिंभगवते हि । स्थविरे भगवते । इमाइएयारूवाइ । एह एताद्दशरूप । वागरणाइ वागरियासमाणा । प्रश्ननाअर्थ कह्यायका । हट्ठतुट्ठा । हर्षपाम्या । थेरेभगव तो । स्थविर भगवतप्रतें । णमसति वदतिवदित्ता । वादे नमस्कारकरे वादीने । णमसित्ता । नमस्कारकरीने । पसिणाइ पुच्छति २ त्ता । प्रश्नप्रतें पूछेप्रश्नप्रतें पूछीने । अट्ठाइ उवाहियति २ त्ता । पूर्वोक्त अर्थग्रहे धारे धारीने । उट्ठाएउट्ठेति २ त्ता थेरेभगवते तिक्खुत्तोवदति णमसति २ त्ता । ऊठी ऊभाथाय ऊभाथ ने स्थविर भगवत तेहोप्रतें तीनवार वादे नमस्कारकरे वादीने नमस्कारकरीने । थेराणभगवताण । स्थविरने भगवतने । अतियाओ समीपथकी । पुप्फई वतीयाओचेइयाओ । पुष्पवती नाम चैत्यथकी । पडिणिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । जामेवदिसिपाउभूयाया । जेदिशिथी आव्याहता । तामेवदि

॥ टीका ॥ हारपज्जुवासणाएत्ति ॥ इह पर्युपासनात्रैविध्य मनोवाक्कायभेदादिति ॥ मत्थएणवंदामित्ति ॥ आलप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वात् मस्तकेनेत्यर्थः ॥ अणण्हयफलेत्ति ॥ न आश्रवो ऽनाश्रव इतिपाठोपि दृश्यते, अनाश्रवो नवकर्मानुपादानं फलमस्ये त्यनाश्रवफलं संयम ॥ वोदाणफलेत्ति ॥ दाप् लवने अथवा; दैप् शोधने इतिवचनात्, व्यवदानं पूर्वकृतकर्मवनगहनस्य लवनं प्राक्कृतकर्मकचवरशोधनवा; फलं यस्य तद्व्यवदानफलं तपइति ॥ किंपत्तियंति ॥ कः प्रत्ययः कारणं यत्र तत्कि मप्रत्ययं निष्कारणमेव देवा देवलोकेषू त्पद्यन्ते तपःसंयमयो रुक्तरीत्या तदकारणत्वा दित्यभि

॥ सूत्र ॥ करेइत्ता एवंवयासी, संजमेणंभंते! किंफले, तवेणंभंते! किंफले? तएणं थेरा भगवंतो तेसमणोवासया एववयासी, संजमेणंअज्जो! अणण्हयफले, तएणं तेसमणोवासया थेरेभगवंते एववयासी, जइणंभंते! संजमेअणण्हफले, तवेवोदाणफले, किंपत्तियंभंते! देवादेवलोएसु उववज्जंति? तत्थणं कालियपुत्तेणामं अणगारेथेरे तेसमणोवासए एववयासी, पुव्वतवेणं अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति, तत्थणं महिलेनामंथेरे

॥ भाषा ॥ एव वयासी। इम कहताहुवा। संजमेणभंतेकिंफले। संयमनो हेभगवन्! पूज्य स्यूंफलहुवे। तवेणंभंतेकिंफले। वली तपनो हेभगवन्! स्यूं फलहुवे इतिप्र। तएणं तेथेराभगवंतो तेसमणोवासए। तिवारे तेस्थविर भगवंत श्रावकते श्रमणोपासक प्रतिकहे। एववयासी। इमकहे। संजमेणअज्जोअण ण्हयफले। संयमनो अहो आर्यो अनाश्रवफल एतावता नवा पापकर्म वारीवे। तवेवोदाणफले। तपनो पूर्वकृतकर्मनो छेदवो एतावता सूंनणाकर्म छेदे। तएणंतेसमणोवासया। तिवारे ते श्रमणोपासक क्रोधा प्रश्ननो एहवो उत्तर सांभली। थेरेभगवंतेएववयासी। स्थविर ते भगवंतप्रते इम कहताहुवा। जइणंभंतेसंजमेणअणण्हयफले। जो थें व्याख्यानकारे, हेभगवन्! संयमनो अनाश्रव फलता संवरफल जेणे पापकर्म वारीवे। तवेवोदाणफले। तपनो पूर्व संचितकर्म छेदवो। किंपत्तियंणभंतेदेवादेवलोएसुउववज्जंति। किसे कारणे संपदे हेभगवन्! देवता देवलोकनेविषे ऊपजे तपसंयमने उक्तरीतें तेहना अकारणथी इत्यभिप्राय। तत्थणकालियपुत्तेणामअणगारे। तिहां ते साधुना समुदायमाहे ए व्याख्यानकारे, कालिकपुत्र इसेनामे साधु।

॥ टीका ॥

प्राय ॥ पुव्वतवेणंति ॥ पूर्वतपः सरागावस्थाभावितपस्या वीतरागावस्थापेक्षया सरागावस्थाया पूर्वकालभावित्वात्, एवंसंयमोपि, अयथाख्या तचारित्रमित्यर्थ, ततश्च सरागकृतेन संयमेन तपसाच देवत्वावाप्ति, रागांशस्य कर्म्मबन्धहेतुत्वात् ॥ कम्मियाएत्ति ॥ कर्म विद्यते यस्या सौ कर्म्मी तद्भाव स्तत्ता तया कर्म्मितया' अन्येत्वाहु कर्म्मणा विकार कार्म्मिका तया अक्षीणेन कर्म्मशेषेण देवत्वावाप्ति रित्यर्थः ॥ संगियाएत्ति ॥ सङ्गो

॥ मूल ॥

तेसमणोवासए एववयासी, पुव्वसंजमेणअज्जो देवा देवलोएसु उववज्जंति, तत्थण आणंदरक्खिएनामंथेरे तेस मणोवासए एववयासी कम्मियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति, तत्थण कासवेनामंथेरे तेसमणोवासए एववयासी संगियाए अज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वतवेण पुव्वसंजमेणं कम्मियाए संगियाए अ

॥ भाषा ॥

तेसमणोवासए एववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहता हवा। पुव्वतवेणअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्व तपकरी अहोआर्यो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे, पूर्वतप सरागभावे तपकरे, पूर्वशब्द स्या भणी? जेकारणे वीतरागावस्थापेक्षाये सरागपणो तप पहिलो। तत्थणमेहलणाम थेरे। तिहा साधुना समुदायमाहे मेहलनामे स्थविर श्रुतवृद्ध। ते समणोवासएएववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रतें इम कहताहवा। पुव्वसंज मेणअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। पूर्व संयमेकरी अहोआर्यो। साधु देवलोकनेविषे देवपणें ऊपजे, एतले सरागकृत संयमेकरी तथा तपेकरी देवपणू पामे, रागासने कर्म बंधनाहेतुथकी एतले यथा ख्यातनही सामायिकादि यथाख्यातचारित्रथी पूर्वछे। तत्थणआणंदरक्खिएनामथेरे। ते साधुना समुदाय माहे आनंदरक्षितनाम स्थविर। तेसमणोवासए एववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहताहवा। कम्मियाएअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। कर्मपणे कर्मनेविकारे अहोआर्यो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे एतले समस्तकर्मनय कीधानथी कोईएककर्म शेषरह्याछे तिणेकरी देवहुवे। तत्थ णंकासएणामथेरे। तिहा साधुना समुदायमाहि काश्यपनामे स्थविर। ते समणोवासएएववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रतें इम कहताथया। संगियाएअज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। संगेकरी अहोआर्यो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे, मनुष्यादिकनेसंगे वर्त्तता सरागपणा भणी द्रव्यादिविषै

त्तरासगकरणेणं , चक्खुप्फासेअंजलिपगहेणं , मणसा एगत्तीकरणेणं । जेणेव थेराभगवंतो तेणेव उवागच्छ ति उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति , तएणं तेथेराभगवंतो तेसिं समणोवासयाण तीसेयमहइमहालियाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति जहा के सिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए आणाए आराहए भवइ , जाव धम्मो कहिओ । तएणतेसमणोवासया थेराणं भगवंताण अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्महठतुठ जाव हियया तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति ,

लिप्पगहेण । दृष्टिदेखे तिवारे हाथजोडी मस्तके चढावे ४ । मणसाएगत्ताकरणेण । अनेकावलंबी मनने एकाग्रकरवो ठामेराखवा ५ इमकरी । जेणे वथेराभगवंतो । जिहां स्थविरभगवंतछे । तेणेवउवागच्छति २ त्ता । तिहां आवे तिहांआवीने । तिक्खुत्तोआयाहिणकरेंति २ त्ता । तीनवार जीमणा पासाथी ज्ञानदर्शन चारित्रशुद्धिने अर्थे तीन प्रदक्षिणा करे करीने । जावतिविहाएपज्जुवासणयाएपज्जुवासेंति । यावत् त्रिविध मन वचन कायानी से वनाये वली करावे अनुमोदे एतीन भगे सेवाये उपासनाकरें । तएणथेराभगवंतो तेसिंसमणोवासयाणतीसेयमहतिमहालियाए । तिवारे ते स्थविर ज्ञान वंत ऐश्वर्यवंत ते तेहने श्रमणोपासकोने श्रावकोने ते सर्वोत्कृष्ट अतिमोटीसभा धर्मचर्चा तिणेकरी । चाउज्जामधम्मपरिकहेंति । चार महाव्रतरूपधर्म पार्श्वनाथना संतानियाछे तेभणी कहे । जहाकेसिसामिस्स । जिम केशीकुमार श्रमणे कह्यो तिमकहे । जावसमणोवासइत्ता । यावत् श्रमणोपासक श्राव कपणे पाली । आणाएआराहएभवइ जावधम्मोकहिओ । आज्ञाये आराधक हुवे इसो यावत् धर्मकह्यो अने श्रमणोपासके अंगीकारकीधो । तएणंतेसम णोवासया । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक ते । थेराणभगवंताण अंतिए । स्थविरने ज्ञानवंतने समीपे । धम्मसोच्चा । द्विविधधर्म सांभलीयकां । निस म्महठ्ठतुठ्ठजावहियया । गतिशये सम्यक् प्रकारे हर्षपाम्या अर्हद्वचननेविषे विश्वासछे जेहनो अत्यंत सांभलवाने आदरछे जेहनो ते यावत् हृदयनेविषे साधु उपदेश सांभलवाथी आपणपो धन्यमानतायका । तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणंकरेति २ त्ता । तीनवार जीमणापासाथी प्रदक्षिणाकरे करीने ।

ह्निता प्रवरपरिह्निता ॥ पायविहारचारेणाति ॥ पादविहारेण न यानविहारेण य श्चारो गमन स तथा तेन ॥ अभिगमेणाति ॥ प्रतिपत्त्या अ भिगच्छन्ति समीप गच्छन्ति ॥ सचित्ताणाति ॥ पुष्पताम्बूलादीना ॥ विउसरणयाएति ॥ व्यवसर्जनया त्यागन ॥ अचित्ताणाति ॥ वस्त्रमुद्रिकादीना अविउसरणयाएत्ति ॥ अत्यागेन ॥ एगसाडियणाति ॥ अनेकोत्तरीयशाटकाना निषेधार्थ मुक्त ॥ उत्तरासगकरणेणाति ॥ उत्तरासङ्ग उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेष अनु स्पर्शे दृष्टिपाते ॥ एगत्तिकरणेणाति ॥ अनेकत्वस्या नेकालबनत्वस्य एकत्वकरण एकालम्बनत्वकरणं एकत्वीकरण तेन ॥ तिवि

वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइ त्ता एगयओ मेलायंति, पायविहारचारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छइत्ता जेणे व पुप्फवईएनाम चेइए होत्या तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरेभगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभि गच्छंति, तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उ

अल्प मोलना मुहगा एहवा जे आभरण तणेकरी शोभायमान कियाछे शरीरजा । सएहिं २ गेहहिंतोपडिणिक्खमति २ त्ता । आपणा आपणा घर थकी नीकले आपणाघरथकी नीकलीने । एगयओमिलायति । एकत्र एकठा सर्वमिले मिलीने । पायविहारचारेणं । पगविहार चालवेकरी एतले अ श्वादि वाहन विना । तुंगियाएणयरीएमज्झंमज्झेणंणिग्गच्छति २ त्ता । तुंगियानाम नगरीथकी मध्ये मध्यभागेकरीने पथमार्गे नीसरे नीसरीने । जेणेवपु प्फवतीचेइए । जिहा पुष्पवतीनाम चैत्यछे । तेणेवउवागच्छति २ त्ता । तिहाआवे तिहा आवीने । थेरेभगवतेपंचविहेणं अभिगमेणंअभिगच्छति । त जहा, वय श्रुत तप वृद्ध स्थविर ज्ञानवंत श्रुतप्ररूपक प्रतें पंचप्रकारने अभिगमेकरी तेपासे आवे ते अभिगमकहेछे—सचित्ताणदव्वाणविउसरणयाए । पुष्प तांबूलादिक जेसचित्तद्रव्य तेहनो तजवो छाडवो तिणेकरो १ । अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए । वस्त्र मुद्रिकादिक जे अचित्तद्रव्य तेहनो छाडवोनही तिणेकरो २ । एगसाडियउत्तरासगकरणेणं । दशासहित एकपटावस्त्रनो उत्तरीयनो देहीनेविषे न्यासविशेष ते करवो ३ । चक्खुफासेगज

स्वकीयानि ॥ कयवलिकम्मत्ति ॥ स्नानानन्तरं कृत बलिकर्मयै स्वगृहदेवताना ते तथा ॥ कयकोउयमंगलपायच्छित्तत्ति ॥ कृतानि कौतुकमाङ्गल्या न्येव प्रायश्चित्तानि दु स्वप्नादिविघातार्थं मवश्यकरणीयत्वा द्यै स्ते तथा, अन्येत्वाहु ॥ पायच्छित्तत्ति ॥ पादेन पादेवा; छुप्ता चक्षुर्दोषपरिहा रार्थं पादच्छुप्ता कृतकौतुकमङ्गलाश्च ते पादच्छुप्ता श्चेतिविग्रह स्तत्र कौतुकानि मषीतिलकादीनि मङ्गलानि तु सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि सुद्धप्पावेसाइति ॥ शुद्धात्मानो वेष्याणि वेषोचितानि अथवा, शुद्धानिच तानि प्रावेश्यानि च राजादिसभाप्रवेशोचितानि शुद्धप्रावेश्यानि ॥ व त्थाइपवराइंपरिहियत्ति ॥ क्वचित् दृश्यते क्वचिच्च ॥ वत्थाइपवरपरिहियत्ति ॥ तत्र प्रथमपाठो व्यक्त, द्वितीयस्तु प्रवर यथाभवती त्येव परि

ण देवाणुप्पिया थेरेभगवते वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो , एयस्स इहभवे परभवे जाव आणुगा मियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु अमसमस्स अंतिए एयमठं पडिसुणति, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइ गेहाइं ते णेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता एहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं

भणी जाइये ण वाक्यालकारे, देववल्लभ । थरेभगवंते वदामो णमसामो । वय श्रुत तपेकरीवड ज्ञानवत मस्तक नमाववेकरी वादा अ र करण शुद्ध नम स्कार करीये । जावपज्जुवासामो । यावत् सेवाकरीये तेहनाकह्या, अरिहत प्रणीत धर्मादि विचार अंगीकारकरे । एयणी इहभवेवा परभवेवा। एह आप णे इहलोकनेविषे परलोकनेविषे । आणुगामियत्ताएजावभविस्सइत्तिकट्टु । अनुगामीपणाने यावत् हुस्ये इसो करीने । अमणस्सअंतिए । एह एहने पा से । एयमट्ठपडिसुणेति । एहवो अर्थसुणे अंगीकारकरे। जेणेव सयाई सयाइ गिहाइ । जिहा आप आपणा घरछे । तेणेवउवागच्छतिउवागच्छइत्ता। तिहां आवे तिहा आवीने । एहाया । स्नानकीधो । कयवलिकम्मा । आपणावरनादेवता ने कीधा वलिकर्म जेणे । कयकोउयमगलपायच्छित्ता । कीधोछे कौतु क शृङ्गारमाटे मगलीक अक्षत दध्यादिक प्रायश्चित तिलक चादला जेणे केई कहेछे—वस्त्र आभरणादि पग ठामें छुदाई पहिरा जिम दृष्टि नलागे । सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया । राजसभाप्रवेश उचित मगलीक चोखावस्त्र प्रधान पहिरा । अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा । भारथी

॥ टीका ॥

श्रमणशतेरेव ॥ सिंघाडगत्ति ॥ शृङ्गाटकफलाकारं स्थानं त्रिक रथ्यात्रयमीलनस्थानं, चतुष्कं रथ्याचतुष्कमीलनस्थानं, चत्वरं बहुतररथ्यामीलनस्थान' महापथो राजमार्ग पथ्यारथ्यामात्र, यावत्करणात् बहुजणसद्देइवाइत्यादिपूर्वव्याख्यात मत्रदृश्य ॥ पडिसुणेतित्ति ॥ अभ्युपगच्छन्ति ॥ सयाइति ॥

॥ मूल ॥

तएणं तेसमणोवासया इमीसेकहाए लद्धठासमाणा हठतुठा जाव सद्दावेति, सद्दावित्ता एवंवयासी, एव खलु देवाणुप्पिया पासावच्चेज्जा थेराभगवंतो जातिसंपन्ना जाव अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणभावेमाणा विहरंति, तमहाफलं खलुदेवाणुप्पिया तहारूवाण थेराणं भगवताणं नामगोय स्सविसवणयाए किमंगपुण अभिगमणवंदणनमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए जाव गहणयाए तगच्छामो

॥ भाषा ॥

क गलीमात्र। जावएगदिसाभिमुहाणिज्जायति। यावत् गच्छथको बहुजणसद्देइवा इत्यादि पूर्ववत् एकदिशि साहमु मयवछे जेहनो इम घणालोक जायेछे। लद्धठासमाणा हठतुठाजावसद्दा एणतेसमणोवासया। तिवारे ते श्रमणोपासक साधुसेवक श्रावक इत्यर्थ। इमीसेकहाए। एहवो कथा वार्त्ता खबर। लडठासमाणा। हठतुठाजावसद्दा वेति। साधुआव्या ते लाभियके हर्ष संतोष पाम्या संतुष्टथया यावत् माहामाहि तेडावे तेडावोने। एववयासी। इम कहताहुवा। एवखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे देवताने पणि वल्लभ। पासावच्चिज्जा। पार्श्वनाथना अपत्यशिष्यादिक। थेराभगवंतो। स्थविर ज्ञानवंत। जातिसंपन्ना। जातिकरी संयुक्त। जावअहापडिरूवउग्गहउगिण्हित्ताण। यावत् यथाप्रतिरूप अभिग्रह गृहीने। सजमेणतवसाअप्पाण भावेमाणाविहरति तजहा। संयमेकरी तपेकरी आ त्माने भावतायका विचरेछे तेमाटे। महाफलखलुदेवाणुप्पिया। महाफल उत्कृष्टफल मोटोफल निश्चे देवनेपणि वल्लभ। तहारूवाणथेराणभगवताण। जे हवा पूर्वेकह्या तेहवा स्थविर श्रुतहद्ध ज्ञानवत। णामगोयस्सविसवणयाए। तेहना नामगोत्रने पणि सांभलवे एतले नामगोत्रसाभल्या पणि महाफलछे। किमगपुणअभिगमणवदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए। स्यू कहवो, अग इति कोमलामत्रणे, वली साहमाजई पाच अभिगम साचवे वादवे नमस्का र करवे मनोगत संदेह वार्त्ता पूछवे सेवा वेयावृत्तिने करवे। जावगहणयाए। यावत् अर्थादिकनो गृहवो तिणे तेणे। तगच्छामोणदेवाणुप्पिया। ते

ल्लेसा सुसामन्तरया अच्छिद्दपसिणवागरणात्ति, अच्छिद्रा णयविरलानि निर्दूषणानिवा, प्रश्नव्याकरणानि येषा ते तथा ॥ कुत्तियावणभूयत्ति ॥ कुत्रिकं स्वर्गमर्त्यपाताललक्षण भूमित्रय, तत्सम्भव वस्त्वपि कुत्रिक तत्सम्पादक आपणो हट्ट कुत्रिकापण स्तद्भूता समीहितार्थसम्पादनलब्धियुक्तत्वेन सकलगुणोपेतत्वेनवा; तदुपमा. ॥ सद्धिति ॥ सार्द्ध सहेत्यर्थ , सम्परिवुता सम्यक्परिवारिता , परिकरभावेन परिकरिताइत्यर्थ , पञ्चभि

मरणभयसोकविप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पचहिंअणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामंदूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईएचेइए तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता अहापडिरूव उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणंभावेमाणा विहरंति , तएण तुंगियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति,

य ए बेजप्रकारे रहित एतले सर्वप्रकारे समाधिगुण युक्त । जावकुत्तियावणभूया। यावत् स्वर्ग मर्त्य पाताल माहि जेवस्तु ते जिण हाटे लाभे ते कुत्रिका पण कहीये, सरीखा साधु सर्वगुण सयुक्तछे। बहुस्सुया बहुपरिवारा। घणा सुतना धारकछे घणा परिवारछे जेहोने। पचहिंअणगारसएहिंसपरिवुडा। पाचसे साधु तेणेसहित परिवरयाथका भले परिवारसहित। अहाणुपुव्विंचरमाणा। यथा पूर्वं अनुक्रमे हालताथका विचरताथका। गामाणुगामदूइज्जमाणा। एकग्रामथी बीजेग्रामे जाताथका। सुहसुहेणविहरमाणा। सुखे सुखेकरी विचरताथका स्वेच्छाये अप्रतिबद्ध विहारी परवसैनहीं जेणेवतुंगियाणयरी। जिहा तुंगियानामे नगरी। जेणेवपुप्फवतीएचेइए। जिहा पुप्फवतीनामे चैत्य वनायतनछे। तेणेवउवागच्छतिउवागच्छइत्ता। तिहा आवे आवीने। अहापडिरूवउग्गहउगिण्हित्ताए। यथा प्रतिरूप यथा योग्य अभिग्रह ग्रहीने। सजमेणतवसाअप्पाणभावेमाणा विहरंति। आवताकर्म वारीये ते सयम, मूलगाकर्म निर्जरीये ते तपते सयमतपेकरी आत्माने भावताथका विचरेछे। तएणतुंगियाएणयरोए। तिवारे तुंगियानाम नगरीनेविषे। सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहेसु। सिंघाडा फलनेआकारेस्थानक तोन गलोमिले ते स्थानक चारगली मिले तेस्थानक घणी गली मिले ते स्थानक राजमार्ग

ज्यावतो गौरवत्याग ॥ ओयसीति ॥ ओजस्विनो मानसावष्टम्भयुक्ता ॥ तेयसीति ॥ तेजस्विन शरीरप्रभायुक्ता ॥ वच्चसीति ॥ वर्चस्विनो विशिष्टप्रभावोपेता, वचस्विनोवा, विशिष्टवचनयुक्ता ॥ जससीति ॥ ख्यातिमन्तो नुस्वार श्चैतेपु प्राकृतत्वात् ॥ जीवियासामरणभयविप्पमुक्कत्ति ॥ जीविताशया मरणभयेनचविप्रमुक्ता ये ते तथा' इह यावत्करणा दिद दृश्य — तवप्पहाणागुणप्पहाणा, गुणाश्च सयमगुणा तप सयमग्रहणचेह तप संयमयो प्रधानमोक्षाङ्गताभिधानार्थं, तथा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा, तत्र करण पिण्डविशुध्यादि चरण व्रतश्रमणधर्मादि, निग्गहप्पहाणा, निग्रहो ऽन्यायकारिणा दण्डो, निच्छयप्पहाणा' निश्चयो वश्यङ्करणाभ्युपगम स्तत्व निर्णयोवा, मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा' ननु जितक्रोधादित्वा न्मार्दवादिप्रधानत्व मवगम्यतएव तत्कि मार्दवेत्यादिना ? उच्यते तत्रो दयविफलतोक्ता मार्दवादिप्रधानत्वेतू दयाभावएवेति, लाघवप्पहाणा, लाघव क्रियासु दक्षत्व, खतिप्पहाणामुत्तिप्पहाणाएवविज्जामतवेयवभनयनियमसचसोयप्पहाणाचारुप्पन्ना, सत्प्रज्ञा ' सोही, शुद्धिहेतुत्वेन शोधय , सुहृदोवा; मित्राणि जीवानामिति गम्य, अणियाणा अप्पुस्सुया अबहि

पन्ना रूवसपन्ना विणयसंपन्ना णाणसपन्ना दसणसपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जालाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जियइंदिया जियपरीसहा जीवियासा

तिणेकरी शोभन भला लोकप्रसिद्ध लाज अथवा सयम तिणेकरी युक्त ज्ञान तिणेकरी शोभनयुक्त सम्यक्त तिणेकरी शोभनयुक्त सामायिकादि चारित्र द्रव्यथी, अल्प उपधिपणो भावथी गोरवत्याग तेणेयुक्त। ओयसी तेयसी वच्चसी जससी। चित्त अवष्टभसहित शरीरप्रभा सहित विशिष्ट अतिशयसहित अथवा विशिष्ट भलावचनसहित लोकमाहे जसवत। जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियणिद्दा। तज्योछे क्रोधप्राणीने अशुभचित्त गोपव्यो मान अहकार, जेणे, वलिक्रोधीछे माया परवंचना जिणे, जीत्यो अल्पक्रोधीछे लोभ लालच जिणे, जीतो अल्पक्रोधीछे निद्राप्रचक्र जिणे, । जितिदिया जियपरीसहा। जीत्याछे स्पर्शादिक पाचइन्द्री जणें, जीत्याछे बावीस परीसहजेणे। जीवियासमरणभयनिप्पमुक्का। जीवितव्यनीवाछा मरणना भ

॥ टीका ॥

रादिभेदा चतुर्विधमपि सर्वत ॥ वत्थपडिग्गहकंबलपायपुच्छणेणंति ॥ इह पतद्ग्रह पात्र पादप्रोंछन रजोहरणं, पीठ आसन फलक मवष्टम्भ नफलक, शय्यावसति र्वृहत्सस्तारकोवा, सस्तारको लघुतर एषा समाहारद्वन्द्वो त स्तेन ॥ अहापडिग्गहिएहिंति ॥ यथा प्रतिपन्ने र्न पुन र्हा मन्नीते ॥ थेरेत्ति ॥ श्रुतवृद्धा ॥ रूवसंपन्नत्ति ॥ इह रूप सुविहितनेपथ्यशरीरसुन्दरतावा, तेन सम्पन्ना युक्ता रूपसम्पन्ना ॥ लज्जालाघवसंपन्नत्ति ॥

॥ मूल ॥

यपुंछणेण पीढफलगसेज्जासंथारएणं ओसहभेसजेणं पडिलाभेमाणा अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पा णं भावेमाणा विहरंति। तेणकालेणं तेणंसमएणं पासावच्चिज्जा थेराभगवंतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना बलसं

॥ भाषा ॥

अमावास्या तथा पूनिम ए पर्वदिननेविषे परोआहार १ शरीर सत्कार २ ब्रह्मचर्य ३ अव्यापार ४ ए चार सर्वथी परिहारकरता पोषध अनुपालताथकाछै ।समणे। श्रमण तपस्वी । णिग्गथेफासूएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेण पीढफलगसेज्जासथारएणं ओसहभेसज्जेण पडि लाभेमाणा । निर्ग्रंथ बाह्याभ्यतर ग्रन्थरहितने एतलेसाधुने फासू बयालीस दूषणरहित पकान्न माडा सातू प्रमुख क्षुधा शमाववानेसमर्थ तेअशनपाणी म द्य द्राक्षरसादि ते १ मेवा तथा उपशमावे २ सोपडो प्रमुख खाद्य ३ सूठ हरडे पीपल जायफल प्रमुख ४ प्रचार आहारेकरी वली वस्त्र पडघोपात्र का वली रजोहरण ओघो आसन उठीगण नेपाटपाटीया बसति अथवा मोटो सथारो नान्हो सथारो तिणेंकरी वली औषध भेषज्य चूर्णादिक तिणेकरी प्रतिलाभता विहरावता थका प्रवर्त्तेछे। अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणंभावेमाणाविहरति । जेहवा आदरया तेहवा पाले एहवा जेतपकर्म क्रिया तेणेंकरी आत्माने आपणपो एटेव गुरुधर्म धन्य इम तीनतत्व अनुमोदता थका विचरे तेश्रावक । तेणकालेणं तेणसमएणं । तेकालनेविषे ते समय नेविषे । पासावच्चिज्जा । पार्श्वनाथ स्वामीना अपत्यसतानिया शिष्यादिक । थेराभगवतोजातिसपन्ना कुलसपन्ना बलसपन्ना रूवसपन्ना विणयसपन्ना । श्रुतवृद्ध ज्ञानऐश्वर्य मातृपक्ष तिणेकरी शोभता भला अथवा सहित पितापक्ष तिणेंकरी शोभन भला उत्कृष्ट सघयण तिणेकरी युक्त शरीर सुंदरपणो तेणे शोभन भला गुणवतने नमस्कार सेवाकरवी तिणेकरी शोभन भला। णाणसपन्ना दसणसंपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना । मत्यादिक

॥ टीका ॥

तिरश्चीन कपाटपश्चाद्भागा दपनीत इत्यर्थ , परिघो र्गला येषा ते उच्छ्रितपरिघा, अथवा; उच्छ्रितो गृहद्वारा दपगत परिघो येषा ते उच्छ्रितपरिघा, औदार्यातिशया दतिशयदानदायित्वेन भिक्षुकाणा गृहप्रवेशार्थ मनर्गलितगृहद्वाराइत्यर्थ ॥ अवंगुयदुवारेत्ति ॥ अप्रावृतद्वारा कपाटादिभि रस्थगितगृहद्वाराइत्यर्थ , सद्दर्शनलाभेन न कुतोपि पाखण्डिका द्बिभ्यति, शोभनमार्गपरिग्रहेणो द्घाटशिरस स्तिष्ठ न्तीतिभाव इतिवृद्धव्याख्या, अन्येत्वाहु , भिक्षुकप्रवेशार्थ मौदार्या दस्थगितगृहद्वाराइत्यर्थ ॥ चियत्तंतेउरघरप्पवेसाचियत्तोत्ति ॥ लोकाना मप्रीतिकरएवा न्त पुरेवा, गृहेवा, प्रवेशो येषा ते तथा, अतिधार्म्मिकतया सर्वत्रा नाशङ्कनीया स्त इत्यर्थ , अन्येत्वाहु ॥ चियत्तोत्ति ॥ नाप्रीतिकरो ऽन्त पुरगृहयो प्रवेश शिष्टजनप्रवेशन येषा ते तथा, अनीर्ष्यालुताप्रतिपादनपर चेत्य विशेषणमिति' अथवा ; ॥ चियत्तोत्ति ॥ त्यक्त अन्त पुरगृहयो परकीययो र्यथा कथञ्चि त्प्रवेशो यै स्ते तथा ॥ बहूहिइत्यादि ॥ शीलव्रता न्यणुव्रतानि, गुणा गुणव्रतानि विरमणानि औचित्येन रागादिनिवृत्तय , प्रत्याख्यानानि पौरुष्यादीनि, पौषध मष्टम्यादिदिनानुष्ठान, तत्रो पवासो वस्थान पौषधोपवास, एतेषा द्वन्द्वो ऽत स्तै र्युक्ता इतिगम्य, पौषधोपवासइत्युक्तं पौषधञ्च यदा यथाविधञ्च ते कुर्वन्तो विहरन्ति तद्दर्शयन्नाह ॥ चाउद्दसेत्यादि ॥ इहो द्दिष्टा अमावास्या ॥ पडिपुन्नपोसहंति ॥ आहा

॥ मूल ॥

परघरप्पवेसा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं चाउद्दसठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्ममणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपा

॥ भाषा ॥

नथी। अवगुयदुवारा। ऊगाडा ते ज्ञाना वारणाना किमाड। चियत्ततेउरपरघरप्पवेसा। प्रीतिकारिया अंतःपुरनेविषे तथा परघरनेविषे प्रवेश जेहना एतावता किणहीने मने तेहनो अविश्वासनथी। बहुहिंसीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं। घणा जेशीलव्रत अणुव्रत गुणव्रत वेरमण उचित तपे नानाप्रकारे रागादिक थको निवृत्त पच्चख्याण पोरसीप्रमुख पौषध पर्वदिनानुष्ठान तेहनेविषै उपवासरह्यो तिणे सहितछे एतावता गुण सहित पौषधकरता विचरैछे ते पोषधदिन कहेछे—चाउद्दसठमुद्दिट्ठपुणमासिणीसुपडिपुन्नपोसहंसम्मंअणुपालेमाणा। चउदस आठम इहा उद्दिट्ठशब्दे

॥ टीका ॥

अचालनीयाः ॥ लद्धट्ठत्ति ॥ अर्थश्रवणात् ॥ गहियट्ठत्ति ॥ अर्थावधारणात् ॥ पुच्छियट्ठत्ति ॥ सांशयिकार्थप्रश्नकरणात् ॥ अभिगयट्ठत्ति ॥ प्रश्नितार्थस्याभिगमनात् ॥ विणिच्छियट्ठत्ति ॥ ऐदंपर्यार्थस्योपलम्भात् ॥ अतएव ॥ अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता ॥ अस्थीनिच कीकसानि मिञ्जाच तन्मध्यवर्त्ती धातु रस्थिमिञ्जा स्ता प्रेमानुरागेण सार्वज्ञप्रवचनप्रीतिरूपकुसुम्भादिरागेण रक्ताइव रक्ता येषां ते तथा, अथवा, ऽस्थिमिञ्जासु जिनशासनगत प्रेमानुरागेण रक्ता ये ते तथा, केनो ल्लेखेनेत्याह ॥ अयमाउसोइत्यादि ॥ अयमिति प्राकृतत्वा दिदं ॥ आउसोत्ति ॥ आयुष्मनिति पुत्रादेः रामत्रण ॥ सेसेत्ति ॥ शेषं निर्ग्रन्थप्रवचनव्यतिरिक्तं धनधान्यपुत्रकलत्रमित्रकुप्रवचनादिकमिति ॥ ऊसियफलिहत्ति ॥ उच्छ्रित मुन्नत स्फटिकमिव स्फटिकं चित्तं येषां ते उच्छ्रितस्फटिका मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमानसाइत्यर्थं इतिवृद्धव्याख्या, अन्येत्वाहुः, उच्छ्रितो ऽर्गलास्थाना दपनीयो द्वौरुतो

॥ मूल ॥

रत्ता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयपरमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर

॥ भाषा ॥

रत्ता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयपरमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर

॥ भाषा ॥

ज्ञातथकी अतिक्रमावी नसकीये एतले ते श्रावक निर्ग्रथना प्रवचनथकी एतला देवना चलाया चलेनहीं। णिग्गंथेपावयणे। निर्ग्रंथना प्रवचननेविषे ए तावता मार्गनेविषे जीवादितत्त्वछे किंवा नहीछे। णिस्संकिया णिक्कंखिया णिव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा। एहवी शंका तिणेंकरी रहित निस्संकित १ अन्यदर्शनोनोवांछा तेकांचा तिणेकरीरहित २ दानादिक फलनोसदेह तिणेकरीरहित ते निव्वितिगिच्छा कहीये ३ सुणवाथी लह्याछे अर्थ जेणें अवधारणथी ग्रह्याछे अर्थजेणें संशयथी पूछी लीधाछे अर्थजेणे। अभिगतट्ठा विणिच्छियट्ठा। प्रश्नना अर्थ जाणीने चिरपरिचय कीधा अर्थजेणे निश्चयथी कीधा विशेषकरीने अर्थना पर्याय। अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता। हाडमिजा ते हाडमध्यवर्त्ती धातु ते सर्वज्ञ वचन प्रीतिरूप कुसुम्भादिरागेकरी रंग्यानीपरे रंग्याछे जेहना अथवा अस्थिमिजानेविषे जिनशासनगत प्रेमानुरागरक्ताछे जिके। अयमाउसो णिग्गंथेपावयणेअट्ठे। ए प्रत्यक्ष पुत्रादिकनो आमंत्रण साधुनो प्रवचनमार्ग ते प्रयोजनछे एहीज मोक्षसाधनहेतु परमार्थसे श्रेयथाकतो। अयपरमट्ठेसेसेअणट्ठे। अनर्थछे निर्ग्रंथप्रवचनथी बीजो धनधान्य पुत्रकलत्रादिक कुप्रावचनादिक ते अनर्थ मोक्षमार्गनो रोधकछे। ऊसियफलिहा। भला स्फटिक जिम निर्मलचित्त तथा दानदेवानेकाजे आगलटोधी

॥ टीका ॥

लौकस्या परिज्ञवनीया, आसवेत्यादौ क्रिया कायिक्यादिका अधिकरण गंत्रीयत्रकादि ॥ कुसलत्ति ॥ आश्रवादीना हेयोपादेयतास्वरूपवेदिन ॥ असहेज्जेत्यादि ॥ अविद्यमान साहाय्य परसाहायिक मत्यन्तसमर्थत्वा द्येषा ते असाहाय्या स्तेच ते देवादयश्चेति कर्मधारय, अथवा; व्यस्त मे वेद, तेन असाहाय्या आपद्यपि देवादिसाहायकानपेक्षा स्वयकृत कर्मस्वयमेव भोक्तव्य मित्यदीनमनोवृत्तयइत्यर्थ, अथवा, पाखण्डिभि प्रारब्धा सम्यक्त्वाविचलनंप्रति न परसाहायक मपेक्षते, स्वयमेव तत्प्रतिघातसमर्थत्वा ज्जिनशासनात्यन्तभावितत्वाच्चेति' तत्र देवा वैमानिका ॥ असुर त्ति ॥ असुरकुमारा ॥ नागत्ति ॥ नागकुमारा ॥ उभये प्यमी भवनपतिविशेषा ॥ सुवण्णत्ति ॥ सद्वर्णा ज्योतिष्का यक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषाव्यन्तर विशेषा ॥ गरुलत्ति ॥ गरुडध्वजा सुपर्णकुमारा भवनपतिविशेषा गन्धर्वा महोरगाश्च व्यन्तरविशेषा ॥ अणतिक्कमणिज्जत्ति ॥ अनतिक्रमणीया

॥ मूल ॥

रुलगंधव्वमहोरगादीएहिं देवगणेहिं निग्गंथाउ पावयणाउ अणतिक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धठा गहियठा पुच्छियठा अभिगयठा विणिच्छियठा अठिमिंजपेम्माणुराय

॥ भाषा ॥

जेणे पुण्य शुभप्रकृतिरूप पापअशुभ प्रकृतिरूप तेहनाफल । आसवसवरणिज्जरकिरियाहिगरणबधमोक्खकुसला । आश्रवकर्म आववानास्थानक सवर ते कर्मद्वार रोकवा, कर्मनोखेरवारूप कायिक्यादिक्रिया गाडोयत्रादिक बधप्रकृति बंधादि चारभेदे मोक्ष सर्वथा क्षयरूप एतलानेविषे अतिडाह्याछे। असहेज्जदेवा सुर नाग सुवण्ण जक्ख रक्खस किनर किंपुरिस गरुल गधव्व महोरगादि एहि देवगणेहि णिग्गथाओ पावयणाओ अ णतिक्कमणिज्जा। आपदाकाले पणि किणही देवताने सहायनहो आपणाकीधाकर्म आपणभोगवोजे एहवो मनोवृत्तिछे जेहनो अथवा पाखडी ए प्रारभ्यो समकितथकी चलाववो तिवारे बीजानो सहाय नवाछे, एतले पोतेज तेहने जवावदेवाने समर्थछे एतावता जिनशासन अत्यत परिणम्यो छे जेहने, देववैमानिक असुरकुमार नागकुमार एवेज भवनपतीविशेष। सुवणत्ति। सद्वर्ण ते ज्योतिषी यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष ए व्यतरनिकाय ना देवजाणवा गरुड चिन्हछे जेहने एहवा सुवर्णकुमारविशेष गधर्व महोरग एवेव्यतर विशेषजाणवा एआदिदेई देवने गणेसमूहे साधुना प्रवचन सि

॥ टीका ॥

स्तावनाये दमाह ॥ तएणंसमणेइत्यादि ॥ अड्ढत्ति ॥ आढ्या धनधान्यादिभिः परिपूर्णा ॥ दित्तत्ति ॥ दीप्ता' प्रसिद्धाः' दृप्तावा, दर्पिता ॥ विच्छि ण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा ॥ विस्तीर्णानि विस्तारवन्ति विपुलानि प्रचुराणि भवनानि गृहाणि शयनासनयानवाहनैः राकीर्णानि ये षा ते तथा' अथवा; विस्तीर्णानि विपुलानि भवनानियेषा शयनासनयानवाहनानिचा कीर्णानि गुणावति येषा ते तथा, तत्र यान गन्त्र्यादि वा हन त्वश्वादि ॥ बहुधणबहुजायरूवरयया ॥ बहु प्रभूत धन गणिमादिक, तथा बहुेव जातरूप सुवर्ण रजत च रूप्य येषाते तथा ॥ आओगपओग सपउत्ता ॥ आयोगो द्विगुणादिवृध्या र्थप्रदान, प्रयोगश्च कलान्तर तौ सम्प्रयुक्तौ व्यापारितौ यै स्ते तथा ॥ विच्छड्डियविउलभत्तपाणा ॥ विच्छ र्द्दित विविध मुज्झित बहुलोकभोजनत उच्छिष्टावशेषसम्भवात् विच्छर्द्दितवा, विविधविच्छित्तिम द्विपुल भक्तच पानक च येषा ते तथा ॥ बहुदा सीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया ॥ बहवो दासीदासा येषा गोमहिषगवेलकाश्च प्रभूता येषा ते तथा गवेलकाउरभ्र ॥ बहुजणस्सअपरिभूया ॥ बहो

॥ मूल ॥

विपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा बहुधणबहुजायरूवरयया आओगपओगसपउत्ता विच्छड्डियविउल भत्तपाणाबहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया बहुजणस्सअपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधप्पमोक्खकुसलाअसहेज्जदेवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसग

॥ भाषा ॥

यावत् शकट गाडो प्रमुख अश्वादिक तेणेंकरी आकीर्ण व्याप्तछे। बहुधणा। घणो धन गणिमादिक। बहुजायरूवरयया। घणो जातरूप सुवर्ण रयय रूपो जेहने। आओग पओगसपउत्ता। बिगुणा त्रिगुणा वधारवा भणी देवो धनादिक जिम प्रवहणमाटे विसयना पाचमवलेभ्यू इमकह्यो धनदेवो ते आयो गकहीये व्यापारादिक तेणेकरी सहायुक्तसहित। विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा। घणालोक जीमणथी घणा अन्नादिक भूठानाखिये एहवा छे जेहनाघर। बहुदासीदास गोमहिसगवेलगप्पभूया। घणा दासीदासछे जेहने गाय भैस बकरा गाडरप्रमुख प्रभूत घणाछे जेहने। बहुजणस्सअपरिभूया। घणालो काने पणि अति धनवतमाटे कुणही म्यू पराभव्या नजाय। अभिगयजीवाजीवा। जाण्याछे जाव अजीवना स्वरूप जेणे। उवलद्धपुण्णपावा। ओलख्या

ममभिधमेज्ञात्ति ॥ कृताटिसमञ्जिध्मना दिह चा यं वाक्यशेषो दृश्य, एव मैथुन सेवमानो योनिगतसत्वा न्मेहनेना विध्वसये देतेच किल ग्रं थान्तरे पञ्चेन्द्रिया श्रूयन्तइति ॥ एरिमएगामित्यादिच ॥ निगमनांमति, पूर्व तिर्यङ्मनुष्योत्पत्ति विचारिता, ऽथ देवोत्पत्तिविचारगाथा प्र

णस्स ञ्जसंजमे कज्जइ, सेव ञंतेञंते! त्ति जाव विहरइ । तएण समणे ञगवं महावीरे रायगिहाउ नयराउ गुणासिलाउ चेइयाउ पक्षिनिक्कमइ पक्षिनिक्कमइत्ता वहिया जणवयविहार विहरइ, तेणंकालेणं तेणंसमए ण तुंगियानामं नयरी होत्या, वसउ, तीसेणं तुंगियाए नयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीन्नाए पुप्फवइ एनाम चेइए होत्था, वसउ, तत्यणंतुंगियाएनयरीए वहवेसमणोवासया परिवसंति, ञ्जढा दित्ता विच्छिस

रमजरे । सेवभते २ त्ति जावविहरइ । तहत्ति हेभगवन्! तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे अन्यथानहीं इमकहो यावत् नमस्कार करी सयमेतपेकरी आत्मानेभावता यका विचरे । तएणसमणे भगवमहावीरे रायगिहाओणयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ । पहिला तिर्यचमनुष्य उत्पत्ति विचारणाकीधी॥ हिवे देव उत्पत्तिनो विचारणाना प्रस्तावथी एकहेछे—तिवारे श्रमण भगवतश्रीमहावीरस्वामी राजगृहनामा नगरथकी गुणशिलानाम चैत्यथकी । पडिणिक्खमइ २त्ता । नीकले नीकलीने । वहियाजणवयविहारविहरइ । बाहिर जनपटदेशने विषे विहारेकरी विचरे । तेणकालेण तेणसमएण । ते अवसर्पिणी चौथा आराकप काल नेविषे ते समयनेविषे । तुंगियानाम णयरीहोत्यावणओ । तुगीया इसेनामे नगरीहुवे, तेहनो वर्णक उवाई उपागथी जाणवो । तीसेणतुंगियाएणयरीए । तेहण नाक्यालंकारे, तुंगियानाम नगरीनेविषे । वहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । बाहिर उत्तरपूर्वदिशिना विभागनेविषे एतले ईशानकूणनेविषे । पुप्फवइएणाम चेइएहोत्या वणओ । पुप्फवतो इसेनाम चैत्य यचायतन हुयो, वर्ण कउवाई उपागमाहिकह्यो तिमकहवो । तत्यणतुंगियाएणयरीए । तिहा ना वाक्य लंकारे, तुंगीयानामे नगरीनेविषे । वहवेसमणोवासियापरिवसंति अड्ढा दित्ता । घणा श्रमणसाधु तेहना उपासक सेवक एतले श्रावक,वसेछे रहैछे द्रव्यर्थ, धन धान्यकरी परिपूर्ण प्रसिद्ध तथा बलवा । विच्छिणविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइणा । विस्तारसहित घणां आवास पल्यकादि सुखादि

स्वार्थिके कप्रत्यये मैथुनप्रत्ययिक ॥ नामंति ॥ नामनामवतो रभेदोपचारा देतन्नामेत्यर्थ , सयोग सम्पर्क , तेइति स्त्रीपुरुषौ ॥ दुहुत्तुत्ति ॥ उभय त स्नेह रेत शोणितलक्षण सचिनुत. संबधयतइति ॥ मेहुणवत्तिएनामसंजोएत्ति ॥ प्रागुक्त मथ मैथुनस्यै वासयमहेतुताप्ररूपणासूत्र ॥ रूयनालि यवति ॥ रूतकर्पासविकार स्तद्भृता नालिका शुपिरवंशादिरूपा रूतनालिका ता एवबूरनालिकामपि नवर बूर वनस्पतिविशेषावयवविशेष ॥

णति , तत्थण जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सयसहस्स पुहत्तं जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति सेतेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छइ । मेहुणेणभंते! सेवमाणस्स केरिसेअसजमे कज्जइ? गोयमा! से जहानामए केइपुरिसे रूयनालियंवा बूरनालियवा तत्तेण कणएणं समभिधंसेज्जा , एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमा

नामे सयोग सपर्क जपजे तेस्त्रीपुरुष बेजथकी स्नेह शुक्र रुधिरलक्षण तेहगते चिणे एकत्रकरे इत्यर्थ । तत्थणजहन्नेणएक्कोवादोवातिण्णिवा उक्कोसेणसय सहस्सपुहत्तजीवाणपुत्तत्ताएहव्वमागच्छति । तिहा सबधमयानेविषे ण वाक्यालकारे, जघन्यथकी एक अथवा दोय अथवा तीन जीवपणे गर्भमाहे ऊप जे उत्कृष्टथी शत सहस्र पृथक्त्वसल्याके ते नवलाख जीव ण वाक्यालकारे, पुत्रपणे ऊतावला ऊपजे आवे इत्यर्थ । सेतेणट्ठेणजावहव्वमागच्छति । ते तेण अर्थे हेगौतम । यावत् नवलाखजीव गर्भनेविषे पुत्र पणे उतावलाआवे ऊपजे ॥ हिवे मैथुनना अधिकारथकी, मैथुननोज असयमपणो प्ररूपेछे । मेहुणे णभंतेसेवमाणस्सकेरिसेअसजमेकज्जइ । मैथुन ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । सेवतोथकोजीव केहवो असयमकरे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा सेजहानामएके इपुरिसेरूयनालिआवूरनालिआ । हेगौतम । ते यथा दृष्टाते नाम इति कोमलामत्रणे कोइपुरुष कपासनोविकार ते रूत कहोये ते भरी वासनी भूग ली अथवा वनस्पनी विशेषनो अवयव ते बूर कहीये तेस्यू भरीवासनी भूगली ली । तत्तेणकणएण समभिधसेज्जा । तप्त जाज्वल्यमान अग्निकरी तपा व्यो लोहनो खोली शलाका ते भूगलीमाहे चपे तिवारे तेरूत तथा बूर सर्व विध्वसपामे विनाशपामे इत्यर्थ । एरिसएणं गोयमा मेहुणसेवमाणस्सअसजमे कज्जइ । एहवो ण वाक्यालंकारे, हेगौतम । मैथुनसेवतोथको योनिमाहेरह्याछे, जेजीव ते प्रते मेहनपुरुषलिंग तेणेकरी विनाश पमाडे इणे एहवो अस

॥ टीका ॥

स्य एकभवग्रहणे लक्षपृथक्त्वं पुत्राणां भवतीति, मनुष्ययोनौ पुनरुत्पन्ना अपि बहवो न निष्पद्यन्तइति' इत्थीएपुरिसस्सयइत्येतस्य, मेहुणवत्तिए नामं संजोगे समुप्पज्जइ, इत्यनेन सम्बन्ध, कस्या मसौ वुत्पद्यते इत्याह ॥ कम्मकडाएजोणीएत्ति ॥ नामकर्मनिर्वर्त्तितायां योनौ अथवा, कर्म्म मदनोद्दीपकोव्यापार स्तत्कृत यस्या सा कर्मकृता, ऽत स्तस्या मैथुनस्य वृत्ति प्रवृत्ति र्यस्मि न्नसौ मैथुनवृत्तिको, मैथुनवा : प्रत्ययो हेतु र्यस्मि न्नसौ

॥ मूल ॥

गोयमा ! इत्थीएय पुरिसस्सय कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिएनामं संजोए समुप्पज्जइ , ते दुहओ सिणेहं चि णंति । सेकेणठ्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? सेण सयसहस्सपुहत्तं जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ।

॥ भाषा ॥

एकश्था गत पृथक्कमत्ताके तेमनुष्यनां तथा तिर्यचनां वीज वारमहूर्त्त योनिभूतहुवे, तिवार गायप्रमुखने शतपृथक्त नवशय नोपणि वीजयानि प्रविष्ट वीजवीजकहीये, तिहा तेवीजना समुदायनेविषे एकजीव ऊपजे ते जीव वीजस्वामी सघनानो पुत्रहुवे, तेनाटे कह्यो उत्कृष्टथो नवसयनो पुत्रपणे उतालो ऊपजे इति । एगजोवस्सणभंतेएगभवग्गहणेणकेवइयाजोवापुत्तत्ताएहव्वमागच्छंति । एकजीवने ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । एक भवने ग्रहवैकरी केतलाजोव पत्रपणे ऊतावलाआवे एतले एकपितानां केतलापुत्रहुवे, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहण्णेणइक्कोवादोवातिण्णिवाउक्कोसेणसयसहस्सपुहत्तजीवाणंपुत्तत्ताएहव्वमागच्छंति । हेगौतम । जघन्ये एक अथवा दोय अथवा तीन उत्कृष्टथकी लाख पृथक्त एतले नवलाखजीव पुत्रपणे उतावलाआवे ऊपजे ते मत्स्यादिकने एकने संयोगे पणि माछलीनी योनिनेविषे नवलाखजोव गर्भपणे ऊपजे अने नीपजे पणि तेमाटे एकनेभवग्रहणे नवलाखपुत्रपणे हुवे, मनुष्य योनिने वणा ऊपजे पणि घणानोपजेनही इतिभाव वलीगौतम पूछेछे—सेकेणठ्ठेणभंतेएववुच्चइ जावहव्वमागच्छति । तेकिमेअर्थे किसे प्रयोजने इमकह्यू यावत् नवलाखजोव ऊतावला गर्भमाहिपुत्रपणे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थोएपुरिसस्सयकम्मकडाएजोणीए मेहुणवत्तिएणामसंजोएसमुप्पज्जइ तेदुहओसिणेहंचिणंति । हेगौतम । स्त्रीपुरुषने चपुन नाम कर्मनिवर्त्तित योनिनेविषे अथवा मदनोद्दीपकव्यापार तेजीभी जेहनेविषे तिका कर्मकृतायोनि कहीये ते व्यापारकरतेछते तेहने मैथुननीवृत्ति प्रवृतिछे जेहनेविषे ते मैथुनवृत्तिकहीये अथवा मैथुननोहेतुछे जेहने तेमैथुन प्रत्ययिका इसे

॥ टीका ॥

त्वा तस्मि न्नेव स्वशरीरे उत्पद्यते द्वादशवर्षस्थितिकतया इत्येवं चतुर्विंशतिवर्षाणि भवंति, केचिदाहुः द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन स्तत्रैवा न्य बीजेन तच्छरीरे उत्पद्यते, द्वादशवर्षस्थितिरिति ॥ एगजीवेणंभंते । इत्यादि ॥ मनुष्याणां तिरश्चां च बीजं द्वादशमुहूर्त्ता न्यावद्योनिभूतं भवति त तश्च गवादीनां शतपृथक्त्वस्यापि बीजं गवादियोनिप्रविष्टं बीजमेव, तत्र च बीजसमुदाये एको जीव उत्पद्यते स च तेषां बीजस्वामिनां सर्वेषां पुत्रो भ वती त्यत उक्तं ॥ उक्कोसेणंसयपुहत्तस्सेत्यादि ॥ सयसहस्सपुहत्तंति ॥ मत्स्यादीनां मेकसंयोगेपि शतसहस्रपृथक्त्वं द्वुतं उत्पद्यते निष्पद्यते चेत्येक

॥ मूल ॥

चिंदियतिरिक्खजोणियबीएणं भंते ! जोणियब्भूए केवइयं कालं संचिठइ ? गोयमा ! जहन्नेणमंतोमुहुत्तं उ क्कोसेणं बारसमुहुत्ता । एगजीवेणं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जह न्नेण इक्कस्सवा दोण्हस्सवा तिण्हस्सवा उक्कोसं सयपुहत्तस्स जीवाणंपुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ एगजीवस्सणंभंते एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जहन्नेणं इक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्को

॥ भाषा ॥

थी स्त्रीनीकायमांहि बारे वरसरही पछे मरीने वली तिणिहीज शरीरनेविषे ऊपजे वली बारेवरसरहै एव २४ वरस अथवा एकजीव बारेवरस रही मू ओ तेहनेशरीरे अनेरे बीजेकरी तेहज शरीरमांहि आय ऊपजे बारेवरस वलीरहै एव २४ वरस एयोजीवरस । मणुस्सपंचिंदियतिरिक्खजोणिय । मनुष्य पंचेंद्रिय तथा तिर्यचयोनिक पंचेंद्रिय तेहने । बीएणभंतेजोणिभूए केवइयंकालमचिट्ठइ । बीज वडतां योनज ते हेभगवन् । योनिभूत योनिनेविषे रह्योथ को केतलोकालरहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहण्णेणंअंतोमुहुत्तउक्कोसेणबारसमुहुत्ता । हेगौतम । जघन्यथको अंतर्मुहूर्त्त वेघडी सीम रहे उत्कृष्टथको बारे मुहूर्त्ततांई रहे चउवीसघडीतांई बीजभूतरहै पछे केतीवधआमांउ जीनां विलयजाय इति । एगजीवेणभंतेएगभवग्गहणेणकेवइयाणपुत्तत्ताएहव्वमा गच्छइ । एकजीव ण वाक्यालंकारे, एक भवने ग्रहवेकरी केतलानी पुत्रपणे आवनो आवे ए ल्ले केतलापितानी पुत्रहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जह णेणं इक्कस्सवा दोण्हस्सवा तिण्हस्सवा उक्कोसेणसयपुहुत्तस्सजीवाणपुत्तत्ताएहव्वमागच्छइ । हेगौतम । जघन्ये एकनो अथवा दोयनो अथवा तीननो उ

गात्, अथच मार्गशीर्षपौषादिषु वैशाखान्तेषु सन्ध्यारागमेघोत्पादादिलिङ्गो भवति, यदाह—पौषेसमार्गशीर्षे सन्ध्यारागोम्बुदा सपरिवेषा । ना त्यर्थमार्गशिरे शीतपौषेतिहिमपात ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ कायभवत्थेणभंतेइत्यादि ॥ काये जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेहएव यो भवो जन्म स काय भव तत्र तिष्ठति य स कायभवस्थ सच कायभवस्थइति, एतेन पर्यायेणेत्यर्थ ॥ चउवीससवच्छराइति ॥ स्त्रीकाये द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन र्मृ

होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोस छम्मासा । तिरिक्खजोणिय गब्भेणंभंते ! तिरिक्खजोणियगब्भेत्ति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नमंतोमुहुत्तं उक्कोसं अट्ठसवच्छराइं । मणुस्सीगब्भेणं भंते ! मणुस्सी गब्भेत्तिकालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं वारससंवच्छराइं । कायभवत्थेणंभंते ! कायभवत्थेत्ति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नमंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउवीसंसवच्छराइं । मणुस्सपं

थिर पोषादिकनेविषैहुवे, ते वैशाख अतनेविषै सध्याराग मेघउपजावणना चिन्ह हुवै ॥ हिवे पचेंद्री गर्भनो अधिकार कहैछै—तिरिक्खजोणियगब्भेणभ ते । तिर्यंचयोनिक सबधीगर्भ हेभगवन् ! तिरिक्खजोणिय । तिर्यंचयोनिक । गब्भेतिकालओ केवचिरहोइ । गर्भपणे कालथकी केतलोकाल गर्भमाहे थिररहोरहै इतिप्रश्न उत्तर गोयमा जहन्नेणअंतोमुहुत्त । हेगोतम । जघन्यथकी अतर्मुहूर्त्तरहै घडीदोयमान । उक्कोसेणअट्ठसवच्छराइ । उत्कृष्टथकी आठ वरसलगे तिर्यंचनो गर्भकालकह्यो । मणुस्सीगब्भेणभंतेमणुस्सीगब्भेतिकालओकेवचिरहोइ । मनुष्यनी स्त्रीनोगर्भ हेभगवन् ! मनुष्य स्त्रीनेविषै गर्भपणे का लथीकेतलोकाल चिररहै इतिप्रश्न, उत्तर, गोयमा जहन्नेणअंतोमुहुत्त । हेगोतम ! जघन्यथकी अतर्मुहूर्त्तलगेरहै घडीदोय प्रमाण । उक्कोसेणदुवालसस वच्छराइ । उत्कृष्टथकी बारे बरसलगे मनुष्यणीना गर्भमाहे रहे जीव । कायभवत्थेणभंते कायभवत्थेतिकालओ केवचिरहोइ । कायनेविषै एतले माता ना उदरमाहिरह्यो जेपोतानोशरीर तेहनेविषैज जिकोभव जन्म ते कायभव कहीये, तेहनेविषै जेरहै तेकायभवस्थ कहीये एणेहीज पर्याये इत्यर्थ, हेभगवन् ! कालथी केतलेकालरहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणअंतोमुहुत्तउक्कोसेणचउवीससवच्छराइ । हेगोतम । जघन्यथी अतर्मुहूर्त्तरहै, उत्कृष्ट

॥ टीका ॥

इत्थीइत्थिवेएणमित्यादि ॥ परिचारणाया किल गर्भः स्यादिति, गर्भप्रकरणं तत्र ॥ उदगगब्भेणं, क्वचिद्दगगब्भेणंति दृश्यते, तत्र उदकगर्भः कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेतुः पुद्गलपरिणाम, तस्य चावस्थान जघन्यतः समयं समयानन्तरमेव प्रवर्षणात्, उत्कर्षतस्तु षण्मासान् षण्मासाना मुपरि वर्ष

॥ मूल ॥

जंसमयं पुरिसवेदं वेदेइ णोतंसमयं इत्थिवेयं वेएइ, इत्थिवेयस्स उदएणं नोपुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेयस्स उदएणं नोइत्थिवेयं वेएइ, एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं एगंवेदं वेदेइ, तंजहा—इत्थिवेदंवा पुरिसवेदंवा, इत्थी इत्थिवेएणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ, पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ, दोवेते अण्णमण्णं पत्थेइ, तंजहा—इत्थीवा पुरिसं पुरिसोवा इत्थिं, उदगगब्भेणं भंते! उदगगब्भेति कालओ केवचिरं

॥ भाषा ॥

रूप वेदप्रते वेदैनहो भोगवैनही। जसमयपुरिसवेदंवदेइ। जेसमयनेविषे पुरुषवेद वेदे भोगवे। णोतसमयं इत्थीवेदंवेदेइ। नही तेसमयनेविषे स्त्रीवेदप्रतें वेदे भोगवे। इत्थीवेयस्सउदएणं। स्त्रीवेदने उदयेकरीने। णोपुरिसवेदंवेदेइ। नही पुरुषवेदप्रते वेदे भोगवे, माहोमाहि विरोधथको। पुरिसवेयस्सउदएणं णोइत्थीवेदंवेदेइ। पुरुषवेदने उदयेकरीने नही स्त्रीवेदप्रतें वेदे भोगवे। एवंखलुएगेजीवे एगेणसमएणं। इम निश्चे एकजीव एकसमये। एगवेदं वेदेइ। एकवेदप्रते वेदे भोगवे। इत्थीवेदंवा पुरिसवेदंवा। ते कहेछे—स्त्रीवेदप्रतें अथवा पुरुषवेदप्रतें एक समये एकजीव वेदवेदे इहां कारण कहेछे—इत्थीइत्थीवेदेण उदिणेण पुरिसपत्थेइ। स्त्रीछेते स्त्रीवेदने उदयथया पुरुषवेदप्रते प्रार्थे वांछे। पुरिसोपुरिसवदेण उदिणेणइत्थिपत्थेइ। तथा पुरुषछे ते पुरुषवेदने उदयथया स्त्रीवेदप्रते प्रार्थे। दोवितेअण्णमण्णंपत्थयति तंजहा। एवेऊ माहोमाहे प्रार्थनाकरे तेकहेछे—इत्थीवापुरिस पुरिसोवाइत्थि। स्त्रीपुरुषप्रते पुरुषस्त्रीप्रते प्रार्थे, परिचारणाकोवायका गर्भहुवे, तेमाटे गर्भप्रकरण कहेछे—उदगगब्भेणभंतेउदगगब्भेतिकालओकेवचिरहोइ। किहां एक सूत्रे दगगब्भेणं एहवोपाठ दीसेछे, तिहां उदगगर्भकहता कालान्तरे जल वरसवानोहेतु पुद्गलपरिणाम ते उदगगर्भकालथको केतलोकाल चिररहे इतिप्रश्न उत्तर गोयमाजहण्णेणंएक्कसमयउक्कोसेण छम्मासा। हेगोतम। उदगगर्भ जघन्यथको एक समयने अनन्तरेज वरसे उत्कृष्टथकोरहे तो छमहीनापछे वरसे एतलग

॥ टीका ॥

स्य सतया इत्यादि यावत् रिद्धीए जुईए पभाए छायाए अच्चीए तेएणं लेसाए दसदिसाओ उज्जोएमाणेत्ति ॥ तत्र ऋद्धि परिवारादिका युति रि ष्टार्थसयोग प्रभा यानादिदीप्ति छाया शोभा अर्चि शरीरस्थरत्नादितेजोज्वाला तेज शरीररोचि लेश्या देहवर्ण एकार्थावेते उद्द्योतय न्प्रका शकरणेन ॥ पभासेमाणेत्ति ॥ प्रभासयन् शोभयन् इह यावत्करणा दिदद्दृश्य ॥ पासाइए ॥ द्रष्टृणा चित्तप्रसादजनक ॥ दरसणिज्जेय ॥ पश्यच्चक्षु र्न श्राम्यति ॥ अभिरूवे ॥ मनोज्ञरूप ॥ पडिरूवेत्ति ॥ द्रष्टार द्रष्टार प्रतिरूप यस्य स तथेति एके नैकदा एकएव वेदोवेद्यत इह कारणमाह ॥

॥ मूल ॥

दूरगतीसु चिरठितीसु सेणंतत्थ देवेभवइ महिड्ढिए जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे जाव पडिरूवे सेणतत्थअन्नेदेवे अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओदेवीओ अभि जुंजिय अभिजुंजिय परियारेड, नोअप्पणामेवअप्पाणं वेउव्विय परियारेइ ! एगेवियणं जीवे एगेणं समए ण एगवेदं वेदेइ, तजहा—इत्थिवेदंवा पुरिसवेदवा, जंसमय इत्थिवेद वेएइ णोतंसमयं पुरिसवेदं वेदेइ,

॥ भाषा ॥

वारनोवर्ण । जावदसदिसाओउज्जोवेमाणे पभासेमाणे । यावत् शब्दे तालगे कहवो दशदिशिनेविषै देहनोकातिकरी तथा आभरणनी कातिकरी उ द्योत करतोथको तेजकरतोथको । जावपडिरूवे सेणतत्थअन्नेदेवे । यावत् प्रतिरूप जोइवायोग्य एतलालगे कहवो, ते निर्ग्रंथ ण वाक्यालंकारे, तिहा वीजोदेव । अन्नेसिदेवाणदेवीओअभिजुंजिय २ परियारेइ । अनेरा देवनी देवी तेहने आलिगोने तथा वशिकरीने परिचारणाकरे अथवा । अप्पणिच्चिया ओदेवीओअभिउंजिय २ परियारेइ । आपणीहीज देवीहोय ते आलिंगीने तथा वशिकरीने परिचारणा भोगकरे । णोअप्पाणचेवअप्पाणविउव्विय २ प रियारेइ । पणिनहो आपणपेईज आत्माने स्त्रीरूपे विकुर्वी भोगवे, एतावतादेवता स्त्रीरूपनवो विकुर्वी भोग नकरे इत्यर्थ तेमाटे । एगेवियणजीवेणगेण समएण एगवेदंवेदेइ इत्यावेदवा । एकजीव, अपि निश्चे चपुन ण वाक्यालकारे, जोव एक सूक्ष्मकालवर्त्ती समयनेविषै एक वेदवेदे अनुभवे भोगवे तेकहैछै— स्त्रीवेद अथवा । पुरिसवेदवा । पुरुष वेद अथवा । जसमयइत्थीवेदवेदेइ । जेसमयनेविषै स्त्रीवेदवेदे भोगवे । णोतसमयपुरिसवेदवेदेइ । ते समयनेविषै पु

चैषा मेवं स्त्रीरूपकरणेपि तस्य देवस्य पुरुषत्वा त्पुरुषवेदस्यै वैकत्र समये उदयो न स्त्रीवेदस्य वेदपरिवृत्त्यावा, स्त्रीवेदस्येव न पुरुषवेदस्योदय" परस्परविरुद्धत्वादिति ॥ देवलोएसुत्ति ॥ देवजनेषु मध्ये ॥ उववत्तारो भवन्तित्ति ॥ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति दृश्य ॥ महिड्डिए ॥ इत्यत्र यावत् करणा दिददृश्य–महज्जुईए महाबले महाजसे महासोक्खे महाणुभागे हारविराइयवच्छे कडयतुडियथंभियभुए ॥ त्रुटिका बाहुरक्षिका ॥ अंगयकुंडलमट्ठगंडकन्नपीठधारी ॥ अङ्गदानि बाहाभरणविशेषान् कुंडलानि कर्णाभरणविशेषान् मृष्टगण्डानि घोलितकपोलानि कर्णपीठानि कर्णाभरणविशेषान् धारयती त्येवशीलो यः सतथा ॥ विचित्तहत्थाभरणे विचित्तमालामउलिमउडे॥ विचित्रमालाच कुसुमस्रक् मौलौ मस्तके मुकुटच य

यंच पुरिसवेयंच जेतेएवमाहंसु मिच्छातेएवमाहंसु, अहपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, एव खलुनियंठे कालगएसमाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्डिएसु जाव महाणुभागेसु

तेकिमछे एह हेभगवन् ! इम तेकह्यो । गोयमा जंणतेअण्णउत्थिया एवमाइक्खति । हेगोतम ! जेमाटे अन्यतीर्थी इमकहे । जावइत्थीवेदंच पुरिसवेदच जेते एवमाहसु मिच्छतेएवमाहसु । यावत् स्त्रीवेद अने पुरुषवेद एवेज वेद दुणप्रकारे एकजीव एकसमये वेदेछे ते हेगोतम ! इमकहेछे—ते अन्यतीर्थी मिथ्या झूठू कहेछे—तेकिम स्त्रीरूपकरेछे तोपणि ते देवने पुरुषपणामाटे पुरुष वेदनोज एकसमयनेविषे उदयछे पणि स्त्रीवेदनो उदयनथी अथवा वेदपालटतो स्त्रीवेदनोज उदयछे पणि पुरुषवेदनो उदयनथी माहोमाहि विरुद्धभावथी । अहपुण गोयमा एवमाइक्खामि । हुवली हेगोतम ! इमज कहूंछू सामान्यपणाथकी । भासेमि पणवेमि परूवेमि । विशेषथी हेतुकरी भेदकहवाथी । एवखलुणियंठेकालगएसमाणे । इम निश्चे निग्रंथ ताह्य अभ्यंतर अत्यरहित कालगत एतले मरणपाम्योथको । अणयरेसु देवलोएसु देवत्ताएउववत्तारोभवति । अन्यतर कोइएक देवलोकनेविषे देवतापणे ऊपजे अवतरे । महिड्डिए । मोटीछे ऋद्धि परिवार जेहने । जावमहाणुभागेसु । यावत्शब्दे मोटा पुन्यवत अतिशयवतनेविषे एतलालगे कहवो । दूरंगईसु दूरठिईसु सेगत त्यदेवभवइ महिड्डिए । वेगलीगतिने अर्थात् ऊपरदेवलोकनेविषे घणीस्थितिछे आयुकर्मनी जिहा ते निग्रंथ ण वाक्यालकारे, तिहा देवपणेहुवे महापरि

॥ टीका ॥

सूत्रं ॥ अन्नउत्थिएइत्यादि ॥ देवभूएणंति ॥ देवभूतेन आत्मना करणभूतेन नोपरिचारयतीतियोग ॥ सेणंति ॥ असौ निर्ग्रन्थदेव स्तत्र देवलोके नो नैव ॥ असेत्ति ॥ अन्यान् आत्मव्यतिरिक्तान् देवान् सुरान् तथा नो अन्येषा देवाना सबंधिनी र्देवी ॥ अभिजुंजियत्ति ॥ अभियुज्य वशीकृत्य आश्लिष्य वा, परिचारयति परिभुक्ते ॥ णोअप्पणिच्चियाउत्ति ॥ आत्मीया ॥ अप्पणामेवअप्पाणं विउव्वियत्ति ॥ स्त्रीपुरुषरूपतया विकृत्य एवचास्थिते ॥ एगेवियणमित्यादि ॥ परउत्थियवत्तव्वयाणेयव्वत्ति ॥ एव चेय ज्ञातव्या ॥ ज समय इत्थिवेय वेएइ तसमय पुरिसवेयवेएइ जसमय, पुरिसवेय वेएइ तसमय इत्थिवेयवेएइ, इत्थिवेयस्स वेयणयाए पुरिसवेय वेएइ' पुरिसवेयस्स वेयणयाए इत्थियेयवेएइ, एवखलु एगे वियणमित्यादि ॥ मिथ्यात्व

॥ मूल ॥

णेणं सेणतत्थ नो अन्नदेवे नोअन्नेसि देवाण देवीन अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, णो अप्पणिच्चियाउ देवीउ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ, एगेवियणजीवे एगेणंसमएण दोवेदे वेदेइ, तजहा—इत्थिवेयच पुरिसवेयंच, एव अन्नउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेयच पुरिसवेयंच सेकहमेयंभंते! एवं? गोयमा! जन्नंते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव इत्थीवे

॥ भाषा ॥

निश्चे निर्ग्रंथ साधु। कालगणसमाणे। काल पहुते थके। देवभूएण। देवताश्रय थके। अप्पाणेण सेणतत्थणो अन्नदेवे अन्नेसिदेवाण देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ। आत्माये करणभूत करा परिचारणा नकरे इतियोग, ते निर्ग्रंथसाधु देवते देवलोकनेविषे नही अन्यदेवप्रते तथा बीजा देवसबधी देवीप्रतें वसिकरीने अथवा आलिंगीने भोगवे। णोअप्पणिच्चियाओदेवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ। नही आपसबधी देवीप्रतेंवसिकरी अथवा आलिंगी परिचारणा करे भोगवे आपणहोज आत्माये स्त्री पुरुष रूपप्रते विकुर्वीने २ परिचारणाभोगकरे इम रह्याथका। एगेवियणजीवे। एकपणि च वपुनणं वाक्यालकारे, जीव। एगेणसमएणदोवेदेवेदेइ तजहा। एके समये दोवेद वेदे तेकहेछे। इत्थीवेदच। स्त्रीवेद चवली अने। पुरिसवेदंच। पुरुष वेद। एवपरउत्थियवत्तव्वयाणेयव्वा। इम परतीर्थी इमकहे तेहनो वक्तव्यता जाणवी।जावइत्थीवेदंच। यावत् स्त्रीवेद वपुन पुरुसवेद। सेकहमेयंभंतेएव। जेहनो अन्यतीर्थी इमकहेछे—

त्ति ॥ श्रोत्रादीनि चक्षूरहितानि स्पृष्टमर्थं प्रविष्टंच गृह्णन्ति ॥ विसयत्ति ॥ सर्वेषा जघन्यतो ङ्गुलस्या सङ्ख्येयभागो विषय' उत्कर्षतस्तु श्रोत्रस्य द्वादश योजनानि, चक्षुष सातिरेक लक्ष, शेषाणा नवयोजनानीति ॥ अणगारेत्ति ॥ अनगारस्य समुद्घातगतस्य ये निर्ज्जरापुद्गला स्ता न छद्मस्थो मनुष्य पश्यतीति ॥ आहारेत्ति ॥ निर्ज्जरापुद्गला न्नारकादयो न जानन्ति नपश्यन्ति, आहारयन्तिचे त्येवमादि वक्तव्य, अथ किमन्तोय मुद्देशक इत्या ह, याव दलोको ऽलोकसूत्रांत' स्तचेद-अलोगेण भंते! किणाफुडे कइहिंवा; कायेहिं फुडे? गोयमा। नोधम्मत्थिकायेण फुडे जाव नो आगास त्थिकायेण फुडे आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पएसेहिं फुडे नोपुढविकायेण फुडे जाव नोअद्धासमएण फुडे एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणतेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासे अणतभागूणेत्ति ॥ नालोको धर्मास्तिकायादिना पृथिव्यादिकायै समयेनच स्पृष्टो व्याप्त स्तेषा तत्रा सत्त्वात्, आकाशास्तिकायदेशादिभिश्च स्पृष्ट स्तेषा तत्र सत्त्वात्, एक श्चासावजीवद्रव्यदेश आकाशद्रव्यदेशत्वा त्तस्य ॥ इतिद्वितीयशते चतुर्थ उद्देश समाप्त ॥ ४ ॥ अनन्तरमिन्द्रिया ण्युक्तानि तद्वशाच्च परिचारणास्यादिति, तन्निरूपणाय पञ्चमोद्देशकस्ये दमादि

ण वाहल्ल पोहत्तं जाव अलोगो इंदियउद्देसो ॥ बिईयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ अणउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति पण्णवेंति परूवेंति, एवंखलु नियंठ कालगएसमाणे देवब्भूएण अप्पा

संभाग विषयछे उत्कृष्टथी श्रोत्रनो १२ योजन चक्षु साधिकलक्षयोजन शेषनो ९ योजन। अणगारेत्ति। अणगार समुद्घातगतना जेनिर्जरापुद्गल तेछ द्मस्थ मनुष्यनदेखे। आहारेत्ति। निर्जरापुद्गलप्रते नारकादि नदेखे नजाणे आहारे इत्यादिक घणूकहवो ॥ हिवे केतला लगे ए उद्देशो कहवो ते कहेछे— जावअलोगो। यावत् अलोकसूत्रनो प्रत ते इम। अलोगेणभते किणाफुडे कइहिंवाकाएहिंफुडेगोयमा णोधम्मत्थिकाएणफुडे इत्यादिकहवो। बितियसयस्सचउ त्थउद्देसो। बीजा शतकना चोथा उद्देशानो विवरण लिख्यो ॥ ४ ॥ पाछिले उद्देशे इन्द्रियकह्या, तेहनेविषे परिचारणा कहेछे—अण उत्थियाणभते एमाइक्खंति भासति पण्णवेंति परूवेंति। अन्यतीर्थी ण वाक्यालङ्कारे, हेभगवन्! इमकहे सामान्यथी भाखे प्रज्ञापे प्ररूपे। एवखलुनियंठे। इम

अप्पाबहुपुट्ठपवि ट्ठविसयअणगारआहारे ॥ १ ॥ इहच सूत्रपुस्तकेषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शेषास्तु तदर्था यावच्छब्देन सूचिता ' तत्र संस्थान श्रोत्रादीन्द्रियाणा वाच्य, तच्चेद-श्रोत्रेन्द्रिय कदम्बपुष्पसंस्थित, चक्षुरिन्द्रिय मसूरकचन्द्रसंस्थित मसूरक मासनविशेष श्चद्र' शशी अथवा, मसूरकचन्द्रो धान्यविशेषदल, घ्राणेन्द्रिय मतिमुक्तकचन्द्रसंस्थित अतिमुक्तकचन्द्रक पुष्पविशेषदल, रसनेन्द्रियं क्षुरप्रसंस्थित, स्पर्शनेन्द्रियं नानाकार ॥ बाहल्लति॥ इन्द्रियाणा बाहल्य वाच्य, तच्चेद-सर्वाण्यङ्गुलासङ्ख्येयभागबाहल्यानि ॥ पोहत्तति ॥ पृथुत्वं तच्चेद-श्रोत्रचक्षुर्घ्राणाना मङ्गुलासङ्ख्येयभागो जिह्वेन्द्रियस्या ङ्गुलपृथक्त्वं, स्पर्शनेन्द्रियस्य च शरीरमान ॥ कइपएसत्ति ॥ अनन्तप्रदेशनिष्पन्नानि पञ्चापि ॥ ओगाढेत्ति ॥ असङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि ॥ अप्पाबहुत्ति ॥ सर्वस्तोक चक्षुरवगाहते तत श्रोत्रघ्राणेन्द्रियेक्रमेण सङ्ख्यातगुणे ततो रसनेन्द्रियमसङ्ख्येयगुण तत स्पर्शन सङ्ख्येयगुणमित्यादि ॥ पुट्ठपविट्ठ

ह्या तेकहेछे—पन्नवणाना पनरमा इन्द्रियपदनो पहिलो उद्देशो इहा कहवो। सठाण बाहल्ल पोहत्त। तिहा द्वारगाथा सठाणबाहल्ल पोहत्तकइपएसओगाढे अप्पाबहुपुट्ठपविट्ठ विसयाअणगारआहारे ॥ १ ॥ इहा सूत्रमाहे तीनद्वारलिख्या तेबोजा । जावअलोगोइंदिय उद्देसो। रसनेन्द्री यावत् शब्देकरी जाणवा तिहा सस्थान श्रोत्रादिकनो कहवो, ते इम श्रोतेन्द्री कदम्बफूलने सस्थाने चक्षु इन्द्री मसूरक चंद्रनेआकारे मसूर ते आसनविशेष गाल्लमसूरियो इतिलोकभाषा चद्र कहतां चन्द्रमा अथवा मसूरचद्रभेलो एक नाम तेधान्यविशेष तेहनो अर्द्ध तथा घ्राणेंद्रिय अतिमुक्तचद्र ते फूल विशेषनो दल तेहने आकारें क्षुरप्रनेआकारे स्पर्शेंद्रिय अनेक सस्थाने, बाहल्लति। इन्द्रियनोबाहल्य कहवो, ते सर्व नो अगुलनो असख्यातमोभाग बाहल्यछे। पोहत्तति पृथक्त्व कहवो ते इम श्रोत्रचक्षु घ्राण नो अगुलनो असख्यातमोभाग पृथक्त्व, जिह्वेंद्रिय अगुल पृथक्त्व, स्पर्शेंद्रिय शरीरप्रमाणें। कइपएसत्ति। पचेइ अनतप्रदेशे नीपनाछे। ओगाढत्ति। असख्येयप्रदेशावगाढछे सर्व। अप्पबहुत्ति। सर्वथोड़ू चक्षुअवगाहनाथी तिवारपछी श्रोत्र घ्राण रसन अनुक्रमे सख्यातगुणा स्पर्शेंद्रिय असख्यातगुणो अवगाहनाथी। पुट्ठपविट्ठत्ति।'श्रोत्रादिक चक्षुरहित स्पर्शो अर्थ अनेप्रविष्ट अर्थनेग्रहै। विसयति। सर्वनो जघन्यथी अगुलनो असख्यात

॥ टीका ॥

मेक सुपरिच सङ्कोचएक मिति ॥ विक्खम्भपरिक्खेवोत्ति ॥ एतौ वाच्यौ' तत्र सङ्ख्यातविस्तृताना सङ्ख्यातयोजन आयामो विष्कम्भ परिक्षेपश्च इतरेषा
त्वन्यथेति, तथा वर्णादयो वाच्या, ते चा त्यन्त मनिष्टा' इत्यादि बहुवक्तव्य याव दय मुद्देशकान्तो यदुत ॥ किसव्वपाणाइत्यादि ॥ अस्यचैव प्र
योग , अस्या रत्नप्रभाया त्रिंशन्नरकलक्षेषु किं सर्वे प्राणादय उत्पन्नपूर्वा, मन्नोत्तर ॥ असइति ॥ असकृ दनेकश' ' इदच वेलाद्वयादावपिस्या दतो
त्यन्तवाहुल्यप्रतिपादनायाह ॥ अदुवत्ति ॥ अथवा, ॥ अणंतखुत्तोत्ति ॥ अनन्तकृत्वो ऽनन्तवारान् ॥ इतिद्वितीयशतेतृतीय-उद्देश समाप्त ॥ ३ ॥
तृतीयोद्देशके नारका उक्ता, ते च पञ्चेन्द्रिया इती न्द्रियप्ररूपणाय चतुर्थोद्देशक , तस्य चादिसूत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ पढमिल्लोइंदियपउनेयव्वोत्ति ॥
प्रज्ञापनाया मिन्द्रियपदाभिधानस्य पञ्चदशपदस्य प्रथमउद्देशको ऽत्र नेतव्यो ऽध्येतव्य , तत्रच द्वारगाथा—संठाणबाहल्ल पोहत्तकइपएसउगाढे ।

॥ मूल ॥

हंतागोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो पुढवीउद्देसो ॥ विईयसए तईओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥
कइणभंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता , तजहा—पढमिल्लो इंदियउद्देसो णेयव्वो , संठा

॥ भाषा ॥

मध्ये एकसहस्त्रयोजन सुषिरछे, उपर एकसहस्त्रयोजन सङ्कोचछे, तथा विक्खम्भपरिक्खेवो विष्कम्भ अने परिधि कहवा, तिहा सङ्ख्यात योजनविस्तारछे
तसङ्ख्यातयोजन आयामे अने विष्कम्भे अने परिधिछे, अने बीजा असङ्ख्यात योजननाछे ते आयाम १ विष्कम्भ २ अने परिधि असङ्ख्यात योजनना जाणवा
तथा । वर्णगंधरस फासादि १ किसव्वपाणाउववण्णपुव्वा हंताअसइ अदुवा अणंतखुत्तो पुढवीउद्देसो । वर्णादिक कहवा ते अत्यत अनिष्ट इत्यादि वणो
वक्तव्यछे यावत् उपदेशना अतलगे इत्यादि एहनो इमप्रयोग श्री रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीसलाख नरकावासानेविषे स्यू सगला प्राणी उपना पूर्वे इति
प्रश्न उत्तर हा एकवार नही घणीवार अथवा अनन्तीवार उपना एपृथिवीना उद्देशोजाणवो । वितियसयस्सतइओउद्देसो । एवीजा शतकनो त्रीजो
उद्देशो टव्वार्थोलिख्यो ॥ ३ ॥ त्रीजे उद्देशे नारकीकह्या ते नारकी पचेंद्रीछे इहा इन्द्रीनो अधिकार कहेछे—कइणभंतेइंदिया पण
त्ता गोयमा पचइंदिया पण्णत्ता तजहा पढमिल्लोइंदियउद्देसोणेयव्वो । केतला ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ! इन्द्रियकह्या इतिप्रश्न हेगौतम ! पाचइन्द्री क

सम्बन्धस्या स्येद मादिसूत्रं ॥ कइण नते। पुढवीउइत्यादि ॥ इहच जीवाभिगमनारकद्वितीयोद्देशके अर्थसंग्रहगाथा–पुढवीउगाहित्ता निरयासठाण मेववाहल्ल । विक्खंनपरिक्खेवो वसोगधोयफासोय ॥ १ ॥ सूत्रपुस्तकेषुच पूर्वार्द्धमेव लिखित शेषाणा विवक्षितार्थाना यावच्छब्देन सूचितत्वादि ति, तत्र ॥ पुढवित्ति ॥ पृथिव्यो वाच्या स्ताश्चैव–कइण नते। पुढवीउ पन्नत्ताउ ? गोयमा। सत्त तजहा–रयणप्पन्नेत्यादि । उगाहित्तानिरयत्ति ॥ पृथिवी मवगाह्य कियद्दूरे नरका इतिवाच्य' तत्रा स्या रत्नप्रभाया अशीतिसहस्रोत्तरयोजनलक्षवाहल्याया मुपर्यक योजनसहस्रमवगाह्याधोप्येकं व र्ज्जयित्वा त्रिंशन्नरकलक्षाणि नवन्ति, एव शर्कराप्रभादिषु यथायोग वाच्य ॥ सठाणमेवत्ति ॥ नरकसस्थान वाच्य' तत्र ये आवलिकाप्रविष्टा स्ते वृत्ता स्त्र्यस्रा श्चतुरस्राश्च, इतरेतु नानासस्थाना ॥ वाहल्लति ॥ नरकाणा वाहल्य वाच्य, तच्च त्रीणियोजनसहस्राणि, कथ अध एक मध्ये शुषिर

कइणं भंते ! पुढवीउ पन्नत्ताउ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाणं जो वितिउ उद्देसो सो णेयव्वो, पुढवीउगाहित्ता निरयासठाणमेववाहल्लं । विक्खंनपरिक्खेवो वसोगंधोयफासोय ॥ १ ॥ किं सव्वपाणा उववन्नपुव्वा ?

जेएकजीव मारणांतिक समुद्घाते मरीने पृथिवीनेविषे ऊपजे तेहभणी पृथिवीनो अधिकार कहेछे–कइणभते पुढवीओ पन्नत्ताओ जीवाभिग मे णेरइयाण जोवितिओउद्देसोसोणेयव्वो । केतली हेभगवन् ! पृथिवी कही इतिप्रश्न, जीवाभिगमने नारक वीजाउद्देशानेविषे अर्थ संग्रहगाथा कि णिही एक पुस्तकनेविषे गाथानो पूर्वार्द्धहीज लिख्युछे शेष अर्थ यावत् शब्दे कहवो, तत्र पृथिवी कहवी, तेइम केतली हेभगवन् ! पृथिवीकही, गोत म सात पृथिवीकही, तेकेही रत्नप्रभा इत्यादि। उगाहित्ताणिरयासठाणमेववाहल्लविक्खभपरिक्खेवो इति। पृथिवी अवगाही केतलीदूर नरकावासाछे तिहा एरत्नप्रभापृथिवीनेविषे एकलाख अशीहजार योजननो पिण्डछे, तेमाहे ऊपरि एक सहस्र योजन अवगाही जे नीचे एकसहस्र योजन मूकीये ते विचिमा त्रीसलाख नरकावासाछे इम शर्करा प्रभादिक पृथिवीनेविषे यथायोग कहवा, । सठाणमेवत्ति। नरकनो सठाणकहवो तिहा जे आवलिका प्रविष्टनरकावासाछे तेवर्त्तुल त्र्यश्र चउरंश्रछे, अने वीजा नानाप्रकार सस्थानेछे। वाहल्लति। नरकनो जाडपणो कहवो त्रिणिसहस्रयोजनछे तेकिम, नीचे एकसहस्रयोजनघनछे,

॥ टीका ॥

दिपुतु यथायोगमित्यर्थः; तत्र वेदनासमुद्घातेन समुद्धत आत्मा वेदनीयकर्म्मपुद्गलाना शातं करोति, कपायसमुद्घातेन कपायपुद्गलाना मारणान्तिकसमुद्घातेन आयु कर्म्मपुद्गलाना वैकुर्विकसमुद्घातेन समुद्धतो जीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निःकाश्य शरीरविष्कम्भबाहल्यमात्र मायामतश्च सङ्ख्येययोजनानि दण्ड निसृजति, निसृज्यच यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् शातयति, यथा सूक्ष्मा आदत्ते, यथोक्त–वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ२त्ता सखेज्जाइं जोयणाइं दण्ड निसिरइ, अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, अहासुहुमेपोग्गले आइयत्ति, एवं तैजसाहारकसमुद्घातावपि व्याख्येयौ, केवलिसमुद्घातेनतु समुद्धत केवली वेदनीयादिकर्म्मपुद्गलान् शातयतीति' एतेषुच सर्वेष्वपि समुद्घातेषु शरीराज्जीवप्रदेशनिर्गमोस्ति, सर्वेष्वेते अंतर्मुहूर्त्तमाना, नवरं केवलिको ऽष्टसामयिक, एते चैकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणा मादित स्त्रयो, वायुनारकाणां चत्वारो, देवाना पञ्चेन्द्रियतिरश्चाच पंच, मनुष्याणातुसप्त ॥ इतिद्वितीयशते द्वितीय उद्देश समाप्त ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरभ्यते, अस्य चाय मभिसम्बन्धद्वितीयोद्देशके समुद्घाता प्ररूपिता स्तेषुच मारणान्तिकसमुद्घात स्तेनच समवहता केचि त्पृथिवीषू त्पद्यत इती ह पृथिव्य प्रतिपाद्यन्तइत्येवं

॥ मूल ॥

सयमणागयद्धं चिठति, समुग्घायपय णेयव्वं ॥ बिईयसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ कइ

॥ भाषा ॥

सूक्ष्मपुद्गल प्रतेग्रहै ४ इम तैजस आहारक समुद्घात पणि वखाणवा। केवलिसमुद्घातेंकरी केवली वेदनीयादि कर्मपुद्गलप्रते शातनकरै ५ ए सर्वसमुद्घात नेविषै शरीरथकी जीवप्रदेशानो निर्गमछे, सर्वनोमान अंतर्मुहूर्त्तनोछे, एतलो विशेषछे केवली समुद्घात आठसमय प्रमाणछे, ए समुद्घात एकेंद्रिय विकलेंद्रियने पहिलातीनहुवे, वायुकाय नारकीने पहिला चारहुवे, देवता अने पचेंद्रीतिर्यंचने पचहुवे, मनुष्य सज्ञीने अने जीवपदे सात समुद्घात हुवे इम यावत् वैमानिकताई कहवा, कपायसमुद्घात अल्पबहुत्वलगे कहवो। अणगारस्सणभतेभावियप्पणोकेवलिसमुग्घाय। अणगारसाधु हेभगवन्! भावितात्मा केवलि समुद्घात। जावसासयमणागयद्धचिठति। यावत् शास्वतो अनागतकाल रहै। समुग्घायपदणेयव्व। समुद्घात पद पन्नवणानो छत्तीसमो सर्वकहवो। बितियसयस्सबितिओ। ए बीजा शतकना बीजो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे समुद्घात कह्या तेहने

॥ टीका ॥

रिगतएव भवतीति वेदनाद्यनुभवज्ञानेन सहैकीभाव, अथ प्राबल्येन घाता कथ? मुच्यते यस्मा द्वेदनादिसमुद्घातपरिगतो बहून् वेदनीयादिक स्मप्रदेशान् कालातरानुभवयोग्या नुदीरणाकरणेना कृष्य उदये प्रक्षिप्या नुभूय निर्जरयति, आत्मप्रदेशै सह श्लिष्टान् शातयतीत्यर्थ' अत प्राव ल्येन घाताइति ॥ सत्तसमुग्घायत्ति ॥ वेदनासमुद्घातादय, एतेच प्रज्ञापनाया मिव द्रष्टव्या, अतएवाह ॥ छउमत्थियइत्यादि ॥ छाउमत्थियसमुग्घाय वज्जंति, कइणंभंते! छाउमत्थियासमुग्घायापणत्ताइत्यादि सूत्रवर्ज्जित ॥ समुग्घायपयति ॥ प्रज्ञापनाया षट्त्रिंशतमपद समुद्घातार्थ मिह नेतव्य, तच्चैव—कइणं भंते! समुग्घाया पणत्ता? गोयमा! सत्तसमुग्घाया पणत्ता, तजहा—वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए इत्यादि' इहसग्रहगाथा—वेय णा १ कसाय २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयए ५ आहारे ६। केवलिएचेवभवे जीवमणुस्साणसत्तेव ७ ॥ १ ॥ जीवपदे मनुष्यपदेच सप्तवाच्या' नारका

॥ मूल ॥

सत्त समुग्घाया पणत्ता, तजहा—वेयणासमुग्घाए एवं समुग्घायपयं छउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्व जाव वेमाणियाण, कसायसमुग्घाया अप्पाबहुयं, अणगारस्सणंभंते! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाय जाव सा

॥ भाषा ॥

समुग्घायपय छउमत्थियसमुग्घायवज्ज भाणियव्वजाववेमाणियाण। हेगौतम! सात समुद्घात कह्या तेकहेछे—वेदनासमुद्घात इम पन्नवणानीपरे देखवा एतला माटेज कहेछे—छउमत्थिय समुग्घाय वज्जति ॥ कइणंभंते समुग्घाया पणत्ता इत्यादि, सूत्रवर्जीने, समुग्घायपयति पन्नवणानो छत्तीसमोपद स मुद्घात इहा जाणवो कहवो ते लेशथी देखाडेछे—कइण भते समुग्घाया पणत्ता सत्त समुग्घाया पणत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाए इत्यादि ॥ वेयण १ कसा य २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयण्य ५ आहारे ६। केवलिय ७ चेवभवे जीवमणुस्साणसत्तेव ॥ १ ॥ तिहा वेदना समुद्घाते करी वेदनीय कर्मशातनकरे १ कषाय समुद्घातेकरी कषाय पुद्गलनो शातनकरे २ मारणांतिक समुद्घाते करी आयु'कर्मपुद्गलनो शातनकरे ३ वैक्रियसमुद्घातेकरी, जीवप्रदेशप्रते शरीरथकी बाहिरकाढी शरीरविष्कम्भ बाहल्यमात्र २ अने आयामथी सख्येययोजन दण्डप्रते रचो, यथा स्थूल वैक्रियशरीरना पुद्गल पूर्वेंग्रह्या तेप्रते शातनकरे, तथा

नतु सर्वेषां ॥ आउक्खएणंति ॥ आयुष्ककर्मदलिकनिर्जरणेन ॥ भवक्खएणंति ॥ देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेन ॥ ठिइक्खएणंति ॥ आयुष्ककर्मणः स्थितेर्वेदनेन ॥ अणंतरंति ॥ देवभवसम्बन्धिनं ॥ चयंति ॥ शरीरं चइत्तत्ति ॥ त्यक्त्वा अथवा, चयंति ॥ च्यव च्यवनं ॥ चइत्तत्ति ॥ च्युत्वा कृत्वा अनंतरं क्व गमिष्यती त्येव मनन्तरशब्दस्य सम्बन्धं कार्यं ॥ इति द्वितीयशतेप्रथम उद्देश समाप्त ॥ १ ॥ अथ द्वितीय आरभ्यते, अस्यचाय मभिसम्बन्धः ॥ केणावामरणेणमरमाणेजीवेवब्धइत्ति ॥ प्रागुक्त मरणच मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतस्या न्यथाच भवतीति समुद्घातस्वरूप मिहो च्यत इत्येव सम्बन्धस्या स्येद सूत्र ॥ कइणंभंतेसमुग्घायाइत्यादि ॥ तत्र हनहिंसागत्योरितिवचनात् हननानि घाता , स मेकीभावे उत्प्राबल्ये तत श्च एकीभावेन प्राबल्येनच घाता समुद्घाता, अथ केन सहै कीभाव? उच्यते यदा आत्मा वेदनादिसमुद्घातगतो भवति तदा वेदनाद्यनुभवज्ञानप

देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयंचइत्ता कहिंगमिहिति कहिंउववज्जिहिति गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करिहिति खंदअसम्मत्तो ॥ बिइयसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ कइणंभंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा !

नाटल निर्जरणेकरी देवभवसंबंधी कर्मगत्यादिकने निर्जरणेकरी आऊखाकर्मनोस्थितिने वेदवेकरी। अणंतरचयचइत्ता। अंतर रहित अनुक्रमे शरीर तेप्रते तजीने। कहिंगमिहिति। किहांजास्ये। कहिंउववज्जिहिति। किहां उपजस्ये इसे प्रश्नकीधे। गोयमा महाविदेहेवासेसिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति। हेगोतम। महाविदेहक्षेत्रनेविषे सीझस्ये तत्वना जाणहुस्ये कर्मथी मूकास्ये शीतलो भाव हुस्ये। सव्वदुक्खाणमंतंकरिहिति। शरीरमानस दुखनो अंतकरस्ये ए पंचविशेषणनो अर्थ पूर्वलिख्यांछे तेहथी विस्तारे जाणवो। खंदओसम्मत्तो। एखंदकनो अधिकार सपूर्णथयो। बितियसयस्सपढमो उद्देसोसम्मत्तो। एबीजाशतकनो पहिलो उद्देशो पूरोथयो ॥ १ ॥ पाछिले किसेमरणे मरतोथको जीवबधे इसो मरणनो अधिकार कह्यो, ते मरण मारणांतिक समुद्घाते करीथाय तेमाटे मरणसमुद्घात कहीयेछे। कइणंभंतेसमुग्घाया पणत्ता। केतला हेभगवन्! स

॥ टीका ॥
तदेव प्रत्ययो हेतु र्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययो त स्तं ॥ कहिंगएत्ति ॥ कस्यां गतौ ॥ कहिंउववन्नेत्ति ॥ क्व देवलोकादाविति ॥ एगइयाणंति ॥ एकेषां

॥ मूल ॥
एणामं अणगारे कालमासे कालकिच्चा कहिंगए कहिंउववन्ने ? गोयमादि, समणेभगवं महावीरे भगवंगो यमं एवंवयासी, एवखलु गोयमा ! मम अंतेवासी खंदएणामं अणगारे पगइभद्दए जाव सेणं मए अब्भणु णाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाइं. आरुहेत्ता तंचेव सव्वं अवसेसयं नेयव्वं जाव आलोइयपडिक्कंते समा हिपत्ते कालमासे कालकिच्चा अच्चुएकप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीससागरोवमा इं ठिई पन्नत्ता, तत्थणं खंदयस्सवि देवस्स बावीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, सेणंभंते ! खंदए देवत्ताओ

॥ भाषा ॥
गारे। खंदकनामे साधु। कालमासकालकिच्चा। कालने अवसरे कालकरीने मरणपामीने। कहिंगएकहिंउववन्ने। किसिगतिनेविषे किसादेवलोका दिकनेविषे ऊपनो इतिप्रश्न। गोयमादि। गौतमादि इसे संबोधने। समणेभगवंमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। भगवंगोयम। भगवंत गौत मप्रते। एवंवयासी। इम कहताहुवा। एवखलुगोयमाममअंतेवासी। इम निश्चे हेगौतम। माहरो शिष्य। खंदएणामंअणगारे। खंदक इसेनामे साधु। पगइभद्दए जावसेणंमए। यावत् तेहने मैं आज्ञादीधायका। सयमेवपंचमहव्वयाइं आरोवित्ता। आपणपैज पांचमहाव्रतप्रतें थापीने आरोपीने। तंचेव सव्वं अवसेसियणेतव्वं। तिमज निश्चे सर्व विशेषरहित कहवो। जावआलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते। यावत् आलोई पडिक्कमीने निराबाधपणे समाधि पामी। कालमासेकालकिच्चा। कालने अवसरे कालप्रते करीने। अच्चुएकप्पेदेवत्ताएउववन्ने। बारमा अच्युतनामा देवलोकनेविषे देवपणें ऊपनो। तत्थणं अत्थेगइयाणदेवाणं। ते बारमा देवलोकनेविषे केतलाएक देवनो पणि सगलानोनही। बावीसंसागरोवमाइंठिईपन्नत्ता बावीस सागरोपमनी स्थिति आऊखानो कही। तत्थणंखंदयस्सविदेवस्स। तिहां खंदक पणि देवनी। बावीससागरोवमाइंठिईपन्नत्ता। बावीस सागरोपमनी स्थितिकही आऊखानो विभागकह्यो। सेणंभंतेखंदएदेवताओदेवलोआओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं। ते ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! खंदक देवताथी देवलोकथी आऊकम

महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवंवयासी , एवंखलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदएणामंअण
गारे पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे भद्दए विणीए सेणंदे
वाणुप्पिएहिं अब्भणुन्नाएसमाणे सयमेवपंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणाय समणीओय खामेत्ता अम्हेहिं सद्धि
विपुलं पव्वयं तचेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए कालगए , इमेयसे आयारभंडए भंतेत्ति, भयवंगोयमे स
मणंभगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण अंतेवासी खंद

वत श्रीमहावीरस्वामीछै। तेणेवउवागच्छति २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। समणभगवमहावीर वंदइ णमंसइ २ त्ता। श्रमण भगवत श्रीमहावीर
स्वामीप्रते वांदे नमस्कारकरे वंदनाकरीने नमस्कारकरीने। एववयासी। इम कहताहुया। एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी। इम निश्चे हेदेवानुप्रिय।
हेभगवन्। तुम्हारोशिष्य। खदएणामंअणगारेपगइभद्दे। खदकनामे साधु प्रकृतिकरी भद्रक दुष्टचितारहित। पगइउवसते। प्रकृते उपशात कषायरहि
त। पगइपयणुकोहमाणमायलोभे। स्वभावे पातलापाड्या क्रोध मान माया लोभजिणे। मिउमद्दवसपणे अल्लीणे। मृदु मार्दव गुणेकरी सपूर्ण, कर्म रजे
करडाणो नथी। भद्दयविणीए। एतला माटेज भद्रक विनयवत तेह। सेणदेवाणुप्पिएहि। तेण वाक्यालकारे, देवानुप्रिय। अब्भणुणाएसमाणे। आज्ञादी
धायका। सयमेवपचमहव्वयाइं आरोवित्ता। पोतेज सर्व प्राणातिपातादि पचमहाव्रत प्रते आरोपीने। समणाय। साधुकाजे गौतमादि प्रते। समणी
ओयखामित्ता। साधवी चदनवालाप्रमुखने खमावीने। अम्हेहिसद्धिविपुलपव्वय। अम्ह सघाते विपुलगिरिनामा पर्वते इत्यादि सर्व। तचेवणिरवसेस।
तिमज निर्विशेषे कहवो। आणुपुव्वीएकालगए। यावत् अनुक्रमे कालमरण प्रहूता। इमेयसेआयारभडणभतेत्ति। एह तेहना आचार भाडउपकरण
देखाडे हेभगवन। भगवगोयमे। भगवत गौतम समणभगवमहावीर श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। वंदइ णमसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे
वांदीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम कहताहुया। एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी। इमनिश्चे हेदेवानुप्रिय। तुम्हारो शिष्य। खदएणामअण

॥ टीका ॥

न परित्रमण यस्य सौ' सप्तम्यलोपा च्छिरस्यावर्त्त स्त ॥ सट्ठिभत्ताइति ॥ प्रतिदिनं भोजनद्वयस्य त्यागा त्रिंशता दिनै षष्टिभक्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ अणसणाएत्ति ॥ प्राकृतत्वा दनशनेन ॥ छेदेत्तत्ति ॥ छित्त्वा परित्यज्य ॥ आलोइयपडिक्कंतेत्ति ॥ आलोचित गुरूणा निवेदित य दतिचा रजात त त्प्रतिक्रान्त मकरणविपयीकृत येना सा वालोचितप्रतिक्रान्तो, ऽथवा, ॥ आलोइयपडिक्कंतेत्ति ॥ आलोचित आसा वालोचनादाना त्प्रतिक्रान्तश्च मिथ्यादुष्कृतदाना दालोचितप्रतिक्रान्त· ॥ परिणिव्वाणवत्तियति ॥ परिनिर्वाण मरण तन यच्छरीरस्य परिष्ठापन, तदपि परिनिर्वाणमेव

। मूल ॥

पडिपुन्नाइं दुवालसवासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिंभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तएणंतेथेराभगवंतो खंदयअण गारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेइ, पत्तचीवराणिगिण्हंति, विपुलाओ पव्वयाओ सणि यंसणियं पच्चोरुहंति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणंभगवं

॥ भाषा ॥

पुन्नाइं दुवालसवासाइं। वण प्रतिपूर्ण पूरा वारेवरसलगे। सामन्नपरियागपाउणित्ता। चारित्र पर्याय एतले दीक्षा पालीने। मासियाएसलेहणाए। एक मासनी सलेखणाये अनशने। अत्ताणझूसित्ता। आत्माने सेवीने आदरीने। सट्ठिभत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता। दिनप्रते भोजने दोयना त्यागथकी त्रीसे दिने साठभात अनशने तजीने छेदीने गुर्वादिके जेव्रतना अतीचारकह्या। आलोइयपडिक्कतसमाहिपत्ते। ते गुरुने सभलावीने आलोईने तेहनो मिथ्या दुष्कृतदेईने समाधिपाम्या मानसीपोडा रहितथया। आणुपुव्विणकालगए। अनुक्रमे कालपहुतो एतावता मरणपाम्यो। तएणतेथेराभगवंतो। तिवारे ते स्थविर भगवंत। खंदयअणगारकालगयजाणित्ता। खंदकसाधुप्रतें मरणपाम्या जाणीने। परिणिव्वाणवत्तिअकाउसग्गकरेति। मरणतेछते तिहा जेश रोरनो परठववीते पणि परनिर्वाणहोज तेहेतुके जेहनेते काउसग्गकरे एतले मृतकशरीर वोसरावीने। पत्तचीवराणिगिण्हति। पात्रपडघो वस्त्र उपग रण ग्रहे। विपुलाओपव्वयाओसणिय २ पच्चोरुहति। विपुलनामा पर्वतथकी हलवे २ ऊतरै ऊतरीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भग

॥ मूल ॥

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्च क्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जंपिय इमंसरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव फुसंतुत्तिकट्टु एयंपिण चरिमेहिं ऊसास नीसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु, सले हणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ, तएणंसेखंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता बहु

॥ भाषा ॥

में जीवता पर्यत । जावमिच्छादंसणसल्लंपच्चक्खाए जावज्जीवाए । यावत् मिथ्यादर्शनशल्यप्रमुख अढार पापस्थानक पचख्या जाजीवू तालगे । इयाणिपिय । इवेपणि । समणस्स भगवओमहावीरस्सअंतिए । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने समीपे । सव्वंपाणाइवाय पच्चक्खामि । सर्व प्राणातिपात त्रिविध त्रिविधकरी पच्चक्खू । जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लपच्चक्खामि । जा जीवू तालगे यावत् मिथ्यादर्शन शल्यप्रमुख अढारपापस्थानक पचक्खू । जावज्जीवाए । जा जीवं तालगे । सव्वंअसणपाणखाइमसाइम । सर्व अशन पान खादिम स्वादिम । चउव्विहंपिआहारपच्चक्खामि । चारेइ विविनाआहार पच्चक्खू । जावज्जीवाए जंपिइमंसरीरं । जा जीवू तालगे जेपणि एशरीर । इट्ठंकंतंपियंजावफुसंतुत्तिकट्टु । इष्ट कांत प्रिय यावत् रोग आतंकउपसर्ग इत्यादिकें नफरसो इमकरो । एयंपिणचरिमेहिं । एहपणि शरीर ण वाक्यालंकारे, छेहला । उस्सासनीसासेहिंवोसिरामित्तिकट्टु । सासोस्वासेकरी वोसराव इति इमकरोने । सलेहणाझूसणाझूसिए । शरीर दुर्बलकरीये तेसलेखणा तप तेहनी सेवासहित थई भत्तपाणपडियाइक्खिए । भात पाणी तेहने पच्चक्खीने एतले वोसिरावतो । पाओवगएकालंअणवकंखमाणेविहरइ । पादपोपगम अनशनेरह्यो कालमरणप्रतें अणवांछतोथको विचरे । तएणं सेखंदए अणगारे । तिवारे तेखंदकसाधु । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवना । तहारूवाणं थेराणंअंतिए । तथाविध तेहवा उत्कृष्ट स्थविरने समीपे । समाइयमाइयाइं । सामाइक आदिदेई । एक्कारसअंगाइ अहिज्जित्ता । इग्यारहअंग भणू सूधा सूत्रार्थ थकी भणीने । बहुपडि

पर्यालोचयति' सङ्गतासङ्गतविज्ञागत' ॥ उच्चारपासवणभूमिपडिलेहेइत्ति ॥ पादपोपगमना दारी दुच्चारादे स्तस्य कर्तव्यत्वा दुच्चारादिभूमिप्रत्यु ॥ टीका ॥

खदया अहंसमठे हताअत्थि, अहासुहदेवाणुप्पिया मापडिबंध, तएणंसे खदएअणगारे समणेणभगवया महावीरेणं अप्नणुन्नाए समाणे हठतुठजावहयहियए उठाए उठेइ उठेइत्ता, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, जाव नमंसित्ता सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहेइ आरुहेइत्ता समणायसमणीओय खामेइ खामेइत्ता तहारूवेहिं थेरेहि कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहेइ दुरूहेइत्ता मेहघणसन्निगासं देवसन्निवाय पुढविसिलावट्टयं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ पडिले ॥ मूल ॥

भायाए जाज्वलते। आगामिप्रभातसमय प्रगटथये यावत् जाज्वल्यमान जये। जेणेवसमणेतिए। जिहा माहरा समीपछे। तेणेवहव्वमागए। तिहा उताव लो आव्यो। सेणूणखदया अठेसमठे। तेनिश्चे हेखदका। एअर्थ समर्थछे युक्तछे। हताअत्थि। हा स्वामीछे, तिवारे भगवतकहेछे—अहासुहदेवाणुप्पिया। जिम सुख तिम हेदेवानुप्रिय पणि। मापडिबंध। विलंब मकरस्यो। तएणसेखदएअणगारे। तिवारे ते खदक साधु। समणेणभगवयामहावीरेण। श्रम ण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। अभ्भणुणाए समाणे। आज्ञादोधायको। हठतुठजावहियए। हर्षयवो सतोषपाम्यो यावत् हृदयजेहनो। उठाए उठेइ २ त्ता। उठे उठीने। समणभगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणकरेइ। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें तीनवार श्रीमणापासाथी प्रदक्षिणाक रे। जावणमसित्ता। यावत् नमस्कारकरीने। सयमेवपचमहव्वयाइ। पोतेज पचमहाव्रतप्रते। आरूहेइ २ त्ता। थापे थापीने। समणाय समणीओय। साधुगौतमादिप्रतें साधवी चदनबालाप्रमुख प्रतें। खामेइ २ त्ता। खमावीने। तहारूवेहिंथेरेहिं। तथा सर्वोत्कृष्ट स्थविरसाधू। कडाईहिंसद्धिं। वेया व्रत्यकारी ते सघाते। विपुलपव्वयंसणियं २ दुरुहेइ २ त्ता। विपुल पर्वत तेहप्रते हलवे २ चढे चढीने। मेघघणसन्निगास। सजलमेघ सरीखो श्याम। देव सन्निवायं। देवसमागम रमणीक पणाथी। पुढविसिलावट्टयंपडिलेहेइ २ त्ता। पृथिवी शिला स्थान पडिलेहे पडिलेहीने। उच्चारपासवणभूमिपडिले ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

जाग्रत कुर्वत इत्यर्थः ॥ तंअत्थितामेत्ति ॥ तदेवमपि अस्ति ताव न्मम उत्थानादि न सर्वथा क्षीणमितिभावः ॥ तंजावतामेअत्थित्ति ॥ त स्मात् यावत् ताइति जायामात्रे मे समास्ति ॥ जावत्ति ॥ यावच्च ॥ सुहत्थित्ति ॥ अज्ञार्थो भव्यान्मति, सुहस्तीवा; पुरुषवरगन्धहस्ती, एतच्च भगवतसा

॥ मूल ॥

यं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था । एवंखलु अहं इमेणं एयारूवेणं उराले णं जाव किसे धमणिसंतए जाव जीव जीवेण गच्छामि, जीवं जीवेणं चिठामि, जाव गिलामि, जाव ए वामेव अहपि ससद्दगच्छामि, ससद्दंचिठामि, त अत्थि तामे उठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कारपरक्का मे तं जाव तामे अत्थिउठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे जाव यमेधम्मायरिए धम्मोवदेसए सम

॥ भाषा ॥

ताथका रहे । तेणंकालेण तेणसमएण । तेकालनेविषे तेसमयनेविषे । समणे भगवमहावीरे । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । जेणेवरायगिहेणयरेस मोसरिए । जिहां राजगृहनामा नगरछे तेहनेविषे समोसरा आव्या । जावपरिसा पडिगया । यावत् पर्षदा वांदवा आवीहती तेपाछीगई । तएणतस्स । तिवारे तेहने । खंदयस्सअणगारस्स । खंदकनामा साधुने । अणयाकयाइ । एकदा प्रस्तावे किवारेकै । पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि । मध्यरात्रिकालस मये प्रस्तावनेविषे एतले आधोरात्रिनेविषे । धम्मजागरिय जागरमाणस्स । धर्मजागरिका धर्मचिंता जागताथकाने एतले धर्मचिंता करताथकाने । इमे यारूवे । ए एहवो एताद्दगरूप । अज्झत्थिए । आत्मविषय अध्यवसाय । चिंतिए । चितारूप प्रार्थनारूप । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् ऊपनो । एवखलुअह । हूम निश्चे । इमेणएयारूवेण । एणे इसेरूपेकरी । उरालेण जावकिसे । आग्रसारहित तेणेंकरी यावत् दुर्वलथयो । धमणिसतएजाए । मासचर्मेकरी उत्था नादिग्रत्तिरहितनाडो नीकली । जीवजीवेणगच्छामि । जीव जीवने वले हु चालुछू । जीवजीवेणचिठामि । जीवजीवने वले हु ऊभारहुछू । जावगिला मि । यावत् ग्लानथयो । जावएवामेव अहपिससद्दगच्छामि । यावत् काष्ट भृत शकटी शब्दकरे इमहुपणि शब्दसहितमार्गे जाउछू । ससद्दचिठामि । शब्दरहित ऊभोरहुछू । तंअत्थि । तोपणिछे अजेस । तामेउठाणे । तावत् मुझने उत्थान । कम्मेवलेवीरिए पुरिसक्कारपरक्कमेतंजावतामे । कर्म वल वीर्य

॥ टीका ॥

सगच्छियत्ति ॥ एरण्डकाष्ठमयी एरण्डकाष्ठभृतावा; शकटिका, एरण्डकाष्ठग्रहणंच तेषा मसारत्वेन तच्छकटिकाया शुष्काया सत्या अतिशयेन गम नादौ सशब्दत्व स्यादिति, अङ्गारशकटिका अङ्गारभृता गत्री ॥ उण्हेदिणासुक्कासमाणीति ॥ विशेषणद्वय काष्ठादीना मार्द्राणामेव सम्भवतीति, य थासम्भव मायोज्यमिति, हुतासनइय भस्मराशिप्रतिच्छन्न ॥ तवेणतेएणंति ॥ तपोलक्षणेन तेजसा, अयमभिप्रायो, यथा भस्मच्छन्नोग्नि र्बहिर्वृत्त्या तेजोरहितो ऽन्तर्वृत्त्यासु ज्वलति, एव स्कन्दको प्यपचितमासशोणितत्वा द्बहिर्निस्तेजा अतस्तु शुभध्यानतपसा ज्वलतीति, उक्तमेवार्थमाह ॥ त वतेएत्यादि ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्ति ॥ पूर्वरात्रश्च रात्रेः पूर्वोभागो ऽपररात्रश्च अपकृष्टा रात्रिः, पश्चिम स्तद्भागइत्यर्थ, स्तल्लक्षणो य कालस मयः कालात्मक समय स तथा तत्र, अथवा, पूर्वरात्रापररात्रकालसमय इत्यत्र रेफलोपात् पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्तिस्यात्, धर्मजागरिका

॥ मूल ॥

इंगच्छइ, ससद्दंचिठइ, उवचिते तवेणं अवचिए मंससोणिएणं हुयासणेविवभासरासिपडिच्छन्ने तवेण तेएणं तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिठइ, तेणकालेणं तेणंसमएणं रायगिहेनयरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया, तएणं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरि

॥ भाषा ॥

वे ते नीलास भरोहुती गाडली पछे तावडोटोथी सूकोयको। ससद्दगच्छइ। शब्दसहित एतले बोलता चाले। ससद्दचिठइ। शब्दसहित उभोरहै। एवा मेवखदएअणगारे ससद्दंगच्छइ ससद्दचिठइ। तेगाडलाने दृष्टाते इमज खदक पणि निश्चे अणगार साधु मासरहितथको हाडना शब्दसहित चाले एतले चालता हाड माहोमाहि बाजेछे शब्दकर्मारहैछे। उवचितेतवेण। उपचितपुष्टथयोछे स्येकरोने तपेंकरोने। अवचितेमंससोणिएणं तवेण। शेषथ्याछे अथवाहीनथयाछे स्येकरोने मासलोहीकरीने तपेंकरोने। हुयासणेविवभासरासिपडिच्छिन्ने तवेणं तेएण। अग्नि जिम भस्मना समूहथी ढाक्यो तप लक्षण तेजेकरो ए भावार्थ जिम रचाये ढाक्यो अग्निबाहिर तेजरहितहुवे अनेहेत्ते दीपे इम खदक पणि एशरीरनेविषे मासलोहीचारयोछे तेमाटे श रोर बाहिर तेजरहितछे पणिमाहे शुभध्यान तपेंकरो दोपेछे वलोकह्यो तेहोज अर्थ कहैछे—तवतेयसिरोएअतोवउवसोभेमाणेचिठइ। तपतेजे शोभ

॥ टीका ॥

टिकिटिका निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियासमुत्थ शब्दविशेष स्ता भूत प्राप्तो य स किटिकिटिकाभूत , कृशो दुर्बल', धमनीसन्ततो ना ड्रीव्याप्तो मासक्षयेण दृश्यमाननाडीकत्वात् ॥ जीवजीवेणत्ति ॥ अनुस्वारस्या गमिकत्वा ज्जीवजीवेन जीवबलेन गच्छति न शरीरबलेनेत्यर्थ , भा सभासित्तेत्यादौ कालत्रयनिर्द्देश ॥ गिलाइत्ति ॥ ग्लायति ग्लानो भवतीति ॥ सेजहानामएत्ति ॥ सेति अथार्थ , ॥ यथेति दृष्टान्तार्थ , नामेति स म्भावनाया, एइतिवाक्यालङ्कारे ॥ कट्ठसगडियत्ति ॥ काष्ठभृता शकटिका काष्ठशकटिका ॥ पत्तसगडियत्ति । पलाशादिपत्रभृता गन्त्री ॥ पत्ततिलभ ण्डगसगडियत्ति ॥ पत्रयुक्ततिलाना भाण्डकानाच मृन्मयभाजनाना भृता गन्त्री इत्यर्थ ॥ तिलसठगसगडियत्ति ॥ क्वचित्पाठ प्रतीतार्थश्च ॥ एरंडकट्ठ

॥ मूल ॥

वं जीवेण गच्छइ, जीवंजीवेणं चिठइ, भासंभासित्ता विगिलाइ, भासंभासमाणेगिलाइ, भासंभासिस्सामी तिगिलाइ , सेजहानामए कट्ठसगडियाइवा पत्तसगडियाइवा पत्ततिलभंडगसगडियाइवा एरंडकट्ठसगडि याइवा इंगालसगडियाइवा उण्हेदिण्णासुक्कासमाणी ससद्दंगच्छइ, ससद्दंचिठइ, एवामेव खदएअणगारे सस

॥ भाषा ॥

गडे । हाड चामडीये करी वीट्या एतलेहाड चामडीरह्यो । किडिकिडियाभूए । मास रहितहाड तेमाटे बेठता ऊठता किटकिटि शब्दहवे । किसे। दूब लोथयो । धमणिसतए । मासने क्षयेकरी नाडिनीकलो । जातेयाविहोत्था । एहवो खदकसाधु थयोरह्योछे । जीवजीवेणगच्छइ जीवजीवेणचिट्ठइ । जीव छे तेजीवने बलेकरी मार्गे जाइ पणि शरीर बलेकरीनही जीवनेबलेकरी ऊभोरहे । भासभासित्ताविगिलाति । तीनकाल निर्देशछे अतीतकाले भाषा बोल्या ग्लानथाय । भासभासमाणेगिलाति । भाषाबोलतोथको वर्त्तमानकाले ग्लानथाय । भासंभासिस्सामीतिगिलाति । भाषा आगामिकाले बोलस्यू तो पणि ग्लानथाय । सेजहानामए । ते यथा दृष्टाते नाम इसे सभावनाये, ए इतिवाक्यालकारे । कट्ठसगडियाइवा पत्तसगडियाइवा । काष्टभरी शक टिका गाडलो पलाशादिपत्रभरो गाडलो । पत्ततिलभडसगडियाइवा । पान सहित तिलाना भाडा मृन्मय भाजनथी भरी गाडलो। एरडकट्ठसगडियाइ वा । एरडकाष्टेभरो गाडलो । इगालकट्ठसगडियाइवा । अगारासूभरी गाडलो । उण्हेदिण्णा सुकासमाणी । एवेऊ विशेषण काष्ट पत्रादिक नीलाने सभ

॥ टीका ॥

यस्सत्ति ॥ सलिख्यतेकृशीक्रियते नयेति सलेखना तप स्तस्या जोषणा सेवा तया जुष्ट सेवितो झूषितोवा; क्षपितो य स तया, तस्य ॥ भत्तपाणप डियाइक्खियस्सत्ति ॥ प्रत्याख्यातभक्तपानस्य ॥ कालत्ति ॥ मरणं ॥ तिकट्टु ॥ इति कृत्वा इदविषयीकृत्य ॥ एवसपेहेइत्ति ॥ एव मुक्तलक्षणमव सम्प्रेक्षते

॥ मूल ॥

याइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एवसंपेहेइ एवसंपेहेइत्ता कल्लंपाउप्पभा याए रयणीए जाव जलंते जेणेवसमणेभगवंमहावीरे जाव पज्जुवासइ खंदयादि, समणेभगवमहावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी, सेणूण तव खंदया पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स इमे यारूवे अज्झत्थिए जाव समु प्पज्जित्था, एवंखलु अहं इमेणं एयारूवेण उरालेणं विउलेणं तचेव जाव कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्त एत्तिकट्टु, एव संपेहेइ २ त्ता, कल्लंपाउप्पभायाए जाव जलंते जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए, सेणूणं

॥ भाषा ॥

ये ते सलेखणा कहिये तेतप तेहनोसेवा तिणे सेव्यो तेहने। भत्तपाणपडियाइक्खियस्स। भात पाणी पचख्खोने। पाओवगयस्स। पादपोपगमने। का लंअणवकखमाणस्सविहरित्तएत्तिकट्टु एवसपेहेइ २ त्ता। कालमरण अणवाछतोथको विचरू इसोकरोने इम समस्तपणें आलोचे आलोचोने। कल्लपाउप्प भायाएरयणोए। आगामि प्रभातसमय प्रगटथये थके। जावजलते यावत् जाज्वल्यमान सूर्य ऊगतेथके। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी तिहां आवे। जावपज्जुवासेइ। यावत् सेवाकरे तेतले। खंदयादि। हेखंदक। इत्यादिनाम पूर्वपरे समणे भगवमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीम हावीरस्वामी। खंदयअणगारं। खंदक अणगारप्रतें। एववयासो। इमकहै। सेणूणतवखंदया। ते निश्चै तुम्हने हेखंदक। पुव्वरत्तावरत्त। मध्यरात्रिने। जाव जागरमाणस्स। यावत् धर्मचिंताए जागतायकाने। इमेयारूवे अब्भत्थिए। ए एतादृश इसरूप। आत्मविषय। जावसमुप्पज्जित्था। यावत् संकल्प ऊपनो। एव खलु अहं इमेण एयारूवेण उरालेण विउलेणं। इम निश्चे हू पणि एहवे रूपेकरी उदारे प्रधानेकरी विस्तीर्णेकरी। तचेवजावकालंअणवकखमाणस्सविहरि त्तएत्तिकट्टु। तिमज निश्चे यावत् कालमरणप्रतें अणवाछता थकाने विचरूं इसोकरोने। एव सपेहेइ २ त्ता। इम समस्तपणें आलोचीने। कल्लपाउप्प

॥ टीका ॥

ह्स्सरस्सिमीत्यादि ॥ कडाईहिंति ॥ इह पदैकदेशा त्पदसमुदायो दृश्य स्तत कृतयोगादिभि रितिस्यात्, तत्र कृता योगा· प्रत्युपेक्षणादिव्या पारा येषा सन्ति ते कृतयोगिन आदिशब्दा त्प्रियधर्म्माणो दृढधर्म्माण इत्यादि गृह्यन्तइति ॥ विउलति ॥ विपुलाभिधान ॥ मेघघणासन्निगासंति॥ घनमेघसदृश सान्द्रजलदसमान कालक मित्यर्थ ॥ देवसन्निवायंति ॥ देवाना सन्निपात समागमो रमणीयत्वा द्यत्र स तथा ॥ तपुढविसिलापट्टयं ति॥ पृथिवीशिलारूप पट्टक आसनविशेष· पृथिवीशिलापट्टक· काष्टशिलापि शिला स्या दत स्तद्व्यवच्छेदाय पृथिवीग्रहण ॥ सलेहणाभूसणाभूसि

॥ मूल ॥

सूरे सहस्सरस्सिमिदिणयरे तेयसाजलंते समणभगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाणि आरुहेत्ता समणायसमणीओय खामेत्ता त हारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्ता मेहघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढ विसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडि

॥ भाषा ॥

थीमहावीरस्वामीप्रते। वंदित्ता णमंसित्ता। वादीने नमस्कारकरीने। जावपज्जुवासित्ता। यावत् पर्युपासना सेवाकरीने। समणेणभगवयामहावीरेण। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। अब्भणुण्णाएसमाणे। आज्ञा दीधायका। सयमेवपचमहव्वयाणि आरोवेत्ता। पोतेज पचमहाव्रत सर्व प्राणातिपा त वेरमणादिक यापीने। समणायसमणीओयखामेत्ता। श्रमण गौतमादिक तेहनेकाजे श्रमणीसाधवी चंदनवाला प्रमुख तेहनेकाजे खमावीने। त हारूवेहिंथेरेहि। तथारूप सर्वोत्कृष्ट तिणेकरी स्थविरेकरी। कडाईहिसद्धि। कीधोयोग प्रत्युपेक्षणादिव्यापार ते कृतयोगी तिणेकरी सहित। विपुलं पव्वयंसणियं २ दुरूहित्ता। विपुलनामे पर्वत तिहां हलवे २ चढीने। मेहघणसण्णिगासं। जिसो स्याम मेघ तिसी शिला निबडजलधर समान स्याम। पुढवीसिलावट्टय। पृथिवी शिलारूप आसनविशेष। देवसण्णिवायं। देवसमागम रमणीकपणाथी। पडिलेहित्ता। पडिलेही पूंजीने। दब्भसंथारियं संथ रित्ता। डाभ तृणविशेषनो संथारो तेप्रतें पाथरीने। दब्भसंथारोवगयस्स। डाभने संथारे उपगत रह्याने। संलेहणाझूसणाझूसियस्स। दूबलाकर्मकीजे इ

द्धिको ऽनशनविधि र्महाफलो भवती त्यभिप्रायेण भगवन्निर्वाणे शोकदुःखभाजन माभूव मह मित्यभिप्रायेणवा; चिन्तित मनेनेति॥ कल्लमित्यादि ॥ कल्लमिति ॥ श्व, प्रादुः प्राकाश्ये, ततः प्रकाशप्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते, फुल्लं विकसितं तच्च तदुत्पलंच फुल्लोत्पलं तच्च कमलश्च हरिणविशेषः फुल्लोत्पलकमलौ तयोः कोमल मकठोर मुन्मीलितं दलानां नयनयो श्चोन्मीलनं यस्मि स्त त्तथा तस्मिन्, अथेति रजनीविभातानन्तरं, पाण्डुरे प्रभाते रक्ताशोकप्रकाशेन किंशुकस्य शुकमुखस्य गुञ्जार्द्धस्यच रागेण सदृशो यः स तथा तस्मिन्, तथा कमलाकरा ह्रदादय स्तेषु खण्डानि नलिनीखण्डानि तेषां बोधको यः स कमलाकरखण्डबोधक स्तस्मि न्नुत्थिते अभ्युद्गते कस्मि न्नित्याह ॥ सूरे ॥ पुनः किंभूतइत्याह॥ स

णे भगवंमहावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव तामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे किंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियंमि

पुरुषाकार पराक्रम एतले आजलगे उत्थानादि सर्वथा चीणथया नथी तेमाटे ज्यांलगे मुझने। अत्थिउट्ठाणे। छे उत्थान। कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे। कर्म बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम। जावयमे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणेभगवमहावीरे। यावत् वपुन माहरा धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्मप्रवर्तक श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। जिणेसुहत्थीविहरइ तावतामेसेयं। जीत्याछे रागद्वेष जिणे, सुभार्थीछे भव्यप्रतें, अथवा सुहस्तीनीपरे विचरे तेतलाकाललगे मुझने श्रेयमंगलीक। कल्लंपभाएरयणीए। आगामि प्रभात रात्रिनेविषे। फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि। विकशित उत्पलफूल कमल हरिणना नेत्र कोमल अकठोर कमलना दल हरिणना नेत्र मिल्याथ्या ते उन्मीलितथया। अहपंडुरेप्पभाए। अथ पांडुर प्रभातथया। रत्तासोगप्पगासे। राता अशोक वृक्षना पुष्पतिसी प्रभा तिणेकरी। किंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे। केसूडानोफूल अथवा शुकनोमुख अथवा चिरमीनोअर्द्ध तेहना रागसरीखोजे। कमलागरसंडबोहए उट्ठियंमिसूरे। कमलना आगर सरोवर तेहनेविषे नलिनीखण्ड तेहने खिडावणहार तेहनेविषे उगतेथके सूर्य। सहस्सरस्सिम्मिदिणयरे तेयसाजलंते। सहस्र किरणसहित दिनकरसूर्य तेजेकरी जाज्वल्यमान एतावता प्रभातसमये। समणभगवमहावीरं। श्रमण भगवंत

॥ टीका ॥

ष्टस्य न्यूनस्तपादस्या पनीतसिंहासनस्येव यदवस्थानं तद्वीरासनं, तेन ॥ अवाउडेणायत्ति ॥ प्रावरणाभावेनच ॥ उरालेणमित्यादि ॥ उरालेन आ शसारहिततया प्रधानेन प्रधान चाल्पमपि स्यादित्याह, ॥ विपुलेन ॥ विस्तीर्णेन बहुदिनत्वात्, विपुलंच गुरुभि रननुज्ञातमपि स्या दप्रयत्नकृतं वा; स्यादतआह ॥ पयत्तेणति ॥ प्रदत्तेन अनुज्ञातेन गुरुज्जि' प्रयत्नेनवा; प्रयत्नवता प्रमादरहितेनेत्यर्थ, एवविधमपि सामान्यत प्रतिपन्न स्यादि त्याह, प्रगृहीतेन बहुमानप्रकर्षा दाश्रितेन, तया कल्याणेन नीरोगताकारणेन, शिवेन शिवहेतुना धन्येन धर्म्मधनसाधुना' मङ्गल्येन दुरितोपशम साधुना, सश्रीकेण सम्यक्पालना त्सशोजेन, उदग्रेण उन्नतपर्यवसानेन' उत्तरोत्तर वृद्धिमतेत्यर्थ, उदात्तेन उन्नतभाववता ॥ उत्तमेणति ॥ ऊर्द्ध त मसो अज्ञाना द्य त्त तथा तेन ज्ञानयुक्तेने त्यर्थ, उत्तमपुरुषासेवितत्वा द्वो; त्तमेन, उदारेण औदार्यवता नि स्पृहत्वातिरेकात्, महानुभागेन म हाप्रभावेण ॥ सुक्केत्ति ॥ शुक्रो नीरसशरीरत्वात् ॥ लुक्खेत्ति ॥ बुभुक्षावशेन रूक्षीभूतत्वात्, अस्थीनि चर्म्मावनद्धानि यस्य सो स्थिचर्मावनद्ध, कि

॥ मूल ॥

विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएणंसेखदए अणगारे तेणं उरालेणं विउलेणं पयत्ते णं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियभूए किसे धमणिसंतएजाएयाविहोत्था, जी

॥ भाषा ॥

क्रिया तिर्णेकरी । अप्पाणभावेमाणेविहरइ । आत्माप्रते भाव्यमान तेधन्य मानता विचरेछे । तएणसेखंदएअणगारे । तिवारे तेखदक साधु । तेणउराले ण विउलेण पयत्तेण पग्गहियेण कल्लाणेण शिवेण धण्णेणं । तिणे आशसाकरी रहित विधानेकरी विस्तीर्ण घणादिनमाटे गुरुसमीपेगया अनुज्ञागुरुनी बहुमानसो श्रद्धा नीरोगने कारणेकरी शिवहेतुयेकरी धर्मधनेकरी । मगल्लेण सस्सिरिएण उदग्गेण । दुरित उपशमेकरी भली परे खालवायी सुशोभ नेकरी दिनदिनप्रतें तपनीवृद्धि । उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण । चढते परिणामेकरी ज्ञानयुक्तिकरी उत्तम पुरुषसेव्या वाछारहित निस्पृहप णाथी महातप्रभा प्रभावक । तवोकम्मेण सुक्केभुक्खेनिम्मसे । एहवें तपकर्म क्रियायेंकरी शरीरसूको निरसपणाथी भूखनेवसे मांसरहितथयो । अट्ठिचम्माव

॥ टीका ॥

यत्र तत् गुणरत्नसंवत्सर तप, इह च त्रयोदशमासा: सप्तदशदिनाधिका स्तप:काल स्त्रिसप्ततिश्च दिनानि पारणककालइति, एवंचाय—पणरसवीस चउवी सचेवचउवीसपणवीसाय। चउवीसएक्कवीसा चउवीसासत्तवीसाय ॥ १ ॥ तीसातेत्तीसाविय चउवीसछवीसअठवीसाय। तीसावत्तीसाविय सोल समासेसुतवदिवसा ॥ २ ॥ पणरसदसठछपंच चउरपंचसुयतिणितिणित्ति। पंचसुदोदोयतहा सोलसमासेसुपारणगा ॥ ३ ॥ इह च यत्र मासे अष्टमादितपसो यावन्ति दिनानि न पूर्यन्ते, तावन्त्यग्रेतनमासा दाकृष्य पूरणीया न्यधिकानि चाग्रेतनमासे क्षेप्तव्यानि ॥ चउत्थचउत्थेणंति ॥ चतुर्थं भक्तं यावद्भक्तं त्यज्यते यत्र तच्चतुर्थं, मिय ञ्चोपवासस्य सञ्ज्ञा, एवं षष्ठादिक मुपवासद्वयादेरिति ॥ अणिक्खित्तेणंति ॥ अविश्रान्तेन ॥ दियत्ति ॥ दिवा दिवसइत्यर्थ ॥ ठाणुक्कुडुयत्ति ॥ स्थान मासन मुत्कुटुक माधारे पुतालगनरूप यस्या सौ स्थानोत्कुटुक ॥ वीरासणेणंति ॥ सिंहासनोपवि

॥ मूल ॥

गारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे जाव नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंजहा—पढमंमासं चउत्थचउत्थेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियाठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आ

॥ भाषा ॥

यणसंवच्छरतवोकम्मउवसंपज्जित्ताणविहरित्तए। वाछ्छू हेभगवन्। तुम्हारी आज्ञापाम्यायका एतले तुम्हारो आज्ञाहोयतो गुणनिर्जराविशेष तेहने रत्न तेहनोकरवो तेरेमास सतरेदिन तपकाल अने ७३ दिन पारणाना एव मास १६ ते गुणरत्न संवच्छर तपकर्म क्रिया आदरीने विचरूं एतले तपकर इतिप्रश्न भगवंत कहेछे—अहासुहंदेवाणुप्पिया मापडिबंधं। जिम सुख होय तिम हेदेवानुप्रिय। पणि प्रतिबंध विलंब मकरस्यो। तएणंसेखंदए। अणगारे। तिवारे ते खंदक साधु। समणेणंभगवयामहावीरेण। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। अब्भणुण्णाएसमाणे। आज्ञादीधायका थके। जावण मंसित्ता। यावत् नमस्कारकरीने। गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मउवसंपज्जित्ताणविहरित्तए। गुणरत्नसंवच्छरनाम तपकर्म, तपक्रिया, अंगीकारकरीने विचरे एतले गुणरत्न संवच्छरतप आदरे इत्यर्थं। तपढममास चउत्थचउत्थेणं अणिक्खित्तेणंतवोकम्मेणं। ते कहेछे—पहिलेमासे चउत्थ ते एक उपवासने संज्ञा, इम छठम तप ते बेउपवास, इम आगे पणि कहवा, बीसामारहित अंतरारहित तपकर्मक्रियाकरे। दियाठाणुक्कुडुए। दिवसनेविषे आसन उक

सप्तरात्रिंदिवा सप्ताहोरात्रमाना, एव नवमी दशमीचेति, एता स्तिस्रोपि चतुर्थभक्तेना पानकेनेति उत्तानकादिस्थानकृतस्तु विशेष ॥ राइंदियति सप्तरात्रिंदिवा एकादशी अहोरात्रपरिमाणा इयच षष्ठभक्तेन ॥ एगराइयति ॥ एकरात्रिकी इयचाष्टमेन भवतीति ॥ गुणरयणसंवच्छरंति ॥ गुणाना रात्रिंदिवा एकादशी अहोरात्रपरिमाणा इयच षष्ठभक्तेन ॥ निर्जराविशेषाणा रचन करण संवत्सरेण सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तपसि तद्गुणरचनसंवत्सर गुणाएव वा; रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्न संवत्सरो

इंदियं , दोच्चं सत्तराइंदियं , तच्चं सत्तराइंदियं , अहाराइदियं , एगराइदियं। तएणसे खंदए अणगारे एग राइ न्निक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव समणन्नगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणन्नगवं महावीरं जाव नमसित्ता एवंवयासी , इच्छामिणं न्नंते ! तुज्केहि अन्नणुन्नाए समाणे गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए , अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं। तएणं से खंदए अण

य परन्तपकाल मास एकांतोजके इतिप्रश्न। अहासुहदेवाणुप्पिया। जिम सुख तिम हेदेवानुप्रिय। मापडिबंधतचेव। पणि विलब मकरस्यो पछेतिमज तेकरे। एवतिमासिय चाउम्मासिय पंचमासिय। इम त्रिमासिक नामतप एकमासनोज ३। चतुर्मासिकनाम चौथी प्रतिमा ४। पंचमासिकनाम पंचमी ५। छम्मासिय सत्तमासिय। छमासिकछठी ६। सप्तमासिकनाम सातमी ७। पढमसत्तराइदिय। चउत्थ चउविहार ४ व्रत ३ पारणायें आठमी ८। दोच्चसत्त राइदिय। नवमी इमज सात अहोरात्रिनी प्रतिमा जांणवी ९। तच्चसत्तराइदिय। दशमी सात अहोरात्रिनो प्रतिमा १०। अहोराइदिय। छठ्ठतप अ होरात्रिकाउसग्ग यइइग्यारमी ११। एगराइदिय। अठ्ठमतप एकरात्रि काउसग्ग यहबारमी प्रतिमा १२। तएणसेखंदएअणगारे। तिवारेतेखंदकसाधु। एगराइयभिक्खुपडिम। एकरात्रि काउसग्गनी साधुनीप्रतिमा। अहासुत्त। जिमसूत्रमाहेकही तिणे प्रकारे। जाव आराहेत्ता। यावत् आज्ञायेआराधीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहाआवीने। समणभगवंमहावीरं। श्रम ण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। जावणमसित्ता। यावत् नमस्कारकरे करीने। एववयासी। इमकहै। इच्छामिणभंतेतुज्केहि अअणुन्नाएसमाणे गुणर

॥ टीका ॥

स्य सम्यग्भावानतिक्रमेण ॥ काएणंति ॥ न मनोरथमात्रेण ॥ फासेइत्ति ॥ उचितकाले विधिना ग्रहणात् ॥ पालेइत्ति ॥ असकृदुपयोगेन प्रतिजागरणात् ॥ सोहेइत्ति ॥ शोभयति पारणकदिनेगुर्वादिदत्तशेषभोजनकरणात्, शोधयतिवा, तिचारपङ्कक्षालनात् ॥ तीरेइत्ति ॥ पूर्णेपि तदवधौ स्तोककालावस्थानात् ॥ पूरेइत्ति ॥ तत्कृत्यपरिमाणपूरणात् ॥ किट्टेइत्ति ॥ कीर्त्तयति । पारणकदिने इद चेद चैतस्या कृत्य तच्च मयाकृत मित्येव कीर्तनात् ॥ अणुपालेइत्ति ॥ तत्समाप्तौ तदनुमोदनात् ॥ किमुक्त भवतीत्याह' आज्ञया आराधयतीति, एवमेता सप्तसप्तमासान्ता स्ततोष्टमी प्रथमा

॥ मूल ॥

एण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं जाव नमंसित्ता एवंवयासी, इच्छामिण भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंधं। तंचेव एवं दोमासिय तिमासिय चाउम्मासियं पंचछसत्त, पढमसत्तरा

॥ भाषा ॥

तिक्रमेनही ज्ञानादिमोक्षमार्ग जिमछे तिमउल्लंघेनही तथा क्षयोपशम भावथी समभावकरी अतिक्रमेनही। सम्मंकाएणफासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ। भलेप्रकारे कायायेकरी फरसे,विधिग्रहणे करी वारंवार उपयोगथी, पारणादिने गुरुनो भक्तालकरी जीमे, तथा अतीचार दोषटाले,तपकाले पूरेछते कितरो एककाल पडखे, तेहनो प्रमाणपूरोकरे, पारणाने दिने गुरुप्रतेअबे भ्हारो पञ्चक्खाण पूरोहयो अनुमोदनापूर्वक पाले। आणाएआराहेए सम्मकाएणफासित्ता जावआराहेत्ता। आज्ञाआराधे भलीपरे कायायेकरी फरसीने यावत् आराधीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहां श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे आवीने। समणभगवमहावीरं। श्रमण भगवत श्रीमहावीरप्रते। वंदइजावनमसित्ता। वादे नमस्कारकरे यावत् वांदी नमस्कारकरी। एववयासी। इमकहे। इच्छामिणभंते तुब्भेहिअभणुन्नाएसमाणे। वांछूछू णवाक्यालंकारे, हेभगवन्! तुम्हारी आज्ञापाम्याथका। दोमासियंभिक्खुपडिमंउवसंपज्जित्ताणविहरित्तए। द्विमासनो साधुनो प्रतिमा आदरीने विचरू एनाम द्विमासिकाकही

॥ टीका ॥

भिग्रहविशेष एतत्स्वरूपंच–गच्छाविणिक्खमित्ता पडिवज्जइमासियमहापडिम । दत्तेगज्ञोयणस्सा पाणस्सविएगजामासमित्यादि ॥ १ ॥ न न्वयमे कादशाङ्गधारी पठित प्रतिमाश्च विशिष्टश्रुतवानेव करोति, यदाह–गच्छेच्चियणिम्माउ जापुव्वादसनवेअसपुसा । नवमस्सतइयवत्थू होइजहस्रोसु याहिगमो ॥ १ ॥ इतिकथ न विरोध ? उच्यते, पुरुपान्तरविपयो यश्रुतनियम, स्तस्यतु सर्वविदुपदेशेन प्रवृत्तत्वा न्नदोपइति ॥ अहासुत्तति ॥ सा मान्यसूत्रानतिक्रमेण ॥ अहाकप्पति ॥ प्रतिमाकल्पानतिक्रमेण, तत्कल्पवस्त्वनतिक्रमेणवा, ॥ अहामग्गति ॥ ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण' क्षायोप शमिकभावानतिक्रमेणवा; ॥ अहातच्चति ॥ यथातत्व तत्वानतिक्रमेण मासिकीमितुप्रतिमेति, शब्दार्थानतिलङ्घनेनेत्यर्थ ॥ अहासम्मति ॥ यथासा

॥ मूल ॥

उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए , अहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं । तएणं खदए अणगारे समणेणं भगव या महावीरेणं अभ्रणुन्नाए समाणे हठतुठजाव नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ , तइणं से खदए अणगारे मासिय भिक्खुपडिमं अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासमं सम्मं का

॥ भाषा ॥

इम यावत् एकमासलगे इम विस्तार ग्रन्थान्तरथी जाणवो, इहा कांईएक पूछस्ये खदकतो इग्यार अग भाण्याछे, अने प्रतिमातो विशिष्ट श्रुतवत आद रे तेमाटे इहा विरोध दीसेछे ? तेहनो उत्तर एश्रुत नियम पुरुषान्तर विशेषछे, तेखदके सर्वज्ञने उपदेशेकरी प्रतिमावही, तिणे दोपनही, वीतराग तेहनो सर्वस्वरूप जाणे, तेएकमासिक साधुनो प्रतिमा आदरीने विचरू इसो खदक पूछ्यायका भगवतकहेछे—अहासुहदेवाणुप्पिया मापडिबध । जिम सुखहु वे देवानुप्रिय पणि विलब मकरस्यो । तएणंसेखदएअणगारे । तिवारे तेखंदकसाधु समणेण भगवयामहावीरेण । श्रमण भगवत श्रीमहावीरदेवे । अभणु न्नाएसमाणे । आज्ञादीधायका । हठजावणमसित्तामासियभिक्खुपडिमउवसपज्जित्ताणविहरइ । हर्षपाम्यो यावत् नमस्कारकरीने मास प्रमाण साधुनी प्रतिमा अभिग्रहविशेष तेआदरीने विचरे प्रतिमावहै तपकरे इत्यर्थ । तएणसेखदएअणगारे । तिवारे तेखदक साधु । मासियभिक्खुपडिमं । मास प्रमा ण साधुनी प्रतिमा अभिग्रहविशेष । अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम्म । जिम सूत्रमांहि कही तिम अतिक्रमेनही प्रतिमा आचार अ

नीकृत्यविहर त्यास्तइति ॥ एक्कारस अंगाइं अहिज्जइत्ति, इह कश्चि दाह' न न्वनेन स्कन्दकचरिता त्प्रागेव एकादशाङ्गनिष्पत्ति रवसीयते, पञ्च माङ्गान्तर्भूतच स्कन्दकचरित मिद मुपलभ्यते इति कथ न विरोध ? उच्यते, श्रीमन्महावीरतीर्थे किल नव वाचना स्तत्रच सर्ववाचनासु स्कन्दकच रिता त्पूर्वकाले ये स्कन्दकचरिताभिधेया अर्था स्ते चरितान्तरद्वारेण प्रज्ञाप्यन्ते, स्कन्दकचरितोत्पत्तौच सुधर्म्मस्वामिना जम्बूनामान स्वशिष्य म ङ्गीकृत्या धिकृतवाचनाया मस्या स्कन्दकचरितमेवा श्रित्य तदर्थप्ररूपणाकृतेति न विरोध ॥ अथवा; सातिशयत्वा द्गणधराणा मनागतकालभावि चरितनिबन्धन मदुष्टमिति, भाविशिष्यसन्तानापेक्षया अतीतकालनिर्देशोपि न दुष्टइति ॥ मासियति ॥ मासपरिमाणा ॥ भिक्खुपडिमति ॥ भिक्षूचित म

सेखदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ अहिज्जइत्ता जेणेव समणेभगवमहावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एव वयासी, इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मासियंभिक्खुपडिम

वहियाजणवयविहारविहरइ । बाहिरि देशनेविषे विहारकरो विचरे, विहारकरे इत्यर्थ । तएणखंदएअणगारे । तिवारे तेखदक अणगारसाधु । समण स्स भगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । तहारूवाण थेराण अतिए । तथा अत्युग्रक्रियाना करणहार तथा रूपजे स्थविरसाधु तेहने समोपे पासे । सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ २ त्ता । सामायिक आदिदेई छआवश्यक अने आचारागादिक इग्यार अग तेहप्रतें भ णी भणीने । जेणेवसमणेभगवमहावीरे । जिहा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । समणभगवमहा वीर वदइ णमसइ २ त्ता । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वादे नमस्कारकरे वादीने नमस्कार करीने । एवंवयासी । इमकहे । इच्छामिणभंते । वाक्कू ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । तुब्भेहिंअभणुणाएसमाणे । तुम्हे आज्ञादीधा थका एतले तुम्हारी आज्ञा होयतो । मासियभिक्खपडिमं मासनी भि क्षु साधुनी प्रतिमा चित्त अभिग्रहविशेष ते एहनोए स्वरूपके गच्छथी नीकली एकमासनी महाप्रतिमा आदरे, एक दत्तभोजन अने एकदत्तपाणी गृहे

॥ टीका ॥

या ॥ चाइत्ति ॥ सङ्गत्यागवान् ॥ लज्जुत्ति ॥ संयमवान् रज्जुरिव वा; रज्जु रवक्रव्यवहार ॥ धण्णेत्ति ॥ धन्यो धर्म्मधनलब्धेत्यर्थ ॥ खंतिक्खमेत्ति ॥ क्षान्त्या क्षमते न त्वसमर्थतया यो सौ क्षान्तिक्षम , जितेन्द्रिय इन्द्रियविकाराभावात् , यच्च प्राग् गुप्तेन्द्रियइत्युक्त' तदिन्द्रियविकारगोपनमात्रेणा पि स्यादिति विशेष ॥ सोहिएत्ति ॥ शोभित शोभावान्, शोधितोवा; निराकृतातिचारत्वात्, सौहृद मैत्री सर्वप्राणिषु तद्योगा त्सौहृदोवा; मनो अणियाणेत्ति ॥ प्रार्थनारहित ॥ अप्पुस्सुएत्ति ॥ अल्पौत्सुक्यस्त्वरारहित ॥ अबहिल्लेस्सेत्ति ॥ अविद्यमाना बहि संयमा द्बहिस्ता लेश्या मनो वृत्ति र्यस्या सा अबहिर्लेश्य ॥ सुसामण्णरएत्ति ॥ शोभने श्रमणत्वे रत ' अतिशयेनवा, श्रामण्यरत ॥ दंतेत्ति ॥ दान्त क्रोधादिदमनात्, दान्तो वा, रागद्वेषयो रन्तार्थप्रवृत्तत्वात् ॥ इणमेवत्ति ॥ इदमेव प्रत्यक्ष ॥ पुरओकाउंत्ति ॥ अग्रे विधाय मार्गानभिज्ञो मार्गज्ञनरमिव पुरस्कृत्य वा, प्रधा

॥ मूल ॥

कायगुत्ते गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबंभचारी चाई लज्जू धन्ने खंतिक्खमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अब हिल्लेस्से सुसामण्णरए दंते इणमेवनिग्गंथ पावयण पुरओ काउ विहरइ , तएणसमणेभगवमहावीरे कयंगलाओ णयराओ छत्तपलासयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहार विहरइ, तएण

॥ भाषा ॥

यत्न आदरे संगत्यागकरे, संयमलज्जासहित । धण्णेखंतिखमे जि इंदिए गुत्तबंभचारी चाई लज्जू। मन आदिदेई गोपवे, इंद्रियगोपवे गुप्त, ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य व्रत आदरे संगत्यागकरे, संयमलज्जासहित । धण्णेखंतिखमे जि तिंदिए सोहिये अणियाणे अप्पुसुए। धर्मसनसहित क्षमायेकरी खमे पणि असमर्थपणेनही इन्द्रीविकाररहित जितेंद्रिय अतीचार सोध्या अथवा सौहृ द मैत्रीभाव सर्वप्राणीनेविषे नियान प्रार्थनारहित । उत्सुकपणारहित । अबहिल्लेसे सुसामणरए। संयमते तलेश्या बाहिरिप्रवर्त्तनथी मनोवृत्ति जेहने भलो श्रमणपणो तेहनेविषे रतछे। दंतेइणमेवणिग्गंथपावयणपुरओकाउविहरइ । दांत क्रोधादिकनादमवाथी एप्रत्यक्ष निर्ग्रंथ प्रवचन आगेकरीने मा र्गना अजाण मार्गना जाण मनुष्य तेहनेआगे करीने विचरे तिम खदक पणि विचरे, । तएणसमणेभगवमहावीरे। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वा मी । कयंगलाओणयरीओ । कयंगलानामे नगरीथी । छत्तपलासयाओचेइयाओ । छत्रपलासनामा चैत्यथको । पडिणिक्खमइ २ त्ता । नीकले नीकलीने ।

॥ टीका ॥

पपग्गतयेति' ग्रथ उत्थायो त्थाय' प्रमादनिद्राव्यपोहेन विबुध्य २ प्राणादिषु विषये य सयमो रक्षा तेन संयतव्यं यतितव्य ॥ तमाणायरत्ति ॥ तदनन्तर माधया ग्रादेशेन ॥ इरियासमिएत्ति ॥ ईर्यायां गमने समित सम्यक् प्रवृत्त ईर्यासमित', सम्यक्प्रवृत्तत्वरूपत्ति समितत्व ॥ ग्रायाण भण्डमत्तनिक्खेवणासमिएत्ति ॥ ग्रादानेन ग्रहणेन सह भण्डमात्राया उपकरणपरिच्छदस्य या निक्षेपणा न्यास स्तस्या समितो य स तथा ॥ उ चारेत्यादि ॥ इहच ॥ खेलत्ति ॥ कण्ठमुखश्लेष्मा सिङ्घाणकञ्च नासिकाश्लेष्मा ॥ मणसमिएत्ति ॥ सङ्गतमन प्रवृत्तिक ॥ मणगुत्तेत्ति ॥ मनोनिरो धवान् ॥ गुत्तेत्ति ॥ मनोगुप्तत्यादीना निगमन' एतदेव विशेषेणाह ॥ गुत्तिदिएत्ति ॥ गुत्तबम्भयारीति ॥ गुप्त ब्रह्म गुप्तियुक्त ब्रह्म चरति य स त

॥ मूल ॥

एइ उठाएइ तहपाणेहिं भूएहि जीवेहि सत्तेहिं सजमेण सजमेइ, असिंचणं अठे णोपमायइ । तएणसेख दए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणास मिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते वयगुत्ते

॥ भाषा ॥

भाषा समिते बोले । तत्तउठाइ २ । पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि । तिमज निद्रा प्रमादरहित उठीने २ प्राणे करीने भूतेकरीने जीवेकरीने सत्वेकरा ने । सजमेणसजमइ । सयमेकरी यत्नकरे तेहनी रक्षाकरे । अस्मिचणअठेणोपमायइ । एहने, चपुन ण वाक्यालंकारे, अर्थनेविषे प्रमाद नकरे । तएणसे खदए । तिवारे तेखदक । कचायणसगोत्ते । कात्यायनगोत्रीयप्रतें । अणगारेजाते । ग्टहस्थावासछोडी साधुथयो । इरियासमिए । ईर्या मार्गनेविषे भल एकारे प्रवर्त्ते ते इर्यासमित । भासासमिए । भाषा बोलवु तेविचारी बोले । एसणासमिए । एषणा ४२ दोषरहित आहार ग्रहै । आयाणभडमत्तनिक्खे वणासमिए । ग्रहवेकरी भाडमात्र उपकरण परिच्छेदने मेलवे करी उपयोगसहित । उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिए । वडीनीति ल घुनीत कठनो मुखनोश्लेस नाकनोमल ते परठवता जयणाकरे उपयोगसहित प्रवर्त्ते । मणसमिए वयसमिए कायसमिए । मननोप्रवर्त्त उपयोगसहित, व चन निःपाप प्रवर्त्ते, कायेकरी निःपापप्रवर्त्ते । मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते । मनगोपावे निरोधकरे, वचननोनिरोधकरे, कायानोनिरोधकरे । गुत्ते गुत्ति

स्त्रमाख्यात मनिश्त मिच्छामी तियोग ॥ एवदेवाणुप्पियागतव्वति ॥ युगमात्रन्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः ॥ एवचिट्ठियव्वंति ॥ निष्क्रमप्रवेशादि वर्जिते स्थाने सयमात्मप्रवचनबाधापरिहारेणो र्द्धस्थाने न स्थातव्यं ॥ एव ॥ निसीइयव्वति ॥ निषत्तव्य मुपवेष्टव्य, सदंशकभूमिप्रमार्जनादिना येनेत्यर्थः ॥ एवतुयट्टियव्वति ॥ शयितव्य सामायिकोच्चारणादिपूर्वकं ॥ एवभुंजियव्वति ॥ धूमाङ्गारादिदोषवर्ज्जनतः ॥ एवभासियव्वति ॥ मधुरादि विशेषणो

देवाणुप्पिया ! चिट्ठियव्वं गंतव्वं । एवं निसीइयव्वं, एव तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उठाय उठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेणसंजामियव्वं, अस्सिंचण अट्ठे णोकिंचिपमाइयव्वं, तएण सेखंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्सभगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्ज इ तमाणाए तह गच्छइ, तह चिठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तहा भुंजइ, तह भासइ, तह उठा

णुप्पियागतव्वं। इ म हेदेवानुप्रिय खदक। जाइवो युग प्रमाण भूमिजोता। एवचिट्ठियव्व। इम निर्गम प्रवेश वर्जितस्थानके भूमि पूंजीने ऊभोरहिवो। एव निसीइयव्वएवतुयट्टियव्व। इम भूमि पूंजीने वैसिवो, इम सामायिकादि उच्चारण पूर्वक सूइवो। एवभुंजियव्व एवभासियव्वं। इम सागारादि दोष वर्जित जीमवो, दोषवर्जित बोलिवो। एवउत्थायउत्थाय। इम ऊठीने २ प्रमाद निद्राने तजिवेकरी जागीने२। पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि। प्राणेकरीने भूतेकरीने जीवेकरीने सत्वेकरीने। सजमेणसजमियव्व। ते प्राणादिकनेविषे तेहनो रचाकरे तिणेकरीने यतनकरवो। अस्सिंचणअट्ठेणोकिंचिपमाइयव्व। एहनेविषे चपुन ण वाक्यालंकारे, अर्थनेविषे नही काई पणि प्रमादकरवो एतले समयमात्र प्रमादकरवोनही। तएणखदएकच्चायणसगोत्ते। तिवारे खदक कात्यायनगोत्रीय। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमणनो भगवत श्रीमहावीरस्वामीनो। इमएयारूव। एपूर्वेकह्यो तेरूप। धम्मियंउवएससम्मसपडिवज्जइ। धर्मप्रतें उपदेशप्रतें भलीपरे पडिवजे अंगीकारकरे। तमाणाएतहगच्छइ। अनतरेज कही ते आज्ञा आदेशेकरीने तिम इर्यासमिते जाय तहचिट्ठइ तहनिसीयइ तहतुयट्टइ तहभुंजइ तहभासइ। तिमज ऊभोरहै, तिमज निषद्यायें वैसे, तिमज सूवे तिमज दोषरहित आहारकरवो, तिम

॥ टीका ॥

त्याए ॥ एसमेइत्यादि ॥ तंइच्छामिति ॥ त त्तस्मा दिच्छामि ॥ सयमेवत्ति ॥ स्वयमेव जगवतैवेत्यर्थः, प्रव्राजितं रजोहरणादिवेषदानेन आत्मान मितिगम्यते, जावेवा, क्तप्रत्यय स्तेन प्रव्राजनमित्यर्थः, मुण्डितं शिरोलुञ्चनेन ॥ सेहावियति ॥ सेहितं प्रत्युपेक्षणादिक्रियाकलापग्राहणात, शिक्षित सूत्रार्थग्राहणात, स्तथा आचार श्रुतज्ञानादिविषय मनुष्ठानं काला ध्ययनादि, गोचरो जिक्षाटनं, एतयोः समाहारद्वन्द्व, स्तत स्तदाख्या त मिच्छामीति योग, स्तथा विनय प्रतीतो, वैनयिक तत्फल, कर्मक्षयादिचरण व्रतादिकरण पिण्डविशुध्यादि, यात्रा संयमयात्रा, मात्रा तदर्थमेवा हारमात्रा, ततो विनयादीना द्वन्द्व' स्ततश्च विनयादीना वृत्ति वर्त्तनं यत्रा सौ विनयवैनयिकचरणकरणयात्रामात्रावृत्तिको, ऽत स्त च

॥ मूल ॥

सेसाए आणुगामियत्ताए जविस्सइ तं इच्छामिणं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वाविय सयमेव मुण्डावियं सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं सयमेव आयारगोयर विणयवेणयिय चरणकरणजायामायावत्तियं धम्म माइक्खियं, तएण समणेजगवमहावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ, एवं

॥ भाषा ॥

एह मुझने निस्तारपाम्या एमाहरो आत्मा अनेउ पनेउस निताव्या थका। परलोकसहियाए खमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ। परलोक ने हितनेकाजे खमानेकाजे मुक्तिहेतु अनुगामि हपणे हस्ये। तइच्छामिणदेवाणुप्पियासयमेवपव्वाविय। ते कारण वाछू छू एणाकालमांरे, एदेवानुप्रिय! पोते भगवंतज रजोहरणादि वेषदानेकरी दीक्षाआत्र। सयमेवमुण्डाविय। भगवते पोते शिरोलुञ्चनकरो। सयमेवसेहाविय। पोतेज आचारक्रियाकलापग्रहणथी। सयमेवसिक्खाविय। पोतेज शिक्षाकरी सूत्रार्थग्रहणथी सयमेवआयारगोयरविणय वेणइय चरण करण जायामायावत्तियधम्ममाइक्खिय। पोतेज आचारश्रुतज्ञानादिविषय अनुष्ठान कालाध्ययनादिगोचरी भिक्षाफिरव, विनय करवो जेहनो फल कर्मक्षयहेतु चरणव्रतादिक करण पिंडविशुद्ध्यादिक संयमयात्रा आहारनीमर्यादा तिहां निर्वर्त्तते धर्म ते तुम्हे तहो दर्शाड़ वाछू छू। तएणसमणेभगवमहावीरे। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। खंदयकच्चायणसगोत्त। स्कंदकप्रते कात्यायनगोत्रना धणीप्रते। सयमेवपव्वावेइ। पोते दीक्षादे। जावधम्ममाइक्खइ। यावत् सर्व जिनधर्मस्वरूप कहे। एवदेवा

॥ टीका ॥

सम्मत स्तत्कृतकार्याणा सम्मतत्वात्, वहुमतो वहुशो वहुभ्यो वा; न्येभ्य सकाशात् वहुरितिवा; मतोवहुमत, अनुमतो नु विप्रियकरणस्य प श्चादपि मतो ऽनुमत ॥ भडकरडगसमाणेत्ति ॥ आभरणकरणक माभरणभाजन तत्समान आदेयत्वादिति, माणसीत मित्यादौ माशब्दो निषेधार्थः, णमिति वाक्यालङ्कारार्थ, इहच स्पृशत्विति, यथायोग योजनीय अथवा; माएन मालान मितिव्याख्येय ॥ वालत्ति ॥ व्याला श्वापदभुजगा ॥ माणवाइयपित्तिगसिंभियसंनिवाइयत्ति ॥ इह प्रथमावहुवचनलोपो द्रश्य ॥ रोगायंकत्ति ॥ रोगा. कालसहा व्याधय, आतका स्तएव सद्य उप घातिन, ॥ परीसहोवसग्गत्ति ॥ अस्य माणमित्यनेन सम्बन्ध, स्पृशतु च्छुपन्तु भवत्वित्यर्थ, तिकट्टु इत्यभिसन्धाय य पालित इतिशेष ' स किमि

॥ मूल ॥

ए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ, एवामेव देवाणुप्पिया मज्झवि आया एगे भंडे इठे कते पिए मणुसे मणामे थेज्जे विस्सासिए समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणंसीयं माणउण्ह माणंखुहा माणंपिवासा माणंचोरा माणंवाला माणंदंसा माणंमसया माणंवाइयपित्तियसंभियसंनिवाइय विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गाफुसंतुत्तिकट्टु, एसनित्थारिएसमाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नो

॥ भाषा ॥

एगेभंडे इट्ठे कंते पिए मणुसे मणामेथिज्जेविसासिएसमएवहुमएअणुमए। एकभांड इष्ट कांत प्रीत मनोज्ञ मनगमतो धर्मसयोगथी धैर्यपणो स्थिरपणो विस्वासी आत्मप्रकृत कार्यना समतपणाथी वहुमत अनुमत। भंडकरडगसमाणे। भंडकरंडक आभरण भाजन ते समान आदेयपणाथी। माणसीय मा णउण्ह माणखुहा। सगले माशब्द निषेधार्थछे ण इसोवाक्यालकारे फुसन्तु ए सवधमत प्रीतमत उष्णमत क्षुधामत। माणपिवासा माणचोरा। माणवा ला माणदंसा माणमसया। पिपासा तृषा फरसोमा चोरफरसोमा व्याल स्वापद भुजगम फरसोमा दसा फरसोमा मसा फरसोमा। माणवाइय पि त्तिय सिंभिय सणिवाइय। वातिक फरसोमा पैत्तिक सलेषम सन्निपातिक। विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गाफुसंतुत्तिकट्टु। विविधरोग कालव्याधि आतकपणि तेहीज उतावली घातकारे परीसह अने उपसर्ग एहने माण इणपदस् सवधकीजे स्पर्शो इमकरीने पाल्यो इतिशेष। एसमेनित्थारिएसमाणे।

दानि यथायोग मेकार्था न्यत्यादरप्रदर्शनायो क्तानि ॥ आलित्तेणंति ॥ पलित्तेणंति ॥ ... ॥ ... ॥ पलित्तेणंति ॥ प्रकर्षेण ज्वलित एवंविध श्वासौ कालतेनेनापि स्या दत उच्यते आदीप्तप्रदीप्तमिति ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ क्रियावचना गमिति ॥ ध्मायमाने ध्मायतिवा; दह्यमान इत्यर्थः ॥ अप्पसारेत्ति ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... मुत्कल्य विजन अन्तं भूभागं ॥ पच्छापुरायत्ति ॥ विवक्षितकालस्य पश्चा त्पूर्वंच संदेशेत्यर्थं ॥ ... ॥ ... ॥ ... । १ टीका ॥

जावधाउवत्ताउय एगंतएक्केइ एकेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता जाव नमंसइत्ता एवंवयासी, आलित्तेणंभंते ! लोए, जराए मरणेणय, सेजहानामए केइ गाहावइ आगारंसि झियायमाणंसि जेसे तत्थ भंडेभवइ अ प्पभारे मोल्लगुरुए तंगहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ, एसमेनित्थारिएसमाणे पच्छापुराए हियाए सुहा । १ सूत्र ।

... । ... । ... । ... । ... भगवान् ... । ... । ... । ... हे भगवन् । ... । ... । ... भगवान् ... । ... । ... । सेजहानामए केइ गाहावइ । ते यथा ... इति कोमलामन्त्रणे ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । ... । मोल्ल ... । ... । ... । ... । एसमेनित्थारिएसमाणे । एसो मुक्तो ... । पच्छापुराए हियाए सुहाए । ... । ... । ... । ... निर्गम ... नाम ... । ... । ... । ... । सुक्त ... । १ भाषा ।

॥ टीका ॥

एतदङ्गीकरोमीत्यर्थ', अथ श्रद्धानाद्युल्लेखं दर्शयति' एव मेत नैर्ग्रन्थं प्रवचन' सामान्यत, अथ यथै तद्यूय वदथे तियोग' ॥ तहमेयति ॥ तथै वैतद्विशेषत ॥ अवितहमेयति ॥ सत्य मेतदित्यर्थ ॥ असदद्धमेयति ॥ सन्देहवर्जित मेतत् ॥ इच्छियमेयति ॥ इष्टमेतत् ॥ पडिच्छियमेयति ॥ प्रतीप्सित प्राप्तुमिष्ट ॥ इच्छियपडिच्छियति ॥ युगपदिच्छा प्रतीप्साविषयत्वात् ॥ तिकहुति ॥ इतिकृत्वेति' अथवा, एव मेय भंते। इत्यादीनि प

॥ मूल ॥

णभंते ! निग्गंथपावयणं, रोएमिणभंते ! निग्गंथपावयणं, पत्तियामिणभंते ! निग्गंथ पावयणं, अब्भुठे मिण भंते ! निग्गंथ पावयण, एवमेयंभंते ! तहमेयंभंते ! अवितहमेयंभंते ! असदिद्धमेयंभंते ! इच्छिय मेयंभंते ! पडिच्छियमेयंभंते ! इच्छियपडिच्छियमेयंभंते ! सेजहेयं तुज्झे वदहत्तिकहु, समणभगवं महावी रं वदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसइत्ता उत्तरपुरच्छिमंदिसीभायं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता तिदडंच कुंडियंच

॥ भाषा ॥

ग। उद्यमवत थयोछे हेभगवन्। निर्ग्रंथ प्रवचनप्रते एअंगीकार करू इत्यर्थ। एवमेयभते। इमज एह हेभगवन्। जिम तुम्हेकह्यु। तहमेयभते। तिमहीज हेभगवन्। अवितहमेयभते। सत्यएह हेभगवन्। इत्यर्थ। असदिद्धमेयभते। सदेहरहित हेभगवन्। एह। इच्छियमेयंभते। इष्ट एह हेभगवन् एह इच्छित। पडिच्छियमेयभते। पामवाने इष्ट प्रतीप्सित हेभगवन्।। इच्छियपडिच्छियमेयभते। समकाले इच्छा अने प्रतीप्सा विषयथकी हेभगवन्। सेजहेयतुज्झेवदहत्तिकट्टु। तेयथा तुम्हेकहो तिमज इमकरीने। समणभगवंमहावीरंवदइणमसइ २त्ता। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वादे नमस्कार करै वादीने नमस्कारकरीने। उत्तरपुरच्छिमदिसीभागंअवक्कमइ २ त्ता। उत्तर पूर्व दिगिविभागे एतले ईशान कूणेजाय जाईने। तिदडच कुडियच। तोनदडकमडलु। जावधाउरत्ताउय। यावत् गेरू रंग्या वस्त्रते। एगतेएडेइत्तेएडेइत्ता। एकाते मूकै मूकीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहाआवे तिहाआवीने। समणभगवमहावीरं। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें। तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणकरेइ २ त्ता। तीनवार जीमणा पासाथी प्रदक्षिणाकरै करीने। जावणमसित्ता। यावत्शब्दे वादे नमस्कारकरे वादीने नमस्कार

॥ टीका ॥

ह्यियचित्ताश्च ॥ आर्त्तं निर्वर्त्तितं चित्तं यैस्ते तथा, आर्त्तोद्या; अनिवर्त्तित चित्त यैस्ते आर्त्त निवर्त्तितचित्ता ॥ सद्दहामित्ति ॥ निर्ग्रन्थ प्रवचन म स्तीति प्रतिपद्ये ॥ पत्तियामित्ति ॥ प्रीति प्रत्ययं वा; सत्य मिद मित्येव रूपं तत्र करोमी त्यर्थ, ॥ रोएमित्ति ॥ चिकीर्षामीत्यर्थ ॥ अब्भुठेमित्ति ॥

॥ मूल ॥

तिए केवलिपन्नत्तं धम्म निसामित्तए, अहासुह देवाणुप्पिया मापडिबंध, तएणंसमणेभगवंमहावीरे खंद यस्सकच्चायणसगोत्तस्स तीसियमहइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ, धम्मकहा भाणियव्वा, तएणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हठतुठजाव हयहियए उ ठाएउठेइ उठेइत्ता समणंभगवंमहावीरं तिखुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ करेइत्ता एवंवयासी, सद्दहामि

॥ भाषा ॥

छू ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । तुम्हारे समोपे केवलोये प्रणोतकह्या, जेवर्म ते सुणिवाभणो, खन्दक इसेकह्या थका भगवतकहेछै—अहासुहदेवाणुप्पि या मापडिवध । जिमसुखहुवे हेदेवानुप्रिय तिमकरो पणि विलयमा करस्यो । तएणसमणेभगवमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी । खदयस्स । खदकने । कचायणसगोत्तस्स । कात्यायनगोत्रीयने । तीसियमहइ महालियाए परिसाए धम्मपरिकहेइ । तिसी मोटी वार्त्तायेकरीने मोटी परिषदानेविषे धर्मप्रते कहे । धम्मकहाभाणियव्वा । ससार अनित्य अने धर्मनित्य इत्यादि धर्मकथा जाणवी । तएणसेखदएकचायणसगोत्ते । तिवारे ते खदक कात्यायन गोत्रनोधणी । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामोने । अंतिएधम्मसोच्चानिसम्म । समोपे धर्मसाभल्या थका हृदयधारीने । हठतुठजावहियए उठेइ २ त्ता । हर्ष संतोषपाम्यो यावत् हर्षथो हीयो विकस्यो उठेउठीने । समणभगवमहावीर तिखुत्तोआयाहिणपया हिणकरेइकरेइत्ता । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें तीनवार जीमणा पासाथी प्रदक्षिणाकरै करीने । एववयासो । इम कहै । सद्दहामिणभतेणिग्ग थपावयण । सद्दहछूं हेभगवन् । जे केवलज्ञानीभाख्यो दयारूपनिर्ग्रंथनो प्रवचनमार्ग । पत्तियामिणंभतेणिग्गथपावयणं । प्रीतिप्रतें अथवा प्रत्ययप्रते ए स त्यछे हेभगवन् । निर्ग्रंथनो प्रवचनमार्ग । रोएमिणभतेणिग्गंथपावयण । वाछूंछू हेभगवन् । निर्ग्रंथना प्रवचन रुचेछे इत्यर्थं । अब्भुठेमिणभतेणिग्गंथपावय

नस्यैव विशेषइति, नेह भेदेन दर्शितमिति ॥ धम्मकहाभाणियव्वति ॥ साचैवं–जहजीवाबझ्झती मुच्चती जहयसंकिलिस्सति । जहदुक्खाणअंत करि तिकेईअपडिवद्धा ॥ १ ॥ अट्टनियट्टियचित्ता जहजीवादुक्खसागरमुविति । जहवेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गविहाडितीत्यादि ॥ २ ॥ इहच ॥ अट्टनिय

अनीहारिमेय, नियमा सपडिक्कमे सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे । इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणेजीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसजोएइ जाव वीयीवयइ, सेतं मरमाणे हायइ, सेत्तं पंडियमरणे । इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा हायइवा, एत्थणसे खंदए कच्चायणसगोत्ते संवुद्धे समणंभगवंमहावीरं वंदइ नमंसइ, नमंसइत्ता एवं वयासी, इच्छामिणं भंते ! तुज्झंअं

हारिमेय । उपाश्रयमाहे रहै तेहना शरीरनो नीहारणोहोय अटवीमाहे रहै तेहना शरीरनो नीहारणोनहोय । णियमासपडिकमे । निश्चय ए पडिक्कमणो करे हाथ पग हिलावे । सेत्तंभत्तपचक्खाणे । भक्तप्रत्याख्यान मरणकहीये । इच्चेतेणखंदया । इत्यादिके करी णं वाक्यालंकारे, हेखंदक । दुविहेणपडियमरणेणमरमाणेजीवे । दुविधप्रकारने पंडितमरणे आराधनादिकरणेकरी मरतोथकोजीव । अणंतेहिंणेरइयभवग्गहणेहिंअप्पाणंविसजोएइ । अनंतनारकीना भवग्रहणेकरी आपणा आत्माने विसजोडे अलगोकरे एतावता चतुर्गतिभ्रमणरूप संसारथी आपणोजीव अलगोकरे । जाववीईवयइ । यावत् संसार अंतकरे जीवकर्मक्षयकरी मोक्षजाय । सेत्तंमरमाणेहायइ २ । तेए पंडितमरणे मरतोथको संसारनीहानि करवाथी जीवघणूं हानिपामे । सेत्तंपडियमरणे २ इच्चेतेणखंदया । तेए पंडितमरणकह्यो । एतले हेखंदक । दुविहेणमरणेणमरमाणेजीवे वड्ढइवाहायइवा । बेप्रकारने मरणेकरी मरतोथकोजीव संसारना वधवाथी जीववधे अने संसारनीहानिथी जीवनीहानिहोय । एत्थणसेखंदए । इहां एहवे कह्यो णं वाक्यालंकारे, तेखंदक । कच्चायणसगोत्तेसंवुद्धे । कात्यायनगोत्रीय समझ्यो बूझ्यो तत्वनीवातजाणी । समणंभगवंमहावीरं वंदइ णमंसइ २ । तिवारे श्रमण भगवंत ऐश्वर्यादिवंत श्रीमहावीरस्वामीने वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने । एवंवयासी । इम कहे । इच्छामिणंभंतेतुज्झंअंतिएकेवलिपण्णत्तंधम्मंनिसामित्तए । वांछू

ना मरणेन म्रियमाणइति ॥ वड्ढेइवड्ढेइत्ति ॥ ससारवर्द्धनेन भृशं वर्द्धतेजीव, इदहि द्विर्वचनं भृशार्थइति ॥ पाउवगमणेत्ति ॥ पादपस्येवो पगमन मस्पदतयावस्थान, पादपोपगमनं इदच चतुर्विधाहारपरिहारनिष्पन्नमेव भवतीति ॥ नीहारिमेयत्ति ॥ निर्हारेण निर्वृत्त यत्तन्निर्हारिम प्रतिश्रये यो म्रियते तस्यै तत् तत्कलेवरस्य निर्हारणात् अनिर्हारिमतु योटव्या म्रियतइति' यच्चा न्यत्रेह स्थाने इङ्गितमरण मभिधीयते, तदुक्तप्रत्याख्या

अणाइयंचणं अणवदग्गं दीहद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियहृइ, सेतं बालमरणेणं मरमाणे वड्ढइ वड्ढइ सेत्तंबालमरणे। सेकिंतं पण्डियमरणे, पण्डियमरणेदुविहे पण्णत्ते तंजहा—(ग्रंथसख्या १०००) पाउवगमणेय भत्तपच्चक्खाणेय, सेकिंत पाउवगमणे पाउवगमणेदुविहे पण्णत्ते तजहा—नीहारिमेय अनीहारिमेय नियमा अपडिक्कमे सेत्तं पाउवगमणे, सेकिंतं भत्तपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणेदुविहे पण्णत्ते तजहा—नीहारिमेय

यमणुयदेवअणाइयत्तणा अणवयग दीहमत। तिर्यंच मनुष्य देवगतिमवाते आलाजांडे आदिनथी चपुन आगे अतनही आघेनावा अद्धा मार्ग। चाउरत ससारकतारंमणुपरियट्टइ। चतुर्गतिससारूप कातार अटवीमाहे परिभ्रमणकरे। सेतवालमरणेणमरमाणेवड्ढइवेव २। तेण बालमरणेकरी मरतोथको जीव ससारने वधनेकरी जीवबधे। सेत्तबालमरणे। तेए बालमरणकह्यो। सेकि त पडियमरणे २ दुविहे पणत्ते तजहा [ग० १०००] ते स्य पडित मरण ते पडित मरण बेभेदे कह्यो तेकहेछे—पाओवगमणेय १। पादप कहीये वृक्ष तेहनीपरे अनपणे रहवो। भत्तपच्चक्खाणेय २। बीजो भात पच्च क्खाण रूप पंडितमरण २। सेकितपाओवगमणे २ दुविहे पणत्ते तजहा। ते स्यु पादपोपगमन पडितमरण पादपोपगमनपडितमरण तेबेप्रकारनो कह्यो तेकहेछे—नीहारिमेय। नगरमाहिमरे तेहना कलेवरनो नीहारणोहोय तेनीहार मरणकहीये १। अनीहारिमेय। पर्वतादिके मरे तेहनो नी हारणो नहोय २। णियमाअपडिक्कमे। नियमथी पडिक्कमणो नकरे हाथ पग हलावेनही। सेतपाओवगमेण। ते पादपोपगमन मरण कह्यो। से कितभत्तपच्चक्खाणे दुविहे पणत्ते तजहा। २। ते स्युं भक्तप्रत्याख्यान मरण तेभक्तप्रत्याख्यान मरण २। बेप्रकारे कह्यो तेकहेछे—नीहारिमेय अनी

॥ टीका ॥

त्ति ॥ वलतो बुभुक्षापरिगतत्वेन वलवलायमानस्य संयमाद्वा; भ्रश्यतो मरणं वलन्मरणं तथा वशे नेन्द्रियवशेन ऋतस्य पीडितस्य दीपकलिकारू
पाक्षिप्तचक्षुष शलभस्येव य न्मरण तद्वशार्त्तमरणं, तथा अन्त शल्यस्य द्रव्यतो ऽनुद्धृततोमरादे भावत सातिचारस्य यन्मरणं तदन्त शल्यमरण त
था तस्मै भवाय मनुष्यादे सतो मनुष्यादावेव बद्धायुषो यन्मरणं तत्तद्भव मरण मिदच नरतिरश्चामेवेति ॥ सत्थोवाडणेत्ति ॥ शस्त्रेण क्षुरिकादिना
अवपाटन विदारण देहस्य यस्मि न्मरणे तच्छस्त्रावपाटन ॥ विहाणसत्ति ॥ विहायस्याकाशे भव वृक्षशाखाद्युद्बन्धनेन यत्त निरुक्तवशा द्वैहानसम् ॥
गद्धपट्ठेत्ति ॥ गृध्रै· पक्षिविशेषै गृध्रैर्वा, मासलुब्धै शृगालादिभि स्पृष्टस्य विदारितस्य करिकरभरासभादिशरीरान्तर्गतत्वेन य न्मरणं तत् गृध्र
स्पृष्टवा; गृद्धस्पृष्टंवा; गृध्रैर्वा, भक्षितपृष्टस्य य तत् गृध्रपृष्ठ ॥ दुवालसविहेणबालमरणेणाति ॥ उपलक्षणत्वा दस्या न्येनापि बालमरणान्त पाति

॥ मूल ॥

बालमरणे , बालमरणे दुवालसविहे पन्नत्ते तंजहा—वलयमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे गि
रिपडणे तरुपडणे जलप्पवेसे जलणप्पवेसे विसभक्खणे सत्थोवाडणे वेहाणसे गिद्ध पिठे, इच्चेएणं खंदया !
दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणेजीवे अणतेहिं नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाणं सजोएइ , तिरियमणुदेव

॥ भाषा ॥

खे विलविलाटकरतो मरे, अथवा धर्मथी भ्रष्टथायमरे १। वसट्टमरणे २। इन्द्रीनेवसि पडी मरे २। अंतोसल्लमरणे ३। शल्यथकीमरे द्रव्यो तोमरादिक
भावथी सातिचार ३। तब्भवमरणे ४। मनुष्य मरीमनुष्य होय तिर्यंचमरी तिर्यचहोय ४। गिरिपडणे ५। पर्वतथी पडी मरे ५। तरुपडणे ६। वृक्षथी प
डीमरे ६। जलप्पवेसे ६। पाणीमाहि प्रवेशकरी मरे ७। जलणप्पवेसे ८। अग्निमाहि प्रवेशकरी मरे ८। विसभक्खणे ९। विष भक्षणकरी मरे ९। सत्थो
वाडणे १०। शस्त्र छुरी प्रमुखथी देहीने विदारे जिणमरणेमरे १०। वेहाणसे ११। वृक्ष शाखादिकथी पासीखाय मरेतेवेहाणस मरे ११। गिद्धपिट्ठे १२।
मृतकमाहिपडीमरे १२। इच्चेएणदुवालसविहेणं बालमरणेणमरमाणेजीवे। इत्यादि बारेभेदे बालमरणें उपलक्षणथी बीजाईपणि बालमरणछे तिणेक
री मरतोथको जीव। अणतेहिंणेरइयभवग्गहणेहि। अनंतेकरी नारकी भवग्रहणेकरी। अप्पाणसजोएइ। आपणा आत्मा जीवप्रतें जोडे मेले। तिरि

आणियव्वा । तत्थदव्वउ सिद्धी सअंता ; खेत्तउसिद्धी सअंता , कालउ सिद्धी अणंता , भावउ सिद्धी अणंता , जेवियते खंदया ! जाव किं अणंते सिद्धे तंचेव जाव दव्वउणं एगेसिद्धे सअंते, खेत्तउणं सिद्धे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे अत्थिपुणअंते, कालउणं सिद्धे सादीएअपज्जवसिए, नत्थिपुण सेअंते, भावउणं सिद्धे, अणंता णाणपज्जवा अणंता दंसणपज्जवा , अणंता अगुरुलहुयपज्जवा , नत्थिपुणसेअंते सेत्तं । दव्वउसिद्धे सअंते, खेत्तउसिद्धे सअंते, कालउ सिद्धेअणंते, भावउ सिद्धेअणंते, जेवियते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था । केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा हायइवा तस्स वियण अयमठे एवंखलु खदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते तंजहा—बालमरणेय पंडियमरणेय , सेकिंतं

छिद्धे । अत्थिपुणसेअते । वली तसिद्धिनोअत एतले अतसहितछे कालथी ण वाक्यालकारे सिद्धिशिला । नकयाविनासि ३ । नही कदेई नहुइ एतावता हुइछे हुस्ये । भावओयजहालोअस्सतहाभाणियव्वा । भावथी वपुन जिम लोकनेकह्यो तिम सिद्धशिलाकहवी । तत्थदव्वओसिद्धीसअता । तिहा द्रव्यथी सिद्धिशिला अत सहितछे । खेत्तओसिद्धिसअंता । क्षेत्रथी सिद्धिशिला अतसहितछे । कालओसिद्धिअनता । कालथी सिद्धिशिला अतरहितछे । भावओ सिद्धीअणता । भावथी सिद्धशिला अंतरहितछे । जेवियणं तेखदया । जिकेपणि वपुन हेखदक । इमेएयारूवे । एहवा रूपेकारी सयुक्तछे । अभत्थिएचिंतिए । आत्मविषय चितारूप । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् संकल्प उपनो । केणवामरणेणमरमाणेजीवेवड्ढइवाहायइवा । किसे मरणे मरतोथकोजीव वधे संसारना वधवाथी जीवनो वधवो संसारनीहानिथको जीवनीहानि । तस्सवियणअयमठे । तेहने पणि वपुन ण वाक्यालंकारे, अर्थकह्यो । एवखलु खदया । इम निश्चे हेखदक । मएदुविहेमरणेपण्णत्ते तजहा । मै बेप्रकार मरणकह्यो तेकहेछे—बालमरणेय । बालमरण १ वपुन । पडियमरणेय । पडितमरण २ वपुन । सेकिंतंबालमरणे २ दुवालसविहेपण्णत्ते तजहा । ते स्यूं बालमरण ते बालमरण बारे प्रकारनो कह्यो तेकहेछे—वलयमरणे । भू

॥ टीका ॥

वे जाव किं सतासिद्धी अणंतासिद्धी तस्सवियणं अयमठेएवखलुमएखंदया चउव्विहासिद्धी पन्नत्ता तंजहा दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउत्ति, दव्वउण ए गासिद्धित्ति ॥ इह सिद्धि र्यद्यपि परमार्थतः सकलकर्म्मक्षयरूपा सिद्धाधाराकाशादेशरूपावा, तथापि सिद्धाधाराकाशदेशप्रत्यासन्नत्वे ने पत्प्राग्भा रा पृथिवी सिद्धि रुक्ता ॥ किंचिविसेसाहिएपरिक्खेवेणंति ॥ किञ्चिन्न्यूनगव्यूतद्वयाधिके द्वे योजनशते एकोनपञ्चाशदुत्तरे भवतइति ॥ वलयमरो

॥ मूल ॥

जेवियणं ते खंदया पुच्छा। अंतासिद्धी अणंतासिद्धि, तस्सवियएणं अयमठे, मए चउव्विहासिद्धी पन्नत्ता तंजहा दव्वउ ४ दव्वउणं एगासिद्धी सअंता खेत्तउणं सिद्धी पणयालीसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगाजोयणकोडीवायालीससयसहस्साइं तीसुचसहस्साइं दोन्नियअउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ता, अत्थिपुणसेअंते, कालउणं सिद्धी नकदाइ नआसि, भावउय जहा लोयस्स तहा से अंते सेत्तं। दव्वउ जीवे सअंते, खेत्तउजीवे सअंते, कालउ जीवे अणंते, भावउ जीवे अणंते,

॥ भाषा ॥

जेपणि वचन ण वाक्यालकारे, हेखदक पूछो। सअंतासिद्धी। अंतसहित सिद्धशिलाछे अ थवा अणतासिद्धी तस्सवियण। अंतरहित सिद्धशिलाछे तेहनो पणि वचन। अयमठेखदया। एअर्थछे हेखदक। मएएवखलुचउव्विहासिद्धीपन्नत्ता तंजहा मैं इम निश्चे चारभेदे सिद्धिशिला कही तेकहेछे—दव्वओणंएगासिद्धीसअंता। द्रव्यथी एक सिद्धिशिला तेहनो अंतछे तेमाटे अंतसहि तछे। खेत्तओ णसिद्धीपणयालीसजोअणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेण। चेत्रथी सिद्धिशिला पैतालीसलाख योजन प्रमाण आयाम लांबी विष्कंभकहतां पोहलपणेछे। एगा जोअणकोडी। एक योजननी कोडी। वायालीससयसहस्साइं। बयालीसलाख। तीसचसहस्साइं। तीससहस्र। दोन्नियअउणापन्ने जोअणसए। दोयसे उगुणपचास योजन। किंचिविसेसाहिएपरिक्खेवेण पन्नत्ता। कोईएक विशेषाधिक एतले कांईएकऊंणा दोयकोस विशेषाधिक परि ए द्रव्यथी जीव अंतसहितछे। खेत्तओसअंते। चेत्रथी पणि अंतसहितछे। कालओजीवेअणंते। कालथी पणिजीव अंतरहितछे। भावओअणंते। भाव थी पणिजीव अंतरहितछे। जेवियणंतेखंदयापुच्छा।

॥ टीका ॥

नपर्याया ज्ञानविशेषा बुद्धिकृतावा विभागपरिच्छेदा अनन्तागुरुलघुपर्याया औदारिकादिशरीरा ययाश्रित्य इतरेतु कार्म्मणादिद्रव्याणि जीवस्वरूप चाश्रित्येति ॥ जेवियतेखदयापुच्छामि ॥ अनेन समग्रं सिद्धिप्रश्नसूत्र मुपलक्षणत्वा च्चोत्तरसूत्रांशश्च सूचित, स्तद्द्वयमप्येवं ॥ जेवियतेखदयाइमेयारू

॥ मूल ॥

भावत्रु लोए अणंते, जेविय ते खंदया! जाव सअंतेजीवे अणतेजीवे तस्सवियणं अयमट्ठे, एवंखलु जाव दव्वत्रुणं एगेजीवे सअंते, खेत्तत्रुण जीवे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थिपुणसे अंते, कालत्रुणं जीवे नकदाइनआसि णिच्चे नत्थिपुण से अंते, भावत्रुणं जीवे अणंतानाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंताचरित्तपज्जवा, अणंता गुरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा। नत्थिपुण

॥ भाषा ॥

खेत्तओलोएसअते। द्रव्यथी लोक अंतसहितछे, चेत्रथी लोकपणि अतसहितछे। कालओलोएअणते। कालथी लोक अंतरहितछे। भावओलोएअणते। भावथी पणि लोक अतरहितछे। जेवियणतेखदया। जेपणि चपुन वली ण वाक्यालकारे, हेखंदक। जावसअतेजीवे अणतेजीवे। यावत् अत सहितछे जीव, अत रहितछे जीव। तस्सवियणअयमट्ठे। तेहनो पणि चपुन णवाक्यालकारे, एअर्थ जाणवो। एवंखलुजावदव्वओण। इम निश्चे यावत् द्रव्यथी णं वाक्यालंकारे, ।एगेजीवेसअते। एकजीव द्रव्य अतसहितछे। खेत्तओणजीवेअसखेज्जपएसिए असखेज्जपएसोगाढे। चेत्रथी ण वाक्यालकारे, जीव असंख्यात प्रदेशात्मकछे असख्यातप्रदेश अवगाढछे। अत्थिपुणसेअते। छे वली तेहनो अत, अंतसहितछे। कालओणजीवे णकयाइणासि। कालथी णं वाक्यालकारे, जीव नही कदेई नहुतो एतावता अतीतकालेहुतो वर्त्तमानकालेछे अनागतकालेहुस्ये। णिच्चेणत्थिपुणसेअते भावओणजीवे। नित्यछे नही वली तेहनो अत एतले अनतछे। भावथी ण वाक्यालकारे, जीव। अणताणाणपज्जवा अणतादसणपज्जवा। अनता ज्ञानना पर्याय अनता दर्शनना पर्याय। अणताचरित्तपज्जवा। अनता चारित्रना पर्याय। अणतागुरुयलहुयपज्जवा। अनता गुरुलघु पर्याय ते औदारिकशरीर आश्रयीने। अणता अगुरुयलहुयपज्जवा णत्थिपुणसेअते। अनताकार्मणद्रव्य अथवा जीवस्वरूप आश्रयीने। नही वली तेहनोअत एतावता तेहनो अतछे। सेत्तदव्वओजीवेसअते।

॥ टीका ॥

पञ्चास्तिकायमयैकद्रव्यत्वा ल्लोकस्यसान्तो सौ ॥ आयामविक्खभेणंति ॥ आयामो दैर्घ्यं, विक्कम्भो विस्तार. ॥ परिक्खेवेणंति ॥ परिधिना ॥ णूविं सुइत्ति ॥ अभवत् इत्यादिभिश्च पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पर्यं मुक्त ॥ धुवेत्ति ॥ ध्रुवोऽचलत्वात्, सचा नियतरूपोपि स्या दतआह ॥ णियएत्ति ॥ नियत एकस्वरूपत्वात्, नियतरूप कादाचित्कोपिस्या दतआह ॥ सासएत्ति ॥ शाश्वत प्रतिक्षणसद्भावात्' सच नियतकालापेक्षयापिस्या दित्य त आह ॥ अक्खएत्ति ॥ अक्षयो दविनाशित्वात्, अयच बहुतरप्रदेशापेक्षयापिस्या दित्यतआह ॥ अव्वएत्ति ॥ अव्यय स्तत्प्रदेशाना मव्ययत्वात्, अ यच द्रव्यतयापिस्या दित्याह ॥ अवट्ठिएत्ति ॥ अवस्थित पर्यायाणामनन्ततया अवस्थितत्वात्, किमुक्त भवति नित्यइति ॥ वण्णपज्जवत्ति॥ वर्णविशेषा एकगुणकालत्वादय' एवमन्येपि, गुरुलघुपर्यवा स्तद्विशेषा वादरस्कन्धाना अगुरुलघुपर्यवा अणूना सूक्ष्मस्कन्धाना ममूर्त्तानाच ॥ णाणपज्जवत्ति ॥ ज्ञा

॥ मूल ॥

इय, धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे णत्थिपुण से अंते ३ । भावओणं लोए अणंतावण्ण पज्जवा , गधरसफास । अणता संठाणपज्जवा , अणता गुरुयलहुयपज्जवा , अणंता अगुरुयलहुयपज्ज वा , नत्थिपुण से अंते ४ सेत्तं खंदया । दव्वउ लोगे सअंते , खेत्तउ लोए सअंते , कालउ लोए अणंते,

॥ भाषा ॥

हो । णकयाइनभवइ । तथा नही कदेइं वर्त्तमानकाले नछे एतावताछे तथा । नकयाइनभविस्सइ । नहीकदेइं अनागतकाले नही हुस्यें एतावता । भुविसुयभवतिय भविस्सतिय धुवेणियएसासए । अतीतकालेहुतो वर्त्तमानकालेछे अनागतकाले हुस्ये अचलपणाथी एक स्वरूपथी नियत शास्वतो । अ क्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । विनाशनही जेहनो प्रदेशापेचायें खिसतु नथी । अवस्थित एतलेनित्यछे । णत्थिपुणसेअंते । नथी वली तेहनो अंत एतले अनंतछे । भावओणलोए । भावथो लोक । अणतावणपज्जवा । अनता वर्णना पर्याय एकगुणकालादिते । गधरसफास । गधरसफासना पणिकहवा । अणतासठाणपज्जवा । अनता सस्थानना पर्याय । अणतागुरुलहुयपज्जवा । अनंता वादर खधने गुरुलघुपर्याय । अणतागुरुलहुयपज्जवा । अनतासूक्ष्म खधने तथा अमूर्त्तो अगुरुलघु पर्याय । णत्थिपुणसेअंतेसेतखंदया । नथी वली तेहनो अत एतले भावथी पणि अनतछे ते एखदक । दव्वओलोएसअंते

इणमक्खेवं, मागहा ! किंसअंतेलोए अणंतेलोए एवं तंचेव जाव जेणेव ममअंतिए तेणेव हव्वमागए, से ∴ णूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे, हंताअत्थि जेविय ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, किंसअंतेलोए अणंतेलोए तस्सवियणं अयमट्ठे, एवंखलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओणं एगेलोए सअंते १ खेत्तओणं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थि पुण से अंते, कालओण लोए नकयाइनआसि नकदाइनभवइ नकदाइनभविस्सइ भविंसुय भवतिय भविस्स

समीपछे। तेणे। हव्वमागए। शिघ्र आव्यो। सेणूणंखंदया। तेनिश्चे हे खंदक। अट्ठसमट्ठे। एअर्थ समर्थ छे। हंताअत्थि। हा छे। जेवियणतेखंदया। जिकोपणि थयूं ते तुझने हे खंदक। अयमेयारूवे। एतादृशरूप। अज्झत्थिए। आत्मविषय। चिंतिए पत्थिए। चिंतित अभीष्ट प्रार्थनारूप। मणोगएसंकप्पेसमुप्पज्जित्था। मन मांही संकल्प उपनो। किंसअंतेलोए। स्यूं लोकअंतसहितछे। अणंते लोए तस्सवियणअयमट्ठे। लोक अंतरहितछे तेहनापणि अपूर्व ए अर्थ, अर्थछे। एवंखलुमएखंदया। इम निश्चे मैं हे खंदक! चउव्विहेलोएपण्णत्ते तंजहा। चार भेद लोक कह्या तेकहेछे—द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी। द्रव्यथी १ क्षेत्रथी २ कालथी ३ भावथी। द्रव्यथीणएगेलोए सअंते। द्रव्यथी पंचास्तिकायमय एक द्रव्यतत्त्वथी लोक अंतसहितछे। खेत्तओणंलोए असंखेज्जाओजोयणकोडाकोडीओ। क्षेत्रथी लोक केहवोछे असंख्याती जोजन नी कोडाकोडि जइं इम लंबाई जाणवी इम चउडाई पहोलाई तेअसंख्याती असंख्याती जोजननी कोडाकोडि। आयामविक्खंभेणं असंखेज्जा जोयणकोडाकोडीओपरिक्खेवेण पण्णत्ता अत्थिपुणसेअंते। आयामलंबपणे विष्कंभविस्तारपणेछे असंख्याती जोजननी कोडाकोडी तरीके कह्या लोक छे वली तेलोकनोअंत एतले अंतसहितछे। कालओणंलोएणकयाइणआसि। कालथी लोक कदी नथी ऐहवो नहुतो एहवातता पहीतकाले नहेतोनहुतो इम न

ट मत्यर्थतुष्टं हृष्टं वा; विस्मितं तुष्टच तोषव चित्तं मनो यत्र त तत् हृष्टतुष्टचित्तं यथाजवति, एवं आनंदित इंष न्मुखसौम्यतादिजावै समृद्धि मुपगत ' ततश्च ॥ नदिएत्ति ॥ नदित स्तै रेव समृद्धतरता मुपगत ॥ पीइमणेत्ति ॥ प्रीति प्रीणन माप्यायन मनसि यस्य स तथा ॥ परम सोमणसिएत्ति ॥ परम सौमनस्यं सुमनस्कता सञ्जातं यस्य स परमसौमनस्यित तद्दा; स्यास्तीति परमसौमनस्यिक ॥ हरिसवसविसप्पमाणहियएत्ति ॥ हर्षवशेन विसर्प्प द्विस्तार व्रज हृदय यस्य स तथा एकार्थिकानि चैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थानीति ॥ दव्वउंगंएगेलोएसअंतेत्ति ॥

लयं जाव ञ्तीव ञ्तीव उवसोन्नेमाणं पासइ पासइत्ता हठतुठचित्तमाणदिए पीइमणे परमसोमणसिए हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे जगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण जगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ खंदयाइ, समणे जगवं महावीरे खंदय क ञ्चायणसगोत्तं एवंवयासी, से णूणं तुमं खंदया सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिसावएणं

सुमनस्कपणो पाम्यो। हरिसवसविसप्पमाणहियए। हर्षनेवसेकरी विस्तारपाम्योछे हृदय जेहनो एहवो खदक। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। समणभगवमहावीर। श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीप्र ते। तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणकरेइ। तीनवार जीमणा पासाथी माडी प्रदक्षिणा करे। जावपज्जुवासइ खंदयाइ। यावत् वादी नमस्कारकरी से वाकरे हेखदक इसे आमत्रणे। समणेभगवमहावीरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। खदयकच्चायणसगोत्त। खदकप्रते कात्यायनगोत्रनाधणी प्रते। एववयासी सेणूणखदया। इम कहताहवा ते निश्चे हेखदक। सावत्थीएणयरीए पिंगलएणणियंठेणं। श्रावस्ती नगरीये पिगलनामे निर्ग्रंथसाधु। वेसा लियसावएण। श्रीमहावीरना वचन सुणिवाने रसिक लिये। इणमक्खेवपुच्छिए। इसे आक्षेपे पूछ्यो। मागहाकिसअंतेलोए। हेमागध। मगधदेशना ज पना स्यू लोक अतसहितछे अथवा; अणतेलोए। अंत रहितलोकछे। एवतचेव। इम तिमहीज निश्चे। जावजेणेवममअतिए। यावत् जिहा माहरो

॥ टीका ॥

वृत्ते २ सूर्ये मुक्त इत्येव शीलो व्यावृत्तभोजी प्रतिदिनभोजीत्यर्थ ॥ उरालंति ॥ प्रधानं ॥ सिंगारंति ॥ शृङ्गारो ऽलङ्कारादिकृता शोभा तद्योगा च्छृंगार शृङ्गारमिव शृङ्गार मतिशयशोभावदित्यर्थ., कल्याण श्रेय शिव मनुपद्रवं अनुपद्रवहेतुर्वा; धन्य धर्मधनलब्धृ तनवा; साधु तद्वा, मंगति मङ्गल्य मङ्गले हितार्थप्रापके साधु मङ्गल्यं अलङ्कृत मुकुटादिभि विभूषितं वस्त्रादिभि स्तन्निषेधा दनलङ्कृतविभूषित ॥ लक्खणवंजणगुणोववेयति ॥ लक्षण मानोन्मानादि तत्र मान जलद्रोणमानता जलभृतकुण्डिकायाहि मातव्य पुरुषः प्रवेश्यते, तत्प्रवेशेन य ज्जल ततो निस्सरति त द्यदि द्रो णमान भवति तदा सौ मानोपेत उच्यते, उन्मान त्वर्द्धभारमानता मातव्यपुरुषोहि तुलारोपितो यद्यर्द्धभारमानोभवति तदो न्मानोपेतो सावुच्य ते, प्रमाण पुन स्वाङ्गुलेना ष्टोत्तराङ्गुलशतोच्छ्रयता यदाह–जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिओउजोनवओ । माणोमाणपमाण तिविहंखलुलक्खणय य ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषतिलकादिक, मथवा; सहज लक्षण, पश्चाद्भव व्यञ्जनमिति, गुणा सौभाग्योदयो लक्षणव्यञ्जनाना वा, ये गुणा स्तै रुप पेत य त्त तथा, उपअपइ इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा दुपपेत भवतीति ॥ सिरीएत्ति ॥ लक्ष्म्या शोभयावा: ॥ हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिएत्ति ॥ हृष्टतु

॥ मूल ॥

सिगार कल्लाण सिव धन्न मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खणवंजणगुणोववेयं सिरीए अतीव अतीव उव सोभेमाणे चिट्ठइ, तएणं सेखंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्सभगवओमहावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं उरा

॥ भाषा ॥

वरहित धन्य हितप्राप्ति । अणलंकियविभूसिय लक्खणवंजणगुणोववेय । आभरणरहितशोभे वस्त्ररहितशोभे लक्षणमान उन्मानसहित मसतिल प्रमुख गुणशोभाग्यादिक तिणेंसहित । सिरीएअईव २ उवशोभेमाण २ चिट्ठइ । शोभायेंकरी घणू २ अत्यत उपशोभायमानथको रहेछे । तएणसेखंदए काधाय णसगोत्ते । तिवारे तेखंदक कात्यायनगोत्रनोधणी । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीना । वियट्टभोईयस्ससरीरयंउरालयं नित्यभोजीना शरीरप्रतें प्रधानप्रतें । जावअईव २ उवसोभेमाणं २ पासइ २ त्ता । यावत् अत्यत २ घणू २ शोभायमान २ देखे देखीने । हट्ठतुट्ठचित्त माणंदिए पीइमाणे । हर्षपाम्यो सतोषपाम्यो चित्तभेहनो आनंदितथयो मनजेहनो प्रीतिवधीछे जेहना मननेविषे । परमसोमणसिए । परम उत्कृष्ट

एसञ्जठे तवताव रहस्सकडे हव्व मक्खाए, जन्नं ञ्जहं जाणामि खंदया ! तएणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते
ञगव गोयमं एवंवयासी, गच्छामोणं गोयमा ! तवधम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं ञगवं महावीरं वदा
मो नमंसामो जाव पज्जुवासामो, ञ्जहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंध, तएणं ञगवं गोयमे खदएणं कच्चाय
णसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे ञगवं महावीरे तेणेव पहारेच्छगमणाए, तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणे ञ
गवं महावीरे वियट्टञोजी याविहोत्था, तएणं समणस्स ञगवञ महावीरस्स वियट्टञोइस्स सरीरयं उरालं

गए। अतीत वर्त्तमान अनागत एत्रिणिकालना विज्ञायक जाण। सव्वणू सव्वदरिसी। सर्वभावनाजाण सर्वभावना देखनहार। जेणमएएसञ्जठे। जिणे सु
भने एअर्थ। तवतावरहस्सकडेमक्खाए। तुम्हारे तावत् पहिला मननेविषेहीज कीधो एहवो अर्थ कह्यो। जञ्जोणञ्जहंजाणामिखदया। जेमाटे हुं जाणूंछु।
हेखदक। तएणसेखदए। तिवारे तेखदक। कच्चायणसगोत्ते। कात्यायनगोत्रीय। भगवगोयम। भगवत गौतम। एववयासो गच्छामोण गोयमा। एहवू
कहताहुया जाइये अम्हे हेगौतम। तवधम्मायरिय। तुम्हारा धर्माचार्य प्रते। धम्मोवएसय। धर्मना उपदेशक प्रते। समणभगवंमहावीर बदामो णमंसामो
श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वादीये नमस्कार करीये। जाव पज्जुवासामो। यावत् सेवाकरीये इसे वचन खदक कच्चायका। अहासुहदेवाण
प्पिया। गौतम बोल्या जिम सुख ऊपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय तुम्हने। मापडिवध। पणि विलंबमाकरस्यो। तएणंसेभगवगोयमे खदएणंकच्चायणसगोत्ते
णसद्धिं। तिवारे तेभगवत गौतम खदक कात्यायन गोत्रनोधणी ते सघातेकरो। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछे।
तेणेवपहारेच्छगमणाए तेणकालेण तेणसमएण। तिहा सकल्पकीधो जाइवानेकाजे तेकालनेविषे तेसमयनेविषे। समणेभगवमहावीरे। श्रमणभगवत श्री
महावीरस्वामी। वियट्टभोईयाविहोत्था। नित्यभोजी प्रतिदिन भोजीछे। तएणसमणस्सभगवञ्जोमहावीरस्स। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी
नो। वियट्टभोईयस्ससरीरयउराल सिगारं कल्लाण सिव धण मगल्ल। नित्यभोजीनो शरीर केहवोछे तेकहेछे—प्रधान अतिशय शोभावत श्रेयकारी उपद्र

चेद् मध्येयं ततश्चार्थ· किंसमर्थः सद्भूत इतिप्रश्न स्यात् उत्तरंतु ॥ हंता अत्थि ॥ सद्भूतोयमर्थ इत्यर्थः ॥ णाणीत्यादि ॥ अस्या यमभिप्राय , ज्ञानी ज्ञानसामर्थ्यात् ज्जानाति तपस्वीच तप सामर्थ्यात् देवतासान्निध्यात् ज्जानातीति प्रश्न कृत ॥ रहस्सकडेत्ति ॥ रह कृत प्रच्छन्न कृत हृदयएवा यथा रितत्वात् ॥ धम्मायरिएत्ति ॥ कुत एत दित्याह ॥ धम्मोवएसएत्ति ॥ उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो नतु सदा संसिद्ध , अर्हन् वन्दनाद्यर्हत्वात्, जिनो रागादि जेतृत्वात्, केवली असहायज्ञानत्वात्, अतएवा तीतप्रत्युत्पन्नानागतविज्ञायक सच देशज्ञोपि स्या दित्याह ॥ सर्वज्ञ सर्वदर्शी ॥ वियट्टभोइत्ति ॥ व्या

ताअत्थि , तएणं सेखंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवंवयासी , सेकेसिण गोयमा ! तहा रूवेणाणीवा तवस्सीवा , जेण तव एसअट्ठे मम्ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओणं तुमं जाणासि , तएणं सेभगवं गोयमे खदयं कच्चायणसगोत्तं एव वयासी , एवंखलु खदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महा वीरे उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी , जेणं मम

उत्तर । हता अत्थि । हा एअर्थ सत्यछै । तएणसेखदए । तिवारे ते खदक । कच्चायणसगोत्ते । कात्यायन गोत्रीयते । भगवगोयम । भगवत गौतम प्रते । एवपयासी सेकेसण गोयमा तहारूवे । इम कहताहुया तेकुण छैगोतम । तथारूप । णाणीवा तवस्सीवा । ज्ञानेकरीजाणें तेज्ञानी, तपवत ते तपस्वी त पनी समर्थाईथी देवसान्निध्यकरे । जेणतवएसअट्ठे ममतावरहस्सकडेहव्वमक्खाए । जिणे तुम्हने एअर्थ माहरो तावत् पहिला प्रछन्नकीधो हृदयनेविषे ज मैं धारीहतो तेअर्थ उतावलोकह्यो । जओणतुमजाणासी । जेतुम्हे माहरामननो रहस्यजाणोछो इतिप्रश्न उत्तर । तएणभगवगोयमे । तिवारे तेभगवन् गौतम । खदयकच्चायणसगोत्तं । खदकप्रतें कात्यायन गोत्रना धणी प्रतें । एवपयासी । इम कहताहुया । एवंखलुखदया । इम निश्चै हेखदक । ममधम्मा यरिए धम्मोवएसए । माहरा धर्माचार्य धर्मनागुरु धर्मना उपदेशक । समणेभगव महावीरे । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी । उप्पणणाणदसणधरे । ऊपनो केवलज्ञान केवलदर्शनना धरणहार । अरहाजिणेकेवली । त्रिभुवनमे पूजवा योग्य राग द्वेष जीता केवलज्ञानसहित । तीयपडुप्पणमणागयविया

॥ टीका ॥

सागयखदयति ॥ स्वागत शोभन मागमनं तवस्कन्दक महाकल्याणनिधे भगवतो महावीरस्य सम्पर्केण तव कल्याणनिवन्धनत्वा तस्य ॥ सुसागयति अतिशयेन स्वागत कथञ्चि देकार्थो वाशब्दा वेतो एकार्थशब्दोच्चारणच क्रियमाण न दुष्ट सम्भ्रमनिमित्तत्वा दस्येति ॥ अणुरागयखदयत्ति ॥ रेफस्या गमिकत्वा दन्वागत मनुरूप मागमन हेस्कन्दक तवेति हृदय ॥ सागयमणुरागयति ॥ शोभनत्वानुरूपत्वलक्षणधर्मद्वयोपेत तवा गमनमित्यर्थ ॥ जेणेवइहति ॥ यस्यामेव दिशीद भगवत्समवसरण ॥ तेणेवति ॥ तस्यामेवदिशि ॥ अत्थेसमत्थेत्ति ॥ अस्त्येषोर्थ ॥ अठेसमठेत्ति ॥ पाठन्तर काक्वा

॥ मूल ॥

ठेइत्ता खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदयं! कच्चायणसगोत्त एवं वयासी, हेखंदया! सागयं खदया! सुसागय खंदया! अणुरागयं खदया! सागय मणुरागयं खंदया! सेणूणं तुम खंदया! सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खे वं पुच्छिए। मागहा! कि सअंतेलोए एवं तंचेव जेणेवइहं तेणेव हव्वमागए, सेणूण खंदया! अठे समठे, हं

॥ भाषा ॥

गच्छइ २ त्ता। तिहा आवे ते तिहा आवीने। खदयकचायणसगोत्त। खदक कात्यायन गोत्रनो धणी ते प्रते। एवंवयासी। इम कहताहुया। हेखदया। हेखदक। सागयखंदया। तुम्हारो आगमन शोभन हेखदक। सुसागयखदया। अतिशयेंकरी शोभन तुम्हारो आगमन हेखदक। अणुरागयखंदया। अनुपम तुम्हारो आगमन हेखदक। सागयमणुरागयेखदया। शोभन तथा अनुपम तुम्हारो आगमन बेहूं लक्षणे सयुक्त तुम्हारो आगमन हेखदक। सेणूणतुमखदया। ते निश्चे तुम्हे हेखदक। सावत्थोएणयरीए। श्रावस्तो नगरोये। पिंगलएणंणियंठेणं। पिङ्गलनामे निर्ग्रंथसाधु। वेसालीयसावएण। श्रीमहावीरना वचन सुणवाने रशिक। इणमक्खेवपुच्छिए मागहा किसअंतेलोए अणतेलोए। इसे आक्षेपे पूछ्यु हेमागध। मगधदेशना उपना। स्यूं लोक अन्त सहितछे अथवा अनत लोक अंत रहितछे। एवतचेव। इम सर्व तिमहीज कहवी। जेणेवइह तेणेवहव्वमागए। जिणि दिशिनेविषे भगवत श्रीमहावीरनो समवसरण तेदिशिनेविषे उतावलो आव्या। सेणूणंखदया। ते निश्चे हेखदक। किअठेसमठे। स्यूं अर्थ समर्थ युक्त ए अर्थ इतिप्रश्न खदक कहेछे—

॥ टीका ॥

स्य चोत्तर सामर्थ्यगम्य, यतो यदि भगवता मध्याह्नसमये इयं वार्ता अभिहिता तदा मध्याह्नस्यो परि मुहूर्त्ताद्यतिक्रमेण या वेला भवति तस्या चद्रूव्यसीतिसामर्थ्या दुक्त, अदूरागतादिविशेषणस्यपि तद्देशप्राप्तो मुहूर्तादिरिव काल संभवति न बहुतरइति ॥ अगाराउत्ति ॥ निष्क्रम्येतिशेष, अनगारिता साधुता प्रव्रजितुं गन्तु अथवा; विभक्तिपरिणामा दनगारितया प्रव्रजितु प्रव्रज्या प्रतिपत्तु ॥ अब्भुट्ठेइत्ति ॥ आसन त्यजति यच्च भगवतो गौतमस्या ऽसयत प्रत्यभ्युत्थानं तद्भाविसयतत्वेन तस्य पक्षपातविषयत्वा द्गौतमस्य चात्नीगारागत्वा, तथा भगवदाविष्कृततदीयविकल्पस्य तत्समीपगमनत स्तत्कथना द्भगवज्ज्ञानातिशयप्रकाशनेन भगव त्यतीव बहुमानोत्पादनस्य निर्जीर्षितत्वादिति ॥ तेणमदयत्ति ॥ सम्बोधनमान ॥

॥ मूल ॥

खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारिय पव्वइत्तए। हंता पभू, जावं चणं समणे भगव महावीरे भगवउ गोयमस्स एयमठं परिकहेइ, तावचणंसे खदए कच्चायणसगोत्ते तंदेसं हव्व मागए, तएणं भगवं गोयमे खदय कच्चायणसगोत्त अदूर मागयं जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुठेइ अब्भु

॥ भाषा ॥

देवाणुप्पियाणअतिएमुंडेभवित्ता। तुम्हारे समीपे मुंड थईने। आगाराओअणगारियपव्वइत्तए इत्यादि। एकस्थानमझाडो साधुपणो अवत्सो दीक्षा लेवों इतिप्रश्न हेगौतम। समर्थ छे। जावचणं। जेतलेकाले। समणे भगवमहावीरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। भगवओगोयमस्स। भगवतगौतमने। एयमठ परिकहेइ। एह अर्थ कहीछते। तावचणंसेखदए कच्चायणसगोत्ते। तेतलेकाले वपुन ग यावत्प्रकारे, तेखंदक कात्यायनगोत्रीय। तदेसहव्वमागए। तिदेशे अविद्दत चरणकमल निवेशना तत्स्थाने उतावलो आव्या। तएणभगवंगोयमे। तिवारे भगवत गौतम। खदयकच्चायणसगोत्त। खंदक कात्यायन गोत्रीय प्रते। अदूरआगयजाणित्ता खिप्पामेवअब्भुट्ठेइ २ ता। निकट पासे आव्या जाणीने उतावला आसनथी उठ्या भगवत गौतमस्वामीने तिम उठे इसे पृच्छा उत्तर खंदक आकार सर्वतोऽसो तथा गौतमस्वामीने रागद्वेषना ज्ञानथी तथा भगवंतनो ज्ञान प्रगटकरण निमित्ते जउठीने। खिप्पामेवपच्चुगच्छइ २ ता। उतावला सांहमाजाय जाईने। जेणेवखंदए कच्चायणसगोत्ते। जिहां खंदक कात्यायनगोत्रनो धणी। तेणेजउवा

॥ टीका ॥

केव अयी त्यामन्त्रणार्थएव ॥ सेकाहेवत्ति ॥ अथ कदावा; कस्यां वेलाया मित्यर्थ. ॥ किहंवत्ति ॥ केनवा; प्रकारेण साक्षा दूर्शनत श्रवणतोवा ॥ केव चिरेणवत्ति ॥ कियतो वा; कालात् ॥ सावत्थी णामं णयरी होत्यत्ति ॥ विभक्तिपरिणा मादस्ती त्यर्थो, ऽथवा, कालस्या वसर्प्पिणीत्वा त्प्रसिद्धगु णा कालान्तरएवा न्नव न्नेदानीमिति ॥ अदूराइएत्ति ॥ अदूरे आगत सचावधिस्थानापेक्षया पिस्या, दथवा, दूरतर मार्गापेक्षया [ग्रंथ ३०००] क्रोशादिक म प्यदूर स्या दतउच्यते ॥ वहुसम्पत्ते ॥ ईपदून सम्प्राप्तो बहुसम्प्राप्त सच विश्रामादिहेतो रारामादिगतोपि स्या दत उच्यते ॥ अद्धा णपक्रिवसेत्ति ॥ मार्गप्रतिपन्न किमुक्त न्नवति ॥ अतरापहेवट्टइत्ति ॥ विवक्षितस्थानयो रन्तरालमार्गे वर्त्ततइति, अनेनच सूत्रेण कथ द्दत्यामी त्य स्यो त्तरमुक्त, कथयतो दूरागतादिविशेषणस्य साक्षादेव दर्शन सम्भवति, तथा ॥ अज्जेवणदच्छसी त्यनेन कियच्चिरा दित्यस्यो त्तरमुक्त, काहेत्य

॥ मूल ॥

सावत्थीए नगरीए गद्दन्नालिस्स ऋंतेवासी खंदए णामं कच्चाणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ, तचेव जाव जेणेव ममऋंतिए तेणेव पाहारेच्छगमणाए सेऋदूरागए बहुसपत्ते ऋद्धाणपक्रिवसे ऋंतरापहे वट्टइ, ऋज्जेवणं दिछ सि गोयमा! न्नंतेत्ति, न्नगवं गोयमे समणं न्नगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमसत्ताइ एव वयासी, पन्नूणं न्नंते!

॥ भाषा ॥

खंदकनामे वायोग्य। तत्थणसावत्थीएणयरीए। तिहां श्रावस्तीनामे नगरीनेविषे। गद्दभालिस्सअंतेवासी। गर्द्दभाली परिव्राजकनो शिष्य। खंदएणामं। खंदकनामे कच्चायणसगोत्ते। कात्यायन गोत्रनो धणी। परिव्वाएपरिवसइ तचेव। परिव्राजक वसेछे तिमहीज सर्व कहवो। जावजेणेवममअंतिए। यावत् जिहां माहरे समीपे। तेणेवपहारेत्थगमणाए। तिहां सकल्पकीधो जाइवानेकाजे। सेअदूरागते। ते नजीकेआव्या। बहुसंपत्ते। पोंछे घणोछोडो। अद्धाण पडिवसे अंतरापहेवट्टइ। मार्गप्रते प्रतिपन्नछे मार्गने अंतरे वर्त्तेछे आवेछे। अज्जेवणदच्छिसि गोयमा। आजहीज देखसे हेगौतम। भंतेत्ति। हेभगवन्। इसे आमन्त्रणे। भगवगोयमे। भगवत गौतम। समणंभगवमहावीर वंदइणमसइ २ त्ता। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने। एववयासी। इम कहताहुया। पभूणभंतेखंदएकच्चायणसगोत्ते। समर्थछे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। खंदक कात्यायनगोत्रीय।

नि स्थितानि यस्य स तथा ॥ पहारेत्यत्ति ॥ प्रधारितवान् सङ्कल्पितवान् गमनाय गन्तु ॥ गोयमाइत्ति ॥ गोतमइति एवं आमंत्र्येतिशेषो, ऽथवा ;

गए छत्तोवाहणसंजुत्ते धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्भ मज्भेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जे णेव कयंगलानगरी जेणेव छत्तपलासए चेइए जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थगमणाए गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी, दच्छिसिण गोयमा! पुव्वसंगइय कंतं, कंभंते! खदयं नाम से काहेवा किहंवा केवच्चिरेणवा, एवं खलु गोयमा ! तेणंकालेणं सावत्थीणामं णयरी होत्था वसाओ तत्थणं

त्रिदंड १ कमंडल २ कचणिय। रुद्राक्ष माला ३। करोडिय भिमिय केसरिय। मृत्तिकामय भाजन ४ मृत्तिका मय भाजन विशेष ५ चोवरखंड पुज वाने ६। छण्णालिय अंकुशमय पविंत्तिय गणेत्तिय हत्थगए। पट्नालिक त्रिकाटिका त्रिगडो ७ वृत्तना पल्लवनेवा भणो अंकुशने आकारे ८ चावानी मूद डी प्रमुख ९ समरणी कलाचिका भरणविशेष १० ए दशजाना हाथेलीधा। छत्तोवाहणसंजुत्ते। छत्रमाथे पगेपगरखो तेणें सयुक्त। धाउरत्तवत्थपरिहिए। धातु रक्त वस्त्र पहिरा पहिरोने। सावत्थीएणयरीए। सावत्थी नगरीने। मज्भमज्भेणंणिग्गच्छइ २ त्ता। मध्ये मध्यभागे थईने नीकले नीकलीने। जेणेव कयगलाणयरी। जिहां कयगला नामे नगरीजे। जेणेवछत्तपलासएचेइए। जिहां छत्रपलाशनामे चैत्यछे। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहां श्रमण भ गवत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवपहारेत्थगमणाए। तिहां सकल्पकोधो जाइवानेकाजे। गोयमाटि। हेगौतम। इसो आमंत्रण वचन। समणे भगव महावीरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। भगवंगोयमएववयासी। भगवत गौतम प्रतें इम कहता हुया। दच्छिसिण गोयमा। देखीश ण वाक्यालकारे हेगौतम। पुव्वसगतिय। पूर्व मित्र प्रतें तिवारे गौतम बोल्या। कभंते खदयनाम। केहप्रते हेभगवन्' भगवतबोल्या खदक इसेनामें तेहप्रतें। सेकाहे वा। ते किणिवेला मिलिस्यें। किहिंवा। किणे प्रकारे दर्शनथो सुणे नथो। केवचिरेणवा। केतलेकाले केतलेचिरे किवारे आवस्यें। एवखलु गोयमा। इम निश्चे हेगौतम। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। सावत्थिएणामंणयरीहोत्था वणओ। सावत्थीनाम नगरी हुई वर्णक कर

॥ टीका ॥

करोटि द्वन्दनादिकंरणमित्यर्थः, सम्प्रेक्षते पर्यालोचयति ॥ परिव्वायावसहेत्ति ॥ परिव्राजकमठ, कुण्डिका कमण्डलुः, काञ्चनिका रुद्राक्षकृता' करोटिका मृद्भाजनविशेष' भृशिका आसनविशेष, केसरिका प्रमार्जनार्थं चीवरखण्डं, खद्वालकं त्रिकाष्टिका, अङ्कुशक तरुपल्लवग्रहणार्थं मङ्कुशाकृतिः, पवित्र कमगुलीयकं, गणेत्रिका कलाचिका भरणविशेष ॥ धाउरत्ताउत्ति ॥ शाटिकाइतिशेष ॥ तिदण्डइत्यादि ॥ त्रिदण्डकादीनि दश हस्ते गता

॥ मूल ॥

रणाइ पुच्छित्तए त्तिकट्टु, एवं सपेहेइ संपेहेइत्ता जेणेव परिव्वायगा वसही तणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तिदंडंच कुंडियंच कंचणियच करोडियंच भिसियंच केसरियंच छन्नालियच अंकुसयंच पवित्तयंच गणेत्ति यंच छत्तयंच वाहणाउय पाउयाउय धाउरत्ताउय गेण्हइ गेण्हइत्ता परिव्वायगवसहीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता तिदंड कुंडियं कचणियं करोडिय भिसियकेसारियछनालयअंकुसयपवित्तियगणेत्तियहत्थ

॥ भाषा ॥

सन्मान करीने। कल्लाण मगल देवयं चेइय। कल्याणकना कारकप्रतें दुरित उपशमहेतुप्रते देवप्रतें इष्टदेवनो प्रतिमानी परें। पज्जुवासेत्ता। सेवू। प्रश्नाइचणएयारूवाइ अट्ठाइ। ए अनतरोक्त प्रत्यक्ष आसन्न चपुन णं वाक्यालकारे, ए कह्ये स्वरूपें अर्थप्रतें। हेतुइपसिणाइ वागरणाइ। हेतुकारण प्रश्न व्याकरण एतला बोलाप्रतें। पुच्छित्तएत्तिकट्टु। पूछू एहवूं करीने। एवंसपेहेइ २ त्ता। इम आलोचे आलोचीने। जेणेवपरिव्वायगावसही। जिहा परिव्राजकनो वसती आश्रमछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। तिदडच। तीन एकठा कीधा। कुडियच १। कमडल २। कचणिय च भिसियच केसरियच छन्नालियच अकुसयच। रुद्राक्षमाला ३ मृत्तिकामयभाजन ४ मृत्तिकामयभाजन विशेष ५ चीवर खड पूजवाने ६ षड् नालिका त्रिकाष्टिका त्रिगडी ७ वृक्षना पल्लव लेवाभणी अकुशने आकारे ८। पवित्तियच गणेत्तियच छत्तयंच वाहणाओय पाउयाओय। तावानी मुद्री प्रमुख समरणी ९ कालाचिका भरणविशेष १० छत्र ११ पगरखा तथा वाहन १२ काष्टमयी चाखडी १३। धाउरत्ताउयगिण्हइ २ त्ता। गेरूसो भगवा वस्त्रछे शाटिका इति शेष तेगृहै गृहीने। परिव्वायगवसहीओ। परिव्राजकनी वसतीथकी। पडिणिक्खमइ २ त्ता। नीसरे नीसरीने। तिदड कुडिय।

नोऽस्माकं प्रेत्यभवे जन्मान्तरे, हिताय पथ्यान्नवत् सुखाय शर्म्मणे चेमाय, सङ्गतत्वाय, नि श्रेयसाय मोक्षाय, आनुगामिकत्वाय परम्परयाशुभानु वन्धसुखाय, भविष्यति इतिकृत्वा इतिहेतो र्वेहव उग्रा आदिदेवस्थापिता रक्षकवंशजाता, भोगा स्तेनैवा वस्थापितगुरुवंशजाता, राजन्या भग वद्वयस्यवंशजा'' क्षत्रिया राजकुलीना, भटाः शौर्यवन्तो, योधा स्तेभ्यो विशिष्टतरा, मल्लकिनो लेच्छकिनश्च राजविशेषा, राजानोनृपा ईश्वरा, युवराजा, स्तदन्येच महर्द्धिका, स्तलवरा' प्रतुष्टनरपतिवितीर्णपट्टवन्धविभूपिता राजस्थानीया, माडंविका सनिवेशविशेषनायका, कौटुम्बिका कतिपयकुटुम्बप्रभवो राजसेवका, उत्कृष्टि श्चानदमहाध्वनिसिंहनादश्च प्रतीत', वोलश्च वर्णव्यक्तिवर्ज्जितो महाध्वनिः, कलकलश्च व्यक्तवचन, सएव एतल्लक्षणो यो रव स्तेन समुद्ररवभूतमिव जलधिशब्दप्राप्तमिव तन्मयमिवे त्यर्थ, नगर मितिगम्यत इति, एतस्या र्थस्य सङ्क्षेपं कुर्वन्नाह ॥ परिसानिग्गच्छइति, ॥ तएणति ॥ ततो नन्तर ॥ इमेयारूवेत्ति ॥ अयं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्ष सच कविनो च्यमानो न्यूनाधिकोपि भवती त्यतश्च

ह, एतदेव रूप यस्या सा वेतद्रूप' ॥ अज्झत्थिएत्ति ॥ आध्यात्मिकआत्मविपय ॥ चिंतिएत्ति ॥ स्मरणरूप ॥ पत्थिएत्ति ॥ प्रार्थित. अभिलापा त्मक' ॥ मणोगयत्ति ॥ मनस्यव योगतो न वहि र्वचनेना प्रकाशनात् स तथा सङ्कल्पो विकल्प ॥ समुप्पज्जित्थत्ति ॥ समुत्पन्नवान् ॥ सेयति ॥ श्रे य कल्याण ॥ पुच्छित्तएत्ति ॥ योगः ॥ इमाइ चणति ॥ प्राकृतत्वा दिमा ननन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षासन्नान् चशब्दा दन्याश्च ॥ एयारूवाइ ॥ एतद्रूपा नुक्तस्वरूपान् अथवा; एतेपामेवा नन्तरोक्ताना मर्थाना रूपं येषा प्रष्टव्यतासाधर्म्यात्ते तथा ता नर्थान् भावान् लोकसान्तत्वादी स्तदन्याश्च ॥ हेऊइति ॥ अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुगम्यत्वा द्धेतवो लोकसान्तत्वादयएव तदन्येवा, अत स्तान् ॥ पसिणाइति ॥ प्रश्नविपयत्वा त्प्रश्ना, एतएव त दन्येवा'; ऽत स्तान् ॥ कारणाइति ॥ कारण मुतपपत्तिमात्रं तद्विपयत्वा त्कारणा न्येतएव तदन्येवा; त स्तानि ॥ वागरणाइति ॥ व्याक्रियमाण त्वात् व्याकरणानि, एतएव तदन्येवा; तस्तानि ॥ पुच्छित्तएत्ति ॥ प्रष्टु तिकट्टु इतिकृत्वा अनेन कारणेन ॥ एवसपेहेइत्ति ॥ एव मुक्तप्रकार भगव

॥ टीका ॥

मो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासामो एयणे पेच्चभवे हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्तिकट्टु बहवेउग्गाउग्गपुत्ता एव भोगा राइन्ना खत्तिया माहणा भडा जोहा मल्लई लेच्छई अन्नेयबहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुंविय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहपभियउ जावउक्किट्ठिसीहनायबोलकलयलरवेणसमुद्दरवभूयपिवकरेमाणा सावत्थिए नयरीए मज्झ मज्झेण निग्गच्छति ॥ अस्याय मर्थ श्रावस्त्या नगर्य्या यत [महयत्ति] महान् जनसमर्द्द स्तत्र बहुजनो न्योन्यस्यैव माख्यातीतिवाक्यार्थ, तत्र जनसमर्द्द उरोनि पेष, इ तिरुपप्रदर्शने, वा समुच्चये पाठान्तरे शब्दइतिवा; जनव्यूह श्चक्राद्याकारो जनसमुदाय, बोलो ऽव्यक्तवर्णोध्वनि, कलकल सएवो पलभ्यमान वचनविभाग ऊर्म्मि सम्बाध कल्लोलाकारोवा; जनसमुदाय, उत्कलिका समुदायएव लघुतरजनसन्निपातो ऽपरापरस्यानेभ्यो जनाना मील न यथाप्रतिरूप मित्युचित तथा रूपाणा सङ्गतरूपाणा ॥ नामगोयस्सत्ति ॥ नाम्नो यादृच्छिकस्या भिधानस्वगोत्रस्यच गुणनिष्पन्नस्य ॥ सवणया ए ॥ श्रवणेन ॥ किमगपुणत्ति ॥ किपुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थ, अङ्गेत्यामन्त्रणे अभिगमन अभिमुखगमन वन्दन स्तुति, नमस्यन प्र णमन, प्रतिप्रच्छन शरीरादिवार्त्ता प्रश्न, पर्युपासन सेवा, तेपा मभिगमनादीना भाव स्तत्ता तया, आर्यस्ये त्यार्यप्रणेतृकत्वात्, धार्म्मिकस्य ध र्म्मप्रतिबद्धत्वात् ॥ वदामोत्ति ॥ स्तुमः नमस्याम इति प्रणमाम सत्कारयाम आदर कुर्मो वस्त्रार्चनवा; सन्मानयाम उचितप्रतिपत्तिभि किम्भूत मित्याह, कल्याण कल्याणहेतु, मङ्गलदुरितोपशमनहेतु, दैवत देव, चैत्य मिष्टदेवप्रतिमा, चैत्यमिव चैत्य पर्युपासयामः सेवामहे, एतत् ॥ णेत्ति ॥

॥ मूल ॥

णं समणं भगव महावीर वंदामि नमंसामि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता नमंसित्ता सक्कारे त्ता सम्माणेत्ता कल्लाण मंगल देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं वाग

॥ भाषा ॥

रणाणिय। तेमाटे हुंजाउ। समणभगवमहावीर वदामि णमंसामि। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वादू नमस्कार करू। सेयखलुमेसमणभगवं महावीर वदित्ता णमसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता। श्रेय कल्याण निश्चै मुझे श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वादीने नमस्कारकरीने सत्कार करी

नेति प्रमोद्य उत्तर माख्यातुं वक्तुं ॥ महयाजणसम्मद्देइवा जणवूहेइवा, इत्यत्र इद मन्य दृश्यम् ॥ जणवोलेइवा जणकलकलेइवा जणुम्मीइवा जणुक्कलियाइवा जणसन्निवायेइवा बहुजणो अन्नमन्नस्स एव माइक्खइ ४ एव खलुदेवाणुप्पिया समणे३ आइगरे जावसंपाविउकामे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे कयगलाए नयरीए छत्तपलासए चेइए अहापडिरूव उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ त महप्फल खलु भोदेवाणुप्पिया। तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स विसवणयाए किमगपुण अभिगमणवंदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए एगस्सवि आयरियस्स २ धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमगपुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए तगच्छामोण देवाणुप्पिया समण ३ वंदा

हेइवा जणवूहेइवा निग्गच्छइ, तएणं तस्सखंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अतिए एयमठं सोच्चा निसम्म इमेएयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था, एवं खलु समणे भगव महावीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए सजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तंगच्छामि

र्खा। तुसिणीएसचिट्ठइ। मौनकरी रह्यो। तएणसेसावत्थीएणयरीए। तिवारे सावत्थी नगरीने लोके कयंगला नगरीये श्रीमहावीरस्वामी आव्या सुण्या। सिंघाडगजावपहेसु। सिंघोडाने आकारे यावत् मोटामार्गनेविषे। महयाजणसम्मद्देइवा जणवूहेइवा। मोटाजन समूह घणा मनुष्यमाहोमाहि एकठा कहे चक्र आकारे लोकरखा जनसमुदाय। परिसानिग्गच्छइ। पर्षदा श्रीमहावीरस्वामी ने वादवा भणी नीकली। तएणतस्सखंदयस्स। तिवारे तेह खंदकने। कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्सअतिए। कात्यायनगोत्रीय घणा मनुष्यपासे समीपे। एयमट्ठंसोच्चा। एहवू अर्थ सांभलीनेकरी। णिसम्म। हीये धारीने। इमेएयारूवे अभत्थिये। वच्यमाणपणे प्रत्यक्ष आत्मविषय। चितिए पत्थिइ। स्मरण रूप प्रार्थना रूप। मणोगएसंकप्पेसमुप्पज्जित्था एवखलुसमणेभगवमहावीरे। मननेविषे संकल्प विकल्प ऊपनो, इम निश्चे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। कयंगलाएणयरीएबहिया। कयंगलानाम नगरीनविषे बाहिर। छत्तपलासएचेइए। छत्रपलास इसेनाम चैत्यनेविषे। संजमेणत वसा अप्पाणभावेमाणेविहरइ। सयमेकरी तपेकरी आत्माने भावताथका विचरे। तग

से पिंगलए नियंठे वेसालीसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चंपि इण मक्खेवं पुच्छे, मागहा! किं सच्चंते लोए जाव केणवामरणेणं मरमाणजीवे वड्ढइवा हायइवा एतावंताव आइक्खाहि वुच्चमाणो, एवं तएणं ते खंदए कच्चायणसगोत्तं पिंगलएण नियंठेण वेसालीसावएण दोच्चंपि तच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिंछिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने नोसंचाएइ, पिंगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिविपमोक्खमक्खाइत्तए तुसिणीए संचिठइ, तएणं सावत्थीएनयरीए सिंघाडगजावपहेसु महयाजणसम्म

पोतानेविषे कलुषपणुं पाम्यो । णोसंचाएइ पिंगलयस्स णियंठस्स । उत्तर देई नथकाये पिंगलने निर्ग्रंथने । वेसालियसावयस्स । किंचिवि । श्रीमहावीरना वचन सुणिवाने रसिकछे । कोई एक पणि । पमोक्खमक्खाइत्तो । प्रश्नोत्तरकहवा, समर्थ नथयो । तुसिणीएसंचिट्ठइ । तिवारे मौनकरी रह्यो । तएणसेपिंगलएणियंठे । तिवार पछी ते पिंगल निर्ग्रंथ साधु । वेसालियसावए खदयकच्चायणसगोत्त । श्रीमहावीरस्वामीना वचनना रसिकछे खंदकप्रते कात्यायन गोत्रना धणी प्रत । दोच्चंपिइणमक्खेवपुच्छे मागहा । बीजीवार पणि इसे आक्षेपे पूछिवालागो हेमगधदेशना ऊपना । किंसअंतेलोए जावकेणवामरणेण । स्यूं लोक अंत सहितछे इत्यादि यावत् किसे मरणेकरी । मरमाणेजीवे वड्ढइवाहायइवा । मरतोथकोजीव संसारना वधवाथी वधे अथवा घटवाथी घटे हानिपामे । एतावतावआइक्खाहि वुच्चमाणे । ए प्रश्ननो पहिला उत्तर कहि पछे बीजो प्रश्नपूछो इम पूछता । एवंतएणसेखदए । इम तिवारे ते खंदक । कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणनियंठेण । कात्यायनगोत्रनोधणी पिंगलनामे निर्ग्रंथसाधु । वेसालीसावएण दोच्चंपि । श्रीमहावीरस्वामीना वचननो रसिक बीजीवारपणि । तच्चंपि इणमक्खेव पुच्छिएसमाणे । त्रीजा वारपणि इसे आक्षेपे पूछ्यो थको । संकिए कंखिए वितिगिच्छिए । शंका ऊपनी कांक्षितथयो फलविषे संदेहहुयो । भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने । णोसंचाएइ । मननेविषे कलुषपणो उपनो उत्तर देई नसके । पिंगलयस्सनियंठस्स । पिंगलने निर्ग्रंथने । वेसालियसावयस्स । श्रीमहावीरना वचनना रसिकने । किंचिविपमोक्खमक्खाइत्तु । कांई एकपणि प्रश्ननो उत्तर कहवा न श

मागहत्ति ॥ मगधजनपदजातत्वात् मागध स्तस्या मन्त्रणं हेमागध। ॥ वड्ढइत्ति॥ ससारवर्द्धनात् ॥ हायइत्ति ॥ संसारपरिहान्येति, एतावंतावेत्यादि ॥ एतावत्प्रश्नजात तावदाख्याहि, उच्यमान· पृच्छमान, एव मनेन प्रकारेण एतस्मि न्नाख्याते, पुनरन्य त्प्रदयामीतिहृदय ॥ सकिएइत्यादि ॥ किमिद मिहोत्तर मिदवेति सञ्जातशङ्कः इद मिहोत्तरं साधु इदंच न साधु अत· कथ मत्रोत्तर लप्स्ये इत्युत्तरलाभाकाङ्क्षावान् काङ्क्षितो स्मि न्नुत्तरे दत्ते किमस्य प्रतीति रुत्पत्स्यते नवे; त्येव विचिकित्सितो भेद समापन्नो मते र्भङ्ग किङ्कर्त्तव्यताव्याकुलत्वलक्षण मापन्न कलुष मापन्नो नाह मिद किञ्चि जानामी त्येव स्वविषय कालुष्य समापन्नइति ॥ नोसचाएत्ति ॥ न शक्नोति ॥ पमोक्खमक्खाइउंति ॥ प्रमुच्यते पर्यनुयोगबन्धना दने

सअंतेजीवे अणंतेजीवे सअंतासिद्धी अणंतासिद्धी सअंतेसिद्धे अणंतेसिद्धे केणवामरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा हायइवा एतावंताव आइक्खाहि वुच्चमाणो एवं तएणं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएण नियंठेण वेसालीसावएण इण मक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिंछिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णोसंचाएइ, पिंगलयस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचिविपमोक्ख मक्खाइउंतुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं

तछे अथवा जीव अंतरहितछे। सअंतासिद्धी अणंतासिद्धी सअंतेसिद्धे अणंतासिद्धे। सिद्धि शिला अंतसहितछे अथवा सिद्धशिला अनरहितछे सिद्धना जीव अंतसहितछे अथवा सिद्धनाजीव अंतरहितछे। केणेवामरणेणं। किसे मरणेकरो। मरमाणेजीवे। मरतो थको जीव। वड्ढइवा। ससारकरी वृद्धि पामे। हायतिवा। ससारक हानि पामे। एतावंताव आइक्खाहिवुच्चमाणो। एतलो प्रश्न पूछ्यो ते पहिला कहो पछे बीजो प्रश्न पूछस्यूं पृच्छमान। तएणंसेखंदए कच्चायणसगोत्ते। तिवारे तेस्कंदक कात्यायन गोत्रीय। पिंगलएणंणियठेण। पिंगलनामे साधु। वेसालियसावएण। श्रीमहावीरनां वचन सुणिवाने रसिक। इणमक्खेवंपुच्छिएसमाणे। इस आक्षेपे पूछ्या थका। संकिए कंखिए वितिगिंछिए। एहनो उत्तर काइं इसोश्का उपनो एहनो उत्तर किम पामिये एहनो उत्तर दीधे एहने प्रतीत उपजस्ये। भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने। मतिभेदपाम्यो मतिभंगपाम्यो हू इहां कांहीं कहो नजाणूं? इम

॥ टीका ॥

श्रीपञ्चमाङ्गगुरुसूत्रविपक्षे शतस्थितानेकशतेद्वितीय । अनेपुणेनापिमयाव्यचारि तत्सूत्रयोगज्ञवचोनुवृत्त्येति ॥ १ ॥ व्याख्यातं द्वितीयशत मथतृती य व्याख्यायते' अस्यचाय मभिसम्बन्धो ऽनन्तरशते ऽस्तिकायाउक्ता इहतु तद्विशेषभूतस्य जीवास्तिकायस्य विविधधर्म्मा उच्यन्त इत्येव सम्बद्धस्या स्य तृतीयशतस्यो द्देशकार्थसङ्ग्रहाये य गाथा ॥ केरिसेत्यादि ॥ तत्र ॥ केरिसविउव्वणत्ति ॥ कीदृशी चमरस्य विकुर्वणा शक्ति रित्यादि प्रश्ननिर्वच नार्थ.' प्रथम उद्देशक ॥ चमरत्ति ॥ चमरोत्पाताभिधानार्थो द्वितीय. ॥ किरियत्ति ॥ कायिक्यादिक्रियाद्यर्थाभिधानार्थ स्तृतीय ॥ जाणत्ति ॥ या न देवेन वैक्रिय कृत जानाति साधु रित्याद्यर्थ निर्णयार्थश्चतुर्थ ॥ इत्थित्ति ॥ साधु र्बाह्यान् पुद्गलान् पर्यादाय प्रभु. स्त्र्यादिरूपाणि वैक्रियाणि कर्तु मित्याद्यर्थ निर्णयार्थ पचम ॥ नगरत्ति ॥ वाराणस्या नगर्या कृतसमुद्घातो नगारो राजगृहे रूपाणि जानाती त्याद्यर्थनिश्चयपर षष्ठ ॥ पा

॥ मूल ॥

केरिसविउव्वणा १ चमर २ किरिय ३ जाणि ४ त्थि ५ नगर ६ पालाय ७ । अहिवइ ८ इंदिय ९ परि सा १० तइयंमिसएदसुद्देसा ॥ १ ॥ तेणकालेणं २ मोयानामं णयरी होत्था , वन्नउ , तीसेणं मोयाएनय रीए वहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए नदणनामंचेइए होत्या , वन्नउ , तेणकालेणं २ सामी समोसढे ,

॥ भाषा ॥

पाछिले उद्देशे अस्तिकाय कह्यो ते विशेषे जीवास्तिकाय विचारकहीयेछे—केरिसविउव्वणाए १ चमर २ किरिय ३ जाणि ४ त्थि ५ नगर ६ पाला य ७ अहिवइ ८ इंदिय ९ परिसा १० तइयमिसएदसुद्देसा १० । केहवी विकुर्वणा चमरेंद्रनो एअधिकार १ चमर उत्पात अधिकार २ कायिक्यादि क्रि यानो अधिकार ३ देवता वैक्रिय समुद्घातकरी जाण विकुर्वे ते साधुजाणे एअधिकार ४ साधु बाहिरला पुद्गललेईने स्त्री आदिरूप विकुर्वे ५ साधु वा राणसीविषे समुद्घातकरी राजगृहनारूपदेखे ६ सोम आदि लोकपालनो ७ असुरादि देवना केतलादेव अधिपति ८ इन्द्रियनो अधिकार ९ चमरनी प रिषदानो अधिकार १० एत्रीजा शतकना दशउद्देशा धिकार जाणवा । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । मोयानामणयरीहोत्या वणओ। मोया इसेनामे नगरी हुइ तेहनो वर्णक उवाईथी जाणवो। तीसेणमोयाएणयरीएवहिया । तेह मोयानामे नगरीनेबाहिर । उत्तरपुरच्छिमेदिसो

लायत्ति ॥ सोमादिलोकपालचतुष्टयस्वरूपाभिधायकः सप्तम ॥ अहिवइत्ति ॥ असुरादीनां कति देवा अधिपतय इत्याद्यर्थपरो ऽष्टम ॥ इंदियत्ति॥ इन्द्रियविषयाभिधानार्थो नवम. ॥ परिसत्ति ॥ चमरपरिषदभिधानार्थो दशम इति. तत्र कीदृशी विकुर्वणा त्याद्यर्थस्य प्रथमोद्देशकस्ये द सूत्रं ॥ तेणंकालेणमित्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ केमहिड्ढिएत्ति ॥ केनरूपेण महर्द्धिक किं रूपावा, महर्द्धि रस्येति किं महर्द्धिक कियन्महर्द्धिक इत्यन्ये ॥

परिसा निग्गच्छइ , पडिगयापरिसा , तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंते वासी अग्गिभूईणामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी चमरेण भंते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढिए केमहज्जुईए केमहाबले केमहायसे केमहासोक्खे केमहाणुभागे केवइयंचण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! चमरेण असुरराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं तत्थ चोत्तीसाए भव

भाए। उत्तर पूर्वदिशि विचाले एतले ईशान कोणनेविषे। नंदणणामचेइएहोत्था वणओ। नंदन इसेनामे चैत्यहुतो, तेहनो वर्णकउवाई उपांगथी जाणवो। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। सामोसमोसढे। श्रीमहावीरस्वामी समोसरा। परिसाणिग्गच्छइ। परिषदा वांदवा नीकली। भगसो च्चा। स्वामीनामुखथी धर्म साभली। परिसापडिगया। परिषदा पाछीवली। तेणकालेण तेणसमएण। तेकालनेविषे ते समयनेविषे। समणस्सभगवओमहा वीरस्सदोच्चेअंतेवासी। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनो बीजोशिष्य। अग्गिभूईणामअणगारे। अग्निभूत इसेनामे साधु। गोयमगोत्तेसत्तुस्सेहे। गौतम गोत्री सातहाथ ऊंचो शरीरछै तेहनो। जावपज्जुवासमाणे। यावत् भगवतनी सेवा करताथका। एववयासी। इम कहताहुया। चमरेणभंतेअसुरिंदे। चमर हेभगवन्। असुरना इन्द्र। असुररायाकेमहिड्ढिए। असुरना राजा किसे रूपे महर्द्धिक अथवा किसीएक मोटोऋद्धि अथवा किसोएक महर्द्धि क। केमहज्जुईए। केहवो मोटोकांतिछै। केमहाबले। किसोएक महाबलोछै। केमहायसे। केहवो एक मोटो यशवतछै। केमहासक्खे। केहवो एक मोटो सुखनोधणीछै। केमहाणुभागे। केहवो एक मोटो भागवतछै। केवइयचणपभूविउव्वित्तए। केहवो एक, चपुन ण वाक्यालंकारे, समर्थछै विकु

सामाणियसाहस्सीणंति ॥ समानया इन्द्रतुल्यया ऋद्धा चरन्तीति सामानिका ॥ तायत्तीसाएत्ति ॥ त्रयस्त्रिंशत् ॥ तायत्तीसगाणंति ॥ मंत्रिकल्पानां यावत्करणा दिदं दृश्य–चउगह लोगपालाणं पचगहं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिगहं परिसाणं सत्तगह अणियाणं सत्तगह अणियाहिवईणं चउ गह चउसठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिच बहूणं चमरचंचारायहाणिवत्थव्वाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणेत्ति ॥ तत्रा धिप त्य मधिपतिकर्म्म, पुरोवर्त्तित्व मग्रगामित्व, स्वामित्व स्वस्वामिभाव, भर्तृत्व पोषकत्व, आज्ञेश्वरस्या ज्ञाप्रधानस्य सतो यत्सेनापत्य तत्तया तत्कार य न्नन्यै पालयन् स्वयमिति, तथा महतारवेणेति योग ॥ आहयत्ति ॥ आख्यानकप्रतिबद्धानीति वृद्धा ' अथवा ; अहयत्ति ॥ अहतानि अव्याहता नि नाट्यगीतवादितानि, तथा तन्त्रीवीणा तलतालाहस्ततालाः तलावा ; हस्ता स्ताला कंसिका ॥ तुडियत्ति ॥ शेषतूर्याणि तथा घनाकारो ध्वनि साधर्म्या द्यो मृदगो मर्द्दल पटुना दक्षपुरुषेण प्रवादित इत्येतेषा द्वन्द्वे ऽत एषा यो रव. स तथा तेन ॥ भोगभोगाइति ॥ भोगार्हान् शब्दादीन् ॥ एव महिड्ढिएत्ति ॥ एव महर्द्धिकइव महर्द्धिक, इयन् महर्द्धिक इत्यन्ये ॥ सेजहानामएइत्यादि ॥ यथा युवति युवा हस्तेन हस्ते गृह्णाति कामवशा

णावाससयसहस्साण चउसठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं जाव विहरइ । एव म हिड्ढीए जाव महाणुभागे एवइयंचण पभू विकुव्वित्तए । सेजहानामए जुवतिजुवणे हत्थेणंहत्थं गेरहेज्जा च

वंणा करवानो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चमरेण । हेगौतम । चमर । असुरिंदे असुरराया महिड्ढिए जाव महाणुभागे । असुरेंद्र असुरराजा महाऋद्धि वत यावत् मोटो भाग्यवतछे । सेणतत्थचउत्तीसाएभवणावाससयसहस्साण । तेह विहा चउत्रीस लाख विमाननो । चउसठीएसामाणियसाहस्सीण । चउ सठ हजार सामानिकनो । तायत्तीसाए तायत्तीसगाण जावविहरइ । तेत्रीसत्रयत्रिंशकनो इत्यादिकनो स्वामिपणो भोगवतोथको यावत् विचरे । एव महिड्ढीए । एहनो महर्द्धिकछे । जावमहाणुभावे । यावत् मोटो भाग्यवंतछे । एवइयंचणपभूविउव्वित्तए । एतलो वपुन ण वाक्यालंकारे, समर्थछे विकु

॥ टीका ॥

द्राढतरग्रहणतो निरन्तरहस्तांगुलितये त्यर्थ , दृष्टान्तान्तरमाह ॥ चक्कस्सेत्यादि ॥ चक्कस्सवा; नाभि' किंभूता' ॥ अरगाउत्तसि ॥ अरकै रायुक्ता अभिविधिना न्विता अरका युक्ता ॥ सियत्ति ॥ स्या द्भवेत् अथवा; अरका उत्तासिता, आस्फालिता यस्या सा अरकोत्तासिता ॥ एवामेवत्ति ॥ नि रन्तरतयेत्यर्थ , प्रभु र्जम्बूद्वीप बहुभि र्दैवादिभि राकीर्णं कर्तुं मितियोग' ' वृद्धैस्तु व्याख्यात, यथा यात्रादिषु युवति र्यूनो हस्ते लग्ना प्रतिबद्धा गच्छति, बहुलोकप्रचिते देशे एव यानि रूपाणि विकुर्वितानि ता न्येकस्मिन् कर्त्तरि प्रतिबद्धानि' यथावा; चक्रस्य नाभि रेका बहुभि ररकै' प्र तिबद्धा घना निश्छिद्रा एव मात्मशरीरप्रतिबद्धै रसुरदेवै र्देवीभिश्च पूरयेदिति ॥ वेउव्वियसमुग्घाएणंति ॥ वैक्रियकरणाय प्रयत्नविशेषेण ॥ समोह

॥ मूल ॥

क्कस्सवा नाभी अरगा उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घाएणं समो हणइ समोहणइत्ता संखेज्जाणिजोयणाणिउड्ढं दण्डं निसिरइ तंजहा—रयणाण जाव रिट्ठाण , अहाबायरे

॥ भाषा ॥

वेणा करवाने । सेजहाणामएजुवइ जुवाणेहत्थेणहत्थेगेण्हेज्जा चक्कस्सवानाभीअरगाउत्तासिया । ते यथा दृष्टाते जिम युवान तरुणपुरुष कामपीडित थकी युवतीने डाया हाथे ग्रहे माहोमाहि गाढो आलिंगीने भीडीने अंतररहित हाथनी आंगुलीकरीकरे तथा वली बीजो दृष्टान्त देखाडेछे—अथवा चक्रनी नाभी आरेकरी निबडभीडी विचाले छिद्र पुणनथी तिम चमरेंद्र आपणेंरूपे करी मांहो माहि गाढे मिले तिम विचाले आंतरू कांई नरहे तिम परिपूर्ण जंबूद्वीप रूपेकरीभरे अथवा जिमयात्रादिविषे लोकघणें मिल्ये हुते कोईएक पुरुष स्त्रीनो हाथ सजोरपणें झाली हीये आणें अने जाणें रखे घणा माणसमाहे हाथ छूटस्ये तो लाभस्येनही इम जे रूप विकुर्वे ते एक कर्त्ताने विषे प्रतिबद्धहुवे, अने जंबूद्वीप भरे अथवा चक्रनी नाभी एक ते घणें अरे भीडो छिद्ररहितहुवे , इम आत्मशरीरे प्रतिबद्ध असुरदेव तथा देवीये करीपूरे । एवामेव गोयमा चमरेण असुरिंदे असुरराया वेउव्वियसमुग्घा एण समोहणइ २ त्ता संखेज्जाणिजोअणाणिउड्ढ दंडनिसिरइ तजहा रयणाण जावरिट्ठाणं । इणिपरे हेगौतम । चमरेंद्र असुरेंद्र असुरकुमारराजा वैक्रि य समुद्घात करवाने काजे प्रयत्न विशेषेकरी प्रदेश बाहरकाढे तेहनोज स्वरूप कहेछे—संख्यातायोजन दंडनीपरे ते ऊंचो लांबो संख्यातायोजन प्रमाण

॥ टीका ॥

गृह्णति ॥ समुपहन्यते समुपहतो ज्ञवति समुपहंति वा; प्रदेशा न्विक्षिपतीति, तत्स्वरूपमेवाह ॥ संक्खेज्जाइंइत्यादि ॥ दण्डइव दण्ड ऊर्द्धोध आयत शरीरबाहल्योजीवप्रदेशकर्म्मपुद्गलसमूह स्तत्रच विविधपुद्गला नादत्तइति दर्शयन्नाह–तद्यथा रत्नाना कर्केतनादीना, इहच यद्यपि रत्नादि पुद्गला औदारिका वैक्रियसमुद्घातेच वैक्रियाएव ग्राह्या ज्ञवन्ति, तथापीह तेषां रत्नादिपुद्गलानामिव सारताप्रतिपादनाय रत्नाना मित्याद्युक्त, त च रत्नाना मिवेत्यादि व्याख्येय, अन्येत्वाहु रौदारिकाअपि ते गृहीता सन्तो वैक्रियतया परिणमन्तीति, यावत्करण दिदंदृश्य–वइराण वेरुलियाण लोहियक्खाण मसारगल्लाण हंसगब्भाण पुलयाण सोगंधियाण जोतिरसाण अंकाण अंजणाण रयणाणं जायरूवाण अंजणपुलयाण फलिहाणंति, किमतआह ॥ अहाबायरेत्ति ॥ यथा बादरा नसारान् पुद्गलान् परिशातयति दण्डनिसर्गगृहीतान्, यच्चोक्त प्रज्ञापनाटीकाया–यथा स्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्म्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् शातयतीति त त्समुद्घातशब्दसमर्थनार्थं अनाजोगिक वैक्रियशरीरकर्मनिर्जरण माश्रित्येति ॥ अहासुहुमेत्ति ॥ यथा सूक्ष्मान् सारान् ॥ परिआइयत्ति ॥ पर्यादत्ते दण्डनिसर्गगृहीतान् सामस्त्ये नादत्तइत्यर्थ. ॥ दोच्चपित्ति ॥ द्वितीयमपिवार समुद्घात करोति,

॥ मूल ॥

पोग्गले परिसाडेइ परिसाडेइत्ता अहासुहमे पोग्गले परियाइयइ परियाइयइत्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ, पन्नूणं गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं जबूद्दीवद्दीवं बहूहि असुरकुमा

॥ भाषा ॥

बाहल्यदल शरीरप्रमाण चौडो जीवप्रदेश कर्मपुद्गलसमूह तिहा विविध प्रकारना पुद्गलग्रहै ते देखाडेछै—तेकिम रत्न कर्केतनादिक इहां यद्यपि रत्नादिक पुद्गल औदारिक छै अने वैक्रिय समुद्घाते तो वैक्रियज ग्रहवाहुवे, तथापिरत्नना पुद्गलकह्या, तेहनोपरे सारपणो देखाडवाने रयणाण इसो कह्यो ते रत्ननीपरे इसो व्याख्यान करवो अनेरा इम कहैछै—औदारिकपणे ते ग्रह्या हुता वैक्रियपणे परिणमे। अहाबायरेपोग्गलेपरिसाडेइ २ त्ता। यथा बादर निस्सार पुद्गल पाडै दंड निसर्गग्रह्या ते पाडीने। अहासुहुमेपोग्गलेपरियाइयइ २ त्ता। यथा सूक्ष्मसार पुद्गलग्रहै दंड निसर्ग ग्रह्या प्रते समस्तपणेग्रहै ग्रहीने। दोच्चपिवेउव्वियसमुग्घाएणसमोहणइ। वली बीजीवार पणि वैक्रियसमुद्घात करै वांछितरूप नीपजावाने करिवा अर्थे। पभूण गोयमा

॥ टीका ॥

चिकीर्षितरूपनिर्माणार्थं ततश्च ॥ पन्नुसि ॥ समर्थ ॥ केवलकप्पंति ॥ केवलं परिपूर्णं कल्पत इति कल्प स्वकार्यकरणसामर्थ्योपेत स्तत कर्म्मधारय', अथवा; केवलकल्प- केवलज्ञानसदृश परिपूर्णतासाधर्म्यात्, सम्पूर्णपर्यायोवा; केवलकल्पशब्दइति ॥ आइसमित्यादय ॥ एकार्था अत्यन्तव्याप्ति प्रदर्शनायोक्ता ॥ अदुत्तरचणंति ॥ अथापरच इदंच सामर्थ्यातिशयवर्णनं ॥ विसएति ॥ गोचरो वैक्रियकरणशक्ते, अथच तत्करणयुक्तोपि स्यादि

॥ मूल ॥

रेहिं देवेहिं देवीहिय आइसं वितिकिसं उवत्थडं संथडं फुडं अरगाढावगाढं करेत्तए। अदुत्तरचणं गोयमा! पन्नूणं चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहि असुरकुमारेहिं देवेहि देवीहि य आइसे वितिकिसे उवत्थडे संथडे फुडे अरगाढावगाढे करेत्तए एसणं गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स

॥ भाषा ॥

चमरे असुरिंदे असुरराया। समर्थ ण वाक्यालंकारे, हेगोतम। चमर असुरेंद्र असुरराजा। केवलकप्पजबूद्दीवद्दीववहूहि असुरकुमारेहिंदेवेहि देवीहिय। केवल परिपूर्ण कल्पोये ते कल्पपोताना कार्यकरवा समर्थोपेत एतले जबूदीप परिपूर्ण आपणरूपे करी भरे एपणि चमरेंद्र विकुर्वणा शक्तिनो विषयछे घणा असुरकुमार देव देवीयेंकरी। आइणवितिकिण। व्याप्त विशेषेकरो व्याप्त। उवत्थड सयडफुड। क्रीडायेकरी आच्छादित परस्पर सघरा प्रगट। अरगाढा वगाढकरेत्तए। परस्परें सलेषपणेरह्या तथा प्रच्छन्नपणें रह्याकरे। अदुत्तर चण गोयमा।। अथवा वली अनेरापणि हेगोतम। शक्तिनो विषय कहेछे— पभूर्णचमरे असुरिंदे असुरराया। समर्थ ण वाक्यालंकारे, चमर असुरेंद्र असुरराजा। तिरियमसखेज्जेदीवसमुद्देवहूहि। घोछा असख्यात द्वीप समुद्र ते घणा। असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय। असुरकुमारना देव तथा देवीनारूपकरो जबूद्वीपनी परे भरे। आइणेवितिकिणे। आकीर्ण व्याप्त विशेषेकरी व्याप्त। उवत्थडे सयडे फुडे। क्रीडाये आच्छादित परस्पर सघरा प्रगट। अरगाढावगाढकरेत्तए। परस्परे सलेषपणें रह्या तथा प्रच्छन्नपणें रह्याकरे। एसण गोयमा चमरस्स असुरिंदस्स असुररणो। एहगौतम चमरनो असुरेन्द्रनों असुरकुमार राजानो। अयमेवारूवेविसएविसयमेत्तेवुइए। एहवो एताद्दशरूप विषय गोचर वैक्रिय करणशक्ति ए करण समर्थ पिणछुवे, तेमाटें कहेछे— ए विषयमात्र कह्यो पिण क्रियाशून्य वुइए कह्यो तेहोज करै

असुररस्रो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए । णोचेवणं संपत्तीए विकुव्विंसुवा विकुव्वतिवा विकुव्विस्सं तिवा । जइणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया ए महिड्ढिए जाव एवइयचणं पभू विकुव्वित्तए । चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररस्रो सामाणियदेवा केमहिड्ढीया जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोय मा ! चमरस्स असुररस्रो सामाणियदेवा महिड्ढीया जाव महाणुभागा तेणं तत्थ साणं साणं भवणाणं

छे—णोचेवणसपत्तोणविउव्विसुवा । नही निश्चे सपदा समर्थाई करीने विकुर्वणाकीधो । विउव्वितिवा । विकुर्वणा करेछे । विउव्विस्सतिवा । विकुर्वणा करस्ये । जइणभंतेचमरे । जो णं वाक्यालकारे, हेभगवन् । चमर । असुरिंदे असुररायाएमहिड्ढिए । असुरेंद्र असुरराजा एहवो महर्द्धिक । जावएवइ यचण । यावत् एतलो चपुन ण वाक्यालकारे, । पभूविउव्वित्तए । समर्थछे विकुर्वणा करवाने तो । चमरस्सणभंते । चमरना हेभगवन् । असुरिंदस्स । असु रेंद्रना । असुररस्रो । असुरराजाना । सामाणियदेवाकेमहिड्ढिया । सामानिक विना ग्रेपद्युति त्रिभवादिक सर्व समानछे ते सामानिकदेव केहवो म हर्द्धिक । जावकेवइयचणपभूविउव्वित्तए । यावत् केतलो एक शक्ति समर्थाईछे विकुर्वणा करवानो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चमरस्स असुरिंदस्स असुर रस्रो । हेगौतम । चमरना असुरेंद्रना असुरराजाना । सामाणियदेवामहिड्ढिया । इन्द्र सरीखा ते सामानिकदेव महर्द्धिकछे । जावमहाणुभागा । या वत् मोटा भाग्यनाधणोछे । तेणतत्थ साणसाणभवणाणं । ते सामानिकदेव तिहा पोता पोताना घर । साणसाणसामाणियाण । आप आपणा सामा निकदेव । साणसाणअग्गमहिसीणं । आप आपणी अग्रमहिषी पट्टदेवी इत्यादिक । जावदिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणाविहरति महिड्ढिया । याव त् देवसबधी भोगविवायोग्य ज भोग ते भोगवताथका विचरेछे एहवा महर्द्धिकछे । जाएएवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् एतलो चपुन ण वाक्यालका रे, विकुर्वणा करवाने समर्थछे । सेजहाणामएजुवईजुवाणेहत्थेणहत्थगेण्हेज्जाचक्कस्सवानाभीअरगाउत्तासिया । ते यथा दृष्टांते जिम युवान तरुणपुरुष काम पीडितथको युवती स्त्रीने हाथासू हाथे गृहे माहोमाहि अतररहित आगुलीकरी अथवा चक्रनी नाभि अरेकरी निविडभीडी थको विचाले छि

साणं साणं सामाणियाणं साणं साणं अग्गमहिसीणं जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति. एवंम हिड्डीया जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए। सेजहानामए जुवइजुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्सवा नाभी अरया उत्तासिया एवामेव गोयमा ! चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिए देवे वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणइ २ जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ पभूणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणिएकेवलकप्पं जंबूद्दीवं२ बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं अगाढावगाढं करेत्तए ! अदुत्तरंचणं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय

हु पणिनरहैं अन्यान्य मिलाजाइ। एवामेव गोयमा। इणे दृष्टांते हेगौतम। चमरस्सवि असुरिंदस्स असुररण्णो। चमरेंद्रना पणि असुरेन्द्रना पणि असुरकुमार राजाना। एगमेगेसामाणिएदेवे। एकेका सामानिक देव। वेउव्वियसमुग्घाएणंसमोहणइ। वैक्रिय करवानेकाजे प्रगल निरोपकरो प्रदेश आदर काढे काढीने। जावदोच्चंपिवेउव्वियसमुग्घाएणंसमोहणइ। यावत् बीजीवार पणि वैक्रिय समुद्घातकरे वांछितरूप नीपजाववाने करवाने समर्थ करे। पभूणं गोयमा चमरस्स। समर्थछे हेगौतम। चमरेंद्रना। असुरिंद्स्स असुररण्णो। असुरेन्द्रना असुरराजानो। एगमेगेसामाणियदेवे। एकेका सामानिक देव। केवलकप्पजंबूद्दीवं २ बहूहिं असुरकुमारेहिं। समस्त जंबूद्वीप प्रते घणा असुरकुमार। देवेहियदेवीहिय। देवता तथा देवी तेणेकरी व्याप्तकरी। आइण्णंवितिकिण्णं। व्याप्त विशेषे व्याप्त। उवत्थडंसंथडं। आच्छादित सघला प्रगट। अगाढावगाढंकरेत्तए। परस्पर समीपे रह्या तथा अत्यंतपणें रह्या करे। अदुत्तरंचणं गोयमा। अथ॥ वली पनेरापणि हेगौतम। गणित थकी प्रयत्न कहेछे--पभू चमरस्स असुरिंदस्स। समर्थछे चमरनो असुरेंद्रनो। असुरकुमाररण्णो। असुरकुमार राजानो। एगमेगेसामाणियदेवे। एकेका सामानिक देव। तिरियमसंखेज्जेदीवसमुद्दे। तीर्छा असंख्याता द्वीप तथा समुद्र। बहू

॥ टीका ॥

त्यतआह ॥ विसयमेत्तेत्ति ॥ विषयएव विषयमात्रं क्रियाशून्यं ॥ वुईएत्ति ॥ उक्त मेतदेवाह ॥ संपत्तीएत्ति ॥ यथो क्तार्थसंपादनेन ॥ विकुव्विंसुवा ॥

॥ मूल ॥

आइन्ने वितिकिन्ने उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए एसणं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, णोचेवण संपत्तीए विकुव्विंसुवा विकुव्विंतिवा विकुव्विस्संतिवा । जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो सामाणियदेवाए महिड्ढीया जाव एवइयंचण पभू विकुव्वित्तए। चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो तावत्तीसया देवा केमहिड्ढीया वत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा । लोयपाला तहेव, नवर, संखेज्जा दीवसमुद्दा भा

॥ भाषा ॥

हि असुरकुमारेहिं । घणा असुरकुमारना । देवहिय देवीहिय आइण्णेवितिकिण्णेउवत्थड । देव तथा देवी तेहने रूपेकरी व्याप्त विशेषेव्याप्त आच्छादित । संथडे फुडे । संथरित प्रगट । अरगाढावगाढंकरेत्तए । परस्परे सलीवे रह्या तथा अच्छन्नपणे रह्याकरे । एसणगोयमा । एह हेगौतम । चमरस्स असुरिंदस्स । चमरनो असुरेंद्रनो । असुररन्नो । असुरकुमारराजानो । एगमेगस्सविमाणियदेवस्स । एकेक सामानिकदेवनो । अयमेयारूवेविसए । एहवो एहवेरूप विषयकह्यो, पणि । विषयमेत्तेवुइए । विषयमात्र कह्योछे पणि । णोचेवणसंपत्तीए विकुव्विंसुवा । नही निश्चे संपदायेंकरीने पूर्वे किणही विकुर्व्योछे विकुव्वितिवा । विकुर्वेछे नही । विकुव्विस्संतिवा । विकुर्वस्ये पणि नही । जइणंभंतेचमरस्सअसुरिंदस्स । जो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । चमरना असुरेंद्रना । असुररन्नो । असुर राजाना । सामाणियादेवाएमहिड्ढिया । सामानिकदेव एहवा महर्द्धिकछे । जावएवइयंचणपभूविउव्वित्तएचमरस्सणभंते । यावत् एतलो वपन ण वाक्यालंकारे, विकुर्वणा करवाने समर्थछे तो चमरना ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । असुरिंदस्स असुररन्नो । असुरेंद्रना असुरकुमारराजाना । तावत्तीसयादेवा केमहिड्ढिया। त्रायत्रिंशकदेव मनोश्वरदेव केहवा एक महर्द्धिकछे स्वामीकहे । तावत्तीसया जहासामाणिया तहाणेतव्वा । त्रायत्रिंशक देवनो महर्द्धिक पणो तथा विकुर्वणा जिम सामानिकदेव कह्या तिम जाणवा । लोयपालातहेव । लोकपाल पणि तिमहीज कहवा । णवर

॥ टीका ॥

विकुर्वितवा न्या; विकुर्व्वते वा; विकुर्विष्यतिवा, विकुर्व इत्यय धातु' सामयिकोस्ति विकुर्वणे त्यादिप्रयोगदर्शनादिति, नवरसखेज्जादीवसमुद्द

॥ मूल ॥

णियव्वा , वहूहिं असुरकुमारेहिं २ आइस्रे जाव विउव्विस्सतिवा । जइणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररस्रो लोगपाला देवा ए महिड्ढीए जाव एवइयचणं पभू विकुव्वित्तए चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररस्रो अग्गमहिसीउ देवीउ केमहिड्ढियाउ जाव केवइयं चणं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स २ महिड्ढियाउ जाव महाणुभागाउ ताउणं तत्थसाण साणं भवणाणं साणं साणं च सामाणियसाहस्सीणं साणं साणं महत्तरियाण साणं साण परिसाण जाव महिड्ढियाउ अस्रं जहा लोगपालाण अपरिसेसं

॥ भाषा ॥

सखेज्जादीवसमुद्दाभाणियव्वा । एतलोविशेष लोकपालादिक देव सामानिकदेवथी थोडारिद्धिवतछे तेमाटे विकुर्वणा सख्यातादीप समुद्रनी कहवी । वहुहिंअसुरकुमारेहिं २ । घणा असुरकुमारना देव तथा देवी तेहनेरूपेकरी । आइसेजावविउव्विस्संतिवाजइणभंतेचमरस्स । व्याप्त यावत् आगामिकाले विकुर्वणाकरस्ये नहो एसवं कहवो, जो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । चमरना । असुरिंदस्स असुररणो । असुरेंद्रना असुरराजाना । लोगपालादेवा । लोकपालदेव । एमहिड्ढीया । एहवा महर्द्धिकछे । जावएवइयचणपभूविउव्वित्तए । यावत् एतलो समर्थछे विकुर्वणा करवानो जेहने । चमरस्सण असुरिंदस्स असुररणो । चमरेन्द्र असुरेन्द्र असुरराजानो । अग्गमहिसीओदेवीओ । जे अग्र महिषी देवीओछे । केमहिड्ढीयाओ । ते केहवी एक महर्द्धिकछे । जावकेवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् ते देवीओनी केहवी एक विकुर्वणा करवानी समर्थाईछे । गोयमा चमरस्सण । हेगौतम । चमरनी असुरिंदस्स असुररणो अग्गिमहिसीओ । असुरेंद्रनो असुरराजानी अग्रमहिषी देवी । महिड्ढीओ । महाऋद्धिवंत । जावमहाणुभागाओ । यावत् मोटोभाग्यवन्तीछे । ताओणतत्थसाण २ भवणाणं । ते अग्र महिषीओ तिहां पोतापोताना भवन कह्या, घर । साणसाणसामाणियसाहस्सीण । पोतापोताना सामानिकदेव सहस्र । साणसाणमहत्तरियाण साणसाणपरिसाण । आपआपणी महत्तरिकादेवीओ मित्रस्थानीय आपआपणी परिषदाओ

त्ति ॥ लोकपालादीना सामानिकेभ्यो ल्पतरर्द्धिकत्वेना ल्पतरत्वा द्वैक्रियकरणलब्धेरिति ॥ अपुट्ठवागरणंति ॥ अपृष्टे सति प्रतिपादनं ॥ वइरोय

सेवन्नंते२ ! त्ति, ज्ञगवं दोच्चे गोयमे समणं ज्ञगव महावीरं वंद मंसइइ नमंसइत्ता जेणेव तच्चे गोयमे ! वायुन्नूइं ऋणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तच्चं गोयमं वायुन्नूइं ऋणगारं एवं वयासी , एवंखलु गोयमा ! चमरे ऋसुरिंदे ऋसुरराया ए महिड्ढीए तंचेव एवं सव्व ऋपुठ वागरणं नेयव्वं , ऋपरिसेस जाव ऋग्गमहिसीणं वत्तव्वया सम्मत्ता । तएणं से तच्चेगोयमे वायुन्नूईऋणगारे दोच्चस्स गोयमस्स ऋग्गिन्नूयस्स

ते सहितछे । जावएमहिड्ढीयाओ । यावत् एहवो महर्द्धिकछे एसर्व कहवो । अन्नजहालोगपालाण अपरिसेस सेवभते २ त्ति । बीजो सर्व जिम लोकपालनो परे कहवो, एतले संख्याता द्वीपसमुद्र विकुर्वणाकरवानो विषयमात्रछे पणि किणही यावत् करस्ये नही एतलालगे कहवो, तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे इमकहो । भगवदोच्चे गोयमे समणभगवमहावीर वंदइणमसइ २ त्ता । भगवत गौतम बीजो गणधर गौतम गोत्रीय अग्निभूतनामे ते श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वादे नमस्कार करे वादीने नमस्कारकरीने । जेणेवतच्चे गोयमे । जिहा त्रीजो गणधर गौतमगोत्रीय । वायुभूतीअणगारे । वायुभूतीनामा साधुछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । तच्चगोयम । त्रीजा गणधर गौतम गोत्रीय । वायुभूती अणगार एववयासी । वायुभूतिनामे अणगारसाधुप्रते इम कहतोहयो । एवखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए । चमरे असुरिंदे असुरराजा एहवो महर्द्धिकछे । तचेवएवसव्व । ते निश्चे इम सर्व पूछिलो अधिकार । अपुट्ठवागरणणेयव्व । विना पूछ्या कह्यो, ते जाणवो । अपरिसेस । एतले सगलोये । जावअग्गमहिसीणवत्तव्वयासम्मत्ता । यावत् अग्रमहिषीनो वक्तव्यता कही तालगे सर्व सबन्ध कहवो । तएणतेतच्चे । तिवारे ते त्रीजे गणधरे । गोयमे । गौतम गोत्रीय । वायुभूतीअणगारे । वायुभूतनामे अणगारसाधु । दोच्चस्सगोयमस्स । बीजा गणधरने गौतम गोत्रीयने । अग्गिभूइस्सअणगारस्स । अग्निभूतनामे साधुने । एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पन्नवेमाणस्स । इम सामान्यथी कहताने विशेषथी कहताने हेतुक

अणगारस्स एव माइक्खमाणस्स भासमाणस्स पणवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमठं नोसद्दहइ नोपत्तियइ नोरोयइ , एयमठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उठाए उठेइ उठेइत्ता जेणेव समणेभगवं महा वीरे तेणेव जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी , एवंखलु भते ! मम दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एव माइक्खइ भासइ पणवइ परूवइ परूवइत्ता एवंखलु गोयमा ! चमरे ३ ए महिड्ढीए जाव महाणुभागे , सेण तत्थ चोत्तीसाए भवणवाससयं तंचेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव अग्गमहिसीउ वत्तव्वया सम्म

री कहताने। परूवेमाणस्स। भेदेकरी कहताने। एयमठंगोसद्दहइ। एह अर्थनेविषे सद्दहणानाणे। णोपत्तियइ। प्रतीति नकरे। णोरोएइ। रुचि नकरे। एयमठंअसद्दहमाणे। एह अर्थप्रते असद्दहणा करतायको। अपत्तियमाणे अरोएमाणे उठाए उठेइ २ त्ता। अप्रतीति आणतोथको अरुचि पामतोथको उठे उभोथाय उभोथइने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवजावपज्जुवासमाणे। तिहा आवीने यावत् सेवा करतो थको। एवं वयासी एवंखलुभते। इम कहतो हवो इम निश्चे हेभगवन्। ममदोच्चेगोयमे। मुझने बीजो गणधर गौतमगोत्रीय। अग्गिभूतीअणगारे एवमाइक्खइ। अग्निभूतिनामे साधु ते इम सामान्यथी कहे। भासेइ पणवेइ परूवेइ। विशेषथी कहे हेतुकरी कहे भेदेकरी कहे। एवंखलुगोयमा चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए। इम निश्चे हेगौतम। चमर असुरेंद्र असुरराजाएहवो महर्द्धिकछे। जावमहाणुभाए। यावत् मोटो भाग्यवत छे। सेणतत्थचउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण। तेह तिहा चोतीसलाख भवनकणा इत्यादि। तंचेवसव्वंअपरिसेसंभाणियव्वं। ते निश्चे सर्व एतले सपूर्ण अधिकार जाणवो। जावअग्गमहिसीओवत्तव्वयासमत्ता। यावत् अग्रमहिषीनी वक्तव्यता पूर्णथइ एतलालगे कहवो। सेतहमेयभतेएवं। तेकिम हेभगवन्। एवचन इमहोज। गोयमादि समणेभगवं महावीरे। गौतमादि श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तच्चगोयम। त्रीजा गौतमप्रते। वायुभूतिअणगारं। वायुभूतिनामा साधुप्रतें। एववयासी। इम कहताहवा। जण गोयमा। जं ण वाक्यालंकारे, हेगौतम। तच्चेगोयमे। तुझने त्रीजो गौतम

णिदेत्ति ॥ दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यः सकाशा द्विशिष्टं रोचनं दीपनं येषा मस्ति ते वैरोचना औदीच्यासुरा स्तेषु मध्ये इन्द्र परमेश्वरो वैरोचने

त्ता । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमादि समणेभगवं महावीरे तच्चं गोयमं वाउभूइं अणगारं एवंवयासी , जस्सं गोयमा ! तवदोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ ४ । एवखलु गोयमा ! चमरे ३ महिं ड्ढिए सोचेव सव्व जाव अग्गमहिसीउ । सच्चेण एसमठे , अहंपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि ४ । एवख लु गोयमा ! चमरे ३ महिड्ढीए सोचेव बितिउ गमो भाणियव्वो । जाव अग्गमहिसीउ सच्चेणमेसअठे से वं भंतेभंते ! त्ति । तच्चे गोयमे वायुभूईअणगारे समणभगवं वदइ वदइत्ता जेणेव दोच्चेगोयमे अग्गिभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता दोच्च गोयम अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एय

गोत्रीय । अग्गिभूइअणगारे । अग्निभूतनामा साधु । एवमाइक्खइ । इम कहै सामान्यथी । भासेइ पणवेइ । विशेषथी हेतुकरी । परूवेइ एवखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । चमरेएमहिड्ढीए ३ । चमर एहवो महर्द्धिकछै । तचेवसव्वजावअग्गमहिसीओ । तिमज निश्चै सर्व यावत् अग्रमहिषीनो वक्तव्यता तालगे कहवो । सच्चेणएसमठे । साचू एअर्थ । अहंपियणं गोयमा एवमाइक्खामि ४ । हू पणि चपुन ण वाक्यालंकारे, हेगौतम । इमकहु सामान्यथी विशे षथी हेतुकरी भेदेकरी । एवखलु गोयमा चमरे ३ एमहिड्ढीए । इम निश्चे हेगौतम । चमर असुरेन्द्र असुरराजा एहवो महर्द्धिकछै । सोचेवबीओगमो भाणियव्वो । तिहीज निश्चै बीजोवार पणि आलावो सर्व कहवो । जावअग्गमहिसीओ । यावत् अग्रमहिषीनो वक्तव्यता तालगे कहवो । सच्चेणएसअठे । साचू ण वाक्यालंकारे, एअर्थ । सेवभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकहु तेसर्व सत्यछे । तच्चेगोयमे । त्रीजोगौतम । वायुभूतीअणगारे । वायुभूतिनामे साधु समणभगवमहावीर । श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीप्रते । वदइ २ त्ता । वादे वादीने । जेणेवदोच्चेगोयमे । जिहा बीजो गणधर गौतम गोत्रनो धणी । अग्गिभूतीअणगारे । अग्निभूत नामे साधु । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । दोच्चगोयम । बीजागणधर गौतम गोत्रीय प्रतें ।

॥ मूल ॥

मठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ । तएणं से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चेणं गोयमेणं अग्गिभूइणा अणगारेण सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी , जइणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढिए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए । बलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए जाव केवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! बलीणं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जहा चमरस्स तहा बलिस्सवि णेयव्वं , णवरं , साइरेगं केवलकप्पं जबूद्दीवं भाणिय

॥ भाषा ॥

अग्गिभूति अणगार । अग्निभूतनामे साधुप्रते । वंदइणमंसइ । वांदे नमस्कारकरे । एयमट्ठंसम्मंविणएण भुज्जो २ खामेइ । एह अर्थ सुणताजे असद्दहणा कीधी तेहअर्थे प्रयोजने भलेप्रकारे त्रिकरण शुद्धे विनने करी वारवार खमावे । तएणंसेतच्चे गोयमे । तिवारे ते त्रीजो गणधर गौतम गोत्रनोधणी । वायुभूतीनामा साधुप्रते । दोच्चेणं गोयमेणं । बीजो गणधर गौतम गोत्रनोधणी । अग्गिभूतीणामअणगारेण सद्धिं । अग्निभूतनामा साधु ते संघाते । जेणेवसमणेभगवमहावीरे । जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे तिहां आवी । जावपज्जुवासमाणे । यावत् सेवा करतोथको । एवंवयासी । इम कहे । जइणंभंतेचमरे । जो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । चमर असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए । चमर असुरेंद्र असुरराजा एहवो महर्द्धिकछे । जावएवइयंचणं पभूविकुव्वित्तए । यावत् एहवो वपुन ण वाक्यालंकारे, समर्थछे विकुर्वणा करवानो जेहनेविषे तो । बलीणंभंतेवइरोयणिंदेवइरोयणराया । बली ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । दक्षिणदिशिने विषे उपना जे असुरकुमार तेहथकी विशिष्ट भलोरोचन कहीये दीपेछे जेहनो ते वैरोचन उत्तरदिशिनेविषे उपना देवता तेह इन्द्र कहीये, परमेश्वर ते वैरोचनेन्द्र तथा वैरोचनराजा दीपित ते । केमहिड्ढीए जावकेवइयंचणंपभूविकुव्वित्तए । केहवा एक महर्द्धिकछे यावत् केहवो एक समर्थछे विकुर्वणाकरवानो एहनेविषे प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बलीणंवइरोयणिंदेवइरोयणराया । हेगौतम । बली ण वाक्यालंकारे, वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा । सेसंजहाचमरस्स । शेष जिम चमरनो अधिकार कह्यो । तहाबलिस्सविणेयव्वं । तिम बलिनो पणि कहवो ।

त्तं, सेस तंचेव णिरवसेसं णेयव्वं, णवरं, णाणत्तं जाणियव्वं, भवणेहिं सामाणिएहिं सेवं भंतेभंते! त्ति भगवं दोच्चे गोयमे वायुभूती जाव विहरइ, तएणं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अण० समणं भगवं वंदइ वंदइत्ता एवं वयासी, जइणं भंते! बलीवइरोयणिंदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए पभू जाव विउव्वित्तए। धरणेणं भंते! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विउव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणवाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीस

पद्वंमातिरेगकेवलकप्पजंबूद्दीवभाणियव्व। एतलोविशेष विकुर्वणाने कांई एक अधिको जंबूद्वीप देव भने देवीने रूपेंकरी भरे एतलो शक्तिछे। सेसतंचेव णिरवसेसणेतव्व। बीजो तिमज निश्चे कहवो चमरनीपरे। णवरणाणत्तजाणियव्व भवणेहिंसामाणिवेहिं। एतलो विशेषभेद जाणवो एहने चोसलाख भवन कहवा, भने साठसहस्स सामानिकदेव कहवा एविशेष कहवो। सेवंभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन्! तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे अन्यथानही इमकही। तएणंसेदोच्चेगोयमेवायुभूतीअणगारेजावविहरइ। बीजो गणधर गौतम गोत्रनोधणी वायुभूत अणगार स्वामी प्रतें वांदीने यावत् विचरे। तएणसेदोच्चेगोयमे। तिवारे बीजो गणधर गौतम गोत्रीय। अग्गिभूतीअणगारे। अग्निभूतनामे साधु। समणंभगवंमहावीर। श्रमण-भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें। वंदइणमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वंदनाकरीने नमस्कारकरीने। एवंवयासी। इमकहे। जइणंभंतेबलीवइरोयणिंदे। जोण वाख्यानकरे, हेभगवन्! बलो वैरोचनेंद्र। वइरोयणराया। वइरोचन राजा। एमहिड्ढीए। एहवो महर्द्धिकछे। एवंपभूजावविउव्वित्तए। एहवो समर्थछे यावत् विकुर्वणा करवाने तो। धरणेणंभंतेनागकुमारिंदे। धरण नें व्याख्यानकारे, हेभगवन्। नागकुमारेन्द्र। नागकुमारराया। नागकुमार राजा। केमहिड्ढीए। केहवो महर्द्धिकछे। जावकेवइयंचणंपभूविउव्वित्तए। यावत् केतलो एक समर्थछे विकुर्वणा करवानो एहनेविषे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमामहिड्ढीए। हेगौतम। एहवो महर्द्धिकछे। जावसेणंतत्थ। यावत् तेह तिहां। चउयालीसाएभवणवाससयसहस्साण। चमालीसलाख ४४००००० भवन कह्या। छण्हंसामाणियसाहस्सी

न्द्र ॥ साइरेगकेवलकप्पंति ॥ औदीच्येन्द्रत्वेन बले विशिष्टतरलब्धिकत्वादिति ॥ एवंजावथणियकुमारत्ति ॥ धरणप्रकरणमिव भूतानन्दादिप्रकरणो

णाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणीयाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच जाव विहरइ, एवइयंचणं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवइंजुवाणे जाव पभू केवलकप्पं जंबुद्दीवंदीवं जाव तिरियं संखेज्जे दीवसमुद्दे बहूहिं नागकुमारीहिं जाव विउव्विस्संतिवा सामाणियतायत्तीसलोगपाल अग्गमहिसीओय तहेव जहा चमरस्स, णवरं, संखेज्जे दीवसमुद्दे भाणियव्वं, एवं जाव थणियकुमारा वाणमंतरजोइसियावि, णवरं

णं छसहस्र सामानिकदेव। तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं। तेत्रीस त्रायस्त्रिंशकदेव। चउण्हलोगपालाणं। चार लोकपाल। छण्हंअग्गमहिसीणं सपरिवाराण। छ अग्रमहिषी ते आपणे परिवारे सहित। तिण्हपरिसाण। तीन परिषदा। सत्तण्हअणियाणं। सात अनीक कटक। सत्तण्हअणियाहिवईणं। सात अनीकना स्वामी एकेको दिसे छ छ सहस्र आत्मरक्षक देव इम चारेई दिसे। चउव्वीसाएआयरक्खदेवसाहस्सीण। चउवीस सहस्र आत्मरक्षकदेव, अण्णेसिंचजावविहरइएवइयंचणंपभूविउव्वित्तए। बीजा पणि अनेक नागकुमार देवनास्वामी स्वामिपणो यावत् भोगवतोथको विचरे अने एतलो समर्थ छे विकुर्वणा करवानो। सेजहानामएजुवइंजुवाणेजावपभूकेवलकप्पंजंबूद्दीवंदीवं। ते यथा दृष्टांते युवती युवान पुरुष हाथेकरी ग्रहे इत्यादि बेहु दृष्टांत पूर्वलो परे कहवा, यावत् समर्थ छे ते नवारूप विकुर्वी केवलकल्प जंबूद्वीप प्रते भरे। जावतिरियंसंखेज्जेदीवसमुद्दे बहूहिंनागकुमारीहिं जावविउव्विस्संतिवा। यावत् तीर्छा संख्याता द्वीप समुद्र घणा नागकुमारदेव तथा देवीनारूप यावत् विकुर्वणाकरी भरे एहवी शक्ति छे पणि अल्पर्द्धिक पणा माटे असंख्याताद्वीप समुद्रनी शक्ति नथी। सामाणियतायत्तीसलोगपालाअग्गमहिसीओयतहेवजहाचमरस्स। सामानिकदेव त्रायस्त्रिंशकदेव लोकपाल अग्रमहिषी एसर्व जिम चमरने अधिकारे कह्या तिम एहनू पणि कहवो। णवरंसंखेज्जेदीवसमुद्देभाणियव्वं। एतलो विशेष सर्वने संख्याता द्वीप समुद्र

॥ टीका ॥

वान्तभुवनपतीन्द्रप्रकरणा न्यध्येयानि, तेषुच इन्द्रनामा न्येतद्गाथानुसारतो वाच्यानि–चमरे १ धरणे २ तहवे णुदेव ३ हरिकंत ४ अग्गिसीहेय ५ । पुत्ते ६ जलकतेविय ७ अमिय ८ विलबेय ९ घोसेय १० ॥ १ ॥ एते दक्षिणनिकायेन्द्रा, इतरेतु–बलि १ भूयाणंदे २ वे णुदालि ३ हरिस्सहे ४ अग्गि माणव ५ वसिठे ६ जलप्पभे ७ अमियवाहणे ८ पहंजणे ९ महाघोसे १० ॥ एतेषांच भवनसङ्ख्या, चउतीसा १ चउचत्ता २ इत्यादि, पूर्वोक्तगाथाद्वया दवसेया, सामानिकात्मरक्षसङ्ख्याचैव–चउसठीसठीखलु छच्चसहस्साउअसुरवज्जाणं । सामाणियाउएए चउग्गुणाआयरक्खाउ ॥ १ ॥ अग्रमहिष्यस्तु प्रत्येक धरणादीना षट्, सूत्राभिलापस्तु धरणसूत्रवत्कार्यः ॥ वाणमतरजोइसियाविति ॥ व्यन्तरेन्द्राअपि धरणेन्द्रवत्सपरिवारा वाच्या, एतेषुच प्रतिनिकायं दक्षिणोत्तरभेदेन द्वौ द्वा विद्रौ स्याता तद्यथा–कालेयमहाकाले १ सुरूवपडिरूव २ पुण्णभद्देय । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेचेवतहमहापुरिसे । अइकायमहाकाए ७ गीयरईचेवगीयजसे ८ ॥ २ ॥ एतेषा ज्योतिष्काणाच त्रायस्त्रिंशा

॥ मूल ॥

दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ, भंतेत्ति ! भगवं गोयमे दोच्चे अग्गिभू

॥ भाषा ॥

नी विकुर्वणानी शक्तिकहवी । एवजावथणियकुमारा । इम यावत् स्तनितकुमार ताई कहवो । वाणमतरजोइसयावि । वानव्यतर ज्योतिषी पणि कहवा । णवरंदाहिणिल्लेसव्वेअग्गिभूई उत्तरिल्लेसव्वेवायुभूईपुच्छइ । एतलो विशेष ए सर्वनेविषे दक्षिणदिशिना इन्द्र अने सूर्य ए अग्निभूति पूछे, उत्तरदिशिना इन्द्र अने चन्द्रमा ए सर्व वायुभूति पूछे, तिहा दक्षिणना इन्द्रना नाम चमर १ धरण २ वेणुदेव ३ हरिकान्त ४ अग्निशिख ५ पूर्ण ६ जलकान्त ७ अमित ८ वेलब ९ घोष १० उत्तरदिशिना इन्द्रना नाम बलि १ भूतानन्द २ वेणुदाली ३ हरिस्सह ४ अग्निमाणव ५ वशिष्ट ६ जलप्रभ ७ अमितवाहन ८ प्रभंजन ९ महाघोष १० ए २० इन्द्रभवनपतीना कह्या, एहना भवननीसख्या चउतीसा चउचत्ता इत्यादि, पूर्वोक्त गाथा थकीजाणवो, सामानिक चमरेन्द्रने चउसठि सहस्र बलीन्द्रने साठि सहस्र धरण आदि अढारे इन्द्रने छ छ सहस्र एहथी चउगुणा आत्मरक्षक देवजाणवा, अग्रमहिषी असुरकुमारने पाच, धरणादिकने छ छ कहवो, वानव्यंतरना इन्द्र सोले, तेहना नाम काल १ महाकाल २ सरूप ३ प्रतिरूप ४ पूर्णभद्र ५ माणभद्र ६ भीम

लोकपालाश्च न संतीति ते न वाच्या, सामानिकास्तु चतु सहस्रसङ्ख्या, एतच्चतुर्गुणाश्चा त्मरक्षा, अग्रमहिष्य श्चतस्त्रइति' एतेषुच सर्वेष्वपि दाक्षिणा त्या निन्द्रा नादित्यचा ग्निभूतिः पृच्छति, औदीच्या श्चन्द्रंश्च वायुभूति, स्तत्रच दाक्षिणात्ये ष्वादित्येच केवलकल्पं जम्बूद्वीप सस्तृतमित्यादि' औदी च्येषुच चन्द्रेच सातिरेकं जम्बूद्वीप मित्यादिच वाच्यं, यच्चेहाधिकृतवाचनाया मसूचितमपि व्याख्यातं, त द्वाचनान्तर मुपजीव्येति भावनीयमिति' तत्र कालेन्द्रसूत्राभिलाप एव ॥ कालेणभंते पिसाइंदे पिसायराया केमहिड्ढिए ६ केवइयंचणं पभूविउव्वित्तए गोयमा। कालेणं महिड्ढिए ६ सेणं तत्थ असंखेज्जाणं नगरावाससहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं अण्णे सिंच बहूणं पिसायाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं जाव विहरइ एमहिड्ढिए ६ एवइयंचणं पभूविउव्वित्तए जावकेवलकप्पं जंबूद्दीवदीवं जावतिरियं संखेज्जेदीवसमुद्दे इत्यादि, शक्रस्य प्रकरणे, जाव चउण्हं चउरासीणं मित्यत्र यावत्करणा दिदं दृश्य–अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चउण्हं

ई अणगारे समणं भगवं वंदइ नमसइ नमंसइत्ता एव वयासी, जइणं भंते! जोइसिंदे जोइसराया एम हिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू विकुव्वित्तए। सक्केणं भंते! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए जाव केवइयंचणं

७ महाभीम ८ किन्नर ९ किंपुरुष १० सत्पुरुष ११ महापुरुष १२ अतिकाय १३ महाकाय १४ गीतरति १५ गीतयश १६, ए १६ तेमाहे ८ एकान्तरे द क्षिणना ८ उत्तरना तथा व्यन्तरीकना इन्द्रने तथाज्योतिषीना इन्द्रने त्रायत्रिंशक लोकपाल नहो तेभणी ते नकहवा, सामानिक चार सहस्र आत्मर क्षक सोले सहस्र अग्रमहिषी, चार तिहां दक्षिणदिशिना इन्द्र अने आदित्य एकेवल कल्प जम्बूद्वीप रूपेकरी भरे, उत्तरदिशिना इन्द्र अने चन्द्र एसाधि क जम्बूद्वीप इत्यादि कहवा, इहां अधिकार नकह्यो तोहो पणि वखाण्यो ते वाचनान्तरथी कह्योछे–इसो भाववू। भंतेत्तिभगवंगोयमे दोच्चेअग्गिभूतीअ णगारे। हेभगवन्! इसे आमन्त्रणे भगवत गौतम बीजो गणधर अग्निभूत साधु। समण भगव महावीर वंदइ णमसइ। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वा मी प्रतें वांदी नमस्कार करी। एवंवयासी। इम कहे। जइणभंते जोइसिंदे। जो ए वाक्यालंकारे, हेभगवन्! ज्योतिषीन्द्र। जोइसराया। ज्योतिषीना

॥ मूल ॥

पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! सक्केणं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव महाणुभागे सेणं बत्तीसाए वि माणावाससयसहस्साणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं जाव चउरहचउरासीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच जाव विहरइ , एमहिड्ढीए जाव केवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए एवं जहेव चमरस्स तहेव भाणि यव्व , णवरं , दोकेवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे अवसेस तंचेव एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरस्सो इ मेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए । णोचेवण संपत्तीए विकुव्विसुवा विकुव्वइवा विकुव्विस्सतिवा । जइणं

॥ भाषा ॥

राजा । एमहिड्ढीए । एहवा- महर्द्धिक । जावएवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् एतलो एक समर्थाईछे विकुर्वणानो एहान विषे । सक्केणभतेदेविंदे देवराया । शक्र हेभगवन् । देवेन्द्र देवनोराजा । केमहिड्ढीए । केहवो महर्द्धिक । जावकेवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् केतलोएक समर्थाई विकुर्व णा करवानो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सक्केणदेविंदेदेवराया महिड्ढीए । हे गौतम । शक्र देवेन्द्र देवराजा महर्द्धिकछे । जावमहाणुभागे । यावत् महा भाग्यवतछे । सेणंबत्तीसाएविमाणावाससयसहस्साण । ते ण वाक्यालंकारे, बत्तीसलाख विमाननो अधिपति । चउरासीएसामाणियसाहस्सीण । चउरासी सहस्र सामानिकदेव । जाव चउरहचउरासीणआयरक्खसाहस्सीण । यावत् चार चउरासी सहस्र आत्मरक्षक देवनो । अन्नेसिंचजावविहरइ । बीजा पणि अनेकदेवनो स्वामीपणो भोगवतो विचरे । एमहिड्ढीए । एहवो महर्द्धिक । जावएवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् एतलो चपुन णवाक्याल कारे, समर्थाईछे विकुर्वणा करवानो जेहनेविषे । एवजहेवचमरस्सतहेवभाणियव्व । इम जिमहोज चमरने तिमहोज शक्रने पणि कहवो, । णवरंदोकेव लकप्पे जबूद्दीवे २ । एतलो विशेष दोय केवल कल्प जबूद्वीप रूपेकरो भरे । अवसेसतचेव । शाक्रतो सवे तिमज कहवो । एसण गोयमा सक्कस्स । एह ण वाक्यालकारे, हेगौतम । शक्रनो । देविंदस्स देवरन्नो । देवेन्द्रनो देव राजानो । इमेएयारूवे । एह एहवेरूपे । विसए विसयमेत्तेबुइए । विषयछे एविषय मात्र कह्यो पणि । णोचेवण सपत्तीए । नहो निश्चे समर्थो करीने । विकुव्विसुवा विकुव्वितिवा । विकुर्वताहुवा विकुर्वेछे । विकुव्विस्सतिवा । विकुर्वस्से श्रा

॥ टीका ॥ लोगपालाणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणंति' शक्रस्य विकुर्वणोक्ता ऽथ तत्सामानिकानां सावक्तव्या, तत्रच स्वप्रतीत सामानिकविशेष माश्रित्य तच्चरितानुवादत स्ता प्रश्नयन्नाह ॥ एवंखलुइत्यादि ॥ एवमिति वक्ष्यमाणन्यायेन सामानिकदेवतयो त्पन्नइतियो

॥ मूल ॥ भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए एवंखलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी तीसएनाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए छठं छठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठसंवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणंझूसित्ता सठिंभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालंकिच्चा सोहम्मेकप्पे सयंसिविमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तीए

॥ भाषा ॥ जावएवइयंचणंप भूविकुव्वित्तए। यावत् एतलो विकुर्वणा करवाने समर्थछे ए शक्रनो विकुर्वणा कह्यो॥ हिवे तेहना सामानिकदेवतानो ते कहवो, तिहा स्वप्रतीतसामानिक विशेष आश्रयीने ते चरित्तानुवादथी पूछेछे—एवंखलुदेवाणुप्पियाणं। इमनिश्चे तुम्हारो। अंतेवासी। शिष्य। तीसएनामअणगारे। तिष्यक नामे साधु। पगइभद्दए जावविणीए। प्रकृते भद्रक यावत् विनीत। छठ्ठछठ्ठेणं। षष्ट भक्त करी। अणिक्खित्तेणं। अंतरा रहित। तवोकम्मेणं। तप क्रियायें करी। अप्पाणंभावेमाणे। आत्माने भावतोथको। बहुपडिपुण्णाइं। बहु प्रतिपूर्ण। अट्ठसंवच्छराइं। आठ वरस। सामण्णपरियागं। दीक्षा पर्याय। पाउणित्ता। पालीने। मासियाएसंलेहणाए। मासनी संलेखणायें। अत्ताणंझूसित्ता। आत्माने वोसिरावीने। सट्ठिभत्ताइं। साठिभात। अणसणाए छेदित्ता। अणसणे छेदीने। आलोइयपडिक्कंतेसमाहिपत्ते। आलोई मनना शल्य पडिक्कमी अतीचार निन्दा समाधिपाम्या। कालमासेकालकिच्चा। कालने अवसरे काल करीने। सोहम्मेकप्पे। सोधर्मनामा देवलोके। सयंसिविमाणंसि। स्वय पोताना तिष्यक नामा विमानने विषे। उववायसभाए। उपपात सभानेविषे।

ग ॥ तीसएत्ति ॥ तिष्यकाभिधान ॥ सयसित्ति ॥ स्वके विमाने ॥ पंचविहाएपज्जत्तीएत्ति ॥ पर्याप्ति राहारशरीरादीना मभिनिर्वृत्ति , साचा न्य त्र षोढोक्ता, इहतु पञ्चधा भाषामन.पर्याप्त्यो र्बहुश्रुताभिमतेन केनापि कारणे नैकत्वविवक्षणात् ॥ लद्धेत्ति ॥ जन्मान्तरे तदुपार्ज्जनापेक्षया ॥ प

णगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरणो सामाणियदेवत्ताए उववणे , तएणं तीसएदेवे अहुणोववरणमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ , तजहा—आहारपज्जत्ती सरीरइंदियआणापाणपज्जत्ती ए भासामणपज्जत्तीए तएण तं तीसयदेवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गयंसमाणं सामाणियपरिसोव वणया देवया करयलपरिग्गहियं दसनह सिरसावत्तं मत्थए अंजलिकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावे

देवसयणिज्जसि । देव शय्याने विषे । देवदूसतरिए । देवदूष्य वस्त्रने अतरे । अगुलस्सअसखेज्जभागमेत्तोएओगाहणाए । अंगुलोने असख्यातमे भागमात्र श रीरनी अवगाहनाये । सक्कस्स । शक्रने । देविदस्स । देवेन्द्रने । देवरणो । देवराजाने । सामाणियदेवत्ताएउववणे तएणतीसाएदेवेअहुणोववरणमेत्तेसमा णेपचविहाएपज्जत्तीएपज्जत्तिभावगच्छइ । सामानिक देवपणे उपनाने, तिवारे तिष्यकदेव तत्कालना उपनामात्र थको पाच प्रकारनी पर्याप्तिकरीने पर्याप्ताना भाव प्रतें पाम्याथका पर्याप्ति ते जीवनी शक्ति विशेष ते पर्याप्ति अन्यस्थानके छ प्रकारनी कही अने इहा पाच प्रकारे ते भाषा मन एवेज पर्याप्तिने बहुश्रुते किणही कारणे 'एकपणे कही ते कहेछे—अहारपज्जत्तीए । आहार अभिनिवृत्ति हेतु आहार पर्याप्ति १ । सरीर इंदिय । इम शरी र पर्याप्ति २ इन्द्रिय पर्याप्ति ३ । आणपाणपज्जत्तीए । सासोच्छ्वास पर्याप्ति ४ । भासमणपज्जत्तीए । भाषामन पर्याप्ति ५ । तएण ततीसएदेवे । तिवा रे तेतिष्यक देव । पचविहाए पज्जत्तीए । पच प्रकारनी पर्याप्ति करीने । पज्जत्तिभावंगयसमाण । पर्याप्ति भावप्रतें पाम्या जाणीने । सामाणियपरिसो ववणयादेवा । सामानिक परिषदाना उपना देव । करयलपरिग्गहियं । हाथजोडीने । दसनहसिरसावत्त । दश नख एकठाकरी । सिरसावत मत्थए अजलिकट्टु । मस्तके अजली करीने । जएण विजएण वद्धावेति २ ता । जय विजय इत्यादि वचनेकरीने वधावे वधावीने । एवरयासी । इमकहे । अ

॥ मूल ॥

इत्ता एवं वयासी अहोणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वं देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तारिसिगए जारिसाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तारिसियाण सक्केण देविंदेणं देवरन्नो दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया जारिसियाण सक्केणं देविंदेण देवरन्नो दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तारिसियाणं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमन्नागया से णं भंते ! तीसए देवे के महिड्ढीए जाव केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! महिड्ढीए जाव महाणुभा

॥ भाषा ॥

हो णं देवाणुप्पिएहिं । अहो इसो आश्चर्यकारी वचन णं वाक्यालंकारे, देवानुप्रिय । दिव्वा देविड्ढी । दिव्यदेवनी मनोज्ञ ऋद्धि । दिव्वा देवजुत्ती । दिव्य देवनी मनोज्ञ द्युतिकांति । दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए । दिव्यदेवनो अनुभाव लाधो जन्मान्तरनेविषे तेह उपार्जनानी अपेक्षायें पांम्या देव भवनी अपेक्षाये तेहना भोगनी अपेक्षायें सनमुखहुया । जारिसियाण देवाणुप्पियाहिं । जेहवो णं वाक्यालंकारे, देवने वल्लभ तुम्हे । दिव्वा देविड्ढी । मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । दिव्वा देवजुत्ती । मनोज्ञ देवनी द्युतिकांति । दिव्वे देवाणुभावे । मनोज्ञ देवनो अनुभाव । लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए । लाधो पांम्यो सनमुखथयो । तारिसियाण । तेहवा, ण वाक्यालंकारे । सक्केण देविंदेणं । शक्र देवेन्द्र । देवरन्नो दिव्वा देविड्ढी । देवराजा मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । जाव अभिसमन्नागए । यावत् सनमुख थया । जारिसियाण सक्केण देविंदेण देवरन्नो दिव्वा देविड्ढी । जेहवा णं वाक्यालंकारे, शक्र देवेंद्र देवनाराजा मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । जाव अभिसमन्नागया । यावत् भोग सनमुख थया । तारिसियाण देवाणुप्पिएहिं । तेहवा ण वाक्यालंकारे, देव वल्लभ तुम्हे । दिव्वा देविड्ढी । मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । जाव अभिसमन्नागए । यावत् भोग सनमुख थया वली अग्निभूत पूछेछे—से णं भंते तीसए देवे के महिड्ढीए । ते ण वाक्यालंकारे, हे भगवन् । तिष्यकदेव केहवो महर्द्धिक । जाव केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए । यावत् केतलो विकुर्वणा करवानो समर्थ छे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा महिड्ढीए जाव महाणुभागे । हे गौतम । महर्द्धिक छे यावत् मोटा भाग्यना धणी छे । से णं तत्थ । ते ण वाक्यालंकारे, तिहां । तीसयस्स विमाणस्स । ति

गे , सेणं तत्थ सयस्स विमाणस्स चउण्हंसामाणियसाहस्सीणं चउण्हंअग्गमहिसीणं तिण्हंपरिसाणं सत्त ण्हं अणियाणं सत्तण्हंअणियाहिवईणं सोलसण्हआयरक्खदेवसाहस्सीणं असेसिच बहूणं वेमाणियाणं देवाणय जाव विहरइ , एमहिड्ढीए जाव एवइय चणं पभू विकुव्वित्तए । से जहानामए जुवइजुवाणे ह त्थेगेण्हेज्जा जहेव सक्कस्स तहेव जाव एसण गोयमा ! तीसयस्सदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुच्चइ , नोचेवण संपत्तीए विकुव्विंसुवा ३ । जइण भंते ! तीसएदेवे महिड्ढीए जाव एवइयंचणं पभू वि कुव्वित्तए । सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया तहेव सव्वं जाव

थक देवना विमाननो । चउण्हसामाणियसाहस्सीण । चारि सामानिक देवना सहस्र । चउण्हअग्गमहिसीण । चार अग्रमहिषी । सपरिवाराण । ते परिवारें सहित । तिण्हपरिसाण । तीन परिषदा । सत्तण्हंअणियाणं । सात अनीक कहता कटक । सत्तण्हअणियाहिवईण । सात अनीकना अधिपति क हिये स्वामी । सोलसण्हआयरक्खदेवसाहस्सीण । सोलैसहस्र आत्मरक्षक देवता । असेसिचवहूणवेमाणियाणदेवाणयजावविहरइ । बीजाये घणा वैमा निकदेव देवी तेहनो स्वामीपणो भोगवतो थको यावत् विचरे । एमहिड्ढीए । एहवो महर्द्धिक छे । जावएवइयचणपभूविकुव्वित्तए । यावत् एहवी स मर्थाइछे विकुर्वणा करवानो । सेजहाणामएजुवइजुवाणेहत्थेगेण्हेज्जा । ते यथा दृष्टांते युवती स्त्रीनां युवान पुरुष हाथ गाढो ग्रहै एदृष्टांत पूठिलो परे कहवा । जहेवसक्कस्सतहेव । जिमहीज शक्रने कह्यो तिमहीज । जावएसणं गोयमा । यावत् ण वाक्यालंकारे, हेगौतम । तीसयस्सदेवस्स । तिष्यक नामा देवनो । अयमेयारूवे विसयेविसयमेत्तेवुच्चइ । एहवो एतादृशरूप विषय ते विषयमात्र कह्यो पणि । णोचेवणसंपत्तीए । नही निश्चै समर्थाइयेंकरी । विकुव्विसुवा ३ । विकुर्वणा करता हुआ । जइणभंतेतीसएदेवेएमहिड्ढीए । जो ण वाक्यालंकारे हेभगवन् । तिष्यकदेव एहवो महर्द्धिक । जावएवइयच णपभूविकुव्वित्तए । यावत् एतलो चपुन णं वाक्यालंकारे, समर्थछे विकुर्वणा करवाने । सक्कस्सणभंतेदेविंदस्सदेवरण्णो । शक्रना णं वाक्यालंकारे, हेभगव

तेत्ति ॥ प्रासादेयत्नवापेक्षया ॥ अजिसमणागएत्ति ॥ तद्गोगापेक्षया ॥ जहेवचमरस्सत्ति ॥ अनेन लोकपालाग्रमहिषीणा ॥ तिरियसखेज्जेदीवसमुद्दे ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥ एसणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, णोचेवणं संपत्तीए विकुव्विंसुवा ३ । तावत्तीसया लोगपाला अग्गमहिसीणं जहेव चमरस्स, णवर, दोकेवलकप्पे जंबूद्दीवेदीवे अण्णं तचेव, सेवं भंते भंते ! त्ति दोच्चेगोयमे जाव विहरइ, भंते ! त्ति भगवं तच्चेगोयमे वायुभूती अणगारे समणं भगव जाव एववयासी, जइणंभंते ! सक्के देविंदे देवराया जाव

॥ भाषा ॥ न् । देवेन्द्रना देवराजाना । अवसेसासामाणियादेवा । बीजा सामानिक देव । केमहिड्ढीया । केहवा महर्द्धिकछे । तहेवसव्वं । तिमज सर्व । जाव एसण गोयमा । यावत् एह ण वाक्यालकारे, हेगौतम । सक्कस्सदेविंदस्सदेवरण्णो । शक्रनो देवेन्द्रनो देवराजानो । एगमेगस्ससामाणियस्स । एक एकनो सामानिक देवनो । इमेयारूवेविसए । एह एतादृशरूप विषयछे । विसयमेत्तेवुइए । ए विषयमात्र कह्यो । णोचेवणं सपत्तीए । नही निश्चे,ण वाक्यालकारे, समर्थाइ करीने । विकुव्विसुवा । विकुर्वणा करता हुआ । विउविस्सतिवा । विकुर्वणा करसे आगामिकाल । तावत्तीसायलोगपालगमहिसीण । तेत्रीस त्रायत्रिंशक लोकपाल चार अग्गमहिषी एहनी वक्तव्यता । जहेवचमरस्स । जिमहीज चमरेन्द्रनो एतले त्रोछासख्याता द्वीपसमुद्र रूपेकरी पूरे एहवी कहवो । णवरदोकेवलकप्पेजवूद्दीवे २ । एतलो विशेष दोय सपूर्ण जबूद्वीप वैक्रियरूपेकरी भरे । अणतचेव । बीजू तिमज निश्चे । सेवंभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे अन्यथानही । इमकही । दोच्चेगोयमेजावविहरइ । बीजो गणधर गौतमगोत्रीय अग्निभूत अणगार यावत् विचरै । भतेत्तिभगवतच्चेगोयमे । हेभगवन् । भगवत त्रीजो गणधर गौतमगोत्रीय । वायुभूतीअणगारे । वायुभूति साधु । समणंभगवमहावीरजावएववयासी । श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रते सेवीने यावत् इम कहता हुआ । जइणंभतेसक्केदेविंदेदेवराया । जो ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । शक्र देवेन्द्र देवतानो राजा । जाव महिड्ढीए । यावत् महर्द्धिक । जावइयचणंपभू विकुव्वित्तए । यावत् एतलो समर्थाइछे विकुर्वणा करवानो पणि । ईसा

॥ टीका ॥

त्ति ॥ वाच्य मितिसूचित ॥ ईसाणेणभंतेइत्यादि ॥ ईशानेन्द्रप्रकरण मिहच ॥ एवंतहेवत्ति ॥ अनेन यद्यपि शक्रसमानवक्तव्य मीशानेन्द्रप्रकरण सूचित तथापि विशेषोस्ति उभयसाधारणपदापेक्षत्वा दतिदेशस्येति' सचाय–सेणं अठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीए सामाणियसाहस्सीणं जाव चउण्ह असीईणं आयरक्खदेवसाहस्सीणंति' ईशानवक्तव्यतानन्तर तत्सामानिकवक्तव्यताया स्वप्रतीत तद्विशेष माश्रित्य तच्चरितानुवाद

॥ मूल ॥

महिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए एवं तहेव, णवरं, साहिए दोकेवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे अवसेसं तहेव। जइणंभंते ! ईसाणे देविंदे देवराया ए महिड्ढीए जाव एवइयं चणं पभू विकुव्वित्तए । एवंखलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं पारणए आयंविलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बा

॥ भाषा ॥

णेणभंतेदेविंदेदेवरायाकेमहिड्ढीए एवतहेव। ईशानेन्द्र हेभगवन् ! देवेन्द्र देवराजा केहवो महर्द्धिक इम तिमहीज यद्यपि शक्र समान वक्तव्यता ईशानेन्द्र प्रकरणे कही तथापि एतलो विशेष कहवो, तेहने अठावीस लाख विमान, असी सहस्र सामानिक देव, चौरासी सहस्र आत्मरक्षकदेव, इत्यादि। णवरसाहिएदोकेवलकप्पेजबूदीवे २ अवसेसंतहेव। एतला विशेष विकुर्वणा शक्तिनेविषै कहवो, एह साधिक दोय केवल कल्प जम्बूद्वीप रूपेकरी पूरे एतलो समर्थाई छै थाकतो सर्व तिमज शक्रनी परे कहवो, ईशान वक्तव्यता कह्याने अनंतरे ते ईशान सामानिकनो वक्तव्यतानेविषै स्वप्रतीत तद्विशेष आश्रयीने ते चरित्तानुवाद थो पूछतो कहैछे—जइणंभंतेईसाणेदेविंदेदेवरायाएमहिड्ढीए। जो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! ईशान देवेंद्र देवराजा एहवो महर्द्धिकछै। जावएवइयंचणंपभूविकुव्वित्तए। यावत् एतलो समर्थाई विकुर्वणा करवानोछै ते एवखलुदेवाणुप्पियाणं। इम निश्चै देव वल्लभ तुम्हारो। अंतेवासी। शिष्य। कुरुदत्तपुत्तेणामअणगारे। कुरुदत्त नामे पिता तेहनो पुत्र कुरुदत्तपुत्र इसे प्रसिद्धनाम अणगार साधु। पगइभद्दए। प्रकृते भद्रीक। जावविणीए। यावत् विनीत। अट्ठमंअट्ठमेणंअणिक्खित्तेणंपारणए आयंविलपरिग्गहिएणंतवोकम्मेणंउड्ढंबाहाओ। तीन तीन उपवास निरन्तरे कर

त मश्नयन्नाह ॥ एवंखलुइत्यादि ॥ उद्धबाहाउपगिज्झियत्ति ॥ प्रगृह्य विधायेत्यर्थ ॥ एवंसणंकुमारेविति ॥ अनेनेद सूचित ॥ सणंकुमारेणं भते। देविंद देवराया के महिड्ढिए ६ केवइयचण पभू विउव्वित्तए? गोयमा! सणंकुमारेण देविंदे देवराया महिड्ढिए ६ सेण वारसण्ह विमाणावासस

हाउ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुणे छम्मासेसामणपरियागं पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणझूसइत्ता तीसंभत्ताइ अणसणाइं छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणेकप्पे सयंसि विमाणंसि जाइसए वत्तव्वया सव्वेवि अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्तेवि , णवर , सातिरेगे दोकेवलकप्पे जबुद्दीवेदीवे अवसेस तंचेव , एव सामाणियतावत्तीसगलो

तो थको तेहना पारणानेविषे आंबिलकरवो, एहवो निश्चयग्रह्यो छे एहवे तपकर्मकरी ऊंचा बाहुप्रते । पगिज्झिय२ सूराभिमुहे । करी२ने सूर्य सामुहो दृष्टि । आयावणभूमीए । आतापनानी भूमिकानेविषे । आयावेमाणे बहुपडिपुणे । आतापना लेताथका घणू प्रतिपूर्ण । छम्मासेसामणपरियागंपाउणित्ता । छ्महीनाताई दीक्षा पर्याय पालोने । अद्धमासियाएसलेहणाए । अर्द्धमास एतले पनरेदिननो सलेखनाये । अत्ताणझूसित्ता । आत्माने वोसिरावीने । तीसभत्ताइअणसणाइछेदित्ता । त्रीस भातप्रते अणसणं करी छेदीने । आलोइयपडिक्कतेसमाहिपत्ते । आलोई गुरु साखे अतीचार पडिक्कमीने समाधि पाम्या मन स्वस्थथया । कालमासेकालंकिच्चा । कालने अवसरे कालकरीने । ईसाणेकप्पे । ईशान नामा देवलोकने विषे । सयंसिविमाणंसि जातीमएववत्तव्वयासव्वेविअपरिसेसाकुरुदत्तपुत्तेवि । कुरुदत्त इसेनामे पोताना विमानने विषे ऊपनो जिका तिष्यकदेवनी वक्तव्यता कही तिका सर्व पणि थाकती कुरुदत्तपुत्रने विषे पणि जाणवी । णवरसातिरेगे दोकेवलकप्पे जबूद्दीवे २ । एतलो विशेष काइंक अधिका दोइ सपूर्ण जबूद्वीप विकुर्वणा करी रूपेकरी पूरे । अवसेसतंचेव । थाकतूं सर्व तिमज कहवो । एवंसामाणियतावत्तीसलोगवालअग्गमहिसीण । इम सामानिक त्रायत्रिंशकदेव लोकपाल अग्रमहिषी ए सर्वनी वक्तव्यता पूछिनो परे कहवी । जावएसण गोयमा । यावत् एह प वाक्यालकारे, हेगौतम । ईसाणस्स । ईशानेन्द्रनो । देवि

यसहस्साणं वावत्तरीए सामाणियसाहस्सीण जाव चउराह वावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीण मित्यादीनि ॥ अग्गमहिसीणंति ॥ यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणा मुत्पत्ति र्नास्ति तथापि या सौधर्मोत्पन्ना समयाधिकपल्योपमादिदशपल्योपमातस्थितयो ऽपरिगृहीतदेव्य स्ता सनत्कुमारदेवाना ओगाय सम्पद्यन्ते इतिकृत्वा अग्रमहिष्य इत्युक्त मिति, एव माहेन्द्रादिसूत्राण्यपि गाथानुसारेण विमानमान सामानिकादिमानच विज्ञाया नुसन्धानीयानि' गाथाश्चैव–बत्तीसअठवीसा २ बारस ३ अठचउरोसयसहस्सा । आरेणबंभलोया विमाणसखाउवेएसा ॥ १ ॥ पणासचत्तछचे वसहस्सालतसु

गपाल अग्गमहिसीणं जाव एसण गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए । णोचेवणं संपत्तीए विकुव्विंसुवा एवं सणंकुमारेवि, णवर, चत्तारिकेवलकप्पे जंवुद्दीवेदीवे अदुत्तरं चणं तिरियमसखेज्जे एवं सामाणियतावत्तीसलोगपाल अग्गमहिसीणं असंखेज्जे दीव समुद्दे सव्वे विकुव्वंति, सणंकुमाराउ आरद्ध उवरिल्ला लोगपाला सव्वेवि असखेज्जे दीवस

दस्स देवरण्णो । देवेन्द्रनो देव राजानी । एगमेगाएअग्गमहिसीएदेवीए । एकेकी अग्रमहिषी देवीनी । अयमेयारूवेविसए । एह एताद्दशरूप विषयछे पणि । विसयमेत्तेवुइए । विषयमात्र कह्यो । णोचेवणसपत्तीए । नही निश्चे समर्थाई करीने । विकुव्विंसुवा । विकुर्वणा कीधी करेछे करिस्ये । एवंसणकुमारेवि णवर चत्तारिकेवलकप्पे जंबूद्दीवे । इम सनत्कुमारनेविषे पणिजाणवो, एतले एकछ्य सनत्कुमार हेभगवन् ! देवराजा केहवो महर्द्धिक केतली विकुर्वणा करवानें समर्थछे हेगौतम । सनत्कुमार देवेन्द्र देवराजा महर्द्धिकछे एहने बारेलाख विमान बहुत्तर सहस्र सामानिकदेव चारेई दिशें बहुत्तर बहुत्तर सहस्र आत्मरक्षकदेव इत्यादि, सर्व भिमज एतलो विशेष चारि संपूर्ण जंबूद्वीप रूपेंकरी भरे । अदुत्तरचणतिरियमसखेज्जे । अथवा वपुन ण व।क्यालकारे, तीछा असख्याता द्वीपसमुद्र रूपेंकरी भरे । एव सामाणियतायत्तीसलोगपालगमहिसीणअसंखेज्जेदीवसमुद्देसव्वेविकुव्विंतिसणकुमाराओ आरद्ध उवरिल्लालोगपालासव्वे विअसंखेज्जेदीवसमुद्दविकुव्व ति एवमाहिदेवि । इम सामानिक त्रायत्रिंशक लोकपाल अग्रमहिषी ए सर्वं असख्याता द्वीप समुद्र

क्कसहस्सारे । सयचउरोआणयपा णएसुतिन्नारणाचुयत्रो ॥ २ ॥ सामानिकपरिमाणगाथा–चउरासीइअसीई बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीय । पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ इहच शक्रादिकान् पञ्चैकान्तरिता नग्निभूति पृच्छति, ईशानादींश्च तथैव वायुभूतिरिति, इन्द्राणां वैक्रियशक्तिप्र

मुद्दे विकुव्वंति । एवं माहिंदेवि , णवरं , साइरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे एव बंभलोएवि , णवरं , अट्ठकप्पे एव लंतएवि , णवरं , साइरेगे अट्ठकेवलकप्पे , महासुक्के , सोलस केवलसहस्सारे , साइरेगे

विकुर्वणा ना रूपेकरी भरे, यद्यपि सनत्कुमार देवलोके स्त्रीनो उत्पत्ति नथी तथापि सौधर्म देवलोक उपनो जे समयाधिक पल्योपमादि दश पल्योपम पर्यंत जेहनीस्थिति एहवी अपरिग्रहीता देवीछे ते सनत्कुमार देवने भोगअर्थे संपजे एहवू करीने अग्रमहिषीओ कही, सनत्कुमार थकी आरभीने उवरिल्लालोगपालासव्वेविअसंखेज्जेदीवसमुद्देविकुव्विंति । एवमाहिंदेवि । उपरिला लोकपाल सगलाई असंख्याताद्वीप समुद्र विकुर्वणाने रूपेकरी भरे इम माहेन्द्रादिक सूत्र पणि गाथानुसारे विमान मान तथा सामानिकदेव मान जाणीने कहवो, गाथा ॥ बत्तीस १ अट्ठवीसा २ बारस ३ अट्ठ ४ चउरो ५ सयसहस्सा ६ । आरेणबंभलोया विमानसंखाभवेएसा ॥ १ ॥ पणासयचत्त ७ छच्चेव ८ सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे । सयचउरोआणयपा णएसुतिण्णारणच्चुयओ ॥ २ ॥ सामानिक परिमाण गाथा ॥ चउरासीइअसीइ बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीय । पणाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ इहां शक्र आदिदेई पच एकेके आंतरे अग्निभूत पूछे, अने ईशानादि तिमहीज वायुभूति पूछे । णवरसातिरेगेचत्तारिकेवलकप्पेजबूद्दीवेदीवे । एतलो विशेष साधिक चार सपूर्ण जबूद्वीप विकुर्वणा समर्थाईथी रूपेकरी भरे । एवबभलोएवि । इम ब्रह्म देवलोकनेविषे पणि कहवो । णवरअट्ठकेवलकप्पे । एतलो विशेष आठ सपूर्ण जबूद्वीप रूपेकरी भरे । एवलतएवि । इम लांतक छठे देवलोके पणि कहवो । णवरसाइरेगेअट्ठकेवलकप्पे । एतलो विशेष झाझेरा आठ सपूर्ण जबूद्वीप कहवा । महासुक्क सोलसकेवल । महाशुक्र सातमे देवलोके सोले सपूर्ण जबूद्वीप रूपेकरी भरे । सहस्सारेसाइरेगेसोलस । सहस्रार आठमे देवलोके झाझेरा सोले जबूद्वीप रूपेकरी भरे । एवपाणएवि । इम प्राणत देवलोके पणि कहवो । णवरबत्तीसकेवल । एतलो विशेष बत्तीस सपूर्ण जबूद्वी

सोहम्म एवं पाणएवि, णवरं, अगीसकेवलं एवं अच्चुए वि. णवरं, साइरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे अण्णंनचेव सेसं तंत भंते! त्ति, तच्चे गोयमे वाउभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव विहरइ, तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ नगरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्कमइ पडिनिक्कमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएण रायगिहे नयरे होत्था, वण्णओ, जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी

[illegible] । [illegible] पण [illegible] । [illegible] केवलकप्पेजंबुद्दीवे २ । एतलो विशेष आझेरा बत्रीस संपूर्ण जंबूद्वीप [illegible] पूरे । [illegible] । बोजो सर्व तिमज [illegible] । सेवंभंते २ त्ति । तत्त्वति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्य छै अन्यथा नथी । तच्चे गोय[illegible] वायुभूतिनामे साधु । समणंभगवंमहावीरं वंदइ नमसइ । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे [illegible] । तएणंसमणेभगवंमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । [illegible] । [illegible] । [illegible] । नंदणाओचेइयाओ । नन्दन नामा चैत्यथकी । पडिणिक्कमइ २ त्ता । नीकले नीकलीने । [illegible] । [illegible] । तेणकालेणं तेणंसमएणं । ते काले तिहां ते समयने विषे । रायगिहेनामनयर [illegible] । [illegible] । जावपरिसापज्जुवासइ तेणकालेणं तेणंसमएणंईसाणेदेविंदेदेवराया । [illegible] । [illegible] इशानेंद्र जे प्रकारनो पोतानो वैक्रियरूप करण समर्थपणो तथा तेजोलेश्या समर्थपणो ते [illegible] । ते कालनेविषे ते समयनेविषे ईशान देवेन्द्र देवराजा । सूलपाणीसमभयाद्रपाणी । [illegible] । [illegible] । [illegible] । अट्ठावीस लाख विमानना

॥ टीका ॥

रूपणप्रक्रमादीशानेन्द्रेण प्रकाशितस्या त्मीयस्य वैक्रियरूपकरणसामर्थ्यस्य तेजोलेश्या सामर्थ्यस्य चोपदर्शनाये दमाह ॥ तेणमित्यादि ॥ जहेवराय प्पसेणइज्जेत्ति ॥ यथैव राजप्रश्नीयाख्ये ध्ययने सूरिकाभदेवस्य वक्तव्यता तथैव चेहे शानेन्द्रस्य किमन्तेत्याह ॥ जावदिव्वदेवड्ढिमिति ॥ साचेयं मर्थ सङ्क्षेपत सभाया सुधर्माया मीशाने सिंहासने ऽशीत्या सामानिकसहस्रै श्चतुर्भि लोकपालै रष्टाभि सपरिवाराभि रग्रमहिषीभि सप्तभि रनीकै सप्तभि रनीकाधिपतिभि शतस्रभि श्चाशीतिभि रात्मरक्षदेवसहस्राणा मन्यैश्च बहुभि र्देवैर्देवीभिश्च परिवृतो महता हतनाट्यादिरवेण दिव्यान् भो गभागान् भुञ्जानो विहरतिस्म, इतश्च जम्बूद्वीप मवधिना लोकयन् भगवत महावीर राजगृहे ददर्श दृष्ट्वाच ससम्भ्रम मासना दुत्तस्थौ उत्थायच सप्ता ष्टानि पदानि तीर्थकराभिमुख माजगाम, ततो ललाटतटघटितकरकुड्मलो ववदे वदित्वा चाभियोगिकदेवान् शब्दयाचकार, एवच ता नवादीत्, ग च्छत भो राजगृह नगर महावीरं भगवतं वदध्व योजनपरिमण्डलच क्षेत्रं शोधयत कृत्वा चैव 'ममनिवेदयत, तेपि तथैव चक्रु' ततो सौ पदात्य

॥ मूल ॥

वसहवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणवाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे आलईयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचलचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे जाव दसदिसाउ उज्जोवेमाणे उज्जोवेमाणे ईसाणेकप्पे ईसाणवडिंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव दिव्वदेविड्ढि जाव जामेव दिसिंपाउब्भूए तामेवदिसि

॥ भाषा ॥

स्वामीछे रजरहित निर्मल जे आकाश तेहनी परे निर्मल ज प्रधान वस्त्र पहिराछे। आलईयमालमउडेनवहेमचारुचित्तचलचलकुंडलविलिहिज्जमा णगडे। यथा स्थानकनेविषे स्थाप्याछे माला अने मुकुट जेणे नवाजे सुवर्णमनोहर चित्तनी परे चचल एहवा जे कुंडल तेणें रेखा पडतीछे गल्लस्थलनेवि षे जेहने इत्यादि। जावदसदिसाओउज्जोवेमाणे। यावत् दशदिशि प्रतें आभरणनीकाति तथा शरीरनीकाति उद्योत करतोथको। पभासेमाणे ईसाणे कप्पे। प्रभा तेज करतोथको ईशान देवलोकनेविषे। ईसाणवडिंसएविमाणेजहेवरायपसेणइज्जे। ईशानवडिंशक विमाने जिमही रायपसेणी नामे अ ध्ययनने विषे सूरियाभदेवनी वक्तव्यता कही, तिम इहा पणि ईशानेन्द्रनी वक्तव्यता कहवी किहानगे। जावदिव्वादेविड्ढि जावजामेवदिसिंपाउब्भू

॥ टीका ॥

नीकाधिपति देव मेव मवादीत् भो भो देवानुप्रिय! ईशानावतंसके विमाने घण्टा मास्फालयन् घोषणां कुरु यदुत गच्छति भोईशानेन्द्रो महावीरस्य वदनाय ततो यूय शीघ्र महर्ध्या तस्या तिक मागच्छत, कृतायाच तेन तस्या बहवो देवा कुतूहलादिभि स्तत्समीप मुपागता, स्तैश्च परिवृतो सौ योजनलक्षप्रमाणयानविमानारूढो ऽनेकदेवगणपरिवृतो नन्दीश्वरद्वीपे कृतविमानसंक्षेपो राजगृहनगर माजगाम, ततो भगवत त्रि प्रदक्षिणीकृत्य चतुर्भि रगुलै र्भुव मप्राप्त विमान विमुच्य भगवत्समीप मागत्य भगवत वंदित्वा पर्युपास्तेस्म, ततो धर्म्म श्रुत्वै व मवादीत्, भदत! यूय सर्वजानीथ पश्यथ केवल गौतमादीना महर्षीणा दिव्य नाट्यविधि मुपदर्शयितु मिच्छामी त्यभिधाय दिव्य मण्डपं विकुर्वितवान् तन्मध्ये मणिपीठिका तत्रच सिंहासन ततश्च भगवत प्रणम्य तत्रोपविवेश, ततश्च तस्य दक्षिणा भुजा दष्टोत्तर शत देवकुमाराणा वामाच्च देवकुमारीणा निर्गच्छतिस्म, ततश्च विविधातोद्यरवगीतध्वनिरञ्जितजनमानस द्वात्रिंशद्विध नाट्यविधि मुपदर्शयामासेति' तएणं से ईसाणे देविंदे २ त दिव्वं देवड्ढि या वत्करणा दिद मपर वाच्य–यदुत दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव पडिसाहरइपडिसाहरइत्ता खणेणं जाए एगभूए, तएण ईसाणे ३ समण भगव म

॥ मूल ॥

पडिगए भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी, अहोणं भंते! ईसा

॥ भाषा ॥

यातामेवदिसिपडिगए। यावत् मनोज्ञ देवतानो ऋद्धि मनोज्ञ देवतानोकांति मनोज्ञदेवनो प्रभाव यावत् वतोम बहुनाट्य विधि गौतमादिकने देखाडोने जे दिशिथी प्रगटथया हता तेहोज दिशिप्रते पाछागया देवसर्वो ऋद्धि सहरोने इहा विस्तार टोकाथी जाणवो। भंतेत्तिभगवंगोयमे। हेभगवन्। इति आमंत्रणे, भगवंत गौतम। समणंभगवमहावीर। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइणमसइ २ त्ता एववयासी। वादे नमस्कार करे वादोने नमस्कार करीने इम कहताहुया। अहोणभंतेईसाणेदेविंदेदेवराया। अहो एआश्चर्यवचने हेभगवन्। ईशान देवेन्द्र देवराजा। महर्द्धिकछै। ईसा एसमणं ते। ईशाननो ण वाक्यालकारे, हेभगवन्! सादिव्यादेविड्ढोकहिंगए। तिका मनोज्ञ देवनो ऋद्धि किहागई। कहिंअणुप्पविट्ठे। किसे स्थानके प्रवेश कोधो इतिप्रश्न उतर। गोयमा सरोरगए। हेगौतम! शरीरने विषे गई, शरीर माहे प्रवेश तोधो। सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ सरोरगते २।

ग्रावीर वंदित्ता नमंसित्ता नियनपरियालसं परियुवेति ॥ परियालत्ति ॥ परिवारः ॥ कूडागारसालादिठतोत्ति ॥ कूटाकारेण शिखराकृत्यो पल
चिता शाला या सा तथा तया दृष्टान्तो य स तथा, सचैव-भगवत गौतम एव मवादीत् ईशानेन्द्रस्य सा दिव्या देवर्द्धिः क्वगता ? गौतम । श
रीरक मनुप्रविष्टा ऽथ केनार्थे नैव मुच्यते ? गौतम । यथानाम कूटाकारशाला स्यात् तस्याश्च दूरे महान् जनसमूह तिष्ठति सच महाभ्रादिक
मागच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वाच ता कूटाकारशाला मनुप्रविशति एव मीशानेन्द्रस्य सा दिव्या देवर्द्धि शरीरक मनुप्रविष्टेति ॥ जिणत्ति ॥ केन हेतुना

णे देविंदे देवराया महिड्ढीए ईसाणस्सणं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गते कहिं अणुप्पविठे ? गोयमा ! सरीरगए, से केणठेणं भंते ! एवंवुच्चइ सरीरगए ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसालासिया दुहउलित्ता गुत्तागुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा तीसेणं कूडागारं जाव कूडागारसालादिठतो भाणियव्वा ईसाणेणभंते ! देविंदे देवरण्णो सादिव्वा देविड्ढी दिव्वादेवजुती दिव्वेदेवाणुभावे किण्णालद्धे किण्णापत्ते किण्णाभि

ते स्ये प्रयोजन हे भगवन् ! इम कह्यु गौतमने जिवे गई शरीरे पेठी ईशानेन्द्र उत्तर । गोयमा सेजहानामएकूडागारसालासिया । हे गौतम । ते यथानामे
दृष्टाते कूडागार ते सरीखे आकारे तेणे ओलखो शाला ते केहवी । दुहउलिता गुत्ता । बिहुपासे छह्ये लीपोछे गुप्तछे । गुप्तदुवारा । गुप्तदुवारा । गुप्त
छे बारना पणि जेहना । णिवायाणिवायगंभीरा । वायरे रहित वायप्रवेश रहित माहि गंभीर छे । तीसेणकूडागारजावकूडागारदिठ तोभाणियव्वो ।
ते कूडागार शाला यावत् जिम कूडागारनो कूट कहियेयुक्त ते आगर घणा माणसना वृन्द परिवरो रह्याछे ते मेघ थयगो वाउल भमुख आवतो देखी ते
कूडागार गुफामाहि पेसे तिवारे वाहर कांई नदीसे तिम देवता ऋद्धि घणी ईशानेन्द्र पाछीमाहे तिवारे कांई नदीसे ॥ ईशान जाणवो । ईसा
णणभंते देविंदेश देवरणो । ईशान हे भगवन् ! देवेन्द्र देवनोराजा । सा दिव्या देविड्ढी । तिका मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । दिव्या देवजुत्ती । मनोज्ञ देवनो का
ति । दिव्वेदेवाणुभावे । मनोज्ञ देवनो अनुभाव । किण्णालद्धे किण्णापत्ते । किसेहेतुकरी लाधो किसेहेतु करी पाम्यो । किणाभिसमण्णागते । किसेहेतु

किवा ॥ दवेत्यादि ॥ इह दत्वा ज्ञानादिमुक्तान्तप्रान्तादि कत्वा तप शुभध्यानादि समाचर्यंच प्रत्युपेक्षाप्रमार्जनादि ॥ कस्सवेत्यादि ॥ वाक्यस्य कान्तेपुण्य सुपार्जित मितिवाक्यशेषो दृश्य ॥ जमति ॥ यस्मा त्पुण्यात् गामित्यलङ्कारे ॥ अत्थि तामेपुरापोराणाणमित्यादि ॥ पुरा पूर्व कताना

॥ टीका ॥

न्निसमन्नागए केवा एस आसि पुव्वभवे किंणामएवा किंगोत्तेवा कयरंसिगामंसिवा णयरंसिवा जाव सन्नि वेसंसिवा किंवादच्चा किंवाभोच्चा किंवाकिच्चा किंवासमायरित्ता कस्सवा तहारूवस्स समणस्सवा माहण स्सवा अंतिए एगमवि आयरिय धम्मियं सुवयण सोच्चा निसम्म जन्नं ईसाणेणं देविंदेणं देवरन्ना सादि व्वादेविड्ढी जाव अभिसमन्नागया-एवंखलु गोयमा! तेणंकालेण तेणसमएण इहेव जंबूद्दीवेद्दीवे भारहेवासे

॥ मूल ॥

करी सनमुखहुयी । केवा । कुण अथवा । एसआसिपुव्वभवे । एह हुंता पूर्व भवने विषे । किंणामएवा । स्यूं नाम एहनो पूर्व भवे हुंतो । किंगोत्तेवा । स्यूं गोत्र एहनो हुंतो । कयरंसिवा गामंसिवा नगरंसिवा । किसाने विषे गामने विषे नगरने विषे । जावसन्निवेसंसिवा । यावत् सन्निवेशने विषे । किंवादच्चा । स्यूं अशनादिदेईने । किंवाभोच्चा । स्यूं अंत प्रांतादि आहार जीमीने । किंवाकिच्चा । स्यूं तप शुभध्यानादिक करीने । किंवासमायरित्ता कस्सवा । अ थवा स्यूं प्रमार्जनादिक समाचरीने अथवा केहने । कस्सवेत्यादि । ए वाक्यने अंते कुण उपार्ज्यो एहवो वाक्य शेष देखवो । तहारूवस्सवा । तथा रूप यो ग्यने उपगमीने । समणस्समाहणस्सवा । श्रमण तपस्वीने उत्तर गुणधारकने माहण एहवा कहताने आप हणेनहो तेहने । अंतिए । समीप । एगमवि आ रिय । एक पणि कोई आर्य भलो । धम्मिय सुवयणंसोच्चा णिसम्मजन्नं । भलूं वचन सांभली ने हृदयनेविषे धारीने जे पुण्य उपार्ज्यूं जे पुण्ययी ण वाक्या लंकारे, ईसाणेणंदेविंदेणं । ईशाने देवेन्द्रे । देवरन्ना । देवराजा । सादिव्वादेविड्ढी । तिका मनोहर देवनो ऋद्धि । जावअभिसमन्नागया । यावत् सनमुख पाम्या इतिप्रश्न । एवंखलुगोयमा । इम निश्चे हे गौतम । तेणंकालेण तेणसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । इहेवजंबूजंबूद्दीवे २ भार हेवासे । एहीज जंबूद्दीपनामा द्वीपनेविषे भरतनामा क्षेत्रनेविषे । तामलित्तीनामणयरीहोत्था वण्णओ । तामलिप्तीनामे नगरी हुई वर्णक उवाई उपा

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मितियोगो, उतएव ॥ पोराणाणंति ॥ पुराणानां ॥ सुचिणाणंति ॥ दानादिसुचरितरूपाणां ॥ सुपरक्कंताणं ॥ सुष्टुपराक्रान्त पराक्रम स्तप प्रभृतिक येषु तानि' तथा तेषां शुभानां सर्वाचरत्वेन कल्याणानां मनर्थोपशमहेतुत्वेनेति कुतोस्तीत्याह ॥ जेणाहमित्यादि ॥ पूर्वोक्तमेव किंचित्सविशेष

॥ मूल ॥

तामलित्तीनामं णयरी होत्था, वणओ, तत्थणतामलित्तीए नयरीए तामलीनामं मोरियपुत्ते गाहावईहोत्था अड्ढे दित्ते जाव बहुजणस्स अपरिभूएयावि होत्था, तएणंतस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेएयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प ने, अत्थि तामे पुरा पोराणाणं सुचिणाणं सुप्परिक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्ति विसेसो, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिंच पसूहिं

॥ भाषा ॥

गथी कहवो। तत्थण तामलित्ताए णयरीए। तिहां ण वाक्यालंकारे, तामलिप्ती नामा नगरीने विषै। तामलीनाममोरियपुत्ते। तामलि इसे नामे मोर्य नू पुत्र बेटो। गाहावई होत्था अड्ढेदित्ते। गाथापति गृहस्थछयो ऋद्धिवंत प्रसिद्ध। जावबहुजणस्स अपरिभूयायिहोत्था। यावत् घणां मनुष्याने अप रिभवनीय घणू ऋद्धिवंत माटे कोइ पराभवी नसकै एहवो हुयो। तएणंतस्स मोरियपुत्तस्स। तिवारे तेहने मोर्यपुत्रने। तामलिस्स गाहावइस्स। ताम लिने गृहस्थने। अन्नयाकयाइ। एकदा समयने विषे। पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि। पूर्वरात्रि अपर रात्रिना काल समयने विषे एतले मध्यरात्रिने समये। कुटुंबजागरियंजागरमाणस्स। कुटुम्बनी जागरिका जागते थके एतावता कुटुम्ब चिंता करतेथके। इमेएयारूवेअज्झत्थिए। एह एहवे रूपे अध्या त्मचिन्ता। जावसमुप्पज्जित्था। यावत् मनने विषे मनोगत संकल्प ऊपनोछे। अत्थितामेपुरापोराणाणसुचिणाण। छे पहिला आगरे पूर्वकीधाना योग पुराणा दानादिक सुचरितरूपना। सुपरिक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं। पराक्रम तप प्रभृति तेहनेविषै। शुभ भले पापक्षपणे अनर्थ उपशमन हेत पण करी कल्याणकारी। कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसो। कर्म तेहना कल्याणफल प्रति विशेष परिणाम्यो ऋद्धि थयो। जेणाहंहिरण्णेणंवड्ढामि।

माह ॥ विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसतसारसावतेज्जेणंति ॥ इह धनं गणिमादि' रत्नानि कर्केतनादीनि, मणय चन्द्रकान्ताद्या शिला, प्रवालानि विद्रुमाणि, अन्येत्वाहु' शिला राजपट्टादिरूपा प्रवाल विद्रुम' रक्तरत्नानि पद्मरागादीनि' एतद्रूप यत्। सतत्ति। विद्यमान सार प्रधान स्वापतेय द्रव्य त तथा तेन ॥ एगतसोक्खयति ॥ एकान्तेन चय नवाना शुभकर्मणा मनुपार्ज्जनेन ॥ मित्तेत्यादि ॥ तत्र मित्राणि सुहृदो, ज्ञातय सजातीया' निजका गोत्रजा, सबधिनो मातृपत्नीया, श्वशुरकुलीनावा, परिजनो दासादि ॥ आढाइत्ति ॥ आद्रियते ॥

वड्ढामि, विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवालरत्तरयणसतसारसावएज्जेणं अईव अईव अभिवड्ढामि, तं किणं अह पुरापोराणाण सुचिणाण जाव कड़ाणं कम्माण एगतसोक्खयं उवेहमाणेविहरामि, त जाव अहं हिरणेण वड्ढामि, जाव अईव अईव अभिवड्ढामि, जावंचमेमित्तनाइनियगसंवंधिपरियणो

सुवणेण वड्ढामि। घडित सुवर्ण करी वध्या। धणेणवड्ढामि। रोकड नाणें करी वध्यो। धणणवड्ढामि। धान्य २४ जाति तिणेकरी वध्यो। पुत्तेहिवड्ढामि। पुत्रकरी वध्यो। पसूहिवड्ढामि। गाय प्रमुख चौपद तिणें करी वध्यो पूर्वे कह्यो तेहीज विशेषेकरी कहैछे—विउल धण कणगरयण मणिमोत्तिय संखसिलप्प वाल रत्तरयण सत सार सावदेज्जेण। विपुल विस्तीर्ण धन गणमादिक सुवर्ण रत्न कर्केतनादिक मणि चद्रकान्तादिक मुक्ताफल शंख दक्षिणावर्त्त विद्रुम कोई कहैछे—शिला राजपट्टादिक रूप प्रवालविद्रुम रत्तरयण पद्मरागादिक एहवो जे सतविद्यमान प्रधान द्रव्य तेणेकरी। अतीव २ अभिवड्ढामि। घणो घणो वध्यो छू तेमाटे स्यू ण वाक्यालंकारे। अहपुरापोराणाण। ह पूठिला पुरातन जूना। सुचिणाण। दानादिक सुचरितरूप। जावकडाण कम्म ण। यावत् कीधानो कर्मनो। एयतसोक्खय। एकातिकरी चयकरतो। उवेहमाणेविहरामि तजावताव अहहिरणेणवड्ढामि। नवाजे शुभकर्म तेहने विना उपार्जना करी विचरू छू तेहभणी यावत् पहिला छू अणघड्यो सुवर्ण करी वध्यो तालगे कहवो। जावअतीव २ अभिवड्ढामि। जालगे घणू २ वध्यो। जावचमे। जेतला लगे चपुन मे मुभने। मित्तणातिणियगसबधिपरियणोआढाइ। मित्र सखाई न्याती सजातीय

॥ टीका ॥ परिजाणइत्ति ॥ परिजानाति स्वामितया ॥ पाणामाएत्ति ॥ प्रणामोस्ति विधेयतया यस्यां सा प्राणामी तया ॥ सुद्धोयणति ॥ सूपशाकादिवर्जितं

॥ मूल ॥ आढाइ परियाणाइ सक्कारेड सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं विणएण चेइय पज्जुवासेइ तावतामेसेय कल्लपाउप्पन्नायाए रयणीए जाव जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहकरेत्ता विउलं असणं पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेत्ता त मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरियण विउलेणं असण पाणं खाइमं साइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेवमित्तणाइनियगसंबंधिपरियणस्स पुरत्त जेठपुत्तं कुटुंबे ठाविन्ता तमित्तनाइनियगसंबंधिपरियणजेठपुत्तंच आपुच्छित्ता सय

॥ भाषा ॥ गोत्रना सबंधी मातपक्षो अथवा श्वसुर कुलोन दासादि ॥ आदरकरे। परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ । स्वामीपणे जाणें सत्कारवें सन्मानवें। कल्लाण मंगल देवय विणएण चेइय पज्जुवासेइ तावतामेसेय। कल्याणकारी मंगलीक देवतानी परे विनये करी चैत्यनी परे सेवाकरे तेतला लगे मुझने श्रेय भलू। कल्लपाउप्पभायरयणीए जावजलंते। सवारे प्रभात समययया रात्रिगया यावत् दोसे सूर्य जगतेथके। सयमेवदारुमयंपडिग्गहकरेत्ता। पोताने मेले ज काष्टमय पडघापात्र करीने। विउलं असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता। विस्तीर्ण अन्न पक्वान्न पाणी सुवासित इक्षुरस प्रमुख लवंगप्रमुख ए चार आहार नीपजावीने। मित्तणाइ णियगसंबंधिपरियण आमंतेत्ता। मित्र ज्ञाति एक गोत्रीय माता पक्षना दासादिक आमंत्री तेडावीने। तमित्तणाइ णियग सयण संबंधि परियणं विउलेण। ते मित्र ज्ञाती निजक स्वजन संबंधी परिजनने विस्तीर्ण घणां। असण पाण खाइम साइमेण। अन्न पाणी खादिम स्वादिमे करी, तथा। वत्थगंध मल्ला लंकारेणय सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता। तपडा गन्ध चूर्ण माला भूषण प्रमुखेकरी देवे सत्कार करीने सन्मान करीने। तस्सेव मित्त णाइ णियग संबंधि परियणस्स पुरओ। तेहनेज मित्र ज्ञाती निजक संबंधी परिजनने आगलिथी। जेठे पुत्त कुटुंबेठावेत्ता। वडा बेटाप्रतें कुटुम्बनेविषे थापीने एतलें कुटुम्बनो अधिकार देइने। तमित्त णाइ णियग संबंधि परियण। ते मित्र ज्ञाति निजक संबंधी परि

मेव दारुमयं पडिग्गहं गहाय मुंडेभवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए, पव्वइएवियणं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि, कप्पइ मे जावज्जीवाए छठं छठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाउ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छठस्सवियणं पारणयंसि आयावणभूमीउ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहयं गहाय तामलित्तीए णयरीए उच्चणीयमज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडेत्ता सुद्धोदणं पडिग्गहेत्ता तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेत्ता तउपच्छा आहारं आहारित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलते

जन प्रतें । जेट्ठपुत्तंच आपुच्छित्ता । वडा बेटाप्रत पूछीने । सयमेव दारुमयं परिग्गहयं गहाय मुंडेभवित्ता । आपणपेंज निश्चे काष्टमय पात्रो ते प्रतें ग्रहीने मस्तकेमुंड थईने । पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए । प्रणामके करिवायोग्य जेहनेविषे ते प्राणमा तिणे प्रव्रज्याये सहित 'प्रवर्त्तवो । पव्वइवियणसमाणा । प्रव्रज्या लीधा पणि वपुन णवाक्यालंकारे, थका । इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि । एह एहवेरूपे अभिग्रह नियम विशेष ग्रहण्य् आदरस्यू । कप्पइमेजावज्जीवाए । कल्पे मुझने जा जीवू तालगे । छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण । षष्ट २ उपवासे अंतर रहित तप क्रियायें । उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ । ऊंची बाहुप्रतें करीने करीने । सूराभिमुहस्स । सूर्य सामुहो दृष्टी । आयावणभूमीए । आतापनानी भूमिकानेविषे आयावेमाणस्सविहरित्तए । आतापना करतोथको विचरू । छट्ठस्सवियणंपारणयंसि । छठ २ उपवासने पणि वपुन ण वाक्यालंकारे, पारणाने विषे । आयावणभूमिओ । आतापनानी भूमिकाथको । पच्चोरुभित्ता । पाछो वलोने । सयमेवदारुमयपडिग्गहयंगहाय । आपणि पे काष्टमय पडघोपात्रो ग्रहीने । तामलित्तीणयरीए । तामलिप्ती नामा नगरीने विषे । उच्चणीयमज्झिमाइ कुलाइं । ऊंच नीच मध्यम कुलने विषे । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए अडेत्ता । घरने समुदान भिक्षाने अर्थे फिरीने । सुद्धोदणंपडिग्गहेत्ता । सूपशाकादि वर्जित कूर ते प्रते लेईने । तंतिसत्तखुत्तोउदएणं पक्खालेत्ता । ते

कूर ॥ तिसत्तखुत्तोत्ति ॥ त्रि सप्तकृत्व एकविंशतिवारानित्यर्थं ॥ आमाएमाणेत्ति ॥ ईषत्स्वादयन् ॥ वीसाएमाणेति ॥ विशेषेण स्वादयन् स्वाद्यवि

सयमेव दारुमय पडिग्गहय कारेइ कारेइत्ता विउल असण पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेइ उवक्खडावे
इत्ता तउ पच्छा राहाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ वत्थाइं पवरपरि
हिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तएण मित्तणाइनियगस
यणसंबंधिपरियणेणं सद्धि त विउल असण पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे वीसाएमाणे परिसाएमाणे

कूरप्रतें तीन सातवार कोज एतल २१ वार पाणीकरी धाईने। तआपच्छा आहार आहारित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ २ त्ता। तिवारपछी आहारप्रतें आहार करतो विचरूं इम मनमें संकल्प करें चीतवे चिन्तवीने। कल्लपाउप्पभायाए। सवारे प्रगटो प्रभा कांति तेज। जावजलते। यावत् सूर्योदय थये हु ते। सयमेवदारुमयपडिग्गहियंकारेइ २ त्ता। आपणपेंज काष्टमय पडघोपात्र करावे करावीने। विउलं असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेइ २ त्ता विस्तीर्ण घणा अन्न पाणी खादिम स्वादिम चार आहारप्रतें नीपजावे नीपजावीने। तओपच्छा ण्हाए। तिवारपछी स्नानकीधो। कयब लिकम्मे। कीधो बलिकर्म देवपूजादिक। कय कोउय मगल पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिए। कीधा कोतुक मषी तिलकादि क मंगलीकने प्रायश्चित्त दुःस्वप्न टालिवाने निमित्ते दानदीधा निर्मल पहिरवा योग्य मंगलीकना करणहार वस्त्र ते भला पहिरे। अप्प महग्घा भरणा लंकियसरीरे। भार थोडा मोले मंहगा एहवा जे आभरण विशेष तेणेंकरी सिणगार्या शरीर। भोयणवेलाए। भोजन वेलायें। भोयण मडवंसि। भोजनना मंडप घरने विषे। सुहासणवरगए। सुख आसन प्रधानने विषे बेठा। तएण मित्त णाइ णियग सयण संबंधि परियणेण सद्धिं। तिवारें मित्र न्याती निजक स्वजन संबंधी परिजन संघातें। तं विउलं असणं पाण खाइम साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणे। ते आहार विस्तीर्ण अ न्न पाणी खादिम स्वादिम प्रतें, थोडो खाती घणो नखावतां ते आस्वादमान, घणो खातो थोडोनखावतो ते वेस्वादमान माहोमाहें आपता देता थ

॥ टीका ॥ जिमियभुत्तुत्तरागएत्ति ॥ जिमियत्ति ॥ प्रथमैकवचनलोपात् जिमितो भु
क्तवान् ॥ भुत्तोत्तरत्ति ॥ भुक्तोत्तर भोजनोत्तरकाल ॥ आगएत्ति ॥ आगत उपवेशनस्थाने भुक्तोत्तरागत., किम्भूत सन्नित्याह ॥ आयतेत्ति ॥ आ
ज्ञेय ॥ परिभाएमाणेत्ति ॥ ददत् ॥ परिभुजेमाणेत्ति ॥ भोज्य परिभुञ्जान ॥

॥ मूल ॥ परिभुंजमाणे विहरइ , जेमिय भुत्तुत्तरागएवियण समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए त मित्तजावपरिय
णं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणय सक्कारेइ सक्कारेइत्ता तस्सेवमित्तणाइ जाव परियणस्स पुरउ जेठपुत्तं
कुटुंबे ठावेइ ठावेइत्ता तं मित्तनाइ जाव परियणं जेठपुत्तंच आपुच्छइ आपुच्छइत्ता मुंडेभवित्ता पाणामा
ए पव्वज्जाए पव्वइएवियण समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ , कप्पइ मे जावज्जीवाए छठ छ

॥ भाषा ॥ परिभुजमाणे विहरइ। भोजन समस्त प्रकारे जोमता थका विचरे। जिमिय भुत्तुत्तरागए वियणसमाणे। जिमीने भोजनने उत्तर काल गया ए
का। आयते चोक्खे परमसूइभूए तमित्तजाव परियण। आचमन कीधो शुद्ध पाणीनेयोगे लेपसीथादि
तले दधि कूर जोम्या बेसिवाने स्थानके आव्याथका। आयते चोक्खे परमसूइभूए तमित्तजाव परियण। आचमन कीधो शुद्ध पाणीनेयोगे लेपसीथादि
कने टालवे करी एतला माटेज परम पवित्रथया ते मित्र यावत् परिजनने। विउलेण वत्थगध मल्ला लकारेणय सक्कारेइ २ त्ता। वस्त्रगन्ध माल्य अलङ्का
रे करीने सत्कारे सन्माने। तस्सेव मित्त णाइ जाव परियणस्स। तेहनेज मित्र न्याति यावत् परिजनने। पुरओ जेठ पुत्तं कुडुबे ठावेइ २ त्ता। आगे व
डा बेटाप्रतें कुटम्बनेविषे स्थापे एतावता कुटम्बने अधिकारे थापे थापीने। तमित्त णाति जाव परियण जेठपुत्तच आपुच्छइ २ त्ता। ते मित्र न्याति या
वत् परिजनप्रते वली वडाबेटा प्रतें पूछेपूछीने। मुडेभवि त्ता। मुड मस्तके थईने। पाणामाए पव्वजाए पव्वइए। प्रणामरूप प्रव्रज्याए परिव्राजक थयो
टीचालोधो। वियणसमाणे। टीचा लोधायका चपम ण वाक्यालकारे,। इमएयारूवअभिग्गह अभिगिण्हइ। एह एहवे रूपे अभिग्रह नियमविशेष ग्रहै।
कप्पइ मे जाव ज्जीवाए। कल्पे मुझने यावत् जीव तालगे। छठ्ठछठ्ठेण जाव आहारित्तएत्ति कट्टु। छठ्ठछठ्ठे पारणो करवो यावत् आहार पारणानेविषे
२१ वार पानी सू धोईने इम करीने। इम एयारूव अभिग्गहं अभिगेण्हइ २ त्ता। एह एहवेरूपे नियम विशेष ग्रहै ग्रहीने। जावज्जीवाए। यावत् जी

घान्तः शुद्धोदकयोगेन ॥ चोक्खत्ति ॥ चोक्षः लेपगिक्याद्यपनयनेना तएव परमशुचिभूतइति ॥ जजत्यपासइत्ति ॥ य मिन्द्रादिक यत्र देशे कोलेवा,

ठेणं जाव स्राहारित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं ग्रभिग्गहं ग्रभिगिरहइ ग्रभिगिरहइत्ता जावज्जीवाए छठं छ ठेणं ग्रनिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढं बाहाउ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहे ग्रायावणभूमीए ग्रायावेमा णे विहरइ, छठस्स वियण पारणयंसि ग्रायावणभूमीए पच्चोरुहइ पच्चोरुहइत्ता सयमेव दारुमय पडिग्ग हय गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्चनीयमज्झिमाइ कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियाए ग्रडइ ग्रडइत्ता सुद्धोयणं पडिग्गहेइ पडिग्गहेइत्ता तिसत्तखुत्तो उदएण पक्खालेइ पक्खालेइत्ता तउ पच्छा ग्राहार ग्राहा रेइ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पाणमाए पव्वज्जा ? गोयमा ! पाणामाएणं पव्वज्जाए पव्वइए समाणे

वू तालगे । छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण । छट्ठछट्ठेकरी अंतरारहित । तवो कम्मेण । तप क्रियायेंकरी । उड्ढवाहाओ । ऊंचो बाहु प्रतें । पगिज्झिय २ । करी ने २ । सूराभिमुहे । सूर्य सामुही दृष्टि । आयावणभूमीए । आतापनानी भूमिकानेविषे । आयावेमाणेविहरइ । आतापना करतोथको विचरे । छट्ठस्स छठ २ उपवासने । वियणपारणयसि । पारणानेविषे । आयावणभूमीओ । आतापनानी भूमिकाथी । पच्चोरुहइ । पाछा वलीने । सयमेवदारुमयपडि ग्गहयगहाय । आपणपेंज काष्टमय पडघो ग्रहीने । तामलित्तीए । तामलित्ती नगरीने विषे । उच्चणीय मज्झिमाइ कुलाइं । ऊंच नीच मध्यमकुलने विषे । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाएअडइ । घर समुदायनी भिक्षा आहारने अर्थे अटे फिरे । सुद्धोयणपडिग्गहेइ । सूपशाकादि वर्जित आहार ग्रह वछे । तिसत्तखुत्तोउदएणपक्खालेइ २ त्ता । ते इक्कीसवार पाणीमूं धोवे धोईने । तओपच्छाआहारंआहारेइ । तिवार पछी ते आहार प्रते आहारे करे । तिवारे गौतम पूछेछे । सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ । ते किसे प्रयोजने । इम कह्यु । पाणामाए पव्वज्जाए । प्रणामरूप प्रवज्या दीक्षा । गोयमा पाणामाए ण पव्वज्जाए । हेगौतम । प्रणाम प्रव्रज्याए । पव्वइए समाणे । प्रव्रज्यां एतावता दीक्षित थयोंथको । जजत्थ पासइ तजत्थ । जे इन्द्रादि प्रते जे देशनेविषे

पश्यति, तस्य तत्र प्रणामं करोतीति वाक्यशेषो दृश्य॰ ॥ खंदंवत्ति ॥ स्कंदं वा; कार्त्तिकेयं ॥ रुद्दंवा ॥ महादेवं ॥ शिवंवत्ति ॥ व्यन्तरविशेष आकारविशेषधर वा, रुद्रमेव ॥ वेसमणवत्ति ॥ उत्तरदिक्पाल ॥ अज्जवत्ति । आर्या प्रशान्तरूपा चंडिका ॥ कोट्टकिरियवत्ति ॥ चण्डिकामेव रौद्ररूपा महिषकुट्टनक्रियावतीमित्यर्थ ॥ रायवा; इत्यत्र यावत्करणा दिद दृश्य ईसरवा, तलवरंवा, माडंबियवा, कोडुंबियवा, सेट्ठिवा, पाणवत्ति॥ चण्डाल ॥ उच्चति ॥ पूज्य ॥ उच्चंपणामति ॥ शयेन प्रणमतीत्यर्थ ॥ नीयति ॥ अपूज्यं । नीयपणामति ॥ अनत्यर्थ प्रणमतीत्यर्थ' एतदेव निगमयन्नाह ॥ जंजहेत्यादि ॥ य पुरुषपश्वादिकं यथा यत्प्रकार पूज्यापूज्यस्वभाव तस्य पुरुषादे स्तथा पूज्यापूज्योचिततया ॥ अणिच्चजागरियति ॥ अनि

ज जत्थपासइ तं इंदंवा खदंवा रुद्दंवा सिवंवा वेसमणवा अज्जंवा कोट्टकिरियंवा रायंवा जाव सत्थवाहंवा काकवा साणवा पाणवा उच्चंपासइ, उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ, नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ, से तेणट्ठेणं जाव पव्वज्जा। तएण से तामलीमोरियपुत्ते तेणं उरालेणं वि

पे अथवा कालने विषे देखे तेहने तिहां प्रणामकरै इति वाक्यशेष ते कहैछै—इंदवा खदवा रुद्दवा सिववा । इन्द्रप्रतें अथवा कार्त्तिकेय प्रते महादेव प्रतें व्यतरविशेष अथवा आकारविशेषनो धरणहाररुद्रज ते प्रतें। वेसमणवा अज्जव्वा कोट्टकिरियवा रायवा । उत्तर दिक्पाल प्रतें आर्याप्रशान्तरूप चंडिका प्रतें चंडिकाहीज रुद्ररूप महिषकुट्टन रूप प्रतें राजप्रतें । जाव सत्थवाहवा । यावत् शब्द थकी ईश्वर तलवर सार्थवाह ते प्रतें। काकवा साणवा पाणवा । काक पखी ते प्रतें। स्वान कूकरो ते प्रतें चंडाल प्रतें । उच्चपासइ उच्चंपणामकरेइ नीयपासइ नीयपणामकरेइ। पूज्यप्रते देखेतो अतिशये प्रणाम करे नीच अपूज्य प्रते देखेतो थोडोसो प्रणाम करे अथवा ऊंचो देखेतो ऊंचो प्रणाम करे नीचा देखेतो नीचो प्रणाम । करेजजहापासइ तस्स तहापणामकरेइ सेतेणट्ठेण जाव पव्वइज्जा। जे पुरुष पश्वादिक प्रते जेणे प्रकारे पूज्य अपूज्य स्वभावे देखे ते पुरुषादिकने तिम पूज्य अपूज्य यथायोग्य ताये प्रणाम करै तेणे प्रयोजने हेगौतम । यावत् प्रणाम प्रव्रज्या कही । तएणसेतामली । तिवारे ते तामलि । मोरियपुत्ते । मौर्य पुत्र । तेणंओरालेणवि

पुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसंतए जाए यावि होत्था , तएणं तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमे यारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था , एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं विपुलेण जाव उदत्तेणं उत्तमेण महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे जाव धमणिसतए जाए , तंअत्थि जामे उठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे ताव ता मे सेयं कल्ल जाव जलंते तामलित्तीए णगरीए दिठा भठेय पासमत्थेय

उलेण पयत्तेण । ते ण वाक्यालंकारे, उदार प्रधान स्वयंकरी रहित धान विस्तीर्ण घणा दिनमाटे गुरुसमीपे जाय अनुज्ञा लीधी । पग्गहिएण । वर्धमान ग्रह्या । बालतवोकम्मेण । एहवा अज्ञान अज्ञान तप तेणें करीने । सुक्के भुक्खे । शरीर सूको नीरस पणा थी भूखने विषे । जाव धम्मणिसतएजाएयावि होत्या । यावत् मास चयेंकरी नाडीनो समूह नीकल्यो एहवो तामलि थयो दूबलो । तएणतस्सतामलिस्स । तिवारे तेहने तामलिने । बालतवस्सिस्स । बाल तपस्वीने । अन्नयाकयाइं । एकदा प्रस्तावने विषे । पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि । पूर्वरात्रि अपररात्रिना कालसमयने विषे । अणिच्चजागरिय । अनित्य चिंतावे । जागरमाणस्स । जागता थकाने । इमेयारूवेअज्झत्थिए चितिए । एह एहवेरूपे अध्यात्म चिंतित । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् मनोगत संकल्प उपनो । एवंखलुअहं । इम निश्चे हूं । इमेणउरालेणविपुलेण । इणेंकरी उदार प्रधान तेणेंकरी विस्तीर्ण तेणेंकरी । जावउदग्गेण उदत्तेण । यावत् दिन २ प्रते तपनी वृद्धि चढते परिणामे । उत्तमेण महाणुभावेण तवोकम्मेण । ज्ञान युक्तकरी महान्त प्रज्ञा प्रभाव तेणेंकरी तपकर्म क्रियाकरी । सुक्के भुक्खे जावधम्मणिसतएजाए । शरीर सूको नीरस पणाथी भूखने वसे यावत् मास चयेंकरी नाडीनो समूह नीकल्यो एहवो थयो । तंअत्थिजामेउठाणे कम्मे बले वीरिए । ते माटे छे जेतला लगे मुझने ऊभा थाइवो । गमना गमनादि शरीरनो समर्थाई जीवनो उत्साह । पुरिसक्कारपरक्कमे । अभिमान विशेष पुरुष क्रियाने विषे छीन नीपजाव्यो पोतानो विषये । तावतामेसेय कल्ल जावजलंते । तेतला लगे मुझने श्रेय मङ्गलीक सवारे याव

॥ टीका ॥ त्यचिन्त ॥ दिहाभट्टेयत्ति ॥ दृष्टाभाषितान् ॥ पुव्वसंगतिएत्ति ॥ पूर्वसङ्गतिकान् गृहस्थत्वे परिचितान् ॥ नियत्तणियमण्डलति ॥ निवर्त्तनं क्षेत्रमान

॥ मूल ॥ गिहत्थेय पुव्वसगतिएय पच्छासंगतिएय परियायसंगतिएय आपुच्छित्ता, तामलित्तीए णयरीए मज्झं मज्झे णं निग्गच्छित्ता पाउगकुंडियमादीयं उवगरणं दारुमयच पडिग्गहयं, एगते एडेत्ता तामलित्तीए णगरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए णियत्तणियमडलं आलिहित्ता सलेहणाज्झूसणाज्झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाउवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ सपेहेइत्ता कल्ल जाव जलंते जाव आपुच्छइ आपुच्छइत्ता तामली एगंते एडेइ जाव भत्तपाणपडियाइक्खिए पाउवगमणं निवन्ने तेणं

॥ भाषा ॥ तसूर्य जगे थके। तामलित्तीएणयरीए। तामलिप्ती नामा नगरीये। दिट्ठा भट्ठेय। देखीने बोलव्या। पासडत्थेय गिहित्थेय। दरसणी गृहस्थपणे परिचिततं। पुव्वसगतिएय पच्छासगतिएय। पूर्वे सगतिक तेहप्रतें दीक्षालीधा पछे परिचयवत थया। परियायसगतिएय आपुच्छित्ता। दीक्षाना पर्याय तिणकरी सरीखा साथे भण्या तेहने प्रतें पूछीने। तामलित्तीएणयरीए। तामलिप्ती नामा नगरीने। मज्झमज्झेण। मध्ये मध्ये थई। णिग्गच्छित्ता। नीकले नीकलीने। पाओगकुडियमादीय। पादुका चाखडी कुडिका आदिदेई। उवगरण दारुमयच पडिगहय एगतेएडेत्ता। उपगरण उपधि वली काष्टमय पडघो एकान्त स्थानके नाखे। तामलित्तीएणयरीए। तामलिप्ती नामा नगरीने विषै। उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए। उत्तर पूर्व दिशि विचाले एतलई शान कोणने विषै। णियत्तणियमडलआलिहित्ता। क्षेत्रमान विशेष अथवा आपणा शरीर प्रमाण भूमडल आलखीने। सलेहणाझूसणाझूसियस्स। शरीर दुर्वल करीये इणें ते सलेखणा तप तेहनी जोषणा सेवा तिणें सेव्यो तेहने। भत्तपाणपडियाइक्खियस्सपाओवगयस्स। भात पाणी पचक्खीने पादपोपगमन नामा अनशनलई। कालअणवकखमाणस्स। मरण प्रते अणवाछतो थको। विहरित्तएतिकट्टु। विचरू इम करीने। एवसपेहेइ २ त्ता। इम मनसे सकल्प करे चितवे चितवीने। कल्लजावजलते। सवारे यावत् तेजवन्त सूर्य जगे थके। जाव आपुच्छइ २ त्ता। यावत् पूर्वे कह्या ते सहूने पूछे पू

॥ टीका ॥

विशेष स्तत्परिमाण निवर्त्तितिक निजतनुप्रमाण मित्यन्ये ॥ पाओवगमणंनिवणेति ॥ पादपोपगमन निष्पन्न उपसपन्न आश्रितइत्यर्थः ॥ अणिदिय त्ति ॥ इन्द्राभावात् ॥ अपुरोहियत्ति ॥ शान्तिकर्मकारिरहिता निन्द्रत्वादेव पुरोहितो हीन्द्रस्य भवति तदभावेतु नामावेति ॥ इदाहीणत्ति ॥ इ

॥ मूल ॥

कालेणं तेणसमएण बलिचचारायहाणी अणिदा अपुरोहिया यावि होत्था, तएण ते बलिचंचारायहाणिव त्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आहोयंति आहोयतित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावेंतित्ता एवंवयासी एवंखलुदेवाणुप्पिया! बलिचंचारायहाणी अणिदा अपुरोहिया अम्हेण दे वाणुप्पिया! इंदाहीणा इदाहिठिया इदाहीणकज्जा अयंचण देवाणुप्पिया! तामली बालतवस्सी तामलित्ती

॥ भाषा ॥

छीने। तामलीएगतेण्डेइ २ त्ता। ते तामलि बाल तपस्वी पादुकादिक उपगरण एकान्ते मूंके परठवे मूकीने। जावभत्तपाणपडियाइक्खिए। यावत् भात पाणी पचख्या छाड्या इत्यर्थ। पाओवगमणनिवणे। पादपापगमन अनशन लेई आश्रयीने रह्यो। तेणकालण तेणसमएण। ते कालने विषे ते स मयने विषे। बलिचचारायहाणी अणिदा। उत्तरदिशि असुरकुमारना इन्द्रनी बलिचचा राजधानी इन्द्रना अभावथी इन्द्ररहित। अपुरोहियायावि होत्था। पुरोहित शान्तिकर्म कर्त्ता ते तो इन्द्रने हुवे, इन्द्रने अभावे पणि नहीं एहवी हुई। तएणंतेबलिचचारायहाणिवत्थव्वया। तिवारे ते बलिचचा नाम राजधानीना वसणहार। बहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओय। घणा असुरकुमारना देव तथा देवी। तामलिंबालतवस्सि। तामली बालतपस्वी प्र ते। ओहिणाआहोयति २ त्ता। अवधिज्ञानेकरी अवलोके देखे देखीने। अणमणंसद्दावेंति २ त्ता। माहोमाहि तेडावे तेडावीने। एववयासी। इम क हे। एवंखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे अहोदेवानुप्रियाओ। बलिचचारायहाणी। बलिचचानाम राजधानी। अणिदा अपुरोहिया। इन्द्र रहित पुरो हित रहितछूं। अम्हेणदेवाणुप्पिया। अम्हे पणि अहो देवानुप्रिया। इदाधीणा। इन्द्रने आधीने सेवकरूप। इदाधिठ्ठिया। देवइन्द्र अधिष्ठित इन्द्र युक्त पणाथी। इंदाहीणकज्जा। इन्द्रने आधीन सर्व कार्य तेमाटे। अयंचणदेवाणुप्पिया। एह वली ण वाक्यालंकारे, अहो। देवानुप्रियाओ। तामली

॥ टीका ॥ न्द्राधीना इन्द्रवश्यत्वात् ॥ इदाहिठियत्ति ॥ इन्द्राधिष्ठता स्तद्युक्तत्वा दतएवाह ॥ इंदाहीणकज्जत्ति ॥ इन्द्राधीनकार्या ॥ ठिइप्पगप्पंति ॥ स्थि

॥ मूल ॥ ए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए नियत्तणियमंडलं आलिहित्ता सलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवन्ने तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिबालतवस्सिं बलिचचाए रायहाणीए ठिइप्पकप्पं पकरावेत्तए तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमठ्ठं पडिसुणंति पडिसुणतित्ता बलिचं चाए रायहाणीए मज्झंमज्झेण निग्गच्छंति जेणेव रुयइंदे उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति वेउव्वियसमुग्घा

॥ भाषा ॥ बालतवस्सी । तामलीनामे बालतपस्वी । तामलित्तीएणयरीएबहिया । तामलिप्तीनामा नगरीने बाहिर । उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए णियत्तणियमडल आलिहित्ता । ईशानकोणने विषे क्षेत्र विशेष अथवा निज शरीर प्रमाण मंडल आलेखीने । सलेहणाझूसणाझूसिए । सलेषणा तप तेहनी सेवा तिणें करी सेव्योछे । भत्तपाणपडियाइक्खिए । भात पाणी पच्चख्याछे जेणें । पाओवगमणनिवन्नेतसेयखलुदेवाणुप्पिया । पादपोपगमन अनशने रह्योछे तेमाटे तेरते श्रेय भलु निश्चे अहो । देवानुप्रियाओ । अम्हतामलिबालतवस्सिं । अम्हे तामली प्रतें बालतपस्वी प्रते । बलिचचाएरायहाणीए । बलिचचाना म राजधानीने विषे । ठिइप्पकप्पंपकरावेत्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्सअंतिए । स्थिति अवस्थान रहवू बलिचचाने विषे प्रकल्प संकल्प करावो एतले तेहनो मन बलिचचा राजधानो ऊपर करावो माहोमाहि तेहने समीपे । एयमठ्ठपडिसुणेंति २ त्ता । एहवू अर्थ सुणे अंगीकार करे करीने । बलिचंचाएरा यहाणीए । बलिचचा राजधानीथी । मज्झमज्झेणणिग्गच्छंति २ त्ता । मध्यमध्ये थईने नीकले नीकलीने । जेणेवरुयइंदेउप्पायपव्वए । जिहां रुचकेंद्रनामा चोथा लोकने विषे आववानां पर्वतछे । तेणेवउवागच्छंति २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । वेउव्वियसमुग्घाएणं । वैक्रिय करवाने काजे प्रयत्न विशेषे करी । समोहणंति । प्रदेश बाहिर काढे । जाव उत्तरवेउव्वियाइं विकुव्वंति २ त्ता । यावत् भवप्रत्यय शरीर नवोशरीर करे ते उत्तर वैक्रिय कहीये ते रूप विकुर्वे विकुर्वीने । ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जयणाए । ते ते उत्कृष्ट उत्कर्षवंती देवगती तिणेंकरी त्वरितयोग, आकुलगति

॥ टीका ॥

तौ अवस्थाने बलिचञ्चाविषये प्रकल्प' सङ्कल्प स्थितिप्रकल्पो तस्त ॥ ताएउक्किठाएइत्यादि ॥ तया विवक्षितया उत्कृष्टया उत्कर्षवत्या देवगत्ये तियोग', त्वरितया आकुलया न स्वभावजयेत्यर्थ, अन्तराकुलतया प्येषा स्यादित्यत आह, चपलया कायचापलोपेतया' चण्डया रौद्रया, तथा विधोत्कर्षयोगेन जयिन्या गत्यन्तरजेतृत्वात्, छेकया निपुणया उपायप्रवृत्तित, सिंह्या सिंहगतिसमानया श्रमाभावेन, शीघ्रया वेगवत्या' दिव्यया प्रधानया, उद्धूतया वस्त्रादीना मुद्धूतत्वेन उद्धतयावा; सदर्प्पया ॥ सपक्खिति ॥ समा' सर्वपक्षा पार्श्वा पूर्वापरदक्षिणोत्तरा यत्र स्थाने त

॥ मूल ॥

एणं समोहणंति जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंतिति विकुव्वित्ता ताए उक्किठाए तुरियाए चवलाए चण्डाए जयणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए दिव्वाए उद्धुयाए देवगईए तिरियं असंखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झंमज्झेण जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहेवासे जेणेव तामलित्तीए णगरीए जेणेव तामलीमोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति उवागच्छितित्ता तामलिस्स बालतवसिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि ठिच्चा दिव्वं देविड्ढि दिव्वंदेवजुत्तिं

॥ भाषा ॥

काय चपलपणें रुद्रगति अनेरो गतिने जोपे ।। छेहाए सीहाए सिग्घाए दिव्वाए देवड्डिआए देवगतीए । निपुणपणेगति शीघ्रगति शीघ्र उतावली गति दिव्य प्रधान गति वस्त्रादिकने उद्धूतपणें एहवो देवगति । तिरियमसंखेज्जाण । बोछा असख्याता । दीवसमुद्दाणं । द्वीप समुद्रने । मज्झमज्झेणं । मध्ये मध्यभागे थईने । जेणेवजंबूद्दीवे २ । जिहा जंबूद्वीप नामा द्वीपछे । जेणेवतामलित्तीणयरी । जिहा तामलिप्ती नामे नगरीछे । जेणेवतामलीमोरियपुत्ते तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । जिहां तामली नामे बालतपस्वी मौर्य पुत्रछे तिहा आवे तिहा आवीने । तामलिस्सबालतवसिस्सउप्पिसपक्खिसपडिदिसिठिच्चादिव्वदेविड्ढी । तामली नामा बालतपस्वीने समक्ष सगला पासा पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर रूप जे स्थानकने विषे ते सपक्ष कहीये समक्ष सर्व प्रतिदिशि जिहा ते सप्रतिदिशि जिहा ते सप्रतिदिशि तिहा रहीने मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । दिव्वदेवजुः दिव्वदेवाणुभाव । मनोज्ञ देवनी कांति मनोहर देवना अनुभाव । दिव्वबत्तीसइविहनट्टविहिउवदंसेइ २ त्ता । दिव्य प्रधान बत्तीसविधि नाट्यविधि प्रते देखाडे ते बत्तीस नाट्यविधि रायप

॥ टीका ॥

रसमप्रतिदिक् ॥ बत्तीसइविहंनट्टविहिंति ॥ द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिं नाट्यविषयव
तसपन्न, इकारः प्राकृतप्रभव-, समाः सर्वाः प्रतिदिशो यत्र त त्समप्रतिदिक् ॥ बत्तीसइविहंनट्टविहिंति ॥ द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिं नाट्यविषयव
स्तुनो द्वात्रिंशद्विधत्वात्, तच्च यथा राजप्रश्नीयाध्ययने तथा वसेयमिति ॥ अठंबधहत्ति ॥ प्रयोजननिश्चयं कुरुतेत्यर्थ, निदान प्रार्थनाविशेष एत

॥ मूल ॥

दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसइविहं हनविहिं उवदंसंति उवदंसंतित्ता तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आया
हिणपयाहिणं करंति वंदंति नमंसंति नमंसंतित्ता एवंवयासी एवंखलु देवाणुप्पिया! अम्हे बलिचंचाराय
हाणीवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिया! वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो।
अम्हाणं देवाणुप्पिया! बलिचंचारायहाणि अणिंदा अपुरोहिया अम्हेयणं देवाणुप्पिया! इंदाहीणा इंदा
हिट्ठिया इंदाहीणकज्जा तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया बलिचंचारायहाणिं आढह परियाणह सुमरह अठंबंधह

॥ भाषा ॥

सेणो अध्ययन माहि जिमछे तिम कहवो, ते देखाडीने। तामलिवालतवस्सितिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणपकरेंति २ त्ता वंदतिणमंसति २ त्ता। ता
मली बालतपस्वी प्रतें तीनवार जीमणा पासाथी प्रदक्षिणा करै करीने वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम कहताहूआ।
एवखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे हेदेवानुप्रिय। देव वल्लभ। अम्हे बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओय। अम्हे बलिचंचानाम
राजधानीना वास्तव्य वसणहार घणा असुरकुमार देव तथा देवी। देवाणुप्पियंवंदामोणमंसामो। देवानुप्रियप्रते तुम्हप्रतें वांदीछूं नमस्कार करूंछूं।
जावपज्जुवासामो। यावत् पर्युपासना सेवा करूंछूं। अम्हाणदेवाणुप्पिया। अम्हारो णं वाक्यालकारे, अहो देवानुप्रिय। बलिचंचारायहाणी। बलिचंचा
नाम राजधानी। अणिंदा अपुरोहिया। इन्द्र रहित शांतिकरणहार रहित हूइ। अम्हेयणदेवाणुप्पिया। अम्हे चपुन णं वाक्यालकारे, अहोदेवानुप्रि
य। इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा। इन्द्रने आधीन छै इन्द्रने अधिष्ठित छै इन्द्रने आधीन सर्व कार्य छै। तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया। तेमाटे
तुम्हे ण वाक्यालकारे, हेदेवानुप्रिय। बलिचंचारायहाणि। बलिचंचानाम राजधानी प्रतें। अढाहपरियाणह। आदर करो स्वामीपणो जाणो। सुम

निहाणं पकरेह ठिइप्पकप्पं पकरेह , तएणं तुज्झे कालमासे कालंकिच्चा वलिचंचारायहाणीए उववज्जिस्सह , तएणंतुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तएणं तुब्भे अम्हेहि सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह । तएणंसे तामली वालतवस्सी तेहिं वलिचचारायहाणीवत्थव्वेहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एव वुत्तेसमाणे एयमठ नोआढाइ, नोपरियाणइ तुसिणीए संचिठइ , तएणंते वलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवेअसुरकुमारा देवायदेवीओय तामलिंमोरियपुत्त दोच्चंपि तच्चंपि तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता जाव अम्हचणं देवाणुप्पिया ! वलिचंचारायहाणी अणिंदा जाव ठिइप्पकप्पं पकरेह ।

रह अहवधह । मनमे सुमरो प्रयोजन वांधा निश्चै करो । निदाणपकप्पह । नियाणो प्राथना विशेष तेहप्रते करे ते कहेछै—वलिचचा ऊपर । ठिइप्पकप्पपकरेह तएणतुब्भेकालसमयकालकिच्चा । स्थिति सकल्प करी मनमे धरो तिवारे तुम्हे काल अवसरने विषे काल करीने । वलिचचारायहाणीए । वलिचचा राजधानीने विषे । उववज्जिस्सह । ऊपजस्यो अवतरस्यो । तएणंतुब्भे अम्हइंदाभविस्सह । तिवारे तुम्हे अम्हारे इन्द्र हस्यो । तएणंतुब्भेअम्हेहिंसद्धिंदिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणाविहरिस्सह । तिवारे तुम्हे अम्हारे सघाते देव सबंधिया मनोज्ञ भोग भोगविवा योग्य जे भोग ते भोगवता थका विचरस्यो । तएणंसेतामलीवालतवस्सी । तिवारे ते तामलो नामा वालतपस्वो । तेहियलिचचारायहाणिवत्थव्वेहि । तिणे वलिचचा राजधानीना वसणहार । बहहिअसुरकुमारदेवेहिय देवीहिय । घणा असुरकुमारना देव तथा देवो । एववुत्तेसमाणे । इम कह्याथका । एयमठणोआढाइ । एह अर्थनो आदरै नही । णोपरियाणइ । स्वामोपणो नजाणे । तुसिणीएसचिठइ । तूणो मोन करोने रहै बोलेनही । तएणतेवलिचचारायहाणिवत्थव्वया । तिवारे ते वलिचचा राजधानीना वसणहार । बहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओय । घणा असुरकुमार देव तथादेवीओ । तामलिंवालतवस्सिमोरियपुत्त दोच्चपि तच्चपि । तामली नामा वाल तपस्वो मौर्यपुत्र प्रते बीजीवार पणि त्रीजीवार पणि । तिक्खुतो आयाहिणपयाहिणकरेंति २ त्ता । तीनवार जीमणापा

॥ टीका ॥ जातकोपोद देवाह ॥ ठिइप्पकप्पति ॥ प्राग्वत् ॥ आसुरुत्तत्ति ॥ आशुरुप्ता· शीघ्रं कोपविमूढबुद्धय· अथवा; स्फुरितकोपचिह्ना· ॥ कुवियत्ति ॥

॥ मूल ॥ सणविमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरियं अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए उगाहणाए ई सा
णे देविंदेविरहियकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए उववन्ने तएणं सेईसाणेदेविंदे देवराया अहुणोववन्ने
पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तंजहा—आहारपज्जत्तीए जाव भासामणपज्जत्तीए, तएण ब
लिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिंबालतवस्सि कालगयंजाणित्ता ईसा

॥ भाषा ॥ ईसाणकप्पे ईसाणवडिसएविमाणे। ईशान नामा देवलोकने विषे ईशाना वतसक विमा
नेने। कालमासेकालकिच्चा। काल अवसरने काल करीने। उववायसभाए देवसयणिज्जंसि। उपपात सभाये देव शय्याने विषे। देवदूसतरिय। देव दूष्य वस्त्रने अतरे। अगुलस्सअसखेज्जइभागमेत्तीए। अंगुल
ने असख्यातमोभाग मात्रनी। ओगाहणाए। अवगाहनाए देहमाने। ईसाणेदेविंदे विरहियकालसमयंसि। ईशान देवलोकने विषे देवेन्द्र कहता इन्द्र
ना विरहकाल समयने विषे एतावता इन्द्र चव्यायका। ईसाणदेविंदत्ताएउववन्ने। ईशान देवलोक बीजाने विषे देवेन्द्रपणे ऊपनो। तएणसेईसाणे
देविंदेदेवरायाअहुणोववन्ने। तिवारे ते ईशान देवेन्द्र देवनोराजा तत्काल ऊपनो। पचविहाएपज्जत्तीएपज्जत्तिभावगच्छइ तजहा। पाच
प्रकारनी पर्याप्ति जीवशक्ति विशेष तेणेकरी पर्याप्तभावप्रते पामे ते कहेछे—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए। आहार पर्याप्ति शरीर पर्याप्ति। जाव
भासमणपज्जत्तीए। यावत् भाषा मन पर्याप्ति ए पंचे पर्याप्ती थयोछे। तएणबलिचंचारायहाणिवत्थव्वया। तिवारे बलिचचा राजधानीना वसणहार।
बहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओय। घणा असुर कुमार देव तथा देवीओ। तामलिबालतवस्सि। तामली नामा बाल तपस्वी प्रते। कालगयंजाणित्ता।
कालगत कालधर्म प्रते एतले मरण पाम्यो जाणीने। ईसाणेयकप्पे। ईशान नामा देवलोकने विषे। देविंदत्ताएउववण्णपासित्ता। देवेन्द्रपणे ऊपनो दे
खीने। आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया। उतावला क्रोधवत थया कुपित थया क्रोध उदेथयो प्रगट्यो रौद्ररूप। मिसमिसेमाणा बलिचंचारायहाणीए।

जाव दोच्चंपि तच्चंपि एव वुत्तेसमाणे जाव तुसिणीए संचिठइ, तएणते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाइज्जमाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया। तेणकालेण तेणंसमएणं ईसाणेकप्पे अणिंदे अपुरोहिए यावि होत्था, तएणंसे तामलीबालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिंवाससहस्साइ परियाग पाउणित्ता दोमासियाए सलेह णाए अत्ताणं झूसित्ता सवीसंभत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालमासे कालंकिच्चा ईसाणेकप्पेई साणवडिं

साथी प्रदक्षिणा करै कराने। जावअम्हचणदेवाणुप्पिया। यावत् अम्हारौ चपुन ण वाक्यालकारे, अहो देवानुप्रिया। बलिचचारायहाणीअणिदा। बलिचचा राजधानी इन्द्र रहित थई तेमाटे तुम्हे। जावठिइपकप्पपकरेह। यावत् तिहां ऊपजवानो रहवानो मनोरथ करो। जावदोच्चपितच्चंपिए वबुत्तेसमाणे जावतुसिणीएसंचिठइ। यावत् बीजोवार पणि त्रीजोवार पणि ते असुरकुमार देव देवी इम कह्ये थके ते वचन साभलो तामली बाल तपस्वी यावत् मोनकरी रहै। तएणते। बलिचचा राजधानीना वसणहार। बहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओ। घणा असुरकुमार देव तथा देवीओ ते। तामलिणाबालतवस्सिणा। तामलीनामा बालतपस्वीयें मौर्यपुत्रे। अणाढाइज्जमाणा। अण आदर करता थका। अपरियाइज्जमाणा। स्वामीपणो अ णजाणता थका। जामेवदिसिपाउब्भूया। जे दिशिथी प्रगट थयाहता। तामेवदिसिपडिगया। तेहोज दिशिप्रतें पाछागया एतले बलिचचा राजधा नी प्रते गया। तेणंकालेण तेणसमएणं। तेकालने विषै तेसमयने विषै। ईसाणेकप्पे। ईशान नामा देवलोक। अणिंदे अपुरोहिएयाविहोत्था। इन्द्र र हित शांतिक्रिया करणहार प्रोहित रहित हवो। तएणतामलीबालतवस्सी। तिवारे तामलीनामा बालतपस्वी मौर्यपुत्र। बहुपडिपुण्णाइ। घणे प्रति पूर्ण पूरा। सट्ठिवाससहस्साइ परियागपाउणित्ता। साठि सहस्र वर्ष ६०००० ताई प्रणाम प्रव्रज्या पर्याय पालीने। दोमासियाएसलेहणाए। बेमासनी सलेखणा तप तिणेकरी। अत्ताणंझूसित्ता। आत्माने वोसिरावीने। सवीसभत्तसय। एकसोवीस भात पालीने। अणसणाइ छेदित्ता। अणसणकरी छे

॥ टीका ॥ या. ॥ चंडिक्कियत्ति ॥ प्रकटितरौद्ररूपा ॥ मिसिमिसेमाणेत्ति ॥ देदीप्यमाना क्रोधज्वलनेनेति ॥ सुवेणाति ॥ रज्वा ॥ उछुहतिमि ॥ अवष्ठीव्यति

॥ मूल ॥ णेय कप्पे देविंदत्ताए उववरणं पासित्ता आसुरुत्ता कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा वलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निगच्छति निगच्छंतित्ता ताए उक्किठाए जाव जेणेवभारहेवासे जेणेव तामलित्तीणयरी जेणेव तामलिस्सवालतवसिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छतित्ता वामेपाए सुंवेणं वंधंति वंधंतित्ता तिक्खुत्तो मुहे उछुहंति २ त्ता तामलित्तीए णयरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आकड्ढविकड्ढिकरेमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवंवयासी—सेकेणं भोतामली वालतवस्सी सयंगहियलिंगे पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए केसणसे ईसाणेकप्पे ईसाणेदेविंदे देवरायातिकट्टु

॥ भाषा ॥ तेहने क्रोध करी देदीप्यमान थका वलिचचा नाम राजधानीने। मज्झमज्झेणणिग्गच्छति २ त्ता। मध्यमध्य भागे थई नीसरे नीसरीने। ताएउक्किट्ठाए ते उत्कृष्ट देवगतियें करीने। इत्यादि सर्व कहवो। जावजेणेवभारहेवासे। यावत् जिहांभरतनामा क्षेत्रछे। जेणेवतामलित्तीणयरी। जिहा तामलित्ती नामा नगरीछे। जेणेवतामलिस्स। जिहा तामलीनो। वालतवस्सिस्ससरीरए। वालतपस्वी मौर्य पुत्रनो शरीरछे। तेणेवउवागच्छंति २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। वामेपाएसुंवेणवंधति २ त्ता। डावा पगने विषे डोरडी सवाते वाधे वाधीने। तिक्खुत्तोमुहेउछुहिति २ त्ता। तीनवार मुखमाहि थूके थूकीने। तामलित्तीणयरीए। तामलित्ती नगरीने विषे। सिंघाडगतियचउक्कचच्चर। सिंघोडाने आकारे स्थानक तीनगली चारगली घणीगली। चउमुहमहापहपहेसु। चतुर्मुख मार्ग राजमार्ग वीजामार्गने विषे। आकड्ढविकड्ढिकरेमाणामहया। आघो पाछो उरहो परहो करताथका पतले उरहो परहो घीसाडता थका मोटे शब्दैकरी पतले ऊचे सादैकरी। उग्घोसेमाणा २। उद्घोषणा करताथका २। एववयासी। इम कहता हुआ। सेकेणभोतामलीवालतवस्सी। ते कुण भो किसो गवाक्यालकारे, अहोलोको तामलीनामा वालतपस्वी मौर्यपुत्र। सयगहियलिंगे। पोतेज ग्रह्योछे लिगवेष

॥ टीका ॥

निष्ठीवनकुर्वंति ॥ आकड्ढविकड्ढिति । आकर्षविकर्षिकां ॥ हीलेतित्ति ॥ जात्याद्युद्घाटनतः कुत्सति ॥ निंदतित्ति ॥ चेतसा कुत्संति ॥ खिसति त्ति ॥ स्वसमक्ष वचनैः कुत्सन्ति ॥ गरहतित्ति ॥ लोकसमक्ष कुत्सन्त्येव ॥ अवमखतित्ति ॥ अपमन्यन्ते अवज्ञास्पदमन्यन्ते ॥ तज्जितित्ति ॥ अङ्गुली शिरश्चालनेन ॥ तालेति ॥ ताडयन्ति हस्तादिना ॥ परिवहेतित्ति ॥ सर्वतो व्यथन्ते कदर्थयन्ति ॥ पव्वहतित्ति ॥ प्रव्यथन्ते प्रकृष्टव्यथा मिवो त्पा

॥ मूल ॥

तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अवमन्नंति तज्जंति तालेंति परिव्व हेंति पव्वहंति आकड्ढविकड्ढिंकरंति हीलेत्ता जाव आकड्ढविकड्ढिंकरेत्ता एगंते एडंति एडंतित्ता जामेवदि सिं पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया, तएणते ईसाणकप्पवासी बहवे वेमाणिया देवाय देवीओय बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलि

॥ भाषा ॥

जिणे एतले गएविनाछे। पाणामाएपव्वज्जाएपव्वइए। प्रणाम प्रवज्यायें प्रव्रज्योछे प्रणामरूप दीक्षा आदरीने। केसणसेईसाणेकप्पे। वली किस्यो ते ई शान नामा देवलोकनेविषे। ईशाणेदेविंदेदेवरायातिकट्टु। ईशान नामे देवेन्द्र देवनोराजा इमकरीने। तामलिस्सबालतवस्सिस्स। तामली नामा बाल तपस्वी मौर्यपुत्रना। सरीरयहीलति णिदति खिसति गरहति अवमखंति तालेति परिवाहिति पव्वहिती। शरीरप्रतें हीलें जात्यादिकना दोष काढ वायी, दुगछें मनेकरी, निन्दे, आप माहे वचनेकरी निन्दे, लोक समक्षये वार२ निन्दे, अपमाने अंगुली करी तरजे, हस्तादि करी ताडे, सर्वथा प्रकारे कद र्थे, शरीरने घणी दुख उपजावे। आकडुढविकडुढिंकरेतिहीलेत्ता। इम करी२ उरहो परहो घोसींटे हीले। जावआकडुढविकडुढिंकरेता। यावत् उर हो परहो घोसींटोने। एगतेएडेति २ त्ता। एकाते नाखे नाखीने। जामेवदिसिंपाउब्भूया। जे दिशिथी आव्याहता। तामेवदिसिंपडिगया। ते दिशि नेविषे पाछागया एतले पोताने ठामे पाछागया। तएणसेईसाणकप्पवासी। तिवारे ते ईशान देवलोकना वसणहारा। बहवेवेमाणियादेवादेवीओय। घ णा वैमानिक देव तथा देवीओ। बलिचचारायहाणिवत्थव्वएहिं। बलिचचा राजधानीना वसणहारा। बहूहिंअसुरकुमारेहि देवेहिय देवीहिय। घणा

ज्जमाणं निंदिज्जमाणं खिंसिज्जमाणं जाव आकड्ढविकड्ढिंकीरमाणं पासंति पासंतित्ता आसुरुत्ता जाव मि
सिमिसेमाणा जेणेव ईसाणेदेविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छंतित्ता करयलपरिग्गहियं दसनह
सिरसावत्तं मत्थए अंजलिकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावेत्ता एवंवयासी एवखलु देवाणुप्पिया !
बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय देवाणुप्पिए कालगए जाणेत्ता ईसाणेयक
प्पे इंदत्ताए उववन्ने पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगते एडंति एडंतित्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं
पडिगए तएणंसे ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणंवेमाणियाणं देवाणय देवीणय अं

असुरकुमार देव तथा देवी। तामलिस्सबालतवस्सिस्ससरीरयं। तामलिनामा बाल तपस्वीना शरीरप्रतें। हीलिज्जमाणं। हीलता थका। निंदिज्जमाणं।
निन्दा करताथका। जावआकड्ढविकड्ढिंकीरमाणंपासंति २ त्ता। यावत् उरहो परहो घीसाटता थका देखे देखीने। आसुरुत्ता। उतावला कोपे चढ्या।
जावमिसमिसेमाणा। यावत् क्रोधने वसे देदीप्यमान थयाथका। जेणेवईसाणेदेविंदेदेवराया। जिहां ईशाननामा देवेंद्र देवराजा। तेणेवउवागच्छं
ति २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। करयलपरिग्गहियंदसनहंसिरसावत्तंमत्थएअंजलिकट्टु। बेहाथ जोडीने दशनख मस्तके आवर्त्तकरी अंजली
करी एतले नमस्कार करी हाथजोडी। जएणंविजएणं वद्धावेंति २ त्ता। जय विजय एहवा शब्दकही वधावे वधावीने। एवंवयासी। इम कहता हु
या। एवंखलु देवाणुप्पिया। इम निश्चे अहो देवानुप्रिय। स्वामिन्। बलिचंचारायहाणि वत्थव्वया। बलिचंचा राजधानीना वसणहार। बहवेअसुर
कुमारादेवायदेवीओय। घणा असुरकुमार देव तथा देवीओ। देवाणुप्पिए। देवानुप्रिय। कालगएजाणित्ता। कालधर्म पाम्या जाणीने। ईसाणेकप्पे
इंदत्ताएउववण्णेपासेत्ता। ईशान नामा देवलोकें इन्द्र पणे ऊपना देखीने। आसुरुत्ता। उतावला कोपे चढ्या। जावएगतेएडेंति २ त्ता। यावत् तुम्हा
रा शरीर प्रते घीसाटी एकांते नाखे एकांते नाखीने। जामेवदिसिंपाउब्भूया। जे दिशिथी आव्याहता। तामेवदिसिंपडिगया। ते दिशिने विषे एतले

तिए एयमठं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलीयं भिउडिं निडा
ले साहट्टु वलिचंचारायहाणिं अहेसपक्खिंसपडिदिसिं समभिलोएइ, तएणं सावलिचचारायहाणी ईसाणेणं
देविंदेणं देवरन्ना अहे सपक्खि सपडिदिसिं समभिलोइयासमाणा तेण दिव्वप्पभावेण इगालब्भूया मुम्मुर
भूया छारिब्भूया तत्तकवेल्लयब्भूया तत्तासमजोइब्भूया जाया यावि होत्था , तएणंते वलिचचारायहाणिव

वलिचचार्ये पाछागया । तएणसेईसाणदेविंदे देवराया । तिवारे ते ईशान देवेन्द्र देवनाराजा । तेसिईसाणकप्पवासीण । तेहने ईशान देवलोकमां व सणहारने । वहूणवेमाणियाणदेवाणयदेवीणय अंतिए । घणा वैमानिक देवने तथा देवीने समीपे । एयमठ्ठसोच्चाणिसम्म । एहवो अर्थ सांभली हृदयधा रीने । आसुरुत्ते । उतावला कोपे चढ्या । जावमिसमिसेमाणे । यावत् क्रोधने वसे देदीप्यमान थका । तत्थेवसयणिज्जवरगए । तिहाज ईशान देवलो कने विषे प्रधान शय्याये बैठाथकाज । तिवलियभिउडिणिडालेसाहट्टु । त्रिवली करता भकुटी दृष्टि विन्यास विशेष तेहप्रतें निलाडने चढावीने । वलि चंचारायहाणि । वलिचचानाम राजधानी प्रतें । अहेसपक्खिसपडिदिसिंसमभिलोएइ । हेठे समछे सगलापासा पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर रूप जे स्थान ते विषे ते सपक्खकहीये समछे सर्व प्रतिदिशि जिहा ते सप्रतिदिशे अवलोकन करे । तएणसावलिचचारायहाणी । तिवारे तिका वलिचचाराजधानी । ईसाणेण देविंदेण देवरन्ना । ईशाने देवेंद्रे देवराजाये । अहेसपक्खिसपडिदिसिसमभिलोइयासमाणा । हेठे चारेदिशि तथा प्रतिदिशे अवलोकन कीधा थका एतले क्रोधिकरी दीठाथका । तेणदिव्वप्पभावेण । ते ण वाक्यालंकारे, देव सम्बंधी प्रभावे करीने । इगालब्भूया । अंगार सरीखी थई । मुम्मुरभूया । अग्निना नाना कणिया ते सरीखी थई । छारियब्भूया । राख सरीखी थई । तत्तकवेल्लगभूया । ताता वेलूना कण ते सरीखी थई । तत्तासमजोतिभू या । घणीताती थई अग्नि सरीखी थई । जायायाविहोत्था । एहवी वलिचचा राजधानी थई । तएणतेवलिचंचारायहाणिवत्थव्वया । तिवारे वलिच चा राजधानीना वसणहारा । वहवेअसुरकुमारादेवायदेवीओय । घणा असुरना देव तथा देवी । तवलिचचारायहाणि । ते वलिचंचा राजधानी प्रतें ।

॥ टीका ॥

दयन्ति ॥ तत्थेवसयणिज्जवरगएत्ति ॥ तत्रैव शयनीयवरे स्थितइत्यर्थः ॥ तिवलयति ॥ त्रिवलिका भृकुटिं दृष्टिविन्यासविशेषं ॥ समजोइब्भूयत्ति ॥
समा ज्योतिषाग्निना भूता समज्योतिर्भूता. ॥ भीयत्ति ॥ जातभयाः ॥ उतत्थत्ति ॥ उत्त्रस्ताः ॥ भयाज्जातोत्कम्पादिभयभावा ॥ तसियत्ति ॥ शुपि
तानन्दरसा ॥ उव्विग्गत्ति ॥ तत्यागमानसाः, किमुक्त भवतीत्यत आह, सञ्जातभयाः आधावति ईषद्धावति परिधावतीति सर्वतो धावति ॥ स

॥ मूल ॥

स्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवाय देवीओय तंबलिचचारायहाणिं इंगालब्भूयं जाव समजोइब्भूयं पासंति
पासतित्ता भीया उतत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सव्वओसमंता आधावंति, परिधावंति परिधावंतित्ता
अस्समस्ससकायं समतुरंगेमाणा चिठति । तएणंते बलिचंचारायहाणिबहवेवत्थव्वा असुरकुमारा देवाय
देवीओय ईसाणदेविंदं देवराय परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरस्सो तंदिव्वं देविढ्ढिं दिव्वंदेव
जुत्तिं दिव्वंदेवाणुभागं दिव्वंतेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दस

॥ भाषा ॥

इंगालभूय । अगार सरीखी थई । पासति २ त्ता । देख देखीने । भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सजायभया । भय पाम्या भयेकरी कंपवालागा आणंद
रूप रसमूकी उदवेगवंत थया भयेंकरी सर्वथा व्याप्या । सव्वओसमंताआधावति । दिशि विदिशि घोडा दोडे। परिधावति २ त्ता । समस्तप्रकारे सर्व
थी दोडे दोडीने। अण्णमण्णस्सकायसमतुरंगेमाणाचिठति । अनेरा अनेरानोकायमाहे प्रवेश करतायका एकमाहि भिडतायका रहे । तएणतेबलिचचा
रायहाणिवत्थव्वा । तिवारे ते बलिचचा राजधानीना वसणहार बहवेअसुरकुमारा देवायदेवीओय । घणा असुर कुमार देव तथा देवी । ईसाणं देवि
द देवरायं परिकुविय। ईशान प्रतें देवेंप्रते देवराजा प्रतें समस्तप्रकारे कुपित थया। जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरणो। जाणीने ईशाननी देवें
द्रनी देवराजानी । तंदिव्वदेविड्ढि। तेह प्रधान देवऋद्धि। दिव्वदेवजुत्ति। दिव्य प्रधान देवनी कांति । दिव्वदेवाणुभाव । प्रधान देवनो प्रभाव तेप्रते।
दिव्वतेयलेस्स असहमाणा। प्रधान तेजोलेश्या तेप्रतें सही नसकता थका। सव्वेसपक्खिसपडिदिसिठिच्चा । सगलाई चारेई दिशि सर्व प्रतिदिशे रहीने।

॥ टीका ॥ मसुरगेमाणेहि ॥ समा श्लिष्यंतो ऽन्योन्य मनुप्रविशन्तीतिवृद्धा , नातिमुज्जो ॥ एवंकरणायागत्ति ॥ नैव भूय एवंकरणाय सपत्स्यामहे इतिशेष ॥

॥ मूल ॥ तहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावंति वद्धावेत्ता एववयासी अहोणं देवाणुप्पि एहिं दिव्वादेविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तंदिठ्ठाणं देवाणुप्पियाणं दिव्वादेविड्ढी जाव लद्धा पत्ता अभिस मन्नागया खामेमोणं देवाणुप्पिया ! खमंतु मं देवाणुप्पिया ! खमंतुमरिहंतु णं देवाणुप्पिया ! णाइभुज्जो भुज्जो एवंकरणयाएत्तिकट्टु एयमठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति , तएणसे ईसाणेदेविंदे देवरा या तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वेहिं वहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवीहिय एयमठं सम्मं विणएणं

॥ भाषा ॥ करयलपरिग्गहिय । बेहाथ जोडीने । दसनहसिरसावत्तं । दसनख सघाते सिर सावर्त्त करीने । मत्थएअंजलिकट्टु । मस्तके अंजली करीने । जएणविज एणवद्धावेंति २ त्ता । जय विजय मंगलकारी वधावे वधावीने । एववयासी । इम कहता हवा । अहोणदेवाणुप्पियएहिं । अहो इति आश्चर्यकारी वचन वा वाक्यालंकारे, तुम्हने । दिव्वादेविड्ढि । प्रधान मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । जावअभिसमन्नागया । यावत् सन्मुख थई । तदिठ्ठाणंदेवाणुप्पियाणं । तेहमते दीठी तुम्हने । दिव्वादेविड्ढी । मनोज्ञ देवनी ऋद्धि । जावलद्धापत्ता । यावत् लाधी पामी । अभिसमन्नागया । सन्मुख थई । तखामेमोणदेवाणुप्पि या । तेमाटे अम्हे खमावूं छूं तुम्हने हेदेवानुप्रिय । देवधम । खमंतुमदेवाणुप्पिया खमंतुमरिहंतुदेवाणुप्पिया । खमो तुम्हे हेदेवानुप्रिय । खमिवाने तुम्हे योग्य छो हेदेवानुप्रिय । णाइभुज्जो २ एवंकरणयाएत्तिकट्टु । एकाम अम्हे वार २ नही किजीये एकाम वली नहीकरश्या अम्हे इमकहीने । एयमठंस म्मंविणएणभुज्जो २ खामेंति । एह अर्थ प्रयोजन भले प्रकारे विनयेकरो वार २ खमावे । तएणसेईसाणेदेविंदेदेवराया । तिवारे ते ईशान देवइंद्र देव राजा । तेहिंबलिचंचारायहाणिवत्थव्वेहिं । तिणें बलिचंचा राजधानी वसनहारे । बहुहिंअसुरकुमारेहिंदेवेहिंदेवीहिय । घणे असुरकुमारने देवे तथा देवीए । एयमठंसम्मंविणएणभुज्जो २ खामिज्जमाणे । एह प्रयोजने भले प्रकारे विनयेकरो वार २ खमाव्या थका । तदिव्वंदेविड्ढि । तेह प्रधान देवनी

॥ टीका ॥ आणाउववायवयणनिद्देसेत्ति ॥ आज्ञा कर्तव्य मेवेद मित्याद्यादेश, उपपात सेवा, वचन मभियोगपूर्वक आदेश , निर्देश प्रश्निते कार्ये नियतार्थ

॥ मूल ॥ भुज्जो भुज्जो खामिएसमाणे तंदिव्व देविड्ढिं जाव तेयलेस्संपडिसाहरइ , तप्पभिइंचणं गोयमा ! तेवलिच चारायहाणिवत्थव्वा बहवे असुरकुमारादेवाय देवीओय ईसाणं देविंदे देवरायं आढंति, जाव पज्जुवासंति ईसाणस्सयस्स देविंदस्स देवरन्नो आणाउववायवयणनिद्देसे चिठंति। एवंखलु गोयमा ! ईसाणेण देविंदेण देवरन्ना सादिव्वादेविड्ढी जाव अभिसमन्नागए, ईसाणस्सभंते ! देविंदस्स देवरन्नो केवइयंकालं ठिई प० ? गोयमा ! साइरेगाइ दोसागरोवमाणि ठिई पन्नत्ता, ईसाणेणं भंते ! देविंदे देवराया ताउदेवलोगाउ आ

॥ भाषा ॥ ऋद्धि तेप्रतें। जावतेयलस्सपडिसाहरइ। यावत् तेजोलेश्या प्रतें पाछो सहरे। तप्पभियचण। ते दिवस थको चपुन ण वाक्यालंकारे,। गोयमा तेव लिचवारायहाणिवत्थव्वा। हेगौतम। तेवलिचचाराजधानीना वसणहारा। बहवेअसुरकुमारा। घणा असुरकुमार। देवाय देवीओय। देव तथा देवी ओ। ईसाणदेविंददेवराय। ईशान देवेन्द्र देवराजा। अढंति। आदर करे। जावपज्जुवासति। यावत् सेवाकरे। ईसाणस्सदेविंदस्सदेवरन्नो आ णाउववायवयणणिद्देसे चिठ्ठति। ईशानना देवेन्द्रना देवराजाना आज्ञायें करवो इत्यादि, आदेश उपपात सेवा वचन अनियोग पूर्वक आदेश निर्देश पू छ्योकामें नियत अर्थनो उत्तर तेहने विषेरहे। एव खलु गोयमा। इम निश्चे हेगौतम। ईसाणेणदेविंदेणदेवरन्ना। ईशाने देवेंद्रे देवराजायें। सादिव्वादेवि ड्ढी। ते मनोज्ञ देवनी ऋद्धि। जावअभिसमन्नागए। यावत् सनमुख थई इम पामी इत्यर्थ वली गौतम पूछेछे—ईसाणस्सणभंतेदेविंदस्स देवरन्नो। ईशानने हेभगवन्। देवेन्द्रने देवराजाने। केवइयकालठ्ठिईपन्नत्ता। केतला कालनी स्थिति कही, केतलू आऊखु इत्यर्थ। गोयमा सातिरेगाइदोसागरो वमाणिठ्ठिई पन्नत्ता। हेगौतम। काईक भाझेरा दोय सागरोपमनी स्थिति कही। ईसाणेणभते देविंदे देवराया। ईशान हेभगवन्। देवेंद्र देवराजा। ताओदेवलोगाओआउक्खएण। तेहथी देवलोकथी ते आऊखो देवतापणानो चयकरी। जावकहिंगच्छिहिति। यावत् किहांजास्ये एतावता किसी ग

॥ टीका ॥ मुत्तरं, तत एषा द्वन्द्व स्तत स्तत्र ईशानेन्द्रवक्तव्यता प्रस्तावा तद्वक्तव्यतासम्बद्ध मेवो द्देशकसमाप्तिं याव त्सूत्रवृन्दमाह ॥ सक्कस्सेत्यादि ॥ उच्चतरा चेवत्ति ॥ उच्चत्व प्रमाणत ॥ उन्नयतराचेवत्ति ॥ उन्नतत्व ॥ गुणात- अथवा, उच्चत्वं प्रासादापेक्ष मुन्नतत्व तु प्रासादपीठापेक्षमिति' यच्चोच्यते-प

॥ मूल ॥ उक्कएण जाव कहिंगच्छहिंति । कहिंउववज्जिहिंति गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिंति जाव अंतंकाहिंति । सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चयरा ईसिंउन्नयराचेव । ईसाणस्सवा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिंणीययराचेव ईसिंणिन्नयराचेव ? हंता गोयमा ! सक्कस्स तंचेव सव्वंनेयव्वं, सेकेणठेणं? गोयमा !

॥ भाषा ॥ ति जास्ये । कहिंउववज्जिहिंति । किहां ऊपजस्ये किसे स्थानके ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा महाविदेहेवासेसिज्झिहिंति । हेगौतम । मनुष्यगतिने विषे अवतरी महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिगते जास्ये । जावग्रंतकाहिंति सक्कस्सणभंतेदेविंदस्सदेवरणोविमाणेहिंतो । याव सर्वदुखनो अंत करस्ये ईशानेन्द्रनी वक्तव्यता प्रस्तावथी तेह वक्तव्यता सबद्धहीज उद्देशक समाप्ति पर्यंत सूत्रसमूह कहेछे—शक्रना हेभगवन् । देवेन्द्रना देवराजाना विमान थकी । ईसाणस्सदेविंदस्सदेवरणोविमाणा ईसिउच्चयरा ईसिउन्नयराचेव । ईशानना देवेन्द्रना देवराजाना विमान काइंक ऊंचा प्रमाणथकी काइंक उन्नततर गुणथी नीचे अथवा ऊंचपणें प्रासादनो अपेचायें उन्नतपणो प्रासादनो पीठनी अपेचायें जाणवो अथवा । ईसाणस्सवा देविंदस्स देवरणो विमाणेहिंतो । ईशानना देवेन्द्रना देवराजाना विमान थकी । सक्कस्सदेविंदस्सदेवरणो विमाणा । शक्रना देवेन्द्रना देवराजाना विमान । ईसिणीयतराचेव । काइंक नीचतर प्रमाणथी नीचा । ईसिंणिण्णयराचेव । तथा काइंक न्यूनतर गुणथी नीचा इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हा गौतम । सक्कस्स तंचेवसव्वणेयव्वं । शक्रना विमानथी इत्यादिक तिमहीज सर्व जाणवो । सेकेणट्ठेण । ते स्ये प्रयोजने हे भगवन् । इमकह्यु । गोयमा सेजहानामए । हे गौतम । ते यथा नामे दृष्टाते । करयलेमिया । हाथना तलाहुइ । देसेउच्चे देसेउन्नए देसेणीये देसेणिण्णे । देशे प्रमाणथी ऊंचा देशे उन्नत गुणथी देशे

॥ टीका ॥

प्रमाणतो गुणतश्चेति ॥ आलावंवा; संलावंवत्ति ॥ आलापः सम्भाषणं संलाप स्तदेव पुन पुनः ॥ किच्चाइति ॥ प्रयोजनानि ॥ करणिज्जाइति ॥ विधे यानि ॥ सेकहमियाणिपकरेतित्ति ॥ अथ कथ मिदानी अस्मि न्काले कार्यावसरलक्षणे प्रकुरुत कार्याणी तिगम्य ॥ इतिभोत्ति ॥ इति एतत्कार्यं म

॥ मूल ॥

दिसिं समभिलोएत्तए जहा पाउब्भवणा तहा दोवि आलवगा णेयव्वा । पभूणं भंते ! सक्के देविंदे देवरा या ईसाणेणं देविंदेणसद्धिं आलावंवा मलाववा करेत्तए-हंतापभू जहा पाउब्भवणा अत्थिणं भंते ! तेसि सक्कीसाणाणं देविंदाण देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं हंताअत्थि । सेकहमियाणि पकरेइ ? गोयमा ! ता हेचेवण सेसक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतिय पाउब्भवइ । ईसाणेवा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवइ । इतिभोसक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलोगाहिवई । इति

॥ भाषा ॥

न करवाने देखवाने । जहापाउभवणा । जिम आववाना शक्र ईशानना बे आलावा कह्या । तहादोविआलावभाणियव्वा । तिम देखवाना पणि श क्र ईशानना दोय आलावा कहवा वली गोतम पूछेछे—पभूणभते सक्के देविंदे देवराया । समर्थछे हेभगवन् । शक्र देवेंद्र देवराजा । ईसाणेणदेविंदेण सद्धि । ईशान देवेंद्र देवराजा संघाते । आलाववा सलाववा । सभाषण एकवार करवो वारम्वार सभाषण । करेत्तए । करवाने । हतापभू । हागोतम समर्थछे । जहापाउभवणा । जिम आववाना आलावा कह्या, तिम एपणि कहवा । अत्थिणंभते तेसिंसक्कीसाणाणं । छे हेभगवन् । तेहने शक्र ईशान ने । देविंदाण देवराईण किच्चाइं करणिज्जाइं । देवेंद्रने देवराजाने कृत्यप्रयोजन करवायोग्य कार्यछे इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हागोतम । छे । से कहमिदाणिंपकरेंति । तेकिम एकार्य अवसर लक्षणें करे कार्य प्रते । गोयमा ताहेचेवण । हेगोतम । तिमज निश्चे । सेसक्के देविंदे देवराया । ते शक्र देवेंद्र देवराजा । ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो । ईशानने देवेंद्रने देवराजाने । अंतिय पाउभवइ ईसाणेवादेविंदे देवराया । ईशानने देवेंद्रने देव राजा । सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतिय । शक्रने देवेंद्रने देवराजाने समीपे । पाउभवइ प्रगट थाय आवे इतिभोसक्का । ए कार्यछे भो शक्र

॥ टीका ॥
चसयउच्चतेश आइमकप्पेसुहोतितउविमागत्ति। त त्परिस्थूरन्याय मङ्गीकृत्या वसेय, तेन किञ्चिदुच्चतरत्वेपि तेषां नविरोधइति॥ देसेउच्चेदेसेउणएत्ति॥

॥ मूल ॥
सेजहानामए करयलेसियादेसे उच्चे देसे उणए देसे णीए देसे तिणे। सेतेणठेण पन्नूण न्नंते! सक्केदेविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरस्सो ञ्चंतिय पाउब्नवित्तए? हतापन्नू। सेन्नंते! किं ञ्चाढामाणेपन्नू ञ्चणाढामाणेपन्नू? गोयामा ञ्चाढामाणेपन्नू णोञ्चणाढामाणेपन्नू, पन्नूण न्नते! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देवरस्सो ञ्चंतियं पाउब्नवित्तए हंतापन्नू सेन्नंते! किं ञ्चाढामाणेपन्नू ञ्चणाढामाणेपन्नू? गोयमा! ञ्चाढामाणेविपन्नू ञ्चणाढामाणेविपन्नू! पन्नूणं न्नते! सक्केदेविंदेदेवराया ईसाणंदेविंदं देवराय सपक्खिसपडि

॥ भाषा ॥
नीच प्रमाणथो देश न्यून गुणथी। सेतेणठेण। तेणे प्रयोजने हेगोतम। इमकप्पु। पभूणभतेसक्केदेविंदेदेवराया। समर्थछे हेभगवन्! शक्र देवेंद्र देवराजा। ईसाणस्स देविंदस्स देवरणो अतिय। ईशानने देवेन्द्रने देवराजाने समोपे। पाउब्भवित्तए। आविवाने इतिप्रश्न। हतापभू। हा गौतम। समर्थछे। सेभतेकिंआढामाणापभू। ते हेभगवन्! स्यू आदर कीधा एतले वोलाव्याथका समर्थ। अणाढामाणापभू। अणवोलाव्याथका समर्थ। गोयमा आढामाणापभू। हेगौतम। तेडाव्या थका आववाने समर्थइवे। णो अणाढामाणेपभू। अणवोलाव्या आववाने समर्थ नहवे, वलीगौतम पूछेछे—पभूणभतेईसाणे। समर्थ इइ हेभगवन्! ईशान। देविंदे देवराया। देवेन्द्र देवराजा। सक्कस्स देविंदस्स देवरणो। शक्रने देवेंद्रने देवराजाने। अतियपाउभवित्तए। अतिकें समीपे आवाने इतिप्रश्न उत्तर। हतापभू। हागौतम। समर्थछे। सेभतेकिंआढामाणेपभू। ते हेभगवन्। स्यू आदर करता एतले तेडाव्याथका समर्थ इइ अथवा। अणाढामाणेपभू। अणतेडाव्या थका समर्थ इइ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आढामाणेविपभू। हेगौतम! बोलव्या थका पणि आववाने समर्थ इइ। अणाढामाणेविपभू। अने अणवोलाव्या थका पणि आववाने समर्थइइ। पभूणभतेसक्केदेविंदेदेवराया ईसाणदेविंददेवराय। समर्थछे हेभगवन्! शक्र देवेंद्र देवराजा प्रते ईशान देवेंद्र देवराजा प्रतें। सपक्खिसपडिदिसि। चारेइ दिशि चारेइ प्रतिदिशि। समभिलोएत्तए। अवलोक

॥ टीका ॥ स्तिनोशद् श्रामनगो इतिनोइति ॥ नोतित्ति ॥ परम्परालापानुकरणं–जसेवयइतस्स आणाउववायवयणनिद्देसत्ति ॥ यदा ज्ञादिक मसौ वदति त

॥ मूल ॥ ञोईसाणा देविंदा देवराया उत्तरड्ढलोगाहिवई । इतिञो इतिञोत्ति , तेञ्णमस्सस्स किञ्चाइं करणिज्जाइं पञ्चणुञ्भवमाणा विहरंति । ञ्त्थिणं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईण विवादा समुप्पज्जंति हंताञ्त्थि । सेकहमिदाणिं पकरेइ ? गोयमा ! ताहेचेवणं सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारंदेविं दं देवरायं मणसीकरेइ । तएणं सेसणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदे देवराईहिं मणसी कएसमाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं ञ्तियं पाउञ्भवंति । जसेवयइतस्स ञ्णाणाउववा

॥ भाषा ॥ एकार्थछे भो शब्द आमन्त्र सम्बोधने शक्र । देविंदा देवराया । देवेंद्र देवराजा । दाहिणड्ढलोगाहिवई । दक्षिणार्द्ध लोकाधिपति । इतिभोईसाणा । इतिभोइतिभोत्ति मांहोमांहि णे ईशाना । देविंदे देवराया । देवेंद्र देवराजा । उत्तरड्ढलोगाहिवई । उत्तरार्द्ध लोकाधिपति । पञ्चणुभवमाणाविहरंति । अगोका आलापन करवो । ते अण्णमण्णस्सकिञ्चाइ । ते अन्योन्य परस्परे कृत्य प्रयोजन प्रते । करणिज्जाइ । करवायोग्य कार्य । ति शक्रने ईशानने देवेंद्रने देवराजाने । वि र करता विचरे । अत्थिणभंते तेसिसक्कीसाणाणं देविंदाण देवराईण । छे गावाक्यालंकारे, हेभगवन् । तेहने शक्रने ईशानने देवेंद्रने देवराजाने । वि वादासमुप्पज्जति । विवाद ऊपजे मांहोमांहि सम्वाद करे इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हा गौतम छे । सेकहमिदाणिपकरेंति । अथ तेहिम ए विवा दावसरे करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ताहेचेवण सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो । हेगौतम । तिमज तिवारे शक्र ईशान देवेंद्र देवराजा प्रते । सण कुमारं देविंदं देवराय । सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा प्रतें । माणसी करेंति । मनने विषे करे एतले मनमे धारे । तएणंसेसणंकुमारे । तिवारे ते सनत् कुमार । देविंदेदेवराया । देवेंद्र देवराजा । तेहिंसक्कीसाणेहिं । तिणे शक्र ईशाने । देविदेहिं देवराईहिं । देवेंद्र देवराजायें । मणसीकएसमाणे । मनने विषे धारतायका । खिप्पामेव । उतावला । सक्कीसाणाणदेविंदाण देवराईण । शक्र ईशानने देवेंद्रने । देवराईणं । देवराजाने । अतियपाउ

॥ टीका ॥

त्रा ज्ञादिके तिष्ठत इतिवाक्यार्थ , तत्रा ज्ञादय पूर्वं वाख्याता एवेति ॥ आराहगति ॥ ज्ञानादीना माराधयिता ॥ चरमेत्ति ॥ चरमएव नवो य

॥ मूल ॥

यत्रयणनिद्देसेचिठंति । सणंकुमारेणं नंते ! देविंदे देवराया किं नवसिद्धिए अनवसिद्धिए सम्मदिठी मिच्छदिठी परित्तससारिए अणंतसंसारिए सुलहबोहीए दुल्लनबोहीए आराहए विराहए चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारेणं देविंदे देवराया नवसिद्धिए णोअनवसिद्धिए, एव सम्मामिच्छ परित्त अणंत सु० आ० च० पसत्थनेयव्वं , सेकेणठेणं नंते ? गोयमा ! सणकुमारे देविंदे देवराया बहूणंसमणाणं बहूणंसमणीणं बहू

॥ भाषा ॥

वभवइ । समोपे प्रगट थावे इत्यर्थ । जमेनदइ । जे ते सनत्कुमार इन्द्र । तस्सप्राणाउववायवयणनिद्देसेचिठ ति । तेहने गर्भ ईशानने आज्ञा १ उपपात २ वचन ३ निर्देश ४ कहे तिणे ग्रह ईशानने रहे वना गौतम पूछेछे—सणकुमारेणभंतेदेविंदेदेवराया । सनत्कुमार हेभगवन् । देवेंद्र देवराजा । कि भवसिद्धिए । स्यू भवसिद्धिक भव्यछे । अभवसिद्धिए । अभवसिद्धिक अभव्यछे । सम्मदिठी । सम्यक्दृष्टि । मिच्छादिठी । मिथ्यादृष्टी छे । परित्तसंसारीय । तुच्छ ससारीछे । अणतससारीय । अनन्त संसारीछे । सुलभबोहिए । सुलभ बोधीछे । दुलहबोहिए । दुर्लभ बोधीछे । आराहए विराहए चरिमे अचरिमे । आराधकछे ज्ञानादिकनो किविराधकछे चरिमछेज भव जेहने अणपामो रह्योछे, अथवा चरिमदेव भवछे जेहने अथवा चरम भवछ्ये जेहने, ते चरिमछे, अथवा अचरिमछे, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सणकुमारेणदेविंदे देवराया भवसिद्धिए । हेगौतम । सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा भव्यछे । णोअभवसिद्धिए । अभव सिद्धिक नथी । एव सम्मदिठी परित्तसंसारी । इम सम्यक्दृष्टीछे, मिथ्यादृष्टी नथी तुच्छ संसारीछे, अनन्त संसारी नथी । सुलभबोहिए आराहए । सुलभ बोधीछे, दुर्लभबोधी नथी । आराधकछे विराधक नथी । चरिमेपसत्थणेतव्व । चरिमछे अचरिम नथी प्रशस्त भला कहवा, अप्रशस्त छांडवा । सेकेणठेणभंतेएववुच्चइ । ते स्ये प्रयोजने हेभगवन् । इम कह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सणकुमारेदेविंदे देवराया । हेगौतम । सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा । बहूणसमणाण बहूणसमणीण । घणा श्रमण तपस्वी साधुनो घणी श्रमणी साधवीनो । बहूणसावगाण बहूणसावियाण । घणा श्रा

स्या प्राप्त स्तिष्टति देवज्ञवोवा ; चरमो यस्य स चरमज्ञवोवा , भविष्यति यस्य स चरम ॥ हियकामएत्ति ॥ हित सुखनिबंधन वस्तु ॥ सुहकामए त्ति ॥ सुख शर्म्म ॥ पत्थकामएत्ति ॥ पथ्य दु खत्राण कस्मादेव इत्यतआह ॥ आणुकंपिएत्ति ॥ कृपावान् अतएवाह ॥ निस्सेयसिएत्ति ॥ नि श्रेयस मोक्ष स्तत्र नियुक्त इव नैश्रेयसिक ॥ हियसुहनिस्सेसकामएत्ति ॥ हित यत्सुख मदु खानुबधमित्यर्थ , तन्नि शेषाणा सर्वेषा कामयते वाञ्छति य

णसाव्रयाणं बहूणंसावियाण हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हियसुहनिस्सेसकामए सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! सणकुमारेणं ज्ञवसिद्धिए जाव णोअचरिमे । सणंकुमारस्स ज्ञंते ! देविंदस्स देवरस्रो केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता सत्तसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता , सेण ज्ञंते ! ताउ देवलोगाउ आउरकएणं जाव कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अंतंकरेहिइ । सेव ज्ञंते ज्ञंते ! त्ति

वकनो घणी श्राविकानो । हियकामए सुहकामए पत्थकामए । हितसुख निबन्धन वस्तु तेहनो वाछक सुख तेहनोवाछक । पत्थकामए आणुकंपिए । पथ्य दुख त्राण तेहनो वाछक कृपायें करो सहित । निस्सेयसिए । निश्रेयस मोक्ष तेत्रिषे जाणें । हियसुहणिस्सेसकामए सेतेणठ्ठेण गोयमा सणकुमारे देविंदे भवसिद्धिए । हित जे सुख अदुखनो बन्ध इत्यर्थ, ते निशेष समस्त तेहने कामय ते वाछे जे जाणे समस्त दुख रहित थाओ मुक्तिजाओ इत्यर्थ तेणे प्रयोजने ण वाक्यालकारे, हेगौतम । सनत्कुमार देवेंद्र । भवसिद्धिक भव्यछे । जावणोअचरिमे । यावत् चरिमछे, पणि अचरिम नही । सणकुमार सणभते देविंदस्स देवरणो । सनत्कुमारनी हेभगवन् । देवेंद्रनी देवराजानी । केवइयकालठिई पणत्ता गोयमा सत्तसागरोवमाणिठिई पणत्ता । केतला केतला कालनी स्थितिकही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । सात सागरोपमनी स्थितिकही । सेणभतेताओदेवलोगाओ आउक्खएण । ते सनत्कुमार हेभगवन् । ते देवलोकथी देव सम्बन्धी आऊखू पूर्ण करो । जावकहिउववज्जिहिति । यावत् किहां ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा महाविदेहेवासेसिज्झिहिति । हेगौतम । महाविदेह क्षेत्रने विषे सोभस्ये मोक्ष जास्ये । जाव अतकरेहिति । यावत् सर्व दुखनो अत करस्ये । सेवभते २ त्ति । तहत्ति हेभग

॥ टीका ॥

स तथा पूर्वोक्तार्थसङ्ग्रहायगाथे ॥ छठेत्यादि ॥ इहाद्यगाथाया पूर्वार्द्धपदाना पश्चार्द्धपदे सह यथा सङ्ख्यसम्बन्ध कार्यं, तथाहि-तिष्यकुरुदत्तसा ध्वो क्रमेणषष्ठमष्टमचतप, तथा मासो अर्द्धमासश्च ॥ भत्तपरिण्णत्ति ॥ अनशनविधि रेकस्य मासिक मनशन मन्यस्य चार्द्धमासिक मितिभाव, तथै कस्या ष्टवर्षाणि पर्यायो ऽन्यस्य षण्मासाइति द्वितीयागाथा गतार्था ॥ मोयसमत्तत्ति ॥ मोकाभिधाननगर्या मस्योद्देशकार्थस्य कीदृशी विकुर्वणे त्येतावद्रूपस्यो क्त्वा न्मोकैवाय मुद्देशक उच्यतइति ॥ इतितृतीयशतेप्रथम ॥ १ ॥ [ग्रंथ ४०००] प्रथमोद्देशकेदेवाना विकुर्व

॥ मूल ॥

गाहाउ । छठ्ठममासोअ द्धमासोवासाइं अठ्ठछम्मासा तीसगकुरुदत्ताणं तवभत्तपरिन्नपरियाउ ॥ १ ॥ उच्चत्तविमाणाणं पाउब्भवपेच्छणायसंलावे किच्चविवादुप्पत्ती सणंकुमारेयभवियत्तं ॥ २ ॥ मोयासम्मत्तो ॥ तईय सए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे णयरेहोत्था,

॥ भाषा ॥

वन् । गाहाओ । पूर्वोक्तार्थ संग्रह गाथा दोय कहेछे—छठ्ठममासोअ अद्धमासोवासाइ अठ्ठछम्मासा । तीसग कुरुदत्ताणं तवभत्तपरिणपरियाओ ॥ १ ॥ एपहिली गाथाने विषे पहिला बेपदनो पाछिला बेपद सघाते सबन्ध यथा संख्य करवो ते देखाडेछे—तिष्यक साधुने छठ तप कुरुदत्त साधुने अठम तप तथा तिष्यक साधुने एकमास कुरुदत्तने अर्द्धमास ए भत्तपरिणति अनशनविधि एकने मासिक बीजाने अर्द्धमासिक इतिभाव तथा एकने आठ वरसनो दीक्षापर्याय बीजाने छमासनो दीक्षापर्याय कह्यो ॥१॥ उच्चत्तविमाणाण पाउब्भवपेच्छणायसंलावे । किच्चविवादुप्पत्ती सणकुमारेयभवियत्तं ॥ २ ॥ उंचपणो विमाननो ईसिउच्चतरा इत्यादि इन्द्रने इन्द्र पासे आविवो अवलोकन करवो संभाषण करवो कार्यनो करवो विवादनो उत्पत्ति सनत्कुमार नो अधिकार भव्यपणो ए अधिकार कह्यो ॥२॥ तइयसयस्सपढमओ ३ ॥ १ ॥ मोकानाम नगरीने विषे परिमविकुर्वणा रूप उद्देशाने कह्याथो ए मो काएहिवे नामे उद्देशो कहीये ते पूर्णथयो ॥ १ ॥ ए पहिलो उद्देशे देवनो विकुर्वणा कही ॥ हिवे बीजेदेव विशेष होज असुरकुमारनी गतिगति प्ररूपणाने काजे ए कहेछे—ते णकालेण ते णसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । रायगिहणामणयरेहोत्था । राजगृह नामा नगर

॥ टीका ॥ योक्ता द्वितीयेतु तद्विशेषाणा मेवा सुरकुमाराणां गतिशक्तिप्ररूपणाये दमाह ॥ तेणामित्यादि ॥ एवंअसुरकुमारेत्यादि ॥ एव मनेन सूत्रक्रमेणेति स

॥ मूल ॥ जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सन्नाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव नट्टविहं उवदंसेत्ता जामेवदिसं पाउब्भूए तामेवदिसिपडिगए, भंतेत्ति ! भगवगोयमे समणं भगवं महावीरं वदइ नमसइ नमंसइत्ता एववयासी — अत्थिणभंते ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति, णोइणठेसमठे, एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव अत्थिण भंते ! ईसिप्पभाए पुढवीए

॥ भाषा ॥ इयो । जावपरिसापज्जुवासइ । श्रीवर्द्धमान स्वामी समोसरया यावत् परिषदा सेवाकरै । ते णकालेण ते णसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । चमरे असुरिंदे असुरराया । चमर असुरेंद्र असुरराजा । चमरचचारायहाणी । चमरचचा राजधानी । सभाए सुहम्माए । सभायें सुधर्माये । चमरसि सीहासणसि । चमरसिंहासनने विषे । चउसठीएसामाणियसाहस्सीहि । चउसठ सहस्र सामानिक इत्यादिक । जावनट्टविहिउवदंसेत्ता । यावत् रायप्रसेणी अध्ययनने विषे जिम सूरियाभदेव श्रीमहावीरस्वामी आगलि बत्तीस बद्ध नाटक कीधो तिम नाट्य विधि देखाडीने चमर । जामेवदिसिपाउब्भूयातामेवदिसिपडिगए । जे दिशियी आव्याहता ते दिशि एतले पोताने स्थानके पाछागया । भंतेत्तिभगवगोयमे समणभगवंमहावीरवदइणमसइणमसइत्ता एववयासी । हेभगवन् । इत्यामंत्रणे भगवत गौतम श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कारकरीने इमकहै । अत्थिणभंते इमोसेरयणप्पभाएपुढवीए । छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । एह रत्नप्रभा पृथिवीने । अहेअसुरकुमारादेवापरिवसंति । नीचे असुरकुमारदेव वसेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे एवजावअहेसत्तमाएपुढवीए । हेगौतम । ए अर्थ समर्थनही युक्तनही इम यावत् नीचे सातमी पृथिवीने विषे वसेछे तथा । सोहम्मस्सकप्पस्सअहे । सौधर्मनामा देवलोकने नीचे रहैछे । जावअत्थिणभंते । यावत् छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । ईसिप्पभाराए

असुरकुमारादेवा परिवसंति . णोइणठेसमठे . सेकहिखाइणं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गो
यमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए एवं असुरदेववत्तव्वयाए जाव
दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति . अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए हंता अ
त्थि . केवइयाणं भंते ! असुरकुमाराणंदेवाणं अहेगतिविसए पन्नत्ते ? गोयमा ! जाव अहे सत्तमाए पुढ
वीए , तच्चंपुण पुढविं गयाय गमिस्संतिय . किं पत्तियणंभंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गयाय ग

[illegible]

मिस्सतिय ? गोयमा ! पुव्ववेरियस्सवा वेयणउदीरणयाए पुव्वसंगइयस्स वेदणउवसामणयाए एवंखलु असुरकुमारादेवा तच्चंपुढवि गयाय गमिस्सतिय अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगतिविसए पन्नत्ते हंताअत्थि , केवइयाणं भंते! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियगइविसए पन्नत्ते? गोयमा ! जाव असंखेज्जादीवसमुद्दा नंदिस्सरवरं पुणदीव गयाय गमिस्सतिय। किं पत्तियणं भंते! असुरकुमारादेवा नंदिस्सरवरं दीवगयाय गमिस्सतिय गोयमा ! जेइमे अरहंता भगवंतो एएसिण जंमणमहेसुवा निक्खमणमहेसुवा

जास्ये । किंपत्तियणभंते असुरकुमारादेवा । स्यें प्रत्ययें कारणे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । असुरकुमारदेव । तच्चपुढविगयायगमिस्सतिय । त्रीजी वालुकप्रभा पृथिवी ताइं गया, जायछे, जास्ये, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुव्ववेरियस्सवावेदणउदीरणयाए । हेगौतम । पूर्व भवना वैरीजीव तिहांजाय ज पना ते जीवनें वेदनानी उदीरणा करवानें अर्थें अलगी वेदना उदें आवस्ये ते आकर्षीने वेगी आणीये ते उदीरणा कहीये तथा कोइक जीव । पुव्वस गइयस्सवेदणउवसामणयाए । पूर्वें भवनो मित्र सखाइ तिहां जाइ जपनो तेहनो वेदना उपशमाववाने अर्थें तेहथी उपशमे नहो पर रागभणी जा य । एवखलुअसुरकुमारादेवा । इम निश्चे असुरकुमार देव । तच्चपुढविंगयायगमिस्सतिय । त्रीजी वालुकप्रभा पृथिवी लगे गया, जायछे, जास्ये, वली गौतम पूछे—अत्थिणंभंतेअसुरकुमाराणदेवाण । छे हेभगवन् । असुरकुमार देवनो । तिरियंगइविसए पणत्ते । त्रीछो गतिनो विषय एतावता त्रीछो जाया कह्या । हंताअत्थि । हा गौतम छे । केवइयाणभंतेअसुरकुमाराणदेवाणतिरियगइविसए पणत्ते । केतलो एक ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । असुरकुमार देवनोत्रीछोगति विषय कह्यो एतले त्रीछो किहा लगे जाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावअसंखेज्जादीवसमुद्दानंदिस्सरवरपणदीवगयायगमिस्सतिय । हेगौतम । यावत् जंबूद्वीपथी मांडो असंख्याता द्वीपसमुद्रलगे जाइवानो विषयछे पणि नन्दीश्वर प्रधानद्वीपे गया, जायछे, जास्ये, दक्षिणदिशिना असुरकुमार उत्तर दिशिना नन्दीश्वर द्वीपलगे गया, जायछे, जास्ये, उत्तर दिशिना असुरकुमार दक्षिणदिशिना नन्दीश्वर द्वीपलगे गया, जायछे,

॥ टीका॥ चैव-उवरिं एग जोयणसहस्सं उगाहेत्ता हेठा चेग जोयणसहस्स वज्जेता मज्के अठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्यणं असुरकुमाराणं देवाणं चोसठि

॥ मूल ॥ णाणुप्पायमहिमासुवा परिनिव्वाणमहिमासुवा एवखलु असुरकुमारा देवा नदीस्सरवरं दीव गयाय गमिस्सतिय । अत्थिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाण उड्ढ गइविसए ? हंताअत्थि , केवइयंचणं भंते ! असुरकुमारा देवाण उड्ढगतिविसए ? गोयमा ! जाव अच्चुएकप्पं सोहम्मंपुणकप्पं गयाय गमिस्सतिय । किं पत्तियणं भंते ! असुरकुमारादेवा सोहम्मकप्पं गयाय गमिस्सतिय ? गोयमा ! तेसिणं देवाणं भवपच्चइय

॥ भाषा ॥ अने जास्ये, । किंपत्तियणभंतेअसुरकुमारादेवा । स्ये प्रयोजनने हेभगवन् ! असुरकुमार देव । नदीसरवरदीवगयायगमिस्सतिय । नन्दीस्वर प्रधान द्वीपप्रतें गया, जायछे, जास्ये, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेइमेअरहता भगवतोएएसिणजम्ममहेसुवा । हेगौतम । जे एह अढाई द्वीप पनरह कर्म भूमि माहे पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशिने विषै अरहत भगवत हुये, एहना जन्मना उत्सवने विषै । निक्खमणमहेसुवा । दीक्षा महोत्सवने विषै । णाणुप्पायमहिमासुवा । ज्ञान उपात उपजवानो महिमाने अर्थे । परिणिव्वाणमहिमासुवा । निर्वाण कल्याणक हुवे, ते महिमाने अर्थे । एवखलुअसुरकुमारा देवा । इम निश्चे असुरकुमारदेव । नदोसरवरदीवंगयायगमिस्सतिय । नन्दीस्वर वरद्वीप प्रतें गया, जास्ये, । अत्थिणभंतेअसुरकुमारादेवाण । छे हेभगवन् ! असुरकुमारदेव । उड्ढगतिविसए । उर्द्धगति विषय ऊंचो जाय इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हांगौतम छे। केवइयाणभंतेअसुरकुमाराणदेवाण । कीतला हेभगवन् असुरकुमार देवने। उड्ढगइविसए । उर्द्ध जाइवानो विषय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावअच्चुएकप्पे। हेगौतम । यावत् अच्युत बारमादेवलोक लगे विषयछे। सोहम्मपुणकप्पगयायगमिस्सतिय । सौधर्म देवलोकलगे गया, तथा जास्ये । किंपत्तियणभंते । स्ये प्रयोजने हेभगवन् । असुरकुमारादेवा । असुरकुमार देव । सोहम्मकप्पगयायगमिस्सतिय । सौधर्मनामा देवलोके गया, तथा जास्यें, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तेसिणदेवाणभवपच्चइए वेराणुबधे । हे गोतम । तेह देवने मानिकइर सवाते भव प्रयय पूर्व भवसबधो वेरानुबधे करी । तेणदेवाविकुव्वेमाणा । ते ण वाक्यालंकारे, देवक्रोधेकरी मोटो

॥ टीका ॥

भवणावासमयमहस्मा भवंतीति अक्खायमित्यादि ॥ विउव्वेमाणावित्ति ॥ संरंभेण मह वैक्रियशरीरं कुर्वंत ॥ परियारेमाणावत्ति ॥ परिचारयंत परकीयदेवीना भोग कर्तुकामा इत्यर्थ ॥ अहालहुस्सगाइति ॥ यथेति यथोचितानि लघुस्वकानि अमहास्वरूपाणि महतान्हि तेषा नेतु गोपयितुवा; शक्यत्वादिति, यथा लघुस्वकानि अथवा, लघूनि महान्ति वरिष्ठानीतिच वृद्धा ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना स्वयमित्यर्थ ॥ एगततति ॥ विजन । अतति ॥ देश ॥ सेकहमियाणिपकरेतित्ति ॥ अथ कि मिदानी रत्नग्रहणानन्तर मेकान्तापक्रमणकाले प्रकुर्वन्ति, वैमानिकास्ता दातृणामिति॥

॥ मूल ॥

वेराणुबधे तेण देवा विकुव्वमाणा परियारेमाणावा आयरक्के देवे वित्तासेंति, अहालहुसगाइं रयणाइ गहाय आयाए एगंतमंत अवक्कमंति। अत्थिण भंते ! तेसिं देवाणं अहालहुसगाइं रयणाइं ? हताअत्थि । सेकह मिदाणि पकरेइ तउ सेपच्छाकाय पव्वहंति। पभूणं भंते ! तेसिं असुरकुमारादेवा तत्थगयाचेव समाणा ताहिं

॥ भाषा ॥

वैक्रियशरीर करतायका अथवा । परिवारेमाणेवाआयरक्खेदेवेवितासेति । पारकी देवी सघाते भोग करवा वाछतो आत्मरक्षक देवने पणि त्रास पमाडे। अहालहुसगाइ रयणाइ गहाय आयाए एगतमत अवक्कमति । यथोचित लघुस्वक मोटेरूपे नही स्या माटे ते देवने मोटा रत्न आणवा तथा गोपवानो समर्थाई नही ते माटे नान्हा रत्न ग्रहीने पोते एकात जनरहित देश एतले रत्न लेईने एकात स्थानके जाय वलीगौतम पूछेछे—अत्थिणभंतेतेसिं देवाण। छे हेभगवन् । तेह वैमानिकदेवने। अहालहुसयाइरयणाइं । यथोचित नान्हा रत्न इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हा गौतम छे। सेकहमिदाणिपकरेइतओपच्छासेकायपव्वहेइ। अथ हिवे स्यु करे रत्न ग्रहणकरी एकाते गयो पछे रत्नना लेणहारने देवना कायप्रते प्रहारकरी व्यथा पीडा उपजावे एतले ते असुरकुमार देवने वैमानिक देवें प्रहार दीधा थका महावेदना हुवे, ते जघन्य अतर्मुहुर्त्त ताइ रहे उत्कृष्ट छमासताई रहे। पभूणभंतेतेसिअसुरकुमारादेवा। समर्थछे हेभगवन् । ते असुरकुमारदेव । तत्थगयाचेवसमाणा । ते देवलोकने विषे रह्या थकाज निश्चे। ताहिंअच्छराहिंसद्धि । ते देवीओ सघाते। दिव्वाइंभोगभोगाइभुजमाणाविहरित्तए। देव सबन्धी भोग भोगविवायोग्य भोग भोगवता विचरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा

तउसेपच्छाकायपवत्तितित्ति ॥ ततो रत्यादानात् ॥ पच्छत्ति ॥ अनन्तरं ॥ मेत्ति ॥ यथा रत्यादाकृता मसुराणां काय देव प्रव्यत्ते , प्रजारे मंशत्ति

अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाविहरित्तए , णोइणट्ठेनमट्ठे तेण तत्तं पडिनियत्तंति पडिनि यत्तित्ता इहमागच्छइ इहमागच्छइत्ता जइणताओ अच्छराओ आढायंति परियाणंति। पभूणंभंते! असुरकु मारा देवा ताहिंअच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए , अहणंताओ अच्छराओ नो आढायंति नोपरियाणंति णोणपभूते असुरकुमारादेवा ताहिंअच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए , एवंखलु गोयमा ! असुरकुमारादेवा सोहम्मंकप्पं गयाय गमिस्सति । केवइकालस्सणं भंते !

णोइणट्ठे समट्ठे । हेगोतम । ए अर्थ समर्थनथी युक्तनथी । तेणतओपडिनियत्तति । ते असुरकुमारदेव तिहां थको देवांगना पाछा निवर्त्ते । तओ पडिणियत्तित्ता । तिहांथी पाछा निवर्त्तीने । इहमागच्छति । असुरकुमार भवनने विषे आवे । जइणताओअच्छराओ । जो ते आपणा स्वामिनी, ते देवीओ आढायति परियायति । आदर करे स्वामीपणो जाणे । पभूणंतेअसुरकुमारादेवा । समर्थ हुवे, ते असुरकुमारदेव । ताहिंअच्छराहिंसद्धिं । ते इन्द्राणी सो सवाते । दिव्वाइं भोगभोगाइं । देव संबन्धी भोग भोगविवा योग्य भोग । भुंजमाणाविहरित्तए । भोगवता थका विचरे । अहणताओ अच्छराओ । अथ ते देवीओ । णोआढायति । आदर नकरे । णोपरियाणति णोणंपभूते । स्वामीपणे नजाणे नथी समर्थ ते । असुरकुमारादेवा । असुरकुमारदेव । ताहिंअच्छरानिसद्धिं । ते देवीओ सवाते । दिव्वाइंभोगभोगाइंभुंजमाणाविहरित्तए । दिव्यप्रधान भोगनि ॥ योग्य भोग भोगवता थका विचरे । एवंख लुगोयमा असुरकुमारा देवा । इम निश्चे हेगौतम । असुरकुमारदेव । सोहम्मकप्पगयायगमिस्सति । सो धर्म देवलोके गया, जाय छे जासे । केवइयस्स कालस्सणभंते तेअसुरकुमारादेवाउड्ढंउप्पयंति । केतलेकाले ए आश्चर्यकारि, हेभगवन् । असुरकुमारदेव । उंचा जाय । [illegible] यावत् सौधर्मनामा देवलोके गया, जाय छे, जास्ये, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणंताहिं ओसप्पिणीहिं । हेगौतम । अनन्ता उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी ग

॥ टीका ॥

वैमानिका देवा स्तेषाच प्रव्यथिताना वेदना भवति जघन्येना तर्मुहूर्त मुत्कृष्टत· षण्मासान् यावत् शवराइवेत्यादौ शवरादयो नार्यविशेषा· ॥ ग ड्डवत्ति ॥ गर्त्ता दुग्गवत्ति ॥ जलदुर्गादि ॥ दरिवत्ति ॥ दरी पर्वतकन्दरा ॥ विसमंवत्ति ॥ विषमं गर्त्ततर्वाद्याकुलभूमिरूप ॥ निस्साएत्ति ॥ निश्र

॥ मूल ॥

असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मकप्प गयाय गमिस्संतिय? गोयमा! अणंताहिं उसप्पिणी हिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं समइक्कंताहिं अत्थिणं एसन्नवे लोयत्थेरयभूए समुप्पज्जइ, जसं असुरकुमा रा देवा उड्ढं उप्पयति, जाव सोहम्मेकप्पे। किंनिस्साएणं भंते! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मे कप्पे? गोयमा! सेजहानामए इह सबराइवा बब्बराइवा टकणाइवा भूचुयाइवा पण्हायाइवा पुलिंदाइवा एगमहं वणंवा गड्डंवा दुग्गंवा दरिंवा विसमंवा पव्वयंवा णीसाए सुमहल्लमवि असवलंवा

॥ भाषा ॥

वीसादिक ते उत्सर्पिणी कहीये। अणताहिं अवसप्पिणोहिंसमइक्कताहिं। अनन्ती अवसर्पिणी वटती जाय आऊखो शरीरादिक ते अवसर्पिणी कहीये जाते थके तेकाल । अत्थिणएसभावेलोयत्थेरयभूएसमुप्पज्जइ। छे ण वाक्यालंकारे, एभावथके लोकने विषे आश्चर्यभूतवार्त्ता ऊपजे । जणंअसुरकुमारा देवा। जे भणी ण वाक्यालंकारे, असुरकुमार देव। उड्ढंउप्पयति। ऊंचा जाय। जावसोहम्मेकप्पे। यावत् सौधर्मनामा देवलोक लगे। किंणिस्साएणंभते असुरकुमारादेवाउड्ढंउप्पयति। किसी निश्राये शरणेंकरीने हेभगवन्। असुरकुमारदेव ऊंचाजाय। जावसोहम्मेकप्पे। यावत् सौधर्मनामा देवलोकल गे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेजहानामए। हेगौतम। ते यथा नामें दृष्टाते। इहसवराइवा बब्बराइवा। इहा सवर अनार्य ते देशना ऊपना मनुष्य चो रादिक बर्बर अनार्यदेश तेहना ऊपना।टकणाइवा। टंकण अनार्य देश तेहना ऊपना।भूचुयाइवा पण्हायाइवा। भूचुक अनार्यदेश तेहना ऊपना प्रश्न अनार्यदेश तथा गाठोशेडा इत्यादिक देशना ऊपना।पुलिंदाइवा। भिल्लादिक। एगंमहंवणंवा। एक मोटो वन अथवा। गड्डंवा दुग्गंवा दरिंवा वि समंवा पव्वयंवा खाड अथवा दुर्ग दुर्गना दोय। भेद, जलदुर्ग १ स्थलदुर्ग २ दरोगुफा विषम खाड पर्वत इत्यादिकनी। णीसाए सुमहल्लमवि असवलंवा हथिव

या श्रित्य ॥ धणुबलवत्ति ॥ धनुर्द्धरबलं ॥ आगलेतित्ति ॥ आकलयति जेष्याम उत्पष्यवसन्तीति ॥ नन्नत्यत्ति ॥ ननु निश्चित मत्र इहलोके अथवा; अरिहंतेवागिस्साए उड्ढउप्पयति ॥ नान्यत्र तन्निश्रया अन्यत्र नता विने त्यर्थ ॥ दागामागत्ति ॥ दानमेष्या ॥ छउमत्यकालियाएत्ति ॥ छद्मस्थका

हत्थिबलंवा जोहबलंवा धणुबलंवा आगलेति, एवामेव असुरकुमारादेवा णण्णत्थ अरहंतेवा अरहंतचेइयाणिवा अणगारे भावियप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयति जाव सोहम्मे कप्पे, सव्वेविणं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयति, जाव सोहम्मेकप्पे गोयमा ! णोइणठेसमठे । महिड्ढियाणं असुरकुमारादेवा उड्ढं

लवा जोहबलवा धणुबलवा । आगलेति । निश्रायें गरण करीने प्रतिहि घणु मोटा घोडासहित वल कटक हाथीनो कटक जोध सुभटनो वल कटक धनुषने धरणहारनो वल कटकने आकले अजय्यें जोपण्णू इम चितवे । णण्णत्थअसुरकुमारा देवा णण्णत्थ । इणें दृष्टाते असुरकुमारदेव अन्यत्र निश्रा कीधा विना । अरहंतेवाअरिहंतचेइयाणिवा । अरहंत तथा अरहंतना चैत्यक जिन भवन तथा जिनादिकनी प्रतिमा । अणगारेवा । साधु चारित्रीयो । भावियप्पणोणिस्साए । भावितात्मा चारित्रने गुणेंकरीने युक्त छे ए तेहनी निश्रायें शरणे आश्रयो । उड्ढउप्पयति । ऊंचो ऊंचो जाय । जावसोहम्मेकप्पे यावत् सौधर्मनामादेवलोक लगे वलीगौतमस्वामी पूछे छे — सव्वेविणभंतेअसुरकुमारादेवाउड्ढउप्पयति । सगलाद ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । असुरकुमारदेव ऊंचा जाय । जावसोहम्मेकप्पे । यावत् सौधर्मनामा देवलोकलगे प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमाणोइणठेसमठे । हे गौतम अर्थ समर्थ नही युक्त नही । महिड्ढीयाणंअसुरकुमारादेवा उड्ढउप्पयति । महर्द्धिक असुरकुमारदेव ऊंचा जाय । जावसोहम्मेकप्पेएसविणभंते चमरे असुरिंदे असुरराया यावत् सौधर्म देवलोक लगे एहोज मलन जे नाटक करिगयो ते अपि निश्चे हेभगवान् चमर असुरेंद्र असुरराजा । उड्ढउप्पइयपुव्वे । ऊंचो गयो पूर्वे । जावसोहम्मेकप्पे । यावत् सौधर्म देवलोकें गयो प्रतिप्रश्न उत्तर । हंतागोयमाएसविणंचमरे । हांगौतम एहोज पलन चमर । असुरिंदे असुरराया असुरेंद्र असुरराजा । उड्ढउप्पइयपुव्वे । ऊंचोगयो पूर्वे । जावसोहम्मेकप्पे । यावत् सौधर्म देवलोकलगे । एसोणभंतेचमरे असुरिंदे । अहो इत्यादि

उप्पयंति , जाव सोहम्मेकप्पे । एसवियणं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइय पुव्वे जाव सोहम्मे कप्पे ? हंता गोयमा ! एसवियण चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइय पुव्वे जाव सोहम्मेकप्पे । अ होणं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महजुत्तीए जाव कहिं पविठा कूडागारसाला दिठंतो भाणियव्वो । चमरेण भंते! असुरिंदेण असुररस्रो सादिव्वा देविड्ढी तंचेव किस्रालद्धा३ एवंखलु गोयमा! तेणकालेणं तेणंसमएणं इहेव जम्बुद्दीवेदीवे भारहेवासे विंझगिरिपायमूले वेभेलेणाम संनिवेसे होत्था , व स्रउ , तत्थणं वेभेलसंनिवेसे पूरणेनामं गाहावई परिवसइ , अड्ढेदित्ते जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहानेयव्वा ,

हेभगवन् ! चमर असुरेंद्र असुरराजा । उड्ढउप्पयंति । ऊंचो गयो पूर्वे । जावसोहम्मोकप्पो । यावत् सौधर्म देवलोकेगयो इतिप्रश्न उत्तर । हंतागोयमा एसवियणचमरे असुरिंदे असुरराया । हांगौतम । एहीज प्रत्यक्ष चमर असुरेंद्र असुरराजा । उड्ढउप्पइयपुव्वे । ऊंचो गयो पूर्वे । जावसोहम्मोकप्पो । यावत् सौधर्म देवलोक लगे । अहोणभंतेचमरेअसुरिंदे । अहो इत्याश्चर्ये हेभगवन् ! चमर असुरेंद्र । असुररायामहिड्ढीए । असुरराजा महर्द्धिक । मह ज्जुइए । महाकान्तिनो धणी ए एतली ऋद्धि विकुर्वीने । जावकहिंपविठ्ठा । यावत् किहा गई किहा पेठी । कूडागारसालादिट्ठंतो भाणियव्वो । इहा कू डागारसाला दृष्टान्त कहवो, जिम पर्वतना शृङ्गे ते मनुष्यनो वृन्द रह्यो मेह आवतो देखो कूडागारशाला गुफामाहि पेसे तिम एजाणवो । चमरेणभ तेअसुरिंदे असुररस्रो । चमर हेभगवन् ! असुरेंद्र असुरराजा । सादिव्वादेविड्ढी । ते मनोज्ञ देवतानो ऋद्धि । तचेवकिस्रालद्धाइ । तिमज किसे हेतु लाधी पामी सनमुख हुवे । एवंखलुगोयमा । इम निश्चे हेगौतम । तेणंकालेण तेणसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । इहेवजम्बूद्दीवेदीवे । एहीज जम्बूद्वीप नाम द्वीपनेविषे । भारहेवासे । भरतनामा क्षेत्रनेविषे । विंझगिरिपायमूले । विन्ध्याचल पर्वतनी निकट मूलनेविषे । विभेलेनामसंनिवेसेहो त्था वणग्रो । वेभेलनामे सन्निवेश नगर पार्श्ववर्ती ग्राम हुयो वर्णक उवाई उपांगमाहे कह्यं तिम जाणवो । तत्थणंविभेलेसंनिवेसे । तिहां वेभेलनामा

॥ मूल ॥

नियत्तणियं मंडलं आलिहित्ता सलेहणाज्झूसणाज्झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवन्ने तेणं कालेण तेग समएण अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छठ्ठछठेणं अनिक्खित्तेण तवो कम्मेण संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामंदूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमार पुरे नगरे जेणेव असोयवणसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए तेणेव उवागच्छा मि उवागच्छामित्ता असोयवरपायवस्स हेठेपुढविसिलावट्टयंसि अठमभत्तपगिण्हामि, दोविपाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविठदिठी अणमिसनयणे ईसिंपब्भारगएणं काएण अहापणिहिएहिंगत्तेहिं

॥ भाषा ॥

आलेखाने करोने। सलेहणाज्झूसणाज्झूसिए। सलेखणा तप तेहनो सवायें सेवितथका। भत्तपाणपडियाइक्खिए। भात पाणो पच्चखोने। पाओवगमण निवन्ने। पादपोपगमन अनशने रहै। तेणकालेण तेणसमएण। ते काललेविषे ते समयनेविषे। अहंगोयमा। हुं हेगोतम। छउमत्थकालियाए। छद्म स्थ कालने विषे एतले अम्हने केवल ज्ञान ऊपनो हतो। एक्कारसवासपरियाए। इग्यारमा वरसने पर्याये दोचा लोधा इग्यार वरसथया इत्यर्थ। छठ्ठ छठेणअणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं। छठ्ठछठ्ठ अतर रहित एतले निरन्तर तपकर्म क्रियायें करो। संजमेणतवसा। संयमे करो तपेकरो। अप्पाणभावेमाणे। आ त्माने भावता थका। पुव्वाणुपुव्विचरमाणे। पूर्वानुपूर्वें चालता थका। गामाणुगामदूइज्जमाणे। गामथो बीजेगामे जाताथका। जेणेवसुसमारपुरेण यरे। जिहां सुसमारपुर नामा नगरछे। जेणेवअसोयवणसडउज्जाणे। जिहां अशोक वनखंड नामे उद्यानछे। जेणेवअसोयवरपायवे। जिहां अशोक प्र धान मनोज्ञ पादपछे। जेणेवपुढविसिलावट्टए। जिहां पृथिवी शिलापटछे। तेणेवउवागच्छामिउवागच्छामित्ता। तिहां आव्यो तिहां आवोने। असोगवर पायवस्सहेठा। अशोकप्रधान वृक्षने नोचे। पुढवीसिलावट्टयंसि। पृथिवो शिला पटने विषे। अठ्ठमभत्तपगिण्हामि। तोन उपवास रूप पच्चखाण ग्रहो ने करोने। दोविपाएसाहट्टु। बेऊ पग सहरोने एतले जिन मुद्रायें। वग्घारियपाणी। लांबो बांह करोने। एगपोग्गलनिविठदिठो। एक पुद्गलने विषे

॥ टीका ॥ लएव छद्मस्थकालिका तस्यां ॥ दोविपाएसाहट्टुत्ति ॥ संहृत्य संहृतौ कृत्वा जिनमुद्रयेत्यर्थः ॥ वग्घारियपाणित्ति ॥ प्रलम्बितभुजः ॥ ईसिपब्भारग

॥ मूल ॥ सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता विहरामि । तेणंकालेणं तेणंसमएणं चमरचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया याविहोत्था, तएणंसे पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिंभत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता कालमासे कालकिच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववन्ने, तएणंसे चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववन्ने पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तंजहा—आहारपज्जत्तीए जाव भासा

॥ भाषा ॥ थापीछे दृष्टि चक्षु । अणमिसनयणे । मेषोन्मेष आंख ढाकवी उघाडवी तिणें रहित । ईसिपब्भारगएणकाएण । थोडोसो आगल थको मुख नम्योछे । एगराति यापीछे इत्यादि ... अहिपणिहिएहिगएहिं । यथास्थितपणे थाप्याछे गात्र जेणें अथवा तीनयोग थिर राख्याछे । सव्विंदिएहिंगुत्तेहिं । सर्वं इन्द्री गोपव्याछे । एगराति यंमहापडिम । एक रात्रिनी महाप्रतिमा प्रते । उवसंपज्जित्ताणंविहरामि । अंगीकार करीने विचरू । तेणंकालेणं तेणंसमएणं । ते कालने विषे ते समय ने विषे । चमरचंचारायहाणी । चमरचंचाराजधानी । अणिंदा अपुरोहियायाविहोत्था । इन्द्र रहित प्रोहित रहित शांतिक्रिया करणहार तेह प्रोहित तिणें रहित थई । तएणंसेपूरणेबालतवस्सी । तिवारे ते पूरण नामा बालतपस्वी । बहुपरिपुण्णाइं । घणा प्रतिपूर्ण पूरा दुवालसवासाइं । बार वरस ल गे । परियागपाउणित्ता । ते पर्याय पालीने एतले टानमयो प्रव्रज्या पालीने । मासियाएसंलेहणाए । मासनो संलेखणाये । अत्ताणंझूसेत्ता । आत्माने वोसिरावीने । सट्ठिभत्ताइं । साठ भात । अणसणाएछेदित्ता । अनशन प्रतें छेदीने । कालमासेकालकिच्चा । काल अवसरने विषे काल करीने । चमर चंचाएरायहाणीए । चमरचंचाराजधानीये । उववायसभाए । उपपात सभाये । जावइंदत्ताए उववन्ने । यावत् इन्द्रपणें ऊपनो । तएणंसेचमरे असुरिंदे तिवारे ते चमर असुरेंद्र । असुरराया । असुर राजा । अहुणोववन्ने । तत्कालनो ऊपनो । पंचविहाए । पांच प्रकारनो । पज्जत्तीए । पर्याप्त सघाते । प

॥ टीका ॥

एगं ॥ प्राग्भार' अग्रतो मुख मवनतत्वं ॥ अहापणिहिएहिंगाएहिंति ॥ यथाप्रणिहितै र्यथास्थितै' ॥ वीससाएत्ति ॥ स्वभावतएव ॥ पासइयतत्ति ॥ पश्यतिच तत्र सौधर्म्मकल्पे ॥ मघवति ॥ मघा महामेघा स्ते यस्य वशे सत्यसौ मघवा नत स्त ॥ पागसासणति ॥ पाको नाम बलवान् रिपु स्त य शास्ति निराकरो त्यसौ पाकशासनो त स्त ॥ सयक्कउत्ति ॥ शतं क्रतूना प्रतिमाना मभिग्रहविशेषाणा श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणावा; कार्तिकश्रेष्ठित्वापेक्षया यस्या सौ शतक्रतु रत स्तं ॥ सहस्सक्खंति ॥ सहस्र मक्ष्णां यस्यासौ सहस्राक्षो त स्त इन्द्रस्य किल मन्त्रिणा पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां चाक्ष्णा मिन्द्रप्रयोजनव्यापृततये न्द्रसम्बन्धित्वेन विवक्षणा तस्य सहस्राक्षत्वमिति ॥ पुरंदरत्ति ॥ असुरादिपुराणा दारणात्पुरन्दर स्त ॥ जावदसदिसाउत्ति ॥ इह यावत्करणात् ॥ दाहिणद्धलोगाहिवई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई एरावणवाहणा सुरिंद अरय वर

॥ मूल ॥

मणपज्जत्तीए , तएणंसे चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गएसमाणे उड्ढंवीससाए उहिणा आभोडए जाव सोहम्मेकप्पे पासइय , तत्थसक्कंदेविंदं देवराय मघवं पागसासणं सयक्कउं सहस्सक्खं वज्जपाणिं पुरंदर जाव दसदिसाउ उज्जोवेमाण पभासेमाणं सोहम्मेकप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे

॥ भाषा ॥

ज्जत्तिभावगच्छइ तजहा। पर्याप्त भाव पाम्या गयो ते कहेछे—आहारपज्जत्तीए। आहार पर्याप्ति । जावभासमणपज्जत्तीए। यावत् भाषा मन पर्याप्ति । तएणसेचमरे। तिवारे ते चमर। असुरिंदे असुरराया। असुरेन्द्र असुरराजा। पचविहाएपज्जत्तीए। पाच प्रकारनी पर्याप्ति करी। पज्जत्तिभावगतेसमाणे । पर्याप्ति भाव प्रतें गयाथका। उड्ढंवीससाए। ऊ चा स्वभावे एतले सहजे कारण विना। ओहिणाआभोएइ। अवधिज्ञाने करी जोवे। जावसोहम्मोकप्पोपासइय। यावत् सौधर्म नामा देवलोक देखे। तत्थसक्कंदेविंददेवराय। तिहा शक्र देवेंद्र देवराजा। मघवपागसासण। मेघमालीदेव वसिवर्त्तेछे जेहने, पाकनामे बलवतरिपु जेह प्रतें निराकरे। सयक्कउंसहस्सक्खं। कार्त्तिकसेठने भवे १०० प्रतिमा अभिग्रह वह्या, तेमाटे शतक्रतु, इन्द्रने पांचसे मंत्रीश्वरछे ते एकेकाने बेबे आखछे ते मिल्या सहस्र आखछे ते इन्द्रने प्रयोजने प्रवर्त्ततेकारण सहस्राक्षनाम। वज्जपाणि पुरदरं जाव दसदिसा

॥ टीका ॥ वत्थधरं, ॥ अरजासिचतानि अम्बरवस्त्राणिच स्वच्छतया काशाकल्पवसना न्यरजौंबरवस्त्राणि तानि धारयति यं स तथा' तं ॥ आलइयमालमउड॥ आलगितमाल मुकुट यस्य स तथा त, नवहेमचारुचित्तचचलकुडल विलिहिज्जमाणगंड, नवाभ्यामिव हेम्न सत्काभ्या चारुचित्राभ्या चचलाभ्या कुडलाभ्या विलिख्यमानौ गंडौ यस्य स तथा तं इत्यादि ताव द्वाच्य ॥ जावदिव्वेण तेणदिव्वाएलेसाएत्ति ॥ अथ यत्र य त्परिवार यत् कुर्वाणच त पश्यति, तयादर्शयितुमाह ॥ सोहम्मेइत्यादि ॥ अप्पत्थियअप्पत्थियएत्ति ॥ अप्रार्थित प्रार्थयते य स तथा ॥ दुरतपतलक्खणेत्ति ॥ दुरन्तानि दुष्टावसाना न्यऽतएव प्रान्तानि अमनोज्ञानि लक्षणानि यस्य स तथा ॥ हीणपुसचाउद्दसेत्ति॥ हीनाया पुण्यचतुर्द्दश्या जातो हीनपुण्यचातुर्द्दश', किल चतुर्द्दशीतिथि पुण्या जन्माश्रित्य भवति, साच पूर्णा त्यन्तभाग्यवतो जन्मनि भवति, अत आक्रोशता उक्त–॥ हीणपुसचाउद्दसेत्ति ॥ जसममइत्या

॥ मूल ॥ सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ पासइत्ता इमेयारूवे अ ज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था , केसण एस अप्पत्थियपत्थए दुरतपतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुसचाउद्दसे जण मम इमे एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए जाव दिव्वे देवाणुभावे ल

॥ भाषा ॥ षोउज्जावेमाणे पभासेमाणे। वज्रआयुध हाथने विषेछे जेहने, असुरकुमार देवना दारणहार यावत् दश दिशानेविषे देहनीकाते करी तथा आभरणनाकाते करी उद्योत करता प्रतें प्रभा तेज करता प्रतें। सोहम्मेकप्पे। सौधर्मनामा देवलोकने विषे। सोहम्मवडिसएविमाणे। सौधर्मावतसक विमानने विषे। सभाएसुहम्माए। सभा सुधर्माने विषे। सक्कसिसीहासणंसि। शक्रनामा सिंहासनने विषे। जावदिव्वाइंभोगभोगाइंभुंजमाणपासइ २ त्ता। यावत् देव संबधी भोगविवा योग्य भोग भोगवतो थको देखे देखीने। इमेयारूवे अज्झत्थिएचिंतिए। एह एहवेरूपे अध्यात्मिक चिंतित। पत्थिएमणोगएसकप्पेसमुप्पज्जित्था। प्रार्थित स्मरणरूप मनमाहि सकल्प उपनो एहवो मनमे चिंतववालागो। केसणएसअप्पत्थिय पत्थए। कुण एह अप्रार्थितनो प्रार्थणहार एतले मरणनो वाछणहार। दुरतपतलक्खणे। दुष्ट अंत छेहला पत अमनोज्ञ लक्षणनो धणी। हिरिसिरिपरिवज्जिए। लाज लक्ष्मी तिणेकरी रहि

दि ॥ ममंति ॥ मम अस्या मेतद्रूपायां दिव्यायां देवर्द्धौ सत्यां तथा दिव्ये देवानुभागे लब्धे प्राप्ते अभिसमन्वागते सति ॥ उप्पिंति ॥ ममैव ॥ अ

द्धपत्ते अभिसमन्नागए उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ , एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता सामाणिय परिसोववन्नए देवे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवं वयासी—केसणं एस देवाणुप्पिया ! अप्पत्थियपत्थए जाव भुंजमाणे विहरइ , तएणंसे सामाणियपरिसोववन्नगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररन्नो एववुत्ता समाणा हठतुठजावहयहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिकट्टु जएणं विजएणं

त । ह्योणपुणचाउद्दसे । होण जे पन्य चतुर्दशी तेहने विषे ऊपनो । जणममइमाएण्याकवाण । जे भणो पवाक्यालकारे, मुभने पइवी एहवे रूपेकरी स हित । दिव्वाएदेविड्ढीए । मनोज्ञ देवतानी ऋद्धि । जावदिव्वेदेवाणुभावेलद्धेपत्ते । यावत् मनोज्ञ देवतानी काति देवतानो अनुभाव लाधो पाम्यो । अभिसमणागए । सनमुखथया हुता । उप्पिं अप्पुस्सुए । माहरे ऊपर अल्प थोडो उछरग तेहने । दिव्वदव्वाइभोगभोगाइंभुंजमाणे विहरइ । देवसं बंधी मनोज्ञ भोग लिवा योग्य भोग भोगवतो थको विचरे । एवंसपेहेइ २ त्ता । इम चिन्तवे इम चिन्तवीने । सामाणियपरिसोववणए । सामानिक परि षदाना ऊपना एतले इन्द्रने स्वामीपणे धारेछे पर इन्द्र समान ऋद्धिवंत छे । देवेसद्दावेइ २ त्ता । ते देवने तेडावे ते देवने तेडावीने । एववयासी । इम कहे । केसणएसदेवाणुप्पिया अप्पत्थियपत्थए । कुण एह हेदेवानुप्रिय । अप्रार्थितनो वांछणहार । जावभुंजमाणेविहरइ । यावत् देवसबन्धी भोग भोगवतो थको विचरे । तएणतेसामाणियपरिसोववणगादेवा । तिवारे ते सामानिक परिषदाना ऊपना देव । चमरेण असुरिंदेण । चमर असुरेंद्र । असुररन्नो एवव त्तासमाणा । असुरराजा इमकह्यांथका । हट्ठतुट्ठजावहयहियया । हर्ष पाम्या संतोष पाम्या यावत् प्रीतिकारी हृत हृदय थया । करयलपरिग्गहिय । बे हाथ जोडीने । दसनहसिरसावत्त । दश नख एकठाकरीने । मत्थएअंजलिकट्टु । मस्तक सघाते आवर्त्त अंजलि करीने । जएण विजएण वद्धावेइ २ त्ता । जय विजय तुम्हारो थाओ इम शब्द कहता वधावे वधावीने । एवंवयासी । इम कहे । एसणदेवाणुप्पिया । एह ण वाक्यालंकारे, हेदेवानुप्रिय । सक्केदे

प्युस्सुयत्ति ॥ अल्पौत्सुक्य ॥ अच्चासाइत्तएत्ति ॥ अत्याशातयितुं च्छायाया भ्रंशयितुमिति ॥ उसिसेत्ति ॥ उग्र कोपसन्तापात् कोपसन्तापजं चो

वट्ठावेंति एववयासि—एसण देवाणुप्पिया ! सक्कोदेविंदे देवराया जाव विहरइ , तएणंसे चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणियपरिसोववन्नगाण देवाण अंतिए एयमठं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते रुठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेसामाणियपरिसोववन्नए देवे एववयासी , अन्नेखलु भो ! सेसक्के देविंदे देवराया, अन्नेखलु भो ! सेचमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए, खलु भो ! से सक्केदेविंदे देवराया अप्पिड्ढिए खलुभो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया , तंइच्छामिणं देवाणुप्पिया ! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चा

विदेदेवरायाजावविहरइ। शक्र देवेन्द्र देवराजा यावत् सौधर्म देवलोके देवसबन्धी भोग भोगवतो थको विचरे। तएणसेचमरे। तिवारे ते चमर। असुरिंदे असुरराया। असुरेन्द्र असुरराजा। तेसिंसामाणियपरिसोववन्नगाणदेवाण अंतिए। तेहना सामानिक परिषदाना उपना जे देव एतले सामानिक देवना समीपे मुखथी। एयमठ्ठसोच्चानिसम्म। एहवो अर्थ सांभलीने हृदयधारीने। आसुरुत्तेरुठ्ठे। उतावलो कोपे चढ्यो रुठो। कुविएचंडिक्किए। क्रोध उदयथयो प्रगट्यो रौद्ररूप जेहने। मिसमिसेमाणे। क्रोधकरी देदीप्यथयो थईने। तेसामाणियपरिसोववन्नएदेवे। ते सामानिक परिषदाना उपना देवना समूह प्रते। एववयासी। इम कहतो हुयो। अन्नेखलुभोसेसक्केदेविंदेदेवराया। वीजो कोईकछे निश्चे अहो सामानिक देवताओ ते शक्र देवेन्द्र देवराजा। अन्नेखलुभोसे चमरे असुरिंदे असुरराया। अनेरो कोईकछे निश्चे अहो सामानिक देवताओ ते चमर असुरेन्द्र असुरराजा वली चमर कहे छे—महिड्ढीएखलुभोसेसक्केदेविंदेदेवराया। महर्द्धिक निश्चे अहो देवो ते शक्र देवेन्द्र देवराजा। अप्पिड्ढिएखलुभोसे चमरे असुरिंदे असुरराया। अने अलप थोडो रूद्धिनो धणोछे निश्चे अहो सामानिक देवो चमर असुरेन्द्र असुरराजा एसरूप जाणोछो। तंइच्छामिणदेवाणुप्पिया। तेह भणी वांछूं ण वाक्यालंकारे, अहोदेवानुप्रियाओ। सक्कं देविंदंदेवरायं। शक्रप्रते देवेन्द्रप्रते देवराजाप्रते। सयमेवअच्चासाइत्तएत्तिकट्टु। आपणपेईज अतिघ

स्मत्व , कस्यचि त्स्वभावतोपि स्यादित्याह ॥ उसिणभूएत्ति ॥ अस्वाभाविक मौष्ण्यं प्राप्तइत्यर्थ ॥ अगत्ति ॥ सहायाभावात्' एकत्वच बहुपरिवारभा

साहित्तएत्तिकट्टु उसिणेउसिणभूए जाएयाविहोत्था , तएणसे चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिंपउजइ , पउं जइत्ता ममंओहिणा आभोएइ आभोएइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था , एवंखलु समणेभग वमहावीरे जंबुद्दीवेदीवे भारहेवासे सुंसुमारपुरे नगरे असोगवणसंडे उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि अठमभत्तं परिगिण्हित्ता एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तंसेयं खलु मे समणंभगवंमहावीरं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तएत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहेइत्ता सय

ण् आभाये करो भग पमाडिवाने एतले गांभायो पाडवाने इम करोने। उसिणे उसिणभूएजाएयाविहोत्था। कोप सतापथो उगहयो, कोप सताप उ ष्णपणो काई एकने स्वभावथो पणि हुवेछे, एतलामाटे कहेछे—अस्वाभाविक कोपपणा प्रतें पाम्यो एतले नवो नवो कोप ऊपजे। तएणसेचमरे असुरिंदे असुरराया। तिवारे ते चमर असुरेन्द्र असुरराजा। ओहिंपउजइ २ त्ता। अवधिज्ञान प्रते प्रयुंजे उपयोगथो प्रयुंजोने। ममओहिणाआभोएइ २ त्ता। मुझने अवधिज्ञाने करो अवलोकन करे। इमेएयारूवे। एह एहवे रूपे। अज्झत्थिएजावसमुप्पज्जित्था। अध्यात्मिक चिंतित प्रार्थित यावत् मनोगत सक ल्प ऊपनो। एवखलुसमणेभगवमहावीरे। इम निश्चे श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। जंबूद्दोवे २। जंबूद्वीप नामा द्वीपने विषे। भारहेवासे। भरत नामा क्षेत्रने विषे। ससमारपुरेणयरे। सुसमारपुर नामा नगरने विषे। असोगवरपायवस्सअहे। अशोक प्रधान वृक्षने हेठे। पुढविसिलावट्टयंसि। पृ थिवी शिला पट्टने विषे। अट्ठमभत्तपगिगहइत्ताए। तीन उपवास ग्रहीने। एगराइयं। एक रात्रिनो। महापडिमउवसपज्जित्ताणंविहरइ। मोटी प्रति मा आदरोने विचरेछे। तमज्जलमेसमणभगवमहावीर। तेह भणी श्रेय मझ नोके निश्चे मुझने श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी। नीसाए सक्कं देवि द देवराय। निश्राये अरणेकरो शक्र देवेन्द्र देवराजा प्रतें। सयमेवअच्चासादित्तएत्तिकट्टु। आपणपेहेज शोभायो पाडवाने काजे वाछू इम करोने।

॥ टीका ॥

वेपि विवक्षितसहायाभावा द्व्यवहारतो भवतीत्याह ॥ अविइयत्ति ॥ अद्वितीयो छिम्मरूपमात्रस्यापि द्वितीयस्या जावात् ॥ एगंमहंति ॥ एकां म

॥ मूल ॥

णिज्जाउ अब्भुठेइ २ त्ता देवदूसं परिहेइ परिहेइत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेवचोप्पाले पहरणकोसे तेणे व उवागच्छइ उवागच्छइत्ता फलिहरयणं परामुसइ परामुसइत्ता एगे अबीए फलिहरयणमयाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जेणेव तिगिच्छकूडे उप्पा यपव्वए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता जाव उत्तरवेउव्वि यरूवं विकुव्वइ ताए उक्किठाए जाव जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममंअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवाग

॥ भाषा ॥

एवसपेहेइ २ त्ता । इम चितवे इम चितवीने । सयणिज्जाओअब्भुट्ठेइ २ त्ता । शयनीय मनोहर शय्या तेहथकी उठे उठीने । देवदूसपरिहेइ २ त्ता । देव दूष्य वस्त्र पहिरे पहिरीने । जेणेवसभासुहम्मा । जिहा सभा सुधर्मा छे । जेणेवचोप्पालेपहरणकोसे तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । जिहा चउफाल नामे श स्त्र कोश आयधशाला छे तिहा आवे आवीने । फलिहरयणपरामुसइ २ त्ता । परिघ रत्ननामा आयुधप्रते हाथे ग्रहे ग्रहीने । एगेअविइएफलिहरयणा मयाए । एकलू सखाईयाना अभावथी बालगात्र कुणसाथे कोईनही परिघरत्न लेईने । महयाअमरिसवहमाणे । मोटो अतिहि अमर्षवहतो धारतो थ को । चमरचचाएरायहाणीए । चमर चचानाम राजधानो ने । मज्झमज्झेणणिग्गच्छइ २ त्ता । मध्ये मध्यभागे नीकले नीकलीने। जेणेवतिगिच्छकूडेउप्पा यपव्वए । जिहा तिगिच्छकूटनामा नीछे लोके आविवानो उत्पात पर्वत छे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणसमोहणइ २ त्ता । तिहां आ वे तिहा आवीने वैक्रिय करवाने काजे प्रयत्न विशेषे करी प्रदेश वाहिर काढे इत्यादि काढीने । जावउत्तरवेउव्वियरूवविउव्वइ २ त्ता । यावत् नवो वै क्रिय शरीर विकुर्वे रचै रचीने । ताएउक्किठाए । ते उत्कृष्टी उत्कर्षवती गतियेकरीने । जावजणेवपुढविसिलापट्टए । यावत् जिहा पृथिवी शिला पट्ट छे । जणेवममअतिए । जिहा मुफ समणा एतले माहरे पासे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । ममतिक्खुत्तो । मुझने तीन वार ।

॥ टीका ॥

इती वींदीमितियोग ॥ घोरंति ॥ हिंस्रां कथं यतो घोराकारा हिंस्राकृतिं ॥ भीमंति ॥ भीमां विकरालत्वेन भयजनिकां कथ यतो भीमाकारां भयजनकाकृति ॥ भासुरति ॥ भास्वरा ॥ भयाणीयति ॥ भय मानीतं यया सा भयानीता अत स्ता अथवा; भयं भयहेतुत्वा दनीक तत्परिवारभूत मुल्कास्फुलिंगादिसैन्य यस्या. सा भयानीका ऽत स्ता ॥ गंभीरति ॥ गंभीरा विकीर्णावयवत्वात् ॥ उत्तासणयति ॥ उत्त्रासनिकां त्रसीउद्वेगइतिवच

॥ मूल ॥

च्छइत्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, जाव नमंसित्ता एवंवयासी, इच्छामिण भंते ! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवराय सयमेव अच्चासाइत्तए त्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिम दिसीभागं अवक्कमइ अवक्कमइत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणइत्ता एगंमहं घोरं घोरागारं भीमं भीमागारं भासुरं भयाणीयं गम्भीरं उत्तासणयं कालड्ढरत्तं मासरासिसंका

॥ भाषा ॥

आयाहिणंपयाहिणकरइजावणमंसित्ता । जीमणा पासाथी प्रदक्षिणा करे यादे यावत् नमस्कार करीने । एवंवयासी । इम कहे । इच्छामिणभंतेतुब्भंनीसा ए । वांकूक ण वाक्यालंकारे, हे भगवन्! तुम्हारी निश्राये शरणे करी । सक्कंदेविंद देवराय । शक्र प्रतें देवेन्द्रप्रतें देवराजाप्रतें । सयमेवअच्चासाइत्तिए त्तिकट्टु । आपणपेज शोभायो पाडिवाने काजे इम करोने । उत्तरपुरच्छिमदिसीभाग । उत्तर पूर्वना दिगिविभाग प्रतें प्रतलें ईशानकूणे । अवक्कमइ २ त्ता । अपक्रमें जाय जाईने । वेउव्वियसमुग्घाएणंसमोहणइ २ त्ता । वैक्रिय समुद्घातेकरी प्रदेश बाहिर काढे काढीने । जावदोच्चंपिवेउव्वियसमुग्घा एणंसमोहणइ २ त्ता । यावत् बीजीवार पणि वैक्रिय समुद्घात करे करीने । एगंमहंघारं घोरागार भीम भीमागार भासुर भयाणीयं गभीर उत्तासणय । एक मोटी वींटो इहां योग करवो, एकमोटो वींटो कहिये तत् ते प्रतिकरे पणि ते वींटो केहवो, बीहामणो तथा बीहामणो आकार तेहनो तथा वि कराल पणे भयनी उपजावनहारी तथा भय उपजावे एहवो आकार देदीप्यमान एहवो भय आण्यु जिणे ते भयानीता अथवा भयना हेतुपणाथी भनी क तत्परिवार भूत उल्कास्फुलिंगादिक सैन्य तेहने ते भयानीका विकीर्ण अवयव थकी गंभीरणनो उद्वेगनो उपजावणहारो तथा । कालड्ढरत्तमासरासि

नात् स्मरणेना प्युद्वेगजनिका । महावोंदिति ॥ महाप्रमाणतनुं ॥ अप्फोडेइत्ति ॥ करास्फोटं करोति ॥ पाददद्दरगंति ॥ भूमेःपादेना स्फोटनं ॥ उच्छोलेइत्ति ॥ अग्रतोमुखा चपेटा ददाति ॥ पच्छोलेइत्ति ॥ पृष्ठतोमुखाचपेटाददाति ॥ तिइंछिदइत्ति ॥ मल्लइव रंगभूमौ त्रिपदीछेदं करोति ॥ कुस

सं जोयणसयसाहस्सीयं महाबोंदिं विउव्वइ विउव्वइत्ता अप्फोडेइ अप्फोडेइत्ता वग्गइ वग्गइत्ता गज्जइ गज्जइत्ता हयहेसिय करेइ करेइत्ता हत्थिगुलुगुलाइय करेइ करेइत्ता रहघणघणाइय करेइ करेइत्ता पायद द्दरग करेइ करेइत्ता भूमिचवेडं दलयइ दलयइत्ता सीहनाद नदइ नदइत्ता उच्छोलेइ उच्छोलेइत्ता प च्छोलेइ पच्छोलेइत्ता तिवातिछिंदइ तिवातिछिंदइत्ता वामंभुयं ऊसवेइ ऊसवेइत्ता दाहिणहत्थपएसिणीए अंगुठनहेणय वितिरिच्छं मुह विडंबइ विडंबइत्ता महया महया सद्देणं कलकलरवं करेइ करेइत्ता एगे

सकास जोअणसयसाहस्सीय महाबोंदिंविउव्वइ २ त्ता। कालो आधीरात्रि एतले अमावास्यानी आधोरात्रि तथा मास उडदनी राशि तेह सरीखो एक लक्ष योजन प्रमाण एहवो बोंदी विकुर्वे बोंदीशब्द स्त्रीलिंगे छे ते माटे एसगला शब्द स्त्रीलिंगे कहवा ते विकुर्वीने। अप्फोडेइ २ वग्गइ २ गज्जइ २। करास्फोट करे हाथ दानू पोटे, भूमि आलिंगे, गर्जारव करे। हयहेसियकरेइ २ त्ता। अश्वना परे हेसारव करे करीने। हत्थिगुलगुलाइयकरेइ २ त्ता। हाथीनो परे गुलगुलाट करे करोने। रहघणघणाइयकरेइ २ त्ता। जाता रथनोपरे घर घर शब्द करे करीने। पायदद्दरगकरेइ २। भूमि मां पग आस्फाले भूमिचवेडदलयइ २ त्ता। धरतीने चपेटाने प्रहारे करी विदारे विदारीने। सीहनादनदइ २ त्ता। सिंहनोपरे शब्द करे करीने। उच्छोलेइ पच्छोलेइ। आगेथको मुखचपेटाथे पूठाथो मुख चपेटाथे। तिवतिछिंदइ २। मल्लनो परे रंगभूमिनेविषे त्रिपदी छेदकरे। वामभुयऊसवेइ २। डावो भुजाप्रते ऊचो करे। दाहिणहत्थपएसिणोएअंगुठनहेणयवितिरिच्छमुहेविडंबइ २। जीमणाहाथ प्रते प्रदेशे नीचोकरो तेहनो अंगुलो अने अंगूठाना नख संघाते त्रीछो मुखप्रतें विडम्बना करे एतलेतूछा वचघाते। महयासद्देणकलकलरवकरेइ २ त्ता। मोटे शब्देकरी कलकलाट करे करीने। एगेअबितिएफलिहरयण

॥ टीका ॥

वेइत्ति ॥ उरसत्तं करोति ॥ विकवेइत्ति ॥ विगुतं करोति ॥ साकड्ढतेवत्ति ॥ समाकर्षयन्निव ॥ विउन्भायमाणेत्ति ॥ व्युद्राजमान शोभमानो विजृम्भमा

॥ मूल ॥

अविडए फलिहरयणामयाए उड्ढंविहास उप्पईए खोभंतेचेव अहेलोयं कंपेमाणेवमेयणितलं साकड्ढंतेव तिरियलोयं फोडेमाणेव अंबरतल कत्थइ गज्जइ, कत्थइ विज्जुयायते, कत्थइ वास वासेमाणे, कत्थइ रयुग्घाय पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्काय पकरेमाणे, वाणमतरे देवे वित्तासेमाणे वित्तासेमाणे जोइसिए देवे दुहाविभयमाणे दुहाविभयमाणे आयरक्खदेवेवि पलायमाणे पलायमाणे फलिहरयणअंबरतलंसि वियट्टमाणे वियट्टमाणे विउब्भाएमाणे विउब्भाएमाणे ताए उक्किठाए जाव तिरियमसखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं

॥ भाषा ॥

माणाय। एतला बोजो साथ काइनहा परिघनामा रत्न आपणो आयुध तेहप्रते लेईने। उड्ढविहासउप्पईए खोभंतेय। ऊंचो आकाश प्रते उछल्यो थको भावतो थको जाणे। अहेलोयकंपेमाणवमेयणितल। अधोलोक प्रतें कपावतो थको जाणे पृथिवी तलप्रते। साकड्ढतेवतिरियलोय फोडेमाणेवअवर तल। जाणे समाकर्षण करतोछे लोका लोक प्रतें जोणें फाडतोथको आकाश प्रते ए चारे पदे इव शब्दउत्प्रेक्षावाचिछे। गज्जइ कत्थइ। किणहो एक स्थानके गाजे। कत्थइ विज्जुयते। किणही एकस्थानके विजलीनो परे झबके। कत्थइवासंवासेमाणे। किणही एक स्थानके वर्षा मेघ वरसावतो थको। कत्थइ रयुग्घायपकरेमाणे। किणही एक स्थानके रजोवृष्टि करतोथको। कत्थइतमुक्कायंपकरेमाणे। किणही एक स्थानके सूक्ष्म वर्षायें अधकार करतो थको। वाणमतरेदेवेवित्तासेमाणे २। वानव्यन्तर देवने विशेषे त्रास उपजावतो थको। जोइसेदेवेदुविहाविभयमाणे। ज्योतिषी देवने विभाग करतो थको एतले विचे नोकलतो थको। आयरक्खदेवेविपलायमाणे २। आत्मरक्षक देवने विशेषे पलायमान करतोथको एतले नसाडतोथको। फलिहरयणअवरतलंसि वियट्टमाणे २। स्फटिक रत्नमय परिघ रत्न आयुध प्रतें आकाश तलने विषे उछालतोथको। विउब्भाएमाणे। शोभमान अथवा विजृम्भमाण आकाशने विषे परिघ रत्न इतियोग। ताएउक्किठाए। तिणें उत्कृष्ट वेगवती गतिनें। जावतिरियमसंखेज्जाणंदीवसमुद्दाणंमज्झमज्झेणंवीईवयमाणे। जा

वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेवसोहम्मेकप्पे जेणेवसोहम्मवडिंसएविमाणे जेणेव सभासुहम्मा तेणेव उवा गच्छइ उवागच्छइत्ता एगंपाय पउमवरवेइयाए करेइ एगंपाय सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं मह या महया सद्देणं तिक्खुत्तो इदकीलं आउडेइ आउडेइत्ता एवंवयासी, कहिणं भो ! सक्केदेविदे देवराया कहिणं ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ जाव कहिणं ताओ चत्तारिचउरासीओ आयरक्खदे वसाहस्सीओ कहिणं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ अज्जहणामि अज्जमहेमि अज्जवहेमि अज्ज ममं अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतुत्तिकट्टु तंअणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुन्नं अमणामं फरुसगिरं निसिरइ, तएणसे स

जणेवसोहम्मवडिंसएविमाणे। वत् चोछा असख्याता द्वीप समुद्रने मध्येमध्यभागे उल्लवतो थका। जणेवसोहम्मेकप्पे। जिहां सोधर्मनामा देवलोकछे। जिहा सोधर्मावतसकनामा विमानछे। जेणेवसभासुहम्मा। जिहा सुधर्मा नामे सभाछे। तेणेवउवागच्छइ२त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। एगपायं पउमवरवेइयाएपकरेइ। एक पग कमलने आकारे सौधर्म देवलोकनो पद्मवरवेदिकाछे तिहां मूके। एगपायंसभाएसुहम्माएकरेइ। एक पग सुधर्मासभा न विषे मूके। फलिहरयणेण। परिघ रत्न आयुधेकरी। महया२सद्देणतिक्खुत्तोइंदकीलंआउडेइ२त्ता। मोटे२ अतिहि शब्देकरी तीनवार प्रतोली द्वार ना कपाट युगल निवेशिवानो स्थानक एतले कमाडना मध्यभाग प्रतें कूटे कूटीने। एववयासी। इम कहे। कहिणभोसक्के। किहा भो आमन्त्रणे शक्र। देविंदेदेवराया। देवेंद्र देवराजा। कहिणताओचउरासीइसामाणियसाहस्सीओ। किहा ते चउरासी सहस्र सामानिकदेव इत्यादि। जावकहिणताओ चत्तारिचउरासीओ। यावत् किहा ते चार चउरासी सहस्र। आयरक्खदेवसाहस्सीओ। आत्मरक्षक देवना वृन्द। कहिणताओअणेगाओअच्छराको डोओ अज्जहणामि। किहा ते अनेक देवीओनी कोडी एसर्वने आज हणस्यू। अज्जमहेमि। आज दधिनी परे मथू। अज्जवहेमि। आज वध करू। अ ज्जममअवसाओअच्छराओवसमुवणमतुत्तिकट्टु। आज माहरे पूर्वे वश्य नहती जे देवीओ वश्यथई ने नमस्कार करो इम करीने। अणिट्ठ अकतं अप्पि

॥ टीका ॥

गीवा ; व्युद्ग्राजय न्वा ; वरतले परिघरत्नमितियोगः ॥ इंदकीलत्ति ॥ गोपुरकपाटयुगसंनिवेशस्थानं ॥ नाळितेति ॥ नैवतव ॥ फुलिंगजालेत्यादि ॥ स्फु लिंगाना ज्वालानाच या माला स्तासा यानि सहस्राणि तानि तथा तै श्चक्षुर्विक्षेप श्चचक्षुर्भ्रम , दृष्टिप्रतिघातश्च दर्शनाभाव , चक्षुर्विक्षेपदृष्टिप्रति

॥ मूल ॥

क्केदेविंदे देवराया त अणिठं जाव अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसंगिरं सोच्चानिसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमि सेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवंवयासी हंभो ! चमरा असुरिंदा असुर राया अप्पत्थियपत्थिया जाव हीणपुण्णचाउद्दसा अज्ज नभवसि नाहितेसुहमत्थित्तिकट्टु तत्थेव सीहासण वरगएवज्जं परामुसइ परामुसइत्ता तजलंतं फुडंतं तडतडंतं उक्कासहस्साइंविणिं मुयमाणं २ जालासहस्सा इं मुयमाण इंगालसयसहस्साइं पविक्खिरमाणं पविक्खिरमाणं फुलिंगजालामालासहस्सेहिं चक्खुविक्खेवदि

॥ भाषा ॥

यअसुभ । इष्ट नहीं कात नहीं शुभ नहीं । अमणुण्ण अमणाम । मनोज्ञ नहीं मनने गमतो नहीं । फरुसगिरंनिसिरइ । एहवो कठोर जे वाणी तेमुखथी नोमरे । तएणसेमक्केदेविंदे देवराया । तिवारे ते शक्रदेवेन्द्र देवराजा । तअणिट्ठ । ते अनिष्ट प्रतें । जावअमणाम । यावत् अमनोज्ञ मनने अरुचवती वा णी । अस्सुयपुव्व । पूर्वे किवारे सांभली नहीं । फरुसगिरसोच्चाणिसम्म आसुरुत्ता । कठोर एहवी वाणी सांभलीने हियधारीने । उतावला कोपे चड्या । जावमिसिमिसेमाणे । यावत् क्रोधेकरी देदीप्यमान थका । तिवलियंभिउडिनिडालेसाहट्टु । त्रिणवलय रूप भृकुटी त्रिसूली दृष्टिविनाशरूप निलाडे चढावे निलाडे चढावीने । चमर असुरिंदअसुरराय एवंवयासी । चमर प्रतें असुरेन्द्र प्रतें असुरराजा प्रतें । इम कहवा लागो । हंभोचमरा । अहो भो चमरा । असुरिंदा असुरराया । असुरेन्द्र असुरराजा । अप्पत्थियपत्थिया । अप्रार्थित प्रार्थित एतले मरणना वांछक । जावहीणपुण्णचाउद्दसा । यावत् हीन पुण्य चउदसना जन्म । अज्ज नभवसिनाहितेसुहमत्थित्ति कट्टु । आजतू नहीं हुवे नहीं तुझने सुख हवे इम करीने । तत्थेवसीहासणवरगए । तिहांज सिंहासन प्रधानने विषे बेठा थकाज एतले सिंहासने बेठा थकाज । वज्जपरामुसइ तजलंत । वज्र प्रते मूके, ते वज्र जलतो थको । फुडंत तडतडंत । फुटफुट

॥ टीका ॥

जइणवेगंति ॥ जयी शेषवेगव द्वेग घातं तदपि कुर्व दपिविशेषणसमुच्चये ॥ हुतवहेत्यादि ॥ हुतवहातिरेकेण य त्तेज स्तेन दीप्यमानं य त तथा ॥ जइणवेगंति ॥ जयी वेगो यस्य त त्तथा ॥ महब्भयति ॥ महता भय मस्मा दिति महद्भय कस्मा देव मित्यतआह ॥ भयकरं । भयकर्तृ ॥ झियाइत्ति ॥ ध्यायति कि मेत दिति चिन्तयति, तथा ॥ पिहाइत्ति ॥ स्पृहयति य द्येव विध प्रहरणं ममापि स्यादित्येवं त दभिलपति' स्वस्थानगमनंचा भिलपति, अथ वा, ॥ पिहाइत्ति ॥ अक्षिणीपिधत्ते निमीलयति ॥ पिहाइझियाइत्ति ॥ पूर्वोक्तमेव क्रियाद्वयं व्यत्ययेन करोति अनेनच तस्या तिव्याकुलतोक्ता ॥ त

॥ मूल ॥

चमर छिपडिघाय पिपकरेमाणं झयवझयतिरगतेयदिप्पंतं जइणवेगं फुल्लकिंसुयसमाण महब्भय भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुररस्रो वहाए वज्जंनिसिरइ , तएणसे चमरे असुरिंदे असुरराया तंजलंतं जाव भयंकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ पासइत्ता झियाइ पिहाइ पिहाइझियाइ झियाइत्ता पिहाइत्ता त

॥ भाषा ॥

मूकतो थको । जालासहस्साइमुचमा शब्द करतो थको चट चट शब्दप्रतें करतो थको । उक्कासहस्साइ । उल्कापातना सहस्र प्रते । विणिमुयमाण२ । मूकतो थको । फलिंगजालामालासहस्सेहिं । ज्वाला सहस्र प्रतें मूकतो थको । इंगालसहस्साइ । अगारना सहस्र प्रतें । पविक्खिरमाण२। खिरतो थको । फलिंगजालामालासहस्सेहिं । अग्निना कणिया अने ज्वाला तेहनो माला पंक्ति तेहना सहस्र तिणेकरी । चक्खुविक्खेवदिट्ठिपडिवायपिपकरेमाण। नेत्रने भ्रम ऊपजे दृष्टि प्रतिघात दृष्टवानो अभाव ते प्रकर्षे करतोथको । हुयवहअतिरेगतेय । अग्नि थको पणि अधिका तेजकरी । दिप्पंतजइणवेग। देदीप्यमान जई वेगवत छे । फुल्ल किंसुयसमाण । फूल्यो जे किंसुक खाखर वृक्ष ते सरीखो । महब्भयं भयंकर चमरस्स । मोटानो भयनो उपजावनहार भय करणहार एहवो वज्र चमर ने । असुरिंदस्स असुररस्रो वहाए । असुरेन्द्रने असुर राजाने वधने अर्थे । वज्जनिसिरइ । वज्र नीकले । तएणसेचमरे असुरिंदे असुरराया । तिवारे ते चमर असुरेन्द्र असुर राजा । तंजलंतजावभयकर वज्जमभिमुहआवयमाणपासइ२ त्ता । ते वज्र प्रतें जलतो थको यावत् भयनो करणहार तालगे कह वा, ते वज्र प्रते अभिमुख सामुहो आवतो थको देखे देखीने । झियाइ पिहाइ पिहाइझियाइ झियाइत्ता पिहाइत्ता । एस्यू आवछे इसू चिन्तवे इसो

॥ टीका ॥

हेवासि ॥ यथा ध्यातवा स्तथैव तत् क्षणएवेत्यर्थः ॥ संभग्गमउडविडवेत्ति ॥ सम्भग्नो मुकुटविटपः ओरकविस्तारो यस्य स तथा ॥ सालंबहत्था नरणेत्ति ॥ सह आलम्बेन प्रलम्बेन वर्त्तते सालम्बानि तानि हस्ताभरणानि यस्या धोमुखगमनवशा दसौ सालम्बहस्ताभरण ॥ कक्खागयसेयपि वत्ति ॥ भयातिरेकात् कक्षागतस्वेदमिव मुञ्चन् देवाना किल स्वेदो नभवतीति सद्दर्शनार्थं पिवशब्द ॥ जइत्तिवेगेणति ॥ वेगेन समवपतितः कथं॥

॥ मूल ॥

हेव संभग्गमउडविडए सालंबहत्थाभरणे उद्धपाए अहोसिरे कक्खागयसेयंपिव विणिं मुयमाणे मुयमाणे ताए उक्किठाए जांव तिरियमसंखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे वीईवयमाणे जेणेव जंबु दीवे दीवे जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममंअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता भीए भयग ग्गरसरे भगवंसरणं मेत्तिवुयमाणे ममं दोग्रहवि पायाणं अंतरंसि झत्ति वेगेणं समोवडिए (ग्रंथाग्र २०००)

॥ भाषा ॥

आयुधम्हारे हुवे तो भलो इसी वाछा करे अथवा पोताने स्थानके जाइवा वाछे अथवा आंखि ढाके तथापि पहिली क्रिया वेकही ते विपरीतपणें करे एतले आख ढांकाने पछे आवेछे इम चिंतवे चिंतवीने ढांकोने एतले तेहने अति व्याकुलता कही । तहेवसभग्गमउडविडए सालंबहत्थाभरणेउद्ध पाए अहोसिरे । तिमज ध्यावतो तत्काल पाछो वल्यो भागा शिरना मुकुटनो विस्तार जेहनो विमानसेतो आभरण हाथेकरी पकडे अधोगमन वशि थको ऊचा पग नीचो मस्तकछे जेहनो । कक्खागयसेयंपिवविणिमुयमाणे २ ताएउक्किठाए जावतिरियमसंखेज्जाणदीवसमुद्दाण । भयना अधिकार थकी जिम काखने विषे परसेवो आवे तिम ते चमर मूकतो थको देवने प्रस्वेद नही पणि पिण एग्रहथी उपमा जाणवी ते उत्कृष्टी वेगवती गतिये यावत् मोटा असख्याता द्वीप समुद्रने । मज्झमज्झेणवीईवयमाणे । मध्य मध्येकरी व्यतिव्रजन करतो उलंघतो थको । जेणेवजंबूदीवे २ । जिहा जंबूद्वीप नामा द्वीपछे । जावजेणेवअसोगवरपायवे । यावत् जिहा अशोकनामा प्रधान वृक्षछे । जेणेवममअंतिए । जिहा माहरो समीपछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । भीएभयगग्गरसरे । भय पाम्यो भयेकरी घर्घर स्वर थयो । भगवंसरणमेत्तिवुयमाणे । हेभगवन् ! तुम्हारो सरण मुझनेछे एह

॥ टीका ॥ ॥ सम्रुतप्रयोजन हाहाइत्यादि संस्कारोयं हा हा अहो हतो हं मस्मीतिकृत्वा व्यक्त चै झगित्ति ॥ झटिति कृत्वा ॥ पभुत्ति ॥ शक्त ॥ समत्थेति ॥

॥ मूल ॥ एतणं तस्ससक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, णोखलु पभू चमरे असु रिंदे असुरराया, णोखलु समत्थे चमरेअसुरिंदे असुरराया, नोखलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुर रन्नो अप्पणो णिस्साए उद्धंउप्पइत्ता जाव सोहम्मेकप्पे, णन्नत्थ अरहंतेवा अरहतचेइयाणिवा अणगारेवा भावियप्पाणो णीसाए उद्ध उप्पयइ जाव सोहम्मेकप्पे, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराणय अच्चासायणयाए त्तिकट्टु ओहिं पउजइ पउंजइत्ता ममं ओहिणाआभोएइ २ त्ता, हाहा अहो हतो

॥ भाषा ॥ वेगे पगामाहि छिप्यो [२०००ग्रन्थ] तएणतस्सस क्कस्स । तिवारे तेहने शक्रने । देविंदस्स देवरन्नो । देवेन्द्रने देवराजाने । इमेयारूवे । एह एतादृश रूप । अज्झत्थिए । अध्यात्मिक । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् सक ल्प ऊपनो । णोखलुपभू चमरे असुरिंदे असुरराया । नहो निश्चे शक्तिवत चमर असुरेन्द्र असुर राजा । णोखलुसमत्थे । नही निश्चे प्रयोजनवत । चमरे अ सुरिंदे असुरराया । चमर असुरेन्द्र असुर राजा । णोखलु विसए । नही निश्चे विषय आववानो । चमरस्स । चमरनो । असुरिंदस्स । असुरेन्द्रनो । असु ररन्नो । असुर राजानो । अप्पणोणिस्साए । आपणी समर्थाईये । उड्ढंउप्पइत्ता । ऊचो आवे । जाव,सोहम्मोकप्पो । यावत् सौधर्मनामा देवलोक लगे । णण्णत्थ अरहंतेवाअरहतचेइयाणिवा । अन्यत्र निश्रा कीधा विना अरहतनो अथवा अरहत चैत्य चैत्य शब्दे वीतरागनो विम्ब तेहनो अथवा । अणगारेवा । साध चारित्रियो । भावियप्पाणोणीसाए । चारित्र गुणेंकरी सयुक्त तेहनो निश्राये करी । उड्ढउप्पयइ । ऊचो आवे । जावसोहम्मोकप्पो । यावत् सौधर्मनामा देवलोक लगे । तमहादुक्खखलु । तेह भणी मोटो दुख निश्चे । तहारूवाण । तथायोग्य जे । अरहताण भगवंताणं । अरहत भगवत । अणगाराणय । अणगार साधने । अच्चासायणयाएत्तिकट्टु । अति आशातनाये एतले शोभाथी भ्रष्ट पमाडे इम करीने । ओहिपउंजइ । अवधि प्रतें प्रयुजे । ममओहि णाआभोएइ२ ऐ वचन कहतो थको । ममटोपइविपायाण अतरसि । माहरावे ऊ पगने विचाले । झत्तिवेगेणसमोवडए ।

॥ टीका ॥ तत् ॥ अवियाइंति ॥ अपिचेति अभ्युच्चये आइतिवाक्यालंकारे ॥ मुट्ठिवाएणंति ॥ अतिवेगेन वज्रग्रहणाय यो मुष्टिबंधने वात उत्पन्नो सौ मुष्टि

॥ मूल ॥ अहमंसि तिकट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देवगईए वज्जस्सवीहिं अणुगच्छमाणे अणुगच्छमाणे तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेण जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममंअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता मम चण चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरइ , अवियाइमे गोयमा ! मुट्ठिवाएणं केसग्गे वीइत्था , तएणसे सक्केदेविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेइत्ता वदइ नमसइ नमसइत्ता एवंवयासी—एवंखलुभंते ! अहं तुब्भंनीसाए चमरेणं असुरिंदेण असुररन्नो

॥ भाषा ॥ त्ता । तिवारे मुझने अवधि ज्ञानेकरी देखे देखीने । चिंतवे । हाहाअहोइती । हाहाए खेद वचन अहो ए आश्चर्य वचन जाणवो । अहमसित्तिकट्टु । हुं छू एतले हाहा हणणू छू इमकरीने । ताएउक्किट्ठाए । ते उत्कृष्टी वेगवती गतियें । जावदिव्वाएदेवगईए वज्जस्सवीहि । यावत् दिव्य प्रधान देवगती वज्रना मार्गप्रतें । अणुगच्छमाणे । केडे जातोथको । तिरियमसंखेज्जाण दीवसमुद्दाण । तीर्छा असंख्याता द्वीप समुद्रने । मज्झमज्झेण ।मध्यें मध्यें करी । जावजेणेव । यावत् जिहां । असोगवरपायवे। अशोक प्रधान वृक्ष । जेणेवममअंतिए । जिहां माहरी समीपछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहा आवीने। ममचउरंगुलमसपत्तंवज्जपडिसाहरइ । मुझने चार अंगुल अणपाम्यो वज्रप्रतें एतले चार अंगुल मुझथी अलगा वज्रप्रतें संहरे । अवियाइमेगोयमामुट्ठिवाएणं केसग्गेवीइत्था । अपिच अभ्युच्चये आ इति वाक्यालंकारे, माहरा हेगौतम ! अतिवेगे वज्र ग्रहवाने काजे मुष्टिने बन्धवेकरी ऊपनो वायरो तिणें केशनो अग्रभाग वीज्या एतले मुष्टिवाते करी केशना अग्रवीज्या । तएणसेसक्केदेविंदेदेवराया । तिवारे ते शक्र देवेन्द्र देवराजा । वज्जपडिसाहरित्ता । वज्रप्रति सहरीने । ममंतिक्खुत्तो । मुझने तीनवार । आयाहिणपयाहिणकरेइ २ त्ता । जीमणा पासाथी प्रद क्षिणा करे करीने । वदइणमसइ २ त्ता । वांदेनमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । एवंवयासी । इम कहता थया । एवंखलुभंते । इम निश्चे हेभगवन् । अहंतुब्भनीसाए । हुं तुम्हारी निश्रायें चरमे

॥ टीका ॥

वात स्तेन मुष्टिवातेन ॥ केसग्गेत्ति ॥ केशाग्राणि ॥ वीइत्था ॥ वीजितवान् ॥ इहमागएत्ति ॥ तिर्य्यग्लोके ॥ इहसमोसढेत्ति ॥ सुंसमारपुरे ॥ इहस पत्तेत्ति ॥ उद्याने॥ इहेवत्ति ॥ इहै वोद्याने ॥ अज्जेत्ति ॥ अद्य अस्मि न्नहनि अथवा, हेआर्य ! पापकर्मबहिर्भूत; आर्यवा । स्वामिन् ॥ उवसपज्जि

॥ मूल ॥

सयमेव अच्चासाइए, तएणं मएकुविएण समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररस्रो बहाए वज्जे निसिठे, तएणं ममं इमेयारूवे अझत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, णोखलुपभूचमरे असुरिंदे असुरराया तहेव जाव उहि पउजामि, देवाणुप्पिए उहिणा आभोएमि, हाहा जाव जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि, वज्जंपडिसाहरणठयाएणं इहमागए, इहसमोसढे इहसंपत्ते इहेवअज्जउवसंपज्जित्ताणं विहरामि, तंखामेमिणं देवाणुप्पिया! खमंतुमं देवाणुप्पिया! खंतु मरिहंतुण देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जोर एवंकरणयाए त्तिकहु ममं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता उत्तरपुरच्छिमं

॥ भाषा ॥

करी। चमरेण असुरिंदेण असुररन्ना। चमरे असुरिन्दे असुरराजा। सयमेवअच्चासादए। तएणमए आपणपेज शोभाथी पाछो आशातना कीधी परिकुविएणसमाणेण। तिवारे मै समस्त प्रकारे कोप्ये थके। चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो बहाए। चमरने असुरेन्द्रने असुरराजाने वधवाने काजे। वज्जेनिसिठे। वज्र प्रतें मूंक्यो। तएणममइमेएयारूवे। तिवारे वज्र मूक्या पछी मुझने एह एहवे रूपे। अझत्थिएजावसमुप्पज्जेत्था। अध्यात्मिक यावत् मनने विषे संकल्प उपनो। णोखलुपभू। नही निश्चे शक्तिवत। चमरे असुरिंदे असुरराया। चमर असुरेन्द्र असुरराजा। तहेवजावओहिपउंजामि। तिमज यावत् अवधि प्रतें प्रयुंजी जोयो। देवाणुप्पिएओहिणाआभोएमि। तुम्हने अवधि ज्ञानेकरी दीठा। हाहाजावजेणेवदेवाणुप्पिए। हाहा हूंह णा थीं यावत् जिहा हेदेवानुप्रिय। तेणेवउवागच्छामि। तिहा हुं आयो। देवाणुप्पियाण। तुम्हथी। चउरंगुलमसंपत्तवज्जपडिसाहरणठयाएण। चार अंगुल अणपाम्या वज्र प्रतें सहरवाने। इहमागए। इहां त्रीछे लोके आयो। इहसमोसढे। इहा सुसमारपुरे समोसरा। इहसपत्ते। इहा उद्यान प्राप्त

॥ टीका ॥

स्राणांति ॥ उपसम्पद्य उपसंपन्नो भूत्वा विहरामि वर्त्ते ॥ नाइभुज्जोत्ति ॥ नैव भूय॰ ॥ एवं करणयाएत्ति ॥ एवंकरणतायेत्ति ॥ वर्तितव्य इतिशेष॰ ॥ दाणिति ॥ इदानी सम्प्रतीत्यर्थ ॰ इह लेष्ठ्वादिक पुद्गल क्षिप्तं गच्छत क्षेपक मनुष्य स्तावत् गृहीतु न शक्नोतीति दृश्यते, देवस्तु कि शक्नोति येन

॥ मूल ॥

दिसीभाग अवक्कमइ अवक्कमइत्ता वामेणं पादेण तिक्खुत्तो भूमिं दालेइ , चमर असुरिंदं असुररायं एव वयासी—मुक्कोसिण भो ! चमरा असुरिंदा असुरराया समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण नाहिं ते दाणि ममाओभयमत्थित्तिकट्टु जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिं पडिगए भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एवंवयासी—देवेणं भंते ! महिड्ढीए महज्जुईए जाव महाणुभागे

॥ भाषा ॥

यगो । इहेवअज्जउवसपज्जित्ताणविहरामि । इह।होज उद्यानने विषै आज ए होज दिवसने विषै अथवा हेआर्य ! पापथो वाहिर थया अथवा हेस्वा मिन् ! उपशम पामोनें विचरूकू । तंखामेमिणदेवाणुप्पिया । तेह भणीहु खमावू छू हेदेवानुप्रिय ! तुम्हने । खमतुमंदेवाणुप्पिया । खमो तुम्हे हेदेवानु प्रिय । खमतुमरहंतुणंदेवाणुप्पिया । तुम्हे खमिवाने योग्यछो हेदेवानु प्रिय ! णाइभुज्जो २ एवकरणयाएत्तिकट्टु । एकाम बार २ हु नही इम करु इ म करोने । समवंदइणमसइ २ त्ता । मुझ प्रतें वादे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । उत्तर पुरच्छिमंदिसीभायंअवक्कमइ । उत्तर पूर्व दिग्भागने विषे एतले ईशान कूणिने विषै जाय । वामेणपादेण । डावै पगेकरी । तिक्खुत्तो भूमिदलेइ । तीन वार धरती प्रतें विदारै । चमरं असुरिंदं असुरराय । चमर असुरेन्द्र असुरराजाप्रतें । एववयासी । इम कहता थया । मुक्कोसिणं चमरा असुरिंदा असुरराया । मूक्योछे तुझने णं वाक्यालकारे, अहो चमर असु रेंद्र असुरराजा । समणस्सभगवओमहावीरस्सपभावेण । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने प्रभावेकरी । नाहितेदाणिममाओभयमत्थित्तिकट्टु । नही ज तुझने साम्प्रत हवे मुझथी भयछे इम करीने । जामेवदिसिंपाउब्भूए । जे दिशिथी आव्याहता । तामेवदिसिंपडिगए । ते दिशिने विषै पाछागया इहा मस्तरादि पुद्गल नाख्य। प्रतें जाताने नाखणहार मनुष्य ग्रहवाने समर्थ न दीसे अने देव स्यूं समर्थ हुव, जेणें शक्रे वज्रमेलीने सहस्त्रो पणि तथा

॥ भंतेइत्यादि ॥ सीहेत्ति ॥ शी
शक्रेण वज्रं क्षिप्तं संहृतंच तथा वज्रंचेत् गृहीतं चमरः कस्मान्नगृहीत इत्यभिप्रायतः प्रस्तावनोपेतं प्रश्नोत्तरमाह ॥ भंतेइत्यादि ॥ सीहेत्ति ॥ शी
घ्रो वेगवान् सच शीघ्रगमनशक्तिमात्रापेक्षयापि स्या दतआह ॥ सीहगईचेवत्ति ॥ शीघ्रगतिरेव ना शीघ्रगतिरपि एवं भूत श्च कायापेक्षयापि स्या
दतआह ॥ तुरिएत्ति ॥ त्वरित स्त्वरावान्, सच गतेरन्यत्रापि स्या दित्यत आह ॥ तुरियगइत्ति ॥ त्वरितगति ॥ मानसौत्सुक्यप्रवर्त्तितवेगवद्ग

तए जइणं भंते ! देवे महिड्ढीए जाव अणुपरियट्टित्ताणं गेण्हित्तए, कम्हाण भंते ! सक्केणं देविंदेणं देव
देवेणं महिड्ढीए पुव्विंपि पच्छावि सीहे सीहगईचेव तुरिए तुरियगईचेव, सेतेणठेण जाव पभू गेण्हि
गेण्हित्तए ? गोयमा ! पोग्गलेणं खिवित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगईभवित्ता तओपच्छा मंदगई भवइ,
पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताण गेण्हित्तए, हंतापभू। सेकेणठेणं भंते ! जाव

वज्र जो ग्रह्यो तो चमर क्यो न ग्रह्यो, इसा अभिप्रायथी प्रस्तावोपेत प्रश्नोत्तर कहेछे—भंतेत्ति। हेभगवन् ! इत्यामंत्रणे। भगव गोयमे समणभगवमहा
वीर। भगवत गौतम श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी प्रतें। वदइणमसइ २ त्ता। वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। एववयासी। इम क
हता थया। देवेणभंतेमहिड्ढीए। देव हेभगवन्। महर्द्धिक। महज्जुत्तीए। महाद्युतिका वत। जावमहाणुभागे। यावत् मोटो भाग्यवंत। पुव्वामेवपो
गलखवित्तापभू। पहिलाज पुद्गल प्रतें समर्थ हुइ। तमेवअणुपरियट्टित्ताणगिण्हित्तए। तेहीज पुद्गल प्रतें पूठे जईने ग्रहवाने इतिप्रश्न उत्तर। हंतापभू
गीतम समर्थ हुवे। सेकेणट्ठेणभंते जावगिण्हित्तए। तेसे अर्थे हेभगवन्। यावत् ग्रहवाने समर्थ हुइ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पुग्गलेणखवित्तेसमाणे पुव्वा
मेवसिग्घगईभवित्ता। हेगौतम पुद्गल नाख्योयको पहिलाहीज उतावलो गत थईने एतले पहिला ते पुद्गल उतावलो चालीने। तओपच्छामंदगईभव
इ। तिवार पछी मंदगति हुइ हलवे हलवे चाले। देवेणमहिड्ढीए। जो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। देव महर्द्धिक। जावअणुपरियट्टित्ताणगेण्हित्त
ए। यावत् पूर्वे जईने ग्रहवाने समर्थ हुवे। कम्हाणंभंते। ते किम ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। सक्केणदेविंदेण देवरण्णा। शक्रे देवेन्द्रे देवराजा। चमरे अ

॥ टीका ॥

तिरिति, एकार्था श्चैते शब्दा ॥ संचाइएत्ति ॥ शंकितः ॥ साहत्थिंत्ति ॥ स्वहस्तेन ॥ गइविसएत्ति ॥ इह यद्यपि गतिगोचरभूत क्षेत्र गतिविषय शब्देनो च्यते तथापि गतिरेवेह गृह्यते, शीघ्रादिविशेषणानां क्षेत्रे युज्यमानत्वादिति ॥ सीहे २ चेवत्ति ॥ शीघ्रो वेगवान् सचा नैकातिकोपि स्या दतआह ॥ सीहेचेवत्ति ॥ शीघ्रएव एतदेव प्रकर्षवृत्तिप्रतिपादनाय पर्यायान्तरेणाह ॥ त्वरितस्त्वरितश्चेवेति ॥ अप्पे २ चेवत्ति ॥ अतिशयेना ल्पो ऽतिस्तोकइत्यर्थ ॥ मदेमदेचेवत्ति ॥ अत्यन्तमन्द , एतेन देवाना गतिस्वरूपमात्र मुक्त मेतस्मि अगतिस्वरूपे सति शक्रवज्रचमराणा मेकमाने ऊ

॥ मूल ॥

रस्सा चमरे असुरिंदे असुरराया नोखलुसचाएइ साहत्थिं गेण्हित्तए ? गोयमा ! असुरकुमाराण देवाणं अहेगइविसए सिग्घे सिग्घेचेव तुरिएचेव उड्ढगतिविसए अप्पे अप्पेचेव मंदेमंदेचेव वेमाणियाण देवाणं उड्ढगतिविसए सीहे सीहेचेव तुरिए तुरिएचेव अहेगतिविसए अप्पे अप्पेचेव मंदे मंदेचेव जावइयंखित्तं सक्केदेविंदे देवराया उड्ढंउप्पयइ एक्कोणं समएणं तवज्जे दोहि। जंवज्जे दोहि तंचमरेतिहिं , सव्वत्थोवे सक्क

॥ भाषा ॥

सुरिंदे असुरराया । चमर असुरेन्द्र असुरराजा । णोसचाएइ । नही समर्थ हुओ । साहत्थिंगेण्हित्तए । पोताने हाथे ग्रहवाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असुरकुमाण देवाण । हेगौतम । असुरकुमार देव । अहेगइविसए । नीचो गतिनो विषय । सिग्घे सिग्घेचेव । उतावलो विशेषे उतावलो । तुरिए तुरि एचेव । त्वरित विशेषे त्वरित । उड्ढगतिविसए । ऊ चोगतिनो विषय । अप्पेअप्पेचेव । थोडो विशेषे थोडो । मदेमदेचेव । एहीज पर्यायान्तरे कहैछै—मद अत्यंत मन्द । वेमाणियाणदेवाण । वैमानिक देव । उड्ढगइविसए । ऊचो गतिनो विषे । सीहे सीहेचेव । वेगवत अत्यन्त वेगवन्त एहीज पर्यायान्तरे कहैछै—तुरिए तुरिएचेव । उतावलो विशेषे उतावलो । अहेगइविसए । नीचो गतिनो विषय । अप्पेअप्पेचेव । थोडो अतिहि थोडो । मदे मदेचेव । मन्द अतिहि मन्द । जावइयखेत्त सक्केदेविंदेदेवराया उड्ढंउप्पयइ । पाछे देवतानी गतिनो स्वरूप कह्यो इहा शक्रेन्द्र एक समय प्रमाण ऊर्द्धादि क्षेत्र जाइ वानी जे कालभेद ते कहैछै—जेटलो क्षेत्र शक्र देवेन्द्र देवराजा ऊंचोजाए । एक्केणसमएण । एके समये करी । तवज्जेदोहि जवज्जेदोहिं । ते क्षेत्रे वज्र

॥ टीका ॥

॥ सव्वत्थोवेसक्कस्से ध्योर्दो क्षेत्रे गन्तव्ये यः कालभेदो भवति तं प्रत्येकं दर्शयन्नाह ॥ जावइयमित्यादि ॥ अथेन्द्रस्यो र्द्धाव क्षेत्रगमने कालभेदमाह ॥ सव्वत्थोवेसक्कस्से त्यादि ॥ सर्वस्तोक स्वल्प शक्रस्य ऊर्ध्वलोकगमने कण्डक कालखण्ड ऊर्द्धलोककण्डक ऊर्द्धलोकगमने अतिशीघ्रत्वा तस्य अधोलोकगमने कण्डक का लखण्ड मधोलोककण्डकं सङ्ख्यातगुणा ऊर्द्धलोककण्डकापेक्षया द्विगुणमित्यर्थं , अधोलोकगमने शक्रस्य मन्दगतित्वात्, द्विगुणत्वञ्च-सक्कस्स उप्पयणका

॥ मूल ॥

ए उहेउवयइ असुरराया असुरिंदे चमरे जावइयखेत्त संखेज्जगुणे उड्ढलोयकण्ए देवरण्णो देविंदस्स एम अहोलोय असुरस्स असुरिंदस्स चमरस्स सव्वत्थोवे तंवज्जोतिहिं जंसक्कोदोहिं तंसक्कोदोहि समएणं क्कोणं असुरराया चमरेअसुरिंदे देवरण्णो देविंदेणं सक्कोणं ! गोयमा एवंखलु संखेज्जगुणे उड्ढलोयकण्ए कण्ए

॥ भाषा ॥

जाता कालनो भेद क वेसमए जाय जे वज्र विसमए चेत्र जाय । तचमरेतिहिं । ते चेत्र चमर त्रिण समये जाय ॥ हिवे शक्रने ऊंचे तथा नीचे क्षेत्रे जाता कालनो खड एतले शक्र हेछे—सव्वत्थोवेसक्कस्सदेविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोय कडए । सर्वथी स्तोक कहता अल्प शक्रनो ऊर्द्ध गमनने विषे कडए कहता कालनो खड समयरूप जाणवो तेहथी । अहोलोयक देवेन्द्र देवराजाने ऊर्द्धलोके जाता काल थोडा लागे ऊर्द्धगमनने विषे अति शीघ्रपणाथकी तेहने कालखड डए संखेज्जगुणे । अधोलोक गमनने विषे काल खंड सख्यात गुणो ऊर्द्धलोक काल खडनी अपेक्षाये बेगणो छे इत्यर्थ अधोलोक गमनने विषे शक्रने मन्दग ति पणाथको इहा कांई कहस्ये ए बिगुणो किमा वचनथी कह्यो तेहने इम कहीये ,सक्कस्स उप्पयण काले, उप्पयण कहता ऊंचा जाइवानो काल, चमरस्स उप्पयण काले उप्पयणकाल कहता नोचा जाइवानो काल ,एवमाईपज्जवितुल्ला, तथा ' जावइयखेत्तचमरे २ अहेउवयइएक्केणसमएण सक्केदोहिं , एअब्व भागे कहस्ये तेहना समर्थनथकी लाभीये । जावतियंखेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया । जेतलू क्षेत्र चमर असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा । अहेउवयइ । हेठा जाय । एक्केणसमएण । एकेसमय करी । तंसक्केदोहि जमक्केदोहि, ते चेत्र शक्र बेइ समए जाय जे शक्र बेइ समये जाय । तवज्जेतिहिं । ते वज्र त्रिण समये जाय ॥ हिवे चमरने ऊंचे तथा नीचे क्षेत्रे जाता कालनो भेद कहैछे—सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहोलोयकडए उड्ढलोयकडए संखे

॥ टीका ॥

ले चमरस्सय उवयणकाले मरणा विणिवितुल्ला, तथा, जावतिय खेत्त चमरे अहे उवयइ सक्केण ममगणा त सक्के दोहिति, वन्यमागरचनद्वयसाम र्थ्यो लभ्यमिति ॥ जावइयमित्यादि ॥ सूत्रद्वय मध'मेत्रापेत्त पूर्ववत् व्याख्येय, सेवमतुइत्यादिच निगमन' अथ शक्रादीना प्रत्येक गतिलेत्रम्या ल्प बहुत्वोपदर्शनाय सूत्रत्रयमाह ॥ सक्कस्मेत्यादि ॥ तत्र ऊर्द्ध मध स्तियक्चयो गतिविषयो गतिविषयभूतं लेत्र मनेकविध तस्य मध्ये कतरो गतिविष य' कतरस्मा द्गतिविषया दसकाणा दल्पादिरितिप्रश्न', उत्तरतु मवस्तोक मध'लेत्र समयेना वपतति, अधो मन्दगतित्वा च्छक्रस्य ॥ तिरियमसेज्ज

॥ मूल ॥

णेमचाएड साहत्थिं गिरिहत्तए । सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरणो उहुं अहेतिरियंच गइविसएयस्स कयरे कयरे हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा? गोयमा ! सबत्थोवेखेत्तं सक्केदेविंदे देवराया अहे उवयइ , एक्केण समएण तिरिय संखेज्जेभागे गच्छइ , उहुं संखेज्जेभागे गच्छइ । चमरस्सणं भंते !

॥ भाषा ॥

ज्जगणे। सवेथो थोडो चमर असुरेन्द्र असुरराजाना अधोलोक गमनने कडण कहता काल्लनारवड चमर ने अधोलोक गमनने विषे गतिना अतिशीघ्र पणाथकी तेहथी ऊर्द्धलोक गमनने विषे कालखड सख्यातगुणो अधोलोक कंडकनो अपवाये गतिना मन्दपणा थको ऊर्द्धलोक जाता वेगणो कालना गो इत्यर्थ । एवंखलु गोयमा सक्केणंदेविंदेण देवरण्णा । इम निश्चे हेगौतम । शक्र देवेन्द्र देवराजा तिणे । चमरेण असुरिंदे असुरराया नोमचाएइसा हत्थिगिण्हित्तए । चमर असुरेन्द्र असुरराजा प्रते नही शक्तिवत पोताने हाथ पकडाने एतले गतिना शीघ्र थको शक्र चमरेन्द्र प्रते पकडवाने समर्थ न हुवो इत्यर्थ ॥ हिवे शक्रादिकने प्रत्येके गतिक्षेत्रना अल्पबहुत्व देखाडे तो तीनसूत्र कहेछे—सक्कस्सणभंतेदेविंदस्स । शक्रने हेभगवन् । देवेन्द्रने । देवरणो उड्ढअहेतिरियचगइविसयस्स कयरे २ हिंतोअप्पेवावहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा । देवराजाने ऊर्ध्व नीचो तीछो गति विषय ते गतिविषय भूत क्षेत्र तो अनेक विधिछे ते माहे कुणगति विषय कयरेहितो कहता कुणगति विषयथको अल्पछइ घणोछइ बराबर छइ विशेषाधिक छइ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवेखेत्तसक्केदेविंदे देवराया अहेउवयइएक्केणसमएणंतिरियं संखेज्जेभागेगच्छइ उड्ढसंखेज्जेभागे गच्छइ । हेगौतम । सर्व थोडो कहता अ

भागेगच्छइत्ति ॥ कल्पनया किलैकेन समयेन योजन मधो गच्छति शक्र' स्तत्रच योजनेद्विधाकृते द्वौ भागौ भवत, स्तयो श्चैकस्मिन् द्विभागेनमीलि ते त्रय सङ्ख्येया भागा भवन्ति, अत स्तान् तिर्यग्गच्छति, सार्द्ध योजनमित्यर्थ ' तिर्यग्गतौ तस्य शीघ्रगतित्वात् ॥ उड्ढसंखेज्जेभागेगच्छइत्ति ॥ यान् किल कल्पनया त्रीन् द्विभागा स्तिर्यग्गच्छति, तेपु चतुर्थे न्यस्मिन् द्विभागे मीलिते चत्वारो द्विभागरूपा सङ्खातभागा. सम्भवन्ति अत स्तानूर्द्ध गच्छति' अथ कथ मूत्रे सङ्खातभागमात्रग्रहणेसति इद नियतभागव्याख्यान क्रियते ? उच्यते, जाव इय खेत्त चमरे ३ अहे उवयइ एक्केण समए

असुरिंदस्स असुररत्रो उड्ढं अहे तिरियच गइविसयस्स कयरे कयरे हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा वि

लप चेत्र शक्र देवेन्द्र देवराजा नीचो चेत्र उपते जतरे एके समये करी नीचो मन्दगति पणाथकी इन्द्रने एतले एक समयमांहि चेत्र आश्रो नीचो थी डाजाय तथा ,तिरियसखेज्जेभागेगच्छइ, तेहथी त्राछो सख्यातमे भागे जाय इहा कलपनाये करी देखाडेछे—इन्द्र एके समये एक योजन नीचो जाय तिहा ते योजन द्विधा कीधा योजनना बेभाग हुवे, ते माहिलो एक भाग मिल्यायका तीन सख्येय भाग हुवे, एतलामाटे तीन सख्येय भाग त्रीछोजाय डेढ योजन इत्यर्थ त्रीछो गतिने विषे तेहने भागमेलिया शीघ्रगतिछे तेमाटे ,उड्ढसखेज्जइभागेगच्छइ, ये कलपनाये करी योजनना दोयभाग कीजे एहना तोन भाग त्रीछा जाय तेहने विषे चोथे द्विभाग मेलिया योजनना बभाग काजे एहवा चारभागरूप सख्यात भाग हुवे, एतले तेतलाभाग ऊचोजाय बेयो जन इत्यर्थ इहा कांई कहस्ये सूत्रनेविषे सख्यात भागमात्र ग्रहण कीधा थका एहवू नियतभाग व्याख्यान किम कीधू तेहने इम कहोये, जावइयखेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया अहेउवयइएक्केण समएण तसक्के दोहिं तथा सक्कस्सणं उप्पयणकाले, उप्पयणकाल कहता ऊर्द्धगमन काल, चमरस्स उवयणकाले, चमरनो अधोगमन । एण्णटोणहवितुल्ला,ए वचन थी निश्चयकोधो शक्र जेतला चेत्र लगे नीचो बिहु समये जाय तेतलो चेत्र ऊचो एक समय जाय तेमाटे अध चेत्र थको ऊरचेत्र तिमणो कह्यो ते बिहुने विचाले वर्त्ते तिर्यक्चेत्र एकारणथी विचले प्रमा ज करीने तेह थाय तिवारे नोचा चेत्रनो अपे चाये त्रीछा चेत्र डेढ योजन थाय इम भाग वखाण्या आहच चूर्णिकार—एगेण समएण तिरियदिवड्ढगच्छइ उड्ढदोजोअणाणिसक्कोत्ति। चमरस्सणभंते

गा त सक्को दोत्ति, तथा, सक्कस्स उप्पयणकाले चमरस्सय उवयणकाले गतेर्णा विशिाविशुत्ताइति, वचनतो निशीयते शक्रो याव दधो द्वाभ्या स मयाभ्या गच्छति, ताव दूर्द्ध मेकेनेति द्विगुणा मध'क्षेत्रा दूर्द्धक्षेत्र, एतयो श्चापान्तरालवर्त्ति तिर्यक्क्षेत्र मतो पान्तरालप्रमाणेनेव तेन भवितव्य मि त्यध क्षेत्रापेक्षया तिर्यक्क्षेत्र मार्द्ध योजन भवतीति व्याख्यात, आह्च चूर्णिकार –एगेणं समएणं उड्ढयए अद्धे जोयणं एगेणाय समएणं तिरियं दि वड्ढ गच्छइ उड्ढ दोजोयणाणि सक्कोत्ति, ॥ चमरस्सगामित्यादि ॥ सव्वत्थोव खेत्तं चमरे ३ उड्ढ उप्पयइ एक्केणसमएणंति ॥ ऊर्द्धगतो मन्दगतित्वा त्तस्य तत्र किलकल्पनया त्रिभागन्यूनं गव्यूतत्रय ॥ तिरियमसंखेज्जेभागेत्ति ॥ तस्मिन्नेव पूर्वोक्ते त्रिभागन्यूनगव्यूतत्रये द्विगुणिते ये योजनस्य सङ्खेयभा गा भवन्ति, तान् गच्छति तिर्यग्गतो शीघ्रतरगतित्वा त्तस्य ॥ अहेसंखेज्जेभागेगच्छइत्ति ॥ पूर्वोक्तं त्रिभागद्वयन्यून गव्यूतषट्कं त्रिभागन्यूनगव्यूत

ससाहएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढ उप्पयइ , एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जेभागे गच्छइ , अहे संखेज्जेभागे गच्छइ , सक्केदेविंदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं तवज्जो

असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढअहेतिरियंचगइविसयस्स कयरे २ हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा । चमरेन हेभगवान् । असुरेंद्रने असुरराजाने ऊचो नीचो त्री छी गति विषयने कुणगति विषय थको अल्पेवा ४ थोडो हुइ घणो हुइ बराबरहुइ । विसेसाहिएवा । विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थो वखेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढउप्पयइ । हेगौतम ! सर्वस्तोक क्षेत्र अल्पक्षेत्र चमर असुरेंद्र असुरराजा ऊचो जाय । एक्केणसमएणतिरियसंखे ज्जभागगच्छइ अहेसंखेज्जेभागेगच्छइ । एके समये ऊर्द्धगतिने विषे तेहने मन्दगति पणाथको तेह कल्पनाये त्रिभाग ऊंनगाऊ तीन इहा एभावना करवी एके क गाऊना तीनतीन भाग करता योजन ना बारभाग थेयोजनना चोवीस भाग करी पछे इहां त्रिभागेये थतले बीजेभाग ऊणा तीन गाऊत आठ भागथया थतले एके समये ऊर्द्धभाग जाय तिरियसंखेज्जेभागेगच्छइत्ति, तेहीज पूर्वोक्त त्रिभाग ऊन तीन गाऊ बिमणो कीधा थ योजनना सख्यात भाग हुवे तेहप्रते जाय तेहने ताछो गतिने विषे शीघ्रपणा थकी अहेसंखेज्जेभागेगच्छइत्ति , पूर्वोक्त ते त्रिभाग ऊणा छ गाऊछे तेहने विषे एक त्रि ॥

॥ टीका ॥

त्रये मीलिते ये सङ्ख्येयभागा भवन्ति, तान् गच्छति योजनद्वय मित्यर्थ ' अथ कथ सङ्ख्यातभागमात्रोपादाने नियतसङ्ख्येयभागत्वं व्याख्यायते ? उच्यते, शक्रस्यो र्ध्वगते श्चमरस्य चाधोगतेः समत्व मुक्त शक्रस्य चोर्ध्वगमन समयेन योजनद्वयरूप कल्पित मत श्चमरस्या धोगमन समयेन योजनद्वय मुक्त तथा–जावइय सक्के ३ उड्ढ उप्पयइ एगेण समएण त वज्ज दोहि ज वज्ज दोहिं त चमरे तिहिति, वचनसामर्थ्या त्प्रतीयते, शक्रस्य यदुर्ध्वगति क्षेत्र तस्य त्रिभागमात्ररूप चमरस्यो र्ध्वगतिक्षेत्र मतो व्याख्यात, त्रिभागन्यूनत्रिगव्यूतमान तदिति' ऊर्ध्वक्षत्राधोगतिक्षेत्रयो श्चाऽपान्तरालवर्त्ति ति यक्क्षेत्र मितिकृत्वा त्रिभागद्वयन्यूनषड्गव्यूतमान तद्व्याख्यातमिति, यच्च चूर्णिकारणोक्त–चमरो उड्ढ जोयणमित्यादि, तन्न वगत, ॥ वज्ज ज हा सक्कस्स तहेवत्ति ॥ वज्र माश्रित्यगति विपयस्या ल्पवहुत्व वाच्य, यथा शक्रस्य तथैव विशेषद्योतनार्थं त्वाह ॥ नवरविसेसाहियकायव्वति ॥

॥ मूल ॥

दोहि तं चमरेतिहि वज्जं जहा सक्कस्स तहेव , नवर , विसेसाहियं कायव्वं , सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स

॥ भाषा ॥

ग ऊ णा तीन गाऊ मेलिया जे सख्येयभाग हवे तेहमतें जाय योजन दोय इत्यर्थ, इहा कोई कहस्ये सूत्रने विषे सख्यातभाग मात्र कह्या थका नियत सख्येय भाग पणो किम व्याख्यान कोधा तेहने इम कहोये शक्रनो ऊर्द्धगतिनो अने चमरनो अधोगतिनो समपणो कह्यो तिहा शक्रना ऊचा जाइवो ए क समयें करी योजन दोयरूप कल्पनाये कोधोछै एतलामाटे चमरनो अधोगमन एके समयेकरी दोय योजन कह्यु तथा। जावइयंखेत्त। सक्केदेविंदेदेवरा या उड्ढउप्पयइ एक्केणसमएण तवज्जेदोहि तचमरेतिहि। ए वचन सामर्थ्य थको जाणीये शक्रनो जे ऊर्द्धगति चेत्र तेहनो त्रिभा। मा त्ररूप चमरनो ऊर्द्ध गतिचेत्र एतला माटे कह्यु त्रिभाग न्यून तीन गाऊ आठभाग थया तेहनो मान तथा ऊर्द्धगतिचेत्र अने अधोगति चेत्र ए बेऊने मध्यवर्त्ती चौछे चेत्रछे इम करोनेबेह त्रिभागे ओछा गाउ छनोमान एतले गाउना तोनभाग कोजे एहवा सोले भाग एक समयमाहे चमर चोछाचेत्र उलवे इति भावार्थ। वज्ज जहासक्कस्सतहेवणवरविसेसाहियकायव्व। वज्र आश्रयीने गति विषयनो अल्प वहुत्व जिम शक्रनो कह्यो तिम कहवो, विशेष कहवाने अर्थे कहेछे—ए तलो जे विशेषाधिक करवो ते इम ,वज्जस्सणभंतेउड्ढअहेतिरियचगइविसयस्स ३ कयरे २ हिंतोअप्पेवा गोयमा सव्वत्थोवखेत्तवज्जेअहेउवयइएक्केणसम

तथैवं वज्रस्सणं भंते उड्ढं अहे तिरियंच गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पेवा ३ ? गोयमा ! सव्व त्थोव खेत्तं वज्जे अहे उवयइ एक्केणं समएणं तिरियं विसेसाहिए भागे गच्छइ उड्ढं विसेसाहिए भागे गच्छइत्ति वाचनान्तरे त्वेत त्साक्षादेवोक्त मिति' अस्यायमर्थः ' स्तोक क्षेत्र वज्र मधोव्रज त्येकेन समयेनाधो मन्दगतित्वा त्तस्य तच्च किलकल्पनया त्रिभागन्यून योजन तिर्यक्‌विशेषाधिकौ भागौ गच्छति' शीघ्रतरगतित्वात्' तौच किल योजनस्य द्वौ त्रिभागौ विशेषाधिकौ सत्रिभाग गव्यूतत्रयमित्यर्थः , तथा ऊर्ध्वं विशेषाधिकौ भागौ गच्छति, यौ किल तिर्यग्विशेषाधिकौ भागौ गच्छति, तावेवो र्ध्वंगतौ किंचिद्विशेषाधिकौ ऊर्ध्वंगतौ शीघ्रतमगतित्वा त्परिपूर्णं योजनमित्यर्थः ' अथ कथं सामान्यतो विशेषाधिकत्वे निरिते नियतभागत्व व्याख्यायते ? उच्यते, जावइयं चमरे ३ अहे उवयइ एक्केणं समएणं तावइयं सक्के दोहिं जं सक्के दोहिं तं वज्जे तिहिंति, वचनसामर्थ्या

एवं, तिरियविसेसाहियभागंगच्छइ उड्ढविसेसाहियभागंगच्छइत्ति, ए पाठ वाचनान्तरे सूत्रमाहि लिख्यो छे—एहनो एअर्थ सर्व स्तोकखेत्र वज्र एके समये नीचो जाय तेहने अधोगति मन्दपणा माटे ते कल्पनाये त्रीजे भाग उणो एक योजन छे, आठभाग इत्यर्थ तथा त्रांछो विशेषाधिक जाय शीघ्रगतिपणा थकी पूर्वोक्त आठ भाग माहि एक गाउना तीनभाग कीजे एहवा दोय त्रिभाग विशेषाधिक एतले त्रिभाग सहित तीनगाउ दशभाग इत्यर्थ तथा विशेषाधिक बेभाग जाय जे त्रांछो विशेषाधिक जाय तेहनो ऊंचा गतिने विषे एक विशेषाधिक उर्द्धखेत्र अति शीघ्रगति पणा थकी पूरो योजन इत्यर्थ, इहां कोई कहस्ये सामान्य थकी विशेषाधिकपणो कह्या थका तिम नियत भाग वखाणीये तेहने इम कहीये, जावइयखेत्ते चमरे ३ अहेउवयइ एक्केणं समएणं तावइयमक्केदोहि, जंसक्केदोहि, तंवज्जतिहि, ए वचन सामर्थ्य थकी शक्र अधोगति अपेक्षाये वज्रने त्रिभाग न्यून अधोगति पामो तेमाटे त्रिभाग न्यून अधोगति वखाणो तथा सक्कस्सउवयणकाले वज्जस्सउप्पयणकालेएसणंदोण्हवितुल्लेइति, उप्पयणतेउतरखो, उप्पयण ते ऊंचो जाइवो, ए दोनू सरीखा ए वचन थकी जाणिये जेतलो खेत्र एके समये शक्र नीचो चाले तेतलो खेत्र वज्र ऊंचो जाय, शक्र एक समये नीचो

च्छक्राधोगत्यपेक्षया वज्रस्य त्रिभागन्यूना ऽधोगति र्लभ्येति' त्रिभागन्यूनयोजनमिति सा व्याख्याता, तथा सक्कस्स उवयणकाले वज्जस्स उप्पयणका ले एसणा दोग्हवि तुल्ले इति वचना दवसीयते, याव देकेन समयेन शक्रो अधो गच्छति ताव द्वज्र मूर्ध्वं शक्र श्चैकेना ध' किल योजनं एव वज्र मूर्द्धं योजन मितिकृत्वो र्द्ध योजनं तस्योक्त, ऊर्ध्वाधोगत्योश्च तिर्यग्गते रपान्तरालवर्त्तित्वा त्तदपान्तरालवर्त्त्यैव सत्रिभागगव्यूतत्रयलक्षण तिर्यग्गतिप्रमाण मुक्तमिति, अनन्तर गतिविषयस्य क्षेत्रस्या ल्पबहुत्व मुक्त मथ गतिकालस्य तदाह ॥ सक्कस्सणमित्यादि ॥ सूत्रत्रय, शक्रादीना गतिकालस्य प्रत्ये

॥ मूल ॥

देवरणो उवयणकालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरे हिंतो ऋप्पेवा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरणो उड्ढ उप्पयणकाले उवयणकाले सखेज्जगुणे , चमरस्सवि जहा सक्कस्स , णवरं ,

॥ भाषा ॥

एक योजन जाय तिम वज्र उचो एक योजन कह्यु, तथा उर्द्धगति अधोगति एबेउने विचाले त्रीछीगति वर्त्तेछे, ते बेउ विचाले त्रीजाभाग सहित तीन गाउ लक्षण एतले एक गाउना तीनभाग कीजे एहवा दशभाग कीजे एहवा दशभाग लक्षण त्रीछी गतिनो प्रमाण कह्यो, ए तीनाईने उर्द्ध तिर्यग अधोभागनो बेवरी गाथायें करी कहैछे—चउवीसवारसठर दुवालससाओजाअणरसुड्ढ। सक्कोवज्जचमरो तिरियविगच्छंतिसमकाले ॥ १ ॥ तिरियट्ठारसदस सोलसेवअट्ठवारसट्ठचउवीसा। जहसखतेणहरी वज्जवावीसुनोचमरं ॥ २ ॥ इहा चउवीस इत्यादिक कह्या ते एकेक गाउना तीन २ भाग करवा तेभाग जाणवा तेहनी स्थापना यन्त्रथकी जाणवी, अनन्तरे गतिविषय क्षेत्रनो अल्प बहुत्व कह्यो ॥ हिवे गतिकालनो अल्प बहुत्व कहैछे—सक्कस्सणभते देविंदस्स देवरणो उवयणकालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे २ हिंतो अप्पे वहु तुल्ले विसेसा। इत्यादि सूत्र तीन तिहा शक्रने हेभगवन्! देवेन्द्रने देवराजाने उतरवाना कालने उचा जाइवाना कालने कुणगति विषय थकी थोडोहुवे घणोहुवे बरोबर हुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवेसक्कस्सदेविंदस्स देवरणो उड्ढउप्पयणकाले। हेगोतम! सर्वथी थोडो शक्र देवेन्द्र देवराजानो उचो जाइवानोकाल जेमाटे शक्रनी उचीगति घणोछे तेमाटे उचा जाता वेला थोडी लागे तेहथी। उवयणकालेसखेज्जगुणे। नीचा उतरवानो काल संख्यात गुणो गतिना मन्दपणा थको। चमरस्सविजहासक्क

क मल्पबहुत्व मुक्त मथ परस्परापेक्षया तदाह ॥ एयस्सण भंते वज्जस्सेत्यादि ॥ एएणविसिविसेतुल्लत्ति ॥ शक्रचमरयो स्वस्थानगमनप्रति वेगस्य समत्वा दुत्पतनावपतनकालौ तयोस्तुल्यौ परस्परेण ॥ सव्वत्थोवत्ति ॥ वक्ष्यमाणापेक्षयेति, तथा ॥ सक्कस्सेत्यादौ ॥ एसण दुण्हवितुल्लेत्ति ॥ उभयोर पि तुल्यः शक्रावपतनकालो वज्रोत्पातकालस्य तुल्यो वज्रोत्पातकालश्च शक्रावपतनकालस्य तुल्यइत्यर्थः ॥ संखेज्जगुणेत्ति ॥ शक्रोत्पातचमरावपात

सव्वत्थोवे उवयणकाले उप्पयणकाले संखेज्जगुणे , वज्जस्सपुच्छा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले उवयणकाले विसेसाहिए, एयस्सणं भंते ! वज्जस्स वज्जाहिवइस्स चमरस्सय असुरिंदस्स असुररस्रो उवयणकालस्सय उप्पयणकालस्सय कयरे कयरे हिंतो अप्पेवा४ ? गोयमा ! सक्कस्सय उप्पयणकाले चमरस्स उवयणकाले एसणं दोराहवि तुल्ले सव्वत्थोवे सक्कस्सय उवयणकाले वज्जस्सय उप्पयणकाले एसणं दोराह

स्स । चमरने पणि जिम शक्रने कह्यो तिम कहवो । णवरंसव्वत्थोवेउवयणकाले । एतलो विशेष सर्वथी थोडो नीचो उतरवानो काल तिहां गतिना शीघ्र पणा थकी तेहथी । उप्पयणकालेसंखेज्जगुणे वज्जस्सयपुच्छा । ऊंचा जाइवानो काल संख्यात गुणो गतिना मंद पणां थकी वज्र आश्रीने प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवेउप्पयणकाले उवयणकाले विसेसाहिए । हेगौतम । सर्वथी थोडो वज्रनो ऊंचा जाइवानो काल शीघ्र गतिमाटे तेहथी नीचा उतरवानो काल विशेषाधिक गतिना मन्दपणां थको ॥ हिवे तीनेइंनो माहोमाहि अल्प बहुत्व कहेछे—एयस्सणभंतेवज्जस्स । एहनो हेभगवन् । वज्रने । वज्जाहिवइस्स । वज्राधिप जे इन्द्र तेहने । चमरस्सय । चमरने । असुरिंदस्स असुररस्रो । असुरेंद्रने असुरराजाने । उवयणकालस्सय । नीचा ऊंचा उतरवाना कालने । उप्पयणकालस्सय कयरे २ हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा । ऊंचा जाइवाना कालने कुणकाल २ थकी थोडाहुवे घणोहुवे बरोबर हुवे विशेषाधिक हुवे, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सक्कस्सय उप्पयणकाले । हेगौतम । शक्रनो ऊंचा जाइवानो काल । चमरस्सयउवयणकाले एसणदोण्हवितुल्लेसव्वत्थोवे । चमरनो नीचा जाइवानो काल एह दोनू सरीखा शक्र अने चमर एवेऊंने स्वस्थाने जाइवा प्रतें वेगना समपणा थकी अने स

॥ टीका ॥

कालापेक्षया एव मनंतरसूत्रमपि जावनीय ॥ उवहयमणसंकप्पेत्ति ॥ उपहतो ध्वस्तो मनस सकल्पो दर्प्पहर्षादिप्रजावो विकल्पो यस्य स तथा ॥ चितासोगसागरमणुप्पविठेत्ति ॥ चिन्ता पूर्वकृतानुस्मरण शोको दैन्य तावेव सागरइति विग्रहो तस्त ॥ करतलपल्हत्यमुहेत्ति ॥ करतले पर्यस्त मधो

॥ मूल ॥

वि तुल्ले, संखेज्जगुणे, चमरस्सय उप्पयणकाले वज्जस्सय उवयणकाले एसणं दोराहवि तुल्ले विसेसाहिए, तएणंसे चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जनयविप्पमुक्के सक्केण देविंदेण देवरन्नो महया अवमाणेणं अव माणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सन्नाएसुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि उवहयमणसंकप्पे चितासोय सागरसंपविठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्काणोवगए नूमिगयदिठीए ज्कियाइ, तएणं तं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववन्नयादेवा नहयमणसंकप्पं जाव ज्कियाइमाणं पासइ पासइत्ता करयल जाव

॥ भाषा ॥

वंधी थोडो गतिना शीघ्रपणा थकी तथा। सक्कस्सयउवयणकाले। शक्रनो नीचा उतरवानो काल। वज्जस्सय उप्पयणकाले। वज्रनो उचा जाइवानो काल। एसणदोण्हवितुल्लेसखेज्जगुणे। एह वेउ बरोबर जाणवो अने सख्यातगुणो तथा। चमरस्सयउप्पयणकाले। चमरनो उचा जाइवानो काल। वज्जस्सयउवयणकाले एसणदोण्हवितुल्ले विसेसाहिए। वज्रनो नीचा उतरवानो काल ए वेउ सरीखा चमर जेतलो चेत्र एक समय माहि उचोजाय तेतलो चेत्र शक्र एक समयमाहि नीचो उतरे अने विशेषाधिक। तएणतेचमरे असुरिंदे असुरराया। तिवारे ते चमर असुरेन्द्र असुरराजा। वज्जभयविप्पमुक्के। वज्रना भय थकी मूकाणो थको। सक्केणदेविंदेणदेवरन्नो। शक्र देवेन्द्र देवराजाये। महयाअवमाणेण। घणे अपमाने करी अरे चमर तुझने मूक्यो इत्यादिक वचने करो। अवमाणिएसमाणे। अपमान्यो थको। चमरचचारायहाणीए। चमरचचा राजधानोने विषे। सभाएसुहम्माए। सभा सुधर्मानि विषे। चमरंसिसोहासणंसि। चमर नामे सिंहासनने विषे गञोथको। उवहयमणसंकप्पे। हण्यो मननो सकल्प दर्प हर्षादि जेहनो। चिंतासोयसागरेसपविठे। पूर्वकृत कर्मनो चितववो ते सोग दीनपणो तेहीजसागर तिहा पैठो। करयलपल्हत्थमुहे। हाथना तलाने विषे अधोमुख पणे थाप्योछे मुख

॥ टीका ॥

मुखतया न्यस्त मुखं येन स तथा ॥ जस्समिपन्नावेणति ॥ यस्य प्रभावेण इहा गतोस्मि भवामीति योग', किंभूत स त्नित्याह ॥ अकिठेसि ॥ अ
कुष्ट' अविलिखित ' अक्लिष्टोवा ; अबाधितो निर्वेदनइत्यर्थः , एतदेव कथ मित्याह ॥ अव्वहिएत्ति ॥ अव्यथितो ताडितः, अताडितत्वेपि ज्वलन

॥ मूल ॥

एवंवयासी—किण्हं देवाणुप्पिया उवहयमणसंकप्पा जाव झियायह , तएणसे चमरे असुरिंदे असुररायां तेसामाणियपरिसोववन्नए देवे एवंवयासी—एवंखलु देवाणुप्पिया मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए , तएणं तेण परिकुविएण समाणेणं ममं वहाए वज्जेनिसिठे, तंभद्दं णं भवतु देवाणुप्पिया समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्संमिपभावेण अकिठे अव्वहिए अपरिताविए इह

॥ भाषा ॥

जेणे । अट्टझाणोवगए । आर्त्तध्यान प्रतें पाम्योछे । भूमिगयदिठ्ठीएझियाइ तएणतचमरं असुरिंद असुरराय । भूमिने विषे दीठी दृष्टि एतले नीचे जोवतो थको तिवारे ते चमर असुरेंद्र असुरराजा प्रतें । सामाणियपरिसोववण्णयादेवा । सामानिक परिषदाना उपना देव एतले इन्द्र नथी पणि ऋद्धि इन्द्र समानछे ते देव । उवहयमणसंकप्पजावझियायमाणपासति । मननो संकल्प ते दर्प हर्षादि हणाणो इत्यादि जालगे ध्यावतो चौणघातोयको देखे तिवारे । करयलजावएववयासी । हाथ जोडी नमस्कार करी जय विजय शब्दे वधावी यावत् इमकहै । किणदेवाणुप्पिया । स्यामाटे हेदेवानुप्रियाओ। उवहयमणसंकप्पा । हणाणो मननो संकल्प हर्ष क्षय गयो । जावझियायह । यावत् ध्यावोछो किम चीण थाओछो । तएणसेचमरे असुरिंदे असुरराय। तिवारे ते चमर असुरेंद्र असुराजा । तेसामाणियपरिसाववणेण्देवे एववयासी । ते सामानिक परिषदाना उपना देवप्रतें इम कहै । एवंखलुदेवाणुप्पि या । इम निश्चै हेदेवानु प्रियाओ । मएसमणंभगवमहावीरनीसाए । मै श्रमण तपस्वी भगवंत ज्ञान लक्ष्मीवंत श्रीमहावीरस्वामीनो निश्रायें । सक्केदेवि ददेवराया । शक्र देवेंद्र देवराजा । सयमेवअच्चासादिए । पोतेज अति आशातनाथत कीधो तेहना माननो पातन कीधो । तएणपरिकुविएणसमाणेण। तिवारे इन्द्र प्रकोप कीधा थका । ममवहाएवज्जेनिसिठे । माहरा वधने काजे वज्रनामे आयुध मूक्यो । तंभद्दणभवतुदेवाणुप्पिया । तेह भणी भद्र मग

कल्पकुलिशसन्निकर्षा त्परिताप स्या दत स्तन्निषेधयन्नाह ॥ अपरितावियएत्ति ॥ इह मागएत्यादि, विवक्षया पूर्ववत् व्याख्येयं ॥ इहेवअज्जेत्यादि ॥

मागए इहसमोसढे इहसपत्ते इहेव अज्जउवसपज्जित्ताण विहरामि, तंगच्छामोणं देवाणुप्पिया समणं भ गवं महावीर वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो त्तिकट्टु चउसठीए सामाणिय साहस्सीहिं जाव सव्विड्ढीए जाव जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममअंतिए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता ममंतिकुत्तो आयाहि णं पययाहिणं जाव नमंसित्ता एवंवयासी—एवखलु भंते ! मएतुब्भं नीसाए सक्केदेविंदे देवराया सयमेव अ च्चासाइए जाव तंभद्दणंभवतु देवाणुप्पियाणं जस्संमिपभावेण अकिठे जाव विहरामि, तखामेमिणं देवा

लोक कल्याण णं वाक्यालकारे, याभो देवानु प्रियाओ। समणस्स भगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीने। जस्सिमिप्पभावेण। जेह ने प्रभावेकरीने। अकिठ्ठ अवहिए अपरिभाविए इहमागए इहसमोसढे इहसंपत्ते। बाधारहित वेदना रहित व्यथारहित अताडितथको परिताप रहित वज्रनी अग्निकरी परिताप विना उपना इहां आव्यो इहां समोसर्यो एह स्थानक पाम्यो। इहेवअज्जउवसंपज्जित्ताणविहरामि। एहीज स्थानक ने विषे आज ए दिवसने विषे प्रप्राप्त थई विचरूं। तंगच्छामोणदेवाणुप्पिया। तेह भणी आपण सर्व जाइये अहो देवानुप्रियाओ। समणंभगवमहावी र। श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रतें। वदामीणमसामी। वादीये नमस्कार करीये। जावपज्जुवासामोत्तिकट्टु। यावत् शब्दे पर्युपासना सेवा करीये एतला लगे कहवो इम करीने। चउसठीएसामाणियसाहस्सीहिं। चउसठ सहस्र सामानिक देव पच अग्रमहिषी सघाते परिवर्यो इत्यादि। जावसव्वि ड्ढीए। यावत् सर्व ऋद्धिकरी सहित इत्यादि। जावजेणेवअसोगवरपायवे। यावत् जिहां अशोकनामे प्रधान वृक्ष। जेणेवममअंतिए। जिहां माहरो समीपछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहा आवीने। ममंतिकुत्तोआयाहिण पयाहिण जावणमसित्ता एववयासी। मुझने त्रिणवार जीम णा पासा थकी माडी प्रदक्षिणा करी यावत् वादे नमस्कार करे वादीने नमस्कार करीने इमकहे। एवंखलुभंतेमएतुब्भनीसाए। इम निश्चे हेभगवन्।

॥ टीका ॥ इहैव स्थाने ऽद्या स्मि नह सुपनम्पद्य प्रशान्तो भूत्वा विश्रामीति, पूर्वं मसुराणा भवप्रत्ययवैरानुबन्ध , सौधर्म्मगमने हेतु रुक्तो, ऽय तत्रैव

॥ मूल ॥ णुप्पिया जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीनागं ग्रवक्कमइ ग्रवक्कमइत्ता जाव बत्तीसइबद्धं नहविहि उवदंसेइ उवदंसेइत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूए तामेवदिसिंपडिगए एवखलु गोयमा ! चमरेणं ग्रसुरिंदेणं ग्रसुररसो सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता ग्रभिसमण्णागया ठिईसागरोवमं महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ, जाव ग्रंतकाहिइ, किपत्तियणं भंते ! ग्रसुरकुमारादेवा उड्ढउप्पयंति जाव सोहम्मेकप्पे ? गोयमा ! तेसिणं देवाणं ग्रहुणो ववसगाणवा चरिमभवत्थाणवा इमेयारूवे ग्रज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ, ग्रहोणं ग्रम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी

॥ भाषा ॥ मे तुम्हारी नियाये। मक्केंदविदेदेवराया। शक्र देवेंद्र देवराजा प्रतें। सवमे।मणामादिए। पोतेज मान मर्दन कोधो। जावतभद्देणभ ततदेवाणुप्पिया ण। यावत् ते भणो भद्र कल्याण ण वाक्यालकारे, याश्री तुम्हने देवानुप्रिया। तुम्हने मगलोक याचो। जखिमझिरपभावेण। जेहने प्रभावे करीने। श किइजावविहरामि। बाधा पोडा रहित थको यावत् ह विचरूं। तंखामेमिणदेवाणुप्पिया। तेह भणोह्र खमायूं तुम्हने देवानुप्रिय। देवप्रभ इम कही वादो नमस्कार करी। जावउत्तरपुरच्छिमदिसोभाग अवक्कमइ २ त्ता। यावत् ईशाणकूणि दिशिभाग प्रतें अपक्रमे जाय जाईने। जावध त्तीसइबद्धनट्टविहिंउवदसेइ २ त्ता। यावत् बत्तीस बद्ध नाटक विधि प्रते उपदिशे देखाडे देखाडोने। जामेवदिसिपाउब्भूए। जे दिशि थकी प्रगट थयों हूं तो आव्यो हतो। तामेवदिसिपडिगए। ते दिशिन विषे गयो स्वस्थान गयो। एवखलु गोयमा। इम निश्चे हेगोतम। चमरेणं असुरिदेणं असुररणो। चमरेंद्र असुरेंद्र असुर राजा। सादिव्वादेविड्ढोलद्धापत्ता। ते दिव्य प्रधान देवतानी ऋद्धि लाधो पामी। जाव अभिसमणागया। यावत् सन्मुखपणे भो गविवा योग्य थई चमरेंद्रनी। ठितिसागरोवम। स्थिति आउखो एक सागरोपम। महाविदेहेवासेसिज्झिहिंति जावअंतंकाहिंति। महाविदेह क्षेत्रने विषे सोझस्ये मोक्षजास्ये यावत् आठ कर्मटालो ससारनो अंत करस्ये पूर्वं असुरकुमारने भवप्रत्यय वेरानुबन्धे करी सोधर्म कल्पें जाइवाने विषे हेतु दे

॥ टीका ॥

हे त्वत्तराभिधानायाह ॥ किंपत्तियसंइत्यादि ॥ तत्र किंपत्तियंति ॥ कः प्रत्ययः कारणं यत्र त त्किम्प्रत्ययं ॥ अहुणोववणाणंति ॥ उत्पन्नमात्राणा

॥ मूल ॥

लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया जारिसियाणं अम्हेहि दिव्वादेविड्ढी जाव अभिसमन्नागया तारिसियाणं सक्के
ण देविंदेण देवरन्ना दिव्वादेविड्ढी जाव अभिसमन्नागया, जारिसियाणं सक्केणं देविंदेणं जाव अभिसम
न्नागए तारिसियाणं अम्हेहिंवि जाव अभिसमन्नागए, तंगच्छामोणं सक्कस्सदेविंदस्स देवरन्नो अंतियं
पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो दिव्वंदेविड्ढिं जाव अभिसमन्नागयं पासतु ताव अम्हे
हिंवि सक्केदेविंदे देवराया दिव्वंदेविड्ढिं जाव अभिसमन्नागयं तंजाणामो, तावसक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो

॥ भाषा ॥

हिवे तिहांज हेत्वान्तर कहवाने काजे कहेछे—किंपत्तियण्णंभंतेअसुरकुमारादेवाउड्ढंउप्पयंति । किसे कारणे हेभगवन् ! असुरकुमार ऊंचा जाये, हिवे तिहांज हेत्वान्तर कहवाने काजे कहेछे—किंपत्तियण्णंभंतेअसुरकुमारादेवाउड्ढंउप्पयंति । किसे कारणे हेभगवन् ! असुरकुमार ऊंचा जावो, सोधर्मनामा देवलोक लगे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तेसिणदेवाण । हेगोतम ! तेह ण वाक्यालंकारे, देवने । अहुणोव य । जावसोहम्मोकप्पो । यावत् सोधर्मनामा देवलोक लगे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तेसिणदेवाण । हेगोतम ! तेह ण वाक्यालंकारे, देवने । अहुणोव वण्णगाणवा । तत्कालना उपनानें अथवा । चरिमभवत्थाणवाइमेएआरूवे । भवना चरम भागने विषें रह्याने चवन अवसरने विषे इत्यर्थ इम एहवे रूप अज्झत्थिएज वसमुप्पज्जइ । चित्तमाहे यावत् भाव उपजे मनोगत संकल्प उपजे इत्यर्थ । अहोणंअम्हेहिदिव्वादेविड्ढीलद्धापत्ता जावअभिसमण्णागया । एहवा आशयेने अर्थे अम्हने दिव्य प्रधान देवनी ऋद्धि लाधी पामी यावत् सन्मुख थई । जारिसियाणअम्हेहिदिव्वादेविड्ढी । जेहवी अम्हे दिव्य प्रधान देव सम्बन्धी ऋद्धि लाधी पामी । जावअभिसमण्णागया तारिसियाणं । यावत् भोगविवा सन्मुख थई तेहवी ण वाक्यालंकारे, । सक्केणं देविंदेण देवरण्णा । शक्र देवेन्द्र देवराजाये । दिव्वादेविड्ढी जावअभिसमण्णागया । प्रधान देव सम्बन्धी ऋद्धि यावत् भोगविवा योग्य सन्मुख थई । जारिसियाणसक्केण दे विंदेण देवरण्णो जावअभिसमण्णागया । जेहवी शक्र देवेन्द्र देवराजायें यावत् देवसम्बन्धी ऋद्धि भोगविवा योग्य सन्मुख थई । तारिसियाणअम्हेहिवि जावअभिसमण्णागया । तेहवी अम्हे पणि यावत् भोगविवा योग्य सन्मुख पामी । तंगच्छामोसक्कस्सदेविंदस्सदेवरण्णो । तेह भणी अम्हे जाउ शक्रने

॥ टीका ॥

चरिमजवत्याणवत्ति ॥ भवचरमजागस्यानं च्यवनावसरे इत्यर्थ ॥-इतितृतीयशते द्वितीयश्चमरारव्य ॥ २ ॥ द्वितीयोद्देशके चमरो त्पातउक्त सच क्रियारूपो ऽत क्रियास्वरूपाजिधानाय तृतीयोद्देशक, सच ॥ तेणकालेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ पंचकिरियाउन्ति ॥ करण क्रिया कर्म्म

॥ मूल ॥

दिव्वंदेविड्ढिं जाव ज्ञन्निसमन्नागयं जाणन्न । ताव ञ्चम्हेवि सक्केदेविंदे देवराया दिव्वदेविड्ढिं ञ्चन्निसमन्ना गय एवंखलु गोयमा ! ञ्चसुरकुमारादेवा उड्ढंउप्पयति, जाज सोहम्मेकप्पे, सेवन्नतेन्नतेत्ति ॥ चमरोसम्मत्तो तईयसए वीज उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ तेणकालेण तेणंसमएणं रायगिहेनामं नयरे होत्था जाव परिसापडिगया तेणंकालेणं तेणसमएणं जाव ञ्चतेवासी मंडियपुत्तेणामं ञ्चणगारे पगइन्नद्दए

॥ भाषा ॥

देवेंद्रने देवराजाने । अतिय पाचअयामो पासामो । समोपे प्रगट थाउ देखु । तावसक्कस्सदेविंदस्स देवरणो । पहिला शक्र देवेन्द्र देवराजानो । दि व्वदेविड्ढिजावअभिसमणागयपासमो । दिव्य प्रधान देव सबधो ऋद्धि यावत् पामो देखो । तावअक्के विसक्केदेविंदेदेवराया । पछिलो अम्हे पणि शक्र देवेंद्र देवराजा । दिव्वदेविड्ढि । दिव्य प्रधान देवसबधो ऋद्धि । जावअभिसमणागयतिजाणामो । यावत् भोगविवा सम्मुख थई इमो जाणो । ताव सक्कस्सदेविंदस्सदेवरणो । तावत् शक्र देवेंद्र देवराजा पणि । दिव्वदेविड्ढि जावअभिसमणागयजाणओ । प्रधान देवसंबन्धी ऋद्धि यावत् भोगविवा योग्य सन्मुख थई जाणो । ताउ अम्हे पणि शक्र देवेन्द्र देवराजा । दिव्वदेविड्ढि । प्रधान देव सबधो ऋद्धि । जावअभिसमणागय । यावत् भोगविवा योग्य पामो । एवखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । असुरकुमारादेवा । असुरकुमारदेव । उड्ढउप्पयति । उंचा जाय । जावसोहम्मोकप्पो । यावत् सौधर्मनामा देवलोक लगे । सेवभंते २ त्ति । तमत्ति हे भगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्य छे अन्यथा नथी । चमरोसमत्तो । ए चमरनो अधिकार पूर्ण थयो । तइयसयस्सवितिओउद्देसो । एतले त्रीजे शतके बीजो उद्देशो पूर्णथयो ॥ २ ॥ बीजे उद्देशे चमरनो उत्पात कह्यो ते क्रियारूपछे तेमा टे क्रियानो अधिकार त्रीजे उद्देशे कहे छे—तेणकालेण तेणसमएण रायगिहेणामणयरेहोत्था जावपडिगया । ते चोथा आराकप कालने विषे ते समयने

॥ टीका ॥

बन्धनिबन्धना चेष्टेत्यर्थः ॥ काइयत्ति ॥ चीयत इति कायः शरीरं, तत्रभवा तेन वा; निर्वृत्ता कायिकी ॥ अहिगरणियत्ति ॥ अधिक्रियते नरकादि ष्वात्मा नेनेति अधिकरण मनुष्ठानविशेषो बाह्यवा; वस्तु चक्रखड्गादि, तत्र भवा तेनवा; निर्वृत्तेति आधिकरणिकी ॥ पाउसियत्ति ॥ प्रद्वेषो मत्सर तत्र भवा तेनवा; निर्वृत्ता स एववा; प्राद्वेषिकी ॥ पारितावणियत्ति ॥ परितापन परितापः पीड़ाकरण, तत्र भवा तेनवा; निर्वृत्ता तदेववा, पारितापनिकी ॥ पाणाइवायकिरियत्ति ॥ प्राणातिपातः प्रसिद्ध स्तद्विषया क्रिया प्राणातिपात एव वा; क्रिया प्राणातिपातक्रिया ॥

॥ मूल ॥

जाव पज्जुवासमाणे एववयासी—कइणं भंते ! किरियाउ पण्णत्ताउ? मंडियपुत्ता ! पचकिरियाउ पण्णत्ताउ तजहा—काइया १ अहिगरणिया २ पाउसिया ३ पारियावणिया ४ पाणाइवायकिरिया ५ । काइयाणं

॥ भाषा ॥

विषे राजगृह नामा नगर हुया तिहा स्वामी समोसरापरिषदा आवी धर्म कह्यो यावत् परिषदा पाछी वली। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालने विषे ते समयने विषे। जाव अंतेवासी मंडियपुत्तेणामअणगारे। यावत् स्वामीनो शिष्य मण्डितपुत्र नामे अणगार साधु। पगइ भद्दए। स्वभावे भद्रक। जावपज्जुवासमाणे एववयासी। यावत् सेवाकरतो थको इम कहै। कइणभंतेकिरियाओ पण्णत्ताओ मंडियपुत्ता। केतली णं वाक्यालकारे, हेभगवन्। क्रिया कही करता ते क्रिया कहोये कर्मनो जे हेतु भूत चेष्टारूप इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर हे मण्डित पुत्र। पचकिरियाओ पण्णत्ताओ तजहा। पाच क्रिया कही ते कहैछे—काइया अहिगरणीया पाओसिया पारितावणिया पाणाइवायकिरिया। शरीर तेहने विषे हुवे अथवा तिणें नीपनी ते कायिकी क्रिया अधिकारी करिये नरकादिकने विषे आत्मा इणेंकरी ते अधिकरण अनुष्ठान विशेष अथवा बाह्य चक्र खड्गादिकनो अधिकरण तिहां थई अथवा तिणें नीपनी ते अधिकरणकी क्रिया २ तथा प्रद्वेष मत्सर तेहने विषेथई अथवा तिणे नीपनी अथवा तेहीज प्राद्वेषकी क्रिया कहीये ३ तथा पारिताप पीडानो करवो तिहा थई अथवा तिहां नीपनी अथवा तेहीज ते पारितापनकी क्रिया कहीये ४ प्राणातिपातक जीवनो हणवो ते विषय जक्रिया अथवा प्राणी हणवो तेहीजक्रिया ते प्राणातिपातिकी क्रिया कहीये। काइयाणंभंतेकिरिया कइविहा पण्णत्ता। कायिकी ण वाक्यालंकारे, हे

॥ टीका ॥

अणुवरयकायकिरियायत्ति ॥ अनुपरतो अविरत स्तस्य कायक्रिया अनुपरतक्रिया, एष अविरतस्य भवति ॥ दुप्पउत्तकाय किरियायत्ति ॥ दुष्ट प्रयु क्तो दुःप्रयुक्तः स यामी कायश्च दुःप्रयुक्तकाय स्तस्य क्रिया दुःप्रयुक्तकायक्रिया, अथवा दुष्टं प्रयुक्तं प्रयोगो यस्य स दुःप्रयुक्त स्तस्य कायक्रिया दुःप्रयुक्तकायक्रिया एष प्रमत्तसंयतस्यापि भवति विरतिमत प्रमादे सति कायदुष्प्रयोगस्य सद्भावात् ॥ संजोयणाहिगरणकिरियायत्ति ॥ संयोजन [illegible] पूर्वनिर्वर्तितानां मीलन तदेव [illegible] संयोजनाधिकरणक्रिया ॥ निव्वत्तणाहिगरणकिरियायत्ति ॥ निर्वर्तन [illegible]

॥ मूल ॥

भंते ! किरिया कइविहा पगत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पगत्ता, तंजहा–अणुवरयकायकिरियाय दुप्प उत्तकायकिरियाय । अहिगरणियाणं भंते ! किरियाकइविहा पगत्ता ? मंडियपुत्ता ! दुविहा पगत्ता, तंजहा–संजोयणाहिगरणकिरियाय निव्वत्तणाहिगरणकिरियाय । पाउसियाणं भंते ! किरियाकइविहा प० ?

॥ भाषा ॥

भगवन्! क्रिया कितने प्रकार की कही है? उत्तर। मंडितपुत्र! दो प्रकार की कही है [illegible] अनुपरतकायक्रिया दुःप्रयुक्तकायक्रिया। [illegible] पुत्र! [illegible] कहते हैं—अनुपरत [illegible] जिसकी कायक्रिया [illegible] दुःप्रयुक्त [illegible] काय [illegible] क्रिया [illegible] प्रमाद [illegible] संयोजना [illegible] अधिकरणिकी क्रिया [illegible] दुविहा पगत्ता [illegible] अधिकरणिक्रिया [illegible] भगवन्! क्रिया कितने भेद [illegible] [illegible] भगवन्! क्रिया कितने भेद की कही [illegible]

शक्तितोमरादीनां निष्पादनं तदेवा धिकरणक्रिया निर्वर्त्तनाधिकरणक्रिया ॥ जीववाउसियायत्ति ॥ जीवस्या त्मपरतदुभयरूपस्यो परि प्रद्वेषाद्या क्रिया प्रद्वेषकरणमेव वा ; ॥ अजीवपाउसियायत्ति ॥ अजीवस्यो परि प्रद्वेषाद्या क्रिया प्रद्वेषकरणमेववा ; ॥ सहत्थपारियावणियायत्ति ॥ स्वहस्तेन स्वस्य परस्य तदुभयस्यवा ; परितापनादसावोदीरणाद्या क्रिया परितापनाकरणमेववा , सा स्वहस्तपारितापनिकी एवं परहस्तपारितापनिक्यपि एव प्राणातिपातक्रियापि' उक्ता' क्रिया , अथ तज्जन्य कर्म्म तद्वेदना चाधिकृत्याह ॥ पुव्विंभंतेत्यादि ॥ क्रियाकरणं तज्जन्यत्वा त्कर्म्मापि क्रिया

मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता , तंजहा—जीवपाउसियाय अजीवपाउसियाय । पारियावणियाणं भंते ! किरियाकइपुच्छा मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—सहत्थपारियावणियाय परहत्थपारियावणियाय । पाणाइवायकिरियाण भंत ! पुच्छा मंडियपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सहत्थपाणाइवायकिरियाय परहत्थपाणाइवायकिरियाय । पुव्विं भंते ! किरियापच्छावेयणा पुव्वि वेयणा पच्छाकिरिया ? मंडियपुत्ता !

हे मण्डित पुत्र । बेहु भेदे कह्यो ते कहेछे—आपण परने तदुभय रूपने ऊपरे प्रद्वेष राखे तेहथी जिका क्रिया अथवा प्रद्वेषनी जे करवा ते जीव प्रद्वेष की क्रिया कहीये १ अजीवने ऊपर प्रद्वेष थको क्रिया अथवा प्रद्वेषनोज तेहीजक्रिया ते अजीव प्रद्वेष थकी क्रिया २ । पारियावणियाणभंते किरिया कइविहा पण्णत्ता मंडियपुत्ता दुविहा पण्णत्ता तजहा सहत्थपारियावणियाय १ । पारितापनकी ण वाक्यालंकारे, हे भगवन् । केतले भेदेकही इतिप्रश्न, उत्तर हे मण्डितपुत्र । बेहु भेदे कह्यो ते कहेछे—स्वहस्तेंकरी आपणने तथा परने तथा बेऊने परितापनथी आशातना उदीरणा थकी जिका क्रिया अथवा परितापन करण तेहीज स्वहस्त परितापनकी १ । परहत्थपारियावणियाय । परहस्ते करी आपणने तथा परने तथा बेऊने परितापन आशातनानो उदीरणाथी जिका क्रिया परितापन करण तेहीज परहस्त पारितापन की क्रिया कहीये । पाणाइवायकिरियाणभंतेकइविहा पण्णत्ता । प्राणातिपात क्रिया ण वाक्यालंकारे हेभगवन् । केतले भेदे कहीये इतिप्रश्न उत्तर । मंडियपुत्ता दुविहा पण्णत्ता तजहा सहत्थिपाणाइवायकिरियाय ।

॥ टीका ॥

अथवा; क्रियत इति क्रिया कर्म्मैव वेदनातु कर्म्मणो नुभव' साच पश्चादेव भवति कर्म्मपूर्वकत्वा त्तदनुभवनस्येति' अथ क्रियामेव स्वामिभावतो निरूपयन्नाह ॥ अत्यिणमित्यादि ॥ अस्त्यय पक्षो यदुत क्रिया क्रियते क्रिया भवति प्रमादप्रत्ययात् यथाहु' ॥ प्रयुक्तकायक्रियाजन्य कर्म्म योगनिमित्तच यथे र्यापथिक कर्म' क्रियाधिकारा दिदमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ इहजीवग्रहणेपि सयोगएवा सौ ग्राह्यो ऽयोगस्यै जनादे रसम्भवात्,

॥ मूल ॥

पुव्विंकिरिया पच्छा वेयणा णोपुव्विं वेयणा पच्छा किरिया । अत्थिण भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ हंता ! अत्थि । कहिणभंते ! समणाणं निग्गथाणं किरिया कज्जइ ? मंडियपुत्ता ! पमायपच्चया

॥ भाषा ॥

हे मण्डित पुत्र । बेहूं भेदे कह्यो ते कहेछे—पोताने हाथेकरी आपने तथा परने तथा बेहूने अतिपात हणवो तेहथी जेक्रिया अथवा प्राणातिपात हो ज ते स्वहस्त प्राणातिपात होज ते स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया १ । परहत्थपाणाइवायकिरियाय । परहस्ते करी आपणे तथा परने तथा तदुभयने प्राण रहित करवायी जे क्रिया अथवा प्राणातिपात होज ते परहस्त प्राणातिपात क्रिया २ पूर्वे क्रिया कही ॥ हिवे तेहथी ऊपनो कर्म तेहनो वेदना ते अधिकरी कहेछे—पुव्विंभतेकिरियापच्छावेयणा पुव्विंवेयणापच्छाकिरिया । पहिला हेभगवन् । क्रिया हुवे, अने पछे वेदना हुवे अथवा पूर्वे वेदना हुवे पछे क्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर । मडियपुत्तापुव्विंकिरियापच्छावेयणा । हेमंडित पुत्र। पूर्वे क्रिया कहता करण तेहथी कर्म ऊपजे तेमाटे कर्म पणि क्रिया कहीये अथवा कीजै ते क्रिया ते कर्महीज कहीये अने वेदनातो कर्मनो भोगववो ते पछे होज हुवे पहिला कर्मकरे तो भोगववो हुवे ते माटे पहिला क्रिया पछे वेदना पणि । णोपुव्विंवेदणापच्छाकिरिया । नही पूर्वे वेदना पछे क्रिया हुवे ॥ हिवे क्रिया प्रतेज स्वामी भावथी कहेछे—अत्थिणभंतेसमणाणंणिग्गथाणंकिरियाकज्जइ । छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । श्रमण निर्ग्रंथ क्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थिकहणभंतेसमणाणणिग्गथाण किरियाकज्जइ मडियपुत्ता पमायपच्चया जोगनिमित्तंच । हामडितपुत्र छे किसे प्रकारे णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । श्रमण निर्ग्रंथने क्रिया हुवे इति प्रश्न हे मडितपुत्र! दुख प्रयुक्त काय क्रियाथी नीपनो कर्म जेहथी अथवा प्रमाद कहतां मद मिथ्यात्व अविरति यथा प्रमाद जिनेंद्रे आठ प्रकारे कह्यो

॥ टीका ॥

सदा नित्यं ॥ समियंति ॥ सप्रमाणं ॥ एयइत्ति ॥ एजते कम्पते एजृकम्पनइतिवचनात् ॥ वेयइत्ति ॥ व्येजते विविधं कम्पते ॥ चलइत्ति ॥ स्थानान्तरं गच्छति ॥ फंदइत्ति ॥ स्पन्दते किञ्चिच्चलति स्पदिकिञ्चिच्चलनइतिवचनात्, अन्य मवकाशं गत्वा पुन स्तत्रैवा गच्छती त्यन्ये ॥ घट्टइत्ति ॥ सर्वदिक्षु चलति पदार्थान्तरंवा; स्पृशति ॥ खुब्भइत्ति ॥ क्षुभ्यति पृथिवी प्रविशति, क्षोभयतिवा; पृथिवी बिभेतिवा; ॥ उदीरइत्ति ॥ प्राबल्येन प्रेरयति, पदार्थान्तरप्रतिपादयतिवा; शेषक्रियाभेदसङ्ग्रहार्थमाह ॥ ततभावंपरिणमइत्ति ॥ उत्क्षेपणावक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणादिकं परिणामं याती

॥ मूल ॥

जोगनिमित्तच, एवंखलु समणाण निग्गंथाण किरिया कज्जइ । जीवेणं भंते ! सयासमियं एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तंतंभावं परिणमइ ! हंता मंडियपुत्ता ! जीवेण सयासमिय एयइ जाव

॥ भाषा ॥

अज्ञान १ संशय २ मिथ्याज्ञान ३ राग ४ द्वेष ५ मतिभ्रम ६ धर्मने विषे अनादर ७ योगने दुख प्रणिधान ८ तेहथी क्रियाउपजे जोग कहीये ईर्यापथिक कर्म अथवा मन प्रमुखना व्यापार तेहोज कहता हेतुछे जिहां । एवखलुसमणाणणिग्गंथाणकिरिया कज्जइ जीवेणभंतेसयासमिय एयइ वेयइ फदेइ घट्टेइ खुभेइ । इम निश्चे श्रमण निर्ग्रंथने क्रिया हुइ क्रियाधिकारथीज कहेछे—जीव हेभगवन् । इहां जीवनो ग्रहण कीधोछे तो पणि सयोगी होज जीव ग्रहवा पणि असयोगीनो ग्रहण न करवो अयोगीने कम्पनादिकना अभावथी सदा नित्ये सप्रमाण कम्पे विविध प्रकारे कपे एकै स्थानक थकी बीजे स्थानक जाय काइक चले अथवा अनेरे स्थानकेजाय वलो तिहांइज आवै सर्वदिशिने विषे चले अथवा किणही बीजा पदार्थने फरसे पृथिवी प्रवेश करे अथवा पृथिवीने डरावै । उदीरेइ ततभावपरिणमइ हतामंडियपुत्ता जीवेणभते । प्रबलपणे प्रेरे तथा अनेरी वस्तुनो अनेरी वस्तु करे शेषक्रिया भेदने संग्रहने अर्थं कहेछे—वैसिवी उठिवो लेवो संकोच विस्तार इत्यादि भाव प्रतें परिणमें एह एजनादि भावने अनुक्रम भावपणे करी सामान्यथी एहवो कहवो पणि नहो प्रत्येकनो अपेक्षायें स्यांमाटे अनुक्रम भावीने समकालना अभावथी इतिप्रश्न हा मण्डितपुत्र सयोगी जीव ण वाक्यालंकारे, भते कहता हेभगवन् । सयासमियएयइ । सदा नित्ये सप्रमाण कंपे इत्यादि । जावतंतभावपरिणमइ । यावत् तेते पूर्वे कह्या भावप्रते परिणमे । जावच

॥ टीका ॥

त्यर्थः, एषां चैजनादिभावानां क्रमभावित्वेन सामान्यत सदेति मन्तव्यं, नतु प्रत्येकापेक्षया क्रमभाविनां युगपदभावादिति ॥ तस्सजीवस्सअंतेत्ति ॥ मरणान्ते ॥ अंतकिरियत्ति ॥ सकलकर्मक्षयरूपा ॥ आरभइत्ति ॥ आरभ्यते पृथिव्यादी नुपद्रवयति ॥ सारभइत्ति ॥ संरभते तेषु विनाशसङ्कल्प करोति ॥ समारभइत्ति ॥ समारभते तानेव परितापयति आहच–संकप्पोसरंभो परितावकरोभवेसमारंभो । आरंभोउद्दवओ सव्वणयाणविसुद्धाणं ॥ १ ॥ इदंच क्रिया २ वतो कथञ्चिदभेदइत्यभिधानाय तयोः समानाधिकरणत सूत्रमुक्त, अथ तयोः कथञ्चि द्भेदो प्यस्तीति दर्शयितु पूर्वोक्तमेवार्थ व्यधिकरणत आह ॥

॥ मूल ॥

तंतभावं परिणमइ । जावं चणंभंते ! सेजीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं तस्स जीवस्स अंतेअंतकिरिया भवइ ? णोइणठेसमठे । सेकेणठेण भंते ! एववुच्चइ जावचणं सेजीवे सयासमियं जाव अंतेअंतकिरिया नभवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं सेजीवे सयासमियं जाव परिणमइ तावंचणं सेजीवे आरंभइ सारंभइ समारंभइ, आरंभेवट्टइ सारंभेवट्टइ समारंभेवट्टइ, आरंभमाणे सारंभमाणे समारंभमाणे, आ

॥ भाषा ॥

णंभंतेसेजीवेसयासमियजावपरिणमइ । जेतले काल णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । ते जीव सदा सप्रमाण यावत् तेते पूर्वोक्त भावप्रतें परिणमें । तावचणं तस्सजीवस्सअंतेअंतकिरियाभवइ । तेतले काले ते जीवने अंते मरणने अंते अंत सकल कर्म क्षयरूप अंतक्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर । णोइणठेसमठे । एअर्थ समर्थ नही युक्तनही । सेकेणठेणभंतेएववुच्चइ । ते किसे अर्थे हेभगवन् । इम कह्यु । जावचणंसेजीवेसयासमियंजावअंतेअंतकिरियानभवइ । जेतले काले ते जीव सदा सप्रमाण तेते भावप्रतें परिणमें तेतले काले ते जीवने मरणने अंते यावत् अंत सकलकर्म क्षयरूप अंतक्रिया नहुवे इतिप्रश्न उत्तर । मंडियपुत्ता । हेमंडित पुत्र । जावचणसेजीवेसयासमियजावपरिणमइ । जेतले काले ते जीव सदा सप्रमाण यावत् तेते भावप्रतें परिणमे । तावचणसेजीवे आरभइसारंभइसमारभइ । तेतले काले ते जीव पृथिव्यादिक प्रतें उपद्रवे विनासे ते पृथिव्यादिकने विनाशनो संकल्प करे विनाशवाने चिंतवे पृथिव्यादिक प्रतें परिताप उपजावे आहच—संकप्पो सरंभो परिताव करो भवे समारंभो आरंभोउद्दवओ सव्वनयाण विसुद्धाणं १ एह क्रिया अने क्रियावंतने

॥ टीका ॥

आरम्भेइत्यादि॥ आरम्भेअधिकरणभूते वर्त्तते जीव एवं संरम्भे संमारम्भेच अनन्तरोक्तवाक्यार्थद्वयानुवादेन प्रकृतयोजनामाह—आरम्भमाण· संरम्भमाणः समारम्भमाणो जीव इत्यनेन प्रथमो वाक्यार्थो नूदित· आरम्भे वर्त्तमान इत्यादिना तुद्वितीयः, दुक्खावणताएइत्यादौ, ताशद्दस्य प्राकृतप्रभवत्वात्, दु खापनाया मरणलक्षणादु खप्रापणाया मथवा; इष्टवियोगादिदु· खहेतुप्रापणाया वर्त्तत इतियोग· ; तथा शोकापनायां दैन्यप्रापणायां ॥ जूरावणताएत्ति ॥ शोकातिरेका च्छरीरजीर्णता प्रापणाया ॥ तिप्पावणताएत्ति ॥ त्रेपापनाया तिपृष्टेपृक्षरणार्थो वितिवचनात् शोकातिरेकादेव अश्रुलालादिक्षरणप्रापणाया ॥ पिट्टावणताएत्ति ॥ पिट्टनप्रापणाया ततश्च परितापनायां शरीरसन्तापे वर्त्तते' क्वचित्पठ्यते ॥ दुक्खणयाएइ

॥ मूल ॥

रम्भेवट्टमाणे सारम्भेवट्टमाणे समारम्भेवट्टमाणे बहूणंपाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणताए सोयावणताए जूरावणताए तिप्पावणताए पिट्टावणताए परियावणताए वट्टइ, सेतेणठेणं मंडियपुत्ता ! एवंवुच्चइ,

॥ भाषा ॥

कथञ्चित प्रकारे अभेद कहवाने काजे एवेजने समानाधिकरण थकी सूत्र कह्यु॥ हिवे क्रिया अने क्रियावतने कह्यु एक भेद पणिछे ते देखाडतो पूर्वे कह्यो जे अर्थ तेहीज प्रतें व्यधिकरण थकी कहैछे—आरंभेवट्टइ सारंभेवट्टइ समारंभेवट्टइ आरंभमाणे सारंभमाणे समारंभमाणे। आरंभ अधिकरण भूतने विषे जीव वर्त्ते १ सारंभ अधिकरणने विषे वर्त्ते जीव २ समारंभ अधिकरणने विषे वर्त्ते जीव ३ ॥ हिवे अनन्तरे कह्या वाक्यार्थ बेभेद अनुवादे करी प्रकृति योजनना प्रतें कहैछे—पृथिव्यादिक प्रतें उपद्रव करतो जीव १ पृथिव्यादिकने विषे विनाश चितवतो जीव २ पृथिव्यादिकने विषे परिताप उपजावतो जीव ३ एहवो जीव एतले पहिलो वाक्यार्थ कह्यो। आरंभेवट्टमाणे सारंभेवट्टमाणे समारंभेवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खावणयाए। आरंभ अधिकरण भूतने विषे वर्त्ततो जीव १ सारंभ अधिकरण भूतने विषे वर्त्ततो जीव २ समारंभ अधिकरण भूतने विषे वर्त्ततो थकोजीव ३ घणां प्राणीने भूतने जीवने सत्वने मरणलक्षण दुख प्राप्तिनेविषे वर्त्ते एहवो योगकरवो अथवा इष्ट वियोग दूखहेतु पमाडवाने विषे वर्त्ते इतियोग। सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए। दैन्यभाव पमाडवाने विषे वर्त्ते अतिशोकथी शरीर जीर्णपणे पमाडवाने वर्त्ते अतिशोकथी

॥ टीका ॥

त्यादि ॥ तच्च व्यक्तमेव यच्च तत्र किलामणयाए उद्दावणयाए इत्यधिकं मभिधीयते, तत्र ॥ किलामणयाएत्ति ॥ ग्लानिनयने ॥ उद्दावणयाएत्ति ॥ उत्त्रासने उक्तार्थविपर्ययमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ एगेएयइत्ति ॥ शैलेशीकरणे योगनिरोधा न्नोएजतइति, एजनादिरहितस्तु नारम्भादिषु वर्त्तते, तथाच न प्राणादीना दुःखापनादिषु तथाच योगनिरोधाभिधानशुक्लध्यानेन सकलकर्मध्वसरूपान्तक्रिया भवति तत्रच दृष्टान्तद्वयमाह ॥ सेजहे

॥ मूल ॥

जावचण सेजीवे सयासमियं एयइ जाव परिणमइ तावचण तस्सजीवस्स अंते अंतकिरिया नभवइ । जी जीवेणभंते ! सयासमियं णोएयइ जाव णो ततभावं परिणमइ ? हंतामंडियपुत्ता ! जीवेणंसयासमियं जाव नोपरिणमइ , जावंचणभंते ! सेजीवे नोएयइ जाव नोतंतभावं परिणमइ , तावंचणं तस्सजीवस्स अंतेअंतकिरिया भवइ ? हंता जाव भवइ । सेकेणठेण जाव भवइ ? मंडियपुत्ता ! जावंचणं सेजीवे सया

॥ भाषा ॥

आसू लालादि नाखवो तेह पमाडवाने विषे वर्त्तं पोटन पमाडवाने विषे प्रवर्त्तं । परियावणयाए । शरीर संताप पमाडवाने विषे प्रवर्त्तं । सेतेणठेणम डियपुत्ता एववुचइ । ते तेणे अर्थं हेमंडित पुत्र । इम कह्यु । जावचणंसेजीवेसयासमिय एयइ । जेतले काले ते जीव सदा सप्रमाण कपे । जावपरिणमति । यावत् तेते भावप्रते परिणमे । तावचणतस्सजीवस्सअंतेअंतकिरियानभवइ । तेतले काले तेह जीवने मरण अंते सकलकर्म चयरूप अंतक्रिया नहोवे ॥ हि वे पहिलां कह्यो जे अर्थ तेहथी विपरीत पणे कहेछे—जीवेणभंतेसयासमिय णोएयइ जावणोततभावंपरिणमइ । जीव ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! सदा समित सप्रमाण न कपे यावत् तेते भावप्रतें परिणमे नही इतिप्रश्न, उत्तर । हंतामडियपुत्ता । हा मंडिय पुत्र । जीवेणसयासमियजावणोपरिणमइ । जीव सदा सप्रमाण यावत् तेते भाव प्रतें परिणमे नही शैलेशीकरणने विषे योगना निरोध थकी, कपे नही तिवारे तेभाव प्रते परिणमे नही । जावच णभंतेजीवेणोएयइ जावणोततभावपरिणमइ । जेतले काले हेभगवन् । तेजीव नकपे । यावत तेते भावप्रते परिणमे नही । तावचणतस्सजीवस्सअंतेअंतकि रियाभवइ । तेतले काले ते जीवने मरण अंते अंत सकल कर्म चयरूप अंतक्रिया हुवे । हंताजावभवइ । हा मंडिय पुत्र । अंतक्रिया यावत् हुवे । सेकेणठे

॥ टीका ॥

त्यादि ॥ तिणहत्थयंति ॥ तृणपूलकं ॥ जायतेअंसित्ति ॥ वह्नौ ॥ मसमसाविज्जइत्ति ॥ शीघ्रं दह्यते, इहच दृष्टान्तद्वयस्या प्युपनयार्थं सामर्थ्यग
म्यो यथा ग्व मेजनादिरहितस्य शुक्लध्यानचतुर्थभेदानलेन कर्मटाख्यदहन स्यादिति अथ नि क्रियस्यै वान्तक्रिया भवतीति नौदृष्टाते नाह ॥ सेज

॥ मूल ॥

समियं णोएयइ जाव परिणमइ । तावंचणं सेजीवे नोआरंभइ नोसारंभइ नोसमारंभइ नोआरंभेवट्टइ
नोसारंभेवट्टइ नोसमारंभेवट्टइ अणारंभमाणे असारंभमाणे असमारंभमाणे, आरंभेअवट्टमाणे सारंभे
अवट्टमाणे समारंभेअवट्टमाणे बहूणंपाणाणं ४ अदुक्खावणताए जाव अपरियावणताए वट्टइ, सेजहा
नामए केइपुरिसे सुक्कतणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सेसुक्के तणहत्थए जायते

॥ भाषा ॥

णजावभवइमंडिया । ते किसे प्रयोजने हेभगवन् । यावत् अंतक्रिया हुवे इतिप्रश्न, हेमंडित पुत्र । जावचणसेजीवेसयासमियणोएयइ। जेतले कालेते जीव
सदा मप्रमाण नकंपे ते ते भावप्रते । जावपरिणमइ । यावत् परिणमे नही । तावचणसेजीवेणोआरभइ । तेतले काले तेजीवनो पृथिव्यादिक उपद्रवे
नही । णोसारभइणोसमारभइ । पृथिव्यादिकने विषे विनाशनो सकल्प नकरे पृथिव्यादिक प्रते परिताप उपजावे नही । णोआरभेवट्टइ णोसारभेवट्टइ
णोसमारभेवट्टइ । आरभने विषे वर्त्ते नही सारभने विषे वर्त्तेनही समारभने विषे वर्त्तेनही । अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे । पृथिव्यादिक
ने विषे उपद्रव अणकरतो थको पृथिव्यादिकने विनाश अणचिंतवतो थको पृथिव्यादिकने परिताप अणउपजावतो थको । आरंभेअवट्टमाणे सारंभेअ
वट्टमाणे समारंभेअवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जोवाण सत्ताण अदुक्खावणयाए जावअपरियावणयाएवट्टइ । आरंभने विषे अवर्त्तमान थको सारभने
विषे अवर्त्तमान थको समारभने विषे अवर्त्तमान थको घणा प्राणी भूत जीव सत्वने मरण लक्षण दुख पमाडवाने विषे वर्त्तेनही यावत् परितापने वि
षे वर्त्तेनही एतले ऐलेषो करण विषे योगना निरोध थको कंपेनही अने कम्पनादि रहित ते आरभादिकने विषे वर्त्तेनही एहवो थको प्राणादिकने
दुखापनादिकने विषे वर्त्तेनही तेहवो थको योग निरोध नामे शुक्लध्याने करी सकल कर्मध्वसरूप अतक्रिया करे इति भावार्थ इहां दृष्टान्तमे कहेछे—से

यंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ ? हंता ! मसमसाविज्जइ । सेजहानामए केइपुरिसे तत्तं सि अयकवल्लंसि उदयविंदुपक्खिवेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सेउदयविंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ? हंता समागच्छइ सेजहानामए हरएसिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्ट माणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ , अहेणं केइपुरिसे तंसि हरयंसि एगंमहं णावं सयासवं सयच्छिद्दं उग्गहेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तेहिं आसवद्दारेहिं आपूरमाणी आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्प

जहानामएकेइपुरिसे । ते यथा नामे दृष्टांते कोई पुरुष । सुक्कंतिणहत्थय । सूको त्रिणनों पूलो । जायतेयंसि । अग्निनें विषे । पक्खिवेज्जा । प्रक्षेपकरे नाखे । सेणूण मंडियपुत्ता । निश्चे हे मंडितपुत्र । सेसुक्कतणहत्थए । ते सूको त्रिणनों पूलो । जायतेयंसिपक्खित्तेसमाणे । अग्निनें विषे प्रक्षेपकीधा थ कांज नाख्या थकाज । खिप्पामेवमसमसाविज्जइ । उतावलो बीज दहन पणोंपमाणे वाले इति प्रश्न । हंतामसमसाविज्जइ । उत्तर हा भगवत उ तावलो वाले । सेजहानामएकेइपुरिसे । बीजो दृष्टांत कहेछे—ते यथानाम कोई पुरुष । तत्तंसिअयकवल्लंसि । ताता वल ताने विषे लोहना कडा हानें विषे । उदगविंदूपक्खिवेज्जा । पाणीनों विंदुउ प्रक्षेप करे नाखे । सेणूण मंडियपुत्ता । ते निश्चे हे मंडित पुत्र । सेउदयविंदू । ते उदक पाणीनों विं दूउ । तत्तंसिअयकवल्लंसिपक्खित्तेसमाणे खिप्पामेवविद्धंसमागच्छइ हंताविद्धंसमागच्छइ सेजहानामएहरएसिया पुण्णेपुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्ट माणे । ताता लोहना कडाहानें विषे प्रक्षेप कीधा थका उतावलो विध्वंसपामे वले इम भगवंत पूछ्यो तिवारे मंडित पुत्र कहे हां स्वामिन् । वले तिवारें स्वामी कहे इहां दृष्टांत दीयनें उपनयथको सामर्थ्य योगे देखाडीयेंछे—इम एजनादि रहित नें शुक्लध्याननों चौथो पायो ते तेरूप अग्निकरी समस्त कर्म तृण पूलानी परें तथा उदक विंदुनी परें वालें इति भावार्थ, हवें निःक्रियनेंज अंत क्रिया हुवें, ते नावने दृष्टाते करी कहेछे—ते यथा नाम दृष्टांते द्रहइद्र पांणीसूंभर्यो लगार उणो नहीं पांणी नीसरता उछालापामतो तेनो छे जेहनो जलनां बहुलपणा थको विकसतो छे विषम नही भव जिम

॥ टीका ॥ हाणामसत्यादि ॥ इह शब्दार्थ- प्राग्व नवरं ॥ उद्दाइत्ति ॥ उद्याति जलस्योपरि वर्त्तते ॥ अत्तत्तासंवुडस्सत्ति ॥ आत्म न्यात्मना संवृतस्य प्रतिसंली

॥ मूल ॥ माणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिठइ ? हंता चिठइ । अहेणं केइपुरिसे तीसे नावाए सव्वउ समंता आसवदाराइं पिहेइ पिहेइत्ता नावा उस्सिंचणएणं उदयं उस्सिंचेज्जा ? सेनूणं मंडियपुत्ता ! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेवउड्ढंउदाइ ? हंता उदाइ , एवामेव मंडियपुत्ता ! अत्तत्तासंवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स जाव बंभगुत्तयारिस्स आउत्तं गच्छमाणस्स चिठमाणस्स

॥ भाषा ॥ घडो भरो हुइ जिम जलनो । समभरघडत्ताएचिट्ठइ । समुदाय जिहा इसोद्रह भरो रहे छे । अहेणकेइ पुरिसेतसिहरयसि । हवे ण कोई पुरुष तेह द्रहने विषे एक मोटी । एगमहणाव सतासयछिद्दउगाहिज्जा । नावा ते केहवी छे सईकडाना आश्रव नान्हाछिद्र पांणी आववाना छे जिहा सो मोटा छिद्रछे जेहने इसीनावा पाणी माहे अवगाहे प्रवेश करावे । सेणूणमंडियपुत्ता । ते निश्चैं हे मंडित पुत्र । सानावा । तिकानावा । तेहि आसवद्दारेहि । तिणे पाणी आववाने छिद्रें करी । आपूरमाणी । पाणीयेंकरी भराती थकी । पुण्णापुण्णमाणा । भराइ लेगार ऊंणीइं करी ऊणी नहीं । वोलट्टमाणा । जिहा पाणी उल्लाघ पामे छे । वोसट्टमाणा । वली पाणी नखातो छे विकसतो छे । समभरघडत्ताएचिट्ठइ । द्रह चंप्यो घडो पाणी भरो जिम तले वैसे तिम तेनाव पाणी संभरो थको पाणी माहि वैसे इसूं स्वामीयें पूछ्यू मंडित पुत्र कहे । हताचिट्ठइ । हा स्वामिन् वैसे ! अहेणंकेइपुरिसे । हवे ण कोई पुरुष । तीसेनावाए । तेह नावा । सव्वतोसमता । सर्व्वथी चौक फेर समस्त प्रकारे । आसवद्दाराइपिहेइ२ त्ता । पांणी अववाना शत बार तेह प्रतें ढांके ढांकीनें । नावाउस्सिचणएणउदय उस्सिंचेज्जा । नाव जल उलीचवानें भाजनें करीनें पांणी प्रतें उलींचीनाखे ते नाव थकी पाणी वाहिर काढे तिवारे । सेणूणमंडितपुत्ता सावावा । ते निश्चे हेमंडित पुत्र तिकानाव । तसिउदयंसि । तेह पाणीने । उसित्तंसिसमा णंसि उले चणें करीने उलीचौ पाणी काढ्या थका ते नाव । खिप्पामेवउड्ढंउदाइ । उतावली हीज पाणी ऊपर ऊचो जाय । हताउदाइएवामेवमंडि

॥ टीका ॥

नस्ये त्यर्थ एतदेवइरियासमियस्सेत्यादिना प्रपञ्चयति आयुक्त मुपयोगपूर्वक मित्यर्थ· ॥ जावचक्खुपम्हनिवायमविति ॥ किंबहुना आयुक्तगमनादिना स्थूलक्रियाजालेनो क्तेन याव चक्षु पत्मनिपातोपि, प्राकृतत्वा ल्लिङ्गव्यत्यय उन्मेषनिमेषमात्रक्रिया प्यस्ति, आस्ता गमनादिका तावदिति शेष. ॥ वेमायत्ति ॥ विविधमात्रा अन्तर्मुहूर्त्तादे र्देशोनपूर्वकोटीपर्यन्तस्य क्रियाकालस्य विचित्रत्वात्, वृद्धा· पुनरेव माहु–याव चक्षुषो निमेषोन्मेषमात्रापि क्रिया क्रियते तावतापि कालेन विमात्रया स्तोकयापि मात्रया इति, क्वचि द्विमात्रेत्यस्य स्थाने सपेहाएत्ति दृस्यते, तत्रच स्वप्रेक्षया स्वेच्छया चक्षु पत्मनिपातो नतु परकृत ॥ सुहुमत्ति ॥ सूक्ष्मवन्धादिकाला ॥ इरियावहियत्ति ॥ ईर्यापथो गमनमार्ग स्तत्रभवा ऐर्यापथिकी केवल

॥ मूल ॥

निसियमाणस्स तुयट्टमाणस्स आउत्तं वत्थपडिग्गहकवलपायपुंछणं गेरहमाणस्स निक्खेवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया सुहुमा इरियावहिया किरिया कज्जइ, सा पढमसमयबद्धा पुठा वितिय

॥ भाषा ॥

यपुत्ता । हा स्वामी । जवोजाय इणिहीज दृष्टाते हे मण्डित पुत्र । अत्तत्तासवुडस्स अणगारस्स । आपहीज जिणे आत्मा संवरीछे प्रतिसंलीनने गृह स्थावास रहित साधुने । इरियासमियस्स । ईर्यासमितने । जावगुत्तबभयारिस्स । यावत् गुप्त ब्रह्मचर्यने । आउत्तगच्छमाणस्स । उपयोग पूर्वक चालता थकाने । चिट्ठमाणस्स निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स । उपयोग पूर्वक ऊभा थकाने उपयोग पूर्वक वेसता थकाने उपयोग पूर्वक सूता थकाने । आउत्तंवत्थपडिग्गहकवलपायपुच्छणगेरहमाणस्स । उपयोग पूर्वक वस्त्र पडिघो कावलो रजोहरण लेता थकाने । णिक्खिवमाणस्स जावचक्खुपम्हवानिवायमवि वेमायासुहमाइरियावहियाकिरियाकज्जइ । मेलहता थकाने यावत् किं वहुना उपयोग पूर्वक गमनादिक स्थूल क्रिया जालने कहवे करी स्यू चक्षु नेत्रनो वाल निपात उन्मेष निमेषमात्र क्रिया पणिछे विविधप्रकारे मात्राशब्दे काल अंतर्मुहूर्त्त आदिदेई देसून पूर्व कोटि पर्यन्त क्रिया कालना विचित्रपणा थको तथा कोई एक व्याख्यान एहवो करेछे—यावत् चक्षुना मेषोन्मेषमात्र पणि क्रिया कीजे तेतले काले पणि थोडी मात्राये पणि किहा एको वेमायाए एहने स्थानके सपेहाए एहवो पाठ दीसेछे—तिहा स्वपेक्षा स्वेच्छा तिणेकरी चक्षु निपात करवो पण नही परकृत सूक्ष्म वन्धादि कालछे जेह

॥ टीका ॥ काययोगप्रत्ययेतिभाव' ॥ किरियत्ति ॥ कर्म्म सातवेदनीयमित्यर्थ ॥ कज्जइत्ति ॥ क्रियते भवतीत्यर्थ', उपशान्तमोहक्षीणमोह सयोगिकेवलिलक्षण गुणस्थानकत्रयवर्त्ति वीतरागोपि हि सक्रियत्वा त्सातवेद्य कर्म्म बध्नातीतिभाव ॥ सेत्ति ॥ ईर्यापथक्रिया ॥ पढमसमयबद्धपुट्ठत्ति ॥ बद्धा कर्म्मता पादनात्, स्पृष्टा जीवप्रदेशैः स्पर्शना, तत कर्म्मधारये तत्पुरुषेच सति प्रथमसमयबद्धस्पृष्टा' तथा द्वितीयसमये वेदिता नुभूतस्वरूपा' एवं तृतीयसमयनिर्ज्जीर्णा, अनुभूतस्वरूपत्वेन जीवप्रदेशेभ्य परिशाटितेति, एतदेव वाक्यान्तरेणाह–सा बद्धा स्पृष्टा प्रथमे समये द्वितीयेतु उदीरिता उदय मुपनीता किमुक्त भवति ? वेदिता नह्येकस्मि न्समये उदीरणा उदयश्च सम्भवती त्येवं व्याख्यातं' तृतीयेतु निर्ज्जीर्णा, ततश्च ॥ सेयकालेत्ति॥ एष्यत्काले ॥ अकम्मवावित्ति ॥ अकर्म्मापिच भवति इहच यद्यपि तृतीयेपि समये कर्म्म अकर्म्म भवति, तथापि तत्क्षणएवा तीतभावकर्म्मत्वेन द्र

॥ मूल ॥ समयवेइया तइयसमयनिज्जारिया सावद्धा पुठा उदीरिया वेदिया निज्जिणा सेयकाले अकम्मं वाविभव

॥ भाषा ॥ नो, एहवी ईर्या पथकी ते निष्केवल योग प्रत्ययकै पणि प्रमाद प्रत्यय नही इतिभाव कर्म सातावेदनीय इत्यर्थ कज्जइत्ति हुवे, एतावता उपशांत मोह ११ क्षीणमोह १२ सयोगी १३ लक्षण गुण स्थान तीनने विषे वर्त्तमान वीतराग पणि सक्रियपणां थकी सातावेदनीय कर्म बांधे इतिभाव । सापढमसमयवद्धा पुट्ठाबितियसमयवेइया । ते ईर्यापथक्रिया पहिले समयें बद्धत्ति कर्मपणें नीपजावी पुट्ठत्ति, जीव प्रदेशे फरसी तथा बीजे समये, वेदिया तेहनो स्वरूप अनुभव्यो इम । तइयसमयणिज्जरिया सावद्दा पुट्ठा उदीरिया वेदिया णिज्जिणा । त्रीजे समये अनुभूत स्वरूप पणें करी जीव प्रदेशथी दूरकीधी एहीज वाक्यान्तरे, कहेछे—तिकाक्रिया बांधी फरसी पहिले समये १ बीजे समयें उदीरी उदय आणी एम्यूं कह्युं वेदी नही एक समयने विषे उदीरणा अने उदय संभवे इसो व्याख्यान कह्यु २ त्रीजे समये निजीर्णी दूरकीधी तिवार पछे । सेयकालेअकम्मवाविभवइ । आगामिकालने विषे कर्म रहित पणि हुवे, एतले अत्तत्तासंवुडस्स इत्यादि कहवे, इसो कह्यो जो संयतो पणि आश्रव सहित थको कर्म बांधे तो असयती हुवे, तेतो सखेज बांधे इणें पूर्वोक्त रीते जीवरूप नाव कर्मरूप जलकरी पूरा थका नीचो बूडवो कह्यो तथा सक्रियने कर्मबंध कहवाथी अक्रियने तेहथी विपरीत पणाथी कर्मबन्धनो अभा

॥ टीका ॥

व्यकर्म्मत्वात्, तृतीयेतु निर्ज्जीर्णकर्म्मेति व्यपदिश्यते, चतुर्थादिसमयेषु त्वकर्म्मेति व्यपदिश्यते' अनत्तासंवुडस्सेत्यादिना चेदमुक्तं' यदि संयतोपि साश्रव. कर्म्मबध्नाति तदा सुतरा मसयत, अनेनच जीवनाव कर्म्मजलपूर्यमाणतया ऽर्थतो ऽधो निमज्जन मुक्तं सक्रियस्य कर्म्मबधनगाना घा क्रियस्य तद्विपरीतत्वा त्कर्म्मबंधाभाव उक्त, सयाच जीवनावो ऽनाश्रवतायां मूर्ध्वगमनं सामर्थ्या दुपनीत मवसेयमिति, अथ यदुक्तं श्रमणाना

॥ मूल ॥

इ, सेतेणठेणं मंडियपुत्ता ! एवंवुच्चइ जावंचणं से जीवे सयासमियं नोएयइ, जाव अंते अंतकिरिया। पमत्तसंजयस्सणं भंते ! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं पमत्तद्धाकालओ केवचिरंहोइ ? मंडिया ! एगंजीव पडुच्च जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा। अप्पमत्तस

॥ भाषा ॥

व कह्यो तथा जीवरूप नाव अनाश्रव पणेंकरी ऊंची जाइयो ते सामर्थ्य थकी कह्यु जाणवो। सेतेणट्ठेणंमडियपुत्ता एववुच्चइ जावचणंसेजीवेसयासमियन एयइ जावअंतेअंतकिरिया भवइ। ते तेणें अर्थें हेमण्डित पुत्र। इमकह्यु जेतले काले तेजीव सदा सप्रमाण नकपे ते यावत् मरणकाले अंत सकल कर्म क्षयरूप अंतक्रिया करे॥ हिवे जे कह्यु, श्रमणने प्रमाद प्रत्यय क्रिया हुवे तिहां प्रमाण प्रमाद परपणो तथा अप्रमाण परपणो संयतीने कालथो देखा डेछे—पमत्तसंजयस्सणंभंते पमत्तसजमेवट्टमाणस्ससव्वावियण पमत्तद्धाकालओ केवचिरहोइ मंडिया एगजीवपडुच्चजहन्नेणं एक्कसमय उक्कोसेणदेसूणापुव्वको डो। प्रमत्त सयतीनें हेभगवन्। प्रमत्त संयमने विषे वर्त्तमानने सर्वकाल स्थानक काल प्रमत्ताद्धा समूहलक्षण काल आश्रयीने केतलू काल यावत् हुवे इ तिप्रश्न, उत्तर हेमण्डित पुत्र। एक जीव आश्रयीने जघन्य थको एक समय ते किम प्रमत्तनामा छठो गुणठाणो तिहा पर्ण्योथको प्रथम समय मर तिवारे जघन्यथको एक समय जाणवो उत्कृष्टथी देशे ऊणो पूर्वकोडो ते किम निश्चे छठो सातमो गुणठाणो प्रत्येके अंतर्मुहूर्त्त प्रमाणहोजछे वेऊ मि ल्याथका देशोन पूर्व कोडोताईं उत्कृष्टा हुवे, अने संयमवतनो उत्कृष्टो पूर्व कोडोनो आउखो हुवे ते सयम आठ वरस पछे पामे तिहा अप्रमत्त अंतर्मु हूर्त्तनो अपेक्षाये प्रमत्त अंतर्मुहूर्त्त घणा कल्पोये इम अंतर्मुहूर्त्त प्रमत्तकालना सगला मेलिया थका देशोन पूर्वकोडो मानहुवे बीजा केई एक कहेछे—प

प्रमादप्रत्यया क्रिया भवतीति' तत्र प्रमादपरत्वं तद्विपक्षत्वा सदितरस्य संयतस्य कालतो निरूपयन्नाह ॥ पमत्तेत्यादि ॥ सव्वावियणंपमत्तद्धत्ति ॥ सर्वापिच सर्वकालसम्भवापिच प्रमत्ताद्धा प्रमत्तगुणस्थानककाल· कालत· प्रमत्ताद्धा समूहलक्षणंकाल माश्रित्य कियच्चिर कियन्तं काल याव द्भवतीति प्रश्न, ननु कालत इति न वाच्य ? कियच्चिर मित्यनेनैव गतार्थत्वात्, नैव क्षेत्रत इत्यस्य व्यवच्छेदार्थत्वात्, भवतिहि क्षेत्रत कियच्चिरमित्यपि प्रश्नो यथा वधिज्ञान क्षेत्रत· कियच्चिरं भवति त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि, कालतस्तु सातिरेका षट्षष्टिरिति ॥ एक्कसमयति ॥ कथं ? उच्यते प्रमत्तसयमप्रतिपत्तिसमयसमनन्तरमेव मरणात् ॥ देसूणापुव्वकोडित्ति ॥ किल प्रत्येक मन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणएव प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानके तेच पर्यायेण जायमाने देशोनपूर्वकोटि यावत् उत्कर्षेण भवत, सयमवतोहि पूर्वकोटिरेव परमायु· सच सयम मष्टासु वर्षेषु गतेष्वेव लभते महान्तिचा प्रमत्तान्तर्मुहूर्तापेक्षया प्रमत्तान्तर्मुहूर्त्तानि कल्प्यन्ते एवंचान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणाना प्रमत्ताद्धाना सर्वासा मीलनेन देशोना पूर्वकोटीकालमानं भवति, अन्ये त्वाहु—अष्टवर्षोना

जयस्सणं भंते ! अप्पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वावियणं अप्पमत्तद्धाकालओ केवचिर होइ? मंडिया ! एगं जीवं पडुच्च जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडीदेसूणा णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं, सेवं भंते भंतेति !

ष्टवर्ष ऊंन पूर्वकोडी यावत् उत्कृष्टथी प्रमत्त सयतपणो हुवे तथा। णाणा जीवे पडुच्च संवद्ध अप्पमत्तसजमवट्टमाणस्स सव्वावियणअप्पमत्तद्धाकालओ केवचिरहोइ मंडिया एगजीवंपडुच्चजहन्नेणअंतोमुहुत्तउक्कोसेणदेसूणा पुव्वकोडी। अनेक जीव आश्रयीने सर्वकाल प्रमत्तपणो हुवे ॥ हिवे अप्रमत्त काल कहै छे—अप्रमत्त सयतीने हेभगवन्। अप्रमत्त सयमने विषे वर्त्तमानने सर्वकाल संभव अप्रमत्त गुण स्थानक काल अप्रमत्ताद्धा समूह लक्षण काल आश्रयाने केतलू काल यावत् हुवे इतिप्रश्न, हेमण्डित पुत्र। एक जीव आश्रयीने जघन्य थकी अंतर्मुहूर्त्त ते किम निश्चै अप्रमत्त कालने विषे वर्त्तता जीवने अंतर्मुहूर्त्त माहे मरण न हुवे, चूर्णिकारने मते तो अप्रमत्त सयत वर्ज्जीने सगलोही सर्व विरति अप्रमत्त कहीये प्रमादना अभाव थकी ते जीव उपशम श्रेणी प्रतें पडिवजै तो अंतर्मुहूर्त्तमांहि कालकरै तो जघन्य काल पामै पूर्व कोडी आउखानो धणी आठवर्ष ना थया पछी दीक्षा लीधी आठवर्ष ऊणो

॥ टीका ॥

पूर्वकोटीं याव दुत्कर्षतः प्रमत्तसंयतता स्यादिति, एवं प्रमत्तसूत्रमपि ॥ नवरंजहन्नेणअंतोमुहुत्तंति ॥ किलाप्रमत्ताद्धायां वर्त्तमानस्या न्तर्मुहूर्त्तमध्ये मृत्यु र्न भवतीति' चूर्णिकारमतंतु प्रमत्तसंयतवर्जः सर्वोपि सर्वविरतो ऽप्रमत्तउच्यते, प्रमादाभावात्' सचो पशमश्रेणीं प्रतिपद्यमानो मुहूर्त्ताभ्य न्तरे कालकुर्वन् जघन्यकालो लभ्यतइति, देशोनपूर्वकोटीतु केवलिनमाश्रित्येति' नाणाजीवेपडुच्चसव्वद्ध मित्युक्त मथ सर्वाद्धाभाविभावान्तरप्ररूप णायाह ॥ भतेत्तिइत्यादि ॥ अइरेगंति ॥ तिथ्यन्तरापेक्षया धिकतर मित्यर्थः ॥ लवणसमुद्दवत्तव्वयानेयव्वत्ति ॥ जीवाभिगमोक्ता कियद्दूर याव दि

॥ मूल ॥

भयवं मंडियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावे माणे विहरइ, भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ नमंसइत्ता एवंवयासी—कम्हा णं भंते ! लवणसमुद्दे चाउद्दसठमुद्दिठपुणमासिणीसु अइरेगं वड्ढइवा हायइवा ? जहा जीवाभिगमे लव

॥ भाषा ॥

तथा प्रमत्त गुणस्थानक छाडो जतलाकाल अनेरे गुणठाणे रहे ते सर्वकाल देसूनपूर्वकोडो माहे जाणवा अथवा देसोनपूर्वकोडो केवली आश्रयीने क ह्यो। णाणाजोवे पडुच्चसव्वद्ध सेवंभते २ त्ति। घणा जीवआश्रयीने सर्वकाल जाणवो तहत्ति हेभगवन्। तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही। भयव मडियपुत्तेअणगारे समणं भगवंमहावीरंवदइणमंसइ २ त्ता। भगवत मण्डित पुत्र साधु श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रतें वादे नमस्कारकरे वांदी ने नमस्कार करीने। सजमेणतवसा अप्पाणंभावेमाणेविहरइ। संजमे करी तपे करी आत्माने भावता थका विचरे। भंतेत्तिभगवगोयमे। हेभगवन्। इसे आमत्रणे भगवन्त श्रीगौतम। समण भगव महावीरं वदइ णमसइ २ त्ता। श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रते वादे नमस्कार करे वादी नमस्कार क री। एवनयासी। इम कहे नाना जीव आश्री सर्वकाल हुवे इमकह्यु, हिवे सर्वकाल भावी भावान्तर देखाडतो कहेछे—कम्हाणभतेलवणसमुद्दे चाउद्दस ठमुद्दिठ पुणमासिणीसुअतिरेय वड्ढइवा हायइवा जहा जोवाभिगमे लवणसमुद्दवत्तव्वयाणेयव्वा जावलोयठिइ लोयाणुभावे सेवभते २ त्ति जावविहरइ। किसे कारण थको ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। लवण समुद्र चउदस अमावस पूनिम तेहने विषे बीजो तिथिनी अपेक्षायें अधिक तर वृद्धि पामे हानि

त्याह ॥ जावलोयठिइंइत्यादि ॥ सांचैव मर्यतः कस्मा द्भदंत। लवणसमुद्रे श्चतुर्दश्यादि प्रतिरेकेण वर्द्धते वा; हीयतेवा; इह प्रश्ने उत्तरं लवणसमुद्रस्य मध्यभागे दिक्षु चत्वारो महापातालकलशाः योजनलक्षप्रमाणाः सन्ति, तेषा चाधस्तने त्रिभागे वायु, मध्यमे वायूदके, उपरितनेतूदकमिति, तथा न्ये क्षुद्रपातालकलशाः योजनसहस्रप्रमाणा श्चतुरशीत्युत्तराष्टशताधिकसप्तसहस्रसङ्ख्यावाय्वादियुक्तत्रिभागवतः सन्ति तदीयवातविक्षोभवशा ज्ज लवृद्धिहानी अष्टम्यादिषुस्याता तथा लवणशिखाया दशयोजनमानां सहस्राणि विष्कम्भ षोडशोछ्रयो योजनार्द्धं सुपरिवृद्धिहानी इत्यादि, अथ कस्मा ल्लवणो जम्बूद्वीप नो प्लावयति ? अर्हदादिप्रभावा ल्लोकस्थिति वैषेति, एतदेवाह ॥ लोयठिइत्ति ॥ लोकव्यवस्था लोयाणुभावेत्ति ॥ लोकप्रभावं ॥ इतितृतीयशतेतृतीयः ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके क्रियोक्ता साच ज्ञानवतां प्रत्यक्षेति, तदेव क्रियाविशेष माश्रित्य विचित्र

णसमुद्दवत्तव्वया नेयव्वा, जाव लोयठिइ लोयाणुभावे सेवं भंते भंतेत्ति, जाव विहरइ, किरियासम्मत्ता॥

पामै इतिप्रश्न, जिम जीवाभिगम उपाङ्गने विषे लवण समुद्रनी वक्तव्यता कही तिम इहां पणि कहवी यावत् लोकस्थिति लोक अनुभाव एतला लगे कहवी, ते इम स्यांमाटे हे भदंत । लवण समुद्र चउद्स आदि तिथिने विषे वढे घटे इतिप्रश्न, उत्तर लवणसमुद्रना मध्यभागने विषे चारेई दिसे चार महापाताल कलश लाख लाख योजन प्रमाणनाछे तेहोने नीचले त्रिभागे वायरोछे विचले त्रीजेभागे वायु पाणी मिश्रितछे ऊपरले त्रीजेभागे पाणी छे तथा वली नान्हा कलश योजन सहस्र प्रमाणना सात सहस्र आठसय चउरासी संख्याये एहोने विचाले अंतरछे ते पणि त्रिभागादि वायु प्रमुखसू भर्याछे तेहनो वात चोभ वशथको जलनी वृद्धि हानि अष्टम्यादिक तिथिने विषे हुवे, तथा लवण शिखा दश सहस्र योजन विष्कंभ सोलह सहस्र योजन ऊंचो ते ऊपर दोय कोस जलनो हानि वृद्धि हुवे, हिवे स्ये कारणे लवण समुद्र जंबूद्वीप प्रतें प्रवाह न करे ते कारण कहैछे—अरहंतादिकना प्रभाव थको अथवा बीजा लोकनी स्थितिछे लोकनो स्वभावछे इति तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यूं ते सत्यछे अन्यथा नही इमकही यावत् विचरे किरियासम्मत्ता॥ तइयसयस्सतइओ उद्देसो॥ क्रिया उद्देशो पूर्णथयो॥ एत्रीजा शतकनो त्रीजो उद्देशो पूरो थयो ॥ ३ ॥ त्रीजे उद्देशे क्रियाकही

॥ टीका ॥

तया दर्शय ञतुर्थोद्देशकमाह, तस्य चेदं सूत्र ॥ ञ्रणगारेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ ञावियप्पत्ति ॥ ञावितात्मा संयमतपोन्या मेवंविधाना मनगाराणां हि प्रायो वधिज्ञानादिलब्धयो ञवंती तिकत्वा भावितात्मे त्युक्त ॥ विउव्वियसमुग्घाएणसमोहयंति ॥ विहितोत्तरवैक्रियञ्रारीरमित्यर्थः ॥ जाणरूवे णति ॥ यानप्रकारेण शिविकाद्याकारवता वैक्रियविमानेनेत्यर्थः ॥ जाएमाणति ॥ यातगच्छंतं ॥ जाणइत्ति ॥ ञानेन ॥ पासइत्ति ॥ दर्शनेन उत्तर

॥ मूल ॥

तइयस्सतईञ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ ञ्रणगारेणं ञंते ! ञावियप्पा देव वेउव्वियसमुग्घाएण समोहयजाणरूवेणं जायमाणं जाणइ, पासइ ? गोयमा ! ञ्रत्थेगइए देवं पासइ नोजाणं पासइ १ ञ्रत्थेगइएण जाणपासइ नोदेवंपासइ २ ञ्रत्थेगइए देवपि जाणपि पासइ ३ ञ्रत्थेगइए नोदेव पासइ नोजाण पासइ ४ ञ्रणगारेण ञंते ! ञावियप्पा देविंविउव्विय समुग्घाएणं समोहियजाणरूवेणं जायमाणिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! एवचेव। ञ्रणगारेणं ञंते ! ञावियप्पा देवं सदेवीयं विउव्विय समुग्घाए

॥ भाषा ॥

ते ञानवतने प्रत्यक्ष्छे,ते आश्चर्यो विचित्र क्रिया देखाडतो कहेछे— अणगारेणंभते भावियप्पादेविवेउव्वियसमुग्घाएण समोहय जाणरूवेण जायमाण जाणइ पासइ गोयमा अत्थेगइएदेवपासइ णोजाणंपासइ। अणगार हेभगवन् । संयमें तपेकरी आत्मा भावितछे जेहनो, एहवा अणगारने प्राये अवधिज्ञानादि लब्धिहुवे, इम करी भावितात्मा एहवो कह्यो ते अणगार देवप्रते वैक्रियसमुद्घाते करी कीधोछे उत्तरवैक्रिय जिणें शरीर शिविकादि आकारवन्त वैक्रिय विमानेकरी जाताथका प्रतें जाणें ञानेकरी देखे दर्शने करी इतिप्रश्न, हेगौतम ! इहा चउभङ्गी कहवी अवधिज्ञानना विचित्रपणा माटे केतला एक देवप्रतें देखे विमान प्रतें नदेखे १। अत्थेगइएजाणपासइ णोदेवंपासइ। केतला एक विमान प्रतें देखे देवप्रतें नदेखे २। अत्थेगइएदेवंपिपासइ जाणपिपासइ। केतला एक देवप्रतें पणि देखे यान विमान प्रते पणि देखे ३। अत्थेगइएणोदेवपासइ णोजाणपासइ। केतला एक देवप्रतें पणि न देखे विमान प्रतें पणि न देखे ४। अणगारेणभते भावियप्पादेविंविउव्वियसमुग्घाएण समोहिय जाणरूवेण जायमाणं जाणइ पासइ। गोयमा जाणइ पासइ।

॥ टीका ॥

मिह चतुर्भङ्गी विचित्रत्वा दवधिज्ञानस्येति ॥ अंतोत्ति ॥ मध्य काष्ट साराादि ॥ वाहिंति ॥ बहिर्वर्त्तित्वक्पत्रसञ्चयादि ॥ एवंमूलेणमित्यादि ॥ एव मिति मूलकदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कदादिपदानि वाच्यानि याव द्वीजपद तत्रच मूल १ कद २ स्कध ३ त्वक् ४ शाखा ५ प्रवाल ६ पत्तं ७

॥ मूल ॥

णं समोहयजाणरूवेण जायमाणं जाणइ पासइ ? गोयमा ! अत्थेगइए देवं सदेवीय पासइ नोजाणं पासइ , एएण अभिलावेणं चत्तारिभंगा । अणगारेण भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ बाहिं पासइ चउभंगो , एव कि मूलं पासइ कंदं पासइ चउभंगो , मूलपासइ खंधपासइ चउभंगो , एव मूलेणं बीज संजोएयव्वं । एव कंदेणवि समं सजोएयव्वं जाव बीय । एवं जाव पुप्फेणसमं बीयं संजोएयव्वं ।

॥ भाषा ॥

अणगार हे भगवन् ! भावितात्मा देवीप्रतें वैक्रियसमुद्घातें करी कीधोछे उत्तरवैक्रिय शरीर जिणें ते शिविकादि आकारवत विमानेकरी जातो थको प्रते ज्ञानेकरी जाणें दर्शने करी देखै। गोयमा एवचेव। हेगौतम ! तिमहीज पूछिलो परे चउभंगो कहवो। अणगारेणभंते भावियप्पादेवसदेवीयवेउव्वियसमुग्घाएण समोहय जाणरूवेण जायमाण जाणइ पासइ। अणगार हेभगवन् ! भावितात्मा देव देवीसहित प्रतें वैक्रियसमुद्घात रूपें करी शिविकादि आकारवन्त विमानेकरी जाताथका प्रते उत्तर वैक्रिय ज्ञानेकरी जाणें दर्शने करी देखै इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा अत्थेगइएदेवं सदेवीयपासइ हे गौतम। केतला एक देव देवीसहित प्रतें देखै। णोजाणपासइ। अने विमान प्रतें न देखे। एएणअभिलावेणचत्तारिभगा। ए इणे आलावे करी चउभगो कहवो। अणगारेणंभतेभावियप्पारुक्खस्सकिंअतोपासइवाहिपासइ। अणगार हेभगवन्। भावितात्मा वृक्षनो स्यू मांहै काष्ट साराादि प्रतें देखैअथवा त्वचा पत्र सचयादि देखै इतिप्रश्न। चउभगो। हेगौतम इहा पणि चउभगो कहवो। एवकिमूलपासइ कंदपासइ चउभंगो। इम स्यूं धरतीमाहि ऊभो जाय ते मूलप्रतें देखै धरतोमाहि नोकलोजाय ते कन्द तेहप्रते देखै इहा पणि चउभगो कहवो। मूलपासइ खधपासइ चउभगो। मूल देखै स्कंद देखै इहा पणि चउभगो कहवो। एवमूलेणवीजसजोएयव्वं। मूल कन्द सूत्र आलावे करी मूल सघाते स्कन्धादिक पद कहवा यावत् बीजलगे तिहा मूल १ कन्द २

॥ टीका ॥

पुष्पं ८ फल ९ बीज १० चेति दशपदा न्येषाच पञ्चचत्वारिंशद्विकसंयोगा, एतावत्येवेह चतुर्भङ्गीसूत्रा ण्यध्येयानीति, एतदेव दर्शयितुमाह ॥ एवं कदेणावीत्यादि ॥ देववेउव्वियसमुग्घाएणसमोहयति ॥ प्रागुक्त मतो वैक्रियाधिकारा दिदमाह ॥ पभूणमित्यादि ॥ जाणंति ॥ शकट ॥ जुग्गति ॥ गोल्लविषयप्रसिद्ध जम्पान द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभित ॥ गेल्लित्ति ॥ हस्तिन उपरि कोल्लररूपा या मानुष गिलतीव गिल्लि ॥ थिल्लित्ति ॥ लाटाना य दश्वपल्याण तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते ॥ सीयत्ति ॥ शिविका कूटाकारा च्छादितो जम्पानविशेष. ॥ सदमाणियत्ति ॥ पुरुषप्रमाणायामो

॥ मूल ॥

अणगारेणं भंते ! भावियप्पा रुक्खस्स किंफलं पासइ बीयंपासइ चउभंगो , पभूणं भंते ! वाउकाएण एगंमह इत्थिरूववा पुरिसरूवंवा जाणरूवंवा एव जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणियरूवंवा विउव्वित्तए ? गोय

॥ भाषा ॥

स्कन्ध ३ त्वचा ४ शाखा ५ प्रवाल ६ पत्र ७ पुष्प ८ फल ९ बीज १० ए दशप्रकारनो वनस्पती कह्यो एहनी विकसंयोगे पैतालीस चउभंगी हुवे, ते किम मूल सघाते नव चउभगो हुवे, ते देखाडेछे—मूल कन्द १ मूल स्कन्ध २ मूल त्वचा ३ मूल शाखा ४ मूल प्रवाल ५ मूल पत्र ६ मूल पुष्प ७ मूल फल ८ मूल बीज ९ मूल सघाते नव चउभगो कह्यो, पछे मूल न कहवो ॥ इम कन्द सघाते ८ स्कन्ध सघाते ७ त्वचा संघाते ६ शाखा सघाते ५ प्रवाल सघाते ४ पत्र सघाते ३ पुष्प सघाते २ फल संघाते १ ए सर्व मिली पैतालीस चउभगो कहवी । एवकदेणंविसमसंजोएयव्वजाववीयं । इम कन्दसंघाते पणि स्कन्धादि जोडीयें यावत् बीजताई तिवारे आठ चउभगो थाय । एवंजावपुप्फेणसमंवीयसंजोएयव्वं । इम यावत् फलसंघाते फल जोडीये तिवारे बेचउभगी थाय ॥ हिवे छेहलो पैतालोसमो चउभगो देखाडेछे—अणगारेणभंतेभावियप्पारुक्खस्सकिंफलपासइ वीयंपासइ चउभगो । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा रूपनो स्यूंफल देखै तथा बोज देखे इतिप्रश्न उतर हेगोतम । इहा पणि पूठिलो परे चउभंगो कहवी ए४५ चउभगो जाणवी वैक्रिय अधिकार थोज कहैछे—पभूणभंते वाउकाएएगमह इत्थि रूववा परिसरूववा हत्थिरूववा जाणरूववा एवजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणिरूवंवाविउव्वित्तए । समर्थछे ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । वाउकाय एक मोटो स्त्रीनूं रूप अथवा पुरुषनो रूप हाथीनो रूप गाडलानो रूप इम जुग्ग गोलदेश प्रसिद्ध जम्पाण दोयहाथ प्रमाण बेदिका स

जम्पानविशेषः ॥ एगंमहंपडागासंठियंति ॥ महत् पूर्वप्रमाणापेक्षया पताकासंस्थितं स्वरूपेणैव वायो पताकाकारशरीरत्वा द्वैक्रियावस्थायामपि तस्य तदाकारस्यैव भावादिति ॥ अइड्ढिएत्ति॥ आत्मर्द्धा त्मशक्त्या त्मलब्ध्यावा, ॥ आयकम्मुणत्ति॥ आत्मक्रियया॥ आयप्पओगेणति ॥ नपरप्रयुक्त इत्यर्थः ॥ऊसिओदयंति॥ उच्छ्रितऊर्ध्वं उदय आयामो यत्र गमने त दुच्छ्रितोदयं, ऊर्ध्वपताक मित्यर्थः, क्रियाविशेषण चेदं ॥ पतोदयंति॥ पतदु

मा ! नोइणट्ठे समट्ठे, वाउकाएणं विकुव्वमाणे एगमहं पडागासंठियरूवं विकुव्वइ । पभूणं भंते! वाउकाए एगमहं पडागासंठियरूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए? हंतापभू । सेभंते! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीएगच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीएगच्छइ णोपरिड्ढीएगच्छइ जहा आयड्ढीए एवंचेव आयकम्मुणावि । आयप्पयोगेवि भाणियव्वं । सेभंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ पतोदयं गच्छइ? गोयमा! ऊसिओदयंपि गच्छइ

हित हाथीनो अबाडो थिल्लो जटनो अबाडो अथवा घोडानो पलाण शिविकाकूटने आकारे आच्छादित भम्पान विशेष पालखी पुरुष प्रमाणे आयामे ते भम्पान विशेष इतिप्रश्न । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम । ए अर्थ बलवन्त युक्त नही । वाउकाएणविउव्वमाणे एगं महपडागासंठियरूवंविकुव्वइ । वाउकाय विकुर्वणा करतोथको एक मोटा पूर्व प्रमाण अपेक्षायें पताका संस्थितरूप विकुर्वे स्वभावेही वायुनो शरीर पताका संस्थानेछे ते वैक्रिय विकुर्वे तो पण पताकाने आकारे होज विकुर्वे। पभूणभंतेवाउकाइएएगमहपडागासंठियरूवंविकुव्वित्ता । समर्थछे हेभगवन् । वाउकाय एक मोटो पताका आकारे रूपप्रते विकुर्वीने । अणेगाइ जोअणाइ गमित्तए । अनेक योजन प्रते गमन करवाने जावाने । हंतापभू । हा गौतम समर्थछे । सेभंतेकिंआयड्ढीए गच्छइ । ते हेभगवन् । स्यू आत्मानी ऋद्धि एतले पोतानी सगति जाय अथवा । परिड्ढीएगच्छइ । पराई शक्ति जाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आइड्ढीए गच्छइ । हेगौतम आपणी शक्ति जाय । णोपरिड्ढीएगच्छइ । पराई ऋद्धि तले सगति जाय नही । जहाआइड्ढीए । जिम आत्मानी लब्धि जावू कह्यू । एवचेवआयकम्मुणावि । इमहीज आत्मकरी जाय कर्म कहतां क्रिया । आयप्पयोगेणविभाणियव्व । इम आत्मप्रयोगे करी पणिजाय

दय पतितपताकं गच्छति ऊर्ध्वपताकास्थापने यं पतितपताकास्थापनात्वियं ॥ एगओपडागंति ॥ एकत एकस्या दिशि पताका यत्र तदेकतः प ताक स्थापनात्वियं ॥ दुहओपडागंति ॥ द्विधापताक ॥ स्थापनावैव रूपान्तरक्रियाधिकारा द्वलाहक सूत्राणि ॥ बलाहयएत्ति ॥ मेघः ॥ परिणामेत्त एत्ति ॥ बलाहकस्या जीवत्वेन विकुर्वणाया असम्भवा त्परिणामयितु मित्युक्त, परिणाम श्चास्य विश्रसारूप ॥ नोआइड्ढीएत्ति ॥ अचेतनत्वा न्मे

पयोदयंपि गच्छइ। सेन्नंते! किं एगओ पडागं गच्छइ दुहओपडागं गच्छइ? गोयमा एगओ पडागं गच्छइ नोदु हओपडागं गच्छइ। सेन्नंते! किं वाउकाए पडागा? गोयमा! वाउकाएणं से नोखलु सा पडागा। पन्नूणं न्नंते! बलाहगे एगंमहं इत्थिरूवंवा जाव संदमाणियरूवंवा परिणामेत्तए? हंतापन्नू। पन्नूणंन्नंते! बलाहए

प्रयोग ते उद्यम ए पणि द्रमज जाणवो। सेभतेंकिऊसियोदयगच्छइ पतोदयगच्छइ। ते हेभगवन्! स्यू ऊंचो पताका धजा तेहने आकारे जाय नीचो पताका एहवो आकार विशेष निपे जाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा ऊसियोदयपिगच्छइ। हेगौतम। ऊंचो पताकाने आकारे पणिजाय। पतोदयपि गच्छइ। नीचो पताकाने आकारे पणिजाय। सेभतेकिएगओपडागगच्छइ। ते हेभगवन्! स्यू एकदिशे पताकाने आकारे जाय। दुहओपडागगच्छइ। दोनो दिशे पताकाने आकारे जाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगओपडागंगच्छइ। हेगौतम! एक दिशे पताकाने आकारे जाय। णोदुहओपडागग च्छइ। पणि दोनो दिशे पताकाने आकारे जाय नही। सेभतेकिवाउकाए पडागा। ते हेभगवन्! स्यू वायुकाय कहीये अथवा पताका कहीये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वाउकाएणसे। हेगौतम। वायुकाय ते कहीये पणि। णोखलुसापडागा। नही निश्चे पताकाकहीये रूपान्तर क्रिया अधिकार थको बलाहक कहीये मेघ सूत्र कहेछे—पभूणभतेवलाहगेएगमहइत्थिरूववा जावसदमाणियरूववा परिणामेत्तए हतापभू। समर्थछे हेभगवन्! मेघ ते एक मो टो स्त्रीनोरूप तेहप्रतें इत्यादि यावत् पालखी रूप प्रतें मेघने अजीव पणें करी विकुर्वणाना असम्भवथको परिणमावे एहवो कह्यो परिणाम पुण एहने विस्रसा कहता स्वभाव इतिप्रश्न उत्तर हां गौतम समर्थछे। पभूणभंतेबलाहए। समर्थछे हेभगवन् बलाहक मेघ। एगंमहंइत्थिरूवपरिणामेत्ता। एक

॥ टीका ॥

घस्य विवक्षितायाः शक्ते रभावा त्रात्मनो गमन मस्ति वायुना देवेन वा; प्रेरितस्तु स्यादपि गमन मतोऽभिधीयते ॥ परिड्ढीएत्ति ॥ एवंपुरिसे आसेहत्थित्ति ॥ स्त्रीरूपसूत्रमिव पुरुषरूपाश्वरूपहस्तिरूपसूत्रा एयध्येतव्यानि, यानरूपसूत्रे विशेषोस्तीति तद्दर्शयति ॥ पभूणं भंते! बलाहए एग

॥ मूल ॥

एगंमहं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ? हंतापभू । सेभंते ! किं आयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? नोआयड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ एवं नोआयकम्मुणा परकम्मुणा नोआयप्पओगेणं परप्पओगेणं ऊसितोदयंवा गच्छइ पयोदयंवा गच्छइ । सेभंते ! किंबलाहए इत्थी ? गोयमा ! बलाहएणं से णोखलु साइत्थी । एवं पुरिसे आसे हत्थी । पभूणं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं

॥ भाषा ॥

मोटो स्त्रीरूप प्रतें परिणमावीने । अणेगाइजोअणाइंगमित्तए । अनेक योजन प्रतें जाइवाने इतिप्रश्न उत्तर । हंतापभू । हा गौतम समर्थछे । सेभंतेकिं आइड्ढीएगच्छइ । ते हेभगवन् स्यू आत्मानी लब्धि समर्थाई करी जाय अथवा । परिड्ढीएगच्छइ । पराई समर्थाई करी जाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोआइड्ढीएगच्छइ परिड्ढीएगच्छइ । हेगौतम मेघने अचेतन पणाथी विवक्षित शक्तिना अभावथी आत्मशक्तिकरी नजाय वाउ अथवा देव तेहना प्रेरा थकाने गमन शक्तिहुवे । एवणोआयकम्मुणा परकम्मुणा । इम आत्म क्रियायें नजाय, परक्रियायें जाय । णोआयप्पओगेण परप्पओगेण । आत्मने प्रयोगे उद्यमे नजाय पारके प्रयोगे जाय । ऊसितोदयवागच्छइ । ऊंचो पताकाने आकारे ऊंचो पणिजाय । पतोदयंवागच्छइ । नीचो पताकाने आकारे नीचो पणिजाय । सेभंतेकिंबलाहएइत्थी । ते हेभगवन् स्यू बलाहक मेघ कहीये किम्वा स्त्री कहीये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बलाहएणसेणोखलु साइत्थी । हेगौतम बलाहक मेघ ते कहीये पणि नही निश्चे ते स्त्री कहीये । एवपुरिसआसेहत्थी । इम स्त्रीरूप सूत्रनी परे पुरुषरूप अश्वरूप हस्तीरूप सूत्र कहवा, यानरूप सूत्रने विषे विशेषछे ते देखाडेछे—पभूणंभंतेबलाहए। समर्थछे हेभगवन् बलाहक कहीये मेघ वादला । एगमहजाणरूवंपरिणामेत्ता अणेगाइजोअणाइ गमित्तए जहाइत्थिरूवंतहाभाणियव्व । मेघ एक मोटो यान शकट रूप परिणमावीने अनेक योजन लगे जाइवाने इत्यादि सूत्रथकी, प

॥ टीका ॥

मह जाणरूवं परिणामेत्ता इत्यादि ॥ पतोदयंपिगच्छइ इत्येतदन्तं, स्त्रीरूपसूत्रसमानमेव विशेष. पुनरयं–से भंते। एगओ चक्कवालं गच्छइ दुहओ चक्कवालं गच्छइ ? गोयमा। एगओ चक्कवालपि गच्छइ दुहओ चक्कवालपि गच्छइत्ति ॥ अस्यैवोत्तररूप मंश माह ॥ नवरं, एगओइत्यादि ॥ इह यानं शकट, चक्रवाल चक्रं, शेषसूत्रेषु त्वय विशेषो नास्ति, शकटएव चक्रवालजावा, ततश्च ॥ युग्यगिल्लिथिल्लिशिवकास्यदमानिकारूप रूपाणि स्त्रीरूपसूत्रवदध्येयानि, एतदेवाह–जुग्गगिल्लिथिल्लिसीया संदमाणियाणंतहेवत्ति ॥ परिणामाधिकारा दिदमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ जेभविएत्ति ॥ यो योग्य ॥ किलेसेसुत्ति ॥ कारुणादीनां मन्यतमा लेश्या येषांते तथा' तेषु कि लेश्येषु मध्ये ॥ जल्लेसाइंति ॥ या लेश्या येषा द्रव्याणा तानि यल्लेश्यानि, यस्या लेश्यायाः सम्बन्धिनीत्यर्थ. ॥ परियाइत्तत्ति ॥ पर्यादाय परिगृह्य भावपरिणामेन काल करोति म्रियते, तल्लेश्येषु नारकेषू त्पद्यते,

॥ मूल ॥

जोयणाइं गमित्तए जहा इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं। नवरं, एगओ चक्कवालंपि दुहओचक्कवालंपि भाणियव्वं। जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियाणं तहेव। जीवेणं भंते! जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए, सेणं भंते! किंले

॥ भाषा ॥

तोदयपिगच्छइ, एसूत्र पर्यंत स्त्रीरूप सरीखा होजसूत्र कहवा वली विशेषए, सेभंतेकिएगओ चक्कवालगच्छइ, दुहओचक्कवालगच्छइ, गोयमा एगओचक्कवालंपिगच्छइ, एहनो उत्तर रूप मंत्र कहेछे—नवरएगओचक्कवालपिदुहओचक्कवालपिभाणियव्व। नवरंएगओ, इत्यादि एतलो विशेष एकदिशि चक्रवाल पणि टोयदिशि चक्रवाल पणिजाणवो इहां यान शब्दे गाडलो कहवो चक्रवाल शब्दे गाडानो पईडो कहवो शेष सूत्रनेविषे ए विशेष नथी शकटनेविषेज चक्रवालनाम सद्भावथको, जुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमानिका, एतलाना सूत्रनोपरे कहवा एहोज कहेछे—तहेवत्ति, तिमज सर्व स्त्रीरूपनी परेज कहवा परिणामना अधिकारथी एकहेछे—जीवेणभंतेजेभविएणेरइएसुउववज्जित्तए। जीव हेभगवन् जे नरक योग्यछे नारको विषे ऊपजे। सेणभंतेकिलेस्सेसु उववज्जइ। तेह ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् कृष्णादिक अनेरी लेश्यामाहि किसी लेश्या सघाते ऊपजे। गोयमा जल्लेसाइंदव्वाइं परियाइत्ता कालंकरेइतल्लेसेसुउववज्जइ। हेगोतम जे लेश्या सम्बन्धी द्रव्यभाव परिणामे ग्रहीने कालकरे मरे इत्यर्थ तिणे लेश्याये नारकोने विषे ऊपजे इहा गाथा सव्वाहिल्ल

॥ टीका ॥

भवन्तिचा अत्रगाथा—सव्वाहिंलेसाहिं पढमेसमयंमिपरिणयाहिंतु । नोकस्सविउववाओ परेभवेअत्थिजीवस्स ॥ १ ॥ सव्वाहिंलेसाहि चरमेसमयंमिप रिणयाहिंतु । नविकस्सदिउववाओ परेभवेअत्थिजीवस्स ॥ २ ॥ अंतमुहुत्तंमिगए अंतमुहुत्तंमि सेसएचेव । लेसाहिंपरिणयाहि जीवागच्छंतिपर लोय ॥ ३ ॥ चतुर्विंशतिदण्डकस्य शेषपदान्यतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति नारकसूत्राभिलापेनेत्यर्थः ॥ जस्सत्ति ॥ असुरकुमारादेर्या लेश्या कृष्णादिका सा लेश्या तस्यासुरकुमारादेर्भणितव्येति, नन्वेतावतैव विवक्षितार्थसिद्धेः किमर्थं भेदेनोक्तं जावजीवेणंभंतेइत्यादि ? उच्यते, दण्डकपर्यवसानसूत्रदर्शनार्थं, मेवं तर्हि वैमानिकसूत्रमेव व्याख्येयं नतु ज्योतिष्कसूत्रमिति ? सत्यं, किंतु ज्योतिष्कवैमानिकाः प्रशस्तलेश्या एव भ

॥ मूल ॥

स्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जंलेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ तंजहा—कराहलेसे सुवा नीललेसेसुवा काउलेसेसुवा एवं जस्स जा लेसा सा तस्स भाणियव्वा जाव जीवेणं भंते ! जेभविए जोइसिएसु उववज्जित्तए पुच्छा ? गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ तं०

॥ भाषा ॥

साहि पढमेसमयसिसपरिणयाहि । णोकस्सविउववाओ परभवेअत्थिजीवस्स ॥१ सव्वाहिंलेसाहि चरमेसमयसिसपरिणयाहि । नविकस्सविउववाओ पर भवेअत्थिजीवस्स ॥२॥ अंतमुहुत्तमिगए अंतमुहुत्तमिसेसएचेव । लेसाहिपरिणयाहि जीवागच्छंतिपरलोय ॥ ३ ॥ तंजहा । ते कहेछे—कण्हलेसेसुवा । कृ ष्णलेश्याने विषे । नीललेससुवा । नीललेश्याने विषे । काउलेसेसुवा । कापोतलेश्याने विषे । एवंजस्सजालेसासातस्सभाणियव्वा । चउवीस दंडकनो शेष पद देखाडतो कहेछे—एवमित्यादि, इम नारक सूत्रनी परें जे असुरादिकने जिकालेश्या कृष्णादिकलेश्या हुवे, ते लेश्या ते असुरादिकने कहवी इहां कोई कहस्ये एतलेज कह्या अर्थनी सिद्धि थई तो स्ये अर्थे भेदेकरी कह्यु ,जावजीवेणंभंते, इत्यादि तेहने इमकहो जे दण्डकनो छेहलोसूत्र देखाडवाने अ र्थे कह्यु वली ते इम कहे तो वैमानिक होजसूत्र कहवो युक्तछे पणि ज्योतिषीनो सूत्र कहवो युक्तनहीं तेहने इम कहेछे—ज्योतिषी अने वैमानिक ए प्र शस्त लेश्याईज हुवे, ए अर्थ देखाडवाने अर्थे तेहने जुदा कह्या अथवा सूत्रगतिना विचित्र पणायो कह्या । जावजीवेणभंतेजेभविए जोइसिएसुउववज्जि

यन्ती त्यस्या र्थस्य दर्शनार्थं तेषां भेदेना भिधानं, विचित्रत्वाद्वा; सूत्रगतेरिति, देवपरिणामाधिकारा दनगाररूपद्रव्यदेवपरिणामसूत्राणि ॥ बाहिरएत्ति ॥ औदारिकशरीरव्यतिरिक्ता न्वैक्रिया नित्यर्थ ॥ वेभारत्ति ॥ वैभाराभिधान राजगृहक्रीडापर्वतं ॥ उल्लंघित्तएवेत्यादि ॥ तत्रो ल्लङ्घन सकृ, त्प्रलङ्घनं पुन पुनरिति ॥ नोइणाहेसमठेत्ति ॥ वैक्रियपुद्गलपर्यादानं विना वैक्रियकरणस्ये वाभावात्, बाह्यपुद्गलपर्यादानेतु सति पर्वतस्यो ल्लंघना

तेउलेस्सेसु । जीवेण भंते ! जेभविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ? गोयमा ! जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता कालंकरेइ तल्लेसेसु उववज्जइ, तंजहा—तेउलेसेसुवा पम्हलेसेसुवा सुक्कले० अणगारेणं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभारपव्वयं उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा ?

तए पुच्छा । यावत् जीव हेभगवन् । जे भव्य ज्योतिषीने विषे जाइवायोग्य जीवछे ते ज्योतिषीने विषे ऊपजे तो किसी लेश्यायें ऊपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा जल्लेसाइंदव्वाइं परियाइतित्ताकालकरेइ तल्लेसेसुउववज्जइ तंजहा तेउलेस्सेसु । हेगौतम । जे लेश्याना द्रव्य ग्रहीने भाव परिणामें लेईने काल करे तेणें लेश्यायें ज्योतिषीने विषे ऊपजे ते कहेछे—तेजोलेश्याने विषे ऊपजे । जीवेणंभतेजेभविएवेमाणिएसुउववज्जित्तए । जीव हेभगवन् जे जीव वैमानिकने विषे ऊपजे । सेणंभतेकिंलेस्सेउववज्जइ । तेह णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् किसी लेश्याने विषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जल्लेसाइंदव्वाइंपरियाइत्ताकालकरेइ । हेगौतम । जे लेश्याना द्रव्य भाव परिणामे ग्रहीने काल करे । तल्लेसेसुउववज्जइ । ते लेश्यायें करी ऊपजे । तंजहा तेउलेस्सेसुवा । ते कहेछे—तेजोलेश्याने विषे । पम्हलेस्सेसुवा । पद्मलेश्याने विषे । सुक्कलेस्सेसुवा । शुक्ल लेश्याने विषे देव परिणाम अधिकारथी अणगार रूप द्रव्य देव परिणाम सूत्र कहेछे—अणगारेणभंतेभावियप्पावाहिरएपोग्गले अपरियाइइत्ता । अणगार हेभगवन् । संयमे तपेकरी आत्मा भावितछे जेहनो एहवा अणगारने प्राये अवधिज्ञानादि लब्धिहुवे, ते औदारिक शरीरथी बीजा जे वैक्रिय शरीरना ते ग्रह्या विनालीधा विना । पभूवेभारपव्वयं । समर्थहुवे, वेभारनामे राजगृह क्रीडा पर्वत प्रते । उल्लंघेत्तएवा । एकवार उल्लंघवा । पल्लंघेत्तएवा । वारवार उल्लंघवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइण

॥ टीका ॥

दौ प्रभु स्या न्महत पर्वतातिक्रामिणः शरीरस्य सम्भवादिति ॥ जावइयाइंइत्यादि ॥ यावन्ति रूपाणि पशुपुरुपादिरूपाणि ॥ एवइयाइंति ॥ एता वन्ति ॥ विउव्वित्तएति ॥ वैक्रियाणि कृत्वा वैभारं पर्वत समं सत विषम, विषमतु समं कर्तुमिति सम्बन्ध, किं कृत्वे त्याह–अंत मंध्ये वैभारस्य

॥ मूल ॥

गोयमा ! णोइणठे समठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा वाहिरए पोग्गले परियाइइत्ता पभू वेभारपव्वयं उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा ? हंता पभू । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा वाहिरएपोग्गले अपरियाइइत्ता जाव इयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं एवइयाइं विउव्वित्ता वेभारंपव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समंवा विसमं वा करेत्तए विसमंवा सम करेत्तए ? गोयमा ! नोइणठेसमठे एवंचेव वितिओवि आलावगो णवरं परिया इइत्ता पभू। सेभंते ! कि माईविकुव्वइ अमाईविकुव्वइ ? गोयमा ! माईविकुव्वइ णोअमाईविकुव्वइ । सेकेणठे

॥ भाषा ॥

ठेसमठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थनथी युक्त नथी । अणगारेणभंतेभावियप्पा । अणगार साधु हेभगवन् । भावितात्मा । बाहिरए पोग्गलेपरियाइत्ता । औदारिक शरीरथी बीजा वैक्रियना पुद्गलने ग्रहीने । पभूवेभारपव्वय । समर्थ हुवे, वैभारनामा क्रीडा पर्वतने । उल्लंघेत्तएवा पल्लंघेत्तएवा । एकवार उल्ल ंघवा वारवार उल्लंघवा इतिप्रश्न । उत्तर । हंतापभू अणगारेणभतेभावियप्पा । हां गौतम समर्थ हुवे, अणगार हेभगवन् । भावितात्मा । वाहिरएपोग्ग लेअपरियाइइत्ता । बाहिरना वैक्रियना पुद्गल विना ग्रह्या । जावइयाइ रायगिहेणयरेरूवाइ । जेतला एक राजगृहनामा नगरने विषे पशु पुरुषादिक ना रूपछे । एवइयाइ विकुव्वित्ता । एतला रूप विकुर्वीने । वेभारपव्वय । वैभार नामा पर्वतने । अंतोअणुपविसित्ता । माहि पेसीने । पभूसमवा विसम करेत्तए । समर्थ हुवे, सरीखोछे ते विषम करे करवाने अथवा । विसमंवासमकरेत्तए । विषमछे ते सम करवाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । ए अर्थ बलवत नही युक्त नही । एवचेववितिओविआलावगोणवरपरियाइइत्ता । इमज निश्चै बीजो आलावो कहवो एतलो विशेष औदारि क शरीरथी बीजा वैक्रियना पुद्गल लेईने । पभूसेभतेकिमाइविकुव्वइ । समर्थ हुवे, अन्यथानही तेमाटे तेहेभगवन् । स्यू माया कषाय प्रमत्त हुवे, वि

॥ पणीयति ॥ प्रणीत गलत्स्नेह वानुप्रविश्य ॥ मायीति ॥ मायावा नुपलक्षणत्वा दस्य सकषायः प्रमत्तइति यावत् अप्रमत्तोहि न वैक्रिय कुरुतइति ॥ पणीयति ॥ प्रणीत गलत्स्नेह विदुकं ॥ भोच्चाएवामेइत्ति ॥ वमनकरोति विरेचनवा; करोति, वर्णावलाद्यर्थं यथा प्रणीतभोजन तद्वमनच विक्रियास्वभाव मायित्वा द्रव त्येव वैक्रियकरण मपीति तात्पर्यं ॥ वहलीभवतित्ति ॥ घनीभवन्ति प्रणीतसामर्थ्यात् ॥ पयणुएत्ति ॥ अघनं ॥ अहावायरत्ति ॥ यथोचितबादरा आहार पुद्गला इत्यर्थं ॥ परिणमति ॥ श्रोत्रेन्द्रियादित्वेन अन्यथा शरीरदार्ढ्यासम्भवात् ॥ लूहति ॥ रूक्ष मप्रणीतं ॥ नोवामेइत्ति ॥ अरूपायितया विक्रि

णं भंते ! एव वुच्चइ जाव नोअमाईविकुव्वइ ? गोयमा ! माईणपणीयं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा वामेइ तस्सणं तेणं पणीएणं पाणभोयणेणं अट्ठिअट्ठिमिंजा वहलीभवंति पयणुए मंससोणिए भवइ जेवियसे अ हावायरा पोग्गला तेवियसे परिणमति । सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोम नहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए अमाईणं लूहं पाणभोयणं भोच्चा भोच्चा णोवामेइ तस्सण तेणं लूहेणं पाण

। हेगौतम । सकषायी प्रमत्त कुवै अथवा । अमाईविकव्वइ । अकषायोप्रमत्त हुवे ते विकुर्वे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा माईविकुव्वइ णोअमाईविकुव्वइ । हेगौतम । सकषायी प्रमत्त हुवे, ते विकुर्वे अकषायी अप्रमत्त हुवे ते विकुर्वणा नकरे । सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ जावनोअमाईविकुव्वइ । ते स्ये कारणें हेभगवन् । इम कह्यु यावत् मा यो विकुर्वे अने अमायी विकुर्वे नहीं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा माईणपणीयपाणभोयणभोच्चावामेइ । हेगौतम । मायीने प्रणीत कहीये सरस अतिस्नि ग्धरस पान भोजन तेहप्रतें भोगवीने वमन करे अथवा विरेचन करे बल वर्णादिकने अर्थे जिम प्रणीत भोजन ते वमन तथा विरेचन विक्रिया स्वभा व मायी पणायी हुवे इम वैक्रिय पणि इति तात्पर्य । तस्सणतेणंपणीएणपाणभोयणेण । तेहने मायीने ते प्रणीत स्निग्धसरस पान भोजन करीने । अट्ठि अ ट्ठिमिंजा वहलीभवइ । हाड हाडनी मिजो चरवो प्रणीत रसना समर्थ पणाथी पुष्ट हुवे । पयणुएमंससोणिएभवइ । पातला मांस अने रुधिर हुवे, एत ले हाड लक् मींजो सबल हुवे मांस लोही थोडो हुवे । जेवियसेअहाबादरा पोग्गला । जिके पणि यथोचित बादर पुद्गल आहार पुद्गल । तेवियसेपरि

याया मनर्थित्वा त्यासवणत्ताए, इहयावत्करणा दिदं दृश्य–खेलत्ताए सिंघाणत्ताए वंतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताएत्ति' रूक्षभोजिन उच्चारादितयै वा हारादि पुद्गलाः परिणमन्ति, अन्यथा शरीरस्या सारता मापत्तेरिति, अथ माय्यमायिनो फलमाह ॥ माईणमित्यादि ॥ तस्सठाणस्सत्ति ॥ त स्मात् स्थानात् विकुर्वणाकरणलक्षणा त्प्रणीतभोजनलक्षणाद्वा; ॥ अमायीणमित्यादि ॥ एवं मायित्वा वैक्रियं प्रणीतभोजनवा; कृतवान्' पश्चा ज्जा

श्रोयणेणं अट्ठिअट्ठिमिंजापयणुभवंति बहले मंससोणिए जेवियसे अहाबादरापोग्गला तेवियसे परिणमं ति–तंजहा उच्चारत्ताए जाव सोणियत्ताए सेतेणट्ठेणं जाव नोअमाईविकुव्वइ। माईणंतस्स ठाणस्स अणालो इयपडिक्कंते कालंकरेइ नत्थि तस्स आराहणा। अमाईणं तस्सठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालंकरेइ अत्थि

णमति तंजहा। ते पणि तेहने परिणमे स्येकरी ते कहेछे—सोइंदियत्ताए। श्रोत्रेन्द्रिय पणें करी। जावफासिंदियत्ताए। यावत् स्पर्शनेन्द्री पणें करी परिणमे। अट्ठिमिजकेसमसु। हाडनी मींजोपणें केशपणें मसुपणें। रोमनहत्ताए सुक्कत्ताए सोणियत्ताए। रोमपणें नखपणें परिणमे वीर्यपणें लोहीप णें परिणमें। अमाईणलूहपाणभोयणंभोच्चाणंवामेइ। अने अमायी लूखो निरस पान भोजन आहार भोगवीने वमन विरेचन नकरे अकषाय पणें करी वैक्रियानो वाछक नहीं। तस्सणतेणलूहेण पाण भोयणेण। तेहने अमायीने ते लूखे निरसे पान भोजन ते आहार तेणेंकरी। अट्ठिमिजाएपयणुएभवति। हाडनी मींजो पातलो हुवे। बहलेमंससोणिए। संघन हुवे पुष्टहुवे मांस अने लोही। जेवियसेअहाबादरापोग्गला। जिके पणि ते यथोचित्त बादर पु द्गल एतले आहारना पुद्गल। तेविसेपरिणमंति तंजहा। ते पणि परिणमे स्ये करीने ते कहेछे—उच्चारत्ताए जावसोणियत्ताए। बडी नीतिपणें यावत् रु धिर पणें इहां यावत् शब्द थकी एतला पद कहवा, खेलत्ताए सिंघाणत्ताए वंतत्ताए पूयत्ताए, परिणमंति रूक्ष आहारना करणहारने उच्चारादिक प णंज आहारना पुद्गल परिणमें। सेतेणट्ठेणंजावनोअमाईविकुव्वइ। ते तेणें अर्थे हेगौतम यावत् अमायी विकुर्वणा नकरे॥ हिवे मायी तथा अमायी ने फल कहेछे—माइणभंते तस्सठाणस्सअणा लोइय अपडिक्कंतेकालंकरेइ। मायी सकषायी हे भगवन् ते स्थानक थकी विकुर्वणा करण लक्षण थकी त

तानुतापो ऽमायीसन् तस्मात् स्थाना दालोचितप्रतिक्रान्त सन् काल करोति, यस्तस्यास्त्याराधनेति ॥ इतितृतीयशतेचतुर्थ ॥ ४ ॥
चतुर्थोद्देशके विकुर्वणोक्ता पञ्चमेपि तामेव विशेषत आह ॥ अणगारेणमित्यादि ॥ असिचम्मपायगहायत्ति ॥ असिचर्मपात्रं स्फुरक अथवा, अ

तस्सञ्चाराहणा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तइयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगंमहं इत्थिरूववा जाव संदमाणियरूवंवा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणठे समठे । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा वाहिरए पोग्गले परियाइइत्ता पभू एग मह इत्थिरूवंवा जाव संदमाणियरूवंवा विकुव्वित्तए ? हतापभू । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केव इयाइं पभूइत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ? गोयमा ! सेजहानामए जुवइंजुवाणे हत्थेणं हत्थिंसिगेएहेज्जा चक्कस्स

या प्रणीत भाजन लवण थको आलोया विना पडिकम्या विना मरणपामे । नत्थितस्सआराहणा । नही तेहने आराधना एतले वीतरागनी आज्ञानो आराधक ते नही । अमाईणंतस्सठाणस्सआलोइयपडिकतेकालंकरेइअत्थितस्सआराहणा । अकपायो एतले पहिला मायो पणायो वैक्रिय प्रतें तथा प्रणीत भोजन प्रतेंकरीने पश्चात्तापकरी अमायी थको ते स्थानक थकी आलोचित प्रतिक्रान्त थको कालकरे तेहनेछे तेहने आराधना ते आज्ञानो आराधक जाणवो । सेवंभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे भाष्यूं तेह अन्यथा नही । तइयसयस्सचउत्थो । ए त्रीजा शतकनो चौथो उद्देशो पूरोथयो ॥ ४ चौथे उद्देशे विकुर्वणा कही पञ्चमें पणि तेहोज विकुर्वणा विशेषथो कहेछे—अणगारेणभंतेभावियप्पावाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्ता पभू । अणगार साधु हेभगवन् । भावितात्मा औदारिक पुद्गल थको बीजा वैक्रिय पुद्गल विनायह्या समर्थ हुवे । एगमहंइत्थिरूववा । एक मोटो स्त्रीरूप तेह प्रतें । जावसंदमाणियरूवंवाविकुव्वित्तए । यावत् पालखी रूप प्रतें विकुर्वणा करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठ्ठेसमठ्ठे । हे गौतम । ए अर्थ समर्थ नही । अणगारेणभंतेभावियप्पा वाहिरएपोग्गलेपरियाइत्ता पभू । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा वाहिरना पुद्गल ग्रहीने समर्थहुवे । एगमहं

वा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव अणगारेवि भावियप्पा विउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ जाव पभूणं ? गोयमा ! अणगारेणं भावियप्पा केवलकप्प जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आयन्नं वितिकिन्नं जाव एसणं गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए नोचेवणं संपत्तीए वि कुव्विंसुवा ३ एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव संमाणिया । सेजहानामए केइपुरिसे असिचम्मपायंगहाय गच्छे ज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा असिचम्मपायं हत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढ वेहासंउप्पएज्जा ? हंता

इत्थिरूववा । एक मोटी स्त्रीरूप तेहप्रतें । जावसइमाणियरूववाविकुव्वित्तए हतापभू । यावत् पालखीरूप प्रतें विकुर्वणा करवाने इतिप्रश्न हागौतम समर्थछे । अणगारेणभतेभावियप्पा।केवइयाइ पभू । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा केतला समर्थ हवे । इत्थिरूवाइ विकुव्वित्तए । स्त्रीना रूप प्रतें विकु र्वणा करवाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहानामएजुवईजुवाणेहत्थेणहत्थसिगेण्हेज्जा । हेगौतम ! ते यथानाम दृष्टाते युवती स्त्रीप्रतें युवान पु रुष कामना वशथकी हाथेंकरी हाथने विषे ग्रहे भिडे अथवा । चक्कस्सवानाभीअरगाउत्तासिया । चक्रनी नाभीना अरा जिम भीडिया थका निवड बल लगावे तिम संकीर्ण रूपहवे । एवामेवअणगारेविभावियप्पा । इणे दृष्टांते अणगार साधु पणि भावितात्मा । वेउव्वियसमुग्घाएणसमोहणइ । वैक्रि य समुद्घातकरी उत्तरवैक्रिय नवा रूपकरे । जावपभूण गोयमा अणगारेणभावियप्पा । यावत् समर्थ हुवे हेगौतम ! साधु भावितात्मा । केवलकप्पजंबू द्दीवं २ बहूहिंइत्थिरूवेहिं । केवल सपूर्ण जंबूद्वीपनामें दीप घणें स्त्रीने रूपेकरी । आइन्नवितिकिन्न । घणू व्याप्या विशेषे करी काजल कूंपीनी परे भरे जावएसण गोयमा । यावत् एह ण वाक्यालंकारे, हेगौतम । अणगारस्सभावियप्पणो । अणगार साधुनो भावितात्मानो । अयमेयारूवे विसएविसयमेत्ते बुइए । एह एहवे रूपे विषयछे पणि विषयमात्र सत्तामात्र कह्योछे परे । णोचेवणसपत्तीएविउव्विसुवा ३ । नही निश्चे समर्थ पणेछे पणि किणही साधु विकुर्व्या नही विकुर्वस्ये नही । एवंपरिवाडीएणेतव्व । इम जिम स्त्रीरूप सूत्र कह्यु तिम पुरुष रूप आदिदेई सूत्रनी परिपाटी अनुक्रम कहवू । जावसइ

॥ टीका ॥

सिश्च खड्गः' चर्मपात्रंच स्फुरक', खड्गकोशकोवा; असिचर्म्मपात्रं तत् गृहीत्वा ॥ असिचम्मपायहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणंति ॥ असिचर्म्मपात्र हस्ते यस्य स तथा, कृत्यं सघादिप्रयोजन गत आश्रित कृत्यगत, तत' कर्म्मधारय', अत स्तेन आत्मना, अथवा; असिचर्मपात्र कृत्वा हस्ते कृत येना सौ असिचर्मपात्रहस्तकृत्वाकृत स्तेन प्राकृतत्वाच्चैवं समास', अथवा, असिचर्मपात्रस्य हस्तकृत्य हस्तकरण गत प्राप्तो य स तथा तेन ॥ प

॥ मूल ॥

उप्पइज्जा। अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू असिचम्महत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए? गोयमा! सेजहानामए जुवईजुवाणे हत्थेणहत्थे गेण्हेज्जा तंचेव जाव विउव्विसुवा ३ सेजहानामए केइपुरिसे एगओ पडागं काउगच्छेज्जा। एवामेव अणगारे भावियप्पा एगओपडागा हत्थकिच्चगएणं अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?-हंता गोयमा !-अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू एगओ पडागा हत्थकिच्च

॥ भाषा ॥

माणिया। यावत् पालखो सूत्र तालगे कहवो। सेजहानामएकेइपुरिसे असिचम्मपायगहायगच्छेज्जा। ते यथानामे दृष्टाते कोई पुरुष खड्ग चर्मपात्र करी षडाने आकारे अथवा खडग चर्मपात्र खड्गनो मेन ग्रहीनें जाय। एवामेवअणगारेविभावियप्पा असिचम्मपायंहत्थकिच्चगएणं। इणे दृष्टान्ते अणगार भावितात्मा खड्ग चर्म पात्र हस्तने विषेछ जेहने तथा सघादि प्रयोजन प्रतें आश्रयीने। अप्पाणेणउड्ढवेहासउप्पइज्जा। आत्मायें ऊंचो आकाशे ऊछले जाय इतिप्रश्न उत्तर। हंता उप्पइज्जा। हां गौतम जाय। अणगारेणभंतेभावियप्पा केवइयाइ। साधु हेभगवन्! भावितात्मा केतला एक ,विउव्वित्तए, इतियोग। पभूअसिचम्महत्थगयाइ रूवाइ विउव्वित्तए। समर्थ हुवे असि चर्मने विषे जेहने एहवा संघादिकार्यने अर्थे रूप विकुर्वे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेजहानामएजुवइजुवाणे हत्थेणहत्थेगेण्हेज्जा तचेवजावविउव्विसुवा ३। हेगौतम। ते यथा नाम दृष्टाते युवती स्त्रीप्रतें युवान पुरुष हाथ सघाते हाथग्रहे इत्यादि दृष्टात पूठिलो परे कहवो तिमहीज यावत् विकुर्व्या नही विकुर्वे नही विकुर्वस्ये नही। सेजहानामएकेइपुरिसे। ते यथा नाम दृष्टाते कोई पुरुष। एगओपडागकाउगच्छेज्जा। एक दिशिने पख पताका ध्वजाछे जिहा एहवो करीने जाय। एवामेवअणगारेविभावियप्पा एगओपडागा

गयाइं रूवाइं विउव्वित्तए एवं जाव विकुव्विंसुवा ३ एवं दुहउ पडागंपि । सेजहानामए केइपुरिसे एगउ जणोवइ तंकाउ गच्छेज्जा एवामेव अणगारेवि भावियप्पा एगउ जनोवइयं किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढ वे हास उप्पाएज्जा ? हंताउप्पाएज्जा । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा केवइयाइ पभू एगउ जंणोवइयं किच्च गयाइं रूवाइं विउव्वित्तए तंचेव जाव विकुव्विंसुवा ३ । एवं दुहउ जंणोवइयपि । सेजहानामए केइपुरिसे एगउ पल्हत्थियं काउंचिठेज्जा एवामेव अणगारेभावियप्पा तचेव जाव विकुव्विंसुवा ३ । एव दुहउ पल्ह

हत्थकिच्च गएण । इणें दृष्टाते साधु भावितात्मा एकदिशि पताका हाथने विषेछे जेहने इमकरी सघादिकने कायें । अप्पाणेणउड्ढ वेहासउप्पएज्जा । आत्मायें करोने ऊंचो आकाशे जाय इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हा गौतम जाय । अणगारेणंभंतेभावियप्पाकेवइयाइ पभू । अणगार साधु भावितात्मा लब्धिनो धणो केतला एक समये हुवे । एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइ रूवाइ विकुव्वित्तए । एकदिशि पताका हाथने विषेकरी सघादिकने कायें रूप विकुर्वे । एवंजावविकुव्विसुवा ३ । इम पूछिलो परे यावत् विकुर्व्या नही विकुर्वेनही विकुर्वेस्ये नही । एवदुहओपडागपि । इम बेपताका हाथने विषेछे एइ सूत्र पणि कहवो । सेजहानामएकेइपुरिसे । ते यथानामे दृष्टाते कोई एक पुरुष । एगउजनोवइतकाउगच्छेज्जा । एक पासे यज्ञोपवीत जनोई ते करोने जाय । एवामेवअणगारेविभावियप्पा । इणें दृष्टांते अणगार साधु पणि लब्धिवत । एगओजणोवइयकिच्चगएण । एक पासे जनोईसहित सघादिकना कायें आश्रोने । अप्पाणेणउड्ढवेहासउप्पएज्जा । पोते ऊंचो आकाश प्रतें जाय इतिप्रश्न उत्तर । हंताउप्पइज्जा । हागौतम जाय । अणगारेणंभंतेभावियप्पा । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा । केवइयाइ पभूएगओजणोवइयकिच्चगयाइरूवाइ विकुव्वित्तए । केतला एक जनोईसहित सघादिकना कायें आश्रयोने समर्थ हुवे. रूप विकुर्वेवा करवाने । तचेवजावविकुव्विंसुवा ३ । पूर्वे कह्यु तिमज यावत् विकुर्व्या नही विकुर्वे नही विकुर्वस्ये पणि नही । एवंदुहओजणोवइयपि । इम बिहु पासे जनोईनो पणि सूत्र कहवो । सेजहानामएकेइपुरिसे । ते यथानाम दृष्टांते कोई एक पुरुष । एगओपल्ह

लियंकति ॥ आसनविशेषः प्रतीतश्च ॥ विगत्ति ॥ वृकः ॥ दीवियत्ति ॥ चतुष्पदविशेष ॥ अच्छत्ति ॥ ऋक्ष ॥ तरच्छत्ति ॥ व्याघ्रविशेषः ॥ परासरत्ति ॥ सरभ , तथा न्यान्यपि शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते ॥ अभिजुजित्तएत्ति ॥ अभियोक्तु विद्यादिसामर्थ्यंत स्तदनुप्रवेशेन व्यापार

त्थियपि । सेजहानामए केइपुरिसे एगत्त पलियंकं काउं चिठिज्जा तंचेव विकुव्विसुवा ३ । एव दुहत्त पलियंकंपि । अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग महं आसरूववा हत्थिरूववा सीहरूवंवा वग्घवग्ग दीविय अच्छ तरच्छ परासररूववंवा अभिजुंजित्तए ? णोइणठे समठे अणगारेणं एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू । अणगारेण भंते ! भावियप्पा एगं महं आसरूवंवा अभिजुंजित्ता

त्थियकाउं चिठ्ठिज्जा । एकपासे पल्हाठो करोने ऊभोरहै । एवामेवअणगारेभावियप्पा । इणे दृष्टांते अणगार भावितात्मा पणि । तचेवजावविकुव्विसुवा ३ । तिमहीज यावत् विकुर्व्या नही ३ । एवदुहओपलहत्थियपि । इम विहुपासे पलाठी वाली वैसे ए सूत्र कहवो । सेजहानामएकेइपुरिसे । ते यथानामे दृष्टांते कोई पुरुष । एगओपलियकाउं चिठ्ठिज्जा । एकपासे पल्यङ्क आसन विशेष प्रतेंकरी रहै । तंचेवजावविकुव्विसुवा ३ । इम अणगार पणि तिमज कहवो पणि विकुर्व्यानही ३ । एवंदुहओपलियकपि । इम विहुंपासे पल्यङ्कनो पणि सूत्र कहवो । अणगारेणभतेभावियप्पाबाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्ता पभू । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा वैक्रिय लब्धिवन्त वैक्रियना नवा पुद्गल लीधा विना समर्थ हुवे । एगमहआसरूवंवा । एक मोटो अश्वनो रूप तेहप्रतें अथवा । हत्थिरूवंवा । हाथीना रूप प्रतें । सीहरूवंवा वग्घवगदीविय अच्छतरच्छपरासररूववाअभिउंजित्तए । सीहना रूप प्रतें बाघना रूप प्रतें हचना हरडाना रूप प्रतें, रीछ व्याघ्र विशेष अष्टापद इहां बीजा पणि शृगालादिक पद वाचनातरे दीसेछै—विद्या समर्थ पणाथकी तेहने विषे अनुप्रवेश करवे करी अथवा पोताने अनुप्रवेशने जोडवो ते जोडे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनही । अणगारेणएवंबाहिरएपोग्गलेपरियादित्तापभू अणगारेणभते भावियप्पा । अणगार इम नवा पुद्गल समर्थ हुवे अणगार हेभगवन् । भावितात्मा लब्धिवत ।

॥ टीका ॥

यितु' यच्च स्वस्यानुप्रवेशने नाञ्जियीजन तं द्विधादिसामर्थ्योपात्तबाह्यपुद्गला न्विना न स्यादिति कत्वो च्यते ॥ नोबाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्तत्ति ॥ अणगारेणसेत्ति ॥ अनगारएवा सौ तत्वतो नगारस्यैवा ऽश्वाद्यनुप्रवेशेन व्याप्रियमाणत्वात् ॥ मायीअभिजुजइत्ति ॥ कषायवा नभियुक्त इत्यर्थ., अ

॥ मूल ॥

णेगाइं जोयणाइं गमित्तए? हंतापभू । सेभंते! किंआइड्ढीए गच्छइ परिड्ढीए गच्छइ ? गोयमा ! आयड्ढीए गच्छइ नोपरिड्ढीए। एवं आयकम्मुणा परकम्मुणा आयप्पयोगेण परप्पयोगेण उस्सिउदयवा गच्छइ पयोदयवा गच्छइ सेणंभंते ! किं अणगारे आसे ? गोयमा ! अणगारेणं से नोखलुसे आसे, एव जाव परासररूवंवा । सेभंते ! किं माईविकुव्वइ अमाईविकुव्वइ ? गोयमा! मायीविकुव्वइ नोअमायीविकुव्वइ । माईणं

॥ भाषा ॥

णगमहंआसरूववा अभिउंजित्ता । एक मोटा अश्वरूप तेहप्रते क्रिया समर्थपणे तेहने विषे प्रवेशकराने । अणेगाइंजोअणाइंगमित्तए । अनेक योजन जाइवाने समर्थ हुवे इतिप्रश्न उत्तर । हंतापभू । हा गौतम समर्थ हुवे । सेभंतेकिंआइड्ढीएगच्छइ । ते हेभगवन् । स्यू पोतानी समर्थाई जाय अथवा । परिड्ढीएगच्छइ । पारकी समर्थाईयी जाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आइड्ढीएगच्छइ । हेगौतम । आत्मानी समर्थाईयी जाय पणि । णोपरिड्ढीएगच्छइ । पर समर्थाईयी नजाय । एवंआयकम्मुणा । इम आत्मानी क्रिया थकी जाय पणि । णोपरकम्मुणा । परक्रिया थकी नजाय । आयप्पओगेण इम आत्माने उद्यमे करी जाय । णोपरप्पओगेण । पणि पराये उद्यमे करी नजाय । उस्सिओदयवागच्छइ । वली ऊर्द्ध पताकाने आकारे जाय । पओदयवागच्छइ । नीचो पताका तेहने आकारे जाय । सेणभंतेकिंअणगारेआसे । तेह ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । स्यू अणगार कहीये अथवा घोडो कहीये । गोयमा अणगारेणसेणोखलुआसे । हेगौतम । अणगार ते कहवो अणगारनोज अश्वादिकने विषे प्रवेशछे नही निश्चे ते घोडो । एवजावपरासररूववा । इम यावत् अष्टापदना रूपलगे कहवो । सेभंतेकिंमायीविकुव्वइअमायीविकुव्वइ । ते हेभगवन् । स्यू कषायी प्रमत्त विकुर्वे अथवा अकषायी अप्रमत्त विकुर्वे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोमायोविकुव्वइ अमायीविकुव्वइ । हेगौतम ! सकषायी प्रमत्त विकुर्वे पणि अकषायी अप्रमत्त विकुर्वे

॥ टीका ॥

धिकृतवाचनायां मायीविउव्वइत्ति दृश्यते, तत्रचा भियोगोपि विकुर्वणेति मन्तव्य विक्रियारूपत्वात्तस्येति ॥ अन्नयरेसुत्ति ॥ आभियोगिकदेवा अ च्युतान्ता भवती तिकृत्वा अन्यतरेष्वि त्युक्त, केषुचिदित्यर्थ, यत्प्रद्यतेचाभियोगभावनायुक्त साधु राभियोगिकदेवेषु करोतिच विद्यादिलब्ध्युप जीवको ऽभियोगभावना यदाह–मताजोगकाउं भूईकम्मतुजेपउंजति । साइरसइड्ढिहेउ अभिउंगभावणंकुणइ ॥ १ ॥ इत्यीत्यादिसङ्ग्रहगाथागतार्थो ॥

॥ मूल ॥

भंते ! तस्सठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ कहिंउववज्जइ ? गोयमा ! अन्नयरेसु आभियोगेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ । अमाईणं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते काल करेइ कहि उववज्जइ गोयमा ! अन्नयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ सेव भंते भंतेत्ति गाहा ॥ इत्थीअसी

॥ भाषा ॥

नहो । मायोणंतस्सठाणस्सअणालोइयपडिक्कतेकालंकरेइकहिंउववज्जइ । मायो हेभगवन् । ते स्थानकथो विकुर्वणा करणलक्षण थको तथा प्रणीत भोजन लक्षण थको आलोया विना तथा पडिकम्या विना काल करे तो किहां ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अन्नयरेसु । हेगौतम । किणही एक स्थानके । आभियोगेसुदेवलोगेसुदेवत्ताएउववज्जइ । आभियोगिक देव सेवक देव ते अच्युत देव पर्यन्त हुवे, तेमाटे अन्यतर कह्यु ते देवलोकने देवतापणे ऊपजे एतले सेवक देवपणे ऊपजे जेमाटे कह्युछे—मताजोगकाउंभूईकम्मतुजेपउंजंति । सायरसइड्ढिहेउं अभिओगभावणंकुणइ ॥ १ ॥ अमायोणंतस्स ठाणस्सआलोइयपडिक्कंतेकालंकरेइकहिंउववज्जइ । अमायीने तेह स्थानकने विषे एतले पहिला मायी पणायी वैक्रिय प्रते तथा प्रणीत भोजन प्रते करो ने पछे पछितावो करो अमायो थको स्थानक थको आलोयी पडिक्कमीने काल करे तो किहांजाय किहां ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अन्नयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु उववज्जइ । हेगौतम । एतले अनुत्तरविमान पर्यन्त कह्यो ते कोई एक स्थानकने विषे सेवकभाव रहित देवलोकने वि षे देवपणे ऊपजे एतले अहमिन्द्र पणे देवहुवे, अकषायी प्राये अनुत्तरविमाने जाय । सेवंभते २ त्ति गाहा । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही पूर्वोक्तार्थ संग्रह गाथा कहेछे—इत्थीअसीपडागा जणोवइएवहोयमोधव्वे । पल्लत्थियपलियंके अभिओगविकुव्वणामाई ॥ १ ॥ स्त्रीरूप खड्ग

॥ टीका ॥

॥ विकुर्वणाधिकारसम्बद्धएव षष्ठ उद्देशक स्तस्य चादिसूत्रं ॥ अणगारेणमित्यादि ॥ अनगारो गृहवा
इतितृतीयशतेपंचम ॥ ५ दित्याह–मिथ्यादृष्टि रन्यतीर्थिकइ
त्यागा द्भावितात्मा स्वसमयानुसारिप्रशमादिभि मायी त्युपलक्षणत्वात् कषायवान् सम्यग्दृष्टि रप्येव स्या
त्यर्थ, वीर्यलब्ध्यादिभि करणभूताभि वाराणसीनगरी ॥ समोहएत्ति ॥ विकुर्वितवान्, राजगृहे नगरे रूपाणि पशुपुरुषप्रासादप्रभृतीनि जाना
ति पश्यति, विभङ्गज्ञानलब्ध्या ॥ नोतहाभावंति ॥ यथावस्तु तथाभावो अभिसंधि यत्र ज्ञाने त तथाभाव' अथवा, यथैव संवेद्यते तथैव भा

॥ मूल ॥

पडागा जस्सोवडएयहोइबोधव्वे । पल्हत्थियपलियंके अभियोगविकुव्वणामायी ॥ १ ॥ तइयसए पंचमो
उद्देसो सम्मत्तो ३ ॥ ५ ॥ अणगारेणं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिठी वीरियलद्धीए
वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ
पासइ ? हंता जाणइ पासइ । सेभंते किं तहाभावं जाणइ पासइ अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

पताकाकार जनोई चपुन हाय जाणवा पालपठो पल्यङ्क आभियोगदेव एतला विकुर्वणा मायीकरे। तइयसयस्सपंचमओउद्देसोसम्मत्तो। ए त्रीजा श
तकनो पंचमो उद्देशो पूरोथयो ॥ ५ ॥ विकुर्वणाधिकार सम्बन्धहीज छठो उद्देशो कहेछे—अणगारेणभंते। अणगार हेभगवन्। गृहवास
त्याग थकी अणगार कह्यो। भावियप्पामायीमिच्छादिठ्ठी। पोताना शासनने अनुसारे उपशमादि गुणेंकरी प्रवर्त्ते तेमाटे भावितात्मा कह्यो तथा उपल
क्षणथी कषायवन्त एहवो सम्यग्दृष्टी साधु पणि हुवे तेमाटे कहेछे—एहवो मिथ्यादृष्टी अन्यतीर्थी इत्यर्थ। वीरियलद्धीए। वीर्यनी लब्धि करीने। वेउ
व्वियलद्धीए। वैक्रिय लब्धि करीने तथा। विभंगणाणलद्धीए। विभंगज्ञान लब्धि करीने। वाणारसिणयरिसमोहणइसमोहणित्ता। वाराणसी नगरी प्रतें
विकुर्वणा करे करीने। रायगिहेणयरे रूवाइं जाणइ पासइ। राजगृह नामा नगरने विषे पशु पुरुष प्रासाद आदि देई जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर।
हंता जाणइ पासइ। हा गौतम ! जाणे देखे। सेभंतेकितहाभावं जाणइ पासइ। ते हेभगवन् ! स्यूं तथा भावप्रतें जाणे देखे जेहवो वस्तु हुवे तेहवो जा

वो वाह्यं वस्तु यत्र त थ्याभाव, अन्यथा भावो यत्र त दन्यथाभावं क्रियाविशेषणेचे मे सहिमन्यते ऽहं राजगृह नगरं समवहतो वाराणस्या रू पाणि जानामि पश्यामी त्येव ॥ सेत्ति ॥ तस्या नगरस्य ॥ सेत्ति ॥ असौ दर्शने विपर्यासो विपर्ययो भवति, अन्यदीयरूपाणा मन्यदीयतया विक ल्पितत्वात्, दिङ्मोहादिव पूर्वामपि पश्चिमा मन्यमानस्येति क्वचित् ॥ सेसे दसणे विवरीए विवच्चासेत्ति दृश्यते, तत्रच तस्य तद्दर्शन विपरीत

णोतहाभाव जाणइ पासइ अणहाभावं जाणइ पासइ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नोतहाभावं जाणइ पासइ अणहाभावं जाणइ पासइ ? गोयमा ! तस्सणं एवभवइ एवंखलु अहं रायगिहेनगरे समोहए स मोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामिपासामि सेसेदंसणेविवच्चासे भवइ सेतेणठेणं जाव पासइ। अणगारेणं भंते! मायीमिच्छादिठी जाव रायगिहे नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं

णोथे ते ज्ञानने विषे ते यथाभाव। अणहाभावजाणइ पासइ। अन्यथाभाव प्रतें जाणें देखे जिसो वस्तु हुवे तेहवो नजाणेये जे ज्ञानने विषे ते अन्यथा भावे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोतहाभाव जाणइ पासइ। हे गौतम। तथा भावे नजाणें विभङ्गज्ञान लब्धिकरी यथावस्तु नजाणें नदेखे। अणहा भाव जाणइ पासइ। अन्यथा भाव ते विपरीत भाव तेहप्रतें जाणें देखे। सेकेणठेणभंतेएववुच्चइ। ते किसे प्रयोजने हेभगवन्! इम कह्यु। णोतहाभावंजा णइ पासइ। तथा भावे नजाणें नदेखे। अणहाभावजाणइपासइ। अन्यथा भावे जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तस्सणएवभवइ। हेगौतम। अन्यतो र्थीनेइम हुवे, ते इम माने। एवखलुअहरायगिहेणयरे समोहए समोहणित्ता। इम निश्चे हु राजगृहनामा नगरने विषे विकुर्वणा करे विकुर्वणा करी ने। वाराणसोएणयरीए रूवाइं जाणामि पासामि। वाराणसी नगरीना रूप प्रतें जाणुं देखुं अन्यतीर्थीने। सेसेदसणे विवच्चासेभवइ। ते अणगार दर्शनने विषे विपरीत हुवे, अनेराकपने अनेरापणें करी दिशि मूढनीपरे जिम पूर्वदिशि प्रतें पश्चिमदिशि माने तेहनी परे एहने देखवाने विषे विप रीत पणों हुवे। सेतेणठेणजावपासइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम। ते तथा भाव नजाणे अन्यथा भाव प्रते जाणे देखे। अणगारेणभंतेभावियप्पामायीमिच्छ

॥ टीका॥

वाणारसिं नगरिं रायगिहं नयरं अंतराय एगं महं जणवयवग्गं चेत्रव्यत्ययेने तिकृत्वा विपर्यासो मिथ्येत्यर्थ , एवं द्वितीयसूत्रमपि, तृतीयेतु ॥ वाराणसी राजगृह तयो रेव चान्तरालवर्तिन जनपदवर्ग देशसमूह समवहतो विकुर्वितवान्, तथैवच तानि विभङ्गतो जानाति समोहएत्ति ॥

॥ मूल ॥

जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । तंचेव जाव तस्सणं एवं होइ एवंखलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए समोहणित्ता रायगिहेनगरे रूवाइं जाणामि पासामि सेसेदंसणेवि वच्चासे भवइ सेतेणट्ठेणं जाव अणहाभावं जाणइ पासइ । अणगारेणं भंते! भावियप्पा मायी मिच्छदिठी वीरियलद्धीए विउव्वियलद्धीए विभंगलद्धीए वाणारसिं नगरिं रायगिहंच नगरं अंतारय एगंमहं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता वाणा

॥ भाषा ॥

यावत् राजगृहनामा नगर प्रते विकुर्वे । जावरायगिहेणयरे समोहए समोहणित्ता । मिच्छदिट्ठी । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा कषायवन्त अन्यतीर्थी । वाराणसी नामा नगरीये पशु पुरुष प्रासादिकना रूप प्रतें जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गायेकरीने । वाराणसीएणयरीएरूवाइं जाणइ पासइ । जाणइपासइ । हा गौतम जाणें देखे । तचेवजावतस्सणंएवंहोइ । इम सर्वं जिम पूर्वं कह्यु तिम इहा पणि कहवो यावत् तेहने मनमे एहवो हुवे । एव खलुअहवाराणसीएणयरीए समोहए समोहणित्ता । इम निश्चे हु वाराणसी नगरी विकुर्वणाये करीने । रायगिहेणयरेरूवाइ जाणामि पासामि । राजगृह नगरना पशुपुरुषादि रूप प्रतें जाणूं छू देखूं छू । सेसेदंसणेविवच्चासे भवइ । ते अणगारने ते दर्शननो विपरीतपणो हुवे अनेराने अनेरो करी माने । सेतेणठ्ठेणजावअणहाभाव जाणइ पासइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम । यावत् तथाभावे नजाणे नदेखे अन्यथा भावे जाणें देखे । अणगारेणभंतेभावियप्पामायीमिच्छदिठ्ठी । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा मायी कषायवन्त मिथ्यादृष्टी अन्यतीर्थी । वीरियलद्धिए । वीर्य लब्धि करीने । वेउव्वियलद्धीए । वैक्रिय लब्धि करीने । विभंगलद्धीए । विभंग लब्धि करीने । वाराणसिणयरिरायगिहणयरं तचअतराएगमहजणवयवग्ग समोहणइ समोहणइत्ता । वाराणसी नगरी प्रतें वली तथा राजगृह नगर प्रते तथा एबेजने अतरा विचाले वपुन एक मोटो जनपदवर्ग देशसमूह विकुर्वे विकुर्वीने । वाणारसिणयरि

॥ टीका ॥

पश्यति' केवलं नो तथाभावं यतो सौ वैक्रियाण्यपि तानि मन्यते स्वाभाविकानीति ॥ जस्सेत्ति ॥ यशो हेतुत्वा द्यश' नगररूवंवा; इह याव

॥ मूल ॥

रसिं नगरिं रायगिह तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्ग जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । सेभंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अणहाभाव जाणइ पासइ ? गोयमा ! णोतहाभावं जाणइ पासइ अणहा भावं जाणइ पासइ । सेकेणट्ठेण जाव पासइ ? गोयमा ! तस्सखलु एवं भवइ एस खलु वाणारसीए नयरीए एसखलु रायगिहे नगरे एसखलु अंतरा एगंमहं जणवयवग्ग नोखलु एस महंवीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी इड्ढी जुत्ती जसे वले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमणागए सेसेदंसणेवि वच्चा

॥ भाषा ॥

वाणारसी नगरी प्रतें तथा । रायगिहणयरतच । राजगृह नगर प्रतें वपुन । चतराय एगमहजणवयवग्गजाणइपासइ । अंतरा विचाले एक मोटो जनप दवर्ग देशसमूह ए तीनेंइ प्रतें जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर । हंता जाणइ पासइ । हा गौतम जाणे देखें । सेभंतेकितहाभावं जाणइ पासइ । ते हेभगव न् स्यू तथा भावे जाणें देखे अथवा । अणहाभावं जाणइ पासइ । विपरीत भाव प्रतें जाणे देखें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोतहाभावजाणइ पासइ । हे गौतम तथा भावप्रतें नजाणें जेमाटे ते विभङ्गज्ञानी तें तीनेंइने वैक्रियछे तोपणि स्वाभाविक माने नदेखे । अणहाभाव जाणइ पासइ । अन्यथा भावते विपरीत भावप्रतें जाणें देखें । सेकेणट्ठेणभते जाव पासइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कह्यु तथा भावे नजाणें अन्यथा भावे जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तस्सखलुएवभवइ । हेगौतम अन्यतीर्थी निश्चे मिथ्यादृष्टीने इम हुवे इम चिन्तवे । एसखलुवाणारसीणयरी । एह निश्चे वाणारसी नग री । एसखलुरायगिहेणयरे । एह निश्चे राजगृह नगर । एसखलुअंतरा । एह निश्चे विचाले । एगेमहजणवयवग्गे । एक मोटो जनपदवर्ग देश समूह । णोखलुएसमह । नहो निश्चे एहवू मैं । वीरियलद्धो । वीर्य लब्धि । वेउव्वियलद्धी । वैक्रिय लब्धि । विभंगणाणलद्धो इड्ढीजुत्ती जसे वले वीरिए पुरिसक्का रपरक्कमे लद्धेपत्ते अभिसमणागए सेसेदंसणेविवच्चा सेभवइ । विभङ्गज्ञान लब्धि ऋद्धि दीप्ति यशना हेतुयको यश बल वीर्य पुरुषात्कार पराक्रम लाधो

से जवइ सेतेणठेणं जाव पासइ। अणगारेणं जंते! जावियप्पा अमायी सम्मदिठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए उहिनाणलद्धीए रायगिहे नगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ पासइ? हंता जाणइ पासइ। सेजंते! किं तहाजाव जाणइ पासइ अन्नहाजावं जाणइ पासइ? गोयमा! तहाजावं जाणइ पासइ नोअन्नहाजावं जाणइ पासइ। सेकेणठेणं जंते! एवंवुच्चइ? गोयमा! तस्सणं एव जवइ एवंखलु अहं रायगिहेनगरे समोहए समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामिपासामि सेसे

पाम्यो सम्मुखथयो ते अणगारने ते एह दर्शनने विपरीत हुवे, एतावता तोनेइं नवा विकुर्वे तोनेइंने देखे पणि मनमे इम जाणे ए मैं विकुर्वणाये करो कोवी नथी एह स्वाभाविकछे एहव् तेहने दर्शन उपराठ् हुवे विभंगज्ञानथी अनेराने अनेरोकरी माने इत्यर्थ। सेतेणठ्ठेणजावपासइ। तेणे अर्थे हेगौतम। यावत् तथाभाव न जाणे अन्यथाभाव जाणे देखे। अणगारेणंभतेभावियप्पा अमायो सम्मदिठ्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए। अणगार साधु हेभगवन्। संयमे तपेंकरी आत्मा भावितछे जेहनो एहवा अणगारने प्रायें अवधिज्ञानादि लब्धि हुवे, अमायी अकषायवन्त ओवीतरागनो आज्ञानो आराधक वीर्यलब्धि करो वैक्रियलब्धि करो अवधिज्ञान लब्धि करी। रायगिहेणयरेसमोहएसमोहणित्ता। राजग्टह नगरने विषे वैक्रिय समुद्घात करी करीने। वाणारसीएणयरीएरूवाइ जाणइ पासइ। वाणारसी नगरीये पशुपुरुषादिक रूपप्रतें जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर। हता गोयमा। हा गौतम जाणे देखे। सेभतेकितहाभाव जाणइ पासइ। ते हेभगवन् स्यूं तथा भावे जाणे देखे अथवा। अणहाभावजाणइ पासइ। अन्यथा विपरीत भावप्रतें जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तहाभावजाणइ पासइ। हेगौतम। तथाभावप्रते जाणे देखे सम्यक्दृष्टी पणाथकी। णोअणहाभावजाणइ पासइ। पणि अन्यथाभावप्रतें जाणे देखेनही। सेकेणठ्ठेणभतेएववुच्चइ। ते स्यें प्रयोजने हेभगवन्। इम कह्यु तथाभावे जाणे अन्यथाभावे नजाणे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा तस्सणएवभवइ। हेगौतम। तेहने इम हुवे इम चिन्तवे। एवखलुअहरायगिहेणयरे समोहए समोहणित्ता। इम निश्चे हूं राजग्टह

दंसणे अविवच्चासे भवइ सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ । बीजंवि आलावगो एवंचेव । णवरं वाणारसी ए नयरीए समोहणा वेयव्वो । रायगिहे नयरे रूवाइं जाणइ पासइ । अणगारेणं भंते ! भावियप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं वाणारसिंनगरिंच अंतराएग महं जणवयवग्गं समोहए समोहएत्ता रायगिहं नगरं वाणारसिंचनगरिं तंच अंतरा एगं महं जणवयवग्गं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ । सेभंते ! किं तहाभावं जाणइ पासइ अन्नहाभावं जाणइ पासइ ? गोय

नामा नगरने विषे वैक्रिय समुद्घात करे करोने । वाणारसीएणयरीएरूवाइं जाणामिपासामि । वाणारसी नगरीयें पशुपुरुषादिकना रूप तेहप्रतें जाणूंछू देखूछू । सेसेदंसणेअविवच्चासेभवइ । ते अणगारने ते एह दर्शनने विपरीत पणो नहुवे समदेखे । सेतेणट्ठेणं गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हे गौतम । इम कह्यु तथाभावे जाणे अन्यथाभावे नजाणे । बीओविआलावओएवंचेव । बीजोपणि आलावो इमज कहवो । णवरंवाणारसीएणयरीएसमोहणावेयव्वा । एतलो विशेष वाणारसी नामा नगरीने विषे विकुर्वे विकुर्वीने । रायगिहेणयरेरूवाइं जाणइ पासइ । राजग्रह नगरे पशुपुरुषादिकनारूप प्रतें जाणे देखे । अणगारेणभंतेभावियप्पा अमायी सम्मदिट्ठीवीरियलद्धीए । अणगार हेभगवन् । भावितात्मा अमायी सम्यग्दृष्टी वीर्यलब्धि करी । वेउव्वियलद्धीए । वैक्रियलब्धि करी । ओहिणाणलद्धीए । अवधिज्ञानलब्धि करी । रायगिहणयरवाणारसिणयरिंच अंतराय । राजग्रह नगरप्रतें वाणारसी नगरी प्रते अंतरा विचाले । एगमहंजणवयवग्ग समोहए २ त्ता । एक मोटो जनपदवर्ग देशसमूह वैक्रिय समुद्घाते विकुर्वे विकुर्वीने । रायगिहं णयरं वाणारसिंचणयरिं तंचअंतरा । राजग्रह नगर प्रते वाणारसी नगरी प्रतें अंतरा विचाले । एगंमहंजणवयवग्गं जाणइ पासइ । एक मोटो जनपद वर्ग देशसमूह प्रतें जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर । हंताजाणइपासइ । हां गौतम जाणें देखे । सेभंतेकिंतहाभाव जाणइ पासइ । ते हेभगवन् । स्यूं तथा भाव ते यथार्थ वस्तुप्रतें जाणें देखे । अणहाभाव जाणइ पासइ । अथवा विपरीत भावप्रते जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तहाभाव जाणइ पासइ ।

त्करणा दिदं दृश्यं–निगमरूववा; रायहाणिरूवंवा, खेडरूवंवा; कव्वडरूवंवा; मडंबरूवंवा; दोणमुहरूवंवा; पट्टणरूवंवा; आगररूवंवा; आ

मा ! तहाभावं जाणइ पासइ नो अन्नहाभाव जाणइ पासइ । सेकेणठेणं ? गोयमा ! तस्सण एवं भवइ नोखलु एसरायगिहे णोखलुएस वाणारसीनगरी नोखलुएस अंतरा एगे जणवयवग्गे एसखलु ममं वीरिय लद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिणाणलद्धी इड्ढी जुत्ती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्ना गए सेसेदसणे अविवच्चासे भवइ सेतेणठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तहाभावं जाणइ पासइ नो अन्नहाभावं जाणइ पासइ । अणगारेण भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवंवा

हेगौतम । तथाभावप्रतें जाणें देखे सम्यकदृष्टी पणा माटे पणि । णोअण्णहाभाव जाणइ पासइ । अन्यथाभावप्रतें नजाणें देखे नही । सेकेणट्ठेण गोय मा तस्सणएवंभवइ णोखलुएसरायगिहेणयरे । तेणे प्रयोजने हेगौतम । इम कह्यु तथाभावेजाणे, हेगौतम । ते अणगारने इम हुवे ते इम चिन्तवे नही निश्चे एह राजगृहनामा नगर । णोखलुएसवाणारसोणयरी । नही निश्चे एह वाणारसी नगरी । णोखलुएसअंतरा । नही निश्चे एह अंतरा विचाले । एगेजणवयवग्गे । एक जनपद वर्ग देशसमूह । एसखलुममवीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी । एह निश्चे वीर्यलब्धि वैक्रियलब्धि । ओहिणाणलद्धी ॥ अवधिज्ञान लब्धि । इड्ढी जुत्ती जसे बले वीरिए पुरिसकार परक्कमे लद्धे पत्ते । ऋद्धि द्युति यश बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम लाधो पाम्यो । अभिसमण्णागते । स न्मुख थयो । सेसेदंसणेअविवच्चासेभवइ । इम ते अणगारने तेह दर्शननो अविपर्यास विपरीतपणो नहुवे यथार्थ ज्ञान हुवे । सेतेणट्ठेण गोयमा एव वु च्चइ तहाभावजाणइ पासइ । ति तेणें कारणे हेगौतम । इमकह्यु तथा भावप्रतें जाणें देखे पणि । णोअण्णहाभावं जाणइ पासइ । अन्यथा भाव ते विप रोत भावे नजाणे नदेखे । अणगारेणभंतेभावियप्पा बाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्तापभू । अणगार साधु हेभगवन् । भावितात्मा तप संयमवन्त बाह्य नवा पुद्गल लोधाविना समर्थहुवे । एगमहगामरूववा नगररूववाजावसण्णिवेसरूववाविकुव्वित्तए ॥ एक मोटो ग्रामरूपप्रतें नगररूप प्रतें इहा यावत् शब्द थ

नगररूवंवा जाव सन्निवेसरूवंवा विकुव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणठेसमठे एवं बितिअविआलावए । नवरं
वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू । अणगारेणं भंते ! केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ? गोय
मा ! सेजहानामए जुवइं जुवाणे हत्थेणहत्थगेएहेज्जा तंचेव जाव विकुव्विंतिवा ३ । एवं जाव सन्निवेसरू
वंवा । चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइआयरक्खदेवसाहस्सीओ ? गोयमा ! चत्तारि चउसठीओ
आयरक्खदेवसाहस्सीओ पन्नत्ताओ । एएणं आयरक्खवन्नओ । एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा

गामरूववा रायहाणिरूववा खेडरूववा कब्बडरूववा मडंबरूववा दोणमुहरूववा पट्टणरूववा आगररूववा आसमरूववा सवाहरूववा सन्निवेसरूव
कुर्वे, एतलालगे कहवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थ नही । इवबितिओआलावओणवरवाहिरएपोग्गलेपरिया
इत्तापभू । इम वीजोपणि आलावो कहवो एतलो विशेष वाहिरला पुद्गललेइने विकुर्वणा करवाने समर्थहुवे इम कहवो । अणगारेणभंतेभावियप्पाकेव
इयाइं पभू । अणगार साधु हेभगवन् । भावितात्मा केतला एक समर्थहुवे । गामरूवाइं विकुव्वित्तए । ग्रामरूप तेहप्रतें विकुर्वणा करवाने इतिप्रश्न उत्तर ।
गोयमा सेजहानामए जुवइंजुवाणेहत्थेणं हत्थंगिण्हेज्जा । हेगौतम । ते यथानाम दृष्टान्ते युवती स्त्रीप्रतें युवान पुरुष कामवशथकी हाथेकरी हाथ
ग्रहे तिमहीज यावत् विकुर्व्या नहीं विकुर्वेनही विकुर्वस्येंनही । एवजावसन्निवेसरूव
दृष्टान्त पूठिलो परे कहवो । तंचेवजावविकुव्विंतिवा ३ । तिमहीज यावत् विकुर्व्या नहीं विकुर्वेनही विकुर्वस्येंनही । एवजावसन्निवेसरूव
यावत् सन्निवेशरूप सूत्रलगे कहवो विकुर्वणाना अधिकार थकी विकुर्वणाने समर्थ देवविशेष प्ररूपणने अर्थ कहेछे—चमरस्सणंभंतेअसुरिंदस्सअ
सुररण्णोकइआयरक्खदेवसाहस्सीओपण्णत्ताओ । चमरने हे भगवन् । असुरेन्द्रने असुरकुमार राजाने केतला आत्मरक्षकदेव सहस्र कह्या इतिप्रश्न उत्त
र । गोयमा चत्तारिचउसठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ एएणंआयरक्खवण्णओ एवंसव्वेसिंइंदाणं जस्सजत्तिया आयरक्खाभाणियव्वा । हेगौतम । च
उसठि सहस्र पूर्वदिशि १ इम दक्षिण २ पश्चिम ३ उत्तर ४ पणि प्रत्येके चउसठि सहस्र कहवा, इम चार चउसठि थई एतले आत्मरक्षकनो वर्णक टी

समरूवंवा ; संवाहरूवव , त्ति , विकुर्वणाधिकारा त्तत्समर्थदेवविशेषप्ररूपणाय सूत्राणि ॥ वणउत्ति ॥ आत्मरक्षदेवानां वर्णको वाच्य , सचायं—सन्न द्धवद्धवम्मियकवयाउप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेवेज्जा वद्धआविद्धविमलवरचिधपट्टागहिया उहपहरणातिणयाइति संधियाइं वइरामयकोडीणि धणूइं अभिगिज्झपयत्ते परिमाइयकंडकलावानीलपाणिणो पीयपाणिणो रत्तपाणिणो एवचारुचावचम्मदंडखग्गपासपाणिणो नीलपीयरत्तचारुचावच म्मदंडखग्गपासवरधरा आयरक्खा रक्खोवगया गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्तपालिया पत्तेय २ समयत्ते विणयत्ते किंकरभूया इव चिट्ठतित्ति, अस्या य मर्थ' सनद्धा सन्नहनिकया कृतसन्नाहा बद्धः कशाबन्धनत वर्म्मितश्च वर्म्मीकृतः शरीरारोपणात कवच' कङ्कटी यै स्ते तथा, ततः संनद्धशब्देन कर्मधारय', तथा उत्पीडिता प्रत्यञ्चारोपणेन शरासनपट्टिका धनुर्यष्टि यैं स्ते तथा, अथवा, उत्पीडिता बाहौ बद्धा शरासनपट्टिका धनुर्द्धरप्र तीता यै स्ते तथा, तथा पिनद्ध परिहितं ग्रैवेयक ग्रीवाभरण यै स्ते तथा, तथा वद्धो ग्रन्थिदानेन आविद्धश्च शिरस्या रोपणेन विमलो वरश्च

चिह्नपट्टो योधतासूचको नेत्रादिवस्त्ररूप यौवर्णोवा, पट्टो यै स्ते तथा, २ गृहीता न्यायुधानि प्रहरणाय यै स्ते तथा, अथवा ; गृहीता न्यायुधा नि क्षेप्यास्त्राणि प्रहरणानिच तदितराणि यै स्ते तथा, तथा त्रिनतानि मध्यपार्श्वद्वयलक्षणस्थानत्रये ऽवनतानि त्रिसन्धितानि त्रिषु स्थानेषु कृतस न्धिकानि नैकाङ्गिकानीत्यर्थ , वज्रमयकोटीनि धनूं ष्यभिगृह्य पदत पदे मुष्टिस्थाने तिष्ठन्तीति सम्बन्ध', परिमात्रिक सर्वतो मात्रावान्, काण्ड कलापो येषा ते तथा, नीलपाणय इत्यादिषु नीलादिवर्णयुक्तत्वा न्नीलादयो वर्णभेदा' सम्भाव्यन्ते, चारुचापपाणय इत्यत्र चाप धनुरेवा नारो पितज्य मतो न पुनरुक्तता, चर्मपाणय इत्यत्र चर्म्मशब्देन स्फुरकउच्यते, दण्डादय' प्रतीता' उक्त मेवार्थं सङ्ग्रहणेनाह—नीलपीएत्यादि, अथवा, नीलादीन् सर्वानेव युगप त्कोचिद्धारयन्ति देवशक्ते रिति दर्शयन्नाह—नीलपीएत्यादि , तेचा त्मरक्षा न सज्ञामात्रेणेवेत्याह—आत्मरक्षा' स्वास्यात्म रक्षाइत्यर्थ., ते एव विशेष्यन्ते रक्षोपगता रक्षामुपगता. सतत प्रयुक्तरक्षाइत्यर्थ , एतदेव कथ मित्याह—गुप्ताः अभेदवृत्तय स्तया गुप्तपालीका स्त

॥ टीका ॥

दन्यतो व्यावृत्तमनोवृत्तिकमण्डलीका, युक्ता परस्परसम्बद्धा, युक्तपालीका निरन्तरमण्डलीका, प्रत्येक मेकैकश समयत पदातिसमाचारेण वि नयतो विनयेन किङ्करभूताइव प्रेष्यत्व प्राप्ताइवेति, अयंच पुस्तकान्तरे साचा दृश्यतएवेति ॥ एवसव्वेसिमिदाणति ॥ एवमिति, चमरव त्सर्वेषा मिन्द्राणा मात्मरक्षा वाच्या स्तेचा र्थतएवं–सर्वेषा मिन्द्राणा सामानिकचतुर्गुणा आत्मरक्षा, स्तत्र चतु षष्टिसहस्राणि चमरस्येन्द्रसामानिकाना ब लेस्तु षष्टि, शेषभवनपतीन्द्राणा प्रत्येक षट्षट्सहस्राणि, शक्रस्य चतुरशीति, ईशानस्या शीतिः, सनत्कुमारस्य द्विसप्तति, माहेन्द्रस्य सप्तति, ब्रह्मण षष्टि, लान्तकस्य पञ्चाशत्, शुक्रस्य चत्वारिंशत्, सहस्रारस्य त्रिंशत्, प्राणतस्य विंशति, अच्युतस्य दशसहस्राणि सामानिकानामिति, यदाह–चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्साउअसुरवज्जाण। समाणियाउएए चउग्गुणाआयरक्खाउ ॥ १ ॥ चउरासीइअसीई बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीय। पण्णा चत्तालीसा तीसावीसादससहस्सत्ति ॥ २ ॥ इतितृतीयशतेषष्ठः ॥ ६ ॥ षष्ठोद्देशके इन्द्राणा मात्मरक्षाउक्ता' अथ सप्तमोद्दे

॥ मूल ॥

ते नाणियव्वा। सेवं भंते भंतेत्ति। जाव विहरइ ॥ तईयसए छठो उद्देसोसम्मत्तो ३ ॥ ६ ॥

॥ भाषा ॥

कार्थी जाणवो जिहा एक ते वर्णक सूत्रमाहि पणिछे इम सर्व इन्द्रने जेतला आत्मरक्षकदेवछे ते कहवा ते इम सर्व इन्द्रने जेतला सामानिकदेवछे ते हथी चउगुणा आत्मरक्षकदेव कहवा तिहा सामानिक देवनो सख्या कहेछे—चउसठ सहस्रसामानिक चमरेन्द्रने इम ६० सहस्र वलीन्द्रने शेष भवन पतीना अढारे इन्द्रने छछ सहस्र सामानिक देवछे शक्रने ८४ सहस्र ईशानने ८० सहस्र सनत्कुमारने ७२ सहस्र माहेन्द्रने ७० सहस्र ब्रह्मने साठ सहस्र लातकने ५० सहस्र शुक्रने ४० सहस्र सहस्रारने ३० सहस्र प्राणतने २० सहस्र अच्युतने १० सहस्र सामानिकदेव एहथी चउगुणा आत्मरक्षक कहवा। सेवभते २ त्ति। तहत्ति हे स्वामिन् तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही। तइयसयस्सछठोउद्देसोसम्मत्तो। ए त्रीजा शतकनो छठो उद्देशो अ र्थथी लिख्यो ॥ ६ ॥ छठा उद्देशाने अते इन्द्रना आत्मरक्षक कह्या सातमे उद्देशे इन्द्रनाज लोकपाल देखाडतो कहेछे—रायगिहेणयरे

शक्रे तेषामेव लोकपालान् दर्शयितु माह ॥ रायगिहेइत्यादि ॥ बहूइं जोयणाइं ॥ इह यावत्करणा दिदं दृश्यं–बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइ बहूइं जोयणसयसहस्साइ बहूउं जोयणकोडीउ बहूउं जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूर वीईवइत्ता एत्थण सोहम्मे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्नाहे असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडीउ परिक्खेवेणं एत्थण सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं भवंतीति अक्खाय, तेणं विमाणासव्वरयणमया अच्छा जाव

रायगिहे नयरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—सक्कस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला प० ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तंजहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे। एएसिणं भंते ! चउण्ह लोगपालाणं कइविमाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता तंजहा—संझप्पभे वरसिठे सयंजले वग्गू । कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे णामं महाविमाणे पण्णत्ते

जाव पज्जुवासमाणे एववयासो सक्कस्सणभंते देविंदस्स देवरण्णो कइलोगपाला पण्णत्ता । राजगृहनामा नगरने विषे यावत् सेवतायका इमकहै शक्रने हे भगवन् । देवेन्द्रने देवराजाने केतला लोकपाल कह्या। इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चत्तारिलोगपाला पण्णत्ता तंजहा । हेगौतम । चार लोकपाल कह्या ते कहैछे—सोमे जमे वरुणे वेसमणे । सोम १ यम २ वरुण ३ वैश्रमण ४ । एएसिणभंते चउण्हलोगपालाणं कइविमाणा पण्णत्ता । एहना णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! चार लोकपालना केतला विमान कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चत्तारिविमाणा पण्णत्ता तंजहा । हेगौतम। चार विमान कह्या तेकहैछे—संझप्पभे वरसिठे सयंजले वग्गू । सध्याप्रभ १ वरशिष्ट २ स्वयंजल ३ वल्गू ४ । कहिणभंतेसक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो । किहां ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् शक्रना देवेन्द्रना देवराजाना । सोमस्समहारण्णो । सोमनाम महाराज लोकपालनो । संझप्पभेणाम महाविमाणे पण्णत्ते। संध्याप्रभनामे महाविमान कह्यो इतिप्र उत्तरम् । गोयमा जंबूद्दीवे २ । हे गौतम जंबूद्वीपनामा द्वीपे । मंदरस्सपव्वयस्स । मेरूनामा पर्वतने। दाहिणेणं। दक्षिण दिशि। इमीसे'य

॥ टीका ॥

पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए इत्ति ॥ वीईवइत्तत्ति ॥ व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्य ॥ जायसूरियाभविमाणस्सत्ति ॥ सूरिकाभविमानं राज प्रश्नीयोपाङ्गोक्तस्वरूप तद्वक्तव्यतेह वाच्या तत्समानलक्षणत्वा दस्येति' कियतीसावाच्येत्याह, याव दभिषेक. अभिनवोत्पन्नस्य सोमस्य राज्याभिषे

॥ मूल ॥

गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरिमगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव पंचवडंसया पन्नत्ता, तंजहा असोयवडंसए सत्तिवण्णवडंसए चंपयवडंसए चूयवडंसए मज्झे सोहम्मवडंसए । तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइ जोयणाइ वीईवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देव

॥ भाषा ॥

रयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ। आ रत्नप्रभा नामे पहिली पृथिवीने विषे घणू समरमणीक भूमिभाग ते मेरू मध्यस्थ चारदिशने विषे सहस्र योजन भूमिने विषे रह्यो पृथुलपणे तिहां गोस्तनाकारे अष्टप्रदेशात्मक रुचकनामा भूतल स्थानछे। उड्ढंचंदिमसूरिमगहगणनक्खत्ततारारूवाण बहूइंजोयणाइं जाव। तिहथी ऊंचो चन्द्र सूर्य ग्रह गण नक्षत्र तारारूपने घणायोजन इहां यावत् शब्द थकी घणायोजन सौ घणायोजन सहस्र घणायोजन लक्ष घणायोजन कोडि घणायोजननो कोडा कोडी ऊंचो अलगोजाइये इहां सौधर्मनामे देवलोक कह्यो पूर्व पश्चिम लांबो उत्तर दक्षिण विस्तीर्ण अर्ध चन्द्रमाने आकारेछे महातेजे देदीप्यमान वर्णथी असंख्याती योजननी कोडाकोडी आयामविष्कंभे असंख्याता योजननी कोडाकोडी परिधिछे इहां सौधर्मदेवना बत्तीसलाख विमानछे ते श्रीमहावीरस्वामी कह्यो ते भाव अनन्ते तीर्थंकरे कह्यो ते विमान सर्वरत्नमय निर्मलयावत् देखवायोग्य ते सौधर्म देवलोकमा बहुसममध्यदेश भागने विषे इहां। पंचवडंसयाविमाणापण्णत्ता तंजहा। पांच अवतंसक सर्व विमानने विषे मुकुट समान कह्या ते कहेछे—असोयवडंसए। अशोकावतंसक विमान १। सत्तवण्णवडंसए। सप्तपर्णअवतंसक विमान २। चंपयवडंसए। चम्पकावतंसक विमान ३। चूयवडंसए। चूत अवतंसक विमान ४। मज्झेसोहम्मवडंसए। विचाले सौधर्मावतंसक विमान ५। तस्सणंसोहम्मवडंसयस्समहाविमाणस्स। तेहने पं वाकालका

रस्रो सोमस्स महारस्रो संझप्पन्ने नामं महाविमाणे पन्नत्ते, अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खं
भेणं उयालीसंजोयणसयसहस्साइं बावन्नचसहस्साइं अठअडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं
पन्नत्ते, जहेव सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेयो। नवरं सोमेदेवे
सझप्पभस्सण महाविमाणस्स अहे सपक्खिं सपडिदिसिं असखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं
सक्कस्स देविंदस्स देवरस्रो सोमस्स महारस्रो सोमानामं रायहाणी पन्नत्ता एगं जोयणसयसहस्सं आया

रे, सौधर्मावतसक नामा महाविमानने। पुरच्छिमेणंसोहम्मेकप्पे। पूर्वदिशि सौधर्मनामा देवलोके । असखेज्जाइंजोअणाइंवोईवइत्ता। असख्याता योजन अतिक्रमीने जोईने। एत्थणसक्कस्सदेविंदस्स देवरस्रो सोमस्समहारस्रो । इहा ण वाक्यालकारे, शक्रनो देवेन्द्रनो देवराजानो सोमनामा महाराजानो ।। स झप्पभेणामे महाविमाणे पन्नत्ते। सध्याप्रभनामा महाविमान कह्यो। अद्धतेरसजोअणसहस्साइं। आधा तेरे एतले साढा बारालाख योजन। आया मविक्खभेण। आयाम विष्कम्भे छे। उयालीसंजोअणसयसहस्साइं बावन्नचसहस्साइं अठअडयालेजोअणसए किंचिविसेसाहिएपरिक्खेवेण पन्नत्ते।। उगुण चालीस लाख बावनसहस्र आठसे अडतालीस योजन काई एक विशेषाधिक परिधि छे ते कह्यो। जहासूरियाभ विमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भा णियव्वा जावअभिसेओ नवरं सोमेदेवे। जिम सूरियाभ विमाननी वक्तव्यता रायपसेणी उपागे कही तेहनी परे इहा कहवी तेह सरीखो वर्णक इहा छे ते केतलालगे वक्तव्यता कहवी ते कहेछे—अभिनव उपना सोमराजाने राज्याभिषेक प्रते एतलालगे कहवो ते इहा पाठ घणोछे। तेमाटे लिख्यो नही पणि रायपसेणी थकी जोईलेवो एतलोविशेष जिहां सूरियाभ देवनो नामलिख्यो इहा सोमदेवनो नाम कहवो । सझप्पभस्सण महाविमाणस्स अहेसपक्खिंसपडिदिसिं। ते सध्याप्रभ महाविमानने नीचे एतले तीर्छालोकने विषे चारेदिशिने विषे चारेई प्रतिदिशि । असखेज्जाइं जोअणसयसहस्सा इंउगाहित्ता। असख्याता योजन एकलाख प्रते अवगाहीने। एत्थणंसक्कस्स देविंदस्स देवरस्रो।। इहा ण वाक्यालकारे, शक्र देवेन्द्र। देवराजानो।। सोम

मविक्खम्भेणं जंबूद्दीवप्पमाणा वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं जाव उवगारियलेणं सोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खम्भेणं पन्नासंजोयणसहस्साइं पंचयसत्ताणउए जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पन्नत्ते। पासायाणं चत्तारिपरिवाडीओ नेयव्वाओ सेसानत्थि। सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो इमे

समहारणो। सोमनाम महाराजानी। सोमानामरायहाणी पण्णत्ता। सोमानाम राजधानीकही। एगजोअणसयसहस्सआयामविक्खभेण जवूद्दीवप्पमा णावेमाणियाण पमाणस्स अद्धणेयव्व। एकलाख योजन आयाम विष्कभेछे जवूद्दीप जेवडोमानछे सौधर्मविमान संबधी प्रासाद प्राकार द्वारादिकनो जे प्रमाण कह्यो तेहथी ए नगरीने विषे आधो प्रमाण जाणवो ते देखाडेछे—सौधर्मविमाननो प्राकार तीनसे योजन ऊंचपणेछे तेमाटे एहनो १५० यो जन सौधर्मवैमानिकनो मूलप्रासाद ५०० योजननोछे तेहथी बोजा तेहना परिवार भूतविमान ते २५० योजन ते चारना प्रत्येके बीजा चारविमान ते हना परिवारभूत १६ विमान १२५ योजन इम बीजा तेहना परिवारभूत ६४ विमान ते साढेबासठ योजन इम बीजाने परिवारभूत २५६ विमान ते सवा इकतीस योजनना इम विमाननी परिपाटी सोधर्मदेवलोकने विषेछे तिम इहां पणि चार विमाननी परिपाटी जाणवी पणि प्रमाण एहथी एहनो आधो जाणवो ते आगल कहस्ये। पासायाण चत्तारिपरिवाडीओत्ति, । जावउवगारियलेण। माहला इतनो चौको पीठ इत्यर्थ। सोलसजोअण सहस्साइ आयामविक्खभेणं। ते सोले सहस्र योजन आयाम विष्कभेछे। पणासचजोअणसहस्साइं। पचास सहस्र योजन। पचसत्ताणउएजोअणसए। पांचसे सत्ताणू योजन। किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्ते। कांइक विशेषे ऊंणा परिधिछे तेकह्या। पासायाणचत्तारिपरिवाडीओणेयव्वाओ। पूर्वे वैमा निकना प्रमाणथी ए राजधानीनो आधोप्रमाण कह्यो ते प्रासादनी चार परिपाटी भणीछे ते इम इहां मूलप्रासाद २५० योजननोछे तेहथी अर्द्ध २ हीन करता केहला २५६ प्रासाद पनरे योजन अने एक योजनना आठभाग कीजे एहवा पचभाग एतले प्रमाणेछे ते प्रासादनी चारेहे परिपाटीने वि षे तीनसै इकतालीस प्रासाद हुवे ते इम १—२५० यो० ४—१२५ यो० १६—६२ ॥ यो० ६४—३१। यो० २५६ – १५ योजन पाचभाग ए सर्वमिली ३४१

कं यावदिति' सापेक्षा तिमहुत्वा आलिखितेति ॥ अवेहइति ॥ तिर्यग्लोके ॥ वेमाणियाणपमाणस्सत्ति ॥ वैमानिकानां सौधर्म्मविमानसत्कप्रासादप्राकारद्वारादीना प्रमाणस्येह नगर्या मर्द्ध ज्ञातव्य ॥ सेसानत्यित्ति ॥ सुधर्म्मादिका सभा इह न सति, उत्पत्तिस्थानेष्वेव तासां भावात् ॥ सोमकाइयत्ति ॥ सोमस्य कायो निकायो येषा मस्ति ते सोमकायिका सोमपरिवारभूता' ॥ सोमदेवयकाइयत्ति ॥ सोमदेवता स्तत्सामानिकादय स्तासा कायो येषा मस्ति ते सोमदेवताकायिका सोमसामानिकादिदेवपरिवारभूता इत्यर्थ' ॥ तारारूवत्ति ॥ तारकरूपा ॥ तब्भत्तियत्ति ॥ तत्र सोमे भक्ति

देवा आणाउववायवयणनिद्देसे चिठंति तजहा—सोमकाइयाइवा सोमदेवयकाइयाइवा विज्जुकुमारा विज्जुकुमारीउ अग्गिकुमारा अग्गिकुमारीउ वायुकुमारा वायुकुमारीउ चंदा सूरा गहा नक्खत्ता तारारूवा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वेते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया, सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

विमान यथा । सेमानत्थित्ति । सुधर्मादिक सभा इहा नथी उत्पत्तिस्थानकने विषेज तेहोना भावथी आदिशब्द थको उपपात व्यवसायादिक सभा पिण नथी । सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो इमेदेवा आणाउववाय वयण निद्देसे चिठ्ठति तजहा । शक्रने णं वाक्यालकारे, देवेन्द्रने देवराजाने सोमनाम महाराजाने एहदेव आज्ञा एह कहवो इत्यादिक आदेश उववायकहिये सेवा वचन अनियोग पूर्वक आदेश निर्देश पूछ्यें कामें नियत अर्थनो उत्तर तेहने विषे रहेछे ते कहेछे—सोमकाइयाइवा सोमदेवकाइयाइवा । सोमनोकाय निकायछे जेहने एतले सोमनोजातिना सोमपरिवारभूत इत्यर्थ सोमना सामानिकदेव तेहनोकाय कहिये निकायछे जेहने सोम सामानिकदेव परिवारभूत इत्यर्थ । विज्जुकुमारा विज्जुकुमारीओ । विद्युत्कुमारभवनपतीदेव विद्युत्कुमार भवनपतीनी देवीओ । अग्गिकुमारा अग्गिकुमारीओ । अग्निकुमार भवनपती देव अग्निकुमार भवनपतीनी देवीओ । वाउकुमारा वाउकुमारीओ । वायुकुमार भवनपती देव वायुकुमार भवनपतीनी देवीओ । चंदासूरागहाणक्खत्तातारारूवा । चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारारूप ज्योतिषी देव । जेयावण्णे । जे वली अनेरादेव । तहप्पगारा । तथा प्रकार ते सरीखाछे । सव्वेतेतब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया । ते सघलाई ते सोमदेव

सेवाबहुमानोवा; येपाते तद्भक्तिकाः ॥ तप्पक्खियत्ति ॥ सोमपाक्षिकाः सोमस्य प्रयोजनेषु सहाया' ॥ तब्भारियत्ति ॥ तद्भार्या स्तस्य सोमस्यभार्या इव भार्या अत्यन्त वश्यत्वा त्पोषणीयत्वाच्चेति तद्भार्या , तद्भारोवा, येषा वोढव्यतया स्ति ते तद्भारिका ॥ गहदण्डत्ति ॥ दण्डाइव दण्डा स्तिर्य गायता श्रेणय. ग्रहाणा मङ्गलादीना त्रिचतुरादीना दण्डा ग्रहदण्डा ' एवं ग्रहमुशलानि नवर मूर्ध्वायता श्रेणय ॥ गहगज्जियत्ति ॥ ग्रहसचाला दौ गर्ज्जितानि स्तनितानि ग्रहगर्ज्जितानि, ग्रहयुद्धानि ग्रहयो रेकत्र नक्षत्रे दक्षिणोत्तरेण समश्रेणितया वस्थानानि ग्रहसिघाटकानि ग्रहाणा सिं घाटकफलाकारेण वस्थानानि ग्रहापसव्यानि ग्रहाणा मपसव्यगमनानि प्रतीपगमनानीत्यर्थ , अभ्रात्मका वृक्षा अभ्रवृक्षा गन्धर्वनगराणि आकाशे

आणाउववायवयणनिद्देसे चिठंति जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति तं० गहदंडाइवा गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा एवंगहजुद्धाइवा गहसिघाडगाइवा गहावसव्वाइवा अब्भरुक्खा

नेविषे भक्ति सेवाना कारक सोमना पक्षी सोमने प्रयोजने साहाय्यना कारक तेहने भार्यानी परे अत्यन्त वशवर्त्तीपणाथकी पोषणीय पणाथकी अ थवा सोमनो भार निवाहेछे तेमाटे तद्भारिका कहीये। सक्कस्स देविंदस्सदेवरण्णो। शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने। सोमस्समहारण्णो । सोम महाराजाने। आणावयणनिद्देसे चिठ्ठति । आज्ञा वचन निर्देशने विषे रहेछे । जवूद्दीवे २ । जवूद्वीपनामा द्वीपने विषे । मदरस्सपव्वयस्सदाहिणेण। मेरुनामा पर्वतने दक्षिण दिशि । जाइंइमाइं समुप्पज्जंति तजहा । जेह एह ऊपजे तेह कहेछे—गहदंडाइवा । दंडनी परे तीछा लावा श्रेणि वद्ध मगलादिक तीन चार हुवे ते ग्रहदड । गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा । ग्रहमुसलनी परे नीचे ऊपर श्रेणिवद्ध हुवे ते ग्रहमुशल ग्रहने सचारे मेघनो गर्जित शब्द हुवे ते ग्रह गर्जित । एवगहजुद्धाइवा । इम एक नक्षत्रने विषे दक्षिण उत्तर श्रेणीग्रह रहे ते ग्रहयुद्ध । गहसिंघाडगाइवा । ग्रह सिघाडाफलने आकारे हुवे ते ग्रहशृं गाटक । गहावसव्वाइवा । ग्रहनो अपसव्य वक्रजावो ते ग्रहापसव्य पाछाजाय । अब्भाइवा । वादल हुवे । अब्भरुक्खाइवा । बादल रूखने आकारेहोय । संझाइवा । सध्या फूले । गधव्वनगराइवा । आकाशने विषे व्यन्तरना कीधा नगरना आकारते गन्धर्व नगर । उक्कापायाइवा दिसिदाहाइवा । देवास

॥ टीका ॥

सरेखा· सोद्योतावा; तारकस्येव पाता', दिग्दाहा' अन्यतमस्यां दिशि अधोन्धकारा उप व्यन्तरकृतानि नगराकारप्रतिबिम्बानि' उल्कापाताः रिचप्रकाशात्मका दह्यमानमहानगरप्रकाशकल्पा ॥ जूवत्ति ॥ शुक्लपक्षप्रतिपदादिदिनत्रयं याव द्यौ सध्याच्छेदा आव्रियंते ते यूपका ॥ जक्खालि त्तयत्ति ॥ यक्षोद्दीप्तानि ॥ आकाशे व्यन्तरकृतज्वलनानि धूमिकामहिकयो र्वर्णकृतो विशेष तत्र धूमिका धूम्रवर्णा धूसरेत्यर्थ , महिकात्वा पाडुरे ति ॥ रउग्घायत्ति ॥ दिशा रजस्वलत्वानि, चदोवरागासूरोवरागा, चद्रसूर्यग्रहणानि ॥ पडिचदत्ति ॥ द्वितीयचद्रा ॥ उदगमच्छत्ति ॥ इंद्रधनु' ख ध्यानि ॥ कविहसियत्ति ॥ अनभ्रे या विद्यु त्सहसा तत्कपिहसित मन्येत्वाहु·—कपिहसित नाम यदा काशे वानरमुखसदृशस्य विकृतमुखस्य हसन ॥ अमोहत्ति ॥ अमोघा आदित्योदया स्तसमययो रादित्यकिरणविकारजनिता आताम्रा कृष्णा· श्यामावा, शकटोद्धिसस्थितादण्डाइति ॥ पाईणवा

॥ मूल ॥

इवा अब्भाइवा सज्झाइवा गधव्वनगराइवा उक्कापायाइवा दिसादाहाइवा गज्जियाइवा विज्जुयाइवा पसुवु ठीइवा जूवजक्खालित्तय धूमियमहियरउग्घाय चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवे साइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा इंदधणूइवा उदगमच्छकइहसियअमोह पाईणवायाइवा पदीणजाव

॥ भाषा ॥

हित अथवा उद्योतसहित तारानी परे पडवो हुवे ते उल्कापात किणही एकदिशे नीचे अधकार हुवे ऊपर नगर दाहनी परे प्रकाश हुवे। गज्जियाइवा। मेघादिकनो गाजवो। विज्जुयाइवा। विजली प्रमुखनो झलकवो। पसुवुठीइवा धूलिनो बरसवो एतले रजोवृष्टि थाय। जूवेइवा जक्खालितएइवा। सुक्लपचने विषे पडवा बीज तीज सध्या फूले आकाशने विषे व्यन्तरनो कीधो अग्नि हुवे। धूमियाएइवा महियाइवा। धूअरि धूसरे वर्ण हुवे, महिका सपेत वर्ण हुवे पणि बेऊ धूअरि कहीये वर्णनो भेद। रयुग्घायएइवा। दिशानो रजस्वलपणो। चदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा। चन्द्रनो उपराग ग्रहणहुवे सूर्यनो उपराग ग्रहणहुवे। चदपरिवेसाएइवा। चन्द्रमानो पाखतो पाखतो परिलेख कुडालो हुवे ते चन्द्र परिवेष। सूरपरिवेसाएइवा। सूर्यनो पाखतो कुडालो हुवे ते सूर्य परिवेष। पडिचंदाइवा पडिसूराइवा। चन्द्र दोय दिखाईदे ते प्रतिचन्द्र सूर्य दो दीसे ते प्रतिसूर्य। इदधणूइवा। इन्द्र धनुष दीसे। उदगमच्छगेइवा। इन्द्रध

॥ टीका ॥

यन्ति ॥ पूर्वदिग्वाताः ॥ पईणवायत्ति ॥ प्रतीचीनवाता यावत्करणा दिदं दृश्यं दाहिणवायाइवा उदीणवायाइवा उड्ढवायाइवा अहेवायाइवा ति रियवायाइवा विदिसीवायाइवा वाउब्भामाइवा वाउक्कलियाइवा वायमंडलियाइवा उक्कलियावायाइवा मंडलियावायाइवा गुंजावायाइवा झंझावा याइवेत्ति, इह वातोद्भामाः अनवस्थितवाता , वातोत्कलिकाः समुद्रोत्कलिकावत्, वातमंडलिका वातोल्यः, उत्कलिकावाता उत्कलिकाभिर्ये वान्ति' मण्डलिकावाता मण्डलिकाभिर्येवान्ति' गुञ्जावाता गुञ्जन्त सशब्दयेवान्ति, झंझावाता अशुभनिष्ठुरा ' सवर्तकवाता तृणादिसवर्तन स्वभावाइति, अथा नन्तरोक्तानां ग्रहदण्डादीनां प्रायिकफलानि दर्शयन्नाह ॥ पाणक्खयत्ति ॥ बलक्खया ॥ जणक्खयत्ति॥ लोकमरणानि निगमयन्नाह ॥ वसणब्भूया मणारिया जेयावन्ने तहप्पगारेत्ति ॥ इहैव मङ्गलघटना न केवलं प्राणक्षयादयएव येचा न्ये एतद्व्यतिरिक्ता स्तत्प्रकाराः प्राणक्षया

॥ मूल ॥

संवट्टयवायाइवा गामदाहाइवा जाव सन्निवेसदाहाइवा पाणक्खया जणक्खया धणक्खया कुलक्खया वसण ब्भूया अणारिया जेयावन्ने तहप्पगारा णए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा

॥ भाषा ॥

नुष ना घणां खण्डदीसै। कविहसिअमोहपाईणवायाइवा पईणवायाइवा जावसवट्टयवायाइवा।बादल विना जिका वीजलो उतावली खिवै ते कपिह सित कहीये, कोईकहै आकाशने विषे व्यन्तर वानरमुख विकुर्वी हसे ते मोघापडे आदित्य उदय अस्त समयने विषे आदित्य किरणविकारथी ऊपनी ला लक्षण गाडानी जधने सस्थाने दड ते अमोघकहीये तथा पूर्वदिशिनो वायरो पश्चिमदिशिनो वायरो यावत् शब्द थकी दाहिण वायाइवा उदीणवाया इवा उड्ढवायाइवा अहोवायाइवा तिरियवायाइवा विदिसिवायाइवा इत्यादि सवर्त्तक वात लगे कहवो । गामदाहाइवा जावसण्णिवेसदाहाइवा । ग्रा मने विषे अग्नि सइभलागे यावत् सन्निवेशने विषे अग्निसंभलागे हिवे अनन्तरे कह्या ग्रहदण्डादिकना प्रायें फल कहैछे—पाणक्खया जणक्खया धणक्ख या कुलक्खया वसणब्भूया अणारिया। बलक्षीन थाय इम मनुष्य मनुष्यनो क्षयथाय धननो क्षयथाय कुलनो क्षयथाय व्यसनभूत ते आपदायें पाडे अनार्य नो आगमन हुवे। जेयावण्णेतहप्पगारा। जे बन्नो बीजा एहवें प्रकारे एहसरीखा। णतेसक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो। नही ते शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने।

दितुल्या व्यसनभूता आपद्रूपा' अनार्या' पापात्मका नते अज्ञाता इतियोग' ॥ अणायत्ति ॥ अनुमानत' ॥ अदिहत्ति ॥ प्रत्यक्षापेक्षया ॥ अस्सुयत्ति ॥ परवचनद्वारेण ॥ अमुयत्ति ॥ अस्मृता मनोपेक्षया ॥ अविन्नायत्ति ॥ अवध्यपेक्षयेति ॥ अहावच्चत्ति ॥ यथा अपत्यानि तथा ये ते यथापत्या देवा पुत्रस्थानीयाइत्यर्थ' ॥ अभिन्नायत्ति ॥ अभिमता अभिमतवस्तुकारित्वादिति ॥ होत्यत्ति ॥ अभवन्, उपलक्षणत्वा च्चास्य भवन्ति भविष्यन्तीतिद्र ष्टव्य ॥ अहावच्चाभिन्नायाणति ॥ यथा अपत्यमेव मभिज्ञाता अवगता यथा पत्याभिज्ञाता, अथवा, यथापत्याश्च ते ऽभिज्ञाताश्चेति कर्मधारय ते चागारकादय' पूर्वोक्ता' एतेषुच यद्यपि चन्द्रसूर्ययो वर्षलक्षाद्यधिकं पल्योपम तथा प्याधिक्यस्या विवक्षितत्वा दङ्गारकादीनांच ग्रहत्वेन पल्योप

असुया अमुया अविन्नाया तेसिवा सोमकाइयाणं सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो इमे अहावच्चादेवा अभिन्नाया होत्था तंजहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सणिचरे चंदे सूरे सुक्के बुहे वहस्सई राहू । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सइभाग पलिउ वमं ठिई पन्नत्ता , अहाव

सोमस्समहारणो अणाया अदिट्ठा अस्सुया अमुत्ता अविणाया । सोम महाराजानेअनुमान अणजाण पणे नही सामनेअदृष्ट नही प्रत्यचनी अपेचायें सो मना अणसुणा परवचन द्वारायें सोमने असमरवेकरी मननी अपेचायें अवधिज्ञानेकरी अजाणपणेंनही । तेसिवासोमकाइयाणं देवाण सकस्सणं देविंद स्स देवरणो सोमस्समहारणो । तेह सोमनी जातिना सोमपरिवारभूत तेहना देवना शक्रना देवेन्द्रना देवराजाना सोम महाराजाना । इमेअहावच्चा देवा अभिणायाहोत्था तंजहा । एह आगल कहस्ये तेह यथापत्यपुत्र स्थानीय विनयवन्त कह्या कार्यना कारक पणांथी हुया उपलचणथी एहनेंछे पणि ते हुस्येपणि ते कहैछे—इ'गालए वियालए लोहियक्खे सणिचरे। अगारक १ बेताल २ लोहिताच ३ शनेश्चर ४। चंदे सूरे सुक्के बुहे वहस्सई। चन्द्र ५ सूर्य ६ शुक्र ७ बुध ८ बृहस्पति ९ । राहू सकस्सण देविंदस्स देवरणो । राहु १० शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने । सोमस्समहारणो सइभागपलिओवम ठिई पणत्ता अहा वचाभिणायाण देवाण एगपलिओवम ठिई पणत्ता ।सोमनामे महाराजाने एक पल्योपम अने पल्योपमने त्रीजेभागे सहित । आऊखो कह्यो, पुत्रस्था

॥ टीका ॥ मस्यैव सद्भावा त्पल्योपम मित्युक्तमिति ॥ पेयकाइयत्ति ॥ प्रेतकायिका व्यंतरविशेषा' ॥ पेयदेवतकाइयत्ति ॥ प्रेतसत्कदेवतामा सम्बन्धिन' ॥ कं

॥ मूल ॥ ञ्चाभिसायाण देवाण एगंपलिओवमं ठिई पन्नत्ता, एमहिड्डीए जाव एमहाणुभागे सोमे महाराया महाराया। कहिण भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो वरसिठेणामं महाविमाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! सोहम्मवडसयस्स महाविणाणस्स दाहिणेणं सोहम्मेकप्पे ञ्चसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो वरसिठेनामं विमाणे पन्नत्ते, ञ्चद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं जहा सोमस्स विमाणं तहा जाह ञ्चभिसेओ रायहाणी तहेव जाव पासायपंतीओ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो इमे देवा ञ्चाणाउववाय० जाव चिठंति तंजहा—जमकाइकाइवा जमदेवयकाइका

॥ भाषा ॥ नीय देवनी स्थिति एक पल्योपमनी कही एहोने विषे यद्यपि चंद्रनी स्थिति लक्षवर्षाधिक एक पल्योपमनोछै सूर्यनी वर्ष सहस्राधिक एक पल्योपमनोछै तथापि इहा अधिकपणानो विवक्षा नकीधी अगारक आदिदेइ जेहोने ग्रहपणे करी एक पल्योपमनो आउखो कह्यो। एमहिड्ढीए जावमहाणुभागे सोमेमहाराया। एहवो महर्द्धिक यावत् एहवो महाभाग्यनो धणी सोमनामे महाराजा पूर्वदिशिनो लोकपालछै। कहिणभंते सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो। किहा ण वाक्यलंकारे, हेभगवन्! शक्र देवेन्द्र देवराजानो। जमस्समहारन्नो। यम नामे महाराजानो। वरसिट्ठेणाममहाविमाणे पण्णत्ते। वरशिष्ट नामे महाविमान कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सोहम्मवडसयस्समहाविमाणस्सदाहिणेण सोहम्मेकप्पे। हेगौतम। सौधर्मावतंसक नामे मोटा विमानने दक्षिण दिशे सौधर्मनामा देवलोके असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं वीईवइत्ता। असंख्याता योजन सहस्र उल्लंघोने अतिक्रमीने। एत्थणं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो। इहा ण वाक्यालंकारे, शक्रनो देवेन्द्रनो देवराजनो जमस्समहारन्नो। यमनामे महाराजानो। वरसिट्ठेणामेमहाविमाणे पण्णत्ते। वरशिष्टनामे मोटो विमान कह्यो। अद्धतेरसजोअणसयसहस्साइं जहासोमस्सविमाण तहाजावअभिसेओ। साढे बारहलाख योजन आया

दर्प्पयन्ति ॥ ये कन्दर्प्पभावनाभावितत्वेन कान्दर्प्पिकदेवेषू त्पन्नाः कन्दर्प्पशीलाश्च कन्दर्प्पश्चा तिकेलिः ॥ आहिर्त्तगत्ति ॥ ये ऽभियोगभावनाभावि तत्वेना भियोगिकदेवेषू त्पन्ना अभियोगवर्त्तिनश्च' अभियोगश्चा देशइति ॥ डिंबाइवत्ति ॥ डिंबा विघ्ना ॥ डमरत्ति ॥ एकराज्यएव राजकुमारादि कतोपद्रवा' ॥ कलहत्ति ॥ वचनराटय' ॥ बोलत्ति ॥ अव्यक्ताचरध्वनिसमूहा' ॥ खारत्ति ॥ परस्परमत्सरा- ॥ महाजुद्धत्ति ॥ महायुद्धानि व्यवस्था

इवा पेयकाइयाइवा पेयदेवयकाइयाइवा असुरकुमारा असुरकुमारीउ कंदप्पा निरयवाला अभियोगा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति तंजहा—डिंबाइवा डमराइवा कलहाइ

म विष्कंभछे जिम सोमना विमाननो वक्तव्यता कही तिम इहा पणि कहवी यावत् अभिषेक राज्यस्थापना । रायहाणीओतहेवजावपासायपतीओ । राजधानी पणि तिमहीज यावत् प्रासादनी चारपङ्क्तिकरी २४१ प्रमाण कहवा। सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो । शक्रने देवेंद्रने देवराजाने । जमस्समहार न्नो । यमनाम महाराजाने । इमेदेवाआणाउववायजावचिट्ठति तंजहा । एह देव आज्ञा उपपातवचन निर्देशकारी रहे छे तेकहेछे—जमकाइयाइवा । य मनीजातिना यम परिवारभूत देव । जमदेवकाइयाइवा । यमना सामानिकदेव तेहनी कायना एतले परिवारभूत देव । पेयकाइयाइवा । प्रेतकायिक व्यंतरदेव विशेष। पेयदेवकाइयाइवा। प्रेतकायिक परिवारभूत देव । असुरकुमारी । असुरकुमार देव भवनपती । असुरकुमारीओकदप्पा । असुरकुमारनी देवी अतिक्रीडाना करणहार कन्दर्पिक देव । निरयवाला आभिओगोजेयावन्नेतहप्पगारा । नरकना रखवाला आभियोग सेवकरूप तेहना आदेशका री वली जे अनेरा तथाप्रकार तेह सरीखा । सव्वेते तब्भत्तिया तप्पक्खिया तब्भारिया । सगलाई ते यमना भक्तिरागी ते यमना पक्षवन्त तेहना वश वर्त्ती वल्लभ । सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो । शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने । जमस्समहारन्नो जावचिट्ठति । यमनाम महाराजाने आज्ञा उपपात वचन नि देशे रहै । जंबूद्दीवे २ । जंबूदीप नामा द्वीपने विषे । मंदरस्सपव्वयस्सदाहिणेणं । मेरुनामा पर्वतने दक्षिण दिशे । जाइंइमाइं समुप्पज्जंति तंजहा । जेह

॥ टीका ॥

हीनमहारणाः ॥ महासंगामत्ति ॥ सव्यवस्थचक्रादिव्यूहरचनोपेतमहारणाः महाशस्त्रनिपातनादयस्तु त्रयो महायुद्धादि कार्यभूताः ॥ दुब्भूयत्ति ॥ दुष्टाजनधान्यादीना मुपद्रवहेतुत्वा दुर्भूता सत्त्वा यूका मत्कुणोदुरुतिक्कप्रभृतयो दुर्भूता ईतय इत्यर्थ , इन्द्रग्रहादय उन्मत्तताहेतव एकाहिकादयो ज्वरविशेषा ॥ उद्वेगत्ति ॥ उद्वेगका इष्टवियोगादिजन्या उद्वेगाः उद्वेजकावा; लोकोद्वेगकारिणा श्चौरादय ॥ कलाकोहत्ति ॥ कक्षाणा शरीरावयवविशे

॥ मूल ॥

वा बोलाइवा खाराइवा महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थनिवडणाइवा एवं महापुरिसनिवडणाइवा महारुहिरनिवडणाइवा दुब्भूयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा मंडलरोगाइवा नगररोगासीसवेयणा अच्छिवेयणा कन्नवेयणा नहवेयणा दंतवेयणा इंदग्गहा खंदग्गहाइवा कुमारग्गहजक्खग्गहभूयग्गहएगाहियाइवा बेहियतेहियचाउत्थयाइवा उव्वेगाइवा कासाइवा खासाइवा जराइवा दाहाइवा कच्छकोहाइवा अजीरया पंडुरोगा अरिसाइवा

॥ भाषा ॥

एह ऊपजे ते कहेछे—डिंवाइवा डमराइवा कलहाइवा बोलाइवा खाराइवा । विघन ऊपजे एक राज्यने विषे राजकुमारादिकनो कीधो उपद्रव ऊपजे वचननी राढि ऊपजे अव्यक्ति अक्षर महाध्वनि समूह ऊपजे। माहोमाहि मत्सर ऊपजे। महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा । व्यवस्था चक्रादि व्यूह रचना सहित महा संग्राम ऊपजे। महासत्थनिवडणाइवा एवमहापुरसनिवडणाइवा । महायुद्ध महासंग्राम हुवे ए तीन कार्य नीपजे ते कहेछे—महाशस्त्र खड्गादि पडे इम मोटा पुरुष पडेमरे इत्यर्थं। महारुहिरनिवडणाइवा दुब्भूयाइया। घणा रुधिर लोही पडे मनुष्य धान प्रमुखने उपद्रवना करण थका एहवा माकण जदरतोड प्रमुखथाय। कुलरोग गामरोग मंडलरोग णयररोग सीसवेयणाइवा। कुलनेविषे रोग ऊपजे गामनेविषे रोग ऊपजे देश तेहने विषे रोग ऊपजे नगरनेविषे रोग ऊपजे माथानो वेदना ऊपजे। अच्छि वेयण कणवेयण णहवेयण दंतवेयणाइवा। आषनी वेदना ऊपजे काननी वेदना ऊपजे नखनी वेदना ऊपजे नह वेडाप्रमुख दांतनी वेदना ऊपजे। इंदग्गह खंदग्गह कुमारग्गह जक्खग्गह भूतग्गहाइवा ५। इन्द्र गृहादिक उन्मत्ततोना कारणछे ते बावला करेछेगे इत्यादि वेदनाने विषे इन्द्रसरीखा उन्मततताना कारण कुमारगृह ते पणि उन्मत्तताना कारण यक्ष गृह

अगंदलाइवा हियमूलाइवा मत्थयसूलाइवा जोणिसूल पाससूल कुच्छिसूल गाममारीइवा नगरखेडकब्बड दोणमुहमडंबपट्टणआसमसंवाहसंन्निवेसमारीइवा पाणक्खय धणक्खय जणक्खयकुलक्खयवसणब्भूयमणारिया जेयावन्ने तहप्पगारा नते सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो अणाया ५ तेसिंवा जमकाइयाणं देवाण सक्कस्स जमस्स इमे देवा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तंजहा — अंबे १ अंबरिसेचेव २ सोमे ३

ते उन्मत्त करे विकल करे भूतगृह ए पणि विकल करे। एगाहिय वेहिय तेहिय चाउत्थिय उव्वेग २०। एकान्तर ज्वरआवे वेहियो ज्वरआवे तेइयो ज्वर आवे चौथेदिन ज्वर आवे ते चौथोज्वर इष्टना वियोगादिकथो ऊपनो उद्वेग अथवा लोकने उद्वेगना कारक चोरादिक। कास खास सास जर दाह कच्छ कोढ। खांसी उधम हुवे श्लेष सहित ते खास ऊपर सासोना करणहार बलहीन करे ते जरादिक शरीर बले ते दाघहुवे काय दुर्गन्धयइ अथवा कच्छ कहीये वनगहन विशेष तेहने विषे पान फूल घणा सडोजाय। अजोरग पडुरोग हरिसाइवा। अजोरणथाय कमलीयो थाय हरिसरोग जाये। भगदल हियमूल मत्थयसूल जोणिसूल पाससूल कुच्छिसूल ५। भगन्दर रोग ऊपजे हियाने विषे सूल ऊपजे माथानेविषे सूल ऊपजे योनिने विषे सूल ऊपजे पसवाडे सूल ऊपजे उदरने विषे सूल ऊपजे। गाममारी नयरमारी खेडमारी कव्वडमारी दोणमुहमारीइवा ५। गामने विषे मिरघीरोग ऊपजे नगरने विषे मिरघो रोग ऊपजे खेडनेविषे मारी ऊपजे खेडतो जिहा धूलनो काचो कोट हुवे कुत्सित नगर कव्वडने विषे मारी ऊपजे द्रोणमुखने विषे मारीरोग ऊपजे जलमार्गना नगर जलथको वस्तु आवे। मडंबमारी पट्टणमारी आसममारी संवाहमारी सन्निवेसमारीइवा ५। नगरथकी कोस अढाई तीन हाय सराय ते मडंब कहीये तेहने विषे मारी उपजे अनेक किरियाणा आवे ते पट्टण तेहने विषे मारो उपजे तापसादिकना स्थानक ते आश्रम तेहने विषे मारो उपजे सार्थवाहना स्थानक तेहने विषे मारी उपजे अहोरादिकनाग्राम तेहने विषे मारी उपजे। पाणक्खया जणक्खया धणक्खया कुलक्खया वसणब्भूया अणारिया। प्राणनो क्षयकरे जन मनुष्यनो क्षयकरे धननो क्षयकरे कुलनो क्षयकरे आपदायें पाडे अनार्यनो आग

पाणांवनगहनानांवा; कोथा कुथित्वानिशटनानिवा; कान्ताकोथा कल्लकोथावा; अंबइत्यादय पञ्चदशासुरनिकायान्तर्वर्त्तिन परमाधार्म्मिकनिकाया, स्तत्र यो देवो नारका नवरतले नीत्वा विमुच त्यसा वम्बइत्यभिधीयते ॥ १ ॥ यस्तु नारकान् कल्पनिकाभि खण्डश कृत्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करो त्यसा वम्बरीषस्य भ्राष्ट्रस्य सम्बन्धादम्बरीषएवो च्यते ॥ २ ॥ यस्तु तेषा शातनादि करोति, वर्णतस्तु श्याम' सश्याम इति ॥ ३ ॥ सबलेत्तिया वरेत्ति ॥ शबलइति चापरो देवइति प्रक्रम', सच तेषा मन्त्रहृदयादी न्युत्पाटयति, वर्णतश्च शबल कर्बुरइत्यर्थ ॥ ४ ॥ शक्तिकुन्तादिषु नारका न्प्रोतयति स रौद्रत्वा द्रौद्रइति ॥ ५ ॥ यस्तु तेषा मेवाङ्गोपाङ्गानि भनक्ति सोऽत्यन्तरौद्रत्वा दुपरौद्रइति ॥ ६ ॥ य पुन कड्वादिषु पचति वर्णतश्च काल. सकालइति ॥ ७ ॥ महाकालेत्तियावरेत्ति ॥ महाकालइति चापरोदेव इति प्रक्रम स्तत्र य श्लक्ष्णमासानि खण्डयित्वा खादयति वर्णतश्च महाकाल समहाकालइति ॥ ८ ॥ असीयत्ति ॥ यो देवो सिना तान् छिनत्ति सोऽसिरेव ॥ ९ ॥ असिपत्तेत्ति ॥ असा कारपत्रवद्धनविकुर्वे

सबलेत्तियावरे ४ रुद्दे ५ वरुद्दे ६ कालेय ७ महाकालेत्तियावरे ८ असिपत्ते ९ धणू १० कुंभे ११ वालुया १२

मन हुवे। जेयाविअणेतहप्पगारा। वली जे अनेरापणि तेह सरीखा तेह इहालेवा। यातेसक्कस्स देविंदस्स देवरणो जमस्समहारणो अणाया ५। नही ते शक्र देवेन्द्र देवराजाने यम महाराजाने अजाणपणें अनुमान पणें इत्यादि सर्व कहवो। तेसिंवा जमकाइयाण देवाण। तेहने यमकायिक देवने। सक्कस्स देविंदस्स देवरणो जमस्समहारणो। शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने यमनाम महाराजाने। इमेअहावच्चाअभिणायाहोत्था तंजहा अंबे अंबरिसो चेव सामे सबलेइआवरे। एह पुत्र स्थानीय विनयवन्त छया ते कहेछे—अंब इत्यादिक परमाधर्मीनी निकाय कहीये ते असुरकुमार निकाय अंतर्वर्त्ती जा णवा नारकीने आकाशे लेजाईने नीचा नाखे ते अब कहीये १ जिके नारकीने कातरि सघाते अनेकखण्ड करी पाक योग्यकरे ते अंबरीष २ जिके नारकीने पाडे तथा वर्णं स्याम ते साम कहीये ३ अपरदेव इति ते बीजा देवने छटयें अत उपाडे अथवा नारकीना मनपडे अथवा काबरे वर्णे तेमाटे सबल एहवू नाम ४। रुद्दोवरुद्देकालेयमहाकाले त्तिआवरे। असिपत्तेधणूकुंभे वालुयवेयरणीइय खरस्सरे महाघोसे एएपन्नरसाहिया। जेनारकीने त्रिशूलभा

णा दसिपत्रः ॥ १० ॥ कुम्भेत्ति ॥ कुम्भादिषु तेषां पचनात्कुम्भः ॥ ११ ॥ क्वचित्पठ्यते ॥ असिपत्ते धणूकुंभेत्ति ॥ तत्र असिपत्रकुम्भौ पूर्ववत् ॥ धणुत्ति ॥ यो धनुर्विमुक्तादर्धचन्द्रादिभि र्बाणैः कर्णादीनां छेदनभेदनादि करोति स धनुरिति ॥ वालुत्ति ॥ कदम्बपुष्पाद्याकार वालुकासु य पचति स वालुकइति ॥ १२ ॥ वेयरणीइयत्ति ॥ वैतरणीतिच देवइति प्रक्रम, तत्र पूयरुधिरादिभृतवैतरण्यभिधाननदीविकुर्वणा द्वैतरणीति ॥ १३ ॥ खरस्सरेत्ति यो वज्रकण्टकाकुलशाल्मलीवृक्ष मारोप्य नारक खरस्वरं कुर्वन्त कुर्वन्वा, कर्षं त्यसौ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोसेत्ति ॥ यस्तु भीतान् पलायमाना न्नारका न्पशूनिव वाटकेषु महाघोष कुर्वं न्निरुणद्धि समहाघोषइति ॥ १५ ॥ एमेपन्नरसाहियत्ति ॥ एव मुक्तन्यायेन एते यमयथापत्यदेवा॰ पंचदश

वेयरणीतिय १३ खरस्सरे १४ महाघोसे १५ एमेपन्नरसाहिया । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो सत्तिभागं पलिउवमं ठिई पन्नत्ता , अहावच्चाभिन्नायाणं देवाणं एगंपलिउवमं ठिई पन्नत्ता एमहीए जाव जमे महाराया २ । कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सयंज

लेकरी पीवे ते रुद्रपणाथी रौद्रकहीये ५ जेनारकीनाज अंगोपांग भाजे ते अत्यंत रुद्रपणाथी उपरुद्र ६ जे नारकीने कडादिकने विषे पचावे तथा वर्णथी काला तेमाटे काल ७ जे नारकीना सूक्ष्मखंड करी तेहने तखतरावे तथा वर्णथी महाकाल ८ जिकोदेव तरवारने आकारे पाननो परें वन विकुर्वे तेहथी असिपत्र ९ धनुषथी मूक्या अर्धचन्द्रादिक वाण तिणेंकरी नारकीना कर्ण नासादि छेदन भेदन करे तेमाटे धणू १० नारकीने कुंभादिकने विषे घाली पचावे तेमाटे कुम्भ ११ कदम्बना फूलनेआकारे वालुका करी तेहने विषे नारकीने पचावे ते वालुक १२ पूय रुधिर भरी वैतरणी नाम नदी विकुर्वी तेहने कष्टदे ते वैतरणीनाम देव १३ वज्रना काटा सहित शालमली नाम वृक्षने विषे नारकीना जीवप्रतें आरोपीने खरस्वर करता प्रतें आकर्षी ते खरस्वर १४ जे भयेकरी नासता नारकीने पशुनी परें मार्गने विषे महाशब्द करताने रूंधे ते महाघोस १५ ए पनरह महाधर्मी कह्या किणही एक पुस्तके असि ९ असिपत्तए जुदा कह्या तिहां जे असि ति असिसघाते छेदे ९ असिपत्र पूर्ववत् तिहां धणू नकह्यो । सक्कसण देविंदस्स देवरणो जमस्स

॥ मूल ॥

लेनामं महाविमाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स पच्चच्छिमेणं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइ जहा सोमस्स तहा विमाणरायहाणीओ भाणियव्वा जाव पासायवडंसया णवर , नाम नाणत्तं सक्कस्सणं वरुणस्स जाव चिठंति तजहा—वरुणकाइयाइवा वरुणदेवकाइयाइवा नागकुमारा नाग कुमारीओ उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ थणियकुमारा थणियकुमारीओ जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया

॥ भाषा ॥

महारणो । शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने यमनाम महाराजाने । सइभागपलिओवम ठिई पण्णत्ता । एक पल्योपम अने एक पल्योपमनो त्रीजोभाग स हित स्थिति कही । अहावच्च अभिणायाण देवाण एगपलिओवम ठिई पण्णत्ता । पुत्रने स्थानीय देवनी एक पल्योपमनी स्थितिकही इहा कोई एकनो अधिकोछे तो पणि विवचा नकीधी । एमहिड्ढीएजावजमेमहाराया २ । एहवो महर्द्धिक यावत् यमनाम महाराजा जाणवो । कहिणंभतेसक्कस्स देवि दस्सदेवरणो । कहा णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । शक्र देवेन्द्र देवराजा । वरुणस्समहारणो । वरुण नाम महाराजानो । सयजलेनाममहाविमाणे पण्णत्ते । स्वयजल नामे महा विमान कह्या । गोयमा तस्सणंसोहम्मवडसयस्समहाविमाणस्स । हेगोतम । तेहीज ण वाक्यालंकारे, सोधर्मावतसक महावि मानने । पच्चच्छिमेण । पश्चिम दिशे । सोहम्मे कप्पे । सोधर्मनामा देवलोके । असंखेज्जाइं । असंख्याता योजन उल्लघोने । जहासोमस्सतहाविमाणराय हाणीओ भाणियव्वा । जिम सोमनाम महाविमाननी वक्तव्यता कही तिम वरुणनी पणि वक्तव्यता राजधानी कहवी । जावपासायवडसया । यावत् प्रासादावतसकनी वक्तव्यता सर्वं कहवी । णवरणामणाणत्त । एतलो विशेष इहा नाम वरुणदेव कहवो । सक्कस्सणवरुणस्समहारणो जाव चिठंति तज हा । शक्रने वरुणनाम महाराजाना आज्ञा उववाय वचन निर्देशे रहे ते कहे छे—वरुणकाइयाइवा वरुणदेवकाइयाइवा । वरुणनी जातिना वरुण प रिवारभूत देव वरुणना सामानिकदेव तेहना परिवारभूतदेव । नागकुमारा नागकुमारीओ । नागकुमार भवनपतीदेव नागकुमार भवनपतीनी देवी ओ । उदहिकुमारा उदहिकुमारीओ । उदधिकुमार भवनपती देव उदधिकुमार भवनपतीनी देवीओ । थणियकुमारा थणियकुमारीओ । स्तनितकु

॥ टीका ॥

आख्याता इति ॥ अइवासत्ति ॥ अतिशयवर्षा वेगवद्वर्षणानीत्यर्थः ॥ मंदवासत्ति ॥ शनै वर्षणानि ॥ सुवुठित्ति ॥ धान्यादिनिष्पत्तिहेतुः ॥ दुवु ठित्ति ॥ धान्याद्यनिष्पत्तिहेतु ॥ उदुब्भेयत्ति ॥ उदकोद्भेदा गिरितटादिभ्यो जलोद्भवा ॥ उदगप्पीलत्ति ॥ उदकोत्पीला स्तडागादिषु जलसमूहा ॥ उदवाहत्ति ॥ अपकृष्टान्यल्पा न्युदकवहनानि, तान्येव प्रकर्षवन्ति प्रवाहा इहप्राणक्षयादयो जलकृता दृष्टव्या ॥ कक्कोडएत्ति ॥ कर्कोटकाभिधानो ऽनुवेलं धरनागराजावासभूत पर्वतो लवणसमुद्रे ऐशान्या दिश्यस्ति तन्निवासी नागराज कर्कोटकः ॥ कद्दमएत्ति ॥ आग्नेय्या तथैव विद्युत्प्रभपर्वत स्तत्र कर्दमको

॥ मूल ॥

जाव चिठंति। जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं जाइ इमाइं समुप्पज्जंति तंजहा—अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुठीइवा दुवुठीइवा उदुब्भेयाइवा उदप्पीलाइवा उदवाहाइवा पवाहाइवा गामवाहाइवा जाव सन्निवेसवाहाइवा पाणक्खया जाव तेसिं वा वरुणकाइयाणं देवाणं सक्कस्सणं वरुणस्स जाव अहा वच्चाभिन्नाया होत्था तंजहा—कक्कोडए कद्दमए अंजणे संखवालए पुंडे पलासे मोये जये दहिमुहे अयंपुले

॥ भाषा ॥

मार भवनपती देव स्तनितकुमार भवनपतीनो देवीओ। जेयावणतहप्पगारा। वली जे अनेरा तथा प्रकार तेह सरीखा। सव्वेते तब्भत्तिया। ते स गलाई तेहनी भक्तिना कारक। जावचिठंति। यावत् रहै। जंबूद्दीवे २। जंबूद्दीपनामा द्वीपने विषै। मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं। मेरुनामा पर्वतने द क्षिणदिशे। जाइंइमाइं समुप्पज्जंति तंजहा। जेह एह ऊपजे ते कहैछे—अतिवासाइवा मंदवासाइवा। घणू उतावली वेगवन्त वर्षाहुवे अति हलवे वर्षाहुवे सुवुठीइवा। जिवे घणा धान नीपजे। दुवुठीइवा। जेणे धान्य नीपजे। उदब्भेयाइवा। पर्वतना तट नदादिकथी पाणीचाले। उद पीलाइवा। तलाव भरी पाणीचाले। उदवाहाइवा पवाहाइवा। थोडा पाणीवहै घणा पाणी वहै। गामवाहाइवा। गाम बाहला वहै। जावस न्निवेसवाहाइवा। यावत् सन्निवेशना बाहला वहै। पाणक्खया। बलनो क्षयकरै। जावतेसिंवावरुणकाइयाण देवाण। यावत् तेहने वरुण परिवारभूत देवने। सक्कस्सणवरुणस्सजावअहावच्चाअभिन्नायाहोत्था तंजहा। शक्रने वरुणनामदेवने यावत् पुत्रस्थानीय देव विनयवन्त आदेशना कारकहुया तेक

॥ टीका ॥ नाम नागराजः ॥ अंजणेत्ति ॥ वेलम्बाभिधानवायुकुमारराजस्य लोकपालों जनाभिधान ॥ संखवालएत्ति॥ धरणाभिधान नागराजस्य लोकपाल

॥ मूल ॥ कायरिए । सक्कस्सणं वरुणस्स देसूणाइं दोपलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, अहावच्चाभिन्नायाणं देवाणं एग प लिओवमं ठिई पन्नत्ता, एमहिड्ढीए जाव वरुणे महाराया २ । कहिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो वग्गूनामं महाविमाणे पं ? गोयमा ! तस्सणं सोहम्मवडंसयस्स महाविमाणस्स उ त्तरेणं जहा सोमस्स विमाणस्स रायहाणियवत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव पासायवडंसया । सक्कस्सणं वेस

॥ भाषा ॥ हैछे—कक्कोडए कद्दमए अंजणए संखवालए पुंडवलासे माएजए दहिमुहे अयपुले कायरिए । लवणसमुद्रन विषे ईशान काणिक कोटिकनाम अनुवेलंधर नागराज आवासभूत पर्वत तिहानावासो देव पणि कर्कोटक १ तिमहीज अग्निकूणें विद्युतप्रभ आवासपर्वत तिहा कर्दमनाम नागराज २ वेलम्बना म वायुकुमार राजनो लोकपाल अंजन नामे ३ धरणनाम नागराजनो लोकपाल शंखपालनामे ४ शंखते पुंड्रादिक प्रसिद्ध ते सूत्रमाहे कहेछे—पुंड्र शं ख पलाश मोज जय दधिमुख अय पुल कातरिक एसर्व शंखजातिछे । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो । शक्र देवेन्द्र देवराजाना । वरुणस्स । वरुणनाम लो कपालनो । देसूणाइंदोपलिओवमाइं ठिई पणत्ता । देशे ऊणा दोय पल्योपमनो स्थितिकही । अहावच्चा । पुत्र स्थानीय । अभिन्नायाणं देवाण । विनय वन्त देवनो । एगपलिओवम ठिई एमहिड्ढीए । एक पल्योपमनो स्थितिकही एहवोमहर्द्धिक । जाववरुणेमहाराया ३ । यावत् वरुणनामे महाराजा लोकपाल ३ । कहिणभंतेसक्कस्सदेविंदस्सदेवरण्णो । किहा ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । शक्रनो देवेन्द्रनो देवराजानो । वेसमणस्स महारण्णो । वेश्रमण नाम महाराजानो । वग्गूणाममहाविमाणे पणत्ते । वलगूनाम महाविमान कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तस्सणसोहम्मवडंसयस्समहाविमाणस्स उत्त रेण । हेगौतम तेहने सौधर्मावतंसक महाविमानने उत्तरदिशे । जहासोमस्समहाविमाणस्स रायहाणिवत्तव्वया तहा णेयव्वा । जिम सोमनाम महा विमाननो राजधानीनो वक्तव्यता कही तिमहीज इहांपणि कहवी । जावपासायवडंसयस्स । यावत् प्रासादावतंसकनो चार परिपाटीये ३४१ वि

॥५८०॥ द्योप्रतीताइति॥ वसुहाराइति॥ तीर्थंकरजन्मादिष्वाकाशाद्द्रव्यवृष्टि॥ हिरखवासत्ति॥ हिरण्य रूप्य घटितसुवर्ण मित्यन्ये

मणस्स इमे देवा ञ्राणाउववायवयणनिद्देसे चिठंति तंजहा—वेसमणकाइयाइवा वेसमणदेवकाइयाइवा सुवसकुमारा सुवसकुमारीउ दीवकुमारा दीवकुमारीउ दिसाकुमारा दिसाकुमारीउ वाणमंतरा वाणमतरीउ जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वेते तब्भत्तिया जाव चिठंति। जबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण जाइ इमाइं समुप्पज्जंति तजहा—ञ्रयागराइवा तउयागराइवा तवागराइवा एवंसीसागराइवा हिरखसुवसरयणवइरागराइवा वसुहाराइवा हिरखवासाइवा सुवसवासाइवा रयणवइरञ्राभरणपत्तपुप्फफलवीयमल्लवसचुस

मान कहवा। सक्कस्स देविदस्स देवरणो। शक्रन ण वाक्यालकारे, देवेन्द्रने देवराजाने। वेसमणस्स महारणो इमेदेवा। वैश्रमणनाम महाराजाने एह देव।आणाउववायवयणनिद्देसे चिठ्ठति तजहा। आज्ञा उतपात वचन निर्देशने विषे रहे ते कहैछै—वेसमणकाइयाइवा वेसमणदेवकाइयाइवा। वैश्रमण परिवारभूतव वैश्रमण सामानिकदेवना परिवारभूत देव। सुवखकुमारा सुवणकुमारीओ। सुवर्णकुमारदेव भवनपती सुवर्णकुमार भवनपतीनी देवीओ। दीवकुमारा दीवकुमारीओ। द्वीपकुमार भवनदेव द्वीपकुमार भवनपतीनी देवीओ। वाणमतरा वाणमतरीओ। वानव्यन्तर वानव्यन्तरनी देवाओ। जेयावन्नेतहप्पगारा। वली जेअनेरा एह सरीखा। सव्वेततभत्तियाजावचिठ्ठति। ते सगलाई वैश्रमण देवना आज्ञाकारी यावत् रहै। जबूदीवेद। जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे। मदरस्सपव्वयस्स। मेरुनामा पर्वतने। दाहिणेण। दक्षिण दिशे। जाइ इमाइ समुप्पज्जति तजहा आयागराइवा। जेह एह ऊपजे ते कहैछै—लोहना आगर हुवे। तउ यागराइवा। ते रूपाना आगर ऊपजे। तवागराइवा। त्रांबाना आगर हुवे। एवसीसागराइवा। इम सीसाना आगर ऊपजे। हिरणागराइवा। हिरखना आगर।सुवणागराइवा। सुवर्णना आगर हुवे। रयणागराइवा। रतनना आगर हुवे। वयरागराइवा। वज्रना आगर हुवे। वसुवाराइवा तीर्थंकरना जन्माभिषेकादिकने आकाशथी द्रव्यवृष्टि हुवे। हिरणवासाइवा। रूपोकोई कहैछै—हिरख घड्यो सोनो

वर्षोऽल्पतरो, वृष्टिस्तु महतीति वर्षवृष्ट्यो र्भेद', माल्यन्तु ग्रथितपुष्पाणि, वर्ण श्चन्दनं, चूर्णो गन्धद्रव्यसम्बन्धी, गन्धा' कोष्टपुटपाका' ॥ सुब्भिक्खाइ वत्ति ॥ सुकाले दुकालेवा; भिक्षुकाणा भिक्षासमृद्धयो दुर्भिक्षास्तू क्तविपरीता' ॥ संनिहित्ति ॥ घृतगुडादिस्थापनानि ॥ सनिचयत्ति ॥ धान्यसच या' ॥ निहीइवत्ति ॥ लक्षादिप्रमाणद्रव्यस्थापनानि ॥ निहाणाइवत्ति॥भूमिगतसहस्रादिसख्यद्रव्यसंचया , किंविधानीत्याह॥ चिरपोराणाइति॥चि

गंधवत्थवासाइवा हिरन्नवुठ्ठीइवा सुवन्नरयणवइरआभरणपत्तपुप्फफलबीयमल्लवन्नगंधवत्थआयणवुठ्ठीइवा खीरवुठ्ठीइवा सुयालाइवा दुक्कालाइवा अप्पग्घाइवा महग्घाइवा सुभिक्खाइवा दुब्भिक्खाइवा कयविक्कयाइवा सन्निहीइवा सन्निचयाइवा निहीइवा निहाणाइवा चिरपोराणाइं पहीणसामियाइवा पहीणसेउयाइवा पही'

तेहनी थोडो वृष्टी । सुवर्णांश साइवा । सुवर्णनो थोडो वृष्टि । रयणवासाइवा । रतन वरसे । वयरवासाइवा । वज्र वरसै । आभरणवासाइवा । आभर ण वरसावे । पत्तवासाइवा । पत्र वरसावे । पुप्फवासाइवा । फूल वरसावे । फलवासाइवा । फल वरसावे । वीयवासाइवा । बीज वरसावे । मल्लवासाइ वा । माला गुन्थ्या फूल तेहने वरसै । वण चुण गंध वत्थवासाइवा । चन्दन प्रमुख तेह वरसै अबीर प्रमुख तेह वरसे कोठना पुडा तेह वरसै कवडा वर सै इहा वरसवो तेथोडो अने वृष्टि ते घणी इतिभेद । हिरण सुवण रयण वयर आभरणपुप्फ फल बीय मल्लवण चुण गंध खीरवत्थ भायणखोरवुठ्ठीइवा । हिरण्यनो घणो वरसै सुवर्णनो घणो वरसै रतननो वरसै वज्रनोवरसै आभरणनोवरसै फूलनो वरसे फलनो वरसै बीजनो वरसै गूंथो मालानो वरसै च न्दन प्रमुखनो वरसै अबीर प्रमुखनो वरसे कोठना पुडा प्रमुखनो वरसै चीर ते बहुमोलना वस्त्र तेहनो वरसै वस्त्र ते सामान्य मोल तेहनो वरसै भाज न थाल प्रमुख तेहनो वरसै दूध पञ्चामृत चीर तेहनो वरसै। सुकाल दुकाल अप्पग्घ महग्घ सुभिक्ख दुभिक्ख कयविक्कय सणिह सणिचयाइवा । सुका लथाय भूंडो काल थाय अल्पमूल्यवस्तु सुहघी थाय मुहघी थाय सुभिक्ष ते जिहा सुकाले भिक्षाचर कडीपडै भिक्षालहै अथवा दुर्भिक्ष ते जिहा भिक्षा न लहै क्रय विक्रय व्यापार लेवो वेचवो घृत गुडादि राखी मूकीयें ते धान्यनो सचय कीजे ते सन्निचय कहीये । निही निहाण चिरपोराण पहीणसामि

॥ टीका ॥

प्रतिष्ठितत्वेन पुराणानि चिरपुराणानि, अतएव॥पहीणसामियाइंति॥ स्वल्पीभूतस्वामिकानि॥पहीणसेउयाइति॥प्रहीणा अल्पीभूता सेक्कार सेच
प्रतिष्ठितत्वेन पुराणानि चिरपुराणानि, अतएव॥ पहीणसामियाइंति ॥ स्वल्पीभूतस्वामिकानि॥ पहीणसेउयाइति॥ प्रहीणा अल्पीभूता सेक्कार सेच
का धनप्रक्षेप्तारो येषां तानि तथा प्रहीणमार्गाणिवा; पहीणगोत्तागाराइति ॥ प्रहीणं विरलीभूतमानुष गोत्रागारं तत् स्वामिगोत्रगृहं येषां तानि
तथा ॥ उच्छिन्नसामियाइति ॥ नि सत्ताकीभूतप्रभूणि ॥ नगरनिद्धवणेसुवत्ति ॥ नगरनिर्द्धवनेषु नगरजलनिर्गमनेषु ॥ सुसाणगिरिकंदरसंतिसेलोवठा
णभवणगिहेसुत्ति ॥ गृहशब्दस्य प्रत्येकं सम्बन्धात् श्मशानगृहं पितृवनगृहं, गिरिगृहं पर्वतोपरिगृहं, कंदरगृहं गुफा, शान्तिगृहं शान्तिकर्मस्थानं,

॥ मूल ॥

णमग्गाणिवा पहीणगोत्ताकाराइवा उच्छिन्नसामियाइवा उच्छिन्नसेउयाइवा उच्छिन्नगोत्तागाराइवा सिंघा
डगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसुनगरनिद्धमणेसुवा सुसाणगिरिकंदरसंतिसेलोवठाणभवणगिहेसु स
न्निक्खित्ताइं चिठंति, एताइ सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो वेसमणस्स महारन्नो अन्नाया अदिठा असुया

॥ भाषा ॥

य पहीणसेउय पहीणमग्गपहीणगोत्तागार उच्छिन्नसामियाइवा। लक्षादि प्रमाण द्रव्य संचय भूमिगत सहस्रादि संख्या द्रव्य संचय घणा कालना संच
यमाटे जूना पुराणा एतला माटेज थोडा थयाछे स्वामी जेहना थोडा थयाछे धनना घालनहार अल्प थयाछे मार्ग जेहना वीखरायाछे मानुष गोत्रागा
र तेहस्वामीपणें जेहनाछे दपाम्या जेहना स्वामी एतले विच्छेद गया। उच्छिन्नसेउय उच्छिन्नगोत्तागार। विच्छेद गया धननो घालनहार विच्छेदपा
म्या गोत्रागार स्वामीपणें जेहना। सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसुवा। शृंगाटक आकारे जे स्थानक तेहने विषे त्रण त्रिक चउक्क चाचर च
तुर्मुख महापथ त तथा छोटामार्गने विषे। णयरणिद्धमणेसुवा। नगरपालने विषे जल निकलवाने स्थानके। सुसाण गिरिकंदर संतिसेलोवठाणभवणगि
हसुसन्निखित्ताइत्ति। इहां गृह शब्दनों प्रत्येकें संबंध कीजे तिवारें श्मशानघर ते पितृवनघर गिरिगृह ते पर्वत ऊपर घर कंदर गृह ते गुफा शांतिगृहशा
न्तिकर्म स्थानक शैल गृह पर्वत तथा पाषाण उंकेरी नें जे घरकीधूं उपस्थान गृह आस्थान मंडपदरीषानों अथवा वैसिवानों घर। एताई सक्कस्सदेवि
दस्स देवरन्नो वेसमणस्समहारन्नो। भवन गृह ते कुटुंबी वसवानोघर एतलानें विषे नही तेह शक्र देवेंद्र देवराजानें वैश्रमण महाराजानें। अणाया अ

॥ टीका ॥ शैलगृह पर्वत मुत्कीर्य यत् कृतं, उपस्थानगृहं आस्थानमंडपो, भवनगृह कुटुंबिवसनगृहम् ॥ इतितृतीयेशतेसप्तम ॥ ७ ॥

॥ मूल ॥ अमुया अविखाया तेसिवा वेसमणकाइयाण देवाण सक्कस्स देविंदस्स देवरणो वेसमणस्स इमे देवा अहा वच्चा अभिखाया होत्था तंजहा—पुणभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुणरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामसमिद्धे अमोहे असते । सक्कस्सण देविंदस्स देवरणो वेसमणस्स महारणो दोपलिउवमाइ ठिई पण्णत्ता, अहावच्चाभिखायाण देवाणं एगं पलिउवमं ठिई पण्णत्ता, एमहिड्डीए जाव वेसमणे महाराया ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तइयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ३ ॥ ७ ॥ रायगिहे नगरे जाव पज्जुवा

॥ भाषा ॥ दिट्ठा अरुया अमुया अविखाया । अनुमान अजाण पणें नहीं अदृष्ट नहीं प्रत्यक्षनो अपेक्षाइं श्रण सुण्या नही पर वचन द्वाराइ असमरणे करी नही मन नों अपेक्षायें अवधि ज्ञानें करी अजाणपणें नथी । तेसिंवावेसमणकाइयाणदेवाणं । तेहनें अथवा वैश्रमण परिवार भूत देवनें । सक्कस्स । शक्रना । देविंदस्स । देवेंद्रना । देवरणो । देवराजाना । वेसमणस्समहारणो । वैश्रमण महाराजाना । इमेदेवा । एह देव । अभिखायाहोत्थात । पुत्रस्थानीय विनयवत ह्या ते कहेछे—पुणभद्दे । पूर्णभद्र । माणिभद्दे । माणिभद्र । सालिभद्दे । सालिभद्र । सुमणभद्दे । सुमनभद्र । चक्करक्खे । चक्ररक्ष । पुणरक्खे पूर्णरक्ष । सव्वाणे । सर्वान । सव्वजसे । सर्वयश । सव्वकामे । सर्वकाम । समिद्धे । समृद्ध । अमोहे । अमोघ । असते । असंग । सक्कस्सण । शक्रनां । देविंदस्सदेवरणो । देवेंद्रना देवराजाना । वेसमणस्समहारणो । वैश्रमणनामे महाराजानी । दोपलिओवमाइंठिईप । दोय पल्योपमनी स्थिति कही । अहावच्चा । पुत्र स्थानीय । अभिखायाणदेवाण । विनयवत देवनी । एगपलिओवम । एक पल्योपमनी । ठिईप० । स्थिति कही । एमहिड्डीए । एहवो म हर्द्धिक छे । जाववेसमणेमहाराया । यावत् वैश्रमण महाराजा । सेवंभंतेभंत्ति । तहत्ति हे भगवन् तुम्हे कह्यु ते सत्य छे अन्यथा नही । तइयसयस्सय सत्तमो ॥ ३ ॥ ७ ॥ एत्रीजा शतकनो सातमो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ॥ ७ ॥ रायगिहेणयरे जावपज्जुवासमाणे एवंवयासी ।

॥ टीका ॥

देववक्तव्यताप्रतिबद्ध एवा ष्टमोद्देशक सच सुगमएव नवरं सो का चि प्प ते रु ज तु का आ, इत्यनेना र्दशकेन दक्षिणभवनपतीन्द्राणा प्रथमलो
कपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथाया, सचैवं—सोमेय १ कालवाले २ चित ३ प्पभ ४ तेउ ५ तहरूएचेव ६ ॥ जल ७ तहतुरिय

॥ मूल ॥

समाणे एवं वयासी असुरकुमाराण भंते ! देवाणकइदेवाआहेवच्च जाव चिठंति ? गोयमा ! दसदेवा आ
हेवच्चं जाव विहरंति तंजहा—चमरे असुरिंदे असुरराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे बली वइरोयणिंदे वइ
रोयणराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे । नागकुमाराणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! दसदेवा आहेवच्चं जाव वि
हरंति तजहा—धरणे नागकुमारिंदे नागकुमारराया १ कालवाले कोलवाले ३ सेलवाले ४ संखवाले ५

॥ भाषा ॥

देव वक्तव्यता प्रतिवद्ध हौव आठमो उद्देशो कहेछे—राजगृह नगरनें विषे यावत् श्री गोतम स्वामि सेवा करतो थको इम कहे । असुर
कुमाराणभंतेदेवाण । असुर कुमार निकायने हेभगवन् देवनें । कइदेवाआहेवच्च जावचिठुति । केतला देव आधिपत्य स्वामि पणें यावत् रहे इति
प्रश्न । गो दसदेवाआहेवच्च जावविहरति त । हे गोतम । दशदेव आधिपत्य स्वामिपणें थई यावत् विचरें ते कहेछे—इहा कोई एक पुस्तकनें विषे विपरो
त नाम छे तेनहीं परमार्थ आगे लिखिसे दशदेवा इहा भावार्थ ए भवनपतोनो असुर आदिदेई दश निकायछे तेहना प्रत्येके दोय २ इन्द्रछे इम २०
इन्द्र थया एकेक इन्द्रने लोकपाल रूप स्वामोपणाना कारक चार ४ छे एव ८० इन्द्र मेलिया १०० देव इतिभाव । चमरे असुरिंदे असुरराया । चमर अ
सुरेन्द्र असुरराजा । सोमे जमे वरुणे वेसमणे वलो वइराइणिंदे वइरोयणराया सोमे । सोम १ यम २ वरुण ३ वैश्रमण ४ वलि ५ वैरोचनइन्द्र वैरोचनरा
जा एक इन्द्र चार लोकपाल एव ५ इम आगे पणि जाणवो सोम ७ । जमे वरुणे वेसमणे । यम ८ वरुण ९ वैश्रमण १० एव । नागकुमाराणभंतेपुच्छा ।
नागकुमारनिकायनो हेभगवन् । इत्यादि प्रश्नकोधो उत्तर । गोयमा दसदेवाआहेवच्चजावविहरति तजहा । हेगोतम । दशदेव स्वामिपणे यावत् विचरेछे
ते कहेछे—धरणेनागकुमारिंदे । धरण नागकुमारेंद्र । नागकुमारराया । नागकुमारराजा १ एदक्षिणनो । कालवाले कोलवाले सेलवाले संखवाले । का

॥ टीका ॥

गईया ८ काले ६ आवत्त १० पढमाओ ॥ १ ॥ एव द्वितीयादयो प्यन्सूत्या, इरच पुस्तकांतरे अयमर्थोदृश्यते, दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रतिसूत्र यौतृतीयचतुर्थौ ता वौदीच्येषु चतुर्थतृतीया विति ॥ एसावत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव आणियव्वत्ति॥ एषा सौधर्म्मेशानोक्ता वक्तव्यता सर्वत्रापि

॥ मूल ॥

भूयाणंदे ६ नागकुमारिंदे णागकुमारराया कालवाले ७ कोलवाले ८ सखवाले ९ सेलवाले १० जहा नागकुमारिंदाणं एयाए वत्तव्वयाए णीतं एव इमाणं नेयव्वं सुवण्णकुमाराण वेणुदेवे वेणुदाली चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे । विज्जुकुमाराण हरिकंतेहरिस्सहे पभे १ सुप्पभे २ पभकंते ३ सुप्पभकंते ४ ॥ अग्गिकुमाराण अग्गिसीहे अग्गिमाणवे तेउ तेउसीहे तेउकंते तेउप्पभे । दीवकुमाराणं पुण्णवसिठरूय

॥ भाषा ॥

लवाल २ कोलवाल ३ सेलवाल ४ सखवाल ५ ए एक इन्द्र चार लोकपाल एव ५ इम आग पणि । भूयाणिंदे णागकुमारिंदे णागकुमारराया कालवाले भूतानन्द नागकुमारेंद्र नागकुमारराजा ६ ए उत्तर श्रेणीनो इन्द्र कालवाल ७ । लोकपाल । कोलवाले सेलवाले सखवाल । कोलवाल ८ सेलवाल ९ सख वाल १० । जहाणागकुमारिंदाण एयाएवत्तव्वयाणो । जिम नागकुमार इन्द्रने एह वक्तव्यताये एहना स्वामिपण कह्या । तएवइमाणंनेयव्व । ते इम एहो ने कहवो । सुवण्णकुमाराण । सुवर्ण कुमारने देव इम कहेछे—वेणुदेवे वेणुदालो । वेणुदेव दक्षिणनो इन्द्र वेणुदालो उत्तरनो इन्द्र अने लोकपाल एकेक ने चारचार एहीज नाम चित्र १ विचित्र २ चित्रपक्ष ३ विचित्रपक्ष ४ । विज्जुकुमाराण । विद्युतकुमारनो इन्द्र कहेछे—हरिकंत हरिस्सह पभसुप्प भ पभकंते सुप्पभकंते । हरिकांत दक्षिणेंद्र हरिस्सह उत्तरेंद्र १ लोकपाल कहेछे—प्रभ १ सुप्रभ २ प्रभकान्त ३ सुप्रभकान्त । अग्गिकुमाराण । अग्निकुमा रना इन्द्र कहेछे—अग्गिसिंह अग्गिमाणव । अग्निसिंह दक्षिणेंद्र १ अग्निमाणव उत्तरेंद्र २ । तेउ तेउसीह तेउकंत तेउप्पभे । तेजु १ तेजुसीह २ तेजु कान्त ३ तेजुप्रभ ४ ए लोकपाल ८ । दीवकुमाराणं दीपकुमारना इन्द्र कहेछे—पुण्ण वसिठ रूय रूयंस रूयसीह रूयप्पभा । पूर्ण दक्षिणेंद्र १ वसिष्ट उ त्तरेंद्र रूप १ रूपांश २ रूपसीह ३ रूपप्रभ ४ ए लोकपाल ८ । उदहिकुमाराण । उदधिकुमारना इम इन्द्र कहेछे—जलकंत जलप्पभ जल जलरूप । जल

॥ टीका ॥

कल्पेषु इन्द्रनिवासभूतेषु भणितव्या, सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वेन्द्रापेक्षयो तरेन्द्रसम्बन्धिनां लोकपालाना तृतीयचतुर्थयो र्व्यत्ययो वाच्य इत्यर्थः, तथैत

॥ मूल ॥

ह्वयंसरूयसीहरूयप्पन्ना । उदहिकुमाराणं जलकंतजलप्पन्नजलजलरूयजलकंतजलप्पन्ना ४ । दिसाकुमाराणं अमियगई अमियवाहणे तुरियगई खिप्पगई सीहगई सीहविक्कमगई ४ । वाउकुमाराणं वेलंबपभंजणकाल महाकालअंजणरिठा । थणियकुमाराणं घोसमहाघोसआवत्तवियावत्तनंदियावत्तमहानंदियावत्ता ४ । एवं भा णियव्वं जहा असुरकुमाराण सोमेय १ कालवाले २ चित्त ३ प्प ४ ते ५ रू ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १०॥

॥ भाषा ॥

लोकपाल ८ । दिसाकुमाराण । दिक्कुमारना दश रूपकांत जलप्रभ । जलकांत जलप्रभ ४ ए लोकपाल ८ । दिसाकुमाराण । दिक्कुमारना दश कात दक्षिणेंद्र १ जलप्रभ उत्तरेंद्र २ जल १ जलरूप २ । जलका त जलप्पभा । जलकांत जलप्रभ ४ ए लोकपाल ८ । दिसाकुमाराण । दिक्कुमारना दश देव कहेछे—अमियगति अमियवाहण । अमितगति दक्षिणेंद्र १ अमितवाहन उत्तरेंद्र २ । तुरियगई खिप्पगई सीहगई सीहविक्कमगई । त्वरितगति १ क्षिप्रगति २ शीघ्रगति ३ शीघ्र विक्रमगति ४ ए लोकपाल ८ । वाउकुमाराण । वायुकुमारना दशदेव कहेछे—वेलब पभंजण काल महाकाल अंजणरि ष्ठा । वेलब दक्षिणेंद्र १ प्रभञ्जन उत्तरेंद्र १ काल १ महाकाल २ अंजन ३ रिष्ट ४ ए लोकपाल ८ । थणियकुमाराण । स्तनितकुमार निकायना दशदेव क हेछे—घोस महाघोस आवत्त वियावत्त नंदियावत्त महानंदियावत्ता । घोष दक्षिणेंद्र १ महाघोष उत्तरेंद्र २ आवर्त्त वैयावर्त्त २ नन्द्यावर्त्त ३ महा नन्द्या वर्त्त ४ ए लोकपाल ८ । एवंभाणियव्व । इम सर्वना दश २ स्वामीदेव कह्या । जहाअसुरकुमाराण । जिम असुरकुमारना कह्या तिम कहवा असुरनिका यादि दशभवनपतीना पहिलालोकपालना नाम कहेछे—सोमेय १ कालवाले २, चित्त प्पभ तेउ ५ तहरूवेचेव ६ । जल ७ तहतुरियगईया ८, काले ८ आवत्त १० पढमाओ ॥ १ ॥ सोम असुरने १ कालवाल नागने २ इम चित्र ३ प्रभ ४ । तेज ५ तिमरूप निश्चे ६ । जल तिम त्वरितगति ८ पहिला लो कपालना नाम कह्या किणही । काल आवर्त्त ए दशेई निकायना एक पुस्तके गाथा नथी तिहा जे पाठछे ते लिखेछे—ए दशेई लोकपालना पहिला अक्षर । सो का चि प्प ते रू ज तु का आ । सोम १ काल २ चित्र ३ प्रभ ४ तेज ५ रूप ६ जल ७ त्वरितगति ८ काल ९ आवर्त्त १० इहा पुस्तकान्तरे

पिसायकुमाराणं पुच्छा गोयमा ! दोदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति तंजहा—कालेयमहाकाले सुरूवपडिरूव पुण्णभद्देय । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किनरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहापुरिसे। अइकायमहाकाए गीयरईचेवगीयजसे ॥ २ ॥ एए वाणमंतराणं जोइसियाणं देवाणं दोदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तंजहा—चंदे सूरेय। सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु कइदेवा आहेवच्चं जाव विहरंति? गोयमा !

ए अर्थ दोसेछे—दक्षिण दिशिना लोकपालने विषे सूत्रें २ ज त्रीजा चोथा लोकपाल कह्या ते उत्तर दिशिने विषे चोथा त्रीजा कहवा एतले त्रीजा ते चोथा अने चोथा ते त्रीजा कहवा, हिवे व्यन्तरीकना स्वामी कहेछे—पिसायकुमाराणं पुच्छा । पिशाचकुमारनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा दोदेवाआहेवच्च जाव विहरंति। हे गौतम! दोय देव स्वामी पणें यावत् विचरेछे—कालेय महाकाले सरूव पडिरूव पुणभद्देय। अमरवइ माणभद्दे भीमेय तहा महाभीमे ॥ १ ॥ काल १ महाकाल २ भूत निकायना दोयदेव सरूप प्रतिरूप २ यक्षने पूर्णभद्र अमर कहीये देवपती माणिभद्र राक्षसनिकायने भीम तिम महाभीम २ किंणरकिंपुरिसे खलुसप्पुरिसेखलुमहापुरिसे। अतिकाए महाकाए गीयरईचेवगीयजसे ॥ १ ॥ किन्नर निकायना किन्नर १ किंपुरुष २ निश्चे किंपुरुष निकायना सत्पुरुष निश्चे महापुरुष २ अतिकाय महाकाय २ गन्धर्व निकायना गीतरति १ निश्चे गीतयश २ आठ व्यंतरनो निकाय बीजो पणिछे अणपन्नी १ पणपन्नी २ इसिवाई ३ भूतवाई ४ कन्दी ५ महाकन्दी ६ कोहण्ड ७ पतग ८ एहना १६ स्वामी सन्निहित १ सामानिय २ धाइ ३ विधाइ ४ इसि ५ इसिवाल ६ ईश्वर ७ महेश्वर ८ सुवत्स ९ विसाल १० हास ११ हासरति १२ सेय १३ महासेय १४ पयग १५ पयगवई १६ एव सर्वमिलो व्यन्तरना ३२ इन्द्र थया। एएवाणमनराणं देवाणं। ए दक्षिण उत्तरेंकरो वानव्यन्तरना स्वामी कह्या। जोइसियाणं देवाणं। ज्योतिषी देवना। दोदेवाआहेवच्च जावविहरंति तंजहा। दोयदेव स्वामीपणें यावत् विचरेछे ते कहेछे—चंदेय सूरेय। चन्द्र १ चपन सूर्य २ चपन। सोहम्मीसाणे सुणंभंतेकप्पेसु। सौधर्म ईशानने हे भगवन्! देवलोकने विषे। कइदेवाआहेवच्च जाव विहरंति। केतलादेव स्वामीपणो भोगवता थका यावत् विचरेछे

॥ टीका ॥

एव सोमादय' प्रतिलोक वाच्याः' नतु भवनपतीन्द्राणामिवा परापरे॥ जेयइंदातेयभाणियव्वा॥ शक्रादयो दशेन्द्रावाच्या, अतिमदेवलोकचतुष्टय इंद्रद्वय प्रावात् ॥ इति तृतीयशतेऽष्टम ॥ ८ ॥ देवानाचा वधिज्ञानसद्भावेपी न्द्रियोपयोगो प्यस्त्यत इन्द्रियविषय निरूपय न्नवमोद्देशक माह॥ रायगिहेत्यादि॥ जीवाभिगमे॥ जोइसियउद्देसउनेयव्वोत्ति॥ सचाय—सोइंदियविसए जाव फासिंदियविसए सोइंदियविसएणं भंते। पोग्गलपरि

॥ मूल ॥

दसदेवा जाव विहरंति तंजहा—सक्के देविंदे देवराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे । ईसाणे देविंदे देवराया सोमे जमे वरुणे वेसमणे एसा वत्तव्वया सव्वेसुवि कप्पेसु एएचेव भाणियव्वा जेय इंदा तेभाणियव्वा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तइयसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ३ ॥ ८ ॥ रायगिहे जाव एवंवयासी, कइविहेणं भंते ! इंदियविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए पण्णत्ते तंजहा—सोइंदियविसए

॥ भाषा ॥

इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दसदेवा जाव विहरति तजहा। हेगोतम। दशदेव स्वामोपणो यावत् भोगवता विचरै ते कहैछे—सक्केदेविंदेदेवराया। शक्र देवेन्द्र देवराजाये। सोमे जमे वरुणे वेसमणे ईसाणेदेविंदेदेवराया। सोम यम वरुण वैश्रमण इम ईशान देवेन्द्र देवराजा। सोमे जमे वरुणे वेसमणे ए सावत्तव्वया सव्वेसुविकप्पेसु एएचेवभाणियव्वा जेयइंदा तेयभाणियव्वा। सोम १ यम २ वरुण ३ लोकपाल ८ वैश्रमण ४ एवं १० एह सौधर्म ईशाने कही वक्तव्यता ते सगलाही देवलोकने विषे इन्द्र निवासभूतन विषे वक्तव्यता कहवी सनत्कुमारादि केइन्द्रनेविषे पूठिला इन्द्रनो अपेक्षायें उत्तरेन्द्र सबन्धी लोकपाल त्रीजा चौथा विपरीत कहवा तथा एहीज सोमादिक लोकपाल प्रत्येके देवलोक प्रते कहवा पणि भवनपतीनो परें नवा नवा नामनही जे शक्रादिक दश इन्द्रछे ते कहवा छेहला चारदेवलोकने विषे इन्द्रहै तेमाटे दशइन्द्र सर्व। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हे कह्यु सर्व सत्यछे अन्य थानही। तइयसयस्सअट्ठमओ उद्देसोसम्मत्तो ३ ८। ए त्रीजा शतकनो आठमो उद्देशो पूरोथयो ॥ ८ ॥ देवने अवधिज्ञान थका प णि इन्द्रीना उपयोगछे एतलामाटे इन्द्रिय विषय निरूपण करतो नवमो उद्देशो कहैछे—रायगिहेणयरे जाव एववयासी। राजगृह नगरने विषे

णामे कइविहे पण्णत्ते ? गो० ! दुविहे तंजहा सुब्भिसद्दपरिणामेय दुब्भिसद्दपरिणामेय [शुभाशुभशब्दपरिणाम इत्यर्थः] चक्खिंदियविसयपुच्छा गो०। दुविहे प० त० सुरूवपरिणामेय दुरूवपरिणामेय, घाणिंदियविसयपुच्छा गो० । दुविहे प० त- सुब्भिगंधपरिणामेय दुब्भिगंधपरिणामेय, एवजिब्भिंदियविसए सुरसपरिणामेय दुरसपरिणामेय फासिंदियविसए सुफासपरिणामेय दुफासपरिणामेय इत्यादिवाच्यं, वाचनान्तरे-इंदियविसए उच्चावयसुब्भिणोत्ति दृश्यते तत्रेन्द्रियविषयसूत्रं दर्शितमेव उच्चावयसूत्रं त्वेवं-सेणूणं भंते! उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं परिणममाणापोग्गलापरिणमंतीति वत्तव्वंसिया? हंता गोयमा! इत्यादि ॥सुब्भिणोत्ति ॥ इदसूत्रं पुनरेवं-सेणूणं भंते! सुब्भिसद्दपोग्गलादुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति? हंता गोयमा!

जीवाभिगमे जोइसियउद्देसगो नेयव्वो अपरिसेसो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ तइयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥

यावत् त्यां गौतम सेवा करतां इम कहेछे—कइविहेणंभंते इंदियविसए पण्णत्ते गोयमा। कतिभेदे हेभगवन् ! इन्द्रिय विषय कह्या इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम। पंचविहे इंदियविसए पण्णत्ते तंजहा। पंचभेदे इन्द्रिय विषय कह्या ते कहे छे—सोइंदियविसए जीवाभिगमे। श्रोत्रेन्द्रिय विषय एजीवाभिगम उपांगे कह्यो तिम कहवो ते इम ,सोइंदियविसएणंभंतेपोग्गलपरिणामे कइविहेपण्णत्ते गोयमा दुविहेपण्णत्ते तंजहा सुब्भिसद्दपरिणामेय दुब्भिसद्दपरिणामेय, शुभ अशुभ शब्दपरिणाम,इत्यर्थः ,चक्खिंदियविसयपुच्छा, गोयमा दुविहे पण्णत्ते तंजहा ,सुरूवपरिणामेय दुरूवपरिणामेय, घाणिंदियविसयपुच्छा, गोयमा दुविहे पण्णत्ते तंजहा, सुब्भिगंधपरिणामेय दुब्भिगंधपरिणामेय, एवं जिब्भिंदियविसयपुच्छा, सुरसपरिणामेय दुरसपरिणामेय, इत्यादि वाचनान्तरे इंदियविसए उच्चावय सुब्भिणोत्ति, एहवो पाठ दीसेछे—तिहां इन्द्रियविषय सूत्र देखाड्यो छीज पते उच्चावयसूत्र देखाडेछे—सेणूणंभंते उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं, परिणममाणापोग्गला परिणमंतित्ति वत्तव्वंसिया हंतागोयमा इत्यादि सुब्भिणोत्ति, ए सूत्र वली इम कह्यो सेणूणंभंते सुब्भिसद्दपोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति हंता गोयमा इत्यादि। जोइसियउद्देसगोणेयव्वो अपरिसेसो। ज्योतिषीनो उद्देशो अपरिशेष जाणवो। तइयसए नवमोउद्देसोसम्मत्तो ३ ८। ए त्रीजा शतकनो नवमो उद्देशो अर्थनो कह्यो ॥ ८ ॥ पाछिले उद्देशे इन्द्र कह्या ते इन्द्रियवंत दे

इत्यादि ॥ इतितृतीयशतेनवम ॥ ६ ॥ प्राणिन्द्रिया ण्युक्तानि तद्वन्तश्च देवाइति देववक्तव्यताप्रतिबद्धो दशम उद्देशक सच सुगमएव नवर ॥ समियत्ति ॥ समिका उत्तमत्वेन स्थिरप्रकृतया समवती स्वप्रभोर्वा, कोपौत्सुक्यादिभावान् शमय त्युपादेयवचनतयेति श मिका, शमितावा, अनुद्धता ॥ चडत्ति ॥ तथाविधमहत्वाभावेने पत्कोपादिनावा चडा ॥ जायत्ति ॥ प्रकृतिमहत्त्ववर्ज्जितत्वेना स्थानकोपादीना जातत्वा ज्जाता, एपाच क्रमेणाभ्यन्तरा मध्यमा बाह्याचेति, तत्राभ्यन्तरा समुत्पन्नप्रयोजनेन प्रभुणा गौरवार्हत्वा दाकारितैव पार्श्वं समागच्छति, ताचासावर्थपद पृच्छति, मध्यमातू भयथाप्यागच्छति अल्पतरगौरवविषयत्वात्, अभ्यन्तरया चा दिष्टमर्थपद तयासह प्रवभाति ग्रन्थिबन्धङ्करोतीत्यर्थ, बाह्या त्वनाका रितैवा गच्छति अल्पतमगौरवविषयत्वा त्तस्या अर्थपद वर्णयत्येव, तत्र द्याया चतुर्विंशति दैवाना सहस्राणि, द्वितीयाया मष्टाविंशति, स्तृती

रायगिहे जाव एवंवयासी, चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा !

वर्छे तेमाटे देव वक्तव्यता प्रतिबद्ध दशमो उद्देशो कहैछे—रायगिहेणयरे जावएववयासी । राजगृह नगरने विषे श्रीगौतमस्वामी इम कहै । चमरस्स णभते असरिंदस्स असुररण्णो कइपरिसाओ पणत्ता गोयमा तओपरिसाओ पणत्ता तजहा समिता चडा जाया । चमरने हेभगवन् ! असुरेन्द्रने अ सुरराजाने कितलो परिषदा कही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । तीन परिषदा कही ते कहैछे—उत्तमपणें करीने स्थिर प्रकृतिक उपशमवन्त अथवा आप णास्वामोने कोप जपना भला उपादेय वचनकही कोप उपशमावै ते शमिका अथवा शमिता कहीये उद्धतनही १ चडत्ति । तथाविधस्वभाव उत्कृष्ट ने अभावे करी थोडोसो क्रोधहुवे, तेमाटे चण्डा कहीये २ उत्तमस्वभाव रहितपणामाटे कोपादिकना स्थानक थको जाताकहीये ३ एहने अनुक्रमे अभ्य तरामध्यमा बाह्य। तिहा अभ्यतर परिषदा ते ज नाये जे राजे महर्द्धिक पणामाटे स्वामी तेडे तिवारेज समीपेजाय स्वामी तेहने प्रयोजन नपूछे १ मध्यमा ते स्वामी तेडे अथवा नतेडे तोपिण स्वामी समीपेजाय मध्यमा ऋद्धिमाटे अभ्यन्तर परिषदा मध्यपरिषदाने प्रयोजनें कहै एकार्य करे २ तथा बाह्यपरिषदानो अ नतेडो हीज आवै अल्पर्द्धिक पणामाटे मध्यम पर्षदाना एहने कहै एकार्यकरेइज ३ तिहां अभ्यन्तर पर्षदाये चउवीस सहस्रदेव १ बीजीयें अट्ठावीस सहस्र २ त्री

यामा द्वात्रिंशदिति, तथा देवीशतानि क्रमेणाध्युष्टानि त्रीणि सार्द्धंच द्वे इति, तथा तद्देवाना मायु: क्रमेण द्वंतृतीयानि पल्योपमानि द्वेसार्द्धंचेति, देवीना तु सार्द्ध मेकं तदर्द्धंचेति, एवं बलेरपि, नवर देवप्रमाणं तदेव चतुश्चतु: सहस्रहीनं, देवीमानंतु शतेन शतेना धिकमिति आयुर्मानमपि तदेव, नवर पल्योपमाधिकमिति, एव मच्युतान्ताना मिन्द्राणां प्रत्येक तिस्र: पर्षदो भवन्ति, नामतो देवादिप्रमाणत: स्थितिमानतश्च क्वचि त्कि चिद्भेदेन भेदवत्य स्ताश्च जीवाजिगमादवसेया: ॥ इतितृतीयशतेदशम: ॥ १० ॥ समाप्तञ्चतृतीयशत ॥ श्रीपञ्चमाङ्गस्यशततृतीय

तत्र परिसाउ पसत्ताउ तजहा—समिया चंडा जाया एवं जहाणुपुव्वीए जाव अच्चुउ कप्पो सेवं भंते भंतेत्ति तइयसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ३ ॥ १० ॥ तइयं सयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥

तेहनी परिषदा सम्यक्त प्रकारे ... जीय वत्तोस सहस्र २ तथा देवो अभ्यन्तर परषदाये साडेतोनसे ३५० मध्यमायें तोनसे ३०० बाहिरली परिषदाये २५० ते देवनो आउखो अभ्यन्तरे अढा ईं पल्योपम १ दोय पल्योपम २ डोढ पल्योपम २ इणो तो दोढ १॥ एक २ आधा २ ए असुरने कह्या इम बलिने पणि एतलो विशेष पूर्वं देवनो प्रमाण कह्यो ते माहे चार २ सहस्र होनकहवा अने देवीनामानमाहे प्रत्येके एक २ सो अधिक कहवा आउखानोमान पणि तेहोज एतलो विशेष जे पल्योपम अधिक कहवो एवंजहाणुपुव्वीए जावअच्चुओकप्पो । इम जिम अनुक्रमें यथानुपूर्वीयें यावत् अच्युत देवलोक पर्यंत इन्द्रनी तीन २ प्रत्येके पर्षदाछे ते नामथी प्रमाणथी स्थितिमा नथी किहां एककांइक भेदें करी जीवाभिगमथी जाणवा । सेवभंतेरत्ति ॥ ततियसय सम्मत्त ॥ तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अ न्यथा नही एत्रीजा शतकनो दशमों उद्देशो अर्थथी कह्यो एत्रीजो शतक अर्थथी पूरोथयो ॥ ॥ १० ॥ ३ ॥

———०ॐ०———

॥ टीका ॥

श्रीपञ्चमाङ्गस्यशततृतीयं व्याख्यातमाश्रित्यपुराणवृत्ती॰ ॥ शक्तोपिगन्तुंभजतेहियानं पान्थ सुरार्थंकिमुयोनशक्तः ॥ १ ॥ तृतीयशते प्रायेण देवाधिकार उक्तो त॰ प्रायस्तदधिकारवदेव चतुर्थशत, तस्य पुनरुद्देशकार्थाधिकारसङ्ग्रहाय गाथा॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्तार्था ॥ अच्चणियत्ति ॥ सिद्धायतने जिनप्र

॥ मूल ॥

चत्तारिविमाणेहिं चत्तारियहोंतिरायहाणीहिं । नेरइएलेस्साहिय दसउद्देसाचउत्थसए ॥ १ ॥ रायगिहे णगरे जाव एवं वयासी—ईसाणस्सणं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो कइलोगपाला पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पन्नत्ता, तंजहा—सोमे १ जमे २ वरुणे ३ वेसमणे ४ एएसिणं भंते ! लोगपालाणं कइविमाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि विमाणा पन्नत्ता तंजहा—सुमणे सव्वओभद्दे वग्गू सुवग्गू । कहिणं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारन्नो सुमणेनाम महाविमाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवेदीवे मंद

॥ भाषा ॥

त्रीजे शतकें प्राये देवाधिकार कह्यो एकारणे प्रावै ते अधिकारनो परे चौथो कहीये छे तिहां उद्देशक अर्थाधिकारे संग्रह गाथा कहेछे । चत्तारिविमाणेहिं । च्यारि विमानना च्यारि उद्देशा । चत्तारियहोंतिरायहाणीहिं । च्यारि राजधानीना च्यारि उद्देशा एव आठ उद्देशा । णेरइएलेस्साहिय । नारकी नो उद्देशो ९ लेश्याधिकार १० । दसउद्देसाचउत्थसए । ए दश उद्देशा चौथा शतक नें विषे जाणवा । रायगिहेणयरे जावएव । राजगृह नगर नें विषे श्री गोतम यावत् इम । एववयासी । कहता हुआ । ईसाणस्सणंभंते । ईशाननैंण हेभगवन् । देविंदस्सदेवरण्णो । देवेंद्रनें देवराजानें । कइलोगपालाणं । केतला लोकपाल कह्या । गोयमा चत्तारिलोगपाला प त । हे गोतम च्यारि लोकपाल कह्या ते कहेछे । सोमे । सोम । जमे । यम । वेसमणे । वैश्रमण ३ । वरुणे । वरुण ४ । एएसिणं भंतेलोगपालाण । एहनेंण हे भगवन् लोकपालना । कइविमाणाप । केतला विमान कह्या इति प्रश्न । गो चत्तारिविमाणा प त । हे गोतम च्यारि विमान कह्या ते कहेछे । सुमणे । सुमन १ । सव्वओभद्दे । सर्वतो भद्र २ । वग्गू । वलगु ३ । सुवग्गू । सुवलगु ४ । कहिणंभते । किहां हे भगवन् । ईसाणस्सदेविंदस्सदेवरण्णो । ईशाननो देवेंद्रनो देवराजानो । सोमस्समहारण्णो । सोम महाराजानो । सुम

रस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव ईसाणेनामं कप्पे पन्नत्ते ? तत्थणं जाव पंचवडंसया पन्नत्ता तंजहा—अंकवडंसए फलिहवडंसए रयणवडंसए जाइरूववडंसए मज्झे तत्थ ईसाणवडंसए तत्थणं ईसाणवडंसयस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीइवइत्ता एत्थणं ईसाणस्स ३ सोमस्स २ सुमणेनामं महाविमाणे पन्नत्ते अद्धतेरसजोयणजहा सक्कस्सवत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्सवि जाव अच्चणिया सम्मत्ता । चउण्हवि लोगपालाणं विमाणे २ उद्देसत्ते चउसुविविमाणेसु चत्ता

पेणाममहाविमाणे प । सुमन नामे महा विमान कह्यो । गो जंबुद्दीवेदीवे । हे गौतम जंबूद्वीप नामा द्वीपने विषे । मंदरस्सपव्वयस्स । मेरुनामा पर्वतने । उत्तरेण । उत्तरदिशि । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए । आ रत्नप्रभा पृथिवीये । जावईसाणेणामकप्पे प । यावत् ईशान नामा देवलोक कह्यो । तत्थणजाव पंचवडसए प तं । तिहा णं यावत् पांच अवतंसक विमान कह्या ते कहेछे । अंकवडसए । अंकावतंस १ । फलिहवडसए । स्फटिकावतंसक २ । रयणवडसए । रत्नावतंसक ३ । जायरूववडसए । जातरूपावतंसक ४ । मज्झेतत्थईसाणवडसए । विचाले तिहां ईशानावतंसक ५ । तेणईसाणवडसयस्स । ते हने ईशानावतंसक । महाविमाणस्स । महाविमानने । पुरच्छिमेण । पूर्व दिशि । तिरियमसंखिज्जाइ जोअणसहस्साइं वीईवइत्ता । पोंछी असंख्याता योजन सहस्र अतिक्रमी जाईने । एत्थणईसाणस्सदेविंदस्सदेवरणो । तिहां ईशानना देवेन्द्रना देवराजाना । सोमस्समहारणो । सोमनामे महाराजा ने । सुमणेणामं महाविमाणे प । सुमन नामे महा विमान कह्यां । अद्धतेरसजोअणजहा सक्कस्सवत्तव्वया तइयसए तहाईसाणस्सवि जावअच्चणियासम्मत्ता । साढी बारे लाख योजन प्रमाण कह्यो इत्यादि जिम शक्र सौधर्मेन्द्रनी वक्तव्यता कही तिम ईशानेंद्रनी पणि कहवी यावत् सिद्धायतन जिन प्रतिमादिकनी पूजियो तत्कालना ऊपना सोमनाम लोकपालने कहवो इत्यादि । चउण्हविलोगपालाणविमाणे२ उद्देसओ । च्यारेई लोकपालने विमानविमानने विषे उद्देशो कहवो । चउसुविविमाणेसुचत्तारिउद्देसाअपरिसेसा । च्यारेई विमानने विषे च्यारि उद्देशा निरवशेष समस्त जांणवा

॥ टीका ॥

तिमाद्यर्चन मज्जिनवोत्पन्नस्य सोमाख्यलोकपालस्येति चतुर्थंचत्वार ॥ ४ ॥ रायहाणीसु चत्तारिउद्देसया जाणियव्वा, तेचेवं–कहिणं भंते। ईसाणस्स देविंदस्स देवरणो सोमस्स महारणो सोमानामं रायहाणी पणत्ता गोयमा ॥ सुमणस्स महाविमाणस्स अहेसपक्खिइत्यादि ॥ पूर्वोक्तानुसारेण जीवाभिगमोक्त विजयराजधानीवर्णकानुसारेण चैकैक उद्देशको ध्येतव्यइति' नन्वे ता राजधान्य किल सोमादीनां शक्रस्येशानस्यच सम्बन्धिना लोकपालाना प्रत्येक चतस्र एकादशे कुण्डलवराभिधानद्वीपे द्वीपसागरप्रज्ञप्त्या श्रूयन्ते, उक्तहितत्सग्रहिण्यां–कुण्डलनगस्सअब्भि तरपासे

॥ मूल ॥

रि उद्देसा अपरिसेसा णवरं ठिईए नाणत्तं आइदुगइभागूणा पलियाधणयस्सहोंतिदोचेव । दोसइभागा वरुणे पलियमहावच्चदेवाणं ॥ १ ॥ चउत्थसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ४ ॥ ४ ॥ रायहाणीसु

॥ भाषा ॥

शक्रना लोकपालनी परे। णवरठिईएणाणत्त। एतलो विशेष स्थितिने विषेभेद कहवा ते कहेछे। आइदुयतिभागूणा । सोम यमनो आउखो त्रिभागून दोय पल्योपम जाणवो । पलियाधणयस्सहोंतिदोचेव । धनदनो आउखो दोय पल्योपम निश्चये । दोसतिभागावरुणे। दोय पल्योपम त्रीजे भाग अधिक वरुणनो। पलियमहावच्चदेवाण ४। आउखो अपत्य स्थानीय देवनू एक पल्योपम आउखो जाणवो एचौथा शतकना चारउद्देशा थया ॥ ४ ॥ हवे चारि उद्देशा राजधानीनां कहेछे—रायहाणीसुवि इत्यादि। राजधानीने विषे पणि चार उद्देशा कहवा ते इम कहणभते ईशाणस्स देविंदस्स देवरणो सोमस्समहारणो सोमाणामरायहाणी पणत्ता, किसे स्थानके ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । ईशान देवेन्द्र देवराजानो सोमनाम महाराजानी सोमा इसेनामे राजधानी कही इतिप्रश्न गोयमा सुमणस्समहाविमाणस्स अहेसपक्खिं इत्यादि हेगोतम। सुमननाम महाविमानने नीचे चारेई दिशे इत्यादि पहिला सौधर्मेन्द्र सोमलोकपालनी राजधानीनो वक्तव्यताकही तिणि अनुसारे करी तथा जीवाभिगमने विषे विजयदेव राजधानीने अनुसारे करी एक२ उद्देशो कहवो, विमाननी परिपाटीलगे सर्वजाणवी इहा कोइक पूछस्ये ए शक्र ईशान सबन्धी सोमादिक लोकपालनी राजधानी प्रत्येके चार२ इग्यारमे कुण्डलवरनामा द्वीपने द्वीपसागर पणत्तीनामा सूत्रने विषे साम्भलीयेछे तिहां लोकपालनी राजधानीनो अधिकार कहो अर्थ संग्र

होतिरायहाणीउ ॥ सोलसउत्तरपासे सोलसपुणदक्खिणेपासे ॥ १ ॥ जाउत्तरेणसोलस ताउ ईसाणलोगपालाण ॥ सक्कस्सलोगपाला णदक्खिणेसो लसहवंति ॥ २ ॥ एताश्च सोमप्रभयमप्रभवरुणप्रभाभिधानाना पर्वताना प्रत्येक चतसृषु दिक्षु भवन्ति, तत्र वैश्रमणनगरी रादौ कृत्वा ऽभिहित, मज्झेहोइचउण्ह वेसमणपभोनगुत्तमोसेलो॥ रइकरगपव्वयसमो उव्वेहुच्चत्तविक्खंभो ॥ ३ ॥ तस्सयनगुत्तमस्सउ चउद्दिसिंहोतिरायहाणीउ ॥ जंबूद्दीवस माउ विक्खंभायामउताउ ॥ ४ ॥ पुव्वेणअयलभद्दा समक्कारायहाणिदाहिणाउ ॥ अवरेणउकुबेरा धणप्पभाउत्तरेपासे ॥ ५ ॥ एएणेवकमेण वरु णस्सविहोंति अवरपासम्मि ॥ वरुणप्पभसेलस्सवि चउद्दिसिरायहाणीउ ॥ ६ ॥ पुव्वेणहोइवरुणा वरुणपभादक्खिणेदिसीभाए ॥ अवरेणहोइकुमुया उत्तरउपुंडरिगिणीया ॥ ७ ॥ एएणेवकमेण सोमस्सविहोंतिअवरपासम्मि ॥ सोमप्पभसेलस्सवि चउद्दिसिंरायहाणीउ ॥ ८ ॥ पुव्वेणहोइसोमा सोम

इणी गाथायें कह्युछे ते गाथा लिखियेछे—कुंडलनगस्सअब्भि तरपासेहोंतिरायहाणीओ। सोलसउत्तरपासे सोलसपुणदाहिणेपासे ॥ १ ॥ कुंडलनामा प र्वतने अभ्यंतरे सोले राजधानी उत्तरदिशेछे तथा वली सोलै दक्षिणपासेछै १ जाउत्तरेणसोलस ताओ ईसाणलोगपालाणं । सक्कस्सलोगपाला णदक्खिणे सोलसहवंति ॥ २ ॥ जे उत्तरनी सोलेराजधानी ते ईशानना लोकपालनी जाणवी जे दक्षिणे सोलै राजधानी ते शक्रना लोकपालनी जाणवी २ ए सो म प्रभ १ यम प्रभ २ वैश्रमण प्रभ ३ वरुण प्रभ ४ नामे पर्वतने प्रत्येके चारेइ दिशिने विषेछे तिहा वैश्रमण नगरी आदिदेई कह्योछे—मज्झेहोइचउण्ह वेसमणपभोनगोत्तमोसेलो । रइकरपव्वयसमो उव्वेहुच्चत्तविक्खंभो ॥ १ ॥ तस्सयनगुत्तमस्सउ चउद्दिसिंहोंतिरायहाणीओ । जंबूद्दीवसमाओ विक्खंभायामओ ताओ ॥ २ ॥ पुव्वेणअयलभद्दा समक्कारायहाणिदक्खिणओ [समक्कासा एहवू राजधानीनो नामछे] अवरेणउकुबेरा धणप्पभाउत्तरेपासे ॥ ३ ॥ एएणेव कमेण वरुणस्सविहोंतिअवरपासम्मि । वरुणप्पभसेलस्सवि चउद्दिसिरायहाणीओ ॥ ४ ॥ पुव्वेणहोइवरुणा वरुणप्पभदक्खिणेदिसीभाए । अवरेणहोइकुमुया उत्तरओपुंडरगिणीया ॥ ५ ॥ एएणेवकमेण सोमस्सविहोंतिअवरपासम्मि । सोमप्पभसेलस्सवि चउद्दिसिरायहाणीओ ॥ ६ ॥ पुव्वेणहोइसोमा सोमप्पभ

प्पन्नदक्खिणेदिसीभाए ॥ सिवपागाराअवरे णाहोइनलिणायउत्तरओ ॥ ९ ॥ एएणेवकमेणं अतकरस्सवियहोतिअवरेण ॥ समवत्तिप्पन्नसेलस्स चउद्दिसिरायहाणीओ ॥ १० ॥ पुव्वेणउविसालाअईविसालाउदाहिणेपासे ॥ सेज्जप्पभावरेणं अमयापुणउत्तरेपासे ॥ ११ ॥ इति, इहच ग्रंथे सौधर्म्मावतसका दीशानावतसकाच्चा सख्येय योजनकोटी र्व्यतिक्रम्य प्रत्येक पूर्वादिदिक्षु स्थितानि यानि सध्याप्रभादीनि सुमन प्रभृतीनिच विमानानि तेषामधोऽसंख्यातायोजनकोटी रवगाह्य प्रत्येक मेकैका नगर्युक्ता तत कथनविरोध? इत्यत्रोच्यते' अन्या स्ता नगर्यो या कुण्डले ऽभिधीयते एताश्चान्याइतियथा शक्रेशानाग्रमहिषीणा नन्दीश्वरद्वीपेकुण्डलद्वीपेचेति॥ इतिचतुर्थशतेऽष्टम ॥ ८ ॥ अनन्तर देववक्तव्यतो क्ता ऽथवैक्रियशरीरसाधर्म्यान्नारकवक्तव्यता प्रतिवद्धो नवमोद्देशक उच्यते, तत्रे दमादिसूत्र ॥ णेरइएणमित्यादि ॥ लेस्सापदेत्ति ॥ सप्तदशपदे ॥ तइओउद्देसओनाणियव्वोति॥ क्वचित्

विचत्तारि उद्देसया नाणियव्वा जाववरुणेमहाराया चउत्थसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ४ ॥ ८ ॥

दक्खिणेदिसीभाए। सिवपागाराअवरे णाहोइनलिणायउत्तरओ ॥ ७ ॥ एएणेवकमेण अतकरस्सवियहोतिअवरेण। समवत्तिप्पभसेलस्स चउद्दिसिरायहाणीओ ॥ ८ ॥ पुव्वेणउविसाला अइविसालाउदाहिणेपासे । सेज्जप्पभअवरेण अमायापुणउत्तरेपासे ॥ ९ ॥ इति ए राजधानो तो इम कहेछे—अने इहा ग्रन्थनेविषे सौधर्मावतसक थको तथा ईशानावतसक थको असख्येय योजन कोटि अतिक्रमीयें जाइये तिहा प्रत्येके पूर्वादिदिशि रह्या सध्याप्रभ आदि सुमनसप्रभृति विमान तेहने नीचे असख्यातायोजनकोटिअवगाहीजे तिहा प्रत्येके एक २ राजधानो इस कह्य इहा विरोध किम तिहा उत्तर कहेछे—ज कुण्डलने विषे नगरो कहो ते अनेरी अने ए अनेरी जिम शक्र ईशान अग्रमहिषोनो नन्दोस्वरद्वीपे तथा कुण्डलद्वीपेंछे तिम ए पणि जाणवो यावत् एहवो महर्धिकछे यावत् चौथो ईशानेन्द्रनो वरुणनाम महाराजा लोकपाल एतलालगे कहवो ए चारेइ राजधानीना चार उद्देशा जाणवा ए चौथा शतकनो आठमो उद्देशो अर्थथको कह्यो ४ ॥ ८ ॥ पाछिले उद्देशे देव वक्तव्यता कही ॥ हिवे वैक्रियशरीर सामर्थ्य थको नारक प्रतिवद्ध नवमो उद्देशो कहेछे—तिहा प्रथम सूत्रएह। णेरइएणभते णेरइएसुउववज्जइ अणेरइएणभते णेरइएसुउववज्जइ पन्नवणाएलेस्सपदे तइयउद्

द्वितीय इतिदृश्यते, सचापपाठइति, सचैवं–गोयमा ! नेरइएनेरइएसु उववज्जइ णो अनेरइएसु उववज्जइ इत्यादि, एयंचास्यार्थ नैरयिकेपू त्पद्यते न पुन रनैरयिक कथ पुनरे तदुच्यते यस्मा नारकादिभवोपग्राहक मायु रेवातो नारकाद्यायु प्रथमसमयसवेदनकालएव नारकादिव्यपदेशो भवति ऋजुसूत्रन यदर्शनेन यत उक्त नयविद्भि ऋर्जुसूत्रस्वरूपनिरूपण कुर्वद्भि–पलाल नदहत्यग्नि र्दिह्यतेन घट' क्वचित् । नशून्यान्निर्गमोस्तीह नचशून्यप्रविश्यते ॥१॥ नारकव्यतिरिक्तश्च नरकेनोपपद्यते । नरकान्नारकाश्चास्य नकश्चि द्विप्रमुच्यते ॥ २ ॥ इत्यादीति ॥ जावनाणाइति ॥ अथ सुद्देशको ज्ञानाधिकारावसा नो ध्येतव्य सचाय ॥ कण्हलेसेणं भंते । जीवे कइसुनाणेसु होज्जा ? गोयमा । दोसुवातिसुवाचउसुवानाणेसुहोज्जा, दोसुहोज्जमाणेआभिणिवोहियसुयनाणे सुहोज्जा इत्यादि ॥ इतिचतुर्थशतेनवम ॥ ९ ॥ लेश्याधिकारा त्तद्वतएव दशमोद्देशकस्ये दमादिसूत्र ॥ सेनूणमित्यादि ॥ तारूवत्ता एत्ति ॥ तदरू

नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? पन्नवणाएवि लेस्सापए तइउ उद्देसउ भाणियव्वो जावनाणाइं । चउत्यसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ४ ॥ ९ ॥ सेनूणं भंते !

देसओभाणियव्वो जावणाणाइं ४ ९ । नारको ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ! नारकोने विषे ऊपजे अथवा नारको नही ते अनारको कहीये ते णं वा क्यालकारे, हेभगवन् । नारकोने विषे ऊपजे इतिप्रश्न हेगौतम । पन्नवणाना सतरमा पदना त्रीजा उद्देशाथी जाणवो किहा एक पुस्तके बीजा उद्दे शाथी एहवूं दीसेछे—ते अपपाठ जाणवो तिहा इमछे गोयमा ,णेरइएणेरइएसुउववज्जइ णोअणेरइएणेरइएसुउववज्जइ, नारकोनारकोने विषे ऊपजे पणि अनारको नारकोने विषे ऊपजे ते किम नारकादि भवनो उपग्राहक आऊखो होजछे एतलामाटे नारकादिकनो आऊखो प्रथमसमय सवेदनकालने विषे होज नारक एहवोकहीये नारकथो वोजो नारकोने विषे नउपजे नारकथो नारक एहने नकोइं मूकावे इत्यादि यावत् ए उद्देशो ज्ञानाधिकार पर्यन्त कहवो ते इम कण्हलेसाणभंते जीवे कइसुणाणेसुहोज्जा, गोयमा दोसुहोज्जमाणेआभिणिवोहियणाणेसुअणाणेसुहोज्जा इत्यादि ॥ चउत्यसए नवमो उद्देसो ॥ ए चौथा शतकनो नवमो उद्देशो अर्थथोकह्यो ॥ ९ ॥ पूर्वलेश्यानो अधिकार कह्यो लेश्यावतनो होज दशमो उद्देशो कहेछे—तेह

॥ टीका ॥

तयारूपतया नीललेश्यास्वभावेन, एतदेव व्यनक्ति॥ तावन्नत्ताएत्ति॥ तस्याइव नीललेश्याया इव वर्णो यस्याः सा तद्वर्णातद्भाव स्तत्ता तया तद्वर्णतया एवं चउत्थो उद्देसउ इत्यादिवचना देव द्रष्टव्य,तागधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताएभु ज्जोरपरिणामइहंता गोयमा। कण्हलेसा नीललेसपप्प तारूवत्ताए भुज्जोरपरिणामइ, अय मस्य भावार्थो यदा कृष्णलेश्यापरिणतो जीवो नीललेश्यायोग्यानि द्रव्याणि गृहीत्वा कालंकरोति, तदा नीललेश्यापरिणत उत्पद्यते' जल्लेसाइ दव्वाइं परियाइत्ता कालंकरेइ तल्लेसे उववज्जइ त्तिवचनात्,अत कारणमेव कार्यंभवति, कण्हलेसा नीललेसपप्पेत्यादितु कृष्णनीललेश्ययोर्भेदपरमुपचारादुक्तमिति' सेकेणठेणं भंते। एवं वुच्चइ कण्हलेसा नीललेसं पप्प तारूवत्ताए५ भुज्जो२ परिणमइ? गोयमा। से जहानामए खीरे दूसिं पप्प (तक्रमित्यर्थ) सुद्धेवा; वत्थे राग पप्प तारूवत्ताए ३ भुज्जो २ परिणमइ से एएणठेणं गो। एववुच्चइ कण्हलेसाइत्यादि' एतेनैवा भिलापेन नीललेश्याकापोती, का

॥ मूल ॥

कण्हलेस्सा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए तावन्नत्ताए एव चउत्थो उद्देसउ पन्नवणाएचेव लेस्सापदे नेयव्वो

॥ भाषा ॥

नो सूत्रछ। सेणूणभंतेकण्हलेसानीललेस्स पप्प तारूवत्ताए तावन्नत्ताए एव चउत्थोउद्देसोपन्नवणाठाणमप्पवइ। तेनिश्चे हेभगवन्। कृष्णलेश्या परिणत जीव नीललेश्यायोग्य पुद्गललेई कालकरै तो नीललेश्यामाहि ऊपजे कृष्णलेश्यो' नीललेश्या प्रतें पामोने इत्यर्थ ते रूपपणें नीललेश्या स्वभाविकरो एहोज कहेछै नील लेश्यानो परे वर्णछै जेहनो तेहपणें करीने। एव चउत्थो उद्देसओ पन्नवणाएचेवलेस्सा। इम पन्नवणाना सतरमालेश्यापदनो चौथो उद्देशो इहां कहवो एवचनथकोज इहां एतला पद कहवा ,तागधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो२ परिणमति हंतागोयमा कण्हलेसा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, ए एहनो भावार्थ जिवारे कृष्णलेश्या परिणतजीव नीललेश्या योग्य द्रव्यग्रहीने कालकरै तिवारे नीललेश्या परिणत ऊपजे जल्लेसाइदव्वाइं परियाइत्ता कालंकरेइ तल्लेसेसुउववज्जइत्ति इतिवचन थको एतलामाटे कारण तेहीज कार्यहुवे कण्हलेस्से नीललेस्संपप्पेत्यादि, कृष्णलेश्या नील लेश्यानोभेद उपचारथी कह्यो सेकेणट्ठेण एववुच्चइ कण्हलेसा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए जावभुज्जो २ परिणमति गोयमा सेजहाणामएखीरेदूसे पप्प, दूध ते छास प्रते पामोने तथा सुद्धे वावत्थे राग पप्प, निर्मल स्वेतवस्त्र वस्त्रादि रागप्रते पामोने तारूवत्ताए ५ जावभुज्जो २ परिणमति, तेहरूप

पीती तैजसीं, तैजसी पद्मां, पद्मा शुक्लां, प्राप्य तद्रूपत्वादिना परिणमतीतिवाच्यं अथ कियद्दूर मय मुद्देशको वाच्य इत्याह ॥ जावेत्यादि॥ परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वारपरिसमाप्ति यावदित्यर्थं, तत्र परिणामोदर्शितएव तथा ॥ वणत्ति ॥ कृष्णादिलेश्याना वर्णो वाच्य ' सचैव-कण्हलेसाणं भंते! केरिसया वर्णेणं पण्णत्ते इत्यादि उत्तरतु कृष्णलेश्या कृष्णा जीमूतादिवत्' नीललेश्या नीला भृंगादिवत्, कापोती कपोतवर्णा खदिरसारादिवत्, तैजसा लोहिता शशरक्तादिवत्, पद्मा पीता चम्पकादिवत्' शुक्ला २ शङ्खादिवदिति, तथा ॥ रसत्ति ॥ रस स्तासा वाच्य, तत्र कृष्णा तिक्तरसा निम्बादिवत्, नीला कटुकरसा नागरवत्, कापोती कषायरसा अपक्वबदरवत्, तेजोलेश्या अम्लमधुरा पक्वाम्रादिफलवत् पद्मलेश्या कटुकषायमधुररसा चन्द्रप्रभासुरादिवत्, शुक्ललेश्या मधुररसा गुडादिवत्॥ गधत्ति॥ लेश्याना गन्धो वाच्य, स्तत्राद्या स्तिस्त्रो दुरभिगन्धा अन्यास्तुतदितरा॰ ॥ सुद्धत्ति॥ अन्त्या॰ शुद्धा आद्यास्त्वितरा.॥ अपसत्यत्ति॥ आद्या अप्रशस्ता, अन्त्यास्तु प्रशस्ता ॥सकिलिठत्ति॥ आद्या सक्लिष्टा, अन्त्यास्त्वितरा॰ ॥ उगहत्ति॥

प्रतें वार २ परिणमे सेतेणठेण गोयमा, कण्हलेस्से इत्यादि ए आलावानो परे नीललेश्या कापोतलेश्या प्रतें पामीने कापोतलेश्या तेजूप्रते पामीने तेजू पद्मप्रतें पामीने पामोने पद्म शुक्लप्रतें पामीने ते रूपपणें आदिदेई परिणमें इम कहवू ॥ हिवे ए उद्देशो केतला लगे कहवो ते कहेछे—जावपरिणाम वणइ गादि द्वार गाथायें कह्या द्वार तेहनो परिसमाप्ति ताई कहवो ते इम ॥ हिवे ए गाथानो अर्थ लिखियेछे—परिणाम ते पहिलो देखाड्यो ईज तथा वणत्ति, कृष्णादिलेश्यानो वर्ण कहवो ते इम कण्हलेस्साणभंते केरिसयावणेण पण्णत्ता, इत्यादि प्रश्न उत्तर हेगौतम! कृष्णलेश्यानो मेघ स्निग्ध तेह सरोखो वर्ण १ नीललेश्यानो भमरा सरीखो वर्ण २ कापोतलेश्यानो कबूतरसरीखो वर्ण ३ तेजोलेश्यानो रातोवर्ण शशक रक्तनो परै ४ पद्मलेश्यानो पीलोवर्ण चांपाना फूल सरीखो ५ शुक्ललेश्यानो ऊजलोवर्ण शङ्खसरीखो ६ तथा रसत्ति, ते कृष्णलेश्यानो रस कहवो, तिहां कृष्णलेश्यानो घणों तिक्तरस निंबादिकनो परे १ नीललेश्या कटुकरस नागरनो परे २ कापोतलेश्या कषायरसें काचाबोर सरीखो ३ तेजोलेश्यानो रस खटमीठो पा

॥ टीका ॥

अन्त्या उष्णा. स्निग्धाश्च, आद्यास्तु शीता रूक्षाश्च॥ गइत्ति॥ आद्या दुर्गतिहेतवो न्त्यास्तु सुगतिहेतव ॥ परिणामत्ति॥ लेश्याना कतिविधः परिणाम इतिवाच्यं, तत्रा सौजघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदात् त्रिधा, उत्पादादिभेदाद्वा; त्रिधेति ॥ पएसत्ति ॥ आसा प्रदेशा वाच्या, स्तत्र प्रत्येक मनन्तप्रदेशिका एताइति॥ उगाह णत्ति ॥ अवगाहना सां वाच्या, तत्रे ता असख्यातप्रदेशावगाढा ॥ वग्गणत्ति ॥ वर्गणा आसावाच्या, तत्र वर्गणाः कृष्णलेश्यादियोग्यद्रव्यवर्गणा., ताश्चा नन्ताऔदारिकादिवर्गणावत् ॥ ठाणत्ति ॥ तारतम्येन विचित्राध्यवसायनिबन्धनानि कृष्णादिद्रव्यवृन्दानि तानिचा संख्येयानि अध्यवसायस्था नाना मसख्यातत्वादिति ॥ अप्पबहुति ॥ लेश्यास्थानाना मल्पबहुत्वं; तच्चैव। एएसिण भंते–कण्हलेसाठाणाण जाव सुक्कलेसाठाणाणय जहण्णगाणं

॥ मूल ॥

जावपरिणामवण्णरसगंधसुद्धअपसत्थसंकिलिट्ठुण्हा गइपरिणामपएसोगाहणवग्गणाठाणमप्पबहुं सेवं भंते

॥ भाषा ॥

का आम्रफलनी परे ४ पद्मलेश्यानो रस कटुक कषाय मधुररस चन्द्रप्रभा मदिरानो परे ५ शुक्ललेश्यानो रस मधुरो गुडादिकनो परे ६ तथा गंधत्ति, कृष्णादिलेश्यानो गन्ध कहवो तिहा पहिलो कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या एतीन दुर्गंध कहवो तिहा पणि तर तम योगविचारी लेवो तथा छेहलो, तेजूलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ए तीन सुगन्ध कहवो तिहा पणि तर तम योग विचारी लेवो तथा सुद्धत्ति, पहिली तीनलेश्या अशुद्ध कहवो छेहलो तीनलेश्या शुद्ध कहवो इहा पणि तर तम योगविचारी लेवो तथा अपसत्थत्ति, तिहां पहिली तीनलेश्या अप्रशस्त भूंडी छेहली तीन लेश्या प्रशस्त भली तथा संकिलिट्ठत्ति, पहिलो तीनलेश्या संक्लिष्टमेली छेहली तीन असंक्लिष्ट मेलीनहो इहां सगले तर तम योगविचारी लेवो तथा उसिणत्ति, छेहली तीन उष्ण अने स्निग्ध कहवी पहिली कृष्ण नील कापोत ए तीन लेश्या शीत अने रूक्ष कहवी तथा गइत्ति, पहिली तीनलेश्या दुर्गति हेतु छेहली तीनलेश्या सुगतिहेतु तथा परिणामत्ति, लेश्यानो केतलेभेदे परिणाम इम कहवो तिहा परिणाम जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भेदथकी तथा उत्पादादि भेदथकी तथा पएसत्ति, लेश्याना प्रदेश कहवा तिहा ए सर्व प्रत्येके अनन्त प्रदेशीछे तथा ओगाहणत्ति, एहनो अवगाहना कहवी एसर्व प्रत्येके असख्यात क्षेत्र प्रदेशावगाढछे तथा वग्गणत्ति, तथा एहोनो वर्गणा कहवी तिहा कृष्णलेश्या योग्य वर्गणा अनन्तीछे औदारि

॥ टीका ॥

दव्वठयाए ३ कयरे २ हितो अप्पावा? ४ गोयमा! सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसाठाणा दव्वठयाए जहन्नगा नीललेस्साठाणा दव्वठयाए असंखेज्ज गुणा जहन्नगा कण्हलेसाठाणा दव्वठयाए असखेज्जगुणा जहन्नगा तेउलेसाठाणा दव्वठयाए असखेज्जगुणा जहन्नगा पम्हलेसाठाणा दव्वठयाए अस खेज्जगुणा जहन्नगा सुक्कलेसाठाणा दव्वठयाए असखेज्जगुणा इत्यादि ॥ इतिचतुर्थशतेदशम ॥ समाप्तचतुर्थशत ॥ ४ ॥ स्वत सुबोधेपि शते तुरीये व्याख्यामयाकाचिदियविदृब्धा ॥ दुग्धेसदास्वादुतमेस्वभावात् क्षेपोनयुक्त किमुशर्करायाः ॥ १ ॥ चतुर्थशतान्ते लेश्या उक्ता पञ्चमशतेतु प्रायो लेश्यावन्तोनिरूप्यन्त इत्येवं सम्बन्धस्या स्यो द्देशकसङ्ग्रहाय गाथेयं ॥ चपेत्यादि ॥ तत्र चम्पाया रविविषयप्रश्ननिर्णयार्थं

॥ मूल ॥

भंतेत्ति ॥ चउत्थसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ४ ॥ १० ॥ चउत्थं सयं सम्मत्तं ॥ ४ ॥ चंपे १ रवि २ अनिल ३ गंठिय ४ । सद्दे ५ छउ ६ माउ ७ एयण ८ णियंठे ९ । रायगिहं चंपाचं दिमाय १० दसपंचमम्मिसए ॥ १ ॥ तेण कालेण तेण समएण चंपानामं नयरीहोत्था वण्णउ तीसेण चंपाए

॥ भाषा ॥

कादि वर्गणा नोपरे ठाणत्ति, तारतम्यें करी विचित्र अध्यवसाय निबन्धनछे कृष्णादिद्रव्यसमूह ते असख्येयछे जेमाटे अध्यवसायना स्थानक असख्याता छे तेमाटे अप्पबहुत्ति, लेश्या स्थाननो अल्प बहुल कहवो ते इम एएसिणभते कण्हलेस्साठाणाण जाव सुक्कलेस्साठाणाणय जहन्नगाणदव्वठयाए २ कयरे २ हितोअप्पावाबहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवाजहन्नगा काउलेस्सठाणादव्वठयाएजहन्नगा नीललेस्सठाणादव्वठयाए असखेज्जगुणाजहन्नगा कण्हलेस्सठाणादव्वठयाए असखेज्जगुणाजहन्नगा तेउलेस्सठाणादव्वठयाए असंखेज्जगुणाजहन्नगा पउमलेस्सठाणादव्वठयाए असंखेज्जगुणाजहन्नगा सुक्कलेस्सठाणादव्वठयाए असखेज्जगुणा इत्यादि कहवो। सेवभते २ त्ति ४ १० । तहत्ति हेभगवन्! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही। चउत्थसयसम्मत्त ४ । ए चौथा शतकनो दशमो उद्देशो अर्थथी कह्यो एतले चौथो शतक पूरोथयो ॥ ४ ॥ * चौथा शतकने अंते लेश्या कही ते पञ्चमे प्राये लेश्यावन्त कहीयेछे उद्देशकार्थ संग्रहगाथा करेछे—चंपेइत्यादि । चंपेरविअणिलगंठिय सद्देछउमाउएय

॥ टीका ॥

प्रथमउद्देशक ॥ अणिलत्ति ॥ वायु विषयप्रश्ननिर्णयार्थो द्वितीय॰ ॥ गठियत्ति ॥ जालग्रन्थिकाज्ञातज्ञापनीयार्थनिर्णयपरस्तृतीय॰ ॥ सद्देत्ति ॥ शब्दविषयप्रश्ननिर्णयार्थ श्चतुर्थ ॥ छउमत्ति ॥ छद्मस्थवक्तव्यतार्थ॰ पञ्चम॰ ॥ आउत्ति ॥ आठेपोल्पत्वादिप्रतिपादनार्थः षष्ठ ॥ एयणत्ति ॥ पुद्गलाना मेजनाद्यर्थप्रतिपादक सप्तम ॥ नियठेत्ति ॥ निर्ग्रन्थीपुत्राभिधानानगारविहितवस्तुविचारसारोष्टम ॥ रायगिहत्ति ॥ राजगृहनगरविचारणपरोनवम॰ ॥ चपाचंदिमायत्ति ॥ चम्पाया नगर्या चन्द्रमसो वक्तव्यतार्थो दशम , तत्र प्रथमोद्देशके किञ्चिल्लिख्यते ॥ सूरियत्ति ॥ द्वौसूर्यौ जवूद्वीपे द्वयोरेव भावात् ॥

॥ मूल ॥

नयरीए पुण्णभद्देनामं चेइए होत्था वण्णओ सामीसमोसढे जाव परिसापडिगया , तेणं कालेणं तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूईणामे अणगारे गोयमगोत्तेणं जाव एवंवयासी—जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे सूरिया उईणपाईणमुग्गच्छपाईणदाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीण

॥ भाषा ॥

णणियठे । रायगिहेचपाचं दिमायदसपचमम्मिसए ॥ १ ॥ तिहा चम्पा नगरीने विषे सूर्यविषय प्रश्न निर्णयार्थ पहिलो उद्देशो १ अणिलत्ति, वायुप्रश्न निर्णयार्थ २ गठियत्ति, जाल ग्रन्थिका ज्ञात ज्ञापनीयार्थ निर्णय ३ सद्देत्ति, शब्द विषय निर्णयार्थ ४ छउमत्थत्ति, छद्मस्थवक्तव्यतार्थ ५ आउत्ति, आउखा अल्पपणानो प्रतिपादनार्थ ६ एयणत्ति, पुद्गलनो कांपवो इत्यादार्थ निर्णय ७ णियंठेत्ति, निर्ग्रन्थी पुत्रनामा अणगार पूछ्यो वस्तुविचार ८ राजगृह नगर विचार ९ चम्पानगरीने विषे चन्द्रमा वक्तव्यतार्थ दशम १० ए दशउद्देशा पञ्चम शतकने विषे जाणवा १ । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । चपाणामणयरीहोत्था वणओ । चपा इसेनामे नगरी हुवे तेहनो वर्णक उवाई उपागथी कहवो । तीसेण चपाएणयरीए । तेह चपा नगरीयकी ईशान कूणने विषे । पुण्णभद्दे णामचेइएहोत्था वणओ सामीसमोसढे । पूर्णभद्र इसेनामे यक्षनो आयतन तेहनोवर्णक उवाईयकी जाणवो तिहा श्री महावीरस्वामी समोसर्या । जावपरिसापडिगया । यावत् परिषदा वांदी पाछी आप आपणे स्थानके गई । तेणकालेणं तेणंसमएण । ते चौथा आरारूप कालने विषे ते समयने विषे परिषदा वांदी पाछीगई तिवारे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण तपस्वी ज्ञान ऐश्वर्यवन्त श्रीमहावीरदेव चउदो

उदीणपाईणंति॥ उदगेव उदीचीनं प्रागेवच प्राचीनं उदीचीनंच तदुदीच्या आसन्नत्वात्, प्राचीनंच तत्प्राच्या प्रत्यासन्नत्वा दुदीचीनप्राचीनं दिगन्तर क्षेत्रदिगपेक्षया पूर्वोत्तरदिगि त्यर्थः ॥ उग्गच्छ ॥ उद्गत्य क्रमेण तत्रोद्गमन कृत्वे त्यर्थः ॥ पाईणदाहिणाति॥ प्राचीनदक्षिण दिगन्तर पूर्वदक्षिणमित्यर्थ ॥ आगच्छतिति॥ आगच्छत क्रमेणे वा स्त यातइत्यर्थः, इह चोद्गमन मस्तमयच द्रष्टृलोकविवक्षयावसेयं तथाहि येषा मदृश्यौ सतौ दृश्यौ तौ स्याता ते तयो रुद्गमन व्यवहरति येषातु दृश्यौ सता वदृश्यौ स्त स्ते तयो रस्तमय व्यवहरती त्यनियता वुदयास्तमया वाहच–जह २ समए २ वुरओ सचरइनक्खरोगय

मागच्छंति दाहिणपडीणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छंति पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीचिपाईणमागच्छंति ? हंता गोयमा ! जंबुद्दीवेणं दीवे सूरिया उदीचिपाईणमुग्गच्छ जाव उदीचिपाईणमागच्छंति जयाण भंते !

समा तीर्थंकरनो । जेट्ठे अंतेवासो । वडो शिष्य । इंदभूतीणामंअणगारे । इन्द्रभूति इसेनामे घरवास तज्योछे जेणे एहवो साधु इत्यर्थ । गोयमगोत्तेण । गौतम नामे गोत्रने विषे जपनो श्री स्वामोने नमस्कार करी । जावएववयासो । यावत् इम कहताहवा । जंबूद्दीवेणभते दीवे सूरिया । जंबूद्दीपनामा हेभगवन् । द्वीपने विषे बेसूर्य जंबूद्दीपने विषे बेसूर्यंना भावथी । उदीणपादीणमुग्गच्छपादीणदाहिणमागच्छति । उत्तर पूर्व एतले पूर्वदिशिनो अंतरक्षेत्र ईशानकूणि इत्यर्थ तिहा अनुक्रमे ऊगीने पूर्व दक्षिण एतले पूर्व दक्षिणनो अंतरक्षेत्र अग्निकूण इत्यर्थ आवतोथको अनुक्रमे अस्तथाय तथा पादीणदाहिणमुग्गच्छदाहिणपडोणमागच्छति । पूर्व दक्षिण एतले अग्निकूणिने विषे उद्गत्य ऊगीने दक्षिण पश्चिम एतले नैऋतिकूणिने विषे अनुक्रमे अस्तथाय । तथा दाहिण पडोणमुग्गच्छपडोणउदीणमागच्छति । दक्षिण पश्चिम एतले नैऋतिकूणिने विषे ऊगीने पश्चिम उत्तर एतले वायव्यकूणिने विषे अनुक्रमे अस्तथाय । पडीणउदीणमुग्गच्छउदीणपादीणमागच्छति । पश्चिमउत्तर एतले वायव्य कूणिनेविषे अनुक्रमे अस्तथाय आथमे इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जंबूद्दीवेणदीवेसूरियाउदीणपादीणमुग्गच्छजावउदीणपादीणमागच्छति जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्सदाहिण । हांगौतम । जंबूद्दीपनामा द्वीपने विषे बेसूर्यछे ते उदीण, उत्तरपूर्व एतले ईशानकूणिने विषे अनुक्रमे ऊगीने पूर्वदक्षिण एतले अग्निकूणिमे आवे एतले ईशानकूणि सूर्य ऊगी

णे॥ तहतहइत्तविनियमा जायइरयणीइभावत्थो॥१॥ एवचसइनराणं उदयत्थमणाइंहोंतिनिययाइ॥ सइदेसजेएकस्सइ किंचोविवदिस्सएनियमा॥२॥ सइचेवयनिद्दिट्ठो भद्दमुहुत्तोकमेणसव्वेसि॥ केसिचीदाणिपिय विसयपमाणोरवीजेसि॥३॥ इत्यादि, अनेनचसूत्रेण सूर्यस्य चतसृषु दिक्षु गतिरुक्ता ततश्च ये मन्यन्ते सूर्यं पश्चिमसमुद्रं प्रविश्य पातालेन गत्वा पुन. पूर्वसमुद्रे उदेतीत्यादि, तन्मतं निषिद्धमिति, इहच सूर्यस्य सर्वतो गमनेपि प्रति नियतत्वा त्तत्प्रकाशस्य रात्रिदिवसविभागोस्तीति तं भेदेन दर्शयन्नाह॥ जयाणमित्यादि॥ इह सूर्यद्वयभावा देकदैव दिग्द्वये दिवसउक्त'

जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसेभवइ तयाण उत्तरड्ढेवि दिवसेभवइ जयाणं उत्तरड्ढे विदि

ने अग्निकूणि आथमे इत्यर्थ इम यावत् वायव्य कोणने विषे ऊगीने ईशानकोणने विषे अनुक्रमे आवीने ऊगे इमसर्व प्रश्ननोपरे उत्तर कहवो इहा भावा र्थ कहैछे—इहा ऊगवो आथमवो ते देखणहार लोकनोविवक्षाये जाणवो ते दृखाडेछे—जेहने अदृश्यथको सूर्यदीसे तिवारे ते सूर्य ऊगो इसो कहै तथा जेहने दृश्यथको सूर्य अदृश्य हुवे तिवारे सूर्य आथम्यो इसोकह्यो पणि उदय अस्त अनियत जाणवो आहच—जह २ समए २, पुरओसचरइभ क्खरोगयणे। तह २ इओविनियमा जायइरयणीयभावत्थो॥१॥ एवचसइनराण उदयत्थमणाइंहोंतिनिययाइ। सयदेसभेयकस्सइ किंचोववदिस्सएनि यमा॥२॥ सयचेवयनिद्दिट्ठो भद्दमुहुत्तोकमेणसव्वेसि। केसिचोदाणिपिय विसयपमाणोरवीजेसि॥३॥ इणे सूत्रे सूर्यनी चारेदिशिने विषे गतिकही ति वारे जिके प्रमाण करेछे जेसूर्य पश्चिम समुद्रप्रते पैसो पातालेजाईने वलो पूर्वसमुद्रनेविषे उदयपामे ऊगे इत्यर्थ एतलो विशेष तेहनो मत निषेध्यो इ हा सूर्यनो सर्वदिशिने विषे गमनछे तो पिण प्रकाशना नियमथको रात्रि दिवसना विभागछे तेहीज भेद देखाडतो कहैछे—जिवारे ण वाक्यालकारे, हेभगवन्! जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे मेरुनामा पर्वतने दक्षिणार्द्धे दिवस हुवे, तिवारे ण वाक्यालकारे, जंबूनामा द्वीपने विषे उत्तरार्द्धनेविषे पणि दिव सहुवे इहा सूर्य दोयछे जेमाटे एकदाहीज दोयदिसे दिवसकह्यो इहा यद्यपि दक्षिणार्द्धने विषे उत्तरार्द्धने विषे इसो कह्यो तथापि दक्षिण उत्तरभाग ने विषे इसो जाणवू अर्द्धशब्दनेभाग मात्रना अर्थपणाथको जे कारणे दक्षिणार्द्ध उत्तरार्द्ध सगलेहो दिवसहुवेतो किम पूर्व तथा पश्चिमे रात्रिहुवे इम का

इहच यद्यपि दक्षिणार्द्धे तथा उत्तरार्द्धे इत्युक्तं, तथापि दक्षिणभागे उत्तरभागेचेति बोद्धव्य' मर्द्धशब्दस्य भागमात्रार्थत्वात्, यतो यदि दक्षिणार्द्धेच समग्रेएव दिवस स्या त्तदा कथ पूर्वेणा परेणाच रात्रि' स्यादिति वक्तु युज्येत' मर्द्धद्वयग्रहणेन सर्वक्षेत्रस्य गृहीतत्वात्, अतश्च दक्षिणार्द्धादिशब्देन दक्षिणादिदिग्भागमात्र मेवावसेय नत्वर्द्ध ततो यदापि दक्षिणोत्तरयो सर्वोत्कृष्टोदिवसो भवति तदापि जम्बूद्वीपस्य दशभागत्रयप्रमाणमेव ता पक्षेत्र तयो प्रत्येक स्याद्दशभागद्वयमानच पूर्वपश्चिमयो प्रत्येक रात्रिक्षेत्र स्या त्तथाहि षष्ट्या मुहूर्तै' किल सूर्यमण्डल पूरयति उत्कृष्टदिनचा ष्टादशभि र्मुहूर्तै रुक्त मष्टादशच षष्टेर्दशभागत्रितयरूपा भवति, तथा यदाष्टादशमुहूर्तो दिवसो भवति' तदा रात्रि र्द्वादशमुहूर्ता भवति द्वादशच षष्टेर्दशभागद्वयरूपा भवतीति, तत्रच मेरु प्रति नवयोजनसहस्राणि चत्वारिंशतानि षडशीत्यधिकानि नवच दशभागा योजनस्यैते तत्सर्वोत्कृष्टदि

छोसकीये टोय अर्द्धने ग्रहवेकरी सर्वक्षेत्रना ग्रहणथाय तेमाटे इहा दक्षिणार्द्धादि शब्देंकरी दक्षिणादि भागमात्र जाणवो पणि अर्द्धनही एतलो स्यू भा वजबूद्वीपना पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर रूप चारभाग करवा जे कारणे जिवारे पणि दक्षिण उत्तरने विषे सर्वोत्कृष्ट दिवसहुवे तिवारे पणि जबूद्वीपना दशभाग कीजे एहवा तीनभाग होज एक सूर्यनो तापक्षेत्रहुवे अने दशहाईया दोयभाग पूर्व तथा दशहाईया दोयभाग पश्चिमे रात्रिक्षेत्रहुवे तेहीज दे खाडेछे—दोय अहोरात्रिना साठ मुहूर्त्त निश्चे सूर्य मण्डल प्रतिपूरे तिहा उत्कृष्टो दिनमान अढारे मुहूर्त्त कह्यो ते अढारे मुहूर्त्तना दशहाईया तीनभा ग रूपछे तेकिम साठि मुहूर्त्त जिवारे दशभागे विहचिये तिवारे दाएकके साठ एतले छएभागे एकभागहुवे इसा तीनभाग भेलाकीजे तिवारे तीनछक्क अठारे इम दसहाइया तीनेभागे अठारे मुहूर्त हुवे जिवारे अढारे मुहूर्त्तनो दिवसहुवे तिवारे रात्रि बारमुहूर्त्तनो हुवे ते बारे मुहूर्त्त साठ मुहूर्त्तना दश हाइया बिभाग रूपहुवे तिहा मेरुप्रते नव सहस्र चारसे छयासी योजन एक योजनना दशभाग कीजे एहवा नवभाग एतले सर्वोत्कृष्ट दिवसने विषे दशहाइया तीनभाग रूप तापक्षेत्र प्रमाण हुवे ते किम ते देखाडेछे—मेरुपर्वतनो इकतीस सहस्रछसे तेवीस योजन काइक जाणो परिधिछे तेहने दशे

वसे दशभागत्रयरूप तापक्षेत्रप्रमाण भवति कथ मन्दरपरिक्षेपस्य किंचिन्न्यूनत्रयोविंशत्युत्तरषट्शताधिकैकत्रिंशद्योजनसहस्रमानस्य दशभि र्भागे हृते यल्लब्ध तस्य त्रिगुणितत्वे एतस्य भावादिति, तथा लवणसमुद्र प्रति चतुर्नवति योजनाना सहस्राणि अष्टौ शता न्यष्टषष्ट्यधिकानि चत्वारश्च दशभागा योजनस्ये त्येतदुत्कृष्टदिने तापक्षेत्रप्रमाण भवति, कथ जम्बूद्वीपपरिधे किञ्चिन्न्यूनाऽष्टाविंशत्युत्तरशतद्वयाधिकषोडश सहस्रोपेतयोजन लक्षत्रयमानस्य दशभि र्भागे हृते यल्लब्ध तस्य त्रिगुणितत्वे एतस्यभावादिति, जघन्यरात्रिक्षेत्रपरिमाण चाप्येवमेव, नवर परिधे र्दशभागो द्विगुण कार्य तत्राद्ये षड्योजनाना सहस्राणि त्रीणि शतानि चतुर्विंशत्यधिकानि षट्चदशभागा योजनस्य द्वितीय तु त्रिषष्टि सहस्राणि द्वे पञ्चचत्वारिंशदधिके योजनाना शते षट्चदशभागा योजनस्य, सर्वलघौ च दिवसे तापक्षेत्र मनन्तरोक्तरात्रिक्षेत्रतुल्य, रात्रिक्षेत्रं त्वनन्तरोक्ततापक्षेत्रतुल्यमिति,

---

भागे विहचीये पछे एकभाग त्रिगुणो कीजे तिवारे एतलो हुवे तथा लवणसमुद्र प्रतें चवराणूसहस्र आठसे अडसठ योजन अने दशहाइया चारभाग एतलो उत्कृष्ट दिननेविषे तापक्षेत्र प्रमाण हुवे तेकिम ते देखाडेछे—जम्बूद्वीपनो तीनलाख सोलैसहस्र दोयसै अठावीस योजन काइंएक न्यून परिधिछे ते हने दशभागे दीधा जेफल लाधो ते एकभागने त्रिगुणे कीधा चौराणवेहजार आठसोअडसठ एतलोहुवे जघन्य रात्रिप्रमाण पणि इमहीजकीजे एतलो विशेष परिधिने दशभागे विहचता जेभाग आव्यो ते एक भाग विगुणो कीधो तिहा पहिलो मेरुपर्वतने पासे छसहस्र त्रिणिसै चउवीस योजन दशहाईया छ भाग एतलो रात्रिक्षेत्र हुवे बीजो बाहिरले पासे त्रेसठसहस्र दोयसै पैतालीस योजन अने दशहाईया छ भाग एतलो रात्रिक्षेत्र हुवे एसर्वोत्कृष्ट दिवसने विषे तापक्षेत्रमान तथा रात्रिक्षेत्रमान कह्यो एहनो स्थापना तथा सर्व लघुदिवसने विषे तापक्षेत्र ते पहिला कह्यु रात्रिक्षेत्र तेह सरीखू जाणवू अने रात्रिक्षेत्र ते पूर्वोक्त तापक्षेत्र सरीखो जाणवो एहनो पणि स्थापना ते ए विष्कभे तापक्षेत्र मानकह्यो, हिवे आयाम थकी कहैछे—तापक्षेत्र जम्बूद्वीपमाहे पैतालीस सहस्र योजनछे अने लवणसमुद्र माहे तेत्रीस सहस्र तीनसै तेत्रीस योजन एक योजनना तीन

॥ टीका ॥

आयामतस्तु तापक्षेत्र जम्बूद्वीपमध्ये पञ्चचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणि, लवणेच त्रयस्त्रिंशत्सहस्राणि त्रीणि शतानि त्रयस्त्रिंशदधिकानि त्रिभागश्च योजनस्य, उभयमीलनेतु अष्टसप्तति सहस्राणि त्रीणि शतानि त्रयस्त्रिंशदधिकानियोजनत्रिभागश्चेति ॥ उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्तेदिवसेभवइत्ति ॥

॥ मूल ॥

वसे भवइ तयाण जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं राई भवइ ? हंता गोयमा! जया णं जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ जावराई भवइ । जयाण भंते! जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे णं दिवसे भवइ तयाण पच्चच्छिमेणवि दिवसे भवइ । जयाणं पच्चच्छिमेणं दिवसे भवइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा! जयाणं जंबू मंदरपुरच्छिमेणं दिवसे जाव राई भवइ,

॥ भाषा ॥

भाग कोजे इसो एकभाग एतलो तापक्षेत्रछे। ते बेऊ एकठा कीधा अठ्योत्तर सहस्र तीनसै तेत्रीस योजन त्रिहाईयो एकभाग सर्व एतलो तापक्षेत्र हुवे। जयाणउत्तरड्ढेदिवसेभवइ। जिवार उत्तरार्द्धने विषे पणि दिवस हुवे। तयाणजंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्सपुरच्छिमपच्चच्छिमेणंराई भवइ। तिवारे ण वाक्यालंकारे जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने विषे पूर्वदिशि तथा पश्चिमदिशिने विषेरात्रिहुवे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा जयाण जंबूद्दीवे २ दाहिणड्ढेदिवसेभवइजावराईभवइ। हा गौतम जिवारे जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे दक्षिणार्द्धे दिवसहुवे तिवारे उत्तरार्द्धे पणि दिवस हुवे अने जिवारे उत्तरार्द्ध एतले उत्तर भागने विषे जिवारे २ दिवसहुवे तिवारे जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे पूर्वदिशिने विषे तथा पश्चिमदिशिने विषेरात्रिहुवे यावत् शब्दथी एतलो कहवो वलो गोतम पूछेछे—जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छिमेणंदिवसेभवइ । जिवारे हेभगवन्! जंबूद्वीपनामाद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने पूर्वदिशिने विषे दिवस हुवे। तयाणपच्चच्छिमेणविदिवसेभवइ। तिवारे णं वाक्यालंकारे, पश्चिमदिशिने विषे पणि दिवसहुवे। जयाणपच्चच्छिमेणविदिवसेभवइ। जिवारे मेरुपर्वतने पश्चिमदिशिने विषे पणि दिवसहुवे । तयाणजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्सउत्तरदाहिणेणंराईभवइ। तिवारे जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने उत्तरभागने विषे तथा दक्षिणभागने विषे रात्रिहुवे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हा

॥ टीका ॥

इह किल सूर्यस्य चतुरशीत्यधिकमण्डलशतं भवति, तत्र किल जम्बूद्वीपमध्ये पञ्चषष्टि मण्डलानि भवंति, एकोनविंशत्यधिकंच शत तेषां लवण समुद्रमध्ये भवति, तत्र सर्वाभ्यन्तरे मण्डले यदा वर्त्तते सूर्य स्तदा ऽष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति, कथं यदा सर्वबाह्ये मण्डले वर्त्तते सौ तदा

॥ मूल ॥

जयाणं भंते ! जंबुद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं उत्तर जाव उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ । जयाणं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेण जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा ! जया जंबूजावदुवा

॥ भाषा ॥

गोतम । इत्यामंत्रणे । जयाणजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छिमणंविदिवसेजावराईभवइ । जिवारे ण वाक्यालंकारे, जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुना मा पर्वतने पूर्वदिशे तथा पश्चिमदिशे दिवस हुवे तिवारे उत्तरार्द्धे तथा दक्षिणार्द्धने विषे रात्रि हुवे, वली गोतम पूछेछे जयाणभंते जंबूद्दीवे २ दाहिण ड्ढेउक्कोसएअट्ठारसमुहुत्तेदिवसे भवइ । जिवारे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे दक्षिणभागने उत्कृष्टो अढारे मुहूर्त्तनो दिनहुवे । तयाणउत्तरड्ढेविउक्कोसएअट्ठारसमुहुत्तेदिवसेभवइ । तिवारेण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! उत्तरार्द्धने विषे पणि उत्कृष्टथी अढारे मुहूर्त्तनो दिनहुवे ते किम इहां निश्चे सूर्यना एकसौ चउरासी मण्डलछे मण्डल ते उगवानो स्थानक तिहां पैंसठ माण्डल जगतीसहित जंबूद्वीप ऊपर एकसौ उगणीस माण्डला लवणसमुद्र ऊपरछे तिहां सर्वाभ्यन्तर माण्डले जिवारे सूर्यआवे तिवारे अढारे मुहूर्त्तनो दिनहुवे तेकिम जिवारे सूर्य सर्व बाह्यमाण्डलाने विषे वर्त्तै ति वारे सर्व जघन्य बार मुहूर्त्तनो दिनहुवे तिवारपछी बीजा माण्डला थकी आरम्भीने प्रत्येके मण्डले २ एक मुहूर्त्तना इगसठ भागकीजे तेहवा दोय २ भाग दिन २ वृद्धकोधा थका एकसौत्यासीमे माण्डलेछे मुहूर्त्त वधे इणे प्रकारे अढार मुहूर्त्तनो दिवसहुवे तिवारे जे बार मुहूर्त्तनो रात्रिहुवे अहोरात्रि ना त्रीस मुहूर्त्तहुवे तेमाटे । जयाणउत्तरड्ढेउक्कोसए अट्ठारसमुहुत्तेदिवसेभवइ । जिवारे उत्तरभागने विषे उत्कृष्टोअढार मुहूर्त्तनो दिनमान हुवे । तया णंजबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्स । तिवारे ण वाक्यालंकारे, जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने विषे । पुरच्छिमपच्चच्छिमेणजहन्नियादुवालसमुहुत्ता

॥ टीका ॥ सर्वजघन्यो द्वादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति ततश्च द्वितीयमण्डला दारभ्य प्रतिमण्डल द्वाभ्या मुहूर्त्तैकपष्टिभागाभ्यां दिनस्य वृद्धौ अशीत्यधिकशतत मे मण्डले पञ्चमुहूर्त्ता वर्द्धन्त इत्येव मष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति, अतएव द्वादशमुहूर्त्ता रात्रि र्भवतीति त्रिशन्मुहूर्त्तत्वा दहोरात्रस्य ॥ अठारस मुहुत्ताणतरेत्ति ॥ यदा सर्वाभ्यन्तरमण्डलानन्तरे मण्डले वर्त्तते सूर्य स्तदा मुहूर्त्तैकपष्टिभागद्वयहीनाष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति, सचा ष्टादशमु हूर्त्तात् दिवसा दनन्तरो ऽष्टादशमुहूर्त्तानन्तर इतिव्यपदिष्ट ॥ साइरेगादुवालसमुहुत्ताराइत्ति ॥ द्वाभ्या मुहूर्त्तैकपष्टिभागाभ्या मधिका द्वादशमु

॥ मूल ॥ लसमुहुत्ता राई भवइ । जयाणं भंते! जंबूमंदरस्स पुरच्छिमउक्कोसए अठारसजाव तयाण भंते ! जंबूउत्तरं दुवालसजाव राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ । जयाण भंते ! जंबूदाहिणड्ढे अठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ तयाण उत्तरड्ढे अठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ जयाणं उत्तरड्ढे अठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाण जंबूमंदरपुरच्छिमपच्चच्छिमेणं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं

॥ भाषा ॥ राईभवइ । पूर्वदिशे तथा पश्चिम दिशिने विषे जघन्यथकी बारे मुहूर्त्त प्रमाणरात्रि हुवे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जयाणजंबूद्दीवेजावदुवालसमुहुत्ता राईभवइ । हा गौतम । जिवारे जंबूद्वीपने विषे दक्षिणें तथा उत्तरे अढार मुहूर्त्तनो दिनमान हुवे तिवारे जंबूद्वीपें पूर्वे तथा पश्चिमे जघन्ये बार मुहुर्त्त नी रात्रि हुवे । जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणउक्कोसए अठारसमुहुत्ताराईभवइ । जिवारे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । जंबूद्वीपनामा द्वीपने मेरुनामा पर्वतने पूर्वे तथा पश्चिमे उत्कृष्ट थी अढार मुहूर्त्त प्रमाणनी रात्रिहुवे । तयाणजंबूद्दीवे २ जाव उत्तरदुवालस जावराई भवइ । तिवारे जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे दक्षिणभागे तथा उत्तर भागनेविषे जघन्यथकी बारमुहूर्त्तनी रात्रिहुवे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जावभव इ । हा गौतम । यावत् बार मुहूर्त्तनी रात्रिहुवे एतला तांईकहवो । जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ दाहिणड्ढेअठारसमुहुत्ताणतरेदिवसेभवइ । जिवारे ण वा क्यालंकारे, हेभगवन् । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे दक्षिणभागने विषे अढार मुहूर्त्त अनन्तर दिवसहुवे । तयाणउत्तरड्ढेअठारसमुहुत्ताणतरेदिवसे भवइ।

॥ टीका ॥

हर्त्ताः ॥ राईनवइत्ति ॥ रात्रिप्रमाणं नवतीत्यर्थः , यावता भागेन दिनं हीयते तावता रात्रि र्वर्द्धते त्रिशन्मुहूर्त्तत्वा दहोरात्रस्येति ॥ एवमएणंक्रमे गति ॥ एव मित्युपसहारे एतेना नन्तरोक्तेन। जयाण भते। जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे इत्यनेनेत्यर्थ ॥ उसारेयव्वति ॥ दिनमानं ह्रस्वीकार्य तदेव दर्शयति ॥ सत्तरसेत्यादि ॥ तत्र सर्वाभ्यन्तरमण्डलानन्तरमण्डला दारभ्य कत्रिशत्तममण्डलार्द्धे यदा सूर्य स्तदा सप्तदशमुहूर्त्तो दिवसो भवति पूर्वो क्तानिक्रमेण त्रयोदशमुहूर्त्तोच रात्रिरिति ॥ सत्तरससुहुत्ताणंतरेत्ति ॥ मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयहीनसप्तदशमुहूर्त्तप्रमाणोदिवसो ऽयच द्वितीया दारभ्य

॥ मूल ॥

जंबूजाव राई भवइ । जयाण भते ! जबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं अठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेण अठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ जयाणं पच्चच्छिमेणं अठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तयाणं जंबूमंदरउत्तरदाहिणेण साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ? हता गोयमा ! जाव भवइ एवं एएणं कमेणं उसारेयव्व ! सत्तरसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता राई भवइ सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भव

॥ भाषा ॥

तिवारे उत्तरार्द्धे पणि अठारे मुहूर्त्त अनन्तर दिवसहुवे। तेकिम जिवारे सर्वाभ्यन्तर माण्डलाथकी बीजे माण्डले सूर्यवर्त्ते तिवारे एक मुहूर्त्तना इकसठ भागकीजे एहवा इगसठिया बिभाग हीन अठार मुहूर्त्तनो दिवसहुवे अठार मुहूर्त्त दिवस थको अनन्तर अन्तरारहित तेमाटे अठारस मुहुत्ताणं तरइसो कह्यो एतले जे दिवसे अठार मुहूर्त्तनो दिनहुवे ते दिवसथी बीजेदिन इत्यर्थं । जयाण उत्तरड्ढेअठारसमुहुत्ताणतरेदिवसे भवइ । जिवारे ण [illegible]कालकाले उत्तरार्द्धने विषे पणि अठारमुहूर्त्त अनतर दिवसहुवे एतले बीजे दिने इगसठिया बिभाग हीन अठारमुहूर्त्त दिनहुवे इत्यर्थं । तया णजबूदीवे २ मदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमेणपच्चच्छिमेणसाइरेगादुवालसमुहुत्ताराई भवइ। तिवारे जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने पूर्वं तथा प श्चिमे इगसठिया बिभागे अधिक बारे मुहूर्त्त रात्रिनो प्रमाणहुवे एतले जेतले भागेकरी दिनहीन कीजे तेतले भागे करी रात्रिवधे त्रीसमुहूर्त्त करी अ होरात्रिथाय तेमाटे इति प्रश्न । हता गोयमा जयाण जबुद्दोवेजावराईभवइ । हा गौतम । जिवारे जबूद्वीपेदक्षिणेउत्तरे अठारे मुहूर्त्तानतर दिवसहुवे

द्वात्रिंशत्तममण्डलार्द्धं भवति एव मनन्तरत्व मन्यत्रा प्यूह्यं ॥ साइरेगतेरसमुहुत्ताराइत्ति ॥ मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयेन सातिरेकत्व मेव सर्वत्र ॥ सोलस मुहुत्तेदिवसेत्ति ॥ द्वितीया दारभ्यै कषष्टितममण्डले षोडशमुहूर्त्तो दिवसो भवति ॥ पण्णरसमुहुत्तेदिवसेत्ति ॥ द्विनवतितममण्डलार्द्धं वर्त्तमाने सू

इ साइरेगतेरसमुहुत्ताराई । सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दसमुहुत्ता राई सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरे गचोद्दसमुहुत्ताराई पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ताराई । पन्नरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेग पन्न रसमुहुत्ताराई । चोद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलसमुहुत्ताराई ! चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सोलस

तिवारे पूर्वे पश्चिमे साधिक बारे मुहूर्त्त प्रमाण रात्रिहुवे। जयाण भंते जंबुद्दीवे । जिवारे हे भगवन् जंबूद्वीपनामा द्वीपे । मंदरस्सपव्वयस्स । मेरुना मा पर्वतने। पुरच्छिमेण । पूर्वदिशिने विषे। अट्ठारसमुहुत्ताणतरेदिवसेभवइ । अठारमुहूर्त्त अनतर दिवसहुवे एतले इगसठिया विभागहीन दिनहुवे। तयाणपच्चच्छिमेणविअट्ठारसमुहुत्ताणतरेदिवसेभवइ। तिवारे जंबूद्वीपे पश्चिमदिसे पणि इगसठिया विभागहीन अठारे मुहूर्त्तनो दिवसहुवे। जयाण पच्चच्छिमेणविअट्ठारसमुहुत्ताणतरेदिवसेभवइ। जिवारे पश्चिमे पणि इगसठिया विभागहीन अठारे मुहूर्त्तनो दिवसप्रमाण हुवे। तयाणजंबूद्दीवेमंदरस्स पव्वयस्सउत्तरदाहिणेण साइरेगादुवालसमुहुत्ताराई भवइ । तिवारे ण वाक्यालंकारे जंबूद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने उत्तरभागे तथा दक्षिणभागे साधिक एतले इगसठिया विभागे अधिक बारे मुहूर्त्त रात्रिनोमान हुवे इतिप्रश्न । हंता गोयमा जावभवइ । हा गौतम। यावत् बारे मुहूर्त्तसाधि क रात्रिमान हुवे । एवएएणकमेणउसारियव्वसतरसमुहुत्तेदिवसे । इमए अनतरे कह्यु जे अनुक्रमतेणेंकरी जयाणं भंते जंबूद्दीवे २ दाहिणड्ढे इणें अनुक्रमे इत्यर्थ दिनमान हीनकरतां ते देखाडेछे इम इगसठिया विभागहीन करता जिवारे सतर मुहूर्त्त दिनमानहुवे । तेरसमुहुत्ताराई सतरसमु हुत्ताणतरेदिवसेसाइरेगातेरसमुहुत्तराई । तिवारे तेर मुहूर्त्त रात्रिमानहुवे तिहां सर्वाभ्यंतर मंडल अनंतर मंडल थकी आरंभीने एकत्रीसमा मांड लाना अर्द्धनेविषे जिवारे सूर्यआवे तिवारे सतरे मुहूर्त्त दिनमान हुवे पूर्वे इगसठिया विभागनी हानि कही तिणिरीते हानिकरताथका अनुक्रमे

॥ टीका ॥

र्य ॥ चोद्दसमुहुत्तेदिवसेत्ति ॥ द्वाविंशत्युत्तरशततमे मण्डले ॥ तेरसमुहुत्ते दिवसेत्ति ॥ सार्द्धद्विपञ्चाशदुत्तरशततमे मण्डले ॥ बारसमुहुत्तेदिवसेत्ति ॥

॥ मूल ॥

मुहुत्ता राई । तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे साइरेगा सत्तरसमुहुत्तारा
ई । जयाणं जंबूदाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं उत्तरड्ढेवि । जयाणं उत्तरड्ढे तयाणं

॥ भाषा ॥

सतर मुहूर्त्तनो दिनमानहुवे तिवारे तेर मुहूर्त्तनो रात्रिहुवे इगसठिया विभागहीन सतरे मुहूर्त्त प्रमाण दिवसहुवे एबीजा माडलाथी आरभीने व
त्तीस माडलाने अंतहुवे इम अनतर पणू बीजास्थानकने विषे पणि जाणवो इगसठिया विभागे अधिक तेरमुहूर्त्तनो रात्रिहुइ इम सगलो जाणवो।
सोलसमुहुत्ते दिवसे चउद्दसमुहुत्ता राई सोलसमुहुत्ताणंतरेदिवसेसातिरेगाचउद्दसमुहुत्ताराइ । सोल मुहूर्त्तनो दिनहुवे तिवारे चउदेमुहूर्त्तनो रात्रि
हुइ एबीजा माडलाथो आरभीने इगसठिमे माडले सोले मुहूर्त्तनो दिनमानहुवे एगसठिया विभागहीन सोले मुहूर्त्तनो दिनहुवे एतले बीजा माड
लाथी आरभीने बासठिमे माडले सूर्य आवे तिवारे इगसठिया विभागहीन सोले मुहूर्त्तनो दिनहुवे इगसठिया विभाग अधिक चउदेमुहूर्त्तनो रात्रि
हुइ । पन्नरसमुहुत्ते दिवसेपन्नरसमुहुत्ताराई । बाणुमा माडलाने अंते वर्त्तमान सूर्यथका पनरमुहूर्त्तनो दिनप्रमाणहुवे तिहां पनरमुहूर्त्तनो रात्रि
प्रमाणहुवे । पन्नरसमुहुत्ताणंतरेदिवसेसाइरेगापन्नरसमुहुत्ताराई । बीजा माडलाथी आरंभीने त्राणुमा ९३ माडलाने अंते वर्त्तमान सूर्यथका ए
गसठिया विभागहीन पनरे मुहूर्त्त दिनमानहुवे इगसठिया विभाग अधिक पनरमुहूर्त्तनो रात्रिमानहुवे । चउद्दसमुहुत्ते दिवसेसोलसमुहुत्ताराई ।
एकसोबावीस मे माडले सूर्यवर्त्तता थका चउदेमुहूर्त्तनो दिनमान सोल मुहूर्त्तनो रात्रिमानहुवे । चउद्दससमुहुत्ताणंतरेदिवसेसाइरेगासोलसमुहु
त्ताराई । एकसो त्रेवीसमे माडले वर्त्तमान सूर्य थका इगसठिया विभागहीन चउदमुहूर्त्त दिनमान हुवे अने इगसठिया विभाग अधिक सोल मु
हूर्त्त रात्रिमान । तेरसमुहुत्ते दिवसेसत्तरसमुहुत्ताराई । एकसो साढाबावनमे माडले वर्त्तमान सूर्यथका तेरमुहूर्त्त दिन सतरमुहूर्त्त रात्रिमान
हुइ । तेरसमुहुत्ताणंतरेदिवसेसाइरेगासत्तरसमुहुत्ताराई । एकसो साढात्रेपन मे माडले वर्त्तमान सूर्यथका इगसठिया विभागहीन तेरमुहूर्त्त दिनमान

॥ टीका ॥

त्र्यशीत्यधिकशततमे मण्डले सर्वबाह्यइत्यर्थः, कालाधिकारा दिद माह-जयाण भंते! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ

॥ मूल ॥

जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उक्कोसिया अठारसमुहुत्ता राई? हंता गोयमा! एवचेव उच्चा रेयव्वं जाव राई भवइ। जयाण भंते! जंबू मंदरपुरच्छिमेणं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणवि जयाण पच्चच्छिमेणवि तयाणं जंबूमंदरउत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अठारसमुहुत्ता राई? हंता गोयमा! जाव राई भवइ। जयाण भंते! जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तयाणं

॥ भाषा ॥

अने त्रिभाग अधिक सतरे मुहूर्त रात्रिमानहुवे । जयाण जंबूदीवे २ दाहिणड्ढेजहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसेभवइ तयाणउत्तरड्ढेवि । जिवारे जंबू द्वीपने विषे दक्षिणार्द्धे जघन्य बारे मुहूर्त दिनप्रमाण हुवे तिवारे उत्तर भागने विषे पणि बारमुहूर्तनो दिनप्रमाण हुवे दिनप्रमाण बोजा माउ लावो आरभो एकसौ त्रयासीमे माउने सर्वबाह्य माउने हुवे दाखवे । जयाण उत्तरड्ढेतयाणजंबूदीवे २ मंदरस्स २ पुरच्छिमपच्चच्छिमेणंउक्कोसियाअठा रसमुहुत्ताराईभवइ । जिवारे दक्षिणार्द्धे तथा उत्तरार्द्धे बार मुहूर्तनो दिनप्रमाण हुवे तिवारे जंबूद्वीपने विषे मेरु पर्वतने पूर्वदिसें तथा पश्चिमदिसें उत्कृष्टपणो अठार मुहूर्तनो रात्रि हुवे इतिप्रश्न । हंता गोयमा एवचेवउच्चारेयव्वंजावराईभवइ । हा गौतम! इमहीज निषे दिनमानहीन करवो रात्रिमा नवधारवो यावत् अठार मुहूर्तनो रात्रि हुवे वली गौतम पूछे छे । जयाणभंतेजंबूदीवे २ मंदरस्सपच्चच्छि । तिवारे हे भगवन् जंबूद्वीपने विषे मेरु पर्वतने विषे । पुरच्छिमेणजहण्णएदुवालसमुहुत्तेदिवसेभवइ । पूर्वदिसिने विषे जघन्य नको बार मुहूर्तनो दिनप्रमाण हुवे । तयाणपच्चच्छि मेणवि । तिवारे पश्चिमे पणि बार मुहूर्तनो दिनप्रमाण हुवे । जयाणपच्चच्छिमेणवि । जिवारे पूर्वे तथा पश्चिमे बार मुहूर्तनो दिनप्रमाण हुवे । तयाणजंबूदीवेमंदरस्स २ । तिवारे जंबूद्वीपने विषे मेरु पर्वतने । उत्तरदाहिणेणउक्कोसियाअठारसमुहुत्ताराई भवइ । उत्तर दक्षिण भागने विषे उत्कृष्टपणो अठारे मुहूर्तनो रात्रिप्रमाण होय इतिप्रश्न । हंता गोयमा जावराईभवइ । हा गौतम! यावत् अठारे मुहूर्तनो रात्रिप्रमाण होय ए

इत्यादि ॥ वासाणंति ॥ चतुर्मासप्रमाणवर्षाकालस्य सम्बन्धी प्रथम आद्य समय क्षण प्रतिपद्यते सम्पद्यते भवतीत्यर्थ ॥ अणंतरपुरक्खडसमय सित्ति ॥ अनन्तरो निर्व्यवधानो दक्षिणार्द्धे वर्षाप्रथमतापेक्षया सचा तीतोपि स्या दतआह–पुरस्कृत. पुरोवर्ती भविष्यन्नित्यर्थ, समय प्रतीत तत

उत्तरड्ढेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ । जयाणं उत्तरड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरपुरच्छिमपच्चच्छिमेणं कूडतरपुरक्खडसमयंसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबू दाहिणड्ढे वासाणं पढमसमएपडिवज्जइ तहचेव जाव पडिवज्जइ । जयाणं भंते ! जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पुरच्छिमेण वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तयाणं पच्चच्छिमेणवि वासाणं पढमे समए

तला लगें कहवो । जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ दाहिणढ्ढेवासाणपढमेसमएपडिवज्जइ । कालना अधिकारथी ए कहेछे जिवारें हे भगवन् जम्बूद्वीपने विषे दक्षिण भागें चउमासा प्रमाण वर्षाकाल सवधी पहिलो क्षण एतले वर्षाकालनों पहिलो समय पणि होय । तयाणउत्तरढ्ढेविवासाण पढमेसमएपडिवज्जइ । तिवारे उत्तरभागे पणि वर्षाकालनो पहिलो समय पडि होय । जयाणउत्तरढ्ढेवासाणपढमेसमएपडिवज्जइ । जिवारे दक्षिणभागे तथा उत्तरभागे चउमासा प्रमाण वर्षाकाल सवधो पहिलो पडि होय । तयाणजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमपच्चच्छिमेण अणतरपुरक्खडसमयंसिवासाणं पढमेसमएपडिवज्जइ । तिवारे जम्बूद्वीपने विषे मेरु पर्वतने पूर्वे तथा पश्चिमे अनंतर वीचिमे अंतरनही दक्षिणार्द्ध वर्षा प्रथम समयनी अपेक्षायें ते अनन्तर समय अतीत पणि होय तेमाटे कहेछे आगामिकाल समयवर्ती एतले जिणि समये दक्षिण उत्तरे वर्षाकाल पडि पडिवजे तेहथी आगले समयें पूर्व पश्चिमे वर्षानो पहिलो समय पडिवजे होय इत्यर्थ इतिप्रश्न । हंता गोयमा जयाणजंबूद्दीवे २ दाहिणढ्ढेवासाणंपढमेसमएपडिवज्जइ । हा गौतम । जिवारे जम्बूद्वीपने विषे दक्षिणभागे वर्षानो प्रथम समय हुवे तिवारे उत्तरार्द्ध पणि । तहचेव जाव पडिवज्जइ । तिमहीज वर्षानो प्रथम समय पडिवजे हुवे । जयाणभंतेजंबूद्दीवे २ मंदरस्स २ पुरच्छिमेणवासाणपढमेसमएपडिवज्जइ । जिवारे हे भगवन् जम्बूद्वीपने विषे मेरुपर्वतने पूर्वदिशें चतुर्मास प्रमाण

॥ टीका ॥

पर्वतस्य पूर्वापरयोः तत्र ॥ अणंतरपच्छाकडसमयंसिति ॥ पूर्वापरविदेहवर्षाप्रथमसमयापेक्षया यो नन्तरः पश्चात्कृतो ऽतीतः समयः तत्र दक्षिणोत्तरयोः वर्षाकालप्रथमसमयो भवतीति ॥ एवमित्यादि ॥ आवलिकाभिलापश्चैवं–जयाणं भंते ! जंबुद्दीवे २ दाहिणड्ढे वासाण पढमा आवलिया पडिवज्जइ तयाणं उत्तरड्ढे वि जयाणं उत्तरड्ढे वासाणं पढमावलिया पडिवज्जइ तयाणं जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्च

॥ मूल ॥

पडिवज्जइ जयाणं पच्चच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तयाणं जाव मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवन्ने भवइ ? हंता गोयमा ! जयाणं जंबूमंदर पुरच्छिमेणं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवइ एवं जहासमएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा

॥ भाषा ॥

वर्षाकाल संबंधी प्रथम समय पडिवज्जे हुवे । तयाणंपच्चच्छिमेणं वासाणं पढमेसमए पडिवज्जइ । तिवारे पश्चात्कारे जंबूद्वीपने विषे मेरुपर्वतने पश्चिमे पणि वर्षाकाल संबंधी पहिलो समय पडिवज्जे हुवे । जयाणंपच्चच्छिमेणं वासाणंपढमेसमएपडिवज्जइ । जिवारे जंबूद्वीपने विषे मेरु पर्वतने पूर्वे तथा पश्चिमे वर्षाकाल संबंधी पहिलो समय पडिवज्जे हुवे इत्यर्थः । तयाणं। तिवारे । जावमंदरस्सपव्वयस्सउत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडसमयंसिवासाणंपढमेसमएपडिवन्नेभवइ । जंबूद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने उत्तर दक्षिणभागे पूर्व महा विदेह तथा पश्चिम महा विदेह चतुर्मासिक वर्षाकाल संबंधी जे पहिलो समय तेहनो अपेक्षायें अनंतर अंतररहित अतीतकालनो जे समय तेहने विषे दक्षिण उत्तर भागने विषे वर्षाकालनो प्रथम समय हुवे एतले अणंतर पच्छाकड समयंसि पूर्वपश्चिमना समयथी एक समय पहिलो वर्षाकाल पाम्यो हुवे इतिप्रश्न । हंता गोयमा जयाणंजंबूद्दीवे २ मंदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमेणंएवंचेवउच्चारेयव्वंजावपडिवन्नेभवइएवंजहासमएणं अभिलावोभणिओवासाणंतहाआवलियाएविभाणियव्वो । हा गोयम ! जिवारे जंबूद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने पूर्वभागे तथा पश्चिमे वर्षानो पहिलो समय पडिवज्जे तिवारे दक्षिण उत्तरने विषे पूर्व पश्चिमना समयथी अतीतकालनो अंतर रहित पहिलो समय तेहने विषे वर्षाकाल पडिवज्यो हुवे इम उच्चरवो इम जिम समयनो आलावो कह्यो वर्षानो तिम आवलिकानो पणि आलावो कहवो

॥ टीका ॥

च्छिमेणं अणतर पुरक्खडसमयंसि वासाणं पढमा आवलियापडिवज्जइ, हतागोयमेत्यादि एवमानप्राणादिपदेष्वपि' आवलिकाद्यर्थ पुनरयं, आव लिका असङ्ख्यातसमयात्मिका, आनप्राणउच्छ्वासनि श्वासकाल सप्तप्राणप्रमाण, लवस्तु सप्तस्तोकरूपो, मूहूर्त्त पुन लवसप्तसप्ततिप्रमाण, ऋतुस्तु मा सद्वयमान. ॥ हेमताणति ॥ शीतकालस्य ॥ गिम्हाणवत्ति ॥ उष्णकालस्य ॥ पढमेअयणेत्ति ॥ दक्षिणायनं श्रावणादित्वा त्सवत्सरस्य ॥ जुगणवत्ति ॥

॥ मूल ॥

आवलियाएवि भाणियव्वो आणापाणूणवि थोवेणवि लवेणवि मुहुत्तेणवि अहोरत्तेणवि पक्खेणवि मासे णवि उऊणवि । एएसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो । जयाणं भंते ! जंबूदीवेदीवे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताणवि गिम्हाणवि भाणियव्वो जाव

॥ भाषा ॥

ते इम जयाण भते दाहिणढे वासाण पढमा आवलिया पडिवज्जइ त याण उत्तरढेवि जयाण उत्तरढेवि वासाण पढमा आवलिया पडिवज्जइ तयाण मदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं अणतर पुरक्खड समयसि वासाणं पढमा आवलिया पडि वज्जइ हता गोयमा इत्यादि । आणपाणू वि थोवेणवि । इम आवलिकाने परें सासोसास पणि कहवा सासोसास प्रमाण स्तोकपणि इमज । लवेणविमुहुत्तेणवि । साते स्तोके लव तेपणि इ मज ७७ लवे एक मुहूर्त्त तेपणि इमज । अहोरत्ते णवि । ३० मुहूर्त्त अहोरात्रि ते पणि इमज । पक्खेणवि । पनर अहोरात्रे पच ते पणि इमज । मा सेणवि । दोय पच्चे मास तेपणि इमज । उऊणवि । दोयमासे ऋतु तेपणि इमज । एएसिसव्वेसिंजहासमयस्सअभिलावो तहाभाणियव्वो । सर्वने वि षे जिम समयने विषे आलावो कह्यो तिम एहोनो पणि आलावो कहवो । जयाणभतेजबूदीवे २ हेमताणपढमेसमएपडिवज्जइ । जिवारे हे भगवन् ! जबूद्वीपने विषे मेरुनें दक्षिणभागे शीतकाल सबधी पहिलो समय पडिवज्जइ हुव इत्यादि । जहेववासाणअभिलावोतहेव हेमताणविगिम्हाणविभा णियव्वो । जिमहीज वर्षाकालनो आलावो कह्यो तिमहीज हेमत शीतकाल सबधीनो तथा उष्णकाल संबधीनो आलावो जाणवो । जावउऊ एवए एतिखिविएएसितीस आलावगाभाणियव्वा । यावत् ऋतु इम वर्षाकाल शीतकाल उष्णकाल तीन जाणवा एतीनना त्रीस आलावा हुवे ते किम जि

॥ टीका ॥

युगं पञ्चसंवत्सरमानं ॥ पुव्वंगेणविति ॥ पूर्वांगं चतुरशीति वर्षलक्षाणा ॥ पुव्वेणविति ॥ पूर्वपूर्वांगमेव चतुरशीतिवर्षलक्षगुणित मेवं चतुरशीतिव र्षलक्षगुणित मुत्तरोत्तर स्थानं भवति, चतुर्नवत्यधिक चाङ्कशत मन्तिमे स्थाने भवतीति ॥ पढमाउसप्पिणीत्ति ॥ अवसर्पयति भावा नित्येव शीला

॥ मूल ॥

उऊ । एवं एए तिन्निवि पएनि तीसं आलावगा भाणियव्वा , जयाणं भंते ! जंबूदाहिणद्धेपढमे अयणे पडिवज्जइ तयाणं उत्तरद्धेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेणवि भाणि यव्वो , जाव अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ , जहा अयणेण अभिलावो तहा संव च्छरेणवि भाणियव्वो , जुएणवि वाससएणवि वाससहस्सेणवि पुव्वंगेणवि पुव्वेणवि तुडियंगेणवि तुडिएण

॥ भाषा ॥

म वर्षाकालने विषे समय १ आवलि २ आणपाण ३ स्तोक ४ लव ५ मुहूर्त ६ अहोरात्रि ७ पक्ष ८ मास ९ ऋतु १० एदश आलावा कह्या तिम शीत काल उष्णकालना पणि प्रत्येकें दशदशआलावा कहता त्रीसआलावा हुवे ते कहवा। जयाणं भंते जंबूद्वीपे २ मंदरस्सपव्वयस्सदाहिणद्धेपढमे अयणेपडिव ज्जइ। जिवारे हे भगवन् ! जंबूद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने दक्षिणभागे पहिलो अयन दक्षिणायन संवत्सर आवणादिलागे ते मांटे पहिलो अयन हुवे त याण उत्तरद्धेवि पढमे अयणेपडिवज्जइ उत्तरार्धेपणि पहिलो अयन कर्कादिदक्षिण मकरादि उत्तर जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेणवि भाणि यव्वो । जिम समय सघाते आलावोकह्यो तिम अयनसघाते पणि आलावो कहवो । जावअणंतरपच्छाकडसमयंसिपढमे अयणेपडिवज्जइ यावत् एतले ज बूद्वीपे तथा पश्चिमें प्रथम अयनपडिवजे तिवारेदक्षिणे तथा उत्तरे अनंतरअतीतकालने विषे प्रथम अयनहुवे। जहा अयणेण अभिलावो तहा संवच्छरेण विभाणियव्वो । जिम अयनसघाते आलावोकह्यो तिम संवत्सर वरस सघाते पणि आलावो कहवो। जुएणवि । युगयुगपंचसंवत्सरप्रमाण। वाससएणवि। इम सौवरससघाते । वाससहस्सेणवि। दसवरससहस्र सघाते पणिआलावो कहवो। वाससयसहस्सेणवि। इम वर्षलाखसघाते पणिआलावो कहवो । पु व्वंगेणवि । चोरासीलाख वरसेपूर्वांगहुवे सत्तरलाख छप्पनहजार कोडिवरसेए ७०५६०००००००००० एकपूर्वहुए चउरासी चउरासीलाख गुणाकधाएहुवे

॥ मूल ॥

वि एवं पुव्वे तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहूय २ उप्पले २ पउमे २ नलिणे २ अत्थिणेउरे २ उए २ पउए २ चूलिए २ सीसपहेलियापलिउवमेणावि सागरेणावि आणियव्वो । जयाणं भंते ! जंबूद्दीवेदीवे दाहिणड्ढे पढमा उसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणं उत्तरड्ढेवि पढमा उसप्पिणी पडिवज्जइ जयाणं उत्तरड्ढे पडिवज्जइ तयाणं जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणावि नेवत्थि उसप्पिणी उवसप्पिणी अवट्ठिएण तत्थकाले पन्नत्ते समणाउसो ? हंता गोयमा ! तंचेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो जहा उसप्पि

॥ भाषा ॥

पुव्वेणवि तुडियंगेणवि । ते पुर्वांग ८४ गुणाकीधापूर्वंकहीजे पूर्व ८४ गुणता त्रुटितांगहुवे । तुडिएणवि । त्रुटितांग ८४ लाखवर्षगुणाकीधा त्रुटितहुवे । एवपुव्वे २ । इम उत्तरोत्तरस्थान चउरासीलाखवरस गुणाकीजे पूर्वथीमांडीआगेनामकहेछै इम पूर्व २ । तुडिए २ । त्रुटित २ । अडडे २ । अडड । अववे २ । अववहुहूए २ । हूहूय । उप्पले २ । उत्पल । पउमे २ । पद्म । णलिणे २ । नलिन । अत्थिणिउरे २ । अत्थिनिउर । अउए २ । अउय । णउरे २ । णउय । पउए २ । पउय । चूलिए २ । चूलिका । सीसपहेलिया २ । शीर्षपहेलिकाएएकसौचोराणू १९४ आंकछेहलेस्थानकहुवे । पलिओवमेणवि । पल्योपमकूपदृष्टांते ते सघातेआलावोकहवो । सागरोवमेणविभाणियव्वो । ते दशकोडाकोडिपल्योपमे एकसागरोपमहुवे ते सघातेआलावोकहवो । जयाणभंते जंबूद्दीवे २ दाहिणड्ढे पढमाओसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणउत्तरड्ढेविपढमाओसप्पिणी पडिवज्जइ । जिवारे हे भगवन् । जंबूद्वीपने दक्षिणभागे पहिलो अवसर्प सर्वभाववटताजाय ते अवसर्पिणीकहिये तेहनोविभाग ते अवसर्पिणी तिवारे उत्तरार्द्धने विषे पहिलो अवसर्पिणीहुवे । जयाणउत्तरड्ढे पढमाओसप्पिणीपडिवज्जइ जिवारे उत्तरार्द्धे पहिलो अवसर्पिणीहुवे । तयाणजंबूदीवे २ मंदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमपच्चच्छिमेणं णेवत्थिओसप्पिणी । तिवारे जंबूद्वीपनामाद्वीपने विषे मेरुनामा पर्वतने पूर्वतथा पश्चिमे नहीछे अवसर्पिणीनाम कालविशेष । णेवत्थिउस्सप्पिणी नहीछे उत्सर्पिणीनाम कालविशेष । अवट्ठिएणतत्थकाले प । अवस्थित सदैव सरीखो तिहां कालकह्यो । समणाउसो । हेश्रमणआउखावंतइतिप्रश्न । हंता गो० । हांगौतम । जिमपूर्वंकह्यो । तंचेवउच्चारेयव्वं तिमजउच्चरवुकहवु । जावसमणाउसो

अवसर्प्पिणी तस्याः प्रथमो विभागः प्रथमावसर्प्पिणी ॥ उस्सप्पिणित्ति ॥ उत्सर्प्पयति भावा नित्येवशीला उत्सर्प्पिणीति ॥ इतिपञ्चमशतेप्रथम ॥ ॥ टीका ॥

णीए आलावउ भाणियव्वो एव उस्सप्पिणीएवि भाणियव्वो । लवणेण भंते ! समुद्दे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जच्चेव जंबूद्दीवस्स वत्तव्वया भाणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्सवि भाणियव्वा णवर अभिलावो इमो जाणियव्वो जयाण भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तचेव जाव तयाण लवण समुद्दे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण राई भवइ एएण अभिलावेणं नेयव्वं जाव जयाण भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा उसप्पिणी पडिवज्जइ तयाणं उत्तरड्ढे पढमाउसप्पिणी जयाणं उत्तरड्ढे पढमा उसप्पिणी पडिवज्जइ ॥ मूल ॥

यावत् श्रमण आयुष्मन् एतलालगेंकहवो । जहाओसप्पिणीए आलावउभणिउ । जिम अवसर्प्पिणीनों आलावोकह्यो । एव उस्सप्पिणीएविभाणियव्वो तिमउत्सर्प्पिणी जिहा सर्वभाववधता २ जायतेसघाते आलावो कहवो । लवणेणभंतेसमुद्दे सूरिया । लवण हे भगवन् । समुद्रने विषे सूर्य । उदीणपाईणमु गच्छ । ईशानकूणिने विषे उदयपामाने इत्यादि । जाचेवजंबूद्दीवस्सवत्तव्वया भणिया । जेनिमे जंबूद्वीपनी वक्तव्यताकही । साचेवसव्वा अपरिसेसयालवणस मुद्दस्सविभाणियव्वा । तिमहीजनिश्चे सगलो सर्व समुद्रने सर्वलवणनामा समुद्रद्वीपनाव योजनआयामेकहे तेहनोवक्तव्यता पणि कहवो । णवरअभिला वोइमोणायव्वो । एतलोविशेष आलावो इम करवो तथा कहवो । जयाणभंते लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे दिवसेभवइ । जिवारे हे भगवन् । लवणसमुद्रने विषे दक्षि णार्द्धे दिवसहुवे इत्यादि । तचेवजावतयाण लवणसमुद्देपुरच्छिमपच्चच्छिमेण राईभवइ एएणअभिलावेणणेयव्व । तिमहीजनिश्चे तिवारे लवणसमुद्रने विषे पूर्वतथा पश्चिमने विषे रात्रिहुवे इणें अलावेकरी जाणवो । जयाणंभंते लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमाओसप्पिणी पडिवज्जइ । जिवारे हे भगवन् । लवणस मुद्रने विषे दक्षिणभागे पहिलो अवसर्प्पिणी हुवे । तयाणउत्तरड्ढेवि पढमाओ सप्पिणीपडिवज्जइ । तिवारे उत्तराधने विषे पणि पहिलो अवसर्प्पि णी हुवे । जयाणउत्तरड्ढे पढमाउसप्पिणीपडिवज्जइ । जिवारे उत्तराद्धने विषे पहिलो अवसर्प्पिणीहुवे । तयाण लवणसमुद्देपुरच्छिमपच्चच्छिमेण तिवारे ॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

तदा लवणसमुद्दे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं नेवत्थि उस्सप्पिणी उवसप्पिणी समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो । धायइखंडेण भंते ! दीवे सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव जंबूद्दीवस्स वत्तव्वया सच्चेव धायइखंडस्सवि भाणियव्वा णवरं इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा, जयाणं भंते ! धायइखंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ तयाणं उत्तरड्ढे विजयाणं उत्तरड्ढेवि तयाणं धायइखंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमपच्चच्छिमेण राई भवइ ? हता गोयमा ! जाव राई भवइ । जयाणं भंते ! धायइखंडे दीवे मंदरा

॥ भाषा ॥

लवणसमुद्रने विषे पूर्वतथा पश्चिमे । णेवत्थिओसप्पिणी णेवत्थिउस्सप्पिणी । नहीछे अवसर्पिणीकालविशेष नहीछे उत्सर्पिणीकालविशेष । समणाउसो । हेश्र मणआउखावतइतिप्रश्न । हता गोयमा । जावसमणाउसो । हा गौतम । इत्यादि यावत् श्रमणआउखावत एतलालगे पाछिलाप्रश्ननोपरे उत्तरकहवो धायइखंडेणभंतदीवे सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ जहेव जंबूद्दीवस्सवत्तव्वया भणिया । धातकी खंडचारलाख योजनमान तेहलवणसमुद्र कालोदधिसमुद्रने मध्येरह्योछे तिहां भरत ऐरवतमहाविदेह मेरुपर्वत ए आदिदेई सर्वजंबूद्वीपथी विमणाछेतेहने विषे हे भगवन् सूर्यउदयछे ईशानकूणिऊगीने इत्यादि जिमहोज जंबूद्वीपनी वक्तव्यता कही । सावेवधायइखंडस्सविभाणियव्वा । तेहीजनिश्चे धातकीखंडनीपणि वक्तव्यता जाणवी एतलोविशेष इण आलाव करी सगलाई आलावा जाणवाविचारी कहवा । जयाणंभंतेधायइखंडेदीवेदाहिणड्ढेदिवसेभवइ । जिवारे ण वाक्यालकारे हे भगवन् ! धातकीखंड द्वीपनें विषे दक्षिणार्द्धने विषे दिवसहुवे । तयाणंउत्तरड्ढेवि । तिवारे उत्तरार्द्धने विषे पणि दिनहुवे । जयाणंउत्तरड्ढेवि । जिवारे उत्तरार्द्धे पणि दिनहुवे । तयाणंधायइखंडेदीवे । तिवारे धातकीखंड नामा द्वीपने विषे । मंदराणंपव्वयाणंपुरच्छिमपच्चच्छिमेणंराईभवइ । चउरासीसहस्र योजन प्रमाण ऊंचो होय मेरुपर्वतछे ते आश्रयीने मंदराण एहवो कह्यो ते मेरुपर्वतने पूर्व तथा पश्चिमे रात्रि हुवे इतिप्रश्न । हता गोयमा । हा गौतम । जावराईभवइ । यावत् रात्रि हुवे एतलालगें कहवो । जयाणंभंतेधायइखंडेदीवे । जिवारे ण वाक्यालकारे हे भगवन् ! धातकीखंडना द्वीपनें विषे । मंदरा

॥ मूल ॥

णं पव्वयाणं पुरच्छिमेणं दिवसे भवइ तयाणं पच्चच्छिमेणवि जयाणं पच्चच्छिमेणवि तयाणं धायइखंडे मंदराणं पव्वयाणं उत्तरदाहिणेणं राई भवइ ? हंता गोयमा ! जाव भवइ एव एएणं अभिलावेण नेयव्वं जाव जयाणं भंते ! दाहिणद्धे पढमा उसप्पिणी तयाणं उत्तरद्धे तयाणं उत्तरद्धे तयाण धायइमंदराणं पव्वयाणं पुरच्छिमपच्चच्छिमेण नेवत्थि उसप्पिणी जाव समणाउसो ? हंता गोयमा ! जाव समणाउसो जहा लवणसमुद्द वत्तव्वया तहा कालोदहिस्सवि भाणियव्वा णवरं कालोदहिस्स नामं भाणियव्वं अभिंतरपुरक्खद्धेण भंते !

॥ भाषा ॥

णपव्वयाणपुरच्छिमेणदिवसेभवइ। मेरुनामा पर्वतछे तेहने पूर्वदिशे दिवस हुवे। तयाणपचच्छिमेणवि। तिवारे पश्चिमे पणि दिवस हुवे। जयाण पचच्छिमेणवि। जिवारें पश्चिमेपणि दिवस हुवे। तयाणधायइखंडे। तिवारे धातकीखंडने विषे। मंदराणपव्वयाण। मेरुनामा पर्वतने। उत्तरदाहिणेणराई भवइ। उत्तरें तथा दक्षिणे रात्रि हुवे इतिप्रश्न। हंता गोयमा जावभवइ। हा गौतम। यावत् रात्रिहुवे एतलानगे कहवो। एवएणणअभिलावेणणेयव्वं। इम इणें आलावें करी जाणवो। जावजयाणभंतेदाहिणद्धेपढमाओसप्पिणीपडिवज्जइ। यावत् जिवारें हे भगवन्! दक्षिणार्द्धे पहिली अवसर्पिणी हुवे। तयाणंउत्तरद्धेवि। तिवारेणं वाक्यालंकारे उत्तरार्द्धे पणि पडिवजे। जयाणउत्तरद्धे। जिवारे उत्तरार्द्धनें विषे पणि पडिवजे। तयाणंधायइखंडेदीवे। तिवारें धातकीखंड नामा द्वीपे। मंदराणपव्वयाण। मेरुनामा पर्वतने। पुरच्छिमपचच्छिमेण। पूर्वे तथा पश्चिमे। णेवत्थिओसप्पिणी। नथीछे अवसर्पिणी काल विशेष। णेवत्थिउस्सप्पिणी। नथीछे उत्सर्पिणी काल विशेष। जावसमणाउसो। यावत् हे श्रमण आउखावंत। जहालवणसमुद्दस्सवत्तव्वया। इम जिम लवण समुद्रनी वक्तव्यता कही पूर्वे। तहाकालोदहिस्सविभाणियव्वा। तिम कालो दधिनी पणि वक्तव्यता जांणवो। णवरकालोदहिस्सनामभाणियव्व। एतलो विशेष जिहां लवणसमुद्रनो नाम कह्यु तिहां कालो दधिनोनाम कहवो आठलाख योजन प्रमाण जाणवो। अभिंतरपुक्खरद्धेणभंतेसूरियाउदीणपाईणमुग्गच्छ। मांहिलो पुष्करार्द्धे पणि हेभगवन् सूर्य इहां ४२ छें ते ईशानकूणें ऊगीने इत्यादि ईशानकूणि आथमैं।

॥ टीका ॥

१ ॥ प्रथमोद्देशके दिशु दिवसादिविज्ञाग उक्तो द्वितीयेतु तास्वेव वातं प्रतिपिपादयिषु वातन्नेदा स्ताव दन्निधातु माह ॥ रायगिहे इत्यादि ॥ अत्थित्ति ॥ अस्त्ययमर्थो यदुत वाता वान्तीति योग कीदृशा इत्याह ॥ ईसिंपुरेवायत्ति ॥ मनाक् सस्नेहवाताः ॥ पत्थावायत्ति ॥ पथ्या

॥ मूल ॥

सूरिया उदीचिपाईण मुग्गच्छ जहेव धायइखंडस्स वत्तव्वया तहेव अब्भिंतरपुरक्खरद्धस्सविन्नाणियव्वा, णवरं अभिलावो जाणियव्वो जाव तयाणं अब्भिंतरपुरक्खद्धे मंदराणं पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं णेवत्थि उसप्पिणी णेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थकाले पसत्ते समणाउसो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स पढमोउद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ १ ॥ रायगिहे णगरे जाव एवंवयासी अत्थिणं भंते! ईसिं पुरे वाया पत्थावाया मंदावाया महावाया वायंति? हंता अत्थि। अत्थिणं भंते! पुरच्छिमेणं ईसि पुरेवाया पत्थावाया

॥ भाषा ॥

जहेवधायइखंडस्सवत्तव्वया। इम जिम धातकीखंडनी वक्तव्यता कही। तहेवअब्भितपुक्खरद्धस्सविभाणियव्वा। तिमहीज माहिला पुष्कर अर्द्धनी पणि वक्तव्यता कहवी अर्द्ध ते मानुसोत्तर माहिके तेमाटे। णवरअभिलावोजाणियव्वो। एतलो विशेष आलावो इम जाणवो। जावतयाणं। यावत् तिवारें। अब्भितरपुक्खरद्धेमंदराणपुरच्छिमपच्चच्छिमेणं। अभ्यंतर पुष्करार्द्धनें विषे मेरुपर्वतनें इहां पर्यंत विषे तेहनें पूर्वे तथा पश्चिमनें विषे—ठाणांगेभणियमिणं पुक्खरद्धोवहनाइसलिलाओ। भट्टिमुमाणसणगं पुक्खरद्धद्धिमिउवणेइ ॥ १ ॥ णेवत्थिओसप्पिणी। नहीं छे अवसर्प्पिणी काल विशेष। णेवत्थिउस्सप्पिणी। नही छे उत्सर्प्पिणी काल विशेष। अवट्ठिएण। सदैव सरीषो। तत्थकाले प। तिहां काल कह्यो। समणाउसो। हे श्रमण आयुष्मन्। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सत्यछे अन्यथा नहीं। पंचमसयस्सपढमओ ५। १। एपांचमा शतकनो पहिलो उद्देशो अर्थथी कह्यो ५ ॥ १ ॥ रायगिहेणयरेजाव एववयासी। पहिले उद्देशे दिशिने विषे दिवसादिकनो विभाग कह्यो बीजें तेदिशिनें विषे वात कहवानो वांछायें वातना भेद पहिला कहेछे राजगृहनामा नगरनें विषे यावत् इम कहे। अत्थिणभंतेईसिपुरेवाया पत्थावाया महावायावायंति। छे एवाख्यालकारे हेभगवन्! थोडा

॥ टीका ॥

वनस्पत्यादिहिता वायवः ॥ मंदावायत्ति ॥ मन्दाः शनैः सञ्चारिणो ऽमहावाता इत्यर्थः ॥ महावायत्ति ॥ उद्दण्डवाता अनल्पा इत्यर्थः ॥ पुरच्छि मेणति ॥ सुमेरोः पूर्वस्यां दिशीत्यर्थः, एवमेतानि दिग्विदिगपेक्षया अष्टौ सूत्राणि, उक्त दिग्भेदेन वातानां वानमथ दिशामेव परस्परोपनिबन्धेन तदाह ॥ जयाणमित्यादि ॥ इच्च द्वे दिक्सूत्रे द्वे च विदिक्सूत्रे इति अथ प्रकारान्तरेण वातस्वरूपनिरूपणासूत्रं, तत्र ॥ दीविच्चगत्ति ॥ द्वैप्या द्वीपस

॥ मूल ॥

मंदावाया महावायावायति ? हंता अत्थि । एवं पच्चच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिण पुरच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमेणं उत्तरपच्चच्छिमेणं। जयाणं भंते ! पुरच्छिमेणं ईसिंपुरेवाया पत्थावाया मंदा वाया महावाया वायंति तयाणं पच्चच्छिमेणवि ईसिं पुरेवाया जयाणं पच्चच्छिमेणं ईसिपुरेवाया तयाणं पुरच्छिमेणवि ? हंता गोयमा ! जयाणं पुरच्छिमेणं तयाणं पच्चच्छिमेणवि ईसिं । जयाणं पच्चच्छिमेणवि ईसि तयाणं पुरच्छिमेणवि ईसि । एवं दिसासु विदिसासु । अत्थिणं भंते ! दीवच्चया ईसिं हंता अत्थि ।

॥ भाषा ॥

स्नेह सहित वायरा पथ्य वनस्पत्यादिकने हितकारी वायरा हलवेसनरे महावाय मोटी उद्दण्डवायरा थोडावायरा नहीं एहवायरा वाजे इतिप्रश्न । हता अत्थि । हा गौतम । छे च्यार भेदेवात । अत्थिणंभंतेपुरच्छिमेणं । णं वाक्यालंकारे हे भगवन् । सुमेरुपर्वतने पूर्वदिशे । ईसिपुरेवाया । थोडासा स्नेहसहित वायरा । पत्थावायामंदावाया । वनस्पतादिकने हितकारी वायरा हलवे सनरे वाक्यालंकारे तेवायरा । महावायावायति । उद्दण्ड वा यरा वाक्यालंकारे एहवा वायरा वाजे इतिप्रश्न । हंतात्थि । हा गौतम । वायरा वाजे छे । एवपच्चच्छिमेणं । इम पूर्वनीपरे पश्चिमें पणि कहवो । दाहिणेणं । इम दक्षिणें पणि कहवो । उत्तरेणं । इम उत्तरें पणि कहवो । उत्तरपुरच्छिमेणं । इम उत्तर पूर्व विचाले ईशानकूणें । दाहिणपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमेणं । दक्षिण पश्चिमविचाले नैरुतकूणने विषे उत्तरपच्चच्छिमेणं । उत्तर पश्चिमविचाले वायव्यकूणने विषे एणतन्नादिशिविदिशिनो अपेक्षायें आठसूत्र कह्या । जयाणभंतेपुरच्छिमेणं । जिवारे हे भगवन् । पूर्वदिशिने विषे । ईसिपुरेवाया । थोडासानेहवायरा । पत्थावाया । वनस्प

॥ टीका ॥

स्वन्धिन· ॥ सामुद्दियत्ति ॥ समुद्रस्यैते सामुद्रिका, अन्नमन्नविवच्चासेणंति ॥ अन्योन्यव्यत्यासेन यदैके ईषत्पुरोवातादिविशेषणा वांति तदेतरे न त
थाविधावान्तीत्यर्थ. ॥ वेलंनाइक्कमइत्ति ॥ तथाविध वातद्रव्यसामर्थ्यो द्वेलाया स्तथास्वभावत्वा च्चेति, अथ वातानां वाने प्रकारत्रयं सूत्रत्रयेण दर्शं

॥ मूल ॥

अत्थिणं भंते ! सामुद्दियाईसिं हंता अत्थि । जयाणं भंते ! दीविच्चयाईसिं तयाणं सामुद्दियाविईसि जया
णं सामुद्दियाईसिं तयाणं दीविच्चयाईसि ? णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते ! एवंवुच्चइ जयाणं दीविच्चयाईसिं

॥ भाषा ॥

त्यादिकने हितकारीवायरा मदावाया । मदवायरा । महावाया । उद्दडवायरा । वायति । वाजे । तयाणपच्चच्छिमेणवि । तिवारे पश्चिमदिशिने विषे
ईसिपुरेवाया । ईषत्वायरा ४ वाजे । जयाणंपच्चच्छिमेण । जिवारे पश्चिमदिशिने विषे ईसिपुरेवाया । थोडावायराआदिदेई ४ वायरावाजे । तयाणपुर
च्छिमेणवि । तिवारे पूर्वदिशिने विषे पणि ४ वायरावाजे इतिप्रश्न हता गो० । हागोतम । जयाणपुरच्छिमेणईसि । जिवारे पूर्वदिशिने विषे ४
वायरावाजे । तयाणपच्चच्छिमेणविईसि । तिवारे पश्चिमदिशिने विषेपणिईसिइत्यादि ४ वायरावाजे । जयाणपच्चच्छिमेणविईसि । जिवारे पश्चिमदिशि
ने विषे पणिईसिआदिदेई ४ वायरावाजे । तयाणपुरच्छिमेणविईसि । तिवारे पूर्वदिशिने पणिईसिआदिदेई ४ वायरावाजे । एवदिसासुविदिसासु ।
इम दिशिने विषे पणि तथा विदिशिने विषे सूत्रबेबेकहवा हवेप्रकारातरेवातस्वरूपनिरूपणकहेछे — अत्थिणभतेदीविच्चयाईसि । हे भगवन् ! द्वीप
सबधीईसिइत्यादि ४ वायरावाजेइतिप्रश्न । हताअत्थि । हागौतम । अत्थिणभतेसामुद्दियाईसि । हे भगवन् ! समुद्रसबधीईसिइत्यादि ४ वायराइति
प्रश्न । हताअत्थि । हागौतम । छे जयाणभतेदीविच्चयाईसि । जिवारे हे भगवन् ! द्वीपसबधीईसिआदिदेई ४ वायरावाजे । तयाणसामुद्दियाविईसि ।
तिवारे समुद्रसबधीपणिईसिआदिदेई ४ वायरावाजे । जयाणंसामुद्दियाईसि । जिवारे समुद्रसबधीईसिआदिदेई ४ वायरावाजे तयाणदीविच्चयाई
सि । तिवारे द्वीपसबधीईसिआदिदेई ४ वायरावाजे गो० णोइणठेसमठे । हे गौतम ! एअर्थ समर्थनही । सेकेणठेणभतेणववुच्चइ । तिवारे गोतमकहे ते
किसेअर्थे हे भगवन् ! इमकह्यो । जयाणदीविच्चयाईसि । जिवारे द्वीपसबधीईसिआदिदेई ४ वायरावाजे। णोणतयासामुद्दियाईसि । तिवारे समुद्रसबधी

यन्नाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ इहच प्रथमवाक्यं प्रस्ताव नार्थमिति न पुनरुक्त मित्याशङ्कनीय ॥ आहारियरियंतित्ति ॥ रीतं रीतिः स्वभावइत्यर्थ ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥ णोणंतया सामुद्दियाईसि जयाणं सामुद्दियाईसिं णोणंतयादीविच्चयाईसिं ? गोयमा ! तेसिणं वायाणं अ सामसाविवच्चासेणं लवणसमुद्दे वेल नाइक्कमइ सेतेणठ्ठेणं जाव वाया वायंति। अत्थिणं भंते! ईसिंपुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति ? हंता अत्थि। कयाणं भंते ! ईसिं जाव वायति ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए अहारियरियंति तयाणं ईसिं जाव वायंति। अत्थिणं भंते ! ईसि हंता अत्थि कयाणं

॥ भाषा ॥ द्वीपसंबंधी ईसिआदिदेई ४ वायरावाजेनही। जयाणमामुद्दियाईसि। जिवारे समुद्रसंबधीईसिआदिदेई ४ वाजे। णोणतयादीविच्चयाईसि। तिवारेद्वीपसंबधी ईसिआदिदेई ४ वायरावाजेनहीइतिप्रश्न। गो तेसिणवायाणअन्नमन्नविवच्चा। हे गौतम। वायरानें माह्होमाहि विपर्यासेविपरीतपणेंकरी ते किम जिवारेद्वीपसंबधीवायरावाजे तिवारेसमुद्रसंबंधीनवाजे जिवारेसमुद्रसंबधी वायरावाजे तिवारेद्वीपसंबधी वायरावाजे एहवोजस्वभावछे सेणंलवणसमुद्दे वेलणाइक्कमइ। लवणसमुद्रनोवे लिउल्लंघेनहीं तथाविधवातद्रव्य समर्थपणांथको वेलिना तथाविधस्वभावथकी अथवा लोकनां स्वभावथकी। सेतेणठ्ठेणजावयायावायति। तेतेणअर्थे इमकह्यू यावत् वायरा वाजे। हवे वायराने वाज वाने विषे प्रकारतीन सूत्र तीनभेदे देखाडेछे अत्थिणभंतेईसिपुरेवाया पत्थावाया मंदावाया महावायावायति। हे भगवन्। थोडासात्रेहवायरा वनस्पतीने हितकारीवायरा मंदवायरा उदंड वायरा वाजेइतिप्रश्न हंताअत्थि। हांगौतम। छे। कयाणभंतेईसिजाववायति। किवारे हे भगवन्। थोडासात्रेहवायरा वाजेइतिप्रश्न। गो० जयाणवाउयाएअहारियरियति। हेगौतम। जिवारे वायुकाय यथास्वभावकरीने ते अतिक्रमेनही ते यथारीते जाय जिवारे स्वभावनो गतिचाले। तयाणईसिजाववायति। तिवारे थोडासात्रेहवायरा आदिदेई ४ वायरावाजे। अत्थिणभंतेईसि। हे भगवन्। ईषत्आदिदेई ४ वायरावाजेइतिप्रश्न। हंताअत्थि। हांगौतम। वाजे छे। कयाणभंतेईसि। किवारे हे भगवन्। ईसि ४ वाजेइतिप्रश्न। गो० जयाणवाउएउत्तरक्रियरियंतितयाणईसि। हे गौतम। जिवारेवायुकायनो प्र

॥ टीका ॥

स्तस्या नतिक्रमेण यथारीतं रीयते गच्छति यथास्वाभाविक्या गत्या गच्छतीत्यर्थः ॥ उत्तरकिरियन्ति ॥ वायुकायस्यहि मूलशरीर मौदारिक, मुत्तरंतु वैक्रिय मत उत्तरा उत्तरशरीराश्रया क्रिया गतिलक्षणा यत्रगमने त दुत्तरक्रियं त द्यथाभवती त्येवं रीयते गच्छति इह चैकसूत्रेणैव वायुवानकार णत्रयस्य वक्तु शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरण त द्विचित्रत्वा त्सूत्रगते रिति मन्तव्यं, वाचनान्तरे त्वाद्यं कारण महावातवर्जितानां द्वितीयतु मन्दवातव

॥ मूल ॥

न्नते ! ईसिं ? गोयमा ! जयाणं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ तयाणं ईसिं । ऋत्थिण न्नते ! ईसिं ? हंता ऋत्थि । कयाण न्नते ! ईसिंपुरे वाया पुच्छा गोयमा ! जयाणं वाउकुमारा वाउकुमारीन्नवा ऋप्पणोपरस्स वा तदुन्नयस्सवा ऋठाए वाउकायंउदीरंति तयाणं ईसिपुरेवाया । वाउयाएण न्नते ! वाउयंचेव ऋाणमं तिवा पाणमंतिवा जहाखदए तहा चत्तारि ऋालावगा नेयव्वा ऋणेगसयसहस्सपुठे उद्दायससरीरी निक्ख

॥ भाषा ॥

रीरऔदारिकछै अने उत्तरवैक्रियकरी उत्तरशरीराश्रयक्रिया गतिलक्षणजेगमनते उत्तरवैक्रियगतियेंजायइत्यर्थं । अत्थिणभंतेईसिं । हे भगवन् ! ईसि ४ वायरावाजेइतिप्रश्न । हताअत्थि । हागौतम । वाजेछै । कयाणभतेईसिंपुरेवायापुच्छा । किवारे हे भगवन् ! ईसि ४ वायरावाजेइतिप्रश्न । गो० जयाण वाउकुमारा । हे गौतम । जिवारेवायुकुमारदेवतथा । वाउकुमारीओवा । वायुकुमारनीदेवीओ । अप्पणोपरस्सवा । आपणनेतथापरने । तदुभयस्सवा । त याआपपरबेजंने । अठाए । अर्थेप्रयाजने । वायुकायाउदीरेंति । वायुकायप्रते उदीरणाकरे । तयाणईसिपुरेवाया । वाउयाएणभतेवाउयचेव । तिवारेई सिआदिदेई ४ वायरावाजेवायुकायना अधिकारथी जणकहैछे वायुकाय ख्वाक्वालकारे हेभगवन् ! वायुनेनिश्चै । आणमतिवा । बाह्यअभ्यतर । पाणमति वा । सासोस्सासग्रहै । जहाखदएतहाचत्तारिआलावगाणेयव्वाअणेगसयसहस्सपुठ्ठेउद्दएसरीरीनिक्खमइ । जिमखदकने विषे तिम च्यारि आलावा कहवा तिहा आणमतिवायराद्दीजनो स्वासऊसासल्ये एपहिलो १ अणेगसएबीजो २ ते इम—वाउयाएणंभतेवाउयाएचेवअणेगसयसहस्सखुतो उद्दाइत्ता २ तत्थेवभुज्जो २ पच्चायाए हंता गोयमा । वायुकायमाहें अनेकलाखवारमरी २ जपजे पुठ्ठे उद्दाइत्ति एत्रीजो ते इमसे—भंतेकिंपुठ्ठे उद्दाइअपुठ्ठे उद्दाइगो० पुठ्ठे

॥ टीका ॥ ज्झिताना तृतीय चतुर्गाम प्युक्तमिति, वायुकायाधिकारा देवेदमाह ॥ वायुकाएणमित्यादि ॥ जहासंदएइत्यादि ॥ तत्र प्रथमो दर्शितएव ॥ अणे गेत्यादि ॥ द्वितीय' सचैव-वाउयाएणं भंते । वाउयाएचेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चायाइ हता गो० । पुट्ठेउद्दाइइत्ति तृतीय, सचैव। से भंते-किंपुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठे उद्दाइ ? गो० । पुट्ठेउद्दाइ नोअपुट्ठे, ससरीरीत्यादि चतुर्थं सचैव-सेभंते । किंसरीरी निक्खमइ अ सरीरी? गो० । सियसरीरीत्यादि' वायुकाय श्चिन्तितो यथवनस्पतिकायादीन् शरीरत श्चिन्तयन्नाह ॥ अहेत्यादि ॥ एएणति ॥ एतानि णमित्यलङ्कारे॥

॥ मूल ॥ मइ । अह भंते ! उदणे कुम्मासे सुरा एएण किं ससरीराइवत्तव्वसिया ? गोयमा ! उदणे कुम्मासे सुरायजे घणे दव्वे एएणं पुव्वभावपन्नवणं पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा तनपच्छा सत्थातीया सत्थपरिणामिया अगणि ज्झामिया अगणिज्झूसिया अगणिसेविया अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीराइवा वत्तव्वंसिया । सुरा

॥ भाषा ॥ उदृदादनोअपुट्ठे उद्दाइ । गत्यादिफरस्यामरे पणि अणफरस्यानमरे २ ससरीरीइत्यादि चौथो ४ ते इम—सेभंतेकिंसरीरोनिक्खमइ असरीरोनिक्खमइ गोयमा सियसरीरोनिक्खमइ सियअसरीरोनिक्खमइ औदारिकनोअपेक्षावेशरीर रहितनोकले तैजसकार्मणनो अपेक्षायेशरीरसहितनोकले ० चो थो आलावो ४ पाछे वायुकायचीतव्यो हवे वनस्पतीकायकहेछे अहभंतेउदणेकुम्मासे । अथ हे भगवन् । चोखा कुल्माषकुलथ सुरा मदिरा एए णंकिंसरीरातिवत्तव्वसिया । एह पृथिवीकायादिमाहे स्यानां शरीरइमो वक्तव्यताहुइइतिप्रश्न । गो० उदणेकुम्मासे । हेगोतम । चोखाकुलथा । सुरा । एएजेघणेदव्वे एएणपुव्वभावपणवणपडुच्च । मदिरा एहमुराने विषे जेघट्टद्रव्यछे एवाघनद्रव्य बोजो द्रव्यद्रव्य २ तिहां जेघनद्रव्यगुलधातकोपुष्पा दिक ते एहांने पूर्वपर्याय आश्रयीने । वणस्सइजोवसरीरातओपच्छासत्थातोया सत्थपरिणामिया अगणिज्झामिया अगणिज्झूसिया अगणिसेविया अ गणिपरिणामिया अगणिजीवसरीराइवत्तव्वसिया । वनस्पतीना शरीरजाण पछिनाओदनादिक वनस्पतीकायहता तिवारेपछी शस्त्रजेऊखलमू सलयत्रादिक करणभूतेकरी अती अतिक्रम्यां पूर्वपर्याय शस्त्रकरी परिणमाव्या कीधा अभिनवपर्याय अग्निकरोधम्या पोताना वर्णना परित्या

॥ टीका ॥

किसरीरत्ति ॥ केषा शरीराणि किंशरीराणि ॥ सुराएयजेयणेत्ति ॥ सुरायां द्वे द्रव्येस्याता घनद्रव्यं द्रवद्रव्यंच तत्र यद्घनद्रव्य ॥ पुव्वभावपन्नवणंपडु च्चत्ति ॥ अतीतपर्यायप्ररूपणा मङ्गीकृत्य वनस्पतिशरीराणि, पूर्वंहि उदना दयो वनस्पतय ॥ तउपच्छत्ति ॥ वनस्पतिजीवशरीरवाच्यत्वा नन्तर अग्निजीवशरीराणी तिवक्तव्य स्यादिति सम्बन्ध , किंभूतानि सन्तीत्याह ॥ सत्थातीयत्ति ॥ शस्त्रेणो दूखलमुशलयन्त्रकादिना कारणभूतेन अतीतानि अतिक्रान्तानि पूर्वपर्यायमिति शस्त्रातीतानि ॥ सत्थपरिणामियत्ति ॥ शस्त्रेण परिणामितानि कृतान्निनवपर्यायाणि शस्त्रपरिणामितानि ततश्च ॥

॥ मूल ॥

एय जेदव्वे एएणं पुव्वभावपन्नवणपडुच्च आउजीवसरीरा तउपच्छा सत्थातीया जाव अगणिसरीराइवत्तव्वं सिया । अहणं भंते ! अये तंबे तउए सीसए उवले कसट्ठिया एएणं किं सरीराइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! अये तंबे तउए सीसए उवले कसट्ठिया एएणं पुव्वभावपन्नवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा तउपच्छा सत्थाईया

॥ भाषा ॥

गयकी अग्निकरी पूर्वस्वभाव खपाव्या अग्निकरा सेव्या अग्निपरिणामथया उपयोगगयकी अथवा इत्यादिकने विषे अग्नि तेहीज शस्त्र इत्यादिक तेहनोजव्याख्यापनइति अगणिजीवसरीरइसो कहवाय । सुराएयजेद्व्वे । सुरानेजेद्रव्य । एएणंपुव्वभावपन्नवणंपडुच्च । एहने विषे पूर्वपर्यायआश्रयीने । आउजीवसरीरा । अपकायजीव शरीरकहवाय । तओपच्छासत्थातीया । तिवारपछी शस्त्रअतिक्रम्यापूर्वपर्याय । जाव अगणिजीवसरीरा इवत्तव्वसिया । यावत् अग्निजीवशरीर इसो वक्तव्यता हुवे। अहणभंते अये तंबे तउए सीसए उवले । हवे हे भगवन् ! लोह तांबो तरुओ सोसो पाषाणदग्ध । कसट्ठिया । कसोटो कट्टधातुविशेष । एएणंकिसरीराइवत्तव्वसिया । एहकिस्युंशरीर इसीवक्तव्यता हुवेइतिप्रश्न । गो० अये तंबे तउ एसीस एउवले । हे गौतम । लोहडो तांबो तरुओ सीसो दग्धपाषाण । कसट्ठिया । कट्टधातुविशेष । एएण पुव्वभावपन्नवणपडुच्च । एहने पूर्वपर्याय आश्रयीने । पुढविजीवसरीरा । पृथिवीकायजीवशरीरकहवाय । तओपच्छासत्थातीया । तिवारपछी श स्त्रअतिक्रम्या । जावअगणिसरीराइवत्तव्वसिया । यावत् अग्निजीवशरीरइसो वक्तव्यताहुवे । अहभंते अट्ठी अट्ठिज्झामे चम्मे चम्मज्झामे रोमे

अगणिज्झामियत्ति ॥ वह्निना ध्यामितानि ध्यामीकृतानि स्वकीयवर्णत्याजनात्, तथा ॥ अगणिज्झूसियत्ति ॥ अग्निना झोषितानि पूर्वस्वभावक्षप णात्, अग्निसेवितानि वा; जुषीप्रीतिसेवनयो रित्यस्य धातो प्रयोगात् ॥ अगणिपरिणामियाइति ॥ सञ्जाताग्निपरिणामानि गौण्ययोगादिति, अ थवा, सत्यातीताइत्यादौ शस्त्र मग्निरेव, अगणिझामियाइत्यादितु तद्व्याख्यानमेवेति ॥ उवलेवेत्ति ॥ इह दग्धपाषाण ॥ कसट्टियत्ति ॥ कट्ट ॥ अट्ठिज्झामित्ति ॥ अस्थिच तच्छ्यामचा ग्निना श्यामलीकृत मापादितपर्यायान्तर मित्यर्थ ॥ इगालेत्यादि ॥ अङ्गारो निर्ज्वलितेन्धन ॥ छारियत्ति ॥ क्षारिक भस्म ॥ बुसेत्ति ॥ बुस ॥ गोमयत्ति ॥ छगण इह बुसगोमयौ भूतपर्यायानुवृत्त्या दग्धावस्थौ ग्राह्यौ' यन्यथा अग्निध्यामितादिवक्ष्यमाण

जाव अगणिसरीराइ वत्तव्वंसिया । अहन्नंते ! अट्ठी अट्ठिज्झामे चम्मे चम्मज्झामे रोमे २ सिंगे २ खुरे २ नहे २ किण्णं किंसरीराइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! अट्ठी चम्मे रोमे सिंगे खुरे नहे एएणं तस्स पाणजीव सरीरा अट्ठिज्झामे चम्मज्झामे रोमज्झामे सिगखुरणहज्झामे एएणं पुव्वभावपणवण पडुच्च तस पाणजीव सरीरा तत्तपच्छासत्याईया जाव अगणित्ति वत्तव्वंसिया । अह भंते! इंगाले छारिए बुसे गोमए एएणं किं

रोमज्झामे सिंगे सिंगज्झामे खुरे खुरज्झामे नखे नखज्झामे एएणंकिंणसरीराइवत्तव्वंसिया । कवे हे भगवन् ! हाडप्रमित हाडबाल्यो तेह चर्मचामडो चर्मबाल्यो रोम रोमबाल्यो खुर खुरबाल्यो नख नखबाल्यो सींग सींगबाल्यो ए० शाकारकार केहनेकिम्या शरीर कहवा कहे इतिप्रश्न । गोयमा अट्ठे चम्मे रोमे सिंगे खुरे नहे । हेगौतम । हाड चर्म रोम सींग खुर नख । एएणतसपाणजीवसरीरा । एहनें त्रस प्राण जीव शरीर एहवो कहे तथा । अट्ठिज्झामे । हाडबाल्यो । चम्मज्झामे रोमज्झामे । चर्मबाल्यो रोमबाल्यो । सिंगखुरणहज्झामे । सींग खुर नख एतोनेंहे पणि बाल्या । एएण पुव्वभावपणवणपडुच्च । एहनें पूर्वभाव पर्याय आश्रयीनें । तसपाणजीवसरीरा । त्रस प्राणी जीव शरीर एहवो कहवाय । तयोपच्छा । तिवारपछी । सत्यातीया । शस्त्र अतिक्रम्याथका । जावअगणित्तिवत्तव्वंसिया । यावत् अग्निशरीर इसो वक्तव्यता कहवो हुवे । अहभंते इंगाले छारिए बुसे गोमए ।

॥ टीका ॥

विशेषणाना मनुपपत्ति' स्यादिति, एते पूर्वभावप्रज्ञापनां प्रतीत्य एकेन्द्रियजीवैः शरीरतया प्रयोगेण स्वव्यापारेण परिणामिता ये ते तथा एके न्द्रियशरीराणीत्यर्थ' अपि' समुच्चये यावत्करणा द्वीन्द्रियजीवशरीरप्रयोगपरिणामिताअपी त्यादिदृश्यं' द्वीन्द्रियादिजीवशरीरपरिणतत्वच यथास म्भवमेव नतु सर्वपदेष्विति, तत्र पूर्वं मङ्गारो त्रसमच एकेन्द्रियादिशरीररूपं भवति, एकेन्द्रियादिशरीराणा मिन्धनत्वात्, बुसतु यवगोधूमहरिता वस्थाया मेकेन्द्रियशरीर' गोमयस्तु तृणाद्यवस्थाया मेकेन्द्रियशरीर द्वीन्द्रियादीना तु गवादित्रि भक्षणे द्वीन्द्रियादिशरीरमपि, पृथिव्यादिकायाधि कारा दप्कायरूपस्य लवणोदधे स्वरूपमाह ॥ लवणेणमित्यादि ॥ एवनेयव्वति ॥ उक्ताभिलापानुगुणतया नेतव्य जीवाभिगमोक्तं लवणसमुद्रसूत्र कि

॥ मूल ॥

सरीराइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! इगाले छारिए बुसे गोमए एएण पुव्वभावपन्नवणं एए एगिंदियजीवस रीरप्पयोगपरिणामियावि जाव पचिंदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामियावि तत्त पच्छा सत्थाईया जाव त्र गणिजीववत्तव्वंसिया। लवणेण भंते! समुद्देकेवइयं चक्कवालविक्खंभेणं पन्नत्ते—एवं नेयव्वं जाव लोगठिई लो

॥ भाषा ॥

एहनें स्यूंशरीर इसी वक्तव्यता हुवे ए जेहनें संभवे तेहने हुवे हेभगवन् । अंगार निर्ज्वलित इंधन भस्म करीष छाणो । एएणकिसरीराइवत्तव्वंसिया । एहनें पूर्वभाव पूर्व अवस्था मेलवा इतिप्रश्न । गोयमा इगाले । हे गौतम । अंगार । छारिए बुसे गोमए । भस्म करीष छाणा । एएणपुव्वभावपन्नवण । एकेंद्रिय जीव शरीर व्यापारें करी परिणम्या आश्रयीने । एगिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामियावि जावपचिंदियजीवसरीरप्पओगपरिणामियावि । पचेंद्रिय जीव शरीर प्रयोग परिणत पणि इत्यादि तिहां पहिला अगारनें पणि यावत् शब्द थकी वेइंद्री जीव शरीर प्रयोग परिणत पणि इत्यादि अवस्थानें विषे एकेंद्रिय शरीर बेंद्रियादिकने गाय भस्म ए एकेंद्रिय शरीर रूप बुस ते यवगोधूम हरितावस्थाने विषे एकेंद्रिय शरीर गोमयते तृणादि जावअगणिजीववत्तव्वंसिया यावत् अग्निजीव शरीर प्रमुखकीधा वेइंद्रियादि शरीर । तओपच्छासत्थातीया । तिवारपछी शस्त्र परिणम्या थका । लवणेण भंते समुद्देकेवइय चक्कवालविक्खंभेण पं । लवण इसी कहवो हुवे पृथिवीकायना अधिकार थको अप्काय रूप लवणसमुद्रनों अधिकार कहेछे—

मन्नमित्याह ॥ जावतीगेलाइ ॥ [illegible] परिक्लेवेणं [illegible] गोयमा ! [illegible] ॥ टीका ॥
पं [illegible] परिक्लेवेणं पन्नत्ते इत्यादि [illegible] इत्यादौ
प्रश्ने गोयमा ! [illegible] इत्यादि [illegible] ॥ इति पञ्चमशते द्वितीय ॥ २ ॥
[illegible]
[illegible] ॥ जावगढियति ॥ [illegible] ॥ जाणुपु [illegible] ॥ जाणुपुव्वी

आणुगामी सेवं भंते भंतेत्ति एवं भंतेत्ति भगवं जाव विहरइ ॥ पंचमसए बिइओ उद्देसो समत्तो ॥ २ ॥ ॥ सूत्र ॥
अण्णउत्थियाणं भंते ! एव माइक्खंति भासंति पण्णवेंति एवं परूवेंति से जहानामए जालगंठियाइवा आणु

[illegible] ॥ भाषा ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
भगवन् ! [illegible]

॥ टीका ॥

परिपाट्या ग्रथिता गुम्फिता आद्युचितग्रन्थीना मादौ विधाना दन्तोचितानाच क्रमेणा न्तएव करणात्, एतदेव प्रपञ्चयन्नाह ॥ अणंतरगंठियत्ति ॥ प्रथम ग्रथीना मनन्तरव्यवस्थापितै ग्रंन्थिभि सहग्रथिता अनन्तरग्रथिता एव परम्परं व्यवहितै सह ग्रथिता परम्परग्रथिता किमुक्तं भवति ॥ अन्नमन्नगंठिय त्ति ॥ अन्योन्य परस्परेण एकेन ग्रन्थिना सहा न्योग्रन्थि रन्येनच सहा न्य इत्येवं ग्रथिता अन्योन्यग्रथिता एवच ॥ अन्नमन्नगरुयत्ताएत्ति ॥ अन्योन्येन ग्रन्थना त् गुरुकता विस्तीर्णता अन्योन्यगुरुकता तया ॥ अन्नमन्नभारियत्ताएत्ति ॥ अन्योन्यस्य यो भार: सविद्यते यत्र तदन्योन्यभारिक तद्भाव स्तत्ता तया एत स्यैव प्रत्येकोक्तार्थद्वयस्य संयोजनेन तयोरेव प्रकर्षं मभिधातुमाह ॥ अन्नमन्नगरुयसंभारियत्ताएत्ति ॥ अन्योन्येन गुरुक यत्सभारिकच त तथा त द्भाव स्तत्ता तया ॥ अन्नमन्नघडत्ताएत्ति ॥ अन्योन्य घटा समुदायरचना यत्र तदन्योन्यघट तद्भाव स्तत्ता तया ॥ चिट्ठइत्ति ॥ आस्ते इति दृष्टन्तो

॥ मूल ॥

पुव्विगंठिया अणंतरगंठिया परंपरगंठिया अन्नमन्नगंठिया अन्नमन्नगुरुयत्ताए अन्नमन्नभारियत्ताए अन्न मन्नगुरुसंभारियत्ताए अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाइसहस्सेसु बहूइं

॥ भावा ॥

या अणतरगंठिया । तेयथा नामे दृष्टाते जाल तेमाछलानो बंधन तेहनी परें गांठिछे जेहने विषे एतले जिमजाली हुवे ते केहवें स्वरूपें हुवे तेकहेछे अनुक्रमें परिपाटीयें गूथीछे पहिला देवायोग्य ते पहिली दीधी छेहडें देवायोग्य गांठिते छेहडे दीधी एहीज विस्तारें करी कहेछे पहिली गांठि ने अंतररहित गांठि दीधी । परंपरगंठिया अन्नमन्नगंठिया । परंपरायें अनंतर गांठिथी अनंतरगांठि दीधी एतलेस्यूं कह्यूं एकगांठिस्यूं अनेरीगांठि दीधी तेहगांठिस्यूं अनेरीगांठि दीधी इम अन्योन्य गूथी । अन्नमन्नगुरुयत्ताए । माहोमाहि गूथवाथी विस्तीर्ण भावकीधी । अन्नमन्नभारियत्ताए । माहोमाहि भारपणे कीधी एवे जूदा कह्या तेभेला कहेछे । अन्नमन्नगुरुसंभारियत्ताए । माहोमाहि विस्तीर्णपणें कीधी अने भारीपणे पणि कीधी । अन्नमन्नघडत्ताएचिट्ठंति । माहोमाहि समुदाय रचना जिहा ते भावे करी रहें एदृष्टांत कह्यो हवे दृष्टांत मेलेछे । एवामेवबहूणं जीवाणं बहूसुआजाइ सहस्सेसुबहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगंठियाइं । इणें न्यायेकरी घणाजीव संबंधी घणा जातिना सहस्रदेवादि जन्मनें विषे प्रतिजीव अनुक्रमे प्रव

ऽयदार्ष्टान्तिक उच्यते ॥ एवामेवत्ति ॥ अनेनैव न्यायेन बहूनां जीवानां सम्यन्धीनि ॥ बहुसुआजाईसहस्सेसुत्ति ॥ अनेकेषु देवादिजन्मसु प्रतिजीव क्र मप्रवृत्ते घधिकरणभूतेषु बहू न्यायुकसहस्राणि तत्स्वामिजीवाना माजातीनाच बहुसहस्त्रसख्यानत्वात् आनुपूर्व्वी ग्रथितानीत्यादि पूर्ववत् व्याख्ये य, नवर मिह भारिकत्व कर्मपुद्गलापेक्षया वाच्य' अथे तेपा मायुपा को वेदनविधि रित्याह ॥ एगेवियेत्यादि ॥ एकोपि जीव आस्ता मनेक एकेन समयेनेत्यादि प्रथमशतवत् अत्रोत्तर ॥ जेतेएवमाहंसुइत्यादि ॥ मिथ्यात्व चेषामेव यानिहि बहूना जीवाना बहू न्यायूपि जालग्रन्थिकाव त्तिष्ठति तानि यथास्व जीवप्रदेशेषु सम्बद्धानि स्यु रसम्बद्धानिवा; यदि सम्बद्धानि तदा कथ भिन्न २ जीवस्थिताना तेपा जालग्रन्थिकाकल्पना कल्पयितु शक्या तथापि तत्कल्पने जीवानामपि जालग्रन्थिकाकल्पत्व स्या त्तत्सबद्धत्वात्, तथाच सर्वजीवाना सर्वायु' सवेदनेन सर्वज्ञवज्ञवनप्रस

आउयसहस्साइं आणुपुव्विगंठियाइं जाव चिठंति एगेवियण जीवे एगेण समएणं दोआउयाइ पडिसंवेद यइ तजहा—इह भवियाउयच परभवियाउयंच । जं समयं इह भवियाउय पडिसंवेदेइ तं समयं परभवि याउयं पडिसंवेदेइ । जाव से कह मेय भंते ! एवं ? गोयमा ! जणं ते अणउत्थिया तचेव जाव परभवि

त्यांनें विषे देवादि जन्मना सहस्रनें विषे घणा अजणाना सहस्रत आऊखाना स्वामी जीवना अनें जातिना बहुसहस्र सख्यपणा थकी अनुक्रमे परिपा टीएं गूथ्या अनुक्रमे बाध्याछें । जावचिठ्ठंति । यावत् तिष्ठति रहे एतलो विशेष इहा भारपणों कर्म पुद्गलनो अपेक्षाएं कहवो हवें आउखानें किसी वि धि वेदे तेकहेछे । एगेवियणं जीवेएगेणसमएणदोआउयाइ पडिसवेदयति तजहा । एक पणि जीव एकें समयें बेआउखा भोगवे एसर्व पहिला शतकनी परें कहवो तेकहेछें । इहभवियाउयच । इणि भवनो आऊखो चपुन । परभवियाउयच । परभवनो आऊखोचपुन । जसमयइह भविया उयपडिसवेदेइ । जे समयनें विषे इण भवनो आऊखो वेदे । तंसमयपरभवियाउयपडिसवेदेइ जावसेकहमेयंभतेएव । ते समयनें विषे परभवनो आऊ खो वेदे इत्यादि सर्व कहवो । यावत् ते किमके हेभगवन् । एह इतिप्रश्न । गोयमा जणतेअणउत्थियातंचेव । हे गौतम ! जेमाटे अन्यतीर्थी इम कहेछे

॥ टीका ॥

द्भइति, अथ जीवाना मसम्बद्धा न्यायूंषि तदा तद्वशा द्देवादिजन्मेति न स्या दसम्बन्धादेवेति' यच्चोक्त मेको जीव एकेन समयेन द्वे आयुषी वेदय ति, तदपि मिथ्या, आयुर्द्वयसवेदने युगपद्भवद्वयप्रसङ्गादिति ॥ अहंपुणगोयमेत्यादि ॥ इह पक्षे जालग्रन्थिकासकलिकामात्र ॥ एगमेगस्सेत्यादि ॥ एकैकस्य जीवस्य नतु बहूना बहु ष्वाजातिसहस्रेषु क्रमवृत्ते ष्वतीतकालिकेषु तत्कालापेक्षया सत्सु बहू न्यायु सहस्राणि अतीतानि, वर्त्तमानभवा न्ता न्यन्नविक मन्यत्नविकेन प्रतिबद्ध मित्येव सर्वाणि परस्पर प्रतिवद्धानि जवन्ति' न पुनरेकन्नवएव बहूनि, ॥ इहन्नवियाउयवत्ति ॥ वर्त्तमानभ वायु ॥ परन्नवियाउयवत्ति ॥ परभवप्रायोग्य यद्वर्त्तमानन्नवे निवद्ध तच्च परन्नवे गतो यदा वेदयति तदा व्यपदिश्यते ॥ परभवियाउयवत्ति ॥ आ

॥ मूल ॥

याउयंच जे ते एव माहंसु तंमिच्छा ? अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव अन्नमन्नघडत्ताए चिठंति एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजाइसहस्सेहिं बहूहिं आउसहस्साइं आणुपुव्विगंठियाइं जाव चि ठंति एगेवियणं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ तं० — इहन्नवियाउयंवा परन्नवियाउयंवा जंसमयं

॥ भाषा ॥

इत्यादि तिमहीज । जावपरभवियाउयंच । यावत् परभवनो आऊखो वेदे । जेतेएवमाहंसुतमिच्छा । जिणें इम कह्यु तेमिथ्या झूठू कहैछे । अहंपुण गोयमा । ह्रु वली हे गौतम । एवमाइक्खामि । इम कह्रू । सेजहानामए । ते यथानामे दृष्टाते । जालगंठियासिया । इणिपक्षे जालग्रंथिका स कलिका मात्रते । जावअन्नमन्नघडत्ताएचिठ्ठति । यावत् माहोमाहि समुदाय रचना पणें जिम रहैछे । एवामेवएगमेगस्सजीवस्सबहूहि जाइसहस्सेहि बहूहिआउसहस्साइ आणुपुव्विगठियाइ जावचिठ्ठति । एणे दृष्टाते एकेका जीवनें पणि घणा जीवने नहीं घणा जाति सहस्रने विषे घणा आऊखाना सहस्रने अनुक्रमवर्त्ती अतीतकालने विषे घणा आऊखाना सहस्रवितीतथया वर्त्तमान भवपर्यंत अन्यभवें करी अन्यभय प्रतिवद्ध इम सर्व परस्परें प्रति वद्ध हुवे पणि एक भवनें विषे घणा प्रतिवद्ध नहीं इम यावत् अनुक्रमे ग्रथित रहै । एगेवियण जीवेएगेणसमएण । वली एक जीव एके समयें करी । एगंआउयंपडिसवेदेइ । एक आऊखो अनुभवे वेदे । तं० इहभवियाउयवा परभवियाउयवा । ते कहैछे वर्त्तमान भवनो आऊखो जे वर्त्तमान भवनें

॥ मूल ॥

कहिं कडे कहिं समाइस्से ? गोयमा ! पुरिमे भवे कडे पुरिमे भवे समाइस्से एवं जाव वेमाणियाणं दंडगं। सेणूण भंते ! जे ज भविए जोणिंउववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ तजहा—नेरइयाउयवा जाव देवाउयंवा ? हंता गोयमा ! जे जंभविए जोणिंउववज्जित्तए से तमाउयं पकरेइ तंजहा—नेरइयाउयंवा तिरियमणुय देवाउयंवा, नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ तजहा—रयणप्पभापुढवीनेरइयाउयवा जाव अहे सत्तमापुढवीनेरइयाउयवा तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पचविहपकरेइ तजहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउ

॥ भाषा ॥

सा भवने विषे समाचरा ते आउखाना हेतु समाचरवाथको इतिप्रश्न। गोयमा पुरिमेभवेकडे। हेगौतम। ते आउखो पूर्व भवने विषे कोधो। पुरिमे भवेसमाइस्से। पूर्व भवने विषे समाचर्‍या ते आउखाना हेतु समाचरता थको। एवं जावेमाणियाणंदंडगो। इम यावत् वैमानिक देवपर्यंत दंडक कहवो। सेणूण भंते जेज भविए जोणिउववज्जित्तए। ते निश्चै हेभगवन्। जिको जेयोनिने विषे ऊपजवा योग्य तेयोनि प्रते ऊपजे। सेतमाउयपकरेइ। तेते आउखा प्रतें करे उपार्जे। त० णेरइयाउयवा तिरिक्खजोणियाउयवा मणुस्साउयवा देवाउयवा। ते कहैछै नारकीनां आउखा प्रते अथवा तिर्यंचयोनिना आउखा प्रते अथवा मनुष्यना आउखा प्रते अथवा देवताना आउखा प्रते इतिप्रश्न। हंता गोयमा। हां गौतम। जेजभविएजोणिउववज्जित्तए। जेजीव जे योनिने विषे ऊपजवा योग्यने योनिने विषे ऊपजे। सेतमाउयंपकरेइ त०। तेतेह आउखा प्रते करे उपार्जे तेकहैछै। णेरइयाउयवा तिरि मणु देवाउयवा। नारकीना आउखा प्रते अथवा तिर्यंच योनिनां आउखा प्रते मनुष्यनां आउखा प्रतें देवना आउखा प्रते। णेरइयाउयपकरेमाणे सत्तविहपकरेइ त०। नारकीनों आउखो करतोथको उपार्जतो थको साते प्रकारे उपार्जे तेकहैछे। रयणप्पभापुढवीणेरइयाउयवा। रत्नप्रभा पृथिवी नारकीनो आउखो उपार्जे अथवा। जावअहेसत्तमापुढवीणेरइयाउयंवा। यावत् नीचे सातमी नारकीनों आउखो उपार्जे। तिरिक्खजोणियाउयंपकरेमाणे। तिर्यंच योनिकनों आउखो उपार्जतोथको। पचविहपकरेइ त०। पांचे प्रकारे उपार्जे करे ते कहैछे। एगिंदियतिरि

॥ मूल ॥

इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ नोतंसमयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ जंसमयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ णोतं समयं इहभवियाउयं पडिसवेदेइ इहभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए णोपरभवियाउयस्स पडिसवेदणा पर भवियाउयस्स पडिसंवेदणाए णोइहभवियाउयस्सपडिसंवेदणा एवंखलु जीवे एगेणसमएणं एगंआउयं पडिसं वेदेइ तंजहा—इहभवियाउयवा परभवियाउयंवा । जीवेणं भंते ! जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणं भंते ! किंसाउए सकमइ निराउए संकमइ ? गोयमा ! साउए संकमइ नो निराउए संकमइ । सेण भंते ! आउए

॥ भाषा ॥

विषे बाधूते परभवनें विषे गयो जिवारे वेदे तिवारे कहीये परभविया । जसमयइहभवियाउयपडिसंवेदेइ । जे समयनें विषे वर्त्तमान भवनो आऊखो वेदे । णोतसमयपरभवियाउयपडिसवेदेइ । ते समयनें विषे परभवनो आऊखो वेदे नहीं । जंसमयपरभवियाउयपडिसवेदेइ । जे समयनें विषे परभव नो आऊखो वेदे । णोतसमयइहभवियाउयपडिसवेदेइ । ते समयनें विषे इणि भवनो आऊखो वेदे नहीं । इहभवियाउयस्सपडिसवेदणाए । इहभ वना आऊखानो प्रतिसवेदना करता थका । णोपरभवियाउयस्सपडिसवेदणा । पर भवना आऊखानो प्रति सवेदना नहुवे । परभवियाउयस्सपडि सवेदणाए । परभवना आऊखानो प्रतिसवेदना करता थका । णोइहभवियाउयस्सपडिसवेदणा । इह भवना आऊखानो प्रतिसवेदना न हुवे । एव खलुएगेजीवे । इम निश्चे एक जीव । एगेणसमएण । एके समये करी । एगआउयपडिसवेदेइ त० । एक आऊखा प्रते वेदे तेकहेछे । इहभवियाउयवा । इण भवना आऊखा प्रते । परभवियाउयवा । अथवा परभवना आऊखा प्रति । जीवेणभतेजेभविए णेरइउसुउववज्जित्तए । आऊखाना अधिकारथीज एकहेछे जीव णवाक्यालंकारे हेभगवन् । जे नारकीने विषे जावा योग्य नारकीने विषे ऊपजे । सेणभतेकिसाउएसकमइ निराउएसकमइ । ते णवा क्यालकारे हे भगवन् ! स्यू आऊखा सहित सक्रमे अथवा आऊखा रहित सक्रमें इतिप्रश्न । गोयमा साउएसकमइ । हे गौतम ! आऊखा सहित स क्रमे । णोणिराउएसकमइ । आऊखा रहित सक्रमें नहीं । सेणभतेआउएकहिंकडेकहिसमाइणे । ते हेभगवन् ! आऊखो किसा भवने विषे कीधूं कि

यु प्रस्तावा दिदमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ सेसेभतेत्ति ॥ अथ तद्भदत। कहिंकभेत्ति ॥ क्व भवे वह्र ॥ समाइसेत्ति ॥ समाचरित तद्धेतुसमाचरणा त् ॥ जेजभविएजोणिउववज्जितएत्ति ॥ विज्ञक्तिपरिणामा द्यो यस्या योना वुत्पत्तु योग्यइत्यर्थ ॥ मणुस्साउयदुविहति ॥ समूर्च्छिमगर्भव्युत्क्रान्ति कभेदा द्विधा ॥ देवाउयचउव्विहति ॥ भवनपत्यादिभेदात् ॥ इतिपंचमशतेतृतीय ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके ऽन्ययूथिकाच्छद्मस्थम नुष्यवक्तव्यतोक्ता चतुर्थे मनुष्याणा छद्मस्थाना केवलिनाच प्राय सोच्यत इत्येव सम्बन्धस्या स्येद मादिसूत्र ॥ छउमत्थेणमित्यादि ॥ आउडिज्जमा णाइति ॥ जुरुवधनेइतिवचनात् आजोडयमानेभ्य सम्बध्यमानेभ्यो मुखहस्तदंडादिना सह शखपठहझल्लर्यादिभ्यो वाद्यविशेषेभ्य आकुट्यमाने भ्योवा, एभ्यएव येजाता शब्दा स्त आजोडयमानाएव आकुट्यमानाएववा, उच्यन्ते, ऽत स्ता नाजोडयमाना नाकुट्यमानान्वा, शब्दान् शृणोति,

यवा भेदो सब्बो भाणियब्बो, मणुस्साउय दुविहं पकरेइ देवाउयं चउव्विह पकरेइ सेवं भते भतेत्ति ॥ पंच मसए तइअ उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ३ ॥ छउमत्थेणं भते ! मणूसे आउडिज्जमाणाइ सद्दाइ सुणेइ त० — सखसद्दाणिवा सिंगसद्दाणिवा संखियखरमुहियपोयापरिपिरियासद्दाणिवा पणवपडहभंभा

वखजोणियाउयवा । एकेंद्री तिर्यंच योनिक आउखो करे । भेदोसव्वोभाणियव्वो । भेद सर्व जाणवो यावत् पचेंद्रिय तिर्यंच आउखो करे । मणुस्सा उयदुविह देवाउयचउव्विह । मनुष्यनों आउखो विहु भेदे गर्भज मनुष्यनो आउखो करे समूर्छिम मनुष्यनों आउखो करे देवनो आउखो चिहू भेदे भवनपती १ व्यतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ । सेवभंते २ त्ति । पचमसयस्सततिओ ५ । ३ । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्य ते सत्यछे अन्यथा नही एप चमा शतकनो त्रीजो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ५ ॥ ३ ॥ छउमत्थेणभतेमणूसेआउडिज्जमाणाइ सद्दाइ सुणेइ त० । चौथे उद्देशे अन्यतीर्थी छद्मस्थ वक्तव्यता कही इहा छद्मस्थ मनुष्य तथा केवलीनो वक्तव्यता कहैछे छद्मस्थ हेभगवन् ! मनुष्य मुख हस्तदडादि करी आजोड्यमान सबधकरी जताथका शब्दादिक सुणे तेकहैछे । सखसद्दाणिवा । शखना शब्द प्रतें । सिंगसद्दाणिवा । सींगडा शब्दप्रते । संखियसद्दाणिवा । म

॥ टीका ॥

इहच प्राकृतत्वेन शब्दशब्दस्य नपुंसकनिर्देश, अथवा; आउज्झिज्जमाणाइंति, आकुट्यमानानि परस्परेण त्रिहन्यमानानि ॥ सद्दाइति ॥ शब्दानि शब्दद्रव्याणि शङ्खादय. प्रतीता ॥ नवरसंखियत्ति ॥ शङ्खिका ह्रस्वशङ्ख ॥ खरमुहित्ति ॥ काहला, पोया महतीकाहला ॥ पिरिपिरियत्ति ॥ कालिकपुटकावनद्धमुखो वाद्यविशेष' ॥ पणवत्ति ॥ भाण्डपटहो लघुपटहोवा; तदन्यस्तु पटहइति ॥ भंभत्ति ॥ ढक्का ॥ होरंभत्ति ॥ रूढिगम्या ॥ भेरित्ति ॥ महाढक्का ॥ झल्लरित्ति ॥ वलयाकारोवाद्यविशेष ॥ दुदुहित्ति ॥ देववाद्यविशेष' ॥ अथो क्तानुक्तसंग्रहद्वारेणाह ॥ तताणिवेत्यादि ॥ ततानि वीणादिवाद्यानि तज्जनितशब्दाअपि तता एव मन्यदपि पदत्रय नवर मयं विशेष स्ततादीना–ततवीणादिकज्ञेय विततपटहादिक । घनं

॥ मूल ॥

होरंभसद्दाणिवा भेरि झल्लरि दुंदुभिसद्दाणिवा तयाणिवितयाणिवा घणाणिवा झूसिराणिवा ? हंता गोयमा ! छउमत्थेण मणूसे आउज्झिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ तं०—संखसद्दाणिवा जावझूसिराणिवा। ताइं भंते ! किंपुठाइं

॥ भाषा॥

खिका लघु शब्द शखना शब्द प्रते सुणे । खरमुहिसद्दाणिवा । काहलीना शब्दप्रते सुणे । पोयासद्दाणिवा । मोटी काहलीना शब्दप्रते सुणे । परिपिरियासद्दाणिवा । कोलिया वडाना पुटतिणे मढ्यांवाजित्र विशेष तेहना शब्दप्रते सुणे । पणवसद्दाणिवा । भाडनो पडहो अथवा नान्हो पडहो तेहना शब्द प्रते सुणे । पडहसद्दाणिवा । ढोल तेहना शब्द प्रते सुणे । भभासद्दाणिवा । धौंसा दमामा ढका तेहना शब्दप्रते सुणे । होरभसद्दाणिवा । रूढिगम्य तेहना शब्दप्रते सुणे । भेरिसद्दाणिवा । मोटोढका मदनभेरी तेहना शब्दप्रते सुणे । झल्लरिसद्दाणिवा । झालरि वलयाकारे वाद्य विशेष तेहना शब्दप्रते सुणे । दुदुभिसद्दाणिवा । दुदुभिवाद्य विशेष तेहना शब्दप्रते सुणे । तताणिवा वितताणिवा घणाणिवा । हवे उक्त अनुक्त संग्रह द्वारेकरी कहेछे ततवीणादि वाद्य विशेष तेहथी ऊपना शब्दपणि तत तिमवीजा पणि तीनशब्द कहवा एतलो विशेष ततादिकनो तेकहेछे वीणादिक तेतत कहीये वितत पटहादिक कहीये कास्यतालादिक घन कहीये। झूसिराणिवा । सुषिरते वशादिक कहीये इतिप्रश्न । हता गोयमा । हा गोतम । छउमत्थेणमणूसे । छद्मस्थ मनुष्य । आउज्झिज्जमाणाइ सद्दाइ सुणेइ त । मुख हस्तादिके करी वजाईतायका शब्दप्रते सुणे तेकहेछे । संखस

॥ टीका ॥

तुकांस्यतालादि वंशादिशुपिरंमतमिति ॥ १ ॥ पुठाइसुणेइइत्यादितु ॥ प्रथमशते आहाराधिकारव दवसेयमिति ॥ आरगयाइंति ॥ आरा द्भाग स्थिता निन्द्रियगोचर मागतानित्यर्थ ॥ पारगयाइति ॥ इन्द्रियविपया त्परतो ऽवस्थितानिति ॥ सव्वदूरमूलमणंतियंति ॥ सर्वथा दूर विप्रकृष्ट मू

॥ मूल ॥

सुणेइ अपुठाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुठाइं सुणेइ नोअपुठाइ सुणेइ जाव नियमा छदिसि सुणेइ । तहाण भंते ! छउमत्थे मणूसे कि आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सुणेइ ? गोयमा ! आरगयाइ सद्दाइं सुणेइ नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ । जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं णो पारगयाइ सद्दाइ सुणेइ तहाणं केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ पारगयाइं सद्दाइ सुणेइ ? गोयमा ! केवलीण आरगयवा पार

॥ भाषा ॥

दृढाणिवा । प्रथवा शब्दप्रते सुणे । जावभूसिराणिवा । यावत् वंशादिकना शब्दप्रते सुणे । ताइं भंतेकिपुठाइसुणेइ । तेह हेभगवन् । स्यू फरस्या श्रोत्रेंद्रिये लागा तेशब्दप्रतें सुणे अथवा । अपुठाइं सुणेइ । अणफरस्या शब्दशब्द प्रते सुणे इत्यादि पहिला शतकने विषे आहाराधिकारनो परे जाणवो इतिप्रश्न । गोयमा पुट्ठाइसुणेइ । हे गौतम । फरस्या प्रते सुणे पणि । णोअपुठाइसुणेइ । फरस्या विना नसुणे । जावणियमाछदिसिसुणेइ । याव त् नियमा निश्चये छदिशिना शब्दप्रते सुणे । छउमत्थेणभंतेमणूसेकि आरगयाइसद्दाइ सुणेइ पारगयाइसद्दाइ सुणेइ । छद्मस्थ हेभगवन् । मनुष्य स्यू श्रोत्रेन्द्रिय गोचर आव्या इन्द्रिय विषय आव्या इत्यर्थ ते शब्दप्रते साभले इन्द्रिय थकी वेगलारह्या एतले बाहिरितें शब्दप्रते सुणे साभले इति प्रश्न । गोयमा आरगयाइ सद्दाइंसुणेइ । हे गौतम । इन्द्रिय विषय आव्या शब्दप्रते साभले । णोपारगयाइ सद्दाइंसुणेइ । नही इन्द्रिय विषय थकी वेगलारह्या शब्दप्रते सुणे । जहाणभंतेछउमत्थेमणूसेआरगयाइं सद्दाइ सुणेइ । जिम हे भगवन् । छद्मस्थ मनुष्य इन्द्रिय विषय आव्या शब्द प्रते सुणे । णोपारगयाइं सद्दाइसुणेइ । इंद्रिय विषय वेगला शब्दप्रते सुणे नहीं । तहाणकेवलीकिआरगयाइ सद्दाइसुणेइ । तिमण वाक्यालंकारे केवली स्यू इन्द्रिय विषय आव्या शब्दप्रते सुणे । णोपारगयाइसद्दाइसुणेइ । इन्द्रिय विषय वेगला शब्दप्रते नसुणे इतिप्रश्न । गोयमा केवलीण

॥ टीका ॥

लच निकटं सर्वदूरमूलं तद्योगा च्छद्मोपि सर्वदूरमूली ऽत स्तं अत्यर्थदूरवर्त्तिन मत्यन्तासन्नचेत्यर्थ, अन्तिम मासन्नं तन्निषेधा दनन्तिक नञो ऽल्पार्थत्वात्' नात्यन्त मन्तिक अदूरासन्नमित्यर्थ' स्तद्योगा च्छद्मो प्यनन्तिको ऽतस्त अथवा ॥ सव्वति ॥ अनेन सव्वंउसमता इत्युपलक्षितं ॥ दूर मूलति ॥ अनादिक मितिहृदयं ॥ अणतियति ॥ अनन्तिकमित्यर्थ ॥ मियपित्ति ॥ परिमाणवत् गर्भजमनुष्यजीवद्रव्यादि ॥ अमियपित्ति ॥ अन न्त मसङ्ख्येयवा; वनस्पतिपृथिवीजीवद्रव्यादि ॥ सव्वजाणइइत्यादि ॥ द्रव्याद्यपेक्षयोक्त, अथ कस्मात् सर्वजानाति केवलीत्याद्युच्युत ? इत्यतआह–

॥ मूल ॥

गयंवा सव्वदूरमूलमणतियं सद्दं जाणइ पासइ सेकेणठेणंतंचेव केवलीणं आरगयंवा पारगयवा जावपासइ ? गोयमा ! केवली पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ अमियपि जाणइ एवं दाहिणेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं उड्ढं अहे मियंपि जाणइ अमियपि जाणइ सव्वं जाणइ केवली सव्वं पासइ केवली सव्वत्त सव्वकालं सव्वभावे अ

॥ भाषा ॥

आरगयवा पारगयवा। हेगौतम केवली ण वाक्यालकारे इंद्रियगोचर आव्या इंद्रियगोचर वेगला। सव्वदूरमूलमणतियसद्द जाणइपासइ । सर्वथा दूरवेगलो सर्वथा मूल ढूकडो अणतिय अदूर आसन्न मध्यस्थ इत्यर्थ शब्द प्रते जाणे देख। सेकेणट्ठेणंभंतेतचेव। तेकिस्ये प्रयोजने अर्थे हेभगवन्! इम कह्यो तिमज निश्चे । केवलीणआरगयवा पारगयवा । केवली ण वाक्यालकारे इंद्रिय गोचर आव्या श्रोत्रेंद्रिय विषय वेगला। जावपासइ । यावत् जाणे देखे इतिप्रश्न । गोयमा केवलीपुरच्छिमेणमियपिजाणइ अमियपिजाणइ। हे गौतम। केवली पूर्व दिशिने विषे मिय प्रमाण सहित गर्भज मनुष्य जी वद्रव्यादि वस्तु जाणे अनत तथा असख्यात वनस्पती जीव तथा पृथिवी जीव इत्यादि जाणे। एवदाहिणेण पच्चच्छिमेण उत्तरेण उड्ढ अहे मियपि जाणइ । इम दक्षिणदिशें पणि जाणे पश्चिमदिशे पणि जाणे उत्तरदिशे पणि जाणे ऊचो नीचो प्रमाणोपेत पणि जाणे । अमियपिजाणइ सव्वजाणइकेवली । अमित प्रमाण रहित पणि जाणे द्रव्यनी अपेक्षाय केवली सर्व द्रव्य जाणे केवल ज्ञानवत । सव्वपासइकेवली । द्रव्यनी अपेक्षायें केवली सर्व द्रव्य देखे केवल दर्शनवत । सव्वओ जाणइकेवली सव्वओपासइकेवली। देशनी अपेक्षायें सर्वथी जाणे केवली सर्वथी देखे केवली। सव्व

॥ टीका ॥ अनन्तज्ञान मनन्तार्थविषयत्वा, तथा ॥ निव्वुडेनाणेकेवलिस्सत्ति॥ निर्वृतं निरावरणं ज्ञानं केवलिन क्षायिकत्वा च्छुद्धमित्यर्थ ' वाचनान्तरेतु ॥ निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धेत्ति ॥ विशेषणत्रय ज्ञानदर्शनयो रधीयते, तत्रच निर्वृत्त निष्ठागत वितिमिर क्षीणावरण मतएव विशुद्धमिति, अथ पुनरपि छद्मस्थमनुष्यमेवा श्रित्याह–छउमत्थेत्यादि ॥ उस्सुयाएज्जात्ति ॥ अनुत्सुक उत्सुको भवे दुत्सुकायेत विषयादान प्रत्यौत्सुक्य कुर्यादित्यर्थ ॥

॥ मूल ॥ णते णाणे केवलिस्स अणंते दसणे केवलिस्स निव्वुडे नाणे केवलिस्स निव्वुडे दंसणे केवलिस्स सेतेणट्ठेणं जाव पासइ। छउमत्थेण भंते ! मणूसे हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा ? हंता हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा । जहाणं भंते ! छउमत्थे मणूसे हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा तहाणं केवलीवि हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा ? गोयमा ! णोइ

॥ भाषा ॥ काल जाणइकेवली । अतीत अनागत वर्त्तमान रूप सर्वकाल जाणे केवल ज्ञानी । सव्वकालपासइकेवली । सर्वकाल प्रते देखे केवली । सव्वभाव जाणइकेवली । क्षायिकादिक सर्वभाव अथवा उत्पाद द्रव्य ध्रौव्य भावप्रते जाणे केवली । सव्वभावपासइकेवली । तथा सर्वभाव प्रते देखे केवल ज्ञानी हवे केवली सगलो स्याथी जाणे तेकहेछे । अणतणाणेकेवलिस्स । अनंत ज्ञान केवलीने अनंत अर्थना विषय थी । अणंतदंसणेकेवलिस्स । अनंत दर्शन केवलीने छे अनंत पर्यायनां देखवाथी । निव्वुडेनाणेकेवलिस्स । निरावरण ज्ञान केवलीनें छे क्षायिक पणा थकी । निव्वुडेदंसणेकेवलिस्स । निरावरण दर्शन केवलीने छे शुद्ध इत्यर्थ । सेतेणट्ठेणंजावपासइ । तेतेणे अर्थे यावत् जाणे देखे एतलालगें कहवो । छउमत्थेणभंतेमणूसे हसेज्जवा । वली छद्मस्थ आश्रयीने कहेछे छद्मस्थ हे भगवन् । मनुष्य हास्यकरे । उस्सुयाएज्जवा हंताहसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा । विषय ग्रहण विषे उत्सुकपणो करे इति प्रश्न हा गौतम । हास्यकरे उत्सुक पणों करे । जहाणंभंतेछउमत्थेमणूसे । जिम ण वाक्यालंकारे हेभगवन् । छद्मस्थ मनुष्य । हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा तहाणंकेवलीविहसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा । हास्यकरे उत्सुक हर्ष प्रते करें तिम ण वाक्यालंकारे केवली पणि हासो करे उत्सुकपणो करे इतिप्रश्न । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हे गौतम । एअर्थ समर्थ नहीं युक्त नहो । सेकेणट्ठेणंभंतेजावणोणतहाकेवलीहसेज्जवा । तेकिसें प्रयोजनें हे भगवन् । इम कह्यु

॥ टीका ॥

जस्सजीवत्ति ॥ यस्मा त्कारणा जीवा ॥ सेणकेवलिस्सनत्थित्ति ॥ तत्पुन श्चारित्रमोहनीयं कर्म्म केवलिनो नास्तीत्यर्थ ॥ एवजाववेमाणिएत्ति ॥ एव मिति जीवाभिलापव न्नारकादिदण्डको वाच्यो याव द्वैमानिक इति, सचैव–नेरइएणं भंते ! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा ; कइ कम्मपगडीउ बंधइ? गोयमा ! सत्तविहबधएवा, अठविहबधएवा, इत्यादि, इह पृथिव्यादीना हास प्राग्भविकतत्परिणामा दवसेयइति ॥ पोहुत्तिएहिंति ॥ प्रथक्त्व

॥ मूल ॥

णठेसमठे सेकेणठेण जाव नोणं तहा केवली हसेज्जवा उस्सुआएज्जवा? गोयमा! जस्स जीवाचरित्तमोहणिज्जकम्मस्स उदएणं हसतिवा उस्सुयायंतिवा सेणं केवलिस्स नत्थि सेतेणठेणं जाव नोणं तहा केवली हसेज्जवा उस्सुयाएज्जवा। जीवेणं भंते! हसमाणेवा उस्सुयमाणेवा कइ कम्मप्पगडीउ बंधइ? गोयमा!

॥ भाषा ॥

यावत् छद्मस्थनी परें केवली हासो नकरें । उस्सुयाएज्जवा । तथा उत्सुक पणो नकरें इतिप्रश्न । गोयमा जस्सजीवाचरित्तमोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं । हे गौतम । जेमाटे जीव चारित्र मोहनीयनो कषाय रूप कर्मनें उदयें करी । हसतिवा । हासोकरे । उस्सुयायतिवा । उत्सुक पणो करे । सेणकेवलिस्सनत्थि । ते चारित्र मोहनीय कर्म केवलीनें नथी मोहनीय कर्म केवलीने क्षयगया माटे । सेतेणठेणजावणोणतहाकेवलीहसेज्जवा । ते तेणे प्रयोजनें यावत् नहीं ण वाक्यालंकारे केवली हासो करे अथवा । उस्सुयाएज्जवा जीवेणभंतेहसमाणेवा । उत्सुक पणो करे जीव ण वाक्यालकारे हेभगवन् । हसतो थको । उस्सुयमाणेवा कइकम्मपगडीवधइ । उत्सुक पणो करतो थको केतली कर्म प्रकृतिनो बधकरे इतिप्रश्न । गोयमा सत्तविहबधएवा । हे गौतम । आयु कर्मना बधविना सात कर्मनो बधकरें । अट्ठविहबधएवा । आयु'कर्म सहित आठकर्मनो बधकरे । एवजाववेमाणिएपोहत्ति एहि जीवेगिदियवज्जोतियभगो णेरइयाणभतेहसमाणेकइकम्मपगडीओवधइ । इम यावत् वैमानिकना दंडकताईं जीवना आलावानी परे कहवो इहा पृथिवी कायादिकने हासो पर्व भवना परिणाम थको लेवो जेपूर्व भवें हुस्या तेहनी अपेक्षायें पोहत्ति एत्ति बहुवचन सूत्र तेहनें विषै । जीवाण भते हसमाणे वा उस्सुयमाणे वा कइकम्मपगडीओ बधंति गोयमा सत्तविहबधगावि अट्ठविहबधगावि इत्यादिकने विषे जीवे गिदिय जो

त्रेपु बहुवचनान्तसूत्रेपु–जीवाणं भंते ! हसमाणावा; उत्सुयमाणा; कइ कम्मपगडीओ बधंति ? गोयमा ! सत्तविहबधगावि अठविहबंधगावि इत्यादिपु ॥ जीवेगिंदिइत्यादि ॥ जीवपदमेकेन्द्रियपदानिच पृथिव्यादीनिवर्जयित्वा ऽन्येपु एकोनविंशतौ नारकादिपदेपु त्रिकभङ्गो भङ्गकत्रय वाच्य, यतो जीवपदे पृथिव्यादिपदेपुच बहुत्वा ज्जीवाना' सप्तविध वन्धकाश्चाष्टविधवन्धकाश्चेत्येवमेकैकभङ्गकोलभ्यते' नारकादिपुतुत्रय तथाहि सर्वएव सप्तविधवन्धका स्युरित्येक अथवा, सप्तविधबन्धकाश्चाष्टविधवन्धकश्चेत्येवमेवद्वितीय अथवा, सप्तविधबन्धका श्चाष्टविधवन्धकाश्चे त्येव तृतीयइति, अत्रैव छद्मस्थकेवल्यधिकार इद मपरमाह–छउमत्थेत्यादि ॥ निद्दाएज्जवत्ति ॥ निद्रा सुखप्रतिबोधलक्षणा कुर्यान्निद्रायेत ॥पयलाएज्जवत्ति॥ प्रचला

सत्तविहबधएवा अठविहबंधएवा एव जाववेमाणिए पोत्तिएहि जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। छउमत्थेण भंते ! मणूसे निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा ? हंता निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जहा हसेज्जा तहा णवरं,

ऽपद अने एकेंद्रोना पाच पद एवर्जीने शेषउगुणीसमें दडकने विषे तीन भागा कहवा जेमाटे सामान्ये जीवपदने पृथिव्यादिक पाचने विषे जीवना बहुलपणा थकी घणा सप्तविध बधक घणा अष्टविध बधक एएकज भागोलाभे नारकादिक उगुणीस पदने विषे तीन भागालाभे ते देखाडेछे—नारकी हे भगवन् ! हसतो थको उत्सुक करतो थको केतली कर्म प्रकृति बाधे इतिप्रश्न । गोयमा सव्वेवितावहोज्जसत्तविहबधगा । हे गौतम ! सगलाही आऊखा टालो सात कर्मना बधक हुवे । अहवासत्तविहबधगाय अठ्ठविहबधगेय २ । अथवा सप्तविध बधक घणा अष्टविध बधक एकहुवे तेमाटे एबीजो भागो २ । अहवासत्तविहबधगाय अठ्ठविहबधगाय । अथवा सप्तविध बधकही घणा अष्टविध बधकही घणा एत्रीजो भागो कह्या ३ इहा गे रइयाण भते इत्यादि सूत्र किणही एक पुस्तकने विषे दीसेछे एनारकीनी परे बीजा पणि अढारे दडक कहवा । छउमत्थेणभतेमणूसे। छद्मस्थ हेभगवन् मनुष्य । निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा । सुखे जागे तेनिद्रा करे ऊभो रह्यो नीदकरे इतिप्रश्न । हता गोयमा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा । हा गौतम ! निद्रायमान हुवे प्रचलायमान हुवे । जहाहसेज्जातहा । जिम हसवाने विषे कह्यो तिम निद्राने विषे पणि कहवो । णवरंदरिसणावरणि

ऊर्द्धस्थितनिद्राकरणलक्षणां कुर्यात् प्रचलायेत केवल्यधिकारात् केवलिनो महावीरस्य सविधानक माश्रित्ये दमाह-हरीत्यादि ॥ इहच यद्यपि महावीरसविधानाभिधायक पद नदृश्यते तथापि हरिनैगमेपीतिवचनात् तदेवा नुमीयते, हरिनैगमेपिणा भगवतो गर्भान्तरे नयनात्, यदिपुन सा मान्यतो गर्भहरणविवक्षा ऽभविष्य त्तदा देवेण भते ! इत्यवक्ष्यदिति, तत्र हरि रिन्द्र स्तत्सवन्धित्वात् हरिनैगमेपीतिनाम ॥ सक्कदूयत्ति ॥ शक्रदूत. शक्रादेशकारी पदात्यनीकाधिपति येन शक्रादेशा द्भगवा न्महावीरो देवानंदागर्भा त्त्रिशलागर्भे संहृतइति ॥ इत्थीगब्भति ॥ स्त्रिया. सम्बन्धी

दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण निद्दायइवा पयलाइवा सेणं केवलिस्स नत्थि भ्रसंतंचेव । जीवेणं भंते ! निद्दायमाणेवा पयलायमाणेवा कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा अठविहबंधएवा एव जाव वेमाणिए पोहत्तिएसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । हरीण भंते !-हरिणेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भं साहरमाणे किं गब्भाउ गब्भं साहरइ १ गब्भाउ जोणिं साहरइ २ जोणीउ गब्भं साहरइ ३ जोणी

अस्सकम्मस्सउदएणनिद्दायतिवा । एतलो विशेष दर्शनावरणीय कर्मने उदयें करी निद्राकरे । पयलायतिवा सेणकेवलिस्सनत्थि अन्नतचेव । प्रचलाकरे प्रचलायमान हुवे ते दर्शनावरणीय कर्म चयगया माटे केवलीने नथी बीजा सर्व तिमहीज कहवा । जीवेणंभंतेनिद्दायमाणेवा । जीवण वाक्यालकारे हे भगवन् ! निद्रा करतो थको । पयलायमाणेवा कइकम्मपगडीओबंधइ । प्रचला नाम निद्रा विशेष ते करतो थको केतली कर्मनी प्रकृति बांधे इतिप्रश्न । गोयमा सत्तविहबंधएवा । हे गौतम ! आउखो नबांधे तिवारे सातकर्म बांधे । अठविहबंधएवा । आउखो बांधे तिवारे आठ कर्म बांधे । एवंजाववेमाणिए । इम यावत् वैमानिक पर्यंत दडक कहवा । पोहत्तिएसुजीवेगिंदियवज्जोतियभंगो । बहु वचनने विषे पूठिली परे जीव पदने विषे तथा एकेंद्रियना पांच पदने विषे एक भांगो शेष १९ दडकने विषे तीनभांगा पूठिली परें कहवा । हरीणभंतेहरिणेगमेसीसक्कदूएइत्थीगब्भसाहरमाणे । केवली अधिकार थकी केवली श्रीमहावीरनो सबंध तेआश्री कहेछे—इहा यद्यपि श्रीमहावीर संबंध अभिधायक पद नदीसेछे

॥ टीका ॥

गर्भ· सजीवपुद्गलपिण्डक· स्त्रीगर्भ स्तं ॥ सहरमाणेत्ति ॥ अन्यत्र नयन् इह चतुर्भङ्गिका तत्र गर्भा द्गर्भाशया दवधे गर्भं गर्भाशयान्तर सहरति, प्रवेशयति गर्भ सजीवपुद्गलपिण्डलक्षणमिति प्रकृत मित्येक·, तथा गर्भादवधे योनि गर्भनिर्गमद्वार सहरति, योन्योदरान्तर प्रवेशयतीत्यर्थ २। तथा योनितो योनिद्वारेण गर्भं सहरति, गर्भाशय प्रवेशयतीत्यर्थ ३। तथा योनितो योने· सकाशात् योनि सहरति, नयति योन्योदरा न्निष्का श्य योनिद्वारेणै वोदरान्तर प्रवेशयतीत्यर्थ ४ एतेषु शेषनिषेधेन तृतीय मनुजानन्नाह—परामुसिएत्यादि ॥ परामृश्य २ तथाविधकरव्यापारेण

॥ मूल ॥

त्ते जोणि साहरइ ? गोयमा ! नोगब्भाओ गब्भंसाहरइ १ नोगब्भाओ जोणिं साहरइ २ नोजोणीओ जोणिं परा

॥ भाषा ॥

तथापि हरिणेगमेषी ए वचन थकी तेहीजनो अनुमान कीजे । किगब्भाओगब्भसाहरइ गब्भाओजोणिं साहरइ । हरिणेगमेषीयें भगवते गर्भथकी बीजे गर्भे आण्या तेहभणी जीवलो सामान्य थी गर्भ हरण विवक्षा होतीतो देवेण भते एहवो कहता तिहा हरि इद्रते सबध पणा थकी हरिणेगमे षीनाम सक्कदूणत्ति शक्रदूत शक्रा देशकारी पदाति अनीकनो स्वामी ते स्त्री सबधी गर्भते जीव सहित पुद्गल पिंड तेहप्रतें सहरतो थको बीजे स्थान के लेजातो थको इहा चउभगी स्यू उदर थकी लेई उदरे प्रवेशे गर्भाशय थकी गर्भा शयातरे प्रवेशे इत्यर्थ गर्भथको गर्भनिर्गमद्वार प्रतें उदरथ की योनि मू के २ । जोणीओगब्भसाहरइ । योनि द्वारे करी गर्भ सहरे योनियकी लेई उदरे प्रवेशकरें ३ तथा । जोणीओजोणिसाहरइ । यो नियकी योनि सहरें पहुचाडे ४ इतिप्रश्न । गोयमा णोगब्भाओगब्भसाहरइ । हे गौतम । गर्भथको गर्भप्रतें सहरे नही १ । णोगब्भाओजोणिसाहरइ णोजोणीओजोणिसाहरइ । गर्भथको योनि सहरें नही २ योनियकी योनि सहरे नहीं ए चौथो भागो तेपणि निषेध एचउभगी पहिलो बीजो चोथो भागो एतीन निषेध त्रीजो भागो श्रीवीतराग देवें अणुजाण्यो योनियकी लेई उदरें प्रवेशें एसहीथयो आगलि देवतानी समर्थाई देखाडी तिवारें अने रोई भागो ऊपजे तव श्रीवीतराग देवें त्रीजो एक भागो प्रमाण कह्यो तेकाई तिवारे ऊतर यद्यपि देवतानी समर्थताछे तथापि लोकव्यवहार राख वा भणी योनिजकाटे लोकमाहि एव्यवहारछे नौपनो अनोपनो गर्भ योनिद्वारेज नीसरे तेकारणें त्रीजो भागोईज प्रमाण । परामुसिय २ अव्वा

॥ टीका ॥

संस्पृश्य २ स्त्रीगर्भं अव्याबाध अव्याबाधेन सुखं सुखेनेत्यर्थः, योनितो योनिद्वारेण निष्काश्य गर्भं गर्भाशयं संहरति गर्भमिति प्रकृतं, यच्चेह यो नितो निर्गमन स्त्रीगर्भस्योक्तं तल्लोकव्यवहारानुवर्त्तनात्तथाहि-निष्पन्नो ऽनिष्पन्नोवा; गर्भः स्वभावा द्योन्यैव निर्गच्छतीति अयञ्च तस्य गर्भसंहरणे आचारउक्तः, अथ तत्सामर्थ्यं दर्शयन्नाह-पभूणमित्यादि ॥ नहसिरंसित्ति ॥ नखाग्रे ॥ साहरित्तएत्ति ॥ संहर्तुं प्रवेशयितुं ॥ नीहरित्तएत्ति ॥ विप्र क्तिपरिणामेन नखशिरसो रोमकूपाद्वा; निर्हर्तुं निष्काशयितुं ॥ आबाहंति ॥ ईषद्बाधा ॥ विबाहंति ॥ विशिष्टबाधा ॥ छविच्छेदंति ॥ शरीरच्छेदं पुनः कुर्यात् गर्भस्यहि छविच्छेद मकृत्वा नखाग्रादौ प्रवेशयितु मशक्यत्वात् ॥ एसुहुमचणंति ॥ इति सूक्ष्म मित्येव लघ्वीति, अनन्तरं महावीर

॥ मूल ॥

मुसिय २ अव्वाबाहेणं अव्वाबाह जोणीउ गब्भं साहरइ । पभूण भंते ! हरिणेगमेसी सक्कस्सणं दूए इत्थी ए गब्भं नहसिरंसिवा रोमकूवंसिवा साहरित्तएवा नीहरित्तएवा ? हंता पभू नोचेवणं तस्स गब्भस्स किंचिआ बाहंवा विबाहंवा उप्पाएज्जा छविच्छेदं पुणकरेज्जा एसुहुमंचणं साहरिज्जवा नीहरिज्जवा । तेणकालेणं तेणं

॥ भाषा ॥

वाहेणअव्वाबाह जोणीओगब्भसाहरइ । तेहवे करण व्यापारे करी गर्भने फरसी २ ने सुखे २ करी योनिद्वारे करी काढीने गर्भाशय प्रतें संहरे गर्भ विषे घाले एह हरिणेगमेषीनें गर्भ संहरवानें विषे आचार कह्यो । पभूणभंतेहरिणेगमेसीसक्कदूएइत्थीगब्भंनहसिरंसिवा रोमकूवंसिवा साहरित्तएवा नीहरित्तएवा । हवें तेहनो समर्थ पणो देखाडतो कहेछे—समर्थछे हे भगवन् । हरिणेगमेषी शक्रदूत स्त्रीगर्भ प्रतें नखना अग्रभागनें विषे रोमकूपनें वि षे गर्भप्रतें प्रवेश करावता भणी काढता भणी इतिप्रश्न । हंतापभू । हा गौतम । नोचेवणंतस्सगब्भस्स । नहीं निश्चे तेह गर्भने । किंचिआबाहंवा विबाहंवा । कांई थोडोही आबाधा पीडा वली आबाधा पीडा । उप्पाएज्जा छविच्छेदंपुणकरेज्जा । उपजावे नहीं, शरीर छेद पुणकरी काढे । एसुहुमंचणंसाहरिज्जवा नीहरेज्जवा । एहवो सूक्ष्म अति लघु करी संहरे पणि आबाधा न उपजें घाले काढे पणि देव शक्तिये जणाय नही इत्यर्थ अनं तरें महावीर संबधी गर्भांतर संक्रमण लक्षण आश्चर्य कह्यो हवें श्रीमहावीर शिष्य संबंधी आश्चर्य देखाडतो कहेछे । तेणकालेण तेणसमएण समणस्स

स्य तत्सम्बन्धि गर्भान्तरसंक्रमणलक्षणं माश्चर्यं मुक्तं मया तच्चिन्तयतोऽस्ति तदेव दर्शयितुमाह ॥ तेणमित्यादि ॥ कुमारसमणेत्ति ॥ [illegible]
तस्य प्रव्रजितत्वात् दाहव-छव्वरिसोपव्वइत्ते निग्गथरोत्तिउणपावयणति ॥ [illegible]
पडिग्गहरयहरणमायाएत्ति ॥ कलाया ग्रतिग्रहकं रजोहरणं च आदायेत्यर्थः ॥ [illegible]
गम्यते ॥ नाविउविवनावंति ॥ नाविकइव नौवाहकइव नावं द्रोणीं ॥ [illegible]

समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्तेणामं कुमारसमणे [illegible]
से अइमुत्ते कुमारसमणे अन्नया कयाइ महावुठिकायंसि निवयमाणंसि [illegible]
यासंपठिए विहाराए तएणंसे अइमुत्ते कुमारसमणे वाहयं वहमाणं पासइ २ [illegible]

भगवश्रीमहावीरस्यअंतेवासी । तेकालने विषे तेसमयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर [illegible]
जावविणीए । अति मुक्तकनामे कुमार श्रमण छवरसनो थई दीक्षा [illegible]
नहुवें स्वभावें भद्रक यावत् विनयवंतके । तएणसेअइमुत्तेकुमारसमणे [illegible]
वृष्टिकायंसिनिवयमाणसि । मोटो घणो वृष्टि थया मता वरसो [illegible]
राए । पडघा तथा रजोहरण आंघो लेईने वाहिरि पाणी [illegible]
सिवहमाणपासइ २ त्ता । नवारव्यालमारे वाहलो पाणीनो [illegible]
धे वाधीने ए माहरी नाव इसो विकल्प करे । [illegible]
पडघा प्रतें पाणीने विषे इम करीने । पव्वाहमाणेअभिरमइ । [illegible]

॥ टीका ॥ रमणक्रिया बालावस्थाबलादिति ॥ अद्दक्खुत्ति ॥ अद्राक्षु दृष्टवन्त स्तेच तदीया मत्यन्तानुचिता चेष्टां दृष्ट्वा तमुपहसन्तइव भगवन्तं पप्रच्छु एत देवाह ॥ एव खलुइत्यादि ॥ हीलेहत्ति ॥ जात्याद्युद्घट्टनत' ॥ निंदहत्ति ॥ मनसा ॥ खिंसहत्ति ॥ जनसमक्ष ॥ गरहहत्ति ॥ तत्समक्ष ॥ अवमन्नहत्ति

॥ मूल ॥ वियामे २ नाविन्नविन्नणावमय पडिग्गहयं उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तंच थेरा अद्दक्खु जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति २ एवं वयासी । एवखलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्तेणामं कुमारसमणे । सेणं भंते ! अइमुत्ते कुमारसमणे कइहि भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति अज्जोत्ति समणेभयवं महावीरे ते थेरे एवंवयासी एवखलु अज्जो ममं अंतेवासी अइमुत्तेणामं कुमारसमणे पगइभद्दए जाव विणीए सेणं अइमुत्ते कुमारसमणे एमेणचेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ

॥ भाषा ॥ दृट्टक्खु जेणेवसमणेभगवमहावीरे । तेअइमुत्ता प्रतें रमतो तपहइस्थविर दीठो ते स्थविर जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवछे । तेणेवउवागच्छ ति २ त्ता एववयासी । तिहा आवे तिहा आवीनें ते स्थविर अइमुत्ता मुनिनों अत्यत अयोग्य तेह प्रतें उपहास्य करता थका स्वामी प्रतें इम कहे । एवखलुदेवाणुप्पियाण । इम निश्चये अहो देवानुप्रिय देववल्लभ तुम्हारो । अंतेवासी अइमुत्तेणामकुमारसमणे । शिष्य अइमुत्तो नामे कुमार श्रमण साधू । कतिहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिहिइ । केतले भवने ग्रहणे करी एतावता केतले भवे सीझस्यें । जावअंतंकरेहिइ । यावत् सकल कर्मनो अंत क रस्ये इतिप्रश्न । अज्जोत्ति समणेभगवमहावीरे तंथेरेएववयासी एवखलुअज्जो ममअंतेवासी । अहो आर्यो इति आमंत्रण वचनें करी श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी तेस्थविर प्रतें इम कहे इम निश्चे आर्यो माहरो शिष्य । अइमुत्तेणामंकुमारसमणे पगइभद्दए जावविणीए सेणअइमुत्तेकुमारस मणे । अतिमुक्तकनामे कुमार श्रमण स्वभावे भद्रक यावत् विनयवंत तेह अतिमुक्तकनामे कुमार श्रमण । इमेणंचेवभवग्गहणेणसिज्झिहिइ । इणि होज निश्चे भवने ग्रहणे करी एतले इणिहीज भवे सीझस्यें । जावअंतकरेहिइ तमाणअज्जो तुब्भेअइमुत्तंकुमारसमण । यावत् सकल कर्मनो क्षय

॥ टीका ॥

तदुचितप्रतिपत्त्यकरणेन ॥ परिभवहत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्र परिभव· समस्तपूर्वोक्तपदकरणेन ॥ अगिलाएत्ति ॥ अग्लान्या अखेदेन ॥ संगिरहहत्ति ॥ सङ्गृह्णीत स्वीकुरुत ॥ उवगिरहहत्ति ॥ उपगृह्णीत उपष्टम्भङ्कुरुत एतदेवाह ॥ वेयावडियति ॥ वैयावृत्य कुरुता स्येतिशेष· ॥ अतकरेचेवत्ति ॥ भवच्छेदकर सच दूरतरभवेपि स्यादतआह ॥ अतिमसरीरिएचेवत्ति ॥ चरमशरीरइत्यर्थ· , यथा य मतिमुक्तको भगवच्छिष्यो तिमशरीरो भवदेव मन्येपि

॥ मूल ॥

तंमाणं अज्जा तुम्हे अइमुत्तं कुमारसमणं हीलह निंदह खिसह गरहह अवमन्नह तुब्भेणं देवाणुप्पिया अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिरहह अगिलाए उवगिरहह अगिलाएणं भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह अइमुत्तेणं कुमारसमणे अंतकरेचेव अंतिमसरीरिएचेव तएणं तेथेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवंवुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वदंति२ अइमुत्तं कुमारसमणं अगिलाए संगिरहंति जाव वेया

॥ भाषा ॥

करो मोक्षजास्ये तेमाटे मतां अहो आर्यो तुम्हे अतिमुक्तक कुमार श्रमण साधु प्रते । हीलह निंदह खिसह गरहह अवमन्नह । जात्यादिके करी हीलनामता करो मनेकरी निंदामतां जनसमक्ष खिंसामतां पोताने समक्ष गरहामता अपमान मकरस्यो। तुब्भेणदेवाणुप्पिया अइमुत्तकुमारसमण । तुम्हे ण वाक्यालंकारे अहो देवानुप्रियाओ अतिमुक्तक कुमार श्रमण । अगिलाएसंगिरहह अगिलाएउवगिरहह अगिलाएभत्तेण पाणेणविणए णवेयावडियकरेह । अग्लान पणे अंगीकार करो एतले एहने अंगीकार करवे खेदमआणो अखेद पणे उपष्टभ करो ओठंभो द्यो एहीज कहेछे अखेदा पणे भातेकरी पाणीयेकरी विनयेकरी वैयावृत्त्य एहनो तुम्हे करो । अइमुत्तेणकुमारसमणे अंतकरेचेव अंतिमसरीरएचेव । अतिमुक्तक कुमार श्रमण भवच्छेदनो करणहार निश्चे चरिमशरीरीछे निश्चे करीने इत्यर्थ । तएणतेथेराभगवंतो समणेणभगवयामहावीरेण । तिवारे तपछइ स्थविर ज्ञानवंत श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीये। एवंवुत्तासमाणा समणभगवंमहावीरं वदंति । इम कह्या थका श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी प्रते वांदे। णमसंति २ ता अइमुत्तकुमारसमण । नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने अतिमुक्तक कुमारश्रमणप्रते । अगिलाएसंगिरहंति जाववेयावडि

॥ टीका ॥

यावन्त स्तत् शिष्या अन्तिमशरीरा' संवृत्ता स्तावतो दर्शयितुं प्रस्तावना माह ॥ तेणमित्यादि ॥ महाशुक्रा त्सप्तमदेवलोकात् ॥ भ्राणंतरियाएत्ति ॥ अन्तरस्य विच्छेदस्य करण मन्तरिका ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका आरब्धध्यानस्य समाप्ति रपूर्वस्या नारम्भणमित्यर्थ , अत स्तस्या वर्त्तमानस्य

॥ मूल ॥

वझियं करंति । तेणंकालेण तेणंसमएणं महासुक्काउ कप्पाउ महासग्गाउ विमाणाउ दोदेवा महिड्ढिया जाव महाणुभागा समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया तएणं तेदेवा समण भगवं महावीरं मणसाचेव वंदंति नमंसंति नमंसंतित्ता मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति कइण देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइ सिज्झिहिति जाव अंतं करेहिति? तएणं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसापुठे तेसिं

॥ भाषा ॥

यकरेति २ त्ता । अखेद पणे अगोकार करे यावत् वैयावृत्त्य करे करीने । तेणकालेणं तेणसमएण महासुकाओकप्पाओ । जिम अइमुत्तो भगवतनों शिष्य अतिम शरीरीहुयो तिम बीजा पणि जेतला शिष्य अतिमशरीरीछे तेतला प्रतें देखाडवा भणी प्रस्तावें करी कहेछे—तेणं इत्यादि तेकालने विषे तेसमयनें महाशुक्रनामा देवलोकथी । महाविमणाओ दोदेवामहिड्ढिया जावमहाणुभागा । सातमा देवलोकनाम महाविमान थकी दोयदेवता म हर्धिक यावत् महाभाग्यनां धणी । समणस्स भगश्रीमहावीरस्स अतियपाउब्भूया । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने समीपे प्रगटथया एतले आ व्या । तएणतेदेवासमणभगवंमहावीर मणसाचेववदतिणमसति २ त्ता । तिवारे तेदेव श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रतें मनेकरीने निश्चे वांदे मने करोज नमस्कार करे करीने । मणसाचेव इमएयारूववागरणपुच्छति । मनेकरीनेज निश्चे एह एहवेरूपे प्रश्नप्रतें पूछे एतले एहवें प्रश्नपूछे । कइणदेवाणुप्पियाणअंतेवासी । केतला ण वाक्यालकारे देवानुप्रियना एतले तुम्हारा शिष्य । सिज्झिहिति जावअंतकरेहिति । सीझस्ये यावत् कर्मनोअत करस्ये । तएणसमणेभगवमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी । तेहिदेवेहिमणसापुठे तेसिदेवाणमणसाचेव । तिणे देवे मनेकरीने प्रश्नपूछ्या थका तेह देवने मनेकरीने निश्चे । इमएयारूव वागरणवागरेइ । एह एहवे रूपे प्रश्ननों उत्तर आपे । एवंखलुदे

॥ टीका ॥ कप्पाउत्ति ॥ देवलोकात् ॥ सग्गाउत्ति ॥ स्वर्गो देवलोकदेशा प्रस्तटा इत्यर्थ ॥ विमाणाउत्ति ॥ प्रस्तटैकदेशादिति ॥ वागरणाइंति ॥ व्याक्रियन्त

॥ मूल ॥ देवाणं मणसाचेव इमं एयारूवं वागरण वागरेइ एवंखलु देवाणुप्पिया ममंसत्तअंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतकरेहिंति तएणं तेदेवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुठेण मणसाचेव इमं एयारूव वागरणं वागरिया समाणा हठतुठजावहियया समणं भगवं महावीरं वदंति णमंसंति मणसाचेव सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा जाव पज्जुवासंति । तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूईणाम अणगारे जाव अदूरसामंत उड्ढंजाणू जाव विहरइ तएणं तस्स भगवओ गोयमस्स

॥ भाषा ॥ वाणुप्पिया ममसत्तअंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति । इम निश्चे अहो देवानुप्रियाओ माहरा सातसे शिष्य सीझस्ये । जावअंतकरे हिंति तएणते देवासमणेणभगवया । यावत् सर्व दुक्खनो अंत करस्ये तिवारे ते देव श्रमण भगवत । महावीरेणं मणसापुठेण मणसाचेव इमएयारूव वागरण वागरियासमाणा । श्रीमहावीर स्वामीये मनेकरी पछ्या मनेकरीज निश्चे एह एहवे रूपे प्रश्नना उत्तर दीधायका । हठतुठजावहियया । हर्षनावसथकी संतोष पाम्यो यावत् हृदय जेहनो । समणभगवमहावीर । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीये । वदंतिणमसंति २ त्ता मणसाचे वसुस्सूसमाणा णमसमाणा । वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करी मने करीनेज निश्चे सांभळवा करता थका नमस्कार करतायका । अभिमुहाजावपज्जुवासंति । सनमुख रह्या थका यावत् सेवाकरे। तेणकालेण तेणसमएणं समणस्सभगवओमहावीरस्स जेठेअंतेवासी । तेकालनेविषे तेसमयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो वडो शिष्य । इंदभूतीणामअणगारे जावअदूरसामंतेउड्ढंजाणूजावविहरइ । इंद्रभूती नामे साधु यावत् वेगलो पिण नहीं ढूकडो पिण नहीं गोडाऊंचा माथोनीचो इम यावत् विचरे । तएणसमणस्सभगवओ गोयमस्स । तिवारे श्रमण भगवंत गौतमने । झाणंतरियाएवट्टमाणस्स । आरभीयो ध्यान तेहनो समाप्ति थई नवोध्यान आरंभ नथी कीधो तेहने विषे वर्त्तमानने । इमेएयारूवेअब्भत्थिए

॥ टीका ॥

इति व्याकरणा न्यर्था अधिकृता एव कल्पविमानादिलक्षणा'' देवप्रस्तावा दिदमाह ॥ देवाणमित्यादि ॥ से किं खाइसं भंते । देवाइ वत्तव्वमि

॥ मूल ॥

दोदेवा महिड्ढीया जाव महा इवेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवखलु ज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स णुभागा समणस्स भगवत महावीरस्स अतिय पाउब्भूया तं नोखलु अहं ते देवा जाणामि कयरात कप्पात वासग्गातवा विमाणातवा कस्सवा अत्थस्स अट्ठाए इह हव्व मागया तं गच्छामिण भगवं महावीरं जाव पज्जुवासामि इमाइंचण एयारूवाइं वागरणाइ पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ उठाए उट्ठेइ २ जेणेव समणे भगवं महावीरे जाव पज्जुवासइ गोयमादिसमणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एवं वयासी—सेणूणं

॥ भाषा ॥

जावसमुप्पज्जित्था । एह एहवेरूपे अध्यात्मिक मननों सकल्प यावत् ऊपनो । इमेखलुदोदेवामहिड्ढिया जावमहाणुभागा समणस्सभगवओमहावी रस्स । इम निश्चे दोयदेव महाऋद्धिवत यावत् महा भाग्यवत श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीने । अतिय पाउब्भूया तओखलुअहतेदेवाजाणामि। समोप प्रगट थया आव्या तेह भणी नही निश्चे हुते देवप्रते जाणू । कयराओकप्पाओवा सग्गाओवा विमाणाओवा कस्सवाअत्थस्सअट्ठाए। कितरमा किस्याओ देवलोक थको प्रतरथको प्रतरना विमान थको किस्या अर्थने कार्यने प्रयोजने । इहहव्वमागया तंगच्छामिण भगवतमहावीरवदामि। इहा समो सरणने विषे ऊतावला आव्या तेहभणी हु जाऊं भगवत श्रीमहावीर स्वामी प्रते वादू । णमंसामि इमाइंचण एयारूवाइ वागरणाइ । नमस्कार करू एह वचन ए वाकयालकारे एहवे रूपे प्रश्नप्रते । पुच्छिस्सामित्तिकट्टु एवसपेहेइ २ त्ता उट्ठाएउट्ठेइ २ । पूछि स्यू इमकरीने इमचि तवे इम चितवोने ऊठ ऊठोने । जेणेवसमणेभगवमहावीरे जावपज्जुवासइ । जिहां श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी यावत् सेवाकरे। गोयमा दिसमणेभगवमहावीरे भगवगोयमेएववयासी । गौतमादि इत्यामत्रणे श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी भगवत गौतम प्रते इम कहै। सेणूणतवगोयमा ज्झाणतरियाए वट्टमाणस्स इमेएयारूवे अब्भत्थिए । ते निश्चे तुम्हने ध्यानने अतरे पूर्वथया इत्यर्थं वर्त्तमानने एह एहवे रूपे अध्यात्मिक यावत् उपनो ।

॥ सूत्र ॥

तव गोयमा ! ज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए सेणूणं गोयमा ! अत्थेसमट्ठे हंता अत्थि तंगच्छाहिण गोयमा ! एएचेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति तएण भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणेसमण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ जेणेव तेदेवा तेणेव पाहारेत्थगमणाए तएण तेदेवा भगव गोयमं एज्जमाणं पासइ हट्ठतुट्ठजाव हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति २ खिप्पामेव पच्चुवगच्छंति जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति २ जाव णमंसित्ता एववयासी एवंखलु भंते ! अम्हे महासुक्काउ कप्पाउ महासग्गाउ विमाणाउ दोदेवा महिड्ढीया

॥ भाषा ॥

जावजेणवममअंतिए। यावत् जिहां माहरो समीपछे। तेणामव्वमागए सेणूण गो० अत्थेसमट्ठे। तिहां उतावलो आव्यो ते निश्चे हे गौतम। अर्थ समर्थ युक्त अर्थछे इसे पूछ्या। हंताअत्थि तंगच्छाहिण गोयमा एएचेवदेवा। गौतम कहै हा स्वामिन्। छे तेह भणीत् जाउ हे गौतम। एहीज निश्चे देव। इमाइएयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति तेणभगवगोयमे। एह एहवेरूपे प्रश्नना उत्तर कहस्ये तिवारे भगवंत गौतम। समणेणंभगव यामहावीरेण अब्भणुन्नाएसमाणे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीयें आज्ञा दीधां थकां। समणभगवमहावीर वंदइ णमंसइ जेणेवतेदेवा। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे करीने जिहांज तेदेवछे। तेणेवपहारेत्थगमणाए तएणंतेदेवा भगवगोयमे। तिहांज जा इवा गमनकरे कार्यांतर नकीधो तिवारे देव भगवंत गौतम प्रते। एज्जमाणपासंति हट्ठजावहियया खिप्पामेवअब्भुट्ठंति २ त्ता। आवता देखे देखी नें हर्ष पाम्या यावत् हृदय संतोष पाम्या उतावला उठे उठीने। खिप्पामेवपच्चुवगच्छंति जेणेवभगवंगोयमे। उतावला साहमा जाइ जिहां भगवंत गौतमछे। तेणेवउवागच्छंति २ त्ता जावणमंसित्ता एववयासी। तिहां आवे आवीने यावत् नमस्कार करे करीने इम कहै। एवखलुभंते अम्हेम हासुक्काओकप्पाओ। इम निश्चे हे भगवन्। अम्हे महाशुक्रनामा सातमा देवलोक थकी। महासग्गाणामाओ विमाणाओ। महा स्वर्ग नामा विमान

॥ मूल ॥

जाव पाउब्भूया तएणं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो २ मणसाचेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो कइणं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतंकरेहिंति तएणं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुठे अम्ह मणसाचेव इमं एयारूव वागरण वागरेइ एवंखलु देवाणुप्पिया मम सत्त अतेवासीसयाइं जाव अतकरेहिंति तएण अम्हे समणेणं भगवया महावीरेण मणसापुठेण मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगव महावीरं वदामो नमंसामो जाव पज्जु

॥ भाषा ॥

थकी । ते देवामहिड्ढिया जावपाउब्भूया । ते देव महर्द्धिक यावत् प्रगट थया आव्या इत्यर्थ । तएणअम्हेसमणभगवमहावीर वदामो । तिवारे अम्हे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी प्रते वांद्या । णमंसामो मणसाचेव । नमस्कार कीधा मनेजकरी निश्चे । इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो कइणभंतेदेवाणुप्पियाण । एह एहवे रूपे प्रश्न प्रते पूछे केतला हेभगवन् ! देवानुप्रियना । अंतेवासी सयाइंसिज्झिहिंति जावअंतकरेहिंति । शिष्यना शइंकडा सीझस्ये यावत् सर्वं दुःखनो अंत करस्ये । तएणसमणेभगवमहावीरे अम्हेहिंमणसापुठे । तिवारें श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवें अम्हे मनेकरी पूछ्या थका । अम्हमणसाचेव इमएयारूव वागरणवागरेइ । अम्हे प्रते मनेजकरी निश्चयें एह एहवें रूपें प्रश्ननो उत्तर दीधो । एवंखलुदेवाणुप्पिया ममसत्तअंतेवासिसयाइं । इम निश्चे अहो देवानुप्रिया माहरा सातसे शिष्य सीझस्यें । जावअंतकरेहिंति तएणंअम्हे समणेणभगवयामहावीरेण । यावत् सर्व दुःखनो अंत करस्ये तिवारे अम्हे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवें । मणसापुठेण मणसाचेव इमंएयारूवं । मनेकरी पूछ्यां थका मनेजकरीनें निश्चये एह एहवे रूपे । वागरणवागरियासमाणा समणभगवमहावीरं वदामो णमंसामो । प्रश्ननो उत्तर दीधा थका श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवप्रते वांद्या नमस्कार कीधा । पज्जुवासामोत्तिकट्टु भगवंगोयमे वदतिणमंसति २ त्ता । सेवाकरां इम करीने भगवंत गोतम प्रते वांदे नमस्कार करे वांदी नमस्कार करीने । जामेवदिसिंपाउब्भूया तामेवदिसिंपडिगया भवेत्ति । जे दिशिना देशथकी प्रगट थया हता ते दिशिना

॥ टीका ॥

यत्ति ॥ सेइति अथार्थः ॥ किमिति प्रश्नार्थे ॥ खाइति ॥ पुनरर्थः वाक्यालङ्कारार्थः ॥ देवाइत्ति ॥ यद्वस्तु तद्वक्तव्यं स्यादिति ॥ नोसजयाइवत्तव्वसि यत्ति ॥ नोसयताइति एतद्वक्तव्य स्यात् असयतशब्दपर्यायत्वेपि नोसयतशब्दस्या निष्ठुरवचनत्वा न्मृतशब्दापेक्षया परलोकीभूतशब्दवदिति देवाधि

॥ मूल ॥

वासामो त्तिकट्टु भगवं गोयमं वंदइ णमंसइ जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं एववयासी । देवाणं भंते ! संजयाइ वत्तव्वंसिया गोयमा ! णोइणठे समठे अब्भक्खाणमेयं देवाणं । देवाणं भंते ! असंजयाइवत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णोइणठे णिठुरवयणमेयं देवाणं देवाणं भंते ! संजयासंजयाइवत्तव्वंसिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे असब्भूयमेयं देवाणं । से किं खाइसं भंते ! देवाइ वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! देवाणं नोसंजयाइवत्तव्वंसिया । देवाणं भंते ! कयराए भासाए भा

॥ भाषा ॥

देवगते पाछा गया हे भदंतइत्या मवणे । भगवगोयमे समणभगवमहावीरजावएववयासी देवाणभतेसंजयाइवत्तव्वसिया । भगवंत गौतम श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी प्रते नमस्कार करी यावत् इम कहै देवना अधिकारथीन एकहैछे देवने हे भगवन् । सयती एहवू कहवो हुवे इतिप्रश्न । गोयमा णोइणठेसमठे अब्भक्खाणेमेयदेवाण देवाणभतेअसंजयाइवत्तव्वसिया । हे गौतम ! एअर्थ समर्थ नहीं झूठो आलदेणो एह देवने तेमाटे एम कहवो देव हे भगवन् । असयती कहवो हुवे इतिप्रश्न । गोयमा णोइणठेसमठे णिठुरवयणमेयदेवाण । हे गौतम ! एअर्थ समर्थ नही निष्ठुर वचन कठोरवचन न कहवो देवने तेमाटे एपणि । देवाणभतेसंजया २ इवत्तव्वसिया । देव हे भगवन् । सयता सयतो एहवो कहवो हुवे इतिप्रश्न । गो० णोइणठे समठे असब्भूयमेयदेवाण । हे गौतम ! एअर्थ समर्थ नही युक्त नहीं अछता भावनो एकहवो देवने तेमाटे एपणि नही । सेकिंखाइणभतेदेवे तिवत्तव्वसिया । तोहवे किसे वलो ण वाक्यालकारे हे भगवन् । देवने किसो वक्तव्यताये कहवाय इतिप्रश्न । गोयमा देवाणंनोसजयाइवत्तव्वसिया देवाणभतेकयराएभासाएभासति । हे गौतम ! देवनें नोसयतो एहवू कहवाय नोसयत शब्द असयत शब्द पर्याय पणेछे तोपणि शब्दने अनिष्टुर

॥ टीका ॥

कारा देवेदमाह ॥ देवाणमित्यादि ॥ विसिस्सइत्ति ॥ विशिष्यते विशिष्टो भवतीत्यर्थः ॥ अद्धमागहत्ति ॥ भाषाकिल षड्विधा भवति यदाह—प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाचसौरसेनीच । षष्ठोत्रभूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंश ॥ १० ॥ तत्र मागधभाषालक्षण किञ्चित् किञ्चिच्च प्राकृतभाषालक्षण यस्या मस्ति सार्द्ध मागध्या इतिव्युत्पत्त्या र्द्धमागधीति केवलिछद्मस्थवक्तव्यताप्रस्ताव एवेदमाह ॥ केवलीणमित्यादि ॥ यथा केवली जाना

॥ मूल ॥

संति कयरावा भासा भासिज्जमाणीविसिस्सइ ? गोयमा ! देवाणं अद्धमागहाए भासाए भासंति सावि यण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ । केवलीणं भंते ! अंतिकरवा अंतमसरीरियवा जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ । जहाणं भंते ! केवली अंतकरंवा अंतिमसारीरियवा जाणइ पासइ तहाणं छउमत्थेवि अंतकरंवा अंतिमसारीरियवा जाणइ पासइ ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे सोच्चा जा

॥ भाषा ॥

वचनपर्यायको जिम लोकनें विषे मूश शब्दनी अपेचायें परलोक यथा इम कहवाय ते शब्दनी परें देवाधिकार थीज कहेछे देव ण वाक्यालंकारे हे भगवन् । किसी भाषायें करी बोले अथवा । कयरावाभासाभासिज्जमाणीविसिस्सइ । किसी भाषा बोली थकी विशिष्ट हुवे विशिष्ट थई परिणमे इतिप्रश्न । गोयमा देवाणअद्धमागहाएभासाएभासंति । हे गौतम । देव अर्द्ध मागधी भाषाये करी बोले । सावियणअद्धमागहाभासाभासिज्जमाणीविसिस्सइ । तेपणि वली अर्द्धमागधी भाषा भाषीजती थकी विशिष्ट हुवे शुभथई परिणमे इत्यर्थं ते भाषाना छभेदछे प्राकृत १ संस्कृत २ मागध ३ पिशाच ४ सौरसेनी ५ छट्ठो भाषा घणे भेदें देश विशेष थी अपभ्रंश तिहां भाषा लचण काइक २ प्राकृत भाषा लचण जेहने विषेछे तेअर्द्ध मागधी कहीजे । केवलीणभंतेअंतकरवा अंतिमसारीरियवा जाणइपासइ । केवली छद्मस्थ वक्तव्यता प्रस्तावने विषेज एकहेछे केवली हे भगवन् । भवच्छेद करे चरम शरीरी प्रते जाणे देखे इतिप्रश्न । हंता गोयमा जाणइ पासइ । हां गौतम जाणे देखे । जहाणंभंतेकेवलीअंतकरवा अंतिमसारीरियवा । जिम ण वक्यालंकारे हे भगवन् । केवली भवछेदकारप्रते चरिम शरीरी प्रते इत्यर्थ । जाणइपासइ तहाणंछउमत्थेवि अंतकरवा । जाणे देखे तिम

॥ टीका ॥

ति तथा छद्मस्थो नजानाति कथञ्चि त्पुन र्जानात्यपी त्येतदेव दर्शयन्नाह ॥ सोच्चेत्यादि ॥ केवलिस्सवत्ति ॥ केवलिनो जिनस्य अय मन्तकरो भविष्यती त्यादिवचन श्रुत्वा जानातीति ॥ केवलिसावगस्सवत्ति ॥ जिनस्य समीपे यः श्रवणार्थी सन् शृणोति तद्वाक्या न्यसौ केवलिश्रावक, स्त स्य वचन श्रुत्वा जानाति, सहि किल जिनसमीपे वाक्यान्तराणि शृण्वन् अय मन्तकरो भविष्यती त्यादिकमपि वाक्य शृणुयात्, ततश्च तद्वचनश्र वणा ज्जानातीति ॥ केवलिउवासगस्सवत्ति ॥ केवलिन मुपास्ते य· श्रवणानाकाङ्क्षी तदुपासनामात्रपर स न्नसौ केवल्युपासक, स्तस्य वच श्रुत्वा

॥ मूल ॥

णइ पासइ पमाणउवा सेकिंत सोच्चा सोच्चाण केवलिस्सवा केवलिसावयस्सवा केवलिसावियाएवा केवलि उवासगस्सवा केवलिउवासियाएवा तप्पक्खियस्सवा तप्पक्खियसावयस्सवा तप्पक्खियसावियाएवा तप्प क्खियउवासगस्सवा तप्पक्खियउवासियाएवा सेत्तं सोच्चा सेकिंतं पमाणे? २ चउव्विहे पन्नत्ते तजहा—पच्चक्खे

॥ भाषा ॥

छद्मस्थ पणि भवच्छेद करशे । अंतिम सारीरियवा जाणइपासइ । चरिम शरीरी प्रतें जाणे देखे इतिप्रश्न । गोयमा गोइणाइसमट्ठे सोच्चाजाणइपासइ पमाणओवा । हे गौतम । ए अर्थ समर्थ नही युक्त नहीं कथचित् प्रकारे वली जाणे देखे पणि ते देखाडता कहेछे सोच्चेत्यादि सुणीने जाणे देखे अथवा प्रमाण थी जाणे देखे । सेकितसोच्चा सोच्चाणकेवलिस्सवा । तेस्यू सोच्चा कहीयें साभलीनें ण वक्यालकारे केवली जिनसमीपें ए अतकर हुस्यें एवचन साभलीने तथा । केवलीसावयस्सवा केवलीसावियाएवा । केवलीना मुखथी सुणें ते केवली श्रावक तेहना मुखथी सुणीने जाणें केवली पासें स्त्री सुणे तेपासे अनेरा साभलें तेसाभलो जाणे । केवलीउवासगस्सवा केवलीउवासियाएवा । केवली वचन सुणवा वाछे ते उपासना मात्रसुणें तेहनो वचन सु णी जाणें केवली वचन सुणवा वाछे ते उपासना मात्र स्त्री सुणें तेहना वचन सुणी जाणे । तप्पक्खियस्सवा तप्पक्खियसावयस्सवा । तेहना पाक्षिक स्वयबुद्ध आदिदेई तेपासे साभली जाणे ते स्वयंबुद्धना मुखथी श्रावक सुणें तेहना मुखथी साभली जाणे । तप्पक्खिसावियाएवा तप्पक्खियउवासगस्स वा । त स्वयंबुद्धिनी श्राविकाना मुखथी साभली जाणें ते स्वयबुद्धनो उपासन मात्र सेवक तेहना मुखथी साभली जाणें । तप्पक्खियउवासियाएवा सेत

॥ टीका ॥

जानाति श्रावनाप्राय प्राग्वत् ॥ तप्पक्खियस्सवत्ति ॥ केवलिपाक्षिकस्य स्वयंबुद्धस्येत्यर्थः, इहच श्रुत्वेति वचनेन प्रकीर्णकं वचनमात्रं ज्ञाननिमित्ततया ऽवसेय, नत्वागमरूप' तस्य प्रमाणग्रहणेन ग्रहीष्यमाणत्वादिति ॥ पमाणेत्ति ॥ प्रमीयते येनार्थ स्तत्प्रमाणं प्रमिति र्वा ; प्रमाण ॥ पच्चक्खेत्ति ॥ अक्ष जीव अक्षाणि चेन्द्रियाणि प्रति गत प्रत्यक्ष ॥ अणुमाणेत्ति ॥ अनु लिङ्गग्रहणसम्बन्धस्मरणादे पश्चा न्मीयते ऽनेने त्यनुमानं ॥ उवम्मेत्ति ॥ उप मीयते सदृशतया गृह्यते वस्त्व नये त्युपमा सैव औपम्य ॥ आगमेत्ति ॥ आगच्छति गुरुपारपर्येणे त्यागम एषा स्वरूप शास्त्रलाघवार्थ मतिदेशत आह जहेत्यादि ॥ एवचै तत्स्वरूप, तत्र द्विविध प्रत्यक्ष, मिन्द्रियनोइन्द्रियभेदा, तत्रेन्द्रियप्रत्यक्ष पञ्चधा श्रोत्रादीन्द्रियभेदात्, नोइन्द्रियप्रत्यक्ष त्रिधा वध्या दिभेदादिति, त्रिविध मनुमान पूर्वव च्छेशव दृष्टसाधर्म्य वच्चेति, तत्र पूर्ववत् पूर्वोपलब्धे स्साधारणलक्षणा न्मात्रादिप्रमातु पुत्रादिपरिज्ञान' शेष वत् यत्कार्यादिलिङ्गा त्परोक्षार्थज्ञान यथा मयूरो त्र केकायितादिति, दृष्टसाधर्म्यवत् यथा एकस्य कार्षापणादे र्दर्शना दन्ये प्येवविधाएवेति प्रति पत्तिरित्यादि, औपम्य यथा गौ र्गवय स्तथेत्यादि, आगमस्तुद्विधा लौकिकलोकोत्तरभेदात्' त्रिधावा ; सूत्रार्थोभयभेदात् ; अन्यथावा, त्रिधा आत्मा

॥ मूल ॥

अणुमाणे उवमे आगमे जहा अणुओगद्दारे तहा णेयव्वं पमाणं जावतेणपरंणोअत्तागमे णोअणंतरागमे

॥ भाषा ॥

सोच्चा सेकितपमाणेपमाणेचउव्विहे प० तं० । ते स्वयबुद्धनो उपासना मात्र स्त्री तेहना मुखथी साभली जाणे ते वचन सणीने-जाणे ते प्रमाणस्य, कहीये जाणी जे जिणे करी तेप्रमाण तेप्रमाणना च्यारि भेद कह्या तेकहेछे—पच्चक्खे अणुमाणे ओवमे आगमे जहाअणुओगद्दारे तहाणेयव्व पमाण जावतेणपर णो अत्तागमे अणतरागमे परंपरागमे । इन्द्रीये करी जे जाणीये ते प्रत्यक्ष कहीये १ चिन्ह सबधस्मरण थकी जेजाणे ते अनुमान कहीये जिहा धूम ति हा अग्नि २ उपमा थी जाणीये जिमगाय तिमगवय उपमान ३ अनुसारे जाणीये ते आगम ४ जिम अनुयोग द्वार शास्त्रमाहे कह्यु तिम कहवो जि णेकरी अर्थना प्रमाण करीये तेप्रमाण यावत् तेहथकी आगले नहीं आत्मागम अर्थथी वीतरागने आत्मागम गणधरने अनतरागम तेहना शिष्यने परपरागम सूत्रथी गणधरने आत्मागम तेहना शिष्यने अनतरागम तेहना प्रशिष्यने परपरागम तिवार पछी आत्मागम नही अनतरागम नही पर

॥ टीका ॥

गमानन्तरागमपरंपरागमभेदात्, तत्र त्वागमादयो ऽर्थत क्रमेण जिनगणधरतच्छिष्यापेक्षया द्रष्टव्या 'सूत्रतस्तु गणधरतच्छिष्यप्रशिष्यापेक्षयेति' एतस्य प्रकरणस्य सीमा कुर्वन्नाह ॥ जावेत्यादि ॥ तेणपरंति ॥ गणधरशिष्याणां सूत्रतो नन्तरागमो यतस्तु परम्परागम ' तत पर प्रशिष्याणामित्यर्थ केवलीतरप्रस्तावएवेद मपरमाह ॥ केवलीणमित्यादि ॥ चरमकर्म यच्छैलेशीचरमसमये नुभूयते, चरमनिर्ज्जरातु य त्ततो नन्तरसमये जीवप्रदेशेभ्य परिशटतीति ॥ पणीयन्ति ॥ प्रणीत शुभतया प्रकृष्ट ॥ धारेज्जत्ति ॥ धारये द्व्यापारयेदित्यर्थ ॥ एवअणतरेत्यादि ॥ अस्या यमर्थ यथा वैमानिका

॥ मूल ॥

परंपरागमे केवलीण भंते ! चरिमकम्मंवा चरिमणिज्जरंवा जाणइ पासइ ? हंता गोयमा ! जाणइ पासइ जहाणं भंते ! केवली चरिमकम्मंवा जहाणं अंतकरेणं आलावगो तहा चरिमकम्मेणवि अपरिसेसित्त णेयव्वो । केवलीणं भंते ! पणीयमणंवा वइंवा धारेज्जा ? हंता धारेज्जा । जसं भंते ! केवली पणीय मणंवा वइंवा धारेज्जा तण वेमाणिया देवा जाणंति पासंति ? गोयमा ! अत्थेगइया जाणंति पासंति अत्थेगइ

॥ भाषा ॥

परागमछे । केवलीणभंतेचरिमकम्मवा चरिमणिज्जरवा जाणइपासइ । केवली प्रस्तावने विषे ण कहेछे—केवली हे भगवन् ! शैलेशी अवस्थायें चरिम समये भोगवीये जे कर्म तेह प्रतें तथा जे तेथको अनतर समयें जीव प्रदेश थकी परिशाटन करे तेह प्रते जाणे देखे इतिप्रश्न । हतागोयमाजाणइ पासइ । हा गौतम ! जाणे देखे । जहाणभंतेकेवली चरिमकम्मवा । जिम ण वाक्यालंकारे हे भगवन् ! केवली चरिम कर्म चरिम निर्जरा प्रतें जाणे देखे तिम छद्मस्थ पणि जाणे देखे इत्यादि । जहाणअतकरेआलावगो तहाचरिमकम्मेणविअपरिसेसतोणेतव्वो । जिम अनतरने विषे आलावो कह्यो तिम चरिम कर्मनें विषे पणि अपरि शेष समस्त पणें कहवो । केवलीणंभंतेपणीयमणवावइवाधारेज्जा । केवली हेभगवन् ! शुभपणें करो प्रकृष्ट मन अथवा शुभ वचन तेह प्रते धारे व्यापारे इत्यर्थ इतिप्रश्न । हता धारेज्जा । हा गौतम ! धारे व्यापारे । जणभंतेकेवलीपणीयमणवावइवाधारेज्जा । जेह ण वाक्यालंकारे हे भगवन् ! केवली शुभपणें प्रकृष्ट मन वचन धारे व्यापारे । तणंवेमाणियादेवाजाणतिपासंति । तेह ण वाक्यालंकारे वैमानिक

॥ टीका ॥

द्विधा वाच्या, अनन्तरोपपन्नकानाञ्च द्विविधा उक्ता मायिमिथ्यादृष्टीनाञ्च ज्ञाननिषेध एव ममायिसम्यग्दृष्टयो ऽनन्तरोपपन्न परम्परोपपन्नकभेदेन द्विधा वाच्या, अनन्तरोपपन्नकानाञ्च ज्ञाननिषेध स्तथा परम्परोपपन्नका पर्याप्तकापर्याप्तकभेदेन द्विधा वाच्या, अपर्याप्तकानाञ्च ज्ञाननिषेध स्तथा पर्याप्तका उपयुक्तानुपयुक्तभेदेन द्विधा वाच्या, अनुपयुक्तानाञ्च ज्ञाननिषेधश्चेति वाचनान्तरे त्विद सूत्र साक्षादेवो पलभ्यतइति ॥ आलाववत्ति ॥ सकृज्जल्प ॥ सलाववत्ति ॥ मुहुर्मुहुर्जल्प

॥ मूल ॥

या जाणति ण पासति सेकेणठेण जाव णपासति ? गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पस्नत्ता तंजहा— मायिमिच्छादिठिउववन्नगाय अमायिसम्मदिठिउववन्नगाय तत्थणं जे ते माइमिच्छादिठिउववन्नगा ते न जाणति नपासंति एव अणंतरपरंपरपज्जत्तअपज्जत्ताय उवउत्ता अणुवउत्ता तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासति सेतेणठेणं तचेव । पन्नूणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगयाचेव समाणा इहगएणं केव

॥ भाषा ॥

देव जाणे देखे इतिप्रश्न । गोयमा अत्थे गइयाजाणति पासति अत्थेगइयाणोजाणतिपासति । हे गौतम । केतला एक वैमानिक देव जाणे देखे केतला एक वैमानिक देव नजाणे नदेखे । सेकेणठेणजावणपासति । ते स्ये प्रयोजने हे भगवन् । इम कह्यु केतला एक जाणे केतला एक नजाणे न देखे इतिप्रश्न । गोयमा वेमाणियादेवादुविहा प० त० । हे गौतम । वैमानिक देव विहु भेदे कह्या तेकहेछे—माईमिच्छदिट्ठीउववन्नगाय अमाईसम्मदिट्ठीउववन्नगाय । कोईकषाई मिथ्यादृष्टी ऊपनाछे १ अमायी अकषायी सम्यग्दृष्टी ऊपना २ । तत्थणजेतेमाईमिच्छदिट्ठीउववन्नगातेनजाणति न पासति । तिहा ण वाक्यालकारे जिके ते मायीमिथ्यादृष्टी ऊपना तेदेव नजाणे नदेखे अमायी सम्यग् दृष्टी ऊपना तेजाणे देखे । एवअणतरपरपरपज्जत्तअपज्जत्ताअणुवउत्ताणोअणुववत्ता । एहनो एभावार्थ जिम वैमानिक वेभेदे कह्या तिहा मायीमिथ्यादृष्टीनें जाणपणो निषेध्यो इम अमायी सम्यग दृष्टी पणि अनतरोपपन्नक परंपरोपपन्नक एवेभेदे कहवा तिहा अनंतरोपपन्नकनें जाणपणो निषेध करवो तिम परपरोपपन्नक पणि पर्याप्तक अपर्याप्तक एवेभेदे कहवा तिहा अपर्याप्तने जाणपणो निषेध करवो तथा पर्याप्त । तत्थण जेतेउवउत्तातेजाणतिपासति सेतेणठेणतचेव ।

॥ टीका ॥

मानसिकमेवेति ॥ लद्धाउत्ति ॥ तदवधे र्विषयजावंगता ॥ पत्ताउत्ति ॥ तदवधिना सामान्यत प्राप्ता परिच्छिन्नाइत्यर्थ ॥ अभिसमणागयाउत्ति ॥

॥ मूल ॥

लिणा सद्धि आलावंवा सलावंवा करेत्तए ? हंता पभू । सेकेणट्ठेण जाव पभूण अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जसं अणुतरोववाइया देवा तत्थगयाचेव समाणा अट्ठंवा हेउंवा पसिणवा कारणवा वागरणवा पुच्छंति तस्स इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरणवा वागरेइ सेतेणट्ठेणं भंते ! इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरेइ तसं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगयाचेव समाणा जाणंति पासंति सेकेणट्ठे

॥ भाषा ॥

पणि उपयोगवत उपयोग रहित एवीभेदे कहवा तिहां उपयोग रहितनें जाणपणानो निषेध करवो तेहीज कहेछे—तिहां उपयोगवत अमायी सम्यग् दृष्टी देव ते जाणे देखे ते तेणे अर्थे इत्यादि सर्व तिमज कहवो । पभूणभंतेअणुत्तरोववाइयादेवा तत्थगयाचेव । समर्थ छे हे भगवन् ! अनुत्तर विमानने विषे उपना जेदेव तिहां अनुत्तर विमानने विषे रह्या थका वसता थका निश्चे । समाणा इहगएणकेवलिणासद्धि आलावंवा । इहां मनुष्यक्षेत्रने विषे रह्या थका केवली सघातें एकवार बोलवो मन सघातेज । सलाववाकरेत्तए हंतापभू सेकेणट्ठेणजावपभूणं । वार २ बोलवो मनसघातेंज तेकरवानें इति प्रश्न हा गौतम ! समर्थछे तेस्यें अर्थे हे भगवन् ! यावत् समर्थछे । अणुत्तरोववाइयादेवा जावकरेत्तए । अनुत्तर विमाने उपना देव केवली सघातें यावत् करवाने इतिप्रश्न । गोयमा जणअणुत्तरोववाइयादेवातत्थगया चेवसमाणा । हे गौतम । जेह भणी अनुत्तर विमानवासी देव जेमाटें अच्युत देव लोक उपरांत देवनो गमन आगमन नथी तेमाटे तिहां रह्या थकाज । अट्ठवा हेउवा पसिणवा कारणवा । अर्थ प्रते हेतु दृष्टांत प्रते अथवा प्रश्नप्रतें अथवा कारण प्रते । वागरणवा पुच्छंति तणइहगएकेवलीअट्ठवा । कह्याने उत्तर ते व्याकरण ते प्रते पूछे तेह इहां मनुष्यक्षेत्रे रह्या केवली अर्थप्रते । जाववागरणवावागरेइ सेतेणट्ठेण । यावत् प्रश्नना उत्तर प्रते कहे ते तेणे अर्थे आलापादिक करवाने समर्थ छे । जण्णभंतेइहगएकेवली अट्ठवाजाववागरेइ । जे ण वाक्यालंकारे हे भगवन् ! इहां मनुष्य क्षेत्रने विषे रह्या केवली अर्थ प्रतें यावत् प्रश्ननो उत्तर कहे । तण्णअणुत्तरोववाइयादेवा तत्थगयाचे

॥ टीका ॥

विशेषतः परिच्छिन्ना यतस्तेषां मवधिज्ञानं सम्भिन्नलोकनाडीविषयं यच्च लोकनाडीग्राहकं तन्मनोवर्गणाग्राहकं भवत्येव' यतो योपि लोकसङ्ख्येयभागविषयो ऽवधिः सोपि मनोद्रव्यग्राही, यः पुनः सम्भिन्नलोकनाडीविषयो सौ कथं मनोद्रव्यग्राही नभविष्यति इष्यतेच लोकसङ्ख्येयभागावधे मनोद्रव्यग्राहित्वं यदाह—सखेज्जमणोदव्वे भागोलोगपलियस्सबोधव्वोत्ति' अनुत्तरसुराधिकारा दिदमाह ॥ अणुत्तरेत्यादि ॥ उदिन्नमोहत्ति ॥ उत्कटवेदमोहनीयाः ॥ उवसतमोहत्ति ॥ अनुत्कटवेदमोहनीया परिचारणाया कथञ्चिदप्यभावात्, नतु सर्वथो पशान्तमोहा उपशमश्रेणे स्तेषा

॥ मूल ॥

ण जाव पासति? गोयमा! तेसिणं देवाणं अणताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमन्नागयाओ भवति सेतेणट्ठेणं जंणं इहगए केवली जाव पासइ। अणुत्तरोववाइयाणं भंते! देवा किं उदिन्नमोहा उवसंतमोहा खीणमोहा? गोयमा! नोउदिन्नमोहा उवसंतमोहा णोखीणमोहा। केवलीणं भंते! आयाणेहिं

॥ भाषा ॥

वसमाणा जाणतिपासति। तेह प्रते अनुत्तर विमाने जपना देव तिहाज रह्या थका निश्चे जाणे देखे इतिप्रश्न। हताजाणतिपासति सेकेणट्ठेण जावपासति। हा गौतम। जाणे देखे ते स्ये अर्थे हे भगवन्। यावत् जाणे देखे इतिप्रश्न। गोयमा तेसिणदेवाणं अणताओमनोदव्ववग्गणाओलद्धाओप त्ताओ अभिसमण्णागयाओभवति। हे गौतम। तेह देवने अनती मनोद्रव्यवर्गणा तेहनां अवधिज्ञानने विषे पहुती तेहने अवधिज्ञाने सामान्य थो पामी विशेष थी पामी छइ जेमाटे तेहनो अवधिज्ञान सभिन्न लोकनाडी विषयछे जे वलीलोकनाडी ग्राहक हुवे ते मनोद्रव्यवर्गणा ग्राहक हुवे इंज जेमाटे जे पणि लोक सख्येय भाग विषय अवधिज्ञान हुवे तेपणि मनोद्रव्य ग्राही हुवे तो जेसभिन्न लोकनाडीविषय तेमनोद्रव्यग्राही किम न हुवे वा छीये लोक सख्येय भाग अवधिने मनोद्रव्य ग्राहक पणो यदाह—सखेज्जमनो दव्वो भागो लोग पलियस्स बोधव्वोत्ति। सेतेणट्ठेणइहगएकेवलीजावणास इ। तेणे प्रयोजने हे गौतम। इहा रह्यो केवली प्रश्नोत्तर कहै ते अनुत्तर विमान वासी जाणे देखे। अणुत्तरोववाइयाणभंतेदेवाकिंउदिण्णमोहाउवस तमोहा खीणमोहा। अनुत्तर देव अधिकार थीज कहैछे—अनुत्तर विमानवासी हे भगवन्! देव स्यू उत्कट वेद मोहनीयछे अथवा उपशमाव्याछे वे

॥ टीका ॥ मत्तावात् ॥ नोखीणमोहत्ति ॥ क्षपकश्रेण्या अभावादिति' पूर्वतरसूत्रे केवल्यधिकारा दिदमाह ॥ केवलीत्यादि ॥ आयाणेहिंति ॥ आदीयते गृह्यते ऽर्थ एभि रित्यादानानी न्द्रियाणि तै र्नजानाति केवलित्वात् ॥ अस्सिसमयसित्ति ॥ अस्मि न्वर्त्तमानसमये ॥ उगाहित्ताणंति ॥ अवगाह्या क्रम्य

॥ मूल ॥ जाणइ पासइ ? णोइणठे समठे सेकेणठेणं जाव केवलीणं आयाणेहिं नजाणइ नपासइ ? गोयमा ! केवलीण पुरच्छिमेण मियंपि जाणइ अमियंपि जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स सेतेणठेण । केवली भंते ! अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थंवा पायंवा बाहुंवा ऊरुंवा उग्गाहित्ताणं चिठइ पभूणं

॥ भाषा ॥ दमोहनीय जेणे एहवो छे अथवा खपाव्योछे वेदमोहनीय जेणे एहवो छे । गो० णोउदिणमोहा उवसंतमोहाणांखीणमोहा केवलीणभंतेआयाणेहिं जाणइपासइ । हे गौतम ! उत्कट वेदमोहनीय नही अनुत्कट वेदमोहनीय छे तेह भणी उपशांत मोहनीय के एहने परिचारणाना अभाव थकी पर सर्वथा उपशांत मोह तेहने न कहीये उपशम श्रेणि तेहने नथी तेमाटे क्षपक श्रेणिना अभावथी क्षीणमोह नथी पहिला सूत्रने विषे केवलीना अधिकारथी एकहेछे—केवली हे भगवन् ! जेणे अर्थ ग्रहीयें तेआदान शब्द इंद्रिय जाणवा ते इंद्रिये जाणे देखे इतिप्रश्न । णोइणठेसमठे सेकेणठेणंजावकेवलीणंआयाणेहिंनजाणइ नपासइ । हे गौतम ! एअर्थ समर्थ नहीं युक्त नही तेकिस्ये प्रयोजने हे भगवन् ! यावत् केवली इंद्रियें करी नजाणे नदेखे इस्युं कह्यु इतिप्रश्न । गो० केवलीणपुरच्छिमेणमियंपिजाणइ । हे गौतम ! केवली पूर्व वाक्यालंकारे पूर्वदिशिने विषे प्रमाण सहित पणि जाणे । अमियंपिजाणइ जावणिव्वुडेदंसणेकेवलिस्स सेतेणठेण । प्रमाण रहित पणि जाणे इत्यादि यावत् निरावरण शुद्ध केवलीने दर्शनछे एतलालगे कहवो ते तेणे अर्थे हे गौतम ! इम कह्यु । केवलीणभंतेअस्सिंसमयंसि जेसुआगासपदेसेसु । केवली हे भगवन् ! एवर्त्तमान समयने विषे जेह आकाश प्रदेशने विषे । हत्थंवा पायंवा बाहुंवा ऊरुंवा उग्गाहित्ताणंचिठइ । हाथप्रते अथवा पगप्रते अथवा भुजाप्रते अथवा जंघाप्रते अवगाही आक्रमीने रहे । पभूणंकेवली सेयकालंसि तेसुचेवआगासपदेसेसु । समर्थ हुवे केवली आगामि कालने विषे बीजाने विषे तिणे आकाश प्रदेशने विषे । हत्थं वा पायंवा बाहंवा

॥ टीका ॥

॥ सेयकालसिवत्ति ॥ एष्यत्कालेपि ॥ वीरियसजोगसद्दव्वयाएत्ति ॥ वीर्यं वीर्यान्तरायक्षयप्रभवा शक्ति स्तत्प्रधान सयोगं मानसादिव्यापारयुक्त य त्सत् विद्यमान द्रव्य जीवद्रव्य त तथा' वीर्यसद्भावेपि जीवद्रव्यस्य योगा न्विना चलन न स्यादिति, सयोगशब्देन सत् द्रव्यं विशेषित' सदि ति विशेषणञ्च तस्य सदा सत्तावधारणार्थं, अथवा; स्व आत्मा तद्रूप द्रव्य स्वद्रव्य तत कर्मधारय अथवा, वीर्यप्रधान सयोगो योगवान् वी र्यसयोग सचासौ सद्द्रव्यश्च मन प्रभृति वर्गणायुक्तो वीर्यसयोगसद्द्रव्यस्तस्य भाव स्तत्ता तया हेतुभूतया ॥ चलाइति ॥ अस्थिराणि ॥ उवगरणाइ ति ॥ अङ्गानि ॥ चलोवगरणठयाएत्ति ॥ चलोपकरणलक्षणो योर्थ स्तद्भाव श्चलोपकरणार्थता तया चशब्द पुनरर्थ , केवल्यधिकारा च्छुतकेवलिन

॥ मूल ॥

केवली सेयकालंसि विएसु चेव आगासपएसेसु हत्थंवा जाव उग्गाहित्ताणं चिठित्तए ? गोयमा ! णोइणठे समठे । सेकेणठेणं भंते ! जाव केवलीण अस्सिंसमयंसि जेसु आगासपएसेसु जाव चिठइ णोणं पभू के वली सेयकालसि विएसुचेव हत्थंवा जाव चिठित्तए ? गोयमा ! केवलिस्सणं वीरियस्स सजोगसद्दव्वयाए चलाइं उवगरणाइ भवंति चलोवगरणठयाएण केवली अस्सिं समयंसि जेसु आगासपएसेसु हत्थंवा जाव

॥ भाषा ॥

ऊरुवा जाव उग्गाहित्ताणचिठित्तए। हाथप्रतें पगप्रते भुजाप्रते जंघाप्रते यावत् अवगाहीने रहवाय । गो० णोइणठेसमठे सेकेणठेणजावकेवलीअस्सि समयंसि जेसुआगासपदेसेसु । हे गौतम! एअर्थ समर्थ नहीं तेसें अर्थें हेभगवन् । यावत् केवली वर्त्तमान समयने विषे जे आकाश प्रदेशने विषे । जावचिठइ णोणपभूकेवलीसेयकालसिविएसुचेव । हस्तादिक प्रतें अवगाही रहै नही समर्थ केवली आगामिकाल समये वीजाने विषे निश्चे। आ गासपदेसेसु हत्थं वा जावचिठित्तए । आकाश प्रदेशनें विषे हस्तादिक प्रते यावत् रहवाने इतिप्रश्न। गो० केवलिस्सण वीरियसजोगसद्दव्वयाएच लाइ उवगरणाइ भवति । हे गौतम। केवलीना वीर्यांतरायने क्षये ऊपनी शक्ति तिणे करी प्रधान जे सयोग मन वचन कायाना योग व्यापार तिणे सहित विद्यमान जीव जीव द्रव्य तेहने भावें करी अस्थिर अगउपाग छे । चलोवगरणठयाएयण केवली अंसिसमयसि। चल उपकरण लक्षण जे गर्थ

॥ टीका ॥

मधिकृत्याह ॥ घडाउघडसहस्संति ॥ घटा दवघे घटं नि श्रां कृत्याघटसहस्रं ॥ अभिनिव्वट्टित्ता ॥ अभिनिर्वर्त्य विधाय श्रुतसमुत्थलब्धिविशेषेण उपदर्शयितु प्रभु रितिप्रश्न· ॥ उक्कारियाभेएणंति ॥ इह पुद्गलाना भेद पञ्चधा भवति खण्डादिभेदा तत्रखण्डभेद· खण्डशो यो भवति लोष्टादे

॥ मूल ॥

चिठइ णोणं पभू केवली सेयकालंसि विएसुचेव जाव चिठित्तए सेतेणठेणं जाव वुच्चइ केवलीणं अस्सिं समयंसि जाव चिठित्तए। पभूणं भंते! चोद्दसपुव्वी घडाउ घडसहस्स पडाउ पडसहस्स कडाउ कडसहस्सं रहाउ रहसहस्सं छत्ताउ छत्तसहस्सं दंडाउ दंडसहस्सं अभिनिव्वट्टेत्ता उवदंसेत्तए ? हंतापभू सेकेणठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव उवदंसेत्तए ? गोयमा! चोद्दसपुव्विस्सणं अणंताइ दव्वाइं उक्कारिया भेएणं भिज्जमा

॥ भाषा ॥

तेहनो भाव तिणेंकरी केवलो जे समयनें विषे । जेसुआगासपदेसेसु हत्यवा जावचिट्ठइ णोणपभूजेगलीसेयकालसि । जे आकाश प्रदेशने विषे हस्तादिक प्रतें यावत् रहे नही वं वाक्यालंकारे समर्थ केवली आगामि कालने विषे । विएसुजावचिट्ठित्तए सेतेणट्ठेण जाववुच्चइ केवलीणअस्सिसमयंसिजावचिट्ठित्तए। बीजा आकाश प्रदेशने विषे यावत् राखवानें ते तेणें अर्थे यावत् इम कह्यु केवली वर्त्तमान समयनें विषे जे हस्तादिक प्रदेश ने आकाश प्रदेशनें विषे इत्यादि यावत् राखवानें। पभूणभंतेचउद्दसपुव्वी घडाओघडसहस्सं। केवली अधिकार थकी श्रुत केवली प्रतें अधिकारी कहेंछे समर्थ छे हेभगवन्। चउद पूर्वधर घटनो निपायें करो घटसहस्र अभि० एपद सघातें योगकीजे। पडाओ पडसहस्स कडाओकडसहस्स रहाओ रहसहस्स। पटनो निपायें पट सहस्र प्रतें कटनो निपायेंकरी कटसहस्र प्रतें रथनो निपायेंकरीरथसहस्र प्रतें। छत्ताओछत्तसहस्स दंडाओदंडसहस्स अभिनिव्विट्टेत्ता उवदंसेत्तए। छत्रनोनिपायेंकरी छत्र सहस्र प्रतें दंडनोनिपायेंकरी दंडसहस्र प्रतें श्रुतोत्पन्न लब्धि विशेषें करी देखाडवा समर्थ इतिप्रश्न। हंता पभू सेकेणट्ठेणपभू चउद्दसपुव्वी जावउवदंसेत्तए। हां गौतम समर्थ कुण तेकिस्यें अर्थे समर्थ चउदे पूर्वधर घटनिपायें घटसहस्र इत्यादि यावत् देखाडवानें इतिप्रश्न। गो० चउद्दसपुव्विस्सण अणंताइदव्वाइं उक्कारियाभेएणभिज्जमाणाइंलद्धाइंपत्ताइं। हे गौतम। चउद पूर्वधरने अनंताद्रव्य इहा पुद्ग

॥ टीका ॥

रिव, प्रतरभेदो ऽभ्रपटलानामिव' चूर्णिकाभेद स्तिलादिचूर्णवत्, अनुतटिकाभेदो ऽवटतटभेदवत्, उत्कारिकाभेद एरण्डबीजानामिवेति' तत्रो त्कारिकाभेदेन भिद्यमानानि ॥ लद्धाइति ॥ लब्धिविशेषात् ग्रहणविषयता गतानि ॥ पत्ताइति ॥ ततएव गृहीतानि ॥ अभिसमन्नागयाइंति ॥ घ टादिरूपेण परिणमयितु मारब्धानि, तत स्तै र्घटसहस्रादि निर्वर्त्तयति, आहारकशरीरव न्निवर्त्त्यच दर्शयति जनाना, मिह चोत्कारिकाभेदग्रहणं तद्भिन्नानामेव द्रव्याणा विवक्षितघटादिनिष्पादनसामर्थ्य मस्ति नान्येषा मितिकृत्वेति ॥ इति पञ्चमशते चतुर्थ ॥ ग्रथमान ५००० ॥ ४ ॥ अनन्तरोद्देशके चतुर्द्दशपूर्वविदो महानुभावतो क्ता, सच महानुभावत्वादेव छद्मस्थोपि सेत्स्यतीति कस्या प्याशङ्का स्या दत स्तदपनोदाय पञ्च मोद्देशकस्ये दमादिसूत्र ॥ छउमत्थेणमित्यादि ॥ जहापढमसएइत्यादि ॥ तत्रच छद्मस्थ आधोवधिक परमाधोवधिकश्च केवलेन संयमादिना न

॥ मूल ॥

णाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमन्नागयाइं भवंति सेतेणट्ठेणं जाव उवदंसित्तए सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचमसयस्स चउत्थोउद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ४ ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासय समयं केवलेणं संजमेण जहा पढमसए चउत्थउद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव अलमत्थुत्ति वत्तव्वंसिया। अन्नउत्थियाणं

॥ भाषा ॥

ते पाच प्रकारे कह्या खंडादि भेदे करी तिहा खंडभेद अनेक खंड हुवे लोष्टादिकनीपरें प्रतर भेद अभ्रपडलनी परें चूर्णिका भेद तिलादि चूर्णनीपरें अ नुतटिकाभेद अवटतटनीपरें उत्कारिकाभेद एरंडबीजनीपरें तिहा उत्कारिकाभेदें करीने एरंडबीजनीपरे भेदिता थका लब्धि विशेषथी ग्रहण विषय पणा प्रतें बाधा तिहा थकीज ग्रह्या। अभिसमणागयाइभवंति सेतेणट्ठेणजावउवदंसेत्तए। घटादि रूपें करी परिणमाववाने आरभ्या तिवार पछी घट सहस्रा दि निवर्तें निवर्त्तावीने मनुष्यने देखाडे तेतेणें प्रयोजने यावत् देखाडवाने समर्थ हुवे। सेवंभंते २ त्ति पंचमसयस्सचउत्थो ५। ४। तहत्ति हे भगवन्! तुम्हे कह्यु ते सत्यछे अन्यथा नही एपाचमा शतकनो चौथो उद्देशो अर्थथी कह्यो ५ ॥ ४ ॥ छउमत्थेणभंते मणूसेतीयमणंतसासयस मयकेवलेणसंजमेण जहापढमसएचउत्थुद्देसएआलावगातहाणेयव्वा। पाछिले उद्देशें चउद पूर्व धरनो महानुभाव पणो कह्यो ते मानुहभाव पणाथकी

॥ टीका ॥ सिध्यती त्याद्यर्थपरं तावन्नेव, याव दुत्पन्नज्ञानादिधरः केवली अल मस्त्विति वक्तव्यं स्यादिति, यच्चेह पूर्वाधीतमपी गाधीत तत्सम्बधविशेषा त्सपुन रुद्देशकपातनाया मुक्तएवेति, स्वयूथिकवक्तव्यतानन्तरं मन्ययूथिकवक्तव्यतासूत्र तनच ॥ एवन्भूयवेयणाति ॥ यथाविध कर्म्म निबद्ध मेवन्भूता

॥ मूल ॥ भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता एवंभूयं वेयणं वेदंति से कह मेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जणं तेअन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव वेदंति जेतेएव माहंसु मिच्छा तेएव मासंसु । अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जावपरूवेमि । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं

॥ भाषा ॥ छद्मस्थ पणि सीझे एहवी कोई एकने आशंका हुवें ते टालवा भणी पाचमो उद्देशो कहेछे छद्मस्थ हे भगवन् । मनुष्य अतीत अनंते शाश्वते काले सपू र्ण शुद्ध संयमे करी सीझे सर्व दुःखनो अंतकरे इतिप्रश्न हे गोतम । जिम पहिला शतकनां चोथा उद्देशाने विषे आलावा कह्या तिम इहां कहवा इ हां छद्मस्थ आधोवधिक परमावधिक ए केवल संयमादिके नसीझे इत्यादिक ता लगे कहवुं उपनां ज्ञानादिकना धरणहार केवली सीझे । जावअल मत्थुत्तिवत्तव्वसिया । यावत् एहथी उपरांत ज्ञान बीजो कोई पामवा योग्य नथी एहवो कहीवें । अण्णउत्थियाणभंतेएवमाइक्खंति । स्वयूथिक वक्तव्यता कही अने अन्ययूथिक वक्तव्यता कहेछे—अन्यतीर्थी हे भगवन् । इम कहेछे । जावपरूवेंति सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता एवंभूयवेदणवेदेंति सेकहमेयभंते । यावत् इम प्ररूपेछे सर्व प्राणी सर्व भूत सर्व जीव सर्व सत्त्व जिणि प्रकारे कर्म बांध्यो असातादिक तिम भोगवें एवे किमछे हेभगवन् ! एह इतिप्रश्न । गो० जणतेअण्णउत्थियाएवमाइक्खंति । हे गोतम । जे ए भणी तेअन्ययूथिक इम कहे सामान्यथी । जाववेदेंति जेतेएवमाहंसु मिच्छात एवमाहंसु । यावत् वेदे इहां लगे कहवो जेणे इम कह्युं तिणे भाठुं कह्युं ते किमजाणिये तिमहीज सर्वकर्म अनभोगवे मरे आउ कर्म सघाते अभिचार थकी ते देखाडेछे—दीर्घकाल अनुभववा योग्य आउखा कर्मते थोडे पणि काले गाभ । घणा भोगों यवहा अपमृत्यु सर्वजन प्रसिद्ध जिम याय यवहा किम नहा संग्रामने विषे लाख जीवनो पणि एकदिने मृत्यु होय मृत्यु उपजे । अहंपुण गो० एवमाइक्खामि जावपरूवेमि अत्थेगइया पाणा भूया जीवा ।

॥ टीका ॥

मेव प्रकारतयो त्पन्ना वेदना मसातादिकर्मोदयं वेदयं त्यनुभवन्ति, मिथ्यात्वं चैतद्वादिना मेवं नहि यथाबद्धं तथैव सर्वं कर्मा नुभूयते आयुः कर्म्मणो व्यभिचारा, तथाहि-दीर्घकालानुभवनीयस्या प्यायु कर्म्मणो ऽल्पीयसापि कालेना नुभवो भवति कथ मन्यथा ऽल्पमृत्युव्यपदेशः सर्व जनप्रसिद्धः स्या, दथवा, महासयुगादौ जीवलक्षाणा मप्येकदैव मृत्युरुपपद्येतेति ॥ अणेवम्भूयपित्ति ॥ यथा बद्धं कर्म्म नैवम्भूताऽनेवम्भूता ऽत

॥ मूल ॥

वेयणं वेदंति अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूयं वेयण वेदंति। सेकेणठेणं अत्थेगइया तंचेव उच्चारेयव्वं ? गोयमा ! जस पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेयण वेदंति तेण पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेयण वेदंति जेणपाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नोतहा वेयणं वेदंति तेणं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेयणं वेदंति सेतेणठेणं तहेव। नेरइयाणं भंते! किं एवंभूयं वेयणं वेदंति ? गोयमा ! नेरइयाण एवंभूयपि वेयणं वेदंति अणेवंभूयपि वेयणं वेदंति । सेकेणठेणं तंचेव ?

॥ भाषा ॥

ह वली हे गौतम । इम कहछ यावत् प्ररूपूछु केतला एक प्राणी भूत जीव । सत्ता एवभूयवेदणवेदेंति अत्थे गइयापाणाभूया जीवा सत्ता । सत्त्व जि णे प्रकारे कर्म असातादिक बाध्या तिम भोगवे केतला एक प्राणी भूत जीव सत्त्व । अणेवभूयवेदणवेदेंति सेकेणठेणभंतेअत्थे गइयातचेवउच्चारेयव्व । जि णे प्रकारे बाध्यू असातादिक कर्म तिम भोगवता नथी कर्मना स्थितिघात रसघातादिके करी ते स्ये अर्थे हे भगवन् । केतला एक एवं भूत वेदना वदे केतला एक नवेदे तिमहीज उच्चरवो इतिप्रश्न । गो० जेणपाणाभूयाजीवासत्ता जहाकडाकम्मा तहावेदणवेदेंति । हे गौतम। जे ण वाक्यालकारे प्राणी भूत जीव सत्त्व जिम कीधा कर्म तिम वेदना अनुभवे । तेणपाणाभूयाजीवासत्ता एवभूयवेदणवेदेंति जेणपाणाभूयाजीवा । तेह प्राणी भूत जीव सत्त्व जेणे प्रकारे बाध्यू कर्म तिणे प्रकारे भोगवे जेह प्राणी भूत जीव । सत्ता जहाकडाकम्मा णोतहावेदणवेदंति तेणपाणाभूयाजीवासत्ता । सत्त्व जिम कीधा कर्म नही तिम वेदना भोगवे तेह प्राणी भूत जीव सत्त्व । अणेवभूयवेदणवेदेंति सेतेणठेणंतहेव । जिम कीधा कर्म वेदना अनुभवे नही ते तेणे

स्ता, श्रूयन्ते ह्यागमे—कर्म्मणः स्थितिघात रसघातादयइति ॥ एवंजाववेमाणियासंसारमंडलंनेयव्वति ॥ एवमुक्तक्रमेण वैमानिकावसान संसारिजी वचक्रवाल नेतव्यमित्यर्थः, अथवे; ह स्थाने वाचनान्तरे कुलकरतीर्थकरादिवक्तव्यता दृश्यते ततश्च संसारमंडलशब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह

गोयमा ! जस्सं नेरइयाणं जहाकडा कम्मा तहा वेयणं वेदेंति तस्सं नेरइया एवंभूयं वेयणंवेदेंति जेणं नेरइया जहा कडा कम्मा णो तहा वेयणं वेदेंति तेणं नेरइया अणेवंभूयं वेयणं वेदेंति । सेतेणठ्ठेण जाव वेमाणिया संसारमंडलं नेयव्वं । जंबुद्दीवेणं भंते ! इह भारहेवासे इमीसे उसप्पिणीए समाए कइकुलगरा होत्था ? गोयमा ! सत्त ७ एवतित्थयरा मायरो पियरो पढमासिस्सिणीउ चक्कवट्टी मायरो इत्थिरयणं बल

अर्थ इत्यादि तिमज कहवो । नेरइयाणंभंतेएवभूयवेदणवेदेंति अणेवभूयंवेदणवेदेंति । नारकी हे भगवन् ! एव भूत तिम कीधा कर्म तिम वेदना वेदे अथवा जिम कीधा कर्म तिम वेदना अनुभवे नही इतिप्रश्न । गो० णेरइयाणंएवभूयंपिवेदणवेदेंति । हे गौतम । नारकी जेहवा कीधा कर्म तेहवा पणि अनुभोगवे । अणेवभूयंपिवेदणवेदेंति सेकेणठ्ठेणतचेव । जिम कर्म कीधा तिम वेदना पणि अनुभवे नही ते स्ये अर्थ हे भगवन् ! इत्यादि तिमज कहवो गो० जेणणेरइयाजहाकम्माकडातहावेदणवेदेंति । हे गौतम । जेणे नारकी जिम कर्म कीधा तिम वेदना वेदे । तणणेरइया एवभूयंवेदणवेदेंति जेणणेरइयाजहाकडाकम्मा । तेणे नारको एव भूत वेदना वेदे तथा जे नारकी जिम कीधा कम । णोतहावेदणवेदेंति तेणंणेरइयाअणेवभूयवेदण वेदेंति । तिम वेदना वेदे नही ते नारकी अणेव भूत वेदना वेदे । सेतेणठ्ठेणजाववेमाणिया ससारमडलंणेयव्व जंबुद्दीवेणभंतेइहभारहेवासे । तेणे अर्थे हे गौतम । इम यावत् वैमानिक पर्यंत दंडक कहवा ससार जीवनो चक्रवाल समूह जाणवो अथवा इहा कुलकर थकी तीर्थंकरादि वक्तव्यता दीसेछे ते संसार मडल शब्दे कहवू ते देखाडेछे—जंबूद्वीपने विषे हे भगवन् । इह भरतक्षेत्रने विषे । इमीसेउस्सप्पिणीएसमाए कइकुलगराहोत्था । एह अवसर्पिणी कालने विषे केतला कुलकर हुया इति प्रश्न । गो० सत्तकुलगराहोत्था एवतित्थयरमायरोपियरो पढमासिस्सणीओ । हे गौतम । सात विमल वाहन आदि देई

॥ टीका ॥

सूचितेति सम्भाव्यते ॥ इति पञ्चमशते पञ्चम' ५ ॥ ५ ॥ अनन्तरोद्देशके जीवानां कर्मवेदनोक्ता, षष्ठेतु कर्म्मणएव वन्धनिवन्धन विशेष माह' तस्यचा दिसूत्रमिद ॥ कहणमित्यादि ॥ अप्पाउयत्ताएत्ति॥ अल्प आयुर्यस्या सा वल्पायुक स्तस्य भाव स्तत्ता तस्यै अल्पायुकतायै अल्प जीवितव्यनिवन्धनमित्यर्थ अल्पायुकतयावा, कर्म्म आयुष्कलक्षण प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति प्राणान् जीवा नतिपात्य विनाश्य ॥ मुसवइत्तत्ति ॥ मृषावाद मुक्ता ॥ तहारूवति ॥ तथाविधस्वभाव भक्तिदानोचितपात्रमित्यर्थ' ॥ समणवत्ति ॥ श्राम्यति तपस्यतीति श्रमणो त स्त ॥ माहणवत्ति ॥ माहने त्येव यो ऽन्य प्रतिवक्ति स्वय हनननिवृत्त. स ब्रसी माहन' ब्रह्मवा; ब्रह्मचर्य कुशलानुष्ठानवा; स्या स्तीति ब्राह्मणो त स्त वाशब्दो समुच्चये ॥

॥ मूल ॥

देवबासुदेवा वासुदेवमायरो पियरो एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नामपरिवाडी तहा नेयव्वा सेवं भंते भंते! त्ति जाव विहरइ॥ पंचमसयस्स पचमो उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ५ ॥ कहणं भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पकरंति ? गोयमा ! पाणेअइवाइत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा अफा

॥ भाषा ॥

कुलकर हुया इम मरुदेवा प्रमुख चउवीस तीर्थंकरनी माता नाभि प्रमुख चउवीस पिता ब्राह्मी प्रमुख पहिली शिष्यणी । चक्कवट्टीमायरोपियरोइ त्थीरयण वलदेव वासुदेवा वासुदेवमायरोपियरो । चक्रवर्त्तनी माता सुमगला प्रमुख १२ पिता ऋषभदेव प्रमुख १२ स्त्रीरत्न चक्रवर्त्तनी १२ नानाम नव वलदेव नाम नव वासुदेव नाम वासुदेवनी माता तथा पितानां नाम । एएसिपडिसत्तू जहासमवाएनामपरिवाडी तहाणेयव्वा । एहना प्रतिशत्रू नव प्रतिवासुदेव ए सघलाई जिम समवायाग नामे चौथा अगने विषे नामनो परिपाटी कही तिम इहां पणि जाणवी । सेवभते २ त्ति जावविहरइ पचमसयस्सपचमओ ५ । ५ । तइत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु तेसर्व सत्यछे अन्यथा नही इम कही यावत् विचरे ए पांचमा शतकनो पाचमो उद्देशो अर्थ थी लिख्यो ५ ॥ ५ ॥ कहणभंतेजीवा अप्पाउयत्ताएकम्मपकरेंति । पाछिले उद्देशे जीवने कर्म वेदना कही छठे कर्मनोज वधनि बंधन कहेछे—किसे प्रकारे हे भगवन् । जीव अल्प आयुखा पणे कर्म वाधे एतले थोडो आयुखो जीवितव्य वाधे इत्यर्थ इतिप्रश्न । गो० पाणेअइवाइत्ता मु

अफासुएणाति॥ न प्रगता असवो ऽसुमन्तो यस्मा त्त दप्रासुकं सजीवमित्यर्थः ॥ अणेसणिज्जेणाति॥ एष्यत इत्येषणीय कल्प्यं तन्निषेधा दनेषणीय तेन अशनादिना प्रसिद्धेन ॥ पडिलाभेत्तत्ति ॥ प्रतिलभ्य लाभवन्त कृत्वा, अथ निगमयन्नाह ॥ एवमित्यादि॥ एव मुक्तलक्षणेन क्रियात्रयेणेति अथ मत्र भावार्थः अध्यवसायविशेषा देतत्त्रय जघन्यायु फल भवति, अथवे, हापेक्षिकी अल्पायुष्कता ग्राह्या, यत किल जिनागमाभिसस्कृतमतयो मुनय. प्रथमवयस भोगिन कञ्चन मृत दृष्ट्वा वक्तारो भवन्ति नून मनेन भवान्तरे किञ्चि दशुभ प्राणिघातादिना सेवित मकल्प्यवा, मुनिभ्यो दत्त येना

सुएणं अणेसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेण पडिलाभेत्ता एवंखलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरंति कहणं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोयमा ! नोपाणेअइवाइत्ता नोमुसवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेण असणं ४ एव खलुजीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरति । कहण भंते !

सावइत्ता । हे गौतम । प्राणी जीवने विनासोने हणीने मृषावाद झूठो बोलीने । तहारूवसमणवा माहणवाअफासुएण अणेसणिज्जेण । तथाविधस्व भाव भक्तिदान देवा योग्य पात्र इत्यर्थ तेहवा श्रमण तपस्वी प्रतें माहणि इसो वचन बोला प्रतें कहे अने पोते हणवाथी निवृत्त थयो एहवा असू नही जीव सहित सचित्त अकल्प दूषण सहित एहवा जे। असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता एवखलुजीवाअप्पाउयत्ताएकम्मपकरेंति कहणभतेजीवादी हाउयत्ताएकम्मपकरेंति । असन पान खादिम स्वादिम च्यारि आहारे करी प्रति लाभीने लाभवत करीने इम निश्चे उक्त लक्षण क्रिया तीनने करवे करी जीव अल्प आयुष कर्म बाधे अध्यवसाय विशेषथी एतीन जवन्यायु फलहुवे हवे दीर्घ आऊखाना कारण कहेछे—किम हे भगवन्! जोव दीर्घायु पणे कर्म बांधे इतिप्रश्न । गो० णोपाणेअइवाइत्ता णोमुसवइत्ता तहारूवंसमणवा माहणवा । हे गौतम । प्राणीने हणे नही मृषावाद बोले नही तथा वि धस्वभाव श्रमण तपस्वी माहण दयावत तथा ब्रह्मचर्यवत एहवा साधुप्रते । फासुएसणिज्जेणअसणपाणखाइमसाइमेणपडिलाभेत्ता । फासू निरवद्य अचि त्त तिणे करी कल्प दूषण रहित एहवा एषणीय आहार पाणी, खादिम स्वादिमे करी पडिलाभीने । एवखलुजीवादीहाउयत्ताएकम्मपकरेति कहणभ

॥ टीका ॥

यं भोग्यप्यल्पायु संवृत्तइति, अन्येत्वाहुः—यो जीवो जिनसाधुगुणपक्षपातितया तत्पूजार्थं पृथिव्याद्यारम्भेण स्वभाण्डासत्योत्कर्षणादिनाधाकर्मा दिकरणेनच प्राणातिपातादिषु वर्त्तते तस्य वधादिविरतिनिरवद्यदाननिमित्तायुष्कापेक्षये य मल्पायुष्कता समवसेया, अथ नैव निर्विशेषणत्वात् सूत्रस्या ल्पायुष्कत्वस्यच क्षुल्लकभवग्रहणरूपस्यापि प्राणातिपातादिहेतुतो युज्यमानत्वा दत कथ मभिधीयते सविशेषणप्राणातिपातादिवर्त्ती जीव

॥ मूल ॥

जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरंति ? गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता मुसवइत्ता तहारूवं समणंवा माह णवा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमन्नित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेण अप्पीइकारएणं असणं ४ पडिलाभित्ता एवंखलु जीवा जाव पकरंति । कहणं भंते ! जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरंति ? गोय

॥ भाषा ॥

तेजीवाअसुभदीहाउयत्ताएकम्मपकरेंति । इम निश्चे एतीन क्रिया करतो जीव दीर्घ आयुपणे कर्म बांधे घणो आउखो बांधे इत्यर्थ हवेदीर्घ आउखाने ज वे सूत्रेकरी शुभाशुभ पणानो कारण कहेछे—किसे प्रकारे हे भगवन् । जीव अशुभ दीर्घ आउखा पणें कर्म बांधे इतिप्रश्न । गो० पाणेअइवाइत्ता मुस वइत्ता तहारूवसमणंवा माहणंवाहीलित्तानिंदित्ता खिंसित्तागरहित्ता अवमन्नित्ता अन्नयरेणअमणुन्नेण । हे गौतम । प्राणीने हणीने तथा मृषावाद बोलीने तथाविध श्रमण माहण प्रते हीन जात्यादि कहीने मनेकरी निंदीने जन समच खिंसीने स्वसमच गरहीने अथवा निद्वूते एकवार गरहवूते वार २ अपमान ते उठवो नही एतला बानामाहे एक कोई एक तिणे करी कुत्सित अन्नादिके करी एतला माटेज । अप्पीइकारएणं असणपाणखाइम साइमपडिलाभेत्ता एवखलुजावजीवापकरेंति । अप्रीति कारके करी भक्तिवतनो अमनोज्ञ आहार पणि मनोज्ञ हीन जाणवो तेहनी फलमनोज्ञ होज हवे इणि सूत्रने विषे फासू अथवा अफासूनो विशेष नही कीधू जेमाटे हीलनादिकनो करणहार फासू एषणीय दानद्ये तो पणि दानना फल विशेष प्रति अकारण पणें करी मत्सर थकी ऊपनो हीलनादिक तिणनेज प्रधान पणे विवचा करवा थकी एहवो अन्नपाणी खादिम स्वादिम प्रति लाभीने इम निश्चे यावत् जीव अशुभ दीर्घ आउखा पणि कर्म बांधे, हवे शुभ दीर्घ आउखानो कारण कहेछे—कहणभंतेजीवासुभदीहाउयत्ताएकम्मपकरेंति ।

आपेक्षिकी चाल्पायुकतेति ? उच्यते अविशेषणत्वेपि सूत्रस्य प्राणातिपातादे र्विशेषण मवश्यवाच्यं यत इत स्तृतीयसूत्रे प्राणातिपातादितएव अशुभदी र्घायुष्कता वक्ष्यति नहि सामान्यहेतौ कार्यवैषम्य युज्यते सर्वत्रा नाश्वासप्रसङ्गात्, तथा समणोवासयस्सण भंते ! तहारूव समणंवा, २ अफासुएण २ असण ४ पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! बहुयरिया निज्जरा कज्जइ अप्पतरे से पावकम्मे कज्जइत्ति' वक्ष्यमाणवचना दवसीयते, नैवंच क्षुल्लकभवग्रहणरूपा ऽल्पायुष्कता नहि स्वपापबहुनिर्जरानिबन्धनस्या नुष्ठानस्य क्षुल्लकभवग्रहणनिमित्तता सम्भाव्यते, जिनपूजाद्यनुष्ठानस्यापि तथा प्रसङ्गात्, नन्वेवं धर्मार्थं प्राणातिपातमृषावादावप्रासुकदानञ्च कर्तव्य मापन्नमिति ? अत्रोच्यते आपद्यतां नाम भूमिकापेक्षया को दोषो यतो यतिधर्माशक्तस्य गृहस्थस्य द्रव्यस्तवद्वारेण प्राणातिपातादिक मुक्तमेव प्रवचने दानाधिकारेतु श्रूयते' द्विविधा श्रमणोपासका संविग्नभाविता लुब्धकदृष्टान्तभाविताश्च भवन्ति, यथोक्त–संविग्गपक्खियाणं लोद्धयदिट्ठतभावियाणंच। मोत्तूणखेत्तकाले भावंचकहितिसुद्धत्थ ॥१॥ तत्र लुब्धकदृष्टा

न्तभाविता आगमार्थानभिज्ञत्वा द्यथाकथञ्चिद्ददति संविग्नभाविता स्त्वागमज्ञत्वा त्साधुसंयमबाधापरिहारित्वा त्सदुपष्टम्भकत्वा च्चौचित्येन' आगमश्चैवं–संथरणमिअसुद्धं दोण्हविगिण्हतदितयाणहियं । आउरदिट्ठतेणं तचेवहियअसंथरणे ॥ १ ॥ तथा नायागयाणं कप्पणिज्जाणं अन्नपाणाईणं दव्वाणमित्यादि, अथ चेहा प्रासुकदान मल्पायुष्कताया मुख्य कारण मितरेण मितरेतु सहकारिकारणे इतिव्याख्येयं, प्राणातिपातनमृषावादनयो र्दानविशेषणत्वा, त्तथाहि–प्राणा नतिपात्या धाकर्मादिकरणतो मृषोक्त्वा यथा भो' साधो स्वार्थं मिदं सिद्धं भक्तादि कल्पनीयं वो तो ना नेषणी यमिति शङ्काकार्येति, तत प्रतिलम्भ्य तथा कर्म कुर्वन्तीति प्रक्रमइति, गम्भीरार्थं च्चेदं सूत्र मतो ऽन्यथापि यथागम भावनीयमिति, अथ दीर्घायु ष्कताकारणा न्याह ॥ कहन्नमित्यादि ॥ भवतिहि जीवदयादिमतो दीर्घमायु र्यतो ऽत्रापि तथैव भवन्ति दीर्घायुष दृष्टा वक्तारो जीवदयादिपूर्वं कृतमनेन तेनाय दीर्घायु सवृत्त, स्तथा सिद्धमेव वधादिविरते दीर्घमायु स्तस्य देवगतिहेतुत्वा दाहच–अणुव्वयमहव्वएहिय बालतवाकामनिज्जराए

य। देवाउयनिबंधइ सम्मद्दिट्ठीयजोजीवो ॥ १ ॥ देवगतौच विवक्षया दीर्घ मेवायु, दानंचा श्रित्ये हैव वक्ष्यति' समणोवासगस्सणं भंते । तहारूवं समणवा २ फासुएण २ असण ४ पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ गोयमा । एगंतसोनिज्जरा कज्जइत्ति, यच्च निर्ज्जराकारण तद्विशिष्टदीर्घायुः कारण तया न विरुद्ध महाव्रतवदिति, व्याख्यानान्तरमपि पूर्वं वदेवेति, अथा युषएव दीर्घस्य सूत्रद्वयेना शुभत्वाशुभत्वकारणा न्याह ॥ कहस्समित्यादि ॥ प्राग्व नवर श्रमणादिकहीलनादिकरणत. प्रतिलम्भे त्यक्षरघटना, तत्र हीलनं जात्याद्युद्घट्टनत कुत्सा' निंदन मनसा' खिसनं जनसमक्ष, गर्हण तत्समक्ष, अपमानन मनभ्युत्थानाद्यकरण, अन्यतरेण बहूना मेकतमेन अमनोज्ञेन स्वरूपतो ऽशोभनेन कदन्नादिना अतएवा प्रीतिकारकेण भक्ति मत स्तु अमनोज्ञमपि मनोज्ञमेव मनोज्ञफलत्वात्' इहच सूत्रे ऽज्ञानादिप्रासुकाप्रासुकत्वादिना न विशेषित हीलनादिकर्तु प्रासुकादिविशेषणस्य दानस्य फलविशेष प्रत्यकारणत्वेन मत्सरजनितहीलनादिविशेषणानामेव प्रधानतया तत्कारणत्वेन विवक्षणात्, वाचनान्तरेतु अफासुएणं अणेसणि ज्जेणाति दृश्यते, तत्रच प्रासुकदानमपि हीलनादिविशेषित मशुभदीर्घायु' कारण मप्रासुकदानन्तु विशेषत इत्युपदर्शयता अफासुएणेत्याद्युक्तमिति प्राणातिपातमृषावादनयो र्दानविशेषणपक्षव्याख्यानमपि घटतएव, अवज्ञादानेपि प्राणातिपातादे र्दृश्यमानत्वा दिति, भवतिच प्राणातिपातादे रशुभदीर्घायु स्तेषा नरकगतिहेतुत्वा द्यदाह – मिच्छद्दिट्ठिमहारं भपरिग्गहोतिव्वलोभनिस्सीलो । नरयाउयनिबंधइ पावमईरोद्दपरिणामो ॥ १ ॥ नरकगतौच विवक्षयादीर्घमेवायु, विपर्ययसूत्रं प्रागिव नवर इहापि प्रासुकाप्रासुकतया दान न विशेषितं पूर्वसूत्रविपर्ययत्वा दस्य पूर्वसूत्रस्य चा विशेषणतया प्रवृत्तत्वात्, नच प्रासुकाप्रासुकदानयो' फलम्प्रति न विशेषोस्ति पूर्वसूत्रयो स्तस्य प्रतिपादितत्वा त्तस्मा दिह प्रासुकैषणीयस्य दान

मा ! नोपाणेअइवाएत्ता नोमुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा माहणवा वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता अन्नयरेणं

किम हे भगवन् । जीव शुभ दीर्घ आउखा पणे कर्म बांधे इतिप्रश्न । गो॰ णोपाणेअइवाइत्ता णोमुसवइत्ता तहारूवसमणवा माहणवा वंदित्ता । हे गौतम । प्राणीने विना हणीने नही मृषावाद बोलीने तथारूप श्रमण माहण प्रते वादीने । जावपज्जुवासित्ता अन्नयरेणमणुन्नेणंपीइकारएण असण

॥ टीका ॥

स्य कल्प्यप्राप्ता वितरस्य चेद फल मवसेयं' वाचनान्तरेतु फासुएणा मित्यादि दृश्यतएवेति' इहच प्रथम मल्पायु सूत्र, द्वितीय तद्विपत्त' स्तृतीय मशुभदीर्घायु सूत्र, चतुर्थं तद्विपत्तइति, अनन्तर कर्मबन्धक्रियो क्ता ऽथ क्रियान्तराणा विषयनिरूपणायाह ॥ गाहावइस्सेत्यादि ॥ गृहपति

॥ मूल ॥

मणुस्सेणं पीइकारएण असणं पाणं खाइमं साइम पडिलाभित्ता एवखलु जीवा जाव पकरंति । गाहावइस्सण भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंड अवहरेज्जा तस्सण भंते! भंडं अणुगवेसमाणस्स किं आरंभिया किरिया कज्जइ परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणीया मिच्छादंसणवत्तिया ? गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ मिच्छादंसणकिरिया सिय क

॥ भाषा ॥

पाणखाइमसाइमेणपडिलाभित्ता एवखलुजावपकरेंति । यावत् सेवा करीने एतलावाना माहे एक कोई एक तिणे करीने मनोज्ञ प्रीतिकारी अशन पान खादिम स्वादिम तिणेकरो प्रतिलाभीने इहा पणि फासू अफासूनी विवत्ता नकीधी पूछिला सूत्रने विषे पणि इमज कह्यु इम निश्चे जीव शुभ दीर्घ आउखो कर्म बाधे इहा पहिलो अल्पायु सूत्र १ बीजो दीर्घायु सूत्र २ त्रीजो अशुभदीर्घायु ३ चौथो शुभदीर्घायु ४ ए च्यारि सूत्र कह्या पाछे कर्मबंध क्रिया हवे क्रियातरनो विषय निरूपणनें काजे कहैछे—गाहावइस्सणभंतेभंडविक्किणमाणस्स केइभंडअवहरेज्जा । गृहस्थने हे भगवन्! किरियाणा वेचता थकाने कोईएक भाड प्रते चोरे । तस्सणभंतेभंडअणुगवेसमाणस्स किंआरभियाकिरियाकज्जइ । तेहने हे भगवन्! किरियाणा प्रते गवेषणा करतांने जीवनाने स्यू आरभ की क्रिया करे १ अथवा । परिग्गहियाकिरियाकज्जइ मायावत्तिया अप्पच्चक्खाणा मिच्छादसणवत्तिया । परिग्रह की क्रिया करे २ मायाप्रत्ययिकी क्रिया करे ३ अप्रत्याख्यान की क्रिया करे ४ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया करे ५ इतिप्रश्न । गो० आरभियाकिरियाकज्जइ परिग्गह माया अप्पच्चक्खाणकिरियाकज्जइ । हे गौतम। आरभकी क्रिया करे १ परिग्रह की क्रिया करे २ मायाप्रत्ययिकी क्रिया करे ३ अप्रत्याख्यानकी क्रिया करे ४ ए च्यारि क्रियातो करे । मिच्छादसणकिरियासियकज्जइ सियनोकज्जइ अहसेभंडेअभिसमण्णागएभवइ । मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रि

॥ टीका ॥

गृही ॥ मिच्छादसणाकिरियासियकज्जइइत्यादि ॥ मिथ्यादर्शनप्रत्यया क्रिया स्या त्कदाचित् क्रियते भवति स्या न्नो क्रियते कदाचि न्न भवति, यदा मिथ्यादृष्टि र्गृहपति स्तदा सौ भवति' यदातु सम्यग्दृष्टि स्तदा न भवतीत्यर्थ', अथ क्रियास्वेव विशेष माह ॥ अहेत्यादि ॥ अथेति पक्षान्त रद्योतनार्थ ॥ सेभंडेत्ति ॥ तद्भाण्ड ॥ अभिसमन्नागएत्ति ॥ गवेषयता लब्ध भवति ॥ तओत्ति ॥ समन्वागमनात् ॥ सेत्ति ॥ तस्य गृहपते पश्चा त्समन्वागमानन्तरमेव ॥ सव्वाओत्ति॥ यास्ता सम्भवोस्ति ता आरम्भिक्यादिक्रिया ॥ पयणुईभवतित्ति ॥ प्रतनुकीभवन्ति ह्रस्वीभवन्ति, अपहृतभाण्ड गवेषणकालेहि महत्य स्ता आसन् प्रयत्नविशेषपरत्वात्' गृहपते स्तल्लाभकालेतु यत्नविशेषोपरतत्वा ता ह्रस्वीभवन्तीति॥ कइएभंडसाइज्जेज्जत्ति॥ क्रयिको ग्राहको भाण्ड स्वादयेत् सत्यङ्कारदानत' स्वीकुर्यात् ॥ अणुवणीएसियत्ति ॥ क्रयिकाया समर्प्पित स्यात् ॥ कइयस्सणताओसव्वाओपयणुईभ

॥ मूल ॥

वइ सिय नोकज्जइ अह सेभंडे अभिसमन्नागए भवइ तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति । गाहावइ स्सणं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा भंडेय से अणुवणीएसिया । गाहावइस्सणं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादसणकिरिया कज्जइ कइयस्सवा ताओ भंडाओ किं

॥ भाषा ॥

या कदाचित् करे कदाचित् नकरे जो गृहपति मिथ्यादृष्टी हुवे तोकरे सम्यग्दृष्टी हुवे तोनकरे, हवे क्रियाने विषे विशेष कहेछे—हवे जो तेभाड किरियाणू गवेषणा करता लाधां हुवेतो । तओसेपच्छासव्वाओताओपयणुईभवति । तिवारे लाधा पछो सेत्ति ते गृहस्थने पछो सर्व आरभ को आदिदेई जेह क्रियानो सभव्छे तेसवं पातलो हुवे नान्ही हुवे जनाटे गवेषणा काले घणो उद्यम करतोहतो क्रियाणा लाधा पूठें उद्यम थोडा तेमाटे । गाहावइस्सणभनेभडविक्किणमाणस्स कइएभडेसाइज्जेज्जा भडेयसेअणुवणीएसिया । गाथापतिने हे भगवन् । किरियाणा वेचता थकाने क्रयिक किरियाणा ग्राहक भाड प्रते सचकार अगोकार करे तेभाड किरियाणो जेणे सचकारो तेहने आप्यो नथो । गाहावइस्सणभनेताओभडाओकि आरभियाकिरियाकज्जइ जावमिच्छादसणकिरियाकज्जइ । तिवारे गाथापतिने हे भगवन् । तेभाड थको किरियाणा थको स्यू आरभको क्रिया हुवे अथवा परिग्रहको म।

॥ टीका ॥

वतिष्ठि ॥ अप्राप्तभाण्डत्वेन तद्गतक्रियाणा मल्पत्वादिति गृहपतेस्तु महत्यो भांडस्य तदीयत्वात् ॥ १ ॥ क्रयिकस्य भाण्डे समर्प्पिते महत्य स्ता' गृहपतेस्तु प्रतनुका' ॥ २ ॥ इद भाण्डस्या नुपनीतोपनीतभेदा त्सूत्रद्वय मुक्त मेव धनस्यापि वाच्य, तत्र प्रथम मेव–गाहावइस्सण भंते । भंड

॥ मूल ॥

आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ? गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अप्पच्चक्खाणकिरिया कज्जइ मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ सिय नोकज्जइ कइयस्सण ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति । गाहावइस्सण भंते ! भंड विक्किणमाणस्स जाव भंडे से उवणीए सिया कइयस्सणं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ गाहावइस्सवा ताओ भंडाओ किं आरं

॥ भाषा ॥

यप्रत्ययिको अप्रत्याख्यानको यावत् मिथ्यादर्शनप्रत्ययिको क्रिया करे । कइयस्सवाताओभंडाओ किंआरंभियाकिरियाकज्जइ । किरियाणो सचकारो तेहनें ते किरियाणा थकी स्यूं आरंभको क्रिया करे । जावमिच्छादंसणकिरियाकज्जइ गो० गाहावइस्स ताओभंडाओ । यावत् मिथ्यादर्शन प्रत्ययि को क्रिया करे हे गौतम ! गाथापति नें ते किरियाणां थकी । आरंभियाकिरियाकज्जइ जावअपच्चक्खाणी मिच्छादंसणवत्तियासियकज्जइ सियनोकज्जइ । आरंभ को क्रिया करे यावत् गर्द्दे परिग्रहको क्रिया करे माया प्रत्ययिको क्रिया करे अप्रत्याख्यानको क्रिया करे मिथ्या दर्शन प्रत्ययिको क्रिया मिथ्याद्रष्टी हुवैतो करे सम्यग् द्रष्टी हुवैतो नकरे । कइयस्सणताओसव्वाओपयणुईभवति गाहावइस्सणभंतेभंडविक्किणमाणस्स । संचकारना देणहारनें अजेस तिथे किरियाणो लीधो नथी तेमाटे सगलीही तेहनें अल्प हुवे अनें गृहपतिनें तेमोटो हुवे ते किरियाणो अजेस तेहनो छे तेमाटे गाथापतिनें हे भगवन् ! किरियाणो वेचतानें । जावभंडेसेउवणीएसिया कइयस्सणभंतेताओभंडाओ किंआरंभियाकिरियाकज्जइ । यावत् ते किरियाणो जेणे सचकारो तेहनें आप्यो हुवेतोते क्रयिक किरियाणानां ग्राहकनें हे भगवन् । ते किरियाणा थकी स्यूं आरंभ को क्रिया करे इत्यादि पाचेई कहवो। गाहावइस्सवाताओभंडाओकिंआरंभियाकिरियाकज्जइ । तथा गाथापतिनें ते किरियाणा थकी स्यूं आरंभ की क्रिया करे यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्ययि

॥ टीका ॥

साइज्जेज्जाधणेयसेअणुवणीएसिया ? कइयस्सणं भंते । ताउ धणाउ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ४ गाहावइस्सयता
विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जाधणेयसेअणुवणीएसिया ? कइयस्सण भंते । ताउ धणाउ हेट्ठिल्लाउ चत्तारि किरियाउ कज्जति मिच्छादसणकिरिया भयणा
उ धणाउ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ५ ? गोयमा । कइयस्स ताउ धणाउ हेट्ठिल्लाउ चत्तारि किरियाउ कज्जति मिच्छादसणकिरिया भयणा
ए गाहावइस्सण ताउ सव्वाउ पयणुईभवति, धने अनुपनीते क्रयिकस्य महत्य स्ता भवति धनस्य तदीयत्वात्, गृहपतेस्तु ता स्तनुका धनस्य
तदानी मतदीयत्वात्, एव द्वितीयसूत्रसमानमिद तृतीय, अतएवाह ॥ एयपिजहाभंडेउवणीएतहानेयव्वंति ॥ द्वितीयसूत्रसमतयेत्यर्थ, चतुर्थ
त्वेव मध्येय–गाहावइस्सण भंते विक्किणमाणस्स कइए भंडे साइज्जेज्जा धणेयसे उवणीएसिया गाहावइस्सण भंते । ताउ धणाउ किं आरंभिया
किरिया कज्जइ कइयस्स वा, ताउ धणाउ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ५ ? गोयमा । गाहावइस्स ताउ धणाउ आरंभिया किरिया ४ मिच्छा
दसणवत्तिया किरिया सिय कज्जइ सिय नो कज्जइ ॥ कइयस्सण ताउ सव्वाउ पयणुईभवति, धन उपनीते धनप्रत्ययत्वा त्तासा गृहपते र्महत्य,
क्रयिकस्यतु प्रतनुका धनस्य तदानी मतदीयत्वा, देवच प्रथमसूत्रसममिद चतुर्थ मित्येत दनुसारेणाच सूत्रपुस्तकान्तरा ण्यनुगन्तव्यानि, क्रिया

॥ मूल ॥

किरियाउ कज्जंति मिच्छादंसणकिरि
भिया किरिया ? गोयमा ! कइयस्स ताउ भंडाउ हेट्ठिल्लाउ चत्तारिकिरियाउ कज्जंति मिच्छादंसणकिरि
याभयणाए गाहावइस्सणं ताउ सव्वाउ पयणुईभवंति। गाहावइस्सणं भंते ! भंडं जाव धणेय से अणुवणीए
सिया एयंपि जहा भंडे उवणीए तहा णेयव्वं चउत्थो आलावगो धणेयसे उवणीए सिया जहा पढमो आ

॥ भाषा ॥

ग्राहकने ते किरियाणा थकी किरियाणा थी
की क्रियाकरे इति प्रश्न । गो० कइयस्सताओभंडाओहेट्ठिल्लाओचत्तारिकिरियाओकज्जंति । हे गौतम । ग्राहकने ते किरियाणा थकी किरियाणा थी
धामाटे पहिलो आरंभ की आदि देई च्यारि क्रिया मोटी लागे । मिच्छादसणकिरियाए भयणाए गाहावइस्सणताओसव्वाओपयणुईभवति । मिथ्या
त्वी हुवेतो लागे सम्यग् दृष्टी हुवेतो नलागे तेमाटे भजना कही गाथा पतिने ते सगलोइ क्रिया पातली हुवे किरियाणा दीधा माटे । गाहावइस्स
भंतेभंडेजावधणेयसेअणुवणीसिया एयंपिजहाभंडेउवणीएतहाणेतव्वचउत्थोआलावगो धणेयसेउवणीएसिया जहापढमोआलावगोभंडेयसेअणुवणीएसिया

धिकारा दिदमाह ॥ अगणीत्यादि ॥ अहुणोज्जलिएत्ति ॥ अधुनोज्ज्वलित सद्य: प्रदीप्त ॥ महाकम्मतराएत्ति ॥ विध्यायमानानलापेक्षया अतिशयेन महान्ति कर्माणि ज्ञानावरणादीनि बन्धमाश्रित्य यस्य सो महाकर्मतर, एव मन्यान्यपि, नवरं क्रिया दाहरूपा आश्रवो नवकर्मोपादानहेतु,

लावगो चंडेयसे अणुवणीए सिया तहा नेयव्वो, पढम चउत्थाणं एक्को गमो, बितियतइयाण एक्को। अग णिकाएणं भंते ! अहुणोज्जलिए समाणे महाकम्मतराएचेव महाकिरियतराएचेव महस्सवतराएचेव महावे

तहा नेयव्वो पढमचउत्थाणएक्कोगमो । गाथापतिने हे भगवन् । भंड इत्यादि यावत् बीजा पानाताना पाठ पूछना बीजा सरीखो जाणवो धनदोषी न यो तेतलामाटे कृषिकने केठिनो च्यारि क्रिया लागे मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी क्रिया किवारे नलागे पने गाथापतिने ते धननो क्रिया पातली लागे धन अपनीबा माटे एनीजो सूत्र बीजा सरीखो कह्यो जिम बीजे सूत्रे भंडे उवणीए एसूत्रने विषे कृषिकने पान क्रिया लागेगाथापतिने पातली हुवे तिम ए बीजा सूत्रने विषे कहवी तथा चोथा आलावो गाथापतिने बीजा थका ए बीजा पानाताना पाठ पूछिना पहिला सरीखो कहवो, तिम पहिले आला वे भंडे अणुवणीएसिया एआलावाने विषे गाहावइस्सणताओ आरंभिया किरिया कज्जइ मिच्छादंसण वत्तिया किरिया सिय कज्जइ सिय नोकज्जइ कइयस्सणताओ सव्वाओ पयणुई भवति इम पाठछे तिम एपाठ चोथे पानावे कह्यो जेमाटे धन गाथापति पासेछे पननो विषे मोटी क्रिया पने कृ षिकने वनदोषा माटे तेहने पातली लागे इम पाठने अनुसारे पहिला आलावाना पने चोथा आलावानो एक सरीखो पाठ जाणवो । बितियतइया णएक्कोगमो अगणिकाएणभंतेअहुणोज्जा लिएसमाणे महाकम्मतराएचेव । तथा बीजा पने त्रीजा आलावानो एक सरीखो पाठ जाणवा क्रिया अधिकार योज कहेछे—अग्निकाय हे भगवन् । तत्कालनो दीप्यो थको विध्यायमान अग्निनो अपेक्षायें अतिशये करी घणा मोटा ज्ञानावरणीयादि कर्म बंध ना श्रयोने जेहने ते महा कर्मतरकहीये । महाकिरियतराएचेव । महस्सवतराएचेव महावेदणतराएचेवभवइ । मोटी क्रियादाहरूप जेहने लागे निश्चे मोटा आश्रवते नवाकर्म उपार्जवानो कारण मोटी वेदना पीडा उपार्जे तेकर्मेनव्य परस्पर शरीर गात्रजन्य हुवे । अणुसमयं २ वोच्छि

॥ टीका ॥

वेदना पीडा भाविनी तत्कर्मजन्या परस्परशरीरसम्बधजन्यावा ; ॥ वोक्कसिज्जमाणेत्ति ॥ व्यपकृष्यमाणो उपकर्षं गच्छन् ॥ अप्पकम्मतराएत्ति ॥ अंगा राद्यवस्था माश्रित्या ल्पशब्द स्तोकार्थ , क्षारावस्थाया त्वभावार्थ ' क्रियाधिकारा देवेदमाह ॥ पुरिसेणमित्यादि ॥ परामुसइत्ति ॥ परामृशति गृह्णाति ॥ आययकणाययति ॥ आयत' क्षेपाय प्रसारित कर्णायत' कर्ण यावदाकृष्ट स्तत कर्मधारयात् आयतकर्णायतो ऽत स्त इषु बाण ॥ उव्वेहासति ॥ ऊर्द्धमिति वृक्षशिखराद्यपेक्षयापि स्या दतआह विहायसी त्याकाशे ॥ उव्विहइत्ति ॥ ऊर्द्ध विजहाति ऊर्द्ध क्षिपतीत्यर्थ ॥ अजिह

॥ मूल ॥

यणतराएचेव भवइ अहेणं समए २ वोक्कसिज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चरिमकालसमयंसि इंगालभूए मुम्मुर भूए छारियभूए तओ पच्छा अप्पकम्मतराएचेव किरिया आसव अप्पवेयणतराएचेव भवइ ? हंता गोय मा ! अगणिकाएणं अज्जणोज्जालिए समाणे तंचेव । पुरिसेणं भंते ! धणुं परामुसइ २ उसुंपरामुसइ २ ठाण ठाइ २ आययकणायय उसुकरेइ २ उड्ढं वेहासं उसुंउव्विहइ तएणं से उसूउड्ढं वेहास उव्विहिए समाणे जाइं

॥ भाषा ॥

ज्जमाणे वोच्छिज्जमाणे चरिमकालसमयंसि । हवे ते अग्नि समये २ वोखेरी तेथकी उलहा तेथकी छेहला कालना समयने विषे । इंगालभूए मुम्मुरभूए छा रियभूए तओपच्छाअप्पकम्मतराएचेव । अंगारथया थका भासडि भूतथया थका भस्मथया थका तिवार पछी अल्प कर्मतर हुवे निश्चे । किरिया आ सव अप्पवेयणतराएचेवभवइ । अल्प क्रियावंत अल्प आश्रववत अल्प वेदनावत हुवे निश्चे इतिप्रश्न । हंता गो० अगणिकाएणंअज्जणोज्जालिए समाणेतंचेव पुरिसेणंभतेधणुंपरामुसइ २ त्ता । हा गौतम । अग्निकाय तत्कालनो बाल्यो दीप्यो थको तिमज पूर्वोक्त प्रकारे कहवो क्रियाधिकार थोज ए कहेछे—पु रुष ॥ वाक्यालंकारे हे भगवन् । धनुषप्रते हाथेग्रहे ग्रहीने । उसुपरामुसइ २ त्ता ठाणठाइ ठाणठिच्चा आयतकणाययउसुकरेइ २ त्ता । बाणप्रते ग्रहे ग्रहीने धनुषने बाण जोडे गोडा नमाय बेठा बाणनाक्षेपने अर्थे प्रसारीने कानलगे आणोखाची धनुष कानताइं तीरप्रते करे करीने। उढ्ढवेहासउसुउ व्विहइ तओणसेउसुउढ्ढवेहासउव्विहिएसमाणे जाइतत्थपाणाइं भूयाइंजीवाइंसत्ताइंअभिहणइ । ऊंचो आकाशने विषे तीरप्रते खेपे तिवारे ए वाक्या

याइत्ति ॥ अभिमुख मागच्छतो हन्ति ॥ वत्तेइत्ति ॥ वर्तुलीकरोति शरीरसङ्कोचापादनात् ॥ लेसेइत्ति ॥ श्लेषय त्यात्मनि श्लिष्टान् करोति ॥ संघाएत्ति ॥ अन्योन्य गात्रै सङ्हतान् करोति ॥ सघट्टेइत्ति ॥ मनाक् स्पृशति ॥ परितावेइत्ति ॥ समतत' पीडयति ॥ किलामेइत्ति ॥ मारणान्तिकादिसमुद्घात नयति ॥ ठाणाउठाणसकामेइत्ति ॥ स्वस्थानात् स्थानान्तर नयति ॥ जीवियाउववरोवेइत्ति ॥ च्युतजीवितान् करोतीति ॥ किरियाहिंपुट्ठेत्ति ॥ क्रियाभि स्पृष्ट क्रियाजन्येन कर्म्मणा बद्धइत्यर्थ' ॥ धणुत्ति ॥ धनु र्दण्डगुणादिसमुदाय , ननु पुरुषस्य पञ्चक्रिया भवन्तु कायादिव्यापाराणा त स्य दृश्यमानत्वात्, धनुरादिनिर्वर्त्तकशरीराणान्तु जीवाना कथ पञ्चक्रिया ? कायामात्रस्यापि तदीयस्य तदानी मचेतनत्वा, दचेतनकायमात्रा

तत्थपाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेइलेस्सेइ संघाएइ सघट्टेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाउ ठाणसकामेइ जीवियाउववरोवेइ तएण भंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से पुरिसे धणुं परामुसइ २ जाव उव्विहइ तावंचणं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पंचहिं किरियाहिं

लकारे तेतीर ऊचो आकाशने विषे नाख्यो थको ते जातीयको जिके तिहा प्राणी प्रते भूतप्रते जीवप्रते सत्वप्रते साहमा आवता हणे । वत्तेइ लेस्सेइ सघाएइ सघट्टेइ परितावेइ किलामेइ ठाणाओठाणसकामेइ । वाटुलाकारे शरीरने संकोच उपाववाथी आत्माने विषे श्लिष्टकरे अन्योन्य गात्रे करी पीडकरे थोडोसोस्पर्शे समीपथी पीडे मारणात समुद्घाते पहुचाडे एक स्थानकथी बीजे स्थानके पहुचावे। जीवियाओववरोवेइ तएणभंतेसेपुरिसेकइ किरिए । प्राण छोडावे सर्वथा मारे तिवारे हे भगवन् । ते पुरुषने केतलो क्रियालागे इति प्रश्न । गो० जावचणसेपुरिसेधणुपरामुसइ २ त्ता जावचउ व्विहइ । हे गौतम । जेतले काले तेपुरुष धनुषप्रते ग्रहे ग्रहीने यावत् बाण ऊचो नाखे। तावचणसेपुरिसेकाइयाए जावपाणाइवायकिरियाएहिंपुट्ठे जेमि पियणजीवाय । तेतले काले तेपुरुष कायिको आदिदेई यावत् प्राणातिपातिकी क्रिया तांई फरसे जेह पिण जीवना । शरीरेहिंधणूणिव्वत्तिए तेवि यणजीवा। शरीर सघाते धनुष नीपजाव्यो ते पणि जीव । काइयाएजावपचहिंकिरियाहिंपुट्ठे एवंधणूपिट्ठेपचहिंकिरियाहिं । कायिको क्रिया आदिदेई

॥ टीका ॥

दपि यत्याभ्युपगमे सिद्धानामपि तत्प्रसङ्ग स्तदीयशरीराणामपि प्राणातिपातहेतुत्वेन लोके विपरिवर्त्तमानत्वात्, किञ्च यथा धनुरादीनि का यिक्यादिक्रियाहेतुत्वेन पापकर्म्मबन्धकारणानि भवन्ति तज्जीवाना मेवं पात्रदण्डकादीनि जीवरक्षाहेतुत्वेन पुण्यकर्म्मनिबन्धनानि स्यु न्यायस्य स मानत्वादिति ? अत्रोच्यते अविरतिपरिणामा द्बन्ध.' अविरतिपरिणामश्च यथा पुरुषस्या स्ति एवं धनुरादिनिर्वर्त्तकशरीरजीवानामपीति' सिद्धा नान्तु नास्त्यसा विति नबन्ध' पात्रादिजीवानान्तु न पुण्यबन्धहेतुत्व तद्धेतो र्विवेकादे स्तेषमभावादिति, किञ्च सर्वज्ञवचनप्रामाण्या च्च यथोक्तं त त्तया श्रद्धेयमेवेति, इषुरिति शरपत्रफलादिसमुदाय ॥ अहेणसेउसूइत्यादि ॥ इह धनुष्पदादीना यद्यपि सर्वक्रियासु कथञ्चि न्निमित्तभावो स्ति तयापि विवक्षितवध स्यत्यमुख्यप्रवृत्तिकतया विवक्षितवधक्रियाया स्तै कृतत्वेना विवक्षणा च्छेपक्रियाणाञ्च निमित्तभावमात्रेणापि तत्कृतत्वेन

॥ मूल ॥

पुठे जेसिपियण जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेवियणं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिंपुठे एवं धणू पिठे पंचहि किरियाहि जीवा पचहि रहारु पंचहि उसू पंचहि सरे पत्ताणे फले रहारु पंचहिं अहेणं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयसंभारियत्ताए अहेवीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थपाणाइं जाव जीवियाउ ववरोवेइ तावंचणं सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! जावंचणं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए

॥ भाषा ॥

यावत् पचक्रिया संघाते फरस्या इम धनुषनो पठो जेह जीवनां शरीरथी नीपनो तेपिण जीव पचक्रिया संघाते फरस्या। जीवापचहि पहारू पचहि उ सू पचहि सरे पत्ताणे फले गहारू पचहि अहेणसेउसू। पुणचसवधी जीव पणि पचक्रिया संघाते फरसे पयसवधी जीवने पचक्रिया फरसे तीरपणि पचक्रि या संघाते फरसे साठी पाखारा भालोडी पय ते पणि पचक्रिया संघाते फरसे हवे ण वाक्यालकारे तेबाण। अप्पणोगुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयसभारि यत्ताए अहेवीससाए। आपणने भारी पणे गुरुतापणे भारी पणे गुरुक सभारपणे नीचो स्वभावे करी। पचोवयमाणे जाइ तत्थपाणाइ जावजीवियाओ ववरोवेइ तावचणसेपुरिसेकइकिरिए। पाछो आतोथको जीतोथको जिके तिहा प्राणी प्रते यावत् प्राणरहित करे मारे तेतले काले तेपुरुष केतली क्रि

॥ टीका ॥

विधनगा चतस्त्र स्ता उक्ताः, वाणादिजीवशरीराणान्तु साक्षा द्वधक्रियाया अप्रवृत्तत्वा तयोति, अथ सम्यक् प्ररूपणाधिकारा न्मिथ्याप्ररूपणानि रासपूर्वक सम्यक् प्ररूपणामेव दर्शयन्नाह ॥ अणउत्थियत्यादि ॥ अरुसमाइन्नेति ॥ अत्यन्त माकीर्ण मिथ्यात्वेन तद्वचनस्य विसद्दृशानपूर्वकत्वा

॥ मूल ॥

जाव ववरोवेइ तावचणं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुठे जेसिपिण जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए तेजीवा चउहिं किरियाहिं धणूपुठे चउहिं जीवा चउहिं एहारू चउहिं उसू पंचहिंसरे पत्तणे फले एहारू पचहिं जेवियसे जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे चिठति तेवियण जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुठा । अणउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति सेजहानामए जुवइंजुवाणे

॥ भाषा ॥

यावत कहाये इति प्रश्न । गो० जावचणसेउसूअप्पणोगुरुयत्ताएजावववरोवेइ । हे गोतम ! जेतले काले तेइषु बाण आपणे गुरुत्वपणे यावत् नीचो आव तोथको । तावचणसेपुरिसेकाइयाए जावचउहिंकिरियाहिंपुठे । तेतले काले तेपुरुष काायिकी आदिदेइ यावत् च्यारिक्रिया अप्रत्याख्यान की ताइं फर स्यो । जेसिपियण जीवाणसरीरेहिंधणूनिव्वत्तिए तेविजीवाचउहिंकिरियाहिंपुठे । जेहना पणि जीवना शरीर संघाते धनुष नीपजाव्यो तेपणि जीव च्यारि क्रिया संघाते फरस्या । धणुपुठे चउहिं जीवाचउहिं एहारू चउहिं उसू पचहिं सरेपत्तणे । धनुपृष्ट पणि च्यारि संघाते पुणच च्यारि संघाते पच च्या रि क्रिया संघाते धनुपनो बाण पचक्रिया संघाते फरस्या साठी पगारा । फलेण्हारूपचहिं जेवियसेजीवा अहेपच्चोवयमाणस्सउवग्गहेवट्टति । भालोडी पच ए बाणनी तेहने पचक्रिया फरसे जेपणि तेजीव नीचा पडता थकाने उपग्रहने विषे वर्त्ते एतले पडता थकेरा जीवाने मारें । तेवियणंजीवा काइया एजावपचहिंकिरियाहिंपुठे । तेपणि जीव कायिकी आदि देइ यावत् पचक्रिया संघाते फरसे । अणउत्थियाणंभंतेएवमाइक्खंति जावपरूवेंति । अथ सम्यक् प्ररूपणाधिकार थको मिथ्या प्ररूपणानिरास पूर्वक सम्यक् प्ररूपणाप्रते देखाडतो कहेछे—अन्यतीर्थी हे भगवन् । इम कहे यावत् इम प्ररूपे । सेजहानामएजुवइं जुवाणेहत्थेणंहत्थेगेण्हेज्जा । ते यथा दृष्टांते युवती स्त्री प्रते युवान पुरुष कामना वशथको हाथे करी हाथ गृहे अथवा । चक्रस्यना

॥ टीका ॥ दवसेयमिति, नेरइएहि इत्युक्त मतो नारकवक्तव्यतासूत्र ॥ एगत्तति ॥ एकत्व प्रहरणानां ॥ पुहत्तति ॥ पृथक्त्व स्वहुत्वं प्रहरणानामेव ॥ जहा जीवाभिगमेइत्यादि ॥ आलापक श्चैव–गोयमा एगत्तपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तपि पभू विउव्वित्तए एगत्तविउव्वमाणे एग महं मोग्गररूव वा, मु

॥ मूल ॥ हत्थेण हत्थं गेण्हेज्जा चक्कस्सवा नाभी अरगाउत्तासिया एवामेव चत्तारि पंचजोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं सेकह मेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं तेअन्नउत्थिया जाव मणुस्सेहिं जेते एव माहंसुमिच्छा अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि जाव एवामेव चत्तारिपंचजोयणसयाइ बहुसमाइण्णे नेरय लोए नेरइएहिं । नेरइयाण भंते ! कि एगत्त पभू विउव्वित्तए पुहत्तं पभू विउव्वित्तए जहा जीवाभिगमे आ

॥ भाषा ॥ नाभीअरगाउत्तासिया एवामेवजावचत्तारिपंचजोअणसयाइ । चक्रनी नाभि ते आरायेंकरी भीडाय एवें दृष्टांते यावत् च्यारिसे अथवा पाचसे योजन । बहुसमाइण्णेमणुयलोएमणुस्सेहि सेकहमेयभंतेएव । कोई एक स्थानके मनुष्यलोकमाहि घणू समाकीर्ण मनुष्ये करी भर्योछे ते किमछे एह हे भगवन् ! इम इतिप्रश्न । गो० जणंतेअन्नउत्थिया जावमणुस्सेहि जेतेएवमाहंसुमिच्छा । हे गौतम । जेह भणी ते अन्यतीर्थी यावत् मनुष्य सघाते करी भर्योछे जिणे इम कह्यु तिणे मिथ्या कह्यु तेहनां वचनने विभंगज्ञान पूर्वक पणाथी जाणवु । अहंपुणगोयमाएवमाइक्खामि जावएवामेवचत्तारिपंचजोअणसयाइं बहुसमाइण्णेनिरयलोएनेरइएहि । हूं वली हे गौतम । इम कहूं जिम पूर्वे, सेजहानामएजुवइ जुवाणे इत्यादि दृष्टांतनी परे यावत् इमहीज च्यारसे अथवा पाचसें योजन घणू समाकीर्ण सकडे भर्योछे—नरकलोक नारकीए करीने नारकीइ करी इसो कह्यु एतला माटे नारक सूत्र कहेछे—णेरइया णभंतेकिंएगपभूविउव्वित्तएपुहुत्त पभूविकुव्वित्तए जहाजीवाभिगमेआलावगो णेतव्वो जावदुरहियासे आहाकम्मअणवज्जेत्तिमणपहारेत्ताभवति सेण तस्स । नारकी हे भगवन् ! स्यु एक पणे प्रहरणने विकुर्वे पृथक्तपणे प्रहरणने विकुर्वे जिम जीवाभिगमने विषे आलावोछे तिम कहवो तेइम गो एगत्तच पहू विउव्वित्तए पुहत्तपिपहू विउव्वित्तए एगत्तं विउव्वमाणे एग मह मोग्गररूवंवा मुसदिरववा इत्यादि पुहत्त विउव्वमाणे मोग्गररूवा णिवा इत्या

॥ टीका ॥

सुढिरूववा; इत्यादि, पुन्नत्तं विउव्वमाणा मोग्गररूवाणिवेत्यादि, ताइं सखेज्जाइं नो असखेज्जाइं एव सबद्धाइ २ सरीराइ विउव्वंति विउव्वित्ता अणमणस्स काय अभिहणमाणा २ वेयण उदीरेंति उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडुय फरुस निठुर चड तिव्व दुक्खं दुग्ग दुरहियासति, तत्रो ज्वला विपक्षलेशेना प्यकलङ्किता, विपुला शरीरव्यापिका, प्रगाढा प्रकर्षवती, कर्कशा कर्कशद्रव्योपमा मनिष्टामित्यर्थ, एव कटुका' परुषा निष्ठुराञ्चेति, चण्डा रौद्री, तीव्रा, झगिति शरीरव्यापिका, दु खा मसुखरूपा, दुर्गा दु खाश्रयणीया, अतएव पुरधिसह्यामिति' इयंच वेदना ज्ञानाद्याराधनाविरहेण भवतीति आराधनाऽजाव दर्शयितुमाह ॥ आहाकम्मेत्यादि ॥ अणवज्जेत्ति ॥ अनवद्यमिति निर्दोषमिति ॥ मणपहारेत्त त्ति ॥ मानस मधारयिता स्थापयिता जवति ॥ रइयगति ॥ मोदकचूर्णादि पुन र्मोदकादितया रचित मौद्देशिकजेदरूप ॥ कतारजत्तति ॥ कान्तार

॥ मूल ॥

लावणो तहा नेयव्वो जाव दुरहियासे आहाकम्मं अणवज्जेत्ति मणपहारेत्ता जवइ सेण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा सेण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा एएणं गमेणं नेयव्वं कीयकड ठवियं रइयं कतारजत्त दुब्भिक्खजत्तं वद्दलियाजत्तं गिलाण

॥ भाषा ॥

दि ताइ सखेज्जाइ नोअसखेज्जाइ एव बद्धइं सरीराइ विउव्वति विउव्वित्ता अणमणस्सकाय १ अभिहडमाणे अभिहडमाणे वेयण उदीरेंति उज्जल विउल इत्यादि सहता दोहली एहवी वेदना एवेदना ज्ञानादिक आराधना विना हुइ तेमाटे आराधना अभाव देखाडतो कहेछे—आधाकर्म तेह प्रते निर्दोष एहवो मनमाहि स्थापणहार हुइ तेह । ठाणस्सअणालोइयपडिक्कतेकालकरेइ नत्थितस्सआराहणा । तेह स्थानकने आलोया विना प्रतिक्रम्या विना कालमरण करे, नही तेहने जिन वचनने विषे आराधना । सेणतस्सठाणस्सआलोइयपडिक्कतेकालंकरेइ अत्थितस्सआराहणा । तेह ण वाक्यालकारे तेहवा स्थानकने आलोई प्रायश्चित्त पडिक्कमी कालमरण प्रते करतो छे तेहने श्री जिनवचनने विषे आराधकपणो । एएणंगमेणंनेयव्वं कीयकड ठवियकड । ए आलावानोपरे सगलो जाणवो वेचातू आण्यू साधुनेअर्थे स्थाप्यूं । रइयकड कतारभत्त दुभिक्खभत्त वद्दलियाभत्त । मोदकचूर्ण वली साधुने देवाभणी मो

॥ टीका ॥

मरण्य तत्र भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं य द्विहितं भक्त त त्कान्तारभक्तं एव मन्यान्यपि नवरं, वार्दलिका मेघदुर्दिनं ॥ गिलाणभत्तति ॥ ग्लानस्य नीरोगतार्थं भिक्षुकदानाय यत्कृत भक्त तत् ग्लानभक्त आधाकर्मादीना सदोषत्वेना गमे भिहिताना निर्दोषताकल्पन ततएव स्वय भोजन मन्य साधुभ्यो नुप्रदापनं सभाया निर्दोषताभणनञ्च विपरीतश्रद्धानादिरूपत्वा न्मिथ्यात्वादि, ततश्च ज्ञानादीना विराधना स्फुटैवेति, आधाकर्मादींश्च

॥ मूल ॥

भत्तं सेज्जायरपिंड रायपिंड आहाकम्मं अणवज्जेत्ति बहुजणमज्झे भासित्ता सयमेव परिभुंजित्ता भवइ सेणं तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा एयंपि तहचेव जाव रायपिंड आहाकम्मं अणवज्जेत्ति अस्स तस्स ठाणस्स जाव अत्थि तस्स आराहणा एयंपि तहचेव जाव रायपिंड आहाकम्मं णं अणवज्जेत्ति बहुजणम मस्सस्स अणुपदावेइत्ताभवइ सेणंतस्स एय तहचेव जाव रायपिंड

॥ भाषा ॥

दकपणें कीधू ० पणि उद्देश भेदरूप अटवी तिहा भिक्षुकने निर्वाहने अर्थे जे कीधू भक्त ते कान्तारभक्त कहीये दुर्भिक्षनेविषे भिक्षुकने निर्वाहने अर्थे जे कीधू भात झडयया भिक्षुक निर्वाहने अर्थे जे कीधूं भक्त। गिलाणभत्त सेज्जायरपिड रायपिड आहाकम्म अणवज्जेत्ति बहुजणमज्झेभासित्ता सयमेवप रिभुंजित्ताभवइ। ग्लानने नीरोगपणाने अर्थे भिक्षुक दाननेअर्थे जेकीधू भात शय्यातर वसती तेहना घरनो पिण्ड राजाना घरनो पिण्ड आधाक र्मादिक सदोषपणें करी आगमने विषे कह्याने निर्दोषपणें कल्पनाकरी घणा मनुष्यमाहे निर्दोषपणें कहीने पोतेहीज भोगवणहारहुये अने निरवद्य आ हारभोजी एहवो। सेणतस्सठाणस्सजावअत्थिआराहणा। तेह ण वाक्यालंकारे, तेह स्थानकने एतले तेह आहारने यावत् आलोये पडिकमेतो वीतराग ना वचननो छे तेह आराधक। एयपितहचेव जावरायपिड। ए पणि आलावो तिमहीज मिथ्ये यावत् राजपिण्ड लगे कहवो। आहाकम्मअणवज्जेत्ति अस्समस्ससअणुप्पदावेइत्ताभवइ सेणतस्सजावअत्थि आराहणा जावरायपिंडं। आधाकर्म निर्दोष इसोकही माहोमाहिदेवो सभानेविषे निर्दोषपणें कह वो ए विपरीत सद्दहणादि प्ररूपणाथी मिथ्यात्वादिकछे तेमाटे ज्ञानादिकनी विराधना प्रगटहीज दीसेछे—तेह तेह स्थानकने जोआलोये तो आरा धक हुवे, यावत् राजपिण्ड लगे कहवो। आधाकर्मादिक पदार्थ मतें आचार्यादिक सभानेविषे प्रायें विशेषथी जणावे तेमाटे आचार्यादिक मह

भगवती	॥ टीका ॥
॥ शतक ॥ ५	
॥ उद्देशा ॥ ६	
॥ ३५१ ॥	

पदार्थो नानार्थादय' मनार्यां प्राय' प्रज्ञापयन्तो त्वाचार्यादीन् फलतो दर्शयन्नाह ॥ आयरिएत्यादि ॥ आयरियउवज्झाएणंति ॥ आचार्येण सहो पाध्याय आचार्योपाध्याय ॥ सविसयंसित्ति ॥ स्वविषये अर्थदानसूत्रदानलक्षणे ॥ गणंति ॥ शिष्यवर्गं ॥ अगिलाएत्ति ॥ अखेदेन संगिण्हन् स्वीकुर्वन्, उपगिण्हन् उपष्टंभयन्, द्वितीय स्तृतीयश्च भवो मनुष्यभवो देवभवान्तरितो दृश्य, चारित्रवतो नन्तरं देवभवो न गति, न च तत्र सिद्धिरस्तीति परानुग्रहस्या नन्तरं फलमुक्त मथ परोपघातस्य तदाह ॥ जेणमित्यादि ॥ अलिएणंति ॥ अलीकेन भूतनिह्नवरूपेण चारित्रवन्तमपि नानेन ब्रह्मचर्यं मनुपालित मित्यादिरूपेण ॥ असब्भूएणंति ॥ अभूतोद्भावनरूपेण अचौरेपि चौरोय मित्यादिना अथवा; अलीकेन असत्येन तत्

॥ मूल ॥

जे पव्वावइत्ता भवइ सेणं तस्स जाव अविग्धाराहणा जाव सव्वपिंडं । आयरियउवज्झाएणं भंते ! सविसयसि गण अगिलाए संगिण्हमाणे अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ तच्चंपुणभवग्गहणं नाइ क्कमइ । जेणं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ तस्सणं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ?

॥ भाषा ॥

फलथको देखाडतो कहेछे—आयरिउवज्झाएणंभंते सविसयंसिगणं अगिलाएसंगिण्हमाणे अगिलाएउवगिण्हमाणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जावअंते करेइ । आचार्य सहित उपाध्याय ते हे भगवन् । पोताने वर्ष दान सूत्रदान लक्षण विषे शिष्यवर्गने खेदरहितपणे स्वीकार करता थाका तथा खेदरहितपणे उपष्टंभ देता थका केटलाभवग्रहण करीने सीझे यावत् सर्व दुःखनो अंत करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइएतेणेवभवग्गहणेणं सिज्झइ । हे गौतम । केटलाएक तिणिजभवग्रहणे करी सीझे एतले परम गति पामे । अत्थेगइए दोच्चेणंभवग्गहणेणंसिज्झइ । केटलाएक बीजे भवग्रहणे करी सीझे एतले एक मनुष्य भव अंतर देवभव करी सीझे पणि त्रीजो । तच्चंपुणभवग्गहणंनाइक्कमइ । त्रीजो भवग्रहण नथी अतिक्रमता एतले त्रीजे मनुष्य भव विषे एकदे सीझे चारित्रवंतने अनंतर देवभवे पमाडे परानुग्रहनो फल कह्यो, हिवे परोपघातनो फल कहेछे—जेणंभंतेपरंअलिएणं असब्भूए

॥ टीका ॥

द्रव्यतोपि भवति लुब्धकादिना मृगादी न्पृष्टस्य जानतोपि नाहं जानामीत्यादि अत आह–असद्भूतेन दुष्टाभिसन्धित्वा दशोभनरूपेण अचौरेपि चौ रोय मित्यादिना ॥ अब्भक्खाणेणंति ॥ आभिमुख्येन आख्यान दोषाविष्करण मभ्याख्यान तेन अभ्याख्याति ब्रूते ॥ कहप्पगारत्ति ॥ कथ प्रकाराणि किंप्रकाराणीत्यर्थ ॥ तहप्पगारत्ति ॥ अभ्याख्यानफलानीत्यर्थ ॥ जत्थेवणमित्यादि ॥ यत्रैव मानुपत्वादा वभिसमागच्छति उत्पद्यते तत्रैव प्रतिस वेदय त्यभ्याख्यानफल कर्म्म, तत पश्चा द्वेदयति निर्ज्जरयतीत्यर्थः ॥ इतिपचमशतेषष्ठः ॥ ६ ॥ षष्ठोद्देशकान्त्यसूत्रे कर्म्मपुद्गल

॥ मूल ॥

गोयमा! जेणं पर अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ तस्सण तहप्पगाराचेव कम्मा कज्जंति जत्थे वण अभिसमागच्छइ तत्थेवणं पडिसवेदेइ तओ से पच्छावेदेइ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पचम सयस्स छठो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ६ ॥ परमाणुपोग्गलेण भंते! एयइ वेयइ जाव तंत भाव परिणमइ

॥ भाषा ॥

ण अब्भक्खाइ तस्सणकहप्पगाराचेवकम्माकज्जंति। जे हेभगवन्! अनेराप्रतें अलीकभुत निन्हवभूतें करी ब्रह्मचर्यना पालणहार साधुने इम कहै ए ब्र ह्मचर्य नथीपालतो अछता अवगुण कहवा चोरनही अने तेहने चोरकहै इत्यादि अथवा अलीक असत्य ते द्रव्यथो पणिहुवे जिमकोई एक मनुष्यने वध कपूछे मृग किहांगयो पेलो जाणतो कहै हु नजाणू जीव राखिवा निमित्त ते माटेज कहैछे–दुष्टाभिसन्धयी अशोभनरूपे करी अचोरने चोर इत्या दि अभिमुख करी दोषने प्रगटकरवा ते अभ्याख्यान अब्भक्खाइ कहता कहै तेहने किसा प्रकारना कर्मतृवे कर्मबांधे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जेण प र अलिएण असंतएण अब्भक्खाणेण अब्भक्खाइ। हेगौतम। जे पर अनेराप्रतें अलीक अछता दोष प्रतें प्रगटकरवै करी कहै। तस्सण तहप्पगाराचेवकम्मा कज्जंति। तेहने तथा प्रकारे अभ्याख्यान फलरूप कर्मबांधे। जत्थेवण पडिसवेदेंति तओसेपच्छावेदेति। जिहांईज गर्भजमनुष्यपणे आवे ऊपजे जिहां ईज अभ्याख्यान फलप्रतें भोगवे तिवारपछी ते निर्जरे वेदे इत्यर्थ। सेवभंते २ त्ति। हेभगवन्! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही। पंचमसयस्सछट्ठा उद्देसा सम्मत्तो। ए पाचमा शतकनो छठोउद्देशो अर्थथी कह्यो ॥ ६ ॥ परमाणुपोग्गलेणंभंतेएयइवेयइ जावततभावपरिणमइ।

॥ टीका ॥ निर्ज्जरोक्ता निर्ज्जराच चलनमिति सप्तमे पुद्गलचलन मधिकृत्ये दमाह ॥ परमाणुमित्यादि ॥ सियएयइत्ति ॥ कदाचि देजते कादाचित्कत्वा त्सर्वपुद्गले ष्वेजनादिधर्म्माणां द्विप्रदेशिके त्रयो विकल्पा· स्या देजन स्या दनेजन स्या द्देशेनैजन देशेनानेजननेति ३ द्व्यंशत्वा त्तस्येति, त्रिप्रदेशके पञ्च

॥ मूल ॥ ? गोयमा ! सियएयइ वेयइ जाव परिणमइ सियणोएयइ जाव णोपरिणमइ । दुपदेसिएणं भंते ! खंधे एयइ जाव परिणमइ ? गोयमा ! सियएयइ जाव परिणमइ सियनोएयइ जाव नोपरिणमइ सियदेसेएयइ देसेनोएयइ । तिपएसिएणं भंते ! खंधे एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ सिय नोएयइ सिय देसे एयइ नोदेसेएयइ सियदेसेएयइ सियनोदेसा एयंति सिय देसा एयंति नोदेसे एयइ, चउप्पएसिएणं भंते ! खंधे

॥ भाषा ॥ कहा उद्देशाने अंते कर्मपुद्गल निर्जरा कही ते निर्जरा चलनरूपछे तेमाटे सातमे पुद्गल चलन अधिकार करेछे—परमाणु प्रश्न हे भगवन् ! निरवयव क्रियावंत तेपरमाणू तेहीज पुद्गल प्रत्य गमनधर्म कांपे घणू कांपे यावत् तेते पूर्वोक्त चलनादि लक्षण भाव प्रते परिणमे इतिप्रश्न । गो० सियएयइ वेयइ जावपरिणमइ सियणोएयइ । हे गौतम ! कदाचित् चले विशेषे चले यावत् तेतेभाव प्रते परिणमे कदाचित् नकंपे । जावणोपरिणमइ दुपदेसिएणंभंतेखंधेएयइ जावपरिणमइ । यावत् तेते भाव प्रते परिणमे नही बेप्रदेशीयोस्कंध हे भगवन् ! कंपे चले यावत् तेते भावप्रते परिणमे इतिप्रश्न । गो० सियएयइ जावपरिणमइ सियणोएयइ जावणोपरिणमइ सियदेसेएयइ । हे गौतम ! बेप्रदेशीया स्कंधने विषे तीन विकल्प हुवेते कहेछे—कदाचित् कंपे यावत् परिणमे १ कदाचित् नकंपे यावत् परिणमे नही कियारे देशेकांपे एककांपे इत्यर्थ । सियदेसेणोएयइ तिपएसिएणंभंते खंधेएयइ । कियारे देशे नकांपे एक नकांपे इत्यर्थ त्रिप्रदेशिकस्कंध हे भगवन् ! कांपे इतिप्रश्न । गो० सियएयइ सियणोएयइ सियदेसेएयइ णोदेसे एयइ । हे गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कंधने विषे पंचविकल्प तिहां पहिला तीन विकल्प जिम द्विप्रदेशिया स्कंधने विषे कह्या तिमज कहवा तेकहेछे—कियारे कंपे १ । सियदेसेएयइ णोदेसाएयइ सियदेसाएयंति णोदेसेएयइ ५ । कियारे नकंपे २ कियारे देशे कंपे देशेनकंपे ३ कियारे देशे एककंपे एतले

॥ टीका ॥

आद्या स्तय, स्तएव द्व्यणुकस्यापि तदीयस्यै कस्यांशस्य तथाविधपरिणामेनै कदेशतया विवक्षितत्वात् तथा देशस्य एजनं देशयोश्चा नेजनमिति च तुर्य , तथा देशयो रेजन देशस्य चानेजनमिति पचम , एव चतु प्रदेशकेपि, नवर पद्' तत्र षष्ठोद्देशयो रेजन देशयो रेव चानेजनमिति' पुद्ग लाधिकारा देवेद सूत्रवृन्द ॥ परमाणुइत्यादि ॥ उगाहेज्जत्ति ॥ अवगाहेत आश्रयेत, छिद्येत द्विधाभाव यायात्, भिद्येत विदारण भावमात्र या

॥ मूल ॥

एयइ ? गोयमा ! सिय एयइ सिय नोएयइ सिय देसे एयइ णोदेसेएयइ सिय देसे एयइ णोदेसा एयंति सिय देसा एयति नोदेसे एयइ सियदेसा एयंति नोदेसा एयंति। जहा चउप्पदेसिए तहा पंचप्पएसिए जाव तहा अणंतपएसिए परमाणुपोग्गलेण भंते ! असिधारवा खुरधारवा उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा सेण

॥ भाषा ॥

वेप्रदेशनकपे किवारे वेदेशकपे एकदेश नकापें ५। चउप्पदेसिएणभतेखधेएयइ गो० सियएयइ। च्यारि प्रदेशीयोखध हे भगवन्। कपे इतिप्रश्न हे गौतम। च्यारि प्रदेशीया खधने विषे छविकल्प तिहा पचविकल्प पूठिलीपरे किवारे कापे १। सियणोएयइ २ सियदेसेएयइ णोदेसेएयइ ३ सियदे सेएयइ णोदेसाएयति ४। किवारे नकापे २ किवारे देश कपे देश नकापे ३ किवारे देश कपे एककपे देशवणा नकापे ४। सियदेसाएयति णोदेसे एयइ ५ सियदेसाएयति णोदेसाएयति ६। किवारे घणा कापे एकनकापे ५ किवारे के वेप्रदेश कापे वेप्रदेश नकापे एछएभागा थया ६। जहाचउ प्पदेसिओ तहापचपदेसिओ तहाजावअणतपदेसिओ। जिम चउप्रदेशीयाने विषे छभगा कह्या तिम पच प्रदेशीयादिकने विषे पणि छभंगा कहवा तिमहीज यावत् अनत प्रदेशिकताई कहवा पुद्गलना अधिकारथीज कहेछे—परमाणुपोग्गलेणंभते असिधारवा खुरधारवा ओगाहेज्जा। परमाणू पुद्गलहे भगवन्। खडगनी धाराप्रते अथवा छुरप्रनीधार प्रते अवगाहे आश्रये इतिप्रश्न। हंताओगाहेज्जा सेणभतेतत्थछिज्जेज्जवाभिज्जेज्जवा। हा गौ तम। अवगाहे आश्रये ते हेभगवन्। तिहा द्विधा भावपामे वेभाग हुवे भेदाय विदाराय इतिप्रश्न। गो० णोइणट्ठेसमट्ठे णोखलुतत्थसत्थकमइएवजाव असखेज्जपएसिओ। हे गौतम। ए अर्थ समर्थ नही, नहो निश्चे तिहा शस्त्र आक्रमे परमाणू पणाथी अन्यथा परमाणू पणोजनहुवे इम यावत् अस

॥ टीका ॥

यात् ॥ नोखलुतत्यसत्यकमइत्ति ॥ परमाणुत्वा दन्यथा परमाणुत्वमेव न स्यादिति ॥ अत्येगइएछिज्जेज्जत्ति ॥ तथाविधबादरपरिणामत्वात् ॥ अत्येगइएनोछिज्जेज्जत्ति ॥ सूक्ष्मपरिणामत्वात् ॥ उल्लेसियत्ति ॥ आर्द्रो भवेत् ॥ विणिहायमावज्जेज्जत्ति ॥ प्रतिस्खलन मापद्येत ॥ परियावज्जेज्जत्ति ॥

॥ मूल ॥

तत्थछिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे नोखलु तत्थ सत्थं कमइ एवं जाव असंखेज्जपएसिउ । अणंतपएसिएण भंते ! खधे असिधारंवा खुरधारवा उग्गाहेज्जा ? हंता उग्गाहेज्जा सेणं तत्थ छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा ? गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्जवा २ अत्थेगइए णोछिज्जेज्जवा २ एव अगणिकायस्स मज्झं मज्झेणं तहिं णवरं झियाएज्जत्ताणियव्वं एव पुक्खलसंवट्टस्स महामेहस्स मज्झ मज्झेण तहिं उ

॥ भाषा ॥

ख्यप्रदेशी या लगे कहवो । अणतपएसिएणभतेखधे । अनन्त प्रदेशिक हे भगवन् । खध । असिधारवा खुरधारवा । असि कहीये खड्ग धाराप्रतें क्षुरप्रधारा प्रतें । उग्गाहेज्जा । अवगाहे इतिप्रश्न उत्तर । हंताउग्गाहेज्जा । हांगौतम । अवगाहै । सेणतत्थछिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा । ते तिहां छेद्योजाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइए छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा अत्थेगइए णोछिज्जेज्जवा णोभिज्जेज्जवा । हे गौतम । केतला एक छेदाय तथाविध बादर परिणाम पर्यायकी खडथाय भेदाय बादर परिणाम पर्यायको केतला एकनो सूक्ष्मपरिणाम पर्यायको खण्ड नथाय नभेदाय सूक्ष्म परिणाम पर्यायी बींधायेंज नहो । एव अगणिकायस्समज्झमज्झेणतहि । इम, परमाणु पोग्गलेणभते अगणिकायस्समज्झमज्झेण उग्गाहेज्जा हंताउग्गाहेज्जा, सेणतत्थझियाएज्जा, बलइ गोयमा णोइणट्ठे णोखलु तत्थसत्थ कमइ, एव जावअसंखेज्जपएसिओ, अणतपएसिएणभते खधे अगणिकायस्समज्झमज्झेण उग्गाहेज्जा हंता उग्गाहेज्जा, सेणतत्थझियाएज्जा बलइ गोयमा, अत्थेगइएझियाएज्जा, बादर परिणामथी बले, अत्थेगइएणोझियाएज्जा, णवर झियाएज्जा भाणियव्व । सूक्ष्म परिणामथी न बले ए आलावाने विषे ,छिज्जेज्जवा भिज्जेज्जवा, ने स्थानके ,झियाएज्जा, एहवो पाठ कहवो । एव पुक्खलसवट्टगस्समहामेहस्समज्झमज्झेणतहि उल्लेसिया । इम पुक्खलसम्वर्त्तक महा मेघने मध्ये २ अवगाहै इत्यादि आलावो कहवो तिहां ,झियाएज्जा, एहने स्थानके भीजे एहवा

॥ टीका ॥ पर्य्यापद्येत विनश्येत् ॥ दुपएसिएत्यादि ॥ यस्य स्कंधस्य समा: प्रदेशा स सार्द्धो, यस्यतु विषमा स समध्य: संख्येयप्रदेशादिस्तु स्कंध: समप्रदेशि

॥ मूल ॥ ज्जोसिया एवं गंगाए महाणईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा तहिंविणिहायमावज्जेज्जा उदगावत्तंवा उदगबिं दुवा उग्गाहेज्जा सेणं तत्थ परियावज्जेज्जा । परमाणुपोग्गलेणं भंते ! किं सअड्ढे समज्झे सपएसे उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे नोसअड्ढे नोसमज्झे नोसपएसे । दुपएसिएण भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे उदाहुअणड्ढे अमज्झे अपएसे ? गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे णोअणड्ढे णोसमज्झे नोअपएसिए । तिपएसिएण भंते ! खंधे पुच्छा गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे नोस

॥ भाषा ॥ कहवो । एवंगंगाएमहाणदीएपडिसोतहव्वमागच्छेज्जा । इम गङ्गा महानदीने प्रवाहमाहे ऊतावलो आवे इत्यादि आलावो कहवो । तहिंविणिहाय मावज्जेज्जा । तिहा प्रति पामे इम कहवो खलना विनाश प्रते । उदगावत्तवा । पाणीना आवर्त्त । उदगबिंदुवा उग्गाहेज्जा । पाणीना बिन्दुआ अवगाही आश्रयोने रहे इत्यादि आलावो । सेणतत्थपरियावज्जेज्जा । तेह तिहा विणसे विनाशपामे इम कहवो । परमाणुपोग्गलेणभंतेकिंसअड्ढे सम ज्झे सपदेसे । परमाणू पुद्गल हेभगवन् । स्यू अर्द्धसहित हुवे मध्य सहित हुवे प्रदेश सहित हुवे । उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपदेसे । अथवा अर्द्ध रहित मध्य रहित प्रदेश रहित इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणड्ढे अमज्झेअपदेसे णोसअड्ढे णोसमज्झे णोसपदेसे । हे गोतम । अर्द्ध रहित छेद्यो भेद्यो नजा य तेमाटे मध्य रहित एतलामाटे अप्रदेश स्कन्धथी अलगामाटे एतलामाटेज नही सअर्द्ध नहीसमध्य नही सप्रदेश नही । दुपदेसिएणंभंतेखंधे किंसअड्ढे ससमज्झे सपदेसे । द्विप्रदेशिक हे भगवन् । स्कन्ध स्यू अर्द्ध सहित मध्यसहित प्रदेश सहित हुवे । उदाहुअणड्ढे अमज्झे अपदेसे । अथवा अर्द्ध रहित मध्य रहित प्रदेशरहित हुवे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा सअड्ढे अमज्झे सपदेसे णो अणड्ढे णो समज्झे णो अपदेसे । हेगोतम । अर्द्धसहित ब प्रदेश माटे मध्यरहित विचे कोइनही तेमाटे तथा दोय नकार प्रकृत अर्थ कहे नही अनर्द्ध एतलो अर्थात् अर्द्ध सहितके समध्य नही अर्थात् अमध्य अप्रदेश

क इतरथ तत्र यः समप्रदेशिक स सार्द्धोऽमध्य इतरस्तु विपरीतइति ॥ परमाणुपोग्गलेणभंतेइत्यादि ॥ किंदेसेणदेसमित्यादयो नव विकल्पा स्तत्र

अड्ढे नोअमज्झे नोअपएसेजहा दुपएसिउ तहा जेसमा तेभाणियव्वा जेविसमा तेजहा तिपएसिउ तहा भा णियव्वो । सखेज्जपएसिएण भंते ! खंधे किं सअड्ढे पुच्छा गोयमा! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे सिय अ णड्ढे समज्झे सपएसे जहा सखेज्जपएसिउ तहा असखेज्जपएसिउवि अणतपएसिउवि परमाणुपोग्गलेण भंते ! परमाणुपुग्गलं फुसमाणे किं देसेण देसं फुसइ १ देसेणं देसे फुसइ २ देसेण सव्वं फुसइ ३ देसेहिं

नही अर्थात् सप्रदेशछे । तिपदेसिएणभंते खधे पुच्छा । त्रिप्रदेशिक खन्ध हेभगवन् । अर्द्धछे इत्यादि प्रश्न कीधो उत्तर । गोयमा अणड्ढे समज्झे सपदे से णो सअड्ढे णो अमज्झे णो अपदेसे । हे गौतम । अर्द्धनही तीन प्रदेशमाटे मध्य सहितछे एक प्रदेश वीचमेछे तेमाटे सप्रदेशछे त्रिप्रदेशिया खन्ध माटे तथा अर्द्धसहित नही विचलो प्रदेश छेद्यो नजाय तेमाटे नही अमध्य अर्थात् समध्यछे नही अप्रदेश अर्थात् सप्रदेशछे । जहादुपदेसिओ तहा जेसमा तेभाणियव्वा जेविसमा ते जहातिपएसिओ तहा भाणियव्वो सखेज्जपएसिएणभंते खधेकिंसअड्ढे पुच्छा गोयमा सियसअड्ढे अमज्झे सपदेसे सि यअणड्ढे समज्झे सपदेसे । जिम वेप्रदेशिक कह्यो तप तिमजे समप्रदेशिकछे ते सम २ । ऽ४ । ६ । ८ । इत्यादि ते कहवा अने जे विषम ३ ऽ ५ । ७ । प्र मुख विषमछे ते त्रिप्रदेशिया नीपरे कहवो सख्यातप्रदेशो स्कन्ध हेभगवन् । स्यू सअर्द्ध इत्यादि प्रश्न उत्तर हेगौतम । कदाचित् अर्द्धसहित मध्यरहित सप्रदेश तथा किवारे अर्द्धरहित मध्यसहित सप्रदेशिक इहा भावना सख्यातप्रदेशिया खन्धना बेभेदछे एक समप्रदेशिक बीजो विषमप्रदेशिक ते बेप्र देशियाने अर्द्धसप्रदेश हुवे अने विषमप्रदेशिक ते त्रिप्रदेशिक नीपरे अनर्द्ध समध्य सप्रदेशिक हुवे । जहासखेज्जपदेसिओ तहा असखेज्जपदेसिओवि अ णतपएसिओवि । जिम सख्यातप्रदेशीयो कह्यो तिम असख्यातप्रदेशीयो पणि अने अनन्तप्रदेशीयो पणि कहवो वेहु २ भेदे सम विषम रूपेकरी जा णवो । परमाणुपोग्गलेणभंते परमाणुपोग्गलफुसमाणे । परमाणू पुद्गल हेभगवन् । परमाणू पुद्गल प्रते आफरसतोथको । किंदेसेणदेसफुसइ १ । स्यू पोताने

देशेन स्वकीयेन देश तदीय स्पृशति' देशेने त्यनेन देशं देशान् सर्व मित्येवं शब्दत्रयपरेण त्रय, एव देशै रित्यनेन ३ सर्वेण त्यनेनच त्रयएवेति, अत्रच सर्वेण सर्व मित्येक एवघटते परमाणो निरंशत्वेन शेषाणा मसम्भवात्, ननु यदि सर्वेण सर्व स्पृशती त्युच्यते तदा परमाणवो रेकत्वापत्ते' कथ मपरापरपरमाणुयोगेन घटादिस्कध निर्वृत्तिरिति ? अत्रोच्यते सर्वेण सर्व स्पृशती तिकोर्थ स्वात्मना ता वन्योन्यस्य लगतो नपुन रद्वौद्यशे

देसं फुसइ ४ देसेहिं देसे फुसइ ५ देसेहि सव्वं फुसइ ६ सव्वेण देसं फुसइ ७ सव्वेण देसे फुसइ ८ सव्वेणं सव्वं फुसइ ९ ? गोयमा ! नोदेसेण देस फुसइ णोदेसेणं देसे फुसइ २ णोदेसेणं सव्वं फुसइ ३ नोदेसेहि देस फुसइ ४ नोदेसेहि देसे फुसइ ५ नोदेसेहि सव्वं फुसइ ६ नोसव्वेणं देसं फुसइ ७ णोसव्वेण देसे फुस

देशेकरी बीजाना देशप्रतें स्पर्शै १ । देसेबदेसेफुसइ २ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रते फरसै २ । देसेणसव्वफुसइ ३ । पोताने देशेकरी बीजो सर्व फरसै ३ । देसेहिंदेसफुसइ ४ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें स्पर्शै ४ । देसेहिदेसेफुसइ ५ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें स्पर्शै ५ । देसेहि सव्वफुसइ ६ । पोताने देशेकरी बीजो सर्व फरसै ६ । सव्वेणदेसफुसइ ७ । पोते सर्वेकरी बीजाना देशप्रतें फरसै ७ । सव्वेणदेसे फुसइ ८ । पोते सर्वेकरी बीजाना देशप्रतें फरसै ८ । सव्वेणसव्वेफुसइ ९ । पोते सर्वेकरी बीजो सर्व फरसै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोदेसेण देसफुसइ १ । हे गौतम । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें स्पर्शैनही १ । णोदेसेणदेसेफुसइ २ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें स्पर्शैनही २ । णोदेसेणसव्वफुसइ ३ । पोताने देशेकरी बीजो सर्व फरसैनही ३ । णोदेसेहिदेसे फुसइ ४ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें फरसैनही ४ । णोदेसेहिदेसेफुसइ ५ । पोताने देशेकरी बीजाना देशप्रतें फरसैनही ५ । णोदेसेहिसव्व फुसइ ६ । पोताने देशेकरी बीजासर्व फरसैनही ६ । णोसव्वेणदेसफुसइ ७ । पोते सर्वेकरी बीजाना देशप्रतें फरसैनही ० । णोसव्वेणदेसेफुसइ ८ । पोताने सर्वेकरी बीजाना देशप्रते फरसैनही ८ । सव्वेणसव्वफुसइ ९ । इहा सर्वेकरी सर्व फरसै ए एकहीज भागी हुवे, परमाणूने विषे निरंशपणें शेषभागाना असभवथकी । परमाणुपोग्गलेदुपएसियफुसमाणेसत्तमणवमेहि फुसइ । परमाणू पुद्गल बेप्रदेशिया

न त्वर्द्धादिदेशस्य तयो रजावा द्व्यणुत्वावापत्तिस्तु तदैव प्रसज्येत यदा तयो रेकत्वापत्ति र्भवति, नच तयो' स्ता स्वरूपभेदात् ॥ गतानन्तरमेति फुसइत्ति ॥ सर्वेण देश सर्वेण सर्वं मित्येताभ्या मित्यर्थं, तत्र यदा द्विप्रदेशिक प्रदेशद्वयावस्थितो भवति तदा तस्य परमाणु सर्वेण देशं स्पृशति परमाणो स्तद्देशस्यैव विषयत्वात् यदातु द्विप्रदेशिक परिणामसौक्ष्म्या देकप्रदेशस्थो भवति तदा त परमाणु सर्वेण सर्वं स्पृशतीत्युच्यते ॥ निप्पच्छिमगद्दितिहिंफुसइत्ति ॥ त्रिप्रदेशो क सन्नौ स्पृश त्रिभि रन्त्यै स्पृशति तत्र यदा त्रिप्रदेशिक प्रदेशत्रयावस्थितो भवति तदा तस्य परमाणु सर्वेण देशं स्पृशति परमाणो स्तद्देशस्यैव विषयत्वात्, यदातु तस्य कत्रप्रदेशे द्वौ प्रदेशौ वस्त्र एको उवस्थित स्या तदा एकप्रदेशास्थितपरमाणुद्वयस्य परमाणो' स्पर्शविषयत्वेन सर्वेण देशौ स्पृशतीत्युच्यते' ननु द्विप्रदेशिकेपि युक्तोय विकल्प स्तत्रापि प्रदेशद्वयस्य स्पृश्यमानत्वा ? नैव यत स्तत्र द्विप्रदेशमात्र एवा वयवीति कस्य देशौ स्पृशति' त्रिप्रदेशिकेतु त्र्यापेक्षया द्व्यणुस्पर्शने एको वक्ष्यते ततश्च सर्वेण देशौ त्रिप्रदेशिकस्य स्पृ

इ ८ सव्वेणं सव्वं फुसइ ९ परमाणुपोग्गले दुपएसियं फुसमाणे सत्तमनवमेहिं फुसइ परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसमाणे णिप्पच्छिमएहिं तिहिं फुसइ जहा परमाणुपोग्गले तिपएसियं फुसावित्त एवं फुसावेयव्वो

प्रते फरसतो सातमे नामे भागे फरसे सर्वेस्तेस १ सर्वेसर्वे २ ए बेभांगा ऊपजे तिहां जो बेप्रदेसे रह्यो हुवे ते परमाणू सर्वेकरी बेपदेसियाने देस फरसे जियारे बेपदेसियो परमाणू सूक्ष्मपणाथको एक प्रदेसेरह्यो हुवे तो ते परमाणू सर्वेकरी ते सर्वने फरसे । परमाणपोगलेपएसियफुसमाणे णिपच्छिमएहिंतिहिंफुसइ । परमाणू पुद्गल त्रेपदेसिया प्रते फरसतो छेहला तीनभागा सघाते फरसे तिहां जो त्रिपदेसियो तीन प्रदेसे रह्यो हुवे तो तेहने परमाणू सर्वेकरी तेहनो देस फरसे १ जो त्रिपदेसियानो बेपदेस एके प्रदेसे रह्या हुवे एक प्रदेसरह्यो हुवे तो एक प्रदेसरह्या परमाणू दोय ते हने परमाणूनों स्पर्श विषयपणे करी सर्वेणदेसौ सूत्रपाठ छे ? तिहां कहीये २ जिवारे त्रिप्रदेसीयो एके प्रदेस रह्यो हुवे तिवारे परमाणू सर्वे ते सर्वे स वाते फरसे ए तीन भांगा ऊपजे । जहापरमाणु पोगले तिपएसिय फुसावियो । जिम परमाणु पुद्गल त्रिप्रदेसिया सघाते स्पर्शीयो । एवंफुसा

॥ टीका ॥

शती ति व्यपदेश साधु स्यादिति' यदा त्वेकप्रदेशावगाढो ऽसौ तदा सर्वेण सर्वं स्पृशतीति स्यादिति ॥ दुपएसिएणमित्यादि ॥ तइयनवमेहिंफु सइत्ति ॥ यदा द्विप्रदेशिको द्विप्रदेशस्थ स्तदा परमाणुदेशेन सर्वं स्पृशतीति तृतीय , यदा त्वेकप्रदेशावगाढो सौ तदा सर्वेण सर्वमिति नवम' ॥ दुपएसिर्तदुपएसियमित्यादि ॥ यदातु द्विप्रदेशिको प्रत्येक्त द्विप्रदेशावगाढो तदादेशेन देशमिति प्रथम , यदा त्वेक एकत्रा न्यस्तु द्वयो स्तदा दे

॥ मूल ॥

जाव ऋणतपएसिर्त दुपएसिएणं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गल फुसमाणे पुच्छा तइयनवमेहिं फुसइ दुपएसिर्त दुपएसिय फुसमाणो पढमतइयसत्तमनवमेहि फुसइ दुपएसिर्त तिपएसियं फुसमाणो ञ्चादिल्लएहिय पच्छिल्लएहिं तिहिं फुसइ मज्झिमएहि तिहिंवि पडिसेहेयव्वं दुपएसिर्त जहा तिपएसियं फुसाविर्त एव फुसावे

॥ भाषा ॥

वेयव्वो । इम सर्व्वाविवो । जाव अनंतपएसिश्रो । यावत् अनत प्रदेशिया ताईं । दुपएसिएणभंते खंधेपरमाणुपोग्गलफुसमाणेपुच्छा तइयनवमेहिंफुसइ । बेप्रदेशिक हेभगवन् । खंध परमाणू पुद्गल प्रतें फरसतो केतलेभागे फरसे इतिप्रश्न हे गौतम । जिवारे बेप्रदेशीयो बेप्रदेशें रह्यो तिवारे आपणें देशेंकरी तेह सर्व फरसे एत्रीजोभागो अने जो बेप्रदेशीयो एकप्रदेशे रह्यो तो सर्वे करो सर्व फरसे ए नवमो भागो ९ । दुपदेसिश्रोदुपदेसियफुसमाणोपढमतइय सत्तमनवमेहिंफुसइ । बेप्रदेशीयो बेप्रदेशिक प्रतें १ । ३ । ७ । ९ । ए चारभागे फरसै ते विवरो देखाडेछे—जीवेईं बेप्रदेशीया प्रत्येके बि द्विप्रदेश अवगाही रह्या तिवारे देशेंकरी देशफरसै ए पहिलोभागो १ जिवारे एक बेप्रदेशीयो बेप्रदेशें रह्यो हुवे एक बेप्रदेशीयो एक प्रदेशे रह्यो तिवारे देशेंकरी सर्व फरस्यो ए त्रीजोभागो ३ जिवारे एक बेप्रदेशीयो एके प्रदेशेरह्यो बीजो बेप्रदेशें रह्यो तिवारे सर्वेकरी देशफरसे ए सातमोभागो ७ जिवारे बेईं बेप्रदेशिया प्रत्येकें एक २ प्रदेशे रह्या तिवारे सर्वेकरी सर्व फरसे ए नवमोभागो ९ इम बेप्रदेशियो बेप्रदेशियाने फरसे तिवारे ४ भागाथाय तेहनी स्थापना करीलेवी । दुपदेसिश्रो तिपएसिय फसमाणो । बेप्रदेशियो त्रिप्रदेशीयाप्रतें स्पर्शतो थको । आदिल्लएहिय पच्छिल्लएहितिहि फुसइ । पहिला तीनभागेकरी तथा छेहले तीनभागेकरी फरसे ते विचारीलेवा । मज्झिमएहितिहिंपडिसेहेयव्व । विचला तीनभागानो प्रतिषेध करवो । दुपदेसिश्रो जहातिपदेसिय फुसावि

ग्रेन सर्व मितितृतीय , तथा सर्वेण देशमिति सप्तम'' नवमस्तु प्रतीत एवेति, अनया दिशा न्येपि व्याख्येयादति' पुद्गलाधिकारादेव पुद्गलाना द्र व्यक्षेत्रभावान् कालत श्चिन्तयति, तत्र परमाणु इत्यादि दव्यचिता ॥ उक्तोमेयमनगाढंकालति ॥ असङ्ख्येयकाला त्परत पुद्गलाना मेकरूपेण स्थित्य

यव्वो जाव अणंतपएसियं । तिपएसिएणं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे पुच्छा तइयछठणवमेहिं फुसइ तिपएसिए दुपएसियं फुसमाणो पढमएणं तइयएणं चउत्थछठसत्तमणवमेहिं फुसइ तिपएसिए तिपएसियं फुसमाणो सव्वेसुविठाणेसु फुसइ जहा तिपएसिए तिपएसियं फुसाविए एवंतिपएसिए जाव अणं तपएसिएणं संजोएयव्वो जहा तिपएसिए एवं जाव अणंतपएसिए भाणियव्वो । परमाणुपोग्गलेणं भंते !

र्षो । त्रिप्रदेशिक जिम त्रिप्रदेशिक प्रतें स्पर्शाव्यो । एवफुसावेयव्वो । इम परमाणुं । जावअणतपदेसिय । यावत् अनन्तप्रदेशोना पतें । तिपदेसिएणभ तें खंधेपरमाणुपोग्गलफुसमाणोपुच्छा । त्रिपदेशिक हेभगवन् ! स्कंध परमाणू पुद्गलप्रतें फरसतो केतलेभागे फरसे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तइयछठणव मेहिफुसइ । हे गौतम ! त्रीजे छट्टे नवमे तीनेभागे फरसे । तिपएसिपोदुपएसियफुसमाणो । त्रिप्रदेशियो द्विप्रदेशिया प्रतें फरसतो थको । पढमएण तइ एण । पहिला सघातें तीजा सघातें । चउत्थ छट्ट सत्तम नवमेहि फुसइ । चौथा छट्टा सातमा नवमा सघातें फरसे । तिपएसियो तिपएसियफुसमाणो । त्रिप्रदेशियो त्रिप्रदेशिया सघातें फरसतो । सव्वेसुविठाणेसुफुसइ । सर्व स्थानक नवई भागाने विषे फरसे । जहातिपएसियो तिपएसिय फुसाविओ । जि म त्रिप्रदेशिक त्रिप्रदेशिक प्रतें फरसाव्यो । एवंतिपएसियोजावअण तपएसिएण सजोएयव्वो । इम त्रिप्रदेशिक यावत् अनन्तप्रदेशिक प्रतें जोडवो फरसा विवो इत्यर्थ । जहातिपएसियो । जिम त्रिप्रदेशिक कह्यो । एवजावअणतपदेसियो भाणियव्वो । इम यावत् अनन्तप्रदेशिक ताई जाणवो पुद्गलना अधि कारथीज पुद्गलने द्रव्यक्षेत्र भावपतें कालथी चिन्तवेछे इत्यादि द्रव्यचिन्ता । परमाणुपोग्गलेणंभंतेकालओकेवचिरहोइ । परमाणू पुद्गल हेभगवन् ! का लथी केतलो कालरहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण एगसमय उक्कोसेण असंखेज्जकाल । हेगौतम ! जघन्य थको एक समय उत्कृष्टथको असंख्यातो का

॥ टीका ॥

त्रावात् ॥ एगपएसोगाढेणमित्यादि ॥ क्षेत्रचिन्ता ॥ सेएत्ति ॥ सैज· सकम्प ॥ तम्मिवाठाणेत्ति ॥ अधिकृतएव ॥ अन्नम्मिवत्ति ॥ अधिकृता दन्यत्र उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागति ॥ पुद्गलाना माकस्मिकत्वा चलनस्य न निरेजत्वादीना मिवा सङ्ख्येयकालत्व ॥ असखेज्जपएसोगाढेत्ति ॥ अनन्तप्रदेशावगाढस्या सम्भवा दसङ्ख्यातप्रदेशावगाढ इत्युक्तं ॥ निरेएत्ति ॥ निरेज नि प्रकम्प ॥ परमाणुपोग्गलस्सेत्यादि ॥ परमाणो रपगते प

॥ मूल ॥

कालउ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण एगं समयं उक्कोसेण असखेज्जं काल एवं जाव अणंतपएसि उ । एगपएसोगाढेणं भंते ! पोग्गले से ए तम्मिवा ठाणे अन्नम्मिवा ठाणे कालउ केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहन्नं एग समयं उक्कोसे आवलियाए असंखेज्जइभागं एवं जाव असखेज्जपएसोगाढे । एगपएसोगाढेण भंते ! पोग्गले निरेए कालउ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण एग समयं उक्कोसेणं असखेज्जकालं एवं

॥ भाषा ॥

ल जेहभणी असंख्याता कालथी उपरान्त पुद्गलने एकरूपे करी स्थितिनो अभावछै । एवजावअणतपदेसिओ । इम यावत् अनन्तप्रदेशियो कहवो इत्यादि क्षेत्रचिन्ता । एगपदेसा गाढेणभतेपोग्गलेसेए तम्मिवाठाणे अन्नमिवाठाणे कालओकेवचिरहोइ । एकप्रदेशावगाढ एक आकाशप्रदेश ऊपर रह्यो हे भगवन् । पुद्गल कम्पन सहित ते अधिकृत स्थानकने विषै तथा अधिकृत स्थानकथी अन्यस्थानकने विषै कालथी केतलोकाल रहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणएकसमय उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । हे गौतम । जघन्यथी एक समय उत्कृष्टथी पुद्गलने आकस्मिक पणायकी चलनने आवलिकानो असख्यातमो भागकह्यो नही निरेजपणाटिकनीपरे असख्येय कालपणो । एवजावअसखेज्जपएसोगाढे । इम यावत् असखेज्ज असख्यात प्रदेशावगाढ कहवा अनन्तप्रदेशावगाढना असम्भव थकी लोकाकाश असख्य प्रदेशरूपछैज छै । एगपएसोगाढेणभते पोग्गलेणिरएकालओकेवचिरहोइ । एक आकाशप्रदेशा वगाढ रह्या हे भगवन् । पुद्गल कंपरहित ते कालथी केतलोकाल रहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण एकसमय । हेगौतम । जघन्यथी एक समय । उक्कोसेणअसखेज्जंकाल । उत्कृष्टथी असख्यातो काल । एवंजावअसखेज्जपएसोगाढे । इम यावत् असख्यातप्रदेशावगाढ लगे कहवो । एग

॥ टीका ॥

रमाणुत्वे यदपरमाणुत्वेन वर्त्तनमापरमाणुत्वपरिणते स्तदन्तरं स्कन्धसंबन्धकाल· सचोत्कर्षतो ऽसङ्ख्यातइति द्विप्रदेशिकस्यतु शेषस्कन्धसंबन्धकाल परमाणुकाल श्चान्तरकाल· सच तेषा मनन्तत्वा त्प्रत्येक चोत्कर्षतो सङ्ख्येयस्थितिकत्वा दनन्त स्तथा यो निरेजस्य काल स सैजस्या तरमिति कृत्वो क्त सैजस्या न्तर मुत्कर्षतो ऽसङ्ख्यात कालइति, यस्तु सैजस्य काल सनिरेजस्या न्तरमिति कृत्वोक्तं निरेजस्या न्तर मुत्कर्षत आवलिकाया असङ्ख्या तो भागइति, एकगुणकालत्वादीना चान्तर मेकगुणकालत्वादिकालसमानमेव, न पुन र्द्विगुणकालत्वादीना मनन्तत्वेन तदन्तरस्या नन्तत्व वचन प्रामाण्यात्, सूक्ष्मादिपरिणताना त्ववस्थानतुल्यमेवा न्तर यतो यदेवैकस्या वस्थान तदेवा न्यस्या न्तरं तच्चा सङ्ख्येयकालमानमिति, सद्देत्यादितु सू

॥ मूल ॥

जाव असंखेज्जपएसोगाढे । एगगुणकालएणं भंते ! पोग्गले कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एग समयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं एवं जाव अणंतगुणकालए एवं वन्नगंधरसफासजावअणंतलुक्खे एवं सुहु मपरिणए पोग्गले एवं बादरपरिणएपोग्गले। सद्दपरिणएणं भंते! पोग्गले कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

गुणकालएणभंते पोग्गलेकालओकेवचिरंहोइ । एकगुण कालवर्ण हेभगवन् । पुद्गल कालथी केतलोकाल रहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणएगसमय । हे गौतम । जघन्यथकी एक समय । उक्कोसेणअसंखेज्जकाल । उत्कृष्टथकी असंख्यातो काल । एवजावअणतगुणकालए । इम यावत् अनन्तगुणकालवर्ण लगे कहवो । एववण्ण गध रस फास । इम वर्ण नीलादि ४ गन्ध २ रस ५ फरस ८ कहवा छेहडे एकगुण रूखा रसथी माडी । जावअनंतगुणलुक्खे । यावत् अनन्तगुण रूक्ष लगे कहवो । एवसुहुमपरिणएपोग्गले एव बादरपरिणएपोग्गले । इम सूक्ष्म परिणत पुद्गल पणि कहवो इम बादर परिणत पुद्गल पणि कहवो । सद्दपरिणएणभंतेपोग्गलेकालओकेवचिरंहोइ । शब्द परिणत हेभगवन् । पुद्गल कालथी केतलोकाल रहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणएग समय । हे गौतम । जघन्यथी एकसमय । उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभाग । उत्कृष्टथी आवलिकानो असंख्यातमो भाग । असद्दपरिणए । शब्द व्य तिरिक्त ते अशब्द परिणत कहीये । जहाएगगुणकालए । जिम एकगुण काल कह्यो तिम ए कहवो । परमाणुपोग्गलस्सणभंतेअंतरकालओ केवचिरंहोइ ।

जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं असद्दपरिणए जहा एगगुणकालए। परमाणुपोग्गलस्सणं भंते! अंतरं कालउ केवचिरंहोइ? गोयमा! जहण्णेणं एगंसमय उक्कोसेणं असंखेज्जाकालं दुपएसियस्सणं भंते! खंधस्स अंतरं कालउ केवचिरंहोइ? गोयमा! जहण्णेण एगं समय उक्कोसेण अणतंकालं एवं जाव अणंतपएसिउ। एगपएसोगाढस्सणं भंते! पोग्गलस्स सेयस्स अंतर कालउ केवचिरहोइ? गोयमा! जहण्ण एगं समय उक्कोसेणं असंखेज्ज काल एवं जाव असखेज्जपएसोगाढे एगपएसोगाढस्सणं भंते! निरेयस्स अंतरं

परमाणू पुद्गलने ण वाक्यालकारे, हेभगवन्! अतरकालथी केतला हुवे परमाणू पुद्गल स्कन्धने मिलो वलो केतलेकाले परमाणू थाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहण्णेण एगसमय। हेगौतम! जघन्यथको एक समय। उक्कोसेणअसखेज्जकाल। उत्कृष्टथी असख्यातो काल। दुपएसियस्सणभतेखधस्सअतरकालओकेवचिरंहोइ। बेप्रदेशिकने हेभगवन्! खन्धने एतले बेप्रदेशियो अन्य पुद्गल स्कन्धने मिलो तथा परमाणू पणे थई वली दुप्रदेशियोथाय तिवारे तेहने अन्तर केतलो हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण अणतकाल। हेगौतम! जघन्ये एकसमय उत्कृष्टथी अनन्तकाल बेप्रदेशिकने तो शेष स्कन्ध सबन्धकाल तथा परमाणूकाल एतलो अन्तरकालछे तेहने अनन्तपणा थको जेमाटे प्रत्येके २ उत्कृष्टथी अनन्तोकाल। एव जावअणतपएसिओ। इम यावत् अनन्तप्रदेशिया लगे कहवो। एगपएसोगाढस्सणभते पोग्गलस्ससेयस्सअतरकालओ केवचिरहोइ। एक प्रदेशावगाढनो हेभगवन्! पुद्गलनो सकपनो सेज फोटी निरेज थई वली सेजथाय तेहनो अन्तर कालथी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहण्णेणएगसमय उक्कोसेण असखेज्जकाल। हे गौतम! जघन्यथी एकसमय उत्कृष्टथी असख्यातोकाल इहा जे निरेजनोकाल ते सेजनो अन्तर इम करो सेजनो अतर उत्कृष्ट थको असख्यातोकाल। एव जावअसखेज्जपएसोगाढे। इम यावत् असख्यात प्रदेशावगाढ लगे कहवो लोकाकाश असख्यातप्रदेशरूप होजछे तेमाटे। एगपएसोगाढस्सणभते णिरेयस्स अतरकालओ केवचिरहोइ। एक प्रदेशावगाढनो हेभगवन्! कपनरहितनो निरेज फोटी सेजथाय वलो निरेजथाय तेहनो

॥ टीका ॥ त्रसिद्धं ॥-एयस्सणं भंते! दव्वठाणाउयस्सत्ति ॥ द्रव्यं पुद्गलद्रव्यं तस्य स्थान भेदः परमाणुद्विप्रदेशकादि तस्यायु स्थिति रथवा; द्रव्यस्य गुणत्वादि भावेन यत्स्थान मवस्थान तद्रूप मायु र्द्रव्यस्थानायु स्तस्य ॥ खेत्तठाणाउयस्सत्ति ॥ क्षेत्रस्या काशस्यस्थान भेदः पुद्गलावगाहकृत स्तस्या यु स्थिति

॥ मूल ॥ कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहणेणं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे वण्णगंधरसफाससुहुमपरिणयाणं एएसिं जचेव अंतरंपि भाणियव्वं । सद्दपरिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहणेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जकालं असद्दपरिणयस्सणं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहणेणं एगं समयं उक्कोसेणं

॥ भाषा ॥ अंतर कालथी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहणेणंएकसमय उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभाग । हे गोतम ! जघन्यथकी एकसमय उत्कृष्टथी आवलिकानो असंख्यातमोभाग काल जाणवो इहा सेजनोकाल निरेजनो अंतर इमकरी कह्यु निरेजनो अंतर उत्कृष्टो आवलिकानो असंख्यातमोभागछे तेमाटे । एव असंखेज्जपएसोगाढे । इम असंख्यातप्रदेशावगाढ पणि कहवो । वण्ण गंध रस फास सुहुम बादर परिणयाणं एएसिंजचेव संचिट्ठणा तचेव अंतरंपि भाणियव्वं । वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ सूक्ष्म परिणत बादर परिणत एहनो जे निश्चे संचिट्ठणा कालकह्यो तेहीज निश्चे अंतर पणि जाणवो तथा एकगुण कालक पण आदिदेई तेहनो अंतर एकगुण कालकत्वादि काल सरीखो छीज पणिनही द्विगुण कालकादिकने अनन्त पर्यंकरी अंतरने पणि अनंत पर्यो वचन प्रमाण थको सूक्ष्मादि परिणतने तो रहवाना काल सरीखोज अंतर । सद्दपरिणयस्सणंभंते पोग्गलस्स अंतरंकालओकेव चिरहोइ । शब्द परिणत हेभगवन् ! पुद्गलनो अंतर कालथी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहणेणंएकसमय । हेगोतम ! जघन्यथकी एक समय । उक्कोसेण असंखेज्जइकालं असद्दपरिणयस्सणंभंते अंतरकालओकेवचिरंहोइ । उत्कृष्टथी असंख्यातोकाल अशब्दे परिणत जेपुद्गल तेहनो हेभगवन् ! पुद्गलनो अंतर कालथी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहणेणंएकसमय । हे गोतम ! जघन्यथी एक समय । उक्कोसेण आवलियाए असंखे

॥ टीका ॥

रयवा; क्षेत्रे एकप्रदेशादौ स्थानं य त्पुद्गलाना मवस्थानं तद्रूप मायु क्षेत्रस्थानायुः, एव मवगाहनास्थानायु र्भावस्थानायुश्च, नवरं मवगाहना नि यतपरिमाणक्षेत्रावगाहित्व पुद्गलानां नावस्तु कालत्वादि ननु क्षेत्रस्या वगाहनायाश्च को भेद ? उच्यते क्षेत्र मवगाढमेवा वगाहनातु विवक्षितक्षेत्रा दन्यत्रापि पुद्गलाना तत्परिमाणावगाहित्व मिति ॥ कयरे इत्यादि ॥ कण्ठ्य' एषाच परस्परेणा ल्पबहुत्वव्याख्या गाथानुसारेण कार्या स्ता श्चेमा'— खेत्तोगाहणदव्वे भावठाणाउअप्पबहुयत्ते । थोवाअसखगुणिया तिन्नियसेसाकहनेया ॥ १ ॥ खेत्तामुत्तत्ताउ तेणसमवधपच्चयाभावा । तोपोग्गलाय

॥ मूल ॥

आवलियाए असंखेज्जइभागं एयस्स भंते! दव्वठाणाउयस्स खेत्तठाणाउयस्स उगाहणठाणाउयस्स भावठाणाउयस्स कयरे२ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तठाणाउए उगाहणठाणाउए असखेज्जगुणे

॥ भाषा ॥

असंख्यातमोभाग एहने हेभगवन् ! द्रव्यपुद्गल तेहनो स्थान भेद पर माणू द्विप्रदेशादिक तेहनो आयु कहता स्थिति तेहने अथवा द्रव्यनो जे परमाणुत्वादि भावेकरी जे स्थानक अवस्थान ते रूप जे आयु ते द्रव्यस्थानायु तेहने तथा क्षेत्र जे आकाश तेहनो स्थानक भेद पुद्गल अवगाह कीधो तेहनो आयु स्थिति अथवा क्षेत्र एकप्रदेशादिकने विषे स्थानक जे पुद्गलानो अवस्थान ते रूप जे आयु ते क्षेत्र स्थानायु तेहने २। उगाहणठाणाउयस्स भावठाणाउयस्स कयरेजावविसेसाहियावा। अवगाहन पुद्गल जेतला आका श प्रदेश अवगाह्या छे तेतलेहीज प्रमाण आकाशप्रदेश अनेरे ठाम पणि अवगाहेछे ते अवगाहना कहीये अवगाहना पूठिलो परे भाव ते कालादि भेद स्थिति भावना पूठिलो परे एहने माहोमाहि कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे बरोबरहुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवे खेत्तठाणाउए। हे गौतम ! सर्वथकी थोडो क्षेत्र स्थानायु जेहभणी क्षेत्रने अमूर्त्तपणे करी क्षेत्र सघाते पुद्गलाने विशिष्टबंधप्रत्ययने स्नेहादिकना अभा वथी एकठा ते पुद्गल घणोकाल नरहै तेमाटे तेहथी। उगाहणठाणाउए असखेज्जगुणे। अवगाहना स्थानायु असख्यातगुणो वर्णा ठाम फरसे तेहभ णी अण खेत्त गयस्सवित चियमाणचिरपिसधरइ इतिवचन थको तेहथी। दव्वठाणाउएअसखेज्जगुणे। द्रव्यस्थानायु असख्यातगुणो सकोच विकोच क

॥ टीका ॥

योवी खेत्तावठाणाकालोउ ॥ २ ॥ अयमर्थ' क्षेत्रस्या ऽमूर्त्तत्वेन क्षेत्रेण सह पुद्गलाना विशिष्टबन्धप्रत्ययस्य स्नेहादे रजावा न्नैकत्र ते चिरं तिष्ठन्ती तिशेषः यस्मादेव तत इत्यादि व्यक्त अथा वगाहनायु बंहुत्व जाव्यते-अवसेत्तगयस्सवि तच्चियमाणाचिरपिसधरइ । उगाहणानासेपुरा खेत्तन्नतफु ग्रहोइ ॥ ३ ॥ इह पूर्वार्द्धेन क्षेत्राद्धाया अधिकावगाहनाद्धे त्युक्त मुत्तरार्द्धेन तु अवगाहनाद्धातो नाधिका क्षेत्राद्धेति कथ मेतदेव ? मित्युच्यते-उगा हणावद्धा खेत्तद्धाअक्रियावद्धाय । नउउगाहणाकालो खेतद्धामेत्तसवद्धो ॥ ४ ॥ अवगाहनाया मगमनक्रियायाच नियता क्षेत्राद्धा, विवक्षिता वगाह नासद्भावएवा क्रियासद्भावएवच तस्या जावा' दुक्तव्यतिरेके चाजावात्' अवगाहनातु न क्षेत्रमात्रनियता क्षेत्राद्धाया अजावेपि तस्या जावादिति, अथ निगमन-जम्हातत्यवत्थय सब्बेउगाहणाजवेखेत्ते । तम्हाखेतद्धाउ वगाहणद्धाअसखगुणा ॥ ५ ॥ अथ द्रव्यायु बंहुत्वं जाव्यते-सकोयविकोएणाव उवरमियाएवगाहणाएवि । तत्तियमेत्ताचिय चिरंपिदव्वाणवत्याणं ॥ ६ ॥ सकोचेन विकोचेनवो; परताया मप्यवगाहनाया यावतिद्रव्याणि पूर्व मासं स्तावतामेव चिरमपि तेषा मवस्थानं सम्भवति, अनेना वगाहनानिवृत्तावपि द्रव्यं ननिवर्त्तत इत्युक्त, मथ द्रव्यनिवृत्तिविशेषे वगाहना निव

॥ मूल ॥

दव्वठाणाउए असंखेज्जगुणे जावठाणाउए असखेज्जगुणे ॥ खेत्तोगाहणदव्वे जावठाणाउयंचअप्पवहुं खेत्ते सव्वत्थोवे सेसाठाणाअसखेज्जगुणा । नेरइयाणं जंते ! किंसारंजा सपरिग्गहा उदाहु अणारंजा अपरिग्ग

॥ भाषा ॥

री अवगाहनानो भगवाय जेतला द्रव्यअवगाहना लिये पूर्वे हता तेतला द्रव्य घणाकाल रहे अवगाहना निवर्ती पणि द्रव्य निवर्त्ते नही तेहथी। भाव ठाणाउए असंखेज्जगुणे। भावस्थानायु असख्यातगुणो द्रव्यनो भंगयाय तेहना वर्णादि पर्याय घणांकाल रहे तेमाटे ए गाथायें सग्रह करेछे—खेत्तोगा हणदव्व भावठाणाउयचअप्पवहु । खेत्तसव्वत्थोवे सेसाठाणाअसंखगुणा ॥ १ ॥ क्षेत्र १ अवगाहना २ द्रव्य ३ भावस्थानायु एहनो अल्प बहुत्व सर्वथी थोडो क्षेत्र स्थानायु शेष तीन अवगाहना १ द्रव्य २ भाव ३ ए एक २ थी असख्यातगुणा जाणवा अनतरे आउखो कह्यो ॥ हिवे आउखावतने आरम्भादि क री चउवीस दडके प्ररूपता कहेछे—नेरइयाणभतेकिसारभासपरिग्गहा। नारकी हेभगवन् ! स्यु आरम्भ सहित परिग्रह सहितछे। उदाहुअणारभाअप

संतएवे त्युच्यते-संघायजेयउंवा दव्वोवरमेपुणाइंसखित्ते । नियमातद्दव्वोगा हणाइनासोनसदेहो ॥ ७ ॥ सङ्घातेन पुद्गलानां भेदेनवा, तेषामेव य सङ्क्षिप्त' स्कन्धो भवति तत्रसति सङ्क्षिप्त' स्तोकावगाहन' स्कन्धो नतु प्राक्तनावगाहन स्तत्र यो द्रव्योपरमो द्रव्यान्यथात्व तत्रसति नच सङ्घातेन न सङ्क्षिप्त' स्कन्धो भवति तत्रसति सूक्ष्मतरत्वेनापि तत्परिणते श्रवणात् नियमा तेषां द्रव्याणा अवगाहनाया नाशो भवति' कस्मादेव मित्यत उच्यते-उगाहद्धादव्वे सकोयविकोयउं यअवबद्धा । नउदव्वसंकोयण विकोयमेत्तमिसबद्धं ॥ ८ ॥ अवगाहनाद्धाद्रव्ये वबद्धा नियतत्वेन सम्बद्धा कथ सङ्कोचा द्विकोचाच्च सङ्कोचादि परिह त्येत्यर्थ· अवगाहनाहि द्रव्ये सङ्कोचविकोचयो रभावे सति भवति तत्सद्भावेच नभवती त्येवं द्रव्ये ऽवगाहना नियतत्वेन सम्बद्धे त्युच्यते, द्रुमत्वे खदिरत्वमिवेति, उक्तविपर्ययमाह नपुन द्रव्य सङ्कोचविकोचमात्रे सत्य प्यवगाहनाया नियतत्वेना सम्बद्धं सङ्कोचविकोचाभ्या मवगाहना निवृत्ता वपि द्रव्यं न निवर्तत इत्यवगाहनायां तन्नियतत्वेना सम्बद्ध मित्युच्यते खदिरत्वे द्रुमत्ववदिति, अथ निगमनं-जम्हातत्यन्नत्यव दव्वउगाहणाइत

चेव । दव्वद्धासंखगुणा तम्हाउगाहणद्धाउ ॥ ९ ॥ अथ भावायुर्बहुत्वं भाव्यते-सघायभेयउंवा दव्वोवरमेविपज्जवासंति । तकसिणगुणाविरामे पुणाइ दव्वनउगाहो ॥ १० ॥ सङ्घातादिना द्रव्योपरमेपि पर्यवा· सन्ति यथा घृष्टपुटे शुक्लादिगुणा सकलगुणोपरमेतु न तद्द्रव्य नचा वगाहना नुवर्त्तते, अनेन पर्यवाणा चिर स्थान द्रव्यस्य त्वचिर मित्युक्त मथकस्मादेव मित्युच्यते-सघायभेयवघा गुणवत्तिणीखिच्चमेवदव्वद्धा । नउगुणकालोसघा यभे यमत्तद्दुसबद्धो ॥ ११ ॥ सङ्घातभेदलक्षणाभ्या धर्माभ्यां यो बन्ध सम्बन्ध स्तदनुवर्त्तिनी तदनुसारिणी सङ्घाताद्यभावएव द्रव्याद्धाया सद्भावा त्तद्भावे चाभावा त्पुन गुणकालः सङ्घातभेदमात्रकालसम्बद्ध· सङ्घातादिभावेपि गुणाना मनुवर्त्तनादिति, अथ निगमन-जम्हातत्यन्नत्यव दव्वखेत्तावगाह णासुंच । तच्चेवपज्जवास तिउतदद्धाअसखगुणा ॥ १२ ॥ आहअणेगंतोय दव्वोवरमेगुणाणवत्याण गुणविप्परिणाममिय दव्वविसेसोयणगतो ॥ १३ ॥ द्रव्यविशेषो द्रव्यपरिणाम -विप्परिणयमिदव्वे कम्मिंगुणपरिणईभवेजुगव । कंमिविपुलतदवत्थे विहोइगुणविप्परीणामो ॥ १४ ॥ भण्णइसघक्खिपुण

॥ टीका ॥ गुणबाहुल्लानसवगुणानासो । दव्वस्सतदन्नत्ते विवहुतराणंगुणाणाठिइत्ति ॥ १५ ॥ अनन्तर मायु रुक्त मया युमत आरम्भादिना चतुर्विंशतिदण्डकेन प्ररूपयन्नाह ॥ नेरइएत्यादि ॥ अकम्मत्तोवगरणत्ति ॥ इह भाजनानिमृन्मयभाजनानि मात्राणि कांस्यभाजनानि उपकरणानि लोहीकटाहकडुच्छुका

॥ मूल ॥ हा ? गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा नोअणारंभा अपरिग्गहा सेकेणठेणं जाव अपरिग्गहा ? गोयमा ! नेरइयाण पुढविकाय समारंभंति, जाव तसकायं समारंभंति, सरीरापरिग्गहिया भवंति, सचित्ता

॥ भाषा ॥ रिग्गहा । अथवा आरम्भ रहितछे परिग्रह रहितछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइयासारंभा सपरिग्गहा । हे गोतम ! नारकी आरम्भसहित परिग्रह सहितछे पणि । णोअणारंभाअपरिग्गहा । नही आरम्भ रहित परिग्रह रहित । सेकेणठेणं जाव अपरिग्गहा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कह्यु यावत् परिग्रह रहित नही इतिप्रश्नउत्तर । गोयमा णेरइयाण पुढविकाय समारभंति जावतसकायसमारभंति । हे गोतम । नारकी पृथिवी कायप्रते पीडा उपजावे यावत् त्रसकाय प्रते पीडाउपजावे । सरीरा परिग्गहियाभवंति । शरीर परिग्रहवंतछे एतलामाटेज कामे परिग्रहवंतछे जिहां शरीर । कम्मापरिग्गहिया भवंति । तिहां कर्म एतलामाटे कर्म्म निश्चयनथिदेही । सचित्ताचित्तमीसयाइ दव्वाइं परिग्गहियाइंभवंति । सचित्तद्रव्य १ अचित्तद्रव्य २ मिश्रद्रव्य ३ एणेंकरी परिग्रह सहित हुवे । सेतेणठेणं तचेव । ते तेणें अर्थे इत्यादि तिमहीज कहवो । असुरकुमाराणंभते किंसारंभापृच्छा । असुरकुमार हेभगवन् । स्यूं आरंभ सहित इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा । हे गोतम । असुरकुमार आरंभ सहित परिग्रह सहितछे । णोअणारंभा अपरिग्गहा । आरम्भ रहित परिग्रह रहित नही । सेकेणठेणं । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । कह्यु । गोयमा असुरकुमाराण पुढविकाइय समारभंति । हे गोतम । असुरकुमार पृथिवीकायनो समारंभ करे पीडा उपजावे । जावतसकाय समारभंति । यावत् त्रसकायने पीडा उपजावे । सरीरापरिग्गहिया भवंति । शरीर परिग्रहवंत हुवे । कम्मापरिग्गहा भवंति । एतला माटेज कर्म परिग्रहवंत हुवे जिहां शरीर तिहां कर्म हुवेज । भवणापरिग्गहिया भवंति । भवन आवासना परिग्रहवंत हुवे । देवा देवीओ । देव देवी । मणूसा मणूसीओ । मनुष्य मनुष्यणी स्त्री । तिरिक्खजोणिया । तिर्य

दीनि एकेन्द्रियाणां परिग्रहोप्रत्याख्याता इत्यर्थः ॥ बाहिरियाभंडमत्तोवगरणत्ति ॥ उपकारसाधर्म्यात् द्वीन्द्रियाणां शरीररक्षार्थं तत्कृतगृहकादी न्य ॥ टीका ॥

चित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति, सेतेण तंचेव । असुरकुमाराणं भंते ! किंसारंभापुच्छा, गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा नोअणारंभा अपरिग्गहा सेकेणठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं पुढविकायं समारंभंति जाव तसकाय समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणापरिग्गहिया भवंति । देवा देवीओ मणूसा मणूसीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहियाओ भवंति, आसणसयणभंडमत्तोवगरणापरिग्गहिया भवंति, सचित्ता चित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति, सेतेणठेणं तहेव एव जाव थणियकुमारा एगिंदिया जहा नेरइया । बेइंदियाणं भंते ! किंसारंभा सपरिग्गहा तंचेव जाव सरीरापरिग्गहिया भवंति, बाहिरियाभंडमत्तोवगरणापरिग्गहिया भवंति, सचि ॥ मूल ॥

चयोनिक । तिरिक्खजोणियोओ । तिर्यं चयोनिक स्त्री । परिग्गहिया भवति । एवे परिग्रहवंत हुवे । आसणसयणभंडमत्तोवगरणापरिग्गहियाभवति । आसन बेसिवानो शयन शय्या भड माटीना भाजन मात्र ते कांसाना भाजन उपगरण लोहना कडाहादिक ते परिग्रहवंत हुवे । सचित्ताचित्तमीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवंति । सचित्तद्रव्य अचित्तद्रव्य मिश्रद्रव्य तिणेकरी परिग्रहवंत हुवे । सेतेणट्ठेणतहेव । ते तेणे अर्थे हे गौतम । असुरकुमार सारंभ सपरिग्रह कह्या । एवजावथणियकुमारा । इम यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त दश भवनपती कहवा । एगिंदिया जहा णेरइया । एकेन्द्री जिम नारकी कह्या तिमज कहवा । बेइंदियाणभंते किंसारंभा सपरिग्गहा तचेव । बे इन्द्री हेभगवन् । स्यूं आरम्भसहित परिग्रह सहित हुवे तिमज कहवा । जावसरीरपरिग्गहियाभवति । यावत् शरीर परिग्रहवंत तिवारे कर्म परिग्रहवंत हुवे । बाहरियाभडमत्तोवगरणा परिग्गहियाभवति । बाह्य उपगरण जिण भडमत्तोवगरणने विषे घरकोथी ते आरम्भी सपरिग्रही जाणवा । सचित्ता चित्तजावभवंति । सचित्त अचित्त मिश्रद्रव्य परिग्रहवंत हुवे ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वसेयानि ॥ टंकत्ति ॥ छिन्नटंका ॥ कूडत्ति ॥ कूटानि शिखराणि हस्त्यादिबन्धनस्थानानिवा ॥ सेलत्ति ॥ मुण्डपर्वता ॥ सिहरत्ति ॥ शिखरिण शिखरवन्तो गिरय॰ ॥ पब्भारत्ति ॥ ईषदवनता गिरिदेशा ॥ लेणत्ति ॥ उत्कीर्णपर्वतगृह ॥ उज्झरत्ति ॥ अवझर ॥ पर्वततटा दुदकस्याध पतन ॥ निज्झरत्ति ॥ निर्झर उदकस्यश्रवण ॥ चिल्ललत्ति ॥ चिक्खल्लमिश्रोदको जलस्थानविशेष ॥ पल्ललत्ति ॥ प्रह्लादनशील सएव ॥ चिप्पिणत्ति ॥ केदारवान् तटवान्वा, देश केदारएवेत्यन्ये ॥ अगडत्ति ॥ कूप ॥ वावित्ति ॥ वापी चतुरस्रो जलाशयविशेष ॥ पुक्खरिणित्ति ॥ पुष्करिणी वृत्त सएव पुष्करवान्वा ॥ दीहियत्ति ॥ सारण्यो ॥ गुंजालियत्ति ॥ वक्रसारण्य ॥ सरत्ति ॥ सरासि स्वय सम्भूतजलाशयविशेषा॰ ॥ सरपंतियाउत्ति ॥ सर पक्त

॥ मूल ॥

हाचित्त जाव भवंति, एव जाव चउरिंदिया। पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते! तंचेव जाव कम्मा परिग्गहिया भवंति, टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति। जलथलविलगुहलेणा परिग्गहिया भवंति, उज्झरनिज्झरचिल्ललपल्ललचिप्पिणापरिग्गहिया भवंति, अगडतडागदहनदीउवावीपुक्करिणीदीहिया गुंजालियासरासरपंतियाउ सरसरपंतियाउ विलपंतियाउ परिग्गहियाउ भवंति। आरामुज्जाणकाणणा

॥ भाषा ॥

एव जाव चउरिंदिया। इम यावत् चउरिंद्री ताई कहवा। पचिंदिय तिरिक्खजोणियाणभते तचेव जाव कम्मापरिग्गहिया भवति टका। पचेंद्री तिर्यंच योनिक हे भगवन्। स्यु सारम्भाछे इत्यादि प्रश्न हे गौतम। तिमज यावत् शरीर तथा कम परिग्रहवतछे छेदा पर्वत। कूडासेलासिहरीपब्भारा परिग्गहियाभवति। कूट शिखर इत्यादि बधनस्थान मुडा पर्वत शिखरवंत पर्वत काइक नम्या पर्वतना देश परिग्रहवन्त हुवे। जल थल विल गुह लेणा परिग्गहिया भवति। पाणी थल विल गुफा लेण उकेरया पर्वतमाहे घर ते परिग्रहवन्त हुवे। उज्झर निज्झर चिल्लल पल्लल चिप्पिणा परिग्गहिया भवति। पर्वत शिखर पाणी झरे जिहा पाणीझरे ते स्थान चीखले मिश्रपाणी स्थान प्रल्हादन शील तेहीज क्यारो आकारे स्थानक तिर्यं परिग्रहवन्त हुवे। अगड तडाग द्रह नदीओ वावी पुक्खरिणी दीहिया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरासरपतियाओ विलपतियाओ परिग्गहियाओभवति। कूया

॥ टीका ॥

सरसरपंतियाउत्ति । यासु सर पंक्तिषु एकस्मा त्सरसो न्यस्मि न्नन्यस्मा दन्यत्रैव सञ्चारकपाटकेनो दकं सञ्चरति ता सर·सर पंक्तय·' विल य· ॥ आरामत्ति ॥ आरामंति येषु माधवीलतादिषु दपत्यादीनि ते आरामा ॥ उज्जाणत्ति ॥ उद्यानानि पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलानि उ पक्तय प्रतीता ॥ काणणत्ति ॥ काननानि ॥ सामान्यवृक्षसंयुक्तानि नगरासन्नानि । वणत्ति ॥ वनानि नगरविप्रकृष्टानि ॥ वणसंडत्ति ॥ त्सवादौ बहुजनभोग्यानि ॥ वणराइत्ति ॥ वनराजयो वृक्षपंक्तय ॥ खाइयत्ति ॥ खातिका उपरिविस्तीर्णा घ सङ्कटखातरूपा· ॥ परिह वनखण्डा एकजातीयवृक्षसमूहात्मकाः ॥ अट्टालगत्ति ॥ प्राकारोपरि आश्रयविशेषा ॥ चरियत्ति ॥ चरिका गृहप्राकारान्तरे हस्त्यादिप्रचारमा त्ति ॥ परिखा अघउपरिच समखातरूपा· ॥ गोउरत्ति ॥ गोपुरं नगरप्रतोली ॥ पासायत्ति ॥ प्रासादा देवाना राज्ञांच भवनानि अथवा; उत्सेधबहुलाः र्ग· ॥ दारत्ति ॥ द्वार ॥ खडक्किका ॥ सरणत्ति ॥ शरणानि तृणमयावसरिकादीनि ॥ आवणत्ति ॥ आपणा हट्टाः चतुर्मु प्रासादा· ॥ घरत्ति ॥ गृहाणि सामान्यजनाना सामान्यानिवा ॥

॥ मूल ॥

वणा वणखंडावणराईउ परिग्गहियाउ भवंति। देवउलसभपवथूभखाइयपरिखाउ परिग्गहियाउ भवंति। सिं पागारट्टालगचरियदारगोपुरपरिग्गहिया भवंति । पासायघरसरणलेणआवणपरिग्गहिया भवंति ।

॥ भाषा ॥

तालाव जिहां थभे अथवा भरे नदी वावी चउखूणी वाटली तथा कमल सहित दीर्घजल पाणी आवर्त्त वाको पाणी आवे पाणीनो आपेही उत्पत्ति सरनीपगति माहोमाहि पाणीआवे भरानो पगति ते परिगृहवन्त हुवे। आरामुज्जाण काणणा वणा वणखंडा वणराईओ परिग्गहिया भवति। जिहां स्त्री पुरुष रमे पुष्पादि समूहवन्त·नगर आसन्न वृक्षवन्त वन ते नगरथी वेगला वनखंड ते एक जातीय वृक्ष अनेक जातिना वृक्ष ते परिगृहवन्त हुवे। देवल सभ पव थूभ खाइय परिखाओ परिगहियाओ भवति। देवस्थान सभा पर्व थूभ खाई हेठेनान्हो ऊपर चौडो हेठे ऊपर सरोखो तिर्वे परि गृहवन्त हवे। पागार ट्टालग चरियदार गोपुरा परिगहिया भवति। गढ कोट कोट ऊपर आश्रय विशेष कोट घर विचाले हस्त्यादिसचरण मारग खिडकी दरवाजा नगरनो पौलि तिर्वे परिगृहवन्त हुवे। पासाद घर सरण लेण आवण परिग्गहिया भवति। प्रासाद देवस्थान तथा राजमन्दिर घर

॥ टीका ॥ ख चतुर्मुखदेवकुलकादि ॥ महापथइति राजमार्गः ॥ सगडेत्यादिप्राग्वत् ॥ लोहित्ति ॥ लोही मण्डकादिपचनिका ॥ लोहकडाहित्ति ॥ कवेल्ली ॥ कडुच्छुर्यास ॥ परिवेषणाद्यर्थो भाजनविशेषः ॥ भवणत्ति ॥ भवनपतिनिवासाः, एतेच नारकादय श्छद्मस्थत्वेन हेतुव्यवहारिकत्वा द्धेतव उच्यन्तइति तद्भेदा न्निरूपय न्नाह ॥ पंचहेऊइत्यादि ॥ इह हेतुषु वर्तमानः पुरुषो हेतुरेव तदुपयोगानन्यत्वा त्पञ्चविधत्व चास्य क्रियाभेदा दित्यत आह ॥ हे

॥ मूल ॥ घाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहापरिग्गहिया भवंति । सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति। लोहीलोहकडाहकडुच्छुया परिग्गहिया भवंति। भवणा परिग्गहिया भवंति देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ आसणसयणखंभभंडसचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । सेतेणट्ठेण जहा तिरिक्खजोणिया. तहा मणुस्सावि भाणियव्वा वाणमंतर जोइसियवेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा । पच हेऊ पण्णत्ता तंजहा—हेउं जाणइ हेउं पासइ

॥ भाषा ॥ सामान्यजनना सरण तृणमय घर उपाश्रय हाट तिणें परिग्रहवन्त हुवे। सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महा पहपहा परिग्गहिया भवति । शृङ्गाटनो स्थापना त्रिकस्थापना चउक्कस्थापना चत्वरस्थापना चतुर्मुख देवकुलकादि राजमार्ग सामान्यमार्ग तिणें परिग्रहवन्त हुवे। सगड रह जाण जुग्ग गिल्लि थिल्लि सीय सदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति। गाडला रथ यान झपान अगाडो पलाण शिबिका पालखी तिणें परिग्रहवन्त हुवे। लोही लोहकडाह कडुच्छुया परिग्गहिया भवंति। मांडा पचावणनी तवी कडाहा कवेली कुडछी भोजन परूसवानी तिणें परिग्रहवन्त हुवे। भवणापरिग्गहियाभवंति। भवन परिग्रहवन्त हुवे। देवा देवीओ। देव देवी। मणूसा मणूसीओ। मनुष्य मनुष्यणी। तिरिक्खजोणिया। तिर्यचयोनिक। तिरिक्खजोणिणीओ। तिर्यंचयोनिकनी स्त्री। आसण सयण खंभभंड। आसन शयन खंभ भंडा। सचित्ता चित्तमीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवति। सचित्त चित्त मिश्रद्रव्य करी परिग्रहवन्त ते हुवे। सेतेणट्ठेणं। ते तेणें अर्थ इमकह्यु तिर्यंच सारखा। जहातिरिक्खजोणिया तहामणूसाविभाणियव्वा। जिम

सम्यगवगच्छति सम्यग्दृष्टित्वा दयं पञ्चविधोपि सम्यग्दृष्टिर्मन्तव्यो मिथ्या
उजाणइत्ति ॥ हेतु साध्याविनाभूत साध्यनिश्चयार्थं जानाति विशेषत· सम्यक्
दृष्टि· सूत्रद्वया त्परतो वक्ष्यमाणत्वा दित्येक, एव हेतु पश्यति सामान्यतएवा वबोधादिति द्वितीय·, एवं हेतु बुध्यते सम्यक्श्रद्धत्ते वोधे सम्यक्
श्रद्धानपर्यायत्वादिति तृतीय , तथा हेतु अभिसमागच्छति साध्यसिद्धौव्यापारणात सम्यक्प्राप्नोती तिचतुर्थ , तथा॥ हेउअउमत्थेत्यादि॥ हेतु रच्य
वसानादि मरणकारणं तद्योगा न्मरणमपि हेतु रत स्त हेतुमदित्यर्थ· छद्मस्थमरण नकेवलिमरण तस्या ऽहेतुकत्वात्, नाप्यऽज्ञानमरण मेतस्य स
म्यग्ज्ञानित्वात्, अज्ञानमरणस्यच वक्ष्यमाणत्वा न्म्रियते करोती तिपञ्चम · प्रकारान्तरेण हेतू नेवाह ॥ पचेत्यादि ॥ हेतुना अनुमानोत्थापकेन
जानाति अनुमेयं सम्यगवगच्छति सम्यग्दृष्टित्वा दे‌क, एव पश्यती तिद्वितीय·, एव वुध्यते श्रद्धत्ते इति तृतीय , एव मभिसमागच्छति प्राप्नोती ति
चतुर्थ , तथा केवलित्वाद्धे तुना ऽध्यवसानादिना छद्मस्थमरण म्रियत इतिपचम · अथ मिथ्यादृष्टि माश्रित्य हेतूनाह ॥ पचेत्यादि ॥ पञ्चक्रि

हेउणा जाणइ जाव हेउ बुज्झइ हेउं अभिसमागच्छइ हेउ छउमत्थमरणं मरइ। पच हेऊ पसत्ता, तंजहा—हेउं नजाणइ जाव हेउं अन्नाणमरण मरइ, पंच हेउणा छउमत्थमरणं मरइ। पच हेऊ पसत्ता, तंजहा—हेउणा जाणइ जाव

जिम भवनपती कह्या तिम कहवा, ए नारकादिक छद्मस्थपणेकरी हेतु व्यवहारिक पणाथको हेतुकहिये ते हेतुना भेद कहेछे—पचहेउ पसत्ता तज
तिर्यचयोनिक कह्या तिम मनुष्य पणि जाणवा। वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया। वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक। जहाभवणवासी तहा येयव्वा।
हा। पञ्चहेतु कह्या इहा हेतुने विषे वर्त्ते ते पुरुष पणिहेतु कहीये ते कहेछे—हेउ जाणइ हेउ पासइ हेउ बुज्झइ हेउ अभिसमागच्छइ हेउ छउमत्थ
मरण मरइ। हेतुसाध्य अविनाभूतसाध्य निश्चयार्थ प्रतें जाणें विशेषथी सम्यगजाणें सम्यग्दृष्टी पणाथको ए पञ्चेइ प्रकार सम्यग्दृष्टीने जाणवा हेतुप्रतें
सामान्यपणें देखे हेतुप्रतें सम्यक् प्रकारे सरदहे हेतुने विषे प्रवर्त्तवें करी सम्यक् पामे अध्यवसानादि मरण कारणे मरे छद्मस्थ मरे पणि केवली मरे नही
केवलीनो मरण अहेतुकछे वली प्रकारान्तरे हेतु कहेछे—पचहेउ पसत्ता तंजहा हेउणा जाणइ जावहेउणाछउमत्थमरणमरइ। पञ्चहेत कह्या ते

॥ टीका ॥

याभेदात् हेतवो हेतुव्यवहारित्वात् तत्र हेतुलिंगं नजानाति नत्र कुत्सार्थत्वा दसम्यगवैति मिथ्यादृष्टित्वात्' एव नपश्यति' एव नवुध्यते, एव ना जिसमागच्छति, तथा हेतु मध्यवसानादिहेतुयुक्तं अज्ञानमरणं म्रियते करोति मिथ्यादृष्टित्वेना सम्यग्ज्ञानत्वा दिति । ५ । हेतूनेव प्रकारान्तरे गाह ॥ पचेत्यादि ॥ हेतुना लिंगेन नजानाति असम्यगवगच्छति एव मन्येपि चत्वार अयो क्तविपक्षभूता नहेतूनाह ॥ पंचेत्यादि ॥ प्रत्यक्षज्ञानि त्वादिना हेतुव्यवहारित्वा दहेतव केवलिन स्तेच पञ्च क्रियाभेदा तद्यथा ॥ अहेउजाणइत्ति ॥ अहेतु नहेतुभावेन सर्वज्ञत्वेना नुमानानपेक्षत्वा धूमादिक जानाति स्वस्या नुमानोत्थापकतयेत्यर्थं , अतो सा वहेतुरेव एवं पश्यतीत्यादि ३ तथा ॥ अहेउ केवलिमरणमरइत्ति ॥ अहेतु निर्हे

॥ मूल ॥

हेऊ पण्णत्ता , तंजहा—हेउणा नजाणइ जाव हेउणा अण्णाणमरणंमरइ । पंच अहेऊ पण्णत्ता , तंजहा—अ हेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरइ । पंच अहेऊ पण्णत्ता , तंजहा—अहेउणा जाणइ जाव अहेउ

॥ भाषा ॥

कहेछे—अनुमानादि हेतुकरी जाणें १ अनुमानादि हेतुकरी देखे २ इम सरदहे ३ इम पामे ४ अकेवली पणायकी अध्यवसानादि करी छद्मस्थ मरणे मरे ५ ए ए आलावा सम्यग्दृष्टी ऊपरिछे ॥ हिवे मिथ्यादृष्टी आश्रयी कहेछे—पचहेऊ पण्णत्ता तंजहा हेउणजाणइ । पचहेतु कह्या ते कहेछे—जेहवा सम्यग्दृष्टी हेतु चिन्ह जाणे तेहवा मिथ्यात्वी नजाणे मिथ्यादृष्टी थकी । जावहेउ अण्णाणमरणमरइ । यावत् इम न देखे २ सरदहे नही ३ पामेनही ४ अध्यवसानादि हेतु युक्त अज्ञान मरणे मरे प्रकारांतरथी वली । पचहेउ पण्णत्ता तंजहा । पचहेतु कह्या ते कहेछे—हेउणाणजाणइ जाव हेउणाअण्णाण मरणमरइ । चिन्ह तिणेकरी न जाणे मिथ्यादृष्टी पणायको इम न देखे २ न सरदहे ३ न पामे ४ यावत् अज्ञान मरणे मरे ५ ए बे आलावा मिथ्यादृष्टी ऊपर जाणवा ॥ हिवे हेतुनो विपक्षभूत अहेतु कहेछे—पंच अहेऊ पण्णत्ता तंजहा अहेउ जाणइ जाव अहेउ केवलि मरणमरइ । पंच अहेतु कह्या ते कहेछे—हेतु कारण विना जाणे तिणि ए बे आलावा केवली ऊपर जाणवा इम कारण परो देखे २ सरदहे ३ पामे ४ अध्यवसानादि हेतु विना मरे के वलीने उपक्रम मरण नथी ५ । पंच अहेऊ पण्णत्ता तंजहा । वली प्रकारांतरे पंच अहेतु कह्या ते कहेछे—अहेउणा जाणइ जाव अहेउणा केवलि मर

तुक मनुपक्रमत्वा त्केवलिमरणं म्रियते करोती त्यहेतु रसौपक्रममइति, प्रकारान्तरेणा हेतूनेवाह ॥ पंचेत्यादि ॥ तथैव नवरं अहेतुना हेत्वभावेन केवलित्वा ज्जानाति योसा वहेतुरेवे त्येव पश्यती त्यादयोपि ३ ॥ अहेउणा केवलिमरणं मरइत्ति ॥ अहेतुनो पक्रमाभावेन केवलिमरणं म्रियते केवलिनो निर्हेतुकस्यैव तस्य भावादिति, अहेतूनेव प्रकारान्तरेणाह ॥ पंचअहेऊइत्यादि ॥ अहेतव' अहेतुव्यवहारिणा स्तेच पञ्च ज्ञानादिभेदा त्त द्यथा ॥ अहेउनजाणइत्ति ॥ अहेतु नहेतुभावेन स्वस्या नुमानानुत्थापकतयेत्यर्थ , नजानाति नसर्वथा वगच्छति कथञ्चिदेवा वगच्छतीत्यर्थो, नञो देशनिषेधार्थत्वात्, ज्ञातु श्चावध्यादिज्ञानत्वा त्कथचित् ज्ञान मुक्त सर्वथाज्ञानतु केवलिनएव स्यादिति, एव मन्यान्यपि ३ तथा ॥ अहेउछउम त्थमरणमरइत्ति ॥ अहेतु अध्यवसानादे रुपक्रमकारणस्या भावात् छद्मस्थमरण मकेवलित्वा न्नत्वज्ञानमरण मवध्यादिज्ञानत्वेन ज्ञानित्वा त्तस्येति, अहेतूनेवा न्यथाह ॥ पंचेत्यादि ॥ तथैव नवर अहेतुना हेत्वभावेन नजानाति कथञ्चिदेवा ऽध्यवस्यतीति गमनिकामात्रमेवेद मष्टाना मप्येषां सू

णा केवलिमरणं मरइ । पंच अहेऊ पन्नत्ता, तंजहा—अहेउं नजाणइ जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरइ । पंच अहेऊ पन्नत्ता, तंजहा—अहेउणा नजाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरण मरइ सेवं भंते भंतेत्ति ॥

ण मरइ । चिन्ह तेहने अभावे करी जाणे केवलिपणा थकी १ इमदेखे २ सरदहै ३ पामे विना हेतुकरी केवली मरणे मरे ए बे आलावा केवली ऊपर कह्या । पंच अहेऊ पन्नत्ता तंजहा । पंचअहेतु कह्या ते ज्ञानादिकना भेदथकी ते कहेछे—अहेउं णजाणइ जाव अहेउ छउमत्थ मरण मरइ । हेतु वि ना सर्वप्रकारे न जाणे अवध्यादि ज्ञानवन्त छे तेमाटे कथंचित् प्रकारे जाणे सर्वथा जाणपणो केवलीनेछे तेमाटे इम देखे २ सरदहै ३ पामे ४ तथा अहेतु अध्यवसानादिक कारणने अभावे छद्मस्थमरणे मरे वली प्रकारांतरे । पंचअहेऊ पन्नत्ता तंजहा अहेउणाणजाणइ जाव अहेउ छउमत्थमरण मर इ । पंच अहेतु कह्या ते कहेछे—अहेतु करी सर्वथा प्रकारे न जाणे कथंचित् प्रकारे जाणे १ इमदेखे २ सरदहै ३ पामे ४ छद्मस्थ मरणे मरे ५ ए दोय आलावा अवध्यादिक ज्ञानवन्तने केवल रहितने कहवा ए आठसूत्र अक्षरार्थे करी लिख्या पणि एहनो भावार्थ बहुश्रुतवन्त जाणे । सेवंभंते २ त्ति । त

॥ टीका ॥

आगा आवार्थं तुवहुश्रुता विदन्तीति ॥ पंचमशतेसप्तम ॥ ७ ॥ सप्तम उद्देशके पुद्गला स्थितितो निरूपिता अष्टमेतु तएव प्रदे शतो निरूप्यन्त इत्येव सम्बन्धस्या स्येद प्रस्तावना सूत्र ॥ तेणमित्यादि ॥ दव्वादेसेणति ॥ द्रव्यप्रकारेण द्रव्यत इत्यर्थः परमाणुत्वाद्यागित्येतियाव

॥ मूल ॥

पंचम सयस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ७ ॥ तेणकालेणं तेणंसमएण जाव परिसापडि गया तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवन्त महावीरस्स अंतेवासी णारयपुत्ते णामं अणगारे पगइभ द्दए जाव विहरइ, तेण कालेणं तेण समएणं समणस्स जाव अंतेवासी नियंठिपुत्तेणामं अणगारे पगइभद्दए जाव विहइ, तएणं से नियंठीपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइ त्ता नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सव्वेपोग्गलति अजो किं सअद्धा समज्झा सपएसा उदाहु अणद्धा

॥ भाषा ॥

इति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे अन्यथा नही । पंचम सयस्स सत्तमओ उद्देसो सम्मत्तो । ए पांचमा शतकनो सातमो उद्देशो पूरोथयो ॥ ७ सातमे उद्देशे पुद्गल स्थितिथकी कह्या आठमे तो तहीज कहीयेछे—इति सबन्ध । तेणकालेण तेणसमएण जाव परिसापडिगया । ते कालने विषे ते सम यने विषे स्वामी धर्म देशना दीधाथका यावत् परिषदा स्वस्थाने गई । तेण कालेण तेण समएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । समणस्सभगवओमहा वीरस्स अंतेवासी । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीना शिष्य । णारयपुत्तेणाम अणगारे । नारदपुत्र इसेनामे साधु । पगइभद्दए । स्वभावें सरल । जाव विणीए । यावत् विनीत । तेणकालेण । ते कालने विषे । तेण समएणं । ते समयने विषे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर स्वामी नो । जाव अंतेवासी । यावत् शिष्य । णियंठीपुत्तेणामअणगारे । निग्रन्थी पुत्र इसे नामे साधु । पगइ भद्दए जावविणीए । स्वभावें सरल यावत् विनीत । तएणसेणियंठी पुत्ते अणगारे । तिवारे ते निग्रन्थीपुत्रनामे साधु । जेणामेवणारयपुत्ते अणगारे । जिहां नारद पुत्र नामा साधुछे । तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । णारयपुत्त अणगार । नारद पुत्र नामा साधुप्रतें । एव वयासी । इम कहतो हुयो । सव्वपोग्गला । सगला पुद्गल । ते

॥ मूल ॥

अमज्झा अपएसा, अज्जोत्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी, सव्वेपोग्गला मे अज्जो सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा, तएणं से नियंठीपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवंवयासी—जइणं ते अज्जो सव्वेपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा किंदव्वादेसेणं अज्जो सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा खेत्तादेसेणं अज्जो सव्वपोग्गला सअड्ढा तहेवचेव कालादेसेणं तचेव भावादेसेण अज्जो तंचेव, तएण से नारयपुत्ते अणगारे नियठीपुत्तं अणगारं एवंवयासी—दव्वादेसेणवि मेअज्जो सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा खेत्ताएसेणवि कालाएसेणवि भावाएसेणवि, तएण से नियंठीपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अण

॥ भाषा ॥

अज्जो कि सअड्ढा समज्झा सपएसा उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपदेसा अज्जोत्ति। तुम्हारे अहो। आर्यो स्यूं? अर्द्ध सहित छे मध्य सहित छे प्रदेश सहित छे अहो। आर्य इसो कह्यो। णारयपुत्ते अणगारे। नारदपुत्र नामे साधुने। णियंठी पुत्त अणगार। निर्ग्रन्थो पुत्र साधुप्रतें। एववयासी। इम कहै। सव्वपोग्गलामेअज्जो। सगला पुद्गल अम्हारे अहो। आर्यो। सअड्ढा समज्झा सपदेसा। अर्द्ध सहित छे मध्य सहित छे प्रदेश सहित छे। णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा। अर्द्ध रहित नही मध्य रहित प्रदेश रहित। तएण से णियंठी पुत्ते अणगारे। तिवारे ते निर्ग्रथी पुत्र साधु। णारयपुत्त अणगार। नारद पुत्र साधुप्रतें। एव वयासी। इम कहै। जइण ते अज्जो। जो ण वाक्यालकारे, तुम्हारे अहो। आर्यो। सव्वपोग्गला। सगला पुद्गल। सअड्ढा समज्झा सपदेसा। अर्द्ध सहित छे मध्य सहित छे प्रदेश सहित छे। णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा। नही अर्द्ध रहित मध्य रहित प्रदेश रहित। किंदव्वादेसेण अज्जो। तो स्यू द्रव्यथी परमाणू आदि आश्रयीने। सव्वपोग्गला। सगला पुद्गल। सअड्ढा समज्झा सपदेसा। अर्द्ध सहित मध्यसहित प्रदेश सहित णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा। नही अर्द्ध रहित मध्य रहित प्रदेश रहित तथा। खेत्ता देसेण अज्जो। एक प्रदेशावगाढी रह्या पुद्गल ते आश्रयीने

॥ टीका ॥

त् ॥ खेत्तादेसेणंति ॥ एकप्रदेशावगाढत्वादिनेत्यर्थं ॥ कालादेसेणंति ॥ एकादिसमयस्थितिकत्वेन ॥ भावादेसेणंति ॥ एकगुणकालकत्वादिना ॥ सव्वपोग्गलासपएसावीत्यादि ॥ इह च परस्परविपर्ययसार्द्धादिपुद्गलविचारे प्रक्रान्ते सप्रदेशा अप्रदेशाश्च तेप्ररूपिता स्ततेषा प्ररूपणे सार्द्धत्वादि प्ररू

॥ मूल ॥

गार एवंवयासी–जइणं अज्जो दव्वाएसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अप एसा, एवं ते परमाणुपोग्गलेवि सअड्ढे समज्झे सपएसे णोअणड्ढे अमज्झे अपएसे । जइण अज्जो खेत्ताए सेणवि सव्वपोग्गला सअड्ढा ३ जाव एवंते एगपएसोगाढेवि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे जइणं अज्जो

॥ भाषा ॥

हे आर्य । सव्वपोग्गला । सगला पुद्गल । सअड्ढा समज्झा सपदेसा । अर्द्ध सहित छे मध्य सहित छे प्रदेश सहित छे । णोअणड्ढा अमज्झा अपदेसा । नथी अर्द्ध रहित मध्य रहित प्रदेश रहित तथा । कालादेसेण अज्जो । एकादि समय स्थितिना पुद्गल आश्रयीने हे । आर्य । सव्वेपोग्गला । सगला पुद्गल । सअड्ढा समज्झा सपदेसा तचेव । अर्द्ध सहित मध्य सहित प्रदेश सहित तिमज कहवा । भावादेसेण अज्जो तचेव । एकगुण कालादि पुद्गल आश्रयीने हे आर्य । पूर्व कह्यु तिमज कहयो । तएण से णारय पुत्ते अणगारे । तिवारे ते नारद पुत्र साधु । णियठी पुत्तं अणगारं । निर्ग्रंथी पुत्रनामे साधुप्रते । एववयासी । इम कहे । दव्वादेसेणवि मे । द्रव्य आश्रयीने पणि म्हारे । अज्जोसव्वपोग्गला । अहो आर्य । सगला पुद्गल । सअड्ढा समज्झा सपदेसा । सअर्द्ध समध्य संप्रदेश छे । णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा । नही अनर्द्ध अमध्य अप्रदेश छे । खेत्ता देसेणवि कालादेसेणवि भावादेसेणवि । इम क्षेत्र आश्रयीने पणि काल आश्रयीने पणि भाव आश्रयीने पणि इमज । तएणं से णियठीपुत्ते अणगारे । तिवारे ते निर्ग्रंथी पुत्र साधु । णारयपुत्त अणगारं । ते नारद पुत्र साधु प्रते । एववयासी । इम कहे । जइण अज्जो । जो ए वात्सल्यागार, हे आर्यो । दव्वादेसेण । द्रव्य आश्रयीने । सव्वपोग्गला सअड्ढा । सगला पुद्गल सअर्द्ध छे । समज्झा । समध्य छे । सपदेसा । प्रदेश सहितछे । णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा । नही अनर्द्ध असमध्य अप्रदेशछे । एवसेप रमाणु पोग्गलेवि । इमछे तो परमाणु पुद्गल पणि । सअड्ढे समज्झे सपदेसे । अर्द्ध सहित हुस्ये मध्य सहित हुस्ये प्रदेश सहित हुस्ये । णोअणड्ढे अम

कालाएसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा ३ एवं ते एगसमयठिइएवि पोग्गले ३ तंचेव जइणं अज्जो भावाएसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढे ३ एवं एगगुणकालएवि पोग्गले सअड्ढे ३ तंचेव अह ते एवंनभवंति, तोजंवयसि दव्वाएसेणवि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा नोअणड्ढा अमज्झा अपएसा एवं खेत्ताएसेणवि कालाएसेणवि भावाएसेणवि तन्नं मिच्छा, तएणं सेनारयपुत्ते अणगारे नियंठीपुत्तं अणगारं एवंवयासी, नोखलु एय देवाणुप्पिया एयमठं जाणामो पासामो, जइण देवाणुप्पिया नोगिलायंति, परिकहित्तए तं इच्छामि

खेत्तादेसेणवि। क्षेत्र आश्रयीने पणि। सव्वपोग्गला। सर्व उभ्रे अपएसे। नही अनर्द्ध अमध्य अप्रदेश हुस्ये। जइणअज्जो। जो य वाक्यालकारे, हे। आर्य। जाव एव ते एगपदेसो गाढेविपोग्गले। यावत् इमछे तो तुम्हारे एक आकाशप्रदेश अवगाही रह्यो ते पर पुद्गल। सअड्ढा ३। सअर्द्ध समध्य सप्रदेश छे। इत्यादि। जइण अज्जो। जो य वाक्यालकारे, हे। आर्य। काला माणु पुद्गल ते पणि। सअड्ढे समज्झे सपदेसे। सअर्द्ध मध्य सहित प्रदेशसहित छे। इत्यादि ३ कहवा। एवतेएगसमयट्ठिईएविपोग्गले सअड्ढे समज्झे देसेण। काल आश्रयीने। सव्वपोग्गला। सगला पुद्गल। सअड्ढा ३। अर्द्ध सहितछे इत्यादि ३ कहवा। एवतेएगगुण कालएवि पो जइ सपएसे तचेव। इमछे तो तुम्हारे एक समय स्थितिनो पणि परमाणु पुद्गल अर्द्ध सहितछे मध्य सहितछे प्रदेश सहित हुस्ये ए पणि तिमज कहवो। जइ णअज्जो। जो य वाक्यालकार, हे। आर्य। भावा देसेण सव्वपोग्गला सअड्ढा ३। भावथकी सर्व पुद्गल सअर्द्ध इत्यादिछे तो। एवतेएगगुण कालएवि पो ग्गले। इम तुम्हारे एकगुण कालनो पणि परमाणू पुद्गल। सअड्ढे समज्झे सपएसे तचेव। अर्द्ध सहित मध्य सहित प्रदेश सहित हुस्ये इत्यादि तिमज कहवा। अहतेएव नभवइ। हिवे ते परमाणू पुद्गल इम न हुवे। तोजवयसि। ते माटे जे तू इम कहैछे— द्रव्यथी पणि। सव्वे पोग्गला। सघला पुद्गल। सअड्ढा समज्झा सपदेसा। अर्द्ध सहित छे मध्य सहित छे प्रदेश सहित छे। णो अणड्ढा अमज्झा अपदेसा। नही अनर्द्ध मध्य रहित प्रदेश रहित। एवखेत्तादेसेणवि कालादेसेणवि भावादेसेणवि। इम क्षेत्रथकी पणि कालथकी पणि भावथकी पणि। तणंमिच्छा। ते य वाक्यालकारे, मिथ्या झूठो।

पितमेव नवती तिकृत्वे त्यवसेयं तथाहि-सप्रदेशा' माद्दां' समध्यावा; इतरे त्वनद्धां ममध्याशेति ॥ अणंतात्ति ॥ तत्परिमाणज्ञापनपरं तत्स्वरूपाभिधानं, अथ द्रव्यतो ऽप्रदेशस्य चेत्राद्याश्रित्या प्रदेशादित्व निरूपयन्नाह ॥ जेदव्वओगप्पएसेइत्यादि ॥ यो द्रव्यतो ऽप्रदेशा परमाणु सच क्षेत्रतो नियमा दप्रदेशो यस्मा दसौ क्षेत्रस्ये कत्रैव प्रदेशे ऽवगाहते प्रदेशद्वयाद्यवगाहेतु तस्या प्रदेशत्वमेव नस्यात्' कालतस्तु यद्यसा वेकसमयस्थितिकस्तदा ऽप्रदेशो, ऽनेकसमयस्थितिकस्तु सप्रदेशाइति' भावत पुन र्यद्येकगुणकालकादि स्तदा ऽप्रदेशो, द्विगुणकालकादिस्तु सप्रदेशाइति, निरूपितो

ण देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमठ सोच्चा निसम्म जाणित्तए, तएणं से नियंठीपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगारं एववयासी दव्वाएसेणवि अज्जो सव्वपोग्गला सपएसावि अपएसावि अणंता खेत्ताएसेणवि एवंचेव कालाएसेणवि, भावाएसेणवि एवंचेव, जेदव्वओ अपएसे सेखेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे

तएणं नारयपुत्ते अणगारे। तिवारे ते नारद पुत्र इसेनामे साधु। नियंठीपुत्र अणगार। निर्ग्रंथी पुत्र साधु प्रते। एम वयासी। इम कहे। पोग्गलप्पदेशाप्पिया। नहीं निश्चे इम अर्थ देवानुप्रिय देवल्लभ। एयमठ्ठजाणामो पासामो जइणंदेवाणुप्पिया। एह अर्थपति इ जाणू देव जीवं वाक्यालंकारे, अर्थो देवानुप्रिय! नोगिलायसि परिकहेत्तए। ए जाणना देवाव नहीं ग्लान थोड़ निःश्चावपणा न पामे। तंइच्छामिणं देवाणुप्पियाणं अंतिए। तो वांछु प वाक्यालंकारे, तुम्हारे समीपे। एयमठ्ठसोच्चानिसम्माजाणित्तए तएणं से नियंठीपुत्ते अणगारे। ए अनन्तरोक्त स्वरूप भावपर्ते साभलीने हृदयने विषे जाणवाने समर्थ थाओं तिवारे तेनिर्ग्रंथी पुत्र अणगार साधु। नारयपुत्तंअणगारं एववयासी। नारद पुत्र साधुप्रतें इम कहे। दव्वादेसेणविअज्जो सव्व पोग्गला सपदेसावि अपदेसावि अणंतावि। द्रव्यथकी पणि प्रकारे अहो आर्य! सगला पुद्गल सप्रदेश पणिछे ते किम द्विप्रदेशादि स्कंध सप्रदेशछे अने परमाणू पुद्गल अप्रदेशछे ते पणि अनन्ताछे। खेत्तादेसेणवि ए। कालादेसेणवि एवं भावादेसेणवि एवंचेव। आकाशना दोय प्रदेशादि ऊपर जे अवगाह्या पुद्गल ते सप्रदेशीछे एक प्रदेश अवगाह्यो रह्या ते अप्रदेश तथा दोय आदि समय स्थितिना सप्रदेशो एक समय स्थितिना अप्रदेशो दोयगुणकालादि

॥ टीका ॥

द्रव्यतो ऽप्रदेशो य क्षेत्रतो ऽप्रदेशं निरूपयन्नाह ॥ जेखेत्तउअप्पएसेइत्यादि ॥ यः क्षेत्रतो ऽप्रदेशः सद्रव्यतः स्या त्सप्रदेशः द्व्यणुकादेर प्येकप्रदेशावगाहित्वात् स्या दप्रदेशः परमाणोर प्येकप्रदेशावगाहित्वात् । कालओभयणाओत्ति । क्षेत्रतोऽप्रदेशोय सकालतोभजनयाअप्रदेशादिर्वाच्यः, तथाह्येकप्रदेशावगाढ एकसमयस्थितिकत्वा दप्रदेशोपि स्या दनेकसमयस्थितिकत्वाच्च सप्रदेशोपि स्यादिति ॥ भावउभयणाएत्ति ॥ क्षेत्रतो ऽप्रदेशो यो सा वेकगुणकालकादित्वा दप्रदेशोपि स्या दनेकगुणकालकादित्वाच्च सप्रदेशोपि स्या दिति, अथ कालाप्रदेश भावाप्रदेशांव निरूपयन्नाह ॥

॥ मूल ॥

जेखेत्तउ अप्पएसे से दव्वउ सिय सपएसे सिय अप्पएसे । भावउ सिय सपएसे सिय अप्पएस । जेखेत्तउ अप्पएसे से दव्वउ सिय सपएसे सिय अप्पएसे कालउ भयणाए भावउ भयणाए जहाखेत्तउ एवं कालउ भावउ, जेदव्वउ सपएसे से खेत्तउ सिय सपएसे कालउ भयणाए भावउ भयणाए जहाखेत्तउ एवं कालउ भावउ,

॥ भाषा ॥

करेछे। जे दव्वओअपएसेसेखेत्त सप्रदेशी एकगुण कालादि अप्रदेशी ए इमज जाणवा, हिवे द्रव्यथी अप्रदेशने क्षेत्रादि आश्रयीने अप्रदेशादि पणो निरूपण करेछे। जे दव्वओअपएसेसेखेत्त ओणियमा अपएसे कालओ सिय सपएसे सियअपएसे भावओसियसपएसे सियअपएसे। जे द्रव्यथी अप्रदेश परमाणुछे ते क्षेत्रथको निश्चे अप्रदेश हुवे जेहभणी एह क्षेत्रनो एक प्रदेशहीज अवगाहै अनेजे प्रदेशद्वयादि अवगाहै तो तेहने अप्रदेश पणो होज नहुवे कालथी तेहीज परमाणू जो एकसमय स्थितिकछे तो अप्रदेशी कहवो अने जो अनेकसमय स्थितिकछे तो सप्रदेशी कहवो इमभावथी तेहीज परमाणू ओजओ, एकगुण कालादिछे तो अप्रदेशी कहवोअने जो अनेकगुण कालादिछे तो सप्रदेशी कहवो। जे खेतओ अपएसे सेदव्वओसियसपएसे सियअपएसे । द्रव्यथी कह्यो ॥ हिवे अप्रदेश प्रतेक्षेत्रथी कहैछे—जे क्षेत्रथी एक आकाशप्रदेश अवगाही रह्या ते द्रव्यथी किवारे सप्रदेशी किवारे अप्रदेशी ते किम द्वाणुकादिकने पणि एक प्रदेशावगाहि पणाथी सप्रदेशी अप्रदेश ते परमाणुने पणि एकप्रदेशावगाहि पणाथी तथा जे क्षेत्रथी अप्रदेशछे तेहने। कालओभयणाए भावओभयणाए जहाखेतओ एव कालओ भावओ। कालथी भजनाये करी अप्रदेशादि कहवो ते देखाडेछे—एक प्रदेश अवगाही रह्या एहवाने अनेक समय पणाथी अप्रदेश जे क्षेत्रथी अप्रदेशछे ते भावथी एकगुण कालादिक पणाथी अप्रदेश पणि हुवे, अने अनेकगुण कालकादिक पणाथको सप्रदेश पणिहुवे, हिवे कालादेशे भावादेशे कहैछे—जि

॥ टीका ॥

जहाखेत्तउएवकालउजावउत्ति ॥ यथा क्षेत्रतो ऽप्रदेश उक्त एवं कालतो भावत श्चासौ वाच्य', तथाहि—जे कालउ अप्पएसे से दव्वउ सिय सप्पएसे सिय अप्पएसे' एवं क्षेत्रतो भावतश्च तथा—जे भावउ अप्पएसे से दव्वउ सिय सप्पएसे सिय अप्पएसे, एव क्षेत्रतः कालतश्चेति, उक्तो ऽप्रदेशो ऽथ सप्रदेशमाह ॥ जेदव्वउसप्पएसेइत्यादि ॥ अयमर्थो यो द्रव्यतो द्व्यणुकादित्वेन सप्रदेश' स क्षेत्रतः स्या त्सप्रदेशो द्व्यादिप्रदेशावगाहित्वा त्स्या दप्रदेश एकप्रदेशावगाहित्वा देव कालतो भावतश्च' तथा य क्षेत्रतः सप्रदेशो द्व्यादिप्रदेशावगाहित्वा त्सद्रव्यत' सप्रदेशएव द्रव्यतो प्रदेशस्य द्विप्रदेशावगाहासम्भवात् कालतो भावत श्चासौ द्विधापि स्या दिति, तथा यः कालत' सप्रदेश स द्रव्यत' क्षेत्रतो भावतश्च द्विधापि स्यात् तथा यो भावत' सप्रदेश. सद्रव्यक्षेत्रकाले द्विधापि स्यादिति सप्रदेशसूत्राणा भावार्थइति, अथै पामेव द्रव्यादित' सप्रदेशाप्रदेशाना मल्पबहुत्ववि

॥ मूल ॥

एसे सिय अपएसे एवं कालउ भावउवि। जे खेत्तउ सपएसे से दव्वउ नियमा सपएसे कालउ भयणाए भावउ भयणाए, जहा दव्वउ तहा कालउ भावउवि। एएसिणं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेणं

॥ भाषा ॥

म क्षेत्र थकी अप्रदेश कह्यो इम कालथी भावथी पणि कहवो ते कहेछे—जे कालथीअप्पएसे दव्वथी सियसप्पएसे सियअप्पएसे एव खेत्तथी भावथी जे भावथी अप्पएसे सियसप्पएसे सियअप्पएसे एवखेत्तथी कालथीवि। एक अप्रदेश कह्यो। जेदव्वथी सपएसे सेखेत्तथीसियसपएसे सियअपएसे एव कालथी भावथीवि। हिवे सप्रदेश कहेछे—जे द्रव्यथी द्व्यणुकादि पणे करी सप्रदेशछे ते क्षेत्रथी किवारे सप्रदेश छे द्व्यादिकप्रदेशावगाहि पणाथी तथा अप्रदेश पणिहुवे एक प्रदेशावगाहि पणाथी इम कालथी भावथी पणि कहवो। जेखेत्तथी सपएसे सेदव्वथी णियमासपएसे। जे क्षेत्रथी द्व्यादिप्रदेशावगाहि पणाथी सप्रदेश छे ते द्रव्यथी निश्चे सप्रदेश होज हुवे द्रव्यथी अप्रदेश परमाणु होजहुवे तेहने द्व्यादिक प्रदेशावगाहना असम्भवथी तथा। कालथी भयणाए भावथीभयणाए जहादव्वथी तहाकालथी भावथीवि। कालथी भजनायें तथा भावथी पणि भजनाये सप्रदेश अप्रदेश बेऊं हुवे तथा जिम द्रव्यथी कह्या तिम कालथी भावथी पणि कहवा तथा जे कालथी सप्रदेश छे हुये ते द्रव्यथी क्षेत्रथी भावथी बेऊ प्रकारे हुवे तथा जे भावथी सप्रदेश हुवे

॥ टीका ॥ आगमाह ॥ एएसिणमित्यादि ॥ सूत्रसिद्धं नवरं मस्यैव सूत्रोक्तालपबहुत्वस्य भावनार्थं गाथाप्रपञ्चोवृद्धोक्तो निधीयते—योच्छंअप्पाबहुयं दव्वेखेत्तद्ध

॥ मूल ॥ नारयपुत्ता सव्वत्थोवा

कालादेसेणं भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? नारयपुत्ता सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपएसा कालादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणंचेव सपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेण सपएसा विसेसाहिया कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया भावादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, तएणं से नारयपुत्ते अण

॥ भाषा ॥ हिवे एहनेज द्रव्यादिक थकी सप्रदेश अप्रदेश अल्प बहुत्व है विभाग क ते द्रव्य क्षेत्र कालेकरी बेज भेद हुवे ए सप्रदेश अप्रदेश सूत्रनो भावार्थ कह्यो ॥ एहने हे भगवन् । छै—एएसिणभंते पोग्गलाणं दव्वादेसेणं खेत्तादेसेण कालादेसेण भावादेसेण सपएसाण अपएसाणय कयरे कयरे जावविसेसाहियावा । इतिप्रश्न इहा अर्थथी व्याख्या पुद्‌गलने द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी सप्रदेशने अप्रदेशने कुण २ थकी थोडाहुवे घणांहुवे बराबर हुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न इहा अर्थथी व्याख्या न दारने विषे तीन अल्प बहुत्व हुवे ते किसा एएसिणभंते पोग्गलाण दव्वादेसेण खेत्तादेसेण कालादेसेण भावादेसेणं अपएसाण कयरे २ इत्यादि तथा एएसिणंभंते पोग्गलाणं दव्वादेसेण ४ सपएसाणय कयरे २ इत्यादि एवं अल्प बहुत्व पहिला कह्यो पछे ए सूत्रोक्त मिश्र अल्प बहुत्व कहवो, पर सूत्रमा हि एकहीज कह्यो ए अल्प बहुत्व सूत्र सिद्ध जाणवो एतलोविशेष एह सूत्रोक्त अल्प बहुत्व भावनाने अर्थे वृद्धोक्त गाथाछै ते विशेष थाहीये टीकाथी जो ई लेवी इहा ग्रथ वधे तेमाटे नथी लिखी । नारयपुत्ता सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपएसा कालादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा । हे नारद पुत्र । ते सर्वथी थोडा पुद्‌गल भावथकी अप्रदेश १ तेहथी कालथी अप्रदेश असख्यातगुणा २ तेहथी । दव्वादेसेणअपएसा असखेज्जगुणा । द्रव्यथी अप्रदेश अस ख्यातगुणा ३ तेहथी । खेत्तादेसेणअपएसा असखेज्जगुणा । क्षेत्रथी अप्रदेश असख्यातगुणा ४ खेत्तादेसेणचेव सपएसा असखेज्जगुणा । तेहथी क्षेत्रथीज निश्चे सप्रदेश असख्यातगुणा ५ तेहथी । दव्वादेसेणसपएसा विसेसाहिएवा । द्रव्यथी सप्रदेश विशेषाधिक ६ तेहथी । कालादेसेण सपएसाविसेसाहि

जावउयावि । अपएससप्पएसा णपोग्गलाणसमासेणं ॥ १ ॥ दव्वेणंपरमाणू खेत्तेणेगप्पएसमोगाढा । कालेणेगसमइया अपएसापोग्गलाहोंति ॥ २ ॥ भावेणअपएसा एगगुणाजेहवंतिवन्नाई [वर्णादिभिरित्यर्थः] तेच्चियथोवाजगुणा याणुणपायसोदव्वे ॥ ३ ॥ द्रव्ये प्रायेण त्वादिगुणा अनन्तगुणान्ता कालकत्वादयो भवन्ति एकगुणकालकादय स्त्वल्पा इतिभाव , एत्तोकालाएसे णअप्पएसाभवेअसखगुणा किकारणपुणभवे भणइपरिणामवाहुल्ला ॥ ४ ॥ अयमर्थो योहि यस्मिन् समये यद्वर्णगन्धरसस्पर्शसङ्घातभेदसूक्ष्मत्ववादरत्वादिपरिणामान्तरमापन्न. स तस्मिन् समये तदपेक्षया कालतो ऽप्रदेश उच्यते तत्रैवे कसमयस्थिति रित्यन्ये, परिणामाश्च वहवइति प्रतिपरिणाम कालाप्रदेशसभवा दसखगुणत्वमिति, एतदेव भाव्यते–भावेणअपएसा जेतेकालेणभोंतिदुविहावि । दुगुणादउविएय भावेणजावणतगुणा ॥ ५ ॥ भावतो ये ऽप्रदेशा एकगुणकालकत्वादयो भवन्ति ते कालतो द्विविधा अपि भवन्ति सप्रदेशा अप्रदेशाश्चेत्यर्थः, तथाभावेन द्विगुणादयोपि अनन्तगुणान्ताएव मिति द्विविधा भवन्ति ततश्च–कालप्पएसयाण एवएक्केक्कंमि

भवइरासी एकेक्कगुणट्ठाण मिएगगुणकालयाईसु ॥ ६ ॥ एकगुणकालकादिपु गुणस्थानकेपु मध्ये एकैकस्मिन् गुणस्थानके कालाप्रदेशाना मेकेको राशि भवति ततश्चा नन्तत्वात् गुणस्थानकराशीना मनन्ताएव कालाप्रदेशराशयो भवन्ति, अथप्रेरक–आइणतगुणत्तण मेवकालापएसयाणति ॥ भ मणतगुणट्ठाणे सुहोंतिरासीविइअणंता ॥ ७ ॥ एवमिति यदि प्रतिगुणस्थानकं कालाप्रदेशराशयो ऽभिधीयन्तइति अत्रोत्तर–भणइएगगुणाणवि अणं तभागमिजअणतगुणा । तेणासखगुणच्चिय भवंतिनाणत्तगुणियसं ॥ ८ ॥ अय ममभिप्रायो यद्य प्यनन्तगुणकालत्वादीना मनन्ता राशय स्तथा प्येकगुणकालत्वादीना मनन्तभागएव ते वर्त्तत इति, न तद्द्वारेण कालाप्रदेशाना मनन्तगुणत्वमपितवसङ्ख्यातगुणत्वमेवेति' एवताभावमिण पडुच्चकालाप एसयासिद्धा । परमाणुपोग्गलाइसु दव्वेविहुएसवेवगमो ॥ ९ ॥ एय ताव ज्ञाव वर्णादिपरिणाम इमं उक्तरूप मेकाद्यनन्तगुणस्थानवर्त्तिन मित्यर्थ , प्रतीत्य कालाप्रदेशकाः पुद्गला' सिद्धा' कालाप्रदेशभावाः पुद्गलाना सिद्धा. प्रतिष्ठिता द्रव्येपि द्रव्यपरिणाम मप्यङ्गीकृत्य परमाण्वादि ष्वेकएव भाव

परिणामोक्तएव गमो । व्याख्या–एमेवहोइखेत्ते एगपएसावगाहणाईसु । ठाणंतरसंकंतिं पडुच्चकालेणमग्गणया ॥ १० ॥ एवमेव द्रव्यपरिणामवद्भवति क्षेत्रे क्षेत्र मधिकृत्य एकप्रदेशावगाढादिषु पुद्गलभेदेषु स्थानान्तरगमनं प्रतीत्य कालेन कालाप्रदेशाना मार्गणा यथा क्षेत्रत एव मवगाहनादितोपी त्येत दुच्यते–सकोयविकोयपिहु पडुच्चउगाहणाइएमेव । तहसुहुमबायरनिरे यसेयसद्दाइपरिणाम ॥ ११ ॥ अवगाहनाया· सङ्कोचं विकोचच प्रतीत्य कालाप्रदेशा· स्यु· तथा सूक्ष्मबादरस्थिरास्थिरशब्दमन कर्मादिपरिणामच प्रतीत्येति–एवंजोसव्वोच्चिय परिणामोपोग्गलाणइहसमए । ततपडुच्चए सि कालेणअप्पएसत्त ॥ १२ ॥ एसिति पुद्गलानामित्यर्थ· कालेणअप्पएसा एवभावापएसएहितो । होतिअसखेज्जगुणा सिद्धापरिणामबाहुल्ला ॥ १३ ॥ एतोदव्वादेसे णअप्पएसाहवतिसखगुणा । केपुणतेपरमाणू कहतेबहुयत्तितसुणसु ॥ १४ ॥ अणु १ सखेज्जपएसिय २ असख ३ णतप्पएसियाचेव ४ । चउरोच्चियरासीपो ग्गलाणलोएअणताणं ॥ १५ ॥ तत्थाणतेहितो सुत्तेणतप्पएसिएहितो । जेणपएसठाए भणियाअणवोअणतगुणा ॥ १६ ॥ अनन्ते

भ्यो नन्तप्रदेशिकस्कन्धेभ्य· प्रदेशार्थतया परमाणवो नन्तगुणा· सूत्रे उक्ता सूत्र चेद–सव्वत्थोवा अणतपएसिया खंधा दव्वठयाए तेचेव पएसठयाए अणतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपएसठयाए अणतगुणा सखेज्जपएसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए असखेज्जगुणा असखे ज्जपएसिया खधादव्वठयाए असंखेज्जगुणा तेचेव पएसठयाए असखेज्जगुणात्ति· सखेज्जइमेभागे सखेज्जपएसियाणवट्टति नवरमसखेज्जपए सिया णभागेअसखइमे १७ सङ्ख्येयतमे भागे सङ्ख्यातप्रदेशिकाना मसङ्ख्येयतमेभागे संख्यातप्रदेशिकाना मणवो वर्त्तंते उक्तसूत्रप्रामाण्यादिति–सइविअसखेज्ज पए सियाणतेसिअसंसभागत्ते । बाहुल्लसाहिज्जइ फुडमवसेसाहिरासीहि ॥ १८ ॥ सङ्ख्यातप्रदेशिकानन्तप्रदेशिकाभिधानाभ्या मिहच सङ्ख्यातप्रदेशिक राशे· सङ्ख्यातभागवृत्तित्वा त्तेषां स्वरूपतो बहुत्व मवगम्यते अन्यथा तस्या प्यसङ्ख्येयभागेनन्तभागेवा, तेभविष्यन्निति । जेणेक्करासिणोच्चिय असख भागेनसेसरासीण । तेणासंखेज्जगुणा अणवोकालापएसेहि ॥ १९ ॥ नद्योषराइयो रित्यस्या यमर्थ अनन्तप्रदेशिकराशे रनन्तगुणा स्ते सङ्ख्यातप्रदेशि

कराशेस्तु सङ्ख्यातभागे सङ्ख्यातभागस्यच विवक्षया नात्यन्तमल्पता ऽत कालत समदेशो ग्रप्रदेशेपुच वृत्तिमता मणूनां यद्बुत्वा स्कालाप्रदेशानांच सामायिकत्वेना त्यन्त मल्पत्वा, स्कालाप्रदेशोभ्यो सङ्ख्यातगुणत्व द्रव्याप्रदेशानामिति–एत्तोग्रसखगुणिया इयतिरेत्तापएसयासमग । जंतेतासव्वेच्चिय अपएसाखेत्तंतअणवो ॥ २०॥ दुपएसियाइएसुवि पएसपरियड्ढिएसुठाणेसु ॥ लब्भइएक्केक्कोच्चिय रासीखेत्तापएसाण ॥ २१ ॥ एत्तोरेत्तासे यावेवसपएसया असखगुणा । एगपएसोगाढे मोत्तुसेसावगाहणया ॥ २२ ॥ तेपुणदुपएसोगा हणाइयासव्वपोग्गलासेसा । तेयअसखेज्जगुणा अवगाहणठाणवाहुल्ला ॥ २३ ॥ दव्वेणहोंतिएत्तो सपएसापोग्गलाविसेसहिया । कालेयजावेगय एमेवजवेविसेसहिया ॥ २४ ॥ जावाईयावुड्ढी असखगुणियाजमप्पएसाण । तोसप्पएसियाणं खेत्ताइविसेसपरिवुड्ढी ॥ २५ ॥ एतद्भावनाच वक्ष्यमाणस्थापनातो वसेया–मीसाणसकमंपइ सपएसाखेत्तंतअसंखगुणा । जणियासठाणेपुण थोवच्चियतेगहेयव्वा ॥ २६ ॥ मिश्राणा मि त्यप्रदेशसप्रदेशाना मीलिताना सक्रमं प्रति अप्रदेशोभ्यः सप्रदेशो ग्रल्पवहुत्वविचारसक्रमे

क्षेत्रतः सप्रदेशा. असङ्ख्येयगुणा. क्षेत्रतो प्रदेशेभ्य सकाशात् स्वस्थाने पुन केवलसप्रदेशचिन्तायां स्तोकाएव ते क्षेत्रत सप्रदेशाइति एतदेवोच्यते–खेत्तेणसप्पएसा थोवादव्वभावतोअहिया सपएसप्पावहुयं सठाणेअत्यतोएवं ॥ २७ ॥ अर्थत इतिव्याख्यानापेक्षया–पढमंअपएसाण बीयपुणाहोइसप्पएसाण तइयंपुणमीसाण अप्पवहुअत्यतोतिन्नि ॥ २८ ॥ अर्थतो व्याख्यानद्वारेण त्रीण्य ल्पवहुत्वानि भवन्ति सूत्रे त्वेकमेव मिश्राल्पवहुत्व मुक्तमिति–ठाणेठाणेवड्ढइ भावाईणजमप्पएसाण । तच्चियजावाईण परिजसइसप्पएसाण ॥ २९ ॥ यथा किल कल्पनया लक्षं समस्तपुद्गला स्तेपु भावकालद्रव्यक्षेत्रतो ऽप्रदेशा. क्रमेण एकद्विपञ्चदशसहस्रसङ्ख्या सप्रदेशास्तु नवनवत्यष्टनवतिपञ्चनवतिनवतिसहस्रसङ्ख्याः ततश्च भावाप्रदेशेभ्य कालाप्रदेशेषु सहस्रं वर्द्धते, तदेव भावसप्रदेशेभ्य कालसप्रदेशेपु हीयत इत्येव मन्यत्रापीति–अहवाखेत्ताईणं जमप्पएसाणक्कायएकमसो । तच्चियखेत्ताईणं परिवड्ढइसप्पएसाणं ॥ ३० ॥ अवरोप्परप्पसिद्धा वुड्ढीहाणीयहोइदोण्हंपि । अपएससप्पएसा णपोग्गलाणंसलक्खणओ ॥ ३१ ॥ तेचेवयतेचउव्विहि जमुवचरिज्ज

॥ टीका ॥

चतुर्भिरिति भावकालादिभि रुपचर्यन्तइति विशेष्यन्ते–एएसिरासीणं निदरिसण तिपोग्गलादुविहा । तेणउवुड्ढीहाणी तेसिंअन्नोन्नसंसिद्धा ॥ ३२ ॥ कल्पनया यावन्त· सर्वपुद्गला स्तावतो लक्षाइति–एकचदोयपंचय दसयसहस्सिणभणामिपच्चक्ख । वुड्ढीएसव्वपोग्गल जावतावाणलक्खाउ ॥ ३३ ॥ एवइयाइसहस्सा इसप्पएसाणविव स्साइअप्पएसाणं । भावाईणकमसो घठगहविजहोवइठाणा ॥ ३४ ॥ णउइंपचाणउइं अठाणउइंतहेवनवनउइं । एएसिजहसनव मत्थोवणयकरिज्जरासीणा सब्भावउयजाणे ज्जतेअणतेजिणाभिहिएत्ति ॥ ३६ ॥ अनन्तर पुद्गला निरूपिता स्तेच जीवो रीय ॥ ३५ ॥

॥ मूल ॥

गारे नियंठीपुत्त अणगार वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एयमठ सम्म विणएण भुज्जो भुज्जो खामेइ खामेइत्ता सजमेण जाव विहरइ॰। भंतेत्ति भगवं गोयमे समण जाव एवं वयासी जीवाण भंते ! किं वहृंति हायंति अवठिया ? गोयमा ! जीवा नोवहृंति नोहायंति अवठिया । नेरइयाण भंते ! कि वहृंति हायंति अव ठिया ? गोयमा ! नेरइया वहृंतिवि हायंतिवि अवठियावि जहा नेरइया एवं जाव वेमाणिया। सिद्धाणं

॥ भाषा ॥

या । कालथो सप्रदेश विशेषाधिक ७ तेहथो । भावादेसेण सपएसा विसेसाहियावा । भावथो सप्रदेश विशेषाधिक ए अल्प बहुत्वनो काइक स्वरूप का हीयेछे यथा कल्पनायें करी एकलाख समस्त पुद्गल कल्पीये तेहने भाव १ काल २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ थकी अप्रदेश अनुक्रमे एक सहस्र बे सहस्र पच सहस्र दश सहस्र ए अप्रदेश अने सप्रदेश अनुक्रमे निन्नाणू सहस्र अठाणू सहस्र पचाणू सहस्र नेऊ सहस्र छे तिवारे भाव अप्रदेश थकी काल अप्रदेशने विषे सहस्र वधे तेहीज भाव सप्रदेशथी काल सप्रदेशने विषे सहस्र हीनथाय इम बीजे स्थानके पणि विचारवो एहनो स्थापना पहिलाथी लिखी । तएणसेणारयपुत्ते अणगारे । तिवारे ते नारदपुत्र साधु । णियठीपुत्त अणगार । निर्ग्रंथीपुत्र साधुप्रतें । वदइ णमंसइ २ त्ता । वादे नमस्कार करे वादी नमस्कार करीने । एयमठ्ठसम्मविणएण भुज्जो २ खामेइ संजमेण जाव विहरइ । एहवा अर्थप्रतें भलीरीतें विनये करी बार बार खमावे एतले ए अर्थने विषे अणगार समभ्या जे कह्यु ते अर्थ मिथ्या दुष्कृत देई सजमे तपेकरो आत्मा भावतो थको विचरे अनन्तरे पुद्गल कह्या ते पुद्गल जीव ग्रहे ते

। टीका ॥

पग्राहित्य इति जीवा श्चिन्तयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ नेरइयाणं नंते! केवइयं कालं अवठिया? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउवी सइ मुहुत्तत्ति ॥ कथं सप्तस्वपि पृथिवीषु द्वादशमुहुर्त्ता न्याव सको प्युत्पद्यते उद्वर्त्तते चोत्कृष्टतो विरहकालस्यै वरूपत्वा दन्येषु पुन र्द्वादशमुहूर्त्तेषु

॥ मूल ॥

नंते! पुच्छा गोयमा! सिद्धावड्ढंति नोहायंति अवठियावि । जीवाणं नंते! केवइयं कालं अवठियावि सव्वद्धं । नेरइयाणं नंते! केवइयं काल वड्ढंति? गोयमा! जहन्नं एगं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखे ज्जइनागं एवं हायंतिवा । नेरइयाणं नंते! केवइयं काल अवठिया? गोयमा! जहन्नं एगसमय उक्को

॥ भाषा ॥

माटे जीवप्रतें चिन्तवतो कहेछे—भंतेत्ति भगवंगोयमे समण भगवमहावीर जाव एववयासी । हे भगवन् । इसे आमंत्रणे भगवन्त गौतम श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामी प्रतें यावत् इमकहे । जीवाणंभंतेकि वड्ढंति हायंति अवठिया । जीव हे भगवन् । स्यूं वधे राशियकी राशियकी घटे जेतलाछे तेत लाज रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाणोवड्ढंति णोहायंति अवठिया । हे गौतम । जीव वधैनही घटैनही एतला माटेज जेतलाछे तेतलाज रहे । इत्यर्थ ॥ हिवे चउवीस दंडक आश्री पूछेछे—णेरइयाणभंते । नारकी हेभगवन् । किंवड्ढंति हायंति अवठिया । स्यूं राशिथी वधे राशिथी हानि हुवे जे तला छे तेतलाज रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइया वड्ढंतिवि हायंतिवि अवठियावि । हे गौतम । नारकी वधे पणि राशिथी अधिका पणि हुवे राशिथी ओछापणि हुवे जेतलाछे तेतला अवस्थित रहे । जहाणेरइयाएवं । जिम नारकी कह्या इम यावत् अर्द्ध चउवीस दंडक वैमानिक पर्यन्त वधे पणि घटे पणि अवस्थिति पणि कहवा । सिद्धाणंभंते पुच्छा । सिद्ध वधे घटे अवस्थित रहे हे भगवन् । इसो प्रश्नकोवो उत्तर । गोयमा सिद्धावड्ढंति । हे गौतम । सिद्ध वधे केवलो थई मोक्षजाय तेमाटे । णोहायंति अवठियावि । घटे नही पविनाना अभावथी विरहपडे तिवारे जेतलाछे तेतलाज रहे । जीवाणंभंतेकेवइयंकाल अवठिया सव्वद्धं । जीव हेभगवन् । केतलो काल जेतलाछे तेतलाज रहे इतिप्रश्न हे गौतम । सर्वकाले जेमाटे अतीत अनागत वर्त्त मान काले जीव घटे पणिनही वधे पणिनही अवस्थित थीज रहे । णेरइयाणंभंतेकेवइयकालंवड्ढंति । नारकी हे भगवन् । केतलो काल वधे इतिप्रश्न

यावन्त उत्पद्यन्ते तावन्तएवो द्वर्त्तन्त इत्येवं चतुर्विंशति मुहूर्त्ता न्याव न्नारकाणा मेकपरिमाणत्वा दवस्थितत्वं वृद्धिहान्यो रभाव इत्यर्थः, एवं र

त्नप्रभादिषु यो यत्रोत्पादोद्वर्त्तनाविरहकाल श्चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिको व्युत्क्रान्तिपदे निहित· स तत्र तत्तुल्यस्य समसङ्ख्याना मुत्पादोद्वर्त्तनाकालस्य मी

सेणं चउवीसं मुहुत्ता एव सत्तसुवि पुढवीसु वढ्ढंति हायंति भाणियव्वं णवरं, अवठिएसु इमं नाणत्तं तं०—
रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीसमुहुत्ता सक्करप्पभाए चउद्दसराइंदियाइं वालुयप्पभाए मासं पंकप्पभाए

उत्तर। गोयमा जहन्नेणं एकसमय। हे गौतम। जघन्यथी एक समय लगे वधे। उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभाग एवं हायंतिवा। उत्कृष्टथी आव
लिकानो असंख्यातमो भाग लगे वधे इम हानि पणि मांमे जघन्यथी एक समय उत्कृष्टथी आवलिकाना असंख्यातमा भाग लगे घटे। णेरइयाणभंतेकेव
इयकाल अवट्ठिया। नारकी हेभगवन्। केतलो काल अवस्थित जेतलाके तेतलाज रहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहन्नेणं एकंसमय उक्कोसेणं चउव्वीसंमु
हुत्ता। हे गौतम। जघन्यथी एक समय अवस्थित उत्कृष्टथी सातमी पृथिवीने उत्कृष्टो बार मुहूर्त्तनो विरहछे तेतले न कोई ऊपजे न कोई चवे तठा
पाछे वली बार मुहूर्त्त लगे जेतला ऊपजे तेतलाही चवे इम मिल्या चउवीस मुहूर्त्त उत्कृष्टथी अवस्थित काल जाणवो। इम सगले विचारवो। एवं स
त्तसुपुढवीसु वढ्ढंति हायंति भाणियव्व। एवं समुच्चय नारकीना दण्डकनीपरे वधवो घटवो जाणवो जघन्यथको एक समय उत्कृष्टथको आवलिकानो
असंख्यातमो भाग। णवरं अवट्ठिएसु इमं णाणत्तं तंजहा। एतलो विशेष अवस्थितकाल विरहकालथी बिमणो सगलेछे पिण विरहकाल जुदा २ छे ते
माटे अवस्थित काल पणि नाना प्रकारनो छे ते कहेछे—रयणप्पभाएपुढवीए अडयालीस मुहुत्ता। रत्नप्रभापृथिवीने विषे चउवीस मुहूर्त्तनो विरह
पडे तिवार पछे चोवीस मुहूर्त्त जेतला ऊपजे तेतला चवे इम अडतालीस मुहूर्त्त अवस्थितकाल थयो। सक्करप्पभाएचउद्दसराइंदियाइं वालुयप्पभाए
मासो। इम शर्करप्रभा पृथिवीने विषे सातदिन विरहछे तिवार पछे सातदिन ऊपजे तेतला चवे इमदिन १४ अवस्थित २ वालुकप्रभाने विषे पनर
दिननो विरहछे तिवार पूठे १५ दिन ऊपजे तेतला चवे इम मास अवस्थित। पंकप्पभाए दोमासा। पंकप्रभा पृथिवीने विषे एकमास विरहछे ते विम

स्वय मभ्यूह्यइति ॥ ए लना द्विगुणित' स अवस्थितकालो ऽष्टचत्वारिंशन्मुहूर्त्तादिक' सूत्रोक्तो भवति विरहकालश्च प्रतिपद मवस्थानकालाद्वैगूत' स्वय मभ्यूह्यइति ॥ ए गिंदियावड्ढतिविति ॥ तेपु विरहाभावेपि बहुतराणा मुत्पादाद्दल्पतराणा चोद्वर्त्तनात् ॥ हायतिविक्ति ॥ बहुतराणा मुद्वर्त्तना दल्पतराणा चोत्पा

दोमासा धूमप्पभाए चत्तारिमासा तमाए अठमासा तमतमाए बारसमासा असुरकुमाराचि वड्ढंति हायति जहा नेरइया अवठिया जहस्सं एग समयं उक्कोसं अठचत्तालीसं मुहुत्ता, एवं दसविहावि एगिंदिया वड्ढंतिवि हायतिवि अवठियावि एएहि तिहिवि जहस्सेण एक्कं समयं उक्कोसं आवलियाए असखेज्जं भागं, बेइंदिया

णो कोधा वेमास अवस्थित। धूमप्पभाएचत्तारिमासा। धूमप्रभाये विमाननोविरहछे ते विमणोकोधा चारिमास अवस्थित। तमाएअठमासा। तमा यें चारि मासनो विरहछे ते विमणो कोधा आठमास अवस्थित। तमतमाए बारसमासा। तमतमाने विषे छ मास विरहछे तिवार पूठे छमास लगे जे तला ऊपजेतेतला चवेतिवारे बारेमास अवस्थित। असुरकुमाराचि वड्ढति हायति जहाणेरइया। असुरकुमार पणि वटे जिम नारकी कह्या तिम व हुवा जवन्यथको एक समय उत्कृष्ट थको आवलिकानो असख्यातमो भाग। अवठिया जहणेण एकसमयं उक्कोसेण अठचत्तालीस मुहुत्ता एवदसविहावि। अवस्थित जवन्यथी एक समय उत्कृष्ट थको अडतालीस मुहूर्त्त ते किम असुरकुमारने उत्कृष्टथी विरह चउवीस मुहूर्त्तनो छे ते बिमणो कोधा अडता लोस मुहूर्त्तथया इम स्तनितकुमार पर्यंत दशेई भवनपती कहवा। एगिदियावड्ढतिवि हायतिवि अवठियावि एएहितिहिवि जहणेण। एकेंद्रियने विषे विरहनो अभावछे तो पणि वणानो ऊपजवो हुवे अने थोडानो चविवो हुवे तिवारे वड्ढति कहीये हायतिविक्ति जिवारे घणा चवे थोडा ऊप जे तिवारे घटे जिवारे सरीखा ऊपजै सरीखा चवे तिवारे अवस्थित कहीये ए तीनाईने विषे एकेंद्रीने जघन्य। एगसमय उक्कोसेण आवलियाए असखे ज्जइभाग। एक समय उत्कृष्टथो आवलिकानो असख्यातमो भाग जाणवो तिवारपछी यथायोगे हक्षादिकना अभाव थको। बेइंदियावड्ढति हायति तहेव। बेइन्द्री बधे तेमाटे वड्ढति कहीये घटे पणि ए बेऊ तिमज कहवा अने। अवठिआ जहणेण एकसमय उक्कोसेण दोअंतामुहुत्ता। अवस्थित सरी

॥ टीका ॥

दात् ॥ अवठियार्वित्ति ॥ तुल्याना मुत्पादा दुद्वर्त्तनाच्चेति ॥ एतेहिंतिहिंविति ॥ एतेषु त्रिष्वपि एकेन्द्रियवृध्यादि ध्यावलिकाया असङ्ख्येयो भाग स्त

॥ मूल ॥

एवं जाव चउरिंदिया अवसेसा वढ्ढंति हायंति तहेव अवठिया जहन्नं एक्कं समयं उक्कोसं दोअंतोमुहुत्ता समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दोअंतोमुहुत्ता, गब्भवक्कंतियाणं चउव्वीसं मुहुत्ता, संमुच्छिममणुस्साणं अठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कंतियमणुस्साण चउव्वीसंमुहुत्ता, वाणमंतरजोइससोहम्मीसाणेसु अठचत्तालीसं मुहुत्ता, सणंकुमारे अठारसराइंदियाइं सव्वे वढ्ढंति हायंति तहचेव अवठियाणं नाणत्तं इमं तंजहा —

॥ भाषा ॥

खा ते जघन्य थकी एक समय उत्कृष्टथकी दोय अन्तर्मुहूर्त्त ते एक ते एक अंतर्मुहूर्त्तनो विरह एक अंतरमुहूर्त्त जेतला ऊपजे तेतला चवे इम दोय अंतर्मुहूर्त्त। एव जाव चउरिंदिया। इम बेइन्द्रीनीपरे तेइन्द्री चउरिन्द्री पणि कहवा। अवसेसा सव्वे। इम पूर्वोक्तथी शेष थाकता सर्व। वढ्ढंति हायंति तहचेव। वधे पणि घटे पणि तेहनो काल तिमज कहवो। अवठियाण णाणत्त इम तंजहा समुच्छिम पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण दो अंतोमुहुत्ता। अवस्थितना कालने विषे नाना प्रकार पणो ते इमज आगे कहेछे—ते जिम समूच्छिम पचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकने दोय अंतर्मुहूर्त्त अवस्थित काल ते किम एक अंतर्मुहूर्त्तनो विरह तेहथी बिमणो अवस्थित। गब्भवक्कंतियाण चउव्वीस मुहुत्ता। गर्भज तिर्यञ्चने चउवीस मुहूर्त्त अवस्थित १२ मुहूर्त्तनो विरह बिमणो अवस्थित इम २४ मुहूर्त्त समूच्छिम मनुष्यने अडतालीस मुहूर्त्त अवस्थित ते किम चउवीस मुहूर्त्तनो विरहछे अने चउवीस मुहूर्त्त जेतला ऊपजे तेतला चवे इम चउवीस मुहूर्त्त अवस्थित। गब्भवक्कंतियाण मणुस्साण चउव्वीस मुहुत्ता। गर्भज मनुष्यने चउवीस मुहूर्त्त अवस्थित काल १२ मुहूर्त्तनो विरहकाल बार मुहूर्त्तनो जेतला ऊपजे तेतला चवे इम २४ मुहूर्त्त। वाणमंतरजोइससोहम्मीसाणेसु अठचत्तालीस मुहुत्ता। वानव्यतर ज्योतिषी सौधर्म ईशान ने विषे अडतालीस मुहूर्त्त अवस्थितकाल तिहा चौवीस मुहूर्त्तनो विरहछे अने चौवीस मुहूर्त्त जेतला ऊपजे तेतला चवे इम चउवीस मुहूर्त्त। सणकुमारे अठारसराइं दियाइं चत्तालीसय मुहुत्ता। सनत्कुमार देवलोकने विषे अढारे अहोरात्रि चालीस मुहूर्त्त अवस्थित का

॥ टीका ॥

तःपरं यथायोगं वृध्दादे रजावात् ॥ दोअंतोमुहुत्तत्ति ॥ एक मन्तर्मुहूर्त विरहकालो द्वितीयंतु समानाना मुत्पादोद्वर्त्तनकालइति ॥ आणयपाणयाणं संखेज्जामासा आरणच्चुयाणसंखेज्जावासति ॥ इह विरहकालस्य सङ्खातमासवर्षरूपस्य द्विगुणितत्वेपि सङ्खातत्वमेवे त्यत सङ्खाता मासा इत्याद्युक्तं॥ एवंगेवेज्जदेवाणंति ॥ इह यद्यपि ग्रैवेयकाधस्तनत्रये सङ्खातानि वर्षाणां शतानि मध्यमे सहस्राणि उपरिमे लक्षाणि विरह उच्यते, तथापि द्विगुण नेपिच सङ्खातवर्षत्वं नविरुध्यते, विजयादिषु त्वसङ्खातकालो विरहः सच द्विगुणितोपि सएव सर्वार्थसिद्धे यः पल्योपमसङ्ख्येयभागः सोपि द्विगुणि

॥ मूल ॥

चत्तालीसयमुहुत्ता, माहिंदे चउव्वीसं राइंदियाइं वीसयमुहुत्ता, बंभलोए पच चत्तालीसराइंदियाइं, लंतए नउयराइं दियाइं, महासुक्के सट्ठिंराइंदियसयं, सहस्सारे दोराइंदियसयाइं, आणयपाणयाणं संखेज्जामासा आरणच्चुयाइं सखेज्जाइं वासाइं एवं गेवेज्जदेवाण विजयवेजयंतजयंतापराजियाणं असंखेज्जाइं वाससहस्साइं

॥ भाषा ॥

ल ते किम नव अहोरात्रि बीस मुहुर्त्त विरहकाल तेहथी बिमणो अवस्थित काल। माहिंदेचउव्वीसराइंदियाइं वीसयमुहुत्ता। माहेन्द्र चौथा देव लोकने विषे चउवीस अहोरात्रि बीस मुहूर्त्त अवस्थित काल ते किम १२ अहोरात्रि दश मुहूर्त्त नो विरहछे तेहथी बिमणो अवस्थित। बंभलोए पच चत्तालीस राइं दियाइं। ब्रह्म पञ्चमा देवलोकने विषे पैतालीस अहोरात्रि अवस्थिति साढा बावीस अहोरात्रिनो विरहछे तेहथी बिमणो एह। लंत ए नउयराइं दियाइं। लंतक छट्ठे देवलोके ९० अहोरात्रि अवस्थित ४५ अहोरात्रिनो विरह तेहथी बिमणो। महासुक्के सट्ठिराइं दियसयं। महा शु क्रनामा सातमें देवलोके एकसो साठि अहोरात्रिनो अव स्थितकाल ८० रात्रिनो विरहछे तेमाटे। सहस्सारे दोराइंदियसयाइं। सहस्रा र नामे आ ठमेदेवलोके टोयसे अहोरात्रिनो अवस्थिति एकसो अहोरात्रिनो विरहछे तेमाटे बिमणो। आणय पाणयाणं सखेज्जामासा। नवमा दशमा देवलोकने विषे सख्याता मासनो अवस्थितनोछे सख्याता मासना बीज विरहमाटे पर विरहथी बिमणो अवस्थितकाल कहवो इम आगे सगलेहो कहवो। आर णच्चुयाण सखेज्जाइं वासाइं। इग्यारमा बारमा देवलोकने विषे सख्याता वरस अवस्थित इहां विरहकाल सख्याता वरसनोछे ते बिमणो कोधा संख्या

॥ टीका ॥

त· सङ्ख्येयभागएव स्या दतउक्तं विजयवेजयंतजयंतापराजियाणं असखेज्जाइं वाससहस्साइं इत्यादीनि ॥ जीवादी नेव ग्रन्थान्तरेणाह ॥ जीवाणमि

॥ मूल ॥

सव्वठसिद्धेय पलिमंवमस्स संखेज्जभागो एवं भाणियव्वं वढंति हायंति जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं आ वलियाए असंखेज्जइभागं अवठियाणं जंभणिय । सिद्धाणं भंते ! केवइयं कालं वढंति ? गोयमा ! जहन्नं एक्कं समयं उक्कोसेण अठसमया केवइयं कालं अवठिया ? गोयमा ! जहन्न एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मा सा । जीवाण भंते ! किं सोवचया सावचया सोवचयसावचया निरुवचया निरवचया ? गोयमा ! जीवा

॥ भाषा ॥

इम ग्रैवेयक देवने पणि इहा यद्यपि नीचला तीन ग्रैवेयकने विषे ता वरस होज हुवे । एवगवेज्जगदेवाण विजय वजयत अपराजियाण असखेज्जाइं । इम ग्रैवेयक देवने पणि इहा यद्यपि नीचला तीन ग्रैवेयकने विषे सख्याता वरस शतनो विरहकालछे तथा मध्यम ग्रैवेयक त्रिकने विषे संख्याता वर्ष सहस्रनो विरहछे उपरला ग्रैवेयकने विषे सख्याता वर्ष लचनो वि रहछे तो पणि विमषे कोधा सख्याता वर्षहोज थाय तेमाटे कह्यु एव गेवेज्जगदेवाण तथा विजयादि ४ अनुत्तर विमान असख्याता कालना विरहछे बेगुणो कोधा पणि असख्याता काल होज हुवे तेमाटे कह्यु, असंखेज्जाइ वा सहस्साइ । सव्वठसिद्धेय पलिओवमस्स सखेज्जभागो एव भाणियव्वं । सर्वा र्थसिद्ध विमानने विषे पल्योपमनो सख्यातमो भाग विरहछे ते बेगुणे कोधा पल्योपम सख्येय भाग होज अवस्थित हुवे इम जाणवो अवस्थित काल । व ढंति हायंति जहन्नं एगसमय । अने वृद्ध पामे ते जघन्य थको एक समय । उक्कोसेणआवलियाए असखेज्जइभाग । उत्कृष्ट थको आवलिकानो अस ख्यातमो भाग । अवठियाणं जभणियं । अने अवस्थितनो काल जेपूर्वे कह्यो ते जाणवो । सिद्धाण भंते केवइयकाल वढंति । सिद्ध हेभगवन् । केतलो का ल वृद्धि पामे इतिप्रश्न उत्तरं । गोयमा जहन्नेण एकसमय उक्कोसेण अठसमया । हेगौतम । जघन्यथी एक समय उत्कृष्टथी आठ समय जे निरन्तर सीझे तो आठ समय लगे सीझे पछे अवश्य अतर पडेज सिद्धने । केवइय अवठिया । केतलोकाल अवस्थित इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण एगंसमय उक्को सेण छम्मासा । हे गौतम । जघन्यथको एक समय उत्कृष्टथी छ मासनो विरहकाल छे तेमाटे तेतलोज अवस्थित काल हुवे तिवार पूठे वधे पणि घट

एगिंदिया तइयपदे सेसा जीवा
नोसोवचया नोसावचया नोसोवचयसावचया निरुवचयनिरवचया । सिद्धा सोवचया नोसावचया नोसोवचय सा
चउहिं पएहिं भाणियव्वा । सिद्धाणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! सिद्धा सोवचया नोसावचया नोसोवचय सा
वचया निरुवचयनिरवचया । जीवाणं भंते ! केवइयं कालं निरुवचयनिरवचया ? गोयमा ! सव्वद्धं नेरइ
याणं भंते ! केवइयं कालं सोवचया ? गोयमा ! जहन्नं एक्कं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं

वाना अभावथकी अवस्थित विमणी नही ॥ हिवे जीवादिकनेज भङ्गान्तरे कहेछे—जीवाणभंते किंसोवचया सावचया सोवचयसावचया निरुवचय नि रवचया । जीव हे भगवन् ! स्यु पूर्वे जे जीवछे तेहने विषे बीजाना ऊपजवाथी वधे पूर्वे जे जीवछे तेहथी कोई एकाना नीकलवाथी हानि हुवे क अजवा चविवाथी वृद्धि हानिनो एकभाव ३ ऊपजवा चविवाने अभावेकरी वृद्धिहानिना अभाव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमाजीवाणोसोवचया णो सा वचया । हे गौतम ! जीव सोपचय नही वृद्धिना अभावथी १ सापचय पणि नही हानिना अभावथी २ । णोसोवचयसावचया । सोपचय सापचय पणिनही वृद्धि हानि समकालना अभावथकी । निरुवचय णिरवचया । निरुपचय निरपचयछे जीवनी वृद्धि हानि एकही नही ए भागोछे । एगिं दिय तइयपदे सेसाजीवा चउहिंपदेहिं भाणियव्वा । एकेन्द्री त्रीजे पदे कहवा सोवचया सावचया इत्यर्थ समकाले ऊपजवो चविवो तिणेकरी हानि वृद्धिना भावथी शेष भाङ्गाने विषे ते सभवे नही प्रत्येके उत्पाद उद्वर्त्तना तेहना विरहना भावथी शेषजीव चारेई पदेकरी कहवा तिहां चारेई भाङ्गा नो सभवछे तेमाटे । सिद्धाणभंते पुच्छा । सिद्ध हे भगवन् ! इत्यादि प्रश्न कीधो उत्तर । गोयमा सिद्धासोवचया । हेगौतम ! सिद्धने विषे वृद्धिछे तेमाटे सोपचय कहीये पणि । णो सावचया २ । सापचय नही हानिना अभावथी । णोसोवचय सावचया । ऊपजवा चविवाथी हानि वृद्धिनो एकभाव न ही ३ । निरुवचय निरवचया । वृद्धि हानि एकही नही एतले सिद्धने विषे पहिलो छेहलो ए २ भाङ्गा हुवे । जीवाणभंते केवइयकाल निरुवचय निर वचया णो सव्वद्धं । जीव हेभगवन् ! केतला लगे वृद्धि हानि एकही नही एतले अवस्थित इतिप्रश्न हे गौतम ! त्रिकालने विषे । णेरइयाणभंतेकेवइयका

॥ टीका ॥ त्यादि ॥ सोपचया सवृद्धय प्राक्तने भ्यो पामुत्पादात् सापचया प्राक्तनेभ्य केषाञ्चिदुद्वर्तना त्सहानय· सोपचयसापचया उत्पादोद्वर्तनाभ्या वृ
द्धिहान्यो र्युगपद्भावात् निरुपचयनिरपचया उत्पादोद्वर्तनयो रभावेन वृद्धिहान्यो रभावात् ननू पचयो वृद्धि रपचयस्तु हानि र्युगपद्वय मद्वय चात्र
स्थितत्व मेवच शब्दभेदव्यतिरेकेण कोनयो· सूत्रयो र्भेद ? उच्यते पूर्वत्र परिमाण मभिप्रेत मिहतु तदनपेक्ष मुत्पादोद्वर्तनामात्रं ततश्चेह तृतीयभ
ङ्गके पूर्वोक्तवृद्ध्यादिविकल्पाना त्रयमपि स्या तथाहि–बहुतरोत्पादे वृद्धि र्बहुतरोद्वर्तनेच हानि· १ समोत्पादोद्वर्तनयो श्चावस्थितत्व मित्येव भेदइ
ति ॥ एगिंदियातइयपएत्ति ॥ सोपचयसापचयाइत्यर्थ·, युगपदुत्पादोद्वर्तनाभ्या वृद्धिहानिभावात् शेषभङ्गकेषु ते नसम्भवन्ति प्रत्येक मुत्पादोद्वर्त

॥ मूल ॥ केवइय कालं सावचया एवंचेव केवइयं काल सोवचयसावचया एवंचेव केवइयं कालं निरुवचयनिरवचया
? गोयमा ! जहन्न एक्कं समयं उक्कोसं वारसमुहुत्ता एगिंदिया सव्वे सोवचया सावचया सव्वद्ध सेसा सव्वे
सोवचयावि सोवचयसावचयावि जहन्न एक्क समयं उक्कोसं आवलियाए असंखेज्जइभागं अवट्ठिएहि वक्कं

॥ भाषा ॥ त सोवचया । नारकी हेभगवन् । केतला काल लगे सोपचय वृद्धिपामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण एग समय । हे गौतम । जघन्य थकी एक स
मय । उक्कोसेणआवलियाए असखेज्जइभाग । उत्कृष्टथकी आवलिकानो असख्यातमोभाग एतलालगे वधे । केवइयकालसावचया एवचेव । केतला का
ल लगे घट इतिप्रश्न हे गौतम । इमहीज जघन्ये एक समय उत्कृष्टे आवलीनो असंख्यातमो भाग । केवइयकालं सोवचया सावचया एवचेव । केतला का
ल लगे सोपचय सापचय वृद्धि हानिनो एकभाव इतिप्रश्न इमज जघन्ये एकसमय उत्कृष्टथी आवलिकानो असंख्यातमो भाग । केवइयकाल निरुवच
य निरवचया । केतलाकाल लगे वृद्धि हानि एकही नही विरह इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण एगसमय उक्कोसेण वारसमुहुत्ता । हे गौतम ।
जघन्य एक समय उत्कृष्टथी वारेमुहूर्त ते थोडे नारकीने उत्कृष्टथी वारे मुहूर्तनो विरहछे । एगिंदियासव्वेसोवचय सावचया सव्वद्ध । एकेन्द्री सगला
वृद्धि हानिना एक भावथको त्रिकाले ऊपजता चविता हुवे जेमाटे विरह नथो । सेसासव्वे सोवचयावि । शेष थाकता सगला सोपचय पणि हुउ पणि

॥ टीका ॥ नयो स्तद्विरहस्य चाभावादिति ॥ अवट्ठिएहिंति ॥ निरूपचयनिरपचयेषु ॥ वक्कतिकालोभाणियव्वोत्ति ॥ विरहकालोवाच्यः ॥ इतिपचमशतेऽष्टमः ॥ ८ ॥ वृद्दकिला थंजात गौतमो राजगृहे प्राय पृष्टवा न्वहुशो भगवत स्तत्र विहारादिति राजगृहादिस्वरूपनिर्णयपरसूत्रप्रपञ्च नवमोद्देशकमाह ॥ तेणमित्यादि ॥ जहापयणुद्देसएत्ति ॥ एजनोद्देशको स्वैव पञ्चमशतस्य सप्तमः तत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यग्वक्तव्यता टकाकुलासे

॥ मूल ॥ तिय कालो भाणियव्वो, सिद्धाण भंते ! केवइयं कालं सोवचया ? गोयमा ! जहन्नं एक्कं समयं उक्कोसं अट्ठसमया केवइयं निरुवचयनिरवचया जहन्नं एक्कं उक्कोस छम्मासा सेव भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी किमिदं भंते ! णयरं रायगिहं ति पवुच्चइ किं पुढवीणयरं रायगिहंति पवुच्चइ आउ नगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव

॥ भाषा ॥ सावचयावि । सापचय पणि । सोवचय सावचयावि । सापचय पणि ए तीनेइ। जहणेणंएगसमयं । जघन्ये एक समय । उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभाग । उत्कृष्टथी आवलिकानो असख्यातमोभाग । अवट्ठिएहिं वक्कंतिकालो भाणियव्वो । निरुपचय निरपचय ते अवस्थित तिहां विरहकाल कहवो पणि पूर्वोक्त अवस्थित न कहवो । सिद्धाणभंते केवइयकाल सोवचया । सिद्ध हे भगवन् । केतलाकाल लगे सोपचय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहणेण एक्क समय उक्कोसेण अट्ठ समया । हे गौतम । जघन्य थको एक समय उत्कृष्टथको आठ समय पछे अवश्य अतर पडेज । केवइयकाल निरुवचनिरवचया । केतला काल लगे निरुपचय निरपचय एतले अवस्थित । जहणेण एगसमयं उक्कोसेण छम्मासा । जघन्यथी एक समय उत्कृष्टथी छम्मास यविरह पडे। सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हे भगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे अन्यथा नही । पंचम सयस्स अट्ठमओ उद्देशो सम्मत्तो । ए पाचमा शतकनो आठमो-उद्देशो अर्थथी लिख्यो ॥ ८ ॥ श्री वर्द्धमानस्वामी राजगृह नगरने विषे घणी वार समोसर्या तेमाटे श्री गौतम राजगृह नगरनो स्वरूप पूछेछे—तेणकालेण तेणसमयेण जाव एववयासी । ते कालने विषे ते समयने विषे यावत् इमकहे । किमिदभंते नगर रायगिहतिपवुच्चइ । स्यू ए

॥ टीका ॥

लासिहरीत्यादिका यो क्ता सेह भणितव्येति, अत्रोत्तरं ॥ पुढवीविनगरमित्यादि ॥ पृथिव्यादिसमुदायो राजगृहं न पृथिव्यादिसमुदाया दृते राजगृहशब्दप्रवृत्ति ॥ पुढवीजीवाइयअजीवाइयनगररायगिहतिपवुच्चइत्ति ॥ जीवाजीवस्वभाव राजगृहमिति प्रतीत ततश्च विवक्षिता पृथिवी सचेतना

॥ मूल ॥

वणस्सइ जहा एयणुदेसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहंति पवुच्चइ ? गोयमा ! पुढवीविनगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहंति पवुच्चइ से केणट्ठेण ? गोयमा ! पुढवीजीवाइय अजीवाइय नगरं रायगिहंति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्तमीसयाइं दव्वाइं जीवाइय अजीवाइय नगरं रायगिहंति पवुच्चइ सेतेणट्ठेणंतंचेव ।

॥ भाषा ॥

किं पुढवीणयर । स्यूं पृथिवी नगर । रायगिहंति पवुच्चइ । राजगृह इसो कहीये । आउणयररायगिहंति ए हे भगवन् ! नगर राजगृह नामे कहीये । जहा एयणुद्देसए पचिंदियतिरिक्खजोणियाण वत्तव्वया तहाभाणियव्वा। पवुच्चइ जाव वणस्सइ । अप् नगर राजगृह इसो कहीये एतला लगे कहीये । जाव सचित्ता चित्त मीस एहीज पचमा शतकने सातमें उद्देशे जिम पचेंद्री तिर्यंचने अधिकारे टका कूडा इत्यादि कह्यो तिम इहा पणि कहवो । गोयमा पुढवीविणय याइ दव्वाइ णयर रायगिहंति पवुच्चइ । यावत् सचित द्रव्य अचित द्रव्य मिश्रद्रव्य नगर राजगृह एहवू कहीये इतिप्रश्न उत्तर । जावसचित्ताचित्त रायगिहंति पवुच्चइ । हे गौतम । पृथिव्यादिक समुदाय राजगृह नगर कहीये पृथिव्यादिक समुदाय राजगृह शब्द प्रवृत्ति न हुवे मीसयाइ दव्वाइ णयर रायगिहंति पवुच्चइ । यावत् सचित्त द्रव्य अचित्तद्रव्य मिश्रद्रव्य नगर राजगृह कहवाय । सेकेणट्ठेणभते । ते स्ये अर्थे हे भगवन्। इम कह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुढवीजीवाइय अजीवाइय णयर रायगिहंतिपवुच्चइ । हे गौतम । पृथिवी जीव अजीव स्वभाव नगर राजगृह प्रतीत छे तिवारपछी विवक्षित पृथिवी सचेतन अचेतनपणें करी जीव अने अजीव राजगृह एह वू कहीये । जावसचित्ताचित्तमीसयाइ दव्वाइ जीवाइय णयर रायगिहंति पवुच्चइ । यावत् सचित्त अचित्त मिश्रद्रव्य जीव तथा अजीव एह नगर राजगृह एहवू कहवाय । सेतेणट्ठेण गोयमा । तेणें अर्थे

॥ टीका ॥

चेतनत्वेन जीवा श्चाजीवाश्चेति राजगृह मितिप्रोच्यतइति, पुद्गलाधिकारा दिदमाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ दिवासुज्ञापोगलत्ति॥ दिवा दिवसे शुभा
पुद्गला भवन्ति किमुक्तं भवति शुभपुद्गलपरिणाम स चार्ककरसपर्कात् ॥ रत्तिंति ॥ रात्री ॥ नेरइयाणश्रसुज्ञापोग्गलत्ति ॥ तत्क्षेत्रस्य पुद्गलशुभता

॥ मूल ॥

सेणूणं जंते ! दिवाउज्जोए राइअंधयारे ? हंता गोयमा ! जाव अंधयारे सेकेणठेण ? गोयमा ! दिवा सु
जापोग्गला सुजेपोग्गलपरिणामे रातिं असुजापोग्गला असुजेपोग्गलेपरिणामे सेतेणठेण। नेरइयाणं जंते!
कि उज्जोए अंधयारे ? गोयमा ! नेरइयाणं नोउज्जोए अंधयारे सेकेणठेणं ? गोयमा ! नेरइयाण असुजा
पोग्गला असुजे पोग्गलपरिणामे सेतेणठेणं । असुरकुमाराणं जंते ! किउज्जोए अंधयारे? गोयमा! असुर

॥ भाषा ॥

हे गौतम । इम कह्यो । जावतचेव । यावत् सर्व तिमहीज कहवो पुद्गलाधिकारथीज कहीछे—सेणूणभते दियाउज्जो तेराइ अंधयारे। ते निश्चे हे भगव
न् । दिने उद्योत रात्रि अधारो इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । हा गौतम । जाव अधियारे। दिने उद्योत रात्रि अधारो। सेकेणठेण गोयमा दिया
सुभा पोग्गलासुभे पोग्गलपरिणामे। ते स्यामाटे हे भगवन् । दिन उद्योत रात्रि अधकार इम कह्यु हे गौतम दिवसे शुभ पुद्गलछे एतला माटेज शुभ पुद्ग
ल परिणाम ते सूर्यना प्रभाव लगे इत्यर्थ। रत्तिअसुभा पोग्गला असुभे पोग्गल परिणामे। रात्रि अशुभ पुद्गल छे एतला माटेज अशुभ पुद्गल परिणाम
रवि किरणादि प्रकाशक वस्तु विवर्जित थको। सेतेणठेण। तेणे अर्थे हे गौतम। इम कह्यु। णेरइयाणभते। नारकीने विषे हे भगवन् । कि उज्जोए अ
धयारे। स्यु उद्योतछे अथवा अधकारछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णेरइयाण णोउज्जोए अधयारे। हे गौतम। नारकीने विषे नथी उद्योत रविकिरणा
दि अभावथी एतला माटेज अन्धकारछे। सेतेणठेणभते एवं वुच्चइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इम कह्यु नारकीने विषे उद्योत नथी अन्धकारछे इतिप्रश्न उ
त्तर। गोयमा णेरइयाणअसुभा पोग्गला असुभे पोग्गल परिणामे। हे गौतम। नारकीने विषे अशुभपुद्गल छेतेना स्वभावथको एतला माटेज अशुभपुद्गल
परिणाम रविकिरणादि प्रकाश वस्तुना अभावथको। सेतेणठेण गोयमा असुरकुमाराणभते कि उज्जोए अधयारे। ते तेणे अर्थे हे गौतम। नारकीने अ

निमित्तभूतरविकरादिप्रकाशकवस्तुवर्जितत्वात् ॥ असुरकुमाराणसुहापोग्गलत्ति ॥ तदाश्रयादीनां भास्वरत्वात् ॥ पुढविकाइयेत्यादि ॥ पृथिवीका यिकादय स्त्रीन्द्रियान्ता यथा नैरयिका उक्ता स्तथा वाच्या एषांहि नास्त्युद्योतो न्धकार चास्ति पुद्गलाना मशुभत्वा दित्येवं भावना एतत्सूत्रं सत्यपि रविकरादिसंपर्के एषा चक्षुरिन्द्रियाभावेन दृश्यवस्तुनो दर्शनाभावात् शुभपुद्गलकार्याकरणेना शुभा पुद्गला उच्यन्ते तत श्चैषा मन्धकारए वेति ॥ चउरिंदियाणसुभासुभपोग्गलत्ति ॥ एषांहि चक्षु सद्भावेन रविकरादिसद्भावे दृश्यार्थावबोधहेतुत्वात् शुभा पुद्गला रविकराद्यभावे त्वशुभा

कुमाराणं उज्जोए नोअंधयारे सेकेणठेणं? गोयमा! असुरकुमाराणं सुभापोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे से तेणठेणं जाव एवं वुच्चइ जाव थणियाणं पुढवीकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइया चउरिंदियाणं भंते! किं उज्जोए अंधयारे? गोयमा! उज्जोएवि अंधयारेवि सेकेणठेणं? गोयमा! चउरिंदियाण सुभासु

न्धारछे असुरकुमारने विषे हे भगवन्! स्यूं उद्योतछे अथवा अन्धकारछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असुरकुमाराण उज्जोए णोअंधयारे। हे गौतम। असुर कुमारने विषे उद्योतछे अन्धकार नही। सेतेणठेण गोयमा। ते स्ये अर्थे हे भगवन्। असुरकुमारने विषे उद्योतछे अन्धकार नही इम कह्यो हे गौतम। अ सुरकुमाराण सुभापोग्गला सुभेपोग्गलपरिणामे। असुरकुमारनेविषे शुभ पुद्गल तेहना आश्रयादिकने दैदीप्यमानपणालगे शुभपुद्गल परिणाम छे। से तेणठेण जाव एव वुच्चइ। ते तेणें अर्थे यावत् इम कह्यु उद्योतछे अन्धकार नही। जाव थणियकुमाराण। यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त इमज कहवो पुढविकाइया जाव तेइंदिया जहा नेरइयाण। पृथिवीकाय १ अप् २ तेज ३ वाउ ४ वनस्पती ५ बेइन्द्री ६ तेरिन्द्री ७ एहने नारकीनी परे अन्धकार छे उद्योत नही इहा ए भावना एहना क्षेत्रने विषे सूर्य किरणादिकनो सचारछे तो पणि एहने चक्षुरिन्द्रिय अभावेकरी देखवायोग्यछे वस्तु ने देखवाना अभावथी शुभ पुद्गलना कार्यने अकरवे करी अशुभ पुद्गल कहीये तेमाटे एहने अन्धकार होज कहवो। चउरिंदियाणभंते किं उज्जोए अंधयारे। चउरिं द्रीनेविषे हे भगवन्! स्यूं उद्योतछे किम्वा अन्धकारछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा उज्जोएवि अंधयारेवि। हे गौतम! उद्योत पणिछे अन्धकार पणिछे।

॥ टीका ॥ बोधाजनकत्वा दशुभाइति, पुद्गला द्रव्यमिति तच्चिन्तानन्तर कालद्रव्यचिन्तासूत्रं ॥ तत्थगयाणंति ॥ नरके स्थितं पञ्चमी स्तृतीयार्थत्वात् ॥ एवंपन्नायइत्ति ॥ एव प्रज्ञायते इद विज्ञायते ॥ समयाइवत्ति ॥ समयाइतिवा ॥ इहतेसिंति ॥ इह मनुष्यक्षेत्रे तेषा समयादीनां मान परिमाण आदित्यगतिसमभिव्यंग्यत्वा तस्य आदित्यगतेश्च मनुष्यक्षेत्रएव भावा न्नरकादौ त्वभावादिति ॥ इहतेसिंपमाणंति ॥ इह मनुष्यक्षेत्रे तेषा समयादीना

॥ मूल ॥ भापोग्गला सुभासुभे पोग्गलपरिणामे सेतेणठेणं एवं जाव मणुस्साणं वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा । अत्थिणं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाण एवं पन्नायए तंसमयाइवा आवलियाइवा जाव ओसप्पिणीइवा उस्सप्पिणीइवा णोइणठेसमठे सेकेणठेणं जाव समयाइवा आवलियाइवा ओसप्पिणीइवा उस्सप्पिणीइवा ? गोयमा ! इह तेसि माण इहं तेसिं पमाणं इहं तेसिं एवंपन्नायते तं समयाइवा जाव उस्स

॥ भाषा॥ सेतेणठेण । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउरिंदियाण सुभासुभे पोग्गलपरिणामे । हेगौतम । चउरिन्द्रीने शुभ अशुभ पुद्गल परिणामछे एहने चक्षुछे तेमाटे रविकिरणादिकने सद्भावें देखवायोग अर्थावबोध हेतु थको शुभ पुद्गल कहीये तेहने अभावे अशुभ कहीये। सेतेणठेण एव जाव मणुस्साण । ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्यु इम यावत् मनुष्यलगे कहवो । वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा असुरकुमारा । वानव्यतर ज्योतिषी वैमानिक एहने जिम असुरकुमार कह्या तिम कहवा एतले उद्योतछे अन्धकार नही पुद्गल द्रव्य चिन्ता अनन्तरे कालद्रव्य चिन्तासूत्र कहेछे—अत्थिणभंते णेरइयाण तत्थगयाण एव पन्नायते । छे हे भगवन् ! नारकीने नरकने विषे रह्याने इम प्रज्ञा तेणे जाणें । त समयाइवा आवलियाइवा । ते समयतिवा आवलिका । जावओसप्पिणीइवा । इम यावत् अवसर्पिणी । उस्सप्पिणीइवा । उत्सर्पिणी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठे समठे । हेगौतम ए अर्थ समर्थ नही । सेकेणठेण जाव समयाइवा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् इम कह्यु यावत् समय । आवलियाइवा ओसप्पिणीइवा उस्सप्पिणीइवा । आवली अवसर्पिणी उत्सर्पिणी नारको नजाणे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इहितेसिमाण इहि तेसि पमाण इहि तेसि पन्नायते तजहा । हे गौतम इहा

॥ टीका ॥

नै प्रमाणं प्रकृष्ट मानं सूक्ष्ममान मित्यर्थ स्तत्र मुहूर्त्त स्तावन्मान तदपेक्षया लव सूक्ष्मत्वा त्प्रमाणं तदपेक्षया स्तोक प्रमाण लवस्तु मान मित्येवं तद्यं यावत्समयइति ततश्च ॥ इहतेसिमित्यादि ॥ इह मर्त्यलोके मनुजे स्तेषा समयादीना सम्बन्धि एव वद्यमाणस्वरूपं समयत्वा द्येवं ज्ञायते तथा या समयाइतिवेत्यादि इहच समयक्षेत्रा द्वहिर्वर्तिना सर्वेषामपि समयाद्यज्ञान मवसेय' तत्र समयादिकालस्या भावेन तद्व्यवहाराभावात् तद् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्काश्च यद्यपि केचि न्मनुष्यक्षेत्रेपि सन्ति तथापि तेऽल्पा. प्राय स्तदव्यवहारिण श्चेतरेतु बहवइति'

॥ मूल ॥

पंचिदियतिरिक्खजोणि
प्पिणीइवा सेतेणं जाव नोएवंपन्नायए समयाइवा जाव उस्सप्पिणीइवा एवं जाव
से या । अत्थिण भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवंपन्नायइ तं समयाइवा जाव उसप्पिणीइवा हंता अत्थि
जाव केणट्ठेण गोयमा ! इहं तेसिं माणं इहचेव तेसिं पमाणं इह तेसिं एवं पन्नायइ तंजहा—समयाइवा

॥ भाषा ॥

नारकादि मनुष्यक्षेत्रने विषे ते समयादिकनो मान कहता परिमाणछे आदित्य गति करी समयादि जाणीये ते आदित्यनी गति मनुष्यक्षेत्रने विषेछे अपे कने विषे तेहना अभावथकी इहां ईज प्रमाणछे सूक्ष्ममान इत्यर्थं ते मान प्रमाणनो विचार करेछे—तिहां मुहूर्त्त मान कहीये तेह मुहूर्त्तनो स चायें लवने सूक्ष्मपणा थकी प्रमाण कहीये ते लवनी अपचाये स्तोकने सूक्ष्मपणा थकी प्रमाण कहीये लवने मान कहीये इणें प्रकारे यावत् जाव मयलगे जाणवो तिवारपछी इहाज ते समयादिकना सम्बन्धी इम वक्ष्यमाण स्वरूपें समयपणो आदिदेई इम जाणीये ते कहेछे—समयाइवा अज्ञान उसप्पिणी एव जाव पचिंदियतिरिक्खजोणिया । समय यावत् उत्सर्पिणी ताई कहवो ए समय क्षेत्रथकी वाह्यवर्त्ती सगलाने समयादिकनो भवनप तीज जाणवो तिहा समयादि कालने अभावे करी तेह व्यवहारनो अभावछेजेमाटे इम यावत् पचेंद्री तिर्यंच लगे कहवो एपचेंद्री तिर्यंच अपेक्षा ती व्यतर ज्योतिषी एयद्यपि केई एक मनुष्य क्षेत्रने विषे पणिछे तथापि ते अल्पछे ते पणि प्राये अव्यवहारीछे अने मनुष्यक्षेत्र विना घणाछे ते जाणवू यें ते नजाणे । अत्थिणभंते मणूसाण इहगयाण एव पन्नायइ तजहा । छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! मनुष्यने इहा मनुष्यक्षेत्रने विषे इम प्रज्ञा

॥ टीका ॥

पेक्षया ते नजानन्ती त्युच्यतइति' कालनिरूपणाधिकारा द्रात्रिंदिवलक्षणकालविशेषनिरूपणार्थ मिदमाह ॥ तेणंकालेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ असखे ज्जेलोएत्ति ॥ असङ्ख्याते असङ्ख्यातप्रदेशात्मकत्वा ल्लोके चतुर्दशरज्ज्वात्मके क्षेत्रलोके आधारभूते ॥ अणंताराइंदियत्ति ॥ अनन्तपरिमाणानि रात्रिन्दि वा न्यहोरात्राणि ॥ उप्पज्जिसुइत्यादि ॥ उत्पन्नानिवा; उत्पद्यन्तेवा; उत्पत्स्यन्तेवा, पृच्छता मयमभिप्रायो यदिनामा सख्यातो लोक स्तदा कथ तत्रानन्तानि तानि भवितु मर्हन्ति अल्पत्वा दाधारस्य महत्त्वा द्धाधेयस्येति, तथा ॥ परित्ताराइंदियत्ति ॥ परीतानि नियतपरिमाणानि नानन्ता

॥ मूल ॥

उस्सप्पिणीइवा सेतेणठ्ठेणं वाणमंतरजोइसवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं । तेणं कालेणं तेण समएण पासा वच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणस्स भगवन्त महा

॥ भाषा ॥

ते कहेछे —समयाइवा जावउस्सप्पिणीइवा । समय इतिवा यावत् उत्सर्पिणी लगे इतिप्रश्न उत्तर । हता अत्थि । हा गौतम छे । सेकेणट्ठेणभते । ते स्यें अर्थ इमकह्यु हे भगवन् ! गोयमा इहिं तेसि पमाण । हे गौतम । इहा तेहनो मान । इहचेवपमाणं । इहां मनुष्यक्षेत्रे तेहनो प्रमाण सूक्ष्म मान । इहचेवतेसि एव पणायते तजहा । इहा निश्चे तेहने इम प्रज्ञायते जाणीये ते कहेछे—समयाइवा जावउस्सप्पिणीइवा । ए समय यावत् उत्सर्पिणी ल गे जाणवो । सेतेणट्ठेण । ते तेणें अर्थे हे गौतम । इम कह्यु । वाणमतरजोइस वेमाणियाण जहाणेरइयाण । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक ए जिम नार कीने कह्यो तिम कहवो एहनो युक्ति पूर्वे लिख्योछे । तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जा । काल निरूपणाधिकारथी रात्रि दिन लक्षण काल विशेष निरूपणने अर्थे कहेछे—ते कालने विषे ते समयने विषे पार्श्वनाथना गच्छ सतानिया । थेराभगवंतो । शिष्य प्रशिष्यादिक तपवृद्ध स्थविर ज्ञानवन्त ते । जेणेवसमणे भगवमहावीरे । जिहा श्रमण भगवन्त श्री महावीर स्वामीछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहा आवीने । समणस्सभगवओ महा वीरस्स । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर स्वामीने । अदूरसामते ठिच्चा । अतिदूर नही अति समीप इम रहीने । एववयासी । इम कहे । सेणूणभते असखि ज्जेलोए अणतराराइंदिया उपज्जिसुवा । ते निश्चे हेभगवन् ! असख्यात प्रदेशरूपपणायकी चउदरज्ज्वात्मक क्षेत्रलोक आधारभूतने विषे अनन्त प

॥ टीका ॥

नि इह्त्यमभिप्रायो यद्यनंतानि तानि तदा कथं परीतानी तिविरोधः, अत्र हन्तेत्या द्युत्तरं अत्रचाय मभिप्रायो ऽसङ्ख्यातप्रदेशेऽपि लोके नन्ता जीवा वर्तन्ते तथाविधस्वरूपत्वा देकत्राश्रये सहस्रादिसङ्ख्यप्रदीपप्रभेव तेषै कत्रैव समयादिके काले अनन्ता उत्पद्यन्ते विनश्यन्तिच सच समयादि काल स्तेषु साधारणशरीरावस्थाया मनन्तेषु प्रत्येकशरीरावस्थायाच परीतेषु प्रत्येकं वर्त्तते तत्स्थितिलक्षणपर्यायरूपत्वा तस्य तथाच कालो नन्त परीतश्च भवती त्येव चासङ्ख्येयेपि लोके रात्रिदिवा न्यनतानि परीतानिच कालत्रयेपि युज्यन्तइति, एतदेव प्रश्नपूर्वकं तत्संमतजिनमतेन दर्शयन्ना

॥ मूल ॥

वीरस्स अदूरसामते ठिच्चा एवंवयासी । सेणूणं भंते ! असखेज्जेलोए अणंताराइंदिया उप्पज्जिंसुवा उप्प ज्जंतिवा उप्पज्जिस्सतिवा विगच्छिंसुवा विगच्छिंतिवा विगच्छिस्संतिवा परित्ता राइंदिया उप्पज्जिंसुवा ३

॥ भाषा ॥

जपजे छे ऊपजस्यें विनाश पाम्या विनाश पामेछे विनाश पामस्ये इहा प्रश्ननो ए अभिप्राय जाणवो असख्यात प्रदेशात्मक लोकछे तो तिहा अनन्ता रात्रि दिन किमहुवे आधारनो अल्पपणा थकी तथा आधेयना महत्वपणा थकी । परित्ताराइंदिया उप्पज्जिसुवा । तथा नियत परिमाण अहोरात्रि जपना ३ । विगच्छिसुवा ३ । विनाश पाम्या इम ३ तीन काले कहवा । हंताअज्जो असखेज्जलोए अणताराइंदिया तचेव । हा अहो । आर्यो असंख्याता प्रदेशनो अपेचायें असख्यातलोक एतले चउदे राजलोकने विषे अनन्ता तथा परीता रात्रि दिनछे ए उत्तरनो ए अभिप्राय असख्यात प्रदेश लोकने विषे पणि अनन्तजीव वर्त्तेछे तथाविधस्वरूप प णाथी एकत्र आश्रयने विषे सहस्रादि सख्य प्रदीप प्रभानी परे ते एकत्र होज समयादि कालने विषे अनन्ता जपजे अनन्ता विनाशपामे ते समयादिक काल ते जीवने विषे साधारण शरीर अवस्थायें अनन्ताने विषे तथा प्रत्येक शरीर अवस्थायें परीतने विषे प्रत्येके वर्त्तेछे एतले ते काल साधारण आश्रयें अनन्तो लेवो प्रत्येक आश्री परीतो लेवो ते स्थिति लक्षण पर्यायरूप पणाथी तेहने तथा काल अनन्तो अने परीतो हुवे इणें प्रकारे असंख्येय पणि लोक ने विषे रात्रि दिन अनन्ता तथा परीता अतीत अनागत वर्त्तमानकाल तीनने विषे पणि घटे । सेकेणट्ठेण जाव विगच्छिस्सतिवा । ते स्ये अर्थे हे भग

॥ टीका ॥

ष ॥ सेणूणमित्यादि ॥ नेत्ति ॥ भवता संबंधिना ॥ अज्जोत्ति ॥ हेआर्या' ॥ पुरिसादाणीएणंति ॥ पुरुषाणां मध्ये आदानीय आदेय' पुरुषादानीय स्तेन ॥ सासएत्ति ॥ प्रतिक्षणस्थायी स्थिरइत्यर्थ' ॥ बुइएत्ति ॥ उक्त' स्थिरश्च उत्पत्तिक्षणा दप्यारभ्य स्या दित्यतआह ॥ अणाइएत्ति ॥ अनादिक' सच सान्तोपि स्या द्रव्यत्ववदित्याह ॥ अणवयग्गेत्ति ॥ अनवदग्रो नन्त ॥ परित्तेत्ति ॥ परिमित' प्रदेशतो नेन लोकस्या सङ्ख्येयत्वं पार्श्वजिनस्या पि संमत मिति दर्शितं तथा ॥ परिवुडेत्ति ॥ अलोकेन परिवृत' ॥ हेट्ठाविच्छिन्नेत्ति ॥ सप्तरज्जुविस्तृतत्वात् ॥ मज्झेसखित्तेत्ति ॥ एकरज्जुविस्तार त्वात् ॥ उप्पिविसालेत्ति ॥ ब्रह्मलोकदेशस्य पञ्चरज्जुविस्तारत्वात् एतदेवो पमानत' प्राह ॥ अहेपलियकसंठिएत्ति ॥ उपरि सङ्कीर्णत्वाधोविस्तृत त्वाच्या ॥ मज्झेवरवइरविग्गहिएत्ति ॥ वरवज्जव द्विग्रहः शरीर माकारो मध्यक्षामत्वेन यस्य स तथा स्वार्थिकश्चकप्रत्यय ॥ उप्पिंउद्धमुइंगागार संठिएत्ति ॥ ऊर्द्धो नतु तिरश्चीनो यो मृदंग स्तस्या कारेण संस्थितो य स तथा मल्लकसपुटाकारइत्यर्थ ॥ अणताजीवघणात्ति ॥ अनन्ता परिमा

॥ मूल ॥

? हंता अज्जो ! असखेज्जेलोए अणंता राइंदिया तंचेव सेकेणट्ठेणं जाव विगच्छिस्संतिवा सेणूणं भेअज्जो पासेणं अरहया पुरिसादाणिएणं सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठाविच्छिन्ने

॥ भाषा ॥

वन् । यावत् विणसस्यें एहीज प्रश्न पूर्वक ते सम्मत जिनमते करी देखाडतो कहेछे—सेणूणभे अज्जोपासेण अरहया पुरिसादाणिएणं सासएलोए बुइए अ णादीए अणवदग्गे परिवुडे हेठ्ठा विच्छिणे मज्झ सखित्ते उप्पिविसाले। ते निये तुम्ह सम्बन्धी अहो आर्यो ! पार्श्वनाथ अरहन्ते तुरुषमाहे आदेय तिणें शास्वतो स्थिर लोक कह्यो ते अनादिछे वली अनन्तछे प्रदेशथी परिमितछे एतले लोकने असख्येयपणो ओ पार्श्वनाथ जिनने पणि सम्मत देखाडयो अलो के परिवृतछे हेठें सातराज विस्तारवन्तछे विचाले साकडो एकराज माटे ऊपर विशाल चौडो ब्रह्मलोक पञ्चराज विस्तारे छे तेमाटे एहीज उपमा नयी कहेछे—अहेपलियकसंठिएमज्झेवरवइरविग्गहिए। हेठे पालगठो सस्थाने विचाले वरवज्र ते सरीखे शरीरछे। उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए। ऊ पर ऊर्द्ध मृदङ्गने आकारेछे ते मल्लक सम्पुटाकार इत्यर्थ। तेसिचण सासयसिलोगसि अणादीयसि। तेहने त्रिये शास्वता लोकने विषे अनादिने विषे।

गतः सूक्ष्मादिसाधारणशरीराणा विवक्षितत्वात् सन्तत्यपेक्षयावा ; नन्ता जीवसन्ततीना मपर्यवसानत्वात् जीवाश्च ते घना आनन्तपर्यायसमूहरूप
त्वा दसङ्ख्येयप्रदेशापिण्डरूपत्वाच्च जीवघनाः किमित्याह ॥ उप्पज्जित्तेत्ति ॥ उत्पद्योत्पद्य विलीयन्ते विनश्यति तथा परीता' प्रत्येकशरीरा अनपेक्षि
तातीतानागतसन्तानतयावा ; सङ्क्षिप्ताः जीवघना इत्यादि तथैव अनेनच प्रश्ने यदुक्त अणतारात्रिदियाइत्यादि' तस्योत्तरं सूचित, यतो नन्तपरीत
जीवसम्बन्धा त्कालविशेषाअपि अनन्ता. परीताश्च व्यपदिश्यते अतो विरोध परिहृतो भवतीति, अथ लोकमेव स्वरूपत आह ॥ सेनूणति ॥ यत्र

॥ मूल ॥

मज्झे वरवइरविग्गहिए उप्पिंउद्धमुइंगाकारसंठिए तेसिंचणं
मज्झेसखित्ते उप्पिंविसाले अहेपलियकसंठिए मज्झे वरवइरविग्गहिए उप्पिंउद्धमुइंगाकारसंठिए तेसिंचणं
सासयंसि लोयंसि अणादीयंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेठाविच्छिन्नंसि मज्झेसंखित्तंसि उप्पिं
विसालंसि अहेपलियंकसंठियंसि मज्झेवरवइरविग्गहियंसि उप्पिंउद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा
उप्पज्जित्ता २ निलीयंति परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता २ निलीयंति । सेनूए उप्पन्ने विगए परिणए अजी

॥ भाषा ॥

अणवदग्गंसि परित्तंसि । अनन्तने विषे नियत परमितने विषे । परिवुडंसि । अलोके वीट्याने विषे । हेठाविच्छिन्नंसि । हेठे विस्तीर्णने विषे । मज्झेसंखि
त्तंसि । माहे साकडाने विषे । उप्पिंविसालंसि । ऊपर चौडो तेहने विषे । अहेपलियकसंठियंसि । नीचे पालखना संस्थाने तेहने विषे । मज्झेवरवइरवि
गहियंसि । विचे वरवज्र तेह सरीखो आकारे तेहनेविषे । उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि । ऊपर उर्द्ध मृदङ्गाकार तेहने विषे । अणंताजीवघणाउप्पज्जि
त्ता २ णिलीयंति । अनन्ता जीव सूक्ष्मादि साधारण शरीर तेहनो अपेक्षायें घणो अनन्त पर्याय जीवने विषे तिणेकरी ऊपजी २ विनसे तेह भणी अन
तो राति थाय । परित्ताजीवघणा उप्पज्जेत्ता २ णिलीयंति । प्रत्येक शरीरनो अपेक्षायें प्रत्येक जीव ऊपजो २ मरे तेमाटे प्रत्येक रात्रि जाणवी ॥ हिव
तेहीज लोकस्वरूपथी कहेछे—सेभूतेउप्पन्ने विगए परिणए । इत्यादि जिहा जीवघणा ऊपजी २ विनसे ते लोक कहीये उपजवा स्वभाव विणसवा स्व
भाव अनेक स्वभाव परिणमे एहनो ए भावार्थ जिणि कारणे अनता जीव ऊपजोने विणसे एव परित्ता पणि तिणे कारणें ए लोकभूत छतोछे पर जो

॥ टीका ॥ जीवघना उत्पद्य विलीयते स लोको भूत· सद्भूतो भवनधर्मसंयोगात् सचा नुत्पत्तिकोपि स्या द्यथा नयमतेना काश मतआह उत्पन्न एवंविध आन श्चरोपि स्यात् यथा विवक्षितघटाभाव इत्यतआह विगत सचा नन्वयोपि किल भवती त्यतआह परिणत· पर्यायातरा ण्यापन्नो नतु निरन्वयना शेन नष्ट , अथ कथ मय मेवंविधो निश्चीयत इत्याह ॥ अजीवेहिंति ॥ अजीवै· पुद्गलादिभि सता विद्यमानै रुत्पद्यमानै र्विगच्छद्भि परिणमद्भिश्च

॥ मूल ॥ वहि लोकइ पलोकइ जे लोकइ सेलोए हंता भगव सेतेणठेणं अज्जो एवंवुच्चइ असंखेज्जेतंचेव तप्पभिइं चण ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समण भगव महावीरं पच्चभिजाणंति सव्वस्सु सव्वदरिसिं । ग्रथाग्रं ३००० । तएण ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ नमसइत्ता एवंवयासी इच्छामिण भते ! तुज्झ अंतिए चाउज्जामाउ धम्माउ पंचमहव्वइय सपडिक्कमं धम्मं उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए अहासुह देवाणुप्पि

॥ भाषा ॥ वनो उत्पत्ति ऊपनो विगमे विणस्या परिणामे परिणत कहवाय, अजीवपुद्गलादिकें परिणमते विणसते करी लोकोयें निश्चेकरोये ते लोक तथा विशेषे निश्चे कीजे ते नानाप्रकार पुद्गले करी जे लोकोये प्रमाणे करी विलोकिये ते लोकशब्द वाचीहुवे इम लोक स्वरूप अभिधायक पार्श्व जिन वचन सम्भारवे करी यो महावीरस्वामीये पोताना वचननो समर्थन कीधो ते स्थविरने स्वामी इम कह्यो । हंता भगव सेतेणठेण अज्जो एवं वुच्चइ असंखेज्जे तंचेव । हा स्वामी । भगवन् इमज तहत्ति ते तेणें अर्थे अहो आर्यो । इम कह्यु असख्यातालोकने विषे अनंता रात्रि दिनहुये इत्यादि तिमज कहवो । तप्पभियच णतेपासावच्चिज्जा । ते वेला थकी चपन ते पार्श्वनाथना अपत्य । थेराभगवतो । स्थविर भगवत । समण भगवमहावीर । श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वा मो प्रतें । पच्च भिजाणति । प्रत्यक्ष जाणे ओलखे । सव्वणू सव्वदरिसि । ते स्यू सर्वज्ञपणें सर्वदर्शी पणें [ग्रन्थ ३०००] तएणं ते थेरा भगवतो । तिवारे ते स्थविर भगवत । समण भगव महावीर वदइ णमसइ णमसइत्ता । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कार करीने । एवंवयासी । इम कहे इच्छामिणभतेतुभणतिए । वाछूछू हेभगवन् । तुम्हारे समीपे । चाउज्जामाओ धम्माओ । चार महाव्रत रूप धर्मथी । पचमहव्वइय । पच महाव्रत । स

जेलोकइसेलो लोकानन्यभूते लोक्यते निश्चीयते प्रलोक्यते प्रकर्षेण निश्चीयते भूतादिधर्म्मकोयमिति, अतएव यथार्थनामा सा विति दर्शयन्नाह ॥ ग्त्ति ॥ योलोक्यते विलोक्यते प्रमाणेन स लोको लोकशब्दवाच्यो भवतीति, एवं लोकस्वरूपाभिधायकपार्श्वजिनवचनसस्मारणेन स्ववचन भगवान् समर्प्पितवानिति ॥ सपडिक्कमणंति ॥ आदिमान्तिमजिनयोरेवा वश्यङ्करणीयप्रतिक्रमणो धर्मो ऽन्येषातु कादाचित्कप्रतिक्रमण आहच-सपडिक्क मणोधम्मो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिणस्स ॥ मज्झिमगाणजिणाण कारणजाएपडिक्कमणं ॥ १ ॥ अनन्तरं देवलोएसुउववन्नाइत्युक्त मतो देवलोकप्ररू

पडिक्कमणधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए? ... मापडिबंधं तएणं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जाव चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिद्धा जाव सव्वदुक्खप्पहीणा अत्थेगइया देवलोएसु उववन्ना कइविहाणं भंते ! देवलोगा पन्नत्ता? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा प० तं०—भवणवासीवाणमंतराजोइसियावेमाणियाभेएणं भवणवासी दसविहा वाणमंतरा अट्ठवि हा जोइसिया पंचविहा वेमाणिया दुविहा गाहा किमियंरायगिहंतिय उज्जोएअंधयारसमएय। पासतिवासि

पडिक्कमणधम्म उवसपज्जिताण विहरित्त०। प्रतिक्रमण सहित धर्मप्रतें आदरीने विचरूं तिवारे स्वामी कहै। अहासुहदेवाणुप्पिया। जिम सुखहुवे तिम करो हेदेवानुप्रिय। धर्मने विषे। मापडिबंध। प्रतिबन्ध विलम्ब म करस्यो। तएण तेपासावचिज्जा। तिवारे ते पार्श्वनाथना अपत्य। थेराभगवतो। स्थविर भगवत केतला एक। जाव चरिमउस्सासणीसासेहिंसिद्धा। यावत् छेहले स्वासो स्वासेकरीं केवल पामी सीधा। जाव सव्वदुक्खप्पहीणा। यावत् सर्व दुखथी मूकाणा। अत्थेगइया देवादेवलोगेसु उववन्ना। केतला एक देवता देवपणे ऊपना, हिवे अधिकारथीज देवलोक प्ररूपणा कहेछे—कइविहा णभंते देवलोगा पन्नत्ता। केतले भेदे हेभगवन्! देवलोक कह्या इतिप्रश्न उत्तर गोयमा चउव्विहादेवलोगा पन्नत्ता तजहा। हे गौतम। चारभेदें देवलोक कह्या ते कहेछे—भवणवासी वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया ४। भवनपती वाणव्यतर ज्योतिषी वैमानिक ४। भेदेणभवणवासी। ए भेदेंकरी भवनपती असुरकुमारादि दशभेद कहवा। वाणमतरा अट्ठविहा। वाणव्यतर आठप्रकारे कहवा। जोइसियापचविहा। ज्योतिषी पचभेदे कहवा चन्द्रादिक। वेमा

॥ टीका ॥

॥ अनन्तरोद्देशकान्ते देवा उक्ता इति देवविशेषभूत चन्द्रमस मुद्दि
पणसूत्रं ॥ कइविहाणामित्यादि ॥ इतिपंचमशतेनवम ॥ ९ ॥ अनन्तरोद्देशकान्ते देवा उक्ता इति देवविशेषभूत चन्द्रमस मुद्दि
श्य दशमोद्देशकमाह तस्य चेद सूत्र ॥ तेणकालेणमित्यादि ॥ एतच्चचन्द्राभिलापेन पञ्चमशतप्रथमोद्देशकवन्नेय मिति ॥ पचमशतेदशम ॥ समाप्त
पचमशतमिति ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
श्रीरोहणाद्रेरिवपञ्चमस्य शतस्यदेशानिवसाधुशब्दान् । विजिघ्यकुर्वेववुधोपदिष्ट्या प्रकाशिता सन्मणि वन्मयार्था. ॥ १ ॥ व्याख्यातं विचि

॥ मूल ॥

पुच्छा राइंदियदेवलोगाय ॥ १ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ पंचम सयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ ९ ॥
तेण कालेणं तेणं समएणं चंपानामं नयरी जहा पढमिल्लो उद्देसउ तहा नायव्वो एसोवि णवरं, चंदिमा
भाणियव्वो ॥ पंचम सयस्स दसमो उद्देसो सम्मत्तो ५ ॥ १० ॥ पचमंसयंसम्मत्तं ॥ ५ ॥

॥ भाषा ॥

णियादुविहा । वैमानिक कल्पवासी कल्पातीत ए बेहुभेदे कहवा । गाहा । उद्देशकार्थ संग्रह गाथा । किमियरायगिहतिय उज्जोए अवयारसमएय। पा
संतिवासिपुच्छा राइदियदेवलोगाय ॥ १ ॥ सूं ए नगर राजगृह केहने कहीये तथा उद्योत अधकार पछे समयादिकनो अधिकार पछे पार्श्वनाथना अ
तेवासीनो अधिकार रात्रि दिन अनंता परीतानो अधिकार अने देवलोकनो अधिकार । सेवभते२ त्ति । तहत्ति हेभगवन्! तुम्हे कह्यु ते सत्यछे। पचमसय
स्स नवमओ उद्देसो सम्मत्तो । ए पचमा शतकनो नवमो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ॥ ९ ॥ अनतरे देव कह्या, हिवे देव विशेषभूत चद्र
उद्दिशीने दशमो उद्देशो कहेछे—तेण कालेण तेण समएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । चपानामणयरी जहापढमिल्लोउद्देसओतहाणेयव्वो । चम्पा
नामे नगरी हुई जिम एहीज पचमा शतकने विषे पहिले उद्देशे ज्योतिषीनो अधिकार कह्यो तिम कहवो । एसोविणवरचदिमा भाणियव्वो । पणि ए
तला विशेष इहा चन्द्रमानो अधिकार कहवो । पचमसयस्सदसमो उद्देसोसम्मत्तो । ए पाचमा शतकनो दशमो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ॥ १० ॥
पचम सय सम्मत्तं । एतले पचमा शतक पणि पूरोथयो ॥ ५ ॥ * * * * ॥

॥ टीका ॥ व्याख्यातं पञ्चमशतं मथा वसरायातं तथाविधमेव षष्ठ मारभ्यते तस्य चोद्देशकार्थसंग्रहणी गाथेयं ॥ वेयणइत्यादि ॥ महावेदनो महानिर्ज्जर इत्याद्यर्थप्रतिपादनपर प्रथम. ॥ आहारत्ति ॥ आहाराद्यर्थाभिधायकोद्वितीय ॥ महस्सवेयत्ति ॥ महाश्रवस्य पुद्गला वध्यते इत्याद्यर्थाभिधानपर स्तृतीय ॥ सपएसत्ति ॥ सप्रदेशो जीवो ऽप्रदेशो वा, इत्याद्यर्थाभिधायक श्चतुर्थ ॥ तमुयएत्ति ॥ तमस्कायार्थनिरूपणार्थ पञ्चम ॥ भविएत्ति ॥ भव्यो नारकत्वादिनो त्पादस्य योग्य स्तद्वक्तव्यतानुगतः षष्ठः ॥ सालित्ति ॥ शाल्यादिधान्यवक्तव्यताश्रित सप्तम ॥ पुढवित्ति ॥ रत्नप्रभादिपृथिवीवक्तव्यतार्थो ऽष्टम ॥ कम्मत्ति ॥ कर्म्मबन्धाभिधायको नवम ॥ अन्नउत्थित्ति ॥ अन्ययूथिकवक्तव्यतार्थो दशम इति ॥ सेणूणं भंते । जे महावेयणे इत्यादि ॥ महावेदन उपसर्गादिसमुद्भूतविशिष्टपीडः महानिर्ज्जरो विशिष्टकर्म्मक्षय. अनयो श्चान्योन्याविनाभूतत्वावि

॥ मूल ॥ वेयणआहारमह स्सवेयसपएसतमुयएभविए । सालीपुढवीकम्म अणउत्थिदसछठगंमिसए ॥ १ ॥ सेणूणं भंते! जे महावेयणे से महानिज्जरे जे महानिज्जरे से महावेयणे महावेयणस्सय अप्पवेयणस्सयसेसेए जे पसत्थ

॥ भाषा ॥ पूर्वे विचित्रार्थ युक्त पाचमो शतक वखाण्यो, हिवे अवसरयो तेहवोज शतक वखाणीयेछे तिहा पहिला उद्देशार्थ संग्रह गाथा वेदनआहारमह स्सवेयसपएसतमुयएभविए । सालीपुढवीकम्म अणउत्थिदसछठगंमिसए ॥ १ ॥ महावेदना महानिर्जरा ए अधिकार १ आहारनो अधिकार २ महाश्रवनो अधिकार ३ जीव सप्रदेशी अप्रदेशी ४ तमस्काय विचार ५ नरक उपजवायोग्य ते अधिकार ६ धान्यादि विचार ७ पृथिवी रत्नप्रभादि विचार ८ कर्मबन्धनो विचार ९ अन्यतीर्थीनो विचार १० ए दश उद्देशा छठा शतकने विषे जाणवा । सेणूणभंते जेमहावेदणे सेमहाणिज्जरे । ते निश्चे हेभगवन् ! जे महावेदनावत ते महानिर्जरावत हुवे अथवा ? । जमहाणिज्जरे । जे महा निर्जरावत । सेमहावेयणे । ते महा वेदनावत हुवे ए एकप्रश्न तथा । महावेयणस्सयअप्पवेयणस्सय सेसए जे पसत्थ णिज्जराए । महावेदनावंतने अने अल्पवेदनामाहे ते येज कहता प्रधान कल्याणकारी जेहने प्रशस्त निर्जराछे एवोजो प्रश्न २ उत्तर । हता गोयमा जेमहावेदणे एवचेव । हा गौतम ! जे महावेदनावत इत्यादि इमहीज कहवो इहा प्रश्नने उत्तर महाउपसर्ग

॥ टीका ॥ र्भावनाय ॥ जेमहानिज्जरेत्यादि ॥ प्रत्यावर्त्तन मित्येक प्रश्नः, तथा महावेदनस्य चाल्पवेदनस्यच मध्ये स श्रेया न्य प्रशस्तनिर्जराक कल्याणानु वन्धनिर्जर इत्येपच द्वितीय प्रश्नः प्रश्नताच काकुपाठा ऽवगम्या, हंतेत्याद्युत्तर, इहच प्रथमप्रश्नस्योत्तरे महोपसर्गकाले भगवा न्महावीरो ज्ञात ' द्वितीयस्यापि सग्वो पसर्गानुपसर्गावस्थायामिति' योमहावेदन स महानिर्ज्जरइति यदुक्त तत्र व्यभिचार शङ्कमान आह ॥ छठीत्यादि ॥ दुद्धोयतरा

॥ मूल ॥ निज्जराए ? हंता गोयमा ! जेमहावेयणे एवंचेव । छठसत्तमासुण भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेयणा ? हंता महावेयणा, तेणं भंते ! समणेहिंतो निग्गंथेहिंतो महानिज्जरतरागा ? णोइणठे समठे सेकेण खाइ च्छठेणं भंते ! एववुच्चइ जेमहावेयणे जाव पसत्थनिज्जराए ? गोयमा ! से जहानामए दुवेवत्थासिया एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते एगेवत्थे खंजणरागरत्ते एएसिण गोयमा ! दोरहं वत्थाण कयरे वत्थे दुधोयतराएचेव

॥ भाषा ॥ कालने विषे भगवान श्री वर्द्धमानस्वामी जाण्व १ बीजा प्रश्नना उत्तरने विषे तेजाज उपसर्ग अनुपसर्ग अवस्थाने विषे जेमहावेदनावत ते महानिर्जरा वत इमकह्यु तिहां व्यभिचार प्रतें आशङ्कतो कहेछे—छठमसत्तमासुणभंतेपुढवीसुणेरइया महावेयणा । छठी सातमी पृथिवीने विषे हे भगवन् ! नारकी महावेदनावतछे इतिप्रश्न उत्तर । हंता महावेयणा । हा गौतम । ते नारकी महावेदनावतछे । तेणंभंते समणेहिंतोणिग्गथेहिंतो । ते छठी सातमी नारकी [redacted] वाक्यालकारे, हेभगवन् । श्रमण तपस्वी थकी तथा निग्रथ थकी । महाणिज्जरतरागा । महा मोटी निर्जराना धणीछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठे समठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थ नही युक्तनथी । सेकेणठेणंभंते एव वुच्चइ जेमहावेयणे जाव पसत्थ णिज्जराए । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु जे महा वेदने सेमहाणिज्जरे इत्यादि तालगे कहवो जालगे प्रशस्त कल्याणकारी श्रेय प्रधान निर्जराछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहाणामए । हेगौतम ते यथा नाम दृष्टांते । दुवेवत्थासिया । दोय वस्त्र कपडा हुवे तेमाटे । एगेवत्थेकद्दमरागरत्ते । एक वस्त्र कर्दम रागे रग्योछे कादासु खरड्योछे । एगेवत्थे खजणरागरत्ते । एक वस्त्र दीवानी कालिमा सरीखो गाडानो वागण तेहने रागे रग्योछे खरड्योछे । एएसिण गोयमा । एहने हे गौतम । दोण्हवत्थाणं ।

॥ टीका ॥

एति ॥ दुष्करतरधावनप्रक्रिय ॥ दुवामतराएति ॥ दुर्वाम्यतरकं दुस्त्याज्यतर कलङ्कं ॥ दुप्परिकम्मतराएति ॥ कष्टकर्त्तव्यतेजोजननभङ्गकरणादिप्रक्रिय
अनेनच विशेषणत्रयेणापि दुर्विशोध्य मित्युक्त ॥ गाढीकयाइति ॥ आत्मप्रदेशैः सहगाढबद्धानि सनसूत्रगाढबद्धसूचीकलापवत् ॥ चिक्कणीकयाइंति ॥
सूक्ष्मकर्म्मस्कन्धाना सरसतया परस्पर गाढसम्बन्धकरणतो दुर्भेदीकृतानि तथाविधमृत्पिण्डवत् ॥ सिढिलीकयाइति ॥ श्लिष्टीकृतानि निधत्तानि सूत्र

॥ मूल ॥

सुपरिकम्मतराएचेव
दुवामतराएचेव दुपरिकम्मतराएचेव कयरेवा; वत्थे सुधोयतराएचेव सुवामतराएचेव सुपरिकम्मतराएचेव
जेवासे वत्थे कद्दमरागरत्ते जेवासे वत्थे खंजणरागरत्ते भगवं तत्थणं जेसेकद्दमरागरत्ते सेण वत्थे दुधोयतराए
चेव दुवामतराएचेव दुपरिकम्मतराएचेव एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइ चिक्क
णीकयाइ सिढिलीकयाइ खिलीकयाइं भवंति , संपगाढंपियणं तवेयणं वेएमाणा णोमहानिज्जरा नोमहा

॥ भाषा ॥

होय वस्त्रमाहे । कयरेवत्थे । किसो वस्त्र । दुधोयतराएचेव । अतिसये करी दुखे धोइवा योग्य निश्चे । दुवामतराएचेव । दुखे तजाय तेहनो कलङ्क । दु
परिकम्मतराएचेव । दुख करवो योग्य तेहने विषे तेज तेहमे विषे तेज उपावणो कठिन । कयरेवावत्थे । किसो वस्त्र । सुधोयतराएचेव । सुखें धोइवा यो
ग्य । सुवामतराएचेव । सुखें त्यजवा योग्य मल कलङ्क । सुपरिकम्मतराएचेव । सुखें तेहने विषे तेज उपायोजाय । जेवासेवत्थे । जिको अथवा ते वस्त्र ।
कद्दमरागरत्ते । कर्दम रागे रग्योछे । जेवासेवत्थे । अथवा जे वली वस्त्र । खजणरागरत्ते । दीवादिकनोकालिमाने रागे रग्याछे इसो स्वामीकह्यो तिवा
रे गौतम कहै । भगवतत्थणजे सेकद्दमरागरत्ते । हेभगवन् । तिहां जे कर्दम रागे रग्योछे । सेणंवत्थे दुधोयतराएचेव । तेण वाक्यालकारे, वस्त्र दुखें धोइ
वा योग्य । दुवामतराएचेव । दुखे त्यजवा योग्य तेहनो मल कलङ्क । दुपरिकम्मतराए । दुखें तेहने विषे तेज उपायोजाय तिवारे गौतम कहै । एवामेव
गोयमा । इणें दृष्टाते हे गौतम । णेरइयाणपावाइ कम्माइं । नारकीये पापकर्म प्रतें । गाढीकयाइ । आत्मप्रदेश स्यू गाढा बाध्या जिम सिणसूत्र सेती
सूईनो समूह बाधीये । चिक्कणीकयाइ । सूक्ष्मकर्मस्कन्ध सरसपणे करी माहोमाहि बांध्या चीकणा कीधा जिम माटीनो पिण्ड । सिढिलीकयाइ खिली

॥ टीका ॥

वह्न्याग्नितप्तलोहशलाकाकलापवत् खिलीभूतानि अनुभूतिव्यतिरिक्तोपायान्तरेण क्षपयितु मशक्यानि निकाचितानीत्यर्थो, विशेषणचतुष्टयेना प्येते न दुर्विशोध्यानि भवन्ती त्युक्त भवति एवंच एवमेवेत्या द्युपनयवाक्य सुघटन स्या द्यतश्च तानि दुर्विशोध्यानि स्यु स्तत सपगाढमित्यादि ॥ नो महापज्जवसाणाभवंतित्ति ॥ अनेन महानिर्ज्जराया अभावस्य निर्वाणाभावलक्षण फल मुक्तमिति, ना प्रस्तुतत्व मस्या शङ्कनीयमिति' तदेव यो म हावेदन स महानिर्ज्जरइति विशिष्टजीवापेक्ष मवगतव्य, नपुन नोरकादिक्लिष्टकर्मजीवापेक्षं यदपि यो महानिर्ज्जर स महावेदन इत्युक्त तदपि प्रायिक यतो भव त्ययोगी महानिर्ज्जरो महावेदनस्तु भजनयेति ॥ अहिगरणित्ति ॥ अधिकरणी यत्र लोहकारा अयोघनेन लोहानि कुट्टयति ॥

॥ मूल ॥

पज्जवसाणा भवंति, सेजहावा केइपुरिसे अहिगरणिं आउडेमाणे महया महया सद्देणं महया महया घोसेण महया महया परंपराघाएणं णोसचाएइ तीसे अहिगरणीए अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं जाव नोमहापज्जवसाणाइं भवंति भगवं तत्थ जे से वत्थे

॥ भाषा ॥

भूाइं भवति सपगाढपियणं तेवेदण वेदमाणा णोमहाणिज्जरा णोमहापज्जवसाणाभवति। निधत्त कीधा जिम सूवें बाधी अग्नितप्तलोहशलाका समूहनीपरे विना भोगव्या उपायांतरे खेरूकीधा नजाय ते निकाचित अतिशयें गाढो पणि ते वेदना वेदता थका नही महानिर्जरावत नही निर्वाण भावलक्षण फलहुवे एतले महानिर्जराने अभावें निर्वाण अभाव फललक्षण कह्यो। सेजहाणामएकेइपुरिसे अहिकरण आकोडेमाणे महया महया। ते य थानामे कोइएक पुरुष अधिकरणने विषे जिहा लोहार लोहना घण सघाते लोहने कूटे ते कूटता थका मोटे मोटे। सद्देणमहयामहया घोसेण महया महया परपराघाएण णोसचाएइ। सद्दें लोह घणने पडवे ऊपनो जे धुनि तिणेकरी अथवा पुरुष हुकार रूपेकरी मोटेमोटे घोषेकरी तेहनेज पूठे ना ठेकरी मोटेमोटे निरतरपणे ते रूप जे वात तेणेंकरी ऊपर २ घातेंकरी इत्यर्थ समर्थ न हुवे। तीसे अहिगरणीए। ते अहिगरणना। अहाबायरेपोग्गले परिसाडित्तए। यथा बादर स्थूल असार पुद्गल तेहप्रतें दूरकरी न सके। एवामेव गोयमा णेरइनाण पावाइं कमाइं गाढोकयाइं जाव णोमहापज्जव

॥ टीका ॥

आउडेमाणेत्ति ॥ आकुट्टयन् ॥ सद्देणाति ॥ अयोघनघातप्रभवेन ध्वनिना पुरुषकृतकिरूपेणवा ॥ घोसेणाति ॥ तस्यैवा नुनादेन ॥ परंपराघाएणंति ॥ परम्परानिरन्तरता तत्प्रधानो घात स्ताडन परम्पराघात स्तेन उपर्युपरिघातेनेत्यर्थ ॥ अहावायरेत्ति ॥ स्थूलप्रकारात् एवामेवेत्याद्युपनये ॥ गा ढीकयाइइत्यादिविशेषणचतुष्केण दुष्परिशाटनीयानि भवन्तीत्युक्त भवति ॥ सुधोयतराएइत्यादि ॥ अनेन सुविशोध्य भवती त्युक्त स्यात् ॥ अहा वायराइति ॥ स्थूलतरस्कन्धान्यसाराणीत्यर्थः ॥ सिढिलीकयाइंति ॥ श्लथीकृतानि मन्दविपाकीकृतानि ॥ निट्ठियाइकयाइति ॥ नि सत्ताकानि विहि तानि ॥ विपरिणामियाइति ॥ विपरिणाम नीतानि स्थितिघातरसघातादिभिः तानिच क्षिप्रमेव विध्वस्तानि भवन्ति एभिश्च विशेषणै सुविशो

॥ मूल ॥

खंजणरागरत्ते सेणं वत्थे सुधोयतराएचेव सुवामतराएचेव सुपरिकम्मतराएचेव एवामेव गोयमा! समणाणं निग्गंथाणं अहावायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं निट्ठियाइं कडाइं विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति, जावइय तावइयंपिण तेवेयण वेएमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति, सेजहानामए केइ

॥ भाषा ॥

साणाइ भवंति । इत्यादि उपनय दृष्टांते करी हे गौतम । नारकी पापकर्म आत्मप्रदेश स्यू गाढा बाध्या चीकणा कीधा निधत्त कीधा विना भोगव्या उपायातरे खेरू कीधा नजाय इत्यादिक विशेषण चारेइंकरी दुखे दूर करवा योग्य कर्महुवे एतलामाटे ते गाढी वेदना वेदताथका नही महानिर्जरा वत यावत् निर्वाण भावलक्षण तेहनो फल होयनही । भगव तत्थजेसेवत्थेखंजणरागरत्ते । हेभगवन् । तिहा जेते वस्त्र दीवानो कालिमा समान खजन रा गे रंग्योछे । सेणवत्थेसुधोयतराएचेव । तेह वस्त्र सुखे धोइवा योग्यछे । सुवामतराएचेव सुपरिकम्मतराएचेव । सुखें त्यजवा योग्य मल कलङ्क सुखें तेहने विषे तेज उपायोजाय । एवामेव गोयमा । एणें दृष्टाते हे गौतम । समणाणंनिग्गंथाणं अहावादराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ णिट्ठियाइ कडाइ विप्परि णामियाइ खिप्पामेवविद्धत्थाइ भवंति जावइय तावइयंपिण । श्रमणने निर्ग्रंथने यथा वादर स्थूलतर स्कंध ते आसार एहवा कर्म तेहप्रतें मंदविपाक कीधा वलहीन कीधा स्थितिघात रस घातादिके करी हीनकीधा कर्म उतावला होज विध्वंसपामे विनाशभावप्रतें पामे जेतला लगे तेतला लगे पणि।

॥ टीका ॥ ध्यानि भवन्तीत्युक्त स्या ततश्च ॥ जावइयमित्यादि ॥ अनन्तर वेदनोक्ता साच करणतो भवतीति करणसूत्रं तत्र ॥ कम्मकरणेति.॥ कर्म्मविषयं कर

॥ मूल ॥ पुरिसे सुक्कं तणहत्थय जायतेयंसि पक्खिवेज्जा सेनूणं गोयमा! सेसुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ ? हंता मसमसाविज्जइ एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाण अहाबायराइं कम्माइं जाव महापज्जवसाणाइ भवंति, सेजहानामए केइपुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदु जाव हंता विद्धंसमागच्छइ एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गथाणं जाव महापज्जवसाणा भवंति सेतेणट्ठेण जे महा

॥ भाषा ॥ ते वेदनं वेदमाणा महाणिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति । ते वेदना वेदतायका महानिर्जरावत हुवे तिवारे निर्वाण भावलक्षण फलहुवे एतले इणें विशेषणें करी सुविसोध्य हुवे इत्यादि कह्यु । सेजहानामएकेइपुरिसेसुक्क । ते यथा नाम दृष्टांते कोईएक पुरुष सूको । तणहत्थयजायतेयंसि पक्खिवेज्जा । तृणनो पूलो अग्निनेविषे वाले । सेनूण गोयमा । ते निश्चे हेगोतम । सेसुक्केतणहत्थए । ते सूको तृणनो पूलो । जायतेयंसिपक्खित्ते समाणे । अग्निमाहि नाख्योथको । खिप्पामेवमसमसाविज्जइ । उतावलो बले भस्मथाय ? हंता मसमसाविज्जइ । गोतम कहे हा भगवन् । बले भस्मथाय । एवामेव गोयमा, इणें दृष्टान्ते हे गोतम । समणाणणिग्गंथाणं । श्रमण निर्ग्रंथ । अहाबायराइं कम्माइं । यथा बादर सूक्ष्म असार कर्म विनाशकारी । जावमहापज्ज वसाणाभवंति । यावत् निर्वाण लक्षण फलपामे, वली बीजो दृष्टान्त कहेछे—सेजहानामएकेइपुरिसे । ते यथानामे कोइ एक पुरुष । तत्तंसि अयकवल्लंसि । ताता लोहरडाने विषे । उदगबिंदूजाव विद्धसमागच्छइ । पाणीनोबिंदुयो नाख्यो थको यावत् उतावलो विनाश पामे । एवामेव गोयमा समणाण णिग्गथाण । इणे दृष्टान्ते हेगोतम ! श्रमण निर्ग्रंथ । जाव महापज्जवसाणाभवंति । यावत् निर्वाण लक्षण फलना विभागी हुवे । सेतेणट्ठेण जेमहावेदणे से महाणिज्जरे जाव णिज्जराए । ते तेणें अर्थे हे गोतम । जे महा वेदना खमे ते वेगा कर्मरहित थाय यावत् निर्जरा कल्याणकारी जाणो अनन्तरे वेदना कह्यो ते करवाथो हुवे तेमाटे करणसूत्र कहेछे—कइविहेणंभंतेकरणे पण्णत्ते । केतलेभेदे हे भगवन् । करण कह्या करण ते करवो निमित्त भूत इत्यर्थ

वेयणे से महानिज्जरे जाव निज्जराए। कइविहेणं भंते ! करणे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे करणे पन्नत्ते तंजहा—मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। नेरइयाणं भंते ! कइविहे करणे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—मणकरणे जाव कम्मकरणे, एवं पंचिंदियाणं सव्वेसिं चउव्विहे करणे पन्नत्ते एगिंदियाणं दुविहे कायकरणेय कम्मकरणेय विगलिंदियाण वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। नेरइयाणं भंते ! किं करणओ असायं वेयणं वेदेंति अकरणओ असायं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! नेरइयाणं करणओ असायं वेयणं

इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चउव्विहे करणे पन्नत्ते तंजहा। हे गौतम। चार भेदे करण कह्यो ते कहेछे—मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे। मनकरण १ वचनकरण २ कायकरण कर्मविषय करणजीव वीर्यप्रतें बंधन संक्रमादि निमित्त भूत कर्म करण कहीये। णेरइयाणंभंतेकइविहे करणे पन्नत्ते। नारकीने हेभगवन् । केतलेभेदे करण कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चउव्विहेकरणे पन्नत्ते तंजहा। हे गौतम। चारेई भेदे करण कह्यो ते कहेछे—मणकरणे। मन करण। जावकम्मकरणे। यावत् कर्म करण। एवंपंचिंदियाण सव्वेसिं चउव्विहे करणे पन्नत्ते तंजहा। इम पंचेन्द्री सर्वने चारेईभेदे करण कह्या मनकरण यावत् कर्म करणताई हुवं। एगिंदियाणं दुविहे। एकेंद्रीने बेभेदे करण कह्यो। कायकरणेय। कायकरण १ चपुन। कम्मकरणेय। कर्मकरण २। विगलिंदियाण। विकलेन्द्रीने तीन करण। वइकरणे। वचनकरण १। कायकरणे। कायकरण २। कम्मकरणे। कर्मकरण ३। णेरइयाणभंतेकिंकरणओअसातावेदणं वेदेंति। नारकी हेभगवन्। स्यूं करणथकी असातावेदना प्रतें वेदे अथवा। अकरणओअसाय वेदण वेदेंति। अकरणथी असाता वेदना प्रतें वेदे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णेरइयाणकरणओ असाय वेदण वेदेंति। हे गौतम। नारकी करणथकी असाता वेदना प्रतें वेदे। णोअकरणओ असायवेदण वेदेंति। पणि नही अकरणथी असाता वेदना प्रतें वेदे। सेकेणट्ठेणं। ते स्यें अर्थे हेभगवन्। इम कह्यु। गोयमा णेरइयाणं चउव्विहे करणे पन्नत्ते तंजहा। हेगौतम। नारकीने चार प्रकारनो करण कह्यो ते कहेछे—मणकरणे। मनकरण १। वइकरणे। वचनक

वेदंति णोअकरणओ असायं वेयणं वेदंति । सेकेणठेणं ? गोयमा ! नेरइयाणं चउव्विहे करणे प० तंजहा— मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे । इच्चेतेणं चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ असाय वेयणं वेदंति णोअकरणओ सेतेणठेणं । असुरकुमाराणं किं करणओ अकरणओ ? गोयमा ! करणओ णोअ करणओ सेकेणठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराण चउव्विहे करणे पण्णत्ते तंजहा—मणकरणे वइकरणे कायकरणे कम्मकरणे इच्चेतेणं सुभेण करणेणं असुरकुमारा करणओ सायवेयणं वेदंति नोअकरणओ एवं जाव थणियकु

रण २ । कायकरणे । कायकरण ३ । कम्मकरणे । कर्मकरण ४ । इच्चेतेणचउव्विहेण असुभेण करणेण । इणे चारप्रकारने अशुभकरणें करीने । नेरइयाण करणओ असाय वेदण वेदेंति । नारकी करणथको असाता वेदना प्रतें वेदे पणि । णोअकरणओ । नही अकरणथको असातावेदना प्रतें वेदे । सेतेणठेण । तेणें अर्थं हेगौतम । इमकह्यु । असुरकुमाराणभंतेकिंकरणओ अकरणओ । असुरकुमार हेभगवन् । स्यू १ करणथको साता वेदना वेदे अथवा अकरणथको सातावेदना वेदे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा करणओ णो अकरणओ । हे गौतम । करणथी वेदे अकरणथी न वेदे । सेकेणठेण । ते स्ये अर्थं हेभगवन् । इम कह्यु । गोयमा असुरकुमाराण चउव्विहे करणे पणत्ते तजहा । हे गौतम । असुरकुमार देवने करण कह्या ते कहेछे—मणकरणे । मनकरण १ वइकरणे । वचनकरण २ । कायकरणे । कायकरण ३ । कम्मकरणे । कर्मकरण ४ । इच्चेतेण सुभेण करणेण असुरकुमाराकरणओ सायवेदण वेदेंति । इणें चार प्रकारने शुभकरणे करी असुरकुमार करणथको सातावेदनाप्रतें वेदे पणि । णोअकरणओ एव जाव थणियकुमारा । अकरणथकी सातावेदना प्रतें वेदेनही इम यावत् स्तनितकुमार ताइं दशेइं भवनपती कहवा । पुढविकाइयाण एवामेव पुच्छा । पृथिवी कायिकनो इमहीज प्रश्न करवो । णवरइच्चेतेण सुभासुभेणकरणेण । एतलो विशेष इणें शुभ तथा अशुभ करणे करीने । पुढविकाइयाकरणओ वेमायाएवेदणवेदेंति णोअकरणओ । पृथिवीकायिक करणथकी विविध मात्रायें करी किवारे साता किवारे असाता इम वेदना प्रतें वेदे पणि नही अकरणथी वेदना वेदे । ओरालियसरीरासव्वेसुभासुभेण वेमा

मारा । पुढविकाइयाणं एवामेव पुच्छा णवरं, एत्तेएणं सुत्तासुत्तेणं करणेणं पुढविकाइया करणत्त वेमायाए वेयणं वेदति नोत्र्प्रकरणत्त उरालियसरीरा सव्वे सुत्तासुत्तेण वेमायाएदेवा सुत्तेणं सायवेयण वेदंति । जीवाणं त्रंते! किं महावेयणा महानिज्जरा महावेयणा ऋप्पनिज्जरा ऋप्पवेयणा महानिज्जरा ऋप्पवेयणा ऋप्पनिज्जरा ? गोयमा ! ऋत्थेगइया जीवा महावेयणा महानिज्जरा ऋत्थेगइया जीवा महावेयणा ऋप्पनिज्जरा ऋत्थेगइया जीवा ऋप्पवेयणा महानिज्जरा ऋत्थेगइया जीवा ऋप्पवेयणा ऋप्पनिज्जरा सेकेणठेणं ? गोयमा ! पडिमापडिवत्रए ऋणगारे महावेयणे महानिज्जरे छठसत्तमासु पुढवीसु नेरइया महावेयणा ऋप्प

याए । औदारिक शरीरना धरणहार सवला शुभ अशुभकरी किवारे साता किवारे असाता इम वेदना वेदे । देवासुभेणसाय । देव सर्व शुभकारणक री साता वेदना वेदे । जीवाणभंते किंमहावेदणा । जीव हे भगवन् । स्यू महावेदनावंत । महाणिज्जरा । महा निर्जरावंत अथवा १ । महावेदणाअप्प णिज्जरा । महावेदनावंत अल्पनिर्जरावंत २ अथवा । अप्पवेयणामहाणिज्जरा । अल्प वेदनावंत महानिर्जरावंत ३ अथवा । अप्पवेयणाअप्पणिज्जरा । अल्पवेदनावंत अल्पनिर्जरावंत ४ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइया जीवा महावेयणा महाणिज्जरा । हेगौतम । कितला एक जीव महावेदनावंत अने महा निर्जरावंत पणिछे १ । अत्थेगइयाजीवामहावेयणा अप्पणिज्जरा । तथा कोतलाएक जीव महावेदनावंतछे पणि तेहने कर्मनो निर्जरा थोडी छे तेमाटे अल्प निर्जरावंतछे २ तथा । अत्थेगइयाजीवा अप्पवेयणामहाणिज्जरा । कितला एकजीव अल्प वेदनावंत अने महानिर्जरावंत पणिछे तथा । अत्थेगइया अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा । कितला एकजीव अल्पहोज वेदना वेदेछे अल्पहोज निर्जरावंतछे । सेकेणठेणभंते । ते स्ये अर्थे हे भगवन् । इम कहु । गोयमा पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेयणे । हे गौतम । प्रतिमा अभिग्रह विशेष ते प्रतिपन्न पडिवज्या साध महावेदनावंत हुवे तिवारे तेहने महा णिज्जरे । निर्जरा पणि घणी हुवे । छठ सत्तमासुपुढवीसुणेरइयामहावेयणा अप्पणिज्जरा । छठी सातमी पृथिवीने विषे रह्या नारकी ते महा वे

॥ टीका ॥

णं जीववीर्यं बन्धनसंक्रमादिनिमित्तभूतं कर्मकरणं ॥ वेमायाएत्ति ॥ विविधमात्रया कदाचि त्सातं कदाचिदसातमित्यर्थ ॥ महवेयणेइत्यादि ॥ संग्र हगाथा गतार्था ॥ षष्ठशतेप्रथम· ॥ १ ॥ अनन्तरोद्देशके य एते सवेदना जीवा उक्ता स्ते आहारकाअपि भवन्तीति आहारो द्देशक स च प्रज्ञापनाया मिव दृश्य· एवचा सौ नेरइयाण भंते ! किं सचित्ताहारा मीसाहारा ? गोयमा ! नो सचित्ताहारा अचित्ताहारा नोसी

॥ मूल ॥

निज्जरा सेलेसिपडिवन्नए अणगारे अप्पवेयणे महानिज्जरे अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा सेवं भंते भंतेत्ति । महावेयणायवत्थे कद्दमखंजणकएयअहिकरणी तणहत्थयकवल्ले करणमहावेयणाजीवा ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ १ ॥ रायगिहं णगरं, जाव एवंवयासी, आहारुद्देसो जोपन्नवणाए सव्वो निरवसेसो णेयव्वो सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठसयस्स विइउ

॥ भाषा ॥

टनार ा छ पणि तहने अल्पनिर्जरावत कह्या । सेलेसीपडिवन्नए अणगारे अप्पवेयणे महाणिज्जरे । शइउऋलल पच ह्रस्व अक्षर उच्चारणकाल नाम शैलेशी नाम चउदमागुणस्थानकवर्त्ती साधु तेहने अल्पवेदना महानिर्जराछे। अणुत्तरोववाइयादेवा अप्पवेयणा अप्पणिज्जरा । पच अनुत्तर विमान नविषे ऊपनादेव तेहने अल्पवेदनाछे अने निर्जरा पणि अल्पछे । सेवभंतेभंतेत्ति । तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे उद्देशकार्थ संग्रह गाथा महवेयणायवत्थे कद्दमखंजणकएयअहिगरणी । तणहत्थयकवल्ले करणमहावेदणाजीवा ॥ १ ॥ महावेदनाधिकार वस्त्र दोय कर्दम खञ्जन दृष्टान्तो अहिगरणनो दृष्टान्त तणपूलानो दृष्टान्त लोहरडानो दृष्टान्त करणनो अधिकरण महावेदना अधिकार जीवअधिकार ए अधिकार इणि उद्देशामां हे कह्या । सेवभंतेभंतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही । छठसपढमओ उद्देसोसम्मत्तो । ए छठाशतकनो पहिलो उद्देशो संपूर्ण कह्यो ६ ॥ १ ॥ पाछिले उद्देशे जीववेदनावंत कह्या ते आहारवंत हुवे तेमाटे बीजे उद्देशे आहार कहेछे—रायगिहेणयरे जाव एवंवयासी अहारुद्देसोजोपणवणाएसव्वोणिरवसेसोणेयव्वो । राजगृहनगरने विषे यावत् गौतम इमकहे पन्नवणाने विषे आहारनो उद्देशो

॥ टीका ॥

॥ अनन्तरोद्देशके पुद्गला आहारत श्चितिता इहतु बन्धादित इत्येवं सम्बन्धस्य तृतीयो
साहारा इत्यादि ॥ षष्ठशतेद्वितीय॰ ॥ २ ॥ बहुकम्मेत्यादि ॥ बहुकंमत्ति ॥ महाकर्मणा सर्वत पुद्गला बध्यन्ते इत्यादिवाच्य ॥ वत्थपोग्गलपउगसावीससा
द्देशकस्या दा वर्यसङ्ग्रहगायाद्वय ॥ बहुकम्मेत्यादि ॥ बहुकंमत्ति ॥ महाकर्मणा सर्वत पुद्गला बध्यन्ते इत्यादिवाच्य ॥ वत्थपोग्गलपउगसावीससा
यत्ति ॥ यथा वस्त्रे पुद्गला प्रयोगतो विस्त्रसातश्च चीयते किमेव जीवानामपी तिवाच्य ॥ साईएत्ति ॥ वस्त्रस्य सादि पुद्गलचय एव कि जीवाना म
प्यसावित्यादि प्रश्न उत्तरंच वाच्य ॥ कम्मठिइत्ति ॥ कर्मस्थिति र्वाच्या ॥ थिइत्ति ॥ कि स्त्री पुरुषादिर्वा, कर्म्म बध्नाती तिवाच्य ॥ सजयत्ति ॥
कि सयतादिः ॥ सम्मद्दिट्ठित्ति ॥ कि सम्यग्दृष्यादि एव सञ्ज्ञी भव्यो दर्शनी पर्याप्तको भाषक परीतो ज्ञानी योगी उपयोगी आहारक सूक्ष्म॰ ॥
चरिमबधेयत्ति ॥ एता नाश्रित्य बन्धो वाच्यः ॥ अप्पबहुति ॥ एषामेव स्त्रीप्रभृतीनां कर्मबन्धकाना परस्परेणा ल्पबहुता वाच्येति' तत्र बहुकर्म्मद्वा

॥ मूल ॥

उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ २ ॥ बहुकम्मवत्थपोग्गल पयोगसावीससायसादीए । कम्मठिइत्थि
संजय सम्मद्दिठीयसन्नीय ॥ १ ॥ भविएदसणपज्ज त्तभासद्यपरित्तनाणजोगेय । उवनुगाहारगसुहु मचरिम

॥ भाषा ॥

जिम कह्या तिम इहा पणिकहवो, ते इम परइयाणभते किंमचित्ताहारा अचित्ताहारा मीसाहारा गोयमा सचित्ताहारा अचित्ताहारा णोमी
साहारा इत्यादि । सेवभतेभतेत्ति । तहत्ति हेभगवत् । तुम्हे कह्यु ते सर्वं सत्यछे अन्यथानही । छट्ठसवितिओउद्देसो सम्मत्तो । ए छट्ठा शतकनो बीज
उद्देशो अर्थथी कह्यो ६ ॥ २ ॥ पाछे वस्त्रादि कह्या इहा वस्त्रादि कहेछे—बहुकम्मवत्थपोग्गल पयोगसावीससायसादीए । कम्मट्ठी
इत्थिसजय सम्मद्दिट्ठीयसण्णीय ॥ १ ॥ महाकर्मथी पुद्गल बाधे जिम वस्त्रने पुद्गल प्रयोगसाविस्त्रसा वस्त्रनो आदि पुद्गल उपचय तिम जीवने इत्यादि
प्रश्न कर्मनी स्थिति स्त्री पुरुष कर्मबाधे सजतादि विचार सम्यग्दृष्टी विचार सन्नीविचार । भविएदसणपज्जत्त भासयपरित्तणाणजोगेय । उवओगा
हारगसुहु मचरिमबंधेयअप्पबहुं ॥ २ ॥ भव्यदर्शनवत पर्याप्तक भाषक एतलानो विचार ज्ञानयोग उपयोग आहारक सूक्ष्म चरिम ,बधयत्ति, आश्रयी
ने बध कहवो ए स्त्री प्रमुख कर्मबधकने माहोमाहि प्रत्य बहुत्व कहवो तिहा बहुकर्मद्वारने विषे । सेणूणभतेमहाकम्मस्समहासवस्समहाकिरियस्स म

॥ टीका ॥

महा रे ॥ महाकम्मस्सेत्यादि ॥ महाकर्म्मणः स्थित्याद्यपेक्षया महाक्रियस्य अलघुकायिक्यादिक्रियस्य महाश्रवस्य बृहन्मिथ्यात्वादिकर्म्मबन्धहेतुकस्य महावेदनस्य महापीडस्य सर्वत सर्वासु दिक्षु सर्वान् वा, जीवप्रदेशा नाश्रित्य बध्यन्ते आसङ्कलनत श्चीयन्ते वन्धनत उपचीयन्ते निषेकरचनतो ऽथवा, बध्यन्तेवन्धनत श्चीयन्ते निधत्तत उपचीयन्ते निकाचनत ॥ सयासमियंति ॥ सदा सर्वदा सदाऽस्वच व्यवहारतो ऽसातत्येपि स्या दित्यतआह समित सतत ॥ तस्सआयत्ति ॥ यस्य जीवस्य पुद्गला बध्यन्ते तस्या त्मा बाह्यात्मा शरीर मित्यर्थः ॥ अणिट्ठत्ताएत्ति ॥ इच्छाया अविषयतया ॥ अक

॥ मूल ॥

सव्वउ पोग्गला बंधेयअप्पवङ्क ॥ १ ॥ सेनूणं भंते ! महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स महावेयणस्स सव्वउ पोग्गला वज्झंति, सयासमियं पोग्गला वज्झंति, सयासमियं वज्झंति, सव्वउ पोग्गला चिज्झंति, सव्वउ पोग्गला उवचिज्झंति, सयासमियंचणं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए पोग्गलाचिज्झंति, सयासमियंपोग्गलाउवचिज्झंति, सयासमियंचणं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंतअप्पियअसुभअमणुन्नअमणामत्ताए । अणिच्छियत्ताए

॥ भाषा ॥

जेहने मोटो काइका दिक्रिया जेहने ते महा क्रियावन्तने महापीडाना धणीने सर्वदिशि अथवा जीवना सर्व प्रदेश आयी पुद्गल वंधाय । सव्वओपोग्गलाचिज्झति । सर्वदि शि अथवा जीवनाप्रदेश आयी पुद्गल चिणीये । सव्वओपोग्गला उवचिज्झति । सर्वदिशियो अथवा जीवना प्रदेश आयो उपचयकीजे पुद्गल । सयासमियपो ग्गलावज्झति । सदा निरन्तर पुद्गल वधाय आसकलन थकी । सयासमियपोग्गलाचिज्झति । सदा निरन्तरपुद्गल वधथी चिणीये । सयासमियपो ग्गलाउवचिज्झति । सर्वदा निरन्तर पुद्गल निकाचित थकी उपचयकीजे । सयासमियचण । सर्वदा निरन्तर वपुन ण वाक्यालङ्कारे, । तस्स आया दुरूव त्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए अणिट्ठत्ताए । ते जीवने पुद्गल वंधाय तेहनो आतमा बाह्यात्मा इत्यर्थ दुरूप पणे अडेनर्ण वर्णपणे दु र्गन्ध पणे दुरस पणे भूंडेरस पणें भूंडे सर्शपणें इच्छाने अविषय पणे । अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुन्नत्ताए । असुन्दर पणे अप्रेम अहेतुपणे

महाकर्मने स्थित्यादिकनी अपेक्षायें मोटा मिथ्यात्वादिक कर्मबंधन हेतुछे जेहने मोटी काइकी ह्नावेयणस्स सव्वओपोग्गलावज्झति । ते निश्चे हे भगवन् ।

॥ टीका ॥

॥ अमणुन्नत्ताएत्ति ॥ नमनसा ज्ञावतो ज्ञायते सु तत्ताएत्ति ॥ असुंदरतया ॥ अप्पियत्ताएत्ति ॥ अप्रेमहेतुतया ॥ असुभत्ताएत्ति ॥ अमङ्गल्यतयेत्यर्थः ॥ अमणुन्नत्ताएत्ति ॥ नमनसा अम्यते गम्यते संस्मरणतो अमनोम्य स्तद्भाव स्तत्ता तया ॥ अणिच्छियत्ताए न्द्रोय मित्यमनोज्ञ स्तद्भाव स्तत्ता तया ॥ अमणामत्ताएत्ति ॥ नमनसा अम्यते गम्यते संस्मरणतो अमनोम्य स्तद्भाव स्तत्ता तया ॥ अणिच्छियत्ताए त्ति ॥ अनीप्सिततया प्राप्तु मवाञ्छितत्वेन ॥ अहिज्झियत्ताएत्ति ॥ भिध्या लोभः सा सजाता यत्र स भिध्यितो नभिध्यितो ऽभिध्यित स्तद्भाव स्तत्ता तया ॥ अहत्ताएत्ति ॥ जघन्यतया ॥ नोउड्ढत्ताएत्ति ॥ नमुख्यतया ॥ अहयस्सत्ति ॥ अपरिभुक्तस्य ॥ धोयस्सत्ति ॥ परिभुक्तोपि प्रक्षालितस्य ॥ तं तुगयस्सवत्ति ॥ तन्त्वोस्तुरीवेमादे रपनीतमात्रस्य वज्झतीत्यादिना पदत्रयेण इवस्त्रस्य पुद्गलानाच यथोत्तरं सम्बन्धप्रकर्ष उक्तः ॥ भिज्जतित्ति ॥ प्रा

॥ मूल ॥

अभिज्झियत्ताए अहत्ताए नोउड्ढत्ताए दुक्खत्ताए नोसुहत्ताए भुज्जो भुज्जोपरिणमंति ? हंता गोयमा ! महा कम्मस्स तंचेव सेकेण ? गोयमा ! सेजहानामए वत्थस्स अहतस्सवा धोयस्सवा तंतुगयस्सवा आणुपुव्वीए परिभुजमाणस्स सव्वउ पोग्गला वज्झंति सव्वउ पोग्गला चिज्जंति जाव परिणमंति सेतेणठेणं । सेणूण

॥ भाषा ॥

अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अहिज्झियत्ताए । मनथी पणि जेहने सम्भारीये नही करो अशुभ पणेकरी ए सुन्दरछे एहवा मनमे पणि नही जाणीये । अणिच्छियत्ताए अहिज्झियत्ताए । पामवाने इच्छिये पणि नही ते पणे ते ऊपर लगार लोभ नही ते पणेकरी । अहत्ताए णो उड्ढत्ताए दुक्खत्ताए णो सुहत्ताए । जघन्य पणे मुख्यपणे नही ते पणे दुखपणेकरी सुखपणे नही । भुज्जो २ परिणमंति । वार २ परिणमे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा महाकम्मस्स तचेव । हा गौतम । महाकर्मनै त्तने इत्यादि सर्व तिमज कहवो यावत् परिणमे । सेकेणठेणभंते । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कह्यु । गोयमा सेजहानामए वत्थस्स । हे गौतम । ते यथा नाम दृष्टाते वस्त्रने । अहयस्सवा धोतस्सवा । अणभोगव्यां न एतले वावर्या नही तेहनो धोयाने । ततुगयस्सवा । तन्तु गतने तुरीवेमादिकथी उतराने । आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स । आनुपूर्वीये अनुक्रमे ते वस्त्र भोगवता थकाने । सव्वओपोग्गला वज्झति । सर्व पुद्गल वस्त्र मयल भराय । सव्वओपोग्ग लाचिज्जति । सर्वथी पुद्गल मेलपणे चिणीये । जाव परिणमंति । यावत् वार २ परिणमे एतला लगे कहवो । सेतेणठेण गोयमा । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इ

॥ टीका ॥ जल्लियस्सत्ति ॥ यल्लितस्य यानलगनधर्मो क्तनसम्बन्धविशेषत्यागात् ॥ विद्धंस्संतित्ति ॥ ततोध पातात् ॥ परिविद्धस्संतित्ति ॥ निःशेषतया पातात् ॥ जल्लियस्सत्ति ॥ यल्लितस्य यानलगनधर्मो ॥ रजोयुक्तस्य ॥ परिकमिज्जमाणस्सत्ति ॥ पेतमलयुक्तस्य ॥ पंकियस्सत्ति ॥ आर्द्रमलोपेतस्य ॥ मइलियस्सत्ति ॥ कठिनमलयुक्तस्य ॥ रइल्लियस्सत्ति ॥

॥ मूल ॥ भंते ! अप्पासवस्स अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पवेयणस्स सव्वउ पोग्गला भिज्जंति, सव्वउ पोग्गला छिज्जंति, सव्वउ पोग्गला विद्धंसति, सव्वउ पोग्गला परिविद्धंसति, सयासमियं पोग्गला भिज्जंति छिज्जंति विद्धंसति परिद्धंसति सयासमियंचणं तस्स आयासुरूवत्ताए पसत्थंनेयव्व जाव सुहत्ताए नोदुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ ? हंता गोयमा जाव परिणमइ सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! जहा नामए वत्थस्स जल्लियस्सवा; पंकियस्सवा; मइलियस्सवा; रतिल्लियस्सवा; आणुपुव्वीए परिकमिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा

॥ भाषा ॥ अप्पकम्मस्स अप्पकिरियस्स अप्पवेयणस्स। जे जीवने कसकह्यु। सेणूणभंते अप्पासवस्स। ते निश्चे हेभगवन्। थोडा आश्रवःपाप जे जीवने ते अल्पाश्रव। सव्वओपोग्गला भिज्जंति। सर्वथी पुद्गल पूर्व सम्बन्ध वियोग। तेजीव अल्पकर्मने थोडोक्रिया जेहने ते अल्पक्रियाने थोडावेदना जेहने ते अल्पवेदनाने। सर्वथी पुद्गल हेठो पाडे थोडा हुवे इत्यर्थ। सव्वगेथ त्यागथी भेद पामे। सव्वओ पोग्गला छिज्जंति। सर्वथी पुद्गल छेदपामे। सव्वओ पोग्गलाविद्धसति। सर्वथी पुद्गल छेदपामे। सर्वदा निरन्तर पुद्गल भेदपामे। छिज्जति विद्धसति। ओपोग्गला परिविद्धसति। सर्वथी पुद्गल समस्तपणे विध्वंस पामे। सयासमियपोग्गलाभिज्जंति। सर्वदा निरन्तर पुद्गल भेदपामे। सदा सर्वदा निरन्तर ते जीवनो आछेद पामे विध्वस पामे समस्तपणें। परिविद्धसति। विध्वस पामे। सयासमियचणतस्सआतासुरूवत्ताए पसत्थणयव्व। सदा सर्वदा निरन्तर ते जीवनो आत्मा जे जीवने पुद्गल वस्त्राय तेहनो वाह्यात्मा शरीर इत्यर्थ सुरूपपणे इत्यादि प्रशस्तपणे कहवा। जावसुहत्ताए णोदुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमति। यावत् सुखपणें नही दुखपणे वारवार परिणमे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा जावपरिणमति। हां गौतम। यावत् वारवार परिणमे एतलालगे कहवो। सेकेणट्ठेणं। ते स्ये अर्थे हे भगवन्। इम कह्यु। सेजहानामए। हेगोतम। ते यथा नाम दृष्टांते। वत्थस्स जल्लियस्सवा पंकियस्सवा मइलियस्सवा। वस्त्रने मल

क्रियमाणको गमार्थोपक्रमस्य ॥ वस्त्रेत्यादिद्वारे ॥ पयोगसावीससायत्ति ॥ कांदसत्वात् प्रयोगेण पुरुषव्यापारेण विस्रसया स्वभावेनेति ॥ जीवाणक

धोव्वमाणस्स सव्वउ पोग्गला भिज्जति जाव परिणमंति, सेतेणठेणं १ । वत्थस्सणं भंते! पोग्गलोवचये किं पयोगसा वीससा? गोयमा! पयोगसावि वीससावि । जहाणं भंते! वत्थस्सणं पोग्गलोवचये पयोगसावि वीससावि तहाणं जीवाणं कम्मोवचए किंपयोगसा वीससा? गोयमा! पयोगसा नोवीससा सेकेणठेण? गोयमा जीवाणं तिविहे पउगे पणत्ते तंजहा—मणप्पउगे वइप्पउगे कायप्पउगे इच्चेतेणं तिविहेणं पयोगेणं

यकने गोनामस कहनेके तेहने कठिनमल सहितने। रजस्वलवा। रज सहितने। आणुपुव्वीएपरिकम्मिज्जमाणस्स। अनुक्रमे ते धोवताने पर्यंतपाक म क्रिया करताने। सुहेणबारिणाधोव्वमाणस्स। निर्मलपाणी संघातेकरी धोइताथकाने। सव्वओपोग्गलाभिज्जंति जावपरिणमंति। सर्वथो पुद्गल भेदप मे छेदपामे यावत् वारवार परिणमे एतला लगे कहवो। सेतेणट्ठेण गोयमा। ते तेणे अर्थे हे गोतम इमकथु इत्यादि, वस्त्र इत्यादि दार कहेछे— वत्थस्सणभंतेपोग्गलोवचए किंपयोगसावीससा। वस्त्रने हेभगवन्। पुद्गलनो उपचय वृद्धि स्यू प्रयोग पुरुष व्यापारे करी हुवे अथवा स्वभावेकरी हुवे इ तिप्रश्न उत्तर। गोयमा पयोगसावि वीससावि। हेगोतम पुरुष व्यापारेकरी पणिछे स्वभावेकरी पणिछे। जहाणभंतेवत्थस्सणपोग्गलोवचए पयोगसावि वीससावि। जिम ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् वस्त्रने पुद्गल वृद्धि पुरुष व्यापारेकरी तथा स्वभावेकरी हुवे। तहाणंभंतेजीवाणकम्मोवचए किंपयोगसा वीससा। तिम ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् जीवने कर्मपुद्गलनो उपचयवृद्धि स्यू प्रयोगेकरी तथा स्वभावेकरी हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पयोगसा नोवीससा। हेगोतम प्रयोगकरीज हुवे पणि स्वभावे नहुवे, जो स्वभावे नहुवे तो अयोगीने पणिबंधनो प्रसंग हुवे। सेकेणट्ठेणभंते। ते स्यू अर्थे हेभगवन् इमक थु इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवाण तिविहेपयोगे पणत्ते तंजहा। हेगोतम जीवने तीन भेद प्रयोगव्यापार कह्या ते कहेछे—मणप्पयोगे वइप्पयोगे कायप्पयोगे। मनेकरी कीधू वचनेकरी कीधू कायायेंकरी कीधू। इच्चेतेण तिविहेण पयोगेण जीवाण कम्मोवचए पयोगसा नोवीससा। इम तीनेकरी जा

जीवाणं कम्मोवचये पयोगसा नोवीससा एवं सव्वेसिं पचिंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे पुढविकाइयाणं एगविहपत्तगेणं एवं जाव वणस्सइकाइया। विगलिंदियाणं दुविहे पत्तगे पण्णत्ते तंजहा—वइप्पयोगेय कायप्पत्तगेय। इच्चेतेणं दुविहेणं पयोगेण कम्मोवचये पयोगसा नोवीससा सेएणत्थेणं जाव नोवीससा एव जस्स जोप्पत्तगो जाव वेमाणियाणं। वत्थस्सणं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिए सादीए अपज्जवसिए अणादीए सपज्जवसिए अणादीए अपज्जवसिए ? गोयमा ! वत्थस्सणं पोग्गलोवचए सादीए स

रना प्रयोगव्यापार तिणेकरी जीवन कर्मनो वृद्धि प्रयोगेकरी हुवे पणि स्वभावेकरी न हुवे। एवमस्वेसि पचिंदियाण तिविहे पयोगे भाणियव्वे। इम सघलाई जीवनो परे पचेंद्रीने तीनेई प्रकारे प्रयोगयो कर्मनो उपचय कहवो। पुढविकाइयाण एगविहेण पयोगेण एवजावयणस्सइकाइयाण। पृथिवीकाइया जीवने एकप्रकारें करी कायप्रयोगेंकरी कर्मनोवृद्धि कहवो इम यावत् वनस्पती कायपर्यन्त पचेंई एकेंद्रीने एककायप्रयोगेंकरी कर्मनो उपचय कहवो विगलिंदियाणदुविहेपयोगे पणत्त तंजहा। विकलेंद्रीने बेहुप्रकारे प्रयोग कह्या ते कहेछे—वइप्पयोगेय कायप्पयोगेय। वचन प्रयोग कायप्रयोग। इच्चेतेण दुविहेण पयोगेण कम्मोवचए पयोगसाणोवीससा। इणें दोय प्रकारने प्रयोगेंकरी कर्मनो उपचय प्रयोगेंकरी हुवे पणि स्वभावेंकरी हुवे नहीं। सेतेणट्ठेण जाव णो वीससा। ते तिणे अर्थे हेगौतम जीवने यावत् स्वभावें कर्मनीवृद्धि नहुये। एवजस्सजोपयोगो। इम जेहने जे प्रयोगछे ते विचारी कहवो। जाववेमाणियाण। यावत् वैमानिकना दण्डकपर्यंन्त कहवा, सादिद्वार कहेछे—वत्थस्सणभते पोग्गलोवचए किंसादीए सपज्जवसिए। वस्त्रने ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्! पुद्गलनो उपचय वृद्धि ते स्यूं आदिसहित अने अंतसहितछे। सादीएअपज्जवसिए। अथवा आदिसहित अने अन्त रहित हुवे। अणादीए सपज्जवसिए। अथवा आदिरहित अने अंतसहितछे अथवा। अणादीएअपज्जवसिए। आदिरहित अने अंतरहितछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वत्थस्सणपोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए। हेगौतम। वस्त्रने पुद्गलनो उपचय वृद्धि ते आदिसहित अने अंतसहितछे घोयाथी उतर

॥ टीका ॥

॥ ईरियावहियबंधयस्सेत्यादि ॥ ईर्यापथो गमनमार्ग स्तत्र ज न्मोवचएपज्जगसाणोवीससाहि ॥ प्रयोगेणैव अन्यथा योगस्यापि बन्धप्रसङ्ग ' सादिद्वारे ॥ व मेर्यापथिक केवलयोगप्रत्यय कर्म्मेत्यर्थ , तद्बन्धकस्यो पशान्तमोहस्य क्षीणमोहस्य सयोगिकेवलिनश्चेत्यर्थ ' ऐर्यापथिककर्म्मणोहि अबद्धपूर्वस्य

॥ मूल ॥

पज्जवसिए नोसादीए अपज्जवसिए नोअणादीए सपज्जवसिए नोअणादीए अपज्जवसिए । जहाणं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए नोसादीए अप० नोअणादीए सप० नोअणादीए अप० तहाण जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा गोयमा ! अत्थेगइयाण जीवाणं कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए अत्थेगइए अणादीए सपज्जवसिए अत्थेगइए अणादीए अपज्जवसिए नोचेवणं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अपज्जव सिए । सेकेणठेणं ? गोयमा ! इरियावहियाबंधयस्स कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए , भवसिद्धियस्स

॥ भावा ॥

तनाटे । णोसादीएअपज्जवसिए । नही आदिसहित अने अतरहित तथा । णोअणादीएसपज्जवसिए । अनादि सात पणिनही । णोअणादीए अप ज्जवसिए । अनादि अनन्त पणि नहीछे । जहाणभंतेवत्थस्स पोग्गलोवचए सादीएसपज्जवसिए । जिम ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । वस्त्रने पुद्गलनो उप चय वृद्धि आदिसहित अने अतसहितछे । णोसादीए अपज्जवसिए णोअणादीएसपज्जवसिए । नही आदिसहित अने अतरहित अनादि सातनही । णोअणादीए० अपज्जवसिए । अनादि अनन्त नहीछे । तहाणजीवाणंकम्मोवचएपुच्छा । तिम ण वाक्यालकारे, जीवने कर्मोपचय स्यू सादिसातछे इम प्र श्ननोवो उत्तर । गोयमा अत्थेगइयाण जीवाण कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए । हेगौतम । केतला एक जीवने कर्मनो उपचयवृद्धि सादि सातछे । अ त्थेगइयाण अणादीए सपज्जवसिए । केतला एक जीवने कर्मनो उपचय अनादि सातछे । अत्थेगइए अणादीए अपज्जवसिए । केतला एक जीवने अना दि अनन्तकर्मनो उपचयछे । णोचेवण जीवाण कम्मोवचएसादीएअपज्जवसिए । नही निश्चे जीवने कर्मना उपचय सादि अनन्त जेकर्मोपचयनो आदि छ वे तेहना अ त हुवे न तेनाटे । सेकणठेणभंते । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यो । गोयमा इरियावहियबंधयस्स कम्मोवचएसादीएसपज्जवसिए । हे गौत

कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए सेतेणट्ठेणं। वत्थेणं भंते ! किं सादीए सपज्जवसिए चउभंगो ? गोयमा वत्थे सादीए सपज्जवसिए अवसेसा तिन्निवि पडिसे हेयव्वा । जहाणं भंते! वत्थे सादीए सपज्जवसिए नोसादीए अपज्जवसिए नोअणादीए सपज्जवसिए नोअ णादीए अपज्जवसिए तहा जीवाकिं सादीया सपज्जवसिया चउभंगोपुच्छा गोयमा ! सादीयासपज्जवसिया

म । इरियावहियकर्म निष्केवलयोग प्रत्ययकर्म इत्यर्थ तेहना बन्धकने एतले उपशान्तमोहने क्षीणमोहने सयोगीने ए तोनगुणस्थानकवर्त्ती जीवने हुवे ते ईर्यापथिक कर्म पहिला बांध्यो नथी अने तेहना बन्धथो आदिपर्णोवयां पछे तेरमा गुणठाणाथी अयोगी अवस्थायें तथा इग्यारमा गुणठाणाथो श्रे णोने पडवेकरी तेहना बन्धनहीं तेमाटे अंत पणिहुवे एतलामाटे ए कर्मनोबन्ध सादिसपर्यवसित कह्यो । भवसिद्धियस्सकम्मोवचए अणादीएसपज्जवसि ए । भव्यने कर्मनो उपचय अनादि सांतछे भव्यछे ते मोक्षजास्ये तिवारे कर्मनो अंतहुस्यें । अभवसिद्धियसकम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए । अभव्यने कर्मनो उपचय ते अनादि अनन्तछे अभव्यपणा थकी कर्मनो अंतकिवार न हुस्यें । सेतेणट्ठेण गोयमा । ते तेणें अर्थेंहे गौतम । इमकह्यु । वत्थेणभंतेकिसा दीए सपज्जवसिए चउभंगो । वस्त्रपोते हेभगवन् । स्यू ? आदिसहित अने अंतसहितछे इहा पणि चउभगो कहवी । गोयमा वत्थेसादीएसपज्जवसिए । हे गौतम । वस्त्रपोते आदिसहित अने अंतसहितछे । अवसेसातिन्निविपडिसेहेयव्वा । बाकता तोनेइ भागानो प्रतिषेध निषेध करवा असम्भव माटे । जहाणभंते वत्थेसादीए सपज्जवसिए । जिम ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । वस्त्र आदिसहित अने अंतसहित ए भागेछे । णोसादीएअपज्जवसिए । नहीसा दि अनन्त ए भागे तथा । णोअणादीएसपज्जवसिए । नहो अनादि सांत ए भागे तथा । णोअणादीएअपज्जवसिए । नहो अनादि अनन्त ए भागे अस म्भवथकी तथा । तहाण जोवा किमादीया सपज्जवसिया चउभंगा पुच्छा । तिमण वाक्यालंकारे, जोव स्यू सादि सपर्यवसितछे इत्यादि चउभङ्गी पूछ वी । गोयमा अत्थेगइयासादीया सपज्जवसिया । हेगोतम । केतला एक जीवसादि सांतछे इत्यादि इहापणि । चत्त.रिविभगाभाणियव्वा । चउभङ्गी जा

ग्रत्यना त्सादित्वं ग्रयोग्यवस्थाया श्रेणिप्रतिपातेवा; ग्रन्यना त्सपर्यवसितत्वं ॥ गइरागइंपडुच्चति ॥ नरकादिगतौ गमन माश्रित्य सादय· ग्राग
मन माश्रित्यच सपर्यवसिता इत्यर्थ ॥ सिद्धागइपडुच्चसाईयात्रपज्जवसियत्ति ॥ इहा क्षेपपरिहारा वेव–साईअपज्जवसिया सिद्धानयनामईयकाल
मि । ग्रासिकयाइविसुन्ना सिद्धीसिद्धेहिसिद्धते ॥ १ ॥ सव्वसाइसरीर नयनामादिमयदेहसब्भावो । कालागाइतणाउ जहावराइंदियाईण ॥ २ ॥ सव्वो
साईसिद्धो नयादिमोविज्जईतहातच । सिद्धीसिद्धायसया निद्दिठारोहपुच्छाएत्ति ॥ ३ ॥ तचति ॥ तच सिद्धानादित्व मिष्यते यत. सिद्धीसिद्धायेत्या

चत्तारिवि भाणियव्वा । सेकेणठ्ठेणं गो० ! नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवा गइरागइंपडुच्च सादीया सपज्ज
वसिया सिद्धागति पडुच्च सादीया ग्रपज्जवसिया भवसिद्धीया लद्धिं पडुच्च ग्रणादीया सपज्जवसिया ग्रभ
वसिद्धिया ससारं पडुच्च ग्रणादीया ग्रपज्जवसिया सेतेणठ्ठेण । कइणं भंते ! कम्मपगडीउ पणत्ताउ ?
गोयमा ! ग्रठ्ठकम्मपगडीउ पणत्ताउ तंजहा–णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं जाव ग्रंतरायं । नाणावर

गवो । सेकणठ्ठेण गोयमा णेरइयतिरिक्खजोणिय मणुस्स देवगइरागइ पडुच्च सादीया सपज्जवसिया । ते स्य अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु हे गौतम । नारकी
तिर्यंचयोनिक मनुष्य देव एहने गमनप्रते आश्रयीने आदिसहित तथा एहने आगमनप्रतें आश्रयीने अतसहित इत्यर्थ तथा। सिद्धिगइपडुच्चसादीया अप
ज्जवसिया । सिद्धगति आश्रयीने जीवने सादि अनन्त प भाङ्गोछे जेमाटे तिहाथी वली पडवो नथी तेमाटे । भवसिद्धियालद्धिपडुच्च । भवसिद्धिकने भव्य
पणानी लब्धि अनादिछे ते सिद्धपदें पाम्या जाय तेमाटे अनपणिछे तेमाटे । अणादीयासपज्जवसिया । अनादि सातछे । अभवसिद्धिया समारपडुच्च अ
णादीया अपज्जवसिया । अभव्यसिद्धिकने समार आश्रयीने अनादि अनन्तभागोछे तेहन ससारनो जिवारे अत न हुस्ये तेमाटे । ते स्ये अर्थे हेगौतम ।
इमकह्युइहा चउभङ्गो कहवो, हिवे कर्मस्थितिद्वार कहेछे—कइणभंतेकम्मपगडीग्रो पणत्ता । केतली हेभगवन् । कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा
अठ्ठकम्मपगडीग्रो पणत्ता तजहा । हे गौतम । आठ कर्मप्रकृति कही ते कहेछे—णाणावरणिज्ज दसणावरणिज्ज जाव अतराइय । ज्ञानावरणीय कर्मप

दीति ॥ नवसिद्धियालद्धिमित्यादि ॥ नवसिद्धिकानां भव्यत्वलब्धि: सिद्धत्वे ऽपैतीति कत्वा ऽनादिसपर्यवसिताचेति, कर्मस्थितिद्वारे ॥ तिन्नियवाससह स्साइं ॥ आवाहा अवाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगोत्ति ॥ बाधूलोडने बाधतइति बाधा कर्म्मण उदय: नबाधा अबाधा कर्मणो बन्धस्यो दयस्य चा न्तर अबाधया उक्तलक्षणया ऊनिका अबाधोनिका कर्मस्थिति कर्म्मावस्थानकाल उक्तलक्षण कर्म्मनिषेको नवति तत्र कर्म्मनिषेको नाम कर्म्मद लिकस्य अनुनवनार्थो रचनाविशेष स्तनच प्रथमसमये बहुक निषिञ्चति द्वितीयसमये विशेषहीन तृतीयसमये विशेषहीन मेव यावदुत्कृष्टस्थितिक कर्मदलिक तावद्विशेषहीन निषिचति तथाचोक्त-मोत्तूणसगमवाह पढमाइठिईइबहुतरंदव्व । सेसेविसेसहीण जावुक्कोसतिसव्वासि ॥ १ ॥ इदमुक्तं भवति वद्धमपि ज्ञानावरण कर्म त्रीणि वर्षसहस्राणि यावदवेद्यमान मास्ते तत स्तन्यूनो ऽनुनवनकाल स्तस्य सच वर्षसहस्रत्रयन्यून. त्रिंशत्सागरो पमकोटी २ मानइति, अन्येत्वाहु:-अबाधाकालो वर्षसहस्रत्रयमानो बाधाकालश्च सागरोपमकोटी २ त्रिंशल्लक्षण स्तद्वितयमपिच कर्म्मस्थितिकाल सचा बाधाकालवर्जित: कर्मनिषेककालो नवति एव मन्यकर्म्मस्वपि अबाधाकालो व्याख्येयो नवर मायुषि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि निषेक: पूर्वको

णिज्जस्सणं नंते ! कम्मस्स केवइयं कालं बंधठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं तीसं सागरोवमकोडाकोडीन तिन्निय वाससहस्साइं अबाहा अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेन एवंदरिसणावर

णति १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आऊ ५ नाम ६ गोत्र ७ ए आठमो अंतरायकर्म ८। णाणावरणिज्जस्सण भंते कम्मस्सकेवइयकालवधठिइ पणत्ता तजह। । ज्ञानावरणीय हेभगवन् । कर्मनो केतलेकाल वन्धस्थिति प्ररूप्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्त । हेगौतम । जघन्यथको अंतर्मुहूर्त्त । उक्कोसेणतीससागरोवम कोडाकोडीओ । उत्कृष्ट थको तीस कोडाकोडी सागरोपम । तिण्णिवाससहस्साइं अबाहा अबाहूणिया कम्मठिईक म्मणिसेओ । तीन सहस्र वर्षनो अबाधाकाल बाधा कहिये कर्मनो उदय नही जे बाधा ते अबाधा कहीये कर्मनो वन्धनो अने कर्मना उदयनो अबाधा काल कहीये इणे अबाधायें ऊणी कर्मनोस्थिति कर्मनिषेक कहिये उदयआव्या पछीक्षीण समये २ करे भ्यर्थ । एवदरिसणावरणिज्जपि । इम दर्शनावर

॥ टीका ॥

टीत्रिभागश्च आधाकालइति ॥ वेयणिज्जंजहन्नेणंदोसमयत्ति ॥ केवलयोगप्रत्ययबन्धापेक्षया वेदनीयं द्विसमयस्थितिकं भवति एकत्र बध्यते द्वितीये वे

॥ मूल ॥

णिज्जंपि । वेयणिज्जं जहन्नं दोसमया उक्कोसं जहा नाणावरणिज्जं मोहणिज्जं जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीउ सत्तयवाससहस्साणि जाव निसेउ आउगं जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं तेत्ती ससागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि कंमठिई कम्मनिसेउ । नामगोयाणं जहन्नं अट्ठमुहुत्ता उक्कोसं वीसंसागरोवमकोडाकोडीउ दोन्नियवाससहस्साणि अबाहा अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेउ अं

॥ भाषा ॥

गोय कर्म पणि कहवो । वेदणिज्जं जहन्नेणं दोसमया उक्कोसेणं जहाणाणावरणिज्जं । वेदनीय जघन्यथकी दोयसमय ते केवल योग प्रत्ययबन्ध अपेक्षावें वेदनीय द्वि समय स्थितिक हुवे एकणिसमये बाधीये बीजे समये वेदीये जे कहीयेछे—वेयणिज्जस्सजहण्णावारसणामगोयाणिअट्ठमुहुत्तत्ति, ते कषाय स्थिति बन्धआश्रयीने जाणवी उत्कष्ट थकी जिम ज्ञानावरणीयकर्म कह्या तिमज पणि जाणवो । मोहणिज्जजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं । मोहनीय कर्मनो जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त उत्कष्टथकी । सत्तरसागरोवमकोडाकोडीओ सत्तयवाससहस्साणि जाव णिसेओ आउगजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं । सत्तर कोडाकोडी सागरोपम ते सातसहस्र वर्षनो आबाधाकाल कर्मना बन्धनो अने कर्मना उदयनो आंतरउ ए आबाधायें ऊणो कर्मस्थिति कर्मनिषेक उदय आव्या पछे समये २ हाणीकरे आउकर्मनो जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त्त । उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाणिपुव्वकोडी तिभागमब्भहियाणि । उत्कष्टथकी तेत्रीस सागरोपम ते पूर्व कोडाना त्रीजोभाग अधिका एहनो आबाधाकाल एतलोजछै तेमाटे । कम्मठिईकम्मणिसेओ । कर्मस्थिति कर्मनिषेक कहीये उदय आव्या पछी हीन समये २ करे । णामगोयाण जहन्नेणं अट्ठमुहुत्ता । नाम गोत्रना जघन्यथको आठमुहूर्त्त । उक्कोसेणंवीससागरोवमकोडाकोडीओ दोण्णियवाससहस्साणि अबाहाअबाहूणियाकम्मठिई कम्मणिसेओ । उत्कष्टथकी वीस सागरोपम कोडाकोडी दोयसहस्र वर्ष अबाधाकाल कर्मना बन्धनो अने कर्मना उदयनो आंतर ते अबाधाकाल कहीये तेणे अबाधायें ऊणो कर्मनीस्थिति कर्मनिषेक उदय आव्या पछीहीणो समये २ करे इत्यर्थं । अतराइयजहा

॥ टीका ॥

ध्यते, यच्चोच्यते वेयणियस्स जहन्ना बारसनामगोयाणं अट्ठमुहुत्तत्ति ॥ तत्सकषायस्थितिबन्धमाश्रित्येति वेदितव्यमिति, स्त्रीद्वारे ॥ नाणावरणिज्जं भंते ! कम्मं किं इत्थीबंधइ इत्यादि प्रश्नसूत्रं न स्त्री न पुरुषो न नपुंसको वेदोदयरहित सचानिवृत्तिबादरसंपरायप्रभृतिगुणस्थानकवर्त्ती भवति तत्रचा निवृत्तिबादरसंपरायसूक्ष्मसंपरायौ ज्ञानावरणीयस्य बंधको सप्तविधषड्विधबन्धकत्वात् उपशान्तमोहादि स्त्वबंधक एकविधबन्धकत्वा

॥ मूल ॥

तराइयं जहा नाणावरणिज्जं नाणावरणिज्जंणं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ नपुंसउ बंधइ नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसउ बंधइ ? गोयमा ! इत्थीवि बंधइ पुरिसोवि बंधइ नपुंसउवि बंधइ नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसउ सियबंधइ सियनोबंधइ । एवं आउगवज्जाउ सत्तकम्मपगडीउ । आउगं भंते ! कम्मं किं इत्थीबंधइ पुरिसपुच्छा ? गोयमा ! इत्थी सियबंधइ सिय नोबंधइ एवं तिन्निवि भाणियव्वा । नोइ

॥ भाषा ॥

णाणावरणिज्ज । अंतराय कर्मना जिम ज्ञानावरणीयकर्म कह्यु तिम कहवो स्त्री द्वार कहेछे—णाणावरणिज्जेणंभंते कम्मं किं इत्थीबंधइ । ज्ञानावरणीय कर्म हेभगवन् स्यूं स्त्री बंधे अथवा । पुरिसोबंधइ णपुंसओबंधइ । पुरुष बांधे नपुंसक बांधे अथवा । णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुंसओबंधइ । स्त्री नही पुरुष नही नपुंसक नही ते वेद उदयनही ते इहां ते अनिवृत्त बादर सम्पराय नामे नवमो गुणठाणो ते आदिदेई गुणस्थानवर्ती हवे ते बांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थीविबंधइ पुरिसोविबंधइ णपुंसओविबंधइ णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुंसओ सियबंधइ सियणोबंधइ । हे गौतम स्त्री पणिबांधे पुरुष पणिबांधे नपुंसक पणिबांधे स्त्री नही पुरुष नपुंसक नही ते नवमा गुणठाणाथी उपशांतादिके तिहां निवृत्तबादर सूक्ष्मसंपराय ए ज्ञानावरणीयना बंधक छे सप्तविध षड्विध बंधकपणायको उपशांत मोहादिक ११ तो एकविध बंधक अबंधकपणायको एतलाभाटे कह्युं किवारे बांधे किवारे न बांधे । एवंआउगवज्जाओसत्तकम्मपगडीओ । जिम ज्ञानावरणीय कर्म कह्यु तिम आउखा टालीने सात कर्मप्रकृति कहवा । आउगणंभंते कम्मं किं इत्थीबंधइ पुच्छा । आउखो चपुन ए वाक्यालंकारे, हेभगवन् । कर्म स्यूं स्त्रीबांधे इत्यादि प्रश्नपूछ्यो उत्तर । गोयमा इत्थीसियबंधइ सियणोबंधइ एवंतिण्णिविभाणि

इत्यादि प्रश्न स्तत्रस्त्र्यादित्रय मायु: स्याद्बध्नाति स्यान्नबध्नाति बन्धकाले बध्नाति अबन्धकाले दतउक्त स्याद्बध्नाति स्यान्नबध्नातीति, आउगं ण भंते । इत्यादि प्रश्न स्तत्रस्त्र्यादित्रय मायु: स्याद्बध्नाति स्यान्नबध्नाति बन्धकाले बध्नाति अबन्धकाले नवध्ना त्यायुष सकृद वैकत्रभवे बन्धात् निवृत्तस्त्र्यादिवेदस्तु नवध्नाति निवृत्तिबादरसंपरायादिगुणस्थानके ह्यायुर्बन्धस्य व्यवच्छिन्नत्वात्, संयतद्वारे ॥ णाणावरणिज्जमित्यादि ॥ संयत आद्यसंयमचतुष्टयवर्त्ति ज्ञानावरणं बध्नाति यथाख्यातसंयमसंयत स्तूपशान्तमोहादि र्नबध्नाति अतउक्त ॥ सजएसियेत्यादि ॥ असंयतो मिथ्यादृष्ट्यादि संयतासंयतस्तु देशविरत स्तौच बध्नीत निषिद्धसंयमादिभावस्तु सिद्ध सच नबध्नाति हेत्वभावादि

त्थी नोपुरिसो नोनपुंसए नबंधइ । णाणावरणिज्जणं भंते ! कम्म किं संजए बंधइ असंजए एवं संजयासंजए बंधइ नोसंजए नोअसंजए नोसंजयासंजए बंधइ ? गोयमा ! संजएसियबंधइ सियनोबंधइ असंजए बंधइ संजयासंजएवि बंधइ नोसंजए नोअसंजए नोसंजयासंजए नबंधइ एवं आउगवज्जाओ सत्तवि आउगे हेठि

यवा णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुंसओणबंधइ । हे गौतम । स्त्री बंधकाले बांधे अबंधकाले नबांधे सातमा गुणठाणालगेबांधे उपरांत नबांधे आऊखानो बंध वारहोज हुवे तेमाटे इम पुरुष नपुंसक पणि जाणवा निवर्त्या छे तीनेई वेद जेहने ते नबांधे निवृत्तबादरसम्पराय आठमोगुणठाणों आदिदेई गुणठाणाने विषे आऊखानो बंध नथी तेमाटे संयतद्वार कहैछे—णाणावरणिज्जेणंभंतेकम्मकिंसजएबंधइ । ज्ञानावरणीय हेभगवन् ! कर्मप्रते स्यूं संयती साधु ते बांधे । असंजएबंधइ संजयासंजएबंधइ । मिथ्यादृष्टि आदिदेई चार गुणठाणा वर्त्तीने बांधे अथवा देशविरती श्रावक बांधे । णोसंजए णोअसंजए णोसंजयासंजए बंधइ । संयतीनही असंयतीनही संयतासंयतीनही ते सिद्ध ते बांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा संजएसियबंधइ सियणोबंधइ असंजएबंधइ संजयासंजए विबंधइ णोसंजए णोअसंजए णोसंजयासंजएणबंधइ । हेगौतम । पहिला संयमचारित्रे वर्त्तंतो ज्ञानावरणीय बांधे ते दशमागुणठाणा ताई हुवे अने यथाख्यातसंयमे संयत उपशांत मोहादिके गुणस्थानके नबांधे एतलामाटे कह्यो सियबंधइ सियणोबंधइ मिथ्यादृष्टि आदिदेई बांधे देशविरती पणिबांधे ए तीनेई नही ते सिद्धकहिये ते नबांधे मिथ्यात्वादि सत्तानन हेतुना अभावथकी । एवंआउगवज्जाओ सत्तविआउगे हेट्ठिला ति

॥ टीका ॥

ति ॥ आउगेहेट्ठिल्लातिन्निजयणाएत्ति ॥ संयतो ऽसयत· संयतासयत आयुर्बन्धकाले वध्नाति अन्यदातु नेति भजनये त्युक्तं ॥ उवरिल्लेनवधइत्ति ॥ सयतादिषू परितन सिद्ध स चायु नंवध्नाति· सम्यग्दृष्टिद्वारे ॥ सम्माद्दिठीसियत्ति ॥ सम्यग्दृष्टि वीतराग स्तदितरश्च स्या तत्र वीतरागो ज्ञानावर ण न वध्ना त्येकविधवन्धकत्वा दितरश्च वध्नातीति स्या दित्युक्त मिथ्यादृष्टिमिश्रदृष्टीतु वध्नीतएवेति ॥ आउएहेट्ठिल्लादोजयणाएत्ति ॥ सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टी आयु· स्या द्बध्नीत स्या न्न वध्नीत इत्यर्थ स्तथाहि सम्यग्दृष्टि रपूर्वकरणादि रायु र्न वध्नाति इतरस्तु आयु र्वन्धकाले तद्बध्नाति अन्य

॥ मूल ॥

ल्ला तिन्नि भयणाए उवरिल्लो नवंधइ । नाणावरणिज्जं भंते ! कम्मं किं सम्मदिठी वंधइ मिच्छदिठी वंधइ सम्मामिच्छदिठी ? गोयमा ! सम्मदिठी सियवंधइ सियनोवंधइ मिच्छदिठी वधइ सम्मामिच्छदिठी वंधइ एवं आउगवज्जाउ सत्तवि आउए हेठिल्ला दो भयणाए सम्मामिच्छदिठी नवंधइ । नाणावरणं किं सन्नीवंधइ

॥ भाषा ॥

णिभयणाए उवरिल्लो णवधइ । इम आयुकर्मवर्ज्जीने सातेइं कर्मवाधे ते जाणवा आयुकर्मसंयती १ असयती २ सयतासयती ३ ए तीनेइं वधकाले वाधे अन्यथा नवाधे तेमाटे भजनाकही ए तीनथी रहित ते सिद्ध ते आऊखो नवाधे सम्यगदृष्टी द्वार कहेछे—णाणावरणिज्जंभतेकम्मकिसम्मद्दिट्ठीवधइ मिच्छ द्दिट्ठीवधइ सम्मामिच्छद्दिट्ठीवंधइ । ज्ञानावरणीय हे भगवन् । कर्म स्यू सम्यगदृष्टी वाधे १ अथवा मिथ्यादृष्टीवाधे सम्यगदृष्टी मिथ्यादृष्टी ए बेहुनो योग ते मिश्रदृष्टिकहीये जिम दधिगुड योगेकरी केवल गुड पणिनही दधि पणिनही किन्तु पृथकरस हुवे मिथ्यादृष्टोहुवे इतिवाधे । गोयमा सम्मद्दिट्ठीसिय वधइ सियणोवधइ मिच्छद्दिट्ठीवधइ सम्मामिच्छद्दिट्ठीवंधइ एवमाउगवज्जाओसत्तविआउए हेठिल्लादोभयणाए सम्मामिच्छद्दिट्ठीणवधइ । हे गौतम । स म्यगदृष्टी जे वीतरागहुवे ते नवाधे ज्ञानावरणीय तेहने एक वेदनीयना वध माटे पने सरागीवाधे तेमाटे कदा सिवधइ सियणोवधइ, मिथ्यादृष्टीवाधे मिश्रदृष्टी पणिवाधे इम आऊखा टालो सातकर्म आऊखा सम्यगदृष्टी मिथ्यादृष्टी ते बेऊ भजनाये वाधे ते देखाडेछे—सम्यग् अपूर्व करणादिक ते आ ऊखो नवाध अने बीजो वन्धकाले वाधे अन्यदा न वाधे इम मिथ्यादृष्टी पणि वन्धकाले वाधे अन्यदा न वाधे तेमाटे भजना कही मिश्रदृष्टी आऊखो

॥ टीका ॥

दातु न बध्नात्येव मिथ्यादृष्टिरपि मिश्रदृष्टिस्त्वायुर्न बध्नात्येव तद्बन्धाध्यवसायस्थानाभावादिति, संज्ञिद्वारे ॥ सन्नीसियवंधइत्ति ॥ सज्ञी मन· पर्याप्तियुक्त· सच यदि वीतराग स्तदा ज्ञानावरणं नवध्नाति यदि पुन रितर स्तदा बध्नाति तत· स्यादित्युक्त ॥ असन्नीबधइत्ति ॥ मन पर्याप्तिवि कलो बध्नात्येव ॥ नोसन्नीनोअसन्नित्ति ॥ केवलीसिद्धश्च नवध्नाति हेत्वभावात् ॥ वेयणिज्जहेठिल्लादोबधतित्ति ॥ सज्ञी असज्ञीच वेदनीय बध्नीत अ योगिसिद्धवर्ज्जाना तद्बन्धकत्वात् ॥ उवरिल्लेभयणाएत्ति । उपरितनो नोसज्ञी नोअसज्ञी सच सयोगायोगकेवलीसिद्धश्च तत्र यदि सयोगकेवली तदा वेदनीय बध्नाति यदि पुनरयोगकेवली सिद्धो वा, तदा नबध्नाति अतो भजनये त्युक्त ॥ आउगंहेठिल्लादोभयणाएत्ति ॥ सज्ञी चायु· स्याद्बध्नीत अ

॥ मूल ॥

सन्नी सिय वंधइ सिय नवंधइ असन्नी बंधइ नोसन्नी नोअसन्नी नवधइ, एव वेयणिज्जाउगवज्जाउ छकम्मप्पगडीउ वेयणिज्जं हेठिल्ला दोबंधइ उवरिल्ला भयणाए आउग हेठिल्ला दो भयणाए उवरिल्लो नवधइ । नाणावरणिज्जं कम्मं किं भवसिद्धिए वंधइ अभ

॥ भाषा ॥

नवाधे सज्ञोद्वार कहेछे—णाणावरणिज्जभते किसन्नीवधइ असन्नीवधइ नोसन्नी नोअसन्नीवधइ । ज्ञानावरणीय कर्म हेभगवन् । स्यू मनपर्याप्ति सहित ते वाधे मनपर्याप्तिरहित ते वाधे सज्ञोनही असज्ञोनही ते केवलो तथा सिद्धवांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सन्नीसियवधइ सियणोवधइ असन्नीवध इ णोसन्नी णोअसन्नी णवधइ । हे गौतम । संज्ञो मनपर्याप्ति सहित तेजो सरागोहुवे तो ज्ञानावरणीय कर्मवाधे अने वीतराग हुवे तो नवाधे तेमाटे क थ्यु सियवधइ सियणोवंधइ असज्ञो वाधे केवलो तथा सिद्ध नवाधे हेतुना अभावथको । एववेदणिज्जाउगवज्जाओ छकम्मपगडीओ । इम वेदनीय आउग कल्ल ये आउखा टालो छकर्म प्रकृति कहवी । वेदणिज्जहेठिल्लादोवधइ उवरिल्लाभयणाए । वेदनीयकर्म सज्ञो तथा असज्ञो ए दोनो वाधे अयोगी सिद्ध वर्जी । वेदनीयना वधपणा माटे उपरिल्लो ते नोसन्नो नोअसन्नो ते सयोगी अयोगी अने सिद्ध तिहा सयोगी केवलोछे वाधे अने अयोगी केवली तथा सिद्धहुवे ते नवाधे एतलामाटे भजनाकही । आउगहेठिल्लादोभयणाए । आयुकर्म सज्ञो असज्ञो ए बेऊ भजनायें वाधे अतर्मुहूर्तकाल छोज तेहनो वन्ध

न्तर्मुहूर्तमेव तद्बन्धात् ॥ उवरिल्लेनवधइत्ति ॥ केवलीसिद्ध श्चायु र्नबध्नातीति, भवसिद्धिकद्वारे ॥ भवसिद्धीयज्जयणाएत्ति ॥ भवसिद्धिको यो वीतरागः स नबध्नाति ज्ञानावरणं, तदन्यस्तु भव्यो बध्नातीति भजनये त्युक्तं ॥ नोभवसिद्धिएनोअभवसिद्धिएत्ति ॥ सिद्ध सच नबध्नाति ॥ आउयदोरेठि ल्लाभयणाएत्ति ॥ भव्यो ऽभव्य श्चायु र्बन्धकाले बध्नीतो न्यदातु नबध्नीत इत्यतो भजनये त्युक्त ॥ उवरिल्लेनबधइत्ति ॥ सिद्धो नबध्नातीत्यर्थ , द र्शनद्वारे ॥ हेठिल्लातिन्निभयणाएत्ति ॥ चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनिनो यदि छद्मस्थवीतरागा स्तदा नज्ञानावरणं बध्नन्ति वेदनीयस्यैव बन्धकत्वा त्तेषा सरागास्तु बध्नन्ति अतो भजनये त्युक्त ॥ उवरिल्लेनबधइत्ति ॥ केवलदर्शनी भवस्थ सिद्धोवा; नबध्नाति द्वेत्वभावादित्यर्थ. ॥ वेयणिज्जहेठिल्ला

वसिद्धिए नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए बंधइ ? गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए अभवसिद्धिए बंधइ नो भवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए नबंधइ, एवं आउगवज्जा सत्तवि आउग हेठिल्ला दोभयणाए उवरिल्लो नबं धइ । नाणावरणं किं चक्खुदंसणीबंधइ अचक्खुदंसणीबंधइ ओहिदंसणीबंधइ केवलदंसणीबंधइ ? गोयमा !

भाय तेमाटे । उवरिल्लानबधइ । केवलो सिद्ध आऊखो नबाधे भवसिद्धद्वारकहेछे—णाणावरणिज्जकम्माकिंभवसिद्धिएबधइ अभवसिद्धिएबधइ णोभवसि द्धिएणोअभवसिद्धिए बधइ । ज्ञानावरणी कर्म हेभगवन् । स्यूं भव्यबाधे अभव्यबाधे भव्यनहो नहो नहो अभव्यऊो ते सिद्ध ते बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा भवसिद्धिए भयणाए । हेगौतम । जे वीतराग ते ज्ञानावरणीय नबाधे सरागीबाधे तेमाटे भजनाकही । अभवसिद्धिएबंधइ । जे अभव्य ते बाधे । णोभव सिद्धिए णोअभवसिद्धिए णबधइ । भव्य पणिनही अभव्य पणिनही ते सिद्ध ते नबाधे । एवंआउगवज्जासत्तवि । इम आयुकर्म वर्ज्जीने सातेइ कर्मप्रकृति कहवी । आउगहेठिल्लादोभयणाए उवरिल्लानबधइ णाणावरणिज्ज किंचक्खुदंसणीबंधइ । आयुकर्म भव्यनत्री अभव्य, ए बन्धकाले बाधे अन्यदा नबाधे तेमा टे भजनाकही सिद्ध ते नबाधे, हिवे दर्शनद्वार कहेछे—णाणावरणिज्ज किंचक्खुदंसणीबंधइ । ज्ञानावरणीय कर्म स्यूं चक्षुदर्शनो बाधे । अचक्खुदंसणीबंध इ । अचक्षु दर्शनो बाधे । ओहिदंसणीबंधइ । अवधि दर्शनो बाधे । केवलदंसणीबंधइ । केवलदर्शनी बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा हेठिल्लातिण्णिभयणाए

तिन्निव वइत्ति ॥ आद्या स्त्रयो दर्शनिन श्छद्मस्थवीतरागा सरागाश्च वेदनीयं बध्नन्त्येव ॥ केवलदंसणीजयणाएत्ति ॥ केवलदर्शनी सयोगिकेवली ब ध्नाति अयोगिकेवली सिद्धश्च नबध्नातीति जजनये त्युक्त, पर्याप्तकद्वारे ॥ पज्जत्तएजयणाएत्ति ॥ पर्याप्तको वीतराग. सरागश्च स्या त्तत्र वीतरागो ज्ञानावरण नवध्नाति सरागस्तु बध्नाति ततो जजनये त्युक्त ॥ नोपजत्तएनोअपजत्तएनबधइत्ति ॥ सिद्धो नबध्नातीत्यर्थ. ॥ आउगंहेठिल्लादोभय णाएत्ति ॥ पर्याप्तकापर्याप्तका वायु स्तद्बन्धकाले बध्नीतो न्यदा नेतिजजना ॥ उवरिल्लेनेति ॥ सिद्धो नबध्नातीत्यर्थ., जायकद्वारे ॥ दोविजयणाए

हेठिल्ला तिन्निजयणाए उवरिल्ले णबंधइ , एवं वेयणिज्जवज्जाउ सत्तवि वेयणिज्ज हेठिल्ला तिन्नि बंधइ केवलदसणी जयणाए । नाणावरणिज्ज कम्मं कि पज्जत्तउ बंधइ अपज्जत्तउबंधइ नोपज्जत्तउ नोअपज्जत्तउ बंधइ ? गोयमा ! पज्जत्तए जयणाए अपज्जत्तए बधइ नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए नबंधइ, एवं आउगवज्जाउ

उवरिल्लोनबधइ । हे गौतम । चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी जोछद्मस्थ वीतरागहुवे तो ज्ञानावरणी नबांधे वेदनीयनाज बंधक पणाथकी तथा सरागी वांधे एतलामाटे भजनाकही केवलदर्शनी भवस्थ अथवा सिद्ध नबांधे हेतुना अभावथकी । एववेदणिज्जवज्जाओसत्तवि । इम वेदनीयवर्जीने सातेईकर्मप्रकृति कहवी । वेदणिज्जंहेठिल्ला तिन्निवर्धति केवलदसणीभयणाए । वेदनीयकर्म चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी बांधे छद्मस्थ वीतराग तथा सराग बांधे सयोगी केवलदर्शनी बांधे अयोगी सिद्ध नबांधे तेमाटे भजनाकही, हिवे पर्याप्तद्वार कहेछे—णाणावरणिज्जकम्मंकि पज्जत्तएबंधइ । ज्ञा नावरणीकर्म स्यू पर्याप्तक बांधे । अपज्जत्तएबधइ । अथवा अपर्याप्तकबांधे । णोपज्जत्तए णोअपज्जत्तएबंधइ । नहो पर्याप्तक नहो अपर्याप्तक ते सिद्ध ते बांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पज्जत्तए भयणाए अपज्जत्तएबधइ । हेगोतम । पर्याप्तक वीतराग तथा सरागहुवे तिहा वीतराग ज्ञानावरणीय नबांधे सरागीबांधे तेमाटे भजनाकही अपर्याप्तोबांधे । णोपज्जत्तएणोअपज्जत्तए णबधइ । नोपर्याप्तक नोअपर्याप्तक ते सिद्ध ते नबांधे । एवआउगवज्जासत्तवि इम आउखो टाली सातेई कर्मप्रकृति कहवी । आउगहेठिल्लादोभयणाए । आउखू पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता बधकाले बांधे अन्यदा न बांधे इम भजना।

त्ति ॥ ज्ञापको ज्ञापालब्धिमां स्तदन्य स्त्वज्ञापक स्तत्र ज्ञापको वीतरागो ज्ञानावरणीय नबध्नाति सरागस्तु बध्नाति अज्ञापक स्त्वयोगी सिद्धश्च न बध्नाति पृथिव्यादयो विग्रहगत्यापन्नाश्च बध्नन्तीति ॥ दोविनयणाएइत्युक्त ॥ वेयणिज्जंनासएबंधइत्ति ॥ सयोग्यवसानस्यापि ज्ञापकस्य सद्वेदनीय बन्धकत्वात् ॥ अज्ञासएभयणाएत्ति ॥ अनापक स्त्वयोगी सिद्धश्च नबध्नाति पृथिव्यादिकस्तु बध्नातीति भजना, परीतद्वारे ॥ परीतेभयणाइत्ति ॥ परीत प्रत्येकशरीरो ल्पससारोवा; सच वीतरागोपि स्या त्सनासौ ज्ञानावरणीयं बध्नाति' सरागपरीतस्तु बध्नातीतिभजना ॥ अपरित्तेबंधइत्ति॥

आउगं हेठिल्ला दोभयणाए उवरिल्लेण० । नाणावरण किं नासए बंधइ अन्नासए? गोयमा ! दोविभयणा ए, एवं वेयणिज्जवज्जाउं सत्तवेयणिज्जं नासए बंधइ अन्नासए भयणाए । णाणावरण किं परित्ते बंधइ अपरित्ते बंधइ नोपरित्ते नोअपरित्ते बंधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए अपरित्ते बंधइ नोपरित्ते नोअ

उवरित्तोनबंधइ । सिद्ध नबांधे, भाषकद्वार कहेछे—णाणावरणिज्जंकिंभासएबंधइ अभासएबंधइ । ज्ञानावरणीयकर्म स्यू भाषक बांधे भाषक ते भाषा लब्धिवन्त अभाषक तेथकी अन्य तेबांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोविभयणाए । हेगोतम । तिहां भाषक वीतराग ज्ञानावरणीय नबांधे तथा अभाष क अयोगी सिद्ध नबांधे बेकें पृथिव्यादिक विग्रहगति पाम्यायका बांध तेमाटे भजनायें कह्या । एववेदणिज्जवज्जाओ सत्तवि । इम वेदनीय वर्जीने सा तई कर्मप्रकृति कहवी । वेदणिज्ज भासएबंधइ अभासए भयणाए णाणावरणिज्जं किंपरित्तेबंधइ अपरित्तेबंधइ । वेदनीय सयोगी केवलीने पर्यन्त ने पणि भाषकने सातावेदनीयना बंधकपणा माटे वल्यु भाषक बांधे अयोगी सिद्ध नबांधे पृथिव्यादिक बांधे तेमाटे भजनाकही परीतद्वार कहेछे—ज्ञानावर णीयकर्म स्यू प्रत्येक शरीरी तथा परित्तसंसारी अल्पसंसारी तेबांधे अनन्तकाय तथा अनन्त संसारी ते बांधे । णोपरित्ते णोअपरित्ते बंधइ । नहीं परि त्त नहीं अपरित्त त सिद्ध ते बांध इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा परित्ते भयणाए अपरित्ते बंधइ । हेगोतम । परीत प्रत्येकशरीरी अल्पसंसारी तथा सरागी बांधे वीतरागी नबांधे तेमाटे भजनाकही अनन्तकाय तथा अनन्तसंसारी बांधे । णोपरित्ते णोअपरित्तेणबंधइ । सिद्ध नबांधे । एवंआउगवज्जाओ सत्त

अपरीत साधारणकायो नन्तसंसारोवा; सच बध्नाति ॥ नोपरित्तेनोअपरित्तेनबधइत्ति ॥ सिद्धो नबध्नातीत्यर्थ ॥ आउयंपरित्तोविअपरित्तोविभय णायत्ति ॥ प्रत्येकशरीरादि· आयुर्बन्धकालएवा युर्बध्नातीति नतु सर्वदाततो भजनेति, सिद्धस्तु नबध्नात्येवे त्यतआह ॥ णोपरित्तेइत्यादि ॥ आभ द्वारे ॥ हेठिल्लाचत्तारिभयणाएत्ति ॥ आभिनिबोधिकज्ञानिप्रभृतय श्चत्वारो ज्ञानिनो ज्ञानावरण वीतरागावस्थाया नबध्नन्ति सरागावस्थायातु ब ध्नन्तीतिभजना ॥ वेयणिज्जंहेठिल्लाचत्तारिविबधतित्ति ॥ वीतरागाणामपि छद्मस्थाना वेदनीयस्य बन्धकत्वात् ॥ केवलणाणीभयणाएत्ति ॥ सयोग

परित्ते नबंधइ, एवं आउगवज्जाउ सत्तकम्मप्पगडीउ आउए परित्तोवि अपरित्तोवि भयणाए नोपरित्तो नोअपरित्तो नबंधइ णाणावरण किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ सुयनाणी उहिनाणी मणपज्जवनाणी के वलनाणी हेठिल्ला चत्तारि भयणाए केवलनाणी नबंधइ, एवंवेयणिज्जवज्जाउ सत्तवि वेयणिज्जं हेठिल्ला चत्ता

कम्मपगडीओ। इम आउखा वर्जीने सातकर्मप्रकृति कहवी। आउएयपरित्तोवि अपरित्तोविभयणाए। आयुकर्म परित्त तथा अपरित्त वेज भजनाये वाधे एवेज आउखा ने बंधकाले अन्यदा वाधे तेमाटे। णोपरित्तो णोअपरित्तोणबंधइ। ते सिद्ध नवाधे ज्ञानद्वार कहेछे—णाणावरणिज्जं किंआभिणि बोहिय णाणीबधइ सुअणाणी बधइ। ज्ञानावरणीय कर्म स्यू आभिनिबोधिक ज्ञानीबाधे अथवा श्रुतज्ञानी वाधे। ओहिणाणीबंधइ। अवधिज्ञानी वाधे मणपज्जवणाणी केवलणाणीबधइ। मनपर्यवज्ञानी वाधे अथवा केवलज्ञानी वाधे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा हेठिल्लाचत्तारिभयणाए केवलणाणीनबधइ हे गौतम। मतिज्ञान आदिदेई चारज्ञान ते वीतराग अवस्थाने विषे ज्ञानावरणी नवाधे सराग अवस्थायें वाधे तेमाटे भ जना कही केवलज्ञानी नवाधे इम वेदनीय टाली सातेई कर्मप्रकृति कहवी। वेदणिज्जेहेठिल्ला चत्तारिवधइ केवलणाणी भयणाए। वेदनीयकर्म मतिज्ञा न आदिदेई चारेई वाधे वीतराग छद्मस्थने पणि वेदनीयना बन्धक पणाथकी सयोगी केवलीबाधे अयोगी तथा सिद्ध नवाधे। णाणावरणिज्जंकिमइआ णाणीबधइ सुयअणाणी विभंगणाणी बधइ। ज्ञानावरणीयकर्म स्यू मतिअज्ञानी वाधे अथवा। श्रुत अज्ञानीबाधे अथवा विभङ्गज्ञानी वाधे इतिप्रश्न उ

॥ टीका ॥

केवलिना वेदनीयस्य बन्धना दयोगिनश्च सिद्धाना चाबन्धना द्भजनेति, योगद्वारे ॥ हेठिल्लातिन्निजयणाएत्ति ॥ मनोवाक्काययोगिनो ये उपशान्तमो हक्षीणमोहसयोगिकेवलिन स्तेज्ञानावरण नबध्नन्ति, तदन्येतु बध्नन्तीतिभजना ॥ अजोगीनबंधइत्ति ॥ अयोगी अयोगकेवली सिद्धश्च नबध्नातीत्यर्थ ॥ वेयणिज्जंहेठिल्लाबंधतित्ति ॥ मनोयोग्यादयो बध्नन्ति सयोगाना वेदनीयस्य बन्धकत्वात् ॥ अयोगीणबंधइत्ति ॥ अयोगिन. सर्वकर्मणा मबन्धकत्वादि ति, उपयोगद्वारे ॥ अट्ठसुविभजणाएत्ति ॥ साकारानाकारा वुपयोगी सयोगाना मयोगानाच स्याता तत्रोपयोगद्वयेपि सयोगाज्ञानावरणादि प्रकृ

॥ मूल ॥

रि बंधइ केवलनाणी भयणाए णाणावरणं किं मतिअन्नाणी बंधइ सुयअन्नाणी विभंगणाणी ? गोयमा ! आउगवज्जाउ सत्तविबंधइ आउगं भयणाए णाणावरणं किं मणजोगीबंधइ वइजोगी कायजोगी अजोगी बंधइ ? गोयमा ! हेठिल्लातिन्निभयणाए अजोगीनबंधइ एवं वेयणिज्जवज्जाउ वेयणिज्जं हेठिल्ला बधंति, अजोगी नबंधइ नाणावरणं किं सागारोवउत्ते बंधइ अणागारोवउत्ते बंधइ ? गोयमा ! अट्ठसुवि भयणाए।

॥ भाषा ॥

त्तर। गोयमा आउयवज्जाओसत्तविबंधइ। हे गौतम। ए मति अज्ञान आदिदेई तीनेई आऊखा टाली सातेई कर्मप्रकृति बांधे। आउगंभयणाए। अने आऊखो बन्धकाले वांधे अन्यदा नबांधे तेमाटे भजना योग द्वार कहेछे—णाणावरणिज्जंकिं मणजोगीबंधइ वइजोगी बंधइ। ज्ञानावरणीकर्म स्यूं मनो योगी बांधे वचनजोगी बांधे। कायजोगीबंधइ। काययोगी बांधे। अजोगीबंधइ। अयोगी बांधे। इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा हेठिल्ला चत्तारितिन्निभयणाए अजोगीणबंधइ एवंवेदणिज्जवज्जाओ। इम वेदनीय वर्ज्जीने सातेवी कहवो। वेदणिज्जहेठिल्लातिन्निबंधइ अजोगीणबंधइ। वेदनीयकर्म मनोयोगी आदि देई तीनेई बांधे अयोगीने वेदनीयना बन्धकपणा माटे सर्वकर्मना अबन्धकपणामाटे अयोगी वेदनीय नबांधे। णाणावरणिज्जकिंसागारोवउत्तेबंधइ। उपयोग द्वारकहेछे—ज्ञानावरणीय स्यूं ज्ञानोपयोगी बांधे अथवा। अणागारोवउत्तेबंधइ। दर्शनोपयोगी बांधे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अट्ठसुविभय णाए। हेगौतम। इहां आठे कर्मनेविषे भजना कहवी साकार अनाकार एबेज उपयोग सयोगीने तथा अयोगीने हुवे तिहां सयोगीने ज्ञानावरणा

॥ दोविभयणाएत्ति ॥ आहारको वीतरागोपि भवति नचासौ ज्ञानावरणं बध्नाति,
ती यथायोग बध्नन्ति अयोगास्तु नेतिभजनेति' आहारकद्वारे
मरागस्तु बध्नातीति आहारको भजनया बध्नाति, तथा अनाहारक केवली विग्रहगत्यापन्नाश्च स्यात्तत्र केवली नबध्नाति इतरस्तु बध्नातीति अना
हारकोपि भजनयेति ॥ वेयणिज्जआहारएवधइत्ति ॥ अयोगिवर्जाना सर्वेषां वेदनीयस्य बन्धकत्वात् ॥ अणाहारएभयणाएत्ति ॥ अनाहारको विग्र
हगत्यापन्न समुद्घातगतकेवलीच बध्नाति अयोगीसिद्धश्च नबध्नातीति भजना ॥ आउएआहारएभयणाएत्ति ॥ आयुर्बन्धकालएवायुषो बन्धनात् अन्य

णाणावरण किं आहारए,बंधइ अणाहारए बंधइ ? गोयमा दोवि भयणाए , एवं वेयणिज्जाउगवज्जाणं
छण्हं वेयणिज्जं आहारए बंधइ अणाहारए भयणाए आउए आहारए भयणाए अणाहारए नबंधइ । णा
णावरण किं सुहुमे बंधइ बादरे बंधइ नोसुहुमे नोबादरे बंधइ ? गोयमा ! सुहुमे बंधइ बादरे भयणाए

ज्ञानावरणीयक
टिक आठ कर्मप्रकृति यथायोगेबाधे अयोगी नबाधे तेमाटे भजनाकही, हिवे आहारद्वार कहेछे—णाणावरणिज्जकिंआहारएवधइ । ज्ञानावरणीयक
र्मप्रति आहारकबाधे अथवा । अणाहारएवधइ । अनाहारक बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोविभयणाए । हेगौतम। आहारक वीतराग पणिहुवे। ते वी
तराग ज्ञानावरण नबाधे सरागीबाधे तेमाटे भजना अणाहारक पण केवली तथा विग्रहगति पाम्यो जीव तिहां केवली नबाधे बीजो बाधे तेमाटे भ
जनाकही । एववेदणिज्जाउगवज्जाण छण्ह । इम वेदनीय आउखो वर्जीने छ कर्मप्रकृति कहवी । वेदणिज्ज आहारएवधइ अणाहारए भयणाए आ
हारक आहारएभयणाए अणाहारएणवधइ । वेदनीयकर्म अयोगी वर्जीने सगलाईने वेदनीयना बन्धकपणामाटे आहारक सर्वबाधे विग्रहगति पा
म्या जीव तथा केवली समुद्घातगत जीव ए वेदनीयबाधे अयोगी तथा सिद्ध नबाधे तेमाटे भजनाकही आउखो आहारक बन्धकाले बाधे अन्यदा नबा
धे तेमाटे भजनाकही अनाहारक आउखो नबांधे जेमाटे विग्रहगतिपाम्या जीवने पणि आउखाना अबन्धकपणाथकी सूक्ष्मद्वार कहेछे—णाणावर
णिज्ज किंसुहुमे बंधइ बायरे बंधइ । ज्ञानावरणीयकर्म सू सूक्ष्मबाधे अथवा बादर बाधे । णोसुहुमे णोबायरे बधइ । नहीसूक्ष्म नही बादर ते सिद्ध ते बाधे

॥ टीका ॥

दा त्ववन्धना इजनेति ॥ अणाहारएणवंधइत्ति ॥ विग्रहगतिंगतानां मप्यायुकस्या बन्धकत्वादिति, सूक्ष्मद्वारे ॥ बायरेभयणाएत्ति ॥ वीतरागवा दरागा ज्ञानावरणस्या बन्धकत्वा त्सरागवादरागाच बन्धकत्वा इजनेति सिद्धस्यपुन रवन्धकत्वा दाह ॥ नोसुहुमेइत्यादि ॥ आउएसुहुमेवायरेभय णाएत्ति ॥ बन्धकाले बन्धना दन्यदा त्ववन्धना इजनेति, चरमद्वारे ॥ अठविभयणाएत्ति ॥ इह यस्य चरमो भवो भविष्यति सचरम यस्यतु नासौ भविष्यति सो ऽचरमः सिद्धश्च चरम' चरमभवाभावा तत्र चरमो यथायोग मष्टापि बधाति अयोगित्वेतु ने त्येव भजना, अचरमस्तु ससारी अष्टा पि बध्नाति सिद्धस्तु ने त्येव मत्रापि भजनेति' अथा ल्पबहुत्वद्वार तत्र ॥ इत्थिवेयगासखेज्जगुणेत्ति ॥ यतो देवनरतिर्यक्पुरुषेभ्य स्त्रियः क्रमेण

॥ मूल ॥

नोसुहुमे नोबादरे नबंधइ, एव आउगवज्जाउ सत्तवि आउए सुहुमे बादरे भयणाए नोसुहुमे नोबादरे नबंधइ । णाणावरणं किं चरिमे अचरिमे बंधइ ? गोयमा ! अठवि भयणाए । एएसिणं भंते ! जीवाणं इत्थिवेयगाण पुरिसवेयगाणं नपुंसगवेयगाण अवेयगाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सुहुमेबधइ बायरे भयणाए। हे गौतम। सूक्ष्मबाधे वीतराग नबाधे सरागी नबाधे। णोसुहुमेणोबायरे णबधइ। नही सूक्ष्म न ही बादर ते सिद्ध ते नबाधे। एवआउगवज्जाओसत्तवि। इम आउखा वर्जीने सातेई कर्मप्रकृति कहवी। आउएसुहुमबादरे भयणाए। आउखो ते बन्धकाले बाधे अन्यदा नबाधे तेमाटे बेहुने बिषे भजनाकही। णोसुहुमेणोबादरेणबधइ। नहीसूक्ष्म नहीबादर ते सूक्ष्म ते सिद्ध ते नबाधे चरिमद्वार क हैछे—ज्ञानावरणीय कर्म स्यू चरिमबाधे अथवा अचरिमबाधे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अठ्ठवि भयणाए। हेगौतम। इहा जेहने चरिमभवछे—ते चरि म कहिये जेहने चरिमभव नही ते अचरिम कहिये तिहा सिद्ध पणि अचरिम कहिये, चरिमभवना अभावथकी तिहा चरिम यथायोगे आठेई कर्म बाधे अयोगी नबाधे इम भजना कहवी अचरिम ते ससारी आठेई कर्मबाधे सिद्ध नबाधे तेमाटे भजनाकही, हिवे अल्प बहुत्व द्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाण इत्थिवेदगाण पुरुषवेदगाण णपुसगवेदगाण अवेदगाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा। एहने हेभगवन्। जीवने स्त्री वेदने पुरुषवेदने नपु

द्वात्रिंश त्सप्तविंशति त्रिगुणा द्वात्रिंश त्सप्तविंशति त्रिरूपाधिकाश्च भवन्तीति ॥ अवेयगाअणंतगुणाति ॥ अनिवृत्तिबादरसम्परायादय सिद्धा श्चावे दा अत एते ऽनन्तत्वात् स्त्रीवेदेभ्यो नन्तगुणा भवन्ति ॥ नपुसगवेयगाअणंतगुणात्ति ॥ अनन्तकायिकाना सिद्धेभ्यो ऽनन्तगुणाना मिहगणनादिति ॥ एएसिसव्वेसिमित्यादि ॥ एतेषा पूर्वोक्ताना सयतादीना चरमांताना चतुर्दशाना द्वाराणा तद्गतभेदापेक्षया ऽल्पबहुत्व मुच्चारयितव्य' तद्यथा—एएसिण भंते । सजयाण असजयाण सजयासजयाण नोसजयनोअसजयनोसजयासजयाण कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा सजया सजयासजया असखेज्जगुणा, नोसजयानोअसजया नोसजयासजया अणतगुणा, असजया अणतगुणाइत्यादि, प्रज्ञापनानुसारेण वाच्य, याव च्चरमा ल्पबहुत्व एतदेवाह ॥ जावसव्वत्थोवा जीवा अचरिमेत्यादि ॥ अत्र चरमा भव्या श्चरमाश्च य भव्या श्चरम भव मास्यन्ति सेत्स्यतीत्यर्थ ' ते

सव्वत्थोवा पुरिसवेयगा इत्थीवेयगा संखेज्जगुणा, अवेयगा अणतगुणा, नपुसगवेयगा अणतगुणा , एएसि सव्वेसिं पयाण अप्पवहुगाइं उच्चारियव्वाइं जाव सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणतगुणा सेव भंते

सक वेदने अवेदकने कुणकुणथकी यावत् विशेषाधिक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवापुरिसवेयगा इत्थिवेयगा सखेज्जगुणा अवेदगा अणतगुणा णपुसगवेयगा अणतगुणा एएसिसव्वेसिं पदाण अप्पा बहुगाइं उच्चारियव्वाइं जाव सव्वत्थोवाजीवा । हे गौतम । सर्वथी थोडा पुरुषवेदक जीवछे तेहथी स्त्रीवेदक संख्यातगुणा मनुष्यथी २७ गुणी तिर्यंचथी तिगुणी देवी ३२ गुणी इम पुरुषथी स्त्री अधिकोछे अनिवृत्तिबादर सम्पराय आदिदेई गुणठाणा अने सिद्धअवेदक कहिये एतलामाटे ते स्त्रीवेदथी अनन्तगुणाछे नपुसकवेद अनन्तकाइया सिद्धथी अनन्तगुणाछे तेमाटे नपुस क वेद अनन्तगुणा कह्या, एह पूर्वोक्त सयतादि चरमान्त चउदे द्वारने तद्गत भेदनी अपेक्षायें अल्प बहुत्व कहवो तेजिम एएसिणभंते सजयाण असजयाण सजयासजयाणं णोसजय णोअसजय णोसजयासजयाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा सव्वत्थोवा सजयासजया सजया सखेज्जगुणा णोसजया णोअसजया णोसजयासज या अणतगुणा असजया अणतगुणा, इत्यादि पन्नवणाने अनुसारे कहवो यावत् चरिमादि अल्प बहुत्व एहीज कहेछे—जावसव्वत्थोवाजीवा अचरिमा अचरिमाचरिमा अणतगुणा । ते अचरिमथकी चरिम अनन्तगुणाछे जे अत्र अचरिम ते अभव्यचरिम ते भव्यचरिम भवप्रतें पामस्ये सीझस्ये इत्यर्थं ।

॥ टीका ॥ वा चरमेभ्यो ऽनन्तगुणा यस्मा दज्ञव्येन्य सिद्धा अनन्तगुणा जाणिता यावन्तश्च सिद्धा स्तावन्तएव चरमा यस्मा द्यावन्त सिद्धा अतीताद्धायां ताव न्तएव सेत्स्य त्यनागताद्धायाम् ॥ इति षष्ठशतेतृतीयः ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके जीवो निरूपितो थ चतुर्थोद्देशकेपि तमेव ज्ञग्यन्त रेण निरूपयन्नाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ कालाएसेणति ॥ कालप्रकारेण काल माश्रित्येत्यर्थः ॥ सपएसेत्ति ॥ सविज्ञाग. ॥ नियमासपएसेत्ति ॥ अना

॥ मूल ॥ ज्ञंतेत्ति ॥ छठसयस्स तइउ उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ३ ॥ जीवेणं ज्ञंते ! कालादेसेणं किं सपएसे अपएसे ? गोयमा ! नियमासपएसे । नेरइएणं ज्ञंते ! कालादेसेणं किं सपएसे अपएसे ? गोयमा ! सिय सप एसे सिय अपएसे, एव जाव सिद्धे । जीवाण ज्ञंते ! कालादेसेणं कि सपएसा अपएसा ? गोयमा ! नि

॥ भाषा ॥ माटे अभव्यथी सिद्ध अनन्तगुणा कह्या जेतलासिद्ध तेतलाजोज चरिम जमाटे जेतला सिद्ध अतीतकालनेविषे सीधा तेतलाजोज अनागतकालने विषे सीझे । सेवभतेभतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही । छठसयस्सयतइओ उद्देसोसम्मत्तो । ए छठा शतकनो तीजो उद्देशो अर्थ थी लिख्यो ६ ॥ ३ ॥ पाछिले उद्देशे जीव प्ररूप्या इहा तेहीज अधिकार भङ्गान्तरे कहेछे—जीवेणभतेकालादेसेण किसपएसे अपए से गोयमा णियमासपएसे । जीव हेभगवन् । कालआश्रयीने स्यु सप्रदेशछे होय आदिसमयस्थिति जेहनो ते सप्रदश एक समयस्थिति जेहनो ते अप्रदे श इतिप्रश्न उत्तर । हेगोतम । नियमा अनादिपणेकरी जीवने अनन्तसमय स्थितिकपणायकी सप्रदेशपणो निश्चेछे । णेरइयाणभते कालादेसेण सपए से अपएसे । नारकी णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । कालथी सप्रदेशछे अप्रदेशछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियसपएसे सियअपएसे । हेगोतम । जे नारकी प्रथमसमय उपनो ते अप्रदेश कहीये द्वितियादिसमय उपना ते सप्रदेश एतलामाटे कह्यु सियसपएसे सियअपएसे । एवंजावसिद्धे जीवाणभते कालादेसेण किसपएसा अपएसा । ए पहिला एक पणेकरी जीव आदिदेई सिद्धपर्यंत छावीस दण्डक कह्या, समुच्चयजीव १ नारकी आदि २४ दण्डक अने सिद्ध एव २६ ते कालथकी सप्रदेशपणे अप्रदेशपणे चिन्तव्या, हिवे एहीज बहुवचने चिन्तवीयेछे जीवघणा हेभगवन् । कालआश्रयीने स्यु सप्रदेशछे अथवा अ

॥ टीका ॥

दित्वेन जीवस्या नन्तसमयस्थितिकत्वा त्सप्रदेशता, यो ह्येकसमयस्थिति सो प्रदेशो द्व्यादिसमयस्थितिस्तु सप्रदेश इह चानया गाथया भावना कार्या–जोजस्सपढमसमए वट्टइभावस्ससोउअपएसो । अएण्म्मिवट्टमाणो कालाएसेणसपएसो ॥ १ ॥ नारकस्तु य: प्रथमसमयोत्पन्न सो प्रदेशो द्व्यादिसमयोत्पन्न: पुनः सप्रदेशः, अतउक्त, सियसप्पएसेसियअप्पएसे' एष तावदेकत्वेन जीवादि सिद्धावसान पञ्चविंशतिदण्डक: कालसप्रदेशत्वादिना चिन्तितो ऽथा यमेव तथैव पृथक्त्वेन चिन्त्यते ॥ सव्वेवितावहोज्जसपएसत्ति ॥ उपपातविरहकाले ऽसङ्ख्यातानां पूर्वोत्पन्नानां भावा त्सर्वेपि सप्रदेशा भवेयुः, तथा पूर्वोत्पन्नेषु मध्ये यदैको न्यो नारक उत्पद्यते तदा तस्य प्रथमसमयोत्पन्नत्वेना ऽप्रदेशत्वा च्छेषाणाच द्व्यादिसमयोत्पन्नत्वेन सप्रदेशत्वा दुच्यते ॥ सपएसायअपएसेयत्ति ॥ एवं यदा बहव उत्पद्यमाना भवन्ति तदोच्यते ॥ सपएसायअप्पएसायत्ति ॥ उत्पद्यन्ते चैकदे का

॥ मूल ॥

यमा सपएसा । नेरइयाणं भंते ! कालादेसेणं किं सपएसा अपएसा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज सप

॥ भाषा ॥

प्रदेशके द्व्यादि समयस्थितिक सप्रदेश एक समयस्थितिक अप्रदेश इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णियमा सपएसा । हेगौतम! घणा जीवाने अनादिपणें करी अनन्तसमय स्थितिकपणांथको निश्चे सप्रदेश कहीये । णेरइयाणंभंते कालादेसेणं किंसपएसा अपएसा । नारकी संबंधाकालकारे, हेभगवन्! कालआश्रयीने द्व्यादि समयस्थितिक ते सप्रदेश कहीये ते छे अथवा एकसमय स्थितिक ते अप्रदेश ते छे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वेवितावहोज्जा सपएसा अहवा सपएसाय अपएसाय । हेगौतम । सगलाईनारकी सप्रदेश जाणवा ते उत्पात विरहकालने विषे असंख्याता पूर्वे ऊपना तेहनाभावथकी सप्रदेशपण प्रथमभंगो १ अथवा पूर्वे जे घणा नारकी ऊपनाछे तेमांहि एक अनेरा नारकी ऊपजे तिवारे तेहने प्रथमसमय ऊपनामाटे अप्रदेशपणोकहीये अनेशेष द्व्यादिकसमय ऊपनामाटे सप्रदेशपणों कहीये तिवारे घणा सप्रदेशी अने एक अप्रदेशी ए बीजोभाङ्गो २ अथवा पूर्वे जे नारकी ऊपना हता ते माहि अनेरा घणा ऊपना तेहभणी इम जिवारे घणा उत्पद्यमान हुवे तिवारे घणा सप्रदेशी घणा अप्रदेशी ए त्रीजो भांगो ३ भागा ३ । एवंजावथणियकुमारा । इम असुरकुमार आदिदेई यावत् स्तनितकुमार पर्यन्तने नारकीनी परे तीनभागा विचारीने कहवा । पुढविकाइयाणंभंते किं सपएसा अप

दयो नारका· यदाह–एगोवदोवतिन्निवि सरासंखावणगसमएणं । उववज्जतेवइया उवट्टंताविएमेव ॥ १ ॥ पुढविकाइयाणमित्यादि ॥ एकेन्द्रिया णा पूर्वोत्पन्नाना मुत्पद्यमानानाच बहूना सम्भवा त्सपएसावि अप्पएसावीत्युच्यते ॥ सेसाजहाणेरइएत्यादि ॥ यथा नारका अभिलापत्रये णोक्ता स्तथा ज्ञेया द्वीन्द्रियादय. सिद्धावसाना वाच्या., सर्वेषा मेषा विरहसम्भवा देकाद्युत्पत्तेश्चेति, एव माहारकानाहारकशब्दविशेषिता वेता वेवैकत्व पृथक्त्वदण्डका वध्येयौ, अध्ययनक्रम श्चाय–आहारएणं भंते ! जीवे कालाएसेणं किसपएसे अपएसे ? गोयमा ! सिय सप्पएसे सिय अप्पएसे इत्या दि स्वधिया वाच्य , तत्र यदा विग्रहे केवलिसमुद्घातेवा; ऽनाहारको भूत्वा पुन राहारकत्व प्रतिपद्यते तदा तत्प्रथमसमये ऽप्रदेशो द्वितीयादि

एसा अहवा; सपएसाय अपएसेय अहवा; सपएसाय अपएसाय एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाणं भंते ! किं सपएसा अपएसा ? गोयमा ! सपएसावि अपएसावि एवं जाव वणप्फइकाइया सेसा जहा

एसा । पृथिवीकायिक हेभगवन् । स्यू सप्रदेश कहिये द्वादिसमय स्थितिक ते सप्रदेश अथवा प्रथम समयस्थितिक ते अप्रदेश कहिये ते छे इतिप्रश्न उत्त र । गोयमा सपएसावि अपएसावि । हेगोतम । सप्रदेश पणिछे अप्रदेशपणिछे एहन विरहकाल नथी तेहभणी घणा सप्रदेशी घणा अप्रदेशी पामिये । एवंजाववणस्सइकाइया । इम यावत् वनस्पतीकायिक लगे एकहीज भागो कहवो जेमाटे एकेन्द्री सर्वने ऊपजवा तथा चविवानो विरह नथी तेमाटे पूर्वे ऊपना ते पणि घणा अने ऊपजता पणि पामिये तेमाटे सप्रदेशो पणिघणा अने अप्रदेशी पणिघणा एहीज भांगो हुवे । सेसाजहाणेरइया तहा जा वसिद्धा । जिम नारकीनेविषे तीनभागा कह्या तिम शेषवाकना द्वीन्द्रियादिक सिद्ध पर्यन्त कहवा तीनेभागे एसर्वनेविषे विरहकालना सम्भवथकी एका दि पणि ऊपजे तेमाटे तीनेई भागाहवे इम आहारक १ अनाहारक २ शब्द विशेषित एकवचने तथा बहुवचने दोय दण्डक कहवा आलावानो अनु क्रम इमछे ,आहारएणभंतेजीवेकालाएसेण किसपएसेअपएसे गोयमा सियसप्पएसे सियअप्पएसे, इत्यादि पातानी बुद्धिकरी कहवा तिहा जिवारे वि ग्रहगतिनेविषे तथा केवली समुद्घातने विषे अनाहारकथईने वली आहारपणो वडिवजे तिवारे प्रथमसमयने विषे अप्रदेशी कहिये, द्वितीयादिसमयने

युतुसप्रदेशइत्यतउच्यते सिय सप्पएसे सिय अप्पएसेत्ति एवमेकत्वेसर्वेष्वपि सादिभावेषु, अनादिभावेषु तु नियमासप्पएसेत्ति वाच्यं, पृथक्त्वदण्डकेत्वेव मभिलापो दृश्य -आहारयाण भंते। जीवा कालाएसेणं तु नियमा सप्पएसेत्ति वाच्य, पृथक्त्वदण्डकेत्वेव मभिलापो दृश्य , आहारयाण भंते। जीवा कालाएसेणं किसपएसा अप्पएसा ? गोयमा ! सपएसावि अपएसावित्ति' तत्र बहूना माहारकत्वेना वस्थितानां भावा त्सप्रदेशत्व तथा बहूना विग्रहगते रनन्तर प्रथमसमये आहारकत्वसम्भवा दप्रदेशत्व मप्याहारकाणां लभ्यतइति सप्रदेशाअपि अप्रदेशाअपीत्युक्त, एव पृथिव्यादयो प्यध्ये याः नारकादय पुन विकल्पत्रयेण वाच्या स्तद्यथा-आहारयाण भंते। नेरइयाण किं सपएसा अपएसा गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज सपएसा अह वा, सप्पएसाय अप्पएसेय अहवा, सप्पएसाय अप्पएसायेत्ति, एतदेवाह ॥ आहारगाणजीवेगिंदियवज्जोतियभंगोत्ति ॥ जीवपद मेकेन्द्रियपदप ञ्चकञ्च वर्जयित्वा त्रिकरूपो भङ्ग स्त्रिकभङ्गो भगकत्रय वाच्यमित्यर्थ' सिद्धपद त्विह न वाच्य, तेषा मनाहारकत्वात्, अनाहारकदण्डकद्वय म

नेरइया तहा सिद्धा, आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अणाहारगाण जीवेगिंदियवज्जाछभंगा एवं

विषे सप्रदेशी कहिये तेमाटे ,सियसप्पएसे सियअप्पएसेत्ति, इम एकवचने सगलाईने विषे सादिभावनेविषे कहवो तथा अनादिभावने विषे णियमासप्प ऐसे, एहवु उत्तर कहवो तथा बहुवचन दण्डकन इम आलावो कहवो 'आहारयाणभंतेजीवाकालाएसेण किसप्पएसा अप्पएसा गोयमा सप्पएसावि अप्पए सावि, तिहा घणाने आहारकपणे रह्यामाटे सप्रदेशपणो हुवे तथा घणाने विग्रहगतिने अनन्तरे पहिले समये आहारकपणाना सम्भवथकी अप्रदेश पणो पणि आहारकने लाभीये तेमाटे सप्रदेश पणि अप्रदेश पणि इसो कह्यु इम पृथिव्यादिकने विषे पणि कहवा नारकादिक वली विकल्पतीने कह वा ते देख डछे—आहारयाणभंतेनेरइया किं सप्पएसा अप्पएसा गोयमा सव्वेवितावहोज्ज सप्पएसा अहवा सप्पएसाय अप्पएसेय २ अहवा सप्पएसाय अपएसायत्ति ३ एहीज सूत्रकारे कहेछे—आहारगाण जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो आहारगाण जीवेगिंदियवज्जो छभंगोएवभाणियव्वा। आहारकने जो वपद तथा एकेंद्रिय पदप्रते वर्जीने भागा तीन कहवा इत्यर्थं सिद्धपद इहा न कहवो तेहने अनाहारकपणामाटे अनाहारक दडक दोय पणि इम अनु

प्येव मनुसरणीयं' तत्र नाहारको विग्रहगत्या पन्नः समुद्घातगतकेवली अयोगी सिद्धोवा; स्या त्सवा नाहारकत्वप्रथमसमये ऽप्रदेश द्वितीयादि षुतु सप्रदेश स्तेन स्या त्सप्रदेशा इत्याद्युच्यते, पृथक्त्वदण्डके विशेषमाह ॥ अणाहारगाणमित्यादि ॥ जीवा नेकेन्द्रियांश्च वर्ज्जयन्तीति जीवैकेन्द्रिय वर्ज्जा स्ता न्वर्ज्जयित्वेत्यर्थः, जीवपदे एकेन्द्रियपदेच सपएसाय अप्पएसाये त्येवरूप एकएव भङ्गको बहूना विग्रहगत्यापन्नाना सप्रदेशाना मप्रदे शानांच लाभात्, नारकादीना द्वीन्द्रियादीनाच स्तोकतराणा मुत्पाद स्तत्र चैकद्यादीना मनाहारकाणा भावात् षड्भङ्गिकासम्भव स्तत्र द्वौ बहुवच

नाणियव्वा, सपएसावा, अपएसावा २ अहवा सपएसेय अपएसेय ३ अहवा सपएसेय अपएसाय ४ अहवा सपएसाय अपएसेय ५ अहवा सपएसाय अपएसाय ६ सिद्धेहिं तियभंगो, भवसिद्धीय अभवसिद्धीय

सरवा तिहा अनाहारक विग्रह प्रतिपन्न जोव १ समुद्घातगत केवलोयें अयोगीकेवलोयें अने सिद्ध अणाहारीहुवे ते अनाहारकपणो पहिलेसमये अप्रदेशी हुवे द्वितीयादि समयनेविषे सप्रदेशीहुवे तिवारे सप्रदेश इत्यादिकहिये बहुवचन दण्डकनेविषे विशेष कहैछे—अणाहारगाणजीवेगिंदियवज्जोतिय भंगो, अनाहारकने जीवपदप्रतें तथा एकेंद्रिय पदप्रते वर्ज्जोने एतले जीवपदने विषे तथा एकेंद्रियपदने विषे सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकहीजभागो हुवे घणा विग्रहगति प्रतिपन्न जोवाने सप्रदेशना तथा अप्रदेशना लाभथकी एकहीज भागोहुवे अने नारकादिक तथा बेइन्द्रियादिकने थोडाना ऊपजवा थकी इहां एक बे आदिदेई पणि अनाहारक हुवे तेमाटे छ भागानो सम्भवहुवे तिहा दोयभागा बहुवचनान्त हुवे बीजा चारभागा एकवचन बहुवचन सयोगी हुवे केवल एकवचने बेभागा इहा नहुवे पृथक्त्वना अधिकारथकी देखाडेछे—इम जाणवा अनाहारक आश्रीभागा ६ एक संयोगीभागा दोय सप्रदेश २ अप्रदेश २ द्विकसयोगीभागा ४। सप्पएसाय १ अप्पएसाय २ अहवासप्पएसेय अप्पएसेय ३ अहवासप्पएसेय अप्पएसाय ४ अहवासप्पएसाय अप्पएसेय ५ अहवासप्पएसाय अप्पएसाय ६। सप्रदेश बहुवचने १ अप्रदेश बहुवचने २ अथवा सप्रदेश एकवचने अप्रदेश पणि एकवचने ३ अथवा सप्रदेश एकवचने अप्रदेश बहुवचने ४ अहवा सप्रदेश बहुवचने अप्रदेश एकवचने ५ अथवा सप्रदेश बहुवचने अप्रदेश पणि बहुवचने ६। सिद्धेहितिय

॥ टीका ॥

नातौ अन्येतु चत्वार एकवचनबहुवचनसंयोगात्, केवलैकवचनभङ्गका विह नस्त' पृथक्त्वस्या धिकृतत्वादिति ॥ सिद्धेहिंतियभंगोत्ति ॥ सप्रदेशप दस्य बहुवचनान्तस्यैव सम्भवात् ॥ भवसिद्धीयअभवसिद्धीयजहाओहियत्ति ॥ अयमर्थः औघिकदण्डकवदेषां प्रत्येक दण्डकद्वय, तत्र भव्यो ऽभव्यो वा, जीवो नियमा त्सप्रदेशो नारकादिस्तु सप्रदेशो ऽप्रदेशोवा ; बहवस्तु जीवाः सप्रदेशाएव नारकाद्यास्तु त्रिभङ्गवन्त एकेन्द्रियाः पुन प्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकभङ्गाएवेति' सिद्धपदंतु नवाच्य, सिद्धाना भव्याभव्यविशेषणानुपपत्तेरिति, तथा ॥ नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धियत्ति ॥ एतद्विशेषण जीवादिदण्डकद्वय मध्येय तत्र चाभिलाप' ॥ नोभवसिद्धीयनोअभवसिद्धीएणं भंते । जीवे सपएसे अप्पएसे इत्यादि ॥ एवं पृथक्त्वदण्डकोपि केवल मिह जीवपदं सिद्धपदंचेतिद्वयमेव नारकादिपदानां नोभव्यनोअभव्यविशेषणस्या नुपपत्तेरिति, इहच पृथक्त्वदण्डके पूर्वोक्त भङ्गकत्रय मनुसर्त्तव्य

॥ मूल ॥

जहा उहिया नोभवसिद्धीय नोअभवसिद्धीय जीव सिद्धेहि तियभंगो, सन्नीहिं जीवादितियभंगो, अ

॥ भाषा ॥

भ॰। भवसिद्धीय अभवसिद्धीय जहाओहिया णोभवसिद्धीय णोअभवसिद्धीय जीवसिद्धेहितियभंगो । सिद्धेहितियभंगोत्ति, सिद्धिपदने विषे सप्रदेश बहुवच नात्तहीज सम्भवे तेमाटे तीनभांगाहुवे भवसिद्धीय अभवसिद्धीय जहा ओहियत्ति, इहां एअर्थ अधिक दण्डकनीपरे एहने प्रत्येके दण्डक दोय कहवा तिहां भव्य तथा अभव्य जीव नियमथको सप्रदेशज हुवे तिहां णियमासप्पएसाए एकहीजभांगो हुवे नारकादिकनो सप्रदेश अप्रदेशविजहुवे घणाजी व सप्रदेशीज हुवे तेमाटे नारकादिकनेविषे भांगा ३ हुवे तेकहेछे—सव्वेवितावहोज्जासपएसा १ अहवा सप्पएसाय अप्पएसेय २ अहवा सप्पएसाय अप्पएसाय ३ एकेंद्रिय सप्पएसाय अप्पएसाए एकहीज भांगाहुवे इहां सिद्धपद न कहवो जेमाटे सिद्धने भव्य अभव्य विशेषण ऊपजेनहीं णोभवसिद्धी य णोअभवसिद्धीयत्ति, ए विशेषण जीवादि बेदण्डके कहवा इहां आलावो इम कहवो णोभवसिद्धीय णोअभवसिद्धीयेभंते जीवेसप्पएसे अप्पएसे इत्यादि एवं पृथक्त दण्डक पणि केवल इहां जीवपद तथा सिद्धपद ए बे कहवा स्यामाटे नारकादिकपदने नोभव्य नोअभव्य ए विशेषण ऊपजे नहीं तेमाटे पृथ क्त दण्डकने विषे पूर्वेकह्या ते तीनभांगा अनुसरवा एहीज कहेछे—जीवसिद्धेहितियभंगोत्ति, अर्थ पहिला लख्योछे—सण्णीहि जीवादितियभंगो असण्णी

॥ टीका ॥

मतगवाह ॥ जीवसिद्धेहिंतियभंगोत्ति ॥ सञ्ज्ञिषु यौ दण्डकौ तयोर्द्वितीयदण्डके जीवादिपदेषु भङ्गकत्रयं भवती त्यतआह ॥ सन्नीहिंइत्यादि ॥ तत्र सञ्ज्ञिनो जीवा कालत सप्रदेशा भवति चिरोत्पन्ना नपेक्ष्य उत्पादविरहानन्तरं चैकस्यो त्पत्तौ तत्प्राथम्ये सप्रदेशा श्चाऽप्रदेशश्चेति स्यात् बहूना मुत्पत्तिप्राथम्येतु सप्रदेशा अप्रदेशाश्चेति स्या त्तदेव भङ्गत्रयमिति' एव सर्वपदेषु केवल मेतयो र्दण्डकयो रेकेन्द्रियविकलेन्द्रियसिद्धपदानि न वाच्यानि, तेषु सञ्ज्ञिविशेषणस्या सम्भवादिति ॥ असन्नीहिंइत्यादि ॥ अयमर्थ असञ्ज्ञिषु असञ्ज्ञिविषये द्वितीयदण्डके पृथिव्यादिपदानि वर्जयित्वा भङ्गत्रय प्राग्दर्शितमेव वाच्य' पृथिव्यादिपदेषुहि सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्च इत्येक एकसदा बहूना मुत्पत्त्या तेषा अप्रदेशबहुत्वस्यापि सम्भवात् नैरयिकादीनाच व्यन्तरान्ताना सञ्ज्ञिना मप्यसञ्ज्ञित्व, मसञ्ज्ञित्व मसञ्ज्ञिभ्य उत्पादा द्भूतभावतया वसेय, तथा नैरयिकादि ष्वसञ्ज्ञित्वस्य कादाचित्कत्वे नैकत्वबहुत्वसम्भवा त्षड्भङ्गा भवन्ति तेच दर्शिताएव शतदेवाह ॥ नेरइयदेवमणुएइत्यादि ॥ ज्योतिष्कवैमानिकसिद्धास्तु न वाच्या, स्तेषा मसञ्ज्ञि

॥ मूल ॥

सन्नीएहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगो, नोसन्नि नोअसन्निजीवे मणुयसिद्धेहिं

॥ भाषा ॥

हिएगिंदियवज्जोतियभंगो णेरइयदेवमणुएहि छभंगो । सञ्ज्ञायान विषे जे बेदण्डक तहमाहि द्वितीयदण्डकने विषे जीवादिपदने विषे भागा ३ हुवे ते माटे कहेछे—सणोहिं इत्यादि तिहां सञ्ज्ञी जीव कालथी सप्रदेशहुवे घणाकालना ऊपनानी अपेचायें उत्पादविरह अनन्तर एकनो उत्पत्तिने विषे पहिले समये सप्रदेसाय अप्रदेसेय इमहुवे घणानो उत्पत्तिनेविषे पहिलेसमये सप्रदेसाव अप्रदेसाय इमभांगा २ हुवे इम सर्वपदनेविषे कहवो केवल ए बेदण्डकने विषे एकेंद्रिय विकलेन्द्रिय सिद्धपद न कहवा एहनेविषे सञ्ज्ञी विशेषणना असम्भवथकी असणीहिं इत्यादि, इहां एअर्थ असञ्ज्ञीयानेविषे बीजे दण्डके पृथिव्यादि पदवर्जीने भागा ३ पूर्वें देखाड्या तिम कहवा, पृथिव्यादि पदनेविषे सप्रदेसाय अप्रदेसाय एकबीज भागोहुवे सदा घणा ऊपजे तिणकरी तेहने अप्रदेश बहुपणाना सम्भवथकी तथा नारकादिकने व्यन्तरपर्यन्तने सञ्ज्ञीयाने पणि असञ्ज्ञीपणो ते असञ्ज्ञीथको ऊपजेछे तेमाटे भूतभावपणे जाणवो तथा नारकादिकने विषे असञ्ज्ञीपणो कदाचित्पणो करी एकवचन बहुवचन पणाना सम्भवथकी छ भंगाहुवे ते पूर्वें देखाड्याछे एतला

त्वासम्भवात्, तथा नोसञ्ज्ञि नोअसञ्ज्ञि विशेषणदण्डकयो द्वितीयदण्डके जीवमनुजसिद्धपदेषू क्तरूप भङ्गकत्रय भवति, तेषु बहूना मवस्थितानां लाभा दुत्पद्यमानाना चैकादीना सम्भवादिति, एतयोश्च दण्डकयो जीव मनुजद्विपदान्येव भवन्ति, नारकादिपदाना नो सञ्ज्ञि नो असञ्ज्ञीति विशे षणस्या घटनादिति, सलेश्यपदण्डकद्वये औधिकदण्डकवज्जीवनारकादयो वाच्या' सलेश्यताया जीवत्ववदनादित्वेन विशेषानुत्पादकत्वा त्केवल सिद्धपद नाधीयते, सिद्धाना मलेश्यत्वादिति' कृष्णलेश्यानीललेश्याकापोतलेश्याश्च जीवनारकादय प्रत्येक दण्डकद्वयेन आहारकजीवादिव दुपयु ज्य वाच्या, केवल यस्य जीवनारकादे रेता सति सएव वाच्य एतदेवाह ॥ कण्हलेसेत्यादि ॥ एताश्च ज्योतिष्कवैमानिकाना न भवन्ति सिद्धानातु सर्वा नभवन्तीति तेजोलेश्याद्वितीयदण्डके जीवादिपदेषु तएव त्रयो भङ्गा, पृथिव्यम्बुवनस्पतिषु पुन षड्भङ्गा, यत एतेषु तेजोलेश्या एकादयो

तियभंगो, सलेसे जहा ओहिया कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा जहा आहारउ णवरं, जस्स अत्थियाउ

भाटेज—ण्रद्दयदेवमणुणहिछभंगा, ए छ भांगानी स्थापना पूर्वे लिखीछे तिर्णेप्रकारे कहवा ज्योतिषी वैमानिक सिद्ध ए इहा न कहवा तेहने असम्भव गाना असम्भवमाटे। णोसण्णी णोअसण्णी जीवमणुयसिद्देहितियभंगो सलेसा।जहाओहिया कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा जहाआहारओ णवरजस्स अत्थियाओ तेउलेस्साए जीवादिओतियभंगो णवरपुढविकाइयाएसुआउवणस्सईसुछभंगो पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए जीवादिओतियभंगो अलेस्सेहि। नोसंज्ञी नोअसंज्ञी विशेषण दण्डक बेमाहे बीजादण्डकने विषे जीव मनुज सिद्धपदने विषे पूर्वे कह्या ते भांगा ३ हुवे तेहने विषे घणा अवस्थित पामीये उपज तांथका एकादि पणि सम्भवे एहना बेदण्डकनेविषे जीव मनुज सिद्ध ए तीन पदहोजहुवे नारकादिकपदनेविषे नोसञ्ज्ञी नोअसञ्ज्ञी इसा विशेषणना अ घटमानथकी सलेसीदण्डक टायनेविषे अधिक दण्डकनोपरे जीव तथा नारकादिक कहवा सलेशीपणांने विषे जीवपणानी अनादिपणेकरी विशेषण अणउपजवा भणी इहा सिद्धपद नकहवा सिद्धने अलेशीपणामाटे कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या एहने विषे जीव नारकादिक प्रत्येकदण्डक बेहु क रीने आहारक जीवादिकनीपरे उपयोगकरीने कहवा केवल ते जीव नारकादिकने जे लेश्याहुवे तेहीज कहवी एहीज कहेछे—कण्हलेसेत्यादि, ए तो

॥ टीका ॥

देवा पूर्वोत्पन्ना उत्पद्यमानाश्चलभ्यन्तइति सप्रदेशानामप्रदेशानां चैकत्ववहुत्वसम्भवइति एतदेवाह ॥ तेउलेस्साइत्यादि ॥ इहनारकतेजोवायुविकलेन्द्रियसिद्धपदानि नवाच्यानि तेजोलेश्याया अभावादिति पद्मलेश्याशुक्लेश्ययो र्द्वितीयदण्डके जीवादिषु पदेषु तएव त्रयो भङ्गका एतदेवाह ॥ पम्हलसेत्यादि ॥ इहच पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यवैमानिकपदा न्येव वाच्यानि नन्ये ष्वनयो रभावादिति' अलेश्यदण्डकयो र्जीवमनुष्यसिद्धपदान्येवोच्यन्ते अन्येषा मलेश्यत्वस्या सम्भवात् तत्रच जीवसिद्धयो र्भङ्गकत्रय तदेवमनुष्येषुतु षड्भङ्गा अलेश्यतामप्रतिपन्नानां प्रतिपद्यमानानां चैकादीनां मनुष्याणां सम्भवेन सप्रदेशत्वे ऽप्रदेशत्वं चैकत्ववहुत्वसम्भवादिति, इदमेवाह ॥ अलेसेहीत्यादि ॥ सम्यग्दृष्टिदण्डकयो· सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तिप्रथमस

॥ मूल ॥

तेउलेस्साए जीवादियन्तियभंगो, णवरं, पुढविकाइएसु आउवणप्फईसु छभंगो, पम्हलेससुक्कलेस्साए जीवाइतियभंगो, अलेसेहिं जीव सिद्धेहिं तियभंगो, मणुएसु छभंगा, सम्मदिठीहि जीवादियतियभंगो,

॥ भाषा ॥

तलेश्या ज्योतिषी वैमानिकने नहुवे तथा सिद्धने तो सर्वलोही नहुवे, तेजोलेश्याने वीजे पृथक्त्वदंडके जीवादिपद २ नेविषे तेहीज तीनभागा कहवा पृथिवी १ अप् २ वनस्पती ३ तीननेविषे वली छभगा कहवा जेमाटे एहोने विषे तेजोलेश्यावन्त एकादिकदेव पूर्वे ऊपना तथा ऊपजतायका पामीये तेमाटे सप्रदेशनो तथा अप्रदेशनो एकत्व वहुत्वनो सम्भवछे एहीज कहेछे—तेउलेश्याइत्यादि, इहां नारक १ तेऊकाय २ वाऊकाय ३ विकलेंद्री ४ सिद्धपद एतला नकहवा एतलेपदे तेजोलेश्यानो अभावछे तेमाटे पद्मलेश्या शुक्ललेश्या एबेहुने वीजे पृथक्त्वदंडके जीवादिपदनेविषे तेहीज तीन भागाहुवे एहीज कहे छे—पह्मलेस्सेत्यादि, इहा पचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य वैमानिक ए पदहीज कहवा बीजापदानेविषे एबेलेश्याना अभावछे तेमाटे अलेससहि अलेसी बेदंडके जीव मनुष्य ? सिद्ध ३ एहोजपद कहवा, बीजापदानेविषे अलेशीपणाना असम्भवपणो तिहां। जीवसिद्धेहितियभंगोमणुएसुछभगा। जीवपदे सिद्धपदे भागा ३ पूर्वनी परे हुवे तेहीज मनुष्यपदनेविषे भागा ६ हुवे अलेशीपणो पाम्याने तथा पामतायकाने एकादि मनुष्यने सम्भवे करी सप्रदेशपणे अप्रदेशपणे एकत्व वहुत्वनो सम्भवछे तेमाटे छभगा पूर्वोक्त रीतेहुवे एहीज कहेछे—अलेसेहीत्यादि, तथा। सम्मदिठीहि जीवादिओ तिय

॥ टीका ॥

मये अप्रदेशत्वं द्वितीयादिषु सप्रदेशत्वं, तत्र द्वितीयदण्डके जीवादिपदेषु त्रयो भङ्गाः स्युरेव विकलेन्द्रियेषु तु षट् यत स्तेषु सासादनसम्यग्दृष्टय
एकादय पूर्वोत्पन्ना उत्पद्यमानाश्च लभ्यन्ते ऽत सप्रदेशत्वा प्रदेशत्वयो रेकत्वबहुत्वसम्भवइति एतदेवाह ॥ सम्मद्दिट्ठीहीत्यादि ॥ इहै केन्द्रियप
दानि न वाच्यानि तेषु सम्यग्दर्शनाभावादिति ॥ मिच्छद्दिट्ठीहीत्यादि ॥ मिथ्यादृष्टिद्वितीयदण्डके जीवादिपदेषु त्रयो भङ्गाः मिथ्यात्व प्रतिपन्ना
यन्त्रः सम्यक्त्वत्यागे तत्प्रतिपद्यमाना येकादय सम्भवन्तो तिकृत्वा एकेन्द्रियपदेषु पुन सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्च त्येकएव ते ह्यवस्थितानामुत्पद्यमाना
नाच बहूनां संभवादिति इच्च सिद्धा नवाच्या स्तेषां मिथ्यात्वाभावादिति, सम्यग्मिथ्यादृष्टिबहुत्वदण्डके ॥ सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिछब्भंगा ॥ श्रय
मर्थः सम्यग्मिथ्यादृष्टित्वं प्रतिपन्नका प्रतिपद्यमानाश्च एकादयोपि लभ्यन्त इत्यतस्तेषु षड्भंगा भवतीति इच्च एकेन्द्रियविकलेन्द्रियसिद्धपदानि
नवाच्या न्यसम्भवादिति ॥ संजएहित्यादि ॥ संयतेषु संयतशब्दविशेषितेषु जीवादिपदेषु त्रिकभङ्ग संयम प्रतिपन्नानां बहूनां प्रतिपद्यमानानां चै

॥ मूल ॥

विगलिंदिएसु छब्भंगा , मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो , सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा , संजएहिं

॥ भाषा ॥

भगा विगलिंदिएसुछभंगा मिच्छादिट्ठीहि एगिंदियवज्जोतियभगो सम्मामिच्छादिट्ठीहि छभंगा संजएहिंजीवादिश्रोतियभगो श्रसंजएहि एगिंदियवज्जो
तिभंगो। सम्यग्दृष्टी दंडकनेविषे सम्यग्दृष्टि पाम्या पहिलेसमये अप्रदेशपणो कहीये पछे द्वितीयादि समयन विषे सप्रदेशपणो कहीये तिहां बीजे
दंडके जीवादिपदनेविषे तीनभांगा विगलेंद्रीने विषे तो छभगाहुवे तेहने विषे सासादन सम्यग्दृष्टी एकादि पूर्वे ऊपना तथा ऊपज
ताथका पामीये एतलामाटे सप्रदेशपणे तथा अप्रदेशपणे एकत्व बहुत्वनो सम्भवहुवे एहीज कहेछे—सम्मदिट्ठीहि, इहां एकेंद्री पद न कहवा तेहनेविषे
सम्यग्दर्शनना अभावथकी मिच्छदिट्ठीहि, मिथ्यादृष्टी बीजे पृथक दंडके जीवादिपदनेविषे तीनभांगाहुवे मिथ्यात्व पामता थका एकादिक पणि सम्भवे
इमजाणीने तथा एकेंद्रियपदने विषे सप्रदेशमात्र अप्रदेशमात्र एकत्रीजभांगोहुवे तेहनेविषे अवस्थित तथा ऊपजता घणाछे तेमाटे इहां सिद्धपद न कह
वो सिद्धने मिथ्यात्वना अभावथकी सम्मामिच्छा, सम्यग्मिथ्यादृष्टि एतले मिश्रदृष्टी बहुत्वदंडके छ भगाहुवे इहां एअर्थ मिश्रदृष्टिपणो पाम्या तथा पा

कादीनां भावादित्थं जीवपदमनुष्यपदेएव वाच्यो अन्यत्र संयतत्वाभावादिति, असंयतद्वितीयदण्डके ॥ असंजएहीत्यादि ॥ इह संयतत्वं प्रति पन्नानां बहूनां संयतत्वादिप्रतिपातेन तत्प्रतिपद्यमानानां चैकादीनां भावा द्भङ्गकत्रय मेकेन्द्रियाणांतु पूर्वोक्तयुक्त्या सप्रदेशा अप्रदेशाश्चे त्येक एव भङ्ग इति इह सिद्धपदं नाध्येयं मसम्भवादिति, संयतासंयतबहुत्वदण्डके ॥ संजयासंजएहीत्यादि ॥ इह देशविरतिं प्रतिपन्नानां बहूनां संयमादसंयमाद्वा, निवृत्त्य तांप्रतिपद्यमानानां चैकादीनां भावा द्भङ्गत्रयसम्भवः इहच जीवपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यपदा न्येवा ध्येयानि तदन्यत्र संयतासंयतत्वस्या भावादिति, नोसंजएत्यादौ सैव भावना नवरं मिह जीवसिद्धपदे एव वाच्ये, अतएवोक्त–जीवसिद्धेहितियभंगोत्ति ॥ सकसाईहिंजीवाइहिंति

जीवादिहिंतियभंगो, असंजएहि एगिंदियवज्जो तियभंगो, संजयासंजएहिं तियभंगो, जीवादिहिंनोसंजय नोअसंजय नोसंजयासंजय जीवसिद्धेहिं तियभंगो, सकसाईहि जीवादिहिं तियभंगो, एगिंदिएसु अभंगक

मता एकादिक पणि पामियेछे एतलामाटे तेहनेविषे छ भंगाहुवे इहां एकेंद्रीना पद तथा सिद्धपद ए न कहवा एहने विषे विरतिनो असम्भवछे तेमाटे संजएहिइत्यादि, सयतशब्द विशेषितने विषे जीवादिपदने विषे तीनभांगाहुवे संयमपाम्या घणाने संयमपामता थकाने एकादिकना भावथको तीन भागाहुवे इहां जीवपद मनुष्यपद ए बेपद कहिवा अनेरापदनविषे संयतपणाना अभावथको असंयतने बीजेदंडके इहां असंयतपणो पाम्याने तथा संयतपणो आदि प्रतिपातेंकरी असंयतपणो पडिवजताने एकादिकना भावथी तीनभांगा हुवे तथा एकेंद्रियने तो पूर्वोक्त सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकजभांगोहुवे इहां सिद्धपद न कहवो तिहां मिथ्यात्वना सद्भावथको संयतासंयत बहुत्वदंडके संजयासंजयेहीत्यादि, इहां देशविरति प्रतिपन्नाने तथा संयमथको अथवा असंयमथको निवर्त्ती । संजयासंजएहिं तियभंगो जावादिषो । संयतासंयत प्रते पामताथकाने एकादिक पणि पामीये तेमाटे तीनभांगानो सम्भवछे इहां जीव पचेंद्रियतिर्यंच मनुष्य ए पदकहवा एहथी अनेराने संयतासंयत पणाना अभावथको । णोसंजय णोअसंजय णोसंजयासंजयजीवसिद्धेहितियभंगो । इत्यादिकनेविषे एहीज भावनाकरवी एतला विशेष इहां जीवपद सिद्धपद एहीज बे कहवा एतलामाटेज कह्यो जीव

॥ टीका ॥

प्रतिपद्यमाना एकाद
यन्नगोत्ति ॥ अयमर्थः सकषायाणां सदावस्थितत्वा त्ते सप्रदेशा इत्येको भङ्गक स्तयो पशमश्रेणीत. प्रच्यवमानत्वे सकषायत्वं प्रतिपद्यमाना एकाद
यो लभ्यन्ते ततश्च सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्च, तथा सप्रदेशा श्चाऽप्रदेशाश्चे त्यपरभङ्गकद्वयमिति, नारकादिषु तु प्रतीतमेव भङ्गकत्रय ॥ एगिंदिएसुअभ
गयति ॥ भङ्गकाना मभावो ऽभङ्गक सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकएव विकल्पइत्यर्थः, बहूना मवस्थिताना मुत्पद्यमानानाञ्च तेषु लाभादिति, इहच
सिद्धपदं नाध्येय मकषायित्वा देव क्रोधादिदण्डकेष्वपि ॥ कोहकसाईहिजीवेगिंदियवज्जोतियभंगोत्ति ॥ अयमर्थः क्रोधकषायिद्वितीयदण्डके जीव
पदे पृथिव्यादिपदेषुच सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकएव भङ्गः' शेषेषुतुत्रय., ननु सकषायिजीवपदय त्कथ मिह भङ्गकत्रय नलभ्यते ? उच्यते इह मा
नमायालोभेभ्यो निवृत्ता क्रोध प्रतिपद्यमाना बहवएव लभ्यन्ते प्रत्येक तद्राशीना मनन्तत्वा त्ततवेकादयो यथो पशमश्रेणीत. प्रच्यवमाना. सकषा

॥ मूल ॥

माणकसाई माइकसाई जीवेगिंदियवज्जो ति
कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, देवेहिं छब्भंगो,

॥ भाषा ॥

सिद्धेहितियभंगोत्ति, सकसाईहि जीवादिओ तियभंगोत्ति। इहा एअर्थ सकषाईजीव सदा अवस्थित घणाछे तेमाटे सप्पएसाए ए एकभाङ्गो १ हुवे, तथा
उपशमश्रेणीथी पडतायका सकषायपणो पडिवजता एकादिक पणि पामिये तिवारे सप्पएसाय अप्पएसेय ए बीजोभाङ्गो २ तथा उपशम श्रेणीथी घणा
पद्धा अने सकषाय पडिवजताने सप्पएसाय अप्पएसाय एत्रीजोभागो ३ नारकादिकने विषे तीनभागा प्रसिद्ध होजछे। एगिंदिएसुअभंगयतिकोहकसा
इहि। भङ्गानो अभाव ते अभङ्गक एतले सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकहोज विकल्पहुवे एकेंद्रानेविषे घणाजीव अवस्थितछे अने घणा ऊपजतायका पणि
लाभे तेमाटे इहा सिद्धपद न कहवा सिद्धने अकषाईपणामाटे इम क्रोधादिक दण्डनेविषे पणि। कोहकसाईहि जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो। इहा ए अ
र्थ क्रोधकसाय बीजे दण्डके जीवपद तथा पृथिव्यादि एकेंद्रीपदनेविषे सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकहोजभांगोहुवे शेषपदनेविषे तीनभागाहुवे इहा को
इएक पूछस्ये सकषाई जीवनोपरे क्रोधकषाईने विषे पणि तीनभाङ्गा किम नलाभे तेहने इम कहीये इहा मान माया लोभयको निवर्त्या जीव क्रोधप्रते
पामता घणाहोज पामीये प्रत्येके ते राशिना अनन्तपणामाटे पणि एकादि नपामिये जिम उपशम श्रेणीथी पडतायका सकषायपणो एकादिपामै

॥ टीका ॥

यत्वप्रतिपत्तारइति ॥ देवेहिंछभ्भंगत्ति ॥ देवपदेषु त्रयोदशस्वपि षड्भङ्गा स्तेषु क्रोधोदयवता मल्पत्वे नैकत्वे बहुत्वेच सप्रदेशाप्रदेशत्वयो सम्भवा
दिति मानकषायिमायाकषायिद्वितीयदण्डकं ॥ नेरइयदेवेहिंछभ्भंगत्ति ॥ नारकाणां देवानांच मध्ये ऽल्पाएव मानमायोदयवन्तो भवन्तीति पूर्वोक्त
न्यायात् षड्भङ्गाभवन्तीति ॥ लोभकसाईहिंजीवेगिंदियवज्जोतियभंगोत्ति ॥ एतस्य क्रोधसूत्रव द्भावना ॥ नेरइएहिंछभ्भंगत्ति ॥ नारकाणां लोभोदय
वता मल्पत्वा त्पूर्वोक्ता षड्भङ्गाभवन्तीति, आहच-कोहेमाणेमाया बोधव्वासुरगणेहिंछभ्भंगा । माणेमायालोभे नेरइएहिंपिछभ्भंगा ॥ १ ॥ देवा लो
भप्रचुरा नारका क्रोधप्रचुराइति, अकषायिद्वितीयदण्डके जीवमनुष्यसिद्धपदेषु भङ्गत्रय मन्येषा मसम्भवा देतदेवाह ॥ अकसाईइत्यादि ॥ ओहिय
नाणे आभिनिवोहियनाणे सुयनाणे जीवाइओ तियभंगोत्ति ॥ औधिकज्ञान मत्यादिभि र्विशेषित तत्र मतिश्रुतज्ञानयोश्च बहुत्वदण्डके जीवादिपदे

॥ मूल ॥

यभंगो, नेरइयदेवेहिं छभ्भंगा, लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइएसु छभ्भंगा, अकसाई

॥ भाषा ॥

तिम इहांनही तथा । देवेहिंछभ्भंगा । देवपदनेविषे छभङ्गा पामीये तेहनेविषे क्रोधउदयवन्तने अल्पपणेकरी एकपणेकरी तथा बहूपणेकरी सप्रदेश
तथा अप्रदेश पणाना सम्भवथकी तथा । माणकसाई मायकसाई जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो । ए बीयकषायनेविषे जीवपदे एकेंद्रियपदनेविषे सप्र
साय अप्रदेसाय, ए एकहीज भांगोहुवे शेष पदनेविषे तीनभांगाहुवे । नेरइयदेवेहिंछभ्भंगा । नारकी तथा देवने माहि थोडाहीज मानमायाना उदयव
न्तहुवे पहिला कह्या तीणभांते छभंगाहुवे । लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो । एहने क्रोधसूत्रनीपरे भावना कहवी नेरइएहिंछभ्भंगत्ति, नारकी
लोभ उदयवन्त अल्पपणाथको पूर्वेकह्या तिणिरीते छभंगा आइचकोहे माणे माया बोधव्वा सुरगणेहिंछभ्भंगा, माणे माया लोभे नेरइएहिंछभ्भंगा ।
देवगतिमाहे लोभघणोछे नरकगतिमाहे क्रोध घणोछे । अकसाईहिंजीवमणुयसिद्धेहिंतियभंगो । अकषाय बीजेदंडके जीव मनुष्य सिद्ध ए तीन पदने
विषे पूर्वोक्त युक्ति तीनभांगाहुवे बीजेपदे अकषायपणाना असम्भवमाटे एहीज कहेछे—अकषाई इत्यादि । ओहियनाणे आभिणिवोहियनाणे सुअनाणेजो
वाइओतियभंगो । अधिक ज्ञानमत्यादि ज्ञानविशेषणें कर रहित तिहां मतिज्ञान श्रुतज्ञानना बहुत्वदंडकनेविषे जीवादिपदनेविषे तीनभाङ्गा तिहा

पु त्रयोभङ्गा' पूर्वोक्ता भवन्ति तत्रौ धिकज्ञानिमतिश्रुतज्ञानिना सदावस्थितत्वेन सप्रदेशानां भावात् सप्रदेशा इत्येक", तथा मिथ्याज्ञाना न्मत्यादिज्ञानमात्र मत्यज्ञाना न्मतिज्ञानं श्रुताज्ञानाच्च श्रुतज्ञान प्रतिपद्यमानाना मेकादीना लाभा त्सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्च, तथा सप्रदेशाश्चाप्रदेशाश्चेति' द्वावित्येव त्रयमिति ॥ विगलिदिएहिछब्भगत्ति ॥ द्वित्रिचतुरिन्द्रियपु सासादनसम्यक्त्वसम्भवेना भिनिबोधिकादिज्ञानिना मेकादीना सम्भवा त्तएव षड्भङ्गा, इहच यथायोग पृथिव्यादय सिद्धाश्च नवाच्या असम्भवादिति एव मवध्यादिष्वपि भङ्गकत्रयभावना केवल मवधिदण्डकयो रेकेन्द्रियविकलेन्द्रिया सिद्धाश्च नवाच्या मन पर्यायदण्डकयोस्तु जीवा मनुष्याश्च वाच्या केवलदण्डकयोस्तु जीवमनुष्यसिद्धा वाच्या अतएव वाचनान्तरे दृश्यते ॥ विसेयजस्सजअत्थित्ति ॥ उहिएअन्नाणेइत्यादि ॥ सामान्ये अज्ञाने मत्यज्ञानादिभि रविशेषिते मत्यज्ञाने श्रुताज्ञानेच जीवादिषु त्रिभङ्गी

जीवमणुएहिं सिद्धेहिं तियभंगो, उहियणाणे आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे जीवादिउ तियभंगो, विगलिदिएहि छब्भंगा, उहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे जीवादियउ तियभंगो, उहिएअन्नाणे मतिअन्नाणे सुय

अधिकज्ञान मतिश्रुतज्ञानीने सदा अवस्थितपणेकरी सप्रदेशना भावथकी सप्पएसाय ए एकभाङ्गो १ तथा मिथ्याज्ञानथकी सत्यादिकज्ञानमात्र प्रते मतिअज्ञानथकी मतिज्ञान प्रते श्रुतअज्ञानथकी श्रुतज्ञान प्रते पडिवजताने एकादिकना लाभथकी सप्पएसाय अप्पएसेय एबीजो भागो २ तथा सप्पएसाय अप्पएसेय एत्रीजो भागो ३। विगलिदिएहिछब्भगा। बेरिंद्री तेरिंद्री चउरिंद्री ए तीन विकलेंद्री कहीये एहने विषे सासादन सम्यक्त्वने सम्भवे आभिनिबोधिकादिकज्ञानीना एकादिकना सम्भवथकी तेहीज छ भगाहुवे इहा यथायोग पृथिव्यादिक अने सिद्ध नकहवा असम्भवथकी इम अवध्यादिकनेविषे पणि भागातीननी भावना करवी अवधिदडकने विषे एकेंद्रियने विकलेंद्रिय सिद्ध नकहवा मनपर्याय दंडकने विषे जीव मनुष्य कहवा केवलदडकनेविषे जीव मनुष्य सिद्धकहवा एतलामाटेज वाचनान्तर दीसेछे, विसेयजस्सण अत्थित्ति। ओहियअन्नाणे मतिअन्नाणे सुयअन्नाणे एगिंदियवज्जो तियभगो विभगणाणे जीवादिओतियभगो। सामान्यअज्ञान ते मतिअज्ञानादि विशेषणरहितने विषे मतिअज्ञान तथा श्रुतअज्ञान दोयनेविषे जीवादि पदनेविषे तीनभागा हुवे

॥ टीका ॥

न्नवति, एतेहि सदावस्थितत्वा त्सप्रदेशा इत्येक'' यदातु तदन्ये ज्ञानं विमुच्य मत्यज्ञानादितया परिणमति तदै कादिसम्भवेन सप्रदेशा श्चाप्र देशाश्चे त्यादि भङ्गद्वय मित्येव भङ्गकत्रयमिति, पृथिव्यादिषुतु सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकएवे त्यतश्चाह ॥ एगिंदियवज्जोतियभंगोत्ति ॥ इहच त्रये पि सिद्धा नवाच्या ॥ विभंगेतुजीवादिषु भङ्गत्रयं तद्भावनाच मत्यज्ञानादिव त्केवल मिहै केन्द्रियविकलेन्द्रिया' सिद्धाश्च नवाच्या इति ॥ सजोईज हाओहिउत्ति ॥ सयोगीजीवादिदण्डकद्वयेपि तथा वाच्यो यथौ घिको जीवादिः सचैव सयोगी जीवो नियमा त्सप्रदेशो नारकादिस्तु सप्रदेशो ऽप्र देशोवा, बहवस्तु जीवाः सप्रदेशा एव नारकाद्यास्तु त्रिभङ्गवत एकेन्द्रिया पुन स्तृतीयभङ्गाइति' इह सिद्धपद नाध्येय ॥ मणजोईइत्यादि ॥ मनो योगिनो योगत्रयवन्तः सञ्ज्ञिनइत्यर्थः, वाग्योगिन एकेन्द्रियवर्जा काययोगिनस्तु सर्वेप्येकेन्द्रियादय एतेषुच जीवादिषु त्रिविधो भङ्ग स्तद्भावनाच म

॥ मूल ॥

ण्णाणे एगिंदियवज्जो तियभंगो, विभंगणाणे जीवादिउ तियभंगो, सजोई जहा ओहिउ मणजोगि वइ

॥ भाषा ॥

ए सदा अवस्थितपणाथकी सप्पएसाए ए एकभांगो जिवारे तेहथी बीजाज्ञान मूंकीने मतिअज्ञानादि पणें परिणमे तेएकादिकने सम्भवकरी सप्पएसाय अप्पएसेय सप्पएसाय अप्पएसाय ए तीनभांगा हुवे पृथिव्यादिकने विषे सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकहीजभागो हुवे एतलामाटेंज कहेछे, ए तीनेहने विषे सिद्ध नकहवा विभंगज्ञानने विषे जीवादिपदें भांगा तीन ते भावना मतिअज्ञानादिकनीपरे करवी इहा एकेंद्रिय विकलेंद्रिय सिद्ध नकहवा। सजोगी जहा ओहिओमणजोगी वइजोगी कायजोगी जीवादिओ तियभंगो णवरकायजोगीएगिंदियातिसुअभंगय अजोगीअलेसा। सजोगी अजोगी जीवादिक बेहूने विषे तिम कहवा जिम अधिक जीवादिक कह्या ते इम सयोगीजीव नियमथकी सप्रदेश हुवे अने नारकादि सप्रदेश अप्रदेश पणिहुवे घणाजीव सप्रदे शहीज नारकादिक तीनभागा सहित एकेंद्रिये पणि तीनभागाहुवे इहा सिद्धपद न कहवो, मनोयोगी ते कहीये जेहने योग तीनेई हुवे ते सन्नीहीजहुवे इत्यर्थ वचनयोगी केन्द्रियवर्जीने हुवे काययोगी एकेंद्रियादिक सगलाई हुवे एहनेविषे जीवादिक तीनभागा भावना इमकरवी मनोयोगी आदिकने अवस्थि त पणे पहिलोभागो समनोयोगीपणे छाडी मनोयोगीपणो ऊपजवेकरी अप्रदेशपणोपामे इमभागा बीजादीय ऊपजे एतलोविशेष काययोगी जे एकेंद्रीछे

॥ टीका ॥

नोयोग्यादीना मवस्थितत्वे प्रथमः' अमनोयोगित्वादित्यागाच्च मनोयोगित्वाद्युत्पादेना प्रदेशत्वलाभे ऽन्यद्भङ्गकद्वयमिति, नवरं काययोगिनो ये एकेन्द्रिया स्ते घभङ्गकं सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकएव भङ्गक इत्यर्थः, एतेषुच योगत्रयदण्डकेषु जीवादिपदानि यथासम्भव मध्येयानि सिद्धपदंच न वाच्यमिति ॥ अयोगीजहाअलेसत्ति ॥ दण्डकद्वये प्यलेश्यसमवक्तव्यत्वा त्तेषा ततो द्वितीयदण्डके ऽयोगिषु जीवसिद्धपदयो र्भङ्गकत्रय मनुष्येषुच ष इभङ्गीति ॥ सागारेत्यादि ॥ साकारोपयुक्ते घनाकारोपयुक्तेषुच नारकादिषु त्रयोभङ्गा जीवपदे पृथिव्यादिपदेषुच सप्रदेशाश्चाप्रदेशाश्चे त्येकएव तत्र चान्यतरोपयोगा दन्यतरगमने प्रथमेतरसमये घप्रदेशत्वसप्रदेशत्वे भावनीये, सिद्धाना त्वेकसमयोपयोगत्वेपि साकारस्ये तरस्य चोपयोगस्या सकृत्प्राप्त्या सप्रदेशत्व सकृत्प्राप्त्या चाप्रदेशत्व मवसेय, एव चासकृदवाप्तसाकारोपयोगा बहू नाश्रित्य सप्रदेशा इत्येको भङ्गः तानेव सकृदवाप्त

॥ मूल ॥

जोगि कायजोगि जीवादिउ तियन्नगो, णवरं, कायजोगी एगिंदिया तेसु अन्नगकं, अजोगी जहा अलेसा

॥ भाषा ॥

जीवादिकपद यथा सम्भवे कहवा इहा सिद्धपद नकहवो । अजो तेहनेविषे अभङ्गक एतले सप्पएसाय अप्पएसाय एकत्रीजभागोहुवे ए तीन योगदंडकनेविषे गीजहाअलेसत्ति । दंडकबेजने विषे अलेशीनीपरे अयोगीनो वक्तव्यता कहवी तिवारे बीजेदंडके अयोगीनेविषे जीव सिद्धना पदनेविषे भागा ३ मनुष्यने विषे भांगा ६ कहवा । सागारोवउत्ते अणागारोवउत्तेहि जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो । सागारोपयोगनेविषे तथा अनाकारोपयोगनेविषे नारकादिपदे तो नभागाहुवे जीवपदनेविषे तथा पृथिव्यादिपदने विषे सप्पएसाय अप्पएसाय एकत्रीजभागो हुवे तिहा घनेरा उपयोगथी अनेरे गमनकीधा प्रथम द्वि तीय समयनेविषे सप्रदेशपणो अप्रदेशपणो भाविवा सिद्धने एकसमय उपयोगपणोछे तोपणि साकार अनाकार उपयोगनो वारम्वार प्राप्तिकरीने सप्र देशपणो एकवार प्राप्तिकरी अप्रदेशपणो जाणवो इम वारम्वार पाम्या साकारोपयोग घणाप्रतें आश्रयीने सप्रदेश ए एकभागो ते प्रतेहीज एकवार पाम्यो साकारोपयोग एकप्रतें आश्रयीने बीजोभागो तथा तेहप्रतेंहीज एकवार पाम्या साकारोपयोग घणाप्रते अधिकरीने त्रीजोभाङ्गो अनाकारोप योग घणाप्रतें आश्रयी पहिलोभाङ्गो ते प्रते होज एकवार पाम्यो अनाकारोपयोग ते एक प्रतेंआश्रयीने बीजोभांगो बेऊने अनेकपणे चोजोभागो । सबे

साकारोपयोगं चैक माश्रित्य द्वितीय तथा तानेव सकृदवाप्तसाकारोपयोगांश्च बहू नऽधिकृत्यतृतीयः अनाकारोपयोगे त्वसकृत्प्राप्तानाकारोपयोगा नाश्रित्य प्रथम , तानेव सकृत्प्राप्तानाकारोपयोग चैक माश्रित्य द्वितीय , उभयेषाम प्यनेकत्वे तृतीयइति ॥ सवेयायजहासकसाइत्ति ॥ सवेदाना मपि जीवादिपदेषु भङ्गकत्रयभावात् एकेन्द्रियेषु चैकभङ्गकसद्भावात्, इहच वेदप्रतिपन्ना न्बहून् अपेक्ष शेच वेद प्रतिपद्यमानकानेकादी नऽपेक्ष्य भङ्गत्रय भावनीय ॥ इत्थीवेयगेत्यादि ॥ इह वेदा द्वेदान्तरसंक्रातौ प्रथमसमये प्रदेशत्व मितरेषुच सप्रदेशत्व मवगम्य भङ्गकत्रय पूर्ववद्वाच्य नपुसक वेददण्डकयो स्त्वेकेन्द्रिये ष्वेको भङ्गक सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येवरूप. प्रागुक्तयुक्ते रेवेति स्त्रीदण्डकपुरुषदण्डकेषु देवपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यपदा न्येव नपुसकदण्डकयोस्तु देववर्जानि वाच्यानि सिद्धपदच सर्वेष्वपि नवाच्यमिति ॥ अवेयगाजहाअकसाइत्ति ॥ जीवमनुष्यसिद्धपदेषु भङ्गत्रय मकषा यिवद्वाच्यमित्यर्थ ॥ ससरीरीजहाओहिउत्ति ॥ औघिकदण्डकवत् सशरीरिदण्डकयो जीवपदे सप्रदेशतेव वाच्या ऽनादित्वा त्सशरीरत्वस्य नारका

सागारोवउत्ते अणागारोवउत्तेहिं जीवे गिंदियवज्जो तियभंगो, सवेयगा जहा सकसाई इत्थीवेयगपुरिसवे यग नपुंसगवेयगेसु जीवादिओ तियभंगो, णवरं, नपुसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं, अवेयगा जहा अकसाई

यगाजहासकसाई । सवेदकने पण जीवादिपदने विषे तीनभागाहवे एकेंद्रीने विषे एकभागोहवे इहा वेदप्रतिपन्न घणा अने अपेक्षी पडीने अपेक्षी पडिवजता एकादिकनी अपेक्षायें भागा ३ भाववा । इत्थीवेयग पुरिसवेयग णपुसगवेयगेसु जीवादिओतियभंगो णवर णपुसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयचेव। इहा वेदथको बीजा वेदनेविषे संक्रमता पहिलेसमये अप्रदेशपणो बीजो आदिदेई समयनेविषे सप्रदेशपणो जाणीने तीनभागा पूठिलीपरे जोडिवा नपुसकवेद बेहूदंडकनेविषे एकेंद्रियनेविषे एकभागो सप्पएसाय अप्पएसाय एरूप पूठे युक्तिकही तिमहीज स्त्रीदंडक पुरुषदंडकनेविषे देव पचेंद्रिय ति र्यच मनुष्य एपद होजकहवा नपुसक वेदंदडकनेविषे देववर्जीने कहवा सिद्धपद सर्वनेविषे नकहवा । अवेयगाजहाअकसाई । जीव मनुष्य सिद्ध पद नेविषे अकषायनीपरे तीनभागा कहवा । ससरीरीजहाओहिओ ओरालिय वेउव्वियसरीराण जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो। औदारिकदंडकनीपरे ससर

दिपुतु बहुत्वे भङ्गकत्रय मेकेन्द्रियेपुतु तृतीयभंगइति ॥ उरालियवेउव्वियसरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगोत्ति ॥ औदारिकादिशरीरिसत्त्वेपु जीवपदे एकेंद्रियपदेपुच बहुत्वे तृतीयभंगएव बहूना प्रतिपन्नाना प्रतिपद्यमानाना चानुत्तरा लाभात्, शेषेषु भगकत्रय बहूना तेपु प्रतिपन्नाना तथौदारिकवैक्रियत्यागे नौदारिक वैक्रियच प्रतिपद्यमानाना मेकादीना लाभात्, इहौ दारिकदण्डकयो र्नारका देवाश्च नवाच्या, वैक्रियदण्डकयोस्तु पृथिव्यप्तेजोवनस्पतिविकलेन्द्रिया नवाच्या यच्च वैक्रियदण्डके एकेन्द्रियपदे तृतीयभगो ऽभिधीयते सवान्यूना मसङ्ख्याताना प्रतिसमय वैक्रियकरणमाश्रित्य तथा यद्यपि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च वैक्रियलब्धिमन्तो स्ये तथापिच भगत्रयवचनसामर्थ्या द्बहूना वैक्रियावस्थानसत्त्व स्तथै कादीना तत्प्रतिपद्यमानता चावसेया ॥ आहारगेत्यादि ॥ आहारकशरीरे जीवमनुष्ययो' षड्भगका पूर्वोक्ताएवा हारकशरीरिणा मल्पत्वात्' शेषजीवा

ससरीरी जहा उहिउ उरालियवेउव्वियसरीराणं, जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, आहारगसरीरे जीव मणुएसु

सप्पएसाय अप्पएसाय शरीरी बेदंडकनेविषे जीवपदे सप्रदेशपणोज कहवो शरीरना अनादिपणाथकी नारकादिकनेविषे बहुत्व तीनभांगा एकेन्द्रीनेविषे एक त्रीजोभांगोहीज हुवे, औदारिकशरीरी जीवपदनेविषे तथा एकेंद्रियपदनेविषे बहुवचने त्रीजोभांगोहीजहुवे घणा प्रतिपन्नने तथा प्रतिपाद्यमानने अन्तरा लाभथकी शेषनेविषे तीनभांगाहुवे घणां तेहनेविषे प्रतिपन्नने तथा औदारिकवैक्रिय त्यागकरी औदारिकप्रते तथा वैक्रियप्रतें प्रतिपद्यमानने एकादिकना लाभथकी इहा औदारिक बेदंडकनेविषे देवता नरक नकहवा वैक्रियबेदंडकने विषे पृथिवी अप् तेउ वनस्पतो विगलेंद्रिय ए नकहवा जे वैक्रियदंडके एकेंद्रियपदें त्रीजाभांगो कह्योये ते वायुकाय असंख्याताने प्रतिसमय वैक्रिय करआश्रयीने कह्यु तथा यद्यपि पचेंद्रिय तिर्यचमनुष्य वैक्रिय लब्धिवन्त थोडाहुवे तथापि वचन सामर्थ्य थकी घणां नो वैक्रियअवस्था न सम्भवे तथा एकादिक ने ते पडिवजताथकाने जाणवो आहारग शरीरनेविषे जीव तथा मनुष्य ए बेपदनेविषे छभगाहुवे पूर्वं कह्या तेहोज आहारक शरीरोना अल्पपणाथकी शेषजीवने आहारकशरीर न सम्भवे तैजसकार्मणशरीरने विषे जीवादिक तिम कहवा जिम औघिकह्या तिहा जीव सप्रदेश होजकहवा अनादिपणाथकी तैजसादिक सयोगने नारकादिक त्रिभगक कहवा

॥ टीका ॥

नातु तन्नसम्भवतीति ॥ तेयगेत्यादि ॥ तैजसकार्म्मणशरीरे समाश्रित्य जीवादय स्तथा वाच्या यथौघिका स्तएव तत्रच जीवा सप्रदेशाएव वाच्या अनादित्वा तैजसादिसंयोगस्य नारकादयस्तु त्रिभङ्गाएकेन्द्रियास्तु तृतीयभङ्ग, एतेषुच सशरीरादिदण्डकेषु सिद्धपद नाध्येयमिति ॥ असरीरेत्यादि ॥ अशरीरेषु जीवादिषु सप्रदेशतादित्वेन वक्तव्येषु जीवसिद्धपदयो पूर्वोक्तात्रिभङ्गीवाच्या ऽन्यत्रा ऽशरीरत्वस्या भावादिति ॥ आहारपज्जत्ती सत्यादि ॥ इहच जीवपदे पृथिव्यादिपदेषुच बहूना माहारादिपर्याप्ती प्रतिपन्नाना तदपर्याप्तित्यागेना हारपर्याप्त्यादिभि पर्याप्तिभाव गच्छताच बहूनामेव लाभा त्सप्रदेशा श्चाप्रदेशाश्चे त्येकएव भङ्ग'' शेषेषु त्रयोभङ्गाइति ॥ भासमणेत्यादि ॥ इह भाषामनसो' पर्याप्ति भाषामन'पर्याप्ति र्भा

॥ मूल ॥

बभ्भंगा, तेयगकम्मगाइं जहाउहिया असरीरेहिं जीव सिद्धेहिं तियभंगो, आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासामणपज्जत्ती जहा सन्नी आहारअप

॥ भाषा॥

अने एकेंद्रियने त्रीजे भागे कहवा ए शरीरादिक दण्डकनविषे सिद्धपद नकहवो अशरीरने विषे जीवादिक पदनेविषे सप्रदेशादिपणें करी वक्तव्यताने विषे जीव सिद्धपदने विषे पूर्वोक्त तीनभागा कहवा बीजस्थानके अशरीरो पणाना अभावथको । आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जोतियभंगो भासमणपज्जत्ती जहासणी । इहा जीवपदने विषे तथा पृथिव्यादिक पदनेविषे घणाने आहारादि पर्याप्ति प्रतें पाम्या ने ते अपर्याप्ति त्यागेकरी पर्याप्तादिकेकरी पर्याप्तिभाव प्रतें पामताएहवा घणाजीव लाभीने तिवारे सप्पएसाय अप्पएसाय ए एकज भांगो थाय शेषनेविषे तीनभागा हुवे भासमणेत्यादि इहा भाषा अने मननी जे पर्याप्ति ते भाषामननीपर्याप्ति ए बेपर्याप्तिने एकपणें विवक्षो तेहनोकारण बहुश्रुतजाणे ते भाषा मनपर्याप्तिक जिम सन्नीकह्या तिम सप्रदेशादिपणे कहवा सर्वपदनेविषे तीनभागा इत्यर्थ इहां पचेंद्रीनाजपद कहवा पर्याप्तिनो ए स्वरूपकह्या जिणे करणेकरी भुक्तआहार खल रसपणें कराने समर्थहुवे ते करणनो निष्पत्ति ते आहारपर्याप्ति कहिये पर्याप्तिकरणशक्ति एवेकशब्द एकार्थछै तथा जिणें करणेकरी औदारिकवैक्रिय आहारकशरीर योग्य द्रव्यग्रहीने औदारिकादिरूपणे परिणमावे ते करणनो निवृत्ति ते शरीरपर्याप्ति

यामन पर्याप्त्योस्तु बहुश्रुताभिमतेन केनापि कारणे नैकत्व विवक्षितं ततश्च तथा पर्याप्तका यथा संज्ञिन स्तथा सप्रदेशादितया वाच्या सर्वपदेषु त्रङ्गत्रयमित्यर्थ पञ्चेन्द्रियपदान्येव चेह वाच्यानि' पर्याप्तीना चेद स्वरूप माहु –येन करणेन भुक्त माहार खल रसच कर्तु समर्थो भवति तस्य करणस्य निष्पत्ति राहारपर्याप्ति , करण शक्तिरिति पर्यायो, तथा शरीरपर्याप्ति नाम येन करणे नौदारिकवैक्रियाहारकाणा शरीराणा योग्या नि द्रव्याणि गृहीत्वौ दारिकादिभावेन परिणमयति तस्य करणस्य निर्वृत्ति· शरीरपर्याप्तिरिति, तथा येन करणे नैकादीना मिन्द्रियाणा प्रायोग्या नि द्रव्याणि गृहीत्वा स्वीयान् विषयान् ज्ञातु समर्थो भवति तस्य करणस्य निर्वृत्ति रिन्द्रियपर्याप्ति , तथा येन करणेना नप्राणप्रायोग्यानि द्रव्या ण्यवलव्या नप्राणतया निस्स्रष्टु समर्थो भवति तस्य करणस्य निर्वृत्ति रानप्राणपर्याप्तिरिति, तथा येन करणेन सत्यादिभाषाया प्रायोग्यानि द्रव्या ण्यवलव्य चतुर्विधभाषया परिणमय्य भाषानिसर्जनसमर्थो भवति तस्य करणस्य निष्पत्ति र्भाषापर्याप्ति , तथा येन करणेन चतुर्विधमनोयोग्यानि द्रव्याणि गृहीत्वा मननसमर्थो भवति तस्य करणस्य निष्पत्ति मंन पर्याप्तिरिति ॥ आहारअपज्जत्तीत्यादि ॥ इह जीवपदे पृथिव्यादिपदेषुच सप्रदे

जत्ती जहा त्रणाहारगा सरीरत्रपज्जत्तीए इंदियत्रपज्जत्तीए त्राणापाणत्रपज्जत्तीए जीवे एगिंदियवज्जो

कहिये तथा जिणें करणकरी एकादिक एक स्पर्शनादिक इन्द्रियप्रायोग्य द्रव्यग्रहीने पोताना विषयप्रतें जाणवाने समर्थहुवे ते करणनी निर्वृत्ति ते इ न्द्रियपर्याप्ति तथा जिणें करणें श्राण प्राण प्रायोग्य द्रव्य अवलवीने आन प्राण पणें रचवाने समर्थहुवे ते करणनी निर्वृत्ति ते आन प्राण पर्याप्ति कहि ये तथा जिणेकरी सत्यादिभाषा प्रायोग्य द्रव्यअवलवीने चतुर्विध भाषायें परिणमी चतुर्विधभाषा निसर्जन समर्थहुवे जे करणनी निर्वृत्ति ते भाषापर्या प्ति कहीये तथा जिणें करणेकरी चतुर्विध मनोयोग्य द्रव्यग्रहीने मनने समर्थहुवे ते करणनी निष्पत्ति ते मनपर्याप्ति कहिये आहारपज्जत्ती०त्यादि इहां जीवपद पृथिव्यादिक पदनेविषे सपएसाय अपएसाय एकहोजभागोहुवे तेमाटे निरन्तर विग्रहगति आहार अपर्याप्तिवन्त घणा लाभीये शेषने विषे छभाङ्गा पूर्वकह्या तेहीज कहवा । आहारअपज्जत्ती जहा आहारगा सरीरअपज्जत्तीए इंदियअपज्जत्ती आणपाण अपज्जत्तीए जीवेगिंदियवर्ज्जातिय

॥ टीका ॥

शा अप्रदेशाश्चे त्येकएव भङ्गको ऽनवरत विग्रहगतिमता माहारापर्याप्तिमतां बहूना लाभात्, शेषेषुच षड्भङ्गा पूर्वोक्ताएवा हारापर्याप्तिमता म ल्पत्वात् ॥ सरीरअपज्जत्तीएत्यादि ॥ इह जीवे ष्वेकेंद्रियेषु चैक एव भङ्गो ऽन्यत्रतु त्रय शरीराद्यपर्याप्तकाना कालत सप्रदेशाना सदैवलाभा दप्र देशाना कदाचि देवादीनाच लाभात् नारकदेवमनुष्येषुच षडेवेति ॥ भासेत्यादि ॥ भाषामनोपर्याप्त्या ऽपर्याप्तका स्ते येषा जातितो भाषामनोयो ग्यत्वे सति तदसिद्धि स्तेच पञ्चेन्द्रियाएव यदि पुन र्भाषामनसो रभावमात्रेण तदपर्याप्तकाऽभविष्य स्तदै केन्द्रिया अपि ते ऽभविष्य, स्ततश्च जी वपदे तृतीयएव भङ्ग स्या दुच्यतेच ॥ जीवाइओतियभंगोत्ति ॥ तत्र जीवेषु पचेंद्रियतिर्यक्षुच बहूना तदपर्याप्तिप्रतिपन्नाना प्रतिपद्यमानाना चैका दीना लाभा त्पूर्वोक्तमेव भङ्गत्रय ॥ नेरइयदेवमणुएसुछब्भंगत्ति ॥ नैरयिकादिषु मनोऽपर्याप्तकाना मल्पतरत्वेन सप्रदेशा प्रदेशाना मेकादीना ला

॥ मूल ॥

तियभंगो, नेरइयदेवमणुएहिं छब्भंगा, भासामणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, णेरइयदेवमणुएहिं छ

॥ भाषा ॥

भंगो। आहार अपर्याप्तिवन्त थोडाछे तेमाटे सरीरअपज्जत्तीए इत्यादि इहा जीवपदनेविषे तथा एकेंद्रिय पदनेविषे एकत्रीजभांगो हुवे अन्यत्र तीनभांगा हुवे शरीरादि अपर्याप्ति कालथी सप्रदेश पामीये अप्रदेश किवारे एकादिक पणि पामीये तेमाटे तीनभांगाहुवे। णेरइयमणुएहिछब्भंगो भासमणअ ज्जत्तीए जीवादिओतियभंगो णेरइयदेवमणुएहिछभंगा। नारक देव मनुष्यनेविषे छभंगाहुवे भाषा मन अपर्याप्तिकरी अपर्याप्ता जेहने जातिथी भाषा मन प्रायोग्य थका तेहनो सिद्धनथी एहवा पचेंद्रिय होजहुवे जोवली भाषा मन अभावमात्रकरी ते अपर्याप्ता कहीये ते एकेंद्रिय पणिहुवे तिवारे जी वपदने विषे त्रीजोभांगो होजहुवे अने कहीयेछे—तिहा जीवपदनेविषे तथा पचेंद्रीतिर्यंचनेविषे घणाने अपर्याप्ति पाम्याने तथा प्रतिपद्यमानने एकादि कना लाभथको पूर्वकह्या तेहोज तीनभांगाहुवे। णेरइयदेवमणुएसुछब्भंगत्ति। नारकादिकनेविषे मनअपर्याप्ताने अल्पतरपणे सप्रदेश अप्रदेशना एका दिकना लाभथको तेहोज छभांगाथाय ए पर्याप्ति अपर्याप्तिद्वारनेविषे सिगपद नकहवो तेहना असम्भवथको पूर्वोक्तद्वारनो। सगहगाहा। संग्रह गाथा कहेछे—सपएसाहारगभविय सण्णिलेसादिट्ठीसंजयकसाए। णाणेजोगुवओगे वेदेसरीरपज्जत्ती ॥ १ ॥ सप्पएसत्ति कालथी जीव सप्रदेश वीजा एक

॥ टीका ॥

न्ना तएव षड्भङ्गा , एपुच पर्याप्त्यपर्याप्तिदण्डकेपु सिद्धपदं नाध्येय मसम्भवादिति, पूर्वोक्तद्वाराणा सङ्ग्रहगाथा ॥ सपएसेत्यादि ॥ सपएसत्ति ॥ कालतो जीवा सप्रदेशा इतरेच एकत्वबहुत्वाभ्या मुक्ता. ॥ आहारगत्ति ॥ आहारका अनाहारकाश्च तथैव ॥ भवियत्ति ॥ भव्या अभव्या उभयनिपेधाश्च तथैव ॥ सन्नित्ति ॥ सञ्ज्ञिनो ऽसञ्ज्ञिनो द्वयनिषधवतश्च तथैव ॥ लेसत्ति ॥ सलेश्या कृष्णादिलेश्या. अलेश्याश्च तथैव ॥ दिट्ठित्ति ॥ दृग्दृष्टि सम्यग्दृष्ट्यादिकान् तद्वत स्तथैव ॥ सजयत्ति ॥ संयता असयता मिश्रा स्त्रयनिपेधिनश्च तथैव ॥ कसायत्ति ॥ कषायिण क्रोधादिमन्त ४ अकषाया श्च तथैव ॥ नाणेत्ति ॥ ज्ञानिन आभिनिबोधिकादिज्ञानिन ५ अज्ञानिनो मत्यज्ञानादिमन्तश्च तथैव ॥ जोगत्ति ॥ सयोगा मनआदियोगिनो ऽयोगिनश्च तथैव ॥ उवओगेत्ति ॥ साकारो नाकारोपयोगा स्तथैव ॥ वेदत्ति ॥ सवेदा स्त्रीवेदादिमन्त ३ अवेदाश्च तथैव ॥ ससरीरत्ति ॥ सशरीरा

॥ मूल ॥

जीवा, सपएसाहारगभविय सन्निलेसादिट्ठिसंजयकसाए । नाणेजोगुवयोगे वेएयसरीरपज्जत्ती ॥ १ ॥

॥ भाषा ॥

जीव बहुपणें करीकह्या आहारगत्ति, आहारक अनाहारक पणि तिमज भवियत्ति, भव्य अभव्य उभय निषेध तिमहीज सण्णित्ति, सन्नी असन्नी उभय निषेधवन्त तिमहीज लेसत्ति, सलेशी कृष्णादिलेशी अलेशी ए तिमज दिट्ठित्ति, दृष्टि सम्यग्दृष्टी आदिदेई तेहवत तिमहीज सजयत्ति, सयत असयत मिश्र तीनेई निषेध ए तिमज कसायत्ति, सकषायी क्रोध मान माया लोभवत अकषायी तिमहीज णाणेत्ति, ज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी अज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभगज्ञानी ए तिमहीज जोगत्ति, सयोगी मनोयोगी वचनयोगी काययोगी अयोगी ए तिमज उवओगत्ति, साकारोपयोग अनाकारोपयोग ए तिमज वेदत्ति, सवेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद तेवत अने अवेदक ए तिमज सरीरत्ति, सशरीरी औदारिकशरीरी वैक्रियशरीरी आहारकशरीरी तैजसशरीरी अशरीरी ए तिमज पज्जत्ति, आहारअपर्याप्ति शरीर इन्द्रिय आनप्राण भाषा मन एव तथा आहार अपर्याप्ति शरीरअपर्याप्ति इन्द्रियअपर्याप्ति आनप्राणअपर्याप्ति भाषा मनअपर्याप्ति ए द्वारगाथा वखाणी जीवाधिकारथी ज कहेछे—जीवाणभंतेकिंपच्चक्खाणी। जीवण वाक्यालकारे, हेभगवन्! स्यूं प्रत्याख्यानी कहीये सर्वविरतीछे। अपच्चक्खाणी। अप्रत्याख्यानी कहीये अविरती

औदारिकादिमन्त ५ अशरीराश्च तथैव ॥ पज्जत्तित्ति ॥ आहारादिपर्याप्तिमन्तः ५ तदपर्याप्तकाश्च ५ तथैवोक्ताइति जीवाधिकारा देयाः ॥ जीवा णमित्यादि ॥ पच्चक्खाणित्ति ॥ सर्वविरताः ॥ अपच्चक्खाणित्ति ॥ अविरताः ॥ पच्चक्खाणापच्चक्खाणीतित्ति ॥ देशविरताइति ॥ सेसादोपडिसेहियव्वेत्ति ॥ प्रत्याख्यानदेशप्रत्याख्याने प्रतिषेधनीये अविरतत्वा न्नारकादीनामिति, प्रत्याख्यानच तद्ज्ञाने सति स्या दिति ज्ञानसूत्रं तत्रच ॥ जेपचें दियातेतिन्निविति ॥ नारकादयो दण्डकोक्तपञ्चेन्द्रियाः समनस्कत्वा त्सम्यग्दृष्टित्वे सति ज्ञपरिज्ञया प्रत्याख्यानादित्रय जानती ति ॥ अवसेसेत्या

वाण भंते ! किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि सव्वजीवाणं एवंपुच्छा ? गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव चउरिंदिया सेसा दोपडिसेहेयव्वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नोपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणीवि पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि म

छे पच्चक्खाणापच्चक्खाणी । प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानी कहता देशविरतीछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवापच्चक्खाणीवि । हेगौतम । जीव सर्व विरतीपणिछे अपच्चक्खाणीवि पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि सव्वजीवाणपुच्छा । अविरति पणिछे जीव देशविरती पणिछे सर्व जीवना इमहीज पृछाकरवी वली । णेरइयाणभंते किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी इत्यादि इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइयाअपच्चक्खाणी जावचउरिंदिया । हेगौतम । नारकी अविरतीछे इम असुरकुमारादि दश भवनपती बेइन्द्रियादि तीन विगलेन्द्री कहवा चउरिन्द्री पर्यन्त ० पूर्वोक्तने अविरति पणाथकी अपच्चक्खाणी कहता । सेसादोपडिसेहेयव्वा । शेष पच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी एदोय निषेध करवा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । पचेंद्री तिर्यञ्चयोनिक । णोपच्चक्खाणी । सर्व विरती न हो । अपच्चक्खाणी । अविरती हुवे । पच्चक्खाणापच्चक्खाणीवि मणुयातिगोवि सेसाजहाणेरइया । तथा देशविरती पणि कहवो मनुष्य पच्चक्खाणी पणि हुवे अपच्चक्खाणी पणिहुवे पच्चक्खाणा पच्चक्खाणी पणिहुवे शेषव्यतर ज्योतिषी वैमानिक एह नारकीनीपरे अपच्चक्खाणीछे शेष २ भांगानही पच्चक्खाणती ते पच्चक्खाण जाणताहुवे तेमाटे ज्ञानसूत्र कहेछे—जीवाणभंतेकिंपच्चक्खाणं जाणंति । जीव हे भगवन् । स्यूं पच्चक्खाणप्रते ज्ञपरिज्ञाये जाणे

॥ टीका ॥ दि ॥ एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाः प्रत्याख्यानादित्रयं न जानं त्यमनस्कत्वादिति, कृतंच प्रत्याख्यानं नवतीति तत्करणसूत्रं प्रत्याख्यान मायुर्बन्धहेतुरपि नवती त्यायु सूत्र तत्रच ॥ जीवायेत्यादि ॥ जीवपदे जीवाः प्रत्याख्यानादित्रयनिबद्धायुका वाच्या वैमानिकपदेच वैमानिका अप्येव प्रत्याख्यानादि

॥ मूल ॥ णयातिसिवि सेसाजहानेरइया । जीवाणं नंते ! किं पच्चरकाण जाणति अपच्चरकाणं जाणंति पच्चरकाणा पच्चरकाण जाणति ? गोयमा ! जे पचिंदिया ततिसिवि जाणंति अवसेसा नपच्चरकाणं जाणंति जीवा णं नंते ! कि पच्चरकाणं कुव्वंति अपच्चरकाणं कुव्वंति पच्चरकाणापच्चरकाणं कुव्वति ? जहा उहिया तहा कुव्वणा । जीवाणं नंते ! कि पच्चरकाणनिवत्तियाउया अपच्चरकाणणिवत्तियाउया पच्चरकाणापच्चरकाणणि वत्तियाउया ? गोयमा ! जीवाय वेमाणियाय पच्चरकाणनिव्वत्तियाउया तिसिवि अवसेसा अपच्चरकाणनि

॥ भाषा ॥ अपच्चरवाण जाणति । अपच्चरवाण प्रते परिजाणें । पच्चरवाणा पच्चरवाण जाणति । प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानप्रते अपरिज्ञायें जाणें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचिंदिया तिण्णिवि जाणंति अवसेसा पच्चरवाण नजाणंति । हे गौतम ! णेरइया असुरा इत्यादिक दंडकने जे पचेंद्री कह्या ते मनसहितछे ते माटे सम्यग्दृष्टि पणाथको अपरिज्ञायेंकरी प्रत्याख्यानादि तीनजाणे एकेंद्री विकलेंद्री प्रत्याख्यानादि तीन नजाणे मनरहित पणामाटे कीधां पच्चरवा णहुवे तेमाटे करणसूत्र कहेछे—जीवाणभंते किपच्चरवाण कुव्वति अपच्चरवाणकुव्वति । जीव हेभगवन् ! स्यूं पच्चरवाणकरे अपच्चरवाणकरे । पच्चरवा णापच्चरवाणकुव्वति । प्रत्याख्याना प्रत्याख्यान करे । जहाओहियातहाकुव्वणा । जिम ओघिकसूत्रे नारकादिक कह्या तिम करवाने अधिकारे पणि कहवा पच्चरवाण आयुर्बन्धक पणिहुवे तमाटे आयुसूत्र कहेछे—जीवाणभंतेकिपच्चरवाण निव्वत्तियाउया । जीव हेभगवन् ! स्यूं पच्चरवाणेंकरी आऊ खो नीपजावे बांधे । अपच्चरवाण णिव्वत्तियाउया । अप्रत्याख्याने करीने आऊखो नीपजावे बांधे अथवा पच्चरवाणा पच्चरवाणणिव्वत्तियाउया । प्र त्याख्याना प्रत्याख्यानेकरी आऊखो नीपजावे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाय वेमाणियाय पच्चरवाणणिव्वत्तियाउयातिण्णिवि । हेगौतम ! जीवपच्च

॥ टीका ॥

त्रयवता तेषू त्पादात् ॥ अवसेसत्ति ॥ नारकादयो ऽप्रत्याख्याननिर्वृत्तायुषो यत स्तेषु तत्त्वेना विरताएवो त्पद्यंत इति' उक्तार्थसङ्ग्रहगाथा ॥ पच्च क्खाणमित्यादि ॥ प्रत्याख्यानमिति एतदर्थगको दण्डक एव मन्ये त्रय' ॥ इतिषष्ठशतेचतुर्थ' ॥ ४ ॥ अनन्तरोद्देशके सप्र देशा जीवा उक्ता अथ सप्रदेशमेव तमस्कायादिक प्रतिपादयितु पञ्चमोद्देशक माह ॥ किमियमित्यादि ॥ तमुकाएत्ति ॥ तमसा तमिस्रपुद्गलाना कायो राशि स्तमस्काय- सच नियतएवेह स्कध कश्चि द्विवक्षितः सच तादृशः पृथ्वीरज'स्कधोवा, स्या दुदकरज'स्कधोवा, नत्वन्य स्तदन्यस्या ता

॥ मूल ॥

वत्तियाउया गाहा—पच्चक्खाणजाणइ कुव्वंतितेणवच्चाउनिव्वत्ती । सपएसुद्देसमिय एमेएदण्डगाचउरो ॥ १ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठ सयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ३ ॥ ४ ॥ किमियं भंते ! तमुका एत्ति पवुच्चइ किं पुढवितमुकाएत्ति पवुच्चइ आउतमुकाएत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! नोपुढवितमुकाएत्तिपवु

॥ भाषा ॥

क्खाणादिक त्रोणि प्रकारकरी आउखोबांधे चवे वैमानिकनो त्रिणिप्रकारेकरो आउखोबांधे । अवसेसा अपच्चक्खाण णिव्वत्तियाउया । अवशेष नारका दिकने अपच्चक्खाणेंकरी आउखोबांधे जेमाटे तेहनेविषे अविरतीहोज उपजेछे । गाहा । उक्तार्थ गाथा पच्चक्खाणजाणइ कुव्वइतेणेवआउणिव्वत्ती । सपदेसुद्देसमिय एमेएदंडगाचउरो ॥ १ ॥ पच्चक्खाण एहवा अर्थनो एकदंडक १ इमजाणे २ करे ३ तिणेंकरी आउखोबांधे ४ सप्रदेश उद्देशाने विषे च व लो एदंडक चारकह्या । सेवंभंतेभंतेत्ति । तहत्ति, हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानथी । छठसयस्सचउत्थो उद्देसोसम्मत्तो । ए छठा शतकनो चो थो उद्देशो अर्थथी कह्यो ६ ॥ ४ ॥ पाछिले उद्देशे सप्रदेशो जीवकह्या इहा सप्रदेशी तमस्कायादि कहतो पांचमो उद्देशो कहेछे—कि मियंभंतेतमुकाएत्तिपवुच्चइ किंपुढवीतमुकाएत्तिपवुच्चइ । स्यूं एह हेभगवन् ! तमिस्रपुद्गल कायराशि ते तमस्काय ते नियमहोज इहा विवक्ष्यो ते तमस्का य एहवोकह्यु ते तेहथो पृथिवी रज स्कन्धहुवे अथवा उदक रजस्कंधहुवे पणि बीजा इणि सरीखानथी तेमाटे नहुवे तिहा पृथिवी अप् विषय संदेहथी कहेछे—स्यूं पृथिवी तमस्कायकहिये अथवा । आउतमुकाएत्तिपवुच्चइ । अपकाय ते तमस्कायकहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोपुढवीतमुकाएत्तिपवु

॥ टीका ॥

दृशत्वादिति पृथिव्यविषयसन्देहा दाह ॥ किंपुढवीत्यादि ॥ व्यक्त ॥ पुढविकाएणमित्यादि ॥ पृथिवीकायो स्त्ये कक कश्चि च्छुभो भास्वरो य दृशत्वादिति पृथिव्यविषयसन्देहा दाह ॥ किंपुढवीत्यादि ॥ व्यक्त ॥ पुढविकाएणमित्यादि ॥ पृथिवीकायो देश पृथिवीकायान्तर प्रकाश्यमपि नप्रका किंविध इत्याह देश विवक्षितक्षेत्रस्य प्रकाशयति भास्वरत्वा न्मण्यादिव तथा ऽस्त्येक पृथिवीकायो देश पृथिवीकायान्तर प्रकाश्यमपि नप्रका शय त्यभास्वरत्वा दन्धोपलव नैव पुन रप्काय तस्य सर्वस्या प्यप्रकाशकत्वा त्ततश्च तमस्कायस्य सर्वथैवा प्रकाशकत्वा दप्कायपरिणामतैव ॥ एग पएसियाएत्ति ॥ एकएव नद्यादय श्रोत्तराधर्यप्रति प्रदेशो यस्या सा तथा तया समभित्तितयेत्यर्थ नच वाच्य मेकप्रदेशप्रमाणयेति असङ्खातप्रदेशा

॥ मूल ॥

अइ आउतमुकाएत्तिपवुच्चइ सेकेणठेण ? गोयमा ! पुढविकाएण अत्थेगइए सुभेए सपकासेइ अत्थेगइए देसं नोपकासेइ सेतेणठेण । तमुकाएण भंते ! कहिं समुठिए कहिं संनिठिए ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्स २ बहिया तिरियमसखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरल्लाउ वेइयंताउ अरुणोदयं समुद्दं

॥ भाषा ॥

चइ । हेगौतम । पृथिवी तमस्कायें न कहीये तमस्काय पृथिवीनू परिणामनही । आउतमुकाएत्तिपवुच्चइ । अने अपकायने तमस्काय एहवू कहिये तेह ने परिणामथकी । सेकेणठेणभंते । तेस्यामाटे हेभगवन् । इमकह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुढवीकाएण अत्थेगइएसुभेदेसेपकासेत्ति । हेगौतम । पृथिवी कायिक केतलाएक शुभ कहिये भास्वर दटोप्यमान ते विवक्षित क्षेत्रने प्रकाशकरे भास्वर पणाथकी मण्यादिकनीपरे । अत्थेगइएदेसेणोपकासेइ । केत लाएक पृथिवीकाय जे देश पृथिवी कायान्तर प्रकाशवायोग्यछै पणि प्रकाश नकरे अभास्वरपणाथकी इम अपकायनही अप्कायसर्वने अप्रकाशक प णाथको तिवारे तमस्कायनेविषे सर्वथीज प्रकाशनथी तेमाटे अप्काय परिणाम होज तमस्कायछै । सेतेणठेणतमुकाएणभंतेकहिंसमुठ्ठित्तेकहिंसंखिठिए । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इम कह्यु तमस्काय पृथिवीपरिणामनही अप्कायपरिणामछै तमस्काय हेभगवन् । किहांथी नीकल्यो किहा जईरह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जंबूद्दीवस्स २ बहिया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने बाहिर । तिरियमसखेज्जेदीवसमुद्दे वीईवइत्ता । तीछा असख्याता द्वीपसमुद्र व्यतिक्रमी ने उलघोने । अरुणवरस्सदीवस्सबाहिरिल्लाओ वेइयंताओ । अरुणवरनामाद्वीपनो बाहिरली वेदिका जगती तेहना अतथकी छेहडाथको । अरुणोदयसमु

॥ टीका ॥

वगाहन्नवत्वेन जीवाना तस्या जीवावगाहनावप्रसङ्गा तमस्कायस्य स्तिबुकाकाराप्कायिकजीवात्मकत्वा द्वाह्यमानस्य च प्रतिपादयिष्यमाण त्वादिति ॥ सूत्यणति ॥ प्रज्ञापककालेऽप्यलिगितस्या रुणोदसमुद्रादे रधिकरणतोपदर्शनार्थं मुक्तवान् ॥ अहेत्यादि ॥ अध अधस्तात् त्महतमूलसस्थ

॥ मूल ॥

बायालीस जोयणसहस्साणि उग्गाहित्ता उवरिल्लाओ जलंताओ एगपदेसियाए सेढीए तत्थणं तमुकाए समुट्ठिए सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता तओपच्छा । तिरियं पवित्थरमाणे २ सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदे चत्तारिवि कप्पे आवरेत्ताणं उड्ढंपियणं जाव बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते एत्थण तमुकाए संनिट्ठिए । तमुकाएणं भंते ! किं संठिए ? गोयमा ! अहेमल्लगमूलसंठिए उप्पिंकुक्कुडगपंजरगसंठिए

॥ भाषा ॥

ड । अरुणोदयनामा समुद्र । बायालीसजोयणसहस्साणि । बइतालीस सहस्र योजनप्रतें । उग्गाहित्ताउवरिल्लाओजलंताओ । अवगाहीने उपरला पाणी ना अन्तथकी । एगपएसियाएसेढीए । इहां एकप्रदेशश्रेणिनथी जिणिकारणे एकजीव असंख्यातप्रदेश अवगाहे तो एकप्रदेशे अप्काय किमरहे परं इहां प्रदेशशब्द समभित्तिआकार एकप्रदेशश्रेणि विशेष जाणवो जिम जिनराजने एकप्रदेशे साधु समोसरा इत्यर्थ ते एकप्रदेश श्रेणी करीने । तत्थणतमुकाए समुट्ठित्ते । तिहां ण वाक्यालंकारे, तमस्काय उदयपणापाम्या ऊंचा इत्यर्थं । सत्तरसएक्कवीसेजोयणसए । सतरेसै इकवीस योजन १७२१ । उद्धंउप्पइत्ता । ऊंचा उत्पतीने जाइने । तओपच्छातिरियंपवित्थरमाणे २ । तिवारपछी तीछा अर्थ विस्तार पामतोथको २ । सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदे चत्तारि विकप्पे । सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेन्द्र ए चार देवलोक । आवरित्ताण । आवरीने ढांकीने उड्ढंपियणंजावबंभलोए कप्परिट्ठविमाण पत्थडसंपत्ते । ऊंचोपणि ण वाक्यालंकारे, यावत् ब्रह्मदेवलोकनेविषे रिष्टनामे पांचमा प्रतर तेहनो विमान तिहां सम्प्राप्तथयो पहुंतो । तत्थणतमुकाएसंणिट्ठित्ते । तिहां ण वाक्यालंकारे, तमस्काय स्थिररह्यो । तमुकाएणभंते किंसंठिएपण्णत्ते । तमस्काय ण वाक्यालंकारे, हेभगवान् ! किसे संस्थानेकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अहेमल्लगमूलसंठिए । हेगौतम ! सरावसंपुट तेहने संस्थाने । उप्पिकुक्कुडगपंजरसंठिएपण्णत्ते । ऊपरि कूकडा पांजरान आकारे प्ररूप्यो कह्यो ।

॥ टीका ॥

त शरावबुध्नसंस्थानः समजलान्तस्यो परिक्षपदशयोजनशता न्येकविंशत्यधिकानि याव द्वलयसंस्थानत्वात् ॥ केवइयविक्खंभेणंति ॥ विस्तारेण क्व चि दायामेविक्खंभेणंति दृश्यते' तत्र चायाम उच्चत्वमिति ॥ संखेज्जवित्यडेत्यादि ॥ सङ्ख्यातयोजनविस्तृतः आदित आरभ्य ऊर्द्ध सङ्ख्येययोजनानि याव त्ततो ऽसंख्यातयोजनविस्तृत उपरि तस्य विस्तारगामित्वेनो क्तत्वात् ॥ असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणंति ॥ सङ्ख्यातयोजनविस्तृत

॥ मूल ॥

पन्नत्ते तमुकाएणं भंते! केवइयं विक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते तंजहा— संखेज्जवित्थडेय असंखेज्जवित्थडे तत्थणं जे से संखेज्जवित्थडे सेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पन्नत्ते तत्थणं जे से असंखेज्जवित्थडे सेणं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पन्नत्ते । तमुकाएणं भंते ! केमहालए पन्नत्ते

॥ भाषा ॥

तमुकाएणभंतेकेवइयविक्खंभेणं । तमस्काय हेभगवन् । केतले विस्तारछे । केवइयपरिक्खेवेणं पन्नत्ते । केतलो परिधिकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहे पन्नत्ते तजहा । हेगोतम । बेप्रकारे कह्यो ते कहेछे—संखेज्जवित्थडेय असंखेज्जवित्थडेय । आदिथकी आरम्भी ऊर्चो संख्याता योजनताई संख्याते विस्तारे तिवारपछी ऊपर असंख्याता योजन विस्तारे । तत्थणंजेतेसंखेज्जवित्थडे । तिहां जेतेसंख्यातयोजन आदिविस्तारे । सेणंसंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं विक्खंभेणं । तेह ण वाक्यालंकारे, संख्यातायोजन सहस्र विष्कम्भ पिहुलपणे संख्यातायोजन विस्तारपणेछे तमस्कायने असंख्यातमा द्वीप परिधियी मोटोछे तेमाट परिधि । असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं परिक्खेवेणं पन्नत्ते । असंख्यातायोजन प्रमाणहोज कहवो, माहिलो बाहिरिलो परिक्षेपविभाग न कह्यो ते बेऊने पणि असंख्यातपणें तुल्यमाटे । तत्थणंजेसे असंखेज्जवित्थडे । तिहां जे असंख्यातयोजन विस्तारे । सेणंअसंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं विक्खंभेणं । ते असंख्यातयोजनसहस्र विष्कम्भ पिहुलपणें । असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं परिक्खेवेणं । असंख्यातयोजन सहस्र परिधि जाणवो । तमुकाएणभंतेकेमहालए पन्नत्ते । तमस्काय हेभगवन् । केतलोमोटो कह्यो । गोयमा अयण्णं जंबूदीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भतराए । हेगौतम । एहोज जंबूद्वी

त्वेपि तमस्कायस्या सङ्ख्याततमद्वीपपरिक्षेपतो वृहत्तरत्वा त्परिक्षेपस्या सङ्ख्यातयोजनसहस्रप्रमाणत्व मान्तर्वहि परिक्षेपविभागस्तु नोक्त उभयस्या प्यसङ्ख्याततया तुल्यत्वादिति ॥ देवेणमित्यादि ॥ अथ किमेदपर्य मिद देवस्य महर्द्धादिक विशेषण मित्याह ॥ जावइणामेवेत्यादि ॥ इह यावच्छद्द एदपर्यार्थं यतो देवस्य महर्द्धादिविशेषणानि गमनसामर्थ्यप्रकर्षप्रतिपादनाभिप्रायेणैव प्रतिपादितानि ॥ इणामव २ तिकट्टुत्ति ॥ इद गमनमेव मतिशीघ्रत्वावेदकचप्पुटिकारूपहस्तव्यापारोपदर्शनपर अनुस्वाराऽश्रवणाच प्राकृतत्वा द्विर्वचनच शीघ्रत्वातिशयोपदर्शनपर इति रूपप्रदर्शनार्थं

? गोयमा ! अयणं जंबूद्दीवेदीवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेण पन्नत्ते , देवेण महिड्ढीए जाव महाणुभावे इणामेव २ तिकट्ट केवलकप्पं जवुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तोअणुप रियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जासेणं देवत्ताएव उक्किठाए तुरियाए जाव देवगईए वीईवयमाणे जाव एकाहवा दुयाहंवा तियाहवा उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा अत्थेगइए तमुकायं वीइवएज्जा अत्थेगइए तमुकायं

पनामा द्वोप सगलाई द्वीपसमुद्रने सवे अभ्यन्तरमध्ये तेहनी तीनलाख सोलेसहस्र दोयसे अट्ठावीसयोजन काइक जणो । जावपरिक्खेवेण पन्नत्ते । प रिधिकह्यो । देवेणमहिड्ढोए जावमहाणुभावेइणमेवेत्तिकट्टु । ते कोई एक देव यावत् महानुभाग एतलालगे कहवो, एतल् जावूज अतिशीघ्रपणें हाथ व्यापारनो अपनी चिपटी माहि इमोकरोने। केवलकप्प जवूद्दीव २। सपूर्ण जवूद्वीपनामा द्वीपप्रतें । तिहिंअराच्छणिवाएहि । तीन हस्तयो नीपनो चिप ठो माहि । तिसत्तखुत्तो २१ । एकवीस वार । अणुपरियट्टित्ताणहव्वमागच्छेज्जा सेण देवत्ताए उक्किठाए जाव देवगईएवीईवयमाणे । अनुवर्त्तनकरी गोलो फिरोने उतावलो आवे ते देव तह उत्कटोगति त्वरितगतें इत्यादि देवगति इसवोले कहवो तिणे देवगति जातोथको । जावएकाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेणछम्मासेवोईवएज्जा । यावत् एकदिवश बे दिवश तीन दिवश उत्कृष्टथको छईमहीने व्यतिक्रमे जाय । अत्थेगइएतमुकायवोईवएज्जा । केतला एक तमस्काय प्रते अतिक्रमे एतले सख्यातयोजन प्रमाण तमस्कायप्रतें पारपामें । अत्थेगइयनमुकाय णोवोईवएज्जा । केतलाएक तमस्कायनो

वस्तुरूप कृत्वा विधायेति ॥ केवलकप्पंति ॥ केवलज्ञानकल्पं परिपूर्णमित्यर्थः, वृद्धव्याख्यातु केवलं संपूर्णं कल्पतइति कल्पः स्वकार्यकरणसमर्थो वस्तुरूप कृत्वा विधायेति ॥ तिसत्तखुत्तोत्ति ॥ त्रिगुणा: सप्त इति यावत्केवल श्चासौ कल्पश्चेति केवलकल्प स्त ॥ तिहिंअच्छराणिवाएहिंति ॥ तिसृभि श्चप्पुटिकाभि रित्यर्थ ॥ सङ्ख्यातयोजनमान व्यतिव्रजे दितरतु नेति ॥ उरा त्रिसप्त २ वारान् त्रिसप्तकृत्व एकविंसतिवारानित्यर्थ ॥ हव्वति ॥ शीघ्र ॥ अत्थेगइयमित्यादि ॥ इह नवादरतेजस्कायिका मन्तव्या, इहैव लावलाहयत्ति ॥ महान्तो मेघा ॥ ससेयतित्ति ॥ तत्सस्वेदन समूर्च्छन वर्पणाच ॥ वायरेविज्जुयारेत्ति ॥

नोवीईवएज्जा एमहालएण गोयमा ! तमुकाए पन्नत्ते । अत्थिणं भंते ! तमुकाए गेहाइवा गेहवणाइवा ? णोइणठेसमठे । अत्थिणं भंते ! तमुकाए गामाइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णोइणठेसमठे । अत्थिणं भंते ! तमुकाए उरालावलाहया संसेयति समुच्छंति वासवासंति हंताअत्थि । तं भंते ! किं देवोपकरेइ असुरो पकरेइ नागोपकरेइ ? गोयमा ! देवोविपकरेइ असुरोविपकरेइ नागोविपकरेइ । अत्थिणं भंते ! तमुकाए

पार नपामे असख्यातयोजन प्रमाण माटे । एमहालएणं गोयमा तमुकाए पन्नत्ते । एतलामोटो हेगोतम । तमस्कायकह्यो । अत्थिणभंततमुकाए । छे ह भगवन् । तमस्काय । गेहाइवा गेहवणाइवा । घरने आकारे आपण कहिये हाट इतिप्रश्न उत्तर । णोइणठेसमठे । हेगोतम । एअर्थ समर्थनही । अत्थिण भंततमुकाए । छे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे । गामाइवा जावसन्निवेसाइवा । गाम इतिवा यावत् सन्निवेसलगे कहवो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइण ठेसमठे । हेगोतम । एअर्थ समर्थनही । अत्थिणभंततमुकाए । छे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे । उरालावलाहया । उदार मोटा मेह वादला । संसेयति स मुच्छंति सवासंति हंताअत्थि । पुद्गलविषे सनेह ऊपजे पुद्गलमिले बरसे इतिप्रश्न उत्तर हांगोतमछे । तंभंतेकिं देवोपकरेइ असुरोपकरेइ नागोपकरेइ । ते हेभगवन् । स्यूं देव करे असुरकरे नागकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देवोविपकरेइ असुरोविपकरेइ णागोविपकरेइ । हेगोतम । देव पणिकरे असुर पणि करे नाग पणि करे । अत्थिणभंततमुकाएवादरेयणियसद्दे वादरे विज्जुयाए । छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । तमस्कायनेविषे बादर स्तनितशब्दछे

॥ टीका ॥

तेषां निषेत्स्यमानत्वात्' किंतु देवप्रभावजनिता भास्वरा पुद्गला स्तइति ॥ णणत्थविग्गहगइसमावन्नेणंति ॥ नइति योय निषेधो बादरपृथिवी तेजसो सो न्यत्र विग्रहगतिसमापन्नान् विग्रहगत्येव बादरे ते भवत पृथिवीहि बादरारत्नप्रभाद्या स्वष्टासु पृथिवीषु गिरिविमानेषुच तेजस्तु म नुजक्षेत्रएवेति' तृतीया चेह पञ्चम्यर्थे प्राकृतत्वादिति ॥ पलियस्सउपुणअत्थित्ति ॥ परि पार्श्वत' पुन सति तमस्कायस्य चद्रादय इत्यर्थ ॥ काटू

॥ मूल ॥

बादरं थणियसद्दे बादरविज्जुयाए ? हंताअत्थि। तं भंते ! किं देवोपकरेइ तिण्णिविपकरेइ । अत्थिणं भंते! तमुकाए बादरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए? णोइणठे। णणत्थविग्गह । अत्थिण भंते ! तमुकाए चंदिम सूरियगहगणणक्खत्ततारारूवा ? णोइणठेसमठे पलियस्सउपुणअत्थि । अत्थिणं भंते ! तमुकाए चदाभाइ

॥ भाषा ॥

तथा बादर बीजलीछे इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हांगौतम । छे इहां बादर तेउकाइया न कहवा इहांज तेहना निषेध कोधामाटे तो स्यूं छे देव प्रभावज नित भास्वर पुद्गलछे तिके । तभंतेकिंदेवोपकरेइ । ते हेभगवन् । स्यूं देवकरे असुरकरे नागकरे इतिप्रश्न । गोयमा तिण्णिविपकरेइ । हांगौतम तीनेइ पणिकरे । अत्थिणंभंततमुकाए बादरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए । छे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे बादर पृथिवीकाय तथा बादर तेउकाय इ तिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हे गौतम । एअर्थ समर्थनही युक्तनही । णणत्थविग्गहगइसमावण्णएण । न इति जे निषेध बादर पृथिवीकाय बाद र तेउकाय ते अन्यत्र विग्रहगति समापन्नथको विग्रहगतिकरीने जे बादर पृथिवी तेउ हुवे बादरपृथिवी रत्नप्रभादिक आठनेविषे छे तथा गिरिविमा ननेविषेछे अने तेउ मनुष्यक्षेत्रनेविषेज हुवे । अत्थिणभंतेतमुकाएचंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवा । छे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे चन्द्र सूर्य ग्रहगण ३ नक्षत्र ४ तारारूप ५ ए पांच ज्योतिषी इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोइणठेसमठे । एअर्थ समर्थनही युक्तनही । पलियस्सउपुणअत्थि । पासेछे तमस्का यने वली चन्द्रादिक । अत्थिणभंततमुकाए । छे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे । चदाभाइवा सूराभाइवा । चन्द्रमानी आभाकान्ति सूर्यनी तेज इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थनही । कादूमणियापुणसा । ते चन्द्रादिकनी प्रभा ते आत्माने दूषिका जाणवी छे ते पणि अछती पणि

त्र्पात्मानं दूपयति तमस्कायपरिणामेन परिणमना त्कदूपणा

सणियापुणसाइत्ति ॥ ननु तत्पार्श्वतथंद्रादीना सद्भावा त्तत्प्रजापि तत्रास्ति? सत्यं केवलकं

सैव कदूपणिका दीर्घताच प्राकृतत्वात् अत· सत्य प्यसा वसतीति ॥ कालेत्ति ॥ कृष्ण कालाज्ञासेत्ति ॥ कालोपि कश्चित् कुतोपि कालो नावज्ञास

त इत्यतआह ॥ कालावज्ञास कालदीप्तिर्वा ॥ गम्भीरलोमहरिसजणणेत्ति ॥ गम्भीर श्चासौ जीषणत्वा द्रोमहर्षजननश्चेति गम्भीररोमहर्षजनन रोम

हर्षजनकत्वे हेतुमाह ॥ जीमंत्ति ॥ जीम ॥ उत्तासणएत्ति ॥ उत्कम्पहतु· निगमयन्नाह ॥ परमेत्यादि ॥ यतएव मतएवाह ॥ देवेविणमित्यादि ॥

तप्पढमयाएत्ति ॥ दर्शनप्रथमतांया ॥ खुभाएज्जत्ति ॥ स्कभ्नीयात् क्षुभ्येत् ॥ अहेणमित्यादि ॥ अथैन तमस्काय मभिसमागच्छेत् प्रविशे त्ततो जया

त् ॥ सीहसीहंति ॥ कायगते रतिवेगेन ॥ तुरियंतुरियंति ॥ मनोगते रतिवेगात् किं मुक्त जवति क्षिप्रमेव ॥ वीइवइज्जत्ति ॥ व्यतिव्रजेदिति ॥ त

वा सूराज्ञाइवा णोइणठेसमठे कादूसणियापुणसा । तमुकाएण ज्ञंते ! केरिसए वसेणं पसत्ते ? गोयमा !

कालेकालोज्ञासे गंजीरलोमहरिसजणणे जीमे उत्तासणए परमकिएहे वसेणं पसत्ते देवेविणं अत्थेगइए

जेण तप्पढमयाए पासित्ताणं खुजाएज्जा अहेणं अजिसमागच्छेज्जा तजपच्छा सीहं२ तुरियं २ खिप्पामेव वीई

जाणवो । तमुकाएणभंतेकेरिसएवसेणं । तमस्काय हेभगवन् । केहवे वर्णे कह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा काले कालोभासे । हेगोतम । कृष्ण वर्ण काली

दीप्तिकान्ति । गभीरलोमहरिसजणणे । ऊंडो रोमकम्पवानो हेतु देखीने रोमकम्प हर्षउपजावे । भीमेउत्तासणए । भयङ्कर उत्कम्पनोहेतु निगम कहे

छे—परमकिण्हवणेणं । उत्कृष्टवर्णे करी कालोकह्यो । देवेविणअत्थेगइए । एतलामाटेज देव पणि गाढं वाक्यालङ्कारे, केतलाएक । जेणतप्पढमयाए । जे

तमस्काय पहिलाज । पासित्ताणखुभाएज्जा । देखीन क्षोभपामे । अहेणअभिसमागच्छेज्जा । हिवे एह तमस्काय प्रवेशकरीने । तओपच्छासीहं २ तुरि

यंखिप्पामेववीईवएज्जा । तिवारपछो भयेंथको कायानोगति अतिवेगेंकरी मननेवेगेंकरी उतावलो होज जाय । तमुकायस्सणभंतेकइनामधेज्जा पसत्ता ।

तमस्कायना हेभगवन् । केतला नामधय कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तेरसनामधेज्जा पसत्ता तजहा । हेगोतम । तेर नामधेय कह्या ते कहेछे—त

॥ टीका ॥

मेइवेत्यादि ॥ तम अन्धकाररूपत्वात्, इति एतत् वा विकल्पार्थः, तमस्काय इतिवा; अन्धकारराशिरूपत्वात्, अन्धकारमितिवा, तमोरूपत्वात्, महान्धकारमितिवा; महातमोरूपत्वात्, लोकान्धकारमितिवा, लोकमध्ये तथाविधस्या न्यस्यान्धकारस्या भावात्' एव लोकतमिस्रमिति वा, देवान्धकारमितिवा, देवानामपि तत्रो द्योताभावे नान्धकारात्मभावात्, एव देवतमिस्रमितिवा, देवारण्यमितिवा, बलवद्देवभया न्नश्यता देवाना तथाविधारण्यमिव शरणभूतत्वात्, देवव्यूहइतिवा, देवाना दुर्भेदत्वात् व्यूहइव चक्रादिव्यूहइव देवव्यूह ॥ देवपरिघइतिवा ॥ देवाना भयोत्पादकत्वेन गमनविघातहेतुत्वात्, देवप्रतिक्षोभइतिवा; तत्क्षोभहेतुत्वात्, अरुणोदकइतिवा, समुद्र, अरुणोदकसमुद्र जलविकारत्वा

॥ मूल ॥

वएज्जा । तमुकायस्सणं भंते ! कइनामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेरसनामधेज्जा पण्णत्ता तजहा—तमेइवा तमुकाएइवा अंधकारेइवा महंधकारेइवा लोगंधकारेइवा लोगतमिसेइवा देवंधकारेइवा देवतमिसेइवा देवरण्णेइवा देववूहेइवा देवफलिहेइवा देवपडिक्खोभेइवा अरुणोदएइवा समुद्दे । तमुकाएणं भंते ! किं पुढ

॥ भाषा ॥

मेइवा । अन्धकाररूपपणें करी तम एहवो नाम १ । तमुकाइएइवा । अन्धकार राशिमाटे तमस्काय २ । अंधकारेइवा । तमस्कायरूपमाटे अन्धकार ३ । महाअंधकारेइवा । महातमस्कायरूपथकी महान्धकारनाम ४ । लोगंधकारेइवा । तथाविध बीजा अन्धकारना अभावथकी लोकान्धकार ५ । लोगतमसेइवा । लोकने विषे तमरूप ६ । देवंधकारेइवा । देवने पणि तिहां उद्योतने अभावेंकरी देवान्धकार ७ । देवतमिसेइवा । देवने तमिस्ररूपमाटे देवतमिस्र ८ । देवारण्णेइवा । बलवन्तदेवना भयथकी नासतादेवने अरण्यनीपरे शरणभूतपणाथकी देव अरण्य ९ । देवबूहेइवा । देवने भेदता दुहेलो चक्रादि व्यूहनीपरे । देवफलिहेइवा । देवने फलसाप्राय गमन विघातहेतुथा ११ । देवपलिक्खोभेइवा । देवने क्षोभनाहेतुथकी देवपलिक्षोभ १२ । अरुणोदयसमुद्देइवा । अरुणोदय समुद्र जलथकी नीकलो तेहभणी । तमुकाएणभंतेकिंपुढवीपरिणामे । तमस्काय हेभगवन् । स्यू पृथिवी परिणामछे । आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे । अथवा अप परिणामछे अथवा जीवपरिणामछे अथवा पुद्गलपरिणामछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा गोपुढवी

ष्टमित्यादि, पूर्वं पृथिव्यादेस्तमस्कायशब्दवाच्यता पृष्टा, अथ पृथिव्यप्कायपर्यायता पृथिव्यप्कायौ जीवपुद्गलरूपा विति तत्पर्यायतां प्रश्नयन्नाह ॥ तमु

पुढविपरिणामे आउपरिणामे जीवपरिणामे पोग्गलपरिणामे ? गोयमा ! नोपुढविपरिणामे आउपरिणामेवि जीवपरिणामेवि पोग्गलपरिणामेवि। तमुकाएणं भंते! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो णोचेवणं बादरपुढविकाइयत्ताए बादरअगणिकाइयत्ताए । कइणं भंते ! कण्हराईओ पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पन्नत्ताओ कहिणं भंते! एया अट्ठ कण्हराईओ पन्नत्ताओ ? गोयमा! उप्पिं सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं हिट्ठिं बंभलोए कप्पे

परिणामे। हेगौतम। पृथिवी परिणामनही। आउपरिणामेवि। अप् परिणाम पणिछै। जीवपरिणामेवि। जीव परिणाम पणिछै। पोग्गल परिणा मेवि। पुद्गलपरिणाम पणिछै। तमुकाएणभंते सव्वपाणा। तमस्कायने विषे हेभगवन्। सर्वप्राणी। भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए। भूत जीव सत्व पृथिवीकाय पणे। जावतसकाइयत्ताएउववन्नपुव्वा। इम यावत् त्रसकाय पणे ऊपना पूर्वे अनेकवेला ऊपना इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमाअसइं हागौतम। एकवारनही एतले वारवार। अदुवा अणंतखुत्तो। अथवा अनन्तीवार ऊपना। णोचेवणबादरपुढविकाइयत्ताए बादरअगणिकाइयत्ताए। नही निश्चे बादर पृथिवीकाय पणे बादर अग्निकायपणे ऊपजेनही ए बे तिहां उपजेनही अने बादर वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकायपणे तिहां ऊप जे अपकायनेविषे तेहनो उत्पत्तिनासंभवथको बीजा नऊपजे तेहनो स्थानकनही तेमाटे तमस्काय सरीखो वर्ण तेहभणी कृष्णराजी कहेछै—कइणंभं तेकण्हराईओ पन्नत्ता। केतली हेभगवन्। कृष्णराजी कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अट्ठकण्हराईओपन्नत्ता। हेगौतम। आठ कृष्णराजीवर्ण रेखा कही। कहिणंभंतेएताओ अट्ठकण्हराईओ पन्नत्ता। किहां हेभगवन्। आठ कृष्णराजी कही। गोयमा उप्पिसणंकुमारमाहिंदाणंकप्पाणं। हेगौतम। ऊपर सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकने। हेट्ठिंबंभलोएकप्पे रिट्ठेविमाणपत्थडे। हेठें नीचे ब्रह्म देवलोकना रिष्टविमान पाथडानेविषे। एत्थणंअक्खाडगसमचउर

रिट्ठे विमाणे पत्थडे एत्थणं अक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठियाओ अट्ठराईओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पुरच्छिमेणंदो पच्चच्छिमेणं दो दाहिणेणं दो उत्तरेणं दो पुरच्छिमअब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइंपुट्ठा दाहिणब्भंतरा कण्हराई पच्चच्छिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराई उत्तरबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा उत्तरब्भंतरा कण्हराई पुरच्छिमबाहिरं कण्हराइं पुट्ठा दोपुरच्छिमपच्चच्छिमाओ बाहिराओ कण्हराईओ छलंसाओ दोउत्तरदाहिणबाहिराओ कण्हराईओ तंसाओ दोपुरच्छिमपच्चच्छिमाओ अब्भंतराओ कण्हराईओ चउरंसाओ दो

ससंठाणसंठियाओ । इहां नाटिकना आखाडा आसनविशेष तेहने आकारे समचतुरस्र संस्थाने एतले सर्व खूणसरीखो एहवी । अट्ठकण्हराईओ पन्नत्ताओ तंजहा । आठ कृष्णराजी कही ते कहेछे—पुरच्छिमेणंदो । पूर्वे दोय । पच्चच्छिमेणंदो । तथा पश्चिमे दोय । दाहिणेणंदो । दक्षिणे दोय । उत्तरेणंदो । तथा उत्तरे दोय । पुरच्छिमअब्भिंतराकण्हराई । पूर्वनी माहिली कृष्णराजी । दाहिणबाहिरिकण्हरातिपुट्ठा । दक्षिणनी बाहिरिली कृष्णराजीने फरसी । दाहिणमब्भिंतराकण्हराई पच्चच्छिमबाहिरिकण्हराईपुट्ठा । दक्षिणनी माहिली कृष्णराजी पश्चिमनी बाहिरिली कृष्णराजी संघाते फरसी । पच्चच्छिमअब्भिंतराकण्हराई उत्तरबाहिरिकण्हराईपुट्ठा । पश्चिमनी माहिली कृष्णराजी उत्तरनी बाहिरिली कृष्णराजी संघाते फरसी । उत्तरमब्भिंतराकण्हराई । उत्तरनी माहिली कृष्णराजी । पुरच्छिमबाहिरिकण्हराई पुट्ठा । पूर्वनी बाहिरिली कृष्णराजी जलसा कहिये छखूणी । दोउत्तरदाहिणबाहिराओकण्हराईओ तंसाओ । दोय उत्तरनी दक्षिणनी बाहिरली कृष्णराजी तंसाओ कहिये तिखूणीछे । दोपुरच्छिमपच्चच्छिमाओ । दोयपूर्वनी तथा पश्चिमदिशिनी । अब्भिंतराओकण्हराईओचउरंसाओ । माहिली कृष्णराजी चउखूणीछे । दोउत्तरदाहिणाओ अब्भिंतराओकण्हराईओ चउरंसाओ । दोय उत्तरदिशिनी तथा दक्षिणदिशिनी माहिली कृष्णराजी चउखूणीछे वली तेहोज गाथायेकरी कहेछे—पुव्वावरछलंसा तंसापुणदाहिणुत्तरबज्झा । अब्भिंतरचउरंसा सव्वाविय कण्हराईओ ॥ १ ॥ कण्हराई णंभंते केवइयंआयामेणं । कृष्णराजी हेभगवन् । केतले आयामे करीछे । केवइयंविक्ख

उत्तरदाहिणाउ अब्भंतराउ कण्हराईउ चउरंसाउ—पुब्बावराबलंसा तंसापुणदाहिणुत्तरावज्झा । अवसेसाचउरंसा सव्वाविय कण्हराईउ ॥ १ ॥ कण्हराईउणं भंते ! केवइयं आयामेणं केवइय विक्खंभेणं केवइय परिक्खेवेणं पन्नत्ताउ ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामेणं सखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पन्नत्ताउ कण्हराईउणं भंते ! केमहालियाउ पन्नत्ताउ ? गोयमा ! अयणं जम्बुद्दीवे जाव अठमास वीईवएज्जा अत्थेगइए कण्हराईं वीईवएज्जा अत्थेगइए कण्हराईंणोवीईवएज्जा ए महालियाउ गोयमा ! कण्हराईउ पन्नत्ताउ । अत्थिणं भंते ! कण्हराईसुगेहाइवा गेहवणाइवा णोइणठेसमठे

मेण । केतले विष्कम्भेछे । केवइयपरिक्खेवेण पन्नत्ते । केतले परिधियेछे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं । हेगौतम । असंख्याता योजनना सहस्र । आयामेण । आयामेकरी । सखेज्जाइं जोअणसहस्साइं विक्खंभेण । संख्यातायोजनना सहस्र विष्कम्भे विस्तारेछे । असंखेज्जाइं जोअणसहस्साइं परिक्खेवेण पन्नत्ताओ । असंख्याता योजनना सहस्र परिधेकरी असंख्यातायोजन सहस्र आयाम माटे । कण्हराईओणभंते केमहालियाओ पन्नत्ताओ । कृष्णराजीओ हेभगवन् । केवडी एकमोटी कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अयणंजंबुद्दीवे२ अठमासवीईवएज्जा । हेगौतम । एह जम्बूद्वीपना मांहीप तीन चिपटी मांहि २१ बार परिधे फिरे एहवी गते आठमासलगे चल्यो जाइ तो । अत्थेगइएकण्हराईं वीईवएज्जा । केतली एक कृष्णराजीनो पारपामे । अत्थेगइएकण्हराईंणोवीईवएज्जा । केतली एक कृष्णराजी उल्लंघाय नही पार नपामे । ए महालियाओण गोयमा कण्हराईंओ पन्नत्ताओ । एहवी मोटी हेगौतम । कृष्णराजी कही । अत्थिणंभंतेकण्हराईंसु । छे हेभगवन् । कृष्णराजीने विषे । गेहाइवा गेहवणाइवा । घरने आकारे घर एहने आकारे हाट इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हे गौतम । एअर्थ समर्थनही युक्तनही । अत्थिणंभंतेकण्हराईंसु । छे हेभगवन् । कृष्णराजीनेविषे । गामाइवा जावसंनिवासेइवा । ग्राम प्रमुख यावत् सरायनेविषे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनही युक्तनही । अ

कायणामित्यादि ॥ वादरवायुवनस्पतय' त्रसाश्च तत्रो त्पद्यन्ते, ऽप्काये तदुत्पत्तिसम्भवा नत्वितरे ऽस्वस्थानत्वात्' अतउक्त ॥ नोचेवणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु गामाइवा जाव सन्निवेसाइवा णोइणठेसमठे। अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु उराला बलाहया ससे ३ हंता अत्थि । तं भंते ! किंदेवो३ ? गोयमा ! देवोपकरेइनो असुरो नोनाग । अत्थिणं भंते ! कण्हराईसु बादरे थणियसद्दे २ जहा उराला तहा । अत्थिण भंते ! कण्हराईसु वायरे आउकाए वायरे अगणिकाए वायरे वणप्फइकाए ? णोइणठेसमठे णणत्थविग्गहगइसमावन्नएणं । अत्थिणं भंते ! चदिमसूरिम ? णोइणठेसमठे अत्थिणं कण्हराईसु चदाभाइवा ? णोइणठेसमठे। कण्हराईणं भंते ! केरिसियाउ

॥ भाषा ॥

त्थिणभते कण्हराईओ । हे हेभगवन् । कृष्णराजीने विषे । उरालावलाहयाससे ३ । उदार मेघ वादला पहलनेविषे स्नेह ऊपजे इत्यादि ७ कहवा । हं ताअत्थि । हा गौतमछे । तभतेकिंदेवो पकरेइ ३ । तेहप्रतें हेभगवन् । स्यू देवकरे असुरकरे नागकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देवोपकरेइ । हेगौतम देवकरे । णोअसुरोपकरेइ णोणागोपकरेइ । असुर नकरे नाग नकरे असुरकुमारादिकने तिहां गमनना असमवपणो । अत्थिणभते कण्हराईसु । हे हेभगवन् कृष्णराजीनेविषे । वादरेथणियसद्दे जहाउरालातहा । बादर स्तनितशब्द जिम मोटा वादर वादला कह्या तिम कहवा । अत्थिणभतेकण्ह राईसु । हे हेभगवन् । कृष्णराजीने विषे । वादरे आउकाए । वादर अपकाय । वादरे अगणिकाए वादरे वणस्सइकाए। वादर अग्निकाय वादर वनस्पतीकाय । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी । णणत्थविग्गहगइसमावण्णएण । निषेधकह्यो ते अन्यत्र आपवो पणि विग्रहगति समापन्न तिहांजाय । अत्थिणभतेचदिम सूरिम ४ । हे हेभगवन् । तमस्कायनेविषे चन्द्र सूर्यादिक इतिप्रश्न । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी । अत्थिणभतेकण्हराईसु चदाभाइवा २ । हे हेभगवन् । कृष्णराजो चन्द्रकान्ति इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम एअर्थ समर्थनथी युक्तनथी । कण्हराईणभंते केरिसियाओवण्णेण पण्णत्ताओ । कृष्णराजो हेभगवन् । केहवे वर्णेकही इतिप्रश्न

॥ टीका ॥

तमस्कायसादृश्यात्, कृष्णराजिप्रकरणं ॥ कराहराइउत्ति ॥ कृष्णवर्णपुद्गलरेखा ॥ हव्वंति । समं किलेति वृत्तिकारः प्राह ॥ अक्खाडगेत्यादि ॥ इहा खाटकः प्रेक्षास्थाने आसनविशेषलक्षण स्तत्संस्थिता ॥ नोअसुरोइत्यादि ॥ असुरनागकुमाराणा तत्र गमनासम्भवादिति ॥ कराहराइवत्ति ॥ पूर्ववत् मेघराजीतिवा; कालमेघरेखातुल्यत्वात् मेघेतिवा; तमिस्रतया षष्ठनरकपृथ्वीतुल्यत्वात्, माघवईतिवा ; तमिस्रतयैवसप्तमनरकपृथिवीतुल्यत्वात् ॥ वायफलिहेइवत्ति ॥ वातोत्र वात्या तद्व द्या तमिस्रत्वात्परिघश्च दुर्लंघ्यत्वात् सा वातपरिघः ॥ वायपरिक्खोभेइवत्ति ॥ वातो त्रापि वात्या तद्व द्या तमिस्रत्वा त्परिक्षोभहेतुत्वा त्सा वातपरिक्षोभइति ॥ देवफलिहेइवत्ति ॥ देवानापरिघइवार्गलेवदुर्लंघ्यत्वाद्देवपरिघइति

॥ मूल ॥

वसेणं पसन्नाउ ? गोयमा ! कालाउ जाव खिप्पामेव वीईवएज्जा कराहराईण भंते ! कइनामधेज्जा प० ? गोयमा ! अठ नामधेज्जा पसत्ता तजहा—कराहराईइवा मेहराईइवा मघाइवा माघवईइवा वायफलिहाइवा वायपलिक्खोभाइवा देवफलिहाइवा देवफलिक्खोभाइवा। कराहराईउणं भंते ! किं पुढविपरिणामाउ

॥ भाषा ॥

उत्तर । गोयमा कालाओ जावखिप्पामेववीईवएज्जा । हेगौतम । काल पुद्गलनीरेखा यावत् उतावली लवे एतला लगे कहवो । कराहराईणभते कइनाम धेज्जा पसत्ता । कृष्णराजीना हेभगवन् । केतलानामधेय कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अठनामधेज्जा पसत्ता तजहा । हेगौतम । आठ नामधेय कह्या ते कहेछे—कराहराईइवा मेहराईइवा । कालापुद्गलनी रेखा तेमाटे कृष्णराजी कालामेघनी रेखा तुल्य तेमाटे मेघराजी २ । मघाइवा । छठा नरक तुल्य अन्धकार तेमाटे मघा ३ । माघवईइवा । सातमानरक तुल्य अन्धकार तेमाटे माघवती ४ वातफलिहाइवा । वातना फलसा समान ५ । वातपलिक्खोभाइवा । वावरो पणि जातो चोभपामे ६ । देवफलिहाइवा । देवने जातफलिह समान ७ । देवपलिक्खोभाइवा । देवने पणि देखो चोभपामे । कराहराई ओणभते किंपुढवीपरिणामाओ । कृष्णराजीओ णं वाक्यालकारे, हे भगवन् । स्यू पृथिवी परिणामेछे । आउपरिणामाओ जीवपरिणामाओ पोग्गलपरिणामाओ । अथवा अप् परिणामेछे जीवपरिणामेछे पुद्गल परिणामेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा

॥ टीका ॥

देवपलिक्खोभेइवत्ति ॥ देवानां परिक्षोभहेतुत्वादिति ॥ अठसुउवासतरेसुत्ति ॥ द्वयो रन्तर मवकाशान्तर तत्रा भ्यन्तरोत्तरपूर्वयो रेक पूर्वयो र्द्वितीयं, अभ्यन्तरपूर्वदक्षिणयो स्तृतीय दक्षिणयो श्चतुर्थं अभ्यन्तरदक्षिणपश्चिमयो· पचम पश्चिमयो. षष्ठ अभ्यन्तरपश्चिमोत्तरयो सप्तम उत्तरयोरष्टम ॥ लोगतियविमाणत्ति ॥ लोकस्य ब्रह्मलोकस्या न्तेसमीपे भवानि लोकान्तिकानि तानिच तानि विमानानिचेति समास लोकान्तिकावा, देवा

॥ मूल ॥

आउ जीव पोग्गलपरिणामाउ ? गोयमा ! पुढविपरिणामाउवि नोआउपरिणामाउ जीवपरिणामाउवि पोग्गलपरिणामाउवि । कण्हराईसुण भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतक्खुत्तो नोचेवणं बायरआउकाइयत्ताए बादरअगणिकाइयत्ताएवा बादरवणप्फइकाइयत्ताएवा एयासिणं अठण्ह कण्हराईण अठसु उवासतरेसु अठलोगंतियविमाणा पण्णत्ता , तजहा—अच्ची

॥ भाषा ॥

पुढवीपरिणामाओ । हेगौतम । पृथिवी परिणामछे तेरूप पणायको । णोआउपरिणामाओ । अप्परिणामे नही भावना असम्भव माटे । जीवपरिणामाओवि । जीव परिणाम पणिछे । पोग्गलपरिणामाओवि । पुद्गल परिणाम पणिछे । कण्हराईसुणभंते सव्वपाणा भूया जीवा सत्ता । कृष्णराजीनेविषे हेभगवन् । सर्वप्राणी भूत जीव सत्व । उववण्णपुव्वा । उपना अतीतकाले इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा असति । हांगौतम । अनेकवार उपना । अदुवाअणंतक्खुत्तो । अथवा अनन्तीवार उपना । णोचेवण बादर आउकाइयत्ताएवा नही निश्चे बादर अप्कायपणे उपना । बादरअगणिकाइयत्ताएवा । बादर तेजस्कायपणे पणि उपनानही ए तेजस्कायपणे पणि स्थानकनही । बादरवणस्सइकाइयत्ताएवा । बादर वनस्पतीकायपणे पणि उपना नही ए वनस्पतीनो पणि स्थानक नही । एयासिणअठकण्हराईण । एहनेविषे आठ कृष्णराजीनेविषे । अठसुउवासंतरेसु अठलोगतियविमाणा पण्णत्ता तजहा । आठ आकाशनो अन्तरने विषे आठ लोकान्तिकदेवना विमानकह्या ए देव समारनो अन्तकीधो तेमाटे लोकान्तिक कहिये ते कहेछे— अच्चि अच्चिमाली । अर्चि १ अर्चिमाली २ । वइरोयणे पभकरे । वैरोचन ३ प्रभङ्कर ४ । चदाभे सूराभे । चन्द्राभ ५ सूराभ ६ । सुक्काभे सुपइठाभे । शुक्रा

॥ टीका ॥

स्तेषा विमानानीति समास इहवा वकाशांतरवर्त्तिं ग्रष्टासु अर्चि प्रभृतिषु विमानेषु वाच्येषु यत् क्रमर।जीमध्यमभागवर्त्तिरिष्टं विमानं नवमं सु क्त तद्विमानप्रस्तावा दवसेयं ॥ सारस्सयमाइच्चाणमित्यादि ॥ इह सारस्वतादित्ययोः समुदितयो- सप्तदेवा- सप्तव देवशतानि परिवार इत्यक्षरा नुसारेगा वसीयते, एव सुत्तरत्रापि ॥ अयसेसाणति ॥ अव्यावाधाग्नेयरिष्टानां ॥ एव नेयव्वंति ॥ पूर्वोक्तप्रश्नोत्तराभिलापेन लोकान्तिकविमानवक्त

॥ मूल ॥

अच्चिमाली वइरोयणे पभंकरे चदाभे सूराभे सुक्काभे सुपइठाभे मज्झेरिठाभे । कहिणं भंते ! अच्चिविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! उत्तरपुरच्छिमेण । कहिणं भंते ! अच्चिमालीविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुरच्छिमेणं एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव कहिण भंते ! रिठविमाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुमज्झदेसभागे एएसुण अठसु लोगंतियविमाणेसु अठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति तंजहा—सारस्सयमाइच्चा वण्हीवरुणायगद्दतोया य । तुसियाअव्वाबाहा अग्गिच्चाचेवरिठाय ॥ १ ॥ कहिण भंते ! सारस्सया देवापरिवसंति ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

भ ७ सुप्रतिष्ठाभ ८ । मज्झेरिष्ठाभे । विचाले रिष्टाभ ९ । कहिणभंतेअच्चिविमाणे पण्णत्ते । किहा ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! अर्चिनामा विमान कह्या दतिप्रश्न उत्तर । गोयमा उत्तरपुरच्छिमेण । हेगौतम । ईशानकूणिनेविषै । कहिणभंतेअच्चिमलीविमाणे पण्णत्ते । किहा हेभगवन् ! अर्चिमाली नाम विमानकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुरच्छिमेण । हेगौतम । पूर्वदिशिके । एवपरिवाडीएणेयव्व । इम अनुक्रम परिपाटीये विमान जाणवो । जावक हिणभंतेरिठविमाणे पण्णत्ते । यावत् किहा हेभगवन् ! रिष्टनामा विमानकह्यो । गोयमा बहुमज्झदेसभागे । हेगौतम । बहुमध्यदेश भागनेविषैछै । एएसु णअठसुलोगतियविमाणेसु । एहने आठ लोकान्तिकविमाननेविषै । अठविहालोगतियादेवापरिवसंति । आठ प्रकारना लोकान्तिकदेव वसछै—त सार स्सय माइच्चा वह्नी वरुणाय गद्दतोयाय । तुसिया अव्वाबाहा अगिच्चा चेवरिठाय ॥ १ ॥ ते कहैछै—सारस्वत १ आदित्य २ वह्नि ३ वरुण ४ गर्दतोय चपु न ५ तुसित ६ अव्याबाध ७ अगिच्च ८ निचे विचाले रिष्टविमानने विषे रिष्टदेव । कहिणभंतेसारस्सयादेवापरिवसंति । किहा हेभगवन् ! सारस्वतनामे

॥ टीका ॥

व्यता जातं नेतव्यं तदेव पूर्वोक्तेन सह दर्शयति ॥ विमाणाणमित्यादि ॥ गाथार्द्धं तत्र विमानप्रतिष्ठानं दर्शितमेव श्राइल्लंतु विमानानां पृथिवी

॥ मूल ॥

अच्चिंमि विमाणेपरिवसति। कहिणं श्राइच्चा देवा परिवसंति? गोयमा! अच्चिमालिंमिविमाणे एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव। कहिणं भंते! रिठादेवापरिवसति? गोयमा! रिठंमिविमाणे। सारस्सयमाइच्चाणं भंते! देवाणं कइदेवा कइदेवसया पण्णत्ता? गोयमा! सत्तदेवा सत्तदेवसया परिवारो पण्णत्तो वण्हिवरुणाणं देवाणं चोद्दसदेवा चोद्दसदेवसहस्सा पण्णत्ता। गद्दतोय तुसियाणं देवाणं सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा प० अवसेसाणं नवदेवा नवदेवसया पण्णत्ता, पढमजुगलंमि सत्तउ सयाणिबीयम्मिचोद्दससहस्सा। तइएसत्त

॥ भाषा ॥

देव वसेछे रहेछे—इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अच्चिमिविमाणेपरिवसति। हेगौतम। अर्चिनामा विमाननेविषे वसेछे। कहणभंते आइच्चादेवापरिवसंति। किहां हेभगवन्। आदित्यनामा देवबसेछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अच्चिमालिमिविमाणेएवणेयव्व। हेगौतम। अर्चिमालीनाम विमानने विषे वसेछे एम जाणवो। जहाणुपुव्वीए। यथानु पूर्वी अनुक्रमे कहवो। जावकहिणं भंतेरिट्ठादेवापरिवसति। यावत् किहां हेभगवन्! रिष्टनामदेव वसेछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा रिट्ठमिविमाणे। हेगौतम। रिष्टनामा विमानने विषे। सारस्सयमाइच्चाणभंतेदेवाण कइदेवा कइदेवसया पण्णत्ते। सारस्वत आदित्यने हेभगवन्। देवने केतलादेव स्वामीपणे अने केतलादेवना सेंकडा परिवारपणे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सत्तदेवा सत्तदेवसया पण्णत्ता। हेगौतम सातदेव स्वामीपणे सातसे देव परिवारपणे कह्या। वण्हीवरुणाणदेवाण। एम वन्ही वरुणदेवने। चउद्दसदेवाचउद्दसदेव सहस्सा पण्णत्ता। चउदेदेव अने चउदे सहस्र देवपरिवारे कह्या। गद्दतोयतुसियाण देवाण सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा पण्णत्ता। गर्दतोय अने तुसितदेवने सातदेव साततसहस्र देवपरिवारे कह्या। अवसेसाण णवदेवा णवदेवसया पण्णत्ता। थाकताने नवदेव अने नवसयदेव परिवारे कह्या एहीज गाथायें करीकहेछे—पढमजुगलंमिसत्तउ सयाणिबीयमिचउद्दससहस्सा। तइएसत्तसहस्सा नवचेव सयाणिसेसेसु ॥ १ ॥ पहिले युगलने विषे सातसेदेव बीजा युगलनेविषे चउदेसहस्र देवछे त्री

बाहल्यं तच्च पञ्चविंशति योजनशतानि, उच्चत्वंतु सप्तयोजनशतानि संस्थानं पुनरेषां नानाविध मनावलिकाप्रविष्टत्वा दावलिकाप्रविष्टानिहि वृत्त त्र्यस्रचतुरस्रभेदा त्रिसंस्थानान्येव भवन्तीति ॥ बंभलोएत्यादि ॥ ब्रह्मलोके याविमानाना देवानाच जीवाभिगमोक्ता वक्तव्यता सा तेषु नेतव्या ऽ नुसर्त्तव्या कियद्दूर मित्यतआह ॥ जावेत्यादि ॥ साचेय लेशत —लोयंतियविमाणाणं भंते ! कइवंसाइवंसा, लोहिया हालिद्दा सुक्किला एवंपभा

सहस्सा नवचेवसयाणिसेसेसु ॥ १ ॥ लोगंतियविमाणाणं भंते ! किंपइठिया पन्नत्ता ? गोयमा ! वाउपइ ठिया एवं नेयव्वं विमाणाणं पइठाणं बाहल्लुच्चत्तमेवसंठाणं बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवु देसए जाव ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो नोचेवणं देवत्ताए लोगंतियविमाणेसु लोगंतिया, लोगं

जायुगलनेविषे स[illegible]सहस्र देवछे शेषनेविषे निश्चे नवसें देवछे १। लोगंतियविमाणाणभंतेकिंपइठिया पण्णत्ता। लोकान्तिकनामा विमान हेभगवन्। स्यू प्रतिष्ठित एतल स्यें आधारे रह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमावाउपइठिया एवणेयव्वं। हेगौतम। वायने आधारे रह्याछे इम पूर्वोक्त प्रश्ननो उत्तर आला वकरो लोकान्तिक विमान वक्तव्यता जात जाणवी तेहोज पूर्वोक्त सघाते देखाडेछे—गाथाने अर्द्धे—विमाणाण पइठाण बाहल्लुच्चत्तमेवसंठाण। तिहा विमान प्रतिष्ठानतो देखाड्योहोज बाहुल्य, विमाननी पृथिवी बाहल्य ते पञ्चवीससययोजन उच्चत्व सातसें योजन संस्थान अनेकप्रकारे आवली बद्धविमान नथी तेमाटे। बंभलोयवत्तव्वयाणेयव्वा जहाजीवाभिगमे । ब्रह्मदेवलोके जे विमाननी तथा देवनो जीवाभिगम उपागनेविषे। देवुद्देसए। देवने उद्देशेकहीं जे वक्तव्यता ते तेहनेविषे जाणवी अनुसरवी केतलालगे ते कहेछे—जहा इत्यादि ते इम लोकान्तिकविमानहेभगवन् । केतले वर्णछे हेगौतम। तीने वर्णछे ते कहेछे—रक्त पीत स्वेत इम प्रभाये नित्या लोक गन्ध इष्ट गन्ध, इम इष्ट रस, इष्ट सर्व रत्नमय तेहनेविषे देव समचउरंस संस्थानेछे इत्यादि। जाव हंतागोयमा । यावत् लोकान्तिकविमाननेविषे सर्वप्राणी भूत जीव सत्त्व पृथिवी कायपणे तथा देवपणे पूर्वे ऊपना एतलालगे कहवो हांगौतम। असतिअदुवा अणतखुत्तो णो चेवणदेवत्ताएलोगंतियविमाणेसु। वार २ अथवा अनन्तीवार ऊपना पणि

॥ टीका ॥

ए निम्ना लोया गधेण इठगंधा एवं इठफासा एवं सव्वरयणमया तेसु देवा समचउरंसा अल्लमहुगवन्ना पम्हलेसा लोयंतियविमाणेसुणं भंते । सव्व पाणा ४ पुढविकाइयत्ताए ५ देवत्ताए देवित्ताए उववण्णपुव्वाइते त्यादि लिखितमेव ॥ केवइयति ॥ च्छांदसत्वा त्कियत्या आबाधया अन्तरेण लोकान्त प्रज्ञप्त· ॥ इतिषष्ठशतेपञ्चम ॥ ५ ॥ व्याख्यातो विमानादिवक्तव्यतानुगतः पचमोद्देशको ऽथ षष्ठ स्तथाविधएव व्याख्यायते, तत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ सूत्र [illegible] पृथिव्यो नरकपृथिव्य ईषत्प्राग्भाराया अनधिकरिष्यमाणत्वात्, इह्च पूर्वोक्तमपि यत्पृथिव्याद्युक्त

॥ मूल ॥

तिय देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अठसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, लोगंतियविमाणे हिंतोण भंते ! केवइयं अबाहाए लोगते पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइ जोयणसहस्साइं अबाहाएलोगंते प० सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ५ ॥ कइणं भंते ! पुढवीउ पण्णत्ताउ ? गोयमा ! सत्तपुढवीउ पण्णत्ताउ, तंजहा—रयणप्पभा जाव तमतमा रयणप्पभादीण आवासा भाणियव्वा

॥ भाषा ॥

तहो तिये देवपणे लोकान्तिकविमानने विषे ऊपना । लोगतियदेवाणभंतेकेवइयकालठिई पण्णत्ता । लोकान्तिकदेवनो हेभगवन् । केतलोकाल स्थिति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अठसागरोवमाइठिई पण्णत्ता । हेगोतम । आठ सागरोपमनी स्थितिकही पाउखोकह्यो । लोगतियविमाणेहितोणं भते केवइयअबाहाएलोगते पण्णत्ते । लोकान्तिकविमानथको हेभगवन् । केतलेअन्तरे लोकनो अन्तकह्यो अलोक इत्यर्थं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असखे ज्जाइं जोयणसहस्साइ । हेगोतम । असख्यातायोजनसहस्रने । अबाहाएलोगते पण्णत्ते । अन्तर लोकनो अन्तकह्यो । सेवंभते २ त्ति । तहत्ति हेभ गवन् । तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे । छठसयपचमो उद्देसोसम्मत्तो । ए छठा शतकनो पाचमोउद्देशो अर्थथो कह्यो ६ ॥ ५ ॥ पूर्वे विमानादिकनी वक्तव्यता कही छठो पणि तेहीज कहेछे—कइणभते पुढवीओ पण्णत्ताओ । केतली हेभगवन् । पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तजहा । सात पृथिवी कही ते कहेछे—रयणप्पभा जावतमतमा । रत्नप्रभा आदिदेईने यावत् तमतमा सातमी पृथिवीकही । र

त तदपेक्ष मारणांतिकसमुद्घातवक्तव्यताभिधानार्थमिति, न पुनरुक्तता ॥ तत्थगएचेवत्ति ॥ नरकावासप्राप्तएव ॥ आहारेज्जवा ॥ पुद्गलानादद्यात् ॥ परिणामेज्जवत्ति ॥ तेषामेव खलरसविभागं कुर्यात् ॥ सरीरवाबधेज्जत्ति ॥ तैरेव शरीरं निष्पादयेत् ॥ अत्थेगइएत्ति ॥ य स्तस्मि न्नेव समुद्घाते म्रियते ॥ ततोपडिनियत्तत्ति ॥ ततो नरकावासा त्समुद्घाता द्वा ॥ इहमागच्छइत्ति ॥ स्वशरीरे ॥ केवइयगच्छेज्जत्ति ॥ कियद्दूर गच्छे द्गमन माश्रि

जाव अहे सत्तमाए एव जेजत्तिया आवासा ते भाणियव्वा जाव । कइणं भंते ! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता, तंजहा—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे । जीवेणं भंते ! मारणंतियस मुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अ न्नयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते ! तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा स

यणप्पभादीय आवासाभाणियव्वा । इहां रत्नप्रभा आदिदेईने तेहना नरकावासा कहवा तीस पच वीस ,पनरस दश तीन ए लाख कहवा छट्ठीए पांचे ऊणी एकलाख । जावअहेसत्तमाए । यावत् नीचे सातमीये पच इम जेहने जेतला आवास ते सर्व कहवा पछे भवनपती व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक ग्रे वेयक पर्यन्त भवनविमान कहवा केतलालगे ते कहेछे—जावकइणभतेअणुत्तरविमाणा पन्नत्ता । यावत् केतला हेभगवन् । अनुत्तरविमान कह्या इतिग्र यून उत्तर । गोयमा पंचअणुत्तरविमाणा पन्नत्ता तंजहा । हेगौतम । पच अनुत्तरविमान कह्या ते कहेछे—विजएजावसव्वट्ठसिद्धे । विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ सर्वार्थसिद्ध ५ । जीवेणभतेमारणतियसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता । जीव हेभगवन् । मारणान्तिक समुद्घात पामीने तथा मा रणान्तिक समुद्घातें करी मरीने । जेभविएइमीसेरयणप्पभाएपुढवीए । नरकावासे ऊपजवायोग्य जेजीव आरत्नप्रभानाम पृथिवीयें । तीसाएणिरयावा ससयसहस्सेसु । त्रीसलाख नरकावासाने विषे । अण्णयरंसिणिरयावाससि । अनेराने विषे नरकावासाने विषे । णेरइयत्ताए उववज्जित्तए । नारकीपणे उ पजे । सेणभतेतत्थगएचेव । तेह हेभगवन् । ते नरकावास पाम्ये थकेज तिहा नरकावासे गयोथको । आहारेज्जवा परिणामेज्जवा । आहारपुद्गल ग्रहे ते

रीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरवा बंधेज्जा अत्थेग इए तत्थपडिनियत्तइ तत्त पडिनियत्तित्ता इह मागच्छइ मागच्छइत्ता दोच्चंपि मारणंतियसमुग्घाएण समोहणइ समोहणइत्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि णेरइयत्ताए उववज्जित्तए तत्तपच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा एवं जाव अहे सत्तमा पुढवी। जीवेणं भंते! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए जे भविए चउसठीए असुरकुमारावाससयहस्सेसु अस्र

आहारनो खल रसभावकरे। सरीरवावधेज्जा। तिणें करीन शरीर बांधे नीपजावे इतिप्रश्न उत्तर। अत्येगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा। हेगौतम! केतलाएक जे तेहोज समुद्घात गयाथका मरे ते तिहां नरकावास गयाथका आहारादि ग्रहे ते आहारने। परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा। खल रस भावे परिणमावे तेणेंकरी शरीरबांधे नीपजावे। अत्थेगइए तत्थपडिणियत्तेइ पडिणियत्तित्ता। केतलाएक ते नरकावासायी तथा समुद्घातथकी पाछावल पाछावलीने। इहमागच्छइगच्छइत्ता। इहां आपणेंशरीरे आवे आवीने। दोच्चपिमारणंतियसमुग्घाएण समोहणइ समोहणइत्ता। बोजीवार पणि मारणान्तिक समुद्घातेंकरी मरे मरीने। इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए। आहीज रत्नप्रभानाम पृथिवीयें। तीसाएणिरयावाससयसहस्सेसु। त्रीसलाख नरकावासाने विषे। अण्णयरंसिणिरयावासंसि। अनेरा कोई एक नरकावासनेविषे। णेरइयत्ताए उववज्जित्तए। नारकीपणें ऊपजे। तओपच्छाआहारेज्जवा। तिवारपछी आहारपुद्गल ग्रहे। परिणामेज्जवा सरीरंवावधेज्जा। ते आहार परिणमावे तेणेंकरी शरीर बांधे नीपजावे एवजावअहेसत्तमापुढवी। इम यावत् नीचे सातमी तमतमा पृथिवीलगे कहवो। जीवेणभंतेमारणंतियसमुग्घाएण समोहए। जीव हेभगवन्! मारणांतिक समुद्घातेंकरी मरीने। जेभविए। जे असुरकुमारने विषे ऊ ऊपजवायोग्य जीव ते। चउसठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु। चउसठिलाख असुरकुमारना आवासनेविषे। अण्णयरंसि असुरकुमारावासंसि। अनेरा कोई एक असुरकुमार आवासनेविषे। असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए। असुरकुमार देवपणें ऊपजे तो तिहांगयो

यरंसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव थणियकुमारा जीवेणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएण समोहए २ जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइया वाससयसहस्सेसु अ न्नयरंसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं के वइयं गच्छेज्जाकेवइयं पाउणेज्जा ? गोयमा ! लोयंतं गच्छेज्जा लोयंत पाउणेज्जा सेणं भंते ! तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए तत्थगएचेव आहारेज्जवा परिणामेज्ज वा सरीरंवा बधेज्जा अत्थेगइए तत्त पडिनियत्तइ २ इह मागच्छइ मागच्छइत्ता दोच्चंपि मारणंतियसमुग्घा

आहार पुद्गलग्रहै इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा जहाणेरइयातहाभाणियव्वा । हेगौतम । जिम नारकी कह्या तिम कहवा । जावथणियकुमारा । यावत् स्तनितकुमार लगे दशेइ भवनपतीने । जीवेणंभतेमारणंतियसमुग्घाएण समोहए । जीव हेभगवन् । मारणांतिक समुद्घातेकरी मरीने । जेभविए असंखेज्जेसु पुढवीकाइयावाससयसहस्सेसु । जे जीव पृथिवीकायनेविषे ऊपजवायोग्यछे ते असंख्याता पृथिवीकायिक आवास शतसहस्रनेविषे । अन्नयरंसि पुढवीकाइयावाससि । अनेरा कोइ एक पृथिवीकायने विषे । पुढवीकाइयत्ताए उववज्जित्तए । पृथिवीकायपणे ऊपजे । सेणंभंतेमंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छिमेणं । तेह हेभगवन् । मेरुपर्वतने पूर्वदिशे । केवइयगच्छेज्जा । केतला दूरजाय गमन आश्रयीने । केवइयापाउणेज्जा । किहा प्राप्तहुवे अवस्थान आश्रयीने । गोयमा लोअंतेगच्छेज्जा । हेगौतम । लोकना अन्तलगे जाय । लोअंतंपाउणेज्जा । लोकान्त स्थानक पामीने रहै । सेणंभंतेतत्थगएचेवआहारेज्जवा । तेह हेभगवन् । तिहा गयाथकाज निश्चे आहार पुद्गल ग्रहै । परिणामेज्जवा । आहार परिणमावे । सरीरवाबंधेज्जा । तेणें करी शरीरबांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइएतत्थगएचेव । हेगौतम । केतलाएक तिहा गयाथकाज निश्चे । आहारेज्जवा परिणामेज्जवा । आहार पुद्गलग्रहै आहार खलरसपणें परिणमावे । सरीरवाबधेज्जा । तेणेंकरी शरीरबांधे नीपजावे । अत्थेगइएतत्रोपडिणियत्तइ २ त्ता इहमागच्छइ । केतला एक ते स्थानकथकी पाछा

॥ टीका ॥

त्य ॥ केवइयं पाउणेज्जत्ति ॥ कियद्दूरं प्राप्नुयात्' अवस्थान माश्रित्य ॥ अंगुलस्सअसंखेज्जइभागमेत्तंवेत्यादि ॥ इह द्वितीया सप्तम्यर्थे द्रष्टव्या' अ ङ्गुल इह यावत्करणा दिद दृश्य विहत्थिंवा ; रयणिंवा ; कुच्छिंवा ; धणुंवा ; कोसंवा ; जोयणंवा ; जोयणसयंवा ; जोयणसहस्संवा , जोयणसयसह स्संवा , लोगंतेवत्ति ॥ अत्र गत्वेतिशेष' , तत्र स्यायमर्थः उत्पादस्थानानुसारेणा ङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्रादिके क्षेत्रे समुद्घाततो गत्वा कथमित्याह ॥ ए गपएसियंसेढिंमोत्तूणत्ति ॥ यद्य प्यसङ्ख्येयप्रदेशावगाहस्वभावो जीव स्तथापि नैकप्रदेशश्रेणीवर्त्त्यसङ्ख्यप्रदेशावगाहनेन गच्छति तथा स्वभावत्वा दित्य

॥ मूल ॥

एणं समोहणइ मंदरस्स पव्वयस्सपुरच्छिमेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तंवा संखेज्जइभागमेत्तंवा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तंवा एवं लिक्खजूयंजवअंगुलजावजोयणकोडिंवा जोयणकोडाकोडिंवा संखेज्जेसुवा असंखे ज्जेसुवा जोयणसहस्सेसु लोगंतेवा एगपदेसियं सेढिंमोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अन्नय

॥ भाषा ॥

वलै पाछावलीने इहा आपणे शरीरे आवे आवीने। टीकापिमारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणिता । बीजीवार वली मारणांतिकसमुद्घातें करी मरै मरीने। मंदरस्सपव्वयस्सपुरच्छिमेणं। मेरुनामा पर्वतने पूर्वदिशे। अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तंवा । अंगुलना असंख्यातमा भाग मात्रनेविषे अथवा। संखेज्जइभागमेत्तंवा। संख्याता भागमात्रनेविषे अथवा । वालग्गंवा वालग्गपुहत्तंवा। वालाग्रनेविषे अथवा वालाग्र पृथक्त्वनेविषे। एव लिक्ख जूअ जव अंगुल जाव जोअणकोडिंवा जोअणकोडाकोडिंवा संखेज्जेसुवा। इम लीख जूका जव अंगुल यावत्शब्दथकी, विहत्थिरयणिवा कुच्छिवा धणुवा कोसवा जोयणंवा जोअणसयंवा जोअणसहस्संवा जोअणसयसहस्संवा, योजननी कोडीनेविषे योजननी कोडाकोडीनेविषे संख्यातायोजन सहस्रनेविषे। असं खेज्जेसुवा जोअणसहस्सेसुलोगंतेवा। असंख्याता योजनसहस्रनेविषे अथवा लोकांते जाइने तिवारे ए अर्थ उत्पादस्थान अनुसारे अंगुल असंख्येयभाग मात्रादिक क्षेत्रनेविषे समुद्घातथी जाइने किम ते कहेछे—यद्यपि असंख्यातप्रदेश अवगाहन स्वभाव जीवछे तथापि। एगपएसियंसेढिंमोत्तूणअसं खेज्जेसु पुढवीकाइयावाससहस्सेसु। एकप्रदेश प्रदेशी श्रेणीवर्त्ती असंख्यातप्रदेश अवगाहनायें करीने जाय तथा स्वभावपणाथकी ते एतलामाटे ते एकप्रदे

रंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता तत्तपच्छा आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बं
धेज्जा जहापुरच्छिमेण मंदरस्स पव्वयस्स आलावउ भणिउ एवंदाहिणेण पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं उड्ढे अहे जहा
पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावया भाणियव्वा । जीवेण भंते ! मारणंतियसमु
ग्घाएण समोहए २ जेभविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अन्नयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदिय
यत्ताए उववज्जित्तए सेण भंते ! तत्थगएचेव जहा नेरइया एव जाव अणुत्तरोववाइया जीवेणं भंते ! मा

अ अेणी मूकीने इमकह्यु असख्याता पृथिवीकायिक आवास सहस्रनेविषे । अन्नयरंसिपुढविकाइयावाससि । अनेरा कोई पृथिवीकाइया स्थानकने वि
षे । पुढवीकाइयत्ताएउववज्जेज्जा । पृथिवीकायिकपणे ऊपजे । तत्तोपच्छाआहारेज्जवा परिणामेज्जवा । तिवारपछी आहारपुद्गलप्रतें आहारप्रतें परि
णमावे । सरीरंवाबंधेज्जा । तिणकरी शरीरबांधे । जहापुरच्छिमेण । जिम पूर्वदिशि । मंदरस्सपव्वयस्स । मेरु पर्वतने । आलावओभणिओ । आलावा
कह्यो । एवदाहिणेण पच्चच्छिमेण उत्तरेण उड्ढे अहे । इम दक्षिणदिशि पणि पच्छिमदिशि पणि उत्तरदिशि पणि ऊर्द्धदिशि अधोदिशि सरीखा आलावा
कहवा । जहापुढविकाइया । जिम पृथिवीकाइकना छ आलावा कह्या । तहाएगिंदियाणसव्वेसिएक्केक्कस्स छ आलावया भाणियव्वा । तिम एकेंद्री सव
नेविषे एकेकना छ छ आलावा कहवा इम पाचायेना मिलीने त्रीस आलावा हुवे ते जाणवा । जीवेणभंतेमारणंतियसमुग्घाएण समोहए २ त्ता । जी
व हेभगवन् । मारणान्तिक समुद्घाते मरे मरीने । जे भविए असंखेज्जेसुबेइंदियावाससयसहस्सेसु । जे जीव बेइन्द्रीनेविषे ऊपजवायोग्यछे ते जीव असंख्या
ता बेइन्द्रियना आवास शतसहस्र लाखने विषे । अन्नयरंसि बेइंदियावाससि । अनेराकोई एक बेइन्द्रियना स्थानकने विषे । बेइंदियत्ताए उववज्जित्त
ए । बेइन्द्रीपणें ऊपजे । सेणतत्थगएचेव जहाणेरइया । तेह तिहां गयोथको आहारेज्जवा इत्यादि, जिम नारकी कह्या तिम कहवा । एवजावअणुत्त
रोववाइया । इम यावत् अनुत्तरविमाने ऊपनादेव तेतलालगे कहवा तेहीज कहेछे—जीवेणभंतेमारणंतियसमुग्घाएणं समोहणए २ त्ता । जीव हेभग

॥ टीका ॥

तस्ता मुक्तो त्युक्तम् ॥ इतिषष्ठशतेषष्ठः ॥ ६ ॥ षष्ठोद्देशके जीववक्तव्यतो क्ता सप्तमेतु जीवविशेषयोनिवक्तव्यतादि र्यं उच्यते, तत्र चेद सूत्र ॥ अहन्नतेत्यादि ॥ सालीणति ॥ कलमादीनां ॥ वीहीणति ॥ सामान्यत ॥ जवजवाणति ॥ यवविशेषाणा ॥ एएसिणमिति ॥ उक्तत्वेन प्रत्यक्षाणा ॥ कोठाउत्ताणति ॥ कोष्ठेकुशूले आगुप्तानि तत्प्रक्षेपणेन सरक्षितानि कोष्ठागुप्तानि तेषा ॥ पल्लाउत्ताणति ॥ इह पल्यो वश

॥ मूल ॥

रणंतियसमुग्घाएण समोहए २ जेन्नविए पंच अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु अन्नयरंसि अणुत्तर विमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते! तत्थगएचेव जाव आहारेज्जवा परिणामेज्जवा सरीरंवा बंधेज्जा सेवं भंते भंतेत्ति पुढविउद्देसम्र सम्मत्तो ॥ छठसए छठोउद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ६ ॥ अहन्नते ! सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाण जवजवाणं एएसिणं धन्नाणं कोठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मचा

॥ भाषा ॥

वन् । मारणान्तिक समुद्घातकरो मरे मरोने । जेभविएपंचअणुत्तरेसु महइमहालएसुमहाविमाणेसु । जे अनुत्तरविमान उपजवायोग्य जीव तेपंच अनु त्तरविमान अतिमहास्थानक महाविमाननेविषे । अन्नयरंसि अणुत्तरविमाणंसि । अनेरा अनुत्तरविमाननेविषे। अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए। अनुत्तरोपपातिक देवपणे उपजे । सेणंभंतेतत्थगएचेव जावआहारेज्जवा । तेह हेभगवन् । तिहां गयाथकाज यावत् आहारपुद्गल ग्रहे । परिणामेज्जवा। आहार परिणमावे । सरीरंवाबंधेज्जा । सरीर तेणेंकरी बांधे । सेवंभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानही । पुढवीउद्देसो सम्मत्तो । ए पृथिवीकायनो उद्देशो पूरोथयो । छठसयस्सछठो । ए छठाशतकनो छठो उद्देशो पूरोथयो ६ ॥ ६ ॥ छठे उद्देशे जीव नो वक्तव्यता कही इहा जोवविशेष योनि वक्तव्यता कहेछे—अहण्णभंतेसालीण वीहीण गोधूमाण जवाण जवजवाण । अथ ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् कलमधान्य आदिदेईने सामान्यधान्यने गोधूमने जवने जवधान्यविशेषने । एएसिंणंधण्णाण कोठाउत्ताण पल्लाउत्ताण मचाउत्ताण । एहने धान्यने कोठ। नेविषे गुप्तकरोराखे तेहने वंशमय पालोधान्य आधारविशेष तेहनेविषे धान्य भाजनविशेष देशभाषायें अकुठ । मालाउत्ताण उल्लित्ताण । ए पणि धा

दिमयो धान्याधारविशेष मञ्चाउत्ताणमालाउत्ताणामित्यत्र मञ्चमालयो र्भेद ॥ अकुड्योहोइमंचो मालोयघरोवरिंहोइत्ति ॥ उलित्ताणाति ॥ द्वार देशेपिधानेन सह गोमयादिना ऽवलिप्ताना ॥ लित्ताणाति सर्वतो गोमयादिनैव लिप्ताना ॥ पिहियाणाति ॥ स्थगिताना तथाविधाच्छादनेन ॥ मुद्दियाणाति ॥ मृत्तिकादिमुद्रावता ॥ लञ्छियाणाति ॥ रेखादिकृतलाञ्छनाना ॥ जोणित्ति ॥ अङ्कुरोत्पत्तिहेतु ॥ तेणपरंति ॥ ततः पर ॥ पमिलायइत्ति ॥ प्रम्लायति वर्णादिना हीयते ॥ पविद्धसइत्ति ॥ क्षीयते एवञ्च बीज मबीज भवति उप्तमपि नाङ्कुर मुत्पादयति, किमुक्त भवति ॥ तेण परजोणीवोच्छेएपण्णत्तेत्ति ॥ कलत्ति ॥ कलाया वृत्तचणका इत्यन्ये ॥ मसूरत्ति ॥ भिलङ्गा, चणकिकाइत्यन्ये ॥ निप्फावत्ति ॥ वल्ला ॥ कुलत्थत्ति ॥

उत्ताणं मालाउत्ताणं उलित्ताण लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लञ्छियाणं केवइयं कालं जोणी संचिठइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोस तिण्णिसवच्छराइं तेणपरं जोणी पमिलायइ तेणपरं जोणी विद्धंसइ तेणपर बीए अबीए भवइ तेणपरं जोणी वोच्छेदे पन्न त्तेसमणाउसो । अहन्नते ! कलावमसूरतिलमुग्गमास

न्यभाजन विशेष बारणा ढाकीने गोवर सघाते लीप्या । लित्ताण पिहियाण । सर्वलीप्या गोवरसंघाते तथाविध ढाकणेंकरी ढाक्या । मुद्दियाणं । मृत्तिकादिकनी मुद्रा दीधी । लञ्छियाण । रेखादिकना लछण कीधा । केवइयकालजोणीसचिट्ठइ । केतलोकाल योनिरहै अंकूरानी उत्पत्तिहुवे सचित्तरहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणअंतोमुहूत्त । हेगौतम । जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त लगेरहै । उक्कोसेणतिण्णिसबच्छराइं । उत्कृष्टथकी तीन वरस लगी सचित्तरहै । तेणपरजोणीपमिलायइ । तिवारपूठे यो न म्लानपणोपामे वर्णादिकेकरी हानिपामे । तेणपरजोणीयविद्धसइ । ते उपरान्त योनि जीवपणो चयथाय विणसे इत्यर्थ । तेणपरबीए अबीए भवइ । तिवारपूठे बीज अबीजहुवे वाव्योथको पणिऊगेनही एतले स्यू कह्यु । तेणपरजोणीवोच्छेदेपण्णत्ते । तिवारपूठे योनिनो विच्छेदपणो प्ररूप्यो सजीवपणो टालीने अजीवपणू हुवे । समणाउसो । हे श्रमण आऊखावन्त । अहन्नभंतेकलावमसूर । हिवे, हेभगवन् । कलाय बाटुला चिणा भिलिङ्ग । तिल मुग्ग मास । तिल मूग उड्द । निप्फाव । निप्फाव वाल अथवा चवला । कुलत्थ आलिसिंदग सत्तीण । कुलथ स

चवलिकाकारा ॥ चिपिटका जवन्ति ॥ आलिसंदगत्ति ॥ चवलकप्रकारा चवलकाएवान्ये ॥ सईणत्ति ॥ तुवरी ॥ पलिमथगत्ति ॥ वृत्तचणका', कालचनकाइत्यन्ये ॥ अयसित्ति ॥ जङ्गी ॥ कुसुनत्ति ॥ लट्टा ॥ वरगत्ति ॥ वरट्टो ॥ रालगत्ति ॥ कगूविशेष ॥ कोदूसगत्ति ॥ कोद्रवविशेष' ॥ सगत्ति ॥ त्वक्प्रधाननालो धान्यविशेष' ॥ सरिसवत्ति ॥ सिद्धार्थका ॥ मूलाबीयत्ति ॥ मूलकबीजानि शाकविशेषबीजानीत्यर्थं , अनन्तरस्थिति रुक्ता अत' स्थितेरेव विशेषाणा मुहूर्त्तादीना स्वरूपाभिधानार्थमाह ॥ ऊसासद्धावियाहियत्ति ॥ उच्छ्रासाद्धा' उच्छ्रासप्रमितकालविशेषा व्याख्याता उक्ता जव

निप्फावकुलत्थआलिसदगसंतीणपलिमिंथमाईण एएसिणं धन्नाणजहा सालीण तहा एयाणिवि । णवरं , पंचसवच्छराइं सेस तचेव । भंते ! अयसिकुसुम्भगकोद्दवकगुवरगरालगकोदूसगसणसरिसवमूलगबीयमाईण एएसिण धन्नाणं एयाणिवि तहेव णवरं, सत्तसंवच्छराइं सेस तचेव । एगमेगस्सणं भंते ! मुहुत्तस्स केवइयाऊसासद्धावियाहिया ? गोयमा ! असंखेज्जाणं समयाण समुदयसमइसमागमेणं साएगा आवलि

वला प्रकार तूवरि । पलिमंथगमाटोप । काला चिणा प्रवरा हत्तचिणा इत्यादि । एएसिणधन्नाणजहासालोणतहाएयाणिवि । एह धान्यने जिम शालि ने आलावेकह्यु कोट्ठाउत्ताणं इत्यादि तिम एहोने पणि कहवो । णवरंपंचसंवच्छराइं सेसतचेव । एतलोविशेष पंचवरसलगे सचित्तरहे थाकतो सगलोहि पुठिलो परे कहवो यावत् अचित्तहुवे । अहभंतेअयसि । हिवे हेभगवन् । भङ्गी । कुसुंभग कोद्रव कंगुवरग रालग कोदूसग । कसूभो कोद्रव कागवरटो आगू विशेष कोद्रवविशेष । सणसरिसवमूलगबीयमाईण । सणलक् प्रधान नाल धान्यविशेष स्नेत सरसव शाकविशेष बीज इत्यादि । एएसिणधन्नाणंए याणिवितहेव । ए धान्यने पुठिलीपरे एहने पणि सर्व तिमज कहवो । णवरंसत्तसंवच्छराइं सेसतचेव । एतलोविशेष ए सात वरसलगे सचित्तरहे शेष तिमजकहवो पछे अचित्तहुवे अनन्तरे स्थितिकहो हिवे, स्थितिविशेष जे मुहूर्त्तादिक तेहनो स्वरूप कहे छे—एगमेगस्सणंभंतेमुहुत्तस्स केवइयाऊसासद्धावियाहिया । एक एकमो हेभगवन् । मुहूर्त्तना केतला ऊसास प्रमितकाल विशेष वखाण्या भगवन्ते । गोयमा असंखेज्जाण समयाण समुदय समिति

ह्निरिति अत्रोत्तर ॥ असखेज्जेत्यादि ॥ असङ्ख्यातानां सम्बन्धिनो ये समुदयावृन्दानि तेषां या समितयो मीलनानि तासां यः समागम संयोग. ससमुदयसमितिसमागम स्तेन य त्कालमान भवती तिगम्यते, सैकावलिकेति प्रोच्यते ॥ सखेज्जाआवलियत्ति ॥ किल षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयनावलिकाना क्षुल्लकभवग्रहण भवति तानिच सप्तदशसातिरेकाणिउच्छ्वासनिःश्वासकाल एवञ्च सङ्ख्याता. आवलिका उच्छ्वासकालो भवति ॥ हट्ठस्सेत्यादि ॥ हृष्टस्य तुष्टस्या नवकल्पस्य जरसा नभिभूतस्य निरुपक्लिष्टस्य व्याधिना प्राक्साम्प्रत चानभिभूतस्य जन्तो र्मनुष्यादे रेक उच्छ्वासेन सह निःश्वास उच्छ्वासनिःश्वासः यइति गम्यते एष प्राण इत्युच्यते ॥ सत्तेत्यादि ॥ गाथा ॥ सत्तपाणूइति ॥ प्राकृतत्वा त्सप्तप्राणा उच्छ्वासनिःश्वासा य इतिगम्यते, स स्तोक इत्युच्यत इति, वर्त्तते एवं सप्तस्तोका ये स लवः लवाना सप्तसप्तत्या एषो धिकृतो मुहूर्त्तो व्याख्यातइति ॥ तिण्णिसहस्सा

यत्ति पवुच्चइ सखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलियानिस्सासो, हट्ठस्सअणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्सजतुणो। एगेऊसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चइ ॥ १ ॥ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाइंसेलवे। लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहिए ॥ २ ॥ तिण्णिसहस्सासत्तसया सयाइंवत्तरिंचऊसासा। एसमुहुत्तोदिठो सव्वे

समागमेण साएगा आवलियत्तिपवुच्चइ सखेज्जाआवलियाऊसासो सखेज्जाआवलिया णीसासा। हेगौतम! असख्याता समयना जे समुदायवृन्द तेहनो जे समिति कहता मेलो तेहनो जे समागम कहीये सयोग तिणेकरी जे कालमानहुवे, ते एक आवलिका कहीये अने समय ते अति सूक्ष्मकालछे ते जीर्ण शटित पटफाटन दृष्टान्ते जाणवा तथा ढोवसैछपन आवलिए एकक्षुल्लक भवग्रहण हुवे तिणेसाधिक सतरे भवे एक उस्सास निस्सासकाल मानहुवे तेमाटे कह्यु इम सख्यातआवलिए एक ऊसासकालहुवे इम सख्यातआवलिकाए एक निस्सास काल हुवे— हट्ठस्सअणवगल्लस्स णिरुवकिट्ठस्स जतुणो। एगेऊसासणीसासे एसपाणुत्तिवुच्चइ ॥ १ ॥ हर्षने जराईकरी पराभव्यो नही एतले युवानने पहिला तथा वर्त्तमानकाले व्याधिकरी अणपराभव्याने एहवा मनुष्यादिकनो एक ऊसास सहित जे नीसास एहने प्राण एहवूं कहिये—सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाइंसेलवे। लवाणसत्तहत्तरिए एस

गाहा ॥ अस्या भावार्थोय सप्तभि रुच्छ्वासैस्तोकः स्तोकाश्च लवे सप्त ततो लवः सप्तभि र्गुणितो जातैकोनपञ्चाशत् मुहूर्त्तेच सप्तसप्तति र्लवाइति सा एकोनपञ्चाशता गुणितेति जात यथोक्त मानमिति ॥ एतावतावगणियस्सविसएत्ति ॥ एतावान् शीर्षप्रहेलिका प्रमेयराशिपरिमाणः तावदिति

हिअणतनाणीहि ॥ ३ ॥ एएण मुहुत्तपमाणाण तीसमुहुत्ता अहोरत्ता, पन्नरसअहोरत्ता पक्खो, दोपक्खा मासो, दोमासा उऊ, तिन्निउऊ अयणे, दोअयणे संवच्छरे, पंचसंवच्छरिय जुगे, वीसंजुगाइ वाससयं, दसवाससयाइं वाससहस्स, सय वाससहस्साण वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगेपुव्वंगे, चउरासीतिं पुव्वंगसयसहस्साइ सेएगे पुव्वे, एवं तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहुए २ उप्पले २ पउमे २

मुहुत्तेवियाहिए ॥ २ ॥ साते उसासनीसास तेणे एक स्तोक कालविशेष कहिये इम साते स्तोके जेकालविशेष हुवे तेहने लव सत्तोत्तर ७७ लवने समूहे जे कालमान तेहने मुहूर्त्त इसो वखाण्यो भगवन्त—तिणिसहस्सासत्तय सयाइ तेवत्तरिंचऊसासा । एसमुहुत्तोदिट्ठो सव्वेहिअणतणाणीहिं ॥ ३ ॥ तीन सहस्र सातसे अने तिहुत्तर ३७७३ एतले सासोसासे ए मुहूर्त्त इसो कालमान दीठो सघले अनन्तज्ञानवंते एतले केवलज्ञानने धरणहारे । एएणंमुहुत्तप माणेण । एह मुहूर्त्त प्रमाणे । तीसमुहुत्ताअहोरत्तो । तीस मुहूर्त्त प्रमाण करी तीस मुहूर्त्त करी अहोरात्रिनो मानहुवे । पन्नरसअहोरत्तापक्खो । पनरे अहोरात्रे पक्षनोमानहुवे । दोपक्खामासो दोमासो उऊ । दोपक्षे मासनोमानहुवे । दोमासे ऋतु मानहुवे । तिणिउऊअयणे दोअयणेसंवच्छरो । तीन ऋतुकरी अयनमानहुवे दोय अयनेकरी वरसनोमानहुवे । पंचसंवच्छरिएजुगे । पांच वरसे युगनोमानहुवे । वीसजुगाइ वाससय । वीसेयुगेकरी वरसयाय दसवाससयाइ वाससहस्स । ते दशगुणा कीधा वर्ष सहस्रहुवे । सयवाससहस्साण । ते सहस्रवर्ष सौगुणा कीधा । वाससयसहस्सं । वर्ष लक्षहुवे । चउरासीइंवाससयसहस्साणिसेएगेपुव्वंगे । ते चउरासी लाखवरसे ते एक पूर्वांग हुवे । चउरासीइंपुव्वंगसयसहस्साइसेएगेपुव्वे । ते चउरासी लाख पूर्वाङ्ग ते एक, पूर्व इम चउरासीलाख गुणाकरता जाइ जे । एवं तुडिए २ अडडे २ अववे २ हूहुए २ उप्पले २ पउमे २ । इम त्रुटित २ अडड २ अवव २ हूहुय २

॥ टीका ॥

क्रमार्थ' गणितविषयोगणितगोचरः गणितप्रमेय इत्यर्थः ॥ उवमिएत्ति ॥ उपमया निर्वृत्त मौपमिकं उपमा मन्तरेण यत्कालप्रमाण मनतिशयिना ग्रहीतु नशक्यते त दौपमिक मितिभाव , अथ पल्योपमादिप्ररूपणाय परमाण्वादिस्वरूप मभिधित्सुराह ॥ सत्थेणेत्यादि ॥ छेत्तुमिति खड्गादि ना द्विधाकर्तुंभेत्तु शूच्यादिना सच्छिद्र कर्तुं वा ; विकल्पे किलेति लक्षणमेवा स्येद मभिधीयते नपुन स्त कोपि छेत्तुवा , रजत इत्यर्थः ससूचनार्थ ॥ सिद्धत्ति ॥ ज्ञानसिद्धाः केवलिन इत्यर्थो नतु सिद्धा सिद्धि गता स्तेषा वदनस्या सम्भवादिति आदिं प्रथम प्रमाणाना वक्ष्यमाण श्लक्ष्णश्लक्ष्णि कादीनामिति , यद्यपि च नैश्चयिकपरमाणोरपी दमेव लक्षण तथापीह प्रमाणाधिकारा द्व्यावहारिकपरमाणुलक्षण मिद मवसेय' अथ प्रमाणान्तर

॥ मूल ॥

नलिणे २ अच्छिणिउरे २ अउए २ एउए २ नउएय २ चूलिय २ सीसपहेलिय २ एयावयावगणियस्स वि सए तणपरं उवमिए । सेकिंतं उवमिए दुविहे पण्णत्ते , तंजहा—पलिउवमेय सागरोवमेय । सेकिंतं पलिउ वमे २ सत्थेणसुतिक्खेणवि छेत्तुंभेत्तुचजंनकिरसक्का । तपरमणुंसिद्धा वयंतिआइंपमाणाणं ॥ १ ॥ अणताणं

॥ भाषा ॥

उत्पल २ पदम २ । णलिणे २ अच्छिणिऊरे २ अडए २ एडए २ णउएय २ चूलिए २ सीसपहेलिए २ । नलिन २ अच्छिणिऊर २ अडक २ एडक २ न उक २ चूलिका २ शीर्षप्रहेलिका २ । एतावतावगणियस्स विसएतेणपर उवमिए । एतलालगे प्रमेय राशिप्रमाण एतलालगे अनुक्रमने अर्थे गणितवि षय गणितगोचरजाणवो तिवारपछी उपमा स्यूं कहवा मोटाभणी उपमा विना कहा नजाय । सेकितउवमिए २ दुविहे पण्णत्ते तजहा । ते स्यूं उ पमित तेउपमित बेहुभेदे कह्यो ते कहेछे—पलिओवमेय । पल्योपम १ । सागरोवमेय । वली सागरोपम । सेकितपलिओवमे २ । ते स्यूं पल्योपम ते पल्योपमनो स्वरूप कहेछे—सत्थेण सुतिक्खेणवि छेत्तु भेत्तुच जकिरणसक्का । तपरमाणुंसिद्धा वयति आइंपमाणाणं ॥ १ ॥ परमाणू आदिथी ते परमाणूनो ए स्वरूप शस्त्रेंकरो घणूं तीखेकरो पणि खड्गादिके करी द्विधाभाव करवो ते छेदवो कहीये सूई प्रमुखेकरी सछिद्रकरवो ते भेदवोकहीये एतले ते प्रते छेदवा भेदवा आरंभे पणि छेदी भेदी नसकै तेहप्रतें सिद्ध कहिये केवली इत्यर्थ पणिसिद्ध कहीये सिद्धगत नकहवा तेहने बोलवाना असम्भवथकी तो ते

लक्षणमाह ॥ अणंताणमित्यादि ॥ अनन्तानां व्यावहारिकपरमाणुपुद्गलानां समुदया द्व्यादिसमुदया स्तेषां समितयो मीलनानि तासां समागम परिणामवशा देकीभवनं समुदयसमितिसमागम स्तेन या परिमाणमात्रेति गम्यते सा एका अत्यन्तश्लक्ष्णा श्लक्ष्णा सैव श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उत्प्राबल्येन श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका इतिरुपदर्शने वासमुच्चये एतेचो च्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिकादयो हुलान्ता दश प्रमाणभेदा यथोत्तर मष्टगुणा सन्तोपि प्र त्येक मनन्तपरमाणुत्व न व्यभिचरन्ती त्यतउक्तं ॥ उस्सण्हसण्हियाइवेत्यादि ॥ सण्हसण्हियत्ति ॥ प्राक्तनप्रमाणापेक्षया ष्टगुणत्वा दूर्ध्वरेण्वपेक्षयातु अष्टभागत्वात् श्लक्ष्णश्लक्ष्णिके त्युच्यते ॥ उड्ढरेणुत्ति ॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्चलनधर्मोपलभ्यो रेणु ऊर्ध्वरेणु ॥ तसरेणुत्ति ॥ त्रस्यति पौरस्त्यादिवायुप्रेरितो

परमाणुपोग्गलाण समुदयसमितिसमागमेणं साएगा उसण्हसण्हियाइवा सण्हसण्हियाइवा उड्ढरेणूइवा सतरे णूइवा रहरेणूइवा वालग्गाइवा लिक्खाइवा जूयाइवा जवमज्झेइवा अंगुलेइवा अट्ठउस्सण्हसण्हियाउ सा एगा सण्हसण्हिया अट्ठसण्हसण्हियाउ उसाएगा उड्ढरेणू अट्ठउड्ढरेणूउ साएगा तसरेणू अट्ठतसरेणूउ सा

हने परमाणू प्रतें । आदि कहीये पहिलोप्रमाण जे वक्ष्यमाण उत्श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिकादिकनो वदन्ति कहे एतले ए परमाणूथकी प्रमाणछुर्यें जो पणि जो नियें परमाणूना पणि पहोज लक्षणछे तथापि इहां प्रमाणना अधिकारथकी व्यावहारिक परमाणू लक्षण ए जाणवो, हिवे प्रमाणान्तर लक्षणार्थ क हेछे—अणंताणंते परमाणुपोग्गलाणसमुदयसमितिसमागमेण साएगाउसण्हसण्हियाइवा। अनन्ताव्यवहारिक परमाणू पुद्गलना समुदाय कहीये द्व्यादिसमुदाय तेहनां जे समिति कहिये मेलवो तेहनो समागम कहिये परिमाणवशथकी एकठो थाइवो तेणेंकरी जे मात्राथाय तेहने उत्श्लक्ष्ण श्ल क्ष्णिका कहीये एतले अनन्ता व्यवहारना परमाणू भेलाकीधा जे पुञ्जथाय तेहने एक ओसन्न सन्निया प्रमाणकहीये ए ओसन्न सन्निय आदिदेई अगु ल पर्यन्त दश प्रमाणभेदछे ते यथोत्तरे एक एकथकी आठगुणाछे तो पणि प्रत्येके २ अनन्त परमाणूपणो व्यभिचरे नही तेमाटे कह्यु उसन्न सन्नियाइवा। सण्हसण्हियाइवा। पूर्व प्रमाणनो अपेक्षायें आठगुणो ते श्लक्ष्ण श्लक्ष्णिका। उड्ढरेणूइवा तसरेणूइवा रहरेणूइवा। ऊंचो नीचो तिरिछो चलन धर्म उप

॥ टीका ॥ गच्छति यो रेणु स त्रसरेणु ॥ रहरेणुत्ति ॥ रथगमनो त्खातो रेणू रथरेणु बालाग्रलिक्षादय प्रतीता ॥ रयणित्ति ॥ हस्त ॥ नालियत्ति ॥ यष्टि

॥ मूल ॥ एगा रहरेणू अट्ठरहरेणूत्र सेएगे देवकुरुउत्तरकुरुगाण मणूसाणंवालग्गे एवं हरिवासरम्मगहेमवएरन्नवयाणं पुव्वविदेहाण मणूसाणं अट्ठवालग्गा साएगा लिक्खा अट्ठलिक्खाउ साएगा जूया अट्ठजूयाउ साएगा जवम ज्झे अट्ठजवमज्झाउ सेएगे अंगुले एएणं अंगुलप्पमाणेणं छअंगुलाणि पादो बारसअंगुलाइं विहत्थी चउवी सअंगुलाइं रयणी अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी छण्णउइअंगुलाणि सेएगे दंडेइवा धणूइवा जुएइवा नालि

॥ भाषा ॥ लघ्य जे रेणु ते ऊर्ध्वरेणु पूर्वादि वायु प्रेरित जे रेणु जाय ते त्रसरेणु रथजाता पडे ते रथरेणु। बालग्गाइवा लिक्खाइवा जूयाइवा। वालनो अग्र लीख जूका। जवमज्झेइवा अंगुलेइवा। जवमध्य अगुल एदृशकह्या। अट्ठओसण्हसण्हियाओ। आठ श्लक्ष्ण सन्निया एकठा मिल्या। साएगासण्हसण्हिया। ते एक सन्न सन्निया हुवे। अट्ठसण्हसण्हियाओ। आठ सन्न सन्निया एकठा मिल्या। साएगाउड्ढरेणू। ते एक ऊर्ध्वरेणु थाय। अट्ठउड्ढरेणूओ। आठऊर्ध्वरेणु एकठा मिल्या। साएगातसरेणू। ते एक त्रसरेणु थाय। अट्ठतसरेणूओ। आठ त्रसरेणु एकठा मिल्या। साएगारहरेणू। ते एक रथरेणु थाय। अट्ठरहरेणूओ सेएगेदेवकुरु उत्तरकुरुगाणमणूसाणवालग्गे। आठ रथरेणु एकठामिल्या ते एक देवकुरु तथाउत्तरकुरु युगलक्षेत्रना ऊपना मनुष्यनो एकवालाग्रहुवे ते बालाग्रथकी आठगुणो। एव हरिवासरम्मग। इमएक हरिवर्ष रम्यकना मनुष्यनो वालाग्र तेथी आठगुणो। हेमवते रण्णवताण। हेमवत ऐरण्यवतना मनुष्यनो वालाग्र तेथी आठगुणो। पुव्वविदेहाणमणूसाण। एकपूर्व विदेहना मनुष्यनो वालाग्र। अट्ठवालग्गासाएगालिक्खा। ते आठ वालाग्र एकठामिल्या ते एक लीखहुवे। अट्ठलिक्खाओसाएगाजूया। आठ लीख एकठामिल्या तिकाएक जूकाहुवे। अट्ठजूयाओसाएगेजवमज्झे। आठ जूका एकठामिल्या ते एक जवमध्यहुवे। अट्ठजवमज्झासेएगेअगुले। आठ जवमध्य एकठामिल्या ते एक अंगुल। एएणअगुलपमाणेण छअगुलाणिपाओ। इणे अंगुलनेप्रमाणेंकरी छ ए अगुले पायो कहीये। बारसअगुलाइंविहत्थि चउवीसअगुलाइंरयणी। बारे अगुले विहत्थिहुवे चउवीस अगुले रयणीकहीये हाथहुवे। अडतालीसअगुलाइंकु

॥ टीका ॥

विशेष ॥ अक्खेत्ति ॥ शकटावयवविशेष ॥ तंतिउणसविसेसपरिरएणंति ॥ तद्योजन त्रिगुण सविशेष वृत्तपरिधे किञ्चिन्यूनषड्भागाधिकत्रिगुणत्वा त् ॥ एक्काहियवेहियतेहियत्ति ॥ षष्ठीबहुवचनलोपात् एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकाना ॥ उक्कोसत्ति ॥ उत्कर्षत सप्तरात्रप्ररूढाना भृतो बालाग्रकोटीना मिति सम्बन्ध' तत्रै काहिक्यो मुण्डिते शिरसि एके नाह्ना यावत्यो भवन्तीति' एव शेषास्वपि भावना कार्या' कथम्भूत इत्याह, सम्मृष्ट आकर्णभृत

॥ मूल ॥

याइवा अक्खेइवा मुसलेइवा एएणं धणुप्पमाणेणं दोधणुसहस्साइं गाउयं चत्तारिगाउयाइं जोयणं एवण जोयणप्पमाणेणं जेपल्लेजोयणे आयामविक्खंभेणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं तंतिउण सविसेसं परिरएणं सेणं ए गाहियबेहियतेहियउक्कोससत्तरत्तप्परूढाणं समठे संनिचिए भरिए वालग्गकोडीणं तेणं बालग्गे नोअग्गी डहेज्जा नोवाऊहरेज्जा नोकुच्छेज्जा नोपरिविद्धंसेज्जा नोपूइत्ताए हव्व मागच्छेज्जा ततोणं वाससए २ एग

॥ भाषा ॥

च्छोछ्छउइअगुलाणि । अडतालीस अगुले कुच्छिहुवे छण्णू ९६ अगुले । सेदंडेइवा धणूइवा जूएइवा णालियाइवा अक्खेइवा मुसलेइवा । ते एक दडहुवे धनुषहुवे भूसरोहुवे लाठोहुवे गाडानो अवयव विशेषहुवे मुसलहुवे । एएणधणुप्पमाणेण । एह धनुषने प्रमाणेकरी । दोधणुसहस्साइं गाउय। दोय सहस्र धनुषे एकगाऊहुवे । चत्तारिगाउयाइं जोअण । चारे गाउए एकयोजन हुवे । एएणजोअणप्पमाणेण जेपल्लेजोअणआयामविक्खंभेण । एह योजनप्रमाणे क री जे पालो कहोये कूप ते एक योजन आयामे तथा विष्कंभे एतले बाटुलो । जोअणउड्ढउच्चतेणं । एक योजन ऊंचो ऊंचपणे । तंतिउणंसविसेसपरि रएण । ते त्रिगुणो साधिक परिधिहुवे । सेणएगाहिय वेहिय तेहिय । ते एकदिवसना बाल बेदिनाना बाल तोनदिनाना बाल । उक्कोसेणसत्तरत्तप्परू ढाणं । उत्कृष्ट सात रात्रिमानना प्रकढ मोटाना बालाग्र सघाते । ससिठ्ठे सणिचिए भरिए । ते एक खण्डना असख्याताखण्ड करी भरीये कानालगे भर्यो कठिनभर्यो । बालग्गकोडीण । ते बालाग्रनो कोडी सघाते । तेणवालग्गे । ते ण वाक्यालकारे, बालाग्रप्रते । णोअग्गीडहेज्जा । नही अग्निबाले । णोवाउहरेज्जा । वायुहरे उडावे नही । णोकुच्छेज्जा । पाणी सघाते कुथित नहुवे । णोपरिविद्धसेज्जा । एकनहो स्यू परिविध्वस न पामे । णोपूइत्ताए

सन्निचितप्रचयविशेषा न्निबिड· किंबहुना एवम्भूतो सौ येन ॥ तेणंति तानि बालाग्राणि ॥ नोकुच्छेज्जत्ति ॥ नकुथ्येयु प्रचयविशेषा च्छुपिराभावा द्वायो रसम्भवाच्च नासारता गच्छेयुरित्यर्थ , अतएव ॥ नोपरिविद्धंसेज्जत्ति ॥ नपरिविध्वंसेरन् कतिपयपरिशाटम प्यङ्गीकृत्य न विध्वसगच्छेयु अत एवच ॥ नोपूइत्ताएहव्वमागच्छेज्जत्ति ॥ नपूतितया नपूतिभाव कदाचि·दागच्छेयु ॥ तओणंति ॥ तेभ्यो बालाग्रेभ्य· ॥ एगमेगबालग्गअवहायत्ति ॥ एकैक बालाग्र मपनीय कालोमीयत इति शेष ततश्च ॥ जावइएणमित्यादि ॥ यावता कालेन सपल्य ॥ खीणेत्ति ॥ बालाग्राकर्षणात् क्षय मुपगत· आकृष्टधान्यकोष्टागारवत् , तथा ॥ नीरएत्ति ॥ निर्गतरज कल्पसूक्ष्मबालाग्रोऽपकृष्टधान्यरज कोष्टागारवत्' तथा ॥ निम्मलेत्ति ॥ विगतमलकल्पसूक्ष्मतरबालाग्र प्रमार्जनिकाप्रमृष्टकोष्टागारवत् , तथा ॥ निट्ठियत्ति ॥ अपनेयद्रव्यापनयन माश्रित्य निष्ठाङ्गत विशिष्टप्रयत्नप्रमार्जितकोष्टागारवत् तथा ॥ निल्लेवत्ति ॥ अत्यन्तसश्लेषा त्तन्मयताङ्गतबालाग्रापहारा दपनीतभित्त्यादिगतधान्यलेपकोष्टागारवत्' अथ कस्मा न्निर्लेप इत्यत आह ॥ अवहडेत्ति ॥ नि शेषबालाग्रलेपापहारात् अतएव ॥ विसुद्धेत्ति ॥ रजोमलकल्पबालाग्रविगमकृतशुद्धत्वापेक्षया लेपकल्पबालाग्रापहरणेन विशेषत शुद्धो विशुद्ध एकार्था वैते शब्दा व्यावहारिक चेद महापल्योपम इदमेव यदा सङ्ख्येयखण्डीकृतैकैकबालाग्रभृतपल्यात् वर्षशते खण्डशो अपोद्धार· क्रियते त

मेगं बालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं सेपल्ले खीणे नीरये निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ सेतं पलिओवमे गाहा—एएसिणपल्लाणं कोडाकोडीहवेज्जदसगुणिया। तंसागरोवमस्स एक्कस्सभवेपरीमाण १

हव्वमागच्छेज्जा। दुर्गन्धपणो उतावली नपामे। तओणवाससए २। ते बालाग्रथकी एकसो वरसे २। एगमेगबालग्गअवहाय। एक २ बालाग्र प्रतें काढीने कालमवीये। जावइएणकालेणसेपल्ले। जेतले कालेकरी ते पल्यकूप। खीणे थोरए निम्मले णिट्ठिए। बालाग्र आकर्षणथकी क्षयपाम्यो सूक्ष्म जे रजतेहथी पणि रहितथयो बालाग्र नीकल्याथकी। णिल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ। सर्व बालाग्रना लेवाथी निर्लेप थयो सर्व बालाग्रनो अपहरण कीधो इमकी धा विशुद्धहुवे। सेतेपलिओवमे गाहा। तिवारे एक परग एहवो उपमाकाल विशेषहुवे गाथा — एएसिपल्लाण कोडाकोडीहवेज्जदसगुणिया। तसाग

॥ टीका ॥

दासूक्ष्म मुच्यते' समये२ ऽपोद्धारेतु द्विधैं वोद्धारपल्योपमं भवति तथा तैरेव बालाग्रै यैं स्पृष्टा· प्रदेशा स्तेषां प्रतिसमयापोद्धारे य काल स्तद्याव हारिक क्षेत्रपल्योपम य· पुन स्तैरेवा सङ्ख्येयखण्डीकृतै· स्पृष्टाऽस्पृष्टाना तथैवा पोद्धारे काल स्तत्सूक्ष्मं क्षेत्रपल्योपम मेव सागरोपममपिविज्ञेयमि

॥ मूल ॥

एएणं सागरोवम पमाणेण चत्तारिसागरोवमकोडाकोडीत कालो सुसमसुसमा १ तिन्निसागरोवमकोडाको डीत कालो सुसमा २ दोसागरोवमकोडाकोडीत कालो सुसमदुसमा ३ एगासागरोवमकोडाकोडीत बाया लीसएवाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दुसमसुसमा ४ एक्कवीसवाससहस्साइं कालो दुसमा एक्कवीस वासस हस्साइं कालो दुसमदुसमा पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दुसमदुसमा एक्कवीसं वा

॥ भाषा ॥

रावमस्सउ इक्कस्सभवेपरीमाणं ॥ १ ॥ एह एक पल्योपमनी कोडाकोडी दशगुणी कीजे एतले दश कोडाकोडी पल्योपम तेणेंकरी सागरोपम एकनो प रिमाण हुवे १। एएणसागरोवमप्पमाणेण। इणि सागरोपम प्रमाणेकरी चार कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल सुखम सुखमा नाम अरो। तिन्नि सागरोवमकोडाकोडीओकालोसुसमा। तीन सागरोपम कोडाकोडी प्रमाण काल सुखमानाम अरो २। दोयसागरोवमकोडाकोडीओकालो सुसम दुस मा। दोयसागरोपम कोडाकोडी प्रमाण काल सुखम दुखमा नाम अरो ३। एगासागरोवमकोडाकोडी बायालीसंवाससहस्सेहिंऊणियाकालोदुसमसु समा। एक सागरोपम कोडाकोडी बयालीस वर्ष ऊणा एतलोकाल दुखम सुखमा नाम अरो ४। एकवीसवाससहस्साइ दूसमा। एकवीसवर्षसहस्र कालदूसमा। एक्कवीसवाससहस्साइ कालोदूसमा दूसमा। इकवीस वर्षसहस्रकाल दुखमदुखमा नाम अरो ६ ए अवसर्प्पिणीकालनाम अरा ६। पुणरविउस्स प्पि णीए एकवीसवाससहस्साइ कालोदूसमदूसमा। वली उत्सर्पिणी कालनेविषे विपरीत कहवा इकवीससहस्रवर्ष काल दुखम दुखमा नाम अरो १। एक्कवीसवाससहस्साइ दूसमा। इकवीससहस्रवर्ष काल दुखमानाम अरो २। एवंजाव चत्तारिसागरोवमकोडाकोडीओ सुसमसुसमा। इम उलटा कह तां यावत् चारकोडाकोडी सागरोपमकाल सुखम सुखमा नाम अरो ६। दससागरोवमकोडाकोडीओ कालोओसप्पिणी। इम दश कोडाकोडी साग

ति कालाधिकारा दिद माह ॥ जबूद्दीवेणमित्यादि ॥ उत्तमठपत्ताएत्ति ॥ उत्तमां स्तत्कालापेक्षयो त्कृष्टा नर्थां नायुष्कादी न्प्राप्ता उत्तमार्थप्राप्ता उत्तमकाष्ठाप्राप्तावा, प्रकृष्टावस्थाङ्गतातस्यां ॥ आगारभावपडोयारेत्ति ॥ आकारस्या कृते र्भावाः पर्याया अथवा; काराश्च भावा श्चाकारभावा स्ते षां प्रत्यवतारो वतरण माविर्भावं आकारभावप्रत्यवतार ॥ वहुसमरमणिज्जत्ति ॥ वहुसमो त्यन्तसमो ऽतएव रमणीयो य स्स तथा ॥ आलिंगपो क्खरेत्ति ॥ आलिङ्गपुष्करं मुरज मुखपुट लाघवाय सूत्रमतिदिशा न्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ उत्तरकुरुवक्तव्यताच जीवाभिगमोक्तैवं दृश्या मुइंगपुक्खरे

ससहस्साइं कालोदूसमा जाव चत्तारिसागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमसुसमा दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी दससागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी वीससागरोवमकोडाकोडीओ कालोओसप्पिणीयउस्सप्पिणीय। जंबुद्दीवेणं भंते! दीवे इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए उत्तिमठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था? गोयमा! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था से जहानामए आलिंगपुक्खरेइवा एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव आसयंति सयंति, तीसेणं समाए भरहे

रोपम काल अवसर्पिणी। दससागरोपमकोडाकोडीआकालाउत्सर्पिणी। इम दश सागरोपम कोडाकोडी काल उत्सर्पिणी। वीससागरोवमकोडा कोडीओ कालोओसप्पिणीय उस्सप्पिणीय। । वीस कोडाकोडी सागरोपम काल अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वेऊ मिल्या एककालचक्र कहिये कालना अधिकार थकी न कहेछे—जबूद्दीवेणभते दीवेइमीसेओसप्पिणीएसुसमसुसमाएसमाएउत्तमठपत्ताए। जबूद्दीपनामा द्वीपने विषे आद्दीज अवसर्पिणी कालना सुसमसुषमा आराने विषे ते कालनी अपेक्षायेज उत्कृष्टअर्थ आऊखादिक तेहप्रतपाम्या तेणकरी। भरहस्सवासस्स। भरतनामा क्षेत्रनो। केरि सएआगारभावपडोयारेहोत्था। केहवो आकार भाव प्रत्यवतार प्रकार हुयो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था। हे गौतम। घणू प्रत्यन्त सम एतलामाटेज रमणीय भूमिभाग हुयो। सेजहानामए। ते यथानामे दृष्टान्ते। आलिंगपुक्खरेइवा। मुरज मादलमुख पुट सरीखो।

इवा ; सरतलेइवा, (सरस्तल सरएव) करयलेइवा ; करतल कर एव इत्यादी त्येवं भूमिसमताया भूमिभागगततृणमणीनां वर्णपञ्चकस्य सुरभिगं धस्य मृदुस्पर्शस्य शुभशब्दस्य वाप्यादीना वाप्याद्यनुगतोत्पातपर्वतादीना मुत्पातपर्वताद्याश्रिताना हंसासनादीनां लतागृहादीना शिलापट्टकादी नाञ्च वर्णको वाच्य स्तदन्ते चैतद्दृश्य – तत्थणबहवेभारहयामणुस्सा मणुस्सीउय आसयति सयति चिठति निसीयति तुयट्टतीत्यादीति ॥ तत्थतत्थे त्यादि ॥ तत्र तत्र भारतस्य खण्डे २ देशे २ खण्डाशे २ ॥ तेहिं २ ति ॥ देशस्यांशे २ उद्दालकादयो वृक्षविशेषा यावत्करणात् कयमालाणट्टमाला इत्यादिदृश्य, ॥ कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूलत्ति ॥ कुशा दर्भा विकुशा वल्वजादय स्तृणविशेषा स्तैर्विशुद्धानि तदुपेतानि वृक्षमूलानि तदधोभागा येपान्ते तथा यावत्करणात् मूलमतोकदमंतोइत्यादिदृश्यं ॥ अणुसज्जिज्जत्ति ॥ अनुसक्तवन्त पूर्वकाला त्कालान्तर मनुवृत्तवन्त ॥ पम्हगधत्ति ॥ पद्मसमगन्धय ॥ मियगधत्ति ॥ मृगमदगन्धय ॥ अममत्ति ॥ ममकाररहिता ॥ तेयतलित्ति ॥ तेजश्च तलञ्च रूप येषा मस्तीति तेजस्तलिन ॥ सह

वासे तत्थ २ देसे २ तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जिज्जत्था, तंजहा पम्हगंधा मियगधा अममा तेयली सहा सणिचारी सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठसए

एवउत्तरकुरुवत्तव्वयाणेयव्वा । इम उत्तरकुरुनीपरे इहा वक्तव्यता जाणवी । जावआसयतिसयंति । यावत् वेसे सूवे इत्यादि क्रीडाकरे एतलालगे रमाणभरहेवासे । तेह कालनेविषे भरतक्षेत्रे । तत्थ २ देसे २ तेहिं २ बहवेउद्दाला कोद्दाला जाव कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव । ति गड २ नेविषे देशे २ खडांशने २ विषे तेहि २ तेते देशना अंशविषे घणा उद्दाल कोद्दालादिक वृक्ष विशेष यावत् कुशडाभ वल्वजादि तिणकरी अपेतछे वृक्ष मूल अधोभाग जेहना ते तथा यावत् शब्दथकी मूलवन्त कन्दवन्त इत्यादि । छव्विहामणुसा अणुसज्जित्था तंजहा । छ प्रकारना मनुष्य बसेछे ते कहेछे—पम्हगधा मियगधा अममा तेयली सहा सणिचारी । कमल सरीखो गन्ध १ मृगमद सरीखो गन्ध २ मम त्व ४ समर्थ ५ हलवे हलवे चाले ६ । सेवंभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे । छट्ठसयस्ससत्तमओ उद्देसोसम्मत्तो ६ ७ ।

त्ति ॥ मद्दिग्रव' ममर्या ॥ सर्गिचारिति ॥ शनै मन्द मुत्सुकत्वाजावा चरन्ती त्येवंशीला शनैश्चारिण ॥ इतिषष्ठशतेसप्तम' ॥ ७ ॥ सप्तमोद्देशके शारतस्य स्वरूप मुक्त मष्टमेतु पृथिवीना तदुच्यते तत्र चादिसूत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ वादरेअगणिकाएइत्यादि ॥ ननु यथा वादराग्ने र्मनुष्यक्षेत्रएव तद्भावा न्निषेध इहोच्यते एवं वादरपृथिवीकायस्यापिनिषेधो वाच्यः स्यात् पृथिव्यादिष्वेव स्वस्थानेषु तस्य भावादिति ? सत्यं

सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ७ ॥ कइणं भंते ! पुढवीउ पसत्ताउ ? गोयमा ! अठपुढवीउ पणत्ताउ, तंजहा—रयणप्पभा जाव ईसिप्पभारा। अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहाइवा गेहावणाइवा ? गोयमा ! णोइणठेसमठे। अत्थिण भंते ! रयणप्पभाएपुढवीए इमीसे अहेगामाइवा जाव सन्निवेसाइवा ? नोइणठेसमठे। अत्थिणं भंते ! इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अहे उराला वलाहया ससेयंति समुच्छंति वास वासंति हंता अत्थि तिन्निवि पकरेइ देवोवि पकरेइ असुरोवि नागोवि।

ए छठा शतकनो सातमो उद्देशो पूरोथयो ६ ॥ ७ ॥ सातमे उद्देशे भरतनो स्वरूप कह्यो आठमे पृथिवीनो स्वरूप कहेछे—कइणंभते पुढवीउपण्णत्ताओ। केतलो हेभगवन्। पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अट्ठपुढवीओ पणत्ता तंजहा। हेगौतम। आठ पृथिवी कही ते कहेछे रयणप्पभाजावईसिप्पभारा। रत्नप्रभा यावत् ईषत्प्राग्भारा पृथिवी कही। अत्थिणंभतेइमीसेरयणप्पभाएपुढवीए। छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। अहेगेहाइवा। नीचे घर। गेहावणाइवा। घरना हाट इतिप्रश्न। उत्तर गोयमा णोइणठे समठे। हेगौतम। ए अर्थ समर्थनही। अत्थिणभते इमीसेरयणप्पभाएअहेगामाइवा। छे हेभगवन्। रत्नप्रभा पृथिवीने नीचे गाम। जावसन्निवेसाइवा। यावत् सन्निवेश लगे कहवा इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणठेसमठे। एअर्थ समर्थ नही। अत्थिणभतेइमीसेरयणप्पभाए। छे हेभगवन्। रत्नप्रभा पृथिवीने। अहेउरालावलाहया ससेयंति। नीचे उदार मेघ बादलना पुद्गलनेविषे स्नेह उपजे। समुच्छंति वासवासंति। पुद्गलमिले वर्षा वरसे इतिप्रश्न उत्तर। हंताअत्थि। हा गौतम छे। तिण्णिवि

किन्तु नेह यद्यत्र नास्ति तत्तत्र सर्वं निषिध्यते मनुष्यादिवत् विचित्रत्वात् सूत्रगते रतो सतोपीह पृथिवीकायस्य ननिषेध उक्त , अप्कायवायुवनस्पतीना त्विह घनोदध्यादिभावेन भावा न्निषेधाभाव सुगमएवेति ॥ नोनाउत्ति ॥ नागकुमारस्य तृतीयाया पृथिव्या अधोगमन नास्ती त्यतएवानुमीयते ॥ नोअसुरोनोनागोत्ति ॥ इहा प्यतएव वचना चतुर्थ्यादीना मधो ऽसुरकुमारनागकुमारयो र्गमन नास्ती त्यनुमीयते सौधर्म्मेशानयो स्त्व

अत्थिण भंते ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बादरेथणियसद्दे हंताअत्थि तिन्निवि पकरेंति । अत्थिणं भंते ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बादरे अगणिकाए ? गोयमा ! णोइणठेसमठे णन्नत्थविग्गहगइसमावन्नएणं । अत्थिण भंते ! इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए चंदिम जाव तारारूवा ? नोइणठेसमठे अत्थिणं भंते ! इमीसेरयणप्पभाए चंदाभाइवा णोइणठेसमठे, एवं दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं एवं तच्चाएवि भाणियव्वं णवरं,

पकरेति । तोनेहे करे । देवोविपकरेइ । देव पणिकरे । असुरोविपकरेइ । असुर पणि करे । नागोविपकरेइ । नाग पणिकरे । अत्थिणभतेइमीसेरयणप्पभाए बादरे थणियसद्दे । छे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीने विषे बादर स्तनित शब्द इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हा गौतम । छे । तिन्निविपकरेइ । तोनेहे देवादिक करे । अत्थिणभतेइमीसेरयणप्पभाए पुढवीए । छे हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे । बादरेअगणिकाए । बादर तेजकाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनहो । णणत्थविग्गहगइसमावणएण । पणि ए निषेध बीजे स्थानके जाता विग्रहगति प्रतिपन्नने नहो । अत्थिणभतेइमीसेरयणप्पभाएपुढवीए । छे हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीने विषे । चन्दिमजावतारारूवा । चन्द्र सूर्य ग्रहगण नचत्र ताराक्प ज्योतिषो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । एअर्थ समर्थनहो । अत्थिणभतेइमीसेरयणप्पभाएपुढवीए । छे हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीने विषे । चदाभाइवा । चन्द्रादिकनो प्रभाकान्ति इतिप्रश्न उत्तर । णोइणठेसमठे । ए अर्थ समर्थनहो तिहा ज्योतिषोना अभावथो । एवंदोच्चाए पुढवीए भाणियव्व । इम जिम रत्नप्रभाने विषे कह्यु तिम बीजो पृथिवोनेविषे कहवो । एवतच्चाएपुढवीए भाणियव्व । इम त्रीजो पृथिवीनेविषे पणि जा

॥ टीका ॥

इहच बादरपृथिवीतेजसो र्निषेध सुगमएवा ऽस्वस्थानत्वा

धो ऽसुरोगच्छति चमरव न्ननागकुमारो ऽशक्तत्वा दतएवाह ॥ देवोपकरेइइत्यादि ॥ इहच बादरपृथिवीतेजसो र्निषेध सुगमएवा ऽस्वस्थानत्वा दिति ॥ एव, सणकुमारमाहिंदेसुत्ति ॥ तया ऽब्वायुवनस्पतीना मनिषेधोपि सुगमएव तयो रुदधिप्रतिष्ठितत्वेना ऽब्वनस्पतिसम्भवाद्वायोश्च सर्वत्र ज्ञावादिति ॥ एवं, बभलोयस्सउवरिंसव्वाहिंति ॥ अच्युत यावदित्य इहा तिदेशतो बादरा ऽब्वनस्पतीना सम्भवो नुमीयते सच तमस्कायसद्भावतो वसेयइति ॥

॥ मूल ॥

एवं थणियसद्देवि । ञ्जत्थिणं ञंते ! बादरे पुढविकाए बादरे ञ्जगणिकाए णोइणठेसमठे णन्नत्थविग्गहगइ देवोवि पकरेइ ञ्जसुरोवि पकरेइ नोनाग पकरेइ चउत्थीएवि णवरं, देवो एक्को पकरेइ नोञ्जसुरो नोनाग एवं हेठिल्लासु देवो एक्को पकरेइ । ञ्जत्थिण ञंते ! सोहम्मीसाणेणं कप्पाण ञ्जहे गेहाइवा गेहावणाइवा ? नोइणठेसमठे । ञ्जत्थिणं ञंते ! उराला वलाहया ? हंता ञ्जत्थि । देवो पकरेइ ञ्जसुरोवि पकरेइ नोनाग

॥ भाषा ॥

गवो । णवरदेवोविपकरेइ । एतलोविशेष देव पणिकरे । असुरोविपकरेइ णोणागोपकरेइ चउत्थीएवि । असुर पणिकरे नागकुमारने चौजी पृथिवी नीचे गमननथी एतलामाटे कह्यु नाग नकरे इम चौथीनरक पृथिवीने विषे पणि कहवो । णवरदेवोएक्को पकरेइ । एतलोविशेष देव एकहीज करे वलाहका दिक पणि । णोअसुरो णोणागो । असुर नकरे नाग पणिनकरे एहोनो तिहा गमननथी तेमाटे । एवहेठिल्लासुसव्वासुएक्कोपकरेइ । इमहेठिली सर्व पृथि वीनेविषे एकदेव करे वलाहकादिक पणि असुर नाग करेनही । अत्थिणभतेसोहम्मीसाणाण कप्पाण अहेगेहाइवा । छे हेभगवन् ! सौधर्मईशान देवला कने नीचे घर इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठे समठे । हेगोतम । एअर्थ समर्थनही । अत्थिणभतेउरालावलाहया । छे हेभगवन् ! मोटा मेह बाद ला इतिप्रश्न उत्तर । हता अत्थि देवोपकरेइ असुरोपकरेइ णोणागोपकरेइ एवथणियकुमारियसद्दे वि। हांगोतम छे देव पणिकरे असुर पणिकरे सौधर्मई शानने नीचे चमरनीपरे असुरजाय पणि नागकुमार नजाय एतला माटे कह्यु नागनही करे इम स्तनित शब्द पणि कहवो । अत्थिणभतेबादरेपुढविका ए । छे स वाक्यालकारे, हेभगवन् ! सौधर्मईशान देवलोकनेनीचे बादर पृथिवीकाय । बादरे अगणिकाए णोइणठेसमठे । बादर अग्निकाय इतिप्रश्न उ

र्थ , परतो देवस्यापि गमो नास्तीति तत्कृतबलाहकादे र्नाव ॥ पुढ्विचवीयत्ति ॥ बादरो ऽप्कायो ग्निकायो वनस्पतिश्च प्रष्टव्य ' अत्र तचेवत्ति वचना न्निषेध्यश्च यतो नेनविशेषोक्ता दन्यत्सर्वं पूर्वोक्तमेव वाच्यमिति सूचित, तथा ग्रैवेयकादीषत्प्राग्भारातेषु पूर्वोक्त सर्वङ्गेहादिक मधिकृतवा

समावसएण । ऋत्थिणं चंदिमजावतारारूवा ? गोयमा ! णोइणठेसमठे । ऋत्थिणं न्नंते ! गामाइवा जाव सन्निवेसाइवा ? गोयमा ! नोइणठेसमठे । ऋत्थिणं न्नंते ! चंदान्नाइवा ? गोयमा ! णोइणठेसमठे । एवं सणंकुमारमाहिंदेसु णवरं , देवोएगो पकरेइ । एवं बंन्नलोएवि एवं बन्नलोगस्स उवरि सव्हि देवो पक

त्तर हेगौतम । एअर्थ समय नही इहा बादरपृथिवी बादरतेज वेऊनो निषेध पोतानो स्थानकनथी तेमाटे तथा अप्वाऊ वनस्पतीनो निषेध नही ते सौधर्म ईशान उदधि प्रतिष्ठितछे तेमाटे तिहा अप्वनस्पतीना सम्भवथकी अने वाऊ तो सगलेछे तेमाटे । गामाइयविग्गहगइसमावन्नएण । ए निषे धकह्यु ते बीजे स्थानके जाता विग्रहगतिसमापन्नने नही एतले विग्रहगतिजाता तेऊकाईयो पणि तिहां पामीये । अत्थिणंभंतेचंदिम । छे ण वाक्याल कारे, हेभगवन् । चन्द्रादिक तिहा । गोयमा णोइणठे समठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनही । अत्थिणभंतेगामाइवा । छे हेभगवन् । गामादिक ते सौधर्मा दिकने विषे । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थनही युक्तनही । अत्थिणभंतेचदाभाइवा । छे हेभगवन् । चन्द्रादिकनी काति । गोयमा णो इणठे समठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थनही युक्तनही । एवसणकुमार माहिंदेसु णवरंएगोदेवोपकरेइ । इम सनत्कुमार माहेन्द्रनेविषे कहवो एतलो विशेष, एकदेव करे इहा अतिदेशथकी बादर अप्वनस्पतीनो सम्भवथकी कीजे तमस्कायना सद्भावथकी । एवबभलोएवि । इम ब्रह्मदेवलोक पचमाने विषे पणिकहवो । एवबभलोगस्सउवरिसव्वहिदेवोपकरेइ पुछेयव्वो । इम ब्रह्मलोकथी ऊपर सगलाई- अच्युतनामा देवलोकलगे इत्यर्थ तिहा देवकरे ते आ गले देवनो पणि गमन नथी तेमाटे देवकृत बलाहकादिक पणि भावनथी चपुन पूछवो । बादरेआउकाए । बादर अप्काय प्रतें । बादरेअगणिकाए । बादर अग्निकाय प्रतें । बादरे वणस्सइकाए अण्णतचेव । बादर वनस्पतीकाय प्रतें पूछवो वचनथकी निषेधकरवो जेमाटे ए विशेषकह्या माटे बीजा स

चनाया मनुक्तमपि निषेधतो ध्येयमिति, अथ पृथिव्यादयो ये यत्रा ध्येया स्तान् सूत्रसङ्ग्रहगाथयाह ॥ तमुकायगाहा ॥ तमुकाएत्ति ॥ तमस्कायप्रकरणे प्रागुक्ते ॥ कप्पपणएत्ति ॥ अनन्तरोक्तसौधर्म्मादिदेवलोकपञ्चकेच॥ अगणीपुढवीयत्ति ॥ अग्निकायपृथिवीकाया वध्येतव्यौ, अत्थिणं भंते बादरे पुढविकाए बादरे अगणिकाए नोइणठेसमठे णणत्थविग्गहगइसमावणएणं इत्यनेना भिलापेन, तथा ॥ अगणित्ति॥ अग्निकायो ऽध्येतव्य. ॥ पुढवीसुत्ति ॥ रत्नप्रभादिपृथिवीसूत्रेषु–अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए इत्याद्यभिलापेनेति, तथा ॥ आउतेउवणस्सइत्ति॥ अप्कायतेजोवनस्पतयो ऽध्येतव्या –अत्थिणं भंते ! बादरे आउकाए बायरे तेउकाए बायरे वणस्सइकाए नोइणठे इत्यादिना भिलापेन, केषित्याह ॥ कप्पुवरमित्ति ॥ कल्पपञ्चकोपरितनकल्पसूत्रेषु, तथा ॥ कण्हराईसुत्ति ॥ प्रागुक्ते कृष्णराजीसूत्रइति इहच ब्रह्मलोकोपरितनस्थानानामधो योऽप्वनस्पतिनिषेध' स यान्यव्वायुप्रतिष्ठितानि तेषा मध आनन्तर्येण वायोरेव भावा दाकाशप्रतिष्ठिताना त्वाकाशस्यैव भावा दवगन्तव्यो

रेइ पुच्छियव्वोय वायरे आउकाए वायरे अगणिकाए वायरे वणस्सइकाए अन्नंतंचेव गाहा — तमुकायकप्पपणए अगणीपुढवीयअगणिपुढवीसु । आऊतेउवणस्सइ कप्पुवरमिकण्हराईसु ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते !

वपूछे कह्यु तेहीज कहवो इमकह्यु तथा ग्रैवेयक थकी ईषत्प्राग्भारा पर्यन्तनेविषे पूर्वोक्त सर्वगेहा.दक इहा वाचनाये नकह्यु तो पणि निषेधथकी कहवो हिवे पृथिव्यादिक जे जिहा कह्या तेप्रते तिहा सग्रह गाथायें कहेछे—तमुकायकप्पपणए अगणीपुढवीयअगणिपुढवीसु । आउतेउवणस्सइ कप्पुवरमिकण्हराईसु ॥ १ ॥ तमस्काय प्रकरण पूर्वे कह्यु तेहने विषे अनन्तरोक्त सौधर्मादि देवलोक पाचनेविषे अग्निकाय पृथिवीकायना प्रश्नकहवा ,अत्थिणभंतेबादरे पुढविकाए बादरेअगणिकाए णोइणठेसमठे णणत्थविग्गहगइसमावणएणं, इणें आलावेकरी तथा अग्निकायनो प्रश्नकहवो, पुढवीसुत्ति, रत्नप्रभादिक सात पृथिवीने विषे ते इम अत्थिणभंते इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अहेबादरे अगणिकाए, इत्यादिक पणि आलावेकरी तथा अप्काय तेजकाय वनस्पतीकाय पूछवा अत्थिणभंतेबादरेआउकाए बादरेतेउकाए बादरेवणस्सइकाए णोइणठे इत्यादिक आलावेकरी केहनेविषे ते कहेछे—पांचमादेवलोकथी ऊ

॥ टीका ॥

ग्ने स्वस्वस्थानादिति अनन्तरं बादराप्कायादयो निरूपिता स्तेषा युबंन्धेसति भवन्ती त्यायुर्बन्धसूत्र तत्र ॥जाइनामनिहत्ताउएत्ति॥ जाति रेकेन्द्रिय जात्यादि पञ्चधा सैव नामइति नामकर्म्मण उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामोवा; तेन सह निधत्त निषिक्त यदायु स्तज्जातिनामनिधत्तायु', निषे कश्च कर्म्मपुद्गलाना प्रतिसमय मनुभवनार्थ रचनेति ॥ गइनामनिधत्ताउएत्ति॥ गतिर्नारकादिका चतुर्द्धा शेष तथैव ॥ ठिइनामनिधत्ताउएत्ति ॥ स्थि ति रिति यत् स्थातव्य क्वचिद्विवक्षितभवे जीवेना यु कर्म्मणावा; सैव नाम' परिणामो धर्म्म स्थितिनाम स्तेन विशिष्ट निधत्त यदायुर्दलिकरूपं तत्स्थितिनामनिधत्तायु' अथवेह सूत्रे जातिनामगतिनामावगाहनाना मग्रहणा ज्जातिगत्यवगाहनाना प्रकृतिमात्र मुक्त स्थितिप्रदेशानुभागनामग्र हणा तु तासामेव स्थित्यादय उक्ता स्तेच जात्यादिनामसम्बन्धित्वा न्नामकर्म्मरूपाएवेति नामशब्द: सर्वत्र कर्म्मार्थो घटतइति, स्थितिरूप नामकर्म्म

॥ मूल ॥

आउयबंधे पण्णत्ते? गोयमा! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तंजहा—जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए

॥ भाषा॥

परला देवलोक सूत्रनेविषे तथा पूर्वे कह्यो जे कृष्णराजो तहनासूत्रनेविषे इहा ब्रह्मदेवलोक उपरितन स्थानकने नीचे जे अप्वायु प्रतिष्ठितछे तेहने नीच अनन्तरे वायुछे आकाश प्रतिष्ठितछे आकाशनाज भावथको जाणवो अने अग्निनेतो पोताना स्थानकना अभावथको न कहवो १ ए गाथा व खाणो पूठे बादर अप्कायादिक कह्या ते आयुखाना बन्धथको हुवे तेमाटे आऊखाबन्धक सूत्र कहेछे—कइविहेणंभंतेआउयबंधेपण्णत्ते गोयमा छव्विहे आउयबंधे पण्णत्त तंजहा। केतलेप्रकारे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । आऊखाबन्ध प्रकप्यो इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। छ० प्रकारे आऊखाबन्ध कह्यो ते कहेछे—जातिनामनिहत्ताउए १ गतिनामनिहत्ताउए २। जाति एकेन्द्रिय जात्यादिक पाचेप्रकारे तेहीज नाम इति नाम कर्मनो उत्तरप्रकृति वि शेष अथवा जोवपरिणामतिणिसवाते निवत्त कहतां कर्मपुद्गलनो प्रतिसमयें अनुभवनने अर्थे रचनाये जे स्थाप्यो आऊखो ते जातिनामनिधत्तायु क होये गतिनारकादि चारभेदे तेहीज नामकर्मनो उत्तरप्रकृति विशेष अथवा जोवपरिणाम तेहसघाते निधत्त कहीये स्थाप्यो जे आऊखो ते गतिनाम निधतायु कहीये। ठिइनामनिहत्ताउए। स्थिति कहोये रहवू जिहा इक विवक्षित भवने विषे जोवे आयुकरीने तेहीजनाम परिणाम धर्म ते स्थितिना

॥ टीका ॥

स्थितिनाम स्तेनसह निधत्तं यदायु स्तत् स्थितिनामनिधत्तायुरिति ॥ उंगाहणानामनिधत्ताउएत्ति ॥ अवगाहते यस्यां जीव सा वगाहना शरीर मौदारिकादि तस्या नाम औदारिकादि शरीरनामकर्म त्ववगाहनानाम अवगाहनारूपोवा, नाम परिणामो वगाहनानाम स्तेन सह यन्निधत्त मायु स्तदवगाहनानामनिधत्तायु ॥ पएसनामनिधत्ताउएत्ति ॥ प्रदेशाना मायु कर्म्मद्रव्याणा नाम स्तथाविधा परिणति· प्रदेशनाम प्रदेशरूपवा, नामकर्म विशेष इत्यर्थ·, प्रदेशनाम स्तेन सह यन्निधत्त मायु स्तत्प्रदेशनामनिधत्तायुरिति ॥ अणुभागनामनिधत्ताउएत्ति ॥ अनुभाग आयु द्रव्याणामेव विपा क स्तल्लक्षणा एव नामः परिणामो नुभागनामो ऽनुभागरूपंवा; नामकर्मोनुभागनाम स्तेन सह निधत्तं यदायु स्तदनुभागनामनिधत्तायुरिति' अथ किमर्थं जात्यादिनामकर्म्मणा युर्विशिष्यते ? उच्यते आयुकस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुदये सति जात्यादिनामकर्म्मणा मुदयो भव

॥ मूल ॥

ठिइनामनिहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए दंडग्रो जाव

॥ भाषा ॥

म तिर्णेकरी विशिष्टनिधत्त जे आयुदलिकरूप ते स्थितिनामनिधत्तायु कहीये अथवा इहा सूत्रनेविषे जातिनाम गतिनाम अवगाहनानाम सग्रह थकी जाति गति अवगाहनाने प्रकृतिमात्र कह्यु अने स्थितिप्रदेश अनुभागनाम ग्रहणथकी तेहीनाज स्थित्यादिक कह्या तिके जात्यादिकनाम सम्बन्धि पर्यायकी नामकर्मरूप हीजछे नामग्रस्ट सघनेकर्मार्थे घटे स्थितिरूपनामकर्म ते स्थितिनाम ते सघाते निधत्त जेआऊखो ते स्थितिनाम निधत्ताय कहीये ३ । ओगाहणाणामनिहत्ताउए ४ । अवगाहना औदारिकादिशरीर तेहनूनाम औदारिकादिशरीर नामकर्म ते अवगाहनानाम अथवा अव गाहनारूप, नामकहता परिणाम ते अवगाहनानाम ते सघाते निधत्त जे आऊखो ते अवगाहनानाम निधत्तायु कहीये ४ । पएसनामणिहत्ताउए। प्रदेशे आयुकर्मनाद्रव्य तेहनोनाम तथाविध परिणत ते प्रदेशनाम अथवा प्रदेशरूप नामकर्म विशेष इत्यर्थं ते सघाते निधत्त जे आऊखो प्रदेशनाम नि धत्तायु कहीये ५ । अणुभागणामणिहत्ताउए । अनुभाग जे आयुद्रव्यनोज विपाक ते लक्षणहीजनाम कहतां परिणाम ते अनुभागनाम कहिये अथवा अनुभागरूपनामकर्म ते अनुभागनाम ते सघाते निधत्त जे आऊखो ते अनुभागनामनिधत्तायु कहिये इहा कोई कहस्ये जात्यादिनाम कर्मेकरी आऊ

॥ टीका ॥

ति नारकादि भवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा दुक्त मिदैव–नेरइयाणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गोयमा ! नेरइए नेरइएसु उववज्जइ नोअनेरइए नेरइएसु उववज्जइत्ति, एतदुक्तमभवति नारकायुः प्रथमसमयसंवेदनमेव नारक उच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेन्द्रियजात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदयइति, इह चायुर्बन्धस्य षड्विधत्वे उपक्षिप्ते यदायुष षड्विधत्व मुक्त त दायुषो बन्धाव्यतिरेका द्बन्धस्यैव चायुव्यपदेश विषयत्वादिति ॥ दण्डकोत्ति ॥ नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउयबंधे पन्नत्ते इत्यादि, वैमानिकान्त श्चतुर्विंशतिदण्डको वाच्यो ऽतएवाह ॥ जाव वेमाणियाणंति ॥ अथ कर्म्मविशेषाधिकारा त्तद्विशेषितानां जीवादिपदानां द्वादशदण्डकानाह ॥ जीवाणं भंते ! इत्यादि ॥ जाइनामनिहत्तत्ति ॥ जातिनामनिधत्त निषिक्तं विशिष्टबन्धवा कृत ये स्ते जातिनामनिधत्ता एव गतिनामनिधत्ता , यावत्करणात् ठिइनामनिहत्ता ओगाहणानामनि

॥ मूल ॥

वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता जाव अणुभागनामनिहत्ता ? गोयमा ! जाइनामनिहत्तावि जाव अणुभागनामनिहत्तावि दंडओ जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ताउया

॥ भाषा ॥

खो विशेषे स्यामाटे कह्यां तेहने उत्तर इमदीजे आउखानो प्रधानपणो देखाडवाने अर्थे जे कारणथकी नरकादिक आउखाने उदयथया जात्यादिकनाम कर्मनो उदयहुवेछे नारकादि भवोपग्राहक आउखोजछे ज कारणे एसूत्रमाहेज कह्युंछे—णेरइएणंभंते णेरइएसुउववज्जइ अणेरइएणेरइएसुउववज्जइ गोयमा णेरइएणेरइएसुउववज्जइ णोअणेरइएणेरइएसुउववज्जइत्ति । इहां भावार्थ नरकनो आउखो पहिलेसमये सवेदतोज नारकी कहिये तेहना सहचारी पचेंद्रिय जात्यादिनाम कर्मनो पणिउदयछे इत्यर्थं । दंडओजावयेमाणियाणं । इम दंडक यावत् वेमानिक लगे कहवो ते इम णेरइयाणंभंते कइविहे आउयबधे पणत्ते गोयमा छव्विहे इत्यादि चउवीसदंडक कहवा एतनामाटेज कहेछे—हिवे कर्म विशेषाधिकारथोज कर्म विशेषित जीवादिपदना बारे दंडक कहेछे—जीवाणंभंतेकिंजातिनामणिहत्ता । जो । हेभगवन् । स्यूं जाति एकेंद्रियादि विशिष्टबन्धजोधो जेणे ते जातिनाम निधत्ता कहिये । गइणामणिहत्ता । इम गतिनाम निधत्ता । जावअणुभागणामनिहत्ता । यावत् शब्दथकी ठिइनामनिहत्ता ओगाहणनामनिह

हत्ता पएसनामनिहत्ता अनुभागनामनिहत्ता इतिदृश्य, व्याख्या तथैव नवरं जात्यादिनाम्ना यास्थिति येच प्रदेशा यश्चानुभाग स्तत् स्थित्यादिना
म अवगाहननाम शरीरनामेति अयमेको दण्डकोवैमानिकान्त, १ तथा ॥ जाइनामनिहत्ताउयत्ति ॥ जातिनाम्ना सह निधत्त मायु यैस्ते जाति
नामनिधत्तायुष एव मन्यान्यपि पदानि अयमन्यो दण्डक २ एव मेते ॥दुवालसदंडगत्ति॥ अमुना प्रकारेण द्वादश दण्डका भवन्ति, तत्र द्वा वाद्यौ
दर्शितावपि सङ्ख्यापूरणार्थं पुन र्दर्शयति जातिनामनिधत्ता इत्यादि रेक जाइनामनिहत्ताउयाइत्यादि र्द्वितीय—जीवाणं भंते । किंजाइनामनि

जाव अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा ! जाइनामनिहत्ताउयावि जाव अणुभागनामनिहत्ताउयावि दंडओ जाव वेमाणियाण एवं एए दुवालसदंडगाभाणियव्वा । जीवाणं भंते ! किं जाइनामनिहत्ता १ जाइ

त्ता अणुभागनामनिहत्ता इति पहनो व्याख्या पूठिलीपरे करवी एतलो विशेष जात्यादिनामना जे स्थिति जे प्रदेश जे अनुभाग ते स्थित्यादिनाम
अवगाहननाम शरीरनाम इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जातिनामनिहत्तावि जावअणुभागनामणिहत्तावि । हेगौतम । जातिनामनिधत्त पणि याव
त् अनुभागनाम निधत्त पणिकह्या । दंडओजाववेमाणियाण । पहिलो दण्डक यावत् वैमानिक लगेकहवो, हिवे बीजो दण्डक कहेछे—जीवाणभंते
किंजातिनामणिहत्ताउया जावअणुभागनामणिहत्ताउया । जीव हेभगवन् । स्यूं जातिनाम निधत्तायु कहीये इम यावत् अनुभागनामनिधत्तायु लगे
कहवो तिहां जातिनामसंघाते निधत्त आउखो जिणें ते जातिनामनिधत्तायुष कहीये इम बीजा पणि पदकहवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जातिना
मणिहत्ताउयावि । हेगौतम । जातिनामनिधत्तायुष पणि कहिये इम गतिनाम निधत्तायुष आदिदेई । जावअणुभागनामणिहत्ताउयावि दंडओजाव
वेमाणियाण । यावत् अनुभागनामनिधत्तायुष पणि इम दण्डक यावत् वैमानिक लगे कहवो एबीजोदण्डक कह्यो । एव एएदुवालसदंडगाभाणियव्वा । इ
म इणेंप्रकारे एह बार दण्डकहुवे तिहां बेदण्डक पूर्वे देखाड्या ते पणि सङ्ख्या पूरणने अर्थें वली देखाडेछे—जातिनामणिहत्ता १ जातिनामनिहत्ताउ
या २ । जाति एकेंद्रियादि विशिष्टवन्धकीधो जेणें ते जातिनाम, इम बीजा पणि पञ्चजातिनाम सघातें निधत्तआउखो जेणें ते जातिनाम निधत्तायुष

उत्ताइत्यादि स्तृतीय.' तत्र जातिनामनियुक्तं नितरां युक्तं सम्बद्धं निकाचितं वेदनेवा, नियुक्त यै स्ते जातिनामनियुक्ता एव मन्यान्यपि' ५ जाइ नामनिउत्ताउयाइत्यादिश्चतुर्थे, तत्र जातिनाम्ना सह नियुक्त निकाचितं वेदयितु मारब्धवायु यैं स्ते तथा एव मन्यान्यपि ५ ॥ जाइगोयनिहत्ता इत्यादि' पञ्चमः, तत्र जाते रेकेन्द्रियादिकाया यदुचित गोत्र नीचै र्गोत्रादि तज्जातिगोत्रं तन्निधत्त यै स्ते जाति गोत्रनिधत्तायुष एवमन्यान्यपि ५ जाइगोयनिउत्ताउयाइत्यादिरष्टमः' तत्र जातिनामगोत्रच निधत्त यै स्ते तथा एवमन्यान्यपि ५ ॥ जाइगोयनिहत्ताउमाइत्यादि दशम ' तत्र जातिनाम्ना गोत्रेणच सह निधत्त मायु यैं स्ते तथा एवमन्यान्यपि ५ ॥ जाइनामगोयनिउत्ताइत्यादिरेकादश', तत्र जातिनाम गोत्रञ्च नियुक्तं यै

नामनिहत्ताउया २ जाइनामनिउत्ता ३ जाइनामनिउत्ताउया ४ जाइगोयनिहत्ता ५ जाइगोयनिहत्ताउया ६ जाइगोयनिउत्ता ७ जाइगोयनिउत्ताउया ८ जाइनामगोयनिहत्ता ९ जाइनामगोयनिहत्ताउया १०

इम बोजा पणि पञ्चए २ दण्डक। जावाणभंतेकिंजातिणामणिउत्ता ३। जीव हेभगवन्। स्यू जातिनाम नियुक्त जातिनाम कर्मसेंयो एतावता निकाच्यो अथवा वेदनने पहुचाव्यो ते इम बीजा पञ्चए २ दण्डक ३। जातिनामनिउत्ताउण। ४ जातिनाम स्यू नियुक्त निकाच्यो आउखो अथवा वेदवामाड्यो जेणें ते इम बीजापणि ५ ए चार दण्डक ४। जातिगोयनिउत्ता ५। जातिएकेंद्रियादि तेहनेयोग्य जे नीच गोत्रादि ते निधत्तगाढो बांध्यो जेणें ते जाति इम बीजा पणि पञ्च ए पाचदण्डक ५। जातिगोयणिहत्ताउया ६। तिहा जाति गोत्रसघाते निधत्त आउखो जेणें ते जातिगोयणिहत्ताउया। इम बीजा पणि पच ए ६ दडक ६। जातिगोयनिउत्ता ७। जाति गोत्र निकाच्यो जेणे ते जातिगोत्र इम बीजा पणि पच ए ७ दंडक ७। जातिगोयणिउत्ताउया ८। जाति गोत्रसघाते निकाच्यो आउखो जेणे ते इम बीजा पणि पचए ८ दडक ८। जातिनामगोयणिहत्ता ९। जातियोग्य नामनेगोत्र निधत्तनिकाच्यो जेणें ते इम बीजा पणि पच ए नवमो दडक ९। जातिनामगोयणिहत्ताउया १०। जातियोग्यनाम अने गोत्रसहित निधत्त आउखो जेणे ते इम बीजा पणि पंच ए दशमो दण्डक १०। जातिनामगोयनिउत्ता ११। जातियोग्यनाम अने गोत्रनिकाच्यो जेणें ते इम बीजा पणि पंच कह

स्ते तथा एवमन्यान्यपि ५। जीवाणं भंते! किं जाइनामगोयनिउत्ताउयेत्यादि द्वादश', तत्र जातिनाम्ना गोत्रेणच सह नियुक्त मायु यैं स्ते तथा स्ते तथा एवमन्यान्यपि ५। जीवाणं भंते! किं जाइनामगोयनिउत्ताउयेत्यादि... एव मन्यान्यपि ५ ॥ इहच जात्यादिनामगोत्रयो रायुषश्च भवोपग्रहे प्राधान्यख्यापनार्थं यथायोग जीवा विशेषिता वाचनान्तरे चाद्याएवा ष्टौ एव मन्यान्यपि ५ ॥ इहच जात्यादिनामगोत्रयो रायुषश्च भवोपग्रहे प्राधान्यख्यापनार्थं यथायोग जीवा विशेषिता वाचनान्तरे चाद्याएवा ष्टौ दण्डका दृश्यत इति' पूर्वं जीवा स्वधर्मत प्ररूपिता अथ लवणसमुद्र स्वधर्मतएव प्ररूपयन्नाह ॥ लवणेणमित्यादि ॥ उस्सिउदएत्ति ॥ उच्छ्रितो दक ऊर्द्ध्ववृद्धिगतजल तद्वृद्धिश्च साधिकषोडशयोजनसहस्राणि ॥ पत्थडोदएत्ति॥ प्रस्तृतोदक समजलइत्यर्थ ॥ खुहियजलेत्ति ॥ वेलावशात् वेलच

जाइनामगोयनिउत्ता ११ जाइनामगोयनिउत्ताउया १२ जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ? गोयमा! जाइनामगोयनिउत्ताउयावि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउयावि दंडओ जाव वेमाणियाण। लवणेणं भंते!

वा ए ११ दण्डक ११। हिवे बारमा दण्डक कहेछै — जोवाणभंतेकिजातिनामगोयणियत्ताउया १२। जीव हेभगवन्! स्यूं जातियोग्य नामकर्म स्यूं नि काच्यू आऊखो जेणें ते जातिनामगोत्रनियुक्तायुष १२ इम अगिला पणि कहवा। जावअणुभागनामगोयणियत्ताउया। यावत् अनुभागनाम गोत्र नियुक्तायुष लगे कहवो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जातिनामगोत्रनिउत्ताउयावि जावअणुभागगोयणिउत्ताउयावि दंडओजाववेमाणियाण। हेगौत म! जातिनामगोत्रनियुक्तायुष पणि यावत् अनुभागनामगोत्रनियुक्तायुष इम यावत् वेमानिक पर्यन्त दंडक कहवा इहा एकेक दंडकने पूठें पाच २ दण्डक जाणवा ए बारमो दंडक एव सर्वमिलोने बारकून बहुत्तर ७२ दंडकथाय किहां एक वाचनान्तरे पहिला आठ हीज दंडक दीसेछै पहिलाजीव स्वधर्मयको प्ररूप्या, हिवे लवणसमुद्र स्वधर्मेहीज कहेछै — लवणेणभंतेसमुद्देकिंउस्सिओदए। लवण हेभगवन्! समुद्र स्यूं ऊचो जल वधेछै अथवा। पत्थडो दए खुभियजले अक्खुभियजले। समा पाणोछै अथवा वेलिनावशयको पाणी चोभपामेछै अथवा चोभ पामतो नथी इतिप्रश्न। गोयमा लवणेणसमुद्दे उ स्सिओदए। हेगौतम। लवणसमुद्र उच्छ्रितोदकछै ते जलनीवृद्धि सोल सहस्र योजन लगेछै। णोपत्थडोदए खुभियजले णोअक्खुभियजले एत्तोआढत्त ज हाजीवाभिगमे। समजलनहो पाणी वेलिना वशयको चोभ पामेछ नहो अनुभित पाणी एतो ए सूत्रप्रारभो जिम जीवाभिगम उपाङ्गने विषे कह्यु

॥ टीका ॥

महापातालकलशगतवायुक्षोभादिति ॥ एत्तोआढत्तमित्यादि ॥ इत सूत्रादारभ्य मद्यथा जीवाभिगमे तथा ध्येतव्यं, तच्चेद–लवणे णं भंते ! लवणसमुद्दे ऊसिओदए नोपत्थडोदए खुभियजले नोअक्खुभियजले तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं उस्सिओदगा ? गोयमा ! समुद्दा नोउस्सिओदगा पत्थडोदगा नोखु भियजला अक्खुभियजला पुण्णापुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे उराला बलाहगा संसे यंति संमुच्छंति वासं वासंति हंता अत्थि जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे उराला तहा णं बाहिरेसुवि समुद्देसु उराला ? ५ नो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? गोयमा ! बाहिरगेसु णं समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, शेषन्तु लिखितमेवास्ति व्यक्तञ्चेदमिति, संठाणओइत्यादि एकेन विधिना प्रकारेण चक्रवालतालक्षणेन वि

॥ मूल ॥

समुद्दे किं उस्सिओदए पत्थडोदए खुभियजले अक्खुभियजले ? गोयमा ! लवणेणं समुद्दे उस्सिओदए नोप त्थडोदए खुभियजले नोअक्खुभियजले एत्तोआढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव सेतेणट्ठेणं ? गोयमा ! बाहि रयाणं दीवसमुद्दा पुण्णापुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति संठाणओ एगविहि विहाणा वित्थारओ अणेगविहिविहाणा दुगुणा दुगुणप्पमाणाओ जाव अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जादीवस

॥ भाषा ॥

तिस कारण से इस लवणसमुद्र में ऊंची वेल होती है सो उच्छितउदक है, नीचा नहीं ऐसा पत्थडोदक नहीं, लवणसमुद्र का पानी क्षुभितजल है अक्षुभितजल नहीं, तैसेही बाहिर के समुद्र किं उच्छितोदगा ? ४ गोयमा बाहिर के समुद्र नोउच्छितउदगा पत्थडोदगा नोक्षुभितजला अक्षुभितजला पुण्णापुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति अत्थि णं भंते लवणसमुद्र में बहवे उराला बलाहगा संसेयंति ३ हंता अत्थि जहा णं भंते लवणसमुद्र में उराला ५ तहा णं बाहिरेसु वि समुद्देसु उराला ५ णो इणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठंति बाहिरगेसु णं समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति चयंति उववज्जंति गौतम तिसी कारण से। संठाणओ एगविहिविहाणा। संस्थान तो एक प्रकारे चक्रवाल वलय आकारे। वित्थारओ अणेग

धान स्वरूपस्यकरण येषान्ते एकविधिविधाना विस्तारतो ऽनेकविधिविधानाः कुत इत्याह ॥ दुगुणेत्यादि ॥ इह यावत्करणादिदं दृश्य पविस्थर माणा २ बहुउप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवइया, उत्पलादीना केसरै फुल्लै श्चोपमेता इत्यर्थ उब्भासमाणवीइयत्ति ॥ सुभनामत्ति ॥ स्वस्तिकश्रीवत्सादीनि ॥ सुभरूवत्ति ॥ शुक्लपीतादीति देवादीनिवा; ॥ सुभगंधत्ति ॥ सुरभिगन्धभेदाः गन्धवन्तो वा, कर्पूरादय ॥ सुभरसत्ति ॥ मधुरादय रसवन्तोवा, शर्करादयः ॥ सुभफासत्ति ॥ मृदुप्रभृतय स्पर्शवन्तोवा; नवनीतादय ॥ एव नेयव्वासुभनामत्ति ॥ एवमिति द्वीपसमुद्राभिधायकतया नेतव्यानि शुभनामानिपूर्वोक्तानि तथा ॥ उद्धारोत्ति ॥ द्वीपसमुद्रेपूद्धारोनेतव्यः सचैव-दीवस मुद्दाण भंते । केवइया उद्धारसमएण पण्णत्ता ? गोयमा । जावइया अड्ढाइज्जाणंउद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमयो त स्तेन तथा ॥ परिणामोत्ति ॥

मुद्दा सयंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो । दीवसमुद्दाणं भंते ! केवइया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइयालोए सुभानामा सुभारूवा सुभागंधा सुभारसा सुभाफासा एवइयाणं दीवसमुद्दा नामधे

विहिविहाणा । विस्तारथको अनेक प्रकारना छै । दुगुणादुगुणप्पमाणाओ । विमणाविमणे प्रमाणें जाणवा । जावअस्सितिरियलोए असंखेज्जादीवस मुद्दा । यावत् एह त्रीछा लोकनेविषे असंख्याता द्वीप समुद्रछे ठाण बिमणा वलयने आकारे जंबूद्वीप लवणसमुद्र आदिदेईने । सयंभुरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता । स्वयंभूरमणद्वीप तथा स्वयंभूरमणसमुद्र छेहडे कह्या । समणाउसो । हेश्रमण।आउखावन्त इति संबोधन। दीवसमुद्दाणभंते केवइयाणामधेज्जे हि पण्णत्ता । द्वीपसमुद्र हेभगवन् । केतला नामधेयकरी कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावतियालोगेसुभानामा । हे गौतम । जेतलाएक लोकनेविषे स्वस्तिक शुभनाम । सुभारूवा सुभागंधा सुभारसासुभाफासा । शुक्लपीतादि शुभरूप कर्पूरादिक शुभगन्ध मधुरादिक शुभरस नवनीतादिक शुभस्पर्श अथवा गन्धादिवन्त । एवतियाणंदीवसमुद्दानामधेज्जेहि पण्णत्ता एवणेयव्वा सुभानामा । एहीना जेतलाएकनाम तेतला एक द्वीपसमुद्रना नामधेय कहवा एतलेनामे कह्या इत्यर्थ, दस द्वीपसमुद्र नामकरी जाणवा जिम शुभनामादि पूर्वेकह्या तिम जाणवा । उद्धारो परिणामो सव्वजीवाण सेवभ

॥ टीका ॥

परिणामो नेतव्यो द्वीपसमुद्रेषु सचैव–दीवसमुद्दाणं भंते ! किंपुढविपरिणामा आउपरिणामा जीवपरिणामा पोग्गलपरिणामा ? गोयमा ! पुढवि परिणामावीत्यादि तथा ॥ सव्वजीवाणंति ॥ सर्वजीवाना द्वीपसमुद्रे पूत्पादो नेतव्य सचैव–दीवसमुद्देसु णं भंते ! सव्वेपाणा ४ पुढविकाइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववणपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तोत्ति ॥ इति षष्ठशते ऽष्टम ॥ ८ ॥ द्वीपादिषु जीवा पृथिव्यादित्वेनो त्पन्नपूर्वा इत्यष्टमोद्देशकेउक्त नवमे तूत्पादस्य कर्म्मबन्धपूर्वकत्वा दसावेव प्ररूप्यत इत्येवं सम्बन्धस्या स्येद मादिसूत्र ॥ जीवेणंभि त्यादि ॥ सत्तविहबंधएत्ति ॥ आयुरबन्धकाले ॥ अठविहबंधएत्ति ॥ आयुर्बन्धकाले ॥ छव्विहबंधएत्ति ॥ सूक्ष्मसम्परायावस्थाया मोहायुषो रबन्धक त्वात् ॥ बंधुद्देसोइत्यादि ॥ बन्धोद्देशक. प्रज्ञापनाया. सम्बन्धीचतुर्विंशतितमपदात्मको त्रस्थाने नेतव्यो ध्येतव्य सचाय–णेरइएणं भंते ! नाणाव

॥ मूल ॥

जोहिं पसत्ता एवं नेयव्वा सुभनामा उद्धारो परिणामो सव्वजीवाणं सेवं भंते भंतेत्ति॥ छठसयस्स अठमो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ ८ ॥ जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं बधमाणे कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा अठविहबंधएवा छव्विह बंधएवा बंधुद्देसोपन्नवणाए नेयव्वो । देवेणं भंते !

॥ भाषा ॥

ते २ त्ति । ते पूर्वोक्त स्वरूप पल्यमांहिथी समये २ ते खडकाढोये जिवारे ते पालोखालोथाय तिवारे एक उद्धार पल्यकहीये एहवा दश कोडाकोडीपल्ये एक उद्धार सागरथाय एहवा अढाई उद्धारसागरना जेतलाएकसमय ते प्रमाण द्वीपसमुद्रछे तेहनेविषे एजीव आदिदेई अनन्तीवार ऊपना एतलाल गे कहवो, हेभगवन् ! तुम्हेकह्युते सत्यछे अन्यथानही । छट्ठसयस्सअट्ठमओ उद्देशोसम्मत्तो । ए छठा शतकनो आठमो उद्देशो पूर्णथयो ६ ॥ ८ द्वीपादिकने पृथिव्यादिपणे पूर्वे ऊपना एहवो आठमेउद्देशेकह्यो नवमे उत्पादने कर्मबन्ध पूर्वक पणाथको कर्मबंध कहेछे—जीवणंभतेणाणावरणिज्जंक म्मबंधमाणेकइकम्मपगडीओबंधइ । जीव हेभगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्म बांधतोथको केतली कर्मप्रकृतिबांधे उत्तर । गोयमा सत्तविहबंधएवा अठविहबंध एवा । हेगोतम ! आऊखाने अबन्धकाले सातप्रकारे कर्मबांधे आऊखाने बंधकाले आठप्रकारे कर्मबांधे । छव्विहबंधएवा बंधुद्देसोपन्नवणाएणेयव्वो ।

॥ टीका ॥

रणिज्जं कम्मं बधमाणे कड कम्मपगडीउ बंधइ ? गोयमा ! सत्तविहबंधगेवा अट्ठविहबंधगेवा एव जाववेमाणिए नवरं' मणुस्से जहाजीवे इत्यादि जीवाधिकारा द्देवजीवमधिकृत्याह ॥ देवेणमित्यादि ॥ एगवणति ॥ कालाद्येकवर्णं एकरूप एकविधाकारं स्वशरीरादि ॥ इहगएत्ति ॥ प्रज्ञापकापे क्षया इह गतान् प्रज्ञापकप्रत्यक्षासन्नक्षेत्रस्थितानित्यर्थः ॥ तत्थगएत्ति ॥ देव किल प्रायोदेवस्थान एव वर्त्ततइति' तत्र गतान् देवलोकादिगतान् ॥ अन्नत्थगएत्ति ॥ प्रज्ञापकक्षेत्रा द्देवस्थानाच्चापरत्र स्थितान् तत्रच स्वस्थानएव प्रायोविकुरुते, यत कृतोत्तरवैक्रियरूपएव प्रायो न्यत्र गच्छतीति,

॥ मूल ॥

महिड्ढीए जाव महाणुभाए वाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउव्वित्तए ? गोयमा ! नोइणट्ठेसमट्ठे । देवेण भंते ! वाहिरए पुग्गले परियाइत्ता पभू हता पभू। सेणं भंते ! किंइहगएपोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? गोय

॥ भाषा ॥

सूक्ष्म संपराय दशमे गुणठाणे मोहनीय आउखोवर्ज्जी छ कर्मबाध बन्धनो उद्देशो पन्नवणा सबधी चउवीसमा पदथकी इहा जाणवो ते इम, णेरइएणं भंते णाणावरणिज्जकम्मबधमाणे कइकम्मपगडीओबधइ गोयमा अट्ठविहबधएवा सत्तविहबधएवा एवजाववेमाणिए णवरं मणुस्से जहाजीवे इत्यादि जीवना अधिकारथकीज देव जीवअधिकार कहेछे—देवेणभंतेमहिड्ढीए जावमहाणुभाए। देव हेभगवन् । महर्धिक यावत् मोटा भाग्यनो धणी। बाहिरिएपोग्गलेअपरियाइत्तापभू। बाहिरला पुद्गल अणलीधां समर्थहुवे। एगवन्न एगरूव विउव्वित्तए। कालादिक एकवर्णप्रते एकविधिआकार, स्वशरीरादि ते प्रते विकुर्वणा करवाने इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगौतम। ए अर्थ समर्थनथी युक्तनथी। देवेणभंतेबाहिरिएपोग्गलेपरियाइत्तापभू। देव हेभगवन्। बाहिरिला पुद्गलप्रते ग्रहीने समर्थहुवे इतिप्रश्न उत्तर। हंतापभू। हा गौतम। समर्थहुवे। सेणभंतेकिंइहगएपोग्गलेपरियाइत्ताविउव्वइ। ते हेभगवन्। स्यु इहा मनुष्य क्षेत्रगत प्रत्यक्ष आसन्नक्षेत्र स्थितिप्रतें लेईने विकुर्वणाकारे रूपप्रतें अथवा। तत्थगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ। देव प्रायेंस्वस्थानकेज वर्त्ते तेमाटे तत्रगत ते देवलोक गतप्रते लेईने विकुर्वे। अणत्थगएपोग्गले परियाइत्ताविकुव्वइ। मनुष्यक्षेत्र थकी अथवा देवक्षेत्रथकी

नोइहगतान् पुद्गलान् पर्यादाये त्याद्युक्तमिति' कालयपोग्गलनीलपोग्गलत्ताए इत्यादौ कालनीललोहितहारिद्रशुक्ललक्षणानां पञ्चानां वर्णानां द्वाद्विकसंयोगसूत्राण्यध्येयानि, एव ॥ एयाएपरिवाडीएगंधरसफासत्ति ॥ इह सुरभिदुरभि लक्षणगन्धद्वयस्य एकमेव तिक्तकटुकषायाम्लमधुरलक्षणानां पञ्चानां रसानां दशद्विकसंयोगसूत्राणि, अष्टानां स्पर्शानां चत्वारिसूत्राणि' परस्परविरुद्धेन कर्कशमृद्वादिना द्वये नैकैकसूत्रनिष्पादनादिति'

मा ! नोइणठेसमठे इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ नोअस्स त्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ एवं एएणं गमेण एगवन्नं एगरूवं जाव अणेगवन्नं अणेगरूवं चउभंगो । देवेण भंते ! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलयपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए नीलपोग्गलंवा कालए पोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? गोयमा ! नोइणठेसमठे

अनेरे बीजे स्थानके रह्या पुद्गल ते प्रतें लेईने विकुर्वे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइहगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । हे गौतम ! मनुष्य क्षेत्रगतपुद्गल लेईने विकुर्वणा नकरे । तत्थगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । तिहां स्वस्थानने विषेज नवा पुद्गललेईइने विकुर्वणा करे जेमाटे उत्तरवैक्रियरूपकरीनेज प्राये देव बीजे स्थानके तेमाटे । णोअन्नत्थगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । बीजेस्थानगत पणि पुद्गललेईने विकुर्वणा नकरे । एवंएएणगमेणजावएगवन्न एगरूव एगवन्नअणेगरूव । इम इणे आलावेंकरीने यावत् एकवर्ण एकरूप एकवर्ण अनेकरूप २ । अणेगवन्न एगरूव । अनेक वर्ण एकरूप ३ । अणेगवन्नअणेगरूव चउभंगो । अनेकवर्ण अनेकरूप प्रतें विकुर्वे ४ ए पूर्वे जिमकह्यु तिम इहां पणि कहवो इम इहा चउभङ्गीहुवे । देवेणं भंते महिड्ढीए जावमहाणुभागे । देवण वाक्यालङ्कारे, हेभगवन् ' महर्द्धिक यावत् महाणुभाग । बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्तापभू । बाहिरिला पुद्गल ग्रह्याविना समर्थहुवे । कालपोग्ग लंनीलपोग्गलत्ताएपरिणामेत्तए । कालपुद्गलप्रतें नीलपुद्गलपणे परिणामवाने अथवा । णीलपोग्गलंवाकालपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए गोयमा णोइणठेसमठे । नीलपुद्गल प्रतें कालपुद्गलपणे परिणमावाने इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ' ए अर्थ समर्थनथी काल नील लोहित हारिद्र शुक्ललक्षण पंच

॥ मूल ॥

परिणामेइत्ति भाणियव्वं । एवं कालगपोग्गलं परियाइत्ता पभू सेणं भंते! किंइहगए पोग्गले तंचेव नवरं, परियाइत्ता पभू सेणं भंते! किंइहगए पोग्गले तंचेव नवरं, एवं कालएणं जाव सुक्किल्लं एवंनीलएणं जाव सुक्किल्लं एव लोहिएणं जाव सुक्किल्लं एवं लोहियपोग्गलत्ताए एवं कालएणं जाव सुक्किल्लं एवं एयाए परिवाडीए गंधरसफासकक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किल्लं एवं एयाए परिवाडीए गंधरसफासकक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए एवं दोदो गरुयलहुयसीयउसिण २ णिद्धलुक्खवण्णाइं सव्वत्थपरिणामेइ आलावगा य दोदो पोग्गले अपरिया

॥ भाषा ॥

वर्णना द्विकसंयोगी दश सूत्रकहवा ते इम । काल नील १ । काल लोहित २ । काल हारिद्र ३ । काल शुक्ल ४ । नील लोहित ५ । नील हारिद्र ६ । नील शुक्ल ७ । लोहित हारिद्र ८ । लोहित शुक्ल ९ । हारिद्र शुक्ल १० । ए वर्णना द्विकसंयोगीसमा उलटा दशसूत्र कहवा, सुरभि दुरभि १ ए गन्ध सवन्ध आश्रीसूत्र ए कहवा ए ससबधो वर्णना दशसूत्र कहवा । परियाइत्तापभू । वाह्य पुद्गललेईने समर्थ हुवे । सेणभंतेकिंइहगएपोग्गलेतचेव । ते ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! स्यू इहगत तत्रगत अन्यत्रगत इत्यादि प्रश्न उत्तर तिमज कहवा । णवरपरिणामेइत्ति भाणियव्व । एतलोविशेष तिहा विकुर्वणाकही इहा परिणमावा समर्थ इम कहवो । एवकालपोग्गललोहियपोग्गलत्ताए । इम कालपुद्गलप्रतें लोहितपुद्गलपणें ए बीजोसूत्र । एवकालएणं जावसुक्किल्ल । इम कालप्रतें यावत् शुक्लताई ४ सूत्रकहवा । एवनीलएणजावसुक्किल्ल । इम नीलसघाते शुक्ललगे तीनसूत्रकहवा एव ७ । एवलोहिएण जावसुक्किल्ल । इम लोहितसघाते यावत् शुक्ललगे बे सूत्रकहवा इम नवसूत्र । एवहालिद्दएणसुक्किल्ल । इम हालिद्र अनेशुक्ल एकहीज सूत्रहुवे ए वर्णना दशसूत्रथया एव एयाएपरिवाडीए गधरसफास कक्खडफासपोग्गलं मउयफासपोग्गलत्ताए २ । इम इणें परिपाटीये अनुक्रमे गन्धरस स्पर्शना सूत्रकहवा तिहा सुरभिगन्ध दुरभिगन्धलक्षण दोयगन्धनो एकसूत्र कहवो रसतीखो १ कडुयो १ कसायलो आंबिल मधुर ए लक्षण पाच रसनावर्ण नीपरे दशसूत्र कहवा त था आठस्पर्शना चारसूत्रकहवा माहोमाहि विरुद्ध जे कर्कश मृदुआदि दोय २ करी एक २ सूत्रकहवो त इम कक्खड फास पोग्गल मउयफास पोग्गलत्ताए परिणामेत्तए मउयफासपोग्गले कक्खडफासपोग्गलत्ताए परिणामेइ एकसूत्र । एव दोदोगरुयलहुयसीयउसिण २ णिद्धलुक्खवणाइ सव्वत्थपरिणा

॥ टीका ॥

देवाधिकारा दिदमाह ॥ अविसुद्धेत्यादि ॥ अविसुद्धलेसेणंति ॥ अविशुद्धलेश्यो विभङ्गज्ञानी देव ॥ असमोहएणअप्पाणेणंति ॥ अनुपयुक्तेना त्मना इहा विशुद्धलेश्यो १ ऽसमवहतात्मा देव २ अविशुद्धलेश्य देवादिक ३ इत्यस्य पदत्रयस्य द्वादशविकल्पा भवन्ति तद्यथा अविसुद्धलेसेणं देवे असमो हएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं ३ जाणइ पासइ ? नोइणट्ठे समट्ठे इत्येको विकल्प, अविसुद्धलेसे असमोहएणं विसुद्धलेसं देवं ? ३ नोइणट्ठेत्ति

॥ मूल ॥

इमा परियाइत्ता। अविसुद्धलेसेण भंते ! देवे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं देविं अन्नतरं जा णइ पासइ ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे एव अविसुद्धलेस्से असमोहएणं० विसुद्धलेसदेव २ अविसुद्धलेसेस मोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसदेवं ३ अविसुद्धलेसेदेवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देव० ४ अवि सुद्धलेसेसमोहयासमोहएणं० अविसुद्धलेसदेव ५ अविसुद्धसमोहयासमोहएविसुद्धलेसंदेव ६ अविसुद्धलेसदे

॥ भाषा ॥

मेइ आतायगा होता। इम दोय २ गन्धफासपोग्गलं सुरभफासपोग्गलताए सुरभफासपोग्गल गन्धफासपोग्गलताए परिणामेइ तथा सीयफासपो ग्गल उसिणफासपोग्गलताए उसिणफासपोग्गल सोयफासपोग्गलताए परिणामेइ २ तथा णिद्धफासपोग्गलं लुक्खफासपोग्गलताएपरिणामेइ २ इम सर्व २ परिणामेइ कहवा आत्मा कहवा। पोग्गल अपरियाइत्ता परियाइत्ता। तिहां पुद्गल अणघड्या समर्थनथी पुद्गलग्रह्या समर्थछे। देवनाम विकारथीज ए कहेछे—अविसुद्धेत्यादि इहां अविसुद्धलेश्योदेव १ असमवहतात्मदेव २ अविसुद्धलेश्योदेवादिक ३ ए तीनपदना बारे विकल्पहुवे ते देखा डेछे—अविसुद्धलेसेणंभंतेदेवेअसमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस। विभङ्गज्ञानीदेव देवभगवन्। उपयोगरहित आत्मा तिणेकरी विभङ्गज्ञानसंयुक्त। देवदेवी अंतरजाणइपासेइ। देवप्रतें तथा देवीप्रते तथा अनेराकोइ प्रतें जाणेंजाणें एथेमेकरीदेखे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे। हेगौतम। एअर्थ समर्थनथी ए एकभांगो। एव अविसुद्धलेसेअसमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव १ २। इम विभङ्गज्ञानीदेव उपयोगरहित आत्माएंकरी देवप्रतें तथा दे वीप्रते तथा अनेराप्रते जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर णोइणट्ठेसमट्ठे, एअर्थ समर्थनथी उपयोगरहित मिथ्यादृष्टीपणामाटे ए बीजो विकल्प। अविसुद्धलेसे

॥ टीका ॥

द्वितीय , अविसुद्धलेसे समोहएणं अविसुद्धलेस देव ? ३ नोइणट्ठेति तृतीय , अविसुद्धलेसे समोहएणं विसुद्धलेसं देवं ? ३ नोइणट्ठेति चतुर्थ , अ
विसुद्धलेसे समोहया समोहएण अप्पाणेणं अविसुद्धलेस देव ? ३ नोइणट्ठेति पंचम , अविसुद्धलेसे समोहया समोहएणं विसुद्धलेसदेव ? ३ णोइणट्ठेति
षष्ठ , विसुद्धलेसे असमोहएणं अविसुद्धलेस देवं ? ३ णोइणट्ठेति सप्तम , विसुद्धलेसेअसमोहएणं विसुद्धलेसंदेवं ? ३ नोइणट्ठेति अष्टम , एतै स्पष्टेति

॥ मूल ॥

विसुद्धलेसेणं भंते ! देवे समोहए
वे असमोहएअविसुद्धलेसदेव ७ विसुद्धलेसेअसमोहएविसुद्धलेसंदेवं ८। विसुद्धलेसेणं भंते ! देवे समोहए
ण अविसुद्धलेसंदेवं ३ जाणइ पासइ हंता जाणइपासइ ९ एवं विसुद्धसमोहएविसुद्धलेसंदेवं १० विसुद्ध
समोहयासमोहएणं अविसुद्धलेसं देवं ११ विसुद्धसमोहयासमोहएणं विसुद्धलेसं देवं १२ एवं हेट्ठिल्लएहिं

॥ भाषा ॥

समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेसदेव ३ ३। तथा विभंगज्ञानीदेव उपयोगसहित आत्मायेंकरी विभंगज्ञानी देवप्रतें तथा देवीप्रतें तथा अनेराकोइप्रत
जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। ए अर्थ समर्थनथी विभंगज्ञानमिथ्यादृष्टि पर्णामाटें ए बीजोभांगो २। अविसुद्धलेसेदेवेसमोहएण अप्पाणेणं विसु
द्धलेस देवदेवीअनेरा ३ ४। विभंगज्ञानीदेव उपयोगसहित आत्मायेंकरी अवधिज्ञानीदेव ते प्रतें तथा देवीप्रतें तथा अनेराकोइ प्रतें जाणें देखे इतिप्रश्न
उत्तर हेगौतम। ए अर्थ समर्थनथी विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि पणामाटे ए चौथो विकल्प ४। अविसुद्धलेसेसमोहयासमोहएण अप्पाएणअविसुद्धलेसदेव ३
५। विभंगज्ञानीदेव उपयोगसहित उपयोगरहित आत्मायेंकरी विभंगज्ञानवन्त देवप्रतें तथा देवीप्रतें तथा अनेराकोइप्रतें जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर
हेगौतम। ए अर्थ समर्थनथी ए पांचमो विकल्प ५। अविसुद्धसमोहया समोहए विसुद्धलेसदेवं ३ ६। विभंगज्ञानी उपयोगसहित रहित अवधिज्ञानीदे
वप्रतें तथा देवीप्रतें तथा अनेराप्रते जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर ए अर्थ समर्थनथी ए छट्ठा विकल्प ६। विसुद्धलेसअसमोहए अविसुद्धलेसदेव। ३। ७ अव
धिज्ञानीदेव उपयोगरहित आत्मायेंकरी विभंगज्ञानीदेवी प्रते देवीप्रतें तथा अनेराप्रतें जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर ए अर्थ समर्थनथी उपयोगरहित्माटे
ए सातमो विकल्प ७। विसुद्धअसमोहएण विसुद्धलेसदेव ३ ८। अवधिज्ञानीदेव उपयोगरहित आत्मायेंकरी अवधिज्ञानीदेव तथा देवी तथा अनेराप्र

॥ टीका ॥

विकल्पे नजानाति तत्र पञ्चि मिथ्यादृष्टित्वा द्वान्या त्वनुपयुक्तत्वादिति, विसुद्धलेसे समोहएणं अविसुद्धलेस देव ? ३ जाणइ ? हंता जाणइ इतिन वम, विसुद्धलसे समोहएण विसुद्धलेस देवं ३ जाणइ ? हंता जाणइत्ति दशम॰ ' विसुद्धलेसे समोहया समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं ३ जाणइ ? हंता जाणइत्ति एकादश ' विसुद्धलेसे समोहया समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस देव ३ जाणइ ? हंता जाणइत्ति द्वादश, एञ्जि पुन श्चतुर्ज्जि विकल्पे सम्यग्दृष्टित्वा दुपयुक्तत्वा दुपयुक्तानुपयुक्तत्वाच्च जानाति, उपयोगानुपयोगपक्षे उपयोगाशस्य सम्यग्ज्ञानहेतुत्वादिति ' एतदे

॥ मूल ॥

छठहिं नजाणइ नपासइ उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ पासइ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छठसए नवमो उद्देसो

॥ भाषा ॥

ते जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर ए अथ असमर्थनही उपयोगरहित पणामाटे ए आठमो विकल्प ८। विसुद्धलेसेणभते देवेसमोहएण अविसुद्धलेसदेव ३ ३। अवधिज्ञानो हेभगवन्! देव उपयोगसहित आत्मायेंकरी विभगज्ञानीदेव तथा देवी तथा अनेराप्रतें। जाणइ पासइ हंता जाणइ पासइ ९। जाणें दे खे इतिप्रश्न उत्तर हंता गोयमा जाणइपासइ उपयोगसहितमाटे तथा सम्यग्द्दष्टिपणाथको ए नवमो विकल्प ९। एवविसुद्धसमोहए विसुद्धलेसदेव ३ १०। इम अवधिज्ञानीदेव उपयोगवन्त आत्मायेंकरी अवधिज्ञानीदेव ३ प्रतें जाणें देखे इतिप्रश्न उत्तर हंता जाणइपासइ ए दशमो विकल्प १०। विसुद्धसमो हया समोहएण अविसुद्धलेसदेव ३ ११। अवधिज्ञानीदेव उपयोगसहित उपयोगरहित थको विभगज्ञानी देवप्रतें ३ जाणेदेखे इतिप्रश्न उत्तर हंता गोयमा जाणइ। जाणे। पासइ। देखे इति ११ मो विकल्प। विसुद्धसमोहयासमोहएणंविसुद्धलेसदेव १२। अवधिज्ञानीदेव उपयोगसहित रहित थको अवधि ३ प्रतें जा णे इतिप्रश्न उत्तर। हंतागोयमा जाणइपासइ। एवहेट्ठिल्लएहिंअट्ठहिं नजाणइनपासइ। इम पहिला आठभागाकह्या तिणें नजाणे नदेखे छभागे मिथ्यादृष्टी पणाथको नजाणे बेहभागे सम्यग्द्दष्टी उपयोगरहित थको नजाणें इम ८। उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइपासइ। अगिलाभागा चार तिहा सम्यग्द्दष्टी पणा माटे उपयोग अनुपयोग सहित। तिणि भणी न जाणे इम समस्त भागा १२ जाणवा। सेवभते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् 'तुम्हे कह्यु ते सत्य' छठमसनवमओ

॥ टीका ॥

॥ ९ ॥ प्रा गविशुद्धलेश्यस्य
वाह ॥ एव । हेविल्लेहीत्यादि ॥ वाचनान्तरेतु सर्वमेवेदं साक्षा दृश्यत ॥ इतिषष्ठशतेनवम ॥ ९ ॥ प्रा
ज्ञानाभाव उक्तो ऽथ दशमोद्देशकेपि तमेव दर्शयन्निदमाह ॥ अन्नउत्थीत्यादि ॥ नोचक्कियत्ति ॥ नशक्नुयात् ॥ जावकोलठियमायमवित्ति ॥ आस्ता
यहु २ तर वा , यावत् कुवलास्थिकमात्र मपि तत्र कुवलास्थिक वदरकुलक ॥ निप्फावत्ति ॥ वल्ल ॥ कलत्ति ॥ कलाय ॥ जूयत्ति ॥ यूका ॥ अथ
समित्यादि , दृष्टान्तोपनय एव यथा गन्धपुद्गलाना मतिसूक्ष्मत्वेना मूर्तकल्पत्वा त्कुवलास्थिकमात्रादिक नदर्शयितुं शक्यते' एव सर्वजीवना सुख

॥ मूल ॥

सम्मत्तो ६ ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियाणं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति जावइया रायगिहे
णगरे जीवा एवइयाणं जीवाणं नोचक्किया केइसुहंवा दुहंवा जाव कोलठिगमायमवि निप्फावमायमविकल
ममामवि मासमायमवि मुग्गमायमवि जूयमायमवि लिक्खमायमवि अभिनिवट्टेत्ता उवदंसित्तए से कहमेयं
भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवमाइक्खंति जाव मिच्छंते एव माहंसु अहंपुण ? गोय

॥ भाषा ॥

उद्देशो सम्मत्तो। ए छठ्ठाध्ययनको नवमो उद्देशो अर्थथी कह्यो ६ ॥ ९ ॥ पाछिले उद्देशे अविशुद्धलेश्यावन्तने ज्ञाननो अभावकह्यो, हिवे दशमे
उद्देशे पणि तेहीज देखाडतो कहेछे—अन्नउत्थियाणं तेएवमाइक्खति जावपरूवति। अन्यतीर्थी हेभगवन् ! इमकहे यावत् इम प्ररूपे। जावइयाराय
गिहेणयरेजीवा। जेतला राजगृह नगरनेविषे जीवछे। एवइयाणजीवाण णोचक्कियाकेइ सुहवादुहवा। एतलाजीवने शक्तिवन्तनही कोई किणहीने
एतले जीवने कोई सुखदुख देवाने समर्थनही केतलू सुख दुख ते कहेछे—जावकोलठिगमायमवि । यावत् बोरना कुलिया समान पणि। णिप्फावमा
यमवि कलममायमवि। वालरप्रमाण भालर पणि कलममात्र पणि शालि। मासमायमवि मुग्गमायमवि । उडदमात्र पणि मूगमात्र पणि। जूया
मायमवि लिक्खामायमवि। जूकामात्र पणि लीखमात्र पणि। अभिनिवट्ठेत्ता उवदंसित्तए। शरीरमाहे काढीने दिखाडवाने नही। सेकहमेयंभतेएव।
ते किमके हेभगवन् ! इम इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जणते अन्नउत्थियाएवमाइक्खति हे गौतम ! जेहभणी ते अन्यतीर्थी इम कहेछे । जावमिच्छंतेएव

मा ! एयमाइक्खामि जावपरूवेमि सव्वलोएवियणं सव्वजीवाणं नोचक्किया केइ सुहंवा तंचेव जाव उवदंसित्तए सेकेणठेणं ? गोयमा ! अयन्नं जंबुद्दीवेदीवे जाव विसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ते देवेणं महिड्ढीए जाव महाणुभागे एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गमंगहाय तं अवद्दालेइ अवद्दालेत्ता जाव इणामेवकट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवदीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा सेनूणं ? गोयमा ! सेकेवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे तिहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे, चक्कियाणं गोयमा ! केइतेसिं

माइमु। यावत् भूठां इम काइतां थयां राजग्रहनगरमेविषे भूठाकहवो । मइपुणगोयमा । हूं पणि हेगौतम । एवमाइक्खामि जावपरूवेमि । इम कहूंछू यावत् प्ररूपूंछू । सव्वलोएवियण सव्वजीवाण णोचक्किया । सर्वलोकमेविषे पणि सर्व जीवने समर्थनही । केइ सुहवा दुहंवा । कोई जिणहोने सुख अथवा दुख । तंचेवजावउवदंसित्तए । तिमहीज यावत् देखाडवाने नही । सेकेणठेणभंते । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यूं ॥ गोयमा अयण्ण जबूद्दीवे २ जावविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । हेगौतम । दृष्टान्तोपनयगमेविषे एहीज जबूद्दीपनामा द्वीपमेविषे यावत् विशेषाधिक परिवेढे ते कह्यु । देवेणमहिड्ढिए । देव महर्द्धिक । जावमहाणुभागे । यावत् महानुभाग । एगमहंसविलेवण । एक मोटो विलेपन सहित । गंधसमुग्गमगहाय । सुगन्धनो डाबडो ग्रहीने अथ वंमय सूय । तंअवद्दालेइ तंअवद्दालेत्ता । तेहनो मुख उघाडे तेहनो मुख उघाडाम । जावइणामेवत्तिकट्टु । यावत् इम करीने । केवलकप्पजबूद्दीव । सपूर्ण जबूद्वीपनामा द्वीपप्रतें । तिहिं अच्छराणिवाएहिं । तीनचपटी चिपटीमाहि । तिसत्तखुत्तो । वार २१ । अणुपरियट्टित्ताण । चौफेर दोली फिरीने । हव्वमागच्छेज्जा । उतावलो पाछोआवे । सेणूणगोयमा । ते निश्चे हेगौतम । सेकेवलकप्पे जंबुद्दीवे २ । ते सपूर्ण जबूद्वीपनामा द्वीप । तिहिंघाणपोग्गलेहिं फुडे हंताफुडे । तिणि नासिकाना पुद्गल फरस्या इम भगवते गौतम प्रतें पूछ्यो तिवारे गौतम कहेछे—हांभगवन् ! फरस्या वलीस्वामी बोल्या । चक्कियाण गोयमा । समर्थहुवे हे गौतम । केइतेसिघाणपोग्गलाण । कोई ते सुगंध पुद्गलने । कोलट्ठिमायमवि जावउवदंसित्तएणोइणट्ठे

॥ टीका ॥

स्यदु खस्यवेति, जीवाधिकारा देवेद माह ॥ जीवेण भंते ! जीवेजीवे, इह एकेन जीवशब्देन जीवो गृह्यते द्वितीयेनच चैतन्य मित्यतः प्रश्न उत्तरं पुनर्जीवचैतन्ययो. परस्परे णाविनाभूतत्वात् जीवश्चैतन्यमेव चैतन्यमपि जीवएवे त्येव मर्थ मवगतव्य, नारकादिषु पदेषु पुन जीवत्व मव्यभिचा रि जीवेषुच नारकादित्व व्यभिचारी त्यतआह ॥ जीवेण भंते ! नेरइए इत्यादि, जीवाधिकारा देवाह ॥ जीवतिभते ! जीवे २ जीवइत्ति जीवति

॥ मूल ॥

घाणपोग्गलाणं कोलठिमायमवि जाव उवदंसित्तए णोइणठेसमठे सेतेणठेणं जाव उवदंसित्तए । जीवेणं भंते ! जीवे जीवे ? गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवेवि नियमा जीवे । जीवेणं भंते ! नेरइए नेरइएजीवे ? गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे जीवेपुणसिय नेरइए सिय अनेरइए । जीवेणं भंते ! असुरकुमारे २ जीवे ? गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे जीवे पुण सिय असुरकुमार सियणोअ

॥ भाषा ॥

समठे । बारनी गुठली जवडू पणि इत्यादिक यावत् देखाडवान ए वचन स्वामीयें कह्यु तिवारे ए अर्थ समर्थनहीं । सतणठे जाव उवदसेत्तए । इणें अर्थ हेगौतम । सर्वजीवने सुख दुख कोई देखाडी नसके जीवना अधिकारथीज ए कहेछे—जीवेणभंतेजीवेजीवे गोयमा । जीव हेभगवन् । जीव अथवा जीव एतले स्यू भावार्थ इहा ए भावार्थ इहा एकेद्री जीवशब्दे जीवहीज गृहिये बीजे जीवशब्दे चैतन्यगृहिये एतलेजीव ते जीव कहिये चैतन्यछे अथवा चैतन्य ते जीवछे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जीव अने चैतन्य माहोमाहि अविनाभूतछे । जीवताव णियमाजीवेजीवेविणियमाजीवे । एतले जीव विना चैतन्यनथी चैतन्य विनाजीवनथी तेमाटे जीवने चैतन्यहोज चैतन्य ते पणिजीव होज ए अर्थ जाणवो । जीवेणभंतेणेरइएणेरइएजीवे गोयमा णेर इएताव णियमा जीवे जीवे पुणसियणेरइएसियअणेरइए । जीव हेभगवन् । नारकी अथवा नारकी जीवछे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । नारकीनो नियम जीवछे जेमाटे नारकादि व्यवहार जीवनेज हुवे । अने जीव जो नरकको ऊपनो तो नारकीकहीये अने मनुष्यादि हुवे तो नारकी नही तेमाटे किवारे नारकीछे किवारे नारकीनही । जीवेणभंतेअसुरकुमारेअसुरकुमारे जीवे । जीव हेभगवन् । असुरकुमारदेव अथवा असुरकुमारजीव इतिप्रश्न उत्तर ।

॥ टीका ॥

प्राणान् धारयति य स जीव उत यो जीव स जीवतीति प्रश्न, उत्तरतु यो जीवति स ताव नियमा ज्जीवत्रजीवस्य आयु कर्माभावेन जीवना भावात्, जीवस्तु स्या ज्जीवति स्यान्नजीवति, सिद्धस्य जीवनाभावादिति, नारकादिस्तु नियमा ज्जीवति, ससारिण, सर्वस्य प्राणधारणधर्मक त्वात्, जीवतीति पुन स्यान्नारकादि स्यादनारकादिरिति, प्राणधारणस्य सर्वेषा सद्भावादिति, जीवाधिकारा त्तद्गतामेवा न्यतीर्थिकवक्तव्यता

॥ मूल ॥

सुरकुमारे एवं दंडग्रं भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं । जीवइ भंते ! जीवे जीवेजीवइ ? गोयमा ! जीवइ ताव नियमाजीवे जीवे पुण सिय जीवइ सिय नोजीवइ । जीवइ भंते ! नेरइए २ जीवइ ? गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवइ जीवइपुण सिय नेरइए सिय अनेरइए एव दंडग्रं नेयव्वो जाव वेमाणियाण । भवसिद्धी

॥ भाषा ॥

गोयमा असुरकुमारेतावणियमाजीवे । हेगौतम । असुरकुमार नियमे जीवछे । जीवेपुणसियअसुरकुमारे सियणोअसुरकुमारे । जीव वली किवारे असुरकुमार किवारे नही असुरकुमार मनुष्यादिकने पामवे असुरकुमार न कहीये । एवदंडओभाणियव्वो । इम दंडक कहवो । जाववेमाणियाण । यावत् वेमानिक लगे चउवीस दण्डक कहवा जीवना अधिकारथीज कहेछे—जीवइभतेजीवेजीवे जीवइ । प्राण धरेते हेभगवन् । जीव अथवा जीव ते प्राण धरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवइतावणियमाजीवे जीवे पुणसियजीवइ सियणोजीवइ । हेगौतम । प्राणधरे निचे जीव जाणवो अजीवने आयुकर्मने प्राण धरवाना अभावथी अनेजीव वली किवारे प्राणधरे सर्व ससारीजीवने प्राणना धरवाथी किवारे जीवनधरे सिद्धना जीवने प्राण धरवाना अभावथी । जीवइभंतेणेरइएणेरइएजीवइ । प्राणधरे ते हेभगवन् । नारकी अथवा नारकी ते प्राणधरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइएतावणियमाजीवइ । हेगौतम नारकनो निचे जीवए कहिये प्राणधरे सर्व ससारीजीवने प्राणधारक धर्मपणाथकी । जीवइपुणसियणेरइएसियअणेरइए । प्राणधरेते वली किवारे नारकी हुवे अनारकना जायायकी किवारे नारकी न हुवे पणि प्राणधरवो सर्वने विषेछे । एवदंडओणेयव्वो । इम दंडक जाणवो । जाववेमाणियाण । यावत् वेमानिकपर्यन्त चउवीसेइ कहवा । भवसिद्धिएणंणेरइए । भवसिद्धियो हेभगवन् । णेरइएभवसिद्धिए । नारकी हेभगवन् । भव्य इतिप्रश्न उत्तर । गो

कदाचि रसाता वेदना २ कथमिति उच्यते-उववाएणचसायं नेरइउदेवकम्मुणावावि ॥ आहच्चअसा माह ॥ अन्नउत्थियएत्यादि ॥ आहच्चसायति ॥

एग भंते ! नेरइए नेरइए भवसिद्धीए ? गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए सिय अनेरइए नेरइए सिय भव सिद्धिए सिय अभवसिद्धिए एवं दंडउ जाव वेमाणियाणं । अन्नउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति जावपरू वंति एवंखलु सव्वपाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुख वेयण वेयंति से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जन्नं ते अन्नउत्थिया जाव मिच्छंते एव माहंसु अहंपुण गोयमा ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि अत्थेगइया पाणाभूयाजीवासत्ता एगतदुक्खं वेयणं वेयंति । आहच्चसायं अत्थेगइया पाणाभूया जीवासत्ता एगंतसायं

यमा । भवसिद्धिएसियणेरइए सियअणेरइए । हेगौतम । भव्य किवारे नारकीहुवे नरकगति जाय किवारे अन्यत्र किवारे अनारको मनुष्यादि गतें हुवे। णेरइएसियभवसिद्धिए सियअभवसिद्धिए । नारकी पणि किवारे भव्यहोय भव्यपणानाभावथी किवारे भवसिद्धि कहिये भव्य नहुवे भव्यपणाना अभाव थकी । एवदडओजाववेमाणियाण । इम दंडक यावत् वैमानिक पर्यन्त कहवा जीवना अधिकारथीज ते जीवगत अन्यतीर्थिक वक्तव्यता कहैछे—अ न्नउत्थियाणभंते एवमाइक्खंति जावपरूवेंति । अन्ययूथिक हेभगवन् । इम कहै यावत् प्ररूपें । एवखलुसव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता । इम निश्चै सर्वप्रा णी भूत जीव सत्त्व । एगतदुक्खवेदणवेदेंति । एकात दुख वेदनाप्रतें वेदे । सेकहमेयभतेएव । तेकिम एह हेभगवन् । इम । गोयमा जन्नतेअन्नउत्थिया । हे गौतम । जेहभणी ते अन्यतीर्थिक इम कह्या ते । जावमिच्छंते एवमाहंसु । झूठो सर्वने सरीखो वेदनाना अभावथी । अहंपुणगोयमा । हु वली हे गौत म । एवमाइक्खामि । इम कहुछू । जावपरूवेमि । यावत् प्ररूपूछू । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगतदुक्खवेदण वेदेंति आहच्चसाय । केतला एक प्राणी भूतजीव सत्त्व एकातजीवदुख वेदनाप्रतें वेदे किवारे कें सातावेदनी वेदे ते किम उववाएण वासाय नारकी उपपात अथवा सातावेदउपपा त अपर्याप्ता भणी च्यवनने गतिमा तजिवाथी केतलाएक प्राणी भूत जीव सत्त्व । एगतसायवेदणवेदेंति । एकाते सातावेदनीय वेदेछे । आहच्चअसाय

॥ टीका ॥ यति ॥ देवा आहननप्रियविप्रयोगादि असातां वेदनां वेदयन्तीति ॥ वेमायायत्ति ॥ विविधया मात्रया कदाचि त्साता कदाचि दसाता मित्यर्थः, जीवाधिकारा देवेद माह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ अत्तमायाएत्ति ॥ आत्मनाआदाय गृहीत्वेत्यर्थः, जीवाधिकारा देवेदमाह ॥ आयशरीरेखेत्तोगा

॥ मूल ॥ वेयण वेयंति आहच्च असाय वेयणं वेयंति । अत्थेगइया पाणा ४ वेमायाए वेयण वेयंति आहच्च सायम सायं सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइयाणं एगंतदुक्ख वेयणं वेयंति आहच्च सायं भवणवइवाणमंतरजोइसवेमा णिया एगंतं सायं वेयंति । आहच्च असायं पुढविकाइया जाव मणुस्सा वेमायाए वेयंति । आहच्च सायम सायं सेतेणट्ठेणं । नेरइयाण भंते ! जेपोग्गला अत्तमायाए आहारंति तेकिं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले

॥ भाषा ॥ वेदण वेदेंति । कदाचित् असातावेदना वेदे ते किम देवआहनन प्रियविप्रयोगादिकनेविषे असातावेदनो वेदे तेमाटे कह्यु । अत्थेगइयापाणाभूया जो वा सत्ता वेमायाएवेदणवेदेंति । केतला एक प्राणी भूत जीव सत्त्व वेमात्रायें कालविशेष विना वेदना वेदे । आहच्चसायमसाय । कदाचित् साता कदा चित् असाता वेदे । सेकेणट्ठेणभंते । ते किस्यें अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । गोयमा णेरइयाएगंतदुक्खं वेदणवेदेंति । हेगौतम । नारकी एकांतदुख वेदनाप्रते वेदे । आहच्चसायं । किवारे असातावेदे उपपात च्यवन विरहे । भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया । भवनपती वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिकदेव एगंतसायवेदणवेदेंति आहच्च असाय । एकान्ते सातावेदनो वेदे किवारे असातावेदे देवने प्रहारे तथा देवीने वियोगे । पुढवीकाइयाजावमणूसा । पृथि वीकायिक आदिदेई यावत् मनुष्य एसर्व । । वेमायाएवेदणवेदेंति । वेमात्रायें वेदना वेदे । आहच्चसायमसाय । किवारे साता किवारेअसातावेदे । से तेणट्ठेणगोयमा । ते तेणें अर्थे हेगौतम । इम कह्यु जीवना अधिकारथीज कहेछे—णेरइयाणभंते जेपोग्गलाअत्तमाया एआहारेंति । नारकी हेभगवन् । जे पुद्गल आत्मायेंकरी आदाय कहीये ग्रहीने आहारे । तेकिं आयसरीरखेत्तोगाढेपोग्गलेअत्तमायाएआहारेंति । तेकि स्वशरीर क्षेत्रनेविषे अवगाह्या र ह्या पुद्गल ते आत्मायेंकरी ग्रहीने आहारे अथवा आत्मशरीरावगाहक्षेत्र अपेक्षायें । अणंतरखेत्तोगाढेपोग्गलेअत्तमायाएआहारेंति । अनन्तर अन्तररहित

॥ आत्मशरीरावगाढक्षेत्रापेक्षया यदनन्तर क्षेत्र तत्रावगाढा नित्यर्थ ॥ परंपरखेत्तोगा
ढेत्ति ॥ स्वशरीरक्षेत्रे वस्थिता नित्यर्थः ॥ अणंतरखेत्तोगाढेत्ति ॥ आत्मशरीरावगाढक्षेत्रापेक्षया यदनन्तर ... केवलीणमित्यादिसूत्र तत्रच ॥ आयाणेहित्ति ॥
ढेत्ति ॥ आत्मक्षेत्रानन्तरक्षेत्रा द्यत्परं क्षेत्र तत्रा वगाढा नित्यर्थ ' अत्तमायाएत्युक्त मत आदानसाधर्म्यात् ॥ केवलीणमित्यादिसूत्र तत्रच ॥ आयाणेहित्ति ॥

पोग्गले अत्तमायाए आहारंति परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए
अत्तमाए आहारंति अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति नोअणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अ
आहारंति? गोयमा! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारंति नोअणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अ
त्तमायाए आहारंति नोपरंपरखेत्तोगाढे जहा नेरइया तहा जाव वेमाणियाणं दंडओ। केवलीणं भंते! आ
याणेहिं जाणइ पासइ? गोयमा! नोइणठेसमठे सेकेणठेणं? गोयमा! केवलीणं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ

क्षेत्रअवगाह्य पुद्गल आत्मायेंकरी ग्रहीने आहारे इतिप्रश्न अथवा। परंपरखेत्तोगाढेपोग्गलेअत्तमायाए आहारेंति। आत्मक्षेत्र अनन्तरक्षेत्रथकी जे पर
म्पर अनेरोक्षेत्र तिहां अवगाढ पुद्गल ते आत्मायेकरी ग्रहीने आहारे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आयसरीर खेत्तोगाढेपोग्गले अत्तमायाय आहारेंति।
हेगौतम। स्वशरीर क्षेत्रनेविषे अवगाहीरह्या पुद्गल ते आत्मायेंकरी ग्रहीने आहारे। णोअणंतरखेत्तोगाढेपोग्गले अत्तमायायअहारेंति। नही अनन्त
र क्षेत्रावगाढ पुद्गलआत्मायेंकरी ग्रहीने आहारे। णोपरंपरखेत्तोगाढे जहाणेरइए तहाजावबेमाणियाणदंडओ। नही परंपरक्षेत्रावगाढ यावत् आहा
रे जिम नारकीकह्या तिम यावत् वेमानिकपर्यन्त चउवीसदण्डक कहवा। केवलीणभंते आयाणेहि जाणइ पासइ। केवली हेभगवन्। इन्द्रियेंकरी
जाणे देखे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणठे समठे। हेगौतम। ए अर्थ समर्थनही। सेकेणठेणभंतेएववुच्चइ। ते स्यें अर्थे हेभगवन्। इमकह्यु। गोयमा
केवलीण पुरच्छिमेणंमियपिजाणइ अमियपिजाणइ। हेगौतम। केवली पूर्वें मितमानोपेत जाणे अमित पणिजाणे। जावणिव्वुडेदसणेकेवलिस्स सेतेण
ठेण। यावत् निरावरणदर्शन केवलीनेछे तेतलालगे कहवो। गाहा। गाथा—जीवाणयसुहदुक्ख जीवेजीवइतहेवभवियाय। एगतदुक्खवेयण अत्तमाया
यकेवली ॥ १ ॥ जीवमे सुख दुख ए अधिकार कह्यु जीव योग्य प्राणजीव तिमहीज भव्यजीव जोवभव्य एकात दुख वेदना आत्मायें ग्रहीने केवली

॥ टीका ॥ इन्द्रियं दशमोद्देशकार्थसङ्ग्रहाय गाथा ॥ जीवाणमित्यादि ॥ गतार्थो ॥ इतिषष्ठशतेदशमोद्देशक ॥ षष्ठशतविवरणात समाप्तम् ॥ १० ॥

॥ मूल ॥ अमियंपि जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स सेतेणठेणं जीवाणयसुहंदुक्ख जीवेजीवइ तहेवजावियाय। एगं तदुक्खवेयण अत्तमायायकेवली सेवं भंते २ त्ति॥ छठसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ६ ॥ १० ॥ छठंसयंसम्मत्तं ६ ॥

॥ भाषा ॥ ए अधिकार। सेवभते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे। छठ्ठाय सम्मत्त। ए छठो शतक सर्पयो सम्यो १० ॥ ६ ॥

मुद्राराहस्त्रकिरणे ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी।
पुस्तककमलविकासी द्युनिवांजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

व्याख्यात जीवाद्यर्थप्रतिपादन
प्रतीत्यभेदकिलनालिकेर षष्ठंशततम्मतिदन्तजन्जि । तथापिविद्वत्सभसच्छिलायां नियोज्यनीतस्वपरोपयोग ॥ १ ॥ व्याख्यात जीवाद्यर्थप्रतिपादन
पर षष्ठ शत' मथ जीवाद्यर्थप्रतिपादनपरमेव सप्तमशत व्याख्यायते, तत्र चादावेवो द्देशकार्थसङ्ग्रहगाथा ॥ आहारेत्यादि । तत्र ॥ आहारत्ति ॥ आ
हारकानाहारकवक्तव्यतार्थ प्रथम. ॥ विरइत्ति ॥ प्रत्याख्यानार्थो द्वितीय ॥ थावरत्ति ॥ वनस्पतिवक्तव्यतार्थ स्तृतीय ॥ जीवत्ति ॥ ससारिजीव
प्रज्ञापनार्थ श्चतुर्थः ॥ पक्खीयत्ति ॥ खचरजीवयोनिवक्तव्यतार्थः पञ्चम ॥ आउत्ति ॥ आयुष्कवक्तव्यतार्थ षष्ठ ॥ अणगारेत्ति ॥ अनगारवक्तव्यता
र्थ सप्तम ॥ छउमत्थत्ति ॥ छद्मस्थमनुष्यवक्तव्यतार्थो ऽष्टमः ॥ असवुडत्ति ॥ असवृतानगार वक्तव्यतार्थो नवम ॥ अण्णउत्थियत्ति ॥ कालोदायिप्र
भृतिपरतीर्थिकवक्तव्यतार्थो दशमइति ॥ कसमयंअणाहारएत्ति ॥ परभव गच्छन् कस्मिन् समये ऽनाहारको भवतीति प्रश्न, उत्तरतु यदा जीव

॥ मूल ॥

आहारविरतिथावर जीवपक्खीयआउअणगारे । छउमत्थासंवुडअ णउत्थिदससत्तमंमिसए ॥ १ ॥ तेण का
लेण तेण समएणं जाव एवं वयासी जीवेण भंते ! कंसमयमणाहारए भवइ ? गोयमा ! पढमे समये

॥ अनुवाद ॥

श्रीअर्हद्भ्योनम ॥ आहारविरतिस्थावर जीवपक्ष्यायुरनगाराः । छद्मस्थासवृतान्य यूथिकइतिदशसप्तमशतके ॥ १ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये याव
देव मवादीत्–जीवो भ भदत । कस्मिन्समये ऽनाहारको भवति ? गौतम । प्रथमेसमये स्यादाहारक' स्यादनाहारको, द्वितीयसमये स्यादाहार

॥ भाषा ॥

पाछिलेशतकेजीवादिपदार्थकह्या, हिवे सातमे पणि तेहीज कहेछे, सग्रहगाथा—आहारविरइथावर जीवपक्खीयआउअणगारे । छउमत्थासवुडअ
णउत्थिदससत्तमम्मिसए ॥ १ ॥ आहारक अनाहारकविचार १ पच्चक्खाणविचार २ वनस्पती विचार ३ ससारीजीवनो विचार ४ पखीनीयोनिनो वि
चार ५ आऊखानाविचार ६ अणगारनो विचार ७ छद्मस्थमनुष्यनो विचार ८ असवरी अणगार ६ अन्यतीर्थी कालोदाईविचार १० ए दश उद्देशासातमा
शतकनेविषे जाणवा । तेणकालेण तेणसमएणं । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । जावएववयासी । यावत् इमकहै । जीवेणंभंतेकसमय मणाहारएभवइ ।

॥ टीका ॥

ऋजुगत्योत्पादस्थानं गच्छति तदा परभवायुषः प्रथमसमय एव आहारको भवति, यदा तु विग्रहगत्या गच्छति तदा प्रथमसमये वक्रे ऽनाहारको भवति, उत्पत्तिस्थानानवाप्तौ तदाहरणीयपुद्गलानामभावात् इत आह ॥ पढमेसमए सिय आहारए सिय अणाहारएत्ति ॥ तथा यदा एकेन वक्रेण द्वाभ्यां समयाभ्या मुत्पद्यते तदा प्रथमे ऽनाहारको द्वितीये त्वाहारको, यदा तु वक्रद्वयेन त्रिभिः समयै रुत्पद्यते तदा प्रथमे द्वितीयेचानाहारक इत्यत आह ॥ बीयसमये सिय आहारए सिय अणाहारएत्ति ॥ तथा यदा वक्रद्वयेनत्रिभिः समयै रुत्पद्यते तदा द्वयो रनाहारक स्तृतीये त्वाहारको, यदा तु वक्रत्रयेण चतुर्भिः समयै रुत्पद्यते तदाद्ये समयत्रये ऽनाहारक श्चतुर्थेतु नियमा दाहारक इतिकृत्वा तइएसमएसियइत्याद्युक्तं, वक्रत्रयं चैवंभवति–नाड्या बहि र्विदिग्व्यवस्थितस्य सतो यस्या धोलोका दूर्द्ध्वलोके उत्पादो नाड्या बहिरेव दिशि भवति सो वश्य मेकेन सम

॥ मूल ॥

सिय आहारए सिय अणाहारए बितिए समये सिय आहारए सिय अणाहारए तइएसमए सिय आहारए

॥ अनुवाद ॥

क स्यादनाहारक, स्तृतीयेसमये स्यादाहारक स्यादनाहारक, श्चतुर्थे समये नियमा दाहारक एव दण्डक, जीवा एकेन्द्रियाश्च चतुर्थसमये, शेषा

॥ भाषा ॥

जीव हेभगवन् । परभवजातो किणसमे अनाहारीहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पढमेसमएसियआहारए सियअणाहारए । हेगौतम । पहिलेसमये किवारे आहारक हुवे जिवारे जीव ऋजुगति उपजवाने स्थानकेजाय तिवारे परभवनो आऊखो तथा आहार पहिलेसमये हुवे जिवारे विग्रहगते जाय तिहा पहिलेसमए विग्रहनेविषे अनाहारकहुवे उत्पत्तिस्थानक पाम्याविना ते आहारकरवायोग्य पुद्गलना अभावथी तेमाटे कह्यु, पढमेसमएसियआहारएसियअणाहारए। बितिएसमएसियआहारए सियअणाहारए। तिवारे एकवक्रकरी बीजे समए उपजे तिवारे पहिलेसमए अनाहारक बीजेसमए आहारक तथा जिवारे दोयवक्रकरी समये उपजे तिवारे पहिलेसमये दोयें अनाहारक एतलामाटेज कहेछे–बितिएसमएसियआहारए सियअणाहारए। तइएसमएसियआहारए सियअणाहारए। जिवारे दोयसमयनी विग्रहगतिहुवे तिवारे नेसमये अणाहारीबीजेसमये आहारी जिवारे ती

॥ टीका ॥

उत्पद्यते, येन विश्रेणितः समश्रेणीं प्रतिपद्यते, द्वितीयेन नाडीं प्रविशति, तृतीयेनोर्द्धलोकं गच्छति, चतुर्थेन लोकनाडीतो निर्गत्योत्पत्तिस्थानमुत्पद्यते, इह चाद्ये समयत्रये वक्रत्रयमवगन्तव्यं समश्रेण्यैव गमनात्' अन्यत्वाहु—वक्रचतुष्टयमपि सम्भवति यदाहि विदिशो विदिश्येवोत्पद्यते तत्र समयत्रय प्राग्वत् चतुर्थसमयेतु नाडीतो निर्गत्य समश्रेणिं प्रतिपद्यते, पञ्चमेन तूत्पत्तिस्थानं प्राप्नोति, तत्र चाद्ये समयचतुष्टये वक्रचतुष्कं स्यात्तत्र चानाहारकइति इदञ्च सूत्रे न दर्शितं प्रायेणेत्यमनुत्पत्तेरिति ॥ एवदण्डोत्ति ॥ अमुना त्रिलापेन चतुर्विंशतिदण्डको वाच्य' स्तत्रच जीवपदमेकेन्द्रियपदेषु च पूर्वोक्तभावनयैव चतुर्थे समये नियमादाहारक इतिवाच्य शेषेषुतु पदेषु तृतीयसमये नियमादाहारक इति' तत्र यो नारकादिस्त्रसेष्वेवोत्पद्यते तस्य नाड्या बहिस्तादागमनं गमनञ्च नास्तीति तृतीयसमये नियमादाहारकत्व' तथाहि—योमत्स्यादिर्भरतस्य पूर्वभागादैरवतपश्चिमभागस्याधोनरकेषूत्पद्यते स एकेन समयेन भरतस्य पूर्वभागात् पश्चिमं भागं याति, द्वितीयेनतु तत ऐरवतपश्चिमं भागं ततस्तृतीयेन नरकमिति, अत्र चाद्ययोरनाहारक स्तृतीये त्वाहारक एतदेव दर्शयति ॥ जीवाय एगिंदियाय चउत्थे समये सेसा तइयसमयत्ति ॥ कसमय

॥ मूल ॥

सिय अणाहारए चउत्थेसमए नियमा आहारए एवं दंडग्रो जीवाय एगिंदियाय चउत्थेसमए, सेसा तइए

॥ भाषा ॥

न समयनो विग्रहगतिकरो चोथेसमये उपजे तिवारे तीनसमये अनाहारक । चउत्थेसमएणियमाआहारए। चौथे समयेतो निश्चे आहारकहुवे इम करीने कहेछे—तइएसमएसियआहारए इत्यादि तेहनो कारण कहेछे—त्रसनाडीथी बाहिरिकोईएक जीव अधोलोकनेविषे विदिशिरह्यो मरणपामी उर्द्धलोकनेविषे त्रसनाडीथी बाहिर उपजणहारछे ते जीव निश्चे एकसमये विषमश्रेणीथी समश्रेणीपडिवजे बीजेसमये त्रसनाडीमा प्रवेशकरे त्रीजेसमये उर्द्धलोकंजाय चौथेसमये नाडि बाहिरनोकलो उत्पत्तिठेने उपजे, इहा जे पहिला तीनसमय अणाहारी समश्रेणी करोनेज गमनछे चौथेसमये आहारक नियमेहुवे । एवदंडग्रो जीवायएगिंदियाय चउत्थेसमएसेसातइएसमए । इम इणि आलावेंकरी चउवीस दंडक कहवा, तिहाजीवपदे तथा एकेन्द्रियपदनेविषे पूर्वोक्तभावनायेंकरी चौथासमयनेविषे निश्चेथकी आहारकहुवे इम कहवा शेषदंडकनेविषे त्रीजेसमये आहारकनियमथको कहवो तिहा ज ना

॥ टीका ॥

सव्वप्पाहारएत्ति ॥ कस्मिन् समये सर्वाल्प सर्वथा स्तोको न यस्मा दन्य स्तोकतरो स्ति स ग्राहारो यस्य स सर्वाल्पाहार मगव सर्वाल्पाहार क ॥ पढमसमयोववण्णएत्ति ॥ प्रथमसमय उत्पन्नस्य यस्य प्रथमोवा, समयो यत्र त त्प्रथमममय तदुत्पन्न मुत्पत्ति र्यस्य स तथा उत्पत्ते प्रथमस मय इत्यर्थ , तदाहारग्रहणहेतो शरीरस्या ल्पत्वा त्सर्वाल्पाहारता जवतीति ॥ चरमसमयजवत्येवत्ति ॥ चरमसमये जवस्य जीवितस्य तिष्ठति य स तथा आयुष श्चरमसमयइत्यर्थ , तदानी प्रदेशाना सहृतत्वेना ल्पेषु शरीरावयवपु स्थितत्वा त्सर्वाल्पाहारतेति अनाहारकत्वच जीवाना विशेषतो लोकसस्थानवशा द्भवतीति लोकप्ररूपणासूत्र ॥ सुपइट्ठगसठिएत्ति ॥ सुप्रतिष्ठक शरावयन्त्रक तच्चेह उपरिस्थापितकलशादिक ग्राह्य त

॥ मूल ॥

समए । जीवेणं नते ! कंसमयं सव्वप्पाहारए नवइ ? गोयमा ! पढमसमयोववण्णएवा चरिमसमयन्नवत्थेवा एत्थणं जीवे सव्वप्पाहारए नवइ, दंमर्ज नाणियव्वो जाव वेमाणियाणं । किंसंठिएणं नते ! लोए पणत्ते

अनुवाद

तृतीयेसमये । जीवो ण नदंत । कस्मिन्समये सर्वाल्पाहारको नवति ? गौतम । प्रथमसमयोत्पन्नकोवा चरमसमयनवस्थोवा अत्र ण जीव सर्वाल्पाहारको नवति, दण्डको नणितव्यो यावद्वैमानिका । किंसस्थितो ण नदंत ! लोक प्रज्ञप्त ? गौतम ! सुप्रतिष्ठकसस्थितो लोक प्रज्ञप्त, अधो

॥ भाषा ॥

रकादि वसनेपिपे उपजे तेहनेनाडियको बाहिरगमन आगमन नहीं तेमाटे त्रीजेमनवे नियमथको आहारकपणोंहुवे । जीवाणभंतेकसमयसव्वप्पाहार ए भवइ । जीव हेभगवन् । किसे समये सर्वथी स्तोकआहारीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पढमसमयोववण्णएवा । हेगौतम । पहिलेसमये अल्पशरीर तिणिभणी अल्पाहारी । चरिमसमयभवत्थेवा एत्थणजीवासव्वप्पाहारए भवइ दण्डओभाणियव्वो । छेहले समये जीवप्रदेश सहरीने अल्पशरीरने रहै ति हाअल्पाहारीहुवे इमदण्डक । जाववेमाणियाण । यावत् वेमानिकपर्यन्त चउवीस दण्डककहवा । किसंठिएणभंतेलोए पणत्ते । किसे संस्थाने हेभगवन् ! लोकक ह्यो इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा सुपइट्ठगसंठिएलोएपण्णत्ते । हेठिंविच्छिण्णे जावउप्पिउद्धमुइंगाकारसंठिए । हेगौतम ! शरावपक शरावलो तेहने संस्थाने तथाविधपणे

॥ टीका ॥

याविधेनैव लोकसादृश्योपपत्तेरिति, एतस्यैव भावनार्थमाह ॥ हेठाविच्छिन्नेइत्यादि ॥ यावत्करणा न्मके सखित्ते उप्पि विशाले अहे पलियकस ठाणसठिए मज्के वरवइरविग्गहिएत्तिदृश्य, व्याख्या चास्य प्राग्वदिति' अनन्तर लोकस्वरूप मुक्त तत्रच य त्केवली करोति त द्दर्शयन्नाह ॥ तं सीत्यादि ॥ अतकरेइ इत्यत्र क्रियोक्ता, ऽथ तद्विशेषमेव श्रमणोपासकस्य दर्शयन्नाह ॥ समणेत्यादि ॥ सामाइयकडस्सत्ति ॥ कृतसामायिकस्य तथा श्रमणोपाश्रये साधुवसता वासीनस्य तिष्ठत ॥ तस्सत्ति ॥ यो यथार्थ स्तस्य श्रमणोपासकस्येति, किला कृतसामायिकस्य तथा साध्वाश्रये ऽनवति

॥ मूल ॥

? गोयमा ! सुपइठगसठिए लोए हेठाविच्छिन्ने जाव उप्पिं उड्ढमुइंगागारसंठिए, तसि उप्पन्ननाणदसण धरे अरहा जिणे केवली जीवेवि जाणइ पासइ, ततपच्छा सिज्झइ जाव अंतकरेइ । समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स तस्सणं भंते ! कि इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपरा

अनुवाद

विस्तीर्णो याव दुपरि ऊर्द्ध्वमृदगाकारसस्थित स्तस्मिलुत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽर्हन् जिन' केवली जीवोपि जानातिपश्यति तत पश्चा त्सिध्यति या व दतकरोति । श्रमणोपासकस्य ण भदत । कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य तस्य ण भदंत । किमैर्यापथिकी क्रिया कृता भवति साप

॥ भाषा ॥

जकरी लोकपणानी उपपत्तिके तेहनांज भावार्थ कहैछे—नीचे विस्तीर्ण यावत् ऊपर ऊंचो मृदङ्गाकारे जाणवो अनन्तरे लोकस्वरूपकह्यु ते लोकनेविषै जे केवलीकरै ते देखाडेछे—तसिचणसासयसिलोगसिहेठाविच्छिन्नसि जावउप्पि उढ्ढमुइ गाकारसठियसि । तेहने सातमालोकनेविषे हेठे विस्तीर्णनेविषे यावत् ऊपर ऊर्द्ध्वमृद गाकारनेविषे। उप्पन्ननाणदसणधरे। ऊपना ज्ञानदर्शनना धरणहार। अरहाजिणकेवली। अरहत जिन केवली। जीवेविजाणइ२ तओपच्छासिज्झइ। जीव परिजाणे अजीवपणिजाणे तिवारपछी सीझै। जावअतकरेइ। यावत् सर्वदुक्खनो अन्तकरे। हिवे अन्तकरे इहा क्रियाकह्ी ते विशेषथकीज श्रमणोपासक कहता श्रावकने देखाडतो कहैछे—समणोवासगस्सणभतेसामाइयकडस्ससमणोवस्सए । श्रमणोपासक कहिये श्राव

॥ टीका ॥

छमानस्य भवति सांपरायिकी क्रिया, विशेषणद्वययोगे पुन रैर्यापथिकी युक्ता निरुद्धकषायत्वा दित्याशङ्कातो यं प्रश्न, उत्तरंतु ॥ आयाहिगरणी भवइत्ति ॥ आत्मा जीवो ऽधिकरणानि हलशकटादीनि कषायाश्रयभूतानि यस्य सन्ति सोऽधिकरणी ततश्च ॥ आयाहिगरणवत्तियचणंति ॥ आत्मनो धिकरणानि आत्माधिकरणानि तान्येव प्रत्यय· कारणं यत्र क्रियाकरणे तदात्माधिकरणप्रत्ययं साम्परायिकी क्रिया क्रियतइतियोग , श्रमणो

॥ मूल ॥

इयाकिरिया कज्जइ ? गोयमा ! नोइरियावहिया कज्जइ संपराइयाकिरिया किरियाकज्जइ सेकेणट्ठेण जाव संपराइया ? गोयमा ! समणोवासयस्सण सामाइयकडस्स समणोवस्सए अत्थमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं चणं तस्सनोइरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइयाकिरिया कज्जइ, सेतेण

अनुवाद

रायिकी क्रिया कृता भवति ? गौतम ! नोऐर्यापथिकीक्रिया कृताभवति साम्परायिकीक्रिया कृताभवति, तत्केनार्थेन यावत् सांपरायिकी ? गौतम ! श्रमणोपासकस्य कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य आत्मा अधिकरणीभवति आत्माधिकरणप्रत्ययं (क्रियाविशेषणमेतत्) तस्य न ऐर्यापथिकीक्रिया कृताभवति सांपरायिकीक्रिया कृताभवति तत्तेनार्थेन । श्रमणोपासकस्य णं भदंत ! पूर्वमेवत्रसप्राणसमारंभ प्रत्याख्यातो भवति पृ

॥ भाषा ॥

कने हेभगवन् ! केइवांछे श्रावकसामायिक कीवांछे जिणे तेहने उपाश्रयनेविषे रह्याने । अत्थमाणस्स । सामायिक निश्चये रह्याने । तस्सणंतेकिइरियावहिया किरियाकज्जइ । तेहने हेभगवन् ! स्यूं इरियावही क्रियाकरे अथवा । सांपराइयाकज्जइ । संपराइकीक्रिया करे इतिप्रश्न उतर । गोयमा णो इरियावहियाकिरियाकज्जइ । हेगौतम ! इरियावहीक्रिया नकरे । संपराइयाकिरियाकज्जइ । सांपरायिकीक्रिया करे । सेकेणट्ठेणंभंतेजावसंपराइयाकिरियाकज्जइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कह्यु यावत् सांपरायिकी क्रियाकरे । गोयमा समणोवासगस्सण सामाइयकडस्ससमणोवासए । हेगौतम ! श्रमणोपासकने सामायिक कीधाने उपाश्रय रह्याने । अत्थमाणस्स । सामायिक निश्चेरह्या तेहने । आयाअहिगरणीभवइ । आत्मा जीव हल शकटादि

॥ टीका ॥ पासकाधिकारादेव समणोवासगेत्यादि प्रकरणं, तत्रच ॥ तसपाणसमारंभेत्ति ॥ त्रसवधः ॥ नोखलु सेतस्स अइवायाए आउट्टइत्ति ॥ न खल्वसौ

॥ मूल ॥ ठेण । समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भ वइ, सेय पुढविंखणमाणे अन्नयरं तसपाणं विहिंसेज्जा, सेणं भंते! तंवय अइचरइ? गोयमा णो इणट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टइ। समणोवासयस्सणं भंते! पुव्वामेव वणप्फइसमारंभे पच्चक्खाए सेय पुढविंखण

॥ अनुवाद ॥ थिवीसमारम्भो ऽप्रत्याख्यातो भवति सच पृथिवी खनन्नन्यतरं त्रस प्राणं विहिंसेत् स णं भदंत । तद्व्रत मतिचरति ? (अतिक्रामतीत्यर्थ) गौ तम । नायमर्थ समर्थ, नखलु स तस्यातिपाताय (वधाय) वर्तते (प्रवर्तते) श्रमणोपासकस्य णं भदंत । पूर्वमेव वनस्पतिसमारम्भ प्रत्याख्यात: सच पृथिवी खनन्नन्यतरस्य वृक्षस्य मूलं छिन्द्यात्, सणं भदंत । तद्व्रत मतिचरति ? नायमर्थ समर्थ, नखलु सतस्यातिपातायां वर्तते । श्रम

॥ भाषा ॥ क कषायना आश्रयभूत जे हनेछे ते अधिकरणी कहीये तेहुने । आयाहिगरणवत्तियचउ । आत्माना जे अधिकरण तेहीज प्रत्ययकारण जे क्रिया कर णनेछे ते आत्माधिकरणप्रत्ययकहीने तेहने इरियावहीक्रिया करे। संपराइयाकिरियाकज्जइ । संपरायिकीक्रिया करे। सेतेणट्ठेण। ते तेणे अर्थे हेभग वन्! इमकह्यो । समणोवासगस्सणभंतेपुव्वामेवतसपाणसमारंभेपच्चक्खाएभवइ । श्रमणोपासकना अधिकारथीज कहेछे—श्रमणोपासकने हेभगवन्! पूर्वेहीज त्रसप्राणनो वध हणवो ते पच्चख्युछे । पुढविसमारंभेअपच्चक्खाएभवइ । पृथिवीकायनो हणवो पचख्यांनथी । सेयपुढविंखणमाणे । ते श्रावक चपुन पृथिवीकाय खणतोथको । अन्नयरंतसपाणंविहिंसेज्जा । कोइएक बीजो त्रसप्राण हणायछे । सेणंभंतेतंवयअइचरइ। ते श्रावक हेभगवन्! ते त्रसवधपच्चक्खाणरूप व्रतने उलंघे अर्थात् व्रतभंगकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम । ए अर्थ समर्थ नथी। णो खलुतेतस्सअइवायाए आउट्टइ । नहीनिश्चे ते श्रावक ते त्रस प्राणना संकल्पनेकाजे प्रवर्त्ते संकल्पीने वधकरवो तेथकी निवर्त्योछे एहने ते संकल्प न थ

॥ टीका॥ तस्य नसप्राणस्या तिपाताय वधाया वर्त्तते प्रवर्त्तत इति, नसङ्कल्पवधो ऽसौ सङ्कल्पवधा देवच निवृत्तो सो नवैषं तस्य सपनइति नासा वति

॥ मूल ॥ माणे अस्सयरस्स रुक्खस्स मूल छिंदेज्जा सेणं भंते ! वयं अतिचरति ? णोइणट्ठे, नोखलु से तस्स अइवा याए आउट्टइ । समणोवासएणं भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसा इमेणं पडिलाभेमाणे किंलब्भइ ? गोयमा ! समणोवासएणं तहारूव समणंवा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स

अनुवाद गोपासको णा भदत । तथारूपं श्रमणंवा माहनंवा प्रासुकैषणीयेना शनपानखादिमस्वादिमेन प्रतिलाभयन् (लाभवतकुर्वन्' दद भितियावत्) किलभते ? (प्राप्नोति) गौतम । श्रमणोपासको णा तथाविध श्रमणंवा याव दशनादिना प्रतिलाभयन् तथारूपस्य श्रमणस्यवा माहनस्यवा समाधि मुत्पादयति समाधिकारको णा तामेव समाधि प्रतिलभते । श्रमणोपासको णा भदत। तथारूप श्रमणंवा माहनंवा यावदशनादिनाप्रतिलाभयन्

॥ भाषा ॥ गी । समणोवासगन्नणभंते पुव्वामेवतसपाणसमारंभेपञ्चक्खाए । श्रमणोपासकने हेभगवन् । पूर्वेत्रीज वनस्पतीकायनो समारंभ पञ्चक्खोके । सेयपुढविंखण माणे । ते श्रावक पृथिवी खणतोथको । अण्णयरस्सरुक्खस्समूलंछिंदेज्जा । कोइएक वृक्षना मूलप्रतें छेदे । सेणंभंतेतंवयंअइचरइ । ते श्रावक हेभगवन् । ते व्रतने अतिचारे इतिप्रश्न उत्तर । णोइणट्ठे समट्ठे । ए अर्थ समर्थनथी । णोखलुसेतस्सअइवायाएआउट्टइ । नही निश्चे ते श्रावक तेहने हणवानेकाजे प्रवर्त्ते सकल्पकरे । समणोवासएणभंतेतहारूवसमणवामाहणवा । ते श्रावक हेभगवन् । तथारूपयाग्य श्रमणप्रते माहणप्रतें । फासूएसणिज्जेण । फासूअचित्त दोषरहित । असण पाणखाइमसाइमेण । अशन पान खादिम स्वादिमेकरी । पडिलाभेमाणेकिंलभइ । प्रतिलाभतोथको स्यूंलाभे स्यूंपामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा समणोवासएण । हेगौतम । श्रमणोपासक । तहारूवसमणवा माहणवा । तथारूप तथाविध श्रमण माहनप्रतें । जावपडिलाभेमाणे । यावत् प्रतिलाभतोथको दानदेतोथको । तहारूवस्ससमणस्सवा माहणस्सवा । तथारूपने श्रमणने माहनने । समाहिंउप्पाएइ । समाधिप्रते उपजावे । समाहिका

॥ टीका ॥

चरति व्रत ॥ किंचयइत्ति ॥ किंददातीत्यर्थ ॥ जीवियचयइत्ति ॥ जीवितमिव ददा त्यन्नादिद्रव्यं यच्छञ्जीवितस्येव त्याग करोतीत्यर्थ , जीवितस्येवा न्नादिद्रव्यस्य दुस्त्यजत्वा' देतदेवाह ॥ दुच्चयचयइत्ति ॥ दुस्त्यज मेत त्यागस्य दुष्करत्वा' देतदेवाह ॥ दुष्कर करोतीति, अथवा, किं त्यजति किं विरह्यति ? उच्यते जीवितमिव जीवित कर्म्मणो दीर्घा स्थिति ॥ दुच्चयति ॥ दुष्ट कर्म्मद्रव्यसचय ॥ दुक्करति ॥ दुष्कर मपूर्वकरणतो ग्रन्थिभेदं' त तश्च ॥ दुल्लभलभइत्ति ॥ अनिवृत्तिकरण लभते, ततश्च ॥ बोहिबुज्झइत्ति ॥ बोधि सम्यग्दर्शन बुध्यते ऽनुभवति, इहच श्रमणोपासक साधूपास नामात्रकारी ग्राह्य स्तदपेक्षयैवा स्यसूत्रार्थस्य घटमानत्वात् ॥ तउपच्छत्ति ॥ तदनन्तर सिध्यतीति प्राग्वत्, अन्यत्रा प्युक्त दानविशेषस्य बोधिगु

॥ मूल ॥

समणस्सवा माहणस्सवा समाहि उप्पाएइ, समाहिकारएणं तामेवसमाहिं पडिलभइ। समणोवासएणं भंते ! तहारूवं समणंवा जाव पडिलाभेमाणे किंचयइ ? गोयमा ! जीवियं चयइ, दुच्चयं चयइ, दुक्करं करेइ,

अनुवाद

कित्यजति ? गौ० ! जीवित मिवत्यजति दुस्त्यज त्यजति दुष्करकरोति दुर्लभलभते बोधिबुध्यते तत पश्चा त्सिध्यति याव दन्त करोति । अस्ति

॥ भाषा ॥

रएण । ते समाधिनोकारक ण वाक्यालकारे । तामेवसमाहिंपडिलभइ । तेहीज समाधिप्रतें पामे । समणोवासएणभंते । श्रमणोपासक हेभगवन् ' त हारूवसमणवा । तथारूप श्रमणमाहनप्रतें । जावपडिलाभेमाणेकिंचयइ । यावत् प्रतिलाभतोथको काइं दे अथवा काइं तजे इतिप्रश्न हेगौतम । जी वित कहिये कर्मनी दीर्घस्थिति तेहप्रतेंतजे कर्मद्रव्यनो जे सचय तेहप्रतें तजे दुखे करवायोग्य जे अपूर्वकरण तेणेंकरी ग्रन्थिभेदकरे दुर्लभ जे अनिवृत्तिकर ण ते लभे तिवारपछे सम्यग्दर्शनप्रतें अनुभवे इहा श्रमणोपासक साधुउपासना मात्रकारी ग्रहवो तेहनी अपेक्षामाटे ,तओपच्छत्ति, तिवारपछे सीझे यावत् अष्टकर्मनो अतकरे उत्तर। गोयमा जीवियचयइ । हेगौतम । जीवितव्यनीपरे अन्नादिक द्रव्यदे । दुच्चयचयइ दुक्करकरेइ दुल्लहलहइ । अन्नादिक दुस्त्यजछे ते तजे जेमाटे दुष्कर करणीकरे तिवारें दुर्लभ क्षपकश्रेणी लाभे ॥ बोहिबुज्झइ । सम्यग्दर्शन बूझे । तओपच्छासिज्झइ जावअतकरेइ । तिवारप

॥ टीका ॥

गत्व, यदाह—अणुकपकामणिज्जर बालतवेदाणविणएत्यादि । तद्यथा— केईतेणेवभवे णिव्वुयासव्वकम्मउमुक्का केईतइयभवेण सिज्झस्सतीजिणसगा सेत्ति ॥ १ ॥ अनन्तर मकर्मत्व मुक्त मतो ऽकर्मसूत्र ॥ गईपन्नायइत्ति ॥ गतिः प्रज्ञायते ऽभ्युपगम्यत इतियावत् ॥ निस्सगयाएत्ति ॥ निःसङ्गतया कर्ममलापगमेन ॥ निरंगणयाएत्ति ॥ नीरागतया मोहापगमेन ॥ गइपरिणामेणंति ॥ गतिस्वभावतया अलाबुद्रव्यस्येव ॥ बंधणच्छेयणयाएत्ति ॥

॥ मूल ॥

दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तउपच्छा सिज्झइ, जाव अंतं करेइ । अत्थिणं भंते! अकम्मस्सगई पन्नायइ हंताअत्थि । कहिणं भंते ! अकम्मस्स गईपन्नायइ ? गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गइपरिणामेणं बंधणच्छेयणयाए निरिंधणयाए पुव्वप्पयोगेणं अकम्मस्स गई पन्नायइ । कहिणं भंते! निस्संगयाए निरंगण

॥ अनुवाद ॥

ण भदत । अकर्मणोगति ? प्रज्ञायते ? (अकर्मणोजीवस्यगतेरस्तित्वमभ्युपगम स्वीकारश्चेतिप्रश्नद्वय) हतास्ति के (करणे) णं पूज्य । अकर्मणोगति प्रज्ञायते ? गौतम । निस्सङ्गतया नीरागतया गतिपरिणामेन बन्धनच्छेदनतया निरिन्धनतया पूर्वप्रयोगेण कर्मणोगतिः प्रज्ञायते । कथ ण भ

॥ भाषा ॥

छो सीझै यावत् सर्वदुखनो अतकरे पाछे अकर्मपणो कह्यु एतलामाटे अकर्मसूत्र कहैछे—अत्थिणभंतेअकम्मस्सगईपन्नायइ । छे हेभगवन् । जेहनेकर्मनही त अकर्मने गती मोक्षगति जाणीये इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हागौतम । छे । कहन्नभंतेअकम्मस्सगई पन्नायइ । किम ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । अकर्मने मोक्षगति जाणीये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णिस्सगताए णिरगणताए । हे गौतम । कर्ममल टालवेकरी निरगपणे मोहने टालवेकरीने । गइपरिणामेण बधणच्छेदणयाए निरिंधणयाए । गतिस्वभावेकरी तूबडी नीपरे कर्मबन्धने छेदवेकरीने एरडबीज नीपरे कर्मइधणरहित धूमनीपरे । पुव्वप्पओगेणअकम्मस्सगई पन्नत्ता । सकर्मनेविषे गतिपरिणामविशेषे करीने बाणनीपरे अकर्मगति कही एहीज विवरणकरतो कहैछे—कहन्नंभंतेणिस्सगयाए । किम हेभगवन् । कर्ममल टालवे करीने । णिरगणयाए गइपरिणामेण अकम्मस्सगई पन्नायइ । निरागपणे मोहनेटालवेकरीने गतिस्वभावेकरी तूंबडीनो

॥ टीका ॥

कर्मबन्धनछेदनेन एरण्डफलस्येव ॥ निरंधणयाएत्ति ॥ कर्मेन्धनविमोचनेन धूमस्येव ॥ पुव्वप्पओगेणंति ॥ सकर्मतायां गतिपरिणामवत्त्वेन बाणस्येवे ति, एतदेव विवृण्वन्नाह ॥ कहण्णमित्यादि ॥ निरुवहयति ॥ वाताद्यनुपहत ॥ दब्भेहियत्ति ॥ दर्भै समूलै ॥ कुसेहियत्ति ॥ कुशै दर्भैरेव छिन्नमू लै ॥ भूइभूइत्ति ॥ भूयोभूय ॥ अत्थाहेत्यादि ॥ इहमकारौ प्राकृतप्रभवावतो ऽस्ताघे ऽतएवा तारे ऽतएवा पौरुषेये ऽपुरुषप्रमाणे ॥ कलसिव

॥ मूल ॥

याए गइपरिणामेणं अकम्मस्स गई पन्नायइ ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे सुक्कं तुवं निच्छिद्दं निरु वहयं आणुपुव्वीए परिकम्ममाणे २ दब्भेहिय कुसेहिय वेढेई अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ, उण्हं दलयइ, भूइं भूइं सुक्कंसमाणं अत्थाहमतारमपोरुसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा से नूणं ? गोयमा ! सेतुंबे तेसिं अट्ठ

अनुवाद

दत । निस्सङ्गतया नीरागतया गतिपरिणामेना कर्मणोगति प्रज्ञायते ? गौतम । सयथानामक कश्चित्पुरुष शुष्क तुंब निश्छिद्र निरुपहत आनु पूर्व्या (नुक्रमेण) परिकुर्वन् (सस्कुर्वन्) दर्भैश्च कुशैश्च वेष्टय त्यष्टभि मृत्तिकालेपे लिम्पति लिम्पयित्वा उष्णे (आतपे) स्थापयति भूयोभूय' शुष्क सन्त मस्ताघातारापौरुषिके (अस्ताघेऽगाधे, अतारेतर्तुमशक्ये, अपौरुषिके पुरुषेणप्रमातुमशक्ये) उदके प्रक्षिपेत् तन्नून गौतम । सतुंब स्तेषाम

॥ भाषा ॥

परे अकर्मने मोक्षगति जाणिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहानामए केइपुरिसे सुक्कतुंब । हेगौतम । ते यथानाम दृष्टान्ते कोई पुरुष सूखो तूंबडो । नि च्छिद्द निरुवहय आणुपुव्वीए । छिद्ररहित वायुप्रमुखेंकरी नथी हणाणो अनुक्रमे । परिकम्ममाणे २ । परिकर्मना करतायका २ । दब्भेहिय कुसेहि य वेढेइ । मूलसहित डाभे करीने जेहनो मूलछेद्यो एहवो डाभ ते कुसकहिये तिणे वींटे । अट्ठहिंमट्टियालेवेहिं लिपइ २ त्ता । आठ मृत्तिकाना लेप ति णेकरी लीपे लीपीने । उण्हंदलयइ भूइ भूइसुक्कसमाणं । तावडे दे बार बार एकेकलेपदेईने सुकावे इत्यर्थ ते सूकोथको । अत्थाहमतारमपोरिसिय सिउदगंसिपक्खिवेज्जा । जहनो थाहनहीं जे तरीनजाय पुरुषप्रमाणथकी अधिको एहवो जल तेहनेविषे ते तूंबडो नाखे । सेणूणं गोयमा सेतुंबे । ते

॥ मूल ॥

रहंमट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुयसंभारियत्ताए सलिलतल मइवइत्ता अहे धरणितलपइठाणे भवइ ? हंता हवइ, अहेणं सेतुवे तेसिं अठरहंमट्टियालेवाणंपरिक्खएणं धरणितलमइवइत्ता उप्पिंसलिल-पइठाणे भवइ ? हंता भवइ, एवंखलु ? गोयमा ! निस्संगयाए निरंगणयाए गतिपरिणामेण अकम्मस्स गईपसायइ। कहणं भंते ! बंधणच्छेयणयाए अकम्मस्स गई पसत्ता ? गोयमा ! सेजहानामए कलसिंबलि-

अनुवाद

ष्टानां मृत्तिकालेपाना गुरुकतया भारिकतया गुरुकसम्भारिकतया सलिलतलमतित्यज्या धोधरणीतलप्रतिष्ठानो भवति ? (जलाधस्तनदेश गच्छति) हत भवति, अथ सतुव स्तपा मष्टाना मृत्तिकालेपाना परिक्षयेण धरणीतल मतित्यज्य त्यक्षोपरि सलिलप्रतिष्ठानो (जलोपरि) भवति ? हत भवति' एवं खलु गौतम ! निस्सङ्गतया नीरागतया गतिपरिणामेना कर्मणो गति' प्रज्ञायते। कथं ग भदत। बन्धनच्छेदनतया ऽकर्मणो गति प्रज्ञायते ? गौतम। तद्यथानामक (यथादृष्टान्तमित्यर्थ) कलायशिंबिकावा मुद्गशिंबिकावा माषशिंबिकावा शिंबलिशिंबिकावा एरण्डमिञ्जिकावा ऊर्ध्व(आत

॥ भाषा ॥

निश्चे हेगौतम। ते तूंबडो। तेसिअठगह मट्टियालेवाण। ते आठ माटीने लेपेंकरी। गुरुयत्ताए भारियत्ताए। विस्तीर्णपणेंकरी भारीपणेंकरी। गुरुसभा रियत्ताए। विस्तीर्ण भारी दोनूपणेकरी। सलिलतलमइवइत्ता। पाणीने तले जाईने। अहेधरणितलपइठाणेभवइ। हेठे धरतीतल प्रतिष्ठानहुवे एत ले वरतोऊपररहै इम स्वामी पूछायका गौतम कहैछे—हताभवइ। हा स्वामी रहै। अहेणसेतुवेतेसि अठ्ठरहमट्टियालेवाणपरिक्खएण। हिवे ते तूंबडो तेहने आठ माटानालेप चवेंकरी। धरणितलमइवइत्ता। पृथिवीनो तलो छाडे छाडोने उप्पिसलिलतलपइठाणे भवइ। ऊपर पाणीना तलाने प्रतिष्ठा नहुवे ऊपररहै इतिप्रश्न उत्तर। हताभवइ। हा स्वामिन्। हुवे। एवंखलुगोयमा णिस्संगयाए निरगणयाए। इम निश्चे हे गौतम! ते तूंबडानीपरे कर्म मल टालवेकरी निरागपणें मोहने टालवेकरी। गइपरिणामेण। गतिस्वभावेकरी तूंबडोनीपरे। अकम्मस्सगईपणावई। अकर्मने मोक्षगति जाणिये।

॥ टीका ॥

थयो यत्र सावेकान्त एक इत्यर्थो ऽत स्त अन्त भूभाग गच्छति, इहच बीजस्य गमनेपि यत् कलायसिम्बलिकादे स्तदुक्त तत्तयो रजेटोपचारादि लियाइवा ॥ कलायाभिधानधान्यफलिका ॥ सिंबलित्ति ॥ वृक्षविशेष ॥ एरंडमिंजिया ॥ एरण्डफल ॥ एगंतमतगच्छइत्ति ॥ एक इत्येव सन्तो निं

॥ मूल ॥

याइवा मुग्गसिंबलियाइवा माससिंबलियाइवा सिंबलिसिंबलियाइवा एरंडमिंजियाइवा उण्हेदिन्ना सु क्कासमाणी फुडित्ताणं एगतमतं गच्छइ, एवंखलु गोयमा। कहण्णं भंते! निरिंधणयाए अकम्मस्सगई? गो यमा! सेजहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढवीससाए निव्वाघाएणं गई पवत्तइ, एवंखलु गोयमा।

॥ अनुवाद ॥

पे) दत्ता (स्थापिता) शुष्कासती स्फुटित्वा वा एकान्तान्तगच्छति एवखलु गौतम। कथ वा भदत! निरिन्धनतया ऽकर्मणो गति प्रज्ञायते? गौतम! त द्यथानामक (यथादृष्टान्त) धूमस्येन्धनविप्रमुक्तस्य ऊर्द्ध विस्त्रसया निर्व्याघातेन गति प्रवर्तते एवखलु गौतम। कथवा भदन्त! पूर्वप्रयोगेणा कर्म

॥ भाषा ॥

कहण्णभंतेबंधणच्छेयणयाए। किम हेभगवन्! कर्मबन्धन छेदवेकरी। अकम्मस्सगईपण्णत्ता। अकर्मने मोक्षगतिकही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेजहानाम ए। हेगौतम। ते यथानाम दृष्टांते। कलिसिंबलियाइवा। कलायरा धाननी फली अथवा। मुग्गसिंबलियाइवा माससिंबलियाइवा। मूंगनीफली उडद नीफली अथवा। सिंबलिसिंबलियाइवा। सिंबलिनी फली। एरडमिंजियाइवा। एरडनी मींजो। उण्हेदिन्नासुक्कासमाणी। तावडे दीधी सुकायथी थ की। फुडित्ताणएगतमतगच्छइ। फाटीने एकातस्थानक भूभागनेविषे जाय नीकलीपडे। एवखलु गोयमा। इम निश्चे हे गौतम। बंधन छेदनेंकरी अक र्मने गतिकही। कहण्णंभंते निरंधणयाए। किम हे भगवन्! कर्मइंधनरहितपणेकरी। अकम्मस्सगई प०। अकर्मने मोक्षगतिकही इतिप्रश्न उत्तर। गोय मा सेजहानामएधूमस्स। हेगौतम। ते यथानाम दृष्टांते धूमाडाने। इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढवीससाए। इंधणथकी मूकाणा जीवो स्वभावेकरी। निव्वा घाएणगईपवत्तइ एवखलुगोयमा। कटादिक आच्छादन अभावथकी गति पवर्त्ते इम निश्चे हेगौतम। कर्म इंधनरहित अकर्मने गतिकही। कहण्णं भंते

टीका

ति ॥ उर्द्धगमगति ॥ ऊर्द्धं गिगनया [illegible]

सकर्माणो वक्तव्यतामाह ॥ दुक्खीत्ति दुःखिकर्मणि ॥ [illegible]

मूल

कहणं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए कण्णस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स ल
क्खाभिमुहं निव्वाघाएणं गई पवत्तइ एवामेव गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पवत्तइ, एवं खलु गोयमा !
नीसंगयाए निरंगणयाए जाव पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गई पवत्तइ । दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? गोयमा !

पदार्थ

[illegible]

[illegible]

भावार्थ

[illegible]

॥ टीका ॥

टो वद्र ॥ नोअदुक्खीत्यादि ॥ नो नैवा दु खी अकर्मा दु खेन स्पृष्ट सिद्धस्यापि तत्प्रसङ्गादिति ॥ एव पचदण्डगागोयवृत्ति ॥ एव मित्यनन्तरोक्ता टो वद्र ॥ नोअदुक्खीत्यादि ॥ दु खी दुक्ख परियाडयइति द्वितीय, स्तत्र दु खी कर्मवान् दु क्खकर्म प त्रिलापेन पञ्चदण्डका नेतव्या स्तत्र दु खी दु खेन स्पृष्ट इत्येक उक्तएव ॥ दु खी दुक्ख परियाडयइति द्वितीय, ॥ उदीरेइत्ति ॥ तृतीय ॥ वेएइत्ति ॥ चतुर्थ । निज्जरेइत्ति ॥ पञ्चम ' उदीरणावदननिर्जर र्यादादाति सामस्त्येनो पादत्ते निधत्तादि करोतीत्यर्थ ॥ उदीरेइत्ति ॥ तृतीय ॥ वेएइत्ति ॥ चतुर्थ । निज्जरेइत्ति ॥ पञ्चम

॥ मूल ॥

दुक्खी दुक्खेणं फुडे नोअदुक्खी दुक्खेणं फुडे। दुक्खीणंते! नेरइए दुक्खेणं फुडे अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे? गोय मा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे नोअदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे एव दण्डगो जाव वेमाणियाणं एव पच दण्डगा नेयव्वा। दुक्खीदुक्खेणं फुडे दुक्खी दुक्ख परियाइयइ दुक्खीदुक्खंउदीरेइ दुक्खीदुक्खंवेएइ दुक्खीदुक्खनिज्जरेइ। अ

॥ अनुवाद ॥

दु खेन स्पृष्ट ? गौतम । दु खीदुःखेनस्पृष्ट नोअदु खी दु खेन स्पृष्ट । दुखी भदत ! नैरयिको दु खेन स्पृष्ट अदु खी नैरयिको दु खेन स्पृष्ट ? गौतम । दु खी नैरयिको दु खेन स्पृष्ट नोअदु खी नैरयिको दु खेन स्पृष्ट , एव दण्डको यावद्वैमानिका एवपञ्चदण्डकानेतव्या । दु खी दु खेन स्पृ ष्ट १ दु खी दु ख पर्याददाति २ दु खी दु ख उदीरयति ३ दु खी दु ख वेदयति ४ दु खी दु ख निर्जरयति ५ ॥ अनगारस्य भदत । अनुपयुक्त

॥ भाषा ॥

कर्मीछे कर्मरहित ते दुखकर्मकरी फरस्यो जो फरसे तो सिद्ध पणि कर्मतो सगहुवे तेमाट, दुखी हेभगवन् । नारको दुखसघाते फरस्यो अथवा । अदुक्खो गोरइए दुक्खेणफुडे । अदुखा नारको दुखसघाते फरस्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुक्खीणेरइए दुक्खेणफुडे । हेगौतम । दुखी नारको दुखसघाते फरस्यो । गोअदुक्खो णेरइए दुक्खेणफुडे । नही अदुखीनारको नारको दुख स्यू फरस्यो । एवदडओजायवेमाणियाण । इम दडक यावत् वेमानिकपर्यन्त क वा । एवचदडगाणेयव्वा । इम अनन्तरोक्त आलावेकरी पञ्च दण्डक कहवा । दुक्खी दुक्खेणफुडे दुक्खीदुक्ख परियाइयइ । तिहा दुखी दुखेकरी फरस्यो ए एक आलावो इम जोवकर्मवन्त कर्म समस्तपणे करी निकाचितकरै वधादिभेद गहै एबोजो आलावो २ । दुक्खीदुक्खउदीरेइ । कर्मवन्त जीवकर्म उ

नानितु व्याख्यातानि प्रागिति. कर्मवन्धाधिकारात् कर्मवन्धक्रियान्वित मणगारस्स सूत्र' अनगाराधिकारात् तस्य चरितार्थसूत्राणि. तत्र ॥ टीका ॥

अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा ३ अणाउत्तं वत्थपडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा नि ॥ मूल ॥
क्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहियाकिरिया कज्जइ संपराइयाकिरिया कज्जइ ? गोयमा ! नो
इरियावहियाकिरिया कज्जइ संपराइयाकिरिया कज्जइ। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जस्स णं कोहमाणमायालोभा

गच्छत स्तिष्ठतो निषीदतः स्वपतो वा अनुपयुक्तं वस्त्रप्रतिग्रहं कम्बलं पादप्रोञ्छनं गृह्णतो वा निक्षिपतो वा तस्य भगवन् ! किमैर्यापथिकी क्रिया ॥ अनुवाद ॥
क्रियते भवति साम्परायिकी क्रिया कृता भवति ? गौतम ! नो ऐर्यापथिकी क्रिया कृता भवति साम्परायिकी क्रिया कृता भवति । तत् केनार्थेन - गौ
तम ! यस्य क्रोधमानमायालोभा व्यवच्छिन्ना भवन्ति तस्यैर्यापथिकी क्रिया कृता भवति यस्य क्रोधमानमायालोभा अव्यवच्छिन्ना भवन्ति तस्य साम्प

[illegible] ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वीति ॥ अनुदिता ॥ सइंगालस्सत्ति ॥ चारित्रेन्धनमङ्गार मिव यः करोति भोजनविषयरागाग्नि सोङ्गारएवोच्यते तेन सह य द्वर्तते पानकादि त
त्साङ्गार तस्य ॥ सधूमस्सत्ति ॥ चारित्रेन्धनधूमहेतुत्वा द्धूमो द्वेष स्तेनसह यत्पानकादि तत्सधूम तस्य ॥ सजोयणादोसदुट्ठस्सत्ति ॥ सयोजना द्रव्य

॥ मूल ॥

वोच्छिन्ना भवति तस्सणं इरियावहियाकिरिया कज्जइ, जस्सण कोहमाणमायालोभा अवोच्छिन्ना भवति तस्सण संपराइयाकिरिया कज्जइ, अहासुत्त रियमाणस्स इरियावहियाकिरिया कज्जइ, उस्सुत्त रियमाणस्स संपराइयाकिरिया कज्जइ, सेणं उस्सुत्तमेव रियइ सेतेण०। अह भंते! सइंगालस्स सधूमस्स सजोयणादोसदु

॥ अनुवाद ॥

गच्छत ऐर्यापथिकीक्रिया कृता भवति, उत्सूत्र गच्छत साम्परायिकीक्रिया कृताभवति
रायिकीक्रिया कृताभवति यथासूत्र (सूत्रानुसारेणेत्यर्थ) गच्छत ऐर्यापथिकीक्रिया कृता भवति, उत्सूत्र गच्छत साम्परायिकीक्रिया कृताभवति
स उत्सूत्रमेव गच्छति तत्तेनार्थेन, । अथ भदत । साङ्गारस्य सधूमस्य सयोजनादोषदुष्टस्य पानभोजनस्य कोर्थ प्रज्ञप्त ? गौ०। योनिर्ग्रन्थ साधुर्वा

॥ भाषा ॥

तर गोयमा जस्सण कोह माण माया लोभा वोच्छिन्नाभवति। हे गोतम । जेहना क्रोध मान माया लोभ ए कषाय उदयनहोय उपशमक तथा क्षपकहुवे ।
तस्सण इरियावहियाकिरियाकज्जइ । तेहने इरियावहीक्रिया हुवे । जस्सण कोह माण माया लोभा अवोच्छिन्नाभवति । जेहने क्रोध मान माया लोभ
वोच्छिन्न नहुवे एतल उदयवन्तहुवे । तस्सणसपराइयाकिरियाकज्जइ । तेहने सापरायिकीक्रिया हुवे । अहासुत्तरियमाणस्सइरियावहियाकिरियाकज्ज
इ । यथा सूत्रमाहिकह्यु तिम चालताने इरिया वहियाक्रिया हुवे । उस्सुत्तरीयमाणस्ससपराइयाकिरियाकज्जइ । उत् सूत्र विपरीत चालताने सापरा
यिकीक्रिया हुवे । सेणउस्सुत्तमेवरियइ । तेह ण वाक्यालकारे, उत्सूत्रहीज उपराठोहीज चालेछे । सेतेणठ्ठेण। तेणे अर्थे हे गौतम । इमकह्यो । अहभते
सइंगालस्स सधूमस्स सजोयणा दोस दुठ्ठस्स पाणभोयणस्स कअठ्ठे पणत्ते। हिवे हेभगवन् । चारित्रइ धनप्रते अगारसरीखो जे आहार करतोकरै भोजन
विषयरागरूप अगिनसो तेणेसहित तेहनो १ चारित्ररूप इधनप्रते धूमकहिये द्वेष ते सहित जे पानादिक तेहने २ द्रव्यनी सयोजना गुणविशेषने अ

स्य गुणविशेषार्थं द्रव्यान्तरेण योजन सैव दोष स्तेन दुष्ट य त्त तथा तस्य ॥ जेणंति ॥ विभक्तिपरिणामा द्य आहार माहारयतीति सम्बन्ध ॥ मुच्छियत्ति ॥ मोहवान् दोषानभिज्ञत्वात् ॥ गिद्धेत्ति ॥ तद्विशेषाकाङ्क्षावान् ॥ गढियत्ति ॥ तद्गतस्नेहतन्तुभि सन्दर्भित ॥ अज्झोववण्णेत्ति ॥ तदेकाग्रता गत· ॥ आहार आहारेइत्ति ॥ भोजन करोति ॥ एसणंति ॥ एष आहार· साङ्गार पानभोजन ॥ महयाअप्पत्तियंति ॥ मह दप्रीतिक मप्रेम ॥

ठस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेणं निग्गंथेवा निग्गंथीवा फासुएसणिज्जं असणपाण २ पडिग्गहेत्ता संमुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे आहारं आहारेइ, एसणं गोयमा ! सइंगाले पाणभोयणे। जेणं निग्गंथेवा निग्गंथीवा फासुएसणिज्जं असणं ४ पडिग्गहेत्ता महयाअप्पत्तियकोहकिलामं करेमाणे आ

निर्ग्रन्था साध्वीवा प्रासुकैषणीय अशन पान खादिम स्वादिम परिगृह्य मूर्च्छितो गृद्धो ग्रथितो ऽध्योपपन्न आहार माहारयति एष गौ०। साङ्गार पानभोजन। यो निर्ग्रन्थोवा निर्ग्रन्थीवा प्रासुकैषणीय अशनादि ४ परिगृह्य महदप्रीतिकक्रोधक्लाम कुर्व न्नाहार माहारयति एष गौ०। सधूम पान

में द्रव्यान्तर सघाते जोडे एहवेकरी दुष्ट ज पान भोजन तेहनो स्यो अर्थ कह्यो इतिप्रश्न उत्तर गोयमा। जेणंणिग्गंथेवा णिग्गंथीवा फासूएसणिज्जं। हे गौतमजेहसाधु अथवा साध्वी अचित्त दोष ४२ रहित। असणपाणखाइमसाइमपडिग्गहेत्तामुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववणे आहार माहारेइ एसण। असन १ पान २ खादिम ३ स्वादिम ४ पडिगाहीने लेईने मोहवन्तथको दोषना अणजाणवा थको तेहनेविषे विशेषे कांक्षावन्त तें आहार रागतंतु तन्तुने गूथाणू तेहनेविषे एकाग्रपणापने पाम्यो एहवोथको आहारकरे एहगतिकालकार। गोयमा सइंगाले पाणभोयणे। हेगौतम। सअंगार पान भोजन कहीये। जेणंणिग्गंथेवा णिग्गंथीवा। जे साधु अथवा साध्वी। फासुएसणिज्जं। अचित्त ४२ दूषणरहित। असण ४ पडिग्गहेत्ता। असन पान खादिम स्वादिम ग्रहीने। महया अप्पत्तियकोहकिलामकरेमाणेआहारमाहारेइ। मोटो अप्रीति अप्रमभावेकरी क्रोध अभिभूतपणाथको शरीर खेदकार

॥ टीका ॥ कोट्टकिलामति ॥ क्रोधात् क्लम शरीरायास क्रोधक्लमो त त्तं ॥ गुणुप्पायणहेउंति ॥ रसविशेषोत्पादनायेत्यर्थ' ॥ वीइंगालस्सेत्ति ॥ वीतो गतो

॥ मूल ॥ हार माहारेइ, एसणं गोयमा ! सधूमे पाणभोयणे। जेण निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अन्न दव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहार माहारेइ एसणं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाणभोयणे एएण गोयमा ! सइं गालस्स सधूमस्स सजोयणादोसदुट्ठस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते। अह भंते! वीइंगालस्स वीयधूमस्स संजो यणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स केअट्ठे पन्नत्ते ? गोयमा ! जेण निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता असंभु

॥ अनुवाद ॥ भोजनस्य कोर्थ प्रज्ञप्त. ? गौ० । यो निर्ग्रंथोवा याव त्परिगृह्या मूर्च्छितो यावदाहारयति एष गौ० । वीताङ्गार पानभोजन । यो निर्ग्रंथोवा याव त्परि प गौतम । सागारस्य सधूमस्य सयोजनादोषदुष्टस्य पानभोजनस्यार्थ प्रज्ञप्त' ॥ अथ भदन्त । वीताङ्गारस्य वीतधूमस्य सयोजनादोषविप्रमुक्तस्य पान भोजन । यो निर्ग्रंथोवा याव त्परिगृह्य गुणोत्पादनहेतु मन्यद्रव्येण सार्द्ध सयोज्या हारमाहारयति एष गौतम । सयोजनादोषदुष्ट पानभोजन । ए

॥ भाषा ॥ ता थका ते आहार आहारतोथको एतला वानाकरे । एसण गोयमा । एह हे गौतम । सधूमेपाणभोयणे । धूमसहित पान भोजन कहीये । जेणगिग्ग थेवा जावपडिग्गहेत्ता । जेह साधु अथवा साध्वी आहार अचित्त निरदूषणप्रतें लेईने । गुणुप्पायणहेउ । गुण जे रसविशेष नीपजावणने अर्थे । अन्नद व्वेणंसद्धिसंजोएत्ता । अनेराद्रव्य सघाते जोडीने मेलीने । आहारमाहारेइ । आहारप्रते करे । एसण गोयमा । एह ण वाक्यालकारे, हेगौ तम । संजोयणादोसदुट्ठे पाणभोयणे एसण गोयमा । सयोजना दोष दुष्ट पान भोजन कह्यो एह हेगौतम । सइंगालस्स सधूमस्स । अंगारनो सधूमनो । संजोयणादोसदुट्ठस्स । सयोजना दोष दुष्टनो । पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते । पान भोजननो अर्थकह्यो । अहभंतेवीइंगालस्सवीयधूमस्स । हिवे हेभगवन् । वीत कहीये गयो अगार जेहथी तेहनो धूम दोष रहितनो । संजोयणादोसविप्पमुक्कस्सपाणभोयणस्सकेअट्ठे पन्नत्ते । घृतादि द्रव्यमेली आहार करवो ते दोषरहितनो पान भोजननो स्यू अर्थ कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । जेणगिग्गथेवा जावपडिग्गहेत्ता । हे गौतम । जेह साधु अथवा साधवी फा

॥ टीका॥
ङ्गारो रागो यस्मा त द्वीताङ्गारं ॥ खेत्ताइक्कतस्सत्ति ॥ क्षेत्र सूर्यसम्बन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थं ' तदतिक्रान्त यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तं तस्य ॥ काला

॥ मूल ॥
च्छिए जाव आहारेइ, एसण गोयमा! वीइंगाले पाणभोयणे। जेणं निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता नोमह या अप्पत्तियं जाव आहारेइ, एसण गोयमा! वीयधूमे पाणभोयणे। जेण निग्गंथेवा जाव पडिग्गहेत्ता जहालद्धं तहा आहारमाहारेइ, एसणं गोयमा! संजोयणादोसविप्पमुक्के पाणभोयणे, एसणं गोयमा! वीइंगालस्स वीयधूमस्स संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते। अहभंते खेत्ताइक्कंतस्स

अनुवाद
गृह्य नोमहद्‌प्रीतिकयावदाहारयति एष गौतम। वीतधूमपानभोजन। यो निर्ग्रंथोवा यावत्परिगृह्य यथालब्ध तथाहारमाहारयति एष गौ०। सयोजनादोषविप्रमुक्तं पानभोजन। एषगौ०। वीताङ्गारस्य वीतधूमस्य सयोजनादोषविप्रमुक्तस्य पानभोजनस्यार्थः प्रज्ञप्त ॥ अथ भदन्त। क्षेत्रातिक्रान्तस्य

॥ भाषा ॥
सूअचित्त यावत् आहारलेईने। अमूर्च्छिएजावआहारेइ एसण गोयमा। मोहवंत नहुवे कायावत्तनहुवे एहवोयको यावत् आहारकरे एह हे गौतम। वीइगाले पाणभोयणे। अगार दूषणरहित पानभोजनकहीये। जेणंनिग्गंथेवा जावपडिग्गहेत्ता। जेह साधु अथवा साधवी अचित्त दूषणरहित यावत् आहारलेईने। णोमहयाअप्पत्तियजावआहारेइ। नही मोटो अप्रीति उत्कट वैररहित यावत् आहारकरे। एसणगोयमा। एह ण वाक्यालंकार, ह गौतम। वीयधूमे पाणभोयणे। धूमदूषणरहित पान भोजनकह्यो। जेणंनिग्गंथेवा जावपडिग्गहेत्ता। साधु अथवा साधवी अचित्तदूषणरहित आहारलेईने। जहालद्धंतहाआहारमाहारेइ एसण गोयमा। जिम जिसो गृहस्थ पासे लाधो तिम तिसोआहार एह हे गौतम। संजोयणादोसविप्पमुक्के पाणभोयणे एसण गोयमा। सयोजनादोष विप्रमुक्त कहतां मूकाणो पान भोजनकह्यो एह हेगौतम। वीतिगालस्स वीयधूमस्स। अंगार दूषण रहितनो धूमदूषण रहितनो। संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाणभोयणस्सअट्ठेपन्नत्ते। सयोजना दोष विप्रमुक्त पान भोजननो अर्थकह्यो ते जाणवो। अहभंतेखेत्ताइक्कंतस्स कालाइक्कंतस्स। हिवे हेभगवन्। क्षेत्र सूर्यसबधी तापक्षेत्र दिन इत्यर्थ ते अतिक्रम्यो ते क्षेत्रातिक्रात तेह दिनना प्रहर तीन

॥ टीका ॥

मगाइक्कंतस्सत्ति ॥ अर्द्धयोजन मतिक्रान्तस्य ॥ पमाणाइक्कंतस्स इक्कंतस्सत्ति ॥ काल दिवसस्य प्रहरत्रयलक्षण मतिक्रान्त कालातिक्रान्तं तस्य ॥

॥ मूल ॥

कालाइक्कंतस्स मग्गाइक्कंतस्स पमाणाइक्कंतस्स पाणभोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? गोयमा ! जेण निग्गंथेवा फासुएसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गहित्ता उग्गएसूरिए आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! खेत्ताइक्कंते पाणभोयणे । जेणं निग्गंथेवा जाव साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गहेत्ता पच्छिमंपोरिसिं उवायणावित्ता आहार माहारेइ, एसणं गोयमा ! कालाइक्कंते पाणभोयणे । जेण नि

॥ अनुवाद ॥

कालातिक्रान्तस्य मार्गातिक्रान्तस्य प्रमाणातिक्रान्तस्य पानभोजनस्य कोर्थः प्रज्ञप्त ? गौ० । यो निर्ग्रन्थोवा निर्ग्रन्थ्यावा प्रासुकैषणीय मशन पान खादिम स्वादिम मनुद्गतेसूर्ये परिगृह्यो द्गतेसूर्ये आहार माहारयति एष गौ० । क्षेत्रातिक्रान्त पानभोजनं । यो निर्ग्रन्थोवा यावत् स्वादिमं प्रथमायां पौरुष्या प्रतिगृह्य पश्चिमां पौरुषी मुपादापय्या हारमाहारयति एष गौ० । कालातिक्रान्त पानभोजन । यो निर्ग्रन्थोवा याव स्वादिमं प्रतिगृह्य

॥ भाषा ॥

पमाणाइक्कंतस्स पाणभोयणस्सकेअट्ठे पण्णत्ते । व लक्षण ते अतिक्रम्यो जे ते कालातिक्रांत तेहनो । मग्गाइक्कंतस्स । मार्ग अर्द्धयोजनप्रतें अतिक्रांतमें । पमाणाइक्कंतस्स पाणभोयणस्सकेअट्ठे पण्णत्ते । व त्रीस कवललक्षण तेह अतिक्रम्यो जे ते प्रमाणातिक्रान्तनो एहवा पान भोजननो स्यूं अर्थकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेणणिग्गथोवा णिग्गथीवा । फासुएसणिज्जं । फासूअचित्त ४२ दूषणरहित । असणपाणखाइमसाइम । अशन पान खादिम स्वादिमप्रतें । अणु हेगौतम । साधु अथवा साधवी । फासूएसणिज्ज । उग्गएसूरिएआहारमाहारेइ एसणगोयमा । सूर्य उगायका आहार आहारे भोजनकरे ए उग्गएसूरिएपडिग्गहेत्ता । सूर्य विणउगे प्रतिलाभीने लेइने । खेत्तातिक्रान्त पान भोजनकह्यो जेह साधु अथवासाधवी अचित्त निर्दोष । जा ह ण वाक्यालंकारे, हे गौतम । खेत्ताइक्क तेपाणभोयणे जेणंणिग्गथोवा । यावत् अशन पान खादिम स्वादिम प्रतें पहिली पोरिसीने विषे पडिगाहीने लेइने । पच्छिमपोरिसिउ वसाइम ४ पढमाएपोरिसीएपडिग्गहेत्ता । पाछिली पोरिसी प्रते चौथेपहरे पामीने आहारप्रतें आहारे । एसणं गोयमा कालाइक्कंते पाणभोयणे । एहहेगौतम वायणावित्ता आहारमाहारेइ ।

॥ टीका ॥

त्ति ॥ द्वात्रिंशत्कवललक्षणप्रमाण मतिक्रान्तस्य ॥ उवाइणावित्तित्ति ॥ उपादापय्य प्रापय्येत्यर्थं ॥ परअद्धजोयणमेराएत्ति ॥ अर्द्धयोजनलक्षणमर्यादा या परतइत्यर्थः ॥ वीइक्कमावइत्तत्ति ॥ व्यतिक्रमय्य नीत्वेत्यर्थ ॥ कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्तागति ॥ कुक्कुट्यण्डकस्य यत्प्रमाण मान तत्परिमाण मान येषाते तथा, अथवा, कुटीव कुटीरकमिव जीवस्या श्रयत्वात् कुटी शरीर कुत्सिता अशुचिप्रायत्वात् कुटी कुकुटी तस्या अण्डकमिवा अण्डक मुदरपूर कत्वा दाहार, कुकुट्यण्डक तस्य प्रमाणतो मात्रा द्वात्रिंशत्तमांशरूपा येषाते कुकुट्यण्डकप्रमाणमात्रा अत स्तेषा, अयमभिप्रायो यावान् यस्य पुरुष

॥ मूल ॥

ग्गंथे जाव साइमं पडिग्गहित्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावइत्ता आहार माहारेइ, एसण गोयमा! मग्गाइक्कंते पाणभोयणे। जेणं निग्गंथेवा फासुएसणिज्जेण जाव साइम पडिग्गहित्ता परबत्तीसाए कुक्कुडि अंडगप्पमाणमेत्ताणं कवलाण आहारमाहारेइ, एसणं गोयमा! पमाणाइक्कंत पाणभोयणे। अट्ठकुक्कुडि

॥ अनुवाद ॥

परतो अर्द्धयोजनमर्यादाया व्यतिक्रमय्या हार माहारयति एष गौ०। मार्गातिक्रान्त पानभोजन। यो निर्ग्रन्थोवा निर्ग्रन्थ्यावा प्रासुकैषणीय याव त्स्वा दिम पतिगृह्य परतो द्वात्रिंशतः कुकुट्यण्डक प्रमाणमात्राणा कवलाना माहार माहारयति एष गौ०। प्रमाणातिक्रान्त पानभोजन। अष्टकुकु

॥ भाषा ॥

कालातिक्रान्त पान भोजनकह्यो। जेणणिग्गथोवा २। जेह साधु अथवा साधवी। जावसाइमपडिग्गहेत्ता। यावत् स्वादिमपर्यन्त लेइने। परअद्धजोय णमेराएवीइक्कमावइत्ता। उपरान्त अर्द्धयोजन लक्षण मर्यादा व्यतिव्रजीने लेजाइने। आहारमाहारेइ। भोजनप्रते करे। एसण गोयमा। एह हेगौत म। मग्गाइक्कंतेपाणभोयणे। मार्गातिकान्त पान भोजनकह्यो। जेणणिग्गथोवाणिग्गथोवाफासूएसणिज्ज। जेह साधु अथवा साध्वी अचित्त दूषण रहि त। जावसाइमपडिग्गहेत्ता परबत्तीसाएकुक्कुडिअडगप्पमाणमेत्ताणंकवलाण आहारमाहारेइ। यावत् स्वादिमप्रतें प्रतिलाभीने पर कहता उपरान्त एत ले उत्कृष्ट.ने बत्रीस कुकडोनाइडानो जे प्रमाणमानछे जेहनो अथवा कुकुटीनोपरे जीवना आश्रयपणाभणी कुकुटी कहिये शरीर कुत्सित अशुचि प्राय पणाथकी कुटी कुकुटी तेहना अडकनापरे उदर पूरकपणाथी आहार ते कुकुट्यडक तेहनो प्रमाणमात्रा बत्रीसमाभाग रूप जेहने ते कुकुट्यडक प्रमा

स्या हार स्तस्या हारस्य द्वात्रिंशत्तमो भाग स्तत्पुरुषापेक्षया कवल इदमेव कवलमान माश्रित्य प्रसिद्धकवलचतु षष्ट्यादिमानाहारस्यापि पुरुषस्य द्वात्रिंशता कवले प्रमाणप्राप्ततोपपन्ना स्यात् नहि स्वभोजनस्यार्द्ध भुक्तवत प्रमाणप्राप्तत्व मुपपद्यते, प्रथमव्याख्यानतु प्रायिकपक्ष मवगन्तव्यमि ति ॥ अप्पाहारेत्ति ॥ अल्पाहार साधु र्भवतीतिगम्य, अथवा, ऽष्टौ कुकुट्यण्डकप्रमाणमात्रान् कवला नाहार माहारयति कुर्वति साधौ अल्पा हार स्तोकाहार आहारचतुर्थांशरूपत्वा त्तस्य, एव मुत्तरत्रापि आहारेमाणेइत्येतत्पद प्रथमैकवचनान्त सप्तम्येकवचनान्तवा, व्याख्येय ॥ अवड्ढो मोयरियत्ति ॥ अवमस्यो नस्यो दरस्य करण मवमौदरिका ऽपकृष्ट किञ्चिदून मर्द्ध यस्यां सा पार्द्धा, द्वात्रिंशत्कवलापेक्षया द्वादशाना मपार्द्धरूपत्वा

अंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे। दुवालसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया। सोलस कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार माहारेमाणे दुभागपत्ते। चउव्वीसं

ण्डयण्डक प्रमाणमात्रान् कवला नाहार माहारयन् अल्पाहार । द्वादशकुकुट्यण्डकप्रमाणमात्रान् कवला नाहार माहारयति सति अपार्द्धावमौद

णमाटे इहा ए अभिप्राय जेतलो जे पुरुषनो आहार ते आहारनो बत्रीसमोभाग ते पुरुषनो अपेक्षायें कवलियो एहीज कवलियो आश्रयीने प्रसिद्ध क वल ६४ आदिदेई प्रमाण आहारने पणि पुरुषने बत्तीस कवल प्रमाणप्राप्तपणो थाय, पणि आपणा भोजननो अर्द्धजीमतानेप्रमाण प्राप्तपणो न उपजे इहा पहिलो व्याख्यानकीधो ते प्रायिकपक्ष अपेक्षायें जाणवो । एसणगोयमापमाणाइक्कंतेपाणभोयणे । एह हेगौतम । प्रमाणातिक्रान्त पान भोजन । अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ताण कवलमाहारमाहारेमाणे अप्पाहारे । आठ कुकुट्यडकप्रमाणमात्र कवलाहारप्रतें आहारतोथको साधु अल्पाहारो कहीये आहार चतुर्थांशरूपपणाथको तेहने इम आगे पणिकहवो। दुवालसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया। बारे कुकु ट्यडक प्रमाणमात्र कवलआहार प्रति करतो काइंएक घाट आधो ऊनोदरी हुवे बत्रीसकवलनी अपेक्षाये बारे अपार्द्धरूपपणाथको। सोलसकुक्कुडिअ डगप्पमाणमेत्ते कवलेआहारमाहारेमाणेदुभागपत्ते। सोलैकुकुट्यडक प्रमाणमात्र कवलआहार करतोथको बेभाग अर्द्धपाम्यो आहार कहीये

॥ टीका ॥

त् अपार्द्धोव सा ऽवमौदरिकाचेति समासः सा भवती त्येवं सम्यक्व्याख्यानं नेयं, प्रथमाक्तव्याख्यानंतु धर्मधर्म्मिणो रभेदा दपार्द्धावमौदरिका साधु र्भवती त्यवं नेतव्य ॥ दुभागपत्तेत्ति ॥ द्विभागो ऽर्द्धं तस्मासो द्विभागप्राप्त आहारो भवतीतिगम्यं, द्विभागोवा; ग्रासोनेनेति द्विभागप्राप्त साधु र्भवती तिगम्य ॥ ऊमोयरियत्ति ॥ अवमौदरिका भवति धर्मधर्म्मिणो रभेदाद्वा; अवमौदरिका साधु र्भवती तिगम्य ॥ पकामरसभोइत्ति ॥

॥ मूल ॥

कुक्कुडिअंडगप्पमाणे जाव आहारमाणे ऊमोदरिया । वत्तीसं कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते । एक्को एक्कोणविघासेणऊणगं आहारमाहारेमाणे समणेनिग्गंथे नोपकामरसभोइत्ति वत्तव्वंसिया एसणं गोयमा ! खेत्ताइक्कंतस्स कालाइक्कंतस्स मग्गाइक्कंतस्स पमाणाइक्कंतस्स पाणभोयणस्स

अनुवाद

रिका । षोडशकुकुट्यण्डकप्रमाणमात्रान् कवला नाहार माहारयन् द्विभागप्राप्तो भवति । चतुर्विंशतिकुकुट्यण्डकप्रमाणायाय आहारय न्नवमौदरिका । द्वात्रिंशत्कुकुट्यण्डकप्रमाणमात्रान् कवला नाहार माहारयन्प्रमाणप्राप्त । एतस्मादेकैकेनापिग्रासेनोनक माहार माहारयन् श्रमणोनिर्ग्रन्थो नप्रकामरसभोजीतिवक्तव्य स्या देष गौ० । क्षेत्रातिक्रान्तस्य कालातिक्रान्तस्य मार्गातिक्रान्तस्य प्रमाणातिक्रान्तस्य पानभोजनस्यार्थं प्रज्ञप्त ॥ अथ भदन्त । शस्त्रातीतस्य शस्त्रपरिणामितस्यै पितस्य व्येष्यितस्य सामुदानिकस्य पानभोजनस्य कोर्यः प्रज्ञप्त ? गौ० । यो निर्ग्रन्थोवा

॥ भाषा ॥

चउवीसकुक्कुडिअंडगप्पमाणेजावआहारमाहारेमाणेऊनोदरिया । चउवीस कुकुटीअंडक प्रमाणमात्र यावत् आहारकरतोथको ऊनोदरीहुवे अथवा धर्म अने धर्मीना अभेदथको अवमोदरिका साधु हुवे इसो जांणीने । वत्तीसकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवलेआहारमाहारेमाणेपमाणपत्ते । वत्रीस कुकुटीअंडक प्रमाणमात्र कवल आहार करतोथको प्रमाण ग्रासआहारकहीये । एक्कोएगोएगेणविघासेणऊणगआहारमाहारेमाणेसमणेणिग्गंथेणोपकामरसभोईत्तिवत्तव्वसिया । एहथकी एक अथवा एकेकरी कवलोयेकरी उणो जे साधु आहारप्रते करतोथको श्रमण निग्रंथ नही निश्चे प्रकाम कहीये घणूरस जे मधुरादिक भेदनो भोगो भोक्ता एतले ते अतिशयेकरी रसनो आदरणहार म जाणवो ए प्रमाणातिक्रान्त कह्यो । एसण गोयमा । एह हे

प्रकाम मत्यर्थं रसाना मधुरादिभेदाना भोगी भोक्ता प्रकामरसभोगीति ॥ सत्थातीतस्सत्ति ॥ शस्त्रादग्न्यादे रतीत मुत्तीर्णं शस्त्रातीत एवम्भूतच त थाविधपृथुकादिव दपरिणतमपिस्या दतआह ॥ सत्थपरिणामियस्सत्ति ॥ वर्णादीना मन्यथाकरणेना चित्तीकृतस्येत्यर्थं., अनेन प्रासुकत्वमुक्त ॥ एसियस्सत्ति ॥ एषणीयस्य गवेषणा विशुद्धा गवेषितस्य ॥ वेसियस्सत्ति ॥ विशेषेण विविधैर्वा, प्रकारै रेषित व्येषित ग्रहणैषणाग्रासैषणाविशो धित तस्य अथवा, वषो मुनिनेपथ्य सहेतु लाभे यस्य तद्वैषिक आकारमात्रदर्शना दवाप्त मत्वावजनया अनेन पुनरुत्पादनादोषापोहमाह ॥ स मुदाणियस्सत्ति ॥ तत स्ततो भिक्षारूपस्य किम्भूतो निर्ग्रन्थइत्याह ॥ निक्खित्तसत्थमुसलेत्ति ॥ त्यक्तखड्गादिशस्त्रमुशल ॥ ववगयमालावन्नगविलेव णत्ति ॥ व्यपगतपुष्पमालाचन्दनानुलेपन· स्वरूपविशेषणेचेमे नतु व्यवच्छेदार्थं निर्ग्रन्थाना मेवरूपत्वादवेति ॥ ववगयचुयचइयचत्तदेहति ॥ व्यपग

अहे पन्नत्ते । अहभंते ! सत्थातीयस्स सत्थपरिणामियस्स एसियस्स वेसियस्स समुदाणियस्स पाणभोयण स्स केअट्ठे पन्नत्ते ? गोयमा ! जेणं निग्गंथेवा २ निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमालावन्नगविलेवणे ववगयचु

निक्षिप्तशस्त्रमुशलो व्यपगतमालावर्णकविलेपनो व्यपगतच्युतच्यावितत्यक्तदेह जीवविप्रजह मकृत मकारित मसङ्कल्पित मनाहूत मक्रीतकृत मनु

गौतम । खेत्ताइक्कतस्स कालाइक्कतस्स मग्गाइक्कतस्स पमाणाइक्कतस्स । क्षेत्रातिक्रान्तनो कालातिक्रान्तनो मार्गातिक्रान्तनो प्रमाणातिक्रान्तनो । पाणभोयण स्सअट्ठेपन्नत्ते। पान भोजननो एअर्थ कह्यो । अहभंते सत्थाईयस्स सत्थपरिणामियस्स एसियस्स वेसियस्स सामुदाणियस्स पाण भोयणस्स केअट्ठेपन्नत्ते। हिवे हेभग वन् ' शस्त्र जे अग्न्यादिक तेहथकी उतर्या वर्णादिकने अन्यथा करवेकरी अचित्तकीधो इत्यर्थ एतले फासूपणोकह्यो एषणीयने अथवा गवेषणाविसुद्धेकरी गवे षितने विशेषे विविधप्रकारे करी ग्रहणेषणाइ ग्रासेषणाइ विशोध्यो तेहने अथवा वेषकहिये साधुनोवेष आकारमात्र दर्शनथी पाम्यो पणि आवर्जीनेन पा म्यो एतले इणे वली उत्पाद दोषत्याग कह्यो घणा घरनो भिक्षाछे एहने सू अर्थकह्यो । गोयमा जेणंणिग्गंथोवा णिग्गंथीवा णिक्खित्तसत्थमुसलेववगयमा लावन्नगविलेवणेववगयचुयचइयचत्तदेहजीवविप्पजढमकयमकारियमसंकप्पियमणाहूयमकीयकडमणुद्दिट्ठं। हेगौतम । जे साधु अथवा साधवी तेकेहवाछे

॥ टीका॥

ता. स्वयपृथग्भूता ओज्यवस्तुसम्भवा आगन्तुकावा, कृत्यादय श्च्युता मृता स्ततएव परतोवा, ऽव्यवहार्यवस्त्वात्मका· पृथिवीकायिकादय ॥ च ह्यति ॥ त्याजिता ओज्यद्रव्यात् पृथक्कारिता दायकेन ॥ चत्तत्ति ॥ स्वयमेव दायकेन त्यक्ता जनद्रव्यात् पृथक्कृता दे·जदविवक्षया दे·िनो यस्मा रसतया तमाहार' वृद्धव्याख्यातु व्यपगत उचत श्चेतनापर्याया दपेत श्च्युतो जीवनक्रियातो भ्रष्ट श्चोवित स्ततएवा युक्तक्षयेण त्रसित स्त्यक्तदेहः परित्यक्तजीवससर्गजनिताहारप्रभवोपचय स्तत एषां कर्म धारयो ऽत स्त, किमुक्तभवतीत्याह ॥ जीवविप्पजढति ॥ प्रासुकमित्यर्थ· ॥ अकयमकारि यमसकप्पियमणाहूयमकीयकडमणुद्दिट्ठ ॥ अकृत साध्वर्थ मनिर्वर्त्तित दायकेन एव मकारित दायकेनैव अनेन विशेषणद्वयेना नाधाकर्म्मिक उपात्त असङ्कल्पित स्वार्थ सस्कुर्वता साध्वर्थतया नसङ्कल्पित अनेना प्यनाधाकर्म्मकमेव गृहीत स्वार्थ मारब्धस्य साध्वर्थ निष्ठागतस्यापि आधाकर्म्मिक त्वात्, नविद्यते आहूत माह्वान मामत्रण नित्य मद्गृहे पोषमात्र मन्न ग्राह्य मित्येवरूप कर्मकराद्याकारणवा; साध्वर्थ स्थानान्तरा दन्नाद्यानय नाय यत्र सोनाहूतो ऽनित्यपिण्डो ऽनभ्याहृतो वे; त्यर्थ, स्वग्रामेवा; हूत तन्निषेधा दनाहूतो दायकेना स्पर्द्धया दीयमानइत्यर्थ, अनेन नावती ऽपरिणताभिधान एषणादोषनिषेध उक्तो ऽत स्त मक्रीतकृत क्रयेण साधुदेय नकृत अनुद्दिष्ट मनौद्देशिक ॥ नवकोडीपरिसुद्धति ॥ इह कोटयो वि

॥ मूल ॥

यचड्डयचत्तदेहं जीवविप्पजढं अकयमकारियमसंकप्पियमणाहूय मकीयकड मणुद्दिठ नवकोडीपरिसुद्धं द

॥ भाषा ॥

नव्यांके गस्त मूगल जेणें वलो साधु केश्वांकेछाडांके फलनीमाला वणा अ·टणू चन्दनप्रमुख विलेपन जेणें एहवा साधु ते आहारकेहवो पोतेज जुद थयो भोज्य वस्तु जपनाजोव मरणपाम्य' भोज्यद्रव्यथको अनगाकोवा देणहारे पोतेज देणहारे भोज्यवस्तुथको पृथक् कीधा तथाविध आहार तथा दायके साधुने अर्थे कीधू नथी दायके साधुने अर्थे कराव्यूं नथी स·धुनेअर्थे सङ्कल्प्यानथी नित्यपिण्ड दोषरहित साधुने अर्थे मोलथाण्यू नथी उद्देशिकपिण्डनथी। नवको डोपरिसुद्ध दसदोषविप्पमुक्तउग्गमउप्पायणेसणासुपरिसुद्ध । नवकोडीविभाग ते एह वीजादिक जीव हणेनही १ हणावेनही २ हणताप्रतेअनुमोदेनही ३ पचेनही ४ पचावेनही ५ पचताप्रते अनुमोदेनही ६ मोलनलेवेनही ७ मोलनलिवरावेनही ८ मोलनलेताप्रते अनुमोदेनही ९ एव अङ्कित म्रक्षितादिक दशदोषरहित

ज.गा स्तान्येमा बीजादिक जीव नहन्ति नघातयति घ्नत नानुमन्यते ३ एव नपचति ३ नक्रीणाति ३ इत्येव रूपा ॥ दसदोसविप्पमुक्कति ॥ दोषा शङ्कितम्रक्षितादय ॥ उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धति ॥ उद्गमश्च आधाकर्मादिः षोडशविध, उत्पादनाच धात्रीदूत्यादिका षोडशविधैव उद्गमोत्पादने एतद्विषयाया एषणापिण्डविशुद्धि स्तया सुष्टु परिशुद्धो य स उद्गमोत्पादनैषणासुपरिशुद्धो ऽतस्त अनेनचोक्तानुक्तसङ्ग्रह कृत, वीताङ्गारादीनि क्रियाविशेषणान्यपि भवन्ति, प्रायो नेनच ग्रासैषणाविशुद्धि रुक्ता ॥ असुरसुरति ॥ अनुकरणशब्दोय एव ॥ अचवचवमित्यपि ॥ अदुयति ॥ अशीघ्र ॥ अविलवियति ॥ नातिमन्थर ॥ अपरिसाडिति ॥ अनवयवोज्झन ॥ अक्खोवजणवणाणुलेवणभूयति ॥ अक्षोपाञ्जनच शकटधूर्म्रक्षणा व्रणानुलेपनच क्षतस्यो षधेन विलपनं अक्षोपाञ्जनव्रणानुलेपने तेइव विवक्षितार्थसिद्धि रसादिनिरभिष्वङ्गता साधर्म्या द्य सो क्षोपाञ्जनव्रणानुलेपनभूतो ऽत स्त क्रियाविशेषणवा ; ५ ॥ संजमजायामायावित्तियति ॥ संयमयात्रा संयमानुपालन सैवमात्रा आलम्बनसमूहात्मा संयमयात्रामात्रा तद

सदोसविप्पमुक्कं उग्गमउप्पायणेसणासुपरिसुद्धं वीइगालं वीइधूमं संजोयणादोसविप्पमुक्कं असुरसुरं अचवचवं अदुयमविलंबियं अपरिसाडिं अक्खोवंजणवणाणुलेवणभूयं संजमजायामायावत्तियं संजमभारवहण

दृिष्ट नवकोटीपरिशुद्ध दशदोषविप्रमुक्तमुद्गमोत्पादनैषणासुपरिशुद्ध वीताङ्गार वीतधूम संयोजनादोषविप्रमुक्त मसुरसुर मचपचप मद्रुतमविलंबित मपरिसाटि मक्षोपाञ्जनव्रणानुलेपनभूत संयमयात्रामात्रावृत्तिकं संयमभारवहनार्थताये विलमिवपन्नगभूते नात्मना शरमाहारयति एष

उद्गम आधाकर्मादि सोलेप्रकारे उत्पादन पणि धात्री दूत्यादि सोलेभेदे एषणापिंड विशुद्धि तिणें परिशुद्ध । वीइ गाल वीयधूम । अगार दूषणरहित धूम दोषरहित । संजोगणादोसविप्पमुक्क । संयोजना दूषणरहित ए तीनेकरी ग्रासेषणा विशुद्धि कही । असुरसुर अचवचवं । सुरड २ शब्द नकरे चप चपाट नकरे । अदुयमविलंबिय अपरिसाडियं । अति उतावलो नही अति सुसतोनही धरतीयें रेडैनही । अक्खोवजणवणाणुलेवणभूय । गाडीनी धुरी जिम चोपडिये तिम आहारले, जिम चाटी ऊपर औषध लगाइये इम आहार ले । संजमजायामायावत्तिय । संजम पालवा तेहीज मात्रा आलवन

यं वृत्ति प्रवृत्ति यंत्राहारे ससयमयात्रामात्रावृत्तिको ऽतस्त सयमयात्रामात्रावृत्तिकवा ; यथाञ्जवति सयमयात्रामात्रावा, प्रत्ययो यत्र सतया ऽत स्त सयमयात्रामात्राप्रत्ययवा, यथाञ्जवति, एतदेव वाक्यान्तरेणाह ॥ सजमञारवहणठयाएत्ति ॥ सयमएव भार स्तस्य वहन पालन सएवार्थ' स यमञारवहनाथ स्तझाव स्तत्ता तस्यै ॥ बिलमिवपन्नगञूएणअप्पाणेणाति ॥ विलेइव रन्ध्रेइव पन्नगञूतन सर्प्पकल्पेना त्मना करणञूतेन आहार मु क्तविशेषण आहारयति शरीरकोष्ठके प्रक्षिपति यथाकिल बिले सर्प्प आत्मान प्रवेशयति पार्श्वा नसस्पृश न्नेव साधु वंदनकन्दरपार्श्वा नसस्पृश न्नाहारेण तदसचारणतो जठरविले आहार प्रवेशयतीति ॥ एसणति ॥ एषो नन्तरोक्तविशेषण आहार शस्त्रातीतादिविशेषणस्य पानञोजनस्या र्थो ञिधेय प्रज्ञप्त' ॥ इति सप्तमशतेप्रथम. ॥ १ ॥ प्रथमोद्देशके प्रत्याख्यानिनो व्यक्तव्यतोक्ता द्वितीयेतु प्रत्याख्यान निरूप

ठयाए विलमिवपन्नगञूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ एसणं गोयमा ! सत्थातीयस्स सत्थपरिणामियस्स जाव पाणञोयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तंचेव सेवं ञंत ञंतत्ति ॥ सत्तमसए पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥

गौ० । शस्त्रातीतस्य शस्त्रपरिणामितस्य याव त्पानञोजनस्यायमर्थ प्रज्ञप्त । त देव ञदन्त भदन्त ॥ इतिसप्तमसतेप्रथम ॥ ७ ॥ १ ॥

समूह तेहीज प्रवृत्तिछे आहारनेविषे जहनो । सजमभारवहणठ्याए । सयम तेहीज भार पालवो तेहीज प्रयोजन तहनोभाव तेहनकाजे । विलमि वपन्नगभूएण अप्पाणण आहारमाहारेइ एसण गोयमा । बिलनविषे जिम सर्प आमाने प्रवेशकरावे पणि प्राशने स्पर्शविनहो इमसाधु वदनरूप कन्द रपासाने अफरसतो जठर बिलनेविषे आहारने प्रवेशे एह हे गौतम । सत्थातीयस्स । शस्त्रातीतनो । सत्थपरिणामियस्स । शस्त्रपरिणामतादि विशेषण नो । जाव पाणभोयणस्सअयमट्ठे पणत्ते । यावत् पान भोजननो यो अर्थ कह्यो । सेवभत २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे । सत्तमसयस्स पढमा उद्देसोसम्मत्ता ७ ॥१॥ ए सातमा शतकनो पहिलोउद्देशो पूरोथयो ७ ॥ १ ॥ पाछिले उद्देशेपच्चखाणवन्तकह्या इहावली प च्चखाण वत कहेछे - सव्वपाणेहि सव्वभूएहि सव्वजीवेहि सव्वसत्तेहि । ते निश्चे हेभगवन् सर्वप्राणे सर्वभूतेकरी सर्वजीवेकरी सर्वसत्त्वेकरी ।

॥ टीका ॥

यस्मात् ॥ सेनूणमित्यादि ॥ सियसुपच्चक्खायसियदुपच्चक्खाय ॥ इति प्रतिपाद्य यत्प्रथमं दुष्प्रत्याख्यानत्ववर्णनं कृत तद्यथासंख्यन्यायत्यागेन यथा सन्नतान्याय मङ्गीकृत्येतिद्रष्टव्य ॥ नोएवअभिसमण्णागयभवइत्ति ॥ नो नैव एवमिति वक्ष्यमाणप्रकार मभिसमन्वागत मवगतं स्यात् ॥ नोसुपच्चक्खायभवइत्ति ॥ ज्ञानाभावेन यथाव दपरिपालना त्सुप्रत्याख्यातत्वाभाव' ॥ सव्वपाणेहिंति ॥ सर्वप्राणेषु ४ ॥ तिविहंति ॥ त्रिविधं कृतकारिता

॥ मूल ॥

सेनूण भंते ! सव्वपाणेहिं सव्वभूएहि सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमितिवदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ तहा दुपच्चक्खाय ? गोयमा ! सव्वपाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खायमितिवदमाणस्स सियसुपच्चक्खायं भवइ सियदुपच्चक्खाय भवइ । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सियदुपच्चक्खायं भवइ ? गोयमा ! जस्सण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मितिवदमाणस्स नोएव अभिसमण्णा

अनुवाद

तन्नून भदन्त ! सर्वप्राणे सर्वभूते सर्वजीवे सर्वसत्वे (सप्तम्यर्थेतृतीया) प्रत्याख्यात मितिवदमानस्य सुप्रत्याख्यात भवति तथा दुष्प्रत्याख्यात भवति ? गौतम । सर्वप्राणे यांव त्सर्वसत्वे प्रत्याख्यात मितिवदमानस्य स्यात्सुप्रत्याख्यात भवति' स्याद्दुष्प्रत्याख्यात भवति' तत्केनार्थेन भदन्त एवमुच्यते सर्वप्राणे यांव त्सर्वसत्वे यांव त्स्या दुष्प्रत्याख्यात भवति ? गौ० । यस्य सर्वप्राणे यांव त्सर्वसत्वे प्रत्याख्यात मितिवदमानस्य

॥ भाषा ॥

पच्चक्खायमिइवदमाणस्ससुपच्चक्खायभवइ । पच्चक्खाणमें कीधो इसो कहताने भलो पच्चक्खाणहुवे । दुपच्चक्खायंभवइ । दुः प्रत्याख्यान हुवे । इतिप्रश्न उत्तर, गोयमा सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं । हेगौतम सर्वप्राणेकरी सर्वभूते सर्वजीवे सर्व सत्वेकरी । पच्चक्खायमिइवयमाणस्स । पच्चक्खाणमें कीधो इसो कहताने—सियसुपच्चक्खाय भवइ । किवारे सुप्रत्याख्यान हुवे । सियदुपच्चक्खायभवइ । किवारे दुःप्रत्याख्यान हुवे । सेकेणट्ठेणभंतेएवदुच्चइ । ते स्ये अर्थे हे भगवन् इमकह्यु । सव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं । सर्व प्राणेकरी यावत् सर्व सत्वेकरी । जावसियदुपच्चक्खायभवइ । किवारे सुप्रत्याख्यानहुवे किवारे दुःप्रत्याख्यान हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सणंसव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं । हे गौतम जेहनो सर्वप्राणेकरी यावत् सर्व सत्वेकरी । पच्चक्खायमि

॥ टीका ॥ नुमतिभेदभिन्न योग माश्रित्य ॥ तिविहेणंति ॥ त्रिविधेन मनोवाक्कायलक्षणेन करणेन ॥ असंजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मेत्ति ॥ संयतो यथादिपरिहारे प्रयत', विरतो वधादे र्निवृत्त', प्रतिहता न्यतीतकालसंबधीनि निन्दातः प्रत्याख्यातानिचा नागतप्रत्याख्यानेन पापानि कर्माणि येन सतथा तत संयतादिपदानां कर्मधारय स्तत स्तन्निषेधा दसंयतविरतप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा' अतएव ॥ सकिरिएत्ति ॥ कायिक्य

॥ मूल ॥ णयं भवइ इमेजीवा इमेअजीवा इमेतसा इमेथावरा तस्सण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स नोसुपच्चक्खाय दुपच्चक्खायं भवइ एवखलु सेदुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मितिवदमाणे नोसच्चंभासंभासइ मोसंभासं भासइ एवंखलु समुसावाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविह

॥ अनुवाद ॥ नो एव अभिसमन्वागत भवति इमे जीवा इमे अजीवा इमे त्रसा इमे स्थावरा स्तस्य सर्वप्राणैः यावत् सर्वसत्वैः प्रत्याख्यात मिति वदमानस्य नोसुप्रत्याख्यात दुष्प्रत्याख्यातं भवति एवखलु सदुष्प्रत्याख्याती सर्वप्राणैः याव त्सर्वसत्वैः प्रत्याख्यात मितिवदन् नो सत्य भाषते मृषा भाषा

॥ भाषा ॥ इवयमाणस्स। पच्चक्खाणमे कांधो इसो कहताने। णोएवंअभिसमन्नागयभवइ। नही इम वक्ष्यमाण प्रकार प्रते जाण्यूं हुवे एतले ज्ञानेकरी इम आगे कहिके, तिम जाण्यूं नहुवे। इमेजीवा इमअजीवा इमेतसा इमेथावरा तस्सणंसव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं। एह जीव एह अजीव एह त्रस बेइन्द्री १ तेइन्द्री २ चउरिन्द्री ३ पचेन्द्री ४ ए त्रस कहिये तथा स्थिररहे ते स्थावर जिम वृक्ष प्रमुख तेहने ण वाक्यालंकारे, सर्व प्राण यावत् सर्व सत्वनो। पच्चक्खायमिइवयमाणस्स णो सुपच्चक्खायभवइ दुपच्चक्खायंभवइ। प्रत्याख्यान कीधांछे इसो कहेछे, पणि जीव अजीव त्रस थावरनो स्वरूप जाण्यांनही तेहने ते सुप्रत्याख्यान नहुवे ज्ञानने अभावेकरी जिमछे तिमपाले नहीं तेमाटे सुप्रत्याख्यान यथार्थ अभावथयो अने दुष्प्रत्याख्यानी हुवे। एवखलुसेदुपच्चक्खाईसव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिइवयमाणे णोसच्चंभासंभासइ मोसभासंभासइ। इम निश्चै ते दुष्प्रत्याख्यानी कहिये सर्व प्राणीकरी यावत् सर्व सत्वेकरी प्रत्याख्यानकीधो इसो कहतांथकाने नही सत्यभ षाने बोले मृषाभाषाबोले। एवखलुसेमुसावाई सव्वपाणेहिं जावसत्तेहिं तिवि

॥ टीका ॥ एकान्तेनसर्वथैवपरान्दण्डयतीति एकान्तद ण्ड, अतएव ॥ असवुडेत्ति ॥ असंवृताश्रवद्वार , अतएव ॥ एगंतदंडेत्ति ॥ एकान्तेनसर्वथैवपरान्दण्डयतीति एकान्तद क्यादिक्रियायुक्त सकर्म्मबन्धनोवा, अतएव ॥ असवुडेत्ति ॥ असंवृताश्रवद्वार , अतएव ॥ कइविहेणमित्यादि ॥ मूलगुणपच्चक्खाणेयत्ति ॥ चारि एक, अतएवै कान्तबाल सर्वथा बालिशो ऽज्ञइत्यर्थ , प्रत्याख्यानाधिकारादेव तद्भेदानाह ॥

॥ मूल ॥ तिविहेणं असंजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगंतदंडे एगंतबालेयावि भवइ , जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मितिवदमाणस्स एव अभिसमन्नागयं भवइ इमेजीवा इमेअ जीवा इमेतसा इमेथावरा तस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खाय मितिवयमाणस्स सुपच्चक्खायं

अनुवाद ज्ञापते एवखलु स मृषावादी सर्वप्राणे यावत्सर्वसत्वे त्रिविधत्रिविधेना सयतविरतप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा सक्रियो सवृत एकान्तदण्ड एकान्तबालश्चापि भवति, यस्य सर्वप्राणे यावत्सर्वसत्वे प्रत्याख्यात मितिवदमानस्य वमभिसमन्वागत भवति इमेजीवा इमअजीवा इमेतसा इमेस्थावरा तस्य सर्वप्राणे यावत् सर्वसत्वे प्रत्याख्यात मितिवदमानस्य सुप्रत्याख्यात भवति नोदुष्प्रत्याख्यात भवति, एवखलु स सुप्रत्या

॥ भाषा ॥ एगंतबालेयाविभवइ । इम निश्चै ते मृषावादी सर्वप्राणीने विषे या वत् सर्व सत्वनेविषे त्रिविध ते करण करावण अनुमोदनभेद भिन्नयोगआश्रयीने त्रिविध मन वचन काया लक्षणकरणकरी असयतकहिये वधादि परि हारनेविषे यत्नवन्त ते नथी ते असयत तथा विरतिरहित नथी हण्या प्रत्याख्यानेकरी पापकर्म जेणें एतलामाटेज कायक्यादिक्रियासहित एतलामाटे ज अ णसवरयाछे आश्रवद्वार जेणे एतलामाटेज एकान्त सर्वथा परप्रते दंडे एतलामाटेज एकान्तबाल सर्वथाप्रकार अज्ञानी हुवे तथा । जस्सणं सव्वपाणे हिं जावसव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिइवयमाणस्स एव अभिसमणागय । जेहने सर्वप्राणेकरी यावत् सर्वसत्वेकरी प्रत्याख्यानसे कीधा इसोकहताने इम वद्य माणप्रकारे जाण्योहवे । इमेजीवा इमेअजीवा इमे तसा इमे थावरा तस्सणंसव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिइवयमाणस्ससुपच्चक्खायभवइ । णोदुप्पच्चक्खाय ए जीव ए अजीव एह त्रस एह थावर तेहने सर्वप्राणेकरी यावत् सर्व सत्वकरी पच्चक्खाणसे कीधा इसो कहताने सुप्रत्याख्यात हुवे ।

अकल्पवृक्षस्य मूलकल्पा गुणा प्राणातिपातविरमणादयो मूलगुणा स्तद्रूपं प्रत्याख्यान निवृत्ति र्मूलगुणविषयंवा; प्रत्याख्यानं मभ्युपगमो मूलगुण

भवइ नोदुपच्चक्खाय भवइ, एवंखलु सेसुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं वयमाणे सच्चंभासं भा सइ नोमोस भासइ, एवंखलु से सच्चवाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहंतिविहेणं संजयविरयप डिहयपच्चक्खायपावकम्मे अकिरिए संवुडे एगंतपंडिएयावि भवइ, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव सियदुपच्चक्खायं भवइ । कइविहेणं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तंजहा

स्याती सर्वप्राणे यावत सर्वसत्वे वदन् सत्या भाषा भाषते नोमृषा भाषत एवखलु समत्यवादी सर्वप्राणे यावत् सर्वसत्वे त्रिविधंत्रिवि धेन संयतविरतप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा ऽक्रिय संवृत एकान्तपण्डितश्चापि भवति ततेनार्थे नैव मुच्यत गौतम । यावत्स्यादुप्रत्या ख्यात भवतीति । कतिविध भदन्त । प्रत्याख्यान प्रज्ञप्त ? गौतम ! द्विविध प्रत्याख्यान प्रज्ञप्त तद्यथा—मूलगुणप्रत्याख्यान चोत्तरगुणप्र

भवइ । नहीं दुप्रत्याख्यात हुवे । एवंखलुसेसुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं । इम निश्चे ते सुप्रत्याख्यानी सर्वप्राणीना । जावसव्वसत्तेहिंपच्चक्खायमिइ वयमाणे । यावत् सर्व सत्वनो मे पच्चक्खाणकीधो इमो कहतोथको । सच्चंभासंभासइ । सत्यभाषा प्रते बोले । णोमोसंभासइ । नही मृषाभा षाप्रतें बोले । एवंखलुसेसव्वपाणेहिं जावसव्वसत्तेहिं । इम निश्चे ते सर्वप्राणीनो यावत् सर्व सत्वनो । तिविहंतिविहेणं संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे अकिरिएसंवुडेएगंतपंडिएयाविभवइ । त्रिविध त्रिविधेंकरी संयत विरत हण्याछे पच्चक्खाणेकरी पापकर्म एतलामाटेंज कायिक्यादिक्रियारहित एतलामाटेंज संवराछे आश्रवद्वार जेणे तेमाटे एकान्त पण्डित सर्वप्रकारे करी ज्ञानी ते हुवे । सेतेणट्ठेणं गोयमा एवंवुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम ! इम कह्यु । जावसियदुपच्चक्खायंभवइ । यावत् किवारे सुप्रत्याख्यान हुवे किवारे दुप्रत्याख्यान हुवे, पच्चक्खाणना अधिकारथकीज पच्चक्खाणनाभेद कहे छे—कइविहेणंभंतेपच्चक्खाणे पण्णत्ते । केतलेभेदे हेभगवन् । पच्चक्खाण कह्यु इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते तंजहा । हेगौतम । बेभ

॥ टीका ॥

प्रत्याख्यान ॥ उत्तरगुणपच्चक्खाणेयत्ति ॥ मूलगुणापेक्षया उत्तरभूता गुणा वृक्षशाखादयो त्तरगुणा स्तेषु प्रत्याख्यान मुत्तरगुणप्रत्याख्यान ॥ सव्वमू
लगुणेत्यादि ॥ सर्वथा मूलगुणप्रत्याख्यान सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान, देशतो मूलगुणप्रत्याख्यान देशमूलगुणप्रत्याख्यान, तत्र सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान

॥ मूल ॥

मूलगुणपच्चक्खाणेय उत्तरगुणपच्चक्खाणेय। मूलगुणपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे
प०, तंजहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणेय देसमूलगुणपच्चक्खाणेय। सव्वमूलगुणपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प०
? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं जाव सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं।

॥ अनुवाद ॥

त्याख्यानञ्च, मूलगुणप्रत्याख्यान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! द्विविधं प्रज्ञप्त तद्यथा—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानञ्च देशमूलगुणप्रत्याख्या
नञ्च, सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! पञ्चविध प्रज्ञप्त तद्यथा—सर्वस्मात्प्राणातिपाताद्विरमणम् १ याव त्सर्वस्मा

॥ भाषा ॥

दे पच्चक्खाणकह्यो ते कहेछे—मूलगुणपच्चक्खाणेय उत्तर गुणपच्चक्खाणेय। चारित्र कल्पवृक्षनो मूलकल्पगुण प्राणातिपातविरमणादिक ते मूलगुण
ते रूप जे पच्चक्खाण ते मूलगुणपच्चक्खाण उत्तरगुणनो अपेचायें उत्तरगुण जिम वृक्षशाखा तिम तेहनेविषे जे पच्चक्खाण ते उत्तरगुणपच्चक्खाण।
मूलगुणपच्चक्खाणेण कइविहे पण्णत्ते। मूलगुणपच्चक्खाण हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहे पण्णत्ते तंजहा। हेगौतम। बेहुभेदे
कह्यो ते कहेछे—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे। सर्वथा मूलगुणपच्चक्खाण ते सर्व विरतीने हुवे। देसमूलगुणपच्चक्खाणे। देशथी मूलगुणपच्चक्खाण ते देशवि
रतीने हुवे। सव्वमूलगुणेणभंतेकइविहे पण्णत्ते ॥ सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहेपण्णत्ते तंजहा।
हे गौतम। पंचभेदेकह्या ते कहेछे—सव्वाओपाणाइवायाओ वेरमण ॥ सर्व प्राणीनो अतिपात जे हणवो तेहथी निवर्त्तवो। जाव सव्वाओपरिग्गहा
ओवेरमण। इम मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह एहथी सर्वथाप्रकारे निवर्त्तवो। देसमूलगुणपच्चक्खाणेणभंतेकइविहे पण्णत्ते। देशमूलगुण प्रत्याख्या
न हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहे पण्णत्ते तंजहा। हेगौतम। पंचभेदेथूला कहेछेकह्यो—तेओपाणाइवायाओ वेरमणं।

॥ टीका ॥

अनागतकरणा दनागत पर्युपगादा वाचार्यादिवैयावृत्यकरणेना न्तरा
सर्वविरतानां, देशमूलगुणप्रत्याख्यानतु देशविरतानां ॥ अगागयगाहा ॥ अनागतकरणा दनागत पर्युपगादा वाचार्यादिवैयावृत्यकरगोना न्तरा यसद्भावा दारतएव तत्तप करणमित्यर्थ, आहच-होहीपज्जोसवगा ममयतयाअतराइयरोज्जा । गुरुवेयावच्चेण तवस्सिगेलण्णयाएवा ॥ १ ॥ सोदा
इतवोकम्म पडिवज्जइतअगागएकाले । एयपच्चक्खाण अगागयहोइनायव्वमिति ॥ २ ॥ एव मतिक्रान्तकरणा दतिक्रान्त भावनात् प्राग्वत्, उक्त
च-पज्जोसवणाइतव जोएलुनकरेडकारगेजाए । गुरुवेयावच्चेण तवस्सिगेलण्णयाएवा ॥ १ ॥ सोदाउतवोकम्म पडिवज्जइतअइत्यिएकाले । एयपच्च

॥ मूल ॥

देसमूलगुणपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प०, तंजहा—थूलाउ पाणाइवायाउ वेरम
णं जाव थूलाउ परिग्गहाउ वेरमणं। उत्तरगुणपच्चक्खाणेणं कइविहे प० गोयमा ! दुविहे प० तं०—सव्वुत्तर
गुणपच्चक्खाणेय देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेय। सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दसविहे
पण्णत्ते, तं०—अणागयमइक्कंतं कोडीसहियंनियंठियंचेव । सागारमणागारं परिमाणकडंनिरवसेसं ॥ १ ॥

अनुवाद

त्परिग्रहा द्विरमणम् । देशमूलगुणप्रत्याख्यान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! पञ्चविध प्रज्ञप्त तद्यथा-स्थूला त्प्राणातिपाता द्विरमण
'याव त्स्थूला त्परिग्रहा द्विरमणम् ॥ उत्तरगुणप्रत्याख्यान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! द्विविध प्रज्ञप्त तद्यथा-सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्या
नञ्च १ देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानञ्च २ ' सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! दशविध प्रज्ञप्त तद्यथा-नागतमतिक्रान्त

॥ भाषा ॥

स्थूल जे मोटका प्राणीनो अतिपात हणवो तेहथको निवर्त्तवो । जावथूलाओ परिग्गहाओवेरमण । इम स्थूल मृषावाद स्थूल अदत्तादान स्थूल मैथुन
स्थूल परिग्रह तेहथी निवर्त्तवो । उत्तरगुणपच्चक्खाणेणभंते कइविहे पण्णत्ते । उत्तरगुण पच्चक्खाण हेभगवन् ! केतले भेदेकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दु
विहे पण्णत्ते तंजहा । हेगोतम । दोयभेदे कह्या ते कहेछे—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणेय देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेय । ए बेउ उत्तरगुण प्रत्याख्यान देशथी उत्तर
गुण प्रत्याख्यान २ । सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणेणभंते कइविहे पण्णत्ते । सर्वथी उत्तरगुण प्रत्याख्यान हेभगवन् ! केतले भेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा

क्खाण अइक्कतद्दोइणायव्वंति ॥ २ ॥ कोटीसहितमिति ॥ मीलितप्रत्याख्यानद्वयकोटिचतुर्थादि कृत्वा अनन्तरमेव चतुर्थादे करणमित्यर्थ, अवाचि च-पट्ठवणउदिवसो पच्चक्खाणस्सनिट्ठवणउय । जहियसमेतिदोसिउ तत्रसइकोडिसहियतु ॥ १ ॥ नियंठितचेव ॥ नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितं प्रतिज्ञातदिनादौ ग्लानत्वाद्यन्तरायभावेपि नियमा त्कर्त्तव्यमिति हृदय यदाह-मासेमासेयतवो अमुगोअमुगेदिणमिएवइउ ॥ हट्ठेणगिलाणेणव कायव्वोजावऊसासो ॥ १ ॥ एयपच्चक्खाण नियंठियधीरपुरिसपसत्त । जगेगहतणगारा अणिस्सिअप्पाअपडिबद्धा ॥ १ ॥ साकारमिति ॥ आक्रियन्त इत्याकारा प्रत्याख्यानापवादहेतवो महत्तराकारादय सहाकारैर्वर्त्तत इतिसाकार अविद्यमानाकार मनाकार यद्विशिष्टप्रयोजनसम्भवाभावे कान्तारदुर्भिक्षादौ महत्तराद्याकार मनुच्चारयद्भि विधीयते तदनाकारमितिभाव, केवल मनाकारेपि अनाभोगसहसाकारा वुच्चारयितव्यावेव का ष्टाङ्गुल्यादे मुखेप्रक्षेपणतो भङ्गो माभूदिति अतो नाभोगसहसाकारापेक्षया सर्वदा साकारमेवेति, परिमाणकृतमिति दत्त्यादिभि कृतपरिमाण, अभाणिच दत्तीहिवकवलेहिव घरेहिभिक्खाहिअहवदव्वेहि । जोभत्तपरिच्चाय करेइपरिमाणकडमेय ॥ १ ॥ निरवशेषं समग्राशनादिविषय, भणितं च-सव्वअसणसव्व चपाणगसव्वखज्जपज्जविहि । परिहरइयसव्वभवे णेयभणियनिरवसेस ॥ १ ॥ साएयचेवत्ति ॥ केत चिह्न सहकेतेन वर्त्तत इति सकेत दीर्घता प्राकृतत्वात्, सङ्केतयुक्तत्वाद्वा; सकेत मङ्गुष्टसहितादि, यदाह-अगुट्ठमुट्ठिगंठी घरसेऊसासथिवुगजोइक्खे । भणियसइकेयमेय धीरेहिअणतणाणीहि ॥ १ ॥ अद्धाएत्ति ॥ अद्धा काल स्तस्या प्रत्याख्यान पौरुष्यादिकालस्य नियमन, आहच-अद्धापच्चक्खाणं जतकालप्पमाणछेएण

परिमाणकडनिरवसेस ॥१॥ जे जि दसविहे प० त० । हे गौतम । दशभेदेंकह्या ते कहेछे—अणागयमइक्कते कोडीसहियनियंठियचेव । सागारमणागार परिमाणकडनिरवसेस ॥१॥ जे जि ण दिन तपकीधो जोईजे तेहथी पहिलोकरे तिण दिन आचार्यादिकनो वैयावृत्त्य करवो हुस्ये तेमाटे तिणिदिन करी न सक्यो तिवारपछे करवो ते अतिक्रान्त जे प्रारम्भता अने मूकता सरीखोकरिये चतुर्थादि करी अनन्तरहीज चतुर्थादिकनो करवो ३ निश्चयेकरीने निहतरी जेमे अमुकेदिवसे त प अवश्य करवो ते नियन्त्रित, प्रतिज्ञात दिनादिकनेविषे ग्लानत्वादि अन्तराय छता पणि नियमथकी करवो ४ आगारने महत्तरागारेण इत्यादिक

॥ टीका ॥

पुरिमड्ढपोरिसीहिं मुहुत्तमासद्धमासेहिंति ॥ १ ॥ उवभोगपरिभोगपरिमाणाति ॥ उपभोग सकृद्भोगः सचा अशनपानानुलेपनादीनां, परिभोगस्तु पुन पुन र्भोगः ॥ सचा आसनशयनवसनवनितादीनां ॥ अपच्छिममारणंतियसलेहणाभूसणाराहणायत्ति ॥ पश्चिमैवा मङ्गलपरिहारार्थं समपश्चिमा

॥ मूल ॥

संकेयंचेवअद्धा एपच्चक्खाणंभवेदसहा । देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! सत्तविहे प० तंजहा—दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं अणत्थदंडवेरमणं सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासो अतिहिसंविभागो, अपच्छिममारणंतियसंलेहणाज्झूसणाराहणता । जीवाणं भंते ! किंमूलगुणपच्चक्खाणी

अनुवाद

कोटीसहितं नियंत्रितचेव । साकारमनाकार परिमाणकृतनिरवशेषम् ॥ १ ॥ सकेत (संकेत) अद्धात. प्रत्याख्यान भवेद्दशधा ॥ देशोत्तरगुण प्रत्याख्यान भदन्त । कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम । सप्तविध प्रज्ञप्त तद्यथा–दिग्व्रत १ उपभोगपरिभोगपरिमाण २ अनर्थदण्डविरमण ३ सामायिक ४ देशावकाशिक ६ पौषधोपवास ७ अतिथिसंविभाग ८, पश्चिममारणान्तिकसलेखनाजोषणाराधनता ९ । जीवा भ० । किंमूलगुणप्रत्याख्या

॥ भाषा ॥

आगारसहित वर्त्ते ते सागार कहीये ५ जे कान्तार दुर्भिक्षादिकें महत्तरागारेणं इत्यादिक उच्चारणकीधाविना कीजे ते अनाकार ६ एकदत्तइत्यादिकें कीधो ते परिमाणकृत ७ समस्त अशनादि परिहरे ते निरवशेष ८ । संकेयचेवपच्चक्खाण भवेदशधा । अगुष्टसहीप्रमुख पचखाण ते संकेत ९ पोरिसी आदिदेई कालनो नियमकरवो तेअद्धापच्चखाण सर्वउत्तरगुण कहिये । देसुत्तरगुणपच्चक्खाणेणभंते कइविहे पणत्ते । देशउत्तरगुण पचखाण हेभगवन् । केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तविहे पणत्ते तंजहा । हेगौतम ! सातभेदेंकह्या ते कहेछे । दिसिव्वय । दिग्विरमण व्रत २ । उवभोगपरिभोगपरिमाण अणट्ठदंडवेरमण सामाइय देसावगासिय पोसहोववासो अतिहिसंविभागो । एकवार भोगवीये ते उपभोग ते अशनादिक बारवार भोगवीये ते परिभोग वस्त्रादिक तेहनो परिमाण २ विना प्रयोजने दण्डपामे ते अनर्थदण्ड तेहथी विरमण ३ सामायिकव्रत ४ देशावकाशिकव्रत ५ पोषधोपवासव्रत ६ अतिथि साधु तेहथी संविभाग । अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाराहणता । अपश्चिम के० मरणने अंत संलेषनातप विशेष

॥ टीका ॥

विवक्षितसर्वायुष्कक्षयलक्षणमिति, मरणमेवान्तोमरणा मरणं प्राणत्यागलक्षणं इह यद्यपि प्रतिक्षणं मावीचीमरणं मस्ति तथापि नतद्गृह्यते किन्तर्हि विवक्षितसर्वायुष्कक्षयलक्षणमिति, मरणमेवान्तोमरणा न्त स्तत्र भवा मारणान्तिकी संलिख्यते कृशीक्रियते ऽनया शरीरकषायादीति संलेखना तपोविशेषलक्षणा तत कर्मधारया दपश्चिममारणान्ति कसंलेखना तस्या जोषणं सेवनं तस्या राधनं अखण्डकालकरणं तद्भावो ऽपश्चिममारणान्तिकसंलेखनाजोषणाराधनता इहच सप्त दिग्व्रतादयो दे शोत्तरगुणाश्च, संलेखनातत्रजनया तथाहि—सादेशोत्तरगुणवतो, देशोत्तरगुणं आवश्यके तथाभिधाना' दितरस्यतु सर्वोत्तरगुणं साकारानाका रादिप्रत्याख्यानरूपत्वादिति, संलेखना मविगणय्य सप्तदेशोत्तरगुणा इत्युक्त, अस्या श्वेतेषु पाठो देशोत्तरगुणधारिणापी यमन्ते विधातव्ये त्यस्या यस्य ख्यापनार्थइति' अयो क्तभेदेन प्रत्याख्यानेन तद्विपर्ययेण च जीवादिपदानि विशेषयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ पचिंदियतिरिक्खजोणिया

॥ मूल ॥

उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खा णीवि । नेरइयाणं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणीवि पुच्छा गोयमा ! नेरइया नोमूलगुणपच्चक्खाणीवि नोउत्त

अनुवाद

उत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिन- ? गौतम । जीवा मूलगुणप्रत्याख्यानिनोपि उत्तरगुणप्रत्याख्यानिनोपि अप्रत्याख्यानिनोपि । नैरयिका भदन्त । किं मूलगुणप्रत्याख्यानिन इतिपृच्छा ? गौतम । नैरयिका नोमूलगुणप्रत्याख्यानिनो नोउत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्या निन

॥ भाषा ॥

तेहनो सेवा तेहनो आराधना करता अखण्ड करे। जीवाणभते किमूलगुणपच्चक्खाणी । जीव हेभगवन् । स्यु मूलगुण पच्चक्खाणी अथवा । उत्तर गुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी । उत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवामूलगुणपच्चक्खाणीवि । हेगौतम । जीवमूलगुण पच्चक्खाणी पणिहुवे । उत्तरगुणपच्चक्खाणीवि । उत्तरगुण पच्चक्खाणी पणिहुवे । अपच्चक्खाणीवि । अपच्चक्खाणी पणिहुवे । णेरइयाणभते किमूलगुण पच्चक्खाणीपृच्छा । नारकी हेभगवन् । स्यु मूलगुणपच्चक्खाणीहुवे उत्तरगुणपच्चक्खाणीहुवे अपच्चक्खाणीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइयाणोमूल गुणपच्चक्खाणी णो उत्तरगुणपच्चक्खाणी । हे गौतम । नारकीनहीं मूलगुणपच्चक्खाणी नहीं उत्तरगुणपच्चक्खाणी । अपच्चक्खाणी । अपच्चक्खाणी

॥ टीका ॥ मणुस्साय जहा जीवत्ति ॥ मूलगुणप्रत्याख्यानिन उत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो प्रत्याख्यानिनश्च, नवरं पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो देशतएव मूलगुणप्रत्याख्यानिनः सर्वविरतस्तेषा मभावात्, इहचोक्त गाथया-तिरियाणचारित्तं निवारियं अहयतोपुणोतेसि ॥ सुव्वइवहुयाणचिय मरहवयारोवणसमए ॥ १ ॥ परिणारोविगाथयेव-गामहव्वयसप्भावे विचरणपरिणामसभवोतेसि ॥ नवहुगुणाणपिजन्म केवलसंभूइपरिणामोत्ति ॥ २ ॥ अथ मूलगुणप्रत्याख्यानादिमतामेवाल्पत्वादि चिन्तयति ॥ एएसिणमित्यादि ॥ सव्वत्थोवाजीवामूलगुणपच्चक्खाणीति ॥ देशतः सर्वतोवा, ये मूलगुणवन्त स्ते स्तोका देशस

॥ मूल ॥ रगुणपच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि । एवं जाव चउरिंदिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्साय जहा जीवा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहानेरइया । एएसिणं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं उत्तरगुणपच्चक्खाणीण अपच्चक्खाणीणय कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणप

॥ अनुवाद ॥ निन, एव याव चतुरिन्द्रिया पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका मनुष्याश्च यथा जीवाः, वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा नैरयिका । एतेषा भदन्त ! जीवाना मूलगुणप्रत्याख्यानिना मुत्तरगुणप्रत्याख्यानिना अप्रत्याख्यानिनाञ्च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा

॥ भाषा ॥ छवे। एवजावचउरिंदिया । इम यावत् चउरिंद्रीलगे कहवा ए अपच्चखाणी छवे । पचिंदियतिरिक्खजोणियामणूसायजहाजीवा । पचेंद्री तिर्यंचयोनिक मनुष्य जिम औधिकजीव कह्या तिमकहवा एतलोविशेष पचेंद्रीतिर्यंचयोनिक देशथकीज मूलगुणपच्चखाणी छवे सर्वविरतिनो तेहने अभावछे तेमाटे । वाणमतरजोइसवेमाणिया जहाणेरइया । वानव्यन्तरज्योतिषी वैमानिक जिम नारकीकह्या तिमकहवा, हिवे मूलगुणप्रत्याख्यानादिवन्तनोज अल्प बहुत्व चिन्तवेछे—एएसिणभंतेजीवाणमूलगुणपच्चक्खाणीण । उत्तरगुणपच्चक्खाणीण । एहने हेभगवन् । जीवने मूलगुणपच्चक्खाणीने उत्तरगुणपच्चखाणीने । अपच्चखाणीणयकयरे २ हिंतो जावविसेसाहियावा । कुण २ थकी यावत् विशेषाधिकछवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवाजीवामूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चखाणी असखिज्जगुणा । हेगौतम । देशथकी तथा सर्वथकी जे जीवमूलगुणवन्तछे ते थोडाछे देशथी तथा सर्वथी उत्तर

॥ टीका ॥ यान्या मुत्तरगुणवता ममह्येयगुणात्वात् उक्त सर्वविरतेषु ये उत्तरगुणवन्त स्ते ऽवश्य मूलगुणवन्तो, मूलगुणवन्त स्तु स्यादुत्तरगुणवन्त स्यातद्विकला य एवच तद्विकला सामर्थ्येन मूलगुणवन्तो ग्राह्या, स्तेच तरेभ्य स्तोकाएव यत्तरयतीना दशविधप्रत्याख्यानयुक्तत्वात्, तेपिच मूलगुणिभ्य मह्यातगुणाएव नामह्यातगुणा, सर्वयतीनामपि मह्यातत्वा देशविरतेषु पुन मूलगुणवद्भ्यो ऽपि ऽप्युत्तरगुणिनो लभ्यन्ते, तेष मधुमांसादिविषि त्यागिन्त्वया बहुतरा भवन्तीतिकृत्वा देशविरतोत्तरगुणवतो धिकत्योत्तरगुणवता मूलगुणवद्भ्यो मह्यातगुणात्व नव त्यतएवाह ॥ उत्तरगुणपच्च क्खाणीसमह्येज्जगुणात्ति, अपचक्खाणीअणतगुणात्ति ॥ मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चएव प्रत्याख्यानिनो ऽन्ये त्वप्रत्याख्यानिनएव, वनस्पतिप्रभृतिकत्वा तेषामनन्तगुणत्वमिति, मनुष्यसूत्रे अप्पच्चक्खाणीअसखेज्जगुणात्ति यदुक्त तत्सम्मूर्छिमग्रहणेना वसेय मितरेषा सङ्ख्यातत्वादिति, एव ॥ अप्पाबहुगा

॥ मूल ॥ उत्तरगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । एएसिण भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! सव्वत्थोवाजीवा पचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणप

॥ अनुवाद ॥ मूलगुणप्रत्याख्यानिन उत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो ऽसङ्ख्येयगुणा अप्रत्याख्यानिनो ऽनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा

॥ भाषा ॥ गुणवन्तना सङ्ख्यातगुणपणामाटे इहां सर्वविरतोनेविषे जे उत्तरगुणवन्तहुवे ते अवश्य मूलगुणवन्तहुवे ते उत्तरगुणवन्तहुवे अथवा उत्तरगुण विकलहुवे तिके अंज उत्तरगुण विकलहुवे तेहोज इहां मूलगुणवन्त ग्रहवा ते उत्तरथकी थोडाहोजहुवे घणासाधुने दशविध प्रत्याख्यान युक्तपणाथकी ते पणि मूलगुणथकी सङ्ख्यातगुणाहोजहुवे सर्वविरतोने पणि सङ्ख्यातपणामाटे देशविरतोनेविषे वली मूलगुणवन्त थकी भिन्न पणि उत्तरगुणवन्त पामी ये ते मधु मांसादि विविध अभिग्रह थकी बहुतर हुवे इमकरीने देशविरती उत्तरगुणवन्त अधिकरे ने उत्तर गुणवन्तने मूलगुणवन्तथकी असङ्ख्यात पणोकह्या । अपच्चखाणी अणतगुणा । मनुष्य पचेन्द्रियतिर्यंचहीज पच्चखाणवन्तहुवे तेहथी वनस्पतीना अनन्तपणामाटे अपच्चखाणी अनन्तगुणा । एएसिणभंतेपचिंदियतिरिक्खजोणियाणपुच्छा । एहने हेभगवन् ! पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवाजीवा पचिंदियतिरिक्ख

सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी नोमूलदेसगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणीवि एवं जाव चउरिंदिया । पंचिंदियतिरिक्ख पुच्छा, गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खा नोसव्वमूलगुणपच्चक्खाणीवि देसमूलगुणपच्चक्खाणीवि, अपच्चक्खाणीवि । मणुस्सा जहा जीवा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहानेरइया । एएसिणं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं अपच्चक्खाणीणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा !

प्रत्याख्यानिनो नोमूलदेशगुणप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिनोपि । एव याव चतुरिन्द्रिया, पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पृच्छा गौ० । पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो नोसर्वमूलगुणप्रत्याख्यानिनो देशमूलगुणप्रत्याख्यानिनोपि अप्रत्याख्यानिनोपि, मनुष्या यथा–जीवा, वानव्यंतरज्योतिकवैमानिका यथा नैरयिका । एतेषा भ० । जीवानां सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानिनां देशमूलगुणप्रत्याख्यानिनां अप्रत्याख्यानिनाच कतरेकतरेभ्यो यावद्विशेषाधि

चक्खाणीपि । अप्रत्याख्यानी पणिहुव । नारइयाणपृच्छा । नारकीनोप्रश्नकीधा उत्तर । गोयमा णेरइयाणासव्वमूलगुणपच्चक्खाणी । हेगौतम । नारकी सर्वमूलगुणपच्चक्खाणीनथी । नोदेसमूलगुणपच्चक्खाणा । देशमूलगुणप्रत्याख्यानीनथी एतलामाटेज । अपच्चक्खाणी । अप्रत्याख्यानीहुवे । एवंजावचउरिंदिया पांचिंदियतिरिक्खपृच्छा । इम यावत् चउरिन्द्रीपर्यन्त कहवा पञ्चेन्द्रीतिर्यञ्चनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । हेगौतम । पञ्चेन्द्रीतिर्यञ्चयोनिक जीव । णोसव्वमूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी । सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी नहुवे देशमूलगुण प्रत्याख्यानीहुवे देशविरतीहुवे तेमाटे अने अप्रत्याख्यानीहुवे । मणुस्साजहाजीवा । मनुष्य जिम जीव कह्या तिमकहवा तीनेहुवे । वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहाणेरइया । वानव्यंतरज्योतिषी वैमानिक जिम नारकी कह्या तिमकहवा एतावता अपच्चक्खाणीहुवे । एएसिणंभंतेजीवाणसव्वमूलगुणपच्चक्खाणीण । एह ने हेभगवन् । जीवने सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानीने । देशमूलगुणपच्चक्खाणीण । देशमूलगुणप्रत्याख्यानीने । अपच्चक्खाणीणकयरे २ हिंतो जावविसेसाहियावा । अप्रत्याख्यानीने कुणकुण थकी थोडाहुवे घणाहुवे बराबरहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमासव्वत्थोवाजीवामूलगुणपच्चक्खाणी

ग्रक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा, गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणीसंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणीअसंखेज्ज गुणा। जीवाणं भंते! किं मूलगुणपच्चक्खाणी देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी? गोयमा! जीवा सव्व मूलगुणपच्चक्खाणीवि देसमूलगुणपच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि। नेरइयाणं पुच्छा, गोयमा! नेरइया नो

गौतम! सवस्तोका जीवा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका मूलगुणप्रत्याख्यानिन उत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो ऽसख्येयगुणा अप्रत्याख्यानिनो ऽसख्येय गुणा। एतेषां भं०। मनुष्याणां मूलगुणप्रत्याख्यानिनां पृच्छा गौ०। सर्वस्तोका मनुष्या मूलगुणप्रत्याख्यानिन, उत्तरगुणप्रत्याख्यानिन स ख्येयगुणा, अप्रत्याख्यानिनो ऽसख्येयगुणा। जीवा भं०। किं मूलगुणप्रत्याख्यानिनो देशमूलगुणप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिन? गौ०। जीवा सवमूलगुणप्रत्याख्यानिनोपि देशमूलगुणप्रत्याख्यानिनोपि अप्रत्याख्यानिनोपि। नैरयिकाना पृच्छा गौ०? नैरयिका नोसर्वमूलगुण

जाणिया मूलगुणपच्चक्खाणी उत्तरगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा। हेगौतम। सर्वथी पचेन्द्रीतिर्यचयोनिक मूलगुणपच्चक्खाणी १ तेहथी उत्तरगुणपच्च क्खाणी असख्यातगुणा २। अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा। तेहथी अप्रत्याख्यानी असख्यातगुणा ३। एएसिणभंते मणूसाणमूलगुणपच्चक्खाणीणपुच्छा। एहने हेभगवन्! मनुष्यने मूलगुण प्रत्याख्यानी इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवामूलगुणपच्चक्खाणी। हेगौतम। सर्वथोडा मनुष्य मूलगुणप च्चक्खाणी जाणवा १ तेहथी। उत्तरगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा। उत्तरगुणपच्चक्खाणी सख्यातगुणा तेहथी। अपच्चक्खाणीअसखेज्जगुणा। अप्रत्याख्या नी असख्यातगुणा ते समूर्छिम मनुष्य ग्रहणकरी जाणवा गर्भजमनुष्य सख्याताहीज तेमाटे। जीवाणभंतेकिसव्वमूलगुणपच्चक्खाणी। जीव हेभगव न्! सर्वमूलगुणपच्चक्खाणी अथवा। देशमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी। देशमूलगुणप्रत्याख्यानी अथवा अप्रत्याख्यानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवासव्वमूलगुणपच्चक्खाणीवि। हेगौतम। जीव सर्वमूलगुण प्रत्याख्यानी पणिहुवे। देशमूलगुणपच्चक्खाणीवि। देशमूलगुण प्रत्याख्यानी पणिहुवे। अप

णितिसिविजहापढमिल्लदण्डए त्ति ॥ तत्रैकं जीवाना मिदमेव, द्वितीय पञ्चेन्द्रियतिरश्चां, तृतीयतु मनुष्याणा मेतानिच यथानिर्विशेषणमूलगुणादि प्रतिबद्धे दण्डक उक्तानि' एवमिह त्रीण्यपि वाच्यानि विशेषमाह ॥ नवरमित्यादि ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियामणुस्साय एवचेवत्ति ॥ यथा जी वा सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान्यादय उक्ता एव पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च वाच्या, इह पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चोपि सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो भवन्ती त्य

सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, एवं अप्पाबहुगाणि तिन्निवि जहा पढमिल्लए दंडए नवरं सव्व त्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा जीवाणं भंते ! किं स व्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी तिन्नि

कावा १ गौ० । सर्वस्तोका जीवा सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानिन एव अल्पबहुकानि त्रीण्यपि यथा प्राथमिके दण्डके, नवर सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रि यतिर्यग्योनिका देशमूलगुणप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिनो ऽसंख्येयगुणा । जीवा भ० । किं सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानिनो देशोत्तरगुणप्रत्या

देसमूलगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । हेगौतम । सर्वथीथोडाजीव सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी देशमूलगुणप्रत्याख्यानी असंख्यातगुणा । अपच्चक्खाणीअणं तगुणा । अप्रत्याख्यानी अनन्तगुणा । एवअप्पाबहुगाणितिण्णिविजहापढमिल्लएदंडए । इम अल्प बहुत्व तीनेइजाणवा जिम पहिलादंडकनेविषे कह्या तिहा पहिलोजीवने तेहीज १ बीजो पचेंद्रियतिर्यचना २ त्रीजोमनुष्यनो ३ ए तीनेइ जिम निर्विशेष समूलगुणादि प्रतिबद्ध दंडकनेविषे कह्या इम इहां पणि तीनेइकहवा वली विशेषकहैछै—णवरसव्वत्थोवापंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणीअसंखेज्जगुणा । एतलोविशेष सर्वथीथोडा पचेंद्रीतिर्यचयोनिक देशमूलगुणप्रत्याख्यानी जेभाटे सर्वमूलगुणपच्चक्खाणी तिर्यंच नहुवे तेमाटे तेहथी अप्रत्याख्यानी असंख्यातगुणा। जीवाणंभंतेकिंसव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी । जीव हेभगवन् । स्युं सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानी हुवे। देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी । देश उत्तरगुण प्र त्याख्यानीहुवे अप्रत्याख्यानीहुवे इतिप्रश्न उतर। गोयमा! जीवासव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीवि तिण्णिवि । हेगौतम । जीव सर्वउत्तरगुणप्रत्याख्यानी पणि

॥ टीका ॥

वसेय. देशविरताना देशत सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानस्या भिमतत्वादिति, मूलगुणप्रत्याख्यानिभृतयश्च संयतादयो भवन्तीति संयतादिसूत्र ॥ ति विविति ॥ जीवा त्रिविधाअपीत्यर्थ ॥ एवजहेवेत्यादि ॥ एव मनेना भिलापेन यथैव प्रज्ञापनाया तथैव सूत्र मिद मध्येय तच्चैव-णेरइयाण भ

॥ मूल ॥

वि । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा एवचेव सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया । एएसिणं भंते ! जीवाण सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीण अप्पाबहुगाणि तिसिवि जहा पढमे दंडए जाव मणुस्साण । जीवाणं भंते ! कि संजया असंजया संजयासंजया ? गोयमा ! जीवा संजयावि तिसिवि एव जाव जहेव पन्नवणाए

॥ अनुवाद ॥

ख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिन ? गौ० । जीवा. सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानिनोपि त्रयोपि, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका मनुष्या एवचैव शेषा अप्रत्याख्यानिनो याव द्वैमानिका । एतेषा भ० । जीवाना सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानिना अल्पबहुकानि त्रीण्यपि, यथा प्रथमेदण्डक यावन्मनुष्याणा । जीवा भ० । कि संयता असंयता संयतासंयता ? गौ० । जीवा संयताअपि त्रयोपि, एव यथैव प्रज्ञापनाया तथैव भणितव्य यावद्वैमानि

॥ भाषा ॥

कल्ला हुवे इम तीनेइ हुवे । पचिंद्रियतिरिक्खजोणियामणुस्साएवचेव । पचेन्द्री तिर्यञ्चयोनिक मनुष्य एवचवत्ति जिमजीव सर्वउत्तरगुणप्रत्याख्यानादिक कल्ला अभि तिम पचेंद्रियतिर्यंचमनुष्य पणिकहवा इहा पचेंद्रियतिर्यंच पणि सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानीहुवे इम जाणवो देशविरतीने सर्वोत्तर प्रत्याख्यानना अभिमत पणायको । सेसाअपच्चक्खाणी जावविमाणिया । शेष नारकादिक सघला अप्रत्याख्यानीकहवा यावत् वैमानिकलगे कहवा । एएसिणभते जीवाण । अल्प बहुत्व तो एहने हेभगवन् । जीवने । सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीण । सर्वउत्तरगुण प्रत्याख्यानीने । अप्पाबहुगातिसिविजहापढमदंडए जावमणूसाण । जीव हे नेइ कहवा जिम पहिलें दडक निर्विशेषपनेविषैकह्या तिम इहा पणिकहवा यावत् मनुष्यपर्यन्त । जीवाणभतेकिसजयाअसजया सजया २ । जीव हे भगवन् । स्यू संयती अथवा असयती अथवा संयता संयती इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवासजयावि तिसिवि । हेगौतम । जीव संयती पणि असंयती पणि संयतासयती पणि तीनेई जाणवा । एवजहेवपण्णवणाएतहेवभाणियव्व जाववेमाणिया । इम इण आलावेकरी जिमहीज पन्नवणानेविषैछै तिम

॥ टीका ॥

ते । किं संजया असंजया संजयासंजया ? गोयमा ! नोसंजया असंजया नोसंजयासंजयेत्यादि ॥ अप्पाबहुमित्यादि ॥ अल्पबहुत्वं संयमादीनां तथैव य था प्रज्ञापनायामुक्तं ॥ तिण्णिवित्ति ॥ जीवानां पञ्चेन्द्रियतिरश्चां मनुष्याणां च, तत्र सर्वस्तोकाः संयता जीवाः, संयतासंयता असङ्ख्येयगुणाः, असंय ताः त्वनन्तगुणाः, पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चस्तु सर्वस्तोकाः संयतासंयताः असंयताः असङ्ख्येयगुणाः, मनुष्यास्तु सर्वस्तोकाः संयताः संयता २ सङ्ख्येयगुणाः,

॥ मूल ॥

तहेव जाणियव्वं जाव वेमाणिया, अप्पाबहुगं तहेव तिण्णिवि जाणियव्वं । जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ? गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणीवि अपच्चक्खाणीवि एवं तिण्णिवि, एवं मणुस्सावि, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आइल्लविरहिया सेसा अपच्चक्खाणी जाव वेमाणिया । एएसिं णं भंते !

अनुवाद

का. अल्पबहुत्व तथैव, त्रीण्यपि ज्ञातव्यानि । जीवा भ० । किं प्रत्याख्यानिनो अप्रत्याख्यानिनः प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानिनः ? गौ० । प्रत्या ख्यानिनोऽपि एव त्रयोऽपि, एवं मनुष्या अपि, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका आदिमविरहिता (प्रथमविरहितः) शेषा सर्वे अप्रत्याख्यानि

॥ भाषा ॥

होज एसव कहवो ते इम नेरइयाणभते किमजया असजया सजया २ गोयमा णासजया असजया णासजयासजया यावत् वैमानिकलगेकहवा । अ ल्पाबहुत्वतेवतिणिविभाणियव्वं । अल्पबहुत्व सजतादिकनो तिमज तीनेइ तिणिवित्ति, जीवने तथा पचेंद्रितिर्यंचने मनुष्यने तिहा सर्वस्तोकजीव सयत सजतासजत असख्यातगुणा असजत अनन्तगुणा पचेंद्रियतिर्यंच सर्वस्तोक सयतासयत असजतअसख्यातगुणा तथा मनुष्य सर्वस्तोकसयत सयतासं यत सख्यातगुणा असजतअसख्यातगुणा सयतादिक प्रत्याख्यानादिकपणे यथा रूपे तिमहिज । जीवाणभतेकिपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी पच्चक्खाणा पच क्खाणी । जीव हेभगवन् । स्यु पच्चक्खाणीछइ अप्रत्याख्यानीछइ प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानीछइ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवापच्चक्खाणीवि एवतिणिवि । हेगौतम । जीव प्रत्याख्यानी पणि इम तीनेइकहवा । एवंमणुसावि तिणिवि । इम मनुष्य पणि तीनेकहवा । पंचिदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविर हिया । पचेंद्रीतिर्यंचयोनिक पहले पच्चक्खाणी ॥ पहिलोभागो तेहथी रहितवीजाभागा कहवा । सेसासव्वेअपच्चक्खाणी । शेष सर्वे अप्रत्याख्यानी क

॥ टीका ॥

असयता असङ्ख्येयगुणाइति, संयतादयश्च प्रत्याख्यान्यादित्वेसति भवन्तीति प्रत्याख्यान्यादिसूत्रं, ननु षष्ठशते चतुर्थोद्देशके प्रत्याख्यान्यादय प्ररूपिता इति किपुन स्तत्प्ररूपणंन ? सत्य मंतत्कि त्वल्पबहुत्वचितारहिता स्तत्र प्ररूपिता' इत्तु तदुक्ता सम्बन्धान्तरद्वारायातश्चेति, जीवाधिका

॥ मूल ॥

जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी , पच्चक्खाणापच्चक्खाणी अ सखेज्जगुणा , अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा , पच्चक्खाणापच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा , मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी , पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा , अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । जीवाणंभंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! जीवा सिय सासया सिय असास

॥ अनुवाद ॥

नां यावद्वैमानिकाः । एतेषां भ० । जीवाना प्रत्याख्यानिना याव द्विशेषाधिकावा ? गौ० ! सर्वस्तोका जीवा. प्रत्याख्यानिन प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानिनो सङ्ख्येयगुणा अप्रत्याख्यानिनो नन्तगुणा , पञ्चन्द्रियतिर्यग्योनिका सर्वस्तोका प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानिनो ऽप्रत्याख्यानिनो ऽसङ्ख्येयगुणा'' मनुष्या. सर्वस्तोकाः प्रत्याख्यानिनः, प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानिनः सङ्ख्येयगुणा , अप्रत्याख्यानिनो ऽसङ्ख्येयगुणाः । जीवा भ० । किं शाश्व

॥ भाषा ॥

इ३ । जाववेमाणिया एएसिणंभंतेजीवाणं पच्चक्खाणीण जावविसेसाहियावा । यावत् वैमानिकपर्यन्त कहवा एहने हेभगवन् ! जीवने प्रत्याख्यानीने यावत् विशेषाधिक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवाजीवापच्चक्खाणी । हेगौतम ! सर्वस्तोकजीव प्रत्याख्यानी । पच्चक्खाणा पच्चक्खाणी असखेज्जगुणा । प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानी असंख्यातगुणा । अपच्चक्खाणीअणंतगुणा । अप्रत्याख्यानी अनन्तगुणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । पंचेंद्री तिर्यंचयोनिक । सव्वत्थोवापच्चक्खाणा पच्चक्खाणी । सर्वस्तोक प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानी । अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा । अप्रत्याख्यानी असंख्यातगुणा हुवे । मणुस्सासव्वत्थोवापच्चक्खाणी । मनुष्य सर्वस्तोक प्रत्याख्यानी हुवे । पच्चक्खाणा पच्चक्खाणीसखेज्जगुणा । प्रत्याख्याना प्रत्याख्यानी संख्यातगुणा । अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा । अप्रत्याख्यानी असंख्यातगुणा जे सम्मूर्च्छिममनुष्य भेलाजाणवा अन्यमनुष्य संख्याता इंजके असंख्याता नथी जीवना अधिका

॥ टीका ॥ रा तच्छाश्वतत्वसूत्राणि तत्रच ॥ दव्वठयाएत्ति ॥ जीवद्रव्यत्वेनेत्यर्थ ॥ भावठयाएत्ति ॥ नारकादिपर्यायत्वेनेत्यर्थ ॥ इतिप्रथमशतेद्वितीय ॥ २

॥ मूल ॥ या । सेकेणठेण भंते ! एव वुच्चइ जीवा सियसासया सियअसासया ? गोयमा ! दव्वठयाए सासया भाव ठयाए असासया, सेतेणठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव सियअसासया । नेरइयाण भंते ! किंसासया अ सासया ? एव जहा जीवा तहा नेरइयावि जाव वेमाणिया जाव सियअसासया , सेव भंते भंतेत्ति ॥

अनुवाद: ता अशाश्वता ? गौ० । जीवा स्यात्शाश्वता स्यादशाश्वता । तत्केनार्थेन भदंत । एवमुच्यते जीवा स्यात्शाश्वता स्यादशाश्वता ? गौ० । द्रव्यार्थतया शाश्वता, भावार्थतया ऽशाश्वता स्तत्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते याव त्स्यादशाश्वता । नैरयिका भदंत ! किं शाश्वता अशाश्वता. ? एव यथा जीवा स्तथा नैरयिकाअपि यावद्वैमानिका याव त्स्यादशाश्वता ॥ तदेवभदन्तभदन्त ॥ इतिप्रथमशतेद्वितीय ॥ २ ॥

॥ भाषा ॥ रयको शास्वतपणानो सूत्रकहैछे—जीवाणभंते किंसासया असासया । जीव हेभगवन् ! स्यूं शास्वतोछे अशास्वतोछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवासिय सासया सियअसासया । हेगौतम ! जीव किवारे शास्वतोछे किवारे अशास्वतोछे । सेकेणठेणभंते एववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यु । जीवा सियसासया सियअसासया । जीव किवारे शास्वतो किवारे अशास्वतो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दव्वठयाएसासया । जीव द्रव्यपणे शास्वतोछे । भा वठयाएअसासया । नारकादिपर्यायपणे अशास्वतोछे । सेतेणठेण एववुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगौतम । इमकह्युजावसियअसासया । जीव किवारे शास्वतो कि वारे अशास्वतो, हिवे दंडक देखाडेछे—णेरइयाणभंते किंसासया असासया । नारका हेभगवन् ! स्यूं शास्वता किंवा अशास्वता । एवजहाजीवा तहा णेरइयावि । इम जिम जीवकह्यो तिम नारको पणिकहवो । एवजाववेमाणिया । इम यावत् वैमानिकलगे कहवो । जावसियअसासया । यावत् किवारे अशास्वतो । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे । सत्यमसयसत्यवितिश्री उद्देसोसमाप्तो । ए शतकमा शतकनो बीजो उद्दे सो पूरोथयो ७ ॥ २ ॥ जीवाधिकारप्रतिबद्धत्रीजत्रीजोउद्देशो कहेछे—एणसूत्रका याणभंते किंकालसव्वपाडारगाथा सव्वमहाढार

॥ टीका ॥

जीवाधिकारप्रतिबद्धएव तृतीयउद्देशक स्तत्सूत्र ॥ वणस्सईत्यादि ॥ ककालति ॥ कस्मिन्काले ॥ पाउसेत्यादि ॥ प्रावृडादौ बहुत्वा जलस्नेहस्य महाहारतोक्ता' प्रावृट् श्रावणादि वर्षा रात्रो ऽश्वयुजादि ॥ सरदेति ॥ शरत् मार्गशीर्षादि स्तत्रचा ल्पाहारा भवन्तीतिज्ञेय' ग्रीष्मे सर्वाल्पा

॥ मूल ॥

सत्तमसयस्स बीउ उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ २ ॥ वणस्सइकाइयाणं भंते ! कक्काल सव्वप्पा हारगावा सव्वमहाहारगावा भवंति ? गोयमा ! पाउसवरिसारत्तेसुणं एत्थण वणस्सइकाइया सव्वमहाहा रगा भवंति, तयाणंतरंचणं सरए तयाणंतरंचण हेमंते, तयाणंतरचणं वसंते, तयाणंतरचणं गिम्हासुणं, वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति । जइण भंते ! गिम्हासुवणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति । क

अनुवाद

वनस्पतिकायिका भ० । ककाल (कस्मिन्काले) सर्वाल्पाहारकावा सर्वमहाहारकावा भवन्ति ? गौ० । प्रावृड्वर्षारात्रिषु अत्र वनस्पतिकायिका सर्वमहाहारका भवन्ति, तदनन्तर शरदि तदनन्तरच हमन्ते तदनन्तरञ्च वसन्ते तदनन्तरञ्च ग्रीष्मे वनस्पतिकायिका सर्वाल्पाहारका भवन्ति । यदि भ० । ग्रीष्मे वनष्पतिकायिका सर्वाल्पाहारका भवन्ति कस्मा द्र० । ग्रीष्मे बहवो वनष्पतिकायिका पत्रिता' पुष्पिता फ

॥ भाषा ॥

गावाभवति । वनस्पतीकाय हेभगवन् । किसाकालनेविषे सर्वथी अल्पआहारवन्तहुवे अथवा किसाकालनविष सर्वथी महा आहारवन्तहुवे एतले किसेकाले थोडोआहार करे किसेकाले वणोंआहारकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाउसवरिसारत्तेसु । हेगोतम । श्रावण भाद्रवो वर्षा आसूकाती । एत्थणंवणस्सइकाइयासव्वमहाहारगाभवति । इहा ण वाक्यालकारे, वनस्पतीकायिकजीव सर्वथी महावणोंआहार करे । तदाणतरचणसरए । तिवारपछे मृगशिर पोसमहीने अल्पाहारीहुवे । तयाणतरहेमते । तिवारपछे माह फागुण अल्पाहारी हुवे । तदाणंतरचणवसते । तिवारपछे चैत्र वैशाख तिहा अल्पाहारीहुवे । तदाणतरचणगिम्हे । तिवारपछे ज्येष्ट आसाढे अल्पाहारीहुवे । गिम्हासुणंवणस्सइकाइयाणसव्वप्पाहारगाभवति । एतले ज्येष्ट आषाढनेविषे वनस्पतीकायिकजीव सर्वथी अल्पाहारवन्त थोडोआहारकरे । जइणभंतेगिम्हासुवणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगाभवति । जो णवाक्यालका

॥ टीका ॥

हारतोक्ता अतएवच ग्रोष्मे ष्वल्पाहारता क्रमेण द्रष्टव्येति ॥ हरितगरेरिज्जमाणात्ति ॥ हरितकाश्च तेनीलका रेरिज्यमानाश्च देदीप्यमाना हरितकरे रिज्यमाना ॥ सिरीएत्ति ॥ वनलक्ष्म्या ॥ उसिणजोणियत्ति ॥ उष्णमेव योनि येषान्ते उष्णयोनिका ॥ मूलामूलजीवफुडत्ति ॥ मूलानि मूलजीवै

॥ मूल ॥

म्हाण भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतो व २ उवसोभेमाणा उवचिट्ठंति ? गोयमा ! गिम्हासुणं बहवे उसिणजोणिया जीवायपोग्गलाय वणस्स इकाइयत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति एवंखलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया जाव चिट्ठंति । सेनूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा कंदा कंदजीवफुडा जाव बीया बीय

॥ अनुवाद ॥

लिता हरितकरेरिज्यमाना. श्रिया ऽतीवातीवोपशोभमाना उपतिष्ठन्ति ? गौ० । ग्रीष्मे बहव उष्णयोनिका जीवाश्च पुद्गलाश्च वनस्पतिकायि कतया ऽवक्रामन्ति व्युत्क्रामन्ति च्यवन्ते उत्पद्यन्तेच, एवखलु गौ० । ग्रीष्मे बहवो वनस्पतिकायिका पत्रिता पुष्पिता यावत्तिष्ठन्ति । अथ

॥ भाषा ॥

रे, हेभगवन् ! ग्रीष्मऋतुनेविषे घणा वनस्पतीकायिकथाव सर्वथी अल्पाहारीहुवे थोडाआहारकरे तो । कस्माणभंतेगिम्हासुबहवेवणस्सइकाइया । स्यामा टे हेभगवन् ! ग्रीष्मऋतुनेविषे घणा वनस्पतीकायिकजीव । पत्तिया पुप्फिया फलिया । पत्रवन्तहुवे फूलवन्तहुवे फलवन्तहुवे । हरियगरेरिज्जमाणासि रीए अईव २ उवसोहेमाणे २ चिट्ठति । नीलवर्णकरी देदीप्यमान लक्ष्मीयेकरीने घणू घणूं सोभायमानथका रहेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा गिम्हासु णबहवेउसिणजोणियाजीवायपोग्गलाय । हेगौतम । ग्रीष्मऋतुनेविषे घणा उष्णोहीज योनि कहिये उत्पत्तिछे जेहनी ते उष्णयोनिक जीव पुद्गल । वण स्सइकाइयत्ताए वक्कमंति । वनस्पतीकायपणे ऊपजे । विउक्कमंति चयंति उववज्जंति । विशेषे ऊपजे चवे ऊपजे । एवखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौत म । गिम्हासुबहवेवणस्सइकाइया पत्तिया पुप्फिया जावचिट्ठति । ग्रीष्मऋतुनेविषे घणा वनस्पतीकायिक पानवन्त फूलवन्त फलवन्त यावत् घणा शोभा यमानथका रहे । सेणूणंभंतेमूला । ते निश्चे हेभगवन् ! मूलते । मूलजीवफुडा । मूल जीव सवाते फरस्या । कंदा कंदजीवफुडा । कन्द ते कन्दजीव सवा

॥ टीका ॥

स्पृष्टानि आप्त.नीत्यर्थं यावत्करणात् यथा खंधजीवफुडा एव तथा साला पवाला पत्ता पुप्फा फलत्ति दृश्यं ॥ जइणमित्यादि ॥ यदि भदन्त ! मूलादीन्येव मूलादिजीवैः स्पृष्टानि तदा ॥ कम्हत्ति ॥ कस्मा त्केनहेतुना कथमित्यर्थ, वनस्पतय आहारयन्ति, आहारस्य भूमिगतत्वा न्मूलादि जीवानाच मूलादिष्वास्त्वेवा वस्थितत्वा त्कथञ्चित् परस्परव्यवधानेन भूमे दूरवर्तित्वादिति, अत्रोत्तर मूलानि मूलजीवस्पृष्टानि केवल पृथिवी जीवप्रतिबद्धानि ॥ तम्हत्ति ॥ तस्मा त्तत्प्रतिबन्धा द्धेतोः पृथिवीरस मूलजीवा आहारयन्ति, कन्दाः कन्दजीवस्पृष्टाः केवल मूलजीवप्रतिबद्धा स्त

॥ मूल ॥

जीवफुडा ? हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीयाबीयजीवफुडा, जइणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाववीयाबीयजीवफुडा कम्हाणं भंते ! वणस्सइकाइया आहारंति परिणामंति ? गोयमा ! मूला मूल

॥ अनुवाद ॥

नून भ० । मूलानि मूलजीवस्पृष्टानि, कन्दा कन्दजीवस्पृष्टा , याव द्बीजानि बीजजीवस्पृष्टानि ? हंत गौ० । मूलानि मूलजीवस्पृष्टानि यावद्बी जानि बीजजीवस्पृष्टानि, यदि भ० । मूलानि मूलजीवस्पृष्टानि यावद्बीजानिबीजजीवस्पृष्टानि कस्माद्भ० । वनस्पतिकायिका आहारयन्ति परिण मन्ति ? गौ० । मूलानि मूलजीवस्पृष्टानि पृथ्वी जीवप्रतिबद्धानि तस्मा दाहारयति तस्मा त्परिणमति । कन्दाः कन्दजीवस्पृष्टा मूलजीवप्रतिबद्धा

॥ भाषा ॥

ते फरस्या । जाववीया । यावत् बीज ते । बीजजीवफुडा । बीज जीवसघाते फरस्या इतिप्रश्न उत्तर । हंतागोयमा मूलामूलजीवफुडा जाववीयावीय ज फुडा । हागोतम । मूलते मूलजीवसघाते फरस्या यावत् खन्धा तथा साला पवाला पत्ता पुप्फा फलाए शब्द कहवा तालगे जिहावीज ते बीज जीवस घाते फरस्या । जइणभंतेमूलामूलजीवफुडा । जो हेभगवन् । मूल ते मूलजीवसघाते फरस्या । जाववीयावीय जावफुडा । यावत् बीज ते बीजजीवसघा ते फरस्या तो । कम्हाणभंतेवणस्सइकाइयाआहारेंति कम्हापरिणामेंति । किस्या थकी हेभगवन् । वनस्पतीकायिकजीव आहारकरे किम परिणमे आ हारने भूमिगतपणाथकी मूलादिजीवने मूलादिव्यापि करी गयस्थितमाटे कांइएकने मांहोमांहि व्यवधानेकरी भूमिना दूर वर्त्तिपणाथकी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मूलामूलजी फुडा पुढवीजीवपडिबद्धा । हेगोतम । मूल ते मूलजीव सघाते फरस्या केवल पृथिवी जीव प्रतिबद्धछे । तम्हाआहारेंति त

॥ टीका ॥ स्मा तत्प्रतिबन्धा न्मूलजीवोपात्त पृथिवीरस माहारयन्ती त्येव स्कन्धादिष्वपिवाच्य ॥ आलुएइत्यादि ॥ एतेषा नन्तकायभेदा लोकरूढिगम्याः ॥

॥ मूल ॥ जीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हाआहारंति तम्हापरिणामंति, कंदाकंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा तम्हाआहारंति तम्हापरिणामंति । एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हाआहारंति तम्हा परिणामंति । अहभंते ! आलुए मूलए सिंगबेरे हिरिली सिरिली सिसिरली किट्टिया छिरिया छीरविरालिया कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे खेलूडे अद्दमुच्छा पिंडहलिद्दा लोहाणी हूथिहूविभागा अस्सकण्णी

॥ अनुवाद ॥ स्तस्मा दाहारयन्ति परिणमन्ति, एव यावत् बीजानि बीजजीवस्पृष्टानि फलजीवप्रतिबद्धानि तस्मा त्परिणमन्ति । अथ भदन्त । आलुको मूलक शृङ्गवेर हिरिली सिरिली सिसिरली किट्टिका छिरिका क्षीरविरालिका कृष्णकदो वज्रकन्द सूरणकन्द• खेलूड अद्रमूर्च्छा पिण्डहरिद्रा लोहाणी

॥ भाषा ॥ म्हापरिणामेंति । ते प्रतिबन्धहेतुथको पृथिवी रसप्रतें मूलजीव आहारकरै तेहथी परिणमे । कंदाकंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा तम्हाआहारेंति तम्हापरिणामेंति । कन्द ते कन्दजीव व्याप्यायका केवलमूलजीव प्रतिबद्धछै ते प्रतिबद्धथको मूलजीवपाम्यो जे पृथिवीरस ते आहारकरै तेहथी परिणमे इम स्कन्धादिकनेविषे पणिकहवो । एवजावबीयाबीयफुडा । इम यावत् बीज ते बीजजीवसघाते स्पर्श्यायका । फलजीवपडिबद्धा तम्हाआहारें ति तम्हापरिणामेंति । फल जीव प्रतिबद्धछै ते प्रतिबन्धथको फलजीव पाम्या रसप्रते आहारे तेहथको परिणमे । अहभंते आलुए मूलए सिंगबेरे । हिवे हेभगवन् । आलुगत्ति ए इ अनन्तकायभेद लोकरूढ जाणवो आलूएमूला आदो । हिरिलीन सिरिली सिसिरली । हिरिलि सिरिलि ए वनस्पती अनन्तकाय विशेष । किट्टिया छिरिया छीरविरालिया । किट्टिका छिरका चीरविरालिका । कण्हकंदे वज्जकंदे सूरणकंदे । कृष्णकंद वज्रकंद सूरणकंद खेलूडे अद्दमुच्छ । पिंडहलिद्दा । खेलूडो अद्रमूर्च्छा पिण्डहरिद्रा । लोहिणी हूथिहूविभागा अस्सकण्णी सीहकण्णी । लोहिणी हूथिहूविभागा अश्वकर्णी सीहकर्णी । सादडो मुसुंढी । सादडो मुसढो । जेयावण्णेतहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवाविविहसत्ता । जेकेइ बीजीपणि तथा प्रकारे आलुकादि सरी

॥ टीका ॥

तहप्पगारत्ति ॥ तथाप्रकारा आलुकादिसदृशा ॥ अणतजीवत्ति ॥ अनन्ता जीवा येषु ते तथा ॥ विविहसत्तत्ति ॥ विविधा बहुप्रकारा वर्णादि भेदा स्तत्वा येषा मनन्तकायिकवनस्पतिभेदाना ततथा अथ चैकस्वरूपैरपि जीवै रेषा मनन्तजीवता स्यादित्याशंकाया माह–विविधा विचित्रक र्मतया ऽनेकविधा सत्वा येषु तेतथा ॥ विविहसत्तित्ति ॥ क्वचिद्दृश्यते, तत्र विचित्रा विधयो भेदा येषा तेतथा तेसत्वा येषु तेतथा जीवाधि

॥ मूल ॥

सीहकसी सादंकी मुसुंकी जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता ? हंता गोयमा ! आलुए मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता । सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेसे नेरइए म हाकम्मतराए ? हंतासिया । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए नीललेस्से नेर इए महाकम्मतराए ? गोयमा ! ठिइंपडुच्च । सेतेण० गोयमा ! जाव महाकम्मतराएचेव । सियभंते ! नील

अनुवाद

भूथिहूविभागा अश्वकर्णीसिंहकर्णी सादकी मुसुंढी येचान्येपि तथाप्रकारा सर्वेते ऽनन्तजीवा विविधसत्वाः ? हन्तगौतम । आलुकी मूलको या वदनन्तजीवा विविधसत्वाः । स्याद्भदन्त । कृष्णलेश्यो नैरयिको ऽल्पकर्मतरको नीललेश्यो नैरयिको महाकर्मतरको ? हन्त स्यात् । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते कृष्णलेश्यो नैरयिको ऽल्पकर्मतरको नीललेश्यो महाकर्मतरको ? गौतम । स्थितिम्प्रतीत्य तत्तेनार्थेन गौतम । याव न्महाकर्म

॥ भाषा ॥

ते सगलोने अनन्ता जीव जेहनविषे तराट अनन्तकाय तथा बहुप्रकार वर्णादिभेदथकी सत्त्वभेद अनन्तकायिक भेदना ते इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा आलुए मूलए । हांगौतम । आलू मूलक । जावअणंतजीवा विविहसत्ता । यावत् अनन्ताजीव कह्या विविधप्रकारना सत्त्व जेहने ते, जीवना अधिकारथीज कहेछे–सियभंतेकण्हलेसे णेरइएअप्पकम्मतराए । किवारे हेभगवन् । कृष्णलेश्यावन्त नारकी अल्पकर्मनो धणी । नीललेसे णेरइएमहाक म्मतराए । नीललेश्यावन्त नारकी महत्कर्मनो धणीहवे इतिप्रश्न उत्तर । हंतासिया । हा गौतम हवे । सेकेणट्ठेणंभंते एववुच्चइ । ते स्येअर्थे हेभगवन् । इ म कह्यु । कण्हलेसेणेरइए अप्पकम्मतराए । कृष्णलेश्यावन्त नारकी थोडाकर्मनो धणी । नीललेसेणेरइए महाकम्मतराए । नीललेश्यावत नारकी मोटा

॥ टीका ॥ कारा देवेदमाह ॥ सिय भंते । कण्हलेसे नेरइएइत्यादि ॥ ठिइपडुच्चत्ति ॥ अत्रेयं भावना सप्तमपृथिवीनारकः कृष्णलेश्य स्तस्यच स्वस्थितौ बहु क्षपितायां तच्छेषे वर्त्तमाने पञ्चमपृथिव्यां सप्तदशसागरोपमस्थिति र्नारको नीललेश्य रूत्पन्नः समयेत्प्य स कृष्णलेश्यो ऽल्पकर्मा व्यपदिश्यते,

॥ मूल ॥ लेस्से नेरइए अप्पकम्मतराए काउलेस्से महाकम्मतराए ? हंतासिया । सेकेणठ्ठेणं भंत ! एवंवुच्चइ नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए काउलेस्से महाकम्मनराए ? गोयमा ! ठिइपडुच्च, सेतेणठ्ठेणं जाव महाकम्मतराए

॥ अनुवाद ॥ तरश्चैव । स्या द्भदन्त । नीललेश्यो नैरयिको ऽल्पकर्मतरक । कापोतलेश्यो महाकर्मतरकः ? हंत स्यात् । केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते नीललेश्यो नैरयिको ऽल्पकर्मतरक कापोतलेश्यो नैरयिको महाकर्मतरकः ? गौ० । स्थितिप्रतीत्य, ततेनार्थेन याव न्महाकमतरक एव याव दसुरकुमारा अपि

॥ भाषा ॥ कर्नो धणीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ठिइपडुच्च । हेगौतम । इहां भावना सातमी पृथिवीनो नारको कृष्णलेश्यावंत तिणे पोतानीस्थिति घणी खयकीधी थाकी थोडी वर्त्तमानथका पचमी पृथिवीनेविषे सतरसागरोपमनीस्थिति नारको नीललेशी ऊपजे तेहनी अपेक्षाये ते कृष्णलेशी नारेकी अल्पकर्मवन्त कहिये इम आगलासूत्र पणि भाववा। सेकेणठ्ठेण गोयमा जावमहाकम्मतराएचेव। तेणे अर्थे हेगौतम। इमकह्यु कृष्णलेशी अल्पकर्मवन्त नीललेशी महाकर्मवन्त । सियभंतेनीललेस्सेणेरइएअप्पकम्मतराए काउलेस्सेणेरइएमहाकम्मतराएचेव । कदाचित् हेभगवन् । नीललेश्यानोधणी नारको थोडाकर्मवंतहुवे अने कापोतलेश्यानोधणी नारको महाकर्महुवे इतिप्रश्न उत्तर । हंतासिया । हा गौतम हुवे । सेकेणठ्ठेणभंते एववुच्चइ । ते स्यू अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । नीललेस्सेअप्पकम्मतराए । नीललेश्यावन्त नारको थोडाकर्मवन्तहुवे । काउलेस्सेणेरइए महाकम्मतराए । कापोतलेश्यावन्त नारको मोटाकर्मवन्तहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ठिइपडुच्च । हेगौतम । स्थितिप्रते आश्रयीने भावना पूर्वलीपरे कहवी । सेतेणठ्ठेणजावमहाकम्मतराए एवअसुरकुमारेविभाणियव्वा । ते तेणेअर्थे हेगौतम । इमकह्यु नीललेशीनारको अल्पकर्मवन्त कापोतलेशीनारको महाकर्मवन्त इम असुरकुमारनेविषे पणि कहवो नारकोनीपरे। णवरंतेउलेस्साअब्भहिया एवजाववेमाणिया। एतलोविशेष नारकीनेविषे तीनहीज लेश्यावन्तहुवे अने असुरकुमारनेविषे

॥ टीका ॥
सलेश्याजीवाश्च वेदना एव मुत्तरसूत्राण्यपि भावनीयानि ॥ जोइसियस्सनत्थइत्ति ॥ एकस्याएव तेजोलेश्या।या स्तस्य सद्भावात् सयोगी नास्तीति, वन्तो भवन्तीति वेदनासूत्राणि ॥ कम्मवेयणत्ति ॥ उदय प्राप्त कर्म्म वेदना धर्म्मधर्म्मिणो रभेदविवक्षणात् ॥ नोकम्मनिज्जरत्ति ॥ कर्म्माभावो निर्ज्ज

॥ मूल ॥
एव असुरकुमारेवि, णवरं तेउलेसा अब्भहिया जाव वेमाणिया जस्स जइलेसाओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ जोइसियस्स नभस्सइ जाव सियभंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराएचेव सुक्कलेस्सेवेमाणिए महाक म्मतराए ? हंतासिया ! सेकेणठेणं सेसं जहा नेरइयस्स जाव महाकम्मतराए । सेणूणं भंते ! जावेयणा

॥ अनुवाद ॥
नवर तेजोलेश्या अभ्यधिका याव द्वैमानिका । यस्य यावत्यो लेश्या स्तस्य तावत्यो भणितव्या । ज्योतिकस्य नभणत । याव त्स्या द्भदत । पद्म लेश्यो वैमानिको ल्पकर्मतरको शुक्लेश्यो वेमानिको महाकर्मतरको ? इत स्यात् । तत्केनार्थेन शेष यथा नैरयिकस्य याव न्महाकर्मतरक । से इति मागधभाषाप्रसिद्ध , अथ भदन्त यावेदना सानिर्जरा यानिर्जरा सावदना ? गौतम । नायमर्थ समर्थ । केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते या

॥ भाषा ॥
तेमाटे इम यावत् वैमानिकलगे कहवो । जस्सजइलेस्साओ तस्सतइयाभाणियव्वाओ । तेचौथी तेजोलेश्या अधिकीकहवी एहनेविषे तेजोलेश्यावंत ऊपजे तेमाटे ज्योतिषी नक्ष जेहनेजतली लेश्याहुवे तेहनेतेतली लेश्याकहवी तेहनविषे। जोइसियस्स णभणंति । ज्योतिषीनेविषे एकहोज तेज लेस्याहुवे तेमाटे ज्योतिषी नक्ष वा । जावसियभंते पम्हलेस्सेवेमाणिएअप्पकम्मतराए । यावत् कदाचित् हेभगवन् । पद्मलेश्यावत वैमानिक अल्पकर्मवतहुवे । सुक्कलेस्सेवेमाणिएमहा कम्मतराए । अने शुक्ललेश्यावत वैमानिक महाकर्मवतहुवे इतिप्रश्न उत्तर । हंतासिया । हागौतम । सेकेणट्ठेण सेसजहाणेरइयस्स जावमहाकम्मतराए। ते स्ये अर्थे हेभगवन । इमकह्यु इतिप्रश्न हेगौतम । स्थितिप्रते आश्रयीने इत्यादि थाकता सर्व नारकीनीपरे कहवो तेणे अर्थे हेगौतम इमकह्यु यावत् महाकर्मवत हुवे । सेणूणभंते जावेदणासाणिज्जरा जाणिज्जरासावेदणा । ते निश्चे हेभगवन् । जिकावेदना तिका निर्जरा अथवा जिका निर्जरा ति का वेदना इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हेगौतम । एअर्थ समर्थनही । सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । जावेदणा

॥ टीका ॥
रा तस्या एवस्वरूपत्वादिति ॥ नोकर्मनिज्जरसुत्ति ॥ वेदितस्य कर्म नोकर्म तन्निर्जरितवन्त कर्मभूतस्य कर्मणो निर्ज्जरणासम्भवादिति, पूर्व

॥ मूल ॥
सानिज्जरा जानिज्जरा सावेयणा ? णोइणठेसमठे। सेकेणठेणं भंते ! एवं जावेयणा नसानिज्जरा जानि ज्जरा नसावेयणा ? गोयमा ! कम्मवेयणा णोकम्मनिज्जरा । सेतेणठेणं गोयमा ! जाव नसावेयणा । ने रइयाणं भंते ! जावेयणा मानिज्जरा जानिज्जरा सावेयणा ? णोइणठेसमठे। सेकेणठेण एवं वुच्चइ नेरइयाणं जावेयणा नसानिज्जरा जानिज्जरा नसावेयणा ? गोयमा ! नेरइयाणं कम्मवेयणा णोकम्मनिज्जरा सेतेण

॥ अनुवाद ॥
वेदना समानिर्जरा यानिर्जरा नसावेदना ? गौतम ! कर्मवेदना नोकर्मनिर्जरा तेनार्थेन गौतम ! याव नसावेदना । नैरयिकाणा भदन्त । या वेदना मानिर्जरा यानिर्जरा सावेदना ? नायमर्थ समर्थ । केनार्थेनवमुच्यत नैरयिकाणा यावेदना नसानिर्जरा यानिर्जरा नसावदना ? गौतम ! नैरयिकाणा कर्मवेदना नोकर्मनिर्जरा तेनार्थेन गौतम ! याव नसावेदना एव यावद्वैमानिकाना । नून भदन्त ! यद्वदितवत स्तानि

॥ भाषा ॥
णसाणिज्जरा जाणिज्जराणसावेयणा । जिका वेदना तिका निर्जरानही जिका निर्जरा तिका वेदनानही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमाकम्मवेयणा णो क म्मणिज्जरा । हेगौतम । उदयकर्महुवे ते वेदनाकर्मनो जे अभाव ते निर्जरा तेहना एहवा स्वरूपथकी । सेतेणठेणं गोयमा जावणसावेयणा । ते तेणे अ र्थे हेगौतम इसकह्यु तिकावेदनानही । णेरइयाणभंतेजावेयणा साणिज्जरा ॥ नारकीने हेभगवन् । जिका वेदना तिका निर्जरा । जाणिज्जरासावेयणा । जिका निर्जरा तिका वेदना इतिप्रश्नउत्तर ॥ गोयमा णोइणठेसमठे। हेगौतम ! एअर्थ समर्थनही । सेकेणठेणभंतेएववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कह्यु । णेरइयाणजावेयणा णसाणिज्जरा जाणिज्जराणसावेयणा । नारकीने जिका वेदनानही तिकानिर्जरा, जिका निर्जरा नही तिका वेदना इति प्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइयाणकम्मवेयणा । हेगौतम । नारकीने उदयकर्महुया वेदनाछे पणि णोकम्मणिज्जरा ॥ कर्मनो अभाव ते निर्जरानही । सेतेणठेणं गोयमा जावणसावेयणा । तेणे अर्थे हेगौतम । यावत् वेदनानही एतलालगेकहवो ॥ एवजाववेमाणियाण । इम यावत् वैमानिकलगेकहवो । दण्डक पाछि

॥ मूल ॥

ठेणं गोयमा ! जाव नसावेयणा एवं जाव वेमाणियाणं । सेनूणं भंते ! जंवेदंसु तंनिज्जरिंसु जंनिज्जरिंसु तवेदंसु ? णोइणठेसमठे । सेकेणठेणं भंते ! एव वुच्चइ जंवेदंसु नोतनिज्जरिंसु जनिज्जरिंसु नोतंवेदंसु ? गोयमा ! कम्मवेदंसु नोकम्मनिज्जरिंसु सेतेणठेण गोयमा ! जाव नोतंवेदंसु । नेरइयाणं भंते ! जंवेदंसु तनिज्जरिंसु एवं नेरइयावि एवं जाव वेमाणिया । सेनूणं भंते ! जंवेदंति तंनिज्जरंति जनिज्जरंति तंवेदंति ? णो

॥ अनुवाद ॥

यनिर्जरितव ज्जरितवन्तो यन्निर्जरितवत स्तद्वेदितवत ? नायमर्थ समर्थ । केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते यवेदितवन्तो नैवत न्निजरितवन्त यद्वेदित न्तो नेवतद्वेदितवन्त. ? गौतम । कर्मवदितवन्तो नैव तन्निर्जरितवन्त स्तेनार्थेन गौतम ! याव न्नेवतद्वदितवत । नैरयिका भदन्त । यद्वेदित वन्त स्तन्निर्जरितवन्त एव नैरयिका अपि यावद्वेमानिका । नून भदन्त । यद्वेदयतितन्निर्जरयति यन्निर्जरयति तद्वेदयन्ति ? गौतम । नाय मर्थ स्समर्थ , केनार्थेनैवमुच्यते याव न्नैव तद्वदयन्ति ? गौतम । कर्म वेदयति नैवनिर्जरयति तेनार्थेन गौतम ! याव न्नैव तद्वेदयति, एवं नै

॥ भाषा ॥

ला आलावा समवे कह्या ए अतीतकाल आश्रो कहेछे—सेणूणभते जवेदेंसु तणिज्जरिसु जणिज्जरिसु तवेदेसु । ते निश्चै हेभगवन् । जे अतीतकालेवेद्या ते निर्जर्या जे निर्जर्या ते वेद्या जे कमवेदताहुया ते कर्म निर्जरताहुया ते निर्जरताहुया जे वेदताहुया । णोइणठे समठे हे गौतम । ए अर्थ समथ नही । जे वेद्या ते निर्जराानही जे निर्ज र्या ते वेद्य सेकेणठेणभते एववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यो । जवेदेंसु णोतणिज्जरेसु जणिज्जरेसु णोतवेदेसु । नही ते कर्म निर्जरताहुया । सेतेणठेण गोयमा जावणोतव नही इतिप्रश्न उत्तर गोयमा । कम्मवदेंसु । हेगौतम । कर्मवेदताहुया । णोकम्मणिज्जरेंसु । नारकी हेभगवन् । जे वेद्या ते निर्जर्या जिम पहिला टेंसु । ते तेणेअर्थे हेगौतम । यावत् नही ते वेदताहुया । णेरइयाणभतेजवेदेंसु तणिज्जरेसु । सेणूणभतेजवेदेति । ते निश्चै हेभगवन् । जे वे कह्यु । एवणेरइयावि । इम नारकी पणिकहवा । एवजाववेमाणिया । इम यावत् वैमानिकलगेकहवो । गोयमा णोइणठे समठे । हे गौतम एअर्थ समर्थनही । सेकेणठ दे । तणिज्जरंति जणिज्जरेंति तवेदेंति । ते निजरे जे निजरे ते वेदे इतिप्रश्न उत्तर ।

इणठेसमठे । सेकेणठेणं एवंवु० जाव नोतंवेदंति ? गो० ! कम्मवेदंति नोकम्मनिज्जरंति सेतेणठेण गोयमा ! जाव नो तंवेदंति एवं नेरइयावि जाव वेमाणिया । सेनूणं भंते ! जंवेदिस्सति तंनिज्जरिस्सति जंनिज्जरिस्सति तंवेदिस्सति ? णोइणठेसमठे । सेकेणठेणं जाव णोतंवेदिस्संति ? गोयमा ! कम्मंवेदिस्संति नोकम्मनिज्जरिस्सति । सेतेणठेणं जाव नोतंनिज्जरिस्सति, एवं नेरइयावि जाव वेमाणिया । सेनूणं भंते ! जेवेदणासमए सेनिज्जरासमए जेनिज्जरासमए सेवेदणासमए ? णोइणठेसमठे । सेकेणठेणं भंते ! एवंवुच्चइ जेवेदणा

रयिका अपि याव द्वैमानिका । नून भदन्त ! यद्वेदिष्यन्ति तन्निर्जरिष्यन्ति यन्निर्जरिष्यन्ति तद्वेदिष्यन्ति ? गौतम ! नायमर्थ समर्थः केनार्थेन यावन्न तद्वेदिष्यन्ति ? गौतम ! कर्म वेदिष्यति नैव निजरिष्यन्ति तेनार्थेन याव नैव तन्निर्जरिष्यन्ति एव नैरयिका अपि, याव द्वैमानिका । नून भदन्त ! यो वेदनासमय सनिर्जरासमयो यो निर्जरासमय सवेदनासमय ? नायमर्थः समर्थ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते यो

णभंतेएववुच्चइ । त स्यें अर्थं हेभगवन् । इमकह्यु । जावणोतंवेदंति । यावत् ते वेदेनही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कम्मवेदंति । हेगोतम कर्मवेदे । णो कम्म णिज्जरंति । नही कर्मनिर्जरे । सेतेणठेण गोयमा जाव णो तं वेदंति । ते तेणें अर्थं हेगोतम । यावत् नही वेदे । एवणेरइयावि । इम नारकी पणि कहवा । जाववेमाणिया । यावत् वेमानिकलगे कहवा । सेणूणभंतेजवेदिस्सति तणिज्जरिस्सति । ते निश्चे हेभगवन् । जे वेदस्ये ते निर्जरस्ये । जणिज्जरिस्सति तवेदिस्सति । जे निर्जरस्ये ते वेदस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगोतम । एअर्थ समर्थनही । सेकेणठेणजावणोतवेदिस्सति । ते स्ये अर्थ हेभगवन् । यावत् त वेदस्येनही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कम्मवेदिस्सति । हेगोतम । कर्मप्रते वेदस्ये । णोकम्मणिज्जरिस्सति । नही कर्मप्रते निर्जरस्ये । सेतेणठेण जावणोतणिज्जरिस्सति । ते तेणेंअर्थ हेगोतम । यावत् नही ते प्रते निर्जरस्ये । एवणेरइयावि । इम नारकी पणि । जाववेमाणिया । यावत् वैमानिकलगे कहवो । सेणूणभंते जेवेयणासमए । ते निश्चे हेभगवन् । जे वेदनासमय । सेणिज्जरासमए । ते निर्जरासमय । जेणिज्जरासमए से

समए नसेनिज्जरासमए जेनिज्जरासमए नसेवेदणासमए ? गोयमा ! जंसमयं वेदंति नोतंसमय निज्जरंति जसमयं निज्जरंति नोतसमय वेदंति, अन्नंमि समए वेदंति अन्नंमि समए निज्जरंति, अन्नंसे वेदणासमए अन्नंसे निज्जरासमए सेतेणठेणं जाव नसेवेदणासमए। नेरइयाण भंते ! जंवेदणासमए सेनिज्जरासमए जेनिज्जरासमए सेवेदणासमए ? णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयाणं जंवेदणासमए नसेनिज्जरासमए

? गौतम ! यस्मिन्समये वेदयन्ति नतस्मिन्समये निर्जरयन्ति यस्मिन्समये वेदनासमयो नस निर्जरासमय यो निर्जरासमयो नसवेदनासमय. ? गौतम ! यस्मिन्समये वेदयन्ति नतस्मिन्समये निर्जरयन्ति यस्मिन्समये निर्जरयन्ति नतस्मिन्समये वेदयन्ति, अन्यस्मिन्समये वेदयत्य न्यस्मिन्समये निर्जरयति, अन्य. स वेदनासमयो न्य. स निर्जरासमय स्तेनार्थे न याव न्नस वेदनासमय । नैरयिकाणा भदन्त ! योवेदनासमय· सनिर्जरासमय· योनिर्जरासमय सवेदनासमय ? गौतम ! नायमर्थ. समर्थ , केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते नैरयिकाणा यो वेदनासमयो नस निर्जरासमयो यो निर्जरासमयो नस वेदनासमयः ? गौतम ! नायमर्थ.,

वेदणासमए । जे निर्जरासमय ते वेदना समय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम एअर्थ समर्थनहो । सेकेणठेणभंतेएवंवुच्चइ । ते स्यें अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यु । जेवेयणासमए णसेणिज्जरासमए । जे वेदनासमय नही ते निर्जरासमय । जे णिज्जरासमए णसेवेयणासमए । जे निर्जरा समय नही ते वेदनासमय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ज समय वेदेति णोतसमयंणिज्जरेंति । हेगौतम । जे समयें वेदे नही ते समये निर्जरे । ज समयणिज्जरेंति णोतसमयवेदेंति । जे समय निजरे नही ते समय वेदे । अन्नमिसमएवेदेंति अन्नमिसमएणिज्जरेंति । अनेरा समयनेविषे वेदे अनेरासमयनेविषे निर्जरे । अणोसेवेयणासमए अणोसेणिज्जरासमए । अनेरो ते वेदनासमय अनेरो ते निर्जरासमय । सेतेणठेण जाव णसेवेयणासमए । ते तेणे अर्थे यावत् ते वेदनासमय नही । णेरइयाणंभंते जेवेयणासमए सेणिज्जरासमए । नारकीने हेभगवन् ! जे वेदनासमय त निर्जरासमय । जेणिज्जरासमए सेवेयणासमए । जे निर्जरासमय ते वेदना समय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम ए अर्थ समर्थ नही । सेकेणठेणभंते एववुच्चइ । ते स्यें अर्थे हेभगवन्

॥ टीका ॥

कृतकर्म्मणाश्च वेदना तद्गताच कथंचि च्छाश्वतत्वेसति युज्यतइति तच्छाश्वतत्वसूत्राणि, तत्रच ॥ अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाएत्ति ॥ अव्यवच्छित्तिप्रधानो न

॥ मूल ॥

रासमए जेनिज्जरासमए नसेवेदणासमए ? गोयमा । नेरइयाणं जसमय वेदेंति नोतसमय निज्जरेंति जंस मयं निज्जरेंति नोतंसमय वेदेंति, अण्णमिसमए वेदेंति अण्णमिसमए निज्जरेंति, अण्णेसे वेदणासमए अ ण्णेसे निज्जरासमए सेतेणठेणं जाव नसेवेदणासमए । एव जाव वेमाणियाणं । नेरइयाणं भंते ! किंसासया

अनुवाद

केनार्थेन ? गौतम ! नैरयिका यस्मिन्समये (कर्म) वेदयति नैव तस्मिन्समये निर्जरयति यस्मिन्समये कर्म निर्जरयन्ति नैव तस्मिन्समये वे दयति, अन्यस्मिन्समये कर्म वेदयत्यन्यस्मिन्समये निर्जरयति, अन्यः स (कर्मणा) वेदनासमयो न्य स (कर्मणो) निर्जरासमय स्तेनार्थेन यावन्नसवेदनासमय , एव याव द्वैमानिका । नैरयिका भदन्त ! किं शास्वता अशास्वता ? गौतम ! स्यात्शास्वता स्यादशास्वता केना र्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? नैरयिका स्यात्शास्वता स्यादशास्वता गौतम ! अव्यवच्छित्तिनयार्थतया (द्रव्यतयेत्यर्थ) शाश्वता , व्यवच्छित्तिन

॥ भाषा ॥

इमकह्यु । णेरइयाण जेवेयणासमए णसेणिज्जरासमए । नारकीने जे वेदनासमय ते निर्जरासमय नही । जेणिज्जरासमए णसेवेयणासमए । जे निर्ज रा समय ते वेदनासमय नही । गोयमा णेरइयाण जसमयवेदेंति णोतसमयणिज्जरेंति । हे गौतम नारकी जे समये वेदे ते समयनिर्जरैनही । जनमय णिज्जरेंति तसमयवेदेंति । जेसमये कर्म निर्जरे नही ते समये वेदे । अण्णमिसमयवेदेंति । अनेरासमयनेविषे कर्मवेद । अण्णमिसमए णिज्जरेंति । अनेरा समयनेविषे कर्मनिर्जरे । अणेसेवेयणासमए अणेसेणिज्जरासमए । अनेरो ते वेदनासमय अनेरो ते निजरासमय । सेतेणट्ठेण जावणसेवेयणासमए । ते तेणे अर्थे हेगौतम । यावत् नही ते वेदनासमय कहिये । एवजाववेमाणियाण । इम यावत् वेमानिकलगे कहवो पूर्वोक्त कर्मनावेदना ते वेदनावन्त ने कथंचितप्रकारे शास्वतपणोछे ॥ युजे, तेमाटे शास्वतपणो सूत्रकहेछे – णेरइयाणभतेकिंसासयाअसासया । नारकी हेभगवन ! स्यू शास्वता अथवा अ सास्वता इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियसासया सियअसासया । हेगौतम ! कदाचित् शास्वताछे कदाचित् असास्वताछे । तेना इणरातिवचनुयः । ते स्वे

यो ऽव्यवच्छित्तिनय स्तस्यार्थी द्रव्य मव्यवच्छित्ति नयार्थ स्तद्भाव स्तत्ता तया ऽव्यवच्छित्तिनयार्थतया, द्रव्य माश्रित्य शाश्वता इत्यर्थ ॥ व्योच्छित्तिनयठयाएत्ति ॥ व्यवस्थितिप्रधानो यो नय स्तस्य योर्थ. पर्यायलक्षण स्तस्य योभाव स्सा व्यवच्छित्तिनयार्थता तया, पर्याया नाश्रित्या शाश्वता नारकाः ॥ इतिसप्तमशतेतृतीय ॥ ३ ॥ तृतीयोद्देशके संसारिणा शाश्वतत्वादिस्वरूपतो निरूपिता, श्चतुर्थोद्देशकेतु तानेव भेद

असासया ? गोयमा ! सियसासया सियअसासया । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइया सियसासया सियअसासया ? गोयमा ! अव्वोच्छित्तिणयठयाए सासया वोच्छित्तिनयठयाए असासया सेतेणठेणं जाव सियअसासया सेवं भंते भंतेत्ति ॥ इइसत्तमसयस्स तइओ उद्देसोसम्मत्तो ७ ॥ ३ ॥ जाव

यायतया (पर्यायतयेत्यर्थ) अशाश्वता , तेनार्थेन याव दशाश्वता । एव यावद्वैमानिका यावत् स्या दशाश्वता । तदेव भदन्त भदन्त ॥ इति सप्तम शते तृतीय ७ ॥ ३ ॥ राजगृहे याव देव मवादीत्–कतिविधा भदन्त । ससारसमापन्नका जीवा प्रज्ञ

अर्थहेभगवन् ! इमकह्यु । णेरइयासियसासया नियअसासया । नारकी कदाचित् शाश्वताछे कदाचित् अशाश्वताछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अव्वोच्छित्तिणयठयाए सासया । हेगौतम । जेणें नये द्रव्यव्यवच्छेदन थाय तेहना अर्थ तेहने भावेकरी एतले द्रव्यआश्रयीने शाश्वता । वोच्छित्तिणयठयाए असासया । व्यवछित्ति प्रधान जे नय तेहनो अर्थपर्यायलक्षण तेहनेभावे करी एतले पर्यायआश्रयीने अशाश्वताछे । सेतेणठेण जावसियसासयासियअसासया । इम यावत् वैमानिकपर्यन्त सरा । ते म्यें अर्थ हेगौतम ! नारकीकदाचित् शाश्वता कदाचित् अशाश्वताहुवे । एवजाववेमाणिया जावसियअसासया । इम यावत् वैमानिकपर्यन्त कहवा । यावत् कदाचित् शाश्वता कदाचित् अशाश्वता इति । सेव भंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सत्यछे । सत्तमसयस्सतइओ उद्देसोसम्मत्तो । ए सातमा शतकनो त्रीजो उद्देशो पूर्णथयो ७ ॥ ३ ॥ त्रीजे उद्देशे ससारीजीव शाश्वतपणो आदिदेई स्वरूप कह्या चौथे उद्देशे तेहीज भेदथकी निरूपणकरता कहेछे—रायगिहेणयरे जावएववयासी । राजगृहनगरनेविषे यावत् इमकहे । कइविहाणंभ

॥ टीका ॥

तो निरूपयन्नाह ॥ कइविहेणमित्यादि ॥ एव जहाजीवाभिगमेत्ति ॥ एवंच तत्रैतत्सूत्रं–पुढवीकाइया जाव तसकाइया सेकित पुढविकाइया ? पुढविकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा–सुहुमपुढविकाइया बायरपुढविकाइया इत्यादि। अत पुनरस्य, एगेजीवे एगेण समएण एक्ककिरिय पकरेइ तसम्मत्तकिरियवा, मिच्छत्तकिरियवा, अतएवोक्त जावसमत्तेत्यादि' वाचनान्तरे त्विद दृश्यते–जीवाणछव्विहपुढवी जीवाणठिईभवठिईकाए। निल्लेवणा अणगारे किरिया सम्मत्तमिच्छत्तेत्ति ॥ १ ॥ तत्रच षड्विधा जीवा दर्शिताएव ॥ पुढवित्ति ॥ षड्विधा बादरपृथ्वी श्लक्ष्णा १ शुद्धा २ वालुका ३ मन सिला ४ शर्करा ५ खरपृथिवी ६ भेदात्' तथैषामेव पृथिवीभेदजीवाना स्थिति रन्तर्मुहूर्त्तादिका यथायोग द्वाविंशतिवर्षसहस्रा

॥ मूल ॥

सम्मत्तकिरियंवा मिच्छत्तकिरियवा, जीवाणछव्विहपुढवी जीवाणठिईभवठिईकाए। निल्लेवणअणगारे किरिया

अनुवाद

हा गौतम। षड्विधा ससारसमापन्नका जीवाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पृथ्वीकायिका एव यथाजीवाभिगमे यावत् सम्यक्त्वक्रियवा मिथ्यात्वक्रि

॥ भाषा ॥

तेसमारसमावण्णगाजीवा पणत्ता। कतनेभेदे हेभगवन्। ससार समापन्नजीव कह्या। इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा छव्विहाससारसमावण्णगाजीवा पण्णत्ताजहा। हेगौतम। छभेदे संसारसमापन्नजीव कह्या तेकहेछे–पुढविकाइयाएवंजहाजीवाभिगमे। पृथिवीकाइक इम जिम जीवाभिगमउपांगे कह्यु, तिमकहवी ते इम ,पुढविकाइया जावतसकाइया सेकितंपुढविकाइया पुढविकाइयादुविहा पणत्ता तजहा सुहुमपुढविकाइयाय बादरपुढविकाइयाय इत्यादि, इहाथी वली एहने एगेजीवेएगेणसमएण एक्ककिरियपकरेइ तजहा सम्मत्तकिरिय वा मिच्छत्तकिरिय वा एतलेमाटेजकह्यु। जावसम्मत्तकिरियवा मिच्छत्तकिरियवा। यावत् एकजीव एकेसमये एकक्रियाकरे तेकेहो सम्यक्त्वक्रियाकरे अथवा मिथ्यात्वक्रियाकरे। जीवाणछव्विहपुढवी जीवाणठिई भवठिईकाए। जीवना छ भेद देखाड्या तेहीज, बादर पृथिवीना छ भेद सण्हा १ सुद्धा २ वालुका ३ मनोसिला ४ शर्करा ५ खर ६ एहीज पृथ्वीभेद जीवनीस्थिति अन्तर्मुहूर्त्त आदिदेई यथायोगे बावीससहस्र वर्षपर्यन्त कहवी तथा नारकादिक सर्वनेविषे भवस्थितिकहवी। ते सामान्यथकी अन्तर्मुहूर्त आदिदेई तेत्रीस सागरोपम पर्यन्त तथा कायनेविषे स्थितिकहवी ते जीवने जीवकायने विषे स्थितिकहवी ते जीवने जीवकायने

॥ टीका ॥

ता वाच्या, तथा नारकादिषु सर्वेषु भवस्थिति वाच्या, साच सामान्यतो ऽन्तर्मुहूर्त्तादिका त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्ता, तथा काये स्थिति र्वाच्या, साच असंख्यातोत्सर्पिण्यवसर्पिण्यादिका, तथा निर्लेपना वाच्या साचैव-प्रत्युत्पन्नपृथिवीकायिकाः समयापहारेण जघन्यपदे ऽसङ्ख्याताभि रुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि रपह्रियन्त एव मुत्कृष्टपदेपि किंतु जघन्यपदा दुत्कृष्टपद मसङ्ख्येयगुण मित्यादि ॥ अणगारेत्ति ॥ अनगारवक्तव्यतावाच्या साचैव-अविशुद्धलेश्यो ऽनगारो ऽसमवहतेना त्मना ऽविशुद्धलेश्य देव देवी मनगारं जानाति नायमर्थ इत्यादि ॥ किरियासम्मत्तमिच्छत्तत्ति ॥ एकजीव एकेन समयेन द्वेक्रिये करोति सम्यक्त्वक्रिया मिथ्यात्वक्रियांचेति, मिथ्याचैत द्विरोधात् ॥ इतिसप्तमशते चतुर्थः प्रत्यासन्नोदेशः एव मारुयान्ति ॥ चतुर्थे संसारिणो भेदत उक्ता, पञ्चमेतु तद्विशेषाणामेव योनिसङ्ग्रह भेदत आह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ सप्तमशतचतुर्थः ॥ ४ ॥

॥ मूल ॥

जाव सम्मत्तकिरियंवा मिच्छत्तकिरियंवा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तम सए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ४ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी खहयरपंचिंदियतिरिक्खजो
सम्मत्तमिच्छत्तं ॥ १ ॥

॥ अनुवाद ॥

तद्वेव भदन्त भदन्त ॥ इति सप्तमशते चतुर्थः ७ ॥ ४ ॥ राजगृहे यावदेव मवादीत् खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां कतिविधो योनिसङ्ग्रह प्रज्ञप्तः १ गौतम।

...सेवा। जीवा पड्विधपृथिवी जीवानां स्थितिर्भवस्थिति कायं निर्लेपनानगारौ क्रियासम्यक्त्वमिथ्यात्वे।

॥ भाषा ॥

कहेवे इत्यादि तथा। णिल्लेवणा अणगारे। निर्लेपनाकहवी ते इम प्रत्युत्पन्न पृथ्वीकायिकजीव समय २ काढता जघन्यपदे असङ्ख्यातीउत्सर्पिणी अवसर्पिणी करी अपहरिये इम उत्कृष्टनेविषे पणि किन्तु जघन्यपदथी उत्कृष्टपद असङ्ख्येयगुण मित्यादि अणगार वक्तव्यताकहवी ते इम अविशुद्धलेश्या अनगार वेदना समुद्घात रहित आत्माये करीने अविशुद्धलेश्यादेव तथा देवप्रते अथवा अणगारप्रते जाणे एअर्थ समर्थ नहीं इत्यादि। किरियासम्मत्तमिच्छत्ते। एकजीव एक समये बे क्रियाकरे सम्यक्त्वक्रियाप्रते तथा मिथ्यात्वक्रिया प्रते ते मिथ्या कह्योछे माहोमाहि विरोधपणानो। सेवंभंते २ त्ति। तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नहीं। सत्तमशतकनचउत्थोउद्देसो। ए सातमा शतकनो चोथो उद्देशो समाप्त थयो ७ ॥ ४ ॥ चोथे उद्देशे संसारीजीव भेदथकी कह्या पञ्चम उद्देशे योनिसङ्ग्रहभेदथकी कहेछे—रायगिहे जावएववयासी।

॥ टीका ॥

जोणीसंगहेत्ति ॥ योनि रुत्पत्तिहेतु र्जीवस्य तया सङ्ग्रहो नैकेषा मेकशब्दाभिलाप्यत्वं योनिसङ्ग्रह ॥ अण्डयत्ति ॥ अण्डा ज्जायन्तइति अण्डजा हं सादय ॥ पोययत्ति ॥ पोतव द्वस्त्रव ज्जरायुवर्जिततया शुद्धदेहा योनिविशेषा ज्जाता पोतादिववो . पस्याज्जाता पोताइववा , वस्त्रसमर्जिता इव जाता पोतजा वल्गुल्यादय ॥ समुच्छिमत्ति ॥ समूर्च्छन योनिविशेषधर्मेण निर्वृत्ता समूर्च्छिमा वह्निकादय ॥ एवजहाजीवाभिगमेति ॥ एव च तत्रेतत्सूत्र ॥ अण्डया तिविहा पन्नत्ता त० इत्थी पुरिसा नपुंसया एवपोययावि तत्थण जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा इत्यादि, एतदन्तसूत्र त्वेव-अत्थिणं भंते । विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराजियाइ ? हता अत्थि तेण भंते ? विमाणा के महालया पन्नत्ता ? गोयमा !

॥ मूल ॥

णियाणं भंते ! कइविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते , तजहा — अंडया पोयया संमुच्छिमा एवं जहा जीवाभिगमे , जाव नोचेवण ते विमाणे वीईवएज्जा एमहालयाणं गोयमा !

अनुवाद

त्रिविधो योनिसङ्ग्रह प्रज्ञप्त , तद्यथा अण्डजा पोतजा समूर्च्छिमा , एव यथाजीवाभिगमे यावन्नैव विमान व्यतिव्रजेत् महालया

॥ भाषा ॥

राजगृहनगरनेविषे यावत् गौतम इमकहे । खह्चर पचि दियतिरिक्वजोणियाणभते । खचर पचेन्द्रीतियचयोनिकनो हेभगवन् । कइविहे जोणि सग हे पण्णत्ते । केतलेभेदे योनिसग्रह कह्या , इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहेजोणिसगहे प० त० । हे गौतम । तीनेभेदे योनिसग्रह कह्या ते कहेछे—यो नि कहता जीवनो उत्पत्तिहेतु तिणेकरी सग्रह ते अनेकनो एकशब्द अभिलापपणो ते योनिसग्रह । अडया पोयया सम्मुच्छिमा एवजहाजीवाभिगम जावणोचेव विमाणेवीईवएज्जा । ईंडाथकी ऊपजे ते हसप्रमुख अण्डज पोतकहिये वस्त्रनीपरेजरायु वर्जितपणे शुद्धदेह योनिविशेषथकी नीकल्या वा ग लप्रमुख ते पोतज २ सम्मूर्च्छिमयोनिविशेष धर्मे करीनीपना ते वह्निकादिक ३ इम जिम जीवाभिगम उपागेकह्यु ते इम अडयातिविहा प० त० इ त्थी पुरिसा नपुंसया एवपोययावि तत्थणजेतेसमुच्छिमा तेसव्वेणपुंसगा इत्यादि एहसूत्रने अते इमकहे अत्थिणभंतेविमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयता इ अपराजियाइ हताअत्थि तेणभंतेविमाणाकेमहालया प० गोयमा जावइयचणसूरिए उदेइ जावइयचणअत्थमेइ जेतले अन्तरे इत्यर्थ । एवइयाइ तन

जावइयचण सूरिए उदेइ जावइयचण सूरिए अत्थमेइ (यावतान्तरेणेत्यर्थ) एव रूवाइं नवउवासतराइं अत्थेगइयस्स देवस्स एगे विक्कमेसि या सेणं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे २ जाव एगाहवा, दुयाहवा, उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जाति, जोपतु लिखितमवास्ते, एतदेव पयन्तसूत्रतया यावत्करणेन दर्शितमिति वाचनान्तरं त्विददृश्यते–जोगीसंगहलेसा दिट्ठीनाणेयजोगउवउगे । उववायठि इसमुग्घा यचवणजाइकुलविहीउ ॥ १ ॥ तत्र योनिसङ्ग्रहो दर्शितएव, लेश्यादीनि त्वर्थतो दर्श्यंते' एषां लेश्याः षट्, दृष्टय स्तिस्र, ज्ञानानि त्री ण्याद्यानि भजनया, ज्ञानानितु त्रीणि भजनयैव, योगा स्त्रय' उपयोगौ द्वौ, उपपात सामान्यत स्तत्स्वप्योपि गतिभ्य, स्थिति रन्तर्मुहूर्ता दिका पल्योपमासङ्ख्येयभागपर्यवसाना' समुद्घाता केवल्याहारकवर्ज्जा. पंच, तथा च्युत्वा त गतिचतुष्टयेपि यान्ति' तथैषा जातौ द्वादशकुलको

तेविमाणा पन्नत्ता–जोगीसंगहलेसा दीठीनाणेयजोगउवउगे । उववायठिइसमुग्घाय चवणजाईकुलविहीउ

स्ते गौतम ! विमाना प्रज्ञप्ता, योनिसङ्ग्रहलेश्ये दृष्टिज्ञानञ्चयोगउपयोगः। उपपातस्थितिसमुद्घाता च्यवनजातिकुलविधय' । तच्चैव भदन्त

उवासंतराइं अत्थेगइए एतस्सदेवस्स एगेणपरक्कमेसिया सेणदेवत्ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जावदिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे २ जावएगाहवा दुयाहवा छ क्कोसेणछम्मास वीईवएज्जासि शेषसूत्रमाहि लिख्यूछे । एमहालएणं गोयमा तेविमाणा प० । एहवा मोटा हेगौतम । ते विमानकह्या जोगीसंगह लेसा दिट्ठीणाणेयजोगउवओगे । उववायठिइं समुग्घाए चवणजाईकुलविहीओ ॥१॥ तिहा योनिसंग्रह तो देखाड्योहीज लेश्यादिक अर्थथी देखाडिछे, छ लेश्या ६ दृष्टि तीन ज्ञान तीन पहिलो भजनायें अज्ञान तीन भजनायें योग तीन उपयोग दोय उपपात सामान्यथकी चारगतिओहवे स्थिति अन्तर्मुहू र्त आदिदेई पल्योपमनो असंख्यातमोभागपर्यन्त समुद्घात केवलीआहारक वर्जित पांच तथा चवण चवीने चारिगतनेविषे ऊपजाय तथा एहनी बार कुलकोडीलाख जातिनेविषे हुवे सेवभतेभतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सत्यछे । सत्तमसयस्सपंचमओ । एसातमाशतकनेविषे पांचमो उद्देशो पूरो

॥ टीका ॥

टीलक्षा भवन्ति ॥ इति सप्तमशते पञ्चम ॥ ५ ॥ अनन्तर योनिसंग्रहादि रूपेणोक्त नचायुष्मतां नवती त्यायुष्कादिनिरूपणा

॥ मूल ॥

॥ १ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तमसयस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ५ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी—जीवेणं भंते ! जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणभंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेइ उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ? गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ नोउववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ नोउववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ, एवं असुरकुमारेसुवि, एवं जाव वेमाणि

॥ अनुवाद ॥

भदन्त इति ॥ सप्तमशते पञ्चम ७ ॥ ५ ॥ राजगृहे यावदेवं मवादीत् जीवो भदन्त ! यद्भविको नैरयिकेषू त्पत्तितु तद्भदन्त ! किमिहगतो नैरयिकायुष्क प्रकरोति उपपद्यमानोवा नैरयिकायुष्क प्रकरोति उपपन्नोवा नैरयिकायुष्क प्रकरोति (पूर्वमुत्पद्यपश्चादित्यर्थः) गौतम ! इहगतो नैरयिकायुष्क प्रकरोति नैवोपपद्यमानो नैरयिकायुष्क प्रकरोति नैवोपपन्नो नैरयिकायुष्क प्रकरोति (इहमनुष्यतिर्यग्भव

॥ भाषा ॥

शया ७ ॥ ५ ॥ पाछिले उद्देशे योनिसंग्रहादिक अर्थकह्यो ते आऊखावालानेहुवेते इहां आऊखो कहेछे—रायगिहेणयरे जावएवंवयासी । राजगृहनगरनेविषे यावत् इम कहेछे—जीवेणभंतेजेभविएणेरइएसुउववज्जइ । जीव हेभगवन् ! जे नरकनेविषे उपजवायोग्यछे ते नरकनेविषे उपजे । सेणभंतेकिंइहगएणेरइयाउयपकरेइ । ते हे भगवन् ! स्यूं इहां मनुष्य तिर्यंचना भवनेविषे रह्यो नारकीनो आऊखोबांधे वाधे उववज्जमाणेणेरइयाउयपकरेइ । अथवा नारकीनेविषे उपजतोथको नारकीनो आऊखो करे अथवा । उववन्नेणेरइयाउयपकरेइ । ऊपनापछी नरकीनो आऊखोकरे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा इहगएणेरइयाउयपकरेइ । हेगौतम ! इहां मनुष्यतिर्यचना भवनेविषे रह्योथको नारकीनो आऊखोबांधे । णोउववज्जमाणेणेरइयाउयपकरेइ । उपजतोथको नारकीनो आऊखो नबांधे । णोउववन्नेणेरइयाउयपकरेइ । ऊपनापछी नारकीनो आऊखो न बांधे । एवंअसुरकुमारेसुवि । इम असुरकुमारनेविषे पणिकहवो । एवंजाववेमाणिएसु । इम यावत् वैमानिकनेविषे कहवो । जीवेणभंते जेभविएउववज्जित्तए । जीव हे

॥ टीका ॥

यं पट स्तत्र ॥ एगतदुक्खवेयणाति ॥ सर्वथा दु खरूपा वेदनीयकर्मानुभूति ॥ आहच्चसायति ॥ कदाचि त्सुखरूपां नरकपालादीना मसयोगका

॥ मूल ॥

एसु । जीवेणं भंते ! जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए से भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ उवव ज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? गोयमा ! नोइहगए नेरइयाउयं पडि संवेदेइ उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ उववन्नेवि नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ , एवं जाव वेमाणिएसु जीवेण भंते ! जेभविए नेरइएसु उववज्जित्तए सेणभंते ! किं इहगए महावेयणे उववज्जमाणे महावेयणे

अनुवाद

गतएव जीवो नरयिकायुष्क वध्वा तत स्तत्रो त्पद्यत इति तात्पर्यार्थ) एव मसुरकुमारेष्वपि वाच्यम् यावद्वैमानिकेषु । जीवो भदन्त योभवि कों नैरयिकेषू त्पतितु स भदन्त । किं इहगतो नैरयिकायुष्क प्रतिसवेदयति उपपद्यमानो नैरयिकायुष्क प्रतिसवेदयति उपपन्नो नैरयिकायु ष्क प्रतिसवेदयति ? गौतम । नोइहगतो नैरयिकायुष्क प्रतिसवेदयति उपपद्यमानो नैरयिकायुष्क प्रतिसवेदयति उपपन्नोपि नैरयिकायुष्क

॥ भाषा ॥

भगवन् । ज नारकीनविषे उपजवायोग्यछे ते नारकीनविषे ऊपजेछे । सेणभतेकिंइहगएणेरइयाउयपडिसवेदेइ । ते णवाक्यालकारे, हेभगवन् ! स्यू इ हा पहिलाभवनेविषे रह्योथको नारकीनाआउखो अनुभवेभोगवे इत्यर्थ । उववज्जमाणेणेरइयाउयपडिसवेदेइ । उपजतोथको नारकीनोआउखो अन भवे भोगवे इत्यर्थ । उववणेणेरइयाउयपडिसवेदेइ । ऊपनापछी नारकीनोआउखो अनुभवे भोगवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइहगएणेरइयाउयपडि सवेदेइ । हेगौतम । नहीं इहा पहिलाभवनेविषे रह्योथको नारकीनोआउखो भोगवे । उववज्जमाणेणेरइयाउयपडिसवेदेइ । उपजतोथको नारकीनोआ उखो भोगवे उववणेणेरइयाउयपडिसवेदेइ । ऊपनापछी नारकीनोआउखो अनुभवे । एवजाववेमाणिएसु । इम यावत् वैमानिकताईंकहवो । जीवेण भंतेजेभविएणेरइएसुउववज्जित्तए । जीव हेभगवन् । जे भव्य नारकीनेविषे ऊपजवायोग्य ते नारकीनेविषे ऊपजेछे । सेणभतेकिंइहगएमहावेयणे । ते हेभगवन् । स्यू इहा पहिला भवनेविषे रह्योथको महावेदनहुवे । उववज्जमाणेमहावेयणे । ऊपजतोथको महावेदनहुवे । उववण्णेमहावेयणे । ऊप

॥ टीका ॥

ले ॥ एगंतमायति ॥ भवप्रत्ययात् ॥ आरब्धप्रसायति ॥ महाराद्युपनिपातात् ॥ कक्कसवेयणिज्जाकम्मति ॥ कर्कशे रौद्रदु खे वेद्यन्ते यानि तानि क

॥ मूल ॥

उववन्ने महावेयणे ? गोयमा ! इहगए सियमहावेयणे सियअप्पवेयणे , उववज्जमाणे सियमहावेयणे सिय अप्पवेयणे, अहेणं उववन्ने भवइ तत्त पच्छा एगतदुक्ख वेयणं वेएइ आहच्चसाय । जीवेण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा गोयमा ! इहगए सियमहावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सियमहावेयणे सियअप्पवेयणे, अहेणं उववन्ने भवइ तत्त पच्छा एगंतसाय आहच्च असायं । एव जाव

अनुवाद

प्रतिसवेदयति, एव यावद्वैमानिकेषु । जीवो भदन्त योभविको नैरयिकेषूत्पत्तितु स भदन्त किमिहगतो महावेदन उपपद्यमानो महावेदन उपपन्नो महावेदन. ? गौतम । इहगत स्यान्महावेदन स्यादल्पवेदन उपपद्यमान. स्यान्महावेदनः स्यादल्पवेदनो ऽथ उपपन्नो भवति तत पश्चा देकान्तदु ग्वा (सर्वथादु खरूपामित्यर्थ) वेदना (वेदनीयकर्मानुभूतिमित्यर्थ) वेदय त्यनुभवति कदाचि त्साता (नरकपालादीना

॥ भाषा ॥

नापछी महावेदनहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इहगएसियमहावेयणे । हेगौतम । इहा पहिला भवनेविषे रह्यो किवारे कोइएक महावेदनावन्तहुय रोगादिकारणे । सियअप्पवेयणे । किवारे कोइएक अल्पवेदनावन्त । उववज्जमाणेसियमहावेयणे सियअप्पवेयणे । उपजतोथको पणि कोइएक महावेदनावन्तहुवे इहाथका पणि महावेदनावन्तहुवे किवारे अल्पवेदनावन्त । अहेणउववन्नेभवइ । हिवे नरकनोजीव नारकीनेविषे उपनो । तत्रोपरछाहुवे एगंतदुक्ख वेयणंवेदेति आहच्चसात । तिवारपछी सर्वथा दु खरूप वेदनीयकर्मवेदे कदाचित् सुखपरमाधर्मीनो सयोग नहुइ ते । जीवेणभंतेजेभविएअसुरकुमारेसुउववज्जित्तए पुच्छा । जीव हेभगवन् । असुरकुमारनेविषे उपजवायोग्यछे ते असुरकुमारनेविषे उपजे इत्यादि पूछिनीपरे प्रश्न उत्तर । गोयमा इहगएसियमहावेयणे सियअप्पवेयणे । हेगौतम । इहां गतथको किवारे महावेदनहुवे किवारे अल्पवेदनहुवे सातावेदनहुवे । उववज्जमाणेसियमहावेयणे सियअप्पवेयणे । उपजतोथको किवारे महावेदनावन्तहुवे किवारेअल्पवेदनावन्तहुवे इणि भवनेविषे साताथको । अहेणउववन्नेभवइ । हिवे उ

॥ मूल ॥

थणियकुमारेसु । जीवेणं भंते ! जेभविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए पुच्छा गोयमा ! इहगए सियमहावे यणे सियअप्पवेयणे, एव उववज्जमाणेवि, अहेणं उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेएइ, एवं जाव मणुस्सेसु, वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु । जीवाणं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया

अनुवाद

ससयोग इति तात्पर्यम्) जीवो भदन्त । यो भविको (योग्यइत्यर्थ) असुरकुमारेषूत्पत्तितु पृच्छा गौतम । इहगत स्यान्महावेदन स्यादल्प वेदन उपपद्यमान स्यान्महावेदन स्यादल्पवेदनो ऽथ उपपन्नोभवति तत पश्चा देकान्तसाता (सर्वथासुखरूपामित्यर्थ) कदाचि दसाता वेदना वेदयतीतिशेष) एव यावत स्तनितकुमारेषु । जीवो भदन्त । यो योग्य पृथिवीकायिकेषूत्पत्तितु पृच्छा ? गौतम । इहगत स्यान्म हावेदन स्यादल्पवेदन एवमुपपद्यमानोपि अथ उपपन्नोभवति तत पश्चा द्विमात्रया ता वेदयति एव यावन्मनुष्येषु वानव्यन्तरज्योतिकवैमा निकेषु यथा ऽसुरकुमारेषु (तथावाच्यमितिशेष) जीवा भदन्त । कि आभोगनिर्वर्तितायुका अनाभोगनिर्वर्तितायुका ? गौतम । नोआभो

॥ भाषा ॥

पनोहुवे । तओपच्छाएगतसायवेयणवेदेति । तिवारपछी एकान्त साता सुखरूप वेदनीयकर्म अनुभवे भवप्रत्ययथकी । आहच्चसाय एवजावथणियकुमा रस । किवारे असाता ते देवादिकृत प्रहारादिना पडवाथकी इम यावत् स्तनितकुमार ताई कहवो । जीवेणभंतेजेभविएपुढविकाइएसुउववज्जित्तए पुच्छा । जीव हेभगवन् । जे पृथिवीकायनेविषे उपजवायोग्यछे ते पृथिवीकायनेविषे उपजे इत्यादि प्रश्नकीधां उत्तर । गोयमाइहगएसियमहावेयणे । हे गौतम । पृथिवीकायिक कोरेक पहिला भवनेविषे महावेदनावन्तहुवे । सियअप्पवेयणे । किवारे अल्प वेदनावन्तहुवे । एवउववज्जमाणेवि । इम उपजताथका पणि कहवो । अहेणउववन्नेभवइ । हिवे ते उपनो हुवे । तओपच्छावेमायाएवेदणवेदेति । तिवारपछी विविधमात्रायें वेदनाप्रतें वेदे । एवजावमणुस्सेसु । इम यावत् मनुष्यनेविषे कहवो । वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक । जहाअसुरकुमारेसु । जिम असुर कुमारनेविषे कह्यु तिमकहवो । जीवाणभंतेकिंआभोगणिव्वत्तियाउया । जीव हेभगवन् । स्यू जाणतोथको आऊखो नीपजावे एतावतावाधे । अणाभो

॥ टीका ॥ कर्कशवेदनीयानि स्कन्दकाचार्यसाधूनामिवेति ॥ अकर्कशवेयणिज्जेत्ति ॥ अकर्कशेन सुखेन वेद्यन्ते यानि तान्यकर्कशवेदनीयानि भरतादीनामिव ॥

॥ मूल ॥ अणाभोगनिव्वत्तियाउया ? गोयमा ! नोआभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया एव नेरइयावि, एवं जाव वेमाणिया । अत्थिणं भंते! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति? हंताअत्थि । कहन्नंभंते! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ? गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवखलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति । अत्थिणं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जा

॥ अनुवाद ॥ गनिर्वर्तितायुष्का अनाभोगनिर्वर्तितायुष्का, एवं नैरयिका अपि यावद्वैमानिका । अस्ति भदन्त ! जीवाः कर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति (स्कन्दकाचार्यसाधूना मिवेति) हंत अस्ति, कथं (केनहेतुना) भदन्त ! जीवा कर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति? गौतम ! प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येन (अष्टादशपापस्थानकसेवनेनेत्यर्थ) एवखलु ? गौतम ! जीवाः कर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति । अस्ति भदन्त ! नैरयिकाः कर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्तीति एवञ्चैव यावद्वैमानिका । अस्ति भदन्त ! जीवा अकर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति (भरता

॥ भाषा ॥ गणिव्वत्तियाउया । अणजाणतो आऊखोबाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोआभोगणिव्वत्तियाउया । हेगौतम । जाणतोथको आऊखोबाधे । अणाभोगणिव्वत्तियाउया । अणजाणतो आऊखोबाधे जिम जोवनोदंडककह्यो । एवणेरइयावि एवजाव वेमाणिया । इम नारकी पणि कहवो इम यावत् वेमानिकलगे कहवो । अत्थिणभंतेजोवाणकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । छे हेभगवन् । जीव कर्कश रौद्र दुःख तिणेकरी वेदोये जे ते एहवा कर्मकरे उपजे इति प्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हांगौतम । कहणभंतेजोवाकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । किम हेभगवन् । जोव कर्कशरौद्र दुःखरूप वेदनोयकर्म उपार्जे इति प्रश्न उत्तर । गोयम।पाणाइवाएणजावमिच्छादंसणसल्लेण । हेगौतम । प्राणीने हणवेकरो यावत् मिथ्यादर्शन शल्य इणे अठारे पापस्थानके करोने । एवखलुगोयमा । इम निश्चे हेगौतम । जोवाणकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । जीव कर्कशवेदनीयकर्म करे । अत्थिणंभंतेणेरइयाणकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्ज

॥ टीका ॥ पाणाइवायवेरमणेणाति ॥ सयमेनेत्यर्थो, नारकादीनान्तु सयमाभावा तदभावो वसेय ॥ अदुक्खणायाणि ॥ दुःखस्य करणं दुःखनं तदविद्यमानं

॥ मूल ॥ ति ? गोयमा ! एवं जाव वेमाणियाणं । अत्थिणं भंते जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, हंता अत्थि । कहन्नं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं कोहविवेगेणं जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं एवंखलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । अत्थिणं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? णोइणठेसमठे, एवं जाव

॥ अनुवाद ॥ दिवत्) हंता अस्ति । कथ (केनहेतुना) अकर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति ? गौतम । प्राणातिपातविरमणेन यावत् परिग्रहविरमणेन क्रोधविवेकेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्यविवेकेन (विवेकस्यत्यागफलत्वात्सयमेनेत्यर्थ) एवंखलु गौतम । जीवा अकर्कशवेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति अस्ति भदन्त । नैरयिका अकर्कशवेदनीयानि (सुखेनवेदनीयानि) कर्माणि कुर्वन्तीति ? गौतम । नायमर्थः समर्थः, एवयावद्वैमानिका. (सयमा

॥ भाषा ॥ ति । छे हेभगवन् । नारकोने कर्कशरौद्रदुःखरूप वेदनीयकर्मकरे इतिप्रश्न उत्तर । गो०एवचेव एवजाववेमाणियाण । हेगौतम । इमहीज जिम पूर्वे कह्यो तिम यावत् वैमानिकलगे कहवो । अत्थिणभंतेजीवाणअकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । छे ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीवने कठोरनहो एतले सुखे वेदवायोग्य जे कर्म ते करे भरवनोपरे इतिप्रश्न उत्तर । गो० हंताअत्थि । हागौतम छे । कहन्नभंतेजीवाणअकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । किसे प्रकारे हेभगवन् । जीव कठोरनहो सुखेवेदवायोग्य जे वेदनीयकर्म तेहप्रतेकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणाइवायवेरमणेण । हेगौतम । प्राणीनो हणवो तेहनी निवर्त्तवो तिणेकरीने । जावपरिग्गहवेरमणेण । यावत् परिग्रहने निवर्त्तववे करीने । कोहविवेगेण । क्रोधने तजवेकरीने । जावमिच्छादंसणसल्लविवेगेण । यावत् मिथ्यादर्शन शल्यने तजवेकरीने एतावता अठारे पापस्थानक छोडवेकरीने । एवंखलुगोयमा जीवाणअकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । इम निश्चे हेगौतम । जीव कठोरनहो सुखे वेदवायोग्य जे कर्म ते करे । अत्थिणभंतेणेरइयाणअकक्कसवेयणिज्जाकम्माकज्जति । छे हेभगव

॥ टीका ॥

यस्या सा बहु खन स्नद्भाव स्तत्ता तया ग्रदु खनतया ग्रदुःखकरणेनेत्यर्थ, एतदेव प्रपंच्यते ॥ ग्रसोयणयाएत्ति ॥ दैन्यानुत्पादनेन ॥ ग्रजूरणयाएत्ति ॥ शरीरापचयकारिशोकानुत्पादनेन ॥ ग्रपिट्टणयाएत्ति ॥ यष्ट्यादिताडनपरिहारेण ॥ ग्रपरितावणयाएत्ति ॥ शरीरपरितापानुत्पादनेन ॥

॥ मूल ॥

वेमाणियाणं, णवरं मणुस्साणं जहाजीवाणं । अत्थिणं भंते ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता अत्थि । कहन्नं भंते ! जीवा सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए बहूणपाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए एवंखलु गोयमा ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति,

॥ अनुवाद ॥

भावान्नारकादीना) विशेषो मनुष्यायथा जीवाः (सयमभावात् । अस्ति भदन्त जीवा सातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति ? हंता अस्ति । कथं भदन्त जीवा सातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति ? गौतम । प्राणिनामनुकम्पातो भूतानुकम्पातो जीवानुकम्पात सत्वानुकम्पातो बहूनाप्राणिना याव दसत्वाना मदु खनताया (मरणलक्षणदु खाकरणभावेनेत्यर्थं) अशोचनताया (दैन्यप्रापणाभावेनेत्यर्थं) अजीर्णताया (शोकातिरेकाच्छ

॥ भाषा ॥

न् । नारकीने कठोरनही सुखे वेदीये एहवाकर्मकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे । हे गौतम । एअर्थ समर्थनही युक्तनही । एवजाववेमाणिया । इम यावत् वैमानिकलगे कहवो । णवरमणूसाणजहाजीवाण । एतलोविशेष मनुष्यने जिम जीवनेकह्यु तिम कहवो । अत्थिणभंतेजीवाणसातावेयणिज्जाकम्माकज्जति । छै हेभगवन् । जीव सातावेदनीय कर्मकरे बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गो० हताअत्थि । हा गौतमछे । कहण्णभंतेजीवासातावेयणिज्जाकम्म कज्जति । किम ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीव सातावेदनीय कर्मकरे बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणाणुकपाए भूयाणुकपाए जीवाणुक पाए सत्ताणुकपाए । हेगौतम । प्राणीनो अनुकपा दयाये भूतनो अनुकपा दयाये जीवनीदयाये सत्वनी अनुकपा दयाये । बहूणपाणाण । घणा प्राणीने । जावसत्ताण । यावत् सत्वने । णदुक्खणयाए असोयणयाए । दु खने अणकरवेकरी दीनपणे अणकरवेकरी । अजूरणयाए अतिप्पणयाए । शरीरनो

॥ मूल ॥

एवं नेरइयाणवि, जाव वेमाणियाणं । अत्थिणं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? हंता अत्थि । कहन्नं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? गोयमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए परजूरणयाए परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए परपरितावणयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खणयाए

॥ अनुवाद ॥

अपिट्टनतायाः (यष्ट्यादिताडनाभावेन) अपरितापनतायाः (शरीरपरितापकरणाभावेन) एवंखलु गौतम ! जीवाः शातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति । एवं नैरयिका अपि, यावद्वैमानिकाः । अस्ति भदन्त ! जीवाः अशातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति ? हन्त अस्ति । कथं भदन्त ! जीवाः अशातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति ? गौतम ! परदुःखनतायाः, परशोचनतायाः, परजीर्णतायाः, परतपनतायाः, परपिट्टनतायाः, परपरितापनतायाः, बहूनाम्प्राणिनाम् यावत् सत्वानां दुःख

॥ भाषा ॥

अपिट्टणयाए अपरियावणियाए । यष्ट्यादि ताडन परिहारे करी शरीरपरिताप अणउपजाववेकरी । एवंखलुगोयमा । इम निश्चे हेगौतम । जीवाणसातावेयणिज्जाकम्माकज्जति । जीव सातावेदनीयकर्मकरे बाधे । छे हेभगवन् । जीव असातावेदनीय कर्मकरे इतिप्रश्न उत्तर । हंता अत्थि । हांगौतम । कहन्नभंतेजीवाणअसायावेयणिज्जाकम्माकज्जंति । किम हेभगवन् । जीव असातावेदनीय कर्मकरे बाधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा परदुक्खणयाए परजूरणयाए । हेगौतम । परने दुःखकरवेकरी परने दीनपणो करवेकरी परने शोककारणे करवेकरी । परतिप्पणयाए परपिट्टणयाए । परने आमूलालादिने खिरणने कारणेकरी परने यष्ट्यादि ताडवेकरी । परपरियावणयाए । परने परितापना करवेकरी । बहूणपाणाण जावसत्ताण । घणाप्राणीने यावत् घणा सत्वने । दुक्खणयाए सोअणयाए । दुःखने करवेकरी दीनपणाने करवकरी । जावपरियावणयाए । यावत् परितापने उपजाववे करीने । एवंखलुगोयमा । इम निश्चे हेगौतम । जीवाणसायावेयणिज्जाकम्माकज्जति ।

॥ टीका ॥

दु खप्रस्तावादिदमाह ॥ जंबूद्दीवेणमित्यादि ॥ उत्तमकट्ठपत्ताएत्ति॥ परमकाष्ठाप्राप्तायां उत्तमावस्थाङ्गतायामित्यर्थ परमकष्टप्राप्तायांवा , ॥ आगा रभावपडोयारेत्ति ॥ आकारभावस्या कृतिलक्षणपर्यायस्य प्रत्यवतारो वतरण आकारभावप्रत्यवतार' ॥ हाहाभूएत्ति ॥ हाहाइत्येतस्य शब्दस्य दु खार्त्तलोकेन करण हाहोच्यते , तद्भूत प्राप्तो य काल सहाहाभूत ॥ भंभाभूएत्ति ॥ भंभेत्यस्य शब्दस्य दु खार्त्तगवादिभि करण भंभोच्यते तद्भूतीय स भंभाभूत , भंभावा , भेरी सा चान्त शून्या ततो भंभेव य कालो जनक्षयाच्छून्य सभंभाभूत उच्यते ॥ कोलाहलभूयत्ति ॥ कोला

॥ मूल ॥

सायणयाए जाव परियावणयाए एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति , एवं नेर इयाणवि , जाव वेमाणियाणं । जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे इमीसे उसप्पिणीए दुसमदुसमाए समाए उत्तमकठ पत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! कालभविस्सइ , हाहाभूए

अनुवाद

नाया , शोचनाया , यावत् परितापनाया , एवखलु गौतम । जीवा अशातावेदनीयानि कर्माणि कुर्वन्ति । एव नैरयिकानामपि याव द्वैमा निकाना) वाच्यमितियोग । जबूद्वीपे भदन्त । द्वीपे अस्या मवसर्प्पिण्या दुसमदुसमाया समाया मुत्तमकाष्ठाप्राप्ताया भारतस्य वर्षस्य कीदृश आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम । हाहाभूतो भंभाभूत कोलाहलभूत कालो भविष्यतीति। समयानुभावेन खरपरुषधूलिमलिना

॥ भाषा ॥

जीव असातावेदनायकर्म उपार्जे। एवणेरइयाणवि एवजाववेमाणियाण। इम नारकी पणि कहवो इम यावत् वैमानिकलगेकहवो। जबूद्दीवेणभंते दोवे । जबूद्वीपनामाद्वीपनेविषे हेभगवन् । भारहेवासे। भरतनामाक्षेत्रनेविषे। इमीसेओसप्पिणीए दुसमदुसमाए समाए। आहीज अवसर्प्पिणीने विषे दुखम दुखमाकालनेविषे। उत्तमकट्ठपत्ताए। परमकाष्ठा प्राप्तनेविषे उत्कृष्टकाष्ठानेविषे। भरहस्सवासस्स। भरतक्षेत्रनो। केरिसएआगारभावपडोया रे भविस्सइ। केहवो आकारभाव तेहनो प्रत्यवतार प्रकार हस्ये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा कालोभविस्सइ। हेगौतम। इसोकालहुस्ये काल ते समयादि। हाहाभूए भंभाभूए कोलाहलभूए। दुखेकरी लोक हाहाकार करस्ये ते भूत जेकाल ते हाहाभूत दु.खपीड्या भाभागवादिकरस्ये पक्षीनासमूह मह

॥ टीका ॥

हल इत्यार्तशकुनिसमूहध्वनि स्तद्भूत प्राप्त कोलाहलभूत' ॥ समयाणुभावेणयणाति ॥ कालविशेषसामर्थ्येनच णामित्यलङ्कारे ॥ खरफरुसधूलिमइ लत्ति ॥ खरपरुषा अत्यन्तकठोरा धूल्याच मलिना येवाता स्तेतथा ॥ दुव्विसहत्ति ॥ दु:सहा' ॥ वाउलत्ति ॥ व्याकुला असमञ्जसाइत्यर्थ ॥ सवट्टय त्ति ॥ तृणकाष्टादीना सवर्त्तका. ॥ इहत्ति ॥ अस्मिन्काले ॥ अभिक्खति ॥ अभीक्ष्ण ॥ धूमाहितियदिसत्ति ॥ धूमायिष्यन्तेच धूम मुद्वमिष्यन्ति दिश पुन किम्भूता स्ताइत्याह ॥ समतारउस्सलत्ति ॥ समन्ता त्सर्वतो रजस्वला रजोयुक्ता' अतएव ॥ रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा ॥ रेणुना धूल्या कलुषा मलिना रेणुकलुषा स्तम पटलेनान्धकारवृन्देन निरालोका निरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरावा , तम पटलनिरालोका स्तत कर्मधा

॥ मूल ॥

अत्राभूए कोलाहलभूए समयाणुभावेणयण खरफरुसधुलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरावाया सवट्टगाय वाहिति , इह अभिक्खं २ धूमाहिंतिय दिसासमंत्ता समता रउस्सला रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा समय लुक्खताएणं अहिय चदा सीय मोच्छति , अहियं सूरिया तवइस्सति , अदुत्तरचण अभिक्खं बहवे अर

अनुवाद

दुर्विषहा व्याकुला भयङ्करा वाता सवर्त्तकाश्च वहिष्यन्ति , इहा भीक्ष्ण धूमायिष्यन्तेच दिश समन्ता द्रजस्वला रेणुकलुषतम पटलनिरालोका

॥ भाषा ॥

कोलाहल आर्त्तस्वरकरस्ये एहवोकाल । समयाणुभावेणयणं । कालनो समर्थाईकरीने वली णवाक्यालंकारे, । खरफरुसधूलिमइला । अत्यन्तकठोर स्पर्श धूल मलसहित एतले अतिकठोरधूल मैला वायरावाजस्ये । दुव्विसहा वाउला भयकरा । सहता दुष्कर व्याकुल करे भयना करणहार । वायासवट्टगा यवाहिति । एहवा वायरा वाटला वाय त्रिणकचरो एकठोकरे । इहअभिक्खण । इण कालनेविषे वारवार । धूमाहितियदिसासव्वओसमतारउस्स ला । दगदिशि धूंआडा मूकिस्ये सर्वदिशा रजसहितहुस्ये । रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा । रेणु धूलि तिणेकरी मलिन अन्धकारनासमूह तिणेकरी नि रास कोयीछे प्रकास जेणे । समयलुक्खताएण । कालना कलपणायकी एहवेसमये लुखेभावेकरी । अहियचदासीयमोच्छिति । अधिक अथवा अहित चन्द्रमा शीतप्रते मूकस्ये । अहियसूरियातवइस्सति अदुत्तरचण । अधिक अथवा अहितकारी सूर्य तपस्ये अथवा अनेराचिन्ह अपचिन्ह । अभिक्खणबहवे ।

॥ टीका ॥

रय ॥ समयलुक्खयाएणं ॥ कालरूक्षतयाचेत्यर्थ ॥ अहियति ॥ अधिक अहितंवा; ऽपथ्यं ॥ मोच्छतित्ति ॥ मोक्ष्यन्ति स्रक्ष्यन्ति ॥ अदुत्तरंचत्ति ॥ अथ अपरञ्च ॥ अरसमेहत्ति ॥ अरसा अमनोज्ञा मनोज्ञरसवर्जितजला येमेघा स्तेतथा ॥ विरसमेहत्ति ॥ विरुद्धरसमेघा, एतदेवा त्रिव्यज्यते ॥ खारमेहत्ति ॥ सर्जादिक्षारसमानरसजलोपेतमेघा ॥ खत्तमेहत्ति ॥ करीपसमानरसजलोपेतमेघा ॥ खट्टमेहत्ति ॥ क्वचित् दृश्यते, तत्रा म्लजला इत्यर्थः ॥ अग्गिमेहत्ति ॥ अग्निवद्दाहकारिजलाइत्यर्थ ॥ विज्जुमेहत्ति ॥ विद्युत्प्रधानाएव जलवर्जिताइत्यर्थः, विद्युन्निपातवन्तोवा, विद्युन्निपातकार्यकारिजलनिपातवन्तोवा; ॥ विसमेहत्ति ॥ जनमरणहेतुजलाइत्यर्थ ॥ असणिमेहत्ति ॥ करकादिनिपातवन्त पर्वतादिदारणसमर्थजलत्वेनवा, वज्रमेघा ॥ अपिवणिज्जोदगत्ति ॥ अपातव्यजला ॥ अयावणिज्जोदगत्ति ॥ क्वचिद्दृश्यते, तत्रा यापनीय नयापनाप्रयोजन मुदक येषान्ते अयापनीयोदका ॥ वाहिरोगवेयणोदीरणापरिणामसलिलत्ति ॥ व्याधय स्थिरा कुष्टादयो, रोगा सद्योघातिन शूलादय, स्तज्जन्याया वेदनाया योदीरणा सैव परिणामो यस्य सलिलस्य तत्तया तदेवविध सलिल येषा स्तेतया, अतएवा मनोज्ञपानीयका ॥ चण्डानिलपहयतिक्खधारा

॥ मूल ॥

समेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा अपिवणिज्जोदगा वा हिरोगवेयणोदीरणापरिणामसलिला अमणुन्नपाणियगा चण्डानिलपहयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहिं

अनुवाद

समयरूक्षतया चाधिक चन्द्रा शीतम्मोक्ष्यन्ति, अधिक सूर्या स्तपिष्यन्ति, अथापरञ्चा भीक्ष्ण स्वहवो ऽरसमेघा, विरसमेघा, क्षारमेघा, करीपमेघा, अग्निमेघा, विद्युन्मेघा, विपमेघा, अशनिमेघा 'अपानीयोदका' व्याधिरोगवेदनोदीरणापरिणामसलिला' अमनोज्ञपानीयका '

॥ भाषा ॥

बारबार घणां। अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा। रसरहित मेह विरुदरस जेहना एहवा मेह साजो समान खारा मेह करीपसमान मेह दाहकारी मेह जल वीजपडीसरीखा मेह जल विष समान मेह मरण हेतुथी करकादिनिपातवन्त मेघ। अपिवणिज्जोदगा। पीवायोग्य पाणीनही। अयावणिज्जोदगा। निरर्थकजल अपानीय उदकइत्यर्थ। वाहिरोगवेयणोदीरणा परिणामसलिला। व्याधि रोग कुष्टादि सूला

॥ टीका ॥

निवायपउरंति ॥ चण्डानिलेन प्रहतानां तीक्ष्णानां वेगवतीनां धाराणां यो निपात स प्रचुरो यत्र वर्षे सतथा तत्तं ॥ जेणंति ॥ येन वर्षेण करणभूतेन पूर्वोक्तविशेषणा मघा विध्वंसयिष्यन्तीति सम्बन्ध ॥ जणवयंति ॥ मनुष्यलोक ॥ चउप्पयगवेलएत्ति ॥ इह चतुष्पदशब्देन महिष्यादयो गृह्यन्ते गो शब्देन गाव ' एलकशब्देन उरभ्रा ॥ खहयरेत्ति ॥ खचराश्च कानित्याह ॥ पक्खिसंघेत्ति ॥ पक्षिसङ्घान् तथा ॥ गामारण्णप्पयारनिरएत्ति ॥ ग्रामारण्ययो र्य प्रचार स्तत्र निरता यंते तथा तान् कानित्याह ॥ तसेपाणेबहुप्पयारेत्ति ॥ द्वीन्द्रियादीनित्यर्थ ॥ रुक्खेत्यादि ॥ तत्र वृक्षा आम्रादयो, गुच्छा वृन्ता कीप्रभृतयो, गुल्मा नवमालिकाप्रभृतयो, लता अशोकलतादयो, वल्ल्योवालुकीप्रभृतय, तृणानि वीरणादीनि, पर्वगा इक्षुप्रभृतयो, हरितानि दूर्वादीनि, औषध्य शाल्यादय, प्रवाला पल्लवाङ्कुरा, अङ्कुरा शाल्यादिबीजसूचय, स्ततो वृक्षादीना द्वन्द्व स्तत स्ते आदि र्येषान्ते तथा तांश्च

॥ मूल ॥

ति, जेणं भारहेवासे गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयजणवयं चउप्पयगवेलए खहयरेप क्खिसंघे गामारण्णप्पयारनिरए तसेयपाणे बहुप्पगाररुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लितणपव्वगहरियोसहिपवालंकुरमा

अनुवाद

चण्डानिलप्रहततीक्ष्णधारानिपातप्रचुर वर्ष वर्षिष्यन्ति, येन भारते वर्षे ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमगत जनपद, चतुष्पदग

॥ भाषा ॥

दि तिहांविदना ऊपनो तेह उदीरणहार तेहीज परिणामके एहवो पाणी जेहने। अमणुण्णपाणियगा। एतलामाटेज मनोज्ञ पाणी नहीं। चण्डानिलपहयतिक्ख धारा निवायपउरवासवासिहिंति। चण्ड वायरेकरी हणीजता तीक्ष्णवेगी निपात पडवो ते प्रचुर घणों छे वर्षानेविषे एहवी वर्षा वरसस्यें। जेणंभरहेवासे। जि णि भरतक्षेत्रनेविषे। गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयजणवय। ग्राम आगर नगर खेडक कर्वट मडंब द्रोणमुख पट्टण आश्रम गत जनपद मनुष्यलोक। चउप्पय गवेलग खहयरे पक्खिसंघे। इहा चउपदशब्दे महिषी आदिदेई ग्रहवा गो शब्दे गाय एलकशब्दे अज खच्चर कुण ते कहै छै—पक्षीनासमूह। गामारण्णप्पयारनिरए। ग्राम अरण्यना सचरणहार। तसेयपाणेबहुप्पगारे। त्रसजीव तथा प्राणीघणेंप्रकारे। रुक्खगुच्छगुम्मलयवल्लित णपव्वगहरिओसहिपवालंकुरमादीए। अम्बादिक वेंगणप्रमुख वर्षावेडा लता अशोकवृक्ष लता वलि नागरवेलि आदि वेरणादि सेलडीप्रमुख दूर्वादि

॥ टीका ॥

आदिशब्दात् कदल्यादिवलयानि' पद्मादयश्च जलजविशेषा ग्राह्या , का नेवविधानित्याह ॥ तणवणस्सइकाइएत्ति ॥ बादरवनस्पतीनित्यर्थ ॥ पव्वए त्यादि ॥ यद्यपि पर्वतादयो ऽन्यत्रे कार्थतया रूढा स्तथापीह विशेषो दृश्य स्तथाहि–पर्व तनना दुत्सवविस्तारणा त्पर्वता क्रीडापर्वता उज्जयन्त वैभारादय , गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरय गोपालगिरिचित्रकूटप्रभृतय , दुङ्गाना शिलावृन्दाना चौरवृन्दाना चाऽस्तित्वात् दुङ्गरा शिलोच्चयमात्ररूपा ॥ उच्छलत्ति ॥ उत् उन्नतानि स्थलानि धूल्युच्छ्रयरूपा एयुत्स्थलानि, क्वचि दुल्लब्दो नदृश्यते ॥ भट्ठित्ति ॥ पास्वादिवर्जि ता भूमय ' तत एषा द्वन्द्व , स्तत स्तेआदि र्येषान्ते तान् , गादिशब्दा त्प्रासादशिखरादिपरिगह ॥ विरावेहितिति॥ विद्रावयिष्यन्ति ॥ सलिलेत्या दि ॥ सलिलबिलानिच भूनिर्झरा' गर्त्ता श्वभ्राणि दुर्गाणिच खातवलयप्राकारादिदुर्गमाणि, विषमाणिच विषमभूमिप्रतिष्ठितानि निम्नोन्नतानिच

॥ मूल ॥

डए तणवणस्सइकाइए विद्धंसेहिति, पव्वयगिरिडोंगरुच्छलभट्ठिमाईएय वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिति, सलिल विलगड्डदुग्गविसमनिण्णुन्नयाइंच गंगासिंधूवज्जाइं समीकरेहिति, तीसेणं भंते ! समाए भरहवासस्स भूमीए

॥ अनुवाद ॥

वेलक्रान् , खचरान् , पक्षिसङ्घान् , ग्रामारण्यप्रचारनिरतान् , त्रसांश्च प्राणिन , बहुप्रकारवृक्षगुच्छगुल्मलतावल्लितृणपर्वगहरितौषधिप्रवालाङ्कु रादितृणवनस्पतिकायिकान् विध्वंसयिष्यन्ति' पर्वतगिरिदुङ्गरोत्स्थलभ्रष्ट्रादींश्च वैताढ्यगिरिवर्जं विद्रावयिष्यन्ति, सलिलविलगर्त्तदुर्गविष

॥ भाषा ॥

गाल्यादिक प्रवालपल्लव अंकुर शाल्यादिक बीजनासूचक आदिशब्दथकी कदलीप्रमुख ग्रहवा एहवी । तणवणस्सइकाइए विद्धंसेहिति । बादरवनस्पती प्रतें दृत्यर्थ विध्वसस्यें । पव्वयगिरिडुंगरुच्छलभट्ठिमाईएयवेयड्ढगिरिवज्जेविरावेहिति । क्रीडापर्वत उज्जयत वेभारादिकगिर जेह ऊपर पाणीहोय थि नानावृन्द रेतनाथल पर्वतसमीप भूमि इत्यादिक वैताढ्यनामापर्वत वर्जीने एसवें चय जास्यें । सलिलविलगड्डदुग्गविसमणिण्णुयाइंच । नीझरण निर्झर गविशेष खाई दुगम विषमस्थानकने ऊंचा नीचास्थानक । गंगासिधुवज्जाइं समीकरेहिति । गंगासिधुवर्जीने सघलीही भूमि समकरस्यें । तीसेणसमा ए । ते समानेविषे । भरहवासस्सभूमीए । भरतक्षेत्रनी भूमिकानो । केरिसए आगारभावपडोयारेभविस्सइ । केहवो एक आकारभावप्रकार हुस्ये इति

प्रतीतानीति द्वन्द्वो तस्तानि ॥ तत्तसमजोइभूयत्ति ॥ तप्तेन तापेन समा तुल्या ज्योतिषा वह्निना भूता जाता यासा तया, धूलिबहुलेत्यादौ धूली पांशु रेणु वालुका, पङ्क कर्दम, पनक प्रतल कर्दमविशेष, चलनप्रमाण कर्दम चलनीत्युच्यते ॥ दुन्निक्कमत्ति ॥ दु खेन नितरा क्रम क्रमण यस्या सा दुर्निष्क्रमा ॥ दुरूवत्ति ॥ दु स्वभावा ॥ अणाएज्जवयणपच्चायायत्ति ॥ अनादेये वचनप्रत्याजाते येषा ते तथा प्रत्याजातन्तु जन्म, कूलेत्यादौ

केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! भूमीभविस्सइ, इंगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेल्लयभूया तत्तसमजोइभूया धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणिबहुला बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दोन्निक्कमायावि भविस्सइ । तीसेणं भंते ! समाए भारहेवासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? गोयमा ! मणुया भविस्सति, दुरूवा दुवन्ना दुग्गंधा दुरसा दुफ्फासा अ

तम । अङ्गारभूता, मुर्मुरभूता, क्षारिकभूता, तप्तकवेल्लकभूता, तप्तसमज्योतिर्भूता, धूलिबहुला, रेणुबहुला, पङ्कबहुला, पनकबहुला, चलनीबहुला भूमिर्भविष्यतीतियोग । बहूना धरणितलगोचराणा सत्वाना दुर्निष्क्रमणाचापि भविष्यति । तस्या भदन्त । समाया भारतेवर्षे मनिस्रोतानिच गङ्गासिन्धुवर्ज्जानिसमीकरिष्यन्ति, तस्या समाया भारतस्य वर्षस्य भूम्या कीदृश आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौ

प्रश्न उत्तर । गोयमा भूमीभविस्सइ । हेगौतम । एहवी भूमिहुस्ये । इंगालभूया मुम्मुरभूया छारियभूया तत्तकवेल्लगभूया । अगारभूत अगारना कणिय समान भस्म सरीखो ताती कवेलूसरीखो । तत्तसमजोइभूया । तापैकरी अग्निसरीखोथई । धूलिबहुला । पांशु ते घणो । रेणुबहुला पंकबहुला पणग बहुला चलणिबहुला । वालू ते घणो कादो घणो पातलो कर्दम घणो कादानो चलनो घणो । बहूणधरणिगोयराणसत्ताणदोण्णिक्कमायाविभविस्सइ । घणां धरतीने गोचरकहिये चालता एहवा सत्त्वजीवने दु ख सदैव चाली सकिये एहवी धरतीहुस्ये । तीसेणभंतेसमाए । तेहनेविषे हेभगवन् । कालनेविषे । भारहेवासे मणुयाण । भरतक्षेत्रनेविषे मनुष्यनो ण वाक्यालंकारे, । केरिसएआगारभावपडोयारे भविस्सइ । केहवो एक आकारभावनो प्रत्यवतार

कूट भ्रान्तिजनकद्रव्य' कपट वञ्चनाय वेषान्तरादिकरणं ॥ गुरुनियोगविनयरहियायत्ति ॥ गुरुषु मात्रादिषु नियोगेना वश्यन्तया योविनय स्तेन रहिता यते तथा' च समुच्चये ॥ विकलरूवत्ति ॥ असम्पूर्णरूपा ॥ खरफरुसझामवणत्ति॥ खरपरुषा' स्पर्शतो तीवकठोरा 'ध्यामवर्णा अनुज्वल

णिट्ठा अकंता जाव अमणामा हीणसरा दीणसरा अणिट्ठसरा जाव अमणामसरा अणादेज्जवयणपच्चायाति लज्जा कूडकवडकलहवहबंधवेरनिरया मज्जायातिक्कमप्पहाणा अकज्जनिच्चुज्जुत्ता गुरुनियोगविणयरहियाय विकलरूवा परूढनहकेसमंसुरोमा काला खरफरुसज्झामवण्णा फुट्टसिरा कविलपलियकेसा बहुण्हारुसंपि

मनुजाना कीदृश आकारभावप्रत्यवतारो भविष्यति ? गौतम ! दूरूपा' दुर्वर्णा, दुर्गन्धा, दूरसा' दुस्पर्शा, अनिष्टा, अकान्ता, यावदमनामा, हीनस्वरा, दीनस्वरा, यावदमनामस्वरा, अनादेयवचनप्रत्याजाता, निर्लज्जा कूटकपटकलहवधबन्धवैरनिरता, मर्यादातिक्रमप्रधाना' अकार्यनित्योद्युक्ता, गुरुनियोगविनयरहिता, विकलरूपा, प्ररूढनखकेशश्मश्रुरोमाण, काला, खरपरुषध्यामवर्णा 'स्फुटशिरस, कपिलप

नुष्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणुयाभविस्संति । हेगौतम । मनुष्य हुस्ये दुरूवा दुवणा दुगंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता । दुःरूप दुष्टवर्ण दुर्गन्ध दुष्टरस दुष्ट शरीरस्पर्श अनिष्ट अकान्त । जावअमणामा । यावत् अणगमतो मनने । हीणसरा दीणसरा । हीनस्वरछे जेहनो दीनस्वरवन्त । जावअमणामस्सरा । यावत् अमनोज्ञ स्वरछे मनने जेहना । अणादेज्जवयणपच्चायातानिलज्जा । अनादेयवचन अने जन्म जेहनोछे लाजरहित । कूड कवडकलहवहवधवेरनिरया । भ्रान्तिजनकद्रव्य वञ्चनने अर्थे वेषान्तरादि करवो कलह वध बन्ध वैरनेविषे निरत । मज्जाइक्कमप्पहाणा । मर्यादा कुलनी तेहनूं उल्लंघवो तिहा समर्थ । अकज्जनिच्चुज्जुत्ता । अकार्यनेविषे नित्यें उद्यमवन्त । गुरुनियोगविणयरहियाविकलरूवा । गुरुमातादिकनेविषे नियोगे अ वश्यें विनयकरिये रहित असपूर्णरूप । परूढनहकेसमसुरोमा काला । मोटावध्याछे नख केश मस्तक प्रमुखना दाढोनाकेश रोमशरीरना केशछे जेह ने कालेवर्णे । खरफरुसज्झामवण्णा । अतीव कठोर स्पर्शको झामासरीखो वर्ण । फुट्टसिरा कविलपलियकेसा । बीखर्या शिरना केश, कपिला प

॥ टीका ॥

वर्णा स्तात कर्म्मधारय ॥ फुट्टसिरत्ति ॥ विकीर्णशिरोजा इत्यर्थ ॥ कविलपलियकेसत्ति ॥ कपिला पलिताश्च शुक्ला केशा येषा ते तथा ॥ बहु ण्हारुसपिणद्धदुद्दसणिज्जरूवत्ति ॥ बहुस्नायुभि सम्पिनद्ध बद्ध मतएव दु खेन दर्शनीय रूप येषा ते तथा ॥ सकुडियवलीतरगपरिवेढियगमगा ॥ सङ्कुटित वलीलक्षणतरङ्गै परिवेष्टितञ्च अङ्ग २ येषा ते तथा, कइव त्यतआह ॥ जरापरिणयव्वथेरणरत्ति ॥ जरापरिणतस्थविरनराइवेत्यर्थ , स्थविरा आन्यथापि व्यपदिश्यन्तइति जरापरिणतग्रहण , तथा ॥ पविरलपरिसडियदतसेढी ॥ प्रविरला दन्तविरलत्वेन परिशटिताच दन्ताना कयाञ्चि त्पतितत्वेन भग्नत्वेनवा, दन्तश्रेणि येषा ते तथा ॥ उब्भडघडमुहत्ति ॥ उद्भट विकराल घटकमुखमिव मुख तुच्छदशनच्छदत्वा द्येषा ते तथा ॥ उब्भडघाडामुहत्ति ॥ क्वचि त्तत्र उद्भटे स्पष्टे घाटामुखे शिरोदेशविशेषौ येषा ते तथा ॥ वक्कवलीविगयभेसणमुहत्ति ॥ वक्क वक्र पाठान्त रेण व्यङ्ग सलाञ्छन वलिभिर्विकृतञ्च बीभत्स भेषण भयजनक मुख येषा ते तथा ॥ कच्छुकसराभिभूया ॥ कच्छू पामा तया कसरैश्च खररै र

॥ मूल ॥

णहुदुद्दसणिज्जरूवा सकुडियवलितरगपरिवेढियगमगा जरापरिणयव्वथेरगनरा पविरलपरिसडियदंतसेढी

॥ अनुवाद ॥

लितकेशा, बहुस्नायुसम्पिनद्धदुर्दर्शनीयरूपा , सङ्कुटितवलितरङ्गपरिवेष्टिताङ्गाङ्गा , जरापरिणता इव स्थविरनरा , प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणय उद्भटघटमुखा , विषमनयना , वक्रनासा , वक्रवलीविषमभीषणमुखा , कच्छूकसराभिभूता , खरतीक्ष्णनखकण्डूयितविकृततनवो , दद्रुकिटि

॥ भाषा ॥

लित वृद्धावाल । बहुण्हारुसपिणद्धदुद्दसणिज्जरूवा । घणा नसाजाल नीकल्या तेणेकरी दुखे देखवायोग्य रूपछे जेहना एहवा एतलामाटेज । जरा सकुडिय वलितरगपरिवेढियगमगा । सकुच्या वली लक्षण तरगे परिवेष्टित वीट्या अगअग जेहना ते कुण कहेछे—जरापरिणयव्वथेरगनरा । जरा परिणतथाया स्थविर वृद्धनरनीपरे इत्यर्थ । पविरलपरिसडियदतसेढी । दन्तने विरलपणेकरी परिशटित केइएक दन्तने पडवेकरी, अथभग्नपणेक री दन्तनोश्रेणी जेहनी । उब्भड घडमुहा विसमनयणा वक्कनासा । विकराल घडानामुखनीपरे तुच्छ दन्तपक्ति जेहने विषमनेत्रछे जेहना वाको ना सिकाछे जेहनी । वक्कवलीविगयभेसणमुहा । वाकीशरीरनी आवली डरावणा भयङ्करमुखछे जेहना । कच्छूकसराभिभूया । पामखसरो तिणेकरी व्या

॥ टीका ॥

॥ खरतिक्खनखकंडुयविक्खयतणुत्ति ॥ खरतीक्ष्णनखानां कण्डूयितेन विक्षता कृतव्रणा तनु शरीरं येषां ते
तथा' अतएव ॥ ददुकिडिभसिब्भफुडियफरुसच्छवित्ति ॥ दद्रुकिटिभसिध्मानि क्षुद्रकुष्ठविशेषास्तत्प्रधाना स्फुटिता परुषा च छवि शरीरत्वक् येषां ते
तथा, अतएव ॥ चित्तलगत्ति ॥ कर्बुरावयवा' ॥ टोलेत्यादि ॥ टोलगतय उष्ट्रादिसमप्रचारा'' पाठान्तरेण टोलाकृतयो प्रशस्ताकारा , विषमा
णि दीर्घह्रस्वत्वादिना सन्धिरूपाणि बन्धनानि येषां ते विषमसन्धिबन्धना उत्कुटुकानि यथास्थान मनिविष्टानि गस्थिकानि कीकसानि विभक्तानी
व दृश्यमानान्तरालानीव येषां ते उत्कुटुकास्थिकविभक्ता गथवो, त्कुटुकास्थिता स्तथास्वभावत्वा द्विभक्ताश्च भोजनविशेषपरिहिता येते तथा ,
दुर्बला बलहीना', कुसंहनना' सेवार्त्तसंहनना , कुप्रमाणा प्रमाणहीना , कुसंस्थिता दु संस्थाना स्तत एषां टोलगत्यादिपदाना कर्मधारय ,

॥ मूल ॥

उप्फुडघडमुहा विसमनयणा वंकनासा वक्कवलिविगयभेसणमुहा कच्छूकसराभिभूया खरतिक्खनखकंडूइय
विक्खयतणू दहुकिडिभसिंभफुडियफरुसच्छवि चित्तलंगा टोलगतिविसमसंधिबंधणउक्कुडुयअट्ठियविभत्तदुब्बला

॥ अनुवाद ॥

...कुरूपा ' कुस्था
...सिध्मस्फुटितपरुपच्छवय' , चित्रलाङ्गा' , टोलगतिविषमसन्धिबन्धनोत्कुटुकास्थिकविभक्तदुर्बलकुसंहननकुप्रमाणकुसंस्थिता , ...
नासनकुशय्यकुभोजिन' , अशुचयो , ऽनेकव्याधिपरिपीडिताङ्गाङ्गा' स्खलद्विह्वलगतयो , निरुत्साहसत्त्वपरिवर्जितविगतचेष्टनष्टतेजसो ' ऽभी

॥ भाषा ॥

...तन शरीरके जेहनां । दद्रुकिडि
...ज्या छे जे ते । खरनिक्खनखकंडूइयविक्खयतणू । एतलामाटेज कठोर तीखानख तेहने खणवें करी विक्षतकाधा व्रण एहवां तन शरीरके जेहनां । दद्रुकिडि
भसिभफुडियफरुसच्छविचित्तलगा । दद्रु किटिभ सिध्म कहिये क्षुद्रकुष्ट विशेष तिणेंकरी स्फुटितके कठिन छविकहिये शरीरनी त्वचा चामडी छे जेहनी
ने । टोलगतिविसमसंधिबंधणउक्कुडुयअट्ठियविभत्तदुब्बला । उंटनीपरे जेहनी गति एहवा तथा विषमसंधिबंधण कहिये लांबो छोटो जेहनो संधि तेहना ब
धन एहवा ऊंचा नीचा अस्थि तेहनाविभक्ति जेहना एतावताअस्थिना अन्तर जूआ २ दीसे एहवा दुर्बलापुरुष । कुसंघयण कुप्रमाण कुसंठिया कुरूवा ।
छेवट्टासंघयण कुत्सितप्रमाण भूण्डाआकार एतलामाटेज कुरूप । कुट्ठासणाकुसेज्जा कुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा । भण्डास्थानके या

॥ टीका ॥

अतएव ॥ कुरूवत्ति ॥ कुरूपा ॥ कुठाणासणकुसेज्जकुभोयणत्ति ॥ कुत्सिताश्रयविष्टरदु शयनदुर्भोजना ॥ असुइणोत्ति ॥ अशुचय स्नानब्रह्मचर्यादि वर्जितत्वादश्रुतयोवा. शास्त्रवर्जिता ॥ खलतविब्भलगइत्ति ॥ खलन्ती स्खलन्तीविह्वला चार्द्दवितर्दा गति येषां ते तथा, अनेकव्याधिरोगपीडि तत्वात ॥ विगयचेट्ठनट्ठतेयत्ति ॥ विकृतचेष्टा नष्टतेजसश्चेत्यर्थं. ॥ सीयेत्यादि ॥ शीतेनोष्णेन खरपरुषवातेनच ॥ विज्झडियत्ति ॥ मिश्रित व्याप्त मित्य र्थं, मलिनञ्च पांशुरूपेण रजसा द्रव्यरजसेत्यर्थं ॥ उग्गुडियत्ति ॥ उद्धूलितञ्च अङ्गमङ्गं येषां ते तथा ॥ असुन्दुक्खभागित्ति ॥ दु खानुबन्धिदु ख भागिनइत्यर्थं ॥ उस्सन्नंति ॥ बाहुल्यन ॥ धम्मसन्नत्ति ॥ धर्मश्रद्धा ॥ रयणिपरिमाणमेत्तत्ति ॥ रत्निर्हस्तस्य यत्प्रमाणं मङ्गुलचतुर्विंशतिलक्षणं तेन मा

॥ मूल ॥

कुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा कुठाणासणकुसेज्जकुभोइणो असुइणो अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा खलंतविब्भलगई निरुच्छाहसत्तपरिवज्जियविगयचिट्ठनट्ठतेया अभिक्खणं सीयउण्हखरफरुसवायविज्झडिय मलिणपंसुरयगुंडियगमंगा बहुकोहमाणमाया बहुलोभा असुहदुक्खभोगी उस्सण्णं धम्मसण्णसम्मत्तपरिब्भट्ठा

अनुवाद

दृष्टा शीतोष्णखरपरुषवातव्युज्झटितमलिनपांसुरजोद्गुण्ठिताङ्गाङ्गा, बहुक्रोधमानमाया, बहुलोभा, अशुभदुःखभागिन, उत्सन्नधर्मश्रद्धासम्यक्त्व परिभ्रष्टा, उत्कृष्टतया ऽरत्निप्रमाणमात्रा, षोडशविंशतिवर्षपरमायुष, पुत्रनप्तृपरिवारप्रणयबहुला, गङ्गासिन्धू महानद्यौ वैताढ्यपर्वत

॥ भाषा ॥

सनभूण्डा शय्याशयनभूण्डा भूण्डा भोजनछै जेहने अशुचि शास्त्रवर्जित अथवा अशुचि अनेकव्याधि करीने पीडित अंग २ छै जेहना । खलंतविब्भलगई । डिगपडे आकुल व्याकुलचाले । णिरुच्छाहा । उच्छाहरहितहुवे । सत्तपरिवज्जिया । सत्वेंकरी परिवर्जितरहित । विगयचेट्ठनट्ठतेया । चेष्टारहित न ष्ट तेजकरि रहितछै । अभिक्खंसीयउण्हखरफरुसवायविज्झडियमलिणपंसुरयगुडियगमंगा । वारवार शीत ताढ उपहु उष्ण तीक्ष्णफरस वायरकरी । मिश्रित व्याप्त मैल पांशुरूप रजद्रव्य रजे इत्यर्थं उद्धूलित अंगअंग जेहना । बहुकोहमाणमाया बहुलोभा । घणाक्रोध मान माया जेहने घणालोभना धणी । असुभदुक्खभागी । अशुभदुखना भजणहार इत्यर्थं । उस्सण्णंधम्मसण्णसम्मत्तपरिब्भट्ठा । बाहुल्यपणे धर्मसंज्ञा धर्मश्रद्धा तथा सम्यक्त्वथी परिभ्र

त्रा परिमाणं येषां ते रत्निप्रमाणमात्राः ॥ सोलसवीसइवासपरमाउसोत्ति ॥ इह कदाचि त्षोडशवर्षाणि कदाचिच्च विंशतिवर्षाणि परमायु र्येषां ते तथा ॥ पुत्तनत्तुपरियालपणयबहुलात्ति ॥ पुत्राः सुताः, नप्तारः पौत्रा दौहित्राश्च एतल्लक्षणो यः परिवार स्तत्र यः प्रणयः स्नेहः सबहुलो बहु र्येषां ते तथा, पाठान्तरे पुत्तनत्तुपरिपालणबहुलत्ति, तत्रच पुत्रादीनां परिपालनञ्च बहुलं बाहुल्येन येषां ते तथा ऽनेनाल्पायुष्कत्वेपि बहूपत्यता तेषां मुक्ता ऽल्पेनापि कालेन यौवनसद्भावादिति ॥ निस्साएत्ति ॥ निश्राय निश्राकृत्वेत्यर्थः ॥ निउयत्ति ॥ निगोदा कुटुम्बानीत्यर्थः ॥ बीयत्ति ॥ बी

उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता सोलसवीसइवासपरमाउसो पुत्तनत्तुपरियारपणयबहुला गंगासिंधूउ महानदीउ वेयड्ढंच पव्वयं निस्साए बावत्तरिंनियोदा वीयं वीयामेत्ता विलवासिणो भविस्संति। तेणं भंते! मणुया किं

निश्राय द्वासप्ततिनिगोदा बीजं बीजमात्रा बिलवासिनो मनुष्या भविष्यन्ति इतियोग । ते भदन्त! मनुष्याः किमाहार माहारयिष्यन्ति ?

छे पड्याछे। उक्कोसेणरयणिप्पमाणमेत्ता। उत्कृष्टथकी अगुल २४ लक्षण हाथप्रमाणमात्रछे जेहनोशरीर कदाचित्। सोलसवीसइवासपरमाउसो। सो लेवरस कदाचित् २० वरस परम आउखोछे जेहनो। पुत्तणत्तुपरियरपणयबहुला। बेटा पोतरा दोहीतरा ए लक्षण जे परिवार तेहनेविषे स्नेहघणो जेहनो। गंगासिंधूमहानदीओ वेयड्ढपव्वयंनिस्साए बावत्तरिनिउदावीयावीयमेत्ता। गङ्गानदी जिहां उत्तरदिशा वैताढ्यपर्वत नीचे प्रवेशकरै तिहां बेहुपासे नवनव बिलछे इम अठारे बिलथया वली गङ्गानदी जिहां वैताढ्यपर्वत नीचेथइ दक्षिणदिशे नीसरेछे तिहांपणि बेहुपासे नवनव बिलछे ए पणि १८ थया बेऊमिली ३६ थया। इम सिंधुनदीने बेहुपासे पणि ३६ बिलछे ए बेहु मिली ७२ थया इम गंगा सिंधु महानदी अने वैताढ्यनामा पर्वतनो निश्रायकरी बहुत्तर निउदाकहियें बिलवासीनो कुटुंब जाणवो। बिलवासिणोभविस्संति। बीजनीपरि बीजरूप मनुष्यसमूहना हेतुप णा थको बीजनीपरे मात्रा परिमाणछे जेहनो ते बीजमात्र थोडास्वरूपथकी इत्यर्थ एहवा बिलवासी हुस्ये। तेणंभंतेमणुयाकिमाहारमाहारेंति। ते ए वाक्यालंकारे, हेभगवन्! मनुष्य स्यूं आहार आहारे आहारकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तेणं कालेणं तेणं समएणं। ते कालनेविषे ते समयनेविषे।

॥ टीका ॥

जमिव बीज भविष्यता जनसमूहानां हेतुत्वात् ॥ बीयमेत्तत्ति ॥ बीजस्येव मात्रा परिमाण येषा ते बीजमात्रा स्वल्पा स्वरूपतऽन्यर्थ ॥ रहपह त्ति ॥ रथपथ शकटचक्रद्वयप्रमितो मार्ग ॥ अक्खसोयप्पमाणमेत्तत्ति ॥ अक्षश्रोत श्क्रे धुर प्रवेशरन्ध्र त्तदेव प्रमाण मक्षश्रोत प्रमाण तेन मात्रा परिमाण मवगाहतो यस्यस तत्तथा ॥ वोज्झीहितित्ति ॥ वक्ष्यत ॥ आउबहुलेत्ति ॥ बहुप्कायमित्यर्थ ॥ निद्धाहितित्ति ॥ निर्द्धाविष्यन्ति, निर्ग

॥ मूल ॥

माहार माहारेहिंति ? गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएण गंगासिंधूउ महानदीउ रहपहवित्थराउ अक्खसो यप्पमाणमेत्तं जलंवोज्झिहिति, सेवियणं जले बहुमच्छकच्छभाइन्ने नोचेवणं आयबहुले भविस्सइ, तएणंते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसिय सूरत्थमणमुहुत्तंसिय बिलेहिंतो निद्धाहिंति, बिलेहिंतोनिद्धाइत्ता, मच्छक च्छभथलाइं गाहेहिंति, गाहित्तासीयायवतत्तएहिं कच्छमच्छएहि एक्कवीस वाससहस्साइं वित्तिंकप्पेमाण

अनुवाद

गौतम ! तस्मिन्काले तस्मिन्समये गङ्गासिन्धूमहानद्यौ रथपथविस्तृते, अक्षश्रोत प्रमाणमात्रजल वहिष्यत , तदपि जल बहुमत्स्यकच्छपाकीर्ण, नोचैवाब्बहुल भविष्यति तदाते मनुष्या सूर्योद्गमनमुहूर्तयावत् सूर्यास्तमनमुहूर्त यावद्बिलेभ्यो निर्द्धाविष्यन्ति, बिलेभ्यो निर्द्धावित्वा मच्छक

॥ भाषा ॥

गंगासिधूमहानदीओरहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तजलवोज्झिहिति । गंगा सिंधु महानदी रथपथ कहिये गाडीनोपथ गाडाना पइडाजाय ते प्रमाण मार्गनेविषे विस्तारहस्ये जनलो गाडानो धुर तेतलोपाणी गंगा सिंधुनदीमाहि वहसी चालसी । सेवियणजलेबहुमच्छकच्छभाइसे । ते पिण पा णी घणामाछला काछवा तिणेकरी आकीर्णव्याप्त भरीहुस्ये । णोचेवणंआयबहुलेभविस्सइ । नहीनिश्चे अप्पाणी घणा हुस्ये । तएणंतेमणुया । तिवारे ते मनुष्य । सूरुग्गमणमुहुत्तंसिया । सूर्य ऊगता उदयपामता एक मुहूर्त्तलगे । सूरत्थमणमुहुत्तंसिया । सूर्य आथमता पाहिलो एक मुहूर्त्त प्रमाणकाल ते हने विषे । बिलेहिंतोनिद्धाहिंति बिलेहिंतोनिद्धाइत्ता । बिलथकी नीकलस्ये बाहिर आवस्ये बिलथकी बाहिरआवीने । मच्छकच्छभेथलाइगाहितिगा हित्ता । माछला काछवा स्थलनेविषे स्थापस्ये स्थापीने । सीतायवतत्तएहिमच्छकच्छभेहिं । शीत तथा तावडो तिणेकरी ताता एतले निर्जीवथया ए

॥ टीका ॥

मिष्यन्ति ॥ गाहितित्ति ॥ ग्राहयिष्यन्ति प्रापयिष्यन्ति स्थलेषु स्थापयिष्यन्तीत्यर्थ ॥ वित्तिकप्पेमाणेत्ति ॥ जीविका कुर्वन्त ॥ निस्सीलत्ति ॥ महाव्रताणुव्रतविकला ॥ निग्गुणत्ति ॥ उत्तरगुणविकला ॥ निम्मेरत्ति ॥ अविद्यमानकुलादिमर्यादा ॥ निप्पच्चक्खाणपोसहोववासत्ति ॥ असत्पौरुष्यादिनियमा अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्चेत्यर्थं ॥ उस्सण्णत्ति ॥ प्रायोमासाहारा कथमित्याह मत्स्याहारा यत. तथा ॥ खोद्दाहारत्ति ॥ मधुन्नोजिन क्षुद्रोदेनवा, हारो येषा ते क्षोद्राहारा. ॥ कुणिमाहारत्ति ॥ कुणप शवस्तद्रसोपि वसादि कुणप स्तदाहारा ॥ तेणत्ति ॥ ये तदानी क्षीणा

॥ मूल ॥

विहरिस्संति। तेणंभंते ! मणूसा निस्सलानिग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा उस्सण्णं मंसाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालंकिच्चा कहिंगच्छहिंति कहिंउववज्जिहिंति ? गोयमा ! उस्सण्णं नर

॥ अनुवाद ॥

विहरिष्यन्ति। ते भगवन् ! मनुष्या च्छपस्थलानि ग्राहिष्यन्ति, ग्राहयित्वा शीतातपतप्तै मत्स्यकच्छपैरेकविंशतिवर्षसहस्राणि वृत्ति कल्पमाना नि शीला, निर्गुणा, निर्मर्यादा, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा, उत्सन्न (प्रायो) मासाहारा' मत्स्याहारा, क्षौद्राहारा, कुणपाहारा-, कालमासे (मरणकाले) काल कृत्वा कुत्र गमिष्यन्ति, कुत्रोत्पत्स्यन्ते ? गौतम ! उत्सन्न (प्राय) नारकतिर्यग्योनिषूत्पत्स्यन्ते, ते भदन्त ! सिंहा व्याघ्रा वर्गा द्वीपिनो, अच्छा, तरच्छा', परासरा, नि शीला-, स्तथैव यावत्कुत्रोत्पत्स्यन्ते ? गौतम ! प्रायो नरकतिर्यग्योनिषु उत्प

॥ भाषा ॥

हवा जे मच्छ कच्छप तिणेकरी। एक्कवीसवाससहस्साइ वित्तिकप्पेमाणाविहरिस्सति। इकवीसवर्ष सहस्रलगे वृत्तिप्रते कल्पना करताथका अजीविका करताथका विचरस्ये एतावता खास्यें। तेणभतेमणुया णिस्सीला णिग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा। तेह हे भगवन् ! मनुष्य महाव्रत अणुव्रत तिणेंकरीरहित उत्तरगुणरहित कुलादिमर्यादारहित पच्चक्खाण पोरिसीप्रमुख नियम अष्टम्यादिक पर्वनेविषे पोषधोपवास तिणेकरी रहित। ओसण्णमंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा। प्राये मासाहारीहुस्यें ते किम मच्छाहारीहुस्यें तेमाटे भुई विदारी मच्छखास्ये मृतकनो रस वसादि तेहना भोजी। कालम.सेकालकिच्चा। काल अवसरनेविषे कालकरीने मरणपामीने। कहिंगच्छिहिंति। किहाजास्ये किसी गति

॥ टीका ॥

वशेषा श्चतुष्पदा केचन भविष्यन्ति ॥ अच्छत्ति ॥ ऋक्षा ॥ तरच्छत्ति ॥ व्याघ्रविशेषा ॥ परस्सरात्ति ॥ सरभा ॥ ढकत्ति ॥ काका ॥ मद्गुगत्ति ॥ मद्गवो जलवायसा ॥ सिहीत्ति ॥ मयूरा ॥ इतिसप्तमशतेषष्ठ ७ ॥ ६ ॥ अनन्तरोद्देशके नरकादा वुत्पत्ति रुक्ता साचा संवृताना

॥ मूल ॥

गति रिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति । तेणंभंते ! सीहा वग्घा वग्गदीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा निस्सीला तहेव जाव कहिं उववज्जिहिंति ? गोयमा ! उस्सन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ! तेणंभंते ! ढंका कंका पिलका मद्दुगा सिही निस्सीला तहेव जाव उस्सन्नं नरगतिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति सेवं भंते भंतेत्ति ॥ सत्तमसयस्स छठो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ६ ॥ संवुडस्सणं भंते ! अणगारस्स

अनुवाद

ष्यन्त, त भदन्त । काका कङ्का (गृध्रा) पिलका (कीटविशेषा) मद्गवो, शिखिनो, नि शीला स्तथैव यावत्प्रायो नरकतिर्यग्योनिषू त्प ष्यन्त' तदेव भदन्त भदन्त ॥ इति सप्तमशते षष्ठ ॥ ७ ॥ ६ ॥ संवृतस्य भदन्त । अनगारस्यायुक्त गच्छतो यावदायुक्त

॥ भाषा ॥

जासे । काहउववज्जिहिति । किसे स्थानके ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा उस्सन्ननरगतिरिक्खजोणिएसुउववज्जति । हेगोतम । प्राये नरक तिर्य चनेविषे ऊपजे । तेणभंतसीहावग्घावग्गदीविया । तेह जिके तिवारे चोपगविशेष चतुष्पद कोइएक हुस्ये ते कुण हेभगवन् । सीह व्याघ्र वगडहल चडे चीतरा । अच्छातरच्छापरस्सरा णिस्सीला । रीच्छ व्याघ्रविशेष जरख अष्टापद ते पणि शीलव्रतरहित । तहेवजावकहिउववज्जिहिति । जिम पूर्वे क ह्यु तिमज यावत् किहाजास्ये किहा ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ओसन्ननरगतिरिक्खजोणिएसुउववज्जिहिति । हे गोतम । प्राये नरकगतिने विषे अथवा तिर्यञ्चगतिनेविषे ऊपजसे । तेणभंतेढंकाकंकापिलकामद्दुगासिहीणिस्सीला । तेह हेभगवन् । काक कंकजीवविशेष पिलकजीवविशेष जल कागविशेष मोर ते पणि शीलव्रतरहित । तहेवजावओसन्ननरगतिरिक्खजोणिएसुउववज्जिहिति । तिमहीज यावत् प्राये नरकगतिनेविषे अथवा तिर्य ञ्चयोनिकनेविषे ऊपजस्ये अवतारग्रहस्ये । सेवंभंतेभंतेत्ति । तहत्ति हे भगवन् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछे अन्यथा नही । सत्तमसयस्सछठोउद्देसोसमत्तो । ए सा

आउत्तं गच्छमाणस्स जाव आउत्तं वत्थपडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणं गेण्हमाणस्सवा निक्खिवमाणस्सवा तस्सणं भंते किंइरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? संवुडस्सणं अणगारस्स जाव तस्सणं इरियावहिया किरियाकज्जइ नोसंपराइयाकिरियाकज्जइ। सेकेणट्ठेणं भंते! एवंवुच्चइ संवुडस्सणं जाव नोसंपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं कोहमाणमायालोभा वोच्छिन्ना भवंति, तस्सणं इरि

वस्त्रपरिग्रह कम्बल पादप्रोञ्छन गृह्णतोवा निक्षिपतोवा तस्य भदन्त। किं ऐर्यापथिकीक्रिया क्रियते भवति साम्परायिकीक्रिया क्रियते भवति ? गौतम। संवृतस्यानगारस्य यावत् तस्यैर्यापथिकीक्रिया क्रियते भवति नोसाम्परायिकीक्रिया क्रियते भवति। तत्केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते संवृत स्ययावन्नोसाम्परायिकीक्रियाक्रियते भवति ? गौतम। यस्यक्रोधमानमायालोभा उच्छिन्ना भवन्ति तस्यैर्यापथिकीक्रिया क्रियते भवति तथैवयावदुत्सूत्र

तमा शतकनो छट्ठाउद्देशो पूरोथयो ७ ॥ ६ ॥ पाछे नरकादिकनेविषे उत्पत्तिकही तेह असंवरीनेहोय तेहथी विपरीतसंवरी कहेछे। संवुडस्सणभंतेअणगारस्सआउत्तंगच्छमाणस्स। इन्द्री संवर्या जेणें तेहने हेभगवन्। अणगारने उपयोगसहित जाताने। जावआउत्तंवत्थपडिग्गहकंबलपा यपुच्छणंगेण्हमाणस्सवा। यावत् उपयोगसहित वस्त्रपडघो कांबलो रजोहरणप्रते ग्रहताने। णिक्खिवमाणस्सवा। भूमिकादिकनेविषे स्थापताने। तस्सणं भंतेकिंइरियावहियाकिरियाकज्जइ। तेहने हेभगवन्। स्यूं इरियावहीक्रिया हुवे अथवा। संपराइयाकिरियाकज्जइ। संपरायिकी कषायरूपक्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा संवुडस्सणंअणगारस्स। हेगौतम। संवरी अणगारने साधुने। जावतस्सणंइरियावहियाकिरियाकज्जइ। यावत् तेहने इरियावही क्रिया हुवे। णोसंपराइयाकिरियाकज्जइ। सांपरायिकीक्रिया नहुवे। सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इमकह्यु। संवुडस्सणंजावणोसंपराइ याकिरियाकज्जइ। संवरी अणगारने यावत् इरियावहीक्रियाकरे पणि संपरायिकीक्रिया नकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सणंकोहमाणमायालो भावोच्छिन्नाभवति। हेगौतम। जेहने क्रोध मान माया लोभ विच्छेदगया हुवे उपशमे क्षपके हुवे। तस्सणंइरियावहियाकिरियाकज्जइ। तेहने इरियाव

॥ टीका ॥

मयै तद्विपर्ययनूतस्य मवृतस्य यद्भवति तत्सप्तमोद्देशके आह ॥ सवुडेत्यादि ॥ सवृतश्च कामनोगा नाश्रित्य नवतीति कामनोगप्ररूपणाय ॥ रूवी त्यादि ॥ सूत्रवृन्दमाह, तत्र रूप मूर्तता तदस्ति येषा ते रूपिणः स्तद्विपरीता स्त्वरूपिणः, काम्यन्ते अभिलष्यन्त एव नतु विशिष्टशरीरसस्पर्शद्वा रेणो पयुज्यन्ते येते कामा, मनोज्ञा शब्दा. मस्थानानि वर्णाश्च, अत्रोत्तर रूपिणः कामा नोअरूपिण. पुद्गलधर्मत्वेन तेषा मूर्तत्वादिति ॥ सचि त्तेत्यादि ॥ सचित्ताअपि कामा समनस्कप्राणिरूपापेक्षया, अचित्ताअपि कामा नवन्ति शब्दद्रव्यापेक्षया, असञ्ज्ञिजीवशरीररूपापेक्षयाचेति ॥

॥ मूल ॥

यावहिया किरिया कज्जइ तहेव जाव उस्सुत्तंरीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ सेणं अहासुत्तमेव रियइ सेतेणठेणं गोयमा ! जाव नोसपराइया किरिया कज्जइ । रूवी नंते ! कामा अरूवी कामा ? गोय मा ! रूवीकामा समणाउसो नोअरूवी कामा । सचित्ता नंते ! कामा अचित्ता कामा ? गोयमा ! सचित्ता

॥ अनुवाद ॥

रीयतस्साम्परायिकीक्रिया कृतानवति तेन यथासूत्रमेव रीयते तत्तेनार्थेन गौतम ! याव न्नोसाम्परायिकीक्रिया कृताभवति । रूपिणो नदन्त ! कामा अरूपिण कामा ? गौतम ! रूपिण कामा श्रमण ! आयुष्मन् ! नोअरूपिण कामा. । सचित्ता नदन्त ! कामा अचित्ता कामा ? गौतम ! सचित्ताअपि

॥ भाषा ॥

रीक्रिया हुवे एकसमयवाधे फरसै बीजेसमयें वेदै तीजेसमय निजरे । तहेवजावउस्सुत्तरीयमाणस्ससपराइयाकिरियाकज्जइ । जिम पूर्वकह्यु तिम कहवो यावत् उत्सूत्र सूत्रोक्त विनाचाले तेहने सांपरायिकीक्रिया हुवे तेमाटे । सेणअहासुत्तमेवरियइ । ते सवरो अणगार यथा सूत्रोक्तविधि चालेछे । सेतेणठेणं गोयमा जावणोसपराइयाकिरियाकज्जइ । ते तेणेअर्थे हेगौतम । सवरोसाधु इरियावहीक्रियाकरे पणि सांपरायिकीक्रिया नकरे । सम्वृत तो कामभोगप्रतें आश्रयोने हुवेछे तेमाटे कामभोग प्ररूपवानेअर्थे जे रूवीत्यादि सूत्रसमूह कहेछे—रूवीभंतेकामा अरूवीकामा गोयमा रूवीकामा णो अरूवीकामा । रूप मूर्त्तिपणोछे जेहने ते रूपी कहियें, रूपी हेभगवन् । कामछे अथवा अरूपीकामछे कामकहियें वांछियेज पणि विशिष्टशरीर सस्प र्श द्वारेकरी जोडियेनहो ते काममनोज्ञशब्द सस्थानवर्ण इतिप्रश्न हेगौतम । रूपीकामछे पणि अरूपीकामनहो पुद्गलधर्मपणेकरी ते कामनेमूर्त्तिपणाथ

॥ टीका ॥ जीवेत्यादि ॥ जीवाअपि कामा भवन्ति जीवशरीररूपापेक्षया, अजीवाअपि कामा भवन्ति शब्दापेक्षया चित्रपुत्रिकारूपापेक्षयाचेति ॥ जीवाण मित्यादि ॥ जीवानामेव कामा भवन्ति कामहेतुत्वात् अजीवाना नकामाभवन्ति तेषा कामासम्भवादिति ॥ रूविमित्यादि ॥ भुज्यन्ते शरीरेणे

॥ मूल ॥ वि कामा अचित्ताविकामा। जीवा भंते ! कामा अजीवा कामा ? गोयमा ! जीवावि कामा अजीवावि कामा । जीवाणं भंते ! कामा अजीवाणं कामा ? गोयमा ! जीवाणं कामा नोअजीवाणं कामा। कइविहेणं कामा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सद्दाय रूवाय ॥ रूवीभंते ! भोगा अरूवीभोगा ? गो

॥ अनुवाद ॥ कामा अचित्ताअपि कामा । जीवा भदन्त ! कामा अजीवा कामा ? गौतम । जीवाअपि कामा अजीवाअपि कामा । जीवाना भदन्त ! कामा अजीवाना कामा ? गौतम ! जीवाना कामा नोअजीवाना कामा । कतिविधा कामा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—शब्दाश्च रूपाश्च। रूपिणो भदन्त ! भोगा अरूपिणो भोगा ? गौतम ! रूपिणो भोगा नोअरूपिणो भोगा । सचित्ता भदन्त ! भोगा अचित्ता

॥ भाषा ॥ जो । सचित्ताभतेकामा अचित्ताभतेकामा गोयमा सचित्ताविकामा अचित्ताविकामा । सचित्त हेभगवन् । कामछे अथवा अचित्त काम छे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । सचित्त पणि कामछे मनसहित प्राणीरूपनो अपेनायेकरी जेहने मनछे तेहनोरूप जोई रूपनोविषय दीखे तेहने कामसहितछे तथा अचित्त पणिकामछे शब्दद्रव्य अपेक्षाये तथा असन्नोजीव शरीररूपनी अपेक्षाये । जीवाभतेकामा अजीवाकामा गोयमा जीवाविकामा अजीवाविकामा । जीव हेभगवन् । कामहुवे अथवा अजीव कामहुवे इतिप्रश्न उत्तर । हेगौतम । जीव पणिकामहुवे जीव शरीररूप अपेक्षाये अजीव पणि काम हुवे शब्दअपेक्षाये तथा चित्रमा पूतलोआदिरूपनी अपेक्षाये । जीवाणभते कामा अजीवाणकामा । जीवने हेभगवन् । कामहुवे अथवा अजीवने काम हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाणकामा । हेगौतम । जीवने कामहुवे कामहेतु पणायकी पणि अजीवने कामनहुवे तेहने कामना असंभवथकी । कइविहाणभतेकामा पणत्ता । केतलेभेदे हेभगवन् । कामकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहाकामा प० त० । हेगौतम । बेहुभेदे कामकह्या ते कहे

॥ टीका ॥ ॥ सचित्तेत्यादि ॥ पभुज्यन्तइति भोगा विशिष्टगन्धरसस्पर्शद्रव्याणि ॥ रूविभोगत्ति ॥ रूपिणो भोगा नोअरूपिण पुद्गलधर्म्मत्वेन तेषा मूर्त्तत्वादिति ॥ सचित्तेत्यादि ॥ तथा अचित्ताअपि भोगा भवन्ति केषाञ्चि द्रव्यादिविशिष्टजीव सचित्ताअपि भोगा भवन्ति गन्धादिप्रधानजीवशरीराणा केषाचि त्समनस्कत्वात्, तथा अचित्ताअपि भोगा भवन्ति केषाञ्चि द्रव्यादिविशिष्टजीव ॥ अजीवाविभोगत्ति ॥ अजीवद्रव्याणाविशिष्टगन्धादि शरीराणा ममनस्कत्वात् ॥ जीवाविभोगत्ति ॥ जीवशरीराणा विशिष्टगन्धादिगुणयुक्तत्वात् ॥

॥ मूल ॥ यमा ! रूवीभोगा नोअरूवी भोगा । सचित्ता भंते ! भोगा अचित्ता भोगा ? गोयमा ! सचित्तावि भोगा अचित्तावि भोगा । जीवाणं भंते ! भोगा पुच्छा जीवावि भोगा अजीवावि भोगा । जीवाणं भंते ! भोगा

॥ अनुवाद ॥ भोगा ? गौतम ! सचित्ताअपि भोगा अचित्ताअपि भोगा । जीवा भदन्त ! भोगा पृच्छा ? जीवाअपि भोगा अजीवाअपि भोगा । जीवाना

॥ भाषा ॥ छे—सद्दायकवाय । शब्द यांवेद्रियविषय रूप चक्षुविषय, हिवे भोग पूछेछे—रूवीभतेभोगा अरूवीभोगा । रूपी हेभगवन् । भोग तथा अरूपीभोग भोगवा ये शरीरेकरी जांडीये ते भोग कहिये विशिष्ट गन्धरस स्पर्श ते भोग इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा रूवीभोगा णोअरूवीभोगा । हेगौतम । रूपी भोगकहीये प णि नहीअरूपीभोग पुद्गलधर्मपणेकरी तेहने मूर्त्तिपणाथकी । सचित्ताभतेभोगा अचित्ताभोगा । सचित्त हेभगवन् । भोगछे अथवा अचित्तभोगछे । इतिप्र श्न उत्तर । गोयमा सचित्ताविभोगा अचित्ताविभोगा । हेगौतम । सचित्त पणिभोगहुवे गन्धादि प्रधानजीव शरीरने कोइएकने मनसहितपणाथकी तथा अचित्त पणिभोगहुवे कोइएकने शरीरने मनरहितपणाथकी । जीवाभतेभोगा अजीवाभोगा । जीव हेभगवन् । भोगछे अथवा अजीवभोगछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाविभोगा अजीवाविभोगा । हे गौतम जीवपणि भोगहुवे जीव शरीरनेविशिष्ट गन्धादिगुणयुक्त पणाथकी तथा अजीव पणिभोग हुवे अजीवद्रव्यने विशिष्टगन्धादि गुणोपेतपणाथकी । जीवाणभतेभोगा अजीवाणभोगा । जीव हेभगवन् । भोगहुवे अथवा अजीवनेभोगहुवे इतिप्रश्न उ त्तर । गोयमा जीवाणभोगा णो अजीवाणभोगा । हेगौतम जीवनेभोगहुवे भोगहेतुपणाथकी अजीवने भोग नहुवे तेहने भोगना असम्भवथकी । कइवि हाणभते भोगा प० । केतलेभेदे हेभगवन् भोगकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहाभोगा प० त० । हेगौतम तीनभेदे भोगकह्या ते कहेछे—गन्ध र

॥ मूल ॥

अजीवाणं भोगा ? गोयमा ! जीवाणं भोगा नोअजीवाणं भोगा। कइविहाणं भंते ! भोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, तंजहा—गंधा रसा फासा। कइविहाणं भंते ! कामभोगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पण्णत्ता, तंजहा—सद्दा गंधा रूवा रसा फासा। जीवाणं भंते ! किंकामी भोगी ? गो० ! जीवा कामीवि भोगीवि। सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ जीवाणं कामीवि भोगीवि ? गो० ! सोइंदियचक्खिंदियाइं पडुच्च कामी, घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव

॥ अनुवाद ॥

भदन्त ! भोगा अजीवाना भोगा० ? गौतम ! जीवाना भोगा नोअजीवाना भोगा। कतिविधा भदन्त ! भोगा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा भोगा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—गन्धा, रसा, स्पर्शा। कतिविधा कामभोगा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पञ्चविधा कामभोगा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—शब्दा, गन्धा, रूपा, रसा, स्पर्शा। जीवा भदन्त ? किंकामिनो भोगिन ? गौतम ! जीवा कामिनोपि भोगिनोपि। तत्केन भदन्त ! एव मुच्यते जीवा० कामिनोपि भोगिनोपि ? गौतम ! श्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रिये प्रतीत्य कामिनो, घ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियाणि प्रतीत्य भोगिन

॥ भाषा ॥

सा फासा। गन्ध घ्राणेन्द्रीविषय रस रसनेन्द्रीविषय स्पर्श स्पर्शनेन्द्रीविषय। कइविहाणंभंतेकामभोगा प०। केतलेभेदे हेभगवन् कामभोग कह्या इति प्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहा कामभोगा प० तं०। हेगौतम पांचभेदे कामभोग कह्या ते कहेछे—सद्दा रूवा गंधा रसा फासा। शब्द रूप २ गन्ध ३ रस ४ स्पर्श ५ ए ५। जीवाणंभंतेकिंकामीभोगी। जीव हेभगवन् स्यूं कामीकहिये अथवा भोगीकहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवाकामीवि भोगीवि। हे गौतम जीवकामीपणि हुवे भोगीपणिहुवे। सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ ते स्ये अर्थ हेभगवन् इमकह्यु। जीवाकामीविभोगीवि। जीव कामी पणि हुवे भोगी पणिहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सोइंदिय चक्खिंदियाइं पडुच्चकामी। हे गौतम जीव श्रोत्रेन्द्रियकान तथा चक्षुरिन्द्रिय आंख ए आश्रयीने कामीकहिये अने। घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियाइं पडुच्चभोगी। घ्राणेन्द्रिय नासिका जिह्वेन्द्रिय रसना स्पर्शनेन्द्रिय कायाआश्रयीने भोगीकहि

भोगीवि । नेरइयाणं भंते ! किंकामी भोगी एवंचेव एवं थणियकुमारा, पुढवीकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! भोगीवि । नेरइयाणं भंते ! किंकामी भोगी एवंचेव एवं थणियकुमारा, पुढवीकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! पुढविकाइया नोकामी भोगी। सेकेणट्ठेणं जावभोगी ? फासिंदिय पडुच्च सेतेणट्ठेणं जावभोगी । एवं जाव वणस्सइकाइया , बेइंदिया एवंचेव , णवर जिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च तेइंदियावि एवंचेव , नवर घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइ पडुच्च , चउरिंदियाण पुच्छा गोयमा ! चउरिंदिया कामीवि भोगीवि

ततेनार्थेन भदन्त । यावद्भोगिनोपि ॥ नैरयिका भगवन् ! किकामिनो भोगिन ? एवचेव, एव स्तनितकुमारा ॥ पृथिवीकायिकाना पृच्छा ? गौतम । पृथिवीकायिका नोकामिनो भोगिन , तत्केन यावद्भोगिन ? स्पर्शेन्द्रिय प्रतीत्य तत्तेनार्थेनयाव द्भोगिन । एव यावद्वनस्पतिकायिका , द्वीन्द्रिया एवचैव नवर, जिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रिये प्रतीत्य, त्रीन्द्रिया अप्येवचैव नवर घ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियाणि प्रतीत्य, चतु

ने । सेतेणट्ठेण गोयमा जावभोगोवि । ते तेण अर्थे हेगोतम जीवकामीपणि भोगीपणि कहिये । णेरइयाणभतेकिकामोभोगो एवचेव । नारकीने हेभगवन् । कामी छे अथवा भोगी छे इतिप्रश्न कामी पणि भोगी पणि पचेंद्री पणामाटे । एवजावथणियकुमारा । इम यावत् स्तनितकुमार लगेकहवो । पुढवीकाइयाणपुच्छा । पृथिवीकाय हेभगवन् । कामी किंवाभोगी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुढवीकाइयाणोकामीभोगी । हेगोतम । पृथिवीकायिकजीव कामीनही भोगीछे । सेकेणट्ठेणजावभोगी । ते स्येअर्थे हेभगवन् । कामीनही भोगीछे इमकह्यु । फासिंदियपडुच्च । स्पर्शेन्द्री आश्रयीने भोगीजाणवा । सेतेणट्ठेणजावभोगी । तेणेअर्थे यावत् कामीनही भोगीछे एकेंद्रीपणायकी । एवजाववणस्सइकाइया । इम यावत् वनस्पतीकायिकताइं निपेवरा भोगी कहवा । बेइंदियाएवचेव । बेइन्द्री पणि इमहीज कहवा एतले भोगीछे । णवरजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च । एतलोविशेष रसनेन्द्री स्पर्शनेन्द्री ए बे आश्रयीने भोगी कहवा । तेइंदियावि एवचेव णवरघाणिंदियजिब्भिंदिय फासिंदियाइं पडुच । ते इन्द्रीपणाथी ते इन्द्रीपणि इमज भोगीछे एतलोविशेष घ्राणेन्द्रिय जिह्वेन्द्री स्पर्शनेन्द्री ए तीन इन्द्री आश्रयीने भोगीकहवा । तेइन्द्रीपणामाटे । चउरिंदियाणपुच्छा । चउरिंद्रीनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा चउ

॥ टीका ॥

गुणोपेतत्वादिति ॥ सव्वत्थोवाकामभोगित्ति ॥ तेहि चतुरिन्द्रिया पञ्चेन्द्रियाश्च स्तोका स्तोकाएव ॥ नोकामीनोभोगिणि ॥ सिद्धा स्तेच तेभ्यो ऽनन्तगुणाएव ॥ भोगिति ॥ एकद्वित्रीन्द्रिया स्तेच तेभ्यो ऽनन्तगुणा वनस्पतीना मनन्तगुणत्वादिति, भोगाधिकारादिदमाह ॥ छउमत्थेणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

सेकेणट्ठेणं जावभोगीवि? गोयमा! चक्खिंदिय पडुच्च कामी घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च भोगी सेतेणट्ठेण जाव भोगीवि, अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया। एएसिणं भंते! जीवाणं कामभोगीण नोकामीणं नोभोगीण भोगीणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा कामभो

अनुवाद

रिन्द्रियाणां पृच्छा? गौतम! चतुरिन्द्रिया कामिनोपि भोगिनोपि, तत्केन यावद्भोगिनोपि? गौतम! चतुरिन्द्रियं प्रतीत्य कामिनः घ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियाणि प्रतीत्य भोगिनः तत्तेनार्थेन यावद्भोगिनोपि। अवशेषा यथा जीवा यावद्वैमानिकाः। एतेषां भदन्त! जीवानां कामभोगिनां नोकामिनां नोभोगिनां भोगिनाञ्च कतरकतरे यावद्विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका जीवा कामभोगिनो नोकामिनो नोभो

॥ भाषा ॥

रिन्द्रियाकामीवि भोगीवि। हे गौतम चउरिन्द्री कामी पणि छे भोगी पणि छे। ते केणट्ठेण जाव भोगी छे। ते किम? हे भगवन् इमकह्यो? चउरिन्द्री कामी पणि भोगी पणि। गोयमा चक्खिंदिय पडुच्च कामी। हे गौतम चउरिन्द्री आंख ते पामीने कामी कहिये। घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियाइं पडुच्च भोगी। घ्राणेन्द्री जिह्वेन्द्री स्पर्शेन्द्री ए तीन इन्द्री पामीने भोगी कहिये चउरिन्द्री पणा माटे। सेतेणट्ठेण जाव भोगीवि। तेणे अर्थे चउरिन्द्री कामी पणि भोगी पणि कहिये। अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया। बाकता सर्वे जीवनी परे कामी पणि भोगी पणि कहवा पंचेन्द्री तणा माटे यावत् वैमानिक जीव लगे कहवा। एएसिणंभंते जीवाणं कामभोगीणं नोकामीणं नोभोगीणं। एहने हे भगवान्। जीव ने कामभोगीने नहीकामी नहीभोगी एतले सिद्ध तेहने। भोगीणयकयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा। भोगीने कुण कुणथकी यावत् विशेषाधिक हुवे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी। हे गौतम सर्वथी थोडा जीव कामीभोगी ते चौरिन्द्री पंचेन्द्री जीव हुवे ते थोडा छे। नोकामीणोभोगी अणंतगुणा। नहीकामी नहीभोगी ते अनन्तगुणा सिद्ध अ

॥ टीका ॥

ॐ अथ शब्दस्य परिप्रश्नार्थं ॥ खीण सूत्र गतार्थं, नवरं ॥ सेणूणंभंते ॥ सेति अथार्थे, असौ मनुष्यो नूनं निश्चितं भदन्त ॥ से ति ॥ असौ मनुष्यो नूनं निश्चितं भदन्त ॥ खीणभोगिति ॥ क्षीणभोगी क्षीणतनुः दुर्बल इतियावत् ॥ णोपभुत्ति ॥ नसमर्थ ॥ भोगिति ॥ भोगो जीवस्य यत्रास्ति तद्भोगिशरीरं तत्क्षीणं तपारोगादिभि र्यस्य स क्षीणभोगी ॥ पुरुषाभि उठाणेणत्ति ॥ उत्थानेन ॥ कम्मेणत्ति ॥ गमनादिना ॥ बलेणत्ति ॥ देहप्राणेन ॥ वीरिएणत्ति ॥ जीवबलेन ॥ पुरिसक्कारपरक्कमेणत्ति ॥ पुरुषाभि मानेन तेनैवच साधितस्वप्रयोजनेनेत्यर्थ ॥ भोगभोगाइंति ॥ मनोज्ञशब्दादीन् ॥ सेणूणं भंते । एयमट्ठ एव वयह ॥ अथ निश्चित भदन्त । एत

॥ मूल ॥

छउमत्थेणं भंते ! मणूसे जेभविए अन्नयरेसु देव लोएसु उववज्जित्तए सेणूणं भंते ! से खीणभोगी णोपभू उठाणेणं कम्मेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्क मेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए । सेणूणं भंते ! एयमठं एवं वयह ? गोयमा ! णोइणठे

॥ अनुवाद ॥

छद्मस्थो भदन्त । मनुष्यो यो भव्यो ऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया त्पत्तितु सनून भदन्त । क्षीणभो गी नोप्रभु रुत्थानेन कर्मणा बलेन वीर्येण पुरुषात्कारपराक्रमेण विपुलान् भोगभोगान् भुंजन् विहर्तुम्, सनून भदन्त । एतदर्थ एव वदथ

॥ भाषा ॥

गिनो ऽनतगुणा भोगिनो ऽनतगुणा ॥ छद्मस्थेणभतेमणूसे जे भविएअन्नयरेसुदेव एकेन्द्रीनो अपेक्षाये भोगाधिकारथीज कहेछे — छउमत्थेणभतेमणूसे जे भविएअन्नयरेसुदेव लोएसु देवत्ताएउववज्जित्तए । इत्यादिक चारसूत्र छद्मस्थ हेभगवन् मनुष्य जे देवलोकनेविषे उपजवायोग्यछे ते कोइएक देवलोकनेविषे देवतापणे उ पजे । सेणूणंभतेसेखीणभोगीणोपभू । ते निश्चे हेभगवन् । ते शरीर क्षीणतपेकरी तथा रोगेकरी दुर्बल नथीसमर्थ किसेकरीने । उठाणेण कम्मेण बलेण वीरिएण । ऊभोथावे करीने गमनागमनेकरीने देहने बलेकरीने जीवने बलेकरीने । पुरिसकारपरक्कमेणविउलाइभोगभोगाइ भुजमाणेविहरित्तए । पुरुषपने अभिमानेकरीने तिणे सौजसाधित पोताने प्रयोजनेकरी विस्तीर्ण मनोज्ञ शब्दादिकप्रते भोगवतोथको विचरे एतावता भोगभोगविवा समर्थ नथी । सेणूणभतेएयमठएवंवयह । ते निश्चे हेभगवन् । ए अर्थ तुम्हे इमकहो एहवो प्रश्न श्री गौतमस्वामी कीधो, ए पूछणहारनो ए अभिप्राय जे ए स

॥ टीका ॥

मनन्तरोक्तमर्थं, एव ममुनैव प्रकारेण वदथ यूयमिति प्रश्न', पृच्छतो य मभिप्रायो–यद्यसौ नमनु स्तदासौ भोगभोजनासमर्थत्वा न्नभोगी मतएव नोभोगत्यागी त्यत कथं निर्जरावान् कथवा, देवलोकगमनपर्यवसानोस्तु ? उत्तरन्तु ॥ नोइणट्ठेसमट्ठेत्ति ॥ कस्मा द्यत ॥ पभूणमेत्ति ॥ सन्नीगाभोगी मनुष्य ॥ अन्नतराइति ॥ एकतरान् कांश्चि त्सीणशरीरसाधूचिता नेवभ्यो चितभोगभुक्तिसमर्थत्वा द्भोगित्व तत्प्रत्याख्यानाच्च तत्त्यागित्व ततो

॥ मूल ॥

समट्ठे पभूणं से उट्ठाणेणवि कम्मेणवि बलेणवि वीरिएणवि पुरिसक्कारपरक्कमेणवि अण्णयराइं विउलाइं भो गभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए तम्हा भोगी भोगे परिच्चयमाणे निज्जरे महापज्जवसाणे भवइ। आहोहिएण

अनुवाद

(यूयमितिशेष) गौतम ! नायमर्थं समर्थ , प्रभु सउत्थानेनापि कर्मणापि बलेनापि वीर्येणापि पुरुषात्कारपराक्रमेण प्यन्यतरान् विपु लान् भोगभोगान् भुञ्जन् विहर्तुम्, तस्मा द्भोगी भोग परित्यजन्महानिर्जरो महापर्यवसानो भवति॥ आधोवधिको भदन्त। मनुष्यो योभविको

॥ भाषा ॥

सर्व भोग भोगविवानहीं तिणिकारण अभोगी जेहकारणे भोगत्यागी पुणनहीं तो निर्जरावन्त किम तिवारे श्री भगवन्त कहैछे—गोयमा णोइणट्ठेस मट्ठे पभूणसेउट्ठाणेणवि कम्मेणवि बलेणवि वीरिएणवि। हे गौतम एअर्थ समर्थनही युक्तनही यद्यपि शरीर दुर्बल विपुलभोगभोगविवा असमर्थछे तथापि स मर्थछे उभेवाऽवेकरी गमनागमनादिकेकरी देहने प्राणेकरी जोग बलेकरी। पुरिसक्कारपरक्कमेणवि अणयराइ विउलाइ भोगभोगाइं भुंजमाणेविहरि त्तए। पुरुषाकार पराक्रमेंकरी पणि केतलाएक दुर्बलशरीर योग्य विपुलविस्तीर्ण भोगयोग्य भोगवतावका विचरवा समर्थछे। तम्हाभोगी। तिणेकारणे भोगी कहवाय। भोगेपरिच्चयमाणेमहाणिज्जरे महापज्जवसाणेभवइति। एहवो छतो भोगत्यजतोथको महानिर्जर महापर्यवसानवाय एतावता भोगना पच्चक्खाणथकी ते त्यागीपणो तिवारे जे निर्जरा तिवारे देवलोकगति हुवे। आहोहिएणभतेमणूसेजेभविए। नियतक्षेत्रविषे अवधिज्ञानी एतले स्तोक अवधिज्ञानी हेभगवन् मनुष्य जे भव्य। अण्णयरेसुदेवलोएसु एवचेव। अनेरा कोइएक देवलोकनेविषे उपजे इत्यादि पूर्वकह्यु तिमज कहवो। जहाछउम त्थे। जिम छद्मस्थ। जावपज्जवसाणेभवइ। यावत् पर्यवसानहुवे एतलालगे कहवो। परमाहोहिएणभंते मणूसे जेभविए। परम अवधि परिमगरोरो जो

॥ टीका ॥

निर्जरा ततोपिच देवलोकगतिरिति ॥ आहोहिएणंति ॥ आधोवधिक नियतक्षेत्रविषयावधिज्ञानी ॥ परमाहोहिएणंति ॥ परमाधोवधिकज्ञानी अयञ्च चरमशरीरएव भवती त्यतआह ॥ तेणेवभवग्गहणेण सिज्झित्तएत्यादि ॥ अनन्तर छद्मस्थादिज्ञानिवक्तव्यतोक्ता अधुनाऽन्यथाज्ञानिवक्तव्यतो च्यते

॥ मूल ॥

भंते ! मणूसे जेभविए अन्नयरेसु देवलोएसु एवंचेव जहा छउमत्थे जाव पज्जवसाणे भवइ परमाहोहिएणं भंते ! मणूसे जेभविए तेणचेव भवग्गहणेण सिज्झित्तए जाव अंतंकरित्तए। सेणूणं भंते ! सेखीणभोगी सेस जहा छउमत्थस्स। केवलीणं भंते ! मणूसे जेभविए तेणंचेव भवग्गहणेणं एव जहा परमाहोहिए जाव महा पज्जवसाणे भवइ, जेइमे भंते ! असण्णिणो पाणा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा एगइया तसा

अनुवाद

ऽन्यतरेषु देवलोकेषु एवचैव यथा छद्मस्थो यावत्पर्यवसानो भवति ॥ परमाधोवधिको भदन्त ! मनुष्यो यो भविक स्तेनैव भवग्रहणेन ससि द्धुं याव दंतकर्तुम्, सनून भदन्त ! क्षीणभोगी शेष यथा छद्मस्थस्य ॥ केवली भदन्त ! मनुष्यो यो भविक स्तेनैव भवग्रहणेन वयथा परमाधोव धिको यावत्महापर्यवसानो भवति यइमे भदन्त ! असज्ञिन प्राणिन पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिका षष्ठाश्च एके (केचन) त्रसा एते

॥ भाषा ॥

जहवे हेभगवन् । ज भव्य । तेणेवभवग्गहणेणसिज्झित्तए । तिणिहीज भवनेग्रहणेकरीसीझे। जावअंतकरित्तए। यावत् भवनो अतकरे। सेणूणभंतेखीण भोगी। ते निश्चे हेभगवन् ते मनुष्य क्षीणभोगी। सेसजहाछउमत्थस्स। याकतो जिम छद्मस्थनेकह्यो तिमकहवो। केवलीणभंतेमणूसेजेभविए तेणेवभवग्गह णेण। केवली हेभगवन् मनुष्य जे केवलीथायवा योग्य तिणिहीज भवनेग्रहणेकरी सीझे इतिप्रश्न। एवजहापरमाहोहिएजावपज्जवसाणेभवइ। इम जिम परमावधिककह्यु तिम यावत् पर्यवसानहुवे। जेइमेभंते असण्णिणोपाणा तपढविकाइया। जे एह हेभगवन् असञ्ज्ञी मनरहित प्राणीजीव ते कहे छे—पृथिवीकायिक। जावबणस्सइकाइया। यावत् वनस्पतीकायिक। छट्ठाएगत्तियातसा। छट्ठा त्रसकायिक सम्मूर्च्छिम। एएणंअधामूढा। एह ण वा क्य लकारे, ज्ञानकरीमुग्ध तत्त्वश्रद्धान रहित। तमपविट्ठा। पवारनेविषे प्रवेशकीधो। तमपडलमोहजालपडिच्छन्ना अकामनिकरणवेदणवेदेंतीतिय

॥ टीका ॥

ग्रेइमेइत्यादि ॥ ग्गइयातसत्ति ॥ एके केचन नसर्वं समूर्छिमाइत्यर्थ ॥ अपत्ति ॥ अन्धा इवान्धा अज्ञाना ॥ मूढत्ति ॥ मूढा स्तत्त्वश्रद्धानस्प्राति एतएवो पमयो च्यन्ते ॥ तमपविठत्ति ॥ तम प्रविष्टाइव तम प्रविष्टा ॥ तमपफलमोहजालपलिच्छन्नात्ति ॥ तम पटलमिव तम पटल ज्ञानाव रण मोहो मोहनीय तदव जाल मोहजाल ताभ्या प्रतिच्छन्ना आच्छादिना येते तथा ॥ अकामनिगरणात्ति ॥ अकामो वेदनानुभवे ऽनिच्छा अमन स्कत्वात्सएव निकरण कारण यत्र तदकामनिकरण अज्ञानप्रत्ययमितिभाव स्तद्यथा भवती त्येव वेदना सुखदु खरूपा वेदनवा, सवेदन वेदय त्यनु भवन्तीति, अथा सञ्ज्ञिविपक्ष माश्रित्याह ॥ अत्थीत्यादि ॥ अस्त्यय पक्षो यदुत ॥ पभूवित्ति ॥ प्रभुरपि सञ्ज्ञित्वेन यथाव द्रूपादिज्ञाने समर्थो

॥ मूल ॥

एएण अंधा मूढा तमप्पविठा तमपफलमोहजालपलिच्छन्ना अकामनिकरण वेयणं वेदतीति वत्तव्वंसिया? हंता गो० ! जेइमे असन्निणो पाणा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया छठा जाव वेयण वेदतीति वत्तव्वंसिया

अनुवाद

अन्धा मूढा स्तम प्रविष्टा स्तमपटलमोहजालप्रतिच्छन्ना अकामनिकरण वेदना वेदयन्तीति वक्तव्य स्यात् ? हत गौ० । यइमे असञ्ज्ञिन प्राणि न पृथ्वीकायिका यावद्वनस्पतिकायिका षष्ठाश्च यावद्वेदना मनुभवन्तीति वक्तव्य स्यात् । अस्ति भ० । प्रभुरपि अकामनिकरण वेदना वे

॥ भाषा ॥

त्तव्वंसिया । तमज्ञानावरणीना पडल मोहरूपियाजाल तिणेंकरी आछायाढाक्या जिणें ते मनइच्छा विनाकारण अकाम अनाभोग तेऽज जेहनवि वै वेदना अनुभवनेविषे इच्छा नथी मनरहित पणायकी तेहइज निकरणकारणछे जेहनेविषे ते अज्ञानप्रत्यय इतिभाव, तिम वेदना सुखदुखरूप वेदे अनुभवे इसीकहवाय इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा जेइमेअसण्णिणोपाणापुढविकाइया जाववणस्सइकाइयाछठावजाववेयणवेदेतीतिवत्तव्वंसिया। हांगो तम एहवा प्रत्यक्ष असज्ञीमनरहित प्राणी जीव पृथिवीकायिक अपकायिक यवात् वनस्पतीकायिक छठा केइएक त्रसकायिक समूर्छिम इत्यादि सर्व पूठिलीपरे यावत् वेदनाप्रते वेदे इसीकहवाय एतलालगे कहवो, हिवे असज्ञी विपक्षआश्रयीने कहेछे-- अत्थिणभतेपभूवि अकामनिकरण वेयणवेदें ति । छे हेभगवन् सज्ञीजीव समर्थ पणि सज्ञीपणायकी यथाविध रूपादिज्ञाननेविषै समर्थछे तोपणि अकाम मनइच्छादिना तेहीज कारण अज्ञान प्रत्ययवेदना सुखदु खरूप वेदे एतावता सज्ञी समर्थथको पणि अज्ञानप्रत्यय वेदनावेदे इतिप्रश्न । हताअत्थि । हांगोतमछे वेदना वेदे । कहणभतेपभूवि ।

॥ टीका ॥

प्यास्ता मसञ्ज्ञित्वेना प्रभु रित्यपिशब्दार्थ ' अकामनिकरण मनिच्छाप्रत्यय मनाभोगात्, अन्येत्वाहु – अकामेन निच्छया निकरण क्रियाया इष्टार्थप्राप्तिलक्षणाया अभावो यत्र वेदने तत्तथा तद्यथा भवती त्येव वेदना वेदयन्तीति प्रश्न , उत्तरन्तु ॥ जेणंति ॥ य प्राणी सञ्ज्ञित्वेनो पाय सद्भावेनच हेयादीना हानादौ समर्थोपि ॥ नोपहुत्ति ॥ नसमर्थ विना प्रदीपेनान्धकारे रूपाणि॥ पासित्तएत्ति॥ द्रष्टु एषो ऽकामप्रत्यय वेदयती तिसम्बन्ध ॥ पुरउत्ति ॥ अग्रत ॥ अणिज्झाएत्ताणंति ॥ अनिर्ध्याय चक्षु रव्यापार्य ॥ मग्गउत्ति ॥ पृष्ठत ॥ अणवयक्खित्ताणंति ॥ अनवेक्ष्य पश्चा

॥ मूल ॥

अत्थिण भंते ! पभूवि अकामनिकरण वेदणं वेदेइ ? हंता अत्थि। कहसं भंते ! पभूवि अकामनिकरणं वेयणं वेदेइ ? गोयमा ! जेणं णोपभू विणापदीवेण अंधकारसि रूवाइं जेणं णोपभू पुरउ रूवाइं अणिज्झाइत्ताणं पासित्तए, जेणं नोपभू मग्गउ रूवाइं अणवयक्खित्ताण पासित्तए, जेणं णोपभू पासउ रूवाइ अणुलोएत्ताणं

अनुवाद

दयति ? हंत अस्ति' कथ भं० । प्रभुर प्यकामनिकरण वेदना वेदयति ? गौ० । योनप्रभु विंना दीपेना न्धकारे रूपाणि द्रष्टु, योनैव प्रभु· पुरतो (ऽग्रत) रूपाणि अनिर्ध्याय द्रष्टु' यो नप्रभु मार्गत (पृष्ठत') रूपा ण्यनवेक्ष्य द्रष्टु, योनप्रभु पार्श्वतो रूपा ण्यनवलोक्य

॥ भाषा ॥

किम हेभगवन् समर्थपण । अकामनिकरणवेदणवेदेइ । अज्ञानप्रत्यय वेदनाप्रते वेदे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेणंणोपभूविणापदीवेणअंधकार सिरू वाइपासित्तए । हेगौतम जे नथीसमर्थ जे प्राणी सञ्ज्ञीपणाथकी हेयोपादेयनेविषे समर्थछे पणि दीवाविना अन्धकारनेविषे रूप देखि नसके तथा । नेणंणोपभूपुरओरूवाइअणज्झाइत्ताणपासित्तए । जे प्राणी आगलिरूपछे देखीपणिछे तथापि चक्षुव्यापाराविना देखवाने समर्थनही देखि नसकै त था । जेणंणोपभूमग्गओरूवाइअणवयखित्ताणपासित्तए । जे प्राणी सञ्ज्ञीयोथको समर्थनही पूर्वे रूपछे परे पाछो दृष्टि फेरव्याविना नेत्रे विलोकनकीधावि ना अवलोकनकरवाने एतले दृष्टिजोयाविना देखवाने समर्थनही तथा । जेणंणोपभूपासओरूवाइ अणवलोइत्ताणपासित्तए । जे प्राणी सञ्ज्ञीयो छतो स मर्थनही बेहु पासे रूपछे ते प्रते पर दृष्टि फेरव्याविना नेत्रे अवलोकनकीधाविना जोइवाने एतावता दृष्टिजोया विना रूप देखवाने समर्थनही । जेणंणा

॥ टीका ॥

ह्रागमनवलोक्येति, अकामनिकरणवेदना वेदयन्तीत्युक्त मथ तद्विपर्ययमाह ॥ अत्थि ॥मित्यादि ॥ प्रभुरपि संज्ञित्वेन रूपदर्शनसमर्थोपि ॥ पकाम निकरणाति ॥ प्रकाम ईप्सितार्थाप्राप्तित प्रवर्द्धमानतया प्रकृष्टो भिलाप सएव निकरण मिष्टार्थसाधकक्रियाणा मभावो यत्र तत्प्रकामनिकरण त द्यथाभवतीत्येव वेदना वेदयतीति प्रश्न , उत्तरन्तु ॥ जेणमित्यादि ॥ यो नप्रभु' समुद्रस्य पारङ्गन्तुं तद्गतद्रव्यप्राप्त्यर्थित्वे सत्यपि तथाविधशक्ति वैकल्या दतएवच यो नप्रभु समुद्रस्य पारगतानि रूपाणि द्रष्टु सतद्गताभिलापातिरेका त्प्रकामनिकरण वेदना वेदयतीति ॥ इति सप्तमशते

॥ मूल ॥

पासित्तए एसणं अकामनिकरणं वेदणं वेदेइ । अत्थिणं भंते ! पभूविपका मनिकरणं वेयणं वेदेइ हंता कहस्रं जाव वेदणं वेदेइ जेण नोपभू समुद्दस्स पारंगमेत्तए, जेणं नोपभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासि

अनुवाद

द्रष्टु, एष कामनिकरण वेदना वेदयति । अस्ति भ० ! प्रभुरपि प्रकामनिकरण वेदना वेदयति ? हत गौ० । अस्ति । कथ भ० ! प्रभुरपि प्रकामनिकरण वेदना वेदयति ? गौतम ! योनप्रभु' समुद्रस्य पार गतु, योनप्रभु समुद्रस्य पारगतानि रूपाणि द्रष्टु, योनप्रभु देवलोक

॥ भाषा ॥

पभू उड्ढरूवाइ अणालोइत्ताणपासित्तए । जे प्राणी सञ्जीयोछतां समर्थनही ऊंचा रूपछे ते प्रते अवलोकन कीधाविना जोइवाने एतावता ऊचो पणि जोयाविना रूपदेखवाने समर्थनही । जेणणोपभूअहेरूवाइ अणालोइत्ताणंपासित्तए । जे प्राणी सञ्जीयोछतो समर्थनही नीचे रूपछे अवलोकनकीधाविना देखवाने एतावता नीचारूप पणि जोयाविना समर्थनही । एसण गोयमा पभूविपकामणिकरण वेयणवेदेइ । एह हेगौतम । समर्थथको पणि इच्छाति ना इष्टार्थनी अप्राप्ति वेदना वेदे अकामनिकरण वेदना वेदे इमोकह्यु हिवे तेहथी विपरीत कहेछे—अत्थिणभंतेपभूविपकामणिकरण वेयणवेदेइ । छे हेभगवन् । सञ्जीपणेकरी रूपदर्शनसमर्थ पणि वांछितार्थनी अप्राप्तिथकी प्रवर्द्धमान जे अभिलाष ते प्रकामकहिये तेहोज णिकरणकहिये कारणछे वेदन नेविषे वेदनवेदे इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हागौतम । कहणभंतेपभूविपकामणिकरणवेयणवेदेइ । किम हेभगवन् । सञ्जीपणेकरो रूपदर्शन समर्थ प णि प्रकामणिकरण वेदनाप्रते वेदे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेणणोपभूसमुद्दस्सपारगमित्तए । हेगौतम । जे प्राणी सञ्जीयो छतो समर्थनही समुद्रनापार

॥ टीका ॥

सप्तमोद्देशकस्यान्ते छाद्मस्थिकं वेदन मुक्त मष्टमे त्वादावेव छद्मस्थवक्तव्यतो च्यते, तत्रचेदमूत्र ॥ छउमत्थेणं
सप्तम ७ ॥ ७ ॥

॥ मूल ॥

पभूवि तए, जेण नोपभू देवलोगं गमित्तए, जेणं नोपभू देवलोगगयाइं रूवाइं पासित्तए एसणं गोयमा ! पभूवि
पकामनिकरणं वेदणं वेदेइ सेवं भंत भंतेत्ति ॥ इति सत्तमसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ७ ॥
छउमत्थेणं भंते ! मणूसे तीयमणंत सासय समयं केवलेण संजमेण एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा

॥ अनुवाद ॥

गतु, योनप्रभु र्देवलोकगतानि रूपाणि द्रष्टु एष गौतम । प्रभुरपि प्रकामनिकरण वेदना वेदयति तदेव भदन्त भदन्तइति ॥ इतिसप्तमशते
सप्तम ॥ ७ ॥ छद्मस्थो भदन्त । मनुष्यो तीत मनन्त शाश्वत समय केवलेन समये नैव यथा प्रथमशतके चतुर्थोद्देशके तथा
भणितव्य याव दलमस्तु । से-शब्दो मागधभाषाप्रसिद्ध, अथ नून भ० । हस्तिनश्च कुथोश्च समएव जीव ? हत गौ० । हस्तिनश्च कुन्थो श्चैवं यथा

॥ भाषा ॥

ते विषे जाइवाने । जेणंणोपभूसमुद्दस्सपारगयाइं रूवाइं पासित्तए । जे प्राणी सम्रीयोछतो नहीसमर्थ समुद्रनापारगत तथा द्वीपान्तरगत रूपादिकने देख
वाने । जेणणोपभूदेवलोगगमित्तए । जे प्राणी सम्रोयोछती समर्थनही देवलोकजाइवाने । जेणणोपभूदेवलोगगयाइं रूवाइंपासित्तए । जे प्राणी समीयो
छती नहीसमर्थ देवलोकगत रूपप्रतें । एसणगोयमा । एह हे गौतम । पभूविपकामणिकरणवेयणवेदेइ । समर्थथको पणि वांछितअर्थनी अप्राप्तिथकी
प्रवर्द्धमान जे अभिलाष तेहीज कारणछै जिहा एहवी वेदना वेदे । सेवभंतेभंतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कहु ते सत्यछै । सत्तमसयस्ससत्तमओ उद्दे
सोसम्मत्तो । ए सातमा शतकनो सातमोउद्देशो पूरोथयो ७ ॥ ७ ॥ पाछिले उद्देशै छद्मस्थने वेदनाकही इहा छद्मस्थ वक्तव्यता कहैछे
छउमत्थेणभंतेमणूसेतीयमणतसासयसमयकेवलेणसजमेणएवंजहापढमसए चउत्थुद्देसएतहाभाणियव्वजावअलमत्थु । छद्मस्थ हेभगवन् । मनुष्य अतीत
काले अनन्तपरिमाण अनादिपणाथको सदाविद्यमान समयकालनेविषे सपूर्णसयमेकरी सपूर्ण ब्रह्मचर्यने पालवेकरी इत्यादि इमज जिम पहिलाशत
कने चोथेउद्देशेकह्यो तिमकहवो सोझेबूझै सर्वदुःखनो अतकरे हेगौतम । एअर्थ समर्थनही ए आदिदेइ यावत् अलमत्थुत्तिवत्तव्वसिया, एतलालगेकहवो

मित्यादि ॥ गतञ्च यथाप्राग्व्याख्यातं तथाद्रष्टव्य मथ जीवाधिकारा दिदमाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ एवजहारायप्पसेणइज्जेत्ति ॥ तत्र चैतत्सून मेव-समेचेव जीवे, सेणूण भंते ! हत्थीउ कुथू अप्पकम्मतराएचेव अप्पकिरियतराएचेव अप्पासवतराएचेव कुथूउ हत्थी महाकम्मतराएचेव ३ ? ह ता गोयमा ! कम्हाणं भंते ! हत्थिस्सय कुथुस्सय समचेव जीवे ? गोयमा ! सेजहानामए कूडागारसाला सिया दुहओलित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा नि वायानिवायगंभीरा अहेणं केइ पुरिसे पईवच जोइंच गहाय तकूडागारसालं अंतो २ अणुपविसइ २ तीसे कूडागारसालाए सव्वओसमंता घणनि चियनिरंतरनिच्छिड्डाइ दुवारवयणाइ पिहेति तीसेय बहुमज्झदेसभाए तपईवं पलीवेज्जा सेयपईवे कूडागारसालं अंतो २ ओभासइ उज्जोएइ त वइ पभासइ नोचेव णं कूडागारसालाए बाहिं तएणं सेपुरिसे तपईवं इड्डरेणं पिहेइ तएणं सेपईवे इड्डरस्स अंतो २ ओभासेइ नोचेवणं इड्डर स्स बाहिं एवं गोकिलंजएणं गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चउब्भाइयाए अट्ठ भाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए तएणं सेपुरिसे तपईवं दीवाचपएणं पिहेइ तएणं सेपईवे तदीवाचपगस्स अंतो २ ओभासइ नो चेवणं दीवचपगस्स बाहिं नोचेवणं चउसट्ठियाए बाहिं जाव नोचेवणं कूडागारसालाए बाहिं एवामेव गोयमा ! जीवेवि जारिसियं पुव्वकम्मनि

आणियद्ध जाव छउमत्थु। सेनूणं हत्थिस्सय कुंथुस्सय समेचेव जीवे? हंता गोयमा ! हत्थिस्सय कुंथुस्सय, एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डियंवा महालियंवा सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समेचेव। नेरइयाणं भंते !

राजप्रश्नीये याव त्क्षुद्रोवा महान्वा जीव सतेनार्थेन गौतम ! याव त्समएव । नैरयिकाणां भ० ! यत्कृत यत्करोति यत्करिष्यति तत्सर्वं दु

जीवनाअधिकारनो ए कहेछे—सणूणभंतेहत्थिस्सयकुंथुस्सयसमेचेवजीवे । तेनिश्चे हेभगवन् ! हाथीनो तथा कुंथुयानो सरीखो जीवछे इतिप्रश्न उत्तर। हंतागोयमा हत्थिस्सय कुंथुस्सय एवंजहारायप्पसेणइज्जे। हा गौतम ! हाथीनो तथा कुंथुयानो सरीखोजीव इम जिम रायपसेणी उपांगमांहे केशी ग णधरे प्रदेशी राजानेकह्यु तिम इहां पणि जाणवो। जावखुड्डियंवा महालियंवा सेतणट्ठेणं गोयमा जावसमेचेवजीवे। यावत् छउमा मोटनोसरीखो

वद् वोदि निवृते तत्रमरोज्जोहि जीवपएसेहि सचित्तीकरेइ, शेषतु लिखित मेवास्ते' अस्य चायमर्थ , कूटाकारेण शिखराकृत्या युक्ता शाला कूटाकारशाला' दुहउलित्ता' बहिरतश्च गोमयादिना लिप्ता' गुत्ता प्राकाराद्यावृता, गुत्तदुवारा' कपाटादियुक्तद्वारा, निवाया' वायुप्रवेशरहिता किल महत्गृहं प्रायो निवात नभवती त्यतआह, निवायगभीरा, निवातविशालेत्यर्थ ' पईव, तैलदशाभाजन, जोइति, अग्नि, घणनिचियनिरं तरनिच्छिद्दाइंवारवयणाइं पिहेइत्ति' द्वाराण्येव वदनानि मुखानि द्वारवदनानि पिधत्ते, कीदृशानि कृत्वेत्याह, घननिचितानि कपाटादिद्वारपि धानाना द्वारशाखादिषु गाढनियोजनेन तानिव तानि निरन्तर कपाटादीना मन्तराभावेन निश्छिद्राणिच नीरन्ध्राणि घननिचितनिरन्तरनिश्छि द्राणि, इक्कारेणति, गन्त्रीढक्कनकेन, गोकिलजगणति, गोवरणाय महावशमयभाजनविशेषेण झल्लयेत्यर्थ ' गडवाणियाएत्ति' गडुपाणिका वंशमय भाजनविशेषएव यांगडे हस्तेन गृह्यते झल्लातो लघुतर , पच्छिपिडएणति, पच्छिकालक्षणपिटकेन, आढकादीनिप्रतीतानि, नवरं, चउव्भाइयत्ति, घटकस्य रसमानविशेषस्य चतुर्थभागमात्रो मानविशेष , अट्ठभाइया, तस्यैवा ष्टभागमात्रो मानविशेषएव, सोलसिया, षोडशभागमाना' वत्तीसि या, तस्यैव द्वात्रिंशद्भागमात्रा, चतुष्पष्टिका, तस्यैव चतुष्पष्टितमाशस्वभावा पलमिति तात्पर्य, दीवाचपएण, दीपकचम्पकेन दीपाच्छादनेन को णकेनेत्यर्थ , एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षा ल्लिखितमेवच दृश्यतइति, जीवाधिकारा दिदमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ सव्वेसेदुक्खेत्ति ॥ दु ख

॥ मूल ॥

पावे कम्मे जेय कडे जेय कज्जइ जेय कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे। जेनिज्जिण्णे सेसुहे ? हंता गोयमा ! नेरइयाण

॥ भाषा ॥

जीवद्रव्ये तेणेअर्थे हेगौतम । इमकह्यु आगीनी तथा कृत्यानो सरीखोजीवछे जीवना अधिकारथी ए कहेछे—णेरइयाणभतेपावेकम्मेजेयकडेजेयकज्जइ जेयकज्जिस्सइ सव्वेसेदुक्खेजेणिज्जिणेसेसुहे। नारकीने हेभगवन् पापकर्मकरा, जे करेछे जे करस्ये ते सगलो दु खहेतु ससारनिबन्धनपणायको दुःखजा णवो। जे निर्जर्या ते सुखस्वरूप मोक्षहेतुपणायको ते निर्जर्या, कर्मसुखकहिये । हंतागोयमा णेरइयाणपावेकम्मजावसुहे एवजाववेमाणियाण । हा गौतम! नारकीने जे पापकर्म करा करेछे करस्ये ते सगलो दु खनाहेतु ससारनिबन्धनपणायको इत्यादि इम यावत् सुखहुवे एतलालगे कहवो इम या

हेतुससारनिबन्धनत्वा दु ख ॥ जेनिज्जिणेसेसुहेत्ति ॥ सुखस्वरूपमोक्षहेतुत्वा द्यन्निर्जीर्णं कर्म तत्सुख मुच्यते नारकादयश्च सञ्ज्ञिन इति सञ्ज्ञाश्रा ह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्र सञ्ज्ञान सञ्ज्ञा आभोगइत्यर्थः, मनोविज्ञान मित्यन्ये, सञ्ज्ञायतेवा, नयेति सञ्ज्ञा वेदनीयमोहनीयोदयाश्रया ज्ञान दर्शनावरणक्षयोपशमाश्रयाच विचित्राहारादिप्राप्तये क्रियैवेत्यर्थ, साचो पाधिभेदा द्भिद्यमाना दशप्रकारा भवति, तद्यथा ॥ आहारसञ्ज्ञेत्यादि ॥ तत्र क्षुद्वेदनीयोदया त्कावलिकाद्याहारार्थं पुद्गलोपादानक्रियेव सञ्ज्ञायते ऽनया तद्वा नित्याहारसञ्ज्ञा' तथा भयमोहनीयोदया द्भयोद्भ्रान्तदृष्टिव दनविकाररोमाञ्चोद्भेदादिक्रियैव सञ्ज्ञायते ऽनयेति भयसञ्ज्ञा, तथा पुंवेदाद्युदया न्मैथुनाय स्त्र्याद्यङ्गालोकनप्रसन्नवदनसस्तम्भितोरुवेपथुप्रभृतिल क्षणा क्रियैव सञ्ज्ञायते ऽनयेति मैथुनसञ्ज्ञा, तथा लोभोदया त्प्रधानभवकारणाभिष्वङ्गपूर्विका सचित्तेतरद्रव्योपादानक्रियैव सञ्ज्ञायते ऽनयेति परि ग्रहसञ्ज्ञा' तथा क्रोधोदया दावेशगर्भप्ररूक्षनयनदन्तच्छदस्फुरणादिचेष्टैव सञ्ज्ञायते ऽनयेति क्रोधसञ्ज्ञा, तथा मानोदया दहङ्कारात्मिकोत्सेक

पावे कम्मे जावसुहे एवं जाव वेमाणियाणं । कइणं भंते ! सण्णाओ प० ? दससण्णाओ प०, त०—आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा कोहसण्णा माणसण्णा मायासण्णा लोभसण्णा लोगसण्णा ओहसण्णा एवं जाव

क्ख यन्निर्जीर्णं तत्सुख ? हत गौ० । नैरयिकाणा पापकर्म यावत्सुख' एवं यावद्वैमानिकाना । कति भ० । सञ्ज्ञा प्रज्ञप्ता ? गौ० । दश स ञ्ज्ञा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–आहारसञ्ज्ञा भयसञ्ज्ञा, मैथुनसञ्ज्ञा, परिग्रहसञ्ज्ञा' क्रोधसञ्ज्ञा, मानसञ्ज्ञा, मायासञ्ज्ञा, लोभसञ्ज्ञा, लोकसञ्ज्ञा, ओघस

वत् वैमानिकलगे कहवा नारकादि सञ्ज्ञाछे तेमाटे सञ्ज्ञा कहेछे—कइणभंतेसण्णाओ पणत्ताओ । केतली हेभगवन् सञ्ज्ञाकही सञ्ज्ञाकहिये आभोगेकोजि इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दससण्णाओ प० तजहा । हेगोतम दशसञ्ज्ञा कही ते कहेछे—आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा । तिहा क्षुधावे दनीयना उदयथकी जेक्रियाजाणीये इणेकरीने आहारसञ्ज्ञा भयमोहनीयना उदयथको भय भ्रातादि क्रियाछोज जाणिये इणेकरी ते भयसञ्ज्ञा २ तथा पुरुष स्त्रीना अंगोपाङ्गदेखी प्रसन्नथाय ते मैथुनसञ्ज्ञा ३ द्रव्यऊपर ममत्वभाव ते परिग्रहसञ्ज्ञा ४ । कोहसण्णा माणसण्णा मायासण्णा लोभसण्णा लोगसण्णा

॥ टीका ॥

...क्रियैव सञ्ज्ञायते अनयेति मानसञ्ज्ञा, तथा मायोदयेनाशुभसंक्लेशादनृतसम्भाषणादिक्रियैव सञ्ज्ञायते अनयेति मायासञ्ज्ञा, तथा लोभोदयाल्लोभसम्बन्धिता सचित्तेतरद्रव्यप्रार्थनैव सञ्ज्ञायते अनयेति लोभसञ्ज्ञा, तथा मतिज्ञानावरणक्षयोपशमात् शब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रियैव सञ्ज्ञायते वस्त्वनयेत्योघसञ्ज्ञा, तत्र शब्दाद्यर्थगोचराविशेषावबोधक्रियैव सञ्ज्ञायते अनयेति लोकसञ्ज्ञा, ततश्चौघसञ्ज्ञा दर्शनोपयोगो लोकसञ्ज्ञा तु ज्ञानोपयोग इति व्यत्ययमन्ये, अन्ये पुनरित्थमभिदधति—सामान्यप्रवृत्तिरोघसञ्ज्ञा लोकदृष्टिस्तु लोकसञ्ज्ञा एताश्च सुखप्रतिपत्तये स्पष्टरूपा पञ्चेन्द्रियान...

॥ मूल ॥

वेमाणियाणं। नेरइया दसविहं वेदणिज्जं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तं०—सीयं उसिणं खुहं पिवासं कंडुं परज्झं जरं दाहं भयं सोगं। से नूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ? हंता गो०!

अनुवाद

...यावद्वैमानिकानां। नैरयिका दशविधां वेदनां प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तद्यथा—शीतं, उष्णं, क्षुधं, पिपासां, कण्डूं, पारवश्यं, ज्वरं, दाहं, भयं, शोकं। सा नूनं भ०। हस्तिनः कुन्थोश्च समा चैव अप्रत्याख्यानक्रिया कृता भवति? हंत गो०। हस्तिनः कुन्थोश्च यावत् कृता...

॥ भाषा ॥

...हारसञ्ज्ञा। क्रोधसञ्ज्ञा ४ मानसञ्ज्ञा कहिये अहंकारसंज्ञा ६ शब्दादि विषये गोचर मायासञ्ज्ञा ७ लोभसञ्ज्ञा ८ विशेषावबोधक्रियाने जाणिये ते लोकसञ्ज्ञा ९। क्रोधसञ्ज्ञा ४ मानसञ्ज्ञा कहिये अहंकारसञ्ज्ञा... सामान्यावबोधक्रियाने जाणिये वस्तु इणीकरी ते ओघसञ्ज्ञा १०। एवं जाव वैमानिकने ८ तथा मतिज्ञानावरण क्षयोपशमथकी शब्दादि अर्थगोचर सामान्यावबोधक्रियाने जाणिये वस्तु इणीकरी ते ओघसञ्ज्ञा १०। एवं जाव वैमानिकने। इम यावत् वैमानिकने चउवीसे दण्डके दशसञ्ज्ञा कहवो जीवना अधिकारथीज कहेछे—नेरइयादसविहवेदणपच्चणुभवमाणाविहरंति तद्यथा। नारकी दशप्रकारनी वेदनीयकर्म भोगवतावका विचरेछे ते कहेछे—सीय उसिण खुह पिवास कंडु परज्झ जर दाह भय सोग। शीतवेदना १ उष्णवेदना २ क्षुधावेदना ३ पिपासावेदना ४ खाजवेदना ५ परवशपणो ६ जरा ७ दाह ८ भय ९ शोक १० पूर्वे वेदना कही ते वेदना कर्म... भगवंत कहेछे—सेणूणभंतेहत्थिस्सयकुंथुस्स य समाचेव अपच्चक्खाणकिरिया... थकी क्रियावंतपणा ते मोटाने अने लघुने सरीखीज हवे एहवो देखाडतो कहेछे—सेणूणभंतेहत्थिस्सयकुंथुस्सय समाचेव अपच्चक्खाणकिरि... हस्तिने तथा कुंथुयाने सरीखी निश्चे अप्रत्याख्यानक्रियाकरे इतिप्रश्न उत्तर। हंतागोयमा। हांगौतम! हत्थिस्सयकुंथुस्स...

॥ टीका ॥

धिकृत्यो क्ता, एकेन्द्रियादीनांतु प्रायो प्रयोक्तक्रियानिबन्धनकर्मोदयादिरूपाश्रवा वक्तव्याइति । जीवाधिकारा ॥ नेरइयत्यादि ॥ पच्चक्खाणकिरियत्ति ॥ पारवश्यं, प्राग्वेदनोक्ता साच कर्म्मवशा तद्य क्रियाविशेषा तसच मन्ता मितरेषाच तमगवेति दर्शयितुमाह ॥ सेणूणं भंते । हत्थिस्सेत्यादि ॥ अ नन्तर मविरति रुक्ता साच सयताना मप्याधाकर्म्मभोजिना कथचिदस्ती त्यत पृच्छति ॥ अहेत्यादि ॥ सासयपडिगपडियत प्रसामयति ॥ अयम

॥ मूल ॥

हत्थिस्सय कुंथुस्सय जाव कज्जइ । सेकेणठेणं एवंवुच्चइ जावकज्जइ ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च सेतेणठेणं जाव कज्जइ । अहाकम्माणं भंते ! भुंजमाणे किंबंधइ किंपकरेइ किंचिणाइ किंउवचिणाइ एव जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव सासए पंडिए पंडियत्तं असासयं सेव भंते भंतेत्ति ॥ इइ सत्तम

॥ अनुवाद ॥

भवति । केनार्थेन भ० । एवमुच्यते यावत्कृता भवति ? गौ० । अविरति प्रतीत्य, तेनार्थेन यावत्कृता भवति । आधाकर्म भ० ! भुंजन् किं बध्नाति किंप्रकरोति किंचिनोति किमुपचिनोति ? एव यथा प्रथमे शते नवमउद्देशे तथा भणितव्य यावच्छाश्वत पण्डित पण्डितत्व म

॥ भाषा ॥

यजावकज्जइ । हाथीने कुंथुआनेसरीखो निश्चे अपच्चक्खाणकिरियाकरे उपजे । सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ जावकज्जइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् इमकह्यु, हाथीने अने कुंथुने यावत् सरीखो क्रियाकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अविरतिपडुच्च । हेगौतम अविरतिप्राश्रयीने । सेतेणट्ठेणंजावकज्जइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम इमकह्यु यावत् सरीखोक्रिया करे अनन्तर अविरतिकही ते सयतोने पणि आधाकर्म भोजीने कांइएकहुवे एतलासाटे पूछे छे—अहाकम्मेणंभंतेभुंजमा णेकिंबंधइ किंपकरेइ किंचिणाइ किंउवचिणाइ । आधाकर्म हेभगवन् भोगवतोथको स्यू बांधे स्यूं प्रकर्षे करे स्यूं चिणे वधारे स्यू पुष्टकरे । एवजहापढमसएनवमेउद्देसएतहाभाणियव्व । इम जिम पहिला शतकने नवमे उद्देशे तिम जाणवो । जावसासएपण्डिएपंडियत्तंअसासय । यावत् जीव शाश्वतोपण्डित, पण्डितपणोअशाश्वतो चारित्रना पडवाथको । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु, ते सत्यछे । सत्तमसयस्सअट्ठमोउद्देसोसम

॥ टीका ॥

व्यतानणनाय प्रस्तावयन्नाह ॥ णायमेयमित्यादि ॥ ज्ञातं समान्यत एतद्वक्ष्यमाणं वस्त्वर्हता भगवता महावीरेण सर्वज्ञत्वा तथा ॥ सुयति ॥ स्मृत मिव स्मृत स्पष्टप्रतिभासभावात्, विज्ञात विशेषत किन्तदित्याह ॥ महासिलाकटएसगामेत्ति ॥ महाशिलेव कण्टको जीवितभेदकत्वा न्महाशि लाकण्टक, स्ततश्च यत्र तृणशूकादिना प्यभिहतस्या श्वहस्त्यादे र्महाशिनाकण्टकेने वाभ्याहतस्य वेदना जायते ससङ्ग्रामो महाशिलाकण्टक एवो च्यते, द्विवचनच उल्लेखस्या नुकरणे, एवच किलाय सङ्ग्राम सञ्जात — चम्पाया कूणिको राजा वभूव तस्यचा नुजौ हल्लविहल्लाभिधानौ भ्रातरौ सेचनकाभिधानगन्धहस्तिनि समारूढौ दिव्यकुण्डलदिव्यवसनदिव्यहारविभूषितौ विलसतौ दृष्ट्वा पद्मावत्यभिधाना कूणिकराजस्य भार्या मत्सरा द्धस्तिनोपहाराय त प्रेरितवती तेन तौत याचितौ तौच तद्भया द्वैशाल्या नगर्या स्वकीयमातामहस्य चेटकाभिधानस्य राज्ञो न्तिक सहस्तिकौ सा

॥ मूल ॥

तए हता पभू। सेभंते ! किंइहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नोअन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ । णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विण्णायमेयं अरहया महासिलाकंटए संगामे, महासिलाकंटएणं भंते !

॥ अनुवाद ॥

दूक्षपुद्गला स्निग्धपुद्गलत्वेन परिणमयितु' हत प्रभु । सकि मिहगतान् पुद्गलान् पर्यादाय याव न्नान्यत्रगता न्पुद्गलान् पर्यादाय विकुर्वंति। ज्ञात मेतदर्हता श्रुतमतदर्हता विज्ञातमेतदर्हता महाशिलाकटके सग्रामे । महाशिलाकटके भ० । सङ्ग्रामे वर्त्तमाने कोजितवान् क पराजितवान् ?

॥ भाषा ॥

समर्थ। हा गौतम । हतापभू। इतिप्रश्न उत्तर। परिणमे लूखपुद्गल स्निग्धपुद्गलपणे यावत् इम परिणामेत्तए। पोग्गलत्ता० ए से भंतेकिंइहगएपोग्गलेपरि यावत् नोअन्यत्रगत पुद्गलप्रते ग्रहीने विकुर्वणाकरे जावणोअण्णत्थगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ। ग्रहीने। इहगत पुद्गलप्रते स्यू हेभगवन् । ते याइत्ता । वक्तव्यता कहवानेअर्थे प्रस्तावथी कहेछे—णायमेयंअरहता सुयमेयं विशेषहुवे तेमाटे सग्रामविशेष सग्रामनेविषे ते विशेषकह्यो पुद्गलपरिणाम अनन्तर स्पष्ट प्रति स्मृत ते परे स्मृतनी सर्वपणाथकी महावीरस्वामीये थी भगवन्त अरिहत वक्ष्यमाणवस्तु सामान्यथको जाण्यू । विण्णायमेयमरहता मरहता कोपरा महासिलाकटएणभतेसगामेवट्टमाणेकेजइत्था महासिलाकटएसगामे, कहेछे—स्यू ते अरिहते एह विशेषथको विज्ञात अरिहत भासभावथको

॥ टीका ॥

न्तःपुरपरिवारौ गतवन्तौ कूणिकेनच दूतप्रेषणतो मार्गितौ नच तेन प्रेषितौ तत कूणिकेन भाणित यदि न प्रेषयसि तौ तदा युद्धसज्जो भव' ते नापि भाणित, एष सज्जोस्मि, तत कूणिकेन कालादयो दश स्वकीयाविमातृका भ्रातरो राजान श्चेटकेन सह सङ्ग्रामाया हूता, तत्रैकैकस्य त्रीणि २ हस्तिना सहस्राणि, एव रथाना मश्वानाच, मनुष्याणातु प्रत्येक तिस्र· २ कोटयः, कूणिकस्याप्येवमेव, एवच व्यतिकर ज्ञात्वा चेटकेना पि अष्टादशगणराजा मीलिता, स्तेषा चेटकस्यच प्रत्येक मेवमेव हस्त्यादि परिमाण' ततोयुद्ध मम्प्रलग्न, चेटकराजश्च प्रतिपन्नव्रतत्वेन दिनमध्ये एकमेव शर मुञ्चति, अमोघवाणश्च स, तत्रच कूणिकसैन्ये (ग्रथाग्र ७०००) गरुडव्यूह श्चेटकसैन्येश सागरव्यूहो विरचित ' ततश्च कूणिकस्य कालो दण्डनायको युध्यमान स्तावद्गतो यावच्चटक ततस्तेनैकशरनिपातेना सौनिपातितो भग्नच कूणिकवल गतेच द्वेअपि वले निजनिज मावासस्थान, एवन दशसु दिवसेषु चेटकेन विनाशिता दशापि कालादय', एकादशेतु दिवसे चेटकजयार्थं देवताराधनाय कूणिको ऽष्टमभक्त प्रजग्राह, तत शक्रचमरावागतौ, तत शक्रो वभाण, चेटक श्रावक इत्यह न तप्रति प्रहरामि, नवर भवन्त सरक्षामि, ततोसौ तद्रक्षार्थं वज्रप्रतिरूपक मभेद्यकवच कृतवान्, चमरस्तु द्वौसङ्ग्रामौ विकुर्वितवा न्महाशिलाकण्टक रथमुशलचेति ॥ जइत्थति ॥ जितवान् ॥ पराजयित्थाति ॥ पराजितवा

॥ मूल ॥

सगामे वट्टमाणे केजयित्था केपराजयित्था ? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते जयित्था नवमल्लइ नवलेच्छइ कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो पराजयित्था तएणं सेकोणिए राया महासिलाकंटक संगामं उवट्ठियं

अनुवाद

गौ० । वज्जी विदेहपुत्रो (कोणिक) जितवान्, नवमल्लकिनो नवलेच्छकिन काशीकोशलका अष्टादशापि गणराजा पराजितवन्त·, तत स

॥ भाषा ॥

जइत्था । महाशिला कहिये जिणि सग्रामे एककण अथवा तृणाने अग्रहस्थांहता हाथी घोडा मनुष्य महाशिला प्रहारे आहणामरीणो वेदनाहुवे ते महाशिला कण्टक कहिये जीवनोभेद गौतम पूछेछे – महाशिलाकण्टके ण वाक्यालकारे, हेभगवन् सग्रामनेविषे वर्त्तमान कुणजीता जयपाम्या कुण हारा इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वज्जीविदेहपुत्तेजइत्था । हेगौतम वज्री इन्द्र विदेहपुत्र कोणिक जयपाम्या जीता इत्यर्थ। नवमल्लई नवलेच्छई

॥ टीका ॥

॥ पूर्वं आधाकर्म भोक्तृत्वेना
र्थो जीव शाश्वत पण्डितत्व मशाश्वत चारित्रस्य भ्रंशादिति ॥ इतिसप्तमशतेऽष्टम ॥ ८ ॥ असवुडेणमित्यादि ॥ असवृत प्रमत ॥ इहगएत्ति ॥ इह पृच्छको गौतम
सवृतवक्तव्यतोक्ता नवमोद्देशकेऽपि तद्वक्तव्यते वोच्यते, तत्रचा दिसूत्र ॥ असवुडेणमित्यादि ॥ असवृत प्रमत ॥ इहगएत्ति ॥ इह पृच्छको गौतम
स्तदपेक्षया इह शब्दवाच्यो मनुष्यलोक स्ततश्च इहगतान् नरलोकव्यवस्थितान् ॥ तत्थगएत्ति ॥ वैक्रिय कृत्वा तत्र यास्यति तत्र व्यवस्थितानित्य

॥ मू० ॥

सए अठमो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ८ ॥ असवुडेणं भंते! अणगारे बाहिरए पोग्गले अप
रियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउव्वित्तए ? गोयमा ! णोइणठेसमठे। असंवुडेणं भंते ! अणगारे बाहि
रए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं जाव हंता पभू । से भंते ! किंइहगए पोग्गले परियाइत्ता

॥ अनुवाद ॥

॥ असवृतो भ० । अनगारो बाह्यान्पुद्गला न्प
शाश्वत । तदेव भदन्तभदन्तइति ॥ इतिसप्तमशतेऽष्टमोद्देश ॥ ८ ॥ असवृतो भ० । अनगारो बाह्यान्पुद्गला न्पर्यादाय प्रभु रेकवर्ण मेकरूपं
र्यादाय प्रभु रेकवर्ण मेकरूप विकुर्वितु ? गौ० । नायमर्थ समर्थ । असवृतो भ० । अनगारो बाह्यान्पुद्गला न्पर्यादाय प्रभु रेकवर्ण मेकरूपं
यावत् हत प्रभु । सकि मिहगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वंति तत्रगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वं त्यन्यत्रगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्व

॥ भाषा ॥

॥ पाछे आधाकर्मी भोक्तृत्वपणेकरी असवरीनी वक्तव्यता कही, हिवे न
त्ता । ए सातमा शतकनो आठमो उद्देशो पूर्णथयो ७ ॥ ८ ॥ पाछे आधाकर्मी भोक्तृत्वपणेकरी असवरीनी वक्तव्यता कही, हिवे न
वमे उद्देशे पणि तेहीज वक्तव्यताकहेछे—असवुडेणभतेअणगारेबाहिरएपोग्गलेअपरियाइत्तापभू । असवरी प्रमादीसाधु बाहिरपुद्गलविनाग्रह्या समर्थहुवे ।
एगवन्नएगरूवविउव्वित्तए । एकवर्ण एकरूप विकुर्वणाकरवाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणठेसमठे । हेगौतम एअर्थ समर्थनही युक्तनही । असवुडेण
भतेअणगारेबाहिरएपोग्गले परियाइत्तापभू । असवरी प्रमादी हेभगवन् साधु बाहिर पुद्गलग्रहीने समर्थहुवे । एगवन्नएगरूवजाव। एकवर्ण एकरूप याव
त् विकुर्वणाकरवाने । हतापभू सेभतेकिंइहगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । हा गौतम । समर्थहुवे ते हेभगवन् । स्यू इहा पृच्छकगौतम तेहनी अपेक्षा
यें इहशब्दवाची मनुष्यलोक तिवारे इहगतप्रते एतले मनुष्यक्षेत्रग्रह्या प्रतें ग्रहीने विकुर्वणा करे । तत्थगएपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । वैक्रियकरीने

॥ टीका ॥ र्थ' ॥ छन्नत्थगएत्ति ॥ उक्तस्थानद्वयव्यतिरिक्तस्थानाश्रितानित्यर्थ ॥ नवरंति ॥ अय विशेष ॥ इहइति ॥ इहगते अनगारइति इहगता न्पुद्गला निति च वाच्य' तत्रत् देवइति, तत्रगतानिति चोक्तमिति, अनन्तर पुद्गलपरिणामविशेष उक्त स च सङ्ग्रामे सविशेषो भवतीति सङ्ग्रामविशेषवक्त

॥ मूल ॥ विकुव्वइ तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ ? गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ नोतत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ नोअण्णत्थगए पोग्गले जाव विउव्वइ, एवं एगवण्णं अणेगरूव चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इहावि भाणियव्वं नवरं अणगारे इहगएय पोग्गले परियाइत्ता विउव्वइ सेसं तचेव जाव लुक्खपोग्गलं णिद्धपोग्गलत्ताए परिणामे

अनुवाद ति ? गौ० । इहगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वति नतत्रगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वति नान्यत्रगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वति, एव मेक वर्ण मनेकरूप चतुर्भंगो यथा षष्ठशते नवमोद्देशके तथेहापि भणितव्यो, नवर मनगार इहगता न्पुद्गला न्पर्यादाय विकुर्वति शेष तदेव याव

॥ भाषा ॥ जिहा जास्ये तिहारह्याप्रतें इत्यर्थ, ते विकुर्वणाकरे कह्या जे वे स्थानक तेहथी । अणत्थगएपोगलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । अन्यस्थानक आश्रितप्रतें ग्रहीने विकुर्वणाकरें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । इहगएपोगलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । हेगौतम । इहगत मनुष्यगत पुद्गलग्रहीने विकुर्वणाकरे । णोतत्थगएपोगले परियाइत्ताविकुव्वइ । वैक्रियकरीने जिहाजास्ये तिहा रह्या पुद्गलग्रहीने विकुर्वणा नकरे । णोअणत्थगएपोगलेपरियाइत्ताविकुव्वइ । बीजेस्थानके रह्या पुद्गलग्रहीने विकुर्वणा नकरे । एवएगवण्णअणेगरूवचउभंगो । इम एकवर्ण एकरूप १ एकवर्ण अनेकरूप २ अनेकवर्ण एकरूप ३ अनेकवर्ण अनेकरूप ४ इम चउभंगो कहवो । जहाछट्ठसएनवमेतहाइहाविभाणियव्वं । जिम छठ्ठा शतकने नवमेउद्देशे तिम इह पणि कहवो । णवरंअणगारेइहगयइहगते चेवपोग्गलेपरियाइत्ताविकुव्वइसेसंतचेव । एतलोविशेष इहयति, ए शतकनेविषे अणगारसाधु इहगते इहा मनुष्य लोकगत पुद्गलप्रतें ग्रहीने विकुर्वे, अने छठ्ठा शतकना नवमाउद्देशानेविषे देवना अधिकारथको तत्रगत पुद्गलप्रतें ग्रहीने विकुर्वे इसोकह्यो शेष तिमहीज कहवो । जावलुक्खपोग्गलेसिणिद्ध

॥ टीका ॥

न्हारितवानित्यर्थः ॥ वज्जित्ति ॥ वज्री इन्द्रः ॥ विदेहपुत्तेत्ति ॥ कूणिक एतावेव तत्र जेतारौ नान्य कश्चिदिति ॥ नवमल्लइत्ति ॥ मल्लकिनामानो राजविशेषा ॥ नवलेच्छइत्ति ॥ लेच्छकिनामानो राजविशेषाएव ॥ कासीकोसलगत्ति ॥ काशी वाराणसी तज्जनपदोपि काशी तत्सम्बन्धिन आद्या नव, कोशला अयोध्या तज्जनपदोपि कोशला तत्सम्बन्धिनो नव द्वितीया ॥ गणरायाणोत्ति ॥ समुत्पन्ने प्रयोजने ये गण कुर्वन्ति तेगणप्रधाना राजानो गणराजा सामन्ता इत्यर्थ, तेच तदानी चेटकराजस्य वैशाली नगरीनायकस्य साहाय्याय गण कृतवन्तइति, अथमहाशिलाकण्टके सङ्ग्रामे चमरेण विकुर्विते सति कूणिको यदकरो तद्दर्शनार्थ मिदमाह ॥ तएणमित्यादि ॥ ततो महाशिलाकण्टकसङ्ग्रामविकुर्वणानन्तर ॥ उदायित्ति ॥ उ

॥ मूल ॥

जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एववयासी, खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया ! उदाइ हत्थिराय पडिकप्पेह हयगयरहजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सन्नाहेह २ जाव ममएयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पि

॥ अनुवाद ॥

कोणिकोराजा महाशिलाकण्टक सग्राम मुपस्थित ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषा नाहूयति आहूयित्वा एवमवादी, क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया। उदायि नामान हस्तिराज प्रतिकल्पयत, हयगजरथयोधकलिता चतुरगिणी सेना सनद्धा कुरुत, सनद्धा कृत्वा ममै तदाज्ञापित क्षिप्रमेव प्रत्यर्प्पयत,

॥ भाषा ॥

कासीकोसलगाअढारसविगणरायाणोपराजइत्था। नवमल्लकिनामा राजा विशेष नवलेच्छिकनामा राजाविशेष एहोज काशीदेशना अधिपति नव मल्लकिराजा कोशलदेश अयोध्यानास्वामी लेच्छकीराजा गणराजा सामन्त चेटकराजा विशालानगरी नायकने साहाय्यनेअर्थे आया ते हारा, तिहिवे महाशिलाकण्टक सग्राम चमरेन्द्रे विकुर्व्यथका, कूणिके जे कीधो ते देखाडछे—तएणमेकोणिएरायामहासिलाकटगसगामउवट्ठियजाणित्ता। तिवारे ते कूणिकराजा महाशिलाकण्टक संग्रामप्रते प्रारभ्यो जाणीने। कोडुबियपुरिसेसद्दावेइ २ त्ता एववयासी। आदेशकारी पुरुषाप्रते तेडावे तेडावीने इमकहे। खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया। उतावलाथाओ अहोदेवानुप्रियाओ। उदाइहत्थिरायपडिकप्पेह। उदायीनामा हस्तिराजप्रते सन्नद्धकरो। हयगयरहजोहकलिय। घोडा हाथी रथ जोधसुभट कलित। चाउरगिणीसेणसन्नाहेह सन्नाहेत्ता। चतुरगिणी सेनाप्रते सज्जकरो सज्जकरीने। ममए

॥ टीका ॥

दायिनामान ॥ हत्थिरायति ॥ हस्तिप्रधान ॥ पडिकप्पेहत्ति ॥ संनद्ध कुरुत ॥ पच्चप्पिणहत्ति ॥ प्रत्यर्प्पयत निवेदयतेत्यर्थः ॥ हठतुठत्ति ॥ इह या वत्करणा देव दृश्य ॥ हठतुठचित्तमाणदियानंदियापीइमणाइत्यादि ॥ तत्र हृष्टतुष्ट मत्यर्थ तुष्ट हृष्टवा; विस्मित तुष्टच तोषव चित्त मनो य त्र तत्तथा तत् हृष्टतुष्टचित्त यथाभवति इत्येव मानंदिता ईषन्मुखसौम्यतादिभावै समृद्धिमुपगता, ततश्च नन्दिता समृद्धितरता मुपगता, प्रीति प्रीणन माप्यायन मनसि येषाते प्रीतिमनसः ॥ अजलिकट्टुत्ति ॥ इद त्वेव दृश्य—करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु, तत्र सिरसा अप्राप्त मसस्पृष्ट मस्तके ञ्जलि कृत्वेत्यर्थ ॥ एवसामीतहत्ति ॥ आणाएविणएणवयणपडिसुणेतित्ति ॥ एवस्वामिन्! तथेति आज्ञया इत्ये वविधशब्दज्ञापनरूपो योविनय स तथा तेन वचन राज्ञ सम्बन्धि प्रतिशृणवन्ति अभ्युपगच्छन्ति ॥ छेयायरिउवएसमइकप्पणाविगप्पेहिति ॥ छे

॥ मूल ॥

णह तएणं सेकोडुंबियपुरिसा कोणिएण रन्ना एवं वुत्तासमाणाहठतुठा जाव अजलिंकट्टु एवसामी तहत्ति आणाए विणएणं वयण पडिसुणंति पडिसुणइत्ता खिप्पामेव छेयायरिउवएसमइकप्पणाविकप्पेहिं सुनिउ

अनुवाद

तदानी तेकौटुम्बिकपुरुषाः कोणिकेन राज्ञा एव मुक्ता सन्तो हृष्टतुष्टा याव दञ्जलि कृत्वा एव स्वामिन् तथेति आज्ञया विनयेन वचन प्र तिशृणवन्ति प्रतिश्रुत्वा क्षिप्रमेव छेकाचार्योपदेशमतिकल्पनाविकल्पै सुनिपुणै रेव यथौपपातिके याव द्भीमसाङ्ग्रामिक अयोध्य (यस्मादुत्क

॥ भाषा ॥

यमाणत्तियखिप्पामेवपच्चप्पिणह तएणसेकोडुबियपुरिसा । माहरो एहआज्ञा शीघ्रपणे मुझने आपोने पाछोसूपा आपो तिवारे ते आदेशकारी पुरुष। कोणिएणरणा एववुत्तासमाणा । कोणिक राजायें एहवी आज्ञा दीधाथका । हठतुठजावअजलिकट्टु एवसामी । हर्ष सतोष पाम्या यावत् बेहाथ जा डीने मस्तके लगाडी । इम हे स्वामिन् । तहत्तिआणाए। तथा तिमज आज्ञाये । विणएणवयणपडिसुणेति २ त्ता । विनयेंकरी वचन राजासबधीया अ गीकारकरे अगीकारकरीनें । खिप्पामेवछेयायरियोवएसमतिकप्पणाविकप्पेहि । उतावला छेका कहिये निपुण आचार्य उपदेशेकरी मतिवृद्धि उपजी क ल्पसिगारना तेहनेभेदे करी । सुणिउणेहि । ते अति निपुण । एवजहाउववाइए जावभीमसगामिय अउज्झ। इम जिम उवाईउपागनेविषे कह्यु तिम

॥ टीका ॥

को निपुणो यआचार्य शिल्पोपदेशदाता तस्यो पदेशात् या मति र्बुद्धि स्तस्या य कल्पना विकल्पा श्लमिभेदा स्तेतथा तै प्रकल्पयन्ती तियोग ॥ सुनिउणाहिति ॥ कल्पनाविकल्पाना विशेषण, नरैर्वा सुनिपुणै ॥ एवजहाउववाइएत्ति ॥ तत्रचेद सूत्रमेव–उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छिय, उज्वलने पथ्येन निर्म्मलवेषेण हव्वति, शीघ्र परिक्षिप्त परिगृहीत परिवृताय सतथा त. सुसज्जवमियसनद्धबद्धकवइय उप्पीलियवत्यकच्छगेवज्जबद्धगलगव रम्मूसणविराइय, वर्मणि नियुक्ता वार्मिका स्तै. सनद्ध कृतसन्नाहो वार्म्मिकसन्नद्ध बद्ध कवचिकसन्नाहविशेषो यस्य स बद्धकवचिक , उत्पीडिना गाढीकृता वक्षसि कक्षा हृदयरज्जु र्यस्य सतथा, ग्रैवेयक बद्ध गलके यस्य सतथा, वरभूषणै र्विराजितोय सतथा, तत कर्म्मधारयो तस्त'अहिय तेयजुत्त विरइयवरकण्णपूरसललियपलवावजलचामरोयरकयधयार, विरचिते वरकर्णपूरे प्रधानकर्णाभरणविशेषौ यस्य सतथा, सललितानि प्र

॥ मूल ॥

णेहि एवं जहा उववाइए जाव भीमं संगामियं च्युज्झं उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पंति, हयगयरहजावसन्ना हेइत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ करयलपरिग्गहियं जावकूणियस्स रन्नो तमाणत्तियं पच्च प्पिणंति, तएणं सेकूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता मज्जणघरं अणुपविसइ

अनुवाद

प्रोयोऽनास्ति) उदायिहस्तिराजं प्रतिकल्पयति' हयगजरथान् याव त्सन्नाहयित्वा यत्र कूणिको राजा तत्रो पागच्छन्ति उपागत्य करतल यावत् कूणिकस्य राज्ञ स्तदाज्ञापितं प्रत्यर्प्पयन्ति' तदानी सकूणिको राजा यत्रेव मज्जनगृह तत्रैवो पागच्छति उपागत्य मज्जनगृह मनुप्रविश

॥ भाषा ॥

इहापणिवाहवी यावत् भीमरौद्र सग्राम योग्य उदार मोटोप्रधान। उदाइहत्थिरायपडिकप्पंति । उदायीनामा हस्तिराज हस्तिप्रधानप्रते सन्नद्ध करे। हयगयजावसणाहित्ता। घोडा हाथी रथ जोध यावत् सन्नद्ध सज्जकरीने। जेणेवकूणिएराया । जिहा कूणिकनामेराजा। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे आवीने। करयलजावकूणियस्सरणो। बेहाथजोडी यावत् कूणिकराजाने। तमाणत्तियपच्चप्पिणति। ते आज्ञा पाछीआपे एतले स्वामिन् तुम्हे कह्यु ते सर्व करयु छे। तएणसेकूणिएराया। तिवारे ते कूणिकराजा। जेणेवमज्जणघरे तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। जिहा मज्जन स्नान करवानू घ

॥ टीका ॥

लधा न्यवनूलानि यस्यसतथा धामरोत्करेण कृतमन्धकारं यत्र सतथा ततः कर्मधारयो ऽतस्तं, चित्रपरिच्छेयपच्छदं, चित्रपरिच्छेको लघु मच्छदो वस्त्रविशेषो यस्य सतथा ऽतस्तं, फणगपत्रियसुत्तगसुबद्धकच्छं, कनकघटितसूत्रकेण सुष्टु बद्धा कक्षा उरोबन्धनं यस्य सतथा तं' वद्धपरग्गावरणभरियजुद्धसज्जं, वर्धूना प्रहरणाना मावरणानाथ स्फुरफकटादीनां भृतो युद्धसज्जश्च य सतथा ऽतस्तं, मच्छत्तं सज्झयं सघंटं पंचामेलियपरिमंडियाभिरामं, पञ्चानि रापीडिकानि मुण्डानि परिमण्डितो ऽनिरामः रम्यो यस्य तथा ऽतस्तं, ओसारियजमलजुयलघंटं, अवसारित मवलम्बित यमल मम युगल द्वय घण्टयो यत्र सतथा ऽतस्तं, विज्जुपिणद्धवकालमेहं, नाररमारणाभरणादीनां विद्युत्कल्पनाकालत्वाच्च गजस्य मेघसमतति, उप्पाइयपव्वयमवत्त, औत्पातिकपर्वतमिव साक्षादित्यर्थः' मत्त मेहमिव गुलगुलत मणपवणजइणवेगं' मन पवनजयी वेगो यस्य सतथा ऽतस्तं' क्वचित्तु लिखितमेवास्ते, वाचनान्तरे त्विदमाधिगतमेव दृश्यत इति ॥ कयबलिकम्मेत्ति ॥ देवताना कृतबलिकर्मा ॥ कयकोउयमंगलपायच्छित्तेत्ति ॥ कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानीव दु स्वप्नादिव्यपोहाय वश्यकर्तव्यत्वात् प्रायश्चित्तानि येन सतथा तत्र कौतुकानि मषीपुण्ड्रादीनि मङ्गलानि सिद्धार्थकादीनि ॥ सन्नद्धबद्धवम्मियकवएत्ति ॥ सन्नद्ध सन्नहनिकया तथा बद्ध कशाबन्धनतो वर्म्मितं वर्मतया कृतोङ्गनिवेशना त्कवच कङ्क

॥ मूल ॥

ग्गणुपविसइत्ता रहाया कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सनद्धबद्धवम्मियकवये

॥ अनुवाद ॥

त्वनुप्रविश्य स्नात कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित सर्वालङ्कारविभूषित सन्नद्धबद्धवर्मितकवच उत्पीडितशरासनपट्टिक पिनद्धग्रैवेय

॥ भाषा ॥

रुद्र तिहां आवे तिहां आवीने। स्नानघरमें प्रवेश करे २ ना। स्नानघरमें प्रवेश करीने। न्हाने कयबलिकम्मे। स्नान कीधो देवताने कीधो बलिकर्म पूजा जेणे। कयकोउयमंगलपायच्छित्ते। कीधा मषीतिलकादिक मंगल सिद्धार्थादिक प्रायश्चित्त स्वप्नादिकने टालवाने अवश्य करवायोग्य। सव्वालंकारविभूसिए। सर्व अलंकारेकरी विभूषित गात्रछे। सन्नद्धबद्धवम्मियकवए। सन्नद्धबद्ध करी कांसणे बांधणे बांध्यो शरीरे निवेस्यो कवच जणे। उप्पीलियसरासणपट्टिए। पुणचढावी धनुषकरी एहवो सरासनपट्टिका धनुदंड जेणे। पिणद्धगेविज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टे। बांध्यो ग्रीवानो आभरण जेणे त

॥ टीका ॥

टो येन सतथा तत कर्म्मधारय ॥ उप्पीलियसरासणपट्टिएत्ति ॥ उत्पीडिता गुणसारणेन कृता वपीडा शरासनपट्टिका धनुर्दण्डो येन सतथा उत्पीडितावा, बाहौ बद्धा शरासनपट्टिका बाहुपट्टिका येन सतथा ॥ पिणद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिधपट्टेत्ति ॥ पिनद्ध परिहित ग्रैवेयक ग्रीवाभरणं येन सतथा, विमलवरो बद्ध श्चिह्नपट्टो योधचिह्नपट्टो येन सतथा तत कर्म्मधारय ॥ गहियाउहपहरणेत्ति ॥ गृहीतानि आयुधानि शस्त्राणि प्रहरणाय परेषा प्रहारकरणाय येन सतथा, अथवा, आयुधा न्यक्षेप्यशस्त्राणि खड्गादीनि, प्रहरणानितु क्षेप्यशस्त्राणि नाराचादीनि, ततो गृहीतान्यायुधानि प्रहरणानि येन सतथा ॥ सकोरिंटमल्लदामेणंति ॥ सहकोरण्टप्रधानै कोरण्टकाभिधानकुसुमगुच्छै र्माल्यदामभि पुष्पमालाभि र्यत्तत्तथा तेन ॥ चउचामरवालवीइयगेत्ति ॥ चतुर्णा श्चामराणा वालै र्वीजित मङ्ग यस्य सतथा ॥ मंगलजयसद्दकयालोएत्ति ॥ मङ्गलो मङ्गल्यो जयशब्द कृतो जनै र्विहित आलोके दर्शने यस्य सतथा ॥ एवजहाउववाइए ॥ जाव इत्यनेने दसूचित–अणेगगणनायगदंडनायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दणगरणिगमसेट्ठिसेणावइसत्थवाहदूयसंधिपालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहणिग्गएविवगह

॥ मूल ॥

उप्पीलियसणपट्टीए पिणिद्धगेविज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे मंगलजय २ सद्दकयालोए एवं जहा उववाइए जाव उवागच्छित्ता उदाइं

॥ अनुवाद ॥

विमलवरबद्धचिह्नपट्टो गृहीतायुधप्रहरण सकोरंटमाल्यदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन चतुश्चामरवालवीजिताङ्गो मङ्गलजयजयशब्दकृतालोक एव यथो

॥ भाषा ॥

या विमलप्रधान पटवद्ध चिह्ननोपाटो जेणें। गहियाउहप्पहरणे। गृह्या आयुध खड्गादिक जे हाथथकी उलालो नाखिये नही, प्रहरण परने प्रहारकरवानेअर्थे भाला बाण इत्यादिक जेहाथथकी वेगला नाखिये एहवा शस्त्रगृह्या जेणें। सकोरंटमल्लदामेणछत्तेणधरिज्जमाणेण। कोरंटकनामावृक्षनाफूलनीमाला तिणेंकरीसहित एहवो छत्रभाथेधरी जताथका। चउचामरवालवीइयगे। चार चामरने वालें वींजितछै अग जेहनो। मंगलजयसद्दकयालोए। मंगलनोदायक जयजयशब्दकीधोछै दर्शननेविषे जेहनेलोके जयजयशब्दथको कीधो। एवजहाउववाइए जावउवागच्छित्ता। इम जिम उवाई उपा

॥ टीका ॥

गणदिप्पतरिक्खतारागणाणमज्झेमसिव्वपियदसणेनरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणामेव उदाईहत्थि राए तेणामेव उवागच्छइत्ति, तत्र नेके येगणनायका प्रकृतिमहत्तरा, दण्डनायका स्तन्त्रपाला, राजानो माण्डलिका' ईश्वरा युवराजा, तलव रा परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीया' माडम्बिका. छिन्नमडम्बाधिपा, कौटुम्बिका कतिपयकुटुम्बप्रभवो ऽवलगका, मन्त्रि णा प्रतीता., महामन्त्रिणो मन्त्रिमण्डलप्रधाना, गणका ज्योतिषिका' भाण्डागारिका इत्यन्ये, दौवारिका प्रतीहारा, अमात्या राज्याधिष्ठा यका, चेटा पादमूलिका., पीठमर्द्दा आस्थाने आसनासीनसेवका, वयस्याइत्यर्थ' नगर मिहसैन्यनिवासि प्रकृतय' निगमा कारणिका, व णिजो वा, श्रेष्ठिन श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गा' सेनापतयो नृपतिनिरूपितचतुरङ्गसैन्यनायका' सार्थवाहा प्रतीता, दूता अन्येषा राजादेशनिवेदका, सन्धिपालाः राज्यसन्धिरक्षका, एतेषा द्वन्द्व स्तत स्तै रिह तृतीया बहुवचनलोपो द्रष्टव्य ॥ सद्धिति ॥ सार्द्ध सहेत्य

॥ मूल ॥

हत्थिरायं दुरूढे तएणं सेकूणिएराया जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं परिवुडे महयाभडचडगविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव

अनुवाद

पपातिके याव दुपागत्यो दायि हस्तिराज दुरूढो (आरूढइत्यर्थ) तदानी सकोणिको राजा नरेन्द्रो हारावस्तृतसुकृतरचितवक्षा यथौपपा तिके यावत् श्वेतवरचामरै रुद्धीज्यमानै २ हयगजरथप्रवरयोधकलितया चतुरंगिण्या सेनया सार्द्ध सपरिवृतो, महाभटविस्तारवद्वृन्दपरिक्षिप्तो,

॥ भाषा ॥

गनेविषे कह्यु तिम कहवो यावत सर्वपरिवारे सहित तिहांआवे तिहांआवीने । उदाइहत्थिरायदुरूढे। उदाईनामा हस्तिराजप्रतें चढ्यो । तएणसेकूणिए रायाणरिदे । तिवारे ते कूणिकराजा मनुष्यनो इन्द्र । हारोत्थयसुकयरइयवत्थेजहाउववाइए । हारसवाते आच्छादनेकरी भलीकीधी रति कहिये वच उर जेहनो ते जिम उवाईउपागमाहिकह्यु तिमवर्णक इहा पणिकहवो । जावसेयवरचामरेहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ । यावत् श्वेतचामर प्रधान सपेत चामर तिणेकरी वीजमान अथाकरता अथाकरताछे । हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीएसेणाएसद्धिसंपरिवुडे। घोडा हाथी रथ प्रधान योद्

॥ टीका ॥

र्थ , नकेवलं तत्सहितत्वमेवा पितु ते समिति रामन्ता त्परिवृत परिकरितइति 'हारोत्थयसुकयरइयवच्छे, हारावस्तृतेन हारावच्छादनेन सुष्टु कृ तरतिक वत्त उरो यस्य सतथा ॥ जहाउववाइएत्ति ॥ तत्रचैव मिदसूत्र–पालबपलवमाणपडसुकयउत्तरिजेइत्यादि ॥ तत्र प्रलम्बेन दीर्घेण प्रलम्ब मानेन झुम्बमानेन पटेन सुष्टुकृत मुत्तरीय मुत्तरासङ्गो येन सतथा ॥ महयाभडचडगविदपरिक्खित्तेत्ति ॥ महाभटाना विस्तारवत्सघेनपरिकरित इत्यर्थ , उवाएत्ति, उपयात उपगत ' अभेज्जकवयति, परप्रहरणाभेद्यावरण, वइरपडिरूवति' वज्रसदृश ॥ एगहत्थिणावित्ति ॥ एकेनापि गजे

॥ मूल ॥

उवागच्छइ उवागच्छइत्ता महासिलाकंटगं संगामं उयाए पुरन्तय से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्ज कवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ताण चिठइ, एवं खलु दोइंदा संगामं संगामंति तंजहा–देविंदेय मणुइंदेय एगहत्थिणाविणं पभू कूणिएराया पराजयित्तए तएणं सेकूणिए राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे

॥ अनुवाद ॥

यत्रैव महाशिलाकण्टक सङ्ग्राम स्तत्रो पागच्छ त्युपागत्य महाशिलाकण्टक सङ्ग्राम मुपगत , पुरतश्च सशक्रो देवेन्द्रो देवराज एक मह्दभेद्यक वच वज्रप्रतिरूपक विकुर्व्य तिष्ठति, एवखलु द्वाविन्द्रौ सङ्ग्राम सङ्ग्रामत स्तद्यथा–देवेन्द्रश्च मनुजेन्द्रश्च' एकेनापि हस्तिना प्रभु कोणिको रा

॥ भाषा ॥

महयाहयभडचडगविदपरिक्खित्ते । मोटाभड सूरिमा कलित इसोज चातुरगिणीसेना तेह सघाते परिवर्या एतले अनेकसेनाने वृन्दकरी सहित । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा भाट तेहना समूह तिणेकरी परिवर्या । जेणेवमहासिलाकटएसगामे । जिहा महाशिलाकण्टक सग्राम । देविंदे देवराया । देवेन्द्र देव आवीने । महासिलाकटएसगामउवाए । महाशिलाकण्टक सग्राम प्रते आव्या । पुरतोयसेसक्के । आगे वपुन ते शक्र । तानो राजा । एगमहंअभेज्जकवयवइरपडिरूवगविउव्वित्ताणचिठइ । एक मोटो परप्रहरण अभेद्य कवच आवरण परीयछ वज्रमय जिणि आगलि वै रीनो प्रहारलागे नही इसो विकुर्वीने रहै । एवखलुदोइ दासगामसगाभेति तजहा । इमनिश्चै दो इन्द्र सग्रामप्रते सग्रामकरे ते काहेछे—देविदेयमणुइ देय । देवेन्द्र ते सौधर्मेन्द्र मनुष्येन्द्र ते कूणिकराजा । एगहत्थिणाविणपभूकूणिएरायापराजित्तए । एक हाथीयेकरीने पणि समर्थछे कूणिकराजा परनें

॥ टीका ॥ नेत्यर्थ ॥ पराजिणित्तएत्ति ॥ परानऽजिनवितु मित्यर्थ ॥ हयमहियपवरवीरघाइयविवडियचिंधद्धयपडागेत्ति ॥ हता प्रहारदानतो मथिता मानिर्मथनत. प्रवरवीरा प्रधानभटा घातिताश्च येषा ते तथा' विपातिता. छिन्नाध्वजा श्चक्रादिचिह्नप्रधानध्वजा पताकाश्च तदन्या येषाते तथा त त कर्म्म धारयो ऽतस्तान् ॥ किच्छप्पाणगएत्ति ॥ कृच्छ्रगतप्राणान् कष्टेपतितप्राणानित्यर्थ ॥ दिसोदिसिंति ॥ दिश सकाशा दन्यस्या दिश्य भिमतादित्यागा द्दिगतराभिमुख्येनेत्यर्थ , अथवा , दिगेवा पदिक् नञानानिमायेगा यत्र प्रतिषेधने तद्दिगऽपदिक् तद्यथा भवत्येव ॥ पडिसेहित्थत्ति ॥

॥ मूल ॥ नवमल्लई नवलेच्छई कासीकोसलगा अट्ठारसवि गणरायाणो हयमहियपवरवीरघाइयावि पडियचिंधयपडागे किच्छप्पाणगए दिसो दिसिं पडिसेहित्था, सेकेणट्ठेणं भंते ! एववुच्चइ महासिलाकटए संगामे ? गोय

अनुवाद जा पराजयितु' तत स्स कूणिकोराजा महाशिलाकण्टक सग्राम सग्रामन् (युध्यन्) नवमल्लकिनवलेच्छकिकाशीकौशलका नष्टादशापि गणराजान् हतमथितप्रवरवीरघातितविपतितचिह्नध्वजपताकान् कृच्छ्रप्राणगतान् दिशोदिश प्रतिषेधितवान् । तत्केनार्थेन भ० । एवमुच्यते महाशिलाकण्टक सग्राम ? गौ० । महाशिलाकण्टके सग्रामे वर्त्तमाने यस्तत्र श्वोवा हस्तीवा योधोवा सारथिर्वा तृणेनवा काष्ठेनवा पत्रेणवा शर्करयावा भिद्यन्ते ससर्वो जानाति महाशिलया ह मनिहत स्ततेनार्थेन गौतम । महाशिलाकण्टक सग्राम । महाशिलाकण्टके सग्रामे वर्त्तमाना

॥ भाषा ॥ जोपिवाने वेरोप्रते पराभविवाने । तएणसेकूणिएराया । तिवारे ते कूणिकराजा । महासिलाकटयसगामसगामेमाणे नवमल्लइ नवलेच्छइकासीकोसलगाअट्ठारसविगणरायाणो । महाशिलाकण्टक सग्रामप्रते करताथका नवमल्लकी राजा काशी वाराणसीना धणी नवलेच्छकिराजा कोशल अजोध्यानाधणी ए अठारे सामन्तराजा गणना धणी इत्यर्थ । हयमहियपवरवीरघातियवाविपडियचिंधयपडागा । हण्या प्रहारथको मान्यो मथ्या गजर प्रधान वीरमभट घातकरा तथा पाडोके चिह्न ध्वजा चक्रादिके युक्त पताकाजेहनी । किच्छपाणगएदिसोदिसिपडिसेहित्था । कष्टनेविषे प्राणगया कष्ट पड्या प्राणप्रते इत्यर्थ अनेरीदिशिथको अनेरीदिशि नसाया भगाया इत्यर्थ । सेकेणट्ठेणभतेएववुच्चइ । ते स्येअर्थे हेभगवन् इमकह्यु । महासिलाकटएसगा

॥ टीका ॥

प्रतिषेधितवान् युद्धा न्निवर्त्तितवानित्यर्थ ॥ सारुट्ठत्ति ॥ सरुष्टा मनसा ॥ परिकुवियत्ति ॥ शरीरे समन्ता द्दर्शितकोपविकारा ॥ समरवहियत्ति ॥ प्रतिपेधितवान् युद्धा न्निवर्त्तितवानित्यर्थ ॥ मग्गर्त्तेत्ति ॥ पृष्ठत ॥ गायसति ॥ लो सङ्ग्रामे हता ॥ रहमुसलेत्ति ॥ यत्र रथो मुशलेन युक्त परिधावन् महाजनक्षय कृतवानसौ रथमुशल

॥ मूल ॥

मा ! महासिलाकटएणं संगामे वट्टमाणे जेतत्थ आसेवा हत्थीवा जोहेवा सारहीवा तणेणवा कट्ठेणवा पत्तेणवा सक्कराएवा अभिहम्मंति सव्वेसे जाणइ महासिलाए हंअभिहए सेतेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकं टए संगामे । महासिलाकंटएण भंते ! संगामे वट्टमाणे कइजणसयसाहस्सीओवहियाओ ? गोयमा ! चउरासीइजणसयसाहस्सीओ वहियाओ । तेणं भंते ! मणुया निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा संरुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालंकिच्चा कहिंगया कहिंउववन्ना ? गोयमा ! उरसन्नं

॥ अनुवाद ॥

कतिजनशतसाहस्योहता ? गौ० । चतुरशीतिजनशतसाहस्यो हता, स्ते भ० । मनुष्या निश्शीला याव न्निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा, स रुष्टा,

॥ भाषा ॥

मे । महाशिलाकण्टकनाम सङ्ग्राम इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा महाशिलाकटएण संगामेवट्टमाणे । हेगौतम । महाशिलाकटक सङ्ग्रामे वर्त्तमान तिहा रह्या थका । जे तत्थआसेवा हत्थीवा जोहेवा सारहीवा तणेणवा कट्ठेणवा पत्तेणवा सक्कराएवा । जिके तिहा घोडा अथवा हाथी अथवा योद्ध सुभट अथवा सारथी तृण सघाते काष्टेकरी पत्रेकरी काकरेकरी । अभिहम्मति सव्वेसेजाणइ महासिलाए अहअभिहए २ । हणीये सघलाई ते जाणे महाशिला मोटे पाथरे हु हणो २ । सेतेणट्ठेण गोयमा महासिलाकटएसगामे महासिलाकटएणभतेसगामेवट्टमाणे । तेणे अर्थे हेगौतम । महाशिलाकण्टक सङ्ग्रामकह्यो महाशिलाकण्टके हेभगवन् । सङ्ग्रामें वर्त्तमानथका । कइजणसयसाहस्सीओ वहियाओ । केतला मनुष्यना लाख हणाणा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा च उरासीइजणसयसाहस्सीओवहियाओ । हेगौतम । चउरासी मनुष्यना लाख ८४००००० हणाणा । तेणभतेमणुयाणिस्सीला । तेह हेभगवन् । मनुष्य श लव्रतरहितगुण उत्तरगुणरहित । जावणिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा । यावत् प्रत्याख्यान पौषध उपवासरहित । रुष्ठापरिकुपिया समरवहिया अणुवस

नरगतिरिक्खजोणिएसु उववन्ना। णायमेयं अरहया सुयमेयं अरहया विणायमेयं अरहया रहमुसलेणं संगामे। रहमुसलेण भंते ! संगामे वट्टमाणे केजयित्था केपराजयित्था? गोयमा ! वज्जी विदेहपुत्ते चमरेय असुरिंदे असुरकुमारराया जयित्था नवमल्लई नवलेच्छई पराजइत्था तएणं सेकूणिएराया रहमुसलं संगामं उवठियं सेसं जहा महासिलाकंटए, णवरं भूयाणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं उयाए पुरओयसे सक्के देविंदे देवराया

परिकुपिता, समररता, अनुपशान्ता' कालमासे कालङ्कृत्वा कुत्रगता कुत्रोत्पन्नाः? गौ! प्रायो नरकतिर्यग्योनिषू त्पन्ना ॥ ज्ञातमेतदर्हता श्रुतमेतदर्हता विज्ञातमेतदर्हता रथमुशले संग्रामे। रथमुशले संग्रामे वर्त्तमाने भ०। केजिता केपराजिता? गौ०। वज्जी विदेहपुत्र श्चमर श्चासुरेन्द्रो सुरराजो जितवन्त, नवमल्लकिनवलेच्छकिन पराजितवन्त', तदानीं सकूणिकोराजा रथमुशलं संग्राम मुपस्थितं ज्ञात्वा शेष य

ता। मनकरी रुठा शरीरनेविषे समर्थकी दिखायाछै कोपनाविकार जेणे संग्रामनेविषे एहवा उपशमरहित क्रोधयुक्त। कालमासेकालकिचाकाहिंगया। काल अवसरनेविषे कालकरीने किसीगति गया। कहिंउववन्ना। किसे स्थानके उपना इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा उस्सण्णनरयतिरिक्खजोणिएसु उववन्ना। हेगौतम। प्राये नारकीनीगति तथा तिर्यंचयोनिनेविषे उपना। णायमेयंअरहता सुयमेयंअरहता विणायमेयंअरहता। जाण्यू एह अरहंत समरणकीधो एह भरहंत विज्ञात एह अरहंत। रहमुसलेसंगामे २ रहमुसलेणंभंतेसंगामे। जिहां रथ मुशलेकरी युक्त दौडतोथको महाजन क्षयप्रतकरे ते रथमुशल संग्रामकहिये ते रथमुशले हेभगवन्। संग्रामे। वट्टमाणे केजयित्था केपराजयित्था। वर्त्तमान कुणजीता कुणहारा इतिप्रश्न उत्तर, गोयमा वज्जीविदेहपुत्तेचमरेअसुरिंदे असुरराया जयित्था। हेगौतम। वज्जीइंद्र विदेहपुत्र ते कूणिक चमर असुरेंद्र असुरराजाए जीता। नवमल्लई नवलेच्छई पराजयित्था। नवमल्लकिराजा नवलेच्छकिराजा सामन्त ए हारा। तएणंसेकूणिएराया। तिवारे ते कूणिकराजा। रहमुसलसंगामउवठियं। रथमुशल संग्रामप्रते सज्जथयो। सेसंजहामहासिलाकंटए। शेष जिम महाशिलाकण्टकनेविषे कह्यो तिमकहवो। णवरंभूयाणंदेहत्थिराया। एतलो वि

॥ मूल ॥

एवंतहेव जावचिठ्ठंति मग्गउयसे चमरे असुरिंदे असुरराया एगंमहं आयसं किढिणपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिठ्ठइ एव खलु तउ इंदा संगामं संगामंति तंजहा—देविंदे मणुयंदे असुरिंदे एगहत्थिणाविणं पभू कूणिएराया जइत्तए तहेव जाव दिसो दिसिं पडिसेहित्था। सेकेणठ्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ रहमुसले संगामे २ ? गोयमा! रहमुसलेणं संगामे वट्टमाणे एगेरहे अणासए असारहिए अणारोहए समुसले महया जणक्ख

अनुवाद

या महाशिलाकण्टके, नवरं, भूतानन्दो हस्तिराज' यावद्रथमुशलसङ्ग्राम मुपयात. (प्राप्त) पुरतश्च शक्रो देवेन्द्रो देवराज एव तथैव याव त्तिष्ठति, मार्गतश्च (पृष्ठत) सचमरो सुरेन्द्रो सुरराज एकं महदायस किठिनप्रतिरूपक विकुर्व्य तिष्ठति, एवखलु त्रय इन्द्रा सग्राम सग्रा मन्ति तद्यथा–देवेन्द्रो मनुजेन्द्रो ऽसुरेद्रश्च, एकेन हस्तिनापि प्रभु कूणिको राजा जयितु तथैव याव द्दिशोदिश प्रतिषेधितवान्। तत्केना

॥ भाषा ॥

शेष भूतानन्दनाम हस्तिराजप्रधान चढीने। जावरहमुसलसंगामउवाए। यावत् कूणिकराजा रथमुशलसग्राम प्रते आव्यो। पुरओयसेसक्केदेविंदेदेवराया। आगे वपुन. ते शक्र देवेन्द्र देवराजा अभेद्य कवचमाडी जिम महाशिलाकण्टक सग्रामनेविषे रह्यो। एवतहेवजावचिठ्ठति। तिमज यावत् इहा रहे। मग्गओयसेचमरे असुरिंदे असुरकुमारराया। पूठी पाछे वपुन ते चमर असुरेन्द्र असुरकुमारराजा। एगंमहआयसकिढिणपडिरूवगविउव्वित्ताणचिट्ठइ। एकमोटी लोहमय वज्रमय तापससम्बन्धी भाजनविशेष तेहने आकारे वस्तु विकुर्वीने रहे। एवंखलुतओइंदासंगामसंगामेंति तंजहा। इम निश्चे तीन इन्द्र संग्रामप्रतें करे ते कहेछे—देविंदे मणुइंदे असुरिंदे। देवेन्द्र १ कूणिक २ असुरेन्द्र चमर ३। एगहत्थिणाविणपभूकूणिएरायाजयित्तए। एक हाथी येंकरी अपि निश्चे ण वाक्यालंकारे, समर्थछे कूणिकराजा वैरीने जीपिवाने। तहेवजावदिसोदिसिंपडिसेहित्था। तिमहीज यावत् नवमल्लकि नवलेच्छकि यावत् दिशोदिशो नसावा। सेकेणठ्ठेणभंतेएववुचइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इमकह्यु। रहमुसलेणसंगामे २। रथमुशल संग्राम। गोयमा रहमुसलेणसं गामेवट्टमाणे। हे गौतम। रथमुशलसंग्रामनेविषे वर्त्तमान। एगेरहेअणासए असारहिए अणारोहए समुसले। एक रथ ते केहवो अश्व घोडा ते रहित

॥ टीका ॥

रमय ॥ किढिणपडिरूवगत्ति ॥ किढिन वंशमय स्तापससम्बन्धी भाजनविशेष स्तत्प्रतिरूपक तदाकार वस्तु ॥ आगासगत्ति॥ अश्वरहित ॥ असारथिक ॥ अणारोहएत्ति ॥ अनारोहको योधवर्जित ॥ महयाजणक्खयति ॥ महाजनविनाश ॥ जणवहत्ति ॥ जनवध जनव्यथा वा, ॥ जणप्पमद्दत्ति ॥ लोकचूर्णन ॥ जणसंवट्टकप्पत्ति ॥ जनसंवर्त्तइव लोकसंहारइव जनसंवर्त्तकल्पो ऽतस्त ॥ एगेदेवलोगेसुउववणे एगेसुकुलेप

॥ मूल ॥

यं जणवहं जणप्पमद्दं जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दम करेमाणे सव्वउ समंता परिधावित्था सेतेणट्ठेणं जाव रह मुसले संगामे । रहमुसलेणं संगामे वट्टमाणे कइजणसयसाहस्सीउ वहियाउ ? गोयमा ! छण्णउइंजणसय साहस्सीउ वहियाउ । तेणं भंते ! मणुया निस्सीला जाव उववण्णा ? गोयमा ! तत्थणं दससाहस्सीउ एगाए

अनुवाद

भंते भ० । एवमुच्यते रथमुशल संग्राम ? गौ० । रथमुशलेसंग्रामे वर्त्तमाने एकोरथो ऽनश्वो ऽसारथि रनारोह समुशलो महाजनक्षय जनव्य थ जनप्रमर्द्द जनसंवर्त्तकल्प रुधिरकर्द्दम कुर्वन् सर्वत समन्तात् परिधावितवान्, तेनार्थेन यावद्रथमुशल संग्राम । रथमुशले भ० ! संग्रामे वर्त्तमाना कतिजनसाहस्र्यो हता ? गौ० । षण्णवतिजनशतसाहस्र्यो हता स्ते भ० । मनुष्या नि शीला यावदुपपन्ना ? गौ० । तत्र दशसाहस्र्य

॥ भाषा ॥

सारथी रहित योद्धा रहित मुशलसहित । महयाजणक्खयजणवह । मोटाजन विनाशप्रते घणामनुष्यनो व्यथा अथवा वध ते प्रते । जणप्पमद्दजणसंवट्ट कप्प । लोकचूर्ण लोकना संहार ऊपरे जनसंवर्त्तक सरीखो । रुहिरकद्दमकरेमाणे । रुधिर लोहीना कर्द्दमप्रते करतोथको । सव्वओसमतापरिधावि त्था । सेतेणट्ठेणंजावरहमुसलेसंगामे । ते तेणे अर्थे हेगौतम । संग्रामकहियै यावत् रथमुशलसंग्राम कहियै । रहमुसलेणंभंतेसंगामेवट्टमाणे । रथमुशल हे भगवन् संग्रामे वर्त्तमानथका । कइजणसयसाहस्सीओवहियाओ केतलामनुष्यना लाख हणाणा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा छण्णउतिजणसयसाहस्सीओ वहियाओ । हे गौतम छिन्नूलाख मनुष्य हणाणा । तेणंभंतेमणुयानिस्सीला । ते ण वाक्यालंकारे, हे भगवन् मनुष्य शीलव्रत रहित । जावउववण्णा । यावत् किहांगया किहां ऊपना इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तत्थणंदससाहस्सीओएगाएमच्छियाएकुच्छिसिउववण्णाओ । हे गौतम तिहां ण वाक्यालंका

॥ टीका ॥ छायावृत्ति ॥ एतत् स्वतएव वक्ष्यति ॥ पुव्वसगइएत्ति ॥ कार्त्तिकश्रेष्ठ्यवस्थायां शक्रस्य कूणिकजीवो मित्र मासवत् ॥ परियायसगइएत्ति ॥ पूरणता

॥ मूल ॥ मच्छियाए कुच्छिंसि उववन्नाउ एगेदेवलोगेसु उववन्ने एगे सुकुले पच्चायाए अवसेसा उस्सन्ना नरगतिरिक्खजोणिएसु उववन्ना । कम्हाणं भंते ! सक्के देविंदे देवराया चमरे असुरराया कूणियस्स रन्नो साहेज्जं दलयित्था ? गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसगइए चमरे असुरे असुरराया परियायसगइए एवंखलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया चमरे असुरिंदे असुरराया कूणियस्स रन्नो साहेज्जं दलयित्था । वज्जज

अनुवाद मत्स्याः कुक्षा वुपपन्ना, एको देवलोकेषू पपन्न , एक सुकुले प्रत्याजातो, ऽवशेषा प्रायो नरकतिर्यग्योनिषू पपन्ना । कस्मा द्भगवन् । शक्रो देवेन्द्रो देवराज श्चमरो सुरराज कौणिकस्य राज्ञः साहाय्य दत्तवन्तौ ? गौ० । शक्रो देवेन्द्रो देवराज पूर्वसङ्गत्या चमरो सुरा सुरराज पर्यायसङ्गत्या एव खलु गौतम । शक्रो देवेन्द्रो देवराज श्चमरोसुरो ऽसुरराज कौणिकस्यराज्ञ साहाय्य कृतवन्तौ जनपु वहुजना ऽन्योन्य

॥ भाषा ॥ रे, दशसहस्र मनुष्य एक माछलीनी कूखिनेविषेऊपना । एगेदेवलोएसुउववन्ने । एक देवलोकनेविषे देवपणे ऊपना । एगेसुकुलेसु पच्चायाते । एकसुकुल मनुष्यना तेहनेविषे ऊपना । अवसेसानरयतिरिक्खजोणिएसुउववन्ना । थाकता नरकनेविषे तथा तिर्यञ्चनेविषे ऊपना तिहां अवतार ग्रह्या । कम्हाणं भंते सक्केदेविंदेदेवराया । किम हेभगवन् शक्र देवेन्द्र देवराजा । चमरेयअसुरकुमारराया । चमर असुरकुमारराजा । कूणियस्सरण्णोसाहेज्जंदलइत्था । कूणिकराजाने साहाय्य दीधू तेहना सहायीथया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सक्केदेविंदेदेवरायापुव्वसगइए । हे गौतम शक्र देवेन्द्र देवराजा कार्त्तिक सेठने शक्रने कूणिकजीव मित्रहतो । चमरे असुरिंदे असुरराया परियायसगइए । चमर असुरेन्द्र असुरराजा पूरणतापसनो जीव तेह अने कूणिकनो पर्याय मित्रहता तापसवतपणे मित्रहता । एवखलु गोयमा सक्के देविंदे देवराया । इम निश्चे हेगौतम । शक्र देवेन्द्र देवराजा । चमरे असुरिंदे असुरराया । चमर असुरेन्द्र असुरराजा । कूणियस्सरण्णोसाहेज्जंदलइत्था । कूणिकराजाने साहाय्य दीधू वली गौतम पूछेछे—वहुजणेणभंतेअण्णमण्णस्सएवमा

॥ टीका ॥

पञ्चावस्थायां चमरस्यासौ तापसपर्यायवर्ती मित्रमासीदिति ॥ अन्नेवसु गणोअमाणसरसावमाइक्खइ ॥ इत्यत्रैकवचनप्रक्रमे अपि बहुवचनं माहंसु इत्यत्र

॥ मूल ॥

णेणं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ एवंखलु गोयमा ! तेणंकालेणं तेणंसमएणं बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहचेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जेणं सेबहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो भवंति जेतेएवमाहंसु, मिच्छंते एवमाहंसु अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव

अनुवाद

सोये माख्याति याव त्प्ररूपयति एव खलु गौतम। तस्मिन्काले तस्मिन्समये बहवो मनुष्या अन्यतरेषु उच्चावचेषु संग्रामेषु अभिमुखा एव प्रहता सन्त कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवत्वेन उपपत्तारो भवन्ति तत्कथ भंत एतदेवं गौतम। यत्स बहुजनो अन्योन्यस्यैव माख्याति यावदुपपत्तारो भवन्ति। ये ते एव माहु मिथ्या ते एव माहु अहंपुन गौतम। एव माख्यामि याव त्प्ररूपयामि, एवखलु गौतम। तस्मिन्काल

॥ भाषा ॥

इत्यत्र। यथा मनुष्य की आत्मा कहते हैं, हे भगवन्! भाषते हैं इम कहते हैं—... । यावत् इम प्ररूपते । ... । इम निश्चे यथा मनुष्य । ... । अनेरा विधे मांहे । संग्रामने विधे । अभिमुख ... कालमासे काल किया । मनुष्यना निश्चयथी महत ... कालसमयनविषे कालकराने । ... थाय । अनेराइ देवलोकनविषे देवपणा उपजणहार थाय देव थवता हेवे । सेकहमेयमेवं । ते किम एम हे भगवन् एम ... । गोयमा । ... हे गौतम ... ते घणा मनुष्य मांहोमांहि इम कहे छे—... । यावत् देवतापणे उपजणहार हुवे। जे ते एवमाहंसु मिच्छंतेएवमाहंसु । जे इम कहता हुवा, झूठा इम कहता हुवा । अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि । हुं वली हे गौतम इम कहुं छूं । ... एवंखलु गोयमा । यावत् इम प्ररूपूं छूं इम निश्चे हे गौतम । तेणकाले ... । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । ... । वेसाली इसेनामे नगरीहुँती महावर्णवाळ । ...

यो ग्रनुरचननिर्देश स व्यक्त्यपेतो वसेय ॥ अभिगयजीवाजीवे ॥ इत्यत्र यावत् करणात् ॥ उवलद्धपुन्नपावे ॥ इत्यादिदृश्य ॥ पडिलाभेमाणेत्ति ॥ इदंच समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे विह

परूवेमि एवंखलु गोयमा! तेणंकालेणं तेणंसमएणं वेसालीनाम नगरी होत्था वण्णओ तत्थणं वेसालीए नग रीए वरुणेनामं नागनत्तुए परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिला भेमाणे छठंछठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं सेवरुणे नागनत्तुए अन्नया कयाइं रायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभियोगेणं रहमुसलेसंगामे आणत्ते समाणे छठभत्तिए अठमभत्तं

अन्यदा कदाचि द्राजाभियोगेन गणाभियोगेन बलाभियोगेन रथमुशलसङ्ग्रामे आज्ञप्त सन् षष्ठभक्तिके ऽष्टमभक्त मनुवर्द्धय त्यनुवर्द्धयित्वा कौटु

तस्मिन्समये विशालानाम नगर्यासीत्, वर्णक, तस्या विशालाया नगर्या वरुणो नाम नागनप्ता परिवसति, आढ्यो याव दपरिभूत, श्रम णोपासको, भिगतजीवाजीवो याव त्प्रतिलाभयन् षष्ठ षष्ठे नानिक्षिप्तेन तप कर्मणा त्मान परिभावयन् विहरति, तदा सवरुणो नागनप्ता

तिहां वैशालीनामा नगरानेविषे। वरुणेणामनागनत्तुएपरिवसइ। वरुण इसेनामे नागना नत्तकहता पुत्रनो पुत्र वसेछे। अड्ढेजावअपरिभूए समणो वासए। महाऋद्धिवन्त यावत् कोई पराभवी सकेनहीं श्रमणोपासक श्रावकछे। अभिगयजीवाजीवेजावपडिलाभेमाणे। अभिगत कह्या जाण्याछे जी व अने अजीव जेणे यावत् प्रत्यक्षो उवलद्धपुण्णपावे इत्यादि सेज्जासंथारएण अभिलाभेमाणे विहरइ एतलालगे कहवो। छट्ठंछट्ठेणअणिक्खित्तेण तवोक म्मेण। छट्ठछट्ठेकरो अन्तरारहित तपक्रियायेकरी। अप्पाणभावेमाणेविहरइ। आत्माने भावतोथको विचरे। तएणसेवरुणेनागणत्तुए। तिवारे ते वरुण नामे नागनत्तुक। अन्नयाकयाइ रायाभियोगेण। एकदा किवारे राजाने अभियोगे आज्ञायेकरी। गणाभियोगेण बलाभियोगेण रहमुसलेसंगामेआ णत्ते समाणे। पोतानो न्यातिने समुदाये आज्ञायेकरी बलात्कारेकरी रथमुशलसंग्रामना आज्ञा राजासबन्धी पामी जाणी जाणीने। छट्ठभत्तिएअट्ठमभ

॥ टीका ॥ रह इत्येवं दृश्य ॥ चाउग्घंटति ॥ घंटाचतुष्टयोपेत ॥ आसरहंति ॥ अश्ववाहनीयरथ ॥ जुत्तामेवति ॥ युक्तमेव रथस म रूपेतिगम्य 'सज्जय, मित्यत्र या

॥ मूल ॥ अणुवहेइ अ० २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवंवयासी—खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आस रहं जुत्तामेव उवट्ठावेह हयगयरहपवरजावसन्नाहेत्ता मम मेय माणत्तिय पच्चप्पिणह तएण ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सछत्तं सज्झयं उवट्ठवेंति हयगयरहजावसन्नाहेंति जेणेव वरुणे नागनत्तुए जाव पच्चप्पिणंति तएणंवसेवरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ जहाकूणिओ जाव

अनुवाद विकपुरुषा नाहूयति आह्व वमवादीत्' क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया! चतुर्घंटं मश्वरथ मुपस्थापयत, हयगजरथप्रवरा यावत्सन्नद्ध ममैत दा ज्ञापित प्रत्यर्पयत, तदा ते कौटुंबिकपुरुषा यावत्प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव सच्छत्र सध्वज याव दुपस्थापयन्ति, हयगजरथान् यावत्सन्नाहयन्ति' यत्रैव वरुणो नागनप्ता याव त्प्रत्यर्पयन्ति, तदा सवरुणो नागनप्ता यत्र मज्जनगृह तत्रो पागच्छति यथा कोणिकः, याव त्प्रायश्चित्त सर्वा

॥ भाषा ॥ त्तपएण्ठ्टठिति म २। बे उपवास का। छ्ठ अष्ठम न् पगारा। ण पछ व. र. र कारी एतलें ते उपवास पहिला कोधाहता एक वलीआगे अष्टमभक्त क राने। कोडुंबिय पुरिसेसद्दावेइ २ ना। आदेशकारी पुरुष तेडावे तेडावीने। एवंवयासी। इमकहे। खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया। उतावलाथाओ अहो देवानुप्रियाओ। चाउग्घंट आसरहजुत्तामेवउवट्ठवेह। चारघंटासहित अश्व घ-जावीया रथप्रति जोतरीने अथवा रथसामग्री वतीसहित युक्तकरीने सज्जकरोत्यारो। हयगयरहपवर जावसन्नाहेत्ता। घोडा हाथी रथ प्रधान यावत् सज्जकरी। ममंमेयमाणत्तियपच्चप्पिणह। माहरी एह आज्ञाकरीने मकने पाछोआपो। तएणंसेकोडुंबियपुरिसाजा पडिसुणेत्ता। तिवारे ते आदेशकारी पुरुष तेहना मुखथा एहवा वचन यावत् सांभलीने। खिप्पामेव सछत्तं सज्झयंजावउवट्ठवेंति। उतावलाथका छत्रसहित। ध्वजासहित। यावत् सज्जकरे। हयगयरहजावसन्नाहेंति। घोडा हाथी रथ यावत् सज्जकरे क राने। जेणेववरुणेणागनत्तुएजावपच्चप्पिणति। जिहां वरुणनामे नागनत्तुयो छे तिहां आवी ने ई यम्हें तुम्हारीआज्ञा सर्वकरीछे सामग्री सज्जकरीछे। त

॥ टीका ॥

वरकरणा दिदृश्य–सघट सपडाग सतोरणवर सणदिघोस सखिखिणीहेमजालपेरंतपरिक्खित्त, सकिङ्किणीकेन क्षुद्रघण्टिकायुक्तेन हेमजालेन पर्यन्तेषु परिक्षिप्तो य सतथा त 'हेमवयचित्ततिणिसकणगनिउत्तदारुयाक' हैमवतानि हिमवद्गिरिजातानि चित्राणि विचित्राणि तैनिसानि तिनिसाभिधानवृक्षसम्बन्धीनि सन्ति दृढानि भवतीति तद्ग्रहण कनकनियुक्तानि नियुक्तकनकानि दारूणि यत्र स तथा त, सुसविट्ठचक्कमडलधुराग, सुष्ठु सविद्धे चक्रे यत्र मण्डलाच वृत्ता धूर्यत्र सतथा त, कालायससुकयनेमिजतकम्म, कालायसेन लोहविशेषेण सुष्ठुकृत नेमे श्चक्रमण्डलमालाया यन्त्रकर्म बन्धनक्रिया यत्र सतथा त' आइण्णवरतुरयसुसपउत्त, जात्यप्रधानाश्वै सुष्ठुसम्प्रयुक्तमित्यर्थ 'कुसलणरच्छेयसारहिसुसपग्गहिय, कुशलनरेरूपो य छेकसारथि दक्षप्राजिता तेन सुष्ठु सम्प्रगृहीतो य स तथा त, सरसयबत्तीसयतोणपरिमडिय' शराणा शत प्रत्येक येषुते शरशता स्तै द्वात्रिंशता तोणै शरधिभि परिमण्डितोय सतथा त, सककडवडेसग, सह कङ्कटै कवचै रवतंसैश्च शेखरकै शिरस्त्राणभूतै र्य सतथा त, सचावसरपहरणावरणभरियजोहजुद्धसज्ज' सहचापशरै र्यानि प्रहरणानि खड्गादीनि आवरणानिच स्फुरकादीनि तेषा भृतो ऽतएव योधाना युद्धसज्जश्च युद्धप्रगु

॥ मूल ॥

पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्धबद्धसकोरिंटमल्लदामं जाव धरिज्जमाणेणं अणेगगणनायग जाव दूय संधिवालसद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला

॥ अनुवाद ॥

लङ्कारविभूषित सन्नद्धबद्धसकोरंटमाल्यदाम यावत् ध्रियमाणो ऽनेकगणनायकै र्यावत् दूतसन्धिपालै सार्द्ध सम्परिवृतो मज्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रा

॥ भाषा ॥

एणसेवरुणे णागनत्तुए । तिवारे ते वरुणनाग नागनत्तू । जेणेवमज्जणघरे । जिहा स्नानघरछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । जहाकूणिओ । जिम कूणिक सज्जथयो तिम । जावपायच्छित्ते । यावत् मगल प्रायश्चित्त एतलालगेजाणवो । सव्वालकारविभूसिए । सर्व अलकारेकरी विभूसित गात्रथया । सन्नद्धबद्धसकोरिंटमल्लदामधरिज्जमाणेण । सनाह बद्धथयो कोरटनामा वृक्षना फूलनीमालासहित यावत् छत्रधरतोथको । अणेग गणनायगजावदूयसधिवालसद्धिसपरिवुडे । अनेक गणनायक सामन्त यावत् दूत सधिपालसहित परिवर्योथको । मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता ।

॥ टीका ॥ गोय सतथा त, चाउग्घट आसरह जुत्तामेवत्ति, वाचनान्तरेतु साक्षादेवेद दृश्यतइति ॥ अयमेयारूवंति ॥ प्राकृतत्वा दिम मेतद्रूप वक्ष्यमाणरू

॥ मूल ॥ जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता चाउग्घट आसरहं दुरूहइ दुरूहइत्ता हयगयरह जाव सपरिवुडे महयाभडचडगजावपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता रहमुसल संगामं उयाए, तएण से वरुणे नागनत्तुए रहमुसल संगामं उयाए समाणे अयमेयारूव अभि ग्गह अभिगेण्हइ कप्पइमे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जेपुव्विं पहणइ तपडिहणित्तए अवसेसे नोक

॥ अनुवाद ॥ मति निष्क्रम्य यत्र वाह्योपस्थानशाला यत्रच चतुर्घंटोश्वरथ स्तत्रैवो पागच्छति उपागत्य चतुर्घंट मश्वरथ मारोहत्यारुह्य हयगजरथै र्यावत्सप रिवृतो महाभटविस्तारवता यावत् परिक्षिप्तो, यत्र रथमुशलसङ्ग्राम स्तत्रोपागच्छ त्युपागत्य रथमुशलसङ्ग्राम प्राप्त, तदा सवरुणो नागनप्ता रथमुशलसङ्ग्राम प्राप्त सन्निम मेतद्रूप मभिग्रह मभिगृह्णाति, कल्पत मे रथमुशलसङ्ग्राम सङ्ग्रामयतो य पूर्वं प्रहन्ति तम्प्रतिहन्तु अवशषा नोक

॥ भाषा ॥ टीवाणखानोछे। जेणेवचाउग्घटेआसर नान मज्जनना घरथकी नीकले नीकलीने। जणेववाहिरिया उवट्ठाणसाला। जिहा वाहिरली उपस्थानशाला चातुर्घंट अश्वरथप्रतें चढे चढी हे। जिहा चातुर्घंट अश्वरथछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे आवीने। चाउग्घटआसरहदुरूहइ २ त्ता। मोटा भट सुभट भाटप्रमुख ति ने। हयगयरहजावसपरिवुडे। घोडा हाथी रथ सुभटसघाते यावत् सघराथकी। महया भडचडगजावपरिक्खित्ते। रहमुसलसगामउयाए। रथ थें वीट्याथकी। जेणेवरहमुसलेसगामे। जिहा रथमुसलसग्रामछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहाआवे तिहा आवीने। रथमुसलनामे सग्रामने मुसलनाम सग्रामे आयो। तएणसेवरुणेनागनत्तुए। तिवारे ते वरुणनामे नागनत्तुक पुत्रनोपुत्र। रहमुसलसगामउयाएसमाणे। रथमुसलनामे सग्रामने लिये आव्योथको। अयमेयारूवेअभिग्गहइ। ए वक्ष्यमाणरूप आगे कहेछे, तेहवा अभिग्रह नियमविशेष ग्रहे। कप्पइमेरहमुसलसगाम सगामेमाणस्स। कल्पे मुझने रथमुशलनामे सग्रामप्रतें करताथकाने। जे पुव्विपहणइ तपडिहणित्तए। जे मुझने पहिला हणे तेहप्रतें हणवो। अवसेसेणोकप्पइत्ति। बी

॥ टीका ॥ ॥ सरिसम्भंडमत्तोवगरणत्ति ॥ सदृशी भाण्डमात्रा प्र
प ॥ सरिसएत्ति ॥ सदृशक: समान ॥ सरित्तएत्ति ॥ सदृशत्वक् ॥ सरिव्वएत्ति ॥ सदृग्वया ॥ सरिसम्भंडमत्तोवगरणत्ति ॥ सदृशी भाण्डमात्रा प्र हरणकोशादिरूपा उपकरणञ्च कङ्कटादिकं यस्य सतथा ॥ पडिरहंति ॥ रथप्रति ॥ आसुरुत्तेत्ति ॥ आशु शीघ्र रुष्ट कोपोदयाद्विमूढो, रुपलुपवि

॥ मूल ॥ ण्हइत्ति अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ अभिगिण्हइत्ता रहमुसलं संगामेइ तएणं तस्स वरुणस्स नागन त्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगेपुरिसे सरिसए सरित्तए सरिव्वए सरिसम्भंडमत्तोवगरणरहेण पडि रहं हव्वमागए, तएणं सेपुरिसे वरुणं नागनत्तुयं एववयासी—पहण भोवरुणा नागनत्तुया ! तएणं वरुणे नागनत्तुए तपुरिसं एवंवयासी—नोखलु मेकप्पइ देवाणुप्पिया पुव्विं अहयस्स पहणित्तए तुमंचेव पुव्विं

॥ अनुवाद ॥ ल्पते इम मेतद्रूप मभिग्रहमभिगृह्णा त्यभिगृह्य रथमुशलसङ्ग्राम सङ्ग्रामयति तदा तस्य वरुणस्य नागन प्तृरथमुशल सग्राम सग्रामयत एक पुरुष सदृक् सदृक्त्वक् सदृग्वया सदृग्भाण्डमात्रोपकरणरथेन प्रतिरथ शीघ्र मागत स्तदानी स पुरुषो वरुण नागनप्तार मवमवादीत्—प्रहण भोवरुण

॥ भाषा ॥ जाने हणवा कल्पतहा। अयमेयारूवअभिग्गहं अभिगिण्हइ अभिगिण्हइत्ता। एहवो अभिग्रह नियमविशेष गृहे गृहीने। रहमुसलसंगामसंगामेइ। रथ मुशलसंग्रामप्रते करे। तएणतस्सवरुणस्सनागनत्तुयस्स। तिवारे तेहने वरुणनामे नागनत्तुयाने। रहमुसलसंगाम संगामेमाणस्स। रथमुसल संग्राम करत। थकाने। एगेपुरिसेसरिसए सरित्तए सरिव्वए। एक पुरुषसरीखो सरीखो चामडीये, सरीखो वयेकरी। सरिसभंडमत्तोवगरणरहेण पडिरहंहव्वमागए। सरीखाछे भांडमात्र उपगरण प्रहरण कोशादिरूप उपगरण कंकटादिक जेहने ते इसे रथकरीने वरुणना रथप्रते उतावलो सामुहो आव्यो। तएणसे पु रिसे। तिवारे ते पुरुष। वरुणनागनत्तुयं। वरुणनागनत्तुयाप्रते। एववयासी। इम कहे। पहणभोवरुणानागनत्तुया। प्रकर्ष हण मार मुझनेभो इति संबो धने वरुणनागनत्तुआ। पहण २ तएणसेवरुणेनागनत्तुए। इम बीजोवार कह्यु हण हण तिवारे ते वरुणनागनत्तुयो। तपुरिस एववयासी। ते पुरुष प्रति इमकहे। णोखलुमेकप्पइदेवाणुप्पिया। नही निश्चे मुझने कल्पे आचरे हे देवानुप्रिय। पुव्विअहयस्सपहणित्तए। पहिला अहतने एतले जे मुझने

॥ टीका ॥

मोक्तनेरितिदर्शनात, स्फुरितकोपचिह्नोया; यावत्करणा दिदं दृश्य ॥ रुट्ठे कुविए चंडिक्किए ॥ तत्र रुष्ट उदितक्रोध कुपित प्रवृद्धकोपोदय श्चा ण्डिक्यित सञ्जातचाण्डिक्यः प्रकटितरौद्ररूपइत्यर्थः ॥ मिसिमिसिमाणेत्ति ॥ क्रोधाग्निना दीप्यमानइव एवंभूतश्च सं, तं श्रुत्वा. कोपप्रकर्षप्र

॥ मूल ॥

पहणाहि, तएणं सेपुरिसे वरुणेणं एवं वुत्तेसमाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ परामुसइ त्ता उसुं परामुसइ परामुसइत्ता ठाणं ठाइ ठिच्चा आययकन्नाययं उसुं करेइ उसुं करेइत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ, तएणं सेवरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसि

अनुवाद

नागनप्त ! ततो वरुणो नागनप्ता तत्पुरुष मेवमवादीत्-प्रहर तु मेकत्वत देवानांप्रिय ! एव मरत्तु प्रहर्त्तु ! त्वमेव पूर्वं प्रहर, तदा सपुरुषो वरुणेन नागनप्त्रा एवमुक्त न आशुरुप्तो यावन्मिसमिसमानो धनु परामृशति परामृश्य पुनरामृशति परामृश्य स्थान तिष्ठति स्थित्वा यतकर्णायत मिषुं करोति कृत्वा वरुणं नागनप्तारं गाढप्रहारं करोति' तदा सवरुणो नागनप्ता तेन पुरुषेण गाढप्रहारीकृत स आशुरुप्तो यावन्मिमि

॥ भाषा ॥

पहिला हणतहो तोभने म हणवानहा तेनाहे। तुमहवपूर्वि वहणाति। तुमेज निंय कुरुते पहिला हणा आयुसमूको। तएणंसपुरिसे। तिवारे ते प रख। वरुणे। नागनतुएण। वरुणनामे नागनत्तुआ। एवयुक्तेसमाणे थामुरुते। इस कह्याथका उतावलो कोपना उदयथको विमूढघणो। आर्यमिसिमिसि माणे। यावत् क्रोध उदयथको क्रोधरूपा अग्नि करी देदीप्यमान कोपायमान थको। धणुपरामुसइ २ त्ता। धनुष तेहपत आगे गृह गृहीने। उसुपरामुसइ २ त्ता। इषु कहिये बाण तेहप्रते गृह गृहीने। ठाणंठाइठाणंठिच्चा। पाडत्याम स्थिर अवगाहतो करे करीने। आयतकन्नाउसुंकरेइ २ त्ता। यावत्कर्णो सामा न्यकरी तेहाज कानलगे ताण्या एतले बाणकरे करीने। वरुणनागनत्तुए गाढप्पहारीकरेइ। वरुण नागनत्तुयाप्रते गाढो प्रहार करे। तिवारे ते वरुणनामे नागनत्तुरो। तेणपुरिसेणं गाढप्पहारीकएसमाणे आसुरुत्ते। तेण पुरुषेकरी, प्रथम गाढे प्रहारे प्रहारकीधा थका उतावलो कोपवन्तथयो। आर्य मिसिमिसि माणे। यावत् कोपरूप अग्निकरी देदीप्यमान थयो थको। धणुपरामुसइ २ त्ता। धनुषप्रते गृह गृहीने। उसुपरामुसइ २ त्ता। बाणप्रते गृह गृहीने। अथ।

॥ टीका ॥ आयत आकृष्ट सामान्येन सर्वं वर्णयित आ तिपादनार्थमुक्ता ॥ ठाणंति ॥ पादन्यासविशेषलक्षणं ॥ ठाइति ॥ करोति ॥ आययकरणाययति ॥ आयत आकृष्ट सामान्येन सर्वं वर्णयित आ कर्णमाकृष्ट आयतकर्णायत स्त ॥ एगाहच्चंति ॥ एका हत्या हननं प्रहारो यत्र जीवितव्यव्यपरोपणे तदेकाहत्य तद्यथा भवति ॥ कूडाहच्चंति ॥ कू टेइव तथाविधपाषाणसम्पुटादौ कालविलम्बाभावसाधर्म्या दाहत्या हननं यत्र तत्कूटाहत्य ॥ अत्थामेत्ति ॥ अस्थामा सामान्यत शक्तिविकल ॥ अवलेति ॥ शारीरशक्तिवर्जित ॥ अवीरिएत्ति ॥ मानसशक्तिवर्जित ॥ अपुरिसक्कारपरक्कमेत्ति ॥ व्यक्त नवर पुरुषकार पुरुषाभिमान सएव लि

॥ मूल ॥ मिसिमाणे धणु परामुसइ परामुसइत्ता आययकसायय उसुंकरेइ उसुंकरेइत्ता तंपुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाउ ववरोवेइ, तएणं सेवरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेण गाढप्पहारीकएसमाणे अत्थामे अबले अवी रिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्ज मितिकट्टु तुरए निगिण्हइ निगिण्हइत्ता रह परावत्तेइ रहमुसलाउ

अनुवाद मिसमानो धनु परामृशति परामृश्या यतकर्णायत मिषु करोति कृत्वा तपुरुष मेकाहत्य कूटाहत्य जीविता व्यपरोपयति, तदा सवरुणो ना गनप्ता तेन पुरुषेण गाढप्रहारीकृतस्स (अत्र पूर्वकृत एव प्रहारो बोद्धव्य एतत्प्रहारोत्तरतस्यमृतत्वात्) अस्थामो ऽबलो ऽवीर्यो ऽपुरुषका रपराक्रमो ऽधारणीय मितिकृत्वा तुरगा न्निगृह्णाति निगृह्य रथ परावर्त्तयति परावर्त्य रथमुशला त्सङ्ग्रामा त्प्रतिनिष्क्रामति निष्क्रम्य कान्ता

॥ भाषा ॥ तपुरिसएगाहच्चकूडाहच्चजीवियाओववरोवेइ । ते पुरुषने तसणाउयउस,करेइ २ त्ता । आकर्णीने कानलगे आयतविस्तीर्ण एहवो बाणप्रते करे करीने । तपुरिसएगाहच्चकूडाहच्चजीवियाओववरोवेइ । ते पुरुषने एक प्रहारे जोवितव्यथको दूरकीधो जिम पर्वतनो कूट पडवाथको कालविलम्ब नकरे ते सावर्म्यथको तिम ते पुरुष जीवितव्यथको दूरकीधो । तएण सेवरुणेनागनत्तुए । तिवारे ते वरुणनामे नागनत्तुयो । तेणपुरिसेणगाढप्पहारीकएसमाणे अत्थामे । तिणे पुरुषे शस्त्रने गाढप्रहारे हणोथको सामान्य थ को शक्ति विकलथयो । अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे । शरीर शक्तिवर्जित मानसशक्तिवर्जित पुरुषाभिमान तेहीज नीपजाव्योछे पोतानो प्रयो जन ते पराक्रम तेहयो वर्जितथको । अधारणिज्जमितिकट्टु । आत्माने धरवाने असमर्थथयो इमकरीने । तुरएनिगिण्हइ २ त्ता । घोडाप्रते जाताने रा

॥ टीका ॥

तुरएणिगिगिए प्यादितस्वप्रयोजन पराक्रम ॥ अधारणिज्जति ॥ आत्मनो धारण कर्तु मशक्य ॥ इतिकट्टुत्ति ॥ इतिकृत्वा इतिहेतो रित्यर्थं ॥ तुरएणिगिगिए प्यादितस्वप्रयोजन पराक्रम ॥ अधारणिज्जति ॥ आत्मनो धारण कर्तु मशक्य ॥ सीलाइति ॥ फलानपेक्षा प्रवृत्तय स्ताश्च प्रक्रमाच्छुना ॥ इति ॥ अश्वान् गच्छतो निरुणद्धीत्यर्थ ॥ एगतमतति ॥ एकान्त विजन अन्तर्भूमिभाग ॥

॥ मूल ॥

संगामाउ पडिनिक्खमइ २ एगंतमंतं अवक्कमइ २ तुरए निगिण्हइ निगिण्हइत्ता रह ठवेइ ठवेइत्ता (ग्रंथाग्रं ५०००) रहाउ पच्चोरुहइ पच्चोरुहइत्ता रहाउ तुरए मोएइ मोएइत्ता तुरए विसज्जेइ विसज्जेइत्ता दब्भसंथारग संथारइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियंकनिसण्णे करयलजावकट्टु एवंवयासी नमोत्थुणं अरहंताणं भगवताण जाव संपत्ताणं नमोत्थुण समणस्स भगवउ महावीरस्स आदिगरस्स जाव

अनुवाद

त्त मपक्रामति, अपक्रम्य तुरगा न्निगृह्णाति निगृह्य रथ स्थापयति स्थापयित्वा रथा त्प्रत्यारोहति प्रत्यारुह्य रथा त्तुरगा न्मोचयति मोच यित्वा तुरगान् विसर्जयति विसृज्य दर्भसंस्तारक संस्तारयति, संस्तार्य दर्भसंस्तारक मारोह त्यारुह्य पौरस्त्याभिमुख सपर्यङ्कनिषण्ण कर तलपरिगृहीत यावदञ्जलि कृत्वैव मवादीत्–नमोऽस्त्वर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो याव त्सम्प्राप्तेभ्यो, नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराया दिकराय याव

॥ भाषा ॥

रहमुसलाओ संगामाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । रथमुसल संग्रामथ खे घोडा चालताने गृहीने । रहपरावेइ २ । रथप्रते संग्रामथी पाछो वाले वालीने । एकान्त मनुष्यरहित अलकहिवे भूमिभागनेविषे आश्रय जावे जाइने । तुरएनिगिण्हइ २ त्ता । घो नोकले नोकलीने । एगतमतअवक्कमइ २ त्ता । रहठवेइ २ त्ता । रथप्रते स्थापे स्थापीने । रहाओपच्चोरुहइ २ त्ता । रथथको उतरे उतरीने । तुरएमोएइ २ त्ता । घोडा चालताप्रते ग्रहीराखे राखीने । तुरएविसज्जेइ २ त्ता । घोडाप्रते विसर्जे विसर्जीने [ग्रन्थाग्र ४०००] दब्भसंथारग संथरइ २ त्ता । डाभना संथाराप्रते संथरे घोडाप्रते मूके मूकीने । दब्भसंथारगदुरूहइ २ त्ता । डाभना संथारावि बेसे बेसीने पुरत्थाभिमुहेसपलियंकनिसण्णे । पूर्वदिशि साहमू पालठाव बेठो । करयलजा करे करीने । एववयासी । इमकहे । णमुत्थुण अरहंताण भगवताण जावसपत्ताण । नमस्कारहुओ अरहतनेकाजे वकट्टु । हाथ बेजजोडीने यावत् अंजली करीने ।

॥ मूल ॥

संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवएसयस्स वंदामिणं भगवं तत्थगय इहगए पासउ मेभगवं तत्थगए जाव वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विंपिणं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए एवं जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावजीवाए, इयाणिंपिणं अहं तस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावजीवाए एवंजहा खंदओ जाव

॥ अनुवाद ॥

त्सम्प्राप्तुकामाय मम धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दामि भगवन्त तत्रगत मिहगत पश्यतु मा भगवा स्तत्रगतो' याव द्वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्कृत्यै वमवादीत्—पूर्वमपि मया श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिक स्थूलप्राणातिपात प्रत्याख्यातो यावज्जीवित मेव याव त्स्थूल परिग्रह प्रत्याख्यातो यावज्जीवित, मिदानी मप्यह तस्यैव भगवतो महावीरस्यान्तिक सर्व प्राणातिपात प्रत्याख्यामि यावज्जीवित मेव यथा स्कन्दको याव देतदपि चरमै रुच्छ्वासनि श्वासै र्व्युत्सृज्यामी तिकृत्वा सन्नाहपट्टं (कवच) मोचयति मोचयित्वा शल्योद्धरण करोति कृत्वा

॥ भाषा ॥

भगवन्तनेकाजे यावत् सिद्धगति पाम्याने। णमुत्थुणसमणस्सभगवओमहावीरस्सआदिगरस्स। नमस्कारहुओ श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने आदि धर्मनी तेहना करणहारने। जावसंपाविउकामस्स। यावत् सिद्धगत मननावाञ्छणहारने। ममधम्मायरियस्स। माहरा धर्माचार्यने। धम्मोवएसग स्स। धर्मउपदेशना देणहारने। वंदामिणभगवततत्थगय। वांदू छूं भगवन्त तुम्हप्रतें तिहा समोसरणनेविषे वैठाने। इहगएपासउमेसेभगवतत्थगए। इहां छ्यां प्रतें देखो मुझने ते भगवन्त तिहा रह्याथका। जाववंदइणमसइ २ त्ता। यावत् वांदे नमस्कार करै करीने। एववयासी। इमकहै। पुव्विंपिणम ए। पहिला पणि मैं। समणस्सभगवओमहावीरस्सअंतिए। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे। थूलपाणाइवाएपच्चक्खाए। स्थूलप्राणातिपात पच्चख्याछे। जावजीवाए। यावत् जीवलगे। इयाणिंपिणअह। हवणा पणि छू। तस्सेवभगवओमहावीरस्सअंतिए। तेहीज भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे। सव्वपाणाइवाय पच्चक्खामिजावजीवाए एवजहाखंदओ। सर्व जे प्राणातिपात एतले सूक्ष्मबादरजीव तेहना हणवा तेहथी निवर्त्तवो जा

॥ मूल ॥

एयपिणं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरसामित्तिकट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ मुयइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ करेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए, तएणं तस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे जाव अधारणिज्जं मितिकट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खममाणं पासइ पासइत्ता तुरए निगिण्हइ निगिण्हइत्ता जहा

अनुवाद

लोचितप्रतिक्रान्त समाधि प्राप्त आनुपूर्व्या काल (मरण) गत, स्तदा तस्य नागनप्तु रेक प्रियबालवयस्यो रथमुशलं सग्रामय न्नेकेन पुरुषेण गाढप्रहारीकृत स न्नस्थामो याव दधारणीय मितिकृत्वा वरुण नागनप्तार रथमुशला त्सग्रामा त्प्रतिनिष्क्रममाण पश्यति दृष्ट्वा तुरगा न्निगृह्णाति निगृह्य यथा वरुणो यावत्तुरगान् विसर्जयति विसृज्य पटसंस्तारक मारोह त्यारुह्य पौरस्त्याभिमुखो यावदञ्जलि कृत्वैव मवादीत्–

॥ भाषा

जीवु तालगे ए जीवने इंणि शरीरसघाते सबवलगे इम जिमखन्दकने अधिकारे कह्यु तिम इहा पणिकहवो। जावएयपिण चरिमेहि। यावत् एह शरीर पणि छेहले। ऊसासनीसासेहिंवोसिरिस्सामित्तिकट्टु। ऊसास नीसासेकरी वोसिराव् विसर्जू तजू इत्यर्थं इमकरीने। सन्नाहपट्टमुयइ २ त्ता। सन्नाहपट्टप्रतें मूकें मूकीने। सल्लुद्धरणकरेइ करेइत्ता। मिथ्यात्वसालने ऊधरे एतले काढे काढीने पूर्वक्षत कर्मने। आलोइयपडिक्कंतेसमाहिपत्तेआणुपुव्वीएकालगए। आलोचे पडिक्कमीने समाधिपाम्यो मनस्थिरकरी अनुक्रमे मरणवसंप्रते प्रामथयो। तएणतस्सवरुणस्सणागणत्तुयस्स। तिवारे तेहनो वरुणनामे नागनत्तुयानो। एगपियबालवयसए। एक प्रियवल्लभ बालमित्र एतले एक बालपणानो मित्रछे ते। रहमुसलसगामसगामेमाणे। रथमुसलसग्राम करतायका। एगेणपुरिसेणगाढप्पहारीकएसमाणे। एके पुरुषे ते मित्रने गाढप्रहारे हण्योथको। अत्थामेजावअधारणिज्जमितिकट्टु। शरीर शक्ति जिकलथको यावत् आत्माने धरवाने असमर्थथयो इमकरीने। वरुणणागणत्तुयरहमुसलाओसंगामाओपडिणिक्खममाणपासइ २ त्ता। वरुणनामे नागनत्तुयाप्रते रथमुशलसग्रामथकी पाछो वलतोथको देखें देखीने। तुरएणिगिण्हेइ २ त्ता। घोडा जाता ग्रहे ग्रहीने। जहावरुणेजावतुरिएविसज्जेइ २ त्ता।

॥ टीका ॥

वयाइति ॥ अहिंसादीनि ॥ गुणाइति ॥ गुणव्रतानि ॥ वेरमणाइति ॥ सामान्येन रागादिविरतय ॥ पच्चक्खाणपोसहोववासाइति ॥ प्रत्याख्यान पौरुष्यादिविषय पौषधोपवास पर्वदिनोपवास ॥ गीयगधव्वनिनाएत्ति ॥ गीत गानमात्र गन्धर्व तदेवमुरजादिध्वनिसनाथ तल्लक्षणो निनाद श

॥ मूल ॥

वरुणे जाव तुरए विसज्जेइ पडसंथारगं दुरूहइ दुरूहइत्ता पुरत्याभिमुहे जाव अंजलिकट्टु एवंवयासी—जाइंणं मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणपोसहोववासाइं ताइंणं ममंपि भवंतुत्तिकट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ मुयइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ करेइत्ता आणुपुव्वीए कालगए, तएणं तं वरुणं नागनत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहिं वाणमंतरदेवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासेवुट्ठे, दसद्ध

॥ अनुवाद ॥

यानि मम प्रियबालवयस्यस्य वरुणस्य नागनप्तुः शीलानि, व्रतानि, गुणा, विरतय, प्रत्याख्यानपौषधोपवासा स्तानि ममापि भवन्त्विति कृत्वा सन्नाहपट्ट मोचयति मोचयित्वा शल्योद्धरण करोति कृत्वा नुपूर्व्या कालगत, ततोवरुण कालगत ज्ञात्वा यथा सन्निहितै र्वानव्यन्तर

॥ भाषा ॥

जिम वरुणनागनत्तुयो यावत् घोडाप्रति विसर्जे विसर्जीने । पडसंथारगदुरूहइ २ त्ता । पटसंथारो जेहवो बरुणेकीधो तेहवो करे करीने बेसे बेसीने । पुरत्याभिमुहेजावअंजलिकट्टु । पूर्व दिशि सामुहो यावत् अंजली बेहाथना करीने । एववयासी । इमकहै । जाइणममपियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स । जेह माहरा प्रियवल्लभ बालमित्र वरुणनागनत्तुयाना । सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं । शील आचार व्रत अहिंसादिक गुणव्रत सामान्यकरी रागादिक विरत । पच्चक्खाणपोसहोववासाइं । पच्चक्खाण पोरसी प्रमुखविषय पर्वदिन पोषधोपवास । ताइणममपिभवतुत्तिकट्टु । तिके ए वात्यालकारे, मुझने पणि हुओ इम करीने । सन्नाह पट्टमुयइ २ । सन्नाहपट्टप्रते मूके मूकीने । सल्लुद्धरणकरेइ २ त्ता । सालनोउद्धार करे करीने । आणुपुव्वीएकालगए । अनुक्रमे कालगत प्राप्तथयो । तएणंतंवरुणंणागनत्तुय । तिवारे ते वरुण नागनत्तुयाप्रते । कालगयंजाणित्ता । कालगयो मरणपाम्यो जाणीने । अहासन्निहिएहि । यथा समीपवर्त्ती । वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वेसुरभिगंधोदगवासेवुट्ठे । वानव्यन्तरदेव देवसबन्धी सुरभिगन्ध सुगन्ध गन्धोदकनी वृष्टि

॥ टीका ॥ व्दो गीतगन्धर्वनिनाद ॥ कालमासेणंति ॥ मरणमासे मासस्यो पलक्षणत्वात् कालदिवसे इत्याद्यपि द्रष्टव्य ॥ कहिं गए कहिं उववन्ने त्ति ॥ अरुणाद्ये

॥ मूल ॥ यवसो कुसुमे निवाडए, दिव्वेयगीयगंधव्वनिनादे वायाविहोत्था, तएण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तंदिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ताय पासित्ताय बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया! बहवे मणुस्सा जाव उववत्तारो भवंति। वरुणेणं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालकिच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताएउववन्ने तत्थणं

अनुवाद देवें दिव्य सुगन्धिगन्धोदकवर्षा वर्षिता, दशार्द्धवर्णानि (पचवर्णानि) कुसुमानि पातितानि, दिव्याश्च गीतगन्धर्वनिनादा कृता अप्यभवन्, तत स्तस्य वरुणस्य नागनप्तुः स्ता दिव्या देवर्द्धि देवद्युति दिव्य देवानुभाव श्रुत्वाच दृष्ट्वाच बहुजनो न्योन्यस्मै एव माख्याति, याव त्प्ररूपयति एवंखलु देवानुप्रिया। बहवो मनुष्या याव दुपपत्तितारो भवति ॥ वरुणो भ० । नागनप्ता कालमासे कालकृत्वा क्वगत क्वोत्पन्न ?

॥ भाषा ॥ कीधो। दशपवर्णकुसुमेनिवाइये। दशपको श्रद्ध एतले पचवर्ण फूलनो पातकीधो। दिव्वेयगीयगधव्वनिनादेअव्याविहोत्था। देवसम्बन्धीगीत गानमा ने गन्धर्व तेहीज मृदंगादिध्वनि ते लक्षण निनादशब्द ते करतांहुवा। तएणतस्सवरुणस्सणागनत्तुयस्स। तिवारे तेहने वरुणने नागनत्तुयाप्रते। तदिव्वंदेविड्ढिं। ते दिव्य देवनोऋद्धि प्रते। दिव्वदेवज्जुत्ति। प्रधानदेव कांतिप्रते। दिव्व देवाणुभाग। देवसबन्धी देवानुभागप्रते। सुणित्ताय पासित्ताय बहुजणो। सांभलीने देखीने घणा मनुष्य। अन्नमन्नस्सएवमाइक्खइ। माहोमांहि एक एकने इमकहे। जावपरूवेइ। यावत् इम प्ररूपे। एव खलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे अहोदेवानुप्रियाओ। बहवेमणुस्साजाबउववत्तारोभवति। घणा मनुष्य संग्रामनेविषे मरणपाम्याथका यावत् देवपणे ऊपजणहार हुवे, वली गौतम पूछेछे—वरुणणंभंतेणागनत्तुएकालमासेकालकिच्चा। वरुणनागनत्तुक हेभगवन्। कालअवसरनेविषे कालकरी मरणपामीने। कहिंगए। किसी गते गयो। कहिंउववन्ने। किसे स्थानके ऊपनो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सोहम्मेकप्पेअरुणाभेविमाणेदेवत्ताएउववन्ने। सौधर्मनाम पहिलादेवलोकना अ

सोऽहमित्याद्येकमेवोत्तर गमनपूर्वकत्वा दुत्पादस्यो त्पादाभिधाने गमन सामर्थ्या दवगतमेवेत्यभिप्रायादिति ॥ आउक्खएणंति ॥ आयु कर्मदलिकानि

अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाणि ठिई प०, तत्थणं वरुणस्सवि देवस्स चत्तारिपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सेणं भंते! वरुणे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवठिइक्खएणं जाव महाविदेहेवासे सिज्झिहिति जाव अंतंकरेहिति । वरुणस्सणं भंते ! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववन्ने ? गोयमा ! सुकुले पच्चाजाए। सेणं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहि

गो० । कालमासे कालकृत्वा सौधर्मे कल्पे अरुणाभे विमाने देवतयो त्पन्नः, तत्र केषांचि देवाना चत्वारि पल्योपमानि स्थिति प्रज्ञप्ता, तत्र वरुणस्यापि देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थिति प्रज्ञप्ता । स भ० । वरुणो देव स्तस्मा देवलोका दायुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण याव महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावदन्त करिष्यति । वरुणस्य भ० । नागनप्तु प्रियबालवयस्य कालमासे न् (अनेनप्रश्नशेषउत्तरारम्भश्चवाच्य)

रुणाभनाम विमाननेविषे देवपणे ऊपनो । तत्थणअत्थेगइयाण देवाणचत्तारिपलिओवमाइंठिई पण्णत्ता । तिहां केतला एक देवनी चार पल्योपमनी स्थिति कही स्थिति कहता आऊखो इत्यर्थः । तत्थणवरुणस्सविदेवस्सचत्तारिपलिओवमाइंठिई पण्णत्ता । तिहां वरुणनामा देवनी चार पल्योपमनी स्थिति कहो वलीगौतम पूछेछे—सेणंभंतेवरुणेदेवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणंभवक्खएणं ठिइक्खएणं । तेह हेभगवन् । वरुणदेव तेह देवलोकथकी आयु कर्मदलिक निर्जरवेकरी भवनी स्थिति निर्जरवेकरी तिहांथकी चवी किहां ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावमहाविदेहेवासेसिज्झिहिइ जावअंतकरेहिइ । हेगौतम । यावत् महाविदेहक्षेत्रे सीझस्ये यावत् सर्वसंसार दुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये । वरुणस्सणंभंतेणागनत्तुयस्सपियबालवयंसए कालमासेकालंकिच्चाकहिंगएकहिंउववन्ने । वरुणनो हेभगवन् । नागनत्तुआनो प्रियवल्लभ बालपणानोमित्र ते कालदिवसनेविषे कालकरीने किसीगति गयो किसे स्थानके ऊपनो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुकुलेपच्चायाए । हेगौतम

॥ टीका ॥ र्जरणेन ॥ नवकरणाति ॥ देवजवनिबन्धनदेवगत्यादिकर्मनिर्ज्जरणेन ॥ टिइकरणाति ॥ आयुष्कादिकर्म्मणां स्थितिनिर्ज्जरणेनेति ॥ इतिसप्तम शतेनवम ॥ ९ ॥ अनन्तरोद्देशके परमतनिरास उक्तो दशमेपि सएवो च्यत इत्येव सम्बन्धस्या स्यंद सूत्र ॥ तेणमित्यादि ॥ ए

॥ मूल ॥ ति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतंकरेहिति सेवं जंते जंतेत्ति ॥ सत्तमसयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ७ ॥ ९ ॥ तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहेनामं नयरे होत्था वणओ गुणसिलए चेइए वणओ जाव पुढविसिलापट्टओ तस्सण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते वहवे अणउ

अनुवाद कालरुत्वा क्षागत क्षोत्पन्न. ? गो० । सुकुले प्रत्याजात । स (वालवयस्य) ज० । ततो नन्तर मुद्वर्त्य (च्युत्वा) क्षागमिष्यति क्षोत्पत्स्यति ? गो० । महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावदन्त करिष्यति । तदेव जदन्त २ ॥ इतिसप्तमशतस्यनवम ॥ ९ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृहनाम नगर मजवत्' वर्णको, गुणशिलक चैत्य मजवत्' वर्णको (तावद्वाच्यो) याव त्पृथिवीशिलापट्टक । तस्य गुणशिल

॥ भाषा ॥ मनुष्यना उ कष्टकुलनेविषे आव्यो । सेणभतेतओहितोअणतरउवट्टित्ता कहिंगाच्छहिइ । तेह हेभगवन् ! तिहांथकी चवीने किसीगति जास्ये । कहिं उववज्जिहिइ । किसे स्थानके ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमामहाविदेहेवासेसिज्झहिइ । हेगोतम महाविदेह क्षेत्रनेविषे सीझस्ये । जावअंतकरेहि ति । यावत् अष्टकर्मनो अंतकरस्ये । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्वसत्यछे । सत्तमसयस्सनवमओ उद्देसोसमत्तो । ए सातमा शत कनो नवमो उद्देशो अर्थथीपूरोथयो ७ ॥ ९ ॥ नवमे उद्देशे परमत निरासकह्यो दशमे पणि तेहीज कहेछे—तेणकालेण तेणसम एण रायगिहेणामणयरेहोत्था वणओ । ते कालनेविषे ते समयनेविषे राजगृहनामा नगरहथा वर्णववायोग्य । गुणसिलएचेइएहोत्थावणओजावपुढवी सिलापट्टओ । गुणशिलकनामे चैत्य ईशानकूणिनेविषे हूयो तेहनो वर्णककरवो यावत् पृथिवीशिलापट्टकछे । तस्सणगुणसिलयस्स । तेह गुणशिलानामे चैत्यने । अदूरसामंते । वणू दूकडानही घणू वेगलानही तिहां । वहवेअणउत्थियापरिवसति तजहा । घणा अन्ययूथिक परमती वसेछे ते कहेछे—का

त्थिया परिवसंति तंजहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नमुदए, अन्नवालए, सेलवाए, सखवालए, सुहत्थी, गाहावई, तएणं तेसिं अन्नउत्थियाणं अन्नयाकयाइ एगयउ सहियाणं समुवागयाणं सन्निविठाण संनिसन्नाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एवंखलु समणे नायपुत्ते पंचअत्थिकाए पन्नवेइ धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं तत्थण समणे नायपुते चत्तारि अत्थि

कस्या दूरसामन्ते बहवो न्ययूथिका परिवसन्ति, तद्यथा—कालोदायी १। शैलोदायी २। सेवालोदायी ३। उदक ४। नामोदक ५। नमुदक ६। अर्णपालक ७। शैलपालक ८। शङ्खपालक ९। सुहस्ती १०। गाथापति ११॥ तदा तेषा मन्ययूथिकाना मन्यदा कदाचि देकत सहिताना समुपागताना सन्निविष्टाना सन्निषण्णाना मय मेतद्रूपो मिथ कथासमुल्लाप समुदपतत्, एवखलु श्रमणो ज्ञातपुत्र पञ्चास्तिकाया न्प्रज्ञापय ति, धर्मास्तिकायो याव दाकाशास्तिकाय, तत्र श्रमणो ज्ञातपुत्र श्चतुरो स्तिकाया नजीवकाया न्प्रज्ञापयति तद्यथा—धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्ति

कालोदाई १। सेलोदाई २ सेवालोदाई ३ उदए ४ नामुदए ५ नमुदए ६ अणवालए ७ सेलवालए ८ सखवालए ९ सुहत्थी १० गाहावई ११। कालोदाई सेलोदाई सेवालोदाई उदक नामुदक नमुदक अर्णपालक शैलपालक शखपालक सुहस्ती गाथापती। तएणंतेसिंअन्नउत्थियाण अन्नयाकयाइ। तिवारे तेह अन्यतीर्थिक एकदा किवारे। एगओसहियाण समुवागयाण सन्निविठ्ठाण सन्निसन्नाण। एकत्र सहितने स्थानान्तरथको एकचस्थाने आव्याने बेठाने सुखआसने बैठाने। अयमेयारूवे। एह एहवेरूपे। मिहोकहासमुल्लावेसमुप्पज्जित्था। माहोमाहि कथासमुल्लाप आलापजल्पनो इसकथा करताहुया। एवखलुसमणे णायपुत्ते। इम निश्चै श्रमण ज्ञातपुत्र श्रीमहावीरस्वामी। पचअत्थिकाएपन्नवेइ त०। पञ्च अस्तिकायप्रदेश राशिप्रते कहै ते कहेछे। धम्मत्थिकाय। धर्मास्तिकाय १। जावआगासत्थिकाय। यावत् आकाशास्तिकाय ५। तत्थणसमणेणायपुत्ते। तिहा ण वाक्यालकारे, श्रमण ज्ञातपुत्र चत्तारिअत्थिकाएअजीवकाएपन्नवेइ तजहा। चारप्रदेश राशिप्रते अजीव कहिये अचेतन काय कहिये राशि ते अजीवकाय तेहप्रते कहै ते कहेछे।

॥ टीका ॥

गउसमुवागयाणति ॥ स्थानान्तरेभ्य एकत्र स्थाने समागतानामागत्यच ॥ सन्निविट्ठाणति ॥ उपविष्टाना मुपवेशन घोत्कुटुकत्वादिनापिस्या दत
आए ॥ सन्निसन्नाणति ॥ सङ्गततयानिषण्णाना सुखासीनानामितियावत् ॥ अत्थिकाएत्ति ॥ प्रदेशराशीन् ॥ अजीवकाएति ॥ अजीवाश्च तेऽचतना
कायाश्च राशयो अजीवकायास्तान् जीवत्थिकायमित्यंतस्य स्वरूपविशेषणायाह ॥ अरूवकायति ॥ अमूर्त्तमित्यर्थ ॥ जीवकायति ॥ जीवन जीवो ज्ञा

॥ मूल ॥

काए अजीवकाए पण्णवेइ तंजहा—धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय, एगचण
समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकाय जीवकायं पण्णवेइ तत्थणं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूवि
काए पण्णवेइ तंजहा—धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवत्थिकायं एगचणं समणे नायपुत्ते
पोग्गलत्थिकायं रूवीकायं अजीवकायं पण्णवेइ, से कहमेयं मन्ने एवं, तेणकालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं

अनुवाद

काय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय । एकञ्च श्रमणो ज्ञातपुत्रो जीवास्तिकाय मरूपिकाय जीवकाय प्रज्ञापयति, तत्र श्रमणो ज्ञातपुत्र खलु
रोस्तिकाया नरूपिकाया न्प्रज्ञापयति, धर्मास्तिकाय' अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय। एकच श्रमणो ज्ञातपुत्र पुद्गलास्ति
काय रूपिकाय मजीवकाय प्रज्ञापयति' अथ (सेशब्दार्थे) कथ मेतन्मन्ये एव ? तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणो भगवा न्महावीरो यावद्

॥ भाषा

धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय । धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ पुद्गलास्तिकाय ४ । एगचणसम
णेणायपुत्ते जीवत्थिकायअरूविकाय जीवकाय पणवेइ। एक चपुन. श्रमण ज्ञातपुत्र जीवास्तिकायप्रते अरूपीकायकहे इत्यर्थ, जीव ते ज्ञानादिक उपयो
ग ते प्रधानकाय ते जीवकाय । तत्थणसमणेणायपुत्ते । तिहा श्रमण ज्ञातपुत्र । चत्तारिअत्थिकाए अरूविकाए पणवेइ तंजहा । चार अस्तिकायप्रते अ
रूपीकाय कहे ते कहेछे—धम्मत्थिकाय १ अधम्मत्थिकाय २ आगासत्थिकाय ३ जीवत्थिकाय ४ । धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवा
स्तिकाय । एगचणसमणेणायपुत्ते । एकचपुन. ण वाक्यालंकारे, श्रमण ज्ञातपुत्र श्रीमहावीरस्वामी । पोग्गलत्थिकाय रूवीकाय अजीवकाय पणवेइ। पुद्ग

॥ मूल ॥

तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरे जाव गुणसिलए चेइए समोसढे जाव परिसापडिगया तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूईनामं अणगारे गोयमगोत्तेणं एवं जहाबितिए सए नियंठुद्देसए जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिग्गाहेमाणे २ रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलं जाव चरियं सोहेमाणे२ तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयइ, तएणं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामं

॥ अनुवाद ॥

गशिलके चैत्ये समवसृतो याव त्परिष त्प्रतिगता, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ज्येष्ठो न्तेवासी न्द्रभूतिनामा नगारी गौतमगोत्र एव यथा द्वितीयेशतके निर्ग्रन्थोद्देशके यावद्भिक्षाचर्याय अटन् यथापर्याप्त भक्तपान प्रतिलभ्य राजगृहा द्याव दत्वरित मचपल मसम्भ्रान्तो याव चर्या (ईर्यासमिति) शोधयन् शोधयन् तेषा मन्ययूथिकाना मदूरसामतेन व्यतिव्रजति' तदा तेन्ययूथिका भगवन्त

॥ भाषा ॥

सेकहमेयमणेएव । अथ किम ए अस्तिकायवस्तु मानिये इम । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालने विषे ते लास्तिकायप्रते रूपीकाय अजीवकाय कहे । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी यावत् गुणशिल चैत्यनेविषे समोसर्या । जाव समणेभगवमहावीरेजावगुणसिलए चेइए समोसढे । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । समणस्सभगवओमहावीर समयने विषे । परिषदा धर्मदेशनासाभली पाछी वली । इन्द्रभूतीनामे साधु गौतमगोत्रीय । एव परिसापडिगया । यावत् परिषदा धर्मदेशनासाभली पाछी वली । इन्द्रभूतिनामे साधु गौतमगोत्रीय । एवज स । श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना । जेठेअंतेवासी । वडोशिष्य । इंदभूतीणामअणगारे गोयमगोत्तेण । इन्द्रभूतीनामे साधु गौतमगोत्रीय । एवज हाबितिएसएनियठुद्देसए । इम जिम बीजा शतकना नियठुउद्देशानेविषे कह्यु तिम इहा पणिकहवो । जावभिक्खायरियाएअडमाणे । यावत् भिक्षाने अर्थे फिरतोथको । अहापज्जत्तभत्तपाण पडि२ । यथा पर्याप्त जिम पूर्ण भक्तपानलेइने । रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसभते । राजगृह नगरथको यावत् उतावला पणि नहो चपलमानस पणि नहो असभ्रान्तथको । जावचरियसोहेमाणे२ । यावत् ईर्यासमिति सोधतोथको । तेसिअण्णउत्थियाण अदूरसामते ण वोईवयइ । तेह अन्ययूथिकने अलगो पणिनही निकट पणिनही तिहा जायछे । तएण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम । तिवारे ते अन्ययू

॥ टीका ॥ नाद्युपयोग स्तत्प्रधान कायो जीवकायो ऽतस्तं, कैश्चिज्जीवास्तिकायो जडतया ऽभ्युपगम्यते अत स्तन्मतव्युदासाये दमुक्तमिति ॥ सेकहमेयमन्नेत्र वति ॥ अथ कथमेत दस्तिकायवस्तु मन्ये इति वितर्कार्थ, एव ममुना ऽचेतनादिविभागेन भवतीति तेषा समुल्लाप ॥ इमाकहाअविप्पकडत्ति ॥ इयकथा एपास्तिकायवक्तव्यता प्यानुकूल्येन प्रकृता प्रक्रान्ता अथवा, नविशेषेण प्रकटा प्रतीता अविप्रकटा ॥ अविउप्पकडत्ति ॥ पाठान्तर तत्र अ

॥ मूल ॥ तेण वीईवयमाणं पासंति पासइत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति सद्दावेइत्ता एववयासी—एवंखलु देवाणुप्पिया ! अम्हंइ माकहा अविप्पकडा अयंचणं गोयमे अदूरसामंतेणं वीईवयइ तसेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमठं पुच्छित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमठं पडिसुणंति२ जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति२ भगवं गोयमं एववयासी—एवंखलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे नायपुत्ते पंचअत्थिकाए

अनुवाद गौतम मदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन्त पश्यन्ति दृष्ट्वा ऽन्योन्य शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवदन्–एवखलु देवानुप्रिया । अस्माक मिय कथा व्युत्प्रकटा' अयच गौतमो दूरसामन्तेन व्यतिव्रजति, त च्छ्रेय खलु देवानुप्रिया । वय गौतम मिम मर्थ मप्रष्टु मितिकृत्वा न्योन्यस्यान्तिक मेन मर्थ प्रतिशृण्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव भगवान् गौतम स्तत्रैवो पागच्छन्ति' उपागत्य भगवन्त गौतम मेव मवादिषु रेवखलु गौतम । तवध

॥ भाषा ॥ थिक भगवन्त गौतमप्रत । अदूरसामतेणवीईवयमाण पासति२ त्ता । अलगो परि समीपे परि नहो इम जातोथका देखे देखीने । अण्णमण्णसद्दावेंति २ त्ता एववयासो । माहोमाहि तेडावे तेडावीने इमकहै । एवखलुदेवाणुप्पिया । इम निश्चे हे देवानुप्रिया । अम्हंमाकहाअविउप्पकडा । अम्हे एह कथा विस्तारी प्रगट नहो । अयचणंगोयमा । एह हे गौतम । अम्ह अदूरसामतेणवीईवयइ । अम्हारे घणूं वेगलो नहो घणू ढूकडो नहो जायछे । तसेयखलुदेवाणुप्पिया । तेमाटे श्रेय निश्चे हे देवानुप्रिया । अम्ह गोयमएयमठंपुच्छित्तएत्तिकट्टु । अम्हे गौतमप्रतें एह अर्थ पूछीये इमकरीने । अण्णमण्णस्सअंतिए । माहोमाहि समोपे । एयमठंपडिसुणेंति २ त्ता । एहअर्थ साभले साभलीने । जेणेवभगवंगोयमे । जिहा भगवत गौतम । तेणेवउवागच्छंति २ त्ता । तिहा

॥ टीका ॥ विद्दत्प्रकता अविज्ञप्रकता अथवा, नविशेषत तत्प्राबल्यतश्च प्रकटा अव्युत्प्रकटा ॥ अयचत्ति ॥ अयपुन ॥ तचेयसाइवि ॥ यस्मा द्वय सर्व मस्ति
विद्दत्प्रकता अविज्ञप्रकता अथवा, नविशेषत तत्प्राबल्यतश्च प्रकटा अव्युत्प्रकटा ॥ अयचत्ति ॥ अयपुन ॥ तचेयसाइवि ॥ पाठान्तरे ज्ञानेन प्रमाणाबाधिततत्व
ज्ञ वमवा स्तीतिवदाम तथाविधसवाददशनेन भवतामपि प्रसिद्धमिद तत्तसा चेतसा मनसा ॥ वेदसत्ति ॥

॥ मूल ॥ पन्नवेइ तंजहा—धम्मत्थिकायं जाव आगासत्थिकायं तंचेव जाव रूविकाय अजीवकाय पन्नवेइ सेकहमेयं गोयमा! एवं ? तएणं से भगवं गोयमे तेअन्नउत्थियं एववयासी—नोखलु देवाणुप्पिया! अत्थिभावं नत्थित्ति वयामो नत्थिभावं अत्थित्तिवयामो, अम्हेणं देवाणुप्पिया! सव्वं अत्थिभावं अत्थित्तिवयामो सव्वं नत्थिभावं

॥ अनुवाद ॥ र्माचार्यो धर्मोपदेष्टा श्रमणो ज्ञातपुत्र पञ्चास्तिकाया न्प्रज्ञापयति तद्यथा—धर्मास्तिकायो याव दाकाशास्तिकाय स्तमेव यावद्रूपिकायमजीव कायप्रज्ञापयति, तत्कथमेतद्गौतम । एव ? तदा सभगवा न्गौतम स्ता नन्ययूथिका नेवमवादीत्—नखलु देवानुप्रिया । अस्तिभाव नास्तीति व दामो, नास्तिभाव मस्तीति वदामो, वय देवानुप्रिया । सर्व मस्तिभाव मस्तीति वदाम सर्व नास्तिभाव नास्तीति वदाम स्तस्मा चेतसा स

॥ भाषा ॥ तवधर्माचार्य । ताहरो धर्मा चार्य तिहां आवानि । भगव गोयम । भगवन्त गौतमप्रते । एववयासी । इमकहे । नखलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । तवधम्मायरिए । ताहरो धर्मा चार्य । धर्मोवएसए । धर्मोपदेशनो देणहार । समणेणायपुत्ते । श्रमण ज्ञातपुत्र श्रीमहावीर । पचत्थिकाएपन्नवेइ त० । पच अस्तिकाय प्ररूपे ते कहेछे । धम्मत्थिकाय । धर्मास्तिकाय । जावआगासत्थिकाय । यावत् आकाशास्तिकाय । तचेवजावरूवीकाय । तिमजिज यावत् रूपीकायप्रते । अजीवकाय पण्णवेइ । अजीवकाय कहे । सेकहमेयं गोयमा एव । ते किमछे एह हे गौतम इम । तएणसेभगवगोयमे । तिवारे ते भगवत गौतम । ते अन्नउत्थिए एववयासी । ते अन्यतीर्थिकप्रते इमकहे । णोखलुदेवाणुप्पिया अत्थिभावनत्थित्तिवदामो । नही निश्चे अहोदेवानुप्रियाओ अस्तिभाव छता भावप्रते ना स्तिभाव पामे कहछ एतले अस्तिभावने नास्तिपणे न कहु तथा । नत्थिभावअत्थित्तिवदामो । नास्तिभावप्रते अस्तिभावपणे न कहु । अम्हेणदे वाणुप्पिया । अम्हे देवानुप्रियाओ । सव्वअत्थिभावअत्थित्तिवदामो । सर्व अस्तिभावप्रते अस्तिपणे । सव्वनत्थिभावनत्थित्तिवदामो । सर्वनास्तिभावप्रते ना

॥ टीका ॥

लक्षणेन ॥ एयमट्ठंति ॥ अमु मस्तिकायस्वरूपलक्षण मर्थं स्वयमेव प्रत्युपेक्षध्व पर्यालोचयतेति ॥ महाकहापडिवन्नेत्ति ॥ महाकथाप्रबन्धेन महाज

॥ मूल ॥

नत्थिन्निवयामो तं चेयसा खलु तुम्हे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खहत्तिकट्टु तेअण्णउत्थिया एवं वयासी—जेणेव गुणसिलएचेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे एवं जहा नियंठुद्देसए जाव भत्तपाणं पडिदंसे इर त्ता समण भगवं ३ वंदइ नमसइ नच्चासत्ते जाव पज्जुवासेइ, तेणकालेणं तेणंसमएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे याविहोत्था कालोदाईय तदेसं हव्वमागए कालोदाइत्ति समणे भगवं महावीरे का

अनुवाद

ल् एय देवानुप्रिया । एनमर्थं स्वयमेव प्रत्युपेक्षध्व मितिकृत्वा तानन्ययूथिका नेवमवादीत्, यत्रैव गुणशिलक चैत्यो यत्रैव श्रमणो भगवा न्महावीर एव यथा निर्ग्रन्थोद्देशके यावद्भक्तपान प्रतिदर्शयति प्रतिदर्श्य, श्रमण भगवन्त महावीर वदते नमस्यति नमस्कृत्य नात्यासन्नो याव त्पर्युपासते । तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणो भगवान्महावीरो महाकथाप्रतिपन्न श्चाप्यभवत् । कालोदायीच तदेश शीघ्रमागत । कालो

॥ भाषा ॥

सि इसा कह छू । तचेयसा खलुतुम्हदेवाणुप्पिया । मनेकरो जाणा अथवा चेयसा कहिये ज्ञानेकरी निश्चे हेदेवानुप्रियाओ प्रमाण, अवाधितत्व लक्षणे करी निचे हदेवानुप्रियाओ । एवमट्ठसयमेवपच्चुवेक्खहत्तिकट्टु । एह अस्तिकायस्वरूप लक्षण अर्थ पोतेजीज आलोचो विचारो इमकहीने । ते अण्णउत्थिया एमवयासी । ते अन्यतीर्थीने इमकहे इमकहीने । जेणेवगुणसिलएचेइए । जिहां गुणशिलनाम चैत्य यक्षायतनछे । जेणेवसमणेभगवंमहावीरे । जिहां समण भगवन्तश्रीमहावीरस्वामीछे । एवंजहानियंठुद्देसए जावभत्तपाणपडिदंसेइ २ त्ता । इम जिम निर्ग्रन्थउद्देशानेविषे कह्युं तिम इहां पणिकहवो यावत् भातपाणीप्रते देखाडे भातपाणीप्रते देखाडीने । समणंभगवंमहावीरं वंदइ णमसइ णमसइत्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीप्रति वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने । णच्चासण्णे जावपज्जुवासइ । अति ढूकडानहीं अति वेगलानहीं यावत् पर्युपासना सेवाकरे । तेणकालेणं तेणसमएणं । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । समणेभगवंमहावीरे । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी । महाकहापडिवण्णेयाविहोत्था । महा कथा प्रबन्धेकरी महा

॥ मूल ॥

लोदाइं एवंवयासी—से नूणं तेकालोदाई अणया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं तहेव जाव सेक हमेयं मसो एवं सेनूण कालोदाई अठेसमठे, हंताअत्थि, तंसच्चेणं एसमठे कालोदाई अहं पंचअत्थिकाए पसवेमि तजहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकाय तत्थणं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए अजीव हाए पसवेमि तहेव जाव एगंचण अहं पोग्गलत्थिकायं रूवीकाय पसवेमि तएणं सेकालोदाई समण न

अनुवाद

दायीति श्रमणो भगवान्महावीरः कालोदायिन मेव मवादीत्—अथनून कालोदायिन् । अन्यदा कदाचि देकत सहितानां समुपागतानां तथैव यावत् तत्कथमेत त्मन्य एव, तन्नून कालोदायिन् । अर्थं समर्थं ? हत अस्ति, तत्सत्य एषोर्थं कालोदायि न्नहं पञ्चास्तिकाया न्प्रज्ञापयामि तद्यथा—धर्मास्तिकायो याव त्पुद्गलास्तिकाय, स्तत्राहं चतुरोस्तिकाया नजीवकाया न्प्रज्ञापयामि, तथैव याव देकं चाहं पुद्गलास्तिकाय रूपि

॥ भाषा ॥

जनने देशनायेकरोने प्रवर्त्ताहुया । कालोदाईय तदस इत्यमागए । एहवे समयेंकरी कालोदाई तेह देश भूमिकाने विषे उतावलो आव्यो । कालो दाई । कालोदाई एहवे सबोधने । समणेभगवमहावीरे । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी । कालोदाइ एववयासी । कालोदाई प्रतें इमकहै । सेणूण ते कालोदाई । हिवे निश्चे ते कालोदाई । अणयाकयाइ । एकदा किवारे कै । एगयओसहियाण । तुम्हे सगला एकत्र मिलियाने । समुवागयाण । स्थानान्तरथकी एकणिस्थानकें आव्याहता । तहेवजावसेकहमेयमणेव । जिम पूर्वेकह्यु तिम सर्वकहवो यावत् ते किमछै एह मानिये इम । सेणूणका लोदाई । ते निश्चे हे कालोदाई । अठेसमठे । ए अर्थ समर्थयुक्तछे । हताअत्थि । हा भगवन् एअर्थ समर्थछे । तसच्चेणएसमठे कालोदाईअह । ते सा चो एअर्थ समर्थछे कालोदाईअहह्न । पचअत्थिकाएपणवेमि । पञ्च अस्तिकाय प्रदेशराशि ते कहहुं छु । तधम्मत्थिकाय जावपोग्गलत्थिकाय । ते जिम ध र्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ जीवास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय । ५ । तत्थणअहचत्तारिअत्थिकाए । तिहा ण वाक्यालंकार,हु चा रि अस्तिकाय प्रदेशराशि ते प्रते । अजीवकाएपणवेमि । अजीवकाय कहहूं इत्यादि जिम पूर्वे कह्यु । तहेवजाव । तिमज यावत् सर्वकहवो । एगच

॥ टीका ॥

नस्य तत्त्वदेशना ॥ एयसिणाति ॥ एतस्मि नुक्तस्वरूपे ॥ पक्रियाकेइति ॥ शक्नुया त्कश्चित् ॥ एयसिण भंते । पोग्गलत्थिकायसीत्यादि ॥ अथमस्य नावार्थ जीवसम्बन्धीनि पापकर्माणि अशुभस्वरूपफललक्षणविपाकदायीनि पुद्गलास्तिकायेन भवन्ति अचेतनत्वेना नुभववर्जितत्वा त्तस्य जीवा

॥ मूल ॥

गव महावीरं एवं वयासी—एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायंसि अधम्मत्थिकायंसि आगासत्थिकायंसि अरूवी अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तएवा चिठित्तएवा निसीइत्तएवा सइत्तएवा जाव तुयट्टित्तएवा ? नो इणठेसमठे कालोदाइ! एयसिण पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि चक्कियाकेइ आसइत्तएवा

अनुवाद

काय प्रज्ञापयामि' तदानी सकालोदायी श्रमण भगवन्त महावीर मेव मवादी–देतस्मि न्धर्मास्तिकाये अधर्मास्तिकाये आकाशास्तिकाये अ रूप्यजीवकायं शक्नुया त्कश्चि दासितु स्यातु निषीदतु शयितुं याव त्स्वपितुवा ? नायमर्थ समर्थ कालोदायि । न्नेतस्मि न्पुद्गलास्तिकाये रूपिकाये अजीवकाये शक्नुया त्कश्चि दासितु याव त्स्वपितुवा । एतस्मिन् नदन्त । पुद्गलास्तिकाये रूपिकाये अजीवकाये जीवाना पापकर्माणि

॥ भाषा ॥

गाग्रहपाग्गलत्थिकायरूवीकायपणवेमि । एक वचन ना वाक्यालकारे, पुद्गलास्तिकाय ते प्रते रूपीकाय प्ररूपूं । तएणसेकालोदाइ । तिवारे ते कालोदाइ । समणभगवमहावीर एववयासो । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते इमकहे । एयसिणभंतेधम्मत्थिकायंसिअहम्मत्थिकायंसि । एहोज उक्तस्वरूप अधर्मास्तिकायनेविषे । आगासत्थिकायंसि अरूवीकायंसि अजीवकायंसि । आकाशास्तिकायनेविषे अरूवीकायनेविषे अजीवकायनेविषे । चक्कियाके इ । समर्थहोय कोईएक । आसइत्तएवा चिठित्तएवा निसीइत्तएवा । बेसिवाने अथवा उभारहिवाने विशेषे बेसिवो उठगो रहवो । सइत्तएवा जावत् यट्टित्तएवा । यावत् निद्राकरवाने इतिप्रश्न हे कालोदाई । णोइणट्ठेसमठ्ठे । एअर्थ समर्थनही । कालोदाई । हे कालोदाई । एयसिणपोग्गलत्थिकायंसि । एहोज उक्तस्वरूप पुद्गलास्तिकायनेविषे । रूवीकायंसि अजीवकायंसि । रूपीकायनेविषे अजीवकायनेविषे । चक्किया।केइआसइत्तएवा । समर्थहोय कोईएक बेसिवाने । जावतुयट्टित्तएवा । यावत् निद्रा करवाने । एएसिणभंतेपोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि जीवाण पावाण कम्माण

॥ मूल ॥

जाव तुयहित्तएवा। एसिणं भंते! पोग्गलत्थिकायंसि रूवीकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावाणंकम्माणंपाव फलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? णोइणट्ठेसमट्ठे कालोदाइ । एयंसिणं जीवत्थिकायंसि अरूवीकायंसि जीवाणं पावाकम्मापावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता कज्जंति। एत्थणं से कालोदाई संबुद्धे, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ नमंसइत्ता एवंवयासी—इच्छामिणं भंते तुज्झं अंतिय धम्मं निसामेत्तए एवं जहा खंदए तहेव

अनुवाद

पापफलविपाकसंयुक्तानि क्रियन्ते ? (भवन्ति) नायमर्थं समर्थ, कालोदायिन् । एतस्मिन् जीवास्तिकाये अरूपिकाये जीवानां पापकर्माणि पापफलविपाकसंयुक्तानि क्रियन्ते ? हन्त क्रियन्ते । अत्र कालोदायी सम्बुद्ध, श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति नमस्कृत्यैव मवादी— इच्छामि भदन्त । त्वदन्तिक धर्म निशामयितु (श्रोतु) मेव यथा स्कन्दक स्तथैव प्रव्रजितो याव दकादशाङ्गानि यावद्विहरति, तत श्रमणो

॥ भाषा ॥

पापफलविवागसंजुत्ताकज्जंति। एहनेविषे हेभगवन् पुद्गलास्तिकायनेविषे रूपीकायनेविषे अजीवकायनविषे जीवने पापकर्मफलनो विपाक संयुक्तकरे एहनो एभावार्थ, जोसवंवो पापकर्म अशुभस्वरूप फललक्षण विपाकदायक पुद्गलास्तिकायनेविषे नहुवे अचेतनपणेकरी अनुभव वर्जितपणायको तेहने जीवने इतिप्रश्न हेकालोदाई । णोइणट्ठेसमट्ठे । एअर्थ समर्थनही । का जीवास्तिकायनेविषेज पापकर्मफलनो विपाक संयुक्त हुवे अनुभव युक्तपणायकी । एहनेविषे जीवास्तिकायनेविषे अरूपीकायनेविषे । जीवाणंपावाकम्मापावफलविवागस लोदाई । हेकालोदाई । एयंसिणजीवत्थिकायंसि अरूवीकायंसि । एत्थणकालोदाईसंवुद्धे । इहा ण वाक्यालंकारे, कालोदाई सम जुत्ताकज्जंति । जीवने पापकर्म पापफलविपाक संयुक्तकरे इसे वचन स्वामीकह्या थका । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरी भ्या बोधपाम्यो तिवारे। समणंभगवंमहावीरंवंदइणमसइ णमंसइत्ता। वाछूं हेभगवन् तुम्हारे समीपे धर्मप्रते सांभलवाने पछे। एवंजहाखंदए तहे ने। एववयासी। इमकहे। इच्छामिणंभंतेतुज्झंअंतियधम्मंनिसामेत्तए। इम जिम खन्दक दीक्षालीधो तिमहीज इग्यारे अंग भणीने यावत् विचरे। तएणंसमणेभगवंमहावीरे। तिवारे श्र वजाएक्कारसअंगाइंजावविहरइ।

॥ टीका ॥ स्तिकायेष्वेव तानि तथाभवन्ति अनुभवगुणत्वात् तस्येति प्राक्कालोदायिप्रश्नद्वारेण कर्मवक्तव्यतोक्ता अधुनातु तत्प्रश्नद्वारेणैव तान्येव यथा भवन्

॥ सूत्र ॥ पव्वइए तहेव एक्कारसअंगाणि जाव विहरइ, तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं रायगिहाओ णयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ, तेणंकालेणं तेणंसमएणं रायगिहे नामनगरे गुणसिलए नामंचेइए होत्था तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयाइं जाव समोसढे जाव पडिगया तएणं से कालोदाई अणगारे अण्णयाकयाइं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उ

अनुवाद भगवान् महावीर अन्यदा कदाचित् राजगृह नगर से गुणशिला चैत्य से प्रतिनिष्क्रमते प्रतिनिष्क्रम्य बहिस्तात् जनपदविहार विहरति। तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृहनाम नगर गुणशिलक नाम चैत्य, तस्मिन्काले श्रमणो भगवान् महावीरो अन्यदा कदाचित् यावत् समवसृतो यावत् परिषद् प्रतिगता, तदानीं सकालोदायी अनगारो अन्यदा कदाचित् यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः तत्रैवोपागच्छति उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महा

॥ भाषा ॥ म प्रमजा र्‍ह श्री महावीरस्वामी। अण्या कदाइ । अन्यदा कदिय विहारे है। रायगिहा णयरा ओ। राजगृह नामा नगर थी। गुणसिलाओ चेइया ओ। गुणसिलनामा उद्यान चैत्य थी। पडिनिक्खमइ २ त्ता। नीकले नीकलीने। बहिया जणवय विहारं विहरइ। बा हिर जनपद देशने विषे विहार करा विहरे। तेणं कालेणं तेणं समएणं। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। रायगिहे नाम नयरे। राजगृह नामा नगर थी। गुणसिलए नामं चेइए। गुणसिल नामे चैत्य। तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ। ते वारपछी, श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी कदा विहार करे। जाव समोसढे। यावत् समोसर्‍या। पडिगया। परिषदा वांदीने पाछी गई। तएणं से कालोदाई अणगारे। तिवारे ते कालोदाई नामा अ णगार अण्याकयाइ। एकदा विहार करे। जेणेव समणे भगवं महावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी छे। तेणेव उवागच्छइ त्ता। तिहां आवे ति हां आवीने। समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता। श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। एवंवया

॥ टीका ॥

नविप.कारीनि नवन्ति तयो पदत्रेयिषु ॥ तत्यणमेइत्यादि ॥ सविधानकओपगमानपूर्वकमिदमाह ॥ छत्थिणमित्यादि ॥ अस्तीद वस्तु यदुत जीवाना पापानि कर्माणि पापोय फलरूपो विपाक स्तत् सयुक्तानि भवन्तीत्यर्थ ॥ थालीपागसुद्धति ॥ स्थाल्या मुखाया पाको यस्य तत् स्थालीपाक मन्यत्रहि पक्व मपक्वया, नतथाविध स्या दितीद विशेषण शुद्ध भक्तदोषवर्जित तत कर्मधारय स्थालीपाकेनवा; शुद्ध मितिविग्रह ॥ अठारसवजणाउलति ॥ अष्टादशभि र्लोकप्रतीते व्यञ्जने शालनकै स्तक्रादिभि र्वा; आकुल सङ्कीर्ण यत् तथा अथवा, ष्टादशभेदच तद्व्यञ्जनाकुलचेति, अत्र भेदपदलोपनसमास ' अष्टादशभेदाश्चैते-सूते १ दणो २ जवस ३ तिन्निय मसाइं ६ गोरसो ७ जूसो ८ । भक्खा ९ गुललावणिया १०

॥ मूल ॥

वागच्छइत्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमसइ नमंसइत्ता एवंवयासी—अत्थिणं भंते ! जीवाण पावा कम्मापावफलविवागसंजुत्ता कज्जति ? हंताअत्थि । कहण्ण भंते ! जीवाणं पावाकम्मापावफलविवागसंजुत्ता कज्जति ? कालोदाई सेजहानामए केइपुरिसे मणुसंथालीपागसुद्ध अठारसवजणाउल विसमिस्सं भोयणं

अनुवाद

वीर वन्दते नमस्यति नमस्कृत्ये वमवादी—अस्ति भदन्त । जीवाना पापकर्माणि पापफलविपाकसयुक्तानि कृतानि भवन्ति ? हत अस्ति । कथ भदन्त । जीवाना पापकर्माणि पापफलविपाकसयुक्तानि कृतानि भवन्ति ? कालोदायिन् । सयथानामक कश्चित्पुरुषो मनोज्ञ स्थालीपाकशुद्ध

॥ भाषा ॥

मं । टनकहे । अत्थिणभतेजीवाणपावाकम्मा पावफलविवागसजुत्ताकज्जति । छे हेभगवन् जीवने पापकर्म जे पापफलरूप विपाक ते सयुक्तहवे इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हा कालोदाई छे । कहणभतेजीवाणपावाकम्मापावफलविवागसजुत्ताकज्जति । किम ण वाकालकारे, हेभगवन् जीव पापकर्म पाप जे फल रूप विपाक ते सयुक्तहवे इतिप्रश्न । कालोदाई । हे कालोदाई । सेजहानामएकेइपुरिसेमणुण्णथालीपागसुद्धअठारसवजणाउलविसमिस्संभोयण भुंजेज्जा । त यथानामदृष्टांते कोईएक पुरुष मनोज्ञ मनोहर माटीभाजने पाककीधा सुद्ध कांचाकोरादि अन्यदोषरहित अठारे व्यञ्जनसहित ते इम सूप १ ओदन २ जवान्न ३ तीन मास जनजादिक ६ गोरस ७ जूस मूग चावल जीरकादिरस ८ भक्ष्यखण्ड खाद्यादिक ९ गुललावणिया गुलपापडी

॥ टीका ॥

मूलफल ११ हरियग १२ डागो १३ ॥ १ ॥ होयरसालूय १४ तहा पाण १५ पाणीय १६ पाणगचेव १७। अहारममोसागो १८ निरुवहतुलोवहतपिंडो ॥ २॥ तत्र मामत्रय जलचरादिसत्क, जूषो मुद्गतदुलजीरककटुभाण्डादिरस , भक्ष्याणि खण्डखाद्यादीनि, गुलल वणिया गुलपर्प्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडधा नावा , मूलफला न्यकमेवपद, हरितक जीरकादि, डाको वास्तुकादिभर्जिका, रसालू मज्जिका, तल्लक्षण चेद, दोघयपलामहुपल दहियस्सद्धाढ यमिरियवीमा । दसखण्डगुलपलाइ गुसरसालूनिवइजोगो ॥ १ ॥ पान सुरादि, पानीय जल, पानक द्राक्षापानकादि, शाक तक्रसिद्धइति ॥ आवाय त्ति ॥ आपात स्तत्प्रथमतया ससर्ग ॥ भद्दएत्ति ॥ मधुरत्वा न्मनोहर ॥ दुरूवत्ताएत्ति ॥ दुरूपतया हेतुभूततया ॥ जहामहासवएत्ति ॥ पष्ठशत स तृतीयोद्देशको महाश्रवक स्तत्र यथेद सूत्र तथेदं प्यध्येय ॥ एवामेवत्ति ॥ विपमिश्रभोजनवत्, जीवाना पाणाइवाए इत्यादौ भवती तिशेष ॥

॥ मूल ॥

भुंजेज्जा तस्स भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ तओपच्छापरिणममाणे २ दुरूवत्ताए दुग्गंधत्ताए जहा महस्स वए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले तस्सणं

अनुवाद

मष्टादशव्यञ्जनाकुल विपमिश्र भोजन भुञ्जीयात्, तस्य भोजनस्या पातो भद्रको भवति तत पश्चा त्परिणम न्दूरूपतया दुर्गन्धतया यथा म हाश्रवके याव द्भूयाभूय परिणमति, एवमेव कालोदायिन् ! जीवाना प्राणातिपातो याव न्मिथ्यादर्शनशल्य तस्यापातो भद्रकोभवति तत प

॥ भाषा ॥

लाकप्रसिद्ध १० मूलफल ११ हरितक जीरकादिक १२ डाग वथुआभाजो १३ रसालू १४ पान सुरादिक १५ पानीय जल १६ पानक द्राक्षादिक १७ शा क तक्रसिद्ध १८ ए अठारे व्यञ्जन व्याप्त विष मिश्रित भोजन जीमे। तस्सभोयणस्स आवाए भद्दए भवइ । ते भोजनने आगत पहिलो ससर्ग छतो भ धुरपणाथी मनोहर व्हे। तओपच्छापरिणममाणे २ । तिवारपछे आहार परिणमे छते २। दुरूवत्ताए दुग्गंधत्ताए। दुरूपहेतु भूतपणे दुर्गंधपणे। जहा महस्सवए जावभुज्जो २ परिणमइ। महा आश्रवपणे जिम छट्ठेशतके त्रीजेउद्देशे यावत् वार वार परिणमे। एवामेवकालोदाई। ए विषमिश्रित भो जननेदृष्टाते हे कालोदायी। जीवाण पाणाइवाए जावमिच्छादंसणसल्ले। जीव ना वायालकारे, प्राणीजीवने प्रतिपाते हणवेकरी यावत् मिथ्यादर्शन

॥ टीका ॥

तस्सफत्ति ॥ तस्य प्राणातिपातादेः ॥ तउपच्छाविपरिणममाणेत्ति ॥ तत पश्चा दापातानन्तरं विपरिणामत् परिणामान्तरगच्छत् प्राणातिपाता दिकार्यं कारणोपचारात् प्राणातिपातादिहेतुकं कर्म ॥ दुरूवत्ताएत्ति ॥ दुरूपताहेतुतया परिणमति दुरूपता करोतीत्यर्थः ॥ उसहमिस्सति ॥ औ

॥ मूल ॥

आवाए भद्दए भवइ तउपच्छा परिणममाणे २ दुरूवत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवं भुज्जो भुज्जो का लोदाई जीवाण पावाकम्माजाव कज्जंति । अत्थिणं भंते ! जीवाण कल्लाणकम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? हंता अत्थि । कहण्णं भंते ! जीवाण कल्लाणकम्मा जाव कज्जंति ? कालोदाई सेजहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्धं अठारसवजणाउलं उसहमिस्स भोयण भुंजेज्जा तस्सणं भोयणस्स आवाए

॥ अनुवाद ॥

श्चा त्परिणाम न्दुरूपतया याव भूयोभूय परिणमति, एवखलु कालोदायिन् । जीवाना पापकर्माणि पापफलविपाकसयुक्तानि कृतानि भव न्ति ॥ अस्ति भदन्त । कल्याणानि कर्माणि कल्याणफलविपाकसयुक्तानि कृतानि भवन्ति ? हतास्ति ॥ कथ भगवन् । जीवाना कल्याणानि कर्मा णि याव त्कृतानि भवन्ति ? कालोदायिन् । सयथानामकः कश्चित्पुरुषो मनोज्ञ स्थालीपाकशुद्ध महादशव्यञ्जनाकुल मौषधमिश्र भोजनं भुञ्जी

॥ भाषा ॥

यल्यने सेववेकरी । तस्सण आवाएभदए भवइ तओपच्छापरिणममाणे २ । तेहने प्राणातिपातादिकने पहिले ससर्गे मधुरपणाथी मधुरहुवे तिवारपछी ते परिणमता छता २ । दुरूवत्ताएजाव भुज्जो २ परिणमइ । दुरूपपणे यावत् वारवार परिणमे ते कर्म विरूपपणे परिणमे इत्यर्थ । एवखलुकालोदाई । इम निश्चे हे कालोदाई । जीवाण पावाकम्मा पावफल जावकज्जति । जीव ण वाक्यालकारे, पापकर्म पापफल सयुक्त यावत् करे । अत्थिणभतेजीवाण क ल्लाणकम्मा कल्लाणफलविवागसजुत्ताकज्जति । छे हेभगवन् जीवने ण वाक्यालकारे, कल्याण मगलकारीकर्म कल्याणफलविपाक सयुक्तकरे एतले शुभक र्मकीधा ते शुभफलविपाकपणे परिणमेछे इतिप्रश्न उत्तर । हताअत्थि । हा कालोदाई । कहण्णभतेजीवाण कल्लाणकम्माकज्जति कालोदाई । किम हेभ गवन् । जीवने कल्याण मगलकारी जे कर्म ते कल्याणफलविपाक ते सहित करे इतिप्रश्न उत्तर हेकालोदाई । सेजहाणामए केइपुरिसे मणुण्णथालीपा

पथ मर्यातिक्रान्तघृतादि ॥ एवामेवेति ॥ औषधमिश्रभोजनवत् ॥ तस्सणंति ॥ प्राणातिपातविरमणादे ॥ आवाएणोभद्दएभवइत्ति ॥ इन्द्रियप्रतिकूलत्वात् ॥ परिणममाणेत्ति ॥ प्राणातिपातविरमणादिप्रभव पुण्यकर्म परिणामान्तराणिगच्छत्, अनन्तर कर्माणि फलतो निरूपिता न्यथ क्रिया

नोभद्दए भवइ तओपच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जावसुहत्ताए नोदुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवामेव कलोदाई जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे तस्सणं आवाए नोभद्दए भवइ तओपच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरू

यात्, तस्य भोजनस्या पातो नभद्रको भवति तत पश्चा त्परिणाम न्सुरूपतया सुवर्णतया याव त्सुखतया नोदु खतया भूयोभूय परिणमति, एवमेव कालोदायिन् ! जीवाना प्राणातिपातविरमण यावत्परिग्रहविरमण क्रोधविवेको यावन्मिथ्यादर्शनशल्यविवेक स्तस्या पातो न भद्रको

गमुइ अढारसवजणाकुलओ सइसमिरमभोयणभुजेज्जा । ते यथानामे कोइएक पुरुष मनोज्ञ था माटी भाजने पाककीर्वा शुद्ध अपक्कादि दोषरहित एहवो अढारे व्यञ्जन जे पूर्वकह्या ते सहित ते तीखा जे औषध तेणे मिश्रित एहवा भोजनप्रते भोगवैकरे । तस्सणभोअणस्सआवाए णोभद्दएभवइ । ते ह भोजनने पहिलातो ते कटुक तिक्तपणायको मनोहर नथीनहो । तओपच्छापरिणममाणे । तिवारपछी परिणमता २ थका । सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए । सुरूपपणे शरीरने भलेवर्णपणेकरो यावत् सुखपणेपणे । णोदुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमति । नही दु खपणे वारवार परिणमे । एवा व कालोदाई । इणि औषध मिश्रितभोजननो परे हेकालोदाई । जीवाणपाणाइवायवेरमणे । जीवने प्राणीजीवने हणवा तेहथी निवर्त्तवेकरी । जाव परिग्गहवेरमणे । यावत् परिग्रहथको निवर्त्तवकरी । कोहविवेगे । क्रोधने मूकवेकरो । जावमिच्छादंसणसल्लविवेगे । यावत् मिथ्यादर्शन शल्यने तजवे करी । तस्सणआवाएणोभद्दएभवइ । तेह प्राणातिपात विरमणादिकथकी पहिला मनोज्ञहुवे इन्द्रिय प्रतिकूल पणाथको । तओपच्छापरिणममाणे २ सुरूवत्ताए जाव णोदुक्खत्ताएभुज्जो २ परिणमंति । तिवारपछी प्राणातिपात विरमणादिकथको ऊपनो जे पुण्यकर्म परिणामांतरपणे जातांसुरूपपणे

॥ टीका ॥

विशेष माश्रित्य तत्कर्तृपुरुषद्वयद्वारेण कर्मादीना मल्पत्वबहुत्वे निरूपयति ॥ दोभंतेइत्यादि ॥ अगणिकायसमारंभंतित्ति ॥ तेजस्कायं समारभेते उपद्रवयत., तत्रैक उज्ज्वालनेनान्यस्तु विध्यापनेन तत्रो उज्ज्वालने बहुतरतेजसा मुत्पादे प्यल्पतराणा विनाशो प्यस्ति तथैव दर्शना दतउक्तं ॥ त

॥ मूल ॥

वन्नाए जाव नोदुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवंखलु कालोदाई जीवाण कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति। दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति तत्थणं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ। एएसिणं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराएचेव महाकिरियतराएचेव महासवतराएचेव महावेयणतराएचेव कयरेवा पुरिसे अप्पक

॥ अनुवाद ॥

भवति तत पश्चा त्परिणमन् सुरूपतया यावन्नो दु खतया भूयोभूय परिणमति । एवखलु कालोदायिन् ! जीवाना कल्याणानि कर्माणि याव त्कृतानि भवन्ति ॥ द्वौ भदन्त ! पुरुषौ सदृशकौ यावत् सदृशभाण्डमात्रोपकरणा वन्योन्येनसार्द्ध मग्निकाय समारभेते, तत्रैक पुरुषो ऽग्नि काय मुज्ज्वालय त्येक पुरुषो निर्वापय त्येतयो र्भदन्त ! द्वयो पुरुषयो. कतर पुरुषो महाकर्मतरकश्चैव महाक्रियतरकश्चैव महाश्रवतरकश्च

॥ भाषा ॥

करो इत्यादि यावत् नही दु खपणे वारवार परिणमे। एवखलु कालोदाई जीवाणकल्लाणकम्मा जाव कज्जंति। इम निश्चे ह कालोदाई। जीवन कल्या णकर्मजीवा ते कल्याणफलविपाक सयुक्तकरे इतिभाव। अनन्तरे कर्मप्रते फलयको कह्या, हिवे क्रियाविशेष आश्रयीने तेकरणहार पुरुष दोयद्वारे क र्मी कल्पादिकने अल्प बहुत्व कहेछे—दोभंतेपुरिसासरिसया जावसरिसभंडमत्तोवगरणा। दोय हेभगवन् ! पुरुषसरीखा यावत्सरीखा भांडमात्र उपगर णादिकछे जेहने। अन्नमन्नेणसद्धिंअगणिकायंसमारभंति तत्थणंएगपुरिसेअगणिकायं उज्जालेइ। अन्योन्ये माहोमाहि साथे तेजकायने समारभे उपद्रव करे तिहाण वाक्यालङ्कारे, एकपुरुष अग्निकायप्रते उजुवालेछे ते उजुवालवेकरी उपद्रवेछे। एगेपुरिसेअगणिकायनिव्वावेइ। अने एक पुरुष अग्निकाय प्रते बुझावेछे बुझाववेकरी उपद्रवेछे। एएसिणभंतेदोण्हपुरिसाणकयरेपुरिसेमहाकम्मतराएचेव महाकिरियतराएचेव महासवतराएचेव महावेयणतरा

॥ टीका ॥

त्यगणेइत्यादि ॥ महाकम्मतराएचेवत्ति ॥ अतिशयेन महत् कर्म ज्ञानावरणादिकं यस्य सतथा चैवशब्द समुच्चये, एव ॥ महाकिरियतराएचेवत्ति ॥ नवरं क्रियादाहरूपा ॥ महासवतराएचेवत्ति ॥ बृहत्कर्मबन्धहेतुक ॥ महावेयणतराएचेवत्ति ॥ महती वेदना जीवाना यस्मा त्सतथा अनन्तरं ग

॥ मूल ॥

म्मतराएचेव जाव अप्पवेयणतराएचेव जेवा सेपुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ जेवा सेपुरिसे अगणिकायं निव्वा वेइ ? कालोदाई ! तत्थणं जे सेपुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ सेणं पुरिसे महाकम्मतराएचेव जाव महावेयण तराएचेव तत्थणं जे सेपुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ सेणं पुरिसे अप्पकम्मतराएचेव जाव अप्पवेयणतराए चेव। सेकेणठेणं भंते! एवंवुच्चइ तत्थणं जे सेपुरिसे जाव अप्पवेयणतराएचेव ? कालोदाई ! तत्थणं जे सेपुरि

॥ अनुवाद ॥

व महावेदनतरकश्चैव' कतरोवा पुरुषो ऽल्पकर्मतरकश्चैव याव दल्पवेदनतरकश्चैव, योवा सपुरुषो ग्निकायमुज्ज्वालयति, योवा सपुरुषो ग्नि काय निर्वापयति ? कालोदायिन् । तत्र य सपुरुषो ग्निकाय मुज्ज्वालयति सपुरुषो महाकर्मतरकश्चैव याव न्महावेदनतरकश्चैव, तत्र य स पुरुषो ग्निकाय निर्वापयति सपुरुषो ल्पकर्मतरकश्चैव याव दल्पवेदनतरकश्चैव । त त्केनार्थेन भ० । एव मुच्यते तत्र य सपुरुषो याव द

॥ भाषा ॥

चैव । एकनेविषे हेभगवन् । दोयपुरुषने किसो पुरुष अतिशयकरी मोटा २ कर्म जे ज्ञानावरणादिक जेहनें ते निश्चे ते मोटीक्रिया दाहरूप ते सहित निश्चे मोटाकर्मबन्धननो हेतु ते सहित निश्चे महावेदना जीवने जेहथकीहुवे ते सहित । कयरेवापुरिसे । किसो अथवा पुरुष । अप्पकम्मतराएचेव । अल्प थोडाकर्म ज्ञानावरणादि ते सहित जाव अप्पवेयणतराएचेव । यावत् अल्पवेदना जीवने जेहथकीहुवे ते सहित । जेवासेपुरिसेअगणिकायंउज्जा लेइ । जे अथवा ते पुरुष अगनिकायप्रते उजुवाले देदीप्यमानकरे । जेवासेअगणिकायंनिव्वावेइ कालोदाई । जे अथवा ते पुरुष अग्निकायप्रते बुझावे इतिप्रश्न उत्तर हे कालोदाई । तत्थणंजेसेपुरिसेअगणिकायउज्जालेइ । तिहां जे पुरुष अग्निकायप्रते उजुवालेछे देदीप्यमान करेछे । सेणंपुरिसेमहाकम्म तराएचेव । ते ण वाक्यालंकारे, पुरुष मोटा जे ज्ञानावरणादिकर्म ते सहित । जावमहावेयणतराएचेव । यावत् महावेदन ते सहित कहिये । तत्थणं

॥ मूल ॥

से अगणिकायं उज्जालेइ सेणं पुरिसे बहुतरायं पुढवीकायं समारंभइ बहुतरायं आउकायं समारंभइ, अप्पतराय तेउकायं समारंभइ बहुतरायं वाउकाय समारंभइ बहुतरायं वणस्सइकाय समारंभइ बहु तराय तसकाय समारंभइ, तत्थण जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ सेणं पुरिसे अप्पतरायं पुढविका

॥ अनुवाद ॥

ल्पवेदनतरक श्चैव ? कालोदायिन् ! यत्र य सपुरुषो ग्निकाय मुज्वालयति सपुरुषो बहुतरक पृथ्वीकाय समारभते' बहुतरक मप्काय समारभ ते, अल्पतरक तेजस्काय समारभते, बहुतरक वायुकाय समारभते, बहुतरक वनस्पतिकाय समारभते, बहुतरक त्रसकाय समारभते। तत्र य सपुरुषो ग्निकाय निर्वापयति सपुरुषो ल्पतरक पृथ्वीकाय समारभते, अल्पतरक मप्काय समारभते, बहुतरक तेजस्काय समारभते, अल्प

॥ भाषा ॥

जावअप्पवेयणतराएचेव। यावत् ते अल्पवेदना जीवने जेहथकीहुवे एहवोकहिये। सेकेणट्ठेणंएववुच्चइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन् इमकह्यो। तत्थणजेसेपुरि सेअगणिकायनिव्वावेइ। तिहां जे ते पुरुष अग्निकायप्रते बुझावेछे। सेणपुरिसेअप्पकम्मतराएचेव। तेह पुरुष अल्प थोडाकर्मनो धणीकहिये। सेजावअप्पकम्मवेयणतराएचेव। तिहां जे पुरुष अग्निकाय उजुवाले ते महाकर्मवन्त अने जे बुझावे ते अल्पकर्मवन्त इतिप्रश्न उत्तर। कालोदाई। हेकालोदाई। तत्थण जे सेपुरिसे अगणिकायउज्जालेइ। तिहां ण वाक्यालंकारे ते पुरुष अग्निकायप्रते उजुवाले देदीप्यमान करे। सेणपुरिसेबहुतरा गपुढविकायसमारभइ। ते ण वाक्यालंकारे, पुरुष अतिघणा पृथिवीकायिकजीवनो समारम्भकरे उपद्रवकरे। बहुतरागआउकायसमारभइ अप्पतराग तेउकायसमारंभइ। अतिघणा अप्कायिकजीवनो उपद्रवकरे अतिथोडा तेउकायना जीवनो उपद्रवकरे। बहुतरागवाउकायसमारभइ। अतिघणा वा उकायिकजीवनो समारम्भकरे। बहुतरागवणस्सइकायसमारभइ। घणा विशेषे वनस्पतीकायिकजीवनो उपद्रवकरे। बहुतरागतसकायसमारभइ। घणा त्रसकायना जीवप्रते समारम्भकरे उपद्रवकरे एतले जे अग्निकायने उजुवालेछे ते पञ्चकायने घणू विराधेछे अने एक अग्निकायनी विराधना थोडी करेछे। तत्थणजेसेपुरुसेअगणिकायनिव्वावेइ। तिहां जे ते पुरुष अग्निकायप्रते बुझावे निर्जीवकरे। सेणपुरिसेअप्पतरायपुढविकायसमारभइ। ते पुरु

॥ टीका ॥ ग्निवक्तव्यतोक्ता ऽग्निश्च सचेतन स ह्यवभासते एव मचित्ता अपि पुद्गला किमवभासन्त इतिप्रश्नयन्नाह ॥ अत्थिणमित्यादि ॥ अचित्ताविति ॥ सचेतना स्तेजस्कायिकादय स्ताव दवभासतएवे त्यपिशब्दार्थ ॥ उंभासतित्ति ॥ प्रकाशा भवन्ति ॥ उज्जोइतिति ॥ वस्तूद्योतयन्ति ॥ तवति

॥ मूल ॥ यं समारंभइ अप्पतरायं आउकायंसमारंभइ बहुतरायं तेउकायं समारंभइ अप्पतरायं वाउकायं समारंभइ अप्पतरायं वणस्सइकायं समारंभइ अप्पतरायं तसकायं समारंभइ सेतेणट्ठेणं कालोदाई! जाव अप्पवेयणतराएचेव। अत्थिणं भंते! अचित्तावि पोग्गला उंभासति उज्जोवेंति तवेंति पभासति? हंता अत्थि।

॥ अनुवाद ॥ तरकं वायुकायं समारभते, अल्पतरकं वनस्पतिकायं समारभते, अल्पतरकं त्रसकायं समारभते तत्तेनार्थेन कालोदायिन्! यावदल्पवेदनतरकश्चैव। अस्ति भ०। अचित्ता अपि पुद्गला अवभासन्ते, उद्योतयन्ति, तपन्ति, प्रभासन्ते? हन्तअस्ति, कतरे भ०! अचित्ता अपि पुद्गला

॥ भाषा ॥ प अल्पतर अतिही थोडा पृथिवीकायिक जीवनो उपद्रवकरे। अप्पतरागंआउकायसमारंभइ। अल्पतर अतिहिथोडा अपूकायिकजीवनो उपद्रव करेछे। बहुतरागंतेउकायसमारंभइ। अतिघणा तेउकायिकजीवना समारंभकरे विराधना करेछे। अप्पतरागंवाउकाय समारंभइ। अतिहिथोडा वाउकायिकजीवनो समारंभकरे। अप्पतरागंवणस्सइकायसमारंभइ। अतिहिथोडा वनस्पतीकायिकजीवनो समारंभकरे उपद्रवकरे विराधनाकरे। अप्पतरागंतसकायसमारंभइ। अतिथोडा त्रसकायिकजीवने विराधे इतले जे अग्निकायबुझावे ते पञ्चकायनी विराधना थोडीकरेछे अने एक तेउकायनी विराधना घणी करेछे। सेतेणट्ठेणं कालोदाई जाव अप्पवेयणतराएचेव। ते तेणे अर्थे हे कालोदाई इमकह्यु। जे पुरुष अग्निप्रते उजुयाले ते महाकर्मवन्त अने जे बुझावे ते यावत् अल्पवेदनावन्तहुवे अनन्तरे अग्निकायनो विराधनाकही ते अग्निसचेतनको प्रकाशकरेछे इम अचित्तपण पुद्गलप्रकाश करे इसो पूछता कहेछे। अत्थिणंभंतेअचित्ताविपोग्गलाओभासंति। छे हेभगवन्। जिम सचेतन तेजस्कायिक प्रकाशकरे तेहनीपरे अचित्त पण पुद्गल प्रकाशकरे। उज्जोयेति तवेंति पभासेति हंताअत्थि। वस्तु प्रते उद्योतकरे आतप करे वस्तुने उजुयाल इतिप्रश्न उत्तर हा कालोदाई छे। कयरेभंतेअचित्ता

॥ टीका ॥

त्ति ॥ ताप कुर्वंति ॥ पभासतित्ति ॥ तथाविधवस्तुदाहकत्वेन प्रभावं लभन्ते ॥ कुद्धस्सेत्ति ॥ विभक्तिपरिणामात् क्रुद्धेन ॥ दूरंगतादूरंनिवयइत्ति ॥ दूरगामिनीति दूरेनिपततीत्यर्थं , अथवा; दूरंगत्वा दूरेनिपततीत्यर्थं ॥ देसगंतादेसंनिवयइत्ति ॥ अभिप्रेतस्य गन्तव्यस्य क्रमशतादे देशे तदद्धादौ गमनस्वभावेति देशे तदद्धादौ निपततीत्यर्थं , क्त्वाप्रत्ययपक्षोप्येवमेव ॥ जहिंजहिंवत्ति ॥ यत्र यत्र दूरेवा , तद्देशेवा; सा तेजोलेश्या निपतति ॥

॥ मूल ॥

कयरेणं भंते ! अचित्तावि पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति कालोदाई कुद्धस्स अणगारस्स तेयलेस्सानि सट्ठासमाणी दूरंगता दूरंनिवतइ देसगता देसं निवतइ जहिं २ चणं सा निवतइ तहिं २ चणं ते अचित्तावि पोग्गला ओभासंति जाव पभासंति एएणं कालोदाई ! ते अचित्तावि पोग्गला ओभासंति तएणं सेकालोदाई

॥ अनुवाद ॥

अवभासन्ते याव तप्रभासन्ते ? कालोदायिन् ! क्रुद्धस्य नगारस्य तेजोलेश्या निसृष्टासती दूरगता दूरंनिपतति देशगता देशनिपतति, यत्र यत्र सानिपतति तत्रतत्र ते अचित्ता पुद्गला अवभासन्ते याव तप्रभासन्ते, एतेन कालोदायिन् ! ते अचित्ताअपि पुद्गला अवभासन्ते याव तप्र

॥ भाषा ॥

विपोग्गलाओभासंति । किसा हेभगवन् ! अचित्त पणि पुद्गल प्रकाशकरै । जावपभासंति कालोदाई । यावत् उजुवाले इतिप्रश्न हो कालोदाई । कुद्ध सअणगारस्सतेयलेस्सानिसट्ठासमाणी । कोप्यो जे साधु ते सबन्धी तेजोलेश्या नीकलीयकी तेहनाशरीरथी नीकलीयकी । दूरगतादूरंनिपतइ देसगता देसनिपतइ । दूरगामिनी छती दूर वेगलोपडे जाईने वाले इत्यर्थं भूमिदेश अभिप्रेत जाइवाने शतपगमाहि जिवियें गई ते तिहापडे । जेहिचणसानि पतइ । जे जे थानकनेविषे दूरदेशे तेहनेछती तिहा पडे । तहिं २ चणतेअचित्तापोग्गलाओभासंति पभासंति । तथा निकट प्रदेशपडे तिहा तिहा ते अचित्तपुद्गल प्रकाशकरै यावत् उजुआलोकरै । एएणंकालोदाई । एह हेकालोदाई । तेअचित्ताविपोग्गलाओभासति । ते अचित्त पणि पद्गल प्रकाशकरै यावत् उजुयालो करै । तएणंसेकालोदाईअणगारेसमणंभगवंमहावीरंवंदइ णमंसइणमंसइत्ता । तिवारे ते कालोदाईनामासाधु श्रमण भगवन्त श्रीमहा वीरस्वामीप्रते वांदे नमस्कारकरै वांदीने नमस्कारकरीने । बहूहिंचउत्थछट्ठट्ठमजावअप्पाणंभावेमाणेजहापढमसए । घणा चउत्थ एक उपवास छट्ठबे उप

॥ टीका ॥

तर्हि २ ॥ तन २ दूरे तद्देशोवा, ॥ तेत्ति ॥ तेजोलेश्या सम्यग्भिन ॥ इतिसप्तमशतेदशम ॥ १० ॥ समाप्तच सप्तमशत वृत्तित ॥ शिष्टोपदिष्टयख्या पदविन्याशशनैरहकुर्वन् । सप्तमशतविवृतिपथ ताङ्घितवान्वृद्धपुरुषवत्‌ ॥ १ ॥ ॥ ॥

॥ मूल ॥

अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ वहूहिं चउत्थ छठ्ठम जाव अप्पाणं भावेमाणे जहा पढम सए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सेवं भंते भंतेत्ति ॥ इति सत्तमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ७

॥ १० ॥ ॥ ॥ सम्मत्तंच सत्तमसय १० ॥ ॥ ॥

अनुवाद

भामन्ते । तदानीं कालोदा अनगार: श्रमणं भगवन्त महावीरं वन्दते नमस्यति नमस्कृत्य बहुभि श्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तै र्याव दात्मानं भावयन् यथा प्रथमशते कालासवेसितपुत्रो याव त्सर्वदुःखप्रहीणः स्तदेव भदन्तभदन्त ॥ मन्दाअप्यश्रमेणप्रथितभगवतीसूत्रपाथोधिपारं यान्तित्वल्पराय वात्तादुरधनपतिसिंहस्यसम्प्रार्थनेन । सम्यक्खरातगच्छप्रवचनगुरुणादेववावानुवाद: पीतोयरामचन्द्रेणाहिशतकमद सप्तममापितोभूत् ॥ १ ॥ इतिसप्तमशते दशम ॥ समाप्तञ्चसप्तमशतम् ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ भाषा ॥

वास अष्टम तोनउपवास य.वत् आत्माने सयमे तपेकरी भावतायको जिमपहिला शतकनेविषे । कालासवेसियपुत्तेजावसव्वदुक्खप्पहीणे । कालासवेसित पुत्रनोअधिकारकह्यो तिम इहा पणिकहवो यावत् सर्वदुःखथकी मूकाणो। सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकहु ते सर्वसत्यछे अन्यथानही। सत्तम सयस्सदसमोउद्देसो। ए सातमा शतकनो दशमो उद्देशो पूरोथयो ७ १० ॥ समत्तंचसत्तमसयं । ए सातमो शतकअर्थथी पूरोथयो ॥ ७ ॥

पूर्वत्र पुद्गलादयो भावा प्ररूपिता इहापि तएव प्रकारान्तरेण प्ररूप्यन्त इत्येव सम्बन्धं मष्टमशत विश्रियत तस्य चाद्देशकस ... गाथामाह ॥ पोग्गलत्ति ॥ पुद्गलपरिणामार्थः प्रथमउद्देशकः पुद्गलश्चोच्यत एवमन्यत्रापि ॥ आसीविसत्ति । आसीविषादिविषयोद्वितीय ॥ रुक्ख त्ति ॥ सद्भ्रातजीवादिवृत्तविषय स्तृतीय ॥ किरियत्ति ॥ कायिक्यादिक्रियाभिधानार्थश्चतुर्थ ॥ आजीवत्ति ॥ आजीविकवक्तव्यतार्थः पञ्चम । फासुय त्ति ॥ प्रासुकदानादिविषयः षष्ठ ॥ अदत्तेत्ति ॥ अदत्तादानविचारणार्थं सप्तम ॥ पडणीयत्ति ॥ गुरुप्रत्यनीकाद्यर्थप्ररूपणार्थो ष्टम ॥ बंधत्ति ॥ प्र योगबन्धाद्यभिधानार्थो नवम ॥ आराहणत्ति ॥ देशाराधनाद्यर्थो दशम ॥ पओगपरिणयत्ति ॥ जीवव्यापारेण शरीरादितया परिणता ॥ मीसाप रिणयत्ति ॥ मिश्रकपरिणता प्रयोगविस्रसाभ्या परिणता प्रयोगपरिणाम मत्यजन्तो विस्रसया स्वभावान्तर मापादिता मुक्तकलेवरादिरूपा अथ वौ, दारिकादिवर्गणारूपा विस्रसया निष्पादिता सन्तो ये जीवप्रयोग णैकेन्द्रियादिशरीरप्रभृतिपरिणामान्तरमापादिता स्ते मिश्रपरिणता,

पोग्गलआसीविसरुक्खकिरियआजीवफासुकमदत्ते । पडिणीयबंधआराहणायदसअट्ठमंमिसए ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवंवयासी कइविहाणं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पोग्गला प० तं०—

पुद्गलआशीविषवृक्षक्रियाजीवप्रासुकादत्ता । गुरुप्रत्यनीकबन्धा राधनाश्चदशाष्टमेशतके ॥ १ ॥ राजगृहे याव देव मवादी—कतिविधा भ० !

पाछिले शतके पुद्गलादिभाव प्ररूप्या इहां पणि तेहीज प्रकारान्तरे कहेछै—पोग्गलआसीविसरुक्खकिरियआजीवफासुकमदत्ते। पडिणीयबंधआराह णायदसअट्ठमंमिसए ॥१॥ पुद्गलपरिणाम १ आशीविषनोविचार २ सख्यात जीवादिवृक्षविषै ३ कायिक्यादिक्रियाविचार ४ आजीविकविचार ५ फासुदान विचार ६ अदत्तादाननोविचार ७ गुरुप्रत्यनीकविचार ८ प्रयोगबंधविचार ९ देशआराधनाविचार १० ए दश उद्देशा आठमा शतकनेविषै जाणवा । रायगिहेणयरे जावएववयासो । राजगृहनगरनेविषै यावत् इमकहै । कइविहाणंभंते पोग्गला पण्णत्ता । केतलेभेदे हेभगवन् पुद्गलकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहापोग्गला प० तं० । हेगौतम ! तीनभेदे पुद्गल कह्या ते कहेछै—पओगपरिणताय मीससापरिणताय वीससापरिणताय । जीव व्यापारे

॥ टीका ॥

ननु प्रयोगपरिणामो प्येवंविधएव ततः कः एषां विशेषः ? सत्यं किन्तु प्रयोगपरिणतेषु विस्रसा सत्यपि नविवक्षितेति ॥ वीससापरिणयत्ति ॥ स्वभावपरिणताः । अथ पयोगपरिणयाणमित्यादिना ग्रन्थेन नवभि र्दण्डकैः प्रयोगपरिणतपुद्गलान् निरूपयति, तत्र चैकेन्द्रियादिमर्वार्थसिद्धदेवान्त

॥ मूल ॥

पओगपरिणया मीसपरिणया वीससापरिणयाय । पओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा प०, तंजहा—एगिंदियपओगपरिणया बेइंदियपओगपरिणया जाव पंचिंदियपओगपरिणया य । एगिंदियपओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—

॥ अनुवाद ॥

पुद्गलाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० । त्रिविधाः पुद्गलाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—प्रयोगपरिणताश्च, मिश्रकपरिणताश्च, विस्रसापरिणताश्च । प्रयोगपरिणताः भदन्त ! पुद्गलाः कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पंचविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—एकेन्द्रियप्रयोगपरिणताः द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणताः यावत् पञ्चेन्द्रि

॥ भाषा ॥

करी शरीरादिकने भावपरिणत १ मीसपरिणयत्ति, प्रयोग अने विस्रसा बेहु परिणम्या ते मिश्रपरिणत तेहना ग्या भावप्रयोगपरिणाम तथा मूकाता मृत शरीरादि स्वभावान्तरे पहचाड्या एतावता जीवरहित कलेवररूप ते मिश्रपरिणत अथवा औदारिकादि वर्गणारूप पुद्गल विस्रसाये नीपजाव्या छता जो प्रयोगे करी एकेन्द्रियादि शरीरने परिणामे पहचाड्या ते पणि मिश्रपरिणत जाणवा २ तथा वीससा स्वभाव तेणे परिणत ते विस्रसापरिणत ३ हिवे पओगपरिणयाणमित्यादि, नवदंडके करी प्रयोगपुद्गलपते निरूपे छे तिहां एकेन्द्रियादि सर्वार्थसिद्ध देवपर्यन्त जीवभेद विशेषितप्रयोगपरिणतपुद्गलनो पहिलो दंडक कहे छे—पओगपरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प० । प्रयोगपरिणत हे भगवन् पुद्गल केतलेभेदे कह्या इति प्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प०त० । हे गोतम ! पांचभेदे कह्या ते कहे छे—एगिंदियपओगपरिणयाय बेइंदियपओगपरिणयाय । एकेन्द्रीप्रयोगपरिणत१ वली बेइन्द्रीप्रयोगपरिणत२ इम तेइन्द्रीप्रयोगपरिणत३ । चउरिन्द्रीप्रयोगपरिणत४ । जाव पंचिंदियपओगपरिणयाय । यावत् पंचेन्द्रीप्रयोगपरिणत । एगिंदियपओगपरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प० । एकेन्द्री प्रयोगपरिणत हे भगवन् पुद्गल केतलेभेदे कह्या इति प्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प०त० । हे गोतम ! पांचभेदे कह्या ते कहे छे—

जीवन्ते विशेषितप्रयोगपरिणताना पुद्गलाना प्रथमो दण्डक स्तत्र ॥ आउकाइयएगेंदियएवचेवत्ति ॥ पृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता इव

पुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया । पुढविकाइयएगिंदियप

ओगपरिणयाणं भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमपुढविकाइय

एगिंदियपओगपरिणयाय बादरपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाय आउकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि

प्रयोगपरिणताश्च । एकेन्द्रियप्रयोगपरिणता भं० । पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ० । पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्र

योगपरिणता याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता । पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता भं० । पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ ।

द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता बादरपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च । अप्कायिकैकेन्द्रियप्रयोगप

रिणता अप्येवमेव, एव द्विको भेदो याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता । द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ० । अनेकविधा प्रज्ञ

पढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया जाव वणस्सइकाइय एगिंदियपओगपरिणया । पृथिवीकायिक एकेंद्री प्रयोगपरिणत १ इम अपकाय एकेंद्रिय

प्रयोगपरिणत २ तेउकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत ३ वाउकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत ४ यावत् वनस्पतीकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत एतलाल

तव्वा । पुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाणभंतेपोग्गला कइविहा प० । पृथिवीकायिक एकेंद्रीय प्रयोगपरिणत हेभगवन् । पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्र

श्न उत्तर । गोयमादुविहा प० त० । हेगौतम । बहूभेद कह्या ते कहेछे—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाय । सूक्ष्म जे चर्मचक्षु ग्रहवायोग्यनही ते सू

क्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रियप्रयोगपरिणत चपुन । बादरपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाय । बादर ते जे चर्मचक्षु ग्रहवायोग्य ते बादर पृथिवीकायिक

एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत । आउकाइयएगिंदियपओगपरिणया एवचेव । अपकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत पणिइमज सूक्ष्मबादर भेदकरी बेप्रकारे जा

णवा । एवदुयओभेओजावणस्सइकाइयाण । इम पृथिवीकाय एकेंद्रिय प्रयोगपरिणतनेविषे जिम सूक्ष्मबादर विशेषणेकरी द्विकपरिणामकीधो तिम तेउका

॥ टीका ॥

अप्कायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता वाच्या इत्यर्थः ॥ एवदुयत्तेत्ति ॥ पृथिव्यप्कायप्रयोगपरिणतेष्विव द्विको द्विपरिमाणो द्विपदोवा; भेदः सूक्ष्मबाद रविशेषगकृत स्तेजस्कायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणतादिषु वाच्य इत्यर्थः ॥ अणेगविहत्ति ॥ पुलाककृमिकादिभेदत्वा द्वीन्द्रियाणा त्रीन्द्रियप्रयोगपरिण ता अप्यनेकविधा कुन्थुपिपीलिकादिभेदत्वा त्तेषा चतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अप्यनेकविधाएव मक्षिकामशकादिभेदत्वा त्तेषा मेतदेवसूत्रय ता

। मूल ॥

एवं चेव । एवदुयत्तेत्त जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपत्तगपरिणया । वेइंदियपत्तगपरिणयाणं पुच्छा गो यमा ! अणेगविहा पण्णत्ता, एवं तेइंदियपत्तगपरिणया चउरिंदियपत्तगपरिणयावि । पंचिंदियपत्तगपरि णयाण भंते ! पुच्छा गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियपत्तगपरिणया तिरिक्खपंचिंदिय पत्तगपरिणया एवं मणुस्सदेवपंचिंदियपत्तगपरिणयाय । नेरइयपंचिंदियपत्तगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा !

अनुवाद

मा । एवं त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । पञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां प्र० । पृच्छा गौ० । चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–नैरयिकपञ्चे न्द्रियप्रयोगपरिणता, स्तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता, एवं मनुष्यदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च । नैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना प्र

॥ भाषा ॥

य वाउकाय वनस्पतिकायि तिनेभिये पणि द्विकपरिणाम कहीये । बेइन्द्रियपयोगप रिणामप्रश्न । बेइन्द्री प्रयोगपरिणत पुद्गल हेभगवन् केतलेभेदे क ह्या प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणेगविहा प० । हेगौतम । पुलाक कृमिकादिकेदे बेइन्द्रीनाभेद अनेकछे तमाटे अनेकभेदकह्या । एमतेइन्द्रियचउरिन्द्रि परिणयावि । एम तेइन्द्री प्रयोग परिणत पणि कुंथु पिपीलिकादि भेदकरी अनेकभेदकरी तथा एम चउरिन्द्री पणि मक्षिकादि भेदकरी अनेकभेद क ह्या । पंचिंदियप्रयोगपरिणतानाभेदपृच्छा । पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणतना हे भगवन् इत्यादि प्रश्न गोतम उत्तर । गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा । ह गातम चारिभेदे कह्या ते कहेछे- नेरइयपंचिदियपयोगपरिणता । नारकी पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत । तिरिक्खजोणियएवंमणुस्सदेवपंचिंदियप्रयोगपरि या । तिर्यग्योनिक पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत एम मनुष्य पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत देव पञ्चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत ए चारिभेद जाणवा । नेरइयपंचिदिय प

सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाय जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाय। तिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! तिविहा प०, तं०—जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया खहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। जलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुवि

च्छा, गौ०! सप्तविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव दध सप्तमपृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ०! त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता, स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता, खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना

ओगपरिणयाणपुच्छा। नारकी पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सत्तविहा प०त०। हेगौतम। सातभेदे कह्या ते कहेछे—रयणप्पभापुढवि णेरइयपचिंदियपओगपरिणयाय। रत्नप्रभापृथिवी नारकी पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत इम शर्करप्रभादिक पणिकहवो। जावअहेसत्तमापुढविणेरइयपओगपरिणयाय। इम यावत् नीचे सातमी तमतमा पृथिवी नारकी प्रयोगपरिणत लगे कहवा। तिरिक्खजोणियपचिंदियपओगपरिणयाणपुच्छा। तिर्यञ्चयोनिक पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत पुद्गल हेभगवन्! केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिविहा. प० त०। हेगौतम! तीनभेदे कह्या तेकहेछे—जलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। जलचर मत्स्यप्रमुख ते पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत १ चपन। थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणया। थलचर जे गायप्रमुख चौपद ते पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत २। खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। खचर जे हंसादिक ते पचेंद्रियतिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत ३ ए तीनभेद कह्या। जलयर पचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणयाण पुच्छा। जलचरमत्स्यादिक पचेंद्रियतिर्यञ्चयोनिक प्रयोगपरिणत पुद्गल हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा प० त०। हेगौतम बेहु भेदे

॥ मूल ॥

हा प०, तं०—सम्मुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाय गब्भवक्कंतियजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपञ्जगपरिणयाय। थलयरतिरिक्खपंचिंदियपञ्जगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुविहा प०, तं०—चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपञ्जगपरिणयाय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपञ्जगपरिणयाय। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपञ्जगपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपञ्जगपरिणया गब्भवक्कंतियथलयरतिरिक्खजोणियपंचिं

अनुवाद

पृच्छा गौ० ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च, गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ० ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च, परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। चतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ० ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता गर्भव्युत्क्रान्तिकस्थलचरतिर्यग्योनिकप

॥ भाषा ॥

कह्या ते कहेछे—सम्मुच्छिमजलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाय। सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत १। गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणया। गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत २। थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाणपुच्छा। इम थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणतनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा दुविहा प० तं०। हेगौतम बेभेदे कह्या ते कहेछे—चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाय। चतुष्पद थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत १। परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाय। परिसर्प थलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत २। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाणपुच्छा। चउपदथलचर पंचेंद्री तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणतनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा दुविहा प० तं०। हेगौतम। बेभेदे कह्या ते कहेछे।

द्रियपओगपरिणयाय। एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय भुयपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। उरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा प०, तं० सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाय। एवं भुयपरिसप्पथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि। एवं

चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। एव मेतेना भिलापेन परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-उर परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता, भुजपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। उर परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सम्मूर्च्छिमोर परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता, गर्भव्युत्क्रान्तिकोर परिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। एव भुजपरिसर्पस्थलचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। एवचैव खचरतिर्यग्योनिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। मनुष्यपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौतम। द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सम्मूर्च्छिममनुष्यप

सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपओगपरिणया। सम्मूर्च्छिमथलचर पचेंद्रियतिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत १। गब्भवक्कंतियथलयर पंचिंदितिरिक्खजोणियपओगपरिणयाय। गर्भजथलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रयोगपरिणत २। एवएएणंअभिलावेणं परिसप्पा दुविहा प० तं०। उरपरिसप्पाय भुयपरिसप्पाय। उरपरिसर्प हृदयसो चाले ते १ अने भुजपरिसर्प बाहासो इम इणे आलावेकरी परिसप्प बेहु भेदे कह्या ते कहेछे—उरपरिसप्पाय भुयपरिसप्पाय। उरपरिसर्प पचेद्रियतिर्यंचना बेभेद कह्या ते कहेछे—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया चाले ते बेभेद २। उरपरिसप्पा पंचिंदियतिरिक्खा दुविहा प० तं०। उरपरिसर्प पचेद्रियतिर्यंचना बेभेद कह्या। ते कहेछे—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प १ गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प २ ए बेभेद। एवंभुयपरिसप्पा एवंखहयरा। इम भुजपरिसर्प पणि सम्मूर्च्छिम गर्भ

॥ मूल ॥

खहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । मणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! दुवि हा पण्णत्ता, तंजहा संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । देवपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिण या एवंजाव वेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया । भवणवासीदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असुरकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिणया जावथणियकुमारदेवपंचिंदियपओगपरिण

अनुवाद

चेन्द्रियप्रयोगपरिणता गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च । देवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ० । चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्य था—भवनवासिदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता एव याव द्वैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता । भवनवासिदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता भ० । क तिविधा प्रज्ञप्ता गौ० । दशविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—असुरकुमारदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् स्तनितकुमारदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च ।

॥ भाषा ॥

ज वेहभेदे कहवा इम खचर पणि वभेद कहवा । मणुस्सपंचिदियपओगपरिणयाण पुच्छा । मनुष्य पचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत पूछन हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहा प० त० । हे गौतम बेहभेदेकह्या ते कहेछे—समुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । समूर्छिम मनुष्य प चेन्द्रिय प्रयोगपरिणत । गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपओगपरिणया । गर्भजमनुष्य पचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत ए बेभेद कहवा । देवपंचिंदियपओगपरिण याणपुच्छा । देवपचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउव्विहा प०त० । हेगौतम चारभेदे कह्या ते कहेछे । भवन वासीदेवपंचिदियपओगपरिणयाएवंजाववेमाणियपओगपरिणया । भवनपती देवपचेन्द्रिय वानव्यन्तर ज्योतिषीदेव ३ इम वेमानिक देवपचेन्द्रिय प्रयोगप रिणत ४ । भवनवासीदेवपंचिदियपओगपरिणयाणपुच्छ । भवनपती देवपचेन्द्रिय प्रयोगपरिणत पूछन हे भगवन् केतलेभेदेकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोय मा । दसविहा पण्णत्ता तंजहा । हेगौतम दशभेदे कह्या ते कहेछे—असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । असुरकुमार आदिदेई यावत् स्तनितकुमार प

पिसायदेवपंचिंदियपओगपरि
या। एवं एएणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरदेवपंचिंदियपओगपरिणया पिसायदेवपंचिंदियपओगपरि
णया जाव गंधव्वदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय। जोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया पंचविहा प०, तंजहा
चंदविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया जावताराविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया। वे
माणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोववन्नवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया
कप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया। कप्पोववन्नगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया दुवालस

एव मेतेना भिलापेना ष्टविधवानव्यन्तरदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता पिशाचदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव द्गन्धवदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिण
ताश्च। ज्योतिकदेवपचन्द्रियप्रयोगपरिणता पचविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-चदविमान ज्योतिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव त्ताराविमान
ज्योतिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। वैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपचेंद्रियप्र
योगपरिणता कल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणताश्च। कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-

इम इण आलावेकरो आठप्रकारे वानव्यन्तर पिशाच१ भूत२
यंत्त हणीद भेदकहवा। एवएणं अभिलावेणं अट्ठविहावाणमंतरा पिसाया जाव गंधव्वा। इम इण आलावेकरो आठप्रकारे वानव्यन्तर पिशाच१ भूत२
यक्ष ३ राक्षस ४ किन्नर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गन्धर्व ८ ए आठभेद जाणवा। जोइसिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा। ज्योतिषीदेव पांचभेदे कह्या ते
कहेछे—चंदविमाणजोइसियपओगपरिणया। चन्द्रविमान ज्योतिषी देवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणत। जाव ताराविमाणजोइसियदेव पंचिंदिय पओगपरिण
या। इम यावत्ग्रन्थे सूर्य २ ग्रहगण ३ नक्षत्र ४ ताराविमान ज्योतिषीदेव पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत। वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा। वैमानिकदेवना
दोयभेदकह्या ते कहेछे—कप्पोववन्नगकप्पातीयवेमाणिय। कल्प जे बारे देवलोक तिहां ऊपना १ तेहथी ऊपर ते कल्पातीत कहिये २। कप्पोव
वन्नगदुवालसविहा पण्णत्ता। कल्पे ऊपना तेह बारेभेदे कह्या ते कहेछे—सोहम्मकप्पोववन्नग वेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय। सौधर्म

॥ सूत्र ॥

विहा पण्णत्ता, तंजहा—सोहम्मकप्पोववण्णगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवं जाव अच्चुयकप्पोववण्णगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। कप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया दुविहा प०, तंजहा गेवेज्जगकप्पातीयदेवपंचिंदियपओगपरिणया अणुत्तरोववाइयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। गेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया णवविहा पण्णत्ता, तंजहा—हेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव उवरिमगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। अणुत्तरोव

अनुवाद

सौधर्मकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवं यावदच्युतकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। कल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता, अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताश्च। ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता नवविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—अधस्तनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावदुपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता। अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानि

॥ भाषा ॥

कल्पोत्पन्न वैमानिक पञ्चेन्द्रिय देव प्रयोगपरिणत। एवं जाव अच्चुयकप्पोववण्णग वेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। इम यावत् अच्युत कल्पोत्पन्न वैमानिक देव पञ्चेन्द्री प्रयोगपरिणत। कप्पातीयगा दुविहा प० तं०। कल्पातीत वैमानिक बेहुभेदे कह्या ते कहे छे—गेवेज्जकप्पातीयगदे प्रयोगपरिणया। ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव प्रयोगपरिणत। अनुत्तरोववाइय०। अनुत्तरोपपातिक देव प्रयोगपरिणत। गेवेज्जगकप्पातीयगा णवविहा प०त०। ग्रैवेयक कल्पातीतना नवभेद कह्या ते कहे छे—हेट्ठिमगेविज्जगकप्पातीयग० पओगपरिणया। [illegible] नीचला [illegible] ते ग्रैवेयक कल्पातीत देव प्रयोग परिणत। जावउवरिम२ गेवेज्जग कप्पातीय० पओगपरिणया। इम यावत् उपरिला [illegible] उपरिला ग्रैवेयक कल्पातीत देव प्रयोगपरिणत एव ९। अणुत्तरोववाइय कप्पातीयगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया [illegible] विहा प०। अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिक देव पञ्चेन्द्रिय प्रयो

न् ॥ नवते इत्रीत्यादि ॥ सुहुमपुढविकाइयेत्यादि ॥ सर्वार्थसिद्धदेवान्त पर्याप्तकापर्याप्तकविशेषणो द्वितीयो दण्डक स्तत्र ॥ गक्केक्केत्यादि ॥ एकैकस्मि
न्निकाये सूक्ष्मबादरभेदा द्विविधाः पुद्गला वाच्या स्तेच प्रत्येकं पर्याप्तकापर्याप्तकभेदा त्पुन र्द्विविधा वाच्या इत्यर्थः ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥

वाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाणं भंते! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता, गोयमा! पंचविहा प०, तं०—विजयअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोव वाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय ॥ १ ॥ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाणं भंते! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता, दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—केइ अपज्जत्तगं पढमं भणंति पच्छापज्जत्तगं। पज्जत्तगं

कदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता भ० । पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ० । पंचविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता याव त्सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता । सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता भ० । पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ० । द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—केचि दपर्याप्तकपृथ्वीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता न्प्रथम प

प्रयोगपरिणत हे भगवन् पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प० तं० । हेगोतम पांचभेदे कह्या ते कहेछे—विजयअणुत्तरोववाइयना परिणया । विजय अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत इम वैजत २ जयत ३ अपराजित ४ कहवा । जाव सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोववाइयदेवपंचिंदिय जावपरिणयाय । यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पचेंद्रिय प्रयोगपरिणत ए पंचभेद जाणवा ए बीजो दंडक कह्यो । सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प० । सूक्ष्मपृथ्वीकायिक प्रयोगपरिणत इत्यादि सर्वत्रित्र पर्याप्त पर्याप्तक विशेषितदो बीजो दंडक कहेछे—सूक्ष्मपृथ्वीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत हेभगवन् पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर गोयमा । दुविहा प० तं० । हेगोतम बेभेदे कह्या ते कहेछे—केइ अपज्जत्तगपढमभणंति । इहां केइएक अपर्याप्ता पहिला कहेछे—पच्छापज्ज

॥ मूल ॥

ज्ञमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तसुज्ञमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया। वादरपुढविका इयएगिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव, एवं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया एक्केक्का दुविहा सुज्ञमाय वादराय पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा। वेइंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगवेइंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगवेइंदियपओगपरिणयाय, एवं तेइंदियपओगपरि

॥ अनुवाद ॥

ठन्ति यथा त्वपर्याप्तकपृथ्वीकायिकैकेद्रियप्रयोगपरिणतानिति, पर्याप्तकपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणताश्च। वादरपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता अपि एवंचेव याव द्वनस्पतिकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता, एकैके द्विविधा सूक्ष्मा वादरा श्च' पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च भणितव्या। द्वीन्द्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—पर्याप्तकद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता। एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपचेंद्रियप्रयोगपरिणताना पृच्छा

॥ भाषा ॥

त्तग। पछे पर्याप्तक कहेछे—ए वाचनान्तरे जाणवो। पज्जत्तसुहमपुढविकाइय जाव परिणयाय। पर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवी एकेंद्री प्रयोगपरिणत, च वली १। अपज्जत्तसुहमपुढविकाइय जाव परिणयाय। अपर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रियप्रयोगपरिणत २। वादरपुढविकाइयाएवचेव। जिम सूक्ष्म पृथिवीकायिकना वेभेद कह्या, तिम वादरपृथिवीकायिकना वेभेद इमज कहवा। एवजाववणस्सइकाइयाएक्केक्कादुविहासुहुमायवादरायपज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा। इम यावत् वनस्पतीकायिक पर्यन्त वेइभेदे सूक्ष्म तथा वादरकह्या ते पर्याप्तक तथा अपर्याप्तक ए वेइभेदेकरी पाचेइ एकेंद्रीपृथिव्यादि वनस्पती पर्यन्त जाणवा। वेइंदियपओगपरिणयाणपुच्छा। वेइन्द्री प्रयोगपरिणतनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा दुविहा प०त०। हे गौतम वेभेदे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगवेइंदियपओगपरिणयाय। पर्याप्तक वेइन्द्रीप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तगवेइंदियपओगपरिणयाय। अपर्याप्तक वेइन्द्री प्रयोगपरिणत ए वेभेद जाणवा। एव तेइंदियावि एवंचउरिंदियावि। इम तेरिंद्री पणि इम चउरिंद्री पणि पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए वेइभेदे कहवा।

औदारिकादिशरीरविशेषण स्तृतीयो दण्डक स्तत्र च ॥ उरालियतेयाकम्मसरीरपओगपरिणयत्ति ॥ औदारिकतैजसकार्मणशरीराणां य प्रयोग स्तेन परिणता येते तथा पृथिव्यादीना हि एतदेव शरीरत्रय भवती तिकृत्वा तत्प्रयोगपरिणताएव तेभवन्ति, बादरपर्याप्तकवायूनां त्वाहारकवर्जशरीरचतुष्टय भवती तिकृत्वाद ॥ नवरजेपज्जत्तेत्यादि ॥ एव ॥ गब्भवक्कंतियावि ॥ अपज्जत्तगित्ति ॥ वैक्रियाहारकशरीराभावा द्गर्भव्युत्क्रान्तिका अप्पर्याप्तका मनुष्या स्त्रिशरीरा सर्वेत्यर्थः ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥ इन्द्रियविशेषण श्चतुर्थो दण्डकः ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥

णयावि, एवं चउरिंदियपओगपरिणयावि। रयणप्पभापुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणया एवं जाव अहेसत्तमपुढविणेरइयपंचिंदियपओगपरिणया। सम्मुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिमज

गौ०। द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—पर्याप्तकरत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता श्च। एवं यावदधः सप्तमपृथिवीनैरयिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणताः। सम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपंचेंद्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधाः

यणप्पभापुढविणेरइय प० पुच्छा। रत्नप्रभा पृथिवी नारकी पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत हे भगवन् पुद्गल कितने भेदे कह्या। इति प्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा पं० तं०। हे गौतम बेह भेदे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगरयणप्पभापुढविजावपरिणयाय। पर्याप्तक रत्नप्रभापृथिवी नारकी पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत। अपज्जत्तजाव परिणयाय। अपर्याप्तक रत्नप्रभा पृथिवी नारकी पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत इम शर्करादिक पणि कहवा। एवं जाव अहेसत्तमा। इम यावत् नीचे सातमी पृथिवीलगे बेबेभेद कहवा। सम्मूच्छिमजलचरतिरिक्खपुच्छा। सम्मूर्च्छिम जलचर तिर्यंचनो पृच्छा उत्तर। गोयमा दुविहा प० तं०। हे गौतम। बेह भेद कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगायअपज्जत्तगाय। पर्याप्तक सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेंद्री तिर्यंच १ तथा अपर्याप्तक सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेंद्री तिर्यंच २। एवं

लयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणया अपज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवंगब्भवक्कंतियजलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । संमुच्छिमचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव । एवंगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एवं जाव संमुच्छिमखहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि गब्भवक्कंतियखहयरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपओगपरिणयावि । एक्केक्के पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा । सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियप

प्रज्ञप्ता तद्यथा—पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एवमेव, एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवं यावत् सम्मूर्च्छिमखचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि, एवं गर्भव्युत्क्रान्तिकखचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि एकैके पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च भणितव्या । सम्मूर्च्छिममनुष्यपञ्चेन्द्रि

गब्भवक्कंतियावि । इम गर्भज जलचर तिर्यंच पणि बेभेदे कहवा । सम्मुच्छिम उरपरिसर्प थलचर प० एवं वचन । सम्मुच्छिम चतुष्पद थलचर पणि पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदकरी इमज कहवा । एवंगब्भवक्कंतियावि । इम गर्भज चउपद पणि पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए बेभेदेकरी कहवा । एवंजावसम्मुच्छिमखहयरगब्भवक्कंतियावि । इम यावत् सम्मूर्छिमखचर गर्भजखचर२ पर्याप्तक अपर्याप्तक ए बेभेदेकरी कहवा । एक्केकेपज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय भाणियव्वा । ए एकेका पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ भेदेकरी सम्मूर्छिम तथा गर्भजना बे बेभेद जाणवा । सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय प० पुच्छा । सम्मूर्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय प्रयोगपरिणतनो प्रश्नकीधो सम्मूर्छिमनो वालोत्नो तादिपवनो परिहोसतो तथा । गोयमा दुविहा प० पज्जत्तगा अपज्जत्तगावि । हे गौतम बे भेद

त्तगपरिणया अपज्जत्तगसम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदियपत्तगपरिणयाय। गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपत्तगपरिणयाणं पुच्छा गोयमा! दुविहा पसत्ता, तंजहा—पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपत्तगपरिणया अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपत्तगपरिणयाय। असुरकुमारभवणवासीदेवपंचिंदियपत्तपरिणयाण पुच्छा गोयमा! दुविहा पसत्ता, तंजहा पज्जत्तगअसुरकुमारदेवपंचिंदियपत्तगपरिणया अपज्जत्तगअसुरकुमारदेवपंचिंदियपयोगपरिणयाय। एवं जाव पज्जत्तगथणियकुमारदेवपंचिंदियपयोगपरिणया अपज्ज

यप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—पर्याप्तका अपर्याप्तका अपि। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता। असुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणतानां पृच्छा गौ०। द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—पर्याप्तकासुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता अपर्याप्तकासुरकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणताश्च। एवं यावत् स्तनितकुमारभवनवासिदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता।

कह्यो अपर्याप्ता हुवे अरयाप्ता। गब्भवक्कंतिय मणुस्सपंचिंदिय पओगपरिणयाणपुच्छा। गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोग परिणतनों प्रश्नाधो उत्तर। गोयमा दुविहा प० त०। हे गौतम। बेहुभेदे कह्या ते कहैछे—पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय। पर्याप्तक गर्भजमनुष्य पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणत १। अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियपंचिंद्रियपओगपरिणयाय। अपर्याप्तक गर्भजमनुष्य पंचेंद्री प्रयोगपरिणत २। असुरकुमारभवणवासीदेव पंचेंद्रियपओगपरिणयाण पुच्छा। असुरकुमार भवनपतीदेव पंचेंद्रिय प्रयोगपरिणतनो प्रश्नाधो उत्तर। गोयमा दुविहा प० तजहा। हेगौतम। बेहुभेदे कह्या ते कह्या ते कहैछे—पज्जत्तगअसुरकुमारदेव० अपज्जत्तगअसुरकुमारदेव पंचेंदियपओगपरिणयाय। पर्याप्तक असुरकुमारदेव अपर्याप्तक असुरकुमारदेव पंचेंद्रियप्रयोगपरिणत। एवजावथणियकुमारा पज्जत्तग अपज्जत्तगाय। इम यावत् स्तनितकुमारपर्यंत पर्याप्तक अपर्याप्तक ए बेहु भेदेकरी दश अ

त्तगथणियकुमारदेवपंचिंदियपत्तगपरिणयाय । एवं एएणं अभिलावेणं दुयएणं भेएणं पिसायाय जावगंध व्वदेवपंचिंदियपत्तगपरिणयाय । एवंपज्जत्तापज्जत्तगचंदजोइसियदेवपंचिंदियपत्तगपरिणया जाव पज्जत्ता पज्जत्तगताराविमानदेवपंचिंदियपत्तगपरिणयाय । पज्जत्तगसोहम्मकप्पोववरागदेवपंचिंदियपत्तगपरिणया अपज्जत्तगसोहम्मकप्पोववरागदेवपंचिंदियपत्तगपरिणया एवं जाव पज्जत्तापज्जत्तगअच्चुअकप्पोववरागदेव पंचिंदियपत्तगपरिणयावि । पज्जत्तगापज्जत्तगहेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीयदेवपंचिंदियपत्तगपरिणया जाव पज्जत्तापज्जत्तगउवरिमउवरिमगेवेज्जकप्पातीयदेवपंचिंदियपत्तगपरिणयावि । एवचेव पज्जत्तापज्जत्तगविज

पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च, एवमनेनाभिलापेनद्विकेनभेदेन पिशाचदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता याव द्गन्धर्वदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव त्ताराविमानज्योतिष्कदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरिणता , सौधर्मकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव दच्युतकल्पोपपन्नकवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता, एव अधस्तनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव दुपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता , एवं विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणता याव दपराजितानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रि

स्तनितक कहना । एवएणंअभिलावेण दुयएणं भेएणं पिसायाय जाव गंधर्वा । इम इणे आलावेकरी बहु पदन भेदकरी आठ व्यन्तरना जे पिसाचादिक गन्धर्वपर्यन्त तेह पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ भेदेकरी कहवा । जाव तारा विमाणा । इम चन्द्रादि तारा विमान पर्यन्त ज्योतिषी पर्याप्तक १ अपर्याप्तक २ ए कहवा । सोहम्मकप्पाव० जावअच्चुआ । सौधर्म दि अच्युतपर्यन्त देवपर्याप्तक भेदेकरी कहवा, अपर्याप्तक भेदेकरी कहवा । हेट्ठिमहेट्ठिम गवेज्जगकप्पातीय० । इम नीचला त्रिकनो नीचलो ग्रैवेयक कल्पातीतदेव । जाव उवरिम उवरिमगेवेज्जग० । यावत् ऊपरला त्रिकनो ऊपरिलो ग्रैवेयक ए पर्याप्तक अपर्याप्तक बेहु भेदे कहवा । विजयअणुत्तरो जाव अपराजिय० । विजयअनुत्तरोपपातिक यावत् अपराजित अनुत्तरपपातिक ए परि हो

यसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचेंदियपओगपरिणया जाव पज्जत्तापज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववा
इयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणयाय ॥ २ ॥ जे अपज्जत्तगसुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरि
णया ते ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, जे पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयएगिंदियप्पओगपरिणया ते
ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया एवं जाव पज्जत्तगचउरिंदियप्पओगपरिणया । नवरं, जे पज्जत्त

यप्रयोगपरिणता अपि। एवं सर्वार्थ सिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणताः ॥२॥ ये अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक
केन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते औदारिकतैजसकामणशरीरप्रयोगपरिणता. येपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणतास्ते औदारिकतेजसका
र्मणशरीरप्रयोगपरिणता । एवं याव त्पर्याप्तकचतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता नवरं ये पर्याप्तकबादरवायुकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते औदारिकवै

यभेद कह्या । सव्वट्ठसिद्धकप्पातीयपओगपरिणयाणपुच्छा । सर्वार्थसिद्ध-कल्पातीतअनुत्तरोपपातिकदेव प्रयोगपरिणतनो प्रश्नकावो उत्तर । गोयमा दुवि
हा प० तं० । हे गौतम ! बेभेदे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो० पओगपरिणया । पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत अनुत्तरोपपातिकदेव
प्रयोगपरिणत । अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध जाव देवपंचिंदियपओगपरिणयावि । अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध कल्पातीत अनुत्तरोपपातिक देवपंचेंद्री प्रयोगपरिण
त ए बीजो दण्डक २ । जअपज्जत्तासुहुमपुढविएगिंदियपओगपरिणया ते ओरालिय तेयाकम्मा सरीरप्पओगपरिणया । जे अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीका
यिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत इत्यादि, औदारिकादि शरीरविशेषणे करी त्रीजोदण्डक कहवो, जे अपर्याप्तक सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय ते औ
दारिक तैजस कार्मणशरीरना जे प्रयोग तिणेकरी परिणत जिको तथा पृथिव्यादिकने एहोज तीनशरीर हुवे इम करीने प्रयोगपरिणत कीजइवे ।
जे पज्जत्तासुहुम जाव पओगपरिणया । जे पर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोगपरिणत । ते ओरालिय तेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया । ते औ
दारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत हुवे । एवंजावचउरिंदियापज्जत्ता । इम यावत् चउरिंद्री प० पप० लगेकहवा बे बे भे० । णवरपज्जत्ता बाद

गबादरवाउकाइयएगिंदियप्पओगपरिणया ते ओरालियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, सेसंतचेव, जे अपज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया, एवं पज्जत्तगरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणयावि, एवं जाव अहेसत्तमापज्जत्तापज्जत्तगसत्तमा पुढविनेरइयपंचिंदियप्पओगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मसरीरप्पओगपरिणया। जे अपज्जत्तगसमुच्छिमजल यरपंचिंदियप्पओगपरिणया ते ओरालियतेयाकम्मसरीरप्पओगपरिणया, एवं जेपज्जत्तगसमुच्छिमजलयरपंचि

न्द्रियकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता 'शेषतच्चैव। ये अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वैक्रिय तैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवं पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि। एवं यावदध सप्तमपृथिवीनैरयिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वैक्रिय तैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता ये अपर्याप्तकसमूर्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते औदारिक तैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवं

रवाउकायएगिंदिय प० परि०। एतलोविशेष जे पर्या० बादरवाउकायिक एकेन्द्रिय प्र०परि०छे तेहने आहारवर्जीने चारशरीरछे इसोकहीने कहेछे। ते ओरालिय वेउव्विय तेयाकम्मासरीर जाव परिणया समतचेव। ते औदारिक वैक्रिय तेजस कार्मण ए चारशरीर प्र० परिणतहुवे शेषयावतो सर्व पूर्वेकह्यो तिमजकहवो जे अपज्जत्तारयणप्पभापुढविणेरइय पंचिंदिय पओगपरिणया। जे अप० रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक पचेंद्रिय प्र०परि०। तेवेउव्विय तेयाकम्मा सरीरप्पओग परिणया। ते वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोग परिणतहुवे। एवं पज्जत्तयावि एव जाव अहे सत्तमा। इम पर्या० रत्नप्रभापृथिवी ते वैक्रिय तैजस कार्मण प० परि० इम यावत् नीचे सातमीनरकपृथिवी लगे वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्र० परि० जाणवो। जेअपज्जत्तासमुच्छिमजलयरजाव परिणया। जे अप० समूर्च्छिम जलचर पचेंद्रिय तिर्यचयोनिक प० परिणत। तेओरालिय तेयाकम्मासरीर जाव परिणया एव पज्जत्तगावि। ते औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्र० परिणतहुवे इम पर्या० संमूर्च्छिम जलचर पचेंद्रिय तिर्यचयोनिक प्र० परि० ते औदारिक तैजस कार्मण प्र० परि०

॥ मूल ॥

कम्मसरीरप्पओगपरिणया, एवं गब्भवक्कंतियावि। अपज्जत्तगपज्जत्तगावि एवंचेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि, जेअपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियपओगपरिणया जहाणेरइयपंचिंदियपओगपरिणयावि तहेव एव पज्जगावि एवंदुपएणभेएण जाव थणियकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियपओगपरिणया। एवंपिसायदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव गंधव्वदेवपंचिंदियपओगपरिणया। चंदविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव ताराविमाणजोइसियदेवपंचिंदियपओगपरिणया एवं सोहम्मकप्पोववगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया जाव अच्चुअकप्पोववगवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया। एवं हेट्ठिमगेवे

अनुवाद

काअपि एवंचैव नवरं शरीरकाणि पञ्च भणितव्यानि। ये अपर्याप्तकासुरकुमारभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यथा नैरयिकपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि तथैव एवं पर्याप्तका अपि एवं द्विकेनभेदेन यावत् स्तनितकुमारभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता। एवं पिशाचदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावद्गन्धर्वदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता। चन्द्रविमानज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् ताराविमानज्योतिष्कदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता। एवं सौधर्मकल्पोपपन्नवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् अच्युतकल्पोपपन्नवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियप्रयोग

॥ भाषा ॥

कार्मणशरीर कहवा, प० पणि इमहीज कहवां। णवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वा। एतला शरीर पांचे पर्या० ने कहवा। जे अपज्जत्तगा असुरकुमार भवणवासि जहा णेरइया तहेव पज्जत्तगावि। जे अप० असुरकुमार भवनपत्यादिक जिम नारकी कह्या तिम एह कहवा वैक्रिय तेजस कार्मण ए तीन शरीर कहवा इम प० पणि तीनशरीरवन्त कहवा। एवं दुपएणं भेएणं जाव थणियकुमारा। इम प० अप० २ वे भेदे करी, वैक्रिय तेजस कार्मणशरीरे करी थणितकुमार पर्यन्त कहवा। एवं पिसाया जाव गंधव्वा। इम पिशाच आदिदेई गन्धर्वपर्यन्त आठ व्यन्तर पणि कहवा। चंदा जाव ताराविमाणा। इम चन्द्रादि ताराविमान पर्यन्त ज्योतिषी पणि कहवा। जाव सोहम्मो कप्पो जाव अच्चुओ। यावत् सौधर्मादिदेई अच्युतलगे तीनशरीर कहवा। ह

ज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जगपरिणया जाव उवरिम गेवेज्जगकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जगपरिणया । एवं विजयअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जगपरिणया जाव सव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जगपरिणया एक्केक्केदुयओ भाणियव्वा । जाव जे अपज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपज्जगपरिणया ते वेउव्वियतेयाकम्मासरीरपज्जगपरिणया । जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपज्जगपरिणया ते फासिंदियपज्जगपरिणया । जे ... परिणया दंडगं ॥ ३ ॥

... उपरितनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता । एव अधस्तनग्रैवेयककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवप... परिणता एव विजयानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता यावत् सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरि... चेन्द्रियप्रयोगपरिणता एकैके द्विक भेदा भणितव्या यावत् येच पर्याप्तका सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियप्रयोगपरिणता ते वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता., दण्डक ॥ ३ ॥ ये अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता ते स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरि...

... दिम २ गेवेज्जा जाव उवरिम २ गेवेज्जा । पहिला ग्रैवेयक आदिदेई नवमाग्रैवेयकपर्यन्त, पणि वैक्रिय तैजस कार्मणसघाते आलावो कहवो । विजयअ... णुत्तरोववाइया । विजयादि अनुत्तरोपपातिक कहवा । जावसव्वठ्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया । यावत् सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिकदेव एतलालगे कहवा । ... एकेकेंद्रियभेदोभाणियव्वा । एकेकस्थानके प० अप २ दोयभेद तीनशरीर कहवा । जाव जे अपज्जत्तासव्वठ्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया । यावत् शब्दे जे अप० ... सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिकप० देव प्र० परिणत । जे पज्जत्ता सव्वठ्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया जाव परिणया । तथा जे प० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक ... पंचेन्द्रियदेव प्र० परिणत । तेवेउव्वियतेयाकम्मासरीरप्पओग प० दडगा ३ । ते वैक्रिय तेजस कार्मणशरीर प्र० परिणत ए तीनदण्डक कहवा । जे अपज्ज... ता सुहमपुढविकाइय एगिंदियपओगपरिणया । जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्र० प० इत्यादि ते इन्द्रिय विशेषणेकरी चौथो दण्डक कहेछे, जे

पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया एवचेव । जे अपज्जत्तावादरपुढविकाइयएगिंदियपओगप रिणया एवचेव एवंपज्जत्तगावि एवंचउक्कतेएणं जाव वणस्सइकाइयएगिंदियपओगपरिणया । जे अपज्ज त्ताबेइंदियपओगपरिणया ते जिब्भिंदियफासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्ताबेइंदियपओगपरिणया एवंचेव एवंजाव चउरिंदियपओगपरिणया नवरं, एक्केक्कं इंदियवड्ढेयव्वं । जे अपज्जत्तारयणप्पभापुढविनेरइयपंचिं

णता , ये पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव। येऽपर्याप्तबादरपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव। एवपर्याप्तकाअपि । एव चतुष्कभेदेन याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता । ये अपर्याप्तद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते जिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रिय प्रयोगपरिणा । येपर्याप्तकद्वीन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचेव । एवयावच्चतुरिन्द्रियप्रयोगपरिणता, नवर एकैक मिन्द्रिय वर्द्धयितव्यम् । ये अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपचेन्द्रियप्रयोगपरिता स्ते श्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता । एव पर्याप्तकाअपि

अप० सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्र० परिणत । ते फासिंदियपओगपरिणया । ते स्पर्शनेन्द्री प्र० परिणत । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवचेव । जे पर्या० सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि इमज एतले स्पर्शनेन्द्री प्र० परिणत होजहुवे । जे अपज्जत्तावादरपुढविकाइयाएवचेव । जे अप० बादर पृथिवीकायिक ते पणि इमज एतले स्पर्शनेन्द्री प्र० परिणत । एवपज्जत्तगावि । इम बादर पर्या० पणि स्पर्शनेन्द्री प्र० परिणत । ते जिब्भिंदिय फासिंदिय पओग परिणया । ते जिह्वेन्द्री स्पर्शेन्द्री ए बे इन्द्री प्रयोगपरिणत हुवे, इम जे पर्या० बेइन्द्री प्रयोगपरिणत पणि इमज एतले रसनेन्द्री स्पर्शेन्द्री ए बेइन्द्री प्रयोगपरिणत कहवा । एवजावचउरिंदिया । इम यावत् चउरिन्द्री लगे कहवा । णवरएक्केकइंदिय वढढयव्व । एतलो विशेष एकेक इन्द्रिय वधारवो ते इम तेरिन्द्रीने घ्राणेन्द्रीने रसनेन्द्रीने ए तीन कहवा चउरिन्द्रीने तीन वली तेहीज चउरिंदी वधे । जे अपज्जत्तारयणप्पभापुढविणेरइयपओगपरिणया । जिके अप० रत्नप्रभापृथिवी नारकी पचेन्द्री प्रयोगपरिणत । तेसोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय पओगपरिणया । ते श्रोत्रेन्द्री चक्षु

दियपऊगपरिणया ते सोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियपऊगपरिणया। एवंपज्जत्तगावि एवंसव्वेभाणियव्वा। तिरिक्खजोणियपंचिंदियपऊगपरिणया मणुस्सपंचिंदियपऊगपरिणया देवपंचिंदियपऊगपरिणया जाव सव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपऊगपरिणया ॥ ४ ॥ जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियउरालियतेयाकम्मासरीरपऊगपरिणया तेफासिंदियपऊगपरिणया जे पज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयएगिंदियउरालियतेयाकम्मासरीरपऊगपरिणया एवंचेव अपज्जत्तबादरपुढविकाइयएगिंदि

सर्वंभणितव्या। तिर्यग्योनिकपचेंद्रियप्रयोगपरिणता, मनुष्यपचेंद्रियप्रयोगपरिणता, देवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता याव त्सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिता ॥४॥ येअपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता। येपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव। अपर्याप्तकबादरपृथिवी

इम पर्या० पणि चेंद्रियादि स्पर्शनेंद्रीपर्यन्त प्रयोगपरिणत कह्वा। जाव ते कह्वा इम सातेइँ नरकपृथिवीनेनिषे कह्वा। तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवा। इम सघलाइँ तिर्यचयोनिक मनुष्यदेव पचेंद्री परिणत कह्वा। जाव जेपज्जत्त गसव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयाजावपरिणया। यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पचेंद्री देवप्रयोगपरिणतछै। तेसोइंदियचक्खिंदिय जावपरिणया ४। ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत कह्वा, ए चौवीसदण्डक कह्वा ४। जे अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइयएगिंदिया ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया ते फासिंदियपओगपरिणया। तथा जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादिक, औदारिकादिशरीरनेविषे स्पर्शनादि इन्द्रियभेदेकरी पचमो दण्डक कह्वो, तेकहेछै—जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत ते। फासिंदियपओग परिणया। तेस्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत। स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत हुवे। जेपज्जत्तासुहुमएवचेव। जे पर्या० सूक्ष्मपृथिवीका

॥ टीका ॥ औदारिकादिशरीरस्पर्शादीन्द्रियविशेषण पञ्चम ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥ वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानविशेषण षष्ठ' एव औदारिकादिशरीर

॥ मूल ॥ यउरालियतेयाकम्मासरीरपज्जगपरिणया एवंचेव एवंपज्जत्तगावि एव एएणं अभिलावेणं जस्सजइ इंदियाणि सरीराणिय ताणिभाणियव्वाणि जाव जे अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपयोगपरिणया तेसोइंदिय घाणिंदिय चक्खिंदिय जिभिंदिय फासिंदियपज्जगपरिणया ॥ ५ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपज्जगपरिणया तेवन्नउ कालवन्नपरिणया णीलवन्नप

॥ अनुवाद ॥ कायिकैकेन्द्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवचैव । एवपर्याप्तकाअपि । एव एतेनाभिलापेनयस्य यावन्ति इन्द्रियाणिशरीराणिच तानिभणितव्यानि । यावत् ये अपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रिय वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते श्रोत्रेंद्रिययावत्स्पर्शइन्द्रियप्रयोगपरिणता ॥ ५ ॥ येअपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिण

॥ भाषा ॥ यिक ते पणि इमज कहवा । बादरअपज्जत्ताएवचेव । जे बादर अप० ते पणि इमज कहवा । एवपज्जत्तगावि । इम बादर पर्या० पणि कहवा । एव एएणं अभिलावेणंजस्सजइ इंदियाणि सरीराणि तत्ताणि भाणियव्वा । इम इणें आलावेकरी जेहने जेतला इन्द्रियहवे तथा जेतला शरीरहुवे ते विचारोने इन्द्रिय तथा शरीरकरी आलावा कहवा । जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया । यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक । जावदेवपचिंदिय वेउव्विय तेयाकम्मासरीरपयोगपरिणया । वेमानिकदेव पचेंद्रिय वैक्रिय तेजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत । तेसोइंदिय चक्खिंदिय जाव फासिंदिय पओगपरिणया ५ । ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शेनेंद्रिय प्रयोगपरिणतहुवे पचमोदण्डक कहवो । जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणया । जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकाय इत्यादि, ते वर्ण गन्ध रस स्पर्श संस्थान विशेषणेकरी छट्ठो दण्डक कहवो जे अप० सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोग परिणत छे । ते वर्णथकी कालाथ परिणयावि पीलत्ताहिय हालिसुक्किला । ते वर्णथको कालवर्ण नीलवर्ण २ लोहित

रिणया लोहिगवस्रपरिणया हालिद्दवस्रपरिणया सुक्किलवस्रपरिणया, गंधद्धसुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणयावि, रसद्धतित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणयावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणयावि महुररसपरिणयावि, फासद्धकक्खडफासपरिणयावि जाव लुक्खफासपरिणयावि, संठाणद्धपरिमंडलसंठाणपरिणयावि वट्टतंस चउरंस आयतसंठाणपरिणयावि । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि एवचेव जहाणुपुव्वीए णेयव्व जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओ

ता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता, गंधत सुरभिगंधपरिणता दुरभिगंधपरिणता, रसत तिक्तरसपरिणताअपि कटुकरसपरिणताअपि कषायरसपरिणताअपि आम्लरसपरिणताअपि मधुररसपरिणताअपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणताअपि याव रूक्षस्पर्शपरिणताअपि, संस्थानत परिमंडलसंस्थानपरिणताअपि वर्तुलत्र्यस्रचतुरस्रायतसंस्थानपरिणताअपि। येपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव। एव यथानुपूर्व्या नेतव्य याव ये पर्याप्तका सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरि

वर्ण ३ हालिद्रवर्ण ४ शुक्लवर्ण ५ परिणत पणिहुवे। गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गन्धथकी, सुगन्ध १ दुर्गन्ध २ परिणत पणिहुवे। रसथी तित्तरस कडुयरस कसायरस अंबिलरस महुररस परिणयावि। रसथकी, तिक्तरस १ कटुकरस २ कषायरस ३ आम्लिरस ४ मधुररस ५ परिणत पणिहुवे। फासथी कक्खडफास जाव लुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी, कर्कशस्पर्श यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पणिहुवे। संठाणथी परिमंडलसंठाण परिणयावि। संस्थानथकी, परिमंडल पणिहुवे इम तंस चउरंस आयतसंठाणपरिणयावि वाटलासंस्थान। वट्टतंस चउरंस ४ आयतसंस्थान पणिहुवे ५। जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया एव। जे पर्या० सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि इमहीज कहवा। एवंजहाणुपुव्वीए णेयव्व। इम यथानुपूर्वी जिम अनुक्रम पूर्वेकह्यु तिम जाणवो। जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववा.व जाव परिणया। यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पचेंद्रिय

॥ टीका ॥ वर्णादिभावविशेषणो सप्तम, इन्द्रियवर्णादिविशेषणो एम, शरीरेन्द्रियवर्णादिविशेषणो नवमइति, अतएवाह एते नव दण्डका', मिश्रपरिणते

॥ मूल ॥ गपरिणया तेवणओ कालवणपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि ॥ ६ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया तेवणओकालवणपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया एवचेव। एवं जहा णुपुव्वीए जस्स जइसरीराणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपओगपरिया तेवणओ कालवणपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि ॥ ७ ॥ जे अ

अनुवाद गता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणताअपि याव दायतसंस्थानपरिणताअपि ॥ ६ ॥ येअपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसंस्थानपरिणताअपि, ये अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवचैव। एव यथानुपूर्व्या नेतव्यानि यस्य यावति शरीराणि याव द्यपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणताअपि याव दायतसंस्थानपरिणताअपि ॥ ७ ॥ ये अपर्याप्तकसूक्ष्मपृ

॥ भाषा ॥ देन प्रयोगपरिणत। ते वर्णथोकालवर्णपरिणयावि। तेवर्णथो, कालवर्ण परिणत। जाव आयतसंठाणपरिणयावि ६। यावत् आयतसंस्थान परिणत पणि ए छट्ठो दण्डक कह्यो। जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मासरीरपओग परिणया। जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक इत्यादि, वर्ण गन्ध स्पर्श संस्थानविशेषणकरो सातमो दण्डक कहेछे—जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिक तेजस कार्मण शरीर प्रयोगपरिणत। ते वर्णथोकालवर्णपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि। ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणिहुवे इम वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहुवे ८। जे पज्जत्तासुहुमपुढविएवचेव। जे पर्या० सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि एव चवत्ति, इम

॥ सूत्र ॥

पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया तेवन्नओ कालवन्नपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणयावि । जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया एवंचेव एव जहाणुपुव्वीए जस्स जइइंदियाणितस्सतत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया तेवन्नओ कालवन्नपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि ॥ ८ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदिय उरालियतेयाकम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया

अनुवाद

थिवीकायिकैकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसस्थानपरिणताअपि' ये पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचेव, एव यथानुपूर्व्या यस्य यावती न्द्रियाणि तस्य तानि तावति भणितव्यानि याव द्ये पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियश्रोत्रेन्द्रिययावत्स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसस्थानपरिणता अपि ॥ ८ ॥ येऽपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्म्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि याव दायतसस्थानपरिणताअपि ।

॥ भाषा ॥

ीज कहवा । एवजहाणुपुव्वीएजेयव्वं । इम यथानुपूर्वीये यथानुक्रम जाणवो । जस्सजइसरीराणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय देवपंचिंदिय वेउव्विय तेयाकम्मसरीरा जाव परिणया । जेहने जेतला शरीरछे तेतला कहवा, यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक देवपंचेन्द्रिय वैक्रिय तेजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत । ते वणओकालवणपरिणयावि । ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणिहुवे । जाव आयतसठाणपरिणयावि । यावत् आयत सस्थान परिणत पणिहुवे ए सातमो दण्डक कह्यो ७ तथा । जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदिय फासिंदिय पओगपरिणया । जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादि, इन्द्रिय अने वर्ण गन्ध रस स्पर्श सस्थानविशेषणेकरी आठमो दण्डक कहेछे—जे अप० सू० पृथिवीकायिक एकेंद्रिय स्पर्शनेन्द्रिय प्रयोगपरिणत हुवे । ते वणओ कालवण परिणयावि । ते वर्णथको कालवर्ण परिणत । जाव आयतसठाणपरिणयावि । यावत् आयतसस्थान

॥ मूल ॥

तेवएणं कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियउरालियतेया कम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया एवचेव, एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइ सरीराणि इंदियाणियतस्सतत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियकम्मासरी

॥ अनुवाद ॥

यपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्म्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवयथानुपूर्व्यायस्य यावन्तिशरीराणीन्द्रियाणिच तस्य तानिभणितव्यानि याव द्ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरश्रोत्रेन्द्रिय यावत्स्प

॥ भाषा ॥

परिणत पणिहुवे । जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एवचेव । जे पर्या० सू० पृथ्वीकायिक पणि इमजकहवो । एवजहाणुपुव्वीए । इम यथानुपूर्वीए । जस्स जइइंदियाणितस्सतत्तियाणिभाणियव्वाणि । जेहने जेतला इन्द्रीहुवे सर्व पूठिलीपरे तेहने तेतला आलावा विचारी कहवा । जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठ सिद्धअणुत्तर जाव देवपंचिंदिय सोइंदिय । यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पचेंद्रिय श्रोत्रेंद्रिय । जावफासिंदिय पओग परि णया । यावत् स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत । ते वणाओकालवणपरिणयावि । ते वर्णथको, कालवर्ण परिणत पणिहुवे, इम वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहुवे, इति ए आठमोदण्डक कह्यो ८ जे अप० सू० पृथिवीकायिक इत्या दि, शरीर इन्द्रिय वर्णादि भेदेकरी नवमो दण्डक कहेछे—जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्माफासिंदिय पओगपरिणयावि । जे अप० सू० पृथिवोकायिक एकेंद्रिय औदारिक तैजस कार्मण स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत । ते वणाओ कालवणपरिणयावि । ते वर्णथो कालवर्ण परिणत पणिहुवे इम वर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहुवे एतलालगे कहवो । जे पज्ज त्ता सुहुमपुढविकाइय एवचेव । जे पर्या० सू० पृथिवोकायिक ते पणि इमज कहवा पूठिलो परे । जहाणुपुव्वीए । इम यथानुपूर्वीए यथानुक्रमे । जस्स जइसरीराणि इंदियाणिय । जेहने जेतलाशरीर जेतला इन्द्रियछे । तस्सतत्तियाणि भाणियव्वाणि । तेहने तेतलाइन्द्री विचारीने कहवा । जाव जे पज्ज

ष्यप्येतएव नव दण्डकाइति, अथ विस्रसापरिणतपुद्गला श्चिन्तयति ॥ विस्ससापरिणयाणमित्यादि ॥ एवंजहापन्नवणाएत्ति ॥ तत्रेव मिद सूत्रं-जे

रसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणयावि एए नवदंडगा ॥ १ ॥ मीसापरिणयाण भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिंदियमीसापरिणया , एगिंदियमीसापरिणयाण भंते ! पोग्गला

॥ ८ ॥ मिश्रपरिणता भदंत ! पुद्गला कति श्रोत्रेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिता यावदायतसस्थानपरिणताअपि एते नवदण्डका विधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पंचविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-एकेंद्रियमिश्रपरिणता यावत्पंचेंद्रियमिश्रपरिणता । एकेंद्रियमिश्रपरिणता भदंत ! पु

जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पंचेंद्रिय वैक्रिय तैजसकार्मणशरीर श्रोत्रेंद्रियादि । जाव फासिंदियपओगपरिणया । यावत् स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणतछे । ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि । ते वर्णथ ग्ग्गीकालवर्ण परिणत पणिहुवे जाव आयतसंठाण परिणयावि । यावत् आयतसस्थान परिणत पणिहुवे । एए नवदंडगा ८ । ए नवमो दंडक कह्यो । ए नव दंडक समुच्चय समुच्चय २ प० अप० २ समुच्चयपर्या० अपर्या०शरी ३ समुच्चय प० अप० इन्द्रिय ४ समुच्चय प० अप० शरीरइन्द्रिय ५ समुच्चय पर्या० अप० वर्णादिसहित ६ समुच्चय प० अप० शरीर वर्णादिसहित ७ समुच्चय प० अप० इन्द्रिय वर्णादिसहित ८ समुच्चय प० अप० शरीर इन्द्रिय वर्णादिसहित ए नव दंडक कह्या ते जाणवा । मीसापरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प० । मिश्र परिणतनेविषे पणि एहीज नवदंडक जाणवा मिश्रप रिणत हेभगवन् ! पुद्गल केतले प्रकारे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा पं० तं० । हे गौतम पांचभेदे कह्या ते कहेछे—एगिंदियमीसा प० जाव पंचिंदियमीसा परिणया । एकेंद्रिय मिश्रपरिणत यावत् पचेंद्री मिश्रपरिणत । एगिंदियमीसापरिणयाणभंते पोग्गलाकइविहा प० । एकेंद्री मिश्रपरिण त हे भगवन् ! पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमाएवंजहापओगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया । हे गौतम ! इम जिम प्रयोगपरिण

॥ मूल ॥

कइविहा पन्नत्ता ? एवं जहा पओगपरिणएहिं नवदंडगा भणिया एवं मीसापरिणएहिंवि नवदंडगा भाणियव्वा तहेव सव्वंनिरवसेसं, नवरं अभिलावो मीसापरिणया भाणियव्वो, सेसंतंचेव जाव जेपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसंठाणपरिणया । वीससापरिणयाण भंते ! पोग्गलाकइविहा पन्नत्ता ? गोयमा! पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—वन्नपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया

अनुवाद

द्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! एव यथा प्रयोगपरिणतै नंव दण्डका भणिता एव मिश्रपरिणतैरपि नवदण्डका स्तथैव सर्व निरवशेष नवरमभिलापो मिश्रपरिणता भणितव्य । शेष तच्चैव याव द्ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावदायतसस्थानसंस्थिताश्च पि ॥ विस्रसापरिणता भदन्त ! पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पचविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–वर्णपरिणता, गधपरिणता, रसपरिण

॥ भाषा ॥

करी नव दडक कह्या । एवमीसापरिणएहिवि नव दडगा भाणियव्वा । इम मिश्रपरिणते करीने पणि नवदडक जाणवा कहवा । तहेवसव्वणिरवसेस । तिमहीज सगलाई समस्त पण कहवा । णवरअभिलावोमीसापरिणया भाणिव्वो सेसतचेव । एतलोविशेष जिहा प्रयोगपरिणत एहवो शब्द कह्यो तिहा आलावे मिश्रपरिणत एहवोशब्द कहवो शेष तिमज कहवा । जाव जे पज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाण ८ । यावत् जे प० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् आयतसस्थान परिणत पणिहुवे ए पणि नवदडक कहवा ८ हिवे विस्रसा पुद्गलप्रते चितवेछे—वीससापरिणयाण भतेपोग्गला कइविहा प० । विस्रसा परिणत हे भगवन् ! पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा प० त० । हे गौतम ! पाचेभेदे कह्या ते कहेछे—वणपरिणया १ । वर्ण परिणत । गध प० २ । गन्धपरिणत । रस प० ३ । रस परिणत । फास प० ४ । स्पर्श परिणत । सठाण प० ५ । सस्थान परिणत । जे वण प० । जे वर्ण परिणत । ते पचविहा प त० । ते पाचेभेदे कह्या ते कहेछे—कालवण प० । कालवर्ण परिणत १ । जाव सुक्किलवण प० । इम नील लोहित हालिद्र शुक्लवर्ण परिणत । जे गध प० ते दुविहा प त । जे गन्ध परिणतछे ते बेह्नभेदे कह्या ते कहेछे—सुर

तथौष्ठावपि द्वावपि कर्णौ छिन्दन्ति, तथा मद्यमांसरसाभिलिप्सोर्मृषाभाषिणो जिह्वां वितस्तिमात्रामाक्षिप्य तीक्ष्णाभिः शूलाभिः 'अभितापयन्ति' अपनयन्ति इति ॥ २२ ॥ तथा—

(टीकार्थ) वे परमाधार्मिक, पूर्व जन्मके पापोंको स्मरण कराकर प्रायः सदा वेदनासे युक्त निर्विवेकी नारकि जीवकी नासिकाको अस्तुरेसे काट लेते हैं तथा उनके ओठ और दोनो कान काट लेते है। तथा मद्य मास और रसके लम्पट और मिथ्या भाषण करनेवाले जीवकी जिव्हाको एक बीत्ता बाहर निकालकर उसे तीक्ष्ण शूलके द्वारा वेध करते हुए पीडा देते हैं।२२

मूलम्—ते तिप्पमाणा तलसंपुडंव, राइंदियं तत्थ थणंति बाला।
गलंति ते सोणिअपूयमंसं, पज्जोइया खारपइद्धियंगा ॥ २३ ॥

(छाया) ते तिप्यमाना स्तालसंपुटाइव रात्रिदिवं तत्र स्तनन्ति बालाः
गलन्ति ते शोणितपूयमांसं प्रद्योतिताः क्षारप्रदिग्धाङ्गाः ।

(अन्वयार्थ) (तिप्पमाणा) जिनके अङ्गोसे रक्त टपक रहा है ऐसे (ते) वे नारकि (बाला) अज्ञानी (तालसपुडव) सूखे हुए तालके पत्तेके समान (राइदिय) रात दिन (तत्थ) उस नरकमें (थणति) रोते रहते है। (पज्जोइया) आगसे जलाये जाते हुए (खारपइद्धियगा) तथा अङ्गोंमें खार लगाये हुए (सोणिअपूयमस) रक्त, पीब, और मास (गलति) अपने अङ्गोसे गिराते रहते है।

(भावार्थ) वे अज्ञानी नारकी जीव अपने अङ्गोंसे रुधिर टपकाते हुए सूखे हुए तालपत्रके समान रातदिन शब्द करते रहते है। तथा आगमें जलाकर पीछेसे अङ्गोंमे खार लगाये गये हुए वे नारकि जीव रक्त, पीब और मासका स्राव करते रहते है।

(टीका) 'ते' छिन्ननासिकौष्ठजिह्वाः सन्तः शोणितं 'तिप्यमानाः' क्षरन्तो यत्र—यस्मिन् प्रदेशे रात्रिदिनं गमयन्ति, तत्र 'बाला' अज्ञाः 'तालसम्पुटा इव' पवनेरितशुष्कतालपत्रसंचया इव सदा 'स्तनन्ति' दीर्घविस्वरमाक्रन्दन्तस्तिष्ठन्ति तथा 'प्रद्योतिता' वह्निना ज्वलिताः तथा क्षारेण प्रदिग्धाङ्गाः शोणितं पूयं मांसं चाहर्निशं गलन्तीति ॥ २३ ॥ किञ्च—

१ स्वनन्तो प्र०।

॥ मूल ॥

दियपओगपरिणया ते सोइंदिय चक्खिंदिय घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियपओगपरिणया। एवंपज्जत्तगावि एवंसव्वेभाणियव्वा। तिरिक्खजोणियपचिंदियपओगपरिणया मणुस्सपचिंदियपओगपरिणया देवपंचिंदियपओगपरिणया जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओगपरिणया ॥ ४ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया तेफासिंदियपओगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेयाकम्मासरीरपओगपरिणया एवंचेव अपज्जत्तबादरपुढविकाइयएगिंदि

अनुवाद

सर्वे भणितव्या। तिर्यग्योनिकपचेंद्रियप्रयोगपरिणता, मनुष्यपचेंद्रियप्रयोगपरिणता, देवपचेंद्रियप्रयोगपरिणता याव त्सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियप्रयोगपरिता ॥४॥ येअपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता। येपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचैव। अपर्याप्तकबादरपृथिवी

॥ भाषा ॥

रिन्द्री घ्राणेन्द्री रसणेंद्री स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत हुवे। एवपज्जत्तगावि एवसव्वेभाणियव्वा। इम पर्या० पणि श्रोत्रेंद्रियादि स्पर्शनेंद्रीपर्यन्त प्रयोगपरिणत कहवा इम सातेई नरकपृथिवीनेविषे कहवा। तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवा। इम सघलाई तिर्यग्योनिक मनुष्यदेव पचेंद्री परिणत कहवा। जाव जेपज्जत्त गसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयाजावपरिणया। यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पचेंद्री देवप्रयोगपरिणत छै। तेसोइंदियचक्खिंदिय जावपरिणया ४। ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत कहवा, ए चोथोदण्डक कहवो ४। ज अपज्जत्त सुहुमपुढविकाइयएगिंदिया ओरालियतेयाकम्मासरीरप्पओगपरिणया ते फासिंदियपओगपरिणया। तथा जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादिक, औदारिकादि शरीरनेविषे स्पर्शनादि इन्द्रियभेदेकरी पचमो दण्डक कहवो, तेकहेछै—जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिक तैजस कार्मणशरीर प्रयोग परिणत ते। फासिंदियपओग परिणया। तेस्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत। स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत हुवे। जेपज्जत्तासुहुमएवचेव। ज पर्या० सूक्ष्मपृथिवीका

ओदारिकादिशरीरस्पर्शादीन्द्रियविशेषण पञ्चम ॥ जेअपज्जत्तासुहुमपुढवीत्यादि ॥ वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानविशेषण षष्ठ' एव मौदारिकादिशरीर

यजुरालियतेयाकम्मासरीरपजुगपरिणया एवंचेव एवंपज्जत्तगावि एवं एएणं अभिलावेणं जस्सजइ इंदियाणि सरीराणिय ताणिभाणियव्वाणि जाव जे अपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपयोगपरिणया तेसोइंदिय घाणिंदिय चक्खिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदियपजुगपरिणया ॥ ५ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपजुगपरिणया तेवणत्र कालवणपरिणया णीलवणप

कायिकैकेन्द्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवचैव । एवपर्याप्तकाअपि । एव मतेनाभिलापेनयस्य यावन्ति इन्द्रियाणिशरीराणिच तानिभणितव्यानि । यावत् ये अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेंद्रिय वैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते श्रो त्रेन्द्रिययावत्स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता ॥ ५ ॥ येअपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिण

यिक ते पणि इमज कहवा । बादरअपज्जत्ताणवचेव । जे बादर अप० ते पणि इमज कहवा । एवपज्जत्तगावि । इम बादर पर्या० पणि कहवा । एव एएण अभिलावेणजस्सजइ इंदियाणि सरीराणि तत्ताणि भाणियव्वा । इम इणे आलावेंकरी जेहने जेतला इन्द्रियहवे तथा जेतला शरीरहुवे ते विचारीने इन्द्रिय तथा शरीरकरी आलावा कहवा । जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइया । यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक । जावदेवपंचिंदिय वेउव्विय तेयाकम्मासरीरप्रयोगपरिणया । वैमानिकदेव पंचेंद्रिय वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत । तेसोइंदिय चक्खिंदिय जाव फासिंदिय पयोगपरिणया ५ । ते श्रोत्रेंद्रिय चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय रसनेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणतएवं पञ्चमोदण्डक कहवा । जेअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया । जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकाय इत्यादि, ते वर्ण गन्ध रस स्पर्श संस्थान विशेषणेंकरी छट्ठो दण्डक कहवो जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय प्रयोग परिणत छे । ते वर्णथी कालवर्ण परिणयावि णीलवणादिय हालिदसुकिला । ते वर्णथकी कालवर्णनीलवर्ण २ लोहित

॥ मूल ॥

गंधउसुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधप रिणया लोहियवन्नपरिणया हालिद्दवन्नपरिणया सुक्किलवन्नपरिणया, रसउतित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणयावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणयावि महुररसपरिणयावि, फासउकक्खडफासपरिणयावि जाव लुक्खफासपरिणयावि, संठाणउपरिमंडलसंठाणपरिणयावि वट्टतंस चउरंस आयतसंठाणपरिणयावि। जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपओगपरिणयावि एवंचेव जहाणुपुव्वीए णेयव्वं जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियपओ

अनुवाद

रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि यावद्रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत. परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वर्तुलत्र्यस्रचतुरस्रायतसंस्थानपरिणता अपि। येपर्याप्तका सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवंचैव। एवं यथानुपूर्व्या नेतव्यं यावद्ये पर्याप्तका सर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेंद्रियप्रयोगपरि ...ता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता, गंधत सुरभिगंधपरिणता दुरभिगंधपरिणता,

॥ भाषा ॥

गन्धथकी, सुगन्ध १ दुर्गन्ध २ परिणत पणिहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। रसथकी, तिक्तरस १ कटुकरस २ कषायरस ३ अम्बिलरस ४ मधुररस ५ परिणत प णिहुवे। रसओ तित्तरस कडुयरस कसायरस अंबिलरस महुररस परिणयावि। स्पर्शथकी, कर्कशस्पर्श यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पणिहुवे। फासओ कक्खडफास जाव लुक्खफास परिणयावि। संस्थानथकी, परिमंडल पणिहुवे इम तस चउरस आयतसंठाणपरिणयावि वाटलासंस्थान। वट्टतसचउरस ४ आयतसंस्थान पणि हुवे ५। संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि। जे पर्या० सूक्ष्मपृथ्वीकायिक ते पणि इमहीज कहवा। एवंजहाणुपुव्वीए णेयव्वं। इम यथानुपूर्वी जिम अनुक्रम पूर्वक छ्यु तिम जाणवा। जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया एव। जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक पंचेंद्रिय जाव परिणया। यावत् जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया।

॥ टीका ॥ वर्णादिभावविशेषणा सप्तम, इन्द्रियवर्णादिविशेषणो एष', शरीरेन्द्रियवर्णादिविशेषणो नवमइति, अतएवाह एते नव दण्डका , मिश्रपरिणते

॥ मूल ॥ गपरिणया तेवण्णउ कालवण्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि ॥ ६ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदियउरालियतेयाकम्मासरीरपउगपरिणया तेवण्णउकालवण्णपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियउरालियतेयाकम्मासरीरपउगपरिणया एवचेव । एव जहा णुपुव्वीए जस्स जइसरीराणि जाव जेपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्वियतेयाकम्मासरीरपउगपरिया तेवण्णउ कालवण्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि ॥ ७ ॥ जे अ

॥ अनुवाद ॥ णता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणताअपि याव दायतसस्थानपरिणताअपि ॥ ६ ॥ येअपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियऔदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसस्थानपरिणताअपि, ये अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता एवचेव । एव यथानुपूर्व्या नेतव्यानि यस्य यावति शरीराणि याव द्येपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणताअपि याव दायतसस्थानपरिणताअपि ॥ ७ ॥ ये अपर्याप्तकसूक्ष्मपृ

॥ भाषा ॥ देश प्रयोगपरिणत । ते वर्णथी कालवर्णपरिणयावि । तेवर्णथी, कालवर्ण परिणत । जाव आयतसठाणपरिणयावि ६ । यावत् आयतसस्थान परिणत पणि ए छट्ठो दण्डक कह्यो । जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्मासरीरपओग परिणया । जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंन्द्रिय औदारिक इत्यादि, वर्ण गन्ध स्पर्श सस्थानविशेषणे करी सातमो दण्डक कहेछे—जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिक तैजस कार्मण शरीर प्रयोगपरिणत । ते वर्णथी कालवर्णपरिणयावि जाव आयतसठाणपरिणयावि । ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणिहुवे इम वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा यावत् आयतसस्थान परिणत पणिहुवे ८ । जे पज्जत्तासुहुमपुढवि०एवचेव । जे पर्या० सूक्ष्मपृथिवीकायिक ते पणि एव चप्रत्ति, इम

॥ मूल ॥

पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया तेवण्णओ कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणयावि। जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपओगपरिणया एवंचेव एव जहाणुपुव्वीए जस्स जइइंदियाणितस्सताणियाणि भाणियव्वाणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया तेवण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव आयतसंठाणपरिणयावि ॥ ८ ॥ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदिय ओरालियतेयाकम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया

अनुवाद

थिवीकायिकैकेंद्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसंस्थानपरिणताअपि' ये पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता (स्ते) एवचेव, एव यथानुपूर्व्या यस्य यावती द्रियाणि तस्य तानि तावति भणितव्यानि याव द्ये पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेद्रियश्रोत्रेद्रिययावत्स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता याव दायतसंस्थानपरिणता अपि ॥ ८ ॥ येअपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकतैजसकार्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि याव दायतसंस्थानपरिणताअपि।

॥ भाषा ॥

हीज कहवा। एवजहाणुपुव्वीएणेयव्व। इम यथानुपूर्वीये यथानुक्रमे जाणवो। जस्सजइसरीराणि जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय देवपंचिंदिय वेउव्विय तेयाकम्मसरीरा जाव परिणया। जेहने जेतला शरीरछे तेतला कहवा, यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक देवपंचेद्रिय वैक्रिय तैजस कार्मणशरीर प्रयोगपरिणत। ते वण्णओकालवण्णपरिणयावि। ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणिहुवे। जाव आयतसठाणपरिणयावि। यावत् आयत संस्थान परिणत पणिहुवे ए सातमो दण्डक कह्यो ७ तथा। जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एगिंदिय फासिंदिय पओगपरिणया। जे अप० सूक्ष्मपृथिवीकायिक इत्यादि, इन्द्रिय अने वर्ण गन्ध रस स्पर्श संस्थानविशेषणेकरी आठमो दण्डक करेछे—जे अप० सू० पृथिवीकायिक एकेंद्रिय स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत हुवे। ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि। ते वर्णथकी कालवर्ण परिणत। जाव आयतसठाणपरिणयावि। यावत् आयतसंस्थान

तेवण्णे कालवण्णपरिणया जाव आयतसंठाणपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालियतेया कम्मासरीरफासिंदियपओगपरिणया एवंचेव, एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जइ सरीराणि इंदियाणियतस्सतत्तियाणि भाणियव्वाणि जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियकम्मासरी

यपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकैकेंद्रियौदारिकतैजसकार्म्मणशरीरस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणता अपि । एवंयथानुपूर्व्यायस्य यावन्तिशरीराणीन्द्रियाणिच तस्य तानितत्तिवक्तव्यानि याव द्ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियतैजसकार्मणशरीरश्रोत्रेन्द्रिय यावत्स्प

परिणत पणिहुवे । जेपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एवचेव । जे पर्या० सू० पृथिवीकायिक पणि इमजकहवो । एवजहाणुपुव्वीए । इम यथानुपूर्वीए । जस्स जइइंदियाणितस्सतत्तियाणिभाणियव्वाणि । जेहने जेतला इन्द्रीहुय सर्व पूठिलीपरे तेहने तेतला आलावा विचारा कहवा । जाव जे पज्जत्ता सव्वट्ठ सिद्धअणुत्तर जाव देवपंचिंदिय सोइंदिय । यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पंचेंद्रिय श्रोत्रेंद्रिय । जावफासिंदिय पओग परिणया । यावत् स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणत । ते वण्णओकालवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणिहुवे, इम वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहुवे, इति ए आठमोदण्डक कह्यो ८ जे अप० सू० पृथिवीकायिक इत्या दि, शरीर इन्द्रिय वर्णादि भेदेकरी नवमो दण्डक कहेछै—जे अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय तेयाकम्माफासिंदिय पओगपरिणयावि । जे अप० सू० पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिक तैजस कार्मण स्पर्शनेंद्री प्रयोगपरिणत । ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि । ते वर्णथी कालवर्ण परिणत पणिहुवे इम वर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा । जाव आयतसंठाणपरिणयावि । यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहुवे एतलालगे कहवो । जे पज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय एवचेव । जे पर्या० सू० पृथिवीकायिक ते पणि इमज कहवा पूठिलो परे । जहाणुपुव्वीए । इम यथानुपूर्वीए यथानुक्रमे । जस्स जइसरीराणि इंदियाणिय । जेहने जेतलाशरीर जेतला इन्द्रियछै । तस्सतत्तियाणि भाणियव्वाणि । तेहने तेतलादंडो विचारीने कहवा । जाव जे पज्ज

॥ टीका ॥ द्यप्येतएव नव दण्डकाइति, अथ विस्रसापरिणतपुद्गला श्चिन्तयति ॥ विस्ससापरिणयाणमित्यादि ॥ एवंजहापन्नवणाएत्ति ॥ तत्रैव मिदं सूत्र-जे

॥ मूल ॥ रसोइंदिय जाव फासिंदियपओगपरिणया ते वन्नओ कालवन्नपरिणया जाव आयतसठाणपरिणयावि एए नवदण्डगा ॥ १ ॥ मीसापरिणयाण भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! पचविहा पन्नत्ता, तंजहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पचिंदियमीसापरिणया, एगिंदियमीसापरिणयाण भंते ! पोग्गला

अनुवाद न्द्रियप्रयोगपरिणता स्ते वर्णत. कालवर्णपरिता यावदायतसस्थानपरिणताअपि एते नवदण्डका ॥ ९ ॥ मिश्रपरिणता भदत ! पुद्गला कति विधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पचविधा. प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-एकेंद्रियमिश्रपरिणता यावत्पचेंद्रियमिश्रपरिणता । एकेंद्रियमिश्रपरिणता भदत ! पु

॥ भाषा ॥ त्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय देव पचिंदिय वेउव्विय तेयाकम्मासोइंदिय । यावत् जे पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पचेंद्रिय वैक्रिय तैजसकार्मणशरीर श्रोत्रेंद्रियादि । जाव फासिंदियपओगपरिणया । यावत् स्पर्शनेंद्रिय प्रयोगपरिणतछै । ते वर्णथी कालवर्ण परिणयावि । ते वर्णथ की कालवर्ण परिणत पणिहुवे जाव आयतसठाण परिणयावि । यावत् आयतसस्थान परिणत पणिहुवे । एए नवदडगा ९ । ए नवमो दडक कह्यो । ए नव दडक समुच्चय समुच्चय २ प० अप० २ समुच्चयपर्या० अपर्या०शरी ३ समुच्चय प० अप० इन्द्रिय ४ समुच्चय प० अप० शरीरइन्द्रिय ५ समुच्चय पर्या० अप० वर्णादिसहित ६ समुच्चय प० अप० शरीर वर्णादिसहित ७ समुच्चय प० अप० इन्द्रिय वर्णादिसहित ८ समुच्चय प० अप० शरीर इन्द्रिय वर्णादिसहित ए नव दडक कह्या ते जाणवा । मीसापरिणयाणभते पोग्गलाकइविहा प० । मिश्र परिणतनेविषे पणि एहीज नवदडक जाणवा मिश्रप रिणत हेभगवन् ! पुद्गल केंतले प्रकारे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा प० त० । हे गौतम पाचभेदे कह्या ते कहेछे—एगिंदियमीसा प० जाव पचिंदियमीसा परिणया । एकेंद्रिय मिश्रपरिणत यावत् पचेंद्री मिश्रपरिणत । एगिंदियमीसापरिणयाणभते पोग्गलाकइविहा प० । एकेंद्री मिश्रपरिण त हे भगवन् ! पुद्गल केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमाएवजहापओगपरिणएहि नव दडगा भणिया । हे गौतम । इम जिम प्रयोगपरिण

॥ मूल ॥

कइविहा पण्णत्ता ? एवं जहा पओगपरिणएहिं नवदंडगा भणिया एव मीसापरिणएहिंवि नवदंडगा भाणियव्वा तहेव सव्वंनिरवसेसं, नवरं अभिलावो मीसापरिणया भाणियव्वा, सेसंतंचेव जाव जेपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसंठाणपरिणया । वीससापरिणयाणं भंते ! पोग्गलाकइविहा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया

॥ अनुवाद ॥

द्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गोतम । एव यथा प्रयोगपरिणतै नव दण्डका भणिता एव मिश्रपरिणतैरपि नवदण्डका स्तथैव सर्वं निरवशेष नवरमभिलापो मिश्रपरिणता भणितव्य । शेष तथैव याव द्ये पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरौपपातिक (प्रभृति) यावदायतसंस्थानसंस्थिताश्च पि ॥ विस्रसापरिणता भदन्त ! पुद्गला कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गोतम । पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—वर्णपरिणता, गन्धपरिणता, रसपरिण

॥ भाषा ॥

करी नव दण्डक कह्या । एवमीसापरिणएहिवि नव दण्डक भाणियव्वा । एम मिश्रपरिणत करीने पणि नवदण्डक जाणवा कहवा । तहेवसव्वनिरवसेस । तिमहीज सगलोई समस्त पणे कहवो । णवरअभिलावोमीसापरिणया भाणियव्वा सेसतचेव । एतलोविशेष जिहा प्रयोगपरिणत एहवो शब्द कह्यो तिहा आलावे मिश्रपरिणत एहवोशब्द कहवो शेष तिमज कहवा । जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाण ८ । यावत् जे प० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् आयतसंस्थान परिणत पणिहवे ए पणि नवदण्डक कहवा ८ हिवे विस्रसा पुद्गलप्रते चिन्तवेछे—वीससापरिणयाण भतेपोग्गला कइविहा प० । विस्रसा परिणत हे भगवन् ! पुद्गल केतलभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा पं० त० । हे गोतम । पाचभेदे कह्या ते कहेछे—वण्णपरिणया १ । वर्ण परिणत । गध प० २ । गन्धपरिणत । रस प० ३ । रस परिणत । फास प० ४ । स्पर्श परिणत । सठाण प० ५ । सस्थान परिणत । जे वण्ण प० । जे वर्ण परिणत । ते पचविहा प त० । ते पाचभेदे कह्या ते कहेछे—कालवण्ण प० । कालवर्ण परिणत १ । जाव सुक्किलवण्ण प० । एम नील लोहित हालिद्र शुक्लवर्ण परिणत । जे गध प० ते दुविहा प त । जे गन्ध परिणतछे ते बेहूभेदे कह्या ते कहेछे—सुर

॥ टीका ॥

रसपरिणाया ते पञ्चविहा पन्नत्ता त०-तित्तरसपरिणाया एव कडुयकसायअंबिलमहुररसपरिणाया' जे फासपरिणाया ते अठविहा पन्नत्ता तजहा-कक्खडफासपरिणाया एव मउयगरुयलहुयसीयउसिणनिद्धलुक्खफासपरिणायाय इत्यादि' अथैक पुद्गलद्रव्य माश्रित्य परिणाम श्चिन्तयन्नाह ॥ एगेइ

॥ मूल ॥

जेवण्णपरिणया तेपंचविहा पण्णत्ता, तजहा—कालवण्णपरिणया जाव सुक्किलवण्णपरिणया जेगंधपरिणया तेदुविहा पण्णत्ता, तजहा—सुगंधपरिणया दुग्गंधपरिणयावि एवं जहा पण्णवणापए तहेव निरवसेस जाव संठाणओ आयतसंठाणपरिणया तेवण्णओ कालवण्णपरिणयावि जाव लुक्खफासपरिणयावि । एगेभंते ! दव्वे किंपयोगपरिणए मीसापरिणए वीससापरिणए ? गोयमा ! पयोगपरिणएवा मीसापरिणएवा वीससाप

अनुवाद

ता, स्पर्शपरिणता, सस्थानपरिणता । येवर्णपरिणता स्ते पचविधा' प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कालवर्णपरिणता याव च्छुक्लवर्णपरिणता' । येगधपरिणता स्तद्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सुगधपरिणता दुर्गंधपरिणताअपि । एव यथा प्रज्ञापनाया तथैव निरवशेष । यावद्ये सस्थानत आयत सस्थानपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि यावद्रूक्षस्पर्शपरिणताअपि ॥ एक भदन्त ! द्रव्य किं प्रयोगपरिणत मिश्रपरिणत विस्रसा

॥ भाषा ॥

भिगध दुरभिगध परिणयावि । सुगन्धदुर्गन्ध परिणत पणिहुवे । एवजहापण्णवणाए तहेवणिरवसेस । इमजिम पन्नवणानेविषे कह्यु तिम निरवशेष सम स्तकहवा तिहा इम सूत्रछे —ज रसपरिणया ते पचविहा प० त०, तित्तरस प० एव कडुयरस कसायरस अंबिलरस महुररस परिणया, जे फास प० ते अठविहा प०त०, कक्खडफास प० एव मउय गरुय लहुय सीय उसिण णिद्ध लुक्खफास परिणया इत्यादि । जावजेसठाण आयतसठाणओ प० । या वत् सस्थानथी आयतसस्थान परिणत । ते वण्णओकालवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी, कालवर्ण परिणत पणि । जावलुक्खफास परिणयावि । यावत् रु क्षस्पर्श प० पणि जाणवो हिवे एक पुद्गल द्रव्यप्रते आश्रयीने परिणामप्रतें चितवेछे—एगभते दव्वेकिंपओग परिणए मीसा प० वीससा परिणए । एक हेभगवन् ! द्रव्य स्यू प्रयोग परिणत मिश्र परिणत २ अथवा वीस्रसा परिणत हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पओगपरिणएवा । हे गौतम ! प्रयोग प०

॥ टीका ॥

त्यादि ॥ समप्पओगपरिणएत्ति ॥ समस्तया परिणत मित्यर्थ ॥ वयप्पओगपरिणयत्ति ॥ भाषाद्रव्य काययोगेन गृहीत्वा वाग्योगेन निसृज्यमान वाक्प्रयोगपरिणत मित्युच्यते ॥ कायपओगपरिणयत्ति ॥ औदारिकादिकाययोगेन गृहीत मौदारिकादिवर्गणाद्रव्य मौदारिकादिकायतया परिणत कायप्रयोगपरिणत मित्युच्यते ॥ सच्चमणेत्यादि ॥ सद्भूतार्थचिन्तननिबन्धनस्य मनसः प्रयोग सत्यमन प्रयोग उच्यते । एवमन्येपि, नवरं मृषा असद्भूता

॥ मूल ॥

रिणएवा । जइपओगपरिणए किंमणपओगपरिणए वइपओगपरिणए कायपओगपरिणए ? गोयमा ! मणप्पओगपरिणएवा वयपओगपरिणएवा कायप्पओगपरिणएवा । जइ मणप्पओगपरिणए किंसच्चमणप्पओगपरिणए मोसमणप्पओगपरिणए सच्चामोसमणप्पओगपरिणए असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ? गोयमा ! सच्चमणप्पओग

अनुवाद

परिणत ? गौतम ! प्रयोगपरिणतवा मिश्रपरिणतवा विस्रसापरिणतवा । यदिप्रयोगपरिणत किं मन प्रयोगपरिणत वच प्रयोगपरिणत का यप्रयोगपरिणत ? गौतम ! मन प्रयोगपरिणतवा वच प्रयोगपरिणतवा कायप्रयोगपरिणतवा । यदि मन प्रयोगपरिणत किं सत्यमन प्रयोगप

॥ भाषा ॥

हुवे अथवा । मीसा परिणएवा वीससा परिणएवा । मिश्र प० हुवे विस्रसा प० हुवे । जइपओग परिणए । जे प्रयोग प० । किं मणपओग प० वइपओग प० कायपओग परिणए । स्यु मन प्र० परिणतपणे कहिये अथवा भाषा द्रव्य काययोगे ग्रहीने वाग्योगेकरी नीसरतोथको वचनप्रयोग परिणत कहीये २ औदारिककाययोगे ग्रह्यु औदारिकादि वर्गणा द्रव्य औदारिकादि काययोगपणेकरी परिणम्या ते काययोग परिणत कहिये २ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणपओगपरिणएवा । हे गौतम । मनप्रयोगपरिणत हुवे १ । वइपओगपरिणएवा । वचनप्रयोगपरिणत हुवे २ । कायपओगपरिणएवा । कायप्रयोगपरिणत हुवे ३ । जइमणपओग परिणए । जो मनप्रयोगपरिणत हुवे । किंसच्चमणपओगपरिणए । स्यु सत्य मनप्रयोग साधा अर्थनो चिन्तवन छे जेहनेविषे एहवो जे मन तेहनोप्रयोग तेणे परिणम्यो ते सत्य मन प्रयोगपरिणत कहिये १ । मोसमणपओगपरिणए । असत्य अर्थ तेहना चिन्तवन रहित मनप्रयोग तेणे परिणम्यो ते असत्य मन प्रयोगपरिणत २ । सच्चामोसमणपओगपरिणए असच्चामोसमणपओगपरिणए । साचू अने मृषा तेणे मि

॥ टीका ॥

र्य । सत्यमृषा मिश्रो, यथा पचसु दारकेषु जातेषु दशदारका जाताइति, असत्यमृषासत्यमृषास्वरूप मतिक्रांतो यथा देहीत्यादि ॥ आरंभसच्चेत्यादि ॥ आरम्भो जीवोपघात स्तद्विषय सत्य मारम्भसत्य तद्विषयो यो मन प्रयोग स्तेन परिणत यत्त तथा, एव मुत्तरत्रापि नवर मनारम्भो जीवानुपघात ॥ सारभत्ति ॥ सरम्भो वधसङ्कल्प समारम्भस्तु परितापइति ॥ उरालिएत्यादि ॥ औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कन्धरूपत्वेनो पचीयमान

॥ मूल ॥

परिणएवा मीसमणप्पउगपरिणएवा सच्चामोसमणप्पउगपरिणएवा असच्चामोसमणप्पउगपरिणएवा । जइ सच्चमणप्पउगपरिणए किंआरंभसच्चमणप्पउगपरिणए अणारंभसच्चमणप्पउगपरिणए सारंभसच्चमणप्पउगप

अनुवाद

रिणत मृषामन प्रयोगपरिणत सत्यमृषामन प्रयोगपरिणत असत्यमृषामन प्रयोगपरिणत ? गौतम । सत्यमन प्रयोगपरिणतवा मृषामन प्रयोग परिणतवा सत्यमृषामन प्रयोगपरिणतवा असत्यमृषामन प्रयोगपरिणतवा । यदि सत्यमनःप्रयोगपरिणत कि आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत अनारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत सारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत असारभसत्यमन प्रयोगपरिणत समारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत असमारम्भ

॥ भाषा ॥

थ ते सत्यामृषा कहिये जिम बालक पाच जनम्याछता दश जण्याकह्यें इम कहिये सत्यमृषास्वरूपने अतिक्रम्यो ते असत्यामृषा यथा देहि इतिग्रन्थ । गोयमा सच्चमणप्पओगपरिणएवा । हेगौतम । सत्य मनप्रयोग परिणतहुवे १ । मोसमणप्पओग परिणएवा । असत्य मनप्रयोगपरिणतहुवे २ । सच्चामोसमणप्पओगपरिणएवा । मिश्र मनप्रयोग परिणतहुवे ३ । असच्चामोसमणप्पओग परिणएवा । असत्यामृषामनप्रयोगपरिणतहुवे ४ । जइसच्चमणप्पओग परिणए तेकिंआरभसच्चमणप्पओगपरिणए । जो सत्यमन प्रयोगपरिणतछै तो स्यू आरभ कहिये जीवघात तेविषय सत्य ते आरभ सत्य तद्विषय जे मनप्रयोग तिणे परिणत जे ते आरम्भ सत्य मनप्रयोग परिणत १ । अणारभसच्चमणप्पओगपरिणए । जीवनाघातनहीं ते विषय जे सत्य ते विषय जेमन प्रयोग तिणेपरिणत अणारम्भसत्यमनप्रयोगपरिणत २ । सारभसच्चमणप्पओगपरिणए । सारम्भ कहिये वध सकल्प ते विषय जे सत्य ते विषय मनप्रयोग परिणत ३ । असारभ सच्चमणप्पओग परिणए । वध सकल्परहित जे ते विषय जे सत्य ते विषय मनप्रयोगपरिणत ४ । समारभसच्चमणप्पओगपरि

॥ टीका ॥ त्यात् काय औदारिकशरीरकाय स्तस्य य प्रयोग औदारिकशरीरस्य वा, य कायप्रयोग. सतया अयच पर्याप्तकस्यैव वेदितव्य स्तेन यत्परिणत

॥ मूल ॥ रिणए आसारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए समारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणए ? गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पओगपरिणएवा जाव असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणएवा। जइ मोसमणप्पओगपरिणए किं आरंभमोसमणप्पओगपरिणएवा एव जहा सच्चेण तहा मोसेणवि एवं असच्चामोसमणप्पओगेणवि। जइ वइप्पओगपरिणए किं सच्चवइप्पओगपरिणए मोसवइप्पओगपरिणए ? एव जहा मणप्पओगपरिणए तहा वइप्पओ

अनुवाद सत्यमन प्रयोगपरिणत ? गौ० । आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणतवा याव असमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणतवा । यदि मृषामन प्रयोगपरिणत कि आरम्भमृषामन प्रयोगपरिणत एव यथा सत्येन तथा मृषापि एव सत्यमृषापि । एव असत्यमृषामन प्रयोगेनापि । यदि वच प्रयोगपरिणत कि सत्यवच प्रयोगपरिणत मृषावच प्रयोगपरिणत एव यथा मन प्रयोगपरिणतं तथा वच प्रयोगपरिणतेपि याव असमारम्भवच प्रयोगपरिण

॥ भाषा ॥ णए असमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणए । परितापविषय जे सत्य मनप्रयोग परिणत ५ परितापरहित तेविषय जे सत्य मनप्रयोग परिणतहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आरम्भसच्चमणप्पओगपरिणएवा । हे गौतम । आरम्भ सत्य मनप्रयोगपरिणत १ । जावअसमारम्भसच्चमणप्पओगपरिणएवा । इम याव त् असमारम्भ सत्यमनप्रयोग तेणे परिणतहुवे ६ । जइमोसमणप्पओगपरिणए । जो मृषा मनप्रयोग तेणे परिणतहुवे । किंआरम्भमोसमणप्पओगपरिणए । तो स्यु आरम्भ मृषा मनप्रयोगपरिणत । एवजहासच्चेण तहामोसेणवि । इम जिम सत्यसघाते छ बोल कह्या तिम असत्यसघाते पणि छ बोल कहवा । एवमसच्चामोसेणवि । इम मिश्रमन ते पणि छ बोल कहवा । एवअसच्चामोसमणप्पओगेणवि । इम असत्या मृषामनप्रयोगसघाते पणि छ बोल कहवा । जइवइप्पओगपरिणए । जो वचनप्रयोग परिणतछे । किंसच्चवइप्पओगपरिणए । तो स्यु सत्यवचन प्रयोग परिणत हुवे १ । मोसवइप्पओगपरिणए । मृषा वचनप्रयोग परिणतहुवे । एवजहामणप्पओगपरिणए । इम जिम मनप्रयोग परिणतनो आलावो कह्यो । तहावइप्पओगपरिणएवि ।

॥ टीका ॥

तत्तथा ॥ उरालियमिस्सासरीरकायपओगपरिणएत्ति ॥ औदारिक मुत्पत्तिकाले असपूर्ण सन् मिश्रं कार्म्मणेनेति, औदारिकमिश्र तदेवौ दारिक मिश्रक तल्लक्षण शरीर मौदारिकमिश्रकशरीर तदेव काय स्तस्य य प्रयोग औदारिकमिश्रकशरीरस्य वा; य कायप्रयोग स औदारिकमिश्रकश रीरकायप्रयोग स्तेन परिणत यत्त तथा, अय पुनरौदारिकमिश्रकशरीरकायप्रयोगो पर्याप्तकस्यैव वेदितव्यो, यत आह–जोएणकम्मएणं आहारेइअण तरजीवो । तेणपरमीसेण जावसरीरसनिप्फत्ती ॥ १ ॥ एवं ताव त्कार्मणे नौदारिकशरीरस्य मिश्रतोत्पत्ति माश्रित्य तस्य प्रधानत्वात्, यदा पुन

॥ मूल ॥

गपरिणएवि जाव असमारंभवइप्पओगपरिणएवा । जइ कायप्पओगपरिणए किंउरालियसरीरकायप्पओगपरिण ए उरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरि

अनुवाद

त । यदि कायप्रयोगपरिणत कि मौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत मौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत माहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत माहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणतं ?

॥ भाषा ॥

तिम वचनप्रयोग परिणतनो पणि आलावो कहवो । जावअसमारंभवइप्पओग परिणएवा जइकायप्पओगपरिणए किंओरालियसरीरकायप्पओगपरि णए । यावत् असमारम्भ वचनप्रयोगपरिणत सर्वकहवो, कायप्रयोग परिणत तो स्यू औदारिकशरीरछोज पुद्गलस्कन्धरूपपणें उपचीयमान पणाथी काय तेहना जे प्रयोग अथवा औदारिकशरीरनो जे कायप्रयोग ते पर्याप्ताने जाणवो तेणे जे परिणम्यां ते औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । औ रालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । औदारिक उत्पत्तिकालनेविषे असपूर्णथको कार्मणसघाते मिश्र ते औदारिकमिश्र कहिये ते लक्षण शरीर ते हीजकाय तेहनो जे प्रयोग अथवा औदारिकमिश्र शरीरनो जे कायप्रयोग तिणे जे परिणम्यो ते ए अपर्याप्ताने जाणवो आहच—जोएणकम्मएण आ हारेइ अणतरजीवो । तेणपरमीसेण जावसरीरसनिप्फत्ती ॥ १ ॥ इम पहिला ,कार्मण सघाते औदारिकशरीरनो मिश्रता उत्पत्तिआश्रयीने तेहना प्र धानपणाथको जिवारे वली औदारिकशरीरनो धणी वैक्रिय लब्धिसपन्न मनुष्य पचेद्रिय तिर्यच अथवा पर्याप्त बादरवाउकायिक वैक्रियशरीर प्रति

रौदारिकशरीरी वैक्रियलब्धिसम्पन्नो मनुष्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक पर्याप्तबादरवायुकायिकोवा, वैक्रियं करोति तदा दारिककाययोगएव वर्त्तमान प्रदेशा न्विक्षिप्य वैक्रियशरीरयोग्यान् पुद्गला नुपादाय याव द्वैक्रियशरीरपर्याप्त्या न पर्याप्ति गच्छति ताव द्वैक्रियं औदारिकशरीरस्य मिश्रता प्रारम्भकत्वेन तस्य प्रधानत्वा देव माहारकेणा प्यौदारिकशरीरस्य मिश्रता वेदितव्येति ॥ वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह वैक्रियशरीरकायप्रयोगो वैक्रियपर्याप्तकस्येति ॥ वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह वैक्रियमिश्रकशरीरकायप्रयोगो देवनारकेषु त्पद्यमानस्या पर्याप्तकस्य, मिश्रता चइह वैक्रियशरीरस्य कार्मणेनैव, लब्धिवैक्रियपरित्यागे त्वौदारिकप्रवेशाद्यया औदारिकोपादानाय प्रवृत्ते वैक्रियप्राधान्या दौदारिकेणापि वैक्रियस्य मिश्रतेति ॥ आहारगसरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह आरकशरीरकायप्रयोग आहारकशरीरनिर्वृत्तौ सत्या तदानी

णए आहारगसरीरकायप्पओगपरिणए आहारगमीसासरीरकायप्पओगपरिणए कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए

गो० । औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतया याव त्कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणतया । य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं एकेन्द्रियौदा

करे तिवारे औदारिक कायवोगने विषे वर्त्तमानथको प्रदेश विखेरी वैक्रियशरीरयोग्य पुद्गलग्रही, ज्यांलगे वैक्रियशरीर पर्याप्ति पर्यामा नथाय त्यांलग वैक्रियशरीर स्यू औदारिकनो मिश्रता जांणवो प्रारम्भपणें तेप्राधान्यपणा ते कारणथका इम आहारकशरीर स्यू पणि औदारिकनो मिश्रता कहवो। वेउव्वियसरीरकायप्पओगवेउव्वियमीसासरीर कायप्पओगपरिणए । इहां वैक्रियशरीर कायप्रयोग वैक्रियपर्याप्तकने हुवे २ तथा वैक्रियना मिश्रता पर्याप्ता देव नारको उत्पत्तिकालनेविषे अपर्याप्तावस्थाये ज्यांलगे वैक्रियशरीर पूरोपर्या हुवे त्यांलगे कार्मण स्यू वैक्रियनो मिश्रता कहवो तथा वैक्रिय मूकिवना वैक्रिय करी पछे औदारिक प्रवेशकरतो ज्यांलगे वैक्रिय सर्वथा छांड्यो नहुवे त्यांलगे औदारिकथी मिश्रता कहवो ४ । आहारकशरीरकाय आहारगमीसासरीरकाय । ए आहारकशरीर नीपजावीवाकोहुवे, तिवारे तेहज प्रधानपणको ५ जिवारे आहारक करिवना आहारकशरीर थई ने कार्यकरी वली औदारिकपणें तिवारे आहारकना प्रधानपणका ज्यांलगे आहारक सर्वथा छांड्यो न हुवे त्यांलगे औदारिक स्यू मिश्रता कहवो ६ ।

॥ टीका ॥

तस्यैव प्रधानत्वात् ॥ आहारगमीसासरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इहा हारकमिश्रकशरीरकायप्रयोग आहारकस्यौ दारिकेण मिश्रतायां साच आ हारकत्यागे नौदारिकग्रहणाभिमुखस्य एतदुक्तंभवति यदा हारकशरीरीभूत्वा कृतकार्यं पुन रप्यौदारिकं गृह्णाति तदा हारकस्य प्रधानत्वा दौ दारिकप्रवेशंप्रति व्यापारभावा दपरित्यजति याव त्सर्वथैवा हारकं ताव दौदारिकेण सह मिश्रतेति' ननु न तत्तेन सर्वथा मुक्तं पूर्वनिर्वर्त्तित त्ति ह्येव तत्कथ गृह्णाति ? सत्य तिष्ठति तत्तथा प्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइति गृह्णात्येवे त्युच्यतइति ॥ कम्मासरीरकायप्पओगपरिणएत्ति ॥ इह कार्मणशरीरकायप्रयोगो विग्रहे समुद्घातगतस्यच केवलिन स्तृतीयचतुर्थपञ्चमसमयेषु भवति उक्तंच–कार्मणशरीरयोगी चतुर्थके पञ्चमेतृतीयेचेति॥

॥ मूल ॥

? गोयमा ! उरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा जाव कम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा। जइ उरालियसरी रकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए एव जाव पंचिंदियउरालियजावपरिणए ? गोयमा ! एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा बेइंदिय जाव परिणएवा पंचिंदिय जाव परिण

अनुवाद

रिकशरीरकायप्रयोगपरिणत एवं याव त्पंचेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० ! एकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा द्वी

॥ भाषा ॥

कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणए। कार्मणशरीर विग्रहगते जो अणाहारीहुवे तो लगे तथा केवल समुद्घाते त्रीजे चौथ पचमे समयनेविषे हुवे ७। गोयमा ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा। हे गौतम। औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा। जावकम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा। यावत् कार्म णशरीर कायप्रयोग परिणत। जइओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए। जो औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत। किंएगिंदियओरालियसरीरकायप्प ओगपरिणए। तो स्यू एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत। एवजाव पंचिंदिय ओरालियसरीर जावपरिण०। इम यावत् पचेंद्रिय औदारि कशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएवा। हे गौतम। एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्र योग परिणत अथवा। बेइंदियजाव परिणएवा जाव पंचिंदिय जावपरिणएवा। बेइन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इम तेइन्द्री चौरिन्द्री

॥ टीका ॥

तत्र प्रज्ञापनाटीकानुसारेणौदारिकशरीरकायप्रयोगादीनां व्याख्याशतकटीकानुसारतः पुनर्मिश्रकायप्रयोगाणां मेवमौदारिकमिश्र औदारिकाद्वा परिपूर्णो मिश्र उच्यते, यथा गुडमिश्र दधि नगुडतया नापि दधितया व्यपदिश्यते' तदाद्भ्या मपरिपूर्णत्वा देव मौदारिकं मिश्र कार्म्मणेन नौदारिकतया नापि कार्म्मणतया व्यपदेष्टुं शक्य मपरिपूर्णत्वादिति तस्यौ दारिकमिश्रव्यपदेश , एव वैक्रियाहारकमिश्रावपीति, नवरं ॥ बायर वाउकाइयइत्यादि ॥ यथौ दारिकशरीरकायप्रयोगपरिणते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रतीत्यालापकोपीत स्तथौ दारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणते

॥ मूल ॥

एवा । जइ एगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए किं पुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा जाव वण रसइकाइयएगिंदियउरालियसरीरकायप्पओगपरिणए ? गोयमा ! पुढविकाइयएगिंदियजावप्पओगपरिणएवा जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजावपरिणएवा । जइपुढविकाइयएगिंदियउरालियसरीरजावपरिणए किंसुहु

॥ अनुवाद ॥

न्द्रिय (प्रकृति) याव त्पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । यद्येकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं पृथ्वीकायिकैकेन्द्रिय (प्रकृति) याव द्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० ! पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत याव द्व नस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । यदि पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं सूक्ष्मपृथ्वीकायिकै

॥ भाषा ॥

यावत् पंचेंद्री औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । जो एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परि णत । किंपुढविकाइयएगिंदियजावपरिणए । तो क्यूं पृथिवी काय एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इस अपकाय तेऊकाय वाऊकाय । जा व वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । यावत् वनस्पतीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुढविकाइयएगिंदियपओग जाव परिणएवा । हे गौतम । पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जावणस्सइकाइय एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए । यावत् वनस्पतीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइपुढविकाइयएगिंदियओरा

॥ मूल ॥

मपुढविकाइय जाव परिणए वादरपुढविकाइयएगिंदियजावपरिणए ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा वादरपुढविकाइय जाव परिणएवा । जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए किंपज्जत्त सुहुमपुढविकाइयजावपरिणए अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयजावपरिणए ? गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणएवा अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणएवा एवं वादरावि एवं जाववणस्सइका

अनुवाद

केंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत वादरपृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । सूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत वादरपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । यदिसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत किं पर्याप्तकसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथ्वीकायिकैकेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत

॥ भाषा ॥

रिकशरीरजाव परिणए । जो पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किंसुहुमपुढविकाइय जाव परिणए । तो क्या सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा । वादरपुढविकाइय एगिंदिय जावपरिणए । वादर पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा । हे गौतम । सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । वादरपुढविकाइय जावपरिणएवा । वादर पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । जइसुहुमपुढविका य जाव परिणएवा । जो सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । किंपज्जत्तासुहुमपुढवि जावपरिणए । तो क्या पर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा । अपज्जत्तासुहुमपुढवी जाव परिणए । अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिक याव त्परिणत । अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयजावपरिणएवा । हे गौतम पर्याप्तक सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोग परिणत । अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइयजावपरिणएवा ।

इयाण चउक्कभेदो बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं दुयओ भेदो पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य । जइ पंचिंदियपओग लियकायप्पओगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणए मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा । जइ तिरिक्ख

[illegible]

॥ मूल ॥

जोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए थलचर खहयरजावपरिणए ? एवं चउक्कोभेदो जाव खहयराणं । जइमणुस्सपचिंदिय जाव परिणए किं सम्मुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ? गोयमा ! दोसुवि । जइगब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किंपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय जाव परिणए अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? गोयमा ! पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजाव

अनुवाद

यदि तिर्यग्योनिकपचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत कि जलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत' स्थलचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत' खचरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एव चतुष्कभेदो यावत्ख चरतिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत । यदिमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत, कि सम्मूर्च्छिममनुष्यपचेद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत, गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । द्वयोरपि । यदिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत , कि पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपचेद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत, अपर्याप्त

॥ भाषा ॥

णजइमणुस्सपंचिंदिय जावपरिणए । तो स्यू जलचर तिर्यंचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा स्थलचर तिर्यंचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा खचर तिर्यंचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत ए तीनेईना समूर्च्छिम १ गर्भज २ पर्याप्त ३ अपर्याप्त ४ इम चारभेद कहवा यावत् खचर पचीलगे सर्व चारभेदकहवा, जो मनुष्य पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत । कि समुच्छिममणुस्सपंचिदियजावपरिणए । तो स्यू सम्मूर्च्छिम मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा । गब्भवक्कंतियमणूसजाव परिणए गो दोसुवि । गर्भज मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम । बेऊनेविषे पणि । जइगब्भवक्कंतिय मणुसजावपरिणए । जो गर्भजमनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इहा समूर्च्छिम मनुष्य न पूछ्यो जनाटे समूर्च्छिममनुष्य अ

॥ मूल ॥

परिणएवा अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजावपरिणएवा । जइ उरालियमीसासरीरकायप्पउगपरिणए किं एगिंदियउरालियमीसासरीरकायप्पउगपरिणए बेइंदियजावपरिणए जाव पचिंदियउरालियजावपरिणए ? गोयमा ! एगिंदियउरालियजावपरिणए एवं जहा उरालियसरीरकायप्पउगपरिणएणं आलावगोभणिउ तहा

॥ अनुवाद ॥

कगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपचेंद्रियौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौ० । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिक (प्रभृति) यावत्परिणत, अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिक (प्रभृति) यावत्परिणत । यद्यौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ' कि एकेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत, द्वीन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत याव त्पचेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौतम । एकेन्द्रियौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत एव यथौदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणते आलापको भणित स्तथौदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणते प्यालापकोभणितव्य ।

॥ भाषा ॥

पर्याप्ताहोजइ रे । किपज्जत्त गब्भवक्कतिय जाव परिणए अपज्जत्तगब्भवक्कतिय जाव परिणए । तो स्यू पर्या० गर्भजमनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा अप० गर्भजमनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पज्जत्तगब्भवक्कतिय जाव परिणएवा । हेगौतम । पर्या० गर्भजमनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत अथवा । अपज्जत्त गब्भवक्कतिय जाव परिणएवा । अप० गर्भजमनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत हिवे औदारिकमिश्रचिन्तवेछै—जइओरालियमीसासरीरकायपओगपरिणए । जो औदारिकमिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । कि एगिंदिय ओरालियमीसासरीरकायपओगपरिणए । तो स्यू एकेन्द्रिय औदारिकमिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । बेइंदियजावपरिणए । बेइन्द्री औदारिक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । जावपचिंदिय ओरालिय जाव परिणए । इम यावत् शब्दें तेरिंद्री चौरिंद्री पचेंद्री औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगिंदियओरालिय । हेगौतम । एकेंद्रियं औदारिकशरीर कायप्रयोगपरिणत । एवजहाओरालियसरीरकाय पओगपरिणएण आलावगो भणिओ । इम जिम औदारिकशरीर कायप्रयोगे परिणत आलावो कह्यो । तहाओरालियमीसासरीरकाय

उरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणएवि आलावगोभाणियव्वो । नवरं वादरवाउकाइयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय गब्भवक्कंतियमणुस्साणय एएसिंपज्जत्तापज्जत्तगाण सेसाण अपज्जत्तगाण। जइवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरजावपरिणए पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ? गो० ! एगिंदियजावपरिणएवा पंचिंदियजावपरिणएवा । जइ एगिंदियजावपरिणए किंवाउकाइयएगिंदिय जाव

नवर वादरवायुकायिकगर्भव्युत्क्रान्तिकपचेंद्रियतिर्यग्योनिकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणाचैतेषा पर्याप्तापर्याप्तकाना शेषाणामपर्याप्तकाणाम् । यदि वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत कि मेकेंद्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत याव त्पचेंद्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौतम । एकेंद्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा याव त्पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा । य द्येकेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत कि वा

एयप्पओगपरिणएणावआलावगोभाणियव्वो । तिम औदारिक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणतनो पणि आलावो कहवो । णवरंवादरवाउकाइयगब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय गब्भवक्कंतियमणूसाणय एएसिपज्जत्ता अपज्जत्तगाण सेसाण अपज्जत्तगाण । एतलोविशेष तिहा सगलाइ सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिका पर्या० अप० विशेषण कह्या, इहा तो वादरवाउकायिक गर्भजपचेंद्रियतिर्यं च मनुष्य पर्या० अप० विशेषणे कहवा थाकता तो अप० विशेषणे ज कहवा जे कारणे वादरवाउकायादिकने पर्या० अवस्थाने विषे वैक्रिय आरम्भणथको औदारिकमिश्रशरोर कायप्रयोग पामीये शेषने अप० अवस्थानेविषे छै। जइवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए। जो वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। किंएगिंदिय वेउव्वियसरोर जाव परिणए। तो स्यूं एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत अथवा। पंचिंदियवेउव्वियसरीरजावपरिणए । पचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत इहा विकलेंद्री तीन न कहवा तेहने वैक्रियशरीर नथी तेमाटे । गोयमा एगिंदियजावपरिणएवा पंचिंदिय जावपरिणए। हेगौतम। एकेंद्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत पचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत । जइएगिंदिय जाव परिणएवा।जो एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत।

॥ टीका ॥

पि वाच्यो नवरं मय विशेष स्तत्र सर्वेपि सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय पर्याप्तापर्याप्तविशेषणा अधीता इतरतु बादरवायुकायिका गर्भजपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याश्च पर्याप्तकाऽपर्याप्तकविशेषणा अध्येतव्या, शेषा स्त्वपर्याप्तकविशेषणाएव यतो बादरवायुकायिकादीना पर्याप्तकावस्थायामपि वैक्रियारम्भणत औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगो लभ्यते शेषाणा पुनरपर्याप्तकावस्थायामेवेति ॥ जहाओगाहणसंठाणेत्ति ॥ प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे तत्र चैव मिदं सूत्र–जइ वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए किंसुहुमवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए बायरवाउकाइयएगिंदियजा

॥ मूल ॥

परिणए अहवा अवाउकाइयएगिंदियजावपरिणए? गोयमा! वाउकाइयएगिंदियजावपरिणए नोअवाउकाइयजावपरिणए एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणासंठाणे वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इहभाणियव्वं जाव

॥ अनुवाद ॥

युकायिकैकेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) यावत्परिणत अथवा अवायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत? गौतम। वायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत नो अवायुकायिक (प्रभृति) यावत्परिणत। एवमेतेनाभिलापेन यथा अवगाहनासंस्थाने वैक्रियशरीर भणित तथेहापिभणितव्यम्। यावत्पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणतवा अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध (प्रभृति) यावत्परिणतवा। य

॥ भाषा ॥

किंवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणएवा। तो स्यूं वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत। अहवा अवाउकाइयएगिंदिय जावपरिणए। अथवा वाउकाय नही ते अवाउकायक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा वाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए। हे गौतम! वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। णोअवाउकाइय जाव परिणए। नही अवाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। एव एएणं अभिलावेण जहाओगाहणासठाणे वेउव्वियसरीरभणिय तहा इहविभाणियव्व। इम इणे आलावेकरी जिम पन्नवणाने इकवीसमे पदे अवगाहना संस्थान वैक्रियशरीर कह्यु तिम इहा पणिजाणवो ते इम, जइवाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए, किंसुहुमवाउकाइयएगिंदिय जावपरिणएवा, बादरवाउकाइयएगिंदिय जाव परिणए, गोयमा णो सुहुम जावपरिणए इत्यादिक। जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीय वेमाणि

॥ मूल ॥

पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणएवा अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयजावपरिणए। जइ वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किंएगिंदियमीसासरीरजाव परिणए जाव पंचिंदियमीसासरीरजावपरिणए एवजहावेउव्वियं तहा वेउव्वियमीसगंपि, णवरं देवनेरइयाण अपज्जत्तगाण सेसाण पज्जत्तगाणं तहेव जाव नोपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए

अनुवाद

दि वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत, कि सैकेन्द्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत याव त्पञ्चेन्द्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एव यथा वैक्रिय तथा वेक्रियमिश्रशरीरमपि नवर देवनैरयिकाणा मपर्याप्तकाना शेषाणा पर्याप्तकाना तथैव याव न्नोपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावत्परिणत, अपर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत । यदि आहारकशरीर

॥ भाषा ॥

यदेवपचिंद्रियवेउव्विसरीरयकायप्पओगपरिणए। यावत् पर्या० सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पचेंद्रिय वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत । अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धजावपरिणएवा। अप० सर्वार्थसिद्ध यावत् प्रयोगपरिणत । जइवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए। जो वैक्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । किएगिंदियमीसासरीरजावपरिणए। तो स्यु एकेंद्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। पंचिंदियमीसासरीर जावपरिणए। पचेंद्री मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत। एवजहावेउव्विय तहावेउव्वियमीसगंपि । इम जिम वैक्रियशरीरनो अधिकार कह्यो तिम वैक्रिय मिश्रशरीरनो पणि अधिकार कहवो। णवरदेवणेरइयाणअपज्जत्तगाण सेसाणपज्जत्तगाण २। एतलोविशेष देव नारकने अपर्याप्तावस्थाये वैक्रियमिश्रहुवे बीजाने पर्याप्तावस्थाये वैक्रियमिश्र हुवे।.तहेवजावणोपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो जाव परिणए। तिमज यावत् नहीं पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् वैक्रियशरीर कायप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए। अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिकदेव पचेंद्रिय वैक्रिय मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत । जइआहारगसरीर कायप्पओगपरिणए । जो आहारकशरीर कायप्रयोगपरि

॥ टीका ॥ वपरिणए ? गोयमा ! नोसुहुम जावपरिणए बायर जाव परिणए इत्यादीति ॥ एवजहाउगाहणसठाणेत्ति ॥ तत्रैव मिद सूत्र-गोयमा ! नोअम

॥ मूल ॥ अपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पउगपरिणए। जइ आहारगसरीर कायप्पउगपरिणए किंमणुस्साहारगसरीरकायप्पउगपरिणए अमणुस्साहारगजावपरिणए एवजहा उगाहण सठाणे जावइ ढ्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिठिपज्जत्तासखेज्जवासाउयजावपरिणए नोअणढ्ढिपत्त जाव परिणए जइआहारगमीसासरीरकायप्पउगपरि० किंमणुस्सआहारगमीसासरीरजावपरि० एवंजहा आहारगंतहेवमी

अनुवाद कायप्रयोगपरिणत किं मनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत अमनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एवं यथा अवगाहनासस्थाने यावत् ऋ द्धिप्राप्तप्रमत्तसयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसख्येयवर्षायुष (प्रभृति) यावत्परिणत । नोअनृद्धिप्राप्तप्रमत्तसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसख्येयवर्षायुष (प्रभृति) यावत्प रिणत । यद्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत किं मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत ? एवं यथा आहारक तथैव मिश्रकमपि निरवशेष

॥ भाषा ॥ मनुष्यकी भ णत । किंमणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए। तो स्‍ू मनुष्य आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत । अमणुस्साहारग जाव परिणए। नेरा अमनुष्य ते आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत। एवजहाओगाहणसठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठीपज्जत्तसखेज्जवासाउय जावपरिण ए। इम जिम पन्नवणाने इक्वीसमेपदे तिहा सूत्र गोयमा णोअमणुस्साहारगसरीरकायप्पओगपरिणए, इत्यादिक यावत् ऋद्धि प्राप्त सयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक सख्यात वर्षायुष यावत् आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत पणि । णोअणिड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठीपज्जत्तसखेज्जवासाउय जाव परिण ए । नहीं ऋद्धि पाम्याविना प्रमत्त सयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त सख्यात वर्षायुष यावत् आहारकशरीर प्रयोगपरिणत । जइआहारगमीसासरीरकायप्प ओगपरिणए किंमणुस्साहारगमीसासरीरकायप्पओगपरिणए । जो आहारक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे । तो स्‍ू मनुष्यआहारक मिश्र शरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे । एवजहाआहारगतहेवमीसगपिनिरवसेस भाणियव्व । इम जिम आहारकशरीर कायप्रयोगपरिणत सबंध कह्यो तिम

॥ टीका ॥

गुस्साहारगसरीरकायप्पउगपरिणए मणुस्साहारगसरीरकायप्पउगपरिणए इत्यादि ॥ एवंजहाउगाहणसंठाणेकम्मगस्सभेउत्ति ॥ सचाय भेद –बेंदि

॥ मूल ॥

सगंपि निरवसेसं भाणियव्वं। जइकम्मासरीरकायप्पउगप० किएगिंदियकम्मासरीरकायप्पउगप० जाव पंचिदियकम्मासरीरजावपरिणए ? गो०! एगिंदियकम्मासरीर जाव परिणए एवं जहा उगाहणसंठाणेकम्मगस्स भेदो तहेव इहवि जावपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरकायप्पउगपरिणएवा अपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइयजावपरिणएवा। जइ मीसापरिणए किंमणमीसापरिणए वयमीसापरिण

अनुवाद

भणितव्य। यदि कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत कि मेकेंद्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत याव त्पञ्चेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत ? गौतम। एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत एव यथा वगाहनासंस्थाने कार्मणस्य भेद स्तथैवेहापि याव त्पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावत्परिणतवा ॥ ७ ॥ यदि मिश्रपरिणत कि मनोमिश्रपरिणत वचोमिश्रपरिणत कायमिश्रपरिणत ? गौतम। मनोमिश्रप

॥ भाषा ॥

त्तीज आहारक मिश्रशरीर कायप्रयोगपरिणत पणि समस्त कहवो। जदिकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए। जो कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत हुवे। किंएगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए। तो स्यू एकेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत इम बेइंद्री तेरिंद्री चउरिंद्री। जाव पंचिंदियकम्मासरीर जावपरिणए। यावत् पचेंद्री कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणए। हेगौतम। एकेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत। एवजहाओगाहणसठाणेकम्मगस्सभेदोतहेवइहवि। इम जिम अवगाहना सस्थाननेविषे कार्मणनो भेदकह्यो तिमज इहा पणिकहवो ते इम। बेइंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा। एव तेइन्द्री चउरिन्द्री इत्यादि। जाव पज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव पंचिंदियकम्मासरीरकायप्पओगपरिणएवा। यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव यावत् पचेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत। अपज्जत्तासव्वठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणएवा। अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक वैमानिकदेव पचेंद्रिय कार्मणशरीर कायप्रयोगपरिणत। ज

॥ मूल ॥

कायमीसापरिणए ? गोयमा ! मणमीसापरिणएवा वयमीसापरिणएवा कायमीसापरिणएवा । जइ मणमी
सापरिणएवा किंसच्चमणमीसापरिणएवा मोसमणमीसापरिणएवा जहा पओगपरिणए तहा मीसापरिणएवि
भाणियव्वं निरवसेसं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरमीसापरिणएवा
अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणएवा । जइ वीससापरिणए किंवण्णपरिणए

॥ अनुवाद ॥

रिणतवा वचोमिश्रपरिणतवा कायमिश्रपरिणतवा । यदि मनोमिश्रपरिणत किं सत्यमनोमिश्रपरिणत मृषामनोमिश्रपरिणत ? यथा प्रयोगपरि
णत तथा मिश्रपरिणतमपि भणितव्य निरवशेष' यावत् पर्याप्तकसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावद्देवपञ्चेन्द्रियकार्मणशरीर
मिश्रपरिणत' अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (प्रभृति) यावत्कार्मणमिश्रपरिणत । यदि विस्रसापरिणत किं वर्णपरिणत गंधपरिणत र

॥ भावार्थ ॥

इमीसापरिणए । जो मिश्रशरीर परिणत । किमणमीसापरिणए । तो स्यूं मनोमिश्र परिणत । वइमीसापरिणए कायमीसा प० । वचनमिश्र परिणत
कायमिश्र परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणमीसा परिणएवा वइमीसा परिणएवा कायमीसा परिणएवा । हे गौतम । मनोमिश्रपरिणत अथवा वच
नमिश्र परिणत कायमिश्र परिणत । जइमणमीसापरिणएवा । जो मनोमिश्र परिणत । किसच्चमणमीसापरिणएवा । तो स्यूं सत्य मनोमिश्र परिणत
अथवा । मोसमणमीसापरिणएवा । मिथ्या मनोमिश्र परिणत इत्यादि । जहा पओगपरिणए तहामीसापरिणएविभाणियव्वं । जिम प्रयोगपरिणत
नो अधिकारकह्यो तिम मिश्रपरिणतनो पणि अधिकार कहवो । णिरवसेसं । समस्त कहवो । जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय । यावत् पर्याप्त
सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक । जाव देव पंचिंदियकम्मासरीरमीसापरिणएवा । यावत् देव पंचेंद्रिय कार्मणशरीर अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्ध मिश्रपरिणत ।
अणुत्तरो जावकम्मामीसापरिणएवा । अपर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक यावत् कार्मणशरीर मिश्रपरिणत । जइवीससापरिणए । जो विस्रसा प
रिणत । किंवण्णप० गंध प० रस प० फास प० संठाण परिणए । तो स्यूं वर्णपरिणतहुवे गन्ध परिणतहुवे रस परिणत स्पर्शपरिणत संस्थानपरिणत हु

॥ मूल ॥

गंधपरिणए रसपरिणए फासपरिणए संठाणपरिणए ? गोयमा ! वरणपरिणएवा जाव संठाणपरिणएवा । जइ वरणपरिणए किं कालवरणपरिणए नीलवरण जाव सुक्किल्लवरणपरिणए ? गोयमा ! कालवरणपरिणएवा जाव सुक्किल्लवरणपरिणएवा । जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए दुब्भिगंधपरिणए ? गोयमा ! सुब्भिगंधप रिणएवा, दुब्भिगधपरिणएवा । जइ रसपरिणए कितित्तरसपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! तित्तरसपरिणए जाव

अनुवाद

सपरिणात स्पर्शपरिणात संस्थानपरिणात ? गौतम । वर्णपरिणात याव तसंस्थानपरिणात । यदि वर्णपरिणात कि कालवर्णपरिणात याव च्छुक्ल वर्णपरिणात ? गौतम । कालवर्णपरिणातवा यावच्छुक्लवर्णपरिणात । यदि गधपरिणात किसुरभिगधपरिणात दुरभिगधपरिणात ? गौतम ।वा सुरभिगधपरिणातवा दुरभिगधपरिणातवा । यदि रसपरिणात कि तिक्तरसपरिणात (इत्यादि) पृच्छा ? गौतम । तिक्तरसपरिणातवा यावन्म धुररसपरिणातवा । यदि स्पर्शपरिणात कि कर्कशस्पर्शपरिणात याव द्रूक्षस्पर्शपरिणात ? गौतम । कर्कशस्पर्शपरिणातवा यावद्रूक्षस्पर्शपरिणातवा ।

॥ भाषा ॥

तिप्रश्न उत्तर । गोयमा वरणपरिणएवा । हेगौतम । वर्णपरिणतहुवे । जावसठाणपरिणए । यावत् संस्थानपरिणत । जइवरण प० किंकालवरण प० नीलप० जाव सुक्किल्लवरण परिणएवा । जो वर्ण परिणत स्यू कालवर्ण परिणत नीलवर्ण परिणत यावत् शुक्लवर्ण परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कालवरणपरिण एवा । हेगौतम । कालवर्ण परिणत । जावसुक्किल्लवरणपरिणएवा । यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । जइगधपरिणए । जो गन्ध परिणतहुवे । किंसुब्भिगध परिणए । तो स्यू सुरभिगन्ध परिणत हुवे । दुब्भिगधपरिणएवा । अथवा दुरभिगन्ध परिणतहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुब्भिगधपरिणएवा । हेगौत म । सुरभिगन्ध परिणत । दुब्भिगध परिणएवा । दुरभिगध परिणत हुवे । जइरस परिणए । जो रस परिणतहुवे । कि तित्तरसपरिणए पुच्छा । तो स्यू तिक्तरस परिणत इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा तित्तरसपरिणएवा । हेगौतम । तिक्तरसपरिणत । जावमहुररसपरिणएवा । यावत् मधुररस परि णत । जइफासपरिणए । जो स्पर्श परिणत । किंकक्खडफासपरिणए । तो स्यू कर्कशस्पर्श परिणत । जावलुक्खफासपरिणए । यावत् रूक्षस्पर्श परिणत

॥ टीका ॥

यकस्मात्शरीरकायप्रयोगपरिणएवा एवं तेइंदियचउरिंदियइत्यादिरिति, अथ द्रव्यद्वयं चिन्तयन्नाह ॥ दोभंतेइत्यादि ॥ इह प्रयोगपरिणतादिपद त्रये एकत्वे त्रयो विकल्पा द्विकयोगेपि त्रयएवे त्येव षट्' एवं मन प्रयोगादित्रयेपि सत्यमन प्रयोगपरिणतादीनितु चत्वारि पदानि तेषु कत्वे

॥ मूल ॥

मउररसपरिणएवा । जइफासपरिणए किंकक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ? गोयमा ! कक्खड फासपरिणएवा जाव लुक्खफासपरिणएवा । जइ संठाणपरिणए पुच्छा ? गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिण ए जाव आययसंठाणपरिणएवा । दो भंते ! दव्वा किंपओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया ? गो यमा ! पओगपरिणयावा मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा, अहवा एगेपओगपरिणए एगेमीसापरिणए

अनुवाद

यदि संस्थानपरिणत (इत्यादि) पृच्छा ? गौतम ! परिमंडलसंस्थानपरिणतवा यावत् आयतसंस्थानपरिणतवा । द्वे भदंत ! द्रव्ये किं प्रयोगपरि णते मिश्रपरिणते विस्रसापरिणते ? गौतम ! प्रयोगपरिणतेवा मिश्रपरिणतेवा विस्रसापरिणतेवा' अथवैकं प्रयोगपरिणतं एकं मिश्रपरि

॥ भाषा ॥

इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कक्खडफासपरिणएवा । हेगौतम । कर्कश स्पर्श परिणत । जावलुक्खफास परिणएवा । यावत् रूक्षस्पर्श परिणत । जइसंठाण परिणएपुच्छा । संस्थान परिणतनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा परिमंडलसंठाणपरिणएवा जाव आयतसंठाण । हे गौतम । परिमंडल संस्थान परि णत यावत् आयतसंस्थान परिणत एक द्रव्य आश्रो अधिकारकह्यो दोभंते इत्यादि, इहां प्रयोगपरिणतादिपद तीननेविषै एक पणे तीन विकल्प हु वे, द्विकसंयोगनेविषै पणि तीन होय विकल्पहुवे, इम मनप्रयोगादि पद तीननेविषै पणि छ भागाहुवे, सत्यमन प्रयोगपरिणतादिक चारिपद तेहने एकत्व विकल्प द्विकसंयोगनेविषै तो छै इम सगलाई दश, हिवे दोयद्रव्यचिंतवेछै । दोभंतेदव्वाकिंपओगपरिणया । दोयहे भगवन् द्रव्य स्यूं प्रयोगपरिणत, मोसापरिणया वीससापरिणया । मिश्र परिणत विस्रसा परिणत इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पओगपरिणयावा । हेगौतम प्रयोगपरिणत १ । मीसाप रिणयावा । मिश्रपरिणत २ । वीससापरिणयावा । अथवा विस्रसा परिणत ३ । अहवाएगेपओगपरिणए । अथवा एक प्रयोगपरिणत । एगेमीसापरिण

॥ टीका ॥ चत्वार, द्विकयोगेतु षट्, एव सर्वेपि दश, आरम्भसत्यमनःप्रयोगपरिणतादीनिच षट्पदानि तेष्वेकत्वे षट्, द्विकयोगेतु पञ्चदश, सर्वेप्येकविंशति,

॥ मूल ॥ अहवा एगेपओगपरिणए एगेवीससापरिणए अहवा एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए। जइ पओगपरिणया किंमणप्पओगपरिणया वयप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणया ? गोयमा ! मणप्पओगपरिणयावा वयप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणयावा। अहवा एगेमणप्पओगपरिणए एगेवयप्पओगपरिणए, अहवा एगेमण प्पओगपरिणए एगेकायप्पओगपरिणए, अहवा एगेवयप्पओगपरिणए एगेकायप्पओगपरिणए। जइ मणप्पओग

अनुवाद णत, अथवैक प्रयोगपरिणत मेक विस्रसापरिणत, अथवैक मिश्रपरिणत मेक विस्रसापरिणत। यदि प्रयोगपरिणते किं मन प्रयोगपरिणते वच प्रयोगपरिणते कायप्रयोगपरिणते ? गौतम ! मन प्रयोगपरिणतेवा वच प्रयोगपरिणतेवा कायप्रयोगपरिणतेवा। अथवैक मन प्रयोगपरिणत मेक वच प्रयोगपरिणत' अथवैक मन प्रयोगपरिणत मेक कायप्रयोगपरिणत, अथवैक वच प्रयोगपरिणत मेक कायप्रयोगपरिणत। यदि म

॥ भाषा ॥ ए। मिश्रपरिणत ४। अहवेगेपओगपरिणए। अथवा एक प्रयोगपरिणत। एगेवीससापरिणए। एक विस्रसापरिणत ५। अहवेगेमीसापरिणए। अथवा एक मिश्रपरिणत। एगेवीससा परिणए। एक विस्रसा परिणत ६। जइपओगपरिणया। जो प्रयोगपरिणत। किंमणप्पओगपरिणया वइप्पओगपरिणया। स्यूं मनप्रयोगपरिणत वचनप्रयोगपरिणत। कायप्पओगपरिणया। कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा मणप्पओगपरिणयावा। हेगौतम मनप्रयोग परिणत १। वइप्पओगपरिणयावा। वचन प्रयोगपरिणत २। कायप्पओगपरिणयावा। कायप्रयोगपरिणत ३। अहवेगेमणप्पओगपरिणए। अथवा एक मनप्रयोगपरिणत। एगेवइप्पओगपरिणए ४। एकवचन प्रयोगपरिणत। अहवेगेमणप्पओगपरिणए। अथवा एकमनप्रयोग परिणत। एगेकायप्पओगपरिणए ५। एक कायप्रयोग परिणत। अहवेगेवइप्पओगपरिणए। अथवा एकवचन प्रयोग परिणत। एगेकायप्पओगपरिणए ६। एक कायप्रयोग परिणत। जइमणप्पओगपरिणया। जो मनप्रयोगपरिणत। किंसच्चमणप्पओगपरिणया। तो स्यूं सत्यमनप्रयोगपरिणत। असच्चमणप्प

सूत्रेच अहवेगेआरज्जसच्चमणप्पउत्तगपरिणएत्यादि नेह द्विकयोगे प्रथमएव भङ्गको दर्शित शेषा स्तदन्यपदसम्भवा श्चातिदेशेन पुन दर्शयतोक्त एवए एगागमएगामित्यादि, एव मेतेन गमेना रम्भसत्यमन प्रयोगादिपदप्रदर्शितेन द्विकसयोगेन नेतव्य समस्त द्रव्यद्वयसूत्र द्विकसयोगस्य चैकत्वविकल्पा

परिणया किं सच्चमणप्पउत्तगपरिणया किं असच्चमणप्पउत्तगपरिणया किं सच्चमोसमणप्पउत्तगपरिणया किं अ सच्चामोसमणप्पउत्तगपरिणया ? गोयमा ! सच्चमणप्पउत्तगपरिणयावा जाव असच्चामोसमणप्पउत्तगपरिणयावा अहवा एगेसच्चमणप्पउत्तगपरिणए एगेमोसमणप्पउत्तगपरिणए , अहवा एगेसच्चमणप्पउत्तगपरिणए एगेसच्चा मोसमणप्पउत्तगपरिणए , अहवेगेसच्चमणप्पउत्तगपरिणए एगेअसच्चामोसमणप्पउत्तगपरिणए, अहवेगेमो

न प्रयोगपरिणते कि सत्यमन प्रयोगपरिणते असत्यमन प्रयोगपरिणते सत्यमृपामन प्रयोगपरिणते असत्यमृपामन.प्रयोगपरिणते ? गौतम । स त्यमन.प्रयोगपरिणतेवा यावदसत्यमृपामन प्रयोगपरिणते । अथवैक सत्यमन प्रयोगपरिणत मेकमृपामन प्रयोगपरिणत, अथवैक सत्यमन प्र योगपरिणत मेक सत्यमृपामन प्रयोगपरिणत, अथवैक सत्यमन प्रयोगपरिणत मेक मसत्यमृपामन.प्रयोगपरिणत, अथवैक मृपामन प्रयोगप

श्रोगपरिणया । असत्य मनप्रयोगपरिणत । सच्चामोसमणप्पओगपरिणया । सत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत । असच्चामोसमणप्पओगपरिणया । अ सत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सच्चमणप्पओगपरिणया । हेगौतम सत्यमनप्रयोगपरिणत । जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिण या । यावत् असत्यामृषा मनप्रयोग परिणत । अहवेगेसच्चमणप्पओगपरिणए । अथवा एक सत्य मनप्रयोग परिणत । एगेमोसमणप्पओगपरिणए । ए क मृषामन प्रयोगपरिणत । अहवेगेसच्चमणप्पओगपरिणए । अथवा एक सत्यमन प्रयोगपरिणत । एगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए । एक सत्यामृषा मनप्रयोगपरिणत । अहवेगेसच्चमणप्पओगपरिणए । अथवा एक सत्यमन प्रयोगपरिणत । एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए । एक असत्यामृषा मनप्र योगपरिणत । अहवेगेमोसमणप्पओगपरिणए । अथवा एक मृषामन प्रयोगपरिणत । एगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए । एक सत्यामृषामन प्रयोगपरि

॥ टीका ॥

भिधानपूर्वकत्वा देकत्वैविकल्पै श्चेतिद्वयं, तत्रच यत्रारम्भसत्यमन प्रयोगादिपदसमूहे यावन्तो द्विकसंयोगा उत्तिष्ठन्ते सर्वे ते तत्र भणितव्या, स्तत्र

॥ मूल ॥

समणप्पओगपरिणए एगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवेगेमोसमणप्पओगपरिणए एगेअसच्चामोसमण प्पओगपरिणए, अहवेगेसच्चमोसमणप्पओगपरिणए एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए ॥ १० ॥ जइ सच्चम णप्पओगपरिणया किंआरंभसच्चमणप्पओगपरिणया जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणया ? गोयमा ! आ रंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा, अहवेगेआरंभसच्चमणप्पओगपरिणए

अनुवाद

रिणत मेक सत्यमृपामन प्रयोगपरिणत, अथवैक मृपामन प्रयोगपरिणत मेकमसत्यमृपामन प्रयोगपरिणत, अथवैक सत्यमृपामन प्रयोगपरि णत मेकमसत्यमृपामन प्रयोगपरिणत। यदि सत्यमन प्रयोगपरिणते किमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणते याव दसमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणते गौतम ! आरम्भसत्यमन प्रयोगपरिणतेवा याव दसमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणते, अथवैकमारम्भसत्यमन प्रयोगपरिणत मेक मनारम्भसत्यमन

॥ भाषा ॥

णत। अहवेगेमोसमणप्पओगपरिणए। अथवा एक मृपामन प्रयोगपरिणत। एगेअसच्चामोसमणप्पओगपरिणए।५ एक असत्यामृपामन प्रयोगपरिणत। अहवेगेसच्चामोसमणप्पओगपरिणए। अथवा एक सत्यामृपामन प्रयोगपरिणत। एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए ६। एक असत्यामृपामन प्रयोगप रिणत। जइसच्चमणप्पओगपरिणया। जो सत्यमन प्रयोगपरिणत। किंआरंभसच्चमणप्पओगपरिणया जाव असमारंभसच्चमण पओगपरिणया।स्यू आरम सत्यमनप्रयोगपरिणत १ असारभ सत्यमन प्रयोगपरिणत २ सारभसत्यमनप्रयोग परिणत ३ असारभसत्यमन प्रयोगपरिणत ४ समारम्भ सत्यमन प्रयो गपरिणत ५ असमारभ सत्यमन प्रयोगपरिणत ६। इहां आरम्भ सत्यमन प्रयोगपरिणतादिक छ पदछे, तेहनेविषे एकत्वे छ भंगा द्विकसंयोगनेविषे प नरे इम सगलाई एकवीसहुवे। गोयमा आरंभसच्चमणप्पओगपरिणयावा। हेगौतम आरम्भ सत्यमनप्रयोगपरिणत। जाव असमारंभसच्चमणप्पओगप रिणयावा। यावत् असमारम्भ सत्यमनप्रयोग परिणत। अहवेगेआरंभसच्चमणप्पओगपरिणए। अथवा एक आरम्भ सत्यमनप्रयोग परिणत। एगेअणार

॥ टीका ॥

त्ता सव्वट्ठसिद्ध जावपरिणयावा अहवेगे पज्जत्ता सव्वट्ठसिद्धजावपरिणए एगे अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धजावपरिणएत्ति ॥ एववीससापरिणयाविति ॥ एवमिति प्रयोगपरिणतद्रव्यद्वयवत्प्रत्येकविकल्पै द्विकसयोगैश्च विस्त्रसापरिणतेऽपि द्रव्ये वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानेषु पञ्चादिभेदेषु वाच्ये कियद्दूर यावदित्याह ॥ जावअहवेगेइत्यादि ॥ अयच पञ्चभेदसंस्थानस्य दशाना द्विकसयोगाना दशमइति. अथ द्रव्यत्रय चिन्तयन्नाह ॥ तिन्नीत्यादि ॥ इह प्रयोगपरिणतादिपदत्रये एकत्वे त्रयोविकल्पा द्विकसयोगेतु षट् कथ माद्यस्यैकत्वे शेषयो क्रमेण द्वित्वे द्वौ तथा द्यस्य द्वित्वे शेषयो क्रमेणै कत्वे न्यौद्वौ तथा द्वितीयस्यै कत्वे तृतीयस्यच द्वित्वे अन्य स्तथा द्वितीयस्य द्वित्वे तृतीयस्य चैकत्वे ऽन्य इत्येवषट्' त्रिकयोगे त्वेक एवेत्येवसर्वे

॥ मूल ॥

जइ वीससापरिणया कि वन्नपरिणया गंधपरिणया ? एववीससापरिणयावि जाव अहवा एगे चउरंससं ठाणपरिणए एगे आययसंठाणपरिणएवा। तिन्नि भंते ! दव्वा कि पओगपरिणया मीसापरिणया वीससाप रिणया ? गोयमा ! पओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया, अहवा एगे पओगपरिणए दोमीसाप रिणया १ अहवेगे पओगपरिणए दो वीससापरिणया २ अहवा दोपओगपरिणया एगे मीसापरिणए ३

अनुवाद

तथापि याव दथवैके समचतुरस्रसंस्थानपरिणत मेक मायतसंस्थानपरिणतवा । त्रीणि भदत । द्रव्याणि कि प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणता नि विस्त्रसापरिणतानि ? गोतम । प्रयोगपरिणतानिवा मिश्रपरिणतानिवा विस्त्रसापरिणतानिवा, अथवैक प्रयोगपरिणत द्वेमिश्रपरिणते

॥ भाषा ॥

आयवसंठाणपरिणएवा । गंध परिणत इम प्रयोगपरिणतद्रव्यदोइनीपरे प्रत्येकविकल्पे तथाद्विकसयोगेकरी विस्त्रसापरिणतपणि द्रव्यनेविषे वर्णगंधरस स्पर्शसंस्थानपचादिभेदनेविषे कहवा केतलागे इत्यादि यावत् अहवेगेइत्यादि । एह पचसंस्थानना द्विकसयोगी दशमेदद्वे तेहमाहि दशमो भागोछे, ह वेतीनद्रव्यचितवताकहेछे । तिन्निभंतेदव्वाकिपओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया गो० पओगपरिणयावा । तीन हेभगवन् द्रव्यस्यू प्रयोग प रिणतछे अथवा मिश्र परिणतछे अथवा विस्त्रसा परिणतछे ? गौतम हेगौतम प्रयोग परिणतछे १ । मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा । मिश्र प

॥ टीका ॥

दश, एवं मन प्रयोगादिपदत्रयेपि अतएवाह ॥ एवमेक्कासंयोगेइत्यादि ॥ सत्यमन प्रयोगादीनितु चत्वारि पदानी त्यत एकत्वे चत्वारो द्विकसयो

॥ मूल ॥

अहवा दोपओगपरिणया एगे वीससापरिणए ४ अहवा एगे मीसापरिणए दो वीससापरिणया ५ अहवा दो मीसापरिणया एगेवीससापरिए ६ अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए। जइ पओगपरिणया किं मणप्पओगपरिणया वयप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणया ? गोयमा ! मणप्पओग परिणयावि एवं एक्कासजोगो दुयसंजोगो तियसजोगोय भाणियव्वो। जइ मणप्पओगपरिणया किं सच्चम

॥ अनुवाद ॥

अथवैक प्रयोगपरिणत द्विविस्रसापरिणतं अथवा द्विप्रयोगपरिणते एकमिश्रप्रयोगपरिणत अथवा द्विप्रयोगपरिणते एक विस्रसाप्रयोगपरिणत अथवैक मिश्रपरिणत द्विविस्रसापरिणत अथवा द्विमिश्रपरिणते एक विस्रसापरिणत अथवैक प्रयोगपरिणत मेक मिश्रपरिणत मेक विस्रसा परिणत। यदि प्रयोगपरिणतानि किं मन प्रयोगपरिणतानि वच प्रयोगपरिणतानि कायप्रयोगपरिणतानि ? गौतम। मन प्रयोगपरिणतानि वा एव मेकसयोगो द्विकसयोग स्त्रिकसयोगो भणितव्य। यदि मन प्रयोगपरिणतानि किं सत्यमन प्रयोगपरिणतानि ४ ? गौतम ! सत्यमन

॥ भाषा ॥

रिणतछे विस्रसा परिणतछे ३। अहवेगेपओगपरिणए दोमीसापरिणया अहवेगेपओगपरिणए दोवीससापरिणया २। अथवा एक प्रयोग परिणत छे दोयमिश्र परिणत अथवा एक प्रयोग परिणत दोय विस्रसा परिणत। अहवादोपओगपरिणया एगेमीसापरिणए ३ अहवादोपओगपरिणया। अथवा दोयप्रयोग परिणत एक मिश्र परिणत अथवा दोयप्रयोग परिणत। एगेवीससापरिणए ४ अहवाएगेमीसापरिणए दोवीससापरिणया ५ अहवा दोमीसापरिणया। एक विस्रसा परिणत अथवा एक मिश्र परिणत दोयविस्रसा परिणत अथवा दोयमिश्र परिणत। एगेवीससापरिणया ६ अहवाएगेपओगपरिणए एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए ७। एक विस्रसा परिणत अथवा एक प्रयोग परिणत एक मिश्र परिणत एक विस्रसा परिणत। जइपओगपरिणया किमणपओगपरिणया। जो प्रयोगतपरिणत हुवे, सू, मनप्रयोगपरिणत। वइप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणया

॥ टीका ॥

गेन द्वादश कथ माद्यस्यै कत्वेन शेषाणा त्रयाणां क्रमेणा नेकत्वेन त्रयो लब्धा पुन रन्ये त्रय आद्यस्या नेकत्वेन शेषाणा क्रमेणैवै कत्वेन तथा द्वितीयस्यै कत्वेन शेषयो क्रमेणा नेकत्वेन द्वौ पुनर्द्वितीयस्या नेकत्वेन शेषयो क्रमेणैवै कत्वेन द्वावेव तृतीयचतुर्थयो रेकत्वानेकत्वाभ्या मेकः पुन र्विपर्यये णैक इत्येव द्वादश, त्रिकयोगतु चत्वार इत्येव सर्वेपि विंशतिरिति, सूत्रेतु काश्चि दुपदत्रयं शेषानतिदेशत आह ॥ एवदुयासंयोगोइत्यादि ॥ इत्यवितहेवत्ति ॥ अत्रापि द्रव्यत्रयाधिकारे तथैव वाच्य सूत्र यथा द्रव्यद्वयाधिकारे उक्त तत्रच मनोवाक्कायभेदतो य प्रयोगपरिणामो मिश्र

॥ मूल ॥

णप्पत्तुगपरिणया ? गो० ! सच्चमणप्पत्तुगपरिणया जाव असच्चामोसमणप्पत्तुगपरिणयावा अहवा एगेसच्चमणप्पत्तुगपरिणए दो मोसमणत्तुगप्पत्तुगपरिणया एवं दुयसंयोगो तियसंजोगोय भाणियव्वो एत्थवितहेव जाव अहवा एगे तंससंठाणपरिणए एगेचउरससंठाणपरिणए एगे आययसंठाणपरिणएवा । चत्तारि भंते ! दव्वावि प

अनुवाद

प्रयोगपरिणतानि याव दसत्यमृषामन प्रयोगपरिणतानि, अथवैक सत्यमन प्रयोगपरिणत द्वे मृषामन प्रयोगपरिणते एव द्विकसयोग त्रिकस

॥ भाषा ॥

वचनप्रयोग परिणत कायप्रयोग परिणत इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा मणप्पओगपरिणयावा एवएक्कासजोगो । हेगौतम । ए तीन प्रयोगपरिणत हुवे इत्यादि इम मनप्रयोगादिपद तीननेविषे पणि दशभागा कहवा एतलामाटेज कहेछे—एवंएक्कासजोगोदुयासजोगो तियासजोगो भाणियव्वो । इम तीनभागा एकसयोगे त्रभगा द्विकसयोगे एकभगो त्रिकसयोगे इम सर्वमिलि दशभागा हुवे ते जाणवा । जइमणप्पओगपरिणया किसच्चमणप्पओगपरिणया ४। जो मन प्रयोगपरिणत तो स्यूं हे भगवन् । सत्यमन प्रयोगपरिणत इत्यादि ४ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सच्चमणप्पओगपरिणयावा जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिणयावा । हेगौतम । सत्यमन प्रयोगादि चारपदछे एतलामाटे एकसयोगे चारिभागाहुवे तथा द्विकसयोगे चारभागाहुवे तेकिम पहिलाने एकवचने करी शेष तीनने अनुक्रमे अनेकपणेकरी भागा तीनहुवे ३ वली पहिलाने अनेकपणेकरी शेष तीननेविषे एकेक पणेकरी तीनभागाहुवे ६ तथा बीजापदने एकले शेषने अनुक्रमे अनेकपणेकरी दोयभागा हुवे एव ८ वली बीजापदने अनेकपणेकरी शेषपदने अनुक्रमे एकपणेकरी दोयभागा । अहवाएग

॥ टीका ॥

तापरिणामो वर्णादिभेदतश्च विस्त्रसापरिणाम उक्त सइहापि वाच्य इतिभाव किमन्त तत्सूत्र वाच्यमित्याह ॥ जावेत्यादि ॥ इहच परिमण्ड लादीनि पञ्चपदानि तेषु चैकत्वे पञ्चविकल्पा द्विकसंयोगेतु विंशति कथ माद्यस्यै कत्वे शेषाणा च क्रमेणा नेकत्वे तथा आद्यस्या नेकत्वे शे षाणा तुक्रमेणै वैकत्वे ऽष्टौ एव द्वितीयस्यै कत्वे ऽनेकत्वेच शेषत्रयस्य चानेकत्वे एकत्वेच षट तथा तृतीयस्यै कत्वे नेकत्वेच द्वयो आनेकत्वे एक त्वेच चत्वार तथा चतुर्थस्यै कत्वे ऽनेकत्वच पञ्चमस्यचा नेकत्वे एकत्वेच द्वा वित्येव सर्वेपि विंशति' त्रिकयोगेतु दश तत्रच अहवा एगे तसत ठाणेत्यादिना त्रिकयोगाना दशमो दर्शितइति, अथ द्रव्यचतुष्क माश्रित्याह ॥ चत्तारित्रतेइत्यादि ॥ इहच प्रयोगपरिणतादित्रये एकत्वे त्रयो द्वि

॥ मूल ॥

उगपरिणया ? गोयमा ! पउगपरिणयावा मीसापरिणयावा वीससापरिणयावा अहवा एगे पउगपरिणए ति

॥ अनुवाद ॥

योगश्च भणितव्य । अत्रापि तथैव याव देक त्र्यस्त्रसस्थानपरिणत एक चतुरस्त्रसंस्थानपरिणत एक मायतसस्थानपरिणत । चत्वारि भदन्त । द्रव्याणि कि प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विस्त्रसापरिणतानि ? गोतम । प्रयोगपरितानिवा मिश्रपरिणतानिवा विस्त्रसापरिणतानि

॥ भाषा ॥

मचननएपर्श्रोगपरिणए टोमासमणएपश्रोगपरिणया एवद्व्यासजोगोतियासजोगोव भाणियव्वो । एम तथा गोलापदने एकपणे चोथापदने अनेकपणे क रो एव ११ वलो गोलापदने अनेकपणे चोथापदने एकपणेकरो एक एव १२ इम बारेभागा द्विकसयोगे जाणवा, त्रिकसयोगे चार इम सगलाई वीस भागाहुवे ते सूत्रनेविषे केटलाक इहाइहने गोपले अतिदेशथी कहे है—एवं दुयासंजोगा इच्चाइ । एत्थंतितरोट्‌ठावएगेतसठाणपरिणए । इहापिण द्रव्य तीनना अधिकारनेविषे तिमहीज कहवो, सूत्र जिम द्रव्यणविचारनेविषे कह्यो तिम मन वचन कायानेविषे जे प्रयोगपरिणाम १ मिश्रपरिणाम २ वर्णादिभेदेंकरी विस्त्रसापरिणामकह्यो ते इहा पणिकहवो इतिभाव यावत् एक त्र्यसस्थानपरिणत । एगेचउरससठाणपरिणए । एक चउरससस्थान परिणत । एगे आयतसठाणपरिणए । एक आयतसस्थानपरिणत । चत्तारिभतेदव्वाकिपओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया । चार हेभगव न ! द्रव्य स्यू प्रयोगपरिणतहुवे मिश्रपरिणतहुवे विस्त्रसापरिणतहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पओगपरिणयावा मीसापरिणयावा २ वीससापरि ण

॥ टीका ॥
कयोगेतु नव कथ माद्यस्ये कत्वे द्वयोश्च क्रमेण त्रित्वे द्वौ तयो द्यस्य द्वित्वे द्वयोरपि क्रमेणैव द्वित्वे न्यौ द्वौ तथा द्यस्य त्रित्वे द्वयो श्च क्रमेणे क त्वे न्यो द्वौ तथा द्वितीयस्ये कत्वे ऽन्यस्य त्रित्वे तथा द्वयोरपि द्वित्वे तथा द्वितीयस्य त्रित्वे ऽन्यस्य चैकत्वे त्र्योन्दे इत्येव सर्वेपि नव' त्रययोगेतु

॥ मूल ॥
णावि मीसापरिणया अहवा एगे पओगपरिणए तिन्नि वीससापरिणया अहवा दोपओगपरिणया दोमीसा परिणया अहवा दो पओगपरिणया दोवीससापरिणया अहवा तिन्नि पओगपरिणया एगे मीसापरिणए अह वा तिन्नि पओगपरिणया एगे वीससापरिणए अहवा एगे मीसापरिणए तिन्नि वीससापरिणया अहवा दो

अनुवाद
वा अथवेक प्रयोगपरिणत त्रीणि मिश्रपरिणतानि अथवैक प्रयोगपरिणत त्रीणि विस्रसापरिणतानि अथवा द्वेप्रयोगपरिणते द्वे मिश्रपरिणते अथवा द्वे प्रयोगपरिणते द्वे विस्रसापरिणते अथवा त्रीणिप्रयोगपरिणतानि एक मिश्रपरिणत अथवा त्रीणिप्रयोगपरिणतानि एक विस्रसा परिणत अथवैक मिश्रपरिणत त्रीणिविस्रसापरिणतानि अथवा द्वे मिश्रपरिणते द्वे विस्रसापरिणते अथवा त्रीणि मिश्रपरिणतानि एक वि

॥ भाषा ॥
यावा । हेगोतम । द्रव्य प्रयोगपरिणतादि तीननेविषे एकपणे तीनभागा ते देखाडेछे—पओगपरिणयावा, चारेद्र प्रयोगपरिणतहुवे । अथवा चारेद्र मिश्रपरिणतहुवे अथवा चारेद्र विस्रसापरिणतहुवे द्विकसयोगे नवभागाहुवे, ते किम पहिलाने एकपणे शेष दोयने अनुक्रमे तीनपणे दोय भागाहुवे २ तथा पहिलाने द्विवे शेष बेने अनुक्रमे द्विवे बीजा दोयभागाहुवे ४ तथा पहिलाने तीनपणे शेष दोयपदने अनुक्रमे एकपणे दोय भागा हुवे ६ तथा बीजापदने एकपणे तीजापदने तीनपणे सातमोभागो तथा बीजापदने द्विवे तीजापदने पणिद्विवे आठमोभागो ८ तथा बीजा पदने तीनपणे तीजापदने एकपणे नवमोभागो ९ ए सर्व नवभागाहुवे ते देखाडेछे—प्रयोगपरिणतहुवे अथवा मिश्रपरिणतहुवे विस्रसापरिणत हुवे । अहवेगेपओगपरिणए तिन्निमीसापरिणया १ । अथवा एक प्रयोगपरिणतहुवे तीन मिश्रपरिणतहुवे १ । अहवेगेपओगपरिणए तिन्निवीससा परिणया २ । अथवा एक प्रयोगपरिणतहुवे तीन विस्रसापरिणतहुवे २ । अहवादोपओगपरिणया दोयमीसापरिणया ३ । अथवा दोय प्रयोगपरिणत

अयएव भवन्तीत्येवं सर्वेपि पञ्चदशेति, जई पत्नग परिणया किं मणपत्तगेत्यादिना चोक्तोपि द्रव्यचतुष्प्रकरणमुपलक्षित तच पूर्वोक्तानुसारेण संख्या

मीसापरिणया दोवीससापरिणया अहवा तिग्नि मीसापरिणया एगे वीससापरिणए अहवा एगेपत्तगपरिणए एगेमीसापरिणए दोवीससापरिणया अहवा एगे पत्तगपरिणए दोमीसापरिणया एगेवीससापरिणए अहवा

स्त्रसापरिणत अथवैक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरिणत द्वे विस्त्रसापरिणते अथवैक प्रयोगपरिणत द्वे मिश्रपरिणते एकं विस्रसापरिणत अथवा द्वेप्रयोगपरिणते एकं मिश्रपरिणत एक विस्त्रसापरिणत । यदि प्रयोगपरिणतानि किमन प्रयोगपरिणतानि वच प्रयोगपरिणतानि का

हुवे दोय मिश्रपरिणतहुवे ३ । अहवादोपओगपरिणया दोवीससापरिणया ४ । अथवा दोय प्रयोगपरिणत दोय विस्रसापरिणतहुवे ४ । अहवातिग्नि पओगपरिणए एगेमीसापरिणया ५ । अथवा तीन प्रयोगपरिणतहुवे एक मिश्रपरिणतहुवे ५ । अहवातिग्निपओगपरिणए एगेवीससापरिणया ६ । अथवा तीनप्रयोगपरिणतहुवे एक विस्रसापरिणतहुवे ६ । अहवेगेमीसापरिणया तिग्निवीससापरिणया ७ । अथवा एक मिश्रपरिणतहुवे तीन विस्रसा परिणतहुवे ७ । अहवादोमीसापरिणया दोवीससापरिणया ८ । अथवा दोयमिश्रपरिणतहुवे दोय विस्रसापरिणतहुवे ८ । अहवातिग्निमीसापरिणया एगे वीससापरिणया ९ । अथवा तीनमिश्र परिणतहुवे एक विस्रसा परिणतहुवे ९ । अहवाएगेपओगपरिणए । तीनसंयोगे तीनहीज भागाहुवे अथवा एक प्रयोगपरिणत हुवे । एगेमीसापरिणया दोवीससापरिणया १ । एकमिश्र परिणतहुवे दोय विस्रसापरिणतहुवे १ । अहवाएगेपओगपरिणए दोमी सापरिणया । अथवा एक प्रयोगपरिणत दो मिश्रपरिणतहुवे । एगेवीससापरिणया २ । एक विस्रसा परिणत हुवे २ । अहवादोपओगपरिणया । अथवा दोयप्रयोगपरिणतहुवे । एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए ३ । एकमिश्रपरिणतहुवे एक विस्रसापरिणतहुवे ३ एसर्व १५ भागाथया । जइप ओगपरिणया किंमणप्पओगपरिणया वइप्पओगपरिणया कायप्पओगपरिणया । इत्यादिकेकरी एक शेषद्रव्य भारनो प्रकरण कहवो, ते पूर्वोक्तानुसार सस्थान सूत्रपर्यन्त योगभगकां पेत समस्तकहनां जो प्रयोगपरिणत तो मनप्रयोगपरिणतहुवे अथवा वचनप्रयोगपरिणतहुवे अथवा कायप्रयोगपरि

॥ टीका ॥

नसूत्रान्त मुचितमङ्गकोपेत समस्त मध्येय मिति, अथ पञ्चादिद्रव्यप्रकरणा न्यतिदेशतो दर्शयन्नाह ॥ एवमएणमित्यादि ॥ एवचा त्रिलाप –पच ज्ञते। दव्वा किपज्जगपरिणया ? ३ गोयमा। पज्जगपरिणयावा ३ अहवा एगे पज्जगपरिणए चत्तारि मीसापरिणया इत्यादि रिह्च द्विकसयोगे विकल्पा द्वादश कथ ? एक चत्वारिच १ द्वे त्रीणिच २ त्रीणि द्वेच ३ चत्वा र्येकचे त्येव चत्वारो विकल्पा द्रव्यपञ्चक माश्रित्ये कत्र द्विकसयोगे पदत्रयस्य त्रयो द्विकसयोगा स्तेष चतुर्भि र्गुणिता द्वादशेति, त्रिकयोगेतु षट् कथ ? त्रीण्ये क मेक च १ एक त्री ण्येकच २ एकमेक त्रीणिच ३ द्वेद्वे एकच ४ द्वे एक द्वेच ५ एक द्वे द्वेचे त्येव

॥ मूल ॥

दोपज्जगपरिणया एगेमीसापरिणए एगेवीससापरिणए। जइ पज्जगपरिणए किं मणप्पज्जगपरिणए एवं एएण कमेणं पंच छ सत्त जाव दस सखेज्जासखेज्जाणंता दव्वा भाणियव्वा दुयासंजोएणं तियासंजोएणं जाव

अनुवाद

यप्रयोगपरिणतानि ? गव मेतेन क्रमेण पञ्च षट् याव द्दश सख्येया न्यसख्या न्यनन्तानि द्रव्याणि भणितव्यानि द्विकसयोगेन त्रिकसयोगेन

॥ भाषा ॥

णतहवे। हिवे पचादि द्रव्य प्रत अतिदेशथको कहेछे—एवएएणकमेण पच छ जाव दससखज्जाअणतादव्वाभाणियव्वादुयासजोएण। एएणमित्यादि समस्त अनुक्रमकरोने पाच छ सात यावत् दश सख्यात असंख्यात अनन्ताद्रव्य जाणवा, आलावा इमकहवा–पचभंतेदव्वाकिपओगपरिणया। ३ गोय मा पओगपरिणयावा ३ अहवाएगेपओगपरिणए चत्तारिमीसापरिणया इत्यादि, इहा द्विकसयोगे विकल्प वारेहुवे तेकिम, एगेपओगपरिणए च त्तारिमीसापरिणया १ दोपओगपरिणया तिण्णिमीसापरिणया २ तिण्णिपओगपरिणया दोमीसापरिणया ३ चत्तारिपओगपरिणया एगेमोसापरिणए ४ इम चार पओग अने मीससासंघाते भागाहुवे एम ८ भागा तथा चारभांगामीसा अने विस्रसासघाते एव १२ इम द्विकसयोगे बारेभागाथाय तथा तीन सयोगे छभागाथाय ते किम तीन एकएक १ एक तीन एक २ एक एक तीन ३ दोय दोय एक ४ दोय एक दोय ५ एक दोय दोय ६ इम छ भागाथाय जाव दससजोएणति, इहा यावत् शब्दथको चतुष्क चतुष्कादि सयोग कह्या। तिहा द्रव्यपचजनो अपेक्षावे सत्यमनपयोगादि चारपदनेविषे द्विक त्रिक चतुष्क सयोगहुवे तिहा द्विकसयोगे चउवीस ते किम, चारपदना छ द्विकसयोगा तिहा एकेकनेविषे पूर्वोक्तअनुक्रमे चार विकल्प छने चारगुणा

॥ टीका ॥

पट्॥ जाव दससंजोएणंति ॥ इह यावत्करणात् चतुष्कादिसंयोगा सूचिता स्तत्र च द्रव्यपञ्चकापेक्षया सत्यमन प्रयोगादिषु चतुर्षु पदेषु द्विकत्रिकचतुष्क संयोगा भवन्ति, तत्रच द्विकसंयोगा श्चतुर्विंशति, कथं? चतुर्णां स्पदाना षट् द्विकसंयोगा स्तत्र चैकैकस्मिन् पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो विकल्पा षणाच च तुर्भि गुणाने चतुर्विंशतिरिति, त्रिकसंयोगा अपि चतुर्विंशति कथं? चतुर्णां स्पदाना त्रिकसंयोगा श्चत्वार एकैकस्मिश्च पूर्वोक्तक्रमेण षड्विकल्पा श्चतुर्णां च षड्भि गुणाने चतुर्विंशति रिति, चतुष्कसंयोगेतु चत्वार कथं? आदौ द्वे शेषेषु चैकैक १ तथा द्वितीयस्थाने द्वे शेषेषु चैकैक २ तथा तृतीयस्थाने द्वे

॥ मूल ॥

दससंजोएणं बारससंजोएणं उवउंजिऊण जत्थजइयासंजोगा तसव्वे भाणियव्वा एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणिहामि तहा उवजुंजिऊण भाणियव्वा, जाव असंखेज्जा अणंता एव चेव नवरं, एकं पदं

॥ अनुवाद ॥

याव दशसंयोगेन द्वादशसंयोगेनो पयुज्य यत्र यावन्त संयोगा उत्तिष्ठन्ते ते सर्वे भणितव्या, एतेपुन यथा नवमशतके प्रवेशनके भणिष्यामि तथोपयुज्य भणितव्यानि याव दसंख्येया न्यनन्तानि। एवचैव नवर मेक पद मभ्यधिक यावदथवानन्तानि परिमण्डलसंस्थानानि याव दनन्ता

॥ भाषा ॥

थका छ चोक चउवीस थाय, त्रिकसंयोगे पणि चउवीस तेकिम चारपदने त्रिकसंयोग चार एकेकनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमकरी छ विकल्प चारने छगुणा कीधा चउवीसथाय, चतुष्कसंयोगनविषे चार ते किम पहिलाटोय पछे तीननेविषे एकएक १ तथा बीजेस्थानकेबेबे २ शेषनेविषे एक एक तथा त्रीजस्थानके बे शेषनेविषे एकएक ३ तथा चोथेस्थानके बेशेषनेविषे एकएक ४ इमचार हुवे तथा एकेंद्रियादि पचपदनेविषे द्विक त्रिक चतुष्क पच कसंयोगहुवे तिहां द्विकसंयोगे चालीसभागा हुवे ते किम पाचपदना दश द्विकसंयोगीहुवे एकेक द्विकसंयोगनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमे चारविकल्पहुवे, तिवारे दशने चार सघाते गुणा चालीसहुवे। तथा त्रिकसंयोगे साठभांगाहुवे ते किम पाचपदना दश त्रिकसंयोगेहुवे एकेक त्रिकसंयोगनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमेकरी छ विकल्प तिवारे दशनेछगुणा कीधा साठहुवे चारसंयोगे वीसभागा हुवे तेकिम पाचपदने चारसंयोगे पाचविकल्प एकेकनेविषे पूर्वोक्त अनुक्रमेंकरी चार भागाहुवे तिवारे पाचने चारसंघाते गुणाथका वीसथाय पचसंयोगे एकवीजभागाहुवे इम षट्कादिसंयोग पणिकहवा, एतलोविशेष षट्संयोगनेविषे

॥ टीका ॥

शेषेषु चैकैक ३ तथा चतुर्थं द्वे शेषेषु चैकैक मित्येवं चत्वार इति' एकेन्द्रियादिपुतु पञ्चसु पदेषु द्विकत्रिकचतुष्कपञ्चकसयोगा भवन्ति तत्रच द्विक संयोगा श्चत्वारिंशत् कथ ? पचाना पदाना दशद्विकसयोगा एकैकस्मिश्च द्विकसयोगे पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो विकल्पा दशानाच चतुर्भि र्गुणने चत्वा रिंशादिति, त्रिकसयोगेतु षष्टि कथ? पञ्चाना पदाना दशत्रिकसयोगा एकैकस्मिश्च त्रिकसयोगे पूर्वोक्तक्रमेण षड्विकल्पा दशानाच षड्भि र्गुणने ष ष्टिरिति, चतुष्कसयोगास्तु विंशति कथ? पञ्चाना पदानातु चतुष्कसयोगे पञ्चविकल्पा एकैकस्मिश्च पूर्वोक्तक्रमेण चत्वारो भङ्गा पञ्चानाच चतुर्भि र्गुणने विंशति रिति, पञ्चकसयोग स्त्वेकएवेति, एव षट्कादिसयोगा अपिवाच्या नवर षट्कसयोग आरम्भसत्यमन प्रयोगादिपदा न्याश्रित्य, सप्तकस

॥ मूल ॥

अणिंदियं जाव अहवा अणता परिमंडलसंठाणपरिणया जाव अणता आयतसंठाणपरिणया एएसिणं

अ०५११८

न्यायतसस्थानपरिणतानि, एतेषा भदन्त । पुद्गलानां प्रयोगपरिणताना मिश्रपरिणताना विस्रसापरिणताना कतरेभ्य कतरेभ्यो याव द्वि

॥ भाषा ॥

आरम्भ सत्यमनप्रयोगादिक पद आश्रयीने कहवा, सप्तकसयोगे औदारिकादि कायप्रयोगप्रतें आश्रयीने कहवा अष्टकसयोगे तो व्यन्तरना भेदथकी कहवा नवकसयोगे तो नवग्रैवेयक भेदथकी कहवा दशकसयोगे तो दश भवनपतीभेद आश्रयीने वैक्रियशरीर कायप्रयोग अपेचावे जाणवा इग्यारमा सयोग तो सवर्नेविषे नकह्या पूर्वोक्तपदनेविषे तेहना असम्भवथकी बारसयोग तो कल्पोपपन्नदेव भेदआश्रयी वैक्रियशरीर कायप्रयोग अपेचायें होज व वो । एएपुणजहानवमसए पवेसणए भणियानि तहाउवउजिऊणभाणियव्वा जाव असखेज्जा अणता एवचेव । एएपुणइत्यादि, ए वली जिम नवमा शतकने बत्रीसमें उद्देशे गंगेयनामे अणगारकृत गतिप्रवेशन विचारनेविषे कह्युं केतलाएक तेहने अनुसारे द्रव्यउपयोगेकरी तिमजकहवा असख्या त पर्यन्त नारकादिविकल्पनाश्रय तें सूत्र इहा जे विशेषछे ते कहेछे—अणताइत्यादि, एहीज आलावाथी देखाडतो कहेछे—णवरएक्कपदअब्भहियं जा वअणतापरिमडलसठाणपरिणया जाव अणताआयतसठाणपरिणया । एतलोविशेष तिहा असख्याताहीज कहवा इहा एकपद अनन्तानो अधिको कहवो यावत् अनन्तपारिमडल सस्थानपरिणत यावत् अनन्ता आयतसस्थान परिणत, हिवे एहनो अल्प बहुत्व चिन्तवतो कहेछे—एएसिणभतेपोग्गला

॥ टीका ॥

योग स्त्वौदारिकादिकायप्रयोग माश्रित्य, अष्टकसयोगस्तु व्यन्तरभेदा, नवकसयोगस्तु ग्रैवेयकदेवभेदान्' दशकसयोगस्तु भवनपतिभेदा नाश्रित्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगापेक्षया समवसेय, एकादशसयोगस्तु सूत्रे नोक्त पूर्वोक्तपदेषु तस्या सम्भवात्, द्वादशसयोगस्तु कल्पोपपन्न देवभेदा नाश्रित्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगापेक्षये वेति ॥ पवेसणएत्ति ॥ नवमशतस्कतृतीयोद्देशके गाङ्गेयाभिधानानगारकृतनरकादिर्गतप्रवेशनविचारे कियत्ति तदनुसारेण द्रव्याणि वाच्यानी त्याह ॥ जावअसंखेज्जत्ति ॥ असङ्ख्यातान्तनारकादिवक्तव्यताश्रयहि तत्सूत्र इहतु यो विशेष स्तमाह ॥ अणताइत्यादि ॥ एतदेवा भिलापतो दर्शयन्नाह ॥ जावअणतेत्यादि ॥ अथै तेषामेवा ल्पबहुत्वचिन्तयन्नाह ॥ एएसिणमित्यादि सव्वत्थोवापोग्गलापओगपरिणयत्ति ॥ कायादिरूपतया जीवपुद्गलसम्बन्धकालस्य स्तोकत्वात् ॥ मीसपरिणयाअणतगुणत्ति ॥ कायादिप्रयोगपरिणतेभ्य सकाशा न्मिश्रकपरिणता अनन्तगुणा यत प्रयोगकृत माकार मपरित्यजन्तो विस्रसया ये परिणामान्तर मुपागता मुक्तकलेवराद्यवयवरूपा स्ते नन्ता , विस्रसापरिणतास्तुतेभ्यो

॥ मूल ॥

न्त ! पोग्गलाणं पओगपरिणयाणं मीसापरिणयाणं वीससापरिणयाणय कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पओगपरिणया मीसापरिणया अणतगुणा वीससापरिणया अणंतगु

अनुवाद

शेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका पुद्गला प्रयोगपरिणता मिश्रपरिणता अनन्तगुणा विस्रसापरिणता अनतगुणा , तदेव भदन्त भदन्त ।

॥ भाषा ॥

ला पओगपरिणयाणं मीसापरिणयाणं वीससापरिणयाणय कयरे २ हिंतो जावविसेसाहियावा । एहने हेभगवन् ! पुद्गलने प्रयोगपरिणतने विस्रसापरिणतने वली कुण २ थकी थोडाहुवे घणाहुवे बराबरहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवापोग्गलापओगपरिणया । हेगौतम ! सर्वथीथोडा पुद्गलप्रयोगपरिणत कायादिरूपपणकरी जीवपुद्गलसबन्ध कालनो थोडापणोछे तिमाटे तेहथी । मीसापरिणयाअणतगुणा वीससापरिणया अणतगुणा । मिश्रपरिणत अनन्तगुणाछै, कायादिप्रयोगपरिणत थकी मिश्रपरिणत अनन्तगुणा जेमाटे प्रयोगकृतआकारप्रते अणतजता विस्रसायेकरी जे परिणामान्तरप्रते पाम्या मुक्तकलेवरादि अवयवरूप ते अनन्ताछे तेहथा विस्रसापरिणत अनन्तगुणा परमाण्वादिकजीव ग्रहणप्रायोग्यना अनन्त

॥ टीका ॥

ष्यनन्तगुणा परमाण्वादीना जीवग्रहणप्रायोग्याणा मप्यनन्तानन्तत्वादिति ॥ इतिअष्टमशतेप्रथम' ॥ १ ॥ प्रथमे पुद्गलपरिणाम उक्तो द्वितीयेतु सएवा शीविषद्वारेणो च्यत इत्येव सम्बन्धस्या स्यादिसूत्र कइइत्यादि ॥ आसीविसत्ति ॥ आशीविषा दंष्ट्राविषा ॥ जाइआसीविसत्ति ॥ जात्या जन्मना आशीविषा जात्याशीविषा ॥ कम्मआसीविसत्ति ॥ कर्मणा क्रियया शापादिनोपघातकरणेना शीविषा' कर्म्मा शीविषा स्तत्र पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च कर्म्माशीविषा पर्याप्तकाएव एतेहि तपश्चरणानुष्ठानतो ऽन्यतोवा, गुणत खल्वाशीविषा भवन्ति शा

॥ मूल ॥

णा सेव भंते भंतेत्ति॥ अट्ठम सयस्स पढमो उद्देसोसम्मत्तो ८ ॥ १ ॥ कइविहाणं भंते ! आसीविसा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, तंजहा—जाइआसीविसाय कम्मआसीविसाय जाइआसीविसाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता , तंजहा—विच्छुयजाइआसी

अनुवाद

इति ॥ इत्यष्टमशतकस्यप्रथमउद्देशक ॥ १ ॥ कतिभदन्त । आशीविषा'प्रज्ञप्ता. ? गौतम ! द्विविधा आशीविषा-प्र ज्ञप्ता स्तद्यथा—जात्याशीविषाश्च कर्माशीविषाश्च। जात्याशीविषा भदंत। कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—वृश्चिक जा

॥ भाषा ॥

पणामाटे। सेवभंतेभंतेत्ति। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हकह्यु ते सत्यछै अन्यथानहीं। अट्ठमसयस्सपढमओउद्देसोसमत्तो। ० आठमाशतकनो पहिला उद्देशो अर्थथी लख्यो ८ ॥ १ ॥ पहिले उद्देशे पुद्गलपरिणाम अधिकारकह्यो बीजे तेहीज आशीविष द्वारेकरी कहेछै—कइणभंतेआसीवि सा पण्णत्ता। कितला हेभगवन्। आशीविष कहिये, आशीविष कहिये दाढाविष कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहा आसीविसा प० तं०। हेगौ तम। बेहभेद आशीविष कह्या ते कहेछै—जातिआसीविसाय कम्मआसीविसाय। जेहनी दाढाविषे जन्मथकी विषहुवे, ते जाति आशीविष कहिये १ कर्मक्रिया तिणेंकरी शापादिक उपघात करवैकरी आशीविष दाढाविष ते कर्माशीविष कहिये, तिहा पचेंद्री तिर्यंच मनुष्य कर्माशीविष पर्याप्ताहीज हुवे ए तपश्चरण अनुष्ठानथकी अथवा अनेरागुणथकी निश्चे आशीविषहुवे ते सरापने देवैकरीज विणासे एह आशीविष लब्धिनास्वभावथकी सहस्रार

॥ टीका ॥

पप्रदानेनैव व्यापादयन्तीत्यर्थ, एतेचा शीविषलब्धिस्वभावा त्सहस्रारान्तदेवेष्वेवो त्पद्यन्ते देवा स्त्वेतएव ये देवत्वे नोत्पन्ना स्ते ऽपर्याप्तकावस्था या मनुभूतभावतया कर्म्माशीविषाइति' उक्तच शब्दार्थाभेदसवादिभाष्यकारेण–आसीदाढातग्गय महाविसासीविसादुविहन्नेया। तेकम्मजाइभेएण णेगहाचउविहविगप्पा ॥ १ ॥ केवइएत्ति ॥ कियान् ॥ विसएत्ति ॥ गोचरो विषस्येति गम्य ॥ अद्धभरहप्पमाणमेत्तंति ॥ अर्द्धभरतस्य यत्प्रमाण सातिरेकत्रिषष्ट्यधिकयोजनशतद्वयलक्षण तदेव मात्रा प्रमाण यस्या' तथा ता ॥ बोंदिंति ॥ तनु ॥ विसेणत्ति ॥ विषेण स्वकीयाशीप्रभवेण करणभूतेन

॥ मूल ॥

विसे मंडुक्कजाइआसीविसे उरगजाइआसीविसे मणुस्सजाइआसीविसे। विच्छुयजाइआसीविसस्सण भंते! केवइए विसए पन्नत्ते ? गोयमा ! पभूण विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेण विस

॥ अनुवाद ॥

त्याशीविषो मण्डूकजात्याशीविष उरगजात्याशीविषो मनुष्यजात्याशीविष । वृश्चिक जात्याशीविषस्य भदत। कियान् विशेष प्रज्ञप्त ? गौतम! प्रभुर्वृश्चिको जात्याशीविषो र्धभरतप्रमाणमात्रा बोंदिविषेणविषपरिगता विकसती कर्तुं विषय. सविषार्थतायां नोचैव सपत्याऽकार्षुर्वाकुर्वन्ति

॥ भाषा ॥

पर्यन्तदेवनेविषे जीवउपजे देवतापणि एतलामाटेजीव देवपणे उपना ते अपर्याप्त अवस्थायें अनुभूत भावपणेकरी कर्माशीविष कहिये अपर्याप्ताहुवे तालगे पूर्वभाव मूकात् नथी ते भणी कर्माशीविष कहिये । जातिआसीविसाणभंतेकइविहा पं० । जातिआशीविष हेभगवन्! केतलाप्रकारना कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चउव्विहा प० त० । हेगौतम। चारभेद कह्या ते कहेछे—विच्छूयजातिआसीविसे मंडुक्कजातिआसीविसे उरगजातिआसीविसे मणुस्सजातिआसीविसे । विच्छूजातिआशीविष १ मंडूकजातिआशीविष २ सर्पजातिआशीविष ३ मनुष्यजातिआशीविष ४। विच्छूयजातिआसीविसस्सणभंते केवइएविसए प० । विच्छूजातिआशीविषनो ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। केतलोएक विषयकहिये विषनो गोचर कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पभूणविच्छूयजातिआसीविसे । हेगौतम। समर्थ ण वाक्यालकारे, विच्छूजातिआशीविष । अद्धभरहप्पमाणमेत्तांबोंदिंविसेणविसपरिगयंविसट्टमाणपकरेत्तएविसए। आधाभरतनो जे प्रमाण बेसे त्रेसठि योजन साधिकलक्षण तेहोज मात्रा प्रमाण जेहनो एहवो बोंदि तनुप्रते स्वकीय आशीप्र

॥ टीका ॥

॥ विसपरिगयत्ति ॥ विष भावप्रधानत्वा न्निर्देशस्य विषता परिगता प्राप्ता विषपरिगता ऽतस्ता अतएव ॥ विसट्टमाणंति ॥ विकसन्ती विदल न्ती ॥ करेत्तएत्ति ॥ कर्तुं ॥ विसएसंति ॥ गोचरोसौ अथवा, से तस्य वृश्चिकस्य ॥ विसट्टयाएत्ति ॥ विषमेवा र्थो विषार्थ तद्भाव स्तत्ता तस्या विषार्थतायाः विषत्वस्य तस्यावा ॥ नोचेवत्ति ॥ नैवेत्यर्थ ॥ संपत्तीएत्ति ॥ संपत्त्या एवंविधवोन्दिसम्प्राप्तिद्वारेण ॥ करिंसुवि ॥ अकार्षु वृश्चिका इतिगम्यते इहचै कवचनमक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थ मेव कुर्वंति करिष्यन्तीत्यपि त्रिकालनिर्देश श्चामीषां त्रैकालि

॥ मूल ॥

कत्वज्ञापनार्थः । मंडुक्क जाइ आसी विस पुच्छा, गोयमा ! पभूणं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणंविसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए एवइए विसए नोचेवणं संपत्तीए करिंसुवा करेंतिवा करिस्संतिवा । मंडुक्क जाइआसीविसपुच्छा गोयमा ! पभूणं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त बोंदिं विसेणंविसपरिगयं सेस तचेव जाव करिस्संतिवा । एव उरगजाइआसीविसस्सवि नवरं, जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं

॥ अनुवाद ॥

या कार्ष्यन्तिवा । मण्डूकजात्याशीविषपृच्छा ? गौतम ! प्रभु मण्डूकजात्याशीविषो भरतप्रमाणमात्रां बोंदि विषेणविषपरिगतां शेष तचै व यावत्करिष्यन्तिवा । एवं उरगजात्याशीविषस्यापि । नवरं जम्बूद्वीपप्रमाणमात्रां बोंदि विषेण विषपरिगतां शेष तचैव याव त्करिष्यन्ति

॥ भाषा ॥

भवकरणभूतशरीरो विस्तारपणाप्रते प्राप्त ते प्रते विदारभूत करवा विषयगोचरछे । सेविसइट्टाण्णाचेवणंसपत्तीए करिंसुवा करेंतिवा करिस्संतिवा । विवे त बोन्दीनो विष पसरीभूमिलगे व्यापेछे पणिनहो निश्चे ए वाववालकारे, समर्थाइकरीने अतीतकाले कीधूनहो करेछेनहो करस्ये पणिनहो । मंडूकजा तिआशीविषपृच्छा । मंडूकजाति आशीविषनो हेभगवन् । केतलोएक विषनो गोचरकह्यो इतिप्र ० उत्तर । गोयमा पभूणमंडुक्कजाइआसीविसेभरहप्प माणमेत्तंबोंदिविसेणंविसपरिगयं सेसतचेव जावकरिस्संतिवा । हे गौतम । समर्थ मंडूकजाति आशीविष ते डाविष भरतक्षेत्र प्रमाण ५२६ योजन तानकला तलप तेहोज मात्रापमाण स्वशरीरनू विष तिणेविषे करीने विषपरिणामावयानो विषयगोचरछे थाकतो सर्व पूर्वलीपरे कहवो यावत् प्रागामिकाले करिस्ये नहो । एवउरगजातिआसीविसस्सवि । इम सर्पजाति आशीविषनो पणिजाणवो । णवर जंबूदीवप्पमाणमेत्तंबोंदिविसेण विसप

विसपरिगय सेसं तंचेव जाव करिस्संतिवा । मणुस्सजाइआसीविसस्सवि एवंचेव नवरं, समयखेत्तप्पमाणमेत्त बोंदि विसेणं विसपरिगय सेस तंचेव जाव करिस्संतिवा । जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे मणुस्सकम्मआसीविसे देवकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे तिरिक्खजोणियकम्मासीविसेवि मणुस्सकम्मासीविसे देवकम्मासीविसेवि । जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?

वा । मनुष्यजात्याशीविषस्याप्येवमेव नवरं समयक्षेत्रप्रमाणमात्रां बोंदिं विषेण विषपरिगतां शेषं तदेव यावत् करिष्यन्ति । यदि कर्माशीविषः किं नैरयिककर्माशीविषः तिर्यग्योनिककर्माशीविषः मनुष्यकर्माशीविषः देवकर्माशीविषः ? गौतम ! नो नैरयिककर्माशीविषः तिर्यग्योनिककर्माशीविषोऽपि मनुष्यकर्माशीविषोऽपि देवकर्माशीविषोऽपि । यदि तिर्यग्योनिककर्माशीविषः किं एकेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो यावत् पंचे

रिगय । एतलो विशेष जंबूद्वीप प्रमाणमात्र स्वशरीरनो जे विष तिणे करीने पूर्ण विषमय करे । सेसतंचेव जावकरिस्संतिवा । याकतो सर्वे तिमहीज कहवा यावत् आगामिकाले करस्ये नहीं । मणुस्सजातिआसीविसस्सवि एवंचेव । मनुष्यजाति आशीविषनो पणि प्रश्न तथा उत्तर इमज कहवो । णवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तंबोंदिविसेणंविसपरिगय सेसतंचेव जावकरिस्संति । एतलोविशेष मनुष्यक्षेत्रप्रमाण स्वशरीरनो विष शापादि प्रदान वचन तिणे करीने उपघातकरवा समर्थ थाकतो सर्वे तिमज पूछिवोपरे कहवा यावत् आगामिकाले करस्येनहीं एतलालगेकहवो हवे गौतम पूछे छे—जइ कम्मआसीविसे किंणेरइयकम्मआसीविसे । जो कर्म क्रियायेकरी आशीविषहुवे तास्यूं नारको कर्माशीविषहुवे । तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे । तिर्यंचयोनिक कर्माशीविषहुवे अथवा । मणुस्सकम्मआसीविसे । मनुष्य कर्माशीविषहुवे अथवा । देवकम्मआसीविसे । देवकर्माशीविषहुवे ? तिवारे उत्तर । गोयमा णो णेरइयकम्मआसीविसे । हे गौतम ! नारको कर्माशीविष नहुवे । तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसेवि । तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष

॥ टीका ॥ कल्पज्ञापनार्थं ॥ समयक्खेत्तत्ति ॥ समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्र ॥ एवजहावेउव्वियसरीरस्सभेउत्ति ॥ यथा वैक्रिय भणता जीवभेदो भणित· तथेहापि वा

॥ मूल ॥ गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिय कम्मासीविसे जाव नोचउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । जइ पंचिंदियजावकम्मासीविसे किं सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? एव जहा वेउव्वियसरीरस्स भेओ जाव

अनुवाद न्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविष ? गौतम । नो एकेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो याव नोचतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविष पचेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविष । यदि पचेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविष किं समूर्छिमपचेन्द्रियतिर्यग्योनिककर्माशीविषो गर्भव्युत्क्रांतिकपचेन्द्रियतिर्य

॥ भाषा ॥ पणि हुवे । मणुस्सकम्मआसीविसेवि देवकम्मआसीविसेवि । मनुष्य पणि कर्माशीविष हुवे देव पणि कर्माशीविषहुवे इहा लब्धिना स्वभावथकी स हस्रारपर्यन्त देवनेविषे ऊपजे तिहांज देवपणे ऊपना तिके अपर्याप्तावस्थानेविषे अनुभूत भावपणे कर्माशीविष कहिये । जइतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किंएगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे । जो तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे तो स्यू एकेंद्री तिर्यंचयोनिक कर्माशीविषहुवे इम बेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री । जावपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्माआसीविसे एतलालगेकहवो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोएगिंदिय तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । हेगौतम एकेन्द्रीतिर्यंचयोनिक कर्माशीविष न हुवे । जाव णोचउरिंदिय तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । इम यावत्शब्दे बेइन्द्री तेरिन्द्री चौरिन्द्री तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष नहुवे एतलालगे इमकहवो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे वली गौतम पूछे छे—जइपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे । जो पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे । किंसम्मुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । तो स्यू समूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष हुवे । गब्भवक्कंतिय पचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे । गर्भज पचेंद्रियतिर्यंचयोनिक कर्माशीविषहुवे इतिप्रश्न उत्तर । एवजहावेउव्वियसरीरस्सभेदो जावपज्जत्ता सखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियकम्मभूमियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।

॥ टीका ॥

न्यो सावित्यर्थं सचाय-गोयमा ! नोसमुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जइ गब्भवक्कं तियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किंसखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे असखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! सखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे नोअसखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे जइ सखेज्जजावकम्मासीविसे किंपज्जत्तसखेज्जजावकम्मासीविसे अपज्जत्तसखेज्जजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! शेष लिखितमवास्ते' एतदोक्त वस्त्वज्ञानो नजानातीति चान्यपि कथि इगवस्तूनि कथचि

॥ मूल ॥

पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियकम्मभूमियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे। जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं सम्मुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे ? गोयमा ! नो संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे एवं जहा वेउ

अनुवाद

ग्योनिककर्माशीविष एव यथा वैक्रियशरीरस्य भेदो याव त्पर्याप्तासख्येयवर्षायुष गर्भव्युत्क्रान्तिक (प्रकृति) यावत्कर्माशीविष । यदि मनुष्यकर्माशीविष किं सम्मूर्छिममनुष्यकर्माशीविषो गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यकर्माशीविष ? गौतम ! नोसम्मूर्छिममनुष्यकर्माशीविष गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यकर्मा

॥ भाषा ॥

इणे प्रकारे जिम वैक्रियशरीर कहता ओननोभेद भाख्या, तिम इहा पणि कहवो ते इम, हे गोतम नोसमुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, जइगब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, किंसखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, असखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे गोयमा सखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे, नोअसखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे, जइसखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे, किंपज्जत्तसखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे, अपज्जत्तसखेज्जजावकम्मासीविसे, इतिप्रश्न उत्तर हे गोतम आकतो सूचमा हे लिख्यं जके पर्याप्त सख्यातवर्ष आउखावन्त गर्भज कहिये कर्मभूमिजपचेन्द्रियतिर्यग्योनिक कर्माशीविष हुवे पणि । नोअपज्जत्तासखेज्जवासाउयजावकम्मासीविसे । नही अपर्याप्तक सख्यातवर्ष आउखावन्त गर्भजकर्मभूमिजपचेन्द्रियतिर्यच कर्माशीविष हुवे वलीगोतम पूछे—जइमणुस्सकम्मासीविसे।

॥ मूल ॥

व्वियसरीरं जाव पज्जत्तासंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे नो अपज्जत्ताजावकम्मासीविसे। जइ देवकम्मासीविसे किं भवणवासीदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मासीविसे? गोयमा! भवणवासीदेवकम्मासीविसेवि वाणमंतरदेवजोइसियवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि। जइ भवणवासीदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारजावकम्मासीविसे? गोयमा!

अनुवाद

शीविष एव यथा वैक्रियशरीर याव त्पर्याप्तासंख्येयवर्षायुषकर्मभूमिजगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यकर्माशीविष नोअपर्याप्तासंख्येय (प्रभृति) यावत्कर्माशीविष। यदि देवकर्माशीविष किं भवनवासिदेवकर्माशीविषो याव द्वैमानिकदेवकर्माशीविष? गौतम! भवनवासिदेवकर्माशीविषोपि वानव्यन्तरदेवज्योतिष्कदेववैमानिकदेवकर्माशीविषोपि। यदि भवनवासिदेवकर्माशीविष किमसुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषो याव त्स्त

॥ भाषा ॥

जो मनुष्य कर्माशीविष हुवे। किंसमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे। तो स्यूं सम्मूर्छिम मनुष्य कर्माशीविष हुवे अथवा। गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे। गर्भजमनुष्य कर्माशीविषहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोसमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे। हेगौतम मनुष्य कर्माशीविष नहुवे। गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे। गर्भजमनुष्यकर्माशीविष। एवजहावेउव्वियसरीरं। इम जिम वैक्रियशरीर कह्या तिम इहां पणि कहवो, केतलालगे कहवो ते कहेछे—जावपज्जत्तासंखेज्जवासाउयकम्मभूमियगब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे। यावत् पर्याप्त संख्यात वर्षायुष कर्मभूमिज गर्भजमनुष्य कर्माशीविष हुवे। णोअपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे। पणि नही अपर्याप्त संख्यातवर्षायुष कर्मभूमिज गर्भजमनुष्य कर्माशीविष हुवे। जइदेवकम्मासीविसे। जो देव कर्माशीविष हुवे तो। किंभवणवासीदेवकम्मासीविसे जाववेमाणियदेवकम्मासीविसे। स्यूं भवनपतीदेव कर्माशीविषहुवे अथवा वानव्यन्तरदेवकर्माशीविषहुवे अथवा ज्योतिषीदेवकर्माशीविषहुवे अथवा वैमानिकदेवकर्माशीविष हुवे एतलालगे यावत् शब्दथकी कहवो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा भवणवासीदेवकम्मासीविसेवि। हे गौतम। भवनपतीदेव कर्माशीविष पणिहुवे। वाणमंतरदेव जोइसियदेव। वानव्यन्तरदेव पणि कर्माशीविष वे ज्योतिषीदेव

असुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे जावथणियकुमारजावकम्मासीविसे। जइ असुरकुमारजावकम्मासीविसे किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे किं अपज्जत्ताअसुरकुमारजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! नोपज्जत्ताअसुरकुमारजावकम्मासीविसे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीजावकम्मासीविसे एवं थणियकुमाराण । जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किंपिसायवाणमंतरदेवकम्मासीविसे एवं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं

नितकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविष. ? गौतम । असुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषोपि एव याव स्तनितकुमारदेवकर्माशीविषोपि । यद्यसुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविष कि पर्याप्तासुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविषो पर्याप्तासुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविष ? गौतम ! नोपर्याप्तासुरकुमार (प्रभृति) यावत्कर्माशीविषो पर्याप्तासुरकुमारभवनवासिदेवकर्माशीविष एव याव स्तनितकुमार (प्रभृति) या

पणि कर्माशीविषहुवे। वैमाणियदेवकम्मासीविसेवि। वैमानिकदेव पणि कर्माशीविषहुवे । जइभवणवासीदेवकम्मासीविसे। जो भवनपतीदेव कर्माशीविष हुवे तो। किंअसुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे। असुरकुमारदेवकर्माशीविषहुवे । जावथणियकुमारजावकम्मासीविसे। इम यावत् नाग सुपर्ण विद्युत अग्नि द्वीप उदधि वायु स्तनितकुमारदेवकर्माशीविषहुवे एतलानगे कहवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसेवि। हेगौतम । असुरकुमारदेव पणि कर्माशीविषहुवे । एव जावथणियकुमार । इम यावत् स्तनितकुमारदेवपर्यंत दशेई भवनपतीनिकायदेवा कर्माशीविष हुवे । जइअसुरकुमार जावकम्मासीविसे । जो असुरकुमार आदिदेई यावत् स्तनितकुमार देवपर्यन्त दशेई कर्माशीविष हुवे। किंपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे। तो स्यू पर्याप्त असुरकुमार भवनपतीदेव कर्माशीविष हुवे अथवा । अपज्जत्ताअसुरकुमार जाव कम्मासीविसे। अपर्याप्तक असुरकुमार भवनपतीदेव कर्माशीविष हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोपज्जत्ता असुरकुमार जावकम्मासीविसे। हेगौतम । पर्याप्तक असुरकुमार भवनपतीदेव कर्माशीविष नहुवे । अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासीदेवकम्मासीविसे । अने अपर्याप्तकअसुरकुमारभवनपतीदेवकर्माशी

॥ मूल ॥

जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं । जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे नोकप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे । जइ कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किंसोहम्मकप्पोवगजावकम्मासीविसे जाव

अनुवाद

वत्कर्माशीविष । यदि वानव्यंतरदेवकर्माशीविष किं पिशाचवानव्यंतरदेवकर्माशीविष एव सर्वेषा मपर्याप्तकाना ज्योतिष्काणा सर्वेषा मपर्याप्तकानाम् । यदि वैमानिकदेवकर्माशीविष किं कल्पोपपन्नकवेमानिकदेवकर्माशीविष कल्पातीतवैमानिकदेवकर्माशीविष ? गौतम । कल्पोपपन्नकवैमानिकदेवकर्माशीविषो नोकल्पातीतवेमानिकदेवकर्माशीविष । यदि कल्पोपपन्नवैमानिकदेवकर्माशीविष किं सौधर्मकल्पोपपन्नक

॥ भाषा ॥

शिवहुवे । एवजावथणियकुमाराण । इम यावत् स्तनितकुमारपर्यंत अपर्याप्ता कर्माशीविष हुवे पर्याप्ता कर्माशीविष नहुवे इमकहवो । जइवाणमंतरदेवकम्मासीविसे । जो वाणव्यन्तरदेव कर्माशीविषहुवे तो । किंपिसायवाणमंतर । स्यूं पिशाच वानव्यन्तरदेव कर्माशीविषहुवे यावत् गन्धर्वलगे कहवो । एवसव्वेसिंअपज्जत्तगाण । इम सर्वने अपर्याप्ताने कर्माशीविषपणो कहवो पर्याप्ताने नकहवो । जोइसियाणसव्वेसिं अपज्जत्तगाण जइवेमाणियदेवकम्मासीविसे । इम ज्योतिषी पचेइ चंद्रादिकने पणि अपर्याप्ताने कर्माशीविषपणो कहवो पणि पर्याप्ताने निषेधकरवो जो वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे तो । किंकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । स्यूं कल्पनेविषे उपना ते देव कर्माशीविषहुवे कल्प कहिये इन्द्रादिकनो आचार अथवा । कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।कल्पातीत तिहां उपना वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे, कल्पातीत कहिये इन्द्रादिकना आचारथी नियर्त्या ते इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । हेगौतम कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषहुवे पणि । णोकप्पातीयगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । कल्पातीतनेविषे उपना ते वेमानिकदेव कर्माशीविष नहुवे । जइकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । जो कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे । किंसोहम्मकप्पोवगजावकम्मासीविसे जावअच्चुयकप्पोवगकम्मासीविसे । स्यूं सौधर्म कल्पोत्पन्नदेव कर्माशीविषहुवे इम यावत् अच्युतको ईशान सनत्कुमार

अच्चुयकप्पोवगजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि नोआणयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नोअच्चुयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे। जइ सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किंपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगजावकम्मासीविसे अपज्जत्तासोहम्मजावकम्मासीविसे ? गोयमा ! नोपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मा

वैमानिकदेवकर्माशीविषो याव दच्युतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष ? गौतम ! सौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषोपि याव त्सहस्रारकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषोपि नोआनतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो याव न्नोऽच्युतकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष । यदि सौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष किं पर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो पर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष ? गौतम ! नोपर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो ऽपर्याप्तसौधर्मकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष एव याव न्नोपर्याप्तसहस्रारक

माहेन्द्र ब्रह्म लातक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत देव कर्माशीविषहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि । हे गौतम । सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषहुवे इम । जावसहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसेवि णोआणयकप्पोवगजाव , यावत् सहस्रारनामे आठमा देवलोक तिलगे कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष पणिहुवे इम कहयो आनत कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष नहुवे । णोअच्चुयकप्पोवगवेमाणिय । इम प्राणत आरण अच्युत ए पणि कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष नहुवे । जइसोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे । जो सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे तो । किंपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगअपज्जत्तासोहम्म । स्यूपर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे अथवा अपर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविष हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगजाववेमाणियदेवकम्मासीविसे । हे गौतम । पर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेव कर्माशीविषहुवे नही । अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेव

॥ टीका ॥

नजानातीति दर्शयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ स्थानानि वस्तूनि गुणपर्यायाश्रितत्वात् छद्मस्थ इहा वध्याद्यतिशयविकलो गृह्यते ऽन्यथा ऽमूर्तत्वेन धर्मास्तिकायादी नजानन्नपि परमाण्वादि जानात्ये वासौ मूर्त्तत्वा त्तस्य समस्तमूर्त्तविषयत्वा च्चावधिविशेषस्य, अथ सर्वभावेने त्युक्त ततश्च तत्कचित ज्जानन्न प्यनन्तपर्यायतया नजानातीति सत्य केवल मेव दर्शाति सख्यानियमो व्यर्थ स्या द्घटादीना सुबहूना मर्थाना सकेवलिना सर्वपर्यायतया ज्ञातु मशक्यत्वात् सर्वभावेनच साक्षात्कारेण चक्षु प्रत्यक्षेणेति हृदय श्रुतज्ञानादिना त्वसाक्षात्कारेण जानात्यपि ॥ जीवअसरीरपडिबद्ध

॥ मूल ॥

सीविसे अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे एवं जाव नोपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे। दसठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं नजाणइ नपासइ तंजहा—धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं

अनुवाद

ल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविषो ऽपर्याप्तसहस्रारकल्पोपगवैमानिकदेवकर्माशीविष । दश स्थानानि छद्मस्थ सर्वभावेन नजानाति नपश्यति तद्यथा—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीव मशरीरप्रतिबद्ध' परमाणुपुद्गल, शब्द, गध, वात, अय जिनो भविष्यति,

॥ भाषा ॥

कम्मासीविसे। अपर्याप्तक सौधर्म कल्पोत्पन्न वैमानिकदेवकर्माशीविष हुवे एवजावणोपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणियजावकम्मासीविसे। इम इशा नथको मांडो यावत् पर्याप्त सहस्रार कल्पोत्पन्न वैमानिकदेवकर्माशीविष नहुवे। अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवगजावकम्मासीविसे। अने अपर्याप्तक सहस्रार कल्पोत्पन्नवैमानिकदेव कर्माशीविषहुवे ए पूर्वे कह्या जे वस्तु ते अज्ञानी नजाणे अनेज्ञानी पणि कोइएक दशवस्तु प्रति कथचित नजाणे ते देखाडतो कहेछे—दसठाणायेछउमत्थेसव्वभावेण नजाणइ नपासइ। दश स्थानकप्रते छद्मस्थसर्वभावेंकरी नजाणे नदेखे स्थान कहिये वस्तुगुणपर्यायाश्रितपणाथको तेहप्रतें छद्मस्थ इहा अवध्यादि अतिशय विकल कहवो, अन्यथा अमूर्त्तपणेंकरी धर्मास्तिकायादिकप्रतें जाणतोथको पणि परमाण्वादिकप्रतेंजाणे होज एह तेहने मूर्त्तपणाथको अने समस्त मूर्त्तविषयपणाथको अवधिविशेषने। तं० धम्मत्थिकाय अहम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय। ते कहे

इति ॥ देहविमुक्तं सिद्ध मित्यर्थं ॥ परमाणुपोग्गलंति ॥ परमाणु श्चासौ पुद्गलश्चेति उपलक्षणमेत तेन द्व्यणुकादिकमपि कश्चि न्नजानातीति, श्र यमिति प्रत्यक्ष कोपि प्राणी जिनो वीतरागो भविष्यति नवा भविष्यतीति नवम, श्रय मित्यादिच दशम, उक्तव्यतिरेकमाह ॥ एयाणीत्यादि ॥ सव्वभावेणजाणइत्ति ॥ सर्वभावेन साक्षात्कारेण जानाति केवलज्ञानेनेति हृदय' जानातीत्युक्त मतोज्ञानसूत्र तत्रच ॥ श्राभिणिबोहियनाणेत्ति ॥

सद्द गधं वातं श्रयं जिणे भविस्सइ नवा भविस्सइ श्रयं सव्वदुक्खाणं श्रतं करिस्सइ नोवा करिस्सइ एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे श्ररहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ तं धम्मत्थिकायं जाव करिस्सइ नवाकरिस्सइ। कइविहेणं भंते! नाणे पन्नत्ते? गोयमा! पंचविहे नाणे पन्नत्ते, तंजहा—श्राभिणि

श्रय सर्वदु खाना मत करिष्यति नोवा करिष्यति, एतानि चैव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽर्हज्जिन केवली सर्वभावेन जानाति पश्यति तद्यथा—धर्मास्तिकाय याव त्करिष्यति नोवा करिष्यति। कितिविध भदन्त! ज्ञान प्रज्ञप्त? गौतम! पचविध ज्ञान प्रज्ञप्त तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञान,

छे—धर्मास्तिकायप्रते १ अधर्मास्तिकायप्रते २ आकाशास्तिकायप्रते ३। जीवनसरीरपडिवद्ध परमाणुपोग्गल। देह विमुक्त जीवप्रते सिद्धप्रते इत्यर्थ ४ एह अनन्तापर्याय नजाणे उपलक्षणथी द्व्यणुकादि पणि नजाणे ५। सद्दगध वात श्रय जिणेभविस्सइ नवाभविस्सइ। शब्द ६ गध ७ वात ८ ए नजाणे ए प्रत्यक्ष कोइएक प्राणीजीव जिन वीतराग हुस्ये अथवा नहो हुस्ये ए वात नजाणे ९। अयसव्वदुक्खाणमतकरिस्सइ णोवाकरिस्सइ। ए प्रत्यक्ष कोइएक प्राणी सर्वदुःखनो अतकरस्ये अथवा नहीकरस्ये १० ए दशठाना छद्मस्थ साक्षात्कार चक्षुप्रत्यक्षेकरी नजाणे नदेखे कह्याथी विपरीत कहेछे—एयाणिचेवउप्पण्णणाणदंसणधरे अरहाजिणेकेवलीसव्वभावेणजाणइपासइ। एहप्रते निश्चे उपना ज्ञानदर्शनना धरणहार अरिहत जिन राग द्वेषरहित केवलो सर्वभावें साक्षात्कारें केवलज्ञानेकरी प्रत्यक्षरूप जाणे देखे। त० धम्मत्थिकाय जाव करिस्सति णोवाकरिस्सति। ते कहेछे—धर्मास्तिकायप्रते इत्यादि यावत् सर्वदुःखनो अंतकरस्ये अथवा नहीकरस्ये एतलालगे दशठाना कहवा ते केवलीहोज जाणे एहवू कह्यु ते जाणपणो ज्ञानथी हुवे तेभा

॥ टीका ॥

अर्थाभिमुखो विपर्ययरूपत्वा न्नियतो ऽसंशयरूपत्वा द्बोध सवेदन मभिनिबोध सएव स्वार्थिकप्रत्ययोपादाना दाभिनिवोधिक ज्ञाति ज्ञायतेवा; अननेति ज्ञान माभिनिवाधिकच तज्ज्ञान चेत्याभिनिवोधिकज्ञान मिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तो बोधइति ॥ सुयनाणेत्ति ॥ श्रूयते तदिति श्रुत शब्द सएव ज्ञान भावश्रुतकारणत्वात् कारणे कार्योपचारा च्छ्रुतज्ञान श्रुता द्वा, शब्दात् ज्ञान श्रुतज्ञान मिन्द्रियमनोनि मत्त श्रुतग्रन्थानुसारी बोधइति॥ उहिणाणेत्ति ॥ अवधीयते अधोधो विस्तृतं वस्तु परिच्छिद्यते अनने त्यवधि सएव ज्ञान अवधिना वा, मर्यादया मूर्त्तद्रव्याण्येव जानाति नेतरा णीति व्यवस्थया ज्ञान मवधिज्ञान ॥ मणपज्जवनाणेत्ति ॥ मनसो मन्यमानमनोद्रव्याणा पर्यव परिच्छेदो मन पर्यव सएव ज्ञान मन पर्यवज्ञान मन पर्यायाणा वा; तदवस्थाविशेषाणा ज्ञान मन पर्यायज्ञान ॥ केवलनाणेत्ति ॥ केवल मेक मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शुद्धवा, आवरणमलकल

॥ मूल ॥

वोहियनाणे सुयनाणे उहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे। सेकिंत आभिणिवोहियनाणे ? २ चउव्विहे प०,

अनुवाद

श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान। अथ किं तदाभिनिवोधिकज्ञान ? आभिनिवोधिकज्ञान चतुर्विध प्रज्ञप्त तद्यथा–अवग्रह

॥ भाषा ॥

टे ज्ञानसूत्र कहेछे—कइविहेण भते णाणे प गोयमा पंचविहेणाणे प त आभिणिवोहियणाणे सयणाणे । केतले भेदे हेभगवन् ज्ञान कह्यु जाणीयेतेणे ते ज्ञान कहीये इतिप्रश्न हेगौतम पाचभेदे ज्ञान कह्यु ते कहेछे—अर्थने अभिमुख अविपर्यय रूपपणाथकी सवेदन ते आभिनिबोध कहीये अभिनिवो धकहीज आभिनिबोधिक जाणीये ते ज्ञान अभिनिवोधिक जे ज्ञान ते इंद्रिय अनिंद्रिय निमित्तबोध इत्यर्थ, सुयनाणत्ति श्रुतज्ञान साभलीये ते श्रुत वाहता शब्द तेहीज ज्ञान ते श्रुतज्ञान अथवा श्रुतथकी जे ज्ञान ते श्रुतज्ञान इंद्रियमनोनिमित्त श्रुतग्रथानुसारी बोधइत्यर्थ २ । ओहिणाणे मण पज्जवणाणे केवलणाणे । अवधि की जे नीचे ऊचे विस्तारवत वस्तु परिच्छेद इणे करी ते अवधि तेहीज ज्ञान अथवा अवधि मर्यादा तिणे करी मूर्त्तद्र व्यप्रते जाणे बीजाप्रते नजाणे व्यवस्थाये ज्ञान ते अवधिज्ञान ३ मनना जेपर्याय मनोद्रव्यना जेपर्याय तेहनो जाणवो तेमन पर्याय ज्ञान अथवा मनः पर्याय तदवस्था विशेषनो जेज्ञान तेमन.पर्याय ज्ञान ४ केवल एक मत्यादि ज्ञान निरपेक्षपणा थकी अथवा शुद्ध आवरण मलकलकरहित पणाथ

क्षरहितत्वा त्सकाल वा, तत्प्रथमतयैवा शेषतदावरणाभावत सपूर्णोत्पत्ते असाधारणवा; ऽनन्यसदृशत्वा दनन्तधा; ज्ञेया नन्तत्वात्, यथाव स्थिताशेषभूतभवद्भाविभावस्वभावावभासीति भावना तच्च त ज्ज्ञानचेति केवलज्ञान ॥ उग्गहोत्ति ॥ सामान्यार्थस्याशेषविशेषनिरपेक्षस्या नि र्देश्यस्वरूपादे, अवग्रहति प्रथमतो ग्रहण परिच्छेदन मवग्रह ॥ ईहत्ति ॥ सदर्थविशेषालोचन मीहा ॥ अवाउत्ति ॥ प्रक्रान्तार्थविनिश्चयो ऽवा य ॥ धारणेत्ति ॥ अवगतार्थविशेषधरण धारणा ॥ एवजहेत्यादि ॥ एव मुक्तक्रमेण यथा राजप्रश्नकृते द्वितीयोपाङ्गे ज्ञानाना भेदो भणित स्तथै वेहापि भणितव्य सचैव-सेकित उग्गहे २ दुविहे पन्नत्ते तजहा-अत्थोग्गहेय वजणोग्गहेय इत्यादिरिति, यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्या मङ्गप्ररूपणे त्यभिधाय जाव भविया अभविया ततोसिद्धा असिद्धायेत्युक्त, तस्या यमर्थ. श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या श्रुतज्ञानविषय दर्शय ते दमभिहित-इच्चेयमिदुवालसगं गणिपिडए अणता भावा अणता अभावा जाव अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अ

तजहा—उग्गहो ईहा अवाय धारणा एवं जहा रायप्पसेणीए जो नाणाणं भेदे तहेव इह भाणियव्वो जाव

ईहा वायो धारणा' एव यथा राजप्रश्नीये ज्ञानाना भेद स्तथै वेहापि भणितव्यो याव त्समाप्त केवलज्ञान ॥ अज्ञान भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ?

को जेज्ञान ते केवलज्ञान ५ । सेकि त आभिणिबोहियणाणे २ चउव्विहे प त उग्गहेईहा अवायधारणा । इवेस्यू ते आभिनिर्बोधिक ज्ञान इतिप्रश्न उत्तर आभिनिर्बोधिकज्ञान च्यारभेदे कह्यो ते कहेछे—सामान्यपणाथी ग्रहे अव्यक्तज्ञान १ छताअर्थनो विशेष आलोचवो विचारणाथकी २ प्रक्रांत अर्थनो विशेषे निश्चय करवो ३ अवगत अर्थ विशेषे धारवू वीसरे नहीं ४ जिमकाई कानें साभल्यू तिवारे अर्थात् ग्रह १ एकेहनू शब्द तिवारे ई हा २ पछे शब्दन् निश्चयकीधो एअमुका नू शब्दछे तिवारे अवायकहीये ३ ते शब्दधारी राखीयें सदा जाणीयें धारीराखीयें ते धारणा कहीयें ४ । एवजहारायपसेणइज्जेणाणाण भेदोतहेवइहभाणियव्वो जावसेत्तकेवलणाणे इम इणे अनुक्रमे करी जिम रायपसेणी बीजाउपागनें विषे पचज्ञान ना भेदकह्या तिम इहा पणि कहवा ते सूत्र इमछे । सेकित उग्गहे उग्गहेदुविहे पणत्ते तजहा अत्थोगहेय १ वंजणोग्गहेय २ इत्यादि केतलालगें कहवो

॥ टीका ॥

गता असिद्धा पन्नत्ते त्यस्यच सूत्रस्य या सग्रहगाथा २-जावमभाविहेज मन्निज्जकारणमकारणाजीवा ॥ अजीवज्जवियज्जविया तत्तोसिद्धाअसिद्धाय ॥१॥ इत्येवरूपा तस्या. स्वयम मिद मेतदन्त श्रुतज्ञानसूत्र मिहाध्येयमिति, ज्ञानविपर्यय स्त्वज्ञानमिति तत्सूत्र तत्रच ॥ अन्नाणेत्ति ॥ नञ कुत्सार्थ त्वा त्कुत्सित ज्ञान मज्ञान कुत्सितत्वच मिथ्यात्वसवलितत्वा दुक्तच-अविसेसियाजइच्चिय सम्मद्दिट्ठिस्सतामइन्नाण ॥ मइअन्नाणमिच्छ द्दिट्ठस्स सुयपिएमव ॥ १ ॥ विभंगणाणेत्ति ॥ विरुद्धा भङ्गा वस्तुविकल्पा यस्मि स्तद्विभङ्ग तच्च तज्ज्ञानच अथवा विरूपो भङ्गो ऽवधिभेदो विभङ्ग सचा सौ ज्ञानचेति विभङ्गज्ञान मिहच कुत्सा विभङ्गशब्देनैव गमितेति नज्ञानशब्दो नञाविशेषित ॥ अत्थोग्गहेयत्ति ॥ अर्थ्यत इत्यर्थ स्तस्या वग्रहो

॥ मूल ॥

सेत्तं केवलनाणे । अन्नाणेणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा—मइअन्नाणे सुय अन्नाणे विभंगनाणे । सेकिंतं मतिअन्नाणे ? २ चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—उग्गहे जाव धारणा । सेकिंतं

अनुवाद

गौतम । त्रिविध प्रज्ञप्त तद्यथा—मत्यज्ञान' श्रुताज्ञान, विभङ्गज्ञान, अथ कि तन्मत्यज्ञान ? मत्यज्ञाम चतुर्विध प्रज्ञप्त तद्यथा-अवग्रहो यावद्धा रणा । अथ कोसावग्रह. ? अवग्रहो द्विविध. प्रज्ञप्त स्तद्यथा—अर्थावग्रहो व्यजनावग्रहश्च, एव यथैवाभिनिबोधिकज्ञानं तथैव नवर मेकार्थिकवर्ज्य

॥ भाषा ॥

ते कहेछे—ते केवलज्ञान कह्यो एतलालगें कहवो ज्ञानथकी विपरीत अज्ञान तेमाटे अज्ञानसूत्र कहेछे—अन्नाणेभंतेकइविहेप गो० तिविहेप० त० । अज्ञान ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । केतलभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम । तीनभेदे कह्या ते कहेछे—मइअन्नाणे सुअअन्नाणे विभगणाणे। सेकिंतमइ अणाणे २ चउव्विहे पणत्ते तजहा । कुत्सित न किंचित्ज्ञान ते अज्ञान कुत्सित ते मिथ्यात्व सवलितपणा थकी उक्तच—अविसेसियामइच्चिय सम्मद्दिट्ठि स्ससामइन्नाण । मइअन्नाणमिच्छद्दिट्ठिस्ससुयपिएमेव ॥ १ ॥ मति अज्ञान त इमहीज १ कुत्सित श्रुत ते श्रुत अज्ञान २ विरुद्धवस्तु निकल्पछे जेहनेविषे ते विभगज्ञान अथवा विरूपभग अवधिभेद ते विभग तेहीज ज्ञान ते विभगज्ञान ३ हिवे सू ते मतिअज्ञान ? मतिअज्ञान चारभेदे कह्यो ते कहे छे—उग्गहे जाव धारणा, सेकिंत उग्गहे २ दुविहे पणत्ते तजहा । अवग्रह १ ईहा २ अपाय ३ धारणा ४ एहनो अर्थ पूर्वेलिख्यु तिमज कहवो, हिवे सू

॥ टीका ॥

र्थावग्रह सकलविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यार्थग्रहण मेकसामायिक मितिभावार्थ ॥ वजणोग्गहेयत्ति ॥ व्यज्यते ऽनेनार्थ प्रदीपेनेव घटइति व्यञ्जन तच्चो पकरणेन्द्रिय शब्दादिपरिणतद्रव्यसङ्घातोवा, ततश्च व्यञ्जनेनो पकरणेन्द्रियेण व्यञ्जनाना वा, शब्दादिपरिणतद्रव्याणा मवग्रहो व्यञ्जनाव ग्रह अत्रा र्थावग्रहस्य सुलक्षत्वा त्सकलेन्द्रियार्थव्यापकत्वाच्च प्रथम मुपन्यास ॥ एव जहेवेत्यादि ॥ यथैवा भिनिबोधिकज्ञान मधीत तथैव म त्यज्ञान मप्यध्येय तच्चैव–सेकित–वजणोग्गहे २ चउव्विहे पण्णत्ते तजहा–सोइदियवजणोग्गहे जिब्भिदियवजणोग्गहे घाणिदियवजणोग्गहे फासिदिय वजणोग्गहे इत्यादि ॥ यश्चेहविशेष स्तमाह–नवर एगट्ठियवज्जति ॥ इहाभिनिबोधिकज्ञाने ॥ उगिण्हिणया अवधारणया सवणया अवलबणया मेहे

॥ मूल ॥

उग्गहे २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—अत्थोग्गहेय वजणोग्गहेय एवं जहेव आभिणिबोहियनाण तहेव णवर, एगट्ठियवज्जं जाव नोइंदियधारणा सेत्त धारणा? सेत्तं मइ अन्नाणे। सेकितं सुयअन्नाणे? जइमं अन्नाणिएहिं

॥ अनुवाद ॥

याव नोइन्द्रियधारणा समाप्ता सा धारणा समाप्त तन्मत्यज्ञान। अथ कितच्छ्रुताज्ञान? श्रुताज्ञान यदेतद ज्ञानिकै र्मिथ्यादृष्टिकै र्यथा नन्दिके

॥ भाषा ॥

ते अवग्रह २ बेहु भेदकह्यो ते कहेछे—अर्थोग्गहेय वंजणोग्गहेय एवजहेव आभिणिबोहियणाण। पाचे इन्द्रियेकरी जे ग्रहवू ते अर्थावग्रह सकलविशेष निरपेक्ष अर्थ ग्रहण एकसमय इतिभावार्थ, तथा प्रगटकरिये इणेकरी अर्थ जिम प्रदीपेकरी घट ते व्यञ्जन तेउपकरणेंद्रिय अथवा शब्दादि परिणतद्रव्य सघाते तिवारपछी व्यञ्जनकहिये उपकरण द्रव्य तिणेकरी अथवा व्यञ्जनकहिये शब्दादि परिणतद्रव्यनो जे अवग्रह ते व्यञ्जनावग्रह कहिये ते मन अ ने नेत्रविना चार इन्द्रियसघाते हुवे २ इहा अर्थावग्रहना सुलक्ष्यपणाथकी अथवा समस्तइन्द्रियार्थ व्यापकपणाथकी पहिला उपन्यासकीधो इम जिम नि ये आभिनिबोधिकज्ञान कह्यो। तहेवणवरएगट्ठियवज्ज। तिमहीज मतिअज्ञान कहवो। सेकितवजणोवग्गहे २ चउव्विहे पण्णत्ते तजहा, सोइदियवजणोग्ग हे १ चक्खिदियवजणोग्गहे २ घाणिदियवजणोग्गहे ३ जिब्भिदियवजणोग्गहे ४ इत्यादि, जे इहा विशेषछे ते कहेछे—एतलोविशेष एगट्ठियवज्जति, आ भिनिबोधिकज्ञाननेविषे उगिण्हणया १ अवधारणया २ सवणया ३ अवलबणया ४ मेहेत्यादिक पच २ एकार्थिक अवग्रहादिकना कह्या ते मतिअज्ञान

॥ टीका ॥

त्यादीति ॥ पञ्चपञ्चैकार्थिका न्यवग्रहादीना मधीतानि' मत्यज्ञानेतु मता न्यध्येयानीतिभाव ॥ जाव नोइंदियधारणात्ति ॥ इद मत्यपद यावदि त्यर्थं ॥ जइम अन्नाणिएत्ति ॥ यदिद मज्ञानिकै र्निर्ज्ञानै स्तत्राल्पज्ञानभावा दधनवदशीलवद्वा सम्यग्दृष्टयो प्यज्ञानिका प्रोच्यन्ते अतआह–मिथ्या दृष्टिभि ॥ जहानंदिएत्ति ॥ अत्रैव मेत त्सूत्र ॥ सच्छंदबुद्धिमइविगप्पिय तंजहा रामायणमित्यादि ॥ तत्रावग्रहेहेबुद्धि अवायधारणेच मति स्वच्छंदेन स्वाभिप्रायेण तत्वत सर्वज्ञप्रणीतार्थानुसारमतरेण बुद्धिमतिभ्या विकल्पित स्वच्छदबुद्धिमतिविकल्पित स्वबुद्धिकल्पनाशिल्पिनिर्मितमि त्यर्थं ॥ चत्तारियवेयत्ति ॥ साम ऋक् यजु रथर्वा चति ॥ संगोवगत्ति ॥ इहाङ्गानि शिक्षादीनि षडुपाङ्गानिच तद्व्याख्यानरूपाणि ॥ गामस ठिएत्ति ॥ ग्रामालम्बनत्वा द्ग्रामाकार मेव मन्यान्यपि नवर ॥ वाससठिएत्ति ॥ भारतादिवर्षाकार ॥ वासहरसठिएत्ति ॥ हिमवदादिवर्षधरप

॥ मूल ॥

मिच्छादिठ्ठिएहिं जहा नंदिए जाव चत्तारिय वेदा संगोवगा सेत्तं सुयअन्नाणे। सेकिंतं विभंगनाणे? २ अ

॥ अनुवाद ॥

याव चत्वारो वेदा सांगोपांगा समाप्तश्रुताज्ञान॥ अथ कित द्विभङ्गज्ञान ? विभङ्गज्ञान मनेकविध प्रज्ञप्त तद्यथा–ग्रामसंस्थितं, नगरसंस्थित,

॥ भाषा ॥

नेविषे न कहवा इति एकार्थिक मतिज्ञाननेज विषे हुवे इतिभाव केतलालगे कहवो ते कहेछेपट कहेछे—जावणोइंदियधारणा सेत्तधारणा सेतमइ अणाणे २। यावत् नोइन्द्रियधारणा ए अष्टनगे कहवो एतले ते धारणा कही ते मति अज्ञान परिणकह्यो॥ ते स्यू श्रुतअज्ञान, श्रुतअज्ञान। जइमअणा णिएहि मिच्छादिट्ठीएहि जहानंदिए। जावचत्तारिवेदासंगोवगा। जे एह अज्ञानी ए मिथ्यादृष्टि जिम नन्दीसूत्रनेविषे कह्यु तिहा ए सूत्रछे सच्छद बु द्धिमइविगप्पिय, तंजहा भारह, रामायण, इति तिहा अवग्रह इहा बुद्धिकहिये, अवायधारणा एमतिकहिये सर्वज्ञ प्रणीतअर्थ अनुसार विना पोतानी बुद्धि मतिकरी विकल्पित स्वच्छन्द बुद्धि मतिविकल्पित कहिये स्वबुद्धिकल्पना शिल्पनिर्मित इत्यर्थ यावत् ए चारवेद ऋक् १ यजु २ साम ३ अथर्वण ४ अंग शिक्षादिक ६ उपाग तेहनो व्याख्यानरूप। सेत्तंसुयअण्णाणे। ते एह श्रुतअज्ञान कह्यो। सेकितविभंगणाणे २ अणेगविहेपण्णत्तेतजहा। हिवे, स्यू ते विभंगज्ञान इतिप्रश्न विभंगज्ञान अनेकप्रकारे कह्यो ते कहेछे—गामसंठिए णगरसंठिए। ग्रामने संस्थाने आकारे, नगरने आकारे। जाव

वंशाकार ॥ हयसंठिएत्ति ॥ अश्वाकार ॥ पसयत्ति ॥ पसयसंठिए ॥ तत्र पसय आटव्यो द्विखुर श्चतुष्पदविशेष एवच नानाविधसंस्थितमिति, अ नन्तरं ज्ञाना न्यज्ञानानि चोक्ता न्यथज्ञानिनोऽज्ञानिनश्च निरूपयन्नाह ॥ जीवाणंभंते इत्यादि ॥ इरच नारकाधिकारे जेनाणीतेनियमातिन्नाणी

णेगविहे प०, तंजहा—गामसंठिए नगरसंठिए जाव सण्णिवेससंठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रुक्खसंठिए थूभसंठिए हयसंठिए गयसंठिए नरसंठिए किनरसंठिए किंपुरिससंठिए महोरगसंठिए गंधव्वसंठिए उसभसंठिए पसुपसयविहगवानरणाणासंठाणसंठिए प० । जीवाणं भंते !

यावत्सन्निवेशसंस्थित, द्वीपसंस्थित, समुद्रसंस्थित, वर्षसंस्थित, वर्षधरसंस्थित, पर्वतसंस्थित, वृक्षसंस्थित, स्तूपसंस्थित, हयसंस्थित गजसंस्थित नरसंस्थित, किन्नरसंस्थित, किंपुरुषसंस्थित, महोरगसंस्थित गन्धर्वसंस्थित, वृषभसंस्थित, पशुपसयविहगवानरनानासंस्थित प्रज्ञप्त । जीवा भदन्त ! किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः ? गौतम । जीवा ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि, येज्ञानिन स्तेकेचन द्विज्ञानिन केचन त्रिज्ञानिन केचन चतुर्ज्ञा

सण्णिवेससंठिए दीवसंठिए समुद्दसंठिए वाससंठिए । यावत् सन्निवेशने संस्थाने द्वीपने संस्थाने समुद्रने संस्थाने भरतादिक्षेत्रने संस्थाने । वासहरसंठिए पव्वयसंठिए रुक्खसंठिए । हिमवन्त आदिदेई पर्वतने संस्थाने पर्वतसंस्थाने वृक्षने संस्थाने । थूभसंठिए हयसंठिए गयसंठिए नरसंठिए । थूभसंस्थाने घोडाने संस्थाने हाथीनेसंस्थाने मनुष्यने संस्थाने । किनरसंठिए किंपुरुससंठिए महोरगसंठिए गंधव्वसंठिए उसहसंठिए । व्यन्तरदेव विशेषने संस्थाने किंपुरुषनाम व्यन्तरदेवविशेषने संस्थाने व्यन्तरदेवविशेषने संस्थाने गंधर्वदेवविशेष संस्थाने वृषभने संस्थाने । पसु पसय विहग वानर णाणासंठाणसंठिए पणत्ते । पशुने संस्थाने पसयने संस्थाने पक्षीने संस्थाने वानरने संस्थाने इम विभंगज्ञान नानाविध संस्थाने संस्थितकह्यो पूर्वे ज्ञान तथा अज्ञान कह्या, हिवे ज्ञानी तथा अज्ञानी कहेछे—जीवाणंभंतेकिंणाणी अणाणी । जीव ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवाणाणीवि अणाणीवि । हेगोतम जीवज्ञानी पणिछे अज्ञानी पणिछे । जेणाणी ते अत्थेगइयादुणाणी । जे ज्ञानीहुवे

॥ टीका ॥ ति, सम्यग्दृष्टिनारकाणां भवप्रत्यय मवधिज्ञान मस्तीति कत्वा ते नियमा त्रिज्ञानिनः ॥ जेअन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणीति, कथमुच्यते अस

॥ मूल ॥ किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! जीवा णाणीवि अन्नाणीवि जे णाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी अत्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउनाणी अत्थेगइया एगनाणी । जे दुयनाणी ते आभिणिबोहियणाणीय सुयणाणी य । जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी । जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी। जे एगनाणी ते नियमाकेवलणाणी। जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी । जे दुअन्नाणी

अनुवाद निन केच नैकज्ञानिनः ये द्विज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च, ये त्रिज्ञानिन स्त आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनश्च, अथवा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो मन.पर्यवज्ञानिनश्च ये चतुर्ज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनो मन पर्यवज्ञानिनश्च, ये एकज्ञानिन स्तेनियमा त्केवलज्ञानिन ॥ येअज्ञानिन स्ते केचनद्व्यज्ञानिन केचन त्र्यज्ञानिन , ये द्व्यज्ञानिन स्ते

॥ भाषा ॥ ते कतलाएक दोय ज्ञानवन्तहुवे । अत्थगइयातिणाणी । केतलाएक तीन ज्ञानवत हुवे । अत्थेगइयाचउणाणी । केतलाएक चार ज्ञानवन्तहुवे । अत्थग इयाएगणाणी । केतलाएक एक ज्ञानवन्त हुवे । जे दुणाणी ते आभिणिबोहिय णाणी सुअणाणीय । जे दोय ज्ञानवन्त ते मतिज्ञानवत चपुन श्रुतज्ञा नवन्त ए बेज्ञानवन्तहुवे । जे तिणाणी ते आभिणिबोहिय णाणी सुअणाणी ओहिणाणी । जे तीन ज्ञानवत ते मतिज्ञान १ श्रुतज्ञानवत २ अवधिज्ञा नवत ३ ए तीन सहितहुवे । अहवाआभिणिबोहियणाणी सुअणाणी । अथवा आभिनिबोधिकज्ञान कहिये मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ । मणपज्जवणा णी मनपर्यवज्ञानवत ए तीन ज्ञानवन्तहुवे । जेचउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी । ते जे चार ज्ञानवन्तहुवे मतिज्ञानवन्त १ श्रुतज्ञानवन्त २ अवधिज्ञानवन्त ३ मनपर्यवज्ञानवन्त ४ । जे एगणाणी ते णियमाकेवलणाणी । जे एक ज्ञानवन्त हुवे ते निश्चये केवल

॥ टीका ॥ ज्ञिन सतो ये नारकेषू त्पद्यन्ते तेषा मपर्याप्तकावस्थाया विभङ्गाभावा दाद्यमेवा ज्ञानद्वय मिति ते द्व्यज्ञानिन, येतु मिथ्यादृष्टिसंज्ञिभ्य उत्पद्यन्ते

॥ मूल ॥ ते मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय, जे तिअन्नाणी तेमइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगणाणी। णेरइयाणं भंते! किंणाणी अन्नाणी? गोयमा! णाणीवि अन्नाणीवि जे णाणी ते नियमा तिणाणी तंजहा—आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी। जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी अत्थेगइया तिअन्नाणी एव तिन्नि

अनुवाद — मत्यज्ञानिन श्रुताज्ञानिन· ये त्र्यज्ञानिन स्ते मत्यज्ञानिन श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिन। नैरयिका भदन्त! किंज्ञानिनो ऽज्ञानिन? गौतम! ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि, येज्ञानिन स्ते नियमा त्रिज्ञानिन स्तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानिनो श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनो, ये ऽज्ञानिन स्ते

॥ भाषा ॥ ज्ञानवन्तहुवे। जे अणाणी ते अत्थेगइयादुअणाणी अत्थेगइयातिअणाणी। जे अज्ञानवन्त हुवे, ते केतलाएक दोय अज्ञानसहितहुवे केतलाएक तीन अज्ञानवन्तहुवे। जे दुअणाणी तेमइअणाणीय सुयअणाणीय। तिहा जे दोय अज्ञानवन्त तेमतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ए बे सहितहुवे। जेतिअणाणी ते मइअणाणी सुयअणाणीय विभंगणाणीय। जे तीन अज्ञान सहितहुवे ते मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ ए तीन अज्ञानसहितहुवे। णेरइया णभंते किंणाणी अणाणी। नारकी ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्! स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीवि अणाणीवि। हेगौतम ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे। जेणाणी ते णियमा तिणाणी तंजहा। जे ज्ञानी ते निश्चे तीनज्ञान सहितहुवे, ते किम सम्यग्दृष्टी नारकीने भवप्रत्यय अवधिज्ञानछे इमकरीने नियमथकी तीनज्ञानहोय ते कहेछे—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ए तीन जाणवा। जे अणाणी तेअत्थेगइया दुअणाणी अत्थेगइयातिअणाणी एव तिअणाणाइ भयणाए। जे अज्ञानीहुवे ते केतलाएक, दोय अज्ञानसहित हो तथा केतलाएक तीन अज्ञानसहित हुवे ते किम असन्नीथकी जे नारकीनेविषे ऊपजे तिहांने अपर्याप्त अवस्थाये विभंगज्ञानना अभावथकी पहिलाज दोय अज्ञानहुवे तेमाटे तथा जे मिथ्यात्वी सन्नीयाथकी ऊपजे तहांने भवप्रत्यय विभंगज्ञानहुवे तेमाटे तीन अज्ञानसहितहुवे एहीज निगमकरतो कहेछे—इम तीन अज्ञान भजनाये

॥ टीका ॥

तेषां भवप्रत्ययो विभङ्गो भवतीति ते अज्ञानिन एतदेव निगमय नाह ॥ एवतिन्निअन्नाणाणि भयणाएत्ति ॥ वेइंदियाणमित्यादि ॥ द्वीन्द्रियाः के चि ज्ञानिनोपि सासादनसम्यग्दर्शनभावेना पर्याप्तकावस्थाया भवन्तीत्यत उच्यते ॥ णाणीविअन्नाणीवित्ति ॥ अनन्तर जीवादिषु षड्विंशतिपदेषु

॥ मूल ॥

अन्नाणाइं भयणाए। असुरकुमाराण भंते ! किंणाणी अन्नाणी? जहेव णेरइया तहेव तिन्नि णाणाणि नियमा तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइयाणं भंते ! किंणाणी अन्नाणी? गोयमा ! नोणाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी मतिअन्नाणी सुयअन्नाणीय एव जाव वणस्सइकाइया

अनुवाद

केचन द्व्यज्ञानिन केचन त्र्यज्ञानिन। एवं त्रीण्यज्ञानानि भजनया। असुरकुमारा भदन्त। किं ज्ञानिनो अज्ञानिनो? यथैव नैरयिकास्तथैव त्रीणि ज्ञानानि नियमा त्रीण्यज्ञानानि भजनया। एवं याव स्तनितकुमारा। पृथ्वीकायिका भदन्त। किं ज्ञानिनो अज्ञानिन? गौतम! नोज्ञानिनो अज्ञानिनो नियमा द्व्यज्ञानिनो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिन एव याव द्वनस्पतिकायिका. ॥ द्वीन्द्रियाणा पृच्छा? गौतम! ज्ञानि

॥ भाषा ॥

कहवा। असुरकुमाराणभंतेकिणाणी अणाणी। असुरकुमार हेभगवन्। स्यू ज्ञानी तथा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। जहेवणेरइया तहेवतिन्नि णाणा णि णियमा। जिम नारकीकह्या तिमहीज तीनज्ञान निश्चेथाय मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा केतलाएकने बे अज्ञान केतलाएकने तीन अज्ञान इम। तिन्निअणाणाणि भयणाए। तीन अज्ञान भजनायेहुवे। एवजावथणियकुमाराण। इम यावत् स्तनितकुमारपर्यन्त इमहीज कहवा। पुढविकाइयाणभंते किणाणी अणाणी। पृथिवीकायिक हेभगवन्। स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोणाणी अणाणी। हे गौतम। ज्ञानीनहुवे अज्ञानीहुवे। णियमादुअणाणी। निश्चे दोय अज्ञानीहुवे। मइअणाणीय सुयअणाणीय एवजाववणस्सइकाइया। मतिज्ञानी १ च श्रुतअज्ञानी दोय अज्ञानसहितहुवे इम यावत् वनस्पतीकायलगे बे अज्ञानी कहवा। वेइंदियाणपुच्छा। वेइन्द्री हेभगवन्। ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीवि अणाणीवि। हेगौतम। ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानीपणिहुवे। जेणाणी तेणियमादुणाणी तजहा। जेज्ञानी ते निश्चे दो

बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि । जे णाणी ते नियमा दुन्नाणी तंजहा—आभिणिबोहिय णाणीय सुयणाणीय । जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी तंजहा—मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय, एवं तेइंदि यचउरिंदियावि । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, जे णाणी ते अत्थे गइया दुनाणी अत्थेगइयातिन्नाणी एवं तिन्निणाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । मणुस्सा जहा जीवा तहेव पंचणाणाइं तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए । वाणमंतरा जहा नेरइया, जोइसियवेमाणियाणं तिन्नि

नो प्यज्ञानिनोऽपि । ये ज्ञानिन स्ते नियमा द्यज्ञानिन स्तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानिनश्च श्रुतज्ञानिनश्च, ये ऽज्ञानिन स्ते नियमा द्यज्ञानिन स्तद्यथा—मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च । एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाश्च । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो प्यज्ञानिनश्च । ये ज्ञानिन स्ते केचन द्विज्ञानिन केचन त्रिज्ञानिन । एव त्रीणि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । मनुष्या यथा जीवा स्तथैव पञ्चज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । वानव्यन्तरा यथा नैरयिकाः । ज्यौतिष्कवैमानिकाना त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि नियमात् । सिद्धाना भदन्त । पृ

ज्ञानसहितहुवे तेकहेछे—आभिणिबोहियणाणी सुयणाणीय । मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ ए बेसहितहुवे । जअन्नाणी तेणियमादुअन्नाणी तं० । ज अज्ञानी हुवे ते निश्चे दोय अज्ञानीहुवे ते कहेछे—मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय । मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान ए बे अज्ञानवन्तहुवे । एव ते इंदिय चउरिंदियावि । इम तेइन्द्री चउरिंद्री पणि बेज्ञान बे अज्ञानसहितहुवे । पचिंदियतिरिक्खजोणियाणपुच्छा । पचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्र श्न उत्तर । गोयमा णाणीवि अन्नाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे । जेणाणी ते अत्थेगइयादुणाणी । जे ज्ञानीहुवे ते केतला एक दोयज्ञानीहुवे । अत्थेगइयातिन्नाणी । केतलाएक तीनज्ञानीहुवे । एवंतिन्निणाणाणि । इम तीनज्ञान । तिन्निअन्नाणाणि भयणाए । तीन अज्ञान भज नाये कहवा । मणुस्साजहाजीवा तहेवपंचणाणाइं तिन्निअन्नाणाणिभयणाए । मनुष्य जिम औधिक दण्डके जीवकह्या तिम कहवा तेहीज देखाडेछे,

॥ टीका ॥ ज्ञान्यऽज्ञानिन श्चिंतिता अथतान्येव गतीन्द्रियकायादिद्वारेषु चिन्तयन्नाह ॥ निरयगइयाणमित्यादि ॥ गत्यादिद्वाराणि चैतानि ॥ गइइंदियएकाए सुहुमेपज्जत्तएभवत्थेय । भवसिद्धिएयसन्नी लद्धीउवओगजोगेय १ लेसाकसायवेए आहारेनाणगोयरेकाले । अंतरअप्पाबहुयं च पज्जवाचेत्तदाराइं ॥ २ ॥ तत्रच निरये गति गंमन येषा ते निरयगतिका स्तेषा मिह च सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयो वा ज्ञानिनो ऽज्ञानिनोवा ये पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येभ्यो न

॥ मूल ॥ णाणाइं तिन्निअन्नाणाइं नियमा । सिद्धाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी नियमा एगणाणी केवलनाणी । निरयगइयाणं भंते ! जीवा किंणाणी अन्नाणी ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि तिन्नि

अनुवाद च्छा ? गौतम । ज्ञानिनो नोऽज्ञानिन नियमा देकज्ञानिन केवलज्ञानिन । निरयगतिका भदन्त । जीवा किञ्ज्ञानिनो ऽज्ञानिन । गौतम ।

॥ भाषा ॥ पाच ज्ञान मतिज्ञान आदिदेई तथा मतिअज्ञान आदिदेई तीन अज्ञान भजनायेंहुवे । वाणमंतराजहाणेरइया जोइसियवेमाणियाण तिण्णिणाणाइं तिण्णिअणाणाइं णियमा । वानव्यन्तर जिम नारकीकह्या तिमकहवा ज्योतिषी अने वैमानिक एहने तीनज्ञान मति १ श्रुत २ अवधि ए निश्चेहुवे तथा तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ एह तीन अज्ञान निश्चय हुवे एहनेविषे असन्नी न उपजे तेमाटे । सिद्धाणभंतेपुच्छा । सिद्ध हे भगवन् । ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणी णो अणाणी । हेगौतम ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी न हुवे । णियमाएगणाणी केवलणाणी । निश्चै एकज्ञानीहुवे केवलज्ञानसहित हुव, अनन्तरे जीवादिक छवीसपदनेविषे तेजिम समुच्चयजीवपद १ तथा चउवीसदण्डक २४ पद तथा सिद्ध एव २६ पदनेविषे ज्ञानी तथा अज्ञानी चितव्या, हिवे ते ज्ञाने तथा अज्ञानेकरी गतिइन्द्रिय कायादिद्वारनेविषे चिन्तवता कहैछे—णिरयगइयाणभंतेजीवा किणाणीअणाणी । णिरयगइयाणइत्यादि, तिहा पहिला गत्यादिकद्वार कहैछे—गइइंदियकाए सुहुमेपज्जत्तएभवत्थेय । भवसिद्धिएयसन्नी लद्धीउवओगजोगेय ॥ १ ॥ लेसाकसायवेए आहारेणाणगोयरेकाले । अंतरअप्पाबहुय चपज्जवाचेहदाराइं ॥ २ ॥ तिहा निरयगइया नरकनेविषे गतिकहिये गमनछेजेहनो ते निरयगति कहिये, तेहने इहा सम्यग्दृष्टी तथा मिथ्यादृष्टी ज्ञानी तथा अज्ञानी जे पचेंद्रियतिर्यंच तथा मनुष्यथकी

रके उत्पत्तुकामा अंतरगतौ वर्त्तते तेनिरयगतिका विवक्षिता एत त्प्रयोजनत्वा द्गतिग्रहणस्येति ॥ तिन्निनाणाइनियमत्ति ॥ अवधे र्भवप्रत्यय त्वेना तरगतावपि भावात् ॥ तिन्निअन्नाणाइभयणाएत्ति ॥ असञ्ज्ञिना नरकेगच्छता द्वे अज्ञाने अपर्याप्तकत्वे विभङ्गस्या भावा, त्सञ्ज्ञिनातु मिथ्या दृष्टीना त्रीण्यज्ञानानि भवप्रत्ययविभङ्गस्य सद्भावा दत स्त्रीण्यज्ञानानि भजनयेत्युच्यत इति ॥ तिरियगइयाणत्ति ॥ तिर्यक्षु गति र्गमनं येषा ते ति र्यग्गतिका स्तेषा तदपान्तरालवर्त्तिना ॥ दोनाणत्ति ॥ सम्यग्दृष्टयो ह्यवधिज्ञानेप्रतिपतितएव तिर्यक्षु गच्छन्ति तेन तेषा द्वे एव ज्ञाने ॥ दोअन्नाणे

णाणाइ नियमा तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तिरियगइयाण भंते! जीवा किंनाणी अन्नाणी? दोणाणा

ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि त्रीणि ज्ञानानि नियमात् । त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तिर्यग्गतिका भदन्त ! जीवा किंज्ञानिनो ऽज्ञानिन । गौतम।

नरकगतिनेविषे ऊपजणहारछे अने अन्तरगतिनेविषे वर्त्ते जे ते निरयगतिकविवक्षावे प्रयोजन पणाथकी गतिनो ग्रहणकीधो ते निरयगतिक ण या क्यलंकारे, हेभगवन् । स्यूं ज्ञानीहोय अथवा जीवअज्ञानीहोय इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णाणीवि अण्णाणीवि तिन्निणाणाइ णियमा । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहोय तिन्निणाणाइ णियमत्ति, तीनज्ञान नियमेंहुवे अवधिने भवप्रत्ययपणे करीने अन्तरगतिनेविषे तेहना भावथकी । तिन्निअ णाणाइ भयणाए तिरियगइयाणभंतेजीवाकिंणाणी अणाणी । असन्नीयाने नरकें जाताने दोयअज्ञान अपर्याप्तकपणे विभंगना अभावथको तथा सन्नी मि थ्यादृष्टिने तीन अज्ञानहुवे भवप्रत्यय विभंगज्ञानना सद्भावथकी एतलामाटे तीनअज्ञान भजनाये विकल्पेकरी कह्या, तिर्यञ्चनेविषे गमनछै जेहनो ते तिर्यगति कहिये ते विचाले वर्त्तताने हेभगवन् । जीवने स्यूं ज्ञानहोय अथवा अज्ञानहोय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोणाणा दोअण्णाणा णियमा नण स्सगइयाणभंते जीवा किंणाणी अणाणी । हे गौतम । सम्यग्दृष्टी अवधिज्ञान पतितथया तिर्यञ्चनेविषे ऊपजे तिणेकरी तेहने बेहोजज्ञानहुवे दोअणा णाइ, मिथ्यादृष्टी पणि विभंगज्ञानप्रतिपतितथया तिर्यञ्चनेविषे जाय तिणेकरी तेहने पणि बेहोज अज्ञानहुवे तेमाटे नियमकह्या, मनुष्यगतिनेविषे गमनछै जेहनो तेमनुष्यगति कहिये, ते मनुष्यगतिक ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । जीव स्यूं ज्ञानी अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दोणाणा दो

॥ टीका ॥
त्ति ॥ मिथ्यादृष्टयोपि विभङ्गज्ञाने प्रतिपतितएव तिर्यक्षु गच्छति तेन तेषां द्वे अज्ञाने इति ॥ मणुस्सगइयाणमित्यादि ॥ तिन्निनाणाइंभयणाएत्ति॥ मनुष्यगतौहि गच्छति केचिज्ज्ञानिनो ऽवधिनासहैव गच्छति तीर्थकरव त्केचिन्न तद्विमुच्यति तेषां त्रीणिवा द्वेवा ज्ञाने स्यातामिति, येपुन रज्ञा निनो मनुष्यगता वुत्पत्तुकामा स्तेषा प्रतिपतितएव विभंगे तत्रोत्पत्तिः स्या दित्यत उक्त ॥ दोअन्नाणाइंनियमत्ति । देवगइयाजहानिरयगइयत्ति॥ देवगतौ ये ज्ञानिनो यातुकामा स्तेषा मवधि र्भवप्रत्ययो देवायु प्रथमसमयएवो त्पद्यते ऽत स्तेषा नारकाणा मिवोच्यते ॥ तिन्निनाणाइंनियम त्ति ॥ येत्वज्ञानिन. स्ते ऽसज्ञिभ्य उत्पद्यमाना द्व्यज्ञानिनो पर्याप्तकत्वे विभङ्गस्या भावा त्सञ्ज्ञिभ्य उत्पद्यमानास्तु अज्ञानिनो भवप्रत्ययविभङ्गस्य

॥ मूल ॥
दोअन्नाणा नियमा। मणुस्सगइयाणं भंते! जीवा किंनाणी अन्नाणी तिन्निणाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं नियमा। देवगतिया जहा निरयगतिया। सिद्धगइयाणं भंते ? जहासिद्धा। सइंदियाणं भंते! जीवा किंनाणी

अनुवाद
द्वेज्ञाने द्वेअज्ञाने नियमात् । मनुष्यगतिका भदन्त । जीवा किंज्ञानिनो ज्ञानिन । गौतम । त्रीणिज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञाने नियमात् । दे

॥ भाषा ॥
अन्नाणा नियमा मणुस्सगइयाणभंतेजीवाकिंणाणी अन्नाणी तिन्निणाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं णियमा देवगइया जहा णिरयगइया । हेगोतम । तीन ज्ञान भजनायेहुवे तेकिम मनुष्यगतिनेविषे जाताथका केईएक ज्ञानी अवधिज्ञानसहित थकाजाय तीर्थंकर नीपरे तिवारे तीनज्ञानकह्या तथा केई एक अवधिज्ञानमकीने जाय तिवारे तेहने बेज्ञानहुवे तेमाटे भजनाकही तथा जे वली अज्ञानीमनुष्य गतिनेविषे ऊपजणहारछे, तेहने विभंगज्ञान थी पछाज तिहा उत्पत्तिहुवे तेमाटेकह्यु दोयअज्ञान नियमथकीहुवे, देवगतिनेविषे जे जीव जावणहारछे ते ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उ त्तर जिम नारकीकह्या तिमकहवा तेकिम देवगतिनेविषे जेज्ञानी जावणहारछे तेहना अवधिभवप्रत्ययथकी होज आउखानेपहिलेसमयनेविषेज ऊ पजे एतलामाटे तेहने नारकीनीपरे कहिये ते तीनज्ञान नियमथकीहुवे तथा जे अज्ञानी असन्नीथकी ऊपजताथका बे अज्ञानीकहिये ते अपर्याप्तक प णानेविषे विभंगना अभावथकी अने सन्नीथकी ऊपजताथका तीनअज्ञानवन्तहुवे भवप्रत्ययना विभंगना सद्भावथकी एतलामाटे तेहने नारकीनीपरे क

॥ टीका ॥

सद्भावा इत स्तेषां नारकाणां मिवो च्यते ॥ तिन्निअन्नाणाइंभयणाएत्ति ॥ सिद्धिगइयाणमित्यादि ॥ यथा सिद्धा केवलज्ञानिनएव एव सिद्धिगतिका अपि वाच्या इतिभाव । यद्यपिच सिद्धाना सिद्धिगतिकाना चा न्तरगत्यभावा न्नविशेषोऽस्ति तथापीह गतिद्वारबलायातत्वा त्ते दर्शिता एव द्वारान्तरेष्वपि परम्परान्तर्भावेपि तत्तद्विशेषापेक्षया अपौनरुक्त्य भावनीयमिति, अथे न्द्रियद्वारे ॥ सइंदियेत्यादि ॥ सेन्द्रिया इन्द्रियोपयोगवन्त स्तेच ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च तत्र ज्ञानिना चत्वारि ज्ञानानि भजनया स्या द्वे स्या त्त्रीणि स्या च्चत्वारि केवलज्ञानंतु नास्ति तेषा अतीन्द्रियज्ञानत्वा त्तस्य द्व्यादिभावश्च ज्ञानाना लब्ध्यपेक्षया उपयोगापेक्षयातु सर्वेषा मेकदै कमेव ज्ञान अज्ञानिनातु त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव स्या द्वे स्या त्त्रीणीति ॥

॥ मूल ॥

ज्ञाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। एगिंदियाणं भंते ! जीवा किंनाणी २

॥ अनुवाद ॥

वगतिका यथा निरयगतिका । सिद्धगतिकाना भदत ? यथा सिद्धा । सेन्द्रिया भदत ! जीवा किंज्ञानिनो ज्ञानिन ? गौतम ! चत्वारि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । एकेन्द्रिया भदत । जीवा कि ज्ञानिनो ज्ञानिन ? यथा पृथिवीकायिका । द्विन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया

॥ भावार्थ ॥

हिवे। तिन्निअन्नाणाइं भयणाएत्ति । सिद्धिगइयाणभंते जहासिद्धा । सिद्धिगइयाणमित्यादि, जिम सिद्ध केवलज्ञानीकह्या तिम सिद्धगतिक, पणि केवलज्ञानी कहवा इतिभाव यद्यपि सिद्धने अने सिद्धगतिकने अन्तरगति अभावथकी कोई विशेषनथी तथापि इहां गतिद्वार चलायात पणाथकी ते देखाड्या इम द्वारान्तरनेविषे पणि परस्पर अंतर्भावे पणि ते तेविशेष अपेक्षाये पुनरुक्तपणो जाणवो नथी, हिवे इन्द्रियद्वार बोलाकहेछे—सइंदियाणभंते जीवा किंनाणी अन्नाणी। सइन्द्रिय कहिये इन्द्री उपयोगवन्त ते हेभगवन्! जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चत्तारिणाणाइं। हेगौतम! चारज्ञान भजनायेंहुवे तेकिम कदाचित् दोय कदाचित् तीन कदाचित् चार ज्ञानहुवे तेहने केवलज्ञान नहुवे केवलने अनिन्द्रियपणाथकी द्व्यादिकभाव ज्ञाननेभाव लब्धिनो अपेक्षाये जाणवो तथा उपयोगअपेक्षायें सगलाने एकदा एकहीज ज्ञानहुवे अज्ञानीनो। तिन्निअन्नाणाइं भयणाए। तीनअज्ञान भजनाये हुवे किवारे दोय किवारे तीन इति। एगिंदियाणभंते जीवाकिंणाणी अन्नाणी जहापुढविकाइया। एकेंद्री हेभगवन्! जीव स्यूं

॥ टीका ॥

जहापुढविकाइयत्ति ॥ एकेन्द्रिया मिथ्यादृष्टित्वा दज्ञानिन स्तेच व्यज्ञानाएवे त्यर्थ ॥ वेइदियेत्यादि ॥ एषा द्वेज्ञाने सासादन स्तेपू त्पद्यत इति कत्वा सासादन श्चोत्कष्टत षडावलिकामानो ऽतो द्वेज्ञाने तेपु लभ्येते इति ॥ अणिदियत्ति ॥ केवलिन , कायद्वारे ॥ सकाइयाणमित्यादि ॥ सह काये नौदारिकादिना शरीरेण पृथिव्यादिषट्कायान्यतरेणवा; कायेन ये ते सकाया स्तएव सकायिका स्तेच केवलिनो पि स्युरिति सकायिकाना

॥ मूल ॥

? जहा पुढविकाइया, बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं दोणाणा दोअन्नाणा नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया । अणिंदियाणं भंते! जीवा किंनाणी २ ? जहा सिद्धा । सकाइयाणं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी

अनुवाद

णा द्वे अज्ञाने नियमात् । पञ्चेन्द्रिया यथा सेन्द्रिया । अनिन्द्रिया भदत । जीवा किं ज्ञानिन ? यथा सिद्धा । सकायिका भदत । जीवा.

॥ भाषा ॥

ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर जिम पृथिवीकायिक कह्या तिमकहवा एकेद्रीने मिथ्यादृष्टि पणाथकी अज्ञानवतहुवे ते पणि बेज्ञानी इत्य थे । बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाण दोणाणा दोअन्नाणाणियमा । एहोने बेज्ञानहुवे सासादन सम्यक्त्ववन्त एहोनेविषे ऊपजे इमकरीने अने सासाद न उत्कृष्टथी छ आवली ताई रहे एतलामाटेबेज्ञान तेहनेविषे पामीवें तथा दोय अज्ञान तो नियमथकी हुवे । पंचिदियाजहासइंदिया । पचेद्री जिम सइन्द्री कह्या तिम चारज्ञान तीन अज्ञान भजनाये कहवा । अणिदियाणभतेजीवा किणाणी जहासिद्धा सकाइयाणभते जीवाकिणाणी अणाणी । अ निन्द्रिय ते केवली ते हेभगवन् । जीव स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जिम सिद्ध केवलज्ञानीकह्या तिम अनिन्द्रिय पणिक ह्या ॥ हिवे चोथो कायद्वार कहेछे—औदारिकादिकशरीर ते काय कहिये तेणे सहित ते सकायिक अथवा पृथिव्यादिक सकाय तेमाहे एककोई कायेकरी सहित ते सकायिक कहिये ते हेभगवन् । स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचणाणाइ तिण्णिअणाणाइ भयणाए । हेगौतम । केवली पणि सकायिक कहिये तेमाटे सकायिक सम्यग्दृष्टीने पचज्ञानहुवे, मिथ्यादृष्टीने तीन अज्ञान भजनायेहुवे तेमाटेकह्यु पचणाणाइ इत्यादि । पुढविकाइया जाववणस्सइकाइया । पृथिवीकायिक १ अप्कायिक २ तेऊकायिक ३ वाउकायिक ४ वनस्पतीकायिक ५ ए पचनो प्रश्नकीधो

॥ टीका ॥

सम्यग्दृशा पञ्चज्ञानानि मिथ्यादृशा तु त्री एयज्ञानानि भजनया स्युरिति ॥ अकाइयाणंति ॥ नास्तिकाय उक्तलक्षणो येषा ते अकाया स्तएवा कायिका' सिद्धा , सूक्ष्मद्वारे ॥ जहापुढविकाइयत्ति ॥ द्व्यज्ञानिन सूक्ष्मा मिथ्यादृष्टित्वा दित्यर्थ ॥ जहासकाइयत्ति ॥ बादरा केवलिनोपि भवन्ती

॥ मूल ॥

? गा० ! पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया , नोनाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी त०—मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय । तसकाइयाजहासकाइया । अकाइयाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? जहा सिद्धा। सुहुमाण भंते ! जीवा किंनाणी२ ? जहा पुढविकाइया। बादराण भंते ! जीवा किं

॥ अनुवाद ॥

कि ज्ञानिनो ज्ञानिन ? गौतम । पंच ज्ञानानि त्री एयज्ञानानि भजनया । पृथिवीकायिका याव द्वनस्पतिकायिका नोज्ञानिनो ज्ञानिनो नियमाद् द्व्यज्ञानिन स्तद्यथा—मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च । त्रसकायिका यथा सकायिका । अकायिका भदंत । जीवा कि ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? यथा सिद्धा । सूक्ष्मा भदंत । जीवा कि ज्ञानिन ? यथा पृथिवीकायिका । बादरा भदंत । जीवा कि ज्ञानिन ? यथा सकायिका ।

॥ भाषा ॥

तिहा उत्तर । णो णाणी अणाणीणियमादुअणाणी तजहा । ए ज्ञानी नहुवे जेमाटे सासादन सम्यक्त्ववत पणि एहांनेविषे ऊपजेनहो तेमाटे ज्ञाननिषेध्यो अने निश्चे दोयअज्ञान सहितहुवे ते कहेछे—मइअणाणीयसुअणाणीय । मतिअज्ञानी सुतअज्ञानी ए बेअज्ञानवतहुवे । तसकाइयाजहासकाइया । त्रसकायिक जिम सकायिककह्या तिम पचज्ञान तीनअज्ञान भजनायें इहा पणिकहवा । अकाइयाणंभंते जीवाकिंणाणी जहासिद्धा ४ । नहीछे का यउतालक्षण जेहने ते अकायिक जिणवेला चउदमेगुणठाणें योगरूंधे ते अथवा सिद्ध इत्यर्थ, ते हेभगवन् । स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर जिम केवलज्ञानी कह्या तिम ए पणिकहवा, हिवे सूक्ष्मद्वार कहेछे—सुहुमाणंभंते जीवाकिंणाणी जहापुढविकाइयाणं। सूक्ष्म हेभगवन् , जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जिम पृथिवीकायिककह्या एतले ज्ञानी नहुवे अने नियमे दोयअज्ञानीहुवे.मतिअज्ञानी सुतअज्ञानी । बादराणंभंतेजीवाकिंणाणी जहासकाइया । बादर हेभगवन् । जीव स्यूं ज्ञानी ? अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जिम सकाइक । पोसुहु

॥ टीका ॥

ति कृत्वा ते सकायिकवद्भजनया पञ्चज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिनश्च वाच्या इति, पर्याप्तकद्वारे ॥ जहासकाइयत्ति ॥ पर्याप्तका केवलिनोपि स्युरिति ते सकायिकवत्पूर्वोक्तप्रकारेण वाच्या पर्याप्तकद्वारएव चतुर्विंशतिदण्डके पर्याप्तकनारकाणां ॥ तिन्नियअन्नाणानियमत्ति ॥ अपर्याप्तकानामेवा सञ्जि नारकाणां विभङ्गाभावइति पर्याप्तकावस्थायां तेषां मज्ञानत्रयमेवेति ॥ एवजावचउरिंदियत्ति ॥ द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया पर्याप्तका द्व्यज्ञानिन

॥ मूल ॥

नाणी२ ? जहा सकाइया। नोसुहुमा नोबादराणं भंते! जीवा ? जहा सिद्धा । पज्जत्ताणं भंते! जीवा किंनाणी२ ? जहा सकाइया। पज्जत्ताणं भंते! नेरइया किंनाणी ? तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया एवं जाव चउरिंदिया । पज्जत्ताणं भंते !

अनुवाद

नोसूक्ष्मा नोबादरा भदंत । ? यथासिद्धा । पर्याप्ता भदंत । जीवा ? यथा सकायिका । पर्याप्ता भदंत । नैरयिका किं ज्ञानिन. ? त्रीणि ज्ञानानि त्री यज्ञानानि नियमा द्यथा नैरयिका एव याव स्तनितकुमारा. । पृथिवीकायिका यथा एकेन्द्रिया एव याव चतुरिन्द्रिया । प

॥ भाषा ॥

र्याप्तावायराणभंते जहासिद्धा । नहीं सूक्ष्म नहीं बादर ते सिद्ध ते हेभगवन्। ज्ञानी तथा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। जिम सिद्ध केवलज्ञानीकह्या तिम ए पणिकहवा, हिवे पर्याप्तद्वारकहेछे—पज्जत्ताणभंतेजीवा जहासकाइया । पर्याप्तक हेभगवन्। जीव ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर जिम सकायिकने पचज्ञान तीनअज्ञान भजनाये कह्या तिम इहां पणिकहवा जेमाटे पर्याप्ता केवली पणिहुवे पर्याप्तद्वारनेविषे होज चउवीस दंडक कहेछे—पज्जत्ताणभंते णेरइयाकिणाणी तिण्णिणाणा तिण्णिअणाणा णियमा । पर्याप्ता हेभगवन् नारकी स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर हेगौतम तीनज्ञान तीनअज्ञान नियमथकोहुवे अपर्याप्तने होज असञ्जी नारकीने विभगज्ञाननो अभावछे, पणि पर्याप्तअवस्थाये तेहने तीन अज्ञानहुवे ईज। जहाणेरइया एव जावथणियकुमारा। जिम नारकीकह्या तिम असुरकुमार आदिदेई स्तनितकुमारपर्यंत पर्याप्तकने तीनज्ञान तीन अज्ञान नियमेकहवा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया एव जाव चउरिंदिया । पृथिवीकायिक पर्याप्ता जिम एकेंद्रीकह्या तिमकहवा इम यावत् चउ

॥ टीका ॥

एवेत्यर्थ ॥ पज्जत्ताण भंते । पंचिंदियतिरिक्खेत्यादि ॥ पर्याप्तकपञ्चेन्द्रियतिरिश्चा मवधि विभङ्गौवा; केषांचित् स्या त्केषांचि त्पुन नेति श्री

॥ मूल ॥

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किंनाणी २ ? तिन्निणाणा तिन्निअन्नाणा भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया । अपज्जत्ताण भंते! जीवा किंनाणी २ ? तिन्निणाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। अपज्जत्ताणं भंते! नेरइया किंनाणी२ ? तिन्नि नाणा नियमा तिन्निअन्नाणा भयणाए

॥ अनुवाद ॥

र्याप्ता भदंत ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका किं ज्ञानिन २ ? त्रीणि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । मनुष्या यथा सकायिका । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा नैरयिका । अपर्याप्ता भदंत । जीवा किंज्ञानिनो ज्ञानिन २ ? त्रीणिज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । अपर्याप्ता भदंत । नैरयिका किं ज्ञानिन २ ? त्रीणि ज्ञानानि नियमात् त्री ण्यज्ञानानि भजनया, एव याव त्स्तनितकुमारा । पृथिवीकायिका याव द्व

॥ भाषा ॥

रिंद्री ताईंकहवा, जे विकलेंद्री पर्याप्ता वेभ्रज्ञानवंत होयछुयें सासादन सम्यक्त्वना अभावथकी तेमाटे एकेंद्रीनीपरें कह्या । पज्जत्ताणभंतेपंचिंदियतिरिक्खजोणिया किंणाणी अणाणी । पर्याप्ता हेभगवन् पचेंद्रीतिर्यंचयोनिक स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम पर्याप्तक पंचेंद्रिय तिर्यंचने अवधि अथवा विभंग कोइएकने नहुवे तेमाटे तीनज्ञान तीनअज्ञान अथवा बेज्ञान बेअज्ञान तेहनेहुवे मनुष्य जिम सकायिककह्या तिम कहवा एतले पचज्ञान तीनअज्ञान भजनाये हुवे । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहाणेरइया । वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक ए तीन जिम नारकी कह्या पूर्वे तिमकहवा एतले तीनज्ञान तीनअज्ञान नियमे कहवा । अपज्जत्ताणभंतेजीवाकिंणाणी अणाणी । अपर्याप्तक हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानी हुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । तिन्निणाणाइं तिन्निअणाणाइंभयणाए । तीनज्ञान तीनअज्ञान भजनायें विकल्पहुवे । अपज्जत्ताणभंतेणेरइयाकिंणाणी अणाणी । अपर्याप्तक हेभगवन् नारकी स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । तिन्निणाणाइंणियमा तिन्निअणाणाभयणाए । हेगौतम तीनज्ञानतो नियमेहुवे अने तीन अज्ञान भजनाये विकल्पेंहुवे ते असज्ञीयकी ऊपजता ते अपर्याप्तकने विभंगना अभावथकी वे अज्ञानहुवे, त

॥ टीका ॥ णि ज्ञाना न्यज्ञानानि वा ; द्वेवा ; ज्ञाने अज्ञानेवा ; तेषां स्यातामिति ॥ बेइंदियाण दोनाणेत्यादि ॥ अपर्याप्तकद्वीन्द्रियादीना केषांचि त्सासादन सम्यग्दर्शनस्य सद्भावा द्वेज्ञाने केषांचि त्पुन स्तस्या सद्भावा द्वेएवा ज्ञाने अपर्याप्तकमनुष्याणा पुनः सम्यग्दृष्टा मवधिभावे त्रीणि ज्ञानानि यथा

॥ मूल ॥ एवं जाव थणियकुमारा पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया। बेइंदियाणं पुच्छा ? दोणाणा दोअन्नाणानियमा एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण। अपज्जत्तगाणं भंते! मणुस्सा किंनाणी२ ? तिन्नि

अनुवाद नस्पतिकायिका यथा एकेन्द्रियाः । द्वीन्द्रियाणा पृच्छा ? द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने नियमात् । एव याव त्पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । अपर्याप्ता म

॥ भाषा ॥ था सज्ञीयो ऊपजे तेहने तीन अज्ञानहुवे इम भजना जाणवी इम यावत् स्तनितकुमारपर्यंत कहवा नारकीनीपरे तीनज्ञाननियमे तीनअज्ञान भज नायेहुवे । पुढविकाइया जाववणस्सइकाइया जहाएगिंदिया। पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतीकायिकपर्यंत पूर्वे जिम एकेंद्रीकह्या तिम ए पणिकहवा एतले ज्ञानोनही एतले बेअज्ञान नियमेहुवे। बेइंदियाणपुच्छा दोणाणा दोअन्नाणाणियमा । बेइन्द्रीना प्रश्नकीधो उत्तर अपर्याप्ता विगलेंद्रीनेविषे को इएकने सासादन सम्यग्दर्शनना सद्भावथकी बेज्ञानहुवे तेहना असद्भावथकी दोयअज्ञानहुवे तेमाटे नियम इसोकह्यु। एवजावपचिंदियतिरिक्खजोणि याण। इम यावत् पचेंद्री तिर्यचलगे कहवो, अपर्याप्तानेविषे बेज्ञान बेअज्ञान नियमेहुवे। अपज्जत्ताणभंते मणुस्सा किणाणी अन्नाणी तिन्निणाणाइ भ यणाए दोअन्नाणाइं णियमा। अपर्याप्तक हेभगवन् मनुष्य ज्ञानी ? अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम तीनज्ञानभजनाइंहुवे तेकिम अप र्याप्तकमनुष्यने समकितीने अवधिना भावथकी तीनज्ञानहुवे जिम तीर्थंकरने अने अवधिने अभावे तो बेज्ञानहुवे तेमाटे भजनाकही मिथ्यात्वीने बेहो ज अज्ञानहुवे मनुष्यने अपर्याप्तकपणे विभगना अभावथकी । वाणमतराणजहाणेरइया अपज्जत्तगा। वानव्यन्तर अपर्याप्ताने नारकीनीपरे तीनज्ञान बे अज्ञान तथा तीन अज्ञानवन्त कहवा, व्यन्तरनेविषे पणि असज्ञीयको ऊपजताथकाने अपर्याप्ताने विभगना अभावथकी बेअज्ञान शेषने अवधिना तथा विभगनाभावथकी तीनअज्ञानहुवे तेमाटे नारकीनीपरे कह्या । जोइसियवेमाणियाणं तिण्णिणाणा तिण्णिअन्नाणाणियमा । जोइसिएत्यादि, ज्योति

तीर्थंकराणां तदभावेतु द्वेज्ञाने मिथ्यादृशातु द्वेएवा ज्ञाने विभङ्गस्या पर्याप्तकत्वे तेषा मभावा दतएवोक्तं ॥ तिन्निनाणाइंअयणाएदोअन्नाणाइंनि यमत्ति ॥ वाणमंतरेत्यादि ॥ व्यंतरा अपर्याप्तका नारका इव त्रिज्ञाना द्व्यज्ञाना स्त्र्यज्ञानावा, वाच्या स्तेष्व प्यसञ्ज्ञिभ्य उत्पद्यमानाना मपर्याप्तका ना विभङ्गाभावा च्छेषाणांचा वधे र्विभङ्गस्यवा, भावात् ॥ जोइसियेत्यादि ॥ एतेषुहि सञ्ज्ञिभ्यएवो त्पद्यन्ते तेषांचा पर्याप्तकत्वेपि भवप्रत्ययस्या व धे र्विभङ्गस्य चा वश्यंभावा त्त्रीणि ज्ञाना न्यज्ञानानिवा, स्युरिति ॥ नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगत्ति ॥ सिद्धा, भवस्थद्वारे ॥ निरयभवत्थाणमित्यादि॥ निरयभवे तिष्ठन्तीति निरयभवस्था प्राप्तोत्पत्तिस्थाना स्तेच यथा निरयगतिका स्त्रिज्ञाना द्व्यज्ञाना स्त्र्यज्ञाना श्चोक्ता स्तथावाच्या इति, भव्यद्वारे ॥ ज

नाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं नियमा। वाणमंतरा जहा नेरइया अपज्जत्तगा जोइसियवेमाणियाणं तिन्निना णा तिन्नि अन्नाणा नियमा। नोपज्जत्तगनोअपज्जत्तगाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ जहासिद्धा। निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी ? जहा निरयगइया। तिरियभवत्थाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? तिन्नि

दत। मनुष्या० किं ज्ञानिनो ज्ञानिनः ? त्रीणि ज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञाने नियमात्। वानव्यंतरा यथा नैरयिका अपर्याप्ता। ज्योतिष्कवैमा निकाना त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि नियमात्। नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता भदत। जीवा किं ज्ञानिनो ज्ञानिन ? यथा सिद्धा। निरयभ

पो वैमानिकनेविषै सन्नीयाथकोज ऊपजे तेहने अपर्याप्तकपणें पणि भवप्रत्यय अवधिनो अथवा विभंगनो अवश्यें भावछे तेमाटे तीनज्ञान अथवा तीन अज्ञानहोजहुवे तेमाटेकह्यु। णोपज्जत्तगा णोअपज्जत्तगाणभंते जीवाकिंणाणी अणाणी जहासिद्धा। नही पर्याप्ता नही अपर्याप्ता ते सिद्धकहवा ते हेभगवन् जीव स्युं ज्ञानी अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिमसिद्धकह्या तिम ए पणि कहवा एतलेएक केवलज्ञानवन्त कहवा ७॥ हिवे भवस्थद्वार कहेछे—णिरयभवत्थाणभंते जीवाकिंणाणीअणाणी जहा णिरयगइया। नरक भवनेविषै रहे ते नरक भवस्थ कहिये पाम्या उत्पत्तिस्थान ते हेभगवन् जीव स्युं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिम नरकगतिक तीनअज्ञानवन्त नियमेतीनज्ञानवन्त भजनाये तिम एपणिक

॥ टीका ॥

हासकाइयत्ति ॥ भवसिद्धिका· केवलिनोपीति ते सकायिकव द्भजनया पञ्चज्ञाना स्तथा याव त्सम्यक्त्व नप्रतिपन्ना स्ताव द्भजनयैव अज्ञानाश्च वाच्याइ

॥ मूल ॥

णाणा तिन्नि अन्नाणा भयणाए। मणुस्सभवत्था जहा सकाइया। देवभवत्थाणं भंते! जहा निरयभवत्था, अभवत्था? जहा सिद्धा। भवसिद्धियाणं भंते! जीवा किंनाणी? जहा सकाइया। अभवसिद्धियाणं पुच्छा

अनुवाद

वस्था भदंत। जीवा किं ज्ञानिनो अज्ञानिनश्च? यथा निरयगतिका। तिर्यग्भवस्था भदंत। जीवा· किं ज्ञानिनो ज्ञानिन· ? त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। मनुष्यभवस्था यथा सकायिका। देवभवस्था यथा निरयभवस्था। अभवस्था यथा सिद्धा। भवसिद्धिका भदंत।

॥ भाषा ॥

हवा। तिरियभवत्थाणभंते जीवाकिंणाणीअन्नाणी तिण्णिणाणाइ तिण्णिअन्नाणाइ भयणाए। तिर्यचभवस्थ हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीछे ? इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम तीनज्ञान पूर्वलोपरे भजनायेकरी हुवे तीनअज्ञान पणि भजनायेकरी कहवा केतलाएकने मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगज्ञान ३ ए तीनहुवे। मणुस्सभवत्थाजहासकाइया। मनुष्यभवस्थ जिम सकाइकनकह्या तिमकहवा एतले पचज्ञान तीनअज्ञान भजनायें हुवे। देवभवत्थाजहाणिरयभवत्था अभवत्थाजहासिद्धा ८। देवभवस्थ जिम नरकभवस्थकह्या तिमकहवा, एतले तीन ज्ञानवन्त तथा वे अज्ञानवन्त तथा तीन ज्ञानवन्त हुवे अभवस्थ ते सिद्धनीपरे कहवा भवनेविषे नरह्या तेमाटे तेहने एक केवलज्ञान कहवो, हिवे भव्यद्वार कहेछे—भवसिद्धियाणभंते जीवाकिंणाणी जहा सकाइया। भवसिद्धिक हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर भवसिद्धिक केवली पणि कहिये तेमाटे सकायिकनीपरे भजनाये पचज्ञान कहवा, तथा जालगे सम्यक्त्व नपाम्या तालगे भजनायेज तीनअज्ञान कहवा। अभवसिद्धियाणपुच्छा गोयमा णोणाणी अन्नाणी तिण्णिअन्नाणाइभयणाए। अभव्यनो प्रश्नकीधो उत्तर हेगौतम। अभवसिद्धिककहिये अभव्य तेहने तीन अज्ञानहीज भजनायेहुवे तेहने सदैव मिथ्यादृष्टि पणायकी एतलामाटे कदापि नहीं ज्ञानहुवे अज्ञानीहीजहुवे तीनअज्ञानभजनायेहुवे। णोभवसिद्धिय णोअभवसिद्धियजीवा जहासिद्धा ८। नहीं भवसिद्धिक नहीं अभवसिद्धिक ते सिद्धहीज जहा सिद्धनीपरेकहवा एतले णिचमाएगणाणी, केवलणाणी ॥ हिवे सन्नीद्वार कहेछे—सण्णी

ति, अभवसिद्धिकाना त्वज्ञानत्रयं भजनया स्या त्सदा मिथ्यादृष्टित्वा तेषा मत उक्तं ॥ नोनाणीअन्नाणीत्यादीति ॥ सन्निद्वारे ॥ जहासइंदियत्ति॥ ज्ञानानि चत्वारि भजनया अज्ञानानिच त्रीणि तथैवेत्यर्थ ॥ असन्नीजहाबेइंदियत्ति ॥ अपर्याप्तकावस्थाया ज्ञानद्वयमपि सासादनतया स्यात् प र्याप्तकावस्थाया त्वज्ञानद्वय मेवे त्यर्थ, लब्धिद्वारे लब्धिभेदान् दर्शयन्नाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ तत्र लब्धि रात्मनो ज्ञानादिगुणाना तत्तत्क र्मक्षयादितो लाभ, साच दशविधा तत्रच ज्ञानस्य विशेषबोधस्य पञ्चप्रकारस्य तथाविधज्ञानावरणक्षयक्षयोपशमाभ्या लब्धि र्ज्ञानलब्धि रेव मन्य

? गोयमा ! नोणाणी अन्नाणी तिण्णिअन्नाणाइं भयणाए। नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धियाण जीवा जहा सिद्धा। सण्णीणंपुच्छा जहा सइंदिया, असण्णी जहा बेइंदिया, नोसण्णी नोअसण्णी जहा सिद्धा॥ कइविहाणं भंते ! लद्धी प० गोयमा ! दसविहा लद्धी प०, तंजहा—नाणलद्धी १ दंसणलद्धी २ चरित्तलद्धी ३ चरि

जीवा कि ज्ञानिनो ज्ञानिन ? यथा सकायिका । अभवसिद्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! नोज्ञानिनो अज्ञानिन त्रीण्य ज्ञानानि भजनया । नो भवसिद्धिका नोअभवसिद्धिका जीवा यथा सिद्धा । सज्ञिना पृच्छा ? यथा सन्द्रिया । असज्ञिनो यथा द्वीन्द्रिया । नोसज्ञिनो अमज्ञिनो य था सिद्धा । कतिविधा भदन्त ! लब्धि प्रज्ञप्ता ? गौतम ! दशविधा लब्धि प्रज्ञप्ता तद्यथा-ज्ञानलब्धि, दर्शनलब्धि, चारित्रलब्धि, चा

णपृच्छा जहासइंदिया असण्णीजहाबेइंदिया । सण्णी हेभगवन् इत्यादि, प्रश्नकीधो उत्तर जिम सइन्द्रियकह्या तिम च्यारज्ञान तीन अज्ञानभजनाये क हवा असन्नी जिम बेइन्द्रीकह्या तिमकहवा अपर्याप्तक अवस्थानेविषे ज्ञान २ पणि सासादनपणेहुवे पर्याप्तक अवस्थाये तो अज्ञानदोयहीज छे । नो सण्णी नोअसण्णी जहासिद्धा १० । नहींसन्नी नहींअसन्नी ते जिम सिद्धनियछे एक केवलज्ञानी कह्या तिमकहवा, हिवे लब्धिभेद देखाडतो कहेछे—क इविहाणभते लद्धी प० । केतलेभेदे हेभगवन् लब्धिकही लब्धिकहिये आत्माने ज्ञानादिगुणनो ते ते कर्मना क्षयथकी लाभ ते लब्धिकहिये इतिप्रश्न उ त्तर । गोयमा दसविहालद्धी प० त० । हेगौतम दशभेदे लब्धि कहिये ते कहेछे—णाणलद्धी दंसणलद्धी । ज्ञानविशेषावबोध ते पचप्रकारे तथाविध ज्ञा

॥ टीका ॥

त्रापि, नवरं दर्शनं रुचिरूप आत्मनः परिणामः, चरित्रं चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमोपशमजो जीवपरिणामः, तथा चरित्रंच तदचरित्रंचेति चरित्राचरित्रं संयमासंयमः स्तच्च प्रत्याख्यानकषायक्षयोपशमजो जीवपरिणामः, दानादिलब्धयस्तु पञ्चप्रकारान्तरायक्षयक्षयोपशमसम्भवा, इहच सकृद्भोजनमशनादीनां भोगः पौनःपुन्येन चोपभोजनमुपभोगः सच वस्त्रभवनादेः दानादीनितु प्रसिद्धानीति, तथा इन्द्रियाणां स्पर्शनादीनां मतिज्ञानावरणक्षयोपशमसम्भूतानां मेकेन्द्रियादिजातिनामकर्मोदयनियमितक्रमाणां पर्याप्तकनामकर्मादिसामर्थ्यसिद्धानां द्रव्यभावरूपाणां लब्धिरात्मन इती

॥ मूल ॥

त्ताचरित्तलद्धी ४ दाणलद्धी ५ लाभलद्धी ६ भोगलद्धी ७ उवभोगलद्धी ८ वीरियलद्धी ९ इंदियलद्धी १० । णाणलद्धीणं भंते! कतिविहा प० ? गो० ! पचविहा पं०, तं०—आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवलनाणलद्धी । अन्नाणलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प०, तंजहा—मइअन्नाणलद्धी सुयअ

अनुवाद

रित्राचारित्रलब्धि, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, वीर्यलब्धि, इन्द्रियलब्धि । ज्ञानलब्धि भदंत ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पचविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि यावत् केवलज्ञानलब्धि । अज्ञानलब्धि भदंत ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौ

॥ भाषा ॥

नावरण क्षयोपशमथकी लब्धि ते ज्ञानलब्धि इम बोलस्थानक पणिकहवा, १ रुचिरूप आत्मपरिणाम ते दर्शनसामान्यावबोध तेहनी लब्धि २ । चरित्तलद्धी चरित्ताचरित्तलद्धी दाणलद्धी लाभलद्धी भोगलद्धी उवभोगलद्धी वीरियलद्धी इंदियलद्धी । चारित्रमोहनीय क्षयोपशमथको ऊपनो जीवपरिणाम ३ संयमासंयम अप्रत्याख्यान कषाय क्षयोपशमथकी ऊपनो जीवपरिणाम ४ पांचप्रकार अन्तराय क्षयक्षयोपशमथको ऊपनो जे लब्धि ५ लाभान्तराय क्षयक्षयोपशमथकी ऊपनो जे लब्धि ६ एकवार जे भोगवीये ते भोग अशनादि तेहनीलब्धि ७ वार २ जे भोगवीये ते वस्त्र भवनादि तेहनीलब्धि ८ वीर्य चक्षनादिशक्ति तेहनी लब्धि ९ इन्द्रियस्पर्शनादि तेहनी मतिज्ञानावरण क्षयोपशम सभूत तेहनीलब्धि ते १० । णाणलद्धीणंभंतेकइविहा प० । ज्ञानलब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा प० त० । हेगौतम पांचभेदे कही ते कहेछे—आभिणिबोहियणाणलद्धी जाव केवल

॥ टीका ॥

न्द्रियलब्धि , अथ ज्ञानलब्धे विपर्ययभूताऽज्ञानलब्धि रित्यज्ञानलब्धिनिरूपणायाह ॥ अन्नाणलद्धीत्यादि ॥ सम्मद्दसणेत्यादि ॥ इह सम्यग्दर्शन मि
थ्यात्वमोहनीयकर्माणुवेदनो १ पशम २ क्षय ३ क्षयोपशम ४ समुत्थ आत्मपरिणाम , मिथ्यादर्शन मशुद्धमिथ्यात्वदलिकोदयसमुत्थो जीवपरिणाम ,
सम्यग्मिथ्यादर्शनतु अर्द्धविशुद्धमिथ्यात्वदलिकोदयसमुत्थ आत्मपरिणामएव ॥ सामाइयचरित्तलद्धित्ति ॥ सामायिक सावद्ययोगविरतिरूप एतदेव च
रित्र सामायिकचरित्र तस्य लब्धि सामायिकचरित्रलब्धि , सामायिकचरित्रंच द्विधा इत्वर यावत्कथिकच, तत्राल्पकाल मित्वर तच्च भरतैरावतेषु

॥ मूल ॥

णाणलद्धी विभंगणाणलद्धी । दंसणलद्धीण भंते ! कतिविहा प० ? गोयमा ! तिविहा—सम्मदंसणलद्धी मि
च्छादंसणलद्धी सम्मामिच्छादंसणलद्धी । चरित्तलद्धीणं भंते! कइविहा प० ? गोयमा ! पचविहा पन्नत्ता

अनुवाद

तम । त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–मत्यज्ञानलब्धि श्रुताज्ञानलब्धि विभंगज्ञानलब्धि । दर्शनलब्धि भदत । कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । त्रिवि
धा प्रज्ञप्ता तद्यथा–सम्यग्दर्शनलब्धि , मिथ्यादर्शनलब्धि सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि । चारित्रलब्धि कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । पचविधा

॥ भाषा ॥

णाणलद्धी । मतिज्ञानलब्धि १ श्रुतज्ञानलब्धि २ अवधिज्ञानलब्धि ३ मनपर्यवज्ञानलब्धि ४ केवलज्ञानलब्धि ५ । अन्नाणलद्धीणभंते कइविहा प० । अज्ञान
लब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही छे तिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा प० तं० । हेगौतम तीनभेदे कही ते कहेछे—मइअन्नाणलद्धी सुयअन्नाणलद्धी विभग
णाणलद्धी ३ । मतिअज्ञानलब्धि १ श्रुतअज्ञानलब्धि २ विभगज्ञानलब्धि ३ । दसणलद्धीणभंते कइविहा प० । दर्शनलब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही इति
प्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा प० तं० । हेगौतम तीनभेदे कही ते कहेछे—सम्मदसणलद्धी मिच्छादसणलद्धी सम्मामिच्छादसणलद्धी । मिथ्यात्वमोहनीय
कर्म अनुवेदन क्षयोपशम तेहथी ऊपनो आत्मपरिणाम ते सम्यग्दर्शन १ अशुद्धमिथ्यात्व दलना उदयथकी ऊपनो जीव परिणाम मिथ्यादर्शन २ शुद्ध अ
शुद्ध कर्मदलना उदयथकी जे ऊपनो आत्मपरिणाम ते ३ इत्यादिक लब्धि ते । चरित्तलद्धीणभंतेकइविहा प० । चारित्रलब्धि हेभगवन् केतलेभेदे कही
इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा प० तं० । हेगौतम पाचभेदेकही ते कहेछे—सामाइयचरित्तलद्धी । सावद्ययोग विरतिरूप एहीज चरित्र ते सा

॥ टीका ॥

प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष्वेवा नारोपितव्रतस्य शिक्षकस्य भवति, यावत्कथिकंतु यावज्जीविकं तच्च मध्यमवैदेहिकतीर्थकरतीर्थान्तर्गतसाधूना मवसेय, तेषा मुपस्थापनाया अभावात्, नन्वित्वरस्यापि यावज्जीवतया प्रतिज्ञाना त्तस्यैव चोपस्थापनाया परित्यागात् कथ न प्रतिज्ञालोप ? अत्रोच्य ते अतिचाराभावा त्तस्यैव सामान्यत सावद्ययोगनिवृत्तिरूपेणा वस्थितस्य शुद्ध्यन्तरापादनेन सञ्ज्ञामात्रविशेषादिति ॥ छेओवट्ठावणियचरित्तलद्धि त्ति ॥ छेदे प्राक्तनसयमस्य व्यवच्छेदेसति यदुपस्थापनीय साधा वारोपणीय त च्छेदोपस्थापनीय, पूर्वपर्यायच्छेदेन महाव्रताना मारोपण मित्य र्थ स्तच्च सातिचार मनतिचारच' तत्रा नतिचार यदित्वरसामायिकस्य शिक्षकस्या रोप्यते तीर्थान्तरसक्रान्तौवा, यथा पार्श्वनाथतीर्था द्वर्द्धमानस्वा मितीर्थ सक्रामत. पञ्चयामधर्मप्राप्तौ, सातिचारन्तु मूलगुणघातिनो य द्व्रतारोपण तच्च तच्चरित्रञ्च छेदोपस्थापनीयचरित्र तस्यलब्धि श्छेदोपस्था

॥ मूल ॥

तंजहा—सामाइयचरित्तलद्धी छेदोवट्ठावणियलद्धी परिहारविसुद्धि चरित्तलद्धीसुहुमसंपरायचरित्तलद्धी अह

अनुवाद

प्रज्ञप्ता तद्यथा—सामायिकचारित्रलब्धि, छेदोपस्थापनिकचारित्रलब्धि' परिहारविशुद्धिचारित्रलब्धि, सूक्ष्मसपरायचारित्रलब्धि, यथा ख्या

॥ भाषा ॥

मायिकचरित्र तेहनी लब्धि तेहना बेप्रकार इत्वर १ यावत्कथिक २ तिहा अल्पकाल ते इत्वरकहिये १ ते भरत ऐरवतक्षेत्रनेविषे पहिला छेहला तीर्थंकरनेवारे अनारोपितव्रत शिष्यकनेहवे यावत्कथिक ते यावज्जीव ते विचला २२ तीर्थंकर तथा महाविदेहतीर्थंकर तीर्थ अन्तर्गत साधुने जा णवा तेहने उपस्थापना अभावथको । छेओवट्ठावणियचरित्तलद्धी परिहारविसुद्धियचरित्तलद्धी । पूर्वसयमनो व्यवच्छेद कीधाथका जे उपस्थापनीय सा धने आरोपनीय ते पूर्व पर्याय छेदकरी महाव्रतनो आरोपण इत्यर्थ तेहना दोयभेद सातिचार १ निरतिचार २ तिहा निरतिचार ते इत्वरसामायि कनाशिष्यने आरोपीये अथवा तीर्थान्तर सक्रातिनेविषे जिम पार्श्वनाथ तीर्थथको वर्द्धमानस्वामी तीर्थप्रते सक्रमताथका पचयामधर्म प्राप्तिथकाहुवे सातिचार ते मूलघातीने जे व्रतनो आरोपण करवो ते चरित्र ते छेदोपस्थापनीय चरित्र तेहनीलब्धि ते छेदोपस्थापनीय चरित्र लब्धि, परिहार कहि ये तपविशेष तेणेकरी विशुद्धजेहता आत्मानू निरमलपणू छे जेहनेविषे ते परिहारविशुद्धिक कहिये ते रूप जे चरित्र ते परिहारविशुद्धिचरित्र तेहना

पनीयचरित्रलब्धि ॥ परिहारविसुद्धियचरित्तलद्धित्ति ॥ परिहार स्तपोविशेष स्तेन विशुद्धि र्यस्मि स्त त्परिहारविशुद्धिक शेष तथैव, एतच्चा द्विविध निर्विशमानक निर्विष्टकायिकञ्च, तत्र निर्विशमानका स्तदासेवका स्तदव्यतिरेका त्तदपि निर्विशमानक, आसेवितविवक्षितचारित्रकाया स्तु निर्विष्टकाया स्तएव निर्विष्टकायिका स्तदव्यतिरेका त्तदपि निर्विष्टकायिकमिति, इह च नवको गणो भवति तत्र चत्वार परिहारिका भव ति' अपरेतु तद्वैयावृत्त्यकरा श्चत्वारएवा नुपरिहारिका, एकस्तु कल्पस्थितो वाचनाचार्यो गुरुभूतइत्यर्थ , एतेषाञ्च निर्विशमानकाना मय परि हार. –परिहारियाणउतवो जहन्नमज्झोतहेवउक्कोसो । सीउण्हवासकाले भणिओधीरेहिपत्तेय ॥ १ ॥ तत्थजहन्नोगिम्हे चउत्थछट्ठतुहोइमज्झिमओ। अट्ठमिहउक्कोसो एत्तोसिसिरेपवक्खामि ॥ २ ॥ सिसिरेउजहन्नाई छट्ठाईदसमचरमगाहोंति । वासासुअट्ठमाइ बारसपज्जतगंनेओ ॥ ३ ॥ पारण गेआयाम पचह्गहदोसुअभिग्गहोभिक्खे । कप्पट्ठियायपइदिण करेंतिएमेवआयाम ॥ ४ ॥ इह सप्त स्वेषणासु मध्ये आद्ययो रग्रहएव पञ्चसु पुन ग्रह स्तत्रा प्येकतरया भक्त मेकतरयाच पानक मित्येव द्वयो रभिग्रहो ऽवगन्तव्यइति–एवछमासतव चरिउपरिहारगाअणुचरंति । अणुचरगेपरि हारिय पयट्ठिएजावछम्मासा ॥ ५ ॥ कप्पट्ठिओविएव छम्मासतवकरेइसेसाउ । अणुपरिहारिगभाव वयतिकप्पट्ठियत्तच ॥ ६ ॥ एवेसोअट्ठारस मास पमाणोउवण्णिओकप्पो । सखेवओविसेसो सुत्ताएयस्सनायव्वो ॥ ७ ॥ कप्पसमत्तीइतय जिणकप्पवाउवेतिगच्छवा । पडिवज्जमाणगापुण जिणस्सग सेपवज्जति ॥ ८ ॥ तित्थयरसमीवासे वगस्सपासेवनोयअणस्स । एएसिजचरण परिहारविसुद्धियततुत्ति ॥ ९ ॥ अन्यैस्तु व्याख्यात परिहारतो मा

लब्धि ते परिहारविशुद्ध चरित्रलब्धि एहना आदरणहारा श्री जिनेश्वर समीपे अथवा जेणे ते तपकर्यो हुवे तेहनेपासे नवजणाहुवे तेमांहि एक गुरु चार तपनाकरणहार चार तेहना अनुचर प्रतीकारक ए नवकगण कहिये ए नवजणामिली वनमांहि रहै उपसर्ग परीसह अहियासे मास अठारल गे जेहवो तपकर्योछे,तेहवोकरे पछे गच्छमाहि आवे अथवा वली तेहीज तप बीजीवारकरे एहने परिहारविशुद्धिचारित्रलब्धिकहिये ए इहां अल्पवि चार लिख्योछे विशेषस्वरूप चाहे ते टीका विचार लब्धी ३ । सुहुमसपराय । सूक्ष्मकहिये किटीसरीखो निरस समराय कहिये सज्वलनरूप कषाय तेह

॥ टीका ॥

सिकचतुर्लघ्वादितप श्चरति य स्तस्य परिहारिकचारित्रलब्धि र्भवतीति, इदञ्च परिहारतपो यथा स्या त्तथो च्यते–नवमस्सतइयवत्थु जहस्रउक्को सउणगादसउं । सुत्तत्यभिग्गहापुण दव्वाइतवोरयणमाई ॥ १ ॥ अयमर्थ यस्य जघन्यतो नवमपूर्वं तृतीयवस्तु याव द्भवति उत्कर्षतस्तु दशपूर्वाणि न्यूनानि सूत्रार्थतो भवन्ति द्रव्यादय श्चाभिग्रहा रत्नावल्यादिश्च तप स्तस्य परिहारतपो दीयते, तद्दानेच निरुपसर्गार्थं कायोत्सर्गो विधीयते, आत्र च नक्षत्रादौ तत्प्रतिपत्ति, तथा गुरु स्त ब्रूते यथाह तव वाचनाचार्यो ऽयञ्च गीतार्थः साधु सहाय स्ते शेषसाधवोपि वाच्या यथा–एसतवपडि वज्जइ नकिंचिआलवइमायआलवह । अत्तठचितगस्सा वाघाउंभेनकायव्वो ॥ १ ॥ तथा कथ मह मालापादिरहित स स्तप कारिष्यामी त्येव विभ्यत स्तस्य भयापहार कार्यं कल्पस्थितश्च तस्यै तत्करोति–किइकम्मचपडिच्छइ परिसपडिपुच्छयपिसेदेइ । सोवियगुरुमुवचिठइ उदतमविपु च्छितकहइ ॥ १ ॥ इह परिज्ञाप्रत्याख्यान प्रति पृच्छा त्वालापक स्ततो सौ यदा ग्लानीभूत समुत्थानादि स्वय कर्तु नशक्नोति तदा भण त्युत्थाना दि कर्तु मिच्छामि ततो नुपरिहारिक स्तूष्णीक एव तदभिप्रेत समस्तमपि करोति आहच–उठ्ठनिसीयणा भिक्खहिंडेज्जभंडगपेहे । कुवियपि यवधवस्सव करेइइयरोवितुसिणीउ ॥ १ ॥ तपश्च तस्य ग्रीष्मशिशिरवर्षासु जघन्यादिभेदेन चतुर्थादिद्वादशान्त पूर्वोक्तमेवेति ॥ सुहुमसपरायच

॥ भाषा ॥

नो बेटनके जेहनेविषे ते सूक्ष्मसम्परायकहिये ते रूपचारित्र तेहनी लब्धि ते सूक्ष्मसम्परायचारित्रलब्धि कहिये जेतलो एकबारजीव दशमें गुण ठाणे चढ्यो हुवे तिहा क्रोधमान मायानोउदय सर्वथा मिट्यो हुवे अने अतिसूक्ष्ममात्र लोभनो उदयहुवे परिणाम भला वर्त्तताहुवे तेहने सूक्ष्मसम्पराय चरित्रलब्धि कहिये एहना पणि दोयभेद विशुद्धमानक १ सक्लिश्यमानक २ तत्र विशुद्धमानक क्षपकश्रेणी उपशमश्रेणी इयआरोहण थकीहुवे, सक्लिश्यमानक ते उ पशमश्रेणीथकी प्रच्यवमानने हुवे २ ४ । अहक्खायचरित्तलद्धी । अहक्खायचरित्तलद्धित्ति, यथा जेणे प्रकारे कह्युछे जे अकषायपणे ते चरित्र तेहवूज ख्या तप्रसिद्ध ते यथाख्यातचरित्र तेहनी लब्धि ते यथाख्यातचारित्रलब्धि एहना पणि दोयभेद उपशम १ क्षपक २ भेदथकी, सर्वथा मोहनीयकर्म उपश मावे अथवा क्षेपवे उपशान्तमोह अथवा क्षीणमोहगुणठाणे यथाख्यातचारित्रलब्धि सर्वोत्तम मुनि नि.कषायचारित्र हुवे क्षपकश्रेणी चढ्योजीव यथाख्या

॥ टीका ॥

रित्तलद्धित्ति ॥ सपरैति ससार मेभि रिति सम्परायाः कपाया सूक्ष्मा लोभांशावशेपरूपा सम्परायाा यत्र त त्सूक्ष्मसम्पराय शेप तथैव एतदपि द्विधा विशुध्यमानक्ष सक्लिश्यमानकञ्च, तत्र विशुध्यमानक क्षपकोपशमकश्रेणिद्वय मारोहतो भवति, सक्लिश्यमानक तूपशमश्रेणीत प्रच्यवमानस्येति ॥ अहक्खायचरित्तलद्धित्ति ॥ यथा येन प्रकारेण आख्यात मभिहित मकषायतयेत्यर्थ, तथैव यत्त द्यथाख्यात, तदपि द्विविध उपशमकक्षपक श्रेणिभेदा च्छेप तथैवेति, एव चरित्ताचरित्तत्यादौ ॥ एगागारत्ति ॥ मूलगुणोत्तरगुणादीना तद्भेदाना मविवक्षया द्वितीयकपायक्षयोपशमलभ्य परिणाममात्रस्यैवच विवक्षया चारित्राचारित्रलब्धे रेकाकारत्व मवसेय, मेव दानलब्ध्यादीना मप्येकाकारत्व भेदाना मविवक्षणात् ॥ बालवीरयल

॥ मूल ॥

रकायलद्धी । चरित्ताचरित्तलद्धीणं भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! एगागारा प० एव जाव उवभोगलद्धी एगागारा । वीरियलद्धीण भंते ! कइविहा प० ? गोयमा ! तिविहा प०, तजहा—बालवीरियलद्धी पंडि

अनुवाद

तचारित्रलब्धिः । चारित्राचारित्रलब्धि र्भदन्त । कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । एकाकारा प्रज्ञप्ता । एव याव दुपभोगलब्धि रेकाकारा । वीर्यलब्धि र्भदन्त । कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा बालवीर्यलब्धि. पण्डितवीर्यलब्धि बालपण्डितवीर्यलब्धि । इन्द्रियलब्धि

॥ भाषा ॥

तचारित्र लाधा पूठे अन्तर्मुहूर्त्ते केवलीहुवे एउपशान्तमोह चीणमोह सयोगी केवली अयोगी केवली ए ४ गुणठाणेहुवे। चरित्ताचरित्तलद्धीणभंते कइविहा प गो० एगागारा प० । चरित्राचरित्रलब्धि हेभगवन् । केतलेभेदेकही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । मूलगुण उत्तरगुणभेद अविवक्षणथकी बीजा कषायना क्षयोपशमलभ्यपरिणाममात्रना विवक्षणथकी चरित्राचरित्र लब्धिनो एकाकार जाणवो । एवजावउवभोगलद्धीएगागारा । इम यावत् दानादि लब्धि आदिदेई उपभोग लब्धिलगे एकाकारपणों कहवो भेदना अविवक्षणथकी अणकहवा माटे । वीरियलद्धीणभंते कइविहा प० । वीर्यलब्धि कि नाकेता कहारे, हेभगवन् । केतलेभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा प० त० । हेगौतम । तीनभेदे कही ते कहेछे—बालवीरियलद्धी पडियवीरियलद्धी बालपडियवीरियलद्धी। असयत तेहनो वीर्यकहिये उद्यम असयम योगनेविषे प्रवृत्ति निबन्धनभूत तेहनी जे लब्धि चारित्रमोहनीयना उदयथकी अथवा

॥ टीका ॥ द्वीत्यादि ॥ वालस्या संयतस्य यद्वीर्यं मसंयमयोगेषु प्रवृत्तिनिबन्धनभूतं तस्य या लब्धि श्चारित्रमोहोदया द्वीर्यान्तरायक्षयोपशमाच्च सातथा एव मितरेऽपि यथायोग वाच्ये, नवरं परिडत संयतो, वालपरिडतस्तु संयतासंयत ॥ तस्सअलद्धियाणांति ॥ तस्य ज्ञानस्य अलब्धिका अलब्धिमन्तो ज्ञानलब्धिरहिता इत्यर्थ. ॥ आभिणिवोहियनाणेत्यादि ॥ आभिनिबोधिकज्ञानलब्धिकाना चत्वारि ज्ञानानि भजनया केवलिनो ना स्याभिनिवोधि

॥ मूल ॥ यवीरियलद्धी वालपंडियवीरियलद्धी । इंदियलद्धीणं भंते ! कतिविहा प० ? गोयमा ! पंचविहा प० तं०—सोइंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी । णाणलद्धियाण भंते ! जीवा किंणाणी अणाणी ? गोयमा ! णाणी नोअणाणी अत्थेगइया दुणाणी एवं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं भंते ! जीवा किंणाणी

अनुवाद भंदन्त । कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम । पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—श्रोत्रेंद्रियलब्धि यांव त्स्पर्शेन्द्रियलब्धि । ज्ञानलब्धिका भदन्त । जीवा. किंज्ञानिनो ज्ञानिन. ? गौतम । ज्ञानिनो नोज्ञानिन. केचन द्विज्ञानिन एव पञ्च ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिका भदन्त । जीवा किंज्ञा

॥ भाषा ॥ वीर्यान्तराय क्षयोपशम थकी ते वालवीरियलब्धि १ इम वीजा पणि यथायोगे कहवा एतलोविशेष पण्डितकहिये संयती बालपण्डितकहिये संयतासंयती ३ । इंदियलद्धीणभंते कइविहा प० । इन्द्रियलब्धि हेभगवन् । केतलेभेदे कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचविहा प० तं० । हेगौतम । पांचभेदे कहा ते कहेछे—सोइंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी । श्रोत्रेन्द्रियलब्धि १ इम यावत् स्पर्शनेन्द्रियलब्धि लगे कहवो एतले चक्षुरिन्द्रियलब्धि घ्राणेन्द्रियलब्धि ३ रसनेन्द्रियलब्धि ४ स्पर्शनेन्द्रियलब्धि ५ । णाणलद्धियाणभंते किंणाणी अणाणी । ज्ञानलब्धिक हेभगवन् । जीव स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गो० णाणी णोअणाणी । हेगौतम ? ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । अत्थेगइयादुणाणी । केतलाएक दोयज्ञानवन्तहुवे । एवंपंचणाणाइंभयणाए । इम केतलाएक तीनज्ञानी केतला चारज्ञानी केतलापांचज्ञानीहुवे । तस्सअलद्धियाणभंतेजीवाकिंणाणीअणाणी । ज्ञानलब्धिरहित जीव स्यू ज्ञानी हुवे अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोणाणी अणाणी । हेगौतम । ज्ञानी नहुवे एतावता अज्ञानीहुवे । अत्थेगइयादुअणाणी । केतलाएक दोयअज्ञानीहुवे ।

कज्ञानमिति, मतिज्ञानस्या लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्ते केवलिन स्ते चैकज्ञानिनएव, ये त्वज्ञानिन स्ते अज्ञानद्वयवन्तो ऽज्ञानत्रयवन्तो वा; एव

॥ टीका ॥

अन्नाणी ? गोयमा ! नोणाणी अन्नाणी अत्थेगइया दुअणाणी तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । आभिणिबोहि
यनाणलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी अत्थेगइया दुणाणी च
त्तारिणाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि,
जेणाणी ते नियमा एगणाणी केवलणाणी, जे अन्नाणी ते अत्थेगइया दुअन्नाणी तिन्नि अन्नाणाइं भय

॥ मूल ॥

निनो ज्ञानिन ? गौतम । नोज्ञानिनो ऽज्ञानिन केचन द्व्यज्ञानिन स्त्रीण्य ज्ञानानि भजनया। आभिनिवोधिकज्ञानलब्धिका भदन्त । जीवा॰
किंज्ञानिनो ज्ञानिन ? गौतम । ज्ञानिनो नोअज्ञानिन केचन द्विज्ञानिन श्चत्वारि ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिका भदन्त । जीवा.
किंज्ञानिनो ज्ञानिन ? गौतम । ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि, ये ज्ञानिन स्ते नियमा देकज्ञानिन केवलज्ञानिन, ये ऽज्ञानिन स्ते केचन द्व्यज्ञा

अनुवाद

तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तीनअज्ञानभजनायेहुवे। आभिणिबोहियणाणलद्धियाणभंते जीवाकिंणाणी अणाणी । आभिनिवोधिककहिये मतिज्ञानलब्धि
कण वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीव स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणी णोअणाणी हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी न
हुवे । अत्थेगइया दुणाणी । केतलाएक बेज्ञानवन्तहुवे । चत्तारिणाणाइं भयणाए । केतलाएक तीनज्ञानवत केतलाएक चार ज्ञानवन्तहुवे, इम चारज्ञान
भजनायेंहुवे केवलीने मतिज्ञान नही । तस्सअलद्धियाणभंते जीवाकिंणाणी अणाणी । एतले मतिज्ञान लब्धिरहित ण वाक्यालकारे, हेभगवन् जीव स्यू
ज्ञानी अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे । जणाणी तेणियमाएगणाणी
केवलणाणी । जे ज्ञानी ते नियमे एकज्ञानवन्तहोज हुवे ते केवलीकहिये कारणेज मतिज्ञान अलब्धिकहुवे । जे अणाणी ते अत्थेगइया दुअणाणी ।
जे अज्ञानी ते केतलाएक बे अज्ञानवन्त हुवे केतलाएक तीन अज्ञानवन्त हुवे । तिन्निअणाणाइंभयणाए । इम तीन अज्ञानभजनाये कहया । एवसुयणा

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

श्रुतेपि ॥ ओहिणाणलद्धीत्यादि ॥ अवधिज्ञानलब्धिका स्त्रिज्ञाना केवलमनःपर्यायासद्भावे चतुर्ज्ञानावा, केवलाज्ञावात्, अवधिज्ञानस्यालब्धिकास्तु

॥ मूल ॥

णाए । एवं सुयणाणलद्धियावि । तस्स अलद्धियावि जहा आभिणिबोहियणाणस्स लद्धिया। ओहिणाणलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी अत्थेगइया तिणाणी अत्थेगइया चउणाणी, जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी, जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी

अनुवाद

निन स्त्रीण्यज्ञानानिभजनया । एवं श्रुतज्ञानलब्धिकाअपि । तस्या लब्धिकापि यथा आभिनिबोधिकज्ञानस्य लब्धिका । अवधिज्ञानलब्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिन । केचन त्रिज्ञानिन. केचन चतुर्ज्ञानिन , ये त्रिज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिन , ये चतुर्ज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो वधिज्ञानिनो मन पर्यवज्ञानिन । तस्या लब्धिकाना पृ

॥ भाषा ॥

णलद्धियावि । इम मतिज्ञानलब्धिक नीपरे श्रुतज्ञानलब्धिक पणिकहवा । तस्सअलद्धियावि । श्रुतज्ञान लब्धिरहित पणि । आभिणिबोहियणाणस्सलद्धिया । जिम मतिज्ञान लब्धिरहितकह्या तिम कहवा ज्ञानीहुवे तो एक केवलज्ञानी हुवे केवलज्ञाननेविषे श्रुतज्ञानना अभावथकी जो अज्ञानीहुवे तीन अज्ञान भजनायें हुवे । ओहिणाणलद्धियाण पुच्छा । अवधिज्ञानलब्धिक हेभगवन् । ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णाणी णो अन्नाणी । हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । अत्थेगइयातिन्नाणी अत्थेगइयाचउणाणी । केतलाएक तीनज्ञानीहुवे केतलाएक चारज्ञानना धणीहुवे । जेतिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी ओहियणाणी । जे तीनज्ञानना धणी ते मतिज्ञानवन्त श्रुतज्ञानवन्त अवधिज्ञानवन्त ए तीनज्ञानवन्तहुवे । जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहियणाणी मणपज्जवणाणी । जे चार ज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानवन्तहुवे १ श्रुतज्ञानवन्त २ अवधिज्ञानवन्त ३ मनपर्यवज्ञानवन्त ४ ते चार ज्ञानवन्त हुवे । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । ते अवधिज्ञान लब्धिरहितनी प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे जे ज्ञानीहुवे ते केतलाएक मति १ श्रुत २ ए बेज्ञानवन्तहुवे, तथा मतिश्रुत २ मन

॥ टीका ॥ ये ज्ञानिन स्ते द्विज्ञाना मतिश्रुतज्ञावात्' त्रिज्ञानावा; मतिश्रुतमन पर्यायज्ञावात्, एकज्ञानावा, केवलज्ञावात्' ये त्वज्ञानिन स्ते द्व्यज्ञाना मत्य ज्ञानश्रुताज्ञानज्ञावात् त्र्यज्ञानावा, त्रयस्यापि ज्ञावात् ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानलब्धिका स्त्रिज्ञाना अवधिकेवलाज्ञावात्, चतुर्ज्ञानावा; केवलस्यैवा ज्ञावात्, मन पर्यवज्ञानस्या लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्ते द्विज्ञाना आद्यद्वयज्ञावात्, त्रिज्ञानावा, आद्यत्रयभावा, देकज्ञानावा, केवलस्यै

॥ मूल ॥ मणपज्जवणाणी । तस्स अलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि, केवलणाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं नयणाए । मणपज्जवणाणलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी अ त्थेगइया तिन्नाणी अत्थेगइया चउणाणी, जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी मणपज्जवणाणी,

अनुवाद च्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि । अवधिज्ञानवर्ज्यानि चत्वारि ज्ञानानि त्री यज्ञानानि ज्ञजनया । मन पर्यवज्ञानलब्धिकाना पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो नोअज्ञानिन । केचन त्रिज्ञानिन॰ केचन चतुर्ज्ञानिन , ये त्रिज्ञानिन स्ते आभिनिवोधिकज्ञानिन॰ श्रुतज्ञानिनो मन पर्यव

॥ भाषा ॥ पर्यव ३ ना भाववकी तीनज्ञानवन्त हुवे तथा केवलज्ञानना भाववकी एक केवलज्ञानवन्तहुवे तेमाट अवधिज्ञानवर्ज्यी चारज्ञान भजनायें कहवा त था तीनअज्ञान पणि भजनायें कहवा । मणपज्जव णाणलद्धियाणपुच्छा । मनपर्यव ज्ञानलब्धिकनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णाणी अणाणी । हेगो तम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । अत्थेगइयातिणाणी अत्थेगइयाचउणाणी । केतलाएक तीनज्ञानवन्तहुवे केतलाएक चारज्ञानवन्त हुवे । जे ति णाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी मणपज्जवणाणी । जे तीनज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी मनपर्यवज्ञानी एव तीन ज्ञानवन्त हुवे । जेचउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी ओहियणाणी मणपज्जवणाणी । जे चारज्ञानवन्त हुवे ते मतिज्ञानवन्त श्रुतज्ञानवन्त अवधि ज्ञानवन्त मनपर्यवज्ञानवन्त इम चारज्ञानवन्त कहवा एक केवलज्ञाननोअभाव । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । मनपर्यवज्ञान जेहनेनही ते मनपर्यव ज्ञान अलब्धिक तेहनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम ! ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे जे ज्ञानीहुवे तेहने । मणपज्ज

॥ टीका ॥ वभावात्, ये त्वज्ञानिन स्ते द्व्यज्ञाना आद्याज्ञानद्वयभावात्, त्र्यज्ञानावा; त्र्यज्ञानद्वयस्यापि भावात् ॥ केवलनाणेत्यादि ॥ केवलज्ञानलब्धिका एक ज्ञानिन स्तेच केवलज्ञानिन एव, केवलज्ञानस्या लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्तेषा माद्य ज्ञानद्वय तत्त्रय मतिश्रुतमन पर्यायज्ञानानिवा, केवलज्ञानव

॥ मूल ॥ जे चउणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिनाणी मणपज्जवणाणी । तस्स अलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि मणपज्जवणाणवज्जाइं चत्तारिनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । केव लनाणलद्धियाण भंते ! जीवा किंनाणी२ ? गोयमा ! णाणी नोअन्नाणी नियमा एगणाणी केवलणाणी तस्स अलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! णाणीवि अन्नाणीवि केवलणाणवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्नि अन्ना

अनुवाद ज्ञानिन , ये चतुर्ज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो वधिज्ञानिनो मनःपर्यवज्ञानिन. । तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि । मन पर्यवज्ञानवर्ज्यानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । केवलज्ञानलब्धिका भदन्त । जीवा किं ज्ञानि नो ऽज्ञानिन. ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिन । नियमा देकज्ञानिन केवलज्ञानिनः । तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो प्यज्ञानि

॥ भाषा ॥ वणाणवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । मनपर्यवज्ञान वर्जीने चारज्ञान भजनाये कहवा तकिम कतलाएकन मति श्रुत एवेज्ञान हुवे तथा मति श्रुत अवधिज्ञानना ३ भागथी तीनज्ञानी छे। तथा केवलज्ञानना भावथकी एकज्ञानहुवे इम चारज्ञान तथा तीन अज्ञानभजनायेकहवा । केवलणाणलद्धियाणभंते जीवाकिंणाणी अन्नाणी गोयमा णाणी णोअन्नाणी । केवलज्ञानलब्धिक हे भगवन् । जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इति प्रश्न उत्तर हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे । णियमाएगणाणी केवलणाणी । निश्चये एकज्ञानीहुवे केवलज्ञानवन्त हुवे । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । ते केवलज्ञानरहितनो प्रश्नजोधो उत्तर । गोयमा णाणीवि अन्नाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणि हुवे अज्ञानी पणिहुवे जे ज्ञानी हुवे तेहने । केवलणा णवज्जाइं चत्तारिणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । केवलज्ञानवर्जीने चारज्ञान तथा तीनअज्ञान भजनाये विकल्पेकरी कहवा ।

॥ टीका ॥

र्ज्जानि चत्वारि वा, ज्ञानानि भवन्ति, ये त्वज्ञानिनस्तेषां माद्य मज्ञानद्वयं तत्त्रयं वा भवतीत्येवं भजनावसेयेति ॥ अन्नाणलद्धियाणमित्यादि ॥ अज्ञानलब्धिका अज्ञानिनस्तेषां च त्रीण्यज्ञानानि भजनया द्वे अज्ञाने त्रीणि वा; अज्ञानानीत्यर्थः, अज्ञानालब्धिकास्तु ज्ञानिनस्तेषां च पञ्चज्ञानानि भजनया पूर्वोपदर्शितया वाच्यानि ॥ जहा अन्नाणेत्यादि ॥ अज्ञानलब्धिकानां त्रीण्यज्ञानानि भजनयोक्तानि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानलब्धिकानामपि तानि तथैव, तथा अज्ञानालब्धिकानां पञ्चज्ञानानि भजनया क्तानि मत्यज्ञानश्रुताज्ञानालब्धिकानामपि पञ्च ज्ञानानि भजनयैव वाच्यानीति ॥

॥ मूल ॥

णाइं भयणाए। अन्नाणलद्धियाणं भंते! पुच्छा? गोयमा! नोणाणी अन्नाणी तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धियाणं भंते! गो०! णाणी नोअन्नाणी पंच नाणाइं भयणाए जहा अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। विभंगणाणलद्धियाणं तिन्नि

अनुवाद

नापि। केवलज्ञानवर्ज्यानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। अज्ञानलब्धिकानां भदन्त! पृच्छा? गौतम! नोज्ञानिनो ऽज्ञानिनः, त्रीण्यज्ञानानि भजनया। तस्या लब्धिकानां भदन्त! पृच्छा? गौतम! ज्ञानिनो नोऽज्ञानिनः पञ्च ज्ञानानि भजनया। यथा ऽज्ञानस्य लब्धिकाऽलब्धिकाश्च भणिता एवं मत्यज्ञानस्य श्रुताज्ञानस्य च लब्धिका भणितव्या। विभङ्गज्ञानलब्धिकानां त्रीणि अज्ञानानि नियमात्। तस्या लब्धिकानां भ

॥ भाषा ॥

भतपृच्छा। ज्ञानरहित ते अज्ञान तेहनी लब्धि जहने ते अज्ञानलब्धिक तेहनो प्रश्न कीधो उत्तर। गोयमा णोणाणी अण्णाणी। हे गौतम। ज्ञानी नहीं अज्ञानी हुवे पूठिलोपरे। तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। तीन अज्ञान भजनायें करी कहवा। तस्स अलद्धियाणं भंते पृच्छा। ते अज्ञान लब्धिरहित तेह हे भगवन्! इत्यादि प्रश्न कीधो उत्तर। गोयमा णाणी णोअन्नाणी। हे गौतम ज्ञानी हुवे पणि अज्ञानी नहुवे तेहने पूर्वकह्या तिम। पंचणाणाइं भयणाए। पंच ज्ञान भजनायें हुवे। जहा अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य लद्धिया भाणियव्वा। जिम अज्ञानलब्धिकने तीन अज्ञान भजनायें कह्या, तिम मतिअज्ञानलब्धिकने पणि तीन अज्ञान भजनायें कहवा तथा अज्ञानलब्धिरहितने पंचज्ञान भजनायें कह्या। इम भणिय

॥ टीका ॥

विभङ्गेत्यादि ॥ विभङ्गज्ञानलब्धिकानात् त्रीण्यज्ञानानि नियमा, तदलब्धिकाना ज्ञानिना पञ्चज्ञानानि भजनया अज्ञानिनांच द्वे अज्ञाने नियमा दिति ॥ दसणलद्धीत्यादि ॥ दर्शनलब्धिका श्रद्धानमात्रलब्धिकाइत्यर्थ स्तेच सम्यक्श्रद्धानवन्तो ज्ञानिन स्तदितरे त्वज्ञानिन स्तत्र ज्ञानिना पञ्च ज्ञानानि भजनया अज्ञानिनात् त्रीण्यज्ञानानि भजनयैवेति ॥ तस्सअलद्धियानत्थित्ति ॥ तस्यदर्शनस्ययेषामलब्धि स्ते नसन्त्येव सर्वजीवाना रुचिमा

॥ मूल ॥

अन्नाणाइं नियमा। तस्स अलद्धियाणं पचणाणाइं भयणाए दोअन्नाणाइं नियमा। दंसणलद्धियाणं भंते ! जीवा किंणाणी२ ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि पंचणाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। तस्स अल द्धियाण भंते ! जीवा किंणाणी२ ? गो० ! तस्स अलद्धिया नत्थि। सम्मद्दंसणलद्धियाणं पंचनाणाइं भ

अनुवाद

पञ्चज्ञानानि भजनया। द्वे अज्ञाने नियमात्। दर्शनलब्धिका भदन्त। जीवा कि ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम। ज्ञानिनो ऽप्यज्ञानिनोपि, पञ्च ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। तस्या लब्धिका भदन्त। जीवा कि ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम। तस्या लब्धिका नसति। सम्यग्दर्शनल

॥ भाषा ॥

ज्ञान श्रुतअज्ञान रहितने पणि पचज्ञानभजनाये कहवा। विभगणाणलद्धियाण तिण्णिअन्नाणाइं णियमा। विभङ्गज्ञानलब्धिकने तीनअज्ञान नियमेहुवे। तस्सअलद्धियाण पचणाणाइ भयणाए। ते विभगज्ञानलब्धिरहितने पचज्ञानभजनाये विकल्प कहवा तथा। दोअन्नाणाइं णियमा। दोयअज्ञान नियम थको हुवे। दसणलद्धियाणभते जीवाकिणाणी अन्नाणी। दर्शनलब्धिक ज्ञानमात्रलब्धिक इत्यर्थ ते हेभगवन्। जीव स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीवि अन्नाणीवि। हेगौतम। ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे जे सम्यक् श्रद्धावन्त हुवे तेहने। पचणाणाइं तिण्णिअन्ना णाइंभयणाए। पचज्ञान भजनायें हुवे तथा मिथ्याश्रद्धावन्तने तीन अज्ञानभजनायें हुवे। तस्सअलद्धियाणभते जीवाकिणाणी अन्नाणी। ते दर्शननो जे हने अलब्धि ते हेभगवन्। जीव स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तस्सअलद्धियानत्थि। हेगौतम ते दर्शनलब्धिरहित कोइनथी सर्व जीवने रुचिमात्रना अस्तिपणाथकी। सम्मद्दंसणलद्धियाण पचणाणाइंभयणाए। सम्यग्दर्शन लब्धिक एतले सम्यग्दृष्टीने पञ्चज्ञानभजनायेहुवे। तस्सअल

॥ टीका ॥

त्रस्या स्तित्यादिति ॥ सम्मद्दसणलद्धियाणंति ॥ सम्यग्दृष्टीना ॥ तस्सअलद्धियाणमित्यादि ॥ तस्या लब्धिकाना सम्यग्दर्शन स्या लब्धिमता मिथ्यादृष्टीना मिश्रदृष्टीनाच त्री ण्यज्ञानानि भजनया यतो मिश्रदृष्टीना मप्यज्ञानमेव तात्त्विकसद्बोधहेतुत्वा न्मिश्रस्यति ॥ मिच्छा दंसणलद्धियाणंति ॥ मिथ्यादृष्टीना ॥ तस्सअलद्धियाणमित्यादि ॥ तस्या लब्धिकाना मिथ्यादर्शनस्या लब्धिमता सम्यग्दृष्टीना मिश्रदृष्टीनाच क्रमेण पञ्चज्ञानानि त्रीण्य

॥ मूल ॥

यणाए, तस्स अलद्धियाण तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए, मिच्छादंसणलद्धियाण भंते ! पुच्छा ? गो० ! नाणी नो अन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए, तस्सअलद्धियाणं भंते किनाणी अन्नाणी ? गो० ! नाणीवि अन्नाणीवि, पंचनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । सम्मामिच्छादंसणलद्धिया अलद्धियाय जहा मिच्छा

अनुवाद

ब्धिकाना पच ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना त्री ण्यज्ञानानि भजनया । मिथ्यादर्शनलब्धिकाना त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना पच ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । सम्यङ्मिथ्यादर्शनलब्धिका अलब्धिकाश्च यथा मिथ्यादर्शनलब्धिका अलब्धिकाश्च तथैव भणित

॥ भाषा ॥

द्धियाण तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । एतले मिथ्यादृष्टी तथा मिश्रदृष्टी तेहने तीन अज्ञानभजनायें हुवे, तेनाटे मिश्रदृष्टीने पणि अज्ञानहीज हुवे मिश्र ने तात्त्विक सद्बोधना अहेतुपणाथका । मिच्छादंसणलद्धियाण तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । मिथ्यादृष्टीने तीनअज्ञानभजनाये विकल्पकारी हुवे । तस्सअ लद्धियाण पचनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए । तेहना अलब्धिया एतले सम्यग्दृष्टीने तथा मिश्रदृष्टीने पचज्ञान तीन अज्ञान अनुक्रमे भजनायें हुवे एता वता सम्यग्दृष्टीने पचज्ञानभजनाये हुवे तथा मिश्रदृष्टीने तीन अज्ञानभजनाये हुवे । सम्मामिच्छादंसण लद्धिया अलद्धियाय जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धियाय तहेव भाणियव्व । मिश्रदृष्टीलब्धिक तथा अलब्धिक जिम मिथ्यादर्शनलब्धिक अलब्धिक कह्या तिमकहवा, तिहा मिथ्यादर्शनलब्धिकने तीन अज्ञानभजनायें कह्या तिम मिश्रदृष्टीलब्धिकने पणि तीन अज्ञानभजनाये कहवा, तथा मिश्रदृष्टीअलब्धिकने पचज्ञान तीन अज्ञान भजनायें कह्या तिम मिश्रदृष्टीअलब्धिक ते सम्यग्दृष्टी तथा मिथ्यादृष्टी जाणवो तिहा सम्यग्दृष्टीने पचज्ञानभजनाये हुवे अने मिथ्यादृष्टीने तीन अज्ञानभजनायें क

॥ टीका ॥

ज्ञानानिच भजनयेति ॥ चरित्तलद्धियाणमित्यादि ॥ चरित्रलब्धिका ज्ञानिन एव तेषाञ्च पञ्चज्ञानानि भजनया यत केवल्यपि चारित्री, चरित्रा लब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्तेषा मन पर्यववर्ज्जानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया भवन्ति, कथ मसयतत्वे आद्य ज्ञानद्वय तत्त्रयवा, सिद्धत्वेच केव लज्ञान सिद्धानामपि चरित्रलब्धिशून्यत्वा द्यत स्ते नो चरित्रिणो नो अचरित्रिणइति ये त्वज्ञानिन स्तेषा त्रीण्यज्ञानानि भजनया ॥ सामाइएत्या

॥ मूल ॥

दंसणलद्धिया अलद्धियाय तहेव भाणियव्वा । चरित्तलद्धियाणं भंते! जाव किंनाणी२ ? गोयमा ! पचना णाइं भयणाए, तस्स अलद्धियाण मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारिनाणाइ तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । सामा इयचरित्तलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी अन्नाणी ? गोयमा ! चत्तारि नाणाइ भयणाए, तस्स अलद्धि

॥ अनुवाद ॥

व्या । चरित्रलब्धिका भदन्त । जीवा किंज्ञानिनो२ ? गौतम । पञ्च ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना मन पर्यवज्ञानवर्ज्यानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानिच भजनया । सामायिकचरित्रलब्धिका भ० । जीवा किंज्ञानिनो नोअ० ? गौतम ! चत्वारि ज्ञानानि भजनया । तस्या

॥ भाषा ॥

हवा । चरित्तलद्धियाणभते जीवा किंणाणी अणाणी । चरित्रलब्धिक हेभगवन् । जीव स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पच णाणाइंभयणाए । हेगौतम पचज्ञानभजनायें हुवे जेमाटे केवली पणि चरित्रवन्त होजके—तस्सअलद्धियाण मणपज्जवणाणवज्जाइ चत्तारिणाणाइ तिणिअणाणाइ भयणाए । तेचरित्रअलब्धिक जे ज्ञानीहुवे तेहने मनपर्यवज्ञान वर्जीने चारज्ञानभजनाये हुवे, तेकिम असयतपणे पहिलाज्ञान दोय तथा तीनहुवे तथा सिद्धपणे केवलज्ञानहुवे सिद्धने पणि चरित्रलब्धिना शून्यपणायकी जेमाटे ते सिद्ध नो चरित्तो नो अचरित्तो इति तथा जे अज्ञानी ते हने तीन अज्ञानभजनायें हुवे । सामाइयचरित्तलद्धियाणभते जीवाकिंणाणी अणाणी । सामायिकचरित्रलब्धिक हेभगवन् जीव स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञा नीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चत्तारिणाणाइ भयणाए । हेगौतम सामायिकचरित्रलब्धिक ज्ञानी होजहुवे तेहने केवलज्ञान वर्जीने चारज्ञान भजना ये हुवे । तस्सअलद्धियाण पचणाणाइ तिणि अणाणाइभयणाए । सामायिकचरित्र अलब्धिक जेज्ञानीछे तेहने पचज्ञानभजनाये हुवे छेदोपस्थापनीया

दि ॥ सामायिकचरित्रलब्धिकाज्ञानिन एव तेषाञ्च केवलज्ञानवर्जानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया, सामायिकचरित्रालब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्तेषा पञ्च ज्ञानानि भजनया छेदोपस्थापनीयादिभावेन सिद्धभावेनवा, येत्वज्ञानिन स्तेषा त्रीण्यज्ञानानि भजनया' एव छेदोपस्थापनीयादिष्वपि वाच्य एतदेवाह ॥ एवमित्यादि ॥ तत्रच्छेदोपस्थापनीयादिचरित्रत्रयलब्धयो ज्ञानिनएव तेषा चाद्यानि चत्वारि ज्ञानानि भजनया तदलब्धयो यथाख्यात चरित्रालब्धयश्च ये ज्ञानिन स्तेषा पञ्च ज्ञानानि भजनया' ये त्वज्ञानिन स्तेषा मज्ञानत्रय भजनयैव, यथाख्यातचरित्रलब्धिकानान्तु विशेषो स्त्य त स्तद्दर्शनायाह ॥ नवरमहक्खायेत्यादि ॥ सामायिकादिचरित्रचतुष्टयलब्धिमता छद्मस्थत्वेन चत्वार्यैव ज्ञानानि भजनया, यथाख्यातचरित्रलब्धि

याणं पंच नाणाइं तिन्निय अन्नाणाइं भयणाए । एवं जहा समाइयचरित्तलद्धिया अलद्धियाय भाणिया एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धिया अलद्धियाय भाणियव्वा नवर, अहक्खायचरित्तलद्धियाणं पच नाणाइ

लब्धिकाना पञ्च ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया एव यथा सामायिकचरित्रलब्धिका अलब्धिकाश्च भणिता एव याव द्यथाख्यातचरित्र लब्धिका अलब्धिकाश्च भणितव्या, नवर यथाख्यातचरित्रलब्धिकाना पञ्चज्ञानानि भजनया । चरित्राचरित्रलब्धिका भदन्त । जीवा किंज्ञा

दि भाविकरी तथा सिद्धभाविकरी तथा जे अज्ञानी तेहने तीन अज्ञानभजनाये हुवे। एवजहासामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धियायभणिया । इम जिम सा मायिकलब्धिक अलब्धिक कह्या तिम छेदोपस्थापनीयादिकनेविषे पणिकहवा, तिहा छेदोपस्थापनीयादिचरित्रलब्धिक ज्ञानवन्तहीजहुवे तेहने प हिला चारज्ञानभजनाये हुवे तथा छेदोपस्थापनीयचरित्र त्रयअलब्धिक । एवजाव अहक्खायचरित्तलद्धियाअलद्धियायभाणियव्वा । तथा यथाख्यातचरि त्रअलब्धिकनें चार ज्ञानभजनाये कहवा तथा जे अज्ञानवन्त तेहने तीनअज्ञानभजनाये कहवा तथा यथाख्यातचरित्र लब्धिकनेविषे विशेषछै ते देखा डेछै—णवर अहक्खायचरित्तलद्धियाण पचणाणाइ भयणाए । एतलोविशेष सामायिकादि ४ चारित्र लब्धिवन्तछै छद्मस्थपणेकरी चार हीजज्ञानभजनायें हुवे अनें यथाख्यातचरित्रलब्धिवन्तने छद्मस्थ, तथाभविकरी पचेंज्ञानभजनाये हुवे। चरित्ताचरित्तलद्धिगणभते जीवाकिंणाणी अणाणी। चरित्राच

॥ टीका ॥

धमता छद्मस्थेतरभावेन पश्चापि भजनया भवन्तीति तेषा तथैव ता न्युक्तानीति ॥ चरित्ताचरित्तेत्यादौ ॥ तस्सअलद्धियत्ति ॥ चरित्राचरित्रस्या लब्धिका श्रावका दस्ये तेष ये ज्ञानिन स्तेषा पञ्च ज्ञानानि भजनया, येत्वज्ञानिन स्तेषा त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव॥ दाणलद्धियाणमित्यादि ॥ दानान्तरा यक्षयक्षयोपशमा द्दान दातव्ये लब्धि येषान्ते दानलब्धय स्तेच ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च तत्र ये ज्ञानिन स्तेषा पञ्च ज्ञानानि भजनया, केवलज्ञानिना मपि दानलब्धियुक्तत्वात्, ये त्वज्ञानिन स्तेषा त्रीण्यज्ञानानि भजनयैव, दानस्या लब्धिकास्तु सिद्धा स्तेच दानान्तरायक्षयेपि दातव्याभावा दस्मा

॥ मूल ॥

भयणाए। चरित्ताचरित्तलद्धियाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? गोयमा ! नाणी नोअन्नाणी, अत्थेगइया दुनाणी अत्थेगइया तिन्नाणी, जे दुनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय। जे तिन्नाणी ते आभिणि बोहियनाणीय सुयनाणी ओहिनाणीय। तस्सअलद्धियाणं पचनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। दाणलद्धिया

॥ अनुवाद ॥

निनो अ० ? गौतम । ज्ञानिनो नोअ० केचन द्विज्ञानिन केचन त्रिज्ञानिन । य द्विज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन. श्रुतज्ञानिनश्च। य त्रिज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो वधिज्ञानिनश्च । तस्या लब्धिकाना पच ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । दानलब्धि

॥ भाषा ॥

विरतलब्धिक ते श्रावक ते हे भगवन् जीव स्यू ज्ञानी हुवे अथवा अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणी णो अणाणी हे गौतम ज्ञानी हुवे पणि अज्ञा नी नहुवे । अत्थेगइयादुन्नाणी अत्थेगइयातिन्नाणी । केतलाएक दोयज्ञानी हुवे केतलाएक तीनज्ञानी हुवे । जेदुणाणी ते आभिणिबोहियणाणीय सुयणा णीय । जे दोयज्ञानी हुवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी इम बेज्ञानी हुवे । जे तिणाणी ते आभिणिबोहियणाणीय सुयणाणीय ओहिणाणीय । जे तीनज्ञानी हुवे ते मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी ३ इम तीनज्ञानी हुवे । तस्सअलद्धियाण पचणाणाइं तिन्निअणाणाइ भयणाए । ते श्रावकपणो अनेरा जे ते ज्ञानी तेहने पचज्ञानभजनायें हुवे अनें अज्ञानी तेहने तीन अज्ञानभजनायें हुवे । दाणलद्धियाण पचणाणाइ तिन्निअणाणाइ भयणाए । दानान्तराय क्षय तथा क्षयोपशमथको दान दातव्यनेविषे लब्धिछै जेहने ते दानलब्धिक कहिये, तेज्ञानी पणि हुवे तिहा जे ज्ञानी हुवे तेहने पचज्ञानभजनायें हुवे

॥ टीका ॥

दानासत्वा द्दानप्रयोजनाभावाच्च दानालब्धय उक्ता स्तेच नियमा त्केवलज्ञानिनइति, लाभभोगोपभोगवीर्यलब्धी सेतरा अतिदिशन्नाह ॥ एवमि त्यादि ॥ इच्चा लब्धय सिद्धानामेवो कान्याया दवसेया, ननु दानाद्यन्तरायक्षया त्केवलिना दानादय सर्वप्रकारेण कस्मा न्नभवन्तीति ? उच्यते प्रयोजनाभावात् कृतकृत्यादि ते भगवन्त इति ॥ बालवीरियलद्धियाणमित्यादि ॥ बालवीर्यलब्धयो ऽसंयता स्तेषाञ्च ज्ञानिना त्रीणि ज्ञाना न्यज्ञानि नाञ्च त्रीण्यज्ञानानि भजनया भवन्ति' तदलब्धिका स्तु संयता' संयतासंयताश्च तेच ज्ञानिनएव तेषाञ्च पञ्चज्ञानानि भजनया ॥ पण्डियवीरिये

॥ मूल ॥

ण पचनाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए। तस्सअलद्धियाण पुच्छा ? गोयमा ! नाणी नोअन्नाणी नियमा एग नाणी केवलनाणी एवं जाव वीरियलद्धिया अलद्धिया भाणियव्वा। बालवीरियलद्धियाण तिन्नि नाणाइं तिन्नि

अनुवाद

काना पंच ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया। तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो नोअज्ञानिनो नियमा देकज्ञानिन.केवलज्ञानिन । एव यावद्वीर्यलब्धिका अलब्धिकाश्च भणितव्याः । बालवीर्यलब्धिकाना त्रीणिज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया। तस्या लब्धिकाना पञ्चज्ञानानि

॥ भाषा ॥

केवलज्ञानीने पणि दानलब्धि युक्तिपणाथकी तथा जे अज्ञान तेहने तीन अज्ञानभजनायेंहुवे । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । ते दानना अलब्धिक ते सिद्ध तेहना दानान्तरायने क्षये पणि दातव्यना अभावथकी अथवा दानप्रयोजन अभावथकी दानअलब्धिक कह्या ते हेभगवन् ! ज्ञानी अथवा अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणी णो अणाणी णियमा एगणाणी केवलणाणी । हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानी नहुवे ते नियमथकी एकज्ञानी केवलज्ञानी हुवे । एवजाववीरियलद्धिया अलद्धियाभाणियव्वा । इम लाभ भोग उपभोग वीर्यलब्धिकाप्रते तथा अलब्धिकाप्रते कहवा, एह अलब्धिक तेसि द्धने जे पूर्वोक्त न्यायेंकरी कहवा इहा कोइएक पूछ्ये दानादिक अन्तरायना क्षयथको केवलीने दानादिक सर्वप्रकारेंकरी किसाकारणथकी नहुवे ते हने इमकहिये प्रयोजनना अभावथको कृतकृत्यछै ते भगवन्त इति । बालवीरियलद्धियाणं तिन्निणाणाइं तिन्निअणाणाइं भयणाए । बालवीर्यलब्धिक ते असंयती कहिये तेह ज्ञानीने तीन ज्ञानभजनायेंहुवे अज्ञानीने तीन अज्ञानभजनायें हुवे । तस्सअलद्धियाण पंचणाणाइं भयणाए । तेहना अलब्धि

॥ टीका ॥ त्यादौ ॥ तस्सअलद्धियाणंति ॥ असयतानां सयतासयतानां सिद्धानाञ्चेत्यर्थ, तत्रा सयतानां माद्य ज्ञानत्रय मज्ञानत्रयञ्च भजनया संयतासंय तानान्तु ज्ञानत्रय भजनयैव भवति, सिद्धानान्तु केवलज्ञानमेव, मन पर्यायज्ञानन्तु पण्डितवीर्यलब्धिवतामेवेति नान्येषा मत उक्त ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ सिद्धानाच पण्डितवीर्यालब्धिकत्व पण्डितवीर्यवाच्ये प्रत्युपेक्षणाद्यनुष्ठाने प्रवृत्त्यभावात् ॥ वालपण्डियेत्यादौ ॥ तस्सअलद्धियाणंति ॥ अश्रावकाणा

॥ मूल ॥ अन्नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाण पंचनाणाइं भयणाए । पंडियवीरियलद्धियाणं पंचनाणाइं भय णाए । तस्स अलद्धियाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अन्नाणाइं तिन्निय भयणाए। वालपंडियवीरिय लद्धियाणं तिन्नि नाणाइं भयणाए। तस्स अलद्धियाणं पंचनाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। इंदियलद्धि

अनुवाद भजनया । पण्डितवीर्यलब्धिकानां पञ्चज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना मन:पर्यववर्जानिज्ञाना न्यज्ञानानि त्रीणिभजनया। वालपण्डित वीर्यलब्धिकाना त्रीणि ज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना पञ्च ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । इन्द्रियलब्धिका भदन्त । जीवा कि

॥ भाषा ॥ क ते सयती तथा सयतासंयतीकहिये ते ज्ञानीहोजहुवे तेहने पचज्ञान भजनाये कहवा । पडियवीरियलडियाण पचणाणाइ भयणाए । पण्डितवीर्यलब्धि वन्त ते सयती ते ज्ञानीहोज हुवे तेहने पचज्ञानभजनायेकरी कहवा । तस्सअलद्धियाण मणपज्जवणाणवज्जाइ णाणाइं तिन्निअन्नाणाणि भयणाए। ते अलद्धिकअसयत तथा सयतासयत तथा सिद्ध तेंहमा असयतीने पहिला तीनज्ञान तथा तीनअज्ञानभजनायें कहवा, तथा सयतासंयतने पहिला तीनज्ञा नभजनायें हुवे तथा सिद्धने तो एक केवलज्ञानहीजहुवे तेमाटेकह्यु मनपर्यवज्ञानवर्ज्जीने चारज्ञानभजनायें कहवा, अने तीनअज्ञान पणि भजनायें वि कल्पेकहवा । बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णिणाणाइ भयणाए । वालपण्डित वीर्यलब्धिक ते श्रावक ते ज्ञानवन्त होजहुवे तेमाटे तीन ज्ञानभजना यें कहवा । तस्सअलद्धियाण पचणाणाइं तिण्णिअण्णाणाइंभयणाए । ते अलब्धिकने एतावता अश्रावकने ज्ञानीने पचज्ञानभजनाये हुवे तीनअज्ञानभ जनायें हुवे । इंदियलद्धियाणभंते जीवा किंणाणी अणाणी । इन्द्रियलब्धिक हेभगवन् । जीव स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा प

॥ टीका ॥

मित्यर्थ ॥ इन्द्रियलद्धियाणमित्यादि ॥ इन्द्रियलब्धिका ये ज्ञानिन स्तेषां चत्वारि ज्ञानानि भजनया, केवलंतु नास्ति तेषां केवलिनां मिन्द्रियोपयोगाभावात्, येत्वज्ञानिन स्तेषामज्ञानत्रय भजनयैवेति, इन्द्रियालब्धिका पुन केवलिनएवं त्येकमेव तेषां ज्ञानमिति॥सोइंदियेत्यादि ॥ श्रोत्रेन्द्रियलब्धय इन्द्रियलब्धिका इव वाच्या स्तेच ये ज्ञानिन स्ते अकेवलित्वा दाद्यज्ञानचतुष्टयवन्तो भजनया भवन्ति, अज्ञानिनस्तु भजनया त्र्यज्ञाना ' श्रोत्रेन्द्रियालब्धिकास्तु ये ज्ञानिन स्ते आद्यद्विज्ञानिन स्ते चापर्याप्तका सासादनसम्यग्दृज्ञानिनो विकलेन्द्रिया' एकज्ञानिनोवा, केवलज्ञानिन स्तेहि

॥ मूल ॥

याणं भंते! जीवा किंनाणी अन्नाणी? गोयमा! चत्तारि नाणाइं तिन्निय अन्नाणाइं भयणाए। तस्स अल्लद्धियाण पुच्छा? गोयमा! नाणी नोअन्नाणी नियमा एगनाणी केवलनाणी। सोइंदियलद्धियाणं जहा इंदियलद्धिया, तस्स अलद्धियाणं पुच्छा? गोयमा! नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते अत्थेगइया दुनाणी, अत्थेगइ

॥ अनुवाद ॥

ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम । चत्वारि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो नोअज्ञानिनो नियमा देकज्ञानिन केवलज्ञानिन । श्रोत्रेन्द्रियलब्धिका यथे न्द्रियलब्धिका' । तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम । ज्ञानिनो प्यज्ञानिनोपि ।

॥ भाषा ॥

त्तारिणाणाइं तिण्णिअणाणाइं भयणाए । हेगौतम । ज्ञानीने केवलज्ञानवर्ज्जीने चारज्ञानभजनायें कहवा केवलीने इन्द्रियउपयोगना अभावथकी अज्ञानीने तीनअज्ञानभजनायें हुये । तस्सअलद्धियाण पुच्छा । इन्द्रिय लब्धिरहितनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णाणी णो अणाणोणियमा एगणाणो केवलणाणो । हेगौतम । ज्ञानीहुवे पणि अज्ञानीनहो तेहने नियमथकी एकज्ञान केवलज्ञानहुवे । सोइंदियलद्धियाण जहाइंदियलद्धिया । श्रोत्रेन्द्रियलब्धिक इन्द्रिलब्धिकनी परे कहवा ज्ञानीने केवलज्ञानवर्ज्जीने चारज्ञान भजनायें हुवे, अज्ञानीने तीनअज्ञान भजनायें हुवे। तस्सअलद्धियाणपुच्छा । श्रोत्रेन्द्री लब्धिरहितनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञानी पणिहुवे । जेणाणी ते अत्थेगइयादुणाणी। जज्ञानी ते केतलाएक वेज्ञानवन्त हुवे । अत्थेगइयाएगणाणी । केतलाएक एकज्ञानवन्तहुवे । जे दुणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी । जे

॥ टीका ॥

श्रोत्रेन्द्रियालब्धिका इन्द्रियोपयोगाभावात् ये त्वज्ञानिन स्ते पुनराद्याज्ञानद्वयवतइति ॥ चक्खिंदियेत्यादि ॥ अयमर्थो यथा श्रोत्रेन्द्रियलब्धिमता चत्वारि ज्ञानानि भजनया त्रीणि चाज्ञानानि भजनयैव' तदलब्धिकानाच द्वे ज्ञाने द्वेचा ज्ञाने एकच ज्ञान मुक्त, मेव चक्षुरिन्द्रियलब्धिकाना प्राणेन्द्रियलब्धिकाना तदलब्धिकानाच वाच्य, तत्र चक्षुरिन्द्रियलब्धिका प्राणेन्द्रियलब्धिकाश्च ये पचेन्द्रिया स्तेषां केवलवर्ज्जानि चत्वारि ज्ञानानि त्रीणि चाज्ञानानि भजनया, येतु विकलेन्द्रिया श्चक्षुरिन्द्रियप्राणेन्द्रियलब्धिका स्तेषा सासादनसम्यग्दर्शनभावे आद्य ज्ञानद्वय तदभावे त्वाद्यमेवा ज्ञानद्वय, चक्षुरिन्द्रियप्राणेन्द्रियालब्धिकास्तु यथायोग त्रिद्व्येकेन्द्रिया केवलिनश्च तत्र त्रिद्वीन्द्रियादीना सासादनभावे आद्यज्ञानद्वयसम्भव स्तदभावे

॥ मूल ॥

या एगनाणी, जे दुनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी, जे एगनाणी ते केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी त०—मतिअन्नाणी सुयअन्नाणी । चक्खिंदियघाणिंदियलद्धियाण अलद्धियाणय जहेव सो

अनुवाद

ये ज्ञानिन स्ते केचन द्विज्ञानिन केच नैकज्ञानिन, ये द्विज्ञानिन स्ते आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिन ' य एकज्ञानिन स्ते केवलज्ञानिन । ये ऽज्ञानिन स्ते नियमाद्व्यज्ञानिन स्तद्यथा—मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिन । चक्षुरिन्द्रियप्राणेन्द्रियलब्धिका अलब्धिका यथैव श्रोत्रेन्द्रियल

॥ भाषा ॥

बेज्ञानवन्त ते अपर्याप्तक सासादन सम्यग्दृष्टी विकलेंद्रिय तेहने मतिज्ञान श्रुतज्ञान बेज्ञानवन्तहुवे । जेएगणाणी ते केवलणाणी । जे एकज्ञानवन्त ते केवली ते श्रोत्रेंद्रिय उपयोगना अभावथी । जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी तजहा । जे अज्ञानी ते नियमथकी बेअज्ञानवन्त हुवे ते देखाडेछे—मइ अन्नाणी सुयअन्नाणी । मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी ए बे सहितहुवे । चक्खिंदिय घाणिंदिय लद्धियाण । चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रिय लब्धिक तथा अलब्धिक ते जिम श्रोत्रेंद्रियलब्धिक अलब्धिक कह्या तिमकहवा एतले केवलज्ञान वर्ज्जीने चारज्ञान तीनअज्ञान ० चक्षुरिंद्रिय घ्राणेंद्रियलब्धिकने भजनायें विकल्पे करी कहवा । अलद्धियाणय जहेवसोइंदियलद्धिया अलद्धियाण । तथा जे चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय अलब्धिकछे ते यथायोगे तेरिन्द्रिय बेइन्द्रिय एकेन्द्रिय केवली हुवे तिहा बेइन्द्री तेरिन्द्रीने सासादनभावे पहिला बेज्ञान हुवे तेहने अभावे बेअज्ञान हुवे एकेन्द्रीने पहिला बेअज्ञानहुवे केवलीने एक केवल

त्वाद्याज्ञानद्वयसम्भव केवलिना त्वेक केवलज्ञानमिति ॥ जिभ्भिंदियेत्यादौ ॥ तस्सअलद्वीयत्ति ॥ जिह्वालब्धिवर्ज्जिता स्तेच केवलिन एकेन्द्रियाश्चे त्यतआह ॥ नाणीवीत्यादि ॥ येज्ञानिन स्ते नियमा स्केवलज्ञानिन , येअज्ञानिन स्ते नियमा द्व्यज्ञानिन , एकेन्द्रियाणा सासादनभावतोपि सम्यग्द र्शनस्या भावात् , विभङ्गाज्ञानावाश्चेति ॥ फासिंदियेत्यादि ॥ स्पर्शनेन्द्रियलब्धिकाः केवलज्ञानवर्ज्जज्ञानचतुष्कवन्तो भजनया, तथैवा ज्ञानत्रयवन्तो

इंदियलद्धियाअलद्धिया । जिभ्भिंदियलद्धियाणं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तस्सअलद्धियाणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी केवलनाणी, जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी तंजहा—मइअन्नाणीय सुयअन्नाणीय । फासिंदियलद्धियाय अलद्धियाय जहा इंदियलद्धिया

ब्धिका अलब्धिकाश्च । जिह्वेन्द्रियलब्धिकाना चत्वारिज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानि भजनया । तस्या लब्धिकाना पृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनो प्यज्ञा निनोपि , ये ज्ञानिन स्ते नियमा एकज्ञानिन· केवलज्ञानिन· , ये अज्ञानिन स्ते नियमा द्व्यज्ञानिन स्तद्यथा–मत्यज्ञानिनश्च श्रुताज्ञानिनश्च । स्पर्शेन्द्रियलब्धिका अलब्धिकाश्च यथेन्द्रियलब्धिका अलब्धिकाश्च । साकारोपयुक्ता जीवा किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम ! पञ्च ज्ञानानि

ज्ञानहुवे । जिभिंदियलद्धियाण चत्तारिणाणाइं तिण्णिअणाणाइं भयणाए । रसनेंद्रियलब्धिवतने केवलवर्ज्जीने चारज्ञानभजनायें तथा अज्ञानोने तीन अज्ञानभजनायें कहवा । तस्सअलद्धियाणपुच्छा । रसनेंद्रिय लब्धिरहितनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम ! ज्ञानी पणिहु वे अज्ञानीपणिहुवे । जेणाणीते णियमा एगणाणी जेअणाणीतेणियमा दुअणाणी तंजहा । रसनेंद्री लब्धिरहित ते केवली तथा एकेंद्रिय हुवे तिहा केव लीने नियमथकी एक केवलज्ञानहुवे तेमाटे ज्ञानीने एकज्ञानहुवे, अने जे अज्ञानी ते नियमथकी बे अज्ञानवन्तहुवे ते देखाडेछे—मइअणाणीय सुअ अणाणीय । मतिअज्ञान सुतअज्ञान ए बेअज्ञानवन्तहुवे । फासिंदियलद्धिया अलद्धियाय जहाइंदियलद्धियाय अलद्धियाय ११ । स्पर्शनेन्द्रियलब्धिक त था अलब्धिक जिम इंद्रियलब्धिक कह्या तिमकहवा एतले लब्धिकज्ञानीने केवलज्ञानवर्ज्जीने चार ज्ञानभजनायें कहवा अज्ञानीने तीन अज्ञानभजना

॥ टीका ॥

वा, स्पर्शनेन्द्रियालब्धिकास्तु केवलिनएव, इन्द्रियलब्ध्यलब्धिमन्तोप्येवविधाएवे त्यतउक्त ॥ जहाइंदियेत्यादि ॥ उपयोगद्वारे ॥ सागारोवउत्ते त्यादि ॥ आकारा विशेष स्तेन सह यो बोध· स साकारो विशेषग्राहको बोधइत्यर्थ, तस्मि न्नुपयुक्ता स्तत्संवेदका ये ते साकारोपयुक्ता स्तेच ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च, तत्र ज्ञानिना पञ्चज्ञानानि भजनया, स्याद्वे स्यात्त्रीणि स्याच्चत्वारि स्यादेक, यच्च स्याद्वे इत्या द्युच्यते तल्लब्धिमात्र मङ्गीकृत्य उपयोगापेक्षया त्वेकदैक मेव ज्ञान मज्ञानम्वाति, अज्ञानिनान्तु त्री एयज्ञानानि भजनयैवेति' अथ साकारोपयोगभेदापेक्षमाह ॥ आभिणीत्यादि ॥

॥ मूल ॥

आलद्धियाय। सागारोवउत्ताण भंते ! जीवा किणाणी अन्नाणी? पच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। आभिणिबोहियणाणसागारोवउत्ताणं भंते? चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं सुयनाणसागारोवउत्तावि। ओहि

अनुवाद

त्री एयज्ञानानि भजनया। आभिनिबोधिकज्ञानसाकारोपयुक्ता भदन्त। जीवा· किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? चत्वारि ज्ञानानि भजनया। ए वश्रुतज्ञानसाकारोपयुक्ताअपि। अवधिज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा वधिज्ञानलब्धिका·। मन·पर्यवज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा मन पर्यवज्ञान

॥ भाषा ॥

यें कहवा तथा स्पर्शनेंद्रियअलब्धिक तेकेवलीहोजहुवे तेहने एक केवलज्ञानहोजहुवे इतिभाव ए लब्धिद्वारकह्या ११ हिवे उपयोगद्वार कहैछे—सागारोव उत्ताणभंते जीवाकिंणाणी अन्नाणी। साकारोपयोगवन्त हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पचणाणाइंतिणिअन्नाणा इंभयणाए। हेगौतम। जे ज्ञानीहुवे तेहने पंचज्ञानभजनाये हुवे केतलाएकने बेज्ञानहुवे केतलाएकने तीनज्ञानहुवे केतलाएकने चारज्ञानहुवे केतलाए कने एक ज्ञानहुवे, हिवे साकारोपयोगभेद अपेक्षाये कहैछे—आभिणिबोहियणाणसागारोवउत्ताणभंते जीवाकिंणाणी अन्नाणी। मतिज्ञान साकारोपयोग हेभगवन् जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चत्तारिणाणाइं भयणाए। हेगौतम। मतिज्ञानसाकारोपयोगज्ञानीहोजहुवे तिहां चारज्ञानभजनाये हुवे। एवसुअणाणसागारोवउत्तावि। इम श्रुतज्ञान साकारोपयोगवन्त पणिकहवा। ओहिणाणसागारोवउत्ताजहाओहिणाणलद्धिया। अवधिज्ञान साकारोपयुक्त जिम अवधिज्ञानलब्धिक पूर्वेकह्या तिमकहवा। मणपज्जवणाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवणाणलद्धिया। मनपर्यवज्ञान

॥ टीका ॥

ओहिणाणसागारेत्यादि ॥ अवधिज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा ऽवधिज्ञानलब्धिकाः प्रागुक्ता, स्यात्त्रिज्ञानिनो मतिश्रुतावधियोगात् स्याच्चतुर्ज्ञानिनो मतिश्रुतावधिमनःपर्यवयोगा त्तथावाच्याः ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ मनःपर्यवज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा मनःपर्यवज्ञानलब्धिका प्रागुक्ता, स्यात्त्रि ज्ञानिनो मतिश्रुतमनःपर्यवयोगा त्स्याच्चतुर्ज्ञानिनः केवलवर्जज्ञानयोगा त्तथावाच्या इति ॥ अणागारोवउत्ताणमित्यादि ॥ अविद्यमानआकारो यत्र तदनाकारं दर्शनं तत्रो पयुक्ता स्तत्संवेदका ये ते तथा तेच ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्च, तत्र ज्ञानिना लब्ध्यपेक्षया पञ्च ज्ञानानि भजनया, ऽज्ञानि

॥ मूल ॥

नाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धिया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया । मइअन्नाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं सुयअन्नाणसागारोवउत्तावि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा । अनागारोवउ

अनुवाद

लब्धिका । केवलज्ञानसाकारोपयुक्ता यथा केवलज्ञानलब्धिका । मत्यज्ञानसाकारोपयुक्ताना त्री एयज्ञानानि भजनया । एवंश्रुताज्ञानसाका रोपयुक्ताअपि । विभंगज्ञानसाकारोपयुक्ताना त्रीएयज्ञानानि नियमात् । अनाकारोपयुक्ता भदन्त । जीवा किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिन ? गौतम । पञ्च ज्ञा

॥ भाषा ॥

साकारोपयोगवन्त ते जिम पाछिलि मनपर्यवज्ञानलब्धिवन्त कह्या तिम इहा पणिकहवा । केवलणाणसागारोवउत्ता जहा केवलणाणलद्धिया । केवलज्ञान साकारोपयोगवन्त जिम केवलज्ञानलब्धिआ पूर्वकह्या तिम कहवा । मइअन्नाणसागारोवउत्ताण तिन्निअन्नाणाइ भयणाए । मतिअज्ञान साकारोपयोगवतने तीन अज्ञानभजनायें विकल्पेकरी कहवा । एवंसुयअन्नाणसागारोवउत्तावि विभंगणाणसागारोवउत्ताण तिन्निअन्नाणाइंणियमा । इम श्रुतअज्ञान सा कारोपयुक्तने पणि तीन अज्ञानभजनायें कहवा विभंगज्ञान साकारोपयोगवतने तीन अज्ञान नियमेकरीने हुवे । अणागारोवउत्ताणंभते किंणाणी अ णाणी । अनाकारोपयोगवत हेभगवन् । जीव स्युं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचणाणाइं तिन्निअन्नाणाइं भयणाए । हेगौ तम । जे ज्ञानीहुवे तेहने पचज्ञान भजनायें हुवे जे अज्ञानी तेहने तीनअज्ञान भजनायेंहुवे । एवंचक्खुदंसण अचक्खुदंसण अणागारोवउत्तावि । एवमि

॥ टीका ॥

नान्त् त्री ण्यज्ञानानि भजनयैव ॥ एवमित्यादि ॥ यथा ऽनाकारोपयुक्ता ज्ञानिनो ऽज्ञानिनश्चोक्ता एवं चक्षुर्दर्शनाद्युपयुक्ताअपि ॥ नवरंति ॥ विशेष पुनरय चक्षुर्दर्शनतरोपयुक्ता केवलिनो नभवन्तीति तेषाञ्चत्वारि ज्ञानानि भजनयेति' योगद्वारे ॥ सयोगीणमित्यादि ॥ जरासकाइयत्ति ॥

॥ मूल ॥

नाणं भंते ! जीवा किंनाणी२ ? पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं चक्खुदंसणअचक्खुदंसण अणागारोवउत्तावि, नवरं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि, जे नाणी ते अत्थेगइया तिनाणी अत्थेगइया चउनाणी, जे तिनाणी ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी ? जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी

अनुवाद

नानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । चक्षुर्दर्शना चक्षुर्दर्शनानाकारोपयुक्ता अपि, नवर चत्वारि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि भजनया । अवधिदर्शना नाकारोपयुक्तानापृच्छा ? गौतम ! ज्ञानिनोप्यज्ञानिनोपि । येज्ञानिन स्ते केचन त्रिज्ञानिन केचनचतुर्ज्ञानिनः । येत्रिज्ञानिन स्त आभिनिबोधि कज्ञानिन श्रुतज्ञानिनो वधिज्ञानिन । ये चतुर्ज्ञानिन स्त आभिनिबोधिकज्ञानिनोयावन्मन पर्यवज्ञानिन ।येऽज्ञानिन स्ते नियमा त्र्यज्ञानिन स्तद्य

॥ भाषा ॥

त्यादि, जिम अनाकारोपयुक्त ज्ञानी अज्ञानीकह्या तिम चक्षुदर्शनादिकउपयुक्त पणि कहवा । णवरंचत्तारिणाणाइं तिण्णिअणाणाइं भयणाए । एतलोवि शेष चक्षुदर्शनउपयुक्त केवली नहवे तिवारे तेहने चारज्ञान तीन अज्ञानभजनायेकरी कहवा । ओहिदंसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा । अवधिदर्शन अ नाकारोपयोगवन्त हेभगवन् । जोव स्यू ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाणीवि अणाणीवि । हेगौतम । ज्ञानी पणिहुवे अज्ञा नी पणिहुवे । जेणाणी तेअत्थेगइया तिणाणी । जे ज्ञानीहुवे ते कैतलाएक तीन ज्ञानवंतहुवे । अत्थेगइयाचउणाणी । कैतलाएक चार ज्ञानवंतहुवे । जेतिणाणी ते आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी ओहिणाणी । ते मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए तीन ज्ञानवंतहुवे । जे चउणाणी ते आभिणिबोहि यणाणी जाव मणपज्जवणाणी । जे चार ज्ञानवंतहुवे तेहने मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान ए चारज्ञानवंत हुवे । जेअणाणी तेणियमा

॥ टीका ॥ प्रागुक्ते कायद्वारे यथा सकायिका भजनया पञ्चज्ञाना ऽस्यऽज्ञाना श्चोक्ता स्तथा सयोगा अपिवाच्या एव मनोयोगाद्योपि केवलिनोपि सयोगादीना भावा, तथा मिथ्यादृशा मनोयोगादिमता मज्ञानत्रयभावाच्च ॥ अयोगीजहासिद्धत्ति ॥ अयोगिन केवललक्षणैकज्ञानिनइत्यर्थ । लेश्या

॥ मूल ॥ जे अन्नाणी ते नियमा तिअन्नाणी तं०—मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी । केवलदंसणअणा गारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया । सजोगीणं भंते! जीवा किंनाणी? जहा सकाइया, एवं मणजोगी वयजोगीवि कायजोगीवि अजोगी जहा सिद्धा । सलेस्साणं भंते? जहा सकाइया । किण्हलेसाणं भंते? जहा सकाइया

अनुवाद: या मत्यज्ञानिन श्रुताज्ञानिनो विभङ्गज्ञानिन. । केवलदर्शनानाकारोपयुक्ता यथा केवलज्ञानलब्धिका । सयोगिनो भदन्त । जीवा किंज्ञानिनो ऽज्ञानिन. ? गौतम । यथा सकायिका । एव मनोयोगिनोपि वचोयोगिनोपि काययोगिनोपि । अयोगिनो यथा सिद्धा. । सलेश्या भदन्त ।

॥ भाषा ॥ तिअन्नाणी तंजहा । जे अज्ञानी ते नियमें तीन अज्ञानवतहुवे ते कहेछे—मइअन्नाणी सुयअन्नाणी विभंगनाणी । मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानी । केवलदंसणअणागारोवउत्ताजहाकेवलणाणलद्धिया १२ । केवलदर्शन अनाकारोपयोगवंत हेभगवन् । जीव स्यूं ज्ञानीहुवे अथवा अज्ञानीहुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिम केवलज्ञानलब्धिक एक केवलज्ञानी कह्या तिम ए पणिकहवा, हिवे सयोगीद्वार कहेछे—सजोगीणभंते जीवाकिंणाणी जहा सकाइया । सयोगी हेभगवन् । जीव स्यूं ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । जिम सकायिकने पंचज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह्या तिम सयोगी पणिकहवा जेमाटे केवलीने पणि । एवमणजोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगी जहासिद्धा १२ । मनोयोगादिकना भावछे तेमाटे इम वचनयोगी पणि काययोगी पणि जिम सिद्ध एक केवलज्ञानवंतहुवे तिम अयोगी पणि एक केवलज्ञानवंत कहवा, हिवे लेश्याद्वार कहेछे—सलेसाणभंते जहासकाइया । सलेशी हेभगवन् इत्यादिप्रश्न चोथो उत्तर जिम सकायिकने पंचज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह्या तिम सलेशीने पणि कहवा केवलीने पणि शुक्ललेश्याने सद्भावेंकरी सलेश्यपणाथकी । कण्हलेसाणभंते जहासकाइया सइंदिया । कृष्णलेशी इत्यादि प्रश्न कृष्णलेशी

॥ टीका ॥

द्वारे ॥ जहासकाइयत्ति ॥ सलेश्या. सकायिकव द्भजनया पञ्चज्ञाना स्त्र्यज्ञानाश्च वाच्या, केवलिनोपि शुक्ललेश्यासम्भवेन सलेश्यत्वात् ॥ कण्हले सेत्यादौ जहासइंदियत्ति ॥ कृष्णलेश्या श्चतुर्ज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिनश्च भजनयेत्यर्थ. ॥ सुक्कलेसाजहासलेसत्ति ॥ पञ्चज्ञानिनो भजनया त्र्यज्ञानिनश्चेत्यर्थं ॥ अलेस्साजहासिद्धत्ति ॥ एकज्ञानिनइत्यर्थ । कषायद्वारे ॥ सकसाइयाजहासइंदियत्ति ॥ भजनया, केवलवर्जचतुर्ज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिनश्चेत्यर्थ ॥ अकसाइयाणमित्यादि ॥ अकषायिणा पञ्चज्ञानानि भजनया, कथ मुच्यते छद्मस्थो वीतराग केवलीचा कषाय ? स्तत्र छद्मस्थवीतरागस्या द्य ज्ञान चतुष्क भजनया भवति, केवलिनस्तु पञ्चममिति, वेदद्वारे ॥ जहासइंदियत्ति ॥ सवेदका सेन्द्रियव द्भजनया केवलिवर्जचतुर्ज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिनश्च

॥ मूल ॥

सइंदिया एवं जाव पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा। अलेस्सा ? जहा सिद्धा। सकसाइयाणं भंते ! जहा सइंदिया एव जाव लोहकसाइयाणं। अकसाइयाणं भंते ! किंणाणी२ ? पंच नाणाइ भयणाए। सवेदगाणं भंते !

अनुवाद

यथा सकायिका । कृष्णलेश्या भदन्त ! यथा सकायिका सेन्द्रिया । एव यावत्पद्मलेश्या । शुक्ललेश्या यथा सलेश्या । अलेश्या यथा सिद्धा । सकषायिनो भदन्त ! यथा सेन्द्रिया । एव यावल्लोभकषायिन । अकषायिनो भदन्त ? पञ्चज्ञानानि भजनया । सवेदका भदन्त ? यथा सेन्द्रिया ।

॥ भाषा ॥

जिम सकायिक सइन्द्रिय कह्या तिमकहवा एतले चार ज्ञान तीन अज्ञानभजना.८ । एवजावपद्मलेस्या सुक्कलेस्या जहासलेस्या । इम नील कापोत तेजो यावत् पद्मलेश्यालगे कहवा शुक्ललेश्यो सलेशीनो परे कहवा तेहने पचज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कहवा । अलेस्साजहासिद्धा १४ । अलेश्या सिद्धनी परे कहवा एक केवलज्ञानवत इत्यर्थ, हिवे कषायद्वार कहेछे—सकसाइयाणभंते जहासइंदिया एव जाव लोहकसाइया अकसाइयाणभंते पचणाणा इ भयणाए । सकषाय जिम सइन्द्रीकह्या तिम केवलज्ञानवर्जीने चार अज्ञानभजनाये कहवा इम यावत् लोभकषायलगे कहवो अकषाईनो प्रश्नकीधो उत्तर छद्मस्थ वीतराग तथा केवली ए अकषाई कहिये तिहा छद्मस्थ वीतरागने चार ज्ञानभजनायें हुवे केवलीने पचमो केवलज्ञानहुवे इत्यर्थ, हिवे वेदद्वार कहेछे—सवेदगाणभंते जहासइंदिया । सवेदनो प्रश्नकीधो जिम सइन्द्रीकह्या तिम केवलज्ञानवर्जीने चारज्ञान तीन अज्ञानभजनायें कह

॥ टीका ॥

वाच्याः ॥ अवेदगा जहाअकसाइयत्ति ॥ अवेदका ह्यकषायिव द्भजनया पञ्चज्ञाना वाच्या यतो ऽनिवृत्तिवादरादयो ऽवेदका भवन्ति, तेषुच छद्मस्थाना चत्वारि ज्ञानानि भजनया केवलिनातु पञ्चममिति' आहारकद्वारे ॥ आहारगेत्यादि ॥ सकषाया भजनया चतुर्ज्ञाना उक्तज्ञाना श्चोक्ता, आहारका अप्येव मेव, नवर माहारकाणा केवल मप्यस्ति केवलिन आहारकत्वादपीति ॥ अणाहारगाणमित्यादि ॥ मन पर्यवज्ञान माहारकाणामेवा द्य,पु

॥ मूल ॥

एवं इत्थिवेदगावि एवं पुरिसवेदगावि नपुसगवेदगावि एव अवेदगा जहा अकसाइया। जहा सइंदिया। एवं इत्थिवेदगावि एवं पुरिसवेदगावि नपुसगवेदगावि एवं अवेदगा जहा अकसाइया। आहारगाणं भंते! जीवा? जहा सकसाइया नवरं, केवलनाणंपि। अणाहारगाणं भंते! जीवा किंनाणी२? मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं अणाणाइं तिण्णि भयणाए। आभिणिबोहियनाणस्सण भंते! केवइए विसए

॥ अनुवाद ॥

एव स्त्रीवेदकाअपि। एव पुरुषवेदका अपि। एव नपुसकवेदकाअपि। अवेदका यथा अकषायिन। आहारका भदन्त! जीवा? यथा सक षायिनो नवर केवल ज्ञानमपि। अनाहारका भदन्त! जीवा किंज्ञानिन २? मन.पर्यवज्ञानवर्जानि ज्ञानानि अज्ञानानिच त्रीणिभजनया।

॥ भाषा ॥

वा। एवइत्थिवेयगावि। इम स्त्री वेदसहित पणि कहवा। एवपुरिसवेयगावि। इम पुरुष वेदसहित पणि कहवो। एवणपुंसगवेयगावि। इम नपुसक वेद सहित पणि कहवा। अवेदगाजहाअकसाइया। अवेदक जिम अकषायी कह्या तिम कहवा एतले पचज्ञान भजनायें हुवे जेमाटे अनिवृत्त वादरादि अवे दक हवे तिहा छद्मस्थने चार ज्ञान भजनायेंहुवे केवलीने एकज्ञान हुवे, हिवे आहारक द्वार कहेछे—आहारगाणभते जीवासकसाइया णवर केवलणाण पि। आहारकजीवनो प्रश्नकीधो उत्तर जिम सकषाईने चारज्ञान तीन अज्ञानभजनायेंकह्या तिम पणि कहवा एतलोविशेष केवलीने पणि आहारक पणाथी केवलज्ञान पणि इहा कहवो। अणाहारगाणभते जीवाकिणाणी मणपज्जवणाणवज्जाइ। अनाहारक हेभगवन् जीव स्यू ज्ञानी अथवा अज्ञानी इतिप्रश्न उत्तर मनपर्यवज्ञान आहारकनेज हुवे तेमाटे मनपर्यवज्ञान वर्ज्यो तथा पहिला तीनज्ञान तीनअज्ञान विग्रहगतिने विषे तथा केवलज्ञान केवलिसमुद्घात तथा शैलेशी तथा सिद्धावस्था एतलेस्थानकें हुवे तिहा अनाहारक पणिहुवे तेमाटे मनपर्यवज्ञान वर्जी ज्ञान तीन अज्ञानभजनाये कह

॥ टीका ॥

न ज्ञानत्रय मज्ञानत्रयच विग्रहे केवलच केवलिन समुद्घातशैलेशीसिद्धावस्था स्वनाहारकाणामपि स्या दतउक्त ॥ मणपज्जवेत्यादि ॥ अथ ज्ञानगोचरद्वारे ॥ केवइएत्ति ॥ किंपरिमाण. ॥ विसएत्ति ॥ गोचरो ग्राह्यो र्थ इतियावत्, तच्च भेदपरिमाणत स्तावदाह ॥ सेइत्यादि ॥ स आभिनिबोधिकज्ञानविषय स्तद्वा, भिनिबोधिकज्ञान समासत सङ्क्षेपेण प्रभेदाना भेदे ष्वेवा न्तर्भावेनेत्यर्थ श्चतुर्विध श्चतुर्विधवा, द्रव्यतो द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीन्याश्रित्य, क्षेत्रतो द्रव्याधार क्षेत्र माकाशमात्रवा, क्षेत्रमाश्रित्य, कालतो ऽद्धा द्रव्यपर्यायावस्थितिवा, समाश्रित्य, भावत औदयिकादिभावान् द्रव्याणावा, पर्यायान् समाश्रित्य ॥ दव्वउणति ॥ द्रव्य माश्रित्या भिनिबोधिकज्ञानविषयद्रव्यवा, श्रित्य यदाभिनिबोधिकज्ञान तत्र ॥ आएसेणति ॥ आदेश प्रकार सामान्यविशेषरूप स्तत्र देशेनौ घतो द्रव्यमात्रतया नतु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेतिभाव, अथवा, देशेन श्रुतपरिकर्म्मिततया सर्व

॥ मूल ॥

प० ? गोयमा! सेसमासउ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वउ १ खेत्तउ २ कालउ ३ भावउ ४। दव्वउणं आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइ जाणइ पासइ। खेत्तउणं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वखेत्त जाणइ

अनुवाद

आभिनिबोधिकज्ञानस्य भदन्त। कियान्विषय प्रज्ञप्त. ? गौतम। स समासत श्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावतश्च। द्रव्यतआभिनिबोधिकज्ञानी आदेशेन सर्वद्रव्याणि जानाति पश्यति। क्षेत्रतआभिनिबोधिकज्ञानी आदेशेन सर्वक्षेत्र जानाति पश्यति। एव

॥ भाषा ॥

वा १७, हिवे ज्ञानगोचर द्वारकहैछै—आभिणिबोहियणाणस्सणभते केवइए विसए प० गो० सेसमासतो। मतिज्ञाननो ण वाक्यालकारे, हेभगवन् केतलोविषय स्यू परिमाण विषय अर्थ ग्रहणशक्ति इत्यर्थ कह्यु इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। तेहप्रते भेदपरिमाणथको पहिला कहैछे—सेइत्यादि ते आभिणिबोधिकज्ञ.न विषय अथवा आभिनिबोधिकज्ञान सक्षेपकरी प्रभेदनेविषै अन्तर्भावकरीने इत्यर्थ। चउव्विहे प० त० दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ दव्वओ ण आभिणिबोहियणाणी। चारभेदकह्यु ते कहैछै—द्रव्यथी द्रव्य जे धर्मास्तिकायादिक ते प्रते आश्रयीने क्षेत्रथको द्रव्याधार अथवा क्षेत्रमात्रआश्रयीने कालथी अद्धाप्रते अथवा द्रव्यपर्याय अवस्थितप्रते आश्रयीने औदयिकादिकभावप्रते अथवा द्रव्यनापर्यायप्रते आश्रयीने। दव्वओणति, द्रव्यआश्रयीने आ

॥ टीका ॥

द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जाना त्यवायधारणापेक्षया ऽवबुध्यते ज्ञानस्या वायधारणारूपत्वात् ॥ पासइत्ति ॥ पश्यति अवग्रहेहापेक्षया ऽवबु ध्यत अवग्रहेहयो दर्शनत्वा दाहचभाष्यकार'—नाणमवायधिईओ दसणमिठ्ठजहोग्गहेहाओ तहतत्तरुईसम्म रोइज्जइजेणतनाण ॥ १ ॥ तथा जसाम न्नगहण दसणमेयविसेसियनाणंति ॥ अवग्रहेहेच सामान्यार्थग्रहणरूपे अवायधारणेच विशेषग्रहणस्वभावेइति, नन्वष्टाविंशतिभेद माभिनिबोधि कज्ञान मुच्यते यदाह—आभिणिबोहियनाण अठावीसइवति पयडीउत्ति ॥ इहच व्याख्याने श्रोत्रादिभेदेन पड्भेदतया वायधारणयो र्द्वादशविध मतिज्ञान प्राप्त' तथा श्रोत्रादिभेदेनेव पड्भेदतया र्थावग्रहेहयो र्व्यञ्जनावग्रहस्यच चतुर्विधतया षोडशविध चक्षुरादिदर्शनमितिप्राप्तमिति कथ न विरोध ? सत्य मेतत् कि त्वविवक्षितत्वान्मतिज्ञानचक्षुरादिदर्शनयो र्भेद मतिज्ञान मष्टाविंशतिधो च्यत इति पूज्या व्याचक्षत इति ॥ खेत्तओत्ति ॥ क्षेत्र माश्रित्या भिनिबोधिकज्ञानविषयक्षेत्रथा, श्रित्य यदा भिनिबोधिकज्ञान तत्र ॥ आदेसेणति ॥ उपत श्रुतपरिकर्मणयावा ॥ सव्वखेत्तत्ति ॥

॥ मूल ॥

पासइ, एव कालओ भावओवि । सुयनाणस्सण भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! सेसमासओ चउ

अनुवाद

कालतो भावतोपि । श्रुतज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासत श्चतुर्विध' प्रज्ञप्त स्तद्यथा–द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावत ।

॥ भाषा ॥

भनिबोधिकज्ञानविषय द्रव्यप्रते आश्रयीने जे आभिनिबोधिकज्ञान तिहा । आदेशेणसव्वदव्वाइ जाणइ पासइ । आदेशकहिये प्रकार सामान्यविशेष रूप तिहा आदेशकहिये ओघथकी सामान्यप्रकारे द्रव्यमात्रकरी जाणे पणि ते माहिला सर्वविशेष अपेक्षाये नजाणे, आदेशकहिये श्रुतपरिकर्मितपणे स र्वद्रव्य धर्मास्तिकायादिक । जाणइ । जाणे अवायधारणा अपेक्षाये अवबोध छुये ज्ञानने अवायधारणारूप पणामाटे अवग्रह ईहा अपेक्षाये अवबोधप्ते अवग्रह ईहाने दर्शनपणाथकी भाष्यकार—णाणमवायधिईओ दसणमिठ्ठजहोग्गहेहाओ । तहतत्तरुईसम्म रोइज्जइजेणतनाण ॥ १ ॥ तथा जेसा मान्नगहण दसणमेयविसेसियणाण ॥ अवग्रह ईहा सामान्यार्थ ग्रहणरूपछे अवायधारणा विशेष ग्रहणस्वभावछे इति । खेत्तओणन्ति, क्षेत्रआश्रयीने आ भिनिबोधिकविषयने विषे अथवा क्षेत्रआश्रयी आभिनिबोधिकज्ञान तिहा आदेसेणति, ओघथकी अथवा श्रुतपरिकर्मितपणे करी सर्वलोकरूप जाण

॥ टीका ॥

लोकालोकरूप एवं कालतो भावत श्चेति, आहच भाष्यकार —आएसोत्तिपगारो उंघादेसेणसव्वदव्वाइं धम्मत्थिकाइयाइं जाणइनउसव्वभावेण ॥ १ ॥ खेत्तलोगालोग कालसव्वद्धमहवतिविहंपि । पंचोदइयाईए भावेजनेयमेवइय ॥ २ ॥ आएसोत्तिवसुत्त सुउंवलद्धेसुतस्ससमइनाण । पसरइतब्भावणया विणाविसुत्ताणुसारेणंति ॥ ३ ॥ इदंचसूत्र नन्द्या मिहैवच वाचनान्तरे ॥ नपासइत्ति ॥ पाठान्तरेण धीत मेवञ्च नन्दिटीकाकृता व्याख्यात, आदेश प्रकार सच सामान्यतो विशेषतश्च, तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन सर्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशेषतोपि यथा धर्मास्तिकायो ध र्मास्तिकायस्य देश इत्यादि, न पश्यति सर्वान् धर्मास्तिकायादीन्' शब्दादीस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यती त्यपीति ॥ उवउत्तोत्ति ॥ भावश्रुतोप युक्तो नानुपयुक्त सहि नाभिधाना दभिधेयप्रतिपत्तिसमर्थो भवतीति विशेषण सुपात्त, सर्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशेषतो वग च्छति श्रुतज्ञानस्य तत्स्वरूपत्वात्' पश्यतिच श्रुतानुवर्तिना मानसेना चक्षुर्दर्शनेन सर्वद्रव्याणि चाभिलाप्यान्येव जानाति, पश्यतिचा भिन्नदशपू

॥ मूल ॥

विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउ। दव्वउणं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ ।

अनुवाद

द्रव्यत श्रुतज्ञानी उपयुक्त स्सर्वद्रव्याणि जानाति पश्यति । एव क्षेत्रत कालतोपि। भावत श्रुतज्ञानी उपयुक्त सर्वभाव जानाति पश्यति। अवधि

॥ भाषा ॥

देख, इम कालथकी भावथकी पणि मतिज्ञाननोविषय कह्यो, श्रुतज्ञाननो हेभगवन् ! केतलोविषयकह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेसमासओचउव्वि हे प० तं० । हेगोतम । ते श्रुतज्ञान सक्षेपथकी चारभेदेकह्या ते कहेछे—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । द्रव्यआश्रयीने क्षेत्रआश्रयीने कालआश्रयी ने भावआश्रयीने । दव्वओण सुअणाणीउवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ एवखेत्तओवि कालओवि भावओणसुयणाणी । तिहा द्रव्यआश्रयीने श्रुतज्ञानव न्त भावश्रुत उपयुक्त कहिये उपयोगसहित नही अनुपयुक्तसहित अभिधानयकी अभिधेय प्रतिपत्ति समर्थहुवे, तेमाटे विशेषण कह्यु सर्वद्रव्य धर्मास्ति कायादिकप्रते जाणे विशेषथी अवगमवन्तहुवे श्रुतज्ञानना तेहवा स्वरूपथकी देखे श्रुतानुवर्त्ति मन अचक्षुदर्शनेकरी ते सर्व द्रव्य जाणे देखे जे अभिन्न दश पूर्वधरादि श्रुतकेवलीहुवे ते अने दश पूर्वथकी पहिला भजनाये जाणे देखे इम क्षेत्रादिकनेविषे पणि भावव भावथकी श्रुतज्ञानी । उवउत्तेसव्वभा

॥ टीका ॥

वंधरादि' श्रुतकेवली तदारतस्तु भजना सापुन र्मतिविशेषतो ज्ञातव्येति, वृद्धै पुन पश्यती त्यत्रे दमुक्त–ननु पश्यतीति कथ कथञ्चन सकलगोच रदर्शनायोगा ? दत्रोच्यते प्रज्ञापनाया श्रुतज्ञानपश्यत्ताया प्रतिपादितत्वा दनुत्तरविमानादीना चालेख्यकरणा त्सर्वथा चादृष्टस्या लेख्यकरणा नु पपत्ते रेव क्षेत्रादिष्वपि भावनीयमिति, अन्येतु नपासइत्ति पठन्तीति ननु "भावश्रोण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ„ इति यदुक्त मिद तत् "सु यचरित्तेन पज्जवासव्वेहि„ अनेन सह कथ न विरुध्यते ? उच्यते इह सूत्रे सर्वग्रहणेन पञ्चौदयिकादयो भावा गृह्यन्ते, ताश्च सर्वान् जातितो जा ना त्यथवा, यद्य प्यभिलाप्याना भावाना मनन्तभागएव श्रुतनिबद्ध स्तथापि प्रसङ्गानुप्रसङ्गत सर्वे ऽभिलाप्या श्रुतविषया उच्यन्ते, अत स्त दपेक्षया सवभावान् जानाती त्युक्त, अनभिलाप्यभावापेक्षयातु "सुयचरित्तेन पज्जवासव्वे„ इत्युक्त मिति नविरोध ॥ दव्वओणमित्यादि ॥ अवधि ज्ञानी रूपिद्रव्याणि पुद्गलद्रव्याणीत्यर्थ, स्तानिच जघन्येना नन्तानि तैजसभाषाद्रव्याणा मपान्तरालवर्त्तीनि यत उक्त "तेयाभासादव्वाण अतरा ए

॥ मूल ॥

एव खेत्तओवि कालओवि, भावओण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ पासइ । ओहिनाणस्सणं भते ! केवइए विसए पणत्ते ? गोयमा ! सेसमासओ चउव्विहे पणत्ते, तजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ ओहिना

अनुवाद

ज्ञानस्य भदन्त । कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासतश्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा–द्रव्यत क्षेत्रत. कालतो भावत । द्रव्यतोवधिज्ञानी

॥ भाषा ॥

वे जाणइ पासइ । उपयोगथी सर्वभाव जाणे देखे । ओहिणाणस्सणभते केवइए विसए प० । अवधिज्ञाननो हेभगवन् । केतलोविषय कह्यो इतिप्रश्न उ त्तर गोयमा सेसमासओ चउव्विहे प० त० । हेगौतम । ते अवधिज्ञान सक्षेपथकी चारभेदे कह्या ते देखाडछे—द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी दव्व ओण ओहिणाणी रूवीदव्वाइ जाणइ पासइ । द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी, द्रव्यथकी अवधिज्ञानी रूपीद्रव्यप्रते जाणे देखे इहा कोइक पू छस्ये पहिलादर्शन पछे ज्ञान देखवा पछेज्ञानने इम अनुक्रमछे तेमाटे इहा ते अनुक्रमछाडी पहिलाजाणे इसो किमकह्यु तेहने इमकहिये इहा अ वधिज्ञानाधिकारथकी अव.नप जे कहवाने अर्थ पहिला जाणति, एहवा कह्यु अवधिदर्शनन तो मतिविज्ञान तथा विभगज्ञानने साधारणपणेंवारो अ

॥ टीका ॥

त्यलहइपहुवत्त्ति,, उत्कृष्टतस्तु सर्वबादरसूक्ष्मभेदभिन्नानि जानाति विशेषाकारेण ज्ञानत्वा तस्य, पश्यति सामान्याकारेणा ऽवधिज्ञानिनो ऽवधि दर्शनस्या वश्यम्भावात्, नन्वा दौदर्शन ततो ज्ञान मिति क्रम स्तत्किमर्थ मेन परित्यज्य प्रथम जानाती त्युक्त ? मत्रोच्यते इहा वधिज्ञानाधि कारा त्प्राधान्यस्यापनार्थमादौ जानातीत्युक्त सवधिदर्शनस्य त्ववधिविभङ्गसाधारणत्वना प्रधानत्वा त्पश्चा त्पश्यती त्युक्त, अथवा, सर्वाएव ल ब्धय साकारोपयोगोपयुक्तस्यो त्पद्यन्ते लब्धि श्चावधिज्ञानमिति साकारोपयोगोपयुक्तस्या वधिज्ञानलब्धि र्जायत इत्येतस्या र्थस्य ज्ञापनार्थ साका रोपयोगाभिधायक जानातीति प्रथम मुक्त' तत' क्रमेणो पयोगप्रवृत्ते पश्यतीति ॥ जहानदीएत्ति ॥ एवच तत्रेद सूत्र–खेत्तओण ओहिणाणी जहण्णे णा अगुलस्स असखेज्जइभाग जाणइ पासइ इत्यादि, व्याख्या पुनरेव क्षेत्रतो ऽवधिज्ञानी जघन्येना ङ्गुलस्यासङ्ख्येयभाग मुत्कृष्टतो ऽसङ्ख्या न्यलोके शक्ति मपेत्य लोकप्रमाणानि खण्डानि जानाति पश्यति, कालतो ऽवधिज्ञानी जघन्येना वलिकाया असङ्ख्येय भाग मुत्कृष्टतो ऽसङ्ख्या उत्सर्प्पिण्य

॥ मूल ॥

णी रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, जहा नदीए जावभावत्ते । मणपज्जवनाणस्सणं भंते! केवइए विसए प०,

अनुवाद

रूपिद्रव्याणि जानाति पश्यति । यथा नन्दिकेयावद्भावत । मन पर्यवज्ञानस्य भदन्त । कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम । स समासतश्चतुर्वि

॥ भाषा ॥

प्रधानपणाथको पासइ इसो पछे कह्यु अथवा सगलीही लब्धिसाकारोपयुक्तने ऊपजे लब्धि ते अवधिज्ञान तेमाटे साकारोपयुक्तने अवधिज्ञानलब्धि ऊपजे ए इस अर्थने जणाववानेअर्थे साकारोपयोगाभिधाय जाणे एतलामाटे पहिले कह्यु तिवार पूठे अनुक्रमे उपयोगप्रवृत्तिथको पासइ एहवो कह्यु द्रव्यथको अवधिज्ञानी रूपोद्रव्य जे पुद्गलद्रव्य ते प्रते जाणे देखे ते जघन्यथकी अनन्ता तेजस भाषाद्रव्यने विचालेरह्यॉं ते यदुक्त—तेयाभासादव्वाणअंत राएत्थलभइ पट्ठविउत्ति, उत्कृष्टो सर्वबादर सूक्ष्मभेद भिन्नप्रते जाणे विशेष आकारकरी ज्ञानथकी तेहने देखे पणि सामान्यकरी अवधिज्ञानीने अवधि दर्शनना अवश्यभावथकी । जहानदीएत्ति । जिमनन्दो सूत्रनेविषेकह्यु तिमकहवो तिहा इम सूत्रछे—खेत्तओणओहिणाणी जहण्णेण अगुलस्सअसखेज्ज भाग जाणइ पासइ, इत्यादि क्षेत्रथको अवधिज्ञानो जघन्यथकी अगुलनो असख्यातमोभाग जाणे देखे उत्कृष्टथको अलोकनेविषे शक्तिअपेक्षीने असख्या

॥ टीका ॥

ऽवसर्प्पिणी रतीता अनागताश्च जानाति पश्यति तद्गतरूपिद्रव्यावगमात्, अथ कियद्दूरं याव दिए नदीसूत्र याच्य मित्याह ॥ जावन्नावत्तित्ति ॥ उ न्नावाधिकार याव दित्यर्थ, सचेव-भावतो ऽवधिज्ञानी जघन्येना नन्तान् भावा नाधारद्रव्यानन्तत्वा ज्जानाति पश्यति नतु प्रतिद्रव्यमिति, उ त्कृष्टतो प्यनन्तान्भावान् जानाति पश्यतिश्च, तेपि चोत्कृष्टपदेन सर्वपर्यायाणा मनन्तभागइति ॥ उज्जुमइत्ति ॥ मनन मति संवेदन मित्यर्थः ऋज्वी सामान्यग्राहिणी मति र्ऋजुमिति घटो ऽनेन चिन्तित इत्यध्यवसायनिबन्धना मनोद्रव्यपरिच्छित्ति रित्यर्थः, अथवा, ऋज्वी मति र्यस्या सा ऋजुमति स्तद्वानेव गृह्यते ॥ अणतेत्ति ॥ अनन्तानपरिमितान् ॥ अणतपएसियत्ति ॥ अनन्तपरमाण्वात्मकान् ॥ जहानदीएत्ति ॥ तत्र चेद सूत्र

॥ मूल ॥

? गोयमा से समासओ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४। दव्वओणं उजुमई अणंते अणतपएसिए जहा नदीए

॥ अनुवाद ॥

ध प्रज्ञप्त स्तद्यथा-द्रव्यत क्षेत्रत. कालतो भावत । द्रव्यत ऋजुमत्यनन्त मनन्तप्रदेशिक यथा नन्दिकेयावद्भावत । केवलज्ञानस्य भदन्त ! कि

॥ भाषा ॥

तालोक प्रमाणखण्ड ते प्रते जाणे देखे, कालथकी अवधिज्ञानी जघन्ये आवलिकानो असंख्यातमोभाग जाणे देखे, उत्कृष्टथकी असंख्येय उत्सर्पिणी अव सर्प्पिणी अतीत अनागत जाणे देखे तेहने अन्तर्गत रूपीद्रव्य अवगमथकी, किहां कितलानगे इहां नन्दीसूत्र कह्यो ते कहेछे—जावभावओत्ति, भाव अधिकारलगे कह्वो ते इम भावथको अवधिज्ञानी जघन्यथकी अनन्ताभाव प्रते आधारद्रव्य अनन्तपणाथकी जाणे देखे पणि द्रव्यप्रते नजाणइ नपास इ उत्कृष्टथकी अनन्ताभावप्रते जाणे देखे ते पणि उत्कृष्टपदे जे सर्वपर्याय तेहने अनन्तमे भागे। मणपज्जवणाणेणंभते केवइए विसए प०। मनपर्यव ज्ञाननो हेभगवन् । कितलोविषयकह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओ चउव्विहे प० तं०। हेगौतम। ते संक्षेपथको चारभेदेकह्यो ते कहेछे—द व्वओ खेतओ कालओ भावओ दव्वओणउज्जुमई अणते अणतपएसिए जहानदीए। द्रव्यथायथी क्षेत्रथायथी कालथायथी भावथायथी तेमांहे द्रव्यथकी ऋजुमति मनन ते मति संवेदन मित्यर्थ ऋज्वीकहिये सामान्यग्राहिणी जेमति ते ऋजुमति घटो इणे पुरुषे चिन्तव्यो इसो अध्यवसाय निबन्धन मनो द्रव्य परिच्छित्ति इत्यर्थ, अथवा ऋज्वीमतिछे जेहने ते ऋजुमतितदन्त ग्रीज ग्रहिये अणतेत्ति, अनन्तकहिये अपरिमित तेहप्रते तथा अनन्तपरमाणुआ

॥ टीका ॥

मेव-खधे जाणइ पासइत्ति, तत्र स्कन्धान् विशिष्टैकपरिणामपरिणतान् सञ्ज्ञिभि पर्याप्तकै प्राणिभि रर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्त्तिभि मनस्त्वेन प रिणामितानित्यर्थं ॥ जाणइत्ति ॥ मन पर्यायज्ञानावरणक्षयोपशमस्य पटुत्वा त्साक्षात्कारेण विशेषभूयिष्ठपरिच्छेदा ज्जानाती त्युच्यते' तदालो चित पुन र्र्थं घटादिलक्षण मन पर्यायज्ञानस्वरूपाध्यक्षतो नजानाति' कित् तत्परिणामान्यथानुपपत्त्या ऽत पश्यतीत्युच्यते, उक्तच भाष्यकारेण- जाणइवज्झेणुमाणाउत्ति„ इत्य चैत दङ्गीकर्त्तव्य यतो मूर्त्तद्रव्यालम्बन मेवेद मन्तार श्चामूर्त्तमपि धर्मास्तिकायादिक मन्येरन् नच त दनेन साक्षा दकर्तु शक्यते तथा चतुर्विधच चक्षुर्दर्शनादिदर्शन मुक्त मतो ज्ञिनालम्बन मेवेद मवसेय तत्र दर्शनसम्भवा त्पश्यतीत्यपि नदुष्ट एकप्रमात्रपेक्षया तदनन्तरभावित्वा च्चोपन्यस्त मित्यल मतिविस्तरेण "तचेवउविउलमई अब्भहियतराए वितिमिरतराए विसुद्धतराए जाणइ पासइ„ तानेव स्क न्धान् विपुला विशेषग्राहिणी मति र्विपुलमति, घटो ऽनेन चिन्तित सच सौवर्ण पाटलिपुत्रको ऽद्यतनो महा नित्याद्यध्यवसायहेतुभूता मनो द्रव्यविज्ञप्ति, रथवा, विपुला मति र्यस्यासौ विपुलमति स्तद्वानेवा ऽवधिकतरकान् ऋजुमतिदृष्टस्कन्धापेक्षया वहुतरान् द्रव्यार्थतया वर्णादिभिश्च वितिमिरतरा इवा तिशयेन विगतान्धकारा इव ये ते वितिमिरतरा स्तएव वितिमिरतरका अत स्तान्, अतएव विशुद्धतरकान् विस्पष्टतरकान्

॥ भाषा ॥

सञ्ज्ञापर्याप्तप्राणी अढाइद्वीपसमुद्र अ परिमाणपरिणत सञ्ज्ञीपर्याप्तप्राणी अढाइद्वीपसमुद्र अ

लक्षप्रते जिम नन्दीसूत्रनेविषे कह्यु ते सूत्र खधे जाणइ पासइत्ति, तिहा स्कन्ध ते विशिष्ट एक परिमाणपरिणत सञ्ज्ञीपर्याप्तप्राणी अढाइद्वीपसमुद्र अ न्तर्वर्त्ती तिणे मनपणेकरी परिणमाव्या तेहप्रते जाणे मनपर्याय ज्ञानावरणक्षयोपशमना पटुपणाथकी इहा देखवानो चर्चानो विशेष टीकाथी जाण वो। ते चेवविउलमई अब्भहियतराए वितिमिरतराए विसुद्धतराए जाणइ पासइ, एहनोअर्थ तेहीज स्कन्धप्रते विपुलग्राहिणीमति ते विपुलमति जि मइणे पुरुषे घडो चिन्तव्यो ते सुवर्णनो पाडलिपुरनो नीपनो आजनोमोटो इत्यादिक अध्यवसाय हेतुभूत मनोद्रव्य विज्ञप्ति अथवा विपुलविस्तीर्ण म तिछे जेहनी ते विपुलमति तेवन्तहीज अभ्भ, ऋजुमतिदृष्ट स्कन्धनीअपेक्षाये बहुतरघणा द्रव्यार्थ पणेकरी विइ, अतिशयेकरी विगत, कहिये गया अन्ध कारनीपरे जिणे तेहप्रते एतलामाटेन विसुद्ध, अतिशयेप्रगट एहवा प्रते जाणे देखे तथा खेत्तओणउज्जुमई अहेजावइमीसेरयणप्पभाएपुढवीए, उवरि

जानाति पश्यतिच तथा " खेत्तोणं उज्जुमई अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवगेसु सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणइ पासइ," तत्र क्षेत्रत ऋजुमति रधो ऽधस्ता द्यावदमुष्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या उपरिमाधस्तान् क्षुल्लकप्रतरान् तावत् किमनोगतान् भावाञ्जानाति पश्यतीति योग, तत्र रुचकाभिधाना त्तिर्यग्लोकमध्याद्धो यावन्नवयोजनशतानि तावदमुष्या रत्नप्रभाया उपरिमा क्षुल्लकप्रतरा, क्षुल्लकत्वञ्च तथा मधोलोकप्रतरापेक्षया तेभ्योपि ये धस्ता दधोलोकग्रामान् यावत्तेऽधस्तना क्षुल्लकप्रतरा ऊर्द्धं यावत् ज्योतिषस्य ज्योतिश्चक्रस्योपरितल "तिरियं जाव अंतो मणुस्सखेत्तेत्ति," तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रस्या तं यावदित्यर्थ स्तदेव विभागत आह "अड्ढाइज्जेसुइत्यादि," तथा 'तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइत्ति, तत्र । तचेवत्ति । इह क्षेत्राधिकारस्य प्राधान्यात्तदेव मनोलब्धिसमन्वितजीवाधार क्षेत्र मभिगृह्यते, तथा ह्यधिकतर मायामविष्कम्भावाश्रित्य, विपुलतरक बाहल्य माश्रित्य

महेट्ठिल्लेखुड्डागपयरे उड्ढं जावजोइसियस्स उवरिमतले तिरियजाव अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पनरससु कम्मभूमीसु, छप्पणाए अंतरदीवगेसु, सण्णीणपंचिंदियाणपज्जत्तगाणमणोगयभावे जाणइ पासइ, तिहां क्षेत्रथकी ऋजुमति नीचे जाणवे आ रत्नप्रभापृथिवीने ऊपर नीचे क्षुल्लक प्रतर सांलगी मनोगत भावप्रतें जाणे ए शब्दसंघाते योगकरवो तिहां रुचकनामे तिर्यग्लोक मध्यथकी नीचेसुधी ९०० योजन तांलगे रत्नप्रभाना उपरिला क्षु ल्लकप्रतर क्षुल्लकपणो एहोनो अधोलोक प्रतरनी अपेक्षाये जाणवो तेहथकी जिके नीचे अधोलोक ग्रामप्रतें यावत् ते नीचला अधस्तन क्षुल्लकप्रतरकहिये ऊपर यावत् ज्योतिषचक्रनो उपरिलो तलो तिरछो यावत् मनुष्यक्षेत्रनो अन्तसुधी इत्यर्थ एहीज विभागथी कहेछे—अढाइज्जेसुइत्यादि, तथा तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतराग विपुलतराग विसुद्धतरागवितिमिरतराग जाणइ पासइ, तिहां । तचेवत्ति, इहां क्षेत्राधिकारना प्रधानपणाथकी तेहीज मनोलब्धि समन्वित जीवाधार क्षेत्रप्रतें ग्रहवो तिहां अढाइअंगुलनो अधिको तिहां अभ्यधिकतर ते आयामविष्कम्भ आश्रयी

॥ टीका ॥

विशुद्धतरकं निर्मलतरं, वितिमिरतरकं तु तिमिरकल्पतदावरणस्य विशिष्टतरक्षयोपशमसद्भावादिति, तथा–कालओणं उज्जुमई जहन्नेणं पलिउवमस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि पलिउवमस्स असंखेज्जइभागं जाणइ पासइ अतीयं अणागयं च तं चेव विउलमई विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ, किय न्नन्दीसूत्र मिहा ध्येय मित्याह ॥ जावभावओत्ति ॥ भावसूत्रं यावदित्यर्थ, तच्चैव–भावओणं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ तं चेव विउलमई विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ॥ केवलणाणस्सेत्यादि ॥ एवंजावभावओत्ति ॥ एव मुक्तन्यायेन याव द्भावत इत्यादि सूत्रं तावत् केवलविषयाविधायि नन्दीसूत्र मिहा ध्येय मित्यर्थ स्तच्चैव–खेत्तओणं केवलणाणी सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ, इह धर्मास्तिकायादिसर्वद्रव्यग्रहणेना काशद्रव्यस्य ग्रहणेपि य त्पुनरुपादान त त्तस्य क्षेत्रत्वेन रूढत्वा दिति ॥ कालओणं केवलणाणी

॥ मूल ॥

जाव भावओ। केवलनाणस्सणं भंते ! केवइए विसए प० ? गोयमा ! से समासओ चउव्विहे प०, तंजहा

अनुवाद

यान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासतश्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा–द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावत । द्रव्यतः केवलज्ञानी सर्वद्रव्याणि जानाति

॥ भाषा ॥

थयोने तथा विपुलतर ते बाहुल्यआश्रयीने विशुद्धतर ते अति निर्मल वितिमिरतर ते तिमिररहीत तदावरणनो विशिष्टतर क्षयोपशम सद्भावथकी जाणे देखे, तथा। कालओणंजहन्नेणंपलिओवमस्सअसंखेज्जइभाग, उक्कोसेणविपलिओवमस्सअसंखेज्जइभाग जाणइपासइ, अईयंअणागयंच, तंचेवविउलमई, विसुद्धतराग, वितिमिरतराग जाणइपासइ॥ ए सुगम ॥ तिहांलगे नन्दीसूत्र इहांकहवो ते कहेछे—जावभावओ। ज्यांलगे भावसूत्रछे त्यांलगे कहवो, ते इम भावओणंउज्जुमईअणंतेभावे जाणइ, सव्वभावाणंअणंतभागं जाणइ पासइ, तंचेवविउलमई विसुद्धतराग वितिमिरतराग जाणइ पासइ। केवलणाणस्सणंभंतेकेवइएविसए प०। केवलज्ञाननो हेभगवन्! केतलोविषय कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओ चउव्विहे प० तं० दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। हेगौतम। ते केवलज्ञान संक्षेपे चार भेदे कह्यो ते देखाडेछे—द्रव्यआश्रयीने क्षेत्रआश्रयी कालआश्रयी भावआश्रयी। दव्वओणंकेवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणइपासइ। तिहां द्रव्यथकी केवलज्ञानी सर्वद्रव्यजाणे देखे इम। खेत्तओणं, केवलज्ञानी सव्वखेत्तजाणइपासइ, कालओणंकेवल

॥ टीका ॥

सव्वं कालं जाणइ पासइ भावओणं केवली सव्वे भावे जाणइ पासइ ॥ मइअन्नाणस्सेत्यादि ॥ मइअन्नाणपरिगयाइंति ॥ मत्यज्ञानेन मिथ्यादर्शनसवलितेना वग्रहादिना त्पत्तिक्यादिनाच परिगतानि विषयीकृतानि द्रव्याणि यानि तानि तथा जाना त्यवायादिना पश्य त्यवग्रहादिना यावत्करणा दिद दृश्य—खेत्तओणं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयं खेत्तं जाणइ पासइ कालओणं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयं कालं जाणइ पासइत्ति ॥ सु

॥ मूल ॥

दव्वओ ४। दव्वओणं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओ। मइअन्नाणस्सणं भंते! केवइए विसए प० ? गोयमा ! चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४। दव्वओणं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओ। मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगए भावे जाणइ पासइ। सुयअन्नाणस्स

अनुवाद

पश्यति । एव यावद्भावत । मत्यज्ञानस्य भदन्त । कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम । स समासतश्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावत । द्रव्यतोमत्यज्ञानी मत्यज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि जानाति पश्यति । एव यावद्भावतो मत्यज्ञानी मत्यज्ञानपरिगत भाव जानाति प

॥ भाषा ॥

णाणीसव्वकालजाणइपासइ, भावथोण केवलणाणीसव्वभावजाणइपासइ इत्यादि, नन्दीसूत्रथकी कहवो। मइअन्नाणस्सणभंते केवइएविसए प०। मतिअज्ञाननो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। केतलोविषय कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओ चउव्विहे प० तं०। हेगौतम। मतिअज्ञान संक्षेपथी चारभेदे कह्यो ते कहेछे —दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। द्रव्यआश्रयीने क्षेत्रआश्रयीने कालआश्रयीने भावआश्रयीने। दव्वओणमइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइपासइ। द्रव्यथकी मतिअज्ञानी मिथ्यादर्शनसवलित अवग्रहादिके तथा औत्पातिक्यादि बुद्धिकरी परिगतकहिये विषयीकृत जे द्रव्य तेहप्रते अवायादिके करी जाणे अवग्रहादिकेकरी देखे। एवजावभावओ मइअन्नाणीमइअन्नाणपरिगएभावे जाणइ पासइ। इम यावत् शब्दथकी एह कहवो, खेत्तओणमइअन्नाणीमइअन्नाणपरिगयं खेत्तंजाणइपासइ, कालओणमइअन्नाणीमइअन्नाणपरिगयं कालंजाणइपासइ, तथा भावथकी मतिअज्ञानी मतिअज्ञान परिगतभाव जाणे देखे। सुयअन्नाणस्सणभंतेकेवइएविसए प०। श्रुतअज्ञाननो णवाक्यालंकारे, हेभगवन्' केतलो विषयगोचर कह्यो

॥ टीका ॥

यअणाणोत्यादि ॥ सुयअन्नाणपरिगयाइति ॥ श्रुताज्ञानेन मिथ्यादृष्टिपरिगृहीतेन सम्यक्श्रुतेन लौकिकश्रुतेन कुप्रावचनिकश्रुतेनवा, यानि परिगतानि विषयीकृतानि तथा ॥ आघवेइत्ति ॥ आग्राहयति अर्थापयतिवा; आख्यापयतिवा, प्रत्यापयतीत्यर्थ, प्रज्ञापयति भेदत कथयति, प्ररूपयति उपपत्तित कथयतीति' वाचनान्तरे पुन रिद मधिक मवलोक्यते—दसेइ निदसेइ उवदसेइत्ति ॥ तत्रच दर्शय त्युपमामात्रत स्तच यथा गौ स्तथा गवय इत्यादि' निदर्शयति हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन' उपदर्शय त्युपनयनिगमनाभ्या मतान्तरदर्शनेनवे, ति ॥ दव्वओण विभंगणाणीत्यादि ॥

॥ मूल ॥

णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते ? गोयमा ! सेसमासओ चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वओ ४ । दव्वओणं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ, एव खेत्तओ कालओ, भावओणं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगए भावे आघवेइ तचेव । विभंगनाणस्सणं भंते ! केवइए विसए प० ? गोयमा ! से स

॥ अनुवाद ॥

षयति । श्रुताज्ञानस्य भदन्त ! कियान्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासत श्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो भावत । द्रव्यत श्रुताज्ञानी श्रुताज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि आग्राहयति प्रज्ञापयति प्ररूपयति । एव क्षेत्रत कालतो' भावत' श्रुताज्ञानी श्रुताज्ञानपरिगत भाव माग्राहयति तचैव । विभङ्गज्ञानस्य भदन्त ! किया न्विषय प्रज्ञप्त ? गौतम ! स समासत श्चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—द्रव्यत क्षेत्रत कालतो

॥ भाषा ॥

इप्रतिप्र उत्तर। गोयमा सेसमासओचउव्विहे प० तंजहा । हेगौतम। त श्रुतअज्ञान संक्षेपथकी चार भेदे कह्यो तेदेखाडेछे—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । द्रव्यथकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथको । दव्वओणसुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगयाइ दव्वाइ आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ । द्रव्यथकी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञान मिथ्यादृष्टी परिग्रहीत सम्यक्श्रुत तिणेंकरी अथवा लौकिकश्रुत कुप्रावचनिकश्रुत तिणेंकरी जे परिगत विषयीकृतद्रव्य ते प्रते विस्तारे भेदथकी कहै उत्पत्तिथी कहै । एवखेत्तओ कालओ भावओण सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगएभावे आघवेइ तचेव । इम क्षेत्रथकी श्रुतअज्ञान परिगतक्षेत्र प्रते कहै, कालथको श्रुतअज्ञान परिगतकालप्रते कहै, भावथकी श्रुतअज्ञानपरिगत भावप्रते कहै इम सर्व तिमजकहवो पन्नवेइपरूवेइ कहवो । विभ

जाणइत्ति ॥ विभङ्गज्ञानेन ॥ पासइत्ति ॥ अवधिदर्शनेनेति, अथ कालद्वारे ॥ साइएइत्यादि ॥ इह ह्य केवली द्वितीयस्तु मत्यादिमान् तत्राद्यस्य साद्यपर्यवसितेति शब्दतएव काल-प्रतीयत इति, द्वितीयस्यैव त जघन्येतरभेद मुपदर्शयितु मिद माह ॥ तत्थण जे से साइए इत्यादि ॥ तत्रच ॥

भासए चउव्विहे प०, तंजहा—दव्वउ ४। दव्वउणं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइ दव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावउणं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ पासइ। नाणिणं भंते ! नाणीत्ति कालउ केवचिरं होइ ? गोयमा ! नाणी दुविहे पणत्ते, तंजहा—साइएवा अपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए,

भावत । द्रव्यतो विभङ्गज्ञानी विभङ्गज्ञानपरिगतानि द्रव्याणि जानाति पश्यति। एव याव द्भावतो विभङ्गज्ञान्यपि विभङ्गज्ञानपरिगत भाव जानाति पश्यति। ज्ञानी भदन्त। ज्ञानीति कालत. कियच्चिर भवति ? गौतम। ज्ञानी द्विविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—सादिकोवा अपर्यवसित। सादिकोवा सपर्यवसित। तत्र य स सादिक सपर्यवसित स जघन्येना न्तर्मुहूर्त मुत्कर्षेण षट्षष्टिसागरोपमाणि सातिरेकाणि। आभिनि

गणाणस्सणभते केवइएविसए पणत्ते। विभगज्ञाननो हेभगवन् केतलोविषय कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेसमासओचउव्विहे प० त०। हेगौतम ते संक्षेपथको चारभेदे कह्या ते कहेछे—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। द्रव्यथको चेत्रथको कालथको भावथको। दव्वओण विभगणाणी विभगणा णपरिगयाइ दव्वाइं जाणइ पासइ। द्रव्यथको विभगज्ञानी विभग परिगत द्रव्य जाणे देखे। एवजावभावओणविभगणाणीवि विभगणाणपरि गएभावे जाणइ। इम यावत्शब्दे चेत्रथको विभगज्ञान परिगतचेत्र जाणे देखे कालथको विभंगज्ञानपरिगत कालथको देखे भावथको विभगज्ञा नपरिगतभाव जाणे देखे, हिवे कालद्वार कहेछे—णाणीण भंते णाणित्तिकालओकेवचिरहोइ। ज्ञानी हेभगवन् ज्ञानसहितथको कालथको केतलोकाल चिररहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणीदुविहे प० तजहा। हेगौतम ज्ञानी दोयभेदे कह्या ते कहेछे—साइएवाअपज्जवसिए साइएवासपज्जवसि ए। तिहा एक आदिसहित अने अन्तरहित बीजो तिहा एक आदिसहित अने अन्तसहित। तत्थणजेसेसाइए सपज्जवसिए सेजहण्णेण अंतोमुहुत्तउ

॥ टीका ॥

जहरोणमंतोमुहुत्तंति ॥ आद्य ज्ञानद्वय माश्रित्यो क्त तस्यैव जघन्यतो न्तर्मुहूर्त्तमात्रत्वात्, तथा ॥ उक्कोसेणं छावठिसागरोवमाइं साइरेगाइंति ॥ यदुक्त तदाद्य ज्ञानत्रय माश्रित्य तस्य ह्युत्कर्षेणे तावत्येव स्थिति साचैव भवति–दोवारेविजयाइसु गयस्सत्तिग्निचुए अहवताइं । अइरेगनरभविय णाणाजीवाणसव्वद्धुति ॥ १ ॥ आभिणिबोहियेत्यादि सूचामात्र एव चैतत् द्रष्टव्य–आभिणिबोहियणाणीणं भंते । आभिणिबोहियनाणित्ति कालओ केवचिरं होइत्ति ॥ एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी त्यादि, अयमर्थ एव मित्यनन्तरोक्तेन, आभिणिबोहिएत्यादिना सूत्रक्रमेण ज्ञान्याभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञान्यवधिज्ञानिमन पर्यवज्ञानिकेवलज्ञान्यज्ञानिमत्यज्ञानिश्रुताज्ञानिविभङ्गज्ञानिना ॥ सचिठणत्ति ॥ अवस्थितिकालो यथा का

॥ मूल ॥

तत्थणं जे से साइए सपज्जवसिए से जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छासठिसागरोवमाइं साइरेगाइं । आभिणिबोहियनाणीण भंते ! एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी मइअन्नाणी सुय

अनुवाद

बोधिकज्ञानी भदत । एव ज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी यावत्केवलज्ञानी अज्ञानी मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी विभङ्गज्ञानी एतेषा मष्टानाम प्यव

॥ भाषा ॥

कोसथकी छावठिसागरोवमाइं सातिरेगाइं । तिहा जे सादि सपर्यवसित ते जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त ए पहिला बेज्ञानआश्रयीने कह्यु तिहने जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त्तपणाथकी तथा उत्कृष्टथकी साधिक छासठ सागरोपम पहिला तीनज्ञान आश्रयीने कह्यु तहनी उत्कृष्टथकी साधिक सागरोपम छासठस्थिति छे, ते इमहुवे ,दोवारेविजयाइसु गयस्सतिणवु?अहवताइं । अइरेगनरभविय णाणाजीवाणसव्वद्धति॥ १ ॥ दोयबार विजयादिक विमानजाय अथवा तीनबार अच्युत देवलोके जाय तिवारे छासठ सागरोपमहुवे अने मनुष्यना भवनोआऊखो अधिको ए एकजीव आश्रयीकह्यु अनेकजीव आश्रयी सर्वकाल जाणवो । आभिणिबोहियणाणीण भते एव णाणी आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी अणाणी मइअणाणी सुअअणाणी विभगणाणीए एसि अठण्हवि सचिठणा जहाकायठिइए । ए इम आलावो कहवो , आभिणिबोहियणाणीण भते आभिणिबोहियणाणित्तिकालओकेवचिरंहोइ, इति प्रश्न उत्तर ए अर्थ इम अनन्तरे कह्यु आभिणिबोहिएत्यादि, सूत्रक्रमे करी ज्ञानी आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केव

यस्थितौ प्रज्ञापनाया अष्टादशे पदे निहित स्तथा वाच्य , तत्र ज्ञानिनां पूर्वं मुक्तएवा वस्थितिकाल , यत्तु पूर्वं मुक्तस्या प्यतिदेशत पुन स्तेषां तदेकप्रकरणपतितत्वा दित्यवसेय आभिनिबोधिकज्ञान्यादिद्वयस्यतु जघन्यतो ऽन्तर्मुहूर्त्तं मुत्कृष्टतस्तु सातिरेकाणि षट्षष्टिसागरोपमाणि, अवधिज्ञानिना मप्येव, नवरं जघन्यतो विशेष सचाय "ओहिणाणी जहण्णेण एक्कं समयं„ कथ ? यदा विभङ्गज्ञानी सम्यक्त्व प्रतिपद्यते तत्प्रथमसमयएव विभङ्ग मवधिज्ञान भवति तदनन्तरमेवच तत् प्रतिपतति तदा एक समय मवधि र्भवती त्युच्यते—मणपज्जवणाणीणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा । जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, कथ ? संयतस्या प्रमत्ताद्धाया वर्त्तमानस्य मन पर्यायज्ञान मुत्पन्न तत उत्पत्तिसमयसमनन्तरमेव विनष्ट चेत्येव मेक समय, तथा चरणकाल उत्कृष्टो देशोना पूर्वकोटी तत्प्रतिपत्तिसमनन्तरमेवच यदा मन.पर्यवज्ञान मुत्पन्न माजन्मचा नुवृत्त तदा भवति मन पर्यायस्यो त्कर्षतो देशोना पूर्वकोटीति, केवलणाणीणपुच्छा ? गोयमा ! साइए अपज्जवसिए ' अणाणी मइअन्नाणी, सुयअन्नाणीण पु

च्छा, तिय्यणाणी विभंगनाणी एएसिणं अठरसवि संचिठणा जहा कायठिइए अंतरं सव्वं जहा जीवाभिगमे अ

स्थिति यथा कायस्थितिके, अनन्तर सर्वं यथा जीवाभिगमे । अल्पबहुत्वानि त्रीणि यथा बहुवक्तव्यतया ' किय न्तो भदत ! आभिनिबोधिक

लज्ञानी, मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानीने, ए पचज्ञान तीनअज्ञान ८ आठने अवस्थितकाल ,जहाकायठिइए, ८ जिम कायस्थिति पन्नवणाना अठारमा पदने विषेकह्यु तिमकहवो तिहा ज्ञानीने पूर्वेकह्यो छै ज अवस्थितकाल ज पूर्वेकह्यानेज अतिदेशथको वली कहवो ते एकप्रकरण पणामाटे एहवो जाणवो आभिनिबोधिकज्ञान आदि दोयनो तो जघन्यथको अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथको साधिक छासठ सागरोपम अवधिज्ञानीने पणि इम णवर जघन्यथको विशेष,ओहिणाणी जहण्णेणएकसमय, तेकिम जिवारे विभंगज्ञानी समकित पडिवजे ते पहिलेसमये हीज विभगने अवधिज्ञानहुवे ते अनन्तरे हीज वलीपडे तिवारे एकसमय अवधिज्ञानहुवे, मणपज्जवणाणीणभते पुच्छा गोयमा जहण्णेणएकसमय उक्कोसेणदेसूणापुव्वकोडी, तेकिम सयमने अप्रमत्तकालनेविषे वर्त्तमानने मनपर्यायज्ञान ऊपनो पछे उत्पत्तिसमय अनन्तरेजगयो इम एकसमयहुवे तथा चारित्रकाल उत्कृष्टो देशोन पूर्वकोटिछै

॥ टीका ॥

च्छा ? गोयमा ! अन्नाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय तिविहे पन्नत्ते तंजहा–अणाइएवा अपज्जवसिए (अभव्यानां) १ अणाइएवा सपज्जवसिए (भ व्याना) २ साइएवा सपज्जवसिए [प्रतिपतितसम्यग्दर्शनाना ३] तत्थण जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेण अंतोमुहुत्त ॥ सम्यक्त्व प्रतिपतितस्य अन्तर्मुहूर्त्तोपरि सम्यक्त्वप्रतिपत्तौ ॥ उक्कोसेण अणतकाल अणताउस्सप्पिणीउसप्पिणीउ कालउ, खेत्तउ अवड्ढपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ सम्यक्त्वाद्भ्रष्ट स्यवनस्पत्यादि ष्वनन्तोत्सर्प्पिण्यऽवसर्प्पिणी रतिवाह्य पुन प्राप्तसम्यग्दर्शनस्येति "विभगनाणीण भते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कसमय," उत्प तिसमयानन्तरमेव प्रतिपाते "उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ देसूणपुव्वकोडी अब्भहियाइ," देशोना पूर्वकोटि विभगितया मनुष्येषु जीवित्वा अप्र तिष्ठानादा वुत्पन्नस्येति ॥ १७ ॥ अतरद्वारे "अतर सव्व जहा जीवाभिगमेत्ति," पञ्चाना ज्ञानाना त्रयाणा चाज्ञानाना मन्तर सर्व यथा जीवाभिग मे तथा वाच्य तच्चैव–आभिणिबोहियनाणस्सण भते ! अतर कालउ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणतकाल जाव अ

॥ भाषा ॥

ते पडिवज्यायका अनन्तरेज जिवारे मनपर्यवज्ञान उपनू ते आजबलगे रह्यु तिवारे हुवे मनपर्यवज्ञाननो उत्कृष्टो देशोन पूर्वकोटि इति ४ केवलणाणी ण पुच्छा गोयमा साइएअपज्जवसिए, आदिसहित अने अन्तरहितछे, अणाणीमइअणाणी सुयअणाणीणपुच्छा गोयमा अणाणी मइअणाणीय सुयअ णाणीयतिविहे प० तं०, अणाइएवाअपज्जवसिए अनादि अनन्त एभागो अभव्यने हुवे १ अणाइएवासपज्जवसिए, अनादि सातभागो भव्यनेहुवे २ साइ एवासपज्जवसिए, सादिसान्त ए सम्यक्त्व पडिवज्याने भागोहुवे ,तत्थणजेसेसाइएसपज्जवसिए सेजहण्णेणअंतोमुहुत्त, ते किम सम्यक्त्वथको पड्यो अंतर्मुहूर्त्त उपरि वली सम्यक्त्व पडिवजे तेहने जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त्तहुवे ,उक्कोसेणअणतंकाल अणताउस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरिय ट्ट देसूणा, ते किम सम्यक्त्वथको भ्रष्टथई वनस्पत्यादिकनेविषै अनन्ती उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी रहीने वली सम्यग्दर्शन तेहनेहुवे ,विभगणाणीणपुच्छा गोय मा जहण्णेण एक्कसमय, समय अनन्तरेज प्रतिपातथया ,उक्कोसेणतेत्तीससागरोवमाइ देसूणाइपुव्वकोडी अब्भहियाइ, तेत्रीस सागरोपम देसून पूर्वकोडी अ धिक तेकिम देसून पूर्वकोटि विभगपणे मनुष्यजीवीने अप्रतिष्ठान आदिदेईने नरकावासानेविषै उपजानेहुवे॥ हिवे अन्तरद्वार कहेछे—अतरसव्वजहाजीवा

वड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणं' सुयनाणिओहिनाणिमणपज्जवनाणीणं एवचेव ॥ केवलनाणिस्स पुच्छा ? गोयमा । नत्थि अतरं । मइअन्नाणिस्स सुयअन्नाणिस्सय पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं, विभंगनाणिस्स पुच्छा गोयमा । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालोत्ति ॥ १८ ॥ अल्पबहुत्वद्वारे ॥ अप्पाबहुगाणि तिन्नि जहा बहुवत्तव्वयाएत्ति ॥ अल्पबहुत्वानि त्रीणि ज्ञानिनां परस्परेणा ज्ञानिनाच ज्ञान्यज्ञानिनाच यथा ऽल्पबहुत्ववक्तव्यतायां प्रज्ञापनासंबन्धिन्यां मभिहितानि तथा व्याख्यानीति तानिचैव-एएसिणं भंते । जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं ५ कयरे २ हिंतो अप्पावाबहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया, केवलणाणीअणंतगुणा, इत्येकं, एएसिणं भंते । जीवाणं मइअन्नाणीणं ३ कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवितुल्ला अणंतगुणा इतिद्वितीयं, एएसि

भिगमे । पाचज्ञाननों तीनअज्ञाननों अन्तरसर्व जिम जीवाभिगम उपांगनेविषे कह्यु तिम कहवो, ते इम ,आभिणिबोहियणाणस्सणभंतेअंतरकालओकेवचिरहोइ गोयमा जहणेणअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणअणंतकालं जावअवढपोग्गलपरियट्ट देसूणं सुअणाण ओहिणाण मणपज्जवणाणीण एवचेव, केवलणाणस्सपुच्छा गोयमा नत्थिअंतरं मइअणाणियस्स पुच्छा ? गोयमा जहणेणअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणछावट्ठिसागरोवमाइं विभंगणाणस्सपुच्छा ? गोयमा जहणेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सइकालोत्ति ॥ हिवे अल्प बहुत्व द्वारकहेछै—अप्पाबहुगाणितिन्नि जहाबहुवत्तव्वयाएत्ति, अल्प बहुत्व तीनेइ ज्ञानीनो १ अज्ञानीनो २ ज्ञानी अज्ञानीमिश्रनो ३ जिम बहुवक्तव्यपदे पन्नवणानेविषे कह्या तिम इहां कहवा, ते इम ,एएसिणभंते जीवाणआभिणिबोहियणाणीण ५ कयरे २ जावविसेसाहियावा, उत्तर गोयमा सव्वत्थोवाजीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखेज्जगुणा' आभिणिबोहियणाणी सुअणाणी दोवितुल्ला विसेसाहियावा केवलणाणी य अणंतगुणा ए पहिलो १ एएसिणभंतेमइअणाणीण ३ कयरे २ जावविसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवाविभंगणाणी मइअणाणी सुअअणाणी दोवितुल्लाअणंतगुणा ए बीजा २ एएसिणभंतेआभिणिबोहियणाणीण ५ मइअणाणीण ३ कयरे अप्पावा ४ उत्तर गोयमा सव्व

णं भंते । जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं ५ मइअन्नाणीणं ३ कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणीअसंखेज्जगुणा आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य दोवितुल्ला विसेसाहिया विभंगनाणीअसंखेज्जगुणा केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी अणंतगुणा मइअन्नाणीसुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणात्ति,, तत्र ज्ञानिसूत्रे स्तोका मनःपर्यायज्ञानिनो यस्मादृद्धिप्राप्तादिसंयतस्यैव तद्भव त्यवधिज्ञानिनस्तु चतसृष्वपि गतिषु सन्तीति तेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः ' श्रुतज्ञानिनश्चान्योन्यतुल्याः ' अवधिज्ञानिभ्यस्तु विशेषाधिका यतस्ते अवधिज्ञानिनोपि मनःपर्यायज्ञानिनोपि अवधिमनःपर्यायज्ञानिनोपि अवध्यादिरहिताअपि पञ्चेन्द्रियाभवन्ति ' सास्वादनसम्यग्दर्शनसद्भावे विकलेन्द्रिया अपिच मतिश्रुतज्ञानिनो लभ्यन्तइति, केवलज्ञानिनस्तु अनन्तगुणाः सिद्धानां सर्वज्ञानिभ्यो नतगुणत्वा' दज्ञानिसूत्रेतु विभङ्गज्ञानिनः स्तोका यस्मात्पञ्चेन्द्रियाएव ते भवन्ति, मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्चैकेन्द्रिया अपीति तेन तेभ्य स्ते ऽनन्तगुणाः परस्परतश्च तुल्याः, त

त्थोवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखेज्जगुणा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्लाविसेसाहियावा विभंगणाणी असंखेज्जगुणा केवलणाणीअणंतगुणा मइअणाणी सुयअणाणी दोवितुल्ला अणंतगुणा ॥ हिवे ए तीनं अल्प बहुत्वनो अर्थ लिखियेछै—तिहां ज्ञानीसूत्रनेविषे सर्वथी थोडा मनपर्यवज्ञानी जेमाटे ऋद्धि प्राप्तसंयतनेंज एहहुवे १ तथा अवधिज्ञानी चारेंगतिनेंविषेछै ते माटे तेहथी असंख्यातगुणा २ तथा आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी माहोमाहि तुल्यसरीखाछै अने अवधिज्ञानीथकी विशेषाधिकछै जेमाटे ते अवधिज्ञानी पणि मनपर्यायज्ञानी पणि अवधिमनपर्यवज्ञानी पणि अवध्यादिरहित पणि पचेंद्रिहुवे सासादन सम्यग्दर्शन सद्भावें विकलेन्द्रिय पणि मतिश्रुतज्ञानी हुवे ते माटे विशेषाधिकछै ३ तेहथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा सर्वज्ञानीथकी सिद्धने अनन्तगुणा माटे ५ अज्ञानीसूत्रनेविषे विभंगज्ञानी थोडा जेमाटे विभंगज्ञानी पचेन्द्रियहीजहुवे, १ मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी माहोमाहि तुल्यसरीखाछै अने तेहथी अनन्तगुणा जेमाटे मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी एकेन्द्रिय पणिहुवे २ मिश्रसूत्रनेविषे सर्वथी थोडा मनपर्यवज्ञानी ऋद्धिप्राप्तसंयतनेंज हुवे तेमाटे १ तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा चारगतिनेंविषेहुवे तेमाटे २ तेहथी मतिज्ञानी श्रुत

॥ टीका ॥

या मिश्रसूत्रे स्तोका मनःपर्यायज्ञानिनः, अवधिज्ञानिनस्तुतेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च न्योन्यं तुल्या प्राक्तनेभ्यश्च विशेषाधिका इत्युक्तिः पूर्वोक्तेव आभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञानिभ्यो विभङ्गज्ञानिनो ऽसङ्ख्येयगुणाः कथं? उच्यते यतः सम्यग्दृष्टिभ्यः सुरनारकेभ्यो मिथ्यादृष्टय स्ते असङ्ख्येयगुणा उक्ता स्तेन विभङ्गज्ञानिनः आभिनिबोधिकज्ञानिश्रुतज्ञानिभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणाः केवलज्ञानिनस्तु, विभङ्गज्ञानिभ्यो ऽनन्तगुणाः सिद्धाना मेकेन्द्रियवर्जजीवेभ्यो ऽनन्तगुणत्वात्, मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च न्योन्य तुल्याः, अथपर्यवद्वारे॥ केवइयादित्यादि॥ आभिनिबोधिकज्ञानस्य पर्यवा विशेषधर्मा आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवा स्तेच द्विविधाः स्वपरपर्यायभेदात्, तत्र ये ऽवग्रहादयो मतिविशेषाः क्षयोपशमवैचित्र्या त्ते स्वपर्याया स्तेचानन्ता, कथं? एकस्मा दवग्रहादे रन्योवग्रहादि रनन्तभागवृद्धया विशुद्धो न्य स्त्वसङ्ख्येयभागवृद्धया ऽपरः सङ्ख्येयभागवृद्धया अन्यतरः सङ्ख्ये

॥ मूल ॥

प्पावज्जगाणि तिन्नि जहा वत्तव्वयाए। केवइयाणं भंते! आभिणिबोहियनाणपज्जवा प०? गोयमा!

अनुवाद

ज्ञानस्य पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गोतम! अनन्ता आभिनिबोधिकज्ञानस्य पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। कियन्तो भदन्त! श्रुतज्ञानस्य पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? एवमे

॥ भाषा ॥

ज्ञानी विशेषाधिक अने माहोमाहि बेऊसरीखा विकलेन्द्रीनेविषे पणिहुवे तेमाटे ४ तेहथी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा ते किम जेमाटे सम्यग्दृष्टीदेवता नारकीथकी मिथ्यादृष्टी असंख्यातगुणाछे तेमाटे ५ तेहथी केवलज्ञानी अनंतगुणा एकेन्द्रीयवर्जीने सर्वजीवथकी सिद्ध अनंताछे तेमाटे ६ तेहथी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी माहोमाहिसरीखा अने केवलज्ञानीथकी अनन्तगुणा वनस्पतीनेविषे मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान हुवे, ते वनस्पतीना जीवा सिद्धथकी अनन्तगुणाछे तेमाटे ८॥ हिवे पर्यायद्वार कहेछे—केवइयाणभंते आभिणिबोहियणाणपज्जवा प० गो० अणंताआभिणिबोहियणाणपज्जवा प०। इत्यादि, केतला हेभगवन्! मतिज्ञाननापर्यायविशेष धर्मकह्या इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम! अनन्ता मतिज्ञाननापर्यायछे तेकिम ते पर्यायना बे भेदछे स्वपर्याय १ परपर्याय २ भेदथकी तिहां जे अवग्रहादिक मतिविशेष क्षयोपशम विचित्रपणाथकी ते स्वपर्यायकहिये ते अनन्ता तेकिम एक अवग्रहादिकथकी अन्य अवग्रहादि अनन्तभाग वृद्धिकरी विशुद्धि तथा अन्य असंख्यातभागवृद्धि तथा अपरअसंख्यातभाग वृद्धि तथा अन्यतर संख्य

॥ टीका ॥

यगुणावृद्धा तदन्यो सङ्ख्येयगुणवृद्धा ऽपरस्त्वनन्तगुणावृद्धेति' एवञ्च सङ्ख्यातस्य सङ्ख्यातभेदत्वा दसङ्ख्यातस्यचा सङ्ख्यातभेदत्वा दनन्तस्यचा नन्तभेदत्वा दनन्ताविभागपलिच्छेदा भवन्ति, अथवा तज्ज्ञेयस्या नन्तत्वा त्प्रतिज्ञेयञ्च तस्यच्छिद्यमानत्वात्, अथवा मतिज्ञान मविभागपरिच्छेदैर्बुद्ध्या छिद्यमान मनन्तखण्ड ञवतीत्येव मनन्ता स्तत्पर्याया, स्तथा ये पदार्थान्तरपर्याया स्ते तस्य परपर्याया स्तेच स्वपर्यायेभ्यो नन्तगुणा. परेषा मनन्तगुणत्वा दिति। ननु य दि ते परपर्याया स्तदा तस्येति न व्यपदेष्टु युक्त परसम्बन्धित्वा दथ तस्य ते तदा न परपर्याया स्ते व्यपदेष्टव्या स्वसम्बन्धित्वा ? दित्यत्रोच्यते यस्मात्तत्रासम्बद्धा स्ते तस्मा त्तपा परपर्यायव्यपदेशो यस्माच्च ते परित्यज्यमानत्वेन तथा स्वपर्यायाणा स्वपर्याया एत दित्येव विशेषणहेतुत्वनच तस्मि नुपयुज्यन्ते तस्मा त्तस्य पयया इति व्यपदिश्यन्ते यथा असम्बद्धमपि धन स्वधन मुपयुज्यमानत्वा दिति आहच–जइतंपरपज्जाया नतस्स अहतस्सनपरपज्जाया [आचायआह] जतमिअसबद्धा तोपरपज्जायववएसो। चायसपज्जायविसे सणाइणातस्सजमुवजुज्जति ॥ १ ॥ सधणमिवास यद्व एवतित्तोपज्जवातस्सत्ति ॥ केवइयाणा भंते सुयनाणेत्यादौ ॥ एवचेवत्ति ॥ अनन्ताश्रुतज्ञानपर्याया प्रज्ञप्ता इत्यर्थ, स्तेच स्वपर्याया परपर्याया श्च तत्र स्वपर्याया ये श्रुतज्ञानस्य स्वगता अक्षरश्रुतादयो भेदा स्ते चानन्ता. क्षयोपशमवैचित्र्यविषयानन्त्याभ्या श्रुतानुसारिणा बोधाना मनन्तत्वा

॥ मूल ॥

णंता आभिणिबोहियनाणपज्जवा प० । केवइयाणं भंते ! सुयनाणपज्जवा प० एवंचेव । एवं जाव के

॥ भाषा ॥

तगुण वृद्धि तथा तदन्य असंख्यातगुण वृद्धि तथा अपर अनन्तगुण वृद्धि इम सख्याताना सख्यात भेदपणाथकी असख्याताना असख्यात भेदपणाथकी अनन्ताना अनन्तभेदपणाथकी अनन्ता विभेदहुवे अथवा तेहना ज्ञेयना अनन्तपणाथकी प्रतिज्ञेय तेहना भिद्यमानथकी अथवा मतिज्ञानना अविभाग पलि छेदेकरी बुद्धिछेदताथका अनन्ताखण्डहुवे तेमाटे अनन्ता तेहना पर्यायकह्या तथा जे पदार्थ मतिज्ञान परिछिन्न घटादिवस्तुना व्यतिरिक जे पटादि ते पदार्थान्तरपर्याय तेहना परपर्याय कहिये, ते स्वपर्यायथकी अनन्तगुणाछे परने अनन्तगुण पणाथकी । केवइयाणभंते सुयणाणपज्जवा प० एवचेव जाव केवलणाणस्स । कतना हे भगवन्! श्रुतज्ञाननापर्याय कह्या इत्यादि जाणिवे। एवचेवत्ति । इमहीज अनन्ता श्रुतज्ञाननापर्याय कह्या इत्यर्थ ते स्वपर्याय परप

दविभागपलिच्छेदानन्त्याच्च, परपर्याया स्त्वनन्ता सर्वभावाना प्रतीताएव अथवा श्रुतग्रन्थानुसारिज्ञानं श्रुतज्ञान श्रुतग्रन्थश्चा क्षरात्मको ऽच राणिचा कारादीनि तेषा चैकैक मक्षर यथायोग मुदात्तानुदात्तस्वरितभेदा त्सानुनासिकनिरनुनासिकभेदात् अल्पप्रयत्नमहाप्रयत्नभेदादिभिश्च संयुक्तसयोगासयुक्तसयोगभेदात् द्यादिसयोगभेदा दभिधेयानन्त्याच्च भिद्यमान मनन्तभेद भवति, तेच तस्य स्वपर्याया परपर्यायाश्चान्ये अनन्ताएव एवञ्चा नन्तपर्याय तत् आहच–एक्कक्कमक्खरंपुण सपरपज्जायभेयओभिण्ण । तसव्वदव्वपज्जा यरासिमाणमुणेयव्व ॥१॥ जेलभइकेवलोसे सवणसहित्ते यपज्जवेगारो । तेतस्ससपज्जाया ससापरपज्जवातस्सवि ॥ २ ॥ एवचाक्षरात्मकत्वेना क्षरपर्यायोपेतत्वा दनन्ता श्रुतज्ञानस्यपर्यायाइति ॥ एव जावत्ति ॥ करणा दिद दृश्य–केवइयाण भते । ओहिनाणपज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा । अणता ओहिनाणपज्जवा पण्णत्ता । केवइयाण भते ! मणपज्जवनाणपज्जवा पणता ? गोयमा ! अणता मणपज्जवनाणपज्जवा पण्णत्ता । केवइयाण भते । कवलनाणपज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा । अणता केवलनाणपज्जवा पण्णत्ति„ तत्रा वधिज्ञानस्य स्वपर्याया ये वधिज्ञानभेदा भवप्रत्ययक्षयोपशमिकभेदा न्नारकतिर्यंग्मनुष्यदेवरूपत्वा त्स्वामिभेदा दसङ्ख्यातभे

श्रुतानुसारीबोधना अनन्तप र्यायभेदथी वे तिहा स्वपर्याय जे श्रुतज्ञानना स्वगत अक्षर श्रुतादिकभेदथकी ते अनन्ताछे क्षयोपशम वैचित्र्यविषय अनतअरी र्यायभेदथी वे तिहा स्वपर्याय जे श्रुतज्ञानना स्वगतअक्षरश्रुतादिकभेदथकी ते अनन्ताछे अथवा श्रुतग्रन्थानुसारीज्ञान ते श्रुतज्ञान पामाटे अथवा अविभागखण्डना अनन्तपणाथकी तथा परपर्याय पणि अनन्ता सर्वभावना प्रतीतपणाछे अथवा श्रुतग्रन्थानुसारीज्ञान ते श्रुतज्ञान श्रु गृथते अक्षरात्मक अक्षर ते अकारादिक तेहना एकेक अक्षर यथायोग उदात्त अनुदात्त स्वरितभेदथकी तथा सानुनासिक निरनुनासिक भेदथकी तथा अल्पप्रयत्न महाप्रयत्न भेदादिकेकरी संयुक्त संयोगअसंयुक्तभेदथकी तथा द्व्यादिसंयोगथकी नामने अनन्तपणे भिद्यमान अनन्ता भेद हुवे, तेह २ ना स्वपर्यायकहिये परपर्याय ते बीजा अनन्ताछेज इम ते श्रुतज्ञानना अनन्तपर्याय आहच—एक्केकमक्खरंपुण सपरपज्जायभेयओभिण्ण । तसव्वदव्वपज्जा यरासिमाणमुणेयव्व ॥ १ ॥ जेलभइकेवलोसे सवणसहिओयपज्जवेगारो तेतस्सयपज्जाया सेसापरपज्जवातस्स ॥ २ ॥ इम अक्षरात्मकपणे का रो अक्षरपर्यायोपेत पणायकी अनन्ता श्रुतज्ञानना पर्याय इम यावत् शब्दथकी ए कहवा, केवइयाणभते ओहिणाणपज्जवा गोयमा अणता० । तिहा अव

॥ टीका ॥ मन पर्यायज्ञानस्य केवलज्ञानस्यच स्वपर्याया-
दतद्विषयभूतक्षेत्रकालभेदा दनन्तभेदतद्विषयद्रव्यपर्यायभेदा दविभागपलिच्छेदाश्च तेचैव मनन्ता इति; मन पर्यायज्ञानस्य केवलज्ञानस्यच स्वपर्याया-
ये स्वाम्यादिभेदेनस्वगताविशेषा स्तेषा नन्ता अनन्तद्रव्यपर्यायपरिच्छेदापेक्षया अविभागपलिच्छेदापेक्षयावेति एवमत्यज्ञानादित्रये प्यनन्तपर्यायत्व
सूत्र मिति (ग्र० ८०००) अथ पर्यवाणा मवाल्पबहुत्वनिरूपणायाह ॥ एएसिणमित्यादि ॥ इहच स्वपर्यायापेक्षयै वैषा मल्पबहुत्वमवसेय स्वपरप
र्यायापेक्षया सर्वेषा तुल्यपर्यायत्वा दिति, तत्र सर्वस्तोका मन पर्यायज्ञानपर्याया स्तस्य मनोमात्रविषयत्वा, तेभ्यो ऽवधिज्ञानपर्याया अनन्तगु
णा मन पर्यायज्ञानापेक्षया वधिज्ञानस्य द्रव्यपर्यायतो ऽनन्तगुणविषयत्वात्, तेभ्य श्रुतज्ञानपर्याया अनन्तगुणा स्तत स्तस्य रूप्यरूपिद्रव्यविषयत्वे

॥ मूल ॥
वलनाणस्स। एवं मइअन्नाणस्स, सुयअन्नाणस्सय। केवइयाणं भंते! विभंगनाणपज्जवा प०? गोयमा!
अणंता विभंगनाणपज्जवा प०। एएसिणं भंते! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं सुयनाणपज्जवाणं ओहिना

अनुवाद
व याव त्केवलज्ञानस्य। एव मत्यज्ञानस्य श्रुताज्ञानस्यच। कियन्तो भदन्त। विभङ्गज्ञानस्य पर्यवा प्रज्ञप्ता? गौतम। अनन्ता विभङ्गज्ञान
स्य पर्यवा प्रज्ञप्ता। एतेषा भदन्त! आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणा श्रुतज्ञानपर्यवाणा मवधिज्ञानपर्यवाणा मन पर्यवज्ञानपर्यवाणा केवलज्ञा

॥ भाषा ॥ अवधिज्ञानना स्वपर्याय जे अवधिज्ञाननाभेद भवप्रत्यय क्षयोपशमभेदथकी नारक तिर्यंच देव मनुष्यरूपपणाथकी स्वामिभेदथकी असंख्यातभेद तद्विषयभू
त क्षेत्रकाल भेदथकी अनन्तभेद तद्विषय द्रव्यपर्याय भेदथकी अथवा अभिभागखण्डथकी ते अनता मनपर्यवज्ञानना पर्याय तथा केवलज्ञानना स्वपर्याय
नाजे स्वाम्यादि भेदेंकरी स्वगतविशेष ते अनता अनन्त द्रव्यपर्याय परिच्छेद अपेचायें अथवा अविभाग पलिच्छेदअपेचाये। एवमइअन्नाणस्स सुअअन्ना
णस्स। इम मतिअज्ञानना श्रुतअज्ञानना अनन्तापर्याय कह्या। केवइयाणभंतेविभंगणाणपज्जवा प०। केतला हेभगवन्। विभंगज्ञानना पर्यायकह्या इति
प्रश्न उत्तर। गोयमा अणताविभंगणाणपज्जवा प०। हेगौतम। अनता विभंगज्ञानना पर्यायकह्या, हिवे पर्याय अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणभंते आभि
णिबोहियणाणपज्जवाण। एएसिणमित्यादि, ए एहने ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायने तथा। सुअणाणपज्जवाण। श्रुतज्ञान

॥ टीका ॥

ना नन्तगुणविषयत्वात्, ततो प्याभिनिबोधिकज्ञानपर्याया अनन्तगुणा स्तत स्तस्या भिलाप्यानभिलाप्यद्रव्यादिविषयत्वेना नन्तगुणविषयत्वात्, तत केवलज्ञानपर्याया अनन्तगुणा सर्वद्रव्यपर्यायविषयत्वा त्तस्येति। एव मज्ञानसूत्रे प्यल्पबहुत्वकारण सूत्रानुसारेणोन्नीय' मिश्रसूत्रेतु स्तोका मन प र्यायज्ञानपर्यवा इहोपपत्ति प्राग्व त्तेभ्यो विभङ्गज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा मन पर्यायज्ञानापेक्षया विभङ्गस्य बहुतमविषयत्वा त्तथाहि विभङ्गज्ञान मूर्द्धाध उपरिमग्रैवेयकादारभ्य सप्तमपृथिव्यन्तक्षेत्रे तिर्यक्चासङ्ख्यातद्वीपसमुद्ररूपे क्षेत्रे यानि रूपिद्रव्याणि तानि कानिचि ज्जानाति काश्चित्तत्पर्या

॥ मूल ॥

णपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणनाणपज्जवा ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियना

॥ अनुवाद ॥

नपर्यवाणाच कतरे कतरे याव द्विशेषाधिकावा? गौतम! सर्वस्तोका मन पर्यवज्ञानपर्यवा अवधिज्ञानपर्यवा अनतगुणा श्रुतज्ञानपर्यवा अनतगुणा आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवा अनतगुणा केवलज्ञानपर्यवा अनतगुणा । एतेषा भदन्त! मत्यज्ञानपर्यवाणा श्रुताज्ञानपर्यवाणा

॥ भाषा ॥

पर्याय तथा। आहिणाणपज्जवाण। अवधिज्ञान पर्यायने तथा। मणपज्जवणाण पज्जवाण। मनपर्यवज्ञान पर्यायने ४ तथा। केवलणाणपज्जवाणय कयरे कयरे जावविसेसाहियावा। केवलज्ञान पर्यायने ५ एपुनरथे कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे सरीखाहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा स व्वत्थोवा।मणपज्जव णाणपज्जवा ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा २। हेगौतम! एहा पोताना पर्यायनी अपेक्षायें अल्प बहुत्व जाणवो पणि पर्यायनी अपे क्षाये सगलाने तुल्यपणामाटे जाणवा तिहा सर्वथी थोडा मनपर्यवज्ञानना पर्याय तेहने मनोमात्र विषयपणाथकी तेहथी अवधिज्ञानना पर्याय अनन्त गुणा मनपर्यवज्ञान अपेक्षायें अवधिज्ञानने द्रव्यपर्यायथकी अनतगुण विषयमाटे २ तेहथी। सुयणाणपज्जवा अणंतगुणा ३ श्रुतज्ञानपर्याय अनन्तगुणा एहने रूपीअरूपीद्रव्य विषयपणेकरी अनतगुण विषयपणामाटे ३ तेहथी। आभिणिबोहियणाणपज्जवा अणंतगुणा ४। आभिनिबोधिकज्ञान पर्याय अ नन्तगुणा एहनेकह्या अणकह्या द्रव्यादिविषयपणेकरी अनन्तगुण विषयपणामाटे ४ तेहथी। केवलणाणपज्जवा अणंतगुणा ५। केवलज्ञानपर्याय अन

॥ टीका ॥

याश्च तानिच मन पर्यायज्ञानविषयापेक्षया ऽनन्तगुणानीति, तेभ्यो ऽवधिज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा अवधेः सकलरूपिद्रव्यप्रतिद्रव्यासङ्ख्यातपर्यायविषयत्वेन विभङ्गापेक्षया ऽनन्तगुणविषयत्वात्, तेभ्योपि श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा श्रुताज्ञानस्य श्रुतज्ञानवदोघादेशेन समस्तमूर्त्तामूर्त्तद्रव्यसर्वपर्यायविषयत्वेना वधिज्ञानापेक्षया ऽनन्तगुणविषयत्वा, तेभ्य श्रुतज्ञानपर्यवा विशेषाधिका केषा चि च्छ्रुताज्ञानाविषयीकृतपर्यायाणा विषयी

॥ मूल ॥

णपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा। एएसिणं भंते ! मइअन्नाणपज्जवाणं सुयअन्नाणविभंगनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, एएसिणं भंते आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव

अनुवाद

विभङ्गज्ञानपर्यवाणा कतरे कतरे यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका विभङ्गज्ञानपर्यवा श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा मत्यज्ञानपर्यवा अनतगुणा । एतेषा भदन्त ! आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणा याव त्केवलज्ञानपर्यवाणा मत्यज्ञानपर्यवाणा श्रुताज्ञानपर्यवाणा विभङ्गज्ञानपर्य

॥ भाषा ॥

न्तगुणा सर्वद्रव्यपर्याय विषयपणामाटे ५, हिवे तीनअज्ञानना पर्यायनो अल्प बहुत्व कहिछै—एएसिणभंते मइअन्नाणपज्जवाण। ए एहने हेभगवन् ! मतिअज्ञान पर्यायने। सुअअन्नाणपज्जवाणविभंगणाणपज्जवाणय कयरकयरे जावविसेसाहियावा। श्रुतअज्ञानपर्यायने विभगज्ञानपर्यायने चपुन कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे बराबरहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवा विभंगणाणपज्जवा सुअअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा। हेगौतम सर्वथी थोडा विभगज्ञानना पर्याय ग्रवेयकना सातमीपृथिवीताई जाणे तेहभणी तेहथी श्रुतअज्ञाननापर्याय अनन्तगुणा एहनी भावना मिथ्य अल्पत्वे कहस्ये तेहथी। मइअन्नाणपज्जवा अणतगुणा। मतिअज्ञानना पर्याय अनन्तगुणा एहनी भावना पणि मिथ्य अल्पत्वे कहस्ये, हिवे मिश्रसूत्रना पर्यायनो अल्पबहुत्व कहिछै—एएसिणभंतेआभिणिबोहियणाणपज्जवाण जाव केवलणाणपज्जवाण। एहने हेभगवन् ! मतिज्ञानपर्यायने १ श्रुतज्ञान पर्यायने २ अवधिज्ञानपर्यायने ३ मनपर्यवज्ञानपर्यायने ४ केवलज्ञानपर्यायने ५ तथा। मइअन्नाणपज्जवाण। मतिअज्ञानपर्यायने ६। सुअअन्नाणपज्जवाण विभगणा

॥ टीका ॥

करणा द्यतो ज्ञानत्वेन स्पष्टावभासं त तेभ्यो पि मत्यज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा यत श्रुतज्ञान मभिलाप्यवस्तुविषयमेव मत्यज्ञानन्तु तदनन्तगुणान
भिलाप्यवस्तुविषय मपीति ततोपि मतिज्ञानपर्यवा विशेषाधिका. कंपा ञ्चिदपि मत्यज्ञानाविषयीकृतभावाना विषयीकरणा त्त दि्ह मत्यज्ञानापे

॥ मूल ॥

केवलणाणपज्जवाण मइअण्णाणपज्जवाणं सुयअण्णाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाणय कयरे कयरे जाव
विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणनाणपज्जवा विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा
अणंतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवाविसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा,

अनुवाद

वाणा कतरे कतरे यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानपर्यवा विभङ्गज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा अवधिज्ञानपर्यवा अनन्तगु
णाः श्रुताज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा श्रुतज्ञानपर्यवा विशेषाधिकाया मत्यज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवा विशेषाधिका केव

॥ भाषा ॥

णपज्जवाणय कयरे २ जावविशेषाहियावा । श्रुतअज्ञान पर्यायने ७ विभंगज्ञानपर्यायने ८ ए आठेनाहि कुणकुणथकी थोडाछै घणाछै बराबरछै वे ३
विशेषाधिकछै ४ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवामणपज्जवणाणपज्जवा । हे गोतम । सर्वथी थोडा मनपर्याय ज्ञानपर्याय इहां उपपत्ति पूठिलीपरे
जाणवी एतले मनोमात्रविषयपणामाटे तेहथी । विभंगणाणपज्जवा अणंतगुणा । विभंगज्ञानपर्याय अनंतगुणा विभंगज्ञान नीचो नवमा ग्रैवेयक थकी
माडी सातमी पृथिवीताई ऊपरदेखे आछाअसंख्याता द्वीपसमुद्रने विषे जेद्रव्य ते कितनाएक कांपि कितनाएक तेहनापर्यायमांपि ते मनपर्यायज्ञान विष
यअपेक्षाये अनंतगुणा तेहथी । ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा । अवधिज्ञाननापर्याय अनंतगुणा अवधिने सकल रूपीद्रव्य प्रतिद्रव्य असंख्यातपर्याय वि
षयपणेकरी विभंगनी अपेक्षाये अनंतगुण विषयपणाथकी तेहथी । सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा । श्रुतअज्ञानपर्याय अनंतगुण श्रुतअज्ञानने श्रुतज्ञाननी
परे ओघेकरी समस्त मूर्त्त अमूर्त्तद्रव्य सर्वपर्याय विषयपणे करी अवधिज्ञान अपेक्षाये अनंतगुण विषयपणामाटे तेहथी । सुयणाणपज्जवाविसेसाहि
यावा । श्रुतज्ञानपर्याय विशेषाधिक कितलाएकने श्रुतअज्ञान अविषयीकृत पर्यायने प्रगटकरे तेमाटे ज्ञानपणेकरी अष्टपणे जाणे तेहथी । मइअणाण

॥ टीका ॥

त्रया स्फुटतर मिति, ततोपि केवलज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा सर्वाद्धाभाविना समस्तद्रव्यपर्यायाणा मनन्यसाधारणावभासेना वन्नासनादिति ॥ इत्य
ष्टमशतेद्वितीय ॥ २ ॥ अनन्तर माभिनिबोधिकादिक ज्ञान पर्यवत प्ररूपित तेनच वृक्षादयो ऽर्थाज्ञायन्ते ऽत स्तृतीयोद्देशके वृ
क्षविशेषा नाह ॥ कईत्यादि ॥ सखेज्जजीवियत्ति ॥ सङ्ख्याता जीवा येषु सन्ति ते सङ्ख्यातजीविका , एव मन्यदपि पदद्वय ॥ जहापन्नवणाएत्ति ॥ यथा

॥ मूल ॥

आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा, सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अठमसयस्स
बीओ उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ २ ॥ कइविहाणं भंते ! रुक्खा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहारु
क्खा पन्नत्ता, तंजहा—संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीविया, सेकित संखेज्जजीविया ? गोय

अनुवाद

लज्ञानपर्यवा अनन्तगुणा स्तदेव भदन्तभदन्त । इति ॥ इत्यष्टमस्यद्वितीयउद्देशस्समाप्तः ॥ २ ॥ कतिविधा भदन्त ! वृक्षा
प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा वृक्षा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सङ्ख्येयजीविका असङ्ख्येयजीविका अनन्तजीविका । अथ किन्ते सङ्ख्येयजीविका ? सखेयजी

॥ भाषा ॥

पज्जवा अणतगुणा। मतिअज्ञान पर्याय अनन्तगुणा श्रुतज्ञानकह्या वस्तुविषे पणि प्रवर्त्ते तेहथी । आभिणिबोहियणाणपज्जवा विसेसाहियावा। मतिज्ञानप
र्याय विशेषाधिक कोइएकने पणि मतिअज्ञान विषयकोधानहो एहवा जेभाव तेहने विषयी करणथकी मतिअज्ञाननोअपेक्षायें स्फुटतरछे तेहथी केवलज्ञान
पर्याय अनन्तगुणा सर्वकालभावी समस्तद्रव्यपर्याय तेहने जाणे सर्वज्ञान केवलज्ञानमाहे समाणा। सेवभंते२ त्ति । तहत्ति हेभगवन्! तुम्हकह्युते सर्व सत्यछे
अन्यथानहो । अट्ठमसयस्सबिइओ उद्देसोसमत्तो ८॥ आठमाशतकनो बीजोउद्देशो अर्थथीलख्यो ८ ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे मतिज्ञानादि पर्याय क
ह्या तिणेंकरी वृक्षादिक अर्थजाणे एतलामाटे त्रीजेउद्देशे वृक्षविशेष कहेछे—कइविहाणभंतेरुक्खा प० । केतले भेदे हेभगवन् । वृक्षकह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोय
मा तिविहारुक्खा प० त०। हेगौतम । तीनभेदे वृक्षकह्या ते कहेछे—सखेज्जजीविया असखेज्जजीविया अणतजीविया । सख्याताजीव जेहनेविषेते सख्य त
जीविक कहियें, असख्याताजीव जेहनेविषेछेते असख्यात जीविक कहिये, अनतजीव जेहने विषेछे ते अनतजीविक कहिये । २ सेकितसखेज्जजीवि

॥ टीका ॥

प्रज्ञापनायां तथा चेदं सूत्र मध्येयं तत्र चैव मेतत् "ताले तमाले तक्कलि तेतलिसालेय सालकल्लाणी। सरलेजावइकेयइ कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खे लवगरुक्खेयहोयवोद्धव्वे पूयफलीखज्जूरी बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारेत्ति,, येचा प्यन्ये तथाप्रकारा वृत्तविशेषा स्तेसङ्ख्यातजीविकाइति प्रक्रम ॥ एगट्ठियायत्ति ॥ एक मस्थिक फलमध्ये बीजं येषां ते एकास्थिका ॥ बहुबीयगायत्ति ॥ बहूनि बीजानि फलमध्ये

॥ मूल ॥

मा ! संखेज्जजीविया अणेगविहा पसत्ता, तजहा—ताले तमाले तक्कलि तेतलि जहा पन्नवणाए जाव नालिएरी जेयावन्ने तहप्पगारा, सेत्तं सखेज्जजीविया। सेकिंतं असंखेज्जजीविया ? असंखेज्जजीविया दुविहा पसत्ता, तजहा—एगट्ठिया बहुट्ठियाय। सेकितं एगट्ठिया ? एगट्ठिया अणेगविहा पसत्ता, तंजहा

अनुवाद

विका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—तालस्तमालस्तक्कलिस्तेतलि यथा प्रज्ञापनायां यावन्नालिकेरी येचान्ये तथाप्रकारा समाप्ता सङ्ख्येयजीविका। अथ किन्ते असङ्ख्येयजीविका ? गौतम ! असङ्ख्येयजीविका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—एकास्थिकाश्च बह्वस्थिकाश्च। अथ किन्ते एकास्थि

॥ भाषा ॥

या २। अथ, हिवे किसा सख्यातजीविक इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । सख्यातजीविक। अणेगविहा प० त० अनेकप्रकारेकह्या ते कहैछै, ताले तमाले तक्कलि तेतलि जहा पणवणाए जाव णालिएरी । ताल तमाल तक्कलि तेतलि जिम पन्नवणानेविषेकह्युं तिम कहवो, ते सूत्र इम—तालेतमालेतक्कलि तेतलिसालेयसालकल्लाणे। सरलेजावइकेयइ कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खेलवगरुक्खेयहोइबोधव्वे। पूयफलीखज्जूरी बोधव्वानालिकेरीय ॥ २ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्तंसखेज्जजीविया। जे वली अनेरा पणितथा प्रकारना एहवा वृक्षविशेष एह सरीषा ते सख्यातजीवि काजाणिये। सेकिंतंअसखेज्जजीविया २ दुविहा पं० त०। हिवे किस्या तेअसख्यातजीविक इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । असख्यातजीविक बेहुभेदे कह्या ते कहैछै—एगट्ठियायबहुबीयगाय । एक अस्थिक एकगुठली जेह फलमाहे हुवे ते एकास्थिक घणाबीज जेह फलमांहि हुवे ते बहु बीजक । सेकितएगट्ठिया २ अणेगविहा प० त० । हिवे किसा एकास्थिक इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! एकास्थिक अनेकप्रकारे कह्या ते कहैछै—णिंबबजम्बुएव जहापन्नवणापदे जावफला बहुबीयगा सेत्तंबहुबीयगा

॥ टीका ॥

येषा न्ते बहुवीजका अनेकास्थिका ॥ जहापन्नवणापए त्ति ॥ यथा प्रज्ञापनाख्ये प्रज्ञापनाप्रथमपदे तथा त्रेदं सूत्र मध्येयं तच्चैवं-निंबंबजंबुकोसं बसालअंकोल्लपीलुसल्लूया ॥ सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ इत्यादि, तथा ॥ सेकित बहुवीया बहुवीयगा अणेगविहा पन्नता त जहा-अत्थियतिदुकविठे अंवाडगमाउलिंगविल्लेय ॥ आमलगफणसदाडिम आसोठेउंवरवडेय ॥ १ ॥ इत्यादि, अन्तिमं पुन रिदसूत्र अत्र "एएसि मूलावि असखेज्जजीविया कदावि खधावि तयावि सालावि पवालावि पत्तापत्तेयजीविया पुप्फाअणेगजीविया फलाबहुवीयगत्ति„ एतदन्त चेद वा

॥ मूल ॥

निंबंबजंबु एवं जहा पन्नवणापए जाव फला बहुबीयगा सेत्तंबहुबीयगा, सेत्तं असंखेज्जजीविया । सेकिंतं अणंतजीविया अणंतजीविया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—आलुए मूलुए सिंगबेरे एवं जहासत्तमसए

॥ अनुवाद ॥

का. ? एकास्थिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-निम्वाम्रजम्बु एव यथा प्रज्ञापनापदे यावत्फला बहुवीजका समाप्ता बहुवीजका ॥ समाप्ता असङ्ख्येयजीविका ॥ अथ किन्ते अनन्तजीविका ? अनन्तजीविका अनेकविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आलुको मूलक शृङ्गवेरक एव यथा सप्तमशते

॥ भाषा ॥

सेत्तंअसखेज्जजीविया । नीम अंब जंबू इम जिम पन्नवणाने पहिलेपदे कह्यो ते सूत्र इम—निंबंबजंबुकोसंब सालअंकोल्लपीलुसल्लूया । सल्लईमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ इत्यादि, तथा, सेकितबहुबीयगा २ अनेगविहा प० त०—अत्थियतिदुकविठे अंवाडगमाउलिंगविल्लेय । आमलगफणसदाडिम आसोठेंबरवडेय ॥ २ ॥ इत्यादि, इहा छेहलो वलो ए सूत्र—एएसिमूलाविय असखेज्जजीविया कदाविय खंधाविय सालाविय पवालाविय ॥ ३ ॥ पत्तापत्तेयजीविया पुप्फाअणेगजीवियाफलाबहुबीयगत्ति, एतलालगी एसूत्र देखाडेछे—जावफलाबहुबीयगा एतले बहुबीज कह्या एतले असंख्यात जीवकह्या । सेकितअणतजीविया २ अणेगविहा प० त० । हिवे किस्या ते अनन्तजीविक इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । अनन्तजीविक अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—आलुए मूलुए सिगबेरे एवजहासत्तमसए । आलुक मूलक शृङ्गवेर इम जिम सातमा शतकनेविषे कह्यु । जावसीउण्हे मुसुढोजेयावण्णेतहप्प गारा । यावत् गौतोण्ह मुसुंढी एसर्व अनन्तकाय वली जे अनेरा तथा प्रकारना छच विशेष वनस्पती । सेत्तअणतजीविया । ते एतले अनन्तजीविक क

॥ टीका ॥

ष्यमिति दर्शनायाह ॥ जावेत्यादि ॥ अथ जीवाधिकारा दिदमाह ॥ अहेत्यादि ॥ कुम्मेत्ति ॥ कूर्म्म कच्छप ॥ कुम्मावलियत्ति ॥ कूर्मावलिका कच्छपपङ्क्ति ॥ गोहत्ति ॥ गोधासरीसृपविशेष ॥ जेअंतरत्ति ॥ यान्यन्तरालानि ॥ तेअंतरेति ॥ ता न्यन्तराणि ॥ कलिंबेणवात्ति ॥ क्षुद्रकाष्ठरूपेण ॥ आमुसमाणेवत्ति ॥ आमृशन् ईषत्स्पृशन्नित्यर्थ ॥ समुसमाणेवत्ति ॥ सस्त्येन स्पृश न्नित्यर्थ ॥ आलिहमाणेवत्ति ॥ आलिखन् ईष त्सकृद्वा, कर्षन् ॥ विलिहमाणेवत्ति ॥ विलिखन् नितरा मनेकशोवा, कषन् ॥ आच्छिदमाणेवत्ति ॥ ईष त्सकृद्वा छिन्दन् ॥ विच्छिदमाणेवत्ति ॥ नितरा

॥ मूल ॥

जाव सीउरहे मुसुंढी जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं अणंतजीविया ॥ अहन्नंते ! कुंमे कुम्मावलिया गोहा गोहावलिया गोणा गोणावलिया मणुस्से मणुस्सावलिया महिसे महिसावलिया एएसिण भंते ! दुहावा तिहावा संखेज्जहावा छिन्नाणं जे अंतरा तेविण तेहिं जीवपएसेहिं फुडा ? हंताफुडा । पुरिसेणं भंते ! अंतराहत्थेणवा पाएणवा अंगुलियाएवा सलागाएणवा कट्ठेणवा कलिंबेणवा आमुसमाणेवा समुसमाणेवा आलिह

॥ अनुवाद ॥

यावच्छीतोरम मुसुण्ढी येचान्ये तथाप्रकारा स्समाप्ता अनन्तजीविका ॥ अथ भदन्त ! कूर्म: कूर्मावलिका गोधा गोधालिका गौ गवावलिका मनुष्यो मनुष्या वलिका महिषो महिषावलिका, एतेषा भदन्त ! द्विधावा त्रिधावा सख्येयधावा छिन्नाना यान्यन्तराणि तान्यपि तै जीवप्रदेशै स्पृष्टानि ? हन्त स्पृष्टानि । पुरुषो भदन्त ! तान्यन्तराणि हस्तेनवा पादेनवा ङुलिकयावा शलाकयावा काष्ठेनवा कलिम्बेणवा ऽऽमृशन्वा

॥ भाषा ॥

द्या, हिवे जीवना अधिकारथीज ए कहैछै—अहभतेकुम्मेकुम्मावलिया । हिवे हेभगवन् ! काछवा काछवानी पक्ति । गोहा गोहावलिया गाणा गाणावलिया मणुस्से मणुस्सावलिया महिसे महिसावलिया । सरीसृपविशेष गोधानीपक्ति सर्पविशेष गोणनीपक्तिविशेष मनुष्य मनुष्यनी पक्ति महिष महिषनी पक्ति । एएसिणदुहावा तिहावा सखेज्जहावा । एहाने टोयखण्डकीधा तीनखण्ड सख्याताखण्ड । छिणाण जे अतराविण तेहि जीवपएसेहि फुडा हताफुडा । कह्याने जूयारे २ कीधाने जे अन्तराविचाले मध्यभागे खण्ड २ प्रत जीवछै तेपाण णं वाक्यालकारे, तेणे जीव प्रदेशेकरी स्पर्शछै

॥ टीका ॥ मसरुद्वा; छिन्दन् ॥ समोड्हमाणेत्ति ॥ समुपदहन् ॥ आवाहंवत्ति ॥ ईष द्बाधा ॥ वावाहंवत्ति ॥ व्यावाधा प्रकृष्टपीडा कूर्मादिजीवाधिकारा त्त दुत्पत्तिक्षेत्रस्यरत्नप्रभादे श्चरमाचरमविभागदर्शनायाह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्र ॥ इमाण भंते । रयणप्पभा पुढवी किंचरिमा अचरिमत्ति ॥ अथ केय ञ्चरमाचरमपरिज्ञापे ? त्यत्रोच्यते चरमन्नाम प्रान्तपर्यन्तवर्त्ति आपेक्षिकञ्च चरमत्व यदुक्त मन्यद्रव्यापेक्षया इद चरम द्रव्यमिति, यथा

॥ मूल ॥ माणेवा विलिहमाणेवा अन्नयरेणवा तिक्खेणं सत्थजाएणं आच्छिंदमाणेवा विच्छिंदमाणेवा अगणिका एणं समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आवाहंवा विवाहंवा उप्पायइ छविच्छेदंवा करेइ ? णोइणठेसमठे नोखलु तत्थ सत्थंकमइ । कइणं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अठपुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—

अनुवाद समृशन्वा लिखन्वा विलिखन्वा न्यतरेणवा तीक्ष्णेन शस्त्रजातेना च्छिन्दन्वा विच्छिन्दन्वा ऽग्निकायेन समुपदहन् तेषां जीवप्रदेशाना किंचि दाबाधावा व्याबाधावो त्पादयति, छविच्छेदवा करोति ? नायमर्थो, नखलु तत्र शस्त्र क्रमते ॥ कति भदन्त । पृथिव्य प्रज्ञप्ता- ? गौतम ।

॥ भाषा ॥ माहोमाहि प्रदेशमिल्या इतिप्रश्न उत्तर हा फरस्या । पुरिसेणभो अन्नरहत्येणवा पादेणवा । पुरुष ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । ते अन्तरमध्य भागप्रतें हाथेंकरी पगेंकरी । अगुलियाएवा सलागाएणवा कट्ठेणवा कलिंचेणवा । अगुलीए करी सलाका करीने काष्टेंकरी कलिंच नान्हाकाष्ट । आमु समाणेवा समुसमाणेवा आलिहमाणेवा विलिहमाणेवा । थोडासा फरसे घणा फरसे थोडोसो एकवारे आकर्षे घणोवारवार आकर्षे । अन्नयरेणवा ति क्खेण सत्थजाएण । अन्यतर कोईएक जिणे तिणे तीखे शस्त्रजाते करी । आच्छिदमाणेवा विच्छिदमाणेवा । थोडोसो अथवा एकवार छेदतो थको स मस्तपणे अथवा बारबार छेदतोथको । अगणिकाय समोडहमाण । अग्निकायेंकरी बालतोथको । तेसिजीवपएसाण किंचिविआवाहवा विवाहंवा । तेह जीव प्रतिदेशने किंचित थोडोसी पीडाहुवे घणोपीडा व्यथा । उप्पायइ छविच्छेदवाकरेइ । उपजावे जीवनो चामडी कर्ण नासिका छेदकरे । णोइ णठेसमठे णो खलुतत्थसत्थंकमइ । ए अर्थ समर्थनही नही निश्चे तिहा शस्त्र सक्रमे कर्मअधिकारथको उत्पत्तिक्षेत्रने रत्नप्रभादिकने चरिम अचरिम

पूर्वशरीरापेक्षया चरमं शरीरमिति, तथा अचरमनाम अप्रान्तं मध्यवर्त्ति आपेक्षिकञ्चा चरमत्व यदुक्त मन्यद्रव्यापेक्षया इदमचरम द्रव्य यथा न्यशरीरापेक्षया मध्यशरीर मिति, इहस्थाने प्रज्ञापनादशम पद वाच्य मेतदेवा ह ॥ चरमेत्यादि ॥ तत्र पदद्वय दर्शितमेव शेषतु दर्श्यते ॥ च रिमाइ अचरिमाइ चरिमतपएसा अचरिमतपएसा ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभापुढवी नोचरिमा नोअचरिमा नोचरिमाइ नोअचरिमाइ नोच रिमतपएसा नोअचरिमतपएसा नियमा अचरिमचरिमाणिय चरिमतपएसाय अचरिमतपएसाय इत्यादि, तत्र किंचरिमा अचरिमा इत्येकवच नान्त प्रश्न. चरिमाइअचरिमाइ इति बहुवचनान्त प्रश्न , चरिमतपएसा अचरिमतपएसति, चरमाएवा न्तवर्त्तित्वा दन्ताश्चरमान्ता स्तेषा प्रदे शा इतिसमास , तथा अचरममेवा न्तो विभागो ऽचरमात स्तस्य प्रदेशा अचरमान्तप्रदेशा ॥ गोयमा ! नोचरिमा नोअचरिमा ॥ चरमत्व ह्येतदा

रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिंपभारा ॥ इमाणं भंते! रयणप्पभा पुढवी किंचरिमा अचरिमा ? चरि

अष्टौ पृथिव्य प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—रत्नप्रभा याव दध सप्तमा ईष त्प्राग्भारा ॥ इय भदन्त ! रत्नप्रभा पृथवी कि चरमाचरमा ? चरमपदनिर

विभाग देखाडवाने कहैछे—कइणभंते पुढवीओ पण्णत्ताओ गोयमा अट्ठपुढवीओ पण्णत्ताओ तं० रयणप्पभा जाव इसिप्पभारा । केतली ए वाक्यालंका रे, हेभगवन् ! पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम ! आठ पृथिवीकही ते कहैछे—रत्नप्रभा इत्यादि, यावत् नीचे सातमी ईषत्प्राग्भारा ए आठ पृथि वी कही ते कहैछे—इमाणभंते रयणप्पभापुढवी किंचरिमा अचरिमा । तिहा आरत्नप्रभा पृथिवी, हिवे किसो अचरिमाचरिम परिभाषा इहा कहैछे, चरिम कहिये प्रान्त छेहडेवर्त्ते ते आपेक्षिक चरिमपणोछे जिमकह्यु अन्यद्रव्यनी अपेक्षायें ए चरिमद्रव्य यथा पूर्वशरीर अपेक्षायें चरिमशरीर इत्यर्थ, तथा अचरिम कहिये अप्रान्तछेहडे नही एतले मध्यवर्त्ती आपेक्षिक अथवा अचरिमपणो यदुक्त—अन्यद्रव्यनी अपेक्षायें ए अचरिमद्रव्य यथा अन्यश रीर अपेक्षायें मध्यशरीर इणि स्थानके पन्नवणानो दशमोपद कहवो एहीज कहैछे—तिहा बेपद तो देखाड्या हीज शेष देखाडीयेछे—चरिमाइ अच रिमाइ । चरिमपदंणिरवसेसं भाणियव्व । चरिमतपएसा अचरिमतपएसा गोयमा , इमाणरयणप्पभापढवी, नोचरिमा नोअचरिमा नोचरिमाइ नोअच

॥ टीका ॥

पेक्षिक अपेक्षणीयस्या भावाच्च कथ चरमान्तविष्यति अचरमत्व मप्यपेक्षयैव भवति तत' कथ मन्यस्या पेक्ष्यस्या भावे अचरमत्व भवति यदिहि र त्नप्रभाया मध्ये ऽन्या पृथिवी स्या त्तदा तस्या श्चरमत्व युज्यते नचास्ति सा तस्मा न्नचरमासौ तथा यदि तस्या बाह्यतो न्या पृथिवी स्या त्तदा तस्या अचरमत्व युज्यते नचास्ति सा तस्मा न्नाचरमासा विति अयच वाक्यार्थो ऽत्र किमिय रत्नप्रभापश्चिमा उत मध्यमेति, तदेत द्द्वितयमपि यथा नसम्भवति तथोक्त, अथनोचरिमाइ नोअचरिमाइति॥ कथ यदा तस्या श्चरमध्यपदेशोपि नास्ति तदा चरमाणीति कथ भविष्यति एव मच रमाण्यपि तथा॥ नोचरिमतपएसा नोअचरिमतपएसत्ति॥ अत्रापि चरमत्वस्या चरमत्वस्या भावा त्तत्प्रदेशकल्पनाया अप्यभाव एवेत्यत उक्त नोचर मान्तप्रदेशा नोअचरमान्तप्रदेशा रत्नप्रभेति किंतर्हि नियमान्नियमेन अचरमच चरमाणिच एतदुक्तम्भवति अवश्यतयेय केवलभङ्गवाच्या नभवति अवयवावयविरूपत्वा दसङ्ख्येयप्रदेशावगाढत्वा द्यथोक्तनिर्वचनविषयैवेति, तथाहि रत्नप्रभा ताव दनेन प्रकारेण व्यवस्थिता इति विनेयजनानुग्रहा य लिख्यते स्थापनाचय * एवमवस्थिताया यानि प्रान्तषु व्यवस्थितानि तदध्यासितक्षेत्रखण्डानि तानि तथाविधविशिष्टैकपरिणामयुक्तत्वा च्चरमा

॥ भाषा ॥

रिमाइ नाचरिमतपएसा नोअचरिमतपएसा नियमाअचरिमाणिय चरिमाणिय चरिमतपएसाय अचरिमतपएसाय इत्यादि, तिहा चरिमा अच रिमा ए एकवचनान्त प्रश्न जाणवो चरिमाइ अचरिमाइ एबहुवचनान्त प्रश्नजाणवो, चरिमतपएसा अचरिमतपएसा तिमहीज अन्तवर्त्तिपणाथकी अतेचरिमान्त तेहना प्रदेश एहवो समासकीजे तथा अचरिमहीज अन्तकहिये विभाग ते अचरिमान्त तेहना प्रदेश ते अचरिमप्रदेश कहिये इति प्रश्न स्यार्थ अथ उत्तर हेगौतम । नोचरिमा नोअचरिमा चरिमपणू तेहने आपेक्षिकहूवे अचरिमपणू पणि अपेक्षायेजहूवे तिवारे किम अन्य अपेक्षानेअभा वे अचरिमपणूहूवे, जो निश्चै रत्नप्रभानेविचाले अन्यपृथिवी होतोतो तेहने चरिमपणौ सम्भवे तेमाटे ए चरिमनहीं तथा जो रत्नप्रभापृथिवीने बाहिर थको बीजो पृथिवी होतीतो तेहने अचरिमपद सम्भवे तिकातो नथी इहा ए वाक्यार्थ छ प्रारत्नप्रभापृथिवी पश्चिम अथवा मध्यम इति तिवारे बेज य पि न सम्भवे तिमकह्यु नाचरिमाइ नोअचरिमाइति तेजिम जो तेहने चरिम व्यपदेश पणिनही तो चरिमाणीति एहवो किमहुवे इम अचरिमाणि

॥ टीका ॥ शि यत्पुन मध्ये महत् रत्नप्रभाक्रान्तक्षेत्रखण्ड तदपि तथाविधपरिणामयुक्तत्वा द्वचरम तदुभयसमुदायरूपाचैव मन्यथा तदभावप्रसङ्गात् प्रदेशप रिकल्पनायातु चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाश्च कथ ये बाह्यखण्डप्रदेशा स्ते चरमान्तप्रदेशा येच मध्यखण्डप्रदेशा स्ते अचरमान्तप्रदेशा इति, अनेन चैकान्तदुर्नयनिरासप्रधानेन निर्वचनसूत्रेण ऽवयवावयविरूप वस्त्वित्याह, तयोश्च भेदाभेदइति, एव शर्करादिष्वपि, अथ कियद्दूर तद्वाच्य

॥ मूल ॥ मपदंनिरवसेसं भाणियव्वं, जाव वेमाणियाणं भंते ! फासचरिमेणं किचरिमा अचरिमा ? गोयमा !

॥ भाषा ॥ तथा 'नोचरिमे' इत्यत्र नोअचरिमापएसत्ति, एहापणि चरिमपणाना तथा अचरिमपणाना अभावथको तेहना प्रदेशनी कल्पनानो अभावथीज एत लामाटेकह्यु नोचरिमातप्रदेशा नोअचरिमातप्रदेशा रत्नप्रभा इति, तोस्यू ? नियमथको अथवा नियमेकरी अचरिमाणिच चरिमाणिच, एतलेएभावार्थ अवश्ये आ रत्नप्रभापृथिवी केवल अचरमाची नहवे अवयव अवयवीरूप पणाथको असङ्ख्येयप्रदेश अवगाढपणाथको जिमकह्यो उत्तर ते विषय होजके ते देखाडेछे—आ रत्नप्रभापृथिवी इणेप्रकारे रहीछे ते विनयवत सन्युष अनुग्रहने अर्थे विशेपथी लिखियेछे स्थापनाथी जोइलेज्यो, इणेप्रकारे रही रत्नप्र भापृथिवीनो तेहने विषेज छेहडानेविषे रह्या तदध्यासित क्षेत्रखण्ड तेह तथाविध विशिष्ट एक परमाणु युक्तपणाथको चरमाणि काहिये, जे वली वि चाले मोटारत्नप्रभा आक्रान्त क्षेत्रखण्ड ते पणि तथाविध परमाणु युक्तपणाथको अचरिमाणि काहिये ते उभय समुदायरूप आ रत्नप्रभा पृथिवीछे अन्य था तेहना अभाव प्रसङ्गथको प्रदेश कल्पनानेविषे तो चरिमान्त प्रदेशाश्च अचरिमातप्रदेशाश्च एहवोकहिये तेकिम जे बाह्य खण्डप्रदेश ते चरमातप्रदेश वली जे मध्यखण्डप्रदेश ते अचरमातप्रदेश कहिये इणेप्रकारे एकान्त दुर्नयनिरास एकान्तवादी ते दुष्टनय तेहनो टालवो, ते प्रधान उत्तर सूत्रेकरी अ वयव अवयवीरूप वस्तुइवे इसाकह्यो ते बेहुनेविषे भेद अभेदकह्यु इम शर्कराप्रभादिक पृथिवीनेविषे पणिकहवो, हिवे केतलालगे ए कहवो ते कहेछे—जा ववेमाणियाणभते फासचरिमेण किचरिमा अचरिमा गोयमा चरिमावि अचरिमावि। यावत् वैमानिक हेभगवन् । स्पर्श चरिमेकरी स्यू चरिमछे वा अ चरिमछे इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम। चरिमावि अचरिमावि। जेवैमानिक भवस्थान स्पर्शन नहीपामे वली तिहा चवणउपजवेकरी तेहने सुतिगसनयको

॥ टीका ॥

मित्याद्ग ॥ जावेत्यादि ॥ ये वैमानिकाभवसम्भव स्पर्शनं नलप्स्यन्ते पुन स्तत्रा नुत्पादेन मुक्तिगमना त्ते वैमानिका स्पर्शचरमेण चरमा येतु लं पुन र्ल प्स्यन्ते ते त्वचरमा ॥ इत्यष्टमशते तृतीय ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके वैमानिका उक्ता स्तेच क्रियावन्त इति चतुर्थोद्देशके ता क्रिया उच्यन्ते तत्रच ॥ रायगिहे इत्यादिसूत्र ॥ एवकिरियापयत्ति ॥ एव मेतेन क्रमेण-क्रियापद प्रज्ञापनाया द्वाविंशतितम तच्चेव-पाउसिया पारियाव णिया पाणाइवायकिरिया इत्यादि' अन्तिम पुनरिद सूत्र मत्र-एयासिण भते । आरम्भियाण परिग्गहियाण अपच्चक्खाणियाण मायावत्तियाण

॥ मूल ॥

चरिमावि अचरिमावि सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अठमसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ३ ॥ रायगिहे जाव एवंवयासी कइणं भंते ! किरिया पसत्ता ? गोयमा ! पचकिरिया प०, तंजहा—काइया

अनुवाद

वशेष भणितव्य । यावद्वैमानिका भदन्त । स्पर्शचरमेण चरमा अचरमा ? गौतम ! चरमा अपि अचरमा अपि तदेव भदन्तभदन्त ॥ इत्यष्टम शते तृतीयोद्देश स्समाप्त ॥ ३ ॥ राजगृहे यावदेव मवादीत्-कति भदन्त । क्रिया प्रज्ञप्ता ? गौतम । पञ्च क्रिया प्र

॥ भाषा ॥

ते वैमानिक स्पर्श चरिमेकरी चरिमकहिये, अने जे वैमानिक भवसम्भव स्पर्शन वली लाभस्ये ते तो अचरिम कहिये । सेवभते २ त्ति । तहत्ति हेभगव न् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछे अन्यथानही । अष्टमसयस्स तइओ उद्देसोसम्मत्तो ८ । ए आठमाशतकनो त्रीजोउद्देशो अर्थथको कह्यो ॥ ३ ॥ पाछिले उद्देशाने अते वैमानिक कह्या ते क्रियावतहुवे तेमाटे चोथेउद्देशे क्रियाअधिकार कहेछे—रायगिहे जावएववयासी कइणभते किरियाओ प० । राजगृहनगरने विषे यावत् गौतमज्ञानी भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वादी नमस्कारकरी इमकहे केतली हेभगवन् । क्रियाकही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचकिरियाओ प० त० काइया अहिगरणिया एवकिरियापदणिरवसेसं भाणियव्व । हेगौतम । पाचप्रकारनो क्रिया कही ते कहेछे—काया ये कीजे ते कायिकोक्रिया १ अधिकरणे हलमूशलादिके कोजे ते अधिकरणकीक्रिया २ इम अनुक्रमे क्रियापद पन्नवणानेविषे बावीसमो निरवशेष स मस्तकहवो ते इम पाओसिया ३ पारियावणिया ४ पाणाइवायकिरिया ५ इत्यादि, वली इहा सूत्रकहवो, एयासिणभते आरभियाण १ परिग्गहिया

॥ टीका ॥

मिच्छादसणवत्तियाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा वहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा । सव्वत्थोवाउ मिच्छादसणवत्तियाउ (मिथ्यादृशा मेव तद्भावात्) अपच्चक्खाणकिरियाउ विसेसाहियाउ (मिथ्यादृशा मविरतसम्यग्दृशाञ्च तासा भावात्) परिग्गहियाउ विसेसाहियाउ (पूर्वोक्ताना देशविरतानाञ्च तासा भावात्) आरंभियाउ किरियाउ विसेसाहियाउ (प्रागुक्ताना प्रमत्तसयतानाञ्च तासा भावात्) मायावत्तियाउ विसेसाहियाउ, पूर्वोक्ताना मप्रमत्तसयतानाञ्च तद्भावादिति, एतदतश्चेद वाच्य मिति दर्शय न्नाह ॥ जावेत्यादि ॥ इहगाथे-मिच्छापच्चक्खाणे परिग्गहारंभमायकिरियाउ॥कमसोमिच्छाअविरय मीसपमत्तप्पमत्ताण ॥१॥ मिच्छत्तवत्तियाउ मिच्छद्दीठीणचेवतोथोवा॥ सेसाणग्गक्कोवच्छइरासीत

॥ मूल ॥

अहिगरणिया एवं किरियापद निरवसेसं भाणियव्व जाव मायावत्तियाउ विसेसाहियाउ सेव भंते भंतेत्ति ॥

॥ अनुवाद ॥

अथवा अन्यया-कायिकी आधिकरणकी, एव क्रियापद ज्ञातव्य निरवशेष याव न्मायाप्रत्ययिक्यो विशेषाधिका स्तदेव भदन्तभदन्त इति भगवान्गौतमो याव द्विहरति ॥ इत्यष्टमशत चतुर्थोद्देश स्समाप्त ८ ॥ ४ ॥ राजगृहे नगरं याव देव मवादी-दाजीविका भद

॥ भाषा ॥

य २ अपच्चक्खाणेण ३ मायावत्तियाण ४ मिच्छादसणवत्तियाणय ५ कयरे २ अप्पा वा ४ गोयमा सव्वत्थोवामिच्छादसणवत्तियाओ किरियाओ, मिथ्या दृष्टीनेज तेहनाभावथको १ अपच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ मिथ्यादृष्टीने तथा अविरतसम्यग्दृष्टीने तेहनाभावथको २ परिग्गहियाओ विसेसा हियाओ, मिथ्यादृष्टीन तथा अविरतसम्यग्दृष्टीने तथा देशविरतीने तेहना भावथको ३ आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, पूर्वोक्त तीनने त था प्रमत्तसयतीने तेहना भावथको ४ एतलालगे कह्या ते देखाडतो कहेछे—मायावत्तियाओ विसेसाहियाओ। पूर्वोक्त चारने तथा अप्रमत्तसय ताने तेहना भाव थको इहा बेगाथा कहेछे—मिच्छापच्चक्खाणे परिग्गहारंभमायकिरियाओ। कमसोमिच्छाअविरय मीसपमत्तप्पमत्ताण ॥१॥ मिच्छत्तव त्तियाओ मिच्छद्दिट्ठीचेवतोथोवा। सेसाणग्गक्केक्का वड्ढइरासीतआअहियाभि ॥ २ ॥ सेवभंते २ त्ति भगवगोयमे जाव विहरइ। तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कहु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही इसो भगवंत गौतम कही यावत् विचरे। अट्ठमसयस्सचउत्थोउद्देसासम्मत्तो ८। ४ आठमा शतकनो चोथोउद्देशो अर्थथकी

॥ टीका ॥

उगृहीष्यति ॥ २ ॥ इत्यष्टमशते चतुर्थउद्देशक ॥ ४ ॥ क्रियाधिकारा त्पञ्चमोद्देशके परिग्रहादिक्रियाविषय विचार दर्शय न्ना ह ॥ रायगिहेत्यादि ॥ गौतमो भगवन्त मेव मवादीत्–आजीविका गोशालकशिष्या भदन्त । स्थविरा न्निर्ग्रन्थान् भगवत एव वक्ष्यमाणप्रकार म वादिषु यच्च ते तान् प्रत्यवादिषु स्त गौतम स्वयमेव पृच्छ न्नाह ॥ समणोवासगस्सणमित्यादि ॥ सामाइयकडस्सत्ति ॥ कृतसामायिकस्य प्रतिप न्नाद्यशिक्षाव्रतस्य श्रमणोपाश्रयेहि श्रावक सामायिक प्राय प्रतिपद्यत इत्यत उक्त श्रमणोपाश्रये आसीनस्येति ॥ केइत्ति ॥ कश्चित्पुरुष ॥ भण्ड ति ॥ वस्त्रादिक वस्तु गृहवर्त्ति साधूपाश्रयवर्त्तिवा ॥ अवहरेज्जत्ति ॥ अपहरेत् ॥ सेत्ति ॥ सश्रमणोपासक ॥ तन्नण्डति ॥ तदपहृत भाण्ड ॥ अणुग

॥ मूल ॥

अट्ठमसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ४. ॥ रायगिहे नयरे जाव एवं वयासी आजीवि याण भंते ! थेरे भगवंते एववयासी समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवासए अत्थमाणस्स

अनुवाद

न्त । स्थविरा न्निर्ग्रन्था नेवमवादिषु–श्रमणोपासकस्य भदन्त । कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य कश्चि द्भाण्डमपहरे त्स तद्भाण्ड म

॥ भाषा ॥

कह्यो ॥ ४ ॥ क्रियाधिकारथकी पाचमेंउद्देशे परिग्रह क्रियाविषय विचार देखाडतो कहेछे—रायगिहेणयरे जाव एवंवयासी आ जीवियाणभंते थेरेभगवंते एववयासी समणोवासगस्सणभंते । राजगृहनगरनेविषे यावत् इमकहे गोशालानाशिष्य स्थविरसाधु समीपे श्रावकनो अपेक्षा ये पूछ्यो ते श्रीगौतमस्वामीये श्रीमहावीर कन्हे पूछ्यो तिहालगे जिहालगे श्रावकना पच्चक्खाणना भागा १७४ कह्या पर आगलि इमकह्यु एहवा गोशा लाना श्रावक नहुवे एहवा श्रमणोपासक जाणवा ते देखाडेछे—श्रमणोपासकना ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । सामाइयकडस्ससमणोवासए अत्थमाण स्सकेइभंडअवहरेज्जा । कृतसामायिकनो एतले पहिलोशिक्षाव्रतसामायिकरूप ते आदर्यो छे जेणें तेहनो ,समणोवासएत्ति, श्रमण साधुना उपाश्रयनेवि षे जेमाटे सामायिक श्रावकउपाश्रयनेविषेज सामायिक पडिवज्जे एतलामाटेकह्यु श्रमणोपाश्रयनेविषे बेठोछे तेहनो केइत्ति, कोइएक पुरुष भडत्ति, व स्त्रादि वस्तु घरनो अथवा उपाश्रयनो अपहरे लेजाय इत्यर्थ । सणभंतेत भड अणुगवेसमाणे । ते ण वाक्यालकारे, हेभगवन् श्रमणोपासक तेह अपहर्यो

॥ टीका ॥ परकीय वा, पृच्छतो यमभिप्राय स्वसम्बन्धि वेसमायाति ॥ सामायिकपरिसमाप्त्यनन्तर गवेषयन् ॥ सयभंडति ॥ स्वकीयंभाण्ड ॥ परायगंति ॥ परकीय ॥ अत्रोत्तर ॥ सभंडति ॥ स्वभाण्ड ॥ तेहिंति ॥ तै र्विवक्षितै त्वा तत्स्वकीय सामायिकप्रतिपत्तौच परिग्रहस्य प्रत्याख्याततत्वा दस्वकीय मत प्रश्न, अत्रोत्तर ॥ सभंडति ॥ स्वभाण्ड ॥ तेहिंति ॥ तै र्विवक्षितै र्यथा क्षयोपशम गृहीतै रित्यर्थ, ॥ सीलेत्यादि ॥ तत्र शीलव्रता न्यणुव्रतानि गुणा गुणव्रतानि विरमणानि रागादिविरतय प्रत्याख्यान नमस्का रसहितादि पौषधोपवास पर्वदिनोपवसन तत एषा द्वन्द्वो ऽत स्तै,' इहच शीलव्रतादीना ग्रहणेपि सावद्ययोगविरत्यविरमणशब्दोपात्तया प्रयो

॥ मूल ॥ केइभंडं अवहरेज्जा सेणंभंते! तंभंडं अणुगवेसमाणे किंसयंभंडं अणुगवेसइ परायगंभंडं अणुगवेसइ ? गो यमा ! सयंभंडं अणुगवेसइ नोपरायगंभंडं अणुगवेयइ । तस्सणं भंते! तेहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाग पोसहोववासेहिं सेभंडे अभंडे भवइ ? हंताभवइ । सेकेण खाइणं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सयं भंडं

॥ अनुवाद ॥ नुगवेषयन् कि स्वक भाण्ड मनुगवेषयति परकीय भाण्ड मनुगवेषयति ? गौ० । स्वक भाण्ड मनुगवेषयति न परकीय भाण्ड मनुगवेषयति। तस्य भदन्त । तै शीलव्रतगुणविरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासै स्तद्भाण्डमभाण्डम्भवति ? हन्त भवति । अथ केन पुन रर्थेन भदन्त ! एव मुच्यते

॥ भाषा ॥ भाडवस्तुप्रतें सामायिक पूरोथया अनन्तरे गवेषता जीवतीथका। किसयंभंडअणुगवेसइ परायगभंडअणुगवेसइ। स्य, स्वकीयभाड आपणोभाड गवेषे जीवें अथवा पारकोभाड गवेषे जीवें इहा पूछणहारनो अभिप्राय स्वकीय ते कहिये जे स्वसवधी हुवे पर सामायिक पडिवज्या परिग्रहना पच्चक्खाण भणी आपणो नहुवे एतलामाटे प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सभंडअणुगवेसइ णोपरायगभंडअणुगवेसइ। हेगौतम । श्रावक आपणो भाडवस्तु सामायिक पूरा पछे गवेषे पराचोभाड गवेषैनही तिहा ए कारण जे ममत्वभाव छेदाणोनथी अने सामायिकभावछता गवेषणा अयुक्त तिणे कारणे अनुगवेषे इमकह्यु। तस्सणभंतेतेहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं सेभंडे अभंडे भवइ हंताभवइ । तेहने ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ते विवक्षित करीने जिम क्षयोपशम यद्या तिणेकरीने शीलव्रतकहिये अनुव्रत गुणव्रत रागादिकविरती नवकारसो पोरसीसहित पर्वदिननेविषे पौषधसहित उपवास तिणेक

॥ टीका ॥

जन तस्यैव, परिग्रहतानिमित्तत्वेन श्रावकस्या श्रावकताभवनहेतुत्वा दिति ॥ सेजके अजडे भवइत्ति ॥ तदपहृतश्रावक ममायक भव,त्यसव्यवहार्य त्वात् ॥ सेकेणंति ॥ अथ केन ॥ खाइणंति ॥ पुन ॥ अट्ठेणंति ॥ अर्थेन हेतुना ॥ एवंभवइत्ति ॥ एवंभूतो मन परिणामो भवति ॥ नोमेहिरण्णेइ त्यादि ॥ हिरण्यादिपरिग्रहस्य द्विविध त्रिविधेन प्रत्याख्यातत्वात्, उक्तानुक्तार्थान्संग्रहेणाह ॥ नोमेइत्यादि ॥ धन गणिमादि गवादिवा; कनक प्रतीत रत्नानि कर्केतनादीनि मणय श्चन्द्रकान्तादयो मौक्तिकानि शङ्खाश्च प्रतीता शिला प्रवालानि विद्रुमाणि अथवा शिला मुक्ताशिलाद्या रक्तरत्नानि पद्मरागादीनि तत एषा द्वन्द्व, ततो विपुलानि धनादीन्यादिर्यस्य त त्तथा ॥ सतत्ति ॥ विद्यमान ॥ सारत्ति ॥ प्रधान ॥ सावएज्ज

॥ मूल ॥

अणुगवेसइ नोपरायगं भंड अणुगवेसइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ णोमे हिरण्णे णोमे सुवण्णे नोमेकंसे नोमेदूसे विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादीए संतसारसावएज्जे ममत्तभावे पुण

अनुवाद

स्वक श्रावक मनुगवेषयति न परकीय श्रावक मनुगवेषयति ? गौ० । तस्यैव भवति नमेहिरण्य नमेसुवर्णं नमे कास्य नमे दूष्य विपुलधनकन

॥ भावा ॥

री इहा शीलव्रतादिकने ग्रहणे पणि सावद्ययोग विरतिकरा विरमणशब्द उपात्तपणेकरी प्रयोजन तहनेज परिग्रहने अपरिग्रहपणो निमित्तपणेकरी भाडने अभाडपणो भवनहेतुपणा थकी से भंडे अभंडे भवतित्ति, ते अपहर्या भाड अभाडहुवे इतिश्च उत्तर हागोतमहुवे । सेकेण खा णा अट्ठेणभते ए वंवुच्चइ । किसेहेतु प्रसिद्ध किण्अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । सभडअणुगवेसइ । आपणोभाड अनुगवेषे। णोपरायगभडअणुगवेसइ। नही परायाभाड अनुगवेषे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तस्सण एव भवइ । हेगौतम । तेहने ण वाक्यालकारे, एहवो मनपरिणाम हुवे । णो मेहिरण्णे णो मेसुवण्णे णो मेकसे । नही माहरो हिरण्य इत्यादि, हिरण्यादि परिग्रहने द्विविध त्रिविधपणे पच्चख्याभणी नहीमाहरो सुवर्ण नही माहरो कास्य । णोमेदूसे । नही माहरो दूष्यव स्त्र उक्त अनुक्तअर्थ सग्रहकरी कहेछे—णोमेविपुल धण कणग रयणमणि मोत्तिय सख सिल प्पवाल रत्त रयणमादीए सतसारसावइज्जेममत्तभावे । णोमे त्यादि, धन गणिमादिक अथवा गवादिक कनकप्रसिद्ध रत्नकर्केतनादिक मोती शङ्ख दक्षिणावर्त्त ए बेऊ प्रसिद्ध शिलप्रवाल विद्रुम अथवा शिला स्फाटि

॥ टीका ॥

त्ति ॥ स्वापतेयं द्रव्यं एतस्यच पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽथ यदि तद्भाण्डं अभाण्डं भवति तदा कथं स्वकीयं तद्गवेषयती त्याशंक्याह ॥ ममत्तीत्या दि ॥ परिग्रहादिविषये मनोवाक्कायाना करणकारणे तेन प्रत्याख्याते ममत्वभाव. पुनः हिरण्यादिविषये ममतापरिणाम· पुनरपरिज्ञातो

॥ मूल ॥

से अपरिन्नाए भवइ सेतेणठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ सयंभंडं अणुगवेसइ नोपरायगंभंडं अणुगवेसइ । समणोवासगस्सणं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवासए अत्थमाणस्स केइ जायं चरेज्जा । सेणं भंते ! किं जायं चरइ अजायं चरइ ? गोयमा ! जायं चरइ नो अजायं चरइ । तस्सणं भंते ! तेहिं सीलव्वयगुणवे

॥ अनुवाद ॥

करतमणिमौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालरक्तरत्नादिके सत्सारस्वापतेये ममत्वभाव पुन स्तस्या परिज्ञातो भवति तत्तेनार्थेन गौतम। एवमुच्यते स्व क भाण्ड मनुगवेषयति न परकीय भाण्ड मनुगवेषयति । श्रमणोपासकस्य भदन्त । कृतसामायिकस्य श्रमणोपाश्रये आसीनस्य कश्चि ज्जाया

॥ भाषा ॥

कशिला प्रवालकहिये विद्रुम रक्तरत्न पद्मरागादिक एहमर्व विपुल घणाछे धनादिक जेहने ते तथा सतत्ति, विद्यमान सारत्ति प्रधान स्वापतेय कहि ये द्रव्य ए पदतीनने कमधारयसमास इत्यादिक, परिग्रहादिकनेविषे मन वचन कायाना करण करावणहार ते पच्चख्यानही ते ममत्वभाव वली ते हि रण्यादि विषयने विषे जे ममता परिणाम । पुणसेअपरिणाएभवइ । वली ते अपरिज्ञात प्रत्याख्यानपूर्वे अनुमतिना अप्रत्याख्यानपणा थकी ममत्वभाव ने अनतिक्रम पणाथकी । सेतेणठेणं गोयमा एववुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगौतम । इमकह्यु । सभंडअणुगवेसइ । स्वकीयभाड अनुगवेषे । णोपरायगभंडअणु वेसइ । पारकोभाड अनुगवेषेनही । समणोवासगस्सणभते सामाइयकडस्ससमणोवासए । श्रमणोपासकनो हेभगवन् । सामाइक कीधेछते श्रमण उपा श्रयनेविषे । अत्थमाणस्सकेइजायचरेज्जा । बैठानो कोइएक पुरुष ते श्रावकनो जाया भार्या सेवै । सेणभतेकिजायचरइ अजायचरइ । ते पुरुष हेभगवन् स्यू ते श्रावकनी स्त्रीप्रते सेवे अथवा स्त्री नही तेहप्रते सेवै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जायचरइ णोअजायंचरइ । हेगौतम स्त्रीप्रते सेवै पणि स्त्री नही ते प्रत सेवै नहीं । तस्सणभतेतेहिंसीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाणपोसहोववासेहिं जाया अजाया भवइ । तेहने हेभगवन् तिणे वक्ष्यमाण प्रकारेकरी शीलव्र

॥ टीका ॥

प्रत्याख्याती भवति अनुमते रप्रत्याख्यातत्वात् ममत्वभावस्य चानुमतिरूपत्वा दिति ॥ केइजाय चरेज्जत्ति ॥ कश्चि दुपपति रित्यर्थ । जाया भार्या चरेत सेवेत ॥ सुण्हत्ति ॥ स्नुषा पुत्रभार्या ॥ पेज्जवधणेत्ति ॥ प्रेमैव प्रीतिरेव बन्धन तत्पुन ॥ से ॥ तस्य श्राद्धस्य अव्यवच्छिन्न भवति

॥ मूल ॥

रमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ? हंता भवइ। सेकेणं खाइणं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाय चरइ नोअजाय चरइ ? गोयमा ! तस्सणं एवं भवइ नो मे माया णोमेपिया णो मे भाया णोमे भइनी नोमे भज्जा नोमे पुत्ता नोमे धूया नोमे सुण्हा पेज्जबंधणे पुणसे अवोच्छिन्ने भवइ सेतेण

अनुवाद

चरति (सेवेत) स भदन्त। किं जाया चर त्यजाया चरति ? गौ० । जाया चरति नाऽजाया चरति । तस्य भदन्त। तैइशीलव्रतगुणविरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासै. साजाया ऽजाया भवति ? हन्त भवति । तत्केन पुन रर्थेन भदन्त । एव मुच्यते जाया चरति ना जाया चरति ? गौतम । तस्यैव भवति नोमे माता नोमेपिता णोमेभ्राता नोमेभगिनी नोमेभार्या नोमेपुत्रो नोमेपुत्री नोमेस्नुषा प्रेमबन्धन पुनस्तस्या व्यवच्छि

॥ भाषा ॥

त गणव्रत राग ति कनी विरति प्रत्याख्यान पोषधोपवास तिणेकरीने वोसिराव्याछे तिवारे ते भार्या अभार्याहिवे इतिप्रश्न उतर । हताभवइ । हेगौतम हवे । सेकेणठ्ठेणमंभते एववुच्चइ । ते किसे प्रसिद्ध अर्थे हेभगवन् इमकह्यु ते जारपुरुष ते श्रावकनी । जायचरइ णो अजायचरइ । स्त्री सेवे परिण स्त्रीनही ते न सेवे इतिप्रश्न उतर । गोयमा तस्सणंएवभवइ । हेगौतम ते सामायिक कीधीछे, जिणे श्रावके तिवारे सामायिकमाहि ते श्रावकना यद्यपि एहवा अभिप्रायछे तेहने मनपरिणाम इमहुवे । णोमेमाता णोमेपिता णोमेभगिणी णोमेभज्जा णोमेपुत्ता णोमेधूया णोमेसुण्हा । नही माहरी माता नही माहरो पिता नही माहरी बहिन नही माहरो भार्या नही माहरो पुत्र बेटा नही माहरी बेटो नही माहरो बेटानी भार्या । पेज्जबंधणेपुणसे अवोच्छिन्ने भवइ सेतेणठ्ठेण गोयमा जायचरइ । प्रेमकहिये प्रीति तेहीज बधण वली ते श्रावकना जेहनो बधछेद्यो नही अनुमतिनेज अप्रत्याख्यानथो प्रेमानुबधने अनुमतिरूपपणाथकी तेणे अर्थे हेगौतम यावत् नही अजायाप्रते सेवे । समणोवासगस्सणंभतेपुव्वामेवथूलए पाणाइवाए अप

॥ टीका ॥

तृतीयार्थत्वा त्पष्ठ्या श्रमणोपासकेने त्यर्थं , स अनुमते रप्रत्याख्यातत्वात प्रेमानुबन्धस्यचा नुमतिरूपत्वा दिति ॥ समणोवासयस्सणंति ॥ नप्रत्याख्याता भवति तदा देश स्वल्पमात्रविवक्षयावा पर्दाय ॥ पुव्वामेवत्ति ॥ प्राक्कालमेव सम्यक्त्वप्रतिपत्तिसमनन्तरमेवेत्यर्थं ॥ अपच्चक्खाएत्ति ॥ प्रत्याचक्षाण प्राणाति विरतिपरिणामस्या जातत्वा त्ततश्च ॥ सेणंति ॥ सश्रमणोपासक पश्चा त्प्राणातिपातविरतिकाले ॥ पच्चाइक्खमाणेत्ति ॥ इत्यस्यचस्थाने " पच्च पात मिति गम्यत कि करोतीति प्रश्नो, वाचनान्तरेतु ॥ अपच्चक्खाए ॥ इत्यस्यस्थाने " पच्चक्खाएत्ति „ पच्चाइक्खमाणं ॥ इत्यस्यचस्थाने " पच्च क्खावेमाणेत्ति „ दृश्यते तत्रच प्रत्याख्यात स्वयमेव प्रत्याख्यापयंश्च गुरुणा हेतुकर्त्रा प्राणातिपातप्रत्याख्यान गुरुणा त्मान ग्राह्य न्नित्यर्थं इति ॥ तीतमित्यादि ॥ तीत मतीतकालकृत प्राणातिपात प्रतिक्रामति ततो निन्दाद्वारेण निवर्त्तत इत्यर्थं ॥ पडुपन्नति ॥ प्रत्युत्पन्न वर्त्तमानकालीन

॥ मूल ॥

समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव थूलएपाणाइवाए अपच्चक्खाए भवइ सेणं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ? गोयमा ! तीयं पडिक्कमइ पडुपन्नं संवरेइ अणागयं पच्चक्खाइ। तीयं पडिक्कममाणे किं तिविहं तिविहेण पडिक्कमइ १ । तिविहं दुविहेण पडिक्कमइ २ । ति

॥ अनुवाद ॥

श्रमणोपासकस्य भदन्त। पूर्वमेव स्थूलक प्राणातिपात प्रत्याख्यातो भवति स भ० । न भवति तत्तेनार्थेन गौ० । याव न्नो अजाया चरति ॥ तीत प्रतिक्रामति प्रत्युत्पन्न संवृणोति अनागत प्रत्याख्याति । तीत प्रतिक्राम न्कि त्रिविधत्रिविधे पश्चात्प्रत्याचक्षाण कि करोति ? गौ० । तीत प्रतिक्रामति

॥ भाषा ॥

अनन्तरेज थूल प्राणातिपात पच्च श्रमणोपासकेे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् पूर्वकाल सम्यक्त्व पडिवज्या क्खाणभवइ । पष्ठीविभक्ति तृतीयार्थे छे एतले श्रमणोपासक हेभगवन् पछे प्राणाति पात विरतिकालनेविषे पच्चक्खतोथको प्राणातिपात प्रते जाणीने स्यूं करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तीयंपडिक्कमइ । हेगौतम अतीतकालकृत प्राणा पात विरतिकालनेविषे पच्चक्खतोथको प्राणातिपात प्रते जाणीने स्यूं करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तीयंपडिक्कमइ । हेगौतम अतीतकालकृत प्राणा तिपात प्रते निन्दायेकरी नियर्त्ते । पडुप्पन्नसंवरेइ । वर्त्तमानकालीन प्राणातिपातप्रते संवरे न करे इत्यर्थ । अणागयपच्चक्खाइ । आगामिकालविषय प्रा

॥ टीका ॥

प्राणातिपात सवृणोति नकरोती त्यर्थ , अनागत भविष्यत्कालविषय प्रत्याख्याति , न करिष्यामी त्यादि प्रतिजानीते ॥ तिविहं तिविहेण मित्या

॥ मूल ॥

विहं एगविहेण पडिक्कमइ ३ । दुविहं तिविहेणं पडिक्कमइ ४ । दुविहं दुविहेणं पडिक्कमइ ५ । दुविहं
एगविहेणं पडिक्कमइ ६ । एगविहं तिविहेणं पडिक्कमइ ७ । एगविहं दुविहेणं पडिक्कमइ ८ । एगविहं
एगविहेणं पडिक्कमइ ९ ? गोयमा ! तिविहं तिविहेणं पडिक्कमइ तिविहंवा दुविहेणं पडिक्कमइ तंचेव

अनुवाद

न प्रतिक्रामति १' त्रिविध द्विविधेनप्रतिक्रामति २, त्रिविधमेकविधेन प्रतिक्रामति ३, द्विविधत्रिविधेनप्रतिक्रामति ४' द्विविधद्विविधेन प्र
तिक्रामति ५' द्विविधमेकविधेन प्रतिक्रामति ६' एकविध त्रिविधेन प्रतिक्रामति ७, एकविध द्विविधेन प्रतिक्रामति ८, एकविधमेकविधेन
प्रतिक्रामति ९? गौतम ! त्रिविधत्रिविधेन प्रतिक्रामति १, त्रिविध द्विविधेन प्रतिक्रामति २, तदेव याव देकविध मेकविधेन प्रतिक्रामति ॥ त्रि

॥ भाषा ॥

प्राणातिपातप्रते न करस्यू इसी प्रतिज्ञाकरे । तीयपडिक्कममाणेकि तिविहं तिविहेण पडिक्कमइ । अतीतकालकृत प्राणातिपात पडिक्कमतोथको स्यू त्रिवि
धि त्रिप्रकार करण करावण अनुमतिभेदथकी प्राणातिपात योगप्रते इसोकहो त्रिविध जे मन वचन कायलक्षण करणेंकरी निन्दवेकरी विरमे १ । तिवि
हं दुविहेण पडिक्कमइ २ । त्रिविध करणादिभेदथको मनप्रभृति एक २ वर्ज्जीने बेहुकरी विरमे २ । तिविहं एगविहेण पडिक्कमइ ३ । त्रिविध करणा
दि भेदथकी एकविधे मनप्रमुखने एकतमे करीने विरमे ३ । दुविहं तिविहेण पडिक्कमइ ४ । द्विविधकरण आदिदेइ अनेरा दोय योगरूप त्रिविधमन प्र
मुख करणेंकरी विरमे ४ । दुविहं दुविहेण पडिक्कमइ ५ । द्विविधकरण आदिदेइ अन्यतमरूप द्वययोग मनप्रमुख अनेरे दोयकरणेंकरी विरमे ५ । दुवि
हं एगविहेण पडिक्कमइ ६ । द्विविध करणआदि अन्यतम दोयरूपयोग एकविध मनप्रमुख अनेरे दोयकरणेंकरी विरमे ६ । एगविहं तिविहेणपडिक्कम
इ ७ । एकविध करणआदि अनेरो एकरूपयोग मनप्रमुख तीनकरणेंकरी विरमे ७ । एकविहंदुविहेण पडिक्कमइ ८ । एकविध करणआदि अनेरो एक
रूपयोग दुविधि मनप्रमुख अनेरे दोयकरणेंकरी विरमे ८ । एगविहंएगविहेण पडिक्कमइ ९ । एकविध करणआदि अनेरो एकरूपयोग एक मनप्रमुख अ

॥ टीका ॥

दि ॥ इत्त्व नवविकल्पा स्तत्र गाथा–तिन्नितियातिन्निदुया तिन्नियगक्काण्वतिजोगेसु ॥ तिदुगक्क२ तिदुगक्कचेवकरणाइ ॥ १ ॥ एतेषु च विकल्पे ष्वेकादश विकल्पा लभ्यन्ते आहच–एक्कोतिन्नियतियगा दोनवगातएयतिन्निनवनवय ॥ त्रगनवगस्सणव त्रगागृणापन्नास ॥ १ ॥ स्थापना तत्र ॥ तिविहंतिविहेणति ॥ त्रिविध त्रिप्रकार करणकारणानुमतिभेदात् प्राणातिपातयोग मिति गम्यते' त्रिविधेन मनोवचनकायलक्षणेन करणेन प्रतिक्रामति तत्तानिन्दनेन विरमति ॥ तिविहं दुविहेणति ॥ त्रिविध करणादिभेदात्, द्विविधेन करणेन मन प्रभृतीना मेकतरवर्जितद्वयन ॥ तिविहं एगविहेणति ॥ त्रिविध तस्येव एकविधेन मन.प्रभृतीना एकतमन करणेनेति ॥ दुविहं तिविहेणति ॥ द्विविध कृतादीना मन्यतमद्वयरूप योग त्रिविधेन मन प्रभृतिकरणन एव मन्येपि ॥ तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे इत्यादि ॥ नकरोति स्वय विदधा त्यतीतकाले प्राणातिपात मनसाहा ॥ एतोह येन मया तदासौ नहत इत्येव मनुध्यानात्, तथा न नैवकारयति मनसैव यथा हा ॥ नयुक्तकृत यदसौ परेण नघातित इति चिन्तनात्,

॥ मूल ॥

जाव एगविहं एगविहेणं पडिक्कमइ। तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १। तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा २। अहवा नकरेइ नकारवेइ करत नाणुजाणइ मणसा कायसा ३। अहवा नकरेइ ३ वयसा

अनुवाद

विध त्रिविधेन प्रतिक्रमन् नकरोति नकारयति कुवन्त (कारयन्तध) नानुजानाति मनसा वचसा कायेन १। 'त्रिविधद्विविधेन प्रतिक्रम न्नक

॥ भाषा

नेएकरणेकरी विरमै इतिप्रश्न उत्तर ६। गोयमा तिविहं तिविहेण पडिक्कमइ। हेगौतम त्रिविध त्रिविध विरमै १। तिविहंधा दुविहेण पडिक्कमइ २। अथवा त्रिविध द्विविध विरमै २ जिम पूर्वकह्यु। तचेवजाव एगविहंवा एगविहेण पडिक्कमइ। तिमज यावत् एकविध २ विरमै ८। तिविहंतिविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ करतनाणुजाणइ। त्रिविधत्रिविधेकरी पडिक्कमतो विरमतोथको पोते नकरै प्राणातिपातप्रते मनेकरी हाय हु हण्यो जिणमे तिवारदिन एहहण्योनही इसा ध्यानथकी तथा नकरावे मनेकरी जेमे युक्त नकोधो १४ अनेरापासे हणाव्योनही इसा चिन्तनथकी तथा उत्पन

॥ टीका ॥

तथा कुर्वन्त विद्धान मुपलक्षणत्वा त्कारयत वा ; समनुजानन्तवा ; पर मात्मानवा' प्राणातिपात नानुजानाति नानुमोदयति मनसैव वधानुस्म

॥ मूल ॥

कायसा ४ । तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ ३ मणसा ५ । अहवा नकरेइ ३ वयसा ६ । अहवा नकरेइ ३ कायसा ७ । दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा कायसा ८ । अ

अनुवाद

रोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा २। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा कायेन ३। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा कायेन ४। 'त्रिविध मेकविधेन प्रतिक्राम न्नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा ५। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा ६। अथवा नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति कायेन ७। 'द्विविध त्रिविधेन

॥ भाषा ॥

चणपणाथको करावताने अनुमोदैनही मनेकरीने वचने अनुसरवेकरी तेहना अनुमोदन थको इम न करे न करावे अनुकरताने अनुमोदैनही वचनेकरी तथाविध वचन प्रवर्त्तनथको इम नकरे नकरावे करताने अनुमोदैनही कायायेकरी तथाविध अंगविकार करणथकी इहा यथासख्यन्याय नलेवो। मणसा वयसा कायसा १। न करे मनेकरी न करावे वचनेकरी अनुमोदैनही कायायेकरी २ ए लचण अनुसर्यानही वक्तृविवचाधीनपणाथको। तिविह दुविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ न कारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा वयसा २। त्रिविध द्विविध पडिक्कमतो थको न करे पोते न करावे अनेरापासे करता अनेराप्रते भलो न जाणे मनेकरी वचनेकरी २। अहवानकरेइ न कारवेइ। अथवा न करे न करावे। करतनाणुजाणइ। करताप्रते भला न जाणे। मणसा कायसा ३। मनेकरी कायायेकरी ३। अहवा न करेइ न कारवेइ करतनाणुजाणइ वयसा कायसा ४। अथवा न करे न करावे करताप्रते भलो न जाणे वचनेकरी कयायेकरी ४। तिविह एगविहेण पडिक्कमताणे न करेइ न कारवेइ करतनाणुजाणइ मणसा ५। त्रिविधि एकविध पडिकमतोथको न करे न करावे करताप्रते भलो न जाणे मनेकरी ५। अहवानकरेइ ३ वयसा ६। अथवा न करे न करावे करताप्रते भलो न जाणे वचनेकरो ६। अहवा न करेइ ३ कायसा ७। अथवा न करे न करावे करताप्रते भलो न जाणे कायायेकरी ७। दुविह तिविहेण पडिकम

॥ टीका ॥

रणेन तदनुमोदनात्, एव नकरोति नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा तथाविधवचनप्रवर्त्तनात्, एव नकरोति नकारयति कुर्वत नानुजानाति कायेन तथाविधाङ्गविकारकरणादिति' नचेह यथासङ्ख्यन्यायो नकरोति मनसा नकारयति वचसा नानुजानाति कायेने त्येवलक्षणो नुसरणीयो वक्तृविवक्षाधीनत्वा त्सवन्यायाना वक्ष्यमाणविकल्पायोगा च्चेति, एव त्रिविध त्रिविधेने त्यत्र विकल्पे एकएव विकल्प' स्तदन्येषु पुन र्द्वितीयतृतीयचतुर्थेषु त्रयस्त्रय, पञ्चमषष्ठयो र्नवनव, सप्तमेत्रयो ऽष्टमनवमयो र्नवनवेति, एव सर्वे प्येकोनपञ्चाशत्, एव मिय मतीतकाल माश्रित्य कृता करणादियोजना, अथचैव मेषा ऽतीतकाले मन प्रभृतिना कृत कारित मनुज्ञातवा, वध क्रमेण नकरोति नकारयति नचा नुजानाति तन्निदनेन तदनुमोदननिषेधत स्ततो निवर्त्तत इत्यर्थ, तन्निन्दनस्याभावेहि तदनुमोदनानिवृत्ते कृतादि रसौ क्रियमाणादि रिव स्यादिति, वर्त्तमानकालं त्वाश्रित्य सुगमेव, भविष्यत्कालापेक्षया त्वेव मसौ नकरोति मनसा न हनिष्यामी त्यस्य चिन्तनात्, नकारयति मनसैव तमह घातयिष्यामी त्यस्य चि

॥ मूल ॥

हवा नकरेइ करतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ९ । अहवा नकारवेइ करतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १० । दुविहं दुविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा ११ । अहवा नक

अनुवाद

प्रतिक्राम न्नकरोति नकारयति मनसा वचसा कायेन ८ । अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा कायेन ९ । अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा कायेन १० । 'द्विविध द्विविधेन प्रतिक्राम न्नकरोति नकारयति मनसा वचसा ११ । अथवा नकरोति न

॥ भाषा ॥

माण नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा कायसा ८ । त्रिविध त्रिविध पडिकमतोथको नकरे न करावे मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ८ । अहवानकरइ करत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ९ । अथवा न करे करताप्रतें अनुमोदेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ९ । अहवानकारवेइ करतनाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १० । अथवा न करावे करताप्रते अनुमोदेनही मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी १० । दुविह दुविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा वयसा ११ । द्विविध द्विविध पडिकमतोथको न करे न करावे मनेकरी वचनेकरी ११ । अहवानकरेइ न कारवेइ मणसा

॥ टीका ॥

त्यर्थं, सर्वेषां मीलने सप्तचत्वारिंश दधिक भङ्गकशत भवति, इहच त्रिविध त्रिविधेनेति विकल्प माश्रित्या क्षेपपरिहारौ वृद्धोक्ता वेव-नकरेइ चाइतिय गिहिणोकहहोइदेसविरयस्स भणइविसयस्सवहि पडिसेहोअणुमइएवि ॥ १ ॥ केईभणतिगिहिणो तिविहंतिविहेणनत्थिसवरण ॥ तन जंनिद्दिठ इहेवसुत्तेविसेसेउं ॥ २ ॥ तोकहनिज्जुत्तीए णुमइनिसेहोत्तिसेसविसयमि ॥ सामण्णेवणत्यन्ते तिविहंतिविहेणको दोसो ॥ ३ ॥ इहच ॥

॥ मूल ॥

दुविहं एक्कविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा २० । अहवा नकरेइ नकारवेइ वयसा २१ । अहवा नकरेइ नकारवेइ कायसा २२ । अहवा नकरेइ करंत नाणुजाणइ मणसा २३ । अहवा नकरेइ करत नाणुजाणइ वयसा २४ । अहवा नकरेइ करतं नाणुजाणइ कायसा २५ । अहवा नकारवेइ करंत नाणुजाणइ मणसा २६ । अहवा नकारवेइ करत नाणुजाणइ वयसा २७ । अहवा नकारवेइ करंत ना

अनुवाद

सा कायेन १९ । 'द्विविधमेकविधेन प्रतिक्रम नकरोति नकारयति मनसा २० । अथवा नकरोति नकारयति वचसा २१ । नकरोति नकारयति कायेन २२ । अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा २३ । अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा २४ । अथवा नकरोति कुर्वन्त नानुजानाति कायेन २५ । अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति मनसा २६ । अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति वचसा २७ ।

॥ भाषा ॥

दुविह एकविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ नकारवेइ मणसा २० । द्विविध एकविध पडिकमताथका न करें न करावे मनेकरी २० । अहवा नकरेइ न कारवेइवयसा २१ । अथवा न करै न करावे वचनेकरी २१ । अहवा नकरेइ नकारवेइ कायसा २२ । अथवा न करै न करावे कायायेकरी २२ । अहवा न करेइ करतनाणुजाणइमणसा २३ । अथवा न करै करताप्रतें अनुमोदेनहो मनेकरी २३ । अहवानकरेइकरतनाणुजाणइ वयसा २४ । अथवा न करै करताप्रतें अनुमोदेनही वचनेकरी २४ । अहवानकरेइकरत नाणुजाणइकायसा २५ । अथवा न करै करताप्रते अनुमोदेनहो कायायेंकरी २५ । अहवा नकारवेइकरंतनाणुजाणइ मणसा २६ । अथवा न करावे करताप्रति अनुमोदेनही मनेकरी २६ । अहवानकारवेइकरतनाणुजाणइ वयसा २७ । अथवा

॥ टीका ॥ सविषयमिति ॥ स्वविषये यथानुमति रस्ति ॥ सामण्णेत्ति ॥ सामान्येवा, अविशेषे प्रत्याख्यानेसति ॥ अगत्यन्ति ॥ विशेषे स्वयंकृतमणजलधि

॥ मूल ॥ णुजाणइ कायसा २८ । एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा २९ । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा कायसा ३० । अहवा करत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ३१ । एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे नकरेइ मणसा वयसा ३२ । अहवा नकरेइ मणसा कायसा ३३ । अहवा नकरेइ वयसा कायसा ३४ । अहवा नकारवेइ मणसा वयसा ३५ । अहवा नकारवेइ मणसा कायसा ३६ । अ

अनुवाद अथवा नकारयति कुर्वन्त नानुजानाति कायेन २८ । एकविध त्रिविधेन प्रतिक्रम नकरोति मनसा वचसा कायेन २९ । अथवा नकारयति मनसा वचसा कायेन ३० । अथवा कुर्वन्त नानुजानाति मनसा वचसा कायेन ३१ । एकविध द्विविधेन प्रतिक्रम नकरोति मनसा वचसा ३२ । अथवा नकरोति मनसा कायेन ३३ । अथवा नकरोति वचसा कायेन ३४ । अथवा नकारयति मनसा वचसा ३५ । अथवा नकारयति म

॥ भाषा ॥ न करावे करताप्रते अनुमोदेनहीं वचनेकरी २७ । अहवा नकारवेइकरत नाणुजाणइ कायसा २८ । अथवा न करावे करताप्रते अनुमोदेनहीं कायायेकरी २८ । एगविहंतिविहेणपडिक्कममाणे नकरेइ मणसा वयसा कायसा २९ । एकविध त्रिविध पडिकमतोथको न करे मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी २९ । अहवानकारवेइ मणसा वयसा कायसा ३० । अथवा करावेनहीं मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ३० । अहवाकरतंनाणुजाणइमणसा वयसा कायसा ३१ । अथवा करताप्रते अनुमोदेनहीं मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी ३१ । एगविहंदुविहेणपडिक्कममाणेनकरेइ मणसा वयसा ३२ । एकविध द्विविध पडिकमतोथको न करे मनेकरी वचनेकरी ३२ । अहवा नकरेइमणसा कायसा ३३ । अथवा न करे मनेकरी कायायेकरी ३३ । अहवानकरेइवयसा कायसा ३४ । अथवा न करे वचनेकरी कायायेकरी ३४ । अहवानकारवेइमणसावयसा ३५ । अथवा न करावे मनेकरी वचनेकरी ३५ । अथवा नकारवेइ मणसाकायसा ३६ । अथवा न करावे मनेकरी कायायेकरी ३६ । अहवा नकारवेइवयसाकायसा ३७ । अथवा न करावे वचनेकरी का

॥ टीका ॥ मत्स्यादौ ॥ पुत्राऽसतइनिमि तमेत्तमेगारसिपवगस्स ॥ जपतिकेइगिहिणो दिव्वाभिमुररसतिविरुपि ॥ १ ॥ यथाच त्रिविध त्रिविधेने त्यत्राद्ये पपरिहारौ कृतौ तथा न्यत्रापि कार्यौ यत्रानुमते रनुप्रवेशो स्तीति, अथ कथ मनसा करणादि ? उच्यते यथा वाक्काययोरिति, आह-आह करपुणमणसा करणकारावणमणुमईय ॥ जहवइतणुजोगेहिं करणाइतहवेसमणसा ॥ १ ॥ तयहीणत्तावइतणु करणाईणाच अहवमणकरणा ॥ सावज्ज

॥ मूल ॥ हवा नकारवेइ वयसा कायसा ३७। अहवा करत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३८। अहवा करत नाणु जाणइ मणसा कायसा ३९ अहवा करतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ४०। एगविहं एगविहेण पडिक्कममाणे नकरेइ मणसा ४१। अहवा नकरेइ वयसा ४२। अहवा नकरेइ कायसा ४३। अहवा नकारवेइ मणसा ४४। अहवा नकारवेइ वयसा ४५। अहवा नकारवेइ कायसा ४६। अहवा करंत नाणुजा

अनुवाद नसा कायेन ३६। अथवा नकारयति वचसा कायेन ३७। अथवा कुर्वंत नानुजानाति मनसा वचसा ३८। अथवा कुर्वंत नानुजानाति मनसा कायेन ३९। अथवा कुर्वंत नानुजानाति वचसा कायेन ४०। एकविधमेकविधेनप्रतिक्रामन्नकरोति मनसा ४१। अथवा नकरोति वचसा ४२। अथवा नकरोति कायेन ४३। अथवा नकारयति मनसा ४४। अथवा नकारयति वचसा ४५। अथवा नकारयति कायेन ४६। अथवा कुर्वंत

॥ भाषा ॥ यायेकरी ३७। अहवाकरत नाणुजाणइ मणसावयसा ३८। अथवा करताप्रते अनुमोदेनही मनेकरी वचनेकरी ३८। अहवाकरतनाणुजाणइ मणसा कायसा ३९। अथवा करताप्रते अनुमोदेनही मनेकरी कायायेंकरी ३९। अहवाकरतनाणुजाणइ वयसा कायसा ४०। अथवा करताप्रते अनुमोदेनही वचनेकरी कायायेंकरी ४०। एगविह एगविहेणं पडिक्कमसाणेनकरेइ मणसा ४१। एकविधि एकविधे पडिक्कमतोथको न करे मनेकरी ४१। अहवान करेइवयसा ४२। अथवा न करे वचनेकरो ४२। अहवानकरेइ कायसा ४३। अथवा न करे कायायेंकरी ४३। अहवा नकारवेइमणसा ४४। अथवा न करावे मनेकरी ४४। अहवा नकारवेइ वयसा ४५। अथवा न करावे वचनेकरी ४५। अहवा नकारवेइकायसा ४६। अथवा न करावे कायायेंक

॥ मूल ॥

णइ मणसा ४७। अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा ४८। अहवा करंतं नाणुजाणइ कायसा ४९। पडुप्पन्नं संवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ ? एवं जहा पडिक्कमणेणं एगूणपन्नं भंगा भणिया संवरमाणेणवि एगूणपन्नं

अनुवाद

नानुजानाति मनसा ४७। अथवा कुर्वंत नानुजानाति वचसा ४८। अथवा कुर्वंत नानुजानाति कायेन ४९। प्रत्युत्पन्न संवृण्वन्किन्त्रिविधन्त्रिविधेन संवृणो त्येव यथा प्रतिक्रमणे एकोनपञ्चाशद्भङ्गा भणिता संवृण्वत्यप्येकोनपञ्चाशद्भङ्गाभणितव्या. । अनागत प्रत्याचक्षाण किन्त्रिविधत्रिविधेन प्रत्याख्यात्येव तंचे वैकोनपचाशद्भङ्गाभणितव्या याव दथवा कुर्वंत नानुजानाति कायेन । श्रमणोपासकस्य भदन्त । पूर्वमेवस्थूलको मृषावा

॥ भाषा ॥

रो ४६। अहव करतनाणुजाणइ मणसा ४७। अथवा करताप्रतें अनुमोदनहीं मनेकरी ४७। अहवाकरतनाणुजाणइ वयसा ४८। अथवा करताप्रते अनुमोदनहीं वचनेकरी ४८। अहवाकरतनाणुजाणइकायसा ४९। अथवा करताप्रते अनुमोदनहीं कायाकरी ४९। पडुप्पणसंवरेमाणे। वर्त्तमानकाले प्राणातिपातप्रते संवरतोथको। किंतिविहतिविहेणसंवरेइ। स्यूं त्रिविध त्रिविधेकरी संवरे इत्यादि, प्रश्नपूछ्या। एवंजहापडिक्कमणेणं। इम जिम प्रतिक्रमणसंघाते। एगूणपन्नभंगाभणिया। उगुण पचास ४९ भङ्गा कह्या पाछलि। एवंसंवरेमाणेणविएगूणपन्नभंगाभाणियव्वा। इम संवरतोथकांने पणि पूठिलीपरे उगुण पचासभङ्गा जाणवा कहवा। अणागयपच्चक्खमाणे। आगामिकाले प्राणातिपात न करस्यूं एहवी प्रतिज्ञा करतोथको। किंतिविह तिविहेणं पच्चक्खाइ। स्यूं त्रिविध त्रिविधे पचखे इत्यादि ४९ प्रश्न पूछ्या उत्तर। एवंतंचेवएगूणवन्नभंगा भाणियव्वा। इम तिमहीज भंगा उगुण पचास जाणवा ते पाहिला छेहला कहेछै—जावअहवाकरंतनाणुजाणइकायसा ४९। यावत् अथवा करताप्रते अनुमोदनहीं कायाये ४९। समणोवासगस्सणभंते। श्रमणोपासको श्रावको हेभगवन्। पुव्वामेवथूलएमुसावाएपच्चक्खाएभवइ। पहिलाहीज स्थूलमोटको मृषावाद प्रत्याख्यात हुवे। सेणंभंतेपच्चाइक्खमाणे। ते श्रावक अलीकरे, हेभगवन्। पचखतोथको मृषावाद जाणीने स्यूं करे इतिप्रश्न उत्तर। एवंजहापाणाइवायस्ससीयालंभंगसयंभणियं। इम जिम प्राणातिपातना एकसो सैतालीस भंगा कह्या ४९ अतीतकाले ४९ वर्त्तमानकाले ४९ आगामिकाले एवं १४७। तहामुसावायस्सविभाणिय

जोगगणा पन्नत्तवीयरागेहिं ॥ २ ॥ कारावणपुणमणसा चिंतेइकरेउएससावज्जं ॥ चिंतेइयकएउण सुठुकयअणुमईहोइत्ति ॥ ३ ॥ इहच पञ्च स्वणुव्रते पु प्रत्येक सप्तचत्वारिंश दधिकस्य भङ्गकशतस्य भावा द्भङ्गकाना सप्तशतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवन्तीति, यत् स्थविरा आजीविके श्रमणो पासकगत वस्तु पृष्टा गौतमेनच भगवा स्त ताव दुक्त' मथानन्तरोक्तशीला श्रमणोपासकाएव भवन्ति नपुन राजीविकोपासका, आजीविकाना गुणित्वेना त्रिमता अपीति दर्शयन्नाह ॥ एएखलुइत्यादि ॥ एते खलु एत एव परिदृश्यमाना निर्ग्रन्थसत्का इत्यर्थ ॥ एरिसगत्ति ॥ ईदृशका. प्राणा

भंगा भाणियव्वा । अणागय पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ एव तचेव भंगा एगूणवन्नं भाणि यव्वा । जाव अहवा करंत नाणुजाणइ कायसा । समणोवासगस्सणं भंते ! पुव्वामेव थूलएमुसावाए पच्च क्खाए भवइ सेणं भंते ! पच्चापच्चाइक्खमाणे एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भगसय भाणिय तहा मुसावायस्सवि भाणियव्वं, एव अदिन्नादाणस्सवि , एवं थूलगस्स मेहुणस्सवि , परिग्गहस्स जाव क

द प्रत्याख्याती भवति स भदन्त । पश्चा त्प्रत्याचक्षाण एव यथा प्राणातिपातस्य सप्तचत्वारिंशदधिकशत भङ्गा भणिता स्तथा मृषावादस्यापि भणितव्या । एवमदत्तादानस्यापि । एव स्थूलकस्य मैथुनस्यापि । परिग्रहस्यापि यावत्कुर्वंत नानुजानाति कायेन । एते खल्वीदृशा श्रमणोपा

व्व । तिम मृषावादना पणि १४७ भागा अतीतकाले वर्त्तमानकाले अनागतकाले करी कहवा । एवथूलगस्सअदिन्नादाणस्सवि । इम स्थूल अदत्तादान ना पणि १४७ भागा कहवा । एवथूलगस्सविमेहुणस्स । इम स्थूल मैथुनना पणि १४७ भागा कहवा । थूलगस्सविपरिग्गहस्स । इम स्थूल परिग्रहना पणि १४७ भागा कहवा, छेहलो भागो कहेछे—जावकरतनाणुजाणइ कायसा । यावत् करताप्रतें अनुमोदेनही कायायेंकरी ते आजीविके स्थ विरे भगवत श्री महावीरसाधु समीपे श्रमणोपासकनौ अपेक्षाये पूछो ते श्रीगौतमस्वामीये श्रीमहावीरस्वामी कन्हे पूछ्या तिहालगी जे श्रावक ना पच्चक्खाणना भागा ७३५ कह्या पर आगलि इमकह्यु, हिवे अनतरोक्त शीलसहित श्रमणोपासक होजहुवे पर आजीविक,उपासक नही आजी

॥ टीका ॥

तिपातादि प्रतीतप्रतिक्रमणादिमन्त ॥ नोखलुत्ति ॥ नैव ॥ एरिसगत्ति ॥ उक्तरूपा उक्तार्थाना मपरिज्ञानात् ॥ आजीविउवासगत्ति ॥ गोशालक शिष्यश्रावका, अथै तस्यैवा थस्यविशेषत समर्थनार्थ माजीविकसमयार्थस्य तदुपासकविशेषस्वरूपस्यचा भिधानपूर्वक माजीविकोपासकापेक्षया श्रमणोपासका नुत्कर्षयितु माह ॥ आजीविएत्यादि ॥ आजीविकसमयस्य गोशालकसिद्धान्तस्य ॥ अयमठ्ठत्ति ॥ इद मभिधेय ॥ अक्खीणपरिभोइणो सव्वसत्तत्ति ॥ अक्षीण सक्षीणायुष्क मप्रासुक परिभुञ्जत इत्येव शीला अक्षीणपरिभोगिनो, ऽथवे न्प्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वादक्षीणपरिभोगा अनपगताहार भोगाशक्तय इत्यर्थ ' सर्वसत्त्वा असयतसर्वप्राणिनो यद्येव तत किमित्याह ॥ सेहतेत्यादि ॥ सेत्ति ॥ तत ॥ हतत्ति ॥ हत्वा लगुडादिना ऽन्यवै

॥ मूल ॥

रंतं नाणुजाणइ कायसा, एए खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति, नोखलु एरिसगा आजीवियोवासगा भवंति, आजीविय समयस्सणं अयमठ्ठे पन्नत्ते अक्खीणपडिभोइणो सव्वसत्ता से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता

अनुवाद

सका भवति नोखलवीदृशा आजीविकोपासका भवन्ति । आजीविकसमयस्या यमर्थ प्रज्ञप्त स्तद्यथा—अक्षीणपरिभोगिन सर्वसत्वानि हत्वा छित्वा

॥ भाषा ॥

विकउपासकने गुणपणे आगे कहस्ये ते जाणवा इसो देखाडतो कहेछे—एणखलु एरिसगा समणोवासगाभवति णोखलुएरिसगा आजीवियोवासगाभवति । इत्यादि एह निश्चे जे पूर्वे देखाड्या—तेह निर्ग्रंथना श्रावकहवे 'एरिसगत्ति, एहवा प्राणातिपातादिकनेविषे अतीत प्रत्यासादिवन्तछे नही निश्चे एरिसगत्ति, उक्तरूप कह्या अर्थना अजाणथकी गोशालकशिष्य श्रावक एतावता एहवा गोशालाना श्रावकनही, हिवे एहीज अर्थने विशेषथी समर्थवाने अर्थ आजीविक शास्त्रना अर्थने तथा तेहना उपासकने विशेषस्वरूपने नामपूर्वक आजीविकउपासकनी अपेक्षायें श्रमणोपासकनो उत्कर्षपणो देखाडतो कहेछे—आजीवियसमयस्सण अयमठ्ठ प० त० । आजीविक गोशालाना सिद्धातनो एहअर्थकह्यो ते कहेछे—अक्खीणपरिभोइणोसव्वसत्तासेहता छेत्ता भेता लुपित्ता विलुपित्ता उद्दवइत्ता आहार माहारेइ । जेहनो आउखो क्षयनही हुयो एहवो अप्रासुकप्रते भोगवे एहवो सत्वजीव असयती प्राणियाछे अथवा आहार परिभोगनेविषे अत्यासक्तिछे तेहने स्यू करवो ते कहेछे—तेहने हता लगुडादिके छेदीने खड्गादिके करी भेदीने सूलादिके

॥ टीका ॥

विलुप्य त्वचोविलोपनेना ऽपद्रा पक्ष्मादिलोपनेन लुप्त्वा शूलादिना भिन्नं कृत्वा जिह्वा द्विधाकृत्वा ऽसिपुत्रिकादिना व्यं प्राणिजातं छित्वा विनाश्य हारमाहारयन्ति ॥ तत्थत्ति ॥ तत्र एवं स्थिते असंयतसत्त्ववर्गे हननादिदोषपरायणा इत्यर्थः, आजीविकसमये वा, धिकरणभूते द्वादशे ति विशेषानुष्ठानवत्त्वा त्परिगणिता आनन्दादिश्रमणोपासकवदन्यथा बहव स्ते ॥ तालेत्ति ॥ तालाभिधान एक एव तालप्रलंबादयोपि ॥ अरहंत देवयागत्ति ॥ गोशालकस्यतत्कल्पनया ऽर्हत्त्वात् ॥ पंचफलपडिक्कतत्ति ॥ फलपंचकान्निवृत्ता उदुम्बरादीनिच पञ्च पदानि पञ्चमीबहुवचनान्तानि

॥ मूल ॥

विलुपित्ता उद्दवइत्ता आहार माहारेंति, तत्थ खलु इमे दुवालसआजीवियोवासगा भवंति तंजहा—ताले ताल पलंबे उव्विहे संविहे अवविहे उदए नामुदए नमुदए अणुवालए संखवालए अयपुले कायरिए इच्चेए दुवालस आजीवियोवासगा अरहंतदेवयागा अम्मापिउसुस्सूसगा पंचफलपडिक्कंता तं०—उउंबरेहिं वडेहिं

॥ अनुवाद ॥

जिह्वा लुप्त्वा विलुप्यो पद्रुत्या हार माहारयन्ति । तत्र खल्विमे द्वादशा जीविकोपासका भवति तद्यथा-ताल स्तालप्रलंब उद्विध संविधो ववविध उदको नामुदको नमुदको नुपालक शंखपालको यपुलक कातरिक इत्येते द्वादशा जीविकोपासका अर्हद्देवताका मातृपितृशुश्रूषकाः पंचफलप्रतिक्रांता स्तद्यथा-उदुम्बरैर्वटै र्वदरै सतरै प्लक्षै पलाण्डुलशुनकंदमूलविवर्जका अनिर्लाञ्छितैः (अकुट्टितवृषणै) रनासाभिन्नै

॥ भाषा ॥

करी पक्ष्मादि खोसवैकरी विधर्षकारी विलुवी, उपद्रवी आहारकरै एहवा वचन गोशालाना मतोकहै असयतोजीव विणासी आहारकरवा । तत्थखलु इमे आजीविक समयनेविषे अधिकरणभूत बार:विशेष अनुष्ठानवन्त पणायको परिगण्या आणंदादि श्र मणोपासकनीपरे ते गोशालानेछै अन्यथा तो घणाछै ते बारेना नामकहैछै—ताले तालपलंबे उव्विहे संविहे अवविहे उदए नामुदए णमुदए अणुवालए संखवालए अयबुले कायरिए । ताल इसनामे १ तालप्रलंब २ उविद्द ३ संविह ४ अविविध ५ उदक ६ नामुदक ७ नमुदय ८ अनुपालक ९ शंखपाल १० अयपुल ११ कातरिक १२ । इच्चेदुवालसआजीवियोवासगा । इम एह बारे आजीविक गोशालाना मुख्यश्रावक कह्या । अरिहंतदेवतागा । गोशा

॥ टीका ॥ प्रतिक्रान्तशब्दानुसरणादिति ॥ अनिल्लंछिएहिंति ॥ अवर्धितकैः ॥ अणक्कभिन्नेहिंति ॥ अनस्तितैः ॥ एएवितावएवंइच्छंतित्ति ॥ एतेपि ताव द्विशिष्टयोग्यता विकला इत्यर्थ ॥ एवइच्छंति ॥ अमुनाप्रकारेण वाञ्छन्ति धर्ममितिगम्य ॥ किमगपुणइत्यादि ॥ किं पुन र्य इमे श्रमणोपासका भवति तेनेच्छतीति गम्यम्, इच्छत्येवंति विशिष्टतरदेवगुरुप्रवचनसमाश्रितत्वा त्तेषा ॥ कम्मादाणाइति ॥ कर्माणि ज्ञानावरणादीन्यादीयन्ते यै स्तानि

॥ मूल ॥ बोरेहिं सतरेहिं पिलक्खूहिं पलंडूल्हसुणकदमूलविवज्जगा अणिल्लंछिएहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं वित्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरति एएवि ताव एवं इच्छंति किमंग पुण जे इमे समणोवासगा भवति, तेसिंणोकप्पंति इमाइं पन्नरसकम्मादाणाइं सयंकरेत्तएवा कारवेत्तएवा करंतंवा अन्नं समणुजाणेत्तए

अनुवाद (अस्यूतनासिकैः) गोभि स्त्रसप्राणवर्जितै र्वित्तै र्वृत्तिं कल्पमानाविहरति । एतेपि तावदेवमिच्छन्ति किं मङ्ग । पुन र्य इमे श्रमणोपासका भवति तेषा नो कल्पन्ते इमानि पञ्चदशकर्मादानानि स्वयं कर्तुं कारयितुं वा कुर्वतं मन्यं समनुज्ञातुं तद्यथा—अङ्गारकर्म वनकर्म शकटकर्म भाटी

॥ भाषा ॥ लाने अरिहंतनी कल्पनायें अर्हत्पणाथकी । अम्मापिउसुस्सूसगा । माता पितानी सुश्रूषाना करणहार । पचफलपडिक्का । त० । पञ्चफलना खावाथकी निवर्त्याछे ते कहेछे—उउंबरेहिं बउेहिं बोरेहिं सतरेहिं पिलक्खूहिं पलडु लहसुण कदामूलविवज्जगा । उदम्बरथकी वडनाफलथकी बोरडीना फलथकी अथवा पीपलना फलथकी सतरहनाविशेषना फलथकी पिपोलसूक्ष्मनाफल अथवा पीपलनाफल पीडालू लहसण कन्दमूलजातिना विवर्जक टालणहार श्रावक । अणिल्लंछिएहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं । खासी न करे लपण छेदेनही जेह नाकवीधे नही वृषभप्रमुखना बलदीए करी । तसपाणविवज्जिएहिं वित्तेहिं वित्ति पकप्पेमाणाविहरति एएवितावइच्छंति । तथा त्रस प्राण विवर्जित, वित्तेहि कहिये व्यापारेकरी वृत्ति आजीविकाप्रते कल्पनाकरतायका विचरेछे ॥ गोशालाना श्रावकनी करणी कहिये ए पणि तावत् विशिष्टयोग्यकरी विकल जाणवा इणेप्रकारे वांछे धर्मप्रते । किमगपुणजेइमे समणोवासगाभवति । सू अगइति कोमलामत्रणे, वली जे एह श्रमणोपासकहुवे ते इच्छेनही इतिगम्य अने वांछे पणि विशिष्टतरदेवगुरुप्रवचन समाश्रित पणाथ

कर्म्मादाना न्यथवा, कर्माणिच ता न्यादानानिच कर्महेतव इति विग्रह ॥ इंगालेत्यादि ॥ अङ्गारविषय कर्माङ्गारकर्माङ्गाराणा करणविक्रयस्वरूपमेव मग्निव्यापाररूप य दन्य दपीष्टकापाकादिक कर्म्म तदङ्गारकर्मोच्यत, अङ्गारशब्दस्य तदन्योपलक्षणत्वात् ॥ वणकम्मेत्ति ॥ वनविषय कर्म्म व नकर्म्म वनच्छेदनविक्रयरूप मेव वीजपेषणाद्यपि ॥ साडीकम्मेत्ति ॥ शकटादीना वाहनघटनविक्रयादि ॥ भाडीकम्मेत्ति ॥ भाटया भाटकेन कर्म्मा ऽन्य दीयद्रव्याणा शकटादिभि र्देशान्तरनयन गोगृहादिसमर्प्पणंवा, भाटीकर्म्म ॥ फोडीकम्मेत्ति ॥ स्फोटि र्भूमे स्फोटन हलकुद्दालादिभि सैव कर्म्म स्फोटीकर्म्म ॥ दंतवाणिज्जेत्ति ॥ दन्ताना हस्ति विषाणाना मुपलक्षणत्वा दन्येषा चर्मचामरपूतिकेशादीना वाणिज्य क्रयविक्रयो दन्तवाणिज्य ॥ ल क्खवाणिज्जेत्ति ॥ लाक्षाया आकरे ग्रहणतो विक्रय, एतच्च त्रससंसक्तिनिमित्तस्या न्यस्यापि तिलादे र्द्रव्यस्य य द्वाणिज्य तस्योपलक्षण ॥ केसवाणि

तं०—इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रसवाणि

कर्म स्फोटककर्म दन्तवाणिज्य लाक्षावाणिज्य केशवाणिज्य रसवाणिज्य विषवाणिज्य यन्त्रपीडनकर्म निर्लाञ्छनकर्म दवाग्निदापनिका सरद्रह

की । तेसिनोकप्पइ । तेहने न कल्पे । इमाइं पणरसकम्मादाणाइं सयंकरेत्तएवा कारित्तएवा । एह वक्ष्यमाण पनरे कर्मादानहेतु तहप्रते पोतेकरवा अथ वा करावला । करतंवाअणनसमणुजाणेत्तएवा तं० । करता अनेराप्रते भलो नजाणे एतले अनुमोदेनही ते कहेछे—इंगालकम्मे वणकम्मे साडोकम्मे भा डोकम्मे फोडोकम्मे । अङ्गारविषयकर्म अङ्गारनोकरण विक्रयस्वरूपे इम अग्निव्यापाररूप जे अनेरो पणि ईंट पाकादिककर्म ते अङ्गारकर्म कहिये, व नविषयकर्म ते वनकर्म बनछेदन विक्रयरूप इम बीजपीपणादि पणि २ शकटादिकवाहन घडावे बेचे इत्यादिक, ते साडोकर्म ३ भाडाकरी पारकाद्रव्य ने शकटादिकेकरी देशान्तरनेविषे पहुचावे वलट घरप्रमुख भाडेदेवो ते भाडोकर्म ४ भूमिनो फोडवो हल कुद्दालादिके करी तेहीजकर्मतेफोडोकर्म ५ । दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे केसवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे । दन्त जे हाथी उपलक्षणथकी एहनाचर्म चामर पूति केशादिकनो जे वाणिज्य क्रय विक्रय ते दन्तवाणिज्य, ६ लाखनो बेचवो एह त्रसशक्ति निमित्तनो अनेरानो पणि तिलादिद्रव्यनो वाणिज्य तेह उपलक्षणथी लेवो, ७ केशवन्तजीव गो

॥ टीका ॥

ज्जंति ॥ केशव ज्जीवाना गोमहिषीस्त्रीप्रभृतिकाना विक्रय ॥ रसवाणिज्जेत्ति॥ मद्यादिरसविक्रय ॥ विसवाणिज्जेत्ति ॥ विषस्योपलक्षणत्वा च्छस्त्र वाणिज्यस्या प्यनेना वरोध ॥जतपीलणकम्मेत्ति॥ यन्त्रेण तिलेक्ष्वादीना यत्पीडन तदेव कर्म यन्त्रपीडनकर्म्म॥ निल्लंछणकम्मेत्ति ॥ निर्लाञ्छनमेव वर्द्धित करणमेव कर्म निर्लाञ्छनकर्म्म ॥ दवग्गिदावणयत्ति ॥ दवाग्ने र्दवस्य दापन दाने प्रयोजकत्व मुपलक्षणत्वा द्दानञ्च दवाग्निदापन तदेव प्राकृत त्वात् "दवग्गिदावणया ॥सरदहतलावपरिसोसणयत्ति॥ सरस स्वयसम्भूतजलाशयविशेषस्य ह्रदस्य नद्यादिषु निम्नतरप्रदेशलक्षणस्य तडागस्य कृत्रि मजलाशयविशेषस्य परिशोषण यत्त त्तथा तदेवप्राकृतत्वात् स्वार्थिकताप्रत्यये "सरदहतलावपरिसोसणया ॥असईपोसणयत्ति॥ दास्या स्तद्भाटीग्रहणा य, अनेनच कुक्कुटमार्जारादिक्षुद्रजीवपोषण मप्याक्षिप्त दृश्य मिति ॥ इच्चेतेत्ति ॥ इत्येव प्रकारा एते निर्ग्रन्थसत्का ॥ सुक्कति ॥ सुक्का अभिन्नवृत्ता

॥ मूल ॥

ज्जे विसवाणिज्जे जंतपीलणकम्मे निल्लंछणकम्मे दवग्गिदावणिया सरदहतलावपरिसोसणया असईपोसणया इच्चेए समणोवासगा सुक्का सुक्काभिजाइया भविया भवित्ता कालमासे कालकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु

अनुवाद

तडागपरिशोषणता असतीपोषणता इत्येतेश्रमणोपासका शुक्ला शुक्लाभिजात्या भविका भूत्वा कालमासे काल कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतयो

॥ भाषा ॥

महिषो स्त्रीप्रमुख तेहनोविक्रय ८ मद्यादिरसनो विक्रय ९ विषनो उपलक्षणथकी शस्त्रविणज पणि इहालेवो १० । जंतपीलणकम्म । यंत्रकरी ज तिलइक्षा दिकनो पीडवो ते यंत्रपीडनकर्म ११ निल्लंछणकम्म दवग्गिदावणिया सरदहतलावसोसणया असईपोसणया । वृषभप्रमुखनो वृषण छेदकरे ते निर्लांछनकर्म १२ दवनोवृद्धि अग्निनोदेवो १३ सर ते पोतेनइज्यो जलाशयविशेष द्रह ते नद्यादिकनेविषे नीचोप्रदेश लक्षण तेहने तडाग ते तालाव कृत्रिम जलाशय विशेष तेहने परिशोषण जिहा ते सरद्रह० १४ दासीनो पोषण ते भाडोग्रहवानेकाजे तथा कूकडा मार्जारादिक क्षुद्रजीव पोषणवर्ज्यो १४ इतिहृश्य । इच्चे ते समणोवासगा । इति एव प्रकार ए निर्ग्रन्थसबधी श्रमणोपासक केहवा । सुक्का २ भिजाइया भविया भवित्ता कालमासे कालकिच्चा अण्णयरेसु दे वलोएसु देवत्ता ए उववत्तारो भवति । शुक्ल ऊजलाभावथकी तेज्यिम ज पापणा २ ज्ञातनेविषे गाढा दृढ गमतारो तथा कृतज्ञ सदाचारना प्रारम्भका स

॥ टीका ॥ अमत्सरिणः कृतज्ञाः सदारम्भिणो हितानुबन्धाश्च ॥ सुक्काभिजाइयत्ति ॥ शुक्लाभिजात्या शुक्लप्रधाना अनन्तरं देवतयो पपत्तारो भवन्तीत्युक्त मथ देवानेव भेदत आह ॥ कइविहाण मित्यादि ॥ इत्यष्टमशते पचम ॥ ५ ॥ पञ्चमे श्रमणोपासकाधिकार उक्त षष्ठे प्यसावेवो च्यत इत्येव सम्बद्धस्यास्ये दसूत्र ॥ समणेत्यादि ॥ किंकज्जइत्ति किंफल भवती त्यर्थः ॥ एगतसोत्ति ॥ एकान्तेन ॥ सेत्ति ॥ तस्य श्रमणोपासकस्य ॥

॥ मूल ॥ देवत्ताए उववत्तारो भवंति। कइविहाणं भंते ! देवलोगा प० ? गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा प०, तं०— भवणवासी जाव वेमाणिया देवा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ५ ॥ समणोवासगस्सण भंते ! तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइम साइमेणपडिला

अनुवाद पपत्तारो भवति। कतिविधा भदत! देवलोका प्रज्ञप्ता ? गौतम! चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–भवनवासिनो याव द्वैमानिकादेवा, स्तदेव भदन्त भदत ॥ इत्यष्टमशतस्य पञ्चम उद्देश ॥ ५ ॥ श्रमणोपासकस्य भदत। तथारूप श्रमणंवा माहनंवा प्रासुकैषणीयेना शनपान

॥ भाषा ॥ वंजपर हितना चिन्तक एहवाछे वली अत्यन्त ऊजल प्रधानभविकहुवे ते कालना समयनेविषे कालकरीने अनेरा कोइएक देवलोकनेविषे देवपणे उप जणहार हुवे अनन्तरे देवपणे उपजणहार हुवे एहवू कह्यु, हिवे देवप्रतेज भेदथी कहेछे—कइविहाणभंतेदेवलोगा प०। केतलेभेदे हेभगवन्! देव कह्या इतिप्रश्न उतर। गोयमा चउव्विहा देवलोगाप० त०। हेगौतम। चारभेदे देव तथा देवलोककह्या ते कहेछे—भवणवासी जाव वेमाणिया। भवनप ती १ यावत्शब्द थकी वानव्यन्तर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुमेकह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानही। अट्ठमसयस्सपच मओउद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ५ ॥ पूर्वे श्रमणोपासक अधिकारकह्यो छठे उद्देशे पणि तेहीज कहियेछे। समणोवासगस्सणभंते तहा रूव समणंवामाहणंवा। फासुएसणिज्जेण। श्रमणोपासक यावकनेविषे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् तथारूप उपशमवारी सहित श्रमणप्रते अथवा माहन एहवा कहतापते, फासू अचित्त निर्जीव एषणीय बयालीस दूषणरहित एहवे। असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेमाणस्सकिकज्जइ। अशन अशादि

॥ टीका ॥ नत्थियसोत्ति॥ नास्ति चैतत् यत्॥ से ॥ तस्य पाप-कर्म क्रियते भवति अप्रासुकदान इवेति॥ बहुतरियत्ति॥ पापकर्मापेक्षया॥ अप्पतराएत्ति॥ अल्प तर निर्जरापेक्षया ऽसमर्थो गुणवते पात्राया प्रासुकादिद्व्यदाने चारित्रकायोपष्टम्भो जीवघातो व्यवहारत स्तच्चारित्रबाधाच भवति ततश्च चारित्रकायो पष्टम्भा न्निर्जराजीवघातादेश्च पाप-कर्म तत्रच स्वहेतुसामर्थ्या त्पापापेक्षया बहुतरा निर्जरा निर्जरापेक्षया चाल्पतर पाप भवति' इहच विवेचका म न्यते असंस्तरणादिकारणत एवा प्रासुकादिदाने बहुतरानिर्जरा भवति नाऽकारणे यतउक्त-संथरणमिअसुद्ध दोण्हविगेण्हतदितयाणाहियं॥ आउर

॥ मूल. ॥ भेमाणस्स किंकज्जइ ? गोयमा ! एगंतसो से निज्जराकज्जइ नत्थिय से पावंकम्मे कज्जइ । समणोवासग स्सणं भंते ! तहारूव समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभे माणस्स किं कज्जइ ? गोयमा ! बहुतरिया सेनिज्जरा कज्जइ अप्पतराए सेपावेकम्मे कज्जइ । सम

अनुवाद खादिमस्वादिमेन प्रतिलाभयत किं कृत भवति ? गौतम । एकातेन तस्य निर्जरा कृता भवति नास्ति तस्य पाप कर्म कृत भवति । श्रमणोपा सकस्य भदत । तथारूप श्रमण वा माहन वा ऽप्रासुकेना ऽनेषणीयेना अनपानखादिमस्वादिमेन प्रतिलाभयत किंकृत भवति ? गौतम ।

॥ भाषा ॥ पाणी खादिम स्वादिम एचार आहारेकरी प्रतिलाभताने टेतायकाने स्यू फलहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगतसोसेनिज्जराकज्जइ नत्थियसेपावेक म्मे कज्जइ समणोवासगस्सणभते तहारूवसमणवामाहणवा । हेगौतम । एकाते तेश्रमणोपासकने निर्ज्जराकर्मनो चयहेतु हुवे नही पछ जे तेहने पापकर्म हुवे एतले साधुने फासूदानथी तेहने कर्म निर्जराहुवे अने पापकर्म नहुवे अप्रासुकदाननेविषे जिम तेहनीपरे, हिवे बीजोसूत्र कहेछे—श्रमणोपासकने हेभगवन् । तथारूप श्रमण माहनप्रतें । अफासुएण अणेसणिज्जेणअसण पाण जाव पडिलाभेमाणस्सकिंकज्जइ । अप्रासुक एतले सजीव सचित्त अनेष णीय दूषणसहित एहवे असन पान खादिम स्वादिमे करी प्रतिलाभताने विहरावताथकाने स्यू फलहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बहुतराएसेणिज्जरा अ प्पतराएसेपावेकम्मेकज्जइ । हेगौतम । पापकर्मनी अपेक्षायें घणी निर्जराहुवे, निर्जरानी अपेक्षाये अल्पतर पापकर्महुवे इहा ए भावार्थ गुणवन्तपात्रने

॥ टीका ॥

दिठतेण तचेवहियअसयरणे ति॥१॥ अन्येत्वाहु रकारणेपि गुणवत्पात्राया प्रासुकादिदाने परिणामवशा द्बहुतरानिर्जरा भवत्यल्पतरच पापकर्मेति निर्विशेषणत्वात् सूत्रस्य परिणामस्यच प्रमाणत्वा दाहच—परमरहस्समिसीण समत्तगणिपिडगकिरियसाराण ॥ परिणामियपमाण निच्छयमवलवमाणाण ॥ १ ॥ यच्चोच्यते सथरणमिअसुद्ध मित्यादिना शुद्ध द्वयोरपि दातृग्रहीत्रो रहितायेति तत् ग्राहकस्य व्यवहारत संयमविराधना द्दायकस्यच लुब्धकदृष्टान्तभावितत्वेन वा, ददत शुभाल्पायुष्कतानिमित्तत्वात्, शुभमपिचायु रल्पमहित विवक्षया शुभायुष्कतानिमित्त चाप्रासुकादिदानस्या ल्पायु

॥ मूल ॥

समणोवासगस्सण भंते! तहारूव असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे फासुएणवा अफासुएणवा एस

॥ अनुवाद ॥

श्रमणोपासकस्य भदंत । तथारूप मसयताविरताप्रतिहतप्रत्या बहुतरतया तस्य निर्जरा कृता भवत्यल्पतरतया पाप कर्म कृत भवति । श्रमणोपासकस्य भदत । तथारूप मसयताविरताप्रतिहतप्रत्या

॥ भाषा ॥

काजे अप्रासुकदानादि दोधा चारित्रकायनो उपष्टंभ हुवे, अने जोवघातपणहुवे ते व्यवहारथी चारित्रबाधाहुवे तिवारपछी चारित्रकायोपष्टंभथकी निर्जराहुवे अने जीव घातादिकथी पापकर्महुवे तिहा स्वहेतु सामर्थ्यथकी पापअपेक्षायें बहुतर निर्जराहुवे अने निर्जरानी अपेक्षायें अल्पतर पापहुवे, साधुने अप्रासुकदाने अल्पपाप निर्जरा घणी इनसूत्रे कह्यु इहा कोइएक इमकहे असथरणादि कारणे ईज अप्रासुकदाने घणी निर्जराहुवे पर कारणवि नानहो यदुक्त—सथरणम्मिअसुद्ध दोण्हविगेण्हतदितयाणहिय । आउरदिठ्ठतेण तचेवहियअसथरणे ॥ १ ॥ वली कोइएक इमकहे अकारणें पणि गुणवत पात्रनेकाजे दान अप्रासुकादिक दीधा परिणामवशथकी घणी निर्जराहुवे अतिथोडा पापकर्महुवे निर्विशेषपणाथकी सूत्रने अने परिणामना प्रमाणपणा थकी आहच—परमरहस्समिसीण समत्तगणिपिडगकिरियसाराण । परिणामियपमाण निच्छयमवलवमाणाण ॥१॥ जे कह्यु, सथरम्मिअसुद्ध, इत्यादिके अशुद्ध बेऊ देणहार लेणहारने अहितनेकाजेहुवे ते ग्राहकने व्यवहारे सयमविराधनाथकी अने दायकने लुब्धकदृष्टान्त भावितपणेकरी अथवा अल्पत्व पणेकरी देता अशुभ अल्पआउखाना निमित्तपणाथकी ते वांचे, शुभआउखो पिण अल्प ते अहितजाणवो ते शुभआउखानो निमित्तपणो अप्रासुक दानने अल्पआउखाफल प्रतिपादकसूत्रनेविषे पहिला वर्णव्युहै जे वली इहा तत्व ते केवली गम्यछे, हिवे त्रीजो सूत्रकहेछे—समणोवासगस्सणभंते तहारू

॥ टीका ॥

फताफलप्रतिपादकसूत्रे प्राक्चर्चितं, यत्पुन रिह तत्व त त्केवलिगम्यमिति, तृतीयसूत्रे 'असंजयअविरयेत्यादिनाच, अगुणवा न्पात्रविशेषउक्त 'अ फासुएणवा अफासुएणवे, त्यादिनातु प्रासुकाऽप्रासुकादे र्दानस्य पापकर्मफलता निर्जराया अभावश्चो क्तो संयमोपष्टम्भस्यो भयत्रापि तुल्यत्वात् यश्च प्रासुकादौ जीवघाताभावेना प्रासुकादौच जीवघातसद्भावेन विशेष सोत्र न विवक्षित पापकर्म्मणो निर्ज्जराया अभावस्यैवच विवक्षितत्वादिति, सूत्रत्रयेणापि चानेन मोक्षार्थमेव यद्दान तच्चिन्तित, य त्पुन रनुकम्पादान मौचित्यदानवा, त न्नचिन्तित निर्ज्जराया स्तत्रा नपेक्षणीयत्वा, दनुक म्पौचित्ययोरेव चापेक्षणीयत्वादिति, उक्तच–मोक्खत्थजदाण तपइएसोविहीसमक्खाउं ॥ अणुकपादाणपुण जिणेहिनकयाविपडिसिद्धति ॥ १ ॥ दानाधिकारा देवेदमाह ॥ निग्गथचेत्यादि ॥ इह चशब्द पुनरर्थ स्तस्यचैव घटना–निर्ग्रन्थाय संयतादिविशेषणाय प्रासुकादिदाने गृहपते रे

॥ मूल ॥

णिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असणपाण जाव किं कज्जइ ? गोयमा ! एगतसो सेपावे कम्मे कज्जइ नत्थि

अनुवाद

ख्यातपापकर्माण प्रासुकेनवा ऽप्रासुकेनवा एषणीयेनवा ऽनेषणीयेनवा ऽशनपानखादिमस्वादिमेन प्रतिलाभयत किं कृत भवति ? गौ

॥ भाषा ॥

वअसजयअविरय अपडिहय पच्चक्खायपावकम्म फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असण पाण जावकिंकज्जइ । श्रमणोपासकने हेभ गवन् ! तथा रूप चारित्रपणेकरी रहित असयती अविरती पचख्या नथी पापकर्म जेणे इत्यादि गुणरहितपात्रनो विशेषणकह्यो तेहप्रतें अचित्त अथवा सचित्तजीव एषणीय दूषणरहित अथवा अणेषणीय दूषणसहित एहवे अशन पान खादिम स्वादिम आहारेकरी यावत् प्रतिलाभतोथको देतोथको ते हने स्यू फलहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगतसोसेपावेकम्मेकज्जइ । हेगौतम ! एकाते तेहने पापकर्महुवे । नत्थिसेकाविणिज्जराकज्जइ णिग्गथचणगाहाव इकुलपिंडवायपडियाए । नही तेहने कांई निर्जराहुवे एतलेगुण रहित पात्रने प्रासुक अप्रासुकादिक दान ते पापकर्मकह्यो अने निर्जरानो अभावकह्यो दानना अधिकारथीज कहेछे—इहा च शब्द वलीने अर्थेछे तेहनो एह वे घटनाकीजे निर्ग्रंथ संयतादि विशेषणसहित तेहनेकीजे प्रासुकादिकदान दो धाथका गृहपतिने एकान्तेकरी निर्जराहुवे तेमाटे निर्ग्रन्थ वली च वाक्यालकारे, अथवा पदपूरणार्थे गृहपतिकुल एतले गृहस्थना घरप्रतें पिण्डनो जे

॥ टीका ॥

कान्तेन निर्जरा भवति । निर्ग्रन्थ पुन गृहपतिकुल गृहिगृह ॥ पिंडवायपडियाएत्ति ॥ पिंडस्स पातो भोजनस्य पात्रे गृहस्थानिपतन तत्र प्रतिज्ञा ध्यान बुद्धि पिण्डपातप्रतिज्ञा तया, पिण्डस्य पातो मम पात्रे भवत्विति बुद्धेत्यर्थ ॥ उवनिमतेज्जत्ति ॥ निद्धो । गृहाणेद पिण्डद्वय मित्यभिदध्यादित्यर्थ तत्रच ॥ एगमित्यादि ॥ सेयत्ति ॥ सपुन निर्ग्रन्थ ॥ तति ॥ स्थविरपिण्ड ॥ थेरायसेत्ति ॥ स्थविरा पुन तस्य निर्ग्रन्थस्य ॥ सि

॥ मूल ॥

से काइ निज्जरा कज्जइ। निग्गंथंचणं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविठ केइदोहिं पिंडेहि उवनिमंतेज्जा एगं आउसो अप्पणाभुंजाहिं एगं थेराणं दलयाहिं सेय तंपडिगाहेज्जा थेराय से अणुगवेसियव्वा सिया जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासेज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया नोचेवणं अणुगवेसमाणे थेरे पासे

अनुवाद

तम । एकातेन तस्य पापकर्म कृत भवति नास्ति तस्य काचिन्निर्जरा कृता भवति ॥ निर्ग्रंथच गृहपतिकुल पिंडपातप्रतिज्ञया ऽनुप्रविष्ट कश्चि द्वाभ्या पिंडाभ्या मुपनिमन्त्रये देक मायुष्मन् । आत्मना (स्वयमित्यर्थ.) भुंक्ष्व एक स्थविराय देहि सच त गृह्णीयात् स्थविरश्च तस्या नुगवेषयितव्य स्या द्यत्रैवा नुगवेषय न्स्थविर पश्येत् तत्रैवा नुप्रदातव्य स्या नोचैवा ऽनुगवेषय न्स्थविर पश्यं तनात्मना भुंजीया न्ना

॥ भाषा ॥

पात भोजन पात्रनविषे गृहस्थयकी पडवो तिहा प्रतिज्ञा बुद्धि ते पिण्डपातप्रतिज्ञा तिणेकरी पिण्डनो पाडवो माहरापात्रनेविषे थाओ इसोबुद्धि करी इत्यर्थ। अणुपविठ्ठ कोइदोहिपिडेहि उवनिमतेज्जा । पैठो कोईएक गृहस्थ ते साधु प्रतें दोयपिण्डेकरी, अहोसाधू । ए दोयपिण्ड ग्रहिये सो ते दोयपि डमाहे । एगआउसो अप्पणाभुंजाहि एगथेराणदलयाहि । एकपिण्ड हे आऊखावन्त । आपपोते भोगवजे तथा एकपिण्ड अनेरास्थविर साधुने देज्यो। सेयतपडिगाहेज्जा थेरायसे अणुगवेसियव्वासिया । सेयत्ति, तिवारे ते वली निर्ग्रन्थसाधु ते स्थविरपिण्ड प्रतें ग्रहीने स्थविर वली ते साधुने अनुगवेषवा एतले स्थविरगवेषवा हुवे। जत्थवाअणुगवेसमाणे थेरेपासेज्जा तत्थेवअणुप्पदातव्वेसिया । जे स्थानकनेविषे अनुगवेषणा करतेथके खपकरतेथके स्थविरप्रते देखे ते स्थानकनेविषेज ते पिण्ड ते स्थविरने अनुप्रदान करवो हुवे आपवू हुवे इत्यर्थ। णोचेवणं अणुगवेसमाणे थेरापासेज्जा । कदाचित्

॥ टीका ॥

यत्ति ॥ स्यु र्भवन्तीत्यर्थ ॥ दावएत्ति ॥ दद्या द्दापयेद्वा ; अदत्तादानप्रसङ्गाद् गृहपतिनापि पिण्डो ऽसौ विवक्षितस्थविरेभ्यएव दत्तो नान्यस्मै इ ति ॥ एगंतेत्ति ॥ जनालोकवर्जिते ॥ अणावाएत्ति ॥ जनसम्पातवर्जित ॥ अचितत्ति ॥ अचेतने नाचेतनमात्रएवे त्यत आह ॥ वहुफासुएत्ति ॥ बहुधा प्रासुक वहुप्रासुक तत्र नन चाचिरकालकृते विस्तीर्णे दूरावगाढे त्रसप्राणबीजरहितेचेति सगृहीत द्रष्टव्यमिति ॥ सेयतेत्ति ॥ सच निर्ग्र

॥ मूल ॥

ज्जा त नोअप्पणाभुजेज्जा नोअन्नेसिंदावए एगंतेअणावाए अचित्ते वहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहित्ता परि मज्जित्ता परिठवियव्वेसिया। निग्गथंचणं गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविठं केइतिहिं पिंडेहिं उ वनिमंतेज्जा एगं आउसो अप्पणाभुंजाहिं दोथेराणं दलयाहि सेयत पडिगाहेज्जा थेराय अणुगवेसमाणे सेस तंचेव जाव परिठवियव्वेसिया। एव जाव दसहि पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा णवर, एगं आउसो अप्पणा

अनुवाद

न्यस्म दद्या (द्दापयेद्वा) एकाते ऽनापाते ऽचित्ते वहुप्रासुके स्थण्डिले प्रतिलिख्य (समार्ज्य) प्रतिस्थापयितव्य स्यात् ॥ निर्ग्रन्थञ्च गृहपति कुल पिण्डपातप्रतिज्ञया ऽनुप्रविष्ट कश्चि त्त्रिभि पिण्डै रुपनिमन्त्रयं देक मायुष्मन्। आत्मना भुङ्क्ष्व द्वौ स्थविराय दद्या (दापये) सच तौ प्रतिगृह्णीयात् स्थविरौचा नुगवेषयितव्यौ शेष तदेव याव त्प्रतिस्थापयितव्य स्यात् ॥ एव यावद्दशभि· पिण्डै रुपनिमन्त्रये त्रवरमेक मायुष्म

॥ भाषा ॥

निश्चै ण वाक्यालकारे, अनुगवेषणा खपकरतायका स्थविरप्रते देखैनहीं। तनोअप्पणाभुञ्जेज्जा णो अणेसिंदावए। ते पिण्डप्रते ना जे पिण्ड आप भो गवे नहा एतले एक आपणोपिण्ड आपभोगवे नही ते पिण्ड अनेरासाधुगते पणि न दे अथवा न दिरावे अदत्तादान प्रस गथकी एतले गृहस्थे कह्यो जे तेहभणी पिण्डदेवो पणि अनेराने न देवो तो पिण्ड स्यु करे ? ते कहेछे—एगतेअ णावाएअचित्तेवहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहित्ता पमज्जित्ता परिठवियव्वे सिया। जिहा कोई मनुष्यदेखेनही जनसपात वर्जित तथा अचेतन घणो प्रासुक तिहा दुणेकरी घणाकालनो कीधो विस्तीर्ण दूरावगाढ त्रसप्राण बी जरहित एप्रत्ये सग्रह्या जाणवा एहवो ज स्थण्डिल बाह्यभूमि तेहनेविषै पडिलेहीने प्रमार्जीने ते पिण्ड परिठवव् एवे एतावता ते स्थानके जई ते पि

भुंजाहिं नव थेराणं दलयाहिं सेसंतंचेव जाव परिठवियव्वेसिया। निग्गंथंचणं गाहावइ कुलं जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहि उवनिमंतेज्जा एगं आउसो अप्पणा पडिभुंजाहि एगं थेराण दलयाहि सेयसंपडिगाहेज्जा त

त्मात्मना भुङ्क्ष्व नव स्थविरेभ्यो दद्याः शेष तदेव याव त्प्रतिस्थापयितव्य स्यात्॥ निर्ग्रन्थञ्च गृहपतिकुल याव दनुप्रविष्ट कश्चि द्वाभ्या प्रतिग्रहाभ्या मुपनिमन्त्रयेदेक मायुष्मन्! आत्मना प्रतिभुङ्क्ष्व क स्थविराय दद्या सच त प्रतिगृह्णीया त्तथैव याव त्त्वात्मना त प्रतिभुञ्जीया त्वात्मसेद

गड परिठवे वली कहेछे—णिग्गंथचणगाहावइकुलंपिडवायपडियाए। निर्ग्रन्थ चपुन ण वाक्यालंकारे, गृहस्थना घरनेविषे पिण्डपाननेविषे पैठा एहवो बूझिये। अणुपविट्ठकेइतिहिंपिंडेहिं उवनिमंतेज्जा एगंआउसो। पैठो तिवारे किणहीएक गृहस्थे तीने पिण्डेंकरी उपनिमंत्रणकरे अहोसाधू। ए तीनपिण्ड ग्रहिये इसी निमंत्रणाकरे ए तीनपिण्डमाहे एकपिण्ड अहो आउखावन्त। साधू तुम्हे। अप्पणाभुंजाहि दोथेराणदलयाहि। आप भोगवज्यो दोय स्थविरने देज्यो इवे। सेयतपडिगाहेज्जा थेरायअणुगवेसे सेसतचेव जावपरिठवियव्वेसिया। वली ते निर्ग्रन्थसाधु ते पिण्डग्रहीने, ते स्थविरनो अनुगवेषणाकरे खपकरे शेषसर्व तिमज पूठिलीपरे कहवो यावत् पिण्ड परठववोहुवे एतलालगे कहवो। एवजावदसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा। इम यावत गृहस्थसाधू प्रते दसेंपिण्डेकरी उपनिमंत्रणाकरे, अहोसाधू। एह दशपिण्ड अहो इसोकहे। णवरंएगआउसो अप्पणाभुंजाहि नवथेराहि दलयाहि सेसतचेव परिठवियव्वेसिया। एतलोविशेष ते दशपिण्डमाहि एकपिण्ड हे आउखावन्त। तुम्हे आप भोगवज्यो, नवपिण्ड नव स्थविराने देज्यो शेषथाकतो सर्व तिमज पूठिलीपरे कहवो जांलगे ते पिण्ड परठवे तांलगे कहवू ते परठववू हुवे वली। णिग्गंथचणगाहावइ जाव केइदोहि पडिग्गहेहि जावउवनिमंतेज्जा एगआउसो अप्पणापडिभुंजाहि। निर्ग्रन्थसाधू गृहपतिना घरनेविषे पिण्डपात बुद्धिपैठो तिवारे किणहीएक गृहस्थे दोयपडघेंकरी अहो साधू। ए दोय पडघाप्रते ग्रहो इसी निमंत्रणाकरे तेमांहि एक पडघो आउखावन्त तुम्हे आप भोगवज्यो अने। एगथेराणदलयाहि। एक पडघो बीजा स्थविरने देज्यो तिवारे। सेयतपडिगाहेज्जा। ते साधू ते पडघाप्रते ग्रहीने इत्यादि। तहेव जाव तंनो अप्पणापरिभुंजेज्जा नोअण्णेसिंदावए सेसतचेव। तिमही

॥ टीका ॥

न्य स्तौ स्थविरपिण्डौ ॥ पडिगाहेज्जत्ति ॥ प्रतिगृह्णीयादिति, निर्ग्रन्थप्रस्तावादिदमाह ॥ निग्गंथचणमित्यादि ॥ इह चशब्दः पुनरर्थः स्तस्य घट नाचैव—निर्ग्रन्थ कश्चित्पिण्डपातप्रतिज्ञया प्रविष्ट पिण्डादिनो पनिमन्तयेत् तेनच निर्ग्रन्थेन पुन ॥ अकिच्चठाणेत्ति ॥ कृतस्य करणस्य स्थान मा

॥ मूल ॥

हेव जाव त नोअप्पणापरिभुंजेज्जा नो अन्नेसिं दावए सेसंतंचेव जाव परिठवियव्वेसिया, एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया एवं गोच्छगरयहरणचोलपट्टगकंबललट्ठीसंथारगवत्तव्वया भाणियव्वा जाव दसहि संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव परिठवियव्वे सिया। निग्गंथेणय गाहावइकुलंपिंड

अनुवाद

द्यात् शेष तदेव याव त्प्रतिस्थापयितव्य स्या, देव याव द्दशभि प्रतिग्रहै रेव यथा पतिग्रहवक्तव्यता भणिता एव गुच्छकरजोहरणचोलपट्टक कम्बलयष्टिसंस्तारकवक्तव्यता भणितव्या, याव द्दशभि संस्तारकै रुपनिमन्त्रये द्याव त्प्रतिस्थापयितव्य स्यात् ॥ निर्ग्रन्थेनच गृहपतिकुल पि

॥ भाषा ॥

ज यावत् ते बीजो पडघो आत्मायें परिभोगवेनही बीजाने पणि न दीये अदत्तादान प्रसङ्गथी गृहस्थे कह्यो जे साधू तेह भणीदेज्यो पणिअनेराने न दे वो थाकतो सर्व तिमज कहवो तालगे । जावपरिठ्ठवियव्वेसिया । जालगे परिठववो हुवे । एवजावद्दसहि पडिग्गहेहिं । इम यावत् दश पडघेकरी उपनि मन्त्रणा करे एक तुम्हे भोगवज्यो नव अनेरा साधूने देज्यो इत्यादि यावत् पडघोहवे तालगे कहवो । एवजहापडिग्गहवत्तव्वयाभणिया । इम जिम पडि घाना आलावानो वक्तव्यता कही अधिकार विशेषें । एवगोच्छगरयहरणचोलपट्टगकंवललट्ठीसंथारगवत्तव्वयाभाणियव्वा । इम गुच्छो रजोहरण ओघो चलोटो पहिरवानो वस्त्र कांवलो लाकडी डाण्डो संथारानो वस्त्र इत्यादिकनो पणि वक्तव्यता कहवी । जावदसहि संथारएहि उवनिमंतेज्जा । यावत् कोई गृहस्थ निर्ग्रन्थप्रते दश संथारकेंकरी उपनिमन्त्रणा करे अहो साधू । ए दश संथारा लेजाव एक तुम्हे भोगवज्यो नव अनेरासाधूने देज्यो इत्यादि । जावपरिठ्ठवियव्वेसिया । यावत् परिठववो हुवे एतलालगे कहवो निर्ग्रन्थना प्रस्तावथी कहेछे—इहा चपुन एहनो घटना करेछे—निग्गंथेणयगाहावइक ल पिंडवाय पडियाएपविट्ठेण । निर्ग्रन्थप्रतें कोईएक गृहस्थे पिण्डपात बुद्धि पैठाप्रते । अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेवए तस्साण एवभवइ । पिंडादिकरी उप

॥ टीका ॥

अथ कृत्यस्थानं तन्निषेधो ऽकृत्यस्थानं मूलगुणादिप्रतिसेवारूपो ऽकार्यविशेष ॥ तस्सणंति ॥ तस्य निर्ग्रन्थस्य सञ्जातानुतापस्यै व भवति एव प्रकार मनो भवति ॥ एयस्सठाणस्सत्ति ॥ विभक्तिपरिणामा देतत्स्थान मनन्तरासेवित मालोचयामि स्थापनाचार्यनिवेदनेन' प्रतिक्रमामि मिथ्यादुष्कृतदानेन, निन्दामि स्वसमक्ष स्वस्या कृत्यस्थानस्यवा, कुत्सनेन, गर्हे गुरुसमक्ष कुत्सनेन ॥ विउट्टामित्ति ॥ वित्रोटयामि तदनुबन्ध च्छि नद्मि' विशोधयामि प्रायश्चित्ताभ्युपगमन, अकरणतया ऽकरणेना भ्युत्तिष्ठा म्यभ्युत्थितो भवामीति ॥ अहारिहंति ॥ यथाई यथोचित मेतच्च गीतार्थ

॥ मूल ॥

वायपडियाए पविट्ठेण अन्नयरे अकिच्चठाणे पडिसेविए तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि विउट्टामि विसोहामि अकरणयाए अब्भुट्ठेमि अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि तओपच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि

अनुवाद

पिण्डपातप्रतिज्ञया प्रविष्टेना न्यतर मकृत्यस्थान सेवित तस्यैव भवति इहैव ताव दह मेतस्य स्थानस्या लोचयामि प्रतिक्रमामि निन्दामि ग र्हे वित्रोटयामि विशोधयामि अकरणतया भ्युत्तिष्ठामि यथार्ह प्रायश्चित्त तप कर्म प्रतिपद्य, तत पश्चा त्स्थविराणा मन्तिक मालोच यिष्यामि

॥ भाषा ॥

निम्रन्थगाथापति तिणे निर्ग्रन्थगाथापति घरनेविषे पिण्डपात प्रतिज्ञायें प्रविष्ट तिणे अनेरो एक वली अकृत्य तिये कारण तेहनोस्थान आश्रय ते कृत्यस्थान कहिये, नही जे कृत्यस्थान ते अकृत्यस्थान एतले मूलगुणादि प्रतिषेधरूप अकार्यविशेष ते प्रते भोगवे तिवारे निर्ग्रन्थने एहवेप्रकारे मनहुवे । इहैवताव अहं एयस्सठाणस्स आलोएमिपडिक्कमामिनिंदामिगरिहामिविउट्टामिविसोहामि अकरणयाएअब्भुट्ठेमि । इहांज पहिला ए एह स्थानक अनन्तरे सेव्यू ते अकार्यरूप आलोयू मिथ्या दुष्कृत देवेकरी पडिक्कमुछुं, निंदू पोताना अकृत्यस्थानने आत्मसाखे गुरुसाखे बार २ निंदू तेहना अनुबन्धछेदू प्राय श्चित लेइ पापपङ्क अविकाल अकरवे करीने उद्यमकरी उठो । अहारिहंपायच्छित्ततवोकम्मंपडिवज्जामि । यथायोग्य प्रायश्चित्त तपकर्मप्रते पडिवजो ए ह गीतार्थपणानेज विषैहुवे अन्यथा न हुवे । तओपच्छाथेराणंअंतियंआलोएस्सामि । तिवारपछी स्थविरनेसमीपे आलोयण लेइस । जावतवोकम्मंपडिव

॥ टीका ॥

तायामेव भवति नान्यथा ॥ अनियति ॥ सर्वाप गतश्तिज्ञेय ॥ थेरायप्रमुहामियत्ति ॥ स्थविरा पुन रस्मा निर्ग्रंथ स्यु वातादिदोषा सतत तस्मा लोचनादिपरिणामे सत्यपि नालोचनादि सम्पद्यत इत्यत प्रश्नयति ॥ सणमित्यादि ॥ आराहएत्ति ॥ मोक्षमार्गस्या राधक शुद्धत्वघं आवश्य शुद्धत्वा भवति चालोचनापरिणतौ सत्या कथञ्चि तदप्राप्तावप्याराधकत्व यतउक्त मरणमाश्रित्य-आलोयणापरिणउ सम्मसपट्ठिउगुरु सगासे ॥ जऽमरइअतरावि तहाविसुद्धोत्तिनावाउत्ति ॥ १ ॥ स्थविरालनंदन चेद ह्वे असुरसूत्रे ह्वे कालगतसूत्रे इत्येव चत्वारि असम्प्राप्तसूत्राणि

॥ सूत्र ॥

सेय सपट्ठिए असपत्ते थेराय पुव्वामेव अमुहा सिया सेणं तत्रं ! किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए । सेय संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणाय पुव्वामेव अमुहेसिया सेणं भंत ! किं आराहए वि

अनुवाद

याय तप कम प्रतिपद्ये । सच सम्प्रस्थितो सम्प्राप्त स्थविराश्च पूर्वमेवा मुका स्यु स्स भदन्त ! कि माराधकोविराधक ? गौतम ! आराधको नाविराधक । सच सम्प्रस्थितो ऽसम्प्राप्त आत्मना पूर्वमेवा मुक स्या त्स भदन्त ! किमाराधको विराधक ? गौतम ! आराधको नो

॥ भाषा ॥

निग्रर्थानि । यावत् तपकर्मेति पडिवज्जीस आचरस्यू । सेयसपट्ठिए असंपत्तेथेरायअमुहासिया । ते साधू आलोइवा भणी चाल्योपणि स्थविरने न पाम्यो स्थविर अपन मुखवचन रहितथए वातादिकना दोषथकी तिवारे तेहने आलोचनादि परिणाम छते पणि आलोचनादिक न सपजे एतलामाटे प्रश्न करेछे । सणभंतेआराहए विराहए । ते साधू हेभगवन् । आराधक अथवा विराधक ? इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए णोविराहए । हेगौतम । ते आराधक मोक्षमार्गनो आराधक इत्येव भावना शुद्धपणाथकी आलोचना परिणामछता कथञ्चित्प्रकारे आलोयण अणपामवाथकी पणि आराधकपणो छे जिनकह्युंछे मरण आश्रीने - आलोयणापरिणओ सम्मसपट्ठिओगुरुसगासे । जऽमरणअंतरेविय तहाविसुद्धोत्तिनावाओ ॥ १ ॥ पणि विराधक नथी वलि पूर्वपणाथकी तथा । सयसपट्ठिए असपत्ते अप्पणायपुव्वामेवअमुहेसिया । ते साधु आलोइवा भणी स्थविरसमीपे जाय आलोव स्यूं इम चिन्तवी मार्गमाहे स्थविरने न पाम्या पोतेज पहिलाइज वातादिदोषथकी मुखवचन रहितथयो एतले बोलवा असमर्थहुया । सेणंभंतेआराहए विराहए ।

॥ टीका ॥ सम्म प्रसूत्रा एयप्येवं चत्वार्यंव, एव मेता न्यष्टौ पिण्डपातार्थं गृहपतिकुले प्रविष्टस्य, एव विचारभूम्यादा वप्येव, ग्रामगमने एा वेव, मेतानि चतु

॥ मूलं ॥ राहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए। सेयसंपठ्ठिए असंपत्ते थेराय कालकरेज्जा सेण भंते ! किं आरा हए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए। सेयसंपठ्ठिए असंपत्तेय अप्पणाय पुव्वामेव कालंकरेज्जा सेणंभंते ! कि आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए। सेय संपठिए संपत्ते थेराय अमुहा

॥ अनुवाद ॥ विराधक । सच सम्प्रस्थितो ऽसम्प्राप्त स्थविराश्च काल कुर्यु स भदन्त ! किमाराधको विराधक ? गौतम । आराधको नोविराधक । सच सम्प्रस्थितो ऽसम्प्राप्त आत्मनाच पूर्वमेव काल कुर्या त्स भदन्त ! किमाराधको विराधक ? गौतम ! आराधको नोविराधक । सच सम्प्रस्थित सम्प्राप्त स्थविराश्च मुखा स्यु स्स भदन्त ! किमाराधको विराधक ? गौतम ! आराधको नो विराधक

॥ भाषा ॥ तेह हेभगवन् । स्यू आराधक अथवा विराधक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए णोविराहए । हेगोतम । आराधक कहिये पणि विराधकनही भावना पूर्वपणाथकी । सेयसपठ्ठिए असपत्तेथेरायकालकरेज्जा । वली ते साधू आलोइया भणी स्थविरसमीपें जाय आलोयण लेस्यू इम चिन्तवी मार्गमां स्थविरने न पाम्यो एतले ते आलोयणदायक स्थविर कालकरे । सेणभंतेकिंआराहएविराहए । तो ते साधू हेभगवन् स्यू आराधक अथवा विराधक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए णोविराहए । हेगोतम वली ते साधू आराधकहुवे पणि विराधक नही कहिये भावना पूठिलीपरे कहवी । सेयसपठ्ठिए असपत्तेअप्पणायपुव्वामेवकालकरेज्जा । वली ते साधू आलोयण लेस्यू इम चिन्तवी साधू सामुहो चाल्यो स्थविरने न पाम्यो एतले आपणपें पहिलाज कालकरी मरण धर्म पामें । सेणभंतेकिं आराहए विराहए । ते साधू हेभगवन् स्यू आराधक कहिये अथवा विराधक कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए णोविराहए । हेगोतम आराधककहिये पणि विराधक न कहिये भावना पूठिलीपरे ए चार आलावा असप्राप्तथकी हुवे, ४ आलावा इमहीज स्थविरसमीपें साधु पाम्याथकी कहेछे—सेय सपठ्ठिए सपत्ते थेराय अमुहासिया । वली ते साधू चाल्यो स्थविरप्रतें पाम्यो एतले स्थविर

॥ मूल ॥

सिया सेणं भंते ! किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए नोविराहए । सेय संपट्ठिए संपत्ते अप्पणाय एवं संपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा, जहेव असंपत्तेण निग्गंथेणय बहिया वियारभूमिंवा विहारभूमिंवा निक्खंतेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए तस्सणं एवं भवइ इहेव ताव अहं एवं एत्थवि तेचेव अठ आलावगा भाणियव्वा जाव नोविराहए। निग्गंथेणय गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे

अनुवाद

आत्मनाच पूर्व मेवैव सम्प्राप्तेनापि चत्वार आलापका भणितव्या । यथैवा सम्प्राप्तेन निर्ग्रन्थेनच बहिस्ता द्विचारभूमिवा विहारभूमिवा निष्क्रान्तेना न्यतर मकृत्यस्थान प्रतिसेवित तस्येव भवती हैव ताव दह मेव मत्रापि ते चैवा ष्टा वालापका भणितव्या याव न्नोविराधक । निर्ग्रन्थेन

॥ भाषा ॥

मुखे वचन बोल न सकें हिवे । सेणभंते किंआराहए विराहए । ते साधू स्यूं आराधक कहिये अथवा विराधक कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आराहए णो विराहए । हे गौतम आराधक कहिये पणि विराधकनहीं भावना पूठिलीपरे कहवी अथवा । सेयसपट्ठिए सपत्ते अप्पणाय एव सपत्तेवि चत्तारिआलावगा भाणियव्वा । वली ते साधू चाल्यों स्थविरप्रते पाम्या एतले पोतेज मुखे बोल न सकें इत्यादि, इम सघाते स्थविरमुखवचन रहितहुवो १ आपमुखवचन रहितहुयो २ स्थविर कालकरै ३ अथवा पोतेज कालकरै ४ इम चार आलावाकहवा, इम बेऊमिली आठ आलावा हुवे । जहेवअसपत्तेण णिग्गथेणयबहिया वियारभूमिवा विहारभूमिवा निक्खतेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए । जिमहीज असप्राप्तसघाते चार आलावा कह्या तिम निर्ग्रंथे बाहिर वियारभूमिकहिये स्थण्डिलभूमि विहारकहिये थामजाइवानेभूमि ते प्रते नीकल्यायकाने अनेरो कोइएक अकृत्यस्थानक मूलगुण सङ्कारो अकार्यविशेष सेवै भोगवै । तस्सणएवभवइ इहेवतावअह एव एत्थवितेचेव आलावगा भाणियव्वा । तेहने इमहुवे इहां पणि तिमहीज वि चार भूम्यादिकने असप्राप्त भेदेकरी आठआलावाकहवा इम विहारभूमिनेविषे पणि असप्राप्तभेदेकरी आठआलावा इम सर्व २४ सूत्रकहवा । जाव णोविराहए । यावत् विराधक नहीं इहांलगे कहवो । णिग्गथेणय गामाणुगाम दूइज्जमाणेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणेपडिसेविए तस्सण एवभवइ । निर्ग्रंथ

पडिसेविए तस्सणं एवं नवइ इहेव ताव एत्थवि तेचेव अठ आलावगा भाणियव्वा जाव नोविराहए । निग्गंथीएय गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविठाए अन्नयरे अकिच्चठाणे पडिसेविए तीसेणं एवं नवइ इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि , तत्तोपच्छा पवित्तणीए अंतिए आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि, साय संपठिया असंपत्ता पवित्तणीय अमुहा सिया साणं

च ग्रामानुग्राम विहरता न्यतर मकृत्यस्थान प्रतिसेवित तस्यैव नवती हैव ताव दत्रा पितेचैवाष्टा वालपका भणितव्या याव नोविराधक ॥ निर्ग्रन्थ्याच गृहपतिकुल पिण्डपातप्रतिज्ञयानुप्रविष्टया याव दन्यतर मकृत्यस्थान प्रतिसेवित तस्या एव नवती हैव ताव दह मेतस्य स्थानस्या लोचयामि याव त्तप कर्म प्रतिपद्ये, तत पश्चा त्प्रवर्तिन्या अन्तिक मालोचयिष्यामि याव त्प्रतिपद्ये, साच सम्प्रस्थिता ऽसम्प्राप्ता प्रवर्तिन्य आमुकास्स्यु. सा ण

एकग्रामथकी बीजेग्रामजायवा ते ग्राम वाचमे नान्हा साटा ते ग्रामकहिये तिहा कोइएक अकृत्यस्थान मूलगुण भङ्गकारी अकार्यविशेष सेवे तेहने इमहुवे । इहेवजावएत्थविचेवअठ्ठआलावगाभाणियव्वा । इहा पणि तेहीज निर्ये असप्राप्त सप्राप्त भेदेकरी आठआलावा कहवा । जावणोविराहए । यावत् ते साधू आराधककहिये पणि विराधक नही । णिग्गंथीएयगाहावइकुलपिंडवायपडियाए अणुप्पविठ्ठे । इम साधवीना पणि २४ सूत्रकहवा ते देखाडेछे—निर्ग्रन्थी पणि गाथापतिकुलनेविषे पिण्ड पडवानेविषे पडो एहवी बुद्धि पैठो । अकिच्चठ्ठाणेपडिसेविए । अकृत्यस्थानक सेवे । तीसेणएवभवइ । तेहने इमहुवे । इहेवतावअहण्यस्सठ्ठाणस्सआलोएमि । इहा पहिलाज एहने स्थानकने आलोइस । जावतवोकम्मपडिवज्जामि । यावत् तपकर्म पडिवजस्यू । तओपच्छापवित्तणीए अंतिय आलोएस्सामि । तिवारपछो मुख्यसाधवी तेहने समीपे आलोइ स्यू । जावपडिवज्जिस्सामि । यावत् तप कर्म पडिवजस्यू । सायसंपठिया । इम चिन्तवी ते मार्गचाली असपत्ता पवित्तणीए अमुहासिया । तिहा पहुती नही तिवार पहिलाज मुख्यपदवीधर साधवी वातादि दोषेंकरी मुखे बोल न सके । साणभतेकिंआराहिया विराहिया । तिवारे ते साधवी हेभगवन् ! स्यू आराधक कहिये अथवा विराध

॥ टीका ॥ विंशतिसूत्राणि, एवं निर्ग्रन्थिकाया अपि चतुर्विंशतिसूत्राणीति, अथ नालोचितएव कथ माराधक इत्याशङ्का मुत्तरचाह ॥ सेकेणमित्यादि ॥ त शमूयवत्ति ॥ तृणाग्रवा ॥ छिज्जमाणेछिन्नेत्ति ॥ क्रियाकालनिष्ठाकालयो रभेदेन प्रतिक्षण कार्यस्य निष्पत्ते श्छिद्यमान छिन्न मित्युच्यते, एव मसा

॥ मूल ॥ भंते ! किं आराहिया विराहिया ? गोयमा ! आराहिया णोविराहिया। साय संपठिया जहा णिग्गंथस्स तिन्नि गमा भणिया एवं निग्गंथीएवि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया नोविराहिया । सेके णट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ आराहए नोविराहए ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे एगंमहं उण्णालोमवा गयलोमवा सणलोमवा कप्पासलोमवा तणसूयवा दुहावा तिहावा संखेज्जहावा छिंदित्ता अगणिकायंसि

अनुवाद भ०। किमाराधिका विराधिका गौ०। आराधिका नोविराधिका साच सम्प्रस्थिता यथा निर्ग्रन्थस्य त्रयो गमा भणिता एव निर्ग्रन्थ्या अपि त्रय आ लापका भणितव्या याव दाराधिका नोविराधिका । अथ केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते आराधको नोविराधक ? गौतम ! स यथा नामक कश्चित्पुरुष एक महत् दूर्णालोमवा गजलोमवा शणलोमवा कार्पासलोमवा तृणशूकवा द्विधावा त्रिधावा सख्येयधावा छित्वा अग्निकाये प्रक्षिपे

॥ भाषा ॥ क कहिये। इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आराहिया णोविराहिया। हेगौतम ! आराधक कहिये पणि विराधक न कहिये भावना पूठिलीपरे। सावसप हिवा। चली ते चाली इत्यादि । जहाणिग्गथस्स तिण्णिगमाभणिया। जिम निर्ग्रन्थने तीन आलावा कह्या। एवं णिग्गथीएवि तिण्णिआलावगाभाणियव्वा। इम निर्ग्रन्थी ने पणि तीनआलावा कहवा इहा पणि आठ वा २४ आलावा हुवे। जावआराहिया णोविराहिया। यावत् ते साधवी आराधक कहिये प णि विराधक न कहिये, हिवे अणआलोया थीज आराधक किमहुवे इम आशङ्कायें कहेछे—सेकेणट्ठेणभतेएववुच्चइ आराहए णो विराहए। ते किसे अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यु ते आराधक पणि विराधकनहो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेजहानामएकेइपुरिसे। हेगौतम ! ते यथा दृष्टान्ते काइएक पुरुष एगमह उण्णालोमवा गयलोमवा सणलोमवा कप्पासलोमवा। एकमोटो ऊर्णलोमप्रते अथवा गजलोमप्रते सणलोमप्रते अथवा कार्पासलोमप्रते। तण

यालोचनापरिणतो सत्या माराधनामप्राप्त आराधकएवेति ॥ अहयगत्ति ॥ अहत नव ॥ धोयति ॥ प्रक्षालित ॥ तंतुग्गयति ॥ तन्त्रोद्गतं तुरीवेमाद् उत्ती

परिकवेज्जा सेणूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिन्ने पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते दज्झमाणे दड्ढेत्ति वत्तव्वंसिया ? हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिन्ने जाव दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया, सेजहानामए केइपुरिसे वत्थं अहतं धोयवा तंतुग्गयंवा मंजिठदोणीए पक्खिवेज्जा सेणूणं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते रज्जमाणे रत्तेत्ति ॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥

स्व नूनं गोतम । छिद्यमानं छिन्नं प्रक्षिप्यमाणं प्रक्षिप्तं दह्यमानं दग्धमिति वक्तव्यं स्यात् ? हन्त भगवन् । छिद्यमानं छिन्नं यावद्दग्धमि ति वक्तव्यं स्यात् । स यथानामकः कश्चित्पुरुषो वस्त्रमहतंवा धौतंवा तन्त्रोद्गतंवा माञ्जिष्ठद्रोण्यां प्रक्षिपेत् स नूनं गोतम । उत्क्षिप्यमाणमुत्क्षिप्तं

॥ भाषा ॥ भावार्थ

सूत्र —ह्रावा तिहावा सखेज्जहावा छिदित्ता । हणायप्रते वे प्रकारे तीन प्रकारे सख्यातप्रकारे छेदीने । अगणिकायमपक्खिवेज्जा । अग्निकायनेविषे प्रक्षेपकर घाले। सेणूणंगोयमा छिज्जमाणे छिन्ने पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते दज्झमाणे दड्ढेत्तिवत्तव्वंसिया । ते निश्चे हेगौतम । छेदवामांड्यूं ते छेद्यूं कहिये क्रि या काल अने निष्ठाकालने अन्देकरी प्रतिक्षणे कार्यनिष्पत्तिथकी प्रक्षेप करवामांड्यूं ते प्रक्षेप्यूं कहिये बालवामांड्यूं ते बाल्यूं कहिये आगला पूर्वलो परे कहवो एहवी वक्तव्यता हुवे इतप्रश्न उत्तर । हंताभगव । हा स्वामी । छिज्जमाणेछिन्ने । छेदवामांड्यो ते छेद्यो । जावदड्ढेत्तिवत्तव्वंसिया । यावत् बालवामांड्यूं ते बाल्यूं एहवी कहवोहुवे । सेजहानामएकेइपुरिसेवत्थं । अथवा यथानामे दृष्टान्ते कोइएक पुरुष वस्त्रप्रते । अहतवा धोतवा तंतुग्ग तवा । इयाणेनवो एतले नवो धोयो तुरी वेमादिकथी उत्तीर्णमात्र । मंजिठदोणीए पक्खिवेज्जा । मंजीठ रागना वासणनेविषे घाले । सेणूणं गोयमा । उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते । ते निश्चे हेगौतम । ते वस्त्र उखेलवामांड्यो ते उखेल्यो कहिये । पक्खिप्पमाणेपक्खित्ते । प्रक्षेपकरवामांड्यो ते प्रक्षेप्यो कहिये । रज्ज माणेरत्तेत्तिवत्तव्वंसिया । रङ्गवामांड्यो ते रङ्ग्यो एहवो वक्तव्यता कहिये एम भगवंत गौतमने पूछ्यूं तिवारे गौतम कहेछे—हंताभगवउक्खिप्पमाणेउक्खि त्ते । हा भगवन्त ते वस्त्र उखेलवामांड्यो ते उखेल्यो कहिये । जाव रत्तेत्तिवत्तव्वंसिया । यावत् रङ्गवामांड्यो ते वस्त्र रङ्ग्यो कहिये एतलालगे कहवो । से

॥ टीका ॥

र्गमात्र ॥ मजिठदोणीएत्ति ॥ माञ्जिष्ठरागजाजने, आराधकश्च दीपव द्दीप्यतइति दीपस्वरूप निरूपय न्नाह ॥ पदीवस्सेत्यादि ॥ ज्झियायमाणस्स त्ति ॥ ध्यायतो ध्मायमानस्यवा; ज्वलतइत्यर्थं ॥ पदीवेत्ति ॥ प्रदीपो दीपयष्ट्यादिसमुदाय ॥ ज्झियाइत्ति ॥ ध्यायति ध्मायतेवा, ज्वलति ॥ ल ठोत्ति ॥ दीपयष्टि ॥ वत्तीत्ति ॥ दशा ॥ दीवचपएत्ति ॥ दीपस्थगनक ॥ जोइत्ति ॥ अग्नि , ज्वलनप्रस्तावा दिदमाह ॥ अगारस्सणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

वत्तव्वंसिया ? हंता भगवं ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते जाव रत्तेत्ति वत्तव्वंसिया, सेतेणठेणं गोयमा ! एवंवुच्चइ आराहए नोविराहए। पईवस्सणं भंते ! ज्झियायमाणस्स किं पदीवेज्झियाइ लठीज्झियाइ वत्तीज्झियाइ तेल्ले ज्झियाइ पदीवचपएज्झियाइ जोइज्झियाइ ? गो० ! नो पदीवेज्झियाइ जाव नोपदीवचंपए ज्झियाइ जोइज्झि

॥ अनुवाद ॥

प्रक्षिप्यमाण प्रक्षिप्त रज्यमान रक्त मिति वक्तव्य स्यात् ? हन्त भगवन् ! उत्क्षिप्यमाण मुत्क्षिप्त याव द्रक्तमिति वक्तव्यं स्यात् तत्तेनार्थेन गौतम ! एव मुच्यते आराधको नोविराधक । प्रदीपस्य भदन्त ! ध्मायमानस्य कि प्रदीपो ध्मायते यष्टि र्ध्मायते, वर्त्ति र्ध्मायते, तैल ध्मायते, प्रदीपचम्पक ध्मायते, ज्योति र्ध्मायते ? गौतम ! नोप्रदीपो ध्मायते याव न्नोप्रदीपचम्पक ध्मायते, ज्योतिर्ध्मायते । अगारस्य भदन्त !

॥ भाषा ॥

तेणट्ठेणं गोयमा एववुच्चइ आराहए णोविराहए। ते तेणे अर्थे हेगौतम इमकह्यु ते आराधककहिये पणि विराधक न कहिये भावना पूर्वलीपरे कहवी। पईवस्सणभंते ज्झियायमाणस्स। आराधकतेदीपनीपरे दीपे तेमाटे दीपस्वरूप निरूपण करतोथको कहेछे—प्रदीपने हेभगवन् बलताने। किंपईवेज्झियाइ। स्यूं प्रदीप पच्यादिकनो समूह बलेछे। लठीज्झियाइ। अथवा दीवानीशिखा बलेछे। वत्तीज्झियाइ तेल्लेज्झियाइ। अथवा बाट बलेछे अथवा तेल बलेछे। पदीवचपएज्झियाइ। अथवा दीवानो ढाकणो बलेछे। जोतिज्झियाइ। अथवा अग्नि बलेछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोपदीवेज्झियाइ। हे गौतम नही प्रदीप बलेछे। जावणोपदीवचपएज्झियाइ। यावत् दीवानोढाकणो वले नही इत्यादि सर्वकहवो। जोइज्झियाइ। ज्योति बलेछे। अगारस्सणभंते ज्झियायमाणस्साकिंअगारेज्झियाइ कुड्डाज्झियाइ। अगारने अगारकहिये कुटी गृह ते हेभगवन् बालतोथको स्यूं छप्परगृह बलेछे भींत व

॥ टीका ॥

इह चागारं कुटीगृहं ॥ कुड्डत्ति ॥ भित्तय ॥ कडणत्ति ॥ त्रट्टिका ॥ धारणत्ति ॥ वलहरणाधारभूते स्थूणे ॥ वलहरणत्ति ॥ धारणयो रुपरिवर्त्ति तिर्यगायतकाष्ठ मोभइति य त्प्रसिद्ध ॥ वसत्ति ॥ वंशा श्छित्वराधारभूता ॥ मल्लत्ति ॥ मल्ला. कुड्यावष्टम्भस्थाणवो वलहरणाश्रितानिवा, छित्वराधारभूतानि ऊर्द्धायतानि काष्ठानि ॥ वग्गत्ति ॥ वल्का वंशादिबन्धनभूता वटादित्वक् ॥ छित्तरत्ति ॥ छित्वराणि वंशादिमयानि च्छादनाधारभूतानि किलिंजानि ॥ छाणेत्ति ॥ छादनं दर्भादिमयं पटलमिति' इयच तेजसा ज्वलनक्रियापरशरीराश्रयेति परशरीरं मौदारिका द्याश्रित्य

॥ मूल ॥

याइ । अगाररस णं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ कुड्डाझियाइ कडणाझियाइ धारणाझियाइ वलहरणे झियाइ वंसाझियाइ मल्लाझियाइ वग्गाझियाइ छित्तराझियाइ छाणेझियाइ जोइझियाइ गोयमा ! नोअगारेझियाइ नोकुड्डाझियाइ जाव नोछाणाझियाइ जोइझियाइ । जीवेणं भंते ! उरा

॥ अनुवाद ॥

ध्मायमानस्य (ज्वलत) कि मगारं ध्मायते, कुड्य ध्मायते, कट ध्मायते, धारणा ध्मायते' वलहरण ध्मायते, वंशा ध्मायन्ते, मल्ला ध्मायन्ते, वल्कानि ध्मायन्ते, छित्वराणि ध्मायन्ते, छादनं ध्मायते, ज्योतिर्ध्मायते ? गौतम ! नोअगारं ध्मायते, नोकुड्यंध्मायते, यावन्नो छादनं ध्मायते, ज्योतिर्ध्मायते ॥ जीवो भदन्त ! औदारिकशरीरा त्कतिक्रिय ? गौतम ! स्यात्त्रिक्रिय स्याच्चतुष्क्रिय स्यात्पञ्चक्रिय

॥ भाषा ॥

लेछे । कडणाझियाइ धारणाझियाइ । थाटी बलेछे वलहरण आधारभूत थूणी बले । वलहरणेझियाइ । नेज थूणीने ऊपर मोभो नाखो ला कडा बले मोभबले । वंसाझियाइ मल्लाझियाइ वग्गाझियाइ । छित्वर आधारभूत ते वंस कटी अवष्टम्भन थाभा ते मल मुक्तनाओ बंधबंधनभूत त्वचा ते बले । छित्तराझियाइ छाणेझियाइ जोतिझियाइ । छित्वर वंशादिमयछादनाधारभूत ते किलिञ्ज बले छादन दर्भादिमय पटल छज इत्यर्थ ते बले अगनि बले इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो अगारेझियाइ णो कुड्डाझियाइ । हेगौतम कुटी छप्पर घर बलेनही भींत पणि बलेनही । जाव णोछाणे झियाइ । यावत् छादन दर्भादिमय पटल ते न बले । जोतिझियाइ । ज्योति कहिये अग्नि ते बले एह अग्निनी ज्वलनक्रिया परशरीराश्रयछे तेभाटे

॥ टीका ॥

जीवस्य नारकादेश्च क्रिया अभिधातुमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ उरालियसरीराउत्ति ॥ औदारिकशरीरा त्परकीय मौदारिकशरीर माश्रित्य कतिक्रियो जीव इतिप्रश्न , उत्तरतु ॥ सियतिकिरिएत्ति ॥ यदैको जीवो ऽन्यस्य पृथिव्यादे सम्बन्धी दारिकशरीर माश्रित्य काय व्यापारयति तदा त्रिक्रिय कायिक्या धिकरणिकी प्राद्वेषिकीना मावा देतासाच परस्परेण विनाभूतत्वा त्स्यात्त्रिक्रिय इत्युक्त, न पुन स्यादेकक्रिय ' स्या द्विक्रिय इति, अविनाभावश्च तासा मेव अधिकृतक्रिय ध्ववीतरागस्यैव नेतरस्य तथाविधकर्मबन्धहेतुत्वा' दवीतरागकायस्य चाधिकरणत्वेन प्रद्वेषान्वितत्वेनच कायक्रियासद्भाव इतरयो रवश्यभाव, इतरभावेच कायिकीसद्भाव, उक्तञ्च प्रज्ञापनाया मिहार्थे-जस्सण जीवस्स काइया किरिया कज्जइ तस्स अहिगरणिया किरिया नियमा कज्जइ जस्स अहिगरणिया किरिया कज्जइ तस्सवि काइया किरिया नियमा कज्जइ इत्यादि, तथा

॥ ५ ॥

लियसरीराउ कइ किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए सिय अकिरिए।

॥ भाषा ॥

परशरीर औदारिकादि आश्रयीने जीवने तथा नारकादिकने क्रिया कहवाने अर्थे कहेछे—जीवेणभंते ओरालियसराराओकइकिरिए गोयमा सिय तिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । जीव हेभगवन् औदारिकशरीरथकी परकीयऔदारिकशरीरप्रते आश्रयीने केतलीक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जिवारे एकजीव अन्य पृथिव्यादिकसम्बन्धी औदारिकशरीराश्रयीने कायव्यापारे, तिवारे तीन क्रियावन्त कहिये कायिकी १ अधिकरणकी २ प्राद्वेषिकी ३ ए तीनभावथकी तेहने माहोमाहि अविनाभावीभूतपणाथकी कदाचित् त्रिक्रिय इसोकह्यो पणि नहुवे, एकक्रिय द्विक्रिय इति अविनाभाव पणि तेहनेज अधिकृतक्रिया अवीतरागनेजहुवे बीजाने नहुवे तथाविध कर्मबन्ध हेतुपणाथकी अवीतरागकायने अधिकरण पणेकरी प्रद्वेषान्वित पणेकरी कायक्रियाने सद्भावे बीजीक्रियानो अवश्यभावछे अने बीजीक्रियानेभावे कायिकक्रियानो सद्भावछे पन्नवणानेविषे पणि कह्युंछे—जस्सणं जीवस्सकाइयाकिरियाकज्जइ, तस्सअहिगरणियाकिरियाणियमाकज्जइ, जस्सअहिगरणियाकिरियाकज्जइ, तस्सविकाइयाकिरियाणियमाकज्जइ, इत्यादि तथा पहिलीतीनक्रियाने सद्भावे आगिली बेक्रिया भजनायेहुवे यदाह—जस्सणंजीवस्सकाइयाकिरियाकज्जइ, तस्सपारियावणियाकिरियासियकज्जइ, सि

जाव वेमाणिए, णवर मणुस्से जहा जीवे। जीवाणं भंते! ओरालियसरीराओ कइकिरिया? गोयमा! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया। नेरइयाणं भंते! ओरालियसरीराओ कइकिरिया एवं एसोवि जहा पढमो दण्डओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, णवरं मणुस्सा जहा जीवा। जीवाणं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया? गोयमा! तिकिरियावि चउ पचकिरियावि अकिरियावि। नेरइयाणं भंते!

याव वैमानिको नवर मनुष्यो यथा जीव। जीवा भदन्त! औदारिकशरीरा त्कतिक्रिया? गौतम! स्या त्रिक्रिया याव त्स्या दक्रिया। नैरयिका भ०! औदारिकशरीरा त्कतिक्रिया? एव मेषोपि यथा प्रथमो दण्डक स्तथा भणितव्यो याव द्वैमानिका नवर मनुष्या यथा जीवा। जीवा भ०! औदारिकशरीरेभ्य कतिक्रिया? गौतम! त्रिक्रिया अपि चतु पञ्चक्रिया अक्रिया अपि। नैरयिका भ०! औदारिकशरीरेभ्य

डक औदारिकशरीर एकवचनेकह्यो। तहाइमांथि अपरिसेसो जाव वेमाणिए। तिम एह पणि औदारिकशरीर बहुवचने पणि सगलो कहवो यावत् वैमानिकलगे कहवो। णवरमणुस्सेजहाजीवे। एतलोविशेष मनुष्यपद जीवपदनीपरे कहवो। जीवाणभंते ओरालियसरीराओ कइकिरिया। इम जीवने एकवचने औदारिकशरीर एकले तथा बहुले बेदडक कह्या, हिवे जीवने बहुले औदारिकशरीरने एकले दडक कहेछे—घणाजीवने हेभगवन्! औदारिकशरीरथो केतलीक्रिया इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिया जाव सियअकिरिया। हेगौतम! किवारे त्रिक्रिय यावत् किवारे अक्रिय। नेरइयाणभंते ओरालियसरीराओकइकिरिया। नारकी व वाक्यालकारे, हेभगवन्! औदारिकशरीरथकी कतिक्रिय इति। एवएसोवि जहा पढमोदडओ तहाभाणियव्वो। इम एहपणि जिम पहिलो दडककह्यो तिम जाणवो। जाववेमाणिया। यावत् वैमानिकपर्यन्त कहवो। णवर मणूसा जहा जीवा। एतलोविशेष मनुष्यपद जीवपदनी परे कहवो जीवने बहुले तथा औदारिकशरीरने पणि बहुले दडक कहेछे—जीवाणभंते ओरालियसरीरेहिंतो कइकिरिया। जीव घणा हेभगवन्! औदारिकशरीर बहुवचन थाथ्यो कतिक्रिय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिकिरियावि। हेगौतम! त्रिक्रिय पणिहुवे। चउ

॥ टीका ॥

चत्वारो दण्डका इति ॥ जीवेणमित्यादि ॥ जीव परकीयं वैक्रियशरीरमाश्रित्य कतिक्रियउच्यते स्या त्रिक्रिय इत्यादि' पञ्चक्रिय श्चेह नोच्यते

॥ मूल ॥

उरालियसरीरेहितो कइ किरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि एव जाव वेमाणिया, णवरं मणुस्सा जहा जीवा। जीवेणं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गो० ! सियतिकिरिए सिय चउकिरिए सियअकिरिए। नेरइएणं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सिय

अनुवाद

कतिक्रिया ? गौतम ! त्रिक्रिया अपि चतुष्क्रिया अपि पञ्चक्रिया अप्येव याव द्वैमानिका नवर मनुष्या यथा जीवा'। जीवो भ०। वैक्रिय शरीरा त्कतिक्रिय ? गौ०। स्यात्त्रिक्रिय स्या चतुष्क्रिय स्यादक्रिय। नैरयिको भ०। वैक्रियशरीरा त्कतिक्रिय ? गौतम ! स्यात्त्रिक्रिय'

॥ भाषा ॥

किरियावि पचकिरियावि अकिरियावि। चतुष्क्रिय पणिहुवे पचक्रिय पणिहुवे अक्रिय पणिहुवे भावना पूठिलीपरे कहवी। णेरइयाणभते ओरालिय सरीरेहितोकइकिरिया। घणानारकी हेभगवन्। औदारिकशरीर थको बहुवचन आश्रयीने केतलीक्रियाहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तिकिरियावि। हेगौतम। त्रिक्रिय पणिहुव। चउकिरियावि पचकिरियावि। चउक्रिय पणिहुवे पचक्रिय पणिहुवे। एवजाववेमाणिया णवरं मणूसा जहाजीवा। इम यावत् वैमानिकपर्यत कहवी एतलोविशेष मनुष्यपद जीवपदनी परेकहवो ए जीवने वहुले बीजा दोयदण्डक कह्या एतले औदारिकशरीरनी अपेचाये चार दण्डकहुवे, हिवे वैक्रियशरीरआश्रयी कहेछे—जीवेणभते वेउव्वियसरीराओकइकिरिए। जीव हेभगवन्। परकीय वैक्रियशरीरआश्रयी तेहथी केत ली क्रियावन्त हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए। हेगौतम। किवारे तीनक्रियाहुवे कदाचित् चारक्रियाहुवे इहा सियपच किरिए, इसो न कहवो प्राणातिपातने वैक्रियशरीर थको करवा असमर्थपणोछे तेमाटे इहा अविरतिमात्रना विवचितपणाथकी एतलामाटेज कह स्ये पचमकिरियानभणइत्ति। नारकी हेभगवन्। वैक्रियशरीरथको कतिक्रियहुवे। इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए। हेगौतम। किवारे त्रिक्रिय किवारे चउक्रिय। एव जाववेमाणिए णवरमणूसेजहाजीवे। इम यावत् वैमानिक लगे कहवो, एतलोविशेष मनुष्यपद जीवपदनी प

प्राणातिपातस्य वैक्रियशरीरेण. कर्तुमशक्यत्वा दविरतिमात्रस्य चेह विवक्षितत्वा दतएवोक्त ॥ पंचमकिरिया नभणइत्ति एव जहा वेउव्विय तहा आहारयंपि तेयगंपि कम्मगंपि भाणियव्वत्ति ॥ अनेना हारकादिशरीरत्रय मप्याश्रित्य दण्डकचतुष्टयेन नैरयिकादिजीवाना त्रिक्रियत्व चतुष्क्रियत्व

चउकिरिए एवं जाव वेमाणिए, णवरं मणुस्से जहा जीवे, एव जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा तहा भाणियव्वा, णवरं पंचमकिरिया न भण्णइ सेसं तचेव एव जहा वेउव्विय तहा आहारगंपि तेयगंपि कम्म गंपि भाणियव्वं । एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कइकिरि

स्या चतुष्क्रिय एव याव द्वैमानिको नवर मनुष्यो यथा जीव एव यथौ दारिकशरीरेण चतुरो दण्डका भणिता स्तथा (वैक्रियशरीरेणापि चतुरो दण्डका) भणितव्याः । नवर पञ्चमी क्रिया न भण्यते शेष तच्चै वैव यथा वैक्रिय तथा हारकमपि तैजस मपि कार्मण मपि

रे कहवो । एवजहाओरालियसरीरेणचत्तारिदंडगाभणिया । इम जिम औदारिकशरीरसघाते चारदण्डक कह्या । तहाविउव्वियसरीरेणवि चत्तारिदंड गाभाणियव्वा णवर पंचमकिरिया नभण्णइ । तिम वैक्रियशरीर सघाते पणि चारदण्डक कहवा जीव एकत्व वैक्रिय एकत्वे १ जीव एकत्व वैक्रिय बहुत्वे २ जीव बहुत्व वैक्रिय एकत्वे ३ जीव बहुत्व वैक्रिय बहुत्वे ४ इम चारकहवा एतलोविशेष वैक्रियशरीर मारारा न मरे ते भणी चारक्रिया लागै पचमी क्रिया न लागे ते नकहवी । सेसतचेव । थाकतो सर्व तिमज कहवो । एवजहाविउव्वियतहाआहारगंपि तेयगंपि कम्मगंपि भाणियव्व एक्केकेचत्तारिदंडगा भाणियव्वा । जाववेमाणियाण । इम जिम वैक्रियकह्यु तिम आहारक पणि तैजस पणि कार्मण पणि जाणवा एतले आहारादिकशरीर तीनआश्रयी दण्डक चार चार करी नारकादिकजीवने त्रिक्रियपणू चउक्रियपणू कह्यु पचक्रियापणू निवार्यो, तेहने मारवाने अशक्यपणाथकी ए तीनशरीरने विषे प्रत्येकें चार २ दण्डककहवा कोई कहस्ये नारकी अधोलोके आहारकशरीर मनुष्यलोके तो नारकीने ते सघाते तीनक्रिया चारक्रिया किमलागै तिहा उत्तर नारकीना पूर्वलाशरीरना जे हाडप्रमुख रह्याछे मनुष्यलोके ते आहारकशरीर प्रते परितापे तेहनी अपेक्षायें तीन चारक्रिया लागै ते

॥ टीका ॥

चोक्त, पञ्चक्रियत्वन्तु निवारित मारयितु मशक्यत्वा त्तस्येति, अथ नारकस्या धोलोकवर्त्तित्वा दाहारकशरीरस्यच मनुष्यलोकवर्त्तित्वेन तत्क्रियाणा
मविषयत्वात् कथ माहारकशरीर माश्रित्य नारक स्यात्त्रिक्रिय स्या चतुष्क्रिय ? इत्यत्रो च्यते यावत्पूर्वशरीर मव्युत्सृष्ट जीवनिर्वर्त्तितपरिणाम
मत्यजति तावत्पूर्वभावप्रज्ञापनानयमतेन निर्वर्त्तकजीवस्यैवेति व्यपदिश्यत घृतघटन्यायेन त्यतो नारकपूर्वभवदेहो नारकस्यैव तद्देशेनच मनुष्यलो
कवर्त्तिना ऽस्थ्यादिरूपेण यदाहारकशरीर स्पृश्यते, परिताप्यतेवा, तदाहारकदेहा न्नारक स्त्रिक्रिय श्चतुष्क्रियोवा, भवति कायिकीभावे इतर
यो रवश्यंभावा, त्पारितापनिकीभाव चाद्यत्रयस्या वश्यंभावादिति, एव मिहा न्यदपि विषयमवगन्तव्य ' यच्च तैजसकार्म्मणशरीरापेक्षया जीवाना
परितापकत्व तदौदारिका द्याश्रितत्वेन तयो रवसेय स्वरूपेण तयो परितापयितु मशक्यत्वा दिति ॥ इत्यष्टमशते षष्ठ ॥ ६ ॥
षष्ठोद्देशके क्रियाव्यतिकर उक्त इति क्रियाप्रस्तावा त्सप्तमोद्देशके प्रद्वेषक्रियानिमित्तको ऽन्ययूथिकविवादव्यतिकर उच्यत इत्येव सबद्धस्या स्येद मादि

॥ मूल ॥

या ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि सेवं भंते २ त्ति ॥ अट्ठम सयस्स छट्ठोउद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ६ ॥

॥ भाषा ॥

भणितव्य मेकैकस्मिन् चत्वारो दण्डका भणितव्या याव द्वैमानिका भ० । कार्म्मणशरीरेभ्य कतिक्रिया ? गौतम । त्रिक्रिया अपि चतु
ष्क्रिया अपि तदेव भदन्त भदन्त ॥ इत्यष्टमशतस्य षष्ठोद्देश समाप्त ॥ ८ ॥ ६ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृह नगर,

जाणवो इम यावत् वैमानिक दण्डक लगे कहवो । कार्म्मणशरीरेहिंतो कतिकिरिया । कार्म्मणशरीरथकी कइक्रियहुवे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तियकि
रियावि चउकिरियावि । हेगौतम । त्रिक्रिय पणिहवे चउक्रिय पणिहवे ते तैजस कार्म्मणशरीरनी अपेक्षायें जीवने परितापकपणो कह्यो ते बेउ औदा
रिकशरीर आश्रितपणे करी जाणवा बीजो ते बेउ पाते रूपेकरी परितापवा असमर्थपणाथको । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछै
अन्यथानही । अट्ठमसयस्सछट्ठो उद्देसो सम्मत्तो । ए आठमा शतकनो छट्ठाउद्देशो अर्थथकी पूरोथयो ॥ ६ ॥ पाछै क्रियास्वरूप कह्यो
इहा प्रद्वेषक्रियाना कारण अन्यतीर्थिकनो विवाद विचार कहेछे — तेणंकालेणं तेणंसमएणं । ते कालने विषे ते समयने विषे । रायगिहेणयरे वण्णओ ।

॥ मूल ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे वण्णओ, गुणसिलए चेइए वण्णओ, जाव पुढवीसिलावट्टओ, तस्सणं गुणसिलयस्सणं चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव समोसढे जाव परिसापडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जहा बिइयसए जाव जीवियासा

अनुवाद

वर्णकः, गुणशिलकं चैत्यं, वर्णकः, यावत् पृथिवीशिलापट्टकः तस्य गुणशिलकस्य चैत्यस्य अदूरसामन्ते बहवो अन्ययूथिकाः परिवसन्ति, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणो भगवान् महावीरः आदिकरो यावत् समवसृतो यावत् पर्षत् प्रतिगता, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य बहवो अन्तेवासिनः स्थविरा भगवन्तो जातिसम्पन्नाः कुलसम्पन्ना यथा द्वितीये शते यावत् जीविताशामरणभयविप्रमुक्ता

॥ भाषा ॥

राजगृह नगरने विषे वर्णक कहवो। गुणसिलए चेइए वण्णओ। गुणशिलकनामे चैत्यछयो वर्णक योग्यछे। जाव पुढवीसिलापट्टओ। यावत पृथिवी शिलापट्टक ता लग कहवो। तस्सणंगुणसिलयचेइयस्स अदूरसामंते। तेह गुणशिलकनामा चैत्यने अनावननने वेगलो नही निकट नही एतले मध्यस्थे। बहवे अन्नउत्थियापरिवसति। घणा अन्यतीर्थी वसेछे। तेणंकालेणं तेणंसमएणं। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। समणेभगवमहावीरे आदिगरे जाव समोसढे। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी ते केहवा आदिनाकरणहार यावत् समोसर्या। जावपरिसापडिगया। यावत् पर्षदाआदि देशना सांभली पाछी गई। तेणंकालेणं तेणंसमएणं। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना। बहवे अन्तेवासी थेराभगवन्ता। घणाशिष्य स्थविरभगवन्त ते केहवा। जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना। जातिवन्त उत्तम कुल पितापक्ष तेणे। जहाविति(?)सए। जिम आगल शतकनेविषे कह्युं तिम कहवो। जाव जीवियासामरणभयविप्पमुक्का। यावत् जीवितव्यनी आशा मरणनो भय ते बेउथको विमुक्त रहितछे। समणस्सभगवओमहावीरस्सअदूरसामंते उड्ढंजाणू। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने वेगला नही टूकडा नही उभाजानू कहिये ढीचण। अहोसि

॥ टीका ॥

सूत्रं ॥ तेणमित्यादि ॥ तत्र ॥ अज्जोत्ति ॥ हे आर्या । तिविहंतिविहेणंति ॥ त्रिविध करणादिक योग माश्रित्य त्रिविधेन मन प्रभृतिकरणेन ॥ अ

॥ मूल ॥

मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संज मेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति । तएणं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा गच्छंति उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी तुज्झेणं अज्जो! तिविहं तिविहेणं असंजयअविरयअप्प डिहय जहा सत्तमसए बिइए उद्देसए जाव एगंतबालायाविभवह , तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए

अनुवाद

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य दूरसामन्त ऊर्ध्वजानवो धोशिरसो ध्यानकोष्ठोपगता संयमेन तपसा त्मान भावयन्तो याव द्विहरन्ति । तदा ते ऽन्ययूथिका यत्रैव स्थविरा भगवन्त स्तत्रैवो पागच्छ न्त्युपागत्य ता स्थविरान् भगवत एव मवादिषु–र्यूयमार्या । त्रिविध त्रिविधेना स यताविरताप्रत्याख्यातपापकर्माणो यथा सप्तमशते द्वितीयो द्देशको याव देकान्तबालाश्चापि भवथ (तावद्वाच्यमितिशेषः) तदा ते स्थविरा भग

॥ भाषा ॥

रे । नीचा मस्तकछे जेहनो । झाणकोट्ठोवगए । ध्यानरूप कोठानेविषे पाम्या । संजमेण तवसा अप्पाणभावेमाणा जाव विहरति तएणसेअण्णउत्थिया । तदा संयमकरी तपकरी आत्माने भावताथका यावत् विचरे तिवारे ते अन्ययूथिक परमती । जेणेवथेराभगवंतो । जिहा श्रीमहावीरस्वामीना स्थविर भगवन्त छे । तेणेवउवागच्छति २ त्ता । तिहाआवे आवीने । तेथेरेभगवते एववयासी । ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहे । तुज्झेणअज्जोतिविह । तुम्हे अहोआर्यो त्रिविध करण करावण अनुमतिरूप । तिविहेणअसंजयाविरयपडिहय । योगआश्रयीने त्रिविध मन वचन कायायें करीने असयती अविरती पच्च क्खा नथीछे पापकर्म जेणें । जहा सत्तमसएवितिएउद्देसए जाव एगतबालायाविभवह । जिम सातमा शतकना बीजाउद्देशानेविषे यावत् एकान्त बाल ना मूर्ख थाओछो । तएण ते थेराभगवंता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अण्णउत्थिए एववयासी । ते अन्यतीर्थिकने इम कहे । केणकारणेणअज्जो ।

दिणसाइज्जाहत्ति ॥ अदत्त स्वदध्वे अनुमन्यध्व इत्यर्थ ॥ दिज्जमाणेअदिखे इत्यादि ॥ दीयमान मदत्त दीयमानस्य वर्त्तमानकालत्वा द्दत्तस्यचा ती तकालवर्त्तित्वा द्वर्त्तमानातीतयो श्चात्यन्त भिन्नत्वा द्दीयमान दत्त न भवति दत्तमेव दत्त मिति व्यपदिश्यते, एव प्रतिगृह्यमाणादा वपि, तत्र दी

एव वयासी केणं कारणेणं अज्जो अम्हे तिविहं तिविहेण असजयअविरय जाव एगंतबालायाविभवामो ? तएण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंत एवं वयासी—तुज्झेण अज्जो ! अदिस्स गिरहह अदिस्स भुंजह अदिसं साइज्जह तएणं ते तुज्झे अदिसं गेरहमाणा अदिसं भुंजमाणा अदिस्स साइज्जमाणा तिविह तिविहेणं असजयअविरय जाव एगतबालायाविभवह । तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी

वन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिपु —केन कारणे नार्यो । वय त्रिविध त्रिविधेना सयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तवाला श्चापि भवाम ? तदा ते न्ययूथिका स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिपु—यूय मार्या । अदत्त गृह्णीथ अदत्त भुञ्जीथ अदत्त स्वदध्वे तदा यूय मदत्त गृह्णन्तो ऽदत्त भुञ्जन्तो ऽदत्त स्वदन्त स्त्रिविध त्रिविधेना सयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तवालाश्चापि भवथ । तदा ते स्थविरा भगवन्त स्ता न

किसे कारणे अहो आर्यो । अम्हेतिविह तिविहेण असजयविरय । अम्हे त्रिविध त्रिविधेकरी असयता अविरतो । जावएगतबालायाविभवामो । यावत् एकान्त बालक थाजकू इम कह्यो । तएणतेअणउत्थिया । तिवारे ते अन्यतीर्थिक । ते थेरेभगवते एववयासी । ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहै । तुम्हे गुअज्जो अदिण गेण्हह अदिण भुजह अदिणसाइज्जह । तुम्हे ण वाक्यालकारे, अहो आर्यो । अदत्त ग्रहो अदत्त भोगवो अदत्त आस्वादो तथा अदत्त अनुमोदो । तएण तुज्झे अदिणगेण्हमाणा अदिणभुजमाणा । तिवारे तुम्हे अदत्त ग्रहताथका अदत्त भोगवता थका । अदिणसाइज्जमाणातिविह तिविहेण असजयविरय । अदत्त आस्वादताथका अनुमोदताथका त्रिविध त्रिविधेकरी असयतो अविरतो । जावएगतबालायाविभवह । यावत् एकान्त बालक मूर्ख थाओछो । तएणतेथेरा भगवंता । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अणउत्थिए एववयासी । ते अन्यतीर्थिक प्रते इम कहै । केणकारणेण

॥ टीका ॥ वसरे अयमभिप्रायो यदि दीयमान पा
यमान दायकापेक्षया प्रतिगृह्यमाणं ग्राहकापेक्षया निसृज्यमान क्षिप्यमाणं पात्रापेक्षयेति ॥ अंतरेति ॥ अवसरे अयमभिप्रायो यदि दीयमान पा

॥ मूल ॥

केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो अदिन्नं भुंजामो अदिन्नं साइज्जामो ? तएणं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव अदिन्नं साइज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय जाव एगंतबालायावि भवामो ? तएणं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणं अदिन्ने पडिग्गाहिज्जमाणे अपडिग्गहिए निसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थणं अंतरा

अनुवाद

न्ययूथिका नेव मवादिषु –केन कारणेना र्या । वय मदत्त गृह्णीमो ऽदत्त भुञ्जामो ऽदत्त स्वदामहे, तदा वय मदत्त गृह्णन्तो याव ददत्त स्वदन्त स्त्रिविध त्रिविधेना सयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तबालाश्चापि भवाम ? तदा ते ऽन्ययूथिका स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिषु-यूय मार्या ! दीयमान मदत्त प्रतिगृह्यमाण मप्रतिगृहीत निसृज्यमान मनिसृष्ट, यूय मार्या । दीयमान मदत्त प्रतिग्रहक मसम्प्राप्त मत्रा

॥ भाषा ॥

अम्हे अदत्त ग्रहाछा अदत्त भोगवाछा अदत्त अनुमो दवाछा। तएणअम्हे अदिण्णगिण्हमाणा जावअदिण्णसाइज्जमाणा। तिवारे अम्हे अदत्त ग्रहताथका यावत् अदत्त आस्वादता थका अथवा अनुमोदता थका। तिविहं तिविहेण असंजय जाव एगंतबालायाविभवामो । त्रिविध त्रिविधेकरी असयती यावत् एकान्त बालक मूर्ख थावाछा। तएणते अन्नउत्थिया ते थेरेभगवंते एववयासी । तिवारे ते अन्यतीर्थिक परमती ते स्थविर भगवन्तप्रतें इम कहे। तुज्झेण अज्जोदिज्जमाणे अदिण्णे। तुम्हने अहो आर्यो ! देवामाण्डा ते अदत्त कहिये स्यामाटे दीयमानने वर्त्तमानकाल पणाथकी दीधाने अतीतकाल वर्त्तिपणाथकी वर्त्तमान अने अतीतने अत्यन्त भिन्न पणाथको देवामाण्डू ते दीधू नहुवे दीधू तेहीज दीधौं कहिये इम । पडिगाहिज्जमाणे अपडिग्गहिए णिसिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे। प्रतिग्रह्यमान ते जे लेवामाण्डू ते लीधू न कहिये तिहा दीयमान ते दायकनी अपेक्षाये प्रतिग्रह्यमान ते ग्राहकनी अपेक्षाये पात्रमांहि घालवामाण्डू अथवा

॥ टीका ॥

त्रे ऽपतित भ दृत्त भवति तदा तस्य दत्तस्य सत पात्रपतनलक्षण ग्रहण कस्य भवति, यदातु त दीयमान मदत्त तदा पात्रपतनलक्षण ग्रहण मद

॥ मूल ॥

कइ अवहरिज्जा गाहावइस्सण त भंते! णोखलु त तुज्झे तएणं तुज्झे अदिन्नं गिराहह जाव अदिन्नं साइज्जह तएण तुज्झे अदिन्नं गिराहमाणा जाव एगतबालायाविभवह । तएणं ते थेरा भगवतो ते अन्नउत्थिए एव वयासी—नोखलु अज्जो अम्हे अदिन्नं गिराहामो अदिन्नं भुंजामो अदिन्नं साइज्जामो अम्हेण अज्जो ! दिन्नं गिराहामो दिन्नं भुंजामो दिन्नं साइज्जामो तएणं अम्हे दिन्नं गिराहमाणा दिन्नं भुजमाणा दिन्न

अनुवाद

न्तरा कश्चि दपहरे दृह्पते स्त न खलु त युष्माक तदा यूय मदत्त गृह्णीथ याव ददत्त स्वदध्वे तदा यूय दमत्त गृह्णन्तो याव देकान्तबाला श्चापि भवथ । तदा ते स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिषु—र्नखल्वार्या ! वय मदत्त गृह्णामो ऽदत्त भुञ्जामो ऽदत्त स्वदामहे वय मार्या । दत्त गृह्णामो दत्त भुञ्जामो दत्त स्वदामहे तदा वय दत्त गृह्णन्तो दत्त भुञ्जन्तो दत्त स्वदन्त स्त्रिविध त्रिविधेन सयतविरतप्रति

॥ भाषा ॥

हिये अन्यदर्शनी इम कहै । तुझेण अज्जोदिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थण अतराकेइ अवहरेज्जा गाहावइस्सणत णोखलुतत तुझ । तुम्हने अहोआ र्यो । ते देवा मांडयू ते अदत्त कहवाय इहा ए अभिप्राय तो जो श्रोने तुम्हने गृहस्थे आहार देवामांडो पणि पडघेवाने पयू नथी इहाण वास्यासका रे, अन्तरानिचाले कोइएक पुरुष अथवा अनेरो अपहरे गृहै तो ते आहार गृहस्थनो परनहो निश्चे ते आहार तुम्हारो इणे कारणे तम्हे अदत्त गृहो छो तिणिकारणे दीजतो अदत्तकहिये, ते तुम्हे स्योंछो एहभणी । तएण तुज्झे अदिणगेण्हह जावअदिण्णसाइज्जह । तिवारे तुम्हे अदत्तग्रहोछो यावत् अदत्तप्रते अनुमोदोछो । तएणतुज्झेअदिणंगेण्हमाणा । तिवारे तुम्हे अदत्त गृहताथका । जावएगतबालायाविभवह । यावत् एकान्त बालक मूर्ख था ओछो । तएण ते थेराभगवतो । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अण्णउत्थिए एवनयासी । ते अन्ययूथिक परमती प्रते इम कहै । णोखलुअज्जो । नही नि श्चे गहो आर्यो ! अम्हेअदिण्णगिण्हामो अदिण्णभुजामो अदिण्णसाइज्जामो । अम्हे अदत्तग्रहोछा अदत्त भोगवछा अदत्त अनुमोदोछा । अम्हेणअज्जो । अ

॥ टीका ॥

त्तस्येति प्राप्तमिति, निर्ग्रन्थोत्तरवाक्येतु ॥ अम्हेणं अज्जो ? दिज्जमाणेदिन्ने इत्यादि ॥ यदुक्तं तत्र क्रियाकालनिष्ठाकालयो रभेदा द्दीयमानत्वादे

॥ मूल ॥

साइज्जमाणा तिविहं तिविहेण संजयविरयपडिहय जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडियायावि भवामो । त एणं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केणंकारणेणं अज्जो ! तुज्झे दिस्सं गिण्हह जाव दिस्सं साइज्जह तएणं तुज्झे दिस्सं गिण्हमाणा जाव दिस्सं साइज्जमाणा एगंतपडियायावि भवह ? तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एववयासी—अम्हेणं अज्जो ! दिज्जमाणे दिस्से पडिगाहेज्जमाणे पडिग्गहिए नि

॥ अनुवाद ॥

हत (प्रकृति) यथा सप्तमे शते याव देकान्तपण्डिता अपि भवाम । तदा ते ऽन्ययूथिका स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—केन का रणेनार्या ! यूय दत्त गृह्णीय याव द्दत्त स्वदध्वे, तदा यूय दत्त गृह्णन्तो याव देकान्तपण्डिता अपि भवथ ? तदानी ते स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिषु—वय मार्या ! दीयमान दत्त प्रतिगृह्यमाण प्रतिगृहीत निसृज्यमान निसृष्ट, वय मार्या ! दीयमान प्रतिग्र

॥ भाषा ॥

म्हे अहो आर्यो । दिणगिण्हामो दिणभुजामो । दीधो ग्रहाछा दीधा भोगवाछा । दिणसाइज्जामो । दीधो अनुमोदाछा । तएणअम्हे दिणगेण्हमा णा दिणभुजमाणा दिणसाइज्जमाणा । तिवारे अम्हे दीधो ग्रहता थका दीधो भोगवताथका दीधो अनुमोदता थका । तिविहतिविहेण । त्रिविध त्रिविधेकरी । सजय विरयपडिहय जहासत्तमसए जाव एगतपडियायाविभवामो । सयतो विरतो पच्चख्याछे पापकर्म जेणे जिम सातमे शतके कह्यु यावत् एकात पण्डित थावाछा । तएणतेअण्णउत्थिया । तिवारे ते अन्ययूथिक परमती । ते थेरे भगवते एववयासी । ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहे । केणकारणेणअज्जो । किसे कारणे अहोआर्यो । तुज्झेदिणगेण्हह जावदिण साइज्जह । तुम्हे दीधा ग्रहाछो यावत् दीधो अनुमोदोछो । तएणतुज्झेदिण गे ण्हमाणा । तिवारे तुम्हे दीधो ग्रहताथका । जावएगतपडियायाविभवह । यावत् एकात पण्डित थाओछो । तएणतेथेराभगवंतो । तिवारे ते स्थविर भ गवन्त । तेअण्णउत्थिए एववयासी । ते अन्ययूथिक प्रते इम कहे ते निर्ग्रन्थ उत्तर वाक्य कहेछे—अम्हेणअज्जोदिज्जमाणेदिन्ने । अमे अहोआर्यो ! देवामा

दत्तत्वादि समवसेय मिति. अथ दीयमान मदत्त मित्यादे र्जवन्मतत्वा द्यूयमेवा सयतत्वादिगुणा इत्यावेदनाय; न्ययूथिका न्प्रति स्थविरा प्रा

सिरिज्जमाणे निसिठे अम्हेणं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहग असंपत्त एत्थणं अंतरा केइ अवहरेज्जा अम्हेण तं नोखलु गाहावइस्स तएणं अम्हे दिस्स गिरहामो दिस्सं नुजामो दिस्स साइज्जामो तएणं अम्हे दिस्स गिरहमाणा जाव दिस्सं साइज्जमाणा तिविह तिविहेणं सजय जाव एगतपडियायावि नवामो । तुज्झेणं अज्जो ! अप्पणाचेव तिविहं तिविहेण असंजय जाव एगंतवालायावि नवह , तएणं ते अण

एकमसम्प्राप्त मत्रा न्तरा कश्चि दपहरे दस्माक तन्नो खलु गृहपते, स्ततो वय दत्त गृह्णामो याव द्दत्त स्वदामहे, ततो वय दत्त गृह्णन्तो याव द्दत्त स्वदन्त स्त्रिविध त्रिविधेन सयत (प्रभृति) याव देकान्तपण्डिता श्चापि नवाम. ॥ यूय मार्या । आत्मना चैव त्रिविध त्रिविधेना सयताविरत (प्रभृ

त्या ते दीधो इत्यादिक, जे कह्यु तिहा क्रियाकाल अने निष्ठाकालना अभेदथकी दीयमानपणाने दीधापणो जाणवो। पडिगाहिज्जमाणपडिगाहिए। इम ग्रहवामांड्या ते ग्रह्यो कहिये । णिसिरिज्जमाणेणिसिट्ठे । पात्रमाहे चेपवामांड्यो ते चेप्यु कहिये। अम्हेणअज्जोदिज्जमाणं पडिग्गहगअसपत्त । अम ने अहोआर्यो! देवामांड्या पणि पडघाप्रते हजीनथी पह्यो । एत्थणअतराकेइ अवहरेज्जा। इहा एतला विचाले कोई चोरादिक अपहरेतो ते आहारा दिक । अम्हणंत णोखलुगाहावइस्स । अमारो पणि नही निश्चे ते आहारादिक गाथापतिनो । तएणअम्हेदिस्सगिरहामो दिस्सभुजामो दिस्ससाइज्जा मो । तिवारे अमे दीधो ग्रहाछा दीधो भोगवाछा दीधो अनुमोदाछा । तएणअम्हेदिस्सगिरहमाणा । तिवारे अमे दीधो ग्रहतायका । जावदिस्ससाइज्ज माणा । यावत् दीधो भोगवतायका दीधो अनुमोदतायका । तिविहतिविहेणसजय । त्रिविध त्रिविधेको संयती । जाव एगतपडियायावि भवामो । याव त् एकान्त पण्डित थयाछा, हिवे देवामांड्यो ते अदत्त इत्यादिक तुमारो मतछे तेमाटे तुमेहीज असयतादि दूपण गुणवन्तछो इसो कहवानेकाजे अन्य यूथिक प्रते स्थविर कहेछे—तुज्झेण अप्पणाचेव तिविहतिविहेण असजय विरय जाव एगतबालायाविभवह । तुमे अहोआर्यो! पोतेहीज निश्चे त्रि

॥ मूल ॥

उत्थिया ते थेरे भगवंते एवंवयासी—केणंकारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं जाव एगंतबालयावि भवामो? तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुज्झेण अज्जो! अदिण्णं गिण्हह ३, तएण तुज्झे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबालायावि भवह। तएणं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवंवयासी—केणंकारणेणं अज्जो! अम्हे अदिन्नं गिण्हामो जाव एगंतबालायावि भवामो? तएणं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं

अनुवाद

ति) याव देकान्तबाला श्चापि भवथ तत स्ते ऽन्ययूथिका स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—केन कारणेनार्या। वय त्रिविध त्रिविधेन याव देकान्तबालाश्चापि भवाम? तदा ते स्थविरा भगवन्त स्तानन्ययूथिका नेव मवादिषु—यूंय मार्या। अदत्त गृह्णीथ ३। तदा यूय मदत्त गृह्णन्तो याव देकान्तबालाश्चापि भवथ। तत स्तेन्ययूथिका स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—केन कारणेना र्या। वय मदत्त गृह्णामो याव

॥ भाषा ॥

विध त्रिविधकारी असयती अविरती यावत् एकान्त बालक मूर्ख थाओछो। तणवारे अणउत्थिया तेथेरेभगवते एववयासी। तिवार ते अन्ययूथक ते स्थविर भगवन्त प्रतें इम कहै। केणकारणेणअज्जो। किसेकारणे अहोआर्यो। अम्हेतिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावभवामो। अमे त्रिविध त्रिविधेकारी यावत् एकात बालक मूर्ख थावाछा। तणवारे ते थेराभगवतो ते अण्णउत्थिए एववयासो। तिवारे तेस्थविरभगवन्त ते अन्यतीर्थी प्रतें इमकहै। तुज्झेणअज्जो अदिणंगेण्हह ३। तुमे अहोआर्यो। अदत्त गृहोछो अदत्तभोगवोछो अदत्त अनुमोदोछो। तणवारे तुज्झे। तिवारे तुमे। अदिण्णंगेण्हमाणा। अदत्त ग्रहताथका। जाव एगतबालायाविभवह। यावत् एकान्त बालक मूर्ख थाओछो। तणवारे तेअणउत्थिया तेथेरेभगवते एववयासी। तिवारे ते अन्ययूथिक ते स्थविर भगवन्त प्रतें इमकहै। केणकारणेणअज्जो। किसे कारणे अहोआर्यो। अम्हेअदिण्णगेण्हामो। अमे अदत्त ग्रहोछा। जावएगंतबालायाविभवामो। यावत् एकान्त बालक मूर्ख थावाछा। तणवारे तेथेराभगवतो। तिवारे ते स्थविर भगवन्त। ते अणउत्थिए एवंवयासी। ते अन्यतीर्थीओप्रते इमकहै। तुज्झेणअज्जोदिज्जमाणे अदिण्णे। तुमे आर्यो। देवामाड्यो ते अणदीधो ग्रहोछो। तचेवजावगाहावइस्सण तणोखलुत तुज्झ। तिमहीज यावत् ते अश्वा

॥ मूल ॥

वयासी—तुज्झेणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने तचेव जाव गाहावइस्सणं तं नोखलु तं तुज्झे तएणं तुज्झे अदिन्नं गिण्हह तचेव जाव एगंतबालयाविभवह। तएणं ते अण्णउत्थिया थेरे भगवंते एववयासी—तुज्झेणं अज्जो तिविहं तिविहेण अस्संजय जाव एगंतबालयावि भवह । तएणं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एववयासी—केणंकारणेणं अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबालयावि भवामो ? तएणं ते अण्णउत्थिया

॥ अनुवाद ॥

देकान्तबाला अपि भवाम । तत स्ते स्थविरा भगवन्त स्ता नन्य यूथिका नेव मवादिषु यूयं मार्या । दीयमान मदत्तं तच्चैव याव द्गृहपते स्त न्न खलु त द्युष्माक ततो यूय मदत्त गृह्णीथ तच्चैव याव देकान्तबाला अपि भवथ । तदानी ते न्ययूथिका स्तान् स्थविरान् भगवत एव मवादिषु—यूय मार्या । त्रिविध त्रिविधेना सयत (प्रभृति) याव देकान्तबाला अपि भवथ, तत स्ते स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिषु.—कन कारणे नार्या । वय त्रिविध त्रिविधेन याव देकान्तबाला अपि भवाम ? तदा ते न्ययूथिका स्तान् स्थविरान् भगवत एव

॥ भाषा ॥

टिक गृहस्थनो पणिनहीं निश्चे अन्नादिक तुम्हारो स्यामाटे क्रियाकालने निष्ठाकालनाभेद पडवाथकी ते भेद नथी तेमाटे । तएणतुज्झेअदिण गेण्ह ह। तिवारे तुम्हे अणदीधो ग्रहाछो। तचेवजाव एगतबालयाविभवह। तिमहीज सर्व कहवो यावत् एकान्त बालक मूर्खथाओछो। तएण तेअण्णउ त्थिया ते थेरे भगवते एववयासी। तिवारे ते अन्यतीर्थिक परमती ते स्थविर भगवन्तप्रते इम कहे। तुज्झणअज्जोतिविह तिविहेण असंजय जाव एगत बालायाविभवह। तुम्हे अहोआर्यो त्रिविध त्रिविधेकरी असयत यावत् एकात बालक मूर्ख थाओछो। तएणतेथेरा भगवतो। तिवारे ते स्थविरभगवत। ते अण्णउत्थिए एववयासी। ते अन्यतीर्थीप्रते इमकहे। केणकारणेणअज्जो। किसेकारणे अहोआर्यो। अम्हेतिविह तिविहेण। अमे त्रिविधत्रिविधेकरी। जावएगतबालायाविभवामो। यावत् एकान्त बालक मूर्खथावाछां। तएणतेअण्णउत्थिया थेरे भगवते एववयासी। तिवारे ते अन्ययूथिक स्थविर भगवत प्रतें इमकहे। तुज्झेणअज्जोरीयरीयमाणापुढविपिच्चेह अभिहणह। तुमे अहोआर्यो। रीति कहिये गमन तेप्रतें करताथका एतले मार्गे चालताथका ए

॥ टीका ॥

इ –तुज्भेण अज्जो ! अप्पणा चेवे त्यादि ॥ रीयंरीयमाणत्ति ॥ रीत गमनं रीयमाणा गच्छन्तो गमनं कुर्वाणा इत्यर्थ ॥ पुढविपेच्चेहत्ति ॥ पृथिवी आक्रामयथेत्यर्थं ॥ अभिहणहत्ति ॥ पादाभ्या माभिमुख्येन हथ ॥ वत्तेहत्ति ॥ पादाभिघातेनैव वर्त्तयथ श्लक्ष्णता नयथ ॥ लेसेहत्ति ॥ श्लेषयथ भू म्या श्लिष्टान् कुरुथ ॥ संघाएहत्ति ॥ संघातयथ संहतान् कुरुथ ॥ संघट्टेहत्ति ॥ संघट्टयथ स्पृशथ ॥ परितावेहत्ति ॥ परितापयथ समता ज्जातस न्तापान् कुरुथ ॥ किलामेहत्ति ॥ क्लमयथ मारणान्तिकसमुद्घात गमयथे त्यर्थ ॥ उवद्दवेहत्ति ॥ उपद्रवयथ मारयथेत्यर्थ ॥ कायवत्ति ॥ काय

॥ मूल ॥

ते थेरे भगवंते एवंवयासी–तुज्भेणं अज्जो ! रीयंरीयमाणा पुढवीं पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उवद्दवेह । तएणं तुज्भे पुढवीं पेच्चमाणा अभिहणमाणा जाव उवद्दवेमाणा ति विहं तिविहेणं असंजय अविरय जाव एगंतवालायावि भवह । तएणं तेथेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए

अनुवाद

भवादिषु–यूय मार्या । रीत रीयन्त पृथ्वी माक्रमथ हथ वर्त्तयथ श्लेषयथ संघातयथ संघट्टयथ परितापयथ क्लामयथो पद्रवयथ, ततो यूय पृथ्वी माक्रमन्तो ऽभिघ्नन्तो याव दुपद्रवयन्त स्त्रिविध त्रिविधेना संयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तवाला श्चापि भवथ । तत स्ते स्थवि

॥ भाषा ॥

तले पृथिवीप्रतें आक्रमोछो पगाकरी हणोछो । वत्तेह लेसेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह । पगाकरी खडीछो भूमिसेती लगाडीछो एकत्र ढावोछो फरसोछो परितापोछो मारणान्तिकसमुद्घात करोछो मारोछो । तएणतुज्भेपुढविपेच्चेमाणा अभिहणमाणा जावउद्दवेमाणा । तिवारे तुमे पृथिवी प्रतें आक्रमताथका पगाकरी हणताथका यावत् मारताथका । तिविहतिविहेणअसंजय अविरय जाव एगतवालायाविभवह । त्रिविध त्रिविधेकरी असयती अविरती यावत् एकान्त वालक मूर्ख थाओछो । तएण ते थेरा भगवंतो । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । ते अण्णउत्थिया एववयासी । ते अन्यतीर्थिकप्रतें इम कहै । णोखलुअज्जोअम्हे रीयं रीयमाणा पुढवीपेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो । नही निश्चे अहोआर्यो । अमे मार्गे गमन करताथका पृथिवीप्रते आक्रमाछा पगाकरी हणाछा नही यावत् माराछा नही । अम्हेणअज्जो रीयं रीयमाणा कायवा जोयवा रीयवा पडुच्च देसदेसे

॥ टीका ॥

शरीर प्रतीत्यो च्चारादिकायकार्य मित्यर्थ ॥ योगवत्ति ॥ योग ग्लानवैयावृत्त्यादिव्यापार प्रतीत्य ॥ रियवापडुच्चत्ति ॥ ऋत सत्यं प्रतीत्या प्काया दिजीवसंरक्षणलक्षण सयम माश्रित्येत्यर्थ ॥ देस देसेण वयामोत्ति ॥ प्रभूताया पृथिव्या ये विवक्षितादेशा स्तै व्रजामो नाविशेषेणे र्यासमितिपरा यणत्वेन सचेतनदेशपरिहारतो ऽचेतनदशै व्रजाम इत्यर्थ ॥ एव पदेस पदेसेण वयामो ॥ इत्यपि नवर देशो भूमे मंहत् खण्ड, प्रदेशस्तु लघु

॥ मूल ॥

एववयासी नोखलु अज्जो ! अम्हे रियरियमाणा पुढवीं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो अम्हेणं अज्जो ! रीयंरीयमाणा कायंवा जोगंवा रियंवा पडुच्च देसंदेसेण वयामो पदेसं पदेसेणं वयामो तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पदेस पदेसेण वयमाणा नो पुढवीं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उवद्दवेमो तएणं अम्हे

॥ अनुवाद ॥

रा भगवन्त स्ता नन्यपूथिका नेव मवादिपु–नखलु वय रीय रीयन्तः पृथ्वी माक्रमामो याव दुपद्रवामो वय मार्या । रीत रीयन्त. कायवा योगवा ऋतवा प्रतीत्य देश देशेन व्रजाम प्रदेश प्रदेशेन व्रजाम स्तेन वय देश देशेन व्रजन्ता प्रदेश प्रदेशेन व्रजन्तो नो पृथ्वी माक्रमामो जिहामो याव दुपद्रवाम स्ततो वय मार्या । पृथ्वी मनाक्रमन्तो ऽनभिघ्नन्तो याव दनुपद्रवन्त स्त्रिविध त्रिविधेन याव देकान्तपण्डिता

॥ भाषा ॥

ण वयामो पदेसपदेसेण वयामो । अमे ण वाक्यालंकारे, अहोआर्यो । मार्ग गमनकरताथका ,कायवत्ति, काय कहिये शरीर एतावता उच्चारादिक का यआश्री तथा ,जोयवत्ति, जोग कहिये ग्लान वैयावृत्यादि व्यापार आश्री तथा रिय कहिये ऋत सत्यप्रतें ते स्यू ? अप्कायादि जीव राखिवा रूपसं यमआश्री इत्यर्थ घणी भूमिकाना जे विवक्षित देशछे तिहा वयामो कहिये चालाछा ईर्यासमित तत्परथका सचेतनदेश परिहरो अचेतन देशे जावाछा इत्यर्थ इम ण पणि इमज कहवो, एतलोविशेष देश ते भूमिना मोटाखण्ड प्रदेश ते भूमिना नान्हाखण्ड इति । तएणंअम्हेदेसदेसेणंवयमाणापदेस पएसेण वयमाणा । तिवारे अमे देशप्रतें देशेकरी तथा प्रदेशेंकरी जाताथका । णोपेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो । नही पृथिवीप्रतें अतिक्रमाछा पगाकरी ह यावत् मारानछा । तएणंअम्हेपुढविंअपेच्चेमाणा । तिवारे अमे पृथिवी अन आक्रमता थका । अणभिहणमाणा जावअणुद्दवेमाणा । नही पगाकरी हण

॥ मूल ॥

पुढवीं अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय जाव एगंतपंडियायावि
भवामो। तुज्झेणं अज्जो ! अप्पणाचेव तिविहं तिविहेणं असंजय जाव वालायावि भवह । तएणं ते अस्स
उत्थिया थेरे भगवंते एवंवयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेण एगंतवालायावि भवा
मो ? तएण तथेरा भगवंतो अस्सउत्थिए एवंवयासी—तुज्झेणं अज्जो ! रीयंरीयमाणा पुढवीं पेच्चेह जाव

॥ अनुवाद ॥

थापि भवथ । तत स्ते न्यथूथिका
थापि भवामः । यूय मार्या ! आत्मना चैव त्रिविध त्रिविधेना सयताविरत (प्रभृति) याव देकान्तवाला थापि भवथ । तत स्ते स्थविरा भग
स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिपु —केन कारणे नार्या ! वय त्रिविध त्रिविधेन याव देकान्तवाला थापि भवाम ? तत स्ते स्थविरा भग
वन्त स्तानन्यथूथिका नेव मवादिपु—यूय मार्या ! रीत रीयन्त. पृथ्वी माक्रमथ याव दुपद्रवयथ ततो यूय पृथ्वी माक्रमन्तो याव दुपद्रवन्त

॥ भाषा ॥

थाछो, हि
माछो तायका यावत् नहो मारतायका। तिविहतिविहेण जाव एगतपडियायाविभवामा । त्रिविध त्रिविधेकरो यावत् एकान्त पण्डित अमे थाछो, हि
वे उत्तर्योगकारी अमारो परे एहांने गमन नथी इसा अभिप्रायथकी त स्थविर ते अन्ययूथिकप्रते कहेछे—तुज्झेणअज्जोअप्पणाचेवतिविहतिविहेण असजय
जाव एगतबालायाविभवह । तुमे अहोआर्यो । पोतेहीज त्रिविध त्रिविधेकारी असयती यावत् एकांत बालक मूर्ख थावोछो। तएण ते अण्णउत्थिया थेरे
भगवते एववयासो । तिवारे ते अन्ययूथिक परमती स्थविर भगवन्तप्रतें इम कहेछे—केणकारणेणअज्जा । किसे कारणे अहोआर्यो । अम्हेतिविहतिवि
हेण जावएगतबालायाविभवामो । अमे त्रिविध त्रिविधेकरी यावत् एकांत बालक मूर्ख थावाछा। तएण ते थेराभगवतो तेअण्णउत्थिए एववयासी । ति
वारे ते स्थविर भगवन्त ते अन्ययूथिक प्रते इमकहे। तुज्झेणअज्जो रीय रीयमाणा पुढवीपेच्चेह जाव उवद्दवेह । तुमे अहो आर्यो । मार्गगमनकरतायका
जातायका इत्यर्थ, पृथिवीप्रते आक्रमोछो यावत् मारोछो एतलालगे कहवो। तएण तुज्झेपुढवीपेच्चेमाणा । तिवारे तुमे पृथिवी आक्रमतायका। जावउवद्द
वेमाणा । यावत् मारतायका । तिविहं तिविहेण जाव एगतबालायाविभवह । त्रिविध त्रिविधेकारी यावत् एकांत बालक मूर्ख थावोछो। तएण ते अण

॥ टीका ॥ तर मिति, अथो क्त गुणयोगेन नास्माक मिवैषां गमन मस्ती त्याशङ्कावत स्थविरा यूयमेव पृथिव्याक्रमणादितो ऽसंयतत्वादिगुणा इति प्रतिपा

॥ मूल ॥ उव्वद्दवेह तएणं तुज्झे पुढवीं पेच्चेमाणा जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतवालायावि भवह। तएणं ते अण्णउत्थिया थेरे भगवंते एवंवयासी–तुज्झेणं अज्जो ! गममाणे अगए वीइक्कमिज्जमाणे अवी इक्कंते रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते तएण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी–नोखलु अज्जो! अम्हे गममाणे अगए विइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते। अम्हेणं अज्जो!

अनुवाद: स्त्रिविध त्रिविधेन याव देकान्तवाला श्चापि भवथ, तदा त न्ययूथिका स्ता स्थविरान् भगवत एव मवादिषु–यूयं मार्या ! गच्छन्तो ऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर सम्प्राप्तुकामा असम्प्राप्ता, स्तदा स्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव मवादिषु–नखलु मार्या ! वय गच्छन्तो ऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर याव दसम्प्राप्ता, वय मार्या ! गच्छन्तो गता व्यतिक्रमन्तो व्यतिक्रान्ता राजगृह

॥ भाषा ॥ उत्थिया थेरेभगवंत एववयासी। तिवारे अन्ययूथिक स्थविर भगवतप्रते इम कहे। तुम्हें णअज्जो गममाणे अगते। तुम अहो आर्यो। जातायका अणगया। वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कते। व्यतिक्रमतायका अव्यतिक्रम्या। रायगिहणयरसपाविउकामअसपत्ते। राजगृह नगरप्रते पामवानी वाच्छाये अणपाम्या। तएण तेथेराभगवन्तो। तिवारे ते स्थविरभगवन्त। ते अणउत्थिए एववयासी णो खलुअज्जो। ते अन्यतीर्थीप्रते इम कहे नहीं निश्चे अहो आर्यो। अम्ह गममाणे अगते। अमे जातायका अणगया। वीइक्कममाणे अवीइक्कते। व्यतिक्रमतायका अव्यतिक्रम्या। रायगिहणयर जाव असपत्ते। राजगृह नगर प्रते यावत् अणपाम्या। अम्हेणअज्जो गममाणेगए। अमे अहोआर्यो गमनकरतामाडो ते गमनकीधो। वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कते। व्यतिक्रमतामाडो ते व्यतिक्रम्यो। रायगिहणयर सपाविउकामे सपत्ते। राजगृहनामा नगरप्रते पामवानी वाच्छाये समाम थया अने। तुम्हेणअज्जोअप्पणाचेव गममाणे तुमे अहो आर्यो पातेहीज निश्चे जातामाडो ते गणगयो। वीइक्कमिज्जमाणे अवीइक्कते। व्यतिक्रमतामाडो ते अव्यतिक्रम्यो। रायगिहणयर जाव अ

॥ टीका ॥

दनाया न्ययूथिका नप्रत्याहु ॥ तुज्झेणंअज्जोइत्यादि ॥ गइप्पवायंति ॥ गति प्रोद्यते प्ररूप्यते यत्र तद्गतिप्रवाद गतेर्वा, प्रवृत्ते क्रियाया प्रपात प्रपतन सम्भव प्रयोगादि ष्वर्थेपु वर्त्तन गतिप्रपात स्तत्प्रतिपादक मध्ययन गतिप्रपात तत्प्रज्ञापितवन्तो गतिविचारप्रस्तावादिति, अथ गतिप्र पातमेव भेदतो ऽभिधातु माह ॥ कइविहेणं मित्यादि ॥ पञ्चगइत्ति ॥ इह गतिप्रपातभेदप्रक्रमे य द्गतिभेदाभिधान त द्गतिधर्मत्वा त्प्रपातस्य, ग तिभेदभणने गतिप्रपातभेदा एव भणिता भवन्तीति न्याया दवसेय, तत्र प्रयोगस्य सत्यमन प्रभृतिकस्य पञ्चदशविधस्य गति प्रवृत्ति प्रयोगगति-॥

॥ मूल ॥

गममाणे गए वीइक्कमिज्जमाणे वीइक्कंते रायगिहं नगर सपाविउकामे संपत्ते । तुज्झेणं अप्पणाचेव गम माणे अगए विइक्कमिज्जमाणे वीइक्कंते रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते । तएणं तेथेरा भगवंतो अन्नउत्थिए एवं पडिहणंति एव पडिहणेत्ता गइप्पवायनामं अज्झयण पन्नवइंसु, कइविहेण भंते ! गइप्पवाए पन्नत्ते

अनुवाद

नगर सम्प्राप्तुकामा सम्प्राप्ता । यूय मार्या । स्वय चैव गच्छन्तोऽगता व्यतिक्रमन्तो ऽव्यतिक्रान्ता राजगृह नगर याव दसम्प्राप्ता स्तदानी तेस्थविरा भगवन्त स्ता नन्ययूथिका नेव प्रतिघ्नन्ति प्रतिहत्वा गतिप्रवाद नामा ध्ययन प्रज्ञापितवन्त –कतिविधो भदन्त । गतिप्रवाद प्रज्ञप्त

॥ भाषा ॥

मपत्ते। राजगृह नगर यावत् असम्प्राप्तथया । तएणं तेथेरा भगवतो । तिवारे ते स्थविर भगवन्त । अन्नउत्थिए एवपडिहणंति २ त्ता । अन्यजूथिक पर मतो प्रत-इम प्रति हणे जीपे इम प्रति हणीने तिणि प्रस्तावे तिणे स्थविरे । गइप्पवायनाम अज्झयण पन्नवइंसु । गतिप्रवाद नाम अध्ययन परुव्यं। गति प्ररूपिये जिहा ते गतिप्रवाद कहिये तत्प्रतिपादक अध्ययन कह्यो । कइविहेणंभंतेगइप्पवाए प० । कितलेभेदे हेभगवन् । गतिप्रपात कह्यो इतिप्रश्न उत्त र । गोयमा पचविहेगइप्पवाए प० तजहा । हेगौतम पांचभेदे गतिप्रपात कह्यो ते कहेछे—पओगगती ततगती बधणछेयणगतो उववायगती विहायग तो । इहा गतिप्रपात भेद प्रक्रमने विषे जे गतिभेद कह्यु ते गति धर्मपणा थकी प्रपातने तेमाटे गतिभेद कह्या प्रपातभेद होजकह्याहवे इसान्यायथकी जाणवो तिहा प्रयोग जे सत्यमन प्रभृति पनरे भेदे तेहनो गति कहिये प्रवृत्ति ते प्रयोगगति कहिये १ तत कहता ग्राम नगरादिप्रते जाइवाने प्रवृत्ति

ततगइत्ति ॥ ततस्य ग्रामनगरादिकं गन्तु प्रवृत्तत्वेन' तद्या प्राप्तत्वेन तदन्तरालपथे वर्त्तमानतया प्रसारितक्रमतयाच विस्तारं गतस्य गति स्तत गति स्ततो वा; ऽवधिभूतग्रामादे र्नगरादौ गति प्राप्ततत्वेन ततगइ „ प्रसिद्ध स्थाने इत. सूत्रा दारभ्य प्रज्ञापनाया षोडशम प्रयोगपद "से त्तविहायगई „ एतत्सूत्र याव द्वाच्य मेतदेवाह ॥ एत्तोइत्यादि ॥ तदेव-बंधणच्छेयणगइ उववायगइ विहायगइ इत्यादि „ तत्र बन्धनच्छेदनगति बन्धनस्य कर्म्मण सम्बन्धस्यवा; च्छेदने ऽभावे गति र्जीवस्य शरीरात् शरीरस्यवा, जीवा द्बन्धनच्छेदनगति, उपपातगतिस्तु त्रिविधा क्षेत्रभवनो भवभेदा तत्र नारकतिर्यङ्नरदेवसिद्धाना यत् स्वक्षेत्रे उपपातायोत्पादाय गमन सा क्षेत्रोपपातगति, यथ नारकादीनामेव स्वभवे उपपातरूपा ग

? गोयमा! पचविहे गइप्पवाए पणत्ते, तंजहा पओगगई ततगई बंधणच्छेयणगई उववायगई विहायगई

– गोतम ! पञ्चविधो गतिप्रवाद प्रज्ञप्त स्तद्यथा-प्रयोगगति स्ततगति बन्धनच्छेदनगति रुपपातगति र्विहायोगति . इत आरभ्य प्रयोगपद

पणै ते ग्रामापणादिको ते अन्तराल मारगे वर्त्तमानपणे प्रसारित क्रमे करी विस्तारगतिनो गति ते ततगति अथवा तत कहिये अवधिभूत ग्रामादिक थकी नगरादिकने विषे गति ते ततगति २ इहां सूत्रमाहे पयोगगति पद निश्चयनो पछे लिख्यूं एत्तोआरभ्यत्यादिक, पर पयोगमा ततगती ये स्थान कनेविषे एत्तोआरभ्यत्यादि पाठछे, ए सूत्रथकी आरभ्या पन्नवणानेविषे सोलमो प्रयोगपद निरवशेष कहवु कह्यो । जावसेत्तविहायगती । ए सूत्रलगे कहवो ते कहेछे—एत्तोइत्यादि, ते इम , बंधणच्छेयणगई उववायगई विहायगई इत्यादि, तिहा बंधन कहिये कर्म अथवा सम्बन्ध तेहने छेदनेकरीने ज गति जीवने शरीरथी अथवा शरीरने जीवथको ते बन्धन छेदन गति कहिये ३ तथा उपपातगति तीनभेदे क्षेत्र १ भव २ नो भवरूपा ३ तिहा ना रकी तिर्यञ्च मनुष्य देव सिद्धनोज पोताना क्षेत्रने विषे उपपात कहिये उपजिवो तेहने अर्थे गमनतिका क्षेत्रोपपातगति १ जे नारकादिकने ठाम पो ताना भवनेविषे उपपातरूपगति तिका भवोपपातगति २ जे सिद्ध तथा पुद्गलनो गमनमात्र ते भवोपपातगति ३ विहायगति फरसता चाले इत्यादिक

॥ टीका ॥

ति सा ऋजोपपातगति, यच्च सिद्धपुद्गलयोर्गमनमात्रं सा नोभवोपपातगति, विहायोगतिस्तु स्पृशद्गत्यादिका नेकविधेति ॥ इत्यष्टमशते सप्तम ॥ ७ ॥ अनन्तरोद्देशके स्थविरा न्प्र त्यन्ययूथिका प्रत्यनीका उक्ता अष्टमेतु गुर्वादिप्रत्यनीका उच्यन्त इत्येव सम्बद्धस्या स्य ८ सूत्र ॥ रायगिहेत्यादि ॥ तत्र ॥ गुरूणति ॥ गुरून् तत्त्वोपदेशकान् प्रतीत्या श्रित्य प्रत्यनीकामिव प्रतिसैन्यमिव प्रतिकूलतया येते प्रत्यनीका, तत्रा चार्योऽर्थव्याख्याता, उपाध्याय सूत्रदाता' स्थविरस्तु जातिश्रुतपर्याये स्तत्र जात्या षष्टिवर्षजात श्रुतस्थविर समवायधर पर्यायस्थविरो विंशतिवर्षपर्याय एतत्प्रत्यनीकता चैव-जचाईहिं अवण विभसइवहइनयाविउववाए ॥ अहिउंच्छिद्दप्पेही पगासवाइअणणुलोमा ॥ १ ॥ अहवावि

॥ मूल ॥

एत्तो आरब्भ पजगपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव सेत्तंविहायगई सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसयस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ७ ॥ रायगिहे नयरे जाव एवंवयासी—गुरूण भंते! पडुच्च कइ पडि णीया पणत्ता ? गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता तंजहा—आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरप

अनुवाद

निरवशेष भणितव्य याव तस्मात्ता विहायोगति स्तदेव भदन्त भदन्त ॥ इति अष्टम शते सप्तम ८ ॥ ७ ॥ राजगृहे याव देव मवादीत्-गुरू न्प्रतीत्य भ० । कतिप्रत्यनीका प्रज्ञप्ता ? गौ० । त्रय. प्रत्यनीका. प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आचार्यप्रत्यनीक उपाध्यायप्रत्यनीक

॥ भाषा ॥

अनेक प्रकारनी । सेवंभंत २ चि । तहति हेभगवन् । तुम्हकह्यु ते सत्यछै पणि अन्यथा नथी । अट्ठमसयस्ससत्तमओ उद्देसोसम्मत्तो । ए आठमा शत कना सातमा उद्देशानो अर्थ लिख्यो ८ ॥ ७ ॥ पाछिले उद्देशे अन्यदर्शनी स्थविराना प्रत्यनीक कह्या इहां गुरुप्रमुखना प्रत्यनीक क हेछे—रायगिहे जाव एवंवयासी गुरूणभं पडुच्च कइपडिणीया प० । राजगृह नगरनेविषे यावत् इम कहे गुरु कहिये तत्व उपदेशदाता ते प्रते आश्र यीने केतला प्रत्यनीक कहिये प्रतिकूल निन्दक कह्या प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तओपडिणीया प० तं० । हेगौतम तीन प्रत्यनीक कह्या तेकहेछे—आय रिय पडिणीए । आचार्य अर्थ व्याख्याननाकरणहार तेहना प्रत्यनीक १ । उवज्झायपडिणीए । उपाध्याय सूत्रदाता तेहना प्रत्यनीक । थेरपडिणीए । जा

॥ टीका ॥

वएएव उवणसपरस्सदितिएवतु ॥ दसविहवेयावच्चे कायव्वसयनकुव्वति ॥ २ ॥ गईणमित्यादि ॥ गति मानुषत्वादिका प्रतीत्य तत्रै हलोकस्य प्रत्यक्षस्य मानुषत्वलक्षणपर्यायस्य प्रत्यनीक इन्द्रियार्थप्रतिकूलकारित्वात् पञ्चाग्नितपस्विव दिहलोकप्रत्यनीक , परो लोको जन्मान्तर तत्प्रत्यनीक इन्द्रियार्थतत्परो द्विधा लोकप्रत्यनीकश्च चौर्यादिभि रिन्द्रियार्थसाधनपर ॥ समूहणमित्यादि ॥ समूह साधुसमुदाय प्रतीत्य तत्र कुल चन्द्रादिक तत्समूहो गण कौटिकादि स्तत्समूह सङ्घ ' प्रत्यनीकता चैतेषा मवर्णवादादिभि रिति, कुलादिलक्षण चद–एत्यकुलविणेय एगायरियस्ससतई

॥ मूल ॥

णीए । गईणं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया प० ? गोयमा ! तओ पडिणीया प० , तंजहा—इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहलोगपडिणीए । समूहण्णं भंते ! पडुच्च कइ पडिणीया प० ? गोयमा ! तओ

अनुवाद

स्थविरप्रत्यनीक । गति प्रतीत्य कति प्रत्यनीका प्रज्ञप्ता ? गौ० । त्रय प्रत्यनीका प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–इहलोकप्रत्यनीक परलोकप्रत्यनीको द्विधालोकप्रत्यनीक । समूह प्रतीत्य भ० ! कतिप्रत्यनीका प्रज्ञप्ता ? गौ० । त्रय प्रत्यनीका प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–कुलप्रत्यनीको गणप्रत्यनीक स्सङ्घ

॥ भाषा ॥

ति श्रुतपर्यायकरी, ते स्थविर ६० वरसना, श्रुत स्थविर समवायाङ्गना धारक, पर्याय स्थविर २० वरस चारित्रपर्यायवन्त एहना प्रत्यनीक । गईणभंते पडुच्चकइपडिणीया प० । मनुष्यपणा आदिदेइ गति आश्रि हेभगवन् ! ते आश्रयी केतला प्रत्यनीक निन्दक कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तओपडिणीया प० त० । हेगौतम ! तीन प्रत्यनीक कह्या ते कहेछै—इहलोगपडिणीए परलोगपडिणीए दुहलोगपडिणीए समूहणभंते पडुच्चकइपडिणीया पण्णत्ता । इहलोक ते प्रत्यक्ष मनुष्यलक्षण पर्यायनो प्रत्यनीक इन्द्रियार्थ प्रतिकूलकारीपणाथकी पञ्चाग्निसाधक तपस्वीनीपरे इहलोक प्रत्यनीक परलोक जन्मान्तर प्रत्यनीक इन्द्रियार्थ तत्परथकी परलोकनो भयनाशे २ द्विधालोक प्रत्यनीक चोरीप्रमुखेकरी इन्द्रियार्थसाधन ते बेउलोक प्रत्यनीक ३ साधू समवाय ते आश्रयीने प्रत्यनीक केतलेप्रकारे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गो तओपडिणीया प त कुलपडिणीए गणपडिणीए सघपडिणीए । हेगौतम तीनप्रकारे कह्या तेकहेछे कुलतेचन्द्रादिक तेहनो समूह गण कौटिकादिक तेहनो समूह तेसघ तेहनो प्रत्यनीकपणो अवर्ण वादादिके करी कुलादिकनो लक्षण

॥ टीका ॥

जाउ ॥ तिपरकुलाणमिहोपुण सावेक्खाणगणोहोइ ॥ १ ॥ सव्वोविनाणदसण चरणगुणविभूसियाणसमणाण । समुदाउपुणसघो गणसमुदाउत्तिकाऊ ण ॥ २ ॥ अणुकंपमित्यादि ॥ अनुकम्पा भक्तपानादिभि रुपष्टम्भ स्तां प्रतीत्य, तत्र तपस्वी क्षपक , ग्लानो रोगादिभि रसमर्थ , शैक्षो ऽभिनव प्रव्रजित, एते ह्यनुकम्पनीया भवन्ति तदकरणाकारणाभ्याञ्च प्रत्यनीकतेति ॥ सुयणमित्यादि ॥ श्रुत सूत्रादि तत्र सूत्र व्याख्येय, अर्थ स्तद्व्याख्यान

॥ मूल ॥

पडिणीया प०, तंजहा—कुलपडिणीए गणपडिणीए संघपडिणीए । अणुकंपं पडुच्च भंते! कइ पडिणीया पुच्छा गोयमा तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए सेहपडिणीए। सुयण्णं भंते! पडुच्च पुच्छा गोयमा! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए

अनुवाद

प्रत्यनीक । अनुकम्पा प्रतीत्य पृच्छा, गौ० । त्रय प्रत्यनीका॰ प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—तपस्विप्रत्यनीको ग्लानप्रत्यनीक शैक्षप्रत्यनीक. । श्रुत प्रतीत्य पृच्छा, गौ० । त्रय प्रत्यनीका॰ प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सूत्रप्रत्यनीको ऽर्थप्रत्यनीक स्तदुभयप्रत्यनीक । भाव प्रतीत्य पृच्छा, गौ० । त्रय प्रत्यनीका

॥ भाषा ॥

कहेछे—एत्थ कुल विन्नेअ एगायरियस्स संतईजाउ। तिण्ह कुलाणमिहो पुण सावेक्खाण गणोहोइ ॥ १ सव्वोविनाण दसण चरण गुण विभूसियाण समणा ण । समुदाओ पुणसंघो गुणसमुदाओत्तिकाऊण॥२॥ एतीनना प्रत्यनीक निदक ३ । अणुकंपपडुच्चपुच्छा गो तओपडिणीया प० त० तवस्सिपडिणीए गिला णपडिणीए सेहपडिणीए। अन्नादिक करी उपष्टभदीजे ते अनुकपा तेआश्री केतला प्रत्यनीक इतिप्रश्न हे गौतम तीनप्रत्यनीक कह्या तेकहेछे—तपस्वीने भक्तपानादि नदे १ ग्लानते रोगादिके करी असमर्थ थया तेहने औषधादि नदे २ शिष्यते नवदीक्षित तेहने भक्तपानादि नदे ३ एसघलाई अनु कपनीय छ्ते ते अकारण अकारण तेण करी प्रत्यनीक पणो कहवा । सुअणभंतेपडुच्चपुच्छा गो तओपडिणीया प त सुअपडिणीए। सिद्धांत हेभगवन् ते आश्रयीने केतला प्रत्यनीक कह्या इतिप्रश्न हे गौतम तीन प्रत्यनीक कह्या तेकहेछे— सूत्रते व्याख्येय तेहनो प्रत्यनीक निदक १ । अत्थपडिणीए तदुभय प डिणीए भावणंभंतेपडुच्चपुच्छा गो तओपडिणीया प त णाणपडिणीए । अर्थते व्याख्यान निर्युक्त्यादि तेहनो प्रत्यनीक २ ते सूत्र अर्थवेऊ रूप तेहनो प्रत्य

टीका ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] इत्यादि [illegible] ॥ भावमित्यादि ॥ [illegible] पुन [illegible] ॥ [illegible] ॥ कइविहेत्यादि ॥ [illegible]

मूल ॥ भावओ णं भंते ! पडुच्च पुच्छा, गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तंजहा—नाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए । कइविहे णं भंते ! ववहारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तंजहा—आगमे सुए

अनुवाद [illegible]

भाषा ॥ [illegible]

॥ टीका ॥

परिच्छिद्यन्ते ऽर्था अनेने त्यागम केवलमन पर्यायावधिपूर्वचतुर्दशको दशकनवकरूप, स्तथा श्रुतं शेष माचारप्रकल्पादि नवादिपूर्वांशाश्च श्रुतत्वे प्यतीन्द्रियार्थेषु विशिष्टज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वा दागमव्यपदेश केवलवदिति, तथा आज्ञा यद्गीतार्थस्य पुरतो गूढार्थपदैः देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनाया तीचारालोचन मितरस्यापि तथैव शुद्धिदान, तथा धारणा गीतार्थसविग्नेन द्रव्याद्यपेक्षया यत्रापराधे यथा या विशुद्धिः कृता तामवधार्य यदन्य स्तत्रैव तथैव तामेव प्रयुक्त इति, वैयावृत्यकरादेर्वा, गच्छोपग्रहकारिणो ऽशेषानुचितस्य प्रायश्चित्तपदाना प्रदर्शितानां धरणमिति, तथा जीत द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिसेवानुवृत्त्या सहननधृत्यादिपरिहाणि मवेत्य यत्प्रायश्चित्तदान योवा, यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्त कार

॥ मूल ॥

आणा धारणा जीए, जहासे तत्थ आगमेसिया आगमेणं ववहारं पठवेज्जा, णोय से तत्थ आगमेसिया ज

॥ भाषा ॥

जे ज्ञान विशेष ते पणि व्यवहार कहिये तिहा पहिलो आगमव्यवहार। आगमे सुण। आगम्यते कहिये जाणिये इणेकरी पदार्थ ते आगम १ साभलीये ते सुत २। आणा धारणा जीए। आदेशकरी दीजे ते आज्ञा ३ धारिये ते धारणा ४ जीतशब्दे आचार ५ तिहा पहिलो जे आगमव्यवहार ते केवलज्ञानी १ मनपर्यवज्ञानी २ अवधिज्ञानी ३ चउदह पूर्वधर ४ दर्श पूर्वधर ५ नव पूर्वधर ६ एहनो व्यवहार, ते छ प्रकारनो तिहा पहिलो केवलीना सहण हुतो पहिले आलोचना केवली कन्हे लेवी तेहने अभावे मनपर्यायज्ञानी इम पाछिला पाछिलाने अभावे आगिलो आगिलो लेवो तिहा केवली प्रमुख आगम व्यवहारी समस्तअतिचार आपणेज जाणे तेह पासे गया ते आगमव्यवहारी आलोयणहारने कहे तू कहि सगला अतिचार जात इसा कहे छते ते जाणतो आपणो दोष मायायेकरी गोपवे तिवारे तेहने प्रायश्चित्त न आपे गने एहवो कहै अनेरे ठाम जाय सोधकारि तथा जेहने चित्ते न आवे दोष कहिये अतिचार स्वभाव छतो न पायो परमायाथको न कहे इम नही तेहने केवलज्ञानना धरणहार दूषण चितारीने कहै अने मायावीने न कहे जाणे एहने काह्यो पणि पछे फोकटहस्ये तेह भणी न कहै इहा चउदह पूर्वधरने यद्यपि परोक्ष ज्ञानछे तो पणि उपयोग दीधे केवली कहे तेतलो ए पणि कहे इहा काई कहस्ये आगमव्यवहारी जाणे तो तेहने कहिये मुझने आलोयणथ्या तिवारे अतिचार ते आपणही कही आलोयण

आपस्थें तेहने उत्तर इम कहिवे ते कडाकह्यो ए आलोयणे घणा गुणछे सम्यग्आराधना थाय अने आलोयणहारने उत्साहभणी गुरु इमकहै वत्स तू ध
न्य भाग्यवन्त इम मानछांडो आपणा आत्माने हित भणी रहस्य प्रगट करेछै ए वात महा दोहिलीछे इम कहे ते समस्तप्रकारे निःशल्य हुवे जे गुरु प्रा
यश्चित्त दे ते हर्षितथका करे इम करतो थोडेकाले निर्वाणफल पामे १ ॥ हिवे श्रुतव्यवहार कहै आचार प्रकल्प निशीथ ते आदि जेहने इम इग्यारह
अंग नव पूर्वहूंतो शेष पूर्व पणि श्रुतव्यवहारमाहि सगलाकह्या तथा नवादि पूर्वने पणि श्रुतपणोछे तो पणि अतीन्द्रिय अर्थनेविषे विशिष्टज्ञान हेतुप
णेकरी सातिशय पणाथकी आगमनेविषै कह्या केवलीनोपरे, हिवे श्रुतव्यवहारी जे थाय ते प्रगटपणें आगिलानो अभिप्राय जाणवा भणी त्रिणवार
दूषणवाह करावै एकवारने कह्यि श्रुतव्यवहारी एकूडे मनें आलोयेछे किंवा साचेंमने इसो जाणि न सकै तिणे पहिलीवारने कह्यि इमकहै मुझने नीट
आवती हती तिणे मै न साभल्यो वलो कहो ते बीजीवार करे पछे कहै मै हिवे रूडा धर्यानही वलो कहो त्रीजीवार कह्यि निर्मायी सगलीवार इ

सरीखो कह्यो एहवो जाणी आलोयणदे अने खोटो कहे तो पहिलो तिणने खोटरो प्रायश्चित्त देई पछे आलोयणदे आज्ञाव्यवहार देश आचार्य
सूत्रार्थना आसेविवा हूंतो महा गीतार्थ जङ्घाबल घीणपणा हूंतो विहार कम कर न सकै अलगै देशान्तरे रह्याछे माहोमाहि मिलि न सकै एक
ते माहि प्रायश्चित्त लेवा वाछै अने तेहवा गीतार्थ गीतार्थशिष्यना अभाव हूंतो धारणा कुशल अगीतार्थ अथवा शिष्य तेहने सिद्धान्तरी भाषाय गू
ढार्थ अतिचार आसेवना पदनाडी बीजा आचार्य कन्हे मूकै अने ते आचार्य तेहनो अपराध साम्भलो द्रव्यादि ४ सहनन धृति बलादिक विचारी आ
प तिहां जाय अथवा तिण विध गीतार्थशिष्य तेहने कहो मूकै तेहने अभावि जे आयोछे तेहनेज अतिचार विसोधिकनी मूकै इम आज्ञाव्यवहार २ ॥
हिवे धारणा व्यवहार कहैछै—किणेई गीतार्थ संवेगीये आचार्यें किणही एक शिष्यादिक भणी कोईएक अपराधने विषे द्रव्यादि ४ जोईजे विसुद्ध
दोधीहुवे ते शिष्य गुरुनी दीधो शुद्धि मनमाहि धरीने किणही एकने तेहवे अपराधे तेहीज शुद्धिदे तो इम देताने धारणाव्यवहार तिम उद्धृतपद धरण

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

गत प्रायश्चित्तव्यवहार प्रवर्त्तितो बहुभि रन्यै श्चानुवर्त्तित इति' आगमादीनां व्यापारणे उत्सर्गापवादा वाह ॥जहेत्यादि॥ यथेति यथाप्रकार केवलादीना मन्यतम ॥ से ॥ तस्य व्यवहर्त्तु सवा; उक्तलक्षणो व्यवहार, स्तत्र तेषु पञ्चसु व्यवहारेषु मध्ये तस्मिन्वा; प्रायश्चित्तदानादिव्यवहार काले व्यवहर्त्तव्येवा, वस्तुनि विषये आगमः केवलादि स्याङ्गवे तादृशेनेतिशेष', आगमेन व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिक प्रस्थापयेत् प्रवर्त्तयेत् न शेषै ' आगमेपि षड्विधे केवलेना वन्ध्यबोधत्वा तस्य, तदभावे मन पर्यायेण एव प्रधानतराभावे इतरेणेति, अथ ॥ नो ॥ नेव चशब्दो यदि शब्दार्थ ॥ से ॥ तस्य सवा, तत्र व्यवहर्त्तव्यादा वागम' स्यात् यथा यत्प्रकार ॥ से ॥ तस्य तत्र व्यवहर्त्तव्यादौ श्रुत स्यात् तादृशेन श्रुतेन व्यवहा

॥ मूल ॥

हासे तत्थ सुएसिया सुएण ववहारं पठवेज्जा, णोयसे तत्थ सुए सिया जहासे तत्थ आणा सिया आणाए

अनुवाद

छाया–आगम श्रुत आज्ञा धारणा जीत । यथा तत्रा गम. स्या दागमेन व्यवहार प्रस्थापये न्नच तस्य तत्रा गम. स्या छाया तस्य तत्र श्रुत

॥ भाषा ॥

रूप अथवा धारणा ते इम केई एक वेयावच्चनो करणहार शिष्यछे पणि समस्तछेद श्रुत देइवाने योग्य नही तिवारे तेहने आचार्य प्रसादकरी केत लाएक प्रायश्चित्तना पद उधरीने तेहने कहे ते धरी अनेरा तेह जे पद माहिलो आलोवण आपे ते धारणा ४ ॥ हिवे जीतव्यवहार कहेछे–जिए अपराधैं पूर्वसाधू घणे तपे शुद्धिकरता तिण अपराध ऊपने छते साम्प्रतकाले द्रव्यादि ४ चिन्तवी सघयण धृति बलनी हाणि जाणी जे योग्य तपनो प्र कार प्रायश्चित्त दे ते समय भाषाये जीतगीतार्थ कहिये अथवा जे प्रायश्चित्त जोये आचार्यने गच्छे अधिको ओछो सूत्र थकी प्रवर्त्यो अने घणे अनेरे गीतार्थे ते मान्योहुवे ते रूढजीत कहिये ए पाच व्यवहारमांहि दायआवे तिणे व्यवहारेसहित गीतार्थ थाय ते कन्हे प्रायश्चित्त लीजे पर अगीतार्थ कन्हे लेता दोष उपजे, हिवे आगमादिकने व्यापारणने विषे उत्सर्ग अपराध कहेछे—जहासेतत्थ आगमेसिया आगमेण ववहार पठवेज्जा। यथा प्रका रे केवलादिकने अन्यतम ते व्यवहार अथवा उक्तलक्षण व्यवहार ते पञ्चव्यवहार माहे अथवा तत्थकहिये ते प्रायश्चित्त दानादिव्यवहार कालने वि आगम कहिये केवलीप्रमुख हुवे तो तेहवेज आगमे व्यवहार प्रायश्चित्त दानादिक मते प्रस्थापे प्रवर्त्ते पणि शेषेकरी प्रवर्त्ते नही आगम पणि छ प्रकारे

र प्रस्थापये दिति ॥ इच्चेएहिं ॥ इत्यादिनिगमनं सामान्येन ॥ जहा जहा से ॥ इत्यादितु विशेषनिगमन मिति, एतै र्व्यवहर्तु फलं प्रश्नद्वारेणाह

ववहारं पठवेज्जा, णोयसे तत्थ आणा सिया जहासे तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहार पठवेज्जा, णोयसे तत्थ धारणा सिया जहासे तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पठवेज्जा। इच्चेएहिं पचहिं ववहार पठवेज्जा, तंजहा—आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं। जहा२ से आगमे सुए आणा धारणा जीए

स्या च्छ्रुतेन व्यवहार प्रस्थापये न्नच तस्य तत्र श्रुत स्या द्यथा तस्य तत्राज्ञा स्या दाज्ञयाव्यवहार प्रस्थापये न्नच तस्य तत्राज्ञा स्या द्यथा तस्य तत्र धारणा स्या द्धारणया व्यवहार प्रस्थापये न्नच तस्य तत्र धारणा स्या ज्जीतेन व्यवहार प्रस्थापये दित्येतै पञ्चभि र्व्यवहार प्रस्थापये तद्य

छै ते माहि केवलज्ञानने अवन्य बोध पणाथकी विनाकह्या जाणे तेमाटे तेहथकी प्रायश्चित्त लेवो तेहने अभावे मनपर्यायज्ञानी इम पाछिला पाछिलाने अभावें आगिलो आगिलो लेवो प्रधान तरने अभावें इतर लेवो। णोयसे तत्थ आगमेसिया जहा से तत्थ सुएसिया सुएण ववहार पठवेज्जा णोयसे तत्थसुएसिया। नही जो ते आगमव्यवहार हुवे तो यथाप्रकारे तेहने तिहा श्रुतरूपे तो तेहने श्रुतेकरी व्यवहारप्रतें प्रवर्त्ते श्रुत ते आचार प्रकल्पनादि नव पूर्वतांई श्रुतधर नही जो तिहा श्रुतव्यवहार हुवे तो। जहासे तत्थ आणासिया आणाए ववहार पठवेज्जा। जिम ते तिहां आज्ञाहुवे तो तेहने आज्ञा व्यवहारें करी प्रवर्त्ते प्रायश्चित्त ले। णोयसेतत्थ आणासिया जहासे तत्थ धारणासिया। तेवली आज्ञाव्यवहार न हुवे जिम ते तिहां किणही गीतार्थे किणहीने अपराधनो द्रव्यक्षेत्र कालभाव जाणी प्रायश्चित्तदीधो ते धारणाहुवे। धारणाए ववहार पठवेज्जा णोयसे तत्थ धारणा सिया। तिणे धारणायें करी व्यवहार प्रतें प्रवर्त्ते वलो ते तिहा धारणा व्यवहार न हुवे। जहासे तत्थ जीएसिया। जिम तिहा पुरुष धेर्य विचारी प्रायश्चित्त दीजे ते जीत हुवे। जीएणं ववहार पठवेज्जा। ते जीत व्यवहारेकरी प्रवर्त्ते। इच्चेएहि पचहि ववहार पठवेज्जा त०। इत्यादिक पञ्चप्रकारे करी व्यवहारप्रते पठकहिये प्रस्थापें प्रवर्त्तावे ते कहेंछे—आगमेण१ सुएणं २ आणाए ३ धारणाए ४ जीएण ५। आगमेकरी श्रुतेकरी आज्ञायेंकरी धारणायेंकरी तथा जीतेकरी५।

॥ टीका ॥

॥ सेकिमित्यादि ॥ अथ किं हे भदन्त । भट्टारका आहु: प्रतिपादयति के आगमबलिका उक्तज्ञानविशेषबलवन्त: श्रमणा निर्ग्रन्था: केवलिप्रभृत
य ॥ इच्चेयति ॥ इत्येत द्दृश्यमाण मथवा; इत्येत मिति उक्तरूप मेत प्रत्यक्ष पञ्चविध व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिरूप ॥ सम्मववहरमाणेत्ति ॥
सम्यक्ष्यते व्यवहरन् प्रवर्त्तय न्नित्यर्थ ॥ कयसम्मति ॥ सम्यक् तदेव कथ मित्याह-यदा यदा यस्मि न्यस्मि न्नवसरे यत्र यत्र प्रयोजने क्षेत्रेवा;
योय उचित स्त त मिति शेष, स्तदा तदा काले तस्मि स्तस्मि न्प्रयोजनादौ कथम्भूत मित्याह-अनिश्रितै सर्वाशसारहितै रुपाश्रितो ङ्गीकृतो

॥ मूल ॥

तहा२ ववहार पठवेज्जा । सेकि माहु भंते ! आगमबलिया समणा णिग्गंथा । इच्चेयं पंचविहं ववहारं
जहा २ जहिं २ तहा २ तहिं २ आणिस्सितोवस्सिय सम्मं ववहरमाणे समणेणिग्गंथे आणाए आराहए भ

अनुवाद

वा-आगमेन श्रुतेना ज्ञया धारणया जीतेन । यथा यथा तस्या गम: श्रुत माज्ञा धारणा जीत स्या त्तथा तथा व्यवहार प्रस्थापयेत् । अथ
कि माहु र्भदन्त । आगमबलिका: श्रमणा निर्ग्रन्था: ? इत्येत पञ्चविध व्यवहार यदा यदा यत्र यत्र तदा २ तत्रतत्रा निश्रितोपाश्रित सम्य

॥ भाषा ॥

जहा २ से आगममुए आणा धारणा जीए। जिमजिम तिहां आगमादि ५। तहा २ ववहार पठवेज्जा। तिम २ व्यवहार प्रस्थापे प्रवर्त्तावे। सेकि
माहु भंते। हणि व्यवहारवन्त पुरुषने फल प्रव्यहारेकरी कहेछे—हिवे स्यू भदंत भट्टारक आहु कहे। आगमबलिया समणा णिग्गंथा इच्चेत पंचविह
ववहार। आगमबलिक उक्तविशेष बलवन्त श्रमण निर्ग्रन्थ केवलीप्रमुख, ए वक्ष्यमाण अथवा उक्तस्वरूप प्रत्यक्ष पञ्चविध व्यवहार प्रायश्चित्त दानादि
रूप सम्मववहरमाणेत्ति, ए पद सघाते सम्बन्ध जोड २ व्यवहरतो प्रवर्त्तातो इत्यर्थ किम सम्यक्रूडो रीते ते जिम ते कहेछे—जहा २ जहि २ तहा २ तहि २
अणिस्सिओवस्सिय सम्म ववहारमाणे समणे णिग्गंथे आणाए आराहए भवइ जे जे अवसरनेविषे अथवा जे जे प्रयोजननेविषे अथवा जे जे क्षेत्रनेविषे
जे जे उचित्त योग्य ते ते प्रते इतिशेष तथा तदाकालतिहिं २ प्रयोजनादिकने विषे केहवो ते कहेछे—अनिश्रित कहिये सर्व आशसारहित तिणे उपा
श्रित कहिये अंगीकार कीधो ते अनिश्रितोपाश्रित ते प्रते अथवा निश्रितराग उपाश्रित द्वेष नहीं राग द्वेष ते अनिश्रितोपाश्रित सर्वथा पक्षपात रहि

॥ टीका ॥

ऽनिश्रितोपाश्रित स्त मथवा, निश्रितश्च शिष्यत्वादिप्रतिपन्न उपाश्रितश्च सएव वैयावृत्यकरत्यादिना प्रत्यासन्नतर स्तौ, अथवा, निश्रित राग उ पाश्रितस्य द्वेष स्त' अथवा, निश्रितस्या हारादिलिप्सा उपाश्रितस्य शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा ते न स्तो यत्र त यथेति क्रियाविशेषण, सर्वथा पक्षपातरहितत्वेन यथाव दित्यर्थ, इह पूज्यव्याख्या–रागोयद्दोहनिस्सा उवस्सिउदोसमजुत्तो ॥ अहवणआहाराई दाईमञ्झलुगत्तनिस्साउ ॥ १ ॥ सीसोपडिच्छउवा होइउवस्साकुलादीयत्ति ॥ आज्ञाया जिनोपदेशस्या राधको भवतीति, इत। आहु देवेति गुरुवचन गम्यमिति' अन्येतु ॥ से किमाहु भंते! इत्याद्येव व्याख्यान्ति–अथ किमाहु भंदता। गमवलिका ममगा निर्ग्रन्था पञ्चविधव्यवहारस्य फल मितिशेष अत्रोत्तर माह ॥ इच्चेय मित्यादि ॥ आराधकस्य कर्म बन्धयति सूत्र; तद्भावीति बन्धनिरूपण माह ॥ कइइत्यादि ॥ बधत्ति ॥ द्रव्यतो निगडादिबन्धो भाव वत कर्मबन्ध इह च प्रकमा त्कर्मबन्धो विवृत. ॥ इरियावहियबधेयत्ति ॥ ईर्या गमन तत्प्रधान पन्था मार्ग ईर्यापथ स्तत्रभव मैर्यापथिक केवल

॥ मूल ॥

वइ। कइविहेणं भंते! बंधे पण्णत्ते ? गोयमा! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तंजहा इरियावहियबंधेय संपराइय

॥ अनुवाद ॥

व्यवहरन् श्रमणोनिर्ग्रन्थ आज्ञाया आराधको भवति ॥ कतिविधो भ०! बन्ध. प्रज्ञप्त ? गौतम! द्विविधो बन्ध प्रज्ञप्त स्तद्यथा-ऐर्याप

॥ भाषा ॥

त पणें यथा अटित्यर्थ एतावता पञ्चविध व्यवहारप्रति निश्रारे २ जेज प्रयोजनने विषे योग्य ते प्रति तिवारे २ ते ते प्रयोजनने विषे सर्वथा पक्षपात रहित प णे। सम्म ववहारेमाणे समणेणिग्गंथे आणाए आराहए भवइ सम्यक् प्रवर्त्ततोथको श्रमण निर्ग्रन्थ आज्ञानो आराधकहुवे आज्ञानो आराधक कर्मने धुवा वे अथवा शुभकर्म बांधे तेमाटे कहेछे—कइविहेणंबधे पण्णत्ते। केतलेप्रकारे हेभगवन् बंधकह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुविहे बधे पण्णत्ते तंजहा। हे गौतम द्रव्यथी निगडादिबध भावथी कर्मबध ते अत्रमाहे इहां प्रक्रमथी कर्मबंधनो अधिकार लेवो ते कहेछे—बे प्रकार बधकह्यो ते कहेछे—इरियाव हियबधेयसपराइय बधेय। ईर्यागमन तत्प्रधान, पन्था कहिये मार्ग ते ईर्यापथ तेहनेविषे थयो ते ईर्यापथिक कहिये केवलयोग्य प्रत्ययकर्म तेहनो जे बध ते एक वेदनीयनोबंध १ समारम्भमे रणकरी ते सम्पराय कहिये कषाय तेहनेविषे थयो साम्परायिककर्म तेहनो जे बध ते साम्परायिकबध कषा

॥ टीका ॥

योगप्रत्ययं कर्म तस्ययो वन्ध सतथा सचै कस्य वेदनीयस्य ॥ सपराइयबंधेयत्ति ॥ सम्परेंति ससारं पर्यटति एभि रिति सम्परायाः कषाया स्ते पु भव साम्परायिक कर्म्म तस्य यो वन्ध स साम्परायिकवन्ध कषायप्रत्यय इत्यर्थ , सचा वीतरागगुणस्थानकेषु सर्वेष्विति ॥ नोनेरइत्ते ॥ इत्यादि मनुष्यस्यैव तद्बन्धो यस्माद्बन्धादुपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिना मेव तद्बन्धन मिति ॥ पुव्वपडिवणए ॥ इत्यादि पूर्व प्राक्काले प्रतिपन्नमै

॥ मूल ॥

बंधेय। इरियावहियाण भंते! कम्मं किं णेरइए बंधइ तिरिक्खजोणिए बंधइ तिरिक्खजोणिणी बंधइ मणुस्सो बंधइ मणुस्सी बंधइ देवो बधइ देवी बधइ? गो०! णो णेरइए बंधइ णो तिरिक्खजोणिए बधइ णोतिरिक्खजोणिणी वधइ णो देवो बंधइ णोदेवीबधइ पुव्वपडिवन्नए पडुच्च मणुस्साय मणुस्सीओय बंधंति , पडि

अनुवाद

यिकबन्धश्च साम्परायिकबन्धश्च । ऐर्यापथिक भ० । कर्म किंनैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति तिर्यग्योनिकी बध्नाति मनुष्यो बध्नाति मनुषी बध्नाति देवो बध्नाति देवीबध्नाति ? गौतम । नो नैरयिको बध्नाति नोतिर्यग्योनिको बध्नाति नो तिर्यग्योनिकी बध्नाति नोदेवो बध्नाति नो देवी बध्नाति । पूर्वप्रतिपन्नकानाश्रित्य मनुष्या मनुष्य श्च बध्नन्ति । प्रतिपद्यमानकान् प्रतीत्य मनुष्योवा बध्नाति १, मनुषीवा

॥ भाषा ॥

यप्रत्यय इत्यर्थ ते वीतरागरहित सर्वगुणस्थानकनेविषे हुवे । इरियावहियाणभंते कम्म कि णेरइओ बधइ । ईर्यापथिक ण वाक्यालकारे, हेभगवन् कम रय नारकी बांधे । तिरिक्खजोणिओ बधइ २ तिरिक्खजोणिणीओबधइ । तिर्यञ्चयोनिक पुरुष बांधे तिर्यञ्चयोनिकनी स्त्री बांधे ३ । मणुस्सो बधइ मणुस्सो बधइ । मनुष्य बांधे मनुष्यणी बांधे । देवो बधइ देवी बधइ । देव बांधे देवीबांधे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो णेरइओबधइ । हेगौतम नारकी न बांधे । णोतिरिक्खजोणिओ बधइ णोतिरिक्खजोणिणी बधइ । नहो तिर्यञ्चयोनिक पुरुष बांधे नहो तिर्यञ्चयोनिकनी स्त्री बांधे ३ । णोदेवोबधइ णो देवीबधइ । देव न बांधे ४ देवी न बांधे ५ मनुष्यनेज ए वन्धहुवे जे कारणथकी उपशान्तमोह १ क्षीणमोह २ सयोगी केवली ३ ए तीनने वन्ध एहनो बधछे । पुव्वपडिवणएपडुच । पूर्वे जे इरियावही वन्ध पडिवज्या ते वन्धकपणो द्वितीयादिक समयवर्त्तीने ते सदा काले पुरुष तथा स्त्री पणाछे ते बेऊ केवला

॥ टीका ॥

र्यापथिकबन्धकत्व ये ते पूर्वप्रतिपन्नका स्तान् तद्बन्धकत्वद्वितीयादिसमयवर्त्तिन इत्यर्थ, तेच सदैव बहव पुरुषा स्त्रियश्च सन्ति उभयेषा केवलि ना सदैवभावा दतउक्त–मणुस्सायमणुस्सीउयबधतित्ति ॥ पडिवज्जमाणएत्ति ॥ प्रतिपद्यमानका नैर्यापथिककर्मबन्धनप्रथमसमयवर्त्तिन इत्यर्थ, एषाञ्च विरहसम्भवा देकदा मनुष्यस्य स्त्रियाश्च एकक्रयोगे एकत्वबहुत्वाभ्या चत्वारो विकल्पा' द्विकयोगे तथैव चत्वार, एव मेते सर्वे प्यष्टा वेतदेवाह ॥ मणुस्सोवा ॥ इत्यादि एषाच पुस्त्वादि त त्त ल्लिगापेक्षया ननु वेदापेक्षया क्षीणोपशान्तवेदत्वा, द्य वेदापेक्ष स्त्रीत्वा द्यधि

॥ मूल ॥

वज्जमाणए पडुच्च मणुस्सोवा बधइ मणुस्सीवा बंधइ मणुस्सायवा बंधति मणुस्सीउयवा बंधति, अहवा मणुस्सोय मणुस्सीय बधइ, अहवा मणुस्सोय मणुस्सीउय बधति, अहवा मणुस्साय मणुस्सीय बंधइ, अ

अनुवाद

बध्नाति २, मनुष्याश्चवा वध्नन्ति ३, मनुष्यश्च वा वध्नन्ति ४, अथवा मनुष्यश्च मनुषीच वध्नाति ५ अथवा मनुष्यश्च मनुष्यश्च बध्नन्ति ६ अथवा मनुष्याश्च मानुषीच वध्नाति ७, अथवा मनुष्याश्च मनुष्यश्च वध्नन्ति ८। तद्भदन्त ! किं स्त्री वध्नाति पुरुषो बध्नाति नपुसको बध्नाति, स्त्रियो

॥ भाषा ॥

सदाहुवे तेमाटे कह्य । मणुस्सा रमणुस्सीओयबधइ पडिवज्जमाणए पडुच । घणा मनुष्य घणी मनुष्यणी बाधे ए बेजपद बहुवचनेकरी कह्या वर्त्तमा न पडिवजणहार आश्रयीने ईर्यापथिक प्रथम समयवर्त्ती इत्यर्थ एहने विरहना सम्भवथकी एक वेलाये मनुष्य तथा स्त्रीने एकयोगे एकवचन बहुवचने करी चार विकल्पहुवे । मणुस्सोवा बधइ मणुस्सीवाबधइ । मनुष्य एकवचने बाधे अथवा मनुष्यणी एकवचने बाधे । मणुस्सायवा बधति मणुस्सीओयवा ब धति । अथवा मनुष्य बहुवचने बाधे अथवा मनुष्यणी बहुवचने बाधे ४ ए एकसयोगी भाङ्गा ४ कह्या, हिवे द्विकसयोगे तिमहीज चारभागाहुवे ते दे खाडेछे—अहवामणुस्सोय मणुस्सीय बधइ । अथवा मनुष्य एकवचने मनुष्यणी एकवचने बाधे ए एकभागो । अहवामणुस्सोय मणुस्सीओय बधति । अथ वा मनुष्य एकवचने मनुष्यणी बहुवचने बाधे २ ए बीजोभागो २। अहवामणुस्सायमणुस्सीय बधइ । अथवा मनुष्य बहुवचने मनुष्यनी एकवचने ३ ए

॥ टीका ॥

कृत्या ६ ॥ त भते किमित्यादि ॥ नोइत्थी ॥ इत्यादिनाच पदत्रयनिषेधेना वेदक प्रश्नित, उत्तरेतु षणां पदानां निषेध सप्तमपदोक्तस्तु व्यप गतवेद स्तत्रच पूर्वप्रतिपन्ना· प्रतिपद्यमानकाश्च जवन्ति तत्र पूर्वप्रतिपन्नकाना विगतवेदाना सदाबहुत्वजावा दाह ॥ पुव्वपडीत्यादि ॥ प्रतिपद्य

॥ मूल ॥

हवा मणुस्साय मणुस्सीओय बधति। त जंते! किंइत्थी वंधइ पुरिसो वंधइ णपुसगो वधइ, इत्थीओ वंधति पुरिसा बधति णपुंसगा वंधंति णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुसगो वधइ? गोयमा! णोइत्थी बधइ णोपुरिसो वंधइ जाव णोणपुसगाबंधति। पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बधति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवग

॥ अनुवाद ॥

बध्नन्ति पुरुषा बध्नन्ति नपुसका बध्नन्ति' नो स्त्री नोपुरुषो नोनपुसको बध्नाति? गौतम। नो स्त्री बध्नाति नोपुरुषो बध्नाति याव न्नो नपु सका बध्नन्ति' पूर्वप्रतिपन्नकान् प्रतीत्या पगतवेदा बध्नाति। प्रतिपद्यमानकान् प्रतीत्या पगतवेदोवा बध्ना त्यपगतवेदावा बध्नाति, यदि

॥ भाषा ॥

त्रीजोभागो। अहवामणुस्साय मणुस्सीओयबधति। अथवा मनुष्य मनुष्यनी ए वेऊ बहुवचन बहुवचने बाधे ए चौथोभागो ४ ॥ हिवे वेदनी अपेक्षाये स्त्रीपणो अधिकारी कहेछे—तभतेकिइत्थी वधइ पुरिसोबधइ णपुसगोबधइ। तेईर्यापथिक बध हेभगवन्। स्त्री बाधे पुरुष बाधे नपुसक बाधे ए तीन पद एकवचने कह्या तथा। इत्थीओबधति पुरिसा बधति णपुसगाबधति। घणी स्त्रीओ बाधे घणा पुरुष बाधे घणा नपुसक बाधे ६ ए तीनपद बहुवच ने कह्या। णोइत्थी णो पुरिसो णो णपुसगो बधइ। नही स्त्री नही पुरुष नही नपुसक ए तीनेई पदने निषेधकरी अवेदक पूछ्यू एतले वेदरहित बाधे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णो इत्थी बधइ णो पुरिसो बधइ जाव णो णपुसगा बधति पुव्वपडिवणएपडुच्च अवगयवेदा बधति। हेगौतम। स्त्री न बा धे पुरुष न बाधे इम यावत् घणा नपुसक न बाधे एतले पहिला छ ए पदनोनिषेध जाणवो अने सातमो तो व्यपगतवेद कहिये तिहा पूर्व प्रतिपन्न तथा प्रतिपद्यमानक हुवे तिहा प्रतिपद्य ते विगतवेद तेहना सदा बहुत्वना भावथकी कहेछे—पूर्वप्रतिपन्न ते आश्री अपगतवेद बहुवचने बाधे प्रतिपद्य मान एतले पडिवजताथकाने तेहने सामायिकपणाथकी विरहने भावें करी एकादिकना सम्भवथकी विकल्प होयछुवे एतलामाटे कहेछे—पडिवज्ज

॥ टीका ॥

मानकानान्तु सामयिकत्वात् विरहभावे नैकादिसम्भवात् विकल्पद्वय अतएवाह ॥ पडिवज्जमाणेत्यादि ॥ अपगतवेदमेवै र्यापथिकबन्ध माश्रित्य स्त्रीत्वादिभूतभावापेक्षया विकल्पय न्नाह ॥ जइइत्यादि ॥ त भंते ! तदा नदन्त तद्दा, कर्म्म ॥ इत्थीपच्छाकडेत्ति ॥ भावप्रधानत्वा न्निर्देशस्य स्त्रीत्व पश्चात्कृत भूतता नीत येनावेदकेना सौ स्त्रीपश्चात्कृत एव मन्या यपि, इहैककयोगे एकत्वबहुत्वाभ्या षड्विकल्पा. द्विकयोगेतु त्रिपु द्विक

॥ मूल ॥

यवेदोवा बंधइ, अवगयवेदावा बंधति, जइ भंते ! अवगयवेदोवा बंधइ अवगयवेदावा बंधंति । तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ १ । पुरिसपच्छाकडो बंधइ २ । णपुंसगपच्छाकडो बंधइ ३ । इत्थी पच्छाकडा बंधति ४ । पुरिसपच्छाकडा बंधंति ५ । णपुसगपच्छाकडा बधंति ६ । उदाउ इत्थीपच्छाक

॥ अनुवाद ॥

भ० ! अपगतवेदोवा बध्नाति अपगतवेदावा बध्नति तद्भदन्त ! स्त्रीपश्चात्कृतोवा बध्नाति, पुरुषपश्चात्कृतोवा बध्नाति २ नपुंसकपश्चात्कृतो बध्नाति ३, स्त्रीपश्चात्कृता बध्नन्ति ४, पुरुषपश्चात्कृता बध्नन्ति ५, नपुसकपश्चात्कृता बध्नन्ति ६ । उताहो स्त्रीपश्चात्कृतश्च पुरुषपश्चात्कृतश्च

॥ भाषा ॥

माणए पहुच अवगय वेदोवा बधइ अवगयवेदावा बधति । पडिवजता आश्रयीने अपगतवेद एकवचने बांधे १ अथवा अपगतवेद बहुवचने बांधे २ अथवा अपगतवेदईज ऐर्यापथिक बधआश्रयीने स्त्रीपणो आदिदई भूतभाव अपेक्षाये विकल्प करतो कहेछे—जइभते अवगयवेदावाबधइ अवगयवेदा वा बधति । जो हेभगवन् ! अपगतवेद एकवचने अथवा अपगतवेद बहुवचने बांधे । त भंतेकिइत्थी पच्छाकडो बधइ १ पुरिसपच्छाकडो बधइ २ णपुसग पच्छाकडो बधइ ३ ते हेभगवन् ! अथवा तेकर्म निर्देशने भाव प्रधानपणाथकी स्त्रीपणो पश्चात्कृतभूतपणा प्रते गयो जिणे अवेदकेते स्त्री पश्चात्कृत कहिये, इम बीजा पणि कहवा इहा एकयोगे एकत्व बहुत्वे करी छ विकल्पहवे ते देखाडेछे—प्रथमद्वारे ए एकवचने १ ए पणि एकवचने २ ए पणि एक वचने ३ इम भागा तीनथया । इत्थीपच्छाकडावधति ४ पुरिसपच्छाकडावधति ५ णपुसगपच्छाकडावधति ६ । स्त्री पश्चात्कृत बांधे ए बहुवचने पुरुष पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने नपुसक पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने ३ ए तीन बहुवचने भागाकह्या, हिवे द्विकसयोगे भागा बारेहुवे । उदाउ

॥ टीका ॥

योगेपु तथैव द्वादश त्रिकयोगे पुन स्तथैवाष्टा वैतेच सर्वे षड्विंशति, सूत्रेच चतुर्भंग्यष्टभङ्गीनां प्रथमविकल्पादर्शिता सर्वान्तिमश्चेति, अथैर्यापथिककर्म्मबन्धन मेव कालत्रयेण विकल्पयन्नाह ॥ त भंते इत्यादि ॥ तदैर्यापथिक कर्म बन्धी बद्धवान् बध्नाति भन्त्स्यति चैत्येकोविकल्प, एव

॥ मूल ॥

उदाहु इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बंधंति २ । उदाहु इत्थी कडाय पुरिसपच्छाकडाय बधइ ३ । उदाहु इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बधंति ४ । उदाहु इत्थीपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय बधइ ५ उदाहु पुरिसपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय बधइ ६ ।

अनुवाद

बध्नाति १, उताहो स्त्रीपश्चात्कृतश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति २ उताहो स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृतश्च बध्नाति ३' उताहो स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति ४' उताहो स्त्रीपश्चात्कृतश्च पुरुषपश्चात्कृतश्च बध्नाति ५' उताहो पुरुषपश्चात्कृतश्च नपुसकपश्चात्कृतश्च बध्ना

॥ भाषा ॥

इत्थी पच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बधइ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत पुरुष पश्चात्कृत बाधै ए बेहु पणि एकवचने ए द्विकसयोगे एकभागो । उदाहु इत्थी पच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बधति । अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने अने पुरुषपश्चात्कृत ए बहुवचने ए द्विकसयोग बीजो भागो २ । उदाहु इत्थी पच्छाकडाय पुरिस पच्छाकडायबधइ ३ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने अने पुरुष पश्चात्कृत एकवचने ए द्विकसयोगे बीजोभागो ३ । उदाहु इत्थी पच्छाकडाय पुरिस पच्छाकडाय बधति ४ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने अने पुरुष पश्चात्कृत ए बहुवचने बाधै ए द्विकसयोगे चौथो भागो ४ ए चारभागा स्त्री पुरुषसंयोगे एकत्व बहुत्वे कह्या इम स्त्री अने नपुसक स्यू एकत्व बहुत्वे चारभागा कहवा तेमाहि पहिलो भागो सूत्रमाहि देखाड्यो । उदाहु इत्थीपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय बधइ ४ । अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने नपुसक पश्चात्कृत एकवचने बाधै इम चारभागा कहवा इम पुरुष अने नपुसक स्यू चारभागा एकत्व बहुत्वे कहवा ते माहि पहिलोभागो देखाडेछै—उदाहु पुरिसपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडायबधइ ४ १२ । अथवा पुरुष पश्चात्कृत एकवचने नपुसक पश्चात्कृत एकवचने बाधै इम ए पणि चारभागा कहवा एव द्विकसयोगो भागा

उदाओ इत्थीपच्छाकडोय पुरिसपच्छाकडोय णपुंसगपच्छाकडोय बंधइ ८। एवं एए छव्वीसं भंगा जाव उदाओ इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति ? गोयमा ! इत्थीपच्छाकडोवि बंधइ पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ णपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ, इत्थीपच्छाकडावि बंधंति पुरिसपच्छाकडावि

ति ६। उताहो स्त्री पश्चात्कृतश्च पुरुषपश्चात्कृतश्च नपुंसकपश्चात्कृतश्च बध्नाति ८। एव मेते षड्विंशतिर्भङ्गा याव दुताहो स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च नपुंसकपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति ? गौतम ! स्त्रीपश्चात्कृतोपि पुरुषपश्चात्कृतोपि नपुंसकपश्चात्कृतोपि बध्नाति, स्त्रीपश्चात्कृता अपि पुरुषपश्चात्कृता अपि नपुंसकपश्चात्कृता अपि बध्नन्ति ६, अथवा स्त्रीपश्चात्कृतश्च पुरुषपश्चात्कृतश्च बध्नाति १२। एव मेते षड्विंश

१२। त्रिके त्रिकसंयोगे स्त्री पुरुष नपुंसकयोगे भागा ८ थाय तेमांहि पहिलोभागो देखाडेछे—उदाहु इत्थीपच्छाकडोय पुरिसपच्छाकडोय णपुंसगपच्छाकडोय बंधइ ८। अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने पुरुष पश्चात्कृत एकवचने नपुंसक पश्चात्कृत ए पणि एकवचने बांधे ए त्रिकसंयोगीनो पहिलोभागो देखाड्यो इम ८ भागाथया। एवंए छव्वीसभगा। इम एह छव्वीसभागा सर्वहुवे तेमांहि छेहलोभागो देखाडेछे—जावउदाहु इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति। यावत् अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने पुरुष पश्चात्कृत ए पणि बहुवचने नपुंसक पश्चात्कृत ए पणि बहुवचने बांधे ए छव्वीसमाहि छेहलोभागो देखाड्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा इत्थीपच्छाकडोवि बंधइ पुरिसपच्छाकडोवि बंधइ णपुंसगपच्छाकडोवि बंधइ। हे गौतम ! स्त्री पश्चात्कृत पणि बांधे एकवचने एकभांगो पुरुष पश्चात्कृत पणि बांधे ए पणि एकवचने नपुंसक पश्चात्कृत बांधे ए पणि एकवचने ३ इत्थीपच्छाकडावि बंधंति। स्त्री पश्चात्कृत पणि बांधे ए बहुवचने भांगो चोथो ४। पुरिसपच्छाकडावि बंधंति। पुरुष पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने भांगो ५ णपुंसगपच्छाकडावि बंधंति ६। नपुंसक पश्चात्कृत बांधे ए पणि बहुवचने एव एकसंयोगी भागा छ हुवे ६। अहवाइत्थीपच्छाकडोय पुरिसपच्छाकडोय बंधइ १२ ८। अथवा स्त्री पश्चात्कृत एकवचने पुरुषपश्चात्कृत एकवचने ए द्विकसंयोगी पहिलोभांगो इम ए द्विकसंयोगी बारेभागा जाणवा

बंधंति णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति ६ । अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय बंधइ १२ । एवं एएछव्वीसं भगा भाणियव्वा जाव अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बंधंति। तं भंते ! किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ १ । बंधी बंधइ नबंधिस्सइ २ । बंधी नबंधइ बंधिस्सइ ३ । बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ४ । नबंधी बंधइ बंधिस्सइ ५ । नबंधी बंधइ नबंधिस्सइ ६ । नबंधी नबंधइ बंधि

ति भंङ्गा भणितव्या याव द्यथवा स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च नपुंसकपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति । तद्भदन्त ! किं बद्धवान् बध्नाति भत्स्य ति १ । बद्धवान् बध्नाति नभत्स्यति २ । बद्धवान् नबध्नाति भत्स्यति ३ । बद्धवान् नबध्नाति नभत्स्यति ४ । नबद्धवान् बध्नाति भत्स्य

११ । तथा त्रिकसंयोगी ८ भागा हुवे । एव एते छब्बीसभगा भाणियव्वा । इम एह सर्वमिली छब्बीसभागा याव ए आठभागा माहिलो छेहलोभागो दे खाडे छे—जाव अहवाइत्थीपच्छाकडाय पुरिस पच्छाकड य णपुंसगपच्छाकडाय बधंति । यावत् अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने पुरुष पश्चात्कृत एबहुवचने नपुंसक पश्चात्कृत ए पणि बहुवचने ए छब्बीसमो भागो देखाड्यो, हिवे ऐर्यापथिक बंध छोज तीनकालेकरी विकल्प करतां कहेछे—तभते किंबधी बधइ बधिस्सइ । ते ऐर्यापथिक कर्म हेभगवन् ! स्यूं अतीतकाले बाध्यं वर्त्तमानकाले बांधेछे अनागतकाले बाधस्ये ए एक विकल्प १ । बधी बंधइ न बधिस्सइ २ । तथा अतीतकाले बाध्यं वर्त्तमानकाले बांधेछे अनागतकालेन बाधस्ये २। वधी नबधइ बधिस्सइ ३ । तथा अतीतकाले बाध्यूं वर्त्तमानकाले न बांधेछे अनागतकाले बाधस्ये ए त्रीजोभागो विकल्प ३ । बधी नबधइ न बधिस्सइ ४ । अतीतकाले बाध्यं वर्त्तमानकाले न बांधेछे अनागतकाले न बाधस्ये ए चोथोभागो ४ । न बधी बधइ बधिस्सइ । अतीतकाले न बाध्यो वर्त्तमानकाले बांधेछे अनागतकाले बाधस्ये ए पाचमो विकल्प ५। नबधी बधइ नबंधिस्सइ ६ । अतीतकालेन बाध्यो वर्त्तमानकाले बांधेछे अनागतकाले न बाधस्ये ए छट्ठोभागो ६ । न बधी न बधइ बंधिस्सइ ७। अतीतकालेन बाध्यो वर्त्तमानकालेन बांधेछे आगामिकाले बाधस्ये ए सातमो भागो ७। नबधो न बधइ न बंधिस्सइ ८। तथा अतीतकाले बाध्योनही वर्त्तमानकाले न बांधेछे अनागत

॥ टीका ॥

मन्येपि सप्त भङ्गा, एषाञ्च स्थापना उत्तरन्तु ॥ भवेत्यादि ॥ भवे अनेकत्रोपशमादिश्रेणिप्राप्त्या आकर्ष ऐर्यापथिककर्माणुग्रहणा भवाकर्ष स्त प्रतीत्य अस्त्येको भवत्येक कश्चिज्जीव प्रथमवैकल्पिक, स्तथाहि पूर्वभवे उपशान्तमोहत्वेस त्यैर्यापथिक कम बद्धवान् वर्त्तमानभवे चीपशान्तमोहत्वे बध्नाति अनागतच उपशान्तमोहावस्थाया भन्त्स्यतीति १। द्वितीयस्तु य पूर्वस्मिन् भवे उपशान्तमोहत्व लब्धवान् वर्त्तमानेच क्षीणमोहत्व प्राप्त स पूर्व बद्धवान् वर्त्तमानेच बध्नाति शैलेश्यवस्थाया पुन नंभन्त्स्यतीति २। तृतीय पूर्वजन्मनि उपशान्तमोहत्व बद्धवान् तत्प्रतिपतितो नबध्नाति अनागतेच उपशान्तमोहावस्थाया भन्त्स्यतीति ३। चतुर्थस्तु शैलेशी पूर्वकाले बद्धवान् शैलेश्याञ्च नबध्नाति नच पुन र्भन्त्स्यतीति ४। पञ्चमस्तु

॥ मूल ॥

स्सइ ७। नबंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ८। गोयमा भवागरिसं पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ

॥ अनुवाद ॥

ति ५। नबद्धवान् बध्नाति नभन्त्स्यति ६। नबद्धवान् नबध्नाति भन्त्स्यति ७। नबद्धवान् नबध्नाति नभन्त्स्यति ८? गौतम! भवाकर्ष प्रतीत्य अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति भन्त्स्यति १। अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति नभन्त्स्यति २। एव तच्चैव सर्व याव दस्त्येको नबद्धवान् नबध्ना

॥ भाषा ॥

काले न बाधस्ये ८ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा भवागरिस पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ। हे गौतम! भवागरिसपडुच्चइत्यादि, भव अनेकत्र उपशमादि श्रेणी प्राप्ति करी आकर्षते ऐर्यापथिक कर्म अणुग्रहण पतले अनेक भवना इरियावही कर्मना अणुने आकर्षीय ते भवाकर्ष जाणवो ते आश्रयीने कहेछे—पूर्वे एक कोईजीव पहिलेभागे ते देखाडछे—पूर्वभवे उपशान्तमोहपणे थका ऐर्यापथिककर्म बांध्यो वर्त्तमानभव वली उपशान्तमोहपणे बांधेछे अनागतभवने विषे उपशान्तमोहावस्थायें बांधस्ये। अत्थेगइए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ एवतचेवसव्व जाव अत्थेगइए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। बीजो कोईएक जीव पूर्वभवनेविषे उपशान्तमोहपणो लाधु वर्त्तमान भवनेविषे क्षीणमोहपणो पाम्यो ते पूर्वे बांध्यो वली वर्त्तमाने बांधेछे शैलेशी अवस्थानेविषे बांधस्ये २ त्रीजो कोईएकजीव पूर्वभवनेविषे उपशान्तमोहपणे बांध्यो तेहथी पड्यो न बांधेछे वली जिवारे उपशान्तमोहपणो पडिवजस्ये तिवारे बांधस्ये ३ चौथो कोईएकजीव शैलेशी पूर्वकालनेविषे बांध्यो शैलेशीनेविषे न बांधे वली ते न बांधस्ये ४ पांचमो कोईएकजीव पूर्व जन्मनेविषे उपशान्तमोहपणो न लाध त

८

॥ टीका ॥

पूर्वजन्मनि नोपशान्तमोहत्व लब्धवानिति नबद्धवा नधुना लब्धमिति बध्नाति पुन रप्येष्यत्काले उपशान्तमोहाद्यवस्थाया भंत्स्यतीति ५। षष्ठ
पुन क्षीणमोहत्वादि नलब्धवानिति' नपूर्वं बद्धवान्, अधुनातुक्षीणमोहत्व लब्धमिति बध्नाति, शैलेश्यवस्थाया पुन नभंत्स्यतीति ६। सप्तम पुन
भव्यस्य सहि अनादौकाले नबद्धवान्, अधुनापि कश्चि नबध्नाति, कालान्तरेतु भंत्स्यतीति' अष्टम स्त्वभव्यस्य सच प्रतीतएव ॥ गहणागरिसमि
त्यादि ॥ एकस्मिन्नेव भवे ऐर्यापथिककर्म्मपुद्गलाना ग्रहणरूपो य आकर्षो ऽसौ ग्रहणाकर्ष स्त प्रतीत्या स्त्येक' कश्चि ज्जीव प्रथमवैकल्पिक स्त
थाहि–उपशान्तमोहादि यदैर्यापथिक कर्म्म बद्धा बध्नाति तदा तीतसमयापेक्षया बद्धवान्' वर्त्तमानसमयापेक्षयाच बध्नाति, अनागतसमयापेक्ष
यातु भंत्स्यतीति १। द्वितीयस्तु केवली सह्यतीतकाले बद्धवान्, वर्त्तमानंच बध्नाति, शैलेश्यवस्थाया पुन नभंत्स्यतीति २। तृतीयस्तु उपशान्त

॥ मूल ॥

अत्थेगइए बंधी बंधइ नबधिस्सइ एव तंचेव सव्वं जाव अत्थेगइए नबंधी नबंधइ नबंधिस्सइ। गहणागरिसं
पडुच्च अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ एवं जाव अत्थेगइए नबंधी बंधइ बंधिस्सइ णोचेवण नबंधी बंधइ

अनुवाद

ति नभंत्स्यति। ग्रहणाकर्ष प्रतीत्या, स्त्येको बद्धवान् बध्नाति भंत्स्यति१। एव याव दस्त्येको नबद्धवान् बध्नाति भंत्स्यति। नोचैव नबद्धवान्

॥ भाषा ॥

म.टे न बाधे इणेभवे उपशान्तमोहपणो लाधो तेमाटे न बाधेछे वली आगामिकाले उपशान्तमोह अवस्थानेविषे बाधस्ये ५ छठो कोइएकजीव क्षीणमोह
पणो आदि न लीधो एतलामाटे पूर्वे न बाध्यो, हिवे वर्त्तमानकाले क्षीणपणो लाधू तिवारेबाधेछे पछे शैलेशी अवस्थायें न बाधस्यें ६ सातमो कोइएक
जीव ए भागो भव्यजीवनेते अनादिकालने विषे न बाध्यो वर्त्तमानकाले पणि कोइएकजीव न बाधेछे कालान्तरने विषतो बाधस्ये ७ आठमे भागे अभव्यजीव
ते तो प्रसिद्ध हीजछे। गहणागरिसपडुच अत्येगइए बधी बधइ बधिस्सइ एव जाव अत्येगइए न बधी बधइ बधिस्सइ ८। गहणागरिसइत्यादि, एक
भवनेविषे हीज ऐर्यापथिककर्म पुद्गलनोग्रहणरूप जे आकर्ष ते ग्रहणाकर्ष कहिये ते प्रते आश्रयीने, छे कोइएकजीव पहिले विकल्पे ते देखाडेछे—उप
शान्तमोहादि तिवारे ऐर्यापथिक कर्मबाधीने बाधे तिवारे अतीतसमयनो अपेक्षाये बाधेछे अनागतसमयनो अपेक्षाये बाधस्ये १ बीजे भागे केवली

मोहत्वे बद्ध्वा तत्प्रतिपतितस्तु नबध्नाति पुनस्तत्रैव भवे उपशमश्रेणिप्रतिपन्नो भंत्स्यतीति, एकभवे चोपशमश्रेणी द्वि प्राप्यत एवेति ३। चतुर्थं पुन सयोगित्वे बद्धवान् शैलेश्यवस्थाया नबध्नाति नच भंत्स्यति ४। पञ्चम पुनरायुष पूर्वभागे उपशान्तमोहत्वादि नलब्धमिति नबद्धवान्, अधुनातु लब्धमिति बध्नाति तदद्धायामेव चैष्यत्समयेतु पुन भंत्स्यतीति ५। षष्ठस्तु नास्त्येव तत्र नबद्धवान् बध्नाती त्यनयो रुपपद्यमानत्वेपि न भंत्स्यती त्यस्या नुपपद्यमानत्वा त्तथा ह्यायुष पूर्वभागे उपशान्तमोहत्वादि नलब्धमिति नबद्धवा त्तल्लाभसमयेच बध्नाति ततो नन्तरसमयेषुच भंत्स्यत्येव नतु भंत्स्यति समयमात्रस्य बन्धस्ये ह्यभावात्, यस्तु मोहोपशमनिर्ग्रन्थस्य समयानन्तरमरणे नैर्यापथिककर्मबन्ध समयमात्रो भवति नासौ षष्ठविकल्पहेतु स्तदनन्तरैर्यापथिककर्मबन्धाभावस्य भवान्तरवर्तित्वात्, ग्रहणाकर्षस्येह प्रक्रान्तत्वात्, यदि पुन सयोगिचरमसमये

नबंधिस्सइ । अत्थेगइए नबंधी नबंधइ बंधिस्सइ । अत्थेगइए नबंधी नबंधइ नबंधिस्सइ । त भंते ! कि

बध्नाति नभंत्स्यति, अस्त्येको नबद्धवान् नबध्नाति भंत्स्यति, अस्त्येको नबद्धवान् नबध्नाति नभंत्स्यति ॥ तद्भदन्त ! कि सादिक सपर्यवसित

अतीतकाले बाध्यो वर्तमानकालनेविषे बाधेछे पछे शैलेशी अवस्थाये वली न बाधशे २ त्रीजो कोईएकजीव उपशान्तमोहपणे बाध्यो तेहथी पडीथकी न बाधे वली तिणिहीज भवे उपशमश्रेणीप्रते पाम्यो बाधस्ये एक भवनेविषे उपशमश्रेणी बे वार पामियेजछे ३ चौथो कोईएकजीव सयोगीपणे बाध्यो वर्तमान शैलेशीअवस्थाये न बाधे आगे न बाधस्ये ४ पाचमो कोईएकजीव आऊखाने पूर्वभागे उपशान्तमोहादि न पाम्यो तेमाटे न बाध्यो वर्तमान कालि लाधू तेमाटे बाधेछे ते कालनेज आगामिसमयनेविषे वली बाधस्ये ५ छट्ठभागे कोइएकजीव नहीं, ते छट्ठाभागानेविषे न बाध्यो बाधेछे ए दोई उपजतायका पणि न बाधस्ये ए बोलबोल न उपजे ते देखाडेछे—आऊखाना पूर्वभागनेविषे उपशान्तमोहत्वादि न लाधू एतलामाटे न बाध्यो ते लाभसमयनेविषे बाधे तिवारपछी अनन्तर समयने विषे बाधशेज पणि इम नहीं जे नबाधशे समयमाधना बन्धनो इहा अभावछे तेमाटे जे मोहोपशम निर्ग्रन्थ ने समय अनन्तर मरणेकरी ऐर्यापथिक कर्मबन्ध समयमात्र हुवे पणि एछठा विकल्पनो हेतु नही तदनन्तर ऐर्यापथिक कर्मबन्ध अभावने भ

॥ टीका ॥

बध्नाति ततोनन्तरं नभन्त्स्यतीति विवक्षित तदा यत्सयोगिचरमसमये बध्नातीति तद्बन्धपूर्वकमेव स्या त्नावन्धपूर्वक तत्पूर्वसमयेषु तस्य बन्धकत्व देवञ्च द्वितीयएव भङ्ग स्या त्नपुन षष्ठइति ६ । सप्तम पुन र्भव्यविशेषस्या, ऽष्टम स्त्वभव्यस्येति, इहच भवाकर्षापेक्षे ग्रहणु नगकेषु ॥ बधी बधइ बधिस्सइ । इत्यत्र प्रथमे भगे उपशान्तमोह ।बधी बधइ नवधिस्सइ । इत्यत्र द्वितीये क्षीणमोह । बधी नवधइ बधिस्सइ । इत्यत्र तृतीये उपशान्तमोह । बधी नवधइ नवधिस्सइ । इत्यत्र चतुर्थे शैलेशीगत । नबधी बधइ बधिस्सइ । इत्यत्र पञ्चमे उपशान्तमोह ।नबधी बधइ नवधिस्सइ । इत्यत्र षष्ठे क्षीणमोह । नवधी नवइ बधिस्सइ । इत्यत्र सप्तमे भव्य. । नवधी नवधइ नवधिस्सइ । इत्यत्रा ष्टमे ऽभव्य । ग्रहणाकर्षापक्षेषु पुन रेत ष्वेव प्रथमे उपशान्तमोह क्षीणमोहोवा, द्वितीयेतु केवली, तृतीय उपशान्तमोह, श्चतुर्थे शैलेशीगत । पञ्चमे उपशान्तमोह क्षीण

॥ भाषा ॥

मातरवर्तिपणायको अने ग्रहणाकर्षने इहा कह्यामाटेजिवारे वली सयोगीचरमसमयने विषे बाधे तिवारपछी ग्रनन्तरेज बाधसे विवक्षा कीजे तिवारे जे सयोगी चरम समयेबाधे ते बधक पूर्वकहीजहुवे पणनही अबधक पूर्वक तेहथी पूर्वसमयनेविषे तेहना बधपणा माटे इम तो बीजोभागो होजहुवे पणछट्ठोभागो न हुवे ६ सातमोभागो भव्यविशेषने ७ ग्राठमो तो अभव्यनेद इहा भवाकर्ष आपेक्षने विषे आठभागाने विषे बधी बधइ बधिस्सइ ए प हिलाभागानेविषे उपशातमोह १ बधी बधइ नवधिस्सइ ए बीजाभागानेविषे क्षीणमोह २ बंधी न बधइ बधिस्सइ ए त्रीजानेविषे उपशान्तमोह ३ बधी न बधइ न बधिस्सइ । ए चौथानेविषे शैलेशीगत ४ न बधी बधइ बधिस्सइ, ए पाचमाने उपशान्तमोह ५ न बधी बधइ न बधिस्सइ, ए छट्ठाभागानेविषे क्षीणमोह ६ न बधी न बधइ बधिस्सइ, ए सातमोभागो भव्य विशेष ७ न बधी न बधइ नबधिस्सइ, ए ग्राठमा भागानेविषे अभव्य ८ ग्रहणाकर्ष आश्रयीने वली एहनेजविषे एतल सूत्र पाठ एहीज जाणवो, पर अर्थथी विशेष कहेछे—पहिलेभागे उपशान्तमोह अथवा क्षीणमोह १ बीजे केवली २ त्रीजे उपशातमोह ३ चौथे शैलेशीगत ४ पाचमे उपशातमोह अथवा क्षीणमोह ५ छठ्ठो सून्य ६ सातमे भव्य ग्रथवा भावीमोहोपशम अथवा भावी मोहक्षय ७ ग्राठमे अभव्य ८ ॥ हिवे ऐर्यापथिक कर्महीज निरूपण करेछे –तमर्तकिंसादिय सपज्जवसिय बधइ सादिय अपज्जवसिय बधइ अणादि

॥ टीका ॥ मोहोवा, षष्ठ शून्य, सप्तमे अव्यो आविमोहोपशमो आविमोहक्षयोवा; अष्टमे त्वभव्य इति, अथैर्यापथिकबन्धमेव निरूपयन्नाह ॥ तमित्यादि ॥ तदैर्यापथिक कर्म ॥ साइय सपज्जवसिय मित्यादि ॥ चतुर्भङ्गी, तत्र चेर्यापथिककर्मणा प्रथमएव भङ्गः बन्धो न्येषु तदसम्भवा दिति ॥ तमित्यादि ॥ तदैर्यापथिक कर्म ॥ देसेणं देसमिति ॥ देशेन जीवदेशेन देश कर्मदेश बध्नातीत्यादि चतुर्भङ्गी, तत्र तद्देशेन कर्मणो देश· सर्वथा, कर्म सर्वात्मना

॥ मूल ॥ साइयं सपज्जवसियं बंधइ साइयं अपज्जवसियं बंधइ अणाइयं सपज्जवसियं बंधइ अणाइयं अपज्जवसियं बंधइ? गोयमा साइयं सपज्जवसियं बंधइ णोसाइयं अपज्जवसियं बंधइ णोअणाइयं सपज्जवसियं बंधइ णोअणाइयं अपज्जवसियं बंधइ। तं भंते! किं देसेणं देसं बंधइ देसेणं सव्वं बंधइ सव्वेणं देसं बंधइ सव्वेणं

अनुवाद बध्नाति, सादिक अपर्यवसित बध्नाति, अनादिक सपर्यवसित बध्नाति, अनादिक अपर्यवसित बध्नाति १ गौतम। सादिक सपर्यवसित बध्नाति, नो सादिक अपर्यवसित बध्नाति, नो अनादिक सपर्यवसित बध्नाति, नो अनादिक अपर्यवसित बध्नाति। तद्भदन्त। किं देशेन

॥ भाषा ॥ य सपज्जवसिय बंधइ अणादिय अपज्जवसिय बंधइ। ते ऐर्यापथिक कर्म हे भगवन्! स्यूं १ सादिसपर्यवसित एतले सादिसात भांगे बांधे १ अथवा सादि अपर्यवसित एतले सादि अनन्त भांगे बांधे २ अथवा अनादि सपर्यवसित एतले अनादि सातभांगे बांधे अथवा अनादि अपर्यवसित एतले अनादि अनन्त भांगे बांधे ४ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सादिय सपज्जवसिय बंधइ। हे गौतम सादि सांतभांगे बांधे ए पहिलाभांगानेविषेज ऐर्यापथिककर्मनो बन्ध छे बीजानेविषे तेहना असम्भवथकी। णोसादिय अपज्जवसिय बंधइ। सादि अनन्तभांगे ऐर्यापथिककर्मनो बंधनथी तथा २। णो अणादिय सपज्जवसिय बंधइ णो अणाइयअपज्जवसिय बंधइ। अनादि सात भांगानेविषे पणि ऐर्यापथिक कर्मनोबन्ध नथी ३ तथा अनादि अनन्तभांगानेविषे पणि ऐर्यापथिककर्मनो बन्धनथी ४ वलीगौतम पूछे छे—तभंतेकिंदेसेणं देसबंधइ। ते ऐर्यापथिककर्म हे भगवन्! स्यूं जीवने देशेंकरी कर्मना देशप्रते बांधे १। देसेण सव्व बंधइ। तथा जीवने देशेंकरी सर्वकर्म बांधे २। सव्वेणदेसबंधइ। तथा जीव सर्वेंकरी कर्मना देशप्रते बांधे ३। सव्वेण सव्व बंधइ। सर्वजीवे

॥ टीका ॥

वा, कर्म्मणो देशो वध्यते, किंतर्हि सर्वात्मना सर्वमेव बध्यते तथास्वभावत्वा ज्जीवस्येति, अथ साम्परायिकबन्धनिरूपणायाह ॥ संपराइयमित्या दि ॥ किंनेरइत्ते इत्यादय सप्त प्रश्ना, उत्तराणिच सप्तैव, एतेषुच मनुष्यमनुषीवर्ज्जा पञ्चसाम्परायिकबन्धका एव सकषायत्वा न्मनुष्यमनुष्यौतु

॥ मूल ॥

सव्वं बंधइ ? गोयमा णोदेसेणं देसं बंधइ णोदेसेणं सव्वं बंधइ णोसव्वेणं देसं बंधइ सव्वेणं सव्वं बंधइ । संप राइयाणं भंते ! किं णेरइत्ते बंधइ तिरिक्खजोणित्ते बंधइ जाव देवी बंधइ ? गोयमा णेरइत्ते बंधइ तिरि क्खजोणित्तेवि बंधइ तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ मणुस्सोवि बंधइ मणुस्सीवि बंधइ देवोवि बंधइ देवीवि

अनुवाद

सर्वं बध्नाति ? गौतम । नोदेशेन देशं बध्नाति, नोदेशेन सर्वं बध्नाति, नो देशं बध्नाति, देशेन सर्वं बध्नाति, सर्वेण देशं बध्नाति, सर्वेण सर्वं बध्नाति ? गौतम । नोदेशेन देशं बध्नाति, नोदेशेन सर्वं बध्नाति, नो सर्वेण देशं बध्नाति, सर्वेण सर्वं बध्नाति ॥ सांपरायिक भं० । कम किं नैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति याव देवी बध्नाति ? गौ तम । नैरयिको बध्नाति तिर्यग्योनिको बध्नाति तिर्यग्योनिक्यपि बध्नाति मनुष्योपि बध्नाति मनुष्यपि बध्नाति देवोपि बध्नाति देव्यपि

॥ भाषा ॥

करी सर्वकर्म बांधे ए चउभंगी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोदेसेणदेसंबंधइ। हेगौतम। जीवने देशेकरी कर्मनादेशप्रते न बांधे। णोदेसेणसव्वं बंधइ। जीवने देशेकरी सर्वकर्म न बांधे २। णो सव्वेणदेसंबंधइ। सर्वजीवेकरी कर्मना देशप्रते न बांधे ३। सव्वेणसव्वं बंधइ। तेरथू १ सर्वात्मायेकरी सर्वकर्म बांधे जीवना तथाविध स्वभावथकी ४ ए इरियावहि बंधकह्यो, हिवे साम्परायिकबन्ध निरूपण करेछे—संपराइयाणभंते किंणेरइओबंधइ। साम्प रायिककर्म हेभगवन्। स्यूं १ नारकी बांधे। तिरिक्खजोणिओ बंधइ जाव देवीबंधइ। तिर्यंचयोनिक पुरुष बांधे इम ता लगे कहवो, जालगे देवी बांधे ७ पूछीलीपरे सातेई प्रश्न पूछवा उत्तर। गोयमा णेरइओ बंधइ। हेगौतम। नारकी पणि बांधे। तिरिक्खजोणिओवि बंधइ। तिर्यंचयोनिक पुरुष पणि बांधे। तिरिक्खजोणिणीवि बंधइ। तिर्यंचयोनिकनी स्त्री पणिबांधे ३। मणुस्सोविबंधइ मणुस्सीविबंधइ देवोविबंधइ देवीवि बंधइ। मनुष्य पणि बांधे मनुष्यनी स्त्री पणि बांधे, देव पणि बांधे देवी पणि बांधे ए सातमांहे मनुष्य मनुष्यणी टाली पञ्चसाम्परायिक कर्मनाबन्धक होंजछे सकषायपणा

सकषायत्वेसति साम्परायिक बध्नीतो नपुन रन्यदेति, साम्परायिकबन्धमेव स्त्र्याद्यपेक्षया निरूपयन्नाह ॥ त भन्ते। किं इत्थी इत्यादि ॥ इह स्त्र्यादयो विवक्षितैकत्ववहुत्वा यद् सर्वदा साम्परायिक बध्नाति, अपगतवेदश्च कदाचिदेव तस्य कादाचित्कत्वा, ततश्च स्त्र्यादय केवला बध्नन्त्यप गतवेदसहिताश्च, ततश्च यदा ऽपगतवेदसहिता बध्नन्ति तदोच्यते अथवं, ते स्त्र्यादयो बध्नन्ति अपगतवदश्च तस्यै कस्यापि सम्भवात्, अथवे, तेच स्त्र्यादयो बध्नन्त्यऽपगतवेदाश्च तेषा बहूनामपि सम्भवात्, अपगतवेदश्च साम्परायिकबन्धको वेदत्रये उपशान्ते क्षीणेवा, याव द्यथाख्यात नप्राप्नोति ताव लभ्यतइति, इह च पूर्वप्रतिपन्नप्रतिपद्यमानकविवक्षा नकृता द्वयो रप्येकत्वबहुत्वयो र्भावेन निर्विशेषत्वा तथाह्यऽपगतवेदत्व

बंधइ, त भन्ते! किं इत्थी बंधइ पुरिसो बंधइ तहेव जाव णोइत्थी णोपुरिसो णोणपुंसओ बंधइ? गो० इत्थीवि बंधइ पुरिसोवि बंधइ जाव णपुंसगावि बंधंति, अहवे एय अवगयवेदो बंधइ अहवे एय अवगयवेयाय

बध्नाति। तद्भदन्त। किं स्त्री बध्नाति पुरुषो बध्नाति तथैव याव नो स्त्री नोपुरुषो नो नपुंसको बध्नाति? गौतम। स्त्र्यपि बध्नाति पुरुषोपि बध्नाति याव नपुंसका अपि बध्नन्ति अथवा अपगत वेदो बध्नाति अपगतवेदाश्च बध्नन्ति। यदि भदन्त। अपगतवेदश्चा पगतवेदाश्च

थको अने मनुष्य गो सकषायपणेथका साम्परायिककर्म बांधे अने अकषायथका नबांधे इति विशेष, हिवे साम्परायिक बन्धहोत स्त्र्यादिकनो अपेक्षा ये करी निरूपण करेछै—तभन्तेकि इत्थीबंधइ पुरिसो बंधइ तहेव जाव णोइत्थी णो पुरिसो णो णपुंसओ बंधइ। ते साम्परायिककर्म प्रते हेभगवान्। स्त्री बांधे पुरुष बांधे इत्यादि तीन एकवचने एव पूर्वे पूछ्या तिम पूछवा तथा नहीं स्त्री नहीं पुरुष नहीं नपुंसक ते अपगतवेद ते बांधे ए ७ प्रश्न पूछ्या। उत्तर। गोयमा इत्थीविबंधइ पुरिसोविबंधइ जाव णपुंसगाविबंधंति। हेगौतम। स्त्री स्त्री आदिदेई तीन एकवचने वली तीन बहुवचने यावत् नपुंसकपणा बांधे, ए छ ए साम्परायिककर्म सर्वदा बांधे अने अपगतवेद किवारें के बांधे तेहने कादाचित्कपणाथकी तेहना एकादिना संभवथकी एक पणि बांधे वणाना सम्भवथको घणा पणि बांधे ते कहेछै—अहवेएयअवगयवेदो बंधइ अहवेय अवगयवेयाय बंधंति। अपगतवेद एकवचने बांधे तथा अपगतवेद बहुवच

॥ टीका ॥

साम्परायिकबन्धोऽल्पकालीनएव तत्रच यो ऽपगतवेदत्वं प्रतिपन्नपूर्वं साम्परायिक बध्ना त्यसा वेको नेकोवा, स्या देव प्रतिपद्यमानको पीति साम्परायिकबन्धोऽल्पकालीनएव तत्रच यो ऽपगतवेदत्वं ... क्षि मित्यादि ॥ इरच पूर्वोक्ते घष्टासु विकल्पे घाद्या श्चत्वारएव सम्भ अथ साम्परायिककर्म्मबन्धन मेव कालत्रयेण विकल्पय न्नाह ॥ त भंते । कि मित्यादि ॥ इरच पूर्वोक्ते ... सवएव ससारी यथाख्यातासम्प्राप्तोपशम वन्ति नेतर जीवाना साम्परायिककर्मबन्धस्या नादित्वेन नबन्धीत्यस्या नुपपद्यमानत्वा, तत्र प्रथम सवएव ससारी यथाख्यातासम्प्राप्तोपशम

॥ मूल ॥

वधंति। जइ भंते ! अवगयवेदोय अवगयवेदाय बंधति, त भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ पुरिसपच्छा कडो बधइ एव जहेव इरियावहिया बंधगस्स तहेव णिरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडाय पुरिसप च्छाकडाय णपुंसगपच्छाकडाय बधंति। तं भंते! किं बधी बधइ बंधिस्सइ १ । बंधी बंधइ नबंधिस्सइ २।

अनुवाद

बध्नन्ति तद्भदन्त । कि स्त्रीपश्चात्कृतो बध्नाति पुरुषपश्चात्कृतो बध्ना त्येव यथैव यांपथिकबन्धकस्य तथैव निरवशेष भणितव्य याव दथवा स्त्रीपश्चात्कृताश्च पुरुषपश्चात्कृताश्च नपुसकपश्चात्कृताश्च बध्नन्ति । तद्भदन्त किं बद्धवा न्बध्नाति भन्त्स्यति, बद्धवान् बध्नाति नभन्त्स्यति, बद्धवा

॥ भाषा ॥

न बाधै । जइणभंते अवगयवेदोय अवगयवेदाय बधति । जो हेभगवन् । साम्परायिककर्म अपगतवेद एकवचने बाधै अथवा अपगतवेद बहुवचने बाधै । तभ तेकिइत्थीपच्छाकडोबधइ पुरिसपच्छाकडो बधइ । तेहभंते हेभगवन् । स्त्री पश्चात्कृत एकवचने बाधै पुरुष पश्चात्कृत ए पणि एकवचने बाधै २ । एवजहेव इरियावहियाबधगस्स तहेव णिरवसेसजाव । इम जिम पूर्वे ऐर्यापथिककर्म बधकना २६ भागा पूछा तथा उत्तर वचनकह्या तिम इहा पणि साम्परा यिककर्मना बधनेविषै पणि भागा कहवा तेमाहिलो छव्वीसमोभांगो कहेछे—अहवाइत्थी पच्छाकडाय पुरिसपच्छाकडाय णपुसगपच्छाकडाय बधति । अथवा स्त्री पश्चात्कृत ए बहुवचने पुरुष पश्चात्कृत ए पणि बहुवचने नपुसकपश्चात्कृत ए पणि बहुवचने बाधै इम इहा पणि कहवो, हिवे साम्परायिक कर्म बन्धन त्रीज तीनकाल करी विकल्पकरता कहेछे—तभंतेकिबधी बधइ बंधिस्सइ । ते हेभगवन् । स्यू १ अतीतकाले बान्ध्यो वर्त्तमानकाले बाधेछे आ गामिकाले बाधस्ये प्रथमा १ । बधी बधइ न बंधिस्सइ २ । अतीतकाले बान्ध्यो वर्त्तमानकाले बान्धेछे आगामिकाले न बाधस्ये २ । बधी नबधइ बंधि

॥ टीका ॥

भंत्स्यति १। द्वितीयस्तु मोहक्षयात्पूर्व मतीतकालापेक्षया बद्धवान्
क्षपकावसान सहि पूर्वं बद्ध्वा न्वर्त्तमानकालेतु बध्ना त्यनागतकालापेया भंत्स्यति १। द्वितीयस्तु मोहक्षयात्पूर्व मतीतकालापेक्षया बद्धवान्
वर्त्तमानकालेतु बध्नाति भाविमोहक्षयापेक्षयातु नभंत्स्यति २। तृतीय पुन रुपशान्तमोहत्वा त्पूर्वं बद्ध्वा नुपशान्तमोहत्वेन बध्नाति तस्मा च्च्युत
पुन र्भंत्स्यतीति ३। चतुर्थस्तु मोहक्षया त्पूर्वं साम्परायिक कर्म बद्धवान् मोहक्षयेतु नबध्नाति नच भंत्स्यतीति सांपरायिककर्मबन्ध मवा श्रित्याह ॥

॥ मूल ॥

बंधी नबंधइ बंधिस्सइ ३। बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ४? गोयमा! अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ १। अत्थेगइए बंधी बंधइ नबंधिस्सइ २। अत्थेगइए बंधी नबंधइ बंधिस्सइ ३। अत्थेगइए बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ ४। तं भंते! किं साइयंसपज्जवसियं बंधइ पुच्छा तहेव? गोयमा साइयत्रा सपज्जवसियं

॥ अनुवाद ॥

न बध्नाति भंत्स्यति ३, बद्ध्वा नबध्नाति नभंत्स्यति ४? गौतम! अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति भंत्स्यति १, अस्त्येको बद्धवान् बध्नाति नभं
त्स्यति २, अस्त्येको बद्धवान् नबध्नाति भंत्स्यति ३, अस्त्येको बद्धवान् नबध्नाति नभंत्स्यति ४। तद्भदन्त! किं सादिक सपर्यवसित बध्नाति

॥ भाषा ॥

स्यइ २। अतीतकाले बान्ध्या वर्त्तमानकाले न बांधे छे आगामिकाले बान्धस्ये ३। बंधी नबंधइ नबंधिस्सइ। अतीतकालेबान्ध्यां वर्त्तमानकाले न बान्ध
अनागतकाले न बान्धस्ये ४ दूहा पूर्वोक्त आठविकल्पने विष पहिला चार बीजविकल्प नसम्भवे जीवने साम्परायिक बन्धने अनादिपर्णे करी अतीतका
ले न बन्ध्यो एहवो जपजे नही अतीतकाले जीवें साम्परायिककर्म बान्ध्योजछे तेमाटे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अत्थेगइए बंधी बंधइ बंधिस्सइ। हे
गौतम केतला एक जीव बंधीत्यादि ए पहिलें भागे सगला छांज ससारी यथाख्यात नथी पाम्या उपशम क्षपक अवसानें तेणे पूर्वे बान्ध्यूं वर्त्तमान का
ले बांधे छे अनागत कालनी अपेक्षायें बांधस्ये। अत्थेगइए बंधी बंधति नबंधिस्सइ। केतला एक जीव बंधी त्यादि बीजे भागे मोह क्षय थकी पहिला
अतीतकाले बाध्यु वर्त्तमान काले बांधे आगामिकालें मोह क्षयनी अपेक्षाये नबांधस्ये। अत्थेगइए बंधी नबधति बंधिस्सइ। छे केतला एक बंधी त्या
दि त्रीजे भागे अनुपशांत मोह पणा थकी पूर्वे बांध्यूं वर्त्तमान काले उपशांत मोह पणें नबांधे आगामिकालें तेहथी पड्यो बांधस्ये। अत्थेगइए बंधी

॥ टीका ॥

र्समित्यादि ॥ साइयवा, सपज्जवसिय वधइत्ति ॥ उपशान्तमोहतायां च्युत पुन रुपशान्तमोहता क्षीणमोहतावा; प्रतिपत्स्यमान ॥ अणाइयं वा, सपज्जवसिय वधइत्ति ॥ आदित. क्षपकापेक्ष मिद ॥ अणाइयवा; अपज्जवसिय वधइत्ति ॥ एतच्चा भव्यापेक्ष ॥ नोचेवण साइय अपज्जव सिय वधइत्ति ॥ सादिसाम्परायिकवन्धोहि मोहोपशमा च्युतस्यैव भवति तस्यचा वश्य मोक्षयायित्वा त्साम्परायिकवन्धस्य व्यवच्छेदसम्भव,

॥ मूल ॥

वंधइ १। अणाइयवा सपज्जवसियं वंधइ । अणाइयवा अपज्जवसिय वंधइ णोचेवणं साइय अपज्जव सिय वंधइ । त भंते ! किं देसेणं देसं वंधइ एवं जहेव इरियावहियवंधगस्स जाव सव्वेणं सव्वं वधइ ।

अनुवाद

पृच्छा तथैव गौ ! सादिकवा सपर्यवसित बध्नाति १, अनादिकवा सपर्यवसित बध्नाति २, अनादिकवा अपर्यवसित बध्नाति ३, नोचैव सा दिक मपर्यवसित बध्नाति ४। तद्भदन्त ! किं देशेन देश बध्नात्येव यथैवे र्यापथिकबन्धकस्य याव त्सर्वेण सर्व बध्नाति ॥ कति भदन्त ! कर्म

॥ भाषा ॥

निबधइ नबधिस्सइ । के केतला एक जीव मोह क्षय थकी पूर्वे साम्परायिक कर्म बाध्यू अनें मोहने क्षयें नबाधें नबाधस्यें । तभते कि सादिय सपज्जव सय वधइ पुच्छा । किवें वली साम्परायिक कर्म बंधहीज आश्रयी कहैछे—ते हेभगवन् स्यू सादिसात बाधें इत्यादि पूछिवो परें चउभगो पूछो । ता ह्रेन गो सादियवा सपज्जवसिय वधइ । तिमज हे गौतम । उपशात मोह पणा थकी पडी वली उपशात मोह तथा क्षीण मोह पणू पामस्यें ए भा गो तेहने हुवे । अथवा । अणादियवा सपज्जवसिय वधइ । अनादि सात बाधें क्षपकनो अपेक्षायें एभागो जाणवो । अथवा । अणादियवा अपज्जवसि य वंधइ णोचेवण साइय अपज्जवसिय वधइ । अनादि अनत बाधें अभव्यनें अपेक्षायें ए भागो जाणवो सादि सापरायिक वध मोह उपशमथकी पड्या तेहनेज हुवे तेहने मोक्ष गामि पणा थकी साम्परायिक बधना व्यवछेदनों संभवछे तेमाटे सादि अनत बधन नथी । तभते कि देसेण देस बध इ । ते हेभगवन् ! स्यू देशे करी कर्मना देश प्रते बाधें । एव जहेव इरियावहियबधगस्स जाव सव्वेण सव्व वधइ । इम जिम जीव ऐर्यापथिक कर्म बंध कह्यो तिम इहा पण सर्वे आत्माइ करी सब साम्परायिक कर्म बाधें अनेरे तीन भागे नबाधे इत्यर्थ, पूर्वे कासे वत्तव्यता कही हवे, कर्मने विषे जीव बध

॥ टीका ॥

स्तत्र नसादि रपर्यवसान साम्परायिकबन्धो स्तीति, अनन्तरं कर्म्म वक्तव्यतो क्ता ऽथ कर्म्मस्वेव यथायोगं परीषहावतार निरूपयितुमिच्छु: कर्म्मप्रकृती परीषहाश्च सावदाह ॥ कइण मित्यादि ॥ परीसहत्ति ॥ परीति समन्तात् स्वहेतुभि रुदीरिता मार्गाच्यवननिर्जरार्थं साध्वादिभि सह्यन्त इति परीषहा स्तेच द्वाविंशति रिति ॥दिगिच्छत्ति॥ बुभुक्षा सैव परीषह स्तपोर्थं मनेषणीयभक्तपरिहारार्थंवा; मुमुक्षुणा परिषह्यमाण

॥ मूल ॥

कइणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं०—णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । कइणं भंते ! परीसहा प० ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तंजहा—दिगिच्छापरीसहे

अनुवाद

प्रकृतय प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अष्टौ कर्मप्रकृतय प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-ज्ञानावरणीय याव दन्तरायिक । कति भदन्त ! परीषहा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्वाविंशति परीषहा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-जिघित्सापरीषह पिपासापरीषहो याव द्दर्शनपरीषह । एते प० ! द्वाविंशति परीषहा. कतिकर्मप्र

॥ भाषा ॥

योगकरी सहनो अवतार तेहप्रते निरूपण करवा वाच्छतां कहेछे—कर्मप्रकृति तथा परीसह पहिला कहेछे—केटलीभते कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ । के तली हेभगवन् । कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तं० । हेगौतम । आठ कर्मप्रकृति कही ते देखाडेछे—णाणावरणिज्ज जाव अंतराइय कइभते परीसहा प० । ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आउखो ५ नाम ६ गोत्र ७ अन्तराय ८ ए आठ कर्मप्रकृति जाणवी पूर्वे कर्मप्रकृति कही, तेहने उदये जे परीसह आवे ते कहेछे—केतला हेभगवन् । परीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बावीस परीसहा प० तं० । हेगौतम । बावीसपरीसह कह्या तिहां परि कहिये समस्तथकी पोताने हेतुये साधु आदिदेई, सहिये निर्जराने अर्थे उदी रित मार्गच्छाडवानथी ते परीसह कहिये ते कहेछे—दिगिछा परिसहे । दिग भूख तेहीज परीसह कहिये समस्तपणे सेहवो ते किम तपने अर्थे अथवा परिहारने अर्थे साधू ये सहवापणा थकी दिगछापरीसह, अथवा निर्दोषआहार अणलाभते सचित्त फलादि आधाकर्मादिक आहारनी इच्छा न करे ते दिगछापरीसह १ पिपासापरीसहे तपने अर्थे, तथा पापपरिहारने अर्थे साधु तृषा थकी घणू तृषालागी तोही पणि कालूं पाणी

त्वा " दिगिच्छापरीसहेत्ति „ एव पिपासापरीषहोपि „ याव च्छब्दलब्धसव्याख्यान मेवं दृश्य ॥ सीयपरीसहे उसिणपरीसहे ॥ शीतोष्णपरीषहा वात पनार्थं शीतोष्णबाधाया मप्यग्निसेवास्नानाद्यकृत्यपरिवर्जनार्थंवा , मुमुक्षुणा तयो परिषह्यमाणत्वा , दव मुत्तरत्रापि ॥ दसमसगपरीसहे ॥ दशा मशकाश्च चतुरिन्द्रियविशेषा उपलक्षणत्वा च्चैषा यूकामत्कुणमक्षिकादिपरिग्रह परीषहता चैतेषा देहव्यथा मुत्पादयत्स्वपि तेष्वनिवारणाज्ज्य द्वेषाभावत ॥ अचेलपरीसहे ॥ चेलाना वाससा मभावो ऽचेल तच्च परीषहो ऽचेलतायां जीर्णाऽपूर्णमलिनादिचेलत्वे लज्जादैन्याकाङ्क्षाद्यकरणेन परिषह्यमाणत्वा दिति , ॥ अरइपरीसहे ॥ अरति मोहनीयजो मनोविकार साच परीषह स्तन्निषेधनेन सहनादिति ॥ इत्थियापरीसहे ॥ स्त्रिया परीषहणाच्च तन्निरपेक्षत्व ब्रह्मचर्यमित्यर्थ ॥ चरियापरीसहे ॥ चर्या ग्रामनगरादिषु सञ्चरण तत्परिषहणाच्चा प्रतिबद्धतया तत्करण ॥ निसीहि यापरीसहे ॥ नैषेधिकी स्वाध्यायभूमि शून्यागारादिरूपा तत्परिषहणाच्च तत्रोपसर्गे ष्वत्रास. ॥ सेज्जापरीसहे ॥ शय्या वसति स्तत्परिषहणाच्च

भणलाभते सचित्तपाणी पीवानो वांछा न करै ते तृषा परीसह, २ इम यावत् शब्दथकी एतला कहया ते कहैछै—सीय प०, सीतै पीड्यो पणि ते टालवाने अर्थे अग्निसेवा नकरै ते सीतपरीसह ३, उण्ह प०, उष्ण पीड्याथका उष्णपणो टालवाने अर्थे स्नानादिककृत्य न करै साधू ४, इम आगे पणिक हवो ,दसमसग प०, दसामसा चउरिन्द्रीविशेष उपलक्षणथकी जूकामाखी माकण ते ग्रहवा ए सर्व देहव्यथा उपजावताथका पणि तेहने निवारै न हीं भय तथा द्वेषना अभावथकी ५ अचेलक प०, चेल कहिये कपडो तेहनो अभाव ते अचेल ते सहवो ते जीर्ण मेलभरया फाटी इसो कपडो आपने पा सै देखी लाज दैन्य आकांक्षादिकना अणकरवो ते अचेल परीसह ६, अरति प०, रति कहिये मोहनीयथी ऊपनो मननोविकार तेहना निषेधकरी स हवाथकी ७ इत्थिया प०, स्त्रीनां परीसह तेहनेविषै निरपेक्षपणो ब्रह्मचर्य पणो इत्यर्थ ८ चरिया प०, चर्या ते ग्राम नगरादिकनेविषै चरवो तेहनो प रीसह ते अप्रतिबद्धपणे कहयो ९ निसीहियां प०, नैषेधिकी कहिये स्वाध्यायभूमि शून्यागारादि रूप ते परीसह ते तिहां उपसर्ग ऊपना त्रास न पा मै १० सेज्जा प०, शय्या कहिये वसति उपाश्रय रूडै भूण्डै साकडै मोकलै सियाले ताढै उन्हाले उन्हे लागे थके मनउद्वेग नाणे ते शय्यापरीसह ११, अ

॥ टीका ॥

तज्जन्यदुःखादे रुपेक्षा ॥ अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे ॥ आक्रोशो दुर्वचन व्यधो यधोवा; यष्ट्यादिताडन तत्परीषहणञ्च क्षान्त्यवलम्बन ॥ जायणा परीसहे ॥ याञ्चा भिक्षण तत्परिषहणञ्च तत्र मानवर्जन ॥ अलाभपरीसहे ॥ अलाभ प्रतीत स्तत्परिषहणञ्च तत्र दैन्याभाव ॥ रोगपरीसहे ॥ रोगो रुक् तत्परिषहणञ्च तत्पीडासहन चिकित्सावर्जन ॥ तणफासपरीसहे ॥ तृणस्पर्श कुशादिस्पर्श स्तत्परिषहणञ्च कादाचित्कतृणग्रहणे तत्सस्पर्शज न्यदुःखाधिसहन ॥ जल्लपरीसह ॥ जल्लो मल स्तत् परिषहणञ्च देशत सवताया, स्नानोद्वर्त्तनादिवर्जन ॥ सक्कारपुरक्कारपरीसहे ॥ सत्कारो वस्त्रादिपूजा पुरस्कारो राजादिकृताभ्युत्थानादि स्तत्परिषहणञ्च तत्सद्भावे आत्मोत्कर्षवर्जन तदभाव दैन्यवर्जन तदनाकाङ्क्षाचेति ॥ पन्नापरीसहे ॥ प्रज्ञा मति ज्ञानविशेष स्तत्परिषहणञ्च प्रज्ञाया अभावे उद्वेगाकरण तद्भावेच मदाकरण ॥ नाणपरीसहे ॥ ज्ञान मत्यादि तत्परिषहणञ्च तस्य

॥ भाषा ॥

फास प०, अजाणलोक दुष्टवचन कहै निर्भ्रछे गालिदेवे तोहो पण मनमांहि कोपनाणे ते आक्रोश परीसह.१२ वध परीसहे, वधपरीसह कोई दुष्ट प्राणी लकडो सू तथा पत्थर सू तथा शस्त्रादिकेकरी मारे तोहो पण क्षमाकरे ते वध परीसह १३, जायणा प०, जब नीच कुलनविषे भिक्षा मांगता जातीथको मनमे लाजनाणे मानकाढे ते याचना परीसह १४, अलाभ प०, केतीवार अन्तराय कर्मने उदयेंकरी सूझतू आहार न पामे तिवारे बीजाने पामता देखीने मनसा ग्लान नथाय ते अलाभ परीसह १५, रोगपरीसह, कर्मनेवसे रोग व्याधियक अतिघणा करे करांत न आणे सावद्य औषध उपचारवानी वाञ्छा करे नहीं ते रोगपरीसह १६, तणफास प०, तृण संथारेकमे वसे भूमिस्पर्श खरखरो दुर्भ अथ तृण दुरपर्श तेहथी ऊपनो दुख ते सहे मन मेलो न करे १७ जल्ल प०, जल्लकहिवे मल जे शरीर ऊपर मललागो ते सर्वथी देशथकी तथा सर्वथको तिहां देशथको ते स्नान सर्वथकोऊगटणू पाठीप्रमुख ते वर्जवो १८, सकार पुरिसकार प० सत्कार ते वस्त्रादिक पूजा पुरस्कार ते राजादिक ऊभा उठवा तेहनो परीसह तेहने सद्भावे आत्माने उत्कर्ष वर्जे तेहने अभावे दीनपणो वर्जे तेहनो आकांक्षाछोडे नहीं १९, पन्ना प०, प्रज्ञा कहिये मतिज्ञानविशेष तेहनो परीसह प्रज्ञाने अभावे उद्वेग न करे तेहने भावे अहंकार न करे २० नाण प० ज्ञान ते मत्यादिक तेहनो परीसह ते विशिष्टने सद्भावे अहंकार न करे तेहने अभावे दीन

॥ टीका ॥

विशिष्टस्य सद्भावे मदवर्जन मभावेच दैन्यपरिवर्जन ग्रन्थान्तरे त्वज्ञानपरीषह इतिपठ्यते ॥ दसणपरीसहे ॥ दर्शनं तत्वश्रद्धान तत्परिषहणञ्च जिनाना जिनोक्तसूक्ष्मभावानाचा श्रद्धानवर्जन मिति ॥ कइसु कम्मपगडीसु समोयरतित्ति ॥ कतिषु कर्मप्रकृतिषु विषये परीषहा समवतारं व्रज न्ती त्यर्थ ॥ पन्नापरीसहेत्यादि ॥ प्रज्ञापरीषहो ज्ञानावरणे मतिज्ञानावरणरूपे समवतरति प्रज्ञाया अभाव माश्रित्य तदभावस्य ज्ञानावरणोदय सम्भवत्वात्' यत्तु तदभावे दैन्यवर्जन तत्सद्भावेच मानवर्जन तच्चारित्रमोहनीयक्षयोपशमादे रिति' एव ज्ञानपरीषहोपि, नवर मत्यादिज्ञाना

॥ मूल ॥

पिवासापरीसहे जाव दंसणपरीसहे । एएणं भंते ! बावीसंपरीसहा कइकम्मपगडीसु समोयरंति ? गो० ! चउसुकम्मपगडीसु समोयरंति त०—णाणावरणिज्जे वेयणिज्जे मोहणिज्जे अंतराइए । णाणावरणिज्जेणं भंते ! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गो० ! दोपरीसहा समोयरंति त०—पन्नापरीसहे णाणपरीसहे । वेयणिज्जेणं

अनुवाद

कतिषु समवतरन्ति ? गौतम ! चतुर्षु कर्मप्रकृतिषु समवतरति तद्यथा—ज्ञानावरणीये वेदनीये मोहनीये अन्तरायिके । ज्ञानावरणीये भ० ! कर्मणि कतिपरीषहा स्समवतरन्ति ? गौतम ! द्वौ परीषहौ समवतरत स्तद्यथा—प्रज्ञापरीषहो ज्ञानपरीषह । वेदनीये भ० ? कर्मणि कति

॥ भाषा ॥

पणो वर्जे इहा ग्रन्थान्तर अज्ञानपरीसह इसो कहैछे २१—दसण प०, दर्शन ते तत्व श्रद्धान परीसह देव गुरु धर्मनेविषे तथा सूक्ष्म निगोदकाल पुद्गल परावर्त्तादिकनेविषे सदेह नाणे २२ ए बावीस परीसह कह्या । एएणभते बावीसपरिसहा । एह हेभगवन् ! बावीस परिसह । कइकम्मपगडीसुसमो यरति । केतली कर्मप्रकृतिनेविषे समवतरे पामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउसुकम्मपगडीसुसमोयरति त० । हेगौतम ! चार कर्मप्रकृतिनेविषे समवतरे उदयआवे ते कहैछे—णाणावरणिज्जे वेयणिज्जे मोहणिज्जे अंतराइए । ज्ञानावरणीयने विषे १ वेदनीयने विषे २ मोहनीयने विषे ३ अन्तरायने विषे ४ । णाणावरणिज्जेणभतेकम्मेकइपरीसहा समोयरति । ज्ञानावरणीय हेभगवन् । कर्मनेविषे केतला परीसह समवतरे व्रजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दो परी सहा समोयरति तजहा पन्नापरीसहे णाणपरीसहे । हेगौतम ! दोय परीसह समवतरे जाय ते कहैछे—प्रज्ञापरीसह मतिज्ञानावरणने विषे समवतरे

वरणे वतरति " पचेत्यादि गाथा „ पंचेवआणुपुव्वीति ॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकपरीषहा इत्यर्थ, एतेषुच पीडैव वेदनीयोत्था तदधिसहनंतु चारित्रमोहनीयक्षयोपशमादिसम्भव मधिसहनस्य चारित्ररूपत्वा दिति ॥ एगेदंसणपरीसहे समोयरइत्ति ॥ यतो दर्शनं तत्वश्रद्धानरूप दर्शनमोहनीयस्य क्षयोपशमादौ भव त्युदयेतु नभवती त्यत स्तत्र दर्शनपरीषह समवतरतीति ॥ अरईत्यादि ॥ गाथा „ तत्रारतिपरीषहो ऽरतिमोहनी

भंते! कइपरीसहा समोयरंति ? गो० ! एक्कारसपरीसहा समोयरंति, तंचेवआणुपुव्वी चरियासेज्जावहेयरोगेय । तणफासजल्लमेवय एक्कारसवेयणिज्जंमि ॥ १ ॥ दंसणमोहणिज्जेणं भंते ! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ । चरित्तमोहणिज्जेणं भंते ! कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा !

परीषहा समवतरन्ति ? गौतम ! एकादशपरीषहा. समवतरन्ति तद्यथा-पचैवआनुपूर्व्या चर्याशय्यावधरोगश्च । तृणस्पर्शोजल्लमेते एकादशवेदनीयेस्यु ॥ १ ॥ दर्शनमोहनीये भ० ! कर्मणि कति परीषहा प्रज्ञप्ता. ? गौतम ! एको दर्शनपरीषह समवतरति । चारित्रमोहनीये

तेहने अभावे दैन्यपणो वर्जवो तेहने सद्भावे मान वर्जवो चारित्रमोहनीय क्षयोपशमादिकथकी जाणवो ६म ज्ञानपरीसह पणि थवर मतिज्ञानभेवि पे अवतरे । वेयणिज्जेणभंते कइपरीसहा समोयरंति । वेदनीयकर्मने विषे हेभगवन् । केतला परीसह समवतरे इतिप्रश्न । उत्तर । गोयमा एक्कारसपरीसहा समोयरंति त० । हेगौतम । इग्यारे परीसह समवतरे भजे ते कहेछे—पचेव आणुपुव्वी चरियासेज्जावहेयरोगेय । तणफासजल्लमेवय एक्कारसवेयणिज्जंमि । १ । पचेव इत्यादि, गाथा पच अनुक्रमे ते क्षुधा १ तृषा २ शीत ३ उष्ण ४ दंशमशक ५ तथा चर्या ६ शय्या ७ वध ८ रोग ९ तृणस्पर्श १० जल्लमल ११ एह स्यू ? पीडा ऊपजे ते वेदनीयथकी ऊपजे ते अधियासवो ते चारित्रमोहनीय क्षयोपशमादिकथी ऊपजो अधियासवाने चारित्ररूप पणाथकी इग्यारह परीसह वेदनीयना । दंसणमोहणिज्जेणभंते कम्मे कइपरीसहा समोयरंति । दर्शन मोहनीयकर्मने विषे हेभगवन् । केतलापरीसह समवतरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगेदंसणपरीसहे समोयरइ । हेगौतम ! एक दर्शनपरीसह जेभाटे दर्शन ते तत्व श्रद्धानरूप ते दर्शनमोहनीयने क्षयो

॥ टीका ॥

ये तज्ञान्यत्वा दचेलपरीषहो जुगुप्सामोहनीये लज्जापेक्षया' स्त्रीपरीषहः पुरुषवेदमोहे स्त्र्यपेक्षयातु पुरुषपरीषह स्त्रीवेदमोहे तत्त्वत स्त्याद्य त्रिलापरूपत्वा त्तस्य, नैषेधिकीपरीषहो भयमोहे उपसर्गजयापेक्षया' याञ्चापरीषहो मानमोहे तद्दु करत्वापेक्षया, आक्रोशपरीषह क्रोधमोहे क्रोधोत्पत्त्यपेक्षया, सत्कारपुरस्कारपरीषहो मानमोहे मदोत्पत्त्यपेक्षया समवतरति, सामान्यत स्तु सर्वे प्येत चारित्रमोहनीये समवतरन्तीति ॥ एगे अलाभपरीसहे समोयरइत्ति ॥ अलाभपरीषह एवान्तराये समवतर त्यन्तराय चेह लाभान्तराय तदुदयएव लाभाभावात्, तदधिसहनच

॥ मूल ॥

सत्तपरीसहा समोयरंति तंजहा—अरईअचेलइत्थी निसीहियाजायणायअक्कोसे । सक्कारपुरक्कारे चरित्तमोहं मिसत्तेते ॥ १ ॥ अंतराइएणं भंते! कम्मे कइपरीसहा समोयरंति ? गोयमा! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ।

॥ अनुवाद ॥

प्र० १ कर्मणि कति परीषहा समवतरन्ति ? गौ० । सप्तपरीषहा समवतरन्ति तद्यथा—अरतीचाचेल स्त्री नैषेधिकीयाचनातयाक्रोश । सत्कार पुरस्कारौ चरित्रमोहेऽवतरन्तिसप्तैते ॥ १ ॥ आन्तरायिके प्र० । कर्मणि कति परीषहा समवतरन्ति ? गौतम । एक अलाभपरीषह समवतर

॥ भाषा ॥

पणमादिकने विषे हुवे अन तेहने उदये नहुवे एतलामाटे तिहां दर्शनपरीसह अवतरे । चरित्तमोहणिज्जेणभंते कइपरीसहा समोयरंति । चारित्रमोह नीयकर्मने विषे हेभगवन् । केतला परीसह समवतरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्त परीसहा समोयरंति त० । हेगौतम । सातपरीसह अवतरे ते कहे छे—अरती अचेलइत्थी निसोहियाजायणायअक्कोसे। सक्कार पुरक्कारे चरित्तमोहंमि सत्तेते । १ । अरतीत्यादि, तिहां अरतिपरीसह अरतिमोहनीयने विषे तेहथी उपनामाटे १ जुगुप्सामोहनीयनेविषे लाजनी अपेचाये २ इहा ए विशेष पुरुषनी अपेचायें स्त्री परीसह स्त्रीनी अपेचायें पुरुष परीसह तिहां स्त्रीपरीसह पुरुष वेदमोहनीयनेविषे स्त्री अपेचपणाथकी पुरुषपरीसह स्त्री वेदमोहनीयनेविषे पुरुष अपेचपणाथकी तत्वथकी स्त्र्यादिक अभि लाषरूप पणाथकी तेहने ३ नैषेधिकीपरीसह भयमोहनीयनेविषे अवतरे उपसर्ग भयनी अपेचाये ४ याचना परीसह मानमोहनीयनेविषे तेहना दुष्कार पणानी अपेचाये ५ आक्रोशपरीसह क्रोधमोहनीयनेविषे क्रोध उत्पत्तिनी अपेचाये ६ सत्कार पुरस्कार परीसह मोहनीयनेविषे अवतरे मद उत्पत्ति

॥ टीका ॥

चारित्रमोहनीयक्षयोपशम इति ॥ अथ बन्धस्थानान्याश्रित्य परीषहान् विचारय नाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधबन्धक आयुर्वर्जशेषकर्मबन्धक ॥ जसमय सीयपरीसह मित्यादि ॥ यत्र समये शीतपरीषह वेदयते न तत्रो ष्णपरीषह शीतोष्णयो परस्पर मत्यन्तविरोधे नैकदै कत्रा सम्भवात्, अथ यद्यपि शीतोष्णयो रेकदै कत्रा सम्भव स्तथा प्यात्यतिके शीते तथाविधाग्निसन्निधौ युगप द्देवैकस्य पुस एकस्यादिशि शीत मन्यस्या चोष्ण

॥ मूल ॥

सत्तविहबंधगस्सणं भंते ! कइपरीसहा पन्नत्ता ? गोयमा ! बावीसं परीसहा पन्नत्ता, वीसं पुणवेएइ । जसमयसीयपरीसहं वेएइ नोतंसमयं उसिणपरीसहं वेएइ, जसमयं उसिणपरीसहं वेएइ नोतंसमय सीयपरीसहं

॥ अनुवाद ॥

ति । सप्तविधबधकस्य भ० । कतिपरीषहा. प्रज्ञप्ता. ? गौतम । द्वाविंशतिःपरीषहा प्रज्ञप्ताः, विंशति' पुन र्वेदयते, यस्मिन्समये शीतपरीषह वेदयते नो तस्मिन्समये उष्णपरीषह वेदयते । यस्मिन् समये उष्णपरीषह वेदयते नो तस्मिन् समये शीतपरीषह वेदयते । यस्मिन् समये

॥ भाषा ॥

नो अपेचाये ७ सामान्यपणायको ए सातेहं चारित्रमोहनीयनेविषे अवतरै । अतराइएणभंतेकम्मे कइपरीसहा समोयरंति । अन्तरायकर्मनेविषे हेभगवन् केतला परीसह समवतरै अर्जे इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगे अलाभपरीसहे समोयरइ । हेगौतम एक अलाभपरीसह अन्तरायनेविषे समवतरै अन्तराय पणि लाभान्तराय तेहनेविषे लाभना अभावथको तेहनो अहियासवो ते चारित्रमोहनीय क्षयोपशम इति, हिवे बन्धस्थान आश्रयीने परीसह प्रते विचारतो कहेछे—सत्तविहबंधगस्सणभंते कइपरीसहा प० । आऊखावर्जीने शेष सप्तविध कर्मबन्धकने हेभगवन् केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बावीसपरीसहा प० वीसपुणवेएइ । हेगौतम बावीस परीसह कह्या वली वीसपरीसहप्रते अनुभवे ते कहेछे—जसमय सीयपरीसहंवेएइ णो तसमयंउसिणपरीसहंवेएइ । जे समयनेविषे शीतपरीसह वेदे अनुभवे ते समयनेविषे उष्णपरीसह वेदै अनुभवे नही शीतउष्णने माहोमाहि अत्यन्त विरोधकारी एकठो न उपजे, हिवे जो पणि शीत उष्णनो एक वेलायें एकठो सम्भवछे अत्यन्त शीतथको तथाविध अग्निसमीपें समकाले एक पुरुषने एकदिशे शीत बीजीदिशें उष्ण इम बेउ शीतउष्णपरीसहनो पणि सम्भवछे तो पणि इम न कहवो जेमाटे इहा कालकृत शीतउष्ण आश्रयण प

॥ टीका ॥ दधिकृतसूत्रस्य वविधव्यतिकरस्यवा ; प्रायेण तपस्विना मभा मित्येव द्वयोरपि शीतोष्णपरीषहयो रस्ति सम्भव , नैतदेवं कालकृतशीतोष्णाश्रयत्वा वा दिति तथा ॥ जसमय चरियापरीसह मित्यादि ॥ तत्र चर्या ग्रामादिषु सञ्चरण नैषेधिकीच ग्रामादिषु प्रतिपन्नमासकल्पादे स्वाध्यायादि निमित्त शय्यातो विविक्ततरोपाश्रये गत्वा निषदन मेवचा नयो विहारावस्थानरूपत्वेन परस्परविरोधा न्नैकदा सम्भव ' अथ नैषेधिकीव च्छ

॥ मूल ॥ वेएइ, जंसमय चरियापरीसहं वेएइ नोतंसमयं निसीहिया परीसह वेएइ जंसमयं निसीहियापरीसहं वेएइ नोतंसमयं चरियापरीसहं वेएइ । अट्ठविहबंधगस्सणं भंते ! कइपरीसहा पण्णत्ता, गोयमा ! बावीसं परी

॥ अनुवाद ॥ चर्यापरीषह वेदयते नो तस्मिन्समये नैषेधिकीपरीषह वेदयते' यस्मिन्समये नैषेधिकीपरीषह वेदयते नो तस्मिन्समये चर्यापरीषह वेदयते । अष्टविधबन्धकस्य भ० । कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्वाविंशति परीषहा प्रज्ञप्ता, तद्यथा–क्षुधापरीषह पिपासापरीषह' शीतपरीष

॥ भाषा ॥ गाथको ते अधिकृत सूत्रने विषे अथवा इम न करवो ते प्रायें श्रमण तपस्वीने न घटे । जसमयउसिणपरीसह वेएइ णो तंसमय सीयपरीसह वेएइ । जे समयनेविषे चर्यापरीसह अनुभवे ते समयनेविषे निषिध्यापरीसह अनुभवे नहीं । जसमय चरियापरीसह वेएइ णो तसमयनिसीहियापरीसह वेएइ । जे समयनेविषे निषिध्यापरीसह वेदे ते समयनेविषे चर्यापरीसह न वेदे तेकिम चर्या ते ग्रामादिकनविषे सञ्चरवो अने नैषेधिकी ग्रामादिकने विषे पडु ता मास कल्प टिकने स्वाध्यायादि निमित्ते शय्याथी विविक्ततर उपाश्रयनेविषे जाय वेसिवो एहोने विहार अवस्थान रूपपणें करी माहोमाहि विरो धथको एकवेलायें सम्भव नहीछे, ते माटे उगणीस परीसह उत्कृष्ट पणें एक वेलायें वेदे एहवो कह्यु जोइजे तेहने इम कहिये ते कह्यु तिम नही जेमाटे ग्रामादिकनेविषे जाइवा भाखो जिवारे कोइएक उत्सुक थको निवर्त्यो नहीछे ते परिणामे हीजविश्राम भोजनादि अर्थे इत्वरशय्यानेविषे वर्त्तेछे तिवारे वेऊनो पणि विरोधनही तत्व थी चर्यानेविषे असमाप्त पणाथको ते धाश्रयने आश्रयथको वली कोइएक कहस्ये जो इमछे तो किम षड्विध बन्धकाश्रयीने कहस्ये ,जसमयचरियाप

॥ टीका ॥

य्यापि चर्यापरीसह विरुद्धेति नतयो रेकदा सम्भव' ततश्चैकोनविंशते रेव परीषहाणा मुत्कर्षे णैकदा वेदन प्राप्तमिति, नैव यतो ग्रामादिगमनप्र वृत्तो यदा कश्चि दौत्सुक्या दनिवृत्ततत्परिणामएव विश्रामभजनाद्यर्थं मित्वरशय्यायां वर्त्तते तदो भयम प्यविरुद्ध मेव तत्त्वत शय्याया असमा सत्वा दाश्रयस्यचा श्रयणादिति ॥ यद्येव तर्हि कथ षड्विधबन्धक माश्रित्य वक्ष्यति ॥ जसमय चरियापरीसह वेएइ नोत समय सेज्जापरीसह वेए

॥ मूल ॥

सहा पण्णत्ता, तंजहा छुहापरीसहे पिवासापरीसहे सीयपरीसहे जाव अलाभपरीसहे । एवं अट्ठविहबंधग रसवि । छव्विहबंधगस्सणं भंते ! सरागछउमत्थस्स कइपरीसहा पण्णत्ता? गोयमा! चोद्दसपरीहा पण्णत्ता, बारस पुण वेएइ, जंसमय सीयपरीसहं वेएइ नोतंसमय उसिणपरीसह वेएइ, जंसमय उसिणपरीसह वेएइ

अनुवाद

ऽ यावत् दलाभपरीषह' एव मष्टविधबन्धकस्यापि । षड्विधबन्धकस्य भ० । सरागछद्मस्थस्य कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ? गौतम । चतुर्दश परीषहा· प्रज्ञप्ता द्वादश पुन र्वेदयते, यस्मिन् समये शीतपरीषह वेदयते नो तस्मिन् समये उष्णपरीषह वेदयते' यस्मिन्समये उष्णपरीषह वेदयते नो तस्मिन्समये शीतपरीषह वेदयते । यस्मिन् समये चर्यापरीषह वेदयते नो तस्मिन् समये शय्यापरीषह वेदयते, यस्मिन् समये

॥ भाषा ॥

रोसहवेएइ णो तसमयं सेज्जापरीसह वेएइ, इत्यादि तेहने इमकहिवे षड्विध बन्धक मोहनीयने अविद्यमान कल्प पणाथकी सघले स्थानकी उत्सुक पणाने अभावेकरी शय्याकाले शय्यानेविषे वर्त्त यथिनहीं बादररागनो परे उत्सुकपणे करी विहारपरिणाम अविच्छेदथको चर्यानेविषे वर्त्त एतलाना टे तेहनो अपेक्षाये तेहना परस्पर विरोधथकी समकाले असम्भवछे तेमाटे एतलो कह्यु । जसमय निसीहिया परीसह वेएइ णो तसमय चरियापरीसह वेएइ । जे समयनेविषे निषध्या ते समये चर्यानहीं । अट्ठविहबंधगस्सणभंते कइ परीसहा प० । अष्टविध बंधकने हेभगवन् । केतला परीसह कह्या इति प्रश्न उत्तर । गोयमा बावीस परीसहा प० । हेगौतम । बावीस परीसह कह्या, वली बीसवेदे जिम सप्तविध बन्धकने कह्यु । एवअट्ठविहबंधगस्सवि । ए म अष्टविध बन्धकने पणि कहवो । छव्विहबंधगस्सणभंते सराग छउमत्थस्स कइ परीसहा प० । आउमोहनीय वर्जीने छ कर्मना बंधकने एतले सूक्ष्म

॥ टीका ॥

इत्यादि ॥ अत्रोच्यते षड्विधवधको मोहनीयस्या विद्यमानकल्पत्वा त्सर्वत्रौत्सुक्याभावेन शय्याकाले शय्यायामेव वर्त्तते नतु बादररागव दौत्सु क्येन विहारपरिणामाविच्छेदा च्चर्यायाम प्यत स्तदपेक्षया तयो परस्परविरोधा द्युगप दसम्भव स्ततश्चा सा ष्वेव जसमय चरिए त्यादि ॥ छवि हवधे त्यादि ॥ षड्विधबन्धकस्या यु र्मोहवर्जाना बन्धकस्य सूक्ष्मसम्परायस्ये त्यर्थ' एतदेवाह ॥ सरागछउमत्थस्से त्यादि ॥ सूक्ष्मलोभाणूना ·वे दना त्सरागो ऽनुत्पन्नकेवलत्वा च्छद्मस्थ, स्तत कर्मधारयो ऽत स्तस्य ॥ चोद्दसपरीसहत्ति ॥ अष्टाना मोहनीयसम्भवाना तस्य मोहाभावेना भा वा द्वाविंशते शेषा श्चतुर्दशपरीषहा इति, ननु सूक्ष्मसम्परायस्य चतुर्दशाना मेवा भिधानात् मोहनीयसम्भवाना मष्टाना मसम्भव इत्युक्त ततश्च सामर्थ्या दनिवृत्तिवादरसम्परायस्य मोहनीयसम्भवाना मष्टाना मपि सम्भव प्राप्त· कथ चैत द्युज्यते यतो दर्शनसप्तकोपशमे वादरकषायस्यदर्शनो योदयाभावेन दर्शनपरीषहाभावा त्सप्तानामेव सम्भवो नाष्टाना, अथ दर्शनमोहनीयसत्तापेक्षया सा वपी ष्यत इत्यष्टा वेव, त र्हुपशमकत्वेसूक्ष्म सम्परायस्यापि मोहनीयसत्तासद्भावा त्कथ तदुत्थाः सर्वेपि परीषहा नभवतीति न्यायस्य समानत्वा दिति अत्रो च्यते यस्मा द्दर्शनसप्तकोपशमस्यो

॥ भाषा ॥

सपराय दशमगुण स्थानक वर्त्तीने इत्यर्थ एहीज कहेछे—हेभगवन् । सूक्ष्मलोभना जे अणु तेहना वेदवाथी सरागी कहिये, केवलज्ञान नथी ऊपनो ते माटे छद्मस्थ कहिये तेहने हेभगवन् । केतला परीसहकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउद्दस परीसहा प० । हेगौतम । चउदे परीसह कह्या आठ प रीसह मोहनीयथका जे ऊपनाछे तेहने मोहनीयने अभावेंकरी अभावथकी बावीसमाहियी आठ दूरकीजे तिवारे शेष चउदह रहे इहा कोइएक बो ल्यो सूक्ष्म सम्परायने चोदेहीज परीसहना कहवाथकी मोहनीयथकी ऊपना आठपरीसह तेहनो असम्भव दर्साकह्यो तिवारे सामर्थ्यथकी अनिवृत्त बा दर सम्परायने मोहनीयथकी ऊपना आठ परीसहनो सम्भव पाम्यो ते किम घटे जेमाटे दर्शन सप्तकने उपशम थया बादर सम्परायने दर्शनमोहनीय उ दयने अभावें दर्शनपरीसहना अभावथकी सातनोज सम्भवछे पणि आठमो नही अने जो दर्शनमोहनीय सत्ता अपेक्षायें एह पणि वाछिये तो आठ पणिहुवे इम तो उपशमनपणें सूक्ष्मसम्परायने पणि मोहनीयसत्ता सद्भावथकी किम तेहथी ऊपना सगलाइ परीसह न हुवे न्यायना समानपणाथकी

॥ टीका ॥

पर्यव नपुंसकवेदा ग्रुपशमकाले ऽनिवृत्तिबादरसम्परायो भवति यथा वश्यकादिव्यतिरिक्तग्रन्थान्तरमतेन दर्शनत्रयस्य बृहतिभागे उपशान्ते शे षेचा नुपशान्ते एव स्यात् नपुंसकवेदचा सौ तेनसहो पशमयितु मुपक्रमते, ततश्च नपुंसकवेदोपशमावसरे अनिवृत्तिबादरसम्परायस्य सतो दर्श नमोहस्य प्रदेशत उदयोस्ति नतस्यैव, तत स्तत्प्रत्ययो दर्शनपरीषह स्तस्यास्तीति, ततश्चा ष्टावपि भवन्तीति, सूक्ष्मसम्परायस्यतु मोहसत्ताया मपि नपरीषहहेतुभूत सूक्ष्मोपि मोहनीयोदयो स्तीति नमोहजन्यपरीषहसम्भव, आह च-मोहनिमित्ताणठवि बायररागेपरीसहाकिहणु। किंहि वासुहुमसरागे नहुतिउवसामएसव्वं ॥ १ ॥ आचार्य आह-सत्तणपरउत्तियजे णवायरोजचसावसंसम्मि। नम्गिह्लमिपुरिते लग्गइतोदसणस्साबि ॥ २ ॥

॥ मूल ॥

नोतसमयं सीयपरीसहं वेएइ, जंसमयं चरियापरीसहं वेएइ नोतसमयं सेज्जा परीसहं वेएइ, जसमय सेज्जा

अनुवाद

शय्यापरीषह चैव वेदयते नो तस्मिन् समये चर्यापरीषह वेदयते। एकविधबन्धकस्य भ०! वीतरागछद्मस्थस्य कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ?

॥ भावा ॥

तेहने एम कहिवे जे कारणथको दर्शनसप्तक उपशमने ऊपरहोज नपुंसकवेद उपशम कालनेविषे अनिवृत्तबादर सम्परायहुवे, ते आवश्यकादि व्यति रिक्त ग्रन्थान्तर मते करी दर्शन तीनने बृहत्भाग उपशान्तथया शेष अनुपशान्त थयाज हुवे, नपुंसकवेद पछ तिणे उपशमाविवाने उपक्रम करे तिवा रे नपुंसकवेद उपशमने अवसरे निवृत्तबादर सम्परायने छते दर्शनमोहनीयनो प्रदेशथको उदयछे पणिनहीं सत्तायेज तिवारे ते प्रत्ययदर्शनपरीसहे तेहनेछे तिवारे आठेइ परीसह हुवे अने सूक्ष्मसम्परायने मोहनीयसत्ताथको पणि परीसह हेतुभूत नहीं सूक्ष्म पणि मोहनीयनो उदयछे पणि मोहज न्य परीसहनो सम्भवनहीं जे सूक्ष्मसम्परायने सूक्ष्मलोभ कीटोनो उदयछे ते परीसह हेतुभूत नहीं लोभहेतुकने परीसहना अणकारथायको अथवा कोई कथञ्चित् प्रकारे ए जो हुवे तो तेहने अल्पपणे करी इहां विवक्षा न कीधी तेमाटे चउदे होज परीसह उपजे। बारसएगबेरइ। बारे वली वेदे। जसम य सीयपरीसह वेएइ णो तसमय उसिणपरीसह वेएइ। जे समये शीतपरीसह वेदे ते समये उष्णपरीसह न वेदे। ज समय उसिणपरीसह वेएइ णो त समयसीयपरीसह वेएइ। जे समये उष्णपरीसह वेदे ते समये शीतपरीसह न वेदे। ज समय चरियापरीसह वेएइ णो त समय सेज्जापरीसह वेएइ।

॥ टीका ॥

लब्धाऽपशमकस्य पञ्चसुक्ष्मोदयत्वेनाऽत्र । तस्माच्छेषाणामसुक्ष्मे नतस्ससुक्ष्मोदत्वविज्ञ इति ॥ ३ ॥ यत्र सूक्ष्मसम्परायस्य सूक्ष्मलोभकिट्टिकाना सद्यो नासौ परीषहहेतु लोभस्तुकस्य परीषहस्या नभिधाना यदिच कोपि कथचि दसौ स्या त्तदा तस्येश त्यन्ताल्पत्वेना विवक्षति ॥ एगविहवध गरसमि ॥ वदनीयबधकस्येत्यथ , कस्यतस्ये त्यत आह ॥ वीयरागछउमत्थस्सत्ति ॥ उपशान्तमोहस्य क्षीणमोहस्यचे त्यर्थ ॥ एवचेवत्यादि ॥ चतु

॥ मूल ॥

परीसहंचेव वेएइ नोतसमयं चरियापरीसह वेएइ, एक्कविहबंधगस्सणं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कइपरीसहा पन्नत्ता ? गोयमा ! एवं जहेव छव्विहबंधगस्स । एगविहबंधगस्सणं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कइपरीसहा प० गो० एक्कारसपरीसहा प०, नव पुण वेएइ. सेस जहा छव्विहबंधगस्स । अबंधगस्सणं

अनुवाद

गौतम । एव यथैव षड्विधबन्धकस्य । एकविधबन्धकस्य भ० । सयोगिभवस्थकेवलिन कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ? गौतम । एकादश परीषहा प्रज्ञप्ता नव पुन वेदयत, शेष यथा षड्विधबन्धकस्य । अबंधकस्य भ० । अयोगिभवस्थकेवलिन. कतिपरीषहा प्रज्ञप्ता ? गौतम । एकादश

॥ भाषा ॥

तथा जे समये चर्यापरीसह वेदे तिणिसमये शय्यापरीसह न वेदे । जे समये सिज्यापरीसह वेदइ णो ते समय चरियापरीसह वेदइ । जे समये शय्याप रीस ? वेदे ते समये चर्यापरीसह न वेदे । एगविह बधगस्सणभते वीयराग छउमत्थस्स कइपरीसहा प० । एक वेदनीयना बधकने ते कुण ते कहेछे—उप शातमोहने इत्यर्थ, एतले एकविध बधक हेभगवन् । वीतराग छद्मस्थने केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एवचेव जहेव छव्विहबंधगस्स । हे गौतम । एमहीज जिम छव्विह बधकने कह्या तिमकहवो एतले चउदे कह्या वली बारे वेदे शीत अने उष्णचर्या अने शय्या एवंजने पर्यायेवेदनाथको । एगविहबधगस्सणभते सजोगि भवत्थ केवलिस्सकइ परीसहा प० । एकविध बधकने हेभगवन् । पणि वेदवाने सयोगी भवस्थकेवली एतले तेरमे गुणस्था नकवर्त्तीने केतलापरीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एक्कारसपरीसहा प० । हेगौतम । वेदनीयसम्बन्धी इग्यारेपरीसह कह्या, नवपरीसह वली वेदे शीतउष्ण चर्या शय्या वध रोग तृणस्पर्श ... एकत्वमाहे एतले शीत अने उष्ण शय्या अने चर्याने माहोमाहि विरोधीथको । अबधगस्सणभते अजोगि भवत्थकेवलिस्स

॥ टीका ॥

इंशा प्रज्ञप्ता द्वादश पुन र्वेदयती त्यर्थः शीतोष्णयो श्चर्याशय्ययोश्च पर्यायेण वेदनादिति, अनन्तर परीषहा उक्ता स्तेषुचोष्णपरीषह हेतुत्वश्च सू

॥ मूल ॥

न्ते ! अजोगिभवत्थकेवलिस्स कइपरीसहा पण्णत्ता? गोयमा ! एक्कारसपरीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेएइ। जंसमय सीयपरीसह वेएइ नोतसमय उसिणपरीसह वेएइ, जसमय उसिणपरीसह वेएइ नोतसमय सीय परीसह वेएइ, जंसमय चरियापरीसहं नोतसमय सेज्जापरीसह, जसमय सेज्जापरीसह नोतंसमय चरिया परीसहं वेएइ जबूद्दीवेण भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति मज्झतिय मुहुत्तंसि

अनुवाद

परीषहा प्रज्ञप्ता, नव पुन र्वेदयते। यस्मिन् समये शीतपरीषह वेदयते नो तस्मिन् समये उष्णपरीषह वेदयते, यस्मिन्समय उष्णपरीषह वेदयते नो तस्मिन् समय शीतपरीषह वेदयते। यस्मिन् समये चर्यापरीषह वेदयते नो तस्मिन्समये शय्यापरीषह वेदयते, यस्मिन् समये शय्या परीषह वेदयत नो तस्मिन्समये चर्यापरीषह वेदयते ॥ जम्बूद्वीपे भ० ! द्वीपे सूर्यो उद्गमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते, मध्यान्तिक

॥ भाषा ॥

कइपरीसहा प०। अबन्धकने हेभगवन् ! पणि अबन्धक काहवाने चउदमें गुणस्थानकवर्त्तीने केतला परीसह कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एकारसप रीसहा प० नवपुणवेएइ। हेगौतम ! इग्यारे परीसह कह्या नव वली वेदे ते देखाडेछे—जंसमयसीयपरीसह वेएइ। जे समये शीतपरीसहने वेदे। णो तसमय उसिणपरीसह वेएइ। ते समयनेविषे उष्णपरीसह वेदेनही तथा। जसमयउसिणपरीसह वेएइ। जे समयनेविषे उष्णपरीसह वेदे। णोतसमय सीयपरीसह वेएइ। ते समयनेविषे शीतपरीसह न वेदे। जसमय चरियापरीसह वेएइ। तथा जे समयनेविषे चर्यापरीसह वेदे। णोतसमय सेज्जापरी सह वेएइ। ते समयनेविषे शय्यापरीसह वेदे नही। जसमयसेज्जापरीसह वेएइ। तथा जे समयनेविषे शय्यापरीसह वेदे। णोतसमय चरियापरीसह वेएइ। ते समयनेविषे चर्यापरीसह वेदे नही अनन्तरे परीसह कह्या तेहनेविषे उष्णपरीसह कह्यो तेहनो हेतु सूर्य एतलामाटे सूर्यवक्तव्यता निरूपण क रतां कहेछे—जबूद्दीवेणभंते सूरियाउग्गमण मुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति। जबूद्वीप हेभगवन् सूर्यउगताकालना मुहूर्त्तनेविषे दूरथका पणि देखणहार

॥ टीका ॥ र्या इत्यत सूर्यवक्तव्यता निरूपय न्नाह ॥ जबूद्दीवेत्यादि ॥ दूरेयमूलेयदीसतित्ति ॥ दूरेच द्रष्टृस्थानापेक्षया व्यवहिते देशे मूले चासन्ने द्रष्टृप्रतीत्यपेक्षया सूर्यो दृश्यते द्रष्टाहि स्वरूपतो बहुभि र्योजनसहस्रै र्व्यवहित मुद्गमास्तमयो सूर्य पश्यति आसन्न पुन मन्यते सद्भूततु विप्रकर्ष सत

॥ मूल ॥ जबूद्दीवेण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि मूलेय दूरेय दीसंति अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति ? हता गोयमा ! जबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय तंचेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति।

अनुवाद जबूद्दीपे द्वीपे सूर्यो उद्गमनमुहूर्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते तमुहूर्ते मूलेच दूरेच दृश्यन्ते, अस्तमनमुहूर्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते ? हन्तगौतम । जबूद्दीपे

॥ भाषा ॥ बेऊ सूर्य ऊगतीवेळे— मध्यान्हिक मुहूर्तमा मूलेय दूर व दीसति । म ना स्थानकनी अपेक्षायें व्यवहित देशनेविषेछे तो पणि ढूकडा देखणहारनो अपेक्षायें बेऊ सूर्य दे.सेछे— तेहनविषे ढूकडा देशनेविषे सूर्यछे देखणहार ना स्थानकनी अपेचायें व्यवहित देशनेविषेछे तो पणि ढूकडा देखणहारनो मध्यान्ह मुहूर्त तेहनविषे ढूकडा देशनेविषे सूर्यछे देखणहार य अन्तर विभाग आकाशनो अथवा दिवसनो ते मध्यान्तिक कहिये ते ज मुहूर्तने छे ते मध्यान्ति मुहूर्त । आथमता मुहूर्तनेविषे पणि दूरथकी ना स्थानकनी अपेचाये वगला देशमें देखणहार प्रतीतनी अपेचाये दीसै । अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेयमूलेय दीसंति । आथमता मुहूर्तनेविषे पणि दूरथको ढूकडो दीसै एटले सूर्य उगता तथा आथमता दूरथको ढूकडोदीसै तथा मध्याह्ननेविषे ढूकडाथका बेऊ सूर्यदीसै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जबूद्दीवेण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति । हेगौतम जबूद्दीपनामा द्वीपनेविषे उगमणकालना मुहूर्तनेविषे अलगाथका पणि ढूकडा दीसै । तचेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति । तिमहीज ते मध्याह्ननेविषे ढूकडाथका पणि अलगा दीसै अत्थमणमुहूर्तनेविषे दूरथका पणि ढूकडा दीसै । जबूद्दीवेणभते दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि । जबूद्दीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे बेऊ सूर्य उदयकालना मुहूर्तनेविषे । मध्यान्तिक मुहुत्तंसिय अत्थमणमुहुत्तंसिय सव्वत्थसमाउच्चत्तेण । मध्यान्तिक मुहूर्तनेविषे दोपहरनेविषे तथा आथमण मुहूर्तनेविषे समभूतल पृथिवी अपेचायें सगलेसरीखा ऊच पणे हुवे एतले सगलेसरीखा आठसै योजन ऊचपणे हुवे इतिप्रश्न उत्तर हतागोयमा जबूद्दीवेण दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेण । हागौतम जबूद्दीपनामा द्वीपनेविषे बेऊसूर्य उगमण तथा मध्यान्तिक तथा आथमणमुहूर्तनेविषे समभूतल पृथिवीनी अपेचायें सगलेसरीखो आठसोयोजन ऊचपणे छ

॥ टीका ॥

मपि नप्रतिपद्यत इति ॥ मज्झंतियमुहुत्तंसि मूलेय दूरेय दीसतित्ति ॥ मध्यो मध्यमो न्तो विभागो गगनस्य दिवसस्यवा, मध्यान्त: स यस्य मूहूर्त्त स्यास्ति समध्यान्तिक सचासौ मुहूर्त्तश्चेति मध्यान्तिकमुहूर्त्त स्तत्र मूलेच आसन्नेदेशे द्रष्टृस्थानापेक्षया दूरेच व्यवहिते देशे द्रष्टृप्रतीत्यपेक्षया सूर्यौ दृश्येते द्रष्टाहि मध्याह्ने उदयास्तमदर्शनापेक्षया सन्न रवि पश्यति योजनशताष्टकेनैव तदा तस्य व्यवस्थितत्वा न्मन्यते पुन रुदयास्तमयप्रतीत्य पेक्षया दूरव्यवहित मिति ॥ सव्वत्थसमाउच्चत्तेणंति ॥ समभूतलापेक्षया सर्वत्रोच्चत्व मष्टौ योजनशतानी तिकृत्वा ॥ लेसापडिघाएणंति ॥ तेजस

॥ मूल ॥

मणमुहुत्तंसिय मज्झंतियमुहुत्तंसिय अत्थमणमुहुत्तंसिय सव्वत्थसमा उच्चत्तेणं ? हंता गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उग्गमण जाव उच्चत्तेणं । जइणं भंते ! जंबूद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसिय मज्झंतिय मुहुत्तंसि अत्थमणमुहुत्तंसि मूले जाव उच्चत्तेणं। सेकेणंखाइणंअट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति ? गोयमा !

॥ अनुवाद ॥

द्यैव याव दस्तमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते । जम्बूद्वीपे भ० । द्वीपे सूर्यौ उद्गमनमुहूर्त्ते मध्यान्तिकमुहूर्त्ते अस्तमनमुहूर्त्ते च सर्वत्र समा उच्च त्वेन ? हन्त गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे सूर्यौ उद्गमनमुहूर्त्ते याव दुच्चत्वेन । यदि भ० । जम्बूद्वीपे द्वीपे सूर्यौ उद्गमनमुहूर्त्ते मध्यान्तिकास्तमनमु हूर्त्ते मूल याव दुच्चत्वेन । अथ पुन भ० । केनार्थेनैव मुच्यते जम्बूद्वीपे द्वीपे सूर्यौ उद्गमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते याव दस्तमनमुहूर्त्ते दूरेच मूले

॥ भाषा ॥

वे । जइणंभंते जंबूदीवे सूरिया उग्गमण मुहुत्तंसि मज्झंतिय अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं । जो णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे बे जसूर्य ऊगता मुहूर्त्तनेविषे मध्यान्हिकमुहूर्त्तनेविषे आथमणमुहूर्त्तने सघलासरीखा यावत् ऊंचपणे हुवे । सेकेणं खाइअट्ठेणंभंते एववुच्चइ । ते किस्ये अर्थ ति प्रसिद्धअर्थे हेभगवन् इमकह्यु । जंबूद्दीवेणंदीवेसूरिया उग्गमण मुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति । जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे सूर्य उदयकालना मुहूर्त्तनेवि षे दूरथका पणि ढूकडा दीसे इम मध्याह्ननेविषे ढूकडाथका पणि अलगा दीसे । जावअत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति । यावत् आथमण मुहूर्त्तने

॥ टीका ॥

प्रतिघातेन दूरतरत्वा त्तद्देशस्य तदप्रसरणेने त्यर्थः, लेश्याप्रतिघातेहि सुखदृश्यत्वेन दूरस्थोपि स्वरूपेण सूर्यं ऽऽसन्नप्रतीतिं जनयति ॥ लेसाभि तावेणंति ॥ तेजसोभितापेन मध्याह्ने ह्यासन्नतरत्वा त्सूर्य स्तेजसा प्रतपति तेज प्रतापेच दुर्दृश्यत्वेन प्रत्यासन्नो प्यसौ दूरप्रतीतिं जनयतीति ॥

॥ मूल ॥

(ग्रंथाग्रं ५०००) लेस्सापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसिय दूरेय मूलेय दीसंति, लेस्साभितावेणं मज्झंतिय मुहुत्तंसि मूलेय दूरेय दीसंति लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति सेतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जंबूद्दीवेणं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसंति जाव अत्थमण जाव दीसंति।

अनुवाद

च दृश्यन्ते ? गौतम। [ग्रन्थाग्र ५०००] लेश्या प्रतिघातेनो द्गमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते, लेश्याभितापेन मध्यान्तिकमुहूर्त्ते मूलेच दूरेच दृश्यन्ते, लेश्याप्रतिघातेना स्तमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच दृश्यन्ते तत्तेनार्थेन गौतम। एव मुच्यते जवूद्वीपे द्वीपे सूर्या उद्गमनमुहूर्त्ते दूरेच मूलेच

॥ भाषा ॥

विषे अलगायका पणि ढूकडा दीसे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा थ० [५०००] लेस्सापडिघातेण उग्गमण मुहुत्तंस दूरेय मूलेय दीसंति। हेगौतम ग्रंथ ५००० सू र्य तेजने प्रतिघाते करीने अतिदूर पणाथकी ते देशने तेमाटे तेजनो प्रसरण न हुवे तेहभणी लेश्या प्रतिघात थया सुखे देखवायोग्य पणे करी दूरे रह्याथको पणि सूर्यस्वरूपे करी आसन्नप्रतीति उपजावेछे ढूकडो दीसेछे इत्यर्थः। लेस्सा भितावेण मज्झंतिय मुहुत्तंसि मूलेय दूरेय दीसति। तेजने अभि ताप कहिये प्रबलपणे मध्यदिवसे अति आसन्नपणाथकी सूर्य तेजकरी प्रकर्षे तपे ते तेजने प्रतापे दुखे देखवायोग्य पणेकरी ढूकडोथको पणिसूर्य दूर प्रतीतिप्रते उपजावेछे। लेस्सापडिघाएणं अत्थमण मुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति। वली तिमज तेजने प्रतिघातेकरी आथमण मुहूर्त्तनेविषे दूरथका पणि ढूकडा दीसे। सेतेणट्ठेण गोयमा एववुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम इमकह्यु। जबूदीवेणदीवेसूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरेय मूलेय दीसति। जबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे वेऊ सूर्य उगताकालने मुहूर्त्तनेविषे दूरथका पणि ढूकडा दीसे। जाव अत्थमण दीसंत। यावत् आथमण मुहूर्त्तनेविषे दूरथका पणि ढूकडा दीसे एतला लगे कहवा वलीगोतम पूछेछे—जबूदीवेणभंते दीवे सूरियाकि तीयखेत्त गच्छति। जवूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे सूर्य स्यू ? अतीत चेत्र

मोतीत खेत्तं गच्छइत्ति ॥ अतीतक्षेत्रस्यातिक्रान्तत्वात् ॥ पडुप्पन्नंति ॥ वर्त्तमान गम्यमान मित्यर्थ ॥ नोअणागयंति ॥ गमिष्यमाण मित्यर्थः इह च यदाकाशखण्ड मादित्यः स्वतेजसा व्याप्नोति तत् क्षेत्र मुच्यते ॥ उभासंतित्ति ॥ अवभासयत ईषदुद्योतयत ॥ पुट्ठंति ॥ तजसा स्पृष्ट ॥ जाव नियमा छद्दिसिंति ॥ इह यावत्करणा दिद दृश्य ॥ तमंते ! किं उगाढं उभासइ अणोगाढं उभासइ गोयमा ! उगाढं उभासइ नोअणोगाढं मि

जम्बूद्दीवेणं भंते ! सूरिया कितीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, अणागयं खेत्तं गच्छंति ? गो० ! नो तीयं खेत्तं गच्छंति पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति नोअणागयंखेत्तं गच्छंति । जंबूद्दीवेणं भंते ! सूरिया किं तीयं खेत्तं उभासंति पडुप्पन्नं खेत्तं अणागयं खेत्तं उभासंति ? गोयमा ! नोतीयं खेत्तं पडुप्पन्नं खेत्तं

दृश्यन्त यावदस्तमनमुहूर्त्तंच दृश्यन्त ॥ जम्बूद्वीपे भ० ! द्वीपे सूर्या किमतीत क्षेत्र गच्छन्ति, प्रत्युत्पन्न क्षेत्र गच्छन्ति, अनागत क्षेत्र गच्छन्ति ? गौतम ! नो तीत क्षेत्र गच्छन्ति, प्रत्युत्पन्न क्षेत्र गच्छन्ति, नो अनागत क्षेत्र गच्छन्ति । जम्बूद्वीपे भदन्त ! सूर्या किमतीत क्षेत्र मवभासन्त प्रत्युत्पन्न क्षेत्र मवभासन्ते अनागत क्षेत्र मवभासन्ते ? गौतम ! नोऽतीतं क्षेत्र, प्रत्युत्पन्न क्षेत्र मवभासन्त नो अनागत क्षेत्र मवभासन्ते ।

प्रते जाय इहा जे आकाशखण्डप्रते आदित्य पोताने तजकरी व्यापे ते क्षेत्रकहिये अथवा । पडुप्पन्नखेत्त गच्छति । वर्त्तमान क्षेत्रप्रते जायछे । अणागयखेत्त गच्छति । अथवा अनागतक्षेत्र प्रते जायछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नो तीयखेत्तगच्छति । हेगौतम अतीतक्षेत्र प्रते जायनही अतीतक्षेत्र प्रते उल्लंघ्या माटे । पडुप्पण्ण खेत्त गच्छति । वर्त्तमान क्षेत्र ते गम्यमान इत्यर्थ ते प्रते जाय । नोअणागयखेत्त गच्छति । अनागतक्षेत्रप्रते नजाय अनागत ते गमिष्यमाण इत्यर्थ । जंबूद्दीवेणभंते दीवे सूरियाकितीयखेत्तं ओभासति । जम्बूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे बेऊ सूर्य सू ? अतीतक्षेत्रप्रते अवभासे थोडो उद्योतकरे । पडुप्पण्ण खेत्त ओभासति । अथवा वर्त्तमानक्षेत्र प्रते अवभासे थोडोसो उद्योतकरे । अणागयखेत्त ओभासति । अथवा अनागतक्षेत्रप्रते थोडोसो उद्योतकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नो तीयखेत्तओभासति । हेगौतम अतीतक्षेत्रप्रते उद्योत न करे । पडुप्पण्ण खेत्त ओभासति । वर्त्तमानक्षेत्रप्रते अव

॥ टीका ॥

त्यादि, तन्नते । कइदिसि उन्नासइ गोयमेत्येतदन्तमिति ॥ उज्जोवंतित्ति ॥ उद्द्योतयत अत्यर्थं द्योतयत ॥ तवंतित्ति ॥ तापयत उष्णरश्मित्वा त्तयो. ॥ नासतित्ति ॥ नासयत शोनयत इत्यर्थं उक्त मेवार्थं शिष्यहिताय प्रकारान्तरेणाह ॥ जवु इत्यादि ॥ किरिया कज्जइत्ति ॥ अवन्नासनादि का क्रिया नवतीत्यर्थ. ॥ पुठत्ति ॥ तेजसा स्पृष्टान् स्पर्शनात् यासा स्पृष्टा ॥ एग जोयणसय उढ्ढ तवतित्ति ॥ स्वविमानस्यो परि योजनशतप्रमा

॥ मूल ॥

उन्नासति नो अणागयं खेत्तं उन्नासति । तं नंते ! किं पुठ उन्नासंति किंअपुठ उन्नासति ? गोयमा ! पुठं उन्नासंति नोअपुठं उन्नासंति जाव नियमा बहिसिं। जंबूद्दीवेण नंते ! सूरिया कितीय खेत्तं उज्जोवेंति एवंचेव जाव नियमा बहिसिं एवं तवेंति एवं नासेंति जाव नियमा बदिसि । जंबूद्दीवेण नंते ! सूरिया

अनुवाद

ते नदन्त । कि स्पृष्ट मवन्नासन्ते अस्पृष्ट मवन्नासन्ते ? गौतम ! स्पृष्ट मवन्नासन्ते नो अस्पृष्ट मवन्नासन्ते याव न्नियमात् षड्दिश । जंबूद्वीपे न० ! द्वीपे सूर्या. कि मतीत क्षेत्र मुद्योतयन्ति, एवमेव याव न्नियमात् षड्दिश । एव तापयन्त' एव नासयन्तो याव न्नियमात् षड्दिश ।

॥ भाषा ॥

भासे उद्योत करे । णोअणागय खेत्तओभासति । अनागतक्षेत्र प्रते पणि उद्योतकरे नही वलीगौतम पूछेछे—तभतेकिंपुठ ओभासति अपुठओभासति । ते हेभगवन् स्यू ? तेजें करी स्पृष्टस्पर्शी ते अवभासे किम्वा अणस्पर्शी अवभासे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुठओभासति णोअपुठओभासति जाव णि यमा छदिसि । हेगौतम स्पर्शी अवभासे पणि अस्पर्शी अवभासे नही इहा यावत् शब्दथकी एतलो कहवो, तभतेकिओगाढओभासति अणोगाढओभा सति गोयमा। ओगाढ ओभासति णो अणोगाढ ओभासति त भते कितिदिशिओभासति, निश्चयथकी छए दिशे अवभासे एतला लगे कहवो । जंबूद्दीवेण भतेदीवे सूरिया कितीयखेत्तं उज्जोवेंति एवजाव णियमा छद्दिसि । जंबूद्वीपमाहा हेभगवन् द्वीपनेविषे बेऊ सूर्य स्यू अतीतक्षेत्र प्रते अत्यर्थ बेऊसूर्यउद्यो तकरे इतिप्रश्न उत्तर इम पूछिलो परे यावत् नियमथकी छए दिशिने अतिशये उद्योत करे एतला लगे कहवो । एवतवेंति एवभासेंति जाव णियमा छद्दिसि । इम बेऊ सूर्य तपेछे उष्ण किरण पणाथकी इम बेऊ सूर्य भासेछे शोभेछे यावत् नियमथकी छएदिशिनेविषे एतलालगे कहवो कह्यो, तेजीज

॥ मूल ॥

किंतीये खेत्ते किरिया कज्जइ पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया० अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? गोयमा ! नोतीये खेत्ते किरिया कज्जइ पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ नोअणागए खेत्ते किरिया कज्जइ, से भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ नो अपुट्ठा कज्जइ जाव नियमा छद्दिसिं । जंबूद्दीवेणं भंते ! सूरिया केवइयं खेत्तं उड्ढं तवेंति केवइयं अहे तवेंति केवइयं खेत्तं तिरियं तवेंति ? गोयमा ! एगं

अनुवाद

जम्बूद्वीपे भ० । सूर्योणां किमतीते क्षेत्रे क्रिया क्रियते प्रत्युत्पन्ने क्षेत्रे क्रिया क्रियते, अनागते क्षेत्रे क्रिया क्रियते ? गौतम ! नैवा तीत क्षेत्रे क्रिया क्रियते प्रत्युत्पन्ने क्षेत्रे क्रिया क्रियते नैवा नागते क्षेत्रे क्रिया क्रियते । सा भगवन् किं स्पृष्टा क्रियते अस्पृष्टा क्रियते ? गौतम ! स्पृष्टा क्रियते नो ऽस्पृष्टा क्रियते, याव नियमात् षड्दिशं । जम्बूद्वीपे भ० । सूर्या कियन्मात्र क्षेत्र मूर्द्धं

॥ भाषा ॥

अथ तिथच्छितनेजाजे प्रकारान्तरे कहेछे—जंबूद्दीवेण भंते दीवे सूरियाणं किंतीयखेत्ते किरियाकज्जइ । जंबूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे सूर्यनो स्यूं अतीतक्षेत्रनेविषे अवभासनादिकक्रिया हुवे । पडुप्पन्नेखेत्ते किरियाकज्जइ । अथवा वर्त्तमानक्षेत्रनेविषे अवभासनादिकक्रिया हुवे । अणागएखेत्ते किरियाकज्जइ । अथवा अनागत क्षेत्रनविषे अवभासनादिकक्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नो तीयखेत्ते किरि-याकज्जइ । हेगौतम ! अतीतक्षेत्रनेविषे अवभासनादिक्रिया हुवे नही । पडुप्पन्नेखेत्तेकिरिया कज्जइ । वर्त्तमानक्षेत्रनेविषे अवभासनादिक्रिया हुवे । नो अणागएखेत्ते किरियाकज्जइ । अनागतक्षेत्रनेविषे पणि अवभासनादिक्रिया न हुवे । साकिंभंतेपुट्ठाकज्जइ अपुट्ठाकज्जइ । तिका स्यूं हेभगवन् तेजकरी स्पर्श न थको जिका तिका स्पृष्ट कहिये एतले स्पर्शीथकी हुवे अथवा अणस्पर्शीथकी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुट्ठाकज्जइ नोअपुट्ठाकज्जइ जाव णियमा छद्दिसिं । हेगौतम स्पर्शीकरे पणि अणस्पर्शी न करे यावत् नियमथकी छ दिशि एतला लगेकहवो । जंबूद्दीवेणभंते दीवेसूरिया । जंबूद्वीपनामा हेभगवन् द्वीपनेविषे बेउसूर्य । केवइयखेत्तं उड्ढं तवेंति । केतलू क्षेत्र सूर्य ऊंचो तपे तेजकरे । केवइयखेत्तं अहेतवेंति । केतलूक्षेत्र अध हेठो तपे तेजकरे । केवइयखेत्तं तिरियंतवेंति । केतलूक्षेत्रची

॥ टीका ॥ गस्येव तापक्षेत्रस्य भावात् ॥ अठारजोयणसयाइं अहे तवतित्ति ॥ कथ सूर्या दशसु योजनशतेषु भूतल भूतलाच्च योजनसहस्रे अधोलोकग्रामा भ वन्ति तांश्च याव दुद्योतना दिति ॥ सीयालीसमित्यादि ॥ एतच्च सर्वोत्कृष्टदिवसे चक्षु स्पर्शापेक्षया ऽवसेय मिति, अनन्तर सूर्यवक्तव्यतोक्ता

॥ मूल ॥ जोयणसयं उड्ढ तवेंति अट्ठारसजोयणसयाइं अहे तवेंति सीयालीस जोयणसहस्साइं दोन्निय तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीसंच सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवेंति । अंतोणं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदियसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवा तेणं भंते ! देवा किंउड्ढोववन्नगा जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव उक्कोसेणं

अनुवाद तापयति, कियन्मात्र मध स्तापयन्ति' कियन्मात्र क्षेत्र तिर्यग् तापयन्ति ? गौतम । एक योजनशत मूर्द्ध तापयन्ति, अष्टादश योजनशता न्य ध स्तापयन्ति, सप्तचत्वारिंश द्योजनसहस्राणि द्विशतत्रिषष्टियोजनानि एकविंशति' षष्टिभागान् योजनस्य तिर्य क्तापयन्ति । अन्त भं० । मानुषोत्तरपर्वतस्य य चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपा स्ते भदन्त । देवा किमूर्द्ध्वोपपन्नका यथा जीवाभिगमे तथैव निर्विशेष याव दुत्कृष्ट षण्

॥ भाषा ॥ ढ़ो तपे तेजकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगंजोअणसयउढ्ढतवेति । हेगौतम । एकसो योजन ऊंचो तेजकरे स्यामाटे पोतानाविमानने ऊपर योजन एकसो प्रमाणनेज तापक्षेत्रना भावथकी । अट्ठारस जोअणसयाइं अहेतवेति । अठ्ठारसे योजन नीचो तेजकरे ते किम सूर्यथकी आठसे योजन समभूतल छे अने समभूतलथकी सहस्रयोजन अधोलोक ग्रामछे तिहालगे उद्योत करे। सीयालजोअणसयाइं दोणिय तेवठ्ठजोअणसएएकवीस चसठ्ठिभाए जोअणस्सतिरियतवेति । सेतालीससहस्र दोयसे त्रेसठयोजन ४७२६३ अने साठ भाइया योजनना एकवीसभाग एतला त्रीछो तपे एहसर्व उत्कृष्ट दिवसने विषे चक्षुस्पर्शनी अपेक्षायें जाणवो अनन्तरे सूर्यवक्तव्यताकही, हिवे सामान्येकरी ज्योतिषीनी वक्तव्यता कहेछे—अंतोणभंतेमाणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिय सूरिय गहगण णक्खत्त तारारूवा । अन्तोणमित्यादि मानुषोत्तर पर्वत भीतर जे चन्द्रादिक छे एतले मानुषोत्तर पर्वतमांहि जे चन्द्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूप ज्योतिषी वर्तेछे । तेणभंतेदेवा किंउड्ढोववन्नगा जहा जीवाभिगमे तहेव णिरवसेस। तेण वाक्यालंकारे, हेभगवन् देव स्यूं ऊंचा उप

ऽथ समान्येन ज्योतिष्कवक्तव्यता माह ॥ अतोण भंते । इत्यादि जहाजीवाभिगमे तहेव निरवसेसंति ॥ तत्र चेदं सूत्र मेव-कप्पोववन्नगा विमाणो ववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया गइरइया गइसमावण्णगा गोयमा ! तेणं देवा नोउड्ढोववन्नगा नोकप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा ॥ ज्योतिश्चक्रचरणोपलक्षितक्षेत्रोत्पन्ना इत्यर्थं ॥ नोचारठिइया ॥ इह चारो ज्योतिषा मवस्थानक्षेत्र ॥ नो ॥ नैव चारे स्थिति रवस्थिति र्येषा ते तथा अतएव ॥ गइरइया ॥ अतएव ॥ गइसमावण्णगा इत्यादि ॥ कियद्दूर मिदं वाच्य मित्याह ॥ जाव उक्कोसेणं छम्मासत्ति ॥ इदं चैव दृष्टव्य॥ इंदठाणेणं भंते । केवइय काल विरहिए उववाएणं गोयमा । जहण्णेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं छम्मासत्ति जहा जीवाभिगमत्ति ॥ एदम प्येव तत्र ॥ जंचदि

छम्मासा । बहियाणं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जहा जीवाभिगमे जाव इंदठाणेणं भंते ! केवइयकाल विर

मासान् । बहि भं० । मानुषोत्तर पर्वतस्य यथा जीवाभिगमे याव दिन्द्रस्थानं भ० । कियत्काल विरहित उपपातेन - गौतम ! जघन्य नेक

ना इत्यादि, जहा जिम जीवाभिगमउपांगनेविषे कह्यु तिम इहां पणि समस्त कहवो तिहां सूत्र इम ,कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णगा चारठिइया गइरइया गइसमावण्णगा गोयमा तेणदेवा णोउड्ढोववण्णगा, कल्पातीत नही, कल्पोत्पन्न नही विमाणोववण्णगा, विमानोत्पन्नछे चारोववण्णगा ज्योतिश्चक्र चरण उपलक्षितक्षेत्रे उपना णोचारठिइया, इहां चारते ज्योतिषीनो अवस्थानक्षेत्र कहिये ते तिहां चारक्षेत्रनेविषे अवस्थित नही जेहना एतलामाटेज गइरइया, गतिनेविषे रतिछे जेहनी एतलामाटेज गइसमावण्णगा, गतिने पाम्या इत्यादिक केतला लगी कहवोते कहेछे—जाव उक्कोसछम्मासा बहियापुणमाणुसुत्तरस्स जहाजीवाभिगमे । यावत् उत्कृष्टो छमासनो विरहकाल छै। इमकहवो, इंदठाणेणं इत्यादि, इन्द्रस्थान हे भगवन् केतलोकाल विरहउपपातेकरी हुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम जघन्ये एकसमय उत्कृष्टो छमासनो ते मानुषोत्तर पर्वतथी बाहिर जहा जिम जीवाभिगमे कह्यु ते इम ज चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्ततारारूवा, तेणभंतेदेवा किंउड्ढोववण्णगा इत्यादि, प्रश्नसूत्र उत्तर गोयमा तेणदेवाणोउड्ढो-ववण्णगा इत्यादि, प्रश्न सूत्र उत्तर । गोयमा ,तणदेवा णोउड्ढोववण्णगा विमाणोववण्णगा णोचारोववण्णगाचारठिइया णोगइरइया णोगइसमावण्णगा ।

॥ टीका ॥

मसूरियगहगणनक्षत्रताराख्या तेणन्नते। देवा किं उड्ढोववणगेत्यादि प्रश्नसूत्र, उत्तरं तु, गोयमा! तेण देवा नोउड्ढोववणगा नोकप्पोववणगा विमा णोववणगा नोचारोववणगा चारठिइया नोगइरइया नोगइसमावणगे त्यादीति ॥ इत्यष्टमशते ऽष्टम ॥ ८ ॥ अष्टमोद्देशके ज्यो तिषा वक्तव्यतोक्ता साच वैस्रसिकीति वैस्रसिक प्रायोगिकच बन्ध प्रतिपिपादयिषु नवमोद्देशक माह तस्य चेद मादिसूत्र॥कइविहेणमित्यादि॥ बधेत्ति ॥ बन्ध पुद्गलादिविषयसम्बन्ध. ॥ पओगबंधेयत्ति ॥ जीवप्रयोगकृत ॥ वीससाबंधेयत्ति ॥ स्वभावसम्पन्न. ॥ यथासत्तिन्याय माश्रित्याह ॥ वीस

॥ मूल ॥

हिए उववाएणं ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ अट्ठमसए अट्ठमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! बंधे प० ? गोयमा ! दुविहे बंधे प०, तं० पओगबंधेय वीससाबंधेय । वीससाबंधेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा — साइय

॥ अनुवाद ॥

समय मुत्कर्षत षण् मासान् । तदेव भदन्त भदन्त ॥ इत्यष्टम शते ऽष्टमो द्देश ॥ ८ ॥ कतिविधो भ० । बन्ध प्रज्ञप्त ? गौतम ! द्विविधो बन्ध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—प्रयोगबन्धश्च विस्रसाबन्धश्च, विस्रसाबन्धो भ० । कतिविध प्रज्ञप्त ? गौ० ! द्विविधः प्रज्ञप्त स्तद्य

॥ भाषा ॥

त्यादि, । जावइंद्रठाणभंते केवइयकालविरहिए उववाएण । यावत् इन्द्रस्थानकनो विरहकाल उपपात कहवो । गोयमाजहण्णेण एक्कसमयउक्कोसेण छ मासा । हेगौतम ते जघन्य एकसमय उत्कृष्टथकी छम्मासनो विरहकाल कह्यो । सेवंभंतेभंतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु सर्व सत्यछे अन्यथा नथी । अट्ठमसयस्सअट्ठमओ उद्देसो सम्मत्तो । ए आठमा शतकनो आठमो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ८ ॥ ८ ॥ पाछिले उद्देशे ज्योतिषीनी वक्त व्यता कही ते स्वाभाविकछे तेमाटे इहा विस्रसातथा प्रयोगिकबन्ध कहेछे—कइविहेणभंते बंधे प० । केतलेभेदे हेभगवन् बंधकह्यो, बंधकहियें पुद्गला दि विषयसम्बन्ध इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहेबंधेपण्णत्ते तंजहा । हेगौतम बेप्रकारे बंधकह्या ते कहेछे—पओगबंधेय वीससाबंधेय । जीव प्रयोगे कीधो जे बंध ते प्रयोगबंध १ स्वभावथकी उपनो जे बंध ते विस्रसाबंध कहियें २ वलीगौतम पूछेछे—वीससाबंधेणंभंते कइविहे प० । वीस्रसाबंध हेभगवन् ! के

॥ टीका ॥ सेत्यादि ॥ धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाईयवीससाबंधेयत्ति ॥ धर्मास्तिकायस्यान्योन्यं प्रदेशानां परस्परेण योऽनादिको विस्रसा बन्धः सतया' एवमुत्तरत्रापि ॥ देसबंधेत्ति ॥ देशतो देशापेक्षया बन्धो देशबन्धः यथा संकलिकाकटिकानां ॥ सव्वबंधेत्ति ॥ सर्वतः सर्वात्मना बन्धः सर्वबन्धो यथा क्षीरनी

॥ मूल ॥ वीससाबंधेय अणाइयवीससा बंधेयं । अणाइयवीससा बंधेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! तिविहे प०, तंजहा—धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे । धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधेणं भंते ! किं देसबंधे

अनुवाद: ध्या–सादिकविस्रसाबन्धश्च अनादिकविस्रसाबन्धश्च । अनादिकविस्रसाबन्धो भदन्त ! कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! त्रिविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा–धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धः अधर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धः आकाशास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धः । धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धो भदन्त ! किं देशबन्धः सर्वबन्धः ? गौतम ! देशबन्धो नो सर्वबन्धः, एवं अधर्मास्तिकायान्योन्यानादिकवि

॥ भाषा ॥ तलेभेदे कह्या ? इति प्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहे प० तं० साईयवीससाबंधेय अणाइयवीससा बंधेय । हे गौतम बेहुभेद कह्या ते कहेछे—सादिकविस्रसाबंध अनादिकविस्रसाबंध २ । अणाईयवीससाबंधेणंभंते कइविहे प० । अनादिविस्रसाबंधना आलापकनारे, हे भगवन् ! केतलेभेदे कह्या ? इति प्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहे प० तं० । हे गौतम तीनभेदे कह्या ते कहेछे—धम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधेय । धर्मास्तिकाय मांहोमांहि प्रदेशानो बंध ते अनादिविस्रसाबंध ते धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबंध १ अधम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधे । एम अधर्मास्तिकाय अन्योन्यप्रदेशानो परस्परे जे अनादिविस्रसा बंध २ । आगासत्थिकाय अन्नमन्नअणाईयवीससाबंधे । आकाशास्तिकायना मांहोमांहि प्रदेशानो अनादिविस्रसा बंध ३ । धम्मत्थिकाय अन्नमन्न अणाइयवीससाबंधेणंभंते किं देसबंधे सव्वबंधे । धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसा बंधना आलापकनारे, हे भगवन् ! स्यूं देशथी ते अन्योन्यपेक्षायें बंध जिम सांकलिकडीनो सर्वआत्मायें बंध ते सर्वबंध जिम खीर नीरनो ? इति प्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधे नोसव्वबंधे । हे गौतम धर्मा

॥ टीका ॥

रयो देशबंधे ॥ नोसव्वबंधेत्ति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाना परस्परसस्पर्शेन व्यवस्थितत्वात् देशबन्धएव नपुन सर्वबन्ध स्तत्रह्येकस्य प्रदेशस्य प्र देशान्तरै सवथा वन्धे न्योन्यान्तर्भावेन एकप्रदेशत्वमेव स्या न्नासङ्ख्येयप्रदेशत्वमिति ॥ सव्वद्धंत्ति ॥ सर्वाद्धा सर्वकाल ॥ साइयवीससाबंधेत्ति ॥ सादिको यो विस्रसा बन्ध स तथा ॥ बधणपच्चइएत्ति ॥ बध्यते ऽनेनेति बन्धन विवक्षितस्निग्धतादिको गुणः सएव प्रत्ययो हेतु यंत्र सतथा एव

॥ मूल ॥

सव्वबंधे? गोयमा ! देसबंधे नोसव्वबंधे, एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणाइयवीससाबंधेवि, आगासत्थि कायअण्णमण्णअणाइयवीससाबंधेवि, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणाइयवीससाबंधेणं भंते ! कालओकेवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं एवं अधम्मत्थिकायं एव आगासत्थिकाय । साइयवीससाबंधेणं भंते ! कइविहे

अनुवाद

स्रसाबन्धोपि, एव माकाशास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धोपि । धर्मास्तिकायान्योन्यानादिकविस्रसाबन्धो भ० । कालत कियच्चिर भ वति ? गौतम । सर्वाद्धा । एव मधर्मास्तिकाय एव माकाशास्तिकायसादिकविस्रसाबन्धो भ० । कतिविध. प्रज्ञप्तः ? गौतम । त्रिविध. प्रज्ञ प्त स्तद्यथा-बन्धनप्रत्ययिको भाजनप्रत्ययिक परिणामप्रत्ययिक । अथ कि तद्बन्धनप्रत्ययिको बन्धनप्रत्ययिको यत्परमाणुपुद्गलो द्विप्रदेशिक

॥ भाषा ॥

स्तिकायनाप्रदेशानो माहामाहि सस्पर्श करी व्यवस्थित पणायकी देशबधहोके पणि नही सर्वबध तिहा एकप्रदेशनो प्रदेशान्तर सघाते अन्योन्य प्रन्त र्भावकरी एकप्रदेशपणो होजहुवे, पणि असख्येयप्रदेशपणो नहुये तेमाटे देशबधछे पर सर्वबन्ध नही । एवअधर्मास्तिकाय अणमण अणाईयवीससाबधे वि । इम अधर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबध पणिकहवो । एव आगासत्थिकाय अणमण अणाईयवीससाबधेवि । इम आकाशास्तिकाय अ न्योन्य अनादिविस्रसाबध पणि कहवो । धम्मत्थिकाय अणमण अणाइयवीससाबधेणभते कालओचिरहोइ । धर्मास्तिकाय अन्योन्य अनादिविस्रसाबधण वाक्य लकारे, हेभगवन् । कालथकी केतलोकाल रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वद्ध । हेगौतम । सर्वकाल रहे । एव अहम्मत्थिकाय । इम अधर्मास्ति काय पणिकहवा । एव आगासत्थिकाय । इम आकाशास्तिकाय पणि कहवो । साईयवीससाबधेणभते कइविहे प० । पूर्वोक्तभेदमाहे सादिविस्रसा

॥ टीका ॥

भाजनप्रत्यय परिणामप्रत्ययश्च नवरं भाजन माधारः परिणामो रूपान्तरगमनं ॥ जण्णं परमाणुपोग्गलेत्यादी,, परमाणुपुद्गल परमाणुरेव ॥ वेमायनिद्धयाएत्ति ॥ विषमा मात्रा यस्यां सा विमात्रा साचासौ स्निग्धताचेति विमात्रस्निग्धता तया एव मन्यदपि पदद्वयं, इदमुक्तं भवति सम निद्धयाएबंधो नहोइसमलुक्खयाएविनहोइ । वेमायनिद्धलुक्ख त्तणेणबंधोउखंधाणं ॥ १ ॥ अयमर्थ समगुणस्निग्धस्य समगुणस्निग्धेन परमाण्वादिना बन्धो नभवति समगुणरूक्षस्यापि समगुणरूक्षेण यदा पुन विषमा मात्रा तदा भवति बन्ध , विषममात्रानिरूपणार्थं चोच्यते-निद्धस्सनि द्धणदुयाहिएणं लुक्खस्सलुक्खेणदुयाहिएणं । निद्धस्सलुक्खेणउवेइबंधो जहण्णवज्जोविसमोसमोइत्ति ॥ १ ॥ बंधणपच्चइएणत्ति ॥ बन्धनस्य बन्धस्य प्र

॥ मूल ॥

पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—बंधणपच्चइए भायणपच्चइए परिणामपच्चइए । से किंत बंधणपच्चइए २ जण्णंपरमाणुपोग्गला दुपएसिया तिपएसिया जाव दसपएसिया संखेज्जपएसिया असंखेज्जपए

अनुवाद

त्रिप्रदेशिक (प्रभृति) याव दशप्रदेशिकसंख्येयप्रदेशिकासंख्येयप्रदेशिकानन्तप्रदेशिकाना स्कन्धाना विमात्रस्निग्धतया विमात्ररूक्षतया वि

॥ भाषा ॥

बन्ध कह्यो ते हे भगवन् । केतलाभेदे कह्यो प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहे प० तंजहा । हे गौतम । तीनभेदे कह्यो ते कहेछे—बंधणपच्चइए भायणपच्चइए परिणामपच्चइए । बांधिये एणेकरी ते बंधनकहिये विवक्षित स्निग्धतादि गुण तेहीज प्रत्यय हेतुछे जिहां १ भाजन आधारभूत प्रत्यय हेतुछे जिहां २ रूपान्तर गमनहेतुछे जिहां ३ । सेकितंबंधणपच्चइए २ ते स्युं बन्धन प्रत्ययकहिये इतिप्रश्न बन्धनप्रत्यय ते कहिये । जण्णं परमाणुपोग्गला दुपएसिया तिपएसिया । जेण वाक्यालंकारे, परमाणुपुद्गल ते परमाणुहीज कहवो द्विप्रदेशिक त्रिप्रदेशिक । जाव दसपएसिया संखेज्जपएसिया असंखेज्जपएसिया । यावत् दशप्रदेशिक संख्यातप्रदेशिक असंख्यातप्रदेशिक । अणंतपएसियाणं खंधाणं वेमायणिद्धयाए वेमाय लुक्खयाए वेमायणिद्धलुक्खयाए । अनन्तप्रदेशिक खंधने विषममात्रा छे जहनेविषे ते विमात्रा कहिये ते एह स्निग्धता स्निग्धपणुं विमात्रा स्निग्धता कहिये, तेणेकरी इम विमात्ररूक्षता अने विमात्र स्निग्ध रूक्षता ए पणि कहवा, इहां ए भावार्थ समणिद्धयाएबंधो नहोइसमलुक्खयाएवि नहोइवेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधोउखंधाणं, ए अर्थ समगुणस्नि

॥ टीका ॥

त्यर्थो हेतु रुक्षरूपविमात्रस्निग्धतादिलक्षणो बन्धनमेववा, विवक्षितस्नेहादिप्रत्ययो बन्धनप्रत्यय स्तेन, इह बन्धनप्रत्ययेनेति सामान्य विमात्रस्नि ग्धतये त्यादयस्तु तद्भेदा इति ॥ असंखेज्जकालंति ॥ असङ्ख्येयो त्सर्प्पिण्यवसर्प्पिणीरूप ॥ जुन्नसुरेत्यादि ॥ तत्र जीर्णसुराया स्त्यानीभवनलक्षणो बन्धो जीर्णगुडस्य जीर्णतन्दुलानाच पिण्डीभवनलक्षणो ॥ पयोगबधत्ति ॥ जीवव्यापारबन्ध सच जीवप्रदेशाना मौदारिकादिपुद्गलानांवा "अणाई

॥ मूल ॥

सिया ञ्ऋणंतपएसियाण खधाणं वेमायनिद्धयाए वेमायलुक्खयाए वेमायनिद्धलुक्खयाए एवं बंधणपच्चइएणं बधे समुप्पज्जइ। जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जंकाल सेत्तं बंधणपच्चइए । सेकिंतं भायणपच्चइए २ जन्न जुन्नसुराजुन्नगुलाजुन्नतंदुलाणं भायणपच्चइएणं बधे समुप्पज्जइ जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखे

अनुवाद

मात्रस्निग्धरूक्षतया बन्धनप्रत्ययिको बन्ध समुत्पद्यते' जघन्येनैक समय मुत्कर्षतो ऽसङ्ख्येय काल ॥ समाप्तो बन्धनप्रत्ययिक ॥ अथ किं तद्भाज नप्रत्ययिको भाजनप्रत्ययिको य ज्जीर्णसुराजीर्णगुडजीर्णतदुलानाच भाजनप्रत्ययिको बध. समुत्पद्यते, जघन्येनान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षत. सङ्ख्येय

॥ भाषा ॥

ग्ध जे परमाणु तथा द्वगुणकादिक ते सघाते बन्धनहुवे तथा समगुण रूक्षने पणि समगुणरूक्ष जे परमाणू तथा द्वणुकादिक ते सघाते बधनहुवे तो जि वारे विषममात्राहुवे तिवारे बन्धहुवे विषममात्रा निरूपणनिमित्तेँ कहेछे—णिद्धस्सणिद्धेण दुयाहिएण लुक्खस्सलुक्खेणदुयाहिएण णिद्धस्सलुक्खेणउवेइबधो जहणवज्जोविसमोसमोवत्ति। बधणपच्चइएणंबधेसमुप्पज्जइ जहन्नेणएक्कसमय उक्कोसेणअसखेज्जकाल। बन्धन जे प्रत्ययकहिये हेतु रुक्षरूप विमात्र स्निग्धतादि लक्षण अथवा बन्धनहीज विवक्षित स्नेहादिप्रत्यय हेतु तिणेकरी बध ऊपजे ते जघन्ये एकसमय उत्कृष्टथकी असख्येय उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीरूप काल लगे रहे । सेत्तबधणपच्चइए सेकितभायणपच्चइए भा २। अथ ए बधनप्रत्यय कह्यो, हिवे सूत्रे भाजनप्रत्यय कहिये इतिप्रश्न भाजनप्रत्यय ते कहिये भा जनकहिये आधार ते प्रत्ययहेतु ते भाजनप्रत्यय। जण्णजुण्णसुराजुण्णगुलाजुण्णतदुलाणय भायणपच्चइए बधे समुप्पज्जइ। जेण वाक्यालङ्कारे, जूनो सुराने ठसौने जाडोहुवे ते लक्षण बन्ध, जूना गुलने तथा जूना तदुलने पिण्डीभवनलक्षण बन्ध ते भाजनप्रत्यय तिणेकरी ते बन्ध ऊपजे ते। जहन्नेणअंतो

॥ टीका ॥

एवेत्यादयो,, द्वितीयवर्ज्जा स्त्रयो भङ्गा स्तत्र प्रथमभङ्गोदाहरणायाह ॥ तत्यण जेसे इत्यादि ॥ अस्य किल जीवस्या ऽसङ्ख्येयप्रदेशकस्या ष्टौ ये मध्ये प्रदेशा स्तेषा मनादिरपर्यवसितो बन्धो यदापि लोक व्याप्य तिष्ठति जीव स्तदा प्यसौ तथैवेति, अन्येषा पुन जीवप्रदेशाना विपरिवर्त्तमानत्वा त्स्यनादिरपर्यवसितो बन्ध एतेषा मुपर्यन्ये चत्वार एव सेते ष्टौ एव तावत्समुदायतो ष्टाना बन्ध उक्तो ऽथ ते प्रत्येकेना त्मप्रदेशेन सह या

॥ मूल ॥

जंकाल सेत्तं भायणपच्चइए । सेकिंतं परिणामपच्चइए २ जण्णं अब्भाणं अब्भरुक्खाणं जहा तइयसए जाव अमोहाणं परिणामपच्चइएणं बंधे समुप्पज्जइ जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्तं परिणामपच्चइए सेत्त साइए वीससा बंधे ॥ सेकिंतं पओगबंधे २ तिविहे पण्णत्ते, तंजहा—अणाइएवा अपज्जवसिएवा ।

॥ अनुवाद ॥

काल । समासो भाजनप्रत्ययिक । अथ किं तत्परिणामप्रत्ययिको २ यदभ्राणा मभ्रवृक्षाणा यथा तृतीयशते याव दमोघाना परिणामप्रत्ययिको बन्ध समुत्पद्यते, जघन्ये नैक समय मुत्कर्षेण षण्मासान् । समाप्त सादिकविस्रसाबन्ध ॥ समाप्तो विस्रसाबन्ध ॥ अथ किं तत्प्रयोग

॥ भाषा ॥

मुहूर्त्त उक्कोसेण संखेज्जकाल । जघन्ये अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथको सख्यातो काललगे रहै । सेत्तंभायणपच्चइए । ते भाजनप्रत्यय कहिये । सेकिंतपरिणामपच्चइए २ । हिवे स्यू ते परिणामप्रत्यय इतिप्रश्न उत्तर ते परिणामप्रत्यय कहिये । जण्णंअब्भाणं अब्भरुक्खाणं जहातइयसए जाव अमोहाण । जे ए वाद्यालका रे, सध्याकाल तथा अभ्र वादल परिणाम वृक्षपरिणाम जिम त्रीजा शतकनेविषे कह्यो' यावत् अमोघादिजिवाघसाई । परिणामपच्चइएणंबंधेसमुप्पज्जइ जहण्णेणंएकसमय उक्कोसेणछम्मासा । परिणाम प्रत्यये करी बंध, ऊपजे, तेजघन्ये एक समयप्रमाण उत्कृष्ट थको छमासलगे रहै । सेत्तपरिणामपच्चइए सेत्त साइयवीससाबंधे सेत्त वीससाबंधे । ते परिणाम प्रत्यय कह्यो, एतले सादिविस्रसा बंध कह्यो । एतले विस्रसा बंध कह्यो । सेकिंतपओगबंधे २ तिविहे पण्णत्ते तंजहा अणाइएवाअपज्जवसिए साइएवाअपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए । तिस्यू प्रयोगबंध कहीये जीव व्यापारबंध ते जाव प्रदेशनो अथवा औदारिक पुद्गल नो इतिप्रश्न हे गोतम ! प्रयोग तीनभेदे कह्यो ते कहै छै इत्यादिक तिहा अनादि सपर्यवसित ए भागो वर्जी

॥ टीका ॥

तत्रापि ते घष्टानु जीवप्रदेशेषु मध्ये त्रयाणा त्रयाणा मेकैकेन सदा नादिरप वता परस्परेण वन्धो भवति तद्दर्शनायाह ॥ तत्थविण मित्यादि ॥ तत्रापि ते घष्टानु जीवप्रदेशेषु मध्ये त्रयाणा त्रयाणा मेकैकेन सदा नादिरप यंवसितो वन्ध स्तथाहि–पूर्वोक्तप्रकारेणा वस्थिताना मष्टाना मुपरितनप्रतरस्य य कश्चि द्विवक्षित स्तस्य द्वौ पार्श्ववर्त्तिना वेकश्चा धोवर्त्ती त्येते त्र य सम्बध्यन्ते शेष स्त्वेक उपरितन, स्तथा धस्तना नसम्बध्यन्ते व्यवहितत्वा' देव मधस्तनप्रतरापेक्षयापीति चूर्णिकार व्याख्या, टीकाकारव्या ख्यातु दुरवगमत्वा त्परिहृतेति ॥ सेसाण साइएत्ति ॥ शेषाणा मध्यमाष्टाभ्यो ऽन्येषा सादि र्विपरिवर्त्तमानत्वा देतेन प्रथमभङ्ग उदाहृत, श्र

॥ मूल ॥

साइएवा अपज्जवसिए, साइएवा सपज्जवसिए। तत्थणंजेसेअणाइए अपज्जवसिए सेणं अट्ठरहं जीवमज्झं प्पएसाणं तत्थविणं तिरह २ अणाइए अपज्जवसिए सेसाणं साइए तत्थणजेसेसाइए अपज्जवसिए सेणंसि

अनुवाद

वन्ध १ प्रयोगवन्ध त्रिविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा–अनादिकोवापर्यवसित सादिकोवापर्यवसित सादिकोवासपर्यवसित । तत्र य सो नादिकोप यंवसित सोष्टाना जीवमध्यप्रदेशाना तत्रापि त्रयाणा त्रयाणा मनादिको पर्यवसित. शेषाणा सादिक । तत्र य सादिको पर्यवसित स सिद्धा

॥ भाषा ॥

प्रयोगवंध ते त्रिविध प्ररूप्या ते कहेछे एक अनादि अपर्यवसित एक सादि सपर्यवसित एक सादि अपर्यवसित ए च्यार भागा मध्ये प्रथम नें शेष तीन भागा कह्या तिहा अनादि० ए पहिलो भागो १ सादी एवा सादि अनत एवीजो भागो २ सादि सात ए त्रीजो भागो ३ तिहा प्रथम भग उदाहरण नें अर्थे कहेछे । तत्थण जेसे अणाइए अपज्जवसिए सेण अट्ठरह जीवमज्झप्पदेसाण । तिहाण वाक्यालकारे जेते अनादि अपर्यवसित ते ण वाक्यालकारे ए जीव असख्यात प्रदेशिक ना आठ जे मध्य प्रदेश तेहनो अनादि अनत वध छे जिवारे पणि लोकव्यापीनें रहे तिवारे पणि ए वध तिम होज रहेछे वली वीजा जीव प्रदेशा ने विपरि वर्त्तमान पणा थकी नहीछे अनादि अपर्यवसित वध तेहनो स्थापना ए होने ऊपरि वीजा च्यारि इम एहआठ प्रदेश इम पहिला समुदाय थकी आठनो वध कह्यो हिवे तेहनें विषे एकेक आत्म प्रदेश सघाते जेतला नो परस्पर वध हुवे ते देखाडतो कहेछे । तत्थविण तिरह तिरह अणाइए अपज्जवसि० सेसाण साइए तत्थण जेसाइए अपज्जवसिए तेण सिद्धाण । तत्रा प तिहा पणि तेह आठ जी व प्रदेश नें विषे मध्ये तीन तीन नें एकेक सघात अनादि अपर्यवसित वन्धछे ते देखाडेछे—पूर्वोक्तप्रकारेकरी रह्या आठप्रदेशने उपरितन प्रतरनो जे

नादि सपर्यवसित इत्ययन्तु द्वितीयोभङ्ग इह नसम्भव त्यनादिसम्बद्धाना मष्टाना जीवप्रदेशाना मपरिवर्त्तमानत्वेन वन्धस्य सपर्यवसितत्वानुप पत्ते रिति' अथ तृतीयो भङ्ग उदाह्रियते ॥ तत्यण जेसे साईएत्यादि ॥ सिद्धाना सादिरपर्यवसितो जीवप्रदेशबन्ध शैलेइयवस्थाया सस्थापितप्र देशाना सिद्धत्वेविचलनाभावा दिति, अथ चतुर्थभङ्ग भेदत आह ॥ तत्यण जेसे साईएत्यादि ॥ आलावणबधेत्ति ॥ आलाप्यते आलीन क्रियते एभि रिति आलापनानि रज्वादीनि तै र्वन्ध स्तृणादीना मालापनवन्ध ॥ अल्लियावणबधेत्ति ॥ अल्लियावण द्रव्यस्य द्रव्यान्तरेण श्लेषादिना आली

तत्थणं तत्थणं जेसे साइए सपज्जवसिए सेणं चउव्विहे प०, त०—आलावणबंधे अल्लियावणबधे सरीरबधे

ना । तत्र य स सादिक स्सपर्यवसित स चतुर्विध प्रज्ञप्त स्तद्यथा–आलापनबन्धो ऽलीकापनबन्ध शरीरप्रयोगबन्ध । अथ किं तदालाप

कोई विवक्षाप्रदेश तेहना टोपपार्श्ववर्त्ती एक अर्धोवर्त्ती ए तीनसघाते सबधकीजे शेष एक उपरितन तीन नीचलापट सघाते सबध नकीजे व्यवहित पणाथकी इम अधस्तन प्रतरनीअपेक्षायें पणि सेसाणसाइएत्ति, शेष जे मध्यम अष्टथकी बाजा तेहने सादिविपरिवर्त्तमान पणाथकी एतले पहिलेभा गे उदाहरण देखाड्यो १ बीजोभागो अनादि सान्त ते इहां न सभवे अनादि सम्बद्ध आठजीव प्रदेशने अपरिवर्त्तमान पणेकरी बधने सपर्यवसित प णनो सातपणों न ऊपजे तेमाटे २ हिवे तीजोभागो उदाहरणेकरी कहेछे—तत्थण जे साइए अपज्जवसिए तेणसिद्धाणं । तिहा जे ते सादि अपर्यवसि तसिद्ध ते सादि अपर्यवसित जीवप्रदेश बधछे शैलेशी अवस्थायें जिम स्थाप्याप्रदेश तेहने सिद्धपणानेविषे पणि चलवाना अभावथकी ३ चौथोभागो भेद थी कहेछे—तत्थण जे सेसाइए सपज्जवसिए सेणचउव्विहे प० त० । तिहा जे ते सादि सपर्यवसित भागो ते चारप्रकारेकह्यो, ते कहेछे— । आलावणब धे अल्लियावणबधे सरीरबधे सरीरप्पओगबधे । पुद्गलविशेषेकरी माहोमाहि घालीन मिण्याकरीयें जिम टोरडोयें तृणादि बाधियें १ एक द्रव्यनेद्रव्यान्तरे श्लेषकरी एकठोमिलवो ते अल्लियावणबध २ समुघातेकरी विखेरया जीवप्रदेशनो एकठमेलवो ते शरीरबध ३ औदारिकशरीरें करी जे पुद्गलनो ग्रहवो एकठाकरिवा ते शरीरप्रयोगबध ४ सेकितआलावणबधे आला २ । ते स्यू ते आलावणबध कहियें इतिप्रश्न उत्तर आलावणबध ते कहियें । जणतणभा

॥ टीका ॥

नस्य करण तद्रूपो यो वन्ध स तथा ॥ सरीरवधेत्ति ॥ समुद्घाते सति यो विस्तारितसङ्कोचितजीवप्रदेशसम्बन्धविशेषवशा त्तैजसादिशरीरप्रदेशाना वधविशेष स शरीरवन्ध' शरीरिवन्धइत्यन्ये, तत्र शरीरिण समुद्घाते विक्षिप्तजीवप्रदेशाना सङ्कोचने यो वध स शरीरिवध इति ॥ सरीरप्पनुगवधेत्ति ॥ शरीरस्यौ दारिकादे यः प्रयोगेण वीर्यान्तरायक्षयोपशमादिजनितव्यापारेण वन्ध स्तत्पुद्गलोपादान शरीररूपस्यवा, प्रयोगस्य यो वन्ध' स शरीरप्रयोगवध ॥ तणभाराणवत्ति ॥ तृणभारा स्तृणभारका स्तेषा ॥ वेत्तेत्यादि ॥ वेत्रलता जलवशकं ॥ वागत्ति ॥ वल्को, वरत्रा चर्ममयी' रज्जु सनादिमयी, वल्ली त्रपुष्यादिका, कुशा निर्मूलदर्भा, दर्भास्तु समूला, आदिशब्दा च्चीवरादिग्रह ॥ लेसणावधेत्ति ॥ श्लेषणा शयद्व्येण

॥ मूल ॥

सरीरप्पनुगवधे । सेकित आलावणवंधे २ जसा तणभाराणवा कट्ठभाराणवा पत्तभाराणवा पलालभाराणवा वेल्लभाराणवा वेत्तलया वागवरत्तरज्जुवल्लिकुसदब्भमाइएहि आलावणबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण सखेज्जकालं। सेत्तं आलावणवंधे । सेकित अल्लियावणबंधे २ चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—

अनुवाद

नवन्धो २ । य तृणभाराणावा, काष्ठभाराणावा; पत्रभाराणावा, पलालभाराणावा, वल्लीभाराणावा, वत्रलतावल्कवरत्रारज्जुवल्लीकुशदर्भादिके रालापनवन्ध समुत्पद्यते, जघन्ये नान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षत सङ्ख्येय काल ॥ समाप्त आलापनवन्ध ॥ अथ कि तदालिकापनवन्धो २ चतुर्वि

॥ भाषा ॥

राणवा कट्ठभाराणवा। जेण वाध्यालकारे, तृणानो भारोबाधिवे काष्टनोभारो बांधिवे। पत्तभाराणवा पलालभाराणवा वेल्लभाराणवा वेत्तलया। पानडानो भारो बांधिये अथवा पलालनो भारो अथवा वेत्रलता तेहनो भारो वेत्रलता जलवशकस्या। वागवरत्तरज्जुवल्लि कुस दब्भमाइएहिं। वागत्ति वल्क वरत्त चर्ममय नाडा रज्जु सनादिमयी त्रपुष्यादिका कुस मूल दभ दर्भ ते समूल आदि शब्दथकी चीवरादिकनो ग्रहणकरजो इत्यादिक स्यू। आलावणवधे समुप्पज्जइ। आलापनवध उपजे। जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जकाल। ते जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त कालरहै उत्कृष्टो सख्यातोकाल रहै। सेत्तआलावणवधे। ते ह आलावण वध कहियेरे। सेकित अल्लियावणवधे। ते स्यू अल्लियावणवध कहिये इतिप्रश्न। अल्लियावणवधे चउव्विहे प० त०। अल्लियावणवध चारभेदे कह्यो

॥ टीका ॥

द्रव्ययो संबन्धन तद्रूपो यो बन्ध स तथा ॥ उच्चयबंधेत्ति ॥ उच्चय ऊर्द्ध चयन राशीकरणं तद्रूपो बन्ध उच्चयबन्ध ॥ समुच्चयबंधेत्ति ॥ सङ्गत उच्चयापेक्षया विशिष्टतरउच्चय समुच्चय सएव बन्ध समुच्चयबन्ध ॥ साहणणाबंधेत्ति ॥ संहनन मवयवाना संघातन तद्रूपो यो बन्ध स संहननबन्धो, दीर्घत्वादि चेह प्राकृतशैलीप्रभव मिति ॥ कुट्टिमाणंति ॥ मणिभूमिकाना ॥ छुहाचिक्खल्लेत्यादौ ॥ सिलेसत्ति ॥ श्लेषो वज्रलेप ॥ लक्खत्ति ॥ जतु ॥ महुसित्थत्ति ॥ मदन आदिशब्दात् गुग्गलरालाखल्यादिग्रह ॥ अवगररासीणवत्ति ॥ कचवरराशीना ॥ उच्चएणंति ॥ ऊर्द्धचयनेन ॥ अगहत

॥ मूल ॥

लेसणाबंधे उच्चयबंधे समुच्चयबंधे साहणणाबंधे । सेकिंत लेसणाबंधे २ जण्णं कुड्डाण कुट्टिमाण खंभाण पासायाण कट्ठाण चम्माण घडाण पडाणं कडाणं छुहाचिक्खल्लसिलेसलक्खमहुसित्थमाइएहिं लेसणएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकालं । सेत्तं लेसणाबंधे । सेकिंतं उच्चयबंधे२ जण्णं

अनुवाद

ष प्रज्ञप्त स्तद्यथा–श्लेषणाबन्ध उच्चयबन्ध समुच्चयबन्ध संहननबन्ध । अथ किं तत् श्लेषणाबन्ध २ य स्कुड्यानां कुट्टिमानां स्तम्भानां प्रासादानां काष्ठानां चर्मणां घटानां पटानां कटानां सुधाचिक्खल्लश्लेषलाक्षामधुसिक्थादिकैः श्लेषणकैः श्लेषणाबन्ध समुत्पद्यते, जघन्ये नान्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षेण

॥ भाषा ॥

ते कहेछे- लेसणाबंधे उच्चयबंधे समुच्चयबंधे साहणणाबंधे । श्लेष टोलाबंध चूनादिक तेणे द्रव्यनो बंधन ते श्लेषबंध १ जे धान्यादिक विशेष ढिगलो करिये तद्रूप जे बंध ते उच्चयबंध २ सम्यकप्रकारे अधिकोअधिको करवो तद्रूप जे बंध ते समुच्चयबंध ३ यथा अवयवनो अथवा एकठो करवो ते रूप जे बंध ते संहननबंध ४ । सेकिंतलेसणाबंधे लेस० २ । ते स्युं लेसणाबंध कहिये लेसणाबंध ते कहिये । जं कुड्डाण कोट्टिमाण खंभाण पासायाण कट्ठ ण चम्माण घडाण पडाण ॥ कडाण । जेम वाक्यालंकारे, भींत भूमिका बंधनो थंभनो प्रासादनो काष्ठनो चर्मनो घटनो पटनो कटनो । छुहा चिक्खल्ल सिलेस लक्ख महुसित्थमाइएहिं लेसणाबंधे समुप्पज्जइ । चूनानो मेण आदि गच्छथी गूगल राल आदिकनो श्लेषकरवो ते तेणो द्रव्यसंघाते बंध ऊपजे । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जकालं । जघन्य अन्तर्मुहूर्त ऊपजे उत्कृष्टथकी संख्यातोकाल । सेत्तंलेसणाबंधे । ते लेसणाबंध कह्यो । से किंतं उच्चयबंधे उच्चयबंधे

॥ मूल ॥

तणरासीणवा कट्ठरासीणवा पत्तरासीणवा तुसरासीणवा भुसरासीणवा गोमयरासीणवा अवगररासीणवा उच्चएण बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकाल । सेत्तं उच्चयबंधे । सेकिंतं समुच्चयबंधे समुच्चयबधे जण्णं अगडतडागनदीदहवाविपुक्खरिणीदीहियाण गुंजालियाणं सराण सरपंतियाणं बिलपंतियाणं देवकुलसभापव्वयथूभखाइयाणं परिहाणं पागारट्टालगचरियदारगोपुरतोरणाणं पासायघरसरणलेण

अनुवाद

सङ्ख्येय काल ॥ समाप्त श्लेषणाबन्ध ॥ अथ कि तदुच्चयबन्ध २ यत्तृणराशीनावा काष्ठराशीनावा पत्रराशीनावा तुषराशीनावा बुसराशीना वा गोमयराशीनावा अवकरराशीनावा उच्चयेन बन्ध समुत्पद्यते, जघन्येनान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षत सङ्ख्येय काल॥ समाप्त उच्चयबन्ध ॥ अथ कितत् समुच्चयबन्ध २ य दवटतडागनदीद्रहवापीपुष्करिणीदीर्घिकाणा गुञ्जालिकाना सरसा सर पक्तीना बिलपक्तीना देवकुलसभापर्वतस्तूपखाति

॥ भाषा ॥

ते स्यू उच्चयबध कहिये उच्चयबध ते कहिये । जणतणरासीणवा कट्ठरासीणवा पत्तरासीणवा तुसरासीणवा । जेण वाक्यालकारे, तृणनोराशि काष्टनी राशि पत्रनो राशि अथवा तुसनो राशि । भुसरासीणवा । अथवा छाणनो राशि । गोमयरासीणवा अवगररासीणवा । अथवा गोबरनो राशि कचरनो राशि । उच्चएणबधे समुप्पज्जइ । उचे चिणवे करी बंध उपजे ते उच्चयबन्ध कहिये । जहण्णेणअंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जकाल । ते जघन्यथकी अंतमुहूर्त्त लगेरहे उत्कृष्टथकी सख्यातोकाल रहे । सेत्तंउच्चयबधे । ते उच्चयबध कह्यो । सकित समुच्चयबधे समुच्चयबधे । हिवे स्यू ? ते समुच्चयबध कहिये । अगड तडाग नदी दह वावि । समुच्चयबध ते अखातसरोवर पालिसहित सरोवर नदी द्रह वावी । पुक्खरिणी दीहियाण गुजालियाण सराण । पुष्करणी दीर्घिका गुञ्जालिका सर । सरपतियाण बिलपतियाण । सरपंक्ति बिलपंक्ति । देवकुलसभापव्वय थूभ खाइयाण परिहाणपागारट्टालग चरिय । देवकुलसभा पर्वत थूभ खाई प्राकार गढ कोट अट्टालग कागुरा चरी । दार गोपुर तोरणाण । द्वार गोपुर तोरण । पासायघर सरणलेण आवणाण ।

॥ टीका ॥

लावनईइत्यादि ॥ प्राय' प्राग्व्याख्यातमेव ॥ देससाहणणाबंधेयत्ति ॥ देशेन देशस्य संहननलक्षणो बन्ध सम्बन्ध शकटाङ्गादीना मिवेति देशसंहननबन्ध ॥ सव्वसाहणणाबंधेयत्ति ॥ सर्वेण सर्वस्य संहननलक्षणो बन्ध सम्बन्ध, क्षीरनीरादीना मिवेति' सर्वसंहननबंध ॥ जण्णं सगडरहेत्यादि ॥ शकटादीनिच पदानि प्राग्व्याख्याता न्यपि शिष्यहिताय पुन र्व्याख्यायन्ते तत्रच ॥ सगडत्ति ॥ गन्त्री ॥ रहत्ति ॥ स्यन्दन ॥ जाणत्ति ॥ यान

॥ मूल ॥

च्छावणाणं सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहमाईणं छुहाचिक्खिल्लसिलासमुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकालं । सेत्तं समुच्चयबंधे । सेकिंत साहणणाबंधे २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—देससाहणणाबंधेय सव्वसाहणणाबंधेय । सेकिंत देससाहणणाबंधे २ जण्णं सगडरहजाणजुग्गगिल्लि

॥ अनुवाद ॥

कानां परिखाणां प्राकाराट्टालकचरितकद्वारगोपुरतोरणानां प्रासादगृहशरणलयनापणानां शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथादीनां सुधाचिक्खल्लशिलासमुच्चयेन बन्ध समुत्पद्यते, जघन्येना न्तर्मुहूर्त मुत्कर्षेण सङ्ख्येय काल ॥ समाप्त समुच्चयबन्ध ॥ अथ किं तत् संहनन बन्ध' ? संहननबन्धो द्विविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—देशसंहननबन्धश्च सर्वसंहननबन्धश्च ॥ अथ किं तद्देशसंहननबन्ध २ यच्छकटरथयानयुग्यगिल्लि

॥ भाषा ॥

प्रासाद वर सरण लेण ए घरविशेष हट्ट श्रेणी । सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह महापहमाईण । सिंघाडाने आकारे त्रिवटा चोवटा चगो गलो चतुर्मुख राजमार्ग आदिदेई एहनो अर्थ पूर्वेलिख्योछै । छुहाचिक्खिल्लसिलासमुच्चएणंबंधेसमुप्पज्जइ । छोह चूनो चीकलो कादो वज्रलेप विशेष एहक री बंध उपजे बंध हुई । जहन्नेणंअंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखेज्जाकाल । जघन्यें अन्तर्मुहूर्तलगे रहे उत्कृष्टथकी सख्यातोकाल रहे । सेत्तसमुच्चयबंधे । ते समुच्चय बंधकह्यो । सेकिंतसाहणणाबंधे । ते स्यू साहणणा बंध । साहणणाबंधेदुविहे प० तं० । साहणणाबंध दोयभेदे कह्या ते कहेछै—देससाहणणाबंधेय सव्वसाहणणाबंधेय । देशथकी देशनो संहननलक्षण जे बंध कहिये सबंध देश ते शकटआदिकनो परे मगलिकनो सगलानो संहननलक्षण बंधकहिये सम्बन्ध क्षीर नीरादिकनापरे ते सर्वबन्ध । सेकिंतदेससाहणणाबंधे २ । ते स्यू ते देश संहननना बन्ध ते कहिये । जण सगड रह जाण जुग्ग गिल्लि थिल्लि सीय

॥ टीका ॥

लघुगन्त्री ॥ जुगत्ति ॥ युग्य गोल्लविषयप्रसिद्ध द्विहस्तप्रमाणं वेदिकोपशोभितं जम्पान ॥ गिल्लित्ति ॥ हस्तिनउपरि कोल्लर यन्मानुष गिलतीव ॥ थिल्लित्ति ॥ अड्डपल्लाण ॥ सीयत्ति ॥ शिविका कूटाकारेणा च्छादितजम्पानविशेष ॥ सदमाणियत्ति ॥ पुरुषप्रमाणजम्पानविशेष ॥ लोहित्ति ॥ मण्डकादिपचनभाजन ॥ लोहकडाहेत्ति ॥ भाजनविशेषएव ॥ कडुच्छुयत्ति ॥ परिवेषणभाजन आसनशयनस्तम्भा प्रतीता ॥ भंडत्ति ॥ मृन्मयभा जन ॥ मत्तत्ति ॥ अमत्र भाजनविशेष ॥ उवगरणत्ति ॥ नानाप्रकार तदन्योपकरणमिति ॥ पुव्वप्पओगपच्चइयत्ति ॥ पूर्व प्राक्कालासेवित प्रयोगो

॥ मूल ॥

थिल्लिसीयसंदमाणियलोहीलोहकडाहकडुच्छुयआसणसयणखंभभंडमत्तोवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे ए वंचेव समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकाल। सेत्तं देससाहणणाबंधे। सेकिंतं सव्वसाहणणा बंधे २ सेणं खीरोदगमाईणं। सेत्तं सव्वसाहणणा बंधे ॥ सेत्तं अल्लियावणबंधे ॥ सेकिंतं सरीरबंधे २ दुवि

अनुवाद

उपकरणादीना देशसहननबन्ध एवञ्चैव समुत्पद्यते, जघन्येना
थिल्लिशिविकास्यन्दमानिकालोहीलोहकटाहकडुच्छिकासनशयनस्तम्भभाण्डामत्रोपकरणादीना देशसहननबन्ध एवञ्चैव समुत्पद्यते ॥ अथ किं तत्सर्वसंहननबन्ध २ स क्षीरोदकादिकै. समुत्पद्यते ॥ समाप्त सर्वसं
न्तर्मुहूर्त मुत्कर्षत सख्येय काल ॥ समाप्तो देशसहननबन्ध. ॥ अथ किं तत्सर्वसंहननबन्ध २ स क्षीरोदकादिकै. समुत्पद्यते ॥ समाप्त सर्वसं

॥ भाषा ॥

सदमाणिय लोहीलोहकडाह कडच्छु आसण सयण खंभभंडमत्तो वगरणमादीण देससाहणणाबंधे एवचेव समुप्पज्जइ। जं णंवाक्यालंकारे, शकटगाडी र थ नान्होगाडी युग्य गोल्लदेश प्रसिद्ध दोयहाथप्रमाण वेदिकायेंकरी उपशोभित झम्पानविशेष हाथीनो ऊपरलो कोल्लर अम्बाडी इत्यर्थ ऊटनीअम्बाडी अथवा घोडानो पलाण शिविकाकूटने आकारे आच्छादित झम्पानविशेष लोही मण्डकादि पचनविशेष लोहभाजनविशेष कुडछी कासीयो आसन शयन स्तम्भप्रसिद्ध भडत्ति, माटीना भाजन मत्तत्ति, अमत्र भाजनविशेष नानाप्रकार तेहथी बीजाउपकरण इत्यादिकने देश साहननबध ऊपजे। ज घन्यथकी अन्तर्मुहूर्त रहै उत्कृष्टथकी सख्यातोकाल रहै। सेत्तदेससाहणणाबधे। ते देश सहननबन्ध हणेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जकाल। ते जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त रहै उत्कृष्टथकी सख्यातोकाल रहै। सेत्तदेससाहणणाबधे। ते देश सहननबन्ध कहिये। सेकितसव्वसाहणणाबधे २। ते स्यू सर्वसाहनना बन्ध कहिये सर्वसाहननावन्ध ते कहिये। सेतखोरोदगमादीणं। तेह ण वाक्यालंकारे, चौ

॥ टीका ॥

जीवव्यापारो वेदनाकषायादिसमुद्घातरूप प्रत्यय कारण यत्र शरीरबन्धे सतथा सएव पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक ॥ पडुप्पन्नप्पओगपच्चइएयत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो प्राप्तपूर्वो वर्त्तमान इत्यर्थ । प्रयोग केवलिसमुद्घातलक्षणव्यापार प्रत्ययो यत्र सतथा सएव प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ तत्थतत्थत्ति ॥ अनेन समुद्घातकरणक्षेत्राणा बाहुल्यमाह ॥ तेसुतसुत्ति ॥ अनेन समुद्घातकारणाना वेदनादीना बाहुल्य मुक्त ॥ समोहणमाणाणति ॥ समुद्घन्यमानाना समुद्घात शरीरा द्बहि जीवप्रदेशप्रक्षेपलक्षण गच्छता ॥ जीवप्पएसाणति ॥ इह जीवप्रदेशाना मित्युक्तावपि शरीरबधाधिकारा

॥ मूल ॥

हे पन्नत्ते, तंजहा—पुव्वप्पओगपच्चइए पडुप्पन्नप्पओगपच्चइएय । सेकितं पुव्वप्पओगपच्चइए २ जण्णं नेरइयाणं संसारत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ तत्थ तेसु तेसु कारणेसु समोहणमाणाणं जीवप्पएसाणं बधे समुप्पज्जइ ।

अनुवाद

इननबन्ध. ॥ समाप्तो ऽभिकापनबन्ध ॥ अथ किं तच्छरीरबन्ध ? शरीरबन्धो द्विविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक प्रत्युत्पन्नप्रयोग प्रत्ययिकश्च ॥ अथ कित स्पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक २ य न्नैरयिकाणा ससारस्थाना सर्वजीवाना तत्रतत्र तेषुतेषु कारणेषु समुद्घन्यमानाना जीवप्रदे

॥ भाषा ॥

र नारकआदिदेईने जे बन्ध ते सबध ते सर्वसहनन बन्ध । सेत्त सव्वसाहणणाबधे । ते सर्व सहननबध कह्यो । सेत्तअल्लियावणबधे २। ते अल्लियावणबन्ध कह्यो । सेकित सरीरबधे २ दुविहे प० त० । ते स्यू शरीरबन्ध कहिये शरीरबन्धना बेभेद कह्या ते कहेछे—पुव्वप्पओग पच्चइएय पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए २ । पूर्वकाल सेव्यो जे प्रयोग जीवव्यापार वेदना कषायादि समुद्घातरूप ते हीजप्रत्यय कहिये कारणछे जेणे बधनविषे, बध कहता विखेरप्रदेश तेह नो पाछालेवो ते बन्धरचनाविशेष जाणवो ते पूर्वप्रयोग प्रत्ययशरीरबन्ध कहिये प्रत्युत्पन्न कहता जे पूर्वकाले अनुभव्यो पाम्यो नथी एतले वर्त्तमान इत्यर्थ ते शरीरनो बन्ध वीखेरयाप्रदेशनो सहरिवो प्रयोग केवल समुद्घातलक्षण व्यापारप्रत्यय जिहाछे ते पाचमे समये थाय ते प्रत्युत्पन्न प्रयोगप्रत्यय शरीरबन्ध कहिये । सेकित पुव्वप्पओगपच्चइए २ । ते स्यू पूर्व प्रयोगप्रत्यय शरीरबन्ध ते कहिये । जण्णंनेरइयाण ससारत्थाण तत्थ २ तेसु २ कारणेसु समोहणमाणाण जीवप्पएसाण । जे ण वाक्यालकारे, नारकीने ससारभवस्थ सर्वजीवने तिहा २ क्षेत्रने समुद्घातकरण वेदनो बाहुल्यकह्यो इणे समुद्घा

॥ टीका ॥

तात्स्था त्तद्व्यपदेश इति न्यायेन जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशाना मिति द्रष्टव्य, शरीरबन्ध इत्यत्रतु पक्षे समुद्घातेन विक्षिप्यसकोचि ताना मुपसर्जनीकृततैजसादिशरीरप्रदेशाना जीवप्रदेशाना मेवेति ॥ बधेत्ति ॥ बधो रचनाविशेष ॥ जस्स केवलेत्यादि ॥ केवलिसमुद्घातेन द ण्ड १ कपाट २ मथिकरण ३ लरपूरण ४ लक्षणेन समुपहतस्य विस्तारितजीवप्रदेशस्य तत समुद्घाता त्प्रतिनिवर्त्तमानस्य प्रदेशा न्सहरत समु द्घातप्रतिनिवर्त्तमानत्व च पञ्चमादि ष्वनेकेषु समयेषु स्या दित्यतो विशेषमाह ॥ अतरामथे वट्टमाणस्स त्ति ॥ निर्वर्त्तनक्रियाया अन्तरे मध्ये वर्त्तस्य

॥ सूत्र ॥

सेत्तंपुव्वप्पओगपच्चइए । सेकित पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए२ जस्सं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएण समोहयस्स तत्र समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अंतरामथे वट्टमाणस्स तेयाकम्माण बधे समुप्पज्जइ,

अनुवाद

शाना बन्ध समुत्पद्यते ॥ समाप्त पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक ॥ अथ किंत त्प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक २ य त्केवलज्ञानिना नगारस्य केवलिसमुद्घा तेन समुद्धतस्य तत समुद्घातात् प्रतिनिर्वर्तमानस्या न्तरा मथि वर्तमानस्य तैजसकार्मणा बन्ध समुत्पद्यते, किकारण २ तदा तस्य प्रदेशा ए

॥ भाषा ॥

तकारणना बादर कर्यो पतले तिहा २ चर्चे ते ते कारणनविषे समुद्घात शरीरथकी बाहिर जीवप्रदेश प्रक्षेपलक्षण जाताने ,जीवप्रदेशसार्थाति, इहा जी वप्रदेशने इसोकह्यो पणि शरीर सम्बन्धअधिकारथकी जीवप्रदेशाश्रित तैजसकार्मण शरीर प्रदेशने इसोकहवो, शरीरबध इणे पक्षे समुद्घातेकरी विखेरी सकोचितने उपसर्जनीकृत तैजसादिकशरीर प्रदेशनो जीवप्रदेशनो होइबध रचनाविशेष ते उपजे । सेत्तपुव्वप्पओगपच्चइए। ते पूर्व प्रयोगप्रत्यय शरीर बधकहिये । सेकितपडुप्पन्नप्पओग पच्चइए २ । हिवे स्यू ते प्रत्युत्पन्न प्रयोगप्रत्यय शरीरबध कहिये, प्रत्युत्पन्न प्रयोगशरीर । जस्सकेवलणाणिस्स अणगारस्स केवलसमुग्घाएण समोहयस्स तओसमुग्घायाओ पडिणियत्तमाणस्स । जेणवा क्यालकरि, केवल समुद्घातेकरी दण्ड १ कपाट २ मथकरण ३ अन्तरकरण ४ लक्षणेकरी समुपहतने विस्तारित जीवप्रदेशने तिवारपछी समुद्घातथकी प्रतिनिवर्त्तमानने प्रदेशप्रतें सहरताने समुद्घात प्रतिनिवर्त्तमानपणो पचमादि क अनेक समयनेविषे हुवे एतलामाटे विशेष कहेछे । अतरामथे वट्टमाणस्स तेयाकम्माणबधेसमुप्पज्जइ किकारण ताहि सेपएसाए गत्तीगयाभवति । निवर्त्त

॥ टीका ॥

तस्य पञ्चमसमयवर्त्त्यर्थो' यद्यपिच षष्ठादिसमयेषु तैजसादिशरीरसङ्घात' समुत्पद्यते तथा प्यभूतपूर्वतया पञ्चमसमय एवासौ भवति शेषेषुतु भूतपूर्वतयैवेति कृत्वा "अंतरामये वट्टमाणस्से त्युक्त मिति ॥ तेयाकम्माण बंधे समुप्पज्जइत्ति ॥ तैजसकार्मणयो शरीरयो र्बन्ध सङ्घात समुत्पद्यते ॥ किंकारणंति ॥ कुतोहेतो रुच्यते ॥ ताहेत्ति ॥ तदा समुद्घातनिवृत्तिकाले ॥ सेत्ति ॥ तस्य केवलिन प्रदेशा जीवप्रदेशा ॥ एगत्तीगयत्ति ॥ एकत्व गता सङ्घातमापन्ना भवति, तदनुवृत्त्याच तैजसादिशरीरप्रदेशाना बन्ध· समुत्पद्यतइति प्रकृत, शरीरबन्ध इत्यत्रतु पदे ॥ तेयाकम्मा

॥ मूल ॥

किंकारण ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति। सेत्तं पडुप्पन्नप्पओगपच्चइए। सेत्तं सरीरबंधे । सेकिंतं सरीरप्पओगबंधे२ पंचविहे प०. तंजहा—ओरालियसरीरप्पओगबंधे वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे आहारगसरीरप्पओगबंधे तेयासरीरप्पओगबंधे कम्मासरीरप्पओगबंधे । ओरालियसरीरप्पओगबंधेण भंते ! कइविहे प० ? गोयमा !

॥ अनुवाद ॥

कत्वगता भवन्ति ॥ समाप्त प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक ॥ समाप्त शरीरबन्ध ॥ अथ कि त च्छरीरप्रयोगबन्ध २ पञ्चविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—औ

॥ भाषा ॥

नक्रियाने अन्तरमध्ये व्यवस्थित रह्याने पंचमसमयने विषे इत्यर्थ यद्यपि षष्ठादि समयनेविषे तेजसादि शरीरसघात ऊपजेछे तथापि अभूत पूर्वपणेकरी पचमसमयनेविषेज एहवु थयुनेविषे तो भूत पूर्वपणेहवे इम करीने 'अंतरामयेवट्टमाणस्स, इसो कह्यु तैजसकार्मण ए बेऊ शरीरनोबधरूप सघात ऊपजे स्यू कारण स्ये हेतुथकी ते कहियेछे, तदा तिवारे समुद्घात निवृत्तकालनेविषे ते केवलीना प्रदेश जीवप्रदेश एक पणोपाम्या सघातपाम्या हवे ते अनुवृत्ते करी तैजसादिकशरीर प्रदेशानोबध ऊपजे इसोयथो शरीरबध पदनेविषे तेयाकम्माण 'तेयाणबंधेसमुप्पज्जइत्ति, तैजसकार्मण आश्रयभूत पणा थकी तैजसकार्मण शरीरप्रदेश तैजससहननोबध ऊपजे इसो वखाण करवो । सेत्तंपडुप्पण्णप्पओगपच्चइए सेत्तंसरीरबंधे। ते प्रत्युत्पन्न प्रयोगप्रत्ययिक शरीर बध कह्या एतले शरीरबध कह्यो। सेकिंतंसरीरप्पओगबंधे २ पचविहे प० तजहा । हिवे स्यू ते शरीरप्रयोग बधशरीर ते औदारिकादिक तेहना जे प्रयोग वीर्यान्तरायक्षयोपशमादि जनित व्यापार तेणेकरी वध अथवा ते पुद्गलोपादान शरीररूप प्रयोगनो जे बध शरीरप्रयोग ते पाचभेदे कह्या ते

॥ मूल ॥

पंचविहे प०, तंजहा—एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे। एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेण भंते! कइविहे प० ? गोयमा! पंचविहे प०, तं०—पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो

॥ अनुवाद ॥

दारिकशरीरप्रयोगबन्धो वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध आहारकशरीरप्रयोगबन्ध स्तैजसशरीरप्रयोगबन्धश्च कार्मणशरीरप्रयोगबन्धश्च ॥ औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त! कतिविध प्रज्ञप्त? गौतम! पञ्चविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो याव त्पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धश्च। एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त! कतिविध प्रज्ञप्तो? गौतम! पञ्चविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, एव मेतेना भिलापेन भेदो यथा ऽवगाहनासंस्थाने औदारिकशरीरस्य तथा भणितव्यो याव त्पर्याप्तगर्भव्यु

॥ भाषा ॥

कहेछे—वेउव्वियसरीरप्पओगबंध। औदारिकशरीर प्रयोगबंध १ वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध २। आहारगसरीरप्पओगबंधे। आहारकशरीर प्रयोगबंध ३। तेयासरीरप्पओगबंधे। तेजसशरीर प्रयोगबंध ४। कम्मासरीरप्पओगबंधे ५। ओरालियसरीरप्पओगबंधेणभंते कइविहे प०। औदारिकशरीर प्रयोग बन्ध हेभगवन्! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहे प० तं०। हेगौतम! पांचभेदे कह्या ते कहेछे—एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेय। एकेंद्री औदारिकशरीरप्रयोग बन्ध १। बेइंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेय। बेइन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध २। तेइंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेय। तेइन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ३। चउरिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधे। चौरिन्द्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ४। पंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे। पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध ५। एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणभंते कइविहे प०। एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोग बंध हेभगवन्! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचविहे प० तं०। हेगौतम! पांचभेदे कह्या ते कहेछे—पुढवीकाइयएगिंदिय। पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबंध। एवंएएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे। इम इणे आलावेकरी भेद जिम अवगाहना संस्थानपदने

॥ टीका ॥

ण वधे समुप्पज्जइत्ति ॥ तैजसकार्मणाश्रयत्वात्त्वा तैजसकार्मणा शरीरप्रदेशा स्तेषा बन्ध स्समुत्पद्यतइति व्याख्येयमिति ॥ वीरियसजोगसद्दव्वयाएत्ति ॥ वीर्य वीर्यान्तरायक्षयादिकृताशक्ति , योगा मन प्रभृतय सह योगै वर्त्तत इति सयोग ' सन्ति विद्यमानानि द्रव्याणि तथाविधपुद्गला य स्य जीवस्या सौ सद्द्रव्यो वीर्यप्रधान सयोगो वीर्यसयोग सचासौ सद्द्रव्यश्चेति विग्रह स्तद्भाव स्तत्ता तया वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया सवीर्यतया सयोगतया सद्द्रव्यतयाच जीवस्य तया ॥ पमायपच्चइयत्ति ॥ प्रमादप्रत्यया त्प्रमादलक्षणकारणा त्तथा ॥ कम्मचत्ति ॥ कर्म चैकेन्द्रियजात्यादिक मुदयवर्त्ति ॥ जोगचत्ति ॥ योगञ्च काययोगादिक ॥ भवचत्ति ॥ तिर्यग्भवादिक मनुभूयमान ॥ आउयचत्ति ॥ आयुष्कच तिर्यगायुष्काद्युदयवर्त्ति ॥ पडु

॥ मूल ॥

जाव पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्सपचिंदियउरालियसरीरप्पउगबंधेय अपज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्स जाव बंधेय । उरालियसरीरप्पउगबंधेणं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया

अनुवाद

त्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धश्च पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धश्च ॥ औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त । कस्य कर्मण उदयेन ? (भवतीतिशेष.) गौतम । वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया प्रमादप्रत्यया त्कर्मच योगञ्च भवञ्चा युष्च प्रती त्यौ

॥ भाषा ॥

त्पर्य । ओरालियसरीरना तहाभाणियव्वो । औदारिकशरीरनो कह्यो तिम इहा पणि कहवो । जावपज्जत्तगब्भवक्कंतिय मणूस पंचिदिय ओरालिय सरीरप्पओग बंधेय । यावत् पर्याप्तक गर्भज व्युत्क्रान्तिक मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयागबन्ध च वली । अपज्जत्तगब्भवक्कंतिय मणूस जाव बंधेय । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध । ओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्सकम्मस्सउदएणं । औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयेहुवे ? इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोग सद्दव्वयाए पमाद पच्चया कम्मच जोगच भवच आउयच । हेगौतम ! ते वीर्य-अन्तराय क्षयादिके बल, सहियोग ते मनप्रमुख योगसहित वर्त्ते ते सयोग कहियें, विद्यमान द्रव्य तथाविध पुद्गल जेह जीवने तेह सद्द्रव्य कहिये वीर्य प्रधानसयोग ते वीर्यसयोग कहिये तेहोज जे सद्द्रव्य तेहनोभाव तिणेकरी एतले सवीर्यपणे सयोगपणे सद्द्रव्यपणे जीव

॥ टीका ॥ न्धेति ॥ प्रतीत्याश्रित्य ॥ उरालिएत्यादि ॥ औदारिकशरीरप्रयोगसम्पादकं यन्नाम तदौदारिकशरीरप्रयोगनाम तस्य कर्मण उदये नौदारिकशरीर प्रयोगबन्धो भवतीति शेष' एतानिच वीर्यसयोगसद्द्रव्यतादीनि पदा न्यौदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मोदयस्य विशेषणतया व्याख्येयानि, वीर्यसयो गसद्द्रव्यतया हेतुभूतया यो विवक्षितकर्मोदय स्तेनेत्यादिना प्रकारेण स्वतन्त्राणि चे ता न्यौदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्य कारणानि, तत्रच पक्षे यदौ दारिकशरीरप्रयोगबन्ध' कस्य कर्मणा उदयेनेति पृष्टे यदन्यान्यपि कारणा न्यऽभिधीयन्ते तद्विवक्षितकर्मोदयो, ऽभिहिता न्येव सहकारिकारणा न्य

॥ मूल ॥ कम्मंच जोगंच भवच आउयंच पडुच्च उरालियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं उरालियसरीरप्पओगबंधे। एगिंदियउरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते! करस कम्मरस उदएणं? एवचेव! पुढविकाइयएगिंदिय उरालिय

अनुवाद दारिकशरीरप्रयोगनाम्न कर्मण उदये नौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (भवतीति) एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त। कस्य कर्मण उद

॥ भाषा ॥ ने तथा प्रमादप्रत्ययथकी प्रमादलक्षण कारणथकी तथा कर्म ते एकेंद्रिय जात्यादिक उदयवर्त्ति, योग ते काययोगादिक भव ते तिर्यचभवादिक अनु भूयमान आउखा ते तिर्यंचआउखादिक उदयवर्त्ति। पडुच्चओरालियसरीरप्पओगणामाए कम्मस्सउदएण ओरालियसरीरप्पओगबधे। आश्रयी ने ओदारिकशरीर प्रयोग सम्पादक जे नाम ते कर्मनेउदयेंकरो ओदारिकशरीरप्रयोगबन्ध हुवे इतिशेष, एह सवीर्य सयोग सद्द्रव्यतादिकपद ओदा रिकशरीर प्रयोगनाम कर्मोदयना विशेषणपणे बखाणवा एतले जीवने सवीर्यपणे सयोगपणे सद्द्रव्यपणे तथाविध ओदारिकशरीर योग्यपुद्गलनेभावे तथा प्रमादप्रत्यय तथा कर्मएकेंद्रिय जात्यादिकउदय वर्त्तेछे ते आश्रयीने योग काययोगादिक भव तिर्यच भवादिक आउख तिर्यंचआउखादिक ते आ श्रयीने ओदारिकशरीर प्रयोगबन्ध उपजे। एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबधेणभते कस्सकम्मस्सउदएण एवचेव। एकेंद्रिय ओदारिकशरीर प्रयोगबध हेभ गवन्। किसा कमने उदये हुवे इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम। एवचेवत्ति, ए सूत्र अने पूर्वं सूत्रसरीखो कह्यु तो पणि ओदारिकशरीर प्रयोगनामा ए पदनं विषे ,एगिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए, इसो जाणवो विशेष देखतो एकेंद्रिय ओदारिकशरीर प्रयोगबन्धना अधिकारथकी इस आगे पणि विचा

॥ टीका ॥

पेक्ष्ये इकारगततया ऽवसेय इत्यस्यार्थस्य ज्ञापनार्थ मिति ॥ एगिंदियेत्यादौ ॥ एवचेवत्ति ॥ अनेना धिकृतसूत्रस्य पूर्वसूत्रसमताभिधानेपि ॥ उरा

॥ मूल ॥

सरीरप्पओगबंधेवि एवंचेव, एवं जाव वणस्सइकाइया, एवं बेइंदिया, एवं तेइंदिया, एवंचउरिंदिया, तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवचेव, मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए पमादपच्चया जाव आउयपडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं । मणुस्सपंचिंदि

अनुवाद

॥ पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो प्येवञ्चेव, एवं यावद् वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो, एवद्वीन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, एवत्रीन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, एवचतुरिन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (पीतिवाच्यम्) तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त । कस्य कर्मण उदयेन ? एवञ्चैव॥ मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त । कस्य कर्मण उदयेन ? एवञ्चैव,

॥ भाषा ॥

री कहवो । पुढवीकाइय एगिंदियओरालियसरीरप्पओग एवचेव । पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोग पणि इमहीज कहवो । एवजाव वणस्सइकाइया । इम यावत् वनस्पतीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्धलगे कहवो एव बेइंदिया एव तेइंदिया एवचउरिंदिया । इम बेइन्द्रिय इम तेइन्द्रिय इम चउरिंद्रिय पणि कहवा । तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधणभते कस्सकम्मस्स उदएणं एवचेव । तिर्यचयोनिक पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । किसा कर्मने उदयेंहुवे इतिप्रश्न एवचेवत्ति, पूर्वसूत्रे कह्यु तिम इहा पणि कहवो । मणुस्सपंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधणभते कस्सकम्मस्सउदएण । मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । किसाकर्मने उदयेंहुये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बीरिय सजोग सद्दव्वयाए पमाद । हेगौतम । वीर्यसयोग सद्रव्यपणेकरी तथा प्रमादप्रत्यय करी । जाव आउयच पडुच्च मणुस्सपंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगनामाएकम्स कम्मस्स उदएण मणुस्सपंचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबधे । यावत् मनुष्यआउखादिक उदयवर्त्ति आश्रयीने मनुष्यपचेंद्रिय

॥ टीका ॥

लियसरीरप्पओगनामाए ॥ इत्यत्रपदे ॥ एगिंदियओरालियसरीरप्पओगनामाए ॥ इत्यय विशेषो द्रष्टव्य, एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धस्ये त्याधि कृतत्वा देव मुत्तरत्रापि वाच्यमिति ॥ देसबंधेवि सव्वबंधेवित्ति ॥ तत्र यथा ऽपूप स्नेहभृततप्ततापिकाया प्रक्षिप्त प्रथमसमये घृतादि गृह्णात्येव शेषेषुतु समयेषु गृह्णाति विसृजतिवा ; एव मय जीवो यदा प्राक्तनशरीरक विहायान्य गृह्णाति तदा प्रथमसमये उत्पत्तिस्थानगतान् शरीरप्रा योग्यपुद्गलान् गृह्णात्येव त्यय सर्वबन्ध, स्ततो द्वितीयादिषु समयेषु तान् गृह्णाति विसृजतिचे त्येषच देशबन्ध स्तत श्चैव मौदारिकस्य देशबन्धो प्य स्ति सर्वबन्धो प्यस्तीति ॥ सव्वबंधे एक्कसमयति ॥ अपूपदृष्टान्तेनैव तत्सर्वबन्धस्य एकसमयत्वा दिति ॥ देशबन्धे इत्यादि ॥ तत्र यदा वायु र्मनुष्या

॥ मूल ॥

ओरालियसरीरप्पओगबंधेण भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे एवचेव । एव पुढविकाइया एव जाव मणुस्स पंचिं

अनुवाद

येन ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया प्रमादप्रत्यया द्याव दायुश्च प्रतीत्य मनुष्यपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगनाम्न· कर्मण उदयेन मनुष्यप ञ्चेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो (भवतीति) औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त । कि देशबन्ध सर्वबन्धो ? गौतम ! देशबन्धोपि सर्वबन्धो पि ॥ एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कि देशबन्ध· सर्वबन्ध ? एवञ्चैव ॥ एव पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धोपि,

॥ भाषा ॥

औदारिकशरीर प्रयोगसम्पादक जे नामकर्म तेहने उदयकरी मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हुवे एहनो विशेषार्थ पूर्वे वखाण्यो तिम इहा पणि कहवो । ओरालियसरीरप्पओगबंधेणभते किंदेसबंधे सव्वबंधे । औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् स्यू देशबन्धहुवे अथवा सर्वबन्ध इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधेवि सव्वबंधेवि । हेगौतम देशबन्ध पणिहुवे सर्वबन्ध पणिहुवे जिम तेल तप्तभरीकडाही माहि प्रथम पूडो प्रक्षेप्यो प्रथमसमये तेलग्रहे शेषसमयें ग्रहे मूके तिम ए जीव जिवारे पूर्व भवसम्बन्धी शरीरप्रते छाडी अन्यशरीर ग्रहे तिवारे प्रथमसमये उत्पत्तिस्थान गतशरीरने अर्थे पुद्ग लग्रहे ए सर्वबन्ध, शेषसमयें ग्रहे मूके ए देशबन्ध । एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणभते किंदेसबंधे सव्वबंधे एवचेव एव पुढविकाइया । एकेंद्रिय

॥ टीका ॥

दिवाँ; वैक्रियं कृत्वा विहायच पुनरौदारिकस्य समयमेकं सर्वबंधं कृत्वा पुनस्तस्य देशबंधं कुर्वन्नेकसमयानन्तरं म्रियते तदा जघन्यत एकसमयं देशबन्धोऽस्य भवतीति ॥ उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइं समयूणाइंति ॥ कथं यस्मा दौदारिकशरीरिणां त्रीणि पल्योपमा न्युत्कर्षतः स्थितिस्तेषुच प्रथमसमये सर्वबन्धक इति समयन्यूनानि त्रीणिपल्योपमा न्युत्कर्षतः औदारिकशरीरिणां देशबन्धकालो भवति ॥ एगिंदियउरालिएत्यादि

॥ मूल ॥

डियउरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । उरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गो० ! सव्वबंधेवि एक्कं समयं देसबंधेवि जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं समयऊणाइं । एगिंदियउरालियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केव

॥ अनुवाद ॥

एवं यावत् मनुष्यपंचेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! किं देशबन्धः सर्वबन्धो ? गौतम ! देशबन्धोपि सर्वबन्धोपि । औदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! सर्वबन्धो प्येकं समयं देशबन्धोपि जघन्ये नैकं समयं, मुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि

॥ भाषा ॥

औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् स्युं देशबन्धरूपे अथवा सर्वबन्धरूपे ए प्रतिप्रश्न उत्तर हे गौतम पूर्वे कह्यु तिम जाणवो एम पृथिवीकायिक पणि कहवो । एव जावमणुस्सपचिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंतेकिंदेसबंधे सव्वबंधे । एम यावत् मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् स्युं देशबन्धरूपे सर्वबन्धरूपे । गोयमा देसबंधेविसव्वबंधेवि । हे गौतम देशबन्ध पणिरूपे सर्वबन्ध पणिरूपे पूर्विली परे कहवो । ओरालियसरीरप्पओगबंधेणभंतेकालओ केवचिरंहोइ । औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हे भगवन् कालथकी केतलोकाल रहे ए प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे एकसमय देसबंधे । हे गौतम सर्वबन्धे एक समय पूछ्याने दृष्टान्ते करीनेज ते सर्वबन्धने एकसमय पाथकी देसबन्धेत्यादि, तिवार पछी वायु अथवा मनुष्यादिकवैक्रियकरीने छांडीने, वली औदारिकादिकनो एकसमय सर्वबन्ध करीने वली तेहनो देशबन्ध करतो एकसमयने अन्तरे मरणपाम्यो तेहने तिवारे । जहणेणं एकसमय उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं समय ऊणाइं । जघन्यथकी एकसमय हुवे उत्कृष्टथकी तीन पल्योपम समय ऊणा ते किम औदारिकश

॥ टीका ॥
देसबधे ॥ जहन्नेणं एक्कसमयंति ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरी वैक्रियं गत पुन रौदारिकप्रतिपत्तौ सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्धक एकं समयं भूत्वा मृत इत्येवमिति ॥ उक्कोसेणं बावीस मित्यादि ॥ एकेन्द्रियाणा मुत्कर्षतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि स्थिति स्तत्रासौ प्रथमसमये सर्वबन्धक शेष काल देशबन्धक इत्येव समयोनानि द्वाविंशति वर्षसहस्रा ण्येकेन्द्रियाणा मुत्कर्षतो देशबन्धकाल इति ॥ पुढविकाइएत्यादि ॥ देशबन्धे ॥ जहन्नेणं

॥ मूल ॥
चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कंसमयं देसबंधे जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं । पुढवीकाइयएगिंदियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कंसमयं देसबंधे जहन्नेणं खुड्डागभवग्ग

अनुवाद
समयोनानि। एकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कालत कियच्चिर भवति ? सर्वबन्ध एक समय, देशबन्धो जघन्ये नैक समय, मुत्कर्षतो द्वाविंशतिर्वर्षसहस्राणि समयोनानि । पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगपृच्छा गौतम ! सर्वबन्ध एक समय, देशबधो जघन्यत क्षुल्ल

॥ भाषा ॥
रीरनो तीन पल्योपमनी उत्कृष्टी स्थितिछे तेहनेविषे पहिले समये सर्वबन्धक हुवे तेमाटे समय न्यून तीन पल्योपम उत्कृष्टो औदारिकशरीरीनो देशब न्धकालहुवे । एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कालओ केवच्चिरंहोइ । एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् कालथकी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे एकसमय देसबंधे जहन्नेणं एक समय उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं समयऊणाइं । हेगौतम सर्वबन्ध जघन्यथकी एकसमय तेकिम वायु औदारिकशरीरी वैक्रियप्रते गयो वली औदारिक पडिवजता सर्वबन्धकथईने देशबन्धक एकसमय थईने मरणपाम्यो, इम सर्व बन्धे एकसमय देशबन्धे पणि जघन्ये एकसमयहुवे उत्कृष्टथकी बावीससहस्र वर्षनो स्थितिछे तिहां एक प्रथमसमये सर्व बन्धकथई शेषकाल देशबन्ध क इम इणेप्रकारे समय ऊणा बावीससहस्रवर्ष एकेंद्रियने उत्कृष्टथकी देशबन्धकालकह्यो । पुढविकाइय एगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कालओ केवच्चिरंहोइ । पृथिवीकायिक एकेंद्रिय औदारिकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् कालथकी केतलोकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे ए कसमय देसबंधे जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणंतिसमयऊणं । हेगौतम सर्वबन्ध एक समय तेहनोयुक्ति पूठिलोपरे कहवी क्षुल्लक भवग्रह तीनसमय ऊन जघ

॥ टीका ॥

सुल्लाग भवगहणातिसमयूणाति ॥ कथं औदारिकशरीरिणां क्षुल्लकभवग्रहणं जघन्यतो जीवितं तच्च गाथाभिर्निरूप्यते-दोन्निसयाइनियमा छप्पन्नाइपमाणओहोति ॥ आवलियपमाणेणंखुड्डागभवग्गहणमेयं ॥ १ ॥ पणसट्ठिसहस्साइं पंचेवसयाइंतहयछत्तीसा । खुड्डागभवग्गहणा हवंतिअंतोमुहुत्तेणं ॥ २ ॥ सत्तरसभवग्गहणा खुड्डागाहुंतिआणुपाणंमि ॥ तेरसचेवसयाइं पंचाणउयाइअंसाणं ॥ ३ ॥ इत्युक्तलक्षणस्य (६५५३६) मुहूर्त्तगतक्षुल्लकभवग्रहणराशेः सहस्त्रत्रयशतसप्तकत्रिसप्ततिलक्षणेन (३७७३) मुहूर्त्तगतोच्छ्वासराशिना भागे हृते यल्लभ्यते तदेकत्रोच्छ्वासे क्षुल्लकभवग्रहणपरिमाणं भवति, तच्च सप्तदशाऽवशिष्टः स्तूक्तलक्षणोंऽशराशिः भवतीति अयमभिप्रायो यथा भागानां त्रीणि सहस्त्रे सप्तत्रिंशदधिकानि ... क्षुल्लकभवग्रहणं भवति तेषां भागानां पञ्चनवत्यधिकानि त्रयोदशशतानि अष्टादशस्यापि क्षुल्लकभवग्रहणस्य तत्र भवतीति, तत्र च पृथिवीकायिक स्त्रिसमयेन विग्रहेणागत स तृतीयसमये सर्वबन्धकः शेषेषु देशबन्धको भूत्वा ... क्षुल्लकभवग्रहणं मृतो मृतश्च अविग्रहेणागतो यदा सर्वबन्धकएव भवतीति एवं च यंते वि

॥ भाषा ॥

अन्यको देशबन्धनेविषे तेविम औदारिकशरीरोनो क्षुल्लक भवग्रहण जघन्यथकी जीवितछै ते गाथायकी कहियेछै—दोसयाइं णियमा छप्पणाइपमाणओहुति । आवलियपमाणेण खुड्डागभवग्गहणमेव ॥ १ ॥ पणसट्ठिसहस्साइं पंचेवसयाइं तहयछत्तीसा । खुड्डागभवग्गहणा हवंतिअंतोमुहुत्तेण ॥ २ ॥ सत्तरसभवग्गहणा खुड्डागाहोंतिआणपाणंमि । तेरसचेवसयाइं पंचाणउयाइं अंसाणं ॥ ३ ॥ तिहां एक लक्षण [६५५३६] एक मुहूर्त्त गत क्षुल्लक भवग्रहण राशिने ३७७३ मुहूर्त्त गतउस्सास राशिकरी भागदीधा सतर भव अने तेरसे पचाण अंशरूप भागराशि हुवे, एहां ए अभिप्राय जे भागने [३७७३] सैतीससे तिहुत्तरें करी क्षुल्लकभवग्रहणहुवे ते भागने तेरसे पचाणु [१३९५] भागरूप भागराशिहुवे एहा ए अभिप्राय जे भागने [३७७३] सैंतीससे तिहुत्तरें करी क्षुल्लक भवग्रहण हुवे, ते भागने तेरसे पचाणु [१३९५] अठारमाना पणि क्षुल्लकभवग्रहणना तिहांहुवे, तिहां जे पृथिवीकायि॰ तीनसमय विग्रहेंकरी आव्यो ते त्रीजेसमये सर्वबन्धक शेषनेविषे देशबन्धकहुईने क्षुल्लकभवग्रहण अभिव्यापी मर्यो मर्या अविग्रहेंकरी आव्यो जिवारे तिवारे सर्वबन्धक होय हुये इम जे विग्रहसमय तीन ऊणोक्षुल्लक कहिये । उत्कृष्टो बावीस वाससहस्रादि समयऊणादि । पृथिवीकायिकनो उत्कृष्टोस्थिति बावीसवर्ष

॥ टीका ॥

ग्रहसमया स्त्रय स्तैरून क्षुल्लकभवग्रहण मित्युच्यते ॥ उक्कोसेण बावीस मित्यादि ॥ भावितमेवेति ॥ देसबंधोजेसिनत्थीत्यादि ॥ अयमर्थ, येषां जो वनस्पतिद्वित्रिचतुरिंद्रियाणां क्षुल्लक भवग्रहण त्रिसमयोन जघन्यतो देशबन्धो यत स्तेषां वैक्रियशरीरं नास्ति, वेक्रियशरीरेहि सत्येकसमयो ज घन्यत औदारिकदेशबन्ध पूर्वोक्तयुक्त्या स्यादिति ॥ उक्कोसेणजाजस्सेत्यादि ॥ तत्रापां वर्षसहस्राणि सप्तोत्कर्षत. स्थिति, तेजसा महोरात्राणि त्रीणि, वनस्पतीनां वर्षसहस्राणि दश, द्वीन्द्रियाणां द्वादशवर्षाणि, त्रीन्द्रियाणां सैकोनपञ्चाश दहोरात्राणि, चतुरिन्द्रियाणां षण्मासा, स्तत

॥ मूल ॥

हणं तिसमयऊण उक्कोसेण बावीसंवाससहस्साइं समयऊणाइं एवंसव्वेसिं सव्ववधो एक्कंसमय देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिंजहण्णेणंखुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेण जाजस्स उक्कोसिया ठिई सास मयऊणा कायव्वा । जेसिपुण अत्थिवेउव्वियसरीरं तेसिं देसवधे जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं जाजस्सठिई

अनुवाद

कभवग्रहण त्रिसमयोन, मुत्कर्षतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि समयोनानि ॥ एव सर्वेषां सर्वबन्ध एकसमय, देशबन्धो येषां नास्ति वैक्रियश रीर तेषां जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन, मुत्कर्षतो या यस्यो त्कृष्टा स्थिति सा समयोना कर्त्तव्या येषां पुन रस्ति वैक्रियशरीर ते

॥ भाषा ॥

सहस्रनोछे तिहा प्रथमसमय सर्वबन्धक शेषकाले देशबन्धक इम समय ऊणा २२००० वर्ष पृथिवीकायनो देशबन्ध कह्यो तथा । एवसव्वेसि सव्ववधो एक्क समय देसवधो। इम सवनेविषे सर्वबन्ध एकसमय प्रमाण देशबन्धो । जेसिणत्थिवेउव्वियसरीरं तेसि जहण्णेणखुड्डागभवग्गहणतिसमयऊण । एअर्थ अप् तेऊ वनस्पती बेइन्द्री तेरिन्द्रीने क्षुल्लक भवग्रहण त्रिसमय ऊन जघन्यथी देशबन्ध जेमाटे जेहने वैक्रियशरीर नथी वैक्रियशरीर छता एकसमय जघन्य थकी औदारिकदेश बन्धपूर्वकह्यो जे युक्ति तिणेकारी हुवे। उक्कोसेण जाजस्सउक्कोसियाठिई सासमयऊणाकायव्वा । उत्कृष्टथको जेजेहनी उत्कृष्टी स्थिति तेसमय ऊन जाणवो अपनो सातसहस्रवर्ष ते ऊनो तीन अहोरात्रो वनस्पतीनो दशसहस्रवर्ष बेइन्द्रीनो बारहवर्ष तेइन्द्रीनो उगुणपचास दिन चउरिन्द्रीनो छमास एतला सर्वबन्धसमय ऊनदेशबन्ध स्थिति उत्कृष्टी हुवे। जेसिपुणअत्थिवेउव्वियसरीर तेसि देशवधो जहण्णेणएक्कसमयं। जेहने वली

॥ टीका ॥

एषा सर्वबन्धसमयोना उत्कृष्टतो देशबन्धस्थिति र्भवतीति ॥ जेसिपुणेत्यादि ॥ तेच वायव पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च एषा जघन्येन देशबन्ध एकसमय भावनाच प्रागिव ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ तत्र वायूना त्रीणिवर्षसहस्राणि उत्कर्षत स्थिति , पञ्चेन्द्रियतिरश्चा मनुष्याणाच पल्योप मत्रय मियच स्थिति सर्वबधसमयोना उत्कृष्टतो देशबधस्थिति रेषा भवतीति' अतिदेशतो मनुष्याणा देशबधस्थितौ लब्धाया मप्यन्तिमसूत्रत्वेन साक्षादेव तेषा तामाह ॥ जाव मणुस्साणमित्यादि ॥ उक्त औदारिकशरीरप्रयोगबधस्य कालो ऽथतस्यैवान्तर निरूपयन्नाह ॥ उरालिएत्यादि ॥ सर्वबन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन , कथ त्रिसमयविग्रहेणौ दारिकशरीरि ष्वागत स्तत्र द्वौसमयौ अनाहारक स्तृतीयसमये सर्वब

॥ मूल ॥

सा समयऊणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसबंधे जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं तिण्णिपलिउवमाइं समय ऊणाइं । उरालियसरीरप्पउगबधतरेण भंते! कालउ केवचिरहोइ ? गो० ! सव्वबधंतरं जहण्णेणं खुड्डाग

॥ अनुवाद ॥

षा देशबन्धो जघन्ये नैक समय, मुत्कर्षतो या यस्य स्थिति सा समयोना कर्तव्या, याव न्मनुष्याणा देशबन्धो जघन्ये नैकसमय मुत्कर्षत स्त्रीणिपल्योपमानि समयोनानि ॥ औदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तर भदन्त ! कालत· कियच्चिर भवति ? गौतम ! सर्वबन्धान्तर जघन्यत क्षु

॥ भाषा ॥

वैक्रियशरीर ते वायु पचेंद्रिय तिर्यचमनुष्य एहनेज जघन्ये देशबन्धज एकसमय भावना पूर्ठिलीपरे कहवी । उक्कोसेण जाकस्सठिई सासमयऊणाकाय व्वा । उत्कृष्टथकी जे जेहनी स्थिति ते समये ऊणी करवी तिहा वायुनी तीनसहस्रवर्ष उत्कृष्टीस्थिति पचेंद्री तिर्यच मनुष्यने पल्योपम तीन ए स्थिति सर्वबन्ध एकसमय ऊन उत्कृष्टदेश बन्धस्थिति तेहनेहुवे, अतिदेशथकी मनुष्यनीस्थिति पामी तो पणि अन्तिमसूत्रपणेकरी साक्षातथकीज ते कहे छे—जावमणुस्साण देसबंधे जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयऊणाइ । यावत् मनुष्य देशबन्धे जघन्यथकी एकसमय उत्कृष्टथकी तीन पल्योपम समयऊना भावना पूर्व कही ते जाणवी औदारिकशरीर प्रयोगबन्धनो काल, हिवे तेहनेज अन्तरनिरूपणकरतो कहेछे—ओरालिय सरीरबधतरेणभते कालओकेवचिरहोइ । औदारिकशरीर बन्धनोअन्तर हेभगवन् कालथकी केतलोकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबधतरं जह

न्धक क्षुल्लकभवच स्थित्वा मृत औदारिकशरीरि ष्वेवोत्पन्न स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबंधक एवच सर्वबन्धस्य २ चान्तर क्षुल्लकभवो विग्रहगतिसमय त्रयोन ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ उत्कृष्टत स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि पूर्वकोटिसमयाभ्यधिकानि सर्वबन्धान्तर भवतीति, कथ मनुष्यादि ष्वविग्रहे णागत स्तत्रच प्रथमसमयएव सर्वबन्धकोभूत्वा पूर्वकोटिच स्थित्वा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थिति र्नारक सर्वार्थसिद्धकोवा, भूत्वा त्रिसमयेन वि ग्रहेणौ दारिकशरीरी सपन्न स्तत्रच विग्रहस्य द्वौसमया वनाहारक स्तृतीयच समये सर्वबधकयौ औदारिकशरीरस्यैवच यौ तौ द्वावनाहारकसम त यो रेक पूर्वकोटीसर्वबधसमयस्थाने क्षिप्त स्तत श्च पूर्णा पूर्वकोटी जातैकश्च समयो तिरिक्त एवच सर्वबधस्य २ चोत्कृष्ट मन्तर यथोक्तमान भ वतीति ॥ देसबधतरमित्यादि ॥ देशबन्धान्तर जघन्यनैक समय, कथ देशबन्धको मृत स अविग्रहेणैवो त्पन्न स्तत्रच प्रथमएव समये सर्वबन्ध को द्वितीयादिषुच समयेषु देशबन्धक सपन्न स्तदेव देशबधस्य २ चान्तर जघन्यत एक समय सर्वबधसबधीति ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ उत्कृष्ट

॥ मूल ॥ भवग्गहण तिसमयऊणं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पुव्वकोडिसमयाहियाइ देसबधतरं जहन्नेणं

अनुवाद क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन, मुत्कर्षत स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमास्थिति पूर्वकोटिसमयाभ्यधिका, देशबन्धान्तर जघन्ये नैकसमय मुत्कर्षत स्त्रय

॥ भाषा ॥ णेण खुड्डागभवग्गहणतिसमयऊण । हेगौतम । सर्व बन्धान्तर जघन्यथकी क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमयऊणो हुवे तेकिम त्रिसमये विग्रहेकरी औदारिक शरीरीनेविषे आयो तिहा बेसमय अनाहारक त्रीजासमयनेविषे सर्वबन्धक क्षुल्लकभव रहीने मूओ औदारिकशरीरीनेविषेज ऊपनो तिहा पहिले सम ये सर्वबन्धक इम सर्वबन्ध अने सर्वबन्धनोअन्तर क्षुल्लकभव विग्रहगत समयतीन ऊणो जाणवो । उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमाइ पुव्वकोडिसमयाहिया इ । उत्कृष्टथकी तेत्रीस सागरोपम पूर्वकोडी एकसमय अधिक सर्व बधान्तरहुवे तेकिम कोई मनुष्यादिभवे अविग्रहगते आयो तिहा प्रथमसमयनेविषे ज सर्वबधक थई, पूर्वकोडी रहीने सातमे नरक तथा सर्वार्थसिद्ध थईने वली त्रिसमयने विग्रहे औदारिकशरीरथयो तिहा विग्रहना बेसमय अणाहा री त्रीजेसमये सर्वबन्धक होय इम थका अणाहारकना बेसमय तेहमाहिथकी एकसमय पूर्वकोडी सर्वबन्ध समयस्थाने घालिये तिवारे पूर्वकोडी थ

त स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयाधिकानि देशबन्धस्य देशबधस्या न्तर भवति, कथं देशबन्धको मृत उत्पन्नश्च त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमायु सर्वा र्थसिद्धादौ, ततश्च च्युत्वा त्रिसमयेन विग्रहेणौ दारिकशरीरी सम्पन्न स्तत्रच विग्रहस्य समयद्वये ऽनाहारक स्तृतीयेच समये सर्ववन्धक, स्ततो दे शबन्धकोऽजनि एवचो त्कृष्टमन्तराल देशबधस्य २ च यथोक्त मवतीति, औदारिकबन्धस्य सामान्यतो न्तरमुक्त मथ विशेषत स्तस्य तदाह ॥ एगिदिएत्यादि ॥ एकेन्द्रियस्यो दारिकसर्ववन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन, कथ त्रिसमयेन विग्रहेण पृथिव्यादि ष्वागत स्तत्रच विग्र हस्य समयद्वय मनाहारक स्तृतीयेच समये सर्ववन्धक स्तत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन स्थित्वा मृत्वा ऽविग्रहेणाच यदो त्पद्य सर्ववन्धकएव भवति

एक्कंसमय उक्कोसेणं तत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं । एगिंदियउरालियपुच्छा ? गो० ! सव्वबधतरं

स्त्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयाधिकानि ॥ एकेंद्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम । सर्ववन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसम

हुं एकसमय वर्ध्या इम सर्वबन्ध अने सर्वबधनो अन्तर तेत्रीस सागरोपम पूर्वकोडी एकसमय अधिक होय । देसबधतर जहणेण एक्कसमय । देशबन्धा न्तर जघन्ये एकसमय ते किम देशबन्ध कालकरीने अविग्रहगते ऊपनो तिहा प्रथमसमय सववधक थयो दूजेसमे देशबन्धक ते भणी जघन्य एक स मय । उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमाई तिसमयाहियाइ एगिंदियओरालियपुच्छा । उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम तीनसमय अधिक तेकिम देशबन्धक मरी ने तेत्रीससागर आऊखे सर्वार्थसिद्ध गयो तिहाथी मरी तीन समयनो विग्रहगति औदारिकशरीरी थयो तिहा दूजेसमये अणाहारी वीजसमये सर्व बधक थयो तिवारपछे देशबन्धक इम तेत्रीस सागर तीनसमय अधिक उत्कृष्टो देशबध अने देशबधनो अन्तरकह्यु औदारिकबधने सामान्यथी अन्तरक ह्यु, हिवे विशेषथी तेहनो अन्तर कहेछे—एकेंद्री औदारिकशरीरनो प्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबधतर जहणेण खुड्डागभवगहणतिसमयऊण । हेगौतम एकेंद्रीने सवबधअन्तर जघन्यथकी क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊन तेकिम त्रिसमय विग्रहेकरी पृथिव्यादिकनेविषे आयो तिहा विग्रहना दूजेसमये अ नाहारक तीजेसमये सवबधक तिवारे क्षुल्लक भवग्रहण तीनसमय ऊनरही मूयोमरी अविग्रहे जिवारे ऊपजो सर्वबधहोजइवे तदा सर्वबध अने सर्वबध

॥ टीका ॥

तदा सर्वबन्धयो र्यथोक्त मन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ उत्कृष्टत सर्वबन्धान्तरं द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि समयाधिकानि भवन्ति' कथम विग्रहेण पृथिवीकायिके प्रागत प्रथमएवच समये सर्वबन्धक स्ततो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थित्वा समयोनानि विग्रहगत्या त्रिसमयया ऽन्येषु पृथिव्यादिषू त्पन्न स्तत्रच समयद्वय मनाहारको भूत्वा तृतीयसमये सर्वबधक सम्पन्नो ऽनाहारकसमययो श्चैको द्वाविंशतिवर्षसहस्रेषु समयोनेषु क्षिप्त स्तत्पूरणार्थं, ततश्च द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि समय श्चैक एकेन्द्रियाणां सर्वबन्धयो रुत्कृष्ट मन्तरं भवतीति ॥ देसबंधतरमित्यादि ॥ तत्रै केन्द्रि यौदारिकदेशबन्धान्तरं जघन्ये नैकसमय कथ देशबन्धको मृत स त्वविग्रहेण सर्वबन्धको भूत्वा एकस्मि न्समये पुन र्देशबन्धकएव जात एवच देशबन्धयो र्जघन्यत एक समयो ऽन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेणअंतोमुहुत्तंति ॥ कथ वायु रौदारिकशरीरस्य देशबन्धक सन् वैक्रिय गत स्तत श्चा

॥ मूल ॥

जहण्णेण खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं देसबंधतरं जहण्णेणं

अनुवाद

येन, मुत्कर्षतो द्वाविंशति वर्षसहस्राणि समयाधिकानि, देशबन्धान्तरं जघन्ये नैक समय' मुत्कर्षतोन्तर्मुहूर्तम् ॥ पृथ्वीकायिकैकेन्द्रियो

॥ भाषा ॥

नो यथोक्त अन्तरहुवे। उक्कोसेणबावीस वाससहस्साइं समयाहियाइं । उत्कृष्टथकी सर्वबधान्तर बावीससहस्रवर्ष समयाधिकहुवे तेकिम अविग्रहेकरी पृथिवीकायनेविषे आयो पहिलाज समयनेविषे सर्वबधक तिवारपछी बावीससहस्रवर्ष समय ऊनरहीने विग्रहग ते तीजे समये अन्य पृथिव्यादिकनेविषे ऊपनो तिहा पहिला बेसमय अनाहारकथईने त्रीजे समये सर्वबधकहुयो तिवारे अनाहारकना बेसमय माहिलो एकसमय ते बावीससहस्र समयोनके तेहमाहि घालतांथका पूरा बावीससहस्रवर्ष थया एकसमयरह्यो ते अधिक एकेंद्रियने सर्वबध अने सर्वबधनो उत्कृष्ट अन्तरहुवे। देसबधतर जहणेण एकसमय उक्कोसेण अंतोमुहुत्त। तिहा एकेंद्रिय औदारिकदेश बधान्तर जघन्ये एकसमय तेकिम देशबधक मूओथको अविग्रहे सर्वबधकथईने एकसमये वली देशबधक होजहुया एव देशबधक अने देशबधकने जघन्यथकी एकसमय अन्तरहुवे उत्कृष्टथकी अन्तर्मुहूर्त ते किम वायु औदारिकशरीरनो देशबधक थको वैक्रियप्रते गयो तिहा अन्तर्मुहूर्त रही, वली औदारिकशरीरनो सर्व बधक थईने देशबधक होजहुयो इम देशबध अने दुशबधनो उ

न्तर्मुहूर्त्तं स्थित्वा पुन रौदारिकशरीरस्य सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्धकएव जात, एवंच देशबन्धयो रुत्कर्षतो ऽन्तर्मुहूर्त्त मन्तरमिति ॥ पुढविका इयत्यादि ॥ देशबधतर जहन्नेण एक्कसमय उक्कोसेण तिन्निसमयत्ति ॥ कथ पृथिवीकायिको देशबन्धको मृत स अविग्रहगत्या पृथिवीकायिके ष्वेवो त्पन्न एक समयच सर्वबन्धको भूत्वा पुन र्देशबन्धको जात एव मेकसमययो र्देशबन्धयो र्जघन्ये नान्तर तथा पृथिवीकायिको देशबन्धको मृत स त्रिसमयविग्रहेण तेष्वेवोत्पन्न स्तत्रच समयद्वय मनाहारक स्तृतीयसमयेच सर्वबन्धको भूत्वा पुन र्देशबन्धको भूत, एवच त्रय समया उत्क र्षतो देशबन्धयो रन्तर मिति, अथाप्कायादीना बन्धान्तर मतिदिशन्न आह ॥ जहापुढविकाइयाण मित्यादि ॥ अत्रैवच सर्वथा समतापरिहारार्थं

एक्कंसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । पुढवीकाइयएगिंदियपुच्छा सव्वबंधतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणि यव्वं, देसबंधतरं जहन्नेणं एक्कसमय उक्कोसेणं तिन्निसमया जहा पुढवीकाइयाणं एव जाव चउरिंदियाणं

दारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम ! सर्वबन्धान्तर यथै वैकेन्द्रियस्य तथैव भणितव्यम्, देशबन्धान्तर जघन्ये नैक समय, मुत्कर्षत स्त्रीणिसमयानि यथा पृथ्वीकायिकाना मेव याव चतुरिन्द्रियाणाम् वायुकायवर्जाना, नवर सर्वबन्धान्तर मुत्कर्षतो या यस्य स्थिति सा स

त्कृष्टथकी अन्तरमुहूर्त्तरहै अन्तरहुवे। पुढविकाइय एगिंदियपुच्छा। पृथिवीकायिक एकेन्द्रियनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वबधतर जहेव एगिंदिय स्स तहेवभाणियव्व देसबधतर जहन्नेण एक्कसमय। हेगौतम। सर्वबध अने सर्वबधनोअन्तर जिम एकेन्द्रियने कह्यो तिमहीज पृथिवीकायने सर्वबध सर्वबध नोअन्तर जाणवो देशबधान्तर जघन्ये एकसमय तेकिम पृथिवीकायिक देशबधक मूवाथको अविग्रहगते पृथिवीकायनेविषेज ऊपनो ते एकसमय सर्व बधक थई वली देशबधकथयो इम एकसमय देशबध अने देशबन्धनो जघन्ये अन्तरहुयो। उक्कोसेण तिन्निसमया जहापुढविकाइयाण एवजाव चउरि दियाण वाउकाइयवज्जाण। तथा पृथिवीकायिक देशबन्धक मूवाथको त्रिसमय विग्रहगतिकरी तेहनेविषे ऊपनो तिहासमय दोयअनाहारी तृतीयस मय सर्वबधथई वली देशबन्धक थयो इम तीनसमय उत्कृष्टथी देशबन्ध अने देशबधनो अन्तरहुवे अप्कायादिकनो बन्धान्तर अतिदेशथी कहेछै—जिम

॥ टीका ॥

मार ॥ नवरमित्यादि ॥ एवंचा तिदेशतो यल्लब्ध तद्दर्श्यते अप्कायिकाना जघन्य सर्वबन्धान्तर क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन मुत्कृष्टतु सप्तवर्षस मार ॥ नवरमित्यादि ॥ एवंचा तिदेशतो यल्लब्ध तद्दर्श्यते अप्कायिकाना जघन्य सर्वबन्धान्तर क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन मुत्कृष्टतु सप्तवर्षस हस्राणि समयाधिकानि देशबन्धान्तरन्तु जघन्य मेक समय उत्कृष्टतु त्रय समया, एव वायुवर्जाना तेज प्रभृतीनामपि, नवर मुत्कृष्ट सर्वबन्धा न्तर स्वकीया स्थिति समयाधिका वाच्या, अथातिदेशे वायुकायिकवर्जाना मित्यनेनातिदिष्टवन्धान्तरेभ्यो वायुबन्धान्तरस्य विलक्षणता सूचि तति, वायुबन्धान्तर भेदेनाह ॥ वायुकाइयाणमित्यादि ॥ तत्रच वायुकायिकाना मुत्कर्षेण देशबन्धन्तर मन्तर्मुहूर्त्त कथ वायु रौदारिकशरीरस्य देशबन्धक सन् वैक्रिय मन्तर्मुहूर्त्त कृत्वा पुन रौदारिकसर्वबन्धसमनन्तर मौदारिकदेशबन्ध यदा करोति तदा यथोक्त मन्तर भवतीति ॥ पचेंदि

॥ मूल

वाउकायवज्जाणं णवरं, सव्ववंधंतरं उक्कोसेण जाजस्स ठिई सा समयाहिया कायव्वा, वाउकाइयाणं सव्व वंधंतरं जहन्नेण खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं उक्कोसेणं तिण्णिवाससहस्साइं समयाहियाइं देसवधंतरं

अनुवाद

समयाधिका कर्त्तव्या ॥ वायुकायिकाना सर्वबन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण त्रिसमयोन, मुत्कर्षत स्त्रीणिवर्षसहस्राणि समयाधिकानि देश

॥ भाषा ॥

पृथिवीकायिकने कह्या इम यावत् चउरिद्रीने वायुकाय वर्जी ने कहवो, इहाज सर्वथा समता परिहरवाने अर्थ कहेछे—णवरसव्ववधतर उक्कोसेण जा जस्स ठिई सासमयाहियाकायव्वा । एतलोविशेष इम अतिदेशथी जे लाधो ते देखाडेछे, अपकायिकने जघन्य बन्धान्तर क्षुल्लक भवग्रहण त्रिसमय ऊन तथा उत्कृष्टो तो सातसहस्रवर्ष समयाधिकदेश बन्धातर जघन्ये एकसमय अने उत्कृष्टतो तीनसमय इम वायुवर्जीने तेजप्रमुखनो पणि एतलोवि शेष सर्वबन्धान्तर उत्कृष्टथी आपणी आपणी स्थिति समयाधिक काय कहवो, वाउकाय वर्जी तेमाटे वाउकायने भेदथको कहेछे—वाउकाइयाणस व्ववधतर जहन्नेण खुड्डागभवग्गहणतिसमयऊण तिण्णिवाससहस्साइं समयाहियाइ देसवधातर जहन्नेण एकसमय उक्कोसेण अतोमुहुत्त । तिहा वाउका यिकने सर्ववधातर जघन्ये करी क्षुल्लभवग्रहण तीनसमय ऊन उत्कृष्टथकी तीनसहस्रवर्ष समयअधिक देशबन्धातर जघन्ये एकसमय उत्कृष्टथको अत मुहूर्त्त तेकिम वायु औदारिकशरीरनो देशवन्धथको वैक्रिय अतर्मुहूर्त्त करी वली औदारिक सर्वबंध समयानन्तर औदारिकदेशबध जिवारे करे तिवारे

॥ टीका ॥

येत्यादि ॥ तत्र सर्वबन्धान्तर जघन्य मावलि मेव उत्कृष्टतु भाव्यते पञ्चेन्द्रियतिर्यं गविग्रहेणो त्पन्न प्रथमएवच समये सर्वबन्धक स्तत समयोना पूर्वकोटि जीवित्वा विग्रहगत्या त्रिसमयया तेष्वे वोत्पन्न, स्तत्रच द्वा वनाहारकसमयौ तृतीयेच समये सर्वबन्धक सम्पन्नो ऽनाहारकसमययो श्चैक समय समयोनाया पूर्वकोट्या क्षिप्त स्तत्पूरणार्थ मेक स्त्वधिक इत्येव यथोक्त मन्तर भवतीति, देशबन्धान्तरन्तु यथै केन्द्रियाणा तथैव जघन्य मेक समय कथ देशबन्धको मृत. सर्वबन्धसमयानन्तर देशबन्धको जात, इत्येव मुत्कर्षेण त्वन्तर्मुहूर्त्त, कथ औदारिकशरीरीदेशबन्धकस्सन् वे

॥ मूल ॥

जहन्नेणं एक्क समय उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधतर जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणतिसमयऊणं पुव्वकोडीसमयाहिया । देसबंधंतर जहा एगिंदियाण तहा

॥ अनुवाद ॥

बन्धान्तर जघन्ये नैक समय, मुत्कर्षतो न्तर्मुहूर्तम् ॥ पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकौदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौतम । जघन्येन क्षुल्लकभ वग्रहणा त्रिसमयोना, मुत्कर्षत पूर्वकोटीसमयाधिका' देशबन्धान्तर यथै केन्द्रियाणा तथा पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मेव मनुष्याणामपि

॥ भाषा ॥

यथोक्त अन्तरहुवे । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय ओरालिय पुच्छा । पचेंद्री तिर्यचयोनिक औदारिकना प्रश्नकीधा उत्तर । गोयमा सव्वबधातर जहन्नेण खु ड्डागभवग्गहण तिसमयऊण पुव्वकोडीसमयाहिया । हेगौतम । सर्वबधान्तर जघन्य क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊन एहनीभावना पूर्ववत् उत्कृष्टनी भावना करेछे—पचेंद्रीतिर्यंच अविग्रहगति ऊपनो तिवारे पहिलेज समये सर्वबधक तिवारपछे समयऊन पूर्वकोडी जीवने विग्रहगते त्रिसमयेकरी ते हनेजविषे ऊपनो तिहा दोयसमय अनाहारक त्रीजेसमये सर्वबधकथयो अनाहारकना बेसमय माहिलो एकसमय ते समयो न पूर्व कोडिमाहि घा ल्यो एकसमय ऊपररह्यो एतले पूर्वकोडि एकसमय अधिक अतरहुवे । देसबधतर जहाएगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण । देशबधान्तर तो जिम एकेंद्रियने कह्यो तिम पचेंद्रिय तिर्यचने कहवो तेकिम देशबधक मरी सर्वबधक समये २ अनन्तरे देशबन्धकहुयो एम तथा उत्कृष्टतो अन्त र्मुहूर्त तेकिम औदारिकशरीरी देशबन्धक थको वैक्रियपाम्यो तिहा अन्तर्मुहूर्त रहीने वली औदारिकशरीरी तिहा पहिलेसमये सर्वबधक द्वितीया

टीका ॥ क्रिय प्रतिपन्न स्तत्रान्तर्मुहूर्त्तं स्थित्वा पुन रौदारिकशरीरी जात स्तत्र च प्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयादिषु तु देशबन्धक इत्येवं देशबन्धयो रन्तर्मु हूर्त्त मन्तरमिति, एवं मनुष्याणा मपी त्येतदेवाह ॥ जहा पंचिंदिएत्यादि ॥ औदारिकबन्धान्तर प्रकारान्त रेणाह ॥ जीवेत्यादि ॥ एकेन्द्रियत्वे ॥ नोएगिंदियत्तेत्ति ॥ द्वीन्द्रियत्वादौ पुन रेकेन्द्रियत्वेसति यत्सर्वबन्धान्तरं तज्जघन्येन द्वे क्षुल्लके भवग्रहणे त्रिसमयोने, कथं एकेन्द्रिय स्त्रिसमयया विग्रहगत्योत्पन्न स्तत्र समयद्वय मनाहारको भूत्वा तृतीयसमये सर्वबन्धं कृत्वा तदून क्षुल्लकभवग्रहणं जीवित्वा मृतो ऽनेकेन्द्रियेषु क्षुल्लकभवग्रहण

॥ मूल ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवंमणुस्साणवि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। जीवस्सणं भंते! एगिंदियत्ते नोएगिंदियत्ते पुणरविएगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवचिरं

अनुवाद ॥ निर्विशेष भणितव्य' याव दुत्कर्षतो ऽन्तर्मुहूर्तम् ॥ जीवस्य भदन्त ! एकेन्द्रियत्वे नोएकेन्द्रियत्वे पुनर प्येकेन्द्रियत्वे एकेन्द्रियौदारिकशरीर प्रयोगबन्धान्तरं कालत कियच्चिरं भवति ? गौतम ! सर्वबन्धान्तरं जघन्येन द्वे क्षुल्लके भवग्रहणे त्रिसमयोने, उत्कर्षतो द्वे सागरोपमसहस्रे

॥ भाषा ॥ दि समयनजिपे तो देशबंधक इम देशबंध अने देशबंधक अन्तर्मुहूर्त्त अन्तर इति। एवंमणुस्साणविजहा पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण तहाणिरवसेसभा णियव्व । इम मनुष्यने पणि जिम पंचेंद्री तिर्यंचयोनिकने कह्यो तिम समस्त अधिकार कहवो । जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त । यावत् उत्कृष्टथको अन्तर्मु हूर्त्त औदारिकबंधांतर प्रकारांतरे कहेछे—जीवस्सणभंते एगिंदियत्ते णोएगिंदियत्ते पुणरविएगिंदियत्ते । जीवने हेभगवन् ! एकेंद्रीपणाथी ते बे इंद्रि यादिपणो पामी वली एकेंद्रियपणे ऊपजे तिवारे । एगिंदियओरालियसरीरबंधंतरकालओ केवचिरंहोइ । एकेंद्रिय औदारिकशरीरबंध सर्वबंधने सर्वब न्धसंघाते देशबंधसंघाते अंतरो कालथकी केतलोकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधंतरंजहन्नेणंदोखुड्डागभवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं । हेगौतम । जे सर्वबंधांतर ते जघन्ये बे क्षुल्लकभवग्रहण तीनसमय ऊन तेकिम एकेंद्री तीनसमयनी विग्रहगते ऊपनो तिहांसमय दोय अनाहारक थईने त्रीजेसम ये सर्वबंध करीने ते ऊन क्षुल्लकभव जीवीने मरणपाम्यो पछे अनेकेंद्रिय ते द्वींद्रियादिक तेहनेविषे क्षुल्लकभव ग्रहणजीवीने मरणपाम्याथकां अविग्र

॥ टीका ॥ मेव जीवित्वा मृत एकविग्रहेण पुन रेकेन्द्रिये षेवोत्पद्य सर्वबन्धको जात, एवच सर्वबन्धयो रुक्त मन्तरं जातमिति ॥ उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइति ॥ कथं मविग्रहेण एकेन्द्रिय समुत्पन्न, स्तत्र च प्रथमसमये सर्वबन्धको भूत्वा द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि जीवित्वा मृत स्त्रसकायिकेषु चोत्पन्न स्तत्र च सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिकसागरोपमसहस्रद्वयरूपा मुत्कृष्टत्रसकायिककायस्थिति मतिवाह्य एकेन्द्रिये ष्वेवोत्पद्य सर्वबन्धको जात इत्येवं सर्वबन्धयो यथोक्त मन्तरं भवति' सर्वबन्धसमयहीनैकेन्द्रियोत्कृष्टभवस्थित त्रसकायिककायस्थितौ प्रक्षेपणेपि सङ्ख्यातस्थानानां सङ्ख्यातभेदत्वेन सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिकत्वस्याव्याहतत्वा दिति ॥ देसबंधतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियंति ॥ कथं मेकेन्द्रिया देशबन्धकः सन् स मृत्वा द्वीन्द्रियादिषु क्षुल्लकभवग्रहणं मनुभूया विग्रहेणाचा गत्य प्रथमसमये सर्वबन्धको भूत्वा द्वितीये देशबन्धको भव त्येवच देशबन्धान्तरं क्षुल्लक

॥ मूल ॥ होइ ? गोयमा ! सव्वबंधतरं जहन्नेणं दोखुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं, देसबंधतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं दोसागरो

अनुवाद सङ्ख्यात वर्षाभ्यधिक, देशबन्धान्तरं जघन्यतः क्षुल्लकभवग्रहणं समयाधिकं, मुत्कर्षतो द्वे सागरोपमसहस्रे सङ्ख्यातवर्षाभ्यधिके। जीवस्य भदन्त।

॥ भाषा ॥ हे पचेंद्रियनेविषे ऊपजो सर्वबंधकथयो इम सर्वबंधक अने सर्वबंधकनो अंतर तीनसमय ऊन दोयक्षुल्लकभव हुवे। उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। उत्कृष्टथकी दोयसहस्र सागरोपम संख्यातवर्ष अधिक तेकिम अविग्रहेंकरी एकेंद्रीपणे ऊपनो तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक थई ने बावीससहस्रवर्ष जीवीने मरणपामीने त्रसकायनेविषे ऊपनो तिहांसंख्यातवर्ष अधिक सागरोपम दोयसहस्ररूप त्रसकायिक कायस्थितिप्रतें भोगवी ने एकेंद्रीनेविषेज ऊपजो सर्वबंधक थयो इम सर्वबंधक बेहुने यथोक्त अंतरहुवे सर्वबंध समयहीन एकेंद्रिय उत्कृष्ट भवस्थिति त्रसकायस्थितिनेविषे प्रक्षेपकीधा पणि संख्यातस्थानना संख्यातभेदकेँ तिणेकरी संख्यातवर्ष अधिकनो विरोधनथी। देसबंधतरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं समयाहियं। देशबंधांतर जघन्ये क्षुल्लकभवग्रहण दोयसमय अधिक ते एकेंद्रीदेशबंधक थको मरीने बेइंद्री आदिमाहि क्षुल्लकभव जीवीने वली एकेंद्रीमाहि अविग्रहे आ

॥ टीका ॥ नव सर्वबन्धसमयातिरिक्त ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ सर्वबन्धान्तरभावनोक्तप्रकारेण भावनीय मिति, अथ पृथिवीकायिकबन्धान्तर चिंतय न्ना ह ॥ जीवस्सेत्यादि ॥ एवचेवत्ति ॥ करणात् " तिसमयूणाईति „ दृश्य ॥ उक्कोसेण अणत कालति ॥ इह कालानन्तत्व वनस्पतिकायस्थितिकालापे तया अनन्तकाल मित्युक्त तद्विभजनाथमाह ॥ अणताउइत्यादि ॥ अय मभिप्राय स्तस्यानन्तस्य कालस्य समये ष्ववसर्प्पिण्युत्सर्पिणीसमयै रपह्रियमाणे

॥ मूल ॥ वमसहरसाइं संखेज्जवासमब्भहियाइ । जीवस्सणं भंते! पुढवीकाइयत्ते नोपुढवीकाइयत्ते पुणरवि पुढवीकाइ यत्ते पुढवीकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबधंतरं कालओ केवचिरंहोइ? गोयमा ! सव्वबंधतर जहण्णेण दोखुड्डागभवग्गहणाइं, एवंचेव उक्कोसेण अणत काल अणंताओ उसप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ

॥ अनुवाद ॥ पृथिवीकायिकत्व नो पृथिवीकायिकत्वे पुनरपि पृथिवीकायिकत्वे पृथिवीकायिकैकेन्द्रियौदारिकशरीरप्रयोगबन्धान्तर कालत कियच्चिर भव ति? गौतम । सर्वबन्धान्तर जघन्यतो द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे एवचैव, उत्कर्षतो अनन्त काल मनन्ता उत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिण्य कालत, क्षेत्रतो अनन्ता

॥ भाषा ॥ ओनेप्र थमसमयें सर्वबध कयद बोजेसमये देशबधकथाय तेमओ चुल्लकभव एक समय अधिको जाणवो । उक्कोसेण दोसागरोवमसहस्साइ संखेज्जवासमब्भहि याइ जीवस्सणभते पुढविकाइयत्ते णोपुढविकाइयत्ते पुणरवि पुढवीकाइयत्ते । उत्कृष्टथी दोयसहस्र सागरोपम संख्यातवर्ष अधिकअतरहुवे, एहनीभावना स र्वबन्धातरना भावनाकहोतिमकहवो, हिवे पृथिवीकायिकबधातर चितवतो कहेछे, जीवने हेभगवन् । पृथिवीकायपणाथको नहो पृथिवीकायपणा थको अनेराअस्थानक अपकायिकादिकपणेंथई वली पृथिवीकायिकपणें ऊपजे तिवारे । पुढविकाइयएगिंदिय ओरालियसरीरप्पओगबधतर कालओकेवचिर होइ । पृथिवीकायिक एकेंद्रिय ओदारिकशरीर प्रयोगबध कालथको केतलाकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमासव्वबधतर जहण्णेण दोखुड्डागभवग्गह णाइ एवचेवत्ति । हेगौतम । सर्वबध सर्वबधनोअतर जघन्यथको वे क्षुल्लक तीनसमय ऊणा जाणवा भावना पूर्वलीपरे जाणवो एवचेवत्ति, कहवाथ की तीनसमय ऊणा इसो कहवो इहा कालनो अनतपणो वनस्पतीकाय स्थितिकालनो अपेक्षाये अनतोकाल इसोकह्यु ते विभजनअर्थें कहेछे—अणत

॥ टीका ॥

घनन्ता अवसर्पिण्युत्सर्पिण्यो भवन्तीति ॥ कालउत्ति ॥ इद कालापेक्षया मानं ॥ खेत्तउत्ति ॥ क्षेत्रापेक्षया पुन रिद ॥ अणंतालोगत्ति ॥ अयमर्थः, अनन्तकालस्य समयेषु लोकाकाशप्रदेशै रपह्रियमाणे घनन्तालोका भवन्ति, अथ तत्र कियन्त पुद्गलपरावर्त्ता भवन्तीत्यत आह ॥ असंखेज्जे त्यादि ॥ पुद्गलपरावर्त्तलक्षण सामान्येन पुन रिद-दशभि कोटीकोटीभि रद्धापल्योपमाना मेकसागरोपम, दशभि सागरोपमकोटी २ भि रवसर्प्युत्सर्पिण्यवमेव ता अवसर्पिण्युत्सर्पिण्यो ऽनन्ता पुद्गलपरावर्त्तः, मत द्विशेषलक्षण त्विहैव वक्ष्यतीति, पुद्गलपरावर्त्ताना मेवा सङ्ख्यातत्व नियमनायाह ॥ आवलिएत्यादि ॥ असङ्ख्यातसमयसमुदायश्चावलिकेति ॥ देसबंधतर मित्यादि ॥ भावनात्वेव, पृथिवीकायिको देशबन्धक स न्मृत

॥ मूल ॥

अणंतालोगा असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा तेणं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो, देसबंधंतरं जहणेणं खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो, जहा

अनुवाद

लोका असङ्ख्या. पुद्गलपरावर्त्ता स्तेच पुद्गलपरावर्त्ता आवलिकाया असङ्ख्येयो भागो, देशबन्धान्तर जघन्यत क्षुल्लकभवग्रहण समयाधिक मुत्कर्षतो

॥ भाषा ॥

काले अणंताओ उत्सर्पिणी अवसर्पिणीओ कालथी खेत्रथी अणंतालोगा। इहां ए अभिप्राय तथा अनंतकालना समयनेविषे अवसर्पिणी उत्सर्पिणीने समयेकरी अपहरतायका अनंता अवसर्पिणी उत्सर्पिणी थाय, एह कालनोअपेखाये जाणवो, खेत्रथकी, क्षेत्रथकी वली एहमान खेत्रथी अणंता लोगत्ति, इहां ए भावार्थ ते कालना समयनेविषे लोकाकाश प्रदेशेकरी अपहरतायका अनंतालोक होय, हिवे तिहां केतलापुद्गल परावर्त्त हुवे ते कहेछे—असंखेज्जापोग्गलपरियट्टा तेण पोग्गलपरियट्टा। असंखेज्जत्ति, पुद्गलपरावर्त्तलक्षण सामान्ये वली एह दश कोडा कोडी अद्धा पल्योपमे एक सागरोपम दश कोडाकोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी इमहीज एक उत्सर्पिणी ते अवसर्पिणी उत्सर्पिणी अनंती एकपुद्गल परावर्त्त हुवे एहनाविशेष लक्षण इहांज कहस्ये पुद्गलपरावर्त्तनोज असंख्यातपणो नियमतो कहेछे—आवलियाए असंखेज्जइभागो। असंख्यात समयनो समुदाय ते आवली कहिये तेहनो असंख्यातमोभाग इहां भावना इम। देसबंधतर जहणेणं खुड्डागभवग्गहण समयाहिय। पृथिवीकायिक देशबंधक थको मरणपाम्यो पृथिवी

॥ टीका ॥

पृथिवीकायिकेषु क्षुल्लकभवग्रहणं जीवित्वा मृत स न्पुन रविग्रहेण पृथिवीकायिके ष्वेवोत्पन्न स्तत्रच सर्वबन्धसमयानन्तर देशबन्धको जात, एवञ्च सर्वबन्ध समयेना धिक मेक क्षुल्लकभवग्रहण देशबन्धयो रन्तरमिति ॥ वणस्सइकाइयाण दोन्निखुड्डाइ ति ॥ वनस्पतिकायिकाना जघन्यत सर्वबन्धा न्तर द्वे क्षुल्लके भवग्रहणे ॥ एवचेवत्ति ॥ करणा त्त्रिसमयोने इति दृश्य, मेतद्भावनाच वनस्पतिकायिक स्त्रिसमयेन विग्रहेणोत्पन्न स्तत्रच विग्रहस्य समयद्वय मनाहारक स्तृतीयसमयेच सर्वबन्धकोभूत्वा क्षुल्लकभवञ्च जीवित्वा पुन· पृथिव्यादिषु क्षुल्लकभवमेव स्थित्वा पुन रविग्रहेण वनस्पतिकायिके ष्वेवोत्पन्न· प्रथमसमयेच सर्वबन्धको सावीति सर्वबन्धयो स्त्रिसमयोन द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे अन्तर भवत इति ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ अयच

॥ मूल ॥

पुढविकाइयाणं, एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं वणस्सइकाइयाणं दोखुड्डाइ एवंचेव, उक्कोसेणं असंखेज्जंकालं असंखेज्जाउ ओसप्पिणीउस्सप्पिणीउ कालउ, खेत्तउ असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधंत

अनुवाद

अनन्त काल याव दावलिकाया असङ्ख्येयो भागो यथा पृथिवीकायिकाना, एव वनस्पतिकायिकवर्जाना यावन्मनुष्याणा, वनस्पतिकायिकाना द्वे क्षुल्लकभवग्रहणे एवञ्चेव, उत्कर्षतो ऽसङ्ख्येय काल मसङ्ख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्य· कालत·, क्षेत्रतो ऽसङ्ख्येया लोका· । एव देशबन्धान्तरमपि,

॥ भाषा ॥

कायनविषे क्षुल्लकभव जीवीने मूर्यो थको वली अविग्रहगति पृथिवीकायनेजविषे ऊपनो तिहा सर्वबंध समयानतर देशबधक थको इम सर्वबधसमय अधिक क्षुल्लकभवग्रहण देशबध अने देशबध माहोमाहि अतर जाणवो । उक्कोसेण अणतकाल जाव आवलियाए असखेज्जइभागो जहा पुढविकाइयाण । उत्कृष्टथकी अनतोकाल यावत् आवलिकानो असख्यातमोभाग एतलालगे पूर्वलीपरे कहवो जिम पृथिवीकायिकने कह्यु । एव वणस्सइकाइय वज्जाण जाव मणुस्साण वणस्सइकाइयाण दोखुड्डाइ । इम यावत् वनस्पतीकायिक वर्जीने यावत् मनुष्यलगे कहवो, वनस्पतीकायिकने जघन्यथकी सर्वबधातर दोय क्षुल्लकभवग्रहण एवचेवत्ति, कालथको तीनसमय ऊन कहवो, इहा भावना वनस्पतीकायिक तीनसमयने विग्रहे ऊपनो तिहा विग्रहना दोयसमय अनाहारक त्रीजेसमये सर्वबधक थईने क्षुल्लकजीवने वली पृथिव्यादिकनेविषे क्षुल्लकभव जीवनईने वली विग्रहे वनस्पतीकायिकने विषे उपनो प्रथमस

॥ टीका ॥

पृथिव्यादिषु कायस्थितिकाल ॥ एव देसबंधंतरंपित्ति ॥ यथा पृथिव्यादीनां देशबन्धान्तरं जघन्य मेव वनस्पतेरपि, तच्च क्षुल्लकभवग्रहणं समयाधिक भावनाचास्य पूर्ववत् ॥ उक्कोसेणं पुढविकालोत्ति ॥ उत्कर्षेण वनस्पतेर्देशबन्धान्तरं पृथिवीकायस्थितिकालो ऽसङ्ख्यातावसर्पिण्यादिरूप इति, अथौदारिकदेशबन्धकादीना मल्पत्वादिनिरूपणायाह ॥ एएसिमित्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोकाः सर्वबन्धका स्तेषा मुत्पत्तिसमय एव भावा दबन्धका विशेषाधिका यतो विग्रहगतौ सिद्धत्वादौच ते भवति तच सर्वबन्धकापेक्षया विशेषाधिका, देशबन्धका असङ्ख्यातगुणा देशबन्धकाल

॥ मूल ॥

रंपि उक्कोसेणं पुढविकालो। एएसिणं भंते! जीवाणं ओरालियसरीरदेसबंधगाणं सव्वबंधगाणय अबंधगाणय

अनुवाद

उत्कर्षतः पृथिवीकालो ॥ एतेषां भदन्त ! जीवानां मौदारिकशरीरदेशबन्धकानां सर्वबन्धकानाञ्चा बन्धकानाञ्च कतरे कतरे याव द्विशेषा

॥ भाषा ॥

समये सर्वबंधक एह इम सर्वबंध अने सर्वबंधनो तीनसमय ऊन दोय क्षुल्लक भवग्रहण अन्तरहुवे। उक्कोसेणं असंखेज्जकाल असंखेज्जाओ ओसप्पिणी उस्सप्पिणी कालओ खेत्तओ असंखेज्जालोगा एवंदेसबंधंतरंपि। उत्कृष्टथकी असंख्यातोकाल एह पृथिव्यादिकनेविषे कायस्थितिकाल जाणवो असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणीकालथकी क्षेत्रथकी असंख्यातालोक इम जिम पृथिव्यादिकने देशबंधांतर जघन्येकह्यो इम वनस्पतीने पणि ते क्षुल्लकभवग्रहण समयाधिकभावना पूर्वलीपरे। उक्कोसेणं पुढविकालो। उत्कृष्टो वनस्पतीने देशबंधांतर पृथिवीकाल एतले पृथिवीकाय कायस्थितिकाल असंख्यात अवसर्पिण्यादिरूप इति, हिवे औदारिकदेश बन्धकादिकनो अल्प बहुत्वादि निरूपणकरतो कहेछे—एएसिणंभंते जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाणं कयरे २ जाव विसेसाहियावा। एहने हेभगवन्! जीवने औदारिकशरीरना देशबंधकने सर्वबंधकने अबन्धकने कुण२ थकी माहोमाहि थोडाहुवे घणाहुवे सरीखाहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवाजीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अबंधगा विसेसाहिया देसबंधगा असंखेज्जगुणा। हेगोतम! सर्वथी थोडा जीव औदारिकना देशबंधक तेहने उत्पत्तिसमयनेविषे भावथकी तेहथकी अबंधक विशेषाधिक जे माटे विग्रहगतिनेविषे-तथा-सिद्धपणामेंविषे ते हुवे तिवारे सर्वबंधकनो अपेक्षायें विशेषाधिक तेहथी देशबंधक असंख्यातगुणा देशबंधकनाकालने अस

स्या ऽसङ्ख्यातगुणत्वा, दैतस्यच सूत्रस्य भावनां विशेषतो ग्रे वक्ष्यामइति, अथ वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनिरूपणायाह ॥ वेउव्विए त्यादि ॥ तत्र ॥ एगिंदियवेउव्विएत्यादि ॥ वायुकायिकापेक्ष मुक्त ॥ पचिंदियेत्यादि तु ॥ पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यदेवनारकापेक्ष मिति " वीरियेत्यादौ „ यावत् कर

कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अबंधगा विसेसाहिया देसबंधका असंखेज्जगुणा । वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे प० ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय । जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय

धिकावा - गौतम ! सर्वस्तोका जीवा औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका, अबन्धका विशेषाधिका, देशबन्धका असङ्ख्येयगुणा । वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कतिविध: प्रज्ञप्तो ? गौतम । द्विविध: प्रज्ञप्त, तद्यथा—एकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च पञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च । यद्येकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध किंवायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो ऽवायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध एवं मेतेनाभिला

ख्यातगुणामाटे, हिवे वैक्रियशरीर प्रयोगबंध निरूपण करिछे—वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कइविहे प० । वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुविहे प० तं० । हेगौतम । बे भेदे कह्यो ते कहिछे—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय पंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय । एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध ते वायुकायनी अपेक्षाये कह्यु पचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध ते तिर्यच मनुष्य देव नारकोनी अपेक्षाये कह्यु । जइ एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । जो एकेंद्री वैक्रियशरीर प्रयोगबन्धहुवे । किं वाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । तो स्यू वाउकाइक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हुवे अथवा । अवाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे । नथी जेवाउकायिक एतले पृथिव्यादिक ते एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्धहुवे । एवं एएणंअभिलावेणं जहाओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदोतहाभाणियव्वो । इस इणे आलावेकरी जिम अव

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

भगवार्थ

॥ भाषा ॥

गात् " पमायपच्चया कम्मंच जोगंच पवचंति , द्रष्टव्यं ॥ लद्धिंवत्ति ॥ वैक्रियकरणलब्धिवा ; प्रतीत्य एतच्च वायुपञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्या नपेक्ष्योक्त,

एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअ णुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेय अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइ य जावप्पओगबंधेय । वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! वीरियसजोगस द्दव्वयाए जाव आउयवा लद्धिवा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएण वेउव्वियसरीरप्पओग

पेन यथा अवगाहनासंस्थाने वैक्रियशरीरभेद स्तथा भणितव्यो याव त्पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरी रप्रयोगबन्धश्च पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धश्च । वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कस्य कर्मणा उदयेन ? गौ० ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया याव दायुष्कवा लब्धिवा प्रतीत्य वैक्रियशरीरप्रयोगनाम्न कर्मणा उदयेन वैक्रियशरीरप्रयो गबन्ध । वायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगपृच्छा ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया एवचैव याव ल्लब्धि प्रतीत्य वायुकायिकशरीरप्रयोगना

गाहना संस्थानने विषे वैक्रियशरीर भेदकह्या तिम इहां पणि कहवा । जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीय वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउव्वि यसरीरप्पओगबंधेय । यावत् पर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबंध च वली । अपज्जत्तासव्वट्ठ सिद्ध जावप्पओगबंधे वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणभंते कस्सकम्मस्सउदएणं । अपर्याप्तक सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेंद्रिय वै क्रियशरीर प्रयोगबन्ध, वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयेकरी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउय वा लद्धिवा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पओगबंध । हेगौतम ! वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणे करी यावत् शब्दथकी ,पमायपच्चया कम्मंच जोगंच भवच, ए कहवो आ उखाआश्रयीने ,लद्धिवत्ति, वैक्रियकरण लब्धिप्रते आश्रयीने एह वाउपचेंद्रिय तिर्यंचमनुष्य अपेक्षीने कह्यु तिर्यंकरी वाउकायादि सूत्रनेविषे लब्धि वै

॥ टीका ॥ तेन वायुकायादिसूत्रेषु लब्धिं वैक्रियशरीरबन्धस्य प्रत्ययतया वक्ष्यति नारकदेवसूत्रेषु पुन स्ता न्विहाय वीर्यसयोगसद्द्रव्यतादीन् प्रत्ययतया वक्ष्यतीति ॥ सव्वबधे जहण्णेण एक्कं समयंति ॥ कथ वैक्रियशरीरि पूत्पद्यमानो लब्धितोवा, तत्कुर्वन् समयमेक सर्वबन्धको भवती त्येव मेक समय स

॥ मूल ॥ बंधे । वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगपुच्छा ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए एवंचेव जाव लद्धिं पडुच्च जाव वाउकाइयएगिंदियसरीरप्पओगबंधे। रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि जाव बंधे, जाव अहे सत्तमाए। तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीर पुच्छा ? गोयमा! वीरिय० जहा वाउ

अनुवाद स कर्मण उदयेन वायुकायिकशरीरप्रयोगबन्ध । रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ० । कस्य कर्मण उदयेन गौ० । वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया याव दायुष्क वा प्रतीत्य रत्नप्रभापृथिवीपञ्चेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) याव द्बन्धो, एव याव दध सप्तमाया। तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरपृच्छा, गौ० । वीर्य (प्रभृति) यथा वायुकायिकाना । मनुष्यपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगपृच्छा एवचैव । असुरकुमारभवनवासिदेवपञ्चेन्द्रियवैक्रिय (प्रभृति) याव द्बन्धो यथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणा । एव याव त्स्तनितकुमारा । एव वानव्यन्तरा,

॥ भाषा ॥ क्रियशरीरबन्धने प्रत्ययपणेकरी इसो कहस्ये तथा नारकदेव सूत्रनेविषे वली लब्धिशब्दप्रतें छांडीने वीर्यसयोग सद्द्रव्यादिपणें इसा कहस्ये । वाउकाइय एगिंदियसरीरपुच्छा । वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीरनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा वीरियसजोगसद्दव्वयाए एवचेव जावलद्धिंपडुच्च । हेगौतम ! वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणेंकरी इमहीज यावत् लब्धिप्रतें आश्रयीन । वाउकाइय एगिंदिय वेउव्विय जाव बंधे । वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हुवे। रयणप्पभापुढवी णेरइय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्स कम्मस्स उदएण। रत्नप्रभा पृथिवी नारक पचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । किसाकर्मने उदयेहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोग सद्दव्वयाए । हेगौतम वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणेंकरी । जाव आउयवा

वंबन्ध इति ॥ उक्कोसेणं दोसमयत्ति ॥ कथ औदारिकशरीरी वैक्रियता प्रतिपद्यमान सर्वबधको भूत्वा मृत पुन नारकत्व देवत्ववा, यदा

काइयाण, मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगपुच्छा एवंचेव असुरकुमारभवणवासिदेवपचिंदियवेउव्विय जाव बंधे। जहा रयणप्पभापुढविणेरइयाणं एव जाव थणियकुमारा . एव वाणमतरा एव जोइसिया, एवं सोहम्मकप्पोवगया वेमाणिया एवं जाव अच्चुयगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणिया णेयव्वा। अणुत्तरोववाइय कप्पातीयवेमाणिया एवचेव। वेउव्वियसरीरप्पओगबंधणं भंते! किं देसबधे सव्वबध ? गोयमा ! देसबधेवि

एव ज्योतिषा, एव सौधर्मकल्पोपगता वैमानिका। एवं याव दच्युतग्रैवेयककल्पातीतवैमानिका ज्ञातव्या, अनुत्तरोपपातिककल्पातीत वैमानिका एवचैव। वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ०। कि देशबन्ध सर्वबन्धो ? गौ०। देशबन्धोपि सर्वबन्धोपि। वायुकायिकैकेन्द्रिया एवचैव। रत्नप्रभा पृथ्वीनैरयिका एव याव दनुत्तरोपपातिका। वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धो भ०। कालत कियच्चिरम्भवति ? गौतम। सर्वबधो जघन्ये नैक समय मुत्कर्षतो द्वे समये, देशबधो जघन्ये नेक समय मुत्कषत स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि समयन्यूनानि। वायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रियपृच्छा गौ०।

पछ्व। यावत् आकाशप्रते आश्रयीने। रयणप्पभापुढवी वेउव्विय जाव बधे। रत्नप्रभा पृथिवी नारक पचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध। एवजावअहे सत्तमाए। इम यावत् नीचे सातमीपृथिवी लगे कहवो। तिरिक्खजोणियपचिंदिय वेउव्वियसरीरपुच्छा। तिर्यचयोनिक पचेंद्रिय वैक्रियशरीर प्रयोगब न्ध किसाकर्मने उदयेहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीविय जहावाउकाइयाण मणुस्सपचिंदियसरीर एवचेव। हे गौतम वीर्यसजोग सद्‌द्रव्यपणे करी जि म वाउकायिक कह्या तिमकहवो, मनुष्य पचेंद्रिय वैक्रियशरीर इत्यादि इमज कहवो। असुरकुमारभवणवासिदेवपचिंदिय वेउव्विय जावबधे। असुर कमार भवनपती देवपचेंद्रिय वैक्रिय यावत् बन्ध। जहारयणप्पभापुढवि णेरइयाण। जिम रत्नप्रभा पृथिवी नारकने कह्या तिमकहवो। एवजावथणिय कुमारा एववाणमतरा एवजोइसिया। इम यावत् स्तनितकुमार लगे कहवा, इम वानव्यन्तर पणिकहवो इम ज्योतिषी पणि कहवो। एवसोहम्मकप्पो

॥ टीका ॥

प्राप्नोति तदा प्रथमसमये वैक्रियस्य सर्वबन्धकएवेति कृत्वा वैक्रियशरीरस्य सर्वबन्ध उत्कृष्टत समयद्वयमिति ॥ देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयंति ॥ कथ औदारिकशरीरी वैक्रियता प्रतिपद्यमान प्रथमसमये सर्वबन्धको भवति द्वितीयसमय देशबन्धको भूत्वा मृत, इत्येव देशबन्धको जघन्यत एकसमयमिति ॥ उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइंति ॥ कथ देवेषु नारकेषु चोत्कृष्टस्थितिषू त्पद्यमान प्रथमसमये सर्वबन्धको वैक्रियशरीरस्य ततःपर देशबन्धक स्तन सर्वबन्धसमयेनोनानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा ण्युत्कृष्टतो देशबन्धइति ॥ वाउकायिएत्यादि, देसबंध जहन्नेणं एक्कसम

॥ मूल ॥

सव्वबंधेवि । वाउकाइयएगिंदिय एवंचेव । रयणप्पभापुढविनेरइया एवं जाव अणुत्तरोववाइया । वेउव्विय सरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सव्वबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दोस मया, देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं। वाउकाइयएगिंदियवेउव्विय

अनुवाद

सर्वबन्ध एक समय, देशबन्धो जघन्य नैक समय मुत्कर्षतो न्तमुहूर्त्तम् ॥ रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकपृच्छा गौ० ! सर्वबन्ध एक समय, देशब

॥ भाषा ॥

वगावेमाणिया । इम सौधर्म कल्पो . त्र वैमानिक पणि कहवा । एवजावअच्चुयगेवेज्जगकप्पातीयवेमाणिया एव । इम यावत् अच्युतकल्पोत्पन्न वैमानिकदेवलगे कहवा ग्रैवेयककल्पातीत वैमानिक पणि इमज कहवा । अणुत्तरोववाइय कप्पातीय वेमाणिया एवचेव । अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिक पणि इमज कहवा । वेउव्वियसरीरप्पओगबंधेण भंते किंदेसबंधे सव्वबंधे । वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् स्यूं देशबन्ध हुवे अथवा सर्वबन्धहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधेवि सव्वबंधेवि । हेगौतम देशबंध पणिहुवे सर्वबन्ध पणिहुवे पूछाने हुआते जाणवो । वाउकाइय एगिंदिया एवचेव । वाउकायिक एकेन्द्रिय इत्यादि, इमज कहवा । रयणप्पभापुढवी णेरइया एवचेव । रत्नप्रभा पृथिवी नारकी इत्यादि, इमज कहवा । जाव अणुत्तरोववाइय वेउव्वियसरीर प्पओग बंधेणभंते कालओ केवचिरहोइ । यावत् अनुत्तरोपपातिकदेव इत्यादि, इमहीज वैक्रियशरीर प्रयोगबन्ध कालथी केतलो काल रहै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे जहन्नेण एक्कसमय उक्कोसेण दोसमया । हेगौतम सर्वबन्धान्तर जघन्य एकसमय तेकिम वैक्रियशरीरने वि

॥ टीका ॥

य ति ॥ कथ वायु रौदारिकशरीरीसन् वैक्रियगत स्तत प्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयसमये देशबन्धकोभूत्वा मृत इत्येव जघन्ये नैको देशबन्ध समय ॥ उक्कोसेण अतोमुहुत्तति ॥ वैक्रियशरीरेण सगव यदान्तर्मुहूर्त्तमात्र मास्ते तदो त्कर्षतो देशबन्धोन्तर्मुहूर्त्त लब्धिवैक्रियशरीरिणो जीवतो न्त र्मुहूर्त्ता त्परतो नवैक्रियशरीरावस्थान मस्ति पुन रौदारिकशरीरस्या वश्यप्रतिपत्ते रिति ॥ रयणप्पभेत्यादि, देसबध जहण्णेण दसवाससहस्सा इति ॥ कथ त्रिसमयविग्रहेण रत्नप्रभाया जघन्यस्थिति नारक समुत्पन्न स्तत्र च समयद्वय मनाहारक स्तृतीये च समये सर्वबन्धक स्ततो देशबन्धको

॥ मूल ॥

पुच्छा ? गो० ! सव्वबंधे एक्कं समय देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । रयणप्पभापुढ विनेरइयपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समय देसबंधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, उक्को

॥ अनुवाद ॥

न्यो जघन्येन दशवर्षसहस्त्राणि त्रिसमयोना न्युत्कर्षेत सागरोपम समयोन, एव याव दध सप्तमाया, नवर देशबन्धे यस्य या जघन्या स्थि ति सा त्रिसमयोना कर्त्तव्या याव दुत्कृष्टा समयोना । पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मनुष्याणाञ्च यथा वायुकायिकाना, असुरकुमारनागकुमा

॥ भाषा ॥

ये ऊपजतो अथवा लब्धियकी करतोथको एकसमय सर्वबधकहुये एम एक एकसमय सर्वबधक कहवो, उत्कृष्टो एकसमय तेजिम औदारिकशरीरी वैक्रियपणो पडिवजतोथको सर्वबन्धकथईने मरणपामी नारकी तथा देवपणो जिवारे पामे तिवारे प्रथमसमये वैक्रियनो सर्वबन्धकहील इमकरीने वैक्रियशरीरनो सर्वबन्धक उत्कृष्टथकी एकसमय कह्यो । देसबधे जहण्णेण एकसमय उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाई समयऊणाई । देशबन्धे जघन्यथकी एकसमय तेजिम औदारिकशरीरी वैक्रियपणो पडिवजतो प्रथमसमये सर्वबन्धक हुवे बीजेसमये देशबधकथई मरणपाम्यो एम देशबन्धक जघन्यथकी एकसमय उत्कृष्टथकी तेत्रीससागर समयऊणा तेजिम देवनेविषे अथवा नारकीनेविषे उत्कृष्टस्थितिनेविषे ऊपजतोथको प्रथमसमये सर्वबन्धक वैक्रिय शरीरनो तिवारपछी देशबन्धक तिणेकरी सर्वबन्धक समयकरी ऊन तेत्रीससागरोपम उत्कृष्टथकी देशबन्धक जाणवो। वाउकाइयएगिंदियपुच्छा। वाउ कायिक एकेंद्रिय वैक्रिय इत्यादि, प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वबधे एकसमय देसबधे जहण्णेण एकसमय। हेगौतम सर्वबन्धक एकसमय देशबन्ध ज

॥ टीका ॥

वैक्रियस्य तदेव माद्यसमयत्रयन्यून वर्षसहस्रदशक जघन्यतो देशबन्धः ॥ उक्कोस सागरोवम समयूणत्ति ॥ कथ मविग्रहेण रत्नप्रभाया मुत्कृष्टस्थिति र्नारकः समुत्पन्न स्तत्रच प्रथमसमय सर्वबन्धको वैक्रियशरीरस्य तत पर देशबन्धक स्तेन सर्वबन्धसमयेनोन सागरोपम मुत्कर्षतो देशबन्धइति, एव सर्वत्र सर्वबन्ध समय, देशबन्धश्च जघन्यो विग्रहसमयत्रयन्यूनो निज २ जघन्यस्थितिप्रमाणो वाच्य., सर्वबन्धसमयन्यूनोत्कृष्टस्थितिप्रमाण श्चो त्कृष्टदेशबन्ध इत्यतदेवाह ॥ एव जावत्यादि ॥ पचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणा वैक्रियसर्वबन्ध एक समय देशबन्धस्तु जघन्यत एक समय, मुत्कर्षेण त्वन्त

॥ मूल ॥

सेणं सागरोवमं समयूणं। एवं जाव अहे सत्तमाए णवर देसबंधे जस्स जा जहण्णिया ठिई सा तिसमयऊ

अनुवाद

णा याव दनुत्तरोपपातिकाना यथा नैरयिकाणा नवर यस्य या स्थिति स्सा भणितव्या, याव दनुत्तरोपपातिकाना सर्वबन्ध एक समय,

॥ भाषा ॥

घन्ये एकसमय तेकिम वायु औदारिकशरीरीथका वैक्रियप्रते गयो तिवारे पहिलेसमये सर्वबन्धक बीजसमये देशबन्धक थई मरणपाम्यां इम जघन्ये देशबन्धक एकसमय। उक्कोसेण अन्तोमुहुत्त। उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त्त वैक्रियशरीरज जिवारे अन्तर्मुहूर्त्त रहै तिवारे उत्कृष्टदेशबन्ध अन्तर्मुहूर्त्तलब्धि वैक्रियशरीरी जीवतोथको अन्तर्मुहूर्त्तथी ऊपर वैक्रियशरीरनेविषे अवस्थान नहीं औदारिकशरीरनो अवश्यें प्रतिपत्ति हुवे। रयणप्पभापुढवीणेरइयपुच्छा। रत्नप्रभा पृथिवी नारकी इत्यादि, प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वबधे एकसमय देसबधे जहण्णेण दसवाससहस्साइ तिसमय ऊणाइ उक्कोसेणसागरोवम समयऊण। हेगौतम सर्वबन्धे एकसमय देशबधें जघन्ये दशसहस्रवर्ष तीनसमय ऊन तेकिम तीनसमयविग्रहैकरी रत्नप्रभानेविषे जघन्यस्थिति नारकऊपनो तिहा दूजेसमये अनाहारक तीजेसमये सर्वबन्धक तिवारपछे देशबन्धक वैक्रियनो तिवारे इम पहिला तीनसमय ऊन जाणवो उत्कृष्टथको सागरोपम समयऊणो तेकिम अविग्रहै रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे उत्कृष्टस्थिति नारकऊपनो तिहा पहिलेसमये वैक्रियशरीरनो सर्वबन्धक तिवारपछो देशबन्धक तिणेकरी सर्वबन्धकसमय ऊन सागरोपम उत्कृष्टथको देशबन्धक इति इम सगले सर्वबन्धक एकसमय देशबधक जघन्ये विग्रहसमय तीन ऊन पोतानो जघन्यस्थितिप्रमाण कहवो, सर्वबन्धसमय ऊन उत्कृष्टस्थिति प्रमाण उत्कृष्ट देशबन्धहुवे एहीज कहेछे—एवजाव अहेसत्तमाए। इम यावत् हेठे

मुहूर्त्त मेतदेवा तिदेशेनाह ॥ पंचिंदियेत्यादि ॥ यच्च-अंतमुहुत्तनरए सुन्नेदचत्तारितिरियमणुएसु ॥ देवेसुअट्टमासो उक्कोसविरहणाकालोत्ति ॥ १ ॥ वचनसामर्थ्या दन्तर्मुहूर्त्तचतुष्टय तेषा देशबन्ध इत्युच्यते, सन्मतान्तर मित्यधसेय मिति, उक्तो वेक्रियशरीरप्रयोगबन्धस्य कालो ऽथ तस्यैवान्तर निरूपय न्नाह ॥ वेउव्वियेत्यादि' सव्वबधतर जहन्नेणं एक्क समयति ॥ कथ मौदारिकशरीरी वेक्रिय गत प्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीय देशब

णा कायव्वा जाव उक्कोसा समयऊणा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणमणुस्साणय जहा वाउकाइयाण, असुर कुमारनागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाण, णवरं जस्स जा ठिई सा भाणियव्वा जाव अणु त्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं देसबंधे जहण्णेणं एक्कतीससागरोवमाइं तिसमयऊणाइं। उक्कोसेणं तत्ती

देशबन्धो जघन्ये नैकत्रिंशत्सागरोपमाणि त्रिसमयोनानि, उत्कृष्टत स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि समयोनानि । वेक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तर

सातमीपृथिवी लगे कहवी । णवर देसबधे जस्स जा जहण्णियाठिई सा तिसमयऊणा कायव्वा । एतलोविशेष देशबन्धनेविषे जेहने जिका जघन्यस्थिति तिका त्रनसमय उन करवी । जावउक्कोसिया सासमयऊणा कायव्वा । यावत् उत्कृष्टी तिका समय ऊन करवी । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साणय जहावाउकाइयाण । पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिक मनुष्य ए बेहुने जिम वाउकायिकने कह्यो तिम कहवो, वेक्रिय सर्वबन्ध एकसमय देशबन्धतो जघन्यथकी ए कसमय उत्कृष्टथकी अन्तर्मुहूर्त्त जे—अंतमुहुत्तनरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसुअट्ठमासो उक्कोसविरहणा कालोत्ति ॥ १ ॥ वचन सामर्थ्यथकी अन्त र्मुहूर्त्त चार तेहने देशबन्ध इसो कह्यियेतेमतान्तरे इसो जाणवो चिह्न अन्तर्मुहूर्त्ते अन्तर्मुहूर्त्तसथाय । असुरकुमार णागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाण। अ सुरकुमार नागकुमार आदिदेइ यावत् अनुत्तरोपपातिकलगे । जहाणेरइयाण णवर जस्स जा ठिइभाणियव्वा । जिम नारकीने कह्यो तिम कहवो एतलो विशेष जेहनी जिकास्थिति तिका जाणवी । जावअणुत्तरोववाइयाण सव्वबधे एक्कंसमय । यावत् अनुत्तरोपपातिकान सर्वबन्ध एकसमय । देसबधेजहण्णे एक्कतीसंसागरोवमाइं तिसमयऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं समयऊणाइं । देशबध जघन्ये एकत्रीस सागरोपम तीन समय ऊणाउत्कृष्टथकी

॥ टीका ॥

न्धको भूत्वा मृतो देवेषु नारकेषुवा, वैक्रियशरीरि षविग्रहे णोत्पद्यमान प्रथमसमये सर्वबन्धक इत्येव मेक समय सर्वबन्धान्तर मिति ॥ उ
त्कर्षेण अनन्त कालमिति ॥ कथ मौदारिकशरीरी वैक्रिय गतो वैक्रियशरीरिषुवा ; देवादिषु समुत्पन्न स्तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको भूत्वा देशबन्ध
ञ्च कृत्वा मृत स्तत पर मनन्तकाल मौदारिकशरीरिषु वनस्पत्यादिषु स्थित्वा (८०००) वैक्रियशरीरवत्सूत्पन्न स्तत्र प्रथमसमये सर्वबन्धको
जात एवमस्य सर्वबन्धयो र्यथोक्त मन्तर भवतीति ॥ एव देसबधतर पिति ॥ जघन्ये नैक समय मुत्कृष्टतो ऽनतकाल मित्यर्थः, भावनाचास्य पू
र्वोक्तानुसारेणेति ॥ वाउकाइयत्यादि ॥ सव्वबधतर जहन्नेण अंतोमुहुत्तति ॥ कथ वायु रौदारिकशरीरी वैक्रियशक्तिमापन्न स्तत्र प्रथमसमये स

॥ मूल ॥

सं सागरोवमाइं समयऊणाइं, वेउव्वियसरीरप्पञ्जोगबंधतरेणं भंते! कालओ केवचिर होइ? गो०! सव्वबंधंतर
जहन्नेण एक्कं समय उक्कोसेणं अणंत काल अणंताओ जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो एवं देसबधंतरं

अनुवाद

न० ! कालत कियच्चिरम्भवति ? गौतम ! सर्वबन्धान्तर जघन्ये नैक समय मुत्कृष्टतोऽनन्त काल मनन्ता याव दावलिकाया असङ्ख्येयो भा

॥ भाषा ॥

गे समयमा उणा पल्यनो भावना सर्वनारकाने परे कहवी वैक्रियशरीर प्रयोगबधनो कालकह्यो, हिवे तेहनाज अन्तरप्रते निरूपण करतो
थको कहे छे—वैक्रियशरीरप्रयोगबधन्तरेण भते कालथी केतलोचिरहोय। वैक्रियशरीर प्रयोगबन्धान्तर हेभगवन् कालथी केतलोकालहवे इतिप्रश्न उत्तर। गोय
मा सव्वबधन्तर जहन्नेण एगसमय इत्यादि। हेगौतम सर्वबन्धान्तर जघन्ये एक समय ते किम औदारिकशरीरी वैक्रिय प्रते गयो पहिलेसमये सर्वबंध
क थोडोसमय देशबधक थईने मरणपामी देवनेविषे तथा नारकीनेविषे वैक्रियशरीरनेविषे अविग्रहेकरी उपजतो पहिलेसमये सर्वबधक इम एकसमय
न विरहान्तर उत्कृष्टथकी। अनन्तकाल अनन्ताओ जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो। अनन्तोकाल ते किम औदारिकशरीरी वैक्रियप्रते गया वैक्रिय
शरीरीनेविषे अथवा देवादिकनेविषे उपनो ते प्रथमसमय सर्वबन्धकथई देशबधकरी मरणपाम्यो तिवारपछी अनन्तकाल औदारिकशरीरी वनस्पत्या
दिकनेविषे रही वैक्रियशरीरवन्तनेविषे उपनो तिहा पहिलेसमये सर्वबन्धकहुवो इम बधे यथोक्त अन्तरहुवे। एवदेशबधंतरपि। इम देशबन्धान्तर

॥ टीका ॥

वैक्रियशरीर मा वंधको भूत्वा मृत पुन वायुरेव जात स्तस्यवा पर्याप्तकस्य वैक्रियशक्ति नांवि भवती त्यन्तर्मुहूर्तमात्रेण सो पर्याप्तको भूत्वा वैक्रियशरीर मा रभते, तत्रचासौ प्रथमसमये सर्वबन्धको जात इत्येव सर्वबन्धान्तर मन्तर्मुहूर्त्त मिति ॥ उत्कर्षेण पलिउवमस्स असंख्येयभागमिति ॥ कथं वायु रौदारिकशरीरी वैक्रिय गत स्तत्प्रथमसमये सर्वबन्धक स्ततो देशबन्धको भूत्वा मृत स्तत पर औदारिकशरीरेषु वायुषु पल्योपमासंख्येयभाग म तिवाह्या वश्य वैक्रिय करोति, तत्र प्रथमसमये सर्वबन्ध स्तस्य सर्वबन्धयो र्यथोक्त मन्तर भवतीति ॥ एव देशबन्धान्तर मपीति ॥ अस्य भावना

॥ मूल ॥

पि । वाउकाइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिउवमस्स

॥ अनुवाद ॥

असंख्येय भाग, एवं देशबन्धान्तर मपि । वायुकायिकवैक्रियशरीरपृच्छा गौ० । सर्वबन्धान्तर जघन्यतो अन्तर्मुहूर्त उत्कर्षत पल्योपमस्या संख्येयो भाग,

॥ भाषा ॥

पणि जघन्य एकसमय उत्कृष्टथकी अनन्तोकाल । वायुकाय वैक्रियशरीरपृच्छा । वायुकायिक वायु [illegible] उत्तर । गौतम सर्व बंधअंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग । [illegible] वायु औदारिकशरीरी वैक्रिय पा म्यो तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक पछे देशबंधक मरणपामी वली वायु [illegible] पर्याप्त थाय [illegible] वैक्रियशक्ति थाय [illegible] पर्याप्त थईने वैक्रिय शरीर मांडे तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक [illegible] औदारिकशरीरी वैक्रिय [illegible] तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक तिहां वली देशबंधक थई मरणपामी तिवारपछी औदारिकशरीरी वायुने [illegible] पल्योपम असंख्यातमो भाग [illegible] वैक्रिय करे तिहां [illegible] रत्न [illegible] समयवडे [illegible] अन्तरथयो । एवदेशबंध [illegible] । इम देशबंधअंतर पणि [illegible] पृथ्वीनी परे कहवो । [illegible] गौतम [illegible] जघन्य अंत [illegible] पुच्छा । तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय वैक्रियशरीर [illegible] उत्तर । गौतम [illegible] जघन्य अंतर्मुहूर्त [illegible] तिर्यंचयोनिक वैक्रियपाम्यो तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक ति [illegible] पछे [illegible] अंतर्मुहूर्त [illegible] वैक्रिय करता वारपछे देशबंध [illegible] अंतर्मुहूर्त [illegible] तिवारपछे औदारिकनो [illegible] समये देशबंधक [illegible] वली [illegible] वैक्रिय करस्ये वली वैक्रियकरता

॥ टीका ॥

प्रागिवेति ॥ तिरिक्खेत्यादि ॥ सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तंति ॥ कथं पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको वैक्रियं गतः स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धकः स्ततः
पर देशबन्धको ऽन्तर्मुहूर्तमात्रं ततः औदारिकस्य सर्वबन्धको भूत्वा समयं देशबन्धको जातः पुनरपि श्रद्धया मुत्पन्ना वैक्रियं करोमीति पुनः वैं
क्रियं कुर्वतः प्रथमसमये सर्वबन्धः एवञ्च सर्वबन्धयो र्यथोक्त मन्तरं भवतीति ॥ उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तंति ॥ कथं पूर्वकोट्यायुः पञ्चेन्द्रियतिर्य
ग्योनिको वैक्रियं गतः स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धकः स्ततो देशबन्धको भूत्वा कालान्तरे मृतः पूर्वकोट्यायुः पञ्चेन्द्रियतिर्यक्ष्वेवोत्पन्नः पूर्वजन्म
ना सह सप्ताष्टौ वारान् ततः सप्तमे ऽष्टमेवा, भवे वैक्रियं गतः स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबंधं कृत्वा देशबन्धं करोती त्येवं सर्वबन्धयो रुत्कृष्टं यथो

॥ मूल ॥

तिरिक्खजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधंतरपुच्छा ? गोय
असंखेज्जइभागं। एवं देसबंधंतरंपि। एवं मणुयस्सवि।
मा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं। एवं देसबंधंतरंपि।

॥ अनुवाद ॥

तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तरपृच्छा गौ०। सर्वबन्धान्तर जघन्यतो ऽन्तर्मुहूर्त मुत्कर्षतः पूर्व
एव देशबन्धान्तरमपि। वायुकायिकत्वे नोवायुकायिकत्वे पुनरपि वायुकायिकत्वे वायुकायिकैकेन्द्रियवैक्रिय
कोटिपृथक्त्वं। एव मनुष्यस्यापि। जीवस्य भदन्त ?

॥ भाषा ॥

पहिलेसमये सर्वबंधक इम बेऊ सर्वबंधने यथोक्त अंतरहुवे तिर्यंच पचेंद्री पूर्वकोडी आऊखानो धणी वैक्रियकरे तिहां पहिलेसमये सर्वबंधक तिवार
पछे देशबंधकथई कालांतरे मरणपामी पूर्वकोडी आऊखे पचेंद्रीतिर्यंचनेविषे ऊपनो पूर्वजन्म स्यूं सात आठवार पूर्वकोडी वर्षप्रमाण जन्मलेई सात
में तथा आठमेभवे वैक्रियकरे तिहां पहिलेसमये सर्वबंधकरो देशबंध करे इम बेऊ सर्वबंधनो यथोक्त अन्तरहुवे। एवदेसबंधंतरंपि। इम देशबन्धांतर
पणिकहवो पणि भावनापूठिलीपरे कहवी। एवमणुस्सस्सवि। इम मनुष्यने पणि कहवो। जीवस्सणंभंते वाउ काइयत्ते। जीवने वैक्रियसरीर बंधांतरहोज प्र
कारांतरे करी चिंतवतो कहेछै—जीवने हेभगवन्। वाउकायपणो पामो। णोवाउकाइयत्ते पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउकाइयएगिंदियपुच्छा। नही जे
वाउकायिक एतले पृथिव्यादिपणे अवतरी वलो वाउकायपणो पामे ते वाउकायिक एकेंद्रिय वैक्रिय इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वबंधंतरं जह

॥ टीका ॥ क्त मन्तरं भवतीति ॥ एव देशबंधंतरं पिति ॥ भावनाचास्य सर्वबन्धान्तरोक्तभावनानुसारेण कर्त्तव्येति ' वैक्रियशरीरबन्धान्तरमेव प्रकारान्तरेण चिन्तय न्नाह ॥ जीवस्सेत्यादि ॥ सव्वबधंतर जहन्नेण अंतोमुहुत्तंति ॥ कथ वायु वैक्रियशरीर प्रतिपन्न स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धको भूत्वा मृत स्तत पृथिवीकायिकेषू त्पन्न स्तत्रापि क्षुल्लकभवमात्र स्थित्वा पुन वायु र्जात स्तत्रापि कतिपयान् क्षुल्लकभवान् स्थित्वा वैक्रिय गत स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धको जात स्ततश्च वैक्रियस्य २ च सर्वबन्धयो रन्तर बहव क्षुल्लकभवा स्तेच बहवो प्यन्तर्मुहूर्त्तं मन्तर्मुहूर्त्ते बहूना क्षुल्लकभवाना प्रतिपादितत्वा, ततश्च सर्वबन्धान्तर यथोक्त भवतीति ॥ उक्कोसेण अणत काल वणस्सइकालोत्ति ॥ कथ वायु वैक्रियशरीरी भवन् मृतो वनस्पत्यादि ष्वनन्त काल स्थित्वा वैक्रियशरीर पुन यदा लप्स्यते तदा यथोक्त मन्तर भविष्यतीति ॥ एवं देसबधंतर पित्ति ॥ भावनाचास्य प्रागुक्तानु

॥ मूल ॥ जीवस्सणं भंते ! वाउकाइयत्ते नोवाउकाइयत्ते पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउकाइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं । उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो । एवं देसबंधंतरंपि ।

अनुवाद पृच्छा गौ० । सर्वबन्धान्तर जघन्ये नान्तर्मुहूर्त, मुत्कर्षतो नन्त काल वनस्पतिकाल एव देशबन्धान्तरमपि । जीवस्य भ० ! रत्नप्रभापृथिवी

॥ भाषा ॥ रोप अंतोमुहुत्त । हे गौतम ' सर्वबधांतर जघन्ये अन्तर्मुहूर्त तेकिम वायु वैक्रियशरीर पडिवज्यो तिहा पहिलेसमये सर्वबधकथई मूयो तिहारपछी पृथिवीकायिकनेविषे ऊपनो तिहा पणि क्षुल्लकभवमात्र रही । वली वाउथयो तिहा पणि केतलाएक क्षुल्लकभव रहीने वैक्रियप्रते गयो तिहा पहिलेसमये सर्वबधकथयो तिहा वैक्रियना बेजं सर्वबधनाअन्तर घणा क्षुल्लकभव ते पणि अन्तर्मुहूर्त्तनेविषे घणा क्षुल्लकभव कह्याछै तेमाटे सर्वबंधांतर यथोक्तछै । उ त्कृष्टथी अणतकाल वणस्सइकालो एमदेसबधतरपि । उत्कृष्टथी अनंतोकाल तेकिम वाउ वैक्रियशरीरी थई मूवो वनस्पत्यादिकनेविषे अनंतोकाल रहीने वैक्रियशरीर वली जिवारे लाभस्ये तिवारे यथोक्त अन्तरहुस्ये एम देसबधांतर पणिकहवो । जीवस्सणं भंते रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते णो रयणप्पभापुढवि पृच्छा । जीवने हेभगवन् ' रत्नप्रभापृथिवी नारकीपणो छांडी नहीं रत्नप्रभा पृथिवीपणो एतले रत्नप्रभादिकथी बीजे स्थानके ऊपनो वली रत्नप्रभा

॥ टीका ॥

सारेणेति, रत्नप्रभासूत्रे ॥ सव्वबंधतर मित्यादि ॥ एत द्भाव्यते रत्नप्रभानारको दशवर्षसहस्रस्थितिक उत्पत्तौ सर्वबन्धक स्तत उद्वृत्तस्तु गर्भजपञ्चेन्द्रिये ष्वन्तर्मुहूर्त्तं स्थित्वा रत्नप्रभाया पुनर प्युत्पन्न स्तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धक इत्येव सूत्रोक्त जघन्य मन्तर सवबन्धयो रिति, अयच यद्यपि प्रथमोत्पत्तौ त्रिसमयविग्रहेणो त्पद्यते तदापि न दशवर्षसहस्राणि त्रिसमयन्यूनानि भवन्ति अन्तर्मुहूर्त्तस्य मध्या त्समयत्रयस्य तत्र प्रक्षेपा त्तच तत्प्रक्षेपे प्यन्तर्मुहूर्त्तत्वव्याघात स्तस्या नेकभेदत्वा दिति ॥ उक्कोसेण वणस्सइकालोत्ति ॥ कथ रत्नप्रभा नारक उत्पत्तौ सर्वबन्धक स्तत उद्वृत्तश्चा नन्तकाल वनस्पत्यादिषु स्थित्वा पुन स्तत्रैवो त्पद्यमान सर्वबन्ध इत्येव मुत्कृष्ट मन्तर मिति ॥ देसबंधतर जहन्नेण अतोमुहुत्तति ॥ कथ रत्नप्रभा

॥ मूल ॥

जीवस्सणं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते नोरयणप्पभापुढविपुच्छा ? गोयमा ! सव्वबंधतर जहन्नेणं दस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण वणस्सइकालो, देसबंधतर जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्को

अनुवाद

नैरयिकत्वे नोरत्नप्रभापृथिवी (त्यादि) पृच्छा गौतम । सर्वबन्धान्तर जघन्येन दशवर्षसहस्रा ण्यन्तर्मुहूर्त्ताधिकानि, उत्कर्षतो वनस्पति कालो, देशबन्धान्तर जघन्ये नान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतो नन्त काल वनस्पतिकाल एव याव दध. सप्तमाया नवर या यस्य स्थितिर्जघन्यका सा

॥ भाषा ॥

पृथिवी पणि ऊपजे इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्वबंधतर जहन्नेण दसवाससहस्साइ अंतोमहुत्त मब्भहियाइ । हेगौतम । सर्वबधांतर जघन्य दशमहस्रवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक तेकिम रत्नप्रभा नारको दशसहस्रवर्ष स्थितिको उत्पत्तिनेविषे सर्वबधक तिवारपछी नीसरी गर्भज पचेंद्रियनेविषे अतमुहूर्त्त रहीने रत्नप्रभानेविषे वली ऊपनो तिहा पहिलेसमये सर्वबधक इम सूत्रोक्त जघन्य अन्तरसर्वबध अने सर्वबधनेहुये वली एह जिवारे पणि पहिलो उत्पत्तिनेविषे त्रिसमये विग्रहेंकरी ऊपजे तो पणि दशसहस्रवर्ष तीनसमय न्यून नहुवे ते समयने नाखवा पणि अन्तर्मुहूर्त्तपणानो व्याघात स्यामाटे अन्तर्मुहूर्त्तना अनेकभेद पणामाटे उत्कृष्टथी वनस्पती तेकिम रत्नप्रभा नारक ऊपनाथका सर्वबधक तिवारपछी नीसरी अनन्तकाल वनस्पत्यादिकनेविषे रही वली तिहा ऊपजता थका सर्वबधक । उक्कोसेण वणस्सइकालो । इम उत्कृष्टथो अन्तर वनस्पतीकाल । देसबंधतर जहन्नेण अतोमुहुत्त ।

॥ टीका ॥ नारको देशबन्धक स्सन् मृतो ऽन्तर्मुहूर्तायु पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षयोत्पद्य मृत्वा रत्नप्रभानारकतयोत्पन्न स्तत्रच द्वितीयसमये देशबन्ध इत्येवं जघन्य देशबन्धस्यान्तरमिति ॥ उक्कोसेणमित्यादि ॥ भावना प्रागुक्तानुसारेणेति, शर्करप्रभादिनारकवैक्रियशरीरबन्धस्यान्तरमतिदेशतः सङ्क्षेपार्थं माह ॥ एवजावत्यादि ॥ द्वितीयादिपृथिवीषु च जघन्या स्थिति क्रमेणैक त्रीणि सप्त दश सप्तदश द्वाविंशतिश्च सागरोपमाणीति, पञ्चेन्द्रियत्यादौ ॥ जहा वायुकाइयाणति ॥ जघन्यं नान्तर्मुहूर्त मुत्कृष्टत पुन रनन्त काल मित्यर्थो, ऽसुरकुमारादयस्तु सहस्रारान्ता देवा उत्पत्तिसमय सर्वबंध कृत्वा स्वकीयाच जघन्यस्थिति मनुपाल्य पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षु जघन्ये नान्तर्मुहूर्तायुकत्वेन समुत्पद्य मृत्वाच तेष्वेव सर्वबंधका जाता एवच तेषा वैक्रियस्य

॥ मूल ॥ सेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो एवं जाव अहे सत्तमाए णवरं जा जस्स ठिई जहण्णिया सा सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तचेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्साणय जहा वाउकाइ

॥ अनुवाद ॥ सर्वबन्धान्तरं जघन्येना न्तर्मुहूर्ताधिका कर्त्तव्या शेष तथैव । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाना मनुष्याणाञ्च यथा वायुकायिकाना' असुरकुमार (प्र

॥ भाषा ॥ देशबंधांतर जघन्यं अन्तर्मुहूर्त्त तेकिम रत्नप्रभा नारक देशबंधक थको मूवो अन्तर्मुहूर्त्तायु पचेंद्रिय तिर्यचपणे ऊपजी मरीने रत्नप्रभाये नारकपणे ऊपनो तिहा बीजेसमये देशबंधक इम जघन्य देशबंधांतर छे । उक्कोसेणं अणंतकाल वणस्सइकालो एव जाव अहेसत्तमाए ॥ उत्कृष्टथकी अनंतोकाल वनस्पतीकाल एहनी भावना पूठिलीपरें इम शर्करप्रभादि नारका वैक्रियशरीर बंधांतर अतिदेशथको कहेछे — सक्षेपार्थे इम यावत् नीचे सातमी नरक पृथिवी लगे कहवो । णवरं जा जस्स ठिई जहण्णियासा सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्त मब्भहिया कायव्वा सेसतचेव । एतलोविशेष जे जेहनी स्थिति जघन्य अनुक्रमे १ ३ ७ १० १७ २२ सागरोपम ए बीजी पृथिवी आदिदेई जघन्यस्थिति कही तिका सर्वबंधांतरनेविषे जघन्य अंतर्मुहूर्त्त अधिकी क रवी शेषथाकतो तिमज कहवो । पंचिंदिय तिरिक्खजोणियमणुस्साणय जहावाउकाइयाणं । पचेंद्री तिर्यचयोनिक अनें मनुष्य जिम वाउकायिक कह्या तिम कहवा, एतले जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथकी अनंतोकाल इत्यर्थ। असुरकुमार णागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं एएसि जहारयणप्पभाए णवरं स

॥ टीका ॥

जघन्यं सर्वबंधान्तरं जघन्या तत्स्थिति रन्तर्मुहूर्ताधिका वक्तव्या, उत्कृष्टं त्वनन्त कालं यथा रत्नप्रभानारकाणा मित्येत दृर्शय न्नाह ॥ "असुरकुमारत्यादि ॥ तत्र जघन्यस्थिति रसुरकुमारादीना व्यन्तराणाच दशवर्षसहस्राणि ज्योतिष्काणा पल्योपमाष्टभाग सौधर्मादिषुतु "पलिय अहिय दोसारमाहियासत्तदसयचोद्दसेत्यादि „ आनतसूत्रे ॥ सव्वबंधतरं मित्यादि ॥ एतस्य भावना आनतकल्पीयो देव उत्पत्तौ सर्वबंधक सचाष्टादशसागरोपमाणि तत्र स्थित्वा तत श्च्युतो वर्षपृथक्त्व मनुष्येषु स्थित्वा पुन स्तत्रैवोत्पन्न प्रथमसमये चासौ सर्वबन्धक इत्येव सर्वबन्धान्तरं जघन्य मष्टाद

॥ मूल ॥

याणं, असुरकुमार नागकुमार जाव सहस्सार देवाणं, एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं नवरं सव्वबंधतरं जस्स जा ठिई जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा सेसतंचेव । जीवस्सणं भंते ! आणयदेवत्ते नोआणयदेवत्तेपुच्छा गो० ! सव्वबंधतरं जहन्नेणं अट्ठारससागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं उक्कोसेण

भनुवाद

भृति) याव सहस्रारदेवाना मेतषा यथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणा नवरं सर्वबंधान्तरेया यस्य स्थिति जघन्या सा न्तर्मुहूर्ताधिका कर्त्तव्या शेष तथैव । जीवस्य भ० ! आनतदेवत्वे नो आनतदेवत्वे (इत्यादि) पृच्छा गौतम ! सर्वबंधान्तरं जघन्यं नाष्टादशसागरोपमाणि

॥ भाषा ॥

सर्वबंधतर जस्स जा जहन्नियाठिई अंतोमुहुत्त मब्भहिया कायव्वा । असुरकुमार आदिदेई यावत् सहस्रार पर्यन्त देव उत्पत्तिसमयनेविषे सर्वबंधकरीने पोतानी जघन्यस्थिति प्रते अनुपालीने पचेंद्रिय तिर्यंचनेविषे जघन्य अतर्मुहूर्त्त आउखापणेकरी ऊपजी मरीने तेहनेविषेज सर्वबंध हुवे इम तेहने वे क्रियनो जघन्य सर्वबन्धान्तर जघन्य तेहनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्त अधिकीजाणवी उत्कृष्टतो अनन्तकाल जिम रत्नप्रभा नारकने एहीज देखाडतो वडे छे—तिहां जघन्यस्थिति असुरकुमारने तथा व्यन्तरने दशसहस्रवर्ष ज्योतिषीने पल्योपमनो आठमोभाग सौधर्मादिकनेविषे तो पलियअहियदोसा रसाहियासत्तदसचउद्दस । इत्यादि । सेसतचेव । याकतो तिमज कहवो । जीवस्सणभते आणयदेवत्ते णोआणयदेवत्तेपुच्छा । जीवने हेभगवन् ! आनत देवपणे नही आनत देवपणे वली आनतदेवपणे इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सव्वबधतर जहण्णेण अट्ठारससागरोवमाइ वासपुहुत्त मब्भहियाइ । हे

श सागरोपमाणि वर्षपृथक्त्वाधिकानीति' उत्कृष्टं त्वनंत कालं कथं सदेव स्तस्मा च्च्युतो नंत कालं वनस्पत्यादिषु स्थित्वा पुन स्तत्रैवो त्पन्न प्रथमसमये चासौ सर्वबन्धक इत्येवमिति ॥ देसबधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तंति ॥ कथं सएव देशबन्धक स च्युतो वर्षपृथक्त्वं मनुष्यत्वं मनुभूय पुन स्तत्रैव गत स्तस्यच सर्वबन्धानन्तरं देशबन्ध इत्येवं सूत्रोक्त मन्तरं भवति, इहच यद्यपि सर्वबन्धसमयाधिकं वर्षपृथक्त्वं भवति तथापि तस्य वर्षपृथक्त्वा दनर्थान्तरत्वविवक्षया न भेदेन गणनमिति, एवं प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकसूत्राण्यपि, अथ सनत्कुमारादिसहस्रारान्ता देवा जघन्यतो नव दिनायुष्केष्व आनताद्यच्युतान्तास्तु नवमासायुष्केष्व समुत्पद्यन्त इति, जीवसमासेऽभिधीयते ततश्च जघन्यं तत्सर्वबन्धान्तरं तत्तदधिकतज्जघन्य

अणंतं कालं वणस्सइकालो, देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहत्तं उक्कोसेण अणंतं कालं वणस्सइकालो एवं जाव अच्चुए नवरं जस्स जा ठिई सा सव्वबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा सेसं तंचेव । गेविज्ज

वर्षपृथक्त्वाधिका, न्युत्कर्षतो नन्त कालं वनस्पतिकालो, देशबधान्तरं जघन्येन वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षतो नन्तकालं वनस्पतिकालं एवं याव दच्युते नवरं यस्य या स्थिति सा सर्वबधान्तरं जघन्यतो वर्षपृथक्त्वाधिका कर्त्तव्या शेषं तच्चैव । ग्रैवेयककल्पातीतपृच्छा गौ० । सर्वबधान्तरं जघ

गौतम ! एहनो भावना आनतदेवलोकनेविषे देवपणे उपजतायका सर्वबधक ते अठारे सागरोपम तिहां रहीने तिवारपछी चवी चवीने वर्ष पृथक्त्व मनुष्यनेविषे रही वली तिहांज उपनो प्रथमसमयनेविषे एह सर्वबन्धक इम सर्वबन्धान्तर जघन्ये अठारे सागरोपम वर्ष पृथक्त्व अधिक । उक्कोसेण अणंतकालं वणस्सइकालो देसबधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं । उत्कृष्टयकी अनन्तोकालतेकिम तेहीज देव तिहांथकी चवीने अनन्तकाल वनस्पत्यादिकनेविषे रही वली तिहांज उपनो प्रथमसमये एहसर्वबन्ध वेऊनो अन्तर जाणवो, देशबन्धांतर जघन्ये वर्ष पृथक्त्व तेहीज देशबन्धक थको चवी वर्ष पृथक्त्व मनुष्यपणो भोगवी वली तिहांज गयो तेहने सर्वबध अनन्तरे देशबध इम सूत्रोक्त अन्तरहवे । उक्कोसेण अणंतकालं वणस्सइकालो एवं जाव अच्चुए णवरं जस्स जा ठिईसा सव्वबधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं मब्भहिया कायव्वा सेसंतंचेव । उत्कृष्टयकी अनन्तकाल वनस्पतीकाल पूर्ववत् इम प्राणत आरण अ

॥ टीका ॥

स्थितिरूप प्राप्नोति सत्यमेतत् केवलं मतान्तरमेवेद मिति' अनुत्तरविमानसूत्रे ॥ उक्कोसेण मित्यादि ॥ उत्कृष्ट सर्वबन्धान्तरं देशबन्धान्तरंच स ङ्ख्यातानि सागरोपमाणि यतो नानन्तकाल मनुत्तरविमानच्युत संसरति' तानिच जीवसमासमतेन द्विसङ्ख्यानीति, अथ वैक्रियशरीरदेशबन्धका

॥ मूल ॥

कप्पातीयपुच्छा गो० ! सव्वबंधंतर जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं उक्कोसे० अणं तं काल वणस्सइकालो, देसबंधंतरं जहन्नेणं वासपुहत्तं उक्कोसेणं वणस्सइकालो। जीवस्सणं भंते ! अ णुत्तरोववाइयपुच्छा गो० ! सव्वबंधतरं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं स

अनुवाद

न्येन द्वाविंशतिसागरोपमाणि वर्षपृथक्त्वाभ्यधिकानि, उत्कर्षतो नन्त काल वनस्पतिकालो, देशबधान्तर जघन्यतो वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षतो वनस्पतिकालो। जीवस्य भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकपृच्छा गो० ! सर्वबधान्तर जघन्यत एकत्रिंशत्सागरोपमाणि वर्षपृथक्त्वाधिका न्युत्कर्षत

॥ भाषा ॥

च्युत सूत्र पणि कहवा एतलोविशेष जेहनो जिका स्थिति तिका सर्वबधातरे जघन्यथको वर्षपृथक्त्व अधिको कहवो थाकतो सर्व पूठिलीपरे कह्या तिम ज कहवां। गेविज्जकप्पातीयपुच्छा। ग्रैवेयक कल्पातीतनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा सव्वबधतर जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ वासपहुत्त मब्भहि याइ। हेगौतम। सर्वबधातर जघन्ये बावीससागरोपम वर्ष पृथक्त्व अधिक जाणवो। उक्कोसेण अणतकाल वणस्सइकालो। उत्कृष्टथको अनतोकाल वनस्पतीकाल कहवो। देसबधतर जहण्णेण वासपुहत्त। देशबन्धान्तर जघन्ये वर्ष पृथक्त्व। उक्कोसेण वणस्सइकालो। उत्कृष्टथको वनस्पतीकाल एतले अनतोकाल कहवो, हिवे अनुत्तरविमाननो प्रश्नकरेछे—जीवस्सणभते अणुत्तरोववाइय पुच्छा। जीव हेभगवन्। अनुत्तरविमानना ऊपना तेहनो प्रश्न कीधो उत्तर। गोयमा सव्वबधतर जहण्णेण एक्कतीससागरोवमाइं वासपुहत्त मब्भहियाइ। हेगौतम। सर्वबधांतर जघन्ये इकतीस सागरोपम वर्ष पृ थक्त्व अधिक कहवो। उक्कोसेण सखेज्जाइ सागरोवमाइं। उत्कृष्टथको संख्याता सागरोपम कहवा। देसबधतरजहण्णेण वासपुहत्त। देशबधातर ज घन्ये वर्ष पृथक्त्व। उक्कोसेण संखेज्जाइं सागरोवमाइं। उत्कृष्टथको सख्यातासागरोपम, हिवे वैक्रियशरीर देशबधकादिकनो अल्प बहुत्व करेछे—ए

दीना मल्पत्वादि निरूपणायाह ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोका वैक्रियसर्वबन्धका स्तत्कालस्या ल्पत्वात् देशबन्धका असङ्ख्यातगुणा स्तत्काल स्य तदपेक्षया ऽसङ्ख्येयगुणत्वा, दबन्धका स्त्वनन्तगुणा सिद्धाना वनस्पत्यादीनाञ्च तदपेक्षया ऽनन्तगुणत्वा दिति, अथा हारकशरीरप्रयोगबन्ध मधिकृत्याह ॥ आहारेत्यादि ॥ एगागारेत्ति ॥ एकप्रकारो नौदारिकादिबन्धव देकेन्द्रियाद्यनेकप्रकार इत्यर्थ ॥ सव्वबंधे एक्कं समयंति ॥ आद्यस

खेज्जाइं सागरोवमाइं, देसबंधतरं जहन्नेण वासपुहत्तं उक्कोसे० संखेज्जाइं सागरोवमाइं। एतेसिणं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गो० ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

सङ्ख्यानि सागरोपमाणि, देशबंधान्तरं जघन्यतो वर्षपृथक्त्व मुत्कर्षत सङ्ख्यानि सागरोपमाणि । एतेषा भं० । जीवाना वैक्रियशरीरस्य देश बंधकाना सर्वबंधकाना मबंधकानाञ्च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा वैक्रियशरीरस्य सर्वबंधका देशबंध का असंख्येयगुणा अबंधका अनन्तगुणा । आहारकशरीरप्रयोगबंधो भदन्त । कतिविध प्रज्ञप्तो ? गौ० । एकाकार प्रज्ञप्त । यद्येका

एसिणभंते जीवाण वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाण सव्वबंधगाण । एहने हेभगवन् । जीवने वैक्रियशरीर देशबंधकने सर्वबंधकने । अबंधगाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा । अबंधकने माहोमाहि कुण २ थकी यावत् विशेषाधिक छे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवा वेउव्वियसरीरस्स सव्व बंधगा देसबंधगा असंखेज्जगणा । हेगौतम । सर्वथकी थोडा वैक्रियशरीरना सर्वबंधक वेदनाकाल थोडामाटे तेहथकी देशबंधककाल असंख्यातगुणो ते हना कालने तेहनी अपेक्षायें असंख्येयगुण पणामाटे । अबंधगा अणंतगुणा । तेहथी अबंधक अनंतगुणा सिद्धने वनस्पत्यादिकने तेहनी अपेक्षायें अनंत गुणामाटे । आहारगसरीरपओग बंधेणभंते क.विहे प० । हिवे आहारकशरीर प्रयोगबंध अधिकार कहेछे—आहारकशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् । के तलाभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगागारे प० । हेगौतम ! एक आकारे कह्यो । जइ एगागारे प० । जो एक आकारे कह्यो । किंमणुस्साहारग

॥ सूत्र ॥

आहारगसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे पं० ? गो० ! एगागारे पं० । जइ एगागारे पं० । किं मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे ? गो० ! मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे नो अणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहा

अनुवाद

कार' प्रश्नः किं मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंधो अमनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंधः ? गौतम ! मनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंधो नो अमनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंधः एवं एतेना भिलापेन यथा अवगाहनासंस्थाने यावत् ऋद्धिप्राप्तप्रमत्तसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिजगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याहारकशरीरप्रयोगबंधो नो अनृद्धिप्राप्तप्रमत्तसंयत (प्रभृति) यावत् आहारकशरीरप्रयोगबंधः । आहारकशरीरप्रयोगबंधो भं० । कस्य

॥ भाषा ॥

सरीरप्पओग बंधेय अमणुस्साहारगसरीरप्पओग बंधेय । तो स्यूं मनुष्यआहारकशरीरप्रयोगबन्ध हुवे अथवा मनुष्यवर्ज्जी एकेंद्रियादिक ते अमनुष्याहारकशरीर प्रयोगबन्ध हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधय । हेगौतम ! मनुष्याहारकशरीर प्रयोगबन्ध हुवे पणि । णो अमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे । मनुष्यवर्ज्जी अनेराने आहारकशरीर प्रयोगबन्ध न हुवे । एवं एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणसंठाणे । एम इणे आलावेकरी जिम अवगाहना संस्थाननविषे कह्यो । जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्त संखेज्जवासाउय । यावत् आहार लब्धि प्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष । कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे णो अणिड्ढिपत्तपमत्त जाव आहारगसरीरप्पओग बंधे । कर्मभूमिज गर्भव्युत्क्रांतिक मनुष्याहारकशरीर प्रयोगबंध हुवे पणि ऋद्धि न पामी एहवो प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टी पर्याप्तक यावत् मनुष्यआहारकशरीर प्रयोगबंध न हुवे । आहारगसरीरप्पओगबंधेणं भंते कस्सकम्मस्सउदएणं । आहारकशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयें हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वीरियसजोग सद्दव्वयाए । हेगौतम ! वीर्यसयोग सद्द्रव्यपणें करी । जावलद्धिवापडुच । यावत् आहार लब्धिमते आश्रयीने । अहारगसरीरप्पओगणामा

॥ टीका ॥

मयएव सर्वबन्धभावात् ॥ देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तंति ॥ कथं जघन्यत उत्कर्षतश्चा तर्मुहूर्त्तमात्र मेवा हारकशरीरी भ

॥ मूल ॥

रगसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वयाए जाव लद्धिं वा पडुच्च आहारगसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पओगबंधे । आहारगसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? गो० ! देसबंधेवि सव्वबंधेवि । आहारगसरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोय० ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आहारग

॥ अनुवाद ॥

कर्मणा उदयेन ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया यावल्लब्धि प्रतीत्या हारकशरीरप्रयोगनाम्न कर्मणा उदयेना हारकशरीरप्रयोगबंध । आहारकशरीरप्रयोगबंधो भ० ! किं देशबंध सर्वबंधो ? गौ० ! देशबंधोपि सर्वबंधोपि । आहारकशरीरप्रयोगबंधो भ० ! कालत कियच्चिर भवति ? गौ० ! सर्वबंध एक समय देशबंधो जघन्ये नान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतो प्यन्तर्मुहूर्त्तम् । आहारकशरीरप्रयोगबंधातर भ० ! कालत किय

॥ भाषा ॥

एकस्स कम्मस्सउदएण । आहारकशरीर प्रयोगनाम कर्मने उदये कराने । आहारगसरीरप्पओगबंधे । आहारकशरीर प्रयोगबन्ध हुवे । आहारकसरीरप्पओगबंधेणंभंते किंदेसबंधे सव्वबंधे । आहारकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् ! स्यूं देशबन्धहुवे अथवा सर्वबन्ध हुवे ते पूछाने छहाते इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधेवि सव्वबंधेवि । हेगौतम ! देशबंध पणिहुवे सर्वबन्ध पणिहुवे । आहारगसरीरप्पओगबंधेणभंते कालओकेवच्चिरंहोइ । आहारकशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् ! कालथकी केतलोकाल हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वबंधे एकसमय देसबंधे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेगौतम ! सर्वबन्ध एकसमय तेकिम पहिलेसमये सर्वबंधना भावथकी देशबन्ध जघन्ये अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथी पणि अन्तर्मुहूर्त्त ते किम जघन्यथकी तथा उत्कृष्टथकी अन्तर्मुहूर्त्तमात्र होज आहारकशरीरहुवे उपरांत औदारिकशरीरनो अवश्य ग्रहणकरे तिहां अंतर्मुहूर्त्तनेविषे प्रथमसमये सर्वबन्धक उत्तर काले देशबंधक, हिवे आहारकशरीर प्रयोगबन्धनो अन्तर निरूपणने अर्थे कहेछे—आहारगसरीरप्पओगबन्धन्तरेणभंते कालओकेवच्चिरंहोइ । आहारक

॥ टीका ॥ वति परत औदारिकशरीरस्या वश्य ग्रहणा तत्रचा न्तर्मुहूर्त्तं आद्यसमये सर्वबन्ध उत्तरकालंच देशबन्धइति, अथाहारकशरीरप्रयोगबधस्यै वा न्तरनिरूपणायाह ॥ आहारेत्यादि ॥ सव्वबधतर जहन्नेणं अंतोमुहुत्तंति ॥ कथ मनुष्य आहारकशरीर प्रतिपन्न स्तत्प्रथमसमयेच सर्वबन्धक स्ततो ऽन्तर्मुहूर्त्तमात्र स्थित्वा औदारिकशरीर गत स्तत्रा प्यतर्मुहूर्त्तं स्थितः पुनरपि तस्य संशयाद्याहारकशरीरकरणकारण मुत्पन्न तत पुन रप्याहार कशरीर गृह्णाति तत्रच प्रथमसमये सर्वबन्धक एवं त्येवच सर्वबन्धान्तर मन्तर्मुहूर्त्तं द्वयोर प्यतर्मुहूर्त्तयो रेकत्वविवक्षया दिति ॥ उक्कोसेणं अणत

॥ मूल ॥ सरीरप्पओगबंधंतरेणंभंते ! कालओ केवचिरं होइ गो० । सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं

अनुवाद चिर भवति ? गौ० । सर्वबधान्तर मन्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतो नन्त काल मनन्ता उत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिण्य कालत , क्षेत्रतो नन्ता लोका अपार्द्ध पुद्ग

॥ भावा ॥ शरीरप्रयोगबन्धान्तर हेभगवन् । कालथकी केतलोकालहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा स व्वबधतर जहन्नेणअंतोमुहुत्त । हेगोतम । सर्वबधातर जघन्ये अ न्तर्मुहूर्त्त ते किम मनुष्य आहारकशरीर पडिवज्यो ते पहिलेसमये सर्वबन्धक तिवारपछो अतर्मुहूर्त्तमात्र रहीने औदारिकशरीरे गयो तिहा पणि अ न्तर्मुहूर्त्त रह्यो वली तेहने समयादिकें आहारकशरीर करवानो कारण ऊपनो तिवारे वली आहारकशरीर ग्रहे तिहां पहिलेसमये सर्वबन्ध होज इ म सर्वबन्धान्तर अन्तर्मुहूर्त्त बेहुने पणि अन्तर्मुहूर्त्तने एकपणे विवक्षाथी । उक्कोसेण अणंतकाल । उत्कृष्टथी अनन्तकाल तेमाटे अनन्तकालथकी आहा रकशरीर पामे ते कालनो अनन्तपणो होजविशेषथी कहेछे—अणताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अणताओगा अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण । अनन्तीउत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालथकी क्षेत्रथकी अनन्तालोक एहनो व्याख्यान पूर्वलीपरे कहवो, पुद्गलपरावर्त्तनो परिमाण स्यूं क वे आधो जेहमाहिथी गयो ते अपार्द्ध कहिये पुद्गलपरावर्त्त प्रागुक्तस्वरूपने पणि देशे ऊणो । एवंदेसबधंतरंपि । इम देशबन्धान्तर पणि जघन्ये अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्टथकी अर्द्धपुद्गल देशोन, हिवे आहारकशरीर देशबन्धकादिकनो अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणभंते जीवाण आहारगसरीरस्स देसबधगाण सव्वब धगाण अबधगाणय कयरे २ हितो जाव विसेसाहियावा । एहने हेभगवन् । जीवने आहारकशरीरना देशबन्धकने सर्वबधकने अबन्धकने माहोमाहि

॥ टीका ॥

कालत्ति ॥ कथं यतो ऽनन्तकाला दाहारकशरीरं पुन र्लभत इति, कालानन्त्यमेव विशेषेणाह ॥ अणताओ उस्सप्पिणीओ ओसप्पिणीओ कालओ त्ति खेत्तओ अणताओ लोगत्ति ॥ एतत् व्याख्यानं प्राग्वत् अथ तत्र पुद्गलपरावर्त्तपरिमाणा कियन्तो स्यादित्याह ॥ अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणंति ॥ अपार्द्धं अप गतार्द्धं मर्द्धमात्र मित्यर्थं, पुद्गलपरावर्त्त प्रागुक्तस्वरूप मपार्द्धम प्यर्द्धतः पूर्ण स्यादत आह ॥ देशोनमिति ॥ एवं देशबंधतरं पित्ति ॥ जघन्ये ना न्त मुहूर्त्त मुत्कर्षतः पुन रपार्द्धपुद्गलपरावर्त्त देशोनं, भावना तु पूर्वोक्तानुसारेणेति' अथा हारकशरीरदेशबंधकादीना मल्पत्वादिनिरूपणायाह ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोका आहारकस्य सर्वबन्धका स्त त्सर्वबन्धकालस्या ल्पत्वा द्देशबन्धका सङ्ख्यातगुणा स्तद्देशबन्धकालस्य बहुत्वा द

॥ मूल ॥

कालं अणताओ उस्सप्पिणीओस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं देसबंधंतरंपि। एएसिणं भंते! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा? गो०! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा देसबंधगा संखेज्ज

अनुवाद

लपरावर्त्त देशोन मेव देशबंधान्तरमपि। एतेषां भदन्त! जीवानां माहारकशरीरस्य देशबंधकानां सर्वबंधकानां मबंधकानाञ्च कतरे कतरे भ्यो यावद् विशेषाधिकावा? गौतम! सर्वस्तोका जीवा आहारकशरीरस्य सर्वबंधका, देशबंधका, सङ्ख्येयगुणा' अबंधका अनन्तगुणा। तेज

॥ भाषा ॥

सा कुणथकी थोडाकुने घणाकुवे बराबरवे विशेषाधिक हुवे ? इति प्रश्न उत्तर। गो०यमा सव्वत्थोवाजीवा आहारगसरीरस्ससव्वबंधगा देसबंधगा संखेज्जगुणा। हे गौतम! सर्वथीथोडाजीव आहारकसरीरना सर्वबंधक ते सर्वबन्धकालना अल्पपणाथकी तेथी देशबन्धक संख्यातगुणा देशबंधक कालना बहुल पणाथकी तथा असङ्ख्यातगुणा तो नहुवे मनुष्यना संख्यातपणा माटे तेहथी। अबंधगा अणंतगुणा। अबन्धक अनन्तगुणा आहारकशरीर मनुष्यमाहे प णि कोई एक साधुने हुवे अपकाले शेष सर्व अबन्धक तिवारे तथा सिद्ध वनस्पत्यादिकना अनन्तपणाथकी अनन्तगुणा, हिवे तेजसशरीर प्रयोगबन्ध नाअर्थो कहेछे—तेयासरीरप्पओगबंधेणंभंते कइविहे प०। तैजसशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन्! केतलेभेदे कह्यो? इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पचविहे प०तं०।

॥ टीका ॥

सङ्ख्यातगुणास्तु ते भवन्ति यतो मनुष्या अपि सङ्ख्याता किंपुन राहारकशरीरदेशबन्धका अबन्धका स्त्वनन्तगुणा आहारकशरीरहि मनुष्याणा तत्रापि संयतानां तेषामपि केषाचिदेव कदाचिदेवच भवतीति. औदारिके ते शेषसत्त्वाश्च बन्धका स्ततश्च सिद्धवनस्पत्यादीना मनन्तगुणात्वा दन

॥ मूल ॥

गुणा अबंधगा अणंतगुणा। तेयासरीरप्पओगबंधेणं भंते! कइविहे पं० ? गो० ! पंचविहे पं०, तं०—एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे बेइंदियतेयासरीरप्पओगबंधे जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे। एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधेणं भंते! कइविहे पंण्णत्ते? एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्त

अनुवाद

शरीरप्रयोगबधो भ०। कतिविध प्रज्ञप्तो ? गौतम। पञ्चविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा-एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धश्च यावत् पञ्चेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धश्च। एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबधो भ०। कतिविध प्रज्ञप्त एव मनेना भिलापेन भेदो यथा अवगाहनासंस्थाने यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपञ्चेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्धश्च पर्याप्तसर्वार्थसिद्धानुत्तरोपपातिक (इत्यादि) यावत् द्वयश्च। ते

॥ भाषा ॥

ह गौतम पचभेदे कह्या ते कहेछे—एगिंदिय तेयासरीरप्पओगबंध। एकेंद्रिय ते तैजसशरीर प्रयोगबन्ध १। बेइंदिय तेयासरीरप्पओगबंध। बेइन्द्रि तैजसशरीर प्रयोगबन्ध २। जाव पंचिदिय तेयासरीरप्पओगबंधे। इम यावत् पचेंद्रिय तैजसशरीर प्रयोगबध। एगिंदिय तेयासरीरप्पओगबंधेणभते कइविहे प०। एकेंद्रिय ते तैजसशरीर प्रयोगबध हे भगवन्। केतलेभेदे कह्या। एव एएण अभिलावेण भेदो जहा ओगाहण सठाणे। इम इणे आलावेकरी भेद जिम अवगाहना सस्थानने विषे आहारकशरीरनो भेदकह्यो तिम कहवो। जावपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइयकप्पातीयावेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधेय। यावत् पर्याप्ता सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पचेंद्रिय तैजसशरीरप्रयोगबध ॥ १ ॥ अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयजावबंधेय। अपर्याप्ता सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरोपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपचेंद्रियतैजसशरीरप्रयोगबध ॥ २ ॥ तेयासरीरप्पओग

॥ टीका ॥ न्तगुणा इति, अथ तैजसशरीरप्रयोगबन्ध मधिकृत्याह ॥ तेयेत्यादि ॥ नोसव्ववधेत्ति ॥ तैजसशरीरस्या नादित्वा न्न सर्वबधोस्ति तस्य प्रथमत पुद्गलोपादानरूपत्वा दिति ॥ अणाइएवा अपज्जवसिए त्यादि ॥ तत्राय तैजसशरीरबन्धो नादि रपर्यवसितो ऽभव्याना, अनादि सपर्यवसित

॥ मूल ॥ रोवव्वाइय जाव वंधेय । तेयासरीरप्पओगवधेणं भंते! कस्सकम्मस्स उदएणं? गो० ! वीरियसजोगसद्दव्वया ए जाव आउयवा पडुच्च तेयासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पओगवंधे । तेयासरीरप्पओग वधेणं भंते! किं देसवंधे सव्ववंधे? गो० ! देसवंधे णोसव्ववधे । तेयासरीरप्पओगवधेणं भंते! कालओ केव चिरंहोइ? गो० ! दुविहे पं० तंजहा—अणाइएवाअपज्जवसिए अणाइएवासपज्जवसिए । तेयासरीरप्पओग

अनुवाद जसशरीरप्रयोगवधान्तर भ० । कस्य कर्मणा उदयेन ? गौतम ! वीर्यसयोगसद्द्रव्यतया याव दायुष्क प्रतीत्य तैजसशरीरप्रयोगनाम्न कर्मणो द येन तैजसशरीरप्रयोगवध । तैजसशरीरप्रयोगवधो भ० । किं देशवध सर्ववध ? गौतम । देशवधो नो सर्ववध. । तैजसशरीरप्रयोगवधो भ० ! कालत कियच्चिर भवति ? गौतम ! द्विविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—अनादिकोवा ऽपर्यवसितो ऽनादिकोवा सपर्यवसित । तैजसशरीरप्रयो

॥ भाषा ॥ वधेण भतेकस्सकम्मस्सउदएण । तेजसशरीरप्रयोगवध हेभगवन् ! किसा कर्मने उदयेंहुवे इतिप्रश्न. । गो० वीरियसजोगसदव्वयाए जावआउयवापडुच्च । हेगो तम वीर्यसयोगसद्द्रव्यपर्णेकरी यावत् आयुषा आश्रयीने । तेयासरीरप्पओगणामाएकम्मस्सउदएण । तैजसशरीर प्रयोगबधनामकर्मने उदयेंकरी । तेया सरीरप्पओगवधे । तैजसशरीर प्रयोगवधहुवे । तेयासरीरप्पओगवधेणभतेकिंदेसवधेसव्ववधे । तैजसशरीरप्रयोगवध हेभगवन् ! स्यु देशवधेंहुवे अथवा स र्ववधेंहुवे इतिप्रश्न । गो० देसवधे णोसव्ववधे । तेयासरीरप्पओगवधेणभतेकालओकेवचिरहोइ गो०दुविहे प०त० । हेगोतम देशवधेंहुवे पणि सर्ववधेंन हुय तेजसशरीरना अनादिपणायकी सर्ववध तिहा सर्वबधनेप्रथमग्रीज पुद्गलोपादान रूपपणाथकी तैजसशरीर प्रयोगवध हेभगवन् ! कालथी केतलोकाल रहे इतिप्रश्न । हे गोतम बेप्रकारे कह्यो ते कहेछे—अणादीएवाअपज्जवसिए । अनादि अनत एह तैजसशरीर अभव्यने हुवे तथा । अणादीएवासपज्जवसिए ।

॥ टीका ॥

स्तु भव्याना मिति, अथ तैजसशरीरप्रयोगबन्धस्यैवा तरनिरूपणायाह ॥ तेयेत्यादि ॥ अणाइयस्सेत्यादि ॥ यस्मा त्ससारस्थो जीव स्तैजसशरीर बधनद्वयरूपेणापि सदा ऽविनिर्मुक्तएव भवति तस्मा द्द्वयरूपस्या प्यस्य नास्त्यन्तर मिति, अथ तैजसशरीरदेशबन्धकाबन्धकाना मल्पत्वादिनि रूपणायाह ॥ एएसीत्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोका स्तैजसशरीरस्या बन्धका सिद्धानामेव तदबन्धकत्वात्, देशबन्धका स्त्वनन्तगुणा स्तद्देशबन्धकाना

॥ मूल ॥

वंधंतरेणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गो० ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं । एएसिणं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं अबंधगाणय कयरे कयरे हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा देसबंधगा अणंतगुणा ।

अनुवाद

गबधांतर भ० । कालत कियच्चिर भवति ? गौतम ! अनादिकस्या पर्यवसितस्य नास्त्यन्तर मनादिकस्य सपर्यवसितस्य नास्त्यन्तरम् । एतेषां भ० । जीवाना तैजसशरीरस्य देशबंधकाना मबंधकानाञ्च कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा स्तैजसशरीरस्या

॥ भाषा ॥

अनादिसांत एभगो भव्यनेहुवे । अभवीरोप गाना थाइवामाटे । तेयासरीरप्पओगबधंतरेणभंतेकालओकेवच्चिरंहोइ गो० अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतर । तैजसशरीर प्रयोगबधांतर हेभगवन् । कालथी केतलोकालहुवे, इतिप्रश्न हे गौतम अनादि अनंत तैजसशरीर प्रयोगबधनो अंतरनथी जेमाटे ससारस्थ जीव तैजसशरीर प्रयोगबधकरो सदैव अणमूकाणो होजहुवे ए अभव्यआश्रयी कह्यो तथा । अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतर । अनादि सांत ए भव्यआश्रया ने पणि तैजसशरीर प्रयोगबधनो माहोमाहि अंतरनथी स्यामाटे अंतर तो तेने कहीये पामियेअने एहनो विरहपड्या पछी फिर लाइयायको बली नपामे ते म टे अंत नथा, हिवे तैजसशरीर देशबधकादिकनो अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणभंते जीवाण तेयासरीरस्स देसबधगाण अबधगाणय कयरे २ हिंतो । एहने हेभगवन् जीवने तैजसशरीर देशबधकने अबधकने माहोमाहि कुणकुणथको थोडाहुवे घणाहुवे बराबरहुवे विशेषाधिकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गो यमा सव्वत्थोवाजीवा तेयासरीरस्स अबधगा देसबधगा अणतगुणा । हेगौतम ! सर्वथीथोडाजीव तैजसशरीरना अबधक सिद्धानेज तेहना अबंधक पणा

॥ टीका ॥

सकलसंसारिणां सिद्धेभ्योऽनन्तगुणत्वादिति, अथ कार्म्मणशरीरप्रयोगबन्ध मधिकृत्याह ॥ कम्मासरीरेत्यादि ॥ नाणपडिणीययाएत्ति ॥ ज्ञानस्य श्रुतादे स्त दभेदा ज्ज्ञानवतां वा, या प्रत्यनीकता सामान्येन प्रतिकूलता सा तथा तया ॥ नाणनिह्नवणयाएत्ति ॥ ज्ञानस्य श्रुतस्य श्रुतगुरूणां वा, या निह्नवता ऽपलपनं सा तथा तया ॥ नाणंतरायेणंति ॥ ज्ञानस्य श्रुतस्यान्तरायं तद्ग्रहणादौ विघ्नो यः स तथा तेन ॥ नाणप्पओसेणंति ॥

॥ मूल ॥

कम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तंजहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे। नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए नाणनिण्हवणयाए नाणंतराएणं नाणप्पदोसेणं णाणच्चा

अनुवाद

बंधका देशबंधका अनन्तगुणा ४। कार्मणशरीरप्रयोगबंधो भं० ! कतिविध प्रज्ञप्तः ? गौतम ! अष्टविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबंधो यावदान्तरायिककार्मणशरीरप्रयोगबंध । ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबंधो भं० । कस्य कर्मण उदयेन ? गौतम । ज्ञानप्रत्यनीकतया ज्ञाननिह्नवनतया ज्ञानान्तरायेण ज्ञानप्रद्वेषेण ज्ञानात्याशातनया ज्ञानविसंवादनयोगेन ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनाम्न क

॥ भाषा ॥

माटे तेहथी देशबंधक अनंतगुणा देशबंधक सकल संसारी जीव छै ते सिद्धथकी अनंतगुणा छै तेमाटे, हिवे कार्मणशरीर प्रयोगबंध आश्रयीने कहे छै। कम्मासरीरप्पओगबंधेणंभंते कइविहे प०। कार्मणशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् केतले भेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अट्ठविहे प० तं०। हे गौतम आठ भेदे कह्यो ते कहे छै—णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओग बंधे जाव अंतराइय कम्मासरीरप्पओग बंधे। ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मोहनीय ४ आऊखो ५ नाम ६ गोत्र ७ यावत् अन्तराय कार्मणशरीर प्रयोगबंध। णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणंभंते कस्सकम्मस्सउदएणं। ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध हे भगवन् किसा कर्मने उदये हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णाणपडिणीययाए णाणणिण्हवणयाए। हे गौतम ज्ञान जे श्रुतादि अथवा अभेदथकी ज्ञानवन्त तेहनीज प्रत्यनीकता सामान्ये प्रतिकूलपणो ते ज्ञानप्रत्यनीकता कहिये तिणे करी

॥ टीका ॥

ज्ञाने श्रुतादौ ज्ञानवत्सुवा ; यः प्रद्वेषो ऽप्रीति स तथा तेन ॥ नाणच्चासायणाएत्ति ॥ ज्ञानस्य ज्ञानिनावा , या त्वाशातना हीलना सा तथा त या ॥ नाणविसंवायणाजोगेणंति ॥ ज्ञानस्य ज्ञानिनावा ; विसंवादनयोगो व्यभिचारदर्शनाय व्यापारो य स तथा तेन एतानिच वाह्यानि कारणानि ज्ञानावरणीयकार्म्मणशरीरबंधे ऽथान्तर कारण माह ॥ नाणावरणिज्जमित्यादि ॥ ज्ञानावरणीयहेतुत्वेन ज्ञानावरणीयलक्षण य त्कार्मणश रीरप्रयोगनाम त तथा तस्य कर्म्मण उदयेनेति ॥ दंसणपडिणीययाएत्ति ॥ इह दर्शन चक्षुर्दर्शनादि ॥ तिव्वदंसणमोहणिज्जयाएत्ति ॥ तीव्रमिथ्या

॥ मूल ॥

सायएणं नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जक म्मासरीरप्पओगबंधे । दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए एवं जहा नाणावरणिज्जं , नवरं दंसणनामघेयव्वं । जाव दंसणविसंवायणा जोगेणं दं

॥ अनुवाद ॥

मंण उदयेन ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध । दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कस्य कर्मण उदयेन ? गौ० । दर्शनप्रत्यनीक तया एव यथा ज्ञानावरणीय नवरं दर्शननामगृहीतव्य याव दर्शनविसंवादनयोगेन दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनाम्न कर्मण उदयेन याव

॥ भाषा ॥

ज्ञाननो अथवा ज्ञानदातागुरुनो अपलपन ० ज्ञानीनही तथा ए गुरुनही इमकहवो तिणेकरी । णाणंतराएण णाणपदोसेणं । सूत्रनो अन्तराय पाडै ते प्रज्ञतानि विघ्नकरे तिणेकरी, श्रुतादिकनेविषे तथा श्रुतवन्तने प्रद्वेषकरे तिणेकरी । णाणच्चासायणयाए । ज्ञाननी तथा ज्ञानवन्तनी हीलणा करवा तिणेकरी । णाणविसवादणाजोगेण । ज्ञान तथा ज्ञानवन्तनो व्यभिचार देखाडवो तिणेकरी । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्सउदएणं । ज्ञानावरणीय हेतुपणेकरी ज्ञानावरणीय लक्षण जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम कर्मने उदयेकरी । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे । ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध हुवे । दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेण भंते कस्सकम्मस्स उदएणं । दर्शनावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबंध हेभगवन् किसा कर्मने उदयेहुवे इतिप्रश्न इहा दर्शन ते चक्षुदर्शनादिक । गोयमा दंसणपडिणीययाए । हेगौतम दर्शनने प्रतिकूलपणे करी । एवंजहाणाणावरणिज्जं

सणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं जाव प्पओगबंधे । सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओग बंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए एवं जहा सत्तमसए दुस्स माउद्देसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्ज जाव बंधे । असायावेयणिज्जपुच्छा ? गोयमा ! परदुक्खणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दुस्समा उ

रप्रयोगबन्धः । सातवेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भ० ! कस्य कर्मण उदयेन ? गौ० ! प्राणानुकम्पतया भूतानुकम्पतया एवं यथा सप्तमश ते दुःषमोद्देशके यावद् अपरितापनतया सातवेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगनाम्नः कर्मण उदयेन सातवेदनीय (प्रकृति) यावद्बन्धः । असातवेद नीयपृच्छा गौतम ! परदुःखनतया परशोचनतया यथा सप्तमशते दुःषमोद्देशके यावत् परितापनतया असातवेदनीयकार्मण (प्रकृति) याव

[illegible] दर्शनावरणीय [illegible] । जाव [illegible] मयाटपा [illegible] । [illegible] दर्शन [illegible] उदएण जावप्पओगबंधे । दर्शनावरणीय [illegible] दर्शनावरणीयलक्षण [illegible] प्रयोगबन्धं । सायावेयणिज्ज [illegible] । गोयमा पाणाणुकंपयाए भूयाणुकंपयाए [illegible] । जाव अपरियावणयाए [illegible] । सातवेदनीय [illegible] प्रयोगनाम [illegible] सातवेदनीय कार्मणशरीर [illegible]

॥ टीका ॥

त्वतये त्यर्थ ॥ तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाएत्ति ॥ कषायव्यतिरिक्त नोकषायलक्षण मिह चारित्रमोहनीय ग्राह्य, तीव्रक्रोधतये त्यादिना कपायचारि त्रमोहनीयस्य प्रागुक्तत्वा दिति ॥ महारम्भयाएत्ति ॥ अपरिमितकृष्याद्यारम्भतयेत्यर्थ. ॥ महापरिग्गहयाएत्ति ॥ अपरिमाणपरिग्रहतया ॥ कुणि

॥ सूत्र ॥

हसए जाव परितावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा जाव प्पओगबंधे । मोहणिज्जकम्मासरीरपुच्छा ? गो० ! तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमाययाए तिव्वलोहयाए तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओग जाव प्पओगबंधे । णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगबंधेण भंते ! पुच्छा गोय

॥ अनुवाद ॥

त्प्रयोगबन्ध । मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धपृच्छा गौतम । तीव्रक्रोधतया तीव्रमानतया तीव्रमायितया तीव्रलोभतया तीव्रदर्शनमोहनीयतया तीव्रचारित्रमोहनीयतया मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोग (प्रकृति) याव त्प्रयोगबन्ध । नैरयिकायु कार्मणशरीरप्रयोगबन्धपृच्छा गौतम । महा

॥ भाषा ॥

रदुखणयाए परसोयणयाए। हेगोतम। परने दुखनोदेवो तिणेकरी परने सोचनो उपजाववो तिणेकरी। जहासत्तमसए दुसमाउद्देसए। जिम सात मा शतकनेविषे दुखमा उद्देशानेविषे। जाव परियावणयाए। यावत् अनेराने परतापने करवेकरी। असातावेयणिज्जकम्मा जावप्पओगबंधे मोहणिज्ज कम्मासरीरपुच्छा। असाता वेदनीय हेतुपणे करी असातावेदनीयलक्षण कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेह कर्मने उदयेकरी असातावेदनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे, मोहनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्धनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा तिव्वकोहयाए तिव्वमाणयाए तिव्वमाययाए तिव्वलोहयाए। हेगो तम। तीव्र क्रोधेकरी तीव्र मानेकरी तीव्र मायायेकरी तीव्र लोभेकरी। तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए। तीव्र मिथ्यात्वमोहनीय पणेकरी तीव्रनो कषायलक्षण चारित्रमोहनीये करो इहा कषाय व्यतिरिक्तनो कषायलक्षण चारित्रमोहनीय ग्रहवो तीव्र क्रोध तया इत्यादिके करी कषाय चारित्रमोहनीयने पहिला कह्यामाटे। मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंध जावप्पओगबंधे। मोहनीयपणे करी मोहनीयलक्षण कार्मणशरीर प्र योगनाम ते कर्मने उदयेकरी मोहनीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्धहुवे। णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगबंधेणभंते पुच्छा। नरकायुष कार्मणसरीर प्रयोगब

मा ! महारंभयाए महापरिग्गहियाए पंचिंदियवहेणं कुणिमाहारेणं णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं णेरइयाउयकम्मासरीर जाव पओगबंधे। तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! माइल्लयाए नियडिल्लयाए अलियवयणेणं कूडतुलकूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा जाव पओगबंधे। मणुस्साउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसणयाए अमच्छरियत्ताए

रम्भतया महापरिग्रहतया पञ्चेन्द्रियवधेन कुणपाहारेण नैरयिकायु कार्मणशरीरप्रयोगनाम्न कर्मण उदयेन नैरयिकायु कार्मणशरीर (प्रयो ति) याव द्बन्ध । तिर्यग्योनिकायु कार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! मायावितया निकृतिमत्तया अलीकवचनेन कूटतुलाकूटमानेन तिर्यग्योनिकायु कार्मण (प्रकृति) याव त्प्रयोगबन्ध । मनुष्यायु कार्मणशरीरपृच्छा गौ० ! प्रकृतिभद्रतया प्रकृतिविनीततया सानुक्रोशतया अमत्सरिकतया

न्त हे भगवन् ! इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा महारंभयाए महापरिग्गहियाए । हे गौतम अपरिमित कृष्यादि आरंभपणे करी अपरिमाण परिग्रहपणे करी । पंचिंदियवहेण । पंचेंद्रिय मारवेकरी । कुणिमाहारेण । मांसादिक भोजनने आहारवेकरी । णेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएण णेरइयाउयकम्मासरीर जावप्पओगबंधे । नरकायुष हेतुपणेकरी नरकायुष सहित जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम तेहकर्मने उदयेकरी नरकायुष कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे । तिरिक्खजोणियाउय कम्मासरीरपुच्छा । तिर्यंचयोनिक आयुष कार्मणशरीरनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा माइल्लयाए । हे गौतम । परवंचन बुद्धिवंतपणेकरी माया ढांकवानिमित्त । नियडिल्लयाए । माया तेहकरे तिणेकरी । अलियवयणेण । अलीकवचनने बोलवो तिणेकरी । कूडतुलकूडमाणेण । कूड तोल कूडमाप तिणेकरी । तिरिक्खजोणियाउयकम्मा जावप्पओगबंधे । तिर्यंचयोनिकायुष कार्मण यावत् प्रयोगबन्धहुवे । मणुस्साउयकम्मासरीर पुच्छा । मनुष्यायुष कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा पगइभद्दयाए पगइ विणीययाए । हे गौतम । स्वभावथकी भद्रीक परनेतापने अणकरवेकरी स्वभावेकरी विनीतपणो तेणेकरी । साणुक्कोसणयाए । अनुकम्पा सहितपणेकरी । अमच्छरियाए । परगुण नसहे ते भा

॥ टीका ॥

ऋापर्जुकतया ऋापार्जवेनेत्यर्थ ॥ ऋविसंवायणाजोगेणंति ॥ विसंवादन मन्यथाप्रतिपन्नस्या न्यथाकरणं तद्रूपो योगो व्यापार स्तेनवा; योग सम्ब न्धो विसंवादनयोग स्तन्निषेधो ऽविसंवादनयोग स्तेने ह च कायर्जुकतादित्रय वर्त्तमानकालाश्रय मविसंवादनयोग स्त्वतीतवर्त्तमानलक्षणकालद्वया श्रय इति ॥ ऋसुभनामकम्मेत्यादि ॥ इहचा शुभनाम नरकगत्यादिक ॥ कम्मासरीरप्पओगबंधेणमित्यादिच, कार्म्मणशरीरप्रयोगबन्धप्रकरणं तैजस

॥ मूल ॥

भणामकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! कायउज्जुययाए जाव विसंवादणाजोगेणं ऋसुभणामकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे । उच्चागोयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जातिऋमदेणं कुलऋमदेणं बलऋमदेणं रूवऋमदेणं तव ऋमदेणं लाभऋमदेण सुयऋमदेण इस्सरियऋमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे । णीयागोयक

ऋनुवाद

वादनयोगेन शुभनामकार्मणशरीर (प्रभृति) यावद्बन्ध । ऋशुभनामकार्मणशरीरपृच्छा गौतम । कायानर्जुकतया याव द्विसंवादनयोगेना शु भनामकार्मणशरीर (प्रभृति) यावद्बन्ध । उच्चैर्गोत्रकार्मणशरीरपृच्छा गौ० । जात्यमदेन कुलामदेन बलामदेन रूपामदन तपोमदेन लाभाम देन श्रुतामदं नैश्वर्यामदेनो च्चैर्गोत्रकार्मणशरीर (प्रभृति) यावत्प्रयोगबध । नीचैर्गोत्रकार्मणशरीरपृच्छा गौतम । जातिमदेन कुलमदेन व

॥ भाषा ॥

योगबधहुवे ऋशुभनाम कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नकीधो इहा ऋशुभनाम ते नरकगत्यादिक । गोयमा कायऋणुज्जुययाए । हेगौतम । कायावेकरी प रने वचवो तिणेकरी । जावविसवादणाजोगेण । यावत् विपरीतने कहवेकरी । ऋसुभणामकम्मासरीर जाव प्पओगबधे । ऋशुभनाम कार्मणशरीर या वत् प्रयोगबध हुवे । उच्चागोयकम्मासरीरपुच्छा । उच्चैर्गोत्र कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा जातिऋमदेण । हेगौतम । जातिनो ऋहका र न करे । कुलऋमएण बलऋमएण रूवऋमएण तवऋमएण लाभऋमएण सुयऋमएण इस्सरियऋमएण । कुलनो मद न करे तिणेकरी बलनो मद न करे तिणेकरी रूपनो मद न करे तिणेकरी तपनो मद न करे तिणेकरी लाभनो मद न करे श्रुतभणवानो मद न करे तिणेकरी लक्ष्मीनो मद न करे ति णेकरी । उच्चागोयकम्मासरीर जावप्पओगबधे । उच्चैर्गोत्र कार्मणशरीर यावत् प्रयोगबधहुवे । णीयागोयकम्मासरीर पुच्छा । नीचैर्गोत्र कार्मणशरीर इत्या

॥ टीका ॥

मादारेणत्ति ॥ मायामोजनेनेति ॥ माइल्लयाएत्ति ॥ परवञ्चनबुद्धिवत्तया ॥ नियडिल्लयाएत्ति ॥ निकृति वंचनार्थं चेष्टा, मायाप्रच्छादनार्थं मायान्त रमित्येके, अत्यादरकरणेन परवञ्चनमित्यन्ये' तद्व त्तया ॥ पगइभद्दयाएत्ति ॥ स्वभावत परानुपतापितया ॥ साणुक्कोसयाएत्ति ॥ सानुकम्पतया॥ अमच्छरियाएत्ति ॥ मत्सरिक परगुणाना मसोढा तद्भावनिषधो मत्सरिकता तया ॥ सुभनामकम्मेत्यादि ॥ इह शुभनाम देवगत्यादिक ॥ काय उज्जुययाएत्ति ॥ कायर्जुकतया परावञ्चनपरकायचेष्टया ॥ भावुज्जुययाएत्ति ॥ भावर्जुकतया परवञ्चनपरमन प्रवृत्त्येत्यर्थं ॥ भासुज्जुययाएत्ति ॥

॥ मूल ॥

मणुस्साउयकम्मा जाव प्पओगबंधे। देवाउयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं बाल तवोकम्मेणं अकामणिज्जराए देवाउयकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे। सुभनामकम्मासरीरपुच्छा ? गोयमा ! काउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए अविसंवादणाजोगेण सुभणामकम्मासरीर जाव प्पओगबंधे असु

॥ अनुवाद ॥

मनुष्यायु कार्मण (प्रकृति) याव त्प्रयोगबन्ध । देवायु कार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! सरागसयमेन सयमासयमेन बालतप कर्मणा अकामनिर्ज रया देवायु कार्मणशरीर (प्रकृति) यावत्प्रयोगबन्ध । शुभनामकार्मणशरीरपृच्छा गौतम ! कायर्जुकतया भावर्जुकतया भाषर्जुकतया अविस

॥ भाषा ॥

वनो निषेध तिणेकरी । मणुस्साउयकम्मा जावप्पओगबंधे । मनुष्यायुष कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हुवे । देवाउयकम्मासरीरपुच्छा । देवायुष कार्मणशरीर नो प्रयोगबन्धनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सरागसंजमेण संजमा संजमेणं । हे गौतम ! सराग चारित्र पालवेकरी देशविरतिकरी । बालतवो कम्मेण । अज्ञान कष्टकारी । अकामणिज्जराए । अकाम निर्जरायें करी । देवाउयकम्मासरीर जावप्पओगबंधे । देवायुष कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध यावत् बन्ध न्धे । सुभनामकम्मासरीरपुच्छा । शुभनाम कर्म ते देवगत्यादिक तेहनो प्रश्न कीधो उत्तर । गोयमा काउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए । हे गौत म काया येकरी दोजाने वचनहो तिणेकरी मनेकरी अनेराने वंचनहो तिणकरी भाषाने आजेअपणेकरी भाषायेंकरी वंचनथी । अविसंवादणा जोगेण । ज हांकहे तेह ही बोले विपरीत न करे तिणकरी । सुभणामकम्मासरीर जावप्पओगबंधे असुभणामकम्मासरीर पुच्छा । शुभनाम कार्मणशरीर यावत् प्र

॥ मूल ॥

म्मासरीरपुच्छा गोयमा ! जातिमदेणं कुलमदेणं वलमदेणं जाव इस्सरियमदेणं णीयागोयकम्मासरीर जाव प्पनुगवधे । अंतराइयकम्मासरीरपुच्छा गोयमा ! दाणंतराएणं लाभंतराएणं भोगंतराएणं उवभोगंतराएणं वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पनुगणामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पनुगवधे । णाणा वरणिज्जकम्मासरीरप्पनुगवधेणं भंते ! किं देसवधे सव्वबंधे ? गोयमा ! देसवधे णोसव्ववधे । एवं जाव

अनुवाद

लमदेन याव ऐश्वर्य्यमदेन नीचैर्गोत्रकार्मणशरीर (प्रभृति) यावत्प्रयोगवन्ध । आन्तरायिककार्मणशरीरपृच्छा गौतम। दानान्तरायेण लाभान्तराये ण भोगान्तरायेणो पभोगान्तरायेण वीर्यान्तरायेणा न्तरायिककार्मणशरीरप्रयोगनाम्न. कर्मणः उदयेना न्तरायिककार्मणशरीरप्रयोगवन्ध ॥ ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगवन्धो भ० । कि देशवन्ध सववन्ध ? गौतम । देशवधो नोसर्ववन्ध, एव याव दान्तरायिक । ज्ञानावरणीय

॥ भाषा ॥

दि प्रश्नकीधा उत्तर । गोयमा जातिमएण कुलमएण वलमदेण जावइस्सरियमएण । हेगौतम । जातिने मदकरी कुलने मदकरी बलने मदकरी याव त लाभने मदकरी ऐश्वर्यमदकरी । णीयागोयकम्मासरीर जावप्पओगवधे । नीचै गौत्र कार्मणशरीर यावत् प्रयोगबधहुवे । अतराइयकम्मासरीरपुच्छा । अन्तराय कार्मणशरीर इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा दाणतराएण लाभतराएण भोगतराएणं । हेगौतम । दाननो अन्तरायकरी लाभनो अन्तरा येकरी भोगनोअन्तरायेकरी । उवभोगतराएण । उपभोगनो अन्तरायेकरी । वीरियतराएण । वीर्यनो अन्तरायेकरी । अतराइयकम्मासरीरप्पओगणा माए कम्मस्सउदएण । अन्तराय हेतुपणेकरी अन्तरायलक्षण जे कार्मणशरीर प्रयोगनाम कर्मने उदयेकरी । अतराइयकम्मासरीरप्पओगबधे । अन्तराय कार्मणशरीर प्रयोगबधहुवे । णाणावणिज्जकम्मासरीरप्पओगवधेण भते किदेसबधे सव्वबधे । ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध हेभगवन् । स्यू देशब न्धहुवे अथवा सर्वबन्धेहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसवधे णोसव्वबन्धे । हेगौतम देशबधेहुवे पणि सर्वबन्धे न हुवे कार्मणशरीरना अनादिपणाथ की सर्वबध नही सर्वबन्धने प्रथमथीज पुद्गलोपादान रूपपणायकी । एवजाव अतराइय । इम यावत् अन्तराय कार्मणशरीर पर्योगबन्ध लगे कहवो ।

अंतराइयं । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! दुविहे प०, तंजहा—अणाइए एवं जहेव तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव एवं जाव अंतराइयकम्मस्स । णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधंतरेणं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! अणाइयस्स एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव जाव अंतराइयस्स । एएसिणं भंते ! जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं अबंधगाणय

कार्मणशरीरप्रयोगबन्धो भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! द्विविधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—अनादिकः (सपर्यवसितः) यथैव तैजसस्य संस्थितिः तथैव च यावत् आन्तरायिककार्मणशरीरस्य । ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धान्तरं भदन्त ! कालतः कियच्चिरं भवति ? गौतम ! अनादिकस्य एवं यथा तैजसशरीरस्यान्तरं तथैव यावत् आन्तरायिकस्य । एतेषां भदन्त ! जीवानां ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो देशबन्धकानामबन्धकानां च

[illegible]

॥ टीका ॥ शरीरप्रयोगबन्धप्रकरणाव नेय, यस्तु विशेषो स वुच्यते ॥ सर्वस्तोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगाति ॥ सर्वस्तोकत्व मेषा मायुर्बन्धाद्धाया स्तोकत्वा दबन्धाद्धायास्तु बहुगुणत्वा त्तदबन्धका सङ्ख्यातगुणा, नन्वसङ्ख्यातगुणा स्तदबन्धका. कस्मा न्नोक्ता स्तदबन्धाद्धाया असङ्ख्यातजीविता नाश्रि त्या सङ्ख्यातगुणत्वा ? दुच्यते इह मनन्तकायिका नाश्रित्यसूत्र, तत्र चानन्तकायिका सङ्ख्यातजीविताएव तेचायुषास्या बन्धका स्तद्दे अबधकेभ्य सङ्ख्या तगुणाएव भवन्ति, यद्यबन्धका सिद्धादय स्तन्मध्ये क्षिप्यन्ते तथापि तेभ्य सङ्ख्यातगुणाएव ते, सिद्धाद्यबन्धकाना मनताना मप्यनन्तकायिकायुर्बन्ध कापेक्षया ऽनन्तभागत्वादिति, ननु यदा युषो ऽबन्धका सतो बन्धका भवन्ति तदा कथ न सर्वबधसम्भव स्तेषा ? मुच्यते नह्यायु प्रकृति रसती

॥ मूल ॥ कयरे कयरे जाव अप्पावहुगं जहा तेयगस्स एवं आउयवज्जं जाव अंतराइय। आउयस्सपुच्छा गो० !

॥ भाषा ॥ तदे कतरेभ्यो याव दल्पावहुत्व यथा तैजसस्यैव मायुर्वर्जं याव दान्तरायिक । आयुष पृच्छा गौतम ! सर्वस्तोका जीवा आयुष कर्मणो देश

अनुवाद बहुत्व जिम तैजसनो कह्यो तिम इहा पणि कहवो इम आउकर्म वर्जीने । जावअंतराइय आउयस्सपुच्छा । यावत् अंतराय कर्म लगे कहवो जे इहा विशेषछे ते कहेछे आऊखा कर्मनो देशबंध अनें सर्व बंधकनें माहो माहि । गो सव्वत्थोवा जीवा आउय कम्म स्सदेसबंधगा अबंधगा संखेज्जगुणा । हेभ गवन् ! कुण २ थकी यावत् विशेषाधिक हुवे इसो प्रश्न कीधो हेगौतम ! सर्वथी थोडा जीव आयु कर्मना देशबंधक आऊखा बंधनो काल थोडो तेहथकी अबंधकालनें बहुगुण पणा थकी तेहना अबंधक संख्यात गुणा इहा कोई एक पूछस्यें अबंधक असंख्यात गुणा किम न कह्या ते अबंधकालना असंख्यात जीवित प्रतें आश्रयोनें असंख्यातगुण पणा थकी मनुष्य तिर्यं च तीन २ पल्योपमनो देवनारकी ३३ सागर ३३ सागरनो ता लगी ते अबंधका असंख्यात गुणा स्यें नथाइ ? तिहा इम कहीयें एह अनंतकायिक प्रतें आश्रयोनें सूत्रछे तिहा अनंतकायिक संख्यात जीवित होयछे ते आऊखाना अबंधक ते देश बंधक थकी संख्यातगुणा होय हुवे जो अबंधक सिद्धादिक तेमाहि घेपीयें तो पणि तेहथी संख्यातगुणा होय ते सिद्धादि अबंधक अनंतनें पणि अनंत कायिक आयुर्बंधकनी अपेक्षायें अनंत भागपणा थकी वली कोई कहस्यें जो आऊखाना अबंधक थका बंधकहुवे तिवारें किमनही तेहनें सर्वबंधकनो

॥ टीका ॥

सर्वो ते निबध्यते, औदारिकादिशरीरवदिति, न सर्वबन्धसम्भव इति, प्रकारान्तरेणौ दारिकादिचिन्तय न्नाह ॥ जस्सेत्यादि नोबधएत्ति ॥ नस्ये कसमये औदारिकवैक्रिययो र्वन्धो विद्यत इतिकृत्वा नोबन्धक इति, एव माहारकस्यापि' तैजसस्य पुन सदैवा विरहितत्वा द्बधको देशवन्धेन

॥ सूल ॥

सव्वत्थोवा जीवाश्राउयकम्मस्स देसबधगा अवधगा संखेज्जगुणा। जस्सणं भंते! उरालियसरीरस्स सव्वबंधे सेणं भंते! वेउव्वियसरीरस्स किंबधए अवंधए? गोयमा! णोवंधए अवंधए। आहारगसरीरस्स किं बधए अबधए? गोयमा! णोबधए अवंधए। तेयासरीरस्स किं वंधए अवंधए? गोयमा! बधए णोअबंधए। जइ

अनुवाद

बन्धका अवन्धका असङ्ख्येयगुणा। यस्य भ०। औदारिकशरीरस्य सर्वबन्ध स्तस्य भ०। वैक्रियशरीरस्य किं वन्धको ऽवन्धक? गौतम! नो वधको ऽवधक। आहारकशरीरस्य किं वधको ऽवधक? गौतम! नोवधको ऽवधक। तैजसशरीरस्य किं वधको वन्धक? गौतम! व धको नोऽवधक। यदि वधक किंदेशबधक सर्ववधको? गौतम! देशवधको नैव सर्ववधक। कार्मणशरीरस्य किं वधको ऽवधको यथैव

॥ भाषा ॥

समय तेहनें इम कहींये नही आऊखानी अछती सगली प्रकृति तिणे वाधीये औदारिक शरीरनोपरें नही सर्वबंधनी सभवइति एवं प्रकारांतरें औदारि कादिक चिंते छे—जस्सणभंते ओरालियसरीरस्स सव्वबधे। जेहने हेभगवन् औदारिकशरीर सर्वबंधि हुवे। सेणभंते वेउव्वियसरीरस्स किं बधए अबध ए। तेह हेभगवन् वैक्रियशरीरनो स्यूं बधक अथवा अबधक हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोबधए अबधए। हेगौतम सर्वबधक नही एह अबधक एक समे सर्वबन्धक औदारिक तेहमाहि वैक्रिय नहुवे। आहारगसरीरस्स किं बधए अबधए। आहारकशरीरनो स्यूं बन्धक अथवा अबन्धक इतिप्रश्न उ त्तर। गोयमा णोबधए अबधए। हेगौतम एहनो पणि बन्धकनही अबन्धक हुवे। तेयासरीरस्स किं बधए अबधए। तैजसशरीरनो स्यूं बन्धक अथवा अबन्धक इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। बधए णो अबधए। हेगौतम एह सदाचारिपणामाटे बन्धकहुवे पणि नही अबन्धक। जइबधए किंदेसबधए सव्व बधए। जो बन्धकहुवे तो स्यूं देशबन्धक हुवे अथवा सर्वबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा देसबधए णोसव्वबधए। हेगौतम देशबन्धक हुवे पणि स

॥ टीका ॥

सर्वबन्धस्तु नास्त्येव तस्येति, एवं कार्म्मणशरीरस्या पि वाच्यमिति, एव मौदारिकसर्वबंध माश्रित्य शेषाणां बन्धचिन्तार्थो नन्तरदण्डक उक्तो

॥ सूत्र ॥

वंधए किं देसवंधए सव्ववंधए ? गोयमा ! देसवंधए णोसव्ववंधए। कम्मासरीरस्स किं वंधए अवंधए जहेव
तेयगस्स जाव देसवंधए णोसव्ववंधए। जस्सणं भंते ! उरालियसरीरस्स देसवंधे सेणं भंते! वेउव्वियसरीरस्स
किं वंधए अवंधए ? गोयमा ! णोवंधए अवंधए एवं जहेव सव्ववंधेण भणियं तहेव देसवंधेणवि भाणि
यव्वं जाव कम्मगस्स। जस्सणं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्ववंधे सेणं भंते ! उरालियसरीरस्स किं वंधए

॥ अनुवाद ॥

तैजसस्य याव देशबन्धको नोसर्वबन्धक । यस्य भदन्त ! औदारिकशरीरस्य देशबन्धक स्स भदन्त । वैक्रियशरीरस्य किं बन्धको ऽबन्धक. ?
गौतम । नोबन्धको ऽबन्धक एव यथैव सर्वबन्धेन भणित स्तथैव देशबन्धकेनापि भणितव्यो याव त्कार्मणशरीरस्य । यस्य भ० । वैक्रि
यशरीरस्य सर्वबंध स्स भदन्त ! औदारिकशरीरस्य किं बन्धको ऽबन्धक ? गौतम । नोबन्धको ऽबन्धक । आहारकशरीरस्यैवचैव । तैज

॥ भाषा ॥

वंबन्धकनहो एहने सर्वबन्धकना अभावथो । कम्मासरोरस्स किं वधए अवधए । कार्मणशरीरनो स्यूं बंधकहुवे अथवा अबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । जहे
व तयगस्स । जिम तैजसशरीरनो कह्यो तिम कहवो । जाव देसवधए णो सव्ववधए । यावत् देशबन्धक हुवे पणि सर्वबन्धक न हुवे एहने पणि तेहना
अभावथकी । जस्सणभंते ओरालियसरीरस्स देसबधे । जेहने हेभगवन् औदारिकशरीरनो देशबन्धकहुवे । सेणभंते वेउव्वियसरीरस्स किं बधए अबधए ।
ते हेभगवन् वैक्रियशरीरनो स्यूं बन्धकहुवे अबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो बधए अबधए । हेगौतम । नहीबन्धक अबन्धक हुवे । एव जहेवस
व्वबंधेण भणिय । इम जिमहीज सर्वबन्धसघाते कह्यु । तहेव देसबंधेणवि भाणियव्व । तिमहीज देशबन्धसघाते पणि कहवो । जावकम्मगस्स । यावत्
कार्मणशरीरनो ता लगे कहवो, हिवे वैक्रिय सर्वं बन्धआश्रयीने शेषशरीरनोबन्ध चिंतवेछे । जस्सणभंते वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे । जेहने हेभगवन् ।
वैक्रियशरीर नो सर्वबन्ध हुवे । सेणभंते ओरालियसरीरस्स किंबधए अबधए । तेह हेभगवन् । औदारिकशरीरनो स्यूं बन्धकहुवे अथवा अबन्धकहुवे इ

॥ टीका ॥ औदारिकस्यैव देशबन्धमाश्रित्यान्यमाह ॥ जस्सणमित्यादि ॥ अथ वैक्रियस्य सर्वबन्धमाश्रित्य शेषाणां बन्धचिन्तार्थो न्यो दण्डक स्तत्रच ॥ तेय

॥ मूल ॥ अबधए ? गोयमा ! णोबंधए अबंधए। आहारगसरीरस्स एवंचेव तेयगस्स कम्मगस्सय जहेव उरालिएणं समं भणिय तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधे णोसव्वबंधे। जस्सणं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे सेणं भंते ! उरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गो० ! णोबंधए अबंधए एवं जहेव सव्वबंधेणं भणिय तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स। जस्सणं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे सेणं भंते ! उरालियसरीरस्स

॥ अनुवाद ॥ सशरीरस्य कार्मणशरीरस्यच यथैवौदारिकशरीरेण सम भणित स्तथैव भणितव्यो (आलापक इतिशेष.) याव देशबंधो नोसर्वबन्धः। यस्य भ० । वैक्रियशरीरस्य देशबंध स्तस्य भ० । औदारिकशरीरस्य किं बन्धको ऽबन्धको ? गौतम । नोबन्धको ऽबन्धक एव यथैव सर्वबंधेन सम भणित स्तथैव देशबंधेनापि भणितव्यो याव त्कार्मणशरीरस्य। यस्य भ० । आहारकशरीरस्य सर्वबंध स्तस्य भदन्त। औदारिकशरीरस्य

॥ भाषा ॥ तिप्रश्न उत्तर। गोयमा णो बंधए अबंधए। हेगौतम। नहीबन्धक अबन्धकछुवे। आहारगसरीरस्स एवचेव। आहारकशरीरनो पणि इमज कहवो। तेयगस्स कम्मगस्सय जहेव ओरालिएण सम भणिय तहेव भाणियव्वं। तैजस कार्मणनो जिमहीज औदारिकशरीर बन्धकने तैजसकार्मणनो देशबन्धक प णों कह्यो तिमज वैक्रियशरीर सर्वबन्धकने पणि तैजसकार्मणनो कहवो। जाव देसबंधे णो सव्वबंधे। यावत् देशबन्धकछुवे पणि नही सर्वबन्धक इस कहवो इतिभाव। जस्सण भंते वेउव्वियसरीरस्सदेसबंधे। जेहने हेभगवन् वैक्रियशरीरनो देशबन्धछुवे। सेणभंतेओरालियसरीरस्स किंबंधए अबंधए। ते हेभगवन्। औदारिकशरीरनो स्यूं बन्धकछुवे अथवा अबन्धकछुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोबंधए अबंधए। हेगौतम। नही बन्धक एतावता अबन्ध क छुवे। एवजहेव सव्वबंधेण भणिय। इम जिमहीज सर्वबन्धसघाते कह्यु। तहेव देसबंधेणवि भाणियव्वं। तिमज देशसघाते पणि कहवो। जावकम्म गस्स। यावत् कार्मणनो। जस्सणभंते आहारगसरीरस्स सव्वबंधे। जेहने हेभगवन्। आहारकशरीरनो सर्वबन्धछुवे। सेणभंते ओरालियसरीरस्स किं बंध

॥ टीका ॥

गस्स कम्मगस्स य जहेवेत्यादि ॥ यथौ दारिकशरीरसर्वबन्धकस्य तैजसकार्म्मणयो र्देशबन्धकत्व मुक्त मेव वैक्रियशरीरसर्वबन्धकस्यापि तयो र्देशबन्धकत्व वाच्य मितिभाव॰। वैक्रियदेशबन्धदण्डक आहारकस्य सर्वबन्धदण्डको देशबन्धदण्डकश्च सुगम एव, तैजसदेशबन्धदण्डकेतु ॥ बंध

॥ मूल ॥

किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! णोबंधए अबंधए एवं वेउव्वियरसवि तेयगकम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणिय तहेव भाणियव्वं । जस्सणं भंते! आहारगसरीरस्स देसबंधे सेणं भंते! ओरालियसरीरस्स एवं जहा आहारगसरीरस्स सव्वबंधेणं भणियं तहा देसबंधेणवि भाणियव्व जाव कम्मगस्स । जस्सणं भंते ! तेयास

अनुवाद

किं बंधको ऽबंधको ? गौतम ! नोबंधको ऽबंधक एव वैक्रियस्यापि तैजसकार्मणयो र्यथैवौ दारिकेण समं भणित स्तथैव भणितव्यौ । यस्य भदन्त ! आहारकशरीरस्य देशबंधक स्स भदन्त । औदारिकशरीरस्यै व यथा ऽऽहारकशरीरस्य सर्वबंधेन समं भणित स्तथैव देशबंधकेनापि भणितव्यो याव त्कार्मणशरीरस्य । यस्य भ॰ । तैजसशरीरस्य देशबंध स्स भदन्त । औदारिकशरीरस्य किं बंधको ऽबंधक ? गौतम । बंध

॥ भाषा ॥

ए अबंधए । तेह हेभगवन् । औदारिकशरीरनो स्यू बन्धक अथवा अबन्धक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो बंधए अबंधए । हेगौतम । नही बन्धक छ तावता अबन्धक । एवंवेउव्वियस्सवि । इम वैक्रियनो पणि । तेयगकम्माणं जहेव ओरालिएण समं भणिय तहेव भाणियव्व । तैजसकार्मणने जिमहीज औदारिकशरीरसघाते कह्यो तिमहीज इहा पणि कहवो । जस्सणंभंते आहारगसरीरस्स देसबंधे सेणंभंते ओरालियसरीरस्स । जेहने हेभगवन् । आ हारकशरीरनो देशबन्ध हुवे तेह हेभगवन् औदारिकशरीरनो बन्धक अथवा अबन्धक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एवं जहा आहारगसरीरस्स स व्वबंधेण भणिय । हेगौतम इम जिम आहारकशरीरनो सर्वबन्धसघाते कह्युं । तहा देसबंधेणवि भाणियव्व । तिम देशबन्धसघाते पणिकहवो । जावक म्मगस्स । यावत् कार्मणनो । जस्सणंभंते तेयासरीरस्स देसबंधे सेणंभंते ओरालियसरीरस्स किंबंधए अबंधए । जेहने हेभगवन् तैजसशरीरनो देशबन्धने तेह हेभगवन् औदारिकशरीरनो स्यू बन्धक अथवा अबन्धक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बंधएवा अबंधएवा । हेगौतम तैजसशरीर देशबन्धक औ

॥ टीका ॥

एवा अबन्धकोवेति ॥ तैजसदेशबन्धक औदारिकशरीरस्य बन्धकोवा; स्या दबन्धकोवा, तत्र विग्रहे वर्त्तमानो ऽबन्धको ऽविग्रहस्य पुन र्बन्धक स्तत्रोत्पत्तिक्षेत्रप्राप्तिप्रथमसमये सर्वबन्धको द्वितीयादौतु देशबन्धक इति, एवं कार्म्मणशरीरदेशबन्धकोऽपि वाच्यमिति । अथौदारिकादि

॥ मूल ॥

रीरस्स देसबंधे सेणं भंते ! उरालियसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधएवा अबंधएवा । जइबंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधएवा सव्वबंधएवा । वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए एवचेव एवं आहारगस्सवि । कम्मगसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? गोयमा ! बंधए णोअबंधए । जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? गोयमा ! देसबंधए णोसव्वबंधए । जस्सणं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे सेणं भंते ! उरालि

॥ अनुवाद ॥

कोवा ऽबंधकोवा, यदि बंधक किं देशबंधक सर्वबंधक - गौतम ! देशबंधकोवा सर्वबंधकोवा । वैक्रियशरीरस्य किं बंधक एवमेवैव मा हारकस्यापि । कार्मणशरीरस्य किं बंधको ऽबंधक ? गौ० । बंधको नोबंधक । यदि बंधक किं देशबंधक सर्वबंधक ? गौतम ! देशबंधको

॥ भाषा ॥

दारिकशरीरनो बन्धकहुवे अथवा अबन्धक हुवे तिहां विग्रहनेविषे वर्त्तमान ते अबन्धक अने आविग्रहे रह्यो थको बन्धक तेहीज उत्पत्तिक्षेत्र प्राप्त प्रथमसमये सर्वबन्धक द्वितीयादिसमयनेविषे सर्वबन्धक । जइबंधए किं देसबंधए सव्वबंधए । जो बन्धक तो स्यूं देशबन्धक अथवा सर्वबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधएवा सव्वबंधएवा । हेगौतम देशबन्धकहुवे अथवा सर्वबंधक हुवे ते उत्पत्तिक्षेत्र प्राप्त प्रथम इत्यादि भावना पूर्वेलिखो ते इहां कहवी । वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए एवचेव । वैक्रियशरीरनो स्यूं बंधकहुवे अथवा अबन्धक हुवे ए पणि इमज कहवो । एवआहारगस्सवि । इम आहारकशरीरनो पणिकहवो । कम्मगसरीरस्स किंबंधए अबंधए । कार्मणशरीरनो स्यूं बन्धकहुवे अथवा अबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा बंधए णो अबंधए । हेगौतम बन्धकहुवे पणि अबन्धक न हुवे । जइबंधए किंदेसबंधए सव्वबंधए । जो बन्धकहुवे तो स्यूं देशबन्धकहुवे अथवा सर्वबन्धकहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा देसबंधए णो सव्वबंधए । हेगौतम देशबन्धक हुवे पणि नहीं सर्वबन्धक । जस्सणंभंते कम्मासरीरस्स देसबंधे । जेहने ए पाम्याल

॥ टीका ॥ शरीरदेशबन्धकादीना मल्पत्वादिनिरूपणायाह ॥'एएसी'त्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोका आहारकशरीरस्य सर्वबन्धका यस्मा त्ते चतुर्दशपूर्वधरा स्तथा

॥ मूल ॥ यसरीरस्स जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्सवि भाणियव्वा जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए णोसव्वबंधए । एएसिणं भंते ! सव्वजीवाणं उरालियवेउव्वियआहारगतेयाकम्मासरीरगाणं देसबंधगाण सव्व बंधगाणं अबंधगाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स सव्व

अनुवाद नैव सर्वबधक । यस्य भदन्त । कार्मणशरीरस्य देशबध स्स भदन्त । औदारिकशरीरस्य यथा तैजसस्य वक्तव्यता भणिता तथा कार्मणस्यापि भणितव्या याव तैजसशरीरस्य याव देशबन्धको नोसर्वबन्धक । एतेषा भ० । सर्वजीवाना मौदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणशरीरकाणा देश बन्धकाना सर्वबधकाना मबधकानाञ्च कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा आहारकशरीरस्य सर्वबन्धका१ । स्त

॥ भाषा ॥ कारे, हेभगवन् कार्मणशरीरनो देशबध हुवे । सेणभतेओरालियसरीरस्स । तेह हेभगवन् औदारिकशरीरनो बधक किंवा अबधक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहा तेयगस्स वत्तव्वयाभणिया तहा कम्मगस्सवि भाणियव्वा । हेगौतम जिम तैजसशरीरनी वक्तव्यता कही तिम कार्मणशरीरनी पणि वक्त व्यता कहवी । जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए णोसव्वबंधए । यावत् तैजसशरीरनो यावत् देशबधक हुवे नही सर्वबधक । एएसिणंभते सव्वजीवाण ओरालिय वेउव्वियआहारग तेयाकम्मासरीराण देसबंधगाण सव्वबंधगाण अबंधगाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा । एहने हेभगवन् सर्वजीवने औ दारिक वैक्रिय आहारक तैजसकार्मणशरीरने देशबधकने सर्वबधकने अबधकने माहोमाहि कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे बरोबरहुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा । हेगौतम सर्वथीथोडा आहारकशरीरना सर्वबधक जे कारणथी ते चउदे पूर्वधर तथाविध प्रयोजन उपनेजकारे तिहा पणि सर्वबध काल समय हीज हुवे । तस्सचेव देसबंधगा संखेज्जगुणा २।तेहीज आहारकशरीरना देशबधक सख्या तगुणा देशबधनो काल घणो ते माटे २ तेहथी । वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३ । वैक्रियशरीरना सर्वबधक असख्यातगुणा तेहथी अस

॥ टीका ॥

विधप्रयोजनवन्तएव भवन्ति सर्वबन्धकालश्च समयमेवेति, तस्यैवच देशबन्धका सङ्ख्येयगुणा देशबन्धकालस्य बहुत्वात्, वैक्रियशरीरस्य सर्वबन्धका असङ्ख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽसङ्ख्यातगुणत्वात्, तस्यैवच देशबन्धका असङ्ख्येयगुणा सर्वबन्धाद्धापेक्षया देशबन्धाद्धाया असङ्ख्यातगुणत्वात्, अथवा, सर्वबन्धका प्रतिपद्यमानका देशबन्धकास्तु पूर्वप्रतिपन्ना प्रतिपद्यमानकेभ्यश्च पूर्वप्रतिपन्नाना बहुत्वात्, वैक्रियसर्वबन्धकेभ्यो देशबन्धका असङ्ख्येयगुणा स्तैजसकार्मणयो रबन्धका अनन्तगुणा यस्मा त्ते सिद्धा स्तेच वैक्रियदेशबन्धकेभ्यो ऽनन्तगुणाएव वनस्पतिवर्जसर्वजीवेभ्य सिद्धाना मनन्तगुणत्वादिति, औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका अनन्तगुणा स्तेच वनस्पतिप्रभृतीन् प्रतीत्य प्रत्येतव्या स्तस्यैवचा ऽबन्धका विशेषाधिका एतेहि

॥ मूल ॥

धगा, तस्सचेव देसबधगा संखेज्जगुणा २, वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ३, तस्सचेव देसबधगा असंखेज्जगुणा ४, तेयाकम्मगाण दोराहवि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा ५, उरालियसरीरस्स सव्वबधगा अणंतगुणा ६, तस्सचेव अबधगा विसेसाहिया ७, तस्सचेव देसबंधगा असखेज्जगुणा ८, तेयाकम्म

अनुवाद

स्यैव देशबन्धका सङ्ख्येयगुणा २। वैक्रियशरीरस्य सर्वबधका असङ्ख्येयगुणा ३। तस्यैव देशबन्धका असख्येयगुणा ४। तैजसकार्मणशरीरयो र्द्वयो रपि तुल्या अबन्धका अनन्तगुणा ५। औदारिकशरीरस्य सर्वबन्धका अनन्तगुणा ६। तस्यैव अबधका विशेषाधिका ७। तस्य

॥ भाषा ॥

ख्यातगुणामाटे २ तेहथी। तस्सचेव देसबधगा असखेज्जगुणा ४। तेहीज वैक्रियशरीरनो देशबधक असख्यातगुणा सर्वबधकालनी अपेक्षाये देशबधकाल असख्यातगुणोछे तेमाटे अथवा सर्वबध प्रतिपद्यमानक अने देशबधपूर्वप्रतिपद्यमानथकी पूर्व प्रतिपन्नने बहुलथकी ४ तेहथकी। तेयाकम्मगाण दोषहवितुल्ला अवधगा अणतगुणा ५। तैजसकार्मणना अवधक माहोमाहि वेऊ सरीखा अने वैक्रियना देशबधथकी अनतगुणा जे कारणथी सिद्ध ते वैक्रियदेशबधकथकी अनतगुणाछेज वनस्पती वर्जी सर्वजीवथकी सिधने अनतगुणामाटे। ओरालियसरीरस्स सव्ववधगा अणतगुणा ६। तेहथकी औदारिकशरीरना सर्वबधक अनतगुणा तेह वनस्पती प्रति आश्रयीने जाणवा ६ तेहथी। तस्सचेव अवधगाविसेसाहिया ७। ते औदारिक सर्वबन्धनहीं

॥ टीका ॥

विग्रहगतिका सिद्धादयश्च भवति तत्रच सिद्धादीना मत्यंताल्पत्वेने हा विवक्षा विग्रहगतिकाश्च वक्ष्यमाणन्यायेन सर्वबन्धकेभ्यो बहुतरा इति ते भ्य स्तदबन्धका विशेषाधिकाइति, तस्यैवचौ दारिकस्य देशबन्धका असङ्ख्यातगुणा विगहाद्धापेक्षया देशबन्धाद्धाया असङ्ख्यातगुणत्वा' तैजसका र्मणयो र्देशबधका विशेषाधिका यस्मा त्सर्वेपि ससारिण स्तैजसकार्म्मणयो र्देशबन्धका भवन्ति, तत्रच ये विग्रहगतिका औदारिकसर्वबन्धका वै क्रियादिबन्धकाश्च ते औदारिकदेशबन्धकेभ्यो ऽतिरिच्यन्तइति ते विशेषाधिका इति, वैक्रियशरीरस्या बन्धका विशेषाधिका यस्मा द्वैक्रियस्य वन्धका प्रायो देवनारकाएव शेषास्तु तदबन्धका सिद्धाश्च तत्र सिद्धा स्तैजसादिदेशबन्धकेभ्यो ऽतिरिच्यन्त इति ते विशेषाधिका उक्ता, आहा रकशरीरस्या ऽबधका विशेषाधिका यस्मा न्मनुष्याणा मेवा हारकशरीर, वैक्रियतु तदन्येषामपि ततो वैक्रियबन्धकेभ्य आहारकबन्धकाना स्तो कत्वेन वैक्रियाबन्धकेभ्य आहारकाबन्धका विशेषाधिका इति, इह देय स्थापना * इहा ल्पबहुत्वाधिकार वृद्धा गाथाभि रेव प्रपञ्चितवन्त –जेरा

॥ मूल ॥

गाण देसबधगा विसेसाहिया ९, वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया १०, आहारगसरीरस्स अब

अनुवाद

चैव देशबधका असख्येयगुणा ८। तेजसकार्मणयो र्देशबधका विशेषाधिका. ६। वैक्रियशरीरस्या बन्धका विशेषाधिका १०। आहारक

॥ भाषा ॥

जेहने ते विशेषाधिक एह विग्रहगति प्रतिपन्न तथा सिद्धादिक हुवे तिहा सिद्धादिकने अत्यन्त अल्पपणाकरी इहा विवक्षा न कीधी अने विगहगतिक वक्ष्यमाण न्यायेकरी सर्ववधथकी बहुतरछे तेमाटे सर्ववधथकी तेहना अवधक विशेषाधिक ७। तस्सचेवदेसवंधगाअसखेज्जगुणा ८। तेहथी औदारिक ना देशवधक असख्यातगुणा विग्रहगतिना कालथी देशवधनोकाल असख्यातगुणोछे तेह भणी ८ तेह औदारिक देशवधथकी। तेयाकम्मगाण देसवधगा विसेसाहिया। तेजसकार्मणना देशवधक विशेषाधिक जेहकारणथकी सगलाये ससारी तेजसकार्मणना देशवधकहुवे तिहा जे विग्रहगतिक औदारि क सर्ववधक तथा वैक्रियादिवधक ते औदारिक देशवधकथकी अधिकाछेजे तेमाटे विशेषाधिक ६ तेहथी। वेउव्वियसरीरस्स अवधगाविसेसाहिया १०। वैक्रियशरीरना अवधक विशेषाधिक जेकारणथकी वैक्रियना बधक प्राये देव नारकादिक होज शेषतो तेहना अवधक तथा सिद्धपण तिहा जे सिद्ध

लसव्वबंधगा थोवाअबंधयाविसेसहिया तस्सोयदेसवधा असखगुणियाकप्पेया ॥ १ ॥ इहौ दारिकसर्वबंधादीना मल्पत्वादिभावनार्थं सर्वबंधादिस्व रूप ताव दुच्यते–पढमम्मिसव्वबंधो समयंमिसेसुदेसबंधोउ । सिद्धाईणबंधा विग्गहगइयाणयजियाण ॥ २ ॥ इह ऋजुगत्याविग्रहगत्या चोत्पद्य मानाना जीवाना मुत्पत्तिक्षेत्रप्राप्तिप्रथमसमये सर्वबंधो भवति द्वितीयादिषु देशबंध सिद्धादीना मित्यघाटिशए द्वैक्रियादिबंधकानाञ्च जीवाना मौदारिकस्याबंध इति, इह च सिद्धादीना मबंधकत्वं व्यत्यन्ताल्पत्वेना विवक्षणा द्वैक्रियिकामेव प्रतीत्य सर्वबंधकेभ्यो ऽबंधका विशेषाधिका उक्ता इत्येतदेवाह–इगपुणविग्गहियाविय पडुच्चभणियाअबंधगाअहिया । सिद्धाअणंतभाग म्मिसव्वबंधाणविभवंति ॥ ३ ॥ साधारणेष्वपि सर्वबंधनावा त्सर्वबंधका. सिद्धेभ्यो ऽनन्तगुणा यस्तएव ततः सिद्धा स्तेषा मनन्तभागे वर्त्तंते यदिच सिद्धाअपि तेषा मनन्तभागे वर्त्तंते तदा सुतरा वैक्रियबंध कादय प्रतीयन्तएव तत स्ता न्विहाय एव सिद्धपदमेवे हाधीत मिति ३ । अथ सर्वबंधकाना मबंधकानाच समताऽभिधानपूर्वक मबंधकाना वि

८ औदारिकस्य	वैक्रियस्य	आहारकस्य	तैजसस्य	कार्मणस्य
सर्वबंधका अनन्तगुणा ६	सर्वबंधका असख्यगुणा ३	सर्वबंधका सर्वस्तोका· १	नसन्तिसर्वबंधका	नसन्तिसर्वबंधका·
देशबंधका असख्यगुणाः ८	देशबन्धका असङ्ख्गुणाः ४	देशबंधका सख्यगुणाः २	देशबंधका विशेषाधिका. ८	देशबंधका विशेषाधिका. ८
अबन्धका विशेषाधिका ७	अबन्धका विशेषाधिका. १०	अबंधका विशेषाधिका. ११	अबंधका अनन्तगुणा ५	अबंधका अनन्तगुणा ५

ते तेजसादि देशबंधकथकी अधिक अधिक तिणमाटे सेहयो १० । आहारकसरीरना अबधगा विसेसाहिया । आहारकशरीरना अबन्धक विशेषाधि का जेमाटे आहारकशरीर मनुष्यनेज हुवे अने वैक्रिय तो तेहथी अनेराने पणिहुवे तिवारे वैक्रियबंधकथी आहारकबंधकने स्तोकपणेकरी वैक्रिय अबंधकथी आहारक अबधक विशेषाधिक कह्या । सेवंभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सत्यछै अन्यथानथी । अष्टमशतकस नवमो उद्देसो

ऽेपाधिकत्व मुपदर्शयितुमाह–उज्जुआयतेगवका दुहत्तवकागईजवेतिविहा । पढमाइसव्वबधा सव्वेवीयायअद्धतु ॥ ४ ॥ तइयाइतइयज्ञागो लज्जइजी वाणसव्ववधाण । इइतिन्निसव्ववधा रासीतिन्नवयअवधा ॥ ५ ॥ रासिप्पमाणउते तुल्लावधायसव्ववधाय । सखापमाणउपुण छावधगासुणजरऽह्न हिया ॥ ६ ॥ ऋजवायतताया गतौ सर्ववन्धकाएवा द्यसमये जव त्येव मेक स्तेषा राशि', एकवक्रया ये उत्पद्यन्ते तेषा ये प्रथमे समये ते ऽबन्धका, द्वितीयेतु सर्ववधका इत्येव तेषा द्वितीयो राशि , सचैकवक्राभिधानद्वितीयगत्यो त्पद्यमानाना मर्द्धजूतो जवतीति' द्विवक्रयागत्या ये पुन रुत्पद्यन्ते ते आद्ये समयद्वये अवन्धका, स्तृतीयेतु सर्ववन्धका, अयष्च सर्ववन्धकाना तृतीयो राशि , सच द्विवक्राभिधानतृतीयगत्यो त्पद्यमानाना त्रिज्ञाग जूतो जवति तृतीयसमयमाविवा त्तस्य, एवच त्रय सर्ववन्धकाना राशय स्त्रयएवचा बन्धकाना समयजेदेन राशिजेदा दिति, एवञ्च ते राशि प्रमाणत स्तुल्या यद्यपि जवन्ति तथापि सङ्ख्याप्रमाणतो धिका अवन्धका सवन्ति तेचैव–जेएगसमइयाते एगनिगोयमिछदिसिएेति । दुसमइयाति

पयरिया तिसमइयासेसलोगाउ ॥ १ ॥ ये एकसामयिका ऋजुगत्योत्पद्यमानका इत्यर्थ', ते एकस्मि न्निगोदे साधारणशरीरे लोकमध्यस्थिते षड्भ्यो दिग्भ्यो ऽनुश्रेण्या आगच्छन्ति, ये पुन र्द्विसमयिका एकवक्रगत्यो त्पद्यमाना इत्यर्थ ' ते त्रिप्रतरिका प्रतरत्रया दागच्छन्ति' विदिशो वक्रेण ग मनात्, प्रतरश्च वक्ष्यमाणस्वरूप., ये पुन स्त्रिसमयिका समयत्रयेण वक्रद्वयेन चोत्पद्यमानका स्ते शेषलोकात् प्रतरत्रयातिरिक्तलोका दागच्छन्ती ति ॥ ७ ॥ प्रतरप्ररूपणायाह–तिरियायपचउद्दिसि पयरमसखप्पएसवाहल्ल । उद्धपुव्वावरदा हिणुत्तरायययदोपयरा ॥ ८ ॥ लोकमध्यगतैकनिगो द मधिकृत्य तिर्यगायत श्चतसृषु दिक्षु प्रतर· प्रकल्प्यते असङ्ख्येयप्रदेशवाहल्यो विवक्षितनिगोदोत्पादकालोचितावगाहनाबाहल्य इत्यर्थ, स्तन्मात्र बाहल्यावेव ॥ उर्द्धति ॥ ऊर्द्धाधोलोका न्तगतौ पूर्वापरायतो दक्षिणोत्तरायतश्चेति द्वौप्रतराविति, अथाधिकृतमल्पवहुत्व मुच्यते–जेतिपयरिया तेछद्दिसि एहितोभवतऽसखगुणा । सेसायिअसखगुणा खेत्ताऽसखंज्जगुणियत्ता ॥ ९ ॥ ये जीवा स्त्रिप्रतरिका एकवक्रया गत्यो त्पत्तिमन्त स्ते प

स्पृदिक्केभ्य ऋजुगत्या पञ्चभ्यो दिग्भ्य आगतेभ्य सकाशा द्रव त्यसंख्यगुणा शेषा अपि ये द्विसमयिका शेषलोका दागता स्ते ऽप्यसंख्येयगुणा भवति कुत क्षेत्रासङ्ख्यातगुणितत्वा द्यत पट्दिक्क्षेत्रा त्तिमतर मसङ्ख्यगुण ततोपि शेषलोक इति' तत किमित्याह–एवविसेसअरिया अवधयास वृवधगरित्तो । तिसमइयाविग्गहेणं पढुमसुत्तेसमएंइ ॥ १० ॥ वक्रद्वय माश्रित्ये दसूत्रद्वयमित्यर्थ] चउसमयाविग्गहेणं सखेज्जगुणाअवंधगाहोंति। एएसिनिदरिसणं टवणारासीहिंवोच्छामि ॥ ११ ॥ पढमाइंडसहस्स दुसमइयादोविलक्खमक्केक्का । तिसमइयापुणतिन्निवि रासीकोडीभवेक्केक्का ॥ १२ ॥ प्रथमऋजुगत्युत्पन्नसर्वबन्धकराशि सहस्रपरिकल्पित क्षेत्रस्याल्पत्वात्, द्विसमयोत्पन्नाणां द्वौराशी गर्भाऽवधकाना मन्य सर्वबधकाना तौच प्रत्येक लक्षमानौ तत्क्षेत्रस्य बहुतरत्वात्, ये पुन स्त्रीन् समयं सुत्पद्यते तेषा त्रयो राशय स्तत्रचा द्ययो समययो रबधकराशी, तृतीयस्तु सर्वबधकराशि स्तेच त्रयोपि प्रत्येक कोटीमाना तत्क्षेत्रस्य बहुतमत्वा दिति, तदेव राशित्रयेपि सर्वबधका सहस्र लक्ष कोटीभेद सर्वस्तोका,

---

अबधकास्तु लक्ष कोटीद्वय चेत्येव विशेषाधिका स्युरिति, एएसिजहसंभव मत्योवणयकरेज्जरासीण । कत्तोअसंखगुणिया वोच्छजहदेसबधावे ॥ १३ ॥ गोलो असंखभागो वट्टइ उव्वट्टणोववायम्मि । एगनिगोयनिच्च एवसेसेसुविसएव ॥ १४ ॥ चतोमुहुत्तमेव ठिइंनिगोयाणजंविणिद्दिष्ठा । पल्लट्टतिनिगोया तम्हाअतोमुहुत्तेण ॥ १५ ॥ अनेनच गाथाद्वये नोद्वर्त्तनावर्णनात् विग्रहसमयसंभवो ऽन्तर्मुहूर्त्तान्ते परिवर्त्तनावर्णनाच्च निगोदस्थितिसमयनान मुक्त ततश्च, तेसिंठिइसमयाण विग्गहसमयाहवतिजहभागे । एवतिभागजुत्तं विग्गहियाहोसजोवाण ॥ १६ ॥ सट्ठिवियविग्गहिया सेसाणजाण सखभागमि । तेणा सखगुणाइं सव्वधयाअबंधगाहिंतो ॥ १७ ॥ वेउव्वियआहारग तेयाकम्माइ पडियसिद्धाइ । इत्थंविविसेसोजो त्वतत्यततभणाहामि ॥ १८ ॥ वेउव्विसव्वबधा थोवाजेपढमसमयदेवाई । तस्सेवदेसबधा असखगुणियाकहकवा ॥ १९ ॥ उच्यते–तेसिंचियजंदेसा तेसव्वसव्वबधगाभु । होतित्थ घायाता तद्धक्कासेसजीवाजे ॥ २० ॥ अयमर्थ'–तेषामेव वैक्रियबधकाना सर्वबधका स्तुल्या ये शेषा स्ते सर्वे वैक्रियस्य देशबधका भवति, अत्रच स

बंधकान् मुक्ते त्यनेन कथमित्यस्य निर्वचन मुक्त, येशेषा इत्यनेनतु केवेत्यस्येति' अबधकास्तु तस्मा ऽनन्ताज्ञवन्ति तेच के ये तद्वर्जा वैक्रिय सर्वदेशबंधकवर्ज्जा शेषजीवा स्ते चौदारिकादिबधका देवादयञ्च वैग्रहिका इति ॥ २० ॥ आहारसव्वबधा थोवादोतिन्निपचवादसवा सखेज्जगुणा देसे तत्तुपुहुत्तसहस्साण ॥ २१ ॥ तव्वज्जासव्वजिया अबधयातेद्दवतिरिताणगुणा । थोवाअबधयाते यगस्ससंसारमुक्काजे ॥ २२ ॥ तद्वज्जा आहारकबध वर्ज्जा सर्वजीवा अबधका इत्याहारकाबधकस्वरूप मुक्त तेच पूर्वेभ्यो ऽनन्तगुणा भवन्ति, सेसायदेसबधा तव्वज्जातेज्ञवतऽणतगुणा । एवकम्मगज्ञेया विनवरिनाणत्तमाउस्मि ॥ २३ ॥ तच्चा युनीनात्व मेव-थोवाआउयबधा सखेज्जगुणाअबधयाहोति । तेयाकम्पाणस ब्बबधगानत्थिणाइत्ता ॥ २४ ॥ सख्यातगुणा आयुष्काबधकाइति यदुक्त तत्र प्रश्न आह-असखेज्जगुणाउन स्सकिअबधगानज्ञन्ति । जम्हाअसखज्ञागो उव्वट्टइएगसमएण ॥ २५ ॥ अय मज्ञिप्राय एको ऽसख्यज्ञागो निगोदजीवाना सर्वदोद्वर्त्तते सच बद्धायुपासेव तदन्येपा मुहुर्त्तनाज्ञावात्, तेभ्यश्चये शेषा स्ते ऽबद्धायुप स्तेच त

दपेक्षया ऽसङ्ख्यातगुणा एवे त्येव मसख्यातगुणा आयुष्काबन्धका स्यु रिति, अत्रोच्यते-जन्तइएगसमइओ कालोउव्वट्टणाइजीवाण । बधणकालोपु णाआ उगस्सअतोमुहुत्तोउ ॥ २६ ॥ अयमभिप्रायो निगोदजीवज्ञवकालापेक्षया तेषा मायुर्बन्धकाल सङ्ख्यातज्ञागवृत्ति रित्यबधका सख्यातगुणा एव एतदेव ज्ञाव्यते-जीवाणठिईकाले आउयबधद्धज्ञाइएलद्धु । एवइज्ञागेआउ स्सबधयासेसजीवाण ॥ २७ ॥ निगोदजीवाना स्थितिकाल अन्तर्मुहूर्त्तमा न सच कल्पनया समयलक्ष तत्रायुबन्धाद्धाया आयुर्बन्धकालेना तर्मुहूर्त्तमानेनैव कल्पनया समयसहस्रलक्षणेन ज्ञाजितेसति यल्लब्ध कल्पनया शत रूपच एतावति ज्ञागे वर्त्तन्ते आयुर्बन्धका. शेषजीवाना तदबधकाना मित्यर्थ, स्तत्र किल लक्षापेक्षया शत सख्येयतमो ज्ञागो ऽतोबधकेभ्यो ऽ बधका सख्येयगुणा भवन्तीति, एतदेव भाव्यते-जसखेज्जइज्ञागो ठिइकालस्साउबधकालोउ । तम्हासखगुणासे अबधयाबधसहितो ॥ २८ ॥ सेति आयुष] सर्योगप्पाबहुय आहारगसव्वबधगाथोवा । तस्सेवदेसबधा सखगुणातेयपुव्वुत्ता ॥ २९ ॥ तत्तोवेउव्वियस ब्बबधगादरिस्सियाअसखगुणा । ज

॥ टीका ॥

समुद्घातेवादेः तवयज्ञातेगमसमर्थं ॥ ३० ॥ तस्सेवदेसघया फस्सगुलियाइवत्तिपयुत्ता । तेयगकम्मायंथा ऽवतगुलियावतेसिद्दा ॥ ३१ ॥ ततोवदाउ लगुणा उरालियसव्वयपगाइंति । तस्सेवतउदपा देसयधायपुत्ता ॥ ३२ ॥ सतातेयगकम्मा फट्टेमघयानवेविसेसरिया । तेयवोरालियट सवपगा इंतिमेयके ॥ ३३ ॥ यतस्सवज्जुयपा अयपगाअेयनेरइयदेया । वकिस्सारियाले पुवाइदनसूमनागी ॥ ३४ ॥ वेउव्वियस्सतसो ववपगासारियावि नसेव । तेयंयदनेरइया इविरखियासिद्दसमुत्ता ॥ ३५ ॥ आहारगस्सतत्तो ववभगावारियाविमसेत । तेपुकिमुसुजिया आहारगलहिरमोत्त ॥ ३६ ॥ समासो वन्ध. ॥ अष्टमशतेनवमः ॥ ८ ॥ अनन्तरोद्देशके बन्धादयो यो उक्ता स्ताश्च श्रुतशीलसम्पन्ना पुरुषा विचा रयन्तीति श्रुतादिसम्पन्नपुरुषप्रभृतिपदार्थविचारणार्थो दशमो देशक स्तस्य चेद मादिसूत्र ॥ रायगिहेत्यादि ॥ सेयं ॥ एवंखलु शील सेय सुय से य सुय शील सेय ॥ इत्यंतस्य पूर्वानुसारेण व्याख्या—अथ लौकिकसिद्धान्तापेन रालु निश्चयेन शृणा न्यूपिका केचि त्क्रियामात्रा दया मोक्षार्थसिद्धि

॥ सूत्र ॥

घगा विसेसाहिया । सेवं भंते भंतेत्ति ॥ छ्ठमसयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ८ ॥ ९ ॥
रायगिहे जाव एवंवयासी—अण्णउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवेंति—एवंखलु सील सेयं सुयसेयं

॥ अनुवाद ॥

शरीरस्या यधकाविशेषाधिका ११ । तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति ॥ इत्यष्टमशते नवमोद्देश समाप्त ॥ ८ ॥ ९ ॥
राजगृहे नगरे यावदेव मवादी—अन्ययूथिका भ० ! एव माख्यान्ति यावदेव प्ररूपयन्ति—एव खलु शील श्रेय , श्रुत श्रेय , श्रुत शील श्रेय ,

॥ भाषा ॥

भगवती ८ । ॥ आठमा शतकनो नवमो उद्देशो समाप्त थयो ८ ॥ ९ ॥ पाछला उद्देशामां बंधादिनुं कथन कर्युं, तेने तेवा श्रुतशील स म्पन्न पुरुष विचारे तेमाटे श्रुतादि सम्पन्न पुरुषप्रभृति पदार्थ विचारणार्थे दशमा उद्देशानुं कथन करे छे —रायगिहेत्यादि यावत एवं वदतां । राजगृह नगरने विषे यावत् एम कहे । अन्यतीर्थिको हे भगवन् एमकहे छे यावत् परूपेछे । अन्यतीर्थिको एम कहे छे के केवल श्रुत शील ज्ञानकं श्रेयस्कर छे कोई लौकिक दया अन्यतीर्थिक अन्यतीर्थी केटलाएक क्रियामात्रथी मोक्षसिद्धिमानी ते कहे छे—ज्ञाननो कांई प्रयोजन नथी निश्चे पदार्थको

त्क्रियामात्रा देवा भीष्टार्थसिद्धि मिच्छन्ति नच किञ्चिदपि ज्ञानेन प्रयोजनं निश्चेष्टत्वा द्धटादिकरणप्रवृत्ता वाकाशादिपदार्थवत् पठ्यतेच–क्रियैव फलदापुसा नज्ञानफलदमत। यत.स्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो नज्ञानात्सुखितोभवत् ॥ १ ॥ तथा–जहाखरोचदणभारवाही भारस्सभागीनहुचदणस्स। एवखुनाणीचरणेणहीणो नाणस्सभागीनहुसोग्गईए ॥ १ ॥ अत स्ते प्ररूपयन्ति शील श्रेय प्राणातिपातादिविरमणध्यानाध्ययनादिरूपा क्रियैव श्रेयो ऽतिशयेन प्रशस्य श्लाघ्य पुरुषार्थसाधकत्वा, च्छ्रेयवा, समाश्रयणीय पुरुषार्थविशेषार्थिना, अन्येतु ज्ञानादेवे ष्टार्थसिद्धि मिच्छन्ति न क्रियातो ज्ञानविकलस्य क्रियावतोपि फलसिद्ध्यदर्शना दधीयतच–विज्ञप्ति फलदापुसा नक्रियाफलदामता। मिथ्याज्ञानात्प्रवृत्तस्य फलासवाद दर्शनात् ॥ १ ॥ तथा–पढमनाणतओदया एवचिठइसव्वसजए। अन्नाणीकिकाही किं वानाहीछेयपावय ॥ १ ॥ अत स्ते प्ररूपयन्ति श्रुत श्रेय., श्रुत श्रुतज्ञान तदव श्रेयो ऽतिप्रशस्य माश्रयणीय वा, पुरुषार्थसिद्धिहेतुत्वात्, नतु शीलमिति, अन्येतु ज्ञानक्रियाभ्या मन्योन्यनिरपक्षाभ्या फल मिच्छन्ति ज्ञान क्रियाविकल मेवोपसर्जनीभूतक्रियवा; फलद क्रियापि ज्ञानविकला उपसर्जनीभूतज्ञानाधा; फलदेति भावो भणतिच–किंचिद्वेद

घटादिक करणप्रवृत्तिनेविषे आकाशादि पदार्थनी परे यत.—जहाखरोचदनभारवाही भारस्सभागीनहुचदनस्स एवखुनाणीचरणेणहीणो नाणस्सभागी नहुसुगईए ॥ १ ॥ जिम रासभ चन्दनभारनो वहणहार ते भारनो भजनहारछुवे पणि चन्दनगुण न जाणे इम निश्चे ज्ञानी चारित्रेकरी हीन ज्ञाननो भजनहार एवे पणि सुगतिनो भजनहारनही एतलामाटे ते प्ररूपेछे शील ते श्रेय प्राणातिपात विरमणध्यान अध्ययनादि रूपक्रिया तेहीज श्रेय अ तिशयेकरी श्लाघ्यछे पुरुषार्थ साधकपणाथकी ते श्रेयकरवो पुरुषार्थ विशेषने वाछवो तथा कोईएक कहे। सुयसेय। ज्ञानथकीज वाछितार्थ सिद्धवाछे प णि क्रियाथकी नही ज्ञानथकी विकलने क्रियावतने पणि फलसिद्ध दर्शनथकी कह्युछे—पढमणाणतवोदया एवचिठइसव्वराजए अन्नाणीकिकाही किवा नाहीयच्छेयपावग ॥ २ ॥ एतलामाटे ते प्ररूपेछे श्रुतश्रेय, श्रुत ते श्रुतज्ञान तेहीज श्रेयकारता अतिप्रसस्य आश्रयवा योग्य पुरुषार्थ सिद्धपणाथकी पणि न ही शीलकहता क्रिया केतलाएक ज्ञान क्रिया बेउ अन्योन्य निरपेक्षकरी फलवाछे ज्ञान ते क्रिया विकलहीज उपसर्जनीभूत क्रियाफलदो क्रिया पणि

॥ टीका ॥

त्व सयोगत फलसिद्धे दृष्टत्वा देकैकस्य प्रधानेतरविवक्षाया असद्भूतत्वा दिति, अहं पुन गौतम । एव माख्यामि याव त्प्ररूपयामी त्यत्र श्रुत युक्त शीव श्रेय इत्ये तावान् वाक्यशेषोदृश्यो, ऽथ कस्मा देव ? मनोच्यते ॥ एवमित्यादि ॥ एव वक्ष्यमाणन्यायेन ॥ पुरिसजायत्ति ॥ पुरुषप्र कारा ॥ सीलव असुयवति ॥ कोर्थ ॥ उवरए अविणायधम्मेत्ति ॥ उपरतो निवृत्त स्वबुद्ध्या पापात्, अविज्ञातधर्मा भावतो नधिगतश्रुतज्ञानो

॥ मूल ॥

माहंसु मिच्छा ते एव माहंसु अहं पुण गोयमा एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवंखलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तजहा—सीलसंपन्ने नामं एगे नोसुयसपन्ने १ । सुयसंपन्ने नाम एगे नोसीलसंपन्ने २ । एगे सीलसंपन्नेवि सुयसपन्नेवि ३ । एगे नोसीलसंपन्ने नोसुयसंपन्ने ४ । तत्थणं जेसे पढमे पुरिसजाए

अनुवाद

माख्यामि याव त्प्ररूपयामि—एव खलु मया चत्वारि पुरुषजातानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—शीलसम्पन्नो नामै को नैव श्रुतसम्पन्न १ । श्रुतसम्पन्नो नामै को नैव शीलसम्पन्न २ । एक शीलसम्पन्नोपि श्रुतसम्पन्नोपि ३ । एको नैव शीलसम्पन्नो नैव श्रुतसम्पन्न ४ । तत्र य स त्प्रथम

॥ भाषा ॥

अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि जावपरूवेमि एवखलुमए चत्तारिपुरिसजाया प० त० । यावत् जिके ते इमकह्यु पूर्वे भूठा तेणे इम कह्यु ह्व वली हेगौतम इमकहछू यावत् प्ररूपछू श्रुतयुक्त शीलश्रेय एतले ज्ञानसहित क्रियावांछितार्थ फलदायकहुवे एहवो वाक्य शेषदेखवो, हिवे किसेकारणे इम ते कहेछे—इणे वक्ष्यमाण न्यायेकरी निश्चे मै चारपुरुषना प्रकार कह्या ते कहेछे—सीलसपन्नेणामएगे णोसुअसपन्ने । तिहा एकपुरुष शीलकहता क्रिया ते सहितछे पणि नही ज्ञानकरी सहित तथा एकपुरुष । सुअसपन्नेणामएगे णोसीलसपन्ने । श्रुतकहिये ज्ञान तिणे सम्पन्नछे क्रियासम्पन्न नही तथा । एगे सीलसपन्नेवि सुअसपन्नेवि । एक पुरुष क्रियायेंकरी पण सहितछे अने ज्ञानेकरी पणसहितछे तेणे । एगेणोसीलसपन्ने । तथा एकपुरुष क्रियायेकरो पणि रहितछे अने । णोसुअसपन्ने तत्थणजेसेपढमे पुरिसजाये । ज्ञानेकरी पणि रहितछे तिहा ण वाक्यालकारे, जे ते प्रथम पुरुषजात पुरुषप्रकार । सेण पुरिसेसीलव असुतव । ते पुरुष शीलक्रियावतछे पणि ज्ञानवतनही । उवरए अविणायधम्मे एसण गोयमा । आपणी वुद्धि पापथी निवर्त्यो पणि धर्मना

॥ टीका ॥

बालतपस्वी त्यर्थः, गीतार्थानिश्रिततपश्चरणनिरतो गीतार्थ इत्यन्ये ॥ देसाराहएत्ति ॥ देश स्तोक मंश मोक्षमार्गस्या राधयतीत्यर्थः सम्यग्बोध रहितत्वा त्क्रियापरत्वाद्वति ॥ असीलव सुयवंति ॥ कोर्थ ॥ अणुवरए विसायधम्मेत्ति ॥ पापा दनिवृत्तो ज्ञातधर्माच, अविरतसम्यग्दृष्टि रिति भाव ॥ देसविराहएत्ति ॥ देश स्तोक मंश ज्ञानादित्रयरूपस्य मोक्षमार्गस्य तृतीयभागरूप चारित्र विराधयतीत्यर्थः, प्राप्तस्य तस्या पालना दप्रा प्तेर्वा ॥ सव्वाराहएत्ति ॥ सर्वं त्रिप्रकारमपि मोक्षमार्ग माराधयती त्यर्थः, श्रुतशब्देन ज्ञानदर्शनयो संगृहीतत्वा न्नहि मिथ्यादृष्टि र्विज्ञातधर्मा

॥ मूल ॥

सेण पुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविनायधम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते १ । तत्थणं जेसे दोच्चे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असीलव सुतवं अणुवरए विनायधम्मे एसण गोयमा ! मए

॥ अनुवाद ॥

पुरुषजात स पुरुष शीलवा नश्रुतवा नुपरतो ऽविज्ञातधर्मा एष गौतम । मया पुरुषो देशाराधक प्रज्ञप्त १ । तत्र य त्त द्वितीय पुरुषजात सपुरुषो ऽशीलवान् श्रुतवा ननुपरतो विज्ञातधर्मा एष गौ० । मया पुरुषो देशविराधक प्रज्ञप्त २ । तत्र य त्त तृतीय पुरुषजात सपुरुष

॥ भाषा ॥

अभावथी जाण्योनथी श्रुतज्ञान बालतपस्वी इत्यर्थः गीतार्थनिश्रा विना तपश्चरण निरत अगीतार्थ इत्यर्थः एह हे गौतम । मएपुरिसे देसाराह० पन्नत्ते । मे पुरुष देशथाडाअंशे मोक्षमार्गनो आराधककह्यो भला बोधरहित पणाथकी अथवा क्रिया तत्परथकी । तत्थणजेसे दोच्चेपुरिसेअसीलवसुतवं । तिहां जे बीजो पुरुष शीलवंत नथी श्रुतवंत छे कोर्थः क्रियावंत नथी अनें ज्ञानवंतछे ते कहवो । अणुवरएविन्नायधम्मे । पापथी निवर्त्योनथी अनें धर्म जाण्योछे एतले अविरत सम्यग् दृष्टी इत्यर्थः । एसण गोयमा पुरिसे देस विराहए । एह हे गौतम । मे पुरुष थोडो अंशे ज्ञानादि त्रयरूप मोक्षमार्गनो त्रीजो भाग रूप चारित्र विराधेछे पाम्योछे पणि पालतो नथी अथवा अप्राप्तथकी । तत्थण जेसेतच्चेपुरिस जाए सेण पुरिसेसीलवसुतवं उवरए विन्नायधम्मे । तिहां जे ते त्रीजो पुरुषजात ते पुरुष क्रियावंत अनें ज्ञानवंतछे ते कहवोछे पापथी निवर्त्योछे सम्यक्त श्रुतधर्म जाण्योछे।एसण गोयमा मएपुरिसेसव्वाराहए प। एह हे गौतम । मे पुरुष सर्वा राधक कह्यो सर्व तीनप्रकार पणि मोक्षमार्ग आराधे श्रुतशब्दें करी ज्ञानदर्शन बेउ संग्रहीत पणाथकी नथी मिथ्यादृष्टि वि

॥ टीका ॥ तत्त्वतो ऽवतीति, एतेन समुदितयो शीलश्रुतयो श्रेयस्त्व मुक्त मिति ॥ सव्वाराहए इत्युक्त ॥ मथा राधनामेव भेदत आह ॥ कतिविहाण मि त्यादि ॥ आराहणाति ॥ आराधना निरतिचारतया नुपालना तत्र ज्ञान पञ्चप्रकार श्रुतवा, तस्या राधना कालाद्युपचारकरण, दर्शन सम्यक्त

॥ मूल ॥ पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते २। तत्थणं जेसे तच्चे पुरिसजाए सेण पुरिसे सीलव सुतवं उवरए विन्नायधम्मे एसण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पन्नत्ते ३ । तत्थणं जेसे चउत्थे पुरिसजाए सेणं पुरिसे असी लव असुतवं अणुवरए अविन्नायधम्मे एसणं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पन्नत्ते ४ । कइविहाणं

अनुवाद शीलवान् श्रुतवा नुपरतो विज्ञातधर्मा एष गौ०। मया पुरुष सर्वाराधक प्रज्ञप्त ३। तत्र य स चतुर्थ पुरुषजात स पुरुषो ऽशीलवा नश्रु तवा ननुपरतो ऽविज्ञातधर्मो एष गौतम। मया पुरुष सर्वविराधक प्रज्ञप्त ४॥ कतिविधा ज०। आराधना प्रज्ञप्ता ? गौतम। त्रिविधा आराधना प्रज्ञप्ता तद्यथा–ज्ञानाराधना दर्शनाराधना चरित्राराधना। ज्ञानाराधना ज०। कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा प्रज्ञप्ता

॥ भाषा ॥ ज्ञातधर्म तत्व थकी छुवे एतले समुदितशील श्रुतने विषे श्रेयपणो कह्यो । तत्थणंजेसेचउत्थेपुरिस जाए। तिहा ए वाक्यालकारे, चौथो पुरुष जात। सेणपु रिसेअसीलव असुतव अणुवरए अविन्नायधम्मे। तेणं वाक्यालकारे, पुरुष क्रियावतनथी ज्ञानवत पणि नथी पापकर्मथी निवर्त्यो नथी धर्मना अभाव थकी नथी जाण्यो धर्म जेणे। एसण गोयमा मए पुरिसे सव्वविराहए प। एह ए वाक्यालकार हेगौतम। में पुरुष सर्व विराधक मिथ्या दृष्टी कह्या ज्ञानदर्शन चारित्र तीनेहनो विराधक इत्यर्थ, पूर्वे सर्वाराधक इसो कह्यो हवे आराधनानेज भेदथी कहेछे। कइविहाणभतेआराहणा प। केतले भेदे हे भगवन्। आराधना कही इति प्रश्न। गो तिविहा आराहणा प त णाणाराहणा दसणाराहणा। हेगौतम। तीने प्रकारे आराधना कही निरता चारपणे अनुपालना ते कहेछे—ज्ञान पचप्रकारे अथवा श्रुत तेहनो आराधना कालादिक उपचार करण दर्शन सम्यक्त तहनो आराधना नि शकित पणो आचारपालवो। चरित्ताराहणा। चारित्र सामायिकादिक तेहनो आराधना निरती चारपणे समिति गुप्तिपालवो। णाणाराहणाणभतेकइ

॥ टीका ॥ तस्या राधना निःशंकितत्वादि तदाचारानुपालनं, चारित्र सामायिकादि तदाराधना निरतिचारता ॥ उक्कोसियत्ति ॥ उत्कर्षा ज्ञानाराधना ज्ञानकृत्यानुष्ठानेषु प्रकृष्टप्रयत्नता ॥ मज्झिमत्ति ॥ तेष्वेव मध्यमप्रयत्नता ॥ जहन्नत्ति ॥ तेष्वेवा ल्पतमप्रयत्नता' एवं दर्शनाराधना चारित्राराधना चेति, अथा स्याराधनाभेदानामेव परस्परोपनिबंध मभिधातु माह ॥ जस्सणमित्यादि ॥ अजहण्णुक्कोसावत्ति ॥ जघन्या चासा वुत्कर्षा चोत्कृष्टा

॥ मूल ॥ भंते ! आराहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तंजहा—नाणाराहणा १ दंसणाराहणा २ चरित्ताराहणा ३ नाणाराहणाणं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—उक्कोसिया मज्झिमा जहन्ना । दंसणाराहणाणं भंते ! कइविहा एवंचेव तिविहावि । एवं चरित्ताराहणावि । जस्सणं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया ना

अनुवाद तद्यथा—उत्कर्षा मध्यमा जघन्या । दर्शनाराधना भं० ! कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! एवंचैव त्रिविधापि । एवं चरित्राराधनापि । यस्य भं० । उत्कर्षा ज्ञानाराधना तस्यो त्कर्षा दर्शनाराधना, यस्यो त्कर्षा दर्शनाराधना तस्यो त्कर्षा ज्ञानाराधना ? गौतम । यस्यो त्कर्षा ज्ञा

॥ भाषा ॥ विहा प । ज्ञान आराधना हे भगवन् । केतले प्रकारे कही इतिप्रश्न । गो तिविहा प त उक्कोसिया । हेगौतम तीनप्रकारे कही ते कहेछे—उत्कृष्टज्ञान आराधना ते कहवाय जे ज्ञान कृत्य अनुष्ठाननेविषे प्रकृष्ट प्रयत्न गाढो उद्यम । मज्झिमाजहण्णा । तेहनेविषेज मध्यमप्रयत्न जिम गाढो उद्यमनहीं तिम घणों थोडो पणिनहीं जघन्य थोडोहीज उद्यम जे घणोउद्यम । दंसणाराहणाणभंते एवंचेव तिविहावि । दर्शनाराधना हेभगवन् केतलेभेदेकही इतिप्रश्न उत्तर गौतम इम जिम ज्ञान आराधना तीनभेदेकही तिम दर्शनाराधना पणि तीनभेदे कहवी । एवंचरित्ताराहणावि । इम चारित्रआराधना पणि तीनभेदे कहवी ज्ञानआराधनानीपरे, हिवे कही आराधना भेदनोज माहोमाहे उपनिबंधनकरतो कहेछे—जस्सणभंते उक्कोसियाणाणाराहणा । जेहने हेभगवन् उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे । तस्सउक्कोसिया दंसणाराहणा । तेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे तथा । जस्सउक्कोसियादंसणारा

॥ टीका ॥

जघन्योत्कर्षा तन्निषेधा दजघन्योत्कर्षा मध्यमेत्यर्थः उत्कृष्टज्ञानाराधनावतो ह्याद्ये द्वे दर्शनाराधने भवतो नपुन स्तृतीया तथा स्वभावत्वा त्त स्येति ॥ जस्स पुणेत्यादि ॥ उत्कृष्टदर्शनाराधनावतोहि ज्ञान प्रति त्रिप्रकारस्यापि प्रयत्नस्य सम्भवोस्तीति त्रिप्रकारापि तदाराधना भजनया भव तीति, उत्कृष्टज्ञानचारित्राराधनासंयोगसूत्रे तूत्तर् यस्योत्कृष्टा ज्ञानाराधना तस्य चारित्राराधना उत्कृष्टा मध्यमावा, स्यात्, उत्कृष्टज्ञानाराधना वतोहि चारित्र प्रति नाल्पतमप्रयत्नता स्या त्तत्स्वभावत्वा त्तस्येति, उत्कृष्टचारित्राराधनावत स्तु ज्ञानप्रति प्रयत्नत्रयमपि भजनया स्यात्, एतदे

॥ मूल ॥

णाराहणा ? गोयमा जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसावा अजहन्नुक्कोसावा, जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसावा जहन्नावा अजहन्नमणुक्कोसावा । जस्सणं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्को

अनुवाद

नाराधना तस्य दर्शनाराधनो त्कर्षावा ऽजघन्योत्कर्षावा, यस्य पुन रुत्कर्षा दर्शनाराधना तस्य ज्ञानाराधनो त्कर्षावा जघन्यावा ऽजघन्यो त्कर्षावा । यस्य भ० । उत्कर्षा ज्ञानाराधना तस्यो त्कर्षा चरित्राराधना, यस्यो त्कर्षा चरित्राराधना तस्यो त्कर्षा ज्ञानाराधना ? यथो

॥ भाषा ॥

हणा । जेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे। तस्सउक्कोसियाणाणाराहणा । तेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सउक्कोसियाणा णाराहणा । हेगौतम जेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे । तस्सउक्कोसियादंसणाराहणा । तेहने उत्कृष्ट दर्शनाराधना हुवे । उक्कोसावा अजहन्नमणु क्कोसावा । उत्कृष्टहुवे अथवा जघन्यउत्कृष्ट ए दोनो निषेधथको अजघन्योत्कृष्टा मध्यमा इत्यर्थ उत्कृष्ट ज्ञानआराधनावन्तने निश्चे पहिली दोय दर्शन आराधनाहुवे पणि त्रीजी जघन्य दर्शनआराधना न हुवे तेहना तथाविध स्वभावथको । जस्सपुणउक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सणाणाराहणा उक्क सा वा जहन्नावा । जेहने वली उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे तेहने ज्ञाननीआराधना उत्कृष्ट हुवे अथवा जघन्यहुवे । अजहन्नमणुक्कोसावा । अथवा मध्यम हुवे उत्कृष्ट दर्शनआराधनावन्तने ज्ञानआश्री तीनेईप्रकारना प्रयत्नो सम्भवछे । जस्सणंभंते उक्कोसिया णाणाराहणा । जेहने हेभगवन् उत्कृष्ट ज्ञानआ

॥ टीका ॥ या तिदेशत आह ॥ जहाउक्कोसियेत्यादि ॥ उत्कृष्टदर्शनचारित्राराधनासंयोगसूत्रेपू सर ॥ जस्सुक्कोसियादसणाराहणे त्यादि ॥ यस्योत्कृष्टा दर्श नाराधना तस्य चारित्राराधना त्रिविधापि भजनया स्या दुत्कृष्टदर्शनाराधनावतोहि चारित्रप्रति प्रयत्नस्य त्रिविधस्या प्यविरुद्धत्वा दिति, उत्कृ

॥ मूल ॥ सिया नाणाराहणा ? जहा उक्कोसिया नाणाराहणाय दंसणाराहणाय भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणाय चरित्ताराहणाय भाणियव्वा। जस्सणं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा

अनुवाद त्कर्षा ज्ञानाराधनाच दर्शनाराधनाच भणिता तथो त्कर्षा ज्ञानाराधनाच चरित्राराधनाच भणितव्या। यस्य भ०। उत्कर्षा दर्शनाराधना तस्यो त्कर्षा चरित्राराधना, यस्यो त्कर्षा चरित्राराधना तस्योत्कर्षा दर्शनाराधना ? गौतम। यस्यो त्कर्षा दर्शनाराधना तस्य चरित्राराधनो

॥ भाषा ॥ राधना हुवे। तस्सउक्कोसियाचरित्ताराहणा। तेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे। जस्सउक्कोसिया चरित्ताराहणा। तथा जेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे। तस्सउक्कोसियाणाणाराहणा। तेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहाउक्कोसिया णाणाराहणा दंसणाराहणाय भणिया। हेगौतम ए पूर्वे जेहने उत्कृष्ट ज्ञानआराधना हुवे तेहने चारित्रआराधना उत्कृष्ट अथवा मध्यमहुवे पणि उत्कृष्ट ज्ञानआराधनावन्तने चारित्रप्रते अल्पतर प्रयत्नपणो न हुवे एतले जघन्यउद्यम न हुवे तेहना तथाविध स्वभावथकी। तहाउक्कोसिया णाणाराहणाचरित्ताराहणाय भाणियव्वा। तथा उत्कृष्टचारित्र आराधनावन्तने ज्ञानप्रते प्रयत्न तीनेई जघन्य मध्यम उत्कृष्ट ए भजनायेहुवे इत्यर्थ। जस्सणंभंते उक्कोसिया दंसणाराहणा। जेहने हेभगवन् उत्कृष्ट दर्शनाराधना हुवे। तस्सउक्कोसियाचरित्ताराहणा। तेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे। जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा। जेहने उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे। तस्सुक्कोसियादंसणाराहणा। तेहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सउक्कोसिया दंसणाराहणा। हेगौतम जहने उत्कृष्ट दर्शनआराधना हुवे। तस्सचरित्ताराहणा उक्कोसावा जहण्णावा अजहण्ण मणुक्कोसावा। तेहने चारित्रआराधना तीनेई प्र

॥ टीका ॥

र्यायां तु चारित्राराधनाया मुत्कृष्टैव दर्शनाराधना प्रकृष्टचारित्रस्य प्रकृष्टदर्शनानुगतत्वादिति, अथा राधनाभेदानां फलप्रदर्शनायाह ॥ उक्कोसियण मित्यादि ॥ तेणेवभवग्गहणेण सिज्झइत्ति ॥ उत्कृष्टा ज्ञानाराधना माराध्य तेनैव भवग्रहणेन सिध्य त्युत्कृष्टचारित्राराधनाया सद्भावे ॥ कप्पोवए सुवत्ति ॥ कल्पोपगेषु सौधर्मादिदेवलोकोपगेषु देवेषु मध्ये उपपद्यते मध्यमचारित्राराधनासद्भाव ॥ कप्पातीएसुवत्ति ॥ ग्रैवेयकादिदेवेषू पपद्यते

॥ मूल ॥

तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसावा जहण्णावा अजहण्णमणुक्कोसावा, जस्सपुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमं उक्कोसा। उक्कोसियंणं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतकरेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतकरेइ, अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतकरेइ, अत्थेगइए कप्पोवएसुवा कप्पातीतएसुवा उववज्जइ, उक्कोसियाण

अनुवाद

त्कर्षावा जघन्यावा अजघन्योत्कर्षावा' यस्य पुनरुत्कर्षा चरित्राराधना तस्य दर्शनाराधना नियमा दुत्कृष्टा ॥ उत्कर्षां भदन्त ! ज्ञानाराधना माराध्य कतिभि भवग्रहणै सिध्यति याव दन्त करोति ? गौतम ! अस्त्येक कश्चि त्तेनैव भवग्रहणेन सिध्यति याव दन्त करोति, अस्त्येक

॥ भाषा ॥

कारे भजनायें हुवे उत्कृष्ट अथवा जघन्य अथवा अजघन्य अनुत्कृष्ट एतले मध्यमदर्शन आराधनावन्तने चारित्रप्रतें त्रिविध प्रवर्त्तपणो पणि अविरुद्ध पणोछे तेमाटे। जस्सपुणउक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सदंसणाराहणा णियमउक्कोसावा। जेहने वली उत्कृष्ट चारित्रआराधना हुवे तेहने दर्शन आराधना नियमथकी उत्कृष्टीज हुवे पणि जघन्य मध्यम न हुवे प्रकृष्टचारित्रने प्रकृष्टदर्शन अनुगतपणाथकी, हिवे आराधनाभेदनो फलप्रदर्शनने अ र्थे कहेछे—उक्कोसियाणंभंते णाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जावअंतकरेइ। उत्कृष्टी हेभगवन् ज्ञानआराधनाप्रतें आराधीने केतला भवग्रहणकरी सीझे यावत सर्वदुःखनो अन्तकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अत्थेगइए तेणेवभवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतकरेइ। हेगौतम केत लाएक तिणेहीज भवग्रहणेकरी सीझे यावत् सर्वदुःखनो अन्तकरे। अत्थेगइएकप्पोवएसुवा कप्पातीएसुवा उववज्जइ। केतलाएक सौधर्मादिक देवलो

॥ टीका ॥

मध्यमोत्कृष्टचारित्राराधनासद्भाव इति ॥ तथा उक्कोसियण्णं भंते ! दंसणाराहण मित्यादौ एवचेवत्ति करणा तेणेवभवग्गहणेण सिज्झई त्यादि दृश्य,, तद्भवसिद्ध्यादिच तस्या स्या चारित्राराधनाया स्तत्रोत्कृष्टाया मध्यमाया श्चोक्तत्वादिति ॥ तथा उक्कोसियण्णंभंते ! चारित्ताराहण मित्यादि,, एवचेवत्ति करणा "तेणेवभवग्गहणेण मित्यादि दृश्य,, केवल तत्र अत्थेगइए कप्पोवगेसुवे त्यभिहित मिदतु तत्र वाच्य, मुत्कृष्टचारित्राराधनावत सौधर्मादिकल्पे घगमना द्धाच्य पुन "अत्थेगइए कप्पातीतएसु उववज्जइत्ति,, सिद्धिगमनाभाव तस्या नुत्तरसुरेषु गमना दतदेव दर्शयतोक्त ॥ नवरमित्यादि ॥ मध्यमज्ञानाराधनासूत्रे मध्यमत्व ज्ञानाराधनाया अविकृतभवएव निर्वाणभवे पुन रुत्कृष्टत्व मवश्य भावी त्यवसेय निर्वाणान्य

॥ मूल ॥

भंते! दंसणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं एवंचेव । उक्कोसियंणं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता एवंचेव, णवरं अत्थेगइए कप्पातीतएसु उववज्जइ । मज्झिमियंण भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भव

अनुवाद

कश्चि द्वितीयेन भवग्रहणेन सिध्यति याव दन्त करोति, अस्त्येक कश्चि त्कल्पोपगेषुवा कल्पातीतकेषुवो पपद्यते । उत्कृष्टा भं० । दर्शनारा

॥ भाषा ॥

कोपण देवनेमाहे ऊपजे ज्ञानआराधना उत्कृष्ट पणि चारित्रआराधना मध्यमने सद्भावें अथवा कल्पातीत ते ग्रैवेयकादि देवनेविषे ऊपजे मध्यमोत्कृष्ट चारित्रआराधनाने सद्भावें । उक्कोसियाणभंते दंसणाराहण आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ एवचेव । उत्कृष्ट हेभगवन् दर्शनआराधनाप्रतें आराधीने केतला भवग्रहणेंकरी सीझे इतिप्रश्न एवचेवत्ति, जिम ज्ञानाराधनायें कह्यो तिम कहवो । उक्कोसियाणभंते चरित्ताराहण आराहेत्ता एवचेव । उत्कृष्ट हेभगवन् चारित्रआराधनाप्रतें आराधीने केतलेभवे सीझे इमहीज एतले तेणेवभवग्गहणेहिं, इत्यादि कहवो । णवरअत्थेगइएकप्पातीए सुउववज्जइ । एतलविशेषछे केवल तिहा ,अत्थेगइएकप्पोवगेसुवा, इसो कह्यो ते इहा न कहवो उत्कृष्ट चारित्रआराधनावन्तने सोधर्मादि कल्पनेविषे जावनो न हुवे इहा सिद्धगमनअभावे तेहन अनुत्तरसुरने गमनछे । मज्झिमयणभंते णाणाराहणआराहेत्ताकइहिं भवग्गहणेहिंसिज्झइ जाव अतकरेइ । मध्यम ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ज्ञानाराधनाप्रतें आराधीने केतला भवग्रहणेंकरी सीझे यावत् सर्वदुखनो अतकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइ

॥ टीका ॥

यानुपपत्ते रिति ॥ दोच्चेणति ॥ अधिकृतमनुष्यजन्मापेक्षया द्वितीयेन मनुष्यभवेन ॥ तच्च पुण भवग्गहणाति ॥ अधिकृतमनुष्यभवग्रहणापेक्षया तृतीय मनुष्यभवग्रहण ॥ एताश्च चारित्राराधना सवलिता ज्ञानाद्याराधना इह विवक्षिता कथ मन्यथा जघन्यज्ञानाराधना माश्रित्य वक्ष्यति ॥ सत्त

॥ मूल ॥

ग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ ? गोयमा ! अत्थेगइए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ, तच्चं पुण भवग्गहणं णाइक्कमइ । मज्झिमियंणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता एवंचेव । एव मज्झिमियं चारित्ताराहणंपि । जहन्नियंणं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ

अनुवाद

धना माराध्य कतिभिः भवग्रहणैः सिध्यति ? एव चैव । उत्कृष्टा भदन्त ! चरित्राराधना माराध्यै व चैव । नवर मस्त्येक कश्चि दकल्पातीतके पूपपद्यते । मध्यमा भदन्त ! ज्ञानाराधना माराध्य कतिभि भवग्रहणै सिध्यति याव दन्त करोति ? गौतम ! अस्त्येक कश्चि द्वितीयेन भव ग्रहणेन सिध्यति याव दन्त करोति' तृतीय पुन भवग्रहण नातिक्रामति । मध्यमा भ० ! दर्शनाराधना माराध्यैव चैव । एव मध्यमा चरि

॥ भाषा ॥

ए दोच्चण भवग्गहणेणंसिज्झइ जाव अंतकरेइ तच्चपुण भवग्गहण णाइक्कमइ । हेगौतम केतलाएक दोय भवग्रहणेकरी सीझे तेकिम मध्यमपणें आराधनायेंकरी वर्त्तमानभवनेविषे निर्वाणने अभावे वली उत्कृष्टपणो अवश्यें हुसें एहवो जाणवो निर्वाणें उत्कृष्टपणा विना उत्पत्ति न हुवे ,दोच्चेणति, वर्त्तमानमनुष्य भवनी अपेक्षायें बीजेमनुष्य भवेंकरी वर्त्तमानमनुष्य भवग्रहण अपेक्षायें तृतीयमनुष्य भवउल्लंघे नही एतले बीजेभवे मोक्षजाय इत्यर्थ । मज्झिमएण दंसणाराहण आराहेत्ता एवचेव । मध्यम हेभगवन् दर्शनआराधना आराधीने केतले भवे सीझे इतिप्रश्न ,एवचेवत्ति, जिम मध्यम ज्ञानाराधनानो फलकह्यो तिम इहा पणिकहवो । एवंमज्झिमिय चरित्ताराहणंपि । इम मध्यमचारित्र आराधनानोफल पिण कहवो । जहण्णियणभते णाणाराहण । जघन्य ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ज्ञानआराधनाप्रतें । आराहेत्ताकइहि भवग्गहणेहि सिज्झइ जावअंतकरेइ । आराधीने केतले भवने ग्रहणेकरी सीझे यावत् सर्वदुःखनो अतकरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झइ जाव अंतकरेइ । हेगौतम । केतलाएक त्रीजेभवने ग्रहणे

ष्टभवग्रहणाइं पुण णाइक्कमइत्ति ॥ यत चारित्राराधनाया एवंद फल मुक्तं यदाह—अष्टभवाउचरित्तेत्ति ॥ श्रुतसम्यक्तदेशविरतिभवा स्त्वसङ्ख्येया उक्ता, स्तत अराराधनारहितज्ञानदर्शनाराधना असङ्ख्येयभविकाअपि भवन्ति भत्वष्टभविकाएवेति, अनन्तर जीवपरिणाम उक्तो ऽथ पुद्गलपरिणामाभिधानायाह ॥ कइविहेणं मित्यादि ॥ वणपरिणामेत्ति ॥ यत्पुद्गलो वर्णान्तरत्यागा द्वर्णान्तर या त्यसौ वर्णपरिणाम इत्येव मन्यत्रापि ॥

? गोयमा ! अत्थेगइए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ जाव अंतकरेइ सत्तठभवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ । एव दसणाराहणापि । एवंचरित्ताराहणापि । कइविहेणं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तंजहा—वण्णपरिणामे गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे संठाणपरिणामे ।

आराधनामपि । जघन्या भ० ! ज्ञानाराधना माराध्य कतिभि भवग्रहणै॰ सिध्यति याव दन्त करोति ? गौतम ! अस्त्येक कश्चि तृतीयेन भवग्रहणेन सिध्यति याव दन्त करोति, सप्ताष्टभवग्रहणान्पुन र्नातिक्रामति । एव दर्शनाराधना मपि । एव चरित्राराधना मपि ॥ कतिवि

करा साभ्र यावत् सर्वदुःखनो अतकरै वर्त्तमानमनुष्य भवनीअपेचायें त्रीजोभव जाणवो । सत्तठ भवग्गहणाइ पुणनाइक्कमइ । सात अथवा आठ भवग्रहणप्रतें वलो अतिक्रमें नही उल्लघंनही । एवदसणाराहणापि एवचरित्ताराहणापि । इम जघन्य दर्शनआराधनानों पणि फल कहवो इम चारित्रआराधनानो पणि फल कहवो अनंतरे जीवपरिणाम कह्यो, हिवे पुद्गलपरिणाम अभिधाननेकाजे कहेछे—कइविहेण भते पोग्गलपरिणामे प० । केतलेभेदे हेभगवन् ! पुद्गलपरिणाम कह्यो इतिप्रश्न उत्तर गोयमा पचविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० । हेगौतम । पाचेभेदे पुद्गलपरिणाम कह्यो ते कहेछे—वण्णपरिणामे गधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे सठाणपरिणामे। जे पुद्गल वर्णान्तर त्यागथकी वर्णान्तरप्रतें जाय ते वर्णपरिणाम इम गधान्तर त्यागथकी गन्धान्तरे जाय ते गन्धपरिणाम २ रसांतर त्यागथकी रसांतरे जाय ते रसपरिणाम ३ स्पर्शान्तरत्यागथी स्पर्शान्तरपरिणामे जाय ते स्पर्शपरिणाम ४ । जे सस्थानत्यागकरी पुद्गलसस्थानान्तरे जाय ते स्थानपरिणाम ५। वण्णपरिणामेणभते कइविहे प० । वर्णपरिणाम हेभगवन् केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्त

॥ टीका ॥ परिमंडलसंठाणपरिणामेत्ति ॥ इह परिमंडलसंस्थानं वलयाकारं यावत्करणाच्च "वट्टसंठाणपरिणामे तंससंठाणपरिणामे चउरंससंठाणपरिणामेत्ति

॥ मूल ॥ वन्नपरिणामेणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—कालवन्नपरिणामे जाव सुक्किल्लवन्नपरिणामे, एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे । संठाणपरिणामेणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आयतसंठाणपरिणामे । एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे किं दव्वं १, दव्वदेसे २, दव्वा

अनुवाद: र्णः भ० । पुद्गलपरिणामः प्रज्ञप्तो ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा—वर्णपरिणामो गन्धपरिणामो रसपरिणामः स्पर्शपरिणामः संस्थानपरिणामः । वर्णपरिणामो भ० । कतिविधः प्रज्ञप्तो ? गौ० ! पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा—कालवर्णपरिणामो यावत् शुक्लवर्णपरिणामः, एवमेतेनाभिलापेन गन्धपरिणामो द्विविधो, रसपरिणामः पञ्चविधः, स्पर्शपरिणामोऽष्टविधः । संस्थानपरिणामो भ० ! कतिविधः प्रज्ञप्तो ? गौतम ! पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा—परिमण्डलसंस्थानपरिणामो यावत् आयतसंस्थानपरिणामः ॥ एको भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशः किं द्रव्य

॥ भाषा ॥ र। गोयमा पचविहे प० त० । हेगौतम। पांचभेदे कह्या ते कहेछे, कालवर्णपरिणाम १ नील २ लोहित ३ हारिद्र ४ यावत् शुक्लवर्ण परिणाम ५। एव एएणं अभिलावेण गंधपरिणामे दुविहे । इम इणे आलावेंकरी गन्धपरिणाम बेहुभेदे कहवो । रसपरिणाम पचविहे । रसपरिणाम तिक्तादि पचभेदे कहवो। फासपरिणामे अट्ठविहे । स्पर्शपरिणाम शीतादि आठभेदे कहवो । संठाणपरिणामेण भंते कइविहे प० । संस्थानपरिणाम हेभगवन् । केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहे प० त० । हेगौतम पांचभेदे कह्या ते कहेछे—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव आयतसंठाणपरिणामे । परिमंडलसंस्थान परिणाम ते वलयाकार कहवो यावत् करणथी वट्टसंठाणपरिणामे चउरंससंठाणपरिणामे यावत् आयतसंस्थान परिणाम एतलो कहवो पुद्गलना अधिकारथीज कहेछे—एगेभंतेपोग्गलत्थिकायपएसे किंदव्व दव्वदेसे दव्वाइ दव्वदेसा । एक हेभगवन् । एकादि पुद्गलराशि तेहनोप्रदेश निरंश अंश ते परमा

॥ टीका ॥

द्रव्य „ पुद्गलाधिकारादिद माह ॥ एगे भंते ! पोग्गलत्थिकाए इत्यादि ॥ पुद्गलास्तिकायस्य एकाणुकादिपुद्गलराशेः प्रदेशो निरंशो ऽश पुद्गलास्ति कायप्रदेशः परमाणु द्रव्य गुणपर्याययोगि, द्रव्यदेशो द्रव्यावयव, एव मेकत्वबहुत्वाभ्या प्रत्येक विकल्पा श्चत्वारो द्विकसयोगा अपि चत्वार एवे ति प्रश्न, उत्तरन्तु स्याद् द्रव्य द्रव्यान्तरासम्बन्धेसति, स्याद् द्रव्यदेशो द्रव्यान्तरसम्बन्धेसति' शेषविकल्पानातु प्रतिषेध परमाणो रेकत्वेन बहु

॥ मूल ॥

इं ३, दव्वदेसा ४, उदाहु दव्वंच दव्वदेसेय ५, उदाहु दव्वंच दव्वदेसाय ६, उदाहु दव्वाइंच दव्वदेसेय ७, उदाहु दव्वाइंच दव्वदेसाय ८, ? गोयमा ! सियदव्व, सियदव्वदेसे, नोदव्वाइ, नोदव्वदेसा, नोदव्वंच

अनुवाद

१, द्रव्यदेशो २, द्रव्याणि ३, द्रव्यदेशा ४, उताहो ! द्रव्यच द्रव्यदेशश्च ५, उताहो द्रव्यच द्रव्यदेशाश्च ६, उताहो द्रव्याणिच द्रव्यदेशश्च ७, उताहो द्रव्याणिच द्रव्यदेशाश्च ८, ? गौतम ! स्याद् द्रव्य १, स्याद् द्रव्यदेशो २' नोद्रव्याणि ३, नोद्रव्यदेशा' ४' नोद्रव्यच द्रव्यदेशश्च ५,

॥ भाषा ॥

णू इत्यर्थ स्यू द्रव्य द्रव्य ते गुण पर्याययुक्त १ द्रव्यदेश कहिये द्रव्यनो अवयव २ एतलेद्रव्य १ द्रव्यदेश २ ए एकत्वना दोयभेद तिम बहुवचनना दोयभेद घणाद्रव्य ३ घणाद्रव्यना देश ३ एवविकल्प ४ इम द्विकसयोगे पणि विकल्प ४ । उदाहुदव्वच दव्वदेसेय । अथवा द्रव्य अने द्रव्यनोदेश ५ ए पचमो विक ल्प ५ । उदाहुदव्वचदव्वदेसाय उदाहुदव्वाइंच दव्वदेसेय । अथवा द्रव्य अने घणाद्रव्यदेश ए छट्ठोविकल्प ६ अथवा बहुद्रव्य एकद्रव्यदेश ए सातमो विक ल्प ७ । उदाहुदव्वाइंचदव्वदेसाय । अथवा घणाद्रव्य घणाद्रव्यनादेश ए आठमो विकल्प ८ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियदव्व सियदव्वदेसे णोदव्वाइ णोदव्वदेसा णोदव्वंच दव्वदेसेय । हेगौतम । कदाचित् द्रव्य द्रव्यान्तरथकी वेगलोछता परिमाणुरूप द्रव्यकहवाय १ कदाचित् द्रव्यदेश द्रव्यान्तर स्यू मिल्यो ते द्रव्यदेश कहवाय ए वे वे विकल्पहुवे शेषभांगा ६ नो प्रतिषेध करवो परमाणुनो एक तिहा बहुत्व अने द्विकसंयोगनो अभावछे ते देखाडेछे घणाद्रव्यनही ३ द्रव्यनादेश घणानही ४ द्विकसयोगे तथा द्रव्य द्रव्यनोदेश नही ५ । णोदव्वच दव्वदेसा । द्रव्य तथा द्रव्यनाघणादेश नही ६ । णोद व्वाइ चदव्वदेसेय । घणांद्रव्य अने द्रव्यनो एकदेश ते पणिनही ७ । णोदव्वाइंच दव्वदेसाय । घणाद्रव्य घणा द्रव्यनादेश पणिनही ८ ए छ निषेध करवा।

॥ टीका ॥

त्वस्य द्विकसंयोगस्यचा भावादिति ॥ दोभंते इत्यादि ॥ इहाष्टासु भंगकेषु मध्ये आद्याः पञ्च भवन्ति नशेषा स्तत्र द्वौ प्रदेशौ स्याद् द्रव्यं कथं यदा तौ द्विप्रदेशिकस्कन्धतया परिणतौ तदा द्रव्य, यदातु द्व्यणुकस्कन्धभावगतावेव तौ द्रव्यान्तरसम्बन्धं मुपगतौ तदा द्रव्यदेश २॥ यदातु तौ द्वावपि भेदेन व्यवस्थितौ तदा द्रव्ये ३ ॥ यदातु तावेव द्व्यणुकस्कन्धता मनापद्य द्रव्यान्तरेण सम्बन्धं मुपगतौ तदा द्रव्यदेशौ ४ ॥ यदा पुन स्तयो रेक केवलतया स्थितो द्वितीयश्च द्रव्यान्तरेण सम्बद्ध स्ततो द्रव्यञ्च द्रव्यदेशश्चेति पंचम , शेषविकल्पानातु प्रतिषेधो ऽसम्भवादिति ॥ तिन्निभंते इत्यादि ॥ त्रिषु प्रदेशे

॥ मूल ॥

दव्वदेसेय, नोदव्वंच दव्वदेसाय, नोदव्वाइंच दव्वदेसेय, नोदव्वाइंच दव्वदेसाय। दो भंते! पोग्गलत्थिकाय प्पएसा किंदव्वं दव्वदेसे पुच्छा? गोयमा! सियदव्वं, सियदव्वदेसे, सियदव्वाइं, सियदव्वदेसा, सिय दव्वंच दव्वदेसेय, नोदव्वंच दव्वदेसाय, सेसापडिसेहेयव्वा। तिन्नि भंते! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वं दव्वदेसे

अनुवाद

नोद्रव्यंच द्रव्यदेशाश्च ६, नोद्रव्याणिच द्रव्यदेशश्च ७ नोद्रव्याणिच द्रव्यदेशाश्च ८ ॥ द्वौ भदन्त । पुद्गलास्तिकायप्रदेशौ किं द्रव्य १, द्रव्यदेशः २ पृच्छा ? गौतम ! स्याद्द्रव्य १, स्याद्द्रव्यदेशः २, स्याद्द्रव्ये ३, स्याद्द्रव्यदेशौ ४, स्याद्द्रव्यञ्च द्रव्यदेशश्च ५, नोद्रव्यञ्च द्रव्यदेशाश्च शेषा प्रतिषेधयितव्या ॥ त्रयो भदन्त । पुद्गलास्तिकायप्रदेशा किं द्रव्य द्रव्यदेश पृच्छा गौतम ! स्याद्द्रव्य १' स्याद्द्रव्यदेश २, एव सप्त भङ्गा

॥ भाषा ॥

दोभंतेपोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वदव्वदेसे पुच्छा तहेव। दोय हेभगवन् । पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्यूं द्रव्यइत्यादि, आठ विकल्प पूछवा इहा आठविकल्पनाहे पहिला पाचमा भागाहुवे, शेष तीनविकल्पनो प्रतिषेध करवो ते देखाडेछे—गोयमा सियदव्व सियदव्वदेसे सियदव्वाइं सियदव्वदेसा। हेगौतम। कदाचित् द्रव्य जिवारे ते बेप्रदेश स्कन्धपणे परिणम्या तिवारे द्रव्य १ अने जिवारे ते द्व्यणुक स्कन्धभावे गयाथकाज ते बेऊ द्रव्यान्तर सम्बन्धप्रते उपगतथया तिवारे द्रव्यदेश २ जिवारे ते बेऊ पणिभेदेकरी रह्या तिवारे ते बेऊद्रव्य इसो कहियै ३। सियदव्वचदव्वदेसेय णोदव्वचदव्वदेसाय सेसापडिसेहेयव्वा। जिवारे तेहीजद्व्यणुक स्कन्धपणो अणपाम्या द्रव्यान्तरे करी सबधप्रते उपगतथया तिवारे ते द्रव्य देशोन इसोकहियै ४ वली जिवारे ते

॥ टीका ॥

द्यष्टमविकल्पवर्ज्जा सप्त विकल्पा सम्भवन्ति' तथाहि–यदा त्रयोपि त्रिप्रदेशिकस्कन्धतया परिणता स्तदा द्रव्य १॥ यदातु ते त्रिप्रदेशिकस्कन्धतया परिणता एव द्रव्यान्तरसम्बन्ध मुपगता स्तदा द्रव्यदेश २॥ यदा पुन स्ते त्रयोपि प्रदेशा व्यवस्थिता द्वौवा, द्व्यणुकी भूता वेकस्तु केवलएव स्थित स्ततो "द्रव्याइति ३॥ यदातु ते त्रयोपि स्कन्धता मगता एव द्वौवा, द्व्यणुकीभूता वेकस्तु केवल मव मित्येव द्रव्यान्तरेण सम्बद्धा स्तदा "दव्वदेसा इति ४॥ यदातु तेषा द्वौ द्व्यणुकतया परिणता वैकश्च द्रव्यान्तरेण सम्बद्धो ऽथवा, एक केवलएव स्थितो द्वौतु द्व्यणुकतया परिणम्य द्रव्यान्तरेण सम्बद्धौ तदा "दव्वं च दव्वदेसेयत्ति ५॥ यदातु तेषा मेक केवलएव स्थितो द्वौच प्रदेशेन द्रव्यान्तरेण सबद्धौ तदा "दव्वं च दव्वदेसाय त्ति ६॥ यदा

॥ मूल ॥

पुच्छा ? गोयमा ! सियदव्वं १, सियदव्वदेसे २, एव सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सियदव्वाइंच दव्वदेसेय

अनुवाद

भणितव्या यावत्स्याद्द्रव्याणिच द्रव्यदेशश्च ७, नोद्रव्याणिच द्रव्यदेशाश्च ॥ चत्वारो भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशा किंद्रव्य १' द्रव्यदेश २, पृच्छा

॥ भाषा ॥

बेऊ माहिला एक केवलपणे रह्यो बीजो, द्रव्यान्तर संघाते सबध तिवारे द्रव्य अने द्रव्यदेश ५ शेष विकल्प तीनभी निषेधकरवो असम्भवथको । तिणि भतेपोग्गलत्थिकायप्पदेसा किंदव्व दव्वदेसा पुच्छा । तीन हेभगवन् ! पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्यूं द्रव्य इत्यादि, भाठ प्रश्न पूछ्या उत्तर । गोयमा सियद व्व सियदव्वदेसे एवसत्तभंगाभाणियव्वा । हेगौतम ! तीनप्रदेशनेविषे एक भाठना विकल्पवर्ज्जीने शेष सातविकल्प सम्भवे ते देखाडेछे–जिवारे तीनेई त्रिप्रदेशिक स्कन्धपणे परिणम्या तिवारे द्रव्य १ जिवारे त्रिप्रदेशिक स्कन्धपणे परिणतथका द्रव्यान्तर सबंधे उपगतथया तिवारे द्रव्यदेश २ जिवारे वली ते तीनेई भेदेकरी रह्या अथवा दोय द्व्यणुकभूत अने एक केवल एकलोज रह्यो तिवारे द्रव्याइति, ३ जिवारे ते तीनेई स्कन्धपणा प्रते अनागतरो ज अथवा दोय द्व्यणुकीभूत एकतो केवलोज द्रव्यान्तरसघाते सबद्ध तिवारे द्रव्यदेशा इति ४ जिवारे तेहना दोय द्व्यणुकपणे परिणम्या अने एक द्रव्या न्तरसघाते सबद्ध अथवा एक केवलहीज रह्यो दोय द्व्यणुकपणे परिणम्या द्रव्यान्तरसघाते सबद्धथया तिवारे दव्वंचदव्वदेसेयत्ति, ५ जिवारे तेहनो एक केवलहीज रह्यो दोयभेदेकरी द्रव्यान्तरसघाते सबद्धथया तिवारे दव्वंचदव्वदेसायत्ति, ६ जिवारे वली तेहना दोयभेदेकरी रह्या एक द्रव्यान्तरसघात

॥ टीका ॥

अष्टमविकल्पस्तु नच भवति, उत्तयत्र त्रिषु प्रदेशेषु पुन स्तेषां द्वौ प्रदेन स्थितौ वैकश्च द्रव्यान्तरेण सम्बद्ध स्तदा "दव्वाइच दव्वदेसेयत्ति ७॥ अनन्तर परमाण्वादिवक्तव्यतोक्ता परमाण्वा बहुवचनाभावात्' प्रदेशचतुष्टयादौ त्वष्टमोपि सम्भव त्युभयत्रापि बहुवचनसद्भावा दिति, दयश्च लोकाकाशप्रदेशावगाहिनो भवन्तीति तद्वक्तव्यता माह ॥ कवइयाण मित्यादि ॥ असखेज्जत्ति ॥ यस्मा दसङ्ख्येयप्रदेशिको लोक स्तस्मा त्तस्य प्रदेशा असङ्ख्याएवेति, प्रदेशाधिकारा देवेद माह ॥ एगमेगस्सेत्यादि ॥ एकैकस्य जीवस्य तावन्तः प्रदेशा यावन्तो लोकाकाशस्य, कथ यस्मा

॥ मूल ॥

नोदव्वाइच दव्वदेसाय । चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्व पुच्छा? गोयमा ! सियदव्वं सियदव्व देसे अठवि भंगा भाणियव्वा । जाव सियदव्वाइच दव्वदेसाय जहा चत्तारि भणिया एवं पंच छ सत्त जाव संखेज्जा असखेज्जा अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वं एवंचेव जाव सियदव्वाइंच दव्वदेसाय ।

अनुवाद

गौतम ! स्याद्द्रव्य स्याद्द्रव्यदेशो इत्यादि भङ्गा भणितव्या याव तस्याद्द्रव्याणिच द्रव्यदेशाश्च यथा चत्वारो भङ्गा भणिता एव पञ्च षट् सप्त याव त्सङ्ख्या असङ्ख्या । अनन्ता भदन्त ! पुद्गलास्तिकायप्रदेशा किंद्रव्य मेव चैव याव तस्याद्द्रव्याणिच द्रव्यदेशाश्च ॥ कति भदन्त ! लोकाकाश

॥ भाषा ॥

सवद्ध तिवारे दव्वाइ चदव्व देसेयत्ति ७। जावसियदव्वाइच दव्वदेसेव णोदव्वाइच दव्वदेसाय। यावत् आठमोविकल्प तो न सम्भवे बेउ स्थानके तीन प्रदेशनेविषे बहुवचनना अभावथको प्रदेश चार आदिदेईने तेहनेविषे आठमोविकल्प पणि सम्भवे बेउस्थानकानेविषे बहुवचनना सद्भावथको। चत्तारि भंते पोग्गलत्थिकायप्पएसा किंदव्वपुच्छा। चार हेभगवन् ! पुद्गलास्तिकायप्रदेश स्यू द्रव्य इत्यादि, आठविकल्पनो प्रश्न पूछ्यो उत्तर। गोयमा सियदव्व सियदव्वदेसे अठविभंगा भाणियव्वा। हेगौतम। किवारे द्रव्यदेश २ इम आठेई विकल्प इहा सम्भवे तेहनी भावना पूर्वापरे कहवी। जावसियदव्वा इच दव्वदेसाय। यावत् कदाचित् घणाद्रव्य घणांद्रव्यनादेश ८ ए आठमोविकल्प जाणवो। जहाचत्तारिभणिया। जिम चारप्रदेशनेविषे आठविकल्पनो सम्भवकह्यो। एव पच छ सत्त जाव असंखेज्जा। इम पाच छ सात यावत् असख्यातप्रदेशनेविषे आठेई विकल्प सम्भवे ते कहवा। अणताभंतेपोग्गल

ज्जीव केवलिसमुद्घातकाले सर्वं लोकाकाशं व्याप्या वतिष्ठते तस्मा ल्लोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्त इति, जीवप्रदेशाश्च प्राय कर्मप्रकृतिभि रनुगता

केवइयाणं भंते ! लोयागासप्पएसा पण्णत्ता ? गो० ! असंखेज्जा लोयागासप्पएसा पण्णत्ता । एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स केवइया जीवप्पएसा पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोयागासप्पएसा एगमेगस्सणं जीवस्स एवइया जीवप्पएसा प० । कइविहाणं भंते ! कम्मपगडीओ प० ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ प०, तं०

प्रदेशा प्रज्ञप्ता गौतम । असंख्येया लोकाकाशप्रदेशाः प्रज्ञप्ता । एकैकस्य भदन्त । जीवस्य कति प्रदेशा प्रज्ञप्ता ? गौतम । यावन्तो लोकाकाशप्रदेशा एकैकस्य जीवस्य तावन्तो जीवप्रदेशाः प्रज्ञप्ताः । कतिविधा भदन्त । कर्मप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । अष्टौ कर्मप्रकृतय प्रज्ञप्ता

स्तिकायप्पएसा किंदव्व एवचेव । अनन्ता हेभगवन् । पुद्गलास्ति कायप्रदेश स्यू द्रव्यदेश इत्यादि, आठप्रश्नपूछ्या उत्तर हेगौतम । एवचेवत्ति, पूर्वे जिम चार प्रदेशादिकनेविषे आठविकल्प कह्या तिम इहां पणिकहवा, यावत् कदाचित् घणाद्रव्य घणा द्रव्यनादेश ए आठमोविकल्प अनन्त परमाणादि वक्तव्यता ते परमाणादिक लोकाकाश प्रदेशावगाही हुवे तेमाटे लोकाकाश वक्तव्यता कहेछे—केवइयाणभंते लोगागासप्पदेसा पं० । केतला हेभगवन् लोकाकाश प्रदेश कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जा लोगागासप्पएसा पं० । हेगौतम । असंख्यात लोकाकाशप्रदेश प्ररूप्या जे कारणथकी असंख्येयप्रदेशिकछे ते कारणे तेहनाप्रदेश असंख्याता कह्या प्रदेशना अधिकारथकीज कहेछे—एगमेगस्सणभंते जीवस्स केवइयाजीवप्पएसा प० । एकेक हे भगवन् जीवना केतला जीवप्रदेश प्ररूप्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जावइयालोगागासपएसा एगमेगस्सण जीवस्सएवइया जीवप्पदेसा प० । हेगौतम जेतला लोकाकाशना प्रदेश तेतला एकेकजीवना प्रदेश तेकिम जे कारणथकी जीव केवलसमुद्घात कालनेविषे सर्व लोकाकाश व्यापीने रहेछे तेमाटे लोकाकाशप्रमाण एकेकजीवना एतला जीवप्रदेश कह्या जीवप्रदेश प्राये कर्मप्रकृति करी अनुगतछे तेमाटे कर्मप्रकृति वक्तव्यता कहेछे—कइविहभंतेकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ । केतलो ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तं० । हेगौतम ! आठकर्मप्र

॥ टीका ॥ इति तद्वक्तव्यता मभिधातु माह ॥ कइणमित्यादि ॥ अविभागपलिच्छेदत्ति ॥ परिच्छिद्यन्त इति परिच्छेदा अंशा स्तेच सविभागाअपि भवन्त्य तो विशेष्यन्ते, अविभागाश्च ते परिच्छेदाश्चे त्यविभागपरिच्छेदा निरंशा अंशा इत्यर्थ, स्तेच ज्ञानावरणीयस्य कर्मणो ऽनन्ता, कथ ज्ञानावरणी य यावतो ज्ञानस्याविभागभदा नावृणोति तावन्तएव तस्या विभागपरिच्छेदा दलिकापेक्षयावा; ऽनन्ततत्परमाणुरूपा. ॥ अविभागपलिच्छेदेहि

॥ मूल ॥ नाणावरणिज्जं जाव अंतराइय । नेरइयाणं भंते ! कइ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अठ । एवं सव्वजीवाणं अठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं । नाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स के वइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । नेरइयाणं भंते !

॥ अनुवाद ॥ स्तद्यथा–ज्ञानावरणीय यावदान्तरायिक ॥ नैरयिकाणा भदन्त ! कति कर्मप्रकृतय प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अष्टौ । एव सर्वजीवाना मष्टौ कर्मप्रकृतय स्थापयितव्या याव द्वैमानिकाना । ज्ञानावरणीयस्य भदन्त ! कर्मणा कति अविभागपरिच्छेदा. प्रज्ञप्ता ? गौ० ! अनन्ता अविभागपरिच्छेदा.

॥ भाषा ॥ कृति कही ते कहैछे—णाणावरणिज्ज जावअंतराइय । ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ इम यावत् अन्तरायलगे कहवो । णेरइयाणभंते कइकम्मपग डीओ पणत्ताओ । नारकीने हेभगवन् । केतली कर्मनी प्रकृति कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठकम्मपगडीओ पणत्ताओ । हेगौतम । आठ कर्मप्रकृति कही । एवसव्वजीवाण । इम सर्व जीवाने । अट्ठकम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ । आठ कर्मनी प्रकृति कहवी । जावविमाणियाण । यावत् वैमानिकलगे क हवो । णाणावरणिज्जस्सणभंते कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा पणत्ता । ज्ञानावरणीयना हेभगवन् । कर्मना केतला अविभाग पलिच्छेद कह्या, जे हना विभाग नथाय एहवा जे पलिच्छेद कहता भाग खण्ड कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणता अविभाग पलिच्छेदा प० । हेगौतम । ज्ञानावर णीय जेमाटे ज्ञानना अविभागपलिच्छेदा प्रतें आवरे तेतलाहीज तेहना अविभाग पलिच्छेद अथवा दलिक अपेचायें अनन्त तत्परमाणु रूप । णेर इयाणभंते णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइआअविभागपलिच्छेदा प० । नारकीने हेभगवन् । ज्ञानावरणीय कर्मना केतला अविभागपलिच्छेद परमाणु

॥ टीका ॥

ति ॥ तत्परमाणुत्ति ॥ आवेढियपरिवेढियत्ति ॥ आवेष्टितपरिवेष्टितो ऽत्यन्तं वेष्टित इत्यर्थ., आवेष्ट्य परिवेष्टित इतिवा ॥ सिय वेढिय

॥ मूल ॥

नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता एवं सव्वजीवाणं । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्हवि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं अंतराइयस्स । एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवप्पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढियपरिवेढिए ? गोयमा ! सियआवेढियपरिवे

अनुवाद

प्रज्ञप्ता । नैरयिकाणां भदन्त ! ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः कति अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अनन्ता अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ता एवं सर्वजीवानां यावत् वैमानिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ता अविभागपरिच्छेदाः प्रज्ञप्ता । एवं सर्वजीवानां । एवं यथा ज्ञानावरणीयस्याविभागपरिच्छेदा भणिता स्तथा ष्टानामपि कर्मप्रकृतीनां भणितव्या यावत् वैमानिकानां मन्तरायस्य । एकैकस्य भदन्त ! जीवस्यैकैको जीवप्रदेशो

॥ भाषा ॥

दलिकरूप कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणंता अविभागपलिच्छेदा प० । हेगौतम अनन्ता अविभागपलिच्छेद कह्या भावना पूठिलीपरे । एवंसव्व जीवाणं । इम सर्व जीवने । जाववेमाणियाणपुच्छा । यावत् वैमानिकनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा अणंता अविभाग पलिच्छेदा प० । हेगौतम अनन्ता अविभागपलिच्छेद कह्या । एवं जहा णाणावरणिज्जस्सअविभागपलिच्छेदाभणिया । इम जिम ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपलिच्छेद कह्या । तहा अट्ठण्हकम्मपगडीण भाणियव्वा । तिम आठेई कर्मप्रकृतिना कहवा । जाववेमाणियाण । यावत् वैमानिक ताई कहवा । अंतराइयस्सएगमेगस्सणंभंते जीवस्स एगमेगे जीवप्पदेसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय परिवेढिए । अन्तरायना पणि इमज कहवा एकेकहेभगवन् ! जीवनो एकेक जीवप्रदेश ते ज्ञानावरणीय कर्मने केतले अविभागपलिच्छेदे परमाणुएकरीने आसमस्तप्रकारे वेष्टित परिवेष्टित रह्याछे अ

॥ टीका ॥ सर्वेष्वपि ज्ञानावरणीयाविभागपरिच्छेदै रावेष्टनपरिवेष्टनाभावा दिति ॥ मणूसस्स परिवेढिएत्ति ॥ केवलिनं प्रतीत्य तस्य क्षीणज्ञानावरणत्वेन तत्प्रदेशस्य ज्ञानावरणीयाविभागपरिच्छेदै रावेष्टनपरिवेष्टनाभावा दिति ॥ मणूसस्स जहा जीवस्सत्ति ॥ सियआवेढियेत्यादि वाच्य मित्यर्थो, मनुष्यापेक्षया आवेष्टितपरिवेष्टितत्वस्य तदितरस्यच सम्भवात्, एव दर्शनावरणीयमोह

॥ मूल ॥ ढिए सिय नोआवेढियपरिवेढिए । जइ आवेढियपरिवेढिए नियमा अणंतेहिं । एगमेगस्सणं भंते ! नेर इयस्स एगमेगे जीवप्पएसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढियपरिवे ढिए ? गोयमा ! नियम अणंतेहिं जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवरं मणूसस्स जहा जीव

अनुवाद ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः कतिभि रविभागपरिच्छेदै रावेष्टितपरिवेष्टित. ? गौतम । स्या दावेष्टितपरिवेष्टित. स्या न्नो आवेष्टितपरिवेष्टित । य द्यावेष्टितपरिवेष्टितो, नियमा दनन्तै । एकैकस्य भ० । नैरयिकस्यै कैको जीवप्रदेशो ज्ञानावरणीयस्य कर्मण कतिभि रविभागपरिच्छेदै रा वेष्टितपरिवेष्टित. ? गौतम । नियमा दनन्तै , । यथा नैरयिकस्यै व याव द्वैमानिकस्य नवर मनुष्यस्य यथा जीवस्य । एकैकस्य भ० । जीवस्यै

॥ भाषा ॥ सियणोआवेढिय परिवेढिए । हेगौतम कदाचित् समस्तप्रकारे अत्यन्त वेष्टित नथीहोय, केवलीमतें आश्रयीने ते टाइने क्षीणज्ञानावरणपणेकरी तेहनाप्रदेशने ज्ञानावरणीय अ त्यन्त वेष्टित इत्यर्थ, इतिप्रश्न । उत्तर गोयमा सिय आवेढिय परिवेढिए । हेगौतम कदाचित् समस्तप्रकारे अत्यन्त वेष्टित थीटियाछे । सियणोआवेढिय परिवेढिए । कदाचित् समस्तप्रकारे अत्यन्तवेष्टित नही तेकिम केवलीमतें आश्रयीने ते टाइने क्षीणज्ञानावरणपणेंकरी तेहनाप्रदेशने ज्ञानावरणीय अ विभागपलिच्छेदेंकरी आवेष्टनना अभावथकी । जइआवेढिय परिवेढिए णियमा अणतेहि । जो अत्यन्त समस्तप्रकारे वेष्टितछे तो नियमथकी अनन्त अविभाग पलिच्छेदे परमाणुओ आवेष्टितछे परिवेष्टितछे । एगमेगस्सणभते णेरइयस्स । एकेकने हेभगवन् । नारकीने । एगमेगजीवप्पदेसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय परिवेढिए । एकेक जीवप्रदेशनें ज्ञानावरणीयकर्मने केतलेकरी अविभागपलिच्छेदेंकरी आवेष्टित परि वेष्टित हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणंतेहि । हेगौतम । नियमथकी अनन्ते करी । जहाणेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स । जिम नारकीने कह्यो इम यावत् वेमानिक लगे कहवो । णवर मणूसस्स जहा जीवस्स । एतलोविशेष मनुष्यने जिम जीवने कह्यो तिम कहवो । एगमेगस्सणभते जीवस्स एगमेगे जी

॥ टीका ॥

नीयान्तरायेष्वपि वाच्य' वेदनीयायुर्नामगोत्रेषु पुन र्जीवपदे एव भजना वाच्या सिद्धापेक्षया मनुष्यपदे तु नासौ तत्र वेदनीयादीना भावा दित्ये तदेवाह ॥ नवरं वेयणिज्जस्सेत्यादि ॥ अथ ज्ञानावरण ज्ञेये सह चिन्त्यते ॥ जस्सणमित्यादि ॥ जस्स णं वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज सियअत्थियसिय

॥ मूल ॥

स्स । एगमेगस्सणं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवप्पएसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं एवं जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं । नवरं वेयणिज्जस्स आउयस्स नामस्स गोयस्स गोयमा ! एएसिं चउण्हवि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स

॥ अनुवाद ॥

कैको जीवप्रदेशो दर्शनावरणीयस्य कर्मणः कतिभि रेव यथैव ज्ञानावरणीयस्य तथैव दण्डको भणितव्यो याव द्वैमानिकस्यैव याव दन्तराय स्य भणितव्य नवरं वेदनीयस्या युषो नाम्नो गोत्रस्य गौतम ! एतेषा चतुर्णा मपि कर्मणा, मनुष्यस्य यथा नैरयिकस्य तथा भणितव्य शेष तच्चैव ॥ यस्य भ० ! ज्ञानावरणीय तस्य दर्शनावरणीय यस्य दर्शनावरणीय तस्य ज्ञानावरणीय ? गौतम ! यस्य ज्ञानावरणीय तस्य दर्शनाव

॥ भाषा ॥

वप्पदेसे । एकेकने हेभगवन् जीवने एकेक जीवप्रदेश ते । दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं । दर्शनावरणीयकर्मने केतले अविभागपलिच्छेदे आवे ष्टित परिवेष्टित छे ए इतिप्रश्न उत्तर । एवंजहेव णाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो । इम जिमहीज ज्ञानावरणीयकर्म कह्यो तिमहीज दंडक कहवो । जाव वेमाणियस्स एवंजाव अंतराइयस्स भाणियव्वा । यावत् वैमानिकलगे कहवो इम यावत् अन्तरायकर्मलगे कहवो । णवरंवेदणिज्जआउ वस्साना मस्सगोयस्स । एतलोविशेष वेदनीय आउखो नाम गोत्रने जीवपदनेविषे भजना करवी, सियआवेढिय परिवेढिए सिय नोआवेढियपरिवेढिए, एहवी भजना करवी सिद्धनी अपेक्षायेंकरी पणि मनुष्यपदनेविषे सर्वत्र वेदनीय आउखो नाम गोत्रना भावथकी एतलामाटेज कहेछे—वेदनीयआउ नाम गोत्र। एएसिंचउ ण्हवि कम्माण मणूसस्स जहा णेरइयस्स तहा भाणियव्वं सेसतहेव । ए च्यारे कर्मने मनुष्य ने जिम नारकीने कह्यु तिम कहवो शेष सर्व तिमहीज कह वो, हिवे ज्ञानावरणीय कर्मसवाते चिन्तवेछे—जस्सणं भंते णाणावरणिज्ज तस्सदरिसणावरणिज्ज । जेहने हेभगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने दर्शना

॥ टीका ॥
नत्थित्ति ॥ अकेवलिनं केवलिनच प्रतीत्या, केवलिनोहि वेदनीय ज्ञानावरणीय चास्ति, केवलिनस्तु वेदनीयमस्ति नतुज्ञानावरणीयमिति ॥ ज

॥ मूल ॥
तहा नाणियव्वं सेसंतंचेव। जस्सणं भंते! नाणावरणिज्ज तस्स दंसणावरणिज्जं जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गो० ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स दसणावरणिज्ज नियमं अत्थि। जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स वि नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि १। जस्सणं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं जस्स वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज नियमं अत्थि, जस्सपुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सियअत्थि सियनत्थि २। जस्सपुण भंते! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं जस्स मोहणिज्जं

॥ अनुवाद ॥
रणीय नियमा इस्ति, यस्य दर्शनावरणीय तस्यापि ज्ञानावरणीय नियमा इस्ति १। यस्य भ०। ज्ञानावरणीय तस्य वेदनीय यस्य वेदनीय तस्य ज्ञानावरणीय ? गौतम। यस्य ज्ञानावरणीयं तस्य वेदनीय नियमा इस्ति यस्यपुन वेदनीय तस्य ज्ञानावरणीय स्या इस्ति स्या नास्ति २।

॥ भाषा ॥
तथा जेहने दर्शनावरणीयकर्महुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्महुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा ज वरणीयकर्महुवे। जस्सदरिसणावरणिज्ज तस्सणाणावरणिज्ज। हेगौतम। जेहने ज्ञानावरणीय कर्म हुवे तेहने दर्शनावरणीयकर्म निश्चयथको हुवे। जस्सदरि स्स णाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्जं णियम अत्थि। तथा जेहने दर्शनावरणीय कर्महुवे तेहने पण ज्ञानावरणीयकर्म निश्चयथको हुवे सहचारिपणाथ सणावरणिज्ज तस्सवि णाणावरणिज्जं णियम अत्थि। तथा। जस्सवेयणिज्ज को वली गौतम पूछेछे—जस्सणभंते णाणावरणिज्ज तस्सवेयणिज्ज। जेहने हेभगवन्। ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सणाणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज णियमअत्थि। हे तस्स णाणावरणिज्ज। जेहने वेदनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे गौतम जेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथको हुवे। जस्स पुण वेयणिज्जं तस्सणाणावरणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि। जेहने वली वेद नीयकर्महुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे तेकिम अकेवलीने वेदनीय ज्ञानावरणीय दोनोंछे केवलीने वेदनीयछे अने ज्ञानावरणी

॥ टीका ॥

स्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सियअत्थि सियनत्थित्ति ॥ अक्षपक क्षपकच प्रतीत्य, अक्षपकस्यहि ज्ञानावरणीय मोहनीय चास्ति, क्षपकस्यतु मोहक्षये याव त्केवलज्ञान नोत्पद्यते ताव ज्ज्ञानावरणीय मस्ति नतु मोहनीय मिति, एवञ्च यथा ज्ञानावरणीय वेदनीयेन सम मधीत त

॥ मूल ॥

तस्स नाणावरणिज्जं ? गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि सियनत्थि, जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ३ । जस्सणं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स आउय एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएणवि समं भाणियव्वं, एवं नामेणवि, एवगोएणवि सम, अंत

॥ अनुवाद ॥

यस्य पुन र्भदन्त ! ज्ञानावरणीय तस्य मोहनीय यस्य मोहनीय तस्य ज्ञानावरणीय ? गौतम ! यस्य ज्ञानावरणीय तस्य मोहनीय स्यादस्ति स्यान्नास्ति यस्यपुन मोहनीय तस्य ज्ञानावरणीय नियमा दस्ति ३ । यस्य भदन्त ! ज्ञानावरणीयं तस्यायु रेव यथा वेदनीयेन सम भणित तथा युषापि सम भणितव्य, मेव नाम्नापि, एव गोत्रेणापि सम, अन्तरायेण यथा दर्शनावरणीयेन सम तथैव नियमात् परस्पर (सर्वे) भणित

॥ भाषा ॥

य नही तेम।टे वली गौतम पूछेछे—जस्सणभंते णाणावरणिज्जं तस्समोहणिज्जं । जेहने हेभगवन् ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने मोहनीयकर्म हुवे तथा। जस्समोहणिज्जं तस्सणाणावरणिज्जं । जेहने मोहनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सणाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सियअत्थि सियनत्थि। हेगौतम । जेहने ज्ञानावरणीयकर्म हुवे तेहने मोहनीयकर्म कदाचित् हुवे कदाचित् न हुवे ते किम अक्षपकने ज्ञानावरणीय अने मोहनीय दोनोंछे अने क्षपकने मोहनीय क्षयथया जालगे केवलज्ञान न ऊपजे तालगे ज्ञानावरणीय हुवे अने मोहनीय नही। जस्सपुणमोहणिज्जं तस्सणाणावरणिज्जं णियम अत्थि। जेहने वली मोहनीयकर्म हुवे तेहने ज्ञानावरणीयकर्म निश्चयथकी हुवे वलीगौतम पूछेछे—जस्सणभंते णाणावरणिज्जं तस्सआउय। जेहने हेभगवन् ज्ञानावरणीयकर्म तेहने आयुकर्म हुवे तथा जेहने आयुकर्म तेहने ज्ञानावरणीयकर्म इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एव जहा वेयणिज्जेणसमभणियं तहा आउएणवि भाणियव्वं। हेगौतम! इम जिम ज्ञानावरणीय वेदनीयसघाते कह्यु तिम आऊखासघाते कहवो जेहने ज्ञानावरणीय हुवे

॥ टीका ॥

या युपा नाम्ना गोत्रेणच सहा ध्येय मुक्तप्रकारेण भजनाया सर्वं प्रेतेपु भावात्, अन्तरायेणच समं ज्ञानावरणीय तथा वाच्य यथा दर्शनावरणीय निर्भजन मित्यथ' एतदेवाह ॥ एव जहा वेयणिज्जेण सम मित्यादि ॥ नियमापरोप्पर भाणियव्वाणित्तिं ॥ कोर्थ ॥ जस्स नाणावरणिज्ज तस्स नियमा अतराइय जस्स अतराइय तस्स नियमा नाणावरणिज्ज„ मित्येव मनयो परस्पर नियमो वाच्य इत्यर्थं, अथ दर्शनावरण शेषै

॥ मूल ॥

राइएणं जहा दंसणावरणिज्जेण समं तहेव नियम परोप्परं भाणियव्वाणि। जस्सण भंते! दंसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं जस्स वेयणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दंसणावरणिज्जंपि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं जाव अंतराइएणं। जस्सणं भंते!

अनुवाद

व्या०। यस्य भदन्त। दर्शनावरणीय तस्य वेदनीय यस्य वेदनीय तस्य दर्शनावरणीय यथा ज्ञानावरणीय मुपरिमै सप्तभि॰ कर्मभि सम भणित तथा दर्शनावरणीय मप्युपरिमै षड्भि कर्मभि॰ सम भणितव्य याव दान्तरायिकेण। यस्य भ०। वेदनीय तस्य मोहनीय यस्य मोहनीय तस्य वे

॥ भाषा ॥

हने आऊखो नियमथकी हुवे तथा जेहन आउखो हुव तेहने ज्ञानावरणीय किवारे हुवे किवारे न हुवे। एव णामेणवि। इम नामकर्म,सघाते पणि कहवो। एव गोएणवि सम अतराइएणं। इम गोत्रकर्मसघाते पणि कहवो अन्तरायसघाते ज्ञानावर्णीय तिम कहवो। जहा दरिसणावरणिज्जेण सम। जिम दर्शनावरणीय भजना विना कह्यु उत्वह। तहेव णियम परोप्पर भाणियव्वाणि जस्सण भते दरिसणावरणिज्ज तस्सवेयणिज्ज। जेहने ज्ञानावरणीय तेहने नियमे अन्तरायहुवे जेहने अन्तराय तेहने ज्ञानावरणीय नियमथकी हुवे पणि भजना नही, हिवे दर्शनावरणीय शेष छ कर्मसघाते चिन्तवेछे जेहने हेभगवन्! दर्शनावरणीय कर्मछे तेहने वेदनीयकर्म हुवे तथा। जस्सवेयणिज्ज तस्सदरिसणावरणिज्ज। जेहने वेदनीयकर्म हुवे तेहने दर्शनावरणीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहाणाणावरणिज्ज उवरिमेहि सत्तहि कम्महि सम भणिय। हेगौतम। ए आलावो ज्ञानावरणीयकर्मना आलावा सरीखो आलावो जिम ज्ञानावरणीय उपरला सातकर्म ते सघाते कह्यु। तहा दरिसणावरणिज्जपि उवरिमेहि छहि कम्मेहिं सम भाणियव्वं जाव

पञ्चभि सह चिन्तयन्नाह ॥ जस्सेत्यादि ॥ अयञ्च गमो ज्ञानावरणीयगमसम गम्येति ॥ जस्सणं भंते । वेयणिज्ज मित्यादिनातु „ वेदनीय शेषै प ञ्चभिः सह चिन्त्यते तत्रच ॥ जस्स वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि सियनत्थित्ति ॥ अक्षीणमोह क्षीणमोहंच प्रतीत्य, अक्षीणमोहस्यहि वे दनीय मोहनीयञ्चास्ति, क्षीणमोहस्यतु वेदनीय मस्ति नतु मोहनीय मिति ॥ एव मेयाणि परोप्पर नियमत्ति ॥ कोर्थ ? यस्य वेदनीय तस्य

वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? गोयमा! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि सियनत्थि । जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि । जस्सणं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं एवं एयाणि परोप्परं नियम जहा आउएण समं एव नामेणवि गोएणवि सम भाणियव्वं ।

दनीय ? गौतम । यस्य वेदनीय तस्य मोहनीय स्या दस्ति स्या न्नास्ति, यस्य पुन मोहनीय तस्य वेदनीय नियमा दस्ति । यस्य भदन्त । वे दनीय तस्या यु रेवमेतानि परस्पर नियमा यथा युषा सम , एव नाम्नापि गोत्रेणापि सम भणितव्यम् । यस्य भदन्त । वेदनीय तस्यान्त

अंतराइएण । तिम दर्शनावरणीय पणि ऊपरिला छ कर्मसघाते कहवा । इम यावत् अतरायसघाते पणि कहवा, हिवे वेदनीयकर्म शेष पाच कर्मस घाते चिन्तवेछे । जस्सणभते वेयणिज्ज तस्समोहणिज्ज जस्समोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज । जेहने हेभगवन् । वेदनीयकर्म हुवे तेहने मोहनीय हुवे जेहने मोहनीयहुवे तेहने वेदनीयहुवे प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सवेयणिज्ज तस्समोहणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि । हेगौतम जेहने वेदनीयकर्मछे तेहने मोह नीय किवारे हुवे किवारे न हुवे अक्षीणमोहने वेदनीय मोहनीय दोनोहुवे अने क्षीणमोहनीयने वेदनीयछे अने मोहनीय नहीं तेमाटे । जस्सपुणमोहणि ज्ज तस्सवेयणिज्ज णियम अत्थि जस्सणभते वेयणिज्ज तस्स आउय । तथा जेहने वली मोहनीयकर्महुवे तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथकी हुवे, जेहने हेभगवन् वेदनीयकर्म हुवे तेहने आयुकर्म हुवे तथा जेहने आयुकर्महुवे तेहने वेदनीय कर्म हुवे प्रतिप्रश्न । उत्तर । गोयमा एव एयाणि परोप्पर णियम । हेगौतम ए म एह माहोमाहि निश्चयथकी हुवे एतले जेहने वेदनीयकर्महुवे तेहने आयुकर्म निश्चयथको हुवे जेहने आयुकर्म तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथको हुवे ।

॥ टीका ॥

नियमा दायु र्यस्यायु स्तस्य नियमा द्वेदनीय मित्येव मेतवाच्ये इत्यर्थ , एव नामगोत्राभ्या मपि चाच्यं, एतदेवाह ॥ जहा आउएणेत्यादि ॥

॥ मूल ॥

जस्सणं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं पुच्छा गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सियअत्थि सियनत्थि । जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि । जस्सणं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं जस्स आउयं तस्स मोहणिज्जं ? गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आ

अनुवाद

राम पृच्छा गौतम । यस्य वेदनीय तस्यान्तराय स्यादस्ति स्या न्नास्ति, यस्य पुन रन्तराय तस्य वेदनीय नियमा दस्ति । यस्य भदन्त । मोहनीय तस्या यु र्यस्या यु स्तस्य मोहनीय ? गौतम । यस्य मोहनीय तस्या यु र्नियमा दस्ति यस्यपुन रायु स्तस्य मोहनीय स्या दस्ति स्या

॥ भाषा ॥

जहा आउएण सम एव णामेणवि गोएणवि सम भाणियव्व । जिम वेदनीयकर्म आउखासघाते कह्यु इम नाम कर्मसघाते तथा इमहीज गोत्रकर्म सघाते पणि कहवो ए चारेई माहोमाहि सहचारीछे तेमाटे। जस्सणभतेवेयणिज्ज तस्सअतराइय पुच्छा। जेहने हेभगवन् । वेदनीयकर्म हुवे तेहने अन्तरायकर्म हुवे तथा जेहने अन्तरायकर्महुवे तेहने वेदनीयकर्महुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सवेयणिज्ज तस्सअतराइय सियअत्थि सियनत्थि। हेगौतम। जेहने वेदनीयकर्म हुवे तेहने अन्तरायकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे अकेवलीने वेदनीयअन्तराय दोनोहुवे अने केवलीने वेदनीयकर्म छे अने अन्तरायकर्म नही तेमाटे तथा। जस्सपुणअतराइय तस्स वेयणिज्ज णियमअत्थि।जेहने वली अन्तरायकर्महुवे तेहने वेदनीयकर्म निश्चयथकी हुवे इति, हिवे वेदनीयकर्म अनेराकर्म चार मध ते चि तवेछे—जस्सणभत मोहणिज्ज तस्सआउय जस्सआउय तस्समोहणिज्ज । जेहने हेभगवन् । मोहनीयकर्म हुवे तेहने आयुकर्महुवे जेहने आयुकर्म तेहने मोहनीयकर्म हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्समोहणिज्ज तस्सआउय णियमअत्थि । हेगौतम । जेहने मोहनीयकर्महुवे तेहने आयुकर्म नियमथकी हुवे तथा । जस्सपुणआउय । जेहने वली आयुकर्म हुवे । तस्समोहणिज्ज सियअत्थि सियनत्थि । तेहने मोहनीय किवारे हुवे किवारे न हुवे तेकिम अचीणमोहनीयने आउखोमोहनीय दोनोहुवे अने चीणमोहने आउखोहुवे अने मोहनीय न हुवे । एव णाम गोव अतराइयच भाणियव्व।इस

॥ टीका ॥

अन्तरायेणतु भजनया यतो वेदनीय मन्तरायचा केवलिना मस्ति, केवलिनातु वेदनीय मस्ति नत्वन्तराय मेतदेव दर्शयतोक्त ॥ जस्सवेयणिज्ज तस्स अतराइय सियअत्थि सियनत्थित्ति ॥ अथ मोहनीय मन्यै श्चतुर्भि सह चिन्त्यते तत्र यस्य मोहनीय तस्यायु र्नियमा दकेवलिन इव, यस्य पुन रायु स्तस्य मोहनीय भजनया यतो क्षीणमोहस्या यु र्मोहनीय चास्ति' क्षीणमोहस्य'त्वायुरेवेति "एव नाम गोय अतराइयच भाणियव्वति„ अयमर्थो यस्य मोहनीय तस्य नाम गोत्र मतरायच नियमा दस्ति, यस्य पुन र्नामादित्रय तस्य मोहनीय स्या द स्त्यक्षीणमोहस्येव, स्या न्ना

॥ मूल ॥

उयं तस्स मोहणिज्जं सियअत्थि सियनत्थि। एव नामं गोयं अंतराइयच भाणियव्व। जस्स पुण भंते! आउय तस्स नाम पुच्छा। गोयमा! दोवि परोप्पर नियमं। एव गोतेणवि समं भाणियव्व। जस्स णं भंते!

अनुवाद

स्तिा एव नामगोत्रमन्तरायञ्च भणितव्यम्। यस्य पुन र्भदन्त! आयु स्तस्य नाम पृच्छा गौतम! द्वावपि परस्पर नियमा, देव गोत्रेणा

॥ भाषा ॥

नाम गोत्र अतराय जाणवा जेहने मोहनीयहुवे तेहने नाम गोत्र अतराय ए ३ नियमथकी हुवे तथा जहने नामादि तीनहुवे तेहने मोहनीय हुवे अ थवा न हुवे अक्षीणमोहने हुवे क्षीणमोहने न हुवे, हिवे आऊखो वीजा तीन सघाते चितवेछै—जस्सण भते आउय तस्सणामपुच्छा। जेहने हेभगवन्' आऊखो हुवे तेहने नाम हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दोविपरोप्पर णियम एव गोत्तेणवि सम भाणियव्व। हेगौतम दोनो माहोमाहि थकी नियमे हु वे कार्य ? जेहने आऊखो तेहने नियमे नामहुवे जेहने नामहुवे तेहने नियमे आऊखोहुवे इम गोत्रसघाते पणि जाणवो। जस्सणंभते आउय तस्सअत राइय पुच्छा। जेहने हेभगवन्! आऊखो हुवे तेहने अतराय इत्यादि प्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सआउय तस्स अतराइय सियअत्थि सियनत्थि। हेगौत म। जेहने आऊखो तेहने अन्तराय किवारेकै हुवे किवारेकै न हुवे तिअकेवलीने आऊखो अन्तराय दोनोछै केवलीने आऊखोछै अन्तराय नही। जस्सपुणअ तराइय तस्स आउय णियमअत्थि। जेहने वली अन्तरायछै तेहने आयुकर्म नियमथकी हुवे, हिवे नामकर्म अनेरा दोयकर्म सघाते चिन्तवेछै। जस्सणभते णामतस्स गोय पुच्छा। जेहने हेभगवन्। नामकर्म हुवे तेहने गोत्रकर्म हुवे जेहने गोत्र हुवे तेहने नाम हुवे इतिप्रश्न। गो० दोविएएपरोप्परणियम जस्स

॥ टीका ॥
स्ति क्षीणमोहस्यैवेति, अथायु रन्यै स्त्रिभि सह चिन्त्यते ॥ जस्सणं भंते । आउय मित्यादि दोविपरोप्पर नियमत्ति ॥ कोऽर्थ ॥ जस्स आउय
तस्स नियमा नाम जस्स नाम तस्स नियमा आउय,, इत्यर्थ ॥ एव गोत्रेणापि ॥ जस्स आउय तस्स अतराइय सियअत्थि सियनत्थित्ति ॥ यस्यायु स्तस्यान्त
राय स्या दस्त्य केवलिव त्स्यान्नास्ति केवलिवदिति ॥ जस्सण भते । नाम इत्यादिना नामान्येन द्वयेन सह चिन्त्यते तत्र यस्य नाम तस्य निय

॥ मूल ॥
आउय तस्स अंतराइयं पुच्छा । गोयमा ! जस्स आउय तस्स अंतराइयं सियअत्थि सियनत्थि । जस्स
पुण अंतराइय तस्स आउयं नियमं अत्थि। जस्सणं भंते! नामं तस्स गोय जस्स गोय तस्स नामं। गो० !
जस्स नामं तस्स नियमा गोयं जस्स गोअं तस्स नियमा नामं। जस्सणं भंते ! नामं तस्स अंतराइयं पु
च्छा । गो० ! जस्स नाम तस्स अतराइय सियअत्थि सियनत्थि । जस्स पुण अंतराइयं तस्स नामं नि

अनुवाद
पि सम भणितव्यम् । यस्य भदन्त । आयु स्तस्या न्तराय पृच्छा गौतम । यस्या यु स्तस्यान्तराय स्या दस्ति स्या न्नास्ति । यस्य पुन रन्तरा
य तस्या यु र्नियमा दस्ति । यस्य भदन्त । नाम तस्य गोत्र यस्य गोत्र तस्य नाम पृच्छा गौतम । यस्य नाम तस्य नियमा द्गोत्र यस्य गोत्र
तस्य नियमा न्नाम । यस्य भ० । नाम तस्यान्तराय पृच्छा गौतम । यस्यनाम तस्यान्तराय स्या दस्ति स्या न्नास्ति' यस्यपुन रन्तराय तस्य

॥ भाषा ॥
णभतेणामतस्सअतराइयपुच्छा । हे गौतम । दोनो माहोमाहि नियमथको हुवे जेहने हे भगवन् । नाम तेहने अतरायकर्म हुवे इत्यादि प्रश्न कीधो ।
गो जस्सणामतस्सअतराइय सियअत्थिसियनत्थि । हेगौतम जेहने नाम तेहने अतराय किवारे हुवे किवारे न हुवे तिहा अकेवलीने हुवे अने केवलीने
न हुवे । जस्सपुणअतराइय तस्स णामणियम अत्थि । जेहने वली अतरायकर्म हुवे तेहने नामकर्म नियमथको हुवे । जस्सणभतेगोय तस्सअतराइ
यपुच्छा । जेहने हेभगवन् । गोत्रकर्म हुवे तेहने अतराय इत्यादि प्रश्नकीधो । गो० जस्सगोयतस्सअतराइय । हेगौतम जेहने गोत्र कर्म हुवे तेहने
अन्तरायकर्म किवारे हुवे किवारे न हुवे ते अकेवलीने दोनोहुवे केवलीने नामहुवे अने अन्तराय नही । जस्सपुण अतराइय तस्सपुण गोय णियम अ

॥ टीका ॥

मा द्गोत्रं यस्य गोत्र तस्य नियमा नाम तथा यस्य नाम तस्या न्तराय स्या दस्त्य केवलिव त्तस्यान्नास्ति केवलिवदिति' एव गोत्रान्तराययो रपि भजना भावनीयेति' अनन्तर कर्मोक्त तच्च पुद्गलात्मक मत स्तदधिकारा दिदमाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ पोग्गलीवत्ति ॥ पुद्गला. श्रोत्रादिरूपा विद्य

॥ मूल ॥

यमं ऋत्थि । जस्सणं भंते ! गोयं तस्स अंतराइय पुच्छा । गो० ! जस्स गोय तस्स अंतराइयं सियअ त्थि सियनत्थि । जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोय नियमं अत्थि ७ । जीवेण भंते ! किं पोग्गली पो ग्गले ? गो० ! जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । सेकेणठ्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ । जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि ? गो० ! सेजहानामए छत्तेणं छत्ती दण्डेणं दण्डी घडेणं घडी पडेणं पडी करेणं करी एवामेव गो० !

अनुवाद

नाम नियमा दस्ति । ६ । यस्य भदन्त ! गोत्र तस्या न्तराय पृच्छा गौतम ! यस्य गोत्र तस्या न्तराय स्या दस्ति स्या न्नास्ति, यस्य पुन र न्तराय तस्य गोत्र नियमा दस्ति ७ । जीवो भदन्त ! किं पुद्गली पुद्गल ? गौतम ! जीव. पुद्गल्यपि पुद्गलोपि । अथ केना र्थेन भदन्त ! एव मुच्यते जीव पुद्गल्यपि पुद्गलोपि ? गौतम ! सयथानामक (कश्चित्पुरुष इतिशेष) छत्रेणा छत्री, दण्डेन दण्डी' घटेन घटी' पटेन पटी, क

॥ भाषा ॥

त्थि । जइने वली अन्तरायकर्म्मनुंपे तेइने गोत्रकर्म नियमथकी हुवे अनन्तरे कर्म कह्या ते पुद्गलात्मकछे एतलामाटे पुद्गलअधिकार कहेछे—जीवेण भंते किंपोग्गला पोग्गले । जीव हेभगवन् स्यूं पुद्गलनोअपेक्षावें अथवा जीवनीअपेक्षावें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । हेगौतम जीव पुद्गल श्रोत्रादिकरूपछे जेहने पुद्गली पणिछे जीव पुद्गल कहवो संज्ञा जीवछे तिवारे ते योगथकी पुद्गल इमो पणि कहिये वलीगौतम कहेछे—सेकेणठ्ठेण भंते एववुच्चइ । तिस्ये अर्थे हेभगवन् इमकह्यु जीवेपोग्गलीवि पोग्गलेवि । जीव पुद्गली पणि कहिये अने पुद्गल पणि कहिये । गोयमा सेजहाणामए छत्ते ण छत्री । हेगौतम ते यथा दृष्टाते छत्रे सयुक्त पुरुष छत्री कहिये । दण्डेण दण्डी घडेण घडी पडेण पडी करेण करी । दण्डे सयुक्त दण्डी कहिये घडे सयुक्त घडी पटे सयुक्त पटी कहिये करे कहिये सुण्डो तिणेकारी सयुक्त करी कहता हाथी । एवामेव । एणे दृष्टाते । गोयमा जीवेवि सोइंदिय चक्खिंदिय घा

॥ टीका ॥

न्ते यस्या सो पुद्गली ॥ पुग्गलेवित्ति ॥ पुद्गलइति सञ्ज्ञा जीवस्य तत सद्योगा त्पुद्गलइति एतदेवदर्शय न्नाह ॥ सेकेणेत्यादि ॥ अष्टमशते दशम

॥ मूल ॥

जीवेवि सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली । जीव पडुच्च पोग्गले । सेते णठेणं गोयमा ! एववुच्चइ । जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । नेरइएणं भंते ! किं पोग्गली पोग्गले एवचेव एवं जाव वेमाणिए नवरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ भाणियव्वाइं । सिद्धेणं भंते ! कि पोग्गली पोग्गले ? गो० ! नोपोग्गली पोग्गले । सेकेणठेणं । गोयमा ! जीवं पडुच्च सेतेणठेणं एव वुच्चइ सिद्धे णोपो

अनुवाद

देश कर्ता (इत्थी) एव मेव गौतम । जीवोपि श्रोत्रेन्द्रियचक्षुरिन्द्रियघ्राणेन्द्रियजिह्वेन्द्रियस्पर्शनेन्द्रियाणि प्रतीत्य पुद्गली, जीव प्रतीत्य पुद्गल स्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यत–जीव: पुद्गल्यपि पुद्गलोपि ॥ नैरयिको भदन्त । कि पुद्गली पुद्गल ? एवचैवं व याव द्वैमानिको नवर यस्य याव न्ती न्द्रियाणि तस्य तावन्ति भणितव्यानि । सिद्धो भदन्त । कि पुद्गली पुद्गल ? गौतम ! नो पुद्गली पुद्गल । अथ केनार्थेन ? गौतम । एव ? जी

॥ भाषा ॥

णिंदिय जिभिंदिय फासिंदियाइ पडुच पोग्गली । हेगौतम जीव पणि श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुरिन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय जिह्वेन्द्रिय स्पर्शनेन्द्रिय ए पाच इन्द्रियआश्रयीने पद्गली कहिये । जीवपडुचपोग्गले । तथा जीवप्रते आश्रयीने पद्गल कहिये । सेतेणठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम इम कहिये । जीवे पोग्गलीवि पोग्गलेवि । जीव पुद्गली पणि कहिये अने पुद्गल पणि कहिये । णेरइयाण भते किपोग्गली पोग्गले एवचेव । नारकी हेभगवन् स्यू पुद्गली कहिये अथवा पुद्गल कहिये, इमहीज पूर्वकह्या तिमज कहवो । एव जाव वेमाणिए । इम यावत् वैमानिकलगे कहवो । णवरजस्स जइइदियाइ तस्सतइभाणियव्वाइ । एतलोविशेष जेहने जेतली इन्द्रियछै तेहने तेतली इन्द्रिये पुद्गली कहिये । सिद्धेणभते कि पोग्गली पोग्गले । सिद्ध हेभगवन् स्यू पुद्गली कहिये अथवा पुद्गल कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोपोग्गली पोग्गले । हेगौतम सिद्ध पुद्गलीनही श्रोत्रेन्द्रियादिकना अभावथकी अने पुद्गल कहिये । सेकेणठेणभते एववुच्चइ जाव पोग्गले । ते स्यू अर्थे हेभगवन् इम कह्यु यावत् पुद्गल कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीव पडुच सेतेणठेण गोयमा एववुच

॥ टीका ॥

१० ॥ समाप्तं चाष्टमशतम् ॥ ८ ॥ सद्रूस्यानुतिनाविवृद्धमहसापार्श्वप्रसादाग्निना तन्नामाक्षरमंत्रजप्तिविधिना विघ्नेन्धनप्लोषत । सपत्नेनघशातिकर्मकरणेनेमादृश्नीतवान् सिद्धिं शिल्पिवदेतदष्टमशतव्याख्यानसन्मन्दिर ॥ १ ॥ ग्र० स० ८४३८ ॥ ॥ ॥ व्याख्यातमष्टमशत मथ नवम मारभ्यते अस्य चाय मभिसम्बन्धो ऽष्टमशते विविधाः पदार्था उक्ता नवमेऽपि तएव प्रकारान्तरेणो च्यत इत्येव सम्ब न्धस्या स्यो द्देशकार्थसूचिकेय गाथा ॥ जम्बूद्दीवेइत्यादि ॥ तत्र ॥ जंबूदीवेत्ति ॥ जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषय प्रथमोद्देशक ॥ जोइसत्ति ॥ ज्योतिषवि

॥ मूल ॥

ग्गली पोग्गले । सेवंभंतेभंते ! त्ति ॥ इति दसम सयं ॥ १० ॥ सम्मत्तं अठमं सयं ॥ ८ ॥
जंबुद्दीवे १ जोइस २ अतरदीवे ३० असोच्च ३१ गंगेये ३२ । कुंडग्गामे ३३ पुरिसे ३४ नवमंमिसयं

॥ अनुवाद ॥

व प्रतीत्य तेनार्थेनैव मुच्यते सिद्धो नोपुद्गली पुद्गल, स्तदेव भदन्त भदन्त ! इति ॥ इत्यष्टमशते दशमोद्देश ॥ ८ ॥ १० ॥ समाप्त चाष्टमशतम् ॥ ८ ॥ व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रामरपरमरसाध्यासभाषानुवाद मोद्यच्छस्ताध्वनीनप्रवचनगुरुवाराम चन्द्रेणकाइयाम् । श्रीमत्प्रख्यातलौंकागच्छजदमृतचन्द्राजिपैः सूरिवर्य्यै रन्वाचंनभूमीपतिधनपतिसिंहस्यसम्प्रार्थनात्ति ॥ १ ॥ गुरूपदिष्टय स्यादौ ऽष्टमप्रापिशतशर्मे । कुर्वतापदविन्यासं मयाविश्राममूरिव ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥
स्युर्जम्बूज्योतिषा न्तरद्वीपाश्रुत्वागांगेया । कुण्डग्रामःपुरुषो नवमेचशतेचतुस्त्रिंशत् ॥ १ ॥ उद्देशा इतिशेष)तस्मिन्काले तस्मिन्समये मि

॥ भाषा ॥

द । हेगौतम जीव आश्रयीने पुद्गल कहिये ते तेणें अर्थे हेगौतम इमकह्यु । सिद्ध नोपोग्गली पोग्गले । सिद्ध पुद्गलो न कहिये अने पुद्गल कहिये । सेवभते भतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्यछे अन्यथानही । अष्टमशत दसमो उद्देसो समाप्तो ॥ १० ॥ ए आठमाशतकनो दश माउद्देशो अर्थथी पूरोथयो । सम्मत्त अट्ठमंसय ८ । एतले आठमू शतक पणि पूरोथयो ८ ॥ * * * *
आठमे शतके विविधपदार्थ कह्या इहा तेहीज प्रकारान्तरे कहेछे—जंबूद्दीवे जोइस । जंबूद्वीप वक्तव्यता विषय पहिलोउद्देशो १ इम ज्योतिषीविषय बीजो

॥ टीका ॥

पयो द्वितीय ॥ अतरदीवत्ति ॥ अंतरद्वीपविषया अष्टाविंशति रुद्देशका ॥ असोच्चत्ति ॥ अश्रुत्वा धर्म्मं लभेते त्याद्यर्थप्रतिपादनार्थ एकत्रिंशत्तम ॥ गंगेयत्ति ॥ गाङ्गेयाभिधानाऽनगारवक्तव्यतार्थो द्वात्रिंशत्तम ॥ कुंडग्गामेत्ति ॥ ब्राह्मणकुण्डग्रामविषय स्त्रयस्त्रिंशत्तम ॥ पुरिसेत्ति ॥ पुरुष पुरुष मन्नित्यादिवक्तव्यतार्थ श्चतुस्त्रिंशत्तम इति ॥ कहिणति ॥ कस्मिन् देश इत्यर्थ "एवजबूद्दीवपणत्तीभाणियव्वत्ति„ साचैव-केमहालएण भंते । जंबुद्दीवे दीवे किमागारभावपडोआरेण भंते । जबुद्दीवेदीवे पणत्ते ? ॥ कस्मिन्नाकारभावे प्रत्यवतारो यस्य स तथा" गोअमा । अयण्ण जबुद्दीवेदीवे सव्वदीवसमुद्दाण सव्वब्भतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसठाणसठिए वट्टे रहचक्कवालसठाणसठिए वट्टे पुक्खरकण्णियासठाणसठिए वट्टे पडिपुण्णचदसठाणसठिए पणत्ते एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण मित्यादि„ किमतेय वाच्ये त्याह ॥ जावेत्यादि ॥ एवामेवत्ति ॥ उक्तेनैव न्यायेन पूर्वा

॥ मूल ॥

मिचोत्तीसा ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेण समएणं मिहिलानामं णयरी होत्था वन्नउ, माणिभद्दे चेइए वन्नउ, सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवंवयासी—कहिणं जबुद्दीवे दीवे ? कि

अनुवाद

थिला नाम्नी नगर्य्य भवत्, वर्णको, माणिभद्र चैत्यो वर्णक , स्वामी समवसृत परिष निर्गता याव भगवा न्गौतम (श्रमण भगवन्त महावीर मिति शेष.) पर्युपासय न्नेवमवादी—एकस्मिन् (देशे) भदन्त । जबूद्वीपो द्वीप ? कि सस्थितो भदन्त । जबूद्वीपो द्वीप. ? एव जम्बू

॥ भाषा ॥

२ अन्तरद्वीपना अठ्ठावीसउद्देशा एव ३० असोचा केवली ३१ गगेयअणगार प्रश्न ३२ । कुडग्गामेपुरिसे । ब्राह्मणकुण्डग्रामविषय ३३ पुरुषने हणे ते विषय ३४ । णवममिसयमि चउतीसा । ए नवमा शतकनेविषे चउत्रीस उद्देशा जाणवा । तेणकालेणं तेणसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । मिहिलाणामणयरीहोत्था वण्णओ । मिथिलानामे नगरी हुवे तेहनो वर्णक उवाई उपांगथी कहवो । माणिभद्दचेइए वण्णओ । माणिभद्र यचायतन हुयो तेहनो वर्णक कहवो । सामीसमोसढे । तिहा श्रीमहावीरस्वामी समोसरया । परिसा पडिगया । परिषदा पाछी वली । जाव भगवगोयमे पज्जुवासमाणे । यावत् भगवन्त श्रीगौतमस्वामी सेवा करतायका । एववयासी । इम कहै । कहिणभते जबुद्दीवे २ । किसा देशनेविषे हेभगवन् । जबूद्वीपनामा द्वीप

परसमुद्रगमनादिना ॥ सपुव्वावरेणंति ॥ सह पूर्वेण नदीवृंदेन पर सपूर्वापर तेन ॥ चोद्दससलिलासयसहस्सा छप्पणच सहस्सा भवतीति मक्खा यति ॥ इह सलिलाशतसहस्राणि नदीलक्षाणि, तत्र स्वस्वखंडेव-भरतैरवतयो गंगासिंधुरक्तारक्तवत्यः प्रत्येकं चतुर्दशभि र्नदीना सहस्रै र्युक्ता, तथा हैमवतैरण्यवतयो रोहितारोहितांशासुवर्णकूलारूप्यकूला प्रत्येक मष्टाविंशत्या सहस्रै र्युक्ता, तथा हरिवर्षरम्यकवर्षयो र्हरिताहरिकांता नरिकांतानारीकांता. प्रत्येक षट्पञ्चाशता सहस्रै र्युक्ता समुद्र मुपयान्ति, तथा महाविदेहे शीताशीतोदे प्रत्येक पचभि र्लक्षै र्द्वात्रिंशताच सह स्रै र्युक्ते समुद्र मुपयात इति सर्वासाच मीलने सूत्रोक्त प्रमाण भवति, वाचनान्तरे पुन रिद दृश्यते-जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा णेयव्व जोइसविहू

संठिएणं भंते ! जंबुद्दीवे २ एवं जंबुद्दीवपन्नत्ती भाणियव्वा जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे २ चोद्दस

द्वीपप्रज्ञप्ति र्भणितव्या याव देव मेवेव सपूर्वापरेण चतुर्दशसलिलाशतसहस्राणि षट्पञ्चाशत्सहस्राणि भवन्तीति मया स्यातम्, तदेव भद

कह्यो । कि संठिएणभंते जंबुद्दीवे २ । किसे संस्थाने हेभगवन् ! जंबूद्वीपनामे द्वीपछे । एवंजंबुद्दीव पण्णत्ती भाणियव्वा जाव एवामेव । इम जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति नेविषे जिमकह्यु, तिम जाणवो, ते इम ,केमसंठिएणभंते जंबूद्दीवे पण्णत्ते, किमाकारभावपडोयारेणभंते जंबूद्दीवे २ पण्णत्ते, किसे आकारभाव प्रत्यवता र जेहनो तथा—गोयमा अयण्णं जंबुद्दीवे सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए वट्टे पुक्खरक णियासंठाणसंठिए वट्टे पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिए पण्णत्ते गोयमा एग जोयण सयसहस्स आयामविक्खंभेण इत्यादि, केतलालगे कहूं ते कहेछे—एवामे वत्ति, कह्यो तिणिपरे ज न्यायेकरी पूर्व पश्चिम समुद्र गमनादिक । सपुव्वावरेण जंबुद्दीवे २ चउद्दससलिलासयसहस्सा छप्पण्णंच सहस्सा भवंति तिमक्खाय । पूर्व तथा पश्चिमेंसहित नदीनावृन्द तिणेकरी चउदलाख छप्पनसहस्र हुवे ते भवतीति अरिहंतें कह्यो तथा सर्व तीर्थंकर गणधरे पिण कह्यु इहां चउद लाख छप्पनसहस्र नदी तेहनी संख्या इम भरतक्षेत्रें गंगा १ सिन्धु २ ए बे नदी एरवतक्षेत्रे रक्ता १ रक्तवती २ बे ते प्रत्येकें चउदे २ सहस्र नदीये सहित तथा हेमवत एरण्यवत क्षेत्रनेविषे रोहिता १ रोहितंसा २ सुवर्णकूला ३ रूप्यकूला ४ ए चार नदी ते प्रत्येकें अठावीस अठावीससहस्र नदीयुक्त तथा ह

शं जाव संनाजोयणवासा पव्वयकूडायतित्थसेढीओ । विजयद्दहसलिलाओ पिंडएहोइसंगहणीत्ति ॥ १ ॥ तत्र जोइसविहूणंति ॥ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां ज्योतिष्कवक्तव्यतास्ति, तद्विहीन समस्त जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र मस्योद्देशकस्य सूत्र ज्ञेय कि पर्यवसान पुन स्तदित्याह ॥ जाव खण्डेत्यादि ॥ तत्र ॥ खण्डत्ति ॥ जम्बूद्वीपो भरतक्षेत्रप्रमाणानि खण्डानि कियन्ति स्या ? दुच्यते–नवत्यधिक खण्डशत ॥ जोयणत्ति ॥ जम्बूद्वीप कियन्ति योजनप्रमाणानि खण्डानि स्या ? दुच्यते–सत्तेवयकोडिसया णउयाछप्पन्नसयसहस्साइं । चउणउइचसहस्सा सयदिवड्ढचसाहीय ॥ १ ॥ गाउयमेगपण्णरस धणुस्सयातहध णुणिपन्नरस्स । सट्ठिचअंगुलाइं जंबूद्दीवस्सगणियपयंसि ॥ २ ॥ गणितपदमित्येव प्रकारस्य गणितस्य सञ्ज्ञा ॥ वासत्ति ॥ जबूद्वीपे भरतहैमवतादीनि सप्तवर्षाणि क्षेत्राणी त्यर्थ. ॥ पव्वयत्ति ॥ जबूद्वीपे कियन्त पर्वता ? उच्यते षड्वर्षधरपर्वता हिमवदादय, एको मन्दर, एक श्चित्रकूट, एकएव विचित्रकूट एतौच देवकुरुषु द्वौ यमकपर्वतौ, एतौ चोत्तरकुरुषु, द्वेशते काञ्चनकाना, एतेच शीताशीतोदयो पार्श्वतो विंशति र्वक्षस्कारा, श्चतुस्त्रिंशद्दीर्घविजयार्द्धपर्वता, श्चत्वारो वर्त्तुलविजयार्द्धा, एव द्वेशते एकोनसप्तत्यधिके पर्वताना भवत ॥ कूडत्ति ॥ कियन्ति पर्वतकूटानि ? उच्यते षट्पञ्चाशद्वर्षधरकूटानि, षण्णवति र्वक्षस्कारकूटानि, त्रीणि षडुत्तराणि विजयार्द्धकूटाना शतानि, नवच मन्दरकूटा न्येवच चत्वारि सप्तषष्ट्यधिकानि कूटशतानि भवन्ति ॥ तित्थत्ति ॥ जम्बूद्वीपे कियन्ति तीर्थानि ? उच्यते भरतादिषु चतुस्त्रिंशतिखण्डेषु मागधवरदामप्रभासाख्यानि त्रीणि २ तीर्थानि भवती त्येव चैक द्युत्तर तीर्थशत भवतीति ॥ सेढीओत्ति ॥ विद्याधरश्रेणय आभियोगिकश्रेणयश्च कियन्त्य ? उच्यते अष्टषष्टि प्रत्येक भासा भवति विजयार्द्धपर्वतेषु प्रत्येक द्वयो र्द्वयो र्भावा देवच षट्त्रिंशदधिक श्रेणीशत भवतीति ॥ विजयत्ति ॥ कियन्ति चक्रवर्त्तिविजेतव्यानि भूखण्डानि ? उच्यते चतुस्त्रिंश द्वैतावत एवच राजधान्यादयो र्था इति ॥ दहत्ति ॥ कियन्तो महाह्रदा ? उच्यते–पद्मादय. षट्, दशच नीलवदादय उत्तरकुरुदेवकुरुमध्य

रिवर्ष रम्यकवर्ष एहनेविषे, हरित १ हरिकान्ता २ नरकान्ता ३ नारिकान्ता ४ ए प्रत्येके छप्पन छप्पनसहस्र नदीयुक्त ए सर्व एतला परिवारसू समुद्र प्रते जाय तथा महाविदेह क्षेत्रनेविषे शीता १ शीतोदा २ ए बे नदी प्रत्येके पचलाख छत्रीससहस्र नदी युक्त समुद्र प्रतेजाय सर्वने मिलिवेकरी सूत्रोक्त

॥ टीका ॥

वर्षिन इत्येव योज्यम् ॥ सलिलत्ति ॥ नद्य स्तत्प्रमाणं च दर्शितमेव ॥ विवक्षेऽहसगह्याणित्ति ॥ उद्देशकार्थानां विवक्षे विषयभूते इय संग्रहणी गाथा भवतीति ॥ नवमशते प्रथम. ॥ १ ॥ अनन्तरोद्देशके जम्बूद्वीपवक्तव्यतो क्ता द्वितीयेतु जम्बूद्वीपादिषु ज्योतिषवक्तव्यता ऽभिधीयते, तस्य चेद मादिसूत्र ॥ रायगिहेइत्यादि ॥ एव जहा जीवाभिगमेत्ति ॥ तत्र चैत त्सूत्र मेव-केवइया चंदा पभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा केवइयासूरिया तविंसुवा तवंतिवा तविस्संतिवा केवइया नक्खत्ता जोगं जोइंसुवा३ केवइया महग्गहा चारं चरिंसुवा ३ केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोहं सोहिंसुवा ३ (शोभा कृतवत्य इत्यर्थं) गोयमा ! जंबूद्दीवेदीवे दो चंदा पभासिंसुवा ३ दो सूरिया तविंसुवा ३, छप्पण्णं नक्खत्ता जोगं जोइंसुवा ३, छावत्तरं गहसयं चारं चरिंसुवा ३ (बहुवचनमिदम्वाच्यत्वादिति) एगंच सयसहस्सं तेत्तीसंखलु भवेसहस्साइं (क्वचितु सूत्रपुस्तके लिखितमेवा

॥ मूल ॥

सलिलासयसहस्सा छप्पन्नंच सहस्सा भवंतीति मक्खाय सेवंभंतेभंतेत्ति ॥ इति नवमसए पढमो उद्देसोसम्मत्तो ॥ ९ ॥ १ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी—जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा एवं जहा जीवाभिगमे जाव नवयसयापन्नासा तारागणकोडि

॥ अनुवाद ॥

न्त । भदन्त । इति ॥ इति नवमशतस्य प्रथमो देश. ॥ १ ॥ राजगृहे यावद् एव मवादी—जम्बूद्वीपे भदन्त ! कति चन्द्रा प्रभासितवन्तोवा प्रभासन्तेवा प्रभासिष्यन्तेवा ? एवं यथा जीवाभिगमे याव न्नवशतपञ्चाशत्तारागणकोटिकोटय. शोभितवन्त्य. शोभन्ते शो

॥ भाषा ॥

भछप्पनहजार नदी प्रमाणवुवे । सेवभंते २ शि । तहत्ति हे भगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्य छे अन्यथा नथी । नवमसयस्सपढमोउद्देसोसम्मत्तो । ए नवमा शतकनो पहिलो उद्देशो अर्थथी पूरो लिख्यो ८ ॥ १ ॥ पाछे जंबूद्वीप वक्तव्यता कही हवे जंबूद्वीपादिकनेविषे ज्योतिष्क वक्तव्यता कहेछे—रायगिहेपयरे जाव एवंवयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् एम कहे । जंबूद्वीपेभंते दीवे केवइया चंदा पभासिंसुवापभासंतिवा पभासिस्संतिवा । जंबूद्वीपनामा हेभगवन् ! द्वीपनेविषे केतला चन्द्रमा प्रभास करताहुवा तेज करेछे तेज करशे । एवंजहाजीवाभिगमे जाव णवसया पण्णा

॥ टीका ॥

स्त इति) लवणेणं भंते ! इत्यादौ ॥ एवं जहा जीवाभिगमेत्ति ॥ तत्र चेदं सूत्रं नेयं (केवइया चंदा पभासिंसुवा केवइया सूरिया तविंसु इत्या दिप्रश्नसूत्रं पूर्ववत् उत्तरंतु–गोयमा ! लवणेणं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिंसुवा ३ चत्तारि सूरिया तविंसुवा ३' बारसोत्तरं नक्खत्तसयं जोगं जोइंसुवा ३' तिन्निबावण्णा महग्गहसया चारं चरिंसुवा ३, दोण्णि सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवसया तारागणकोडिकोडीणं सोहं सोहिं सुवा ३, सूत्रपर्यन्तमाह ॥ जावताराउत्ति ॥ तारकसूत्रं याव त्तच्च दर्शितं मेवेति "धायइसंडे इत्यादौ, यदुक्तं, जहा जीवाभिगमे तदेव भाव

॥ मूल ॥

कोडीणं सोभिंसु सोभिंति सोभिस्सति। लवणेणं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा पभासिंसु वा ३ एवं जहा

अनुवाद

भिष्यन्ते । लवणे भदन्त ! समुद्रे कति चन्द्रा प्रभाषितवन्तोवा ३ एवं यथा जीवाभिगमे याव तारा. । धातकीखण्डे कालोदे पुष्करवरे ऽ

॥ भाषा ॥

सा तारागणकोडाकोडीणं सोभिंसु सोभंति सोभिस्सति लवणेणभंते केवइया चंदापभासिंसु ३ एवंजहा जीवाभिगमे। इम जिम जीवाभिगमउपांगनेविषे कह्यु ते सूत्र इम ,केवइयाचंदापभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा, केवइयासूरातविंसुवा तवंतिवा तविस्संतिवा केवइया नक्खत्ताजोगं जोइं सुवा ३ केवइयामहग्गहाचारं चरिंसुवा ३ केवइयाओ तारागणकोडाकोडीओ सोभिंसुवा शोभाकरता इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! जंबूद्वीवे २ दो चंदापभासिंसुवा ३ दोसूरियातविंसुवा ३ छप्पण्णा नक्खत्ताजोगंजोइंसुवा ३ छावत्तरि गहसया चारंचरिंसुवा ३ एगंचसयसहस्सं तेत्तीसंखलुभवेसहस्साइं। शेष सूत्रमांहि लिख्यूंछै जाव नवसया, नवसेपचास तारानी कोडाकोडी सोभती हुये सोभेछे सोभस्ये, लवणसमुद्रनेविषे हेभगवन् ! केतला चंद्रमा प्रभा स्या ३ इम जिम जीवाभिगमउपांगनेविषे कह्यु ते सूत्र इम—केवइयाचंदापभासिंसुवा ३ केवइयासूरियातविंसुवा ३ इत्यादि प्रश्न सूत्र पूठिलीपरे उत्तर हेगौतम ! लवणेणं समुद्दे चत्तारि चंदापभासिंसुवा ३ चत्तारिसूरियातविंसुवा ८ बारसोत्तरनक्खत्तसयंजोगंजोइंसुवा ३ तिन्निबावण्णामहग्गहसया चारंच रिंसुवा ३ दोण्णियसत्तसहस्सा सत्तट्ठिंवसहस्सा नवसइयातारागण कोडाकोडीणं सोभिंसुवा सूत्रनो छेहडो कहैछै—जावताराओधायइखंडे कालोदेपुक्ख रवरे अभितरद्धे मणुस्सखेत्ते एएसुसव्वेसुजहाजीवाभिगमे। तारानो सूत्र यावत् ते इहांसोहीज धायइखंडे द्वीपादिकनेविषे जे जाणु जहाजीवाभि

॥ टीका ॥ नीय-धायइखण्डेणं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसुवा ३' केवइया सूरिया तविंसुवा ३ इत्यादि प्रश्न पूर्ववत् उत्तरन्तु-गोयमा ! बारस चंदा पभासिंसुवा ३ बारस सूरिया तविंसुवा ३ एवं चउवीससससिरविणो णक्खत्तसयाय तिण्णिछत्तीसा । एगंचगहसहस्सं छप्पण्णधायईखण्डे ॥ १ ॥ अट्ठेवसयसहस्सा तिण्णिसहस्साइंसत्तयसयाइं । धायइखण्डेदीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥ २ ॥ सोहं सोहिंसुवा ३ ॥ कालोएणं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा इत्यादि प्रश्न, उत्तरन्तु-गोयमा ! बायालीसचंदा बायालीसचदिणयरादित्ता कालोदहिंमिएए चरंतिसंबद्धलेसागा ॥ १ ॥ णक्खत्तसहस्समेगं मेगंछावत्तरंचसयमण्णं ॥ छच्चसयाछण्णउया महागहातिण्णियसहस्सा ॥ २ ॥ अट्ठावीसकालो दहिंमिबारसयसहस्साइं ॥ णवयसयापण्णासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ सोहं सोहिंसुवा ३ ॥ तथा पुक्खरवरेणं भंते ! दीवे केवइया चंदे त्यादि प्रश्न, उत्तरन्तु एतद्गाथानुसारेणा वसेय-चोयाल

॥ मूल ॥ जीवाभिगमे जाव ताराउ, धायइखण्डे कालोदे पुक्खरवरे अब्भिंतरपुक्खरद्धे मणुस्सखेत्ते एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं । पुक्खरद्धेणं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा पभा

अनुवाद ऽभ्यन्तरपुष्करार्द्धे मनुष्यक्षेत्रे एतेषु सर्वेषु यथा जीवाभिगमे यावदेकशशीपरिवारः स्तारागणकोटिकोटीनाम् । पुष्करार्द्धे भ० ! समुद्रे कतिचन्द्रा'

॥ भाषा ॥ गमेंछे, ते इस कहछे धायइखण्डेणभंतेदीवे केवइयाचंदापभासिंसुवा ३ इत्यादि प्रश्न पूछिलोपरे उत्तर हेगोतम बारसचंदापभासिंसुवा ३ बारससूरिया तविंसुवा ३ एव चउवीससससिरविणो णक्खत्तसयायतिण्णिछत्तीसा । एगंचगहसहस्सं छप्पण्णधायईखण्डे ॥ १ ॥ अट्ठेवसयसहस्सा तिण्णिसहस्साय सत्तयसहस्साधायइखण्डेदीवे तारागणकोडिकोडीणं ॥ २ ॥ सोभिंसुवा ३ कालोएणभंतेसमुद्दे केवइयाचंदा इत्यादि प्रश्न उत्तर हेगोतम--बायालीसचंदा बायालीसचदिणयरादित्ता कालोदहिंमिएए चरंतिसंबद्धलेसागा ॥ १ ॥ णक्खत्तसहस्सएगं मेगंबावत्तरिचसयमण्णं छच्चसयाछण्णउया महागहातिण्णियसहस्सा ॥२॥ अट्ठावीसकालो दहिंमिबारसमयसहस्साइं णवयसयापण्णासा तारागणकोडिकोडीणं ॥ ३ ॥ सोभ सोभिंसुवा ३ तथा पुक्खरवरेणभंतेदीवे केवइयाचंदा इत्यादि प्रश्न, चउयालचंदसयं चोयालचेवसूरियाणसयं पुक्खरवरंमिदीवे भमंतिएएपयासेता ॥ १ ॥ इहां ज भमवो कह्यु ते सर्व चन्द्र सूर्यनें अपेक्षीने कह्यु चत्तारिसहस्साइं'

॥ टीका ॥

चदसय चोयालचेवसूरियाणसय ॥ पुक्खरवरमिदीवे जमतिएएपयासंता ॥ १ ॥ इहच यद्भमण मुक्तं नतत्सर्वांश्चन्द्रादित्या नपेक्ष्य किं तर्हि पुष्करद्वीपाभ्यन्तरार्द्धवर्त्तिनी द्विसप्तति मेवेति, चत्तारिसहस्साइ वत्तीसचेवहोतिणक्खत्ता । छच्चसयाबावत्तर महग्गहायारससहस्सा ॥ १ ॥ छण उइसयसहस्सा घत्तालीसञ्चवेसहस्साइं । चत्तारिसयापुक्खरि तारागणकोडिकोडीण ॥ २ ॥ सोह सोभिंसुवा ३ ॥ तथा अब्भितरपुक्खरद्धेण भंते । केवइया चदेत्यादि प्रश्न' उत्तरतु–बावत्तरिचचदा बावत्तरिमेवदिणयरादित्ता । पुक्खरवरदीवड्ढे चरंतिएएपयासता ॥ १ ॥ तिण्णिसयाछत्तीसा छच्चसहस्सामहग्गहाणतु । णक्खत्ताणतुभवे सोलाइदुवेसहस्साइ ॥ २ ॥ अडयालसयसहस्सा बावीसखलुभवेसहस्साइ । दोयसयपुक्खरद्धे तारागणकोडिकोडीण ॥ ३ ॥ सोभ सोभिंसुवा ॥ ३ ॥ तथा मणुस्सखेत्तेण भंते । केवइया चंदे त्यादि प्रश्न' उत्तरन्तु–बत्तीसचदसय बत्तीसचेवसूरियाणसय । सयलमणुस्सलोयं चरंतिएएपयासता ॥ १ ॥ एक्कारसयसहस्सा छप्पियसोलामहग्गहाणतु । छच्चसयाछणउया णक्खत्तातिण्णियसहस्सा ॥ २ ॥ अडसीइसयसहस्सा चालीससहस्समणुयलोगमि । सत्तयसयाअणूणा तारागणकोडिकोडीण ॥ ३ ॥ इत्यादि, किमन्त मिद वाच्य मित्याह ॥ जावेत्यादि ॥ अस्यच सूत्राशस्या य पूर्वांश ' अठासीइचगहा अठावीसचहोतिनक्खत्ता । एगससीपरिवारो एत्तोताराणवोच्छामि ॥१॥

॥ भाषा ॥

बत्तीसचेवहुतिणक्खता छच्चसयाबावत्तरि महाग्गहाबारससहस्सा ॥२॥ छणउइसयसहस्सा चायालीसभवेसहस्साइ चत्तारिसयाइ पुक्खरि तारागणकोडिकोडीण ॥ ३ ॥ सोभ सोभिंसुवा ३ तथा अब्भितरपुक्खरद्धेणभंते केवइयाचदेत्यादि प्रश्न, उत्तर बावत्तरिचचदा बावत्तरिमेवदिणयरादित्ता पुक्खरवरदीवड्ढे चरतिएएपभासता ॥ १ ॥ तिण्णिसयाछत्तीसा छच्चसहस्सामहग्गहाणतु णक्खत्ताणतुभवे सोलाइ दुवेसहस्साइं ॥ २ ॥ अडयालसयसहस्सा बावीस खलुभवेसहस्साइं दोयसयपुक्खरद्धे तारागणकोडिकोडीण ॥ ३ ॥ सोभा सोभिंसुवा ३ तथा मणुस्सखेत्तेणभंते केवइएत्यादि, प्रश्न उत्तरन्तुबत्तीस चदसयं बत्तीसचेवसूरियाणसय सयलमणुस्सलोय चरतिएएपयासता ॥ १ ॥ एक्कारससहस्सा छप्पियसोलामहग्गहाणतु छच्चसयाछणउया णक्खत्तातिण्णियसहस्सा ॥ २ ॥ अडसीइसयसहस्सा चालीससहस्समणुयलोगमि सत्तयसयाअणूणा तारागणकोडिकोडीण ॥ ३ ॥ इत्यादि, केतलाताइं ए कहवो ते कहेछे,।

॥ टीका ॥

छावट्ठिसहस्साइं नवचेवसयाइंपंचसयराइंति ॥ पुक्खरोदेणं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा इत्यादौ प्रश्न इद मुत्तरं दृश्य–संखेज्जा चंदा पभासिंसु वा ३ ॥ इत्यादि „ एवं सव्वेसु दीवसमुद्देसुत्ति ॥ पूर्वोक्तेन प्रश्नेन यथासम्भवं सङ्ख्याता असङ्ख्याताश्च चन्द्रादय इत्यादिना चोत्तरेण स्वयं , द्वीपसमुद्रनामानिचेव–पुष्करोदसमुद्रादनन्तरो वरुणवरो द्वीपः, ततो वरुणोदः समुद्रः, एवं क्षीरवरक्षीरोदौ घृतवरघृतोदौ क्षोदवरक्षोदोदौ नन्दीश्वरनन्दीश्वरोदौ अरुणाऽरुणोदौ अरुणवराऽरुणवरोदौ अरुणवरावभासाऽरुणवरावभासोदौ कुण्डलकुण्डलोदौ कुण्डलवरकुण्डलवरोदौ कुण्डलवरावभासकुण्डलवरावभासोदौ रुचकरुचकोदौ रुचकवररुचकवरोदौ रुचकवरावभासरुचकवरावभासोदा वित्यादी न्यसङ्ख्यातानि यतो सङ्ख्याताद्वीपसमुद्रा ॥ इति नवमशते द्वितीयः ॥ २ ॥ द्वितीयो द्देशके द्वीपवक्तव्यतो क्ता तृतीयेपि प्रकारान्तरेण सैवोच्यत इत्येव सम्बद्धस्यास्येद मादिसूत्र॥

॥ मूल ॥

सिंसुवा ३ एवं सव्वेसु दीवसमुद्देसु जोइसियाणं भाणियव्वं जाव सयंभुरमणे जाव सोभं सोभिंसुवा ३ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ नवमसए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥ २ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी–कहि

॥ अनुवाद ॥

प्रभासितवन्तोवा ३ । एवं सर्वेषु द्वीपसमुद्रेषु ज्योतिष्का भणितव्या यावत् स्वयम्भूरमणे यावत् शोभितवन्त ३ तदेव भदन्त ! २ इति ॥

॥ भाषा ॥

एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं पुक्खरद्धेणभंते केवइयाचंदापभासिंसुवा ३ ॥ १ ॥ जाव इत्यादि एह सूचना अगलो ॥ पूर्वाभ छहासीठ चंद्रा श्र ठावीसचहतिणदवत्ता एगससीपरिवारो एत्तोताराणंवोच्छामि ॥८॥ छावट्ठिसहस्साइं नवचेवसयाइं पंचसयराइंति, सोभ सोभिंसुवा २ पुक्खरोदेणं भंते समुद्देकेवइयाचंदा इत्यादि प्रश्न, उत्तर संखेज्जाचंदापभासिंसुवा ३ । एवंसव्वेसुदीवेसु समुद्देसु जोइसियाणंभाणियव्वं । इम सर्व द्वीपसमुद्रनेविषे यथा सम्भवे सङ्ख्याता असङ्ख्याता २ चन्द्रादिक ज्योतिषीनी वक्तव्यता कहवी । जावसयंभूरमणे । यावत् सयम्भूरमण समुद्रनेविषे । जावसोभिंसुवा साभति वा सोभिस्सतिवा । यावत् सोभ सोभिंसुवा ३ सोभताहुवा सोभेछे । सेवंभंते २ त्ति । तदपि हेभगवन् ! तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानही । नवमसयस्स बीओ उद्देसोसम्मत्तो ९ २ । ए नवमा शतकना बीजाउद्देशानो अर्थ पूरोकह्यो ॥ २ ॥ बीजे उद्देशे द्वीपसमुद्र वक्तव्यता कही

॥ टीका ॥ रायगिहेत्यादि ॥ दाहिणिल्लाणंति ॥ उत्तरान्तरद्वीपव्यवच्छेदार्थं ॥ एवं जहा जीवाभिगमेत्ति ॥ तत्र चेद मेव सूत्र–चुल्लहिमवंतस्स वासहर पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाउ चरिमताउ लवणसमुद्द तिन्नि जोयणसयाइ उगाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवेनाम दीवे पण्णत्ते, तिन्नि आयामसयाइ आयामविक्खंभेणं नवएगूणपन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणय वणसंडेणं सव्वउ

॥ मूल ॥ भंते ! दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयद्दीवे नाम दीवे पं० ? गो० ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाउ चरिमंताउ लवणसमुद्दं उत्तरपुरच्छिमेणं तिन्निजोयणसयाइं उग्गाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाण एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पं। तिन्नि जो

अनुवाद नवमशते द्वितीय ॥ ९ ॥ २ ॥ राजगृहे (नगरे) याव देव मवादीत्–कुत्र भदन्त । दाक्षिणात्याना मेकोरुकमनुष्याणा मे कोरुकद्वीप नाम द्वीप प्रज्ञप्त ? गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणत क्षुल्लहिमवन्तस्य वर्षधरपर्वतस्यो त्तरपौरस्त्याच्चरमान्ता ल्लवणसमुद्र मुत्तरपौरस्त्येन त्रीणि योजनशता न्यवगाह्य त्रै कोरुकमनुष्याणा मेकोरुकद्वीप नाम द्वीप प्रज्ञप्तम्, त्रीणि योजनशता न्यायामवि

॥ भाषा ॥ बीज प्रकारान्तरे करी तेहीज कहेछे–रायगिहेणवरे जावएववयासी । राजगृहनगरनेविषे यावत् इमकहे । कहिणंभंतेदाहिणिल्लाण एगूरुयमणु स्साण । किहां हेभगवन् । दक्षिणदिशिनो एकोरुक मनुष्यनो । एगूरुयणामदीवे प० । एकोरुकनामे अन्तरदीप कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जंबुद्दी वे २ मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द उत्तरपुरच्छिमेण तिण्णिजोअणसयाइ ओ गाहित्ता । हेगौतम । एहीज जंबूद्वीपनामा द्वीप मेरुनामे पर्वतथी दक्षिणदिशि महाहिमवन्तनो अर्थ्याचे लघुहिमवन्त वर्षधर पर्वतनेपूर्वना छेहडाथकी एतले जंबूद्वीपनी जगतीथकी ऊपरघई लवणसमुद्र प्रते उतरें तथा पूर्वं तीनसें योजन अवगाही उल्लंघीने जाइये । एत्थणंदाहिणिल्लाण एगूरुयमणुस्सा ण । इहां ण वाक्यालंकारे, दक्षिण दिशिना एगोरुकमनुष्यनो । एगूरुयदीवेणामदीवे पण्णत्ते । एकोरुक द्वीपनामे अन्तरदीप प्ररूप्यो । तिण्णिजोअणसया

दिमपूर्वस्मिन्नात् चरिमंतात् लवणसमुद्रं तिन्नियोयणसयाइं उत्तरदिशा गत्वा दाक्षिणात्यानां आभाषिकमनुष्याणां आभाषिकद्वीपे नाम द्वीपे पत्ते
षे,, आयमेकोरुकद्वीपवद् दिति ॥ नवमशते चतुर्थं ॥ ४ ॥ एव वैषाणिकद्वीपोद्देशकोपि, नवरं दक्षिणापरा चरमान्ता दिति ॥
नवमशते पञ्चम ॥ ५ ॥ एव लाङ्गुलिकद्वीपोद्देशकोपि, नवरं मुत्तरापरा चरमान्ता दिति ॥ नवमशते षष्ठ ॥ ६ ॥
एव हयकर्णद्वीपोद्देशकोपि, नवरं मेकोरुकस्यो त्तरपौरस्त्या चरमान्ता ल्लवणसमुद्रं चत्वारि योजनशता न्यवगाह्य चतुर्योजनशतायामविष्कम्भो हय
कर्णद्वीपो भवतीति ॥ नवमशते सप्तम ॥ ७ ॥ एव गजकर्णद्वीपोद्देशकोपि, नवरं गजकर्णद्वीप आभाषिकद्वीपस्य दक्षिणपौर
स्त्या चरमान्ता ल्लवणसमुद्रं मवगाह्य चत्वारि योजनशतानि हयकर्णद्वीपसमो भवतीति ॥ नवमशते ऽष्टम ॥ ८ ॥ एवं गोकर्ण
द्वीपोद्देशकोपि, नवरं मसौ वैषाणिकद्वीपस्य दक्षिणापरा चरमान्ता दिति ॥ नवमशते नवम ॥ ९ ॥ एव शष्कुलीकर्णद्वीपोद्दे
शकोपि, नवरं मसौ लाङ्गुलिकद्वीपस्यो त्तरापरा चरमान्तादिति ॥ नवमशते दशम' ॥ १० ॥ एव मादर्शमुखद्वीपमेण्ढमुखद्वीपा5

नी परे कहवो । नवमा शतकनो चोथो उद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ४ ॥ एम वैषाणिकद्वीप उद्देशक पणि कहवो, एतलो विशेष दक्षिण पश्चि
म चरमान्तथकी । नवमा शतकनो पांचमो उद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ५ ॥ एव लाङ्गूलिकद्वीप उद्देशक पणि ए विशेष उत्तर पश्चिम चरमा
न्तथकी ए पहिलो पाँचडो नवमा शतकनो छठोउद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ६ ॥ एम हयकर्णद्वीप उद्देशक पणि कहवो ए विशेष उत्तर पूर्व
चरमान्तथकी लवणसमुद्रमें च्यारसेंयोजन अवगाहीने च्यारसेंयोजन आयामविष्कम्भे हयकर्णद्वीपछे । नवमा शतकनो सातमो उद्देशो पूरोथयो ॥ ७
एम गजकर्णद्वीप उद्देशक पणि दक्षिण पूर्व चरमान्तथकी लवणसमुद्र च्यारसेंयोजन अवगाहीने त्यांरे तिहां हयकर्णद्वीप सरीखोछे । नवमा शतकनो
आठमो उद्देशो पूरोथयो ९ ॥ ८ ॥ एम दक्षिण पश्चिम चरमान्तथकी गोकर्णद्वीप । नवमा शतकनो नवमोउद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ९
एम उत्तर पश्चिम चरमान्तथकी शष्कुलिकर्णद्वीप कहवो ए चोथो पाँचडो कह्यो । नवमाशतकनो दशमो उद्देशोपूरोथयो ८ ॥ १० ॥ ९

॥ टीका ॥

पञ्चयोजनशतानि लवणोदधि मवगा
योमुखद्वीपगोमुखद्वीपा श्यकर्णादीना चतुर्णां क्रमेण पूर्वोत्तरपूर्वदक्षिणदक्षिणापरापरोत्तरेभ्य श्चरमान्तेभ्य ॥ नवमशते चतुर्दशम ॥ १४ ॥ ए
ह्य पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चा न्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति क्रमेणा श्वमुखद्वीपहस्ति
तेपा मेवा दर्शमुखादीना पूर्वोत्तरादिभ्य श्चरमान्तेभ्य षड्योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य षड्योजनशतायामविष्कम्भा ॥ १८ ॥
मुखद्वीपसिंहमुखद्वीपव्याघ्रमुखद्वीपा भवन्ति त त्प्रतिपादका श्चान्ये चत्वार उद्देशका भवन्तीति ॥ नवमशते ऽष्टादशम ॥ अश्वकर्णद्वीपहस्तिकर्णद्वीपाकर्णद्वीपकर्णप्रावर्ण
एतेपा मेवा श्वमुखादीना तथैव सप्तयोजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य सप्तयोजनशतायामविष्कम्भा ॥ एतेपा मेवा श्वकर्णादीना त
द्वीपा भवन्ति, तत्प्रतिपादकाश्चापरे चत्वार एवोद्देशका ॥ इतिनवमशते द्वाविंशति ॥ २२ ॥ उल्कामुखद्वीपमेघमुखद्वीपविद्युन्मुखद्वीपविद्युद्दन्तद्वीपा भवन्ति तत्प्रतिपा
थैवा ष्टयोजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्या ष्टयोजनशता यामविष्कम्भा ॥ एतेपा मेवो ल्कामुखद्वीपादीना तथैव नवयोजनशतानि
दका श्चान्ये चत्वार एवो द्देशका ॥ इतिनवमशते षड्विंशति ॥ २६ ॥

॥ भाषा ॥

यकीमाडो लवणसमुद्र पाचसैयोजन अवगाहीयें ति
म आदर्शमुख द्वीप १ मेंढ्रमुखद्वीप २ अयोमुखद्वीप ३ गोमुखद्वीप ४ ए चौथो चौकडो ईशानकूणि ॥ इमहीज वली ईशानकूणि आ
हा पाचसैयोजन आयामविष्कम्भेंछे प्रतिपादक चार उद्देशाहुवे। नवमा शतकना ११ १२ १३ ॥ १४ ॥ व्याघ्रमुख ४ ए चौथो चौकडोछे न
हिदेई लवणसमुद्र छसै योजन अवगाहीयें तिहां छसैयोजन आयामविष्कम्भेंछे अश्वमुख १ हस्तिमुख २ सिंहमुख ३ प्रमाण अश्वकर्ण १ हस्तिकर्ण
वमा शतकना १५ १६ १७ ॥ १८ ॥ इम वली ईशानादि लवणसमुद्र सातसैयोजन अवगाही सातसैयोजन ॥ इम वली ईशानादि लवणसमुद्र आ
२ कर्णद्वीप ३ कर्णप्रावरणद्वीप ४ ए नवमा शतकनो पाचमो चौकडोछे पूरोथयो १९ २० २१ ॥ २२ ॥ विद्युद्दन्तद्वीप ४ ए नवमा शतकनोछ
ठसैयोजन अवगाहीयें तिहा आठसैयोजन आयामविष्कम्भेंछे उल्कामुखद्वीप १ मेघमुखद्वीप २ विद्युत्मुखद्वीप ३ अवगाही जाय तिहा नवसैयोजन आयामविष्क
ठो चौकडो पूरोथयो २३ २४ २५ ॥ २६ ॥ इम वली ईशानादि लवणसमुद्र नवसैयोजन

॥ टीका ॥

लवणसमुद्रं मवगाह्य नवयोजनशतायामविष्कम्भा घनदन्तद्वीपलष्टदन्तद्वीपगूढदन्तद्वीपशुद्धदन्तद्वीपा भवन्ति तत्प्रतिपादका श्चान्ये चत्वार एवो द्देशका इत्येव मादितो ऽत्र नवमशते त्रिंशत्तम ॥ ३० ॥ शुद्धदन्तोद्देशक इति उक्तरूपा श्चार्था केवलिधर्मा ज्ज्ञायन्ते तद्वा श्रु त्वापि कोपि लभत इत्याद्यर्थप्रतिपादनपर मेवत्रिंशत्तम मुद्देशक मथास्य तस्य चेद मादिसूत्रम् ॥ रायगिहेत्यादि ॥ तत्र च ॥ असोच्चत्ति ॥ अश्रुत्वा धर्मफलादिप्रतिपादकवचन मनाकर्ण्य प्राकृतधर्म्मानुरागा देवे त्यर्थं ॥ केवलिस्सवत्ति ॥ केवलिनो जिनस्य ॥ केवलिसावगस्सत्ति ॥ केवली येन

॥ मूल ॥

अंतरद्दीवा सएण २ आयामविक्खनेणं नाणियव्वा, नवरं दीवे २ उद्देसज, एव सव्वेवि एए अठावीस उ द्देसगा सेवं नंते ! नंते त्ति ॥ १ ॥ नवमसयस्स तीसइमो ॥ ३० ॥ रायगिहे जाव एवंवयासी—असोच्चाण नंते ! केवलिस्सवा केवलिसावगस्सवा केवलिसाविचाएवा केवलिउवासगस्सवा

अनुवाद

स्ते मनुजा प्रचसा श्रमण । आयुष्मन् । एव मष्टाविंशति रप्यन्तरद्वीपा स्वकीयेन स्वकीयेना यामविष्कम्भेण भणितव्या नवरं द्वीपे द्वीप उद्दे शको, एव सर्वे प्यते अष्टाविंशति रुद्देशका भणितव्या स्तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति ॥ नवमशते त्रिंशत्तम ॥ ३० ॥ राजगृहे याव देव मवादीत्–अश्रुत्वा भदत ! केवलिनोवा केवलिश्रावकस्यवा केवलिश्राविकायावा केवल्युपासकस्यवा केवल्युपासिकायावा त

॥ भाषा ॥

भद्र घनदन्तद्वीप १ लष्टदन्त २ गूढदन्त ३ शुद्धदन्त ४ पर्यन्तविशेष । दीवेरे उद्देशओ । दीप २ नोंचिये उद्देशो कहवा । एवसव्वेविएएअट्ठावीसउद्देसगा । इम सगलो एह अट्ठावीस अन्तरदीपना अट्ठावीस उद्देशा कह्या । सेवमंते २ त्ति । तहत्ति देवानुप्रिय ! तुम्हें कह्यु ते सर्व सत्यछे । ० नवमा शतकनासातसो चौकडा पूरावजी २७ २८ २९ ॥ ३० ॥ नवमसयस्स तीसइम उद्देसोसमत्तो । ० नवमा शतकनो त्रीसमो उद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ३० पाछे कह्या ते अर्थ केवली जाणे ते कोइएक अणसुण्यां पणि पामे ते कहेछे—रायगिहेनगरे जाव एववयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् इम कहे । पञ्चाधणमतकेवलिवासा । धर्मफल दि प्रतिपादनवचन अणसुण्या प्राकृतधर्मना अनुरागथाज त्वर्थ देवानुप्रिय ! जिननो । केवलीसावगस्सवा । केवली

॥ टीका ॥

स्वय मेव पृष्ट श्रुतंवा, येन तद्वचन मसौ केवलिश्रावक स्तस्य ॥ केवलिउवासगस्सवत्ति ॥ केवलिन उपासनां विदधानेन केवलिनैवा न्यस्य कथ्य मान श्रुत येनासौ केवल्युपासक. ॥ तप्पक्खियस्सत्ति ॥ केवलिपाक्षिकस्य स्वयंबुद्धस्य ॥ धम्मंति ॥ श्रुतचारित्ररूप ॥ लभेज्जत्ति ॥ प्राप्नुयात् ॥ सव णयाएत्ति ॥ श्रवणतया श्रवणरूपतया श्रोतु मित्यर्थ ॥ नाणावरणिज्जाणंति ॥ बहुवचन, ज्ञानावरणीयस्य मतिज्ञानावरणादिभेदेना वग्रहमत्यावर णादिभेदेन च बहुत्वात्, इहच क्षयोपशमग्रहणात् मत्यावरणाद्येव तद्ग्राह्य नतु केवलावरण तत्रक्षयस्यैव भावात्, ज्ञानावरणीयस्य क्षयोपशम

॥ मूल ॥

केवलिउवासियाएवा तप्पक्खियस्सवा तप्पक्खियसावगस्सवा तप्पक्खियसावियाएवा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाएवा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव

अनुवाद

त्पाक्षिकस्यवा तत्पाक्षिकश्रावकस्यवा तत्पाक्षिकश्राविकायावा तत्पाक्षिकोपासकस्यवा तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलिप्रज्ञप्त धर्म लभेत श्रव णतया ? गौतम । अश्रुत्वा केवलिनोवा याव तत्पाक्षिकोपासिकायावा एक: कश्चित् केवलिप्रज्ञप्त धर्म लभेत श्रवणतया, एकः कश्चित् केव

॥ भाषा ॥

जिणे प.ते पूछ्या वलो केवलोनो वचन साभल्यो जेणे ते केवली श्रावक तेहनो । केवलोसावियाएवा केवलोउवासगस्सवा । केवलीना वचन सुण्या एहवी श्राविका केवलोनो उपासनाकरता अथवा केवलो अनेराने कहतासुणे ते केवलोउपासकना तथा । केवलोउवासियाएवा तप्पक्खियस्सवा । केवली अने राने कहता वचन सुणे ते उपासिको तत्पक्षी जे स्वयबुद्ध प्रमुखनो । तप्पक्खियसावगस्सवा तप्पक्खियसावियाएवा । स्वयबुद्ध पूछीने अर्थधारया ते तत्पक्षी श्रावक एह तत्पक्षी श्राविका । तप्पक्खियउवासगस्सवा तप्पक्खियउवासियाएवा । स्वयबुद्धनी उपासना करता अथवा स्वयबुद्ध अनेराने कहता वचन सु ण्या ते उपासक एहवी तत्पाक्षिक उपासिका इत्यादिक, वचननो अणसुण्यो । केवलि पणत्त धम्मलभेज्ज सवणयाए । केवलोप्रणीत धर्म श्रुत चारित्ररूप पामे साभलवाने इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असोच्चाणकेवलिस्सवा । हेगौतम । धर्मना फलनो वचन अणसाभलोने जिननो । जाव तप्पक्खियउवासिया एवा अत्थेगइए । यावत् तत्पक्षी स्वयबुद्धप्रमुखनी उपासिकानो केतलाएक । केवली पणत्त धम्म लभेज्जसवणयाए । केवलीप्रणीत धर्म श्रुत चारित्ररूप पा

॥ मूल ॥

तप्पक्खियउवासियाएवा अस्सोच्चा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगइए केवलिपन्नत्तं धम्मं नोलभेज्जा सवणयाए। सेकेणठेणं भंते! एवं वुच्चइ असोच्चाणं जाव नोलभेज्जा सवणयाए? गो०! जस्सणं नाणावरणिज्जाणंकम्माणंखओवसमे कडे भवइ सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव तप्पक्खियउवासियाएवा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, जस्सणं नाणावरणिज्जाणकम्माणखओवसमे नो कडे भवइ सेण असोच्चाकेवलिस्सवा जाव तप्पक्खियउवासियाएवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नोलभेज्जा सवणयाए सेतेणठेणं गो

॥ अनुवाद ॥

लिप्रज्ञप्तं धर्मं नोलभेत श्रवणतया। अथ केनार्थेन भदन्त! एवं मुच्यते अश्रुत्वा यावत् नोलभेत श्रवणतया? गौतम! यस्य ज्ञानावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमः कृतो भवति सो ऽश्रुत्वा केवलिनोवा यावत् तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभेत श्रवणतया, यस्य ज्ञानावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमो नोकृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा यावत् तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नोलभेत श्रवणतया त

॥ भाषा ॥

मे सांभलवाने। अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्मं णोलभेज्जसवणयाए। केतलाएक केवलीप्रणीत धर्म न पामे सांभलवाने। सेकेणट्ठेणभंते एवं वुच्चइ। ते स्ये अर्थे हे भगवन्! इम कह्यु। असोच्चाणं जाव णोलभेज्ज सवणयाए। अणसांभलीने यावत् न पामे सांभलवाने इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जस्सणं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडेभवइ। हे गौतम जेहने ए व्याख्यानकारे, ज्ञानावरणीयकर्म क्षयोपशम कीधो हुवे इहां क्षयोपशमना ग्रहणथकी मति श्रावरणादिक लीजवुंरुवा पणि केवल ज्ञानावरण नथी केवलज्ञाननेविषे क्षयनाज भावथकी। सेणंअसोच्चाणं केवलिस्सवा। ते अणसुणीने जिननो वचन जाव तप्पक्खियउवासियाएवा। यावत् स्वयंबुद्ध श्रमणनी उपासिकानो वचन। केवलि पण्णत्तं धम्मंलभेज्जसवणयाए। केवलीप्रणीत धर्म लाभे सांभलवाने। जस्सणंणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णोकडेभवइ। यस्स जेहने ज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपशम न कीधो हुवे। सेणंअसोच्चाणं केवलिस्सवा। तेह अणसांभलीने जिननो वचन। जाव तप्पक्खियउवासियाएवा। यावत् तत्पाक्षिक उपासिकानो वचन। केवलिपण्णत्तं धम्मं णोलभेज्ज सवण

॥ टीका ॥

श्च गिरिसरिदुपलघोलनान्यायेनापि कस्यचि त्स्या त्तत्सद्भावेचा श्रुत्वापि धर्म्मं लभेत श्रोतुं चयोपशमस्यैव तल्लाभे ऽन्तरङ्गकारणत्वा दिति ॥ केवल बोहिंति ॥ शुद्ध सम्यग्दर्शन ॥ बुज्झेज्जत्ति ॥ बुध्येता नुभवेदि त्यथ., यथा प्रत्येकबुद्धादि रेव मुत्तरत्रा प्युदाहर्त्तव्य ॥ दरिसणावरणिज्जाणंति ॥ इह दर्शनावरणीय दर्शनमोहनीय मभिगृह्यते, बोध. सम्यग्दर्शनपर्यायत्वात् तल्लाभस्यच तत्क्षयोपशमजन्यत्वा दिति ॥ केवल मुक्तभविता

॥ सूत्र

यमा ! एव वुच्चइ तचेव जाव नोलभेज्ज सवणयाए । असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव तप्पक्खियउवासियाएवा केवलं बोहि बुज्झेज्जा ? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव अत्थेगइए केवलंबोहिं बुज्झेज्जा अत्थेगइए केवलं बोहि नोबुज्झेज्जा । सेकेणठेण भंते ! जाव नोबुज्झेज्जा ? गो० ! जस्सणं दरिसणावरणि

अनु ० द

त्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते तद्वैव याव न्नोलभत श्रवणतया । अश्रुत्वा भदन्त ! केवलिनोवा याव त्तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवला बोधि बुध्येत ? गौतम ! अश्रुत्वा केवलिनोवा याव देक कश्चित् केवला बोधि बुध्येत, एक कश्चित् केवला बोधि नोबुध्येत । अथ केनार्थेन भदन्त । याव न्नोबुध्येत ? गौतम ! यस्य दर्शनावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा यावत् केवला बोधि बुध्ये

॥ भाषा ॥

याए । केवलीप्रणीत धर्म न पामे साम्भलवाने । सेकेणट्ठेण गोयमा एव वुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगौतम इमकह्यु । तचेव जाव णोलभेज्ज सवणयाए । तिम होज यावत् न पामे साम्भलवाने । असोच्चाणभते केवलिस्सवा । अणसाम्भलीने हेभगवन् केवलीनो वचन । जावतप्पक्खियउवासियाएवा । यावत् तत्पाक्षिक स्वयबुद्ध प्रमुखनी उपासिकाना वचन । केवलबोहिंबुज्झेज्जा । शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रतें अनुभवे, जिम प्रत्येकबुद्धादिक इम आगे पणि उदाहरण कहगो । गोयमा असोच्चाए केवलिस्सवा । हेगौतम अणसाम्भलीने केवलीनो वचन । जाव अत्थेगइए केवलबोहिं बुज्झेज्जा । यावत् केतलाएक शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रतें अनुभवे । अत्थेगइएकेवल बोहिं णो बुज्झेजा । केतलाएक शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रतें अनुभवे नहो । सेकेणट्ठेण जाव णो बुज्झेज्जा । ते किसे अर्थे याव शुद्ध सम्यग्दर्शन अनुभवे नहो प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सणदरिसणावरणिज्जाण कम्मण खओवसमे कडे भवइ । हेगौतम ! जेहने दर्शनावरणीय ते दर्श

आगारात् अणगारितां ॥ केवलां शुद्धां सम्पूर्णांवा; नगारता मितियोगः ॥ धम्मंतराइयाणंति ॥ अन्तरायो विघ्नः सोस्ति येषु ता न्यन्तरायिका ॥ टीका ॥

णाणं कम्माणं खओवसमे कडे सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव केवल वोहिं वुज्झेज्जा, जस्सणं दरिसणा वरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नोकडे भवइ सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव केवलं वोहिं नोवुज्झेज्जा सेतेणट्ठेणं जाव नोवुज्झेज्जा । असोच्चाण भंते ! केवलिस्सवा जाव तप्पक्खियउवासियाएवा केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा अत्थेग ॥ मूल ॥

त, यस्य दर्शनावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमो नोकृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा यावत् केवलां बोधिं नोबुध्येत तत्तेनार्थेन गौतम ! याव नोबुध्येत । अश्रुत्वा भदन्त ! केवलिनोवा याव तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलां मुण्डो भूत्वा आगारा दनगारतां प्रव्रजेत् ? गौतम ! अश्रुत्वा केवलिनोवा याव तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलां मुण्डो भूत्वा स्त्येकः कश्चि दागारा दनगारतां प्रव्रजेत्, अस्त्येकः कश्चिन् मुण्डो अनुवाद

नमोहनीय कर्मनो वोधिने सम्यग्दर्शन पर्याय पणायको ते सम्यग्दर्शनना लाभने दर्शनमोहनीय क्षयोपशमथो ऊपनामाटे तेह कर्मक्षयोपशमथया हुवे। सेणअसोच्चाकेवलिस्सवा । तेह अणसांभल्ये केवलीप्रमुखनो वचन । जाव केवल वोहि वुज्झेज्जा । यावत् शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रते अनुभवे । जस्सण दरिसणा वरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ । जेहने दर्शनावरणीय कर्मनो क्षयोपशम न कीधो हुवे। सेणअसोच्चा केवलिस्सवा। तेह अणसांभलीने जिन नो वचन । जाव केवल वोहिं णो वुज्झेज्जा । यावत् शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रते अनुभवे नही । सेतेणट्ठेण जाव णो वुज्झेज्जा । ते तिणेअर्थे यावत् शुद्ध सम्यग्दर्श न अनुभवे नही । असोच्चाण भंते केवलिस्सवा । अणसांभलीने हेभगवन् ! केवलीनो वचन । जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा । यावत् तत्पाक्षिक उपासि कानो वचन । केवलमुंडे भवित्ता । शुद्ध सपूर्ण अणगार मुण्ड थई । आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा । गृहस्थावास छांडी अणगारपणें प्रव्रज्या लिये ए तिप्रश्न उत्तर । गोयमा असोच्चाण केवलिस्सवा । हेगौतम । अणसांभली केवलीनो वचन । जाव उवासियाएवा । यावत् उपासिकानो वचन । अत्थेग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

त्ति धर्मस्य चारित्रप्रतिपत्तिलक्षणस्या न्तरायिकाणि धर्मान्तरायिकाणि तेषां वीर्यान्तरायचारित्रमोहनीयभेदाना मित्यर्थः ॥ चरित्तावरणिज्जाणंति॥

॥ मूल ॥

इए केवलं मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगइए केवलं मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं नोपव्वएज्जा, सेकेणट्ठेणं जाव नोपव्वएज्जा ? गो० ! जस्सणं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा जस्सणं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नोकडे भवइ सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव मुंडेभवित्ता जाव नोप

अनुवाद

भूत्वा केवला मागारा दनगारतां नोप्रव्रजेत् । अथ केनार्थेन यावन्नोप्रव्रजेत् ? गौतम ! यस्य धर्मान्तरायिकाणां कर्मणां क्षयोपशमः कृतो भवति सोऽश्रुत्वा केवलिनोवा याव त्केवलो मुण्डो भूत्वा ऽऽगारा दनगारतां प्रव्रजेत्, यस्य धर्मान्तरायिकाणां कर्मणां क्षयोपशमो नोकृतो भवति सोऽश्रुत्वा केवलिनोवा याव न्मुण्डो भूत्वा यावन्नोप्रव्रजेत् तत्तेनार्थेन यावन्नोप्रव्रजेत् । अश्रुत्वा भदन्त ! केवलिनोवा याव त्त

॥ भाषा ॥

इए केवल मुंडे भवित्ता । केतलाएक गृह मुण्ड थईने । आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा । गृहवासथकी अणगारपणें दीक्षा लियें । अत्थेगइए केवलं मुंडे भवित्ता । केतलाएक गृह मुण्ड थईने । आगाराओ अणगारियं णो पव्वएज्जा । गृहवासथकी अणगारपणें दीक्षा लियेनहीं । सेकेणट्ठेणं जाव णो पव्वएज्जा । ते स्यें अर्थे यावत् प्रव्रज्या न ल्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सणं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ । हेगौतम जेहने धर्म जे चारित्र प्रतिपत्ति लक्षण तेहनो जे अन्तरायिक तेह कर्मनो क्षयोपशम कीधो हुवे, एतले वीर्यान्तराय चारित्रमोहनीय भेदनो जिणें क्षयोपशम कीधो हुवे । सेणंअसोच्चा केवलिस्सवा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव केवलमुंडेभवित्ता । यावत् गृह मुण्ड थईने । आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा । गृहवासथकी अणगारपणें प्रव्रज्या ल्यें । जस्सणं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ । जेहने धर्म जे चारित्र प्रतिपत्तिलक्षण तेहनो अन्तरायिक तेहकर्मनो क्षयोपशम न कीधो हुवे । सेणंअसोच्चा केवलिस्सवा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन । जावमुंडे भविता । यावत् मुण्ड थईने । आ

॥ टीका ॥

इह वेदलक्षणानि चारित्रावरणीयानि विशेषतो ग्राह्याणि मैथुनविरतिलक्षणस्य ब्रह्मचर्यवासस्य विशेषत स्तेषामेवा वारकत्वात् ॥ केवलेण सज

॥ मूल ॥

ब्रएज्जा सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! जाव नोपव्वएज्जा । असोच्चाणं भंते ! केवलिस्स जाव उवासियाएवा केव
ल बंभचेरवासं आवसेज्जा ? गो० ! अत्थेगइए केवल बंभचेरवास आवसेज्जा अत्थेगइए नोआवसेज्जा ।
सेकेणठ्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जाव नोआवसेज्जा ? गो० ! जस्सणं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवस
मे कडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव केवल बंभचेरवासआवसेज्जा , जस्सणं चरित्तावरणिज्जाणं

॥ अनुवाद ॥

त्वाद्विकोपासिकायावा केवल ब्रह्मचर्यवास मावसेत् ? गौतम ! अस्त्येक कश्चि त्केवल ब्रह्मचर्यवास मावसेत्, अस्त्येक कश्चि न्नोआवसेत् ।
अथ केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यत याव न्नो आवसेत् ? गौतम ! यस्य चरित्रावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति सो श्रुत्वा केवलि
नोवा याव त्केवल ब्रह्मचर्यवास मावसेत्' यस्य चरित्रावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो नोकृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव न्नो आव

॥ भाषा ॥

व णो पव्वज्जा । यावत् दीक्षा ले नही । सेतेणठ्ठेण गोयमा जाव णो पव्वज्जा । ते तेणे अर्थे हेगौतम । यावत् साधुपणो न ले । असोच्चाणभते केवलि
स्सवा । अणसांभलीने हेभगवन् । केवलीनो वचन । जाव उवासियाएवा । यावत् उपासिकानो वचन । केवल बभचेरवास आवसेज्जा । शुद्ध अथवा सपू
र्ण ब्रह्मचर्य वास मैथुन विरतिलक्षण पाले । गोयमा असोच्चाण केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा । हेगौतम नही सांभली केवलीनो वचन यावत् उपासि
कानो वचन । अत्थेगइए केवल बभचेरवास आवसेज्जा । केतलाएक शुद्ध मैथुनविरति लक्षण ब्रह्मचर्य पाले । अत्थेगइए णो आवसेज्जा । केतलाएक ब्रह्म
चर्यव्रत न पाले । सेकेणठ्ठेणभंते एववुच्चइ । तस्यअर्थ हेभगवन् । इमकह्यु । जावणो आवसेज्जा । यावत् शुद्ध मैथुन विरतिलक्षण ब्रह्मचर्य न पाले । गोयमा जस्स
णचरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवई । हेगौतम । जेहने चारित्रावरणीय कहता पुरुष वेदादि तेहकर्मनो क्षयोपशम कीधो हुवे । सेणअसोच्चा
केवलिस्सवा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव केवल बभचेरवास आवसेज्जा । यावत् शुद्ध मैथुन विरतिलक्षण ब्रह्मचर्य प्रते सेवे पाले । जस्सण चरि

॥ टीका ॥

मेयं सजमेज्जत्ति ॥ इह संयम प्रतिपन्नचरित्रस्य तदतिचारपरिहाराय यतनाविशेष ॥ जयणावरणिज्जाणंति ॥ इहतु यतनावरणीयानि चारि

॥ मूल ॥

कम्माण खउवसमे नोकडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव नोआवसेज्जा सेतेणठेणं जाव नोआव सेज्जा । असोच्चाणं भंते! केवलिस्सवा जाव केवलेण सजमेणं संजमेज्जा? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा अत्थेगइए केवलेणं सजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं संजमेणं नोसंजमेज्जा । सेकेणठेणं जाव नोसंजमेज्जा? गो० ! जस्सणं जयणावरणिज्जाणं कम्माण खउवसमे कडे भवइ सेण अ

अनुवाद

सेत् ततेनार्थेन गौ० । याव न्नो आवसेत् । अश्रुत्वा भदन्त । केवलिनोवा याव त्केवलेन सयमेन सयमयेत्? गौतम ! अश्रुत्वा केवलिनोवा याव दुपासिकायावा अस्त्येक कश्चि त्केवलेन सयमेन सयमयेत्' अस्त्येक' कश्चि त्केवलेन सयमेन नोसयमयेत् । अथ केनार्थेन याव न्नो सयमयेत्? गौतम ! यस्य यतनावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतोभवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव त्केवलेन सयमेन सयमयेत्, यस्य यतनावरणीया

॥ भाषा ॥

णावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णे कडे भवइ । जेहने चारित्रावरणीय पुरुष वेदादिक तेहकर्मनो क्षयोपशम न कीधो हुवे । सेणअसोच्चा केवलिस्स वा । तेह अणसाभलीने केवलीनो वचन । जाव णो आवसेज्जा । यावत् शुद्ध मैथुन विरतिलक्षण ब्रह्मचर्य न पाले । सेतेणट्ठेण जाव णो आवसेज्जा । ते तेणे अर्थे यावत् ब्रह्मचर्य न पाले । असोच्चाणभंते केवलिस्सवा । अणसाभलीने हेभगवन् । केवलीनो वचन । जाव केवलेणं सजमेण सजमेज्जा । यावत् शु द्ध सपूर्ण सयम कहिये प्रतिपन्न चारित्र तेहना अतिचार परिहरवाने काजे यतना विशेषतिणेंकरी सयमे सयम पामे । गोयमा असोच्चाण केवलिस्सवा । हेगौतम । अणसाभलीने केवलीनो वचन । जाव उवासियाएवा । यावत् उपासिकानो वचन । अत्थेगइए केवलेण सजमेण संजमेज्जा । केतलाएक शुद्ध सयमेकरी चारित्रना अतिचार परिहरवाने काजे यतना विशेष पामे । अत्थेगइए केवलेण सजमेण णो सजमेज्जा । केतलाएक शुद्धसयम प्रतिपन्न चा रित्रना अतिचार परिहरवाने यत्नविशेष न पामे । सेकेणट्ठेणभंते जाव णो संजमेज्जा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । यावत् न पामे । गोयमा जस्सण जयणावर

अविशेषविषयवीर्यान्तरायलक्षणानि मन्तव्यानि ॥ अज्झवसाणावरणिज्जाणति ॥ संवरशब्देन शुताध्यवसायवृत्ते र्विवक्षितत्वा त्तस्याश्च भावचारित्र

सोच्चाकेवलिस्सवा जाव केवलेणं सजमेणं संजमेज्जा, जस्सणं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव नोसंजमेज्जा सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगइए नोसंजमेज्जा। असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा केवलेणं सवरेणं संवरेज्जा ? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव अत्थेगइए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगइए केवलेणं जाव नोसंवरेज्जा। सेकेणठ्ठेणं

ना कर्मणा क्षयोपशमो नोकृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव नो सयमयेत् तत्तेनार्थेन गौतम। याव दस्त्येक कश्चि न्नोसयमयेत्। अ श्रुत्वा भदन्त। केवलिनोवा याव दुपासिकायावा केवलेन सवरेण सवृणुयात् ? गौतम ! अश्रुत्वा केवलिनोवा याव दस्त्येक. कश्चि त्केवलेन सवरेण सवृणुयात्' अस्त्येक' कश्चि त्केवलेन याव नो सवृणुयात्। अथ केनार्थेन भदन्त। याव नो सवृणुयात् ? गौतम ! यस्या ध्यवसानावरणीयाना

णिज्ज कम्म खओवसमे कडे भवइ। हेगौतम। जेहने यतनावरणीयकर्म ते चारित्रविशेष विषय वीर्यान्तराय लक्षण क्षयोपशम कीधो हुवे। सेण असोच्चाए केवलिस्सवा। तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन। जाव केवलेण सजमेण सजमेज्जा। यावत् चारित्रना अतिचार निवारवाने अर्थे यतन विशेष पामे। जस्सण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ। जेहने यतनावरणीय चारित्रविशेष वीर्यान्तरायकर्म क्षयोपशम न कीधो हुवे। सेण असोच्चा केवलिस्सवा। तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन। जाव णो सजमेज्जा। यावत् यतनविशेष न पामे। सेतेणठ्ठेण गोयमा जाव अत्थेगइए णो सजमेण। ते तेणेअर्थे हे गौतम। यावत् केतलाएक यतनविशेष न पामे। असोच्चाणभंते केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा। अणसांभलीने हेभगवन्। केवलीनो वचन यावत् उपासिकानो वचन। केवलेण सवरेण सवरेज्जा। शुद्ध सपूर्ण सवरशब्दे शुभ अध्यवसाय वृत्ति तिणे प्रवर्त्ते इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असोच्चा ण केवलिस्सवा। हेगौतम। अणसांभलीने केवलीनो वचन। जाव अत्थेगइए केवलेण सवरेण सवरेज्जा। यावत् केतलाएक शुध अथवा संपूर्ण अध्यवसाय

॥ मूल ॥

जाव नोसंवरेज्जा ? गोयमा ! जस्सणं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ सेणं असो
च्चाकेवलिस्सवा जाव केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, जस्सण अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो
कडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव नोसंवरेज्जा सेतेणट्ठेणं जाव नोसंवरेज्जा । असोच्चाण भंते !
केवलिस्सवा जाव केवल आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ? गो० ! असोच्चाण केवलिस्सवा जाव उवासि

अनुवाद

कर्मणा क्षयोपशम. कृतो भवति सोऽश्रुत्वा केवलिनोवा याव एकेवलेन संवरेण संवृणुयात्, यस्या ध्यवसानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो नो
कृतो भवति सोऽश्रुत्वा केवलिनोवा याव नो संवृणुयात् तत्तेनार्थेन याव नो संवृणुयात् । अश्रुत्वा भदन्त । केवलिनोवा याव एकेवल माभिनि
बोधिकज्ञान मुत्पादयेत् ? गौतम । अश्रुत्वा केवलिनोवा याव दुपासिकायावा ऽस्त्येक कश्चि एकेवल माभिनिबोधिकज्ञान मुत्पादये दस्त्ये

॥ भाषा ॥

वृत्ति तिण प्रवर्त्ते । अत्थेगइए केवलेण जाव णो संवरेज्जा । कतलाएक शुद्ध संपूर्ण शुभ अध्यवसायवृत्ति तिण प्रवर्त्ते नही । सेकेणट्ठेण जाव णो संवरेज्जा ।
ते स्यें अर्थे यावत् न प्रवर्त्ते इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ । हेगौतम जहने अध्यवसानावरणी
य शब्दे इहां भावचारित्रावरणीय कह्यो, तेह कर्मनो क्षयोपशम कीधो हुवे । सेण असोच्चा केवलिस्सवा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव के
वलेण संवरेण संवरेज्जा । यावत् शुभ अध्यवसायें प्रवर्त्ते । जस्सण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णोकडे भवइ । जेहने अध्यवसानावरणीय कर्म
नो क्षयोपशम न कीधो हुवे । सेण असोच्चा केवलिस्सवा जाव णो संवरेज्जा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन शुभ अध्यवसायवृत्ति तिणे न प्रवर्त्ते । सेते
णट्ठेण जाव णो संवरेज्जा । ते तिणे अर्थे यावत् न प्रवर्त्ते । असोच्चाण भंते केवलिस्सवा जाव केवल आभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा । अणसांभलीने हेभग
वन् । केवलीनो वचन यावत् केवल शुद्ध अथवा संपूर्ण मतिज्ञान तेहप्रतें उपार्जे पामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । असोच्चाण केवलिस्सवा । हेगौतम ।
अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव उवासियाएवा । यावत् उपासिकानो वचन । अत्थेगइए केवल आभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा । कोतलाएक शुद्ध

याएवा अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगइए केवलं आभिणिबोहियनाणं नोउप्पाडेज्जा । सेकेणट्ठेणं जाव नोउप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्सणआभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्सणं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नोकडे भवइ सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नोउप्पाडेज्जा, सेतेणट्ठेणं जाव नोउप्पाडेज्जा । असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव

कः कश्चित् एकेवल माभिनिबोधिकज्ञान नोत्पादयेत् । अथ केनार्थेन याव नो त्पादयेत् ? गौतम ! यस्या भिनिबोधिकज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव एकेवल माभिनिबोधिकज्ञान मुत्पादयेत्' यस्या भिनिबोधिकज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो नोकृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव एकेवल माभिनिबोधिकज्ञान नो त्पादयेत्' तत्तेनार्थेन याव नो त्पादयेत् । अ

सपूर्ण मतिज्ञानप्रते उपार्जे पामे। अत्थेगइए केवलंआभिणिबोहियणाण णो उप्पाडेज्जा सेकेणट्ठेण जाव णो उप्पाडेज्जा । केतलाएक शुद्ध सपूर्ण मतिज्ञानप्रते न उपार्जे न पामे, ते स्ये अर्थे यावत् न उपार्जे न पामे। गोयमा जस्सण आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ। हेगौतम जेहने आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीयकर्म क्षयोपशम कीधो हुवे । सेण असोच्चा केवलिस्सवा । ते अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव केवल आभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा । यावत् शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपार्जे पामे। जस्सण आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ । जेहने आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपशम कीधो न हुये । सेण असोच्चा केवलिस्सवा । तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन । जाव केवल आभिणिबोहियणाण णो उप्पाडेज्जा । यावत् संपूर्ण आभिनिबोधिकज्ञान न उपार्जे न पामे। सेतेणट्ठेण जाव णो उप्पाडेज्जा । ते तेणे अर्थे यावत् न उपार्जे न पामे। असोच्चाभंतेकेवलि जाव केवलं सुयणाण उप्पाडेज्जा । अणसांभलीने हेभगवन् केवलीनो वचन यावत् शुद्ध सपूर्ण श्रुतज्ञान प्रते उपार्जे पामे। एव

॥ मूल ॥

केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ? एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्सवि भाणियव्वा, नवरं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमो भाणियव्वो, एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं नवरं ओहिनाणावरणिज्जाणं खओवसमो भाणियव्वो, एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा नवरं मणपज्जव नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमं भाणियव्वं । असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव तप्पक्खियउवासि

अनुवाद

श्रुत्वा भदन्त । केवलिनोवा याव रकेवल श्रुतज्ञान मुत्पादयेत् ? एव यथा ऽऽभिनिबोधिकज्ञानस्य वक्तव्यता भणिता तथा श्रुतज्ञानस्यापि भणितव्या नवर श्रुतज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो भणितव्य, एव चैव केवल मवधिज्ञान भणितव्यं नवर मवधिज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो भणितव्य, एव केवल मन पर्यवज्ञान मुत्पादयेत्, नवर मन पर्यवज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो भणितव्य । अश्रुत्वा भदन्त । केवलिनोवा याव तत्पाक्षिकोपासिकायावा केवलज्ञान मुत्पादयेत् ? एव चैव नवर केवलज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयो भणितव्य

॥ भाषा ॥

जहा आभिणिबोहिय णाणस्स वत्तव्वया भणिया । इम जिम आभिनिबोधिकज्ञानमी वक्तव्यता कही । तहा सुअणाणस्सवि भाणियव्वा । तिम श्रुतज्ञाननी पणि वक्तव्यता कहवी । णवर सुअणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे । एतलोविशेष श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपशम कीधो हुवे एहवो कहवो । एवचेव केवल ओहिणाण भाणियव्व । इमहीज निश्चे शुद्ध सपूर्ण अवधिज्ञान जाणवो । णवर ओहिणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे । एतलोविशेष अवधि ज्ञानावरणकर्म क्षयोपशम एहवो कहवो । एव केवल मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा । इम केवल संपूर्ण मन.पर्यवज्ञान उत्पादे । णवर मणपज्जव णाणावरणीयाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे । एतलो विशेष मनपर्यवज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कहवो । असोच्चाण भंते केवलिस्सवा । अणसाभलीने हेभगवन् केवलीनो वचन । जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा । यावत् तत्पाक्षिक स्वयबुद्ध तेहनी उपासिकानो वचन । केवलणाण उप्पाडेज्जा एवचेव । केवल ज्ञान उपार्जे इमहीज कहवो । णवर केवलणाणावरणिज्जाण कम्माण खए भाणियव्वे सेसतचेव । एतलोविशेष

याएवा केवलनाणं उप्पाडेज्जा एवचेव नवरं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए नाणियव्वे सेस तंचेव । सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव केवलनाणं नोउप्पाडेज्जा । असोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव त प्पक्खियउवासियाएवा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहि बुज्झेज्जा, केवल मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, केवल बम्भचेरवास आवसेज्जा, केवलेणं संजमेण संजमेज्जा। केवलेणं संवरेण संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा जाव केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा जाव केवलना

शेष तचैव तत्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते याव त्केवलज्ञान नो त्पादयेत् ॥ अश्रुत्वा भ० । केवलिनोवा याव त्तत्पाक्षिको पासिकायावा केव लिप्रज्ञप्त धर्मं लभेत श्रवणतया, केवला बोधि बुध्यत' केवल मुण्डो भूत्वा गारा दनगारता प्रव्रजत्, केवल ब्रह्मचर्यवास मावसेत केवलेन सय मेन सयमयेत्, केवलेन सवरेण सवृणुयात्, केवल माभिनिबोधिकज्ञान मुत्पादये, द्याव त्केवल मन पर्यवज्ञान मुत्पादये, द्याव त्केवलज्ञान मु

केवल ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय कीधो हुवे, इसो कहवो जेमाटे केवलज्ञानावरणीयनो क्षयोपशम नथी क्षयहोजछे तेमाटे शेष तिमहीज कहवो । सेते णट्ठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तिणे अर्थे हेगौतम । इमकह्यो । जाव केवलणाण णो उप्पाडेज्जा । यावत् केवलज्ञान उपार्जे नहीं एतलालगे कहवो पूर्वोक्त अर्थ प्रतेज समुदायें करी वली कहेछे—असोच्चाणभंते केवलिस्सवा । अणसांभलीने हेभगवन् केवलीनो वचन । जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा । यावत् तत्पाक्षिक उपासिकानो वचन । केवलि पणत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । केवलीये कह्यो धर्मश्रुत चारित्ररूप ते पामे सांभलवान । केवलबोहि बुज्झेज्जा । शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रते अनुभवे । केवल मुंडे भवित्ता । शुद्ध मुण्ड थई । आगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा । गृहवास थकी अणगारपणे दीक्षा ले । केवल ब म्भचेरवास आवसेज्जा । शुद्ध मैथुन विरतिलक्षण ब्रह्मचर्य प्रतें पाले । केवलेण संजमेण संजमेज्जा । शुद्ध प्रतिपन्नचारित्र तेहना अतिचार टालवाने यतना पामे । केवलेण संवरेण संवरेज्जा । शुद्ध शुभ अध्यवसायवृत्ति तिणें प्रवर्त्ते । केवल आभिणिबोहियणाण उप्पाडेज्जा । शुद्ध मतिज्ञान तेहप्रते उपार्जे पामे ।

॥ टीका ॥ रूपत्वेन तदावरणक्षयोपशमलब्धत्वा दध्यवसानावरणीयशब्देनेह भावचारित्रावरणीया न्युक्तानीति, पूर्वोक्तानेवार्था न्पुन समुदायेनाह ॥ असो

॥ मूल ॥ णं उप्पाडेज्जा ? गो० ! असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव उवासियाएवा अत्थेगइए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभे ज्जा सवणयाए अत्थेगइए केवलिपन्नत्तं धम्मं नोलभेज्जा सवणयाए अत्थेगइए केवलं वोहिं बुज्झेज्जा अत्थेगइए केवलं वोहिं नोबुज्झेज्जा अत्थेगइए केवलं मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अ त्थेगइए जाव णोपव्वएज्जा, अत्थेगइए केवल वंभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगइए केवलं जाव नोआवसे

अनुवाद स्पादयेत् ? गौतम ! अश्रुत्वा केवलिनोवा याव दुपासिकायावा स्त्येक कश्चि त्केवलिप्रज्ञप्त धर्मं लभेत श्रवणतया स्त्येक कश्चि त्केवलिप्रज्ञप्त धर्मं नो लभेत श्रवणतया, अस्त्येक कश्चि त्केवला वोधि बुध्येता स्त्येक कश्चि न्नो केवला वोधि बुध्येता, स्त्येक कश्चि त्केवल मुण्डो भू त्वा गारा दनगारता प्रव्रजे दस्त्येक कश्चि त्केवल मुण्डो भूत्वा गारा दनगारता नो प्रव्रजे, दस्त्येक कश्चि त्केवल ब्रह्मचर्यवास मावसे दस्त्ये

॥ भाषा ॥ जाव केवल मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा। इम यावत् शुद्ध सपूर्ण मनपर्यवज्ञान पामे। केवलणाण उप्पाडेज्जा। केवलज्ञान उपार्जे इतिप्रश्न उत्तर। गो यमा असोच्चाण केवलिस्सवा। हेगौतम। अणसांभलीने केवलीनो वचन। जावउवासियाएवा। यावत् स्वयंबुद्धनी उपासिकानो वचन। अत्थेगइए केव लि पणत्त धम्म लभेज्जा। केतलाएक केवलीयें कह्या धर्मप्रते पामे। सवणयाए। सांभलवाने। अत्थेगइए केवलि पणत्तं धम्म णो लभेज्जा सवणयाए। के तलाएक जीव केवली प्रणीत धर्मप्रते न पामे सांभलवाने। अत्थेगइए केवल वोहि बुज्झेज्जा। केतलाएक शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रतें अनुभवे। अत्थेगइए केव ल वोहि णो बुज्झेज्जा। केतलाएक शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रतें अनुभवे नहीं। अत्थेगइए केवल मुंडे भवित्ता। केतलाएक जीव शुद्ध मुण्ड थईने। आगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा। आगारथकी अणगारपणे प्रव्रज्या ल्ये। अत्थेगइए जाव णो पव्वएज्जा। केतलाएक यावत् प्रव्रज्या न ले। अत्थेगइए केवल ब भचेरवास आवसेज्जा। केतलाएक जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यप्रतें पाले। अत्थेगइए केवलं जाव णो आवसेज्जा। केतलाएक जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यप्रतें न पाले। अ

ज्जा, ञ्जत्थेगइए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, ञ्जत्थेगइए केवलेणं संजमेणं नोसंजमेज्जा एवं संवरेणवि ञ्जत्थेगइए केवलं ञ्जाभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, ञ्जत्थेगइए जाव नोउप्पाडेज्जा एवं जाव मणपज्जवनाणं ञ्जत्थेगए केवलनाणं उप्पाडेज्जा ञ्जत्थेगइए केवलनाणं नोउप्पाडेज्जा, सेकेणट्ठेणं ज्ञंते ! एवं वुच्चइ ञ्जसोच्चाणं तंचेव जाव ञ्जत्थेगइए केवलनाणं नोउप्पाडेज्जा ? गो० ! जस्स नाणावरणिज्जाणं कम्माण खञ्

क कश्चि त्केवल.ब्रह्मचर्यवास नो आवसे' दस्त्येक कश्चि त्केवलेन सयमेन सयमये दस्त्येक कश्चि त्केवलेन सयमेन नोसयमये देव सवरेणापि अस्त्येक कश्चि केवल माभिनिबोधिकज्ञान मुत्पादये दस्त्येक. कश्चि द्याव नो उत्पादये देव याव न्मन. पर्यवज्ञान, मस्त्येक कश्चि त्केवलज्ञान मुत्पादये दस्त्येक कश्चि त्केवलज्ञान नो उत्पादयेत् । अथ केनार्थेन ज्ञदन्त । एव मुच्यते अश्रुत्वा तच्चैव याव दस्त्येक कश्चि त्केवलज्ञानं नो उत्पादयेत् ? गौतम ! यस्य ज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो नोकृतो भवति यस्यदर्शनावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमो नो कृतो ज्ञ

त्थेगइए केवलेण सजमेणं सजमेज्जा । कैतलाएक जीव शुद्ध चारित्रना अतिचार टालवाने यतना आदरे । अत्थेगइए केवलेण सजमेण णो सजमेज्जा । केतलाएक शुद्ध चारित्रना अतिचार टालवाने यतना आदरे नही । एव सवरेणवि । इम अध्यवसायवृत्ति पणि कहवो । अत्थेगइए केवल आभिणिबोहिय णाण उप्पाडेज्जा । कैतलाएक शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपार्जे पामे । अत्थेगइए जाव णो उप्पाडेज्जा । कैतलाएक यावत् न पामे । एवं जाव मणपज्जवणाण । इम यावत् मनपर्यवज्ञान लगे कहवो । अत्थेगइए केवलणाण उप्पाडेज्जा । कैतलाएक केवलज्ञान उपार्जे । अत्थेगइए केवलणाणं णो उप्पाडेज्जा सेकेणट्ठेण भंते एव वुच्चइ । कैतलाएक जीव केवलज्ञान उपार्जे नही ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कह्यु । असोच्चाणं तचेव । अणसांभलीने केवलीनो वचन इत्यादि, तिमहीज । अत्थेगइए जाव केवलणाण णो उप्पाडेज्जा । कैतलाएक जीव यावत् केवलज्ञान उपार्जे नही एतलालगे कहवोइति प्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सणणाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे णो कडे भवइ । हेगौतम ! जेहने मतिज्ञानावरणीयादिकर्म क्षयोपशम न कीधो हु

॥ मूल ॥

वसमे नोकडे भवइ, जस्सणं दंसणावरणिज्जाणं कम्माणं खत्रोवसमे नोकडे भवइ, जस्सणं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खत्रोवसमे नोकडे भवइ, एव चरित्तावरणिज्जाणं जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाणं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं जाव मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खत्रोवसमे नोकडे भवइ, जस्सणं केवलनाणावरणिज्जाणं जाव खए नोकडे भवइ सेणं असोच्चा केवलिस्सवा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं नोलभेज्जा सवणयाए। केवलं बोहिं नोबुज्झेज्जा जाव केवलनाणं नोउप्पाडेज्जा, जस्सणं नाणावरणिज्जाणं खत्रोवसमे

अनुवाद

यति यस्य धर्मान्तरायिकाणां कर्मणां क्षयोपशमो नो कृतो भवत्येव चारित्रावरणीयानां यतनावरणीयानां मध्यवसानावरणीयानां माभिनिबो धिकज्ञानावरणीयानां याव न्मन पर्यवज्ञानावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमो नोकृतो भवति यस्य केवलज्ञानावरणीय (प्रकृति) याव क्षयो नैव कृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव त्केवलिप्रज्ञप्त धर्म नो लभेत श्रवणतया केवला बोधि नो बुध्येत याव त्केवलज्ञान नैवो त्पादयेत् ॥

॥ भाषा ॥

वं। जस्सणं दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खत्रोवसमे णो कडे भवइ। जेहने दर्शनमोहनीय तेहकर्मने क्षयोपशम न कीधो हवे। जस्सण धम्मतराइया ण कम्माण खत्रोवसमे णो कडे भवइ। जेहने चारित्र प्रतिपत्तिलक्षण तेहनो अन्तरायिक तेहकर्मने जिणे क्षयोपशम न कीधो हुवे। एव चरित्तावरणि ज्जाण जयणावरणिज्जाणं। इम पूर्वप वेदादि ते कर्मनो क्षयोपशम न कीधो हुवे यतनावरणीयकर्म क्षयोपशम न कीधो हुवे। अज्झवसाणा वरणि ज्जाणं। अध्यवसानावरणीयकर्म क्षयोपशम न कीधो हुवे। आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाण। आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म क्षयोपशम न कीधो हुवे। जावमणपज्जवणाणावरणिज्जाण कम्माण खत्रोवसमे णो कडे भवइ। यावत् मनपर्यवज्ञानावरणीय कर्म क्षयोपशम न कीधो हुवे। जस्सण केवल णाणावरणिज्जाण जाव खए णो कडे भवइ। जेहने केवलज्ञानावरणीय यावत् क्षय न कीधो हुवे। सेणअसोच्चा केवलिस्सवा। ते इ अणसांभ ळीने केवलीनो वचन। जाव केवलि पणत्त धम्म णो लभेज्ज सवणयाए। यावत् केवली प्रणीत धर्ममतें न पामे सांभळवाने। केवलंबोहिं णो बुज्झेज्जा।

॥ टीका ॥ घाणजते इत्यादि ॥ अथाश्रुत्वैव केवल्यादिवचनं यथा कश्चि त्केवलज्ञान मुत्पादये त्तथा दर्शयितु माह ॥ तस्सेत्यादि ॥ तस्सत्ति ॥ यो श्रुत्वैव केवलज्ञान मुत्पादय त्तस्य कस्यापि "छठ छठेण मित्यादिच" यदुक्त तत्प्राय षष्ठतपश्चरणवतो बालतपस्विनो विभङ्गज्ञानविशेष उत्पद्यत इति ज्ञा

॥ मूल ॥ कडे भवइ, जस्सणं दरिसणावरणिज्जाणं खओवसमे कडे भवइ, जस्सणं धम्मंतराइयाणं एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ, सेणं असोच्चाकेवलिस्सवा जाव केवलि पन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा केवलनाणं उप्पाडेज्जा तस्सणं भंते ! छठंछठेणं अनिक्खित्तेणं

अनुवाद यस्य ज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति यस्य दर्शनावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति यस्य धर्मान्तरायिकाणा मेव याव द्यस्य केवलज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षय कृतो भवति सो श्रुत्वा केवलिनोवा याव त्केवलिप्रज्ञप्त धर्म लभेत श्रवणतया केवला बोधि बुध्येत याव त्केवलज्ञान मुत्पादयेत् तस्य षष्ठ षष्ठेना निक्षिप्तेन तप कर्मणाद्धं बाहू प्रगृह्य २ सूराभिमुखस्या तापनभूमा वातापयत प्रकृति

॥ भाषा ॥ शुद्ध सम्यग्दर्शन प्रते न अनुभवे। जाव केवलणाण णो उप्पाडज्जा। यावत् केवलज्ञान न उपार्जे। जस्सण णाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ। तथा जेहने मतिज्ञानावरणीयादि कर्म क्षयोपशम कीधो हुवे। जस्सण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ। जेहने दर्शनमोहनीयकर्म क्षयोपशम कीधो हुवे। जस्सणधम्मंतराइयाण। जेहने धर्म ते चारित्र प्रतिपत्तिलक्षण ते-नो जे अन्तरायिक तेहकर्म जिणे क्षयोपशम कीधो हुवे। एव जाव जस्सण केवलणाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ। एम यावत् जेहने केवलज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयकीधो हुवे। सेण असोच्चा केवलिस्सवा। तेह अणसांभलीने केवलीनो वचन। जाव केवलि पण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए। यावत् केवली प्रणीत धर्म पामे सांभलवा ने। केवल बोहिं बुज्झिज्जा। शुद्ध सम्यग्दर्शन अनुभवे। जाव केवलणाण उप्पाडेज्जा। यावत केवलज्ञान उपार्जे पामे, हिवे केवली वचन विना सुणाज कोई एक केवलज्ञान उपार्जे तिम देखाडेछे—तस्सणभंते छठंछठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण। जे अणसुण्या केवलज्ञानप्रते उपावे तेहने कहने पणि इत्यादि

॥ टीका ॥

पनार्थ मिति ॥ पगिज्झियत्ति ॥ प्रगृह्य धृत्वेत्यर्थ ॥ पगइभद्दयाए इत्यादीनितु ॥ प्राग्वत् ॥ तयावरणिज्जाणंति ॥ विभङ्गज्ञानावरणीयानां ॥ ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्सत्ति ॥ इहेहा सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेष्टा' अपोहस्तु विपक्षनिरासो, मार्गणञ्चा ऽन्वयधर्मालोचनं, गवेषणातु व्य

॥ मूल ॥

तवोकम्मेणं उड्ढंबाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए भद्दयाए विणीययाए अन्नयाकयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं २ अल्लीणयाए तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विभंगे नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं

अनुवाद

भद्रतया प्रकृत्युपशान्ततया प्रकृतिप्रतनुक्रोधमानमायालोभतया मृदुमार्दवसम्पन्नतया लीनतया भद्रतया विनीततया अन्यदा कदाचिच्छुभेनाध्यवसानेन शुभेन परिणामेन लेश्याभिर्विशुध्यमानाभि रलीनतया तदावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमेने हापोहमार्गणगवेषणां कुर्वतो विभ

॥ भाषा ॥

कह्युं ते माटे छट्ठ छट्ठ करतां बालतपस्वीने विभंगज्ञान विशेष ऊपजे एहवो जणाववाने अर्थे । उड्ढंबाहाओ । ऊंचा बेउ बाहु । पगिज्झिय २ । धरीने २ । सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए । सूर्य सामुहाने आतापन भूमिका धरतीनेविषे । आयावेमाणस्स पगइ भद्दयाए पगइउवसंतयाए । आतापना करताने स्वभावे भद्रक सरलपणे स्वभावे उपशान्तपणे करी । पगइपयणु कोह माण माया लोभयाए । स्वभावे पातला पाड्या क्रोध मान माया लोभ तिणे करी । मिउमद्दव संपणयाए अल्लीणयाए भद्दयाए विणीययाए अन्नयाकयाइ । सुकोमल मार्दव तिणे सम्पन्न पणेकरी अलीन पणेकरी भद्रक पणेकरी विनीत पणेकरी । अन्यदा किवारेक । सुभेणं अज्झवसाणेणं । शुभ अध्यवसाये करी । सुभेणं परिणामेणं । शुभ परिणामे करीने । लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं । लेश्या पणि विशुद्धमान तिणे करीने । अल्लीणयाए तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं । विभंगज्ञानावरणीय कर्मने क्षयोपशमे करीने । ईहा पोह मग्गण गवेसणं करेमाणस्स विभंगे णाम अन्नाणे समुप्पज्जइ । अर्थ चेष्टा ज्ञान सन्मुख विचारवो धर्मज्ञान बीजा पक्षरहित निर्णय

॥ टीका ॥

सेणंति ॥ स यो विभङ्गज्ञानी भूत्वा ऽवधिज्ञान चारित्रञ्च प्रतिपन्न ॥ तिसु विसुद्धलेसासु होज्जत्ति ॥ यतो भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव सम्यक्त्वादि प्रतिपद्यते ना विशुद्धास्विति ॥ तिसुआभिणिबोहियेत्यादि ॥ सम्यक्त्वमतिश्रुतावधिज्ञानाना विभङ्गविनिवर्त्तनकाले तस्य युगप द्भावा दाद्ये ज्ञानत्र य एवा सौ तदा वर्त्तत इति ॥ णोअजोगीहोज्जत्ति ॥ अवधिज्ञानकाले अयोगित्वस्या भावात् ॥ मणजोगीत्यादिच ॥ एकतरयोगप्राधान्यापेक्षया

॥ मूल ॥

सेणं भंते ! कइसु लेस्सासु होज्जा ? गो० ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा तं०——तेउलेस्साए पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साए । सेणं भंते ! कइसु नाणेसु होज्जा ? गो० ! तिसु आभिणिबोहियनाण सुयनाण ओहिनाणे सु होज्जा, सेणं भंते ! किं सजोगी होज्जा अजोगीहोज्जा ? गो० ! सजोगीहोज्जा नोअजोगीहोज्जा ।

अनुवाद

कतिषु लेश्यासु भवेत् ? गौतम ! त्रिषु विशुद्धलेश्यासु भवेत् तद्यथा-तेजोलेश्यायां पद्मलेश्यायां शुक्ललेश्यायाम् । स भदन्त । कतिषु ज्ञा नेषु भवेत् ? गौ० । त्रिषु आभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानेषु भवेत् । स भदन्त । किं सयोगी भवे दयोगी भवेत् ? गौतम । सयोगी भवेत् नो अयोगी भवेत् । यदि अयोगी भवेत् किं मनो योगी भवेत् वाग्योगी भवे त्काययोगी भवेत् ? गौतम । मनो योगीवा भवेत् वाग्यो

॥ भाषा ॥

लेश्याये शुक्ललेश्यायें । सेणभंते कइसुणाणेसुहोज्जा । तेह हेभगवन् । केतलाज्ञाननेविषे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिसु आभिणिबोहियणाणेसु सुयणाणेसु ओहिणाणेसुहोज्जा । हेगौतम । तीनज्ञाननेविषे हुवे, मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञाननेविषे हुवे विभङ्गज्ञान निवर्त्तनकालनेविषे तेहोना समकाल भावथकी आद्यज्ञान तीनहीज हुवे । सेणभंते किं सजोगीहोज्जा अजोगीहोज्जा । तेह हेभगवन् । स्यूं सयोगीहुवे अथवा अयोगीहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सजोगीहोज्जा णो अजोगीहोज्जा । हेगौतम । सजोगीहुवे, अवधिज्ञानना कालनेविषे अयोगीपणाना अभावथी अयोगी न हुवे । जइ सजोगीहोज्जा । जो सयोगी हुवे । किंमणजोगीहोज्जा वइजोगीहोज्जा कायजोगीहोज्जा । तो स्यूं मनयोगी हुवे अथवा वचनयोगीहुवे अथवा काययोगी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा मणजोगीवाहोज्जा वइजोगीवाहोज्जा कायजोगीवाहोज्जा । हेगौतम ! मनयोगी हुवे अथवा वचनयोगी हुवे अथवा

॥ टीका ॥

ऽवगन्तव्य ॥ सागारोवउत्तेवेत्यादि ॥ तस्यहि विभङ्गज्ञाना न्निवर्त्तमानस्यो पयोगद्वयेपि वर्त्तमानस्य सम्यक्त्वावधिज्ञानप्रतिपत्ति रस्तीति ॥ ननु स व्वाउ लद्धीउ सागारोवउगोवउत्तस्स जवती त्यागमा,, दनाकारोपयोग सम्यक्त्वावधिलब्धिविरोध. ? नैव प्रवर्द्धमानपरिणामजीवविषयत्वा त्तस्या ग मस्या वस्थितपरिणामापेक्षयाचा नाकारोपयोगेपि लब्धिलाभस्य सम्भवादिति ॥ वइरोसभनारायसघयणेहोज्जत्ति ॥ प्राप्तव्यकेवलज्ञानत्वा त्तस्य, केवलज्ञानप्राप्तिश्च प्रथमसंहनन एव भवतीति, एवमुत्तरत्रापीति ॥ सवेयएहोज्जत्ति ॥ विभङ्गस्यावधिभावकाले न वेदक्षयोस्ती त्यसौ सवेदएव ॥

॥ मूल ॥

जदि सजोगीहोज्जा किं मणजोगी होज्जा वइजोगी कायजोगी वा होज्जा ? गो० ! मणजोगी होज्जा वइजोगीहोज्जा कायजोगीवा होज्जा । सेणं भंते ! किं सागारोवउत्तेहोज्जा अणागारोवउत्तेहोज्जा ? गो० ! सागारोवउत्तेवा होज्जा अणागारोवउत्ते वा होज्जा । सेणं भंते ! कयरंमि संघयणे होज्जा ? गो० ! वइरोसहनारायसंघयणे होज्जा । सेण भंते ! कयरंमि संठाणे होज्जा ? गो० ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे सं

अनुवाद

गीवा भवे त्काययोगीवा भवेत् । स भदन्त । किं साकारोपयुक्तो भव दनाकारोपयुक्तो भवेत् ? गौ० । साकारोपयुक्तोवा भवे दनाकारोपयुक्तोवा भवेत् । स भदन्त ! कतरस्मिन् संहनने भवेत् ? गौतम । वज्रऋषभनाराचसंहनने भवेत् । स भदन्त ! कतरस्मि न्संस्थाने भवेत् ? गौ

॥ भाषा ॥

काययोगी हुवे, एक काइएक प्रायः अर्थ वाये जाणवो । सेणंभंतेकिं सागारोवउत्तेहोज्जा अणागारोवउत्तेहोज्जा । तेह हेभगवन् । स्यु साकारोपयोगी हुवे अथवा अनाकारोपयोगे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सागारोवउत्ते होज्जा अणागारोवउत्तेहोज्जा । हेगौतम । ते विभंगज्ञानथको निवर्त्तमानने उपयोग वेउने विषे पणि वर्त्तमाने सम्यक्त्व अवधिज्ञान प्रतिपत्ति पामवोछे तेमाटे साकारोपयोगे हुवे अथवा अनाकारोपयोगे हुवे, वलीगौतम पूछे छे—सेणंभंतेकयरंमि संघयणेहोज्जा । तेह हेभगवन् । कातरसां संघयणनेविषे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वइरोसभनारायसंघयणेहोज्जा । हेगौतम ! प्राप्तव्य केवलज्ञान पणाथको तेहने केवलज्ञान प्राप्ति पहिलो संघयणनेविषेज हुवे तेमाटे वज्र ऋषभनाराच संघयणे हुवे । सेणंभंते कयरंमि संठाणेहोज्जा ।

॥ टीका ॥

नोइत्थिवेयएहोज्जत्ति ॥ स्त्रिया एवंविधस्य व्यतिकरस्य स्वभावत एवा भावात् ॥ पुरिसनपुंसगवेयएवत्ति ॥ वर्द्धितकत्वादित्वेन नपुंसकः पुरुषनपु

॥ मूल ॥

ठाणे होज्जा । सेणं भंते ! कयरंमि उच्चत्ते होज्जा ? जहन्नेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए होज्जा । सेणं भंते ! कयरंमि आउए होज्जा ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगठवासाउए उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा । सेणं भंते ! किं सवेदए होज्जा अवेदए होज्जा ? गो० ! सवेदए होज्जा नोअवेदए होज्जा । जइ सवेयए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा पुरिसवेदए होज्जा पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा नपुंसगवेदए होज्जा ? गोयमा !

॥ अनुवाद ॥

तम । पण्णा संस्थानानां मन्यतरस्मिन् संस्थाने भवेत् । स भदन्त । कतरस्मिन् उच्चत्वे भवेत् ? गौतम । जघन्येन सप्त रत्नी उत्कर्षेण पञ्च धनुशतिके भवेत् । स भदन्त । कतरस्मिन् आयुषि भवेत् ? गौतम । जघन्येन सातिरेकाष्टवार्षिकायुषि उत्कर्षेण पूर्वकोट्यायुषि भवेत् । स भदन्त । सवेदको भवेत् अवेदको भवेत् ? गौतम । सवेदको भवेत् नो अवेदको भवेत् । यदि सवेदको भवेत् किं स्त्रीवेदको भवेत् पुरुषवेदको भवेत् पुरुषनपुंसकवेदको भवेत् ? गौतम । नैव स्त्रीवेदको भवेत् पुरुषवेदको वा भवेत् नो नपुंसकवेदको भवेत् पुरुषनपुंसकवेदको वा

॥ भाषा ॥

तेह हेभगवन् । किसा संस्थाननेविषे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । छण्ह संठाणाणं अण्णयरे संठाणेहोज्जा । हेगौतम । छ संस्थानमांहे अनेरे कोईएक संस्थाने हुवे । सेणभंते कयरंमि उच्चत्तेहोज्जा । तेह हेभगवन् । केतले उच्चपणे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणं सत्तरयणीए । हेगौतम । जघन्ये सात हाथ प्रमाण हुवे । उक्कोसेणं पंचधणुसइएहोज्जा । उत्कृष्टथकी पांचसे धनुष प्रमाण शरीरे हुवे । सेणभंते कयरंमि आउएहोज्जा । तेह हेभगवन् । केतले आउखे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणंसाइरेगअट्ठवासाउए । हेगौतम । जघन्यथकी आधेरा आठवरसने आउखे हुवे । उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउएहोज्जा । उत्कृष्टथकी पूर्वकोडीने आउखे हुवे । सेणभंते किं सवेदएहोज्जा अवेदएहोज्जा । तेह हेभगवन् स्यूं वेद सहितहोय अथवा अवेदक वेदरहित हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सवेदएहोज्जा नो अवेदएहोज्जा । हेगौतम सवेदक हुवे पणि अवेदक न हुवे, विभंगज्ञानने अवधिभाव का

॥ टीका ॥

सक ॥ सकसाईहोज्जत्ति ॥ विभङ्गावधिकाले कषायक्षयस्याभावात् ॥ चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जत्ति ॥ सत्यवधिज्ञानतापरिणत विभङ्गज्ञानश्चरण प्रतिपन्न उक्त स्तस्यच तत्काले चरणयुक्तत्वा त्सज्वलनाएव क्रोधादयो भवतीति ॥ पसत्थत्ति ॥ विभङ्गस्यावधिभावोहि नाप्रश

॥ मूल ॥

नोइत्थिवेदए होज्जा पुरिसवेदएवा होज्जा नोनपुंसगवेदए होज्जा पुरिसनपुंसगवेदएवा होज्जा । सेणं भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? गो० ! सकसाई होज्जा नोअकसाई होज्जा । जइ सकसाई होज्जा सेणं भंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गो० ! चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जा । तस्सणं भंते ! केवइया

अनुवाद

भवेत् । स भदन्त ! किं सकषायित्वे भवे दकषायित्वे भवेत् ? गौतम ! सकषायित्वे भव नो अकषायित्वे भवेत् । यदि सकषायित्व भवे त्स भदन्त ! कतिषु कषायेषु भवेत् ? गौतम ! चतुर्षु सज्वलनक्रोधमानमायालोभेषु भवेत् । तस्य भदन्त ! कत्यध्यवसाना प्रज्ञप्ता ? गौतम !

॥ भाषा ॥

लनेविषे वेदनो चय नहोछे तेमाटे अवेदके हुवे । जइसवेदएहोज्जा कि इत्थिवेदएहोज्जा पुरिसवेदएहोज्जा णपुंसगवेदएहोज्जा पुरिसणपुंसगवेदएहोज्जा । जो सवेदके हुवे तो स्त्री वेदे अथवा पुरुषवेदे हुवे अथवा नपुंसक वेदे हुवे पुरुष चिन्ह दूरकोधो ते पुरुष नपुंसक पणि जन्म नपुंसक नहो ते वेदे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो इत्थीवेदएहोज्जा पुरिसवेदएवाहोज्जा णो णपुंसगवेदएहोज्जा । स्त्रीवेदे न हुवे पुरुषवेदे एह हुवे नपुंसक वेदे एह न हुवे । पुरिस णपुंसग वेदएवा होज्जा । पुरुष नपुंसक ते कृत्रिमनपुंसक वेदे हुवे । सेणभंते किं सकसाईहोज्जा । तेह हेभगवन् ! स्यूं सकषाईय णे हुवे । अकसाईहोज्जा । अथवा अकषाईपणे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सकसाईहोज्जा । हेगौतम सकषाय हुवे पणि । णो अकसाईहोज्जा । अ कषाई न हुवे, विभंग अवधिकालनेविषे कषाय चयनो अभावथको । जइसकसाईहोज्जा । जो सकषाई हुवे । सेणभंते कइसु कसाएसुहोज्जा । तेह हे भगवन् केतलो कषायें हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चउसु संजलण कोह माण माया लोभेसुहोज्जा । हेगौतम चार संज्वलन क्रोध मान माया लोभ नविषे हुवे । तस्सणभंते केवइया अज्झयसाणा प० । तेहने हेभगवन् केतला अध्यवसाय परिणामविशेष कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जा अ

स्तात्यवसानस्य भवती त्यत उक्त प्रशस्ता न्यध्यवसायस्थानानीति ॥ अणतेहिंति ॥ अनन्तै रनन्तानागतकालभाविभि ॥ विसजोएइत्ति ॥ विसयो जयति तत्प्राप्तियोग्यता उपनोदादिति ॥ जाउवियत्ति ॥ या अविच ॥ नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवगतिनामाउत्ति ॥ एतदभिधाना ॥ उत्तर

अज्झवसाणा प० ? गो० ! असंखेज्जा अज्झवसाणा प० । तेणं भंते ! किं पसत्था अप्पसत्था ? गो० ! पसत्था नोअप्पसत्था । सेणं भंते ! तेहिं पसत्थेहिंअज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसजोएइ अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय जाव विसंजोएइ अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसजोएइ जाउविय से इमाउ नेरइयतिरिक्खजोणिय

असङ्ख्येया अध्यवसाना. प्रज्ञप्ता । तं (अध्यवसाना) भ० । किं प्रशस्ता अप्रशस्ता ? गौ० । प्रशस्ता नो अप्रशस्ता । स भ० । ते प्रशस्ते र ध्यवसाने वर्द्धमाने रनन्तेभ्यो नैरयिकभवग्रहणेभ्य आत्मान विसयोजयति' अनन्तेभ्य स्तिर्यग्योनिकभवग्रहणेभ्य आत्मान विसयोजयति, अनन्तेभ्यो मनुष्यभवग्रहणेभ्य आत्मान विसयोजयति' अनन्तेभ्यो देवभवग्रहणेभ्य आत्मान विसयोजयति, या अपि चेमा नैरयिकतिर्यग्यो

अज्झवसाणा प० । हेगौतम । असंख्याता अध्यवसाय परिणामविशेष कह्या । तेभगवते कि पसत्था अपसत्था । ते हेभगवन् स्यू प्रशस्त भलाहवे अप्रशस्त बुरा हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पसत्था । हेगौतम प्रशस्त हुवे । णो अप्पसत्था । पणि अप्रशस्त न हुवे । सेणभते तेहिं पसत्थेहिं० अज्झवसाणेहिं वट्टमाणेहिं अणतेहिं णेरइय भवग्गहणेहिंतो अप्पाण विसजोएइ । ते हेभगवन् तिणे प्रशस्त अध्यवसाय वर्त्तमाने करी अनन्ताज अनागतकाल भावी, नारकीना भवग्रहण तेहथकी आत्माप्रदेश ते प्रात चाप्यपणे दूर जाउआथकी अलगो करे आपणपो मुगडावे । अणतेहिं तिरिक्खजोणिय जाव विसजोए इ । वली अनन्त अनागतकाल भावी जे तिर्यञ्चयोनिक भवग्रहण तेहथकी आत्माने अलगो करे । अणतेहिं मणुस्स भवग्गहणेहिंतो अप्पाणंविसजोएइ । वली अनन्त अनागत भावी मनुष्य भवग्रहण तेहथको आत्माप्रते अलगो करे । अणतेहिं देव भवग्गहणेहिं अप्पाण विसजोएवि । वली अनन्त अनागत

॥ टीका ॥

पयडीउवयत्ति ॥ नामकर्म्माभिधानाया मूलप्रकृते रुत्तरभेदभूता ॥ तासिचणंति ॥ तासाच नैरयिकगत्याद्युत्तरप्रकृतीना च शब्दादन्यासांच ॥ उवग्गहियत्ति ॥ औपग्रहिकान् उपष्टम्भप्रयोजनान् अनन्तानुबन्धिन क्रोधमानमायालोभान् क्षपयति, तथा प्रत्याख्यानादींश्च तथाविधानेव क्षपयतीति ॥ पचविह नाणावरणिज्जंति ॥ मतिज्ञानावरणादिभेदान् ॥ नवविह दरिसणावरणिज्जंति ॥ चक्षुर्दर्शनाद्यावरणचतुष्कस्य निद्रापञ्चकस्यच नी

॥ मूल ॥

मणुस्सगइनामाउ चत्तारि उत्तरप्पगडीउ तासिंचणं उवग्गहिए अणंताणुबंधी कोहमाणमायालोभे खवेइ २ अपच्चक्खाणकसाए कोहमाणमायालोभे खवेइ२ पच्चक्खाणावरणे कोहमाणमायालोभे खवेइ२ त्ता संजलणे कोहमाणमायालोभे खवेइ २ त्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दरिसणावरणिज्जं पंचविहं अंतराइयं

अनुवाद

तिर्यग्मनुष्यदेवगतिनाम्न्य श्चतस्र उत्तरप्रकृतय स्ताश्चौ पग्रहिका ननन्तानुबन्धिक्रोधमानमायालोभान् क्षपयति अनन्तानुबन्धिक्रोधमानमायालोभान् क्षपयित्वा ऽप्रत्याख्यानिक्रोधमानमायालोभान् क्षपयति क्षपयित्वा प्रत्याख्यानिक्रोधमानमायालोभान् क्षपयति क्षपयित्वा सज्वलन

॥ भाषा ॥

काल भावी देव भवग्रहण तेहथकी आत्माने अलगो करे । नामकर्मविषयेहमाश्रो । जिका पणि चउन एह आगल वक्ष्यमाण । नैरइयतिरिक्खजोणिय म नुष्य देवगति नामाश्रो चत्तारि उत्तर पगडीओ तासिचण उवग्गहिए । नारकी तिर्यचयोनिक मनुष्य देवगति एहवेनामे चार नामकर्म मूलप्रकृतिनो उत्तर भेदभूत तेहने नरकगत्यादि उत्तरप्रकृतिने च शब्दथकी बीजीने पणि उपष्टम्भप्रयोजन तेहने उपष्टम्भना देणहार । अणताणुबंधी कोह माण मा या लोभे खवेइ । अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ खपावे । अणताणुबंधी कोह माण २ त्ता । अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ खपावीने । अपच्चक्खाण कसाए कोह माण माया लोभे खवेइ अपच २ त्ता । अप्रत्याख्यान कषाय क्रोध मान माया लोभ खपावे अप्रत्याख्यान क्रोध मान माया लोभ खपावीने । पच्चक्खाणावरणे कोह माण माया लोभ खवेइ २ त्ता । प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ खपावे प्र०२ खपावीने । सजलणे को हमाणमायालोभे खवेइ २ त्ता । सज्वलन क्रोध मान माया लोभ खपावे खपावीने । पचविह णाणावरणिज्ज । मतिज्ञानावरणीय आदिदेइ पचभेदे

॥ टीका ॥

वसायविशेष मनुप्रविष्टस्या ऽनन्त विषयानन्त्यात्, अनुत्तर सर्वोत्तमत्वात्' निर्व्याघातं कुड्यादिभिरप्रतिहननात्, निरावरण सर्वथा स्वावरणक्षयात्, कृत्स्न सकलार्थग्राहकत्वात्, प्रतिपूर्ण सकलस्वांशयुक्ततयोत्पन्नत्वात्, केवलवरज्ञानदर्शन केवल मभिधानतो वर ज्ञानान्तरापेक्षया, ज्ञानञ्च दर्शनञ्च ज्ञानदर्शन समाहारद्वन्द्व स्तत केवलादीना कर्मधारय, इह च क्षपणाक्रम ॥ अणमिच्छमीससम्म अट्ठनपुंसित्थिवेयछक्कच ॥ पुमवेय चसवई कोहाईएयसंजलणे ॥ १ इत्यादि ग्रन्थान्तरप्रसिद्धो' नचाय निदाश्रितो यथाकथचि त्क्षपणामात्रस्यैव विवक्षितत्वादिति ॥ आघवेज्जत्ति ॥ आग्राहये च्छिष्या नर्थापयेद्वा; प्रतिपादनत पूजा प्रापयत् ॥ पण्णवेज्जत्ति ॥ प्रज्ञापय द्भेदकथनतो बोधयेद्वा ॥ परूवेज्जत्ति ॥ उपपत्तिकथनत.॥ नन्नत्थएगनाएणवत्ति ॥ नइति योय निषेध. सो न्यत्र एकज्ञाता देक मुदाहरण वर्जयित्वेत्यथ ' तथाविधकल्पस्वा दस्येति ॥ एगवागरणेणवत्ति ॥

॥ मूल ॥

निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जइ । सेणं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेज्ज वा पन्नवेज्जवा परूवेज्जवा ? णोइणट्ठेसमट्ठे । नणत्थ एगणाएणवा एगवागरणेणवा, सेणं भंते ! पव्वा

अनुवाद

त्पद्यते । स भदन्त ! केवलिप्रज्ञप्त धर्म माग्राहयेद्वा प्रज्ञापयेद्वा प्ररूपयेद्वा ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्रैकज्ञानाद्वा एकव्याकरणाद्वा । स भ० ! प्रव्राजयेद्वा मुण्डयेद्वा ? गौतम ! नायमर्थ समर्थ, उपदेश पुन. कुर्यात् । स भदन्त ! किं सिध्यति याव दन्त करोति ? हन्त !

॥ भाषा ॥

सिणे पडिपुण्णे । विषयना अनन्तपणामाटे अनन्त सर्वोत्तमपणामाटे कुड्यादिके हणाय नही समस्त अर्थ ग्राहकपणाथी समस्त अर्थ पोताना अंश तिणे युक्त थपनामाटे एहवो । केवलवर नाणदंसणे समुप्पज्जइ । शुद्ध संपूर्ण समस्तज्ञाननाहि प्रधान ज्ञानान्तराय चक्षअपेक्षाये ज्ञान दर्शनान्तराय क्षय अपेक्षाये दर्शन ऊपजे । सेणंभंते केवलि पणत्त धम्म आघवेज्जवा पणवेज्जवा परूवेज्जवा । तेह हेभगवन् ! केवलीप्रणीत धर्मप्रते शिष्यने ग्रहावे अर्थकर्ई प्रतिपादनथी पूजा पमाडे प्रकर्षे जणावे भेदना कहवाथी अथवा बोध उपजावे उपपत्ति कहवाथी प्ररूपे इतिप्रश्न उत्तर । णो इणट्ठेसमट्ठे । ए अर्थ समर्थनथी अन्यत्थानथी । णणत्थ एगणाएणवा एगवागरणेणवा । नइति जे ए निषध ते अन्य एकज्ञानपणो एक उदाहरण वर्जीने तथाविध आचारपणा

टीका ॥ प्रकस्याकरणा देशतया इत्यर्थं ॥ पवृध्देत्यादि ॥ प्रद्यापयेत् ॥ [illegible] ॥ मुण्डापयेत् ॥ [illegible] ॥ नवघस्तपुणादेरूपाति ॥ धनुष्यपा [illegible] प्रव्रज त्यादि ॥ [illegible] ॥ [illegible]

मूल ॥ वेज्जवा मुंडावेज्जवा ? नोइणट्ठेसमठ्ठे, उवदेसंपुणकरेज्जा । सेणं भंते ! किंसिज्झइ जाव अंतकरेइ ? हंता सिज्झइ जाव करेइ । सेणं भंते ! किं उड्ढंहोज्जा अहेहोज्जा तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढंवाहोज्जा अहेवाहोज्जा तिरियंवा होज्जा उड्ढंहोज्जमाणे सद्दावइ वियडावइ गंधावइ मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा साहरणंपडुच्च सोमणसवणेवा पंडगवणेवा होज्जा, अहेहोज्जमाणे गड्ढाएवा दरीएवा होज्जा, सा

अनुवाद सिध्यति यावत् अन्तं करोति । स भ० । किं ऊर्ध्वं भवेत् अधो भवेत् तिर्यग् भवेत् - गौतम ! ऊर्ध्वं वा भवेत् अधो वा भवेत् तिर्यग् वा भवेत् । ऊर्ध्वं भवन् शब्दापाति विकटापाति गन्धापाति माल्यवत्पर्यायेषु वृत्तवैताढ्यपर्वतेषु भवेत् । संहरणं प्रतीत्य सौमनसवने वा पाण्डुकवने वा भवेत् । अधो

भाषा ॥ धो [illegible] तथा उपदेश [illegible] न करे । [illegible] ? हां गौतम ! [illegible] ते, सुणा पे सिद्ध [illegible] । [illegible] करे । [illegible] उपदेश करेज्जा । [illegible] जाव [illegible] उपदेश [illegible] । [illegible] गौतम [illegible] जाव [illegible] । [illegible] एवं पण [illegible] । [illegible] तिरछोज्जा । [illegible] गौतम [illegible] ऊर्ध्वलोके [illegible] अधोलोके [illegible] तिर्यग्लोके [illegible] गौतम [illegible] सद्दावइ वियडावइ गंधावइ मालवंत परियायेसु [illegible] वृत्तवैताढ्यपर्वतेसु होज्जा । [illegible] शब्दापाती विकटापाती गन्धापाती माल्यवन्त ए [illegible] जम्बूद्वीप

॥ टीका ॥

वर्षरम्यकैरण्यवतेषु, क्षेत्रसमासाभिप्रायेणतु–हैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्यकेषु भवन्ति तेषुच तस्य भाव आकाशगमनलब्धिसम्पन्नस्य तत्र गतस्य के वलज्ञानोत्पादसद्भावेसति ॥ साहरणपडुच्चत्ति ॥ देवेन नयनं प्रतीत्य ॥ सोमणसवणेत्ति ॥ सौमनसवनं मेरौ तृतीयं ॥ पण्डगवणेत्ति ॥ मेरौ चतुर्थं गड्डाएवत्ति ॥ गर्त्ते निम्ने भूभागे अधोलोकग्रामादौ ॥ दरीएवत्ति ॥ तत्रैव निम्नतरप्रदेशे ॥ पायालेवत्ति ॥ महापातालकलशे वलयामुखादौ ॥ भवणेवत्ति ॥ भवनवासिदेवनिवासे ॥ पण्णरससुकम्मभूमीसुत्ति ॥ पञ्चभरतानि पञ्चैरवतानि पञ्चच महाविदेहा इत्येवलक्षणासु, कर्म्माणि कृषि वाणिज्यादीनि तत्प्रधानभूमय कर्मभूमय स्तासु ॥ अड्ढाइज्जेत्यादि ॥ अर्द्धं तृतीयं येषान्ते ऽर्द्धतृतीया स्तेच ते द्वीपाश्चेति समासो ऽर्द्धतृतीयद्वीपा श्च समुद्रौच तत्परिमिता वर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रा स्तेषा सवासौ विवक्षितो देशरूपो भागो ऽशो ऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रतदेकदेशभाग स्तत्र, अनन्तर

॥ मूल ॥

हरण पडुच्च पायालेवा भवणेवा होज्जा, तिरियहोज्जमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च

अनुवाद

भवन् गर्त्तावा दर्यांवा भवेत् । संहरणं प्रतीत्य पातालवा भवनेवा भवेत् । तिर्यग्भवन् पञ्चदशसु कर्मभूमिषु भवेत् । संहरणं प्रतीत्या र्द्धतृतीय

॥ भाषा ॥

प्रज्ञप्ती अभिप्रायेंकरी हेमवंत हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत क्षेत्रनविषेछे तेहनेविषे आकाशगमनलब्धिसम्पन्नने तिहां गयाने केवलज्ञान ऊपना थका हुये ए चार पर्वतनेविषे वेताढ्यनेविषे। साहरणपडुच्च सोमणसवणेवा पडगवणेवाहोज्जा । देवसंहरणे करी लेजाय मूके तो सोमनसनामे मेरुपर्वत नेविषे त्रीजो वन तथा पडगनामे मेरुपर्वतने विषे चोथो वन तिहां हुवे। अहेहोज्जमाणे। अधोलोकें हुवे तो। गड्डाएवा दरीएवाहोज्जा। नीचो भूमि भाग अधोलोक ग्रामादिक विषम अतिनीचा प्रदेशनेविषे हुवे। साहरण पडुच्च पायालेवा भवणेवाहोज्जा । देव संहरणे करी लेजाय मूके तो महा पातालकलश वलयामुख प्रमुख तेहनेविषे तथा भवनपती देवनिवासनेविषे हुवे। तिरियहोज्जमाणे। तीर्छेलोकें हातोथको। पण्णरससुकम्मभूमीसुहोज्जा। पच भरत पच ऐरवत पच विदेहलक्षण ए पनरे कर्मभूमिनेविषे हुवे। साहरणपडुच्च अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे तदेक्कदेसभाएहोज्जा। देवसंहरण आश्री जंबू द्वीपधातकीखंड पुष्करार्द्ध ए अढाईद्वीप लवणसमुद्र कालोदधिसमुद्र ए बे समुद्र तेहना एक देशभागनेविषे हुवे। तेणभंते एगसमएणं केवइयाहोज्जा।

॥ टीका ॥ केवल्यादि वचनाश्रवणो यस्या स्तदुक्त मथ तच्छ्रवणो यस्या स्तदाह ॥ सोच्चाण मित्यादि ॥ अथ यथैव केवल्यादिवचनाश्रवणावाप्तबोध्यादे केवल ज्ञान मुत्पद्यते नतथैव तच्छ्रवणावाप्तबोध्यादे किंतु प्रकारान्तरेणेति दर्शयितु माह ॥ तस्सण मित्यादि ॥ तस्सणं ॥ य श्रुत्वा केवलज्ञान मुत्पा

॥ मूल ॥ ज्झाइज्जदीवसमुद्दतदेक्कदेसन्नाए होज्जा । तेण भंते ! एगसमएणं केवइयाहोज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं दस सेतेणठेणं ? गोयमा ! एववुच्चइ असोच्चाणं केवलिस्सवा जाव अत्थेगइए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए अत्थेगइए केवलि जाव नोलभेज्जासवणयाए जाव अत्थे गइए केवलनाणं उप्पाडेज्जा अत्थेगइए केवलनाणं नोउप्पाडेज्जा । सोच्चाणं भंते ! केवलिस्सवा जाव त

द्वीपसमुद्रतदेकदेशभागे भवेत् । ते भ० । एकेन समयेन कियन्तो भवेयु ? गौतम । जघन्ये नैकोवा द्वौवा त्रयोवा' उत्कर्षतो दश, तत्तेना र्थेन गौतम । एवमुच्यते—अश्रुत्वा केवलिनोवा यावदस्त्येक कश्चि त्केवलिप्रज्ञप्त धर्म लभेत श्रवणतया, याव दस्त्येक कश्चि त्केवलज्ञानमुत्पादये दस्त्येक कश्चि त्केवलज्ञान नो उत्पादयेत् ॥ श्रुत्वा भ० । केवलिनोवा यावत्त

अनुवाद

॥ भाषा ॥ तेह हेभगवन् ! एक समये केतला हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण दस । हेगौतम ! जघन्यथकी एक अथवा दो य अथवा तीन उत्कृष्टथकी दशहुवे । सेतेणट्ठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इम कह्यु । असोच्चाण केवलिस्सवा । अणसाभलीने केवलीना व चन । जावअत्थेगइए केवलि पन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । यावत् केतलाएक केवलाप्रणीत धर्मपामे साभलवाने । अत्थेगइए केवलि जाव णो लभेज्ज सवणयाए । केतलाएक केवलज्ञान यावत् न पामे साभलवाने । जाव अत्थेगइए केवलणाण उप्पाडेज्जा । यावत् केतलाएक केवलज्ञान उपार्जे पामे। अत्थेगइए केवलणाण णोउप्पाडेज्जा । केतलाएक केवलज्ञान न उपार्जे न पामे । सोच्चाण भंते केवलिस्सवा जाव तप्पक्खिय उवासियाएवा । अनन्तरे केव ल्यादि वचन अणसुण्या जे थाय ते कह्यु, हिवे केवल्यादि वचन सुणान हुवे ते कहेछे—साभलीने हेभगवन् । केवलीना वचन यावत् तेहना पक्षी स्वय

॥ मूल ॥

गोयमा ! सोच्चाणं केवलिस्सवा जाव प्पक्खियउवासियाएवा केवलिपसत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चाणं केवलिस्सवा जाव प्पक्खियउवासियाएवा केवलिपसत्तं धम्मं एव जाचेव असोच्चाए वत्तव्वया साचेव सोच्चाएवि भाणियव्वा, नवरं अभिला अत्थेगए केवलिपसत्तं धम्म एव जाचेव असोच्चाए वत्तव्वया साचेव सोच्चाएवि भाणियव्वा, नवरं अभिला वो सोच्चत्ति सेसं तचेव णिरवसेसं जाव जस्सण मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ जस्सणं केवलणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ सेणं सोच्चाकेवलिस्सवा जाव उवासियाएवा के

॥ अनुवाद ॥

श्रुत्वा केवलिनोवा यावत्तत्पाक्षिकोपासिकाया वा (वचनमिति शेष) केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभेत श्रवणतया ? गौतम ! श्रुत्वा केवलिनोवा यावत्तत्पाक्षिकोपासिकाया वा यावदस्त्येक कश्चित्केवलिप्रज्ञप्तं धर्ममेव याचैवा श्रुत्वाकेवलिनो वक्तव्यता साचैव श्रुत्वाकेवलिन्यपि भणितव्या नवरं मभिलाप श्रुत्वेति शेष तचैव निरवशेष, यावद्यस्य मन पर्यवज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशम कृतो भवति' यस्य केवलज्ञानावरणीयाना कर्मणा क्षयोपश म कृतो भवति स श्रुत्वा केवलिनोवा यावदुपासिकायावा केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभेत श्रवणतया केवला बोधि बुध्येत याव त्केवलज्ञानमुत्पा

॥ भाषा ॥

केवलीप्रणीत धर्मप्राप्ते साभलवाने इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सोच्चाए केवलिस्सवा। वह तेहनों उपासिकानो वचन। केवलिपण्णत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए। केवलीप्रणीत धर्मलाभे साभलवाने। एव जाचेव असोच्चा हेगौतम। साभलीने केवलीनो वचन। जाव अत्थेगइए केवलिपण्णत्तं धम्म। यावत् केतलाएक केवलीप्रणीत धर्मलाभे साभलवाने। एव जाचेव असोच्चा ए वत्तव्वया। इम निकाहीज निश्चे असोच्चानो वक्तव्यता कही तिका निश्चे। साचेव सोच्चाएवि भाणियव्वा। सोच्चानेविषे पणि कहवो। नवर अभिला वो सोच्चत्ति। एतलोविशेष अभिलावो सोच्चा इम कहवो। सेस तचेव णिरवसेस जाव जस्सण मणपज्जव णाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडेभ वइ। शेषथाकतो तिमज निश्चे निरवशेष समस्तपणे कहवो, यावत् जेहने मनपर्यवज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कीधो हुवे। जस्सण केवल णाणावर णिज्जाण कम्माण खएकडे भवइ। जेहने केवलज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयकीधो हुवे, इहा क्षयोपशम न कहवो क्षयोपशम ते जेफेरी उदयआवे एआवतो नथी। सेण सोच्चा केवलिस्सवा। तेह साभलीने केवलीनो। जाव उवासियाएवा। यावत् तेहनो उपासिकानो वचन। केवलिपण्णत्तं धम्म लभेज्जसवण

इये तस्य कस्या प्यर्थो त्प्रतिपन्नसम्यग्दर्शनचारित्रलिङ्गस्य ' अट्ठमं अट्ठमेणं मित्यादिच, यदुक्त तत्प्रायो विकृष्टतपश्चरणवत साधो रवधिज्ञान मुत्पद्यत इति ज्ञापनार्थ मिति ॥ लोयप्पमाणमेत्ताइति ॥ लोकस्य य त्प्रमाण मात्रा तदेव परिमाण येषान्तानि तथा अथै नमेव लेश्यादिभि र्निरूपय

वलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए केवलंबोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा तस्सणं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, सेणं तेणं ओहिणाणेणं समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अ

इये तस्याष्टम मष्टमेना निक्षिप्तेन तपः कर्मणा ऽऽत्मान भावयत: प्रकतिभद्रतया तथैव यावद्गवेषणं कुर्वतो ऽवधिज्ञान समुत्पद्यते ' स तेनावधिज्ञानेन समुत्पन्नेन जघन्यतो ऽङ्गुलस्यासङ्ख्येय भाग मुत्कृष्टतो सङ्ख्येयान्यलोके लोकप्रमाणमात्राणि खण्डानि जानाति पश्यति । स भ० । कति

याए केवलबोहिं बुज्झेज्जा । केवलीप्रणीत धर्मनामे सामलयाने ग्रह सम्यग्दर्शनप्रते अनुभवे । जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा । यावत् केवलज्ञान उपार्जे पामे । तस्सणं अट्ठमं अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं । तेहने अनन्तरे अट्ठमअट्ठ अक्षेकरी अन्तरारहित । तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइ भद्दयाए । तपकर्मे करी आत्माने भावतायकाने प्रकृति भद्रकी इहा अट्ठम इत्यादि जे कह्यु ते प्राये विकृष्ट तपचरणवन्त साधुने अवधिज्ञान ऊपजे एहो जणाववाने अर्थे । तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं ओहिणाणेणं समुप्पन्नेणं । तिमज यावत् इहा इता अर्थ अभिमुख ज्ञानचेष्टा अपोह अभंध्यानथी धीजापथनो निरासकरवो इत्यादि, करताथकाने अवधिज्ञान ऊपजे तेह तेणे अवधिज्ञान ऊपनाथका । जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग । जघन्यथकी आंगुलनो असङ्ख्यातमोभाग । उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ । उत्कृष्टथकी असंख्याता अलोकनेविषे लोकप्रमाण एतले चउदेराज प्रमाण खण्ड जाणे देखे । सेणंभंते कइसु लेसासु होज्जा । तेह हे भगवन् ! केतली लेश्यानेविषे हुवे प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा छसुलेसासुहोज्जा तं० । हे गौतम ! छए लेश्यानेविषे हुवे ते कहेछे—कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए । कृष्णलेश्याये यावत् शुक्ललेश्याये हुवे । सेणंभंते

॥ टीका ॥

त्वात् ॥ मणं भंते ! इत्यादि ॥ तत्र ॥ सेणंति ॥ सो नन्तरोक्तविशेषणो वधिज्ञानी ॥ छसु लेसासु होज्जत्ति ॥ यद्यपि भावलेश्यासु प्रशस्तास्वेव तिसृष्वधिज्ञानं लभते तथापि द्रव्यलेश्या प्रतीत्य षट्स्वपि लेश्यासु लभते सम्यक्त्वश्रुतवत् यदाह-सम्मत्तसुय सव्वासु लब्भइत्ति, तल्लाभे चासौ षट्स्वपि भवतीत्युच्यत इति ॥ तिसुवत्ति ॥ अवधिज्ञानस्याद्यज्ञानद्वयाविनाभूतत्वा दवधिज्ञानी त्रिषु ज्ञानेषु भवेदिति ॥ चउसु वात्तिज्जत्ति ॥ मतिश्रु

॥ मूल ॥

लोए लोअप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ सेणं भंते ! कइसु लेसासु होज्जा ? गोयमा ! छसु लेसासु होज्जा तंजहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए । सेणं भंते ! कइसु णाणेसु होज्जा ? गो० ! तिसुवा चउसुवा होज्जा, तिसु होज्जमाणे आभि होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिबोहियणाणसुयणाणओहिणाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिबोहियणाणसुयणाणओहिणाणमणपज्जवणाणेसु होज्जा । सेणं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? एवं जोगो

अनुवाद

षु लेश्यासु भवेत् ? गौतम ! षट्सु लेश्यासु भवेत् तद्यथा-कृष्णलेश्याया यावच्छुक्ललेश्यायां । स भ० । कतिषु ज्ञानेषु भवेत् ? गौतम ! त्रिषु वा चतुर्षु वा, त्रिषु भवन् त्रिष्वाभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानेषु भवेत्, चतुर्षु भवन् चतुर्ष्वाभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानमनःपर्यवज्ञानेषु भवेत् । स भ० ! किं सयोगी भवे दव योगोपयोगो संहननसंस्थाने उच्चत्व मायुश्चैतानि सर्वाणि यथा अश्रुत्वाकेवलिनि तथैव भणि

भावार्थ

... । हे गौतम । तीनने विषे अथवा चारज्ञानने विषे होय । ते केटला ज्ञानने विषे हुवे ? तिमज उत्तर । गोयमा तिसुवा चउसुवा होज्जा । हे गौतम । तीनने विषे अथवा चारज्ञानने विषे होय । तिहां आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान विषे हुवे । तिसु होज्जमाणे । तीन ज्ञानने विषे होतांथकां । तिसु आभिणिबोहियणाण सुयणाण ओहिणाणेसु होज्जा । ते आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञानने विषे हुवे । चउसु होज्जमाणे । चार ज्ञानने विषे हुवे तो । आभिणिबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण मणपज्जवणाणेसु होज्जा । आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यवज्ञानने विषे हुवे । सेणभंते किं सजोगी होज्जा । तेह हे भगवन् ! स्यूं सयोगी हुवे । एव जोगोवओगो । ए योग उपयोग । संघयण संठाण उच्चत्त आउयं । संघयण संस्थान उच्चपणुं आउखुं । एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि । एत

॥ टीका ॥
तमन पर्यायज्ञानिनो ऽवधिज्ञानोत्पत्तौ ज्ञानचतुष्टयभावात् चतुर्थे ज्ञाने प्रथिरूढावधिज्ञानी भवेदिति ॥ सवेयएवेत्यादि ॥ अक्षीणवेदस्यावधिज्ञानो त्पत्तौ सवेदक स न्नवधिज्ञानी नवत्, क्षीणवेदस्यचावधिज्ञानोत्पत्तौ अवेदक स न्नयस्यात् ॥ नोउवसंतवेयएहोज्जत्ति ॥ उपशान्तवेदो य मवधिज्ञानी

॥ मूल ॥
वज्जगो सघयणसंठाण उच्चत्तं आउयंच एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव जाणियव्वाणि । सेणं नंते! किं सवेदए पुच्छा गोयमा ! सवेदएवा होज्जा अवेदएवा होज्जा, जइ अवेदएवा होज्जा किं उवसंतवेदए खीणवेदए होज्जा ? गोयमा ! णोउवसंतवेदए होज्जा खीणवेदए होज्जा । जइ सवेदए होज्जा किं इत्थी वेदए होज्जा पुच्छा गोयमा! इत्थीवेदएवा होज्जा, पुरिसवेदएवा होज्जा, पुरिसणपुंसगवेदएवा होज्जा।

अनुवाद
तव्यांन । स न्न० । कि सवेदक पृच्छा गो० । सवेदके वा भवे दवेदके वा भवेत् । यद्यवेदके वा भवे त्किमुपशान्तवेदके क्षीणवेदके वा भवे त् ? गौ० । नो उपशान्तवेदके भवेत् क्षीणवेदके नवेत् । यदि सवेदके भवेत् कि स्त्रीवेदके भवे त्पृच्छा गौतम । स्त्रीवेदके भवेत् पुरुषवेदके

॥ भाषा ॥
ला सघलाई जिम असोच्चाने कह्यां तिमज सोच्चाने पण कहवा । सेणंभते कि सवेदए पृच्छा । तेह हे भगवन् । स्यूं सवेदकनेविषे हुवे इत्यादि प्रश्ननो उत्तर । गोयमा सवेदएवाहोज्जा अवेदएवाहोज्जा । हे गौतम अक्षीणवेदने अवधिज्ञान उत्पत्तिनेविषे सवेदकपणो हुवे क्षीणवेदने अवधिज्ञान उत्पत्ति अवेदकपणाने हुवे तेमाटे कह्यु सवेदकनेविषे पण हुवे अवेदकनेविषे पण हुवे । जइअवेदएवाहोज्जा । जो अवेदक हुवे तो । कि उवसंत वेदए खीणवेदए होज्जा । तोस्यूं उपशांतवेदे हुवे अथवा क्षीणवेदे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो उवसंतवेदएहोज्जा । हे गौतम उपशांतवेदे एह अवधिज्ञानी न हुवे पामवायोग्य केवलज्ञानना श्हने विवक्षित प्रमाथको तेमाटे । खीणवेदएहोज्जा जइसवेदएहोज्जा । जो सवेदकनेविषे हुवे तो । कि इत्थी वेदएहोज्जा पृच्छा । तो स्यूं स्त्री वेदे हुवे इत्यादि प्रश्ननो उत्तर । गोयमा इत्थीवेदएहोज्जा । हे गौतम स्त्री वेदे हुवे अथवा । पुरिसवेदएवाहोज्जा । पुरुष वेदने पणि हुवे अथवा । पुरिसणपुंसगवेदएवा होज्जा । पुरुष नपुंसक ते कृत्रिम नपुंसकादिक पणि जन्म नपुंसक न हुवे तेमाटे नपुंसगवेदएवा

॥ टीका ॥

नभवति प्राप्तव्यकेवलज्ञानस्या स्य विवक्षितत्वा दिति ॥ सकसाईवेत्यादि ॥ य कषायक्षयेस त्यवधि लभते स सकषायीस न्नवधिज्ञानी न्नवेत्, यस्तु कपायक्षये ऽसा वकषायीति ॥ चउसुवेत्यादि ॥ यद्यक्षीणकषाय स न्नवधि लन्नते तदा य चारित्रयुक्तत्वा चतुर्षु सज्वलनकषायेषु न्नवति यदातु क्षपक श्रेणिवर्त्तित्वेन सज्वलनक्रोधे क्षीणे ऽवधि लन्नते तदा त्रिपु सज्वलनमानादिषु, यदातु तथैव सज्वलनक्रोधमानयो क्षीणयो स्तदा द्वयोरेव मेकत्र

॥ मूल ॥

सेणं न्नंते ! सकसाई होज्जा, ऋकसाई होज्जा ? गोयमा ! सकसाईवा होज्जा, ऋकसाईवा होज्जा, जइ ऋकसाई होज्जा किं उवसतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ? गोयमा ! णोउवसंतकसाई होज्जा खीणकसाई होज्जा, जइ सकसाई होज्जा सेणं न्नंते ! कइसु कसाएसु होज्जा ? गोयमा ! चउसुवा तिसुवा

अनुवाद

वा न्नवे त्पुरुपनपुसकवेदके वा न्नवेत् । स न्नदन्त सकषायी भवे दकषायी न्नवेत् ? गौतम । सकषायीवा न्नवे दकषायी वा भवे । यदि अकषायी न्नवे त्किमुपशान्तकषायी भवेत् क्षीणकषायी न्नवेत् ? गौ० । नो उपशान्तकषायी न्नवे क्षीणकषायी न्नवेत् । यदिसकषायी न्नवे त्स न्न० । क तिपु कषायेषु न्नवेत् ? गौतम ! चतुर्षुवा त्रिषुवा द्वयोर्वा एकस्मिन्वा भवेत् । चतुर्षु न्नवन् चतुर्षु सज्वलनक्रोधमानमायालोन्नेषु न्नवेत्' त्रिपु

॥ भाषा ॥

होज्जा, इम न कह्यु । सेणभ तेसकसाईहोज्जा अकसाईहोज्जा । तेह हेभगवन् सकषायी हुवे अथवा अकषायी हुवे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सकसाईवाहोज्जा अकसाईवाहोज्जा । हेगौतम सकषायी पणिहुवे अकषायी पणिहुवे, जे कषायने अचययका अवधिज्ञान पामे ते सकषायी, वली जे कषायने चययया अवधिज्ञान पामे ते अकषायी । जइ अकसाईहोज्जा । जो अकषायी हुवे । कि उवसतकसाईहोज्जा । तो स्यू उपशात कषायी हुवे अथवा । खीणकसाईहोज्जा । क्षीणकषायी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोउवसतकसाईहोज्जा । हेगौतम उपशातकसायी हुवे नही । खीणकसाईहोज्जा । क्षीणकषायी हुवे । जइसकसाईहोज्जा । जो सकषायीहुवे तो । सेणभते कइसु कसाएसु होज्जा । तेह हेभगवन् केतला कषायने विषे हुवे । गोयमा चउसुवा तिसुवा दोसुवा । हेगौतम चारनेविषे हुवे तीननेविषे हुवे दोयनेविषे हुवे । एक्कमिवाहोज्जा । एकनेविषे हुवे । चउसुहोज्जमा

दोसुवा एक्कंमिवा होज्जा, चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोहमाणमायालोभेसु होज्जा, तिसुहोज्जमाणे तिसु संजलणमाणमायालोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु संजलणमायालोभेसु होज्जा, एगंमि होज्जमाणे एगंमि संजलणलोभे होज्जा। तस्सणं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवलणाणं समुप्पज्जइ। सेणं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्जवा पण्णवेज्जवा परूवेज्जवा ? हंता गोयमा ! आघवेज्जवा पण्णवेज्जवा परूवेज्जवा। सेणं भंते ! पव्वावेज्जवा

भवन् त्रिषु सञ्ज्वलनमानमायालोभेषु भवेत्, द्वयोर्भवन् द्वयोः सञ्ज्वलनमायालोभयो र्भवेत्, एकस्मिन् भवन्नेकस्मिन् सञ्ज्वलनलोभे भवेत्। तस्य भ०। कत्यध्यवसाना प्रज्ञप्ता ? गौतम ! असंख्येया एव यथा ऽश्रुत्वाकेवलिनि तथैव याव त्केवलज्ञान समुत्पद्यते। स भ०। केवलिप्रज्ञप्त धर्म माख्यापयेद्वा प्रज्ञापयेद्वा प्ररूपयेद्वा ? हन्त गौतम ! आख्यापयेद्वा प्रज्ञापयेद्वा प्ररूपयेद्वा। स भ०। प्रव्राजयेद्वा मुण्डयेद्वा ? हन्त गौ०। प्रव्राजयेद्वा

थे। चारने विषे हुवे तो। चरसु संजलण कोह माण माया लोभेसु होज्जा। चार जे संज्वलन क्रोध मान माया लोभनेविषे हुवे। तिसुहोज्जमाणे। तीनने विषे हुवे तो। तिसु संजलन माण माया लोभेसु होज्जा। तीनेह संज्वलन मान माया लोभनेविषे हुवे। दोसु होज्जमाणे। दोयनेविषे हुवे तो। दोसु संजलण माया लोभेसु होज्जा। दोय संज्वलन माया लोभनेविषे हुवे। एगंमि होज्जमाणे। एकने विषे हुवे तो। एगंमि संजलण लोभेसु होज्जा। एक संज्वलन लोभने हुवे। तस्सणंभते केवइया अज्झवसाणा प०। तेहनेविषे हेभगवन्! केतला अध्यवसाय कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असंखेज्जा। हेगोतम असंख्याता हुवे। एवं जहा असोच्चाए। इम जिम असोच्चाने कह्यु। तहेव जाव केवलणाणं समुप्पज्जइ। तिमहीज यावत केवलज्ञान उपजे। सेणंभते केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्जवा पण्णवेज्जवा परूवेज्जवा। तेह हेभगवन् केवलीप्रणीत धर्म शिष्यादिकनेविषे, उपदेश करे भेदकरी कहे उपनय कथनथी कहे। हंता गोयमा आघवेज्जवा पण्णवेज्जवा परूवेज्जवा। हांगोतम। शिष्यादिकने उपदेश करे भेदकरी कहे उपनय कथनथी कहे। सेणंभतेपव्वावेज्जा

॥ मूल ॥

मुंडावेज्जवा ? हंता ! पव्वावेज्जवा मुंडावेज्जवा । सेणं भंते ! सिज्झइ बुज्झइ जाव अंतंकरेइ तस्सणं भंते ! सिस्सावि सिज्झंति जाव अंतंकरेंति ? हंता ! सिज्झंति जाव अंतकरेंति । तस्सणं भंते ! पसिस्सावि सिज्झंति ? एवचेव जाव अंतंकरेंति । सेणं भंते ! किं उड्ढं होज्जा अहेवा जहा असोच्चाए जाव तदेक्कदेस भाए होज्जा । सेणं भंते ! एगसमएण केवइया होज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्को

अनुवाद

मुण्डयेद्वा । स भ० । सिध्यति बुध्यति याव दन्त करोति । तस्य भ० । शिष्या अपि सिध्यति याव दन्त कुर्वन्ति ? हन्त । सिध्यन्ति याव दन्तं कुर्वन्ति । तस्य भ० । प्रशिष्या अपि सिध्यन्ति ? एव चैव याव दन्त कुर्वन्ति । स भ० । किं मूर्द्धं भवे दधो भवे त्तिर्यं ग्भवे यथा ऽश्रुत्वाकेवलि (प्रभृति) याव त्तदेकदेशभागे भवेत् । ते भ० । एकसमये काति भवेयु ? गौतम । जघन्ये नैकोवा द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतम् । तत्तेना

॥ भाषा ॥

वा मुंडावेज्जवा । तेह हेभगवन् ! प्रव्रज्या दे मुण्डपणें प्रवर्त्तावे । हता पव्वावेज्जवा मुंडावेज्जवा । हा गौतम ! प्रव्रज्या दे मुण्डपणें प्रवर्त्तावे । सेणभंते सि ज्झइ बुज्झइ । तेह हेभगवन् ! सीझे बूझे । जाव अतकरेइ । यावत् सर्वदुक्खनो अन्तकरे । तस्सणभंतेसिस्साविसिज्झति । तेहना हेभगवन् ! शिष्य पणि सीझे । जाव अतकरेंति हता सिज्झंति । यावत् सर्वदुखनो अन्त करे हा गौतम । सीझे । जाव अतकरेंति । यावत् सर्वदुखनो अन्त करे । तस्सभंते प सिस्साविसिज्झति । तेहना हेभगवन् प्रशिष्य ते शिष्यना शिष्य ते पणि सीझे । एवचेव जाव अत करेंति । इमहीज यावत् सर्वदुखनो अन्त करे । सेण भंते किं उड्ढ होज्जा अहेवा । तेह हेभगवन् ! स्यू ऊर्द्धलोके हुवे अथवा अधोलोके हुवे इतिप्रश्न उत्तर । जहा असोच्चाए जाव तदेक्क देसभाए होज्जा । जिम असोच्चानो अधिकार कह्यो तिम कहवो यावत् तेहना एक देशभागने विषे हुवे । सेणभंते एग समएण केवइयाहोज्जा । तेह हेभगवन् । एक समय केतला हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा । हेगौतम । जघन्यथकी एक अथवा दोयहुवे अथवा तीनहुवे । उक्कोसेण अट्ठ सय । उत्कष्टथकी १०८ एकसोआठ सीझे । सेतेणट्ठेण गोयमा एव वुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम इम कह्यु । सोच्चाण केवलिस्सया । साभलीने केवलीनी

॥ टीका ॥

ति ॥ नवमशते एकत्रिंशत्तम ॥ ३१ ॥ अनन्तरोद्देशके केवल्यादिवचन श्रुत्वा केवलज्ञान मुत्पादये दित्युक्त मिह्तु येन केवलि वचन श्रुत्वा तदुत्पादित सदर्श्यंत इत्येव सम्बद्धस्य द्वात्रिंशत्तमोद्देशकस्ये दमादिसूत्र ॥ तेणमित्यादि ॥ सतरति ॥ समयादिकालापेक्षया सविच्छेद

॥ मूल ॥

तेणं अट्ठेणं सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ सोच्चाणं केवलिस्सवा जाव केवलिउवासियाएवा जाव अत्थेगइया केवलणाणं उप्पाडेज्जा अत्थेगइया केवलणाणं णोउप्पाडेज्जा । सेवं भंते भंतेत्ति । नवमसयस्स एक्कतीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ९ ॥ ३१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे णामं णयरं होत्था वण्णओ दूइपलासे चेइए, सामीसमोसढे, परिसाणिग्गया, धम्मोकहिओ, परिसापडिगया,

॥ अनुवाद ॥

यंन गौतम । एव मुच्यते श्रुत्वा केवलिनोवा याव दस्त्येक कश्चित् केवलज्ञान मुत्पादये दस्त्येक कश्चित्केवलज्ञान नैवोत्पादये त्तदेव भदन्त । इति नवमशते एकत्रिंशत्तम उद्देश ॥ ३१ ॥ तस्मिन्काले तस्मि न्समये वाणिज्यग्राम नाम नगर मभवत्, वर्णको, दूतिपलाश चैत्य, स्वामी समवसृत, परिष निर्गता, धर्म कथित, परिषत्प्रतिगता । तस्मिन्काले तस्मिन्समये पार्श्वापत्यो गाङ्गेयो नामा

॥ भाषा ॥

वचन । जाव केवलि उपासिकापवा । यावत् केवलीनो उपासिकानो वचन । आय अत्थेगइया केवलणाण उपाडेज्जा । यावत् केतलाएक केवलज्ञान उपार्जे । अत्थेगइया केवलणाणं णो उपाडेज्जा । केतलाएक केवलज्ञान प्रते न उपार्जे । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कहो ते सर्व सत्यछै । नव मसयस्स एक्कतीसइमो उद्देसो सम्मत्तो । ए नवमा शतकनो एकत्रीसमो उद्देशो अर्थथी पूरोथयो ९ ॥ ३१ ॥ पाछे केवलीना वचन सांभलीने केवलज्ञान उपार्जे इसो कह्यो, इवा तो केवलीनोवचन सुणीने जेणे केवलज्ञान उपार्ज्यो ते कहेछै—तेणकालेणं तेणसमएण । ते कालने विषे ते समयने विषे । वाणियगामेणाम णयरेहोत्था वण्णओ । वाणिज्यग्राम इसेनामे नगरहुंवो तेहनो वर्णक कहेवो । दूइपलासेचेइए । दूतिपलाशनामे चैत्य । सामीसमोसढे । स्वामी समवसर्या । परिसाणिग्गया । पर्षदा वांदवा नीकली । धम्मोकहिओ परिसापडिगया । धर्मकह्यो पर्षदा पाछी स्वस्थाने गई ।

॥ टीका ॥

तत्र चैकेन्द्रियाणा मनुसमय मुत्पादा न्निरन्तरत्व मन्येषा तूत्पादे विरहस्यापि भावा त्सान्तरत्वं निरन्तरत्वच वाच्यमिति, उत्पन्नानाच सता

॥ मूल ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा गंगेयं णाम अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—संतरं भंते ! णेरइयाउववज्जंति निरंतरं णेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! संतरंपि णेरइया उववज्जंति निरंतरंपि णेरइया उववज्जंति । संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति।

॥ अनुवाद ॥

नगारो यत्रैव श्रमणो भगवा न्महावीर स्तत्रैवो पागच्छ त्युपागत्य, श्रमणस्य भगवतो महावीरस्या दूरसामन्त स्थित्वा श्रमण भगवन्त महावीर मेव मवादीत्-सान्तर भदन्त ! नैरयिका उत्पद्यन्ते निरन्तर नैरयिका उत्पद्यन्ते ? गाङ्गेय ! सान्तर मपि नैरयिका उत्पद्यन्ते निरन्तर मपि नैरयिका उत्पद्यन्ते । सान्तर भ० ! असुरकुमारा उत्पद्यन्ते निरन्तर मसुरकुमारा उत्पद्यन्ते ? गाङ्गेय ! सान्तर मप्यसुरकुमारा उत्प

॥ भाषा ॥

तेणकालेण तेणसमएण । ते कालनेविषे ते समयने विषे । पासावच्चिज्जा । श्री पार्श्वनाथनो सतानीयो । गंगेयणाम अणगारे जेणेव समणेभगव महावीरे । गंगेय इसे नामे साधु जिहा श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी छे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहा आवे तिहा आवीने । समणस्स भगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने । अदूरसामते ठिच्चा । घणो वेगलो नही घणो ढूकडो नही तिहा रहीने । समणभगवमहावीरं एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते इम कहे । संतरभते णेरइया उववज्जति । समयादि अन्तरसहित हेभगवन् नारको ऊपजे एक एक समये ऊपजे बीजो समयान्तरे ऊपजे अथवा । निरतर णेरइया उववज्जति । समयादि अन्तररहित नारको ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया सतरंपि णेरइया उववज्जति । हे गगेय अन्तरसहित पणि नारको ऊपजे एहने विरहना भावथको विरह विना पण । निरतरंपि णेरइया उववज्जति । निरन्तर पणि नारको ऊपजे प्रति समये ऊपजे । सतरभते असुरकुमारा उववज्जति । अन्तरसहित हेभगवन् असुरकुमार ऊपजे । निरतर असुरकुमारा उवव

सुद्वर्त्तना भवती त्यत स्तां निरूपय न्नाह ॥ सतरं भंते । नेरइया उव्वट्टतीत्यादि ॥ उद्वृत्तानाच केषांचि द्गत्यतरे प्रवेशन भवती त्यत स्तन्निरूप

गंगेया ! संतरंपि असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरंपि असुरकुमारा उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा। संतरं भंते ! पुढवीकाइया उववज्जंति निरंतर पुढवीकाइया उववज्जंति ? गंगेया ! णोसतरं पुढवीकाइया उववज्जंति निरंतर पुढवीकाइया उववज्जंति एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा णेरइया। संतरं भंते ! णेरइया उव्वट्टंति निरंतरं णेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतरंपि णेरइया

द्यन्ते निरन्तर मप्यसुरकुमारा उत्पद्यन्ते। एव याव स्तनितकुमारा। सान्तर भदन्त! पृथिवीकायिका उत्पद्यन्ते निरन्तर पृथिवीकायिका उत्पद्यन्ते ? गाङ्गेय ! नोसान्तर पृथिवीकायिका उत्पद्यन्ते निरन्तर पृथिवीकायिका उत्पद्यन्ते' एव याव द्वनस्पतिकायिका। द्वीन्द्रिया याव द्वैमानिका, एते यथा नैरयिका। सान्तर भदन्त! नैरयिका उद्वर्त्तन्ते निरन्तर नैरयिका उद्वर्त्तन्ते ? गाङ्गेय। सान्तरमपि नैरयिका

ज्जति। निरन्तर पणि अन्तररहित पणि असुरकुमार ऊपजे। एव जाव थणियकुमारा। इम यावत् स्तनितकुमारलगे इमज कहवो। सतरभंते पुढविकाइया उववज्जति। अन्तरसहित पृथिवीकायिक हेभगवन् ऊपजे अथवा। निरतरं पुढविकाइया उववज्जति। अन्तररहित पृथिवीकायिक ऊपजे प्रतिसमयें इत्यर्थ। गंगेया णोसतरं पुढविकाइया उववज्जति। हे गागेय। अन्तरसहित पृथिवीकायिक न ऊपजे एतले प्रतिसमयें असख्याता ऊपजे। निरतरं पढविकाइया उववज्जति। निरन्तर पृथिवीकायिक ऊपजे एहने समयना पणि अन्तर नही तेमाटे। एव जाव वणस्सइकाइया। इम यावत् वनस्पतीकायिक लगे कहवो पणि वनस्पतीकायिक प्रतिसमये अनन्ता ऊपजे। बेइंदिया जाव वेमाणिया। बेइन्द्री आदिदेई यावत् वैमानिक लगे। एते जहा णेरइया। ए सर्व जिम नारको कह्या तिम कहवा। संतरभंते णेरइया उव्वट्टति। ऊपना पछी निकलवो हुवे, तेमाटे उद्वर्त्तना कहेछे—अन्तरसहित हेभगवन् नारको नीकले। निरतर णेरइया उव्वट्टति। अथवा अन्तररहित नारकी नीकले इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया। हेगागेय।

॥ मूल ॥

उव्वट्टंति निरंतरंपि णेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव थणियकुमारा । संतरं भंते! पुढवीकाइया उव्वट्टंति पुच्छा गंगेया! णोसंतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति । एवं जाव वणस्सइकाइया । णोसंतरं उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति। संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ? गंगेया! संतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति निरंतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति एवं जाव वाणमंतरा। संतरं भंते ! जोइसिया चयंति पुच्छा गंगेया ! संतरंपि जोइसिया चयंति निरंतरंपि जोइसिया चयंति । एवं जाव वेमाणिया । कइवि

॥ अनुवाद ॥

उद्वर्त्तन्ते निरन्तरमपि नैरयिका उद्वर्त्तन्ते । एवं यावत् स्तनितकुमाराः । सान्तरं भ० । पृथिवीकायिका उद्वर्त्तन्ते पृच्छा गांगेय ! नोसान्तरं पृथिवीकायिका उद्वर्त्तन्ते, निरन्तरं पृथिवीकायिका उद्वर्त्तन्ते । एवं यावत् वनस्पतिकायिका., नैव सान्तरं मुद्वर्त्तन्ते निरन्तरं मुद्वर्त्तन्ते । सान्तरं भ० । द्वीन्द्रिया उद्वर्त्तन्ते निरन्तरं द्वीन्द्रिया उद्वर्त्तन्ते ? गांगेय ! सान्तरमपि द्वीन्द्रिया उद्वर्त्तन्ते निरन्तरमपि द्वीन्द्रिया उद्वर्त्तन्ते । एवं

॥ भाषा ॥

संतरंपि णेरइया उव्वट्टंति निरंतरंपि णेरइया उव्वट्टंति । अन्तरसहित पणि नारकी निकले अन्तररहित पणि नारकी नीकले जिम उपजिवाने विषे विरहछे तिम चविवानेविषे पणि विरहकालछे। एवजाव थणियकुमारा । इम यावत् स्तनितकुमार लगे कहवो । संतरभंते पुढविकाइया उव्वट्टंति पृच्छा । अन्तरसहित हेभगवन् पृथिवीकायिक नीकले इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गंगेया णो संतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति । हे गांगेय चविवाना विरहना अभावथी प्रतिसमये असंख्याता चवेछे तेमाटे अन्तर नही । निरंतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति । निरन्तर पृथिवीकायिक नीकले। एव जाव वणस्सइकाइया । इम यावत् वनस्पतीकायिक लगे कहवो, पणि वनस्पतीकायिकने अनन्ता कहवा । णो संतरं उव्वट्टंति । नही सान्तर निकले। निरंतरं उव्वट्टंति । निरन्तर निकले चवे। संतरभंते बेइंदिया उव्वट्टंति । सान्तर हेभगवन् बेइन्द्रिय नीकले चवे अथवा । निरंतर बेइंदिया उव्वट्टंति । अन्तररहित बेइन्द्रिय चवे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया संतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति । हे गांगेय अन्तरसहित बेइन्द्रिय चवे। निरंतरंपि बेइंदिया उव्वट्टंति ।

॥ टीका ॥ णायाइ ॥ कइविहेणं मित्यादि ॥ पवेसणएत्ति ॥ गत्यन्तरा दुद्धृतस्य विजातीयगतौ जीवस्य प्रवेशन मुत्पाद इत्यर्थः ॥ एगे भंते। नेरइए,, इत्या

॥ मूल ॥ हेणं भंते ! पवेसणए पन्नत्ते गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पन्नत्ते, तंजहा—णेरइयपवेसणए तिरिक्खजोणियपवेसणए मणुस्सपवेसणए देवपवेसणए। णेरइयपवेसणएणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा—रयणप्पभापुढविणेरइयपवेसणए जाव अहे सत्तमापुढवीणेरइयपवेसणए। एगेणं भंते !

॥ अनुवाद ॥ याव द्वानव्यन्तरा । सान्तर भदन्त ! ज्योतिष्का च्यवन्ते पृच्छा गांगेय ! सान्तरमपि ज्योतिष्का च्यवन्ते, निरन्तर मपि ज्योतिष्का च्यवन्ते। एव यावद्वैमानिका । कतिविधो भ० ! प्रवेशनक प्रज्ञप्तो ? गांगेय ! चतुर्विध. प्रवेशनक प्रज्ञप्त स्तद्यथा—नैरयिकप्रवेशनक स्तिर्यग्योनिकप्रवेशनको मनुष्यप्रवेशनको देवप्रवेशनक । नैरयिकप्रवेशनको भ० ! कतिविध प्रज्ञप्तो ? गांगेय। सप्तविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकप्रवेशनको याव दध सप्तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक । एको भदन्त । नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविश न्कि रत्नप्रभाया भवेत् शर्कः

॥ भाषा ॥ अन्तररहित पणि वेइन्द्रिय चवै। एव जाव वाणमतरा । इम यावत् वानव्यन्तर लगे कहवो। सतरंभते जोइसिया चयति पृच्छा। सातर हेभगवन् ज्योतिषी चवे इतिप्रश्न उत्तर। गगेया सतरपि जोइसिया चयति। हेगागेय ! अन्तरसहित पणि ज्योतिषी चवै। निरतरपि जोइसिया चयति। अने अन्तररहित पणि ज्योतिषी चवै। एवजाव वेमाणिया कइविहेणभते पवेसणए पन्नत्ते। इम यावत् वैमानिक पर्यंत कहवा उद्धृतने कोइएक गत्यतरनेविषै प्रवेशहुवे एतलामाटे प्रवेश निरूपण करतो कहेछे—कितलेभेदे हेभगवन् ! प्रवेशन कह्यो अनेरो गतिथी नीकलो अनेरी गतिनेविषै जाइवो। गगेया च उव्विहे पवेसणए प० त०। हेगागेय ! चारिभेदे प्रवेशन कह्यो ते कहेछे—णेरइयपवेसणए तिरिक्खजोणिय पवेसणए मणुस्सपवेसणए देवपवेसणए। नारकीप्रवेशन १ नरकगतिनेविषै पैसिवो तिर्यग्योनिक प्रवेशन २ तिर्यंचगतिने विषै पैसिवो मनुष्यप्रवेशन ३ मनुष्यगतिनविषै पैसिवो देवप्रवेशन ४ देवगतिनेविषै पैसिवो। णेरइयपवेसणएणभते कइविहे प०। नारकीप्रवेशन हेभगवन् ! कितलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गगेया सत्तविहे प० त०। हेगागेय!

॥ टीका ॥ दी सप्त विकल्पाः ॥ द्विकसंयोगे । नेरइए,, इत्यादौ अष्टाविंशति विकल्पाः तत्र रत्नप्रभाद्याः सप्तापि पृथिवीः क्रमेण पट्टादौ व्यवस्थाप्य तत्सञ्चारणया

॥ मूल ॥ णेरइए णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणे किंरयणप्पभाए होज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एव जाव अहे सत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा । दो भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किंरयणप्पभाए होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाएवा होज्जा

अनुवाद रत्नप्रभाया भवे देव याव दध सप्तमाया भवेत् ? गागेय । रत्नप्रभायावा भवेत् याव दधः सप्तमायावा भवेत् । द्वौ भदन्त । नैरयिकौ नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्तौ कि रत्नप्रभायां भवेता याव दधः सप्तमाया भवेता ? गागेय । रत्नप्रभायावा भवेता याव दध सप्तमायावा भवेता

॥ भाषा ॥ सातभेदे नारकीप्रवेशन कह्यो ते कहेछै—रयणप्पभापुढवि णेरइय पवेसणए । रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिकप्रवेशन १ इम शर्करप्रभा पृथिवी नरकप्रवेशन इत्यादि । जाव अहेसत्तमा पुढवी णेरइय पवेसणए । यावत् नीचे सातमी पृथिवी नरकप्रवेशन लगे कहवो । एगेणभंते णेरइए णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणे किरयणप्पभाए होज्जा सक्करप्पभाए होज्जा । एकजीव हेभगवन् । नारकी नरकगतिने प्रवेशने करीने प्रवेशन ऊपजतोथको स्यू रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे प्रवेशन हुवे अथवा शर्करप्रभा पृथिवीनेविषे प्रवेशन हुवे । एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा । इम यावत् नीचे सातमीपृथिवीनेविषे प्रवेशन हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गगेया रयणप्पभाएवाहोज्जा जाव अहेसत्तमाएवाहोज्जा । हे गागेय एकजीव नारकीप्रवेशन करतोथको रत्नप्रभायें ऊपजे अथवा शर्करप्रभाये ऊपजे अथवा यावत् नीचे सातमीपृथिवीयें ऊपजे इम इहा सात विकल्प जाणवा एकजीव आश्रयीने । दोभंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाएहोज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा गगेया रयणप्पभाएवाहोज्जा जाव अहेसत्तमाएवाहोज्जा । दोय नारकी हेभगवन् नारकी नारकीप्रवेशकरी प्रवेशन करता थका स्यू रत्नप्रभापृथिवीयें ऊपजे अथवा शर्करप्रभाये ऊपजे इत्यादि यावत् नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर हे गागेय इहा एकसयोगी भागा ७ द्विकसयोगीभागा २१ एव भागा २८ हुवे, तिहा रत्नप्रभानेविषे ऊपजे अथवा बेऊ शर्क

पृथिवीना मेकत्वद्विकयोगाभ्या तेऽवसेया, सर्वे केकपृथिव्या नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणत्वे सप्त विकल्पा । पृथिवीद्वये नारकद्वयोत्पत्तिलक्षणाद्विकयो

जाव अहे सत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्प भाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ । अहवा एगे सक्करप्प भाए एगे वालुयप्पभाए जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ५ । अहवा एगे वालु यप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४ । एवं

अथवा एको रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभायां भवेत् अथवा एको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभायां भवेत् अथवा यावत् एको रत्नप्रभाया मेकोऽध सप्तमायां भवेत् ६ । अथवा एकः शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया यावत् अथवा एकः शर्कराप्रभाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् ५ । अथवा एको वालुकाप्रभाया मेको पङ्कप्रभायां भवेत् एवं यावत् अथवा एको वालुकाप्रभाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् ४ । अथ मेकैका पृथ्वी संयोगा

रत्नप्रभामें उपजे इम यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वीमांहे उपजे इम सातभांगा एकसंयोगी, हिवे द्विकसंयोगी भांगा २१ देखाडे छे—अथवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए होज्जा । अथवा एक रत्नप्रभामें उपजे एक शर्कराप्रभामें उपजे ए पहेलो भांगो १ । अथवा एगेरयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा । अथवा एक रत्नप्रभामें उपजे एक वालुकाप्रभामें उपजे इम २ । जाव एगेरयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ । यावत् एक रत्नप्रभामें उपजे एक नीचे सातमीपृथ्वीमांहे उपजे इम द्विकसंयोगी भांगा ६ रत्नप्रभाना थया । अथवा एगेसक्करप्पभाए । अथवा एक शर्कराप्रभामें उपजे । एगे वालुयप्पभाए । एक वालुकाप्रभामें उपजे । जाव अहवा एगे अहेसत्तमाए । इम यावत् अथवा एक शर्कराप्रभामें उपजे । एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५ । एक नीचे सातमीपृथ्वीमें उपजे इम शर्कराप्रभाना भांगा ५ थया शर्कराप्रभा छूटी, हिवे वालुकाप्रभा ना भांगा ४ कहे छे—अथवा एगेवालुयप्पभाए । अथवा एक वालुकाप्रभामें उपजे । एगे पंकप्पभाए होज्जा । एक पंकप्रभामें उपजे । एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए । इम यावत्

॥ मूल ॥

एक्केक्का पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । तिस्सि भंते ! णेरइया णेरइ

॥ अनुवाद ॥

याव दथवा एक तमायां मेको ऽध सप्तमायां भवेत् । २८ । त्रयो भदन्त ! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त किं रत्नप्रभायां भवेयु र्या

एकजीवस्यैकनरकयोगेभङ्गा | द्वयोर्जीवयो रेकनरकयोगे | द्वयोर्जीवयो र्नरकद्वययोगे भङ्गा २१

र	श	वा	प	धू	त	त	
१	०	०	०	०	०	०	
०	१	०	०	०	०	०	
०	०	१	०	०	०	०	
०	०	०	१	०	०	०	
०	०	०	०	१	०	०	
०	०	०	०	०	१	०	७
०	०	०	०	०	०	१	

र	श	वा	प	धू	त	त	
२	०	०	०	०	०	०	
०	२	०	०	०	०	०	
०	०	२	०	०	०	०	
०	०	०	२	०	०	०	
०	०	०	०	२	०	०	
०	०	०	०	०	२	०	७
०	०	०	०	०	०	२	

र	श	वा	प	धू	त	त	
१	१	०	०	०	०	०	
१	०	१	०	०	०	०	
१	०	०	१	०	०	०	
१	०	०	०	१	०	०	
१	०	०	०	०	१	०	
१	०	०	०	०	०	१	६
०	१	१	०	०	०	०	

र	श	वा	प	धू	त	त	
०	१	०	१	०	०	०	
०	१	०	०	१	०	०	
०	१	०	०	०	१	०	
०	१	०	०	०	०	१	५
०	०	१	१	०	०	०	
०	०	१	०	१	०	०	
०	०	१	०	०	१	०	

र	श	वा	प	धू	त	त	
०	०	१	०	०	०	१	४
०	०	०	१	१	०	०	
०	०	०	१	०	१	०	
०	०	०	१	०	०	१	३
०	०	०	०	१	१	०	
०	०	०	०	१	०	१	२
०	०	०	०	०	१	१	१

॥ भाषा ॥

अथवा एक वालुकप्रभावे ऊपजे । एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४ । एक नीचे सातमी नरकपृथिवीये ऊपजे इम वालुकप्रभासी भागा ४ एतले वालुकप्रभा छू टो । एव एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा । इम येकेक पृथिवी अनुसचारणनी अपत्राये येकेक पृथिवी छ.डवी छेहली भागो देखाडेछे—जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । यावत् अथवा येकजीव तमप्रभायें ऊपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीयें ऊपजे ए बे पृथिवी मिली येकसंयोगी ७ द्विकस योगी २१ सर्व २८ भागा थया । तिण्णिभंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा । तीन हेभगवन्

॥ टीका ॥

गे त्वेकविंशति रित्येव मष्टाविंशति' ॥ एवं शर्कराकापुढवी छम्भेयव्वत्ति ॥ अक्षसञ्चारणापेक्षये दमुक्त मिति ॥ तिण्णि भंते । नेरइयत्यादौ „ चतु रशीति विकल्पा स्तथाहि–पृथिवीना मेकत्वे सप्त विकल्पाः, द्विकसयोगेतु तासा मेको द्वा वित्यनन नारकोत्पादविकल्पेन रत्नप्रभया सह शेषा

॥ मूल ॥

यपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा ? गंगेया ! रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहवा अहे सत्तमाए होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए दोसक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ६ । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १२ । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए

अनुवाद

व दध सप्तमाया भवेयु ? गाङ्गेय । रत्नप्रभायावा भवेयु याव दथवा ध.सप्तमाया भवेयु. ७ । अथवै को रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया भवेता याव दथवा एको रत्नप्रभाया द्वा वध सप्तमाया भवेता ६ । अथवा द्वौ रत्नप्रभाया येक शर्कराप्रभाया भवेत् याव दथवा द्वौरत्नप्रभाया मे

॥ भाषा ॥

नारकी नरकनेविषे प्रवेशन करी प्रवेश करताथका स्यु रत्नप्रभानेविषे ऊपजे इम यावत् नीचे सातमोनरक पृथिवीनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहवा अहे सत्तमाएहोज्जा ७ । हेगांगेय इहां येकसयोगी भांगा ७ द्विकसयोगी ४२ त्रिकसयोगी ३५ सर्व ८४ ते देखाडिछे—तीनेई जीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे इम यावत् तीनेई नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम येकसयोगी भांगा ७ जाणवा, हिवे द्विकसयोगी भांगा ४२ ते देखाडिछे—अहवा एगे रयणप्पभाए दोसक्करप्पभाए होज्जा । अथवा येक रत्नप्रभाये उपजे दोय शर्करप्रभायें उपजे ये येकभांगो १ । जाव अहवा एगेरयणप्पभा० दो अहे सत्तमाए होज्जा ६ । इम यावत् अथवा येक रत्नप्रभायें उपजे दोय नीचें सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे येव द्विकसयोगीना भांगा ६ थया । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाएहोज्जा । अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे उपजे येक शर्कराप्रभानेविषे उपजे ये येकभांगो । जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १२ । इम यावत् अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे उपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे

॥ टीका ॥

ऽि क्रमेण चारितान्ति लंभ्या' पट्, द्वावेक इत्यनेनापि नारकोत्पादविकल्पेन पडेव तदेते द्वादश' एव शर्कराप्रभया पञ्च पञ्चेति दश, एव वालुकाप्रभया ऽष्टौ, पङ्कप्रभया पट्, धूमप्रभया चत्वार, तम प्रभया द्वाविति द्विकयोगे द्विचत्वारिंश, त्रिकयोगेतु तासा पञ्चत्रिंश द्विकल्पा

॥ मूल ॥

होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ५। अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०। एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वा जाव अहवा दो तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४२। अह

अनुवाद

को ध सप्तमाया भवेत् १२। अथवा एक शर्कराप्रभाया द्वौ वालुकाप्रभाया भवेता याव दथवै क शर्कराप्रभाया द्वा वध सप्तमाया भवेताम् ५। अथवा द्वौ शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया भवेत् याव दथवा द्वौ शर्कराप्रभाया मेको ध सप्तमाया भवेत् १०। एव यथा शर्कराप्रभाया वक्तव्यता भणिता तथा सर्वपृथिवीना भणितव्या याव दथवा द्वौ तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् ।४२। अथवैको रत्नप्रभाया मेक श

॥ भाषा ॥

उपजे ए पणि छ भागा इम रत्नप्रभा सघाते भागा १२ थया एतले रत्नप्रभा छूटो, हिवे शर्करप्रभा सघाते कहेछे—अहवाएगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा। अथवा येक शर्करप्रभाये उपजे दोय वालुकप्रभायें उपजे ये येक भागो १। जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाएहोज्जा ५। इम यावत् अथवा येक शर्करप्रभायें उपजे दोय जीव नीचे सातमी पृथिवीयें उपजे इम शर्करप्रभासो भागा ५। अहवा दो सक्करप्पभाए एगेवालुयप्पभाए होज्जा। वली अथवा दोय शर्करप्रभाए उपजे येक वालुकप्रभाये उपजे ये एकभागो १। जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०। इस यावत् अथवा दोय शर्करप्रभायें उपजे येक नीचे सातमीनरकपृथिवीये उपजे ये पाचभागा थया इम शर्करप्रभासो भागा १० थया। एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया तहा सव्व पुढवीण भाणियव्व। इम जिम शर्करप्रभा सघाते वक्तव्यता कही तिम सर्व पृथिवीसघाते कहवो इम वालुकप्रभासो येक दोय इम भागा ४ तथा दोय येक येक इम भागा ४ मिली आठ थया इम पकप्रभासो ६ धूमप्रभासो ४ तमासो दोयथया इम सर्वमिली

वा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा १२। जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ५। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयाए एगे अहे सत्त

र्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां भवेत्' अथवा एका रत्नप्रभायां मेकः शर्कराप्रभायां मेक पङ्कप्रभायां भवेत् १२। याव दथवा एको रत्नप्रभायां मेकः शर्कराप्रभायां मेको ऽधः सप्तमायां भवेत् ५। अथवेको रत्नप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेक पङ्कप्रभायां भवे दथवै को रत्नप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेको धूमप्रभायां भवे देव याव दथवा एको रत्नप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेको ऽध सप्तमायां भवेत् ४। अ

द्विकसंयोगी ४२ थाय। तेमांहि छेहला भांगा देखाडे छे— जाव अहवा दो तमाए एग अहेसत्तमाए होज्जा ४२। इम यावत् अथवा दोय तमप्रभायें उपजे येक नीचे सातमी नरक पृथिवीयें उपजे ए बयालीसमो द्विकसंयोगनो विकल्प जाणवो, हिवे त्रिकसंयोगे भांगा ३५ ते अक्षसंचारे करी विचारी लेवा तिहां त्रिकसंयोगे रत्नप्रभासुं भांगा १५ शर्कराप्रभासुं १० वालुकाप्रभासुं ६ पंकप्रभासुं ३ धूमासुं १ सर्वमिलो ३५ ते देखाडे छे—अहवा एगे रयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा। अथवा येक रत्नप्रभायें उपजे येक शर्कराप्रभायें उपजे येक वालुकाप्रभायें उपजे। अहवा एगेरयणप्पभाए एगेसक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाएहोज्जा १२। अथवा येक शर्कराप्रभायें उपजे येक रत्नप्रभायें उपजे येक पंकप्रभायें उपजे ये बीजोभांगो २। जाव अहवा एगेरयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५। इम यावत् अथवा येक रत्नप्रभायें उपजे येक शर्कराप्रभायें उपजे येक नीचे सातमी नरक पृथिवीयें उपजे इम भांगा ५ थया। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा। अथवा येक रत्नप्रभायें उपजे येक वालुकप्रभायें उपजे येक पङ्कप्रभायें उपजे। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभायें उपजे येक वालुक



माए होज्जा ४। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रय
णप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे
तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २। अहवा एगे रयण
प्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १। एवं १५। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे

थवैको रत्नप्रभायामेक पङ्कप्रभायामेको धूमप्रभायां भवेत् यावदथवैको रत्नप्रभायामेक पङ्कप्रभायामेकोऽधःसप्तमायां भवेत् ३। अथ
वैको रत्नप्रभायामेको धूमप्रभायामेकस्तमायां भवेदथवा एको रत्नप्रभायामेको धूमप्रभायामेकोऽधःसप्तमायां भवेत् २। अथवैको रत्न
प्रभायामेकस्तमायामेकोऽधःसप्तमायां भवेत् १। एवं १५। अथवैकः शर्कराप्रभायामेको वालुकाप्रभायामेकः पङ्कप्रभायां भवेदथवा

प्रभायें उपजे येक धूमप्रभायें उपजे ये येकभांगा १। इम जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ४। इम यावत् अथवा एक
रत्नप्रभानेविषे उपजे येक वालुकप्रभानेविषे उपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ४ इम सर्वभागा ८। अहवा एगे रयणप्पभा
ए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। अथवा येक रत्नप्रभानेविषे उपजे येक पङ्कप्रभानेविषे उपजे येक जीव धूमप्रभानेविषे उपजे। जाव अहवा
एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ३। इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव
नीचे सातमी पृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ३ सर्व १२। अहवा एगे रयणप्पभाए एगेधूमप्पभाए एगे तमाएहोज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उ
पजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा २। अथवा येकजीव
रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा २ सर्व १४। अहवा एगेरयणप्पभाए एगे
तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १ इम १५। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे

पंकप्पन्नाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पन्नाए एगे वालुयाए एगे धूमप्पन्नाए होज्जा २ । जाव एगे सक्कारप्पन्नाए एगे वालुयप्पन्नाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४ । अहवा एगे सक्करप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३ । अहवा एगे सक्करप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे अहे

एक· शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवेत् २ । याव देक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् ४ । अथवैक शर्कराप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवे द्याव दथवा एक शर्कराप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको ध सप्तमाया भवेत् ३ । अथवैक शर्कराप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवे दथवैक शर्कराप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ध सप्तमाया भवे

उपजे ये वेकभागो १ इम रत्नप्रभासघाते त्रिकसंयोगीभागा १५ थया शर्करप्रभासो। भागा १० कहेछे—अहवा एगे सक्करप्पभाए एगेवालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाएहोज्जा । अथवा येकजीव शर्करप्रभायें उपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव पङ्कप्रभायें उपजे ये येकभागो । अहवा एगेसक्करप्पभाए एगे वालुयाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २ । येक शर्करप्रभायें उपजे येकजीव वालुकप्रभायें उपजे येक धूमप्रभायें उपजे । जाव एगे सक्करप्पभाए एगेवालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४ । इम यावत् येकजीव शर्करप्रभायें उपजे येक वालुकप्रभायें उपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ४ थया । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाएहोज्जा । अथवा येक शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव पङ्कप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे ये येकभागो । जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ३ । यावत् अथवा येकजीव शर्करप्रभायें उपजे येकजीव पङ्कप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरक पृथिवीनेविषे उपजे इम ३ भागा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा । अथवा येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे १ । अहवा एगेसक्कराए एगे धूमाए एगे

॥ मूल ॥

सत्तमाए होज्जा २। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्त

अनुवाद

त् २। अथवा एकः शर्कराप्रभायामेकस्तमायामेकोऽधःसप्तमायां भवेत् १०। अथवैको वालुकाप्रभायामेकः पंकप्रभायामेको धूमप्रभायां भवेत्, अथवा एको वालुकाप्रभायामेकः पंकप्रभायामेकस्तमायां भवेदथवा एको वालुकाप्रभायामेकः पंकप्रभायामेकोऽधः सप्तमायां भवेत् ३। अथवैको वालुकाप्रभायामेको धूमप्रभायामेकस्तमायां भवेदथवा एको वालुकाप्रभायामेको धूमप्रभायामेकोऽधः सप्तमायां भ

॥ भाषा ॥

अहेसत्तमाए होज्जा २। अथवा येकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा २। अहवा एगे सक्कराए एगेतमाए एगेअहेसत्तमाए होज्जा १०। अथवा येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमाये उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे इम येकभांगो थयो ये शर्करासघाते भागा १० थया, हिवे वालुकप्रभा सघाते भागा ६ देखाडेछे—अहवा एगे वालुयाए एगेपंकाए एगे धूमाए होज्जा। येकजीव वालुकप्रभा सघाते उपजे येकजीवपंकप्रभायें उपजे येकजीव धूमप्रभायें उपजे १। अहवा एगे वालुयाए एगे पंकाए एगेतमाए होज्जा। अथवा येकजीव वालुकप्रभायें उपजे येकजीव पंकप्रभायें उपजे येकजीव तमाये उपजे। अहवा एगे वालुयाए एगेपंकाए एगे अहेसत्तमाए ३। अथवा येकजीव वालुकप्रभायें उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इमभांगा ३। अहवा एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा। अथवा येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे ये येकभांगो १। अहवा एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २। अथवा येक वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उ

जीवत्रयमाश्रित्य भङ्गाश्चतुरशीति ८४

	७	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	२
र	३०००००००	११११११	२२२२२२	०००००	०००००	००००	००००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	— —	— —
श	०३००००००	२०००००	१०००००	११११११	२२२२२	००००	००००	[illegible]	[illegible]		— —	— —
वा	००३०००००	०२००००	०१००००	२००००	१००००	११११	२२२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	— —	— —
प	०००३०००	००२०००	००१०००	०२०००	०१०००	२०००	१०००	२२२	[illegible]	[illegible]	— —	— —
धू	००००३००	०००२००	०३०१००	००२००	००१००	०२००	०१००	१ . .	१ . .	११	२ २	१ १
त	०००००३०	००००२०	१०००१०	०००२०	०००१०	००२०	००१०	. १ .	. १ .	२ .	१ —	२ —
त	००००००३	०००००२	००००००१	००००२	००००१	०००२	०००१	. . १	. . १	. २	— १	— २

सर्वे [illegible] द्विकसंयोगिभङ्गाः ४२

जीवत्रय नरकत्रयमाश्रित्य त्रिकसंयोगिभङ्गयंत्रकम् ३५

	५	४	३	२	१	४	४	२	१	२	२	१	२	१	१
र	१११११	११११	१११	११	१	००००	००००	००	०	०००	००	०	००	०	०
श	१११११	००००	०००	००	०	११११	११११	११	१	०००	००	०	००	०	०
वा	१००००	११११	०००	००	०	११११	११११	००	०	१११	११	१	००	०	०
प	०१०००	१०००	१११	००	०	१०००	१०००	००	०	१११	००	०	११	१	०
धू	००१००	०१००	१००	११	०	०१००	०१००	११	०	१००	११	०	११	०	१
त	०००१०	००१०	०१०	१०	१	००१०	००१०	१०	१	०१०	१०	१	१०	१	१
त	००००१	०००१	००१	०१	१	०००१	०००१	०१	१	००१	०१	१	०१	१	१

सर्वे चैते ७।४२।३५। एवं मिलिता जीवत्रयस्य नरकत्रयमाश्रित्य चतुरशीतिभङ्गा ८४।

॥ टीका ॥ स्तेषा चसञ्चारणगम्या स्तदेव मेते सर्वेपि चतुरशीति रिति ॥ चत्तारि भंते ! नेरइया इत्यादौ „ दशोत्तरे द्वेशते विकल्पाना तथाहि-पृथिवी

॥ मूल ॥ माए होज्जा २ । अहवा एगे वालुयाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १ । एवं ६ । अहवा एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा अहवा एगे पंकाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २ । अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १ । एव ३ । अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १ । ३५ । ८४ ॥ चत्तारि भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएण पवेसमाणा किं रय

अनुवाद वेत् २ । अथवै को वालुकाप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् १ । एव ६ । अथवै क पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवेत्, अथवै क पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ध सप्तमाया भवेत् २ । अथवै क. पङ्कप्रभाया मेकस्तमाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् । २ । एव ३ । अथवै को धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् २ । ३५ । ८४ ॥ चत्वारो भ० । नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन

॥ भाषा ॥ जे एकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा २ थया । अहवा एगे वालुयाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा एव ६ । अथवा येकजीव वलुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ये १ इम वालुकप्रभा सघाते भागा इम थया, हिवे पंकप्रभासघाते भागा ३ कहैछै—अहवा एगे पंकाए एगेधूमाए एगे तमाएहोज्जा । अथवा येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे २ । अहवा एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १ एव ३ । अथवा येकजीव पंकप्रभानेविषे हुवे येकजीव तमानेविषे हुवे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम ३, हिवे धूमप्रभासघाते भागो १ देखाडैछै—अहवा एगे धमाए एगेतमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । १ ३५ ८४ । अथवा येकजीव धूमप्रभाये उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे ये तीन नारकीना येकसयोगी ७ द्विकसयोगी ४२ त्रिकसयोगी ३५ इम सर्वमिली भागा ८४ ते जाणवा । चत्तारिभंते णेरइया

॥ टीका ॥

ना मेकत्वे सप्त विकल्पा, द्विकसंयोगेतु तासामेक स्त्रय इत्यनेन नारकोत्पादविकल्पेन रत्नप्रभया सह शेषाभि' क्रमेण चारिताभि लब्धा षट्, द्वौ द्वा विन्यनेनापि षट् त्रय, एक इत्यनेनापि षड्व, तदेव मेते ऽष्टादश, शर्कराप्रभयातु तथैव त्रिषु पूर्वोक्तनारकोत्पादविकल्पेषु पञ्चपञ्च

॥ मूल ॥

णप्पन्नाए होज्जा पुच्छा गंगेया! रयणप्पन्नाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्प न्नाए तिन्निसक्करप्पन्नाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पन्नाए तिन्निवालुयप्पन्नाए होज्जा एव जाव एगे रयण प्पन्नाए तिन्नि अहे सत्तमाए होज्जा ६। अहवा दो रयणप्पन्नाए दो सक्करप्पन्नाए होज्जा, एवं जाव दो रयणप्पन्नाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ६। अहवा तिन्नि रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए होज्जा, एवं जाव

॥ अनुवाद ॥

प्रविशन्त कि रत्नप्रभाया भवेयु पृच्छा गाङ्गेय। रत्नप्रभाया वा भवेयु यावद्ध सप्तमाया वा भवेयु ७। अथवै को रत्नप्रभाया त्रय. शर्करा प्रभाया भवेयु ' अथवै को रत्नप्रभाया त्रयो वालुकाप्रभाया भवेयु, एव याव देको रत्नप्रभाया त्रयो ध सप्तमाया भवेयु. । ६। अथवा द्वौ रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया भवेता मेव याव द्वौ रत्नप्रभाया द्वा वध सप्तमाया भवेताम् । ६। अथवा त्रयो रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभा

॥ भाषा ॥

णेरइय पवेसणए ण पवेसमाणा कि रयणाए होज्जा पुच्छा। चार हे भगवन्! नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशन करतायका स्युं रत्नप्रभानेविषे उपजे इत्यादि प्रश्ननो उत्तर। गंगेया रयणाएवा होज्जा। हे गांगेय! इहां येकसंयोगी भागा ७ द्विकसंयोगीभागा ६३ त्रिकसंयोगी २१० याव तेनाहि चौकसंयोगी भागा ७ ते देखाडेछे—चारे जीव रत्नप्रभानेविषे उपजे। जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा। इम यावत् चारे जीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे। अहवा एगे रयणाए तिन्नि सक्कराए होज्जा। ये येकसंयोगी भागा ७ थया तथा द्विकसंयोगे तेहना येक तीन इम नारक उत्पाद विकल्पे करी रत्नप्रभासघाते शेष अनुक्रमे पृथिवी चारितकोधा भागा ६ हुवे वली तीन येक इम कोधा पणि भागा ६ हुवे इम रत्न प्रभा अने बीजी पृथिवीसघाते मिलिया भागा १८ हुवे इम शर्कराप्रभा बीजी पृथिवीसघाते जोडता येक तीन १ दोय दोय तीन १ २ इम विकल्प कोधा

॥ टीका ॥

तमःप्रभयैकैके इति षट्, तम प्रभयैकैक इति पञ्चदश' एवं वालुकाप्रभया चत्वार चत्वार इति द्वादश, पङ्कप्रभया त्रय त्रय इति नव' धूमप्रभया द्वौ द्वा विति षट्,

॥ सूत्र ॥

अहवा एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं संचारियं तहा सक्करप्पभाएवि उवरिमाहिं समं संचारियं तहा सक्करप्पभाएवि उवरिमाहिं समं

अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ६ । १८ ॥

॥ अनुवाद ॥

अथवैकः शर्कराप्रभायां त्रयो वालुकाप्रभायां भवेयु रेवं यथैव रत्नप्रभोपरिमाभि सम संचारिता तथा शर्कराप्रभा अप्युपरिमाभि सम सञ्चारयितव्या, एवं मेकैकया सम सञ्चारयितव्या यावद् यावत् त्रयो रत्नप्रभायां मेको ध सप्तमायां भवेत् ६। एवं १८।

॥ भाषा ॥

पंच पंच पांच करतां भागा १५ थाय इम वालुकासंघाते ४ ४ ४ करतां भागा १२ थाय इम पङ्कप्रभा संघाते ३ ३ ३ करता भागा ९ थाय इम धूमप्रभा संघाते २ २ २ करता भागा ६ थाय इम तमप्रभा संघाते १ १ १ करता भागा ३ थाय इम द्विकसंयोगे भागा ६३ थया ते देखाडेछे—अहवा एगे रयणाए तिण्णिसक्कराए होज्जा एवजाव एगे रयणाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ६। येक जीव रत्नप्रभायें उपजे तीन शर्करप्रभायें उपजे अथवा येकजीव रत्नप्रभायें उपजे तीन वालुकप्रभायें उपजे इम यावत् येक रत्नप्रभायें हुवे तीन नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ६ थाय। अहवा दो रयणाए दो सक्कराए होज्जा। अथवा दोय जीव रत्नप्रभा पृथिवीने विषे उपजे दोय शर्करप्रभा पृथिवीने विषे उपजे। एव जाव दो रयणाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ६। इम यावत् दोय रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे उपजे दोय नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे ये पणि भागा ६ थया। अहवा तिण्णि रयणाए एगे सक्कराए होज्जा। अथवा तीन जीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे। एव जाव अहवा तिण्णि रयणाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ १८। इम यावत् अथवा तीनजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम पणि ६ भागा इम रत्नप्रभासंघाते १८ भागा थया, हिवे शर्करप्रभा अने शेष पृथिवी ५ संघाते भागा देखाडेछे—अहवा एगे सक्कराए तिण्णिवालुयाए होज्जा। अथवा येक जीव शर्करप्रभायें तीन वालुकप्रभायें उपजे। एव जहेव रयणाए उवरिमाहिं समं संचारियं। इम जिमहीज रत्नप्रभापृथिवी उपर पृथिवीसंघाते सञ्चा

इति त्रय स्तदेव मेते द्विकयोगे त्रिषष्टि, तथा पृथिवीनां त्रिकयोगे एक एको द्वौचे त्येव नारकोत्पादविकल्पे रत्नप्रभाशर्कराप्रभाभ्यां सहा न्या भिः क्रमेण चारिताभि लंब्धा पञ्च, एको द्वा वेक श्चेत्येव नारकोत्पादविकल्पान्तरेपि पञ्च द्वा वेक एक श्चेत्यव मपि नारकोत्पादविकल्पान्त रेपि पञ्च द्वा वेक एक श्चेत्येवमपि नारकोत्पादविकल्पान्तरे पञ्चैवेति पञ्चदश, एव रत्नप्रभावालुकाप्रभाभ्यां सहो तराभि क्रमेण चारिताभि लंब्धा द्वादश एव रत्नप्रभापङ्कप्रभाभ्यां नव, रत्नप्रभाधूमप्रभाभ्यां षट्, रत्नप्रभातम प्रभाभ्यां त्रय शर्कराप्रभावालुकाप्रभाभ्यां द्वादश, शर्कराप्रभा

चारेयव्वं । एवं एक्केक्काए समं चारेयव्व जाव अहवा तिन्नितमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ६३ । अहवा

वा त्रय स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् ६३ । अथवैको रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया द्वौ वालुकाप्रभाया भवेता मथवै को रत्नप्रभाया

रितकोधा गणन।ये करो गिणो । तहा मक्कराएवि उवरिमाहि समचारियव्व । तिम शर्करप्रभा पणि उपरिलो पृथिवीसघाते सचारवो गणनाये कारवो । एव एक्केक्काए समचारियव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६३ । इम येकेको सघाते उपरिलो पृथिवी सचारवो, हिवे सयोगीना छेहलाभागो देसठमो देखाडेछे—यावत् अथवा तीनजीव तमानेविषे उपजे एक नीचे सातमीनेविषे उपजे ६३ भागा दिखाया हिवे, त्रिक सयोगीना १०३ भागा देखाडेछे—त्रिकसयोगे येक येक दोय इम नारकउत्पाद विकल्पनेविषे रत्नप्रभा शर्करप्रभासंघाते अन्य पृथिवी अनुक्रमे सचा रण कोधा लाधा पचभागा वली येक दोय येक इम नारक उत्पादविकल्पान्तरे पणि पाच वली दोय येक येक इम पणि नारकउत्पाद विकल्पा तरे पच इम १५ भागा थाय इम रत्नप्रभा वालुकप्रभासो आगली चार पृथिवी जोडता १२ भागाथाय इम रत्नप्रभासो जोडता नव भागाथाय इम र त्नप्रभा धूमप्रभासघाते ६ भागा इम रत्नप्रभा तमप्रभासघाते तीनभागा इम सर्व रत्नप्रभाना ४५ भागा थया इम शर्करप्रभा वालुकप्रभासघाते बारे भा गा इम शर्करप्रभा पकप्रभासघाते नव शर्करप्रभा धूमप्रभासघाते ६ भागा शर्करप्रभा तमप्रभासघाते ३ इम शर्करप्रभासघाते चौसभागा थाय इम सर्व ७५ थया तथा वालुकप्रभा पकप्रभासंघाते करो नवभागा थाय वालुकाभा धूमप्रभासघाते ६ वालुकाभा तमप्रभामघाते ३ इम वालुकप्रभासघाते १८

एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे रयणप्पभाए एक्के सक्करप्पभाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ५। दो पंकप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ५। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्प

मेक शर्करायप्रभाया द्वौ पङ्कप्रभाया भवेता मेव याव दथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया द्वा वध. सप्तमाया भवेताम् ५। अथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया द्वौ पङ्कप्रभाया भवेता मेव याव दथवैको रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया मेको ऽप सप्तमाया भवेत् ५। त्र रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया भवे देव याव दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको ऽध, स थवा द्वौ रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया भवेत् १। एव याव दथवा द्वौ रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको ऽध. स

थाय इम सर्व ८३ थया तथा पंकप्रभा धूमप्रभासघाते ६ भागा पंकप्रभा तमप्रभासघाते ३ इम ८ सर्व १०२ इम धूमप्रभा तमप्रभा तमतमा सघाते ३ इम सर्व मिलो १०५ त्रिकसयोगी भागाथाय ते देखाडेछे –अहवाएगेरयणाए। अथवा एक रत्नप्रभायें उपजै। एगे सक्कराए दो वालुयाए होज्जा। येक शर्करप्रभाये उपजै दोय वालुकप्रभायें उपजै। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए। अथवा येक रत्नप्रभायें उपजै येक शर्करप्रभायें उपजै। दो पंकाए होज्जा एव जाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए दो अहेसत्तमाए होज्जा ५। दोय पंकप्रभाये उपजै इम यावत् अथवा येक रत्नप्रभानेविषै उपजै येकजीव शर्करप्रभाने विषै उपजै दोयजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषै उपजै इम भागा ५ थया। अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए एगे वालुयाए होज्जा। अथवा येकजी व रत्नप्रभानेविषै उपजै दोयजीव शर्करप्रभानेविषै उपजै येकजीव वालुकप्रभानेविषै उपजै। एव जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए एगे अहेसत्तमा ए होज्जा ५। इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषै उपजै दोयजीव शर्करप्रभानेविषै उपजै येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषै उपजे ए प णि ५ भागाथया। अहवा दो रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए होज्जा १ एव। अथवा दोयजीव रत्नप्रभानेविषै उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषै उ

पङ्कप्रभाभ्यां नव, शर्कराप्रभाधूमप्रभाभ्यां षट्, शर्कराप्रभातमःप्रभाभ्यां त्रय', वालुकाप्रभापङ्कप्रभाभ्यां नव, वालुकाप्रभाधूमप्रभाभ्यां षट्, वा

प्पभाए होज्जा १। एवं जाव अहवा दोरयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ५ १५। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दोपंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ४। एव एएणं गमएणं जहा तिण्हंतियसंजोगो तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०५। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्क

प्रभायां भवेत् ५। १५॥ अथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया द्वौ पङ्कप्रभायां भवेता याव दथवैको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया द्वौ वध सप्तमाया भवेताम् ४। एव मेतेना भिलापेन यथा त्रयाणां त्रिकसंयोग स्तथा भणितव्यो याव दथवा द्वौ धूमप्रभाया मेकः स्तमाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् १०५॥ अथवै को रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया भवेत्, अथवे को रत्नप्र

पभे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे १ इम। जाव अहवा दो रयणाए एगे सक्करा० एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५। १५। यावत् अथवा दोयजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम पणि ५ भागा थया इम रत्नप्रभा शर्कराप्रभा संघाते १५ भागा थया, हिवे रत्नप्रभा वालुकप्रभा संघाते आगिलो ४ पृथिवी मिल्या भांगा १२ देखाडे छे—अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए दो पंकाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभाये उपजे येकजीव वालुकप्रभाये उपजे दोयजीव पंकप्रभाये उपजे इम येक। जाव अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ४। इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभाये उपजे येकजीव वालुकप्रभाये उपजे दोयजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम भांगा ४ थया। एव एएणं गमएणं जहा तिण्हंतियसंजोगो तहा भाणियव्वो। इम इणे आलावेकरी जिम तिणने त्रिकसंयोग कह्यो तिम इहां पणि कहवो, हिवे छेहलो एकसो पचमो भांगो देखाडे छे—जाव अहवा दो धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०५। यावत् अथवा

॥ टीका ॥ लुकाप्रभातम प्रभाभ्या त्रय , पङ्कप्रभाधूमप्रभाभ्या षट्, पङ्कप्रभातम प्रभाभ्या त्रय', धूमप्रभादिभिस्तु त्रय इति तदेव त्रिकयोगे पञ्चोत्तर शत।

॥ मूल ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्प

अनुवाद: अथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवेत्, एव याव द्यवै को रत्नप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवे द्यवै को रत्नप्रभाया मेको प सप्तमाया भवेत् ४। अथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवे द्यवै को रत्नप्रभा

॥ भाषा ॥ इम त्रिकसंयोगे भागा १०५ कह्या, अथ ४ संयोगीभागा ३५ देखाडेछे— अथवा एक रत्नप्रभायें उपजे एकजीव शर्करप्रभायें उपजे एकजीव बालुकप्रभायें चौथजीव धूमप्रभायें उपजे एक तमायें एक नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे इम अथवा एगे रयणाए एगे सकराए एगे वालुयाए एगे पकाए होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभायें उपजे एकजीव शर्करप्रभायें उपजे एकजीव बालुकप्रभायें उपजे एकजीव पङ्कप्रभायें उपजे। अथवा एगे रयणाए एगे सकराए एगे बालुयाए एगे धूमाए होज्जा। अथवा एकजीव रत्नप्रभायें उपजे एकजीव शर्क रप्रभायें उपजे एकजीव बालुकप्रभानेविषे उपजे एकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे। एव जाव अहवा एगे रयणाए एगे सकराए एगे बालुयाए एगे अहेसत्त माए होज्जा ४। इम यावत् अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे एकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे एकजीव बालुकप्रभानेविषे उपजे एक नीचे सातमी नरके उपजे इम भागा ४ थया। अहवा एगे रयणाए एगे सकराए एगे पकाए एगे धूमाए होज्जा। अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे एकजीव शर्क रप्रभानेविषे उपजे एकजीव पङ्कप्रभानेविषे उपजे एकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे। अहवा एगे रयणाए एगे सकराए एगे पकाए एगे तमाए होज्जा। अ थवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे एकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे एकजीव पङ्कप्रभायें उपजे एकजीव तमप्रभानेविषे उपजे। अहवा एगे रयणाए एगे

॥ टीका ॥

चतुष्कसंयोगेतु पञ्चत्रिंश दित्येव सप्ताना त्रिषष्टे पञ्चोत्तरशतस्य पञ्चत्रिंशतश्च मीलने द्विशते दशोत्तरे भवत इति ॥ पच भंते। नेरइया इत्यादि॥ पूर्वोक्तक्रमेण भावनीय नवर, संक्षेपेण विकल्पसङ्ख्या दर्श्यते–एकत्वे सप्तविकल्पा, द्विकसंयोगे चतुरशीति कथ? द्विकसंयोगे सप्ताना पदाना मे कविंशति भंगा, पञ्चाना नारकाणाञ्च द्विधा करणे ऽत्रसञ्चारणावगम्या श्चत्वारो विकल्पा भवन्ति तद्यथा–एक श्चत्वारश्च द्वौ त्रयश्च त्रयो द्वौ च चत्वार एकश्चेति तदेव मेकविंशति श्चतुर्भि र्गुणिता श्चतुरशीति र्भवतीति, त्रिकयोगेतु सप्ताना पदाना पञ्चत्रिंश द्विकल्पाः, पञ्चानाञ्च त्रित्वेन

॥ मूल ॥

भाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगेतमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १। एव १०॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा

अनुवाद

या मेक शर्कराप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेक स्तमाया भवे दथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् ३। अथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवे दथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् २। अथवै को रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् १। एव १०। अथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेको धूमप्रभाया भवे, दथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पङ्कप्र

॥ भाषा ॥

सक्कराए एगे पकाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३। अथवा एकजीव रत्नप्रभामें उपजे एकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे एकजीव पकप्रभामें उपजे एक जीव नीचे सातमा नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम तीन भागा थया इम ७। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा। अथवा एक जीव रत्नप्रभामें उपजे एक शर्कराप्रभामें उपजे एक धूमप्रभामें उपजे एक तमामें उपजे। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे धूमाए एगे अहेसत्त

॥ टीका ॥ स्थापने षट् विकल्पा' स्तद्यथा-एक २ स्त्रयश्च एको द्वौ द्वौच द्वा वेको द्वौच एक स्त्रय एकश्च द्वौ द्वा वेकश्च त्रय एक २ श्चेति तदेवं पञ्चत्रिंशतः

॥ मूल ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयाए एगेपंकाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १ । १६ ॥ अहवा एगे

अनुवाद भाया मेकस्तमाया भवे दथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको च सप्तमाया भवेत् ३ । अथवै को रत्नप्रभाया मे को वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवे दथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको च सप्तमाया भवेत् २ । अथवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक स्तमाया मेको च सप्तमाया भवेत् १ । १६ । अथवै को रत्नप्रभाया मेक' पंकप्रभा

॥ भाषा ॥ माए होज्जा २ । अथवा येकजीव रत्नप्रभायें उपजै येक शर्करप्रभायें उपजै येकजीव धूमप्रभायें उपजै येक नीचे सातमी नरक पृथिवीयें उपजै इम २ भागा थया । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा १ इम १० । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजै येकजीव शर्करप्रभानेविषे ऊपजै येकजीव तमायें ऊपजै एकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें ऊपजै इम १ रत्नप्रभा शर्करप्रभासघाते आगिलो पृथिवीसो सिन्या चतुष्कसयोगी भागा १० थया। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाएहोज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेसघाते ऊपजै येकजीव वालुकप्रभानेविषे ऊपजै येकजीव पंकप्रभाने विषे ऊपजै येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजै। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे तमाए होज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजै येकजीव वालुकप्रभायें ऊपजै येकजीव पंकप्रभायें ऊपजै येकजीव तमानेविषे ऊपजै। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा२ । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजै एकजीव वालुकप्रभानेविषे ऊपजै येकजीव पंकप्रभा

चतुरो जीवा नाश्रित्य भगा २१०

र	४ ० ० ० ० ० ०	१ १ १ १ १ १	२ २ २ २ २ २	३ ३ ३ ३ ३ ३	० ० ० ० ०	० ० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	* * * *	* * *	* * *	— —
श	० ४ ० ० ० ० ०	३ ० ० ० ० ०	२ ० ० ० ० ०	१ ० ० ० ० ०	१ १ १ १ १	३ ३ ३ ३ ३	० ० ० ०	० ० ० ०	* * * *	* * *	* * *	— —
वा	० ० ४ ० ० ० ०	० ३ ० ० ० ०	० २ ० ० ० ०	० १ ० ० ० ०	३ ० ० ० ०	१ ० ० ० ०	१ १ १ १	२ २ २ २	३ ३ ३ ३	* * *	— — —	— —
प	० ० ० ४ ० ० ०	० ० ३ ० ० ०	० ० २ ० ० ०	० ० १ ० ० ०	० ३ ० ० ०	० १ ० ० ०	३ ० ० ०	२ ० ० ०	१ * * *	१ १ १	३ ३ ३	— —
धू	० ० ० ० ४ ० ०	० ० ० ३ ० ०	० ३ ० २ ० ०	० ० ० १ ० ०	० ० ३ ० ०	० ० १ ० ०	० ३ ० ०	० २ ० ०	* १ * *	३ * *	१ — —	१ १
त	० ० ० ० ० ४ ०	० ० ० ० ३ ०	० ० ० ० २ ०	० ० ० ० १ ०	० ० ० ३ ०	० ० ० १ ०	० ० ३ ०	* ० २ ०	* * १ *	* ३ *	— १ —	३ —
त	० ० ० ० ० ० ४	० ० ० ० ० ३	० ० ० ० ० २	० ० ० ० ० १	० ० ० ० ३	० ० ० ० १	० ० ० ३	* * * २	* * * १	* * ३	— — १	— ३
	७	६	६	६	५	५	४	४	४	२	३	२

जीवचतुष्क नरकत्रयमाश्रित्यच त्रिकसयोगिजङ्गयन्त्रकम् १०५

र	० ०	० ०	०	०	०	द्विक सयोगि भगाः ६३ सर्व ७०	१ १ १ १ १	१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	१ १ १ १	१ १ १ १	२ २ २ २	१ १ १	१ १ १
श	० ०	० ०	०	०	०		१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	१ १ १ १ १	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ०	० ० ०
वा	० ०	० ०	०	०	०		२ ० ० ० ०	१ ० ० ० ०	१ ० ० ० ०	१ १ १ १	२ २ २ २	१ १ १ १	० ० ०	० ० ०
प	० ०	० ०	०	०	०		० २ ० ० ०	० १ ० ० ०	० १ ० ० ०	२ ० ० ०	१ ० ० ०	१ ० ० ०	१ १ १	२ २ २
धू	२ २	३ ३	०	०	०		० ० २ ० ०	० ० १ ० ०	० ० १ ० ०	० २ ० ०	० १ ० ०	० १ ० ०	२ ० ०	१ ० ०
त	२ ०	१ ०	१	२	३		० ० ० २ ०	० ० ० १ ०	० ० ० १ ०	० ० २ ०	० ० १ ०	० ० १ ०	० २ ०	० १ ०
त	० २	० १	३	२	१		० ० ० ० २	० ० ० ० ०	० ० ० ० १	० ० ० २	० ० ० १	० ० ० १	० ० २	० ० १
	२	२	१	१	१		५	५	५	४	४	४	३	३

॥ मूल ॥

रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १। १९ ॥ अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा एवं २०।

अनुवाद

या मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवे दथवे को रत्नप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ऽध' सप्तमाया भवेत् २। अथवै को रत्नप्रभाया मेक' पंकप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् १। १९। अथवै को रत्नप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध.

॥ भावा॥

नेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमो नरकपृथिवीनेविषे इम भागा ३ थाय। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव तमानेविषे ऊपजे। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे इम भागा २। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १६। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव तमानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीये ऊपजे ए रत्नप्रभा वालुकप्रभा संघाते भागा ६ थया इम सर्व १६ भागा थया। अहवा एगे रयणाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव तमानेविषे ऊपजे। अहवा एगे रयणाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव पंकप्रभाये ऊपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे इम भागा २। अहवा एगे रयणाए एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १, १८। अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे एकजीव पंकप्रभानेविषे एकजीव तमप्रभानेविषे एकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे ए एकभागो इम रत्नप्रभास

अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १ । एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाउ पुढवीउ संचारियाउ तहा सक्करप्पभाएवि उवरिमाउ उच्चारियव्वाउ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १० । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे

सप्तमायां भवेत् । एवं २० । अथवैकः शर्कराप्रभायामेको वालुकाप्रभायामेकः पंकप्रभायामेको धूमप्रभायां भवेत् १ । एवं यथा रत्नप्रभया उपरिमाः पृथिव्यः सञ्चारितास्तथा शर्कराप्रभयाप्युपरिमा उच्चारयितव्या यावदथवैकः शर्कराप्रभायामेको धूमप्रभायामेकस्तमायामेकोऽधःसप्तमायां भवेत् १० । अथवैको वालुकाप्रभायामेकः पंकप्रभायामेको धूमप्रभायामेकस्तमायां भवेदथवैको वालुकाप्रभायामेकः प

घाते ३ भागा थया सर्वभांगा १८ । अहवा एगे रयणाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा एवं २० । अथवा येकजीव रत्नप्रभाने विषे उपजे येकजीव धूमप्रभाये येकजीव तमप्रभाये येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे ये येकभांगो इम रत्नप्रभासघात २० भागा थाय एतले रत्नप्रभा छाडी, हिवे शर्करप्रभा सघात दशभागा कहेछे—अहवा एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए होज्जा १ । अथवा येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे एकजीव वालुकप्रभाये उपजे येकजीव पंकप्रभाये उपजे येकजीव धूमप्रभाये उपजे इम भांगो पहिलो । एवं जहा रयणाए उवरिमाओ पुढवीओ संचारिओ । इम जिम रत्नप्रभासघाते ऊपरली पृथिवी संचारी गणितकीधी । तहा सक्कराएवि उवरिमाओ उच्चारेयव्वाओ । तिम शर्करप्रभा पणि ऊपरली पृथिवीसघाते ऊपरवी गणितकरी भागा कहवा । जाव अहवा एगे सक्कराए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १० । यावत् अथवा येकजीव शर्करप्रभाये उपजे येकजीव धूमप्रभाये उपजे येकजीव तमाये उपजे येकजीव नीचे सातमो नरकपृथिवीये उपजे दशमाहिला छहलाभांगो कह्यो इम सर्व ३० भागाथया । अहवा एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाएहोज्जा । अथवा येकजीव वालुकप्रभाये उपजे येकजीव पंकप्रभाये उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमाप्रभाये उपजे । अहवा एगे वालुयाए एगेपंकाए एगे धूमाए

जीवचतुष्क नरकत्रयमाश्रित्यच त्रिकसयोगिभङ्गयत्रकम् १०५

र	२ २ २	१ १	१ १	२ २	१	१	२	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
श	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	१ १ १ १	१ १ १ १	२ २ २ २
वा	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	१ १ १ १	२ २ २ २	१ १ १ १
प	१ १ १	० ०	० ०	० ०	०	०	०	२ ० ० ०	१ ० ० ०	१ ० ० ०
धू	१ ० ०	१ १	२ २	१ १	०	०	०	० २ ० ०	० १ ० ०	० १ ० ०
त	० १ ०	२ ०	१ ०	१ ०	१	२	१	० ० २ ०	० ० १ ०	० ० १ ०
त	० ० १	० २	० १	० १	२	१	१	० ० ० २	० ० ० १	० ० ० १
	३	२	२	२	१	१	१	४	४	४

र	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	० ० ०
श	१ १ १	१ १ १	१ १	१ १	२ २	१	१	२	० ० ०
वा	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	१ १ १
प	१ १ १	२ २ २	० ०	० ०	० ०	०	०	०	१ १ १
धू	२ ० ०	१ ० ०	१ १	२ २	१ १	०	०	०	२ ० ०
त	० २ ०	० १ ०	२ ०	१ ०	१ ०	१	२	१	० २ ०
त	० ० २	० ० १	० २	० १	० १	२	१	१	० ० २
	३	३	२	२	२	१	१	१	३

जीवचतुष्क नरकत्रयमाश्रित्यच त्रिकसयोगिभङ्गयत्रकम् १०५

र	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०	०	०
श	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०	०	०
वा	१ १ १	२ २ २	१ १	१ १	२ २	१	१	२	० ०	० ०	० ०	०	०	०	०	०	०
प	२ २ २	१ १ १	० ०	० ०	० ०	०	०	०	१ १	१ १	२ २	१	१	२	०	०	०
धू	१ ० ०	१ ० ०	१ १	२ २	१ १	०	०	०	१ १	२ २	१ १	०	०	०	१	१	२
त	० १ ०	० १ ०	२ ०	१ ०	१ ०	१	२	१	२ ०	१ ०	१ ०	१	२	१	१	२	१
त	० ० १	० ० १	० २	० १	० १	२	१	१	० २	० १	० १	२	१	१	२	१	१
	३	३	२	२	२	१	१	१	२	२	२		१	१	१	१	१

चतुर्णां जीवाना त्रिक सयोगि भगाः १०५

र	१ १ १ १
श	१ १ १ १
वा	१ १ १ १
प	१ १ १ १
धू	० १ ० ०
त	० ० १ ०
त	० ० ० १
	४

॥ मूल ॥

पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३५। २१०॥ पच भंते! णेरइया णेरइयप

॥ अनुवाद ॥

कप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेको च सप्तमायां भवेत् २। अथवै को वालुकाप्रभायां मेक पंकप्रभायां मेक तमायां मेको धः सप्तमायां भवे दथवै को वालुकाप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेक तमायां मेको ध. सप्तमायां भवे दथवै क पंकप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेक तमायां मेको ध. सप्तमायां भवेत् ३५। २१०॥ पञ्च भदन्त! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त कि रत्नप्रभायां पृच्छा गाङ्गेय। अथवा रत्नप्रभायांवा

॥ भाषा ॥

एगे अहेसत्तमाए होज्जा २। अथवा येकजीव वालुकप्रभाये उपजे येकजीव पंकप्रभाये उपजे येकजीव धूमप्रभाये उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें ऊपजे इम भागा २ थया। अहवा एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अथवा येकजीव वालुकप्रभाये येकजीव पंकप्रभायें उपजे येकजीव तमायें उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे ये येकभागो इम ३ थया। अहवा एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अथवा येकजीव वालुकप्रभायें उपजे येकजीव धूमप्रभायें उपजे येकजीव तमायें उपजे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीये उपजे इम ४। अहवा एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५, २१०। अथवा येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचेसातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे ये येकभागो इम सर्व ३५ भागा थया इहां चारजीव आश्री येकसंयोगी ७ द्विकसंयोगी ६३ त्रिकसंयोगी १०५ चउकसंयोगी ३५ सर्वभागा २१० थया। पचभंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रय णाए पुच्छा गंगेया अहवा रयणाएवा होज्जा। पञ्च हे भगवन्! नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशनेकरी प्रवेशनकरताथका स्यूं रत्नप्रभानेविषे उपजे इत्या

वेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए पुच्छा गंगेया! अहवा रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमा
एवा होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाएवा होज्जा चत्तारि सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्ता
रि अहे सत्तमाए होज्जा ६। अहवा दोरयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा दो
रयणप्पभाए तिन्नि अहे सत्तमाए होज्जा अहवा तिन्नि रयणप्पभाए दोन्नि सक्करप्पभाए होज्जा एवं

भवेयु यांव दथवा ध सप्तमाया भवेयु ७। अथवैको रत्नप्रभाया भवे चत्वार शर्कराप्रभाया याव दथवैको रत्नप्रभाया चत्वारो ऽध सप्त
माया भवेयु. ६। अथवा द्वौ रत्नप्रभाया त्रय शर्कराप्रभाया भवेयु रेव याव दथवा द्वौ रत्नप्रभाया त्रयो ध सप्तमाया भवेयु' एथवा त्रयो

दि प्रश्नकीधो उत्तर हेगांगेय। पचेंद्र रत्नप्रभानेविषे उपजे इत्यादि पचजीवआश्रयीने येकसयोगी भागा ७ द्विकसयोगी ८४ सात नरकना इकवीस प
ट नारकीना दोयभाग कीजे १४ २३ ३२ ४१ ए चार भागा इकवीस गुणाकीजे तिवारे ८४ भागाथाय त्रिकसयोगी २१० सात नारकीना ३५ पदे
विकल्प ६ ते किम १३ १२२ २१२ १३१ २२१ ३११ ते पैंतीस ६ गुणा कीजे तो २१० भागाथाय चतुष्कसयोगे सात नारकीना पैंतीसविकल्प पचने चार
पणे स्थाप्या चार विकल्पहुवे ते किसा १११२ ११२१ १२११ २१११ तिवारे पैंतीस चउगुणाकीधा १४० भागा हुवे तथा पचसयोगे इकवीस भागा हुवे
सर्व मिली ४६२ भागा हुवे ते देखाडछे—अथवा पचेंइ नीचे। जाव अहेसत्तमाएवाहोज्जा अहवाएगे रयणाएवा होज्जा चत्तारिसक्कराए। यावत्
सातमी नरक ऊपजे भागा ७ अथवा एक रत्नप्रभाये उपजे चार शर्करप्रभाये उपजे। जाव अहवा एगे रयणाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ६।
यावत् अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे चार नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे इम येक चार सघाते भागा ६ थया। अहवा दो रयणाए ति
ण्णि सक्कराए होज्जा। अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे उपजे तीनजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे ए पहिलोभागो १। एवजाव अहवा दोरयणाए तिण्णि अ
हेसत्तमाए होज्जा। इम यावत् अथवा दोयजीव रत्नप्रभापृथिवीनेविषे उपजे तीनजीव नीचे सातमो नरकपृथिवीनेविषे उपजे ये दोय तीनसघाते

जाव अहवा तिन्नि रयणप्पभाए दोन्नि अहे सत्तमाए होज्जा ६ । अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ६ । २४ ॥ अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ संचारियाओ तहा सक्करप्पभाएवि समं उच्चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २० ।

रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभायां भवेतां एवं यावत् अथवा त्रयो रत्नप्रभायां द्वावधः सप्तमायां भवेताम् । ६ । अथवा चत्वारो रत्नप्रभायां एकः शर्कराप्रभायां एवं यावत् अथवा चत्वारो रत्नप्रभायां एकोऽधः सप्तमायां भवेत् ६ । २४ । अथवैकः शर्कराप्रभायां चत्वारो वालुकाप्रभायां भवेयुः एवं यथा रत्नप्रभया समं उपरिमाः पृथिव्यः संचारितास्तथा शर्कराप्रभयापि समं उच्चारयितव्या यावत् अथवा चत्वारः शर्कराप्रभायां एको

भागा ६ थया इम १२ । अहवा तिण्णि रयणाए दोण्णि सक्कराए होज्जा । अथवा तीनजीव रत्नप्रभामें उपजे दोय शर्कराप्रभामें उपजे ए पहिलोभागो । एवं जाव अहवा तिण्णि रयणाए दोण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ६ । इम यावत् अथवा तीनजीव रत्नप्रभामें उपजे दोयजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीमें उपजे ए छेहलो भागो ये तीन दोय संघाते भागा थया इम सर्व १८ भागा थाय । अहवा चत्तारि रयणाए एगे सक्कराए होज्जा । अथवा चार रत्नप्रभामें उपजे येक शर्कराप्रभामें उपजे ये पहिलोभागो । एव जाव अहवा चत्तारि रयणाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६ २४ । इम यावत् अथवा चार रत्नप्रभामें उपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीमें उपजे ये छेहलोभागो ये चारसंघाते ६ भागा कह्या इम सर्व २४ भागा एतले रत्नप्रभा छूटो, हिवे शर्कराप्रभाना भागा २० देखाडेछे—अहवाएगे सक्कराए चत्तारि वालुयाए होज्जा । अथवा येक शर्कराप्रभामें उपजे चार वालुकप्रभामें उपजे ये पहिलो भागो । एव जहा रयणाए समं उवरिम पुढवीओ संचारियाओ । इम जिम रत्नाना संघाते ऊपरलीपृथिवी संचारी गणितकरी । तहा सक्कराएवि समं उच्चारेयव्वाओ । तिम शर्कराप्रभासंघाते पणि ऊपरली पृथिवी संचारवी गणित करणा । जाव अहवा चत्तारि सक्कराए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा २० ।

॥ मूल ॥

एवं एक्केक्काए समं उच्चारियव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ८४ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि अहे सत्तमाए होज्जा ५ । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ५ । अहवा दो रयणप्प

अनुवाद

ध सप्तमाया भवेत् २० । एव मेकैकया सम मुच्चारयितव्या याव दथवा चत्वार स्तम प्रभाया मेको ध सप्तमाया भवेत् ८४ । अथवैको रत्न प्रभाया मक शर्कराप्रभाया त्रयो वालुकाप्रभाया भवेयु रेव याव देको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया त्रयो ध· सप्तमाया भवेयु ५ । अथ वा एको रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया द्वौ वालुकाप्रभाया भवेत मेव याव दथवा एको रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया द्वावध सप्तमाया भ

॥ भाषा ॥

यावत् अथवा चार शर्करप्रभायें येक नीचे सातमा नरक पृथिवीयें उपजे ये शर्करप्रभानो छेहलो बीसमो भागो कह्यो २० । एव एक्काए सम उच्चारेय व्वा । इम येकानी पृथिवीसघाते आगलो पृथिवी उच्चरवी । जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८४ । यावत् अथवा चार तमप्रभायें येक नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे ० द्विकसंयोगीनो छेहलो ८४ मो भागो कह्यो इम सर्व द्विकसंयोगीना ८४ भागा कह्या, हिवे त्रिकसंयोगीना भागा देखाडछै—अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए तिण्णि वालुयाए होज्जा । अथवा एक रत्नप्रभाये उपजे येक शर्करप्रभायें उपजे तीन वालुकप्रभा यें उपजे ० पहिलो भागो । एव जाव एगे रयणाए एगे सक्कराए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ५ । इम यावत् येक रत्नप्रभायें उपजे येक शर्करप्रभायें उपजे तीनजाव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे इम पाचभागा थया । अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए दो वालुयाए होज्जा । अथवा येक रत्न प्रभानविषे उपजे दो शर्करप्रभायें उपजे दो वालुकप्रभाये उपजे ए पहिलो भागो । एव जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए दो अहेसत्तमाए हो ज्जा ५ । इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभायें उपजे दोयजीव शर्करप्रभायें उपजे दोजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयें उपजे ए पांच पा

न्नाए एगे सक्करप्पन्नाए दो वालुयप्पन्नाए होज्जा एवं जाव अहवा दो रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए दो अहे सत्तमाए होज्जा ५। अहवा एगे रयणप्पन्नाए तिन्नि सक्करप्पन्नाए एगे वालुयप्पन्नाए होज्जा एवं जाव अहवा एगे रयणप्पन्नाए तिन्नि सक्करप्पन्नाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा २०। अहवा दो रयणप्पन्नाए दो सक्करप्पन्नाए एगे वालुयप्पन्नाए होज्जा, एव जाव दो रयणप्पन्नाए दो सक्करप्पन्नाए एगे अहे

वेताम् ५। अथवा द्वौ रत्नप्रभायां मेकः शर्कराप्रभायां द्वौ वालुकाप्रभायां भवेता मेव याव दथवा द्वौ रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभायां द्वा व ध सप्तमायां भवेता ५। अथवेको रत्नप्रभायां त्रय शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभायां भवे देव याव दथवैको रत्नप्रभायां त्रय शर्कराप्रभाया मेकोध सप्तमायां भवेत् २०। अथवा द्वौ रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभायां भव देव याव द्वौ रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभाया मेकोध सप्तमायां भवेत् २५। अथवा त्रयो रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभायां भवेत्, एव याव दथवा त्रयो

चभागा थया इम १०। अहवा दो रयणाए एगे सक्कराए दो वालुयाए होज्जा। अथवा दोय रत्नप्रभामेंविषे ऊपजे येक शर्कराप्रभामें उपजे दोय वालुकाप्रभानेविषे ऊपजे ये पहिलोभांगो। एव जाव अहवा दोरयणाए एगे सक्कराए दो अहेसत्तमाए होज्जा ५। इम यावत् अथवा दोय रत्नप्रभा यें ऊपजे येक शर्कराप्रभाय ऊपजे दोय नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे ए पणि पाचभांगा थया इम १५ भांगा थया। अहवा एगे रयणाए तिन्नि सक्कराए एगे वालुयाए होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभायें तीन शर्कराप्रभाये ऊपजे एक वालुकाप्रभायें उपजे ए पहिलोभांगो। एव जाव अहवा एगे रयणाए तिन्नि सक्कराए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०। इम यावत् अथवा एक रत्नप्रभायें तीन शर्कराप्रभायें ऊपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे ऊपजे ये पणि पाचभांगा इम २०। अहवा दो रयणाए दो सक्कराए एगे वालुयाए होज्जा। अथवा दोयजीव रत्नप्रभायें ऊपजे दोयजीव शर्कराप्रभानेविषे ऊपजे येक वालुकाप्रभानेविषे ऊपजे ए पहिलो भांगा। एव जाव दो रयणाए दो सक्कराए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २५। इम यावत् अथवा दोय

॥ मूल ॥

सत्तमाए होज्जा २५ । अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ३० । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिन्नि पंकप्पभाए होज्जा । एव एएणं कमेणं जहा चउण्हं तिय संजोगो भणिओ । तहा पंच ण्हवि तियसंजोगो भाणियव्वो । णवरं तत्थ एगो संचारिज्जइ इमाइं दोन्नि सेसतंचेव, जाव अहवा तिन्नि धूमप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१० । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभा

अनुवाद

रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेकोध सप्तमाया भवेत् ३० । अथवैको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया त्रय पङ्कप्रभाया भवेयु रेव मेतेन क्रमेण यथा चतुर्णा त्रिकसंयोगो भणित स्तथा पञ्चाना मपि त्रिकसंयोगो भणितव्यो नवर तत्रैक सचार्यते इमौ द्वौ शेष तथैव याव दथवा

॥ भाषा ॥

जीव रत्नप्रभानेविषै ऊपजे दोय शर्करप्रभानेविषै ऊपजे एकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषै ऊपजे ये पणि ५ भागा थया इम २५ । अहवा तिन्नि रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए होज्जा । अथवा तीनजीव रत्नप्रभानेविषै उपजे येक शर्करप्रभानेविषै उपजे येक वालुकप्रभानेविषै उपजे ये पहिलो भागो । एव जाव अहवा तिन्नि रयणाए एगे सक्कराए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३० । इम यावत् अथवा तीनजीव रत्नप्रभानेविषै येक शर्करप्रभानेविषै उपजे येक नीचे सातमी नरकपृथिवीये उपजे इम पणि ५ भागा सर्व ३० थया । अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए तिन्नि पकाए होज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषै उपजे येक वालुकप्रभानेविषै उपजे तीनजीव पकप्रभानेविषै उपजे ये पहिलोभागो । एव एएण कमेण जहा चउण्ह तियसजोगो भणिओ तहा पचण्हवि तियसजोगो भाणियव्वो । इम इणे अनुक्रमे जिम चारने त्रिकसयोग कह्या, तिम पचने पणि त्रिकसयोग जाणवा । णवर तत्थ एगो सचारिज्जइ इमाइ दोन्नि सेस तचेव । एतलोविशेष तिहा येक सचारवो ये दोयसघात सचारवा शेष सर्व तिमहीज कहवा । जाव अहवा तिन्नि धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१० । यावत् अथवा तीनजीव धूमप्रभानेविषै उपजे येकजीव तमाये उपजे येकजीव नीचे सातमी नरक

॥ टीका ॥ पञ्चभिर्गुणने दशोत्तरं शतशतद्वयं भवति, चतुष्कसंयोगेतु सप्तानां पञ्चत्रिंश द्विकल्पा पञ्चानाञ्च चतूराशितया स्थापने चत्वारो विकल्पा, स्त द्यथा-११२, ११२१' १२११, २१११, तदेव पञ्चत्रिंशतश्चतुर्भि गुणने चत्वारिंश दधिक शत भवतीति, पञ्चकयोगे त्वेकविंशतिरिति सर्वमीलनेच चत्वारिंशतानि द्विषष्ट्यधिकानि भवन्तीति ॥ वृत्ते । नेरइया इत्यादि ॥ इह एकत्वे सप्त, द्विकयोगेतु पणा द्वित्वे पच विकल्पा स्तद्यथा-१५,

॥ मूल ॥ ए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयाए दो अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए दो वालुयाए एगे पंकाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए दोवालुयाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४ । अहवा एगे रयणाए

अनुवाद अयो धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको च सप्तमाया भवेत् २१० । अथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया द्वौ पङ्कप्रभा या भवता मेव याव दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया द्वा वध सप्तमाया भवेताम्, अथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया द्वौ वालुकाप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया भवे देव याव दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया द्वौ वालुकाप्रभाया मेको च सप्त

॥ भाषा ॥ पृथिवीयें उपजे ये त्रिकसंयोगे २१० छेहलोभागो कह्या ये त्रिकसंयोगे २१० भागा थया, हिवे चउकसंयोगी भागा १४० कहेछे—अहवा एगे रयणाए एगेसक्कराए एगे वालुयाए दो पंकाए होज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभायें उपजे येकजीव शर्करप्रभाये उपजे येकजीव वालुकप्रभायें उपजे दोय पंक प्रभाये उपजे ये पहिलोभागो । एव जाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । इम यावत् अथवा येक रत्नप्रभा ये उपजे येक शर्करप्रभायें उपजे येकजीव वालुकप्रभायें उपजे दोयजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे ए च्यारभागा ४ । अहवा एगे रयणाए ए गेसक्कराए दो वालुयाए एगे पंकाएहोज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभायें उपजे दोय वालुकप्रभाये उपजे येक पंकप्रभायें उपजे ये येकभागो । एव जाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए दो वालुयाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४ । इम यावत् अथवा येक रत्नप्रभायें उपजे येक

दो सक्काराए एगे वालुयाए एगे पंकाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्काराए एगे वालुया ए एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४। अहवा दो रयणाए एगे सक्काराए एगे वालुयाए एगे पंकाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणाए एगे सक्काराए एगे वालुयाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४। अहवा एगे रयणा

भायां भवेत् ४। अथवैको रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभाया मेकः पंकप्रभायां भवेदेव यावदथवैको रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको ध सप्तमायां भवेत् ४। अथवा द्वौ रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेकः पंकप्रभायां भवेत्, एवं यावदथवा द्वौ रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको ध सप्तमायां भवेत् ४। अथवैको रत्नप्रभाया

शर्करप्रभामें उपजे दोय वालुकप्रभामें उपजे एक जीव नीचे सातमी नरकपृथिवीयोंविषे उपजे इस परि ४ भांगा। अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए होज्जा। अथवा एक जीव रत्नप्रभाविषे उपजे दोय शर्करप्रभाविषे उपजे एक वालुकप्रभाविषे उपजे एक पंकप्रभाविषे उपजे। एवं जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए एगे वालुयाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। इस यावत् अथवा एक रत्नप्रभामें उपजे दो शर्करप्रभाविषे उपजे एक वालुकप्रभामें उपजे एक नीचे सातमी नरकपृथिवीयोंविषे उपजे इस परि भांगा ४। अहवा दो रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए होज्जा। अथवा दोय रत्नप्रभाविषे उपजे एक शर्करप्रभाविषे उपजे एक वालुकप्रभाविषे उपजे एक पंकप्रभाविषे उपजे। एवं जाव अहवा दो रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४। इस यावत् अथवा दोय रत्नप्रभाविषे उपजे एक शर्करप्रभाविषे उपजे एक वालुकप्रभाविषे उपजे एक नीचे सातमी नरकपृथिवीयोंविषे उपजे इस परि ४ भांगा थया। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे पंकाए दो धूमाए होज्जा। अथवा एक जीव रत्नप्रभाविषे उपजे एक जीव शर्करप्रभाविषे उपजे एक जीव पंकप्रभाविषे उपजे दोय जीव धूमप्रभाविषे उपजे। एम जाणी चउ पंचसंजोगा भाणियव्वा। इस जिम पांचने थापिनों स्थापना करी। तदा पंचनइ चउक्कसंजोगा भाणियव्वा। तिम पचने पणि थापनों सही

जीवचतुष्क नरकचतुष्कमाश्रित्यच चतु संयोगिभङ्गयन्त्रकम् २१०

र	१ १ १	१ १	१	१ १ १	१ १
श	१ १ १	१ १	१	० ० ०	० ०
वा	० ० ०	० ०	०	१ १ १	१ १
प	१ १ १	० ०	०	१ १ १	० ०
धू	१ ० ०	१ १	०	१ ० ०	१ १
त	० १ ०	१ ०	१	० १ ०	१ ०
त	० ० १	० १	१	० ० १	० १
	३	२	१	३	२

र	१	१ १	१	१	० ० ०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०
श	०	० ०	०	०	१ १ १	१ १	१	१ १	१	१	०	०	०	०	०
वा	१	० ०	०	०	१ १ १	१ १	१	० ०	०	०	१	१	१	१	०
प	०	१ १	१	०	१ १ १	० ०	०	१ १	१	०	१	१	१	०	१
धू	०	१ १	०	१	१ ० ०	१ १	०	१ १	०	१	१	१	०	१	१
[illegible]	१	१ ०	१	१	० १ ०	१ ०	१	१ ०	१	१	१	०	१	१	१
त	१	० १	१	१	० ० १	० १	१	० १	१	१	०	१	१	१	१
	१	२	१	१	३	२	१	२	१	१	१	१	१	१	१

एवं चतुर्णां जीवानां चतुष्कसंयोगि भंगाः पञ्चत्रिंशत् ३५ सर्व ७ । ६३ । १०५ । ३५ । इत्येव २१०

जीवपञ्चक माश्रित्य द्विकसंयोगिभङ्गयन्त्रकम् ८४

र	५ ० ० ० ० ० ०	१ १ १ १ १ १	२ २ २ २ २ २	३ ३ ३ ३ ३ ३	४ ४ ४ ४ ४ ४	- - - - -	- - - - -	- - - - -
श	० ५ ० ० ० ० ०	४ ० ० ० ० ०	३ ० ० ० ० ०	२ ० ० ० ० ०	१ - - - - -	१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	३ ३ ३ ३ ३
वा	० ० ५ ० ० ० ०	० ४ ० ० ० ०	० ३ ० ० ० ०	० २ ० ० ० ०	- १ - - - -	४ - - - -	३ - - - -	२ - - - -
प	० ० ० ५ ० ० ०	० ० ४ ० ० ०	० ० ३ ० ० ०	० ० २ ० ० ०	- - १ - - -	- ४ - - -	- ३ - - -	- २ - - -
धू	० ० ० ० ५ ० ०	० ० ० ४ ० ०	० ० ० ३ ० ०	- - - २ - -	- - - १ - -	- - ४ - -	- - ३ - -	- - २ - -
त	० ० ० ० ० ५ ०	० ० ० ० ४ ०	० ० ० ० ३ ०	- - - - २ -	- - - - १ -	- - - ४ -	- - - ३ -	- - - २ -
त	० ० ० ० ० ० ५	० ० ० ० ० ४	० ० ० ० ० ३	- - - - - २	- - - - - १	- - - - ४	- - - - ३	- - - - २
	७	६	६	६	६ । २४ ।	५	५	५

पञ्चानां जीवानां द्विकसंयोगिभङ्गयन्त्रकम् ।

र	० ० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ०	० ० ०	- - -	- - -	- -	- -	- -	- -	०
श	४ ४ ४ ४ ४	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ०	० ० ०	- - -	- - -	- -	- -	- -	- -	०
वा	१ ० ० ० ०	१ १ १ १	२ २ २ २	३ ३ ३ ३	४ ४ ४ ४	० ० ०	० ० ०	- - -	- - -	- -	- -	- -	- -	०
प	० १ ० ० ०	४ ० ० ०	३ ० ० ०	२ ० ० ०	१ ० ० ०	४ ४ ४	१ १ १	२ २ २	३ ३ ३	- -	- -	- -	- -	०
धू	० ० १ ० ०	० ४ ० ०	० ३ ० ०	० २ ० ०	० १ ० ०	१ ० ०	४ ० ०	३ - -	४ - -	४ ४	१ १	२ २	३ ३	०
त	० ० ० १ ०	० ० ४ ०	० ० ३ ०	० ० २ ०	० ० १ ०	० १ ०	० ४ ०	- ३ -	- ४ -	१ -	४ -	३ -	२ -	४
त	० ० ० ० १	० ० ० ४	० ० ० ३	० ० ० २	० ० ० १	० ० १	० ० ४	- - ३	- - ४	- १	- ४	- ३	- २	१
	५ । २०	४	४	४	४ । १६	६	३	३	३	२	२	२	२	१

र	०	०	०
श	०	०	०
वा	०	०	०
प	०	०	०
धू	०	०	०
त	१	२	३
त	४	३	२
	१	१	१

द्विकसंयोगभङ्गा ८४ ।

पञ्चानां जीवानां त्रिकसंयोगिभङ्गयन्त्रकम् ।

र	१ १ १ १ १	१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	३ ३ ३ ३ ३	१ १ १ १	२ २ २ २
श	१ १ १ १ १	२ २ २ २ २	१ १ १ १ १	३ ३ ३ ३ ३	२ २ २ २ २	१ १ १ १ १	[illegible]	[illegible]
वा	३ ० ० ० ०	२ ० ० ० ०	२ ० ० ० ०	१ - - - -	१ - - - -	१ [illegible]	१ १ १ १	२ २ २ २
प	० ३ ० ० ०	० २ ० ० ०	० २ ० ० ०	- १ - - -	- १ - - -	[illegible] १ [illegible]	३ [illegible]	१ [illegible]
धू	० ० ३ ० ०	० ० २ ० ०	० ० २ ० -	- - १ - -	- - १ - -	[illegible] १ [illegible]	[illegible] ३ [illegible]	[illegible] १ [illegible]
त	० ० ० ३ ०	० ० ० २ ०	- - - २ -	- - - १ -	- - - १ -	[illegible] १	[illegible] ३ [illegible]	[illegible] १ [illegible]
त	० ० ० ० ३	० ० ० ० २	- - - - २	- - - - १	- - - - १	[illegible] १	[illegible] ३	[illegible] १
	५	५	५	५	५	५	४	४

ए एगे सक्कराए एगे पंकाए दो धूमाए होज्जा, एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ, तहा पंचण्हवि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो, णवरं अब्भहियं एगो संचारियव्वो एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १४० । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे

मेक शर्कराप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया द्वौ धूमप्रभाया भवेता मेव यथा चतुर्णां चतुष्कसंयोगो भणित स्तथा पञ्चाना मपि चतुष्कसंयोगो भणितव्यो नवरं मभ्यधिक क. संचारयितव्य एव याव दथवा द्वौ पङ्कप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको धः सप्तमाया भवेत् १४० । अथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेको धूमप्रभाया भव १ । दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्र

ग कहवो । णवर अब्भहियं एगो संचारियव्वो । ए टलोविशेष अधिको येक संचारवो भेलवो । एवं जाव अहवा दो पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १४० । इम यावत् अथवा दोयजोव पंकप्रभाये उपजे येक धूमप्रभाये उपजे येकजोव तमाये उपजे येकजोव नोचे सातमो नरक पृथिवीनेविषे उपजे ये छेहलोभांगो जाणवो ये चोकसंयोगोना येकसो चालीस भांगा कह्या, हिवे पंच संयोगोना भांगा देखाडेछे—अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए होज्जा । अथवा येकजोव रत्नप्रभाये उपजे येकजोव शर्कराप्रभाये उपजे येक वालुकप्रभाये उपजे येक पंकप्रभाये उपजे येक धूमप्रभाये उपजे ये येकभांगो । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे तमाए होज्जा । अथवा एक रत्नप्रभाये उपजे येक शर्कराप्रभाये उपजे येक वालुकप्रभानेविषे येक पंकप्रभाये उपजे येक तमाये उपजे २ । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अथवा येक रत्नप्रभाये उपजे येक शर्कराप्रभाये उपजे येक वालुकप्रभानेविषे उपजे येक पंकप्रभाने विषे उपजे येक नोचे सातमोनर्क पृथिवीनेविषे उपजे ३ । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा । अथवा येकजो

वालुयप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे वालुय
प्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे वालु
यप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे वालुयप्प
न्नाए एगे धूमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे वालुयप्प

प्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेक स्तमाया भवे २। इथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पक
प्रभाया मेको ध सप्तमाया भवे ३। इथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेकस्तमाया भवे ४।
इथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ध' सप्तमाया भवे ५। इथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्क

व रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे येक वालुकप्रभानेविषे उपजे येक धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे ४। अह
वा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषे उप
जे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नरक पृथिवीनेविषे उपजे ए पाचमोभांगो ५। अहवा एगे र
यणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभाये उपजे येक शर्करप्रभाये उपजे येक वालुकप्रभाये
उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ६। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे
तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येक शर्करप्रभाये उपजे येक पंकप्रभाये उपजे येक धूमप्रभाये उपजे येकजीव तमानेविषे
उपजे ७। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव श
र्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ८। अहवा एगे रय

न्नाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे सक्करप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पन्नाए एगे वालुयप्पन्नाए एगे पंकप्पन्नाए एगे धूमप्पन्नाए एगे

राप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध ःसप्तमाया भवे ६ । दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेक पकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेकस्तमाया भव ७ । दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेक पङ्कप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको ध सप्तमाया भवे ८ । दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मक पकप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवे ९ । दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको धूमप्रभाया मक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवे १० । दथवैको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मक पकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्त

णाए एगेसक्कराए एगे पकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ९ । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येक शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव पकप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ९ । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा १० । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे १० । अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पकाए एगे धूमाए एगे तमाएहोज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव पकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे इम ११ । अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पकाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२ । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे

॥ मूल ॥

तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्त
माए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए
होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १५। अहवा
एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा। अहवा एगे

अनुवाद

मायां भवे ११। दयवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको च सप्तमाया भवे १२। दयवैको रत्नप्र
भाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेक स्तमाया मेको च सप्तमाया भवे १३। दयवै को रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको धू
मप्रभाया मेक स्तमाया मेको च सप्तमाया भवे १४। दयवैको रत्नप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेकस्तमाया मेको च सप्तमा
या भवे १५। दयवे क शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया भवे १६। दयवैक

॥ भाषा ॥

येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम १२।
अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३। अथवा येकजीव रत्नप्रभायें ऊपजे येकजीव वालुकप्रभायें ऊपजे
येकजीव पंकप्रभायें ऊपजे येकजीव तमानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम १३। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए एगे
धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे
येकजीव तमानेविषे ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम १४। अहवा एगे रयणाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहे
सत्तमाए होज्जा १५। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव तमप्रभानेविषे

सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्कर

शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेकः पंकप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेको ध' सप्तमायां भवे १७ । दथवैक शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेकः पंकप्रभायां मेकः तमायां मेको ध. सप्तमायां भवे १८ । दथवैक शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेको धूमप्रभायां

ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ये रत्नप्रभासघाते १५ भागा थया इम १५ । अहवा एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा १६ । अथवा येकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे येकजीव वालुकाप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव धूमप्रभाये उपजे येकजीव तमप्रभायें उपजे १६ । अहवा एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १७ । अथवा येकजीव शर्कराप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकाप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम १७ । अहवा एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अथवा येकजीव शर्कराप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव वालुकाप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे ऊपजे येकजीव तमायें ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम १८ । अहवा एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९ । अथवा येक शर्कराप्रभायें ऊपजे येकजीव वालुकाप्रभायें ऊपजे येकजीव धूमप्रभायें उपजे येकजीव तमप्रभायें ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम १९ । अहवा एगे सक्कराए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २० । अथवा येकजीव शर्कराप्रभायें ऊपजे येकजीव पंकप्रभायें ऊपजे येकजीव धूमप्रभाये ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे । अहवा एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१ । अथवा येकजीव वालुकाप्रभायें ऊपजे येकजीव पंकप्रभायें ऊपजे येकजीव धूमप्रभायें ऊपजे येकजीव तमायें ऊपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए पंचसयोगी

पचानां जीवाना त्रिकसयोगिभ्रगयत्रकम् ।

र	१ १ १ १	२ २ २ २	१ १ १ १	३ ३ ३ ३	१ १ १	१ १ १	२ २ २	१ १ १	२ २ २	३ ३ ३	१ १	१ १	२ २	१ १
श	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
वा	२ २ २ २	१ १ १ १	३ ३ ३ ३	१ १ १ १	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
प	२ ० ० ०	२ ० ० ०	१ ० ० ०	१ ० ० ०	१ १ १	२ २ २	१ १ १	३ ३ ३	२ २ २	१ १ ०	० ०	० ०	० ०	० ०
ध	० २ ० ०	० २ ० ०	० १ ० ०	० १ ० ०	३ ० ०	२ ० ०	२ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ ० ०	१ १	२ २	१ १	३ ३
त	० ० २ ०	० ० २ ०	० ० १ ०	० ० १ ०	० ३ ०	० २ ०	० २ ०	० १ ०	० १ ०	० १ ०	३ ०	२ ०	२ ०	१ ०
त	० ० ० २	० ० ० २	० ० ० १	० ० ० १	० ० ३	० ० २	० ० २	० ० १	० ० १	० ० १	० ३	० २	० २	० १
	४२	४६	५०	५४	५७	६०	६३	६६	६८	७२	७४	७६	७८	८०

पचाना जीवाना पञ्चसयोगिभ्रगयत्रकम् ।

सर्वे चैते ७।८४।२१०। १४०।२१। असंयोगा. विस्तरभया न लिखितानि	र	१ १ १	१ १	१	१ १	१	१ १ १	१	१ १	र	० ०	०	०	०	०
	श	१ १ १	१ १	१	१ १	१	१ ० ०	०	० ०	श	१ १	१	१	१	०
	वा	१ १ १	१ १	१	० ०	०	० १ १	१	१ ०	वा	१ १	१	१	०	१
	प	१ १ १	० ०	०	१ १	१	० १ १	१	० १	प	१ १	१	०	१	१
	धू	१ ० ०	१ १	०	१ १	०	१ १ १	०	१ १	धू	१ १	०	१	१	१
	त	० १ ०	१ ०	१	१ ०	१	१ १ ०	१	१ १	त	१ ०	१	१	१	१
	त	० ० १	० १	१	० १	१	१ ० १	१	१ १	त	० १	१	१	१	१
		३	२	१	२	१	३	१	२		२	१	१	१	१

सर्वं चैते पचाना जीवानां
वेक सयोगी ७
द्विक संयोगी ८४
त्रिक सयोगी २१०
चतुष्क सयोगी १४०
पच सयोगी २१
एवं सर्वं ४६२

॥ टीका ॥

२४, ३३, ४२, ५१, ते च सप्तपदद्विकसंयोगैकविंशते र्गुणना त्पञ्चोत्तरं भङ्गकशतं भवति, त्रिकयोगेतु पञ्चां त्रित्वे दश विकल्पा, स्तद्यथा–११४, १२३, २१३, १३२, २२२, ३१२, १४१, २३१, ३२१, ४११। एतैश्च पञ्चत्रिंशत सप्तपदत्रिकसंयोगानां गुणना त्त्रीणि शतानि पञ्चाशदधिकानि भवति, चतुष्कसंयोगेतु पञ्चा चतूराशितया स्थापने दश विकल्पा स्तद्यथा–१११२, ११२२, १२१२, २११२, ११३१, १२२१, २१२१, १३११, २२११, ३१११। पञ्च

॥ मूल ॥

प्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा। भन्ते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रय

॥ अनुवाद ॥

मेक स्तमाया मेको च सप्तमाया भवे १९। तथैक शर्कराप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेको च सप्तमाया भवेत् २०। अथवै को वालुकाप्रभाया मेक पंकप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको च. सप्तमाया भवेत् २१॥ भदन्त ! नैरयिका नैरयिकप्रवेशन

॥ भाषा ॥

भागा २१ कह्या इहां येकसंयोगी ७ द्विकसंयोगी ८४ त्रिकसंयोगी २१० चउकसंयोगी १४० पचसंयोगी २१ ये सर्व ४६२ भागा पचजीव आश्री थया। छभंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा कि रयणाए पुच्छा। छ हेभगवन् ! नारकी नरकगति प्रवेशनेकरी प्रवेशन करताथका स्यूं रत्नप्रभाने विषे उपजे इत्यादि, यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया रयणाएवाहोज्जा। हेगांगेय। छ जीव आश्रयीने नारकने येक संयोगे भागा ७ द्विकसंयोगे ६ नेविर्षे पचविकल्प ते किसा १५ २४ ३३ ४२ ५१ तिणेंकरी सात द्विकसंयोगे २१ हुवे ते २१ पाचगुणा कीधा १०५ भागा हुवे, त्रिकसंयोगे छने तीनपणे कीधा दश विकल्प ते किसा १४ १२३ २१२ १३१ २२२ ३१२ १४१ २३१ ३२१ ४११ इणेंकरी सात त्रिकसंयोगे ३५ पद थाय ते पैंतीस दशगुणा कीधा ३५० भांगाहुवे चारिने संयोगे छने चार राशिपणे स्थाप्या दश विकल्प हुवे ते देखाडेछे—१११३ १२२२ १२१२ २११२ ११२१ १२२१ २१२१ १३११ २२११ ३१११ सात चौकसंयोगी पैंतीसपद हुवे ते पैंतीस दशगुणाकीधा ३५० भागाहुवे पचसंयोगे छने पचेस्थानके करी

॥ मूल ॥

णप्पन्नाए पुच्छा गंगेया ! रयणप्पन्नाएवा होज्जा, जाव ऋहे सत्तमाएवा होज्जा । ऋहवा एगे रयणप्पन्नाए पंच सक्कारप्पन्नाएवा होज्जा । ऋहवा एगे रयणप्पन्नाए पंच वालुयप्पन्नाएवा होज्जा । एवं जाव ऋहवा एगे रयणप्पन्नाए पंच ऋहे सत्तमाए होज्जा ६ । ऋहवा दो रयणप्पन्नाए चत्तारि सक्कारप्पन्नाए होज्जा । एवं जाव ऋहवा दो रयणप्पन्नाए चत्तारि ऋहे सत्तमाए होज्जा ६ । ऋहवा तिन्नि रयणप्पन्नाए तिन्नि

अनुवाद

केन प्रविशन्त. कि रत्नप्रभाया पृच्छा गाङ्गेय । रत्नप्रभाया वा भवेयु र्याव दथवा च सप्तमाया भवेयु । अथवैको रत्नप्रभाया पञ्चशर्कराप्र भायावा भवेयु. अथवैको रत्नप्रभाया पञ्च वालुकाप्रभायावा भवेयु रेव याव दथवैको रत्नप्रभाया पञ्चा धः सप्तमाया भवेयु ६ । अथवा द्वौ रत्नप्रभाया चत्वार. शर्कराप्रभाया भवेयु रेव याव दथवा द्वौ रत्नप्रभाया चत्वारो ऽध सप्तमाया भवेयु । ६ । अथवा त्रयो रत्नप्रभाया त्र

॥ भाषा ॥

पचविकल्प ते देखाडेछे—११११२ १११२१ ११२११ १२१११ २११११ सातपदने पचसयोगे इकवीस विकल्प तेहने पाच सो गुण्या येकसोपाच भागा थाय छने योगे सात छोजभागा हुवे इम सर्वमिलो ९२४ छ जीवना भागा हुवे ते देखाडेछे—रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे ऊपजे । जाव अहेसत्तमाएवाहो ज्जा । यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम येकसयोगी भागा ७ कह्या, हिवे द्विकसयोगे भागा येकसोपाच कहेछे—अहवा एगे रयणाए पच सक्कराएवाहोज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे पच शर्करप्रभाये उपजे । अहवा एगे रयणाए पच वालुयाएवाहोज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे पचजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे २ । एव जाव अहवा एगे रयणाए पच अहेसत्तमाए होज्जा ६ । इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे पच नीचे सातमो नर्क पृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ६ थया । अहवा दो रयणाए चत्तारि सक्कराए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणाए । अथवा दोयजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे चार शर्करप्रभानेविषे उपजे इम यावत् अथवा दोयजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे । चत्तारि अहेसत्तमाएहोज्जा ६ । चार नीचे सातमी पृथिवीनेविषे ये पणि ६ भागा थया ६ । अहवा तिन्नि रयणाए तिन्नि सक्कराए होज्जा । अथवा तीनजीव रत्नप्रभानेविषे

त्रिंशतश्च सप्तपदचतुष्कसंयोगानां दशभिर्गुणना त्रीणि शतानि पञ्चाशदधिकानि भवन्ति, पञ्चकसंयोगेषु पुनः पञ्चधाकरणे पञ्च विकल्पा स

सक्करप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं दुयसंजोगो तहा छण्हवि भाणियव्वो, णवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०५ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा । एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अ

य॰ शर्कराप्रभायां भवेयु रेवमेतेन क्रमेण यथा पञ्चानां द्विकसंयोग स्तथा षण्णामपि भणितव्यो नवर मभ्यधिकैक सञ्चारयितव्यो याव द थवा पञ्चतमाया मेको ऽध सप्तमाया भवेत् १०५ । अथवैको रत्नप्रभाया मेक॰ शर्कराप्रभाया चत्वारो वालुकाप्रभाया भवेयु, अथवैको र त्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया चत्वार॰ पङ्कप्रभाया भवेयु रेवं याव दथवैको रत्नप्रभाया मेकः शर्कराप्रभाया चत्वारो ध॰ सप्तमाया भवेयु,

उपजे तीनजीव शर्करप्रभाविषे उपजे । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं दुयसंजोगो तहा छण्हवि भाणियव्वो । इम इणे अनुक्रमे जिम पचने द्विकसंयोग क ह्यो तिम छने पणि द्विकसंयोग कहवो । णवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो । एतलोविशेष येक अधिको संचारवो । जाव अहवा पंचतमाए एगे अहेस त्तमाए होज्जा १०५ । यावत् अथवा पच तमानिविषे उपजे येक नीचेसातमी नर्कपृथिवीनिविषे उपजे ये छहलोभागो देखाड्यो, येकसोपाच द्विविकसंयोगी भागा तीनसोपचास कहे छे । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए चत्तारि वालुयाए होज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानिविषे येकजीव शर्करप्रभाये उपजे चारजी व वालुकप्रभानिविषे उपजे । अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए चत्तारि पंकाए होज्जा । अथवा येकजीव रत्नप्रभानिविषे उपजे येक शर्करप्रभानिविषे उपजे चार

जीव पङ्कप्रभानिविषे उपजे । एवंजाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभानिविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानिविषे उपजे चारजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनिविषे उपजे इम पाच भागा थया । अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए तिण्णि वालु

हवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तिय संजोगो भणिओ तहा छण्हंवि भाणियव्वो, णवरं एक्को अब्भहिओ उच्चारेयव्वो सेसं तंचेव ३५०। चउक्क संजोगोवि तहेव ३५०। पंच संजोगोवि तहेव णवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा १०५। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

५। अथवैको रत्नप्रभायां द्वौ शर्कराप्रभायां त्रयो वालुकाप्रभायां भवेयुः एव मेतेन क्रमेण यथा पञ्चानां त्रिकसंयोगो भणित स्तथा षण्णामपि भणितव्यो नवर मभ्यधिकैकः सचारयितव्यो शेष तथैव ३५०। चतुष्कसंयोगोपि तथैव ३५०। पञ्चसंयोगोपि तथैव नवर मेको भ्यधिक सचा रयितव्यो याव त्पश्चिमो भङ्गो ऽथवा द्वौ वालुकाप्रभायां मेकः पंकप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेक स्तमायां मेको ध: सप्तमायां भवेत् १०५। अथवैको रत्नप्रभायां मेकः शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां मेकः पंकप्रभायां मेको धूमप्रभायां मेक स्तमायां भवेत् १। अथवैको रत्नप्रभा

याए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे दोय शर्कराप्रभानेविषे उपजे तीनजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे। एव एएण कमेण जहा पंचण्हं तिय सजोगो भणिओ तहा छण्हंवि भाणियव्वो। इम इणे अनुक्रमे करी जिम पचने त्रिकसयोग कह्यो तिम छने पणि त्रिकसयोग कहवो। णवर एक्को अ ब्भहिओ उच्चारियव्वो सेसंतचेव ३५०। एतलोविशेष येक अधिको उचारवो शेष तिमहीज जाणवो ये त्रिकसयोगीना भागा तीनसौपचास थया। चउ क्क संयोगेवि तहेव ३५०। चतुष्कसयोगे पणि तिमहीज भागा तीनसौपचास कहवा। पचसंजोगोवि तहेव णवर एक्को अब्भहिओ सचारियव्वो। प चसयोगे पणि तिमहीज कहवो एतलोविशेष येक अधिको सचारवो मेलवो। जाव पच्छिमोभगो। यावत् छेहलोभागो देखाडेछे—अहवा दो वालुया ए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाएहोज्जा १०५। अथवा दोयजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव

या याव देको धूमप्रभाया मेको ध. सप्तमाया भवेत् २। अथवैको रत्नप्रभाया याव देक. पंकप्रभाया मेक स्तमाया मेको धः सप्तमाया भवेत् ३। अथवैको रत्नप्रभाया याव देको वालुकाप्रभाया मेको धूमप्रभाया मेक स्तमाया मेको ध सप्तमाया भवेत् ४। अथवैको रत्नप्रभाया मेक शार्करामप्रभाया मेक पंकप्रभाया याव देको ऽध सप्तमाया भवेत् ५। अथवैको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया याव देको ध. सप्तमाया भवेत् ६।

धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा येकसो पचास थया, हिवे छ संयोगी भागा ७ देखाडछे—अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए एगे पंकाए एगे धूमाए एगे तमाए होज्जा। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्करप्रभानेविषे उपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव धूमप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमप्रभानेविषे उपजे १। अहवा एगे रयणाए जाव एगे धूमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे इम यावत् येकजीव धूमप्रभानेविषे येकजीव नीचे सातमी नरकपृथिवीनेविषे उपजे २। अहवा एगे रयणाए जाव एगे पंकाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे इम यावत् येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ३। अहवा एगे रयणाए जाव एगे वालुयाए एगे धूमाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे यावत् येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे येकजीवध मप्रभानेविषे उपजे येकजीव तमप्रभानेविषे उपजे येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ४। अहवा एगे

॥ मूल ॥

एगे अहे सत्तमाए होज्जा १२४। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा। जाव अहे सत्तमाए होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छप्पह सत्त भंते! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा गंगेया! रयणप्पभाएवा होज्जा। जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छण्ह दुयसंजोगो तहा सत्तण्हवि भाणियव्वं णवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ सेसं तंचेव १२६। तियसंजो

॥ अनुवाद ॥

सप्तमायां भवेत् १२४॥ सप्त भदन्त! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्तः किं रत्नप्रभायां (मित्यादि) पृच्छा गांगेय! रत्नप्रभायांवा भवेयु यावत् अधः सप्तमायांवा भवेयुः ७। अथवैको रत्नप्रभायां षट्शर्कराप्रभायां भवेयुरेव अथवैकः शर्कराप्रभायां मेको वालुकाप्रभायां यावदेको ऽधः सप्तमायां भवेत् ... मेतेन क्रमेण यथा षण्णां द्विकसंयोग स्तथा सप्तानां मपि भणितव्यो नवरं मेको ऽभ्यधिकः संचारयितव्यः शेषं तथैव १२६। त्रिकसंयोग ५२५।

॥ भाषा ॥

रयणाए एग सक्कराए एगे पंकाए जाव एग अहेसत्तमाए होज्जा ५। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे येकजीव पंकप्रभानेविषे उपजे इम यावत् यकजीव सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ५। अहवा एगे रयणाए एगे वालुयाए जाव एग अहेसत्तमाए होज्जा ६। अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे इम यावत् येकजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ६। अहवा एगे सक्कराए एग वालुयाए जाव एगे अहसत्तमाए होज्जा ८२४। अथवा येकजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे येकजीव वालुकप्रभानेविषे उपजे इम यावत् येकजीव सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम छ जीव आश्रयीने सर्वभागा ८२४ थया ते जाणवा। सत्तभंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा। सातजीव हेभगवन्! नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशन करताथका स्युं रत्नप्रभानेविषे उपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर। गंगेया रयणाएवाहोज्जा। हेगांगेय! सातजीव आश्रयीने नारकने येकसंयोगेभागा ७ द्विकसंयोगे सातने द्विके छ विकल्प ते देखाडेछे—१६ २५ ३४ ४३ ५२ ६१ इणे छ, ए सात द्विकसंयोग इकवीस हुवेते छगुणा कीधा १२६ भागाहुवे त्रिकसंयोगे सातने तीन पणे १५ विकल्प हुवे ते देखाडेछे—११५ १२४ २१४ १३३ २२३ ३१३

यथा-११११२, ११२१, ११२११, १२१११, २११११ । समानाञ्च पदानां पञ्चकसंयोगे एकविंशति र्विकल्पा स्तेषाञ्च पञ्चभि र्गुणने पञ्चोत्तरं शतमिति, षट्कसंयोगेतु सप्तैव ते सर्वमीलनेच नवशतानि चतुर्विंशत्युत्तराणि भवन्तीति ॥ सत्त भंते । इत्यादि ॥ इहेकत्वे सप्त द्विकयोगेतु सप्तानां द्वित्वे षड्विकल्पा स्तद्यथा-१६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, एकविंशत सप्तपदद्विकसंयोगैकविंशते र्गुणना त्षड्विंश त्युत्तरं शतं भवति, त्रिकयोगेतु सप्तानांत्रित्वे पञ्चदश विकल्पा स्तद्यथा- ११५' १२४' २१४, १३३, २२३, ३१३, १४२, २३२, ३२२, ४१२, १५१, १४१, ३३१, ४२१, ५११ । एतैश्च पञ्च

गो ५२५ । चउक्कसंजोगो ७०० । पचसंजोगो ३१५ । छक्क सजोगोय जहा तहा सत्तण्हवि भाणियव्वं णवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव छक्कसंजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा ४२ । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए

चतुष्कसंयोग ७०० । पञ्चकसंयोग ३१५ । षट्कसंयोगश्च यथा यथा तथा सप्ताना मपि भणितव्य नवरं मेकैको ऽभ्यधिक सञ्चारयितव्यो यावत् षट्कसंयोगो, अथवा द्वौ शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया मेको च सप्तमाया भवेत ४२ । अथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया याव

१४२ २३२ ३२२ ४१२ १५१ २४१ ३३१ ४२१ ५११ इणे सातपद त्रिकसंयोगे विकल्प ३५ ते पनरगुणा करता पांचसेपच्चीस भांगाहुवे ५२५ तथा चतुष्कसंयोगें सातने चारराशि तथा चतुष्कसंयोगे सातने चारराशि पणे थापता येक येक येक चार ११४ इत्यादिक वीस विकल्प हुवे ते काढवा पूर्वोक्त भांगाने अनुसारे आक संचारणने विषे कुशल हुवे तिणें पोतेज करवा अने सातपद चतुष्कसंयोगी पैंतीस विकल्प ते वीसगुणा कीधा ७०० सौ भांगा हुवे पांचसंयोगे सातने पचपणे थापता येक येक येक येक तीन इत्यादिक पनरे विकल्प हुवे इणे सातपद पचकसंयोगे इकवीस पनरगुणा करता तीन सौ पनर भांगा थाय छने संयोग सातने छ प्रकारे करता येक येक येक येक येक टोय इत्यादि छ विकल्प तथा सातपदने छने संयोगे सात विकल्प तेह सातने छगुणा करता ४२ भांगा हुवे सातसंयोगे तो येकचीज ११११११ भांगोहुवे ये सर्व मेलिया १७१६ भांगाहुवे सात जीवनाभांगा देखाडे

॥ टीका ॥

त्रिंशत सप्तपदत्रिकसयोगानां गुणना त्पंचशतानि पञ्चविंश त्यधिकानि भवन्तीति, चतुष्कयोगेतु सप्तानां चतूराशितया स्थापने एक एक एक श्च त्वार श्चे त्यादयो विंशति विकल्पा स्तेष वक्ष्यमाणाश्च पूर्वोक्तभङ्गकानुसारेणा द्दसञ्चारणाकुशलेन स्वय मेवा वगन्तव्या, विंशत्याच पञ्चत्रिंशत सप्तपदचतुष्कसयोगानां गुणना त्सप्तशतानि विकल्पानां भवन्ति, पञ्चकसयोगेतु सप्तानां पचतया स्थापने एक एक एक एक स्त्रय श्चेत्यादय पंच दश विकल्पा एतैश्च सप्तपदपञ्चकसयोगेकविंशतं गुणना त्रीणिशतानि पञ्चदशोत्तराणि भवन्ति, षट्कसयोगेतु सप्तानां षोढा करणे पञ्चैकका

॥ मूल ॥

होज्जा १७१६ । अह भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा । गंगेया !

अनुवाद

देको ध सप्तमाया भवेत् १७१६ ॥ अथो भ० । नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त. कि रत्नप्रभाया भवेयु ? गांगेय । रत्नप्रभायावा भवेयु

॥ भाषा ॥

छे—सातेइ जीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे। जाव अहेसत्तमाएहोज्जा ७। इम यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे सातेई ऊपजे एव येकसयोगीना भागा ७ थया, हिवे द्विकसयोगीना भागा देखाडेछे—अहवा एगे रयणाए छ सक्कराए होज्जा एव एएण कमेण जहा छण्ह दुयसजोगो तहा स त्तण्हवि भाणियव्व। अथवा येक रत्नप्रभानेविषे ऊपजे छ जीव शर्करप्रभानेविषे ऊपजे इम इणे अनुक्रमे करी जिम छने द्विकसयोग कह्यो तिम सा तने पणि द्विकसयोग कहवो। णवर एगो अब्भहिओ सचारिज्जइ सेसतचेव १२६। एतलोविशेष येक अधिको सचारवो मेलवो शेष सर्व तिमहीज कहवो ए द्विकसंयोग भागा १२६ भागा। तियसजोगो ५२५ चउक्कसंजोगो ७०० पचसजोगो ३१५। त्रिकसजोगे भागा ५२५ चतुष्कसयोगे भागा ७०० पचसयोगे भागा ३१५। छक्कसजोगेय छण्ह जहा तहा सत्तण्हवि भाणियव्व। छने सयोगे जिम छने तिम सातने पणि जाणवो। णवर एक्केको अ ब्भहिओ सचारेयव्वो। एतलोविशेष एक अधिको सचारवो। जाव छक्कसजोगो। यावत् छन सयोगे। अहवा दो सक्कराए एगे वालुयाए जाव एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ४२। अथवा दोय शर्करप्रभानेविषे येक वालुकप्रभानेविषे यावत् येक नीचे सातमी नर्क पृथिवीनेविषे उपजे ए भागा ४२ हुवे। अ हवा एगे रयणाए एगे सक्कराए जाव एगे अहेसत्तमाएहोज्जा १७१६। अथवा येक रत्नप्रभानेविषे येक शर्करप्रभानेविषे यावत् येक नीचे सातमी नर्क

॥ टीका ॥

द्वौचेत्यादय १११११२, षड्वि कल्पाः' सप्तानाच पदाना षट्कसयोगे सप्त विकल्पा स्तेषाच षड्भि र्गुणने द्विचत्वारिंश द्विकल्पा भवन्ति सप्तकसयोगे त्वेकएवेति, सर्वमीलनेच सप्तदशशतानि षोडशोत्तराणि भवन्तीति ॥ अठ भते ! इत्यादि ॥ इहैकत्वे सप्त विकल्पा ' द्विकयोगे त्वष्टाना द्वित्वे एक सप्तेत्यादय सप्त विकल्पा प्रतीताएव, तैश्च सप्तपदद्विकसयोगैकविंशते र्गुणना च्छत सप्तचत्वारिंशदधिक भङ्गकाना भवतीति, त्रिकसयोगे त्वष्टाना त्रित्वे एक एक षट् इत्यादय एकविंशति विकल्पा स्तेश्च सप्तपदत्रिकसयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने सप्तशतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवन्ति च

॥ मूल ॥

रयणप्पभाएवा होज्जा । जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा एव दुयसजोगो १४७ । तियसजोगो ७३५ । चउक्कसंजोगो १२२५ । पचसंजोगो ७३५ । जाव

अनुवाद

यांव दष सप्तमायावा भवेयु ७ । अथवैको रत्नप्रभाया सप्त शर्कराप्रभाया भवेयु एव द्विकसयोग १४७ । त्रिकसयोग ७३५ । चतुष्कसयोग १२२५ ।

॥ भाषा ॥

पृथिवीनविषे उपजे इम सर्वभागा सातसौ आगणीसे भागा १७१६ थया । अट्ठभते णेरइया णेरइयपवेसणएण पविसमाणा किं रयणाए होज्जा । आठ जीव नारकी हेभगवन् ! नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशने करी प्रवेशन करताथका स्यु रत्नप्रभानेविषे उपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर । गंगेया रयणाएवा जाव अहेसत्तमाएवा होज्जा ७ । हे गांगेय ! आठजीव आश्रयीने नारकने येक पणे विकल्प द्विकने येकपणे विकल्प द्विकसयोगे तो आठने द्वि प्रकारे करता येक सात १७ इत्यादिक सात विकल्प भङ्गभङ्गोन इफेकी सातपद द्विकसयोगे इकवीस विकल्प हुवे ते इकवीस सातगुणा करता एकसो सैतालीस १४७ भागाहुवे त्रिकसयोगे आठने येक येक छ ११६ इत्यादिक विकल्प तेणिकरी सातपद त्रिकसयोगे पैंत्रीसविकल्प ते ३५ इकवीसगुणा कीधा सातसै पैंत्रीस ७३५ भागा हुवे चतुष्कसयोगे तो आठने चारप्रकारे येक येक येक पच इग्यारेसे पनरे इत्यादिक पैंत्रीसविकल्प सातपदे चतुष्कसयोगे ३५ पद ते पैंत्रीस पैंत्रीस गुणाकीधा बारेसे पचीस १२२५ भागाहुवे पचसयोगे आठने पचपणे येक येक येक येक चार ११११४ इत्यादिक पैंत्रीस विकल्प सातपद पचसयोग इकवीसपद हुवे ते पैंत्रीस इकवीसगुणा कीधा सातसै पैंत्रीस ७३५ भागाहुवे छ सयोगे छ पणे आठ आठने १११११३ इ

॥ टीका ॥

तुष्कसयोगे त्वष्टाना चतुर्द्वात्वे एक एक एक पचे त्यादय. पञ्चत्रिंशद्विकल्पा स्तैश्च सप्तपदचतुष्कसयोगानां पञ्चत्रिंशतो गुणाने द्वादशशतानि पञ्च विंशत्युत्तराणि भगकाना भवन्तीति, पञ्चकसयोगे त्वष्टाना पञ्चत्वे एक एक एक एक चत्वार श्चेत्यादय. पञ्चत्रिंशद्विकल्पा स्तैश्च सप्तपदपञ्चकस योगेकविंशते र्गुणाने सप्तशतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवन्तीति, षट्कसयोगे त्वष्टाना षोढात्वे पञ्चैकका स्त्रय श्चेत्यादय १११११३ एकविंशति र्विक

॥ मूल ॥

छक्कसजोगोय जहा सत्तण्हं भणियं तहा अट्ठण्हवि भाणियव्वं, णवरं एक्केक्को अब्भहिओ सेस तंचेव जाव छक्कसजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा १४७।

अनुवाद

पचसयोगा ७३५। याव त्षट्कसयोगश्च यथा सप्तानां भणित तथा ऽष्टाना मपि भणितव्यो नवर मेकैको ऽभ्यधिक शेष तथैव याव त्षट्कसयोग स्या थवा त्रय. शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया याव देको ध सप्तमाया भवेत् १४७। अथवैकोरत्नप्रभाया याव द्वौ तमाया मेको ध.

॥ भाषा ॥

त्या टक प्रकवीसविकल्प हुवे सातने छ सयोगे सातपद हुवे ते इकवीस गुणाकीधा येकसो सैतालीस १४७ भागा हुवे सातसयोगे आठने सातपणे सातविकल्प प्रसिद्धहीज तेणेकरी एकने सप्तकसयोगे गुणता सातहीज विकल्पहवे ए सगला मेलिया तीनसहस्र तीन भागा ३००३ भागा थाय ते दे खाडिछे। गगेया रयणाएवाहोज्जा ७। हेगागेय। रत्नप्रभा आठेई रत्नप्रभानेविषे अथवा यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए एकसयोगी भागा ७ थया, हिवे द्विकसयोगी भागा देखाडिछे—अहवा एगे रयणाए सत्त सक्कराएहोज्जा एव दुयसजोगो १४७। अथवा एक रत्नप्रभाये ऊपजे सात शर्कराप्रभाये ऊपजे ए एवा भागा इम द्विकसयोगे भागा १४७। तियसजोगो ७३५ चउक्कसजोगो १२२५ पचसजोगो ७३५। त्रिकसयोगे भागा ७३५ चतुष्कसयोगे भागा १२२५ पचसयोगे भागा ७३५। जाव छक्कसजोगोय जहा सत्तण्ह भणिय तहा अट्ठण्हवि भाणियव्व। यावत् छक्कसयोगी छनो सयोग जिम सातने कह्या तिम आठने पिण कहवो। णवर एक्केक्को अब्भहिओ सेसतचेव जाव छक्कसजोगस्स। एतलोविशेष जे एकेको अ धिको कहवो शेष सर्व तिमज कहवो यावत् छ सयोगनो। अहवा तिण्णि सक्कराए एगे वालुयाए जाव एगे अहेसत्तमाएहोज्जा १४७। अथवा तीं

॥ टीका ॥

ल्पा स्तैश्च सप्तपदषट्कसंयोगानां सप्तकस्य गुणने सप्तचत्वारिंशदधिकसप्तक शतं भवतीति, सप्तसंयोगे पुन रष्टानां सप्तधात्वे सप्तविकल्पा प्रतीता एव ते श्चैकस्य सप्तकसंयोगस्य गुणने सप्तैव विकल्पा एषाञ्च मीलने त्रीणिसहस्राणि त्र्युत्तराणि भवतीति ॥ नवन्नंतेइत्यादि ॥ इहाप्येकत्वे सप्तैव द्विकसंयोगेतु नवानां द्वित्वे ऽष्टौ विकल्पा प्रतीताएव ते श्चैकविंशते. सप्तपदद्विकसंयोगानां गुणने अष्टषष्ट्यधिक मङ्गकशतं भवतीति, त्रिकसंयोगेतु नवानां द्वावेककौ तृतीयश्च सप्तक ११७ इत्येव मादयो ष्टाविंशति विकल्पा स्तैश्च सप्तपदत्रिकसंयोगे पञ्चत्रिंशतो गुणने नवशता न्यशीत्युत्तराणि भङ्गकानां भवन्तीति, चतुष्कसंयोगेतु नवानां चतुर्द्धात्वे त्रय एकका षट्क इत्यादय ११११६ षट्पञ्चाशद्विकल्पा स्तैश्च सप्तपदचतुष्कसंयोगपञ्चत्रि

॥ मूल ॥

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहे सत्तमाए होज्जा । एवं संचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा ७ । ३००३ । णव भंते ! णेरइया णेरइयप

॥ अनुवाद ॥

सप्तमायां भवे देव सञ्चारयितव्यम् । याव दथवा द्वौ रत्नप्रभायां मेक शर्कराप्रभायां याव देको ध सप्तमायां भवेत् ७ । ३००३ । नव भ० ।

॥ भाषा ॥

न शर्कराप्रभानेविषे एक बालुकप्रभानेविषे यावत् एक नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए छेहलोभांगो १४७ । अहवा एगे रयणाए जाव दो तमाए,एगे अहेसत्तमाएहोज्जा एव संचारेवव्व । अथवा येक रत्नप्रभाने यावत् दोय तमानेविषे येक नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए सात संयोगनो इम संचारवो । जाव अहवा दो रयणाए एगे सक्कराए जाव एगे अहेसत्तमाएहोज्जा ७ ३००२ । णवभंते णेरइया णेरइय पवेसण एण । नव हेभगवन् ! नारकी नरकगति प्रवेशने करी नव जीवप्राश्रयीने नारकने येकले सातभांगा भागाहुवे द्विकसंयोगे नवाने धिलें येक आठ १८ इत्यादिक आठ विकल्प हुवे अने सातपद द्विकसंयोगे इकवीस पद हुवे ते इकवीस आठसघाते गण्या एकसो अडसठ हुवे १६८ भांगा त्रिकसंयोगे नवने एक एक सात ११७ इत्यादिक अठावीस विकल्पहुवे ते सातपद त्रिकसंयोगे पैंतीसपद हुवे ते पैंतीसपद अठावीस गुणाकीधा ९८० नवसे असी भागाहुवे चतुष्कसंयोगे नवाने चारप्रकारे करतां एक एक एक छ ११११६ इत्यादिक छप्पन विकल्पहुवे अने सातपद चतुष्कसंयोगे पैंतीसपद हुवे ते पैं

॥ टीका ॥

शती गुणने सहस्रं नवशतानि षष्टिश्च भङ्गकाना भवतीति पञ्चकसंयोगेतु नवानां पञ्चद्वात्वे चत्वार एकका· पंचक श्चेत्यादयः ११११५ सप्तति विं

॥ मूल ॥

वेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा पुच्छा गंगेया ! णवरं रयणप्पभाएवा होज्जा । जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७ । अहवा एगे रयणप्पभाए अठ सक्करप्पभाएवा होज्जा एवं दुयसंजोगो जाव सत्तग संजोगोय जहा अट्ठण्हं भणिय तहा णवण्हंपि भाणियव्वं, णवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो सेसं तंचेव

॥ अनुवाद ॥

नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त· किं रत्नप्रभायां भवेयु पृच्छा गांगेय । नव रत्नप्रभायांवा भवेयु यावं दध सप्तमायांवा भवेयु ७ । अथवैको रत्नप्रभाया मष्टौ शर्कराप्रभायांवा भवेयु रेव द्विकसयोगो याव त्सप्तकसयोगश्च यथा ऽष्टानां भणित स्तथा नवाना मपि भणितव्य म्, नवरं मेकैको ऽभ्यधिक स्सञ्चारयितव्य शेष तच्चैव पश्चिम आलापको ऽथवा त्रयो रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया

॥ भाषा ॥

बोस छयनगुणा करता एकसहस्र नवसे साठ ११६० हुवे पचसंयोगे नवने पचपणे थापता एक एक एक एक पच ११११५ इत्यादि ७० विकल्पहुवे अने सातपद पचसंयोगे इकवीसपद हुवे ते सत्तरसघाते इकवीसगुणा १४७० भागाथाय, छ संयोगे नवने छ पणे एक एक एक एक चार इत्यादिक छ प्पन्न विकल्पहुवे तिणेकरी सातपद छना संयोगनेविषे सातने गुणवेकरी तीनसे बाणवे भागा हुवे सातसंयोगे वली नवाने सातपणे एक एक एक एक एक एक तीन ११११११३ इत्यादिक अट्ठावीस विकल्पहुवे तेणेकरी एकने सप्तकसंयोगने गुणवे अट्ठावीस भागा हुवे एव सर्व मीलने ५००५ भागा हुवे। हे पवेसमाणा किं रयणाए होज्जा पुच्छा । प्रवेशन करतोथको स्यूं रत्नप्रभानेविषे ऊपजे इत्यादि प्रश्नकोधो उत्तर । गंगेया णवरं रयणाएवा होज्जा । हे गांगेय । नवेई जीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे अथवा । जाव अहेसत्तमाएवा होज्जा ७ । यावत् नवेई जीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम एक संयोगी भागा ७ , हिवे द्विकसंयोगी देखाडेछे—अहवा एगे रयणाए अट्ठ सक्कराएवाहोज्जा । अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे आठजीव शर्कराप्रभानेविषे ऊपजे। एवं दुयसंजोगो जाव सत्तग संजोगोय जहा अट्ठण्ह भणिय तहा णवण्हंपि भाणियव्वं। इम द्विकसंयोगी इम यावत् सातनो संयो

॥ टीका ॥

कल्पा स्तेश्च सप्तपदपञ्चकसयोगेकविंशते गुणने सहस्रं चत्वारिंशतानि सप्ततिश्च भङ्गकाना भवन्तीति, षट्कसयोगेतु नवानां षोढात्वे पञ्चैकका श्चतु
ष्कश्च त्यादय १११११४ षटपञ्चाशद्विकल्पा भवति तैश्च सप्तपदषट्कसयोगसप्तकस्य गुणने शतत्रय द्विनवत्यधिक भगकाना भवतीति सप्तकसयोगे पुन
र्नवाना सप्तत्वे एकका· षट्त्रिकश्च त्यादयो १११११३ अष्टाविंशति विकल्पा भवति तैश्च एकस्य सप्तकसयोगस्य गुणने ऽष्टाविंशति रेवभगका एषा
च्च सर्वेषा मीलने पञ्चसहस्राणि पञ्चोत्तराणि विकल्पा भवतीति ॥ दसग्रते । इत्यादि ॥ इहा प्येकत्वे सप्तैव द्विकसयोगेतु दशाना द्विधात्वे ए
को नवचेत्येवमादयो नव विकल्पा स्तै श्चैकविंशते सप्तपदद्विकसयोगाना गुणने एकोननवत्यधिक भङ्गकशत भवतीति, त्रिकयोगेतु दशाना त्रि

॥ मूल ॥

पच्छिमो आलावगो अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहे सत्त
माए होज्जा ५००५ दस भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा पुच्छा
गंगेया ! रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७ । अहवाएगे रयणप्पभाए नव सक्कर

अनुवाद

याव दशको ध· सप्तमाया भवेत् ५००५ । दश भदन्त ! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त कि रत्नप्रभाया भवेयु पृच्छा ? गागेय ! रत्न
प्रभायावा भवेयु याव दध सप्तमाया वा भवेयु ७ । अथवैको रत्नप्रभाया नवशर्कराप्रभायावा भवेयु एव द्विकसयोगो याव त्सप्तकसयोगो

॥ भाषा ॥

ग जिम पहिला आठनो कह्यो तिम नवने पणि कहवो । णवर एकेको अब्भहिओ सचारेयव्वो सेसतचेव पच्छिमो आलावो । एतलोविशेष तेमाहे एके
को अधिको सचारवो शेषसर्व तिमज कहवो छेहलो आलावो । अहवा तिण्णि रयणाए एगे सक्कराए एगे वालुयाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५००
५ । अथवा तीन रत्नप्रभानेविषे ऊपजे एक शर्कराप्रभायें एक वालुकप्रभायें इम यावत् नीचे सातमो नर्कपृथिवीयें ऊपजे इहा नवजीव आश्रयाने सर्व
भागा ५००५ देखाव्या । दसभते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा कि रयणाए होज्जा पुच्छा । दश हेभगवन् । नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशने
करी प्रवेश करता थका स्यू रत्नप्रभायें ऊपजे इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गंगेया रयणाएवा होज्जा जाव अहेसत्तमाएवा होज्जा ७ । हे गागेय । दश

॥ टीका ॥ धात्वे एक एको ऽष्टौ चेत्येव मादय षट्त्रिंशद्विकल्पा स्तैश्च सप्तपदत्रिकसंयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने द्वादशशतानि षष्ट्यधिकानि भङ्गकाना भवन्ती ति, चतुष्कसंयोगेतु दशाना चतुर्द्धात्वे एककत्रय सप्तक श्चेत्येव मादय श्चतुरशीति विकल्पा स्तैश्च सप्तपदचतुष्कसंयोगपञ्चत्रिंशतो गुणने एकोनत्रि शच्छतानि चत्वारिंशदधिकानि भङ्गकाना भवन्तीति, पञ्चकसंयोगेतु दशाना पञ्चधात्वे चत्वार एकका· षट्कश्चे त्यादय षड्विंशत्युत्तरशतसङ्ख्याविकल्पा

॥ मूल ॥ प्पन्नाएवा होज्जा, एवं दुयसंजोगो जाव सत्तसंजोगो जहा णवण्हं णवरं एक्केक्को अब्भहिउ संचारेयव्वो सेसं

अनुवाद: यथा नवाना नवरं मेकैको ऽभ्यधिक सचारयितव्य शेष तच्चैव पश्चिम आलापको ऽथवा चत्वारो रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया याव देवो

॥ भाषा ॥ जीव आश्रयीने नारकने एकसयोगी भागा सातहोज हुवे, द्विकसयोगे दशने द्विधापणे एक नव १९ इत्यादिक नव विकल्प तिणेंकरी सात द्विकसयोगे २१ पदहुवे ते गुण्या एकसो नव्यासी भागा हुवे त्रिकसयोगे तो दशने तीनपणे एक एक आठ ११८ इत्यादिक छत्रीस विकल्प तेणेंकरी सातपद त्रिकस योगे ३५ ते गुणता वारेसे साठ १२६० भागा हुये चतुष्कसयोगे दशने चारप्रकारे विहचिया एक एक एक सात १११७ इत्यादिक चोरासी विकल्प हुवे तेणेकरी सातपद चार सयोगे पंचीसपद हुवे ते गुणता उगणत्रीससे चालीस २९४० भागाहुवे पचसयोगे दशने पचप्रकारे विहचता एक एक एक एक छ ११११६ इत्यादिक १२६ विकल्पहुवे तेणेंकरी सातपद पचकसयोगे इकवीस ते गुणता छव्वीससे छयालीस भागाहुवे छ सयोगे दशने छ प्रकारे विहचता एक एक एक एक एक पाच १११११५ इत्यादिक एकसो छत्रीस विकल्प हुवे तिणेंकरी छ सयोगी सातपद हुवे ते गुण्या ८८२ भागाहुवे सातसयोगे दशने सातेप्रकारे विहचता एक एक एक एक एक एक चार ११११११४ इत्यादिक चोरासीविकल्प हुवे तिणेंकरी एक सप्तकसयोगने गुणता ८४ होजभागा हुवे ए सर्वने मोलने ८००८ भागा हुवे ते देखाडेछे—दशेई रत्नप्रभानेविषे ऊपजे इम यावत् दशेई नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ए ७ भागा थया, हिवे द्विकसयोगी देखाडेछे—अहवा एगे रयणाए नव सक्कराएवा होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभायें ऊपजे नव शर्करप्रभायें ऊपजे। एव दुयसंजोगो जाव सत्तसंजोगो जहा णवण्ह। इम द्विकसयोग यावत् सप्तकसयोग जिम नवने कह्यो तिम दशने पणि कहवो। णवरं एक्के

॥ टीका ॥ कल्पा भवति, तेश्च सप्तपदपञ्चकसंयोगैकविंशते गुणने षड्विंशतिशतानि षट्चत्वारिंशदधिकानि भङ्गकाना भवतीति, षट्कसंयोगेतु दशाना षोढा त्वे पञ्चैकका· पञ्चकश्चेत्यादय षड्विंशत्युत्तरशतसङ्ख्याविकल्पा भवति तेश्च सप्तपदषट्कसंयोगसप्तकस्य गुणने अष्टौ शतानि द्व्यशीत्यधिकानि भङ्गका ना भवति, सप्तकसंयोगेतु दशाना सप्तधात्वे षडेकका चतुष्क इत्येवमादय चतुरशीति विकल्पा स्तेषां कस्य सप्तकसंयोगस्य गुणने चतुरशीतिरेव भङ्गकानाभवति सर्वेषा चैषा मीलने अष्टसहस्रा स्यष्टोत्तराणि विकल्पाना भवतीति ॥ सखेज्जाभंते ! इत्यादि ॥ तत्र सङ्ख्याता एकादशादय शी र्षप्रहेलिकाता इहाप्येकत्वे सप्तैव· द्विकसंयोगेतु सङ्ख्यातानां द्विधात्वे एक सङ्ख्याता इत्यादयो दश सङ्ख्याताश्च सख्याता सख्याताश्च त्येतदन्ता

॥ मूल ॥ तंचेव पच्छिमो आलावगो अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहे सत्तमाए होज्जा, ८४ । ८००८ । संखेज्जा भंत ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा गंगेया ! रयणप्पभाएवा

अनुवाद ध सप्तमाया भवेत् ८४ । ८००८ ॥ सङ्ख्येया भदन्त ! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त· किं रत्नप्रभाया पृच्छा गागेय ! रत्नप्रभायावा भ वेयु याव दथवा ध सप्तमाया भवेयु· । अथवैको रत्नप्रभाया सख्येयाः शर्कराप्रभाया भवेयु रेव याव दथवैको रत्नप्रभाया सख्येया अध स

॥ भाषा ॥ ठो अथवा ही अधो सप्तमीविषे संततचेव पच्छिमो आलावगो । एतलो विशेष तेहमाहे एकीको अधिको सचारवो शेष सर्व तिमजीज कहवो छेल्लो आला वो । अथवा चत्तारि रयणाए एगे सक्कराए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८४ ८००८ । अथवा चार रत्नप्रभानेविषे एक शर्कराप्रभानेविषे यावत् एक नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ८४ इहा दश जीवआश्रयीने भागा सर्व ८००८ थया । सखेज्जा भंते णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा । सख्याता हेभगवन् ! नारकी नरकगतिनेविषे प्रवेशनकरी प्रवेशन करताथका स्यू रत्नप्रभाने ऊपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर गंगेया रयणाएवा होज्जा जा व अहवा अहेसत्तमाए होज्जा । हे गांगेय ! सख्याता रत्नप्रभानेविषे ऊपजे यावत् अथवा सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए एकस योगी, हिवे द्विकसंयोगी देखाडेछे—सख्यात जीवआश्रयीने नारकने एकसयोगी भागा सात ७ द्विकसयोगी भागा १२१ ते पद २१ विकल्प ११ एक

॥ टीका ॥

एकादश विकल्पा एते चोपरितनपृथिव्या मेकादीना मेकादशाना पदाना मुच्चारणे ऽधस्तनपृथिव्यांतु सङ्ख्यातपदस्यैवो च्चारणे सत्यवज्ञेया'' ये त्वन्ये उपरितनपृथिव्या सख्यातपदस्या ऽधस्तनपृथिव्या त्वेकादीना मेकादशानां पदाना मुच्चारणे लभ्यते तदिह नविवक्षिता पूर्वसूत्रक्रमाश्रयणा त् पूर्वसूत्रेषुहि दशादिराशीना द्वैविध्यकल्पनाया मुपर्य्येकादयो लघव सङ्ख्याभेदा पूर्वं न्यस्ता, अधस्तु नवादयो महान्त एव मिहाप्येकादय

॥ मूल ॥

होज्जा । जाव अहवा अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ६ । अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्कर प्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ३ । अहवा तिन्नि रय

अनुवाद

प्रभाया भवेयु' । ६ । अथवा द्वौ रत्नप्रभाया सख्येया शर्कराप्रभाया भवेयु रेवं याव दथवा द्वौ रत्नप्रभाया सख्येया अध सप्तमायां भवेयु.

॥ भाषा ॥

रत्नप्रभासघाते शर्करप्रभा इम दश इकवीस इग्यार गुणाकीजे तिवारे २३१ थाय त्रिकसयोगी ७३५ तिहा पद ३५ विकल्प इकवीस पैमी इकवी सगुणाकीजे तिवारे ७३५ थाय चउकसयोगी १०८५ थाय तिहा पद पैंत्रीस विकल्प २१ इम पैंत्रीस इकवीसगुणा करता १०८५ थाय पचसयोगीना ८६१ तिहा पद २१ विकल्प ४१ ते इकतालिस इकवीसगुणा कीजे तो ८६१ थाय छ सयोगी ३५७ तिहापद ७ विकल्प ५१ इम इकावन सातगुणा करता ३५७ थाय इ सातसयोगीना ६१ पद विकल्प तिवारे भागा ६१ होजहुवे एव सर्व मिल्या ३३३७ भागाथाय ते देखाडेछे—रयणाए इत्यादि । अहवा ए गे रयणाए सखेज्जा सक्कराए होज्जा । अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे संख्याताजीव शर्करप्रभानेविषे ऊपजे ये येकभागो १ । एव जाव अहवा एगे रयणाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ६ । इम यावत् अथवा येकजीव रत्नप्रभानेविषे ऊपजे सख्याताजीव नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें ऊपजे एव भागा ६ थया । अहवा दो रयणाए संखेज्जा सक्कराए होज्जा । अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे ऊपजे सख्याता शर्करप्रभानेविषे ऊपजे १ । एव जाव अहवा दो रयणाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । इम यावत् अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे ऊपजे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए पणि ६ भा

॥ टीका ॥

उपरिसङ्ख्यातराशि श्राध स्तत्र सङ्ख्यातराशे रधस्तनस्यैकाद्याकर्षणेऽपि सङ्ख्यातत्व मवस्थितमेव प्रचुरत्वा त्पुन: पूर्वसूत्रेषु नवादीनामिवे कादित

॥ मूल ॥

णप्पन्नाए संखेज्जा सक्करप्पन्नाए होज्जा, एवं एएणं कमेण एक्केक्को सचारियव्वो जाव अहवा दस रयणप्पन्नाए संखेज्जा सक्करप्पन्नाए होज्जा। एवं जाव अहवा दस रयणप्पन्नाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ६। अहवा संखेज्जा रयणप्पन्नाए संखेज्जा सक्करप्पन्नाए होज्जा। जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पन्नाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ६। अहवा एगे रयणप्पन्नाए संखेज्जा वालुयप्पन्नाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पन्ना

अनुवाद

६। अथवा त्रयो रत्नप्रभाया सङ्ख्येया. शर्कराप्रभाया भवेयु रेव मेतेन क्रमेणै कैक सचारयितव्यो याव दथवा दश रत्नप्रभाया सङ्ख्येया शर्कराप्रभाया भवेयु रेवं याव दथवा दश रत्नप्रभाया सङ्ख्येया अध. सप्तमाया भवेयु ६। अथवा सङ्ख्येया रत्नप्रभाया सङ्ख्येया शर्कराप्रभाया भवेयु यांव दथवा सङ्ख्येया रत्नप्रभाया सङ्ख्येया अध. सप्तमाया भवेयु. ६। अथवैको रत्नप्रभाया सङ्ख्येया वालुकाप्रभाया भवेयु रेव यथा रत्नप्रभो

॥ भाषा ॥

गा थया ६। अहवा तिण्णि रयणाए संखेज्जा सक्कराए होज्जा। अथवा तीन रत्नप्रभानेविषे ऊपजे सख्याता शर्कराप्रभाये ऊपजे। एव एएण कमेण एक्केक्को सचारियव्वो। इम इणे अनुक्रमे एकेको नाहि सचारवो मेलवो। जाव अहवा दस रयणाए संखेज्जा सक्कराएहोज्जा। यावत् अथवा दशजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे सख्याता शर्कराप्रभानेविषे उपजे १। एव जाव अहवा दस रयणाए संखेज्जा अहेसत्तमाएहोज्जा। इम यावत् अथवा दश रत्नप्रभानेविषे उपजे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ए पणि ६ भागा थया। अहवा संखेज्जा रयणाए संखेज्जा सक्कराए होज्जा। अथवा सख्याता रत्नप्रभाये सख्याता शर्कराप्रभाये उपजे १। जाव अहवा संखेज्जा रयणाए संखेज्जा अहेसत्तमाएहोज्जा ६। इम यावत् अथवा संख्याता रत्नप्रभाये उपजे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ए पणि ६ भागा थया। अहवा एगे रयणाए संखेज्जा वालुयाए होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभानेविषे उपजे सख्याता वालुकाप्रभानेविषे ए एक भागो १। एव जहा रयणा उवरिमपुढवीहिं समं चारिया। इम जिम रत्नप्रभा ऊपरली पृथिवीसो सचा

॥ टीका ॥

या तस्यावस्थान मित्यतो नेहाथ एकादिभावो ऽपितु सङ्ख्यातसम्भव एवेति, नाधिकविकल्पविवक्षेति. तत्ररत्नप्रभा एकादिभि सख्याता न्तै रेका दशभि पदै क्रमेण विशेषिता सङ्ख्यातपदविशेषितानि. शेषाभि सह क्रमेण चारिता षट्षष्टिभङ्गकान् लभते एव मेव शर्कराप्रभा पञ्चपञ्चा शत वालुकाप्रभा चतुश्चत्वारिंशत पङ्कप्रभा त्रयस्त्रिंशत धूमप्रभा द्वाविंशति तम प्रभात्वेकादशेति एवञ्च द्विकसंयोगविकल्पाना शतद्वय मेकत्रिंश दधिक भवति त्रिकयोगतु विकल्पपरिमाणमात्रमेव दश्यते, रत्नप्रभाशर्कराप्रभावालुकाप्रभाश्चेति प्रथम स्त्रिकयोग, स्तत्र एकएक सङ्ख्याताश्चेति प्रथमविकल्प स्तत प्रथमाया मेकस्मिन्नेव तृतीयायातु सङ्ख्यातपदएव स्थित द्वितीयाया क्रमेण शविन्यासे ध्याद्यभावेन दशमवारे सख्यातपद भ

॥ मूल ॥

उवरिमपुढवीहिं समं चरिया एव सक्करप्पभावि उवरिमपुढवीहिं संचारेयव्वा एवं एक्केक्का पुढवी उवरिम पुढवीहि समं संचारेयव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए सखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा २३१ । अहवा एगे

अनुवाद

परिमपृथिवीभि सम सचारिता एव शर्कराप्रभा ऽप्युपरिमपृथिवीभि सम सचारयितव्या, एव मेकैका पृथिव्युपरिमपृथिवीभिः सम स ञ्चारयितव्या याव दथवा सख्येया स्तमाया सख्येया,अध सप्तमाया भवेयु २३१ । अथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया संख्येया वालु

॥ भाषा ॥

रो मेलो गणना कीधी । एव सक्कराविं उवरिमपुढवीहि सचारेयव्वा । इम शर्कराप्रभा पृथिवीसघाते सचारवी गणना करवी एव एकेक्का पुढ वी उवरिम पुढवीहि सम सचारेयव्वा । इम एकेकी पृथिवी उपरिली पृथिवीसघाते संचारवी । ज व अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा २३१ । यावत् अथवा सख्याताजीव तमानेविषे उपजे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम सर्व २३१ भागा ए द्विकसयोगीना कह्या, हिवे त्रिकसयोगीना कहेछे—अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए सखेज्जा वालुयाए होज्जा । अथवा एकजीव रत्नप्रभानेविषे उपजे एक शर्कर प्रभानेविषे उपजे सख्याता वालुकाप्रभानेविषे उपजे। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए सखेज्जा पङ्काए । अथवा येक रत्नप्रभानेविषे उपजे एक श र्कराप्रभानेविषे उपजे सख्याता पङ्कप्रभानेविषे उपजे। जाव अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । इम यावत् अथवा एक जीव

॥ टीका ॥

वति एव मेते पूर्वेण सह एकादश ततो द्वितीयाया तृतीयायाच संख्यातपदस्य स्थिते प्रथमाया तथैव आद्यपदभावेन दशमवारे सख्यातपद भवति एव चैत दश समाप्यते, चेतोऽपविन्यासो ऽन्त्यपदस्यप्राप्तत्वात्, एवचैत सर्वं पंकत्र त्रिकसयोगे एकविंशति अनयाच पञ्चत्रिंशत सप्तपद त्रिकसयोगाना गुणने सप्तशतानि पञ्चत्रिंशदधिकानि भवति चतुष्कसयोगेतु पुन राद्यानि त्रीण्येक प्रथम चतुष्कसयोग स्तत्रचाद्यासु तिसृषेदे क चतुर्थ्यांतु सख्याता इत्येको विकल्पः तत पूर्वोक्तक्रमेण तृतीयाया दशमवारे सख्यातपद मेव द्वितीयाया प्रथमा याच ततएते सर्वेप्येकत्र च

॥ मूल ॥

रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो

अनुवाद

कप्रभाया भवेयु रथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया सख्येया पङ्कप्रभाया याव दथवैको रत्नप्रभाया मेक शर्कराप्रभाया सख्येया अध सप्तमाया भवेयु ५। अथवैको रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया सख्येया वालुकाप्रभाया भवेयु याव दथवैको रत्नप्रभाया द्वौ शर्कराप्रभाया स

॥ भाषा ॥

रत्नप्रभानेविषे उपजे एक शर्कराप्रभानेविषे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे एवभागा ५ थया। अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए सखेज्जा वालुयाए होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभानेविषे उपजे दोयजीव शर्कराप्रभानेविषे उपजे सख्याता वालुकप्रभानेविषे उपजे १। जाव अहवा एगे रयणाए दो सक्कराए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। यावत् अथवा एक रत्नप्रभानेविषे उपजे दोय शर्कराप्रभानेविषे उपजे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ए पांच ५ भागाथया अथवा एगे रयणाए तिण्णि सक्कराए सखेज्जा वालुयाए होज्जा। अथवा एक रत्नप्रभानेविषे उपजे तीन शर्कराप्रभानेविषे उपजे सख्याता वालुकप्रभा नेविषे उपजे ए एकभागो थयो। एव एणा क्रमेण एक्केको सचारेयव्वो। इम पूर्वे अनुक्रमे करी एकेको सचारवो। सक्कराए जाव अहवा एगे रयणाए सखेज्जा सक्कराए सखेज्जा वालुयाए होज्जा। शर्कराप्रभा पृथिवीनेविषे यावत् अथवा एक रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्कराप्रभाये सख्याता वालुकाप्रभानेविषे उपजे।

॥ टीका ॥

तुष्कयोगे एकत्रिंशत् अनयाच सप्तपदचतुष्कसंयोगाना पञ्चत्रिंशतोगुणने सहस्र पञ्चाशीत्यधिक भवति पञ्चकसंयोगे त्वाद्यानि पञ्चभि प्रथम प ञ्चकयोग स्तत्राद्यासु चतसृ ष्वेकैक पञ्चम्यान्तु सख्याता इत्येको विकल्प स्तत पूर्वोक्तक्रमेण चतुर्थ्या द्रशमचारे सख्यातपद मेव शेषास्वपि तत एते सर्वे प्येकत्र पञ्चकयोगे एकचत्वारिंशत्, अस्याश्च प्रत्येक सप्तपदपञ्चकसंयोगाना मेकविंशतौ लाभा दष्टशतान्येकषष्ट्यधिकानि भवति षट्कसंयोगेषुतु पूर्वोक्तक्रमे णेकत्र षट्कयोगे एकपचाश द्विकल्पा भवति अस्याश्च प्रत्यक सप्तपदषट्कसंयोगसप्तके लाभा त्रीणिशतानि सप्तपञ्चाशदधिकानि भवति

॥ मूल ॥

सक्करप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुय प्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखे ज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा । जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए

अनुवाद

ङ्ख्येया अथ सप्तमाया भवेयु ५ । अथवैको रत्नप्रभाया त्रय शर्कराप्रभाया सङ्ख्येया वालुकाप्रभाया भवेयु रेव मेतेन क्रमेणै कैक सञ्चारयि तव्य शर्कराप्रभाया याव दथवा एको रत्नप्रभाया सङ्ख्येया शर्कराप्रभायां सख्येया वालुकाप्रभाया भवेयु याव दथवैको रत्नप्रभायां सख्येयाः

॥ भाषा ॥

जाव अहवा एगे रयणाए संखेज्जा सक्कराए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ५ । यावत् अथवा येक रत्नप्रभापृथिवीनेविषे सख्याता शर्करप्रभापृथिवीनेवि षे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ५ थया । अहवा दो रयणाए संखेज्जा सक्कराए संखेज्जा वालुयाए होज्जा । अथवा दोय जीव रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्करप्रभानेविषे सख्याता वालुकप्रभानेविषे उपजे । जाव अहवा दो रयणाए संखेज्जा सक्कराए संखेज्जा अहेसत्तमा ए होज्जा ५ । यावत् अथवा दोय रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्करप्रभानेविषे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ५ । अहवा ति न्नि रयणाए संखेज्जा सक्कराए संखेज्जा वालुयाएहोज्जा । अथवा तीन रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्करप्रभानेविषे सख्याता वालुकप्रभानेविषे उपजे । ए व एएण कमेण एक्केक्को रयणाए संचारेयव्वो । इम इणे अनुक्रमेंकरी एकेको रत्नप्रभानेविषे संचारवो । जाव अहवा संखेज्जा रयणाए संखेज्जा सक्करा

संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा तिन्नि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को रयणप्पभाए संचारयव्वो जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा। जाव अ

शर्कराप्रभायां संख्येया अध सप्तमायां भवेयु ५। अथवा द्वौ रत्नप्रभायां संख्येया शर्कराप्रभायां संख्येया वालुकाप्रभायां भवेयु यावं दथवा द्वौ रत्नप्रभायां संख्येया शर्कराप्रभायां संख्येया अध सप्तमायां भवेयु ५। अथवा त्रयोरत्नप्रभायां संख्येया. शर्कराप्रभायां संख्येया वालुकाप्रभायां भवेयु, एव मेतेन क्रमेणैकैको रत्नप्रभायां सञ्चारयितव्यो याव दथवा संख्येया रत्नप्रभायां संख्येया शर्कराप्रभायां संख्येया

ए सखेज्जा वालुयाए होज्जा। यावत् अथवा सख्याता रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्करप्रभानेविषे सख्याता वालुकप्रभानेविषे उपजे। जाव अहवा रुखेज्जा रयणाए सखेज्जा सक्कराए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। यावत् अथवा सख्याता रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्करप्रभानेविषे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे इम भागा ५। अहवा एगे रयणाए एगे सक्कराए सखेज्जा पकाए होज्जा। अथवा येक रत्नप्रभानेविषे येक शर्करप्रभानेविषे सख्याता पंकप्रभानेविषे उपजे। जाव एगे रयणाए एगे वालुयाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। यावत् येक रत्नप्रभानेविषे येक वालुकप्रभानेविषे सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीये उपजे इम भागा ४ थया। अहवा एगे रयणाए दो वालुयाए सखेज्जा पकाए होज्जा। अथवा येक रत्नप्रभानेविषे दोय वालुकप्रभानेविषे सख्याता पंकप्रभानेविषे उपजे। एव एएण कमेण तियसजोगो चउककसजोगो जाव सत्तसजोगो जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो। इम इणे अनुक्रमें करी त्रिकसयोग चतुष्कसयोग यावत् सप्तकसयोग जिम दशने कह्यो तिम इहा पणि कहवो। पच्छिमगो आलावगो सत्तसजोगस्स। छेहलो आलावो सात सयोगनो। अहवा सखेज्जा रयणाए सखेज्जा सक्कराए जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ६१ [३३३७]। अथवा

हवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं तियसंजोगो चउक्कसंजोगो जाव सत्तसंजोगो जहा दसण्हं तहेव भाणियव्वो पच्छिमगो आलावगो सत्त

वालुकाप्रभायां भवेयु र्याव द्यथवा सख्येया रत्नप्रभाया सख्येया शर्कराप्रभाया सख्येया अध सप्तमाया भवेयु ५। अथवैको रत्नप्रभाया मे क शर्कराप्रभायां सख्येया पङ्कप्रभाया भवेयु र्याव देको रत्नप्रभाया मेको वालुकाप्रभाया सख्येया अध· सप्तमाया भवेयु, अथवैको रत्नप्रभा या द्वौ वालुकाप्रभाया सख्येया पङ्कप्रभाया भवेयु रेव मेतेन क्रमेण त्रिकसयोग श्चतुष्कसयोगो याव त्सप्तकसयोगो यथा दशाना तथैव भणि

सख्याता रत्नप्रभानेविषे सख्याता शर्कराप्रभानेविषे यावत् सख्याता नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें उपजे इम सख्याता जीवआश्रयीने सर्वभागा ३३३७ थ या। असखेज्जाभते णेरइया णेरइयपवेसणएण पवेसमाणा पुच्छा। असख्याता हेभगवन्। नारकी नरकगतिने प्रवेशनेकरी प्रवेशन करताथका स्यू र त्नप्रभानेविषे उपजे इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर। गगेया रयणाए वाहोज्जा। जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ७। हे गागेय। असख्यात जीवआश्रयीने ना रकने येकसयोगी भागा ७ द्विकसयोगीना भागा २५२ तिहा पद इकवीस विकल्प बारे, इकवीस बारेगुणा कीजे तिवारे २५२ भागा थाय त्रिकसयो गीना ८०५ तिहा पद ३५ विकल्प २३, पैंतीस त्रेवीसगुणा कीजे तिवारें ८०५ थाय चउकसयोगी ११९० तिहा पद ३५ विकल्प ३४, पैंतीस चउत्रीस गुणाकीधा ११९० थाय पचसयोगी भागा ९४५ तिहा पद २१ विकल्प पैंतालीस, इकवीस पैंतालीस गुणाकीधा ९४५ थाय, छसयोगीना भागा ३९२ तिहा पद ७ विकल्प ५६, ते ५६ सातगुणा कीधा ३९२ थाय, सातसयोगीना ६७ तिहा पद १ विकल्प ६७, तिवारे भागा ६७ इम सर्व ३६५८ भागा, अस ख्याता रत्नप्रभानेविषे उपजे इम यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे उपजे ये येकसयोगीना ७ भागा। अहवा एगे रयणाए असखेज्जा सक्कराए

॥ टीका ॥

सप्तकसंयोगेषु पूर्वोक्तभावनया कथष्टि विकल्पा भवति सर्वेषा चैषा मीलने त्रयस्त्रिंशच्छतानि सप्तत्रिंश दधिकानि भवन्ति ॥ असखेज्जाभंते । इत्यादि ॥ सख्यातप्रवेशनकवदेवं त दसख्यातप्रवेशनक वाच्य नवर मिहा सख्यातपद द्वादश मधीयते तत्र चैकत्वे सप्तैव द्विकयोगादौतु विकल्प प्रमाणवृद्धि भवति साचैव–द्विकसंयोगे द्वेशते द्विपञ्चाशदधिके २५२, त्रिकसंयोगे अष्टौ शतानि पञ्चोत्तराणि ८०५, चतुष्कसंयोगे त्वेकादश शतानि नवत्यधिकानि ११९०, पञ्चकसंयोगे पुन नवशतानि पञ्चचत्वारिंशदधिकानि ९४५, षट्कसंयोगेतु त्रीणिशतानि द्विनवत्यधिकानि ३९२, सप्तसयोगे

॥ मूल ॥

संजोगस्स अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए जाव संखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ६१ । ३३ । ३७ । असंखेज्जा भंते! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा गंगेया! रयणप्पभाएवा होज्जा जाव अहे सत्तमाएवा होज्जा ७। अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा एवं दुयसंजोगो जाव सत्तगसंजोगोय जहा संखेज्जाणं भणिउ तहा असखेज्जाणवि भाणियव्वो, णवर असंखेज्जाउ अब्भहिउ

॥ अनुवाद ॥

तव्य , पश्चिम आलापक सप्तसयोगस्या थवा सख्येया रत्नप्रभाया सख्येया· शर्कराप्रभाया याव त्सख्येया अध सप्तमाया भवेयु ६१ ३३ ३७ । असख्येया भदन्त ! नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त कि रत्नप्रभाया पृच्छा गागेय । रत्नप्रभायावा भवेयु याव दध सप्तमायावा भवेयु ७। अथवैको रत्नप्रभाया भवे दसख्येया शर्कराप्रभाया भवेयु रेव द्विकसयोगो याव त्सप्तकसयोगश्च यथा सख्येयाना भणित स्तथा

॥ भाषा ॥

होज्जा । अथवा येक रत्नप्रभानेविषै उपजै असख्याता शर्करप्रभानेविषै उपजै १ । एव दुयसजोगो जाव सत्तसजोगोय जहा सखेज्जाण भणियो । इम द्विकसयोगो यावत् सप्तकसयोग जिम सख्यातानेविषै कह्यो । तहा असखेज्जाणवि भाणियव्वो । तिम असंख्यातानेविषै पणि जाणवो । णवर असखेज्जाओ अब्भहिओ भाणियव्वो सेसतचेव । एतलोविशेष असख्याती अधिको कहवो शेष तिमज कहवो । जाव सत्तगसजोगस्स पच्छिमगो आलावगो । यावत् सप्तक सयोगनो छेहलो आलावो कह्यो । अहवा असखेज्जा रयणाए । अथवा असख्याता रत्नप्रभानेविषै । असखेज्जा सक्कराए जाव असखेज्जा

॥ टीका ॥ पुन. सप्तषष्टि· ६७, एतेषां मीलने षट्त्रिंशच्छतानि अष्टपञ्चाशदधिकानि भवति ३६५८। अथ प्रकारान्तरेण नारकप्रवेशनक मेवाह॥ उक्कोसेणमित्यादि॥

॥ मूल ॥ भाणियव्वो सेसं तचेव। जाव सत्तगसजोगस्स पच्छिमओ आलावगो अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहे सत्तमाए होज्जा ६ ७ ३६ ५८। उक्कोसेण भंते ! णेरइया णेरइयपवेसणएणं पवेसमाणा पुच्छा गंगेया ! सव्वेवि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाएय होज्जा। अहवा रयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय होज्जा, जाव अहवा रयणप्पभाएय अहे सत्तमा

अनुवाद असंख्येयाना मपि भणितव्यो नवरं मसंख्याता दभ्यधिका भणितव्य ७। शेष तथैव याव त्सप्तकसंयोगस्य पश्चिम आलापक ७। अथवा असंख्येया रत्नप्रभाया मसंख्येया शर्कराप्रभाया याव दसंख्येया अध सप्तमाया भवेयु ६७ ३६ ५८। उत्कृष्ट तया भदंत। नैरयिका नैरयिकप्रवेशनकेन प्रविशन्त पृच्छा गागेय। सर्वेपि ताव द्रत्नप्रभाया भवेयु रथवा रत्नप्रभाया शर्कराप्रभाया भवेयु रथवा रत्नप्रभाया वालुकाप्रभाया भवेयु याव दथवा रत्नप्रभाया मध सप्तमाया भवयु ६। अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभाया वालुकाप्रभायाच भवयु रेव याव दथवा रत्नप्र

॥ भाषा ॥ अहेसत्तमाए होज्जा [६७३६] ५८। असंख्याता शर्कराप्रभानेविषे यावत् असंख्याता नीचे सातमी नकपृथ्वीनेविषे उपजे इम असंख्याता जीवआश्रयीने सर्वभांगा ३६५६ थया, हिवे प्रकारान्तरे नारकना प्रवेशन कहेछे—उक्कोसेणभंते णेरइयपवेसणएण पवेसमाणा पुच्छा। उत्कृष्ट हेभगवन्। नारकी नरकगतिनविषे प्रवेशनेकरी प्रवेशन करताथका इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर। गंगेया सव्वेवि ताव रयणाए होज्जा। हे गांगेय। सगलाई तावत् पहिला रत्नप्रभानेविषे उपजे। अहवा रयणाए सक्कराएय होज्जा १। अथवा रत्नप्रभा वपन शर्कराप्रभाये हुवे। अहवा रयणाए वालुयाएहोज्जा। अथवा रत्नप्रभाये वालुकाप्रभाये हुवे ऊपजे इत्यर्थ। जाव अहवा रयणा एय अहेसत्तमाएयहोज्जा ६। इम यावत् अथवा रत्नप्रभाय नीचे सातमो नर्कपृथ्वीनेविषे ऊपजे इम द्विकसंयोगी भांगा ६। अहवा रयणाएय सक्कराए वालुयाएय होज्जा। अथवा रत्नप्रभाये शर्का

एय होज्जा ६ । अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए अहे सत्तमाए होज्जा ५ । अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए होज्जा १ । जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहे सत्तमाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा १ । एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियसंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए अहे सत्तमाए होज्जा १५ । अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभा

भायां च शर्कराप्रभायां च सप्तमायां भवेयुः ५ । अथवा रत्नप्रभायां च वालुकाप्रभायां च पंकप्रभायां च भवेयुः १ । यावत् अथवा रत्नप्रभायां च वालुकाप्रभायां चाध सप्तमायां भवेयुः ४ । अथवा रत्नप्रभायां च पंकप्रभायां च धूमायां च भवेयुः १ । एवं रत्नप्रभा ममुचत्सु यथा त्रयाणां त्रिकसंयोगो भणित स्तथा भणितव्यो यावत् अथवा रत्नप्रभायां च तमायां चाधः सप्तमायां च भवेयुः १५ । अथवा रत्नप्रभायां च शर्कराप्रभा

रत्नप्रभायें वालुकप्रभायें ऊपजे त्रिकसंयोगीनो पहिलोभांगो १ । एव जाव अहवा रयणाएय सक्कराएय अहेसत्तमाएय होज्जा ५ । इम यावत् अथवा रत्नप्रभायें शर्करप्रभायें नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम भागा ५ । अहवा रयणाएय वालुयाएय पंकाएय होज्जा १ । अथवा रत्नप्रभायें वालुकप्रभायें पंकप्रभानेविषे ऊपजे । जाव अहवा रयणाएय वालुयाएय अहेसत्तमाएय होज्जा ४ । यावत् अथवा रत्नप्रभाने वालुकप्रभानेविषे नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे इम भांगा ४ । अहवा रयणाए पंका० धूमाएय होज्जा १ । अथवा रत्नप्रभायें पंकप्रभायें धूमप्रभायें ऊपजे । एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियसंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं । इम रत्नप्रभापृथिवी प्रतें अणमूकतें छतें जिम तीनने त्रिकनो संयोग कह्यो तिम जाणवो । जाव अहवा रयणाएय तमाएय अहेसत्तमाएय होज्जा १५ । यावत् अथवा रत्नप्रभायें तमायें नीचे सातमी नर्कपृथिवीनेविषे ऊपजे ए त्रिकसंयोगी १५ भांगा थाय, हिवे चतुष्कसंयोगी देखाडिछे– अहवा रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय पंकाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें शर्करप्रभायें वालुकप्रभायें प

एय वालुयप्पभाएय पंकप्पभाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय धूमप्पभाएय होज्जा । जाव अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय अहे सत्तमाएय होज्जा ४ । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमप्पभाएय होज्जा । एव रयणप्पभं अमुयं तेसु जहा चउरह चउक्कसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाएय धूमप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा २० । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमप्पभाएय होज्जा ।

याच वालुकाप्रभायाच पंकप्रभायाच भवेयु १ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभायाच धूमप्रभायाच भवेयु यांव दथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभाया चाध सप्तमाया भवेयु ४ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच पंकप्रभायाच धूमप्रभायाच भवेयु रेव रत्नप्रभा ममुचत्सु यथा चतुर्णा चतुष्कसयोग स्तथा भणितव्यो याव दथवा रत्नप्रभायाच धूमप्रभायाच तमाया चाध सप्तमायाच भवेयु २० । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभायाच पंकप्रभायाच धूमप्रभायाच भवेयु । अथवा रत्नप्रभायांच याव त्पङ्कप्रभाया

माये ऊपजे। अहवा रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय धूमाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें शर्कप्रभायें बालुकप्रभायें धूमप्रभाये ऊपजे २ । जाव अहवा रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय अहेसत्तमाएय होज्जा ४ । यावत् अथवा रत्नप्रभायें शर्करप्रभायें बालुकप्रभायें नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें ऊपजे इम भागा ४ । अथवा रयणाएय सक्कराएय पंकाएय धूमाएय होज्जा १ । अथवा रत्नप्रभायें शर्करप्रभायें पंकप्रभायें धूमप्रभायें ऊपजे । एवं रयणप्पभ अमुय तेसु जहा चउण्ह चउक्कसजोगो तहा भाणियव्व । इम रत्नप्रभापृथिवी प्रति अणमूकते छतें जिम चारने चारसयोग कह्या तिम जाणवो। जाव अहवा रयणाएय धूमाए तमाए अहेसत्तमाएय होज्जा २० । यावत् अथवा रत्नप्रभायें धूमप्रभायें तमप्रभायें नीचे सातमो नर्कपृथिवीयें ऊपजे ए चउक्कसयोगीना २० भागा कह्या, हिवे पंचसयोगी देखाडिछे—अहवा रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय पंकाएय धमाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें

॥ मूल ॥

अहवा रयणप्पभाए य जाव पंकप्पभाए य तमाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए य जाव पंकप्पभाए य अहे सत्तमाए य होज्जा ३ । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य धूमप्पभाए य तमाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयं तेसु जहा पंचण्हं पंचसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए य पंकप्पभाए धूमप्पभाए य तमाए य अहे सत्तमाए य होज्जा १५ । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य पंकप्पभाए य धूमप्पभाए य तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य जाव धूमप्पभाए य अहे सत्तमा

अनुवाद

च तमायाच भवेयु । अथवा रत्नप्रभायाच याव त्पङ्कप्रभाया चाप सप्तमाया भवेयु ३ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभा याच धूमप्रभायाच तमायाच भवेयु एव रत्नप्रभा ममुचत्सु यथा पञ्चाना पञ्चसंयोगा भणित स्तथा भणितव्यम्, याव दथवा रत्नप्रभायाच पङ्क प्रभायाच धूमप्रभायाच तमाया चाप सप्तमाया भवेयु १५ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभायाच पङ्कप्रभायाच धूमप्रभा याच तमायाच भवेयु १ । अथवा रत्नप्रभायाच याव द्धूमप्रभाया चाप. सप्तमाया भवेयु २ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्र

॥ भाषा ॥

शर्करप्रभामें वालुकप्रभामें पंकप्रभामें धूमप्रभामें उपजे । अहवा रयणाए य जाव पंकाए य । अथवा रत्नप्रभामें यावत् पंकप्रभामें लग कहवो । तमाए य होज्जा । तमप्रभामें उपजे । अहवा रयणाए य जाव पंकाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ३ । अथवा रत्नप्रभामें यावत् पंकप्रभा लगे कहवो नीचे सातमी पृथिवीमें उपजे इम भांगा ३ । अहवा रयणाए य सक्कराए य वालुयाए य धूमाए य तमाए य होज्जा । अथवा रत्नप्रभामें शर्करप्रभामें वालुकप्रभामें धूमप्रभामें तमप्रभामें उपजे । एव रयणप्पभं अमुयं तेसु जहा पंचण्हं पंचसंजोगो तहा भाणियव्वं । इम रत्नप्रभा प्रते अणमूकते छते जिम पांचने पंचसंयोग क ह्यो तिम कहवो । जाव अहवा रयणाए य पंकाए य धूमाए य तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा १५ । यावत् अथवा रत्नप्रभामें पंकप्रभामें धूमप्रभामें तमामें नीचे सातमी नर्कपृथिवीमें उपजे इम पंचसंयोगी भांगा १५ हिवे छ संयोगीभांगा कहे छे—अहवा रयणाए य सक्कराए य वालुयाए य पंकाए य धूमाए

॥ टीका ॥

उत्कर्षा उत्कृष्टपदिनो ये उत्कर्षत उत्पद्यन्ते ॥ सव्वेविति ॥ ये उत्कृष्टपदिन स्ते सर्वेपि रत्नप्रभाया भवेयु स्तद्गामिना तत्स्थानानांच बहुत्वात्, इह प्रक्रमे द्विकयोगे षड्भगका, त्रिकयोगे पञ्चदश, चतुष्कयोगे विंशति, पञ्चकयोगे पञ्चदश, षट्कयोगे षट्, सप्तकयोगे त्वेकइति। अथ रत्नप्रभादिष्वेव नारकप्रवेशनकस्या ल्पत्वादिनिरूपणायाह ॥ एयस्सणमित्यादि ॥ तत्र सर्वस्तोक सप्तमपृथिवीनारकप्रवेशनक तद्गामिना शेषापेक्षया स्तोकत्वात्, तत पश्चा

॥ मूल ॥

भापुढविपवेसणगस्स जाव अहे सत्तमापुढविणेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरे जाव विसेसाहिएवा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे अहे सत्तमपुढविणेरइयपवेसणए तमापुढविणेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे । पडिलोमग

॥ अनुवाद ॥

भदन्त ! रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकप्रवेशनकस्य शर्कराप्रभापृथ्वीनैरयिकप्रवेशनकस्य याव दध. सप्तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनकस्य कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गाङ्गेय ! सर्वस्तोको ऽध सप्तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक स्तमापृथ्वीनैरयिकप्रवेशनको ऽसंख्येयगुण , प्रतिलोमक

॥ भाषा ॥

नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें उपजे ए सातसयोगीभांगो १ इम उत्कृष्ट पदे ६४ थया, हिवे रत्नप्रभानेविषेन नारकप्रवेशनना अल्प बहुत्वादि निरूपण करेछे—एयस्सणभंते रयणप्पभा पुढवि णेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभा पुढविपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमा पुढविणेरइयपवेसणगस्स कयरे २ जाव विसेसाहिएवा। एहने हेभगवन् ! रत्नप्रभापृथिवी नैरयिक प्रवेशनने शर्करप्रभापृथिवी प्रवेशनने यावत् नीचे सातमी पृथिवी नैरयिक प्रवेशनने मांहोमांहि कुणकुणथकी थोडाहुवे घणाहुवे बराबर हुवे यावत् विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया सव्वत्थोवे अहेसत्तम पुढवि णेरइयपवेसणए तमा पुढवि णेरइय पवेसणए असंखेज्जगुणे। हे गांगेय । सर्वथी थोडो नीचे सातमी पृथिवी नैरयिक प्रवेशनक शेषपृथिवीनो अपेक्षायें तिहां जीवना स्तोकपणा माटे तेहथी तमानामे छठी नरकपृथिवीनेविषे प्रवेशन असंख्यातगुण अधिक पणामाटे । पडिलोमग जाव रयणप्पभा पुढविणेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे। इम प्रतिलोमक उलटा करता यावत् रत्नप्रभा ताईं आवीजे ते प्रत्येकें प्रवेशन असंख्यातगुणोछे तेमाटे बीजो पृथिवी थकी रत्नप्रभा प्रवेशन असंख्यातगुणो ए नारको आश्री अधिकार संपूर्ण कहेछे, हिवे तिर्यंचयोनिका प्रवेशनका स्वरूप कहेछे—तिरिक्खजोणिय पवेसणएण भंते कइविहे पं

एय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय पंकप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय वालुयप्पभाएय धूमप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय पंकप्पभाएय धूमप्पभाएय तमाएय अहे सत्तमाएय होज्जा ५ । अहवा रयणप्पभाएय वालुयप्पभाएय जाव अहे सत्तमाएय होज्जा ६ । अहवा रयणप्पभाएय सक्करप्पभाएय जाव अहे सत्तमाए होज्जा १ ६४ । एयस्सणं भंते ! रयणप्पभापुढविणेरइयपवेसणगस्स सक्करप्प

भायाच पंकप्रभायाच तमाया चाध सप्तमाया भवेयुः ३ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच वालुकाप्रभायाच धूमप्रभायाच तमाया चाध सप्तमायाच भवेयुः ४ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच पंकप्रभायाच धूमप्रभायाच तमाया चाध सप्तमाया भवेयु ५ । अथवा रत्नप्रभायाच वालुकाप्रभायाच याव दध सप्तमायांच भवेयु ६ । अथवा रत्नप्रभायाच शर्कराप्रभायाच याव दध सप्तमाया भवेयु १ । ६४ ॥ एतस्य

य तमाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें शर्कराप्रभायें वालुकप्रभाये पंकप्रभाये धूमप्रभायें तमायें ऊपजे । अहवा रयणाएय जाव धूमाएय अहेसत्तमाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें यावत् धूमप्रभायें लगे कहवो नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें ऊपजे २ । अहवा रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय पंकाएय तमाएय अहेसत्तमाए होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें शर्कराप्रभायें वालुकप्रभायें पंकप्रभायें तमप्रभायें नीचे सातमी नर्कपृथिवी ऊपजे अहवा । रयणाएय सक्कराएय वालुयाएय धूमाएय तमाएय अहेसत्तमाएय होज्जा । अथवा रत्नप्रभायें शर्कराप्रभाये वालुकप्रभायें धूमप्रभायें तमायें नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें ऊपजे । अहवा रयणाएय सक्कराएय पंकाएय धूमाएय तमाएय अहेसत्तमाए होज्जा ५ । अथवा रत्नप्रभायें शर्कराप्रभाये पंकप्रभाये धूमप्रभानेविषे तमानेविषे नीचे सातमी नर्कपृथिवीयें ऊपजे ५ । अहवा रयणाएय वालुयाएय जाव अहेसत्तमाएय होज्जा ६ । अथवा रत्नप्रभाये वालुकाप्रभाये यावत् नीचे सातमी नर्कपृथिवीये ऊपजे ए छ संयोगी भांगा ६ । अहवा रयणाएय सक्कराएय जाव अहेसत्तमाए होज्जा १ ६४ । अथवा रत्नप्रभाये शर्कराप्रभाये यावत्

॥ मूल ॥

जाव रयणप्पभापुढविणेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे । तिरिक्खजोणियपवेसणएणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते, ? गंगेया ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए । एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पवेसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा । जाव पंचिंदिएसु होज्जा ? गंगेया ! एगिंदिएसुवा होज्जा, जाव पंचिंदिएसुवा होज्जा ५ । दो भंते ! तिरिक्ख

अनुवाद

(प्रभृति) याव द्रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिकप्रवेशनको ऽसंख्येयगुणः । तिर्यग्योनिकप्रवेशनको भदन्त ! कतिविधः प्रज्ञप्तः ? गांगेय ! पंचविधः प्रज्ञप्तः तद्यथा–एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनको याव त्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकः ॥ एको भदन्त ! तिर्यग्योनिक स्तिर्यग्योनिकप्रवेशनकेन प्रविशन् किं मेकेन्द्रियेषु भवे द्याव त्पञ्चेन्द्रियेषु भवेत् ? गांगेय ! एकेन्द्रियेषुवा भवे द्यावत्पञ्चेन्द्रियेषुवा भवेत् ५ । द्वौ भदन्त ! तिर्यग्यो

॥ भाषा ॥

पन्ने । तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर गंगेया पंचविहे प० त । हेगांगेय ! पंचविध कह्यो ते कहेछे–एगिंदिय तिरिक्खजोणिय पवेसणए जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय पवेसणए । एकेंद्री तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक इम यावत् पंचेंद्री तिर्यंचयोनिक प्रवेशनक ५ इम इहा एकेंद्रीयकी मांडी पचेंद्रीपर्यन्त पचभेदे तिर्यंचयोनिक प्रवेश कह्यो । एगे भंते तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणिय पवेसणएणं पवेसमाणे । येक हेभगवन् ! तिर्यंचयोनिक तिर्यंचयोनिकप्रवेशनेकरी प्रवेशन करतांथकां । कि एगिंदिएसुहोज्जा जाव पंचिंदिएसुहोज्जा । स्यूं येकेंद्रीनेविषे ऊपजे अथवा बेइन्द्रीनेविषे ऊपजे इम यावत् अथवा पचेंद्रीनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया एगिंदिएसुवाहोज्जा जाव पंचिंदिएसुवाहोज्जा ५ । हेगांगेय । येक तिर्यंचयोनिक येकेंद्रियनेविषे ऊपजे इम यावत् पचेंद्रियनेविषे ऊपजे इहा येक तिर्यंचयोनिक येकेंद्रियनेविषे ऊपजे इसो कह्यु तिहा यद्यपि येकेंद्रियनेविषे येक किवारेई ऊपजतो न लाभीये अनन्तजीव तिहा प्रतिसमयें उपत्तिथकी तो पणि देवादिकथी जीवलोने जे इहा ऊपजे तेहनी अपेक्षाये प्रवेशन कहियेले विजातीय थकी आवीने विजातीयनेविषे प्रवेशन करे ऊपजे ते प्रवेशन कहिये अने सजातीय तो सजातीयनेविषे पैठो होज तो स्यो तिहा प्रवेशन

॥ टीका ॥

मसङ्ख्यातगुणां तद्गामिना मसङ्ख्यातगुणत्वा देव मुक्तत्वापि' अथ तिर्यग्योनिकप्रवेशनकप्ररूपणायाह ॥ तिरिक्खेत्यादि ॥ इहैक स्तिर्यग्योनिक एके न्द्रियेषु वा भवे दित्युक्तं तत्र यद्य प्येकेन्द्रिये ष्वेक कदाचि दुत्पद्यमानो लभ्यते ऽनन्ताना मेव तत्र प्रतिसमय मुत्पत्ते स्तथापि देवादिभ्य उ द्धृत्य य स्तत्रोत्पद्यते तदपेक्षयैकोपि लभ्यते एतदेवच प्रवेशनक मुच्यते य द्विजातीयेभ्य आगत्य विजातीयेषु प्रविशति सजातीयस्तु सजातीयेषु प्रविष्ट एवेति किंतत्र प्रवेशनक मिति तत्रैकस्य क्रमेण एतानेव सूचयता ॥ अहवा एगे एगिंदिएसु ॥ इत्यायुक्त, अथ सर्वेषा मप्यादीना मस

॥ मूल ॥

जोणियपुच्छा गंगेया ! एगिंदिएसुवा होज्जा , जाव पंचिंदिएसुवा होज्जा ५। अहवा एगे एगिंदिएसु एगे बेइंदिएसु होज्जा। एवं जहा णेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणएवि भाणियव्वे जाव असंखेज्जा। उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिय पुच्छा गंगेया ! सव्वेवि ताव एगिंदिएसु होज्जा। अहवा एगिंदिएसु य बेइं

॥ अनुवाद ॥

निकों पृच्छा गाङ्गेय ! एकेन्द्रियेषुवा भवे द्यावत् पञ्चेन्द्रियेषुवा भवेत् ५। अथवैक एकेन्द्रियेषु एको द्वीन्द्रियेषु भवे देवं यथा नैरयिकप्रवेशन कं तथा तिर्यग्योनिकप्रवेशनकमपि भणितव्यं यावदसङ्ख्या । उत्कृष्टा भदन्त ! तिर्यग्योनिका. पृच्छा गाङ्गेय ! सर्वेपि ताव देकेन्द्रियेषु भ

॥ भाषा ॥

इस एकेन्द्रियादिक पांचपदनेविषे अपनाने पाय विकल्प हुवे। टीका। तिरिक्खजोणियपुच्छा। हे भगवन् ! तिर्यचयोनिक इत्यादि प्रश्न उत्तर। गांगेय! एगिंदिएसुवा होज्जा। हे गांगेय! दोमें एकेन्द्रीनेविषे उपजे। जाव पंचिंदिएसुवा होज्जा ५। इस यावत् दोमें पंचेन्द्रियनेविषे उपजे इस दोवना येक संयोगीभांगा ५ थया, हिवे द्विकसंयोगी कहेछे—अहवा एगे एगिंदिएसु एगे बेइंदिएसु होज्जा। अथवा येक एकेन्द्रीनेविषे उपजे येक बेइन्द्रीनेविषे उप जे इस द्विकसंयोगीभांगा १० विचारी लेवा। एवं जहा णेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणएवि भाणियव्वे। जिम नारकप्रवेशन कह्यो तिम तिर्यचयोनिक प्रवेशन पणि सर्व कहवो पर तिहां सातपृथ्वीयोनेविषे येकादि उपजाव्या तिर्यचनेविषे तिमहीज पंचस्थानकनेविषे उपजाववा। जाव अ सङ्ख्या उक्कोसाभंते तिरिक्खजोणिय पुच्छा। इस यावत् असङ्ख्याता लगे कहवो इहां अनन्ता येकेन्द्रियनें उपजै पणि सिंघ अनन्त पद नहीं ते प्रवेश

॥ टीका ॥

ख्यातपर्यन्तानां तिर्यग्योनिकानां प्रवेशनक मतिदेशेन दर्शय न्नाह ॥ नारकप्रवेशनकसमान मिदं सर्वं परं तत्र सप्तसु पृथिवी ष्वेकादयो नारका उत्पादिता तिर्यंच स्तु तथैव पञ्च स्थानेषु उत्पादनीया ततो विकल्पनानात्व भवति तच्चाभियुक्ते पूर्वोक्तन्यायेन स्वयमवगतव्य मिति, इह चा नन्ताना मेकेन्द्रियाणा मुत्पादेपि अनन्तपद नास्ति प्रवेशनकस्यो त्तलक्षणस्या सख्यातानामेव भावादिति ॥ सव्वेवितावएगिंदिएसुहोज्जत्ति ॥ एकेन्द्रियाणा मतिबहूना मनुसमय मुत्पादात् ॥ दुयासयोगोइत्यादि ॥ इह प्रक्रमे द्विकसयोग श्चतुर्द्धा त्रिकसयोग· षोढा चतुष्कसयोग श्चतुर्द्धा प ञ्चकसयोग स्त्वेकएवेति ॥ सव्वत्थोवेपचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणएत्ति ॥ पञ्चेन्द्रियजीवाना स्तोकत्वा दिति, तत श्चतुरिन्द्रियादिप्रवेशनकानि

॥ मूल ॥

दिएसुय होज्जा । एव जहा णेरइया संचारिया तहा तिरिक्खजोणियावि सचारेयव्वा एगिंदिया अमुयंते सु दुयसजोगो तियसंजोगो चउक्कसंजोगो पंचकसजोगोय भाणियव्वो जाव अहवा एगिंदिएसुय वेइंदि

अनुवाद

वेषु एवंवे केन्द्रियेषुच द्वीन्द्रियेषुच भवेयु·, एव यथा नरयिका सञ्चारिता स्तथा तिर्यग्योनिका अपि सञ्चारयितव्या एकेन्द्रिये ष्वमुञ्चत्सु द्विकसयोग स्त्रिकसयोग श्चतुष्कसयोग पञ्चकसयोगश्च भणितव्यो याव दथवै केन्द्रियेषुच द्वीन्द्रियेषुच याव त्पचेन्द्रियेषुच भवेयु । एतस्य भ

॥ भाषा ॥

न उक्त लक्षणने असंख्यातानोज भावछे तेमाटे उत्कृष्टा हेभगवन् । तिर्यंचयोनिक इत्यादिक प्रश्न उत्तर । गंगेया सव्वेवि ताव एगिंदिएसुहोज्जा । हेगा गेय । सगलाई पहिला एकेंद्रियनेविषे ऊपजे । अहवा एगिंदिएसुय वेइंदिएसुय होज्जा । अथवा येकेंद्रियनेविषे बेइन्द्रियनेविषे ऊपजे । एव जहा णेर इया सचारिया । इम जिम नारको सचारिया गण्या । तहा तिरिक्खजोणियावि सचारियव्वा । तिम तिर्यचयोनिक पणि सचारवा गणवा । एगिंदिया अमुय तेसु दुयसजोगो तियसजोगो चउक्कसजोगो पचसजोगोय भाणियव्वो । एकेंद्रिय अणमूकते छते इहा प्रकरणनेविषे द्विकसयोग चारप्रकारे त्रि कसयोग छ प्रकारे चतुष्कसयोग चारप्रकारे पचकसयोग येकहीज इम उपयोग देई भागानी विचारणा करवी । जाव अहवा एगिंदिएसुय बेइंदिएसुय जाव पचिंदिएसुय होज्जा । यावत् अथवा एकेंद्रियने बेइन्द्रिनेविषे यावत् पचेंद्रीनेविषे ऊपजे । एयस्सणभते एगिंदिय तिरिक्खजोणिय पवेसणगस्स जा

परस्परेण विशेषा धिकानीति, मनुष्यप्रवेशनकं देवप्रवेशनकंच सुगम तथापि किंचि लिख्यते मनुष्या स्थानद्वये संमूर्छिमगर्भजलक्षणे प्रविशतीति द्वयमाश्रित्य एकादिसंख्यातान्तेषु पूर्ववं द्विकल्पा कार्या स्तत्रचा तिदेशयाना मन्तिम संख्यातपद मिति तद्विकल्पान् साक्षा दृर्शय न्नाह ॥ स खेज्जाइत्यादि ॥ इह द्विकयोगे पूर्ववं देकादश विकल्पा असंख्यातपदेषु पूर्वं द्वादशविकल्पा उक्ता इह पुन रेकादशैव यतो यदि संमूर्छिमेषु गर्भ

एसुय जाव पचिंदिएसुय होज्जा । एयस्सणं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्सय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे पचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए चउरिंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए तेइंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए बेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए एगिंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए। मणु

दन्त ! एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकस्य याव त्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकस्यच कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गांगेय । सर्व स्तोक पचेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकं चतुरिन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनको विशेषाधिक, त्रीन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनको विशेषाधिको द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकोविशेषाधिक । एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकप्रवेशनकोविशेषाधिक । मनुष्यप्रवेशनको भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्तो ?

व पचिदियतिरिक्खजोणिय पवेसणगस्सय कयरे २ जाव विसेसाहियावा । एहनेविषे हेभगवन् । एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रवेशनने यावत् पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रवेशनने माहोमाहि कुणकुणथकी थोडाएवे घणाछुवे बरोबरछुवे विशेषाधिक छुवे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया सव्वत्थोवे पचिंदिय तिरिक्खजोणिय पवेसणए चउरिंदिय तिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए । हेगांगेय । सर्वस्तोक पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक प्रवेशनकछे पचेंद्रिय जी ।ने स्तोकपणाथकी तेहथकी चउरिंद्री तिर्यंचयोनिक प्रवेशन विशेषाधिक छे सर्व माहोमाहि विशेषाधिक कहेवो । तेइंदिय तिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए । तेरिन्द्री तिर्यंचयोनिक प्रवेशन विशेषाधिक तेहथी । बेइंदिय तिरिक्खजोणिय पवेसणए विसेसाहिए । बेइन्द्री तिर्यंचयोनिक प्रवेशन विशेषाधिक

॥ टीका ॥ जेषु चासंख्यातत्व स्या त्तदा द्वादशोऽपि विकल्पो भवे न्नचैव मिह गर्भजमनुष्याणां स्वरूपतो प्यसङ्ख्यातानां मभावेन तत्र प्रवेशनके असंख्यातास्त्रवा दतो सङ्ख्यातपदे विकल्पैकादश दर्शनायाह ॥ असखेज्जाइत्यादि ॥ उक्कोसा भंते ! इत्यादि ॥ सव्वेवि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जत्ति ॥ समूर्च्छि

॥ मूल ॥ स्सपवेसणएणं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणएय गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणएय । एगे भंते ! मणुस्सपवेसणएणं पवेसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ? गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसुवा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसुवा होज्जा २ दो भंते ! मणुस्सा पुच्छा गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसुवा होज्जा । गब्भवक्कंतियमणुस्सेसुवा होज्जा, अहवा

अनुवाद गांगेय ! द्विविध प्रज्ञप्त, तद्यथा-समूर्च्छिममनुष्यप्रवेशनकश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रवेशनकश्च । एको भदन्त ! मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकेन प्रविशन् किं समूर्च्छिममनुष्येषु भवेत् गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु भवेत् ? गांगेय ! समूर्च्छिममनुष्येषुवा भवेत् गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुवाभवेत् २। द्वौ भदन्त ! मनुष्यौ पृच्छा गांगेय ! समूर्च्छिममनुष्येषु वा भवेतां गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुवाभवेतां, अथवैक: समूर्च्छिममनुष्येषु भवे देको ग

॥ भाषा ॥ तइथी । एगिंदिय तिरिक्खजोणियप्पवेसणए विसेसाहिए । एकेन्द्रो तिर्यचयोनिक प्रवेशन विशेषाधिक कहवो । मणुस्सपवेसणएणंभंते कइविहे प० । मनुष्य प्रवेशन वली देवप्रवेशनक सुगमछेजके तथापि काइंयेक लिखीयेछे मनुष्यने स्थानक दोयनेविषे समूर्छिम गर्भज तेहनेविषे प्रवेश करे इम दोय आश्रीने सख्यातानेविषे पूछिलीपरे विकल्प कहवा मनुष्यप्रवेशन हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो । गंगेया दुविहे पन्नत्ते त० । हेगांगेय ! दोयभेद कह्या ते कहेछे । समुच्छिम मणुस्स पवेसणएय । सम्मूर्च्छिम मनुष्य प्रवेशन १। गब्भवक्कंतिय मणुस्स पवेसणएय । गर्भजमनुष्य प्रवेशन ए बीजोभेद २। एगे भंते मणूसे मणुस्सपवेसणएण पवेसमाणे किं समुच्छिम मणुस्सेसुहोज्जा । येक हेभगवन् ! मनुष्य मनुष्यगतिनेविषे प्रवेशने करी प्रवेशन करतायका स्यूं सम्मूर्च्छिममनुष्यनेविषे ऊपजे । गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुहोज्जा । अथवा गर्भजमनुष्यनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया समुच्छिम मणुस्सेसुवाहोज्जा । हेगांगेय ! येकजो

॥ टीका ॥ मानामसङ्ख्यातानां भावेन प्रविशतां मध्यसङ्ख्यातानां सम्भवः, ततश्च मनुष्यप्रवेशनकं प्रत्युत्कृष्टपदिनं स्तेषु सर्वेऽपि भवन्तीति, अतएव सम्मूर्च्छिममनुष्य

॥ मूल ॥ एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा णेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणएवि भाणियव्वे एवं जाव दस । संखेज्जाइ भंते ! मणुस्सपुच्छा गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसुवा होज्जा । गब्भवक्कंतियमणुस्सेसुवा होज्जा अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसुसंखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो समुच्छिम० संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एक्केक्को उसारिएसु जाव

॥ अनुवाद ॥ गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु भवेत् एवं एतेन क्रमेण यथा नैरयिकप्रवेशनकं तथा मनुष्यप्रवेशनकोपि भणितव्यं यावद्दश । संख्येया भदन्त ! मनुष्याः पृच्छा गांगेय ! सम्मूर्च्छिममनुष्येषुवा भवेयुः गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुवा भवेयुः, अथवैकः सम्मूर्च्छिममनुष्येषु संख्येया गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुवा भवेयुः, अथवा द्वौ सम्मूर्च्छिममनुष्येषु संख्येया गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु भवेयुः एवं एकैकं उत्सारितेषु यावत् दशवा संख्येयाः सम्मूर्च्छिममनुष्ये

॥ भाषा ॥ व सम्मूर्च्छिमनेविषेज उपजे । गरभवक्रांतिय मणुस्सेसुवा होज्जा । अथवा गर्भज मनुष्यनेविषेज उपजे । दोमते मणुष्या पुच्छा । हांव हेभगवन् । मनुष्य ए त्यादि प्रश्न उत्तर । गंगेया समुच्छिम मणुस्सेसुवा होज्जा । हेगांगेय । दोनों सम्मूर्च्छिम मनुष्यनेविषे उपजे अथवा । गब्भवक्रांतिय मणुस्सेसुवा होज्जा । दोनों गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे इम एकसंयोगी भांगा २ थया । अथवा एगे समुच्छिम मणुस्सेसु होज्जा । अथवा वेकजोग सम्मूर्च्छिम मनुष्यनेविषे उपजे । एगे गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा । वेकजोग गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे इम भांगो । एवं एएणं कमेणं जहा णेरइय पवेसणए तहा मणुस्सपवेसणएवि भाणियव्वे । इम एगो अनुक्रम करी जिम नारकी प्रवेशन कह्यो तिम मनुष्यप्रवेशन पणि आणवो । एवंजाव दस । इम यावत् दश लगे कहवो । संखेज्जाइ भंते मणुस्सपुच्छा । संख्याता हेभगवन् । मनुष्य इत्यादि प्रश्न उत्तर । गंगेया समुच्छिममणुस्सेसुवा होज्जा । हे गांगेय । सम्मूर्च्छिम मनुष्यनेविषे उपजे । गब्भवक्क तिय मणुस्सेसुवा होज्जा । गर्भज मनुष्यनेविषे उपजे । अहवा एगे समुच्छिम मणुस्स संखेज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा । अथवा येक सम्मूर्च्छिम मनुष्य

अहवा संखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ११। असंखेज्जाइं भंते ! मणुस्सा पुच्छा गंगेया ! सव्वेवि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा। अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दोगब्भवक्कंतियमणुस्सेसु एवं जाव असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसुय होज्जा ११। उक्कोसा भंते ! मणुस्सा पुच्छा गंगेया !

षु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुवा भवेयुः ११ ॥ असंख्येया भदन्त ! मनुष्या पृच्छा। सर्वेपि ताव त्सम्मूर्च्छिममनुष्येषु भवेयुः रथवा ह्यसंख्येया स मूर्च्छिममनुष्येषु एको गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु भवे दथवा असंख्येयाः सम्मूर्च्छिममनुष्येषु द्वौ गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु एव याव दसंख्येया सम्मूर्च्छिममनुष्येषु संख्येया गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषुच भवेयुः ११ ॥ उत्कर्षा भदन्त ! मनुष्याः पृच्छा गांगेय ! सर्वेपि तावत् सम्मूर्च्छिममनुष्येषु भ

नेविषे गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे। अहवा दो समुच्छिम मणुस्सेसु होज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा। अथवा दोय समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे संख्याता गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे। एव एकैक उसारिएम्। इम येकेको उसारितकरवो यथारवो। जाव अहवा संखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु गब्भवक्कंतियमणुस्सेसुहोज्जा ११। यावत् अथवा संख्याता समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे संख्याता गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे ११। असंखेज्जाइं भंते मणुस्सा पुच्छा। असंख्याता हेभगवन्। मनुष्य इत्यादि प्रश्न उत्तर। गंगेया सव्वेवि ताव समुच्छिम मणुस्सेसु होज्जा। हेगांगेय ! सगलाई पहिला समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे उपजे। अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु। अथवा असंख्याता समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे। एगे गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु होज्जा। एकजीव गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे। अहवा असंखेज्जासमुच्छिम मणुस्सेसु। अथवा असंख्याता समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे उपजे। दो गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसु। दोय गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे। एव जाव असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु। इम यावत् असंख्याता समूर्च्छिम मनुष्यनेविषे। संखेज्जा गब्भवक्कंतिय मणुस्सेसुय होज्जा ११। संख्याता गर्भजमनुष्यनेविषे उपजे ११। उक्कोसाभंते मणुस्सा पुच्छा। उत्कृष्ट हेभगवन् मनुष्य इत्यादि प्रश्ननो उत्तर। गांगेया सव्वेवि ताव समुच्छिम मणुस्सेसुहोज्जा। हेगांगेय

॥ मूल ॥

सव्वेवि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा १। एयस्सणं भंते ! समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए समुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे। देवपवेसणएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव

॥ अनुवाद ॥

वेषु रथवा सम्मूर्छिममनुष्येषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषु च भवेयु १। एतस्य भदन्त ! सम्मूर्छिममनुष्यप्रवेशनकस्य गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रवेशनकस्य च कतरं कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गांगेय ! सर्वस्तोको गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रवेशनक. सम्मूर्छिममनुष्यप्रवेशनको ऽसंख्येयगुण। देवप्रवेशनको भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्तो ? गांगेय ! चतुर्विधः प्रज्ञप्त तद्यथा- भवनवासिदेवप्रवेशनको याव द्वैमानिकदेवप्रवेशनक

॥ भाषा ॥

सगलाई पण पहिला समूर्छिम मनुष्यनेविषे ऊपजे समूर्छिम मनुष्य पण असंख्याताने भांगे प्रवेशन करताने पण असंख्याता सम्भवछे तिवारे मनुष्यप्रवेशन प्रते उत्कृष्टना धणी तेहनेविषे सगलाई हुवे एतलामाटे संमूर्छिम मनुष्यने इतरनी अपेक्षाये असंख्यातगुणा जाणवा। अहवा समुच्छिममणुस्सेसु गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा १। अथवा संमूर्छिम मनुष्यनेविषे गर्भजमनुष्यनेविषे ऊपजे। एयस्सणंभंते समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स। एहने हेभगवन् समूर्छिम मनुष्य प्रवेशनने। गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स कयरे २ जाव विसेसाहियावा। गर्भजमनुष्य प्रवेशनकने माहोमांहि कुण २ थका यावत विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतिय मणुस्सपवेसणए। हे गांगेय सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्यप्रवेशन संख्याता होजछे तेमाटे। समुच्छिममणुस्सपवेसण० असंखेज्जगुणे। समूर्छिम मनुष्य प्रवेशन असंख्यातगुणा असंख्यातामाटे ए मनुष्यप्रवेशन कह्या, हिवे देवप्रवेशन कहेछे—देवपवेसणएणं भंते कइविहे प०। देवप्रवेशन हेभगवन् केतलेभेदे कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया चउव्विहे प० तं०। हेगांगेय चारभेदे कह्या ते कहछे—भवणवासि देवपवेसणए जाव वेमाणिय देवपवेसणए। भवनपती देवप्रवेशनक १ वानव्यन्तर देवप्रवेशनक २ ज्योतिषी देवप्रवेशनक ३ वेमा

॥ टीका ॥ प्रवेशनक मितरापेक्षया ऽसङ्ख्यातगुण मवगंतव्यमिति, देवप्रवेशनके ॥ सव्वेवि ताव जोइसिएसु होज्जत्ति ॥ ज्योतिष्कगामिनो बहवइति, तेषूत्कृष्टपदिनो

॥ मूल ॥ वेमाणियदेवपवेसणए। एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा, वाणमंतरेसु होज्जा जोइसिएसु होज्जा वेमाणिएसु होज्जा ? गंगेया ! भवणवासीसुवा होज्जा वाणमंतरेसुवा होज्जा जोइसिएसुवा होज्जा वेमाणिएसुवा होज्जा ४ । दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं पुच्छा गंगेया ! भवणवासीसुवा होज्जा वाणमंतरेसुवा होज्जा जोइसिएसुवा होज्जा वेमाणिएसुवा होज्जा, अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहेव देवपवेसणएवि भाणियव्वे जाव असंखेज्जाइं

अनुवाद ४ ॥ एको भदन्त ! देवो देवप्रवेशनकेन प्रविशन् किं भवनवासीषु भवेत् वानव्यन्तरेषु भवेत् ज्योतिष्केषु भवे द्वैमानिकेषु भवेत् ? गाङ्गेय ! भवनवासीषुवा भवेत् वानव्यन्तरेषुवा भवेत् ज्योतिष्केषुवा भवे द्वैमानिकेषुवा भवेत् ४ द्वौ भदन्त ! देवौ देवप्रवेशनकेन पृच्छा गाङ्गेय ! भवनवासीषुवा भवेतां वानव्यन्तरेषुवा भवेतां ज्योतिष्केषुवा भवेतां वैमानिकेषुवा भवेतां ४ । अथवै को भवनवासीषु एको वानव्यन्तरेषु भवेत्

॥ भाषा ॥ निक देवप्रवेशनक ४ । एगे भंते देवे देवपवेसणएणं पविसमाणेकिं भवणवासीसु होज्जा । देवप्रवेशननेविषे प्रवेशकरता थका स्यूं भवनपतीनेविषे उपजे । वाणमंतरेसु होज्जा जोइसिएसु होज्जा वेमाणिएसु होज्जा । अथवा वानव्यन्तरनेविषे उपजे ज्योतिषीनेविषे उपजे वैमानिकनेविषे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया भवणवासीसुवा होज्जा । हेगांगेय । एकजीव भवनपतीनेविषे उपजे । वाणमंतरेसुवाहोज्जा जोइसिएसुवाहोज्जा वेमाणिएसुवाहोज्जा ४ । अथवा वानव्यन्तरनेविषे उपजे २ अथवा ज्योतिषीनेविषे उपजे ३ अथवावैमानिकनेविषे उपजे एव भांगा ४ । दोभंते देवा देवपवेसणएणं पुच्छा । दोय हेभगवन् ! देव देवगतिनेविषे प्रवेशन इत्यादि प्रश्न उत्तर । गंगेया भवणवासीसुवाहोज्जा । हेगांगेय । दोनो भवनपतीनेविषे उपजे । वाणमंतरेसुवाहोज्जा जोइसिएसुवाहोज्जा वेमाणिएसुवाहोज्जा ४ । अथवा दोनो वाणव्यन्तर भवणवासीनेविषे उपजे अथवा दोनो ज्योतिषीनेविषे उपजे अथवा दोनो वैमानिकनेविषे

उक्कोसा भंते ! पुच्छा गंगेया ! सव्वेवि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिएसुय भवणवासीसुय होज्जा, अहवा जोइसियवाणमंतरेसुय होज्जा। अहवा जोइसियवेमाणिएसुय होज्जा अहवा जोइसिएसुय भवणवासीसुय वाणमंतरेसुय होज्जा अहवा जोइसिएसुय भवणवासिएसुय वेमाणिएसुय होज्जा अहवा जोइसिएसुय वाणमंतरेसुय वेमाणिएसुय होज्जा अहवा जोइसिएसुय भवणवासीसुय वाणमंतरेसुय

एवं यथा तिर्यग्योनिकप्रवेशनक स्तथैव देवप्रवेशनकोपि भणितव्यो यावदसङ्ख्येया। उत्कर्षा भदन्त ! पृच्छा गांगेय। सर्वेपि तावज्ज्योतिष्केषु भवेयुः, अथवा ज्योतिष्केषुच भवनवासीषुच भवेयुः, अथवा ज्योतिष्केषुच वानव्यन्तरेषुच भवेयुः, अथवा ज्योतिष्केषुच वैमानिकेषुच भवेयुः, अथवा ज्योतिष्केषुच भवनवासीषुच वानव्यन्तरेषुच भवेयुः, अथवा ज्योतिष्केषुच भवनवासीषुच वैमानिकेषुच भवेयुः, अथवा ज्योतिष्के

उपजै एव भागा ४। अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा। अथवा येक भवनपतीनेविषै येक वानव्यंतरनेविषै उपजै। एव जहा तिरिक्खजोणिय पवेसणए। इम जिम तिर्यंचयोनिकनेविषै प्रवेशन कह्यो। तहेव देवपवेसणएवि भाणियव्वे। तिमहीज देवप्रवेशन कह्यो। जाव असखेज्जइ उक्कोसा भंते पुच्छा। यावत् असख्याता लगे कहवो उत्कृष्ट हेभगवन्। इत्यादि प्रश्न उत्तर। गंगेया सव्वेवि ताव जोइसिएसु होज्जा। हेगांगेय सगलाई पहिला ज्योतिषीनेविषे उपजे ज्योतिष्कगामी घणा तेमाटे उत्कृष्ट पदना घणो देवप्रवेशनवन्त सगलाई हुवे। अहवा जोइसिएसुय भवणवासीसुय होज्जा। अथवा ज्योतिषीनेविषै भवनपतीनेविषै ऊपजै। अहवा जोइसिय वाणमंतरेसुय होज्जा। अथवा ज्योतिषीनेविषै वानव्यंतरनेविषै ऊपजै। अहवा जोइसिय वेमाणिएसुय होज्जा। अथवा ज्योतिषीनेविषै वैमानिकनेविषै ऊपजै २ ए द्विकसंयोगीभागा, हिवे त्रिकसंयोगी भागा कहेछे—अहवा जोइसिएसुय भवणवासीसुय वाणमंतरेसुय होज्जा। अथवा ज्योतिषीनेविषै भवनपतीनेविषै ऊपजै वानव्यन्तरनेविषै ऊपजै। अहवा जोइसिएसुय भवणवासिएसुय वेमाणिएसुय होज्जा। अथवा ज्योतिषीनेविषै भवनपतीनेविषै वैमानिकनेविषै ऊपजै। अहवा जोइसिएसुय वाणमंतरेसुय वेमाणिएसुय होज्जा।

॥ टीका ॥

देवप्रवेशनकवन्त' सर्वेऽपि भवन्तीति ॥ सव्वत्थोवे वेमाणियदेवप्पवेसणएत्ति ॥ तद्गामिना तत्स्थानानां चाल्पत्वा दिति, अथ नारकादिप्रवेशनस्यैवा ल्पत्वादिनिरूपयन्नाह ॥ एयस्सणं मित्यादि॥ तत्र सर्वस्तोकं मनुष्यप्रवेशनकं मनुष्यक्षेत्रएव तस्य भावा त्तस्यच स्तोकत्वा नैरयिकप्रवेशनकं त्वसंख्यातगुणं,

॥ मूल ॥

वेमाणिएसुय होज्जा । एयस्सणं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स वाणमंतरदेवपवेसणगस्स जोइसियदेव पवेसणगस्स वेमाणियदेवपवेसणगस्सय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणि यदेवपवेसणए भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे जोइसियदेवपवे

॥ अनुवाद ॥

षुच वानव्यन्तरेषुच वैमानिकेषुच भवेयु , अथवा ज्योतिष्केषुच भवनवासीषुच वानव्यन्तरेषुच वैमानिकेषुच भवेयु । एतस्य भदन्त ! भवनवा सिदेवप्रवेशनकस्य वानव्यन्तरदेवप्रवेशनकस्य ज्योतिष्कदेवप्रवेशनकस्य वैमानिकदेवप्रवेशनकस्य कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गाङ्गे य ! सर्वस्तोको वैमानिकदेवप्रवेशनको भवनवासिदेवप्रवेशनको ऽसङ्ख्येयगुणो, वानव्यन्तरदेवप्रवेशनको ऽसङ्ख्येयगुणो' ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक'

॥ भाषा ॥

अथवा ज्योतिषीनेविषे वानव्यन्तरनेविषे वैमानिकनेविषे ऊपजे ३ ए त्रिकसंयोगी भांगा । अहवा जोइसिएसुय भवणवासिएसुय वाणमंतरेसुय वेमाणि एसुय होज्जा । अथवा ज्योतिषीनेविषे भवनपतीनेविषे वानव्यन्तरनेविषे वैमानिकनेविषे ऊपजे ए चउकसंयोगीनो भांगो । एयस्सणंभंते भवणवासि देव पवेसणगस्स । एहने हेभगवन् भवनपतीदेव प्रवेशनने । वाणमंतर देवपवेसणगस्स जोइसिय देवपवेसणगस्स । वानव्यन्तर देवप्रवेशनने ज्योतिषी देवप्रवे शनने । वेमाणिय देवपवेसणगस्सय कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा । वैमानिकदेव प्रवेशनने माहोमाहि कुण कुण थकी यावत् विशेषाधिक हुवे एत लालगे कहवो । गंगेया सव्वत्थोवे वेमाणिय देवपवेसणए भवणवासी देवपवेसणए असंखेज्जगुणे । हेगांगेय सर्वथीथोडो वैमानिक देवप्रवेशनक तेहने विषे जावणहार तथा तेहना स्थानकना अल्पपणा थकी तेहथी भवनपतीदेव प्रवेशन असंख्यातगुणा स्थानकना अधिकारथकी । वाणमंतर देवपवेसण ए असंखेज्जगुणे । तेहथी वानव्यन्तर देवप्रवेशन असंख्यातगुणो स्थानकना अधिकपणा थकी तेहथी । जोइसिय देव पवेसणए संखेज्जगुणे। ज्योतिषी देव

॥ टीका ॥ तद्गामिना मसङ्ख्यातगुणत्वा देव मुत्तरत्रापीति' अनन्तर प्रवेशनक मुक्त तत्पुनरुत्पादोद्वर्त्तनारूप मिति, नारकादीना मुत्पाद मुद्वर्त्तनञ्च सान्तरनिरन्तरतयानिरूपयन्नाह ॥ सतरंभते। इत्यादि ॥ अथ नारकादीना मुत्पादादं सान्तरादित्व प्रवेशनका त्पूर्व निरूपित मेवेति, किं पुन स्तन्निरूप्यत इति,

॥ मूल ॥ सगाए सखेज्जगुणे । एयरसणं भंते ! णेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स कयरे कयरे जाव विसेसाहियावा ? गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए णेरइयपवेसणए

अनुवाद सख्येयगुणा. ॥ एतस्य भदन्त ! नैरयिकप्रवेशनकस्य तिर्यग्योनिकप्रवेशनकस्य मनुष्यप्रवेशनकस्य देवप्रवेशनकस्य कतरे कतरेभ्यो याव द्विशेषाधिकावा ? गाङ्गेय ! सर्वस्तोको मनुष्यप्रवेशनको नैरयिकप्रवेशनको ऽसंख्येयगुणो, देवप्रवेशनको ऽसख्येयगुणा स्तिर्यग्योनिकप्रवेशनको ऽसख्ये

॥ भाषा ॥ प्रवेशन सख्यातगुणो स्थानकना अधिकपणा यको। इहा तिर्यचप्रवेशनक पचभेदे तथा मनुष्यप्रवेशनक बेहुभेदे तथा देवप्रवेशनक चिहुभेदे एह सर्व अल्प भणी सुगमछेजके तेमाटें गणके विचारी लेवा तथा देवप्रवेशनक चार भवनपती आदिदेई अथा तेहनेविषे विशेषछे ते देखाडेछे—भवनपती देव प्रवेशनक दशभेदछे १ वानव्यतर देवप्रवेशनक आठभेदछे २ ज्योतिषी देवप्रवेशनक पचभेदछे ३ वैमानिक देवप्रवेशनक बेहुभेदछे कल्पवासी देव तथा कल्पातीत भेदेकरी तेहमाहि कल्पवासी देवप्रवेशनक सोधर्मादिकें करी बारभेदछे तथा कल्पातीत देवप्रवेशनक पणि बेहुभेदछे, ग्रैवेयक १ अनुत्तर विमान भेदेकरी तिम ग्रैवेयक कल्पातीत देवप्रवेशनक पणि नवे भेदछे तथा अनुत्तरकल्पातीत देवप्रवेशनक पचभेदछे ए सर्वनेविषे कल्पवासी देवप्रवेशनकभेद अविकारछे तेमाटे तेह आश्रयीने विशेष लिखीयेछे, हिवे नारकादि प्रवेशननुं अल्प बहुत्व कहछे—एयस्सणंभंते णेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स। एहने हेभगवन् नारकीप्रवेशननें १ तिर्यचयोनिक प्रवेशननें २। मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स कयरे २ जाव विसेसाहियावा। मनुष्य प्रवेशननें देवप्रवेशननें मांहोमाहि कुण कुणथकी यावत् विशेषाधिक एवे प्रतिप्रश्न उत्तर। गंगेया सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए णेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे देवपवेसणए असखेज्जगुणे। हेगांगेय सर्वथी थोडो मनुष्यप्रवेशन मनुष्यक्षेत्रनेविषेज तेहना भावथी ते थोडोछे तेहथी नारकप्रवेशन असख्यात

अथोच्यते पूर्वं नारकादीनां प्रत्येक मुत्पादस्य सान्तरत्वादिनिरूपितं ततश्च तथैवोद्वर्त्तनाया इदंतु पुन र्नारकादिसर्वजीवभेदानां समुदायतः समु

॥ मूल ॥

असंखेज्जगुणे देवपवेसणए असंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे । संतरं भंते ! णेरइया उववज्जंति निरंतरं णेरइया उववज्जंति संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति, संतरं णेरइयाउव्वट्टंति निरंतरं णेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं

॥ भाषा ॥

यगुणः । सान्तरं भदन्त ! नैरयिका उत्पद्यन्ते निरन्तरं नैरयिका उत्पद्यन्ते, सान्तरं असुरकुमारा उत्पद्यन्ते यावत्सान्तरं वैमानिका उत्पद्यन्ते निरंतरं वैमानिका उत्पद्यन्ते । सान्तरं नैरयिका उद्वर्त्तन्ते निरन्तरं नैरयिका उद्वर्त्तन्ते यावत्सान्तरं वानव्यन्तरा उद्वर्त्तन्ते निरन्तरं वान

॥ अनुवाद ॥

गुणो तिहां भाखोना असंख्यातगुणामाटे २ तेहथी देवप्रवेशन असंख्यातगुणो तेह पणाछे तेमाटे ३ तेहथकी । तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे तिर्यंचयोनिक प्रवेशन असंख्यातगुणो विजातीयने प्रवेशन कह्यो ते असंख्याता जपजे तेमाटे ४ अनन्तरे प्रवेशन कह्यो ते वली उत्पाद उद्वर्त्तना रूप छे गत नारकादिकने उत्पाद उद्वर्त्तना प्रते सान्तर निरन्तरपणे समुदावे निरूपेछे। संतरं णेरइया उववज्जंति निरंतरं णेरइया उववज्जंति । सान्तर हेभगवन् नारको ऊपजे निरन्तर नारको ऊपजे। संतरं असुरकुमारा उववज्जंति । सांतर असुरकुमार ऊपजे सान्तर कहता अन्तरसहित अथवा । निरंतर असुरकुमारा उववज्जंति । निरन्तर अन्तररहित असुरकुमार ऊपजे। जाव संतरवेमाणिया उववज्जंति । यावत् सान्तर वैमानिक ऊपजे। निरंतर वेमाणिया उववज्जंति । निरन्तर वैमानिक ऊपजे। संतर णेरइया उव्वट्टंति । सान्तर नारको उद्वर्त्तना करे नीकले। निरंतर णेरइया उव्वट्टंति। अथवा निरन्तर नारको नीकले। जाव संतर वाणमंतरा उव्वट्टंति । यावत् सान्तर वानव्यन्तर नीकले। निरंतर वाणमंतरा उव्वट्टंति । निरन्तर वानव्यन्तर नीकले। संतर जोइसिया चयंति निरंतरजोइसिया चयंति । सान्तर ज्योतिषी चवे अथवा निरन्तर ज्योतिषी चवे। संतर वेमाणिया चयंति निरंतर

॥ मूल ॥

जोइसिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! संतरंपि णेरइया उववज्जंति निरंतरंपि णेरइया उववज्जंति जाव संतरंपि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरंपि थणियकुमारा उववज्जंति णो संतरं पुढवीकाइया उववज्जंति निरंतरं पुढवीकाइया उववज्जंति एवं जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा णेरइया जाव संतरंपि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरंपि वेमाणिया उववज्जंति संतरंपि णेरइ

अनुवाद

व्यन्तरा उद्वर्तन्ते, सान्तर ज्योतिष्का च्यवन्ते निरन्तर ज्योतिष्का च्यवन्ते, सान्तर वैमानिका च्यवन्ते निरन्तर वैमानिका च्यवन्ते ? गाङ्गेय ! सान्तरमपि नैरयिका उपपद्यन्ते निरन्तरमपि नैरयिका उपपद्यन्ते यावत् सान्तरमपि स्तनितकुमारा उपपद्यन्ते निरन्तर मपि स्तनितकुमारा उपपद्यन्ते नोसान्तर पृथ्वीकायिका उपपद्यन्ते निरन्तर पृथ्वीकायिका उपपद्यन्ते, एवं यावत् वनस्पतिकायिका शेषा यथा नैरयिका यावत् सान्तरमपि वैमानिका उपपद्यन्ते निरन्तर मपि वैमानिका उपपद्यन्ते, सान्तर मपि नैरयिका उद्वर्तन्ते निरन्तर मपि नैरयिका उद्व

॥ भाषा ॥

वेमाणिया च्यवंति । सान्तर वैमानिक चवे निरन्तर वैमानिक चवे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया संतरंपि णेरइया उववज्जंति निरंतरंपि णेरइया उववज्जंति । हेगांगेय सान्तर पणि नारकी ऊपजे विरहना भावथकी निरन्तर पणि नारकी ऊपजे । जाव संतरंपि थणियकुमारा उववज्जंति । यावत् सान्तर पणि स्तनितकुमार ऊपजे । निरंतरंपि थणियकुमारा उववज्जंति । निरन्तर पणि स्तनितकुमार ऊपजे एतलाने विरहछे तेमाटे । णो संतरं पुढविकाइया उववज्जंति । नहीसान्तर पृथिवीकायिक ऊपजे विरहना अभावथी । निरंतर पुढविकाइया उववज्जंति । निरन्तर पृथिवीकायिक ऊपजे प्रतिसमये असंख्याता ऊपजे तेमाटे । एवं जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा णेरइया । इम यावत् वनस्पतीकायलगे कहवो पणि वनस्पती प्रतिसमये अनन्ता ऊपजे शेष जिम नारकी कह्या तिम कहवा । जाव संतरंपि वेमाणिया उववज्जंति । यावत् सान्तर पणि वैमानिकदेव ऊपजे । निरंतरंपि वेमाणिया उववज्जंति । निरन्तर पणि वैमानिकदेव ऊपजे । संतरंपि णेरइया उव्वट्टंति निरंतरंपिणेरइया उव्वट्टंति । सान्तर पणि नारकी नीकले निरन्तर पणि ना

॥ टीका ॥ दितयोरेव चोत्पादोद्वर्त्तनयो स्त न्निरूप्यत इति, अथ नारकादीनां प्रकारान्तरेणोत्पादोद्वर्त्तने निरूपयन्नाह ॥ सञ्जते । इत्यादि ॥ तत्रच सउत्ते रइया उववज्जतित्ति ॥ सतो विद्यमाना द्रव्यार्थतया नहि सर्वथैवा सत्किंचि दुत्पद्यते ऽसत्वादेव खरविषाणवत् सत्वच तेषा जीवद्रव्यापेक्षया ना

॥ मूल ॥ या उव्वट्टंति निरंतरंपि णेरइया उव्वट्टंति एवं जाव थणियकुमारा णो सतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढवीकाइया उव्वट्टंति एवं जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा णेरइया, णवर जोइसिया वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरंपि वेमाणिया चयंति निरंतरंपि वेमाणिया चयंति। सओ भंते! णेरइया उववज्जंति असतो णेरइया उववज्जंति? गंगेया! सओ णेरइया उववज्जंति णोअसतो णेरइया उववज्जंति एवं जाव

अनुवाद र्तन्ते एव याव त्स्तनितकुमारा । नो सान्तर पृथ्वीकायिका उद्वर्तन्ते निरन्तर पृथ्वीकायिका उद्वर्तन्ते एव याव द्वनस्पतिकायिका शेषा यथा नैरयिका नवर ज्योतिषा वैमानिका श्च्यवन्ते, अभिलापो याव त्सान्तरमपि वैमानिका श्च्यवन्ते निरन्तरमपि वैमानिका श्च्यवन्ते ॥ स तो भदन्त! नैरयिका उत्पद्यन्ते असतो नैरयिका उत्पद्यन्ते? गागेय! सतो नैरयिका उत्पद्यन्ते नो असतो नैरयिका उत्पद्यन्ते, याव द्वै

॥ भाषा ॥ रकी नीकले। एव जाव थणियकुमारा णो सतर पुढविकाइया उव्वट्टति। इम यावत् स्तनितकुमारपर्यंत कहवा सान्तर पृथिवीकायिक नीकले नहीं। निरतरंपि पुढविकाइया उव्वट्टति। निरन्तर प्रतिसमये पृथिवीकायिक नीकले। एव जाव वणस्सइकाइया सेसा जहा णेरइया। इम यावत् वनस्पती कायिक लगे कहवो शेष जिम नारकी कह्या तिम कहवा। णवर जोइसिया वेमाणिया चयति अभिलावो। एतलोविशेष ज्योतिषी वैमानिकनेविषै च वे एसो नाम कहवो। जाव संतरंपि वेमाणिया चयति निरतरंपि वेमाणिया चयति। यावत् सान्तर पणि वैमानिक चवै, निरन्तर पणि वैमानिक च वै, हिवै नारकने प्रकारान्तरे करी उत्पाद उद्वर्त्तना कहेछे—सओभते णेरइया उववज्जति असतो णेरइया उववज्जति। तिहा सत् कहवा विद्यमान द्रव्यार्थपणे पणिनहीं सर्वथाज अछतो कांई ऊपजे अछता पणाथकीज खर शृङ्गनीपरे जेमाटे विद्यमानपणो तो तेहने जीव द्रव्यनीअपेचाये अथवा प

॥ मूल ॥

वेमाणिया । सओ भंते ! णेरइया उव्वट्टंति असओ णेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! सओ णेरइया उव्वट्टंति णो असओ णेरइया उव्वट्टंति एवं जाव वेमाणिया, णवरं जोइसियवेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं । सओ भंते ! णेरइया उववज्जंति असओ णेरइया उववज्जंति, सओ असुरकुमारा उववज्जंति एवं जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति असओ वेमाणिया उववज्जंति, सओ णेरइया उव्वट्टंति असओ णेरइया उव्वट्टंति सओ असुरकुमारा

अनुवाद

मानिकाः । सन्तो भदन्त ! नैरयिका उद्वर्त्तन्ते असन्तो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते ? गांगेय ! सन्तो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते नो असन्तो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते, एवं यावद् वैमानिका नवरं ज्योतिषवैमानिकेषु च्यवन्ते (इति) भणितव्यम् । सन्तो भदन्त ! नैरयिका उपपद्यन्ते असन्तो नैरयिका उपपद्यन्ते, सन्तो असुरकुमारा उपपद्यन्ते एवं यावत् सन्तो वैमानिका उपपद्यन्ते असन्तो वैमानिका उपपद्यन्ते, सन्तो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते असन्तो नैरयिका उद्व

॥ भाषा ॥

यांचना अपवादे भाव नारकोनो अपेक्षाये छद्मथी छता नारक ऊपजे अथवा नरकनाथ, जीवोना उदयपणे नारको ऊपजे अथवा अछता नारको ऊपजे न. ए नोविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया सओ णेरइया उववज्जंति णो असओ णेरइया उववज्जंति । हे गांगेय ! छता नारको ऊपजे पणि अछता नारको न ऊपजे इम । जाव वेमाणिया । यावत् वैमानिक लगे कहवो । सओ णं णेरइया उव्वट्टंति । इम अछतां पणि छता हे भगवन् ! नारको नीकले । असओ णेरइया उव्वट्टंति । अछता नारको नीकले इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया सओ णेरइया उव्वट्टंति णो असओ णेरइया उव्वट्टंति । हे गांगेय ! छता नारको नीकले पणि अछता नारको नीकले नहीं । एवं जाव वेमाणिया । इम यावत् वैमानिक लगे कहवो । णवरं जोइसिय वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं । एतलो विशेष ज्योतिषी वैमानिकनेविषे चवे कहवो । सओ भंते णेरइया उववज्जंति । छता हे भगवन् । नारको ऊपजे । असओ णेरइया उववज्जंति । अछता हे भगवन् । नारको ऊपजे । सओ असुरकुमारा उववज्जंति । छता असुरकुमार ऊपजे । एवं जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति । इम यावत् छता वैमानिक ऊपजे । असओ वेमाणिया उववज्जंति । अछता वैमानिक ऊपजे । सओ णेरइया उव्वट्टंति । छता ना

॥ टीका ॥ रकपर्यायापेक्षयावा तथाहि–भाविनारकपर्यायापेक्षया द्रव्यतो नारका सतो नारका उत्पद्यते नारकायुष्कोदयाद्वा भावनारकाएव नारकत्वेनो त्पद्यन्तइति, अथवा ॥ सउत्ति ॥ विभक्तिपरिणामा त्सत्सु प्रागुत्पन्नेष्वन्ये समुत्पद्यते नासत्सु लोकस्य शाश्वतत्वेन नारकादीना सर्वदैव सद्भावा

॥ मूल ॥ उव्वट्टंति जाव सओ वेमाणिया चयंति असओ वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! सओ णेरइया उववज्जंति णो असओ णेरइया उववज्जंति सओ असुरकुमारा उववज्जंति णो असओ असुरकुमारा उववज्जंति जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति णो असओ वेमाणिया उववज्जंति, सओ णेरइया उव्वट्टंति णो असओ णेरइया उव्व

अनुवाद र्त्तन्ते सतो ऽसुरकुमारा उद्वर्त्तन्ते याव त्सतो वैमानिका च्यवन्ते असतो वैमानिका च्यवन्ते ? गाङ्गेय ! सतो नैरयिका उपपद्यन्ते नो असतो नैरयिका उपपद्यन्ते सतो ऽसुरकुमारा उपपद्यन्ते नो असतो ऽसुरकुमारा उपपद्यन्ते याव त्सतो वैमानिका उपपद्यन्ते नो असतो वैमानिका उपपद्यन्ते सतो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते नो असतो नैरयिका उद्वर्त्तन्ते याव त्सतो वैमानिका च्यवन्ते नो असतो वैमानिका च्यवन्ते । अथ

॥ भाषा ॥ रखो नीकले। असओ णेरइया उव्वट्टंति। अछता नारकी नीकले। सओ असुरकुमाराउ व्वट्टंति। छता असुरकुमार नीकले। जाव सओ वेमाणिया च यंति। इम यावत् छता वैमानिक चवै। असओ वेमाणिया चयंति। अछता वैमानिक चवै इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया सओ णेरइया उववज्जंति। हेगांगे य। छता नारको ऊपजे। णो असओ णेरइया उववज्जंति। नही अछता नारकी ऊपजे। सओ असुरकुमारा उववज्जंति। छता असुरकुमार ऊपजे। णो असओ असुरकुमारा उववज्जंति। नही अछता असुरकुमार ऊपजे। जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति। इम यावत् छता वैमानिक ऊपजे। णो असओ वेमाणिया उववज्जंति। नही अछता वैमानिक ऊपजे। सओ णेरइया उव्वट्टंति। छता नारकी नीकले। णो असओ णेरइया उव्वट्टंति। नही अछता नारकी नीकले। जाव सओ वेमाणिया चयंति। यावत् छता वैमानिक चवै। णो असओ वेमाणिया चयंति। नही अछता वैमानिक चवै। सेकेणट्ठेणभंते एव वुच्चइ। ते स्यै अर्थे हेभगवन् ! इम कह्यु। सओ णेरइया उववज्जंति णो असओ णेरइया उववज्जंति। छता नारकी ऊपजे नही अछ

॥ टीका ॥ दिति ॥ सेणूण गंगेया ! इत्यादि ॥ अनेनच तत्सिद्धाते नैव स्वमत पोषित यत पार्श्वनाथार्हता शाश्वतो लोक उक्तो ऽतो लोकस्य शाश्वतत्वा त्सतएव सत्त्वेववा, नारकादय उत्पद्यन्ते च्यवते चेति, साध्वेवोच्यत इति, अथ गांगेयो भगवतोऽतिशायिन ज्ञानसपद सभावयन् विकल्पयन्ना

॥ मूल ॥ इति जाव सतो वेमाणिया चयंति णो असतो वेमाणिया चयति । सेकेणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ सतो णेरइ या उववज्जति णो असतो णेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति णो असतो वेमाणिया चयति से णूणं भे गंगेया ! पासेण अरहा पुरिसादाणिएणं सासए लोए वुइए अणाइए अणवदग्गे जहा पचमे सए जाव जे लोक्कइ से लोए सेतणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ जाव सतो वेमाणिया चयति णो असतो वेमा

अनुवाद केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते सतो नैरयिका उपपद्यन्ते नो असतो नैरयिका उपपद्यन्ते याव त्सतो वैमानिका च्यवन्ते नो असतो वैमानि का च्यवन्ते त नून भो गाङ्गेय ! पार्श्वेना ऽर्हता पुरुषादानीयेन शाश्वतो लोक उक्तो ऽनादिको ऽनवदग्रो यथा पञ्चमशते याव द्य ल्लोक्यते स लोक स्तत्तेनार्थेन गाङ्गेय ! एव मुच्यते-याव त्सतो वैमानिका च्यवन्ते नो असतो वैमानिका च्यवन्ते । स्वय भदन्त ! एतदेव जानीथ, उ

॥ भाषा ॥ ता नारकी ऊपजे। जाव सओ वेमाणिया चयति णो असओ वेमाणिया चयति । यावत् छता वैमानिक चवै नही अछता वैमानिक चवै उत्तर । सेणू णभे गंगेया पासेणं अरहा पुरिसादाणिएण सासए लोए वुइए अणाइए अणवदग्गे जहा पचमेसए जाव जे लोक्कइ से लोए । ते निश्चे हेगांगेय ! पार्श्वनाथ अरिहन्त पुरुषप्रादानीय तिणे शास्वतोलोक कह्यो अनादि अनन्तो कह्यो इणे वचने तिहने सिद्धान्ते करीने आपणो मत पुष्टकीधो जेमाटे श्री पार्श्वना थ अरिहते शास्वतो लोककह्यो एतलामाटे लोकने शास्वतपणाथकी छता नारकी ऊपजे अथवा चवै एतलोज कह्यु जिम पांचमा शतकनेविषे यावत् जे अवलोकिये ते लोक कहिये । सेतेणट्ठेण गंगेया एव वुच्चइ । ते तिणे अर्थे हेगांगेय ! इम कह्यु । जाव सओ वेमाणिया चयति । यावत् छता वैमानिक चवै । णो असओ वेमाणिया चयति । नही अछता वैमानिक चवै, हिवे गांगेय ! भगवन्तनी अतिशयवन्त ज्ञानसम्पदा सभावतो थको विकल्पकरतो

णिया चयंति। सयं भंते! एयं एवं जाणह उदाहु असयं असोच्चा एतेवंजाणह उदाहु सोच्चा सतो णेरइया उववज्जंति णो असतो णेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति णो असतो वेमाणिया चयंति? गंगेया! सयं एते एवं जाणामि णो असयं असोच्चा एते एवं जाणामि णो सोच्चा सतो णेरइया उववज्जंति णो असतो णेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति णो असतो वेमाणिया चयंति। सेकेण

आहो अस्वय मश्रुत्वा एतदेव जानीथ, उताहो श्रुत्वा, सतो नैरयिका उपपद्यन्ते नो असतो नैरयिका उपपद्यन्ते याव त्सतो वैमानिका श्च्यवन्ते नो असतो वैमानिका श्च्यवन्ते? गाङ्गेय! स्वय मेतदेव जानामि नो अस्वय मश्रुत्वा एतदेव जानामि नो श्रुत्वा' सतो नैरयिका उपपद्यन्ते नो असतो नैरयिका उपपद्यन्ते याव त्सतो वैमानिका श्च्यवन्ते नो असतो वैमानिका श्च्यवन्ते। अथ केनार्थेन भदन्त! एव मुच्यते-

कहेछे— सयभंते एय एव जाणह उदाहु असय असोच्चा एतेव जाणह। स्वय आपणपेज चिन्हविना हेभगवन्! एयंति, वक्ष्यमाण प्रकारवस्तु जाणो छो अथवा असय, परलिंग थकी इत्यर्थं तथा असोच्चा, अणसांभलीने आगम अपेक्षाविना एहीज जाणोछो इत्यर्थ। उदाहु सोच्चा सओ णेरइया उववज्जंति णो असओ णेरइया उववज्जंति। अथवा सोच्चा, बीजा पुरुषना मुखथकी सांभलीने आगमथको इत्यर्थ छता नारकी उपजे, नहीं अछता नारकी उपजे। जाव सओ वेमाणिया चयंति। यावत् छता वैमानिक चवे। णो असओ वेमाणिया चयंति। नहीं अछता वैमानिक चवे इतिप्रश्न उत्तर। गंगेया सय एते एव जाणामि। हे गांगेय! स्वयंपोतेज एह इम जाणोछू प्रत्यक्ष साक्षात्कृत समस्तवस्तु समूह स्वभावथकी। णो असय असोच्चा एतेएव जाणामि। नहीं परलिंगथकी अणसांभलीने एह इम जाणोछू। णो सोच्चा सओ णेरइया उववज्जंति। नहीं सांभलीने छता नारकी उपजे। णो असओ णेरइया उववज्जंति। नहीं अछता नारकी उपजे। जाव सओ वेमाणिया चयंति णो असओ वेमाणिया चयंति। यावत् छता वैमानिक चवे नहीं अछता वैमानिक चवे। सेकेणठ्ठेणभंते एव वुच्चइ। ते से अर्थे हेभगवन्! इम कह्यु। तचेव जाव णो असओ वेमाणिया चयंति। तिमहीज यावत्

१ ॥ सयजते । इत्यादि ॥ स्वय मात्मना लिंगानपेक्षमित्यर्थः ॥ एषति ॥ वक्ष्यमाणप्रकार वस्तु ॥ असयंति ॥ अस्वय परतो लिङ्गत इत्यर्थ ,तथा ॥ असोच्चति ॥ अश्रुत्वा आगमानपेक्ष ॥ एतेवति ॥ एतदेव मित्यर्थः ॥ सोच्चत्ति ॥ पुरुषान्तरवचन श्रुत्वा आगमत इत्यर्थ ॥ मय एतेव जाणामित्ति ॥ स्वय नेतदेव जानामि पारमार्थिकप्रत्यक्षसाक्षात्कृतसमस्तवस्तुस्तोमस्वभावत्या मम ॥ सय नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ॥ स्वयमेव नारका उत्पद्यते नाऽस्वय नेश्वरपारतन्त्र्यादित्यर्थ , यथा कैश्चिदुच्यते-अज्ञोजन्तुरनीशोय मात्मन सुखदुःखयो । ईश्वर प्रेरितोगच्छे त्स्वर्गवाश्वभ्रमेवचेति ॥ १ ॥

ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव णो असतं वेमाणिया चयंति ? गंगेया ! केवलीणं पुरच्छिमेणं मियंपि जाणइ अमियंपि जाणइ दाहिणेणं एवं जहा सद्दुद्देसए जाव णिव्वुडे णाणे केवलिस्स सेतेणठ्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव णो असतं वेमाणिया चयंति । सयं भंते ! णेरइया णेरइएसु उववज्जंति असयं

एतदेव याव नो असतो वैमानिका च्यवन्ते ? गाङ्गेय ! केवली पूर्वस्मिन् (दिशि) मित मपि जानात्यमित मपि जानाति, दक्षिणत एव यथा शब्दोद्देशके याव निवृंत ज्ञान केवलिन स्तदनार्थेन गाङ्गेय । एव मुच्यते तथैव याव नो असतो वैमानिका च्यवन्ते । स्वय भदन्त । नैरयिका नैरयिकेषू पपद्यन्ते अस्वय नैरयिका नैरयिकेषू पपद्यन्ते ? गाङ्गेय ! स्वय नैरयिका नैरयिकेषू पपद्यन्ते नो अस्वय नैरयिका नैरयिकेषू पप

नहो चवता वैमानिक चवे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया केवलीए पुरच्छिमेणं मियपि जाणइ अमियपि जाणइ । हे गांगेय । केवलज्ञानवन्त ना आश्चालका रे, पूर्वदिशि मानसहित ते पणि जाणे तथा अमितवस्तु ते पणि जाणे । दाहिणेणं एवं जहा सद्दुद्देसए । इम दक्षिण पणि जाणे इम जिम शब्दउद्देशाने । जाव णिव्वुडे णाणे केवलिस । यावत् निरावरण ज्ञान केवलीनो । सेतेणठ्ठेणं गंगेया एवंवुच्चइ । ते तेणे अर्थे हे गांगेय ! इम कह्यु । तचेव जाव णो असओ वेमाणिया चयंति । तिमहीज यावत् नहो चवता वैमानिक चवे, प्रश्न गौतम पूछे - स्वयमते णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । पोतेज हेभगवन् । नारको नरकनेविषे उपजे अथवा । असय णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । पोतेनही पणि परना प्रेरयाको नारको नरकगतिनेविषे उपजे इतिप्र

॥ टीका ॥ ईश्वरस्यापि कालादिकारणकलापव्यतिरिक्तस्य युक्तिभि र्विचार्यमाणस्या घटनादिति ॥ कम्मोदएणंति ॥ कर्म्मणा मुदितत्वेन नच कर्मोदयमात्रेण नारकेपूत्पद्यते केवलिनामपि तस्यभावा दतआह ॥ कम्मगुरुयाएत्ति ॥ कर्म्मणा गुरुकता महत्ता कर्म्मगुरुकता तया ॥ कम्मभारियाएत्ति ॥ भारो स्ति येषा तानि भारिकाणि तद्भावो भारिकता कर्मणा भारिकता कर्म्मभारिकता तया महदपि किञ्चिदल्पभार दृष्ट तथाविधभारमपिष किंचि दमहदित्यतआह ॥ कम्मगुरुसंभारियत्ताएत्ति ॥ गुरो सम्भारिकस्यच भावो गुरुसम्भारिकता गुरुसम्भारिकता चेत्यर्थ., कर्म्मणा गुरुसंभारिकता कर्म्मगुरुसम्भारिकता तया ऽतिप्रकर्षावस्थयेत्यर्थ , एतच्च त्रय शुभकर्मापेक्षया स्या दत आह ॥ असुभाणमित्यादि ॥ उदयप्रदेशतोपि स्या दत

॥ मूल ॥ णेरइया णेरइएसु उववज्जंति ? गंगेया ! सयं णेरइया णेरइएसु उववज्जंति णो असयं णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएण कम्मगुरुयत्ताए कम्म भारियाए कम्मगुरुयसंभारियत्ताए असुभाणं कम्माणं उदएणं असुभाणं कम्माणं विवागेण असुभाण क

अनुवाद ॥ ऽत्पद्यन्ते । अथकेनार्थेन भदन्त । एव मुच्यते-याव दुपपद्यन्ते ? गाङ्गेय । कर्मोदयेन कर्मगुरुकतया कर्मभारिकतया कर्मगुरुकसम्भारिकतया ऽशु भाना कर्मणा मुदयेना ऽशुभाना कर्मणा विपाकेना ऽशुभाना कर्मणा फलविपाकेन स्वय नैरयिका नैरयिकेपू पपद्यन्ते नो अस्वय नैरयिका नै

॥ भाषा ॥ अ उत्तर । गंगेया सय णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । हेगांगेय । पोतेज नारकी नरकगतिनेविषे उपजे । णो असय णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । नही परना वशथकी नारकी नरकगतिनेविषे उपजे। सेकेणट्ठेणंभते एव वुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कह्यु । जाव उववज्जंति । यावत् उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गंगेया कम्मोदएण । हेगांगेय । कर्मने उदितपणे करी । कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारियत्ताए । कर्मनो जे गुरु कहता महत्त्वपणे तेणे करीने, कर्मनो जे भार तेणेकरीने । कम्मगुरुय सभारियत्ताए । कर्मनो जे गरिष्ट तदनो ज सभार तेणे करीने अति प्रकृष्ट अवस्थायें इत्यर्थ । असुभाण कम्माण उदएण । अशुभकर्मने उदयेंकरी उदय ते प्रदेशथो पणिहुवे एतलामाटे । असुभाण कम्माण विवागेण । अशुभकर्मने विपाकें करी । असुभाण कम्माण फलविवागे

॥ टीका ॥

ग्राह ॥ विवागेणंति ॥ विपाको यथाबद्धरसानुभूति सच मंदोऽपि स्या दत ग्राह ॥ फलविवागेणंति ॥ फलस्येवा लाबुकादे विपाको विपच्य मानता रसप्रकर्षावस्था फलविपाक स्तेना ऽसुरकुमारसूत्र ॥ कम्मोदएणंति ॥ असुरकुमारोचित कर्मणा मुदयेन' वाचनातरंतु ॥ कम्मोवसमेणंति ॥ दृश्यते तत्रचा शुभकर्मणा मुपशमेन सामान्यत ॥ कम्मविगइएत्ति ॥ कर्मणा मशुभाना विगत्या विगमेन स्थिति माश्रित्य ॥ कम्मविसोहीएत्ति ॥

॥ सूत्र ॥

म्माणं फलविवागेणं सयं णेरइया णेरइएसु उववज्जंति सेतेणट्ठेणं गंगेया ! जाव उववज्जंति । सयं भंते ! असुरकुमारा पुच्छा गंगेया ! सयं असुरकुमारा उववज्जंति णोअसयं असुरकुमारा उववज्जंति । सेकेण ट्ठेणं तंचेव जाव उववज्जंति ? गंगेया ! कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं कम्मविगइए कम्मविसोहीए कम्मविसु

रयिकेषु पपद्यन्ते तत्तेना र्थेन गाङ्गेय ! याव दुपपद्यन्ते । स्वयं भदन्त ! असुरकुमारा पृच्छा गाङ्गेय ! स्वयं मसुरकुमारा उपपद्यन्ते नो अ स्वयं मसुरकुमारा उपपद्यन्ते । अथ केनार्थेन तथैव याव दुपपद्यन्ते ' गाङ्गेय । कर्मोदयेन कर्मोपशमेन कर्मविगत्या कर्मविशोधिना कर्मविशु

॥ अनुवाद ॥

ग । अशुभकर्मनो फल ते तुंबडीप्रमुख तेहनो विपाक ते निपजवापणे रसप्रकर्ष अवस्था तेणे करीने । सय णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । पोतेज ना रकी नरकगतिनेविषे ऊपजे । णो असय णेरइया णेरइएसु उववज्जंति । नहीं परना प्रयोगे नारकी नरकगतिने विषे ऊपजे । सेतेणट्ठेणं गंगेया जाव उववज्जंति । ते तेणे अर्थे हे गांगेय ! यावत् ऊपजे । सय भंते असुरकुमारा पुच्छा । पोते हे भगवन् ! असुरकुमार ऊपजे इत्यादि प्रश्न पूछ्यो । गंगेया सय अ सुरकुमारा उववज्जंति । हे गांगेय । पोतेज असुरकुमार ऊपजे । णो असय असुरकुमारा उववज्जंति । नहीं परना प्रयोगथी असुरकुमारनेविषे ऊपजे । सेकेणट्ठेणं तंचेव जाव उववज्जंति । ते स्ये अर्थे इत्यादि तिमज जाणवो यावत् ऊपजे त्यांसुधी उत्तर । गंगेया कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं कम्मविगइए कम्मविसो हीए कम्मविसुद्धीए । हे गांगेय । कर्मने उदयपणे करी अशुभकर्मने उपशमे करी अने स्थितिविगत ईदये करी कर्मनो रसनो विशोधि करी कर्मना नी विशुद्धि करी । सुभाणं कम्माणं उदएणं । शुभकर्मने उदये करी । सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं । शुभकर्मने विपाके करी शु

॥ टीका ॥ रसमाश्रित्य ॥ कम्मविसुद्धीएत्ति ॥ प्रदेशापेक्षया, एकार्थां चैते ग्राह्या इति, पृथिवीकायिकसूत्रे ॥ सुभासुभाणत्ति ॥ शुभानां शुभवर्णगन्धादीनां मशु

॥ मूल ॥ भीए सुभाणं कम्माणं उदएणं सुभाण कम्माण विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जंति णोअसयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति सेतेणट्ठेणं जाव उववज्जंति, एवं जाव थणियकुमारा। सयं भंते! पुढवीकाइया पुच्छा गंगेया! सयं पुढवीकाइया उववज्जंति णोअ सयं जाव उववज्जंति। सेकेणट्ठेणं जाव उववज्जंति? गंगेया! कम्मोदएणं कम्मगुरुयत्ताए कम्मभारिय

अनुवाद भा शुभाना कर्मणा मुदयेन शुभाना कर्मणा विपाकेन शुभाना कर्मणा फलविपाकेन स्वय मसुरकुमारा असुरकुमारतया याव दुपपद्यन्ते नो अस्वय मसुरकुमारा याव दुपपद्यन्ते तत्तेनार्थेन याव दुपपद्यन्ते एव याव त्स्तनितकुमारा। स्वय भदन्त। पृथिवीकायिका पृच्छा गाङ्गेय! स्वय पृथिवीकायिका उपपद्यन्ते नो अस्वय याव दुपपद्यन्ते। अथ केनार्थेन याव दुपपद्यन्ते? गाङ्गेय! कर्मोदयेन कर्मगुरुकतया कर्मभारि

॥ भाषा ॥ भकर्मना फलने विपाकें करी इत्यादिकें करी। सय असुरकुमारा। पोतेज असुरकुमार। असुरकुमारत्ताए जाव उववज्जति। असुरकुमार पणें यावत् ऊपजें। णो असय असुरकुमारा जाव उववज्ज ति। नही परना वशथकी असुरकुमारपणें ऊपजे। सेतेणट्ठेण जाव उववज्ज ति। ते तेणें अर्थे यावत्। ऊपजे। एव जाव थणियकुमारा सयभंते पढविकाइया पुच्छा। इम यावत् स्तनितकुमार लगे कहवो पोतेज हेभगवन्! पृथिवीकायिक इत्यादि प्रश्न उत्तर। गगेया सय पुढविकाइया उववज्ज ति। हेगांगेय। पोतेज पृथिवीकायिक पणें ऊपजे। णो असय जाव उववज्ज ति। नही परना वशथकी यावत् ऊपजें। सेकेणट्ठेण जाव उववज्ज ति। ते स्यें अर्थे यावत् ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गगेया कम्मोदएण कम्मगुरुयत्ताए कम्म भारियत्ताए कम्मगुरुयसभारियत्ताए। हेगांगेय कर्मने उदयेकरी कर्मना जे महत्त्वपणो तेणें करी। कर्मना भारपणें तेणें करी कर्मना जे अति प्रकृष्टपणो तिणें करी। सुभा सुभाण कम्माण उदएण। शुभ तथा अशुभ वेदकर्मने उदये करी। सुभा सुभाण कम्माण विवागेण। शुभ तथा अशुभ वेदकर्मने विपाकें करी। सुभा सुभाण क

॥ टीका ॥ ज्ञाना तेषा मेकेन्द्रियमात्यादीनावा ॥ तप्पभिईचणं ॥ यस्मिन्समये ऽनन्तरोक्त वस्तु भगवता प्रतिपादित सएव समय प्रभृतिरादि यस्य प्रत्य भिज्ञानस्य तत्तथा चशब्द पुनरर्थे समुच्चयेवा ॥ सेत्ति ॥ असौ ॥ पच्चभिजाणइत्ति ॥ प्रत्यभिजानातिस्म किंरुत्वेत्याह सर्वज्ञ सर्वदर्शिन जातप्रत्य

॥ मूल ॥ त्ताए कम्मगुरुयसम्भारियत्ताए सुभासुभाणंकम्माणं उदएणं सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढवीकाइया जाव उववज्जंति णोअसयं पुढवीकाइया जाव उववज्जंति, सेतेणठेणं जाव उववज्जंति, एवं जाव मणूसा वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा सेतेणठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ सयंवेमाणिया जाव उववज्जंति णोअसयं वेमाणिया जाव उववज्जंति तप्पभिइंचणं से

अनुवाद कतया कर्मगुरुकसम्भारिकतया शुभाशुभाना कर्मणा मुदयेन शुभाशुभाना कर्मणा विपाकेन शुभाशुभाना कर्मणा फलविपाकेन स्वयं पृथिवीकायिका याव दुपपद्यन्ते नो अस्वयं पृथिवीकायिका याव दुपपद्यन्ते तत्तेनार्थेन याव दुपपद्यन्ते एव याव न्मनुष्या । वानव्यन्तरज्योतिषवैमानिका यथा ऽसुरकुमारा स्तत्तेनार्थेन गाङ्गेय ! एव मुच्यते–स्वयं वैमानिका याव दुपपद्यन्ते नो अस्वयं वैमानिका याव दुपपद्यन्ते, तत्प्रभृ

॥ भाषा ॥ म्माणं फलविवागेणं । शुभकर्म तथा अशुभ वेसकर्मने फलविपाकें करी । सयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति । पोतेज पृथिवीकायिकपणें उपजे । णो असयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति । नही परना प्रेर्यको पृथिवीकायिक यावत् उपजे । सेतेणठ्ठेणं जाव उववज्जंति । ते तेणेअर्थे यावत् उपजे । एव जाव मणूसा वाणमंतर जोइस वेमाणिया । इम यावत् मनुष्य लगे कहवो वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक ए सर्व । जहा असुरकुमारा । जिम असुर कह्या तिम कहवा । सेतेणठ्ठेणं गंगेया एवं वुच्चइ । ते तेणें अर्थें हेगांगेय ! इम कह्यु । सयं वेमाणिया जाव उववज्जंति । पोतेज येनानिकदेव वैमानिकपणें यावत् उपजे पणि । णो असयं वेमाणिया जाव उववज्जंति । नही परना प्रेर्यको वैमानिकदेव यावत् उपजे । तप्पभिइंचणं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं । जे समयनेविषें भगवन्त अनन्तरोक्तवस्तु कह्यु ते समयाभृति कहता आदिदेईने ते गांगेय ! साधु श्रमण भगवन्त श्रीमहावी

॥ टीका ॥

यत्वादिति ॥ नवमशते द्वात्रिंशत्तम ॥ ९ ॥ ३२ ॥ ग्रंथ संख्या १६०००] गांगेयो भगवदुपासनात सिद्धो ऽन्यस्तु कर्म्मजन्मा

॥ मूल ॥

गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं पञ्चभिजाणइ सव्वन्नू सव्वदरिसी तएणं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी—इच्छामिणं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वयं एवं जहा कालासवेसियपुत्ते अणगारे तहेव भाणियव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे सेवं भंते ! भंतेत्ति ॥ गंगेयोसम्मत्तो ९ ॥ ३२ ॥ तेणं

अनुवाद

ति च स गाङ्गेयो नगार श्रमण भगवन्त महावीर प्रत्यभिजानातिस्म सर्वज्ञ सर्वदर्शिन, तदानी स गाङ्गेयो ऽनगार श्रमण भगवन्त महावीर त्रि कृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणा करोति वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्कृत्यैव मवादीत्—इच्छामि भदन्त ! त्वदन्तिके चातुर्यामा द्धर्मा त्पञ्चमहाव्रत मेव यथा कालासवेसितपुत्रो ऽनगार स्तथैव भणितव्यम् याव त्सर्वदु खप्रहीण स्तदेव भदन्त ! भदन्त ॥ इति नवमशते द्वात्रिंश

॥ भाषा ॥

रस्वामी प्रते । पञ्चभि जाणइ सव्वण्णू सव्वदरिसी । प्रत्यक्ष जाणे सर्व वस्तुना जाण सर्वपदारथना देखणहार । तएणं से गंगेये अणगारे समण भगवं म हावीर तिक्खुत्तो । तिवारे ते गांगेय साधु श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार । आयाहिण पयाहिण करेइ वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसि त्ता । जीमणापासाथकी प्रदक्षिणा करे वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहे । इच्छामिणभंते तुज्झ अंतिए । वांछू छू हेभगवन् तुम्हारे समीपे । चाउज्जामाओ धम्माओ पंच महव्वय । चार महाव्रतरूप धर्मथकी पंच महाव्रतरूप धर्म । एव जहा कालासवेसियपुत्ते अण गारे तहेव भाणियव्वं । इम जिम कालासवेसित पुत्र साधुनो अधिकार कह्यो तिमज इहां पणि कहवो । जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । यावत् गांगेय अणगा र सर्वदु:ख थकी मूकाणा एतले मोक्ष गया । सेवमंते भंतेति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछै । गंगेयो सम्मत्तो ९ ३२ । ॥ नवमा शतकनो ब त्तीसमो उद्देशो अर्थथी कह्यो ९ ॥ ३२ ॥ पाछिले उद्देशे गांगेय भगवन्तनो उपासना पकी सीधो बीजो कोइएक कर्मना वशथकी

॥ टीका ॥ द्विपर्ययमप्यवाप्नोति यथा जमालि रित्येत दर्शनाय त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशक स्तस्य चेद प्रस्तावना सूत्र ॥ तेणमित्यादि ॥ अड्ढेत्ति ॥ समृद्ध ॥ दित्ते ति ॥ दीप्त स्तेजस्वी दृप्तोवा, दर्प्पवान् ॥ वित्तेत्ति ॥ प्रसिद्धो यावत्करणात्, विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णेइत्यादि दृश्य„ रिया

॥ मूल ॥ कालेणं तेण समएणं माहणकुंडग्गामेणामं णयरे होत्था वण्णउ बहुसालए चेइए वण्णउ तत्थणं माहणकुंडग्गामे णयरे उसभदत्ते णामं माहणे परिवसइ, अड्ढे दित्ते वित्ते जाव अपरिभूए रिउव्वेयजउव्वेयसामवेय अथव्वणवेय जहा खंदउ जाव अण्णेसुय बहुसुय बंभण्णएसुय नएसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगय

॥ अनुवाद ॥ ज्ञम ॥ ९ ॥ ३२ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये ब्राह्मणकुण्डग्राम नाम नगर मभव द्वर्णको बहुशालक चैत्यो वर्णक स्तत्र ब्राह्मणकुण्डग्रामे नगरे ऋषभदत्तो नाम ब्राह्मण परिवसति' आढ्यो दीप्तो वित्तो याव दपरिभूतो ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्ववेद (अनुवि) यथा स्कन्दको याव दन्येषुच बहुषु ब्राह्मणीयेषु नयेषु सुपरिनिष्ठित. श्रमणोपासको ऽभिगतजीवाजीव उपलब्धपुण्यपापो याव दात्मान भावय न्विहरति,

॥ भाषा ॥ विपरीतपणो पणि पामे जिम जमालो इसो देखाडता तेत्रीसमो उद्देशो कहेछे—तेण कालेण तेण समएण । ते कालनेविषे ते समयनविषे । माहणकुंडगामे णाम णयरे होत्था । ब्राह्मण कुण्डग्राम नामे नगर हतो । वण्णओ बहुसालए चेइए वण्णओ । वर्णक बहुशाल नामे चैत्य वर्णन करवो । तत्थण माहण कुंडगामे णयरे । तिहा ब्राह्मणकुण्डग्रामनामे नगरनेविषे । उसभदत्ते णाम माहणे परिवसइ । ऋषभदत्तनामे ब्राह्मण वसेछे । अड्ढे दित्ते वित्ते जाव अपरिभूए । ऋद्धिवंत समृद्ध तेजवन्त प्रसिद्ध यावत् किणही पराभव्यो न सकिये । रिउव्वेय जउव्वेय सामवेय अथव्वणवेय जहा खंदओ । ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्वणवेद जिम स्कन्दक कह्यो । जाव अण्णेसुय बहुसुय । यावत् अनेरा घणानेविषे । बंभण्णएसुय नएसु । ब्राह्मणना नयमार्गनेविषे चावनेविषे । सुपरिनिट्ठिए समणोवासए । सुपरिनिष्ठितछे श्रमणोपासक श्रावकछे । अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे । जाण्याछे जीव अजीव जेणे पाम्याछे पुन्य पापना फल जेणे । जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ । यावत् आत्माने भावता थका विचरेछे । तस्सण उसभदत्तस्स माहणस्स । तेहने ऋ

॥ मूल ॥

जीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तस्सणं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा णाम माहणी होत्था, सुकुमालपाणिपाया जाव पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव विहरइ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा पज्जुवासइ, तएणं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव हियए जेणेव देवाणंदामाहणी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता देवाणंदामाहणिं एववयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव

अनुवाद

तस्य ऋषभदत्तस्य ब्राह्मणस्य देवानन्दानाम्नी ब्राह्मण्य भवत्, सुकुमारपाणिपादा याव त्प्रियदर्शना सुरूपा श्रमणोपासिका ऽभिगतजीवाजीवो पलब्धपुण्यपापा याव द्विहरते, तस्मिन्काले तस्मि न्समये स्वामी समवसृत परिष त्पर्युपास्ते, तदानी स ऋषभदत्तो ब्राह्मणो ऽस्या कथाया लब्धार्थ सन् हृष्टो यावत् हृदयो यत्रैव देवानन्दा ब्राह्मणी तत्रैवो पागच्छ त्युपागत्य देवानन्दा ब्राह्मणी मेव मवादीत्—एव

॥ भाषा ॥

षभदत्तने ब्राह्मणने । देवाणंदानाम माहणी होत्या । देवानन्दा एसेनामे ब्राह्मणी हुई । सुकुमालपाणिपाया जाव पियदंसणा सुरूवा । सुकोमल छे हाथ पग जेहना यावत् प्रियमनोहर दर्शनछे जेहनो स्वरूप । समणोवासिया अभिगय जीवाजीवा । ते पणि श्राविकाछे जाण्याछे जीव अजीव तेणे । उवलद्ध पुण्णपावा जाव विहरइ । पाम्याछे पुण्य पापनाफल इम यावत् विचरे । तेण कालेण तेण समएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । सामीसमोसढे परिसा पज्जुवासइ । श्रीमहावीरस्वामी समोसर्‍या पर्षदा सेवा करेछे—तएण से उसभदत्ते माहणे । तिवारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मण । इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव हियए । एहवी ते कथाये लाधे अर्थथका जे श्रीमहावीरस्वामी पधार्‍या हर्ष संतोषे यावत् हृदय थयो । जेणेवदेवाणंदामाहणी तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । जिहा देवानन्दा ब्राह्मणीछे तिहा आवे आवीने । देवाणंदामाहणिं एव वयासी । देवानन्दा ब्राह्मणी प्रते इम कहे । एव खलु देवाणुप्पिया । इम निश्चे हे देवानुप्रिया । समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू सव्व दरिसी । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी धर्मनी आ

सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरइ, तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्सवि सवणयाए किमंगपुण अभिगमणवंदणणमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंगपुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए तं गच्छामोणं देवाणुप्पिए समणं भगवं महावीरं वंदा

खलु देवानुप्रिये ! श्रमणो भगवान् महावीर आदिकरो यावत् सर्वज्ञः सर्वदर्शी आकाशगतेन चक्रेण यावत् सुखसुखेन विहरन् बहुशालके चैत्ये यथाप्रतिरूपं अवग्रहं यावत् विहरति, तन्महत्फलं खलु देवानुप्रिये ! तथारूपाणां अर्हतां भगवतां नामगोत्रस्यापि श्रवणतया किमङ्गपुनः अभिगमनवन्दननमस्करणप्रतिपृच्छनापर्युपासनया एकस्या अप्यार्यस्य धार्मिकस्य सुवचनस्य श्रवणतया किमङ्गपुनः विपुलस्यार्थस्य ग्रह

दिना करणहार यावत् सर्वज्ञ सर्ववस्तुना देखणहार । आकाशमां रहेला चक्रे । आकाशगत धर्मचक्र जेणे करीने । जाव सुहे सुहेण विहरमाणे बहुसाल ए चेइए । यावत् सुखे सुखकरी विचरताथका बहुशाल चैत्यने विषे । अहा पडिरूव उग्गह जाव विहरइ । यथा प्रतिरूप अभिग्रह ग्रहीने यावत् विच रे । तमहप्फलं खलु देवाणुप्पिए । ते भणी महा फलछे निश्चे हे देवानुप्रिये । तहा रूवाणं अरिहंताणं भगवंताणं । तथारूप अरिहंतने भगवंतने । णाम गोयस्सवि सवणयाए । नाम गोत्रने पणि सांभलवे करीने । किमंगपुण अभिगमण वंदण णमंसण पडिपुच्छण पज्जुवासणयाए एगस्सवि आरियस्स । ता स्यूं वली सन्मुख जइये, वंदना ते अरिहंत साहमा जावो नाटको नमस्कार करवो प्रश्नना पूछवा पर्युपासना सेवा करवे करीने एक पणि आर्य संबंधि धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए । धर्मनो सुवचनना सांभलवे करीने । किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए । स्यूं वली विस्तीर्ण अर्थने घ हवे करीने ते फलनो स्यूं वखाण कीजे । तंगच्छामोणं देवाणुप्पिए । ते भणी जाइये हे देवानुप्रिये । समणं भगवंत महावीरवंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदीजे नमस्कार करिये यावत् सेवा करिये । एय णोइहभवे । एह आपणने इणि भवने हि

॥ टीका ॥

एति ॥ हिताय पथ्यान्नवत् ॥ सुहाएत्ति ॥ सुखाय शर्मणे ॥ खमाएत्ति ॥ क्षमत्वाय संगतत्वायेत्यर्थः ॥ आणुगामियत्ताएत्ति ॥ आनुगामिकत्वाय शुभानुबन्धायेत्यर्थः ॥ हट्ठ तुट्ठ यावत्करणा देवाणुप्पिया–हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया,, हृष्ट तुष्ट मत्यर्थं तुष्ट हृष्टवा विस्मित तुष्टच तोषवच्चित्त यत्र तत्तथा तद्यथा भव त्येव आनंदिता ईषन्मुखसौम्यतादिभावै समृद्धि मुपगता ततश्च नंदिता समृद्धतरता मुपगता ॥ पीइमणा ॥ प्रीति प्रीणन माप्यायनं मनसि यस्याः सा प्रीतिमना ॥ परमसोमणस्सिया ॥ परमसौमनस्यं सुष्ठु सुमनस्कता संजातं यस्याः सा परमसौमनस्यिता ॥ हरिसवसविसप्पमाण

॥ मूल ॥

मो णमंसामो जाव पज्जुवासामो एयणं इहभवे परभवेय हियाए सुहाए खमाए आणुगामियत्ताए भवि स्सइ, तएणं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया करयल जाव कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, तएणं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दा

अनुवाद

वातया तद्गच्छामो देवानुप्रिये ! श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दामो नमस्यामो यावत् पर्युपासयाम एतन्नो इहभवे परभवेच हिताय सुखाय क्षमत्वाय आनुगामिकत्वाय भविष्यति, तदानीं सा देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्तेन ब्राह्मणेनैवमुक्ता सती हृष्ट (प्रभृति) यावत् हृदया करतल (प्रभृति) याव त्कृत्वा ऋषभदत्तस्य ब्राह्मणस्य (सुखादितिशेष) एतदर्थं विनयेन प्रतिशृणोति, तदानीं सऋषभदत्तो ब्राह्मण कौटुम्बिक

॥ भाषा ॥

ने परभवने । हियाए सुहाए खमाए । वळी परभवने विषे हितने काजे सुखने अर्थे संगतपणाने काजे । आणुगामियत्ताए भविस्सइ । शुभ अनुबन्धने काजे हुस्से । तएणं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं । तिवारे तिवा देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणे । एवं वुत्तासमाणी हट्ठ जाव हियया कर यल जाव कट्टु । इम कह्या थका ते हर्षवन्त संतोषवन्त यावत् हृदय वर्षे वेज करतल यावत् करीने । उसभदत्तस्समाहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणे इ । ऋषभदत्त ब्राह्मणनो एह अर्थनो विनयकरीने सांभले । तएणंसे उसभदत्ते माहणे । तिवारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मण । कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता । कौटुंबिक पुरुष तेडावे तेडावीने । एवं वयासी । इम कहे । खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया । उतावलाथको अहो देवानुप्रियाओ । लहुकरण जुत्त जोइय सम

ह्रियया ॥ एर्षवशेन विसर्प्प द्विस्तारयायि हृदय यस्या सा ॥ तथा लहुकरणजुत्तजोइएत्यादि ॥ लघुकरण शीघ्रक्रियादक्षत्व तेन युक्तौ योगिकौ च प्रशस्तयोगवन्तौ प्रशस्तसदृशरूपत्वा द्यौ तौ तथा समा खुराश्च प्रतीता ॥ वालिहाणत्ति ॥ वालिधानेच पुच्छौ ययो स्तौ तथा समानि लिखिता न्युल्लिखितानि शृङ्गाणि ययो स्तौ तथा तत कर्म्मधारयो ऽत स्ताभ्या लघुकरणयुक्तयौगिकसमखुरवालिधानसमलिखितशृङ्गकाभ्या गोयुवभ्या युक्तमेव यानप्रवर मुपस्थापयतेति सम्बन्ध पुन किम्भूताभ्या मित्याह–जाम्बूनदमयौ सुवर्णनिवृत्तौ यौ कलापौ कण्ठाभरणविशेषौ ताभ्या युक्तौ प्रतिविशिष्टकौच प्रधानौ जवादिना यौ तौ तथा ताभ्या जाम्बूनदमयकलापयुक्तप्रतिविशिष्टकाभ्या, रजतमय्यौ रूप्यविकारौ घटे ययो स्तौ तथा सूत्ररज्जुके कार्प्पासिकसूत्रदवरकमय्यौ वरकाञ्चने प्रवरसुवर्णमण्डितत्वेन प्रधानसुवर्णे येन स्ते नासिकारज्जू तयो प्रग्रहेण रश्मिना अवगृहीतकौ बद्धौ यौ तौ तथा तत कर्म्मधारयो त स्ताभ्या रजतमयघटसूत्ररज्जुकवरकाञ्चननस्ताप्रग्रहावगृहीतकाभ्या, नीलोत्पलैर्ज्जलजनिङ्ग

वेइ सद्दावेइत्ता एवंवयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तजोइयसमखुरवालिहाणसमलिहियसिंगेहिं जंबूणयामयकलावजुत्तपरिविसिठेहिं रययामयघटसुत्तरज्जुपवरकंचणणत्थपग्गहोग्गहियएहिं णी

पुरुषान् शब्दापयति शब्दापयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया ! लघुकरणयुक्तयौगिकसमखुरवालिधानसमलिखितशृङ्गकाभ्या जाम्बूनदमयकलापयुक्तप्रतिविशिष्टकाभ्या रजतमयघटसूत्ररज्जुप्रवरकाञ्चननस्ताप्रग्रहावगृहीतकाभ्या नीलोत्पलकृतापीडकाभ्या प्रवरगोयुवभ्या

खुर वालिहाणसमलिहियसिंगेहिं। लघुकरण शीघ्रक्रियानेविषे दक्षपणे करी युक्त एहवाछे तथा योगिकाप्रशस्त योगवन्त तथा खुर अने पूछ जेहना समाछे वक्र नथी तथा समा जसरा एहवा शृगछे जेहना। जबूणयामय कलाव जुत्त परिविसिठेहि रययामयघट सुत्तरज्जु पवर कचण णत्थ पग्गहोग्गहियएहिं। सुवर्णमय कण्ठाभरण युक्त तथा प्रतिविशिष्ट कहता वेगादिगुणे करी प्रधान तिणेकरी तथा रूपामय घण्टाछे जेहने तथा सूत्रमय रज्जु सूत्रना दोरडानी प्रवर प्रधान सुवर्ण विज्ञानमण्डित एहवी णत्थ कहिये नाथ तेणेकरी बाधाछे तिणेकरी तथा। णीलुप्पलकया मेलएहिं पवर गोण जुवाणए

॥ टीका ॥

पे कृतो विहित ॥ आमेलत्ति ॥ आपीडः शेखरो ययो स्तौ ताभ्या नीलोत्पलकृतापीडकाभ्या ॥ पवरगोणजुवाणएहिति ॥ प्रवरगोयुवभ्या नानाम णिरत्नाना सत्क यद्धटिकाप्रधान जाल जालक तेन परिगत परिक्षिप्त य त्त तथा सुजात सुजातदारुमय य द्युग यूप स्त त्सुजातयुग तच्च योक्त्रा रज्जुका युगञ्च योक्त्राभिधानरज्जुकायुग्म सुजातयुगयोक्त्ररज्जुकायुगे ते प्रशस्ते ऽतिशुभे सुविरचिते सुघटिते निर्मिते निविशिते यत्र तत् सुजा तयुगयोक्त्ररज्जुकायुगप्रशस्तसुविरचितनिर्मित ॥ एवमित्यादि ॥ एव स्वामिन् ! तथेति आज्ञया इत्येव ब्रुवाणा इत्यर्थ , विनयेना ञ्जलिकरणा

॥ मूल ॥

लुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुआणएहिं णाणामणिमयघंटियाजालपरिगतसुजातजुग्गजुत्तरज्जुयजुयपसत्थ सुविरचियनिम्मियपवरलक्खणोववेयं (ग्रंथ ६०००) धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह मम एय मा णत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया

अनुवाद

नानामणिमयघण्टिकाजालपरिगतसुजातयुगयोक्त्ररज्जुकायुगप्रशस्तसुविरचितनिर्मितप्रवरलक्षणोपपेत धार्मिक यानप्रवर युक्तमेवो पस्थापयत ममैतदाज्ञापित प्रत्यर्पयत, तदानी ते कौटुम्बिकपुरुषा ऋषभदत्तेन ब्राह्मणेनैव मुक्ता सतो हृष्ट (प्रभृति) यावत् हृदया करतल (प्रभृति)

॥ भाषा ॥

हि । नीलवर्ण जलज कमले करी कीधो आमेल कहिये शेखर जेहने एहवा प्रवर प्रधान तरुणवृषभ तणे जातरोरथ तेरथ केहवोछे । णाणा मणिमय घंटिया जाल परिगत सुजात जुग्ग जुत्तरज्जुय जुय पसत्थ सुविरचिय निम्मिय पवरलक्खणोववेय । नानाप्रकार मणि रत्नमय जे घण्टिका घाटी तेणेक री प्रधान जे जालक तेणे परिगत कहता सहित सुजात प्रशस्त काष्टमय भ्रमर सहित जुत्तकहिये जोत्र तेहनी रज्जु कहिये पाटा तेहनो युग कहि ये युगलछे जेहने विषे एहवा प्रशस्त अति रूडा सुघटित निर्मितकहिये निवेश्याछे जेणे रथे प्रधानलक्षणे करी सहित [ग्रंथ ६०००] धम्मिय जाणप्प वर जुत्तामेव उवट्ठवेह । एहवो धार्मिक धर्मकरवाने अर्थे यान प्रवर उत्तम रथछे ते वृषभसहिते ल्यावो । मम एय माणत्तिय पच्चप्पिणह । माहरो एह आज्ञा तुम्हे मुझने उतावलो पाछो सूपो एतले सज्जकरीने मुझने कहो जे रथ जोर्योछे । तएण से कोडुंबिय पुरिसा । तिवारे ते आज्ञाकारी सेवक पु

करयल जाव एवंसामी तहत्ता णाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवरं जुत्तामेव उवठवेत्ता जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तएणं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमइत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे, तएणं

याव देव स्वामिन् ! तथाज्ञया विनयेन वचन यावत् प्रतिश्रुत्वा क्षिप्रमेव लघुकरणयुक्त (प्रभृति) याव द्धार्मिक यानप्रवर युक्तमेवो पस्थापयित्वा याव त्तदाज्ञापित प्रत्यर्पयन्ति, तदा सऋषभदत्तो ब्राह्मण स्नातो यावदल्पमर्घाभरणालङ्कृतशरीरः स्वकीया द्गृहात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला यत्रैव धार्मिको यानप्रवर स्तत्रैवो पागच्छ त्युपागत्य धार्मिक यानप्रवर दुरूढ, स्तदा सा देवानदा

रप। उसभदत्तेण माहणेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयल जाव एवंसामी। ऋषभदत्त ब्राह्मणे इम कह्याथका हर्ष संतोष सहित यावत् हृदय थयो हाथजोडी यावत् इम हे स्वामिन्। तहत्ता णाए विणएण वयण जाव। तथा तिमज आज्ञाये करी इसो कहता इत्यर्थ विनयेकरी एतले गजलो करवे करी वचन यावत् सुणीने। पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरण जुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता। उतावला होज शीघ्रगामियाने विषे दत्तपणे युक्तछे इम यावत् धार्मिक धर्म करवा सम्बन्धी प्रधानरथ ह्यषभयुक्त करीने ल्यावे। जाव तमाणत्तिय पच्चप्पिणति। यावत् ते आज्ञा तेहने पाछी सूपे एतले कहे स्वामी रथ सज्जकरीने आणोछे। तएण से उसभदत्तेमाहणे ण्हाए। तिवारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मण स्नानकीधो। जाव अप्पमहग्घाभरणा लंकियसरीरे। यावत् भार थोडो मोल महघा एहवे आभरणे करी शोभायमान शरीरथको। सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता। पोताना घरथकी नीकले पोताना घरथको नीकलीने। जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला। जिहा बाहिरली उपस्थान शालाछे। जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे। जिहा धार्मिक यानप्रवरछे। तेणेवउवागच्छइ गच्छइत्ता। तिहा आव्या आवीने। धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे। धार्मिक यानप्रवरप्रते आरूढ थया चढ्या। त

॥ टीका ॥

दिना ॥ तएणं सा देवाणंदा माहणी त्यादि ॥ इहच स्थाने वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते–अतोऽन्तेउरसिण्हाया ॥ अन्तर्मध्येन्त पुरस्य स्नाता अनेनच कुलीना स्त्रिय प्रच्छन्ना. स्नातीति दर्शितं ॥ कयवलिकम्मा ॥ गृहदेवता प्रतीत्य (ग्र० १००००) कयकोउयमंगलपायच्छित्ता ॥ कृता नि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्ता न्यवश्यकार्यत्वा द्यया सा तथा तत्र कौतुकानि मषीतिलकादीनि मङ्गलानि सिद्धार्थकदूर्वादीनि ॥ किते ॥ कि ञ्चान्यत् ॥ वरपादपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउचियकडगखड्डुगएगावलीकठसुत्तउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तगनाणामणिरयणभूसणविराइयंगी ॥ वराभ्या पादप्राप्तनूपुराभ्या मणिमेखलया हारेणच रचितै रतिदैर्वा,सुखदउचितै र्युक्तै कटकैश्च ॥ खड्डुगत्ति ॥ अङ्गुलीयकैश्च एकावल्याच विचित्रमणिमय्या कण्ठसूत्रेणच उर.स्थेनच रूढिगम्येन ग्रैवेयकेणच प्रतीतेन उर स्थग्रैवेयकेणवा ; श्रोणिसूत्रकेणच कटीसूत्रेण नानामणिरत्नाना भूषणैश्च विराजितमग

॥ मूल ॥

सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता किते वरपादपत्त नेउरमणिमेहलाहाररइयउचियकडयखड्डुगएगावलीकठसुत्तउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तगणाणामणिरयणभूसणवि

॥ अनुवाद ॥

ब्राह्मण्य तोन्त पुरे स्नाता कृतवलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता किञ्च वरपादप्राप्तनूपुरमणिमेखलारचितोपचितकटकाङ्गुलीयकैकावलीक

॥ भाषा ॥

पण सा देवाणंदामाहणी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया कयवलिकम्मा । तिवारे ते देवानन्दा ब्राह्मणी माहे अंते उरनेविषे स्नानकीधो एतले कुलीन स्त्री प्रछन्न स्नान करे इसो देखाड्यो घरना देवश्रायीने कीधो पूजाप्रमुख । कय कोउय मगल पायच्छित्ता । कीधा कौतुक मगल तेहीज प्रायश्चित्त अवश्य करवावा य जेणे ते तिहा कौतुक मषी तिलकादिक मगल ते सरसव द्रोब प्रमुख । कितेवरपादपत्तनेउर मणिमेहलाहार रइय उचिय कडय खुड्डगएगावली कठसुत्तउरत्थ गेवेज्जसोणिसुत्तगणाणा मणिरयणा भूसणविराइयगी । वली काई वीजो प्रधान पगनेविषे पाम्यो नेउर मणिमेखलायें करी हार करी रचित तिणें उचितयुक्त कडे करी अगुलीय करी एकावली विचित्र मणिमय तिणें कण्ठसूत्रे उरस्थ तिणें ग्रैवेयक प्रसिद्ध श्रोणिसूत्र कहता कटिसूत्र इत्या दिक नाना मणिरत्न ना जे भूषण तिणेंकरी विराजितछे अग कहता शरीर जेहनो । चीणसुअवत्थपवरपरिहिया दुगुल्ल सुकुमाल उत्तरिज्जा । चौ

॥ टीका ॥

शरीर यस्या सा तथा ॥ चीणमुयवत्यपवरपरिहिया ॥ चीनांशुकं नाम यद्वस्त्राणां मध्ये प्रवरं तत्परिहितं निवसनीकृतं यया सा तथा ॥ दुगुल्ल सुकुमालउत्तरिज्जा ॥ दुकूलो वृक्षविशेष स्त द्वल्का ज्जात दुकूलं वस्त्रविशेष स्तत्सुकुमारमुत्तरीय मुपरिकायाच्छादनं यस्याः सा तथा ॥ सव्वोउय सुरभिकुसुमवरियसिरया ॥ सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः वृता वेष्टिता शिरोजा यस्याः सा तथा ॥ वरचंदणवंदिया ॥ वरचंदनं वन्दितं ललाटे निवेशित यया सा तथा ॥ वराभरणभूसियगीतिव्यक्तम्, कालागुरुधूमधूवियाइत्यपि व्यक्तं ॥ सिरिसमाणवेसा ॥ श्री देवता तया समाननेपथ्या, इत प्रक्रत वाचना नुश्रियते ॥ खुज्जाहिंति ॥ कुब्जिकाभि र्वक्रजङ्घाभि रित्यर्थ ॥ चिलाइयाहिंति ॥ चिलातदेशोत्पन्नाभि यावत्करणादिदं दृश्यं वामणियाहिं ॥

॥ मूल ॥

राइयंगी चीणसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुमवरियसिरया वरचंदण वंदिया वराभरणभूसियंगी कालागरुधूवधूविया सिरिसमाणवेसा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहू हिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं "वामणियाहिं वडहियाहिं बब्बरियाहिं ईसिगणियाहिं जोण्हियाहिं चारुगणिया

॥ अनुवाद ॥

यष्टमूक्षोरस्थग्रैवेयकश्रोणिसूत्रकनानामणिरत्नभूषणविराजिताङ्गी चीनांशुकवस्त्रप्रवरपरिहिता दुकूलसुकुमारोत्तरीया सर्वर्तुकसुरभिकुसुमवृतशिरो जा वरचंदनवन्दिता वराभरणभूषिताङ्गी कालागुरुधूपधूपिता श्रीसमानवेषा याव दल्पमहर्घाभरणालङ्कृतशरीरा बह्वीभि कुब्जिकाभि श्चिला

॥ भाषा ॥

नामुक वस्त्रना मे जे वस्त्रनेविषे प्रधान ते नियसनीकृत जेणे दुकूल वृक्षविशेष तेहना वल्कलनो नीपनो दुकूल वस्त्रविशेष ते सुकुमाल उत्तरीयछे ऊपर ओढनोछे जेहने । सव्वोउयसुरभिकुसुम धरिय सिरया । सर्व ऋतु नोपना सुगन्ध कुसुमफूल तिणेकरी वेढित मस्तकना केशछे जेहना । वरचंदण वंदि या वराभूसणभूसियगी । प्रधान चन्दन चरच्योछे ललाटे जेहने प्रधान आभरण भूषितछे अंग जेहनो । कालागुरु धूपधूविया सिरिसमाणवेसा । कालागु रु धूपेकरी धूपितछे जेह श्रीदेवता समानछे वेष जेहनो । जाव अप्पमहग्घा भरणा लंकियसरीरा । यावत् अल्पमूल्य भार मोल मुहघा तेहवे आभ रणेकरी अलङ्कर्योछे शरीर जेहनो । बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं । घणीए करी वांको जंघा जेहनीछे तिणेकरी चिलातदेशनी उपनी

॥ टीका ॥

कुब्जशरीराभि ॥ वडभियाहिं ॥ मडहकोष्टाभि ॥ बब्बरियाहि पउसियाहिं ऋसिगणियाहिं थासगणियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ल्हासिया हिं लउसियाहिं आरबीहिं दमिलाहिं सिंहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं वहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं ॥ नाणादेसीविदेसपरिपिंडिया हिं ॥ नानादेशीभ्यो बहुविधजनपदेभ्यो विदेशो तद्देशापेक्षया देशान्तरे परिपिण्डिता या स्ता स्तथा ॥ सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं ॥ स्वदेशनेपथ्य

॥ मूल ॥

हिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहिं आरबीहिं दमिलाहिं सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्कली हिं वहिलीहिं मुरंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसी विदेसपरिपिंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं इंगि

अनुवाद

तीभि "वांमनिकाभि वडभाभि (मडहकोष्टाभि) बार्बरीभि (बर्बरदेशसम्भवाभि) बकुसिकाभि आतु सिकाभिरितिवा, इसिनिकाभि. वासकिनाभि यौनिकाभि (योनिकदेशजाभि) पल्हविकाभि ल्हासिकाभि लासिकाभिरितिपाठान्तरम् (लासिकदेशोत्पन्नाभि) लकुसि काभि (लकुसदेशोत्पन्नाभि) आरबीभि (आरबदेशोत्पन्नाभि) द्रमलिकाभि (द्रमिलदेशोत्पन्नाभि) सैंहलीभि (सिंहलदेशोत्पन्नाभि) पौलिन्द्रीभि (पुलिन्द्रदेशोत्पन्नाभि) पौक्कलीभि (पुक्कलदेशजाभि) वाहलीभि (वहलदेशोत्पन्नाभि) मुरुण्डीभि (मुरुण्डदेशजाभि)

॥ भाषा ॥

नान्हा शरीरछे जेहना तिणेंकरी। वडभियाहिं बब्बरियाहिं पउसियाहिं इसिणियाहिं खारुगणियाहिं। जडकाष्ट सरीखो जंघो होयछे जेहनो वर्बर देशनी जपनी पउसियदेशनी जपनी ऋषिगणकदेशनी जपनी खारुगणिकादेशनी जपनी। जोणियाहिं पल्हवियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहिं। योनिकादेशनी जपनी पल्हवितदेशनी जपनी लउसितदेशनी जपनी। आरबीहिं दमिलाहिं सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्कलीहिं वहिलीहिं। आरबदेश नी जपनी दमिलदेशनी जपनी सिंघलदेशनी जपनी पुलिंददेशनी जपनी पुक्कलदेशनी जपनी वहिलीदेशनी। मुरंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं। मुर ण्डीदेशनी सबरदेशनी पारसीदेशनी। णाणादेसी विदेसपरिपिंडियाहिं। बहुविध जनपद थकी विदेश तेहना देशनी अपेक्षायें देशान्तरनेविषे प रिपण्डित एकठी तिणेंकरी। सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं। आपणादेशना शृङ्गार वेष ग्रह्या जेणें तिणेंकरी। इंगिय चिंतिय पत्थिय वियाणियाहिं।

मिव गृहीतो वेषो यकाभि स्ता स्तथा ताभि· ॥ इगियचिंतियपच्छियवियाणियाहि ॥ इङ्गितेन नयनादिचेष्टया चिन्तितञ्च परेण प्रार्थितञ्चा भि लिखित विजानति यास्ता स्तथा ताभि· ॥ कुसलाहि विणीयाहि ॥ युक्ता इति गम्यते ॥ चेडियाचक्कवालवरिसधरथेरकचुइज्जमहत्तरयविंदपरिखित्ता ॥ चेटीचक्रवालेना ऽर्थी त्स्वदेशसम्भवेन वर्षधराणा वर्द्धितकरणेन नपुसकीकृताना मन्त पुरमहल्लकाना ॥ थेरकचुइज्जाति ॥ स्थविरकञ्चुकिना मन्त पुरप्रयोजननिवेदकाना प्रतीहाराणा वा, महत्तरकाना चान्त पुरकार्यचिंतकाना वृन्देन परिक्षिप्ता या सा तथा' इदच सर्व वाचनान्तरे

यचिंतियपच्छियवियाणियाहिं कुसलाहिं विणीयाहि चेडियाचक्कवालवरिसधरथेरकंचुइज्जमहत्तरगविंदपरिक्खित्ता,, जाव अंतेउराओ णिग्गच्छइ २ इत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २ इत्ता जाव धम्मियं जाणप्पवर दुरूढा, तएणं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदा माहणीए स

शाबरीभि· (शावरदेशजाभि) पारसीभि (पारसदेशजाभि) नानादेशीविदेशपरिपिण्डिताभि स्वदेशनेपथ्यगृहीतवेषाभि रिङ्गितचिन्तितप्रार्थितविजानतीभि कुशलाभि विनीताभि श्चेटिकाचक्रवालवर्षधर स्थविरकञ्चुकीयमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्ता ,, यावदन्त पुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला यत्रैव धार्मिको यानप्रवर स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य याव द्धार्मिक यानप्रवर दुरूढा तदानी सऋषभदत्तो ब्राह्मणो

नेत्रादि चेष्टा मने चिंतव्यू । वाछ्या अगिलानी भलाव्यो जाणें तिणेंकरी । कुसलाहि विणियाहि । डाहो तिणेंकरी विनीत तिणेंकरी । चेडिया चक्कवाल वरिसधर थेरे कचुइज्ज महत्तरगविंद परिक्खित्ता । चेटिका दासी तेहनो समूह कृत्रिम नपुसक प्रयोजने पुरमाहि जाय अथवा पोलिया जे अन्त:पुरना कार्यना चिन्तक तेहना समूह तिणे परिकरित । अतेउराओ णिगच्छति २ त्ता । इम अते उरथकी नीकलै अते उरथकी नीकलीने । जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेवउवागच्छइ गच्छइत्ता । जिहा बाहिरिली उपस्थानशाला दरीखानो जिहा धार्मिक यानप्रवरछै तिहा आवै तिहा आवीने । जाव धम्मिय जाणप्पवरं दुरूढा । यावत् धार्मिक यानप्रवर प्रतें आरूढ थई चढी इत्यर्थं । तएण से उस

॥ टीका ॥
साद्धा देवास्ति ॥ सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाएत्ति ॥ पुष्पताम्बूलादिद्रव्याणां व्युत्सर्जनतया त्यागेनेत्यर्थः ॥ अचित्ताण दव्वाण अविमोयणयाए

॥ मूल ॥
ड्ढिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढेमाणे णियगपरियालसपरिवुडे माहणकुंडग्गाम णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्ताइए तित्थकराइसए पासइ २ त्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ २ त्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिसमागच्छइ त–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए एवं जहा विइएसए जाव तिविहाए पज्जुवा

अनुवाद
देवानन्दया ब्राह्मण्या सह धार्मिकं यानप्रवरं दुरूढ (आरूढो) निजकपरिवारसम्वृतो ब्राह्मणकुण्डग्रामात्ं नगरात् मध्येन मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बहुशालकं चैत्यं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकं तीर्थकरातिशयं पश्यति, दृष्ट्वा धार्मिकं यानप्रवरं स्थापयति, उपेत्य धार्मिकाद्यानप्रवरात् प्रत्यारोहति, प्रत्यारुह्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं पञ्चविधेनाभिगमेनाभिसमागच्छति, तद्यथा–सचित्तानां द्रव्याणां व्यु

॥ भाषा ॥
भदत्त माहणे। तिवारे ते ऋषभदत्तनामा ब्राह्मण। देवाणंदामाहणीए सद्धि। देवानन्दा ब्राह्मणी सघाते। धम्मिय जाणप्पवर दुरूढेमाणे। धार्मिक यानप्रवर आरूढ थया थका। णियग परियाल सपरिवुडे माहण कुंडग्गाम णयर मज्झंमज्झेण णिग्गच्छइ २ त्ता। पोताने परिवारे परिवर्या ब्राह्मण कुंडग्राम नगरने माहे माहें थइ नीकले नीकलीने। जेणेव बहुसालए चेइए। जिहां बहुशालनामे चैत्य छे। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता छत्ताइए। तिहां आवे तिहां आवीने छत्र उपर छत्र इत्यादिक। तित्थगराइसए पासइ २ त्ता। तीर्थंकरना अतिशय देखे देखीने। धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ २ त्ता। धार्मिक यानप्रवर प्रते थापे थापीने। धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता। धार्मिक यानप्रवर थकी उतरे उतरी। समण भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। पंचविहेणं अभिगमेणं। पंचविध अभिगम तेणे करी। अभिसमागच्छइ तं०। सामुहा जाय ते कहे छे –सचित्ताण दव्वाण विउसरणयाए। सचेतन द्रव्य जे पुष्प तांबूलादि तेहने मूकवें। एवं जहा विइएसए। इम जिम बीजे शतके। जाव तिविहाए पज्जुवा

॥ टीका ॥

ग्रत्ति ॥ वस्त्रादीना मत्यागेनेत्यर्थ ॥ मणसोएगत्तीभावकरणेणाति ॥ अनेकस्य सत एकतालत्तणभावकरणेन ॥ ठियाचेवत्ति ॥ ऊर्द्धस्थानस्थितैव प्र

॥ मूल ॥

सणयाए पज्जुवासइ, तएणं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाउ जाणप्पवराउ पच्चोरुहइ २ त्ता बहूहिं खुज्जा हिं जाव महत्तरगपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ तं—सचित्ताणं द व्वाणं विउसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं विमोयणयाए विणओणयाए गायलठीए चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहे णं मणसो एगत्तीभावकरणेणं जेणेव समणेभगवमहावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं

॥ अनुवाद ॥

त्सर्जनतया एव यथा द्वितीयेशते याव त्त्रिविधया पर्युपासनया पर्युपास्तेस्म, तदानी सादेवानन्दा ब्राह्मणी धार्मिकाद्यानप्रवरात् प्रत्या रोहति' प्रत्यारुह्य बह्वीभिः कुब्जिकाभि यावन्महत्तरकपरिक्षिप्ता श्रमणं भगवन्त महावीरं पञ्चविधेनाभिगमनेना भिसमागच्छति, सचित्ता ना द्रव्याणा व्युत्सर्जनतया ऽचित्ताना द्रव्याणामविमोचनतया विनयनतया गात्रयष्ट्या चक्षु स्पर्शेऽञ्जलिप्रग्रहेण मनसएकत्रीभावकरणेन यत्रैव

॥ भाषा ॥

सणयाए पज्जुवासइ । यावत् त्रिविध पर्युपासनाये करी मन वचन कायायें करी शुद्धपणें सेवाकरें । तएणं सादेवाणंदामाहणी । तिवारे ते देवानन्दा ब्राह्मणी । धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ २ त्ता । धार्मिक यानप्रवर थकी ऊतरे धार्मिक यानप्रवर थकी ऊतरीने । बहूहिं खुज्जाहिं जाव म हत्तरगपरिक्खित्ता । घणी बाकी जघाछे जेहनी एहवी दासी इत्यादि अन्त.पुरकार्य चिन्तक तेणेकरी परिवरी । समणं भगवं महावीरं पंचविहेण अभिगमेणं । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी प्रतें पचप्रकारे अभिगम तिणेकरी । अभिगच्छइ त० । सामुहा जाय ते कहेछे—सचित्ताणं दव्वाणं वि उसरणयाए । पुष्प ताबूलादिक सचित्तद्रव्य तेहने मूकवे करी । अचित्ताणं दव्वाणं विमोयणयाए विणओणयाए गायलठ्ठीए । वस्त्रादिकनो त्याग न क रवो तिणेंकरी विनयकरी नमाछे गात्र लष्ठी देहो जेहनो । चक्खुप्फासे अंजलि पग्गहेणं । चक्षु देखत समा अंजलि हाथने जोडवे करी । मणसो एगत्ती भावकरणेणं । मन चञ्चलछे ते अनेक थकाने एकलपण भावने करी । जेणेव समणे भगवं महावीरे । जिहां श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीछे । ते

॥ टीका ॥ नुपविष्टेत्यर्थ ॥ आगयपण्हयत्ति ॥ आयातप्रस्नवा पुत्रस्नेहा दागत स्तनमुखस्तन्येत्यर्थ ॥ पप्फुयलोयणा ॥ प्रस्नुतलोचना पुत्रदर्शनप्रवर्त्तितानन्दजलेन ॥ संवरियवलयवाहा ॥ संवृत्तौ हर्षातिरेका दतिस्थूरीभवन्तौ निषिद्धौ वलयै कटकै र्बाहू भुजौ यस्या सा तथा ॥ कंचुयपरिखित्तिया ॥ कञ्चुको वारवाण परिक्षिप्तो विक्षिप्तो विस्तारितो हर्षातिरेकस्थूरीभूतशरीरतया यया सा तथा ॥ धाराहयकलंबपुप्फगंपिवसमूससियरोमकूवा ॥ मेघधारा

॥ मूल ॥ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठियाचेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी णमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासइ तएणं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्फुयलोयणा संवरियवलियवाहा। कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहतकलंबपुप्फगंपि

अनुवाद श्रमणो भगवान् महावीर स्तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीरं त्रि कृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणा करोति, कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्य ऋषभदत्त ब्राह्मण पुरतः कृत्वा स्थिता चैव सपरिवारा। शुश्रूषमाणा नमस्यन्त्यभिमुखा विनयेन कृतप्राञ्जलि पर्युपासतस्म तदानी सा देवानन्दा ब्राह्मणी आगतप्रस्नवा प्रस्नुतलोचना सम्वारितवलयबाहु कञ्चुकपरिक्षिप्ता धाराहतकदम्बपुष्पमिव समुच्छ्वसि

॥ भाषा ॥ येवउआगच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीने। समण भगव महावीर। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें। तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ २ त्ता। तीनवार जीमणापासाथकी प्रदक्षिणा करे करीने। वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता। वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। उसभदत्त माहण पुरओकट्टु। ऋषभदत्त ब्राह्मण प्रतें आगे करीने। ठियाचेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी। ऊभीथकी पणि बेठीनही निश्चे परिवारसहित सेवा करती थकी। णमंसमाणी अभिमुहा विणएण पंजलिउडा पज्जुवासइ। नमस्कार करती थकी सामुही विनयेकरी हाथ जोडीने चिकरण शुद्ध सेवाकरे। तएण सा देवाणंदामाहणी आगयपण्हया। तिवारे ते देवानन्दा ब्राह्मणी पुत्रना स्नेहथकी स्तनमुखे दूध आव्यो। पप्फुयलोयणा संवरियवलयबाहा। पुत्रदर्शन आनन्द जलभरया नेत्र सवरीनिषेधी स्थूलथाका वलयबाहा अधिकहर्षं करी स्थूलबाहा थइ तिणेकरी चूडामा

॥ टीका ॥

न्याहृतकदम्बपुष्पमिव समुच्छ्वसितानि रोमाणि कूपेषु रोमरन्ध्रेषु यस्याः सा तथा ॥ देहमाणीति ॥ प्रेक्षमाणा अनिमेषयेचात्र द्विरुक्तिः ॥ भंतेत्ति॥ भदन्त । इत्येव मामन्त्रणवचसा मन्त्र्येत्यर्थः ॥ गोयमाइत्ति ॥ गौतम । इति एव मामन्त्र्य त्यर्थः, अथवा गौतम इति नामोच्चारणं अयीति आमन्त्रणार्थो

॥ मूल ॥

वसमुस्ससियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिठीए देहमाणी २ चिठइ, भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी—किण्णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया तचेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पिए अणिमिसाए दिठीए देहमाणी २ चिठइ गोयमादि !

अनुवाद

तद्रोमकूपा श्रमणं भगवन्तं महावीरं मनिमिषया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा तिष्ठतिस्म, भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यतिस्म, वन्दित्वा नमस्कृत्य एवमवादीत्—किम्भदन्त । एषा देवानन्दा ब्राह्मणी आगतप्रस्रवा तथैव यावद्रोमकूपा देवानुप्रिय मनिमिषया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा तिष्ठति ? गौतम । अयि । श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतम मेव मवादीत्—एवखलु गौतम । देवानन्दा ब्राह्मणी ममाम्बा

॥ भाषा

हि मावे नहीं । कचुयपरिक्खित्तिया । कञ्चुयाना बल खच्या कस टूटा इत्यर्थ । धाराहतकलंबपुष्पगमिव समुच्छसियरोमकूवा । मेघनी धाराये हण्या कदम्बफूलनी परे उससाके रोमकूप जेहना एहवी थकी । समण भगव महावीर । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रति । अणिमिसाए दिठीए देहमाणी २ चिठइ । मेषोन्मेष रहित दृष्टि करी वार वार देखती रहे । भंतेत्ति भगव गोयमे । हेभदन्त । इसे संबोधने भगवन्त गौतम । समण भगव महावीर वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी प्रति वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहे । किण्णंभते एसा देवाणंदामाहणी आगयपण्हया । किसे कारणे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । एह देवानन्दा ब्राह्मणी स्तनमुखे दूधनी धार छूटी । तचेव जाव रोमकूवा । इत्यादि तिमहीज यावत् उससाके रोमकूप जेहना । देवाणुप्पिए अणिमिसाए दिठीए । देवानुप्रिया प्रते मेषोन्मेषरहित दृष्टि देखती थकी । देहमाणी २ चिठइ । देखती थकी रहे । गोयमादि समणे भगव महावीरे । गौतम इसे आमन्त्रणे श्रमण भगवन्त

॥ टीका ॥ निपातो हे भो इत्यादिवत् ॥ अत्तएत्ति ॥ आत्मज पुत्र ॥ पुव्वपुत्तसिणेहाणुरागेणति ॥ पूर्वप्रथमगर्भाधानकालसम्भवो य पुत्रस्नेहलक्षणो नुरागः स पूर्वपुत्रस्नेहानुराग स्तेन ॥ महइमहालियाएत्ति ॥ महतीचासा वतिमहतीचति महातिमहती तस्यै आलप्रत्ययश्चेह प्राकृतप्रभव ॥ इसिपरिसा एत्ति ॥ पश्यतीति ऋषयो ज्ञानिन स्तद्रूपा पर्ष त्परिवार ऋषिपर्ष तस्यै यावत्करणा दिद दृश्य–मुणिपरिसाए जइपरिसाए अणेगसयाए अणेग

॥ मूल ॥ समणेभगवं महावीरे भगवं गोयमं एवंवयासी–एव खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी मम अम्मगा अहं ण देवाणंदाए महाणीए अत्तए तएणं सा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहाणुरागेणं । आगयपण्हया जाव समुस्ससियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिठइ तएणं समणे भगवं महावीरे उस

अनुवाद अह देवानन्दाया ब्राह्मण्या आत्मज, स्तत एषा देवानन्दा ब्राह्मणी तेन पूर्वपुत्रस्नेहानुरागेण आगतप्रस्नवा याव त्समुच्छ्वसितरोमकूपा मा मनिमिषया दृष्ट्या प्रेक्षमाणा तिष्ठति, तदा श्रमणो भगवान् महावीरो ऋषभदत्तस्य ब्राह्मणस्य देवानन्दाया ब्राह्मण्या स्तस्यै महातिमहत्यै

॥ भाषा ॥ श्री महावीरस्वामी । भगव गोयम एव वयासी । भगवन्त गौतम प्रते इम कहे । एव खलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम ! देवाणंदामाहणी मम अम्मगा । देवानन्दा ब्राह्मणी माहरी माता । अहण देवाणंदाए माहणीए अत्तए । ण वाक्यालंकारे, देवानन्दा ब्राह्मणीनो आत्मज बेटाछू । तएण सा देवा णंदामाहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहाणुरागेण । तेहभणी एह देवानन्दाब्राह्मणी तेह प्रथम गर्भाधान काल सम्भवज पुत्र स्नेह लक्षण अनुराग तिणेकरी एतले पहिला गर्भधरण वेलाये अम्हे एहने गर्भे ८२ रात्रिंदिन रह्या तिणेकरी अनुराग स्नेह करीने । आगयपण्हया । स्तनमुख दूधनो पानो आयो । जाव समुस्ससिय रोमकूवा । यावत् उससाछे रोमकूप जेहना । मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिठइ । मुझप्रते मेषोन्मेषरहित दृष्टि देखतीथ की वारवार रहे । तएण समणे भगव महावीरे । तिवारे श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी । उसभदत्तस्समाहणस्स । ऋषभदत्त ब्राह्मणने । देवाणंदा ए माहणीए । देवानन्दा ब्राह्मणीने । तीसेय महइ महालियाए इसिपरिसाए । तेह अतिमोटी तेहनेकाजे एहवी ज्ञानवन्तनी परिषदा परिवार

सयविदपरिवाराए इत्यादि ॥ तत्र मुनयो वाचयमा यतयस्तु धर्मक्रियासु प्रयतमाना अनेकानि शतानि यस्याः सा तथा तस्यै अनेकशतप्रमाणा

भदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसेयं महइमहालियाए इसिपरिसाए जाव परिसा पडिगया त
एणं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्मं सोच्चा णिसम्म हठतुठे उठाए उठे
इ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एववयासी—एयमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! जहा
खदओ जाव सेजहेय तुब्भे वदहत्ति कट्टु उत्तरपुरच्छिम दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्ला

ऋषिपरिषदे यावत् परिषत् प्रतिगता तदानी सऋषभदत्तो ब्राह्मणः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य हृष्ट तुष्ट उत्ति ष्ठति, उत्थाय श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रि कृत्वा यावं नमस्कृत्यैव मवादीत्–एतदेव भदन्त । तथैं तद्भदन्त । यथा स्कन्दको यावत् तद्य थे तत् यूय वदथ इतिकृत्वो उत्तरपौरस्त्य दिग्भाग मपक्रामति। अपक्रम्य स्वयमेवा भरणमाल्यालङ्कारानुन्मोचयति, उन्मोचयित्वा स्वयमेव पञ्च

तेहनेकाले देशना दीधी। जाव परिसापडिगया। यावत् पर्षदा स्थानके पहुती। तएणं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय ध म्म सोच्चा। तिवारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवन्त श्री महावीरदेवने समीपे धर्म साभलीने। णिसम्महट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता। हिए धरीने ह र्ष संतोष पाम्या उठे उभोथाय उठी उभा थईने। समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें तीनवार। जाव णमंसि त्ता एववयासी। यावत् नमस्कार करीने इम कहे। एयमेवं भंते तहमेवं भंते जहा खंदओ। इम एह हेभगवन्। तथा एह हेभगवन्। जिम खंदकेकह्यो। जाव सेजहेय तुब्भे वदहत्ति कट्टु। यावत् ते जिमहोज एह तुम्हे कहोछो इम करीने। उत्तरपुरच्छिमदिसिभाग अवक्कमइ २ त्ता। ईशानकूणि दिशिने भागे जाय ईशानकूणि दिशिनेभागे जाईने। सयमेव आभरणमल्लालंकारउमुयइ २ त्ता। आपणपेज आभरण माला अलङ्कार उतारे उतारीने। सयमे वपचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता। आपणपेज पञ्चमुष्टिक लोचकरे करीने। जेणेवसमणे भगवं महावीरे। जिहां श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी छे। ते

॥ मूल ॥

लंकारं ओमुयइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव णमंसित्ता एवंवयासी—आलित्तेणं भंते ! लोए पलित्तेणं भंते ! लोए जराए मरणेणय एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइए जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, जाव बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसम जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ मा

अनुवाद

मौष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिः कृत्वा आदक्षिणां प्रदक्षिणां यावन्नमस्कृत्य एवमवादीत्—आलिप्तो भदन्त ! लोकः प्रलिप्तो भदन्त ! लोको जरया मरणेन च एवमेतेन क्रमेण यथा स्कन्दकस्तथैव प्रव्रजितो यावत्सामायिकादीन्येकादशाङ्गानि अधीते, यावद्बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमदशम (भक्तैः) यावद्विचित्रैस्तपःकर्मभिरात्मानं भाव

॥ भाषा ॥

पास आवे २ त्ता । तिहां आवीने । समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव णमंसित्ता । श्रमण भगवन्त महावीर स्वामीने त्रण वार आदक्षिणा प्रदक्षिणा देई यावत् नमस्कार करीने । एवंवयासी । एम कहे । आलित्तेणंभंते लोए पलित्तेणंभंते लोए । हे भगवन् ! आ लोक अलित थयो, प्रदीप्त थयो आ लोक । जराए मरणेणय । जरा अने मरणे करी । एवं एएणं कमेणं । एम ए अनुक्रमे करी । जहा खंदओ तहेव पव्वइए । एम जिम खंदक तिमज प्रव्रजित थयो दीक्षा लीधी । जाव सामाइयमाइयाइं । यावत् सामायिक आदिदेई । एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ । इग्यार अंग भणे । जाव बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम दसम जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं । यावत् घणा उपवास बे उपवास त्रण उपवास चार उपवास यावत् नानाप्रकारना तपकर्मे करीने । अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं । आत्माने भावतां थकां घणां वर्ष । सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता । श्रमणपर्याय दीक्षापर्याय पाळे श्रमणपर्याय पाळीने । मासियाए संलेहणाए । मासिक

॥ टीका ॥ नि वृन्दानि परिवारो यस्या सा तथा तस्यै ॥ तएणं सा अज्जचंदणा अज्जेत्यादि ॥ इह देवानन्दाया भगवता प्रव्राजनकरणेपि यदा र्यचन्दनया

॥ मूल ॥ सि० २ त्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइ छेदेइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेत्ता जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । तएणं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण जाव णमंसित्ता एवंवयासी–एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खइ, तएणं समणे भगवं महावीरे देवाणंदा

॥ अनुवाद ॥ यन् बहूनि वर्षाणि सामान्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आत्मान झूसयति, झूसयित्वा षष्टिभक्तानि अनशनानिच्छे दयति, छेदयित्वा यस्यार्थ क्रियते नग्नभाव (प्रवृत्ति) यावत्तदर्थमाराध्य यावत्सर्वदु खप्रहीण, तदानी सा देवानन्दा ब्राह्मणी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा श्रमण भगवन्त महावीर त्रिःकृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणा यावन्नमस्कृत्य एवमवादीत्–एतदेव भ

॥ भाषा ॥ संलेखणायें करीने । अत्ताण झूसेइ मासि २ त्ता । आत्माने सेवे मासिकसंलेखणाये आत्माने सेवीने । सट्ठि भत्ताइ अणसणाइं छेदेइ २ त्ता । साठ भात अशनरहित छेदे छेदीने । जस्सट्ठाए कीरइ । जेहने अर्थे कीधोछे । नग्गभावे जाव तमट्ठ आराहेत्ता जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । नग्नभाव एतले निर्ग्रंथ अर्थे निर्ग्रंथपणो आदर्योछे तेह अर्थप्रते आराधीने यावत् सर्वदुःखथी प्रक्षीणथया मोक्षगया इत्यर्थ । तएणं सादेवाणंदामाहणी । तिवारे ते देवानन्दा ब्राह्मणी । समणस्स भगवओ महावीरस्स अंति० । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे मुक्यको । धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ । धर्म सांभली [illegible] ये धारी हर्ष सन्तोष पामी । समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव णमंसित्ता एववयासी । श्रमण भगवन्त श्री [illegible] ते तीनवार जीमणापासाथकी प्रदक्षिणा दे यावत् नमस्कार करीनें इमकहे । एवमेयभंते तहमेयंभंते एव जहा उसभदत्तो । इमहीज [illegible] त था एह हेभगवन् । इम जिम ऋषभदत्त । तहेव जाव धम्ममाइक्खइ । तिमहीज यावत् धर्म कहे । तएण समणे भगव महावीरे । तिवारे श्रमण भगव

॥ टीका ॥ पुन स्तत्करणं त स्नैवा नवगतावगमकरणादिना विशेषाधान मित्यवगन्तव्यमिति ॥ तमाणाएत्ति ॥ तदा ज्ञया आर्यचन्दनाज्ञया ॥ फुट्टमाणेहिंति ॥

॥ सूत्र ॥ माहणिं सयमेव पव्वावेइ पव्वावेइत्ता सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए सीसिणित्ताए दलयति, तएणं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदामाहणिं सयमेव मुंडावेइ, सयमेव सेहावेइ, एवं जहा उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयाणुरूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तहगच्छइ, जाव संजमेणं संजमइ, तएणं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अ

अनुवाद दत्त। तथैतद्भदन्त। एवं यथा ऋषभदत्तस्तथैव यावद्धर्म माख्याति, तदानी श्रमणो भगवान् महावीरो देवानन्दा ब्राह्मणी स्वयमेव प्रव्राजयति, प्रव्राजयित्वा स्वयमेव आर्यचन्दनायै शिष्यणीतया ददाति, तदानीं सा आर्यचन्दनार्या देवानन्दा ब्राह्मणी स्वयमेव मुण्डयति, स्वयमेव शिक्षयति, एवं यथा ऋषभदत्तस्तथैवार्यचन्दनाया आर्याया इदमेतद्रूप धार्मिकमुपदेशं सम्यक् प्रतिपद्यते, तदाज्ञया तथा गच्छति,

॥ भाषा ॥ न्त श्रीमहावीरस्वामी। देवाणदा माहणि सयमेव पव्वावेइ २ त्ता। देवानन्दाब्राह्मणी प्रतें पोतेज दीक्षाये पोतेज दीक्षा देईने। सयमेव अज्ज चंदणाए पोतेज आर्यचन्दनबाला। अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ। आर्याने शिष्यणीपणे दे। तएण सा अज्जचदणा अज्जा। तिवारे तेह आर्य चन्दनबाला आर्या। देवाणदा माहणि सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ। देवानन्दा ब्राह्मणी प्रतें पोतेज दीक्षा दे पोतेज आचारमार्ग सिखावे। एव जहा उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए। इम जिम ऋषभदत्त तिमहीज आर्य चन्दनबाला आर्या। इम एयाणुरूव धम्मिय उवदेस सम्म पडिवज्जइ। एह एहवे रूपें धर्मसबन्धी उपदेश भलीभांति पडिवजे आदरे ते आर्यचन्दनबाला। तमाणाए तह गच्छइ जाव संजमेण संजमइ। तेहनी आज्ञायेंकरी तिमज जाय यावत् संयमेंकरी प्रवर्त्ते चाले। तएण सा देवाणदा अज्जा। तिवारे ते देवानन्दा आर्या। अज्जचदणाए अज्जाए अंतियं। आर्यचन्दनबाला आर्याने समीपे। सामाइय माइयाइ एकारस अगाइ अहिज्जइ सेसतचेव। सामायिक आदिदेई इग्यारे अगप्रतें भणे शेष तिमहीज निये। जाव सव्वदुक्खप्पहीं

अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भि रिव विदलद्भि रिवे त्यर्थ ॥ मुइंगमत्थएहिंति ॥ मृदङ्गाना मर्दलाना मस्तकानीव मस्तकानि उपरिभागा पुटा नीत्यर्थो मृदङ्गमस्तकानि ॥ बत्तीसइबद्धेहिंति ॥ द्वात्रिंशता अभिनेतव्यप्रकारै पात्रै रित्येके बद्धानि द्वात्रिंशद्बद्धानि तै ॥ उवनच्चिज्जमाणेत्ति ॥ उपनृत्यमान स्त मुपाश्रित्य नर्त्तनात् ॥ उवगिज्जमाणेत्ति ॥ तद्गुणगानात् ॥ उवलालिज्जमाणेत्ति ॥ उपलाल्यमान इप्सितार्थसम्पादनात् ॥ पाउसेत्या

हिज्जइ, सेस तचेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणा । तरसणं माहणकुंडग्गामस्स णयरस्स पच्चच्छिमेणं एत्थणं ख त्तियकुंडग्गामे णामं णयरे होत्था वण्णओ तत्थणं खत्तियकुंडग्गामे णयरे जमाली णाम खत्तियकुमारे परिव सइ, अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं

यावत् सयमेन सयमते, तदा सा देवानन्दायो आर्यचन्दनाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीन्येकादशाङ्गादीन्यधीते शेष तचैव यावत्स र्वदु खप्रक्षीणा ॥ तस्य ब्राह्मणकुण्डग्रामस्य नगरस्य पाश्चात्येनात्र क्षत्रियकुण्डग्राम नाम नगरमत्रवर्णकस्तत्र क्षत्रियकुण्डग्रामे नगरे जमाली तिनाम्ना क्षत्रियकुमार परिवसति, आढ्या दीप्तो यावदपरिभूत उपरिप्रासादवरगत स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तके द्वात्रिंशद्बद्धैर्नाटकैर्नानाविधवरतरु

णी । यावत् सर्वदु खथका मूकाणा ए ऋषभदत्त देवनन्दानो अधिकार कह्यो । तसा माहणकुडगामस्स णयरस्स पच्चच्छिमेण । तेहने ब्राह्मण कुण्डग्राम नगरने पश्चिमे । एत्थणं खत्तिय कुडग्गामेणामणयरे होत्था वण्णओ । इहा ए वाक्यालंकारे, क्षत्रिय कुण्डग्रामनामे नगरहुं यो इहा उवाईउपाङ्गथकी वर्ण न करवो । तत्थणं खत्तियकुडग्गामे णयरे जमालीणामखत्तियकुमारे परिवसइ । तिहा ए वाक्यालंकारे, क्षत्रियकुण्डग्राम नगरनेविषे जमालीनाम क्षत्रि यकुमार वसछे । अड्ढेदित्ते जाव अपरिभूए उप्पि पासाय वरगए । ऊपर प्रासाद प्रधाननेविषे बेठोथको । फुट्टमाणेहिं मुयगमत्थएहिं । अतर भसे आस्फालन थको जाणे फूटता मादलना माथाओपरे माथा ऊपरला भाग पुडा तिणेकरी । वत्तीसइबद्धेहिं नाडएहिं । बत्तीसबद्धना नाटके करी एह नाटकनी पद्धति रायपसेणी उपागथी जाणवी । णाणाविह वर तरुणी संपउत्तेहिं । अनेकदेशनी जपनी प्रधान तरुणी युवान स्त्री तिणे रच्योछे ।

॥ टीका ॥

दि ॥ तत्र प्रावृट् श्रावणादि, वर्षारात्रो ऽश्वयुजादि, शरन्मार्गशीर्षादि हेमन्तो माघादि, वसन्त श्चैत्रादि, ग्रीष्मो ज्येष्ठादि, ततश्च प्रावृड्वर्षारात्रश्च शरच्च हेमन्तश्च वसन्तश्चेति प्रावृड्वर्षारात्रशरद्धेमन्तवसन्ता स्तेच ते ग्रीष्मपर्यन्ताश्चेति कर्मधारयो ऽत स्तान् षडपि ऋतून् कालविशेषान् ॥ माण माणेत्ति ॥ मानयन् तदनुभाव मनुभवन् ॥ गालेमाणेत्ति ॥ गालयन् अतिवाहयन् ॥ सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर ॥ इह यावत्करणा दिदंदृश्य–चउ

॥ मूल ॥

णाणाविहवरतरुणीसपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे पाउसवासारत्तसारदहेमंतवसंतगिम्हपज्जंतं छप्पिउऊ जहाविभवेणं माणमाणे कालंगालेमाणे इट्ठे सद्दे फरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ, तएणं खत्तियकुंडग्गामे णयरे सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव बहुजणसद्देइवा जहा उववाइए जाव एवं

अनुवाद

णीसम्प्रयुक्तैरुपनृत्यमान उपगीयमान उपलाल्यमान. प्रावृड्वर्षारात्रशरद्धेमन्तशिशिरवसन्तग्रीष्मपर्यन्तान् षडपिऋतून् यथाविभवेन मानयन् गालयन् इष्टान् शब्दान् स्पर्शरसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मनुष्यसम्बन्धीन् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरति, तदानी क्षत्रियकुण्डग्रामे नगरे श्रृ

॥ भाषा ॥

उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २। बत्तीसबद्ध नाटके नचावी तो पतले स्त्री भाव तेहना कह्याने अनुसारे नाटक करेछे तिमज मालो गिरो धनन हस्तन्यासादि अतिरस भर करेछे इणे कारणे, नच्चिज्जमाणे, तेहने गुणे गावीजतो थको २ धनने अनुसारे दानादि देवरावेछे। पाउसवासारत्तसारदहेमंतसिसिरवसंतगिम्हपज्जंते। श्रावण भाद्रवो वर्षा आसोज कार्त्तिक शरद मगसिर पोस हेमन्त माघ फागुन शसिर चैत्र वैशाख वसन्त ज्येष्ट आषाढ ग्रीष्म पर्यन्त। छप्पिउऊ जहा विभवेण माणेमाणे। छए ऋतु कालविशेष प्रते यथा सम्पदाये करीने मानतो मानतो। कालिगाले माणे इट्ठे सद्दे फरिसरूवगंधे पचविहे माणुस्सए। कालप्रते गालतो अतिवाहतो थको इष्टवल्लभ शब्द स्पर्श रस रूप गन्धेकरी पचप्रकारे मनुष्यसंबधी। कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ। कामभोग अनुभवतो थको विचरेछे। तएण खत्तियकुंडग्गामे णयरे। तिवारे क्षत्रिय कुंडग्राम नगरनेविषे। सिंघाडग

॥ टीका ॥

महयापसद्देतुति ॥ बहुजणसद्देइवत्ति ॥ यत्र शृङ्गाटकादौ बहूनां जनानां शब्द स्तत्र बहुजनोऽन्योन्यस्यैव माख्यातीति वाक्यार्थ, तत्र बहुजनशब्द. परस्परालापादिरूप, इतिशब्दो वाक्यालङ्कारे' वाशब्दो विकल्पे ॥ जहाउववाइएत्ति ॥ तत्र चेद सूत्र मेव लेशत—जणवूहेइवा जणबोलेइवा ज णकलकलेइवा जणुम्मीइवा जणुक्कलियाइवा जणसन्निवाएइवा बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवभासइत्ति, अस्याय मर्थो ' जनव्यूह इ नसमुदाय बोलो ऽव्यक्तवर्णो ध्वनि. कलकल स एवोपलभ्यमानवचनविभाग, ऊर्मि सम्बाध उत्कलिका लघुतर. समुदाय सन्निपातो ऽपरा परस्थानेभ्यो जनाना मेकत्र मीलन माख्याति समान्यतो भाषते व्यक्तपर्यायवचनत एतदेवाह द्वय पर्यायत एवमाइ—एव प्रज्ञापयति प्ररूपयती ति ॥ अहापडिरूव ॥ इह यावत्करणा दिद दृश्य—उग्गा' भोगाइ उगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणेत्ति जहा उववाइएत्ति„ तदे व लेशतो वर्ण्यते—नामगोयस्सवि सवणयाए किमगपुण अभिगमणवदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयण स्स सवणयाए किमगपुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए त गच्छामो ण देवाणुप्पिया समण ३ वदामो ४ एय णो पेच्चभवे हियाए ५ भविस्सइत्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता एव भोगा राइण्णा खत्तिया भडा अप्पेगइया वदणवत्तिय एव पूयणसक्कारवत्तिय कोउहल्लवत्तिय अप्पेगइया जीयमेय तिकट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा इत्यादि एव जहा उववाइए तत्र चैतदेव सूत्र—तेणामेव उवागच्छइ २ छत्ताईए तित्थयराइसए पासति २ आणवाह

॥ मूल ॥

पन्नवेइ एव परूवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी

अनुवाद

शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वर (प्रभृति) यावद्बहुजनश[ब्द]... यावदेव प्रज्ञापयति एव प्ररूपयति, एव खलु देवानुप्रिया. ! श्रमणो भगवान्महावीर आदिकरो यावत्सर्वज्ञ सर्वदर्शी ब्राह्मणकुण्डग्रामस्य नगरस्य बहिर्शालकचैत्ये यथाप्रतिरूप यावद्विहरते, तन्महत्फलं

॥ भाषा ॥

इस शृङ्गाटक चत्वर यावत् बहुजन शब्दइत्या जहा उववाइए जाव एव पन्नवेइ एव परूवेइ । सिंघाडेके आकार तिन ... यावत् घणा मनुष्य शब्द तिहां घणा मनुष्य एक एकने माहोमाहि इम कहेछे जिम उवाईउपाङ्गनेविषे कह्यु तिम कहवो इम विशेष कहेछे इम परूपेछे । एवंखलु देवाणुप्पिया ।

माहणकुंडग्गामस्स णयरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महप्फलं खलु देवा णुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं जहा उववाइए जाव एगाभिमुहे खत्तियकुंडग्गामं णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे णयरे जेणेव बहुसालए चेइए एवं जहा उववाइए जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव स

खलु देवानुप्रिया ! तथारूपाणामर्हतां भगवतां यथौपपातिके यावदेकाभिमुखः क्षत्रियकुण्डग्रामस्य नगरस्य मध्य मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य य त्रैव ब्राह्मणकुण्डग्राम नगरं यत्रैव बहुशालकश्चैत्य एव यथौपपातिके यावत् त्रिविधया पर्युपासनया पर्युपासते स्म, तदा तस्य जमाले: क्षत्रिय कुमारस्य तन्महज्जनशब्द वा यावत्सन्निपात वा शृण्वतो वा पश्यतो वा ऽयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुदपीपदत्--किमद्य क्षत्रियकुण्डग्रामे

तिम निश्चे देवानुप्रिय । समणेभगव महावीरे आदिगरे जाव सव्वणू सव्वदरिसी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी आदिना करणहार यावत् सर्वज्ञ स र्ववस्तुना जाणणहार सर्व वस्तुना देखणहार कहिये सर्वदर्शी । माहणकुंडग्गामस्सणयरस्स बहिया । ब्राह्मण कुण्डग्राम नगरने बाहिर । बहुसालए चेइए अहापडिरूव जाव विहरइ । बहुशाल चैत्ये यथा प्रतिरूप यावत् विचरे । त महप्फल खलुदेवाणुप्पिया तहा रूवाण । तेहभणी महाफल निश्चे हेदेवानु प्रिया । तथा रूपनो । अरहताण भगवताण जहा उववाइए जाव एगाभिमुहे । अरहन्तनो भगवन्तनो इत्यादि जिम उवाईउपांगनेविषे कह्यु तिम कह वो यावत् एकदिशि सामुहा मनुष्य । खत्तियकुंडग्गाम णयर मज्झमज्झेण णिगच्छइ २ त्ता । क्षत्रिय कुण्डग्राम नगरे मध्ये मध्ये करी नीकल नीकलीने । जेणेवमाहणकुंडग्गामे णयरे । जिहा ब्राह्मण कुण्डग्राम नगर । जेणेव बहुसालए चेइए । जिहां बहुशाल चैत्यछे । एव जहा उववाइए । इम जिम उवाई उपागनेविषे कह्यु तिम कहवो । जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ । यावत् मन वचन काया रूप त्रिविध पर्युपासनाये सेवे । तएण तस्स जमालि स खत्तियकुमारस्स । तिवारे तेहने जमाली क्षत्रियकुमारने । तमहया जण सद्दवा जाव सणिवायवा । तेहप्रते मोटा जननो शब्द यावत् घणा मनुष्य

॥ टीका ॥

णाइदाइतीत्यादि ॥ अयमेयारूवत्ति ॥ अय मेतद्रूपो वक्ष्यमाणस्वरूप' ॥ अज्झत्थिएत्ति ॥ आध्यात्मिक आत्माश्रितो यावत्करणा दिदं दृश्य-चिंतिएत्ति ॥ स्मरणरूप ॥ पत्थिएत्ति ॥ प्रार्थितो लब्धु वाञ्छित ॥ मणोगएत्ति ॥ अबहि.प्रकाशितः ॥ संकप्पेत्ति ॥ विकल्प ॥ इंदमहेइवत्ति ॥ इन्द्रमह इन्द्रोत्सव ॥ खंदमहेइवत्ति ॥ स्कन्दमह. कार्त्तिकेयोत्सव' ॥ मुगुंदमहेइवत्ति ॥ इह मुकुन्दो वासुदेवो बलदेवोवा ॥ जहा उववाइएत्ति ॥ सत्र चेदमेव सूत्र-मारया प्रज्ञा जोहा मलई लेच्छई पभेय घटवं राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइत्ति ॥ तत्र भटा शूरा ' योधा

॥ मूल ॥

खित्तायंवा सुणमाणस्सवा पासमाणस्सवा अय मेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—किं णं अज्ज खत्तिय कुंडग्गामे णयरे इंदमहेइवा खंदमहेइवा मुगुंदमहेइवा णागमहेइवा जक्खमहेइवा भूयमहेइवा कूवमहेइवा तडागमहेइवा नईमहेइवा दहमहेइवा पव्वयमहेइवा रुक्खमहेइवा चेइयमहेइवा थूभमहेइवा जं णं एए

॥ अनुवाद ॥

नगरे इन्द्रमह इति वा स्कन्दमह इतिवा मुकुन्दमह इति वा नागमह इति वा यक्षमह इति वा भूतमह इति वा कूपमह इति वा तडागमह इति वा नदीमह इति वा ह्रदमह इति वा पर्वतमह इति वा वृक्षमह इति वा चैत्यमह इति वा स्तूपमह इति वा यदेते बहव उग्रा भोगा राजन्या इक्ष्वा

॥ भाषा ॥

कोलाहल। सुणमाणस्सवा पासमाणस्सवा। सुणतांथकाने देखतांथकाने। अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था। एह एहवेरूपे आगे कहीसे ते आत्मा आश्रयीने मनोगत सकल्प उपनो। किंण अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे। किसे कारणे ण वाक्यालंकारे, आज क्षत्रियकुण्डग्राम नगरनेविषे। इंदमहेइवा मुगुंदमहेइवा णागमहेइवा जक्खमहेइवा भूयमहेइवा। इन्द्रनो महोत्सवछै अथवा कार्त्तिकेयनो महोत्सवछै वासुदेव तथा बलदेवनो महोत्सवछे नागदेवना महोत्सवछै यक्षव्यन्तरनो महोत्सवछै भूतदेवनो महोत्सवछै। कूवमहेइवा तडागमहेइवा। कूवानो महोत्सवछै तालावनो महोत्सवछै। नईमहेइवा दहमहेइवा पव्वयमहेइवा रुक्खमहेइवा चेइयमहेइवा थूभमहेइवा। नदीनो महोत्सवछै द्रहनो महोत्सवछै पर्वतनो महोत्सवछै वृक्षनो महोत्सवछै चैत्यनो महोत्सवछै स्तूपमहोत्सवछै। ज ण एए बहवे। जेहभणी एए घणा। उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाया कोरवा। उग्रवंशना भोगवंशना राजन्यवंश

॥ टीका ॥ सहस्रयोधादयो, मल्लई लेच्छई राजविशेषाः, राजान सामन्ताः, ईश्वरा युवराजादयः, तलवरा राजवल्लभाः, माडंविका सन्निवेशविशेषनायकाः, कौ

॥ मूल ॥ बहवे उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा णाया कोरवा खत्तिया खत्तियपुत्ता भडा भडपुत्ता सेणावती पसत्थारो लेच्छइ माहणा इब्भा जहा उववाइए सत्थवाहप्पभितयो एहाया कयवलिकम्मा जहा उववाइए जाव णिग्गच्छंति, एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता एवं कंचुइज्जपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी–किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे इंदमहेइवा जाव णिग्गच्छंति, तएणं से कंचुइज्जपुरिसे जमालि

अनुवाद रव्यो ज्ञाता कौरवाः क्षत्रिया क्षत्रियपुत्रा भटा भटपुत्रा सेनापतयः प्रशास्तारो लेच्छकिनो माहना इभ्या यथौपपातिके सार्थवाहप्रभृतयः स्नाता कृतबलिकर्मा यथौपपातिके यावन्निर्गच्छन्ति, एवं सम्प्रेक्षते (चिन्तयतीयं) सम्प्रेक्ष्य (चिन्तयित्वा) एवं कञ्चुकीयपुरुषं (अन्तःपुररक्षकम्) शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्–किं देवानुप्रिय ! अद्य क्षत्रियकुण्डग्रामे नगरे इन्द्रमह इति वा यावन्निर्गच्छन्ति, त

॥ भाषा ॥ ना इक्ष्वाकुवंशना ज्ञातवंशना कौरववंशना । खत्तिया खत्तियपुत्ता भडा भडपुत्ता सेणावई पसत्थारो लेच्छई माहणा इब्भा । क्षत्रिय क्षत्रियपुत्र सुभट सुभटपुत्र सेनापती प्रशास्तार लेच्छकी ब्राह्मण धनाढ्य । जहा उववाइए सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया । जिम उवाईउपांगनेविषे कह्यु तिम वाहवो सार्थवाह प्रमुख स्नानकीधो । कयबलिकम्मा जहा उववाइए । कीधा घरनादेवताने बलिकर्म जिम उवाईउपांगनेविषे कह्यु तिम इहां पणि कहवो । जाव णिग्गच्छंति एवं संपेहेइ २ त्ता । यावत् मनुष्यना समूह नीकलेछे इम चिन्तवे चिन्तवीने । एवं कंचुइज्ज पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी । इम तेजे अंतःपुरनी चिन्ताकरे ते पुरुष प्रतें तेडावे पुरुषप्रतें तेडावीने इमकहे । किण देवाणुप्पिया । किसे कारणे हे देवानुप्रिया । अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे इंदमहेइवा जाव णिग्गच्छंति । आज क्षत्रियकुण्डग्राम नगरनेविषे इन्द्र महोत्सवछे इत्यादि यावत नीकलेछे । तएणं से कंचुइज्जपुरिसे । तिवारे ते कंचुकिपुरुष । जमालिणामेणं खत्तियकुमारेणं एवं वुत्तेसमाणे हट्ठतुट्ठे । जमाली क्षत्रियकुमारे इम कह्याथका हर्ष सन्तोष पाम्यो । समणस्स भगवओ महा

॥ टीका ॥

टुम्बिका कतिपयकुटुम्बनायका', इभ्या महाधना' ॥ जहाउववाइएत्ति ॥ अनेनचेद सूचित-कयकोउयमगलपायच्छित्ता सिरसाकंठेमालाकडाइ त्यादि „ शिरसा कण्ठे च माला कृता धृता यै स्ते तथा प्राकृतत्वा च्चैव निर्द्देश ॥ आगमणगहियविणिच्छएत्ति ॥ आगमने गृहीत. कृतो विनिश्च यो निर्णयो येन स तथा ॥ जएण विजएण वद्धावेइत्ति ॥ जय त्व विजयत्व मित्येव माशी र्वचनेन भगवत समागमनसूचनेन त मानन्देन व

॥ मूल ॥

णामेणं खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हठतुठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलजमालिं खत्तियकुमार जएणं विजएण वद्धावेइ वद्धावेइत्ता एवं वयासी—णोखलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे णयरे इंदमहेइवा जाव णिग्गच्छति, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेभगवं महा वीरे जाव सव्वसू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स णयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहारूवं उग्गहं जाव

अनुवाद

दा स कञ्चुकीयपुरुषो जमालिना क्षत्रियकुमारेणैवमुक्त. सन् हृष्टतुष्ट. श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यागमनगृहीतविनिश्चय. करतल (प्रभृ ति) यावज्जमालि क्षत्रियकुमार जयेन विजयेन वर्द्धापयति, वर्द्धापयित्वा एवमवादीत्-न खलु देवानुप्रिया । अद्य क्षत्रियकुण्डग्रामे नगरे इन्द्रमह इति वा यावन्निर्गच्छन्ति, एव खलु देवानुप्रिया । श्रमणो भगवान् महावीरो यावत्सर्वज्ञ सर्वदर्शी ब्राह्मणकुण्डग्रामस्य नगरस्य ब

॥ भाषा ॥

हारस्य । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीनो । आगमणगमणविणिच्छए । आगमनथयो तिहा सर्वमनुष्य गमनकरेछे एहवो निश्चयकरीने । करयल जमालि खत्तियकुमारेण । हाथजोडी जमाली क्षत्रियकुमार प्रते । जएण विजएण वद्धावेइ २ त्ता एव वयासी । जय विजय शब्देकरी बधावै बधावीने इमकहै । णो खलुदेवाणुप्पिया । नही निश्चे अहोदेवानुप्रिया । अज्जखत्तियकुडग्गामेणयरे इदमहेइवा जाव णिग्गच्छति । आज क्षत्रियकुण्डग्राम नगर नविषे इन्द्रमहोत्सवछै इत्यादि यावत् नीकलछे । एव खलुदेवाणुप्पिया समणे भगव महावीरे जाव सव्वणू सव्वदरिसी । इम निश्चे हेदेवानुप्रिया । श्रम ण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी यावत् सर्ववस्तुना जाणणहार सर्ववस्तुना देखणहार । माहणकुडग्गामस्स णयरस्स वहिया बहुसालए चेइए । ब्राह्मण कुड

॥ टीका ॥

द्वयतीति जाव ॥ अप्पेगइया वंदणवत्तिय जाव निग्गच्छतीए यावत्करणा दिद दृश्य–अप्पेगइया पूयणवत्तियं एव सक्कारवत्तिय सम्माणवत्तियं को उहल्लवत्तिय असुयाइ सुणिस्सामो सुयाइ निस्संकियाइ करिस्सामो मुण्डेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो अप्पेगइया हयगया एव गय रहसिवियासंदमाणिया गया अप्पेगइया पायविहारचारिणो पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता महयाउक्किट्ठसीहणायबोलकलरवेण समुद्दरवभूयंपिवकरे माणा खत्तियकुण्डग्गामस्स मज्झंमज्झेणंति „ चाउग्घंटति ॥ चतुर्घंटोपेत ॥ आसरहंति ॥ अश्ववाह्यरथ ॥ जुत्तामेवत्ति ॥ युक्तमेव ॥ जहा उववाइए

॥ मूल ॥

विहरइ, तए एए बहवे उग्गा भोगा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं जाव णिग्गच्छंति, तएणं जमाली खत्तियकुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता ममएय

॥ अनुवाद ॥

द्बहुशालके चैत्ये यथारूपमवग्रहं यावद्विहरते, तत एते बहव उग्रा भोगा (इत्यादि) यावदेके के चन वन्दनवृत्तिका यावन्निर्गच्छन्ति, तदा जमालि क्षत्रियकुमार कञ्चुकीयपुरुषस्यान्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया! चातुर्घंटमश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत, उपस्थापयित्वा ममैतदाज्ञापित प्रत्यर्पयतस्तदानी ते कौटुम्बिकपुरु

॥ भाषा ॥

ग्राम नगरनेबाहिर बहुशालनामा चैत्ये। अहापडिरूव उग्गहं जाव विहरइ। यथा प्रतिरूप अभिग्रह ग्रहीने यावत् विचरेछे। तए एए बहवे उग्ग भोगा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं जाव णिग्गच्छति। तेहभणी एह सघलाई घणा उग्रवंशना भोगवंशना केतलाएक वन्दवाने कारणे यावत् नीकलेछे। तए णं जमाली खत्तियकुमारे कंचुइज्ज पुरिसस्स अंतिए। तिवारे जमाली क्षत्रियकुमार कञ्चुकिपुरुषना अंत.पुर रक्षकपुरुषना मुखथी। एयमट्ठंसोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे। एहवो अर्थ सांभलीने हिए धरीने हर्ष सन्तोष पाम्या थका। कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी। कौटुम्बिकपुरुष कहिये सेवक पुरुष तेहावे तेडावीने इमकहे। खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया। उतावलाथाओ अहो देवानुप्रियाओ। चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह २ त्ता। चार

॥ टीका ॥

परिसावण्णेत्ति ॥ यथा कौणिकस्यौपपातिके परिवारवर्णक उक्त स्तथा स्यापी त्यर्थ सचाय–अणेगगणनायकदण्डनायकराईसरतलवरमाडंबिय मतिमरामतिगणगदोवारियग्रमच्चचेडपीढमद्दनगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहदूयसंधिवालसद्धिंसपरिवुडेत्ति „ तत्रा नेके ये गणनायका प्रकृतिमहत्तरा· द ण्डनायका स्तन्त्रपालका राजानो माण्डलिका ईश्वरा युवराजा स्तलवरा परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीया माडम्बिका च्छि न्नमडम्बाधिपा· कौटुम्बिका कतिपयकुटुम्बप्रभवो ऽवलगका मन्त्रिण प्रतीता महामन्त्रिणो मन्त्रिमण्डलप्रधाना· हस्तिसाधनोपरिका इति च वृद्धा ' गणकागणितज्ञा भाण्डागारिका इतिच वृद्धा , दौवारिका प्रतीहारा अमात्या राज्याधिष्ठायका चेटा· पादमूलिका पीठमर्दा आस्था ने आसनासीनसेवका वयस्या इत्यर्थ , नगर नगरवासिप्रकृतयो ' निगमा· कारणिका , श्रेष्ठिन· श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गा· ,

॥ मूल ॥

माणत्तियं पञ्चप्पिणह, तएणं तेकोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेण एवंवुत्ता समाणा पञ्चप्पिणाति, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता रहाए कयबलिकम्मे जहा उववाइए परिसावसाउ तहा भाणियव्वं जाव चंदणोक्खित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघ

॥ अनुवाद ॥

या जमालिना क्षत्रियकुमारेणैवमुक्ता· सन्त· प्रत्यर्पयन्ति, तदा स जमालि क्षत्रियकुमारो यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नात· कृतबलिकर्मा यथौपपातिके परिषद्वर्णकस्तथा भणितव्यो यावच्चन्दनोक्षिताङ्गशरीर· सर्वालङ्कारविभूषितो मज्जनगृहात्प्रतिनिष्क्रामति, प्रति

॥ भाषा ॥

घण्टासहित घोडावडे एहवो रथ युक्तकरी लेयआवो लेयआवीने। ममएयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। माहरी एह आज्ञाकरीने पाछी आपो। तएण ते को डुंबियपुरिसा। तिवारे ते आज्ञाकारी सेवकपुरुष। जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ता समाणा पच्चप्पिणाति। जमाली क्षत्रियकुमारे इम कह्यायका ते चार घट अश्वरथ सज्जकरी आवी कहे स्वामी अम्हे रथ सज्जकरी ल्यावाछा। तएण से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार जिहा मज्जननो घरछे। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। तिहांआवै तिहा आवीने। रहाए कयबलिकम्मे जहा उववाइए परिसावण्णओ तहा

॥ टीका ॥

सेन पतय· सैन्यनायका दूता अन्येषां राजादेशनिवेदका. सन्धिपाला राज्यसन्धिरक्षका एषां द्वन्द्वः स्तत स्तै रिह तृतीयाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य, सार्द्धं सह नकेवल सहितत्वमेवा पितु तैः समितिः समन्ता त्परिवृत्त परिकरित इति„ चदणुक्खित्तगायसरीरेत्ति ॥ चन्दनोपलिप्ताङ्गदेह इत्य र्थः ॥ महयाभडचडगरपहकरविंदपरिक्खित्तत्ति ॥ महयत्ति ॥ महता वृहताप्रकारेणेति गम्यते, भटाना प्राकृतत्वा न्महाभटाना वा, ये ॥ चडगर ॥ इत्यादिशब्दा च्छेसर त्ति ॥ चटकरवन्तो विस्तरवन्त ॥ पहकरत्ति ॥ समूहा स्तेषा यद्वृन्द तेन परिक्षिप्तो य स तथा ॥ पुष्फतंबोलाउहमाइयति ॥ इत्यादि

॥ मूल ॥

राउ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता चाउग्घंटआसरहं दुरूहइ, दुरूहइत्ता सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरपहकरविंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जे

अनुवाद

निष्क्रम्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टमश्वरथ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथ दुरूढयते (आरूढयति) आरूढयि त्वा सकोरण्टमाल्यदाम छत्र धारयन् महता भटचटकरपहकरवृन्दपरिक्षिप्त क्षत्रियकुण्डग्रामा न्नगरा न्मध्य मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ब्रा

॥ भाषा ॥

जाव चतुर्भा भागियव । स्नानकोधो काधो घरमादेवताने बलिकम जिम उवाइउपागनेविषे परिषदानो वर्णन कह्यो तिम इहा पणि वर्णन कहवो । सव्वालङ्कारविभूसिए । सर्व अलङ्कारेकरी विभूषित थइने । मज्जणघ क्खित्तगायसरीरे । यावत् चन्दनसघाते लीप्याछे गात्र शरीर जेहनो देह इत्यर्थ । जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला । जेणेव चाउग्घटे आसरहे । जिहा बाहिरली उप राओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । मज्जनना घरथकी नीकले नीकलीने । तिहाआवे तिहा आवीने । चाउग्घट आसरह दुरूहइ २ त्ता । चातु स्थानशाला टीवानखानो जिहा चातुर्घट अश्वरथछे । तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । कोरण्टवृक्ष फूलमाला सहित छत्र धरीजता थका । महया भड चड र्घट अश्वरथ ऊपर चढे चढीने । सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण । खत्तियकुडग्गाम णयर मज्झमज्झेण । क्षत्रिय कुण्ड प्करविंद परिक्खित्ते । मोटा सुभट चाकर तेहना विस्तारवन्त जे वृन्द समूह तेणे परिवर्‍या थका ।

छत्रचामरादिपरिग्रहः ॥ आयतेत्ति ॥ शौचार्थं कृतजलस्पर्शः ॥ चोक्खत्ति ॥ आचमना दपनीताशुचिद्रव्यः ॥ परमसुइभूएत्ति ॥ अतएवा त्यर्थं शुची

णेव माहणकुंडग्गामे णयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता तुरिए णिगिण्हेइ णिगिण्हेइत्ता रह ठवेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहइत्ता पुप्फतंबूलाउहमाइयवाणहाउयविसज्जेइ २ त्ता एगसाडियं उत्तरासगं करेइ, करेइत्ता आयंते चोक्खे परमसूइभूए अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवंमहावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव तिविहाए पज्जुवास

ब्राह्मणकुण्डग्राम नगर यत्रैव बहुशालक चैत्य स्तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य तुरगा न्निगृह्णाति, निगृह्य रथ स्थापयति, स्थापयित्वा रथा त्प्र त्यारोहति, प्रत्यारुह्य पुष्पताम्बूलायुधाद्युपानहादींश्च विसर्जयति, विसर्ज्यैकशाटकमुत्तरासङ्गं करोति' कृत्वा आचान्त श्चोक्षः परमशुचिभूतो ञ्जलिमुकुलितहस्तो यत्रैव श्रमणो भगवान्महावीरस्तत्रैवोपागच्छति' उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीरं त्रि कृत्वा यावत्त्रिविधया पर्युपास

ग्राम नगर मध्यमध्ये थई। णिगच्छइ २ त्ता। नीकले नीकलीने। जणेव माहण कुडग्गामेणयरे। जिहां ब्राह्मणकुण्डग्राम नगरछे। जेणेव बहुसालए चेइए। जिहां बहुशालनामा चैत्यछे। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे आवीने। तुरिए णिगिण्हेइ २ त्ता रहठवेइ २ त्ता रहाओपच्चोरुहइ २ त्ता। घो डा चालता गृहे गृहीने रथप्रते स्थापे स्थापीने रथथकी ऊतरे ऊतरीने। पुप्फतंबूलाउहमाइयवाणहाउयविसज्जेइ २ त्ता। पुष्प तांबूल आयुध आदि शस्त्र नी शेषर छत्र चामरादि वली उपानहो प्रमुख विसर्जे तजे तजीने। एग साडिय उत्तरासंग करेइ २ त्ता। एक शाटक एक पटो उत्तरासग करे करीने। आयंते चोक्खे परमसूइभूए। शुचिनिमित्ते कीधो जलस्पर्श आचमनथी टाल्यू अशुचिद्रव्य एतलामाटे परमपवित्र थया। अंजलि मउलिय हत्थे। अंजलि करीने मुकुलितकराछे हाथ जेणे। जेणेवसमणे भगवंमहावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीछे तिहां आवे तिहां आवीने। समण भगवं महावीर। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते। तिक्खुत्तो जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासइ।

॥ टीका ॥

॥ अञ्जलिना मुकुलमिव कृतौ हस्तौ येन सतथा ॥ सद्दहामित्ति ॥ श्रद्धे सामान्यत ॥ पत्तियामित्ति ॥ उपपत्ति
नूत॰ ॥ अंजलिमउलियहत्थेत्ति ॥

॥ मूल ॥

इसि णाए पज्जुवासइ, तएणं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तीसेय महइमहालियाए इसि जाव धम्मकहा जाव परिसा पडिगया, तएणं जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हठतुठ जाव हियए उठाए उठेइ, उठेइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामिणं भंते! णिग्गथं पावयणं, पत्तियामिणं भंते! णिग्गथ पावयणं, रोएमिणं

अनुवाद

यावत्परिष नया पर्युपासतेस्म' तदा श्रमणो भगवान्महावीरो जमाले क्षत्रियकुमारस्य तस्यै महातिमहत्यै ऋषिपरिषदे धर्मकथा (प्रभृति) यावत्परिष त्प्रतिगता, तदानीं जमालि क्षत्रियकुमार श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट (प्रभृति) याव हृदय उर्द्ध मुत्ति ष्ठति, उत्थाय श्रमण भगवन्त महावीर त्रि कृत्वा याव न्नमस्कृत्यैवमवादीत्-श्रद्धे भदन्त। नैर्ग्रन्थिक प्रवचन, प्रत्येमि भदन्त। नैर्ग्रन्थिक

॥ भाषा ॥

सेवै। तएण समणे भगव महावीरे। तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी। ज तीनवार यावत् मन वचन काया लक्षण त्रिविध पर्युपासनायें करी सेवै। तएण समणे भगव महावीरे। तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी। ज मालिस्स खत्तियकुमारस्स। जमाली क्षत्रियकुमारने। तीसेय मइइ महालियाए। तेह अतिमोटी विस्तारवती। इसि जाव धम्म कहा। ऋषि परिष दा प्रमुखने यावत् धर्मकथा धर्मदेशना कही। जाव परिसापडिगया। यावत् परिषदा वाटी पाछी वली। तएण जमाली खत्तियकुमारे। तिवारे ज माली क्षत्रियकुमार। समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म सोच्चा। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपें धर्म साम्भलीने। णिसम्म हठतुठ जावहियए। हृदय धरीने हर्षसंतोषवन्त यावत् हृदयथयो। उठाए उठेइ २ त्ता। उठे ऊभाथाय उठो ऊभाथईने। समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जा व णमंसित्ता एववयासी। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार यावत् नमस्कार करीने इमकहै। सद्दहामिणभंते णिग्गथ पावयण। सरदहू छू सामान्यथकी हेभगवन्। निर्ग्रंथ प्रवचनमार्ग। पत्तियामिणं भंते णिग्गथ पावयण। उपपत्ति करी प्रतीति करूछू हेभगवन्। निर्ग्रंथमार्ग। रोएमि

॥ टीका ॥

नि' प्रत्येमि प्रीतिविषयवा, करोमि ॥ रोएमित्ति ॥ चिकीर्षामि ॥ अब्भुट्ठेमित्ति ॥ अभ्युत्तिष्ठामि ॥ एवमेदंति ॥ उपगम्यमानप्रकारवत् ॥ तहमेयति ॥ आप्तवचनाऽवगतपूर्वाभिमतप्रकारवत् ॥ अवितहमेयंति ॥ पूर्वमभिमतप्रकारयुक्तमपि सदन्यदाविगताभिमतप्रकारमपि किंचित्स्यादत उच्यते अवितथमेतत् नकालान्तरेपि विगताभिमतप्रकारमिति ॥ अम्मताओत्ति ॥ हेअम्ब ! हेतात इत्यर्थ , हेतात ! हेपित इत्यर्थ ॥ किंवते

॥ मूल ॥

भंते ! णिग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमिणं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, तहमेयं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि तएणं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि, अ

अनुवाद

प्रवचनम्, रोचे (चिकीर्षामीत्यर्थ) नैर्ग्रन्थिक प्रवचनम्, अभ्युत्तिष्ठामि भदन्त ! नैर्ग्रन्थिक प्रवचन, एवमेतद्भदन्त ! नैर्ग्रन्थिक प्रवचनम्, तथैतद्भदन्त ! नैर्ग्रन्थिक प्रवचन, अवितथमेतद्भदन्त ! नैर्ग्रन्थिक प्रवचन, असंदिग्धमेतद्भदन्त ! नैर्ग्रन्थिक प्रवचन यावत् यथैत यूयं व दथ ॥ यतो नवरम् देवानुप्रिया ! पितरौ आपृच्छामि तदानीं देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा आगारादनगारता प्रव्रजामि ॥ यथासुख

॥ भाषा ॥

हभते णिग्गंथ पावयण। रोचवु हेभगवन् ! निर्ग्रंथमार्ग। अब्भुट्ठेमि भंते णिग्गंथ पावयण। उद्यम करुं हेभगवन् ! निर्ग्रंथमार्गे। एवमेयंभंते णिग्गंथ पावयण। उपलभ्यमान प्रकारनीपरे हेभगवन् ! निर्ग्रंथमार्ग। तहमेव भंते णिग्गंथ पावयण। तिमहीज आप्त वचनाथकी पूर्वाभिमत प्रकारनीपरे, एह हेभगवन् ! निर्ग्रंथमार्ग। अवितहमेव भंते। अवितथ अन्यथा नथी एह हेभगवन् ! असंदिद्धमेयंभंते जाव सेजहेयं तुब्भेवदह। संदेहरहित हेभगवन् ! यावत् ते जिम एह तुम्ह कहोछो तिमज। जं णवरं देवाणुप्पिया अम्मापियरो आपुच्छामि। जेतलो एतलो विशेष हे देवानुप्रिया ! माता पिताने पूछीने। तएण देवाणुप्पियाण अंतिय मुंडे भवित्ता। तिवारे तुम्हारे समीपे मुण्डथईने। आगाराओ अणगारियं पव्वयामि। घरवासथकी अणगारपणे दीक्षा लेस तिवारे स्वामी कहे। अहासुह देवाणुप्पिया। जिम सुख तिम हे देवानुप्रिय। पडि। मापडिबंध। प्रतिबन्ध विलम्ब मकरस्यो। तए

॥ मूल ॥

हासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, दुरूहइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता सकोरंटमल्लदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते जेणेव खत्तियकुंडग्गामे णयरे तेणेव

अनुवाद

देवानुप्रिय ! माप्रतिबन्ध (विधेहीतिक्रियाध्याहार) तदा स जमालि क्षत्रियकुमार श्रमणेन भगवता महावीरेणैवमुक्त सन् हृष्टतुष्ट श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रि कृत्वा यावन्नमस्कृत्य तमेव चातुर्घण्टमश्वरथं दूरूढयते, दूरूढयित्वा श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिकात् बहुशालाचैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सकोरण्टमाल्यदाम (प्रभृति) यावद्धारयन् महता भटचटकर (प्रभृति) यावत्परिक्षिप्तो यत्रैव क्षत्रियकुण्डग्राम नगरं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य क्षत्रियकुण्डग्रामस्य नगरस्य मध्येन मध्येन भूत्वा यत्रैव स्वकीय गृहं यत्रैव वाह्योपस्थान

॥ भाषा ॥

ण से जमाली खत्तियकुमारे । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार । समणेणं भगवया महावीरेण । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीये । एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठे । इम कह्या थका हर्ष सन्तोष पाम्यो । समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार यावत् नमस्कार करीने । तमेव चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ दुरूहइत्ता । तिणिहीज चारघंटासहित अश्वरथे रथे चढीने । समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी । बहुसालाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । बहुशालनामा चैत्यथकी नीकलै नीकलीने । सकोरंटमल्लदामेणं । कोरंटवृक्षना फूलमाला सहित । जाव धरिज्जमाणेणं यावत् छत्र धरीजता थका । महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते । मोटा सुभट चाकरना वृन्दसमूह संघाते परिवर्यो थको । जेणेव खत्तियकुंडग्गामे णयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहां क्षत्रियकुण्डग्राम नगर छै तिहां आवै तिहां आवीने । खत्तियकुंडग्गामं णयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे । क्षत्रियकुण्डग्राम नगरे मध्यमध्य थइ जिहां पोतानो घर छै । जेणेव बाहिरिया उ

॥ टीका ॥ त्ति ॥ निशमित श्रुतइत्यर्थ ॥ इच्छितमिति ॥ इष्ट ॥ पडिच्छियत्ति ॥ पुन पुनरिष्ट. जावतोवा; प्रतिपन्न ॥ अभिरुइत्ति ॥ स्वादुभावमिवोपग

॥ मूल ॥ उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता खत्तियकुंडग्गामं णयरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव वाहिरिया उव ट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता तुरिए णिगिण्हइ, णिगिण्हइत्ता रहं ठावेइ, ठावेइत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेइत्ता एवंवयासी—एवं खलु अम्मताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, सेवियधम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएण तं

॥ अनुवाद ॥ शाला तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य तुरगान् निगृह्णाति निगृह्य रथ स्थापयति, स्थापयित्वा रथात् प्रत्यारोहति, प्रत्यारुह्य यत्रैवाभ्यन्तरो पस्थानशाला यत्रैवाम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्या ऽम्बापितरौ जयेन विजयेन वर्द्धापयति, वर्द्धापयित्वा एवमवादीत्,—एव खलु हेम्बस्य । हेतात । मया श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं निशमित, सोपिच धर्म इच्छित प्रतीच्छितोभिरुचित, तदानीं त जमालि

॥ भाषा ॥ वट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा बाहिरली उपस्थानशाला तिहा आवे तिहा आवीने । तुरिए णिगिण्हइ २ त्ता रह ठावेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता । तुरग घोडाप्रते ग्रहे घोडाप्रते ग्रहीने रथप्रते स्थापे रथप्रते स्थापीने रथथकी ऊतरे रथथकी ऊतरीने। जेणेव अब्भंतरिया उवट्ठाणसाला । जिहा माहिली उपस्थानशाला । जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा माता पिताछे तिहा आवे तिहा आवीने । अम्मापियरो माता पिता प्रते । जएण विजएण वद्धावेइ २ त्ता । जय विजयशब्दे करी वधावे वधावीने । एव वयासी । इम कहे । एव खलु अम्मताओ । इम निश्चये माता पिताओ । मए समणस्स भगवओ महावीरस्स । मै श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने । अतिए धम्मे निसते सेवियधम्मे इच्छिए । समीपे सुख थकी धर्म सांभल्यो ते पिण धर्म इच्छ्यो वाछ्यो । पडिच्छिए अभिरुइए । वली वलीइच्छ्यो अथवा भावथकी पडिवज्यो स्वादुभाव पाम्यो । तएण त

॥ टीका ॥

त ॥ धन्नोसित्ति ॥ धन लब्धासि भवसि ॥ जायत्ति ॥ हेपुत्र ॥ कयत्थेसित्ति ॥ कृतार्थः कृतस्वप्रयोजनोसि ॥ कयलक्खणेत्ति ॥ कृतानि सार्थकानि

॥ मूल ॥

जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–धन्नेसि णं तुम्मं जाया ! कयत्थेसिणं तुम्मं जाया ! कयपुण्णेसिणं तुम्मं जाया ! कयलक्खणेसिणं तुम्मं जाया ! जेणं तुम्मे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं निसंते सेविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि एवं वयासी–एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं निसंते जाव

अनुवा-

क्षत्रियकुमारमम्बापितरावेवमवादिष्टाम्–धन्योसि त्वं जात । कृतार्थोसि त्वं जात । कृतपुण्योसि त्वं जात । कृतलक्षणोसि त्वं जात । येन त्वया श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं निशमितः, सोपि च धर्मं इप्सितः प्रतीप्सितोभिरुचितः । तदा स जमालिः क्षत्रियकुमारो ऽम्बापितरौ द्विवारमप्येवमवादीत्–एवं खलु मया ऽम्ब । तात । श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं निशमितो यावदभिरुचितः स्ततो

॥ भाषा ॥

जमालिय खत्तियकुमार अम्मापियरो । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारप्रते माता पिता । एववयासी । इमकहे । धन्नेसिण तुम्म जाया । धन्यछो ए वाक्यालकारे, तुम्हे हे जाया । कयत्थेसिण तुम्म जाया । कृतार्थ तुम्हे हे पुत्र । कयपुण्णेसिण तुम्म जाया । कृत पुण्यछो तुम्हे अहोपुत्र । कयलक्खणेसिण तुम्म जाया । कोधा सार्थक देहनालक्षण तुम्हे हे पुत्र । जेण तुम्मे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मनिसते । जेहभणी तुम्हे श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीने समीपे धर्मसाम्भल्यू । सेविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । ते पणि धर्म इछ्यो वारवार इछ्यो पडिवज्यो स्वादुभाव पाम्यो । त एण जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चपि एववयासी । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार माता पिता प्रते बीजी वार पणि इम कहे । एव खलु मए अम्मताओ । इम निश्चे मैं माता पिताओ । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने । अतिएधम्म निसते । समीपे धर्म साम्भल्यू । जाव अभिरुइए तएण अह अम्मताओ ससारभयओविग्गे । तिवारे हु माता पिताओ ससारना भयथकी उद्विग्नथयो खेदितथयो । भीए जम्म

॥ टीका ॥

लक्षणानि देहचिह्नानि येन स कृतलक्षण ॥ आणिट्ठंति ॥ अवाञ्छिता ॥ अकंतति ॥ अकमनीया ॥ अप्पियति ॥ अप्रीतिकरी ॥ अमणुण्णति ॥ नमनसा ज्ञायते सुन्दरतये त्यमनोज्ञा ता ॥ अमणामति ॥ नमनसा अम्यते गम्यते पुन पुन सस्मरणेने त्यमनोमा ता ॥ सेयागयरोमकूवपगलतविली

॥ मूल ॥

अभिरुइए तएण अहं अम्मताओ ! संसारभयउव्विग्गे भीए जम्मजरामरणेणं तं इच्छामिण अम्मयाओ ! तुज्झे हि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइ त्तए. तएण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया तं अणिट्ठं अकंत अप्पिय अमणुन्न अमणामं असुय पुव्वं गिर सोच्चा णिसम्म सेयागयरोमकूवपगलतविगलीनगत्ता सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविम

॥ अनुवाद ॥

एमम्ब । तात । ससारभयोद्विग्नो भीतो जन्मजरामरणेन, तस्मा दिच्छामि अम्ब ! तात ! युष्माभिरभ्यनुज्ञात सन् श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके मुण्डो भूत्वा आगारादनगारता प्रव्रजितुम्, तदानी सा जमाले क्षत्रियकुमारस्य माता तामनिष्टामकान्तामप्रियाममनोज्ञाममना

॥ भाषा ॥

जरामरणेण । बीहतो जन्म जरामरणे करी । त इच्छामिणं अम्मयाओ । तेहभणी वाछू छु य वाक्यालकारे, माता पिताओ । तुज्झेहि अब्भणुण्णाए समाणे । तम्हे अनुज्ञात थको एतले तुम्हारी आज्ञा पाम्या थका । समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए मुडेभवित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे मुण्डथईने। आगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। गृहवासथकी अणगारपणौं प्रव्रजित थाउ दीक्षाग्रहु इत्यर्थ । तएणसाजमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया त । तिवारे तिका जमाली क्षत्रियकुमारनी माता तेह। अणिट्ठ अकतं अप्पिय अमणुन्न अमणाम असुयपुव्व गिरसोच्चा णिसम्म । अनिष्ट अवाछित मनोहरननी अप्रीतिकारी मनमेंहो भली जाणीये नही मनमेंही सभारिये नही पूर्वेकदेई साभली नही एहवी वाणी साभलीने हृदयधारीने। सेयागयरोमकूवपगलतविगलीनगत्ता । प्रस्वेद आव्यो रोमकूपथकी गले तिणेकारणे विगलीन कहिये गाढो ढीलो थयो शरीर जेहनो । सोगभरपवेविय गमगी नित्तेया । शोकभरेकरी प्रवेपित कहिये कम्पतोछे अगोपाग जेहनो बलेकरी रहितथई । दीणविमणवयणा । दीननीपरे विमनसनीपरे वदनछे

॥ टीका ॥

शानत्ता ॥ स्वेदेना गतेन रोमकूपेभ्य प्रगलन्ति क्षरन्ति वलीनानिच क्लिन्नानि गात्राणि यस्या सा तथा ॥ सोगजरपवेवियगमंगी ॥ शोकज्वरेण प्रवेपितं कम्पितमङ्गमङ्गं यस्या सा तथा ॥ नित्तेया ॥ निर्वीर्या ॥ दीणविमणवयणा ॥ दीनस्येव विमनस इवच वदन यस्या सा तथा ॥ तक्खणउलुग्गदु ब्बलसरीरलावण्णसुण्णनिच्छायत्ति ॥ तत्क्षणमेव प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षणएव अवरुग्ण ग्लान दुर्बलच शरीर यस्या सा तथा लावण्येन शून्या लावण्य शून्या निच्छाया नि प्रभा तत पदत्रयस्य कर्मधारय ॥ गयसिरीयत्ति ॥ नि शोभा ॥ पसिढिलभूसणपडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा ॥ भूमिपतना तत्प्रदेशान्तरेषु नमितानि च प्रशिथिलानि भूषणानि दुर्बलत्वा द्यस्या सा तथा पतन्ति कृशीभूतबाहुत्वा द्विगलन्ति ॥ खुण्णियत्ति ॥

॥ मूल ॥

णवयणा करयलमलियव्व कमलमाला तक्खणउलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुण्णनिच्छायगइसिरीया पसिढिलभूस णपडियखुण्णियसंचुण्णियधवलवलया पब्भट्ठउत्तरिज्जा मुच्छावसतट्ठचेतगरुई सुकुमालविकिण्णकेसहत्था पर

अनुवाद

मामश्रुतपूर्वां गिरम् श्रुत्वा निशम्य स्वेदागतरोमकूपप्रगलद्विलीनगात्रा शोकज्वरप्रवेपिताङ्गाङ्गा निस्तेजा (निर्वीर्या) दीनविमनोवदना करतलमलि तेवकमलमाला तत्क्षणमवरुग्णदुर्बलशरीरा लावण्यशून्यनिच्छायगतिश्रीका प्रशिथिलभूषणपतितचुर्णितसञ्चूर्णितधवलवलया प्रभ्रष्टोत्तरीया मूर्च्छा

॥ भाषा ॥

जेहनी । करयलमलियव्व कमलमाला तक्खणउलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुण्णनिच्छायगइसिरीया । हाथने तले मली एहवी जाणे कमलफूलनीमाला त त्काल उतरी गयो दुर्बल थयो शरीर जेहनो लावण्य शून्यथई कान्तिरहित थई गई शोभा जेहनी । पसिढिलभूसणपडितखुण्णियसंचुण्णधवलवलया । घणू सिथलढील। भूषण आभूषण दुर्बलपणाथकी पडता गलता भूमिना पडवाथकी नम्या चूर्णथया भागा धवल निर्मल वलय जेहना तथा । पब्भट्ठ उत्तरिज्जा । मस्तकथकी पड्यो ओढणो जेहनो । मुच्छावसतट्ठचेतगरुई । मूर्च्छाना वसथकी नाठो चित्तनेविषे गुरुताशरीर जिका ते । सुकुमालविकिण्णकेसहत्था । सुकुमार विखेराना व्याकुल चित्तपणे केश हस्त कहिये गूथी चोटी जेहनी । परसुनियत्तव्वचपगलया । फरसीये जाणे छे दी चपकलता । निव्वत्तमहव्वइंदलट्ठो । निवर्त्यो महोत्सवे जाणे इन्द्रभहोत्सवनो थम्भ । विमुक्कसंधि बंधणा । सिथिल थयाछे सधानना बन्धन जेहना

॥ टीका ॥

धारये त्येवं व्याख्येयं लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनात् ॥ उक्खेवगतालियंटवीयणगजणियवाएणंति ॥ उत्क्षेपको वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यो दण्डमध्यभाग स्तालवृन्त तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्त तत्पत्रच्छोटइत्यर्थ , तदाकार वा ; चर्ममय वीजनक तु वशादिमयमेवा न्तग्राह्यदण्ड मेतै र्जनितो वात स तथा तेन ॥ सफुसिएण॥ सोदकविंदुना ॥ रोयमाणी ॥ अश्रुविमोचनात् ॥ कंदमाणी ॥ महाध्वनिकरणात् ॥ सोयमाणी ॥ मनसा शोचनात् ॥ विलवमाणी ॥ आर्त्तवचनकरणात् ॥ इट्ठेइत्यादि ॥ पूर्ववत् ॥ थेयत्ति ॥ स्थैर्यगुणयोगात् स्थैर्य. ॥ वेसासिएत्ति ॥ विश्वासस्थान ॥ सम्मएत्ति ॥ सम्मत

॥ मूल ॥

विमलजलधारपरिसिंचमाणनिव्वावियगायलट्ठी उक्खेवयतालियंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरियणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालि खत्तियकुमारं एवं वयासी—तुम्म सिणं जाया ! अम्मं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए

अनुवाद

निर्वापितगात्रयष्टी उत्क्षेपकतालवृन्तवीजनकजनितवातेन सोदकेना न्तःपुरपरिजनेना श्वासितासती रुदतीसती क्रन्दमाना शोचमाना विलपती जमालि क्षत्रियकुमार मेवमवादीत्—त्वमसि जात । अस्माक मेक पुत्र इष्ट कान्त प्रियो मनोज्ञो मनोम स्थैर्यो विश्वासितो (विश्वासस्थानम्)

॥ भाषा ॥

मुष्टि ग्रहवायोग्य मध्यभाग तालनामें वृक्षपानना वृत अथवा तेहने आकारे चर्ममय वीजो वशमय होज विचे ग्रहवानो दण्ड तिणेंकरी जनित काढ्ये ऊपनो जेवाय तिणें वायरे करी । सफुसिएण अते उरपरियणेण । उदक सहित विन्दुयें करी अन्तेउर परिवारेंकरी । आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी । आश्वासना दीधायका राणी स्यूं करें ते कहेछे, असूना मूकवायकी रोवतीयकी महाशब्दना करवायकी मनेकरी सोचतीयकी आर्त्तवचन करतीयकी । जमाली खत्तियकुमारं एववयासी । जमाली क्षत्रियकुमार प्रतें इमकहे । तुम्मसिण जाया अम्म एगे पुत्ते । तुम्हें छो हेजाया अह्मी पुत्र । अम्हारे एकपुत्र । इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए । इष्टवल्लभ मनोहर प्रिय मनोज्ञ मनेसम्भारवायोग्य स्थैर्यनो स्थान कहिये विसासनो स्थानक । सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे । तेहनो कीधो कार्यमानवायोग्य तिणें कारणें सम्मत घणाकार्यनेविषे पुण

॥ टीका ॥
स्तत्कृतकार्याणां सम्मतत्वात् ॥ बहुमएत्ति ॥ बहुमतोबहुष्वपि कार्येषु बहुर्वा; नल्पतया ऽस्तोकतया मतो बहुमत ॥ अणुमएत्ति ॥ कार्यव्याघातस्या पश्चादपि मतो ऽनुमत ॥ भंडकरंडगसमाणे ॥ भाण्डमाभरण करण्डक स्तद्भाजन तत्समान आदेयत्वात् ॥ रयणेत्ति ॥ रत्न मनुष्यजाता वुत्कृष्टत्वात्, रजनोवा; रञ्जक इत्यर्थ ॥ रयणब्भूएत्ति ॥ चिन्तारत्नादिकल्प ॥ जीविउस्सविएत्ति ॥ जीवित मुत्सूते प्रसूतइति जीवितोत्सव. सएव जीवितोत्सविक. जीवितविषयेवा; उत्सवो मह स्तद्वय सजीवितोत्सविक. जीवितोच्छासिक इतिपाठान्तरे ॥ हियया णंदजणणे ॥ मन.समृद्धिकारक ॥ उवरेत्यादि ॥ उदुम्बरपुष्प दुर्लभ्य भवति अत स्तेनोपमान ॥ सवणयाएत्ति ॥ श्रवणतायै श्रोतुमित्यर्थ ॥ किमंगपुणत्ति ॥ किम्पुन. अङ्गे त्यामन्त्रणे ॥ अच्छाहितावजायाजाघतावअम्हेजीवामोत्ति ॥ इत्यत्रा स्व तावज्जात ! यावद्वय जीवाम इत्येतावतैवविवक्षितसिद्धौ यत्पुन

॥ मूल ॥
अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणब्भूए जीवियउस्सविए हिययणंदजणणे उंवरपुप्फंपिव दुल्लहे सवणयाए किमंगपुण पासवणयाए तं णोखलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भखणमवि विप्पओगं तं अच्छाहि ताव

अनुवाद
समतो बहुमतो ऽनुमतो भाण्डकरण्डकसमानो रत्नभूतो जीवितोत्सवो हृदयानन्दजनने उदुम्बर पुष्पमिव दुर्लभ श्रवणतायै (श्रोतुमित्यर्थ) कि मङ्ग (इतिकोमलामन्त्रणे) पुनर्दर्शनतायै (द्रष्टुम्) तस्मा न्नो खलु जात। वयमिच्छामस्तवक्षणमपि विप्रयोगम्, तस्मादास्व ताव ज्जात।

॥ भाषा ॥
बहु गाढो गमतो तेमाटे बहुमत कदाचित् काईकार्य व्याघातकरे तोपणि पछे मानवेकरी अणगमतो नथी आभरणना करण्डिया समान। रयणब्भूए जीविय उस्सविए। मनुष्यजातिनेविषे उत्कृष्टपणा थको अथवा चिन्तामणिरत्नभूत जीवतव्यने उछाहनो कर्त्ता। हिययणंदिजणणे। हियाने आनन्दनो कर्त्ता अथवा मनने समृद्धिनो करणहार। उंवरपुप्फंपिव दुल्लहे सवणयाए। जिम गूलरनाफूल दुर्लभ तिम तू उम्बरनामा फूलनीपरे साम्भलवाने पणि दोहिलो। किमंग पुण पासवणयाए। तो वली स्यू अगइतिकोमलामन्त्रणे दर्शन देखवो। तणो खलुजाया अम्हेइच्छामो। तेहभणी नही निश्चै अहोपुत्र। अम्हे वाछूछू। तुब्भखणमवि विप्पओगं त अच्छाहि ताव जाया। तुम्हारो क्षणमात्र पणि वियोगप्रते तेहभणी तू गृहवासमे वसो तालगे हे पुत्र! जाव ता

॥ टीका ॥

स्तावच्छब्दस्योच्चारण तद्भाषामात्रमेवेति ॥ वड्डियकुलवसंततुकज्जम्मिनिरवयक्खेत्ति ॥ वड्डियत्ति ॥ सप्तम्येकवचनलोपदर्शनाद् वृद्धिं पुत्रपौत्रादिभि स्तावच्छब्दस्योच्चारण तद्भाषामात्रमेवेति ॥ वृद्धिमुपनीते कुलरूपो वंशो न वेणुरूप कुलवंश. सन्तान. सएव तन्तु दीर्घत्वसाधर्म्यात् कुलवंशतन्तु सएव कार्यं कृत्य कुलवंशतन्तुकार्यं तत्र

॥ मूल ॥

जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो, तत्र पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवन्न वड्डियकुलवंसत तुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवन्न महावीरस्स अंतिए मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी–तहाविणं तं अम्मताओ! जंणं तुब्भे ममं एवं वदह तुम्मं सिण जाया! अम्मं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तच्चेव जाव पव्वइहिसि, एवंखलु अम्मताओ! माणुस्सए भवे

॥ अनुवाद ॥

याव द्वय जीवाम इति, तत पश्चादस्माभि काल गते. सद्भि परिणतवयोवद्धितकुलवंशतन्तुकार्ये निरपेक्ष सन् श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तिके मुण्डो भूत्वा आगारादनगारता प्रव्रज, तदानीं स जमालि क्षत्रियकुमार पितरावेवमवादिष्टाम्–तथापि तदेत दम्ब! तात! यद्यूय मम एववदथ–त्वमसि जात! अस्माकमेक पुत्र इष्ट कान्त स्तच्चैव यावत्प्रव्रज, एव खल्वम्ब! तात! मानुष्यको भवो ऽनेकजाति

॥ भाषा ॥

ए अमे जीवामो। यावत् ज्यांलगी ताय पछ पुरयो अम्हे जीवूछू। तमो पच्छा अम्हेहि कालगएहि समाणेहि। तिवारपछी अम्हे कालगया मरण पाम्याथका। परिणयवयावट्ठियकुलवसततुकज्जमिनिरवयक्खे। वृद्धिंने वधारायका कुलवंशीयो वंश तेहनेज तंतु दीर्घपणे सरीखा तेहनो जे काय वारा। अनन्तर एतले अनेकपुत्र पौत्र प्रपौत्रादिक वधारीने पछे तेहनेविषे आकांक्षारहित थको नीपजाव्या सकल प्रयोजनथको। समणस्सभगवओ महा वीरस्स अंतिए मुंडेभवित्ता। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे मुण्डथईने। आगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। गृहवासथको अणगारपणे दीक्षा लेज्यो। तएणं से जमाली खत्तियकुमारे। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार। अम्मापियरो एववयासी। माता पिता प्रते इमकहे। तहाविणत अम्मताओ। तिमछतांज तेह पणि अन्वयानछो माता पिताओ। जणं तुब्भे मम एव वदह। जेहभणी तुम्हे मुझने इम कहोछो। तुम्मंसिण जाया अम्म ए

॥ टीका ॥

अथवा; वर्द्धितशब्द: कर्मधारयेण सम्बन्धनीय स्तत स्तत्र सति निरवकाङ्क्षो निरपेक्ष' मरसकलप्रयोजनानां ॥ तदाविशततित्ति ॥ तथैव नान्यथेत्यर्थ: यदुक्त–अम्हेहिं कालगएहिं पव्वहिसि „ तदाश्रित्यासावाह–एव खलु इत्यादि ॥ एव वन्यमाणेन न्यायेन ॥ अणेगजाइजरामरणरोगसारीरमाणसपकामदुक्खवेयणवसणसउवद्दवाभिभूएत्ति ॥ अनेकानि यानि जातिजरामरणरोगरूपाणि शारीराणि मानसिकानिच प्रकाम अत्यर्थ दु:खानि तानि तथा तेषा यद्वेदन व्यसनानाञ्च चौर्यद्यूतादीना यानि शतानि उपद्रवाश्च राजचौरादिकृता स्तै रभिभूतो य स तथा अतएव ॥ अधुवेत्ति ॥ नभुव सूर्योदयव न प्रतिनियतकाले वश्यम्भावी ॥ अणितिएत्ति ॥ इति शब्दो नियतरूपोपदर्शनपर स्ततश्च नविद्यते इति यत्रासावनितिको ऽविद्यमाननियतस्वरूप इत्यर्थ , ईश्वरादेरपि दारिद्रादिभावात् ॥ असासएत्ति ॥ क्षणविनश्वरत्वात्, अस्याशाश्वतत्वमेवोपमानै र्दर्शय न्नाह ॥ सञ्झेत्या

॥ मूल ॥

अणेगजाइजरामरणरोगसारीरमाणसपकामदुक्खवेयणवसणसउवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए सं

अनुवाद

जरामरणरोगशारीरिकमानसप्रकामवेदनव्यसनशतोपद्रवाभिभूतो ऽध्रुवो ऽनितिको ऽशाश्वत: सन्ध्याभ्ररागसदृशो जलबुद्बुदसमान: कुशाग्र

॥ भाषा ॥

गेपुत्ते इ‍इ वाते । तुम्हे छो अम्हापुत्र । इष्ट मनोहर । तथेव जाव पव्वहिसि । जिम पूर्वे कह्यु तिमहीज कहवो यावत् दीक्षालेज्यो एतलालगे कहवो । एवखलु अम्मताओ माणुस्सए भवे । इम निश्चे माता पितार्को मनुष्यनो भव । अणेगजाति जरामरण रोग सारीरमाणस पकामदुक्खवेयण । अनेक जिका जाति जरामरण रोगरूप शरीरसम्बन्धी मनसंबन्धी अत्यर्थे दुक्ख तेह, तथा जे वेदना व्यसन चौर्य द्यूतादि तेहना जे शैकडा तथा । वसणसउवद्दवाभिभूए । उपद्रव राज चौरादिककृत तिणेकरी अभिभूत कहिये पराभव्यो छे एतलामाटे जे । अधुवे अणिदए असासए । सूर्योदयनीपरे नियतकालनेविषे अवश्य भावी नही अविद्यमान नियतस्वरूपछे ईश्वरादिकने पणि दारिद्रादिकना भावथकी अशाश्वतोछे तेहीज उपमाये करी देखाडेछे—सञ्झब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे । सन्ध्याना आभला पञ्चरङ्ग रूप ते समान अनित्यछे पाणीना परपोटासमान जीवितव्यछे । कुसग्गजलबिंदुसन्निभे । डाभना अग्रनेविषे पाणीना बिंदुआसमान जीवितव्यछे । सुविणगदंसणोवमे । स्वप्नदर्शननी ओपमाछे जेहने जिम स्वप्नमाहि वस्तु देखी फोकथाय तिम

॥ टीका ॥

अणिच्चे सडणपडणविद्धंदि ॥ किमुक्तं भवतीत्याह ॥ अणिच्चेत्ति ॥ अथवा ; प्राग्जीवितापेक्षया ऽनित्यत्व मुक्त मथ शरीरस्वरूपापेक्षया तदाह ॥ अणिच्चे सडणपडणविद्धंदि ॥ किमुक्त भवतीत्याह ॥ अणिच्चेत्ति ॥ अथवा ; प्राग्जीवितापेक्षया ऽनित्यत्व मुक्त मथ शरीरस्वरूपापेक्षया तदाह ॥ पुव्विवत्ति ॥ विवक्षितकालात् पूर्ववा ॥ पच्छावत्ति ॥ विवक्षितकालात् पश्चाद्वा ॥ अवस्स विप्पजहियव्वेत्ति ॥ अवश्य विप्रहातव्य स्त्याज्य ॥ सेकेसणजाणइत्ति ॥ अथ को सणधम्मति ॥ शटन कुष्टादिनाङ्गुल्यादे पतन बाह्वादे खड्गच्छेदादिना विध्वसन क्षय एतएव धर्मा यस्य स तथा ॥ पुव्विवत्ति ॥ विवक्षितका ला त्पूर्ववा ॥ पच्छावत्ति ॥ विवक्षितकालात् पश्चाद्वा ॥ अवस्स विप्पजहियव्वेत्ति ॥ अवश्य विप्रहातव्य स्त्याज्य ॥ सेकेसणजाणइत्ति ॥ अथ को सौ जाना त्यस्माक नकोपीत्यर्थ ॥ केपुव्विगमणयाएत्ति ॥ क पूर्व पित्रो' पुत्रस्यचा न्योन्यतो गमनाय परलोके उत्सहते क पश्चाद्गमनाय तत्रैवो

॥ मूल ॥

सञ्झब्भरागसरिसे जलवुब्बुदसमाणे कुसग्गजलविंदुसन्निभे सुविणगदसणोवमे विज्जुया चंचले अणिच्चे सडणपडणविधंसणधम्मे पुव्विवा पच्छावा अवस्सं विप्पजहियव्वे भविस्सइ, सेकेसण जाणइ, अम्मताओ ! केपुव्विगमणयाए केपच्छागमणयाए तं इच्छामिणं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ

अनुवाद

जलबिन्दुसन्निभ स्वप्नदर्शनोपमो विद्युच्चञ्चलो ऽनित्य शटनपतनविध्वसनधर्मं पूर्वं वा पश्चाद्वा ; अवश्य विप्रहातव्यो भविष्यति, कोसौ जानाति अम्ब ! तात ! क पूर्व गमनाय क पश्चाद्गमनाय, तस्मादिच्छामि अम्ब ! तात ! युष्माभिरभ्यनुज्ञात सन् श्रमणस्य भगवतो महावी

॥ भाषा ॥

एह जीवितव्य । विज्जुया चपल अणिच्चे । बीजलीनोपरे चपल जीवितव्यछे जिम ए अनित्यछे तिम ए अनित्यछे । सडणपडणविधसणधम्मे । सडवो ते कुष्टादिकेकरी अगुल्यादिकने पडवो ते बाहुप्रमुखने खड्ग छेदादिकेकरी क्षय एतलाहीज धर्म जेह शरीरना तेह । पुव्विवा पच्छावा अवस्स विप्पजहिय व्वे भविस्सइ । विवक्षित कालथकी पहिला अथवा पछे अवश्येकरी छाडवो हुस्ये तेह शरीर । सेकेसण जाणइ । हिवे कुण एह जाणे अपितु न कोई ए त्यर्थ । अम्मयाओ । हे माता पिताओ । के पुव्वि गमणयाए के पच्छा गमणयाए । कुण पहिला गमनकरस्ये मरस्ये इत्यर्थ कुण पछे गमन करस्ये पछे म रस्ये इत्यर्थ । त इच्छामिण अम्मयाओ । तेमाटे वाछू छू माता पिताओ । तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे । तुम्हे आज्ञा दीधायका । समणस्स भगवओ म हावीरस्स । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीने समीपे । जाव पव्वइत्तए । यावत् दीक्षा ग्रहण करू । तएण त जमालि खत्तियकुमार । तिवारे तेह

॥ टीका ॥

त्सरते क पूर्व कोवा, पश्चा न्म्रियतइत्यर्थ ॥ पविसिठरूवति ॥ प्रविशिष्टरूप ॥ लक्खणवजणगुणोववेय ॥ लक्षण मस्थिप्रभृर्त्यो सुखमासे त्वचिजो गा. स्त्रियोऽक्षिषु । गतौयानस्वरेचाज्ञा सर्वसत्त्वेप्रतिष्ठित मित्यादि ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषतिलकादिक तयो र्योगुणा प्रशस्तत्व तेन उपपेत सङ्गत य द्व त्तथा ॥ उत्तमवलवीरियसत्तजुत्त ॥ उत्तमे र्वलवीर्यसत्त्वै युक्त य त्त तथा तत्र वल शारीरप्राणो वीर्य मानसोवष्टम्भ सत्त्व चित्तविशेषएव यदा द्र-सत्त्वमवेक्रव्यकर मध्यवसानकरण्च अथवा, उत्तमयो र्वलवीर्ययो र्यत्सत्त्व सत्ता तेन युक्त य त्त तथा ॥ ससोहग्गगुणसमूसियति ॥ ससौभाग्य गुणसमुच्छित चेत्यर्थ. ॥ अहिजायमहक्खमति ॥ अभिजात कुलीन महती क्षमा यत्र त त्तथा तत कर्म्मधारय ' अथवा, अभिजातानां मध्ये मह

॥ मूल ॥

महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ? तएणं त जमालिं खत्तियकुमार अम्मापियरो एववयासी—इमंच ण तं जाया ! सरीरग पविसिठरूवलक्खणवजणगुणोववेय उत्तमवलवीरियसत्तजुत्तं विण्णाणवियक्खणससोहग्गगुणसमुस्सि यअभिजायमहक्खमं विविहवाहिरोगरहिय निरुवहयउदत्तलठपचिंदियपडुपढमजोव्वणत्थ अणेगउत्तमगुणे

॥ अनुवाद ॥

रस्य यावत्प्रव्रजितुम्, तदा त जमालि क्षत्रियकुमारमम्बापितरावेवमवादिष्टाम्-इद च ते जात ! शरीर प्रविशिष्टरूपलक्षणव्यञ्जनगुणो पपेतमुत्तमवलवीर्यसत्वयुक्त विज्ञानविचक्षणससौभाग्यगुणसमुच्छिताभिजातमहत्क्षम विविधव्याधिरोगरहित निरुपहतोदात्तलष्टपञ्चेन्द्रियप

॥ भाषा ॥

जमालो क्षत्रियकुमार प्रतें । अम्मापियरो एववयासी । माता पिता इम कहता हुवा । इमचण तजाया सरीरग । एह वली ते ताहरो अहो पुत्र शरी र केहवोछै । पविसिठरूवलक्खण वजणगुणोववेय । प्रकर्ष विशिष्ट रूपलक्षण ते श्रीवत्सादिक व्यञ्जन ते मसादिक ते भला तिणे सहितछै । उत्तमव लवीरिय सत्तजुत्त । उत्तम जे वलवीर्य तथा सत्त्व तिणेंकरी सहितछै । विण्णाणवियक्खण ससोहग्गगुणसमुस्सिय अभिजाय महक्खम । विज्ञान ७२ कला तिणे विचक्षण डाहोछै, सौभाग्यसहित गुणेकरी समुच्छित ऊचोछै भला कुलीन मोटी क्षमाछै जेहने अथवा कुलीन तेहनेमाहे पूज्य तथा समर्थछै विविहवाहिरोगरहिय । विविधप्रकारे व्याधि तथा १८ कुष्टादिरोग तिणें रहितछै शरीर । निरुवहयउदत्तलठपचिंदियपडुपढमजोव्वणत्थ । वायु पि

॥ टीका ॥ त् पूज्य क्षम समर्थश्च य स्त तथा ॥ निरुवहयउदत्तलठपचिंदियपडुति ॥ निरुपहतानि अविद्यमानवाताद्युपघातानि उदात्तानि उत्तमवर्णादिगुणानि अतएव लष्टानि मनोहराणि पञ्चापीन्द्रियाणि पटूनिच स्वविषयग्रहणदक्षाणि यत्र स तथा ॥ विविहवाहिसयसनिकेयति ॥ इह सनिकेत

॥ मूल ॥ हिं जुत्तं त अणुहोहि ताव जाव जाया! नियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे तउ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवउ वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जनिरवयक्के समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइहिसि, तएणं से जमाली खत्ति

अनुवाद: टुप्रथमयौवनस्यमनेकोत्तमगुणैर्युक्त तदनुभव तावद्यावज्जात। निजकशरीररूपसौभाग्ययौवनगुणा, तत पश्चादनुभूय निजकशरीररूपसौभाग्ययौवनगुणअस्मान्नि कालगतै सद्भि परिणतवयोवर्द्धितकुलवंशतन्तुकार्यनिरपेक्ष श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके मुण्डीभूत्वाऽऽगारादनगारता प्रव्रज (इति) तदा सजमालि क्षत्रियकुमारोऽम्बापितरा वेवमवादीत्–तथापि (तथैव) एतदम्ब। तात! यद्यूय मे एव वद

॥ भाषा ॥ काररहित उदत्त उत्तम वर्णादिगुण लष्ट मनोहर पञ्चेन्द्रियना विषयनेविषे विचक्षण प्रथम वययौवन तिणे सहितछे वीजापणि। अनेकउत्तमगुणेहिंजुत्त। अनेक उत्तमगुण तिणेकरी सहित। तअणुहोहिताव जाव जाया। तेहभणी भोग अनुभवि पहिला जालगे अहोपुत्र। नियगसरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणे। पोतानाशरीर तेहनोरूप सौभाग्य योवनना जे गुण तेहछे जालगे। तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूवसोहग्ग जोव्वणगुणे। तिवारपछी अनुभवीने भोगवीने पोतानो जे शरीर तेहनो रूप सौभाग्य यौवनगुणे। अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं। अम्हे कालगत थया एतले मरणपाम्या थका। परिणयवओ वड्ढियकुलवसतंतुकज्जनिरवयक्खे। पछे हडि थयाछे वधारीने कुलवंश तन्तुकार्य एतले पुत्र पौत्रादिक थया पछे अपेक्षारहित थई। समणस्सभगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडेभवित्ता। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे मुण्डथई। आगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि। ग्रहवास छांडी अणगारपणे प्रव्रज्या लेज्यो। तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एववयासी। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार माता पिता प्रते इम क

॥ टीका ॥

स्थानं ॥ अट्ठियकट्ठुट्ठियंति ॥ अस्थिकान्येव काष्ठानि काठिन्यसाधर्म्यात्तेभ्यो यदुत्थित त तथा ॥ छिराण्हारुजालउवणद्धसंपिणद्धंति ॥ शिरा ना ड्य ॥ ण्हारुत्ति ॥ स्नायव स्तासा यज्जाल समूह स्तेन उपनद्धसंपिनद्ध मत्यर्थं चेष्टित य त्त त्त था ॥ असुइसंकिलिट्ठंति ॥ अशुचिना मेध्येन संक्लिष्ट दुष्ट य त्त तथा ॥ अणिट्ठवियसव्वकालसंठप्पयंति ॥ अनिष्ठापिता ऽसमापिता सर्वकाल सदा संस्थाप्यता तत्कृत्यकरण यस्य त तथा ॥ जराकुणिमजज्ज

॥ मूल ॥

यकुमारे अम्मापियरो एववयासी—तहाविणं तं अम्मयाओ ! जंणं तुज्झे मम एवं वदह इमंचणं ते जाया ! सरीरगं तंचेव जाव पव्वइहिसि, एव खलु अम्मयाओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं विविहवाहिसयसंनि केयं अट्ठिकट्ठुट्ठियंछिराण्हारुजालउवणद्धसंपिणद्धं मट्टियभंडंवदुब्बलं असुइसंकिलिट्ठं अणिट्ठवियसव्वकाल

अनुवाद

य' इदञ्च जात। ते शरीर तच्चैव याव त्प्रव्रज, एव खलु अम्ब। तात। मानुष्यक शरीर दु खायतन विविधव्याधिशतसंनिकेत (स्थानम्) अस्थिकाष्ठोच्छ्रित शिरास्नायुजालोपनद्धसम्पिनद्ध मृद्भाण्डमिव दुर्बल अशुचिसंक्लिष्ट अनिष्ठापितसर्वकालसंस्थाप्यत्व (असमापितसदाकृत्यकर

॥ भाषा ॥

हे। तहाविण त अम्मयाओ। तिमज जिम तुम्हे कह्यो ते अन्यथा नही ते माता पिताओ। जण तुब्भे ममएववदह इम चण ते जाया सरीरग तंचेव। जेहभणी तुम्हे मुझने इम कहोछो एह बसो ताहरो हे पुत्र शरीर पूर्वोक्त प्रकारे। जावपव्वहिसि एवखलु अम्मयाओ। यावत् दीक्षालिज्यो एतलालगी कहवो, इम निश्चे माता पिताओ। माणुस्सग सरीर दुक्खाययण विविहवाहिसयसंनिकेय। मनुष्यनो शरीर ते दुखनो आयतन कहिये घरछे विविधप्र कारनो व्याधि तेहना सेकडा तेहनो स्थानकछे। अट्ठिकट्ठुट्ठि छिराण्हारुजाल उवणद्धसंपिणद्ध मट्टिभंडव दुब्बल। हाडरूपिया काठ काठिन्य साधर्म्य थ को जे रह्याछे नाडी नसा तेहनो जालसमूह तिणे उपनद्ध अत्यर्थं बांध्याछे जिम माटीनोभांड भारपड्या फूटजाय तेहनीपरे दुर्बल। असुइसंकिलिट्ठ अ णिट्ठवियसव्वकालसंठप्पयजराकुणिमजज्जरघरव। अशुचि ते मध्यम तिणेकरी दुष्ट असमापित सर्वकालनेविषे तेहना कृत्यकरण जेहना तेकु पप जीर्णता प्रधा न मृतकगन्धसहित जीजराघर तेहसरीखो एह शरीर जरा जीर्णतानो कुणप ते मडो कहवाव। सडणपडणविधंसणधम्मं। सडवो रोगादिके पडवो छे

॥ टीका ॥ रपरव ॥ जराकुणपश्च जीर्णताप्रधानशवो जर्जरगृहञ्च जीर्णगेहं समाहारद्वन्द्वात् जराकुणपजर्जरगृह तदिव किमित्याह–सडणेत्यादि ॥ विउलेत्यादि ॥ विपुलकुलाश्च ता बालिकाश्चेति विग्रह, कलाकुशलाश्च ता सर्वकाललालिताश्चेति कलाकुशलसर्वकाललालिता स्ताश्च ता सुखोचिताश्चेति

॥ मूल ॥ संडणपडणविद्धंसणधम्मं पुव्विंवा पच्छावा अवस्स विप्पजहियव्वं भविस्स इ, सेकेसण जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं तंचेव जाव पव्वइत्तए, तएणं त जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवंवयासी–इमाओ्यते जाया ! विउलबालियाओ सरिसयाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्णरूवजो

॥ अनुवाद ॥ शमित्यर्थः) जराकुणपजर्ज्जरगृहवत् शटनपतनविध्वंसनधर्मं पूर्वंवा पश्चाद्वावश्य विप्रहातव्य भविष्यति, कोसौ जानाति, अम्ब ! तात ! क. पूर्वं तथैव यावत्प्रव्रजितुम्, तदा त जमालि क्षत्रियकुमारं पितरावेवमवादिष्टाम्–इमाश्च ते जात । विपुलबालिका सदृशा सदृग्त्वच स दृग्वयाः सदृग्लावण्यरूपयौवनगुणोपपेता. सदृग्भ्य कुलेभ्य आनीता कलाकुशलसर्वकाललालितसुखोचिता मार्द्दवगुणयुक्तनिपुणविनयोपचा

॥ भाषा ॥ टवैकारी विनाश पामवानो धर्म छे जेहनो । पुव्विवा पच्छावा अवस्सविप्पजहियव्व भविस्सइ । पहिला अथवा पछे अवश्यैकारी छाडवो हुस्ये । सेके सण जाणइ । त कुण जाणे छे न कोइ इत्यर्थः । अम्मयाओ के पुव्वि तचेव जाव पव्वइत्तए । माता पिताओ कुण पूर्वं मरस्ये कुण पछे मरस्ये इत्यादि ए सर्व पूछिनापरे कहवो । यावत् दीक्षा ग्रहण करु । तएण त जमालि खत्तियकुमारं । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार प्रते । अम्मापियरो एवंवया सी । माता पिता वलो इम कहे । इमाओय ते जाया विउलबालियाओ सरिसयाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ । एह वली ते ताहरी हे पुत्र । विस्तीर्ण मोटा कुलनी अपनी बालिका स्त्रीओ छे तुझ सरीखी छे सरीखी त्वचा चर्म छे जेहनो सरीखी वये करी छे । सरिसलावण्णरूव जोव्वणगुणोववेयाओ । सरी खो लावण्यरूप यौवन आदि गुणेकरी उपपेत सहित छे । सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ । तथा सरीखा जे कुल पितानोपक्ष तेहथकी आणी छे एतले परणी ल्यावी छे । कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोचियाओ । ६४ जे कला तिणेकरी डाही तथा ते सर्वकालनेविषे लालित कहिये किणे

॥ टीका ॥

विग्रह , मार्द्दवगुणयुक्ता निपुणो यो विनयोपचार स्तत्र पण्डितविचक्षणा अत्यन्तविशारदा या स्ता स्तत' कर्मधारय' ॥ मंजुलमियमहुरभणिय विहसियविप्पेक्खियगइविलासचिट्ठियविसारयाओ ॥ मंजुल कोमल शब्दतो मितं परिमित मधुर मकठोर मर्थतो यद्भणित तत्तथा तच्च विहसितञ्च विप्रेक्षितञ्च गतिश्च विलासश्च नेत्रविकारो गतिविलासोवा ; विलसन्ती गति र्विस्थितञ्च विप्रिष्टायितिति रितिद्वन्द्व स्तेषु विशारदा या स्ता स्तथा ॥ अविकलकुलसीलसालिणीओ ॥ अविकलकुला ऋद्धिपरिपूर्णकुला शीलशालिन्यश्च शीलशोभिन्य इतिविग्रह ॥ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भवय भाविणीओ ॥ विशुद्धकुलवशएव सन्तानतन्तु र्विस्तारि तन्तु स्तद्वर्द्धने पुत्रोत्पादनद्वारेण तद्वृद्धौ प्रगल्भ समर्थ यद्वयो यौवन तस्यभाव सत्ता विद्यते यासा ता स्तथा " विसुद्धकुलवससंताणतंतुवद्धणपगब्भुब्भवपभाविणीओत्ति पाठांतर , तत्रच विशुद्धकुलवंशसन्तानतन्तुवर्द्धनार्थं प्रगल्भा प्रकृष्टगर्भा स्तेषां

॥ मूल ॥

रूवगुणोववेयाओ सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणिएल्लियाओ कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोचियाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपंडियवियक्खणाओ मंजुलमियमहुरभणियविहसियविप्पेक्खियगइविलासचिट्ठियविसारयाओ अविकलकुलसीलसालियाओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुविवद्धणप्पगब्भवयभाविणीओ मणाणुकूलहियइ

॥ अनुवाद ॥

रूपविदतविचक्षणा मञ्जुलमितमधुरभणितविहसितविप्रेक्षितगतिविलासचेष्टितविशारदा अविकलकुलशीलशालिन्यो विशुद्धकुलवंशसन्तानतन्तु

॥ भाषा ॥

वचनमात्र दूहवी नथी एहवी सुखभोगविवाने योग्यछे । मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपंडियवियक्खणाओ । मार्दव गुणयुक्त निपुण जे विनयनो उपचार तेहनेविषे पण्डिता कहिये अत्यन्तविशारद विचक्षण जेह ते । मंजुलमियमहुरभणियविहसियविप्पेक्खियगइविलासचिट्ठियविसारयाओ । [illegible] लवाणी मित मनी मीठी बोलणी हसवानेविषे जाण देखवानेविषे कुशल गति चेष्टा विलासनेत्र चेष्टा अनेरी चेष्टा एतलीनेविषे विचक्षणछे जेह तेह । अविकलकुलसीलसालियाओ । ऋद्धेकरी पूरी कुलशीलेकरी शोभावन्त एहवीछे । विसुद्धकुलवंससंताणतंतु विवद्धणप्पगब्भवयभाविणीओ । विशुद्धकुल वंशनी जे सन्तानतन्तु तेहना वधारवानेविषे पुत्रोत्पादन द्वारकरी तेहनी वृद्धिनेविषे प्रगल्भ कहिये समर्थ जे वययौवन तेहनो भाव सत्ताछे जेहने । मणाणुकूल

॥ टीका ॥

य उद्भव· सम्भूति स्तत्र य प्रभाव· सामर्थ्य स यासा मस्ति ता स्तथा ॥ मणाणुकूलहियइच्छियाउ ॥ मनोनुकूला श्च ता हृदयेनेप्सिताश्चेति कर्म्मधार य ॥ अठतुज्कगुणवल्लभाउत्ति ॥ गुणै र्वल्लभा या स्ता स्तथा ॥ विसयविगयवोच्छिणकोउहल्लेत्ति ॥ विषयेषु शब्दादिषु विगत व्यवच्छिन्न अत्यन्तक्षीण कौतूहल यस्य स तथा ॥ माणुस्सगाकामभोगेत्ति ॥ इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुषशरीराण्यभिप्रेतानि ॥ उच्चारेत्यादि ॥ उच्चाराटि

॥ मूल ॥

च्छियाउ अठतुज्कगुणवल्लहाउ उत्तमाउ णिच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीउ भारियाउ तं भुंजाहिं, ताव जाव जाया ! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे तउपच्छा भुत्तभोगी विसयवोच्छिण्णकोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव पव्वइहिसि, तएणंसे जमाली खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवंवयासी—तहाविणं तं अम्म याउ ! जंणं तुब्भे मम एवं वदह इमाउय ते जाया ! विउलकुलजाव पव्वइहिसि, एवंखलु अम्मयाउ ! मा

अनुवाद

विवर्द्धनप्रगल्भवयोभाविन्यो मनोनुकूलहृदयेप्सिता अष्टत्वद्गुणवल्लभा उत्तमा नित्य भावानुरक्तसर्वाङ्गसुन्दर्यो भार्या, स्त्व भुङ्क्ष्व ताव द्याव ज्जा त ! एताभि सम विपुलान् मनुष्यसम्बन्धीन् कामभोगान्, तत पश्चाद्भुक्तभोगी विषयविगतव्युच्छिन्नकौतूहलो ऽस्माभि काल गतै र्याव त्प्रव्रज, तदा स जमालि क्षत्रियकुमारो ऽम्बापितरा वेव मवादीत्–तथैवाम्ब ! तात ! यद्यूय ममैव वदथ इमा स्ते जात ! विपुलकुल (प्रभृति) या

॥ भाषा ॥

हियइच्छियाओ । मनने गमती हृदयनेवाल्हीस्त्रियो । अठतुज्झगुणवल्लहाओ उत्तमाओ । आठेई तुम्हगुणेंकरी वल्लभछे । णिच्चभावाणुरत्तसव्वंगसुं दरीओ । निरंतरभाव चित्तना प्रेम तिणेंकरी सगलाअङ्ग सुन्दरछे । भारियाओ त भुंजाहि ताव जाव जाया । एहवीजे भार्या स्त्रो तेहप्रतें भोगवो पहिला जालगे हे पुत्र । एयाहि सद्धिंविउले माणुस्सए कामभोगे । एह सघाते विस्तीर्ण मनुष्यसम्बन्धी काम भोगवो । तओपच्छाभुत्तभोगीविसयवोच्छिण्णकोउ हल्ले । तिवारपछी भुक्तभोगी थई विषय जे शब्दादिक तेहनेविषे अत्यन्त क्षीणथयो कौतूहल । अम्हेहि कालगएहि जाव पव्वहिसि । जेहनो अम्हने का लधर्म पाम्या पछे यावत् दीक्षालेज्यो । तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एववयासो । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार माता पिता प्रते इम

॥ टीका ॥

न्य समुद्भवो येषाते तथा ॥ अमणुण्णदुरूपमुत्तपूइयपुरीसपुण्णा ॥ अमनोज्ञाश्च ते दुरूपमूत्रेण पूतिकपुरीषेणच पूर्णाश्चेति विग्रहः, इहच दुरूप विरूप पूतिकच कुथित ॥ मयगंधुस्सासअसुभनिस्सासउव्वेयणगा ॥ मृतस्येव गन्धो यस्यस मृतगन्धिः सचासा वुच्छ्वासश्च मुखादिना वायुग्रहण निश्वासस्तु तन्निर्गम ॥ बीभच्छांत्ति ॥ जुगुप्सोत्पादका ॥ लहुसगत्ति ॥ लघुका लघुस्वभावा ॥ कलमलाहियासदुक्खबहुजणसाहारणा ॥ कलमलस्यशरीरसत्का

॥ मूल ॥

णुस्सया कामभोगा असुई असासया वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा उच्चारपास वणखेलसिंघाणवंतपूयसुक्कसोणियसमुब्भवा अमणुण्णदुरूवमुत्तपूइयपुरीसपुण्णा मियगंधुस्सासअसुभनिस्सा सउव्वेयणगा बीभत्था अप्पकालिया लहुसगा कलमलाहियासदुक्खबहुजणसाहारणा परिकिलेसकिच्छदुक्ख

अनुवाद

वत्प्रव्रज' एव खलु अम्ब ! तात ! मानुष्यकाणि कामभोगानि अशुचीन्यशाश्वतानि वान्तास्रवाणि पित्तास्रवाणि श्लेष्मास्रवाणि शुक्रास्रवाणि शो णितास्रवाणि उच्चारप्रस्रवणश्लेष्मसिंघाणवान्तपूयशुक्रशोणितसमुद्भवानि अमनोज्ञदुरूपमूत्रपूतिकपुरीषपूर्णानि मृतगन्धोच्छ्वासाशुभनि श्वासोद्वेग नकानि बीभत्सानि अल्पकालिकानि लघुस्वभावानि कलमलाधिवासदुःखबहुजनसाधारणानि परिक्लेशकृच्छ्रदुःखसाध्यानि अबुधजनसेव्यानि सदै

॥ भाषा ॥

कहे। तद्याविण त अम्मयाओ। तिमहोज तेह माता पिताओ। नण तुब्भे मम एव वयह। जेरूभणी तुम्हे मुझने इम कहोछो। इमाओ ते जाया वि पुलकुल जाव पव्वइहिसि। एह ताहरी हे पुत्र। विस्तीर्ण कुलनीउपनी भोगवी पछे यावत् दीक्षालेज्यो। एवखलु अम्मयाओ माणुस्सया कामभोगा। इम निश्चे माता पिताओ मनुष्यसंबंधी कामभोग इहां कामभोग शब्दथकी तेहना आधारभूत स्त्री पुरुष शरीर ते ग्रहवा। असुई असासया वंतासवा पि त्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा। अपवित्र थिरनथी वमनना आश्रव भर्याछे पित्तभर्या अछे श्लेष्मानो मल तेहप्रते भर्या शुक्र ते वीर्य तेहप्र ते भर्या अर रुधिरप्रते भर्या अछे। उच्चारपासवणखेलसिंघाणवंतपूयसुक्कसोणियसमुब्भवा। वडीनीति लघुनीति श्लेष्म नाकनो मल वमनपित्त पूति शुक्र रुधिर एतलाथकी नीपना एतले एहनो उत्पत्तिस्थानक तेहथी नीपनो। अमणुण्ण दुरूवमुत्त पूइयपुरीसपुण्णा। अमनोज्ञ जे विरूपमूत्र कुथित पुरीषविष्टा

॥ टीका ॥

शुभद्रव्यविशेषस्याधिवासेना ऽवस्थानेन दु खा दु खरूपा येते तथा बहुजनानां साधारणा भोग्यत्वेन येते तथा तत कर्मधारय ॥ परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा ॥ परिक्लेशेन महामानसायासेन कृच्छ्रदु खेनच गाढशरीरायासेन ये साध्यन्ते वशीक्रियन्ते तथा ॥ कडुयफलविवागा ॥ विपाक परिकोपि स्या दतो विशेष्यते फलरूपो विपाक. फलविपाक कटुक फलविपाको येषा न्ते तथा ॥ चुडलिव्वत्ति ॥ प्रदीप्ततृणपूलिकेव ॥ अमुच्चमाणा

॥ मूल ॥

सज्झा अवुहजणसेविया सदा साहुगरहणिज्जा अणंतसंसारवद्धणा कडुयफलविवागा चुडलिव्व अमुच्चमाण दुक्खाणुवंधिणो सिद्धिगमणविग्घा सेकेसण जाणइ अम्मयाउ ! केपुव्वि गमणयाए केपच्छा तं इच्छामिणं अम्मयाउ ! जाव पव्वइत्तए, तएणं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवंवयासी—इमेय ते जाया !

अनुवाद

वसाधुगर्हणीयानि अनन्तसंसारवर्द्धनानि कटुकफलविपाकानि चुडलिवत् (ज्वलत्तृणपूलिकेव) अमुच्यमानदु खानुबन्धीनि सिद्धिगमनविघ्नानि कोसौ जानाति अम्ब । तात । क पूर्व गमनताये क पश्चा त्तदिच्छामि अम्ब । तात । यावत्प्रव्राजितुम्' तदा त जमालि क्षत्रियकुमार पितरा वेवम

॥ भाषा ॥

तिर्णेकरी परिपूर्णछे। मियगधुस्सासउस्वेयणगा वीभत्था । मृतकसरीखो गन्धछे जेहनो तेहीज उस्वास ते अशुभनिस्वासें करी उद्वेगनाकारक एतले उस्वास निस्वास ते पणि उद्वेगना उपजावणहार जुगुप्सानो उपजावणहार । अप्पकालिया लहुसगा । थोडा कालना जाणवा लघुस्वभाव । कलमलाहियासदुक्खबहुजण साहारणा । अशुभ द्रव्य जिणटीठे मनने कलमलथाय तेहने अधिवास कहिये अवस्थानकरी दुक्खरूप जे ते घणा मनुष्य साधारण भोग्यपणें । परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा । परिकिलेसना कारण गाढाशरीरने प्रयासेंकरी साधिये वश करिये जे ते । अवुहजणसेविया । अबूझ मनुष्ये मूर्ख मनुष्ये सेव्या । सदासाहुगरहणिज्जा । सदैव जे भला साधु तिणे भोगनी निन्दाकीधी । अणंतसंसारवद्धणा कडुयफलविवागा । अनन्तसंसार चतुर्गति भ्रमणरूप तेहना वधारणहारछें कडुया खाराछे फलविपाक जेहना एतले भोगथी नरकादि पामें। चुडलिव्व अमुच्चमाण दुक्खाणुवंधिणो । चुडलो कहिये वलो तृणनोपूलो ते जो नाखिवेनहो अने हाथेराखिये तो वाले तेहनोपरे कामभोग अणमूको ता दुःखना देणहारछे। सिद्धगमणविग्घा सेकेसण जा

त्ति ॥ इह प्रथमा पर्युषवन्नोपो द्वय ॥ एमेव ते आया [illegible] ॥ इहभ्य तव पुच ' आर्यक पितामह प्रार्यक पित् पि तामह. पितृप्रार्यक पितुः प्रपितामह [illegible] पुकाहा हागत यत [illegible] [illegible], आर्यकप्रार्यकपितृका व पर्यंत पर्याय परिवाटिरित्यर्थ सेना गतं य त मया ॥ विपुलधनकनक, इह यावत्करणा दिद दृश्य " [illegible] ॥ सच विपुलधनानि ॥ प्रचुर गवादि ॥ [illegible] ॥ धान्य ॥ रत्नानि ॥ कर्केतनादीनि ॥ मणयः ॥ [illegible] मौक्तिकानि शङ्खाश्च प्रतीता ॥ शिलाप्रवालानि ॥ विद्रुमा णि ॥ रक्तरत्नानि ॥ पद्मरागा स्वाप्यादि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ विद्यमान [illegible] ॥ [illegible] ॥ प्रधान ॥ सा पतेयानि ॥ स्वापतेय द्रव्य तत [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible]

अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए बहुहिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य विउलधणकणगजावसंतसारसावएज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं परिभाएउं तं अणुहोहि ताव जाया !

पाठिहाम–इहम्य ते आम । आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागत (पितामहसंबंधि पितामहसंबंधि प्रपितामहसंबंधि [illegible]) [illegible] हिरण्य व सु वर्ण व कांस्य व दूष्य विपुलधनकनक (प्रमुखि) यावत्स्वापतेय [illegible] ([illegible], [illegible]) [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । विशेषे घन [illegible] यावत् [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादिक, सातपिढी पोताने [illegible]

॥ टीका ॥ सत्तेति ॥ आसप्तमात् कुलवंश्यात् कुललक्षणवंशोऽत्र कुलवंश्य स्तस्मात् सप्तम पुरुष यावदित्यर्थ ॥ पकामदाउंति ॥ अत्यर्थ दीनादिभ्यो दातु एव भोक्तु स्वय भोगेन ॥ परिभाएउंति ॥ परिभाजयितु दायादादीना प्रकामदानादिपु याव त्स्वापतेय मल तावदस्तीति हृदय ॥ अग्गिसाहि

॥ मूल ॥ विपुले माणुस्सए इड्ढिसक्कारसमुदए तत्तो पच्छा अणुभूयकल्लाणे वड्ढियकुलवंस जाव पव्वइहिसि, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवंवयासी—तहाविण अम्मयाओ! जंणं तुब्भे मम एव वदह इमच ते जाया! अज्जयपज्जयजाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मयाओ! हिरण्णेय सुवण्णेय जाव सावएज्जे अग्गि

अनुवाद सप्तमात्कुलवंश्यात् प्रकाम दातुम्प्रकाम भोक्तु परिभाजयितु (अल भवति तावदस्तीति हृदयम्) तदनुभव ताव ज्जात। (यावत्) विपुलमानुष्यक ऋद्धिसत्कारसमुदय, तत पश्चादनुभूतकल्याणोवर्द्धितकुलवंश (प्रव्रति) यावत्प्रव्रज, तदा स जमालि क्षत्रियकुमार पितरा वेवमवादीत्—तथ पि अम्ब। तात। य यूय ममैव वदथ इदञ्च ते जात। आयकप्रार्यक (प्रव्रति) यावत्प्रव्रज, एव खल्वम्बा तात। हिरण्य च सु

॥ भाषा ॥ प्रधानद्रव्य। अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामदाउ पकामभोत्तु परिभाएत्तु। तेहपह चे केतलालगे ते कहवो यावत् सातमा कुलवृश्यकी जापनो पुरुषलगे एतले सातपोढीलगे पहुं च जो उत्कृष्ट दानदेइये तो पणि अत्यर्थ पोते भोगवीये तो पणि गोत्रीयने बाटदीजे। त अणहाहि ताव जाया विपुले माणुस्सए। तेहभणी भोगवो पहिली हेपव। विस्तीर्ण मनुष्यसवन्धी कामभोग। इड्ढिसक्कारसमुदए। ऋद्धिना सत्कार समुदाय अथवा विशेष उदयप्रते। तओपच्छा अणुभूयकल्लाणे। तिवारपछे अनुभोगवीने कल्याणक मङ्गलीक प्रते। वड्ढियकुलवंस जाव पव्वहिसि। पुत्र पौत्रादिक वंशवधारी पछे यावत् प्रव्रज्या लेज्यो। तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवंवयासी। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार मातापिता प्रते इमकहे। तहाविण अम्मयाओ। तिमहीज माता पिताओ। जण तुब्भे ममएव वयह इमच ते जाया। जेहभणी तुम्हे मुझप्रते इमकहोछो एह वली ताहरा हे पुत्र। अज्जय पज्जय जाव पव्वहिसि।—दादो पडदादो यावत् तेहसमीप-थकी आव्यो इत्यादि यावत् दीक्षालेज्यो। एवखलु अम्मयाओ। इम निश्चे माता

टीका ॥ एइत्यादि ॥ अन्यादि साधारण मित्यर्थ ॥ दाइयसाहिएत्ति ॥ दायादाः पुत्रादय एतदेव द्रव्यस्यातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरेणाह ॥ अग्गिसामणेइत्यादि ॥ विसयाणुलोमाहिति ॥ विषयाणां शब्दादीना मनुलोमा स्तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेना नुकूला विषयानुलोमा स्ताभि ॥ आघव

॥ मूल ॥ साहिए चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए दाइयसाहिए अग्गिसामणे जाव दाइयसामणे अधुवे अणितिए असासए पुव्विंवा पच्छावा अवस्सं विप्पजहियव्वे भविस्सइ, सेकेसणं जाणइ तंचेव जाव पव्वइत्तए? तएण तं जमालिं खत्तियकुमार अम्मयाउ जाहेनोसचाएइ विसयाणुलोमेहिं बहूहि आघवणाहिय पन्नव

अनुवाद वर्ण च यावत्स्वापतेय अग्निसाधिक चोरसाधिकं राजसाधिकं मृत्युसाधिकं दायादसाधिकं ऽग्निसामान्यो याव दायादसामान्यो ऽध्रुवो ऽनितिको ऽशाश्वत पूर्वया पश्चाद्वाऽवश्यविप्रहातव्य भविष्यति कोसौ जानाति तथैव यावत् प्रव्रजितुम्, तदा त जमालि क्षत्रियकुमार अम्बातातौ यदा नोचालयितु शक्नुवन्तौ विषयानुलोमाभि र्बह्वीभि राख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च विज्ञापनाभिश्च सञ्ज्ञापनाभिश्चाख्यातु

॥ भाषा ॥ पितायो। हिरणेव सुवणेव जाव सावएज्जे। हिरण्य रूपन सुवर्ण रूपन यावत् स्वापतेयद्रव्य तेह। अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए मच्चुसाहिए दाइयसाहिए। अग्निने आधीनछै अग्निथी बले चोर लेजाय राजाने आधीन मृत्युआधीन अथवा मृत्युने आधीन दायादि पुत्रादिक तेहने स्वाधीनछै एहीजद्रव्य अतिपरवशपणो कहवा पर्यायान्तरे कहैछै—अग्गिसामणे। अग्निसामान्य यावत् पुत्रसामान्य। अधुवे अणितिए असासए पुव्विंवा पच्छावा। अध्रुव अनित्य अशाश्वतो पूर्व पहिला तथा पछै। अवस्स विप्पजहियव्वे भविस्सइ। अवश्यमेकरी मूकवो हुस्ये। सेकेसण जाणइ। तेह कुण जाणैछै। त चेव जाव पव्वइत्तए। तिमहीज यावत् आशादीक्षाका दीक्षा लेस्यूं। तएण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ। तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमार प्रतें माता पिता। जाहे नोसचाएइ। जिवारे समर्थ नथी। विसयाणुलोमेहि बहूहि। विषय जे शब्दादिक तेहने अनुकूल सन्मुख एहवे घण वचनेकरी सामान्य वचनने कहवेकरी। पन्नवणाहिय विन्नवणाहिय सन्नवणाहिय। विशेष वचनने कहवेकरी विनतीने करवेकरी प्रेमसहित प्रार्थनाने

॥ टीका ॥ पणवणाहियत्ति ॥ प्रज्ञापनाभिश्च विशेषकथनैः ॥ सगणवणाहियत्ति ॥ सञ्ज्ञापनाभिश्च सम्बोधनाभिः ॥ आख्यापनाभिः सामान्यतो भणनै ॥ पणवणाहियत्ति ॥ प्रज्ञापनाभिश्च विशेषकथनैः ॥ सणवणाहियत्ति ॥ सञ्ज्ञापनाभिश्च सम्बोधनाभिः ॥ विणवणाहियत्ति ॥ विज्ञापनाभिश्च विज्ञप्तिकाभिः सप्रणयप्रार्थनैः, चकारः समुच्चयार्थः ॥ आघवित्तएवत्ति ॥ आख्यातु एवमन्यान्यपि पूर्वपदेषु क्रमेणोत्तराणि योजनीयानि ॥ विसयपडिकूलाहिंति ॥ विषयाणां प्रतिकूला स्तत्परिभोगनिषेधकत्वेन प्रतिलोमा या स्ता स्तथा ताभिः ॥ संजमभउव्वेयणकरीहिंति ॥ संयमात् भयं भीतिं मुद्वेजनञ्च चलनं कुर्वन्ती त्येवंशीला या स्ता स्तथा ॥ सच्चेत्ति ॥ सद्भ्योहितत्वात् ॥ अणुत्तरेत्ति ॥ अविद्यमानप्रधानतरं अन्यदपि तथाविधं भविष्यती त्याह ॥ केवलत्ति ॥ केवलं मद्वितीयं ॥ जहावस्सएत्ति ॥ एवं चेदं तत्र सूत्रं " पडिपुण्णे ॥ अपवर्ग

॥ मूलं ॥ णाहिय विसवणाहिय सम्रवणाहिय आघवेत्तएवा सण्णवेत्तएवा विण्णवेत्तएवा तहेव विसयपडिकूलाहिं संजमभयउव्वेयणकरीहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी—एवं खलु जाया! णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले " जहा आवस्सए,, जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेइ, अहीव एगंतदिट्ठिए खुरोइव एगंतधाराए लो

अनुवाद सञ्ज्ञापयितुं प्रज्ञापयितुं विज्ञपयितुं तथैव विषयप्रतिकूलाभिः संयमभयोद्वेजनकरीभिः प्रज्ञापनाभिः प्रज्ञापयन्तावेवमवादिष्टाम्—एवं खलु जात। निर्ग्रन्थं प्रवचनं सत्यमनुत्तरं केवलं यथा ऽऽवश्यके * (प्रतिपूर्णप्रज्ञप्ति) यावत्सर्वदुःखानामन्तं करोति, अहिरिवैकान्तदृष्टिकं क्षुरप्र

॥ भाषा ॥ वारवे सबोधन भले प्रकारे वचनने कहवेकरी। आघवेत्तएवा सण्णवेत्तएवा विण्णवेत्तएवा। सामान्य प्रकारे वचन कहे सबोधन वचनेकरी विनतीने वचने करी। तहेवविसयपडिकूलाहि। तिमज विषयने प्रतिकूल ते पणि भोगनिषेधपणेकरी प्रतिलोम। संजम भयउव्वेयणकरीहि। संयमने भेदकारी वचन सयम भयप्रते चलवांकरे इसो भोळके जेहने। पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एववयासी। प्रज्ञाविशेष वचनेकरी प्ररूपतीथकी विशेषे कहतीथकी। इमकह्। एव खलुजाया णिग्गथेपावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले। इम निश्चे हेपुत्र। निर्ग्रंथ प्रवचनमार्ग सज्जनने हितकारी सर्वथी उत्कृष्टो बीजो इसो कोई नथी। पडिपुण्णआवस्सए। जिम आवश्यकमाहि तिहां सूत्र इम अपवर्ग प्रापकगुणेकरी भर्यो, नेयाउए, नायक मोक्षमार्गने, ससुद्धे, समस्तपणे शुद्ध इत्यादि।

* यथा ऽऽवश्यक इतिसूत्रकारोक्त्या भद्रबाहुस्वामिपूर्वकाले प्याशीदावश्यकसूत्रमिति सम्भाव्यते।

॥ टीका ॥

प्रापकगुणैर्भृत ॥ नेयाउए ॥ नायक मोक्षगमकमित्यर्थः, नैयायिकंवा; न्यायानपेतत्वात् ॥ ससुद्धे ॥ सामस्त्येन शुद्ध ॥ सल्लगत्तणे ॥ मायादिशल्य कर्त्तन ॥ सिद्धिमग्गे ॥ हितार्थप्राप्त्युपाय ॥ मुत्तिमग्गे ॥ अहितविच्युते रुपाय ॥ निज्जाणमग्गे ॥ सिद्धिक्षेत्रगमनोपाय ॥ निव्वाणमग्गे ॥ सकलकर्मवि रहजसुखोपाय ॥ अवितहे ॥ कालान्तरे प्यनवगततथाविधाजिमतप्रकार मविसन्धिप्रवाहेण व्यवच्छिन्न ॥ सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे ॥ सकलाशर्म्मक्ष योपाय ॥ एत्यठिया जीवा सिज्झति वुज्झति मुच्चति परिनिव्वायत्तित्ति ॥ अहीवेगतदिट्ठीए ॥ अहिरिव एको न्तो निश्चयो यस्या सा एकान्ता सादृष्टि र्वुद्धि र्यस्मिन् निर्ग्रन्थप्रवचने चारित्रपालनम्प्रति तदेकान्तदृष्टिक अहिपक्षे आमिषग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता एकनिश्चया दृष्टि र्दृक् यस्य स एकान्तदृष्टिक ॥ खुरोइवएगतधाराएत्ति ॥ एकान्ता उत्सर्गलक्षणैकविभागाश्रया धारेव धारा क्रिया यत्र त त्तथा ॥ लोहमयेत्यादि ॥ लोहमया यवा इव चर्वयितव्याः, नैर्ग्रन्थं प्रवचन दु कर मितिहृदय ॥ वालुयत्यादि ॥ वालुकाकवलइव निरास्वाद वैषयिकसुखास्वादनापेक्षया प्रवचन मिति ॥ गगेत्यादि ॥ गङ्गावा; गङ्गेव महानदी प्रतिस्रोतसा गमन प्रतिश्रोतोगमन तद्भाव स्तत्ता तया प्रतिश्रोतोगमनेन गङ्गेव दुस्तर प्र

॥ मूल ॥

हमया जवा चावेयव्वा वालुयाकवलेइव निरसारे गंगावा महानदी पडिसोतगमणयाए महासमुद्दोव्व भुया

॥ अनुवाद ॥

इवैकान्तधाराक, लोहमया यवा चर्वयितव्या, वालुकाकवल इव निस्सार, गङ्गेव महानदी प्रतिश्रोतोगमनतायै, महासमुद्र इव भुजाभ्या दुस्तर,

॥ भाषा ॥

जावसव्वदुक्खाणमतकरेइ । यावत् दुःखनोअतकरे एतलालगे कहवो । अहीवएगतदिट्ठाए खुरोइवएगतधाराए। जिम सर्पनो आमिष ग्रहवाने एकात दृष्टि हुवे जिम चारित्रनेविषे एकातदृष्टि राखवी खुरप्रनोपरे एकात उत्सर्गलक्षण कहता क्रियाछे जिहा। लोहमयाजवा चावेयव्वा । लोहमय जव माणे चाववा एतलो निग्रंथ प्रवचन जे चारित्रनेविषे दुष्करपणो देखाड्यो । वालुया कवलेइवनिस्सारए। वेलूना कवलनीपरे स्वादरहित वैषयिक सुख स्वादनी अपेक्षायें साररहितछे चारित्र। गगावामहानदीपडिसोतगमणयाए। गङ्गामहानदीनीपरे, जिम गङ्गामहानदी प्रतिस्रोत कहिये सामुहे प्र वाहे जाइवाने दोहिलो तिम साधुपणो आदरतो दुष्कर । महासमुद्दोव्वभुयाहिदुत्तरो तिक्खजमियव्व गुरुयलबेयव्व। महासमुद्र भुजायेकरी तरिवो दो

॥ टीका ॥

वचन मिति भावः, एव समुद्रोपमावचनमपि ॥ तिक्खंकमियव्व ॥ यदेत त्प्रवचन त त्तीक्ष्ण खड्गादिक्रमितव्य यथाहि खड्गादिकमितु मशक्य मेव मशक्य प्रवचन मनुपालयितु मितिभाव ॥ गुरुय लंबेयव्वति ॥ गुरुक महाशिलादिक लम्बयितव्य मवलम्बनीय रज्ज्वादिनिबद्ध हस्तादिना धरणीय प्रवचन गुरुकलम्बनमिव दुष्कर तदिति भाव ॥ असीत्यादि ॥ असे र्धारा यस्मिन् व्रते आक्रमणीयतया तदसिधाराक व्रत नियम श्चरितव्य मासेवितव्य तदेत त्प्रवचनानुपालन तद्व दुष्कर मित्यर्थ, अथ कस्मा देतस्य दुष्करत्व मत्रोच्यते ॥ नोइत्यादि ॥ आधाकर्म्मिकमिति, एतद्वा उज्झोयरएइवा ॥ अध्यवपूरकइतिवा तल्लक्षण चेद-स्वार्थ मूलाद्रहणेकृते साध्वाद्यर्थमधिकतरकणक्षेपणमिति ॥ कंतारभत्तेइवत्ति ॥ कान्तार मरण्य

॥ मूल ॥

हि दुत्तरो तिक्ख कमियव्व गुरुयं लंबेयव्व असिधारागं वयं चरियव्वं णोखलु कप्पइ जाया ! समणाणं णिग्गंथाणं आहाकम्मिएइवा उद्देसिएइवा मिस्सजाएइवा उज्झोयरिएइवा पूइएइवा कीएइएवा पामिच्चेइवा

अनुवाद

तीक्ष्ण क्रमितव्य, गुरुक लम्बयितव्य, असिधाराक व्रत चरितव्य, नखलु कल्पते जात ! श्रमणाना निर्ग्रन्थानामाधाकर्म्मिकमितिवा उद्देशिकमितिवा मिश्रजातिकमितिवा अवध्यपूरक मितिवा पूतिक मितिवा क्रीतमितिवा पामित्यमितिवा अच्छेद्यमितिवा अनिसृष्टमितिवा अभ्याहृत

॥ भाषा ॥

छे। महाशिलादाद्य तथा रज्वादिक वांधी धारहिलो तिम निर्ग्रंथप्रवचन पालता दोहिलो तीखी खडगनीधारा ऊपर चालवो दुष्कर तिम ए मार्गछे। ह्या तिम ए प्रवचन पालिवो तेहथी पणि दुष्कर, हियो दुष्कर तिम एहछे। असिधारगंवयचरियव्व। तरवारनी धारा सरीखो वयकहिये नियमते सेविवो जे ए प्रवचन पालिवो तेहथी पणि दुष्कर, हिवे स्यामाटे एहने दुष्करपणो कहियेछे—णोखलुकप्पइजाया समणाण णिग्गथाण। नही निश्चे कल्पे हेपुत्र। श्रमणने निर्ग्रंथने। आहाकम्मिएइवा उद्देसिएइवा मिस्सजाएइवा। गृहस्थे पोताने अर्थे आहारकरता साधुने अर्थे कीधू, ते साधुने न कल्पे साधुने उद्देशीने करवो गृहस्थे पोताने अर्थे काइक कीधू काइक साधुनेअर्थे कीधो ते मिश्र। उज्झोयरएइवा पूइएवा कीएइएवा पामिच्चेइवा। पोतानेअर्थे मालटेई लीधू तिहा साधुनेअर्थे अधिक तर क्षेपवू आपण आरम्भमाहे साधुनिमित्ते करे वेचा तू लेईने साधुने दे ओछीनो लेईने साधुने दे ते पामिच्चदोष। अच्छेज्जेइवा अणिसिठेइवा अभिह

॥ टीका ॥ तत्र यद्भिक्षुकार्थं संस्क्रियते तत्कान्तारभक्त मेव मन्यान्यपि ॥ भोत्तएवत्ति ॥ भोक्तु ॥ पायएवत्ति ॥ पातुवा ॥ नालंति ॥ नसमर्थं शीताद्यधिसोढु

॥ मूल ॥ च्छेज्जेइवा आणिसिठ्ठेइवा आभिहडेइवा कतारभत्तेइवा दुब्भिक्खभत्तेइवा गिलाणभत्तेइवा वद्दलियाभत्ते इवा पाहुणभत्तेइवा सेज्जायरपिंडेइवा रायपिंडेइवा मूलभोयणेइवा कंदभोयणेइवा फलभोयणेइवा बीय भोयणेइवा हरियभोयणेइवा भुत्तएवा पायएवा तुम्मंसि चणं जाया ! सुहसमुचिए णोचेवणं दुहसमुचिए नालंसीयं नालंउण्हं नालंखुहा नालंपिवासा नालंचोरा नालंवाला नालंदंसा नालंमसगा नालंवाइयपित्ति

अनुवाद मितिवा कान्तारभक्तमितिवा दुर्भिक्षभक्तमितिवा ग्लानभक्त मितिवा वार्दलिकाभक्त मितिवा प्राघूर्णकभक्तमितिवा शय्यातरपिण्डमितिवा राजपिण्डमितिवा मूलभोजनमितिवा कन्दभोजन मितिवा फलभोजन मितिवा बीजभोजन मितिवा हरितभोजन मितिवा भोक्तुवा पातुवा त्वञ्च जात ! सुखसमुचितो नैव दुःखसमुचितो नाल शीतं नालमुष्णं नालक्षुधं नाल पिपासां नाल चौरान् नाल व्यालान् नाल दंशान्

॥ भाषा ॥ डेइवा कतारभत्तेइवा दुब्भिक्खभत्तेइवा गिलाणभत्तेइवा वद्दलियाभत्तेइवा । अनेरा पासथी मागीने साधुने दे ते अभ्याहृतदोष अनिष्टदोष भिक्षुभिक्षुनो साधारण दे साहमो आणी साधुने आहार दे अटवीनेविषे भिक्षुकनेअर्थे करे ते भोजन दुर्भिक्षनेविषे भिक्षुकनेअर्थे करे ते भोजन ग्लाननेअर्थे जे आ हार करे ते वरसात वरसते आहारलेई आपवू न कल्पे । पाहुणभत्तेइवा सेज्जायरपिंडेइवा रायपिंडेइवा मूलभोयणेइवा कंदभोयणेइवा फलभोयणेइ वा । प्राहुणानेअर्थे नीपजाव्यू आहार ते न कल्पे उपाश्रयनोस्वामी तेहनो शय्यातर कही आहार न लेवो राजाराघरनो आहार न लेवो कन्दनो भो जन न लेवो फलनोभोजन न लेवो न करवो । बीयभोयणेइवा हरियभोयणेइवा । बीज सचित्तनो भोजन न करवो हरितनो भोजन न करवो । भुत्तएवा पायएवा । जीमवाने पीवाने । तुम्मंसिचणजाया । तुम्हने चपुन ण वाक्यालंकारे, हेपुत्र ! सुहसमुचिए णोचेवण दुहसमुचिए । सुखने योग्यछे नही निश्चे ण वाक्यालंकारे, दुःखभोगववाने योग्य । णालसीयं णालउण्हं णालखुहा णालपिपासा णालचोरा णालवाला णालदंसा णालमसगा । समर्थ नही शी

॥ टीका ॥

इह रोगा कुष्टादय मितियोग' इत्यत्र क्वचि त्प्राकृतत्वेन द्वितीयार्थे प्रथमा दृश्या ॥ वालत्ति ॥ व्यालान् स्वापदभुजगलक्षणान् ॥ रोगायंकेत्ति ॥

॥ मूल ॥

उदिसे अहियासेत्तए तं णोखलु जाया! अम्हे इच्छा यसिन्नियसणिवाइयविविहेरोगायंके परीसहोवसग्गे उदिसे अहियासेत्तए तं णोखलु जाया! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पजोग तं अच्छाहि ताव जाया! जाव अम्हे जीवामो तनुपच्छा अम्हेहिं कालगए हिं जाव पव्वइहिसि, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहाविणं तं अम्मयाओ

अनुवाद

परीसहोपसर्गानुदीर्णानध्यासितु' तस्मान्नखलु जात। वय मिच्छा नाल मसकान् नाल वातिकपैत्तिकश्लैष्मिकसान्निपातिकविविधरोगातङ्कान् परीसहोपसर्गानुदीर्णानध्यासितु' तस्मान्नखलु जात। वय मिच्छाम त्तव क्षण मपि विप्रयोग ततो त्रास्व ताव ज्जात। यावद्वय जीवाम स्तत पश्चा दस्माभि र्याव त्प्रव्रज, तदानी सजमालि क्षत्रियकुमारो म स्तव क्षण मपि विप्रयोग ततो त्रास्व ताव ज्जात। नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन सत्य मनुत्तर केवल तथैव ऽम्बापितरावेवमवादीत्–तथापि (तथैव) तदम्ब! तात! यद्यूय ममैव वदथ एव खलु जात! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन सत्य मनुत्तर केवल तथैव

॥ भाषा ॥

सहवाने समर्थ नहीं व्याल स्वा त सहवान समर्थ नहीं उष्ण सहवाने समर्थ नही भूख सहवाने समर्थ नहीं तृषा सहवाने समर्थ नही चोरनों उपद्रव सहवाने समर्थ नहीं व्याल स्वा त सहवान समर्थ नहीं उष्ण सहवाने समर्थ नहीं दसानोउपद्रव सहवाने समर्थ नही मसानोउपद्रव सहवाने। वालवाइय पित्तिय सिंभिय सण्णिपातिय। न पद सर्पप्रमुखना उपद्रव सहवाने समर्थ नहीं दसानोउपद्रव सहवाने समर्थ नही मसानोउपद्रव सहवाने। विविहेरोगाय के परीसहोवसग्गेउदिसे अ हीं समर्थ सहवाने वातिक पैतिक श्लेषा वात पित्त श्लेष एकठा थया ते सन्निपातिक तेह उपना थका। विविहेरोगाय के परीसहोवसग्गेउदिसे अ हियासित्तए। विविधप्रकारना रोग कुष्टादिक आतङ्क उतावला घातकरे शूलादिक तेहना परीसह उपसर्ग उदयआव्या ते अहियासवाने खमिवाने असमर्थ। तणोखलुजाया इच्छामो। तेहभणी नहीं निश्चे अहोपुत्र। अम्हे वाछूं। तुज्झखणमवि विप्पओग। तुझसघाते क्षणमात्र पणि निमिषमा त्र पणि वियोग। तनच्छाहि ताव जाया जाव अम्हेजीवामो। तेमाटे रहि तू तितलालगे अहोपुत्र। जालगे अम्हे जीवा। तओपच्छाअम्हेहि जाव पव्व इहिसि। तिवारपछी अम्हे कालधर्म पाम्या पछी यावत् भुक्तभोगी थई दीक्षा लज्यो। तएण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एववयासी। तिवा रे ते जमाली क्षत्रियकुमार ए वचन सांभली पाछो माता पिता प्रतें इमकहे। तहाविण त अम्मयाओ। तिमज तेह अहो माता पिताओ। जण तु

॥ टीका ॥ आतङ्का आशुघातिन शूलादय ॥ कीवाणंति ॥ मन्दसंहननानां ॥ कायराणंति ॥ चित्तावष्टम्भवर्जितानां अतएव ॥ कापुरिसाणंति ॥ पूर्वोक्तमेवा थ मन्वयव्यतिरेकाभ्या पुनराह ॥ दुरणुइत्यादि ॥ दुरनुचर दुःखासेव्य प्रवचनमिति प्रकृतं ॥ धीरस्सत्ति ॥ साहसिकस्य तस्यापि निश्चितस्य कर्त्तव्यमेवेद मिति कृतनिश्चयस्य तस्यापि व्यवसितस्य उपायप्रवृत्तस्य ॥ एत्यति ॥ प्रवचने लोकेवा, दु करत्वञ्च ज्ञानोपदेशापेक्षयापि स्यादत आह

॥ मूल ॥ जसां तुझे ममं एवं वदह एवखलु जाया ! णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तचेव जाव पव्वइहिसि एव खलु अम्मयाओ ! णिग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबधाणं परलोगपरम्मुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पामयजणस्स . धीरस्स णिच्छियस्स ववसियस्स णो खलु एत्थ किंचिवि दुक्करं करणयाए, त इच्छामिण अम्मयाओ! तुझेहिं अब्भणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव

अनुवाद यावत्प्रव्रज, एव खलवम्ब ! तात ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन क्लीवाना कातराणा कापुरुषाणा मिहलोकप्रतिबन्धाना परलोकपराङ्मुखाणा विषयतृपिताना दुरनुचर पामरजनस्य' धीरस्य निश्चितस्य व्यवसितस्य नखल्वत्रकिञ्चिदपि दुष्कर करणतया, तदिच्छामि अम्ब ! तात ! युष्माभि

॥ भाषा ॥ भे मम एव वदह । जेहभणो तुम्हे मुझने इम कहोछो । एवखलुजाया णिग्गंथे पावयणं । इम निश्चे अहोपुत्र । निर्ग्रंथ प्रवचनमार्ग । सच्चेअणुत्तरे । सत्य उत्कृष्ट केवलितचेव जाव पव्वइहिसि । शुद्ध इत्यादिक तिमहीज यावत् टीचा लेस्यो एतलालगे वाइवो । एव खलु अम्मयाओ णिग्गंथेपावयणे । इम निश्चे माता पिताओ साधुनो मार्ग । कीवाण कायराण कापुरिसाण । नष्ट संघयणना धणीने कायरने कापुरुषने । इहलोगपडिबधाण । इह लोकनेविषे रक्तने । परलोग परमुहाण । परलोकथकी उपराठाने भयरहितने । विसयतिसियाण । विषयथकी तृप्त रहितने । दुरणुचरे पामयजणस्स । दुखें आसेविवा योग्य प्रवचन इसोकह्यो ते पामर जननेछे । धीरस्सणिच्छियस्स ववसियस्स । पणि साहसिकने निश्चय एहकार्य करवो छेज एहवाने उपाय प्रवर्त्तने । णोखलु एत्थ किंचिविदुक्कर करणयाए । नही निश्चें इहा प्रवचनने काइ पणि करवाने दुष्करनही । त इच्छामिण अम्मयाओ । तेहभ

॥ टीका ॥ छासियसम्म करणतया ॥ करणेन संयमस्यानुष्ठानेनेत्यर्थः ॥ सब्भंतरबाहिरियंति ॥ सहाऽभ्यन्तरेण वाहिरिकयाच बहिर्भागेन य त्त तथा ॥

॥ मूल ॥ जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहिय विसयपडिकूलाहिय बहूहिं आघवणाहिय पन्नवणाहिय ४। आघवेत्तएवा जाव विन्नवेत्तएवा ताहे अकामाइं चेव पवइत्तए? तएणं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो निक्खमणं अणुमन्नित्था, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमाररस पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं

अनुवाद — तदा तं जमालिं क्षत्रियकुमारं अम्बापितरौ यदा सञ्चालयितुं नशक्नुवन्तौ विषयानुलोमाभिः विषयप्रतिकूलाभिश्च बह्वीभिराख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च विज्ञापनाभिश्च सञ्ज्ञापनाभिश्चाख्यातुंवा यावत् विज्ञापयितुंवा अकामौ चैव जमालेः क्षत्रियकुमारस्य निष्क्रमण (दीक्षामहोत्सव) अन्वमनिपाताम्, तदा तस्य जमालेः क्षत्रियकुमारस्य पिता कौरन्यनुज्ञात सन् श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके यावत्प्रव्रजितुम् ?

॥ भाषा ॥ तुम्हे आज्ञा दीधा थका। समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामीने समीपे। जाव पव्वइत्तए। यावत् दीक्षा लेवानेकाजे। तएणं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार प्रतें माता पिता। जाहे नोसंचाएइ विसयाणुलोमाहिय। जेहभणी समर्थ नही वचन कहवाने विषय जे शब्दादिक तेहना पो षणहार वचन। विसयपडिकूलाहिय बहूहिं आघवणाहिय पण्णवणाहिय ४। चारित्र ते विषयने प्रतिकूलपणें देखाड्यो एहवा वचन घणा सामान्यप्र कारे वचन कहवा तिणेकरी विशेषप्रकारे वचन कहवा तिणेकरी। आघवेत्तएवा जाव विण्णवेत्तएवा ताहे अकामाइंचेव। कहीने यावत् वीनवी ने ते इमणो इच्छाविना हीन निचै। जमालिस्सखत्तियकुमारस्स। जमाली क्षत्रियकुमारस्स। णिक्खमण अणुमणित्था। दीक्षामहत्सव मानता हुवा। तएणं तस्सजमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया। तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता। कोडुंबियपुरिसेसद्दावेइ २ त्ता एववयासी। आज्ञाकारीपुरुष तेडावे ते सेवकपुरुष तेडावीने इमकहे। खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया। उतावला थाओ अहो देवाणुप्रियाओ। खत्तियकुंडगामण

॥ टीका ॥ ज्जितवलित्तति ॥ आसिक्तं गुदकेन समार्जितं प्रमार्ज्जनिकादिना उपलिप्तञ्च गोमयादिना य त्त तथा ॥ जहाउववाइएत्ति ॥ एवञ्चैत त्सू-सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुइयसम्मट्ठरत्यंतरावणवीहियं ॥ आसिक्तानी ईषत्सिक्तानि सिक्तानिव तदन्यथा अत एव शुचिकानि पवित्राणि सम्मृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि रथ्यामध्यानि आपणवीथयश्च हट्टमार्गायत्र तत्तथा ॥ मंचाइमंचकलियं नाणाविहरागभूसियज्झयपडागाइपडागमंडियं ॥ नानाविधरागैः रञ्जितैः ध्वजैः चक्रसिंहादिलाञ्छनोपेतैः पताकाभिश्च तदितराभिः अतिपताकाभिश्च

॥ मूल ॥ वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जहा उववाइए जाव पच्चप्पिणंति , तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ , सद्दावेइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं म

अनुवाद टुम्बिकपुरुषान् आह्वापयति आह्वापयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! क्षत्रियकुण्डग्राम नगरं साभ्यन्तरबाहिरिक आसिक्त सम्मार्जितोपलिप्त (प्रभृति) यथौपपातिकं यावत्प्रत्यर्पयन्ति , तादनो स जमालेः क्षत्रियकुमारस्य पिता द्वितीयमपि कौटुम्बिकपुरुषान् आह्वापयति आह्वापयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! जमालेः क्षत्रियकुमारस्य महार्थं महार्घ्यं महार्हं विपुलनिष्क्रमणाभिषेकं उप

॥ भाषा ॥ यर सब्भितर बाहिरथ । क्षत्रियकुण्डग्राम नगरमां अभ्यन्तरसहित बाहिरभाग । आसियसम्मज्जिओवलित्त जहा उववाइए जाव पच्चप्पिणंति । छंटकाव सुगन्ध जलसघाते करी प्रमार्जनादि प्रमार्जी गोमयादिके लींपो जिम उववाइउपांगनेविषे कह्यो तिम यावत् कार्यकरीने सेवकपुरुष आज्ञापाछीसुंपे । त एणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया । तिवारे ते जमालीक्षत्रियकुमारनो पिता । दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । बीजीवार पणि कौटुंबिक सेवकपुरुष तेडावे ते सेवकपुरुष तेडावीने इमकहे । खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया । उतावलाथाओ अहोदेवाणुप्रियाओ । जमालिस्सख त्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं । जमाली क्षत्रियकुमारनो मोटाअर्थे युक्त महामूल्य महायोग्य । विपुलणिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह । विस्तारवंत दी

॥ टीका ॥

पताकोपरिवर्त्तिनीभि मंरिडतं य त तथाइत्यादि„ महत्थंति ॥ महाप्रयोजन ॥ महग्घंति ॥ महामूल्य ॥ महरिहंति ॥ महार्हं महतावा योग्यं निक्खमणाभिसेयंति ॥ क्रमणाभिषेकसामग्री ॥ एवजहारायप्पसेणइज्जेति ॥ एवञ्चैत त्तत्र–अट्ठसएणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणंति„ अट्ठसएणं भोमेज्जाणंति ॥ मृन्मयाना ॥ सव्वड्ढीएत्ति ॥ सर्वर्द्धा समस्तच्छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्करणादिदं दृश्य–सव्वज्जुईए ॥ सर्वद्युत्याभरणादिसम्बन्धिन्या सर्वयुत्यावा, उचितेष्टवस्तुघटनालक्षणया ॥ सव्वबलेणं ॥ सर्वसैन्येन ॥ सव्वसमुदएणं ॥ पौरादिमीलनेन

॥ मूल ॥

हग्घं महरिहं विपुलणिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं त जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेइ, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा रायप्पसेणीए जाव अट्ठसयाणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव

अनुवाद

स्थापयत, तदा ते कौटुम्बिकपुरुषा स्तथैव यावत्प्रत्यर्पयन्ति, तदा त जमालिं क्षत्रियकुमारं अम्बातातौ सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखं निषादयतो निषादयित्वा अष्टोत्तर शत सौवर्णिककलशानामेव यथा राजप्रश्नीये याव दष्टोत्तर शत भौमेयाना कलशाना सर्वर्द्धा यावन्मह

॥ भाषा ॥

चानो अभिषेकमहोत्सव सामग्री प्रते सज्जकरो । तएणंसे कोडुंबियपुरिसा । तिवारे ते आज्ञाकारी पुरुष । तहेव जाव पच्चप्पिणंति । तिमहीज सामग्री सज्जकरीने यावत् आज्ञा पाछीसूपे । तएणं त जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार प्रते मातापिता । सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुह निसीयावेइ निसीयावेत्ता । सिंहासन प्रधानने विषे पूर्व सन्मुख वैसारे वैसारीने । अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं । १०८ सुवर्णना कलश । एवंजहारायप्पसेणीए । इम जिम राजप्रश्नीयउपाङ्गमे विषे कह्यु तिम कहवो । जावअट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव महयारवेणं । यावत् १०८ माटीनाकलश तिणेकरी अभिषेक कीधो समस्त छत्रादि राजचिन्ह रूपेकरी यावत् मोटे शब्देकरी । महया २ निक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचइ २

सव्वायरेण ॥ सर्वोचितकृत्यकरणरूपेण ॥ सव्वविभूईए ॥ सव्वसम्पदा ॥ सव्वविभूसाए ॥ समस्तशोभया ॥ सव्वसम्भमेण ॥ प्रमोदकृतौत्सुक्येन ॥ स व्वपुप्फगन्धमल्लालंकारेणं सव्वतुरियसद्दसन्निनाएणं ॥ सव्वतूर्यशब्दानां मीलने य सङ्गतो निनादो महाघोष स तथा तेन अल्पेष्वपि ऋद्ध्यादिषु सर्व शब्दप्रवृत्ति दृष्टे त्यत आह–महताइड्ढीए महताजुईए महयाबलेणं महयासमुदएणं महयावरतुरियजमगसमगप्पवाइएणं [यमकसमकयुगपदि त्यर्थं] सखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरयमुइंगदुंदुहिनिग्घोसनाइयरवेणं ॥ पणवो भाण्डपटह भेरी महतीढक्का महाकाहलावा, झल्लरी प्रत्योच्छ्रया महामुखा चर्म्मावनद्धा खरमुही काहला मुरजो महामर्दल मृदङ्गोमर्दल दुन्दुभी ढक्काविशेषएव तत शङ्खादीनां निर्घोषो महाप्रय त्नोत्पादित शब्दो नादित तु ध्वनिमात्र मेतद्द्वयलक्षणो यो रव स तथा तेन ॥ किंदेमोत्ति ॥ किंदद्मो भवदभिमतेभ्य ॥ किंपयच्छामोत्ति ॥ तव तेगव अथवा, दद्म सामान्यत प्रयच्छाम सकर्षेणेति विशेष ॥ किंणावत्ति ॥ केनवा ॥ कुत्तियावणाउत्ति ॥ कुत्रिक स्वर्गमर्त्यपाताललक्षण भूत्रय

महया रवेणं महयामहयानिक्खमणाभिसेगेण अभिसिंचंत २ त्ता करयल जाव जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेइत्ता एव वयासी–भण जाया ! किं देमो किं पयच्छामो किंणावा ते अट्ठो ? तएणं से जमाली खत्ति यकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–इच्छामिण अम्मयाउ ! कुत्तियावणाउ रयहरणच पडिग्गहंच माणिउं

तारवेण महतामहता निष्क्रमणाभिषेकेनाभिषिंचतो ऽभिषिच्य करतल (प्रभृति) यावज्जयेन विजयेन वर्द्धापयतो वर्द्धापयित्वा एव मवा दिष्टाम्–भण जात ! किं दद्म किं प्रयच्छाम केनवा ते अर्थः ? तदा स जमालि क्षत्रियकुमारः पितरा वेव मवादीत्–इच्छामि अम्ब ! तात !

रा । मोटा२ शब्दोंनो महोत्सव निष्क्रमणें अभिषेककरे करीने । करयल जाव जएण विजएण वधावेइ २ त्ता एववयासी । हाथ जोडी यावत् ज य विजय शब्दकरी वधावे वधावीने एमकहें । अणजाया किंदेमो किं पयच्छामो किंणावा ते अट्ठो । कहो देवुं । स्यू दीजिये तुम्हारा वाञ्छायको स्यू तुम्हने प्रदो छा किण वस्तु सघाते अर्थ ते कहो । तएण से जमालीखत्तियकुमारे अम्मापियरो एववयासी । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार माता पि

॥ टीका ॥

तत्सम्भवि वस्त्वपि कुत्रिकं तत्सम्पादको य आपणो हट्टो देवाधिष्ठितत्वेना सौ कुत्रिकापण स्तस्मात् ॥ कासवगंति ॥ नापितं ॥ सिरिघराउत्ति ॥

॥ मूल ॥

सिरिघराउ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाउ रयहरणंच पडिग्गहंच उवणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह, तएणं से कोडुंबियपुरिसे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठकरयल जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव कासवगंच सद्दाविउ, तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया !

अनुवाद

कुत्रिकापणा द्रजोहरणञ्च प्रतिग्रह चानयितु काश्यपकञ्च शब्दापयितु, तदा स जमाले. क्षत्रियकुमारस्यपिता कौटुम्बिकपुरुष शब्दापयति, शब्दापयित्वा एव मवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय । श्रीगृहात्त्रीणि शतसहस्राणि (सौवर्णिकानामितिशेष) गृहीत्वा द्वाभ्यां शतसहस्रा भ्यां कुत्रिकापणाद्रजोहरणञ्च प्रतिग्रहञ्चानय, शतसहस्रेणच काश्यपक शब्दापय, तदा स कौटुम्बिकपुरुषो जमाले क्षत्रियकुमारस्य पित्रा

॥ भाषा ॥

ता प्रतें इमकहे । इच्छामिणअम्मयाओ । वाछूछू ण वाक्यालकारे, माता पिताओ । कुत्तियावणाओ रयहरणंच पडिग्गहचसणिउ कासवगचसद्दावि उ । स्वर्ग मर्त्य पाताललक्षण तीन त्रिभुवन तेहमाहि वस्तु ते पणि कुत्रिक तेहनो दायक हाट देवाधिष्टितपणें करी तेहथकी रजोहरण ओघो तथा पडघो अणाववो नापित प्रतें तेडावो । तएण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया । तिवारें ते जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता । कोडुवियपुरिसे सद्दावे इ २ त्ता एववयासी । आज्ञाकारी सेवकपुरुष तेडावे ते पुरुष तेडावीने इमकहे । खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया सिरिघराओ । उतावला थाओ अहो दे वानुप्रियाओ । भण्डारथकी । तिण्णिसयसहस्साइं गहाय । तीनलाख सोनईया ग्रहीने । दोहिसयसहस्सेहि । दोयलाख सोनईये करीने । कुत्तियावणा ओरयहरणचपडिग्गहच आणेह । कुत्रिकापणथकी रजोहरणओघो अने पचली पडघो आणो । सयसहस्सेणकासवगसद्दावेह । अने एकलाख सोनईया देइने नापितने तेडावो । तएण से कोडुवियपुरिसा । तिवारें ते सेवक पुरुष । जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एववुत्तासमाणा । जमाली क्षत्रियकु

॥ मूल ॥

सिरिघराओ तिन्निसयसहस्साइं तहेव जाव कासवगं सद्दावेइ, तएणं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंवियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे तुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता करयल जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेइत्ता एववयासी–संदिसह तुब्भं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं

अनुवाद

एव मुक्त सन् हृष्टतुष्टकरतल (प्रभृति) यावत् प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव श्रीगृहा त्त्रीणिशतसहस्राणि तथैव यावत्काश्यपक शब्दापयति' तदा स काश्यपको जमाले क्षत्रियकुमारस्य पित्रा कौटुम्बिकपुरुषै शब्दापित सन् हृष्टतुष्ट स्नात कृतवलिकर्मा यावत् शरीरो यत्रैव जमाले क्षत्रियकुमारस्यपिता तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल (प्रभृति) यावज्जमाले क्षत्रियकुमारस्यपितर जयेन विजयेन वर्द्धापयति, वर्द्धापयित्वा एवमवादीत्–संदिशथ यूय देवानुप्रियाः। यन्मया करणीय, तदा स जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता त काश्यपकमेवमवादीत्–त्व देवानुप्रिय।

॥ भाषा ॥

मारना पितानें इम कह्यायका। हट्ठतुट्ठकरयल जाव पडिसुणेत्ता। हर्ष सन्तोष पाम्या हाथजोडीने यावत् वचन सुणे सुणीने। खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णिसयसहस्साइं। छतावलाहीज भण्डारघरथकी तीनलाख सोनईया ले दोवलाख सोनईया दे रजोहरणपडघा लेआवे। तहेव जाव कासवगस हावेइ। तिमज यावत् एकलाख दे नापित तेडे। तएणंसेकासवए। तिवारे ते नापित। जमालिस्सखत्तियकुमारस्सपिउणा। जमाली क्षत्रियकुमारना पिताये। कोडुंवियपुरिसेहिं सद्दाविएसमाणे। कौटुंविकपुरुषे करी तेडाव्यो थको। हट्ठेतुट्ठेण्हाए कयबलिकम्मे जावसरीरे। हर्ष सन्तोष पाम्यो स्नानकीधो कीधा घरना देवताने वलिकर्म यावत् पवित्रशरीर थई। जेणेव जमालिस्सखत्तियकुमारस्सपिया तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। जिहां जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता तिहांआवे तिहां आवीने। करयल जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं। हाथजोडी जमाली क्षत्रियकुमारना पिता प्रते। जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता एववयासी। जय विजय शब्दे करी वधावे वधावीने इमकहे। संदिसहतुब्भंदेवाणुप्पिया जंमएकरणिज्जं। आज्ञाद्यो तुम्हे अहो देवानुप्रि

॥ मूल ॥

तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवंवयासी—तुम्मं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स ख
त्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरंगुलवज्जे निक्कमणप्पउगे ग्गकेसे कप्पेह, तएण से कासवए जमालिस्स
खत्तियकुमारस्स पिउणा एववुत्ते समाणे हठतुठे करयल जाव एव सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं
पडिसुणेइ, पडिसुणेइत्ता सुरभिणा गधोदएणं हत्थपाए पक्खालेइ, सुर २ त्ता सुद्धाए अठपडलाए पोत्ति
ए मुह बंधइ, बधइत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्कमणप्पउगे अग्गकेसे

अनुवाद

जमाले क्षत्रियकुमारस्य परेण यत्नेन चतुरङ्गुलवर्जान् निष्क्रमणप्रायोग्यान् अग्रकेशान् कर्त्तय, तदा स काश्यपको जमाले क्षत्रियकुमारस्यपित्रा
एवमुक्त सन् हृष्टतुष्टकरतल (प्रभृति) याव देव स्वामिन् । तथेति आज्ञया विनयेन वचन प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य सुरभिणा गन्धोदकेन
हस्तपादौ प्रक्षालयति, प्रक्षाल्य शुद्धया अष्टपटलया पोत्तिकया मुख बध्नाति, बध्वा जमाले क्षत्रियकुमारस्य परेण यत्नेन चतुरङ्गुलवर्जान्

॥ भाषा ॥

तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता । तकासवग एववयासी । तेह ना
या । ज मुभने करवाजोग । तएण सेजमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया । जमाली क्षत्रियकुमारना आगिला यत्नेकरीने ।
पित प्रते इमकहे । तुम्मदेवाणुप्पिया । तुम्हे हेदेवानुप्रिया । जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण । चारअगुल केश राखी वो
चउरगुलवज्जेणिक्खमणपउगे अगकेसे कप्पेह । चार अङ्गुल वर्जीने दीक्षा प्रायोग्य अग्रकेश तेहप्रते कापो एतले लोचनेकाजे कह्या
जा दूरकरो । तएण से कासवए । तिवारे ते काश्यप । जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एववुत्तेसमाणे। जमाली क्षत्रियकुमारना पिताये इम स्वामी
यथा । हठतुठे करयल जाव एववयासी । हर्ष संतोष पाम्यो हाथजोडी यावत् इमकहे । तहत्ति आणाए विणएणवयण पडिसुणेइ २ त्ता । तिमज सुद्दा
आज्ञा विनयेकरी वचनप्रते सुखे सुणे सुणीने । सुरभिणागधोदएण हत्थ पाए पक्खालेइ सुर २ त्ता । सुगन्ध गन्धोदकेंकरीने हाथ पग धोवे धोईने । जमालिस्सखत्तियकु
ए अठपडलाए पोत्तिए मुहबधइ २ त्ता । निर्मल आठ पुडवस्त्रनी मुख पोतिका मुखकोशकरी तिणसंघाते सुखप्रते बाधे बाधीने ।

॥ टीका ॥

ज्यायागारात् ॥ अग्गकेसेत्ति ॥ अग्रभूता केशा अग्रकेशा स्तान् ॥ हंसलक्खणेणंति ॥ शुक्लेन हंसचिह्नेनवा ॥ पडसाडएणंति ॥ पटरूप शाटक पटशाटक शाटकोहि शाटनकारकोप्युच्यत इति तद्व्यवच्छेदार्थं पटग्रहणं अथवा, शाटको वस्त्रमात्र सच पृथुल पटो विधीयतइति पटशाटक ॥ अग्गेहिंति ॥ अग्र्यै प्रधानै रेतदेव व्याचष्टे ॥ वरेहिंति ॥ हारवारिधारसिंदुवारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइंति ॥ इहसिंदुवारत्ति ॥ वृक्षविशेषो

॥ सूत्र ॥

कप्पेइ , तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ , पडिच्छइत्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ , पक्खालेइत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेइ , अच्चेइत्ता सुद्धेणं वत्थेणं बंधेइ , बंधइत्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवइ , पक्खिवइत्ता हारवारिधारसिंदुवारच्छिन्न

अनुवाद

निष्क्रमणप्रायोग्यान् अग्रकेशान्कर्त्तयति, तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य माता हंसलक्षणेन पटशाटकेनाग्रकेशान्प्रतीच्छति, प्रतीच्छ्य सुरभिणा गन्धोदकेन प्रक्षालयति, प्रक्षाल्याग्र्यैर्वरैर्गन्धैर्माल्यैरर्च्चति , अर्चयित्वा शुद्धेन वस्त्रेण बध्नाति , बध्वा रत्नकरण्डके प्रक्षिपति' प्रक्षिप्य हारवारिधारासिन्दुवारच्छिन्नमुक्तावलिप्रकाशानि सुतवियोगदुःसहानि अश्रूणि विनिर्मुञ्चती सती एव मवादीत्–एतदस्माकं जमाले क्षत्रि

॥ भाषा ॥

मारस्स परेण जत्तेण। जमाली क्षत्रियकुमारना अगिला यत्नेकरी । चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसेकप्पेइ। चारअंगुल वर्ज्जीने दीक्षाप्रायोग्य अग्रभूत केशप्रते कापे। तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनी माता । हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसेप डिच्छइ २ त्ता। हंसना रूपछे अथवा हंससमान श्वेतवस्त्र तेणें करीने अग्रकेश ल्ये लेईने। सुरभिणागंधोदएणं पक्खालेइ २ त्ता। सुरभिगन्धोदके करी धोवे धोईने। अग्गेहिंवरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेइ २ त्ता । अग्रा कहिये प्रधान मुख्य गन्धेकरी माल्येंकरी पूजे पूजीने। सुद्धेणवत्थेणं बंधेइ २ त्ता। निर्मलवस्त्रेकरी बांधे बांधीने । रयणकरंडगंसिपक्खिवइ २ त्ता। रत्नना करंडनेविषे प्रक्षेपकरे करीने। हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं । मोतीनोहार पाणीनीधारा निर्गुंडीनाफूल मोतीनीमाला त्रोडीथकी छूटी जेहवी दीसे तेह सरीखो। सुतविओगदूसहाइं। पुत्रने वियोगेंकरी दुःखे स

॥ टीका ॥

निर्गुण्डीतिकेचित् तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानिच शुक्लानीति ॥ एसणंति ॥ एतत् अग्रकेशवस्तु अथवा; एतत् दर्शनमिति योगो णमित्यल ङ्कारे ॥ तिहीसुयत्ति ॥ मदनत्रयोदश्यादितिथिषु ॥ पव्वणीसुयत्ति ॥ पर्वणीषु कार्त्तिक्यादिषु ॥ उस्सवेसुयत्ति ॥ प्रियसङ्गमादिमहेषु ॥ जण्णेसुयत्ति ॥ नागादिपूजासु ॥ छणेसुयत्ति ॥ इन्द्रोत्सवादिलक्षणेषु ॥ अपच्छिमेत्ति ॥ अकारस्या मङ्गलपरिहारार्थत्वात् पश्चिमदर्शन भविष्यति एतत्केशदर्शन मपनीतकेशावस्थस्य जमालिकुमारस्य यद्दर्शन सर्वदर्शनपाश्चात्य तद्भविष्यतीतिभाव , अथवा; नपश्चिम मपश्चिम पौन पुन्येन जमालिकुमारस्य दर्शन मेतद्दर्शने भविष्यतीत्यर्थ ॥ दोच्चंपित्ति ॥ द्वितीय वार ॥ उत्तरावक्कमणंति ॥ उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणमवतरण यस्मा तदुत्तरापक्रमण उत्तरा

॥ मूल ॥

मुत्तावलिप्पगासाइं सुतविन्नगदूसहाइं अंसूहिं विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एसणं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसुय तिहीसुय पव्वणीसुय उस्सवेसुय जलेसुय छणेसुय अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीतिकट्टु ऊसीसगमूले ठवेइ, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चंपि

अनुवाद

यकुमारस्य बहुषु तिथिषुच पर्वणीषुचोत्सवेषुच जन्येषु च च्छनेषु चापश्चिम दर्शन भविष्यतीति कृत्वोच्छीर्षकमूले स्थापयति। तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्या म्बापितरौ द्विवारमपि उत्तरापक्रमण सिंहासन रचयत., रचयित्वा जमालि क्षत्रियकुमार श्वेतपीतै कलशै स्नापय

॥ भाषा ॥

इवा योग्य । असूहिविणिम्मुयमाणी २ एववयासी । असूप्रते मूकतीथकी मूकतीथकी इमकहे । एसणंअम्ह जमालिस्सखत्तियकुमारस्स । एह णं वाक्याल ङ्कारे, अम्हने जमाली क्षत्रियकुमारना अग्रकेस वस्तु रूप । बहूसुय तिहीसुय पव्वणीसुय उस्सवेसुय जलेसुय छणेसुय । घणी मैणातेरसिप्रमुख तिथिने विषे दीवालीप्रमुख अमावास्यायें प्रीतमसगमादि उत्सवनेविषे नागादिदेवनी पूजानेविषे इन्द्रोत्सवादि लक्षणनेविषे । अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु । छेहलो एह केशनो अम्हने दर्शनहस्ये इम करीने । ऊसीसगमूले ठवेइ । उसीसाना मूलनेविषे थापे । तएणतस्सजमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो । तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारना माता पिता । दोच्चंपि उत्तरावक्कमण सीहासणरयावेति २ त्ता । बीजीवार पणि उत्तरदिशि साहमो

॥ टीका ॥

न्निमुख पूर्वं तत्पूर्वाभिमुखमासीदिति ॥ सेयापीयएहिंति ॥ रूप्यमयैः सुवर्णमयै श्चेत्यर्थः ॥ पम्हलसुकुमालाएत्ति ॥ पक्ष्मवत्या सुकुमालयाचेत्यर्थः ॥ गधकासाइएत्ति ॥ गन्धप्रधानया कषायरक्तया शाटिकये त्यर्थः ॥ नासानीसासेत्यादि ॥ नासानि श्वासवातवाह्य मतिलघुत्वात्, चक्षुर्हरं लोचनानन्ददायकत्वात् चक्षूरोधकवा, घनत्वात् ॥ वण्णफरिसजुत्तंति ॥ प्रधानवर्णस्पर्शमित्यर्थः, हयलालाया. सकाशात् पेलव मृदु अतिरेकेणा तिश

॥ मूल ॥

उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, रयावेंतित्ता जमालिखत्तियकुमारं सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, से २ त्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभिएणं गधकासाइएणं गायाइं लूहेंति, लूहेंतित्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, गोसी २ त्ता णासाणिस्सासवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसंजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलकणगखचितंतकम्मं महरिह हंसलक्खणपडसाडग परिहिंइ, परिहिंइत्ता हारं पिणद्धेंति, पिणद्धेंतित्ता

अनुवाद

ति, स्नापयित्वा पक्ष्मवत्सुकुमालया सुरभिगन्धकाषाय्या गात्राणि लूषत, लूषयित्वा सरसेन गोशीर्षचन्दनेन गात्रमनुलिम्पत ' अनुलिप्य ना सानि श्वासवाह्य चक्षुर्हरं वर्णस्पर्शसंयुक्तं हयलालापेलवातिरेक धवलकनकखचितान्तकर्म महार्घ हंसलक्षणपटशाटक पिनह्यत ' पिनह्यपि

॥ भाषा ॥

सिंहासन रचावें रचावीने । जमालि खत्तियकुमार सेयपीएहिं । जमालिक्षत्रियकुमार प्रतें रूप्य सुवर्णमय । कलसेंहिं ण्हावेंतिसे २ त्ता । कलसेंकरी न्हव वरावें रूप्य सुवर्णमय कलसेंकरी न्हवरावीने । पम्हलसुकमालाए सुरभिएण गधकासाइएगायाइंलूहेंति २ त्ता । पक्ष्मवन्त सुहाला सुरभिकरी गन्धप्रधा न कषाय रक्तप्रधान एतले रातीसाडी तिणेंकरी गात्र शरीर लूहे लूहीने । सरसेणगोसीसचंदणेण गायाइं । सरसजे गोशीर्ष चन्दन तिणेंकरी गात्र शरी रप्रते । अणुलिंपति गोसी २ त्ता । लेपन करें गोशीर्ष चन्दन सू गात्र लीपीने । णासाणिस्सासवोज्झ चक्खुहरवण्णफरिस संजुत्त । नासिकाने वायरें कांपे उडे घणू लघुपणापणाको लोचनने आनन्ददायक पणायको प्रधानवर्ण स्पर्श संयुक्त । हयलालापेलवाइरेग धवलकणगखचितंतकम्म । घोडानी लालथकी पणि सुकोमल अतिशयेंकरी धवलो उजलो सुवर्णकरी मण्डितछे वेज छेहडा जेहना । महारिहहंसलक्खणपडसाडगंपरिहिंइ २ त्ता । मोंघा मोलनो

॥ टीका ॥

पिनह्यत येन यत्त तथा कनकेन खचितं मण्डितं अन्तयो रञ्चलयो' कर्म वानलक्षणं यस्य त तथा ॥ हारति ॥ अष्टादशसरिक ॥ पिणद्वति ॥ पिनह्यत पितराविति ॥ अद्वहारति ॥ नवसरिक ॥ एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहेवत्ति ॥ सचैव–एगावलिपिणद्वति एवमुत्तावलि कणगावलि रयणावलि अगयाइ केउराइ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तय दसमुद्दिया णतय वत्थ सुत्त मुरवि कठमुरवि पालबकुडलाइ चूडामणिति„ तत्रैकावली विचित्रमणिकमयी मुक्तावली केवलमुक्ताफलमयी कनकावली सौवर्णमणिकमयी रत्नावली रत्नमयी छाङ्गद केयूरच बाहूाभरणविशेष एतयोश्च यद्यपि नामकोशे एकार्थतोक्ता तथा पीहाकारविशेषा द्भेदो वगन्तव्य'' कटक कलाचिकाभरणविशेष, तुटिक बाहुरक्षिका दशमुद्रिका नन्तक हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशक वत्त सूत्र हृदयाभरणभूतसुवर्णसङ्कलक "वच्छासुत्तति पाठान्तर„ तत्रवैकक्षिकासूत्र उत्तरासङ्गपरिधानीय सङ्कलक मुरवी मुरजाकारमाभरण कण्ठमुरवी तदेव कण्ठासन्नतरावस्थान प्रालम्ब झुम्बनक वाचनान्तरेत्वयमलङ्कारवर्णक: साचा क्षिखित एव दृश्यतइति, रयणस

॥ मूल ॥

चित्तं रयणसकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति, पिणद्धेंतित्ता एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव,

अट्ठहारं पिणद्धेंति, पिणद्धेंतित्ता एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव, चित्तं रयणसकडुक्कडं मउडं

पिणद्धेंति किं बहुणा गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिमेणं चउव्विहेण मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसियं

अनुवाद

त्वा हार पिनह्यत, पिनह्ययित्वा ऽर्द्धहार पिनह्यत, पिनह्ययित्वा एव यथा सूरियाभस्या लङ्कारस्तथैव चित्ररत्नसङ्कटोत्कट सुकुट पिनह्यत, कि बहुना ग्रन्थिमवेष्टिमपूरिमसङ्घातिमेन चतुर्विधेन माल्येन कल्पवृक्षमिवालङ्कृतविभूषित कुरुत: तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता कौटु

॥ भाषा ॥

पहिरावे पहिरावीने। हारपिणद्धेति २ त्ता अद्धहारपिणद्धेति २ त्ता। अठारहसरोहार पहिरावे पहिरावी महामोल्य हसथी ऊजलो एहवो कपडो पहिरावे पहिरावीने। एवजहासूरियाभस्स अलकारो तहेवचित्त। इम जिम राजप्रश्नउपाङ्गनेविषे सूरियाभदेव अलकारशरीरे पहिने नव सरोहार पहिरावे पहिरावीने। नानाप्रकार सयुक्त रत्नजडित आभरण उत्कृष्टमउड तेहप्रते पहिरावे। किंबहुणा गथिम वेढिम पूरिम सघातिमेण। रयणसकडुक्कड मउड पिणद्धेति। घणू बखाणिये गूंथ्योनाना फूलना सबूसा वगनो शलाकाये पूर्या माहोमाहि नालमेल फूल चोलीनोपरे गूथ्या तिम इहा पणि कहवो।

॥ टीका ॥

कञ्चुकमिति ॥ रत्नसङ्कटश्च तदुत्कटश्च उत्कटं रत्नसङ्कटोत्कटं ॥ गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणंति ॥ इह ग्रन्थिमं ग्रन्थेन निर्वृत्तं सूत्रग्रन्थितमालादि, वेष्टिमं वेष्टननिष्पन्नपुष्पलम्बूसकादि, पूरिमं येन वंशशलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादिवा ; पूर्यते, सङ्घातिमं तु यत्परस्परतो नालसङ्घातनेन सङ्घात्यते ॥ अलंकियविभूसियंति ॥ अलङ्कृतश्चासौ कृतालङ्कारो ऽतएव विभूषितश्च सञ्जातविभूष श्चेत्यलङ्कृतविभूषित स्त वाचनान्तरे पुन रिदमधिक-

॥ मूल ॥

करेइ, तएणं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालिभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवन्नओ जाव मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं पुरिससहस्सवाहिणीय सीयउवट्ठवेह, उ० २ त्ता ममएय

अनुवाद

म्बिकपुरुषान् आह्वापयति, आह्वापयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा लीलास्थितशालभञ्जिकाम् यथा राजप्रश्नीये विमानवर्णको यावन्मणिरत्नघण्टिकाजालपरिक्षिप्ताम् पुरुषसहस्रवाह्याम् शिविका मुपस्थापयत, उपस्थाप्य ममै तदाज्ञापिक प्रत्यर्प

॥ भाषा ॥

ण्या। चउव्विहेणं मल्लेणं। चारप्रकारनी मालायें करीने। कप्परुक्खगंपिव। कल्पवृक्षनीपरे जिम कल्पवृक्ष फूलेंकरी शोभायमान हुवे। अलंकियविभूसिय करेइ। तिम अलङ्कारसहित विभूषित एहवो करे। तएणं से जमालिस्सखत्तियकुमारस्सपिया। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता। कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी। कौटुंबिक आज्ञाकारीपुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे। खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया। उतावलाथाओ अहोदेवानुप्रियाओ। अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालिभंजियागं। अनेक थांभाना सैकडा जेहनेविषे रह्याछे लीलायें रही पूतलीयो जिहां एहवे चित्रामसहितछे। जहा रायप्पसेणइज्जे विमानवन्नओ। जिम राजप्रश्नउपाङ्गनेविषे सूर्याभदेवना विमाननो वर्णनकह्यो तिम इहां पणि शिविकावर्णन कहवो। जाव मणि रयणघंटिया जालपरिक्खित्त। यावत् मणिरत्नघंटिका जालीयें परिक्षिप्त सहितछे। पुरिससहस्स वाहिणीय सीयउवट्ठवेह २ त्ता। एहवी सहस्रपुरुषे उपडे तेहवी शिविका पालखी रचीव्याबो लावीने। ममएयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। एह कार्यकरी मांहरीआज्ञा पाछी आपो। तएणं से

दर्दरमलयसुगन्धिगन्धिएहिं गायाइं सुकुडेतिक्विदृश्यते, तत्रच दर्दरमलयाभिधानपर्वतयोः सम्बन्धिन स्तदुद्भूतचन्दनादिद्रव्यजत्वेन ये सुगन्धयो गन्धि का गधावासा स्ते तथा, अन्येत्वाहु र्दर्दरश्चीवरावनद्ध कुण्डिकादिनाजनमुख तेन गालिता स्तत्र पक्वा वा, ये ॥ मलयत्ति ॥ मलयोद्भवत्वेन मलयस्य श्रीखण्डस्य सम्बन्धिन सुगन्धयो गन्धिका गन्धा स्ते तथा तै र्गात्राणि ॥ सुकुडेतित्ति ॥ उद्धूलयति ॥ अणेगखम्भसयसण्णिविट्ठंति ॥ अनेकेषु स्तम्भशतेषु सन्निविष्टा या सा तथा अनेकानिवा, स्तम्भशतानि सन्निविष्टानि यस्यांसा तथा ता ॥ लीलट्ठियसालिभंजियागंति ॥ लीलास्थिता शालिभञ्जिका. पुत्रिकाविशेषा यत्र सा तथा ता' वाचनान्तरे पुन रिद मेव दृश्यते–अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयतोरणवररइयलीलट्ठियसालिभंजियागंति ॥ तत्रचा भ्युद्गते उच्छ्रिते सुकृतवज्रवेदिकायाः सम्बन्धिनि तोरणवरे रचिता लीलास्थिता. शालभञ्जिका यस्यांसा तथा ता ॥ जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओत्ति ॥ एवमस्या अपि वाच्य इत्यर्थ सचाय–ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्त ॥ ईहामृगादिभि र्भक्तिभि श्चित्रविच्छित्तिभि श्चित्रा चित्रवती या सा तथा ता, तत्र ईहामृगा वृका ऋषभा वृषभा व्यालका श्वापदा भुजगाः; किन्नरा देवविशेषा रुरवो मृगविशेषाः सरभाः परासरा वनलता चम्पकलतादिका. पद्मलता मृणालिका' शेषपदानि प्रतीतान्येव ॥ खम्भुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिराम ॥ स्तम्भेपूद्गता निविष्टा या वज्रवेदिका तया परिगता परिकरिता अतएवाभिरामाच रम्या या सा तथा ता ॥ विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव ॥ विद्याधरयो र्यत् यमल समश्रेणीक युगल द्वय तेनेव यन्त्रेण सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपेण युक्ता या सा तथा ता धार्पत्वा चैवंविधसमास. ॥ अच्चीसहस्समालिणीय ॥ अर्चिं सहस्रमाला दीप्तिसहस्राणा मावल्यः सन्ति यस्या सा तथा स्वार्थिकप्रत्ययेच अर्चिं सहस्रमालिनीका ता ॥ रूवगसहस्सकलियभिसमाणा ॥ दीप्यमाना ॥ भिब्भिसमाणा ॥ अत्यर्थंदीप्यमाना ॥ चक्खुलोयणलेस्सं ॥ चक्षु कर्तृलोकनेऽवलोकने सति ॥ लिसतीव ॥ दर्शनीयत्वातिशयात् श्लिष्यतीव यस्या सा तथा ता ॥ सुहफाससस्सिरीयरूव ॥ सश्रीकरूपकां ॥ घंटावलिचलियमहुरम

॥ टीका ॥

गरतर ॥ घण्टावल्या चलिते चलने मधुरो मनोहरश्च स्वरो यस्याः सा तथा ताम् ॥ सुह कत दरिसणिज्ज निउणोवियमिसिमिसंतमणिरयणघ
टियाजालपरिक्खित्त ॥ निपुणेन शिल्पिना उपित परिकर्मित ॥ मिसिमिसंत ॥ चिकचिकायमान मणिरत्नानां सम्बन्धि यद्घण्टिकाजाल किङ्किणीवृन्द
तेन परिक्षिप्ता परिकरिता या सा तथा ताम् वाचनान्तरे पुन रय वर्णक साक्षा दृश्यत एवेति „ केसालंकारेणेति ॥ केशा एवालङ्कार केशाल
ङ्कार स्तेन यद्यपि तस्य तदानी केशा, कल्पिता इति केशालङ्कारो नसम्यक् तथापि कियतामपि सद्भावा सद्भाव इति अथवा, केशाना मलङ्कारः

॥ मूल ॥

माणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे के
सालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडि
पुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरूहइ, दुरूहइत्ता सीहासण

अनुवाद

यत, तदानीं ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति, तदा स जमालि क्षत्रियकुमार केशालङ्कारेण वस्त्रालङ्कारेण माल्यालङ्कारेणाभरणालङ्कारेण
चतुर्विधेनालङ्कारेणालङ्कारित सन् प्रतिपूर्णालङ्कार सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय शिबिका मनुप्रदक्षिणीकुर्वन् शिबिकामारोहति, आरुह्य

॥ भाषा ॥

कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । तिवारे ते कौटुंबिक पुरुष यावत् तेहवो शिबिका करी आज्ञा पाछी सूंपे । तएणं से जमाली खत्तियकुमारे । ति
वारे ते जमाली क्षत्रियकुमार । केसालंकारेणं वत्थालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं । केश अलङ्कारे वस्त्रने अलङ्कारे करीने माल्यने अलङ्कारे क
रीने आभरणने अलङ्कारे करीने । चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे । च्यारप्रकारना अलङ्कार तिणेकरी अलङ्कार शोभायमा
न प्रतिपूर्ण अलङ्कार करीने । सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता । सिंहासनथकी उठे सिंहासनथकी उठीने । सीयं अणुप्पदाहिणी करेमाणे । शिबिकाने प्रदक्षि
णा करे । सीयं दुरूहइ २ त्ता । शिबिकाने विषे चढे, शिबिकाने विषे बेसीने । सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसन्ने । सिंहासनप्रधानने विषे पूर्वसामु
हा थई बेठा । तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया जाव सरीरा । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनी माता स्नानकीधो यावत् अलङ्का

॥ टीका ॥ शृङ्गारस्य रसविशेषस्यागारमिव यश्चारुश्च वेषो पुष्पादि केशालङ्कार स्तेन ॥ वत्थालंकारेणंति ॥ वस्त्रलक्षणालङ्कारेण ॥ सिंगारागारचारुवेसत्ति ॥

॥ मूल ॥ तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ण्हाया जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ, दुरूहइत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणेणं पासेणं भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया जाव सरीरा रयहरणं पडिग्गहच गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरूहइ, दुरूहइत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने,

अनुवाद तदा तस्य जमालेः क्षत्रियकुमारस्य माता स्नाता यावच्छरीरा हंसलक्षणम् पटशाटकम् गृहीत्वा शिविकामनुप्रदक्षिणीकुर्वती शिविका दुरोहति, दुरूह्य जमालेः क्षत्रियकुमारस्य दक्षिणे पार्श्वे भद्रासनवरे सन्निषण्णा, तदा तस्य जमालेः क्षत्रियकुमारस्य अम्बा धात्री स्नाता यावच्छरीरा रजोहरणं प्रतिग्रहं च गृहीत्वा शिविकामनुप्रदक्षिणीकुर्वती शिविकादुरोहति, दुरूह्य जमालेः क्षत्रि सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुख सन्निषण्ण,

॥ भाषा ॥ तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनी माता स्नान कीधां यावत् अलंकृत शरीर थई। हंसलक्षण पटशाटक प्रते ग्रहीने। सीयअणुप्पदाहिणीकरेमाणी सींयदुरूहइ २ त्ता। शिबिकाने प्रदक्षिणा देतीथकी शिबिकाये चढे शिबिकाये चढीने। जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणेण पासेण भद्दासणवरंसि सन्निसण्णा। जमाली क्षत्रियकुमारने जीमणेपासें भद्रासन प्रधानने विषे बेठी। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाई ण्हाया जाव सरीरा। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारनी धाइमाता स्नान कीधां यावत् अलंकृत शरीर थई। रयहरणपडिग्गहच गहाय। रजोहरण वली पडघा ग्रहीने। सीय अणुप्पदाहिणी करेमाणी सीय दुरूहइ २ त्ता। शिबिकाप्रते प्रदक्षिणा करतीथकी शिबिकाये चढे शिबिकाये चढीने। जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामेपासे भद्दासणवरंसिसण्णिसण्णा। जमाली क्षत्रियकुमारने डावें पासे भद्रासण प्रधानने विषे बेठी। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारने

॥ टीका ॥

नेपथ्य यस्या सा तथा अथवा; शृङ्गारप्रधान आकार श्चारुश्च वेषो यस्याः सा तथा ॥ सगतेत्यादौ ॥ यावत्करणा देव दृश्य-सगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसलत्ति ॥ तत्रच सङ्गतेषु गतादिषु निपुणा युक्तेषू पचारेषु कुशलाच या सा तथा इहच विलासो नेत्रविकारो यदाह-हावोमुखविकार स्या द्भावश्चित्तसमुद्भव । विलासोनेत्रजोज्ञेयो विभ्रमोभ्रूसमुद्भवइति ॥ १ ॥ तथा सलापोमिथोभाषा उल्लापस्तु काकुवर्णन यदाह-अनुलापोमुहुर्भाषा प्रलापोनर्थकवच । काक्वावर्णनमुल्लाप' सलापोभाषणमिथइति „ रूवजोव्वणविलासकलियत्ति ॥ इह विलासशब्देन स्थानासनगमनादीना सुश्लिष्टो यो विशेषो सा वुच्यते यदाह-स्थानासनगमनाना हस्तभ्रूनेत्रकर्मणाचैव । उत्पद्यतेविशेषो य श्लिष्टोसौ विलासःस्यात् ॥ १ ॥ सुदरथणजहणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयत्ति सूचित „ तत्रच सुन्दरा ये स्तनादयो र्या स्तै रुपपेता या सा तथा लावण्यचेह स्पृहणीयता रूप माकृति यौवन तारुण्य गुणा मृदुस्वरत्वादय ॥ हिमरययकुमुयकुदेंदुप्पगासेति ॥ हिमञ्च रजतञ्च कुमुदञ्च कुन्दश्च इन्दुश्चेति द्वन्द्व स्तेषामिव प्रकाशो यस्य त त्तथा ॥ सकोरंटमल्लदामति ॥ सकोरंटकानि कोरंटकपुप्फगुच्छयुक्तानि माल्यदामानि पुष्पमाला

॥ मूल ॥

पिठउ एगावरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा सगय जाव रूवजोव्वणविसालकलिया सुंदरथणहिमरययकुमुद कुंदेंदुप्पगासं सकोरंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं उवधरेमाणी२ चिठइ, तएण तस्स जमालिस्स

अनुवाद

यकुमारस्य वामे पार्श्वे भद्रासनवरे सन्निषणा, तत स्तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य पृष्ठत एका वरतरुणी शृङ्गारागारचारुवेषा सङ्गत (प्रभृति) यावद्रूपयौवनविशालकलिता सुन्दरस्तनहिमरजतकुमुदकुन्देन्दुप्रकाश सकोरंटमाल्यदाम धवलातपत्र गृहीत्वा सलील मुपधार्यमाणा तिष्ठति॰

॥ भाषा ॥

पूठेयो । एगावरतरुणीसिंगारागारचारुवेसा । एक प्रधान तरुणी स्त्री शृङ्गाररस विशेषना घरसरीखो भला भेखनी धरणहारी। सगय जाव रूवजोव्वणविसालकलिया सुंदरथणहिमरययकुमुदकुंदेंदुप्पगासं । संगतने डाहो यावत् रूप यौवन विशालनेत्रनो विकार तिणे सहितछे सुन्दर स्तन तिणे करी युक्तछे तथा सुवर्ण तथा रूप कुमुद चन्द्रविकासी कमल मुचकुन्दफूल इन्दु चन्द्रमा तेहसमान प्रकाशछे जेहनो। सकोरंटमल्लदाम धवल आयवत्त

॥ टीका ॥ नानामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदण्डाउत्ति ॥ नानामणिकनकरत्नानां विमलस्य महार्हस्य महार्घस्य तपनी यस्य च सत्का उज्ज्वलौ विचित्रौ दण्डौ ययो स्ते तथा अथात्र कनकतपनीययो को विशेष ? उच्यते कनक पीत तपनीय रक्तमिति ॥ चिल्लियाउत्ति ॥ दीप्यमाने लीनेइत्येके ॥ सखककुदगरयअमयमहियफेणपुजसणिगासाउत्ति ॥ शङ्खाङ्ककुन्ददकरजसा अमृतस्य मथितस्य सतो य फेनपुञ्ज स्त स्यच सन्निकाशे सदृशे ये ते तथा इहचाङ्कोरत्नविशेष इति ॥ चामराउत्ति ॥ यद्यपि चामरशब्दो नपुसकलिङ्गो रूढ स्तथापीह स्त्रीलिङ्गतया नि

॥ मूल ॥ उभउ पासिं दुवे वरतरुणीउ सिंगारागारचारु जाव कलियाउ णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाउ चिल्लियाउ संखंककुंदगरयअमियमहियफेणपुजसणिगासाउ धवलाउ चामराउ गहाय

॥ अनुवाद ॥ तदा तस्य जमाले. क्षत्रियकुमारस्योभयो. पार्श्वयो द्वे वरतरुण्यौ शृङ्गारागारचारु (प्रभृति) यावत्कलिता नानामणिकनकरजतविमले महार्हे तपनीयोज्वलविचित्रदण्डे दीप्यमाने सङ्खाङ्ककुन्दोदकरजोमृतमथितफेनपुञ्जसन्निकाशे धवले चामरे गृहीत्वा सलील वीजयन्त्यौ तिष्ठत , तदानी त

॥ भाषा ॥ गहाय । कोरण्टद्रुमना फूलनी मालासहित एहवा धवल आतपत्र तेहप्रते गृह्णाने । सलील उवधरेमाणी २ चिट्ठइ । लीलासहित उपसमीपे धरतीथकी रहे । तएण तस्सजमालिस्स उभओपासि दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारु जाव कलियाओ । तिवारे तेह जमालीने बेहुपासे दो प्रधान स्त्री शृङ्गार घर अने प्रधान वेषनोधरणहारी यावत् कलित सहितछे । णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदण्डाओ चिल्लियाओ । नानाप्रकारनामणि कनकरत्नमा निर्मल महार्घ्य अथवा महासुहगा तपनीयना उज्वल कान्तिवन्त विचित्र दण्डछे जेहने तेहवे उज्वल ते दीपरहित इहा कनक ते पीलो सुवर्ण तपनीय रातो सुवर्ण देदीप्यमान । सखककुदगरयअमियमहियफेणपुजसणिगासाओ धवलाओ चामराओ गहाय । शङ्ख अङ्क रत्न कर्दटगरज वारी अमृत मथ्या जेह फेनना पुञ्ज तेहनो सन्निगासा कहिये सरीखा जेते तथा धवल तेहवा चामरप्रते ग्रहोने । सलीलवीयमाणीओ २ चि ट्ठति । लीलायेसहित वीजतीथकी २ रहे । तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरच्छिमेण । तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारने ईशानकू

॥ टीका ॥

दिए स्तथैव क्वचिद्दृत्यादिति ॥ मत्तगयमहामुहाकिइसमाणंति ॥ मत्तगजस्य यन्महामुखं तस्य याकृति राकार स्तया समान य त्त तथा ॥ एगा

॥ मूल ॥

सलीलं वीयमाणीउ वी २ चिठंति, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्ण मत्तगयमहामुहाकिइसमाणं भिंगारं गहाय चिठइ, तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरच्छिमेण एगा वरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया चित्तकणगदण्डं तालपटं गहाय चिठइ, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे

॥ अनुवाद ॥

स्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य उत्तरपौरस्त्येन एका वरतरुणी शृङ्गारागारचारुवेषा यावत्कलिता श्वेत रजतमय विमलशलिलपूर्ण मत्तगजमहामुखाकृतिसमान भृङ्गार गृहीत्वा तिष्ठति' तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य दक्षिणपौरस्त्येन एका वरतरुणी शृङ्गारागार (प्रभृति) यावत्कलिता चित्रकनकदण्ड तालपट गृहीत्वा तिष्ठति, तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता कौटुम्बिकपुरुषान् आह्वापयति आह्वापयित्वा एवमवादीत्--क्षिप्र

॥ भाषा ॥

णे। एगावरतरुणी सिंगारागार जाव कलिया। एक प्रधान स्त्री शृङ्गारनो घर यावत् सहितछै। सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण। तेह ऊजलो रजत रूपामय निर्मलपाणीसू भर्यो। मत्तगयमहामुहाकिइसमाण भिंगार गहाय चिट्ठइ। माता गजनो जे मुख तेहनी आकृति आकार तिणसमान जेहे ५ सा भृङ्गारप्रतें ग्रहीने बेसे। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरच्छिमेण एगावरतरुणी। अग्निकूण एक प्रधान स्त्री। सिंगारागार जाव कलिया। शृङ्गारघर यावत् रूप लावण्यसहित। चित्तकणगदण्ड तालपट गहाय चिट्ठइ। विचित्र सुवर्णदण्डयुक्त एहवो तालवृन्त कहतां वीजणाप्रतें ग्रहीने बेसे। तएण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्सपिया। तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारनो पिता। कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी। आज्ञाकारी सेवकपुरुष तेडावें तेडावीने इमकहे। खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया। उतावलाथाओ अहो देवानुप्रियाओ। सरिसय सरित्तय सरिव्वय। सरीखा सरीषा चामडीयें सरीखा वयें। सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेय। सरीखा लावण्य रूप यौवन गुण तिणेंकरी उपपेतसहित। एगाभरणवसणगहि

॥ टीका ॥ ञरणवसणगहियणिज्जोयति ॥ एक एकादृश आजरणवसनलक्षणो गृहीतो निर्योग परिकरो यै स्ते तथा ॥ तप्पढमयाएति ॥ तेषा विवक्षितानां

॥ मूल ॥ सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एववयासी—खिप्पामेव ज्ञो देवाणुप्पिया! सरिसय सरित्तय सरिव्वयं सरिसलावस्स रूवजोव्वणगुणोववेयं एगाज्जरणवसणगहियनिज्जोयं कोडुंवियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह, तएण ते कोडुंविय पुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं जाव सद्दावेंति, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा जमालिस्स खत्तिय कुमारस्स पिउणा कोडुंवियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हठतुठा राहाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगलपाय

अनुवाद सेव ज्ञोदेवानुप्रिया! सदृशक सदृक्त्वच सदृग्वयस सदृग्लावण्यरूपयौवनगुणोपपेत एकाज्जरणवसनगृहीतनिर्योग कौटुम्बिकवरतरुणसहस्र ञाह्वायत, तदा ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव सदृशक यावत् ञाह्वयन्ते, तदा ते कौटुम्बिकपुरुषा जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता कौटुम्बिकपुरुषै ञाह्वायिता सन्तो हृष्टा स्तुष्टा स्नाता कृतवलिकर्माण कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता एकाज्जरणवसनगृहीतनिर्यो

॥ भाषा ॥ यनिज्जोय। एकसरीखा आभरण वस्त्रलक्षण ग्रह्याछे निर्योग परिकर जिणे ते। कोडुंविय वरतरुणसहस्स सद्दावेह। आज्ञाकारी सेवक प्रधान युवान सहस्रपुरुष प्रते तेडावे। तएण ते कोडुंवियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता। तिवारे ते कौटुंविकपुरुष यावत् वचन सांभलीने। खिप्पामेव सरिसय जाव सद्दावेंति। उतावलाहोज सरीखा सरीखे वर्णे यावत् सहस्र पुरुष प्रते तेडे। तएण ते कोडुंविय पुरिसा। तिवारे ते आज्ञाकारी सेवकपुरुष। जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा। जमाली क्षत्रियकुमारने पितायें। कोडुंवियपुरिसेहिं सद्दावियासमाणा हठतुठा राहाया कयवलिकम्मा। सेवक पुरुषेकरी तेडा व्या थका हर्ष संतोष पाम्या स्नानकीधो कीधा घरना देवने वलिकर्म। कयकोउयमंगलपायच्छित्ता। कीधा कौतुक मङ्गलरूप प्रायश्चित्त जेणे। एगाभर णवसणगहियणिज्जोया। एक सरीखा आभरण वस्त्रलक्षण ग्रह्याछे परिकर जेणे। जेणेव जमालिस्सखत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा जमाली क्षत्रियकुमारना पिता तिहा आवे तिहा आवीने। करयल जाव वद्धावेइ २ त्ता एववयासी। हाथजोडी यावत् वधावे वधावीने इमक

च्छित्ता एगाभरणवसणगहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावेइत्ता एवंवयासी—संदिसंतुणं देवाणुप्पिया ! ज अम्हेहिं करणिज्ज तएण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कोडुंबिय वरतरुणसहस्सपि एववयासी—तुज्भेणं देवाणुप्पिया! ण्हाया कय जाव गहियणिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेंति, तएणं तस्स जमालिस्सखत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय

गा यत्रैव जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल (प्रभृति) याव द्वर्द्धापयन्ति, वर्द्धापयित्वा एव मवादिषु—स न्दिशथ देवानुप्रिया । यद स्माभि करणीय, तदा स जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता त कौटुम्बिकवरतरुणसहस्र मप्येवमवादीत्-यूय देवा नुप्रिया । स्नाता कृतवलिकर्माणो यावद्गृहीतनिर्योगा जमाले क्षत्रियकुमारस्य शिविका परिवहत, तदा ते कौटुम्बिकपुरुषा जमाले क्षत्रियकु मारस्य शिविका परिवहन्ति, तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य पुरुषसहस्रवाह्या शिविका दुरूढस्य सत स्तत्प्रथमतया इमान्यष्टमङ्गलकानि

छे। सदिसतुण देवाणुप्पिया ज अम्हेहिं करणिज्ज । आदेश द्यो हे देवानुप्रिया । जे कार्य अम्हने करवा योग्य छे। तएण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमारना पिता। त कोडुंबिय वरतरुण सहस्सपि एववयासी। ते आज्ञाकारी प्रधान युवानपुरुष सहस्रने प्रति इम कहे। तुज्भेण देवाणुप्पिया ण्हाया कय जाव गहिय णिज्जोया। तुम्हे ण वाक्यालंकारे, अहो देवानुप्रियाओ। स्नानकरी कीधा कौतुक मङ्गलप्रायश्चित्त यावत् गृह्यो छे परिकर जेणे। जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहेह। जमाली क्षत्रियकुमारनी शिबिकाप्रते वहो उपाडो। तएण ते कोडुंबिय पुरिसा। तिवारे ते आज्ञाकारी सेवकपुरुष। जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहेइ। जमालीक्षत्रियकुमारनी शिबिकाप्रते वहे उपाडे। तएणतस्सजमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीय। तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारने पुरुष सहस्र वाहिनी शिबिका प्रते। दुरूढस्स

॥ टीका ॥ अष्टावष्टाविति वीप्सायां द्विर्वचन मङ्गलकानि माङ्गल्यवस्तूनि, अन्येत्वाहु रष्टमङ्गलानि अष्टम मध्ये प्रथमता तत्प्रथमता तया ॥ अट्ठमगलगत्ति ॥ अष्टावष्टाविति वीप्सायां द्विर्वचन मङ्गलकानि माङ्गल्यवस्तूनि, अन्येत्वाहु रष्टमङ्गलानि अष्टम मध्ये प्रथमता तत्प्रथमता तया ॥ तत्र वर्द्धमानक शराव पुरुषा रूढ पुरुष इत्यन्ये, स्वस्तिकपञ्चक मित्यन्ये, प्रासादविशेष इत्यन्ये, जहा उववाइयएहि ॥ अनेनच यदुपात्त तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति तच्चेद— सचामरादरसरइयआलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजय दिव्वायछत्तपडागा ॥ दिव्येव दिव्या प्रधाना छत्रसहिता पताका छत्रपताका तथा ॥ सचामरादरसरइयआलोयदरिसणिज्जा आलोक दृष्टिगोचर याव दृश्यते ऽत्युच्चत्वेन यासा लोक तीयजसियहि ॥ सच्चामराभ्या यासा सचामरा आदर्शो रचितो यस्या सा दर्शरचिता आलोक दृष्टिगोचर यावत् दृश्यते ऽत्युच्चत्वेन यासा लोक दर्शनीया तत कर्म्मधारय ॥ सचामरादसणरइयआलोयदरिसणिज्जत्ति ॥ पाठान्तरेतु सचामरेति भिन्नपद तथा दर्शने जमाले दृष्टिपथे रचिता विहिता दर्शनरचिता दर्शनेवा; सति रतिदा सुखप्रदा दर्शनरतिदा साचासावालोकदर्शनीयाचेति कर्म्मधारय ॥ कासावित्याह ॥ वातोद्धूता विजयसूचिका वैजयन्ती पार्श्वतो लघुपताकिकाद्वययुक्त पताकाविशेषो वातोद्धूतविजयवैजयन्ती उच्छ्रिता उच्चा कथमिव ॥ गगणतलमणुलिहन्ती

॥ मूल ॥ दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठमगला पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया त०—सोत्थियसिरिवत्थ जाव

अनुवाद पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितानि तद्यथा—सौवस्तिक श्रीवत्स (प्रभृति) याव द्दर्पणः, तदनन्तरञ्च पूर्णकलशभृङ्गार (प्रभृति) यथौपपातिके यावद्गगन

॥ भाषा ॥ समाणस्स तप्पढमयाए । चढता थकाने ते विर्वाचतमाहि प्रथमपणे । इमे अट्ठमगलगापुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया । एह वक्ष्यमाण आठ आठ मङ्ग ल यथानुपूर्वीयें यथानुक्रमे मुख आगलि चाल्या । तमोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पण । ते कहेछे—साथीयो १ श्रीवत्स २ नन्दावर्त्त ३ वर्द्धमान ४ भद्रास ग ५ कलश ६ मत्स्य ७ दर्पण ८ ए आठ मङ्गलीक । तदाणतरचण पुण्ण कलसभिगार जहा उववाइए । तेहने अनन्तरेणवाक्यालंकारे, पूर्ण कलश भृङ्गा र इत्यादिक, उवाई उपाङ्गनेविषे कह्यु तिम इहा पणि कहवो । जाव गयणतलमणुलिहती । यावत् विजय वैजयन्तीपताका गगनतल आकाशतल प्रते पहुचे अति उच्चपणे इसी । पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया । आगलिथकी यथानुक्रमे यथानुपूर्वीयें चालताहुया । तदाणतरचण बहवेउग्गाभोगा जहा उ

॥ टीका ॥

ति ॥ गगनतल माकाशतल मनुलिखन्तीवानुलिखन्ती अत्युच्चयेति ॥ जहा उववाइए त्ति ॥ अनेन यत्सूचित तदिद-तयाणतरं च णं वेरुलियभिसंत विमलदंडं, भिसंतित्ति [दीप्यमान] पलंबकोरंटमल्लदामोपसोहियं चंदमंडलनिभं समूसियं विमलमायवत्तं पवरं सीहासणवरमणिरयणपायपीढं सपाउयाजुगसमाउत्तं [स्वकीयपादुकायुगसमायुक्त] बहुकिंकरकम्मकरपुरिसपायत्तपरिक्खित्तं] बहवो ये किङ्कराः प्रतिकर्म्म प्रश्नं पृच्छाकारिणः कम्मकराश्च तदन्यथाविधा स्तेचते पुरुषाश्चेति समास , पादातञ्च पत्तिसमूहो बहुकिङ्करादिभि परिक्षिप्त य स तथा ॥ पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवयग्गाहा [कुतुप स्नेहादिभाजन विशेष] हडप्पग्गाहा [द्रम्मादिभाजन, ताम्बूलार्थंपूगफलादिभाजनवा] पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो [शिखाधारिणः] जडिणो [जटाधरा] पिच्छिणो [मयूरादिपिच्छधारिण] हासकरा [येहसंति] डमरकरा [विड्वरकारिणः] दवकरा [परिहासकारिणः] चाटुकरा [प्रियवादिन] कंदप्पिया [कामप्रधानकेलिकारिणः] कुक्कुइया [भाण्डा भाण्डप्रायावा] वायंताय गायंताय नच्चंताय हसंताय भासंताय [शिक्षयंत] सावेंताय [इदंचेदंच भविष्यती त्येवं भूतवचांसि श्रावयन्त] रक्खंताय [अन्याय रक्षन्त] आलोयंच करेमाणे त्यादितु लिखितमेवास्ति इति, एतच्च वाचनान्तरे प्राय साक्षा दृश्यत एव, तथेदमपरं तत्रैवाधिक- तयाणंतरं च णं जच्चा

॥ मूल ॥

दप्पणं, तदाणंतरं च णं पुन्नकलसभिंगारं जहा उववाइए जाव गयणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, एवं जहा उववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयंचकरेमाणा जय २ सद्दंच पउंजमाणा पुरओ

अनुवाद

तलमनुलिखन्ती पुरतो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता एव यथौपपातिके तथैव भणितव्यम्, याव दालोकनञ्च कुर्वन्तो जयजयशब्दंवा प्रयुञ्जन्त पुर

॥ भाषा ॥

ववाइए । तिहने अनन्तरे घणा दण्ड आदिदेवै धारवकपणे थाप्या तेहना वश भोग तेहीज आदिदेवै गुरुपणिकरी थाप्या तेहना वश इत्यादिक जिम उववाइउपांगनेविषै कह्यु । जाव महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता । यावत् मोटापुरुषनी वागुरा सर्वथापरिवार साधर्म्यथकी तेणें परिवरया । जमालिक्ष ख

ण वरमल्लिहायणाणं चंचुच्चियललियपुलियविक्कमविलासियगईणं हरिमेलामउलमल्लियच्छाणं थासगअमिलाणचमरगंडपरिमंडियकडीणं अट्ठसय वर तुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं ईसी दंताणं ईसिमत्ताणं ईसिउच्छंगउण्णयविसालधवलदंताणं कंचणकोसीपविट्ठदंतोवसोहियाणं अट्ठसयं गयकलहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सखिंखिणीहेमजालपेरंतपरिक्खित्ताणं सनंदिघोसाणं हेमवयचित्ततिणिसकणगनिज्जुत्तदारुयाणं सुसंविद्धचक्कमंडलधुराणं कालायससुकयनेमिजंतकम्माणं आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियाणं सकंकडवडेंसगाणं सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं तयाणंतरं च णं असिसत्तिकोंततोमरसूललउलभिंडिमालधणुपाणिसज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं बहवे राईसरतलवरकोडुंबियमाडंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइ

यारहगया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियत्ति ॥ तत्र च ॥ वरमल्लिहायणाणंति ॥ वरं माल्यधानं पुष्पबन्धनस्थानं शिरःकेशकलापो येषान्ते वरमाल्यधाना स्तेषामिह चकारः प्राकृतप्रभवो वालिहाणामित्यादाविवेति, अथवा वरमल्लिकाव शुक्लत्वेन प्रवरविचकिलकुसुमवद्घ्राणं नासिका येषान्ते तथा तेषां, क्वचित्तरमल्लिहायणाणंति दृश्यते तत्र च तरो वेगो बलं वा, तथा मलमल्लधारणे ततश्च तरो मल्ली तरो धारको हायनः संवत्सरो वर्त्तते येषां ते तरोमल्लिहायना यौवनवन्त इत्यर्थो ऽत स्तेषां वरतुरङ्गाणामिति योगः ॥ वरमल्लिभासणाणंति क्वचि दृश्यते, तत्र तु प्रधानमाल्यवता मत एव दीप्तिमतां चेत्यर्थः ॥ चंचुच्चियललियपुलियविक्कमविलासियगईणंति ॥ चंचुच्चियत्ति ॥ प्राकृतत्वेन चञ्चुरितं कुटिलगमनं अथवा चञ्चुः शुकचञ्चु स्तद्वद्वक्रतया उच्चितं उच्चताकरणं पादस्य उत्पाटनं वा, पादस्येवेति चञ्चूचितं तच्च ललितञ्च क्रीडितं पुलितञ्च गतिविशेषः प्रसिद्ध एव विक्रमश्च विशिष्टः क्रमणं क्षेत्रलङ्घनमिति द्वन्द्व स्ततः एतत्प्रधाना विलासिता विशेषेणोल्लासिता गति र्यैस्ते तथा तेषां, क्वचिदिदं विशेषणमेवं दृश्यते–चचु

॥ ८३५ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ टीका ॥

धुरो येषां ते तथा तेषां ॥ सुसिलिठचक्कमंडलधुराणंति ॥ क्वचि दृश्यते तत्र सुष्टुश्लिष्टा श्चिव्रवन्तोर्कवन्मण्डलाश्च वृत्ता धुरो येषांते तथा तेषा ॥ कालायससुकयनेमिजंतकम्माणंति ॥ कालायसेन लोहविशेषेण सुष्टुकृत नेमे श्चक्रगण्डधाराया यन्त्रकर्मबन्धनक्रिया येषां ते तथा तेषां ॥ आइन्नवरतुरगसुसंपउत्ताणंति ॥ आकीर्णैर्जात्यै र्वरतुरगै सुष्टुसम्प्रयुक्ता युक्ता ये ते तथा तेषां ॥ कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणंति ॥ कुशलनरैर्विज्ञपुरुषै श्छेकसारथिभिश्च दक्षप्राजितृभि सुष्टुसम्प्रगृहीता ये ते तथा तेषां ॥ सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियाणंति ॥ सरशतप्रधाना ये द्वात्रिंशत्तोणा प्रस्त्रका स्तै परिमण्डिता ये ते तथा तेषां ॥ सकंकडवडेंसगाणंति ॥ सह कङ्कटै कवचै रवतंसकैश्च शेखरकै शिरस्त्राणैर्वा ये ते तथा तेषां ॥ सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणंति ॥ सह चापै शरैश्च यानि प्रहरणानि कुन्तादीनि आवरणानि च स्फुरकादीनि तेषां भरता युद्धसज्जाश्च युद्धप्रगुणा ये ते तथा तेषां शेषंतु प्रतीतार्थ मेवेति, अथाधिकृतवाचनानुश्रियते॥ तयाणंतरंचणं बहवे उग्गा इत्यादि ॥ तत्र उग्रा आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्ता तद्वंश्याश्च भोगा स्तेनैव गुरुत्वेन व्यवहृता स्तद्वंश्याश्च ॥ जहा उववाइएत्ति करणादिद दृश्य–राइणा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा इत्यादि ॥ तत्र राजन्या आदिदेवेनैव वयस्यतया व्यवहृता स्तद्वंश्याश्च, क्षत्रियाश्च प्रतीता, इक्ष्वाकवो नाभेयवंशजा, ज्ञाता इक्ष्वाकुवंशविशेषभूता ॥ कोरव्वत्ति ॥ कुरव कुरुवंशजा, अथ कियद्दूरमिदं सूत्र मित्रा ध्येय मित्याह ॥ जावमहापुरिसवग्गुरापरिक्खित्तत्ति॥ वागुरा मृगबन्धनं वागुरेव वागुरा सर्वत परिवारणसाधर्म्यात् पुरुषाश्च ते वागुरा च पुरुषवागुरा महतीचासौ पुरुषवागुराच महापुरुषवागुरा तया परिक्षिप्ता ये

॥ मूल ॥

अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तयाणंतरंचणं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरापरि

अनुवाद

तो यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता, तदनन्तरञ्च बहव उग्रा भोगा यथौपपातिके यावन्महापुरुषवागुरापरिक्षिप्ता जमाले क्षत्रियकुमारस्य पुरतो मार्गत पार्श्वतश्च यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता । तदा जमाले क्षत्रियकुमारस्य पिता स्नात कृतबलिकर्मा यावद्विभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरंट

॥ भाषा ॥

त्तियकुमारस्स पुरओ मग्गओय पासओय अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । जमाली क्षत्रियकुमारने आगे पूठे जीमणे डावे पासे यथानुपूर्वीये यथानुक्रमे चाल्या ।

॥ टीका ॥

ते तथा ॥ महयासत्ति ॥ महाश्वा किमूता इत्याह ॥ आसवरा ॥ अश्वाना मध्ये वरा ॥ "आसवारत्ति" पाठान्तर ॥ तत्र अश्ववारा अश्वारूढपुरुषा ॥ उभओपासिति ॥ उभयपार्श्वयो ॥ नागत्ति ॥ नागा हस्तिन ॥ नागवरा ॥ हस्तिना मधाना ॥ रहसंगिलित्ति ॥ रथसमुदाय ॥ अश्वमय

॥ मूल ॥

खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरत्रो मग्गत्रो पासत्रो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया , तएणं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाया कय जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्व० हयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ २ अणुगच्छइ, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरत्रो मह आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागवरा पिट्ठओ रहा रहसं

अनुवाद

माल्यदाम्ना छत्रेण धार्य्यमाणेन श्वेतवरचामरैः उद्धूयमानैः २ हयगजरथप्रवरयोधकलितया चातुरङ्गिण्या सेनया सह सम्परिवृतो महता भटचटकर (प्रभृति) यावत् परिक्षिप्तो जमालेः क्षत्रियकुमारस्य पृष्ठतो २ नुगच्छति, तदा तस्य जमालेः क्षत्रियकुमारस्य पुरतो महाश्वा अश्ववरा उभयो

॥ भाषा ॥

तएणं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाया कय जाव विभूसिए । तियारे जमाली क्षत्रियकुमारना पिता तेणे स्नानकीधो , यावत् शरीरे विभूषित थयो । हत्थिखंधवरगए । हाथीना स्कन्ध प्रधाननेविषे बेठो । सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवर चामराहिं । कोरण्टवृक्षना फूलमालासहित छत्र धरीजता थका श्वेत प्रधान चामर तिणेकरी । उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्व । वींजातायका वींजातायका । हय गय रह पवर जोह कलियाए । घोडा हस्ती रथ प्रधान योध सुभट तिणेकरी सहित एहवा । चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे । चतुरङ्गिणीसेना सघाते परिवर्यो । महया भडचडगर जाव परिक्खित्ते । मोटा भट सुभट चेटकथका तिणिसघाते परिवर्यो । जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ अणुगच्छइ । जमाली क्षत्रियकुमारना पूठायकी चाले । तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ । तियारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारने आगे । महआसा आसवरा उभ

॥ टीका ॥ प्रगृहीत तालवृन्त यं प्रति स तथा ॥ ऊसवियसेयछत्ते ॥ भिगारेति ॥ अभ्युद्गतो ऽभिमुख मुत्पाटितो भृङ्गारो यस्य स तथा ॥ पग्गहियतालियटे ॥ प्रगृहीत तालवृन्त यं प्रति स तथा ॥ ऊसवियसेयछत्ते ॥ प्रवीजिते श्वेतचामरे वालव्यजनि उच्छ्रितश्वेतच्छत्र ॥ पवीइयसेयचामरवालवीयणीए ॥ प्रवीजिता श्वेतचामरवालाना सत्का व्यजनिका य अथवा, प्रवीजिते श्वेतचामरे वालव्यजनि

॥ मूल ॥ गह्री, तएणं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे परिग्गहियतालियंटे ऊसवियसेयछत्ते पवीइयसेय चामरवालवीयणीए सब्बिड्ढीए जाव णाइयरवेण, तयाणंतरचणं वहवे लट्ठिग्गहा कुंतग्गहा जाव पुत्थि यग्गहा जाव वीणग्गहा, तयाणंतरचणं अट्ठसयंगयाणं अट्ठसयं तुरियाणं अट्ठसयंरहाणं, तदाणंतरंचणं

अनुवाद पार्श्वयो नागा नागवरा पृष्ठतो रथसङ्केल्ली, तदानीं सजमालि क्षत्रियकुमारो भ्युद्गतभृङ्गार परिगृहीततालवृन्त उच्छ्रितश्वेतछत्र. प्रवीजितश्वे तचामरवालव्यजनिक सर्वर्द्ध्या याव न्नादितरवेण, तदनन्तरञ्च वहवो यष्टिग्रहा कुन्तग्रहा यावत् पुस्तकग्रहा यावद्वीणाग्रहा, स्तदनन्तरञ्च अष्टशत गजाना मष्टशत तुरगाणा मष्टशतञ्च रथाना, तदनन्तरञ्च लकुटासिकुन्तहस्ता वहव पादातिका पुरत सम्प्रस्थिता, तदनन्तर

॥ भाषा ॥ ओपासि णागा णागवरा पिट्ठओ रहा रहसंगेल्लो । मोटाघोडा अश्वारुढ पुरुष वेहुपासे हाथी हाथी आरूढ पुरुष पूठे रथ रथसमुदाय । तएण से जमा ली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिंगारे परिग्गहियतालियंटे । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार साहमो उपाड्योछे भृङ्गार जेहने प्रकर्षे ग्रह्योछे तालिवृन्त वि ञ्जणो जेहप्रते । ऊसवियसेतछत्ते । ऊचोकीधोछे श्वेत छत्र जेहप्रते । पवीइयसेयचामर वालवीयणीए सव्विड्ढीए । प्रकर्षे वीज्या श्वेतचामर वालवीञ्जणा जेहप्रते सर्वऋद्धिकरी सहित । जाव णाइतरवेण तयाणंतरचणं । यावत् वाजित्र तेहने रवेकरी तेहने अनन्तरे । वहवे लट्ठिग्गहा कुंतग्गहा जाव पुत्थियग्गहा जाव वीणग्गहा । घणा लाठीना ग्रहणवाला भालाना ग्राहक यावत् पुस्तकना ग्राहक यावत् वीणाना ग्राहक । तयाणंतरचणं अट्ठसयग याणं अट्ठसयतुरियाणं अट्ठसयंरहाणं तदाणंतरचणं लउड । तेहने अनन्तरे एकसोआठ गज एकसोआठ घोडा एकसोआठ रथ तेहने अनन्तरे लकुट हस्ते १०८ । असि कौतहत्थाण बहूणं पायत्ताणीए पुरओसपट्ठिया तयाणंतरचणं । १०८ खड्ग हस्ते कोंत भालाधर १०८ तेह घणा पालामनुष्य आगलि चा

॥ टीका ॥ काच य स तथा ॥ जहाउववाइयत्ति करणा दिद दृश्य-कामच्छिया भोगच्छिया ॥ कामौ शुभशब्दरूपे भोगा शुभगन्धादय ॥ लाभच्छिया ॥ ध नादिलाभार्थिन ॥ इड्ढिसियत्ति । ऋद्धिगम्या ॥ किव्विसियत्ति । किल्विषिका भाण्डादय इत्यर्थः क्वचि त्किव्विसियस्थाने किट्टिसियत्ति पठ्यते ॥

॥ मूल ॥ लउडग्गाहसिकौतहल्याणं बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपठिया, तयाणंतरंचणं बहवे राईसरतलवर जाव सत्थ वाहप्पभियओ पुरओ संपठिया, खत्तियकुंडग्गामे णयरे मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे णयरे जेणेव बहुसालए चेइए जेणेव समणेभगवमहावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकु मारस्स खत्तियकुंडग्गामंणयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छमाणस्स सिंघाडगतिगचउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थ

अनुवाद: च बहवो राजेश्वरतलवर (प्रभृति) याव त्सार्थवाहप्रभृतय पुरत सम्प्रस्थिता क्षत्रियकुण्डग्रामस्य नगरस्य मध्येन मध्येन (भूत्वा) यत्रैव ब्राह्मणकुण्डग्राम नगर यत्रैव बहुशालकचैत्यो यत्रैव श्रमणोभगवान्महावीर स्तत्रैव प्रधारितवान् (सङ्कल्पितवान्) गमनाय (गन्तुम्) तदा तस्य जमाले क्षत्रियकुमारस्य क्षत्रियकुण्डग्रामा न्नगरा न्मध्येन मध्येन (कृत्वा) निर्गच्छत शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वर (प्रभृति) यावत्पथेषु

॥ भाषा ॥ ऱ्या तेहने अनन्तरे । बहवेराईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ संपठिया । घणा राजाईश्वर तलवर यावत् सार्थवाह प्रमुख आगलिचाल्या । खत्तियकुंडग्गामेणयरे मज्झमज्झेण । क्षत्रियकुण्डग्राम नगरने मध्यभागे । जेणेव माहणकुंडग्गामेणयरे जेणेव बहुसालए चेइए । जिहां ब्राह्मण कुण्ड ग्राम नगर जिहां बहुशालनाम चैत्यछै । जेणेवसमणे भगव महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । जिहां श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामीछै तिहां जा इवाने उद्यमवन्त थया सङ्कल्पकीधो जाइवानेकाजे । तएणं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स । तिवारे तेह जमाली क्षत्रियकुमारने । खत्तियकुंडग्गामण यर मज्झमज्झेण णिग्गच्छमाणस्स । क्षत्रियकुण्डग्राम नगरने मध्ये मध्यभागे निकलता थकाने । सिंघाडग तिग चउक्क जाव पहेसु बहवे । सिंघाडाने आ कारे त्रिक चउक यावत् मार्गनेविषे घणा । अत्थच्छिया जहा उववाइए । अर्थना धननाकाङ्क्षी इत्यादिक जिम उवाईउपाङ्गनेविषे कह्यु तिम इहां पणि

कारवाधितावा ॥ सखिया ॥ करवाहिन स्त एव कारवाहिका कर राजदेयद्रव्यं वहन्ती त्येव शीला॰ ॥ काकोंक्रिया ॥ कापालिका॰ ॥ कारवाह्रिया ॥ नगलिया ॥ गलावलम्बितसुवर्णादिमय चन्दनगञ्जशङ्खहस्ता माङ्गल्यकारिण. शङ्खवादकावा ॥ चक्किया ॥ चाक्रिका श्चक्रप्रहरणा॰ कुम्भकारादयो वा ॥ वद्धमाणा ॥ स्कन्धारोपितपुरु लाङ्गलप्रतिरूतिधारिणो भद्दविशेषा कषका वा ॥ मुहमगलिया ॥ मुखे मङ्गल येषा मस्ति ते मुखमङ्गलिका श्चाटुकारिण ॥ पा ॥ पूसमाणया ॥ मागधा ॥ इज्जिसिया पिण्डिसिया घटियद्दि ॥ क्वचिद्दृश्यते ॥ तत्र च इज्या पूजा मिच्छ त्येपयन्ति वा ये ते इज्येषा स्त एव स्वार्थि के कप्रत्ययविधानादिज्यैषिका एवपिण्डैषिका अपि नवर पिण्डो भोजन घटिका स्तु ये घटया चरति ता वा वादयती ति ॥ ताहिति ॥ ताभि र्वि वक्षिताभि रित्यर्थ विवक्षितत्वमेवाह–इट्ठाहि ॥ इष्यतेस्म तीष्टा स्ताभि प्रयोजनवशा दिष्टमपि किञ्चित्स्वरूपत कान्त स्यादका त्तच्चे त्यतआह। कताहि ॥ कमनीयशब्दाभिरित्यर्थ ॥ पियाहि ॥ प्रियार्थोभि ॥ मणुन्नाहि ॥ मनसा ज्ञाय ते सुन्दरतया या स्ता मनोज्ञा भावत सुन्दरा इत्यर्थ स्ताभि. ॥

मणामाहि ॥ मनसा अम्यते गम्यते पुन पुन र्या. सुन्दरत्वातिशया न्मनोमा स्ताभि ॥ उरालाहि ॥ उदाराभि शब्दतोऽर्थतश्च ॥ कल्लाणाहि ॥ कल्याण प्राप्तिसूचिकाभि ॥ सिवाहि ॥ उपद्रवरहिताभि. शब्दार्थदूषणरहिताभि रित्यर्थ ॥ धणाहि ॥ धनलम्भिकाभि ॥ मगल्लाहि ॥ मङ्गले ऽनर्थप्रति घाते साध्वीभि ॥ सस्सिरीयाहि ॥ शोभायुक्ताभि ॥ हियगमणिज्जाहि ॥ गम्भीरार्थतो सुबोधाभिरित्यर्थ ॥ हियपल्हायणिज्जाहि ॥ हृदय गतकोपशोकादिग्रन्थिविलयनकारीभिरित्यर्थ ॥ मियमहुरगम्भीरगाहियाहि ॥ मिता परिमिताक्षरा मधुरा कोमलशब्दा गम्भीरा महाध्वनयो दु रवधार्यमप्यर्थ श्रोतॄन् ग्राहयन्ति या स्ता ग्राहिका स्तत पदचतुष्टयस्य कर्मधारयो ऽत स्ताभि ॥ मियमहुरगम्भीरसस्सिरीयाहि ॥ क्वचित् दृश्य ते, तत्रच मिता क्षरतो मधुरा शब्दतो गम्भीरार्था अर्थतो ध्वनितश्च स्वश्रीरात्मसम्प द्यासा ता स्तथा ताभि ॥ अट्ठसइयाहिति ॥ अर्थशतानि यासु सन्ति ता अर्थशतिका स्ताभि अथवा, बहुलत्व अर्थत. ॥ सइयाउ अट्ठसयाउ ताहि अपुणरुत्ताहि वग्गूहि ॥ वाग्भि र्गोभि रेकार्थिका

॥ टीका ॥

निवा; प्राय इष्टादीनि वाग्विशेषणानीति ॥ अणवरयं ॥ संततं॥ अभिणंदंतायेत्यादितु लिखितमेवास्ते, तत्रचाभिनन्दयन्तो जय जीवेत्यादिभणनतो ऽभिवृद्धि माचक्षाणा , जयजयेत्याशीर्वचन भक्तिसम्भ्रमेच द्विर्वचन ॥ नंदाधम्मेणति ॥ नन्द वर्द्धस्व धर्मेण एव तपसापि अथवा; जय २ विपक्ष केन धर्मेणेह नन्देत्येव मक्षरघटनेति ॥ जय २ नंदाभद्दते ॥ जयत्व हेजगनन्द जगन्नन्दिकर । भद्र ते भवतादितिगम्य ॥ जियविग्घोवियत्ति ॥ जितविघ्न श्च ॥ वसाहियदेवसिद्धिमज्झेत्ति ॥ वसत्व हेदेव । सिद्धिमध्येवा ॥ निहणाहियेत्यादि ॥ निर्घातयच रागद्वेषमल्लौ तपसा कथ भूत सन्नित्याह—धृति

॥ मूल ॥

ण्छिया जहा उववाइए जाव अभिणंदंताय अभित्थुणंताय एवंवयासी—जयजयणंदा धम्मेण जयजयणंदा तवेणं जयजयणंदा भद्दते अभग्गेहि णाणदंसणचारित्तमुत्तमेहिं अजियाइं जियाहि इंदियाइं जितपालेहि समणधम्मं जियविग्घोवियवसाहियदेवसिद्धिमज्झे निहणाहि रागदोसमल्ले तवेणं धिइधणियबद्धकच्छे

अनुवाद

वहवो यैल्लका यथौपपातिके यावदभिनन्दयन्तश्च अभिष्टुवन्तश्चैवमवादिपु—जय जय नन्द (वर्द्धस्व) धर्मेण, जय जय नन्द तपसा, जय जय नन्द भद्रन्ते (भवतादितिशेष) अभग्नैर्ज्ञानदर्शनचारित्रोत्तमै रजितानि जय इन्द्रियाणि, जित पालय श्रमणधर्मं, जितविघ्नोपिच वश देव। सिद्धिमध्ये, निर्घातय रागद्वेषमल्ल तपसा, धृतिधनिकबद्धकक्षो मर्दयाष्टकर्मशत्रून् ध्यानेनोत्तमेन शुक्लेनाप्रमत्तो, गृहाणाराधनापताकाञ्च

॥ भाषा ॥

कहवो। जाव अभिणंदंताय अभित्थुणताय एववयासी। यावत् तू जय चिरजीव अथवा समृद्धि पामो इत्यादि कहता बिरदावली कहता इम कहै। जय जय णदा धम्मेण जय २ णदा तवेण जय २ णदा भद्दते अभग्गेहि। तू जयवन्तो वरतो इसो आशीर्वचन कहता थको धर्म करी तू जयवन्तो वर्त्तौ तपकरी तूं जयवन्तो वर्त्तौ हे जगदानन्दकर तुझने भद्रथाओ अभग्न नियम विशेषैकरी। णाणदसणचरित्तमुत्तमेहि। ज्ञानदर्शन चारित्र उत्तमें करी। अजियाइं जियाहि इंदियाइं जित पालेहि समणधम्म। जिणही जीत्या न जाय एहवा इन्द्रियप्रते जीपिज्यो पालज्ये श्रमण धर्मप्रते। जियविग्घोविय वसाहिय देव सिद्धिमज्झे। जीपज्ये विघ्न अपि सभावनार्थे बसि तू हे देव सिद्धिगत माहे। णिहणाहि रागदोसमल्ले तवेण। निर्घात

॥ टीका ॥

रेव धनिक मत्यर्थं बद्धा कक्षा येन स तथा मल्लोमल्लान्तरजयसमर्थोभवति गाढबद्धकक्ष सन्निति कृत्वोक्तं धिइधणिइत्यादि, तथा ॥ अप्पमत्तोइ त्यादि ॥ हराहित्ति ॥ गृहाण ज्ञानादिसम्यक्पालना साएव पताका जयप्राप्तनरग्राह्या आराधनापताका ता त्रैलोक्यमेव रङ्गमध्य मल्लयुद्धद्रष्ट महाजनमध्य तत्र ॥ हतापरीसहचमुति ॥ हत्वा परीषहसैन्य ॥ अथवा; हन्ता घातक परीषहचम्वा इतिविभक्तिपरिणामात् शीलार्थकतृन्न न्तत्वा द्वा, हन्तापरीषहचमूमिति ॥ अभिभवियत्ति ॥ अभिभूय जित्वा ॥ गामकटगोवसग्गाणति ॥ इन्द्रियग्रामप्रतिकूलोपसर्गानित्यर्थं, णावा

॥ मूल ॥

महाहि अठकम्मसत्तू ज्झाणेणं उत्तमेण सुक्केणं अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागच धीरं तेलोक्करगमज्झे पावय वितिमिरमणुत्तरंचकेवलणाणं गच्छय मोक्खं परंपदं जिणवरोवदिठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेण हंता परीसहचमूं अभिभविय गामकंटकोवसग्गाणं धम्मे ते अविग्घमत्थुत्तिकट्टु अभिणंदतिय अभिथुणंतिय, तए

॥ अनुवाद ॥

धीर ! त्रैलोक्यरङ्गमध्ये ! प्राप्य वितिमिर मनुत्तर केवलज्ञान, गच्छ मोक्ष परम्पदम् जिनवरोपदिष्टेन सिद्धिमार्गेणाकुटिलेन, हन परीसहचमू, अभिभविता ग्रामकण्टकोपसर्गाणा, धर्मेते अविघ्न मस्त्वितिकृत्वा अभिनन्दन्ति चाभिष्टुवन्तिच। तदासजमालि क्षत्रियकुमारो नयनमालासहस्रे

॥ भाषा ॥

महाहिअठकम्मसत्तू। मर्द जे मर्दन कर कर राग द्वेष वेज सुभटमल्ल तपेकरी। धिइधणियबद्धकच्छे। धृति तेहीज धनिक अत्यर्थ बाधी कक्षा जिणे। महाहिअठकम्मसत्तू। मर्द जे मर्दन कर जे आठ कर्मरूप शत्रु वैरीप्रतें। ज्झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो हराहि। ध्ये करीने ध्यानेकरी किसेध्याने उत्तम सर्वोत्कृष्ट जे शुक्ल तिणेकरी अप्रमत्त थको ग्रहो। आराहणपडागंचधीरतेलोक्करगमज्झे। आराधनारूप पताका तेहप्रते हे धीर। त्रैलोक्यहीज रङ्ग मध्य मल्लयुद्ध द्रष्टा महाजन मध्ये। पावय वितिमिरमणुत्तरच केवलणाण गच्छयमोक्खपरपद। पावज्ये निर्मल सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञानप्रतें जाज्ये मोक्ष इसेनामे परमपदप्रते। जिणवरोवदिठेण सिद्धि मग्गेण अकुडिलेण। जिनवर तीर्थंकरे उपदिष्ट कहता देखाड्यो जे सिद्धमार्ग तिणें ते वाकूं नहीं तिणें करीने जाज्ये सिद्धपदे। हता परीसहाचमू अभिभ विय गामकटकोवसग्गाण। हणीने परीषह सेनाने अभिभवी जीपीने इन्द्रियरूप ग्राम प्रतिकूल उपसर्गप्रतें ण वाक्यालकारे, घणू स्यू कहिये। धम्मेते

क्यालङ्कारे अथवा' अभिभविता जेता ग्रामकण्टकोपसर्गाणामिति' किम्बहुना ॥ धम्मेतेइत्यादि ॥ नयणमालासहस्सेहिंति ॥ नयनमालाश्रेणी भूतजननेत्रपङ्क्तय ॥ एवजहाउववाइएत्ति ॥ अनेन यत्सूचित तदिद्–वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २ हियमालासहस्सेहिं अभिनंदिज्जमाणे २ [जनमन समूहैं समृद्धिमुपनीयमानो जय जीव नन्दत्यादि पर्यालोचना दितिभाव] मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे २ [एतत्पादमूले वत्स्याम इत्यादिभि र्जनविकल्पै र्विशेषेण स्पृश्यमान इत्यर्थ] कंतिरूवसोहग्गजोव्वणगुणेहिं पत्थिज्जमाणे २ [कान्त्यादिभि र्गुणै र्हेतुभूतै प्रार्थ्यमानो भर्तृतया स्वामितयावा, जनैरिति, अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणहत्थेण बहूण नरनारिसहस्साण अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे २ भवणपंतीसहस्साइं समइच्छमाणे २ [समतिक्रामन्नित्यर्थ] तंतीतलतालगीयवाइयरवेण [तन्त्रीवीणा तला हस्ता स्ताला कंशिका तलतालावा, हस्तताला गीतवादितेप्रतीते एषा यो रव स तथा तेन] महुरेण मणहरेण जयसद्दुग्घोसमीसएण [जयेतिशब्दस्य य उद्घोष उद्घोषण तेन मिश्रो य स तथा तेन] तथा मंजुमंजुणाघोसेण ॥ अतिकोमलेन ध्वनिना स्तावकलोकसम्बन्धिना नूपुरादिभूषणसम्बन्धिनावा, अप्पडिबुज्झमाणेत्ति ॥ अप्रतिवुध्यमान शब्दान्तराण्यनवधारयन् अप्रत्युद्यमानोवा, अनपह्नियमाणमानसो वैराग्यगतमानसत्वादिति ॥ कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुद्धघणभवणदेवकुलसिंघाडगतिगचउक्कचच्चरआरामुज्जाणकाणणसभप्पवप्पदेसदेसभागेत्ति ॥ कन्दराणि भूमिविवराणि गिरिणा विवरकुहराणि गुहा पर्वतान्तराणिवा; गिरिवरा प्रधानपर्वता, प्रासादा सप्तभूमिकादय ऊर्द्धघनभवनानि उच्चा विरलगेहानि देवकुलानि प्रतो

णं से जमाली खत्तियकुमारे णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे एवं जहा उववाइए कूणिओ जाव णिग्गच्छइ

प्रेक्ष्यमाण एव यथौपपातिके कूणिकोयावन्निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ब्राह्मणकुण्डग्राम नगर यत्रैव बहुशालक चैत्य स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

अविग्घमत्थुत्तिकट्टु । नाहक यतरूप चारित्ररूप धर्म तेहनेविषे विघ्नमथाओ । अभिणंदतिय अभिथुणतिय । मङ्गलीक शब्द बोले स्तवना करे। तएण से जमालीखत्तियकुमारे । तिवारे ते जमाली चत्रियकुमार । नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे एव जहा उववाइए । श्रेणिथया जे मनुष्य तेहनी नेत्रनी पंक्ति

॥ टीका ॥

तानि शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वराणि प्राग्वत्' आरामा पुष्पजातिप्रधाना वनखण्डा उद्यानानि पुष्पादितवृक्षयुक्तानि काननानि नगरादूरवर्त्तीनि सभा आस्थायिका प्रपा जलदानस्थानानि एतेषां येप्रदेशदेशरूपा भागा स्ते तथा तान् तत्र प्रदेशा लघुतराभागा देशास्तु महत्तरा, अयं पुन र्दण्डक क्वचिदन्यथा दृश्यते-कदरदरिकुहरविवरगिरिपायारट्टालचरियदारगोउरपायदुवारभवणदेवकुलआरामुज्जाणकाणणसभप्पएसेति, प्रतीतार्थश्चाय ॥ पडिसुयासयसहस्ससंकुलेकरेमाणेत्ति ॥ प्रतिश्रुतसहस्रसङ्कुलान् प्रतिशब्दकलकसंकुलानित्यर्थ, कुर्वन् २ निर्गच्छतीतिसम्बन्ध ॥ हयहेसियहत्थिगुलुगुलाइयरहघणघणाइयसद्दमीसएणं महयाकलरवेणयजणस्ससुमहुरेणं पूरेतो अंबरं समंता सुगंधवरकुसुमचुण्णउव्विद्धवासरेणुमइलणभं करेंते ॥ सुगन्धीनां वरकुसुमानां चूर्णानांच ॥ उव्विद्ध ॥ ऊर्द्धं गतो यो वासरेणु र्वासकं रजं स्तेन मलिनं य त्त तथा ॥ कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेणं जीवलोगमिववासयंतं ॥ कालागुरुगन्धद्रव्यविशेष प्रवरकुन्दुरुक्क वरचीडा तुरुक्क सिल्हक धूप स्तदन्य एतल्लक्षणोवा; एषां एतस्यवा; यो निवह. सतया तंन जीवलोकं वासयन्निवेति ॥ समंतउ खुभियचक्कवाल ॥ क्षुभितानि चक्रवालानि जनमण्डलानि यत्र गमने तत्तथाभवत्येव निर्गच्छतीति सम्बन्ध ॥ पउरजणबालवुड्ढपमुइयतुरियपहावियविउलाउलबोलबहुल नभं करेंते ॥ पौरजनाश्च अथवा; प्रचुरजनाश्च बाला वृद्धाश्च ये प्रमुदिता स्त्वरितप्रधाविताश्च शीघ्रं गच्छन्त तेषां व्याकुलाकुलानां मतिव्याकुलानांयो बोल. सबहुलो यत्र तत्तथा तदेवभूतं नभं कुर्वन्ति

॥ मूल ॥

णिगच्छइत्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे णयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता छत्ता ईए तित्थगराइसए पासइ, पासइत्ता पुरिससहस्सवाहणि सीयं ठवेइ, ठवेइत्ता पुरिससहस्सवाहिणीउ

अनुवाद

छत्रादीन् तीर्थंकरातिशयान् पश्यति, दृष्ट्वा पुरुषसहस्रवाहनीयां शिविकां स्थापयति, स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहनीयात शिविकात प्रत्या

॥ भाषा ॥

सहस्र तीर्थंकरो देखीजतो थको इम जिम उवाईउपाङ्गमाहे कह्यु । वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे इत्यादि, इहा पणि कहवो। कूणिओ जाव णिगच्छइ २ त्ता । जिम राजा कूणिक श्री वर्धमानस्वामीप्रतें चम्पानगरीथी वान्दिवा नीकल्यो तिम जमाली दीक्षा लेवाप्रतें नीकल्यो नीकलीने । जणेव

॥ टीका ॥ ति ॥ खत्तियकुंडग्गामस्स नगरस्स मज्झमज्झेणंति, शेषंतु लिखितमेवास्तइति ॥ पउमेइवत्ति ॥ इह यावत्करणादिदंदृश्य-कुमुदेइवा नलिणेइवा

॥ मूल ॥ सीयाउ पच्चोरुहइ, तएणं तं जमालिंखत्तियकुमार अम्मापियरो पुरउ काउं जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगव महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! जमालीखत्तियकुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कंते जाव किमगपुण पासणयाए सेजहानामए उप्पलेइवा

अनुवाद रोहति, तदात जमालि क्षत्रियकुमार अवापितरौ पुरत कृत्वा यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीर स्तत्रैवोपागच्छत, उपागंत्य श्रमणम्भगवन्त महावीर त्रि कृत्वा यावन्नमस्कृत्य एवमवादिष्टाम्-एष खलु भगवन् ! जमालि क्षत्रियकुमारो ऽस्माकमेक पुत्र इष्ट कान्तो यावत् किमङ्ग पुनर्दर्शन तायें तद्यथा नाम उत्पलमितिवा पद्मइतिवा यावत्सहस्त्रपत्रमितिवा पङ्केजात जलेसवर्द्धित नावलिप्यते पङ्करजसा नावलिप्यते जलरजसा एव

॥ भाषा ॥ माहणकुडग्गामणयरे जणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहां ब्राह्मणकुण्डग्राम नगरछै जिहां बहुशालनामा चैत्यछै तिहां आवे तिहां आवीने । छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ २ त्ता । छत्रादि तीर्थंकरना अतिशय देखे देखीने । पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ २ त्ता । पुरुषसहस्स उपाडे इसी शिबिकाप्रतें थापे थापीने । पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ २ त्ता । पुरुषसहस्स उपाडे इसी शिबिकाथकी उतरे उतरीने । तएणं तं जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो पुरओ काउ । तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार प्रतें मातापिता आगे करीने । जेणेवसमणेभगवंमहावीरे । जिहां श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीछै । तेणेव उवागच्छइ गच्छइत्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । समणभगवंमहावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एववयासी । श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें तीनवार यावत् नमस्कार करीने इम कहे । एवखलुभंते । इम निश्चे हेभगवन् ! जमालीखत्तियकुमारे अम्हएगेपुत्ते । जमाली क्षत्रियकुमार अम्हारे एक पुत्र । इट्ठेकंते जाव किमगपुणपासणयाए सेजहानामए । इष्टवल्लभ मनोहर यावत् स्यू वलीइति कोमनामवर्ण, वली देखवा दर्शन दोहिलो ते यथानाम दृष्टान्ते । उप्पलेइवा पउमेइवा जाव सहस्सपत्तेइवा । चन्द्रविकासी कमलइतिवा, सूर्यविका

॥ टीका ॥ भोगा गन्धरस स्पर्शा स्तेषु मध्ये संवृद्धो वृद्धिमुपगत ॥ नोवलिप्पइ कामरएणंति ॥ कामलक्षण रज कामरज स्तेन कामरतेनवा, कामानुरागेण ॥ मित्तनाईत्या दि ॥ मित्राणि प्रतीतानि ज्ञातय स्वजातीया निजका मातुलादय स्वजना पितृव्यादय सम्बन्धिन. श्वशुरादय. परिजनो दासादि रिह समा सुभगेइवा भोगधिएइवेत्यादि एषाञ्च भेदो रूढिगम्य ॥ कामेहि जाएत्ति ॥ कामेषु शब्दादिरूपेषु जात ॥ भोगेहिं संवुड्ढेत्ति ॥

॥ मूल ॥ पउमेइवा जाव सहस्सपत्तेइवा पंकेजाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं एवामेव जमालीवि खत्तियकुमारे कामेहि जाए भोगेहिं संवुड्ढे णोवलिप्पइ कामरएणं णोवलिप्पइ भोगरएणं णोवलि प्पइ मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं एसणं देवाणुप्पिया ! संसारभयउव्विग्गे भीए जम्मजरामरणेणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, तं एसणं देवाणुप्पियाणं अम्हे

अनुवाद मेव जमालिरपिक्षत्रियकुमार. कामैर्जातो भोगै सम्वर्द्धितो नावलिप्यते कामरजसा नावलिप्यते भोगरजसा नावलिप्यते मित्रज्ञातिनिजकस्वजन सम्बन्धिपरिजनेन एष देवानुप्रिया । संसारभयोद्विग्नो भीतो जन्मजरामरणेनेच्छति देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डीभूत्वा आगारादनगारता

॥ भाषा ॥ सो कमल यावत् सहस्रपत्र कमल । पंकेजाए जलेसंवुड्ढे । तेह कर्दमनेविषे ऊपना पाणीथी वध्या । णोवलिप्पइ पंकरएण । पणि लींपाय नही पङ्क र जेकरीने । णोवलिप्पइ जलरएण । वली न लीपाय जल रजेकरीने तेहथकी ऊचा रहै । एवामेव जमालीवि खत्तियकुमारे कामेहि जाए भोगेहि संवु ड्ढे । इणें दृष्टान्ते इमहीज जमाली पणि क्षत्रियकुमार शब्दरूपे करी ऊपनो गन्ध रस स्पर्शेकरी वध्यो । णोवलिप्पइ कामरएण णोवलिप्पइ भोगरएण । वली न लीं पाय न लीपाय कामलक्षण रज तिणेंकरी नलीपाय भोगने अनुरागरूप रजेकरी । णोवलिप्पइ मित्त णाति णियग सयण संबंध परजणेण । वली न लीं पाय स्नेहथी सबन्ध न हुवे मित्रप्रसिद्ध गोत्री माउला पितराइ सासरादि दासादि । एसणंदेवाणुप्पिया । एह जमाली हेदेवानुप्रिया । संसारभयउव्विग्गे भीए जम्मजरामरणेण । संसारना भयेंकरी उद्विग्न थयो बीहतो जन्म जरामरणे करी । इच्छइदेवाणुप्पियाण अंतिएमुंडेभवित्ता । वांछा करेछे तुम्हारे समी

हारबन्ध स्तत स्तेन नोपलिप्यते स्नेहस सम्बद्धो नभवतीत्यर्थ ॥ हारवारि इह यावत्करणा दिदंदृश्यं-धारासिदुवारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइ अंसू

सीसभिक्ख दलयामो पडिच्छतुणं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं, अहासुह देवाणुप्पिया ! मापडिबंधं, तएण से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेण एवंवुत्ते समाणे हठतुठे समणं भगवं महावीर तिक्खुत्तो जावणमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं उमुयइ, तएण साजमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेणं पडसाडएण आभरणमल्लालंकार पडि

प्रव्रजितुम्, तस्मादेप देवानुप्रियाणा वय शिष्यभिक्षा दद्म, प्रतीच्छन्तु देवानुप्रिया ! शिष्यभिक्षा, यथासुख देवानुप्रिया ! माप्रतिबन्ध(कुर्वन्तु) तत सजमालि क्षत्रियकुमार श्रमणेन भगवता महावीरेण एवमुक्त सन् हृष्टतुष्ट श्रमण भगवन्त महावीर त्रि कृत्वा यावन्नमस्कृत्य उत्तरपौरस्त्य

पे मुण्डथइने। आगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए त एसण देवाणुप्पियाण। गृहवासथकी अणगारपणे दीचा लेवाने तेमाटे एहने तुम्हने। अम्हेसीसभिक्ख दलयामो। अम्हे शिष्य रूप भिचाप्रते थाछा। पडिच्छतुण देवाणुप्पियासीसभिक्ख। वाछो हेदेवानुप्रिय तुम्हे शिष्य भिचाप्रते तिवारे स्वामी कहे। अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबध। जिम सुख तिम पणि प्रतिबध मकरो। तएण से जमाली खत्तियकुमारे। तिवारे ते जमाली चत्रियकुमार। समणेण भगवया महावीरेण एववुत्तसमाणे हठ तुठे। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीये इमकह्या थका हर्ष सतोष पाम्या। समणभगवमहावीर तिक्खुत्तो जावणमसित्ता। श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार प्रदचिणादे यावत् नमस्कारकरे नमस्कार करीने। उत्तरपुरच्छिमदिसिभाग अवक्कमइ २ त्ता। ईशानकूणि भूमिभागप्रते अपक्रमे जाय ईशानकूणि जाईने। सयमेव आभरणमल्लालंकारउमुयइ २ त्ता। पोतेज आभरण माल्य अलङ्कार तेहप्रते पाछा उतारे पोतेज उतारीने। तएण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया। तिवारे तिका जमाली चत्रियकुमारनी माता। हसलक्खणेणपडसाडएण। हसलचण हस समान उज्वल एहवो वस्त्र तिणेकरी। आभरणमल्लालकार पडिच्छइ २ त्ता। आभरण माल्य अलङ्कार प्रते गृहे गृहीने। हार वारि धार जाव

॥ टीका ॥

णिति ॥ जइयव्वंति ॥ प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्न कार्य ॥ जाया ॥ हेपुत्र ॥ घडियव्वंति ॥ अप्राप्तानां संयमयोगाना प्राप्तये घटना कार्या ॥ पर क्कमियव्वंति ॥ पराक्रम कार्य पुरुषत्वाभिमान सिद्धफल कर्त्तव्यइतिभाव , किमक्त भवति ॥ अस्सिंचेत्यादि ॥ अस्मिन्नर्थे प्रव्रज्यानुपालनलक्ष

॥ मूल ॥

च्छइ , पडिच्छइत्ता हारवारिधार जाव विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवंवया सी–घडियव्वं जाया ! जइयव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिंचणं अट्ठे णोपमादेतव्वंतिकट्टु जमा लिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति जामेवदिसिं पाउब्भूया तामे वदिसिं पडिगया , तएणंसे जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ , करेइत्ता जेणेव समणे

अनुवाद

दिभाग मपक्रामति, अपक्रम्य स्वयमेवाभरणमाल्यालङ्कारानुन्मुञ्चति, तत सा जमाले· क्षत्रियकुमारस्य माता हंसलक्षणेन पटशाटकेन आभरण माल्यालङ्कारान् प्रतीच्छति, प्रतीच्छ्य हारवारिधारा (प्रभृति) यावद्विमुञ्चती विमुञ्चतीसती जमालि क्षत्रियकुमारमेवमवादीत्–घटितव्य जात ! यतितव्य जात ! पराक्रमितव्य जात ! अस्मिन्नर्थे न प्रमादयितव्यमितिकृत्वा जमाले· क्षत्रियकुमारस्य पितरौ श्रमण भगवन्त महावीर वन्दतो नम

॥ भाषा ॥

विणिमुयमाणी विणिम्मुयमाणी । मोतीनोहार पाणीनी धारा यावत् आंखि आसू मूकतीथकी आंखि आसू मूकतीथकी । जमालि खत्तियकुमार एव वयासी । जमाली क्षत्रियकुमारप्रते इमकहे । घडियव्वंजाया जइयव्वंजाया परक्कमियव्वंजाया । हेपुत्र । संयमना योग नथी पाम्या ते पामवा भणी घटनाकरवी हे पुत्र । पाम्यानेविषे जतन करज्ये पराक्रम करज्ये संयमनेविषे सिद्धफल करवो हेपुत्र । अस्सिंचण अट्ठे णोपमादेतव्वंत्तिकट्टु । एह अर्थने विषे वचन ए वाक्य लकारे, प्रव्रज्या अनुपालन लक्षणनेविषे प्रमाद न करवो इम करीने । जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो । जमाली क्षत्रिय कुमारना माता पिता । समणभगवं महावीरं वदंति णमंसंति । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कार करे नमस्कार करीने । जा मेव दिसिंपाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया । जिण दिसियकी आव्याहता ते दिशिप्रतें पाछागया एतले परिगया । तएण से जमाली खत्तियकुमा

णे नप्रमादयितव्यमिति ॥ एवंजहाउसभदत्तो ॥ इत्यनेन यत्सूचितं तदिद–तेणामेवउवागच्छित्ता समणं ३ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता एवं जहा उसभदत्तो तहेवपव्वइओ णवरं पंचहिं पुरिस सएहिं सद्धिं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठम जाव मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं से जमाली अणगारे अण्णयाकयाइं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ

स्यतो२ यामेवदिश प्रादुर्भूतो तामेव दिशं प्रतिगतौ, तदानीं स जमालि क्षत्रियकुमारः स्वयमेव पञ्चमौष्ठिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एव यथा ऋषभदत्त स्तथैव प्रव्रजितो नवरं पञ्चभि पुरुषशतैः सार्द्ध तथैव याव त्सामायिकादी न्येकादशाङ्गान्यधीते, अधीत्य बहुभि श्चतुर्थषष्ठाष्टमयावन्मासार्द्धमासक्षपणै र्विचित्रै स्तपः कर्मभि रात्मानं भावयन् विहरतिस्म' तदानीं जमालि र

रे। तिवारे ते जमाली क्षत्रियकुमार। सयमेव पंचमुट्ठियं लोयकरेइ २ त्ता। आपणपेज पंचमुष्टिक लोचप्रते करे पातेज पंचमुष्टिक लोचप्रते करीने। जेणेवसमणे भगवमहावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीछे तिहां आवे तिहां आवीने। एवं जहा उसभदत्तो तहे व पव्वइओ। इम जिम ऋषभदत्त ब्राह्मण दीक्षालीधी तिम जमाली पणि दीक्षालीधी। णवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं। एतलोविशेष पांचसेपुरुष स घाते जमाली दीक्षालीवी। तहेव जाव सामाइयमाइयाइं। तिमहीज यावत् सामायिक आदिदेई। एकारस अंगाइं अहिज्जइ २ त्ता। इग्यारे अंग भणे सामायिक आदि इग्यारेअंग भणीने। बहूहिं चउत्थछट्ठम जाव मासद्ध। घणा एक उपवास वेउपवास अट्ठम तीनउपवास यावत् अर्द्धमास खम ण। मासक्खमणेहिं विचित्तेहिं। मास खमण करीने इत्यादिक नानाप्रकारने। तवोकम्मेहिं अप्पाणंभावेमाणे विहरइ। तपकर्मक्रियायेंकरी आत्माने भा वतोथको विचरे। तएणं से जमाली अणगारे अण्णयाकयाइं। तिवारे ते जमाली साधु एकदा प्रस्तावे। जेणेवसमणेभगवमहावीरे तेणेउवागच्छइ २ त्ता।

॥ टीका ॥

वदइ २ वंदित्ता २ एवंवयासी–आलित्तेण भंते । लोए पलित्तेण भंते । लोए इत्यादि „ व्याख्यातचेद प्रागिति ॥ नोआढाइत्ति ॥ नाद्रियते तन्नार्थं नादरवान् भवति ॥ नोपरिजाणइत्ति ॥ नपरिजानातीत्यर्थं , भाविदोषत्वेनोपेक्षणीयत्वात्तस्येति ॥ अरसेद्दियत्ति ॥ द्विवादिभि रथ

॥ सूत्र ॥

णमंसइ , णमसइत्ता एववयासी–इच्छामिणं भंते ! तुज्झेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए ? तएणं समणेभगवंमहावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमठं णो आढाइ णोपरिजाणइ तुसिणीएचिठइ , तएणसे जमाली अणगारे समणेभगवंमहावीरे दोच्चंपि तच्चंपि

॥ अनुवाद ॥

नगारो ऽन्यदाकदाचित् यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीर स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति नमस्कृत्यैवम वादीत्–इच्छामि भदन्त। युष्माभि रभ्यनुज्ञात सन् पञ्चभि रनगारशतै साक बहिस्तात् जनपदविहार विहर्तुम् ? तदा श्रमणो भगवा स्त महावीरो जमाले रनगारस्यैतदर्थं नैवाद्रियते नैव परिजानाति तूष्णीकस्तिष्ठति, तदा सजमालि क्षत्रियकुमार श्रमण भगवन्त महावीर द्विवा

॥ भाषा ॥

जिहा श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी तिहा आवे तिहा आवीने। समणभगव महावीर वदइ णमसइ णमसइत्ता एववयासी। श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी प्रते वादे नमस्कार करे वादी नमस्कार करी इमकहे। इच्छामिणभते तुज्झेहि अभणुणाए समाणे। वाछू ण वाक्यालकारे, हेभगव न् ! तुम्हारी आज्ञा पाम्याथका। पचहि अणगारसएहि सद्धि। पाचसे साधुसंघाते। बहियाजणवयविहार विहरित्तए। बाहिर जनपद देशनेविषे वि हारप्रते करवाने। तएण समणे भगवमहावीरे जमालिस्सअणगारस्स। तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी जमाली अणगार साधुनो। एयमठ णो आढाइ णोपरिजाणति तुसिणीए चिठइ। एह अर्थ आदरे नही आगलि दोष हुस्ये तेमाटे भलू नजाणे होणहार मिटैनही तेमाटे मौनकरी रहे। तएण सेजमाली अणगारे समणेभगव महावीरे दोच्चपि तच्चपि एववयासी। तिवारे ते जमाली साधु श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीप्रते बीजीवार प णि इम बीजीवार इमकहे। इच्छामिणभते तुज्झेहि अब्भणुणाएसमाणे। वाछू ण वाक्यालकारे, हेभगवन् ! तुम्हे आज्ञा दीधा थका। पचहिअणगार

एवंवयासी–इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए? तएणं समणेभगवंमहावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चंपि तच्चंपि एयमठं णोआढाइ जाव तुसिणीए संचिठइ, तएणं से जमाली अणगारे समणं भगव महावीर वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतियाउ बहुसालाउ चेइयाउ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पचहिं अणगारस एहिसद्धिं वहिया जणवयविहारंविहरइ, तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थीणामं णयरी होत्था वण्णउ कोठ

रमपि त्रिवारमपि एव मवादीत्–इच्छामि भगवन् ! युष्माभिरभ्यनुज्ञात सन् पञ्चभि रनगारशतै सार्द्धं यावद्विहर्त्तुम् ? तदापि श्रमणो भगवान्महावीरो जमाले क्षत्रियकुमारस्य द्विवारमपि त्रिवारमपि एतदर्थ नैवाद्रियते यावत्तूष्णीकस्तिष्ठति, तदा सजमालिरनगार श्रमण भगवन्तमहावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्य श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिका द्बहुशाला चैत्यात्प्रतिनिष्क्रमते, प्रतिनिष्क्रम्य पञ्चभि

सएहि सद्धि जाव विहरित्तए । पाचसे साधुसघाते बाहिर जनपद देशने विहारने करवेकरी विचरवाने । तएण समणेभगवमहावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चपि तच्चपि । तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी जमाली साधुनो बीजीवार पणि त्रीजीवार पणि । एयमठ णो अढाइ । एह अर्थ ने विषे आदरवन्त न हुवे । जाव तुसिणीए सचिठइ । यावत् मौनकरी रहे । तएण से जमाली अणगारे । तिवारे जमाली साधु । समणभगव महावीर वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वादे नमस्कार करे वादीने नमस्कार करीने । समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी बहुशाल नाम चैत्यथकी नीकले नीकलीने । पचहि अणगारसएहि सद्धि बहिया जणवयविहार विहरइ । पाचसे साधुसघाते बाहिर देशनेविषे बिहारने करवेकरी विचरे । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । सावत्थीणामणयरीहोत्था वण्णओ । श्रावस्तीनामे नगरी हुई वर्णक चम्पानीपरे कहवो । कोठए चेइए वण्णओ जाव व

॥ मूल ॥

एचेइए वणओ जाव वणसंडस्स तेणंकालेणं तेणंसमएणं चंपाणामं णयरी होत्था वणओ पुण्णभद्दे चेइए वणओ जाव पुढवीसिलापट्टओ तएणं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पंचहि अणगारसएहिंसद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हइ, उगिण्हइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे

॥ अनुवाद ॥

गच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूव उग्गहं उगिण्हइ ...

कोष्ठकश्चैत्य, वर्णको रनगारशतै सार्द्धं बहिस्ताज्जनपदविहारं विहरति, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रावस्ती नाम्नी नगर्य्यभवत्, वर्णक, कोष्ठकश्चैत्य, वर्णको यावद्वनखण्डस्य, तस्मिन्काले तस्मिन्समये चम्पा नाम्नी नगर्य्यभवत्, वर्णक, पूर्णभद्रश्चैत्य', वर्णक, यावत्पृथिवीशिलापट्टक.' तदा सजमालि रनगारो ऽन्यदाकदाचि त्पञ्चभिरनगारशतै' साक सम्परिवृतो पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्राम व्यतिक्रमन् यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव कोष्ठकश्चैत्य स्तत्रैवोपागच्छति' उपागत्य यथाप्रतिरूपमवग्रह गृह्णाति, गृहीत्वा संयमेन तपसात्मान भावयन् विहरति, तदा श्रमणो भग

॥ भाषा ॥

ते कालनेविषे ते समयनेविषे । चपाणामणयरीहोत्था वणसड स । कोष्टकनाम चैत्य वर्णन करवायोग्य यावत् वनखण्डतां । तेणकालेणं तेणसमएणं । चपाणामणयरीहोत्था वण्णओ । यावत् पृथिवीशिलानाजे पट्टशिलाछे । चम्पानामे नगरी हुई वर्णकयोग्य । पुण्णभद्दे चेइए वण्णओ । पूर्णभद्र चैत्य वर्णकयोग्य । जाव पुढवीसिलापट्टओ । यावत् पृथिवीशिलानाजे पट्टशिलाछे । तएणं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे । तिवारे ते जमाली साधु एकदा किवारेके पाचसे साधुसघातेपरिवर्या । पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे । पूर्वानुपूर्वीय चालतोथको । गामाणुगामदूइज्जमाणे जेणेवसावत्थीणयरी । एकग्रामथकी बीजेग्रामे व्यतिक्रमतोथको जिहा श्रावस्तीनामे नगरी । जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा कोष्टकनामे चैत्य तिहांआवे तिहां आवीने । अहापडिरूव उग्गह उगिण्हइ २ त्ता । यथा प्रतिरूप अभिग्रह नियम विशेष तेहप्रते ग्रहे तेहप्रते ग्रहीने । सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । सयमेकरी तपेकरी आत्माने भावतोथको विचरे । तएण समणेभगवमहावीरे अण्णयाकयाइ । तिवारे श्रमणभगवन्त तपस्वी ज्ञानवन्त श्रीमहावीरस्वामी अन्यदा किवारेके ।

॥ टीका ॥

रूक्षतत्वा दविद्यमानरसै ॥ विरसेहियत्ति ॥ पुराणत्वा द्विगतरसै ॥ अंतेहियत्ति ॥ अरसतया सर्वधान्यान्तवर्त्तिभि र्वल्लचणकादिभि ॥ पतेहिय हि ॥ तैरेव भुक्तावशेषत्वेन पर्युषितत्वेनवा; प्रकर्षेणान्तवर्त्तित्वा त्प्रान्ते ॥ लूहेहियत्ति ॥ रूक्षे ॥ तुच्छेहियत्ति ॥ अल्पै ॥ कालाइक्कतेहियत्ति ॥

॥ मूल ॥

विहरइ, तएणं समणेभगवं महावीरे अन्नयाकयाइं पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे जाव सुहसुहेणं विहरमाणेवा जेणेव चंपाणयरी जेणेव पुन्नभद्दए चेइए तणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गह उगि रहइ, उगिरहइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तएणं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहिय विरसेहिय अंतेहिय पंतेहिय लूहेहिय तुच्छेहिय कालाइक्कंतेहिय पमाणाइक्कंतेहिय सीएहिं

अनुवाद

वान्महावीरो ऽन्यदाकदाचित्पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्राम यावत्सुख सुखेन विहरन्वा यत्रैव चम्पा नगरी यत्रैव पूर्णभद्रश्चैत्य स्तत्रैवोपाग च्छति' उपागत्य यथाप्रतिरूपमवग्रह गृह्णाति, गृहीत्वा सयमेन तपसात्मान भावयन् विहरति, तदा तस्य जमाले रनगारस्य तै ररसैर्विर

॥ भाषा ॥

पुव्वाणुपुव्विचरमाणे जावसुहं सुहेण विहरमाणेवा । पूर्वानुपूर्वीयें चालताथका यावत् सुखे सुखेकरी विहरता थका । जेणेव चपाणयरी जणेव पुणभद्दए चेइए तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । जिहा चम्पानामे नगरी जिहा पूर्णभद्रनामे चैत्यछे तिहाआवे तिहाआवीने । अहापडिरूव उग्गह उगिणहइ २ त्ता । य था प्रतिरूप अभिग्रहप्रतें गृहे यथा प्रतिरूप अभिग्रह प्रतें गृहीने । सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणेविहरइ । सयमेकरी तपेकरी आत्माने भावताथका विचरै । तएण तस्सजमालिस्स अणगारस्स । तिवारे ते जमाली साधुने । तेहि अरसेहिय विरसेहिय अंतेहिय पतेहिय लूहेहिय तुच्छेहिय । तिणें हिङ्गु सस्कारनही तेमाटे रसरहित तिणेंकरी पुराणाधान तिणेंकरी परमपणें सर्वधाननेविषे पतेवर्त्ते वाल चिणा प्रमुख तिणेंकरी शेष अरचण ते पणिसाधा एठरह्यो तिणेंकरो रूखोआहार तिणेंकरी ते पणि अल्प तेणेंकरी । कालाइक्कतेहिय पमाणाइक्कतेहिय । बुभुक्षाकाले न पाम्या तेणेंकरी बुभुक्षा तृषामा त्रायें नही तेणेंकरो । सीएहिं पाण भोअणेहि अणयाकयाइ । सीतलपाणी भोजनेकरी एकदा किवारेकै । सरीरगसिविउलरोगातकेपाउब्भूए । शरीर

॥ टीका ॥

॥ रोगायंकेत्ति॥ रोगो व्याधि सचासावातङ्कश्च कृच्छ्रजीवितकारीति तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्ते ॥ पमाणाइक्कतेहियत्ति ॥ बुभुक्षापिपासामात्रानुचितै ॥ तिउलेत्ति ॥ त्रीनपि मन·प्रभृतिकानर्थान् तुलयति जयतीति त्रितुल , क्वचिद्विपु रोगातङ्क ॥ उज्जलेत्ति॥ उज्वलो विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कितत्वात् ॥ तिउलेत्ति ॥ कक्कसेत्ति ॥ कर्कशद्रव्यमिव कर्कशो ऽनिष्टइत्यर्थ ॥ कडुएहि ॥ लइन्युच्यते, तत्र विपुल सकलकायव्यापकत्वात् ॥ पगाढेत्ति ॥ प्रकर्षवृत्ति ॥ कक्कसेत्ति ॥ कर्कशद्रव्यमिव कर्कशो ऽनिष्टइत्यर्थ ॥ तिव्वेत्ति ॥ तीव्र तिक्त कटुक नागरादि तदिव य स कटुको ऽनिष्टसर्वेति ॥ चंडेत्ति ॥ रौद्रः ॥ दुक्खेत्ति ॥ दु खहेतु ॥ दुग्गेत्ति ॥ कष्टसाध्य इत्यर्थ· ॥ तिव्वेत्ति ॥ तीव्र तिक्त लिम्बादिद्रव्य तदिव तीव्र किमुक्तभवति ॥ दुरहियासेत्ति ॥ दुरधिसह्य ॥ दाहवक्कतिएत्ति ॥ दाहो व्युत्क्रान्त उत्पन्नो यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्त स

॥ मूल ॥

पाणभोयणेहिं अण्णयाकयाइं सरीरगंसि त्रिउलरोगातंकेपाउब्भूए उज्जले तिउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवुक्कंतिएयावि विहरइ , तएण से जमाली अणगारे

अनुवाद

सैश्चान्तैश्च प्रान्तैश्च रूक्षैश्च तुच्छैश्च कालातिक्रान्तैश्च प्रमाणातिक्रान्तैश्च शीतै· पानभोजनै रन्यदा कदाचि च्छरीरे विपुलरोगातङ्क प्रादुरभूत्, उज्वल स्त्रितुल प्रगाढ· कर्कश कटुकश्चण्डो दु खो दुर्गस्तीव्रो दुरधिसह्य पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकश्चापि विहरति, तदा स

॥ भाषा ॥

उज्जले तिउले पगाढे कक्कसे कडुवे चडे दुक्खे दुग्गे। सुखरहित मन वचन नविषे विस्तीर्ण रोग व्याधि तेहीज आतङ्कष्टे जीवितकारी ते प्रगटथयो। तिव्वे दुरहियासे पित्तज्जरपरिगयसरीरे कायाने दुखदाई घणा रोग कर्कशद्रव्यनीपरे अनिष्ट विशेषेकरी अनिष्ट कटुक रौद्र दुखना हेतु कष्टसाध्य। तीव्र निबादिकनीपरे दुखे सहवायोग्य एहवे पित्तज्वरे व्याप्तशरीर यथार्थको दाघ ऊपनो एहवो दाहवुक्कतिएयाविविहरइ। श्लेषमादिखिरे तिणेकरी तीव निबादिकनीपरे दुखे सहवायोग्य एहवे पित्तज्वरे व्याप्तशरीर यथार्थको दाघ ऊपनो एहवो थको विचरे। तएण से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूएसमाणे। तिवारे ते जमाली साधु वेदनायेंकरी पराभव्योथको। समणेणिग्गथे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी। श्रमण निग्रन्थ आपणाशिष्य तेहप्रतें तेडे तेडीने इमकहे। तुब्भेण देवाणुप्पिया। तुम्हे अहोदेवानुप्रिया। ममसेज्जासथारय सथरह। माहरे काजें शयननेकाजे सूइवानेकाजे सथारो सथरोकरो। तएण समणा णिग्गथा जमालिस्स अणगारस्स। तिवारे श्रमण निर्ग्रंथ जमाली साधुनो। एयमठ

॥ टीका ॥ एव दाहव्युत्क्रान्तिक ॥ सेज्जासंथारयति ॥ शय्यायै शयनाय सस्तारक ॥ वलियतरति ॥ गाढतर ॥ किकडेकज्जइत्ति ॥ किं निष्पन उत निष्प

॥ सूत्र ॥ वेदणाए अभिभूए समाणे समणेणिग्गंथे सद्दावेइ , सद्दावेइत्ता एवंवयासी—तुज्झेण देवाणुप्पिया ! ममं सेज्जासथारय संथरह, तएणं समणाणिग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमठ्ठ विणएण पडिसुणेंति २ त्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासथारगं सथरेंति, तएणसे जमाली अणगारे वलियतर वेदणाए अभिभूए स माणे दोच्चंपि समणेणिग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवंवयासी—ममंणं देवाणुप्पिया ! सेज्जासथारए किकडे

अनुवाद जमालि रनगारो वेदनयाभिभूत सन् श्रमणान्निर्ग्रन्थान् शब्दयते २ । एवमवादीत्-यूय देवानुप्रिया ! मम शय्यासस्तारक सस्तरथ, तदा श्र मणा निर्ग्रन्था जमाले रनगारस्येनमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति' प्रतिश्रुत्य जमाले रनगारस्य शय्यासस्तारक सस्तरन्ति' तदा स जमालि र नगारो गाढतर वेदनयाभिभूत सन् द्विवारमपि श्रमणान्निर्ग्रन्थान् शब्दयते शब्दयित्वा एवमवादीत्-मम देवानुप्रिया ! शय्यासस्तारक कि

॥ भाषा ॥ विणएण पडिसुणेति २ त्ता । एह अर्थ विनयेकरी सुणे एह अर्थ विनयेकरी सुणोने । जमालिना अणगारना सेज्जा सथारग सथरति । जमाली साधुनो शय्या शयनने अर्थे सथरे करे । तएण से जमाली अणगारे वलियतर वेयणाए । तिवारे ते जमाली साधु अतिगाढी वेदनायें । अभिभूएसमाणे । परा भव्यो थको । दोच्चपि समणे णिग्गथे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । बीजीवार पणि श्रमण निर्गंथ प्रतें तेडावे तेडावीने इमकहे । ममण्णं देवाणुप्पिया से ज्जा सथारए किकडे कज्जइ । माहरू ण वाक्यालंकारे, हे देवानुप्रिय ! शयनने अर्थे सथारू स्यू कीधू किवा करेछे एतले स्यू नीपनू अथवा नीपजावेछे इ मो कहवे अतीतकाल निर्देश अने वर्त्तमानकाल निर्देशे कीधो अने करवामाडो ते बेहुनो भेद देखाड्यो । तएणसमणाणिग्गथा । तिवारे श्रमण निर्गं थ । त जमालि अणगार एववयासी । ते जमाली साधुप्रतें इमकहे । णो खलुदेवाणुप्पियाण सेज्जासथारए कडे कज्जइ । नथी निश्चे अहोदेवानुप्रिया । तुम्हारो सथारू कीधू ते करियेछे, जिवारे सस्तारकने करणहार अणगारे पणि करवामाडाने अकृतपणो कह्यो तिवारे ते जमाली सकाय वचन अने

॥ टीका ॥

द्राते अनेनातीतकालनिर्देशेन वर्त्तमानकालनिर्देशेनच कृतक्रियमाणयो र्भेद उक्त, उत्तरेप्येवमेव तदेव सस्तारककर्तृसाधुभिरपि क्रियमाणस्या कृततोक्ता तत श्रासौ स्वकीयवचनसस्तारककर्तृसाधुवचनयो र्विमर्शा त्प्ररूपितवान् क्रियमाण कृत यदभ्युपगम्यते तन्न सङ्गच्छते यतो येन क्रिय माण कृतमित्यभ्युपगत तेन विद्यमानस्य करणक्रियाप्रतिपन्ना तथाच बहवो दोषा स्तथाहि–यत्कृत तत्क्रियमाण नभवति विद्यमानत्वा चिरत नघटवत्, अथ कृतमपि क्रियते तत क्रियता नित्य कृतत्वा त्प्रथमसमयइवेति, नच क्रियासमाप्ति र्भवति सर्वदा क्रियमाणत्वादादिसमयवदिति,

॥ मूल ॥

कज्जइ ? तएणं समणाणिग्गंथा तंजमालिं अणगारं एवंवयासी–णोखलु देवाणुप्पियाणं सेज्जासथारए कडे कज्जइ, तएणं तस्सजमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जंणं समणेभगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ एवं खलु चलमाणे चलिए उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव णिज्ज

॥ अनुवाद ॥

कृत क्रियते ? तदा श्रमणा निर्ग्रन्था स्त जमालिमनगारमेवमवादिषु–नखलु देवानुप्रिया । शय्यासस्तारक कृत, क्रियते, तदा तस्य जमाले रनगारस्यायमेतद्रूपो अर्थित (प्रभृति) यावत्समुदपतत्, यच्छ्रमणो भगवान्महावीर एवमाख्याति यावदेव प्ररूपयति–एव खलु चलमानश्च

॥ भाषा ॥

सस्तारक करणहारनों वचन ते वेज वचनना विनासणयको चिन्तववा लागो। तएण तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्प ज्जित्था। तिवारे ते जमाली अणगारने एह एहवैरूपे मनोगत सकल्प यावत् ऊपनो। जण समणेभगवं महावीरे एवमाइक्खइ। जेहभणी श्रमण भगव न्त श्रीमहावीरस्वामी इमकहे सामान्यथकी। जाव एव परूवेइ। यावत् इम प्ररूपे। एवखलु चलमाणे चलिए उदीरिज्जमाणे उदीरिए जाव णिज्जरिज्ज माणे णिज्जिण्णे तण मिच्छा इमचण पच्चक्खमेवदीसइ। इम निश्चै चलवामाण्डू ते चल्यूं कहिये उदीरवामाण्डू ते उदीरा कहिये इम यावत् निर्जरवा माण्डू ते निर्जर्या कहिये ते सर्वं मिथ्या झूठा कह्यु ते किम एह प्रत्यक्षहीज दीसेछे, करवामाण्डू ते कीधो इसो जो अङ्गीकार कीजे ते भलू नही जे कारणे जिणे करवामाण्डू ते कीधू कहे इसो तिणे विद्यमानने करणक्रिया पडिवजी तिहा घणा दोष हुवे ते देखाडेछे— जे कीधू ते करवामाण्डू न हु

॥ टीका ॥

तथा यदि क्रियमाणं कृतं स्या त्तदा क्रियावैफल्यं स्यादकृतविषयएव तस्या सफलत्वात्, यथा पूर्वमसदेव प्रवर्द्दृश्यते इत्यध्यक्षविरोधश्च तथा घटादिकार्यनिष्पत्तौ दीर्घः क्रियाकालो दृश्यते यतो नारम्भकालएव घटादिकार्यं दृश्यते नापि स्थासादिकाले किंतर्हि तत्क्रियावसाने यतश्चैव ततो नक्रियाकाले युक्त कार्यं किंतु क्रियावसानएवेति, आहचभाष्यकार –जस्सेहकज्जमाणकयंतितेणेहविज्जमाणस्स । करणकिरियायवत्था तहायपरुदो सपक्खिवत्ती ॥ १ ॥ कयमिहनकज्जमाण तब्भावाउचिरतनघडोव्व । अहवाकयपिकीरइ कीरउनिच्चनयसमत्ती ॥ २ ॥ किरियावेफल्लंपिय पुव्वमभूयचदीसए हुत । दीसइदीहोयजहो किरियाकालोघडाईण ॥ ३ ॥ नारंभेच्चियदीसइ नसिवाइद्धाएदीसइतदंते । तोनहिकिरियाकाले जुत्तकज्जंतदंतमीति ॥ ४ ॥ अ

॥ मूल ॥

रिज्जमाणे णिज्जिसे तणं मिच्छा, इमंचणं पच्चक्खमेव दीसइ, सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथारिज्जमाणे असंथरिए, जम्हाण सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणेवि अच

अनुवाद

लित उदीर्यमाण उदीर्णा याव निर्जीर्यमाणो निर्जीर्ण स्तन्मिथ्या, इदन्तु प्रत्यक्षमेव दृश्यते शय्यासंस्तारक क्रियमाणमकृत संस्तार्यमाणमसंस्तृत'

॥ भाषा ॥

वे विद्यमान पणाथकी थपाकालना वर्तनीपरे, हिवे जो कीधो ते पणि करिये तिवारे करताने निर्लक्षतक पणाथकी प्रथम समयनीपरे क्रिया समाप्ति न हुवे सर्वदा क्रियमाणपणों आदि समयनीपरे तथा करवामांडू ते कीधू तो क्रियानो विकल्पहुवे अकृत विषयनेविषेज तेहना सफलपणाथकी तथा पहिलो अछतोज हुयो दीसे ए प्रत्यक्ष विरोध तथा घटादिकार्य निष्पत्तिनेविषे घणो क्रियाकाल दीसेछे जे कारणे आरम्भकालनेविषे घटादिकार्य दीसे न छे घटादिकालनेविषे पणि नही तो स्यू क्रिया अवसाने दीसे जेमाटे इम तेमाटे नही क्रियाकालनेविषे युक्तकार्य किन्तु क्रियाअवसाननेविषे कार्य हुवे । सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथारिज्जमाणेअसंथरिए । जेमाटे शयनकरवानू संथारु करवामांडू ते अणकीधू तथा संथरवामांडू ते असंथरयू एह साक्षात दीसेछे । जम्हाण सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथरिज्जमाणे असंथरिए । जेहभणी शय्या संथारो करवामांड्यो ते अणकीधू दीसेछे संथरवामांड्यो ते असंथर्यो दीसेछे । तम्हा चलमाणेवि अचलिए । तेमाटे चालवामांड्यो ते पणि अणचाल्यो कहिये । जाव णिज्जरिज्जमाणेविअणिज्जिण्णे

ऽथेगइया समणा निग्गथा एयमठ नोसद्दहतित्ति ॥ येच न श्रद्दधति तेषा मतमिदं नाकृतमभूतमविद्यमानमित्यर्थं , क्रियते अभावात्खपुष्पवत् ,
यदि पुनरकृतमप्यऽसदपीत्यर्थं क्रियते तदाखरविषाण मपि क्रियता मसत्त्वाविशेषात् ' अपिच ये कृतकरणपक्षे नित्यक्रियादयो दोषा भणिता स्तेऽस
त्करणपक्षेपि तुल्या वर्तन्ते ' तथाहि–नात्यन्तमसत्क्रियते ऽसद्भावा त्खरविषाणमिव अथवात्यन्तासदपि क्रियते तदा नित्य तत्करणप्रसङ्गो नचा
त्यन्तासत करणे क्रियासमाप्ति र्भवति , तथात्यन्तासत करणे क्रियावैफल्यच स्या दसत्त्वादेव खरविषाणवत् ' अथवा ; विद्यमानस्य करणाभ्युपगमे
नित्यक्रियादयो दोषा कष्टतरका भवन्ति अत्यन्ताभावरूपत्वात्खरविषाणइव , विद्यमानपक्षेतु पर्यायविशेषणाभ्यंणात्स्यादपि क्रियाव्यपदेशो य
था आकाश कुरु तथाच नित्यक्रियादयो दोषा नभवन्ति नपुनरय न्यायो त्यन्तासति खरविषाणादा वस्तीति , यच्चोक्त–पूर्वमसदेवोत्पद्यमान दृ
श्यतइति प्रत्यक्षविरोध स्तत्रोच्यते–यदिपूर्वमभूत सद्भवद्दृश्यते तदा पूर्वमभूतसद्भवत्कस्मात्त्वया खरविषाणमपि नदृश्यते ? यच्चोक्त दीर्घ क्रियाकालो

दृश्यते तत्रोच्यते–प्रतिसमयमुत्पन्नाना परस्परेण पड्विघलक्षणाना सुबह्वीना स्थासकोसादीनामारम्भसमयेष्वेव निष्ठानुयायिनीना कार्यकोटीना दी
र्घ क्रियाकालो यदि दृश्यते तदा किमत्र घटस्यायात येनोच्यते दृश्यते दीर्घश्च क्रियाकालो घटादीनामिति ? यच्चोक्त–नारम्भेएव दृश्यते इत्यादि
तत्रोच्यते कार्यान्तरारम्भेकार्यान्तर कथ दृश्यतां पटारम्भे घटवत् शिवकस्थासकादयश्च कार्यविशेषा घटस्वरूपा नभवन्ति ' तत शिवकादि
काले कथ घटो दृश्यता मिति ' किञ्च अन्त्यसमयएव घट समारब्ध स्तत्रैवच यद्यसौ दृश्यते तदा कोदोष ? एवञ्च क्रियमाणएव कृतो भवति कि
यमाणसमयस्य निरंशत्वात् , यदिच सम्प्रति समये क्रियाकाले प्यकृत वस्तु तदा अतिक्रान्ते कथ क्रियता कथवा ; एष्यति क्रियाया उभयोरपि
विनष्टत्वानुत्पन्नत्वेनासत्वादसम्बध्यमानत्वा त्तस्मा त्क्रियाकालएव क्रियमाण कृतमिति ' आहच–थेराणमयनाकय मभावउकीरएखरपुप्फच । अह
वअकयपिकीरइ कीरउतोखरविसाणपि ॥ १ ॥ निच्चकिरियाइदोसा नणुतुल्लाअसइकठतरयावा । पुव्वमभूयनते दीसइकिखरविसाणपि ॥ २ ॥

॥ टीका ॥

पइसमयुप्पन्नाण परोप्परविलक्खणाणसुबहूणं । दीहोकिरियाकालो जइदीसइकिंबकुंभस्स ॥ ३ ॥ अन्नारंभेअन्न किह्दीसउजहघडोवकारंभे । भिवगादर्त्तनकुम्भो किह्दीसउंसोतदद्वाए ॥ ४ ॥ अंतेच्चियआरद्धो जइदीसइतचेवकोदोसो । अकयचसंपइगयं किह्कीरउकिरियाएसमि ॥ ५ ॥ इत्यादि

॥ मूल ॥

लिए जाव णिज्जरिज्जमाणेवि अणिज्जिणे एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता समणेणिग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवंवयासी—जणं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ एवखलु चलमाणेचलिए तंचेव सव्वं जाव णिज्जरिज्जमाणे अणिज्जिणे, तएण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगइया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगइया समणा णिग्गं

अनुवाद

यस्माच्छय्यासंस्तारक क्रियमाण मकृतं संस्तार्यमाणमसंस्तृत तस्मा च्चलमानोप्यचलितो याव न्निर्जीर्यमाणमप्यनिर्जीर्णं एव सम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्य श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयते, शब्दयित्वा एवमवादीत्–यद्देवानुप्रिया । श्रमणो भगवान्महावीर एवमाख्याति यावदेव प्ररूपयति–एव खलु च लमानश्चलित स्तच्चैव सर्वं याव न्निर्जीर्यमाणमनिर्जीर्णं । तदा तस्य जमाले रनगारस्यैवमाचक्षतो यावत्प्ररूपयत एके केचन श्रमणा निर्ग्रन्था

॥ भाषा ॥

एव संपेहेइ २ त्ता । इम यावत् निर्जरवामांड्यो ते पणि अणनिजरयो कहिये इम चिन्तवै इम चिन्तवीने । समणेणिग्गंथसद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी । श्रमण निर्ग्रंथ तेडे श्रमण निर्ग्रंथ तेडोने इमकहे । जणं देवाणुप्पिया समणेभगवं महावीरे एवमाइक्खइ । जेहभणी अहो देवानुप्रियाओ श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी इमकहे। जाव परूवेइ एवखलु चलमाणेचलिए। यावत् प्ररूपे इम निश्चे चलवामांड्यो ते चल्यू कहिये। तंचेवसव्वं जाव णिज्जरिज्जमाणे अणिज्जिणे। तिमज निश्चे सर्वं पूठिलीपरे कहवो यावत् निर्जरवामांड्यो ते अणनिजर्यो कहिये इत्यादि सर्व कहवो। तएण तस्स जमालिस्स अणगारस्स। तिवारे ते जमाली अणगारने। एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स। इम सामान्यथकी कहताने यावत् विशेषथी कहताने। अत्थेगइया समणा णिग्गंथा। कोतलाएक श्रमण निर्ग्रंथ। एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति। एह अर्थ सरदहे सत्यकरी माने प्रतीत आणे रुचि आणे। अत्थे गइया

था एयमठं णोसद्दहंति णोपत्तियंति णोरोयंति, तत्थणं जेते समणाणिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति तेणं जमालिचेव अणगारं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तत्थण जेते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमठं णोसद्दहंति णोपत्तियंति णोरोयंति तेणं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाउ कोठयाउ चेइयाउ पडिणिक्कमंति, पडिणिक्कमइत्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपाणयरीए जेणेव पुन्नभद्दए चेइए जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवाग

एतमर्थं श्रद्दधति, प्रतीयन्ति (प्रतीतिविषय कुर्वन्ति) रोचन्ते, एके केचन श्रमणा निर्ग्रन्था एतमर्थं नश्रद्दधति नप्रतीयन्ति नरोचन्ते, तत्र ये केचिच्छ्रमणानिर्ग्रन्था जमाले रनगारस्यैनमर्थं श्रद्दधति प्रतीयन्ति, रोचन्ते, ते जमालि चैवानगार मुपसम्पद्य विहरन्ति, तत्र ये केचिच्छ्रमणा निर्ग्रन्था जमाले रनगारस्यैनमर्थं नश्रद्दधति नप्रतीयन्ति नरोचन्ते, ते जमाले रनगारस्यान्तिकात्कोष्ठकाच्चैत्यात्प्रतिनिष्क्रमन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य पूर्वानुपूर्व्या चरन्तो

समणा णिग्गथा। केतलाएक श्रमण निर्ग्रंथ साधु। एयमठ्ठं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोयति। एह अर्थ सत्यकरी न माने प्रतीत न आणे रुचि आणे नहीं। तत्थण जेते समणाणिग्गथा। तिहां जेते श्रमण निर्ग्रंथ। जमालिस्स अणगारस्स एयमठ्ठ सद्दहति। जमाली साधुनो कह्यो एह अर्थ सत्य करी जाणे। पत्तियति रोयति। प्रतीत आणे रुचि आणे। तेण जमालि चेव अणगार। ते साधु जमाली साधुप्रते। उवसपज्जित्ताण विहरति। अङ्गी कार करीने वचनप्रमाण करीने विचरे। तत्थण जेते समणाणिग्गथा जमालिस्स अणगारस्स। तिहां जेते केई श्रमण निर्ग्रंथ जमालीनामा साधुनो कह्यो। एयमठ्ठं णो सद्दहति णो पत्तियति णो रोयति। एह अर्थ न सरदहे प्रतीत नाणे रुचि नाणे। तेण जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति २ त्ता। तेह जमाली साधुना समीपथकी कोष्टक चैत्यथकी नीकले नीकलीने। पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे। पूर्वानुपूर्वे चालताथका एक गामथकी बीजेगामें जाताथका। जेणेव चंपाणयरी जेणेव पुन्नभद्दए चेइए। जिहां चम्पानगरी जिहां पूर्णभद्र चैत्य। जेणे

च्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तएणं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइं ताओ रोगातंकाओ विप्पमुक्के हट्ठेतुट्ठे जाए अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपाणयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जेणेव स

ग्रामानुग्राम व्यतिक्रमन्तो यत्रैव चम्पानगरी यत्रैव पूर्णभद्रश्चैत्यो यत्रैव श्रमणो भगवान्महावीर स्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य श्रमणंभगवन्त महावीर त्रि कृत्वा आदक्षिणा प्रदक्षिणा वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्कृत्य श्रमण भगवन्त महावीर मुपसम्पद्य विहरन्ति' तदा सजमालिरनगारो न्यदाकदाचित्तस्माद्रोगातङ्का द्विप्रमुक्तो हृष्ट स्तुष्टो जातो ऽरोगो बलिष्टशरीर श्रावस्त्या नगर्यां कोष्टका चैत्यात् प्रतिनिष्क्रमते, प्रतिनिष्क्रम्य पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्राम व्यतिक्रमन् यत्रैव चम्पानगरी यत्रैव पूर्णभद्रश्चैत्यो यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीर स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

व समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता । जिहा श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीछे तिहा आवे तिहा आवीने। समणभगवं महावीरं तिक्खुत्तो। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार। आयाहिण पयाहिण वदंति णमसति वंदित्ता णमसित्ता। जीमणा पासाथी प्रदक्षिणा करो वांदै नमस्कार करै वांदोने नमस्कारकरीने। समणभगव महावीर उवसंपज्जित्ताण विहरति। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते अङ्गीकार करीने वि चरे। तएण से जमाली अणगारे अण्णयाकयाइ। तिवारे ते जमाली साधु एकदा किवारे कै। ताओ रोगातंकाओविप्पमुक्के हट्ठेतुट्ठेजाए। तेह रोग आतङ्क कष्टथकी मूकाणो हर्ष सतोष पाम्यो। अरोए बलियसरीरे। रोगरहित थयो बलिष्ट शरीरथयो। सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खम इ२ त्ता। श्रावस्तीनगरी थकी कोष्टक चैत्यथकी नीकले नीकलीने। पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामंदूइज्जमाणे। पूर्वानुपूर्वे चालतोथको एकगामथको बीजेगामे जातोथको। जेणेव चंपाणयरी जेणेवपुण्णभद्दे चेइए। जिहा चम्पानाम नगरी जिहा पूर्णभद्रनामा चैत्य। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा

बहुवक्तव्य तच्च विशेषावश्यकादवगन्तव्यमिति ॥ छउमत्थावक्कमणेणाति ॥ छद्मस्थाना सतामपक्रमणं गुरुकुलान्निर्गमनं छद्मस्थापक्रमण तेन ॥ आ

मणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगव महावीरं एवं वयासी–जहाणं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कंता णोखलु अहं तहा चेव छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंते, अहंण उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवली अवक्कमणेणं अवक्कंते, तएणं भगवं

श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यादूरसामन्ते स्थित्वा श्रमण भगवन्त महावीरमेवमवादीत्–यथा देवानुप्रियाणा बहवोन्तेवासिन श्रमणानिर्ग्रन्था छद्मस्था भूत्वा छद्मस्थापक्रमणेना पक्रान्ता नखलवह तथाचैव छद्मस्थोभूत्वाम्छद्मस्थापक्रमणेना पक्रान्त., अह मुत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽर्हन् जिन· केवली भूत्वा केवल्यपक्रमणेनापक्रान्त , तदा भगवान् गौतमो जमालि मनगारमेवमवादीत्–नखलु जमाले । केवलिनो ज्ञान वा दर्शन वा

गच्छइ २ त्ता । जिहा श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी तिहां आवे तिहा आवीने । समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिचा । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने वेगला पणि नही ढूकडा पणि नही तिहा रहीने । समणभगव महावीर एववयासी । श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते इमकहे । जहाण देवाणुप्पियाण अतेवासी । जिमण वापर्यलकारे, देवानुप्रिया तुम्हारा घणा शिष्य । समणाणिग्गथ । छउमत्थाभवित्ता । श्रमण निर्ग्रंथ छद्मस्थ थई ने । छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कता णो खलुअहतहाचेव । छद्मस्थ छा गुरुकुल थकी तुम्हारापासथी नीकल्या नही निश्चे हु तिमहीज । छउमत्थे भवित्ता । छद्मस्थ थईने । छउमत्थावक्कमणेण अवक्कते । छद्मस्थ थका कुलवासथकी नीकल्यो । अहण उप्पन्नणाणदसणधरे अरहाजिणे केवली भवित्ता । हु ण वाक्या लकारे, ऊपनो ज्ञानदर्शन तेहनो धरणहार अरिहन्त जिन केवलीथईने । केवली अवक्कमणेण अवक्कते । केवलज्ञान थका गुरुकुलथकी नीकल्योछू । विहार कीधाछे इसीकह्यु । तएण भगवगोयमे जमालि अणगार एववयासी । तिवारे भगवत गौतम जमाली साधुप्रते इम कहे । णोखलुजमाली केवलिस्स

गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—णोखलु जमाली केवलिस्स णाणेवा दंसणेवा सेलंसिवा थंभंसिवा थूभंसिवा आवरिज्जइवा णिवारइज्जइवा, जइण तुम्मं जमाली ! उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवली अवक्कमणेणं अवक्कंते ताण इमाइं दोवागरणाइं वागरेहिं, सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ! सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ? तएणं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एववुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव कलुससमावण्णे जाए यावि होत्था, णोसचाएइ भगवओ गो

शैलेनवा स्तम्भेनवा स्तूपेनवा आव्रियतेवा निवार्यतेवा, यदि त्व जमाले। उत्पन्नज्ञानदर्शनधरोऽर्हन् जिन केवली भूत्वा केवल्यपक्रमणेनापक्रान्त, तर्हि इमे द्वे व्याकरणे व्याकुरु, शाश्वतो लोको जमाले ! अशाश्वतो लोकोजमाले ? शाश्वतो जीवो जमाले ! अशाश्वतोजीवोजमाले ? तदा स जमालिरनगारो भगवता गौतमेनैवमुक्त सन् शङ्कित काङ्क्षितो यावत्कलुषसमापन्नो जात श्चाप्यभवत्, नोसचाययति (नसमर्थो भवतीत्यर्थ) भगवतो

णाणेवा दसणेवा। नही निश्चे जमाली केवलीना ज्ञान अथवा दर्शन ते। सेलंसिवा थभंसिवा थूभंसिवा। पर्वतेंकरी स्थम्भेकरी स्तूभेकरी। आवरिज्जइवा णिवारइज्जइवा। वीडीसो आवरीयें ढाकीये अत्यर्थे वारिये प्रतिरुणिये नही। जइण तुम्म जमाली। जो ण वाक्यालकारे, तुम्हे जमाली। उप्पन्नणाणदसणधरे अरहा जिणे केवलीभवित्ता। ऊपनाछे ज्ञान अथवा दर्शन अरिहन्त जिन केवलीथईने। केवली अवक्कमणेण अवक्कते। केवलज्ञानथका गुरुकुलथकी नीकल्योछे। ताण इमाइ दो वागरणाइ वागरेहि। तो ण वाक्यालकारे, एह दोयप्रश्नो उत्तर कहो। सासए लोए जमाली असासए लोए जमाली। शास्वतो लोकछे हे जमाली अथवा असासतो लोकछे हे जमाली। सासएजीवेजमाली असासएजीवेजमाली। शास्वतो जीवछे हे जमाली अशास्वतो जीवछे हेजमाली। तएण से जमाली अणगारे। तिवारे ते जमाली साधु। भगवया गोयमेण एववुत्तेसमाणे। भगवन्त गौतम इम कह्याथका। सकिते कखिते जाव कलुससमावण्णे जातेयाविहोत्था णोसचाएइ। शङ्कित शङ्कावन्तथयो आकाङ्क्षासहित थयो। यावत् कलुष भावप्रतें सहित जात ए

॥ टीका ॥ वरिज्जइत्ति ॥ उपद्रियते ॥ निवारिज्जइत्ति ॥ नितरां वार्यते प्रतिहन्यतइत्यर्थः ॥ नकयाइनासीत्यादि ॥ तत्र न कथञ्चि न्नासी दनादित्वा

॥ मूल ॥ यमस्स किंचिवि पामोक्ख माइक्खित्तए, तुसिणीए संचिठइ, जमाली! समणे भगवं महावीरे जमालिं अ णगारं एवं वयासी—अत्थिणं जमाली! ममं बहवे अंतेवासी समणाणिग्गथा छउमत्था जेणं पभू एयं वा गरणं वागरित्तए जहाण अहं णोचेवण एतप्पगारं भासं भासित्तए जहाण तुम, सासए लोए जमाली! जणं णकदायि णासि णकदायि णभवइ णकदायि णभविस्सइ, भुविच भवइ भविस्सतिय धुवे णितिए

॥ अनुवाद ॥ गौतमस्य किञ्चिद्विप्रमोक्ष (उत्तर) आख्यातु, तूष्णीकः सन्तिष्ठते, जमाले! इति श्रमणो भगवान्महावीरो जमालिमनगारमेव मवादीत्—सन्ति ज माले! मम बहवोन्तेवासिन श्रमणा निर्ग्रन्था श्छद्मस्था ये प्रभव एतद्व्याकरण व्याकर्तु यथाह, नोचेवैतत्प्रकारा भाषा भाषितु यथात्व, शाश्वतो लोको जमाले! यन्नकदाचिन्ना सीत् नकदाचिन्नभवति नकदाचिन्नभविष्यति, अभूद्भवति भविष्यति, ध्रुवो नियत शाश्वतो ऽक्षयोव्ययो वस्थितो

॥ भाषा ॥ इवो थयो समर्थथयो नही। भगवन्तो गोयमस्स किंचिविप्पमोक्खमाइक्खित्तए। भगवन्त गौतमने काइ विप्रमोच उत्तर कहि न सके तिवारे। तुसिणीए संचिट्ठइ जमालित्ति। मौनकरी रहे हेजमाली इमे आमन्त्रणे। समणेभगव महावीरे जमालि अणगार एववयासी। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी जमाली साधु प्रते इमकहे। अत्थिण जमाली मम बहवे अंतेवासी। छे ण वाक्यालंकारे, हे जमाली! माहरा घणाशिष्य। समणा णिग्गथा छउमत्था। श्रमण निर्ग्रंथ छद्मस्थ। जेणं पभूएय वागरण वागरित्तए। जेह ण वाक्यालंकारे, समर्थ एह प्रश्नना उत्तर देवाने। जहाणं अह णो चेवण एतप्पगार भासं भासित्तए। जिम ण वाक्यालंकारे, हुं कहुंछू तिम पणि नही तिमै ण वाक्यालंकारे, इणि प्रकारे भाषा बोलिवाने वचन कहिवाने। जहाणतुमसासए लोएजमाली। जिम तू एतावता अम्हे जिम कहुंछू प्रश्नना उत्तर तिम प्रश्नोत्तर कहिवाने समर्थछे पणि जिम तू छद्मस्थपणो कहेछे, हुं केवलीछू एह वो वचन कहिवाने श्रमण समर्थ नही पणि शाश्वतोछे लोक हे जमाली। जए णकदाइणासि णकदाइणभवइ णकदाइण भविस्सइ। जेह भणो ण ना

त्नकदाचि न्नभवति सदैवन्नावात्, न कदाचि न्नन्नविष्यति अपर्यवसितत्वात्, किंतर्हि ॥ नुविचेत्यादि ॥ ततश्चायं त्रिकालन्नावित्वेनाचलत्वाद् ध्रु वो मेर्वादिवत्, ध्रुवत्वादेव नियतो नियताकारो नियतत्वादेव शाश्वत प्रतिक्षणमप्यसत्वस्या भावात्, शाश्वतत्वादेवा क्षयो निर्विनाशो ऽव्ययत्वा देवाव्यय प्रदेशापेक्षयाऽवस्थितो द्रव्यापेक्षया नित्य स्तदुन्नयापेक्षया एकार्था वैतेशब्दा ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना ॥ असक्षावुक्षावणाहिंति ॥ अ

जसप्पिणीन्नवित्ता उस्सप्पिणीन्नवइ सासए अरकए अव्वए अवहिए णिच्चे, असासए लोए जमाली ! जं नसप्पिणीन्नवित्ता उस्सप्पिणीन्नवइ सासए अरकए अव्वए अवठिए णिच्चे, असासए जीवे उस्सप्पिणीन्नवित्ता नसप्पिणीन्नवइ, सासए जीवे जमाली! जं णकदायि णासि जाव णिच्चे, असासए जीवे जमाली ! जंणं णेरइए नवित्ता तिरिक्कजोणिए न्नवइ तिरिक्कजोणिए न्नवित्ता मणुस्सेन्नवइ मणुस्से न्नवि

नित्य ' अशाश्वतो लोको जमाले । यदवसर्पिणी नूत्वोत्सर्पिणी भवति, उत्सर्पिणी नूत्वाचावसर्पिणी न्नवति, १ शाश्वतो जीवो जमाले । यन्न कदाचिन्नासी द्यावन्नित्य , अशाश्वतोजीवो जमाले । यन्नैरयिको नूत्वा तिर्यग्योनिकोन्नवति, तिर्यग्योनिको भूत्वा मनुष्योन्नवति, मनुष्योन्नू

कालकारे, नही कदेई न हुतो अनादि पणाथको, नही किवारे नके सदैवभाव थको नही कदाचित् न हुस्यें अपर्यवसान पणाथको । भुविच भवइ अ विस्सइय । हयो वपुनके अने हुस्यें तेह कारणथी एह त्रिकाल भावीपणें करी अचलपणाथको । धुवेणिइए सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे असासए लोए जमाली । भ्रव नित्य शास्वतोके अक्षयके अव्ययके अवस्थितके नित्यके वली अशास्वतोके लोक हे जमाली । जओसप्पिणीभवित्ता उसप्पिणी भवइ । जेहभणी अवसर्प्पिणी थइने उत्सर्प्पिणी हुवे । उसप्पिणीभवित्ता ओसप्पिणी भवइ । उत्सर्प्पिणी थइने अवसर्प्पिणी हुवे । सासए जीवे जमाली । तथा शास्वतो जीवछे हे जमाली ।। जण कदायिणासि जाव णिच्चे । जेहभणी नही कदेई नहुतो इत्यादि पूर्ववत् यावत् नित्यछे वली । असासएजीवे जमा ली । अशास्वतो जीवछे हे जमाली । जंण णेरइए भवित्ता । जेहभणी नारकीथईने । तिरिक्खजोणिए भवइ तिरिक्ख जोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ मणु स्से भवित्ता । तिर्यचयोनिक हुवे तिर्यचयोनिक थइने मनुष्य हुवे मनुष्यथईने । देवेभवइ । देव हुवे । तएण से जमाली अणगारे । तिवारे तेह जमाली

॥ टीका ॥

सद्भावाना वितथार्थाना मुद्भावना उत्प्रेक्षणानि असद्भावोद्भावना स्ताभिः ॥ मिच्छत्ताहिनिवेसेहियत्ति ॥ मिथ्यात्वा न्मिथ्यादर्शनोदया द्योऽभिनिवेशा आग्रहा स्तै तथा तैं ॥ वुग्गाहेमाणेत्ति ॥ व्युद्ग्राहयन् विरुद्धग्रहवन्त कुर्वन्नित्यर्थं ॥ वुप्पायेमाणेत्ति ॥ व्युत्पादयन् दुर्विदग्धीकुर्वन्नित्यर्थः ॥

॥ मूल ॥

त्ता देवे भवइ, तएणं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमठं णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोयइ एयमठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चंपि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आताए अवक्कमइ, दोच्चंपि आताए अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहिय अप्पाणंच परंच तदुभयंच वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वा

॥ अनुवाद ॥

त्वाच्च देवोभवति, तदा स जमालिरनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यैवमाचक्षतो यावदेव प्ररूपयत एनमर्थं नश्रद्दधाति नप्रत्येति नरोचते एनमर्थमश्रद्दधन् अप्रत्ययन्नरोचयन् द्विवारमपि श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिका दात्मना ऽपक्रामति, द्विवारमप्यात्मना ऽपक्रम्य बह्वीभि रसद्भावोद्भावनाभि र्मिथ्यात्वाभिनिवेशै श्चात्मानञ्च परञ्च तदुभयञ्च व्युद्ग्राहयन् व्युत्पादयन् बहूनि वर्षाणि समान्यपर्याय पालयति,

॥ भाषा ॥

साधु। समणस्सभगवओ महावीरस्स। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने। एवमाइक्खमाणस्स। इम सामान्यथकी कहताने। जाव एव परूवेमाणस्स। यावत् इम विशेषथी प्ररूपता थकाने। एयमठ णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोयइ। एह अर्थ सत्यकरी न जाणें प्रतीत नाणें रुचि नाणें। एयमठअसद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चंपि। एह अर्थप्रतें असद्दहतो थको अप्रतीति आणतोथको अरोचतोथको बोजीवार पणि। समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आताए अवक्कमइ। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी आत्माने लेइने नीकले। दोच्चंपि आताए अवक्कमित्ता। बीजीवार पणि पोतेज नीकलीने। बहूहि असब्भावणाहि। घणां विपरीतअर्थनी उद्भावनानो प्रगट करवो तिणेंकरीने। मिच्छत्ताभिणिवेसेहिय। मिथ्यादर्शनना उदयथकी कदाग्रह तिणेंकरी। अप्पाणंच परच तदुभयच वुग्गाहेमाणे। आत्माने वली परने ते बेजने विरुद्ध ग्रहवन्त करतोथको। वुप्पाएमाणे

साइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणइत्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ २ त्ता तीसं भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ, छेदेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतएकप्पे तेरस सागरोवमाइं ठिइएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने, तएणं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवंवयासी—एवंखलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली

पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयात्मानं जोषयति, जोषयित्वा त्रिंशद्भक्तान्यनशनानि छिनत्ति, छित्वा तत्स्थानमनालोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे कालं कृत्वा लान्तके कल्पे त्रयोदशसागरोपमस्थितिकेषु देवकिल्विषिकेषु देवेषु देवकिल्विषिकतयोत्पन्नः, तदा भगवान्गौतमो जमालिमनगारं कालगतं ज्ञात्वा यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा न

वरस सामाइ। ड्राधेडथ करतांथकां घणा वरस लगे। सामण्णपरियागं पाउणइ २ त्ता। घणा वरसलगे दीक्षापर्याय पाले पालीने। अद्धमासियाएसंलेहणाए अत्ताणं झूसेइ २ त्ता। अर्द्धमासनी संलेखणाइं करी आत्माने दुर्बलकरे आत्माने लग करे करीने। तीसं भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ २ त्ता। त्रीस भात अनशनेकरी छेदे, त्रीसभात अनशनेकरी छेदीने। तस्सठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालंकिच्चा। तेह स्थानकने आलोयाविना पाप पडिकम्या विना काल समयनेविषे कालकरीने। लंतएकप्पे तेरससागरोवमाइं ठिइए किब्बिसिएसु देवेसु। लान्तकनामा छट्ठा देवलोकनेविषे तेर सागरोपमनी स्थिति करता पापवंत किल्विषीदेवनेविषे। देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने। देवकिल्विषीपणे उपनो। तएणं भगवंगोयमे। तिवारे भगवन्त गौतम। जमालि अणगारं कालगयं जाणित्ता। जमालीअणगार प्रते कालगत कहिने मरणधर्म पाम्यो जाणीने। जेणेवसमणे भगवंमहावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी तिहां आवे तिहां आवीने। समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसि

णामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिंगए कहिंउववन्ने गोयमादि ! समणेभगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–एवखलु गोयमा ! मम अंतेवासी कुसिस्से जमालीणाम अणगारे सेणं तदा ममं एवमाइक्खमा णस्स ४ एयमठं णोसद्दहइ ३ एयमठं असद्दहमाणे दोच्चंपि ममं अंतियाउ आताए अवक्कमइ २ त्ता बहूहिं असम्भावुब्भावणाहिं तंचेव जाव देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने, कइविहाणं भंते ! देवकिब्बिसिया प० ? गो

मस्कृत्यैवमवादीत्–एव खलु देवानुप्रियाणामन्तेवासी कुशिष्यो जमालिनामानगार कालमासे कालकृत्वा क्वगत क्वोत्पन्न. ? गौतमादि ! श्र मणो भगवान्महावीरो भगवन्त गौतममेवमवादीत्–एव खलु गौतम ! ममान्तेवासी कुशिष्यो जमालिनामानगार स्स तदा मे एवमाचक्षतो ४ । एनमर्थं नो श्रद्दधय, एनमर्थमश्रद्दधन् द्विवारमपि ममान्तिका दात्मना पक्रामति, अपक्रम्य बह्वीभि रसद्भावोद्भावनाभिस्तच्चैव याव द्देव

त्ता एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने इमकहे । एवखलुदेवाणुप्पियाण अंतेवासी कुसिस्से । जमाली इम निश्चे हे देवानुप्रिय । तुम्हारो शिष्य पणि कुत्सित शिष्य । जमालीणाम अणगारे कालमासे कालकिच्चा कहिंगए कहिं उववन्ने गोयमादि । जमाली नामे अणगार कालसमयनेविषे काल करीने किसीगतें गयो किसेस्थानके ऊपनो गौतमादि इत्यादि संबोधने । समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी भगवन्त गौतम प्रतें इमकहे । एवखलु गोयमा ममअंतेवासी कुसिस्से । इम निश्चे हे गौतम । माहरो समीप वर्त्ती कुशिष्य । जमालीणाम अणगारे सेण तदामम । जमालीनामे साधु तेह ण वाक्यालंकारे, तिवारे मुझने । एवमाइक्खमाणस्स ४ । इम चलमाणे च लिए इत्यादि कहताने । एयमट्ठं णो सद्दह ३ एयमट्ठं असद्दहमाणे । एह अर्थ सत्यकरी न जाणे एह अर्थ असद्दहतोथको अप्रीति करतोथको रुचि अण करतो थको । दोच्चपि मम अंतियाओ आताए अवक्कमइ २ त्ता । बीजीवार पणि माहरा समीपथकी पोतेज नीकले बीजीवार पणि पोतेज नीकली ने । बहूहिं असभावुब्भावणाहिं । घणी विपरीत उद्भावना विपरीतप्ररूपणा प्रगटकरवी । तंचेव जाव देव किब्बिसियत्ताए उववन्ने । तिमहीज या

॥ मूल ॥

यमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया प०, तंजहा—तिपलिउवमठिईया तिसागरोवमठिईया, तेरससागरोवमठिईया, कहिस्स भंते ! तिपलिउवमठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति ? गो० ! उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थणं तिपलिउवमठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति, कहिणं भंते ! तिसागरोवमठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिंसोहम्मीसाणाण कप्पाणं हिट्ठिं सणंकुमारमाहिंदेसु

॥ अनुवाद ॥

किल्बिषिकतयोत्पन्न । कतिविधा भ० ! देवकिल्बिषिका प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–त्रिपल्योपमस्थितिका स्त्रिसागरोपमस्थितिका स्त्रयोदशसागरोपमस्थितिका, कुत्र भदन्त ! त्रिपल्योपमस्थितिका देवकिल्बिषिका देवा. परिवसन्ति ? गौतम ! उपरि ज्योतिष्का णा मधः सौधर्मेशानयो अत्र त्रिपल्योपमस्थितिका देवकिल्बिषिका परिवसन्ति, क्व भदन्त ! त्रिसागरोपमस्थितिका देवकिल्बिषिका परिवसन्ति ? गौतम ! उपरि सौधर्मेशानयो कल्पयो रधः सनत्कुमारमाहेन्द्रयो कल्पयो अत्र त्रिसागरोपमस्थितिका देवकिल्बि

॥ भाषा ॥

वत् देवकिल्बिषीपणे ऊपने एतलासगे सर्वकहवो वलीगौतम पूछेछे—कइविहेणभंते देवकिब्बिसिया प० । केतलेभेदे हेभगवन् । देवकिल्बिषी कह्या छ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा देव किब्बिसिया पं० तं० । हेगौतम । तीनप्रकारे देवकिल्बिषी कह्या ते कहेछे—तिपलिओवमठिईया तिसागरोवमठिईया । तीन पल्योपमनो स्थितिना धणी तीनसागरोपमनी स्थितिना धणी । तेरससागरोवमठिईया । तेरै सागरोपमनी स्थितिना धणी । वलीगौतम पूछेछे—कहिणं भंते तिपलिओवमठिईया । किहां हेभगवन् । तीन पल्योपमनी स्थितिना धणी । देवकिब्बिसिया परिवसति । देवकिल्बिषी वसेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा उप्पिं जोइसियाणं । हेगौतम । ऊपर ज्योतिषीओने । हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु । नीचे सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे । एत्थण तिपलिओवमठिईया । इहां तीन पल्योपमनी स्थितिना धणी । देवकिब्बिसिया परिवसति । देवकिल्बिषी वसेछे । कहिणभंते तिसागरोवमठिईया । किहां हेभगवन् । तीन सागरोपमनी स्थितिना धणी । देवकिब्बिसिया परिवसति । देवकिल्बिषी वसेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा उप्पिंसोहम्मीसाणाण

॥ टीका ॥

सर्वदिग्गामिनीप्रसिद्धिर्यश स्तत्प्रतिषेधा दयश अवर्ण स्त्वप्रसिद्धिमात्र केसुकमादाणेसुत्ति ॥ केषु कर्महेतुषु सत्सु इत्यर्थ ॥ अजसकारगेत्यादि ॥

॥ मूल ॥

कहिसं भंते ! तेरससागरोवमठिइया देव कप्पेसु एत्थणं तिसागरोवमठिईया देवकिब्भिसिया परिवसंति, तेरससागरोवम किब्भिसिया परिवसंति ? गोयमा ! उप्पि बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठि लंतए कप्पे एत्थणं तेरससागरोवम ठिईया देवकिब्भिसिया परिवसंति । देवकिब्भिसियाण भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्भिसियत्ताए उववज्ज तारो भवति ? गोयमा ! जेइमे आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया स

॥ अनुवाद ॥

उपरि ब्रह्मलोकस्य कल्पस्य अध त्रयोदशसागरोपमस्थितिका देवकिल्विषिका परिवसन्ति ? गौतम ! षिका परिवसन्ति' कुत्र भदन्त । त्रयोदशसागरोपमस्थितिका देवकिल्विषिका परिवसन्ति, देवकिल्विषिकाना (किल्विषिकाना देवाना मध्ये इत्यर्थ) स्तात्लान्तककल्पे अत्र त्रयोदशसागरोपमस्थितिका देवकिल्विषिका परिवसन्ति भदन्त । केषु कर्मादानेषु (कर्महेतुषु सत्सु इत्यर्थ.) देवकिल्विषिकतया उपपत्तारो भवन्ति ? (जीवा इतिगम्यम्) गौतम । यइमे आचार्य

॥ भाषा ॥

कप्पाण । हेगौतम । ऊपर सौधर्म ईशान देवलोकने। हिट्ठिसणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु । हेठे सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोकने विषे । एत्थण तिसागरोव म ठिईया देवकिब्भिसिया परिवसंति । इहा ण वाक्यालकारे, तीनसागरोपम स्थितिना धणी देवकिल्विषी वसेछे । कहिणभंते तेरससागरोवमठिईया देवकिब्भिसिया परिवसति । किहा हेभगवन् ! तेरे सागरोपमनी स्थितिना धणी देवकिल्विषी वसेछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा उप्पि बंभलोगस्स कप्प स्स हिट्ठिलंतए कप्पे । हेगौतम । ऊपर ब्रह्मनाम पञ्चमा देवलोकने नीचे लान्तकनामा छठा देवलोकने । एत्थण तेरस सागरोवमठिईया देवकिब्भिसि या परिवसति । इहा ण वाक्यालकारे, तेरे सागरोपमनी स्थितिना धणी देवकिल्विषी वसेछे । वलो गौतम पूछेछे— देवकिब्भिसियाणभंते केसुकम्मादा णेसु । देवकिल्विषी हेभगवन् ! किसे कर्मने करवेकरी । देवकिब्भिसियत्ताए उववत्तारो भवति । देवकिल्विषीपणे ऊपजतो हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । जेइमे आयरिय पडिणीया । हेगौतम ! जे एह आचार्यना प्रत्यनीक निन्दनाक । उवज्झायपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया सघपडिणीया । ज

मकीर्त्तिं पुनरेकदिग्गामिन्यप्रसिद्धिरिति ॥ अरसाहारेत्यादि ॥ इहचा रसाहार इत्याद्यपेक्षया अरसजीवीत्यादि नपुनरुक्तं शीलादिप्रत्ययार्थेन

ठिईएसुवा। देवकिव्विसियाणं भंते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति? गोयमा! जाव चत्तारि पंचणेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभवग्गहणाइं संसारंअणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति वुज्झंति जाव अंतंकरेंति, अत्थेगइया अणाईयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति, जमालीणं भंते! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे

तद्यथा–त्रिपल्योपमस्थितिकेषुवा त्रिसागरोपमस्थितिकेषुवा त्रयोदशसागरोपमस्थितिकेषुवा। देवकिल्विषिका भदन्त। तेभ्यो देवलोकेभ्य आयु क्षयेण स्थितिक्षयेण भवक्षयेण अनन्तर च्यवन्त च्युत्वा क्वगच्छन्ति कुत्रोपपद्यते? गौतम। यावच्चत्वारि पञ्च नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यदेवभवग्रहणानि संसार मनुपर्यट्य तत पश्चात् सिध्यन्ति बुध्यन्ति यावदन्त कुर्वन्ति, सन्त्येके केचन अनादिकमनवदग्रम् दीर्घो मद्धा चातुरन्त संसारकान्तार मनुपर्यटन्ति, जमालि भदन्त। अनगारो ऽरसाहारो विरसाहारो ऽन्ताहार प्रान्ताहारो रूक्षाहार स्तुच्छाहारो ऽरसजीवी

सुवा। अथवा तेरे सागरोपमनी स्थितिना धणी तेहनेविषे ऊपजे वलीगौतम पूछेछे—देवकिल्विसियाण भंते ताओ देवलोगाओ आउक्खएण। भवक्खएण ठि'क्खएण। देवकिल्विषी हेभगवन्। तेह देवलोकथकी आऊखाने क्षयेकरी भवने क्षयेकरी स्थितिने क्षयेकरी। अणंतरचय चइत्ता कहिंगच्छइ कहिं उववज्जइ। अन्तररहित चवे चवीने किसीगतें जाय किसे स्थानके उपजे इतिप्रश्न उत्तर। जाव चत्तारि पंचणेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देव भवग्गहणाइ संसार अणुपरियट्टित्ता। हेगौतम। यावत् चार पांच नारकी तिर्यंचयोनिक मनुष्य देव भवग्रहणकरी संसारमें परिभ्रमण करे। तओपच्छा सिज्झंति वुज्झंति जाव अंतकरेंति। तिवारपछे सीझे बूझे यावत् सर्वदुःखनो अन्तकरे। अत्थेगइया अणाईय अणवदग्ग दीहमद्ध। केतलाएक जीव आदिरहित तिम अन्तरहित दीर्घकालनो। चाउरंतससारकंतारं अणु परियट्टंति। चार गतिरूप संसाररूप अटवीमांविषे घणू परिभ्रमणकरे। जमाली

ठिईएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवत्ताए उववन्ने ? गोयमा ! जमालीणं अणगारे आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवन्नकारए जाव वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणइत्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ, छेदेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे जाव उववन्ने। जमालीणं भंते! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जाहिति ? गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणियमणुस्सदेवभव

तयोत्पन्न ? गौतम । जमालिरनगार आचार्यप्रत्यनीक उपाध्यायप्रत्यनीक आचार्योपाध्यायानामयशस्कारको ऽवर्णकारको याव द्व्युत्पादय न्ब हूनि वर्षाणि सामान्यपर्याय पालयति, पालयित्वार्द्धमासिक्या सलेखनया त्रिंशद्भक्तान्यनशनानि छिनत्ति च्छेदयित्वा तस्थानमनालोचितप्रतिक्रान्त कालमासे काल कृत्वा लान्तके कल्पे यावदुत्पन्न.। जमालि भदन्त । देव स्तस्मा द्देवलोकादायु क्षयेण यावत्कुत्रोत्पत्स्यते ? गौतम ।

उत्तर। गोयमा जमालीण अणगारे। हेगौतम। जमाली अणगार। आयरिय पडिणीए उवज्झाय पडिणीए। आचार्यनां प्रत्यनीक निन्दक उपाध्यायनो प्रत्यनीक निन्दक। आयरिय उवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए। आचार्य उपाध्यायना अयशनो कारक अछता दूषणनो करणहार। जाव वुप्पाएमाणे। यावत् दुर्विदग्ध करतोथको। बहूइ वासाइ सामण परियांग पाउणइ २ त्ता। घणावरस लगे दीचापर्याय पाले पालीने। अद्धमासियाए सलेहणाए। अर्द्धमासनी सलेखणाये। तीस भत्ताइ अणसणाइ छेदेइ २ त्ता।। चौसभात अणसणेकरी छेदे चौसभात अणसणेकरी छेदीने। तस्सट्ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते। तेह स्थानकने विना आलोया विना पडिकम्या। कालमासे कालकिच्चा लतए कप्पे जाव उववन्ने। कालसमे कालकरीने लान्तकनामा छट्ठा देवलोकने विषे यावत् किल्बिषीदेवपणे ऊपनो। जमालीण भते देवेताओ देवलोगाओ आउक्खएण। जमाली हेभगवन्। देव तेह देवलोकथको आउखाने चयेकरी। जाव कहि उववज्जहिइ। यावत् किसे स्थानके ऊपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चत्तारि पचतिरिक्खजोणिय

तीमाविति ? उच्यते-अवश्यंभाविभावानां महानुभावैरपि प्रायो लङ्घयितु मशक्यत्वा दित्यमेववा ; गुणविशेषदर्शिनो वा कुलत्वादि भगवन्तोऽर्हन्तो न निष्प्रयोजन क्रियासु प्रवर्त्तन्ते ॥ इति नवमशते त्रयस्त्रिंशत्तमः ॥ ९ ॥ ३३ ॥ अनन्तरोद्देशके गुरुप्रत्यनीकतया स्वगुणव्याघात उक्त त्रयस्त्रिंशत्तमेतु पुरुषव्याघातेन तदन्यजीवव्याघात उच्यत इत्येवं सम्बद्धस्यास्येद मादिसूत्र ॥ तेणमित्यादि ॥ नोपुरिसहणइत्ति ॥ पु

ग्गहणाई संसारं अणुपरियहित्ता तओपच्छा सिज्झिहिति जाव अंतंकाहिति सेव भंते भंतेत्ति ॥ जमाली सम्मत्तो ॥ नवमसयस्स तेत्तीसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवंवयासी—पुरिसेणं भंते ! पुरिसं हणमाणे किंपुरिसं हणइ णोपुरिसं हणइ ? गोयमा !

चत्वारि पञ्च तिर्यग्योनिकमनुष्यदेवभवग्रहणानि संसारमनुपर्यट्य ततः पश्चात्सेत्स्यति यावदन्तं करिष्यति, तदेव भदन्त भदन्त ! ॥ इति जमालिः समाप्तः ॥ इति नवमशते त्रयस्त्रिंशत्तमः ॥ ९ ॥ ३३ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृहं यावदेवमवादीत्—पुरुषो

मनुष्य देव भवग्रहणाई संसार परियहित्ता तओपच्छा सिज्झिहिइ जाव अंतकाहिइ । हे गौतम ! चार पांच तिर्यग्योनिक मनुष्य देव भवग्रहणकरी संसारप्रते परिभ्रमण करीने तियारपछो सीझस्ये यावत् सर्वदुःखनो अन्तकरस्ये, तिवे भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीये सर्वज्ञ पणावकी एह जमालीना ह त्तान्तप्रते जाणतायका दीक्षा किमदीधी इम कोई एक पूछे तेहने इम कहिये अवश्य भावी भावने मोटापुरुष पणि प्राये लघवा असमर्थछे अथवा काइ क गुण देखीने तथा लाभदेखीने दीक्षादीधी श्रीभगवन्तनिष्प्रयोजन क्रियानेविषे प्रवर्त्ते नही । सेव भंतेभंतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सत्यछे सत्यवानजी । जमालीसम्मत्तो । एतले जमालीनो अधिकार संपूर्णथयो । नवमसयस्स तेत्तीसमो उद्देसो सम्मत्तो । ए नवमा शतकनो तेत्रीसमो उद्देशो पूरोथयो ॥ ९ ॥ ३३ ॥ पाछिले उद्देशे गुरु प्रत्यनीकपणे करी पोताना गुण व्याघातना करणहार कह्या हवे पुरुष व्याघातेंकरी अन्यजीव व्याघात कहेछे—तेण कालेण तेण समएण रायगिहेणयरे जाव एववयासी । तेकालनेविषे ते समयनेविषे राजगृह नगरनेविषे यावत् इम कहे ।

॥ टीका ॥

तद्व्यतिरिक्त जीवान्तर हन्ति ॥ अणेगेजीवाहणइत्ति ॥ अनेकान् जीवान् यूकाशतपदिकाकृमिगण्डोलकादीन् तदाश्रितान् तच्छरीरावष्टब्धतदुधि रूपव्यतिरिक्त जीवान्तर हन्ति, अथवा; स्वकायस्याकुञ्चनप्रसारणादिनेति "छणातित्ति „ क्वचित्पाठ स्तत्रापि नगक्षणं क्षणघातो हिंसार्थत्वात्, यान्युल्कादय रक्षाविताडीय हन्ति, अथवा; स्वकायस्याकुञ्चनप्रसारणादिनेति कश्चिदेकमपि जीवान्तर हन्तीत्यपि द्रष्टव्य वक्ष्यमाणसूत्रत्रयान्यथानुपप त्तेः सूत्र तत्र पुरुष स तथाविधसामग्रीवशात् स्वाश्रितमेव हन्ति नान्य कश्चिदेकमपि जीवान्तर हन्तीत्यपि

॥ सूत्र ॥

पुरिसपि हणइ णोपुरिसंपि हणइ । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ पुरिसपि हणइ णोपुरिसंपि हणइ ? गो यमा ! तस्सणं एव भवइ एवखलु अहं एगंपुरिस हणामि, सेण एगंपुरिसं हणमाणे अणेगा जीवा हणंति

॥ पाठार्थ ॥

भ० । पुरुष स किं पुरुष हन्ति नोपुरुष हन्ति ? गौतम । पुरुषमपि हन्ति नोपुरुषमपि हन्ति, अथकेनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते पुरुषमपि हन्ति नोपुरुषमपि हन्ति ? गौतम । तस्यैव भवति एव खल्वह मेक पुरुष हन्मि, स एक पुरुष घ्नतेसा स्त्रीप्राण् हन्ति तत्तेनार्थेन याव

॥ भाषा ॥

परिनेकमते पुरिसहणमाणे किंपुरिसहणइ णोपुरिसहणइ । पुरुष हेभगवन् । पुरुषप्रतै हणतायको स्यू पुरुषप्रतै हणै अथवा पुरुषथको अनेराजीव प्रते हणै इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुरिसपिहणइ णो पुरिसपिहणइ । हेगौतम । पुरुषने पणि हणै तथा पुरुषथकी अनेरा जीवने पणि हणै । सेकेणट्ठेणं ते एयमुचइ । ते स्येअर्थे हेभगवन् इमकहियै । पुरिसपिहणइ णो पुरिसपिहणइ । पुरुषने पणि हणै पुरुषथकी अनेराजीव प्रते पणि हणै इतिप्रश्न उ त्तर । गोयमा तस्सण एव भवइ एव खलु अहं एगपुरिसहणामि सेण एगपुरिस हणमाणे अणेगाजीवाहणंति सेतेणट्ठेणं जाव णो पुरिसंपिहणइ । हेगौत म तेहना मनमाहि अभिप्राय एहवोहुवै इम निश्चै हु एक पुरुष प्रतै हणू तेह एक पुरुष हणतोथको अनेकजीव जू कृमिगण्डोलादिक तेहना प्राण हणै ॥ अथवा तेहना शरीरपडतो घणा जीवहणै अथवा पोतानाशरीरने आकुञ्चन प्रसारणादिके करी हणै किहा एक छणइ इसो पाठछे तिहा पणि एहीज अर्थ छणधातुना हिंसार्थपणाथको आकुञ्चणादिको एक ते पुरुषप्रतै हणतोथको तथा सामग्रीना वशथको कारण ते तिहप्रतेज हणै कोइएक एक पणि बीजाजीव हणै इत्यादिक पणि देखवो आगे तीनभाङ्गा कहस्यै तेहनो उपपत्ति अन्यथाम हुवे तेनाटे तेणं अर्थे हेगौतम ।

सेतेणठेणं जाव णोपुरिसंपि हणइ । पुरिसेणं भंते ! आसं हणमाणे किं आसं हणइ णोआसे हणइ? गोयमा ! आसंपि हणइ णोआसेवि हणइ, सेकेणठेण अठो तहेव, एवं हत्थि सीहं वग्घं जाव चिल्ललगं । पुरिसेणं भंते ! अन्नतरं तसपाणं हणमाणे किं अन्नतर तसपाणं हणइ णोअन्नतरे तसे पाणे हणइ? गोयमा ! अन्नतरंपि तसपाणं हणइ णोअन्नतरेवि तसपाणे हणइ, सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अन्नतरंपि

नोपुरुषमपि हन्ति । पुरुषो भदन्त ! अश्वं घ्नन्नश्वं हन्ति नोअश्वं हन्ति? गौतम ! अश्वमपि हन्ति नोअश्वमपि हन्ति' अथकेनार्थेन? अर्थस्तथैव । एवं हस्तिनं सिंहं व्याघ्रं यावत् चिल्ललकं । पुरुषो भदन्त ! अन्यतरं त्रसं प्राणं घ्नन्नन्यतरं त्रसं प्राणं हन्ति नोअन्यतरं त्रसं प्राणं हन्ति? गौतम ! अन्यतरं त्रसं प्राणं हन्ति नोअन्यतरमपि त्रसं प्राणं हन्ति, अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-अन्यतरमपि त्रस प्रा

इम कह्यु पनपनें पणि हणें अनें पनपथकी अनेराजीव प्रतें पणि हणें । पुरिसेणभते आस हणमाणे । पुरुष हेभगवन् । घोडाप्रतें हणतोथको । किंआस हणइ णोआसेहणइ । स्यूं घोडाप्रतें हणें अथवा घोडाथकी अनेराजीवने हणें इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आसंपिहणइ णोआसेविहणइ । हेगौतम । घोडाप्रतें पणि हणें अनें घोडाथकी अनेराजीव प्रते पणि हणें । सेकेणट्ठेण अठ्ठोतहेव । ते स्ये अर्थे इम कह्यु इत्यादिक अर्थ तिमहीज पूठिलीपरें कहवो । एव हत्थि सीहं वग्घं जाव चिल्ललग । इम हाथीप्रतें सिंहप्रते बाघप्रतें इम यावत् चिल्ललगप्रतें अटवी जीव विशेष । पुरिसेणभते अन्नतर तसपाण हणमाणे । पुरुष हेभगवन् । अनेरा त्रसप्राणी प्रतें हणतोथको । कि अन्नतरेतपाणेहणइ णो अन्नतरे तसेपाणेहणइ । स्यूं अनेरा त्रसप्राणीनें हणें अथवा तेहथी अनेरा वली त्रसप्राणी प्रतें हणे नही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अन्नतरेवितसेपाणेहणइ णो अन्नतरेवि तसेपाणेहणइ । हेगौतम । अनेरा पणि त्रसप्राणीनें हणें वली तेहथकी अनेराने पणि त्रसप्राणी प्रतें हणें । सेकेणट्ठेणभते एववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । अन्नतरंपितसपाणंहणइ णो अन्नतरे वि तसेपाणे हणइ । अनेरा पणि त्रसप्राणीने हणें अनें तेहथकी अनेराने पणि त्रसप्राणीनें हणें । गोयमा तस्सण एवंभवइ एव खलुअहं ।

॥ टीका ॥ ६

जीवान् ऋषिं च अनन्तान् ॥ आणतजीवाणपाइति ॥ ऋषिं ॥ इसिति ॥ यते इत्यादय एकगमा. सदृशाभिलापा. ॥ एतेसव्वेएक्कगमा ॥ तेरिति ॥
इति, यत स्तद्वाते अनन्तानां घातो जवति, मृतस्य तस्य विरतेरजावेना नन्तजीवघातकत्वजावा दथवा, ऋषि जीवन् बहून् प्राणिनः प्रतिबोध
यति तेच प्रतिबुद्धाः क्रमेण मोक्षमासादयन्ति मुक्ताश्चानन्तानामपि संसारिणामघातका जवन्ति तद्वधेचैतत्सर्वं नजवत्यत स्तद्वधे ऽनन्तजीवघपोऽज

॥ मूल ॥

तस पाणं हणइ, णोअन्नतरेवि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्सण एव जवइ एवं खलु अहं एगं अन्न
तर तसं पाणं हणामि सेणं एगं अन्नतरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ सेतेणठेणं गोयमा !
तच्चेव, एए सव्वेवि एक्कगमा । पुरिसेणं जंते ! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ णोइसि हणइ ? गोयमा !
इसिंपि हणइ णोइसिंपि हणइ, सेकेणठेणं जंते ! एवं वुच्चइ जाव णोइसिंपि हणइ ? गोयमा ! तस्सणं

॥ अनुवाद ॥

स एकमन्यतरं त्रसं प्राणं हन्ति, स एकमन्यतर त्रस प्राणं हन्ति नोअन्यतरमपि त्रस प्राणं हन्ति ? गौतम ! तस्यैव भवति एव खलु अहं एकमन्यतर त्रस प्राणं हन्मि, स एकमन्यतर त्रस प्राणं
प्रघ्ननेकान् जीवान् हन्ति तत्तेनार्थेन गौतम ! तच्चैव, एते सर्वे प्येकगमाः । पुरुषो जदन्त ! ऋषिं च न्निक ऋषिं हन्ति नोऋषिं हन्ति ? गौत
म ! ऋषिमपि हन्ति नोऋषिमपि हन्ति, अथ केनार्थेन जदन्त ! एवमुच्यते याव नोऋषिमपि हन्ति गौतम ! तस्यैवं जवति-एवं खलवहमे

॥ भाषा ॥

हेगौतम ! तेहनो अभिप्राय इमहुवे इमनिश्चे हु । एग अन्नतरतसपाण हणामि । एक अनेरा त्रसप्राणी प्रते हणु । सेणएगं अन्नतर तसपाण हणमा
णे । तेह एक अनेरा त्रसप्राणी प्रते हणतोथको । अणेगेजीवे हणइ । अनेकजीव प्रते हणे । सेतेणठेण गोयमा तच्चेव । ते तेणे अर्थे हेगौतम ! तिमहीज
निश्चे । एएसव्वेविएक्कगमा । ए सगलाने एकसरीखो आलावो कहवो । पुरिसेण भंते इसिंहणमाणे किंइसिंहणइ । पुरुष हेभगवन् ! साधुने हणतोथको
स्युं साधुप्रते हणे अथवा । णो इसिंहणइ । साधुथकी अनेराजीव ते नो ऋषि कहिये तेह हणे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इसिंपिहणइ णोइसिंपिहणइ ।
हेगौतम ऋषिने पणि हणे अने ऋषिथी अनेराने पणि हणे । सेकेणठेणभंते एववुच्चइ । ते स्येंअर्थे हेभगवन् इमकहिये । जाव णो इसिंपिहणइ । यावत

वतीति ॥ निक्खेवउत्ति ॥ निगमनं ॥ नियमपुरिसवेरेणेत्यादि ॥ पुरुषस्य हतत्वा नियमात् पुरुषवधपापेन स्पृष्ट इत्येको भङ्गः, तत्र यदि आगा
न्तरमपि हत तदा पुरुषवैरेण नोपुरुषवैरेणचेति द्वितीयः यदितु बहव प्राणिनो हता स्युः तदा पुरुषवैरेण नोपुरुषवैरैश्चेति तृतीय, एव कथ
त्रय, ऋषिवधेतु ऋषिवैरेण नोऋषिवैरैश्चेत्येव सेवाय, ननु यो मृतो मोक्ष यास्यत्यविरतो नत्रविष्यति, तस्य ऋषिवधे ऋषिवैरमेव भवति

एव वयइ एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि सेणं एगं इसिं हणमाणे अणंता जीवा हणइ सेतेणट्ठेणं नि
क्खेवओ । पुरिसेणं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे णोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! णियमेणं
ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेणय णोपुरिसवेरेणय पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेणय णोपुरिसवेरेहिय

कमपि हन्मि' स एकमपि घ्नन्ननन्ताञ्जीवान् हन्ति तत्तेनार्थेन निक्षेपकः । पुरुषो भदन्त ! पुरुष घ्नन् किं पुरुषवैरेण स्पृष्टो नो पुरुषवैरेण स्पृ
ष्टः ? गौतम ! नियमेन तावत्पुरुषवैरेण स्पृष्टः, अथवा पुरुषवैरेणच नोपुरुषवैरेणच स्पृष्टः, अथवा पुरुषवैरेणच नोपुरुषवैरैश्च स्पृष्टः । सव

ऋषिने पणि हणं शने ऋषिवा पनेराने पणि हणे । गोयमा तेथ्रणं एव भवइ एवखलु अहं एग इसिं हणामि । हेगौतम तेहने अभिप्राय इमज इम
निसे छे एक ऋषिप्रते हणुं । सण एग इसिं हणमाणे अणंता जीवा हणइ । तेह एक ऋषिने हणतोथको अनन्ताजीव हणे तेकिम जेऋषि जनो [illegible] विरतो
थाय तिवारे अनन्तजीव घातक थाय ते मर्यो थका ऋषि अनन्ताजीवने अविरोधि ते प्रतिबोध्या मुक्ति जाय अनन्त संसारीजीवना रक्षक थाय [illegible]
पिमारया ते माटे तेहने वध अनेरा अनन्ताजीवनो वधथाय । सेतेणट्ठेण णिक्खेवओ । ते तेणे अर्थे हेगौतम इत्यादि निगमन कहवो । पुरिसे [illegible]
[illegible] हणमाणे । पुरुष हेभगवन् पुरुषने हणतोथको । किंपुरिसवेरेणपुट्ठे णोपुरिसवेरेणपुट्ठे । स्युं पुरुषने वैरकरी स्पर्श्यो अथवा पुरुषथकी अनेरा [illegible]
वैरकरी फरस्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णियमेण तावपुरिसवेरेण पुट्ठे । हेगौतम पुरुष हण्यामाटे निश्चयथकी पुरुष वध पापेंकरी फरस्यो [illegible]
णो । अहवापुरिसवेरेणय णोपुरिसवेरेणयपुट्ठे । अथवा तेहने अने एकजीवने हणे तो पुरुषवैर अने नो पुरुषवैर तिणेंकरी फरस्यो एबेउ स्थानके एकवचनवी

॥ टीका ॥

अत· प्रथमविकल्पसम्भव , अथ चरमशरीरस्य निरुपक्रमायुष्कत्वा न्न हननसम्भव स्ततो चरमशरीरापेक्षया यथोक्तभङ्गकसम्भवो ? नैव यतो यद्यपि चरमशरीरो निरुपक्रमायुष्क स्तथापि तद्वधाय प्रवृत्तस्य यमुनराजस्येव * वैरमस्त्येवेति प्रथमभङ्गकसम्भवइति सत्य किन्तु यस्य ऋषे· सोपक्रमायुष्कत्वात् पुरुषकृतो वधो भवति तमाश्रित्येदसूत्र प्रवृत्त तस्यैव हननस्य मुख्यवृत्त्या पुरुषकृतत्वादिति। प्रागहननमुक्तं हनन चोच्छ्वासादिक्रियायोगे स्त उच्छ्वासादिवक्तव्यता माह ॥ पुढविकाइयाणमंतेइत्यादि ॥ इह पूज्यव्याख्या यथा वनस्पति रन्यस्योपर्यन्य स्थित स्तत्तेजोग्रहण करोति, एव

॥ मूल ॥

पुठे, एवं आसं एवं जाव चिल्लगं, जाव अहवा चिल्लगवेरेणय णोचिल्लगवेरेहिय पुठे। पुरिसेण भंते! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेण पुठे णोइसिवेरेणं पुठे? गोयमा! णियम इसिवेरेणय णोइसिवेरेहिय पुठे।

॥ अनुवाद ॥

मश्वमेव याव चिल्लक, याव चिल्लकवैरेणच नो चिल्लकवैरैश्च स्पृष्ट· । पुरुषो भदन्त । ऋषि घ्नन्कि ऋषिवैरेण स्पृष्टो नो ऋषिवैरेण स्पृष्ट ? गौतम । नियमादृषिवैरेणच नोऋषिवैरैश्च स्पृष्ट· ॥ पृथिवीकायिका भदन्त । पृथिवीकायिक चैवानन्तिवा प्राणन्तिवा उच्छ्वसन्तिवा नि·

॥ भाषा ॥

घोजीभाग्यो यथो २ । अहवा पुरिसवेरेणय णो पुरिसवेरेणयपुठे । अथवा तेहनेसगे घणाजीव हण्या तो पुरुष वैर इहा एकवचन नो पुरुष वैर इहा बहुवचन ए चीजीभागो २ इम सगले तीनभागा कहवा । एव आस एव जाव चिल्लग । इम अश्व इम चिल्लगजीव विशेष ते कहनो अथवा । जाव बहुवचन इम तीनभागा सर्वत्र कहवा। पुरिसेण चिल्लगवेरेणय णो चिल्लगवरेहियपुठे।यावत् चिल्लगने वैरकरी इहा एकवचन नो चिल्लग वैर इहा बहुवचन इम तीनभागा सर्वत्र कहवा। पुरिसेण भंते इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणपुठे । पुरुष हेभगवन् ऋषिप्रते हणतोथको स्यू ऋषिवैरे करी फरस्यो अथवा । णो इसिवेरेण पुठे । ऋषिथकी अनेरा जीवने वैरेकरी फरस्यो । गोयमा णियम इसिवेरेणय णो इसिवेरेहियपुठे । हेगौतम इहा एकबीजभागोजपजे पणि तीनभागा न ऊपजे ते किम ऊके, नियमथकी ऋषिने वैरकरी फरस्यो इहा एकवचन तथा ऋषिथकी अनेरा, घणाजीवाने वैरेकरी फरस्यो इहा बहुवचने एकबीजभागो हुवे । पुढविका इयाणभंते पुढवीकाइयचेव आणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा णीससतिवा। पृथिवीकायिक हेभगवन् पृथिवीकायिकप्रते सासले ऊसासले

पृथिवीकायिकादयो प्यन्योन्यसम्बद्धत्वा तत्तद्रूपं प्राणापानादिकुर्वन्तीति, तत्रैक' पृथिवीकायिको ऽन्यं स्वसम्बद्ध पृथिवीकायिक मनितितद्रूपमुच्छ्रास करोति' यथोदरस्थितकर्पूर. पुरुष' कर्पूरस्वभावमुच्छ्रास करोति, एव मप्कायादिकावित्यैव पृथिवीकायिकसूत्राणि पञ्च एवमेवाप्कायादय' प्र

पुढविकाइयाण भंते! पुढविकाइयंचेव आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा? हंता गोयमा! पुढवीकाइया पुढवीकाइयचेव आणमंतिवा जाव नीससंतिवा, पुढवीकाइयाणं भंते! आउकाइय आणमतिवा जाव नीससतिवा? हंता गोयमा! पुढवीकाइयाणं आउकाइयं आणमंतिवा जाव नीससंतिवा,

श्वसन्तिवा ? हन्त (अभ्युपगमे) गौतम । पृथिवीकायिका' पृथिवीकायिकश्चैवानन्तिवा प्राणन्तिवा याव न्नि श्वसन्तिवा' पृथिवीकायिका भदन्त । अप्कायिक मानन्तिवा याव न्नि श्वसन्तिवा ? हन्त गौतम । पृथिवीकायिका अप्कायिकमानन्तिवा याव न्नि श्वसन्तिवा, एव तेजस्कायिका वायुकायिक मेव वनस्पतिकायिकम् । अप्कायिका भदन्त । पृथिवीकायिकमानन्तिवा प्राणन्तिवा एवञ्चैव' अप्कायिक चैवा नन्ति

वा ग्रभेदे करीने इतिप्रश्न उत्तर । हतागोयमा पुढवीकाइया पुढवीकाइयचेव आणमतिवा जाव णीससतिवा । हागौतम जिम वनस्पती बीजने ऊपररह्यो थको तिहनोज गहणकरे इम पृथिवीकायिकादिक पणि अन्योन्य सबद्धपणाथको ते तेरुप प्राणापानादि करे तिहा एक पृथिवीकायिक अन्य ससबद्ध पृथिवीकायिक प्रते स्वास उस्वास ले ते रुप उस्वासकरे जिम उदररह्यो कपूर कपूरस्वभाव ऊसासले तिम इहा पृथिवीकायस्वभाव ऊसास जाणवा । पुढवीकाइयाणभते आउकाइय आणमतिवा जाव णीससतिवा । पृथिवीकायिक हेभगवन् अप्कायिकप्रतें आनमी सासोस्वासले इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा पुढवीकाइयाण आउकाइय आणमतिवा जाव णीससतिवा । हागौतम पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकप्रतें आनमे यावत् स्वासोस्वास ले एतलालगे कहवो । एव तेउकाइय वाउकाइय एव वणस्सइकाइय । इम तेजस्कायिक प्रतें वाउकायिक प्रतें इम वनस्पतीकायिकप्रतें पृथिवीकायिकना पचसूत्र कहवा । आउकाइयाणभते पुढविकाइयं आणमतिवा पाणमतिवा एवचेव । अप्कायिक हेभगवन् । पृथिवीकायिकप्रतें सास ऊसास

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ अनुवाद ॥ भाषा ॥

एवं तेउकाइयवाउकाइयं, एवं वणस्सइकाइयं, आउकाइयाणं भंते ! पुढविकाइयं आणमंतिवा पाणमं तिवा एवचेव, आउकाइयचेव आणमंतिवा एवचेव, एवं तेऊवाउवणस्सइकाइय। तेऊकाइयाणं भंते ! पुढवीकाइय आणमंतिवा जाव वणस्सइकाइयाण भंते वणस्सइकाइयचेव आणमंतिवा तहेव। पुढवीकाइएणं भंते ! पुढवीकाइयंचेव आणममाणेवा पाणममाणेवा ऊससमाणेवा नीससमाणेवा कइकिरिए ? गो

वा एव चेव' एव तेजोवायुवनस्पतिकायिकान्। तेजस्कायिका भदन्त। पृथ्वीकायिक मानन्तिवा (इत्यादि) यावद्वनस्पतिकायिका भदन्त ! वनस्पतिकायिकचेव आनन्तिवा (सर्व) तथैव (वाच्य मितियोग) पृथ्वीकायिको भ०। पृथ्वीकायिक चैव आनन्वा प्राणन्वा उच्छ्वसन् वा नि:श्वसन् वा कतिक्रियो भवति ? गौतम। स्यात्त्रिक्रिय. स्याचतुष्क्रिय स्यात् पञ्चक्रिय। पृथ्वीकायिको भ०। अप्कायिकमानन्वा ए

ले इत्यादि प्रश्न उत्तर इमज कहवो। आउकाइयचेव आणमतिवा एवचेव। अपकायिकप्रते सासउसास ले इमहीज कहवो। एव तेऊ वाऊ वण स्सइकाइन तेऊकाइयाणभंते पुढवीकाइय आणमतिवा। इम तेऊ वाऊ वनस्पतिकायित प्रते इम सूत्र पञ्च कहवा तेऊकायिक हेभगवन्। पृथिवी कायिकप्रते साम ऊसास ले इत्यादि। जाव वणस्सइकाइयाण भते वणस्सइकाइयचेव आणमतिवा तहेव। इम यावत् वनस्पतीकायिक हेभगवन्। वन स्पतीकायिक प्रतेज निश्चये सास ऊसास ले इत्यादिक सर्व पञ्चसूत्र तिमज कहवा। पुढवीकाइयाण भते पुढवीकाइयचेव। पृथिवीकायिक हेभगवन् पृथिवीकायिक प्रतें निश्चे। आणममाणेवा पाणममाणेवा। भींतर सासलेताथका भीतर ऊसास लेताथका। ऊससमाणेवा नीससमाणेवा। बाहर सास लेताथका बाहिर नीसास लेताथका। कइकिरिया। केतली क्रिया हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए सिय चउकिरिए सियपचकिरिए। हेगौतम। जिवारे तीन क्रियावन्त हुवे जिवारे पृथिवीकायिकादिक पृथिवीकायिकादिरूप प्रते उच्छास करताथका पणि तेहने पीडा उपजावे नथी तिवारे एह कायिक्यादि तीन क्रियावन्त हुये जिवारे तहने पीडा उपजावे तिवारे पारितापनको क्रियाना भावथी चारक्रियावन्त हुवे

॥ टीका ॥ त्येक पञ्चसूत्राणि लभन्तइति पंचविंशतिसूत्राण्येतानीति । क्रियासूत्राण्यपि पञ्चविंशति स्तत्र ॥ सियतिकिरिएत्ति ॥ यदा पृथिवीकायिकादि पृ

॥ मूल ॥ यमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । पुढवीकाइएण भंते ! आउकाइयं आणममाणेवा एवचेव, एवं जाव वणस्सइकाइए, एवं आउकाइएणवि सव्वे भाणियव्वा, एवं तेऊकाइएणवि, एवं वाउ काइएणवि, एवं वणस्सइकाइएणवि जाव वणस्सइकाइएणं भंते ! वणस्सइकाइयंचेव आणममाणेवा पुच्छा गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । वाउकाइएण भंते ! रुक्खस्स मूलं पचा

अनुवाद व चेव, एव यावत् वनस्पतिकायिक (प्रभृति) एव मप्कायिकेनापि सर्वं भणितव्या, एव तेजस्कायिकेनापि, एव वायुकायिकेनापि, एव वनस्पतिकायिकेनापि, यावद्वनस्पतिकायिको भ० । वनस्पतिकायिक चैव आनन्वा पृच्छा, गौतम । स्यात्त्रिक्रिय स्याच्चतुष्क्रिय स्यात्पञ्च क्रिय । वायुकायिको भ० ! वृक्षस्य मूल प्रचालयन्वा (कम्पयन्नित्यर्थः) प्रपातयन्वा कतिक्रिय ? गौ० । स्यात्त्रिक्रिय स्याच्चतुष्क्रिय स्या

॥ भाषा ॥ अने प्राणातिपात सद्भावें पचक्रियावन्त हुवे तेमाटे कह्यु सियतिकिरिए इत्यादि । पढवीकाइयाणभंते आउकाइय आणममाणेवा० वचेव । पृथिवीकायि क हेभगवन् । अपकायिकप्रतें भीन्तर सासलेतायका इत्यादि, पूठिलो परे कहवो । एव जाव वणस्सइकाइया एव आउकाइएणवि सव्वे भाणियव्वा । इम यावत् वनस्पतीकायिकप्रतेज एतला लगे सर्वकहवो तिमहीज इम अपकायिकसघाते पणि पृथिवीकायिकादिक सगलाई पूठिलीपरे कहवा । एव ते उकाइएणवि एव वाउकाइएणवि एव वणस्सइकाइएणवि । इम तेऊकायिकसघाते पणि सर्वकहवा, इम वाउकायिक सघाते पणि सर्व कहवा इम वनस्पतीकायिक सघाते पणि पृथिवीकायिकादिक सर्वं कहवा सर्वथकी छेहलो आलावो देखाडेछे—जाव वणस्सइकाइयाण भंते वणस्सइकाइयचेव आ णममाणेवापुच्छा । यावत् वनस्पतीकायिक हेभगवन् । वनस्पतीकायिकप्रतें हीज निश्चे भीन्तर सास लेतायका इत्यादि प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा सि यतिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए । हेगौतम । किवारेकै तीन क्रियावन्त हुवे किवारेकै चार क्रियावन्त हुवे किवारेकै पाच क्रियावन्त हुव

थिवीकायिकादिरूपमुच्छ्वासं कुर्वन्नपि नतस्य पीडा मुत्पादयति स्वभावविशेषा सदा सौ कायिक्यादित्रिक्रियः स्यात्, यदातु तस्य पीडा मुत्पा यति तदा पारितापनिकक्रियाभावा चतुष्क्रिय, प्राणातिपातसद्भावेतु पञ्चक्रियइति, क्रियाधिकारादेवाह ॥ वाउकाइएणमित्यादि ॥ इह च वायु ना वृक्षमूलस्य प्रचलन प्रपातन वा; तदा सम्भवति यदा नदीभित्त्यादिषु पृथिव्याऽनावृत तत्स्यादिति, अथ कथ प्रपातने त्रिक्रियात्वं ? परि तापादे सम्भवा दुच्यते–अचेतनमूलापेक्षयेति ॥ नवमशते चतुस्त्रिंशत्तम ॥ ३४ ॥ समाप्तं च नवमशत ॥ ९ ॥

लेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए ! एवं कंदं एवं जाव बीयं पवालेमाणेवा पुच्छा ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए, सेव भंते २ त्ति ॥ नवमसयस्स चउत्तीसइमो उद्देसो सम्मत्तो ९ ॥ ३४ ॥ नवमंसय सम्मत्तं ॥ ९ ॥

त्रिक्रिय, एव कन्दम्, एव यावद्बीज प्रवालयन् वा पृच्छा' गौ० ! स्यात्त्रिक्रिय स्याच्चतुष्क्रिय स्यात्पञ्चक्रिय स्तदेव भदन्त भदन्त ॥ इति नवमशतस्य चतुस्त्रिंशत्तमोद्देशः ९ ॥ ३४ ॥ समाप्त नवम शतम् ॥ ९ ॥ ॥

ए पृथिवीपरे कह्वो क्रियाअधिकार थकीज कहेछे–वाउकाइयाणभंते रुक्खस्स मूल पवालेमाणेवा पवाडेमाणेवा कइकिरिए। वाउकायिक हेभगवन् रूखनो मूल हलावतायका पाडतायका केतली क्रियाहुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए। हेगौतम ! कदा चित् तीनक्रियावन्तहुवे कदाचित् चार क्रियावन्त हुवे कदाचित् पञ्च क्रियावन्त हुवे। एव कद एव जावबीय पवालेमाणेवापुच्छा। इम कन्द आदिदे ई इम यावत् बीजलगे कह्वो, बीज हलावतायका इत्यादि प्रश्न उत्तर। गोयमा सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए। हेगौतम। किवारे के तीन क्रियावन्तहुवे कदाचित् चार क्रियावन्त हुवे कदाचित् पाच क्रियावन्त हुवे। सेवभंते भंतेत्ति। तहत्ति हेभगवन्! तुम्हे कह्या ते सर्व सत्यछे मन्य यानही। नवमसयस्सचउत्तीसइमोउद्देसोसम्मत्तो। ए नवमा शतकनो चउत्तीसमो उद्देशो पूरोथयो ८ ॥ ३४ ॥ नवमसयसम्मत्त। ए

अस्मिन्मनोव्योमतलप्रचारिणि श्रीपार्श्वसूर्यस्यविमर्षितेजसा । दुर्बोधमनोज्ञतमोपसारणा द्विनक्तमेवनवमंजातमया ॥ १ ॥ ॥
व्याख्यातं नवमं शतमथ दशमं व्याख्यायते ऽस्यचाय मभिसम्बन्धो ऽनन्तरशते जीवादयोर्था: प्रतिपादिता इहापि तएव प्रकारान्तरेण प्रतिपाद्यन्त
इत्येव सम्बन्धस्यास्योद्देशकार्थसङ्ग्रहगाथेय ॥ दिसेत्यादि ॥ दिसित्ति ॥ दिशमाश्रित्य प्रथम उद्देशक ॥ संवुडमणगारेत्ति ॥ संवृतानगारविषयो द्वि
तीय ॥ आइड्डित्ति ॥ आत्मर्द्ध्या देवो देवीवा; सान्तराणि व्यतिक्रामे दित्याद्यर्थाभिधायक स्तृतीय. ॥सामहत्थियत्ति॥ श्यामहस्त्यभिधानश्रीमन्महा
वीरशिष्यप्रश्नप्रतिबद्ध श्चतुर्थ ॥ देवित्ति ॥ चमराद्यग्रमहिषीप्ररूपणाय पञ्चम. ॥ सभत्ति ॥ सुधर्मसभाप्रतिपादनार्थ षष्ठ ॥ उत्तरअंतरदीवत्ति ॥
उत्तरस्यादिशि ये अन्तरद्वीपा स्तत्प्रतिपादनार्था अष्टाविंशति रुद्देशका एव चादितो दशमे शते चतुस्त्रिंशदुद्देशका भवन्तीति ॥ किमिय शते । पा

दिसिसंवुडमणगारे आइड्ढीसामहत्थिदेविसभा । उत्तरअंतरदीवा दसमम्मिसयम्मिचोत्तीसा ॥ १ ॥ रायगिहे

श्रीमल्लोंकागणशेविधिविदमृतचन्द्राभिधे सूरिवर्य्ये राढिद्वारायत्राद्दुरधनपतिसिंहेनसम्प्रार्थितश्च । व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रेपृथुनवमशतस्यानुवादा
लयोसौ सनीत शिल्पिनेवप्रवचनगुरुणारामचन्द्रेणसिद्धिम् ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
दिसू (१) सवुता ऽनगारा (२) ऽऽत्मर्द्धय (३) श्यामहस्ति (४) देवि (५) सभा (६) ॥ उदगन्तारद्वीपा (२८) शतेतुदशमेचतुस्त्रिंशत् ॥१॥ उद्देशा)

तले नवमो शतक पूर्णययो ॥ ८ ॥
नवमेशतके जीवादिपदार्थ कह्या दशमे तेहीज प्रकारान्तरे कहिछे—दिसिसंवुडमणगारे आ.इड्ढीसामहत्थिदेविसभा । उत्तरअंतरदीवा दसमम्मिसयम्मि
चोत्तीसा ॥१॥ पहिलेउद्देशे दिशिनो अधिकार १ संवृत अणगारनो अधिकार २ आत्म ऋद्धिकरी देव वासान्तर प्रतिगतिक्रमे ३ श्यामहस्ती अणगा
र यानद्दारोरस्वामी ग्रिष्यकृत प्रश्न प्रति; अधिकार ४ चमरादि अग्रमहिषी देवीअधिकार ५ सुधर्मासभा अधिकार ६ उत्तरदिशिना २८ उद्देशा अ
न्तरद्वीपना २८ उद्देशा, एम दशमा शतकनेविषे चउतीसउद्देशा कह्या इति सग्रह गाथा । रायगिहे जाव एवंवयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् गो

॥ टीका ॥

ईणत्ति पवुच्चइत्ति ॥ किमेतद्वस्तु यत्प्रागेव प्राचीन दिग्विवक्षाया प्राचीना प्राची पूर्वेति प्रोच्यते? उत्तरन्तु जीवाश्चैवाजीवाश्चैव जीवाजीवरूपा प्राची तत्र जीवा एकेन्द्रियादयो ऽजीवास्तु धर्मास्तिकायादिदेशादय इदमुक्त भवति प्राच्या दिशि जीवा अजीवाश्च सन्तीति ॥ इदंत्यादि ॥ इन्द्रो देवता

॥ मूल ॥

जाव एवं वयासी—किमियं भंते ! पाईणेत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! जीवाचेव अजीवाचेव किमियं भंते ! पडीणेत्ति पवुच्चइ ? गोयमा ! एवंचेव, एवंच दाहिणा, एवच उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहोवि । कइणं भंते ! दिसाउ पन्नत्ताउ ? गोयमा ! दस दिसाउ पन्नत्ताउ, तजहा—पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा दाहिणा दाहिणपच्चच्छिमा पच्चच्छिमा पच्चच्छिमुत्तरा उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा उड्ढा अहो । एयासिण भंते ! दसण्हं

अनुवाद

राजगृहे नगरे यावदेवमवादीत्–किमेतद् (वस्तु) भदन्त ! प्राचीनेति प्रोच्यते? गौतम। जीवाश्चैवाजीवाश्चैव, किमेतद्भदन्त। प्रतीचीनेति प्रोच्यते? गौतम। एव चैव, एवच दक्षिणा, एव चोत्तरा, एवमूर्ध्वा, एवमधोपि। कति भदन्त। दिश प्रज्ञप्ता ? गौतम। दश दिश प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–पौरस्त्या १। दक्षिणपौरस्त्या २। दक्षिणा ३। दक्षिणपाश्चात्या ४। पाश्चात्या ५। पाश्चात्योत्तरा ६। उत्तरा ७। उत्तरपौरस्त्या ८। ऊ

॥ भाषा ॥

तम इमकहे। किमियभतेपाईणतिपवुचइ। स्वा० एह हेभगवन्। पूर्वदिशि कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव। हेगौतम। जीवरूप पूर्वदिशि निश्चे, अजीवरूप पूर्वदिशि निश्चे। किमियभतेपडीणेतिपवुचइ। स्वा० एह हेभगवन्। पश्चिमदिशि कहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एवचेव। हे गौतम। जीव तथा अजीवरूप। एवचदाहिणा एवच उदीणा एवउड्ढा। इम दक्षिणदिशि पणि कहवो इम उत्तरदिशि पणि कहवो इम ऊर्द्धदिशि पणि कहवो। एवअहोवि कइणभतेदिसाओपण्णत्ताओ। इम अधोदिशि पणि कहवो, केतली हेभगवन्। दिशिकहिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दसदिसाओ प० त०। हेगौतम। दशदिशि कही ते कहेछे—पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा। पूर्वदिशि १ अग्निकूण दिशि २। दाहिणा दाहिणपच्चच्छिमा। दक्षिणदिशि ३ नैऋतकूण ४। पच्चच्छिमा पच्चच्छिमुत्तरा। पश्चिम ५ पश्चिमउत्तर कहता वायव्यकूणि ६। उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा। उत्तर ७ ईशानकू

यस्याः सैन्द्री, अग्निर्देवता यस्याः सा आग्नेयी, एवं यमो देवता याम्या, निर्ऋतिर्देवता नैऋती, वरुणो देवता वारुणी, वायुर्देवता वायव्या सोमदेवता सौम्या, ईशानदेवता ऐशानी, विमलतया विमला, तमा रात्रिः सदान्धकारत्वात् तमा अन्धकारेत्यर्थः, अत्र ऐन्द्री पूर्वा ज्ञेया: क्रमेण विमला तूर्ध्वा, तमा पुनरधोदिगिति, एताश्च दिशः शकटोर्द्धसंस्थिताः, विदिशस्तु मुक्तावल्याकाराः, ऊर्द्धाधोदिशौ च रुचकाकारे आह च–

दिसाणं कइ नामधेज्जा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसनामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—इंदाग्गेयीयजमा य नेरई

द्धाः। अथ १० ॥ एतेषां भदन्त ! दशानां दिशां कति नामधेयाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! दश नामधेयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–ऐन्द्री (१) आग्नेयी (२) या

गि ८ उठ्ठा अधो। उर्ध ९ अधो १०। एयासिणं भंते दसण्हंदिसाणं कइनामधेज्जा पं०। एहनां हेभगवन्! दश दिशना केतला नामकह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दसनामधेज्जा प० तं०। हेगौतम! दशनाम कह्या तेकहेछे—इंदाग्गेयीया जमायनेरईवारुणीयवायव्वा। सोमाईसाणीया विमलायतमा यबोधव्वा ॥ १ ॥ इन्द्र देवता तेहभणी ऐन्द्रानाम १ अग्नि देवता तेहभणी आग्नेयीनाम २ यमदेवता तेह भणी याम्यानाम ३ निर्ऋतिदेवता तेभणी नैर्ऋतीनाम ४ वरुणदेवता ते भणी वारुणीनाम ५ वायुदेवता ते भणी वायव्यानाम ६ सोमदेवता ते भणी सोमानाम ७ ईशानदेवता तेमाटे ऐशानी ८ निर्मलपणे विमलानाम ९ तमा अर्था अन्धकार १० ॥ हिवे विशेषअर्थ कहेछे—इन्द्रदेवता जेहने ते इन्द्रदिशि कहिये इम आगे पणि कहवो १ अग्निदेवता जेहने ते आग्नेयी २ यमदेवता जेहने ते याम्या ३ निर्ऋतिदेवता जेहने ते नैर्ऋती ४ वरुणदेवता जेहने ते वारुणी ५ वायुदेवता जेहने ते वायव्या ६ सोमदेवता जेहने ते सौम्या ७ ईशानदेवता जेहने ते ऐशानी ८ विमल निर्मलपणे करी विमला ९ तम कहिये रात्रि ते अन्धकारपणाथकी तमा अन्धकारा इत्यर्थः, एतलामाटे ऐन्द्री पूर्वदिशि कहिये शेष अनुक्रमे कहवी विमला ऊर्द्धदिशि ९ तमा अधोदिशि १० इहां दिशा गाडानी ऊधने आकारे विदिशा मोतीनी सरीने आकारे इम ऊर्ध्वअधो ए बेउदिशि रुचकने आकारे आहच—सगडुद्धिसंठियाओ महादिसाओहवंतिचत्तारि। मुत्तावलीय चउरो दोचेवयहुंतिरुयगनिभत्ति ॥ १ ॥ वलीगौतम पूछेछे—इंदाणंभंते दिसाकिं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसा। इंदाण

सगडुद्धिसंठियाउ महादिसाउ हवंति चत्तारि । मुत्तावलीयचउरो दोचेवयहोंतिरुयगनिभा ति ॥ १ ॥ जीवावीत्यादि ॥ ऐन्द्री दिग् जीवा जीव

इंदा अग्गेयी जम्मा य नेरई वारुणीयवायव्वा । सोमाईसाणीया विमलायतमायबोधव्वा ॥ १ ॥ इंदाणं भंते! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसा? गोयमा! जीवावि तचेव जाव अजीवप्पएसावि, जे जीवा ते णियमं एगिंदिया वेइंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया, जे जीवदेसा ते णियम एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा, जे जीवप्पएसा ते णियमं एगिंदियप्पएसा जाव अणिंदियप्पएसा, जे अजीवा ते

ऐन्द्री (१) आग्नेयी (२) याम्या (३) नैऋती (४) वारुणी (५) च वायव्या (६) । सौम्या (७) ऐशानी (८) खलु विमला च (९) तमा च (१०) बोद्धव्या ॥ १ ॥ ऐन्द्रा भदन्त । दिक् किं जीवा जीवदेशा जीवप्रदेशा अजीवा अजीवदेशा अजीवप्रदेशा ? गौतम। जीवा ऽपि तथैव यावदजीवदेशा ऽपि, ये जीवास्ते नियमादेकेन्द्रिया द्वीन्द्रिया यावत्पञ्चेन्द्रिया अनिन्द्रिया , ये जीवदेशास्ते नियमादेकेन्द्रियदेशा यावदनिन्द्रियदेशा , ये जीवप्रदेशास्ते नियमा देकेन्द्रियप्रदेशा

अग्नेयी २ दक्षिण ३ नैऋति ४ पश्चिम ५ वायव्य ६ उत्तर ७ ईशान ८ ऊर्ध्व ९ अधो १० ए दश दिशाना नाम । इंदाणमित्यादि, इन्द्रादिशि हे भगवन्! स्यूं जीव कहिये अथवा जीवदेश २ अथवा जीवप्रदेश ३ अथवा अजीव ४ अजीवदेश ५ अथवा अजीवप्रदेश ६ इति प्रश्न उत्तर। गोयमा जीवावि तचेव जाव अजीवपएसावि । हे गौतम । जीव पणि ऐन्द्रादिशिनेविषे जीवना अस्तिपणामाटे इम जीवदेश जीवप्रदेश पणि कहवा तथा अजीव पुद्गलनो अस्तिपणोछे तमाटे अजीवा पणि कहिये, वली धर्मास्तिकायादि देशरूपाप णि अस्तिपणामाटे अजीवदेश पणिछे अजीवप्रदेश पणिछे , तचेवत्ति, जिम छ प्रश्न पूछ्या तिमज उत्तर पणि छए कहवा इम यावत् अजीवप्रदेशलगे कहवा तथा । जे जीवा ते णियम एगिंदिया वेइंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया । जिहां तजीव ते निश्चयथकी एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय अनिन्द्रिय ते केवली तथा सिद्ध ए छएके । जेजीवदेसा तेणियम एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा । जे जीवनादेश ते पणि निश्चयथकी एकेन्द्रियनादेश यावत् अनिन्द्रिय केवलीनादेश ६ । जेजीवपएसा तेणियमएगिंदियप्पएसा । जे जीवप्रदेशछे ते पणि निश्चयथकी एकेन्द्रियनाप्रदेश इत्यादि । जाव अणिंदियप्पएसा ।

॥ टीका ॥

जीवानामस्तित्वात्' तत्र जीवदेशा जीवप्रदेशाश्चेति' तथा अजीवानां पुद्गलादीनामस्तित्वात् तु अजीवा, धर्मास्तिकायादिदेशानां पुनरस्तित्वादजीवदेशा, एवं अजीवप्रदेशा अपीति, तत्र ये जीवास्ते एकेन्द्रियादयो ऽनिन्द्रियाश्च केवलिनो' यत्तु जीवदेशास्त एकेन्द्रियादीनां ६। एवं जीवप्रदेशा अपि ॥ ये अरूपी अजीवास्ते सप्तविधा इति ॥ तत्र ॥ नोधर्मास्तिकाय ॥ प्रथमतो धर्मास्तिकायः समस्त एवोच्यते तत्र प्राची दिग् भवति तद्देश

॥ मूल ॥

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—रूविअजीवा य अरूविअजीवा य, जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला, जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पएसा, नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्म

अनुवाद

यावदनिन्द्रियप्रदेशा, ये अजीवास्ते द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-रूप्यजीवा अरूप्यजीवाश्च, ये रूप्यजीवास्ते चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा- स्कन्धा स्कन्धदेशा स्कन्धप्रदेशा परमाणुपुद्गलाः ४। ये अरूप्यजीवास्ते सप्तविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-नोधर्मास्तिकाय (किन्तु) धर्मास्तिकायस्य देशा धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा २, नोऽधर्मास्तिकाय (किन्तु) अधर्मास्तिकायस्य देशा अधर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः ४। नोआकाशास्तिकाय (किन्तु)

॥ भाषा ॥

यावत् अनिन्द्रिय केवलना प्रदेश छे। जे अजीव ते दुविहा प० तं०। जे अजीव छे ते बे भेदे कह्या ते कहे छे—रूपीअजीवा अरूपीअजीवा। रूपीअजीव १ तथा अरूपीअजीव २। जे रूपीअजीव ते चउव्विहा प० तं०। जे रूपीअजीव ते चारभेदे कह्या ते कहे छे—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला। खंध १ खंधदेश २ खंधप्रदेश ३ परमाणु पुद्गल। जे अरूपीअजीवा ते सत्तविहा प० तं०। जे अरूपीअजीव ते सातभेदे कह्या ते कहे छे—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा। नहीं धर्मास्तिकाय जेभणी धर्मास्तिकाय समस्त होय ते कहिये ते पूर्वदिशि नथी पूर्वदिशिने धर्मास्तिकायना एकदेशभूत पणाथकी ते भणी कहिये पूर्वदिशि धर्मास्तिकाय ना देशभाग रूप छे वली पूर्वदिशिने असंख्येय प्रदेशात्मक पणाथकी ए २ भेद हुवा। नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपएसा। इम नहीं अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनो देश छे अधर्मास्तिकायना प्रदेश

देशभूतत्वा त्तस्या किन्तु धर्मास्तिकायस्य देश सा तदेकदेशभागरूपेति , तथा तस्यैव प्रदेशा सा भवति असङ्ख्येयप्रदेशात्मकत्वा त्तस्या २ । एव मधर्मास्तिकायस्य देश प्रदेशाश्च २ । एवमाकाशास्तिकायस्य देश- प्रदेशाश्च २ । अद्धासमयश्चेति , तदेव सप्तप्रकारा रूप्यजीवरूपा ऐन्द्री दिगिति॥ आग्गेयीणमित्यादि॥ प्रश्न , उत्तरन्तु जीवा निषेधनीया विदिशा मेकप्रादेशिकत्वा देकप्रदेशेच जीवानामवगाहाभावात् असङ्ख्यातप्रदेशावगाहित्वा त्तेषा , तत्र ॥ जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसेत्ति ॥ एकेन्द्रियाणा सकललोकव्यापकत्वा दाग्नेय्या नियमा देकेन्द्रियदेशा- सन्तीति ॥ अहवे

स्तिकायस्स पएसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पएसा, अद्धासमए। आग्गेयीणं भंते ! दिसा किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा पुच्छा गोयमा ! णोजीवा जीवदेसावि जीवप्पए साव्वि, अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पएसावि, जे जीवदेसा ते णियमा एगिंदियदेसा अहवा एगिंदिय

आकाशास्तिकायस्य देशा आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा अद्धा समय ॥ आग्नेयी भ० । दिक्कि जीवा जीवदेशा जीवप्रदेशा पृच्छा, गौ० । नो जीवा जीवदेशापि जीवप्रदेशापि, अजीवापि अजीवदेशापि अजीवप्रदेशापि, ये जीवदेशा स्ते नियमादेकेन्द्रियदेशा अथवा एकेन्द्रियदेशाश्च द्वीन्द्रियस्य

पणिछे एव ४। णो आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सपएसा । नही आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायनो देशछे ५ आकाशा स्तिकायनो प्रदेशछे ६ । अद्धासमए । ते काल ७ इम सातप्रकारे अरूपीअजीव ऐन्द्री दिशिछे वलीगौतमपूछेछे—अग्गेयीणभते दिसा कि जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा पुच्छा। आग्नेयी ण वाक्यालकारे , हेभगवन् । दिशि स्यू जीव १ जीवदेश २ जीवप्रदेश ३ अजीव ४ अजीवदेश ५ अजीवप्रदेश ६ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोजीवा जीवदेसावि जीवप्पएसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पएसावि । हेगौतम । इत्यादि आग्नेयीदिशिने विषे जीव नथी तेकिम इहा टीकामाहे ,विदिसत्ति, एतलो पाठछे विदिशिने एक प्रदेशात्मक पणोछे तेमाटे एक प्रदेशनेविषे जीवनी अवगाहना नथी जीवनी अवगा हना असख्यातप्रादेशिकछे , तेमाटे जीव नथी तथा जीवदेश पणिछे जीवप्रदेश पणिछे २ अजीवछे ३ अजीवदेश पणिछे ४ अजीवप्रदेश पणिछे ५ ए

त्यादि ॥ एकेन्द्रियाणां सकललोकव्यापकत्वादेव द्वीन्द्रियाणां चाल्पत्वेन क्वचिदेकस्यापि तस्य सम्भवा दुच्यते एकेन्द्रियाणां देशाश्च द्वीन्द्रियस्यच देश इति द्विकयोगे प्रथम १ । अथवा एकेन्द्रियपद तथैव द्वीन्द्रियपदे त्वेकवचन देशपदे पुन र्बहुवचनमिति द्वितीय , अय च यदा द्वीन्द्रियो व्यादिभि र्देशै स्ता स्पृशति तदा स्यादिति, अथवा एकेन्द्रियपद तथैव द्वीन्द्रियपद देशपदञ्च बहुवचनान्तमिति तृतीय , स्थापना—एके०देशा ३ द्वी० १ देश १। एके० देशा ३ द्वी० १ देशा , ३ एके० देशा ३ द्वी० ३ देशा ३, एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियपञ्चेन्द्रियानिन्द्रियै सह प्रत्येक भङ्गत्रय द्रष्टव्य, एव प्रदेशपक्षोपिवाच्यो नवर मिह द्वीन्द्रियादिषु प्रदेशपद बहुवचनान्तमेव यता लोकव्यापकावस्थानिन्द्रियवर्ज्जजीवाना यत्रैक प्रदेश स्तत्रा

देसाय वेइंदियस्सदेसे १ । अहवा एगिंदियदेसाय वेइंदियस्स देसा २ । अहवा एगिंदियदेसाय वेइंदिया

देश १। अथवा एकेन्द्रियदेशाश्च द्वीन्द्रियस्य देशा २। अथवा एकेन्द्रियदेशाश्च द्वीन्द्रियाणाच देशा ३। अथवा एकेन्द्रियदेशा स्त्रीन्द्रियस्य

व ५ छे। जेजीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा । जेजीवदेसाइत्यादि, जे जीवदेशछे निश्चयथकी एकेंद्रियने सकललोक व्यापकपणाथकी आग्नेयीदि शिनेविषे नियमथकी एकेन्द्रियना देशछे एकसयोगीभाङ्गा एक, हिवे द्विसयोगीभाङ्गा तीन हुवे ते देखाडछे—अहवाएगिंदियदेसाय वेइंदियस्सदेसे १ अहवा एगिंदियदेसाय वेइंदियस्सदेसा २ अहवा एगिंदियदेसाय वेइंदियाणयदेसा अहवा ३ एगिंदियदेसा ते इंदियस्सदेसे एवचेव तियभंगो भाणियव्वो। अहवाएगिंदियदेसाय, वेइंदियस्सदेसे इत्यादि, अथवा एकेंद्रियने सकललोक व्यापकपणाथकी एकेंद्रियदेशनेविषे बहुवचन होज हुवे, अने बेइन्द्रियने अल्पपणाकरी किहाएक एक बेइन्द्रियना एकदेशना सम्भवथकी कहिये घणा एकेन्द्रियना घणादेश अने एक बेइन्द्रियनो एकदेश ए द्विकसयोगे पहिलो भाङ्गो १ अथवा एकेन्द्रिय पदतो तिमहीज बहुवचने कहवो अने बेइन्द्रियपदनेविषे एकवचन तेहना देशपदनेविषे बहुवचन एतले घणा एके न्द्रियना घणादेश अने एक बेइन्द्रियना घणादेश ए बीजोभाङ्गो एह जिवारे कोई एक बेइन्द्री द्व्यादिक देशेकरीने तेहने फरसे तिवारे हुवे २ अ थवा एकेंद्रिय पदतो तिमहीज कहवो, अने बेइन्द्रियपद तथा देशपद ए बेज बहुवचने कहवा एतले घणा एकेन्द्रियना घणादेश अने घणा बेइन्द्रीना

यंती अपराजिता । तत्थ णं एगमेगाए देवीए सेसं तंचेव जहा चंदस्स णवरं इंगालवडिंसए विमाणे इंगालगंसि सीहासणंसि सेसं तंचेव । एव वियालस्सवि । एवं अट्ठासीएवि महागहाणं वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा जाव भावकेउस्स, णवरं वडिंसगा सीहासणाणिय सरिसणामगाणि, सेस तंचेव । सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा, अज्जो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं—पउमा सिवा सेवा अजू अमला अ

स्तद्यथा–विजया, वैजयन्ती, जयन्ती, अपराजिता ४ । तत्रैकैकाया देव्याः शेष तच्चैव यथा चन्द्रस्य, नवरमङ्गारावतंसके विमाने अङ्गारे सिंहासने शेष तच्चैव । एव व्यालस्यापि । एवमष्टाशीतिमहाग्रहाणामपि वक्तव्यता निरवशेषा भणितव्या यावद्भावकेतो, नवरमवतंसका सिंहासनानि च सदृशनामकानि, शेष तच्चैव । शक्रस्य भदन्त ! देवेन्द्रस्य देवराजस्य पृच्छा, आर्याः ! अष्टावग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–पद्मा, शिवा, सेवा, अञ्जू, अमला, अप्सरा, नवमिका, रोहिणी ८ । तत्रैकैकाया देव्याः षोडश षोडश देवीसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तः । प्रभवस्ता एकैका दे

राजिता ४ । विजया वेजयती जयती अपराजिता ४ । तत्थण एगमेगाए देवीए । तिहा एकेकी देवीने इत्यादि । सेस तचेव जहा चदस्स । शेष थाकतो तिमहीज कहवो जिम चन्द्रने कह्यो तिम जाणवो । णवर इगालवडिंसए विमाणे । एतलाविशेष अङ्गार अवतसकनामे विमान । इगालगसि सीहासणसि सेसतचेव एव वियालस्सवि । अङ्गारनामे सिंहासननेविषे शेष तिमहीज इम व्यालनामा महाग्रहने पणि कहवो । एव अट्ठासीएवि महागहाण वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा जाव भावकेउस्स । इम अठ्यासी महाग्रहनी वक्तव्यता पणि णिरवशेषे समस्तप्रकारे जाणवो यावत् भावकेतुने एतला लगे कहवो । णवर वडिसगा सीहासणाणिय सरिसणामगाणि सेस तचेव । एतलोविशेष विमानावतंसक तथा सिंहासन ए बेऊना नाम पोताना नाम सरीखा जाणवा शेष तिमहीज । सक्कस्सणंभते देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा । शक्रने हेभगवन् ! देवेन्द्रने देवराजाने केतली अग्रमहिषी कही इतिप्रश्न । उत्तर । अज्जो अठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आठ अग्रमहिषी कही ते कहेछे—पउमा सिवा सेवा अजू अमला अच्छरा नवमिया रोहिणी ८ ।

॥ मूल ॥

चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसियरण्णो पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा । एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए, तहेव सूरस्सवि सूरप्पभा आइच्चा अच्चिमाली पभंकरा, सेसं तहेव जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं । इंगालस्स णं भंते ! महागहस्स कति अग्गमहिसीओ पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं—विजया वेजयंती ज

अनुवाद

राजधान्य सिंहासनानि च शेषं तथैव । चन्द्रस्य भ० । ज्योतिषेन्द्रस्य ज्योतिषराजस्य पृच्छा, आर्या ! चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्ना, अर्चिमाली, प्रभङ्करा ४ । एवं यथा जीवाभिगमे ज्योतिष उद्देशके तथैव सूरस्यापि–सूरप्रभा, आदित्या, अर्चिमाली, प्रभङ्करा ४ । शेषं तथैव यावन्नैव च मैथुनप्रत्ययम् । अङ्गारस्य भदन्त ! महाग्रहस्य कत्यग्रमहिष्यः पृच्छा, आर्या ! चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ता

॥ भाषा ॥

सि पर्यंत जाणवा कलम । सर्व ठेकाणे कालनामर्थ कहवा । णवरं सरिसनामगाओ रायहाणीओ सीहासणाणिय सेसं तचेव । एतलो विशेष आपणे नामसरीखे नामे राजधानी तथा सिंहासन जाणवा शेष सर्व तिमहीज कहवो । चंदस्स णं भंते जोइसिंदस्स जोइसियरणो पुच्छा । चन्द्रने हे भगवन् ! ज्योतिषी इन्द्रना ज्योतिषीराजाना प्रश्ननो उत्तर । अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहीछे—चंदप्पभा जोइसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा ४ । चन्द्रप्रभा ज्योत्स्नाभा अर्चिमाली प्रभङ्करा ४ । एवं जहा जीवाभिगमे जोइसिय उद्देसए तहेव । इम जिम जीवाभिगम उपाङ्गना ज्योतिषीउद्देशानेविषे कह्यो तिम सर्व इहां पणि कहवो इम । सूरस्सवि सूरप्पभा आइच्चा अच्चिमाली पभंकरा सेसं तचेव । सूर्यने पणि चार अग्रमहिषी कही सूर्यप्रभा आदित्या अर्चिमाली प्रभङ्करा ४ शेष थाकतो तिमहीज कहवो । जाव णो चेव णं मेहुणवत्तिय । यावत् नही निश्चै मैथुनप्रत्यय भोग भोगववा समर्थ हुवे । इंगालस्स णं भंते महागहस्स । अङ्गारनामे हे भगवन् ! महाग्रहने । कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा । केतली अग्रमहिषी कही इतिप्रश्न उत्तर । अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहीछे— विजया वेजयंती जयंती अप

रि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—रोहिणी नवमिया हिरी पुप्फवई। तत्थणं एगमेगा देवी सेसं तंचेव। एव माहपुरिसस्सवि। अइकायस्सणं पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—भुयगा भुयगवई महाकच्छा फुडा। तत्थणं सेसं तचेव। एव महाकालस्सवि। गीयरइस्सणं भंते! पुच्छा, अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—सुघोसा विमला सुस्सुरा सरिस्सई। तत्थणं सेसं तचेव। एवं गीयजसस्सवि। सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स, णवरं सरिसनामगाओ रायहाणीओ सीहासणाणिय सेस तचेव।

ह्री, पुष्पवती ४। तत्रैकैका देवी शेष तच्चैव। एव महापुरुषस्यापि। अतिकायस्य पृच्छा, आर्या! चतस्रोऽग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—भुजगा, भुजगवती, महाकच्छा, स्फुटा ४। तत्र शेष तच्चैव। एव महाकालस्यापि। गीतरतेर्भदन्त! पृच्छा, आर्या! चतस्रोऽग्रमहिष्य प्रज्ञप्तास्तद्यथा—सुघोषा, विमला, सुस्वरा, सरस्वती ४। तत्र शेष तच्चैव। एव गीतयशसोऽपि। सर्वेषा मेतेषा यथा कालस्य, नवर सदृशनामका

पणि कहवो। सुपुरिसस्सण पुच्छा। सत्पुरुष इन्द्रनो प्रश्नकीधो उत्तर। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पणत्ताओ त०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहछे—रोहिणी नवमिया हिरी पुप्फवई ४। रोहिणी नवमिका ह्री पुष्पवती ४। तत्थणएगमेगादेवी सेस तचेव। तिहा एकेको देवी शेष तिमहीज कहवो। एवमहापुरिसस्सवि अतिकायस्सणपुच्छा। इम महापुरुषप्रते पणि कहवो अतिकायनामे व्यन्तरेन्द्रनो प्रश्नकीधो उत्तर। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पणत्ताओ त०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहछे—भुयगा भुयगवई महाकच्छा फुडा ४। भुजगा भुजगवती महाकच्छा स्फुटा ४। तत्थण सेस तचेव एवमहाकालस्सवि। तिहा इत्यादि शेष तिमहीज कहवो इममहाकालने पणि कहवो। गीयरइस्सणभते पुच्छा। गीतरतिनामेइन्द्रनो प्रश्नकीधो उत्तर। अज्जो चत्तारिअग्गमहिसीओ पणत्ताओ त०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहिछे— सुघोसा विमला सुस्सुरा सरिस्सई ४। सुघोषा विमला सुस्वरा सरस्वती ४। तत्थण सेसतचेव। तिहा शेष तिमहीज सर्व कहवो। एवगोयजसस्सवि। इम गीत जस इन्द्रने पणि कहवो। सव्वे

अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पुण्णा बहुपुत्तिया उत्तमा तारया । तत्थणं एगमेगाए सेसं जहा कालस्स । एवं माणिभद्दस्सवि । भीमस्सणं भंते ! रक्खसिंदस्स पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्ग महिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—पउमा पउमावई कणगा रयणप्पभा । तत्थणं एगमेगा देवी सेसं जहा कालस्स एवं महाभीमस्सवि । किण्णरस्सणं भंते ! पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—वडेंसा केतुमई रइसेणा रइप्पिया । तत्थणं सेसं तंचेव, एवं किंपुरिसस्सवि । सुप्पुरिसस्सणं पुच्छा, अज्जो ! चत्ता

र्याः । चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–पूर्णा, बहुपुत्रिका, उत्तमा, तारका ४ । तत्रैकैकस्याः शेषं यथा कालस्य । एवं माणिभद्रस्यापि । भीमस्य भ० ! राक्षसेन्द्रस्य पृच्छा, आर्याः ! चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–पद्मा, पद्मावती, कनका, रत्नप्रभा ४ । तत्रैकैका देवी शेषं यथा कालस्य । एवं महाभीमस्यापि । किन्नरस्य भ० ! पृच्छा, आर्याः ! चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–अवतंसा, केतुमती, रतिसेना, रतिप्रिया ४ । तत्र शेषं तथैव । एवं किम्पुरुषस्यापि । सत्पुरुषस्य पृच्छा, आर्याः ! चतस्रोऽग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–रोहिणी, नवमिका,

तत्थणं एगमेगाए सेसं जहा कालस्स । तिहां एकेकी देवी इत्यादि, शेष जिम कालने कह्यु तिम कहवो । एवंमाणिभद्दस्सवि । इम माणिभद्रने पणि । भीमस्सणभंते रक्खसिंदस्स पुच्छा । भीमनो हे भगवन् ! राक्षस इन्द्रनो प्रश्नकीधो उत्तर । अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो च्यार अग्र महिषी कही ते कहेछे—पउमा पउमावती कणगा रयणप्पभा ४ । पद्मा पद्मावती कनका रत्नप्रभा ४ । तत्थणं एगमेगादेवी सेसंजहा कालस्स । तिहां ण वाक्यालंकारे, एकेकी देवी इत्यादि शेषकालनी परे कहवो । एवं महाभीमस्सवि । इम महाभीमने पणि कहवो । किण्णरस्सणभंते पुच्छा । किन्नरना हे भगवन् ! इत्यादि प्रश्नकीधो । अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो च्यार अग्रमहिषीओ कही ते कहेछे—वडिंसा केतुमई रइसेणा रइप्पिया ४ । अवतंसा केतुमती रतिसेना रतिप्रिया ४ । तत्थणं सेसंतंचेव । तिहां इत्यादि, शेष तिमज कहवो । एवं किंपुरिसस्सवि । इम किंपुरुषने

उप्पला सुदंसा । तत्थणं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं सेसं जहा चमरलोगपालाणं, परिवारो त हेव, णवर कालाए रायहाणीए कालंसि सीहासणंसि सेसं तचेव । एवं महाकालस्सवि। सुरूवस्सणं भंते! भूतिंदस्स भूयरन्नो पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीउ पन्नत्ताउ, तंजहा—रूयवई बहुरूवा सुरूवा सुभगा। तत्थणं एगमेगा सेसं जहा कालस्स। एवं पडिरूवस्सवि, पुन्नभद्दस्सणं भंते ! जक्खिंदस्स पुच्छा,

भा, उत्पला, सुदर्शना ४। तत्रैकैकाया देव्या एकैकं देवीसहस्रं शेषं यथा चमरलोकपालाना, परिवारस्तथैव, नवरं कालायां राजधान्यां काले सिंहासने शेषं तच्चैव। एवं महाकालस्यापि । सुरूपस्य भदन्त ! भूतेन्द्रस्य भूतराज्ञः पृच्छा, आर्या ! चतस्रोग्रमहिष्यः प्रज्ञप्तास्तद्यथा— रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा, सुभगा ४। तत्रैकैका शेषं यथा कालस्य। एवं प्रतिरूपस्यापि। पूर्णभद्रस्य भदन्त ! यक्षेन्द्रस्य पृच्छा, आ

छे—कमला कमलप्पभा उप्पला सुदंसा ४ । कमला कमलप्रभा उत्पला सुदर्शना ४। तत्थणं एगमेगाए देवी० एगमेगं देविसहस्सं। तिहां एकएक देवीने एकेक देवीसहस्रनो परिवार छे। सेसं जहा चमरलोगपालाणं परिवारो तहेव। थाकतो जिम चमर लोकपालनो परे कहवो परिवार पणि तिमज कहवो। णवर कालाए रायहाणीए। एतलोविशेष काला एहवेनामे राजधानी। कालंसि सीहासणंसि सेसंतचेव। कालनामे सिंहासनने विषे शेषसर्व तिमहीज कहवो। एवंमहाकालस्सवि। इम महाकालने पणि कहवो। सुरूवस्सणंभंते भूतिंदस्स भूयरणो पुच्छा। सुरूपने हेभगवन् ! भूतना इन्द्रने भूत राजानो प्रश्नकीधो उत्तर। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ त०। आर्यो चार अग्रमहिषीओ कही ते कहेछे—रूयवई बहुरूवा सुरूवा सुभगा ४। रूपवती बहुरूपा सुरूपा सुभगा ४। तत्थणं एगमेगा सेसंजहा कालस्स। तिहां एकेको देवी इत्यादि, शेष जिम कालने कह्यो तिम कहवो। एवं पडिरूवस्सवि। इम प्रतिरूपने पणि कहवो। पुण्णभद्दस्सणं भंते जक्खिंदस्सपुच्छा। पूर्णभद्रने हेभगवन् ! यक्षइन्द्रनो प्रश्न कीधो उत्तर। अज्जो चत्तारिअग्ग महिसीओ पन्नत्ताओ प० त। आर्यो चार अग्रमहिषीओ कही ते कहेछे—पुण्णा बहुपुत्तिया उत्तमा तारया ४। पूर्णा बहुपुत्रिका उत्तमा तारका ४।

सपुव्वावरेणं छत्तीसं देविसहस्साइं से तं तुडिए। पभू णं भंते! धरणे सेसं तंचेव, णवरं धरणाए रायहा
णीए धरणंसि सीहासणंसि सओ परिवारो सेसं तंचेव। धरणस्स णं भंते! णागकुमारिंदस्स कालवालस्स
लोगवालस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा
असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा। तत्थणं एगमेगाए देवीए अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं सेसाणं ति
ण्हवि। भूयाणंदस्सणं भंते! पुच्छा अज्जो? छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—रूया रूयंसा सुरूवा

एकैका देव्या अन्यानि षट्षट् देविसहस्राणि परिवारार्थं विकुर्वितुम्। एवमेव सपूर्वापरेण षट्त्रिंशद्देविसहस्राणि, स त्रुटिकः। प्रभु भदन्त! धरण शेष तथैव नवरं धरणाया राजधान्यां धरणे सिंहासने स्वकः परिवारः शेष तथैव। धरणस्य भ०! नागकुमारेन्द्रस्य कालवालस्य लोकपालस्य महाराजस्य कत्यग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः? आर्य! चतस्रः अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—अशोका विमला सुप्रभा सुदर्शना ४। तत्रैकैकस्या देव्या अवशेषं यथा चमरलोकपालानां, शेषाणां त्रयाणामपि लोकपालानां। भूतानेन्द्रस्य भदन्त! पृच्छा, आर्य! षडग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—

धानीनिविषे धरणसिंहासनने विषे। सओपरिवारो सेस तचेव। धरणने पोतानो परिवार कहेवो ते इम ६ सामानिक सहस्र इत्यादिक कहेवो शेष ति म राज। धरणस्सण भंते णागकुमारिंदस्स कालवालस्स। धरणने हे भगवन् नागकुमारेन्द्रना कालवाल। लोगपालस्स महारणो। लोकपाल महा राजाने। कइ अग्गमहिसीओ पणत्ताओ। केतली अग्रमहिषी कही। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पणत्ताओ तं०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे—असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा ४। अशोका विमला सुप्रभा सुदर्शना ४। तत्थणं एगमेगाए देवीए अवसेसंजहा चमरलोगपालाणं सेसाणं ति ण्हवि। तिहां एक एक देवी इत्यादि अवशेष थाकतो चमर लोकपालना परे कहेवो शेष तीनने पण इमज कहेवो। भूयाणंदस्सणंभंते पुच्छा। भूतानेन्द्रनो हे भगवन् इत्यादि प्रश्नोत्तर। अज्जो छ अग्गमहिसीओ पणत्ताओ तं०। आर्यो छ अग्रमहिषी कही ते कहेछे—रूया रूयंसा सुरूवा

प०, तं०—मीणगा सुभद्दा विज्जुया असणी। तत्थणं एगमेगाए देवीए सेसं जहा चमरस्स, एवं जाव वेस
मणस्स। धरणस्सणं भंते! णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो कइ अग्गमहिसीओ प० अज्जो! छ प०
तंजहा अला सक्का सतेरा सोदामिणी इंदा घणविज्जुया। तत्थणं एगमेगाए देवीए छ छ देविसहस्सा परि
वारो पन्नत्तो। पभूणं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं छ छ देविसहस्साइं परियार विउव्वित्तए। एवामेव

नवरं बलिचञ्चाया राजधान्या' परिवारो यथा मोकोद्देशके शेष तथैव यावन्मैथुनप्रत्ययम्। बले भंदन्त! वैरोचनेन्द्रस्य वैरोचनराज- सोम
स्य महाराज्ञ कत्यग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता. ? आर्या! चतस्रो ऽग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–मेनका सुभद्रा विद्युत् असनी ४। तत्रैकैकाया देव्या.
शेष यथा चमरस्येव यावद्वैश्रमणस्य। धरणस्य भं०। नागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराज्ञ कत्यग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता ? आर्या. ? षडग्रमहिष्य प्र
ज्ञप्ता स्तद्यथा–अला शक्रा शतेरा सौदामिनी इन्द्रा घनविद्युत ६। तत्रैकैकाया देव्या. षट् षट् देविसहस्त्राणि परिवार प्रज्ञप्त'। प्रभव स्ता ए

गाए देवीए। तिहा एकेकी देवी इत्यादि। सेसं जहा चमरस्स एव जाव वेसमणस्स। शेष जिम चमरने कह्यु तिम कहवो इमयावत् वैश्रमण लगे क
हवो। धरणस्सण भंते णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो। धरणने हेभगवन् नागकुमारेन्द्रने नागकुमारराजाने। कइअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं०। के
तली अग्रमहिषी कही ते कहेछे—अज्जो छ अग्गमहिसीओ प०तं०। आर्यो छ अग्रमहिषी कही ते कहेछे, अला सक्का सतेरा सोदामिणी इंदा घनवि
ज्जुया ६। अला शक्रा शतेरा सौदामिनी इन्द्रा घनविद्युत् ६। तत्थण एगमेगाए देवीए छ छ देविसहस्सापरिवारो पण्णत्तो। तिहां एक एक देवीने छ
छ देविसहस्र परिवार कह्यो। पभूण ताओ एगमेगादेवी। समर्थ तेह एकएक देवी। अन्नाइं छछदेविसहस्साइं परिवारविउव्वित्तए। अनेरा छ छ देवि
सहस्र परिवारपणे अर्थे विकुर्वे। एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीस देविसहस्साइं सेततुडिए। इमहीज पूर्वा परेकरी छत्रीसदेवि सहस्र तेह त्रुटिकवर्ग क
हिये। पभूणंभंते धरणे सेसतचेव। समर्थ हेभगवन् धरण शेष तिमहीज। णवर धरणाए रायहाणीए धरणसि सीहासणसि। एतलोविशेष धरणनाम राज

॥ मूल ॥

वरुणस्सवि, णवरं वरुणाए रायहाणीए एव वेसमणस्सवि, णवरं वेसमणाए रायहाणीए सेसं तचेव जाव मेहुणवत्तियं। बलिस्सणं भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छा, अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा सुभा णिसुंभा रंभा निरंभा मदणा। तत्थणं एगमेगाए देवीए अट्ठ सेस जहा चमरस्स, णवरं बलिच चाए रायहाणीए परिवारो जहा मोयोद्देसए सेसं तचेव जाव मेहुणवत्तिय। बलिस्सणं भंते ! वइरोयणिं दस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ

अनुवाद

पि' नवर वरुणाया राजधान्या, एव वैश्रमणस्यापि, नवर वैश्रमणाया राजधान्या शेष तथैव यावन्मैथुनप्रत्यय। बले भदन्त ! वैरोचनेन्द्र स्य पृच्छा, आर्या ! पञ्चाग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–शुम्भा निशुम्भा रम्भा निरम्भा मदना ५। तत्रैकाया देव्या अष्टौ अष्टौ शेष यथा चमरस्य,

॥ भाषा ॥

इस वैश्रमण लोकपालने पण कहेवो एतलो विशेष वैश्रमण इसेनामे राजधानीने विषे। एव वेसमणस्सवि णवर वेसमणाए रायहाणीए। इसेनामे राजधानीने विषे। सेसतचेव जाव मेहुणवत्तिय। थाकतो सर्व तिमहीज कहवो यावत् मैथुनप्रत्यय भोग भोगविवा समर्थ नहीं। बलिस्सणभंते वइरोयणिंदस्स पुच्छा। बलिने हेभगवन् ! वैरोचनेन्द्रने इत्यादि प्रश्न उत्तर। अज्जो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं०। आर्यो पंच अग्रमहिषीओ कही ते कहेछे–सुभा णिसुभा रंभा णिरंभा मयणा। शुम्भा निशुम्भा रम्भा निरम्भा मदना ५। तत्थण एगमेगाए देवीए। तिहां एकेकी देवीने। अट्ठट्ठसेस जहा चमरस्स णवरं। व लिचचानाम राजधानीने विषे। परिवारो जहा मोयो उद्देसए सेस तचेव। परिवार जिम मोका शतकना मोयाउद्देशानेविषे कह्यो तिम कहवो शेष ति महीज कहवो। जाव मेहुणवत्तिय। यावत् मैथुनसम्बन्धी भोग भोगविवा समर्थ नहीं। बलिस्सणभंते वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्समहारण्णो। व लिने हेभगवन् वइरोचनेंद्रने वइरोचन राजाने सोमनाम महाराजाने। कइअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। केतली अग्रमहिषीओ कही। अज्जो चत्तारि अग्ग महिसीओ पण्णत्ताओ तं०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे,। मीणगा सुभद्दा विज्जुया असणी ४। मेनका सुभद्रा विद्युत् असनी। तत्थण एगमे

॥ टीका ॥

ञ्जानो विहर्तुमित्युक्तं तत्रैव विशेषमाह ॥ केवलं परियारिद्धीएत्ति ॥ केवलं नवरं परिचारः परिचारणा सचेह स्त्रीशब्दश्रवणरूपसन्दर्शनादि रूपः सएव ऋद्धिः सम्पत्परिचारर्द्धिं स्तया परिवारर्द्धा वा, कलत्रादिपरिजनपरिचारणामात्रेणेत्यर्थं ॥ नोचेवणं मेहुणवत्तियंति ॥ नैव च मैथुनप्रत्यय यथाभवत्येव भोगभोगान् भुञ्जानो विहर्त्तुंप्रभुरिति प्रकृत मिति ॥ परिवारो जहापढमोद्देसएत्ति ॥ तृतीयशतस्य प्रथमोद्देशक इत्यर्थं ॥

॥ मूल ॥

रणो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं अवसेसं जहा चमरस्स, णवरं परियारो जहा सूरियाभस्स, सेसं तंचेव जाव णोचेवणं मेहुणवत्तियं। चमररसणं भंते! जाव रणो यमस्स महारणो कइ अग्गमहिसीओ एवचेव, णवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स, एवं

अनुवाद

राजधान्या सभाया सुधर्मायां सोमे सिंहासने त्रुटिकेनावशेष यथा चमरस्य, नवरं परिचारो यथा सूरिकाभस्य शेष तच्चैव यावन्नोचैव मैथुनप्रत्यय। चमरस्य भ० । यावद्राज्ञो यमस्य महाराज्ञ कत्यग्रमहिष्य एवचैव, नवरं यमाया राजधान्या शेष यथा सोमस्य' एव वरुणस्या

॥ भाषा ॥

त्तारिदेविसहस्सा सेतंतुडिए। चारदेवी सहस्र तेह त्रुटिकवर्ग कहिये। पभूणंभंते चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो। समर्थ हेभगवन्! चमरनो असुरेन्द्रनो असुरकुमार राजानो। सोमेमहाराया सोमाए रायहाणाए सभाएसुहम्माए। सोम महाराजा लोकपाल सोमनाम राजधानीने विषे सभा सुधर्मानै विषे। सोमसिंसीहासणंसि तुडिएणं। सोमनामे सिंहासनने विषे त्रुटिकवर्ग सघाते। अवसेसं जहा चमरस्स। थाकतो चमरनी परे कहवो। णवरं परियारो जहा सूरियाभस्स सेसंतंचेव। एतलोविशेष परिचार सूर्याभदेवनी परे कहवो शेष तिमहीज। जाव णोचेवणं मेहुणवत्तियं। यावत् नही निश्चे मैथुनप्रत्यय भोग भोगविवाने समर्थ। चमरस्सणंभंते जाव रणो यमस्स महारणो। चमरने हेभगवन। यावत् असुरराजाने। यम महाराजा लोकपालने। कइ अग्गमहिसीओ एवचेव। केतली अग्रमहिषीओ कही इत्यादि इमहीज कहवो। णवरं जमाए रायहाणीए सेसं जहा सोमस्स। एतलोविशेष यमानाम राजधानीने विषे शेष सर्व सोमनीपरे कहवो। एवं वरुणस्सवि णवरं वरुणाए रायहाणीए। इम वरुणने पणि कहवो एतलोविशेष वरुण

॥ टीका ॥

था दिव्याद् भोगभोगाद् ति, तत्र च महता वृहता अहताव्य च्छिन्नानि आख्यानकप्रतिबद्धानि वाद्यानि नाट्यगीतवादितानि तेषां तन्त्रीतलताला ना च ॥ तुडियत्ति ॥ शेषतूर्याणा च घनमृदङ्गस्य च मघसमानध्वनिमर्दलस्य पटुना पुरुषेण प्रवादितस्य यो रव स तथा तेन प्रभु भोगान् भु

॥ मूल ॥

रसणं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररस्रो सोमस्स महारस्रो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—कणया कणगलया चित्तगुत्ता वसुंधरा। तत्थणं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो पण्णत्तो । पभूणं ताओ एगमेगादेवी अण्णं एगमेगं देविसहस्सं परियारं विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देविसहस्सा, सेत्तं तुडिए। पभूण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार

॥ अनुवाद ॥

असुरेन्द्रस्यासुरकुमारराजस्य सोमस्य महाराजस्य कत्यग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ता ? आर्य ! चतस्रो अग्रमहिष्यः प्रज्ञप्ता तद्यथा–कनका कनकलता चित्रगुप्ता वसुंधरा ४। तत्रैकस्या देव्या एकैकं देवीसहस्रं परिवारं प्रज्ञप्तं। प्रभवः ता एकैका देव्यो अन्यमेकैकं देवीसहस्रं परिवारार्थं विकुर्वितुम्। एवमेव सपूर्वापरेण चत्वारि देवीसहस्राणि, सच त्रुटिकं । प्रभु भ० । चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराजस्य सोमो महाराजा सोमाया

॥ भाषा ॥

सो शब्द श्रवणरूप सदर्शनादि तेहीज ऋद्धि सम्पदा तिणेकरी कलत्रादि परिजन परिचारणमात्रे करी इत्यर्थः पणि मैथुनप्रत्यय भोग भोगवती विच रवाने समर्थ नथी। चमरस्सणंभंते असुरिंदस्स असुररस्रो सोमस्समहारस्रो। चमरनो हेभगवन् ! असुरेन्द्रनो असुरकुमार राजानो सोमनामे महाराज लोकपालने। कइअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ। केतली अग्रमहिषीयों कही प्रतिप्रश्न उत्तर। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त०। चार अग्रमहि षी कही ते कहिछे--कणया कणगलता चित्तगुत्ता वसुंधरा। कनका कनकलता चित्रगुप्ता वसुंधरा। तत्थणं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवी सहस्स परि वारो पण्णत्तो। तिहां एकेकी देवीने एकएकहजारसहस्रनो परिवार कह्यो। पभूणताओ। समर्थछे तेह देवीओ। एगमेगादेवी अण्णं एगमेगं देविसहस्स परियार विउव्वित्तए। एकेकीदेवी अनेरा एक एक देवी सहस्ररूप परिवारणाने अर्थे विकुर्वे। एवामेव सपुव्वावरेणं। इमहीज पूर्वापर सघाते। च

॥ टीका ॥ कल्याणमित्यादिबुद्धया ॥ पज्जुवासणिज्जाउत्ति ॥ महयाहय इह यावत्करणादिदं दृश्यं-नहगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवे

॥ मूल ॥ पभू सेतेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ णोपभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव विह रित्तए। पभूणं अज्जो चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहा सणंसि चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अन्नेहिंय बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिय देवी हिय सद्धिं संपरिवुडे महयाहय जाव भुंजमाणेविहरित्तए केवलपरियारिड्ढीए णोचेवणं मेहुणवत्तियं। चमर

अनुवाद कल्याण मङ्गल दैवत चैत्य (इति बुद्धया) पर्युपासनीयानि भवन्ति, तेषा प्रणिधाने नेव प्रभु स्तत्तेनार्थेनार्या । एवमुच्यते नो प्रभुश्चमरोऽसुरेन्द्रो ऽसुरराजा चमरचञ्चायां राजधान्यां सभायां सुधर्मायां चमर सिंहासने चतुःषष्टिसामानिकसहस्राणि त्रायस्त्रिंशका यावदन्यैश्च बहुभिरसुर कुमारदेवै र्देव्यैश्च सार्द्धं सम्परिवृतो महताहत (प्रभृति) यावद्भुञ्जानो विहर्त्तुम्, केवल परिवारर्द्ध्या नोचैव मैथुनप्रत्यय। चमरस्य भदन्त !

॥ भाषा ॥ दैवत चैत्य इत्यादि बुद्धिकरी सेवा करवायोग्य छुवे । तेसि पणिहाणे णोपभू। तेहांने मनमांहि वन्द्य पूज्य जाणी आछादीने नही समर्थ। सेतेणट्ठेण अज्जो एववुच्चइ णोपभू। तेणे अर्थे हो आर्यो। इम कहिये नही समर्थ। चमरे असुरिंदे असुरराया। चमर असुरेन्द्र असुरराजा। चमरचचाएरायहाणी ए जाव विहरित्तए। चमरचचानामे राजधानीने विषे यावत् विचरवाने एतलालगे कहवो। पभूणअज्जो चमरे असुरिंदे असुरराया। समर्थ छे अहो आर्यो। चमर असुरेन्द्र असुरराजा। चमरचचाएरायहाणीए सभाएसुहम्माए। चमरचचानाम राजधानीनेविषे सभासुधर्मानेविषे। चमरंसिसींहास णंसि। चमर सिंहासननेविषे। चउसट्ठीसामाणिय साहस्सीहिं तायत्तीसाए। चउसठ सामानिक सहस्रदेव संघाते त्रायत्रिंशक इत्यादि। जाव अन्नेसि च बहूहि असुरकुमारेहिं। यावत् अनेरा पणि घणा असुरकुमार सबंधी। देवेहिय देवीहिय सद्धिं संपरिवुडे। देवसघाते देवीसघाते परिवर्यो। मह याहय जाव भुंजमाणे विहरित्तए। मोटे शब्देकरी आहया इत्यादि यावत् भोगवतोथको विचरे। केवलपरियारिड्ढीए णोचेवण मेहुणवत्तिय। ते केवल

इत्येव सम्बद्धस्या ऽस्येदमादिसूत्र--तेणमित्यादि ॥ सेततुफिएत्ति ॥ त्रुटिक नाम वर्ग. ॥ वइरामएसुत्ति ॥ वज्रमयेषु ॥ गोलवट्टसमुग्गएसुत्ति ॥ गोलकाकारा वृत्तसमुद्गका गोलवृत्तसमुद्गका स्तेषु ॥ जिणसकहाउत्ति ॥ जिनसक्थीनि जिनास्थीनि ॥ अच्चणिज्जाउत्ति ॥ चन्दनादिना ॥ वदणिज्जाउत्ति ॥ स्तुतिभि ॥ नमसणिज्जाउ ॥ प्रणामत ॥ पूयणिज्जाउ ॥ पुष्पै ॥ सक्कारणिज्जाउ ॥ वस्त्रादिभि ॥ समाणणिज्जाउ ॥ प्रतिपत्तिविशेषै.,

रिदस्स असुरकुमाररणो चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइए खंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूउ जिणसकहाउ सणिखित्ताउ चिठति, जाउणं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो असेसिच बहूण असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाउ वंदणिज्जाउ णमंसणिज्जाउ पूयणिज्जाउ सक्कारणिज्जाउ सम्माणणिज्जाउ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाउ भवति, तेसिं पणिहाणे णो

ये चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञो ऽन्येषाञ्च बहूना मसुरकुमाराणा देवाना देवीना चार्चनीयानि वन्दनीयानि नमस्करणीयानि पूजनीयानि सत्करणीयानि सम्माननीयानि न्या सभाया सुधर्माया माणवके चैत्ये स्तम्भे वज्रमयषु गोलवृत्तसमुद्गकेषु बहूनि जिनसक्थीनि निक्षिप्तानि तिष्ठन्ति,

असुरकुमारराजाने । चमरचचाएरायहाणीए सभाए सुहम्माए । चमरचचा राजधानीनेविषे सभासुधर्मानेविषे । माणवए चेइएखभे । माणवकनामे चैत्य स्थभने विषे । वइरामएसुगोलवट्टसमुग्गएसु । वज्रमय गोलाने आकारे वाटला डाबडानेविषे । बहूआ जिणसकहाओ सणिखित्ताओ चिट्ठति । घणा जिनना अस्थि हाड डाढाप्रमुख घालीराख्या रहेछे । जाओणं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो अणेसिच बहूणं । जिके चमरने असुरेन्द्रने असुरकुमार राजाने अनेरा पणि घणा । असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ । असुरकुमारना देवने तथा देवीने पूजवायोग्यछे स्तुतिकरी वांदवायोग्यछे । णमसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ समाणणिज्जाओ । प्रणामविशेषे करी नमस्कारयोग्यछे फूलेकरी पूजवायोग्यछे वस्त्रादिके करी सत्कारवा योग्यछे प्रतिपत्ति विशेषेकरी सन्मान करवायोग्यछे । कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति । कल्याण मङ्गलीक

देवीए अन्नाइं अट्ठदेवीसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, सेत्तं तुडिए। पभूणं भंते! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाएरायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणंसद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणेविहरित्तए? णोइणट्ठे समट्ठे। सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ णोपभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाएरायहाणीए जाव विहरित्तए? अज्जो! चमरस्सणं असु

तत्रैके काया देव्या अष्टावष्टौ देविसहस्रपरिवार' प्रज्ञप्त., प्रभवस्ता एकैका देवी अन्यान्यष्टावष्टौ देविसहस्राणि परिचारार्थं विकुर्वितुं, एव मेव सपूर्वापरेण चत्वारिंशद्देविसहस्राणि' सत्त्रुटिक.। प्रभु भंदन्त। चमरो सुरेन्द्रोसुरकुमारराजा चमरचञ्चायां राजधान्या सभाया सुध र्माया चमरे सिंहासने त्रुटिकेन सार्द्धं दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जानो विहर्तुम्? नायमर्थ समर्थ'। अथकेनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते नै वप्रभु श्चमरोऽसुरेन्द्रोऽसुरराजा चमरचञ्चाया राजधान्या यावद्विहर्तुम्? आर्यो'। चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञ श्चमरचञ्चाया राजधा

वीए। समर्थछे तेह एकेकी देवी। अन्नाइ अट्ठदेवी सहस्साइ परियार विउव्वित्तए। अनेरा आठआठ देवीना सहस्र परिचारणाने अर्थे विकुर्वे। एवामेवसपुव्वावरेणं चत्तालीसदेवी सहस्सा। इम करतो पहिलो पाछिलो मिलीयको चालीससहस्र देवी परिचारणानी थाय। सेस तुडिए पभूणं भंते चमरे असुरिंदे असुरकुमार राया। तेहने त्रुटिक इसेनामे वर्ग कहियें समर्थ हेभगवन्। चमर असुरेन्द्र असुरकुमारराजा। चमरचचाए रायहाणीए। चमरचञ्चानाम राजधानीनेविषे। सभाए सुहम्माए। सभा सुधर्मानेविषे। चमरंसिसीहासणंसि तुडिएणसद्धिं। चमरसिंहासननेविषे त्रुटिकवर्ग सघाते। दिव्वाइ भोग भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए। देव सम्बन्धी भोगविययोग्य भोगप्रते भोगवतो थको विचरवा। णोइणट्ठे समट्ठे। ए अर्थ समर्थ नही। सेकेणट्ठेण भंते एववुच्चइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इम कह्यो। णो पभू चमरे असुरिंदे असुरराया। नही समर्थ चमर असुरेन्द्र असुरराजा। चमरचचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए। चमरचचा राजधानीने विषे यावत् विचरवा। अज्जो चमरस्सण असुरिंदस्स असुररणो। आर्यो चमरने असुरेन्द्रने

णयरे गुणसिलए जाव परिसापडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे, अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमेसए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति, तएण ते थेराभगवंतो जायसड्ढा जायसंसया जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी—चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो कइअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ? अज्जो! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—काली रायी रयणी विज्जू मेहा । तत्थणं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देविसहस्सपरिवारो पण्णत्तो । पभूण ताओ एगमेगाए

तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य बहवोन्तेवासिन स्थविरा भगवन्तो जातिसम्पन्ना यथाष्टमे शते सप्तमोद्देशके यावद्विहरन्ति, तदानी ते स्थविरा भगवन्तो जातश्रद्धा जातसंशया यथा गौतमस्वामी यावत्पर्युपासन्त एवमवादिषु—चमरस्य भदन्त ! असुरेन्द्रस्यासुरकुमारस्यासुरकुमारराज्ञ कत्यग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता ? आर्या ! पञ्चाग्रमहिष्य प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—काली, रात्रि, रजनी, विद्युत्, मेघा ५ ।

तेण तेण समएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । समणस्सभगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना घणा शिष्य । थेराभगवंतो जाइसंपन्ना । स्थविर भगवन्त जातिवन्त इत्यादि । जहा अट्ठमेसए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति । जिम आठमा शतकना सातमा उद्देशाने विषे कह्यु यावत् विचरे । तएण ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जाय संसया । तिवारे ते स्थविर भगवन्त उपनी श्रद्धा उपनो संसय । जहा गोयमसामी जाव पज्जुवासमाणा एववयासी । यावत् सेवाकरता एवा कहे । चमरस्सण भंते असुरिंदस्स । चमरने हे भगवन् । असुरेन्द्रने । असुरकुमाररन्नो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ । असुरकुमारराजाने केतली अग्रमहिषीओ पट्टराणी कही इतिप्रश्न उत्तर । अज्जो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । अहो आर्यो । पंच अग्रमहिषी कही ते कहेछे—काली रायी रयणी विज्जू मेहा । कालीनाम १ रायी २ रजनी ३ विद्युत ४ मेघा ५ । तएण एगमेगाए देवीए । तिहा एकेकी देवीने । अट्ठट्ठ देवि सहस्सपरिवारो पण्णत्तो । आठआठ देवी सहस्रनो परिवार कह्यो । पभूण ताओ एगमेगाए दे

॥ टीका ॥ का स्तत्रोत्पन्ना स्तत्प्रभृतिच पूर्वमिति ॥ दशमशते चतुर्थ ॥ ४ ॥ चतुर्थोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता पञ्चमे तु देवीवक्तव्यतोच्यत

॥ मूल ॥ णवरं चंपाए णयरीए जाव उववन्ना । जप्पभिइं च णं भंते! ते चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया सेसं तचेव जाव अन्ने उववज्जंति । अत्थिणं भंते ! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा हंता अत्थि । सेकेणट्ठेणं जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अन्ने उववज्जंति सेव भंते भंतेत्ति ॥ दसमस यस्स चउत्थउ उद्देसो सम्मत्तो १० ॥ ४ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएण रायगिहे णामं

अनुवाद चाम्पीया स्त्रयस्त्रिंशत्सहायाः शेष तच्चैव यावदन्येचोत्पद्यन्ते । अस्ति भ० । सनत्कुमारस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञ पृच्छा, हन्तास्ति । अथ केनार्थेन यथा धरणस्य तथैव, एव यावत्प्राणतस्य, एवमच्युतस्य, यावदन्ये उत्पद्यन्ते । तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति दशमशते चतुर्थोद्देशः ॥ १० ॥ ४ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृह नाम नगर (अभवदिति गम्यम्) गुणशिलके चैत्ये यावत्परिषत्प्रतिगता,

॥ भाषा ॥ नामे नगरीनविषे इत्यादि यावत् उपना ए कहवो । जप्पभिइ च णभंते ते चम्पिज्जा । जे दिवसथकी हेभगवन् ! ते चम्पावासी । तायत्तीससहाया सेस तचेव । तेत्रीस सहाया मित्र शेष तिमहीज । जाव अन्ने उववज्जंति । यावत् अनेरा चवे अनेरा उपजे । अत्थिणभंते सणकुमारस्स देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा । छे हेभगवन् ! सनत्कुमारने देवेन्द्रने देवराजाने इत्यादि प्रश्न उत्तर । हंताअत्थि सेकेणट्ठेण । हा छे ते स्ये अर्थे । जहा धरणस्स तहेव एव जाव पाणयस्स एव जाव अच्चुयस्स । जिम धरणने कह्यु तिमहीज कहवो इम यावत् प्राणतने कहवो इम अच्युतने पणि कहवो । जाव अन्ने उववज्जंति । यावत् अनेरा चवे अनेरा उपजे । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्य छे । दसमसयस्स चउत्थओ उद्देसओ सम्मत्तो । ए दशमा शतकनो चौथो उद्देशो अर्थथको लिख्यो १० ॥ ४ ॥ चौथे उद्देशे देववक्तव्यता कही पाचमें देवीवक्तव्यता कहेछे—तेणकालेण तेण समएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । रायगिहेणामणयरे गुणसिलए । राजगृहनामा नगरनेविषे गुणशिल चैत्ये । जाव परिसापडिगया । यावत् पर्षदा पाछी वली । तेण का

पच्छावि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना । जप्पभिइं च णं भंते ! ते बालाए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति। अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स ३ एवं जहा सक्कस्स

मणोपासकाः पूर्वमपि पश्चादपि उग्रा उग्रविहारिणः संविग्नाः संविग्नविहारिणो बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं झूषयन्ति, झूषयित्वा षष्टिभक्तान्यनशनतया च्छेदयन्ति, च्छेदयित्वा ऽऽलोचितप्रतिक्रान्ताः समाधिप्राप्ताः कालमासे कालं कृत्वा यावदुत्पन्नाः । यत्प्रभृति च भदन्त ! ते बालाकास्त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतयः श्रमणोपासकाः शेषं यथा चमरस्य यावदन्ये चोत्पद्यन्ते । अस्ति भ० ! ईशानस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य एवं यथा शक्रस्य नवरं चम्पाया नगर्यां यावदुत्पन्नाः । यत्प्रभृति च भ० ! ते

वासगा पुव्विंपि पच्छावि । श्रमणोपासक पहिला पणि पछे पणि । उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी । उत्कृष्ट भावे उत्कृष्ट आचारवन्त श्रमणोपासक पर्याय पाले पालीने । मासिसमार्ग चाल्या कडा अनुष्ठानवन्त । बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ २ त्ता । घणा वरसलगे श्रमणोपासक पर्याय पाले पालीने । मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता । मासनी संलेषणाए आत्माने सेवीने । सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता । साठभात अणसणें करीं छेदे छेदीने । आलोइय पडिक्कता समाहिपत्ता । आलोई पडिक्कमी समाधि पाम्या । कालमासे कालकिच्चा जाव उववन्ना । काल समयनेविषे काल करीने यावत् उपना । जप्पभिइं च णं भंते ते बालाए तायत्तीसं सहाया गाहावई । जे दिवसथकी हे भगवन् ! ते बालसन्निवेशना तेत्रीस सहायी मित्र कुटुम्बना नायक । समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति । श्रमणोपासक शेष जिम चमरने कह्यु तिम यावत् अनेरा चवे अनेरा उपजे। अत्थि णं भंते ईसाणस्स ३ । छे हे भगवन् ! ईशानने ३ । एवं जहा सक्कस्स णवरं चंपाए णयरीए जाव उववण्णा । इम जिम शक्रने कह्यु तिम कहवो एतलो विशेष चम्पा

॥ मूल ॥

दस्सवि, एवं जाव महाघोसस्सवि । अत्थिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा हंताअत्थि । से केणट्ठेण भंते ! जाव तायत्तीसगा देवा एवं खलु गोयमा ! तेण कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वालाएणामं सन्निवेसे होत्था, वण्णओ । तत्थणं वालाए सन्निवेसे तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरंति, तएणं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विंपि

अनुवाद

स्त्रायस्त्रिंशकाना देवाना शाश्वतानि नामधेयानि प्रज्ञप्तानि' ये नकदाचिन्नासिषु यावदन्ये च्यवन्ते ऽन्येचोत्पद्यन्ते । एव भूतानन्दस्यापि, एव यावन्महाघोषस्यापि । अस्ति (सन्तीत्यर्थ) भदन्त ! शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञ पृच्छा, हन्तास्ति । अथ केनार्थेन भ० ! याव त्त्रायस्त्रिंशका देवा ? एव खलु गौतम ! तस्मिन्काले तस्मिन्समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वालाक इति नाम्रा सन्निवेशो भवत्, वर्णक ' तत्र वालाके सन्निवेशे त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय श्रमणोपासका यथा चमरस्य यावद्विहरन्ति, तदानी ते त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय. श्र

॥ भाषा ॥

ह्या । ज नकदापि नासि जाव अणोच्छिति । ज न कदेई न हुयो यावत् अनेरा चवे । अनेरा उववज्जति । अनेरा उपजे इत्यादि पूर्ववत् । एव भूयाणद ऋषि एव जाव महाघोसस्सवि । इम भूतानन्दने पणि कहवो इम यावत् महाघोषने पणि कहवो । अत्थिणभंते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा । छे हे भगवन् ! शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने इत्यादि प्रश्न उत्तर । हता अत्थि । हा छे । सेकेणट्ठेण भंते जाव तायत्तीसगादेवा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! यावत् त्राय स्त्रिंशक देव । एव खलु गोयमा । इम निश्चे हेगौतम । तेणकालेण तेण समएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । इहेव जबूदीवे २ भारहेवासे । एहीज जबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे भरतनामा क्षेत्रनेविषे । वालाएणामसंणिवेसे होत्था वण्णओ । वाल एहवे नामे संनिवेश हुयो वर्णक । तत्थण वालाए सण्णिवेसे । तिहा वाल सन्निवेशनेविषे । तायत्तीससहाया गाहावई । तेत्रीस सहायी मित्र कुटुम्बना नायक । समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरति । श्रम णोपासक इत्यादि जिम चमरने तिम यावत् विचरे । तएण ते तायत्तीस सहाया गाहावई । तिवारे ते तेत्रीस मित्र सहायी कुटुम्बना नायक । समणो

पच्छावि उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना। जप्पभिइं च णं भंते! ते वालाए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति। अत्थि णं भंते! ईसाणस्स ३ एवं जहा सक्कस्स

मणोपासका पूर्वमपि पश्चादपि उग्रा उग्रविहारिणः संविग्ना संविग्नविहारिणो बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्यायं पालयन्ति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं झूषन्ति, झूषयित्वा षष्टिभक्तान्यनशनतया च्छेदयन्ति, च्छेदयित्वा ऽऽलोचितप्रतिक्रान्ता समाधिप्राप्ता कालमासे कालं कृत्वा यावदुत्पन्ना। यत्प्रभृति च भदन्त! ते वालाका स्त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतयः श्रमणोपासकाः शेषं यथा चमरस्य यावदन्ये चोत्पद्यन्ते। अस्ति भ०। ईशानस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञ एव यथा शक्रस्य नवरं चम्पायां नगर्यां यावदुत्पन्ना.' यत्प्रभृति च भ०। ते

वासगा पुव्विं पच्छावि। श्रमणोपासक पहिला पणि पछे पणि। उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी। उत्कृष्ट भावे उत्कृष्ट आचारवन्त मोक्षमार्गे चाल्या कडा अनुष्ठानवन्त। बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणइ २ त्ता। घणा वरसलगे श्रमणोपासक पर्याय पाळे पालीने। मासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसित्ता। मासनी संलेषणाए आत्माने सेवीने। सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता। साठभात अणसणे करी छेदे छेदीने। आलोइय पडिक्कंता समाहिपत्ता। आलोई पडिक्कमी समाधि पाम्या। कालमासे कालकिच्चा जाव उववन्ना। काल समयनेविषे काल करीने यावत् ऊपना। जप्पभिइं च णं भंते ते वालाए तायत्तीस सहाया गाहावई। जे दिवसथकी हे भगवन्। ते वालसन्निवेशना तेत्रीस सहायी निज कुटुम्बना नायक। समणोवासगा सेस जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति। श्रमणोपासक शेष जिम चमरने कह्यु तिम यावत् अनेरा चवे अनेरा ऊपजे। अत्थि णं भंते ईसाणस्स २। छे हे भगवन्! ईशानने २। एवं जहा सक्कस्स णवरं चंपाए णयरीए जाव उववन्ना। इम जिम शक्रने कह्यु तिम कहवो एतलो विशेष चम्पा

दस्सवि, एवं जाव महाघोसस्सवि । अत्थिणं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा हंताअत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! जाव तायत्तीसगा देवा एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वालाएणामं सण्णिवेसे होत्था, वण्णओ । तत्थणं वालाए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरंति, तएणं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा पुव्विंपि

स्त्रायस्त्रिंशकाना देवाना शाश्वतानि नामधेयानि प्रज्ञप्तानि' ये नकदाचिन्नासिषु यावदन्ये च्यवन्ते ऽन्येचोत्पद्यन्ते । एव भूतानन्दस्यापि, एव यावन्महाघोषस्यापि । अस्ति (सन्तीत्यर्थ.) भदन्त ! शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञ पृच्छा, हन्तास्ति । अथ केनार्थेन भ०! याव त्रायस्त्रिंशका देवा ? एव खलु गौतम ! तस्मिन्काले तस्मिन्समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे वालाक इति नामा सन्निवेशो भवत्, वर्णक ' तत्र वालाके सन्निवेशे त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय श्रमणोपासका यथा चमरस्य यावद्विहरन्ति, तदानी ते त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय श्र

त्था । ज नकदापि नासि जाव अवोच्छित्ति । ज न कहेई न हुयो यावत् अनेरा चवे । अनेरा उववज्जति । अनेरा उपजे इत्यादि पूर्ववत् । एव भूयाणद स्सवि एव जाव महाघोसस्सवि । इम भूतानन्दने पणि कहवो इम यावत् महाघोषने पणि कहवो । अत्थिणभते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो पुच्छा । छै हे भगवन् । शक्रने देवेन्द्रने देवराजाने इत्यादि प्रश्न उत्तर । हता अत्थि । हा छै । सेकेणट्ठेण भते जाव तायत्तीसगादेवा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । यावत् त्राय स्त्रिंशक देव । एव खलु गोयमा । इम निश्चै हेगौतम । तेणकालेण तेण समएण । ते कालनेविषै ते समयनेविषै । इहेव जबूदीवे २ भारहेवासे । एहीज जबूद्वीपनामा द्वीपनेविषै भरतनामा क्षेत्रनेविषै । वालाएणामसंण्णिवेसे होत्था वण्णओ । वाल एहवे नामे सन्निवेश हुयो वर्णक । तत्थण वालाए सण्णिवेसे । तिहा वाल सन्निवेशनेविषै । तायत्तीससहाया गाहावई । तेत्रीस सहायी मित्र कुटुम्बना नायक । समणोवासगा जहा चमरस्स जाव विहरति । श्रम णोपासक इत्यादि जिम चमरने तिम यावत् विचरे । तएण ते तायत्तीस सहाया गाहावई । तिवारे ते तेत्रीस मित्र सहायी कुटुम्बना नायक । समणो

तत्थणं विभेल सन्निवेसे जहा चमरस्स जाव उववन्ना । तप्पभिइंचणं भंते ! ते विभेलगा तायत्तीस सहा या गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिंदस्स सेसं तचेव जाव णिच्चे अव्वोच्छित्तिणयठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जति। अत्थिण भंते! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो तायत्तीसगा देवा? हंता अत्थि । सेकेणठेणं जाव तायत्तीसगा देवा ? गोयमा ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो ताय त्तीसगाणं सासए नामधेज्जे पन्नत्ते जं नकदायि नासी जाव अन्ने चयति अन्ने उववज्जति । एव भूयाण

ऽन्नवत् , वर्णक स्तत्र विभेल सन्निवेशे यथा चमरस्य यावदुत्पन्ना स्तत्प्रभृतिच भदन्त । ते विभेलका स्त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय श्रमणोपासका बलेर्वैरोचनेन्द्रस्य शेष तचैव यावन्नित्या अव्युच्छित्तिनयार्थतया ऽन्ये च्यवन्ते ऽन्य उत्पद्यन्ते । अस्ति भदन्त ! धरणस्य नागकुमारेन्द्रस्य नाग कुमारराजस्त्रायस्त्रिंशका देवा ? हन्तास्ति । अथ केनार्थेन यावत्त्रायस्त्रिंशका देवा ? गौतम ! धरणस्य नागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराज्ञ

में सन्निवेश हुवो वर्णक तिहा विभेलनामा सन्निवेशनेविषै। जहा चमरस्स जाव उववन्ना । जिम चमरने तिम यावत् ऊपना । तप्पभिइंचण भंते ते विभे लगा । ते दिवसथकी हेभगवन् ते विभेल सन्निवेशना वासी । तायत्तीस सहाया गाहावई । तेत्रीस मित्र कुटुंबना नायक । समणोवासगा । श्रमणोपा सक । बलिस्स वइरोयणिदस्स । बलिने वैरोचनेंद्रने इत्यादि । सेसंतचेव जाव णिच्चे । शेष तिमहीज कहवो यावत् नित्यछै । अव्वोच्छित्तिणयठयाए । अवि च्छेद नयार्थे करी । अन्ने चयति अन्ने उववज्जति । अनेरा चवे अनेरा ऊपजे पणि नामादिकथी शास्वता छे । अत्थिणभंते धरणस्स । छे हेभगवन् धरण ने । णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो । तायत्तीसगादेवा । नागकुमारेन्द्रने नागकुमार राजाने त्रायत्रिंशकदेव इतिप्रश्न उत्तर। हंताअत्थि । हा गौतम छे। सेकेणठेणं जाव तायत्तीसगादेवा । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । यावत् त्रायत्रिंशकदेव एतलालगे कहवो । गोयमा धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमार रन्नो तायत्तीसगाणं देवाणं । हेगौतम । धरणने नागकुमारेन्द्रने नागकुमारराजाने त्रायत्रिंशक देवना । सासएनामधेज्जे पन्नत्ते । शास्वता नामधेय क

॥ मूल ॥

णिच्चे अव्वोच्छित्ति
तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पन्नत्ते, जं नकदायि नासी नकदायि नभवइ जाव णिच्चे अव्वोच्छित्ति
णयठयाए अन्ने चयंति अन्ने उववज्जति । अत्थिणं भंते ! वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो ताय
त्तीसगादेवा ? हंताअत्थि । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगादेवा ? एवं
खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणंसमएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे विभेलेणामे सन्निवेसे होत्था वन्नओ

अनुवाद

ना शाश्वतानि नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, ये नकदाचिन्नासिषु नंकदाचिन्नभवन्ति यावन्नित्या अव्युच्छित्तिनयार्थतया अन्येच्यवन्ते अन्ये उत्पद्यन्ते।
अस्ति भदन्त ! वले वैरोचनेन्द्रस्य वैरोचनराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका देवा ? हन्तास्ति। अथ केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते वलेर्वैरोचनेन्द्रस्य वैरोचन
राज्ञो यावत्त्रायस्त्रिंशका देवा ? एव खलु गौतम । तस्मिन्काले तस्मिन्समये इहैव जम्बूद्वीपेद्वीपे भारते वर्षे विभेल इति नाम्ना सन्निवेशो

॥ भाषा ॥

छे । शास्वता नामधेय कह्यां । जे नकदायिनासी न कदायि न
थ । चमरने असुरेन्द्रने असुरकुमारराजाने त्रायस्त्रिंशक देवना । सासए णामधेज्जे पण्णत्ते। शास्वता नामधेय कह्यां । जे नकदायिनासी न कदायि न
भवइ जाव णिच्चे । जे नहो कियारे नहुता नहो कियारे नछे यावत् नित्यछे। अव्वोछित्तिणयठयाए अन्ने चयति अन्ने उववज्जति । अविच्छेद नयथकी
इम जाणवा चमरने असुरेन्द्रने असुरकुमारराजाने त्रायस्त्रिंशक शास्वताछे अनेरा चवै अनेरा ऊपजै पणि स्थानक नामथी शास्वताछे इत्यर्थ, एहनो
विछेदनथी । अत्थिण भंते वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरन्नो तायत्तीसगा देवा । छे हेभगवन् । वलिने वैरोचन इन्द्रने वैरोचन राजाने त्रायस्त्रिंशक दे
व इतिप्रश्न उत्तर । हंता अत्थि । हा गौतम छे । सेकेणठ्ठेणंभंते एव वुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कहिये । वलिस्स वइरोयणिदस्स जाव तायत्तीस
गा देवा । वलिने वैरोचनेन्द्रने यावत् त्रायस्त्रिंशक देव । एवखलु गोयमा । इम निश्चै हेगौतम । तेण कालेण तेण समएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे।
इहेव जंबूदीवे २ भारहेवासे । एहीज जंबूदीपनामा द्वीपमेंदिपभरतक्षेत्रनेविषे । विभेलणामे सन्निवेसे होत्था वण्णओ तत्थण विभेले सन्निवेसे। विभेलना

सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमं सइ २ त्ता एवं वयासी–अत्थिणं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तिंसगा देवा ? हंताअत्थि, सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ एवं तंचेव सव्वं भाणियव्वं जाव तप्पभिइचणं एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगा देवा ? णोइणट्ठेसमट्ठे एव खलु गोयमा ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो

रेणैवमुक्त सन् शङ्कित काङ्क्षितो विचिकित्सित उत्थयोत्तिष्ठति, उत्थायोत्थाय श्यामहस्तिनानगारेण सह यत्रैव श्रमणो भगवान्महावीरस्तत्रै वोपागच्छति, उपागत्य श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्यैवमवादीत्–अस्ति भदन्त ! चमरस्यासुरेन्द्रस्या सुरकुमारराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका देवा ? हन्तास्ति । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? एवं सर्वेवसर्वं भणितव्य यावत्तत्प्रभृतिचैवमुच्यते चमरस्या सुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका देवा ? नायमर्थः समर्थः । एवखलु गौतम ! चमरस्यासुरेन्द्रस्या सुरकुमारराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशकानां देवा

॥ श्ङ्कित थया वितिगिच्छा उपनी उठी उभाथाय उठी उभाईने । सामहस्थिणा अणगारेण सहि । श्यामहस्ति साधुसघाते । जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी तिहा आवे तिहा आवीने । समणभगवमहावीर वदइ णमसइ वंदि त्ता णमसित्ता एवंवयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्य भो प्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने इमकहे । अत्थिणभंते चमरस्स असु रिंदस्स असुररणो तायत्तिसगा देवा । छे हेभगवन् ! चमरने असुरेन्द्रने असुरराजाने त्रायत्रिंशक देव इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि सेकेणट्ठेणभंते एववुच्च इ । हा छे ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इमकह्यु । एवं तचेव सव्वभाणियव्व । इम तिमहीज सघलो जाणवो । जाव तप्पभिइचण एववुच्चइ । यावत् ते दिवस थकी इम कहिये । चमरस्स असुरिंदस्स असुररणो । चमरने असुरेन्द्रने असुरराजाने । तायत्तीसगादेवा णो इणट्ठेसमट्ठे । त्रायस्त्रिंशक नहा सभोस्वर देव स्यूं पूर्वे म हुंता एतलाभणी कहवो एह अर्थ समर्थ नही । एव खलु गोयमा । इम हेगौतम । चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो तायत्तीसगाण देवा

॥ टीका ॥ ज्ञानाद्याचारविराधनात् ॥ अहाच्छंदत्ति ॥ यथाकथञ्चित् आगमपरतन्त्रतया छन्दो ऽभिप्रायो बोधः प्रवचनार्थेषु येषां ते यथाच्छन्दाः, ते चैक
दापि भवन्ती त्यत आह ॥ अहाच्छंदविहारित्ति ॥ आजन्मापि यथाच्छन्दा एवेति ॥ तप्पभिइंचणंति ॥ यत्प्रभृति त्रयस्त्रिंशत्सख्योपेताः स्ते श्राव

॥ सूत्र ॥ रस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगा देवत्ताए उववण्णा । जप्पभिइंचणं भंते ! कायंदगा तायत्तीस
सहाया समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा तप्पभिइंचणं भंते !
एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगादेवा २ ? तत्थणं भगवं गोयमे सामहत्थिणा
अणगारेणं एववुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए उठाए उठेइ, उठेइत्ता सामहत्थिणा अणगारेणं

अनुवाद न्ति' छंदयित्वा तस्य स्थानस्य (तत्स्थान मित्यर्थं) अनालोचितप्रतिक्रान्ताः कालमासे काल कृत्वा चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञ स्त्राय
स्त्रिंशका देवतयोत्पन्ना, यत्प्रभृतिच काकन्दका स्त्रायस्त्रिंशत्सहाया श्रमणोपासकाश्चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशकदेवतयोत्प
न्ना स्तत्प्रभृतिच भदन्त । एवमुच्यते चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका देवा २ इति ? तत्र भगवान्गौतम श्यामहस्तिना ऽनगा

॥ भाषा ॥ लसमयें कालकराने। चमरस्स असुरिंदस्स असुररणो। चमरने असुरेन्द्रने असुरराजाने। तायत्तीसगा देवत्ताए उववण्णा। त्रयस्त्रिंशक देव महीश्वर दे
वपणे उपना। जप्पभिइ चणभंते। जे दिवसथकी हेभगवन्। कायदगा तायत्तीस सहाया समणोवासगा। काकन्दीनगरीना तेत्रीस सख्याये अन्योन्य
साहाय्यकारी श्रमणोपासक। चमरस्स असुरिंदस्स असुररणो। चमरने असुरेन्द्रने असुरराजाने। तायत्तीसगदेवत्ताए उववण्णा। त्रयस्त्रिंशका देवपणे उ
पना। तप्पभिइ चणभंते एवं वुच्चइ। ते दिवसथकी हेभगवन् इम कहिये। चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो। चमरने असुरेन्द्रने असुरकुमार राजा
न। तायत्तीसगादेवा। त्रायस्त्रिंशक देव पणि स्युं पूर्वे न हुता इसो श्यामहस्ति अणगारे भगवन्त प्रते पूछ्यो ? तत्थण भगवं गोयमे। तिहां भगवन्त गौ
तम। सामहत्थिणअणगारेण एववुत्तेसमाणे। श्यामहस्ति अणगारे इम कह्येथके। संकिए कंखिए वितिगिच्छिए उठाए उठेइ उठेइत्ता। शंकित थया

ॐ सविग्नविहार सविग्नानुष्ठानमस्ति येषां ते तथा ॥ सविग्गविहारिणि ॥ सविग्गविहारिति ॥ सविग्गा मोक्षंप्रति प्रचलिता ससारभीरवोवा ॥ सविग्गत्ति ॥ सविग्गविहारिति ॥ अवसन्ना इव श्रान्ता इवा वसन्ना आलस्यादनुष्ठाना त्वात् ॥ ओसन्नत्ति ॥ आकाल पार्श्वस्थसमाचारा ॥ पासत्थविहारित्ति ॥ ज्ञानादिबहिर्वर्तिन ॥ पासत्थत्ति ॥ ज्ञानाद्याचारविराधनात् ॥ कुसीलविहारित्ति ॥ आजन्मापि पासत्थत्ति ॥ आजन्मशिथिलाचारा इत्यर्थ. ॥ कुसीलत्ति ॥ ज्ञानाद्याचारविराधनात् ॥ कुसीलविहारित्ति ॥ आजन्मापि ऽसम्यक्करणात् ॥ ओसन्नविहारित्ति ॥

पच्छा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाच्छंदा अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणंति, पाउणंतित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसंति २ त्ता तीस भत्ताइं अणसणाए छेदेंति २ त्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालकिच्चा चम

(प्रभृति) वर्णको यावद्विहरन्तिस्म, तदा ते त्रायस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय श्रमणोपासका पूर्वमुग्रा उग्रविहारिण सविग्ना सविग्नविहारिणो भूत्वा तत. पश्चात्पार्श्वस्था पार्श्वस्थविहारिणो ऽवसन्ना अवसन्नविहारिण कुशीला कुशीलविहारिणो यथाछन्दा यथाछन्दविहारिणो बहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्याय पालयन्ति, पालयित्वा ऽर्द्धमासिक्या सलेखनया ऽऽत्मान झूपन्ति, झूपयित्वा त्रिंशद्भक्तान्यनशनतया छेदय

यकी पाछल वर्षे थकाने पासत्थानो आचार स अनुष्ठान पाले इसा थईने । तओपच्छा पासत्था पासत्थविहारी । तिवारपछी ज्ञानदर्शन चारित्रथकी बाहिर वर्ते थकाने पासत्थानो आचार स आचरें । ओसन्ना ओसन्नविहारी । थाकानीपरे थाका आजन्म शिथिलाचारी । कुसीला कुसीलविहारी । ज्ञानादिक आचारना विराधक थकी आ जन्म लगी विराधक हुआ ,ससत्ता ससत्तविहारी, ए पाठन कह्यो जेमाटे इत्तिप्रमुखने विषे नथी । अहाछंदा अहाछंदविहारी बहूइ वासाइ । आ पणे छन्दे चाले यावज्जीव लगे यथा छन्दाजीव एहवा थका घणा वर्ष लगे । समणोवासगपरियाग पाउणंति २ त्ता । श्रमणोपासक पर्याय पाले पाली ने । अद्धमासियाए संलेहणाए । पनरह दिनना सलेपणाये । अत्ताणं झूसंति २ त्ता । आत्माने सेवे सेवीने । तीसभत्ताइ अणसणाए छेदेंति २ त्ता । चीस भात अणसणे करी छेदे छेदीने । तस्सठाणस्स अणालोइय पडिक्कता कालमासेकालकिच्चा । तेह स्थानकने आलोयाविना पडिकम्या विना का

॥ टीका ॥ इत्येव सम्बद्धस्यास्येदमादिसूत्र-तेणमित्यादि ॥ तायत्तीसगत्ति ॥ त्रायस्त्रिंशा मन्त्रिकल्पा ॥ तायत्तीससहायागाहावइत्ति ॥ त्रयस्त्रिंशत्परिमाणा· सहाया परस्परेण साहाय्यकारिणो गृहपतय कुटुम्बनायका ॥ उग्गत्ति ॥ उग्रा उदात्ता भावत ॥ उग्गविहारित्ति ॥ उदात्ताचारा सदनुष्ठान

॥ मूल ॥ स्सा तायत्तीसगा देवा ? एवं खलु सामहत्थी तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदीणामं णयरी होत्था वण्णओ, तत्थणं कायंदीए णयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा वण्णओ, जाव विहरंति, तएणं ते तायत्तीसं सहाया गाहावइसमणोवासगा पुव्विं उग्गा उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता तओ

अनुवाद सुरकुमारस्य राज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका देवा ? इत्तास्ति (अस्तीत्यव्यय सत्तायां) अथ केनार्थेन भदन्त । एवं मुच्यते चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमार राज्ञ स्त्रायस्त्रिंशका २ देवा ? एवं खलुश्यामहस्तिन् । तस्मिन्काले तस्मिन्समये इहैव जम्बूद्वीपेद्वीपे भारतेवर्षे काकन्दीति नाम्नी नगर्यभ वर्णक स्तत्र काकन्द्यां नगर्यां त्रयस्त्रिंशत्सहाया गृहपतय· श्रमणोपासका· परिवसन्तिस्म, आढ्या यावदपरिभूता अभिगतजीवाजीवा उपलब्ध

॥ भाषा ॥ समएण । ते कालने विषे ते समयनेविषे । इहेवजंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे । एहीज जम्बूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतनामा क्षेत्रनेविषे । कायंदीणामणय रीहोत्था वण्णओ । काकन्दी इसेनामे नगरीहुई तेहनो वर्णक करवो । तत्थणंकायंदीए णयरीए तायत्तीस सहाया गाहावई । तिहा काकन्दी नगरीने विषे तेत्रीस मित्रसाहाय्यना कारक कुटुम्बना नायक । समणोवासगा परिवसंति । श्रमणोपासक वसेछे । अड्ढा जाव अपरिभूया । ऋद्धिवन्त यावत् किणहीं पराभवी न सकिये । अभिगय जीवा जीवा उवलद्धपुण्णपावा वण्णओ । जाण्याछे जेणें जीव अजीवनो स्वरूप जेणें ओलख्याछे पुन्य अने पाप व र्णक । जाव विहरंति । यावत् विचरेछे । तएणं ते तायत्तीस सहाया गाहावई । तिवारे ते तेत्रीस सहाय्यकारक मित्र कुटुम्बना नायक । समणोवासगा पुव्विंउग्गा । श्रमणोपासक पहिला उत्कृष्ट भावथकी उग्र । उग्गविहारी संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता । उत्कृष्ट आचारवन्त मोक्षमार्ग प्रतें चाल्या तओ

अणगारे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थीणाम अणगारे पगइभद्दए जहा रोहे जाव उड्ढ जाणू जाव विहरइ, तएणं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेइ त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एववयासी—अत्थिणं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार

स्तीनामानगारः प्रकृतिभद्रको यथा रोहो याव दूर्ध्वजानु यावद्विहरति, तदानीं स श्यामहस्त्यनगारो जातश्रद्धो यावदुत्थयोत्तिष्ठति, उत्था यात्थाय यत्रैव भगवान्गौतम स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य भगवन्त गौतम त्रि कृत्वा यावत्पर्युवासयन्नेवमवादीत्—अस्ति भदन्त! चमरस्यासुरेंद्रस्या

को तेहवे स्वामी समोसर्या। । जाव परिसापडिगया। यावत् परिषदा धर्म सांभलो पाछी घरे गई। तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समय नेविषे। समणस्सभगवओमहावीरस्स जेठअंतेवासी। श्रमण तपस्वी भगवन्त श्रीमहावीर स्वामी जीनो जेठ वडोशिष्य। इंदभूतीणाम अणगारे जाव उड्ढ ज णू। इन्द्रभूतिनामे साधु यावत् उर्द्ध जानू। जाव विहरइ। यावत् विचरे। तेणकालेण तेणसमएण। तेकालने विषे ते समयने विषे। समणस्सभगवओमहावीरस्सअंतेवासी। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीजीनो शिष्य। सामहत्थीणामअणगारे पगइभद्दए। श्यामहस्तीनामे साधु स्वभावे करी भद्रक। जहारोहे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ। जिम रोहो कह्यो तिम कहवो यावत् उर्द्ध जानू यावत् विचरे। तएण से सामहत्थी अणगारे,जायसढ्ढे। तिवारे ते श्यामहस्तीसाधु ऊपनी श्रद्धा। जाव उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता। यावत् उठे ऊभाथाय ऊभाथईने। जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा भगवन्त गौतमस्वामी छे तिहा आवे आवीने। भगवगोयम तिक्खुत्तो। भगवन्त गौतम प्रते तीनवार। जाव पज्जुवासमाणे एववयासी। इत्यादि यावत् सेवाकरतो थको इमकहे। अत्थिणभंते चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो। छे हेभगवन्! चमरने असुरेंद्रने असुरकुमारराजाने। तायत्तीसगा देवा। तेत्रीस मंत्रीसर समान देव। एव खलु सामहत्थी। इम निश्चे श्यामहस्ती अणगार। तेणकालेण तेण

॥ टीका ॥

यावद्वस्तुनि नियतेत्यत' किमिय वक्तव्यास्यादिति ? उत्तरंतु हतेत्यादि ॥ इदमत्र हृदय माश्रयिष्याम' इत्यादिका ऽनवधारणत्वा द्वर्त्तमानयोगेनेत्ये तद्विकल्पगर्भत्वादात्मनि गुरौचैकार्थत्वेपि' वहुवचनस्यानुमतत्वा त्प्रज्ञापन्येव, तथा मन्त्रण्यादिकापि वस्तुनो विधिप्रतिसधाऽविधायकत्वेपि या निरवद्यपुरुपार्थसाधनी-साप्रज्ञापन्येवेति ॥ दशमशते तृतीय ॥ ३ ॥ तृतीयोद्देशके देववक्तव्यतोक्ता चतुर्थे प्यसावेवोच्यत

॥ मूल ॥

जाव न एसा भासा मोसा, सेव भंते२ त्ति ॥ दसमसयस्स तईओ उद्देसो सम्मत्तो १० ॥ ३ ॥ तेणं कालेण तेण समएणं वाणियगामे णामं णयरे होत्था वण्णओ, दूइपलासए चेइए सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया, तेणं कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेठे अंतेवासी इंदभूईणामं

अनुवाद

भाषा मृषा, तदेव भदन्त । भदन्त ॥ इति दशमशते तृतीय ॥ १० ॥ ३ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये वाणिजकग्राम नाम नगर मभवत्, वर्णक, दूतिपलाशके चैत्ये स्वामी समवसृतो यावत्परिपत्प्रतिगता, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतो महावीर स्य ज्येष्ठोन्तेवासीन्द्रभूतिनामानगारो यावदूर्द्धजानु र्यावद्विहरति, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तेवासी श्यामह

॥ भाषा ॥

युक्तभाषा १२ पणवणीपति, कहवाने अथ इणे ते प्रज्ञापनी कहिये अर्थनो कहणहारो इत्यर्थ 'नएसा, नहीं एह मृषा झूठो इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा आसइस्सामो तचेव जाव नएसा भासा मोसा । हागौतम आश्रय स्यू इत्यादि, तिमहीज यावत् नही ०ह भाषामिथ्या झूठी । सेवभंतेभंतेत्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हकह्यु ते सर्व सत्यछै। दसमसयस्सय तइओ उद्देसओ सम्मत्तो। दशमा शतकनो,चौजोउद्देशो अर्थथकी लिख्यो १० ॥ ३ चोजेउद्देशे देववक्तव्यता कही चौथे पणि तेहीज कहियेछे, तआदिसूत्र हुवो। तेण कालेण तेण समएण। ते कालने विषे ते समयने विषे । वाणियगामे णाम णयरेहोत्था-वण्णओ। वाणियग्राम नामे नगर-हुवो- तेहनो वर्णक उपागथी जाणवो। दूइपलासए चेइए सामीसमोसढे। दूतिपलास-इसेनामे चैत्यथ

॥ टीका ॥

सदनुकूला इच्छानुलोमा यथा–कार्यं प्रेरितस्य एवमस्तु ममाप्यभिप्रेत मेतदितिवच. ॥ अणभिग्गहियाभासागाहा–अनभिगृहीताऽर्थो नाभिग्रहेण योच्यत डित्थादिवत् ॥ भासायअभिगहम्मिबोधव्वा ॥ भाषाऽभिग्रहे बोद्धव्या अर्थमभिगृह्य योच्यते घटादिवत् ॥ ससयकरणीभासत्ति ॥ याऽनेकार्थ प्रतिपत्तिकरी सा संशयकरणी यथा–सैन्धवशब्द· पुरुषलवणवाजिषु वर्तमानइति ॥ वोयडत्ति ॥ व्याकृता लोकप्रतीतशब्दार्था. ॥ अव्वोयडत्ति ॥ अ व्याकृता गम्भीरशब्दार्था मन्मनाक्षरप्रयुक्तावा ऽविभावितार्था ॥ पण्णवणीणंति ॥ प्रज्ञाप्यतेऽर्थो नयेति प्रज्ञापनी अर्थकथनी वक्तव्येत्यर्थ. ॥ नए सा मोसत्ति ॥ नैषा मृषा, नार्थानभिधायिनी नावक्तव्येत्यर्थ , पृच्छसीयमभिप्राय –आश्रयिष्याम इत्यादिका भाषा भविष्यत्कालविषया साचान्त रायसम्भवेन व्यभिचारिण्यपि स्या तथैकार्थविषयापि बहुवचनान्ततयोक्तेत्येवमयथार्था, तथा ऽऽमन्त्रणीप्रभृतिका विधिप्रतिषेधाभ्या नसत्यभा

॥ मूल ॥

पच्चक्खाणीभासा भासाइच्छाणुलोमाय ॥ १ ॥ अणभिग्गहियाभासा भासायअभिग्गहंमिबोधव्वा । ससयकरणी भासा वोयडमव्वोयडाचेव ॥ २ ॥ ,, पण्णवणीण एसा भासा न एसा मोसा ? हता गो० ! आसइस्सामो तचेव

सशयकरीहिभाषा व्याकृताव्याकृताचैव ॥ २ ॥ „ प्रज्ञापनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! आश्रयिष्याम स्तचैव याव नैषा

॥ भाषा ॥

करी ४ पण्णवणित्ति, प्रज्ञापनीय विनेयने उपदेश दानरूप एतले उपदेशनो देवो ५ पच्चक्खाणी भासत्ति, प्रत्याख्यानी ते कहिये मागताने कहे तुझ्म क न्हे ममागिसि इत्यादिकरूप भाषा ६ इच्छानुलोमत्ति, कहणा हारानी जिका इच्छा तेहने अनकूल कहवो जिम किणहीए कह्यु अमुको कार्य करि ये तिवारे ते कहे हा मुझने पणि एहीज गमेछे मनमानेछे इत्यर्थ ७ ए एक गाथानो अर्थ लिख्यो ॥ १ ॥ अणभिग्गहियाभासा भासायअभिग्गहंमिबोध व्वा । ससयकरणीभासा वोयडमव्वोयडाचेव ॥ २ ॥ अनभिग्रहीता जेहनो अर्थ न जाणिये एहवी भाषा डित्थडवित्थवत् ८ भासाय च वली भाषा अभिग्र हीता जेहनो अर्थ समुझिये घटादियत् ९ जिका भाषा अनेक प्रतिपत्तिनो करणहारा एक शब्दना घणाअर्थ बोलेजिम सैधवशब्द कह्या पुरुष लव ण वाजी एतले अर्थ वर्त्ते एतले सशय थाय ६ति १० वोयडत्ति, प्रगट भाषा लोकप्रसिद्ध शब्दार्थ ११ अव्वोयडत्ति, गभीरशब्दार्थ अथवा मन्मनाक्षर प्र

त्ति ॥ उस्थानेन स्थास्याम ॥ निसिइस्सामीत्ति ॥ निषित्स्याम उपवेक्ष्याम इत्यर्थ ॥ तुयट्टिस्सामीत्ति ॥ संस्तारके शयिष्याम इत्यादिका भाषा कि प्रज्ञापनीतियोग , अनेनचोपलक्षणपरवचनेन भाषाविशेषाणामेव जातीयाना प्रज्ञापनीत्व पृष्ट मथ भाषाजातीना तत्पुच्छति–आमतणिना हा ॥ तत्रमन्त्रणी हेदेवदत्तेत्यादिका , एषाच किल वस्तुनो ऽविधायकत्वादनिषेधकत्वाच्च सत्यादिभाषात्रयलक्षणवियागतश्चा ऽसत्यामृषेति प्रज्ञा पनादा वुक्ता एवमाज्ञापन्यादिकापि ॥ आणमणीति ॥ आज्ञापनी कार्यं परस्य प्रवर्त्तनी यथा कठ कुरु ॥ जायणीत्ति ॥ याचनी वस्तुविशेषस्य दे हीत्यव मार्गणरूपा , तथेति समुच्चये ॥ पुच्छणीयत्ति ॥ प्रच्छनी अविज्ञातस्य सन्दिग्धस्य चार्थस्य ज्ञानार्थं तदभियुक्तप्रेरणरूपा ॥ पणवणीत्ति ॥ प्रज्ञापनी विनेयस्योपदेशदानरूपा यथा–पाणवहाउनियत्ता भवतिदीहाउयाअरोगाय । एमाइंपन्नवणी पण्णत्तावीयरागेहि ॥ १ ॥ पच्चक्खाणीत्ति प्रत्याख्यानी याच मानस्यादित्सा मे ऽतो मा मायाचस्वेत्यादिप्रत्याख्यानरूपा ॥ भासा इच्छाणुलोमत्ति ॥ प्रतिपादयितुर्या इच्छा तदनुलोमा

सइस्सामो चिट्ठिस्सामो निसीइस्सामो तुयट्टिस्सामो " आमंतणिआणवणी जायणीतहपुच्छणीयपन्नवणी ।

रोति (भवतीति) अथ भदन्त ! आश्रयिष्यामो शयिष्यामहे स्थास्याम निषित्स्याम स्तुयट्टिष्याम (इत्यादिका भाषा कि प्रज्ञापनीतियोग " आमन्त्रण्याज्ञापनीच याचनीप्रच्छनीतथा । प्रज्ञापनीप्रत्याख्यानी भाषाईच्छानुलोमाच ॥ १ ॥ भाषानभिग्रहीता ऽभिग्रहीतातथैवबोद्धव्या ।

कर भाषाविशेषना होज जाणणहारने कहवू कह्यु , हिवे भाषाजातिने पूछके—आमंतणिआणवणी जायणीतह पुच्छणीयपन्नवणी । पच्चक्खाणीभा सा भासाइच्छाणुलोमाय ॥ १ ॥ आमंतणिगाहा तिहा आमंतणी कहता आमंत्रणी हेदेवदत्त इत्यादिक , एह भाषा निश्चय वस्तुने अविधायक पणाथ को अथवा अनिषेध पणाथको सत्यादिभाषा तीनलक्षण वियोगथको असत्या मृषा पन्नवणादिकनेविषे कही एम आज्ञापनादिक पणि कहवी १ आण वणी कहता आज्ञापनी कार्यनेविषे परने प्रवर्त्तावणहारी जिम किणहीने कहिये अमुको कार्य करि अथवा घडोकरि २ ,जायणित्ति, याचनीवस्तु विशेषने दे इम मार्गणा रूप ३ तहत्ति, तथा शब्द समुच्चये ,पुच्छणीयत्ति, अणजाण्यो सदेहसहित जे अर्थ तेहने जाणवाने प्रेरणारूप एतले सदेहनो पू

आसस्सेत्यादि ॥ हियस्सयजगयस्सयत्ति ॥ हृदयस्य यकृतश्च दक्षिणकुक्षिगतोदरावयवविशेषस्यान्तरान्तराले' अनन्तर खुक्खुत्ति प्ररूपित तच्च' आह सच भाषारूपापि स्यादिति भाषाविशेषान् भाषणीयत्वेन प्रदर्शयितुमाह—अहभंतेइत्यादि ॥ अथेति परिप्रश्नार्थः ॥ भंतत्ति ॥ भदन्तेत्येव भ गवत महावीर मामन्त्य गौतम पृच्छति ॥ आसइस्सामोत्ति ॥ आश्रयिष्यामो वय माश्रयणीय वस्तु ॥ सइस्सामोत्ति ॥ शयिष्यामहे ॥ चिठिस्सामो

भंते ! किं विमोहेत्ता पभू तहेव पुव्विंवा वीईवएत्ता पच्छा विमोहेज्जा एए चत्तारि दंडगा । आसस्सणं भंते ! धावमाणस्स किं खुक्खुत्ति करेइ ? गोयमा ! आसस्सणं धावमाणस्स हियस्सय जगयस्सय अंतरा एत्थणं कक्कडए नाम वाए समुच्छिए जेणं आसस्स धावमाणस्स खुक्खुत्ति करेइ । अह भंते ! आसइस्सामो

प्रजत् । ता भदन्त । किं विमोह्य प्रभु स्तथैव । पूर्ववा व्यतिव्रज्य पश्चाद्विमोहयेदेतेचत्वारो दण्डका । अश्वस्य भदन्त । धावत किं खुक्खु इति करोति (भवति) ? गौतम । अश्वस्य धावतो हृदयस्य यकृतस्यचान्तरा ऽत्र कर्कटको नाम वायु सम्मूर्च्छति येनाश्वस्य धावत· खुक्खु इति क

जाइनेपछेविमाहे।एएचत्तारिदंडगा। इम एह चारदंडक कहवा। आसस्सणंभंते धावमाणस्स किंखुक्खुत्तिकरेइ। घोडाने भ वाक्यालंकारे, हेभगवन् । दोडता ने स्यू खक्खुइसो शब्दकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आसस्सणं धावमाणस्स हियस्सय जगयस्सय अंतरा। हेगौतम । घोडाने दोडताने हृदय अनेदक्षिणकु क्षिगत उदर अवयवविशेष एतलेकाले जो एवेहने विचाले। एत्थणं कक्कडए नाम वाए समुच्छिए । इहां णं वाक्यालंकारे, कर्कट इसेनामे वायुविशेष स मूर्च्छे मूर्च्छा पामे। जेणं आसस्स धावमाणस्स खुक्खुत्तिकरेइ । जिणे वायुविशेषे करी घोडाने दोडता थकाने खक्खु इसोशब्द करे हुवे इत्यर्थ अनन्तरे ख क्खु इमा प्रकृष्य् त शब्दहुवे ते भाषारूप पणिहुवे तेमाटे भाषा विशेषप्रते भाषणीयपणे करी देखाडतो कहेछे— अहभंते आसइस्सामो सइस्सामो । अथ वा शब्द पछनाने अर्थे भंतेत्ति, हेभगवन् । श्रीमहावीरस्वामीप्रतें आमंत्रीने गौतम पूछेछे—आश्रयवायोग्य-वस्तु अम्हे आश्रय स्यू घस्के सू इस्यू । चिठि स्सामो निसीइस्सामो तुयट्टिस्सामो। जभारहि स्यू बैसि स्यू सयारे सूस्या इत्यादिक जे भाषा स्यू कहवी एहवो योग बोले इणि उपलक्षण परवचने

॥ टीका ॥ अभिप्रायेणेति ॥ सामान्येन देवेन सममालापकत्रयोपेतो देवदेवीदण्डको वैमानिकातोन्य: २ एवमेव देवीदेवदण्डको वैमानिकान्तगतापरः ३ एवमेव देव्या दण्डकोन्य इत्येव चत्वार एते दण्डका ४, अनन्तर देवक्रियोक्ता साचातिविस्मयकारिणीति विस्मयकर वस्त्वन्तर प्रज्ञपयन्नाह—

॥ मूल ॥ वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा? हंता वीईवएज्जा। अप्पिड्ढियाएणं भंते! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीईवएज्जा? णोइणठे समठे, एवं समिड्ढियादेवी समिड्ढियाए देवीए तहेव, महिड्ढिया देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव, एवं एक्केक्के तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा, जाव महिड्ढियाण भंते! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेण वीईवएज्जा? हंता वीईवएज्जा। तं

अनुवाद यावन्महर्द्धिका वैमानिकी अल्पर्द्धिकस्य वैमानिकस्य मध्यमध्येन व्यतिक्रामेत्? हन्त व्यतिक्रामेत्। अल्पर्द्धिका भदन्त। देवी महर्द्धिकाया देव्या मध्यमध्येन व्यतिव्रजेत्? नायमर्थः समर्थ एव समर्द्धिका देवी समर्द्धिकया देव्या तथैव, महर्द्धिका देवी अल्पर्द्धिकया देव्या तथैव, एव मेकैकस्मिन् त्रयस्त्रय आलापका भणितव्या यावन्महर्द्धिका भ०। वैमानिकी अल्पर्द्धिकाया वैमानिक्या मध्यमध्येन व्यतिव्रजेत्? हन्त व्यति

॥ भाषा ॥ वो। अल्पर्द्धिक हेभगवन्। देवी। महिड्ढियाए देवीए। महर्द्धिक देवीने। मज्झमज्झेण वीईवएज्जा। मध्यें मध्यभागेकरी जाय इतिप्रश्न उत्तर। णोइणठे समठे यहअर्थ समर्थ नहीं इम समऋद्धिक देवो। समिड्ढियाएदेवीए तहेव। समऋद्धिक देवीसघाते पणि तिमहीज। महिड्ढिया देवी अप्पिड्ढियाएदेवीए तहेव। महर्द्धिकदेवी अल्पर्द्धिकदेवी सघाते पणि तिमहीज। एव एक्केके तिन्नितिन्नि आलावगा भाणियव्वा। इम असुर कुमार आदिदेई एकेक निकायनेविषे तीन तीन आलावा कहवा। जाव महिड्ढियाणभंते वेमाणिणी। यावत् महर्द्धिक हेभगवन्। वैमानिकनीदेवी। अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए। अल्पर्द्धिक वैमानिकनी देवीने। मज्झमज्झेणवीईवएज्जा। मध्ये मध्यकरी जाय इतिप्रश्न उत्तर। हता वीईवएज्जा। हा जाय। तमते छिविमोहित्तापभूतरेय। ते हेभगवन्। स्यू विमोहीने समर्थ इत्यादिक तिमहीज। पुर्विवा वीईवएत्ता पच्छाविमोहेज्जा। अथवा पहिला

यहा जहा ऋद्धिएणं देवेणं भणिया, एवं जाव थणियकुमाराणं, वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं एवंचेव । अप्पिड्ढिएणं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णोइणट्ठे समट्ठे । समिड्ढिएणं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं एवं तहेव देवेणय देवीएय दंडओ भाणियव्वो, जाव वेमाणिए । अप्पिड्ढियाणं भंते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं एवं एसोवि तइओ दंडओ भाणियव्वो, जाव महिड्ढिया

भदन्त ! देवो महर्द्धिकाया देव्या मध्यमध्येन व्यतिक्रामेत् ? नायमर्थः समर्थः । समर्द्धिको भदन्त ! देवः समर्द्धिकाया देव्या मध्यमध्येनैव तथै व देवेनच देव्याश्च दण्डको भणितव्यो यावद्वैमानिक । अल्पर्द्धिका भ० ! देवी महर्द्धिकस्य देवस्य मध्यमध्येनैवमेषोपि तृतीयो दण्डको भणितव्यो

समर्द्धिक असमर्द्धिक २ महर्द्धिक अल्पर्द्धिक ३ । जहा आइड्ढिएणं देवेणं भणिया । जिम आत्मऋद्धि सघाते कह्या । एव जाव थणियकुमारेण । इम यावत् स्तनितकुमारसघातेपणि कहवो । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं एवचेव । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक पणि इमहीज ए एक दण्डकथी । अप्पिड्ढिएणं भंते देवे महिड्ढियाए देवीए । अल्पऋद्धिवन्त हे भगवन् देव महाऋद्धिवन्त देवीने । मज्झं मज्झेणं वीईवएज्जा । मध्ये मध्यभागेकरी जाय ? तिवारे उत्तर । णोइणट्ठे समट्ठे । ए अर्थ समर्थ नथी । समिड्ढिएणं भंते देवे समिड्ढियाए देवीए । समऋद्धिवन्त हे भगवन् देव समऋद्धिवन्त देवीने । मज्झं मज्झेणं एवं तहेव । मध्ये मध्यभागे इत्यादि प्रश्न उत्तर तिम हीज । देवेणय देवीएय दण्डओ भाणियव्वो । देव अने देवीसघाते दण्डक जाणवो । पणि पहिलापरे तीन आलावा कहवा ए २ दण्डक । जाव वेमाणियाए अप्पिड्ढियाणं भंते देवी महिड्ढियस्स देवस्स । यावत् वैमानिकलगे अल्पऋद्धिक हे भगवन् ! देवी महर्द्धिक देवने । मज्झं मज्झेणं । मध्ये मध्यभागे करी । एवएसोवि तइओ दण्डओ भाणियव्वो । इत्यादि ए पण त्रीजोदण्डक तीन आलावे करी पूर्वलापरे कहवो । जाव महिड्ढिया वेमाणिणी । यावत् महर्द्धिक वैमानिकनी देवी । अप्पिड्ढिया वेमाणियस्स । अल्पर्द्धिक वैमानिक देव ... मध्यभागेकरी जाय इतिप्रश्न उत्तर । देवी जाय एतो तीन दण्डक । अप्पिड्ढियाणं भंते दे

॥ टीका ॥

मेदितिभाव ॥ एव असुरकुमारेणावि तिण्णि आलावगत्ति ॥ अल्पर्द्धिकमहर्द्धिकयो रेक समर्द्धिकयो रन्यो महर्द्धिकाल्पर्द्धिकयोरपर इत्येवं त्रय ॥

॥ मूल ॥

भंते ! किं विमोहित्ता अविमोहित्तापभू ? गोयमा ! विमोहित्तापभू अविमोहित्ताविपभू । सेभंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छावीईवएज्जा, पुव्विंवीईवइत्ता पच्छाविमोहेज्जा ? गोयमा ! पुव्विंवा विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, पुव्विंवा वीईवइत्ता पच्छाविमोहेज्जा । अप्पिड्ढिएणं भंते । असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीईवएज्जा ? णोइणट्ठेसमट्ठे, एवं असुरकुमारेणवि तिण्णि आलावगा भाणि

अनुवाद

स भ० । कि पूर्वं विमोह्य पश्चाद्व्यतिव्रजेत्, पूर्वं वा व्यतिव्रज्य पश्चाद्विमोहयेत् ? गौतम । पूर्वं वा विमोह्य पश्चाद्व्यतिव्रजेत् । पूर्वं वा व्यतिव्रज्य पश्चाद्विमोहयेत् । अल्पर्द्धिको भदन्त । असुरकुमारो महर्द्धिकस्यासुरकुमारस्य मध्येन मध्येन व्यतिव्रजेत् ? नायमर्थः समर्थः, एवमसुरकुमारेणापि त्रय आलापका भणितव्या यथौघिकेन देवेन भणिता, एव याव त्स्तनितकुमारेण, वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकेनैव चैव । अल्पर्द्धिको

॥ भाषा ॥

सेभंतेकिंविमोहित्ता पभू अविमोहित्तापभू । तेह हेभगवन् । स्यू विमोह उपजावीने जाइवा समर्थ अथवा विमोह विना उपजाव्या समर्थ उत्तर । गो यमा विमोहित्तापभू अविमोहित्ताविपभू । हेगौतम । विमोह उपजावीने विमोह विनाउपजाव्या पणि समर्थ । सेभंतेकिंपुव्वि विमोहित्ता पच्छावीई वएज्जा । तेह हेभगवन् । स्यू पहिला विमोह उपजावीने पछे जाय अथवा । पुव्विवीई वइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । पहिला जाईने पछे विमोह उप जावे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुव्विंवा विमोहित्ता पच्छावीई वएज्जा । हेगौतम । पहिला पणि विमोह उपजावीने पछे जाय अथवा । पुव्विंवा वीई वइत्ता पच्छाविमोहिज्जा । पहिला जाईने पछे पणि विमोह उपजावे । अप्पिड्ढिएणभंते असुरकुमारे । अल्पऋद्धिवन्त हेभगवन् । असुरकुमार देव । म हिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेण वीई वएज्जा । महाऋद्धिवन्त असुरकुमारदेवने मध्ये मध्यभागे करी जाय इतिप्रश्न उत्तर । णोइणट्ठेसमट्ठे । ए अर्थ समर्थ नही । एव असुरकुमारेणवि तिण्णि आलावगाभाणियव्वा । इम असुरकुमारदेव सघाते पणि तीन आलावा कहवा अल्पर्द्धिक महर्द्धिक १

रति॥ तत परं ॥ परिद्धीरत्ति ॥ परर्द्धा परर्द्धिकोवा ॥ विमोहित्ताप्रभृत्ति ॥ विमोह्य महिकाद्यन्धकारकरणेन मोहमुत्पाद्या ऽपश्यन्तमेव तंव्यतिक्रा

वएज्जा ? णोइणट्ठेसमट्ठे, पमत्त पुण वीईवएज्जा । सेणंभंते ! किं विमोहित्ता पभू अविमोहित्ता पभू ? गोयमा ! विमोहित्तापभू णोअविमोहित्तापभू । सेत भंते ! किं पुव्विंविमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा पुव्विवीईवएत्ता पच्छाविमोहिज्जा ? गोयमा ! पुव्विविमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा णोपुव्विं वीईवयित्ता पच्छा विमोहिज्जा । महिड्ढीएणं भंते! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीईवएज्जा ? हंता वीईवएज्जा । से

दन्त । किं विमोह्य प्रभुरविमोह्य प्रभु ? गौतम । विमोह्य प्रभु नो अविमोह्य प्रभु । स भ०। किं पूर्वं विमोह्य पश्चाद्व्यतिव्रजेत्, पूर्वं व्यतिव्रज्य पश्चाद्विमोहयेत् ? गौतम । पूर्वं विमोह्य पश्चाद्व्यतिव्रजेत्, नोपूर्वं व्यतिव्रज्य पश्चाद्विमोहयेत् । महर्द्धिको भदन्त । देवो ऽल्पर्द्धिकस्य देवस्य मध्यंन मध्येन व्यतिव्रजेत् ? हन्त व्यतिव्रजेत् । स भदन्त । किं विमोह्य प्रभु रविमोह्य प्रभु ? गौतम । विमोह्य प्रभुरविमोह्यापि प्रभु ।

मर्थ । ए अर्थ समर्थनहीं । पमत्त पुणवीईवएज्जा । वली जो ते देवप्रमादी हुवे तो ते समर्थ हैकदेव जाय । सेणभंते किंविमोहित्तापभू अविमोहित्ता । ते हदेव हेभगवन् । स्यूं धूअरिप्रमुख अन्धकारे विमोह उपजावी समर्थ हुवे अथवा धूअरिप्रमुख अन्धकार विना उपजाव्या समर्थहुवे । गोयमा विमोहित्तापभू णो अविमोहित्तापभू । हेगोतम । विमोह उपजावीने समर्थहुवे पणि नहीं विमोह विनाउपजाव्या समर्थहुवे समर्थिक माटे । सेतभंते किं पुव्विविमोहित्ता पच्छावीईवएज्जा । तेह हेभगवन् ! स्यूं पहिला विमोह उपजावीने पछे उलघवा समर्थहुवे । पुव्विंवीईवएत्ता पच्छाविमोहिज्जा । अथवा पहिला उलघो पछे विमोहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुव्विंविमोहित्ता पच्छावीईवएज्जा । हेगोतम । पूर्वे विमोह उपजावीने पछे उलघे पणि । णो पुव्विवीईवइत्ता पच्छाविमोहिज्जा । पूर्वे उलघीने पछे विमोहे नहीं वलीगौतम पूछेछे—महिड्ढीएभंते देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीईवएज्जा हंतावीईवएज्जा । महाऋद्धिवन्त हेभगवन् । देव अल्पऋद्धिवन्त देवने मध्ये मध्यभागेकरी व्यतिव्रजे उलंघीजाय इतिप्रश्न उत्तर हा जाय ।

॥ टीका ॥ त्मर्द्धिक' ॥ देवत्ति ॥ सामान्यो ॥ देवावासंतरायति ॥ देवावासविशेषान् ॥ वीइक्कतेत्ति ॥ व्यतिक्रान्तो लङ्घितवान्, क्वचित् व्यतिव्रजतीतिपाठ ॥ तेणप

॥ मूल ॥ भंते! देवे जाव चत्तारि पच देवावासंतराइ वीइक्कते तेणपरं परिड्ढीए? हता गोयमा! आइड्ढीएणं तंचेव जाव एवं असुरकुमारेवि, णवरं असुरकुमारावासतराइ सेसं तंचेव, एव एएणं कमेणं जाव थणियकुमारेवि, एव वाणमंतरजोइसिए वेमाणिए जाव परंपरिड्ढीए। अप्पिड्ढीएणं भंते! देवे से महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीईवएज्जा? णोइणट्ठेसमट्ठे। समिड्ढीएणं भंते! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीई

अनुवाद तम। आत्मर्ध्दा तथैव यावदेवमसुरकुमारेपि नवरमसुरकुमारावासान्तराणि शेष तथैव, एवमेतेन क्रमेण यावत्स्तनितकुमारेपि' एव वान व्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यावत्तत पर परर्ध्या। अल्पर्द्धिको भदन्त' देव स महर्द्धिक देव मध्यमध्येन कृत्वा व्यतिव्रजेत्? नायमर्थ समर्थ। समर्द्धिको भदन्त! देव समर्द्धिक (समऋद्धिमतमित्यर्थ) देव मध्यमध्येन व्यतिव्रजेत्? नायमर्थ समर्थ, प्रमत्त पुन व्यतिक्रामेत्। स भ

॥ भाषा ॥ आत्मप्रत लघा जाय तिण उपरान्त पराइ रूद्धे जाव प्रतिप्रश्न उत्तर। हता गोयमा आइड्ढीए तचेव जाव एव असुरकुमारेवि। हा गौतम! आ त्मऋद्धिकरी तिमहीज वाचवू जाव इम असुरकुमारनेविषे पणि कहवो। णवरं असुरकुमारावासतराइ सेसतचेव। एतलोविशेष असुरकुमार असुरकुमा रना आवासान्तर प्रति अतिक्रमे शेष तिमज कहवो। एव एएण कमेण जाव थणियकुमारेवि। इम इणे अनुक्रमेकरी यावत् स्तनितकुमारलगे कहवो। एव वाणमतर जोइसिए वेमाणिए जाव पर परिड्ढीए। इम वानव्यन्तरनेविषे ज्योतिषीनेविषे वैमानिकनेविषे कहवो यावत् तिण उपरान्त पराइ ऋद्धे जाव एतलालगे कहवो। अप्पिड्ढीएणभते देवे से महिड्ढियस्स देवस्स। थोडी ऋद्धिनो धणी हेभगवन्! देव तेह महाऋद्धिवन्त देवने। मज्झम ज्झेण वीईवएज्जा। मध्ये मध्यभागेकरी व्यतिवजे जाय प्रतिप्रश्न उत्तर। णोइणट्ठे समट्ठे। एह अर्थ समर्थ नही। समिड्ढीएण' ते देवे समिड्ढियस्स दे वस्स। सरीखा ऋद्धिनो धणी हेभगवन्! देव सरीखा ऋद्धिवन्त देवन। मज्झमज्झेण वीईवएज्जा। मध्ये मध्यभागे करी जाव प्रतिप्रश्न उत्तर। णोइणट्ठेस

॥ टीका ॥

सेणति ॥ स भिक्षु ॥ तस्सठाणस्सत्ति ॥ तत्स्थान ॥ 'अणपन्नियदेवत्तणंपिनोलभिस्सामित्ति ॥ अणपन्निका व्यन्तरनिकायविशेषा स्तत्सम्बन्धिदेवत्व मणपन्निकदेवत्व तदपि नोलप्स्ये इति ॥ दशमशतस्य द्वितीय ॥ १० ॥ २ ॥ द्वितीयोद्देशकान्ते देवत्वमुक्त मथ तृतीय देवस्वरू पमभिधीयत इत्येव सम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्र–रायगिहेत्यादि ॥ आइड्ढीएणति ॥ आत्मर्द्धा स्वकीयशक्त्या अथवा, आत्मनएव ऋद्धि र्यस्यासा वा

॥ सू ॥

सियदेवत्तणंपि णोलभिस्सामित्ति कट्टु सेण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा सेण तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ, अत्थि तस्स आराहणा, सेवं भंते भंतेत्ति॥ दसमसयस्स बिइओ उद्देसो सम्मत्तो १० ॥ २ ॥ रायगिहे जाव एववयासी–आइड्ढीएणं

॥ अनुवाद ॥

(अप) नोलप्स्यइति कृत्वा तस्य स्थानस्यानालोचितप्रतिक्रान्त कालं करोति नास्ति तस्या राधना' स तस्य स्थानस्यालोचितप्रतिक्रान्त कालं करोति अस्ति तस्याराधना। तदेव] भदन्त भदन्त ॥ इतिदशमशतस्य द्वितीयोद्देश ॥ १० ॥ २ ॥ राजगृहे नगरे यावदेव मवादीत्–आत्मर्द्धा भ० । देवो याव घत्वारि पञ्च देवावासान्तराणि व्यतिक्रान्त स्तत पर परर्द्धा (परर्द्धिकोवा) ? हन्त (अगीकारे) गौ

॥ भाषा ॥

ता पामस्यूं ज इम करीने। तेणतस्सठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालंकरेइ। तेह साधु तेह स्थानकने आलोयाविना पडिकम्याविना मरणप्रते पामे। नत्थि तस्स आराहणा। नथी ते साधुने आराधना। सेणतस्सठाणस्स आलोइयपडिक्कते कालंकरेइ। तेह साधु तेह स्थानकने आलोई पडिक्कमी ने पछे कालप्रते करे तो। अत्थि तस्सआराहणा। छे तेह साधुने आराधकपणो। सेवंभंतेभंतेत्ति। तहत्ति हेभगवन्! तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्य छे अन्यथा नथी। दसमसयस्सबिइओउद्देसोसम्मत्तो। ए दशम शतकनो बीजोउद्देशो अर्थथकी पूरो लिख्यो १० ॥ २ ॥ बीजाउद्देशाने अंते देवपणो कह्यो तेमाटे त्रीजेउद्देशे देवस्वरूप कहेछे–तेहना पहिलो सूत्र। रायगिहे जाव एववयासी। राजगृहनगरनेविषे यावत् इमकहे। आइड्ढी एणभते देवे जाव चत्तारि पचदेवावासतराइ वीइक्कते तेण पर परिड्ढीए। आत्मशक्ति करीने हेभगवन्! देव यावत् चार पांच सामान्यदेवना वासा

॥ मूल ॥

पच्छावियणं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोइस्सामि जाव पडिक्कमिस्सामि सेणं तस्स ठाणस्स आणालोइयपडिक्कंते जाव णत्थि तस्स आराहणा, सेणं तस्स ठाणस्स आलोइयपडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, भिक्खूय अन्नयरं अकिच्चठाणं पडिसेवित्ता तस्सण एवं भवइ जइ ताव समणोवासयावि कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति किमंगपुण अणव

अनुवाद

दप्यहं चरमकालसमये एतस्य स्थानस्य (एन स्थानमालोचयिष्यामि) यावत्प्रतिक्रमिष्यामि स तस्य स्थानस्यानालोचितप्रतिक्रान्तो यावन्नास्ति तस्याराधना, स तस्य स्थानस्यालोचितप्रतिक्रान्त कालं करोति अस्ति तस्याराधना, भिक्षुश्चान्यतर मकृत्यस्थानं प्रतिषेविता (भवति) तस्यैव भवति यदि तावच्छ्रमणोपासका अपि कालमासे कालं कृत्वा ऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्तारो भवन्ति किमङ्ग पुनरणपन्निकदेवत्वमपि

॥ भाषा ॥

वीने। तस्सण एवभवइ। तेहने मननो अभिलाष इमहुवे। पच्छावियि अह चरिमकालसमयसिएयस्सठाणस्स आलोइस्सामि जाव पडिक्कमिस्सामि। पछे पणि णं वाक्यालंकारे, अह कहिये हुं छेहलाकाल समयनेविषे मरणने अवसरे एह अकृत्यस्थानन आलोयस्यूं यावत् पडिक्कमस्यूं। सेण तस्सठाणस्स अणालोइयपडिक्कते जाव णत्थितस्सआराहणा। तेह भिक्षु तेह अकृत्यस्थानकने आलोयाविना तथा पडिकम्या विना यावत् नथी तेहने आराधना। सेण तस्सठाणस्स आलोइयपडिक्कते कालकरेइ। तेह साधु तेह अकृत्यस्थानकने आलोयी पडिक्कमीने पछे काल करेतो। अत्थि तस्स आराहणा। छे तेहने आराधना। भिक्खूयअन्नतर अकिच्चठाण पडिसेवित्ता। वली साधु अनेरा अकृत्यस्थानकप्रते सेवीने। तस्सण एव भवइ। तेहने मननो अभिलाष इम हुवे। जइ ताव समणोवासयावि कालमासेकालंकिच्चा। जो पहिला श्रमणोपासक साधु ते पणि कालसमयनेविषे कालकरीने मरणपामीने। अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवइ। अनेरा कोइएक देवलोकनेविषे देवतापणे ऊपजणहार हुवे एतावता ऊपजे। किमगपुण अणवणियदेवत्तणंपि। तो स्यूं अगइति कोमलामंत्रणे, वली अणपन्निक वानव्यन्तरनिकाय विशेष ते सम्बन्धी देवपणों पणि छ। णो लभिस्सामीतिकट्टु। नहीं लाभस्यूं एताव

॥ टीका ॥

उद्भावणात्, अथवा चियत्ते समत्ते प्रीतिविषये धर्म्मसाधनेषु प्रधानत्वाद्देहस्येति ॥ एवं मासियाभिक्खुपडिमेत्यादि ॥ अनेनच यदतिदिष्टं तदिद-
जेकेइपरीसहोवसग्गाउप्पज्जंति तं०-दिव्वावा माणुसावा तिरिक्खजोणियावा तेउप्पन्ने सम्मसहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइत्यादि ॥ तत्र सहते स्था
नाविचलनत, क्षमते क्रोधाभावात्, तितिक्षते दैन्याभावात्, अधिसहते मन प्रभृतिभि'किमुक्त भवत्यधिसहतइति, आराहियाभवतीत्युक्त मथारा
धना यथा भवत्याराधनाच स्यात्तद्दर्शयन्नाह-भिक्खूय अन्नयरं अकिच्चठाणमित्यादि ॥ इह च आइ चेदित्येतस्यार्थे वर्त्तते, स च भिक्षो रकृत्यस्थानासेव
नस्य प्रायशा सम्भवप्रदर्शनपर ॥ पडिसेवित्तत्ति ॥ अकृत्यस्थान प्रतिसेविता भवतीतिगम्य, वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने ॥ पडिसविज्जत्ति ॥ दृश्यते ॥

॥ मूल ॥

तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा, सेणं तस्स ठाणस्स आलोइयप
डिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा, भिक्खू अणयरं अकिच्चठाणं पडिसेवित्ता तस्सणं एवं भवइ

॥ अनुवाद ॥

ऽन्यतर मकृत्यस्थानं प्रतिषेविता (भवतीतिशेष) स तस्य स्थानस्य (तत्स्थानमित्यर्थ) अनालोचितप्रतिक्रान्त. काल करोति नास्ति तस्याराधना,
स तस्य स्थानस्यालोचितप्रतिक्रान्त काल करोति अस्ति तस्याराधना। भिक्षुर्यान्यतरनकृत्यस्थान प्रतिषेविता (भवति) तस्यैव भवति यथा

॥ भाषा ॥

ना सहे। एवमासियाभिक्खुपडिमानिरवसेसा भाणियव्वा। एम मासिकी भिक्षु अणगारनी प्रतिमा अभिग्रह नियमविशेष समस्त जाणवो। जहा द
सा जाव आराहिया भवइ। जिम दशा श्रुतस्कन्ध सूत्रमांहि बारे प्रतिमानो अधिकार विशेषथकी कह्योछे, तिम इहां पणि निरवशेषे समस्तपणे का
हवो यावत् आज्ञानो आराधक हवे एतलालगे कहवो। भिक्खूय अणयर अकिच्चठाण पडिसेविज्जा। वली साधु अनेरो कोइएक अणकरवायोग्य स्थान
क प्रति सेवणहार हुए। सेण तस्सठाणस्स अणालोइयपडिक्कंतकालंकरेइ। तेह भिक्षु तेहस्थानकने आलोयाविना पडिकम्या विना काल मरणप्रते कर
तो। णत्थि तस्स आराहणा सेणतस्सठाणस्स आलोइयपडिक्कंत कालंकरेइ। नथी तेहने आराधना तेह भिक्षु तेह स्थानकने आलोइय तथा पडिकमी का
ल मरणप्रते करेतो। अत्थि तस्स आराहणा भिक्खूय अणयर अकिच्चठाण पडिसेविज्जा। छे तेहने आराधना साधु अनेरो कोइएक अकृत्य स्थानकप्रते से

॥ टीका ॥

त्रयधिकृतवाचनाया सूचितानि, यत स्तत्रोक्त-वेयणापय भाणियव्वं जाव नेरइयाणं भंते। किं दुक्खमित्यादि,, वाचनान्तरेतु-पादोनगाथोक्तानि सूचितानि, यत स्तत्राप्युक्त-निदायअनिदायवज्जति,, वेदना प्रस्तावाद्वेदनाहेतुभूता प्रतिमा निरूपयन्नाह-मासियणमित्यादि॥ मास परिमाण यस्या सा मासिकी ता भिक्षुप्रतिमा साधुप्रतिज्ञाविशेष॥ वोसट्ठकाएत्ति॥ व्युत्सृष्टे स्नानादिपरिकर्म्मवर्ज्जनात्॥ चियत्तदेहेत्ति॥ त्यक्ते वधबन्धा

॥ मूल ॥

भंते! भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे एवं मासियाभिक्खुपडिमा णिरवसेसा भाणियव्वा जहा दसा जाव आराहिया भवइ। भिक्खूय अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेविता सेणं

अनुवाद

व्युत्सृष्टे काये त्यक्ते देहे एव मासिकी भिक्षुप्रतिमा निरवशेषा भणितव्या, यथा दशाश्रुतस्कन्धे यावदाराधिता भवति। भिक्षुश्च (भिक्षुश्चेदित्यर्थ)

॥ भाषा ॥

नीतने वेदनायोग्यनो अनुभव वेऊभेदे पणि पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य वेदे अथवा औपक्रमिकी प्रतेज तथा 'दुविहा वेयणा प० तं० निदाय अनिदाय, निदाचित्तवतो विपरीत ते अनिदा तिहां संज्ञा वेक वेदे असंज्ञी अनिदामते वेदे इहां पन्नवणानेविषे द्वारगाथाछे ते इम—सीयादव्वसारीरा सायात ह्ववेयणाहवइदुक्खा। अब्भुवगमुवक्कमिवा निदायअनिदायनायव्वा॥ १॥ पहना पूर्वार्द्ध कह्या ईजद्वारमते अधिकृत-वाचनायें कह्या जेहभणी इहां कह्यु वेयणापद भाणियव्व। जाव णेरइयाणभंते किं दुक्खवेयणवेदेंति सुहवेयणवेदेंति अदुक्खमसुह वेयणवेदेंति। जाव णेरइयाणभंते किं दुक्खमित्यादि, वाचनान्तरे तो एकपद ऊणी गाथा कहीज जेह भणी तिहां कह्यु निदाय अनिदाय वज्जति,। जाव णेरइयाणभंते किं दुक्खवेयणवेयंति सुहवेयणवेयंति अदुक्खमसुह वेयण वेयंति। यावत् नारकीण वाक्यालकारे, हेभगवन्! स्यूं दुक्खवेदना वेदे अथवा सुखवेदना वेदे २ अथवा अदुक्ख असुख वेदना वेदे ३ इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा दुक्खंपि वेयण वेयंति सुहंपि वेयण वेयंति। हेगौतम! दुक्ख पणि वेदना वेदे सुख पणि वेदना वेदे २। अदुक्खमसुहवेयणं वेयंति। अदुक्ख असुख पणि वेदना वेदे ३। मासियणभंते भिक्खुपडिम पडिवण्णस्स अणगारस्स। मासप्रमाणछे जेहनी ते मासिकी ते हेभगवन्! भिक्षुनी प्रतिमाने प्रतिपन्नने गृहवासरहित साधुने। निच्चंवोसट्ठकाए चियत्तदेहे। सदैव स्नानादि परिकर्म वर्जनयी वोसराव्यो काय त्यक्त देहवधबन्धादि उप

उ ॥ तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धाद्द्रव्यवेदना, नारकादिक्षेत्रसम्बन्धा क्षेत्रवेदना, नारकादिकालसम्बन्धात्कालवेदना' शोकक्रोधादिभावसम्बन्धा द्वाववेदना, सर्वे संसारिणश्चतुर्विधामपि । तथा "तिविहा वेयणा सारीरा माणसा सारीरमाणसा„ समनस्का स्त्रिविधामपि, असञ्ज्ञिनस्तु शारीरीमेव तथा तिविहा वेयणा साया असाया सायासाया„ सर्वे संसारिण स्त्रिविधामपि तथा "तिविहा वेयणा दुक्खा सुहा अदुक्खमसुहा„ सर्वे त्रिविधामपि सातासातसुखदु खयोश्चायंविशेष सातासाते अनुक्रमेणोदयप्राप्तानां वेदनीयकर्मपुद्गलानां मऽनुभवरूपे, सुखदु खेतु परोदीर्यमाणवेदनीयानुभवरूपे तथा "दुविहा वेयणा अब्भोवगमिया उवक्कमिया„ आभ्युपगमिकी या स्वय मभ्युपगम्य वेद्यते यथा साधव केशोल्लुञ्चना तापनादिभि र्वेदयन्ति, औपक्रमिकीतु स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेनचोदयमुपनीतस्य वेद्यस्या नुभवो द्विविधामपि पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च शेषा स्त्वौपक्रमिकीमेवेति, तथा "दुविहा वेयणा निदाय अनिदाय„ निदा चित्तवती विपरीतात्वनिदेति, सञ्ज्ञिनो द्विविधा मसञ्ज्ञिनस्त्वनिदामेवेति, इहच प्रज्ञापनायां द्वारगाथास्ति साचेय–सीयादव्वसारीरसायतह्वेयणाहवइदुक्खा । अब्भुवगमुवक्कमिया निदायअनिदायनायव्वा ॥ १ ॥ अस्याश्च पूर्वार्द्धोक्तान्येव द्वारा

हवा –एव चउव्विहावेयणा प० तं० दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तिहां द्रव्य पुद्गल सबन्धयकी द्रव्यवेदना १ नारकादि क्षेत्रसबन्धयकी क्षेत्रवेदना २ नारकादि कालसबन्धयकी कालवेदना ३ शोकक्रोधादिभाव सबन्धयकी भाववेदना ४ सर्व ससारीजीवने चतुर्विधवेदना हुवे तथा 'तिविहावेयणा प० तं० सारीरा १ माणसा २ सारीरमाणसा ३, मनसहित जीवने तीनइ वेदनाहुवे असज्ञीने शारीरहीज वेदनाहुवे तथा 'तिविहावेयणा प० तं० साया असाया २ सायासाया ३, सगलाई ससारीजीवने त्रिविधवेदनाहुवे तथा 'तिविहावेयणा प० तं० दुक्खा सुहा २ अदुक्खमसुहा ३ सगलाईजीव त्रिविध वेदनावन्त हुवे, साता असाता दुख दुखनो ए विशेष साता असाता अनुक्रमेकरी उदयपाम्या जे वेदनीयकर्म पुद्गल तेहना अनुभवरूप कहिये सुख दुखनो पर उदीरतायका वेदनीयना अनुभवरूप कहिये तथा 'दुविहा वेयणा प० तं० अब्भोवगमियाय ओवक्कमियाय, तिहां आभ्युपगमकी जिका पोतेअङ्गीकार करी वेदिये । जिम साधु केश लुञ्चन आतापनादिकेकरी वेदिये औपक्रमिकी तो पोते उदीर्णने उदीरणा करणेकरी उदयप्रते उप

॥ टीका ॥

वसीपत्तेत्यादि,, एतद्वक्तव्यतासङ्ग्रहगाथैव-सखावत्ताजोणी इत्थीरयणस्सहोइविसेया । तीएपुणउप्पत्ती नियमाउविणासस्सईगब्भो ॥ १ ॥ कुम्मुन्नयजोणीए तित्थयराचक्किवासुदेवाय । रामाविय जायते सेसाससेसगजणोउत्ति ॥ २ ॥ अनन्तर योनिरुक्ता योनिमतांच्च वेदना भवतीति तत्प्ररूपणायाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ एव वेयणापय भाणियव्वंति ॥ वेदनापदंच प्रज्ञापनाया पंचत्रिंशत्तम तच्च लेशतो दर्श्यते-नेरइयाण भंते । किं सीयवेयण वेयंति ३ गो० ! सीयंपिवेयणवेयंति, एवउसिणपि, नोसिउसिण, एवमसुरादयोवैमानिकान्ता. ॥ एव चउव्विहा वयणा दव्वउ खेत्तउ कालउ भाव

॥ सूत्र ॥

हाण भंते ! वेयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेयणा पन्नत्ता, तंजहा—सीया उसिणा सीउसिणा एवं वेयणापदं भाणियव्वं, जाव णेरइयाणं भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति सुहं वेयणं वेदेंति अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ? गोयमा ! दुक्खंपि वेयणं वेदेंति सुहंपि वेयणं वेदेंति अदुक्खमसुहंपि वेयणं वेदेंति । मासियंणं

भनुवाद

ष्मा, एवं योनिपद निरवशेष भणितव्यम् । कतिविधा भदन्त । वेदना प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा वेदना प्रज्ञप्ता तद्यथा—शीता उष्णा शीतोष्णा, एव वेदना पद भणितव्य, याव नैरयिका भदन्त ! किं दु खा वेदना वेदयन्ति सुखा वेदना वेदयन्ति अदु खसुखा वेदना वेदयन्ति ? गौतम ! दु खा मपि वेदना वेदयन्ति, सुखामपि वेदना वेदयन्ति, अदु खसुखामपिवेदना वेदयन्ति । मासिकी भदन्त ! भिक्षुप्रतिमा प्रतिपन्नस्यानगारस्य नित्य

॥ भाषा ॥

त। पनुणउप्पत्ती णियमाउविणस्सइगब्भो ॥ १ ॥ कुम्मुण्णजोणीए तित्थयराचक्किवासुदेवाय । रामाविय जायते सेसाणसेसगजणोत्ति ॥ २ ॥ इति अनन्तरे योनिकही ते योनिवन्तने वेदनाहुवे तेमाटे वेदनाप्ररूपणा कहेछे—कइविहाणभंते वेयणा प० गोयमा तिविहा प० त० सीया उसिणा सीउसिणा एववेयणापद । केतलेभेदे हेभगवन् ! वेदनाकही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! तीनभेदे वेदनाकही ते कहेछे—शीतवेदना उष्णवेदना २ शीतोष्णवेदना ३ एववेयणापद भाणियव्वंति, वेदनापद पन्नवणानो पैंत्रीसमा पद ते सक्षेपथकी देखाडियेछे—णेरइयाण भते कि सीयवेयणवेदेति उसिसिणवेयणवेयति सीओसिणवयणवेयति गोयमा सीयपिवेयणवेयति एव उसिणपि णो सीओसीण । इम असुरादिक वैमानिक पर्यन्त चउवीस दण्डक का

कायसम्भवे नारकदेवाना यदुपपातक्षेत्र तन्न केनचिज्जीवेन परिगृहीतमित्यचित्ता तेषा योनि , गर्भवासयोनिस्तु मिश्रा शुक्रशोणितपुद्गलानामचित्ता ना गर्भाशयस्यच सचेतनस्य भावादिति, शेषाणा पृथिव्यादीना सम्मूर्छजानाच मनुष्यादीना मुपपातक्षेत्रं जीवेन परिगृहीतं ऽपरिगृहीतं उभयरूपं चोत्पत्तिरिति त्रिविधापि योनिरिति, तथा कइविहा णं भंते । जोणी पण्णत्ता ? गोयमा । तिविहा जोणी पण्णत्ता त०-सवुडाजोणी वियडाजोणी सवुडवियडाजोणी त्यादि,, सवृतादियोनिप्रकरणार्थसङ्ग्रहस्तु प्रायएव-एगिदियनेरइया सवुडजोणीतहेवदेवाय । विगलिंदिएसुवियडा सवुडविय डायगब्भमि ॥ १ ॥ एकेन्द्रियाणा सवृता योनि स्तथास्वभावत्वात्, नारकाणामपि सवृतैव यतो नरकनिष्कुटाःसवृतगवाक्षकल्पा स्तेषुच जाता स्ते वर्द्धमानमूर्त्तय स्तेभ्य पतन्ति शीतेभ्यो निष्कुटेभ्य उष्णेषु नरकेषु उष्णेभ्यस्तु शीतेष्विति, देवानामपि सवृतैव यतो देवशयनीये देवदूष्यान्तरितो ऽङ्गुलासङ्ख्यातभागमात्रावगाहनो देव उत्पद्यतइति, तथा"कइविहा णं भंते । जोणी पण्णत्ता ? गो० । तिविहा जोणी पण्णत्ता त०-कुम्मुण्णया सखावत्ता

सून्य जीवनिकाय भवे नारकदेवनां जे उपपातक्षेत्र ते नहीं कोणथी अधिकरी परिग्रहीत तेमाटे अचित्तयोनि तेहोनो कहीं गर्भवासयोनि मिश्र कहिये शुक्र शोणितपुद्गल अचित्त अने गर्भाशय सचेतनना भावथकी शेष जे पृथिव्यादिकना वली सम्मूर्छिम मनुष्यादिकना उपपातक्षेत्रनेविषे परिग्रहीत अथवा अपरिग्रहीत उभयरूप उत्पत्तिछे तेमाटे त्रिविध पण योनिछुवे तथा । कइविहाणंभते जोणी प० गोयमा तिविहा जोणी पण्णत्ता त०, सवुड.जोणी वियडाजोणी सवुडवियडाजोणी इत्यादि, सवृतादि योनिप्रकरणार्थ सग्रहगाथे इम—एगिदियनेरइया सवुडजोणी तहेवदेवाय । विगलिंदिएसुवियडा सवुडवियडायगब्भमि ॥ १ ॥ एकेन्द्रियनी सवृतायोनि कहिये तथाविधस्वभावथकी तथा नारकीने पण सवृत जे निष्कुट जे कारणे नरकनिष्कुट सवृत गवाक्षसरीखाछे तेहनेविषे ऊपना ते वर्धमानमूर्त्ति तेहथी पडे । सीया उसिणा सीओसिणा एव जोणीपद भाणियव्व । शीतनिष्कुटथकी उष्णनरकनेविषे उष्णथकी शीतनेविषे पडे देवनो पण सवृतजयोनि कहिये तथा क.विहाणंभते जोणी प० गोयमा तिविहा जोणी प० त० कुम्मुनया सखावत्ता वसीपत्ता इत्यादि, एह कहुयता सग्रह इम—सखावत्ताजोणी इत्थीरयणस्स होइविरणेया ।

जाणी नोसीतोसिणाजोणी त्यादि„ अयमर्थः, सीया विजोणिति„ आद्यासु तिसृषु नरकपृथिवीषु चतुर्थ्यांच केषुचि न्नरकावासेषु नारकाणां यदुपपातक्षेत्र तच्छीतस्पर्शपरिणतमिति तेषां शीतापियोनि "उसिणाविजोणित्ति„ आपासु पृथिवीषु चतुर्थपृथिवीनरकावासेषुच केषुचि न्नारकाणां यदुपपातक्षेत्र तदुष्णस्पर्शपरिणतमिति तेषामुष्णापि योनि. "नोसीउसिणाजोणित्ति„ नच मध्यमस्वभावा योनि स्तथास्वभावात् शीतादियोनि प्रकरणार्थं सङ्ग्रहस्तु प्रायेणैव-सीउसिणजोणीया सव्वदेवायगब्भवक्कंती । उसिणायतेउकाए दुहनिरएतिविहसेसेसु ॥ १ ॥ गब्भवक्कंतित्ति ॥ गर्भोत्पत्ति का ॥ तथा कइविहाणं भंते । जोणी पन्नत्ता ? गोयमा । तिविहा जोणी पन्नत्ता, तंजहा-सचित्ता अचित्ता मीसिया इत्यादि ॥ सचित्तादियोनि प्रकरणार्थसङ्ग्रहस्तु प्रायेणैव- अचित्ताखलुजोणी नेरइयाणं तहेवदेवाणं । मीसायगब्भवासे तिविहापुणहोइसेसेसु ॥ १ ॥ सत्यप्येकेन्द्रियसूक्ष्मजीवनि

उष्णस्पर्श जेहनो ते उसिणा मिश्रस्वभाव जेहनो ते सीतोसिणा एवजोणीपद गिरवसेस भाणियव्वंति, पन्नवणानेविषे नवमो योनिपदछे ते समस्त इहा जाणवो ते इम—णेरइयाणंभंते कि सीयाजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी गोयमा सीयाविजोणी उसिणाविजोणी णोसीतोसिणा जोणी इत्यादि अर्थ सीयाविजोणित्ति, पहिली तीन नरकपृथिवीनेविषे अने चोथी पृथिवीना कोइएक नरकावासानेविषे नारकीनो जे उपपातक्षेत्र ते शीतस्पर्श परिणतछे तेहनो शीत पणि योनिछ्वे उसिणाविजोणित्ति, पचमी छठी सातमी नरकपृथिवीनेविषे अने चोथी नरकपृथिवीना कोइ एक नरकावासानेविषे नारकीनाजे उपपातक्षेत्र ते उष्णस्पर्श परिणतछे तेहनो उष्ण पणि योनिछ्वे उसिणाविजोणित्ति, नही मध्यस्वभावे योनि तथाविधस्वभावथकी शीतादि योनिप्रकरण अर्थसंग्रह प्राये इमछे, सीउसिणजोणीया सव्वदेवायगब्भवक्कंति । उसिणायतेउकाए दुहनिरएतिविहसेसेसु ॥ १ ॥ गब्भवक्कंतित्ति, गर्भो उत्पत्ति जेहथी ते तथा । कइविहाणंभंतेजोणीपण्णत्ता गोयमा तिविहाजोणीपण्णत्ता तंजहा सचित्ता अचित्ता मीसिया इत्यादि, सचित्तादि योनिप्रकरणार्थ संग्रह प्राये इम, अचित्ताखलुजोणी णेरइयाणतहेवदेवाण । मीसायगब्भवासे तिविहापुणहोइसेसेसु ॥ १ ॥ इति छते पणि एकेंद्रिय

॥ टीका ॥

अवीइसि ॥ अवीचिमतो ऽकषायसम्बन्धवतो ऽविविच्यवा, अपृथग्भूय यथाख्यातसंयमात्, अविचिन्त्यवा; रागविकल्पाभावेनेत्यर्थ, अविकृति वा, यथाभवतीति' अनन्तर क्रियोक्ता क्रियावताच प्रायो योनिप्राप्ति भवतीति योनिप्ररूपणायाह ॥ कतिविहाणमित्यादि ॥ तत्रच ॥ जोणित्ति ॥ युमिश्रणा इतिवचनात् युवन्ति तेजसकार्मणशरीरवन्त सन्त औदारिकादिशरीरयोग्यस्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्ति जीवा यस्या सा योनि साच त्रिविधा शीतादिभेदा तत्र ॥ सीयत्ति ॥ शीतस्पर्शा ॥ उसिणत्ति ॥ उष्णस्पर्शा ॥ सीओसिणत्ति ॥ द्विस्वभावा ॥ एव जोणीपय निरवसेस भाणियव्वति ॥ योनिपदच प्रज्ञापनाया नवमपद तच्चैव-नरइयाण भते । किसीया जोणी उसिणाजोणी सीतोसिणा जोणी ? गोयमा । सीयाविजोणी उसिणावि

॥ मूल ॥

रिया कज्जइ णोसंपराइया किरिया कज्जइ। सेकेणट्ठेण भंते ! जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव सेण अहा सुत्तमेव रीयइ सेतेणट्ठेण जाव णोसपराइया किरिया कज्जइ। कइविहाण भंते! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तजहा—सीया उसिणा सीओसिणा एव जोणीपद णिरवसेस भाणियव्व। कइवि

अनुवाद

र्यापथिकी क्रिया क्रियते नो साम्परायिकी क्रिया क्रियते । अथ केनार्थेन भदन्त । यथा सप्तमशते सप्तमोद्देशके याव त्स यथासूत्रमेव रियति तत्तेनार्थेन याव न्नासाम्परायिकी क्रिया क्रियते। कतिविधा भदन्त! योनि प्रज्ञप्ता - गौतम! त्रिविधा योनि प्रज्ञप्ता तद्यथा–शीता उष्णा शीतो

॥ भाषा ॥

राइया किरिया कज्जइ। पणि सपरायिकी क्रिया उपजे नही। सेकेणट्ठेणभते जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इत्यादि जिम सातमाशतकना सातमाउद्देशानेविषे कह्यु तिमकहवो। जाव सेण अहासुत्तमेवरीयइ। यावत तेह ण वाक्यालकारे, यथा सूत्रहीज चालेछे। सेतेणट्ठेण जाव णो सपराइया किरिया कज्जइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम! यावत् नही सापरायिकी क्रिया उपजे इसे इत्यर्थ अनन्तरे क्रियाकहीते क्रियावन्तने प्राये योनि प्राप्तिहवे तमाटे योनिप्ररूपणने काजे कहेछे– कतिभेदे हेभगवन्! योनिकही इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम! तीन प्रकारे योनि कही योनि कहिये तेजस कार्मण शरीरवन्थको औदारिकशरीर योग्य स्कन्ध समुदायकरी मिश्रहुवे जीव जेहनेविषे ते योनिकहिये ते कहेछे –सीया शीतस्पर्श जेहना ते शीता

॥ टीका ॥
त्याद्यतिदेशादिद दृश्यं-वोच्छिन्ना जवति तस्सण इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्सण कोहमाणमायालोभा अवोच्छिण्णा जवति तस्सण सपराइया किरिया कज्जइ, अहा सुत्त रियरियमाणस्स इरिया वहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तरियरियमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइत्ति,, व्याख्या चास्य प्राग्वदिति ॥ सेणउस्सुत्तमेवत्ति ॥ सपुनरुत्सूत्रमेवा गमातिक्रमणातएव ॥ रीयइत्ति ॥ गच्छति ॥ सवुडस्सेत्याद्युक्तविपर्ययसूत्र ॥ तत्रच ॥

॥ मूल ॥
माणमायालोभा एवं जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव सेणं उस्सुत्तमेवरीयइ सेतेणठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ । संवुडस्सणं भंते ! अणगारस्स अवीइपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्सणं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ पुच्छा गोयमा ! संवुड जाव तस्सणं इरियावहिया कि

॥ अनुवाद ॥
क्रियते, अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते सवृत (प्रवृति) याव त्साम्परायिकी क्रिया क्रियते ? गौतम । यस्य क्रोधमानमायालोभा एव यथा सप्तमशते प्रथमोद्देशके याव त्स उत्सूत्र मेव रियति (गच्छति) त तेनार्थेन याव त्साम्परायिकी क्रिया क्रियते । सवृतस्य भदन्त ! अनगारस्या वीचिपथि स्थित्वा पुरतो रूपाणि निर्ध्यायमानस्य यावत्तस्य भदन्त ! किमैर्यापथिकी क्रिया क्रियते पृच्छा, गौतम । सवृत (प्रवृति) यावत्तस्यै

॥ भाषा ॥
य क्रियाहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्सण कोहमाणमायालोभा । हेगौतम । जेहने क्रोध मान माया लोभ विच्छेदगया हुवे तेहने जे इरियावही क्रियाऊपजे इत्यादि । एव जहा सत्तमसएपढमुद्देसए । इम जिम सातमाशतकने पहिले उद्देशे कह्यु तिम कहवो । जाव सेण उस्सासमवरीयइ । यावत् तेह आगम उल्लघीहीज चालेछे तेमाटे । सेतेणठेणं जाव सपराइया किरियाकज्जइ । ते तेणेअर्थे यावत् तेहने साम्परायिकीक्रिया ऊपजे हुवे इत्यर्थ सवुडस्सण भते अणगारस्स अवीइपथेठिच्चा । संवृतने हेभगवन् । साधुने कषायरहित मार्गनेविषे रह्याथकाने । पुरओ रूवाइ निज्झायमाणस्स । आगिला रूपाप्रतें ध्यावतायकाने । जाव तस्सणभते किं इरियावहियाकिरियाकज्जइ पुच्छा । यावत् तेहने हेभगवन् । स्यू ऐर्यापथिकी क्रिया ऊपजे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सवुड जाव तस्सण इरियावहिया किरियाकज्जइ । हेगौतम । सवृतअणगारने यावत् तेहने इरियावही क्रिया उपजे । यासप

॥ टीका ॥

त्येवास्थित्वा ॥ पथेत्ति ॥ मार्गे ॥ अवयक्खमाणस्सत्ति ॥ अवकाङ्क्षतो ऽपेक्षमाणस्यवा; पथि अग्रतस्य चोपलक्षणत्वा दन्यत्राप्याधारेस्थित्वेतिद्रष्टव्य॥ नोइरियावहियाकिरियाकज्जइत्ति ॥ न केवलयोगप्रत्यया कर्म्मबन्धक्रिया भवति सकषायत्वा त्तस्येति ॥ जस्सणंकोहमाणमायालोभा ॥ इह एव जहे

॥ मूल ॥

मग्गऊ रूवाइं अवयक्खमाणस्स पासऊ रूवाइं अवलोएमाणस्स उड्ढं रूवाइं उलोएमाणस्स अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्सण भंते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! संवुडस्स अणगारस्स वीइपंथे ठिच्चा जाव तस्सण णोइरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ संवुड जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं कोह

॥ अनुवाद ॥

ऽपेक्षमाणस्यवा, पार्श्वतो रूपाण्यवलोकयत उर्द्ध रूपाणि विलोकयतो ऽधोरूपाण्यवलोकयत स्तस्य भदन्त ! किमैर्यापथिकी क्रिया क्रियते साम्परायिकी क्रिया क्रियते ? गौतम ! संवृतस्यानगारस्य वीचिपथि स्थित्वा याव त्तस्य नो ऐर्यापथिकी क्रिया क्रियते साम्परायिकी क्रिया

॥ भाषा ॥

ओरूवाइ निज्झायमाणस्स मग्गओरूवाइं अवयक्खमाणस्स। आगिला रूपाप्रतें ध्यावताथकाने पूठि पाछेरह्या रूपाने वाछाथकी देखता थकाने। पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स उड्ढरूवाइ उलोएमाणस्स अहेरूवाइं आलोएमाणस्स। बेहूपासेरह्या तेहप्रतें अवलोकन करताथकाने ऊंचारह्या रूपप्रतें विलोकन करताथकाने नीचेरह्या रूपाप्रतें आलोकन करताथकाने। तस्सण भंते कि इरियावहियाकिरियाकज्जइ। तेहने हेभगवन्! स्यू ऐर्यापथिकी क्रिया ऊपजे अथवा। संपराइया किरियाकज्जइ। साम्परायिकी क्रिया ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा संवुडस्स अणगारस्स वीइ पंथे ठिच्चा। हेगौतम! सहत साधुने कषायउदय मार्गनेविषे रह्याने। जाव तस्सण णो इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ। यावत् तेहने नही मार्गनेविषे ऐर्यापथिकीक्रिया ऊपजे तेहने साम्परायिकीक्रिया ऊपजे। सेकेणट्ठेणभंते एवं वुच्चइ। संवुड जाव संपराइया किरिया कज्जइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्! इम कहिये संवृतअणगारने कषायमार्गनेविषे रह्याने ऐर्यापथिकीक्रिया न ऊपजे अने तेहने साम्परायिकीक्रिया ऊपजे साम्परायिकी कहता कषायप्रत्य

॥ टीका ॥

इत्यादि ॥ इति दशमशते प्रथमः ॥ १ ॥ अनन्तरोद्देशकान्ते शरीराण्युक्तानि शरीरीच क्रियाकारी भवतीति क्रियाप्ररूपणाय द्वितीय उद्देशक स्तस्य चेदमादिसूत्र ॥ रायगिहेइत्यादि ॥ तत्र ॥ संवुडस्सत्ति ॥ संवृतस्य सामान्येन प्राणातिपाताद्यास्त्र वद्वारसंवरोपेतस्य ॥ वीइपथेठिच्चत्ति ॥ वीचिशब्दः संप्रयोगे सच संप्रयोगो द्वयो र्भवति तत क्षेह कषायाणां जीवस्यच सम्बन्धो वीचिशब्दवाच्य, स्ततश्च वीचिमत कषायवतो मतुप्रत्ययस्य षष्ठ्याश्चलोपस्य दर्शनात् अथवा विचि रपृथग्भावे इतिवचनात् विविच्य पृथग्भूय यथाख्यातसंयमात्क षायोदयमनपवार्य्येत्यर्थः, अथवा विचित्य रागविकल्पावित्यर्थः, अथवा विरूपाकृति क्रिया सरागत्वात् यस्मि न्नवस्थाने तद्विकृति यथाभवती

॥ मूल ॥

अप्पाबहुगंति, सेव भंते भंतेत्ति ॥ दसमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो १० ॥ १ ॥
रायगिहे जाव एवं वयासी—संवुडस्सणं भंते ! अणगारस्स वीइपंथे ठिच्चा पुरउ रूवाइं निज्झायमाणस्स

अनुवाद

गाहनासस्थान (प्रज्ञापनाया २१ पद) निरवशेष भणितव्य यावदल्पाबहुत्व मिति तदेवभदन्त २ ॥ इतिदशमशते प्रथमोद्देश ॥ १ ॥
राजगृहे याव देवमवादीत्—संवृतस्य भदन्त ! अनगारस्य वीचिपथि स्थित्वा पुरतो रूपाणि निर्ध्यायमानस्य मार्गत (पृष्ठत) रूपाण्यवकाङ्क्षतो

॥ भाषा ॥

ते सर्वसत्यछे अन्यथा नही । दसमसयस्सपढमो उद्देसोसमत्तो । ए दशमाशतकनो पहिलोउद्देशो अर्थथकी पूरोकह्यो १० ॥ १ ॥
हिवे बीजो उद्देशो संक्षेपथी लिखियेछे, पाछिला उद्देशाने अंते शरीर कह्या ते शरीरी क्रियाना करणहार हुवे तेमाटे क्रियाप्ररूपणानेकाजे बीजो उद्द शो कहेछे—तेहनो पहिलो सूत्र । रायगिहे जाव एववयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् इमकहे । संवुडस्सण भंते अणगारस्स वीइपथेठिच्चा । संवृत कहतां सामान्येकरी प्राणातिपातादि आश्रवद्वार संवरसहितने हेभगवन् । साधुने वीचिशब्देंकरी संयोगकहिये ते संयोग बेहुने हुवे तिवारे इहा वी चिशब्देंकरी जीवने कषायनो संयोग लेवो तिवारे कषायवन्तने एहवो अर्थथयो अथवा विविच पृथग्भावे ए वचन थकी विविच्य कहतां यथाख्यात स यमथकी पृथक थईने एतले कषायनो उदय वार्यो नथी इम ठिच्चा कहिये रहीने किहा पथसि, मार्गनेविषे एतले कषायने उदयें मार्गेरह्यो तेहने । पुर

॥ टीका ॥ त्येवास्थित्वा ॥ पंथेत्ति ॥ मार्गे ॥ अवयक्खमाणस्सत्ति ॥ अवकाङ्क्षतो ऽपेक्षमाणस्यवा; पथि ग्रहणस्य चोपलक्षणत्वा दन्यत्राप्याधारेस्थित्वेतिद्रष्टव्य ॥ जस्सणंकोहमाणमायालोभा ॥ इह एव जहे णोइरियावहियाकिरियाकज्जइत्ति ॥ न केवलयोगप्रत्यया कर्म्मबन्धक्रिया भवति सकषायत्वा त्तस्येति ॥

॥ मूल ॥ मग्गउ रूवाइं अवयक्खमाणस्स पासउ रूवाइं अवलोएमाणस्स उड्ढं रूवाइं उलोएमाणस्स अहे रूवाइं आ लोएमाणस्स तस्सणं भंते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! संवुडस्स अणगारस्स वीइपथे ठिच्चा जाव तस्सण णोइरियावहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ संवुड जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्सणं कोह

अनुवाद ऽपेक्षमाणस्यवा; पार्श्वतो रूपाण्यवलोकयत ऊर्द्ध्व रूपाणि विलोकयतो ऽधोरूपाण्यवलोकयत स्तस्य भदन्त ! किमैर्यापथिकी क्रिया क्रियते सा म्परायिकी क्रिया क्रियते ? गौतम ! संवृतस्यानगारस्य वीचिपथि स्थित्वा याव त्तस्य नो ऐर्यापथिकी क्रिया क्रियते साम्परायिकी क्रिया

॥ भाषा ॥ आरूवाइं निज्झायमाणस्स मग्गओरूवाइं अवयक्खमाणस्स । आगिला रूपाप्रतें ध्यावताथकाने पूठि पाछेरह्या रूपाने वाछाथकी देखता थकाने । पासओ रूवाइं अवक्खाएमाणस्स उड्ढरूवाइं उलोएमाणस्स अहेरूवाइं आलोएमाणस्स । वेहूपासेरह्या तेहप्रतें अवलोकन करताथकाने उचारह्या रूपप्रतें विलोक न करताथकाने नीचेरह्या रूपाप्रतें आलोकन करताथकाने । तस्सणं भंते कि इरियावहियाकिरियाकज्जइ । तेहनेहेभगवन् ! स्यू ऐर्यापथिकी क्रिया ऊ पजे अथवा । संपराइया किरियाकज्जइ । साम्परायिकी क्रिया ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा संवुडस्स अणगारस्स वीइ पथे ठिच्चा । हेगौतम ! संह त साधुने कषायउदय मार्गनेविषे रह्याने । जाव तस्सण णो इरियावहियाकिरियाकज्जइ संपराइयाकिरियाकज्जइ । यावत् तेहने नही मार्गनेविषे ऐ र्यापथिकीक्रिया ऊपजे तेहने साम्परायिकीक्रिया ऊपजे । सेकेणट्ठेणभंते एव वुच्चइ । संवुड जाव संपराइया किरिया कज्जइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इ म कहिये संवृतअणगारने कषायमार्गनेविषे रह्याने ऐर्यापथिकीक्रिया न ऊपजे अने तेहने साम्परायिकीक्रिया ऊपजे साम्परायिकी कहता कषायप्रत्य

॥ टीका ॥

इत्यादि ॥ इति दशमशते प्रथम ॥ १ ॥ अनन्तरोद्देशकान्ते शरीराण्युक्तानि शरीरीच क्रियाकारी भवतीति क्रियाप्ररूपणाय द्वितीय उद्देशक स्तस्य चेदमादिसूत्र ॥ रायगिहेइत्यादि ॥ तत्र ॥ सवुडस्सत्ति ॥ सवृतस्य सामान्येन प्राणातिपाताद्यास्त्र वद्वारसवरोपेतस्य ॥ वीइपथेठिश्वत्ति ॥ वीचिशद्ब सम्प्रयोगे सच सम्प्रयोगो द्वयो र्भवति तत श्चेह कषायाणा जीवस्यच सम्बन्धो वीचिशद्बवाच्य, स्तत्र वीचिमत कषायवतो मतुप्रत्ययस्य षष्ठ्याश्चलोपस्य दर्शनात् अथवा विचि रपृथग्भावे इतिवचनात् विविच्य पृथग्भूय यथाख्यातसयमात्का षायोदयमनपवार्य्येत्यर्थ , अथवा विचित्य रागविकल्पावित्यर्थ , अथवा विरूपाकृति क्रिया सरागत्वात् यस्मि न्नवस्थाने तद्विकृति यथाभवती

॥ मूल ॥

अप्पाबहुगंति, सेव भंते भंतेत्ति ॥ दसमसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो १० ॥ १ ॥
रायगिहे जाव एवं वयासी—संवुडस्सणं भंते ! अणगारस्स वीइपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स

॥ अनुवाद ॥

गाहनासस्थान (प्रज्ञापनाया २१ पद) निरवशेष भणितव्य यावदल्पाबहुत्व मिति तदेवभदन्त २ ॥ इतिदशमशते प्रथमोद्देश ॥ १ ॥
राजगृहे याव देवमवादीत्—सवृतस्य भदन्त । अनगारस्य वीचिपथि स्थित्वा पुरतो रूपाणि निध्यायमानस्य मार्गत (पृष्ठत) रूपाण्यवकाङ्क्षतो

॥ भाषा ॥

ते सर्वसत्यछे अन्यथा नथी । दसमसयस्सपढमो उद्देसोसम्मत्तो । ए दशमाशतकनो पहिलोउद्देशो अर्थथकी पूरोकह्यो १० ॥ १ ॥ हिवे वीजो उद्देशो सक्षेपथी लिखियेछे, पाछिला उद्देशाने अते शरीर कह्या ते शरीरी क्रियाना करणहार हुवे तेमाटे क्रियाप्ररूपणानेकाजे वीजो उद्दे शो कहेछे—तेहनो पहिलो सूत्र । रायगिहे जाव एववयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् इमकहे । सवुडस्सण भते अणगारस्स वीइपथेठिच्चा । सवृत कहता सामान्येकरी प्राणातिपातादि आश्रवद्वार सवरसहितने हेभगवन् । साधुने वीचिशब्देकरी सयोगकहिये ते सयोग बेहूने हुवे तिवारे इहा वी चिशब्देकरी जीवने कषायनो सयोग लेवो तिवारे कषायवन्तने एहवो अर्थथयो अथवा विविच पृथग्भावे ए वचन थकी विविच्य कहता यथाख्यात स यमथकी पृथक थईने एतले कषायनो उदय वारो नथी इम ठिच्चा कहिये रहीने क्रिया पयत्ति, मार्गनेविषे एतले कषायने उदयें मार्गेरह्या तेहने । पुर

ते, त–एगिंदियउरालियसरीर जाव पंचिंदियउरालियसरीरे इत्यादि ॥ पुस्तकान्तरेत्वस्य सङ्ग्रहगाथो पलभ्यते साचेयं–कइसठाणपमाणं पोग्गल चिणणासरीरसजोगो । दव्वपएसप्पवहु सरीरउगाहणाएय ॥ १ ॥ तत्रच ॥ कतीति ॥ कति शरीराणीति वाच्य तानि पुन रौदारिकादीनि पञ्च त था ॥ सठाणत्ति ॥ औदारिकादीना सस्थान वाच्य यथा नानासस्थानमौदारिक तथा ॥ पमाणत्ति ॥ एषामेव प्रमाण वाच्य यथौदारिक जघन्य तो ऽङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्र मुत्कृष्टतस्तु सातिरेकयोजनसहस्रमान' तथैषामेव पुद्गलचयो वाच्यो यथौदारिकस्य निर्व्याघातेन षट्सु दिक्षु व्याघात प्रतीत्य स्यात्त्रिदिशीत्यादि, तथैषामेव सयोगो वाच्यो यथा यस्यौदारिकशरीर तस्य वैक्रिय स्यादस्तीत्यादि, तथैषामेव द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाल्प बहुत्व वाच्य, यथा " सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए इत्यादि „ तथैषामेवावगाहनाया अल्पबहुत्व वाच्य यथा " सव्वत्थोवा उरालियसरी

विहे प० त०, एगिंदियओरालियसरीरे जाव पंचिंदियओरालियसरीरे, इहा पुस्तकान्तरे एहनी सग्रहगाथा लाभियेछे ते कहेछे–कइसठाणपमाण पोग्गलचिणणासरीरसजोगो । दव्वपएसप्पवहु सरीरओगाहणाएय ॥ १ ॥ तिहा कतीति, केतलाशरीर इसो कहवो ते वली औदारिकादिक पच तथा स ठाणति, औदारिकादिक नाम स्थान कहता आकार तेह कहवा तेजिम अनेकप्रकारने सस्थानने औदारिक तथा पमाणति, तेहनोज प्रमाण कह वो जिम औदारिक शरीर जघन्यथकी अगुलने असख्येय भागमात्र उत्कृष्टथकी साधिक योजनसहस्र मान तथा एहोनोज पुद्गलचय कहवो यथा औ दारिकनो निर्व्याघातो छए दिशिनेविषे व्याघात प्रतें आश्रयीने किवारेके तीनदिशिनेविषे इत्यादिक तथा एहोनो सयोग कहवो यथा जेहने औदारिक शरीर हुवे तेहने वैक्रिय हुवे इत्यादि तथा एहोनोज द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपणें करी अल्पबहुत्व कहवो यथा थोवाआहारगसरीराटव्वट्ठयाए इत्यादि, तथा ते होनोज अवगाहनानो अल्प बहुत्व कहवो यथा सव्वत्थोवाओरालियसरीरस्स जहण्णिआओगाहणा इत्यादि । सेवभते २ त्ति । तदस्ति हेस्वानि । तुम्हेकह्यु

॥ टीका ॥

देशाः प्रदेशाश्च विवक्षया तत्रापि युक्ता एवेति' अथ तमायां विशेषमाह ॥ नवरं मित्यादि ॥ अद्धा समयो न भण्णइति ॥ समयव्यवहारोहि सञ्चरिष्णुसूर्यादिप्रकाशकृत' सच तमायां नास्तीति तत्राद्धासमयो न भण्यतइति, अथविमलायामपि नास्त्यसाविति, कथं तत्र समयव्यवहार ? इत्युच्यते—मन्दरावयवभूतस्फटिककाण्डे सूर्यादिप्रभासकान्तिद्वारेण तत्र सञ्चरिष्णुसूर्यादिप्रकाशाभावादिति, अनन्तरं जीवादिरूपा दिशः प्ररूपिता जीवाश्च शरीरिणोपि भवन्तीति शरीरप्ररूपणायाह ॥ कइणं भंते । इत्यादि ॥ उगाहणसंठाणंति ॥ प्रज्ञापनायामेकविंशतितम पद तच्चैव-पचविहेपन्न

॥ मूल ॥

त्तविहा अद्धा समए न भस्सइ । कइणं भंते! सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पन्नत्ता, तंजहा उरालिए जाव कम्मए। उरालियसरीरेणं भंते! कइविहे पन्नत्ते ? एवं उगाहणसंठाणं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव

अनुवाद

प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! पञ्च शरीराणि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-औदारिकं यावत्कार्मणम् । औदारिकशरीरं भदन्त । कतिविधं प्रज्ञप्तं ? एवमव

॥ भाषा ॥

दश विदशानेविषे तिहां पणि युक्तछेजके ॥ हिवे तमानेविषे विशेष कहेछे—नवरं अद्धवो कृत्विहां अद्धासमओ नभणइ। नवरमित्यादि, एतलांविशेष अरूपीना छभेद कहवा अद्धासमय न कहवो समयव्यवहार सञ्चरणशील सूर्यादि प्रकाशकृतछे ते तमादिशिनेविषे नथी तेमाटे तिहां अद्धासमय न कहिये, हिवे कांइ एक पूछस्ये विमलादिशिनेविषे पणि सूर्यादि प्रकाश नथी तो विमलादिशें समयव्यवहार किम कह्यो तेहने इम कहिये मेरुपर्वत अवयवभूत स्फटिककाण्डनेविषे सूर्यादिकना किरणनो संक्रमछे तेमाटे सूर्यादिप्रकाशना अभावथकी तिहां समय व्यवहारछे अनन्तरे जीवादिरूप दिशिप्ररूपी ते जीवशरीरो पणि हुवे तेमाटे शरीरप्ररूपणानेअर्थे कहेछे—कइणं भंते सरीरा पन्नत्ता । केतला हेभगवन् ! शरीर कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचसरीरा प० तं० । हेगौतम । पञ्च शरीर कह्या ते कहेछे—ओरालिय जाव कम्मए। औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ । ओरालियसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते । औदारिकशरीर ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गो० एवं ओगाहणसंठाणं णिरवसेसं भाणियव्वं जाव अप्पा बहुगंति । हेगौतम । अवगाहना संस्थानपद निरवशेष समस्त कहवो ते पन्नवणानेविषे इकवीसमो पद तिहां इम सूत्रछे पंच

जीवा जहा अग्गेयीएत्ति ॥ विमलायामपि जीवाना मनवगाहात् ॥ अजीवा जहा इंदाएत्ति ॥ समानवक्तव्यत्वात् ॥ एवं तमाविति ॥ विमलाव तमा पिवाच्येत्यर्थ , अथ विमलाया मनिन्द्रियसम्भवा तद्देशादयो युक्ता स्तमाया तु तस्या सम्भवा त्कथ तइति ? उच्यते दण्डाद्यवस्य तमाश्रित्य तस्य देशो

अद्धासमए विदिसासु नत्थि, जीवा देसे भंगो होइ सव्वत्थ । जमाणं भंते ! दिसा किं जीवा ? जहा इंदा तहेव णिरवसेस, णेरइया जहा अग्गेयी, वारुणी जहा इंदा, वायव्वा जहा अग्गेयी, सोमा जहा इंदा, ईसाणी जहा अग्गेयी, विमलाए जीवा जहा अग्गेयी, अजीवा जहा इंदा, एव तमाएवि, णवर अरूवी

दि कि जीवा ? यथैन्द्रा तथैव निरवशेषम्, नैर्ऋती यथाग्नेयी' वारुणी यथैन्द्रा, व्यायव्या यथाग्नेयी, सौम्या यथैन्द्रा' ऐशानी यथाग्नेयी, विमलाया जीवा यथाग्नेयी, अजीवा यथैन्द्रा, एव तमायामपि, नवर मरूपिण षड्विधा., अद्धासमयो नभणयते । कति भदन्त शरीराणि

जमा कहिये दक्षिणदिशि हेभगवन् । तेहमविषे स्यु जीव इत्यादि प्रश्न पूछवा उत्तर । जहा इदा तहेव णिरवसेस णेरइया जहा अग्गेयी । जिम ऐन्द्री दिशि कही तिमज निरवशेष समस्त कहवी ३ नैर्ऋतिकूणि कही जिम आग्नकूणि कही तिम निरवशेषपणे कहवी ४ । वारुणी जहा इदा वायव्वा जहा अगेयी । पश्चिमदिशि पूर्वदिशिनोपरे कहवी ५ वायव्यकूणि जिम अग्निकूणि कही तिम कहवी । सोमा जहा इदा ईसाणी जहा अग्गेयी । उत्तरदिशि जिम पूर्वदिशि कही तिम ईशाना जिम अग्नि कही तिम कहवो । विमलाए जावा जहा अग्गेयी अजीवा जहा इदा एव तमाएवि । विमलाए कहता ऊर्द्धदिशि तेहनेविषे जीवनाभेद अग्निकूणिनोपरे कहवा, एतले विमलादिशिनेविषे पणि जीवनो अवगाहना नथी तेमाटे जीवनादेश प्रदेश कहवा तथा । अजीवा जहा इन्द्रा । अजीव पूर्वदिशिनोपरे कहवा एतले पूर्वदिशि समान कहवा एव तमाएवि, इम तमा कहिये अधोदिशिनेविषे पणि कहवो जाव अग्निकूणिनोपरे अजीव पूर्वदिशिनोपरे कहवा इहा कोई एक पूछ्ये विमलादिशिनेविषे तो अनिन्द्रियना सम्भवथकी तेहना देशादिक गुण छै पणि तमानेविषे तेहना असम्भवथकी किम दशादिक कहवाय इहा उत्तर दण्डादि अ स्यात्तर प्रते आश्रयीने तेहना एकदेश तथा घणाप्र

एगिंदियप्पएसाय वेइंदियाणय पएसा, एवं आदिल्लविरहिज जाव अणिंदियाणं, जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—रूवीअजीवाय अरूवीअजीवाय, जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—खंधा खधदेसा खधप्पएसा परमाणुपोग्गला। जे अरूवी अजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तजहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पएसा, एवं अधम्मत्थिकायस्सवि, जाव आगासत्थिकायस्स पएसा

एवमादिमविरहितोयाव दनिन्द्रियाणा (द्विकभङ्गो यप्रदेशाश्च द्वीन्द्रियस्यप्र देशा' २। अथवा एकेन्द्रियप्रदेशाश्च द्विन्द्रियाणाञ्च प्रदेशा ३। ये रूप्यजीवा स्ते चतुर्विधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-स्कन्धा' स्कन्ध वाच्यइतिशेष.) ये ऽजीवा स्ते द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-रूप्यजीवाश्चारूप्यजीवाश्च, देशा. स्कन्धप्रदेशा परमाणुपुद्गला। ये ऽरूप्यजीवा स्ते सप्तविधा. प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-नोधर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देशो धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा' । एवमधर्मास्तिकायस्यापि यावदाकाशास्तिकायस्य प्रदेशा, श्रद्धासमयो विदिक्षु नास्ति' जीवादेशे भङ्गो भवति सर्वत्र। यमा ज०।

आदिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाण। इम पहिलोभागो वर्ज्जीने यावत् अनिन्द्रियलगे द्विकसंयोगे प्रत्येके दोयदोय भागा कहवा। जे अजीवा ते दुविहा प० त०। जे अजीव ते वेहु भेदे कह्या ते कहेछे—रूवीअजीवाय अरूवीअजीवाय। रूपीअजीव चपुन अरूपीअजीव। जे रूवी अजीवा ते चउव्विहा प० त०। जे रूपीअजीव ते चारे भेदे कह्या ते कहेछे—खधा खधदेसा खधप्पएसा परमाणुपोग्गला। खन्ध खन्धदेश खन्धप्रदेश परमाणुपुद्गल ४। जे अरूवीअजीवा ते सत्तविहा प० त०। जे अरूपी अजीव ते साते भेदे कह्या ते कहेछे—णोधम्मत्थिकाए। नही धर्मास्तिकाय। धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा एव अधम्मत्थिकायस्सवि। धर्मास्तिकायनो देश धर्मास्तिकायना प्रदेश घणा इम नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे २ अधम्मत्थिकायस्सपदेशा ४ इम अकाशास्तिकाय पणि कहवो। जाव आगासत्थिकायस्सपएसा। यावत् आकाशास्तिकायना प्रदेश ६ विशेष कहेछे—अद्धासमए विदिसासु नत्थि। अद्धासमय ते काल ते विदिशनेविषे नथी। जीवादेसे भंगो होइ सव्वत्थ। जीवना देश भङ्ग हुवे सगलेई। जमाणभते दिसाकिजीवा।

सपरिवृत्तेति „ एवं जहा जीवाभिगमे इत्यादि अनेनच यत्सूचित तदिद्-तत्थणं एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवसाहस्सीए परिवारो पण्णत्तो, प

अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं—रोहिणी मदणा चित्ता सोमा । तत्थणं एगमेगं जहा चमरलो गपालाणं, णवरं सयंप्पभे विमाणे सभाए सुहम्माए सोमंसि सीहासणंसि सेसं तचेव एवं जाव वेसमण स्स, णवरं विमाणाइं जहा तइयसए । ईसाणस्सणं भंते ! पुच्छा, अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं०—कण्हा कण्हराती रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा । तत्थणं एगमेगाए सेसं जहा

आर्या । चतस्रोऽग्रमहिष्य प्रज्ञप्तास्तद्यथा-रोहिणी, मदना, चित्रा, सोमा ४ । तत्रैकैका शेष यथा चमरलोकपालानां, नवरं स्वयंप्रभे विमाने सभायां सुधर्मायां सोमे सिंहासने शेष तथैव, एवं यावद्वैश्रमणस्य, नवरं विमानानि यथा तृतीयशते । ईशानस्य भदन्त ! पृच्छा, आर्या । अष्टावग्रमहिष्य प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कृष्णा, कृष्णराजी, रामा, रामरक्षिता, वसू, वसुगुप्ता, वसुमित्रा, वसुन्धरा ८ । तत्रैकैकाया शे

देवेंद्रने देवराजाने । सोमस्समहाराजा कइअग्गमहिसीओ पुच्छा । सोमनाम महाराजा लोकपालने केतली अग्रमहिषी कही इतिप्रश्न उत्तर । अज्जा चत्तारिअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे—रोहिणी मदणा चित्ता सोमा ४ । रोहिणी मदना चित्रा सोमा ४ । तत्थणं एगमेग सेसं जहा चमरलोगपालाणं । तिहां एकेको इत्यादि शेष चमरलोकपालनी परे कहवा । णवरं सयप्पभे विमाणे सभाए सुहम्माए । एतलो विशेष स्वयप्रभनामा विमान सभासुधर्माने विषे । सोमंसि सीहासणंसि सेसंतचेव । सोमनामा सिंहासननेविषे शेष तिमहीज कहवो । एवंजाव वेसम णस्स णवरंविमाणाइं । इम यावत् वैश्रमण लोकपाल लगे कहवो एतलोविशेष विमान । जहा तइयसए । जिम त्रीजा शतकनेविषे कह्या तिम जाण वा । ईसाणस्सणंभंते पुच्छा । ईशानने हेभगवन् । इत्यादि प्रश्न उत्तर । अज्जो अठ्ठअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० । आर्यो आठ अग्रमहिषी कही ते कहेछे । कण्हा कण्हराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा ८ । कृष्णा कृष्णराती रामा रामरक्षिता वसू वसुगुप्ता वसुमित्रा वसुंधरा ८ । त

॥ टीका ॥

प्यू तत्तु ॥ सेत्तु दूणं ताउ एगमेगा देवी अन्नाइ चत्तारि २ देविसहस्साइ परिवारं विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेणं सोलसदेविसाहस्सीउ पण्णत्ताउ ॥ सेत्तु ब्रिहिं लोहितादिग्रहनेवराधुणिकप्राधुणिककणकक क्रियमित्यादीति ॥ एव अट्ठासीतीएवि महागहाण जाणियव्वत्ति ॥ तत्र द्वयोर्वक्तव्यतोक्तैव शेषाणां तु क्रमेण—वरसिते सयजले वग्गुत्ति, विमाणा शक्राणादीना सावाव्येति ॥ विमाणाइं जहा तइयसएत्ति ॥ तत्र सोमस्योक्तमेव यमवरुणवैश्रमणानातु

॥ मूल ॥

सक्कस्स । ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीउ पुच्छा, अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताउ तं०—पुढवी राइ रयणी विज्जू, तत्थणं सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं। एव जाव वरुणस्स णवरं विमाणा जहा चउत्थसए सेसं तंचेव जाव णोचेवणं मेहुणवत्तिय। सेवंभंते २ त्ति!

अनुवाद

प यथा शक्रस्य । ईशानस्य भदन्त । देवेन्द्रस्य देवराज्ञ सोमस्य महाराज्ञ कत्यग्रमहिष्य. प्रज्ञप्ता पृच्छा, आर्या । चतस्रोग्रमहिष्य. प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—पृथ्वी, रात्रि , रजनी, विद्युत् ४ । तत्र शेष यथा शक्रस्य लोकपालाना' एव यावद्वरुणस्य नवर विमानानि यथा चतुर्थशते शेष

॥ भाषा ॥

देवेन्द्रने द त्यण एगमेगाए सेसजहा सक्कस्स ईसाणस्सणभंते देविंदस्स देवरण्णो। तिहा एकेको इत्यादि, शेष सर्व शक्रनीपरे कहवो ईशानने हेभगवन् । वराजाने । सोमस्समहारण्णो । सोमसहाराजाने। कइ अग्गमहिसीओ पुच्छा। केतली अग्रमहिषी इतिप्रश्न उत्तर। अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं०। आर्यो चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे— पुढवी राई रयणी विज्जू ४ । पृथिवी रानी रजनी विद्युत् ४ । तत्थण सेसं जहा सक्कस्सलोग पालाण। तिहा इत्यादि, शेष सर्व शक्रलोकपालनी परे कहवो। एव जाव वरुणस्स णवर विमाणा जहा चउत्थसए सेसतचेव ।। इम यावत् वरुण लो कपालनी परे कहवो एतलोविशेष एहोना विमान जिम चोथा शतकनेविषे कह्या तिम कहवा शेष तिमहीज सर्वकहवो। जाव णो चेवण मेहुणवत्ति य । यावत् नही निश्चे मैथुनप्रत्ययिक भोग भोगविवाने समर्थ। सेवभतेभतेत्ति जाव विहरइ। तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानही इम

॥ टीका ॥

जरा चउत्थसए त्ति ॥ क्रमेणाच तानीशानलोकपालाना मिमानि सुमणेसव्वुत्तमहूवग्गू ॥ इति दशमशते पञ्चम ॥ ५ ॥ पञ्चमो द्देशके देववक्तव्यतोक्ता षष्ठेतु देवाश्रयविशेष प्रतिपादयन्नाह–कहिणमित्यादि ॥ एव जहा रायप्पसेणइज्जे इत्यादि करणा देव दृइय–पुढवीए बहु समरमणिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढ चदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाण बहूइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइ एव सहस्साइ एव सयसहस्साइ

॥ मूल ॥

जाव विहरइ ॥ दसमसयस्सय पंचमओ ॥ १० ॥ ५ ॥ कहिस्स भंते ! सक्कस्स देविंद स्स देवरस्सो सभा सुहम्मा प० ? गो० ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एव जहा रायप्पसेइणिज्जे जाव पञ्चवडिंसगा पन्नत्ता त०—असोयवडिसए जाव मज्झे सोहम्मवडिं

॥ अनुवाद ॥

तथैव यावन्नोचैव मैथुनप्रत्ययम् । तदेव भदन्त । भदन्त । इति यावद्विहरति ॥ दशमशते पञ्चमोद्देश ॥ १० ॥ ५ ॥ क्व भदन्त । शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराज सभा सुधर्मा प्रज्ञप्ता ? गौतम। जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या एव यथा राजप्रश्नीये यावत्पञ्चावतसका. प्रज्ञप्तास्तद्यथा–अशोकावतसको यावन्मध्ये सौधर्मावतसक , सच सौधर्मावतसको विमानोऽर्द्धं

॥ भाषा ॥

कही यावत् विचरे। दसमसयस्सय पचमओ उद्देसओसम्मत्तो। ए दशमा शतकनो पचमो उद्देशो अर्थथकी कह्यो १० ॥ ५ ॥ पाचमें उद्देशे देववक्तव्यता कही छट्ठे देवआश्रय विशेष प्रतें कहेछे—कहिण भते सक्कस्स देविदस्स देवरणो सभासुहम्मा पणत्ता। किहा हेभगवन्। शक्रनो देवेंद्रनो देवताराजानी सभासुधर्मा इसेनामे कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जबूदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण। हेगोतम। जबूद्वीपनामा द्वीपे मेरु नामा पर्वतने दक्षिण दिशि। इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए। एह रत्नप्रभानाम पृथिवी इत्यादि। एव जहा रायप्पसेइणिज्जे जाव पच वडिसगा पणत्ता तजहा। इम जिम राजप्रश्नउपाङ्गनेविषै कह्यु तिम इहा पणि कहवो तिहा पच अवतसक कह्या ते कहेछे—असोयवडिसए। अशोक अवतसक। जाव मज्झे सोहम्मवडिसए। इम यावत् मध्ये विचाले सौधर्म अवतसक विमान कह्यो। सेत सोहम्मवडिसए महाविमाणे। तेह सौधर्म अवतसकनामे म

॥ टीका ॥

बहूइं जोयणकोडीओ बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थणं सोहम्मेनाम कप्पे पण्णत्ते इत्यादि „ असोगवडिंसए इह यावत्करणा दिदं दृश्यं—सत्तिवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसएत्ति „ विवक्षिताभिधेयसूचिकाचेयमतिदेशगाथा—एवजहसूरियाभे तहेवमाणतहेवउववाओ। सक्कस्सयअभिसेओ तहेवजहसूरियाभस्सत्ति ॥ १ ॥ एवमनेन क्रमेण यथा सूरिकाभे विमाने राजप्रश्नकृताख्यग्रन्थोक्तं प्रमाणमुक्तं तथैवास्मिन् वा च्य तथा यथा सूरिकाभाभिधानदेवस्य देवत्वेन तत्रोपपात उक्त स्तथैवोपपातः शक्रस्येहवाच्यो ऽभिषेकश्चेति, तत्र प्रमाणमायामविष्कम्भसम्बन्धि दर्शितं शेषं पुनरिदं—अयालीसंच सयसहस्साइं यावत् सहस्साइं अट्ठयअडयाले जोयणसए परिक्खेवेणंति ॥ १ ॥ उपपातश्चैवं—तेणंकालेणं तेणंस मएणं सक्के देविंदे २ अहुणोववन्नमेत्तेचेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ तंजहा—आहारपज्जत्तीए इत्यादि „ अभिषेकः पुनरे व—तएणं सक्के देविंदे २ जेणेव अभिसयसभा तेणेव उवागच्छइ २ अभिसेय सभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ जेणेव

॥ मूल ॥

सए महाविमाणे अद्धतेरसजोअणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एवं जहा सूरियाभे तहेव उववाओ। स

अनुवाद

ादशयोजनशतसहस्राणि (सार्द्धद्वादशयोजनलक्षाणीत्यर्थः) आयामविष्कम्भेन, एवं यथा सूरिकाभे तथैवोपपातः । शक्रस्याभिषेक स्तथैव

॥ भाषा ॥

द्वविमान । अद्धतेरस जोअणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं । साडाबार शतसहस्र एटले लक्ष एटला योजन आयामे तथा विष्कम्भे कह्यो, कह्या अर्थनी कहणहारी ए अतिदेश गाथा कहेछे । एवं जहा सूरियाभे तहेव उववाओ । एवजहेत्यादि, इम अनुक्रमे करी जिम सूर्याभविमाननो राजप्रश्न ग्रन्थने विषे प्रमाण कह्यु तिमहीज एहनेविषे कहवो, तथा जिम सूर्याभनाम देवनो देवपणे उपपात कह्यो तिमहीज उपपात शक्रनो इहां कहवो । सक्कस्सय अभिसेओ तहेव जहा सूरियाभस्स अलंकारअच्चणिया तहेव । वली शक्रनो अभिषेक पणि तिमज सूरियाभनी परे कहवो, तिहां प्रमाण आयामवि ष्कम्भ संबंधी देखाड्यो हीज अने शेष देखाडेछे, बायालीससयसहस्साइं बावणसहस्साइं अट्ठयअडयाले जोअणसए परिक्खेवेणंति, उपपात इम तेणं कालेणं तेणंसमएणं सक्के देविंदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तचेव समाणे, पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावगए इत्यादि, अभिषेक वली इम ,तएणं सेसक्के

सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसण्णे तएणं सक्कं ३ सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एव वयासी-खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया। सक्कस्स ३ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह इत्यादि „ अलकारअच्चणियायतहेवत्ति ॥ यथासूरिकाभस्य तथैवालङ्कारोऽर्चनिका चेन्द्रस्य वाच्या, तत्रालङ्कार -तएणं से सक्के ३ तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाइयाए गा याइं लूहेइ २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ २ नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचि यतकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति २ हारपिणद्धेइत्यादीति „ अर्चनिकालेशस्त्वेव-तएणं से सक्के ३ सिद्धाययणं पुर त्थिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसइ २ जणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ लोमहत्थगं गेण्ह इ जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जइ जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइत्ति जाव आयरक्खत्ति „ अर्चनिकायाः परो ग्रन्थ स्तावद्वाच्यो

क्कस्स अभिसेओ तहेव जहा सूरियाभस्स, अलंकारअच्चणियातहेव। जावआयरक्खदेवत्ति, दोसागरो

यथा सूरिकाभस्य, अलङ्कारार्चनिका तथैव यावदात्मरक्षकदेवा इति, द्वे सागरोपमे स्थितिः। शक्रो भदन्त। देवेन्द्रो देवराजा। कीदृग्महर्द्धि

देविंदे देवराया जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, अभिसेयसभं अणुप्पदाहिणी करेमाणे २ पुरच्छिमेणंदारेणं अणुपविसइ २ त्ता, जेणेवसी हासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरच्छाभिमुहेणिसण्णे, तएणं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अभिओगिदेवे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयंउवट्ठवेह इत्यादि, अलकार अर्चणियातहेवत्ति जिम सूरियाभने तिमहीज अलकार अर्चनिका इन्द्रने पणि कहवा तिहां अलंकार कहेछे—तएणंसक्के देविंदे देवराया तप्पढमया ए पम्हलसूमालाए सुरभीएगंधकासाइयाए, गायाइं लूहेइ २ त्ता सरसेणंगोसीसचंदणेणगायाइं अणुलिंपेइ २ त्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरवण्णफरि सजुत्तं हयलालापेलवातिरेकधवलकणगखचियतकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वंदेवदूसजुयलंनियंसेइ हारपिणद्धेत्यादि, हिवे अर्चनिका संक्षेपथकी

॥ टीका ॥

यावदात्मरक्षा सुचैव लेशत -तएणं से सक्के ३ सभं सुहम्मं अणुप्पविसइ २ सीहासणे पुरत्याभिमुहे निसीयइ' तएणं सक्कस्स ३ अवरुत्तरेणं उत्तरेणं
उत्तरपुरच्छिमेणं चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ निसीयति, पुरच्छिमेणं अट्ठअग्गमहिसीओ, दाहिणपुरच्छिमेणं अब्भितरियाए परिसाए बारसदेवसा
हस्सीओ निसीयति, दाहिणेणं मज्झिमियाए परिसाए चोद्दसदेवसाहस्सीओ, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए सोलसदेवसाहस्सीओ, पच्च
त्थिमेणं सत्तअणियाहिवइणो, तएणं तस्स सक्कस्स ३ चउद्दिसिं चत्तारि आयरक्खदेवचउरासीसाहस्सीओ निसीयतीत्यादीति „ केमहिड्ढीए ॥ इह
यावत्करणादिदं दृश्य- यावत्करणादिदं दृश्य-के महज्जुइए के महाणुभागे के महाजसे के महाबलेत्ति „ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं मिह

॥ मूल ॥

वमाइंठिइ । सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए जाव केमहेसक्खे ? गो० ! महिड्ढीए जाव महेस

अनुवाद

को यावत्कीदृग्महाशख ? गौतम ! महर्द्धिको यावन्महासख । स च तत्र द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणां यावद्विहरति' महर्द्धिको यावन्म

॥ भाषा ॥

माहे छे—तएणंसक्के देविंदे देवराया सिद्धायतणं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेवदेवच्छंदए जेणेवजिणपडिमा तेणेवउवागच्छइ २ त्ता ।
जिणपडिमाणं आलोए पणामंकरेइ २ त्ता । तगेण्हइ २ त्ता जिणपडिमाओ मरभिणागधोदएण पक्खालेत्ति इत्यादि । जाव आयरक्खदेवत्ति दो सागरोवमा
इ ठिइ । अर्चनिकाने आगलि ग्रन्थ इहा तेतलालगे कहवो जेतले आत्मरक्षक देव ते सघेपथकी कहेछे—तएणंसक्के देविंदे देवराया सभसुहम्मं अणुप्पवि
सइ सीहासणेपुरच्छाभिमुहेनिसीयइ तएणं सक्कस्स देविंदस्स देवरणो अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं चउरासी सामाणियसाहस्सीओनिसीयइ,
पुरच्छिमेणअग्गमहिसीओ दाहिणपुरच्छिमेणं अब्भितरियाए परिसाए बारसदेवसाहस्सीओनिसीयति दाहिणेणमज्झिमाएपरिसाए चउद्दसदेवसाहस्सी
ओ दाहिणपच्चच्छिमेणं बाहिरियाए परिसाए सोलसदेवसाहस्सीओ पच्चच्छिमेणं सत्तअणियाहिवई तएणं तस्ससक्कस्स ३ चउद्दिसिचत्तारिआयरक्ख
देव चउरासीइ साहस्सीओ निसीयंतीत्यादि, ते शक्रनी दोय सागरोपमनी स्थितिछे स्थिति कहता आउखो वलीगौतम पूछेछे—सक्केणंभंते देविंदे देव
राया के महिड्ढिए जाव के महेसक्खे । शक्र ए वाक्यालंकारे, हे भगवन् ! देवेंद्र देवराजा केहवो महर्द्धिकछे इहां यावत् शब्दथकी एतलो कहेवो, के

॥ टीका ॥

चउरासीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसाण (ग्रं० सं० ११०००) अट्ठण्हं अग्गमहिसीण जाव अन्नेसिंच बहूण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव कारेमाणे पालेमाणेत्ति ॥ दशमशते षष्ठ ॥ ६ ॥ षष्ठोद्देशके सुधर्म्मसभोक्ता सभाश्रय इत्याश्रयाधिकारादा श्रयविशेषानन्तरद्वीपाभिधान् मेरोरुत्तरदिग्वर्त्तिशिखरिपर्वतदंष्ट्रागतान् लवणसमुद्रान्तर्वर्त्तिनो ऽष्टाविंशति मभिधित्सु रष्टाविंशति मुद्देशकानाह-कहिणंभंते।

॥ मूल ॥

रक्के, सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरइ, महिड्ढीए जाव महेसक्खे सक्के देविंदे देवराया सेवं भंते २ त्ति ॥ दसमसयस्स छठ्ठो ॥ १० ॥ ६ ॥ ॥
कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नाम दीवे पन्नत्ते ? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव

अनुवाद

शासक· शक्रो देवेन्द्रो देवराजा तदेव भदन्त। भदन्त। इति दशमशते षष्ठ ॥ १० ॥ ६ ॥ कुत्र भदन्त। औदीच्यानामेकोरुकमनुष्याणामेकोरुकद्वीपो नाम द्वीप· प्रज्ञप्त· ? एवं यथा जीवाभिगमे तथैव निरवशेष (भणितव्यम्) यावच्छुद्धदन्तद्वीप इति। एते ऽष्टा

॥ भाषा ॥

महज्जुईए केमहाणुभागे केमहायसे केमहाबलेत्ति केमहासक्खे, केहवो मह्वा द्युतिवन्तछे केहवो महानुभागछे केहवो महा यशवन्तछे केहवो महा बलवन्तछे केहवो महा ईश्वरछे ए प्रतिप्रश्न उत्तर। गोयमा महिड्ढीए जाव महेसक्खे। हे गौतम। शक्र महाऋद्धिनो धणीछे यावत् महा ईश्वरछे। सेणं तत्थ बत्तीसाएविमाणावाससयसहस्साण जाव विहरइ। तेह तिहां बत्तीसलाखविमाननो यावत् शब्दथकी एहवो कहवो ,चउरासीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण अठण्ह अग्गमहिसीण जाव अन्नेसिंचबहूण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव कारेमाणे पालेमाणे विहरइ,। महिड्ढिएजाव महेसक्खे सक्के देविंदे देवराया। एहवो महर्द्धिक यावत् महा ईश्वर शक्र देवेन्द्र देवराजा। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हेंकह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही। दसमसयस्सय छट्ठओ उद्देसओसम्मत्तो। ए दशमा शतकनो छठ्ठो उद्देशो पूरोथयो १० ॥ ६ ॥ छठे उद्देशे सुधर्मसभाकही तेह आश्रय तेमाटे आश्रयोना अधिकारथकी आश्रयविशेष अन्तरद्वीप अभिधाने मेरुथकी उत्तरदिशिवर्त्ती शिखरीपर्वत दंष्ट्रागत प्रते लवणस

॥ टीका ॥

उत्तरिल्लाणमित्यादि ॥ जहा जीवाभिगमे ॥ इत्ययमतिदेशः, पूर्वोक्तदाक्षिणात्यान्तरद्वीपवक्तव्यतानुसारेणावगन्तव्य ॥ दशमशते चतुस्त्रिंशत्तम ॥ ७ ॥ समाप्तश्च दशमं शतम् ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

इतिगुरुजनशिक्षा पार्श्वनाथप्रसाद प्रसृततरपतद्वन्धसामर्थ्यमाप्य । दशमशतविचारत्माधराग्रेधिरूढ शकुनिशिशुरिवाहतुच्छबोधाङ्गकोपि ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

णिरवसेसं जाव सुद्धदंतदीवोत्ति । एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा सेवं भंते २ त्ति जाव विहरइ ॥ दसमसयस्सय चउत्तीसइमो ॥ १० ॥ ३४ ॥ दसमं सयं सम्मत्तं ॥ १० ॥

अनुवाद

विंशति रुद्देशका भणितव्यास्तदेव भदन्त । भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥ इति दशमशते चतुस्त्रिंशत्तम ॥ १० ॥ ३४ ॥ समाप्तश्च दशम शतम् ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीपूज्यामृतचन्द्रसूरिभिरुपादिष्टेनलोकाधिपै र्मेरुत्माधरदेशवद्भगवतीसूत्रस्यशब्दाब्धिया ।
रत्नालीवचरामचन्द्रगणिनाकुर्व्येवसंस्कुर्वता प्रापीदद्दशमशतघनपतेःपृथ्वीपते प्रार्थनैः ॥ १ ॥

॥ भाषा ॥

सुद्र अन्तर्वर्त्ति अठावीसनामे अठावीस उद्देश कहेछे—कहिया भंते उत्तरिल्लाण एगोरुयमणुस्साण एगोरुयदीवेनामदीवे पण्णत्ते एव जहाजीवाभिगमे त हेव णिरवसेस। किहां हेभगवन् । उत्तरदिशिना एकोरुक मनुष्यनो एकोरुकनामे द्वीप कह्यो इतिप्रश्न उत्तर इम जिम जीवाभिगमउपाङ्गने विषै कह्यो तिमज समस्त कहवा एतले पूर्वे दक्षिणदिशिना हिमवन्तपर्वत संबन्धी लवणसमुद्र अन्तर्वर्त्ती अठावीस अन्तरद्वीप कह्या तिम ए पणि कहवा । जाव सुद्धदंतदीवोत्ति । एह अठावीस अन्तरद्वीप संबंधी । अठावीसउद्देसगा भाणियव्वा । अठावीस उद्देशा कहवा । सेवभंते २ त्ति जाव विहरइ । तह त्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही यावत् विचरे । दसमसयस्सचउत्तीसइमो उद्देसोसमत्तो । ए दशमा शतकनो चउत्रीसमो उद्देशो पूरोथयो १० ॥ ३४ ॥ दसमसय सम्मत्त । एतले दशमो शतक पूरोथयो ॥ १० ॥ ॥

॥ टीका ॥

व्याख्यातं दशमं शतमथैकादशं व्याख्यायते अस्यचायमभिसम्बन्ध –अनन्तरशतस्यान्ते ऽन्तरद्वीपा उक्ता स्तेच वनस्पतिबहुला इति वनस्पतिविशेषप्रभृतिपदार्थस्वरूपप्रतिपादनायैकादशं शतं भवति, इत्येवं सम्बन्धस्या स्योद्देशकार्थसङ्ग्रहगाथा–उप्पलेत्यादि ॥ उप्पलेत्ति ॥ उत्पलार्थः प्रथम उद्देशक ॥ सालुत्ति ॥ सालूकमुत्पलकन्द स्तदर्थो द्वितीय ॥ पलासेत्ति ॥ पलाश. किंशुक स्तदर्थ स्तृतीय ॥ कुंभीति ॥ वनस्पतिविशेष स्तदर्थ श्चतुर्थ ॥ नालीयत्ति ॥ नाडीवद्यस्यफलानि सनाडीको वनस्पतिविशेषएव तदर्थ पञ्चम ॥ पउमत्ति ॥ पद्मार्थ षष्ठ ॥ कण्णीयत्ति ॥ कर्णिकार्थ सप्तम ॥ नलिणत्ति ॥ नलिनार्थो ऽष्टमो यद्यपि चोत्पलपद्मनलिनानां नामकोशे एकार्थतोच्यते तथापीह रूढिविशेषोऽवसेय ॥ सिवत्ति ॥ शिव राजर्षिवक्तव्यतार्थो नवम ॥ लोगत्ति ॥ लोकार्थो दशम ॥ कालालभीयत्ति ॥ कालाथ एकादश, आलभिकायां नगर्यां यत्प्ररूपितं तत्प्रतिपादक उद्देशको ष्यालभिक इत्युच्यते ततोसौ द्वादश ॥ दसदोयएक्कारित्ति ॥ द्वादशोद्देशका एकादशे शते भवन्तीति, तत्र प्रथमोद्देशकद्वारसङ्ग्रहगाथा–

॥ मूल ॥

उप्पलसालुपलासे कुंभीनालीयपउमकण्णीय । नलिणसिवलोगकाला लभीयदसदोयएक्कारे ॥ १ ॥ तेणं का

॥ अनुवाद ॥

स्यादुत्पलञ्चशालूकं पलाशस्तुतृतीयकं । कुम्भीनाडीचपद्मञ्च कर्णिकानलिनंतथा ॥ १ ॥ शिवर्षिर्नवमोलोकः कालश्चालभिकातथा । एकादशे

॥ भाषा ॥

प छिले शतकने अंते अन्तरद्वीप कह्या तिहां वनस्पती घणीछे तेमाटे इहां वनस्पतीप्रमुख पदार्थ कहेछे—तिहां उद्देश्यकार्थ सग्रहगाथा कहेछे–उप्पलसालुपलासे कुंभीनालीयपउमकण्णीय । नलिणसिवलोगकाला लभियदसदोय एक्कारे । १ । उप्पलेत्यादि, उत्पल अर्थ निरूपण पहिलो उद्देशो सालू कहिये उत्पल कन्द ते अर्थनिरूपण बीजो उद्देशो २ पलास केसूडो ते अधिकार त्रीजो उद्देशो ३ कुंभिक्को, वनस्पतीविशेष अधिकार चोथो ४ नालियत्ति नाडीनीपरे जेहना फल ते नाडीक वनस्पती विशेष ते अधिकार पचमो ५ पउमत्ति, पद्मअधिकार छठो ६ कण्णीयत्ति, कर्णिअधिकार सातमो ७ नलिनत्ति, नलिनअर्थ अधिकार आठमो ८ इहां जो पणि उत्पल पद्म नलिन ए नामकोशे एकार्थपणे कह्या तो पणि इहां रूढिथको विशेष जाणवो ए सिवत्ति, शिवराजर्षि वक्तव्यता अधिकार नवमो ९ लोगत्ति, लोकअधिकार दशमो १० कालालभीएत्ति, कालअधिकार इग्यारमो ११ आ

॥ टीका ॥

वाचनान्तरे दृष्टा स्ताश्चेमा–उववाओ १ परिमाणं २ अवहार ३ च्चत्त ४ बंध ५ वेदेय ६ । उदये ७ उदीरणाए ८ लेसा ९ दिट्ठीय १० नाणेय ११ ॥ १ ॥
जोगु १२ वओगे १३ वण्ण १४ रसमाइ १५ कुसासगेय १६ आहारे १७ । विरई १८ किरिया १९ बंधे २० सण्ण २१ कसायि २२ त्थि २३ बंधेय २४ ॥ २ ॥
सण्णि २५ दिय २६ अणुबंधे २७ संवेहा २८ हार २९ ठिइ ३० समुग्घाए ३१ । चयण ३२ मूलादीसुय उववाओसव्वजीवाणं ३३ ॥ ३ ॥ एतासाचा र्थउद्देशकार्थाधि
गमगम्य इति ॥ उप्पलेण भंते एगपत्तए इत्यादि ॥ उत्पल नीलोत्पलादि एक पत्र यत्र तदेकपत्रक अथवैकच तत्पत्र चैकपत्र तदेवैकपत्रक तत्र सति

॥ मूल ॥

लेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी–उप्पलेणं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? गो
यमा ! एगजीवे णो अणेगजीवे तेणपरं जे अन्ने जीवा उववज्जंति, तेणं णो एगजीवा अणेगजीवा । तेण

॥ अनुवाद ॥

शतेचामी द्वादशोद्देशका क्रमात् ॥ २ ॥ (युग्मम्) तस्मिन्काले तस्मिन्समये राजगृहे नगरे यावदेवमवादीत्–उत्पल भदन्त ! एकपत्रक किमे
कजीवमनेकजीवम् ? गौतम ! एकजीवम् नैवानेकजीवम् । ततः परं ये ऽन्य जीवा उत्पद्यन्ते ते नैकजीवा (किन्तु) अनेकजीवा । ते भदन्त !

॥ भाषा ॥

लभिका नगरीनेविषे जे प्ररूप्यु ते प्रतिपादक उद्देशक पणि आलभिका इसी कहिये ए बारमो १२ ए बारे उद्देशक इग्यारमा शतकनेविषे कहस्ये १
तिहा पहिले उद्देशे द्वार संग्रहगाथा वाचनान्तरे दीठी ते इम–उववाओ १ परिमाण २, अवहार ३ च्चत्त ४ बंध ५ वेदय ६ । उदए ७ उदीरणाए ८ ले
सा ९ दिट्ठीय १० नाणेय ११ ॥ १ ॥ जोगु १२ वओगे १३ वन्नरस, माइ १४ ऊसासगेय १५ आहारे १६ । विरई १७ किरिया १८ बंधे १९ सण्ण २० क
साइ २१ त्थि २२ बंधेय २३ ॥ २ ॥ सण्णि २४ दिय २५ अणुबंधे २६, संवेहा २७ हार २८ ठिई २९ समुग्घाए ३० । चेयण ३१ मूलाई सुय, उववाओ सव्व
जीवाण ३२ ॥ ३ ॥ द्वारगाथानो अर्थ उद्देशक अर्थथी जाणवो । तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव एव वयासी । ते कालनेविषे ते समयनेविषे
राजगृहनामे नगरे यावत् गौतम सेवाकरतो थको इम कहे । उप्पलेण भंते एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे । उत्पल ण वाक्यालंकारे, हे भगवन् । एक
पत्र छे ज्यां, एकजीव अथवा अनेकजीव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगजीवे णो अणेगजीवे । हेगौतम । उत्पल नीलोत्पलादिक एकपत्र जिहां ते एकपत्र

॥ टीका ॥

एकपत्रकत्वं किशलयावस्थाया उपरि द्रष्टव्य ॥ एगजीवेत्ति ॥ यदा ह्येकपत्रावस्था तदेकजीव त' यदातु द्वितीयादिपत्र तेनसमारब्ध भवति तदा नैकपत्रावस्था तस्येति, बहवो जीवा स्तत्रोत्पद्यन्त इत्येतदेवाह ॥ तेणपरमित्यादि ॥ तेणपरंति ॥ तत प्रथमपत्रात्परत ॥ जेअन्नेजीवाउववज्जलिति ॥ येन्ये प्रथमपत्रव्यतिरिक्ता जीवा जीवाश्रयत्वात् पत्रादयो ऽवयवा उत्पद्यन्ते ते नैकजीवा नेकजीवाश्रया कि त्वनेकजीवा इति, अथवा ॥ तेजेत्यादि ॥ तत एकपत्रात्परत शेषपत्रादिष्वित्यर्थः, ये अन्ये जीवा उत्पद्यन्ते ते नैकजीवा नैकका कि त्वनेकजीवा अनेके इत्यर्थ ॥ तेण

॥ मूल ॥

भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति, किं णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिमणुदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सदेवेहिंतो वि उववज्जंति,

अनुवाद

जीवा कुत (आगत्य) उत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते, तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैव नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते, तिर्यग्योनि

॥ भाषा ॥

क अथवा एकहोज जे पत्र ते एक पत्र एतले एकहोज पान ते इहां किशलय अवस्थान आश्रयीने देखवो ,एगजीवत्ति, जिवारे एकहोज पत्रावस्थ तिवारे एकहोज जोव अने जिवारे द्वितीयादि पत्र तिणे समारंभ्या हुवे तिवारे अनेक पत्रावस्थ तेहने विषे घणांजीव ऊपजे एहीज कहेछे—तेणपर जे अन्नेजीवा उववज्जति । तेणपरमित्यादि, तेह पहिला पत्रथी उपरान्त जे ,अन्नेजीवाउववज्जतित्ति, जे अनेराजीव पहिला पत्रथी व्यतिरिक्तजीव पत्रादिकने जीवना आश्रयपणाथकी अवयव ऊपजे तेमाटे तिके एकजीव आश्रय नही किन्तु अनेक जीवना आश्रय अनेकजीव इत्यर्थ अथवा । तेण णो एगजीवा अणेगजीवा । तेणइत्यादि, तिवारपछे एक पत्रथी उपरान्त शेष पत्रादिकनेविषे इत्यर्थ, जे अनेराजीव ऊपजे ते नही एकजीव किन्तु अनेकजीव इत्यर्थ । तेणभते जीवा कओहिंतो उववज्जति । तेह हेभगवन् । जीव किहांथकी ऊपजे । किंणेरइएहिंतो उववज्जति । स्यू नारकीथकी ऊपजे । तिरिमणुदेवेहिंतो उववज्जति । तिर्यंचयोनिक मनुष्य देवथकी ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो णेरइएहिंतो उववज्जति । हेगौतम । नारकीथकी न ऊपजे । तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति । तिर्यंचयोनिक थकी ऊपजे । मणुस्स देवेहिंतोवि उववज्जति । मनुष्यथकी ऊपजे देवथकी पणि ऊपजे । एव उ

॥ टीका ॥

न्ते । जीवत्ति ॥ ये उत्पले प्रथमपत्राद्यवस्थाया मुत्पद्यन्ते ॥ तेजहा वक्कतीएत्ति ॥ प्रज्ञापनाया षष्ठपदे सचैवमुपपातः–जइ तिरिक्खजोणिएहिं तो उववज्जति जाव पचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ? गोयमा । एगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो वि उववज्जतीत्यादि ॥ एव मनुष्य

॥ मूल ॥

एवं उववाओ भाणियव्वो, जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाण जाव ईसाणोत्ति। तेणं भंते! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा, उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति। तेणं भंते! जीवा समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा केवइयकाले अवहीरंति? गोयमा! तेण असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति णोचेवणं

॥ अनुवाद ॥

केभ्य उत्पद्यन्ते, मनुष्यदेवेभ्यश्चाप्युत्पद्यन्ते, एवमुपपातो भणितव्यो यथा व्युत्क्रान्तिके (प्रज्ञापनाषष्ठपद इत्यर्थ) वनस्पतिकायिकाना याव दीशानात् इति, ते भदन्त। जीवा एकसमयेन कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम। जघन्यतएको वा द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षत सङ्ख्येयावा ऽसङ्ख्येयावा उत्पद्यन्ते। ते भदन्त। जीवा समयेसमये अपहृियमाणा २ कियता कालेनापहृियन्ते ? गौतम। ते ऽसङ्ख्येया समये २ अपहृियमाणा असङ्ख्येयाभि रुत्स

॥ भाषा ॥

र्पिणीभि भाणियव्वो। इम उपपात कहता ऊपजवो ते जाणवो। जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव ईसाणोत्ति। जिम पन्नवणाना छट्ठापदनेविषे वाह्यु वनस्पतीकायिक उपपात तिम इहा पणि उपपात कहवो यावत् ईशान देवलोकना देवतायें ऊपजे, हिवे परिमाणद्वार कहेछै—तेणभतेजीवा ए गसमएण केवइया उववज्जति। तेह हेभगवन्। जीव एकेसमये केतला ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहन्नेण एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेण संखे ज्जावा असखेज्जावा उववज्जति। हेगौतम। जघन्यथकी एक अथवा दोय अथवा तीन उत्कृष्टथकी सख्याता अथवा असख्याता ऊपजे द्वार २ ॥ हिवे अपहरणद्वार कहेछै—तेणभते जीवा समए २ अवहीरमाणा २ केवइकाले अवहीरंति। तेह हेभगवन्। जीव समय २ प्रते अपहरता परहा काढता २ केतलेकाले अपहराय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा तेण असखेज्जासमए २ अवहीरमाणा। हेगौतम। तेह जीव असख्याता समये समये अपहरता

॥ टीका ॥ भेदा वाच्या. ॥ जइदेवेहिंतो उववज्जति किं भवणवासीत्यादि प्रश्नो, निर्वचनच ईशानान्तदेवेभ्य उत्पद्यन्त इत्युपयुज्य वाच्यमिति, तदेतेनोप पात उक्त ॥ जहन्नेण एक्कोवेत्यादिनातु परिमाण, तेण असखज्जा समयेत्यादिना त्वपहार उक्त.' एवद्वारयोजना कार्या उच्चत्वद्वारे ॥ साइरे ग जोयणसहस्सति ॥ तथाविधसमुद्रगोतीर्थकादा विद मुच्चत्व मुत्पलस्यावसय, बन्धद्वारे—बन्धएवाबधयावत्ति ॥ एकपत्रावस्थाया बन्धक एकत्वा त् द्व्यादिपत्रावस्थायाञ्च बन्धका बहुत्वादिति, एव सर्वकर्मसु, आयुष्कतु तदन्यावस्थापि स्या त्तदपेक्षयाच अबन्धकोपि अबन्धका अपिच भव न्तीत्येतदेवाह—नवरमित्यादि ॥ इह बन्धकाबन्धकपदयो रेकत्वयोगे एकवचनेन द्वौ विकल्पौ, बहुवचनेनचद्वौ द्विकयोगेतु यथायोग मेकत्वबहु

॥ मूल ॥ अवहिरिया सिया । तेणं भंते ! जीवा केमहालया सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण साइरेगं जोअणसहस्सं । तेणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंध गा अबंधगा ? गोयमा ! णोअबंधगा बंधएवा बंधगावा एवं जाव अंतराइयस्स, णवरं आउयस्स पुच्छा

अनुवाद ण्विंण्यवसर्प्पिणीभिरपहियन्ते नैवापहृता स्यु । ते भदन्त । जीवा. कियन्महालयाशरीरावगाहना' प्रज्ञप्ता. ? गौतम । जघन्येनाङ्गुलस्या सङ्ख्येय भाग ' उत्कर्षत. सातिरेक योजनसहस्र ४। ते भदन्त । जीवा ज्ञानावरणीयस्य कर्मण' किं बन्धका अबन्धका ? गौतम । नो अबन्धका

॥ भाषा ॥ यका २ । असखेज्जाहि उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरति । असख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणीये करी अपहरिये तो पण । णोचेवणअवहिरिया सि या । नही निश्चै अपहरया जाय द्वार ३ । हिवे उच्चद्वार कहेछै—तेणभंते जीवा के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता । तेह हेभगवन् जीव केतली मोटी शरीरनी अवगाहनाये कह्यी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहणेणअगुलस्स असखेज्जइभाग । हेगौतम जघन्यथकी अगुलनो असख्यातमोभाग देह नान हुवे । उक्कोसेण साइरेग जोअणसहस्स । उत्कृष्टथकी साधिक योजनसहस्र शरीरनी अवगाहना जाणवी द्वार ४ । हिवे बधद्वार कहेछे—तेणभ ते जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा । तेह हेभगवन् ज्ञानावरणीय कर्मना स्यू बन्धक अथवा अबन्धक एतले बांधे अथवा न बांधे इति

॥ मूल ॥

गोयमा ! बंधएवा अबंधएवा बंधगावा अबंधगावा, अहवा बंधएय अबंधएय, अहवा बंधएय अबंधगाय, अहवा बंधगाय अबंधगेय, अहवा बंधगाय अबंधगाय एए अठ्ठभंगा ८। तेणं भंते ! जीवा णाणा

॥ अनुवाद ॥

बन्धकोवा ऽबन्धकोवा, बन्धकावा ऽबन्धकावा, अथवा बन्धकश्चाबन्धकश्च, अथवा बन्धकश्चाबन्धकाश्च, अथवा बन्धकाश्चाबन्धकश्च, अथवा बन्धकाश्चाबन्धकाश्च, एते ऽष्टौ भङ्गा ८। ते भदन्त ! जीवा ज्ञानावरणी बन्धकोवा बन्धकावा' एवं यावदान्तरायिकस्य, नवरमायुष पृच्छा, गौतम ! बन्धकोवा ऽबन्धकोवा, बन्धकावा ऽबन्धकावा, अथवा बन्धक

॥ भाषा ॥

प्रश्न उत्तर। गोयमा णो अबंधगा बंधएवा बंधगावा। हे गौतम अबन्धक तो नथी एकपत्र अवस्थायें बन्धक एकवचने द्यादिपत्र अवस्थायें बन्धका बहु वचने। एवं जाव अंतराइयस्स णवरं आउयस्स पुच्छा। इम यावत् अन्तराय पर्यन्त सर्व कर्मनेविषे कहवो एकवचने तथा बहुवचने आऊखानेविषे तो आऊखानो अबन्धअवस्था पणिहुवे तेहनी अपेचायें अबन्धक एकवचने पणि हुवे तथा अबन्धगा बहुवचने पणिहुवे एतलामाटे एहीज कहेछे—एतलो विशेष आयुकर्मनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा बंधएवा अबंधएवा बंधगावा अबंधगावा। हे गौतम। इहां एकयोगे एकवचने करी बे विकल्प २ तिम ब हुवचने करी पणि दोय विकल्प इम एक सयोगे भागा ४ हुवे इम द्विकसयोगे पणि एकवचन बहुवचने करी चार विकल्प हुवे इम ८ विकल्प हुवे ते देखाडेछे—अहवा बंधएय अबंधएय अहवा बंधएय अबंधगाय। एकपत्र अवस्थायें आऊखाने बंधकाले बन्धक एकवचने १ एकपत्र अवस्थायें आऊखाना बन्धकाल विना अबन्धक एकवचने २ बंधगावा द्यादि पत्रअवस्थायें आऊखाने बंधकाले बंधगा बहुवचने ३ अबन्धगावा। द्यादि पत्र अ वस्थायें आऊखाना बन्धकाल विना अबन्धक बहुवचने ४ ए चारभगा एकसयोगे कह्या, हिवे द्विकसंयोगीभगा ४ कहेछे,। अहवा बंधगेय अबंधगेय। अथवा बन्धकही एकवचने अबन्धकही एकवचने १ अथवा बन्धक एकवचने अबन्धक एकवचने २ अथवा बन्धक आऊखाना बहुवचने अबन्धक आ ऊखानो एकवचने ए त्रीजो विकल्प द्विकसयोगीनो ३ अथवा बन्धक पणि बहुवचने अबन्धक पणि बहुवचने ४ एवं विकल्प ८ थाय ए बन्धद्वार ५। अहवा बंधगाय अबंधगाय एए अठ्ठभगा। एवं सर्वभगा ८ इहां सगले प्रथम पत्रनी अपेचायें एकवचन पणो तिण उपरान्त बहुवचनपणो कहवो ए बन्ध

॥ टीका ॥ त्वाभ्यां चत्वार इत्येवं मष्टौ विकल्पा , वेदनीये सातासाताभ्यां पूर्ववं दष्टौ भङ्गा , इहच सर्वत्र प्रथमपत्रापेक्षयैकवचनान्तता , तत परन्तु बहुवच

॥ मूल ॥ वरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा ? गोयमा ! णो अवेदगा वेदएवा वेदगावा । तेणं भंते ! जीवा कि सायावेदगा असायावेदगा ? गोयमा ! सायावेदएवा असातावेदएवा अट्ठभंगा । तेणं भंते ! जीवा

॥ अनुवाद ॥ यस्य कर्मणा कि वेदका अवेदका ? गौतम ! नो अवेदका वेदकोवा वेदकावा । ते भदन्त ! जीवा कि सातावेदका असातावेदका ? गौतम ! सातावेदकोवाऽसातावेदकोवा' अष्टौ भङ्गा ८ । त भदन्त ! जीवा ज्ञानावरणीयस्य कर्मणा किमुदयिना ऽनुदयिन ? गौतम ! नेवानुदयी

बन्धद्वारे ऽष्टौ विकल्पस्थापना ।					वेदद्वारे ऽष्टौ भङ्गा ।				
१ बन्धक	१	५ बन्धको	ऽबन्धक	१	१ सातावेदक	१	५ सातावेदको	ऽसातावेदक	१
२ अबन्धक	१	६ बन्धको	ऽबन्धका.	३	२ असातावेदक.	१	६ सातावेदको	ऽसातावेदका.	३
३ बन्धका.	३	७ बन्धका.	अबन्धक	१	३ सातावेदका.	३	७ सातावेदका	असातावेदक.	१
४ अबन्धका	३	८ बन्धका	अबन्धका.	३	४ असातावेदका	३	८ सातावेदका	असातावेदका	३
एकसयोगि भङ्गा ४		द्विकसयोगि भङ्गा			एकसयोगि भङ्गाः ४		द्विकसयोगि भङ्गा		

॥ भाषा ॥ द्वार पचमा कह्यो, हिवे वेदकद्वार छठा कहेछे—तेण भंते जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि वेदगा अवेदगा । तेह हेभगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्मना स्यू वेदकछे अथवा अवेदकछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो अवेदगा वेदएवा वेदगावा । हेगौतम ! नथी अवेदका प्रथम पक्षभाश्री वेदक इत्यादि पद्म आश्री वेदका । तेण भंते जीवा कि सातावेदगा असातावेदगा । तेह हेभगवन् ! जीव स्यू सातानावेदक अथवा असातानावेदक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सायावेदएवा असायावेदएवा अट्ठभंगा । हेगौतम ! सातानो वेदक ए एकवचन प्रथमपक्ष आश्रीने असातानो वेदक ए पणि प्रथम पक्षआश्रीने

॥ टीका ॥ नान्तता, वेदनचा नुक्रमोदितस्योदीरणोदीरितस्यवा कर्मणो ऽनुभव ' उदयश्चा नुक्रमोदितस्यैवेति, वेदकत्वप्ररूपणेपि भेदेनोदयित्वप्ररूपणमि ति ॥ उदीरणाद्वारे ॥ नोअणुदीरगत्ति॥ तस्यामवस्थायां तेषा मनुदीरकत्वस्यासम्भवात् ॥ वेयणिज्जाउएसु अट्ठभंगत्ति ॥ वदनीय साताऽसातापेक्षया

॥ मूल ॥ णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई ? गोयमा ! णोअणुदई उदईवा उदइणोवा एवं जाव अंतराइयस्स । तेणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा अणुदीरगा ? गोयमा ! णो अणुदीरगा उदीरएवा उदीरगावा एवं जाव अंतराइयस्स, णवरं वेदणिज्जाउएसु अट्ठभंगा । तेणं भंते ! जीवा किं

अनुवाद उदयीवोनुदयिन , एव यावदान्तरायिकस्य । ते भदन्त । जीवा ज्ञानावरणीयस्य कर्मण किमुदीरका अनुदीरका ? गौतम । नैवानुदीरका उदीरकोवा उदीरकावा, एव यावदान्तरायिकस्य नवर वेदनीयायुषोरष्टौ भङ्गा । ते भ० । जीवा कि कृष्णलेश्या नीललेश्या॰ कापोतलेश्यास्तेजोले

॥ भाषा ॥ एकवचने इहा आठभंगाहुवे, हिवे उदयद्वार कहेछे । तेणभंते जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई अणुदई । तेह हेभगवन् । उत्पलजीव ज्ञानावरणीय कर्मना स्यूं उदई उदयवन्त अथवा उदयवन्त नहीं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो अणुदई उदईवा उदई णोवा एव जाव अनराइयस्स हेगौतम । अनुदया किवारे नहीं उदयी एकवचन उदयिणो बहुवचने इहा सगले प्रथम पत्रनी अपेक्षाये एकवचनपणे तिणि उपरान्त द्वयादिपत्रनी अपेक्षाये बहुवचनपणे कहवा इम यावत् अन्तरायने एतलालगे कहवा द्वार ७ । हिवे उदीरणाद्वार ८ कहेछे—तेणभंते जीवा णाणावरणिज्जस्स,कम्मस्स कि उदीरगा अणुदीरगा । तेह हेभगवन् । जीव ज्ञानावरणीय कर्मना स्यूं उदीरकछे ? उदीरणावन्तछे अथवा अनुदीरवा उदीरणावन्त नहीं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो अणुदीरगा उदीरएवा उदीरगावा एव जाव अतराइयस्स । हेगौतम । नहीं अनुदीरक एतले उदीरकछे, अथवा उदीरक एकवचने उदीरका बहुवचने इम यावत् अन्तरायकर्म लगे कहवो एकवचने तथा बहुवचने । णवर वेयणिज्जाउएसु अट्ठभगा । एतलोविशेष वेदनीय आउखानेविषे आठभगा हुवे, तिहा वेदननेविषे साता असातानी अपेक्षाये पूर्वे वेदक कह्या तिम उदीरणासवाते आठभगा हुवे तेहनी स्थापना, हिवे लेश्याद्वार ९-मो कहेछे—

ऽऽप्युपि पुनरुदीरकत्वापेक्षया ऽष्टौ भङ्गा , अनुदीरकत्वंचा युष उदीरणाया कादाचित्कत्वादिति, लेश्याद्वारे ऽशीतिर्भङ्गा , कथ ? एककयोगे एकवचनेन चत्वारो, बहुवचनेनापि चत्वारएव, द्विकयोगेतु यथायोगमेकवचनबहुवचनाभ्या चतुर्भङ्गी चतुर्णांच पदाना षट् द्विकयोगा स्तेष चत्

कराहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा ? गोयमा ! कराहलेस्सेवा नीललेस्सेवा काउलेस्सेवा तेउलेस्सेवा, कराहलेस्सावा नीललेस्सावा काउलेस्सावा तेउलेस्सावा अहवा कराहलेस्सेय नीललेस्सेय एव एएदुया सयोगतियासजोगचउक्कसंजोगेणय असीतिभंगा भवति । तेणं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिठी मिच्छद्दिठी

इया ? गौतम ! कृष्णलेश्योवा नीललेश्योवा कापोतलेश्योवा तेजोलेश्योवा, कृष्णलेश्यावा नीललेश्यावा कापोतलेश्यावा तेजोलेश्यावा, अथवा कृष्णलेश्यश्च नीललेश्यश्चैवमेत द्विकसयोगेन त्रिकसयोगेन चतुष्कसयोगेनचाशीति भङ्गा भवन्ति । ते भदन्त ! जीवा किं सम्यग्दृष्टिनो मि

तेणभते जोवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा । तेह हेभगवन् ! उत्पलजीव स्यू कृष्णलेश्यावन्त अथवा नीललेश्यावन्त अथवा कापोतलेश्यावन्त अथवा तेजूलेश्यावन्त हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कण्हलेस्सेवा नीललेस्सेवा काउलेस्सेवा तेउलेस्सेवा । हेगौतम । कृष्णलेशी ए एकवचने तथा नीललेशी ए एकवचने २ कापोतलेशी एकवचने ३ तेजुलेशी हुये एकवचने ४ इम चार एकवचने । कण्हलेस्सावा नीललेस्सावा काउलेस्सावा तेउलेस्सावा । कृष्णलेश्यावन्त बहुवचने ५ नीललेश्यावन्त बहुवचने ६ कापोतलेश्यावन्त बहुवचने ७ तेजुलेश्यावन्त बहुवचने ८ ए चार बहुवचने । एकसयोगी ८ भगा । अहवा कण्हलेस्सेय नीललेस्सेय एव एए दुयासयोग तियासयोग चउक्कसंजोगेणय असीतिभगा भवति । अथवा कृष्णलेशी नीललेशी ए बेउ एकवचने इम एकवचने बहुवचने करी द्विकसयोगीना भागा २४ हुवे तथा त्रिकसयोगी भागा ३२ थाय ते पणि एकवचन बहुवचने चारी तथा चउकसयोगी भागा १६ थाय ते पणि एकवचने करी इम लेश्याद्वारनेविषे सर्व असीभगा थाय ते पूठिलीपरे विचारी लेवा । हिवे दृष्टिद्वार कहेछे—तेणभते जीवा किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छद्दिट्ठी । तेह हेभगवन् उत्पलजीव स्यू सम्यग्दृष्टी हुवे अथवा मिथ्यादृष्टी हुवे सम्यग्मिथ्यादृष्टीहुवे इतिप्रश्न

॥ टीका ॥ गुणा चतुर्विंशति , त्रिकयोगेतु त्रयाणा पदाना मष्टौ भङ्गा , चतुर्णांच पदानां चत्वार स्त्रिकसंयोगा स्तेचाष्टाभि र्गुणिता द्वात्रिंशत्, चतुष्कसंयोगेतु । षोडश भङ्गा सर्वमीलनेचाशीतिरिति॰ अतएवोक्त ॥ गोयमा ! कण्हलेसेवेत्यादि ॥ वर्णादिद्वारे ॥ तेणुग अप्पणाअवणत्ति ॥ शरीराण्येव ते

॥ मूल ॥ सम्मामिच्छादिट्ठी ? गो० ! णोसम्मदिट्ठी णोसम्मामिच्छादिट्ठी मिच्छादिट्ठीवा मिच्छादिट्ठिणोवा । तेणं भंते !

अनुवाद ग्दृष्टिन. सम्यङ्मिथ्यादृष्टिन॰ ? गौतम ! नैव सम्यग्दृष्टिनो नैव सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनो मिथ्यादृष्टीवा मिथ्यादृष्टिनोवा । ते भदन्त ! जीवा

लेश्याद्वारे ऽशीतिभङ्गयन्त्रकम् ।

क नी	क नी	क नी	क नी	नी का	नी ते	का ते	क १ १ १ १ ३ ३ ३ ३	क १ १ १ १ ३ ३ ३ ३	क नी का ते	क नी का ते	क नी का ते	क नी का त
१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	१ १	नी १ १ ३ ३ १ १ ३ ३	का १ १ ३ ३ १ १ ३ ३	१ १ १ १	१ ३ १ ३	३ १ ३ १	३ ३ ३ ३
३ ३	१ ३	१ ३	१ ३	१ ३	१ ३	१ ३	का १ ३ १ ३ १ ३ १ ३	ते १ ३ १ ३ १ ३ १ ३	१ १ १ ३	१ ३ ३ १	३ १ ३ ३	एव १६
का त	३ १	३ १	३ १	३ १	३ १	३ १	क १ १ १ १ ३ ३ ३ ३	नी १ १ १ १ ३ ३ ३ ३	१ १ ३ १	१ ३ ३ ३	३ ३ १ १	सर्वे ८०
१ १	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	नी १ १ ३ ३ १ १ ३ ३	का १ १ ३ ३ १ १ ३ ३	१ १ ३ ३	३ १ १ १	३ ३ १ ३	
३ ३	एव ४	एव ८	एव १२	एव १६	एव २०	एव २४	ते १ ३ १ ३ १ ३ १ ३	ते १ ३ १ ३ १ ३ १ ३	१ ३ १ १	३ १ १ ३	३ ३ ३ १	
एकयो	द्विक योगि भङ्गा॰ सर्वे ३२						त्रिकसयोगि भङ्गा॰ ३२		चतु॰ सयोगि भङ्गा ।			

॥ भाषा ॥ टभर । गोयमा णो सम्मदृटिट्ठी णो सम्मामिच्छादृटिट्ठी मिच्छादृटिट्ठीवा मिच्छादृटिट्ठीणोवा । हेगोतम । सम्यग्दृष्टी न हुवे सम्यग्मिथ्यादृष्टी पणि न हुवे तो मिथ्यादृष्टी एकवचने हुवे अथवा मिथ्यादृष्टिनो बहुवचने हुवे द्वार १०, हिवे ज्ञानद्वार कहेछे—तेण भंते जीवा किं णाणी अणाणी । तेह हेभग

॥ टीका ॥ पा पञ्चवर्णादीनि, ते पुन रुत्पलजीवा ॥ अप्पणत्ति ॥ स्वरूपेण अवर्णा वर्णादिवर्जिता अमूर्त्तत्वादेषामिति, उच्छ्वासकद्वारे ॥ नोउस्सासनिस्सा

॥ मूल ॥ जीवा किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! णो णाणी अन्नाणी अन्नाणिणोवा । तेणं भंते ! जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! णोमणजोगी णोवइजोगी कायजोगीवा कायजोगिणोवा । तेणं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तेवा अणागारोवउत्तेवा अट्ठभंगा तेणं भंते ! जीवाणं सरीरगा कइवन्ना कइगंधा कइरसा कइफासा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचवन्ना दुगंधा

॥ अनुवाद ॥ किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः ? गौतम ! नैव ज्ञानी अज्ञान्यज्ञानिनावा । ते भदन्त ! जीवा किं मनोयोगिनो वाग्योगिनः काययोगिनः ? गौतम ! नैवमनोयोगिनो नैव वाग्योगिनः काययोगीवा काययोगिनोवा । ते भदन्त ? जीवा किं साकारोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ता ? गौतम ! साकारोपयुक्तोवा ऽनाकारोपयुक्तोवा ऽष्टौ भङ्गा । ८ (१३ । द्वारम्) तेषां भदन्त ! जीवाना शरीराणि कतिवर्णानि कतिगन्धीनि कतिरसानि

॥ भाषा ॥ वन् । जीव स्यू ज्ञानी हुवे ? अथवा अज्ञानी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो णाणी अन्नाणी अन्नाणिणोवा । हेगौतम ज्ञानी न हुवे अज्ञानी एकवचने अथवा अज्ञानिनो बहुवचने द्वार ११ । हिवे योगद्वार कहेछे—तेणंभते जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी । तेह हेभगवन् जीव स्यू मनोयोगी हुवे अथवा वचनयोगी हुवे अथवा काययोगी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोमणजोगी णोवइजोगी कायजोगीवा कायजोगिणोवा । हेगौतम मनयोगी न हुवे वचनयोगी पणि न हुवे काययोगी एकवचने हुवे अथवा काययोगिनो बहुवचने द्वार १२ । हिवे उपयोगद्वार कहेछे । तेणंभते जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता । तेह हेभगवन् जीव स्यू साकारोपयोगे हुवे अथवा अनाकारोपयोगे हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सागारोवउत्तेवा अणागारोवउत्तेवा अट्ठभंगा । हेगौतम साकारोपयुक्त एकवचने अनाकारोपयुक्त एकवचने २ इहां एकवचन बहुवचने करी आठभंगा हुवे द्वार १३ । हिवे वर्णादिद्वार कहेछे—तेणंभते जीवाणं सरीरगा कइवन्ना कइगंधा कइरसा कइफासा प० । तेह हेभगवन् ! उत्पलजीवना शरीरे केतलावर्ण केतला गन्ध

भगवती ॥ शतक ११ ॥ उद्देशा ॥ १		॥ टीका ॥

सएत्ति ॥ अपर्याप्तावस्थायां, इहच षड्विंशति भंगा, कथ? एककयोगे एकवचनान्तास्त्रय, बहुवचनान्ताअपि त्रयो, द्विकयोगेतु यथायोगमेकत्वबहु

॥ मूल ॥

अफासा पन्नत्ता। तेण भंते ! जीवा
पचरसा अठफासा पन्नत्ता, तेपुण अप्पणा अवन्ना अगंधा अरसा
किं उस्सासा निस्सासा णोउस्सासाणिस्सासा ? गोयमा ! उस्सासएवा णिस्सासएवा णोउस्सासणिस्सास
एवा उस्सासगावा णिस्सासगावा णोउस्सासणिस्सासगावा ६ । अहवा उस्सासएय णिस्सासएय ४ । अ
हवा उस्सासएय णोउस्सासणिस्सासएय ४ । अहवा णिस्सासएय णोउस्सासणिस्सासएय ४ । अहवा

॥ अनुवाद ॥

कतिस्पर्शाणि प्रज्ञप्तानि? गौतम। पच वर्णानि द्विगन्धीनि पञ्चरसान्यष्टस्पर्शाणि प्रज्ञप्तानि, तेपुनरात्मनाऽवर्णा अगन्धा अरसा अस्पर्शा.
प्रज्ञप्ता.। ते भदन्त ! जीवा किमुच्छ्वासका नि श्वासका नेवोच्छ्वासका नि श्वासका? गौतम। उच्छ्वासकोवा नि.श्वासकोवा नेवोच्छ्वासनि श्वासको
वा, उच्छ्वासकावानि श्वासकावा ५। नैवोच्छ्वासनि श्वासकावा ६। अथवोच्छ्वासकश्च नि श्वासकश्च ४। अथवोच्छ्वासकश्च नैवोच्छ्वासनि.श्वास

॥ भाषा ॥

कोतला रस केतला फरस कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पचवर्ण दुगंध पचरसा अठफासा पणत्ता। हेगौतम। पाच वर्ण दोय गन्ध पाच रस आठ
फरस कह्या एतले तेहनाशरीर पचवर्णादि हुवे। तेपुण अप्पणा अवणा अगंधा अरसा अफासा पणत्ता। पणि तेह आत्माये स्वरूपपणे करी अवर्ण ५
अगन्ध २ अरस अस्पर्श ८ जेमाटे जीव अमूर्त्तछे तेमाटे वर्णादि नही हार १४। हिवे ऊसासद्वार कहेछे—तेणभत जीवा कि उस्सासा णिस्सासा णो उ
स्सासा णिस्सासा। तेह हेभगवन्। जीव उत्पल स्यू उच्छ्वासवन्त निस्वासवन्त नही उच्छ्वास निस्वास एतले अपर्याप्त अवस्थानेविषे इतिप्रश्न उत्तर। गो
यमा उस्सासएवा णिस्सासएवा णो उस्सासणिस्सासएवा। हेगौतम। इहा छव्वीसभगा हुवे एकवचने १ एकवचने २ एकवचने ३ एव ३ एकवचने। उ
स्सासगावा णिस्सासगावा। बहुवचने ४ बहुवचने ५। णोउस्सासणिस्सासगावा ६। बहुवचने ६ ए एकसयोगी ६ भगा कह्या। अहवाउस्सासएय णि
स्सासएय ४। द्विकसयोगे भगा १२ देखाडेछे—अथवा एकवचने एकवचने इम एकवचन बहुवचने करी भगा ४। अहवा उस्सासएय णो उस्सासणिस्सा

॥ टीका ॥ त्वाभ्या तिस्र श्चतुर्भङ्गिका इति द्वादश, त्रिकयोगे त्वष्टाविति, अतएवाह–एतेछव्वीस भंगा भवंतित्ति॥ आहारकद्वारे॥ आहारएवा अणाहारएवत्ति॥

॥ मूल ॥ उस्सासएय णिस्सासएय णोउस्सासणिस्सासएय अठ्ठभंगा। एए छव्वीसं भंगा भवंति। तेणं भंते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! णोअणाहारगा आहारएवा अणाहारएवा अठ्ठभंगा। तेणं भंते ! जीवा किं विरया अविरया विरयाविरया ? गोयमा ! णोविरया णोविरयाविरया अविरएवा अविरयावा

॥ अनुवाद ॥ कश्च ४। अथवा निःश्वासकश्च नैवोच्छ्वासनिःश्वासकश्च ४। अथवोच्छ्वासकश्च निःश्वासकश्च नैवोच्छ्वासनिःश्वासकश्चाष्टौ भङ्गा ८। एते च द्विंशतिर्भङ्गाभवन्ति। ते भदन्त। जीवा किमाहारका अनाहारका ? गौतम। नैवानाहारका आहारकोवा ऽनाहारकोवा ऽष्टौ भङ्गा। ते भदन्त। जीवा. किं विरता अविरता विरताविरता ? गौतम। नैवविरता नैवविरताविरता, अविरतोवाऽविरतावा (द्वारम् १७) ते भ

॥ भाषा ॥ सा य ४। अथवा एकवचने णोउस्सास एकवचने ए पणि एकवचन बहुवचने करी भागा ४ हुवे। अहवा णिस्सासएय णोउस्सास णिस्सासएय ४। अथवा एकवचने णोउस्सास एकवचने इहा पणि एकवचन बहुवचनेकरी भागा ४ कहवा एव द्विकसयोगे १२। हिवे त्रिकसयोगे भागा ८ देखाडेछे— अहवा उस्सासएय णिस्सासएय णोउस्सास णिस्सासएय अठ्ठभगा। अथवा उच्छ्वासवन्त एकवचने एकवचने णोउस्सास एकवचने इम इहा आठभागा कहवा। एए छव्वीसभगा भवति। एह सर्व इहा छव्वीसभगा हुवे द्वार १५। हिवे आहारद्वार १६ मो कहेछे। तेणभते जीवा किं आहारगा अणाहारगा। तेह हेभगवन्! जीव स्यू आहारक अथवा अनाहारक इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णो अणाहारगा आहारएवा अणाहारएवा अठ्ठभगा। हेगौतम नही अनाहार आहारक एकवचने अनाहारक एकवचने इहा एकवचने बहुवचनेकरी आठभगा कहवा द्वार १६। हिवे विरतिद्वार १७मो कहेछे। तेणभते जीवा किं विरया अविरया विरया विरया। तेह हेभगवन् जीव स्यू विरती अथवा अविरती अथवा विरताविरती इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोविरया णो विरया विरया। हेगौतम नही विरती विरताविरती पणि नही। अविरएवा अविरयावा। एकवचने बहुवचने द्वार १७। हिव

॥ मूल ॥

णो अकिरिया सकिरिएवा सकिरियावा । तेणं

तेणं भंते ! जीवा कि सकिरिया अकिरिया ? गोयमा ! णो अकिरिया सकिरिएवा सकिरियावा । तेणं भंते ! जीवा कि सत्तविहबंधगावा अट्ठविहबंधगावा ? गोयमा ! सत्तविहबंधएवा अट्ठविहबंधएवा अट्ठ भंगा । तेणं भंते ! जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता भयसण्णोवउत्ता मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! आहारसण्णोवउत्तेवा असीतिभंगा । तेणं भंते ! जीवा किं कोहकसाई माणकसाई मायाकसाई

अनुवाद

ते भदन्त । जीवा कि सक्रिया अक्रिया ? गौतम ! नो अक्रिया सक्रियोवा सक्रियावा । ते भदन्त । जीवा कि सप्तविधबन्धकावा ऽष्टविधबन्धकावा ? गौतम । सप्तविधबन्धकोवाऽष्टविधबन्धकोवा ऽष्टौ भङ्गा । ते भ० । जीवा किमाहारसञ्ज्ञोपयुक्ता भयसञ्ज्ञोपयुक्ता मैथुनसञ्ज्ञोपयुक्ता परिग्रहसञ्ज्ञोपयुक्ता ? गौतम । आहारसञ्ज्ञोपयुक्तोवा ऽशीतिर्भङ्गा । ८० (द्वारम् २०) ते भदन्त । जीवा० कि क्रोधकषायिनो मा

॥ भाषा ॥

क्रिय द्वार १८ मा कहछे । तणभते जीवा कि सकिरिया अकिरिया । तेह हेभगवन् जीव स्यूं सक्रियछे अथवा अक्रियछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो अकिरिया सकिरिएवा सकिरियावा । हेगौतम अक्रिय नही सक्रिय एकवचने सक्रियबहुवचने द्वार १८ । हिवे बंधद्वार १९ मो कहेछे । तेण भते जीवा कि सत्तविहबंधगावा अट्ठविहबंधगावा । तेह हेभगवन् जीव स्यूं सप्तविध बन्धक अथवा अष्टविध कर्मनाबन्धक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तविहबंधएवा अट्ठविहबंधएवा अट्ठभंगा । हेगौतम सप्तविधबन्धक एकवचने अष्टविधबन्धक एकवचने इहा आठभंगा कहवा द्वार १९ । हिवे सञ्ज्ञा द्वार २० मो कहेछे । तेण भंते जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता । तेह हेभगवन् जीव स्यूं आहार सञ्ज्ञोपयुक्तछे । भयसण्णोवउत्ता मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता । भयसञ्ज्ञोपयुक्तछे मैथुनसञ्ज्ञोपयुक्तछे परिग्रहसञ्ज्ञोपयुक्त कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आहारसण्णोवउत्तेवा असीतिभंगा । हेगौतम आहारसञ्ज्ञोपयुक्तछे ए एकवचने इहा लेश्याद्वारनीपरे असीभागा कहवा द्वार २० । हिवे कषायद्वार २१ मो कहेछे । तेणभते जीवा कि कोहक साई माणकसाई मायाकसाई लोहकसाई । तेह हेभगवन् जीव स्यूं क्रोधकषायी मानकषायी मायाकषायी लोभकषायी कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोय

लोभकसाई ? गोयमा ! कोहकसाईवा असीतिभंगा । तेणं भंते ! जीवा किं इत्थीवेदगा पुरिसवेदगा णपुसगवेदगा ? गोयमा ! णोइत्थीवेदगा णोपुरिसवेदगा णपुंसगवेदगेवा णपुंसगवेदगावा । तेणं भंते ! जीवा कि इत्थीवेदवधगा पुरिसवेदवधगा णपुंसगवेदवधगा ? गोयमा ! इत्थीवेदवधएवा पुरिसवेदवधएवा णपुंसगवेदवधएवा छव्वीसभंगा । तेणं भंते ! जीवा कि सन्नी असन्नी ? गोयमा ! णो सन्नी असन्नीवा अस

नकषायिनो मायाकषायिनो लोभकषायिन ? गौतम । क्रोधकषायीवा अशीतिर्भङ्गा । ८० (द्वारम् २१) ते भदन्त । जीवा कि स्त्रीवेदका, पुरुषवेदका नपुंसकवेदका ? गौतम । नैवस्त्रीवेदका नेवपुरुषवेदका नपुंसकवेदकावा नपुंसकवेदकावा (द्वारम् २२) ते भदन्त । जीवा कि स्त्रीवेदबन्धका पुरुषवेदबन्धका नपुंसकवेदबन्धका ? गौतम । स्त्रीवेदबन्धकोवा पुरुषवेदबन्धकोवा नपुंसकवेदबन्धकोवा , षड्विंशति र्भङ्गा । स

मा कोहकसाईवा असीतिभंगा । हेगौतम क्रोधकषायी एकवचने इहा पणि पूठलीपरे असीभागा कहवा द्वार २१ । हिवे वेदद्वार कहेछे । तेणभते जीवा कि इत्थीवेदगा पुरिसवेदगा णपुंसगवेदगा । तेह हेभगवन् जीव स्यू स्त्री वेदक पुरुषवेदक नपुंसकवेदक इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो इत्थीवेदगा णोपुरिसवेदगा णपुंसगवेदगेवा । हेगौतम नही स्त्री वेदक नही पुरुष वेदक नपुंसकवेदक एकवचने । णपुंसगवेदगावा । नपुंसकवेदक बहुवचने द्वार २२ । हिवे बन्धद्वार २३ मो कहेछे । तेणभतेजीवा कि इत्थीवेदवधगा पुरिसवेदवधगा णपुंसगवेदवधगा । तेह हेभगवन् जीव स्यू स्त्रीवेदना बन्धका अथवा पुरुषवेदना बन्धक अथवानपुंसकवेद बन्धक ३ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थीवेदवधएवा पुरिसवेदवधएवा णपुंसगवेद वधएवा छव्वीसभंगा । हेगौतम स्त्रीवेद बन्धक एकवचने पुरुषवेदबन्धक एकवचने नपुंसकवेदबधक एकवचने इहा छव्वीसभंगा पूठलीपरे कहवा द्वार २३ । हिवे सन्नीद्वार २४ मो कहेछे—तेणभतेजीवा कि सन्नी असन्नी । तेह हेभगवन् जीव स्यू सन्नी अथवा असन्नी इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोसन्नी असन्नीवा असन्निणोवा । हेगौतम नही सन्नी असन्नी एकवचने असन्नीओ बहुवचने द्वार २४ । हिवे इन्द्रियद्वार २५ मो कहेछे—तेणभंते जीवा कि सइंदिया अणिंदिया । तेह हे

॥ टीका ॥

[illegible] ॥ तेजाद्यते । उप्पलजीवे विग्रहगता अनाहारको यथा त्वाहारक स्तत्राच्यो लङ्का पूर्ववत्, सज्ञाद्वारे कषायद्वारे चा ओतिसंज्ञा लेश्याद्वारवद्वाच्येया ॥ सवादेवपति ॥ [illegible] सवेधस्थितिरुक्ता, तत्रच ॥ भवादेसेण ॥ त्यादिनातु उप्पलजीवे पुढविजीवे ॥ इत्यादिनात्वनयस्थितिरनुबन्धपर्यायोक्ता ॥ [illegible] ॥

॥ मूल ॥

गो अणिंदिया सइंदिएवा सइंदियाज्ञा णिंदिया ? गोयमा ! णो अणिंदिया सइंदिएवा सइंदियाञा जीवा किं सइंदिया अणिंदिया ? गोयमा ! णो अणिंदिया सइंदिएवा सइंदियाञा। सिरणोवा । तेण भंते ! जीवा किं सइंदिया अणिंदिया ? गोयमा ! जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जा तेणं भंते ! उप्पलजीवे तिकालत्ते केवचिर होइ ? गोयमा ! जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जा काल । तेणं भंते ! उप्पलजीवे पुढवीजीवे पुणरवि उप्पलजीवे तिकालत्ते केवतिय कालं सेवेज्जा केवइयं काल गतिरागति करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहणेण दोभवग्गहणाइं उक्कोसेण असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं

अनुवाद

जीवा किं सन्नी असन्नी - गौ० । नेव सन्नी असन्नीवाऽसन्निनोवा (द्वारम् २४) ते भदन्त । जीवा कि सेन्द्रिया अनिन्द्रिया ? गौतम । नवानिन्द्रिया सेन्द्रिय सन्द्रियावा (द्वारम् २५) स भदन्त । उत्पलजीव इतिकालत कियच्चिरभवति ? गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त मुत्कर्षणाऽसङ्ख्येय काल । स भदन्त । उत्पलजीव पृथ्वीजीव पुनरप्युत्पलजीव इतिकालत कियन्त काल सेवेत, कियन्त काल गत्यागति

॥ भाषा ॥

[illegible] सइ दिएवा सइ दियावा । हेगौतम नो अनिन्द्रिय सइ [illegible] अथवा अनिन्द्रिय [illegible] उत्तर । गोयमा णो अणिंदिया सइ दिएवा सइ दियावा । हेगौतम नो अनिन्द्रिय सइ [illegible] तेणं भंते उप्पलजीवे तिकालओकेवचिर होइ । तेह हेभगवन् । उत्पलजीव कालथ [illegible] नो [illegible] उत्कृष्टथको असंख्यातो का [illegible] हेगौतम जघन्यथको अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टथको असंख्यातो का [illegible] गोयमा जहणेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असंखेज्जकाल । हेगौतम जघन्यथको अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्टथको असंख्यातो का [illegible] तेणं भंते उप्पलजीवे पुढवीजीवे । तेह हेभगवन् उत्पलजीव मरी पृथ्वी जीवथई । पुनरपि उप्पल [illegible] केतलोकाल सेवे । केतलोकाल गतिरागति करेज्जा । केतलोकाल गति आ [illegible] केवइकाल सेवेज्जा । [illegible] हेगौतम भवआश्रयीने जघन्यथको दोय भवग्रहण एक पृथ्वीकायिक भवे नो [illegible] गोयमा भवादेसेण जहणेण दोभवग्गहणाइं । [illegible]

॥ टीका ॥

भवप्रकारेण भवमाश्रित्येत्यर्थं ॥ जहस्रेण दो भवग्गहणाइति ॥ एक पृथिवीकायिकत्वे ततो द्वितीयमुत्पलत्वे तत पर मनुष्यादिगति गच्छेदिति॥ कालादेसेण जहस्रेण दो अंतोमुहुत्तत्ति ॥ पृथिवीत्वेनान्तर्मुहूर्त्तं पुन रुत्पलत्वेनान्तर्मुहूर्त्तमित्येव कालादेशेन जघन्यतो द्वे ऽन्तर्मुहूर्त्ते इति, एव द्वी

॥ सूत्र ॥

कालादेसेणं जहस्रेणं दोअंतोमुहुत्ता उक्कोसेण असंखेज्ज काल एवतिय कालं सेवेज्जा एवतियं काल गइ रागतिं करेज्जा । सेण भंते । उप्पलजीवे आउजीवे एवचेव एव जहा पुढवीजीवे भणिते तहा जाव वाउ जीवे भाणियव्वे । सेणं भंते ! उप्पलजीवे त वणस्सइजीवे तेपुणरवि उप्पलजीवेति केवइयं काल सेवेज्जा

अनुवाद

कुर्यात् । गौतम । भवादेशेन जघन्यतो द्वे भवग्रहणे, उत्कर्षतो ऽसङ्ख्येयानि भवग्रहणानि, कालादेशेन जघन्येन द्वेन्तर्मुहूर्त्ते, उत्कर्षेणासङ्ख्येय कालमेतावतिक काल सेवेत, एतावतिक काल गत्यागति कुर्यात् । स भ० । उत्पलजीव अप् जीव एव चैव एव यथा पृथ्वी जीवो भणित स्तथा यावद्वायुजीवो भणितव्य । स भदन्त । उत्पलजीव सवनस्पतिजीव (भूत्वा) पुनरप्युत्पलजीव (भवति) इति कैयतिक काल सेवे

॥ भाषा ॥

जो उत्पलपणे तिवारपछे मनुष्यादि गतें जाय । उक्कोसेण असंखेज्जाइ भवग्गहणाइ कालादेसेण । उत्कृष्टथकी असंख्याता भवनो ग्रहणवें करी काल आश्रीने जहस्रेण दोअंतोमुहुत्ता उक्कोसेण असंखेज्जकाल । जघन्यथकी दोय अन्तर्मुहूर्त्त एक पृथिवीपणे एक उत्पलपणे इम २ उत्कृष्टथकी असख्या तोकाल । एवइयं काल सेवेज्जा । एतलोकाल सेवे । एवइयकाल गतिरागति करेज्जा । एतलोकाल गति आगति करे । सेण भते उप्पलजीवे आउजीवे एव तेह हेभगवन् उत्पलजीव आउजीव थई वली उत्पलजीव इत्यादि इमहीज । एवजहा पुढवीजीवे भणिते । इम जिम पृथिवीजीव कह्यो । तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे । तिम यावत् वाउजीवलगे कहवो । सेणभते उप्पलजीवे तेवणस्सइजीवे ते पुणरवि उप्पलजीवेति । तेह हेभगवन् उत्पलजीव तेह व नस्पती जीवथई तेह वली उत्पलजीव थाय । केवइयकाल सेवेज्जा केवइयकाल गति रागति करेज्जा । तिहा केतलोकाल सेवे केतलोकाल गति आग ति करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा भवादेसेण । हेगोतम भवआश्रयाने । जहस्रेण दो भवग्गहणाइ । जघन्यथकी दोय भवग्रहण पूठिलो परे । उक्कोसेण भ

केवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकालो एवतियं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा । सेणं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे २ पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा केवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा ? गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसे

जघन्यतो द्वे भवग्रहणे, उत्कर्षतो नन्तानि भवग्रहणानि । कालात कियन्तं कालं गत्यागतिं कुर्यात् ? गौतम । भवादेशेन (भवमाश्रित्य) जघन्यतो द्वे भवग्रहणे, उत्कर्षतः सङ्ख्येयानि भवग्रहणानि, कालादेशेन जघन्यतो द्वेऽन्तर्मुहूर्त्ते, उत्कर्षेणानन्त कालं तरुकालं, एतावन्तिकं कालं सेवेत, एतावन्तिकं कालं गत्यागतिं कुर्यात् । स भ० । उत्पल जीव द्वीन्द्रियजीव (भूत्वा) पुनरप्युत्पलजीव (जात) इति कियन्तिकं कालं सेवेत कियन्तिकं कालं गत्यागतिं कुर्यात् ? गौतम । भवादेशेन कालादेशेन जघन्यतो द्वेऽन्तर्मुहूर्त्ते उत्कर्षतः सङ्ख्येयकालं एतावन्तिकं कालं सेवेत,

जघन्य थकी दोय भव करे उत्कृष्टथकी अनन्त भवग्रहण करे कालआश्रयीने । जहन्नेण दो अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल तरुकालो । जघन्य थकी दोय अन्तर्मुहूर्त्त पूठिलापरे उत्कृष्टथकी अनन्तकाल ते वनस्पतीकाल । एवइयकाल सेवेज्जा एवइयकाल गति रागति करेज्जा । एतलोकाल सेवे एतलोकाल गति आगति करे । सेणभंतेउप्पलजीवे बेइंदियजीवे । तेह हेभगवन् उत्पलजीव मरी बेइंदियजीव थई । पुणरविउप्पल जीवेइ केवइयकाल सेवेज्जा । वली उत्पलजीव इसो ऊपजे केतलोकाल सेवे । केवइयकालगति रागतिकरेज्जा । केतलकालगति आगति करे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा भवा देसेण । हेगोतम भवआश्रयीने । जहन्नेण दो भवग्गहणाइं उक्कोसेण सखेज्जाइं भवग्गहणाइं कालादेसेण । जघन्यथकी दोय भवग्रहण करे पूठिलो परे उत्कृष्टथकी सख्याता भवग्रहण करे काल आश्रयीने । जहन्नेण दो अंतोमुहुत्ता । जघन्यथकी दोय अन्तर्मुहूर्त्त काल । उक्कोसेण सखेज्जकाल एवइयका ल सेवेज्जा एवइयकालगति रागति करेज्जा । उत्कृष्टथकी सख्यातोकाल एतलो काल सेवे एतलोकाल गति आगति करे । एव तेइ दियजीवेवि एवचउ

न्द्रियादिषु नेय ॥ उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं ति ॥ चत्वारि पञ्चेन्द्रियतिरश्च श्चत्वारिचोत्पलस्येत्येवं महोभवग्रहणानि उत्कर्षत इति ॥ उक्कोसेणं पु व्वकोडीपुहुत्तं ति ॥ चतुर्षु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्भवग्रहणेषु चतस्रः पूर्वकोट्य उत्कृष्टकालस्य विवक्षितत्वेनोत्पलकायाऽत्रजीवयोर्योत्कृष्टपञ्चेन्द्रियतिर्यक् स्थित ग्रहणात्, उत्पलजीवितत्वेतास्वधिकमित्येव मुत्कृष्टत पूर्वकोटीपृथक्त्वं भवतीति ॥ एवं जहा आहारउद्देसए वणस्सइकाइयाणमित्यादि ॥ अने

ण संखेज्जाइं भवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं संखेज्जं कालं एवइयं कालं सेवेज्जा एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा एवं तेइंदियजीवेवि, एवं चउरिंदियजीवेवि, सेणं भंते! उप्पल जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियजीवेति पुच्छा, गोयमा! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अट्ठभवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं एवइयं कालं सेवेज्जा

एतावतिकं कालं गत्यागतिं कुर्यात्। एवं त्रीन्द्रियजीवोपि एवं चतुरिन्द्रियजीवोपि। स भदन्त! उत्पलजीव पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकजीव इति पृच्छा, गौतम! भवादेशेन (भवमाश्रित्य) जघन्यतो द्वे भवग्रहणे, उत्कर्षतो अष्टौ भवग्रहणानि, कालादेशेन जघन्यतो द्वे अन्तर्मुहूर्ते उ त्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वम्, एतावतिकं कालं सेवेत एतावतिकं कालं गत्यागतिं कुर्यात्। एवं मनुष्येणापि समं यावदियत्कालं गत्यागति

रिंदियजीवेवि। एम तेइन्द्रिय जीव पणि कहवो एम चउरिन्द्रिय जीवपणे पणि कहवो। सेणं भंते उत्पलजीव पंचिंदियतिरिक्खजोणिय जीवेति पुच्छा। ते हे भगवन् उत्पलजीव मरी पचेन्द्रिय तिर्यचपणे थई वली उत्पलपणे आवे इत्यादि प्रश्न उत्तर। गोयमा भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं। हे गौतम। भवआश्रयीने जघन्यथकी बेय भवग्रहण पृथिवीनापरे कहवा। उक्कोसेणं अट्ठभवग्गहणाइं कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता। उत्कृष्टथकी आठ भवग्रहण चार पचेंद्रिय तिर्यचना चार उत्पलना एवं काल आश्रयीने जघन्यथकी बे अन्तर्मुहूर्त पृथिवीना परे। उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं एवइ यं कालं सेवेज्जा। उत्कृष्टथकी पूर्वकोडि पृथक्त्व चार पचेंद्रियतिर्यच भवग्रहणनेविषे चार पूर्वकोडि उत्कृष्टकालने तिर्यचपणे करी उत्पलकाल ग्रहण जा

॥ टीका ॥

यन्ति, उत्पलजीवास्तु बादरत्वेन तथाविधनिष्कुटे प्रायो म्रियमाणत्वात् षट्सु दिक्ष्वाहारयन्तीति ॥ वक्कतीएत्ति ॥ प्रज्ञापनायाः षष्ठपदे ॥ उव्वट्टणा यन्ति, उत्पलजीवास्तु बादरत्वेन तथाविधनिष्कुटे ... ॥ नोनेरइएसुउववज्जंति तिरिएसुउववज्जंति मणुएसुउववज्जंति एत्ति ॥ उद्वर्त्तनाधिकारे तत्रचेदमेव सूत्र–मणुएसुउववज्जंति देवेसु उववज्जंति गो० ।

॥ मूल ॥

तेसिणं भंते ! जीवाणं कइसमुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए । तेणं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति असमोहयामरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति । तेणं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं णेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, एवं जहा वक्कंतीए उव्व

अनुवाद

प्रज्ञप्ता ? गौतम । जघन्यतोन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दश वर्षसहस्राणि । तेषां भदन्त । जीवानां कतिसमुद्घाताः प्रज्ञप्ता ? गौतम । त्रय समुद्घाता प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–वेदनासमुद्घात कषायसमुद्घाता मारणान्तिकसमुद्घात ३ । ते भदन्त । जीवा मारणान्तिकसमुद्घातेन समोहता किं म्रियन्ते असमोहता म्रियन्ते ? गौतम । समोहता अपि म्रियन्ते असमोहता अपि म्रियन्ते । ते भदन्त । जीवा अनन्तरमुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते

॥ भाषा ॥

हेभगवन् ! जीवनी केतला कालनी स्थितिकही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्त । हेगौतम ! जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त्तनी । उ क्कोसेण दसवाससहस्साइ । उत्कृष्टथकी दशसहस्र वर्षनी कही द्वार २८ । हिवे समुद्घातद्वार ३० मो कहेछे । तेसिणभंतेजीवाणंकइसमुग्घाया प० । तेह हेभगवन् ! जीवने केतला समुद्घात कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तओ समुग्घाया प० त० । हेगौतम । तीन समुद्घात कह्या ते कहेछे । वेयणासमुग्घा ए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए । वेदनासमुद्घात कषायसमुद्घात मारणान्तिकसमुद्घात ३ । तेणं भंते जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं । तेह हेभगवन् ! जीव मारणान्तिकसमुद्घाते करी । किं समोहया मरंति असमोहयामरंति । स्यू समोहया छता मरे अथवा असमोहया छता मरणपामे इ तिप्रश्न उत्तर । गोयमा समोहयावि मरंति असमोहयाविमरंति । हेगौतम समोहया छता पणि मरण पामे । असमोहया छता पणि मरणपामे छा

॥ टीका ॥ नव यदतिदिष्ट तदिद-सेत्तं असंखेज्जपएसोगाढ़ाइं, कालओ अणंतरकालठियाइं, भावओ वण्णमंताइं इत्यादि „ सव्वप्पणयाए त्ति ॥ सर्वात्मना न वर ॥ नियमा छद्दिसिंति ॥ पृथ्वीकायिकादयः सूक्ष्मतया निष्कुटगतत्वेन स्यात्त्रिषु दिक्षु स्याच्चतसृषु दिक्ष्वित्यादिनापि प्रकारेणा ऽऽहारमाहार

॥ मूल ॥ एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा, एवं मणुस्सेणवि समं जाव एवइयं कालं गइरागतिं करेज्जा। तेणं भंते! जीवा किं माहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइ काइयाणं आहारे तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारं माहारेंति, णवरं णियमं छद्दिसिं सेसं तंचेव । तेसिणं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ।

॥ अनुवाद ॥ कुर्यात् । द्वारम् २७ । ते भदन्त ! जीवा किमाहारमाहारयन्ति ? गौतम ! द्रव्यतोऽनन्तप्रादेशिकानि द्रव्याण्येवं यथाऽऽहारोद्देशके वनस्पतिकायिकानामाहारस्तथैव यावत्सर्वात्मनाऽऽहारमाहारयन्ति नवरं नियमात्षट्सु दिक्षु शेषं तथैव । तेषां भदन्त ! जीवानां कियत्कालं स्थिति

॥ भाषा ॥ वना उत्कृष्ट पंचेंद्रिय तिर्यंच स्त्रीतना गृहगमनो उत्पन्न आश्रित तेहनां भंग प्ररूपको । एवइयं कालमिति रागति करेज्जा । एतलोकाल सेवै एतलोकाल गति आगति करे । एवमणुस्सेणविसम । इम मनुष्य साथे पिण कहवो । जाव एवइयकालमिति रागति करेज्जा । यावत् एतलोकाल सेवै एतलोकाल गति आगति करे एतलालगे कहवो द्वार २७ । हिवे आहारद्वार २८ मो कहे छै तेणंभंते जीवा किं माहार माहारेंति । ते हे भगवन् ! जीव स्यूं आहार करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं । हे गौतम ! द्रव्यथकी अनन्त प्रदेशिक द्रव्यने आहार करे । एवं जहा आहारुद्देसए । इम जिम आहार उद्देशाने विषे । वणस्सइकाइयाणं आहारेतहेव । वनस्पतीकायिकने आहार कह्यु तिम इहां पिण कहवो । जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति । यावत् सर्व आत्माये आहार करे एतलालगे कहवो । णवरं णियमं छद्दिसिं सेसं तंचेव । एतलोविशेष लोकना निष्कुटना अनाश्रयको व्हालजीव नियमथको छ दिशिना आहार करे शेष तिमहीज कहवो द्वार २८ । हिवे स्थितिद्वार २९ मो कहे छै — तेसिणंभंते जीवाणं केवइयकालं

रस पढमो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ १ ॥ सालुएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे एवं उप्पलउद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अणंतखुत्तो, णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं सेसं तचेव सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारससयस्सय बितिओ उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ २ ॥ पलासेण भंते ! एगपत्तए। किं एगजीवे

म ॥ ११ ॥ १ ॥ शालूको भदन्त। एकपत्रक किमेकजीवो ऽनेकजीव ? गौतम। एकजीव एवमुत्पलोद्देशकवक्तव्यता ऽपरिशेषा भणितव्या यावदनन्तकृत्वो नवरं शरीरावगाहना जघन्यतोऽङ्गुलस्यासङ्ख्येय भागमुत्कर्षतो धनु पृथक्त्वं शेष तच्चैव तदेव भदन्त। २ ॥ इति एकादशशते द्वितीयोद्देश ॥ ११ ॥ २ ॥ पलाशो भदन्त। एकपत्रक किमेकजीव एवमुत्पलोद्देशकवक्तव्यता ऽपरिशेषा

दार ३३। सेव भंते भंतेत्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सत्यछे। उप्पलउद्देसओ। ए कमलउद्देशो कह्यो। एगारससयस्सय पढमो उद्देसोसम्मत्तो। ए इग्यारमा शतकनो पहिलो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ १ ॥ सालूकउद्देशक आदिदेइने सातउद्देशा प्राये कमलउद्देशा सरीखा जाणवा विशेष जे जिहाछे ते सूत्रमाहीज कहस्ये। सालुएणभंतेएगपत्तए कि एग जीवे अणेगजीवे। कमलकन्दनाम वनस्पती विशेष ते हेभगवन् एका पत्रक स्यूं एकजीव अथवा अनेकजीव इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगजीवे। हेगौतम एकजीव। एव उप्पलउद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा। ए कमलउद्देशानो वक्तव्यता निरवशेष समस्त जाणवी। जाव अणंतखुत्तो णवरसरीरोगाहणा। यावत् अनन्तवार ऊपना एतलो विशेष शरीरनी अवगाहना। जहन्नेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग। जघन्यथकी अंगुलनो असंख्यातमोभाग। उक्कोसेणधणुपुहुत्त सेसतचेव। उत्कृष्टथकी धनुषपृथक्त्व अवगाहना शेष तिमहीज। सेव भंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे। एगारससयस्सयबिइओ उद्देसो सम्मत्तो। ए ग्यारमाशतकनो बीजो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ २ ॥ पलासेण भंते एगपत्तए कि एगजीवे। किंशुक वनस्पती विशेष ते हेभगवन् एकपत्रक स्यूं एकजीव

नोदेवीसुउववज्जति „ उप्पलकेसरत्ताएत्ति ॥ इह केसराणि कर्णिकापरितोवयवा ॥'उप्पलकण्णियत्ताएत्ति ॥ इहतु कर्णिका बीजकोश ॥ उप्पलथि ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥ हणाए वणस्सइकाइयाण तहा भाणियव्वा । अह भंते! सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता उप्पलमूल त्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलणालत्ताए उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकण्णियत्ताए उप्पलथिभगत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असति अदुवा अणंतखुत्तो सेव भंते भंतेत्ति उप्पलउद्देसओ ॥ एगारससय

॥ अनुवाद ॥ किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते एव यथा व्युत्क्रान्तिके उद्वर्त्तना वनस्पतिकायिकाना भणिता तथा (अत्रापि) भणितव्या । अथ भगवन् । सर्वप्राणा सर्वे भूता सर्वे जीवा सर्वे सत्वा उत्पलमूलतया उत्पलकन्दतया उत्पलनालतया उत्पलपत्रतया उत्पलकेसरतया उत्पलक र्णिकतया उत्पलथिभगतया उत्पन्नपूर्वा ? हन्त गोतम । असकृदथवाऽनन्तकृत्वस्तदेव भदन्त ! भदन्त ! इत्युत्पलोद्देशक ॥ एकादशशते प्रथ

॥ भाषा ॥ र ३० । तएभते जीवा अणतर उव्वट्टित्ता कहिगच्छति कहिंउववज्जति । तेह हेभगवन् । जीव अन्तररहित नीकलीने किसी गति जाय किसे स्थानके ऊप जे । किणेरइएसु उववज्जति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति । स्यू नारकीने विषे ऊपजे अथवा तिर्यचयोनिकनेविषे ऊपजे । एवजहा वक्कतीए उवट्टणाए वणस्सइकाइयाण तहाभाणियव्वा । इम जिम पन्नवणाना छट्ठा पदनेविषे ,उव्वट्टणाएत्ति, उद्वर्त्तनाकहिये तिहाथकी निकलवो ते अधिकारने विषे वन स्पतीकायिकनो उद्वर्त्तन कह्यो तिम इहा निरवशेष समस्त जाणवो द्वार ३१ । हिवे मूलादिकने विषे सर्वजीवनो उपपात द्वार कहेछे । अहभते सव्वे पाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता । अथ हेभगवन् सर्वप्राणी सर्वभूत सर्वजीव सर्वसत्व । उप्पलमूलत्ताए उप्पलकंदत्ताए उप्पलणालत्ताए । उत्पलमूलप णे करी कमल कन्दपणे करी कमलने नालपणे करी । उप्पलपत्तत्ताए उप्पलकेसरत्ताए उप्पलकण्णियत्ताए । उत्पलने पत्रपणे करी कमलने केसरपणे क री, कर्णिकनीपासे अवयव उत्पल कर्णिकापणे करी बीजकोश । उप्पल थिभगत्ताए उववण्णपुव्वा । कमलने थिबुकपणेकरी जिहा ते पत्र ऊपजे ते थिबुक कहिये ऊपना पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असति अदुवा अणतखुत्तो । हागौतम वारम्वारऊपना अथवा अनन्तवार ऊपना सर्व जीव

॥ टीका ॥

॥ सालूकोद्देशकादय समोद्देशका प्राय उत्पलोद्देश
नगताऽपि ॥ विभगाच यत पत्राणि प्रभवन्ति ॥ एकादशशते प्रथमः ॥ १ ॥ देवेसुनउववज्जतित्ति ॥ तस्यायमर्थ-उत्पलोद्देशकेहि देवेभ्य
कममानगमा , विशेष पुन र्यो यत्र स तत्र सूत्रसिद्ध एव नवर पलाशोद्देशके यदुक्त ॥ देवेषूत्पद्यन्ते इतिवाच्यमप्रशस्तत्वा त्तस्य, यत स्ते प्रशस्तेष्वेवोत्पलादिवनस्पतिषू त्पद्यन्तइति, तथा॥
उद्वृत्ता उत्पले उत्पद्यन्तइत्युक्त मिहतु यं पलाशे नोत्पद्यन्ते इतिवाच्यमप्रशस्तत्वा त्तस्य, यत स्ते प्रशस्तेष्वेवोत्पलादिवनस्पतिषू त्पद्यन्तइति, तथा॥ इयमत्र भावना-यदा किल तेजोलेश्यायुतो देवत्वा दुद्वृत्य
लसासुत्ति ॥ लेश्याद्वारे इदमध्येयमिति वाक्यशेष स्तदेव दर्श्यते ॥ तेणमित्यादि ॥

॥ सूत्र ॥

णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
एव उप्पलउद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, णवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,
उक्कोसेण गाउयपुहत्तं देवा एएसु नउववज्जंति, लेसासु-तेणं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा नीललेस्सा का
उलेस्सा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेवा नीललेस्सेवा काउलेस्सेवा छव्वीसंभंगा सेसं तचेव सेव भंते भंतेत्ति ॥

अनुवाद

भणितव्या नवर शरीरावगाहना जघन्यतोऽङ्गुलस्याऽसङ्ख्येय भागमुत्कर्षत. क्रोशपृथक्त्वम् । देवा एतेषु नोत्पद्यन्ते, लेश्यासु-ते भदन्त । जीवा
किं कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या ? गौतम । कृष्णलेश्योवा नीललेश्यो वा कापोतलेश्योवा षड्विंशतिर्भङ्गा शेष तचैव तदेव भदन्त ।

॥ भाषा ॥

इत्यादि । एव उप्पलउद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसाभाणियव्वा । इम कमल उद्देशकनी वक्तव्यता समस्तप्रकारे कहवी । णवर सरीरोगाहणा जहन्नेणं
अंगुलस्स असखेज्जइभाग । एतलोविशेष शरीरनी अवगाहना जघन्यथकी अगुलनो असख्यातमोभाग । उक्कोसेण गाउयपुहत्त देवाएएसुनउववज्जति ।
उत्कृष्टथकी गाऊ पृथक्त्व कहवी देवमरी एह पलाशने विषे न ऊपजे पलाशने अप्रशस्तपणा थकी देवप्रशस्त वनस्पतीने विषे ऊपजे एहवो नियमछे ।
लेसासु । लेश्यानेविषे विशेषछे ते कहेछे । तेण भते जीवा कि कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा । तेहनेविषे हेभगवन् स्यू कृष्णलेश्यावन्त हुवे नीललेश्या
वन्त हुवे कापोतलेश्यावन्त हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कण्हलेस्सेवा नीललेस्सेवा काउलेस्सेवा । हेगौतम कृष्णलेशी एकवचने नीललेशी एकवचने का
पोतलेशी एकवचने । छव्वीसभगा सेसतचेव । इहा छव्वीस २६ भङ्गा हुवे, तेजूलेश्याना अभावथकी देव न ऊपजे तेमाटे शेष सर्व तिमहीज कहवो । से

॥ टीका ॥ वनस्पतिषू त्पद्यते तदा तेषु तेजोलेश्या लभ्यते नच पलाशे देवत्वोद्वृत्त उत्पद्यते पूर्वोक्तयुक्ते रेवमेह तेजोलेश्या नसम्भवति तदभावाच्चाद्या

॥ मूल ॥ एगारससयस्सय तइओ उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ३ ॥ कुंभिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, णवरं ठिइजहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं सेसं तचेव सेवं भंते भंतेत्ति॥ एगारससयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ४ ॥ नालिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा सेवं भंते

॥ अनुवाद ॥ भदन्त! इति ॥ एकादशशते तृतीय ॥ ११ ॥ ३ ॥ कुम्भिका भदन्त! एकपत्रका किमेकजीवाऽनेकजीवा? एव यथा पलाशोद्देशके तथा भणितव्यम्, नवरं स्थितिर्जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्त्तं, उत्कर्षतो वर्षपृथक्त्वम्। शेष तथैव तदेव भदन्त! भदन्त! इति ॥ एकादशशते चतुर्थोद्देश ॥ ११ ॥ ४ ॥ नालिका भदन्त! एकपत्रका किमेकजीवानेकजीवा एव कुम्भिकोद्देशकवक्तव्यता निरवशेषा भणि

॥ भाषा ॥ वभते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्य छे अन्यथा नही। एगारससयस्सय तइओ उद्देसो सम्मत्तो। ए इग्यारमा शतकनो त्रीजोउद्देशो परीपूर्णथयो ११ ॥ ३ ॥ कुंभिएणंभते एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे। कुंभिक वनस्पतीविशेष हेभगवन् एकपत्रक स्यूं एकजीव अनेकजीव। एव जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे। इम जिम पलासउद्देशानेविषे कह्यु तिम इहा पणि कहवो। णवरंठिई जहन्नेण अंतोमुहुत्त। एतलोविशेष स्थिति जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त। उक्कोसेण वासपुहुत्त सेस तचेव। उत्कृष्टथकी वर्ष पृथक्त्व जाणवो शेष तिमहीज जाणवो। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्यु ते सत्य छे अन्यथा नही। एगारससयस्सय चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो। ए इग्यारमा शतकनो चोथो उद्देशो अर्थथी लिख्यो ११ ॥ ४ नालिएणंभते एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे। नालिका वनस्पतीविशेष हेभगवन् एकपत्रक स्यूं एकजीव अथवा अनेकजीव। एव कुंभिउद्देसग वत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा। इम जिम कुंभीउद्देशानेविषे वक्तव्यता कही ते सर्व इहा पणि करवी। सेवभते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकह्युते

॥ टीका ॥ एव तिस्रोलेश्या इह भवन्ति एतासु च षड्विंशति भङ्गका स्थापना पदानामेतावतामेव भावादिति, एतेषुचोद्देशकेषु नानात्वसङ्ग्रहार्था स्त्रिस्रोगाथा --सालुम्मिधणुपुहत्त होइपलासेयगाउयपुहत्त । जोअणसहस्समहियं अवसेसाणतुछप्पि ॥ १ ॥ कुम्भीइनालियाए वासपुहत्तठिईउवोधव्वा ।

॥ मूल ॥ भंतेत्ति ॥ एगारससयस्स पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ५ ॥ पउमेणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारससयस्सय छठो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ६ ॥ कण्णिएणं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं चेव णिरवसेसं भाणियव्वं सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारससयस्स सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ७ ॥

अनुवाद तव्या तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति ॥ एकादशशते पञ्चम ॥ ११ ॥ ५ ॥ पद्म भदन्त ! एकपत्रक किमेकजीवमनेकजीवमेवमुत्पलोद्देशकवक्तव्यता निरवशेषा भणितव्या तदेव भदन्त ! २ इति ॥ एकादशशते षष्ठ ॥ ११ ॥ ६ ॥ कर्णिका भ० ! एकपत्रका किमेकजीवा ? एवं चेव निरवशेषं भणितव्यम्, तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति ॥ एकादशशते सप्तम. ॥ ११ ॥ ७ ॥

॥ भाषा ॥ सत्यछे । एगारससयस्य पचमो उद्देसो सम्मत्तो । ए इग्यारमा शतकनो पचमो उद्देशो परीपूर्णो ११ ॥ ५ ॥ पउमेणभंतेएगपत्तए कि एगजीवे अणेगजीवे । पदम कहता कमल हेभगवन् ! एकपत्रक छे एकजीव अथवा अनेकजीव । एवउप्पलुद्देसगवत्तव्वया णिरवसेसा भाणियव्वा । इम कमलउद्देशानो वक्तव्यता निरवशेष समस्त कहवी । सेवंभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! एगारससयस्सयछट्ठो उद्देसो सम्मत्तो । ए इग्यारमा शतकनो छट्ठो उद्देशो परीपूर्णो ११ ॥ ६ ॥ कण्णिएणभंते एगपत्तए कि एगजीवे अणेगजीवे । कर्णिका कमलजाति हेभगवन् ! एकपत्रक छे एकजीव अनेकजीव इत्यादि । एवचेव णिरवसेस भाणियव्व । इमहीज कमलउद्देशानीपरे सगलो जाणवो । सेवंभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! एगारससयस्स सत्तमो उद्देसोसम्मत्तो । ए इग्यारमा शतकनो सातमो उद्देशो अर्थथी लह्यो ११ ॥ ७ ॥ णालिएणभंते एगपत्तए

॥ टीका ॥

दसवाससहस्साइं अवसेसाणतुक्कस्सं पि ॥ २ ॥ कुम्भीइनालियाए होंतिपलासेयतिन्निलेसाउ । चत्तारिउलेसाउ अवसेसाणतु पचवहति ॥ ३ ॥ एका दशशते द्वितीयादयो ऽष्टमान्ता ॥ २ ॥ अनन्तरमुत्पलादयोऽर्था निरूपिता एव भूताद्यार्थान् सर्वज्ञएव यथावत् ज्ञातु समर्था

॥ मूल ॥

नलिएणं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे एवं चेव णिरवसेसं जाव अणंतखुत्तो गाहा—सालुंमि धणुपुहुत्त होइपलासेयगाउयपुहुत्तं । जोअणसहस्समहियं अवसेसाणतुबराहपि ॥ १ ॥ कुंभीएनालीए वासपुहुत्तठिईउनेवाधव्वा । दसवाससहस्साइं अवसेसाणतुबराहपि ॥ २ ॥ कुंभीएनालियाए होंतिपलासेय तिन्निलेसाउ । चत्तारिउलेस्साउ अवसेसाणतुपचराह ॥ ३ ॥ सेवं भंते भंतेत्ति ॥ एगारससयस्स अठमो

॥ अनुवाद ॥

नलिन भदन्त ! एकपत्रक किमेकजीवमनेकजीवम् , एवचैव निरवशेष यावदनन्तकृत्व , गाथा –तासा चायमर्थम्–शालूके धनु पृथक्त्व मव गाहनेतियोग , भवतिपलाशेच क्रोशपृथक्त्व योजनसहस्रमधिक मवशेषाणा तु वपा मपीति ॥ १ ॥ कुम्भ्याच नाल्याच वर्षपृथक्त्व स्थिति स्तु वोद्धव्या दश वर्षसहस्राणि अवशेषाणान्तु पक्षामपीति ॥ २ ॥ कुम्भ्याचनाल्याच भवन्तिपलाशेच तिस्रो लेश्या चतस्रो लेश्या अवशेषाणान्तु पचा

॥ भाषा ॥

कि एगजीवे अणेगजीवे । कमल वनस्पतीविशेष ते हेभगवन् । एकपत्रक स्यू एकजीव अथवा अनेकजीव । एवचेव णिरवसेस जाव अणंतखुत्तो । इमज निश्चे निरवशेष यावत् अनन्त बार ऊपना, ए सर्व उद्देशमाहे विशेषछे ते कहेछे—सालुंमिधणुपुहुत्त होइपलासेयगाउयपुहुत्त । जोअणसहस्समहिय अवसेसाणतुक्कस्सं पि ॥ १ ॥ सालूनेविषे अवगाहना धनुषपृथक्त्व हुवे पलाशनेविषे अवगाहना गाऊ पृथकत्व योजन सहस्र अधिक थाकता छनी अवगा हना कहवी ॥ १ ॥ कुंभीएनालीए वासपुहुत्तठिईउबोधव्वा । दसवाससहस्साइं अवसेसाणतुक्कस्सं पि ॥ २ ॥ कुंभी अने नालिकानी स्थिति वर्ष पृथकत्व कहवी दशसहस्र वर्षनी स्थिति अवशेष छनी कहवी ॥ २ ॥ कुंभीएनालियाए होंतिपलासेयतिन्निलेसाओ । चत्तारिउलेस्साओ अवसेसाणतुपचण्ह ॥ २ ॥ तथा कुंभी नालिक हुवे पलाश ए तीननेविषे तीनलेश्या चारलेश्या हुवे अवशेष पचाइने ॥ २ ॥ सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । एगारससयस्सअट्ठमोउ

॥ टीका ॥ नपुन रत्नो द्वीपसमुद्रानिव शिवराजर्षिरिति सम्बन्धेन शिवराजर्षिसंविधानकं नवमोद्देशकं प्राह–तस्याचेदमादिसूत्र ॥ तेणकालेणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे णामं णयरेहोत्था वसन्नो,
उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ८ एत्थणं सहस्संबवणेणामं उज्जाणे होत्था,
तस्सणं हत्थिणापुरस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थणं सहस्संबवणेणामं उज्जाणे होत्था,
सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निगासे सुहसीयलच्छाए मणोरमे साउफले अकंटए पासादीए जाव
पडिरूवे तत्थणं हत्थिणापुरे णयरे सिवे णामं राया होत्था, महयाहिमवंत वसन्नो, तस्सणं सिवस्सरन्नो

॥ अनुवाद ॥ एकादशशते ऽष्टमोद्देश ॥ ११ ॥ ८ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये हस्तिनागपुर
नाम् ॥ ३ ॥ तदेव भदन्त । भदन्त । इति ॥ तस्य हस्तिनागपुरस्य नगरस्य बहिस्ता दुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे ऽत्र सहस्राम्रवन नामोद्यानमभवत्, सर्वर्तुकपुष्प
नामनगरमभवत्, वर्णक, तत्र हस्तिनागपुरे नगरे शिवो नाम
फलसमृद्ध रम्य नन्दनवनसन्निकाश सुखशीतलच्छाय मनोरम स्वादुफलमकण्टक प्रासादीय यावत्प्रतिरूप,

॥ भाषा ॥ ८ ॥ पाछले उद्देशे उत्पल आदि अनेक पदार्थ कह्या ते स
दृहेसोसम्मत्तो । ए ग्यारमा शतकनो आठमो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ ८ ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे । हत्थिणापुरेणामणयरेहोत्थावन्न
र्वस जाणे अनेरो न जाणे ते इहां शिव राजऋषि कहियेछे । तेणकालेणं तेणं समएणं । इहां ण वाक्यालंकारे, हस्तिनापुर
था । हस्तिनापुर नामे नगर हुवे एहनो वर्णक उवाईउपागनीपरे कहवो । तस्सणहत्थिणापुरस्सणयरस्सवहिया । तेहने ण वाक्यालंकारे, सहस्राम्रवन नामे
नामे नगरने बाहिर । उत्तरपुरच्छिमेदिसिभागे । ईशान कूणिनेविषे । एत्थणसहस्संबवणेणामउज्जाणेहोत्था । इहां ण वाक्यालंकारे, सहस्राम्रवन नामे
उद्यान हुवे । सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे । सर्व ऋतुनेविषे फूल फलेकरी समृद्धछे रमणीकछे । णंदणवणसन्निगासे सुहसीयलच्छाए मणोरमे । नन्दन
वन समान वन एहछे सुखदायक शीतलछायाछे हचनी जिहा मन रमै इसो । साउफले अकंटए पासादीए जाव पडिरूवे । मिष्ठ फलछे जे हचना क
एटालाहच रहित देखवायोग्य यावत् प्रतिरूप एहवो वनछे । तत्थणहत्थिणापुरेणयरे सिवेणामरायाहोत्था । तिहां ण वाक्यालंकारे, हस्तिनापुरनामे

॥ टीका ॥

महयाहिमवतवणओत्ति ॥ अनेनमहयाहिमवतमहंतमलयमंदरमहिंदसारेइत्यादिराजवर्णकोवाच्यइतिसूचित, तत्र महाहिमवानिव महान् शेषरा जापेक्षया तथा मलय पर्वतविशेषो मन्दरो मरु महेन्द्र शक्रादि देवराज स्तद्वत्सार प्रधानो य स तथा ॥ सुकुमालवण्णओत्ति ॥ अनेनच सुकु मालपाणिपायेत्यादिराज्ञीवर्णको वाच्य इतिसूचित, ॥ सुकुमाल जहा सूरियकंते जाव पच्चुवक्खमाणे २ विहरइत्ति ॥ अस्यायमर्थ सुकुमालपाणि पाए लक्खणवंजणगुणोववेए इत्यादिना यथा राजप्रश्नकृताभिधाने ग्रन्थे सूर्यकान्तोराजकुमार, पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ इत्येतदन्तेन वर्णके न वर्णित स्तथाय वर्णयितव्य ॥ पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ त्येतच्चैव मिह सम्बन्धनीय-सेणं सिवभद्देकुमारे जुवराया यावि होत्था, सिवस्स रण्णो रज्जंच रट्ठंच बलंच वाहणंच कोसंच कोठागारंच पुरंच अंतेउरंच जणवयंच सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहरइत्ति वाणप्पत्थत्ति ॥ वनेभवा वानीप्रस्था

॥ मूल ॥

धारणीणाम देवी होत्था, सुकुमाल वण्णओ, तस्सणं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारणीए अत्तए सिवभद्देणामकुमार होत्था, सुकुमाल जहा सूरियकंते जाव पच्चुवेक्खमाणे प २ विहरइ । तएणं तस्स सिवस्सरण्णो अन्नया

अनुवाद

राजाऽभवत्, महाहिमवान् (प्रभृति) वर्णक, तस्य शिवराज्ञो धारिणी नाम्नी देव्यभवत्. सुकुमार (प्रभृति) वर्णक, तस्य शिवस्य राज्ञ पुत्रो धारिण्यात्मज शिवभद्रनाम्ना कुमारो ऽभवत्' सुकुमार (प्रभृति) यथा सूर्यकान्तो याव त्प्रत्यपेक्षमाण २ विहरति, तदा तस्य शिव

॥ भाषा ॥

नगरनेविषे शिव इसेनामे राजा हवे। महयाहिमवत वर्णओ। महाहिमवन्तनो परे वर्णक कहवो। तस्सणसिवस्सरणो। तेहने शिवनामे राजाने। धा रणीणामदेवीहोत्था सुकुमालवण्णओ। धारणीनामे देवी हुइ सुकुमाल इत्यादिक वर्णन करवो। तस्सणसिवस्सरण्णोपुत्ते धारणीए अत्तए। तेह शिवरा जानो पुत्र धारणीदेवीनो आत्मज। सिवभद्देणाम कुमारेहोत्था। शिवभद्रनामे कुमार हवे। सुकुमालजहा सूरियकंते। सुंवाला हाथ पग जेहना इम जिम सूर्यकान्तनो अधिकार राजप्रश्न उपाङ्गनेविषे कह्यो तिम इहा पणि कहवो। जाव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ। यावत् राज्यचिन्ता करतोथको २ विचरे। तएण तस्ससिवस्सरण्णो। तिवारे ते शिवराजाने। अण्णयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि। अन्यदा किवारे के मध्यरात्रिना कालसमयने

कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरंचिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, अ
त्थि ता मे पुरा पोराणाणं जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं वड्ढामि। पसूहिं वड्ढामि। रज्जेण वड्ढामि। एवं
रट्ठेणं बलेण वाहणेणं कोसेण कोठागारेणं पुरेण अंतेउरेणं वड्ढामि। विपुलधणकणगरयण जाव संतसा
रसावदेज्जेणं अतीव २ अभिवड्ढामि तं किं ण अहं पुरापोराणाण जाव एगंतसोक्ख उव्वेहमाणे विहरामि

कदाचित्पूर्वरात्रापररात्रकालसमये राज्यधुरं चिन्तयतोऽय मेतद्रूपो ऽभ्यर्थित (प्रभृति) यावत्समुत्पन्नवान्–अस्ति तावन्मम
स्य राज्ञो ऽन्यदा कदाचित्पूर्वरात्रापररात्रकालसमये राज्यधुर चिन्तयतोय मेतद्रूपो ऽभ्यर्थित (प्रभृति) यावत्समुत्पन्नवान्–अस्ति तावन्मम
पुरा पुराणाना यथा तामले यावत्पुत्रै पशुभिश्च वर्द्धे राज्येन वर्द्धे' विपुलधनकनकरजत (प्रभृति) यावत्सत्सारस्वापतेयेनातीवातीवाभिवर्द्धे,
तत्किमहं पुरा पुराणाना याव देकान्तसौख्यमुञ्जानोविहरामि, तद्यावन्नावदहं हिरण्येन वर्द्धे, तथैव यावदभिवर्द्धे, यावच्च मे सामन्त रा

त्रिषे। रज्जधरचिंतेमाणस्स। राज्यधुराने चिन्तवता थकाने। अयमेयारूवे अब्भत्थिए। एह एहवे रूपे आत्मा आश्रयीने। जाव समुप्पज्जित्था अस्तिता
मे पुरापोराणाण जहा तामलिस्स। यावत् मनोगत सङ्कल्प उपनो छे पहिला माहरा जूनातप अने दाननाफल इत्यादि जिम तामलिने अधिकारे क
ह्यु तिम इहा पणि कहवो। जाव पुत्तेहिंवड्ढामि पसूहिंवड्ढामि रज्जेणवड्ढामि। यावत् पुत्रेकरी बध्यो चतुष्पद तिर्यंकरी बध्यो राज्येकरी बध्यो। ए
व रट्ठेण बलेण वाहणेण कोसेण कोठागारेण पुरेण अंतेउरेण वड्ढामि। इम रथे करी कटके करी वाहने करी भण्डारे करी कोठागारे करी पुरे करी
अंत.पुरे करी बध्यो। विउलधणकणग रयण। विस्तीर्ण धन सुवर्ण रतन। जाव संतसारसावएज्जेण अतीव २ अभिवड्ढामि। यावत् विद्यमान प्रधान
धन तिणेकरी घणू अतिशये करी बध्यो। तंकिण्ण अहपुरापोराणाण जाव एगत सोक्ख। तेह भणी स्यू छ पहिला भवनेविषे कीधा जे तप दानादिक
तेणे करी यावत् एकान्त सुख। उव्वेहमाणे विहरामि। भोगवतो थको विचरू छू। तजाव ताव अहहिरण्णेण वड्ढामि। तेहभणी जालगे पहिला छ क
पे करी बध्या। तचेव जाव अभिवड्ढामि जावचमे। तिमहीज यावत् घणू बध्यो जा लगे माहरे। सामंतरायाणोविवसे वट्टति। सामन्तराजा विश

॥ टीका ॥

न प्रस्था ऽवस्थितिर्वनी प्रस्था येषां ते वानप्रस्था, अथवा ब्रह्मचारीगृहस्थश्च वानप्रस्थोयतिस्तथा इति चत्वारो लोकप्रतीता आश्रमा एतेषांच तृतीयाश्रमवर्त्तिनो वानप्रस्थाः ॥ होत्तियत्ति ॥ अग्निहोत्रिका ॥ पोत्तियत्ति ॥ वस्त्रधारिण ॥ कोत्तियत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्राप्ययमेवार्थ ॥ जहा उववाइए ॥ इत्यतस्सा दतिदेशादिद दृश्य—कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंवउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा समज्जगा निमज्जगा सपक्खाला दक्खि

॥ मूल ॥

तं जाव ताव अहं हिरण्णेण वड्ढामि। तंचेव जाव अभिवड्ढामि। जावंच मे सामंतरायाणो विवसे वट्टंति, तावतामे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं तंपिय ताव भंडगं घडा वेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोहकडाहकडुच्छुयं तंपिय तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलवाणपत्था तावसा भवंति तंजहा—होत्तिया पोत्तिया जहा उववाइए—कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई जाव

॥ अनुवाद ॥

जानोपि वशे वर्त्तन्ते तावतामे श्रेय, श्व प्रादु प्रभातायां यावज्ज्वलन्त, सुबहुलोहीलोहकटाहकडुच्छुकं, तदपिच तापसभाण्डकं घटापयित्वा शिवभद्रं कुमारं राज्ये स्थापयित्वा तत्सुबहु लोहकटाहकडुच्छुकं तदपिच तापसभाण्डकं गृहीत्वा ये इमे गङ्गाकूलवानप्रस्थास्तापसा भवन्ति

॥ भाषा ॥

पे करी वश्यवर्त्ते छे। तावतामेसेय कल्लपाउप्पभायाए जाव जलंत। ता पछिना प्रभाते श्रेय भलूं कालिहे प्रभात प्रगटथया यावत् सहस्र किरण सूर्य जगा। सुबहुलोहीलोहकडाहकडुच्छुय। घणा लोहना रोटीपचाववानी पाव कडाह कडछी प्रत्र हलाववानी। तंपिवतावसभंडगघडावेत्ता। ते पणि तापसनेयोग्य एहवो भण्डपात्र प्रते घडावीने। सिवभद्दकुमार। शिवभद्र कुमार प्रते। रज्जेठावेत्ता। राज्ये स्थापोने। तंसुबहुलोहकडाहकडुच्छुय। तेह घणा लोहना कडाह कडछी प्रमुख। तंपिय तावसभंडगगहाय। ते पिण तापसयोग्य भण्डपात्र प्रते ग्रहीने। जेइमेगंगाकूलवाणपत्थातावसा भवंति तं०। जिके गङ्गाना तटनेविषे वननेविषे रहे ते वानप्रस्थ कहिये एहवा जे तापस हुवे ते कहेछे—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया। अग्निहोमी वस्त्रधारी भूमि शय्या करे। जण्णई सड्ढई थालई। यज्ञकारक श्रद्धावन्त उपगरण सीधंज रहे। हुंवउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा संमज्जगा निमज्जगा सपक्खाला।

॥ टीका ॥

णाकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धया हत्थितावसा उद्दकगा दिसापोक्खिणो वक्कवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वायुभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतय पत्तपुप्फफलाहारा जलाभिसेयकढिणगत्ता आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियमिति ॥ तत्र ॥ कोत्तियत्ति ॥ भूमिशायिन ॥ जन्नइत्ति ॥ यज्ञयाजिन ॥ सड्डइत्ति ॥ श्राद्धा ॥ थालइत्ति ॥ गृहीतभाण्डा ॥ हुंवउट्टत्ति ॥ कुण्डिकाश्रमणा ॥ दंतुक्खलियत्ति ॥ फलभोजिन ॥ उम्मज्जगत्ति ॥ उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति ॥ सम्मज्जगत्ति ॥ उन्मज्जनस्यैवासकृत्करणेन ये स्नान्ति ॥ निम्मज्जगत्ति ॥ स्नानार्थं निमग्ना एव ये क्षणं तिष्ठति ॥ संपक्खालत्ति ॥ मृत्तिकादिघर्षणपूर्वकं यङ्गं क्षालयन्ति ॥ दक्खिणकूलगत्ति ॥ यैर्गङ्गाया दक्षिणकूल एव वास्तव्यं ॥ उत्तरकूलगत्ति ॥ उक्त

॥ मूल ॥

उट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा णिम्मज्जगा संपक्खाला उद्धकंडूयगा अहोकंडूयगा दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धया हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अंबुवासिणो वाउवासिणो जलवासिणो वेलवासिणो अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा

॥ भाषा ॥

बूडो बारबार न्हावै माटा पहिला घसी पछै स्नानकरै पाणीमाहि बूडो बारबार स्नानकरै पाणीमाहि पैसि तत्काल नीकले बारबार न्हावै माटी पहिला घसी पछै नामकरै जे यारो फलनोभोजी एकवार पाणीमाहि पैसि तत्काल नीकले बारबार स्नानकरै। उद्धकंडूयगा अहोकंडूयगा दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धया हत्थितावसा। नाभि ऊपर खाज खणे नीचे न खणे नाभि नीचे खाज खणे ऊपर न खणे जे कहे गंगाने दाहिणे कूलज वसिवा जे इम कहै गंगाने उत्तर कूलेज वसिवा शंख बजावी जीमे जे अनेरो कोई न आवे जे कूल ऊभा रही शब्दकरी जीमे मृग विणासे जे एक हस्ती विणासी वर्ष टीहलगी जीमे। जलाभिसेयकढिणगत्ता। जल मांहि पैसी कोई न आवे जे कूल ऊभा रही शब्दकरी जीमे मृग विणासे जे एक हस्ती विणासी वर्ष टीहलगी जीमे। जल ऊपर अने जे वायरज रहै जे वल्कलादि वृक्षावकाश रहै जे ऊंन समा कठिन गात्र जेहना। अंबुवासिणो वाउवासिणो जलवासिणो वेलवासिणो। पाणीज पावाने रहै वायरोज भक्ष सेवाल भक्ष। मूलाहारा कंदाहारा पंचस पाठान्तर चउ वासिणो। अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो। पाणीज पावाने रहै वायरोज भक्ष सेवाल भक्ष। मूलाहारा कंदाहारा

विपरीता ॥ संखधमगत्ति ॥ शङ्खं ध्मात्वा ये जेमन्ति यद्यन्य कोपि नागच्छतीति ॥ कूलधमगत्ति ॥ ये कूले स्थित्वा शब्दं कृत्वा भुञ्जते ॥ मियलु
द्धयत्ति ॥ प्रतीता एव ॥ हत्थितावसत्ति ॥ ये हस्तिनं मारयित्वा तेनैव बहुकालं भोजनतो यापयन्ति ॥ उद्दंडगत्ति ॥ ऊर्द्धकृतदण्डा ये सञ्चरन्ति ॥
दिसापोक्खिणोत्ति ॥ उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति ॥ वक्कवासिणोत्ति ॥ [illegible] ॥ चेलवासिणोत्ति ॥ व्यक्तं पाठान्तरे ॥
वेलवासिणोत्ति ॥ समुद्रवेलासन्निधिवासिन ॥ जलवासिणोत्ति ॥ ये जलनिमग्ना एवासते शेषाः प्रतीता जलाभिसेयकढिणगायत्ति ॥ ये
ऽस्नात्वा न भुञ्जते स्नानाद्वा पाण्डुरीभूतगात्रा इति वृद्धाः । क्वचिज्जलाभिसेयकढिणगायभूयत्ति । दृश्यते तत्र जलाभिषेककठिनगात्रभूता प्रा
प्ता ये ते तथा ॥ इंगालसोल्लियंति ॥ अङ्गारैरिव पक्वं ॥ कंडुसोल्लियंति ॥ कन्दुपक्वमिवेति ॥ दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणंति ॥ एकत्र पारणके पू

तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा उद्दंडगा रुक्खमूलि
या मंडलिया बिलवासिणो वक्कवासिणो दिसापोक्खिणो आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियंपिव

तद्यथा-होत्रिका पौत्रिका यथौपपातिके यावत् आत्मानं भावयन्तो विहरन्ति (अत्र पदकानामर्थस्तु टीकातोऽवसेयः) तत्र ये ते दिक्प्रोक्षिण

पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा । मूलनो आहार करे कंदनो आहार करे पत्रनो आहार करे छाल खाइ फूल खाइ फल खाइ
बीज खाइ । परिसडियकंदमूलतयपत्तपुप्फफलाहारा । आप मेलें पड्या [illegible] कंदमूल [illegible] पत्र फूल फल तेहना आहारना करण
हार । उद्दंडगा रुक्खमूलिया । ऊंचो दंड करीने चाले [illegible] । [illegible] । [illegible] । बिलवासिणो वक्कवासिणो दिसापोक्खि
णो । दिशिने [illegible] पाणी छांटी फूल फल ले । आयावणाहिं [illegible] । [illegible]
तापें करीने । इंगालसोल्लियंपिव कंदुसोल्लियंपिव कट्ठसोल्लियंपिव । [illegible]
[illegible]

॥ टीका ॥ कर्मणि पारणककरणं तत्तप कर्म दिक्चक्रवाल वंस्यादिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुंक्ते द्वितीयेतु दक्षिणस्यामित्येव दिक्चक्रवालेन यत्र तप

॥ मूल ॥ कंडुसोल्लियंपिव कठसोल्लियंपिव,, जाव अप्पाणं करेमाणा विहरति, तत्थणं जे ते दिसापोक्खियतावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइएवियणं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि, कप्पइमे जाव जीवाए छठंछठेणं अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव विहरित्तएत्ति कट्टु एवं सपेहेइ २ त्ता कल्लं जाव जलते सुबहुं लोहीलोह

॥ अनुवाद ॥ कास्तापसा स्तेषामन्तिके मुण्डो भूत्वा दिक्प्रोक्षिकतापसतया प्रव्रजितुम्, प्रव्रजितोपिचसन् अयमेतद्रूपमभिग्रहमभिगृहिस्यामि–कल्पते मम यावज्जीव षष्ठषष्ठेनानिक्षिप्तेन दिक्चक्रवालेन तपःकर्मणोर्द्ध्वं बाहू प्रगृह्य प्रगृह्य यावद्विहर्त्तुमितिकृत्वा एव संप्रेक्षते, एव संप्रेक्ष्य ध (प्रभृति) यावज्ज्वलन्ते, सुबहु लोहीलोहकटाह (प्रभृति) याव द्घटापयित्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति, शब्दापयित्वैवमवादीत्–क्षिप्रमे

॥ भाषा ॥ पाछे (?) तापस। घाई एहवो पदछे पणि ते सर्व इहां सूत्रमाहिज कह्या छे। तत्थणं जे ते दिसापोक्खियतावसा। तिहां ते जे दिशाने जले छांटी फलफूल ग्रहै ते तापस। तेसिं अंतियं मुंडेभवित्ता। तेह समीपे मुण्डथईने तापसपणो ग्रहीने। दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए। दिसापोखी तापसपणें प्रवज्या लेस्यू। प कव्वइएवियणं समाणे अयमेयारूव। प्रवज्या लीधाथका एह एहवे रूपे। अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि। अभिग्रह प्रते आदरस्यू। कप्पइमे जावज्जीवाए छ ठ्ठंछ्ठेणं अणिक्खित्तेण। कल्पे मुझने जा जीवू तालगे छठ छठ करी अन्तरहित करी। दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेण। पहिले छठने पारणे पूर्वदिशे जा य पाणी छांटी फलादि आणी आहार करे इम बीजे बीजीदिशि इम फिरतीदिशे फलादि ग्रहै ते दिशाचक्रवाल तप कहिये तिणे तपें करी। उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव विहरित्तत्तिए कट्टु। ऊंचो बाहाओ करे करीने यावत् विचरू इम करीने। एवंसपेहेइ २ त्ता। इम मनमांहि विचारे विचारीने। कल्लं जाव जलते। कालहे यावत् सहस्रकिरण सूर्य ऊगा। सुबहुंलोहीलोह जाव घडावित्ता। घणा लोहना लोहकडाह कडुछा प्रमु

॥ मूल ॥

जाव घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं णयरं सब्भितरबाहिरियं आसिय जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तएणं से सिवे राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं २ विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति, तएणं से सिवे राया अणेगगणनायगदंडनायग जाव संधिवालसद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दकुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं णि

॥ अनुवाद ॥

व भो देवानुप्रिया । हस्तिनागपुरं नगरं साभ्यन्तरबाह्यं आसिक्त (प्रभृति) यावत्तदाज्ञापितं प्रत्यर्प्पयन्ति । तदा सो पि शिवोराजा द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् आव्हापयति' आव्हापयित्वैवमवादीत्—क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया । शिवभद्रस्य कुमारस्य महार्थं महार्घ्यं विपुलं राज्याभिषेकमुपस्थापयत, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा स शिवो राजाऽनेकगणनायकदण्डनायक (प्रभृति) याव त्सन्धि

॥ भाषा ॥

ख तापस योग्य पात्र घडावीने । कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । भाषाकारो सेवकपुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे । खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया । उतावलाथाओ अहोदेवानुप्रियाओ । हत्थिणापुर णयरं सब्भितर बाहिरिय । हस्तिनापुर नगरमांहि सहित बाहिर । आसिय जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति । पाणीप्रमुख थको छांटो 'त्यादि, यावत् ते आज्ञा पाछी आपी ते पणि पछी आपे । तएणसे सिवेराया । तिवारे ते शिव राजा । दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । बीजीवार पणि सेवकपुरुष तेडावे तेडावीने इस कहे । खिप्पामेवभो देवाणुप्पिया । उतावलाथाओ अहो देवानुप्रियाओ । सिवभद्दस्सकुमारस्स महत्थं २ । शिवभद्र कुमारने महाअर्घ महर्घ्य महायोग्य । विउलरायाभिसेयंउवट्ठवेह । विस्तीर्ण राज्याभिषेक प्रते सामग्री सज्जकरो । तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति । तिवारे ते सेवकपुरुष तिमहीज यावत् सज्जकरे । तएणं से सिवेराया । तिवारे ते शिवराजा । अणेगगणनायग दंडनायग । अनेक गणनायक दण्डनायक । जाव संधिवालसद्धिं संपरिवुडे । यावत् स

॥ टीका ॥ नवामाहि इत्येत त्करणा दिद दृश्य-मणुणाद्दि नवामाहि
नुच्यते तेन तप कम्संबेति ॥ ताहि इठाहिं कताहिं पियाहिं, इत्यत्र एव जहाउववाइए ॥

॥ सूत्र ॥ सीयावेंति, णि २ त्ता अठसएणं सोवन्नियाणं कलसाण जाव अठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महया गयाभिसेएणं अभिसिंचंति, म २ त्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभिगंधकासाईए गायाइं लूहेइ, पम्हल २ त्ता सरसेण गोसीसेणं जहेव जमालिस्स अलंकारो जाव कप्परुक्खगंपिव अलंकियविभूसियं करेंति २ त्ता करयल जाव कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता ताहिं इठाहिं क

अनुवाद पालं साधं सम्परिवृत्त शिवभद्रकुमार सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखं निषादयति, निषाद्याष्टशतेन सौवर्णिकानां कलशानां यावदष्टशतेन भौमेयानां कलशानां सर्वर्द्ध्या यावद्रवेण महताराज्याभिषेकेणाभिषिञ्चन्ति, अभिषिच्य पक्ष्मलसुकुमारया सुरभिगन्धकाषाय्या गात्राणि लूहन्ति, लूहयित्वा सरसेन गोशीर्षचन्दनेन यथैव जमालेरलङ्कारो यावत्कल्पवृक्षमिवालङ्कृतविभूषितं कुर्वन्ति, कृत्वा करतल (प्रभृति) यावत्कृत्वा शिव

॥ भाषा ॥ प्रधाने सघाते परिवर्या । शिवभद्रकुमार सिंहासणदरसि । शिवभद्रकुमार प्रते सिंहासन प्रधानने विषे । पुरत्याभिमुख बसीयावेति २ त्ता । पूर्व सन्मुख बेसाणे पूर्व सामुखो बेसाणीने । अठसएणं सोवन्नियाण कलसाण । एकसोआठ सोनाना कलश तिणकरी । जाव अठसएण भोमेज्जाण कलसाण सव्विड्ढीए । एम यावत् एकसोआठ माटीना कलश इत्यादि सर्व ऋद्धिकरी । जाव रवेणमहयारायाभिसेएण अभिसिंचति २ त्ता । यावत् महामहोत्सव शब्देकरी मोटो राज्याभिषेके करी अभिषेक करे मोटो राज्याभिषेक करी । पम्हलसुकुमाल सुरभिगंधकासाई गायाइलूहेइ प पक्ष्म २ त्ता । पक्ष्मसहित सुहाला सुरभिगन्धसहित कषाय रातोवस्त्र तिणकरी गात्र लूहे गात्र लूहीने । सरसेण गोसीसेण । सरस जे गोशीर्षचन्दन तिणे गात्रलेपन करे । जहेव जमालिस्सअलंकारो जाव कप्परुक्खगपिव । जिमहीज जमालीने अलकार पहिराया तिम अलकार पहिरावी यावत् कल्पवृक्षना परे । अलंकियविभूसिय करेइ २ त्ता करयल जाव कट्टु । अलकार शृङ्गारे विभूसित करे करीने हाथ जोडीने यावत् पूर्वलीपरे करी

॥ टीका ॥

जाव वग्गूहिं अणवरयं अभिनंदंताय अभित्थुणंताय एववयासी- जय २ नंदा जय २ भद्दा जय २ नंदा भद्दं ते अजियं जिणाहि जियं पालयाहि जियमज्झवसाहि अजियंच जिणाहि सत्तुपक्खं जियं पालेहि मित्तपक्खं जियविग्घोविय वसाहि तं देवसयणमज्झे इंदोइव देवाणं चंदोइव ताराणं

॥ मूल ॥

ताहिं पियाहिं एव जहा उववाइए कूणियस्स जाव परमाउयं पालयाहिं इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स णयरस्स अन्नेसिंच बहूणं गामागर जाव विहराहित्तिकट्टु जय जय सद्दं पउंजंति, तएणं से सिवभद्दकुमार राया जाए, महयाहिमवंत वण्णओ जाव विहरइ, तएणं से सिवे राया अन्नया कयाइं सोहणंसि ति

॥ अनुवाद ॥

भद्र कुमार जयेन विजयेन वर्द्धापयन्ति, वर्द्धापयित्वा ताभिरिष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभि रेव यथोपपातिके कूणिकस्य यावत्परमायु पालय, इष्टजनसम्परिवृतो हस्तिनागपुरस्य नगरस्यान्येषाञ्च बहूना ग्रामाकर (प्रभृति) यावद्विहर, इतिकृत्वा जयजयशब्दं प्रयुञ्जन्ति, तदा स शिवभद्रकुमारो राजा जात, महाहिमवान् (प्रभृति) वर्णक (वाच्यस्तावत्) यावद्विहरति, तदा स शिवो राजा न्यदाकदाचि त्सोभने ति

॥ भाषा ॥

सिवभद्दकुमार जएण विजएण वद्धावेंति २ त्ता। शिवभद्रकुमारप्रतें जय विजय शब्देंकरी बधावीने। ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं। तिणें इष्ट वचनें करी मनोज्ञ वचनेंकरी प्रीतिकारी वचनेंकरी। एव जहा उववाइए कूणियस्स। इम जिम उवाईउपांगनेविषे कह्यु कूणिकाने अधिकारे कह्यु तिम कहवो। जाव परमाउयपालयाहि। यावत् परम उत्कृष्टो आउखो पालज्यो एतले चिरंजीवी होज्यो। इट्ठजणसंपरिवुडे। इष्टजन संघाते परवर्या थका। हत्थिणापुरस्सणयरस्स अन्नेसिंचबहूण। हस्तिनापुर नगरनो तथा अनेरा घणा। गामागर जावविहराहित्ति कट्टु। ग्राम आगरनो राज्यभोगवतो यावत् विचरज्यो। जय २ सद्द पउंजंति। तू जय तू विजय इम शब्द प्रयुंजे। तएण से सिवभद्दकुमारेराया जाए। तिवारे ते शिवभद्रकुमार राजा हुयो। महयाहिमवंतवण्णओ जाव विहरइ। मोटा हिमवन्तनी परें वर्णकर्कें जेहनो इस यावत् विचरे। तएणसे सिवेराया अण्णयाकयाइं। तिवारे ते शिवराजा अन्यदा किवारे कें। सोहणंसि तिहिकरण दिवस णक्खत्तमुहुत्तंसि। दोषरहित शोभन तिथिकरण दिवस नक्षत्र मुहूर्त्त ए सर्व दोषासवन्धी श्रेष्टमेविषे।

॥ टीका ॥ धरणोइव नागाणं भरहोइव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं अणहसमग्गोय हट्ठतुट्ठोत्ति एतच्च व्यक्तमेवेति ॥ वा

॥ मूल ॥ हिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेंतित्ता मित्त णाइणियग जाव परियणं रायाणो खत्तिएय आमंतइ, आमंतइत्ता तओपच्छा ण्हाए जाव सरीरे भोयण मंडवंसि सुहासणवरगए तं मित्तणाइणियगसयण जाव परिजणेण राईहिं खत्तिएहियसद्धिं विपुलं असणं ४ एवं जहा तामलि जाव सक्कारेइ सम्माणेइ, सम्माणेइत्ता त मित्तणाइणियग जाव परिजण रायाणो खत्ति

अनुवाद थिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्त्ते विपुलमशन पान खादिम स्वादिम मुपस्कारयति, उपस्कारयित्वा मित्रज्ञातिनिजक (प्रभृति) यावत्परिजन राजन्यान् क्षत्रियाश्चामन्त्रयति, आमन्त्र्य तत पश्चात्स्नातो यावच्छरीरो भोजनमण्डपे सुखासनवरगतस्तेन मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धि यावत्परिजनेन राजभि क्षत्रियैश्च सार्द्धं विपुल मशन पान खादिम स्वादिममेव यथा तामलि यावत्सत्कारयति सन्मानयति, सत्कृत्वा सन्मा

॥ भाषा ॥ विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता। विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहार प्रते नयार करावे विस्तीर्ण अशनादि नधावाने। मित्तणाति णियग जाव परियण राया णो खत्तिएय। मित्र ज्ञाती निजक यावत् परिजन राजाप्रते क्षत्रियप्रते। आमंतइ २ त्ता। आमंत्रे नि हतरे स्नान। तओपच्छा ण्हाए जाव सरीरे। तिवारपछे स्नान कीधो यावत् विभूषित शरीरथयो। भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए। भोजनना मण्डप नेविषे सुखासन प्रधाननेविषे बेठा। तमित्तणाइ णियग सयण जाव परिजणेण। ते मित्र ज्ञाती निजक सयण यावत् परिजन दासादि सघाते। राईं हिखत्तिएहिय सद्धि विउलं असणं ४। तथा राजा क्षत्रिय ते सघाते विपुल विस्तीर्ण अशन पानादि ४ आहार। एवं जहा तामलि जाव सक्कारेइ सम्मा णेइ २ त्ता। इम जिम तामलिने परे सर्व जाणवो यावत् भोजन कीधा पूठे ते सर्वने वस्त्रादिके सत्कारे सन्माने सत्कारी सन्मानीने। तमित्तणाइ णि यग जाव परिजण रायाणो खत्तिएय। तेह मित्र ज्ञाती निजक स्वजन यावत् परिजन प्रते तथा राजाप्रते क्षत्रिय प्रते। सिवभद्दकुमारायाण आपुच्छ

॥ टीका ॥ गलवत्यनिवर्थेत्ति ॥ वल्कल वल्क स्तस्येद वाल्कल तद्वस्त्र निवसित येन स वाल्कलवस्त्रनिवसितः ॥ उवरति ॥ उटज स्तापसगृह ॥ किढिणस

॥ मूल ॥ एय सिवभद्दंच रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुयं जाव भंडग गहाय जे इमे गंगाकूलवाणप्पत्था तावसा भवंति तचेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइएवियणं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं गिएहइ, कप्पइ मे जावज्जीवाए छठं तचेव जाव अभिग्गह अभिगिएहइ, अभिगिएहइत्ता पढम छठक्खमण उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं से सिवे राय

अनुवाद नयित्वा त मित्रज्ञातिनिजक यावत्परिजन राजन्यान् क्षत्रियाश्च शिवभद्रञ्च राजानमापृच्छति' आपृच्छ्य सुबहु लोहीलोहकटाहकडुच्छुक या वद्भाण्डक गृहीत्वा य इमे गगाकूलवानप्रस्थास्तापसा भवन्ति तथैव यावत्तेषामन्तिके मुण्डो भूत्वा दिक्प्रोक्षितकतापसतया प्रव्रजित । प्रव्र जितोपिच सन्नयमेतद्रूपमभिग्रह गृह्णाति-कल्पते मम यावज्जीव षष्ठ तथैव यावदभिग्रहमभिगृह्णाति, अभिगृह्य प्रथम षष्ठक्षमणमुपसम्पद्य

॥ भाषा ॥ इ २ त्ता । वली शिवभद्र राजाप्रते पूछे पूछीने । सुबहु लोही लोहकडाह कडुच्छुयं जाव भडग गहाय । घणा लोहसम्बन्धी लोढना कडाए कडुछोप्रमुख यावत् तापसयोग्य भण्डपात्र प्रते ग्रहीने । जे इमे गंगाकूलवाणपत्थातावसा भवति । जिके एह गंगा तटना वसणहार वनवासी तापस हुवे होंसिया इ त्यादिक । तचेव जाव तेसिं अतिय मुंडभवित्ता । जिम पूर्वे कह्या तिमहीज यावत् तेहने समीपे मुण्डधईने । दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए । दिशा पोखी तापसपणें प्रव्रज्या दीक्षा लीधी । पव्वइएवियणसमाणे अयमेयारूव । प्रव्रजित थया थका पणि एह एहवे रूपें । अभिग्गह गिण्हइ । अभिग्रह नियम विशेष प्रते ग्रहे । कप्पइमे जावज्जीवाए । कल्पे मुझने जा जीवू तानगे । छट्ठ तचेव जाव अभिग्गह अभिगिण्हइ २ त्ता । छठ्ठ२ पारणे इत्यादि तिमहीज यावत् अभिग्रहप्रतें ग्रहे अभिग्रहप्रतें ग्रहीने । पढमं छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ताण विहरइ तएणं से सिवे रायरिसी । पहिले छट्ठक्षमण शिवरा जऋषि अंगीकार करीने विचरे तिवारे ते शिवराज ऋषि । पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि । पहिला छठ्ठना पारणाने विषे । आयावणभूमीए पच्चोरुहइ २

॥ टीका ॥ काइयगति ॥ किढिणित्ति ॥ वंशमय स्तापसभाजनविशेषः, तत श्च तयो साकायिकं भारोद्वहनयंत्रं किढिनसाकायिकं ॥ महारायत्ति ॥ लोकपाल ॥ पत्थाणेपत्थियमित्ति ॥ प्रस्थाने परलोकसाधनमार्गे प्रस्थित प्रवृत्त फलाद्याहरणार्थंगमने वा, प्रवृत्त शिवराजर्षि ॥ दक्षयत्ति ॥ समू

॥ मूल ॥ रिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता वालगवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता किढिणसंकाइय गिण्हइ, गिण्हइत्ता पुरच्छिमं दिसिं पोक्खेइ पुरच्छिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवे रायरिसी अभि २ जाणिय तत्थ कं दाणिय मूलाणिय तयाणिय पत्ताणिय पुप्फाणिय फलाणिय बीयाणिय हरियाणिय ताणि अणुजाणउत्ति

अनुवाद विहरति, तदानी स शिवो राजर्षि प्रथमषष्ठक्षमणपारणके आतापनभूम्या प्रत्यारोहति, (अवतरतीत्यर्थ) प्रत्यारुह्य वाल्कलवस्त्रनिवसितो यत्रैव स्वक उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य किठिनसाङ्कामिक (कावड इति प्रसिद्ध) गृह्लाति, गृहीत्वा पौरस्त्या दिशा प्रोक्षति प्रोक्ष्य पूर्वस्यादिश सोमो महाराजा प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु शिव राजर्षिमभिरक्षतु, यानिच तत्र कन्दानिच मूलानिच त्वचश्च पत्राणिच

॥ भाषा ॥ त्ता। आतापनानी भूमिका थकी पाछो वले आतापनानी भूमिकाथको पाछो वलीने। वालगवत्थनियत्थे जेणेवसएउडए तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। वा कलो वस्त्र ते वस्त्र छालथी नीपनो ते पहिरे जिहा पोतानो झोपडो आश्रमछे तिहाआवे तिहा आवीने। किढिणसंकाइय गिण्हइ २ त्ता। वंशमय तापस भाजनविशेष भारवहवानो लाकडी कावड पुष्पादि भार वहे ते ग्रहे ते ग्रहीने। पुरच्छिमंदिसिं पोक्खेइ। पूर्वदिशि प्रतें जलना छाटा नाखे। पुरच्छिमाएदिसाए सोमे महाराया। पूर्वदिशिने विषे सोमनामे महाराजा लोकपाल तेह। पत्थाणेपत्थिय अभिरक्खउ सिवेरायरिसी अभि २ त्ता। जा परलोक साधक मार्गनेविषे प्रवर्त्यो शिवराजऋषि तेहने फल फूल लेता विघन टालो इमकही शिवराजऋषिप्रते विघनथकी राखो इम कहीने। जा णिय तत्थकंदाणिय मूलाणिय तयाणिय पत्ताणियपु प्फाणिय फलाणिय बीयाणिय हरियाणिय। जिके चपुन तिहां कंदछे वली मूलछे वली छालनी

॥ टीका ॥

लान् ॥ कुसेयत्ति ॥ दर्भानेव निर्मूलान् ॥ समिहाउयत्ति ॥ समिध काष्टिका ॥ पत्तामोडच ॥ तरुशाखामोटितपत्राणि ॥ वेदिवड्ढेइत्ति ॥ वेदिका देवाचनस्थान वर्द्धनी वहुकारिका ता प्रयुक्त इति वर्द्धयति प्रमाजयतीत्यर्थ ॥ उवलेवणसमज्जणकरेइत्ति ॥ इत्युपलेपन गोमयादिना स

॥ मूल ॥

कहु पुरच्छिमं दिसि पसरइ, पसरइत्ता जागिय तत्थ कंदाणिय जाव हरियाणिय ताइ गेण्हइ किढिण संकाइय भरेइ किढि २ त्ता दब्भेय कुसेय समिहाउय पत्तामोडच गिण्हेइ, जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता किढिणसंकाइय ठवेइ किढि २ त्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेइत्ता उवलेवणसमज्जणं करेइ,

॥ अनुवाद ॥

पुष्पाणिच फलानिच बीजानिच हरितानिच तान्यनुजानान्त्वितिकत्वा पौरस्त्या दिश प्रसरति २ त्वा यानिच तत्र कन्दानिच यावद्धरितानिच तानि गृह्णाति, गृहीत्वा किठिनसाङ्कायिक भरति' भृत्वा दर्भांकुशान्समिधस्तरुशाखामोटितपत्राणि गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वक उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य किठिनसाङ्कायिक स्थापयति, स्थापयित्वा वेदिं वर्द्धयति (प्रमार्जयतीति) उपलेपनसम्मार्जन करोति' कृत्वा

॥ भाषा ॥

कालछे हचना पानडाछे हचना फूलछे फलछे ते प्रते बीजप्रते नीला अकुर तेहप्रते। ताणिअणुजाणउत्ति कट्टु। तिके आज्ञा द्यो इमकरी। पुरच्छिम दिसि पसरइ २ त्ता। पूर्वदिशि प्रते चाल्या पूर्वदिशि प्रते जाइने। जाणियतत्थ कदाणिय। जिके वली तिहा कन्दछे तेहप्रते। जाव हरियाणिय ताइ गेण्हइ। यावत् हरित नीलाकुराछे तेहप्रते गृहे गृहीने। किढिणसकाइय भरेइ किढि २ त्ता दब्भय। वशमय तापस भाजनविशेष भारवहवानी लाकडी सहित ते पुष्पादिके भरे भरीने समूला डाभ। कुसेय समिहाउय। मूलरहित डाभ पलाशादिकनी लाकडी। पत्ता मोडच गिण्हेइ। वृक्षनी शाखा मो ड्या पानडा ते गृहे गृहीने। जणेवसए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा पोतानो झोडलोछे तिहा आवे तिहा आवीने। किढिणसकाइयठवेइ किढि २ त्ता वेदिवड्ढेइ त्ता। वशमय तापस भाजनविशेष भारवहवानी लाकडी सहित ते ठवे धरती मखे मेल्हीने वेदिका देवार्चन स्थानक ते सार वणीये पूजे पूजीने। उवलेवणसमज्जण करेइ २ त्ता। गोवरप्रमुखे लापे जपर पाणीसो सुहालीकरे लीपी सुहालो करीने। दब्भकलसाहत्थगए। डा

॥ टीका ॥ दर्भा श्च कलशश्च हस्ते गता यस्य स तथा ॥ दब्भसगब्भकलसाहत्थगएत्ति ॥ क्वचित् मज्जनं तु जलेन समार्जनं वा, शोधनं ॥ दब्भकलसाहत्थगएत्ति ॥ दर्भा श्च कलशश्च हस्ते गता यस्य स तथा ॥ दब्भसगब्भकलसाहत्थगएत्ति ॥ क्वचित् तन दर्भेण सगर्भो य कलशक स हस्ते गतो यस्य स तथा ॥ जलमज्जणंति ॥ जलेन देहशुद्धिमात्र ॥ जलकीडंति ॥ देहशुद्धावपि जलेनाऽभिरति ॥ जलाभिसेयति ॥ जलक्षरण ॥ आयतत्ति ॥ जलस्पर्शात् ॥ चोक्खेत्ति ॥ अशुचिद्रव्यापगमात्, किमुक्त भवति ॥ परमसुइभूतेत्ति ॥ देवयपिइकयकज्जे

॥ मूल ॥ जलाभिसेयं करेइ, करेइत्ता आयंते उग्गा करेइत्ता दब्भकलसाहत्थगए जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता गंगामहाणदिं उग्गा हेइ, उग्गाहेइत्ता जलमज्जणं करेइ, करेइत्ता कीडं करेइ, करेइत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेइत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूते देवयपित्तियकयकज्जे दब्भसगब्भकलसहत्थगए गंगाओ महाणदीओ पच्चुत्तरइ गंगा २ त्ता

॥ अनुवाद ॥ दर्भकलशहस्तगतो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य गङ्गां महानदीमवगाहते, अवगाह्य जलमज्जनं करोति, कृत्वा जलक्रीडां करोति, कृत्वा जलाभिषेकं करोति, कृत्वाऽऽचान्तः चोक्षः परमशुचिभूतो दैवतपैतृककृतकार्यो दर्भसगर्भकलशहस्तगतो गङ्गाया महानद्याः प्रत्युत्तरति, उत्तीर्य यत्रैव स्वकं उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य दर्भैश्च कुशैश्च वालुकयाच वेदिं रचयति, रचयित्वा शरकेनारणिं मथ्नाति, मथि

॥ भाषा ॥ भ घान कलश हाथनेविषे गयाछै जेहने । जेणेवगंगामहाणदी तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । जिहां गङ्गानाम महानदी तिहां आवे तिहां आवीने । गंगा महाणदिं उग्गाहेइ २ त्ता । गङ्गामहानदी प्रते अवगाहे अवगाहीने । जलमज्जणंकरेइ २ त्ता । पाणीयें करी देह शुद्धमात्र करे करीने । कीडंकरेइ २ त्ता जलाभिसेयं करेइ २ त्ता । पाणीनेविषे क्रीडाकरे करीने पाणीना बिन्दु खिरे ते रूप जलाभिषेक करे करीने । आयंतेचोक्खेपरमसुइभूए । जलस्पर्शी अशुचि द्रव्यरहित माटे परमशुचि थईने । देवयपित्तियकयकज्जे । देवन पितरने पाणी अञ्जुली दानरूप कीधाकार्य । दब्भसगब्भकलसहत्थगए गंगाओमहाणदीओ पच्चुत्तरइ गंगा २ त्ता । कलशमाहि दर्भ गर्भितछै ते हाथनेविषे गयाछै जेहने गंगा महानदी तेहप्रते उतरे गंगामहानदी उतरीने । जेणेवसए उडए तेणेरउवागच्छइ २ त्ता । जिहां पोतानो आडणीछै तिहाआवे तिहा आवीने । दब्भेहिय कुसेहिय वालुयाएय । मूलसहित ते दा

॥ टीका ॥

ति ॥ देवतानां पितृणां च कृतं कार्यं जलाञ्जलिदानादिकं येन स तथा ॥ सरएणं अरणिमहेइत्ति ॥ शरकेन निर्मन्थनकाष्ठेन अरणिं निर्मन्थनीयकाष्ठं मथ्नाति घर्षयति ॥ अग्गिस्सदाहिणे इत्यादि सार्द्धं श्लोकः 'तद्यथा-शब्दवर्जं स्तत्र च ॥ सत्तंगाइं समादहेत्ति ॥ सप्ताङ्गानि समादधाति सन्निधापयति, सकथा १ वल्कलं २ स्थानं ३ शय्याभाण्डं ४ कमण्डलु ५ । दण्डदारु ६ तथात्मानमिति ७' तत्र सकथा तत्समयप्रसिद्ध उपकरणविशेषः स्थानं ज्योतिःस्थानं पात्रस्थानं वा, शय्याभाण्डं शय्योपकरणं दण्डं दारुदण्डकं आत्मा प्रतीतश्चेति ॥ चरुसाहेइत्ति ॥ चरुर्भोजनविशेषः, तत्र पच्यमा

॥ मूल ॥

जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता दब्भेहिय कुसेहिय वालुयाएय वेइंरयेइ २ त्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेइत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेइत्ता अग्गिं संधुक्केइ २ त्ता समिहाय कट्ठाइं पक्खिवेइ २ त्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेइत्ता अग्गिस्स दाहिणेपासे सत्तंगाइं समादहे तंजहा—सकहवक्कलठाणं सेज्जाभंड

अनुवाद

त्वाऽग्निं पातयति, पातयित्वाग्निं सन्धुक्षति, सन्धुक्ष्य समिधः काष्ठानि प्रक्षिपति, प्रक्षिप्याग्निमुज्ज्वालयति, उज्ज्वाल्याग्नेर्दक्षिणपार्श्वे सप्ताङ्गानि समादधाति तद्यथा-सकथावल्कलस्थानं शय्याभाण्डकमण्डलुं । दण्डदारुतथात्मानं मधस्तानिसमादधाति १ ॥ मधुनाच घृतेनच

॥ भाषा ॥

भ मूलरहित ते कुश तिणेकरी तथा वेलूयेकरी । वइरवेइ २ त्ता । वेदिकाप्रते रचे वेदिका प्रते रचीने । सरएणं अरणिमहेइ २ त्ता । सर जे निर्मन्थन काष्ट ते सघाते अरणी प्रते मथे मथीने । अग्गिपाडेइ २ त्ता अग्गिसधुक्केइ २ त्ता । अग्निप्रते पाडे पाडीने अग्निप्रते सधूके धूम्रसहित करे सन्धूकीने । समिहायकट्ठाइं पक्खिवेइ २ त्ता अग्गिउज्जालेइ २ त्ता । इंधण प्रते काष्टप्रते अग्निनेविषे प्रक्षेपकरे घाले इत्यर्थं घालीने अग्निप्रते उजुयाले अग्निप्रते उजुयालीने । अग्गिस्सदाहिणेपासेसत्त गाइं समादहे त० । अग्निने जीमणेपासे सात अंग थापे ते सातअंग कहेछे । सकहवक्कलठाणसेज्जाभंड कमण्डलु दण्डदारु तहप्पाणं अहेताइं समादहे । सकथा ते समय प्रसिद्ध उपगरण विशेष १ वाकला वस्त्र २ स्थान ते ज्योति.स्थान अथवा पात्रस्थान ३ शय्यांउपगरण ४ पानीयपात्र ५ काष्टमयदण्ड ६ तथा आपणपो ७ ए सात अंग थापे । महुणाय घएणय । मधुसघाते तथा घृतसघाते । तंदुलेहिय अग्गिंहुण

॥ टीका ॥ नद्रव्यमपि चरुरेव त चरु बलिमित्यर्थं ,'साधयति रन्धयति ॥ वलिवइसदेवकरेइत्ति ॥ वलिना वैश्वानर पूजयतीत्यर्थ ॥ अतिहिपूयकरेइत्ति ॥

॥ मूल ॥ कमंडलुं । दारुतहप्पाणं आहेताइं समादहे ॥ १ ॥ मज्झणाय घएणय तंदुलेहिय अग्गिं हुणइ, हुणइत्ता चरु साहेइ, साहेइत्ता वलि वइसदेव करेइ, करेइत्ता अतिहिपूय करेइ , करेइत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ, तएणं से सिवे रायरिसी दोच्चं छठ्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताण विहरइ, तएण से सिवे राय रिसी दोच्च छठ्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ २ त्ता वागल एव जहा पढमपारणगं, णवरं

अनुवाद तन्दुलैश्चाग्नि जुहोति, हुत्वा चरु साधयति, साधयित्वा वलि वैश्वदेव करोति (विभक्तिविपरिणामा द्वलिना वैश्वदेव पूजयतीत्यर्थ) कृत्वा ऽतिथिपूजा करोति, कृत्वा तत पश्चादात्मनाऽऽहारमाहारयति, तदा स शिवो राजर्षिर्द्वितीयमपि षष्ठक्षमणमुपसम्पद्य विहरति, तदा स शिवो राजर्षि द्वितीय षष्ठक्षमणपारणे आतापनभूम्याः प्रत्यारोहति (अवतरतीत्यर्थ) प्रत्यारुह्य वाल्कल (प्रभृति) एव यथा प्रथ

॥ भाषा ॥ ६ २ त्ता। चरुसाहेइ २ त्ता। चोखा ते सघाते अग्निप्रतें होमे अग्निप्रतें होमीने चोरादिक वलिप्रते राधे राधीने। बलिवइसदेव करेइ २ त्ता। तेव लि करी नेप्रते करे पूजे इत्यर्थ पूजीने। अतिहिपूय करेइ २ त्ता। आवणहार पाहुणानी पूजाकरें पूजाकरीने। तओपच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ। तिवारपछी आपणपें आहारप्रतें करें। तएणसेसिवेरायरिसी। तिवारे ते सिवराजऋषि। दोच्च छठ्ठक्खमण उवसंपज्जित्ताण विहरइ। बीजो बेउवास रूप तप अंगीकार करीने विचरे। तएण से सिवेरायरिसी दोच्चछठ्ठक्खमणपारणगंसि। तिवारे ते शिवराजऋषि बीजा छठ्ठक्खमण पारणानेविषे। आया वणभूमीओपच्चोरुभइ २ त्ता। आतापनानी भूमिकाथकी पाछो वले पाछो वलीने। वागल एव जहा पढमपारणग। वाकला वस्त्र पहिरया इम जिम पहिला पारणे अधिकार कह्यो तिम इहा पणि कहवो। णवरदाहिणदिसि पोक्खेइ २ त्ता। एतलोविशेष दक्षिण दिशिप्रते जलेकरी छांटे छाटीने। दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे सेस तचेव जाव आहारमाहारेइ। दक्षिणदिशिने विषे यमनामे महाराजा परलोकसाधक मार्गे प्रवर्त्यो

दाहिणदिसिं पोक्खेइ, पोक्खेइत्ता दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणं सेसं तचेव जाव आहारमाहारेइ, तएणं से सिवे रायरिसी तच्चं छठ्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं से सिवे सेसं तंचेव, णवरं पच्चत्थिमं दिसिं पोक्खेइ पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणेपत्थियं सेसं तंचेव जाव आहारमाहारेइ, तएणं से सिवेरायरिसी चउत्थछठ्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं से सिवे रायरिसी चउ

क्षपारणके (उक्त तथैव वाच्यमिति योग) नवरं दक्षिणा दिशं प्रोक्षति, प्रोक्ष्य दक्षिणस्या दिशो यमो महाराजा प्रस्थान (प्रवृत्ति) शेषं तचैव यावदाहारमाहारयति, ततः स शिवो राजर्षि स्तृतीय षष्ठक्षमणमुपसम्पद्य विहरति, तदा स शिव शेषं तचैव नवरं पाश्चात्या दिशं प्रोक्षति, पश्चिमाया दिशो वरुणो महाराजा प्रस्थाने प्रस्थित शेष तचैव यावदाहारमाहारयति, ततः स शिवो राजर्षि चतुर्थषष्ठक्षमणमुपसम्पद्य विहरति, तदा स शिवो राजर्षि श्चतुर्थषष्ठक्षमणपारणके मन चैव, नवरं मुत्तरा दिशं प्रोक्षति, उत्तराया दिशो वैश्रमणोमहाराजा

शिवराजऋषि तेहना त्रिघनटानो शेष तिमज यावत आहारप्रते करे पारणो करे एतलालगें कहवो। तएणं से सिवेरायरिसी। तिवारें ते शिव राजऋषि। तच्चं छठ्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताणं विहरइ। त्रीजो छठ्ठक्खमण बेउपवासरूप अङ्गीकार करीने विचरें। तएण से सिवे सेसतचेव णवरं पच्चत्थिमदिसिंपोक्खेइ। तिवारें ते शिवराजऋषि इत्यादि शेष सर्व तिमज पूठिलापरें सर्व कहवो एतलोविशेष. पश्चिमदिशि जलसघाते छांटे। पच्चत्थिमाएदिसाए वरुणेमहाराया। पश्चिमदिशिने विषे वरुणनामें महाराज लोकपाल। पत्थाणेपत्थियं सेसं तचेव। परलोक इत्यादि त्रिघनटानो शेष तिमहीज कहवो। जाव आहारमाहारेइ। यावत् आहारप्रते करें। तएण से सिवेरायरिसी। तिवारें ते शिवराज ऋषि। चउत्थछठ्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताणं विहरइ। चोथा छठ्ठक्खमण प्रते अङ्गीकार करीने विचरें। तएण से सिवे रायरिसी। तिवारें ते शिव राजऋषि। चउत्थछठ्ठक्खमण एवचेव। चौथा छठ्ठक्खमण पारणाने विषे इत्यादि इमहीज। णवरउत्तरदिसिंपोक्खेइ उत्तराएदिसाए। एतलोविशेष उत्तरदिशि प्रते पोखे। उत्तरदिशिनेविषे। वेसमणे

॥ मूल ॥

त्थयं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव विणीययाए अन्नया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे णामं अन्नाणे समुप्पन्ने, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ, अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे तेण परं न जाणइ न पासइ,

(भगवती — उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं... छट्ठक्खमणा एवंचेव, णवरं उत्तरं दिसिं पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ, सेसं तं चेव जाव तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ, तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छठं)

॥ अनुवाद ॥

'तदानी तस्य शिवस्य राजर्षेः षष्ठषष्ठेना निक्षिप्तेन दिक्चक्रवालेन यावदातापयतः प्रकृतिभद्रतया यावद्विनीततया न्यदा कदाचित्तदावरणीयानां कर्मणां क्षयोपशमेनेहापोहमार्गणगवेषणं कुर्वतो विभङ्गनामाज्ञानं समुत्पन्नं, स तेन विभङ्गाज्ञानेन समुत्पन्नेन पश्यत्यस्मिन् लोके सप्त द्वीपान् सप्त समुद्रान्' ततः परं न जानाति न पश्यति, तदा त प्रस्थाने प्रस्थितमभिरक्षतु शेषं तथैव यावत्तत पश्चादात्मनाहारमाहारयति'

॥ भाषा ॥

शिवने फलफूल लेता विचन टालो शेष तिम महाराया पत्थाणेपत्थियं अभिरक्खउ सेसंतंचेव। वैश्रमण नामे महाराजा लोकपाल ते परलोक इत्यादि जाव तओपच्छा अप्पणाआहारमाहारेइ। आप पोते आहार प्रते करे। तएणं तस्ससिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसा चक्कवालेणं। तिवारे तेहने शिवराजऋषिने छट्ठछट्ठने अन्तररहित करी दिशाचक्रवाल तपेंकरी इत्यादि। जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए। यावत् आतापना करताथकाने प्रकृतिस्वभाव भद्रकपणें करी। जाव विणीययाए अन्नयाकयाइ। यावत् विनीतपणें करी एकदा किवारेकें। तयावरणिज्जाणंकम्माणं खओवसमेणं। तेह अज्ञानपणाना आवरणना कर्मने क्षयोपशमे करी। ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्सविभंगेणाम अन्नाणे समुप्पन्ने। ईहा अर्थ चेष्टा न सम्यक् विचार करवो, अपोह धर्म ध्यान बीजा पक्षरहित निर्णयकरवो तहीज धर्मनी आलोचना अधिक धर्मनो आलोचना करताथका विभङ्गनामें अज्ञान ऊपनो। सेणं तेणं विभंगअन्नाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ। तेह तेणें विभङ्गअज्ञान ऊपनाथका देखे। अस्सिंलोएसत्तदीवे सत्तसमुद्दे। एहलोकने

तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अत्थिणं ममं अतिसेसेणाण दसणे समुप्पन्ने, एवंखलु अस्सिलोए सत्तदीवा सत्तसमुद्दा, तेणपर वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय एव संपेहेइ, संपेहेइत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सुबहुं लोहीलोहकडाहकडुच्छुय जाव भंडग किढिणसंकाइयं गेण्हइ, गेण्ह

स्य शिवस्य राजर्षे रयमेतद्रूपो ऽभ्यर्थितो यावत्समुत्पन्नवान्–अस्ति ममातिशये ज्ञानदर्शने समुत्पन्ने, एव खलु अस्मिन् लोके सप्त द्वीपा सप्त समुद्रा स्तत पर व्युच्छिन्ना द्वीपाश्च समुद्राश्चैव सम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्यातापनभूम्या प्रत्यारोहति' प्रत्यारुह्य वाल्कलवस्त्रनिवसितो यत्रैव स्वक उटजस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुबहु लोहीलोहकटाहकटुच्छुक यावद्भाण्डक किठिनसांकायिक गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव हस्तिनागपुरे नगरे

तिये सातद्वीप सातसमुद्र प्रते देखे। तेणपर नजाणइ नपासइ । तिणि ऊपरला नजाणे ज्ञानेकरी न देखे दर्शनेकरी। तएण तस्स सिवस्सरायस्स अय मेयारूवे। तिवारे ते शिवराजऋषिने एह एहवे रूपे। अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था। आत्माआश्रयीने मनोगत सकल्प ऊपनो। अत्थिणमम अइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ने। छे ण वाक्यालकारे, मुझने समस्त ज्ञानदर्शन ऊपनो। एवखलु अस्सिलोएसत्तदीवा सत्तसमुद्दा। इम निश्चे एहलोकने विषे सात द्वीप तथा सात समुद्र छेजछे। तेणपर वोच्छिण्णादीवाय समुद्दाय एव संपेहेइ २ त्ता। तिणि ऊपर विरछेद गया द्वीप वपुन समुद्र एतले अधिका नथी इम चिन्तवे इम चिन्तवीने। आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ २ त्ता। आतापनाना भूमिकाथकी पाछावले आतापनानी भूमिकाथकी पाछो वलीने। वाग लवत्थणियत्थे जेणेवसए उडए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। वाकला वस्त्रनो पहिरण जिहा पोतानो झोडलोछे तिहा आवे तिहा आवीने। सुबहुलोही लो हकडाहकडुच्छुय जाव भडग। घणा लोहनी लोहकडाही कडुछीप्रमुख तापसयोग्य यावत् पात्र। किढिणसकाइय गेण्हइ २ त्ता। वशमयभाजन भार उपाडवानो लाकडो ते ग्रहे ग्रहीने। जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा हस्तिनापुर नगरछे तेहनेविषे जिहा

॥ मूल ॥

इत्ता जेणेव हत्थिणापुरे णयरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता भंडगणिक्खेवं करे
इ, करेइत्ता हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु बहुजणस्स एव माइक्खइ जाव एव परूवेइ,
अत्थिणं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एवंखलु अस्सिंलोए जाव दीवाय समुद्दाय त
एणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु
बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ, अत्थि

॥ अनुवाद ॥

यत्रैव तापसावसथस्तत्रैवोपागच्छति' उपागत्य भाण्डकनिक्षेपं करोति, कृत्वा हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिक (प्रभृति) यावत्पथिषु बहु
जनस्यैवमाख्याति यावदेव प्ररूपयति–अस्ति देवानुप्रिया । ममातिशेषे ज्ञानदर्शने समुत्पन्ने' एवं खल्वस्मिन् लोके यावद्द्वीपाश्च समुद्राश्च'
तदानीं तस्य शिवस्य राजर्षे रन्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिक (प्रभृति) यावत्पथिषु बहुजनोऽन्योन्यस्यैवमाख्या
ति यावत्प्ररूपयति–एवं खलु देवानुप्रिया । शिवो राजर्षिरेवमाख्याति–अस्ति देवानुप्रिया । ममातिशेषे ज्ञानदर्शने याव तेनपर त्रुच्छि

॥ भाषा ॥

तापसना मठछे तिहां आवे तिहां आवीने। भंडगणिक्खेव करेइ २ त्ता। भण्ड निक्षेपकरे करीने। हत्थिणापुरेणयरे सिंघाडगतिगजावपहेसु। हस्तिना
पुर नगरें शृङ्गाटक त्रिक यावत् महापथने विषे। बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ। घणा मनुष्यने माहोंमाहि इम कहे यावत् इम प्ररूपे।
अत्थिण देवाणुप्पिया मम। णं ए वाक्यालंकारे, अहो देवानुप्रिया मुझने। अतिसेसेणाणदंसणे समुप्पन्ने। अतिशेष समस्त ज्ञानदर्शन ऊपनो। एवखलु अ
स्सिंलोए जाव दीवाय समुद्दाय। इम निश्चे एहलोकने विषे सातद्वीप सातसमुद्रछे ते उपरान्त विच्छेदगया द्वीपसमुद्र। तएणंतस्स सिवस्स रायरिसिस्स
अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म। तिवारे तेह शिवराजऋषिने समीपे एह अर्थ सांभली हीये धरी। हत्थिणापुरेणयरे सिंघाडगतिग जाव पहेसु। शृङ्गाट
क त्रिक यावत् महापथने विषे। बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ। घणा मनुष्य माहोंमाहि आप आपमा इम कहे यावत् इम प्ररूपे।

ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे णाणदंसणे जाव तेणपरं वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय सेकहमेयं मन्ने ए वं? तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा जाव पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बिइयसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं णिसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइ

न्ना द्वीपाश्च समुद्राश्च, अथ कथमेतन्मन्य एव, तस्मिन्काले तस्मिन्समये स्वामी समवसृत पर्षत्प्रतिगता, तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य ज्येष्ठान्तेवासी (इत्यादि) यथा द्वितीयशत निर्ग्रन्थोद्देशके यावदटन् बहुजनशब्दं निशामयति, बहुजनो ऽन्योन्यस्यैव माख्याति यावदेव प्ररूपयति, एव खलु देवानुप्रिया । शिवो राजर्षि रेवमाख्याति यावत्प्ररूपयति' अस्ति देवानुप्रिया । तचैव यावद्

एवखलुदेवाणुप्पिया । इम निचे अहोदेवानुप्रियाभो । सिवरायरिसी एवमाइक्खइ । शिवराजऋषि इम कहे । अहो देवानुप्रिया । मम अतिसेसे णाण दंसणे जाव । मुझने अतिशय समस्त ज्ञानदर्शन उपनो सातद्वीप सातसमुद्र वे यावत् । तेणपरंवोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय सेकहमेयमन्नेएवं । तिथि उपरान्त विच्छेदगया दीप तथा समुद्र तेह किम एह मानिये इम । तेणकालेणं तेणसमएणं सामीसमोसढे । ते कालने विषे ते समयने विषे स्वामी समो सरया । परिसा जाव पडिगया । पर्षदा यावत् पाछी वली । तेणकालेणं तेण समएणं समणस्सभगवओमहावीरस्स । ते कालनेविषे ते समयनेविषे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीनो । जेट्ठेअंतेवासी । ज्येष्ट बडो शिष्य गौतम । जहा बिइयसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे । जिम बीजा शतकना पांचमा उ देशाने विषे कह्यु तिम कहवो यावत् फिरतायका । बहुजणसद्दंणिसामेइ । घणा मनुष्यना शब्दप्रते सांभले । बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ । घणां मनुष्य माहोमाहिने इम कहे यावत् इम प्ररूपे । एवंखलुदेवाणुप्पिया । इम निचे देवानुप्रिया । सिवेरायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवे

क्खइ जाव परूवेइ, अत्थिणं देवाणुप्पिया ! तंचेव जाव वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय सेकह मेयं मन्ने ए व ? तएणं भगव गोयमे बहुजणस्स अंतिय एयमठ सोच्चा णिसम्म जायसड्ढे जहा णियंठुद्देसए जाव ते णपर वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय। से कहमेय भंते ! एव ? गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एववयासी—जंणं गो० ! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, तंचेव जाव सव्वं भाणियव्वं जाव

च्छिन्ना द्वीपाश्च समुद्राश्च, अथ कथमेतन्मन्य एव ? तदानी भगवान्गौतमो बहुजनस्यान्तिकमेतदर्थं श्रुत्वा निशम्य जातश्रद्धो यथानिर्ग्रन्थोद्दे शके यावत्तनपर व्युच्छिन्ना द्वीपाश्चसमुद्राश्च, अथ कथमेतद्वदन्त । एव ? गौतमादि । श्रमणो भगवान्महावीरो भगवन्त गौतममेवमवादीत्– यद्गौतम । स बहुजनो न्योन्यस्यैवमाख्याति तथैव यावत्सर्व भणितव्यम्' यावद्भाण्डकनिक्षेप करोति, हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाटक (प्रश्न

इ । शिवराजऋषि इमकहे यावत् इम प्ररूपे । अत्थिणदेवाणुप्पिया । हे मनुने हे देवानुप्रिया इत्यादि । तचेव जाव वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय । तिम द्वीज यावत् सातद्वीप सातसमुद्रछे उपरान्त विच्छेदगया द्वीप तथा समुद्र । सेकहमेय मन्नएव । तेकिम एह मानिये इम । तएणभगवगोयमे । तिवारे भगवत गौतम । बहुजणस्सअतिय एयमठ सोच्चा णिसम्म जायसड्ढे । घणा मनुष्याने समीपथकी मुखथकी एहवो अर्थ साभली हियेधरी ऊप नो श्रद्धा । जहा णियठुद्देसए जाव तेणपर वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय । जिम बीजा शतकना पाचमाउद्देशाने विषे कह्यु तिम कहवो यावत् तिण उपरान्त विच्छेदगया द्वीप तथा समुद्र एतले सातद्वीज द्वीपसमुद्रछे । सेकहमेयभंतेएव । ते किमए छ हेभगवन् । इम इसे गौतम पूछ्या । गोयमादि समणे भगवमहावीरे । हेगौतम । इसे आमत्रणवचने श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी । भगवगोयम एववयासी । भगवन्त गौतमप्रते इमकहे । जण गोयमा सबहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ । जेहभणी हेगौतम । ते घणा मनुष्य माहोमाहि इमकहे । इत्यादि तचेव जाव सव्व भाणियव्व । तिमहीज या वत् सर्व जाणवो । जावभडणिक्खेवकरेइ । यावत् पात्रना स्थापवो करे । हत्थिणापुरेणयरे सिघाडग तचेव जाव वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय । हस्तिना

इत्यर्थ ॥ एगविहिविहाणाति ॥ एकेन विधिना प्रकारेण विधानं व्यवस्थानं येषां ते तथा सर्वेषां वृत्तत्वात् ॥ वित्थारओ णेगविहिविहाणाति ॥ द्विगुणाद्विगुणविस्तारत्वा त्तेषामिति ॥ एवं जहा जीवाभिगमे ॥ इत्यनेनयदिह सूचितं तदिदं–दुगुणादुगुण पडुप्पाएमाणा २ पवित्थरमाणा ओभा

खंडगणिरस्कंत्र करोड, हत्थिणपुरे णयरे सिंघाडग तचेत्र जाव वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय, तएणं तस्ससिव रस रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तचेत्र तिमहीज तेणपर वोच्छिन्ना दीवाय समुद्दाय तणं मिच्छा, अहपुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एव खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा सठाणओ एगविहिविहाणा वित्थारओ अणेगविहिविहाणा, एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयभुरम

ति) तचेव यावद्व्युच्छिन्ना द्वीपाश्च समुद्राश्च' तदानीं तस्य शिवस्य राजर्षे रन्तिकं एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य तथैव तेन परं व्युच्छिन्ना द्वीपाश्च, तन्मिथ्या, अहं पुन गौतम! एव माख्यामि यावदेव प्ररूपयामि–एवं खलु जम्बूद्वीपादयो द्वीपा लवणादय समुद्रा सस्थानत एकविधिविधाना, विस्तारतोऽनेकविधिविधाना, एवं यथा जीवाभिगमे यावत्स्वयम्भुरमणसमुद्रपर्यवसाना अस्मिंस्तिर्यग्लोकेऽसङ्ख्येया द्वीपसमुद्रा प्रज्ञ

पुर नगरनेविषे श्रृंगाटक तिमहीज सात द्वीपसमुद्र थकी उपरान्त विच्छेद गया द्वीप तथा समुद्र। तएणं तस्स सिवस्सरायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठसो च्चा। तिवारे तेहने शिवराजऋषिने समीपे एह अर्थ प्रते सांभली। णिसम्मतचेव। हृदय धरी इत्यादि तिमहीज। तणपरवोच्छिन्ना दीवायसमुद्दा य। तिण उपरान्त विच्छेद गया द्वीपसमुद्र एतले सातद्वीप द्वीपसमुद्र छे। तणमिच्छा अहपुण गोयमा। तेह ण वाक्यालंकारे, मिथ्या जूठो छ वली हे गौतम! एवमाइक्खामि जावरूवेमि। इम कहुं छू यावत प्ररूपूं छू। एव खलु जंबूद्वीवादीवादीया लवणादीया समुद्दा। इम निश्चे जंबूद्वीप आदिदेइ द्वीप लवणसमुद्र आदिदेइ समुद्र। सठाणओएगविहिविहाणा। संस्थानथी सगलाई एकसरीखा वाटले आकारेंछें वलयने आकारे पाला टालीछे। वित्थारओअणेगविहिविहाणा। विस्तारथकी अनेकप्रकारे एतले बिमणे, बिमणे विस्तारेछें। एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयभुरमण समुद्दपज्जवसा

॥ टीका ॥ उत्पलकुमुदनलिनसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोवचिया ,, बहूना मुत्पलादीना प्रफुल्लाना विकसितानां यानि केसराणि तैरुपचिता संयुक्ता ये ते तथा तत्रोत्पलानि नीलोत्पलादीनि कुसुदानि चन्द्रबोध्यानि पुण्डरीकाणि सितानि शेषपदानितु रूढिगम्यानि " पत्तेयं २ पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं २ वण सम्भासमानवीचय श्रीजमाजतरङ्गा समुद्रापेक्षमिद विशेषण ॥ शेषपदानितु ॥ धर्मास्तिकायादीनि ॥ असमसबद्धाइति ॥ परस्परेण गाढाश्लेषाणि ॥ असमण संडपरिक्खित्तत्ति सवखाइंपित्ति ,, पुद्गलद्रव्याणि ॥ अवखाइंपित्ति ॥

॥ मूल ॥ अत्थिणं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि सरसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइंपि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि। अत्थिणं भंते ! लवणसमुद्दे ... समगाउसो ! अत्थिणं भंते ! जंबुद्दीवपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता

॥ अनुवाद ॥ हा श्रमण । आयुष्मन् । अस्ति (सन्तीत्यर्थं) भदन्त । जम्बूद्वीपद्वीपे द्रव्याणि सवर्णान्यप्यवर्णान्यपि सगन्धान्यप्यगन्धान्यपि रसान्यप्यरसान्यपि सस्पर्शान्यप्यस्पर्शान्यप्यन्योन्यसम्बद्धान्यन्योन्यस्पृष्टानि यावद्धटतया तिष्ठन्ति ? हन्तास्ति। अस्ति भदन्त । लवणसमुद्रे द्रव्याणि सवर्णा

॥ भाषा ॥ इत्यादि समुद्रनो अधिकार वि णा । इम जिम जीवाभिगमउपांगने विषे कह्यु ते इम—दुगुणादुगुणपडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया, एह तिर्यग्लोकने विषे असंख्याता द्वीप समुद्र पन्नत्ता । शेष कह्यु तिम सर्व इहां पणि कहवो यावत् स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त कहवा । अस्मितिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा श्रमण आयुष्मन् एतला वचन वली गौतम पूछे छे । अत्थिणंभंते जंबुद्दीवेदीवे दव्वाइं । छै ण निर्ये असंख्याता द्वीप तथा समुद्र कह्या छे । समणाउसो । हे श्रमण आयुषन् वायवालकारे, हे भगवन् । जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे द्रव्य । सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि सगंधाइंपि अगंधाइंपि रसाइंपि अरसाइंपि सफासाइंपि अफासाइं पि । ते पुद्गल द्रव्यसहित पणि अधर्मास्तिकायादिक पणि पुद्गलद्रव्य सगन्ध पणि धर्मास्तिकायादिक अगन्ध पणि पुद्गलद्रव्य धर्मास्तिकायादिक रसर हित पणि पुद्गलद्रव्य फरससहित धर्मास्तिक द्रव्य । अणमणबद्धाइं अणमणपुट्ठाइं जाव घडत्ताएचिट्ठति । माहोमाहि करी गाढावाध्या छे माहोमाहि

॥ टीका ॥

पुढाइति ॥ परस्परेणागाढाश्लेषाणि, इह यावत्करणादिदमेव दृश्य-अन्नमन्नबद्धपुट्ठाइ अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठतित्ति „ तत्रचान्योन्यबद्धस्पृष्टा न्यनन्तरोक्तगुणद्वययोगात् किमुक्त भवति अन्योन्यघटतया परस्परसम्बद्धतया तिष्ठन्ति ॥ तावसावसहेत्ति ॥ तापसावसथ स्तापसमठइति, अन

॥ मूल ॥

दव्वाइं सवन्नाइंपि एवचेव एव धायईखंडे दीवे एवंचेव। एव जाव सयंभुरमणे समुद्दे जाव हंताअत्थि। तएणं सा महइमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयमठं सोच्चा णिसम्म हठतुठा तएणं समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वदित्ता णमंसित्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसि पडि गया। तएणं हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एव माइक्खइ जाव परूवेइ

॥ अनुवाद ॥

न्यप्येव चैव, एव धातकीखण्डे द्वीपे एव चैव, एव यावत्स्वयम्भुरमणे समुद्रे यावद्धन्तास्ति। तदानीं सा महातिमहती महत्पर्षत् श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा तदा श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्य यामेवदिश (यस्यादिश) प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता, तदानीं हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाटक (प्रभृति) यावत्पथिषु बहुजनोऽन्योन्यस्यैवमाख्याति

॥ भाषा ॥

छे हेभगवन् । लवणसमुद्रने विषे। द सर्थांके यावत् माहोमाहि घटपणे रहेके इतिप्रश्न उत्तर। हता अत्थि। हा गौतमछे। अत्थिणभते लवणसमुद्दे। व्याइ सवन्नाइ पि एवचेव। द्रव्य पुद्गलद्रव्य सवर्ण पणि इमहीज पूठलो परे। एव धायई खंडेदीवे एवचेव। इम धातकीखण्ड द्वीपनेविषे पणि कहवो द मद्दीज पूठलीपरे। एव जाव सयभूरमणे समुद्दे जाव हता अत्थि। इम यावत् सयभूरमणनामा समुद्रपर्यन्त प्रश्नकीधो उत्तर यावत् हागौतम छे यावत् रहे। तएण सा महइ महालिया महच्चपरिसा। तिवारे तेमोटा महाविस्तारवन्त मोटी पुरुषनी परिषदा। समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए। अ मण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना मुखथी। एयमट्ठसोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठा। एह अर्थ साम्भलीने हीये धरीने हर्ष सन्तोष पामी। तएण समणभगव महा वीर वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता। तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वादे नमस्कार करे वादीने नमस्कार करीने। जामेवदिसि पाउ

जसं देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थिणं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे णाणदंसणे जाव समुद्दाय, तं णोइणठे समठे समणे भगव महावीरे एव माइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स रायरिसिस्स छठछठेणं तचेव जाव भंडणिक्खेव करेइ, करेइत्ता हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडग जाव समुद्दाय, तएणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमठं सोच्चा णिसम्म जाव समुद्दाय, तंणंमिच्छा—

यावत्प्ररूपयति—यद्देवानुप्रिया । शिवो राजर्षिरेवमाख्याति यावदेव प्ररूपयति—अस्ति ममातिशेषे ज्ञानदर्शने यावत्समुद्राश्च' तन्नायम र्थः समर्थः, श्रमणो भगवान्महावीर एवमाख्याति यावदेव प्ररूपयति, एव खल्वेतस्य शिवस्य राजर्षे षष्ठ षष्ठेन तच्चैव यावद्भाण्डनिक्षेप क रोति, कृत्वा हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाटक (प्रभृति) यावत्समुद्राश्च, तदानी तस्य शिवस्य राजर्षे रन्तिकमतदर्थं श्रुत्वा निशम्य यावत्समु

द्रा तामर्यादिसि पडिगया । जे टिग्रिथकी परिषदा आवीहती तेहीज दिशि प्रति परिषदा गई पाछी वली इत्यर्थ । तएण हत्थिणापुरेणयरे सिंघाड ग जाव पहेसु । तिवारे हस्तिनापुर नगरनेविषे शृगाटक त्रिक यावत् महापथनेविषे । बहुजणो अण्णमण्णस्सएवमाइक्खइ जाव परूवेइ । घणा मनुष्य मा हांमाहि इम कहे यावत् इम प्ररूपें । जण देवाणुप्पिया सिवेरायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ । जेहभणी अहोदेवानुप्रिया । शिवराजऋषि इमक हे यावत् इम प्ररूपें । अत्थिण देवाणुप्पिया । छे ण वाक्य लकारे, अहोदेवानुप्रिया । ममंअतिसेसेणाणे जाव समुद्दाय । मुझने समस्त ज्ञानदर्शन ऊ प नो यावत् सात द्वीपसमुद्रथी उपरान्त नथी द्वीपसमुद्र । तणोइणठेसमठे । तेह एह अर्थ वलवन्त नथी । समणे भगवमहावीरे एवमाइक्खइ जाव परू वेइ । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी इमकहे यावत् इम प्ररूपें । एव खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स । इम निश्चे एहने शिवने राजऋषिने । छठ्ठछठ ण तचेव भंडणिक्खेव करेइ २ त्ता । छठ्ठछठ्ठ करी तिमहीज यावत् पात्रनो निक्षेप स्थापन करे करीने । हत्थिणापुरेणयरे सिंघाडग जाव समुद्दाय । ह स्तिनापुर नगरनेविषे शृङ्गाटक त्रिक यावत् समुद्रलगे कहवो । तएण तस्ससिवस्सरायरिसिस्स अंतिय । तिवारे तेहने शिवनामा राजऋषिने समीपथ

समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ एवंखलु जंबुद्दीवाईया दीवा लवणादीया समुद्दा तंचेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो ! तएणं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतिय एयमठ्ठं सोच्चा णिसम्म संकिए कंखिए वितिगिछिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाएयावि होत्था। तएण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव कलुससमावन्नस्स विन्भगे अन्नाणे खिप्पामेव परिवडिए, तएण तस्स

द्राथ तन्मिथ्या, श्रमणो भगवान्महावीर एवमाख्याति-एव खलु जम्बूद्वीपादयो द्वीपा लवणादय समुद्रास्तच्चैव यावदसङ्ख्येया द्वीपसमुद्रा प्रज्ञप्ता श्रमण ! आयुष्मन् ! तदा स शिवो राजर्षिबहुजनस्यान्तिक मेतदर्थं श्रुत्वा निशम्य शङ्कित काङ्क्षितो विचिकित्सितो भेदसमापन्न कलुषसमापन्नो जातश्चाप्यभवत्, तदानी तस्य शिवस्य राजर्षे शङ्कितस्य काङ्क्षितस्य यावत्कलुषसमापन्नस्य विभङ्ग मज्ञान क्षिप्रमेव प्रतिपति

को। एवमाइक्खामि जाव समुद्दाय। एह अर्थ सांभलीने शिवऋषि एमकहे सात द्वीपसमुद्र उपरान्त विच्छेदगया द्वीपसमुद्र। तमिच्छा। तेह मिथ्या झूठो कहे। समणेभगवमहावीरे एवमाइक्खइ। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी इम कहे इम प्ररूपे। एवखलु जंबुद्दीवा दीवादीया लवणा दीवासमुद्दा। इम निश्चे जंबूद्वीप आदिदेई द्वीप लवणसमुद्र आदिदेई समुद्र यावत् स्वयंभूरमण समुद्रपर्यन्त। तचेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो। तिमहीज पूर्वलापरेज यावत् असंख्याता द्वीप समुद्र कह्या। हे श्रमण आयुष्मन्। तएण से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतिय। तिवारे ते शिवनामा राजऋषि घणा नगरवासी मनुष्यना मुखथकी। एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म। एहवो वचन सांभलीने हीयेधरीने। संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाएयावि होत्था। एहनो उत्तर काई हसी शंका उपनी एहनो उत्तर किम पामिवे ते कांक्षा २ एहनो उत्तर दीधा पछीने प्रतीति उपजे के नहीं ३ मतिभेद पाम्यो विभ्रमहूवो ४ ए इहां कोई नजाणे इम पातानेविषे कलुषपणो पाम्यो एहवो थिर हूवो। तएणत स्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स। तिवारे तेह शिवनामा राजऋषिने शंकितथयाने कंखितथयाने। जाव कलुससमावन्नस्स विभंग नाणे

॥ टीका ॥ न्तर शिवराजर्षे सिद्धिरुक्ता ताव सहननादिनि निरूपयन्निदमाह–जतेत्ति ॥ इत्यादि अथ लाघवार्थ मतिदेश माह ॥ एव जहेव इत्यादि ॥ एवमनन्तरदर्शितनाभिलापेन यथौपपातिके सिद्धानधिकृत्य सहननाद्युक्त तथैवेहापि वाच्य तत्र सहननादिद्वाराणा सङ्ग्रहाय गाथापूर्वार्द्ध–सघय

॥ मूल ॥ सिवस्स रायरिसिस्स ऋयमेयारूवे ऋज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, एवं खलु समणे भगवं महावीरे ऋादि गरे तित्थगरे जाव सव्वसू सव्वदरिसी ऋागासगएणं चक्केणं जाव सहसववणे उज्जाणे ऋहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महप्फल खलु तहारूवाण ऋरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स जहा उववाइए जाव गहणया

अनुवाद त, तदा तस्य शिवस्य राजर्षे रयमेतद्रूपो न्यर्थितो यावत्समुत्पन्नवान्–एव खलु श्रमणो भगवान्महावीर आदिकर स्तीर्थकरो यावत्सर्वज्ञः सवदर्शी आकाशगतेन चक्रेण यावत्सहस्राम्रवन उद्याने यथाप्रतिरूप यावद्विहरति, तन्महत्फल खलु तथारूपाणा महंता भगवता नामगो त्रस्य यथौपपातिके यावद्ग्रहणतायै, तद्गच्छामि श्रमण भगवन्त वन्दामि यावत् पर्युपासे, एत न इहभवे च परभवे च यावद्भविष्यतीतिकृ

॥ भाषा ॥ तिवारे तेहने शिवनामा राजर्षिने एह एहवे रूपे अध्यात्मिक मननोसकल्प एहवो उपनो। एवख खिप्पामेव परिवडिए। यावत् मननेविषे कलुषपणो पाम्याने विभगनामा अज्ञान उतावलो प्रति पतित भाणो निश्चे टल्या। तएणतस्सिवस्स रायरि सिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था। तिवारे तेहने शिवनामा राजर्षिने एह एहवे रूपे अध्यात्मिक मननोसकल्प एहवो उपनो। एवख लु समणे भगव महावीरे आदिगरे तित्थगरे। इम निश्चे श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी धर्मनो आदिना करणहार तरीये तेतीर्थ तेहना करणहार। जाव सव्वसू सव्वदरिसी। यावत् सर्वपदार्थना जाण देखणहार। आगासगएण चक्केण। आकाशगत धर्मचक्रछे जेहने एहवो। जाव सहसववणे उज्जाणे। यावत् सहस्राम्रवन उद्यानने विषे। अहापडिरूव जाव विहरइ। यथा प्रतिरूप अभिग्रह नियमसहित यावत् विचरे। त महप्फल खलु तहा रूवाण अ रहताण भगवताण। तेहभणी मोटोफल निश्चे तथा रूपना अरहन्तनो भगवन्तनो। णामगोयस्स जहाउववाइए जाव गहणयाए। नाम गोत्रनो पणि सांभलनो जिम उवाइउपागमांहि कह्यु तिम इहा पणि कहवो यावत् अर्थनो ग्रहनो। त गच्छामिण समणभगव महावीर वदामि। तेहभणी हुजाउ

ए, त गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि, एयं णे इहभवेय परभवेय जाव भ विस्सइत्तिकट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तावसावसहं अणुप्पविस इ २ त्ता सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव किढिणसंकाइगंच गेण्हइ २ त्ता तावसावसहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पडियविब्भंगे हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव सहसंब

त्वा एवमसम्प्रेक्षते, सम्प्रेक्ष्य यत्रैव तापसावसथ स्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तापसावसथेऽनुप्रविशति, प्रविश्य सुबहु लौहीलोहकटाह (प्रभृति) यावत्किठिनसांकायिकञ्च गृह्णाति, गृहीत्वा तापसावसथात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य पतितविभङ्गो हस्तिनागपुरं नगरं मध्य मध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव सहस्राम्रवनमुद्यानं यत्रैव श्रमणो भगवान्महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रि कृत्वा

ण वाक्यालंकारे, श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदू। जाव पज्जुवासामि एय णे इहभवेय परभवेय। यावत् सेवा करु एह अम्हने इणि भवने विषे तथा परभवने विषे हियाए इत्यादि जाव भविस्सइत्तिकट्टु। यावत् आणुगामियत्ताए हुस्ये एतला लगें कहवो। एवं संपेहेइ २ त्ता। इम चीतवे इम चीतवीने जेणेव तावसावसहे। जिहा तापसनोमठस्थानकछे। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीनें। तावसावसहे अणुप्पविसइ २ त्ता। तापसना स्थानकने विषे पेसे प्रवेशकरे प्रवेशकरीनें। सुबहुं लोहीलोहकडाह जाव कि ढिणसकातिगंच गेण्हइ २ त्ता। घणा लोह लोहकडाह कडछी इत्यादि या वत् वंशमयतापसभाजन विशेष भारवहवानीकावडी ग्रहे ग्रहीने। तावसावसहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता। तापसना मठथकी नीकले तापसना मठथकी नीकलीनें। पडियविभंगे। पड्यो विभंग अज्ञान जेहनें एतले सहायत। हत्थिणापुर णयर। हस्तिनापुरनामा नगरथकी। मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता। मध्यें मध्यें नीकले नीकलीनें। जेणेव सहसंब वणे उज्जाणे। जिहा सहस्राम्रवननामा उद्यानछे। जेणेव समणे भगवं महावीरे। जिहा श्रमण भगवंत श्रीम हावीर स्वामीछे। तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। तिहा आवे तिहा आवीनें। समणं भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्रते। तिक्खुत्तो वदति

वणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ णमंसइ, णच्चासण्णे (ग्रंथा ग्रंथ ७०००) णाइदूरे जाव पंजलिउडे पज्जुवासइ। तएणं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसेय महतिमहालियाए जाव आणाए आराहए भवइ। तएणं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म जहा खंदओ जाव उत्तरपुरच्छिमं

वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्य नात्यासन्नो (ग्रंथाग्र ७०००) नातिदूरो यावत् कृतप्राञ्जलिः पर्युपास्ते, तदा श्रमणो भगवान्महावीरः शिवस्य राजर्षेः तस्याः महातिमहत्या यावदाज्ञाया आराधको भवति, तत स शिवो राजर्षिः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य यथास्कन्दको यावदुत्तरपौरस्त्यं दिग्भागमपक्रामति, अपक्रम्य सुबहु लोहीलोह (प्रभृति) यावत्किठिणसाङ्कायिकं एकान्ते एडयति' एडयित्वा स्वयमेव पञ्चमौष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा श्रमणं भगवन्तं महावीरं मेव यथैव ऋषभदत्तः तथैव प्रव्रजितः 'प्रव्रज्य

णमसति २ त्ता। तीनवार वांदे नमस्कारकरे वांदीनमस्कारकरीने। णच्चासणे। अतिढूकडोनही यथाग्र [७००० सूत्रग्रंथ] णातिदूरे जाव पंजलिउडे पज्जुवासइ। अतिदूरनही यावत् हाथ जोडीने सेवाकरे। तएणं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी शिवनामा राजऋषिने। तीसेय महतिमहालियाए। तेहवी मोटी महाविस्तारवंतपरिषदानेविषे धर्मकथाकहे। जाव आणाए आराहए भवति। यावत् आज्ञानो आराधक हुवे एतलालगे कहवो। तएणं से सिवे रायरिसी। तिवारे तेशिवराजऋषि। समणस्स भगवओ महावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनीकना। अंतिय धम्मं सोच्चा णिसम्म। मुखथकी धर्म सांभलीने हृदयेधरीने। जहा खंदओ। जिम खंदक तिम कहवो पिण जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ त्ता सुबहुलोहीलोह जाव किढिणसंकाइगंच। यावत् ईशानकूणि ते भागप्रते जाइ तिहां जाइने घणा लोहनो लोहकडाहीप्रमुख यावत् तापसभाजनविशेष भारवहवानीलाकडीप्रमुख। एगते एडेइ २ त्ता। एकांते नाखे एकांतेनाखीने। सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता। पोतेहीज पांचमुष्टिक

णसठाण उच्चसंग्राउयचपरिवसणाति ॥ तत्र सहननमुक्तमेव सस्थानादित्वेव-तत्र सस्थाने पणा सस्थानाना मन्यतरस्मिन् सिध्यन्ति, उच्चत्वेतु जघन्यत सप्तरत्निप्रमाणे, उत्कृष्टतस्तु पञ्चधनु शतिके, आयुषि पुन जघन्यत सातिरेकाष्टवर्षप्रमाणे उत्कृष्टतस्तु पूर्वकोटीमाने, परिवसनापुनरेव-रत्नप्रभादिपृथिवीना सौधर्मादीना चेषत्प्राग्भारान्ताना क्षेत्रविशेषाणा अधो नपरिवसन्ति सिद्धा किंतु सर्वार्थसिद्धमहाविमानस्योपरितनात् स्तूपिकाग्रा दूर्ध्वं द्वादश योजनानि व्यतिक्रम्येषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणायामविष्कम्भाऽस्या वर्णत श्वेताऽत्यन्तरम्यास्ति,

दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता सुवज्ञं लोहीलोह जाव किढिणसकाइगंच एगंत एडेइ, एडेइत्ता सय मेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, करेइत्ता समण भगव महावीर एव जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ तहेव एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ । तहेव सव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वदइ णमंसइ, णमसइत्ता एववयासी—जीवाण भंते ! सिज्झमाणा कयरंमि सघयणे सिज्झति ? गो

तथैवैकादशाङ्गान्यधीते, तथैव सर्वं यावत्सर्वदु क्खप्रहीणा ' हेभगवन् ! भगवान् गौतम श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति' वन्दित्वा नमस्कृत्य एवमवादीत्-जीवा भदन्त ! सिध्यन्त कस्मिन्संहनने सिध्यन्ति ? गौतम ! वज्रर्षभनाराचसहनने सिध्यन्ति, एवयथैवोपपातिकं त

लोचप्रते करेकरीने । समण भगव महावीर । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीजीप्रते । एव जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ । इम जिमहीज ऋषभदत्त नो अधिकार कह्यो तिमहीज दीक्षालीधी । तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ । तिमहीज इग्यारेअग अध्ययनकरे भणे इत्यथ तहेव सव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । तिमज सर्वेमवध कहवो यावत् सर्व दुःखबधकी मकाणीमोचगया इत्यथ । भंतेत्ति । हेभगवन् । एसेआमत्रणे । भगव गोयमे । भगवत गौतम । समण भगव महावीर वदति णमसति २ त्ता । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते वादे नमस्कारकरे वादीनमस्कारकरी एववयासी । इमकहे । जीवाण भंते । सिज्झमाणा कयरंमि सघयणे सिज्झति । जीव ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । मोक्ष जातांथकां किसा सघयणने विषे सीझे मोक्षजाय इत्यर्थ इति

॥ टीका ॥ तस्याश्चोपरि योजने लोकान्तो भवति, तस्य च योजनस्योपरितनगव्यूतोपरितनषड्भागे सिद्धाः परिवसन्तीति ॥ एवं सिद्धिगण्डिया निरवसेसा भा णियव्वत्ति ॥ एवमिति पूर्वोक्तसंहननादिद्वारनिरूपणक्रमेण सिद्धिगण्डिकासिद्धिस्वरूपप्रतिपादनपरा वाक्यपद्धति रौपपातिकप्रसिद्धा ध्येया, इ यत्र परिवसनद्वारयावदर्थलेशतो दर्शिता तत्परतस्त्वेव–कहिपडिहयासिद्धा कहिंसिद्धापइट्ठियाइत्यादिका,„ अथ किमन्तेय मित्याह–जावत्यादि ॥ अ

॥ मूल ॥ यमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति । एवं जहेव उववाइ तहेव–संघयणंसठाणं उच्चत्तंआउयंचपरिव सणा । एवं सिद्धिगण्डिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव अव्वाबाहसोक्ख अणुभवंतिसासयसिद्धा । सेवं भंते

॥ अनुवाद ॥ ।तदेव थैव–संहननसंस्थान मुच्चत्वमायुश्चपरिवसन, एवं सिद्धिगण्डिकानिरवशेषा भणितव्या यावत्–अव्याबाधसौख्य मनुभवन्तिशाश्वतसिद्धाः

॥ भाषा ॥ हे गौतम ! छए संघयण माहे प्रश्न उत्तर । गोयमा वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति एवं जहेव उववाइ तहेव संघयणसंठाण उच्चत्तआउयंचपरिवसणा । वज्र ऋषभनाराच संघयणे सीझे शेष पंचे संघयणे न सीझे, हिवे लाघवने अर्थे अतिदेश कहेछे, इम पूर्वे देखाड्या जे आलावा ते जिम उवाईउपागने विषे सिद्ध प्रते आश्रयीने संघयणादिक कह्या तिम इहां पणि कहवा तिहां संघयणादिक द्वारनी संग्रहगाथा पूर्वार्द्ध संघयणमित्यादि, तिहां संघयण तो कह्युं संस्थानादिक तो इम तिहां संस्थान छ माहि अनेरो कोइएक संस्थानने विषे सीझे उच्चत्वथको सात हाथ प्रमाणे उत्कृष्टथको ५०० धनुष आउ खो जघन्यथको साधिक अष्टवर्ष प्रमाण उत्कृष्टथको पूर्वकोटि आउखे रत्नप्रभा आदिदेई पृथिवीने सौधर्म आदिदेई देवलोकने इषत्प्रागभारा पृथिवीपर्यंत ने नीचे सिद्ध वसे नहीं तो स्यूं सर्वार्थसिद्ध महाविमानना ऊपरिलाभाग थूभिकाना अग्रथको बारे योजने ऊंचा जाय ते तिहां ईषत्प्रागभारा नाम पृ थिवी ते पैतालीसलाख योजन आयामविष्कंभे वर्णथको ऊजली वर्णी रमणीकछे आठयोजन विषे जाडीछे तेहने ऊपर एकयोजने लोकनो अन्तछे ते योजनना ऊपरला कोशना ऊपरला छट्ठाभागनेविषे सिद्ध रहेछे तिहां वसेछे इत्यर्थ । एवं सिद्धिगंडिया णिरवसेसा भाणियव्वा । इम पूर्वोक्त संहनना दि द्वारनिरूपण अनुक्रमें करी सिद्धिगंडिका, सिद्धस्वरूप प्रतिपादन परवाक्यपद्धति, उववाईमाहे प्रसिद्ध ते इहां कहवी एह परिवसणा यावत् अर्थ ले

व्याबाधमित्यादिचेह गाथोत्तरार्द्धमधीत, समग्रगाथापुनरियमेव–निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का। अव्वाबाहसोक्खं अणुहुतीसासयं सिद्धत्ति ॥ १ ॥ एकादशशते नवम ॥ ११ ॥ ९ ॥ नवमोद्देशकस्यान्ते लोकान्ते सिद्धप्रविवसनोक्तं त्यतो लोकस्वरूपमेव दशमे प्राह तस्य चेदमादिसूत्र–रायगिहेत्यादि ॥ दव्वलोएत्ति ॥ द्रव्यलोक आगमतो नो आगमतश्च; तत्रागमतो द्रव्यलोको लोकशब्दार्थज्ञस्तत्रानुपयुक्तो ऽनुपयोगो द्रव्यमितिवचनात्, आहच मङ्गल प्रतीत्य द्रव्यलक्षण–आगमओअणुवउत्तो मंगलसद्दाणुवासिओवत्ता। तन्नाणलद्धिजुत्तोउनोउवउत्तोत्तिदव्वत्ति ॥ १ ॥ नोआगमतस्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरतद्व्यतिरिक्तभेदा त्रिविध स्तत्र–लोकशब्दार्थज्ञस्य शरीर मृतावस्थं ज्ञानापेक्षया भूतलोकपर्यायतया घृतकुम्भवत्

भंतेत्ति ॥ सिवोसम्मत्तो ॥ एगारससयस्स नवमो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ९ ॥ रायगिहे जाव एववयासी–कइविहेणं भंते ! लोए पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तंजहा–दव्वलोए

भदन्त। भदन्त। इतिशिव समाप्त ॥ इत्येकादशशतस्य नवमोद्देश ॥ ११ ॥ ९ ॥ राजगृहे यावदेवमवादीत्–कतिविधो भदन्त। लोक प्रज्ञप्त ? गौतम। चतुर्विधो लोक प्रज्ञप्तस्तद्यथा–द्रव्यलोक क्षेत्रलोक काललोको भावलोक। क्षेत्रलोको भदन्त। कतिवि

ययकी टेखाथी ते इम–कहिपडिहयासिद्धा कहिंसिद्धापइट्ठिया, इत्यादिक पदवे ए वेतलालगे कहवो–निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का। अव्वाबाहसोक्खं अणुहुतीसासयसिद्धत्ति ॥ १ ॥ छेद्या सगलादुक्ख जाति जरामरणना बन्धनथकी मूकाणा अव्याबाध सुखप्रते अनुभवेछे शाश्वता सिद्ध। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन्। तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथा नथी इमकही गौतमस्वामी विचरे। सिवोसम्मत्तो। एतले शिवराजऋषिनो अधिकार पूर्णथयो। एगारससयस्सनवमो उद्देसो सम्मत्तो। ए इग्यारमा शतकनो नवमो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ ९ ॥ नवमा उ देशाने अंते लोकान्ते सिद्धनी परिवसना कही इहां लोकस्वरूप कहेछे–रायगिहेणयरे जाव एववयासी। राजग्रहनगरने विषे गौतमस्वामी यावत् इम कहे। कइविहेणंभंते लोए पन्नत्ते। केतलेभेदे हेभगवन्। लोक कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा चउव्विहे लोए प० तं०। हेगौतम। चारभेदे लोककह्यो ते

लोक सच ज्ञशरीररूपो द्रव्यभूतो लोको ज्ञशरीरद्रव्यलोक , नोशब्दश्चेह सर्वनिषेधे तथा शब्दार्थं लोक ज्ञास्यति य स्तस्य शरीर सचेतन भाविलो
कभावत्वेन मधुघटव द्रव्यशरीरद्रव्यलोक , नोशब्दइहापि सर्वनिषेधएव , ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तश्च द्रव्यलोको द्रव्याण्यव धर्मास्तिकायादीनि
आह च-जीवमजीवेरूवम रूविसपएसअप्पएसेय। जाणाहिदव्वलोय निच्चमणिच्चजदव्व ॥१॥ इहापि नाशब्द सर्वनिषेधे आगमशब्दवाच्यस्य ज्ञानस्य
सर्वथा निषेधात् ॥ खेत्तलोएत्ति ॥ क्षेत्ररूपोलोक क्षेत्रलोक आह च-आगासस्सपएसा उड्ढचअहयतिरियलोएय । जाणाहिखेत्तलोय अणतजिणदेसिय
सम्म ॥ २ ॥ काललोएत्ति ॥ काल समयादि स्तद्रूपोलोक काललोक आह च-समयावलीमुहुत्ता दिवसअहोरत्तपक्खमासाय । सवच्छरजुगपलिया सा
गरउसप्पिपरियट्टा ॥ १ ॥ भावलोएत्ति ॥ भावलोको द्वेधा आगमतो नोआगमतश्च , तत्रागमतो लोकशब्दार्थज्ञ स्तत्रचोपयुक्तो भावरूपो लोको
भावलोक इति , नोआगमतस्तु भावा औदयिकादय स्तद्रूपो लोको भावलोक आह च-उदइयउवसमिए खइएयतहाखउवसमिएय । परिणामसन्नि
वाए य-छव्विहोभावलोगोत्ति ॥ १ ॥ इह नोशब्द सर्वनिषेधे मिश्रवचनोवा , आगमस्य ज्ञानत्वात् , क्षायिकक्षायोपशमिकज्ञानस्वरूपभावविशेषे
णाच मिश्रत्वा दौदयिकादिभावलोकस्येति ॥ अहेलोयखेत्तलोएत्ति ॥ अधोलोकरूप क्षेत्रलोको धोलोकक्षेत्रलोक ' इह किलाष्टप्रदेशो रुचक स्तस्य चा

कहेछ —दव्वलोए खेत्तलोए काललोए भावलोए । द्रव्यलोक १ क्षेत्रलोक २ काललोक ३ भावलोक ४ ए चारिभेदे लोक वली गोतम पूछे छे—खेत्तलोएणभंते
कइविहे पण्णत्ते । क्षेत्रलोक हेभगवन् केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहे लोए प० तजहा । हेगोतम ' तीनभेदे कह्यो त कहे छे—अहोलोय
खेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए । अधोलोकरूप क्षेत्रलोक ते अधोलोक क्षेत्रलोक कहिये इहा निश्चे अष्टप्रदेश रुचक तेहनो हेठलो प्रतर तेह नीचे नवसे
योजन लगे तिर्यग्लोकके तिवारपछे नीचे रह्यामाटे नीचलो क्षेत्रलोक कहिये ते साधिक सातराज प्रमाणछे तथा तिरियलोय खेत्तलोय रुचकनो अ
पसाथी नवसेयोजन ऊचो तथा नीचे ए अढारेसे योजनमान तिर्यगरूप पणाथको तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक कहिये तथा । उड्ढलोय खेत्तलोए । तथा तिर्य
ग्लोकने ऊपर देशोन सातराज प्रमाण ऊर्द्धभागे वर्त्ते तेमाटे ऊर्द्धलोक क्षेत्रलोक कहिये २ अथवा नीचे अशुभपरिणाम बाहुल्यकरी क्षेत्र अनुभाव वको

॥ टीका ॥

धस्तनप्रतरस्याधो नव योजनशतानि यावत्तिर्यग्लोक स्तत परेणाध स्थितत्वा दधोलोक साधिकसप्तरज्जुप्रमाणा ॥ तिरियलोयखेत्तलोएत्ति ॥ रुच कापेक्षया अधउपरिच नवनवयोजनशतमान स्तिर्यग्रूपत्वा त्तिर्यग्लोक स्तद्रूप. क्षेत्रलोक स्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक ॥ उड्ढलोयखेत्तलोएत्ति ॥ तिर्यग्लोकस्योप रि देशोनसप्तरज्जुप्रमाणा ऊर्द्ध्वभागवर्त्तित्वा दूर्द्ध्वलोक स्तद्रूप क्षेत्रलोक ऊर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोको ऽथवा; अधोशुभ परिणामो बाहुल्येन क्षेत्रानुभावा द्यत्र लोके द्रव्याणामसा वधोलोक , तथा तिर्यग्मध्यमानुभाव क्षेत्र नातिशुभ नाप्यत्यशुभ तद्रूपो लोक स्तिर्यग्लोक , तथा ऊर्द्ध्व शुभपरिणामो बाहुल्येन द्रव्याणा यत्रासावूर्द्ध्वलोक आहच-अहवअहोपरिणामो खेत्तणुभावेणजेणउस्सण्ण । असुहोअहोत्तिभणिउ दव्वाणतेणऽहोलोगो ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ तप्पा

॥ मूल ॥

खेत्तलोए काललोए भावलोए । खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—अहेलोयखेत्तलोए तिरियलोयखेत्तलोए उड्ढलोयखेत्तलोए । अहोलोयखेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते , तंजहा—रयणप्पभापुढवीअहेलोयखेत्तलोए जाव अहेसत्तमापुढविअहेलोय

अनुवाद

ध प्रज्ञप्त ? गौतम । त्रिविध प्रज्ञप्तस्तद्यथा—अधोलोकक्षेत्रलोक स्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक ऊर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोक ३ । अधोलोकक्षेत्रलोको भदन्त । कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम । सप्तविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा—रत्नप्रभापृथ्व्यधोलोकक्षेत्रलोको यावदध सप्तमापृथिव्यधोलोकक्षेत्रलोक । तिर्यग्लोकक्षे

॥ भाषा ॥

जे लोकनेविषे द्रव्यने ते अधोलोक क्षेत्रलोक १ तथा मध्यम अनुभावक्षेत्र अतिशुभ नही अति अशुभ नही तद्रूपलोक ते तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक २ तथा द्रव्य नो शुभपरिणाम घणो तिहा ते ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक कहिये ३ । अहोलोय खेत्तलोएणभंते कइविहे प० । अधोलोक क्षेत्रलोक हेभगवन् । केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तविहे प० तं० । हेगौतम । सातभेदे कह्यो ते कहेछे—रयणप्पभापुढवी अहेलोय खेत्तलोए । रत्नप्रभा पृथिवी अधोलोक क्षेत्र लोक शर्करप्रभापृथिवी अधोलोक क्षेत्रलोक । जाव अहेसत्तमापुढवी अहेलोय खेत्तलोए । इम यावत् नीचे सातमी पृथिवी अधोलोक क्षेत्रलोक एव ७ । तिरियलोयखेत्तलोएण भंते कइविहे प० । तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक हेभगवन् । केतलेभेदे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असंखेज्जविहे प० तं० । हेगौतम ।

॥ मूल ॥

कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तंजहा—
खेत्तलोए । तिरियलोय खेत्तलोएणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तंजहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयम्भुरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए । उड्ढलोयखेत्तलोएणं भंते ! कइविहे ? गोयमा ! पण्णरसविहे पण्णत्ते, तंजहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय उड्ढलोयखेत्तलोए, गेविज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाण०, ईसिप्पब्भारपुढवीउड्ढलोयखेत्तलोए । अहेलोयखेत्तलोएणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते । तिरियलोयखेत्तलोएणं

अनुवाद

त्रलोको भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! असङ्ख्येयविध प्रज्ञप्तस्तद्यथा—जम्बूद्वीपोद्वीपस्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोको यावत्स्वयम्भूरमणसमुद्रस्तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक । ऊर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोको भदन्त ! कतिविध प्रज्ञप्त ? गौतम ! पञ्चदशविध प्रज्ञप्तस्तद्यथा—सौधर्मकल्पोर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोको यावदच्युतोर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोको, ग्रैवेयकविमानोर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोको, ऽनुत्तरविमानोर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोक, ईषत्प्राग्भारापृथिव्यूर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोक । अधोलो

॥ भाषा ॥

असंख्यातभेद कह्या, ते कहेछे—जंबूद्वीप २ तिरियलोय खेत्तलोए । जंबूद्वीपनामाद्वीप तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक । जाव सयंभुरमणसमुद्दे तिरियलोय खेत्तलोए । यावत् सयंभूरमण समुद्र तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक । उड्ढलोय खेत्तलोएणं भंते कइविहे प० । ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक हेभगवन् । केतला भेद कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पन्नरस विहे प० तं० । हेगौतम । पनरे भेद कह्या ते कहेछे—सोहम्मकप्पउड्ढलोय खेत्तलोए । सौधर्मनामा देवलोक ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक । जाव अच्चुय उड्ढलोय खेत्तलोए । यावत् अच्युत देवलोक ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक । गेविज्जगविमाणे उड्ढलोय खेत्तलोए । यावत् ग्रैवेयकविमान ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक । अणुत्तरविमाण । अनुत्तरविमान ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक १४ । ईसिप्पभार पुढवी उड्ढलोय खेत्तलोए । ईषत्प्राग्भारा पृथिवी ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोक १५ एव १५ । अहेलोय खेत्तलोएणं भंते किसंठिए प० । अधोलोक क्षेत्रलोक हेभगवन् । किसे संस्थाने आकारे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तप्पागारसंठिए प० । हेगौतम त्रापाने संस्थाने कह्यो । तिरियलोयखेत्तलोएणं भंते किं संठिए प० । तिर्यग्लोक क्षेत्रलोक हेभगवन् । किसे संस्थाने आकारे क

॥ टीका ॥

गारसंठिएत्ति ॥ तत्र उडुपको ऽधोलोकक्षेत्रलोको ऽधोमुखसरावाकारसंस्थान इत्यर्थ ॥ झल्लरिसंठिएत्ति ॥ अल्पोच्छ्रायत्वा न्महाविस्तारत्वाच्च ति र्यग्लोकक्षेत्रलोको झल्लरीसंस्थित ॥ उड्ढमुइंगाकारसंठिएत्ति ॥ उर्द्ध ऊर्द्धमुखो यो मृदङ्ग स्तदाकारेण संस्थितो य स तथा सरावसम्पुटाकार इ त्यर्थ. । सुपइट्ठगसंठिएत्ति ॥ सुप्रतिष्ठक स्थापनक तच्चहारोपितजव.रकादि गृह्यते , तथाविधेनैव लोकसादृश्योपपत्तेरिति ॥ जहा सत्तमसए इत्या दि ॥ यावत्करणा दिद दृश्य–उप्पिविसाले अहे पलियंकसंठाणसंठिए मज्झे वरवइरविग्गहिए उप्पि उड्ढमुइंगाकारसंठिए तस्सिचणं सासयंसि

॥ सूत्र ॥

न्नंते ! किं संठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते । उड्ढलोगखेत्तलोगपुच्छा ? गोयमा ! उड्ढमुइंगाकार संठिए पन्नत्ते । लोएणं न्नंते ! किं संठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! सुप्पइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते , तंजहा—हेट्ठावि च्छिन्ने मज्झे संखित्ते जहासत्तमसए पढमोद्देसए जाव अंतंकरेंति । अलोएणं न्नंते ! किं संठिए पन्नत्ते ज्झुसिर

॥ अनुवाद ॥

कक्षेत्रलोको भदन्त ! किं संस्थित प्रज्ञप्त ? गौतम । तत्प्राकारसंस्थित प्रज्ञप्त । तिर्यग्लोकक्षेत्रलोको भदन्त । किं संस्थित प्रज्ञप्त ? गौतम । झल्लरिसंस्थित प्रज्ञप्त । ऊर्द्धलोकक्षेत्रलोकपृच्छा , गौतम । ऊर्द्धमृदङ्गाकारसंस्थित प्रज्ञप्त । लोको भदन्त ! किं संस्थित प्रज्ञप्त ? गौतम । सुप्रतिष्ठकसंस्थितो लोक प्रज्ञप्तस्तद्यथा–अधोविस्तीर्णो मध्ये संक्षिप्तो यथा सप्तमशते प्रथमोद्देशके यावदन्त कुर्वन्ति । अलोको भदन्त ! किं

॥ भाषा ॥

छ्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा झल्लरिसंठिए प० । हेगौतम । झालर थालविशेष ऊचो थोडो चोडो घणो हुवे तेआकारेछे । उड्ढलोग खित्तलोगपुच्छा । ऊर्द्ध लोक क्षेत्रलोकनो प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा उड्ढमुइंगाकार संठिए प० । हेगौतम । ऊर्द्धमुख जे मृदङ्ग तेहने संस्थाने कह्यो । लोएणभंते किं संठिए प०। लोक हेभगवन् । किसे संस्थाने आकारविशेषे कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सुप्पइट्ठ गसंठिए लोए प० तं० । हेगौतम । आखलाने आकारे सरावसपुट ने आकारे कह्यो ते कहेछे—हेट्ठाविच्छिन्ने मज्झेसंखित्ते । हेठे विस्तारवन्त विचाले साकडोछे । जहासत्तमसएपढमोद्देसए जाव अंत करेंति । जिम सा तमा शतकना पहिला उद्देशाने विषे लोकस्वरूप वखाण्यू तिम इहां पणि सर्व कहवो यावत् अरहा जिण केवली जीवे विजाणइ अजीवेविजाणइ

॥ टीका ॥

लोगसि हेठा विच्छिसखि जाव उप्पि उड्ढमुइगाकारसंठियसि उप्पणणाणदसणधरे अरहा जिणे केवली जीवेवि जाणइ अजीवेवि जाणइ तम्रोपच्छा सिज्झइ वुज्झइ त्यादीति ॥ झुसिरगोलसंठिएत्ति ॥ अन्त शुषिरगोलकाकारो यतो ऽलोकस्य लोक शुषिरमिवाभाति ॥ अहेलोयखेत्तलोएण भते । इत्यादि ॥ एवं जहा इदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वति ॥ दशमशत प्रथमोद्देशके यथेन्द्री दिगुक्ता तथैव निरवशेष मधोलोकस्वरूप मणि तव्व तचेव—अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पदेसा गोयमा । जीवावि जीवदेसावि जीवप्पएसावि अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पदेसावीत्यादि ॥

॥ सूत्र ॥

गोलसंठिए पन्नत्ते । अहेलोयखेत्तलोएणं भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा एवं जहा इंदा दिसा त हेव णिरवसेसं भाणियव्व जाव अद्धासमए। तिरियलोयखेत्तलोएणं भंते किं जीवा एवंचेव, एवं उड्ढलोय

॥ अनुवाद ॥

संस्थित प्रज्ञप्त ? गौतम । शुषिरगोलसंस्थित. प्रज्ञप्त । अधोलोकक्षेत्रलोके भदन्त । किं जीवा जीवदेशा जीवप्रदेशा एव यथेन्द्री दिग् तथैव निरवशेष भणितव्यम्, यावदद्धासमय । तिर्यग्लोकक्षेत्रलोके भदन्त । किं जीवा एव चैव, एवं मूर्द्धलोकक्षेत्रलोकेपि, नवरमरूपिण

॥ भाषा ॥

तथा पछ सिज्झति जाव अंतकरेति वलीगौतम पूछे—अलोएणभते कि संठिए प० । अलोक हेभगवन् । किसे सस्थाने आकारावयवे कह्यो इतिप्रश्न उ त्तर । गोयमा झूसिरगोलसंठिए प० । हेगौतम । माहि खालीगोलो हुवे तेहने संस्थाने जेमाटे अलोकने विचाले लोक सुषिरनो पेरे शोभे वलीगौतम पूछे—अहेलोयखत्तलोएणभते कि जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा । अधोलोक क्षेत्रलोकने विषे हेभगवन् । स्यू जीव हुवे अथवा जीवदेश हुवे अथवा जो वप्रदेश अजीव अजीवदेश अजीवप्रदेश हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गो० एव जहाइदा दिसा तहेव णिरवसेस भाणियव्व जाव अद्धासमए । हेगौतम इम जि म दशमा शतकना पहिला उद्देशानेविषे इन्द्रा कहिये पूर्वदिशि कही तिम इहा पणि निरवशेष समस्त अधिकार कहवो ते जाणवो यावत् अद्धासम य एतलालगे कहवो । तिरियलोय खेत्तलोएणभते कि जीवा एवचेव । तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकनेविषे हेभगवन् । स्यू जीव जीवदेश जीवप्रदेश इत्यादि प्रश्न उत्तर इमहीज जिम अधोलोक क्षेत्रलोक कह्या तिम एह पणि कहवो । एव उड्ढलोय खेत्तलोएवि णवर अरूवी छव्विहा अद्धासमओ नत्थि । ऊर्द्धलोक

नवरमित्यादि ॥ अधोलोकतिर्यग्लोकयो ररूपिण सप्तविधा प्रागुक्ता धर्म्माधर्म्माकाशास्तिकायानां देशा ३ प्रदेशा ३ कालश्चे त्येव ऊर्द्धलोकेतु रविप्रकाशानभिसम्बद्धात् कालोनास्ति तिर्यगधोलोकयोरेव रविप्रकाशस्य भावात्, अत षडेव त इति ॥ लोएणमित्यादि ॥ जहा वीयसए अत्थि उद्देसएत्ति ॥ यथा द्वितीयशते दशमोद्देशक इत्यर्थ ॥ लोयागासेत्ति ॥ लोकाकाशे विषयभूते जीवादय उक्ता एवमिहापीत्यर्थं ॥ नवरमिति ॥ केवलमय विशेष स्तत्रारूपिण पञ्चविधा उक्ता इहतु सप्तविधा वाच्या स्तत्रहि लोकाकाश माधारतया विवक्षितमत आकाशभेदा स्तत्र नोच्यते, इहतु लोको ऽस्तिकायसमुदायरूप आधारतया विवक्षितो ऽत आकाशभेदा अप्याधेया भवन्तीति, सप्त ते चैव-धर्मास्तिकायो लोके परिपूर्णस्य तस्य विद्यमानत्वा द्धर्मास्तिकायदेशस्तु नभवति धर्मास्तिकायस्यैव तत्र भावात्, धर्मास्तिकायप्रदेशाश्च सन्ति तद्रूपत्वा द्धर्मास्तिकायस्येति

खेत्तलोएवि, णवरं अरूवी छव्विहा। अद्धासमउ नत्थि। लोएणं भंते! किं जीवा जहा वीयसए अत्थि उद्दे

षड्विधा अद्धासमयो नास्ति। लोके भदन्त। किं जीवा यथा द्वितीयेऽस्त्युद्देशके लोकाकाशे नवरमरूपिण सप्तविधा यावदधर्मास्तिकायस्य

क्षेत्रलोक पणि इमहीज कहवो एतलोविशेष तिहा अधोलोक तिर्यग्लोकने अरूपीना सातभेद कह्या इहा ऊर्द्धलोकने विषे रवि प्रकाशयकी अपनोकाल नही तेमाटे अरूपीना छभेद कहवा अद्धासमय न कहवो वलीगौतम पूछेछे—लोएणभंते कि जीवा जहा विइए अत्थिउद्दे सए लोगागासए। लोक हे भगवन् स्यू जीव इत्यादि प्रश्न उत्तर हेगौतम जिम वीजा शतकना दशमाउद्देशाने विषे लोकाकाश विषयभूतनेविषे जीवादिक कह्या तिम इहा पणि कहवो। णवर अरूवी सत्तविहा जाव अहम्मत्थिकायस्सपएसा। एतलोविशेष तिहा अरूपी पञ्चकह्या इहा अरूपी सातभेदे कहवा, तिहा लोकाकाश प्रतें आधारपणें विवक्ष्यो तेमाटे आकाशना भेद तिहा न कह्या पर अधोलोक आधारपरे विवक्ष्या एतलामाटे आकाशभेद पणि आधेय हुवे तेमाटे सातभेद कहवा तेइम धर्मास्तिकाय लोकनेविषे तेहना परिपूर्णना विद्यमानपणा थकी तथा धर्मास्तिकायनो देश तो न हुवे धर्मास्तिकायनाज तिहा भावथकी तथा धर्मास्तिकायना प्रदेश तिहाछे धर्मास्तिकायने प्रदेश रूपपणाथकी इम धर्मास्तिकायना दोयभेद तथा। णो आगासत्थिकाए आगास

॥ टीका ॥

इय, एवमधर्मास्तिकायेपि द्वय ४ तथा ॥ नोआकाशास्तिकायो लोकस्यतद्देशत्वात्, आकाशदेशस्तु भवति तद्देशत्वा लोकस्य तत्प्रदेशाश्च सति ६ कालश्चेति ७' सप्त । अलोएणं भंते । इत्यादि ॥ इदञ्च ॥ एवजहेत्याद्यतिदेशा देवदृश्य-अलोएणभंते । किं जीवा जीवदेसा जीवप्पदेसा, अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसा गोयमा ! नोजीवा जाव नोअजीवप्पदेसा एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागा से अणंतभागूणेत्ति „ तत्र सर्वाकाशमनन्तभागेन मित्यस्यायमर्थो-लोकलक्षणेन समस्ताकाशस्या नन्तभागेन न्यून सर्वाकाशमलोक इति । अहेलोग

॥ मूल ॥

त्थिकायउद्देसए अलोगागासे तहेव णिरवसेसं जाव अणंतभागूणे । अहेलोयखेत्तलोयस्सणं भंते ! एगम्मि कायस्सदेसे आगासत्थिकायस्स पएसा अद्धासमए सेसं तंचेव । अलोएणं भंते ! किं जीवा एवं जहा अ सए लोगागासे, णवरं अरूवी सत्तविहा जाव अहम्मत्थिकायस्स पएसा, णोआगासत्थिकाए आगासत्थि

अनुवाद

यथाऽस्तिकायोद्देशके ऽलोकाकाशे तथैव निरवशेष यावदनन्तभागेन । अधोलोकक्षेत्रलोकस्य भदन्त ! एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे किं जीवा जीवदेशा प्रदेशाः ' नो आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा अद्धासमय शेष तच्चैव । अलोके भदन्त । किं जीवा. ? एव

॥ भाषा ॥

त्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सपएसा अद्धासमए सेसतचेव । नोआगासत्थिकाए लोकने तेहना देशपणा थकी तथा आकाशदेश तो हुवे तेहना अथ पणाथकी लोकने आकाशना प्रदेश पणिहुवे इम ६ काल ७ इम सातभेद हुवे । अलं एणभंते किं जीवा एव जहा अत्थिकायउद्देसए अलोगागासे । अ लोक हेभगवन् ! स्यू जीव इत्यादि अतिदेशथकी इम कहवो, अलोएणभंते किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा, अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसा, गोय मा णोजीवा जाव णो अजीवप्पएसा, एगेअजीव दव्वदेसे अगुरुयलहुए अणतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासे अणतभागूणे तहेव णिरवसेस जाव अणतभागूणे । तिहा सर्व आकाश अनन्तभागेन एहनो अर्थ लोकलक्षण समस्त आकाशने अनन्तमेभागे करी न्यून सर्वआकाश अलोक इति व लोकोतम पूछेछे । अहेलोय खेत्तलोयस्सणभंते एगम्मि आगासपएसे किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा । अधोलोक क्षेत्रलोकना हेभगवन् एक आकाश प्र

॥ टीका ॥

खेतलोगस्स णं भंते ' इत्यादि ॥ नोजीवा एकप्रदेशे तेषामनवगाहनात् बहूनां पुन जीवाना देशस्य प्रदेशस्या वगाहना दु च्यते-जीवदेसाविजीवप्पएसाविति ॥ अजीवाविति ॥ यद्यपि धर्मास्तिकायाद्यजीवद्रव्य नैकत्राकाशप्रदेशे वगाहते तथापि परमाणुद्व्यणुकादिद्रव्याणा कालद्रव्यस्यचावगाहनादुच्यते-अजीवाविति , द्व्यणुकादिस्कन्धदेशाना त्ववगाहनादुक्त-अजीवदेसाविति ' धर्माधर्मास्तिकायप्रदेशयो पुद्गलद्रव्य प्रदेशाना चावगाहनादुच्यते-अजीवप्पएसाविति , एव मज्झिल्लविरहिउत्ति ॥ दशमशतप्रदर्शिते त्रिकभङ्गे ॥ अहवा एगिंदियदेसाय बेंदियस्सय दे

॥ मूल ॥

आगासपदेसे किं जीवा जीवदेसा जीवप्पदेसा , अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पदेसा ? गोयमा ! णोजीवा जीवदेसावि जीवप्पएसावि , अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पदेसावि । जे जीवदेसा ते णियम एगिंदिय देसा अहवा एगिंदियदेसाय वेइंदियस्स देसे , अहवा एगिंदियस्स देसाय वेइंदियाणय देसा एवं मज्झि

अनुवाद

जीवप्रदेशा , अजीवा अजीवदेशा अजीवप्रदेशा ? गौतम ! नो जीवा जीवदेशा अपि जीवप्रदेशा अपि अजीवा अपि अजीवदेशा अपि अजीवप्रदेशा अपि । ये जीवदेशा स्ते नियमादेकेन्द्रियदेशा , अथवा एकेन्द्रियदेशाश्च द्वीन्द्रियस्य देश , अथवैकेन्द्रियस्य देशाश्च द्वीन्द्रियाणाच देशा एव मध्यम

॥ भाषा ॥

देशने विषे स्यू जीव जीवदेश जीवप्रदेश । अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसा । अजीव अजीवदेश अजीवप्रदेश छे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोजीवा जीवदेसा जीवप्पएसावि, अजीवावि अजीवदेसावि अजीवप्पएसावि । हेगौतम जीव नही एकप्रदेशनेविषे जीवनी अवगाहनाना अभावथकी वली घणा जीवना देशनी तथा प्रदेशनो अवगाहना थकी जीवदेश पणि जीवप्रदेश पणि तथा यद्यपि धर्मास्तिकायादिक अजीवद्रव्य नही एक आकाशप्र देशनेविषे अवगाहे तथापि द्व्यणुकादिक द्रव्यनो तथा कालद्रव्यनी अवगाहना थकी कहिये अजीवपणि इम अजीवदेश प्रदेश पणि कहवा । जे जीव देसा ते णियम एगिंदियदेसा । जे जीवना देशछे ते नियमथकी एकेन्द्रियना देशछे ए एकसंयोगी भांगोकह्यो, हिवे द्विकसंयोगीभागा देखाडेछे—अ हवा एगिंदियदेसाय बेइंदियस्सदेसे । अथवा घणा एकेन्द्रीना घणादेश एक बेइन्द्रीनो एकदेश । अहवा एगिंदियस्सदेसाय बेइंदियाणयदेसा । अथवा घ

॥ टीका ॥

तथाहि-द्वीन्द्रि सा ॥ इत्येवरूपो यो मध्यमभङ्गस्तद्विरहितो सौ त्रिकभङ्ग 'एवमितिसूत्रप्रदर्शितभङ्गद्वयरूपो ध्येतव्यो मध्यमभङ्गस्येह असम्भवात् ' तथाहि-द्वीन्द्रि यस्यैकस्यैकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति देशस्यैव जावा देव-आइल्लविरहिउत्ति ' अहवा एगिंदियदेसाय बेंदियस्स पएसे-इत्येवरूपाद्यभङ्ग कविरहितस्त्रिकभङ्ग एवमिति सूत्रप्रदर्शितभङ्गद्वयरूपो ऽध्येतव्य आद्यभङ्गकस्येहाऽसम्भवात्, तथाहि-नास्त्येवैकत्राकाशप्रदेशे केवलिसमुद्घातवि

॥ मूल ॥

ल्लविरहिउ जाव अणिंदिएसु जाव अहवा एगिंदियदेसाय अणिंदियाणयदेसा, जे जीवप्पएसा ते णियमं एगिंदियप्पदेसा, अहवा एगिंदियप्पएसाय बेइंदियस्स प्पदेसा, अहवा एगिंदियप्पदेसाय बेइंदियाणय प्पएसा एव आदिल्लविरहिउ जाव पंचिंदिएसुय अणिंदिएसुय तियभंगो, जे अजीवा ते दुविहा प०, तं०

॥ अनुवाद ॥

विरहितो यावदनिन्द्रियेषु यावदथवैकेन्द्रियदेशाश्चानिन्द्रियाणांच देशा । ये जीवप्रदेशा स्ते नियमादेकेन्द्रियप्रदेशा , अथवैकेन्द्रियप्रदेशाश्च द्वी न्द्रियस्य प्रदेशा ' अथवैकेन्द्रियप्रदेशाश्च द्वीन्द्रियाणाच प्रदेशा , एव मादिमविरहितो यावत्पञ्चेन्द्रियेषु वानिन्द्रियेषुच त्रिक भङ्ग. । ये ऽजीवास्ते

॥ भाषा ॥

गा एकेंद्रीना घणादेश हुवे घणा बेइन्द्रीना घणा देशहुवे । एव मज्झिमविरहिओ जाव अणिंदिएसु । इम दशमा शतकने विषे तीनभागा देखाड्या ते माहिलो त्रिचलो भांगो घणा एकेंद्रीना घणादेश बेइंद्री एकना घणादेश ए बीजोभांगो नथी यावत् अनिन्द्रियलगे कहवा । जाव अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाणयदेसा । यावत् अथवा घणा एकेन्द्रियना घणादेश घणा अनिन्द्रियना घणादेश हुवे एतलालगे कहवो । जे जीवप्पएसा ते णियम एगि दियप्पएसा । जे जीवना प्रदेशहुवे ते नियमथकी एकेन्द्रियमा प्रदेशहुवे ए एकसंयोगी भांगो कह्यो, हिवे द्विकसंयोगी भागा देखाडेछे। अहवा एगिंदियप० सायबेइंदियस्सप्पएसा। अथवा घणा एकेन्द्रियना घणाप्रदेश एक बेइन्द्रीना घणाप्रदेश । बेइंदियाणयप्पएसा। घणा बेइन्द्रीना घणाप्रदेश ए बीजोभांगो । ए व आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदिएसुय । इम दशमा शतकना पहिलाउद्देशानेविषे तीनभगा कह्या ते माहिलो पहिलो घणा एकेन्द्रियना घणाप्रदेश एक बेइन्द्रीनो एकदेश ए भांगो न कहवो इम यावत् पञ्चेन्द्रिय लगे कहवो । अणिंदिएसु तियभंगो । अनिन्द्रियनेविषे पूर्वकह्या तीनेइ भागानो सम्भवछे इम करो

॥ टीका ॥ नैकस्य जीवस्यैकप्रदेशसम्भवो बहूनामेव भावादिति ॥ अणिंदियसुत्तियगर्गाणि ॥ अनिन्द्रियेषूक्तभङ्गकत्रयमपि सम्भवतीतिकृत्वा तेषु तद्वाच्यमिति ॥ रूवीतहेवत्ति ॥ स्कन्धा देशाः प्रदेशा अणव चेत्यर्थः ॥ नोधम्मत्थिकायेत्ति ॥ नोधर्मास्तिकाय एकत्राकाशप्रदेशे सम्भवत्यसङ्ख्यातप्रदेशावगाहित्वा तस्येति ॥ धम्मत्थिकायस्स देसेत्ति ॥ यद्यपि धर्मास्तिकायस्यैकत्राकाशप्रदेशे प्रदेश एवास्ति तथापि देशो ऽवयव इत्यनर्थान्तरत्वेना ऽवयवमात्रस्यैव विवक्षितत्वा न्निरंशतायाश्च तत्र सत्या अप्यविवक्षितत्वा द्धर्मास्तिकायस्य देश इत्युक्तं, प्रदेशस्तु निरुपचरित एवास्तीति

॥ सूत्र ॥ रूवीअजीवाय अरूवीअजीवाय, रूवीतहेव, जे अरूवीअजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—णोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पएसा एवं अधम्मत्थिकायस्सवि अद्धा समए । तिरियलोयखेत्तलोयस्सणं भंते ! एगम्मि आगासप्पदेसे किं जीवा एवं जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढ

अनुवाद द्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा—रूप्यजीवाश्चा रूप्यजीवाश्च, रूपिणस्तथैव, ये ऽरूप्यजीवास्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा—नोधर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देशो धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा एवमधर्मास्तिकायस्यापि, अद्धासमय । तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकस्य भदन्त ! एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे किं जीवा एव यथा

॥ भाषा ॥ ने तेहनेविषे पहिलोभांगो छइ। जे अजीवा ते दुविहा प० तं० । जे अजीव ते बेभेद कह्या ते कहेछे। रूपीअजीवाय अरूपी अजीवाय। रूपीअजीव अरूपीअजीव। रूवीतहेव। रूपीना चारभेद तिमहीज कहवा खंधादिक ४ । जे अरूपीअजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता तं०। जे अरूपीअजीव तेपंचभेदे कह्या ते कहेछे—णोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसाएव अधम्मत्थिकायस्सवि अद्धासमए । नहो धर्मास्तिकाय एक आकाशप्रदेशने विषे न छइ वे तेमाटे धर्मास्तिकायने असंख्यात प्रदेशावगाहन पणायको तथा यद्यपि धर्मास्तिकायनो एक आकाशप्रदेशने विषे प्रदेशज छै तथापि देशशब्दे धर्मास्तिकायनो अवयव लेवो तेणे अवयवमात्र विवक्षितपणा थको निरंशपणो तिहां छता पिण अविवक्षितपणाथको धर्मास्तिकायनो देश इम कह्यु धर्मास्तिकायप्रदेश तो निरुपचरित छैजछै तेमाटे कह्यु धर्मास्तिकायप्रदेश २ इम अधर्मास्तिकायना पिण देसि कहवा इम ४ अद्धासमए ५ ए पांच अ

॥ टीका ॥ ज्यत उच्यते-धर्मास्तिकायस्य पदेसेत्ति ॥ एवमहम्मत्थिकायस्सविति ॥ नोअहम्मत्थिकाए अहम्मत्थिकायस्सदेसे अहम्मत्थिकायस्स पदेसे, इत्येवमधर्मास्तिकायसूत्र वाच्यमित्यर्थं ॥ अद्धा समए नत्थि अरूवीचउव्विहत्ति ॥ ऊर्द्ध्वलोके अद्धासमयोनास्तीत्यरूपिण श्चतुर्विधा धर्मास्तिकायदेशाद्य ऊर्द्ध्वलोकस्यैकत्राकाशप्रदेशे भवन्तीति ॥ लोगस्स जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगमि आगासप्पएसेत्ति ॥ अधोलोकक्षेत्रलोकस्यैकत्राका

॥ मूल ॥ लोयखेत्तलोगस्सवि, णवरं अद्धासमए नत्थि । अरूवी चउव्विहा लोगस्स जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासप्पएसे । अलोगस्सणं भंते! एगम्मि आगासप्पएसे पुच्छा ? गोयमा ! णोजीवा णोजीवदेसा

अनुवाद ऽधोलोकक्षेत्रलोकस्य (वक्तव्यतोक्ता) तथैव (वाच्या) एवमूर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोकस्यापि नवरमद्धासमयो नास्ति' अरूपिणश्चतुर्विधा । लोकस्य यथाधोलोकक्षेत्रलोकस्यैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे । अलोकस्य भदन्त । एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे पृच्छा, गौतम। नोजीवा नोजीवदेशा स्तथैव, यावदनन्तैरगु

॥ भाषा ॥ तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकना हे भगवन् एक आकाशप्रदेशनेविषे स्यूरूपी अजीवना भेदकह्या । तिरियलोय खेत्तलोयस्सणभंते एगमि आगासपएसे किंजीवा । तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकने विषे कह्यु तिमहीज तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकनेविषे पणि जीव इत्यादि प्रश्न उत्तर । एव जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव । इम जिम अधोलोक क्षेत्रलोकने विषे कह्यु तिमहीज तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकनेविषे पणि कहवो । एव उड्ढलोयखेत्तलोगस्सवि । इम ऊर्द्ध्वलोक क्षेत्रलोकनेविषे पणि कहवो। णवरं अद्धासमओ नत्थि अरूवी चउव्विहा । एतलोविशेष ऊर्द्ध्वलोकनेविषे अद्धासमय नथी तेमाटे अरूपीना चारभेद कहवा धर्मास्तिकाय देशादिक ऊर्द्ध्वलोकना एक आकाशप्रदेशनेविषे हुवे । लोगस्स जहा अहेलोय खेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपएसे । अधोलोक क्षेत्रलोकना एक आकाशप्रदेशने विषे जे वक्तव्यता कही ते लोकना पणि एक आकाशप्रदेशने विषे वक्तव्यता कहवी ते इम' लोगस्सणभंते एगम्मि आगासपएसे किंजीवा पुच्छा, गोयमा णोजीवा इत्यादिक, पूर्वापरे कहवो, हिवे अलोकनी वक्तव्यता कहेछे—अलोगस्सण भंते एगमि आगासपएसे पुच्छा । अलोक हे भगवन् । एक आकाशप्रदेशने विषे स्यू जीव इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा णोजीवा णोजीवदेसा तचेव । हे गौतम । नही जीव नही जीवदेश इत्यादिक तिमहीज । जाव अणतेहि अगुरुयलहुय गुणेहिं सजुत्ते । यावत् अनन्ते अगुरुल

शप्रदेशे यदुक्तमयुक्त तल्लोकस्याप्येकत्राकाशप्रदेशे वाच्यमित्यर्थ स्तद्देव–लोगस्सणं भंते । एगमि आगासप्पएसे किं जीवपुच्छा, गोयमा ! नो

तंचेव जाव अणंतेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे, दव्वओणं अहेलोयखेत्तलोए अणंता जीवदव्वा अणंता अजीवदव्वा अणंता जीवाजीवदव्वा एवं तिरियलोयखेत्तलोएवि, एवं उड्ढलोयखेत्तलोएवि। दव्वओणं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा णेवत्थि अजीवदव्वा णेवत्थि जीवाजीवदव्वा एगे अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स अणंतभागूणे। कालओणं अहेलोयखेत्तलोए जाव णकयाथि णासि जाव णिच्चे एवं जाव

रुलघुकगुणैः संयुक्तः सर्वाकाशस्यानन्तभागोनः । द्रव्यतो धोलोकक्षेत्रलोको ऽनन्तानि जीवद्रव्याणि, अनन्तान्यजीवद्रव्याणि, अनन्तानि जीवाजीवद्रव्याणि । एवं तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकोपि, एवमूर्द्ध्वलोकक्षेत्रलोकोपि । द्रव्यतो ऽलोके नैवास्ति (सन्ति) जीवद्रव्याणि, नैवास्त्यजीवद्रव्याणि, नैवास्ति जीवाजीवद्रव्याणि एको जीवद्रव्यदेशो यावत्सर्वाकाशस्यानन्तभागोनः । कालतो धो लोकक्षेत्रलोको याव न्नकदाचिन्नासीद्यावन्नित्य

युक्त गुणेकरी संयुक्त छे । सव्वागासस्स अणंतभागूणे । सर्व आकाशने अनन्तमेभागे ऊनछे । दव्वओण अहेलोय खेत्तलोए । द्रव्यथकी अधोलोक क्षेत्रलोक नेविषे । अणताजीवदव्वा अणताअजीवदव्वा अणंता जीवाजीवदव्वा । अनन्ताजीव द्रव्यछे अनन्ता अजीव द्रव्यछे अनन्ता जीवअजीव द्रव्यछे । एवं तिरियलोय खेत्तलोएवि । इम तिर्यग्लोक क्षेत्रलोकने विषे पणि कहवो । एवं उड्ढलोय खेत्तलोएवि दव्वओणअलोए । इम ऊर्द्धलोक क्षेत्रलोकने विषे पणि कहवो द्रव्यथकी अलोकने विषे । णेवत्थिजीवदव्वा णेवत्थिअजीवदव्वा णेवत्थि जीवाजीवदव्वा । नथीछे जीवद्रव्य नथीछे अजीवद्रव्य नथीछे जीव अजीवद्रव्य । एगे अजीवदव्वदेसे । एक अजीवद्रव्य देशछे । जावसव्वागासस्स अणतभागूणे । यावत् सर्व आकाशने अनन्तमेभागे ऊनछे । काल थोण अहेलोय खेत्तलोए । कालथकी अधोलोक क्षेत्रलोक । जाव णकयाथिणासि जावणिच्चे एवं जाव अलोए । यावत् नथी किवारे नहुतो इम नथी यावत् नित्य एतलालगे कहवो इम यावत् अलोकलगे कहवो । भावओण अहेलोय खेत्तलोए अणतावण्णपज्जवा । भावथकी अधोलोक क्षेत्रलोक

॥ टीका ॥

जीवेत्यादि ॥ प्राग्वत् ॥ अहेलोयखेत्तलोए अणता वसपज्जवत्ति ॥ अधोलोकक्षेत्रलोके ऽनन्तावर्णपर्य्यवा, एकगुणकालकादीना मनन्तगुणकाल काद्यवसानाना पुद्गलाना तत्र भावात्, अधोलोकसूत्रे ॥ नेवत्थिअगरुयलहुयपज्जवत्ति ॥ अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणां पुद्गलादीना तत्राभावात् ॥ सव्वदीवत्ति ॥ इहयावत्करणा दिद दृश्य-समुद्दाण अब्भतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसठाणसठिए वट्टे रहचक्कवालसठाणसठिए वट्टे पुक्ख रकण्णियासठाणसठिए वट्टे पडिपुण्णचदसठाणसठिए एक्कं जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण तिण्णिजोयणसयसहस्साइं सोलसयसहस्साइं दो

॥ मूल ॥

अलोए । भावत्तेण अहेलोगखेत्तलोगे अणंता वसपज्जवा जहा खंदए जाव अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा एवं जाव लोए । भावत्तेण अलोए णेवत्थि वसपज्जवा जाव णेवत्थि अगुरुलहुयपज्जवा एगे अजीवदव्व देसे जाव अणंतभागूणे । लोएणं भंते ! केमहालए पसत्ते, गोयमा ! अयसं जंबुद्दीवदीवे सव्वदीव जाव

अनुवाद

एव यावल्लोक । भावतोऽधोलोकक्षेत्रलोके ऽनन्तावर्णपर्यवा यथा स्कन्दकं (स्कन्दकाधिकार इत्यर्थ) यावदनन्ता अगुरुकलघुकपर्यवा एव यावल्लोक । भावतोऽलोके नैवास्ति वर्णपर्यवा यावन्नैवास्ति अगुरुकलघुकपर्यवा एको ऽजीवद्रव्यदेशो यावदनन्तभागोन । लोको भदन्त ! कियान्महालय प्रज्ञप्त ? गौतम । अय जम्बूद्वीपोद्वीप सर्वद्वीप (प्रभृति) यावत्परिक्षेपेण । तस्मिन् काले तस्मिन् समये षड् देवा महर्द्धिका

॥ भाषा ॥

अनन्ता एकगुण कालादि वर्ण पर्याय छै । जहा खदए जाव अणता अगुरुयलहुय पज्जवा एव जाव लोए । जिम खन्दकने अधिकारे कह्यु तिम इहा पणि कहवो यावत् अनन्ता अगुरुलघुक पर्याय इम यावत् लोकलगे कहवो । भावओण अलोए । भावथको अलोकनेविषे । णेवत्थिवसपज्जवा जाव णे वत्थि अगुरुलहुयपज्जवा । नथी वर्णपर्यायछै यावत् नथीछै अगुरुलघुक पर्याय । एगे अजीवदव्वदेसे जाव अणतभागूणे । एक अजीवद्रव्यदेश यावत् अनन्तमेभागे ऊन । लोएणभते के महालए प० । लोक हेभगवन् केवलोक मोटो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अयण जबुद्दीवेदीवे । हेगोतम एह जबूद्वीपनामे द्वीप । सव्वदीव जाव परिक्खेवेण । सर्व द्वीपसमुद्र मध्येछै यावत् तीनलाख सोलसहस्स दोयसै सत्ताईस योजन जाझेरो परिधिछै ।

॥ टीका ॥

सिसत्तावीसे जोयणसए तिन्निय कोसे अट्ठावीसंच धणुसयं तेरसअंगुलाइं अद्धंगुलंच किंचिविसेसाहियंतिति ॥ ताए उक्किट्ठाएत्ति ॥ इह या वत्करणा दिदं दृश्यं–तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जयणाए छेयाए दिव्वाएत्ति „ तत्र त्वरितया आकुलया चपलया कायचाप ल्येन चण्डया रौद्रया गत्युत्कर्षयोगात् सिघ्या दाक्ष्यस्थिरतया उद्धतया दर्पातिशयेन जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन छेकया निपुणया दिव्यया दिवि

॥ मूल ॥

परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा, जंबुद्दीवेदीवे मंदरे पव्वए चू लिए सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा, अहेणं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि वलि पिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसुवि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा, ते चत्तारि बलिपिंडे जम गसमगं बाहिराभिमुहे पक्खिविज्जा, पभूणं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितल

अनुवाद

यावन्महासख्या, जम्बूद्वीपेद्वीपे मन्दरे पर्वते चूलिकाया (मेरुगिरिचूलिकाया) सर्वतः समन्तात्सम्परिक्षिप्यातिष्ठेयुः, अथचतस्रो दि क्कुमार्यो महत्तरिकाश्चतुरो बलिपिण्डान् गृहीत्वा जम्बूद्वीपस्य द्वीपस्य चतसृष्वपि दिक्षु बाह्याभिमुखाः स्थित्वा तान् चतुरो बलिपिण्डान् यमकसमकं (समकालमित्यर्थं) बाह्याभिमुखं प्रक्षिपेयुः, प्रभुर्गौतम। तत एकैको देवस्तान् चतुरो बलिपिण्डान् धरणितलमसम्प्राप्तान् क्षिप्रमेव

॥ भाषा ॥

तेणंकालेणं तेणं समएणं । ते कालने विषे ते समयने विषे । छदेवामहिड्ढिया जाव महेसक्खा । छदेव महाऋद्धिवन्त यावत् महाइश्वर्य छे । जंबुद्दीवेदीवे मंद रे पव्वए चूलिए । जंबूद्वीपनामा द्वीपे मेरुपर्वतनी चूलिका प्रते । सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा । सर्वथकी समस्त प्रकारे, सपरिक्षित वीटीने रह्याछे । अहेणंचत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ । हिवे ए अवसरने विषे, चार दिशाकुमारी घणी ऋद्धिनी धरणहारी । चत्तारि बलिपि डे गहाय । चार बलि पिंडप्रते ग्रहीने । जंबुद्दीवस्सदीवस्स चउसुविदिसासु बहियाभो अभिमुहीओ ठिच्चा । जंबूद्वीपनामा द्वीपने चारेइ दिशिने बा हर सन्मुख बाहिरमुखे ऊभीरहीने । ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिविज्जा । ते चारेइ बलिपिंड समकाले बाहिरकोटिमि

॥ मूल ॥

पुरत्थाभि मुहे पयाए एवं दाहिणाभिमुहे एवं पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एवं उड्ढाभिमुहे एगे देवे अहे पयाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति णोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तएणं तस्स दारगस्स आउपहीणे भवइ णोचेवजाव संपाउणंति,

सेणं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगइए एगे देवे पुरत्थाभि मसंपत्तं खिप्पामेव पडिसाहरित्तए,

॥ अनुवाद ॥

प्रतिसंहर्तुम्, हे गौतम! देवा स्वोत्कृष्टया यावद्देवगत्या एको देव. पौरस्त्याभिमुख. प्रयात एव दक्षिणाभिमुख एव पाश्चात्याभिमुख एव मुत्तराभिमुख एवमूर्ध्वाभिमुख एको देवो ऽध. प्रयातस्तस्मिन् काले तस्मिन् समये वर्षसहस्रायुष्को (कस्यचित्) दारक प्रजात, तदानी तस्य दारक स्याम्बा.पितरौ प्रहीनौ भवतो नोचैव तेदेवालोकान्त सम्प्राप्नुवन्ति' तदानी तस्य दारकस्यायु प्रहीनो भवति नैवच यावत्सम्प्राप्नुवन्ति, स दा तस्य दारकस्यास्थिमज्जा प्रहीना भवन्ति नैव च ते देवा लोकान्त सम्प्राप्नुवन्ति, सचैव तस्य दारकस्य (या सर्वत्र मागधभाषाप्रविष्ठो

॥ भाव। ॥

नाखे। पभूण गोयमा। समर्थ छ याख्याणकारे, हेगौतम। तथो०गमेगे ते द्वे ते चत्तारियलिपिडे। तेह एकेको देव ते चार थलिपिड। धरणितलसपन्न विप्प मेव पडितानाहरिसए। धरती पद्मा पडिलीज उतावलोईज ग्रहवाने। सेण गोयमा देवा ताए उक्किट्ठाए जाय देवगईए। तेह हेगौतम 'देव ते उत्कृष्ट यावत् देवनी गति। एगेदेवे पुरत्थाभिमुहे पयाए। एकदेव पूर्व सामुहो चाल्यो। एव दाहिणाभिमुहे एव पच्चत्थाभिमुहे एव उड्ढाभिमुहे। इम एकदेव दक्षिण सामुहो चाल्यो इम एकदेव पश्चिम सामुहो चाल्या इम एकदेव उत्तर सामुहो चाल्यो। एव उड्ढाभिमुहे। इम एकदेव ऊंचो चाल्यो। एगदेवे अहेपयाए। एकदेव नीचो चाल्यो। तेण कालेण तेण समएण। ते कालने विषे ते समयने विषे। वाससहस्साउए दारएपयाए। कोईएकने घर पुत्र जन्म्यो। तिवारे तेह बालकना माता पिता मरणपाम्या तोही पणि। तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति। तएणतस्सदारगस्स आउपहीणे भवइ। तिवारे तेह बालकनो आ मनुष्यने आउखुं बालक जनम्यो। नोचेवणं ते देवा लोगंतं संपाउणंति। नहीं निश्चे ते देव लोकअन्त पामे। तिवारे तेह बालकनो आ

॥ टीका ॥

वयेति ॥ पुरत्याभिमुखेत्ति ॥ मेवंपेतया ॥ आसत्तमे कुलवसे परीणेत्ति ॥ कुलरूपो वंश प्रहीणो भवति आसप्तमादपि वंश्या त्सप्तममपि वंश्य यावदित्यर्थः ॥ गयाउसे अगते असखेज्जतिभागे अगयाउसे गए असखेज्जगुणेत्ति ॥ ननु पूर्वादिषु प्रत्येक मर्द्धरज्जुप्रमाणत्वाल्लोकस्योर्द्धाधश्च किंचिन्न्यूनाधिकसप्तरज्जुप्रमाणत्वात् तुल्यया गत्या गच्छता देवाना कथ षट्स्वपि दिक्षु गतादगत क्षेत्रमसङ्ख्यातभागमात्र अगताच्च गत मसङ्ख्यातगु णमिति क्षेत्रवैषम्यादितिभाव 'अत्रोच्यते-घनचतुरस्त्रीकृतस्य लोकस्यैवकल्पितत्वा न्नदोष , ननु यद्युक्तस्वरूपयापि गत्या गच्छन्तो देवा लोकान्त

॥ सूत्र ॥

तएणं तस्स दारगस्स अट्ठीमिंजा पहीणा भवंति णोचेवणं ते देवा लोगंत संपाउणंति, तहेव ण तस्सदारगस्स आसत्तमे कुलवंसे पहीणे भवइ णोचेवणं ते देवा लोगंत संपाउणंति, तएण तस्स दारगस्स नामगोएवि पहीणे भवइ णोचेवण ते देवा लोगंत संपाउणंति । तेसिण भंते! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए ? गो

अनुवाद

वाक्यालङ्कारार्थ) आसप्तमात्कुलवंश्यात् (सप्तमपुरुषपर्यन्तमित्यर्थ) वंश , प्रहीनो भवति नैव च ते देवा लोकान्त सम्प्राप्नुवन्ति, तदा तस्य दारकस्य नामगोत्र प्रहीन भवति नैव च ते देवा लोकान्त सम्प्राप्नुवन्ति । तेषां भदन्त । देवाना किं गतो बहुको ऽगतो बहुक (गतक्षेत्र

॥ भाषा ॥

जश्यां खोण हवा एतला नरा पाम्यां ते बालक तोहो पण । णो चेवण जाय संपाउणति । नहीं निश्चे ते देवलोकांत प्रते पामे। तएण तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवति । तिवारे तेह बालकना हाड हाडमाहिलो मीज्जो ते पण खोपयइ एतले विणश्यो । णो चेवण ते देवालोग त संपाउणंति । तो पण नहीं निश्चे ते देव लोकान्तप्रते पामे एतावता न पामे। तहेवण तस्सदारगस्स। तिमहीज ण वाक्यालंकारे, तेह बालकना । आसत्तमे कुलवसे पहीणे भवइ । सातमा कुल वंशवंशो पण वंश प्रक्षीणथयो हुवे । णोचेवण ते देवालोगंत संपाउणंति । तो पण नहीं निश्चे ते देव लोकान्तप्रते पामे । तएण तस्स दारगस्स णामगोएवि पहीणेभवइ । तिवारे ते बालकना नाम गोत्र पण विच्छेद गया हुवे पण । णोचेवण ते देवालोगंत संपाउणंति । नहीं निश्चे ते देव लोकान्तप्रते पामे तिवारे गोतम पूछे-तेसिण भंते देवाण किंगए बहुगए अगए बहुए । तेह हेभगवन् ' दे

अलोगयाउ से गए असंखेज्जइभागे अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोएणं यमा! गएबज्जए गोअगए बज्जए! गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोएणं गोयमा! ए महालए पन्नत्ते। अलोएणं भंते! के महालए पन्नत्ते? गोयमा! एएणं समयक्खेत्ते पणया लीसं जोअणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं। तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया तहेव जाव सपरिक्खित्ताणं चिठेज्जा, अहेणं अठ दिसाकुमारी महत्तरियाउ अठ बलिपिंडे

गतात् (क्षेत्रात्) तत् (तस्य वा देवस्य) अगत (क्षेत्र) असङ्ख्येय भागे, बहु अगतक्षेत्र वा बहु) ? गौतम। गतो बहुको नो अगतो बहुको, गतात् (क्षेत्रात्) तत् (तस्य वा देवस्य) अगत (क्षेत्र) असङ्ख्येय भागे, अगतात्तद्गतमसङ्ख्येयगुणम्' लोको गौतम। इयान् महालय प्रज्ञप्त। अलोको भदन्त। कियान् महालय प्रज्ञप्त? गौतम। एतत्समयक्षेत्र पञ्च चत्वारिंशद्योजनशतसहस्राण्यायामविष्कम्भाभ्यां यथा स्कन्दके यावत्परिक्षेपेण तस्मिन् काले तस्मिन् समये दश देवा महर्द्धिकास्तथैव यावत्सम्प

बने स्यूं गतक्षेत्र घणों अथवा अगतक्षेत्र घणों एतले घणीभूमि गया अथवा शेष घणीरही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा गए बहुए णो अगए बहुए। हे गो तम। गतक्षेत्र घणो पणि नहीं अगतक्षेत्र घणों। गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे। गयाक्षेत्रथकी अगतक्षेत्र असंख्यातमें भागछे। अगयाओ से गए अ संखेज्जगुणे। आगतथकी गत असंख्यातगुणोछे एतले जे क्षेत्र देवउलघाने गया ते क्षेत्र शेषक्षेत्रथकी असंख्यातगुणो एतले घणीभूमि गया थोडीभूमि रही इत्यर्थ एतलामोटो श्रीमहावीरस्वामीजी कहेछे—लोएण गोयमा ए महालए पणत्ते। लोक हेगौतम। एवडोमोटो कह्यो वलीगौतम पूछेछे—अलोए णभंते के महालए पणत्ते। अलोक हेभगवन्। के वडोमोटो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एएण समयखेत्ते पणय•लीस जोअणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेण। हेगौतम। एह ण वाक्यालंकारे, समयक्षेत्र कहता मनुष्यक्षेत्र पैंतालीसलाख योजन प्रमाण आयाम तथा विष्कंभे-चाटलेआकारेछे। जह खंदए जाव परिक्खेवेण। जिम खंदकने अधिकारे कह्यु यावत् परिधिलगे कहवो। तेण कालेण तेण समएण। ते कालने विषे ते समयने विषे। दस देवामहिड्ढिया तहेव जाव सपरिक्खित्ताण चिठेज्जा। दसदेव महाऋद्धना धणी पूर्वे कह्यु तिमज यावत् वींटीने रह्या छे। अहेण अठदिसाकुमारी मह

॥ टीका ॥

दनुनापि कालेन न लङ्घ्यते तदा कथमच्युताज्जिनजन्मादिषु द्रागवतरन्ति बहुत्वा स्वोऽस्या ल्पत्वादवतरणकालस्येति ? सत्यं किन्तु मन्देय गति र्जिन जन्माद्यवतरणगतिस्तु शीघ्रतमेति ॥ असद्भावपट्ठवणाएत्ति ॥ असद्भूतार्थकल्पनयेत्यर्थ ' पूर्वं लोकालोकवक्तव्यतोक्ता ऽथ लोकैकप्रदेशगत वक्तव्य

॥ मूल ॥

गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसुवि दिसासु विदिसासुय बहियाभिमुही ठिच्चा अट्ठ बलिपिंडे जमग समगं बहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा , पभूणं गोयमा ! तओ एग मेगे ते देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलम सपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, तेणं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगेदेवे पुरत्थाभिमुहे पयाए एगेदेवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाए एवं जाव उत्तरपुरत्थाभि

अनुवाद

दिक्प्रास्तिष्ठेयुरथोष्टौ दिक्कुमार्यो महत्तरिका अष्टौ बलिपिण्डान् गृहीत्वा मानुषोत्तरस्य पर्वतस्य चतसृष्वपि दिक्षु विदिक्षु च बाह्याभिमुखा· स्थित्वा अष्टौ बलिपिण्डान् यमकसमक बाह्याभिमुखा प्रक्षिपेयु , प्रभुर्गौतम ! तत एकैको देवो तानष्टौ बलिपिण्डान् धरणितलमसम्प्रा प्तान् क्षिप्रमेव प्रतिसंहर्त्तुम् , ते गौतम ! देवा तया उत्कृष्टया यावद्देवगत्या लोकान्ते स्थित्वा असद्भावप्रस्थापनया एको देव पौरस्त्याभिमु

॥ भाषा ॥

खरियाओ। अथ हिये आठ दिशाकुमारी महत्तरिका धवलहारी । अष्टबलिपिंडगहाय । आठ बलिपिंड प्रते ग्रहीने । माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स । मानु षोत्तर पर्वतने । चउसुदिसासु विदिसासुय । चारेदे दिशिने विषे चारेदे विदिशने विषे । बहियाभिमुहीठिच्चा । बाहिर सामही रहीने । अट्ठ बलि पिंडे जमगसमग बहियाभिमुहीओपक्खिवेज्जा । आठ बलिपिंड समकाले बाहर सामहा नाखे तिवारे । पभूण गोयमा । प्रभु समर्थ हेगोतम । तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसपत्ते । तिवारपछी एकेको ते देव ते आठ बलिपिंड धरती पद्या पहिलाज । खिप्पामेव पडिसाहरि त्तए । उतावलाहोज पाछा ग्रहिवाने । तेण गो० देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए । तेह हेगोतम देव तेह उत्कृष्टी यावत् देवसबंधिनी गतिवें । लोगते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए । लोकान्तने विषे रहीने जेमाटे ते अर्थाछाने विषे देवनोगति नथी तेमाटे अणछती कल्पनावे करीने । एगेदेवे परत्था

॥ मूल ॥

मुहे पयाए, एगे देवे उद्धाभिमुहे एगे देवे अहेभिमुहे पयाए। तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्सा उए दारए पयाए, तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति णोचेवणं ते देवा अलोयंत संपाउ णंति, तंचेव जाव तेसिणं भंते! देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए ? गोयमा ! णो गए बहुए अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे, अगयाउ से गए अणंतभागे, अलोएणं गोयमा! ए महालए पन्नत्ते।

अनुवाद

स प्रयात एको देवो दक्षिणपौरस्त्याभिमुख प्रयात एव यावदुत्तरपौरस्त्याभिमुख प्रयात एको देव ऊर्ध्वाभिमुख एकश्चाधोभिमुख प्रयात स्तस्मिन् काले तस्मिन् समये वर्षशतसहस्रायुको दारक प्रजात, तदानी तस्य दारकस्याम्बापितरौ प्रहीनौ भवतो नैव च ते देवा अलोकान्त सम्प्राप्नुवन्ति' तचैव यावत्तेषा भदन्त। देवाना किं गतो बहुको ऽगतो बहुको? गौतम। नोगतो बहुको ऽगतो बहुको गताद्दगतमनन्तगुणं,

॥ भाषा ॥

उत्तरपुरत्याभिमुहे निमुहे पयाए। एकदेव पूर्व सामुहो चाल्यो। एगेदेवे दाहिण पुरत्याभिमुहे पयाए। एकदेव अग्निकूण सामुहो चाल्यो। एव जाव पयाए। इम यावत् एकदेव उत्तर ईशानकूणि सामुहो चाल्यो। एगेदेवे उढाभिमुहे। एकदेव ऊर्ध्वदिशि सामुहो चाल्यो। एगेदेवे अहेभिमुहे पयाए। एकदेव अधोदिशि सामुहो चाल्यो। तेण कालेण तेण समएण। ते कालने विषे ते समयने विषे। वाससयसहस्साउए दारए पयाए। कोइएकने वर्ष लचने आउखे बालक जनम्यो। तएणतस्सदारगस्स अम्मापियरो पहीणाभवंति। तिवारे ते बालकने मा बाप प्रक्षीणथया हुवे एतले मरण पाम्या तो पणि। णोचेवणं ते देवा अलोयंत संपाउणति तंचेव जाव। नहो निश्चे ते देव अलोकातप्रते पामे तिमहोज पूर्वलो वांति सर्व इहा पणि कहवो। या वत् तेसिणभंते देवाण कि गए बहुए अगए बहुए। तेह हेभगवन्! देवने एॅ गयोचेत्र घणो अथवा अगयोचेत्र घणो इतिप्रश्न उत्तर। गो० णो गएब हुए अगए बहुए। हेगौतम। नहो गयोचेत्र घणो अगयो ते छेत्र घणो। गयाओ से अगए अणतगुणे। गया क्षेत्रथको अणगयो क्षेत्र अनन्तगुणो। अ गयाओ से गए अणतभागे। अणगया ते क्षेत्रथको गतक्षेत्र अनन्तमे भागछ। अलोएण गोयमा ए महालए पन्नत्ते। अलोक हेगौतम। ए वडोमोटो कह्यो।

॥ टीका ॥ विशेषं दर्शयन्नाह-लोगस्सणमित्यादि ॥ अत्थिणं भंतेति ॥ अस्त्ययं भदन्त! पक्ष, इहच ते इतिशेषो दृश्य ॥ जाव कलियत्ति ॥ इह यावत्करणादेव

॥ मूल ॥ लोगस्सणं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियप्पदेसा अणिंदियप्पदेसा अन्नम न्नस्स बद्धा अन्नमन्नपुट्ठा जाव अन्नमन्नस्स घडत्ताए चिट्ठंति । अत्थिणं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहंवा वाबाहंवा उप्पायंति, छविच्छेदंकरेति, णोइणट्ठे समट्ठे । सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ लोगस्सण एगम्मि आगासप्पदेसे जे एगिंदियप्पदेसा जाव चिट्ठति णत्थिणं अन्नमन्नस्स किंचि आवाहंवा जाव

अनुवाद अनंतानन्ततमनन्तभागे अलोको गौतम । उपात्मसालय प्रश्न । लोकस्य भदन्त ! एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ये एकेन्द्रियप्रदेशा यावत्पञ्चेन्द्रियप्रदेशा अनिन्द्रियप्रदेशा अन्योन्यबद्धा अन्योन्यस्पृष्टा यावदन्योन्यघटतया तिष्ठन्ति, अस्ति (अय पक्ष.) भदन्त । (ते) अन्योन्य किञ्चिद् बाधा वा व्याबाधा वा उत्पादयन्ति, छविच्छेद कुर्वन्ति ? नायमर्थः समर्थः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते लोकस्यैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ये

॥ भाषा ॥ लोगस्सणभंते एगंमि आगासपएसे । लोकना हे भगवन् । एक आकाशप्रदेशने विषे । एगिंदियपएसा जाव पंचिंदियप्पएसा अणिंदियप्पएसा । जे एकेंद्रियना प्रदेश बेइंद्रियनाप्रदेश इम यावत् पंचेंद्रियनाप्रदेश समुद्घातगत केवलीनाप्रदेश । अन्नमन्नबद्धा अन्नमन्नपुट्ठा जाव अन्नमन्न घडत्ताए चिट्ठंति । माहोमाहि बाधा माहोमाहि फरस्या यावत् माहोमाहि घटपणे करी रहे । अत्थिणभंते अन्नमन्नस्स । छे ण वाक्यालंकारे, हे भगवन् । माहोमाहि ने । किंचि आबाहंवा वाबाहंवा उप्पायंति छविच्छेदंकरेति । कोइएक पणि ईषत् बाधा पीडा अथवा घणा पीडा उपजावे छविछेद करे इतिप्रश्न उत्तर । णो इणट्ठेसमट्ठे । ए अर्थ समर्थ नही बलवन्त नही । सेकेणट्ठेणभंते एव वुच्चइ । ते स्ये अर्थे हे भगवन् । इम कहिये । लोगस्सण एगंमि आगासपएसे । लोकना एक आकाशप्रदेशने विषे । जेएगिंदियप्पएसा जाव चिट्ठंति । जे एकेंद्रियनाप्रदेश यावत् रहे । णत्थिण अन्नमन्नस्स । नही ण वाक्यालंकारे, माहोमाहि ने । किंचिआबाहंवा जाव करेंति । कोइएक ईषत्थोडी पीडा यावत् करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहाणामए नट्टियासिया । हे गौतम ! ते यथानाम य

॥ टीका ॥

कलियत्ति,, वत्तीसइविहस्स नट्टस्सत्ति ॥ द्वात्रिंशद्विधा भेदा यस्य तत्तथा दृश्य-सगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससुललियसलावनिउणजुत्तोवयारकलियत्ति,, एतच्चरिताज्जिनयनमितिसम्भाव्यते, एवमन्ये तस्य नाट्यस्य' तत्र ईहामृगऋषभतुरगनरमकरविहगव्यालकिन्नरादिभक्तिचित्रो नामैको नाट्यविधि' एतच्चरितार्जिनयनमितिसम्भाव्यते, एवमन्ये व्येकत्रिंशद्विधयो राजप्रश्नकृतानुसारतो वाच्या, लोकैकप्रदेशाधिकारादेवेदमाह-लोगस्सणमित्यादि ॥ अस्य व्याख्या-यथा किल एतेषु त्रयोदशसु प्रदेशेषु त्रयोदशप्रदेशकानि दिग्दशकस्पर्शानि त्रयोदशद्रव्याणि स्थितानि तेषाच प्रत्याकाशप्रदेशं त्रयोदश२ प्रदेशा भवन्ति' एव लोकाकाशदेशे

॥ मूल ॥

करेंति ? गोयमा ! से जहाणामए नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया रंगट्ठाणंसि जणसया उलंसि जणसयसहस्साउलंसि वत्तीसइविहस्स नट्टस्स अन्नयरं नट्टविहिं उवदंसिज्जा सेणूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति हंता भंते ! समभिलोएंति, ताओणं गो

अनुवाद

एकेन्द्रियप्रदेशा यावत्तिष्ठन्ति नास्त्यन्योन्यस्य किञ्चिदाबाधा वा यावत्कुर्वन्ति ? गौतम । अथ यथानाम नर्त्तकी स्यात् शृङ्गारागाराचारुवेषा यावत्कलिता रङ्गस्थानके जनशताकुले जनशतसहस्राकुले द्वात्रिंशद्विधस्य नाट्यस्यान्यतर नाट्यविधिमुपदर्शयेत् , अथ नून गौतम । ते

॥ भाषा ॥

याइष्टाते नाटिकणी हुवे । सिंगारागारचारुवेसा । शृङ्गाररसो घर मनोहर वेष छे जेहनो । जाव कलियारंगट्ठाणंसि । यावत् कलितयुक्त छे ते रंगना स्था नकने विषे । जणसय.उलंसि जणसयसहस्सा उलंसि । मनुष्यना सैकड़ा तिणे व्याप्तनेविषे , मनुष्यना शतसहस्र कहता लख तिणे व्याप्तनेविषे । बत्तीसइ विहस्स नट्टस्स । बत्तीसभेदे नाटकछे तेहनेविषे । अन्नयरनट्टविहि उवदंसिज्जा । अनेरो कोई नाटक विधप्रते देखाडे । सेणूणं गोयमा ते पेच्छगा त न ट्टिय । त निश्चे ण वाक्यालंकारे, हेगौतम । ते देखणहार तेह नाटिकणी प्रते । अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओसमता समभिलोएंत्ति । मेषोन्मेष रहित दृष्टीकरी सर्वदिशि थकी पासे जोवे इसो स्वामीयें कह्यु तिवारे गौतम कहे । हता भंते समभिलोएंति ताओण गोयमा दिट्ठीओ । हा भगवन् जोवे तिवारे भगवन्त कहे, तेह हेगौतम । दृष्टि सर्व जननी । तंसि नट्टियंसि सव्वओ समता । तेह नाटिकणीने विषे सर्वप्रकारे । सन्निवडियाओ । पासे पडे इसो

यमा ! दिठीइ तंसि नट्टियसि सव्वओ समंता संणिघडियाओ हंता संणिघडियाओ । अत्थिणं गोयमा ! ताओ दिठीओ तीसे नट्टियाए किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पायेंति छविच्छेदंवाकरेंति ? णोइणठे समठे। अहवा सोनट्टिया तासिंदिठीणं किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविछेदंवा करेति ? णोइणठे स

प्रेक्षका स्ता नर्त्तकीमनिमिषया दृष्ट्या सर्वत समन्तात्समभिलोचयन्तीति ? हन्त भदन्त ! समभिलोचयन्ति, ता गौतम ! दृष्टिय स्तस्या न र्त्तिक्या सर्वत समन्ता त्सन्निपतिता ? हन्त सन्निपतिता । अस्ति गौतम ! ता दृष्टय स्तस्या नर्त्तक्या किञ्चिदाबाधांवा व्याबाधांवो त्पादयन्ति छविच्छेदंवा कुर्वन्ति ? नायमर्थ समर्थ । अथवा सानर्त्तकी तासां दृष्टीनां किञ्चिदाबाधांवा व्याबाधांवो त्पादयति छविच्छेद करोति ? नायमर्थ समर्थ । अथवा ता दृष्टयो ऽन्योन्यस्या दृष्ट्या किञ्चिदाबाधांवा व्याबाधांवोत्पादयन्ति छविच्छेदंवा कुर्वन्ति ? नायमर्थ

स्वामीयें कह्यु, तिवारे गौतम कहे । हंतासंणिघडियाओ अत्थिण गोयमा । हा भगवन् ! दृष्टि सर्वजनना पडे वली भगवन्त कहे छे, ण वाक्यालंकारे, हे गौतम । ताओदिठीओ तीसे नट्टियाए । तेह दृष्टि तेह नाटकणीने । किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पायेंति छविच्छेदंवा करेंति । काइ पणि थोडीसी पीडाप्रते अथवा घणी पीडाप्रते उपजावे छविछेद पणिकरे एसो भगवन्त कहे तिवारे गौतम कहे । णोइणठे समठे अहवा सोनट्टिया । ए अर्थ समर्थ न थी अथवा तेह नाटिकणी । तासिंदिठीण किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविछेदंवा करेइ । तेह दृष्टि प्रते काइ पणि थोडीसी पीडा प्रते उपजावे अथवा छविछेद पणि करे तिवारे गौतम कहे । णोइणठे समठे अहवाताओदिठीओ । ए अर्थ समर्थ नथी अथवा तेह घणी दृष्टि । अण्णमण्णाए दिठीए किंचि आवाहंवा वावाहंवा उप्पाएइ छविछेदंवा करेइ । माहोमाहि दृष्टिकरी काइ पणि थोडी आबाधा प्रते घणी पीडाप्रते उपजावे अथवा छविछेद पणिकरे एसो स्वामी कह्यु तिवारे गौतम कहे । णोइणठे समठे । ए अर्थ समर्थनथी । सेतेणठेणं गोयमा एवंवुच्चइ । ते तेणेअर्थे हे गौतम ! इम कहिये । तचेव जाव छविछेदंवा करेइ । पूर्वे कह्यु तिमहीज यावत् छविछेद प्रतिकरे । लोगस्सणभंते एगंमि आगासपएसे । लोकने हे भगवन् ! एक आका

ऽनन्तजीवावगाहे नैकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽनन्ता जीवप्रदेशा भवन्ति, लोकेच सूक्ष्मा अनन्तजीवात्मका निगोदाः पृथिव्यादिसर्वजीवा असङ्ख्येयकतुल्या सन्ति तेषा चैकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे जीवप्रदेशा अनन्ताभवन्ति ' तेषाच जघन्यपदे एकत्राकाशप्रदेशे सवस्तोका जीवप्रदेशा स्तेभ्यश्च सर्वजीवा असङ्ख्येयगुणा उत्कृष्टपदे पुनस्तेभ्यो विशेषाधिका जीवप्रदेशा इति, अयच सूत्रार्थो भूयि वृद्धोक्तगाथाभि र्भावनीय –लोगस्सेगपएसे जहण्णयपयम्मिजियपएसाण । उक्कोसपएयतहा सव्वजियाणचकेबहुया ॥ १ ॥ इतिप्रश्न , उत्तर पुन रन–थोवाजहण्णपए जियप्पएसाजियाअसखगुणा । उक्कोसयपएसा तओविसेसाहियाभणिया ॥ २ ॥ अथ जघन्यपद मुत्कृष्टपदचोच्यते–तत्थपुणजहण्णपय लोयतेजत्थफासणातिदिसि । छद्दिसिमुक्कोसपय समत्तगोलमिणसत्थ ॥ ३ ॥ तत्र तयो र्जघन्येतरपदयो र्जघन्यपद लोकान्ते भवति (जत्थत्ति) यत्र गोलके स्पर्शना निगोददेशै स्तिसृष्वेव दिक्षु भवति शेषदिशामलोकेनावृतत्वात्, साच खण्डगोलएव भवतीतिभाव. (छद्दिसिति) यत्र पुन र्गोलके षट्स्वपि दिक्षु निगोददेशै स्पर्शना भवति तत्रो

त्कृष्टपद भवति, तच्च समस्तगोले परिपूर्णगोलके भवति नान्यत्र, खण्डगोलके नभवतीत्यर्थ , सम्पूर्णगोलकश्च लोकमध्यएव स्यादिति । अथपरवचनमाशङ्कमान आह–उक्कोसमसखगुण जहण्णयाओपयहवइकितु । नणुतिदिसिफुसणाओ छद्दिसिफुसणाभवेदुगुणा ॥ ४ ॥ उत्कर्ष मुत्कृष्ट पदमसङ्ख्यातगुण जीवप्रदेशापेक्षया जघन्यका त्पदादितिगम्य भवति, किंतु कथतु नभवतीत्यर्थ., कस्मादेवमित्याह–ननु निश्चित अवमार्थोवा, ननुशब्द , त्रिदिक्स्पर्शनाया सकाशा त्षट्दिक्स्पर्शना भवेद्द्विगुणेतीहच काकुपाठा द्धेतुत्व प्रतीयत इत्यतो द्विगुणमेवोत्कृष्टपद स्यादसङ्ख्यातगुणच तदिष्यते जघन्यपदाश्रितजीवप्रदेशापेक्षया सङ्ख्यातगुणसर्वजीवेभ्यो विशेषाधिकजीवप्रदेशोपेतत्वा दस्येति, इहोत्तर–थोवाजहण्णपए निगोयमेत्तावगाहणाफुसणा । फुसणासखगुणत्ता उक्कोसपएअसखगुणा ॥ ५ ॥ स्तोका जीवप्रदेशा जघन्यकपदे कस्मादित्याह–निगोदमात्रे क्षेत्रे ऽवगाहना येषा ते तथा एकावगाहना इत्यर्थ., तैरेव यत्स्पर्शनमवगाहन जघन्यपदस्य तन्निगोदमात्रावगाहनस्पर्शन तस्मात् खण्डगोलकनिष्पादकनिगोदै स्तस्या स्प

शेनादित्यर्थं , शून्यासन्नापवरककोणान्तिमप्रदेशसदृशोऽहि जघन्यपदाख्य प्रदेश , तथालोकसम्बन्धा देकावगाहनाएव निगोदा स्पृशन्ति नतु स शडगोलनिष्पादका , तत्र किल जघन्यपद कल्पनया जीवशत स्पृशति तस्यच प्रत्येक कल्पनयैव प्रदेशलक्ष तत्रावगाढमित्येव जघन्यपदे कोटीजीव प्रदेशाना मवगाहेत्येव स्तोका स्तत्र जीवप्रदेशा इति, अथोत्कृष्टपदजीवप्रदेशप्रमाण मुच्यते-फुसणासखगुणत्ति ॥ स्पर्शनाया उत्कृष्टपदस्य पूर्ण गोलकनिष्पादकनिगोदै: सस्पर्शनाया यदसङ्ख्यातगुणत्व जघन्यपदापेक्षया ततथा तस्माद्वतो उत्कृष्टपदे असङ्ख्यातगुणा जीवप्रदेशा जघन्यपदापेक्षया भवन्ति, उत्कृष्टपदहि सम्पूर्णगोलकनिष्पादकनिगोदैरेकावगाहनै रसङ्ख्यै स्तथोत्कृष्टपदाविमोचनेनैकैकप्रदेशपरिहारिभि प्रत्येकमसङ्ख्यैरेव स्पृष्ट, तत्र किल कल्पनया कोटीसहस्रेण जीवाना स्पृश्यत तत्रच प्रत्यक जीवप्रदेशलक्षस्या वगाहना ज्जीवप्रदेशाना दशकोटीकोट्योवगाढा स्युरिति, एव मुत्कृष्टपदे ते ऽसङ्ख्येयगुणा भावनीया इति, अथ गोलकप्ररूपणायाह-उक्कोसपयममोत्तु निगोओगाहणाएसव्वओ । निप्फाइज्जइगोलो पएसपरिवु

ड्ढिहाणीहि ॥ ६ उत्कृष्टपद विवक्षितप्रदेशममुञ्चद्भि निगोदावगाहनाया एकस्या सर्वत सर्वासु दिक्षु निगोदान्तराणि स्थापयद्भि निष्पाद्यते गो ल ' कथ प्रदेशपरिवृद्धिहानिभ्या काश्चित्प्रदेशान् विवक्षितावगाहनाया आक्रामद्भि काश्चिद्विमुञ्चद्भि रित्यर्थ , एवमेकगोलकनिष्पत्ति । गोलका न्तरकल्पनायाह-तत्तोच्चियगोलाओ उक्कोसपयमुइत्तुजोअन्नो । होइनिगोओतम्मिवि अन्नोनिप्फज्जइगोलो ॥ ७ ॥ तमेवोक्तलक्षणगोलकमाश्रित्य अ न्योगोलकोनिष्पद्यते कथ उत्कृष्टपद प्राक्तनगोलकसम्बन्धि विमुच्य योन्यो भवति निगोद स्तस्मिन् उत्कृष्टपदकल्पनेनेति, तथाच यत्स्या सदाह- एवनिगोयमेत्ते खेत्तेगोलस्सहोइनिप्फत्ती । एवनिप्फज्जते लोगगोलाअसखेज्जा ॥ ८ ॥ एव मुक्तक्रमेण निगोदमात्रे क्षेत्रे गोलकस्य भवति निष्पत्ति विवक्षितनिगोदावगाहातिरिक्तनिगोददेशाना गोलकान्तरानुप्रवेशात्, एवच निष्पद्यन्ते लोके गोलका असङ्ख्येया असङ्ख्येयत्वा न्निगोदावगाहना ना प्रतिनिगोदावगाहनच गोलकनिष्पत्तेरिति , अथकिमिदमेव प्रतिगोलक यदुक्त मुत्कृष्टपद तदेवेह ग्राह्य मुतान्यदित्यस्यामाशङ्कायामाह-

॥ टीका ॥

ववहारनयगाहम उक्कोसपयाविएत्तियाचेव । अपुणउक्कोसपय नेच्छइयत्तोइतबोध्द ॥ ९ ॥ व्यवहारनयेन सामान्येन इदमनन्तरोक्तमुत्कृष्टपदमुक्त का चिदमध्यम तेन नेदं ग्राह्यमित्यर्थ स्यात् अथ कस्मादेवमित्याह–उक्कोसपयाविएत्तियाचवत्ति ॥ नकेवल गोलका असङ्ख्या उत्पर्पपदान्यपि प्रतिपूर्णगोलकस्पर्शनाप्ररूपितानि एतावत्यवा सङ्ख्यान्येव भवन्ति, यस्मा तता ननियतमुत्कृष्टपद किच नस्यादिटिजाव ' यत्पुन रुत्कर्ष ट नैश्चयिक भवति मर्वोत्कर्षयोगा द्यदिह ग्राह्यमित्यर्थ स्तद्दत्य तदवाह–वायरनिगोयविग्गह गइयाइजत्यसमहियाअसे । गोलाहोज्जसुदुया ने च्छइयपयतदुक्कोत ॥ १० ॥ बादरनिगोदाना कान्दादीना विग्रहगतिकादयो बादरनिगादविग्रहगतिकादय आदिशब्दयोरा विग्रहगतिकावरोधा

॥ मूल ॥

मट्ठे । अहवा ताउ दिठीउ आसमसाए दिठीए । किंचि आवाहंवा वावाहवा उप्पाएइ छविच्छेदंवाक रेति ? णोइणट्ठे समट्ठे । सेतेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ तचेव जाव छविच्छेदवा करेइ । लोगस्सण भंते! एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णए जीवप्पदेसाणं उक्कोसपदे जीवप्पएसाण सव्वजीवाणय कयरे कयरे जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासप्पदेसे जहण्णपदे जीवप्पदेसा सव्वजीवा

अनुवाद

समर्थ । तत्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते तचैव यावच्छविच्छेद वा कुर्वन्ति । लोकस्य भदन्त । एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे जघन्यपदे जीवप्रदेशाना मुत्कृष्टपदे जीवप्रदेशानां सर्वजीवानाञ्च (मध्ये) कतरे कतरे यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम । सर्वस्तोका लोकस्यैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे जघन्य

। भाषा ॥

शप्रदेशनेविषे । जहण्णपए जीवप्पमाण । जघन्यपदे जीवप्रदेशने । उक्कोसपए जीवप्पएसाण सव्वजीवाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया । उत्कृष्टपदे जी वप्रदेशने सर्वजीव थकी माहोमाहि कुणकुण थकी अल्पहुवे घणाहुवे सरीखाहुवे विशेषाधिक कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयस । सव्वत्थोवालोगस्स एगम्मि आगासप्पएसे जहण्णए जीवपएसा सव्वजीवा असंखेज्जगुणा उक्कोसपए जीवप्पएसा विसेसाहिया । हेगौतम । सर्वथकी थोडा लोकना जघन्यपदे ए क आकाशप्रदेशे जीवप्रदेश तेहथी सर्वजीवप्रदेश असंख्यातगुणा तेहथी उत्कृष्टपद जीवप्रदेश विशेषाधिक छै। जघन्यपदे लोकने अते जिहा गोलाने

र्षं, यतोत्कृष्टपदे समधिका अन्ये सूक्ष्मनिगोदगोलकेभ्यो परे गोलका भवेयुः सुवक्तो नैश्चयिक पदं तदुत्कर्षं, बादरनिगोदाहि पृथिव्यादिष्वेव स्वस्थानेषु स्वरूपतो भवन्ति नतूल्लनिगोदवत्सर्वत्रत्यतो यत्र क्वचित्ते भवन्ति तदुत्कृष्टपदं तात्त्विक मितिभाव, एतदेव दर्शयन्नाह-इयरापकु पसुत्तमे वट्टतुल्लापायसोसगलगोला । तोआगराइगहत्था कीरइ उक्कोसयपयमि ॥ ११ ॥ इयरंत्ति ॥ बादरनिगोदाश्रयणं विना सूक्ष्मनिगोदान् प्रतीत्य यत्तुल्या निगोदसङ्ख्या समाना प्रागस प्रायोगत्वमंकादिना न्यूनाधिकत्वे व्यभिचारपरिहारार्थं कएतइत्याह-सकलगोला नतु खण्डगोला अतो ननियत किंचि दुत्कृष्टपदं लभ्येत यतएव ततो बादरनिगोदादिग्रहणं क्रियते उत्कृष्टपदे अथ गोलकादीनां प्रमाणमाह-गोलायअसंखेज्जा होंतिनि उयाअसंखयागोल । एक्केकोयनिगोओ अणंतजीवोमुणेयव्वो ॥ १२ ॥ अथ जीवप्रदेश परिमाणप्ररूपणपूर्वक निगोदादीना मवगाहनानान मभिधि त्सुराह-लोगस्सयजीवस्सय होंतिपएसाअसंखमाणा । अंगुलअसंखभागो निगोयजियगोलगोगाहो ॥ १३ ॥ लोकजीवयो प्रत्येकमसङ्ख्येया प्रदेशा

भवन्ति, तेच परस्परेण तुल्याएव एषाच सङ्कोचविकाशात्' अङ्गुलासङ्ख्येयभागो निगोदस्य तज्जीवस्य गोलकस्यचावगाह इति निगोदादिसमावगा हनतामेव समर्थयन्नाह-जमिजित्तमेव निगोजतोतमिचेवगोलोवि । निप्फज्जइजखेत्ते तोततुल्लावगाहणया ॥ १४ ॥ यस्मिन् क्षेत्रे योयोवगाहते त स्मिन्नेव निगोदो निगोदव्याप्त्या जीवस्यावस्थानात् " तोत्ति „ तत स्तदनन्तरं तस्मिन्नेव गोलोपि निष्पद्यते विवक्षितनिगोदावगाहनातिरिक्ता या शेषनिगोदावगाहनाया गोलकान्तरप्रवेशेन निगोदमात्रत्वात् गोलकावगाहनाया इति' यद्यस्मात् क्षेत्रे आकाशे तत स्ते जीवनिगोदगोला स्तुल्यावगाहनाका समावगाहनाका इति, अथ जीवाद्यवगाहनासमतासामर्थ्येन यदेकत्र प्रदेशे जीवप्रदेशमानं भवति तद्विनिरूपणे स्थापना र्थं प्रश्न कारयन्नाह-उक्कोसपयपएसे किमेगजीवप्पएसरासिस्स । एगजिगनिगोयस्सय गोलस्सव किंतमोगाढं ॥ १५ ॥ तत्र जीवमाश्रित्योत्तर-जीवस्स लोगमेत्तस्स सुहुमतुंगाहणावगाढस्स । एक्केक्कमिपएसे होंतिपएसाअसंखेज्जा ॥ १६ ॥ तत्र किल कल्पनया कोटीशतसङ्ख्य जीवप्रदेशराशे प्रदेश

दशसहस्रीस्वरूपजीवावगाहनया भागे हृते लब्धमाना भवन्तीति' अथ निगोदमाश्रित्याह-लोगस्सरिसभागे निगोयउगाहणाइजाउ । उक्कोसपए ऽतिगय रत्तियमेक्कक्कजीवाउ ॥ १७ ॥ लोकस्य कल्पनया प्रदेशकोटीशतमानस्य हृते भागे निगोदावगाहनया कल्पनात प्रदेशदशसहस्त्रीमानया यल्लब्ध तच्च किल लक्षपरिमाणं उत्कृष्टपदे ऽतिगतमवगाढ मेतावदेकैकजीवानन्तजीवात्मकनिगोदसम्बन्धिन एकैकजीवस्तत्कमित्यर्थ ऽनेन नि गोदस्तत्कमुत्कृष्टपदे यदवगाढ तद्दर्शित मथ गोलकस्तत्क यत्तत्रावगाढ तद्दर्शयति-एवदव्वाउ सव्वेत्तिगक्कगोलजीवाण । उक्कोसपयमइगया होति पएसाअसखगुणा ॥ १८ ॥ यथा निगोदजीवेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा स्तत्प्रदेशा उत्कृष्टपदे ऽतिगता एव दव्वाओत् द्रव्यार्थतया नतुप्रदेशार्थतया " सव्वे त्तिति „ सर्वेभ्य " एक्कगोलजीवाणति „ एकगोलगतजीवद्रव्येभ्य' सकाशा दुत्कृष्टपद मतिगता भवन्ति, प्रदेशा असङ्ख्यातगुणा । इह किलानन्त जीवोपि निगोद कल्पनया लक्षजीव ' गोलकश्चा सङ्ख्यातनिगोदोपि कल्पनया लक्षनिगोद स्तत श्च लक्षस्य लक्षगुणने कोटीसहस्रसख्या कल्पनया

गोलके जीवा भवन्ति, तत्प्रदेशानाच लक्ष लक्ष मुत्कृष्टपदे ऽतिगतम तथैकगोलजीवेभ्य सकाशा देकत्र प्रदेशे ऽसङ्ख्येयगुणा जीवप्रदेशा भवन्तीत्यु क्त मथ तत्र गुणाकारराशे परिमाणनिर्णयार्थ मुच्यते-तपुणकेवइरण गुणियमसखेज्जयभवेज्जाहि । जमइदव्वपहाए जावइयासव्वगोलत्ति ॥ १९ ॥ तत्पुन रनन्तरोक्त उत्कृष्टपदातिगतजीवप्रदेशराशे सम्बन्धि कियता किंपरिमाणेन सख्येयराशिना गुणित सत् " असखेज्जायति „ असंख्येयक भ सख्यातगुणनाद्वारापात भवेत्स्यादिति भण्यते अत्रोत्तर-द्रव्यार्थतया नतु प्रदेशार्थतया यावन्त सर्वगोलका सकललोकगोलका स्तावन्तएवेतिगम्य, सचोत्कृष्टपदगतैकजीवप्रदेशराशि र्मन्तव्य सकलगोलकाना तत्तुल्यत्वादिति-किंकारणमोगाहणा तुल्लताजियनिगोयगोलाण।गोलाउक्कोसपयक्क जियप एसेहितोतुल्ला ॥ २० ॥ किंकारणंति „ कस्मात् कारणा द्यावन्त सर्वगोला स्तावन्तएवोत्कृष्टपदगतैकजीवप्रदेशा इतिप्रश्न , अत्रोत्तर मवगाहनात् ल्यत्वा त्केषामित्याह-जीवनिगोदगोलाना मवगाहनातुल्यत्व चेषा मङ्गुलासख्येयभागमात्रावगाहित्वादिति, यस्मादेव"तोत्ति„तस्माद्गोला सकललो

कसम्बन्धिन उत्कृष्टपदे ये एकस्य जीवस्य प्रदेशा स्ते तथा तै रुत्कृष्टपदैकजीवप्रदेशै स्तुल्या भवन्ति एतस्येव भावनार्थ मुच्यते-गोलोऽवि असंखा आगच्छइजतमेगजीवस्स । उक्कोसपयगयपए सरासितुल्लावइज्जम्हा ॥ २१ ॥ गोलो गोलावगाहनाप्रदेशे कल्पनया दशसहस्ररूपै हृतं विभक्तं हृत विभाग इत्यर्थ, लोके लोकप्रदेशराशौ कल्पनयैककोटीशतप्रमाणे आगच्छति लभ्यते यल्लक्षगोलकसंख्यास्थान कल्पनया लक्षमित्यर्थस्तदेकजीवस्य सम्बन्धिना पूर्वोक्तप्रकारेण कल्पनया लक्षप्रमाणेनोत्कृष्टपदगतप्रदेशराशिना तुल्य भवति यस्मात्तस्मा द्गोला उत्कृष्टपदैकजीवप्रदेशै स्तुल्या भवन्तीति प्रकृतं भवति, एवं गोलकानामुत्कृष्टपदगतैकजीवप्रदेशानाच तुल्यत्वं समर्थितं पुन स्तदेव प्रकारान्तरेण समर्थयति-अहवालोगपएसे एक्केक्कठव गोलमेक्केक्के । एवउक्कोसपए एक्कजियपएसेसुमायंति ॥ २२ ॥ अथवा, लोकस्येव प्रदेशे एककस्मिन् स्थापय निधेहि विवक्षितसमत्वयुक्तत्वात् गोलकमेकं ततश्च एवमुक्तक्रमस्थापने उत्कृष्टपदे ये एकजीवप्रदेशा स्ते तथा तेषु तत्परिमाणेष्वाकाशप्रदेशेष्वित्यर्थ मान्ति गोलानिगन्त यावन्त

उत्कृष्टपदे एकजीवप्रदेशा स्तावन्तो गोलकाअपि भवन्तीत्यर्थ एतच कल्पनया किल लक्षप्रमाणा उनयेपाति, अथ सर्वजीवेभ्य उत्कृष्टपदजीवप्रदेशा विशेषाधिका इति विनिर्णिपु स्तथा सर्वजीवानाच तावत्समतामाह-गोलोजीवोयसमा पदेसउगाहसमुजीवायि । एगोतिसमोगाहणया नज्झिमउ गाहणयम्मि ॥ २३ ॥ गोलोजीवोयसमा गोलोजीवश्च समौ प्रदेशतो ऽवगाहनाप्रदेशानाश्रित्य कल्पनया द्वयोरपि प्रदेशदशसहस्रावगाहत्वात् “ जघन्य „ यस्माच सर्वजीवाअपि सूक्ष्मा भवन्ति समावगाहनका मध्यमावगाहनामाश्रित्य कल्पनयापि जघन्यावगाहना पञ्चप्रदेशसहस्राणि उत्कृष्टा तु पञ्चदशति द्वयोश्च मीलनना द्विकरणानच दशसहस्राणि मध्यमा भवन्तीति-तेणपुरुचियसिद्ध एगपएसभिजीजियपएसा । तपवुजीवतुल्ला सुणानु पुणोअरविसेसरिया ॥ २४ ॥ इह किलासद्भावस्थापनया कोटीशतसंख्यप्रदेशस्य प्रदेशदशसहस्राा सवगाढस्य प्रतिप्रदेश प्रदेशलक्ष भवति तच पूर्वोक्तप्रकारतो निगोदवर्त्तिना जीवलक्षेण गुणितं कोटीसहस्र भवति, पुनरपिच तदेकगोलवर्त्तिना निगोदलक्षेण गुणितं कोटीकोटीदशकप्रमाण

सवति, जीवप्रमाणमप्येतदेव तथाहि-कोटीशतसंख्यप्रदेशे लोके दशसहस्रावगाहिना गोलानां लक्षं भवति प्रतिगोलकंच निगोदलक्षकल्पना निगो
दाना कोटीसहस्र भवति, प्रतिनिगोदच जीवलक्षकल्पना त्सर्वजीवाना कोटी २ दशक भवति, अथ सर्वजीवेभ्य उत्कृष्टपदगतजीवप्रदेशा विशेषा
धिका इति दर्श्यते-जम्हा तिकेइखण्ड गोलालोगतवत्तिणोअणे । वायरविग्गहिएहिय उक्कोसपधजमब्भहिय ॥ २५ ॥ यस्मा द्विद्यते केचित्खण्डगो
ला लोकान्तवर्त्तिन " गलेत्ति „ पूर्णगोलकेभ्यो ऽपरं ऽन्ये जीवराशि कल्पनया कोटी २ दशकरूपर्जनो भवति, पूर्णगोलकतायामेव तस्य यथो
क्तस्य भावात्' ततश्च य न जीवराशिना खण्डगोलका पूर्णीभूता. सर्वजीवराशे रपनीयते ध्यसद्भूतत्वात्तस्य सच किल कल्पनया कोटीमात्र स्तत्रचा
पनीते सर्वजीवराशि स्तोकतरो भवति, उत्कृष्टपदच यथोक्तप्रमाणमेवति, तत्वतो विशेषाधिक भवति समतापुन खण्डगोलकाना पूर्णताविव
क्षणादुक्तेति, तथा बादरविग्रहिकैश्च बादरनिगोदादिजीवदेशै श्चोत्कृष्टपद यद्यस्मा त्सर्वजीवराशे रभ्यधिक तत सर्वजीवेभ्य उत्कृष्टपदजीवप्रदेशा

विशेषाधिका भवन्तीति इयमत्रभावना-बादरविग्रहगतिकादीना मनन्ताना जीवाना सूक्ष्मजीवासंख्येयभागवर्त्तिना कल्पनया कोटीप्रायसंख्याना पू
र्वोक्तसर्वजीवराशिप्रमाणे ऽपकृष्यमाणे समता प्राप्तावपि तस्य बादरादिजीवराशे कोटीप्रायसंख्यस्यमध्यादुत्कर्षतो ऽसंख्येयभागस्य कल्पनया शतस
स्यस्य विवक्षितसूक्ष्मगोलकावगाहनाया मवगाहनात्' एकैकस्मिश्च प्रदेशे प्रत्येक जीवप्रदेशलक्षस्यावगाढत्वा ल्लक्षस्यच शतगुणत्वेन कोटीप्रमाणत्वा
त्तस्याश्चोत्कृष्टपद प्रक्षेपात्पूर्वोक्तमुत्कृष्टपद जीवप्रदेशमान कोट्याधिक भवतीति यस्मादेव-तम्हासव्वेहितो जीवेहितोफुडगहेयव्व । उक्कोसपयपदेसा
होतिविसेसाहियानियमा ॥ २६ ॥ इदमेव प्रकारान्तरेण भाव्यते-अहवाजेणबहुसमा सुहुमालोयवगाहणाय । तणक्केकजीव बहुगेविरल्लएलोग
॥ २७ ॥ यतो बहुसमा प्रायेण समाना जीवसंख्यया कल्पनयैकैकावगाहनाया जीवकोटीसहस्रस्यावस्थानात् [illegible]गोलके व्यभिचारपरिहारार्थ चे
द-बहुग्रहण, सूक्ष्मा सूक्ष्मनिगोदगालका. कल्पनया लक्षकल्पा लोके चतुर्दशरज्वात्मके, तथा वगाहनयाच समा कल्पनया दशसु दशसु प्रदेश

सहस्रे प्रवगाढत्वा त्तस्मा देकप्रदेशावगाढजीवप्रदेशाना सर्वजीवानाञ्च समता परिज्ञानार्थं मेकैक जीव बुध्या " विरायति „ केवलिसमुद्घातग त्या विस्तारये लोके अयमत्रभावार्थ -यावन्तो गोलकस्यैकत्र प्रदेशे जीवप्रदेशा भवन्ति कल्पनया कोटीकोटीदशकप्रमाणा स्तावन्त एव विस्तारिते पु जीवेपु लोकस्यैकत्र प्रदेशा ते भवन्ति' सर्वजीवा अप्येतत्समाना एवेति, अतएवाह-एवमिममाजीवा गगपवनगयजियप्पएसेहिं । वायरधाधुला पुण होंतिपएसाविसेसमहिया ॥ २८ ॥ एवमपि नकेवल, गोलो जीवोवसमा इत्यादिना पूर्वोक्तन्यायेन समा जीवा एकप्रदेशगते जीवप्रदेशे रिति, उत्तरार्द्धस्तु व्यक्त प्राग्व्यसेयेति, अथ पूर्वोक्तराशीना निदर्शनाभ्यभिधित्सु प्रस्तावयन्नाह-तेसिपुणरासीण निदरिसणमिणमोरणासिपट्टवल्ल । सुत्तगएणगाएणत्थ ठवणारासिप्पमाणोसि ॥२९॥ गोलाणणकरमेक्क गएगोलेनिगोपलक्खतु । एक्केक्कयनिगोय जीवाणलक्खमेक्केक्क ॥ ३० ॥ एक्केक्क यमेगजीव प्पएसनाणलमवलोगस्स । गोलनिगोयजियाण दससहस्साससमोगाढे ॥ ३१ ॥ जीवस्सक्केक्कस्सय दससहस्सावगाढिगोलेन । एक्के

कक्खिमपएस पगसलक्खसमोगाढ ॥ ३२ ॥ जीवसयस्सजहण्णे पयमिकोडीजियप्पएसाण । तुगाढाउक्कोसे पयगिव्वोध्दवरसाण ॥ ३३ ॥ कोडिसह स्सजियाण कोडाकोडीदसप्पएसाण । उक्कोसतुगाढा सव्वजियावेहियाचेव ॥ ३४ ॥ कोडीउक्कोसपयमि यायरजियप्पएसपक्खेवो । सोएणयमेत्ति यचिय कायव्वसव्वगोलाण ॥ ३५ ॥ उत्कृष्टपदे सूक्ष्मजीवप्रदेशराशे रुपरि कोटीप्रमाणो वादरजीवप्रदेशानां प्रक्षेप: कार्य शतकल्पत्वा द्विवक्षित सूक्ष्मगोलकावगाढबादरजीवाना तेपाच प्रत्येक प्रदेशलक्षस्योत्कृष्टपदेप स्थितत्वा त्तन्मीलनेच कोटीभवतीति' तथा सवजीवराशे संख्या क्षो धनक मपनयन " रात्तियचियत्ति „ एतावता मेव कोटीसंख्यानामेव कथव्य सगलगोलाना सयलगोलकपूर्णताकरणे मिपुक्तजीवाना तेषा मवान्ना विकत्वादिति, एगत्ति जहासनव भत्योवणाय फरज्जरासीण । सब्भावउपजाणाज्ज तेअणताअनसावा ॥ ३६ ॥ एतार्थोपनयो यथास्थान प्राय प्रा ग्दर्शित एव"अणतात्ति„ निगोदे जीवा यद्यपि लक्षमाना उक्ता स्तथाप्यनन्ता एव सर्वजीवा अपि, तथा निगोदादयो ये लक्षमाना उक्ता स्तेप्यनं

॥ टीका ॥ ॥ अनन्तरोद्देशके लोकवक्तव्यतोक्ते इह तु लोकवर्त्तिकालद्रव्यवक्तव्यतो
च्यत इत्येव सम्बद्धस्यास्यैकादशोद्देशकस्येदमादिसूत्र—तेणमित्यादि ॥ पमाणकालेत्ति ॥ प्रमीयते परिच्छिद्यते येन वर्षशतादि तत्प्रमाण सचासौ
ख्येया अवसेया इति ॥ एकादशशते दशम ॥ ११ ॥ १०

॥ मूल ॥ असंखेज्जगुणा, उक्कोसपदे जीवप्पदेसा विसेसाहिया, सेव भंते भंतेति ॥ एगारससयस्स दसमो उद्देसो
सम्मत्तो ११ ॥ १० ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामेणामं णयरे होत्था वण्णओ
दूइपलासे चेइए वण्णओ, जाव पुढवीसिलापट्टए। तत्थणं वाणियगामे णयरे सुदंसणे णामं सेठी परिवसइ
अड्ढे जाव अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ सामी समोसढे जाव परिसा पज्जु

अनुवाद पदे जीवप्रदेशा सर्वजीवा असख्येयगुणा, उत्कृष्टपदे जीवप्रदेशा विशेषाधिका स्तदेव भदन्त ! भदन्त ! इति ॥ एकादशशते दशमोद्देश
॥ ११ ॥ १० ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये वाणिज्यग्राम नाम नगर मवर्णवत्, वर्णको दूतिपलाशश्चैत्यो वर्णको याव त्पृथ्वी
शिलापट्टक । तत्र वाणिज्यग्रामे नगरे सुदर्शन इति नाम्ना श्रेष्ठी परिवसति, आढ्यो याव दपरिभूत श्रमणोपासको ऽभिगतजीवाजीवो या

। भाषा ॥ निगोदनाप्रदेश फरसे ए सपूर्ण गो
तोन दिशिना निगोदनाप्रदेश फरसे शेष दिसा अलोके आवरने ए खणगोला उत्कृष्ट जिहां गोलाने छदिशिना
ला लोकमाहि हुव एहनो विशेष टीकाथी जाणवो। सेवंभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकहो ते सर्व सत्यछे। एगारससयस्सदसमो उद्देसो सम्मत्तो।
ए इग्यारमा शतकनो दशमो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ १० ॥ पाछिले उद्देशे लोकस्वरूप कह्यो इहां लोकवर्ती कालद्रव्यनी वक्तव्यता
कहेछे—तेणंकालेणं तेणं समएणं वाणियगामेणयरे होत्था वण्णओ। ते कालने विषे ते समयनेविषे वाणिजग्रामनामे नगर हुवो वर्णक उववाई उपागथी
जाणवो दूइपलासे चेइए वण्णओ। दूतिपलासनामे चैत्य तेहनो वर्णक । पुढवी सिलापट्टए। यावत् पृथवो शिलापट्ट एतलालगे कहवो। तत्थणवाणि
यगामेणयरे। तिहां वाणिजग्रामनामे नगरनेविषे। सुदसणेणामसेठी परिवसइ अड्ढे। सुदर्शन इसनामे सेठ वसेछे ऋद्धिवन्त। जाव अपरिभूए सम

॥ मूल ॥

वासइ । तएणं से सुदंसणे सेठी इमीसे कहाए लद्धठे समाणे हठतुठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते सव्वाल कारविभूसिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण पाद विहारचारेणं महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियगाम णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छइत्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता समण भगवं महा

॥ अनुवाद ॥

वद्विहरति, स्वामीसमवसृतो यावत्पर्युपास्ते, तदानीं स सुदर्शन श्रेष्ठी अस्या कथाया लब्धार्थ सन् हृष्टतुष्ट स्नान कृत (प्रभृति) यावत्प्रा यश्चित्त सर्वालङ्कारविभूषित स्वकीया गृहात् प्रतिनिष्क्रमते, प्रतिनिष्क्रम्य सकोरंटमाल्यदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन पादविहारचारेण महापु रुषवागुरापरिक्षिप्तो वाणिज्यग्राम नगर मध्य मध्येन निर्गच्छति' निर्गत्य यत्रैव दूतिपलाशचैत्यो यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीर स्तत्रैवोपागच्छ

॥ भाषा ॥

गोवासए । यावत् किणही पराभवी न सकाय एवागोपासक श्रावकछ । अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ । जाणवाछ जीव अने अजीवना स्वरूप जे णे इम यावत् विचरे एतलालगे कहवो । मासेनमासट्टे जाव परिसापज्जुवासइ । एहवे श्री वर्द्धमानस्वामी समोसर्या यावत् पर्षदाआवी सेवाकरे एतलालगे कहवो । तएणं से सुदंसणे सेठी । तिवारे ते सुदर्शननामे शेठियें। इमीसे कहाए लद्धठेसमाणे। एहवो स्वामी आव्यानो कथा सांभल्या थका । हठतुठे ण्हाए कय जाव पायच्छित्ते । हर्ष संतोष पाम्या स्नान कीधो यावत् मंगल प्रायश्चित्त एतलालगे कहवो । सव्वालंकारविभूसिए सांओ गिहा ओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । सर्व अलंकार विभूषितशरीर थयो थको आपणा घरथकी नीकले नीकलीने । सकोरंटमल्लदामेण छत्तेणधरिज्जमाणेण पाद विहारचारेण । कोरंटवृक्षना फूल मालाइं करि मस्तके छत्र धरीजता थका पालो पगें चालतो थको । महयापुरिसवग्गुरा परिक्खित्ते । मोटा पुरुष तेहनीवागुरा कहता श्रेणि तिणें परिवर्यो थको । वाणियगामणयरं मज्झंमज्झेण णिग्गच्छइ २ त्ता । वाणिज्यग्राम इसेनामे नगर मध्येमध्ये करी नी कले नीकलीने । जेणेव दूइपलासे चेइए । जिहां दूतिपलासनामे चैत्य छे । जेणेवसमणे भगवमहावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइ २ त्ता । जिहां श्रम

॥ मूल ॥

वीरं पंचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छइ तंजहा-सचित्ताणं दव्वाणं जहा उसभदत्तो जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। तएणं से समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसेय महइ जाव आराहए भवइ, तएणं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ उट्ठाए२ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एववयासी-कइविहेणं भंते! काले पं-सुदंसणा! चउव्विहेकाले

॥ अनुवाद ॥

ति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं पञ्चविधेनाभिगमेनाभिगच्छति तद्यथा-सचित्तानां द्रव्याणां यथा ऋषभदत्तो याव त्रिविधया पर्युपासनया पर्युपास्ते, तदा स श्रमणो भगवान् महावीरः सुदर्शनस्य श्रेष्ठिनः तस्याः महातिमहत्यै यावदाराधको भवति, तदानीं स सुदर्शनः श्रेष्ठी श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट उत्थयो तिष्ठति, उत्थाय श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्वा यावन्नमस्कृत्यैव

॥ भाषा ॥

श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर नभगवन्त श्रीमहावीरस्वामीछे तिहा आवे तिहा आवीने। समणभगवमहावीर पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ त०। सचित्त द्रव्यनो त्यजन कर इत्यादि ज्ञानी प्रते पञ्चप्रकारना अभिगमकरी साहमू जाव सावें इत्यर्थ कहेछे-सचित्ताण दव्वाण जहा उसभदत्तो। यावत् त्रिविध मन वचन काया तेह स्थिरकरि जिम ऋषभदत्तने अधिकारे कह्यु, तिम इहा पणि कहवो। जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। सुदसणस्ससेट्ठिस्स तीसेय महइ जाव आराहए भवइ। श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी। तिवारे ते श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी। तएण से समणेभगवमहावीरे। पर्युपासनाने सेवे। यावत् आज्ञानो आराधक हुवे एतलालगे कहवो। तएण से सुदसणसेट्ठी। तिवारे ते सुदर्शननामा श्रेष्ठिने तेहवी मोटी पर्षदामाहि धर्मकहे श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे धर्मप्रते साम्भली ने हृदयवरीने हर्ष सन्तोष पामी उठे उठीने। समणस्सभगवओ महावीरस्स अंतिय धम्मसोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठउट्ठाए २ त्ता। श्रमणभगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते तीनवार प्रदक्षिणाकरी यावत् वांदी नमस्कार करीने इमकहे। समणभगव महावीर तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एववयासी। कइविहेणभते काले प०। केतलेभेदे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। काल कह्यो इतिप्रश्न

॥ टीका ॥

कालश्चेति प्रमाणकाल प्रमाणंवा; परिच्छेदन वर्षादि स्तत्प्रधान स्तदर्थोवा, काल प्रमाणकाल, अद्धाकालस्य विशेषो दिवसादिलक्षण आहच- दुविहोपमाणकालो दिवसपमाणचहोइराईय। चउपोरिसिउदिवसो राइचउपोरिसीचेव ॥ १ ॥ अहाउनिव्वत्तिकालत्ति ॥ यथा येनप्रकारेण आयुषो निर्वृत्तिर्बन्धन तथा य कालो ऽवस्थितिरसौ यथायुर्निर्वृत्तिकालो नारकाद्यायुष्कलक्षणो ऽयचा द्धाकालएवायु कर्मानुभवविशिष्ट सर्वेषामेव स सारिजीवाना स्यादाहच-नेरइयतिरियमणुया देवाणअहाउयंतुजजेण। निव्वत्तियमन्नभवे पालितिअहाउकालोसो ॥ २ ॥ मरणकालेत्ति ॥ मरणेन विशिष्ट कालो ऽद्धा कालएव मरणमेववा, कालो मरणस्य कालपर्यायत्वा न्मरणकाल ॥ अद्धाकालेत्ति ॥ अद्धासमयादयो विशेषा स्तद्रूप कालो ऽद्धाकाल चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्त्ती समयादि राहच-समयावलियमुहुत्ता दिवसहोरत्तपक्खमासाय। संवच्छरजुगपलि

॥ मूल ॥

प०, त०—पमाणकाले अहाउणिव्वत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले। से किंत पमाणकाले २ दुविहे पण्णत्ते, तंजहा—दिवसप्पमाणकालेय रत्तिप्पमाणकालेय चउपोरिसीएदिवसे चउपोरिसीएराई भवइ। उक्कोसिया

अनुवाद

भवादीत्-कतिविधो भदन्त। काल प्रज्ञप्त? सुदर्शन। चतुर्विध काल प्रज्ञप्त स्तद्यथा-प्रमाणकालो यथायुर्निवृत्तिकालो मरणकालो ऽद्धाकाल। अथ कि तत्प्रमाणकाल? प्रमाणकालो द्विविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा-दिवसप्रमाणकालश्च रात्रिप्रमाणकालश्च, चतु पौरुषीको दिवसो चतु पौरुषीका

॥ भाषा ॥

उत्तर। सुदर्शण चउविहे काले प० त०। हेसुदर्शन। चारभेदे कालकह्यो तेकहेछे—पमाणकाले अहाउणिव्वत्तिकाले मरणकाले अद्धाकाले। जिणेंये जिणेंकरी वर्ष शतादिक ते प्रमाण कहिय जिणेप्रकारे आउखानो बन्धन तथा जे काल अवस्थित ते यथाउनिवृत्तकाल नारकादिकनो आयुषलक्षण आयुष्कने अनुभव करणेकरी विशिष्टकाल अद्धाकालहीज अथवा मरणहीज मरणने कालधर्मपर्णाथी मरणकाल अद्धासमयादिक विशेष ते रूप काल ते अद्धाकाल चन्द्र सूर्यादिक्रिया विशिष्ट अढाईद्वीप बेसमुद्रवर्त्ती समयादि अद्धाकाल कहियेछे। सेकित पमाणकाले २ दुविहे प० त०। तेकिसो प्रमाणकाल इतिप्रश्न उत्तर प्रमाणकाल बे भेदे कह्या ते कहेछे—दिवसपमाणकालेय। दिवस प्रमाणकाल चवलो। रत्तिप्पमाणकालेय। रात्रिप्रमाण काल।

॥ टीका ॥ या सागरउसप्पिपरियट्टत्ति ॥ २ ॥ अनन्तर चतु पौरुषीको दिवस श्चतु पौरुषीकाच रात्रिर्भवतीत्युक्त मथ पौरुषीमेव प्ररूपयन्नाह—उक्कोसियेत्या दि ॥ अद्धपचममुहुत्तत्ति ॥ अष्टादशमुहूर्त्तस्य दिवसस्य रात्रेर्वा, चतुर्थो भागो यस्या र्द्धपञ्चममुहूर्त्ता नवघटिका इत्यर्थ, ततोऽर्द्धपञ्चमामुहूर्त्ता यस्या सा तथा ॥ तिमुहुत्तत्ति ॥ द्वादशमुहूर्त्तस्य दिवसादे श्चतुर्थोभाग स्त्रिमुहूर्त्तो भवति अत स्त्रयो मुहूर्ता· षट्घटिका यस्या सा तथा ॥ कइ

॥ मूल ॥ अद्ध पचम मुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसी भवइ। जयाणं भंते ! उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ। तयाणं कइभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी परि २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ। जयाणं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तदाणं कइभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढ

अनुवाद च रात्रिर्भवति, उत्कृष्टार्द्धपञ्चमसुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति जघन्यात्रिमुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति। यदा भदन्त ! उत्कृष्टार्द्धपञ्चमसुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति तदा कतिभागमहूर्त्तभागान्परिहीयमानापरिहीयमाना जघन्या त्रिमुहूर्त्ता दिवस

॥ भाषा ॥ चउपोरिसीए दिवसे चउपोरिसीए राईभवइ। चारे पोरिसीए दिवस हुवे चारे पोरिसीए रात्रि हुवे अनन्तरे चारप्रहरनो दिवस चारप्रहरनी रात्रि इसो कह्यु, हिवे पोरिसीहीज प्ररूपेछे—उक्कोसियाअद्धपचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसीभवइ। उत्कृष्टथकी साढाचारमुहूर्त्त एतले अठारेमुहूर्त्त दिवसना तथा रात्रिनो चोथोभाग ते अर्द्धपञ्चममुहूर्त्त नवघटिका इत्यर्थ एह दिवसनो तथा रात्रिनो प्रहर हुवे। जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसीभवइ। जघन्यथकी बारेमुहूर्त्त दिवस तथा रात्रि हुवे तेहनो चोथोभाग एतले तीनमुहूर्त्त छ घटिका जेहनेविषे ते दिवस तथा रात्रिनो प्रहर हुवे वली सुदर्शन पूछेछे—जयाणभंतेउक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्सवाराईएवा पोरिसी भवइ। जिवारे हेभगवन् ! उत्कृष्टथकी साढाचार मुहूर्त्त दिवसना तथा रात्रिनो पोरिसी हुवे। तयाण कइभागमुहुत्ता भागेण परिहायमाणी २। तिवारे कतलोभाग ते रूप मुहूर्त्तभाग तिणेकरी

॥ टीका ॥ भागमुहुत्तभागेणत्ति ॥ कतिभाग कतिथभाग स्वरूपा मुहूर्त्तभाग कतिभागमुहूर्त्तभाग स्तेन कतिथेन मुहूर्त्तांशेनेत्यर्थ ॥ बावीससयभागमुहुत्तभा

॥ मूल ॥ माणी परि २ उक्कोसिया अट्ठपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ? सुदंसणा ! जदाणं उक्कोसिया अट्ठपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ , तदाणं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ, जयाणं जहन्निया तिमुहुत्ता

अनुवाद स्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति, यदा जघन्या त्रिमुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति तदा कतिभागमुहूर्त्तभागान्परिवर्द्धमाना परिवर्द्ध मनोत्कृष्टाद्धपञ्चममुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति ? सुदर्शन । यदोत्कृष्टार्द्धपञ्चममुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति तदा

॥ भाषा ॥ मुहूर्त्तांशे करी इत्यर्थ परिहानघाता परिहानघाता । जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसीभवइ । जघन्ये तीनमुहूर्त्त दिवसनी अथवा रात्रिनी पोरिसी हुवे एतले केतलेभागे घटाडता घटाडता तीनमुहूर्त्तनी पोरिसी हुवे । जदाणं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसीभवइ । तथा जिवारे जघन्यथकी तीनमुहूर्त्त दिवसनी तथा रात्रिनी पोरिसी हुवे । तदाणं कइभागमुहुत्तभागेणं परिवट्ठमाणी परि २ । तिवारे केतलाभाग ते रूप मुहूर्त्तभाग तिणेकरी वधता वधता । उक्कोसियाअट्ठपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ । उत्कृष्टथकी साढाचारमुहूर्त्त दिवसनी तथा रात्रिनी पोरिसी हुवे इतिप्रश्न उत्तर । सुदंसणा । हेसुदर्शन । जदाणं उक्कोसिया अट्ठपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईएवा पोरिसीभवइ । जिवारे ण वाक्यालंकारे, उत्कृष्टथकी साढाचारमुहूर्त्त दिवसनी तथा रात्रिनी पोरिसी हुवे । तदाणं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी२ । तिवारे दिहा साढाचारमुहूर्त्तने अने तीनमुहूर्त्तने विशेष डोढमुहूर्त्त ते एकसो ब्यासीदिन वधे तथा घटे ते डोढमुहूर्त्त एकसोब्यासी भागपणे व्यवस्थापीये तिवारेएक मुहूर्त्तनविषे एकसोबावीसभागहुवे ते एकसोबावीसमभाग मुहूर्त्तभागेकरी परिहानघाता परिहानघाता । जहन्नियातिमुहुत्तादिवसस्सवाराईएवा पोरिसी भवइ । जघन्यथी तीन मुहूर्त्त दिवसनी तथा रात्रिना पोरिसी हुवे । जदाणं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ । जिवारे जघन्य

॥ टीका ॥ षड्शी नेणति ॥ इह अर्द्धपञ्चमाना त्रयाणाञ्च मुहूर्त्तानां विश्लेषः सार्द्धो मुहूर्त्तः सच अशीत्यधिकेन दिवसशतेन वर्द्धते हीयतेच, सच सार्द्धो मुहूर्त्त त्र्यधिकशतभागतया व्यवस्थाप्यते, तत्रच मुहूर्त्तं द्वाविंशत्यधिक भागशत भवत्यतो भिधीयते "वावीसत्यादि„द्वाविंशत्यधिकशततमभागरूपेण मुहूर्त्त

॥ मूल ॥ परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ तदाणं वावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ । कयाण भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ कदाण जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ ? सुदंसणा ! जयाणं उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तयाणं

अनुवाद द्वाविंशतिशतभागमुहूर्त्तभागेन (द्वाविंशत्यधिकशतभागमुहूर्त्तभागेनेत्यर्थ) परिहीयमाना २ जघन्या त्रिमुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति, यदा जघन्या त्रिमुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति तदा द्वाविंशतिशतभागमुहूर्त्तभागेन परिवर्द्धमाना परिवर्द्धमानोत्कृष्टार्द्धपञ्चममुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति। कदा भदन्त। उत्कृष्टार्द्धपञ्चमुहूर्त्तादिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति कदाच जघन्या

। भाषा ॥ परिवढ्ढमाणी २ । तिवारे एकसोबावीसमें मुहूर्त्त भागेकरी वधता तोनमुहूर्त दिवसना तथा रात्रिनो पोरिसी हुवे । तदाण वावीससयभागमुहुत्तभागेण परिवढ्ढमाणी २ । तिवारे एकसोबावीसमें मुहूर्त्त भागेकरी वधतां वधतो थको । उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ । उत्कृष्टथको साढाचारि मुहूर्त्तनी पोरिसी थाय एतले जिवारे साढाचारि मुहूर्त्तनी पोरिसी थाय ते दिवसथी एक मुहूर्त्तनो एकसोबावीसमो भाग दिवस दिवसप्रते घटे तालगे जालगी जघन्य त्रिमुहूर्त्त त्रिमुहूर्त्त पोरिसी थाय तिहाथकी प्रारम्भी दिवस दिवसप्रते मुहूर्त्तनो एकसो बावीसमोभाग पोरिसीमाहि वधे तालगे जालगे साढाचारि मुहूर्त्तनी पोरिसी थाय एतले पोरिसी पोरिसीप्रते हानि वृद्धि कही वली सुदर्शन पूछेछै—कदाणभंते उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसीभवइ । किवारे ए वली क्यालवारे, हेभगवन् । उत्कृष्टथकी साढाचार मुहूर्त्त दिवसनो तथा रात्रिनो पोरिसी हुवे । कदाण जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्सवा रातीएवा पोरि

उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा पोरिसी भवइ जहन्निया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जयावा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तयाणं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ। कयाणं भंते! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कयावा उक्कोसिया अट्ठा

त्रिमुहूर्त्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति ? सुदर्शन ! यदोत्कृष्टोऽष्टादश मुहूर्त्तो (मुहूर्त्तप्रमाणः) दिवसो भवति जघन्याच द्वादश मुहूर्त्ता रात्रिर्भवति तदोत्कृष्टार्द्धपंचममुहूर्त्ता दिवसस्य पौरुषी भवति जघन्याच त्रिमुहूर्त्ता रात्रेर्वा पौरुषी भवति, यदावोत्कृष्टा द्वादशमुहूर्त्ता रा

सी भवइ। किवारे जघन्यथकी तीनमुहूर्त्त दिवसनी तथा रात्रिनी पोरिसी हुवे इतिप्रश्न उत्तर। सुदसणा जदाणं उक्कोसिए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। हेसुदर्शन। जिवारे उत्कृष्टथकी अठारेमुहूर्त्तनो दिवस हुवे। जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। जघन्यथी बारे मुहूर्त्तनी रात्रि हुवे। तदाणं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्सवा पोरिसी भवइ। तिवारे उत्कृष्टथकी साढाचार मुहूर्त्त दिवसनी पोरिसी हुवे। जहन्निया तिमुहुत्ता राईए पोरिसीभवइ। जघन्यथकी तीन मुहूर्त्त रात्रिनी पोरिसी हुवे। जदावा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ। अथवा जिवारे उत्कृष्टथकी अठारेमुहूर्त्तनी रात्री हुवे। जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ। जघन्यथकी बारे मुहूर्त्तनो दिवस हुवे। तदाणउक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसीभवइ। तिवारे उत्कृष्टथकी साढाचारि मुहूर्त्त रात्रिनी पोरिसी हुवे। जहन्नियातिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ। जघन्यथकी तीनमुहूर्त्त दिवसनी पोरसी हुवे वली सुदर्शन पूछेछे—कदाणभंते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ। किवारे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्! उत्कृष्टथकी अठारे मुहूर्त्तनो दिवस हुवे। जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। जघन्यथकी बारे मुहूर्त्तनी रात्रि हुवे। कदावा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राईभवइ। अथवा किवारे उत्कृष्टथकी अठारेमुहूर्त्तनी रात्रि हुवे। जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसेभवइ। जघन्यथकी बारे मुहूर्त्तनो दिवस हुवे इतिप्रश्न उत्तर। सुदंसणा।

॥ टीका ॥

भागेनेत्यर्थः ॥ आसाढपुण्णिमाएइत्यादि ॥ इहाषाढपौर्णमास्यामिति यदुक्तं तत्पञ्चसंवत्सरिकयुगस्यान्तिमवर्षापेक्षयावसेयं यत स्तत्रैवाषाढपौर्ण मास्यामष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवत्यर्द्धपञ्चममुहूर्त्ताच तत्पौरुषीभवति, वर्षान्तरेतु यत्र दिवसे कर्कसंक्रान्ति र्जायते तत्रैवासौ भवतीति समवसेय मिति, एवं पौषपौर्णमास्या मप्यौचित्येन वाच्यमिति' अनन्तरं रात्रिदिवसयो वैषम्यमभिहितं अथ तयोरेव समता दर्शयन्नाह–अत्थिणमित्यादि

॥ मूल ॥

आसाढपुण्णिमाएणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ ? सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाएणं उक्कोसए रसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, पोसपुण्णिमाएणं उक्कोसिया अट्ठारस अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । अत्थिणं भंते ! दिवसाय राईओय समाचेव मुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ।

अनुवाद

भदन्त ! उत्कृष्टोऽष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्या द्वादश मुहूर्त्ता रात्रिर्भवति, कदावोत्कृष्टा ऽष्टादशमुहूर्त्तारात्रि र्जघन्यो द्वादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति ? सुदर्शन ! आषाढपौर्णमास्यामुत्कृष्टोऽष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्या द्वादशमुहूर्त्ता रात्रिर्भवति पौषपौर्णमास्यामुत्कृष्टाष्टादश त्रिर्भवति जघन्यो द्वादश मुहूर्त्तो दिवसो भवति तदोत्कृष्टार्द्धपञ्चममुहूर्त्ता रात्रेः पौरुषी भवति जघन्या त्रिमुहूर्त्ता दिवसस्य पौरुषी भवति। कदा

॥ भाषा ॥

आषाढी पौर्णिमासीने विषे एह जे कह्यु ते पंच सवत्सरिक युगने छेहला वर्षनी अपेक्षायें जाणवो जेमाटे तेहीज आषाढी पूनिमनेविषे अठारेमुहूर्त्तनो दिवस हुवे। जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। अने जघन्य थकी बारे मुहूर्त्तनो रात्रिहुवे। पोसपुण्णिमाएण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ। इस पोसनी पौर्णमासीनेविषे उत्कृष्टथकी अठारेमुहूर्त्तनी रा त्रि हुवे। जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसेभवइ। जघन्यथकी बारे मुहूर्त्तनो दिवसहुवे अनन्तरे रात्रि दिवसनी विषमपणो कह्यो, हिवे तेहनोज सम पणो देखाडता कहेछे—अत्थिण भंते दिवसायराईउय समाचेव भवति। हे ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् । दिवस अपुन रात्रि सरीखा निश्चे हुवे इति इस पहेलें प्रश्न । आसाढपुण्णिमाएण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ । आषाढी पौर्णिमासीने विषे उत्कृष्टो अठारेमुहूर्त्तनो दिवस हुवे तिवारे तेहनी पोरिसी साढाचार मुहूर्त्तनो हुवे अने वर्षान्तरने विषे तो जे दिवसनेविषे कर्कसंक्रान्ति हुवे ते दिवसने विषे अठारे मुहूर्त्तनो दिवस हुवे।

॥ टीका ॥

॥ इह च ॥ चेत्तासोयपुण्णिमासुणमित्यादि ॥ यदुच्यते तद्व्यवहारनयापेक्ष निश्चयतस्तु कर्कमकरसंक्रान्तिदिनादारभ्य यद्दिनवर्तितम महोरात्र तस्या मेव समा दिनरात्रिप्रमाणतेति, तत्रच पञ्चदशमुहूर्ते दिने रात्रौवा, पौरुषीप्रमाण त्रयो मुहूर्त्ता स्त्रयश्च मुहूर्तचतुर्भागा भवति, दिनचतुर्भागरूप त्वा त्तस्या एतदेवाह–चउभागेत्यादि ॥ चतुर्भागरूपो यो मुहूर्त्तभाग स्तेनोना चतुर्भागमुहूर्त्तभागोना चत्वारो मुहूर्त्ता यस्या पौरुष्या सा तथेति ॥ सेकित अहाउनिव्वत्तिकाले इत्यादि ॥ इहच ॥ जेणाति ॥ सामान्यनिर्देशो ततश्च यन कनचिन्नारकाद्यन्यतमेन ॥ अहाउयनिव्वत्तियति ॥ यत्प्रकार

॥ सूत्र ॥

भवति? हंता अत्थि। कयाणं भंते ! दिवसाय राईओय समाचेव भवति? सुदंसणा! चित्तासोयपुण्णिमासुणं दिवसाय राईओय समाचेव भवति, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ, चउभागमुहुत्तभागू

॥ अनुवाद ॥

मुहूर्त्ता रात्रिर्भवति जघन्यो द्वादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति। अस्ति भदन्त! दिवसाश्च रात्रयश्च समाश्चैव भवन्ति? हन्तास्ति। कदा भ०। ते दिवसाश्च रात्रयश्च समाश्चैव भवन्ति? सुदर्शन। चैत्राश्विनपौर्णमास्या दिवसाश्च रात्रयश्च समाश्चैव भवन्ति, पञ्चदश मुहूर्त्तो दिवस पञ्चदश

॥ भाषा ॥

प्रश्न उत्तर। हंता अत्थि। हा सुदर्शन छे। कदाणभते ते दिवसाय राईओय समाचेव भवति। किवारे ग वाक्य.लकारे, हेभगवन्। दिवस तथा रात्रि सराखा निश्चयें हुवे इतिप्रश्न उत्तर। सुदंसणा चित्तासोयपुण्णिमासुण दिवसाय राईओय समाचेव भवति। हेसुदर्शन। चैत्र आसोज पूनिमने विषे दिन तथा रात्रि सरीखा हुवे ए व्यवहार नयनी अपेक्षाये कह्यु निश्चयथकी तो कर्क मकरसंक्रान्ति दिवसथकी पांचमो जे वासभी अहोरात्रि तेहना अहं नेविषे सरीखा दिनरात्रिनो प्रमाणपणो हुवे। पण्णरसमुहुत्तेदिवसे पण्णरसमुहुत्ता राईभवइ। पनर मुहूर्त्तनो दिवस तथा पनर मुहूर्त्तनी रात्रिहुवे तिहा पनरमुहूर्त दिवसनेविषे तथा पनरमुहूर्त रात्रिनेविषे पोरिसी प्रमाण तीनमुहूर्त अने चउभाग मुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरिसी भवइ। एक मुहूर्त्तना च्यारभागकीजे एकभाग घटाडीजे एतले पोणाच्यार मुहूर्त्त दिवस तथा रात्रिनी पोरिसी हुवे। सेत्तंपमाण काले। एतले प्रमाणकाल कह्यो। सेकित अहाउणिव्वत्तिकाले २। हिवे स्यु ते यथायुनिर्वृत्तिकाल इतिप्रश्न उत्तर यथायुनिर्वृत्तिकाल। जण जेरइए

॥ टीका ॥

मायुक जीवित मन्तर्मुहूर्तादि यथायुक निर्वर्त्तित निबद्ध ॥ जीवोवा सरीरेत्यादि ॥ जीवोवा शरीरा च्छरीरवा ; जीवा द्वियुज्यत इतिशेषो, वाश
द्वौ शरीरजीवयो रवधिभावस्येच्छानुसारिता प्रतिपादनार्थो विति ॥ सेकित अद्धाकाले इत्यादि ॥ अद्धाकालो ऽनेकविध प्रज्ञप्त स्तद्यथा-समय

॥ सूत्र ॥

णा चउमुहुत्ता दिवसस्सवा राईएवा पोरसी भवइ, सेतं पमाणकाले। सेकिंतं अहाउणिव्वत्तिकाले? अ २
जंणं णेरइएणवा तिरिक्खजोणिएणवा मणुस्सेणवा देवेणवा अहाउणिव्वत्तियं सेत्तं पालेमाणे अहाउणिव्वत्ति
काले। सेकितं मरणकाले मर २ जीवोवा सरीराउ सरीरंवा जीवाउ सेत्तं मरणकाले। सेकिंतं अद्धाकाले
अ २ अणेगविहे पण्णत्ते, तंजहा—समयठ्याए आवलियठ्याए जाव उस्सप्पिणीयठ्याए एसणं सुदसणा!

अनुवाद

मुहूर्ता रात्रिर्भवति' चतुर्भागमुहूर्त्तभागोना चतुर्मुहूर्ता दिवसस्यवा रात्रेर्वा पौरुषी भवति। समाप्त प्रमाणकाल ॥ अथ कितद्यथायुर्निर्वृ
त्तिकाल ? यथायुर्निर्वृत्तिकालो यन्नैरयिकेणवा तिर्यग्योनिकेनवा मनुष्येणवा देवेनवा यथायुर्निर्वर्तितम्। समाप्तो यथायु पालयन्निर्वृत्तिकाल।
अथ कि तन्मरणकाल ? मरणकालो जीवोवा शरीरा च्छरीर वा जीवात् (पृथग्भवतीतिशेष) समाप्तो मरणकाल। अथ कि तदद्धाकाल ?
अद्धाकालो ऽनेकविध प्रज्ञप्तस्तद्यथा-समयार्थतया ऽऽवलिकार्थतया यावदुत्सर्पिण्यर्थतया एष सुदर्शन। अद्धा द्विधारच्छेदनेन (द्विधाकार

॥ भाषा ॥

णवा तिरिक्खजोणिएणवा मणुस्सेणवा देवेणवा अहाउणिव्वत्तिय सेत्तं पालेमाणे। जेणे किणेइ नारके अथवा तिर्यञ्चयोनिके मनुष्ये अथवा देवे जेत
लो आउखो अन्तर्मुहूर्त्तादिक निवर्त्तित कहता बाध्युं ते यथायुनिवर्त्तित तेह पालतो थको। अहाउणिव्वत्तिकाले। यथायुनिवर्त्तितकाल कहिये।
सेकित मरणकाले २। हिवे ते सू० मरणकाल कहिये इतिप्रश्न उत्तर मरणकाल। जीवोवा सरीराओ सरीरवा जीवाओ। जीव शरीरथकी जुदो थाय
शरीर पणि जीवथकी जुदोथाय छूटे इत्यर्थ। सेत्त मरणकाले। ते मरणकाल एतले मरणकाल कह्यो। सेकित अद्धाकाले। हिवे सू० ते अद्धाकाल कहि
ये। अद्धाकाले अणेगविहे पणत्ते त०। अद्धाकाल अनेकप्रकारे कह्यो ते कहेछे—समयठ्याए आवलियठ्याए। समयरूप जे अर्थ तेहनोभाव तिणेकरी स

॥ टीका ॥

ठयाएत्ति ॥ समयरूपो ऽर्थ समयार्थ स्तद्भाव स्तत्ता तया समयभावेन इत्यर्थ , एवमन्यत्रापि यावत् करणात् मुहुत्तठयाए इत्यादिदृश्यमिति, अथानन्तरोक्तस्य समयादिकालस्य स्वरूपमभिधातुमाह–एएसिणमित्यादि॥ एषा ऽनन्तरोक्तोत्सर्पिण्यादिका अद्धा दोहारच्छेयणेणंति॥ द्वौ हारौ भागौ यत्र च्छेदने द्विधाया, कार करण यत्र तद्द्विहार द्विधाकारवा; तेन ॥ जाहेत्ति ॥ यदा समय इतिशेष , सेत्तमित्यादि निगमन ॥ असखे ज्जाणमित्यादि ॥ असख्यातानां समयानां सम्बन्धिनो ये समुदया वृन्दानि तेषा या समितयो मीलनानि तासा य समागम सयोग समुदयसमि तिसमागम स्तेन यत्कालमान भवतीति गम्यते, सैकावलिकेति प्रोच्यते ॥ सालिउद्देसएत्ति ॥ षष्ठशतस्य सप्तमोद्देशके, पल्योपमसागरोपमाभ्यां

॥ मूल ॥

अद्धा दोहारच्छेयणेणं छिज्जमाणा जाहे विभागं णो हव्वमागच्छइ सेत्तं समए। समयठयाए असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमितिसमागमेणं एगा आवलियत्तिपवुच्चइ, संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए

॥ अनुवाद ॥

च्छेदनेन) छिद्यमाना यदा विभाग नेव शीघ्रमागच्छति (स समय इति शेष) समाप्त समय । समयार्थतया ऽसङ्ख्यानां समयानां समुद

॥ भाषा ॥

मयभावें करी इत्यर्थ इम आवलिका भावेकरो । जाव उत्सर्पिणीवठयाए एसणं भुदसणा अद्धादोहारच्छेयणेण छिज्जमाणा जाहे विभागं। यावत् शब्द थकी मुहुत्तठ्याए दिवसठ्याए इत्यादिक कहवो, इम उत्सर्पिणी भावेकरी अनन्तरे कह्यो जे समयादिक काल तेहनोज स्वरूप कहेछे—एह हेसुदर्श न। अनन्तरे कह्यो उत्सर्पिण्यादि टोवहार कहता भाग जिहा छेदननेविषे अथवा द्विधाकार तिणे छेदने करवे छेदताथका जेहनो विभाग खण्ड। णोहव्वमागच्छइ सेत्त समए समयठ्याए। उतावलो न हुवे जिवारे तिवारे ते समय कहिये ते समयार्थे करो। असखेज्जाण समयाण समुदयसमिति समागमेण। असख्याता समयनो सर्वो समुदयवृन्द तेहने मेलवो तेहनो सयोग तिणेंकरो । एगाआवलियत्ति पवुच्चइ । एक आवलिका कहिये । स खेज्जाओ आवलियाओ जहासालिउद्देसए । सख्याती आवलिकाए इत्यादि । जिम छट्ठे शतके सातमे उद्देशे कह्यु तिमइहा पणि कहवो । जाव त सागरोवमस्स एगस्सभवेपरिमाणे । यावत् सागरोपमनो एक तो परिमाण हुवे एतलालगे कहवो । एतेहिपल्लते पलिओवमसागरोवमेहि । एणं प

॥ टीका ॥ ठितीपयति ॥ प्रज्ञापनाया चतुर्थपद, अथ नैरयिकादीना मायुषाणि मीयन्त इत्युक्त मय तदायुष्कमानमेव प्रज्ञापयन्नाह–नेरइयाणमित्यादि ॥ ठितीपयति ॥ सवत्ति ॥ सर्वविनाश ॥ अवचएत्ति ॥ दशातो ऽपगम पल्यापमसागरोपमयो रतिप्रचुरकालत्वेन क्षयमसम्भावयन् प्रश्नयन्नाह–अत्थिणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥ जाव ल सागरोवमस्स एगस्स भवे परीमाण । एएहिण भंते ! पलिउवमसागरोवमेहिं किं पओयण ? सुदसणा ! एएहिं पलिउवमसागरोवमेहिं णेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवाण आउयाइ माविज्जति । णेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पन्नत्ता ? एव ठिईपद णिरवसेस भाणियव्व जाव अजहन्नमणुक्कोसं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । अत्थिण भंते ! एए किं पलिउवमसागरोवमाण खएइवा अवचएइवा ? हंता

॥ अनुवाद ॥ यावत् सागरोपमस्यैकस्य भवेत्परिमाण । एभि भदन्त । पल्योपमसागरोपमै किं प्रयोजन ? सुदर्शन । एभि पल्योपमसागरोपमै नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यदेवाना मायुषि मीयन्ते ॥ नैरयिकाणा भ० । कियत्काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? एव स्थितिपद निरवशेष भणितव्यम् यावदजघन्यमनुत्कृष्टा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थिति प्रज्ञप्ता । अस्ति भ० । एतेषा किं पल्यापमसागरोपमाणा क्षय इतिवा ऽपचय इतिवा ? हन्तास्ति । अथ केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते अस्ति एतेषा पल्योपमसागरोपमा

॥ भाष्य ॥ हे सुदर्शन । एएहि पलिओवम सागरोवमेहि । एणे पल्यापम सागरोपमे करी । किंपओयण सुदसणा । स्यू प्रयोजन स्यू कार्य हवे प्रश्न उत्तर । हे सुदर्शन । एएहि पलिओवम साक्षात्कारे, हे भगवन् । पल्यापम सागरोपम करी । णेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवाण आउयाइ माविज्जति । नारकी तिर्यचयोनिक मनुष्य देवना आ उखा मापीये इत्यर्थ वली सुदर्शन पूछे छे—णेरइयाणभंते केवइयकाल ठिईपन्नत्ता । नारकीने हे भगवन् । केतलाकालनी स्थितिकही इतिप्रश्न । एव ठिईपद णिरवसेस भाणियव्व । इम पन्नवणानो स्थितिपद चोथो समस्त कहवो । जाव अजहन्नमणुक्कोस तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । यावत् अजघन्य मनुत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही एतलालगे कहवो, हिवे पल्यापम सागरोपमने प्रतिघणे कालेकरी तेहना चयनो असम्भव करतो

अस्थि । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ अत्थिणं एएसिं पलिउत्रमसागरोवमाणं जाव अवचएइवा एवं खलु सुदसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे णयरे होत्था, वण्णउ सहसवणे णामं उज्जाणे वण्णउ। तत्थण हत्थिणापुरे णामं णयरे बलेणाम राया होत्था, वण्णउ, तस्सणं बलस्स रन्नो पभावईणामं देवी होत्था सुकुमाल वण्णउ जाव विहरइ। तएणं से पभावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि

था यावदपचय इतिवा ? एव खलु सुदर्शन । तस्मिन्काले तस्मिन्समये हस्तिनागपुर नगरमभवद्वर्णक सहस्राम्रवन नामोद्यान वर्णक स्तत्र हस्तिनागपुरे नाम्नि नगरे बलो नाम राजाऽभवद्वर्णक , तस्य बलस्य राज्ञ प्रभावती नाम्नी देव्यभवत् सुकुमार (प्रभृति) वर्णको यावद्विहरति।

पूछेछे-- अत्थिणभंते एएकि पलिओवमसागरोवमाणं खएइवा अवचएइवा । छे हेभगवन् एह स्यू पल्योपम सागरोपमनो सर्वथा विनाश ते क्षय दे शथकी विनाश ते अपचय इतिप्रश्न उत्तर । हंता अत्थि । हा सुदर्शन छे । सेकेणट्ठेण भंते एववुच्चइ । ते स्यें अर्थे हेभगवन् इमकह्यु । अत्थिण एएसि पलिओवमसागरोवमाण जाव अवचएइवा । छे ण वाक्यालंकारे, एह पल्योपम सागरोपमनो क्षय सर्वथा विनाश यावत् अपचय देशथी विनाश इति प्रश्न, हिवे पल्योपमादिकनो क्षय तेहीज सुदर्शनने चरित्रकरी देखाडतो उत्तरहारें करी स्वामीजी कहेछे—एवखलु सुदसणा । इम निश्चे हेसुदर्शन । तेणंकालेण तेणं समएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । हत्थिणापुरे णयरे होत्था वण्णओ । हस्तिनापुर इसेनामे नगरहुयो तेहनो वर्णक । सहसव वणणाम उज्जाणे वण्णओ । सहस्राम्रनामे उद्यान तेहनो वर्णक उवाईउपांगथी कहवो । तत्थणहत्थिणापुरेणामणयरे बलेणामराया होत्था वण्णओ । तिहा ण वाक्यालंकारे, हस्तिनापुर इसेनामे नगरनेविषे बल इसेनामे राजाहुयो तेहनो वर्णक कूणिकनो परे कहवो । तस्सण बलस्सरन्नो पभावती णाम देवीहोत्था । तेह बलनामे राजाने प्रभावती इसेनामे देवी पट्टराणी हुई । सुकुमालवण्णओ जाव विहरइ । सुकुमाल हाथ पग जेहना इत्यादि वर्णक यावत् विचरै। तएण से पभावतीदेवी अन्नयाकयाइ । तिवारे ते प्रभावतीदेवी अन्यदा किवारे के। तंसितारिसगंसिवासघरंसि अभितरओ स

॥ टीका ॥

इति, अथ पल्योपमादित्वं तस्यैव सुदर्शनस्य चरितेन दर्शयन्निदमाह-एवं खलु सुदंसणे त्यादि ॥ तसितारिसगंसिति ॥ तस्मि स्तादृशके वक्तु मशक्यस्वरूपे पुण्यवता योग्य इत्यर्थ ॥ दूमियघट्ठमठेत्ति ॥ दूमित धवलित घृष्ट कोमलपाषाणादिना अतएव मृष्ट मसृण य त्तत्तथा तस्मिन् ॥ विचित्तउल्लोयचिल्लियतलेत्ति ॥ विचित्रो विविधचित्रयुक्त उल्लोक उपरिभागो यत्र ॥ चिल्लियति ॥ दीप्यमान तल चाधोभागो यत्र तत्तथा तत्र ॥ पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियत्ति ॥ पंचवर्णेन सरसेन सुरभिणाच मुक्तेन क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनोपचारेण पूजया कलित यत्तत्तथा तत्र ॥ कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामेत्ति ॥ कालागरुप्रभृतीनां धूपानां योमघमघायमानो गन्ध उद्भूत उद्धूत स्तेनाभिरा

॥ मूल ॥

अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोगचिल्लियतले मणिरयणपणासियंधकारे बहु समसुविभत्तदेसभाए पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंत

अनुवाद

तदा सा प्रभावत्यन्यदा कदाचि त्तस्मिंस्तादृशके वासगृहे ऽभ्यन्तरत सचित्रकर्मणि बाह्यतो दूमितघृष्टमृष्टे विचित्रोल्लोकचिल्लिततले मणिर त्नप्रणाशितान्धकारे बहुसमसुविभक्तदेशभागे पंचवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिते कालागरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धो

॥ भाषा ॥

चित्तकम्मे। तेहवे तेहवेरूप पुण्यवन्तनेयोग्य एहवा वासघरनेविषे ते घर केहवो माहिथी सर्व चित्राम सहितछे। बाहिरओ दूमियघट्टमट्ठे विचित्तउल्लोगचिल्लियतले। बाहिरथकी धवल्यो कोमलपाषाणादिके घस्यो एतलामाटे सुहालो एतलेमृदुफरसि सुहालो कीधो विविध चित्रयुक्त ऊपरलोभाग जिहा देदीप्यमान अधोभाग जिहा तेहनेविषे। मणिरयणपणासियधकारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए। मणि चन्द्रकान्तादिक रत्न कर्केतनादिक तिणे नसाड्यो अन्धकार जिहा तेहनेविषे घणो सरीखो विहच्यो कीधो भूमिभाग तेहनेविषे। पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए। पञ्चवर्ण सरस सगन्धे मूक्यो तिणेकरी फूल पुञ्जलक्षणे करी उपचार पूजा तिणेकरी कलित सहित तेहनेविषे। कालागरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूप मघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिएगंधवट्टिभूए। कृष्ण अगर प्रधान चीड सिल्ह इत्यादि धूपनो जे मघमघायमान गन्धउद्भूत उद्धूत तिणेकरी अभिरामरम्य तेहनेविषे सुगन्ध प्र

म रम्य यत्ततथा, तत्र कुदुरुक्क चीडा तुरुक्क सिल्हक ॥ सुगंधवरगंधिएत्ति ॥ सुगन्धय सद्गन्धा वरगन्धा प्रवरवासा सन्ति यत्र ततथा तत्र ॥ गंधवहिभूएत्ति ॥ सौरभ्यातिशया द्गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पे ॥ सालिंगणवट्टीएत्ति ॥ सहालिङ्गनवर्त्त्या शरीरप्रमाणोपधानेन यत्ततथा तत्र ॥ उन्नओविब्बोयणे ॥ उभयत शिरोन्तपादान्तावाश्रित्य ॥ विब्बोयणे ॥ उपधानके यत्र ततथा तत्र ॥ दुहओउण्णए ॥ उभयत उन्नते ॥ मज्झणयगंभीरे ॥ मध्येनतच निम्न गम्भीरच महत्वा द्यत्ततथा तत्र अथवा मध्येनच मध्यभागेन गम्भीरे॥ पण्णत्तगंडविब्बोयणेत्ति ॥ क्वचिद्दृश्यते,,तत्रच सुपरिकर्म्मितगण्डोपधान इत्यर्थ ॥ गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए ॥ गङ्गापुलिनवालुकाया योऽवदालो ऽवदलन पादादिन्यासेऽधोगमनमित्यर्थ स्तेन सदृशकमतिमृदुत्वा द्य त्ततथा तत्र, दृश्यतेच हसतूल्यादीनामयन्यायइति ॥ उयवियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे ॥ उयवियत्ति ॥ परिकर्म्मित यत् क्षौमिक दुकूल कर्प्पासिकमतसीमयवा, वस्त्र तस्य युगलापेक्षया य पट्ट शाटक सप्रतिच्छदन माच्छादन यस्य ततथा, तत्र ॥ सुविरइयरयत्ताणे ॥ सुष्टुविरचित

गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवहिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टीए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झेणयगंभीरे गंगापुलिणवालुयउद्दालसालिसए उयवियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे सुविरइय

धुताभिरामे सुगन्धवरगन्धित गन्धवर्त्तिभूते (गन्धवटीभूतेवा) तस्मिन्तादृशके शयनीये सालिङ्गनवर्त्त्या उभयत उपधानके उभयत उन्नते मध्ये नतगम्भीरे (मध्येनचगम्भीरेवा) गङ्गापुलिनवालुकावदालसदृशके उपितक्षौमिकदुकूलपट्टप्रतिच्छदने सुविरचितरजस्त्राणे रक्तांशुकसंवृते सुरम्ये

धान गन्धवासके जिहां तेहनेविषे सौरभ्यना अतिशयथकी गन्धद्रव्यगुटिकासरीखो । तथितारिसगंसिसयणिज्जंसि। तेहनेविषे तेहवे रूपे पुण्यवन्त योग्य नेविषे शयनीय शय्यानेविषे । सालिंगणवट्टीए । शरीरप्रमाण पल्यंकनेविषे । उभओविब्बोयणे दुहओउण्णए मज्झणयगंभीरे । शिर पगआश्रयी वेहूपासे ओसीसाछे,बेहूपासे पल्यंक ऊंचाछे जिहां विचाले नम्यो गंभीर तेहनेविषे । गंगापुलिनवालुय उद्दालसालिसए। गंगानदीनो तट तेहनो जे वेलू ते ऊपर पगमेल्ही जे ते जिम नीचोजाय ते सरीखो सुहालीके परमाणु शरीर । ओयवियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे । ते रूडा परे नीपायू कपासमय वस्त्र

॥ टीका ॥

रक्तांशुकसंवृते मशकगृहाभिधानवस्त्रविशेषावृते ॥ आईं रजस्त्राण माच्छादनविशेषोपरिभोगावस्थायां यस्मिंस्त तथा, तत्र ॥ रत्तसुयसवुडे ॥ रक्तांशुकसंवृते मशकगृहाभिधानवस्त्रविशेषावृते ॥ रूतच कर्पासपक्ष्म बूरच वनस्पतिविशेषो नवनीत आजिनक चर्ममयोवस्त्रविशेष स्तच स्वभावादतिकोमलो भवति, रूतच कर्पासपक्ष्म बूरच वनस्पतिविशेषो नवनीत च म्रक्षण तूल आकतूलइति द्वन्द्व स्तत एषामिव स्पर्शो यस्य तत्तथा, तत्र ॥ सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिएत्ति ॥ सुगन्धानि यानि वरकुसु मानि चूर्णा एतद्व्यतिरिक्त तथाविधशयनोपचाराश्च तैः कलित य त्तत्तथा, तत्र ॥ अद्धरत्तकालसमयंसित्ति ॥ समय समाचारोपि भवतीति कालेन विशेषित कालरूपसमय कालसमय, सचानर्द्धरात्ररूपोपि भवतीत्यतो ऽर्द्धरात्रशब्देन विशेषित स्ततश्चार्द्धरात्ररूप कालसमयो ऽर्द्धरात्रका लसमय स्तत्र ॥ सुत्तजागरत्ति ॥ नातिसुप्ता नातिजागरेतिभाव, कस्मादेवमित्यत आह ओहीरमाणीति ॥ प्रचलायमाना ॥ उरालादिविशेषणादिपूर्वव

॥ मूल ॥

रयणाणं रत्तसुयसवुडे सुरम्मे आईणगरूयबूरणवणीयतुल्लफासे सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिए अद्ध रत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं सस्सिरीयं

अनुवाद

आजिनकरूतबूरनवनीततुल्यस्पर्शे सुगन्धवरकुसुमचूर्णशयनोपचारकलिते ऽर्द्धरात्रकालसमये सुप्तजागरा नपाल्छ्यमाणा २ (प्रचलायमानेत्यर्थ) इदमेतद्रूपमुदार कल्याण (कल्याणकारकत्वात्) शिव (उपद्रवानपेतत्वात्) धन्य माङ्गल्य सश्रीक महास्वप्न दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा तद्यथा-हाररज

॥ भाषा ॥

अथवा अतसीमयवस्त्र तेह युगलनो अपेचावें एकपटांपट आच्छादनछे जेहने तेहनेविषे। सुविरइयरयत्ताणे रत्तसुयसवुडे सुरम्मे। भर्तारच्या आच्छा दनविशेष भोगअवस्थाये जेहनेविषे कठकुमर रावस्ते सवृत मनोहरनविषे। आईणगरूयबरणवणीयतुल्लफासे। चूलगारविशेष रुय बूर कांहो वन स्पतीविशेष माषण तूल ते सरीखो फरसछे। सुगंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिए। सुगन्ध प्रधान कुसुम तेहना चूर्ण तिणेकरी शय्या ना उपचार ति णेकरी कलितसहित तेहनेविषे। अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा। अर्द्ध रात्ररूप काल समयनेविषे यति सूतीनथी अति जागती नथी एतावता। ओहीरमाणी २ अयमेयारूव। थाडी निद्राये प्रचलायमान थकी एह एहवे रूपे। उराल कल्लाण सिवधन्न मंगल्ल सस्सिरीय महासुविण पासित्ताण

त् ॥ सुविणेत्ति ॥ स्वपनक्रियायां ॥ हाररययखीरसागरससंककिरणदगरयरययमहासेलपण्डुरतरोरुरमणिज्जपेच्छणिज्जं ॥ हारादयइव पाण्डुरतरो ऽतिशुक्ल उरु र्विस्तीर्णो रमणीयो रम्यो ऽतएव प्रेक्षणीयश्च दर्शनीयो य स तथा त' इत्थ रजतमहाशैलो वैताढ्यइति ॥ थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं ॥ स्थिरावप्रकम्प्यौ लष्टौ मनोज्ञौ प्रकोष्ठौ कूर्प्परागेतनभागौ यस्य स तथा, वृत्ता वर्तुला पीवरा स्थूला सुश्लिष्टा अविसंवरा विशिष्टा वरा तीक्ष्णा ग्रेदिका या दंष्ट्रा ताभि कृत्वा विडंबित विवृत मुख यस्य स तथा तत कर्मधारयो ऽत स्त ॥ परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाइयसोहंतलट्ठउट्ठ ॥ परिकर्म्मित कृतपरिकर्म यज्जात्यकमलं तद्व त्कोमलौ मात्रिकौ प्रमाणोपपन्नौ शोभमानाना मध्ये लष्टौ

महासुविणं पासित्ताणं पडिवुद्धा तं०—हाररययखीरसागरससंककिरणदगरययमहासेलपण्डुरतरोरुरमणिज्जपिच्छणिज्जं थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाइ

तत्क्षीरसागरशशाङ्ककिरणोदकरजतमहाशैलपाण्डुरतरोरुरमणीयप्रेक्षणीय स्थिरलष्टप्रकोष्ठवृत्तपीवरसुश्लिष्टविशिष्टतीक्ष्णदंष्ट्राविडंबितमुख परिकर्म्मितजात्यकमलकोमलमात्रिकशोभनलष्टौष्ठरक्तोत्पलपत्रमृदुकसुकुमारतालुजिह्व मूषागतप्रवरकनकतापितावर्त्तयद्वृत्ततडिद्विमलसदृशनयनं वि

पडिवुद्धा तं० । उदार मोटो कल्याणनो करणहार निरुपद्रव धन्य मंगलीक सश्रीक महास्वप्नप्रते देखीने जागी ते कहेछे—हाररययखीरसागर ससंक किरणदगरययमहासेलपंडरतरोरु रमणिज्जपिच्छणिज्ज । हारमोतीनो रजतरूपो क्षीरसमुद्र चन्द्रमाना किरण पाणीनाकणिया रूपानो महाशैल वैताढ्यपर्वत एतलानोपरे अतिशय ऊजलो उरुविस्तीर्ण मनोहर एतलामाटेज देखवायोग्य जिको तेहप्रतें । थिरलट्ठपउट्ठवट्टपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठतिक्खदाढाविडंबियमुह । स्थिर अप्रकम्प्य लष्टप्रधान कलाई जेहनी तथा वाटली पीवर सुहाली भली तीखी भेदणहारी जिका दाढा तिणेंकरी अलंकृतमुखछे जेहनो तेहप्रतें । परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाइयसोभंतलट्ठउट्ठ । समारयाछे जात्य कमल तेहनोपरे कोमल मात्रिक मानोपेत सोभमान मनोज्ञ ओठवेज जेहना तेहप्रतें । रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीह । राता कमलना पातनीपरे मृदु सुकुमार तालुयो अने जीभछे जेहने तेहप्रतें ।

॥ टीका ॥

मनोज्ञौ दशनच्छदौ यस्य स तथा त ॥ रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीह ॥ रक्तोत्पलपत्रव न्मृदूना मध्ये सुकुमाले तालुजिह्वे यस्य स तथा त, वाचनान्तरेतु–रत्तुप्पलसउयसुकुमालतालुनिल्लालियग्गजीह महुगुलियभिसतपिगलच्छतिदृश्यते, तत्रच रक्तोत्पलपत्रव न्मृदु सुकुमाल तालुनिर्लालिताग्राच जिह्वा यस्य स तथा त, मधुगुलिकाव द्भिसतल्लि दीप्यमाने पिङ्गले अक्षिणी यस्य स तथा त ॥ मूसागयपवरकणगताविअआवत्तायतवट्टतडिविमलसरिसनयण ॥ मूषा स्वर्णादितापनभाजन तद्गत यत्प्रवरकनक तापित कृताग्नितापं ॥ आवत्तायतत्ति ॥ आवर्त्त कुर्वाण तद्व द्ये वृत्तेच तडिदिव विमलेच सदृशेच परस्परेण ते लोचने यस्य स तथा त ॥ विसालपीवरोरुपडिपुण्णविपुलखध ॥ विशाले विस्तीर्णे पीवरे उपचिते उरू जङ्घे यस्य परिपूर्णो विपुलश्च स्कन्धो यस्य स तथा त ॥ मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडोवसोहिय ॥ मृदवो ॥ विसदत्ति ॥ स्पष्टा सूक्ष्मा ॥ लक्खणपसत्थत्ति ॥ प्रशस्तलक्षणा विस्तीर्णा पाठान्तरेण विकीर्णा या केसरसटा स्कन्धकेशच्छटा स्ताभि रुपशोभितो य. स तथा त ॥ ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलगूल ॥ उच्छ्रितमूर्द्धीकृत सुनिर्मित सुष्टु अधोमुखीकृत सुजात शोभनतया जात आस्फोटितच भूमावास्फालित लाङ्गूल ये

॥ मूल ॥

यसोन्नतलठउठं रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुजीहं मूसागयपवरकणगताविअआवत्तायंतवट्टतडिविमलसरिसनयण विसालपीवरोरुपडिपुण्णविउलखध मिउविसयसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिण्णकेसराडोवसोहियं

अनुवाद

शालपीवरोरुप्रतिपूर्णविपुलस्कन्ध मृदुविशदसूक्ष्मलक्षणप्रशस्तविस्तीर्णकेसरसटोपशोभित उच्छ्रितसुनिर्मितसुजातास्फोटितलाङ्गूल सौम्य सौ

॥ भाषा ॥

मूसागयपवरकणगताविअआवत्तायतवट्टतडिअविमलसरिसनयण । मूषा ते स्वर्णादितापन मृन्मय भाजनविशेष तेहनेविषे गयो जे प्रधान कनक अग्नि । तापितकीधो पतलामाटे आवर्त्त करतो तेहनोपरे वृत्त तडितनीपरे विमलसरीखा लोचनछे जेहना तेहप्रतें । विसालपीवरोरुपडिपुण्णविउलखध । विस्तीर्ण पुष्ट उरू जघा जेहनी परिपूर्ण विपुल स्कन्ध जेहनो तेहप्रते । मिउविसय सुहुमलक्खणपसत्थविच्छिण्णकेसराडोवसोभिय । मृदु कोमल विशद धवल सूक्ष्म तनु लक्षण प्रशस्त विस्तीर्ण केशरा स्कन्धना रोम तेहनो आटोप तिणे उद्धतपणे शोभित तेहप्रतें । ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलागूल ।

॥ टीका ॥ न स तथा तं ॥ अतुरियमचवलंति ॥ देहमनश्चापल्यरहित यथा भवत्येव ॥ असजताएत्ति ॥ अत्तुत्सुकया ॥ रायहससरिसीएंति ॥ राजहसगति

॥ मूल ॥ ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलंगूलं सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं नहयलाओ उवयमाणं निय यवयणमतिवयंतं त सीह सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तएणं सा पभावई देवी अय मेयारूवं उरालं जाव सस्सिरीयं महासुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा समाणी हठजावहियया धाराहयकलंबपुप्फगंपिवसमूससियरोमकूवा तं सुविणं उगिगहइ उगिगिहत्ता सयणिज्जाओ अब्भुठेइ २ त्ता अतुरियमचवलमसंभंताए

॥ अनुवाद ॥ स्याकार लीलायन्त जृम्भन्त नभस्तलादुत्तरन्त निजकवदनमुपव्रजन्त त सिंह स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा, तदा सा प्रभावती देव्ययमेतद्रूपमुदार यावत्सश्रीक महास्वप्न स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा सती हृष्ट (प्रभृति) यावद्धृदया धाराहतकदम्बपुष्पमिवसमुच्छ्वसितरोमकूपा त स्वप्नमुद्गृह्णाति, उद्गृह्य शयनीयादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायात्वरिताचपलासम्भ्रातया अविलम्बितया राजहंससदृश्या गत्या यत्रैव बलस्य राज्ञ शयनीय तत्रै

॥ भाषा ॥ ऊर्ध्वा कीधा अधामुखीकृत अथवा कुण्डलीकृत सुजात शोभनपणे जात भूमिनेविषे आस्फालित लांगूल पूछ जेणे तेहप्रते। सोम सोमाकार लीलायत। सोमप्रते सोमआकारप्रते लीलाकरता थकाप्रते। जभायत नहयलाओ उवयमाण नियगवयणमतिवयत। बगासुं करताथकाने आकाशतलथकी उतर ताथका प्रते पोताना वदननेविषे पेसताप्रते। तसीहसुविणेपासित्ताणपडिबुद्धा। एहवा सीहप्रते सुहिणानेविषे देखीने जागी। तएण सापभावतीदेवी। तिवारे तिका प्रभावती राणी। अयमेयारूवउराल जाव सस्सिरीयमहासुविण। एह एहवेरूपे उदार यावत् सश्रीक महास्वप्न प्रते। सुविणेपासित्ताणपडि बुद्धासमाणी हठ जाव हियया। स्वप्ननेविषे देखीने जागीथकी हर्षसतोष पामी हृदय सतोष हुयो जेहनो। धाराहयकलवपुप्फगपिवसमूससियरोमकूवा तसुविणउगिगहइ उगिगिहत्ता सयणिज्जाओ अब्भुठेइ २ त्ता। मेघनीधाराये आहण्यो कदम्बवृक्षनो फूल तेहनीपरे विकस्याछे रोमकूप जेहना तेह स्वप्नप्रते ग्रहे निश्चेकरे ग्रहीने शय्याथकी उठे उठीने। अतुरियमचवलमसभंताए अविलंबियाए। देह चपल रहितपणे मन चपलरहित असम्भ्रान्त वि

॥ टीका ॥ सदृशयेत्यर्थः ॥ आसत्थत्ति ॥ आश्वस्ता गतिजनितश्रमाभावात् ॥ वीसत्थत्ति ॥ विश्वस्ता सञ्जाताभावा दनुत्सुकावा ॥ सुहासणवरगयत्ति ॥ सुखे

॥ मूल ॥ अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिउमहुरमंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ, पडिबोहेइत्ता बलेणं रन्नो अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि सीहासणंसि णिसीयइ, णिसीयइत्ता आसत्था वीसत्था

अनुवाद वोपागच्छति, उपागत्य बलं राजानं ताभिरिष्टाभिः कान्ताभिः प्रियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोमाभिरुदाराभिः कल्याणाभिः शिवाभिर्धन्याभिर्मङ्गल्याभिः सश्रीकाभिर्मृदुमधुरमञ्जुलाभिर्गीर्भिः संलपन्ती २ प्रतिबोधयति' प्रतिबोध्य बलेन राज्ञा ऽभ्यनुज्ञाता सती नानामणिरत्नभक्तिचित्रे सिंहासने निषीदति' निषीद्य आश्वस्ता विश्वस्ता सुखासनवरगता "शुभासनवरगतावा„ बलं राजानं ताभिरिष्टाभिः कान्ताभिर्यावत्संलप

॥ भाषा ॥ जिहां बलरा लम्ब रहितपणे। रायहंससरिसीए गईए। राजहंसनी गति सरीखी गतिकरी। जेणेव बलस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां बलरा जानो शयनीय शय्य छे तिहांआवे तिहां आवीने। बलरायताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं। बलराजाप्रते तिणेंकरी इष्ट मनोहर प्रीतिकारी। म णुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं। मनोज्ञ अभिराम उदार कल्याणकारी निरुपद्रवधन्य। मगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिउम हुर मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेइ २ त्ता। मङ्गलीक सश्रीक मृदु मधुर मञ्जुल एहवी गिरा कहिये वाणीयें करी बोलतीथकी २ ज गावे जगावीने। बलेणं रन्नो अब्भणुन्नाया समाणी। बलराजायें आज्ञा दीधाथका। णाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि सीहासणंसि णिसीयइ २ त्ता। अ नेकप्रकारना मणि चन्द्रकान्तादिक रत्नकर्केतनादिक तिणेभांतें चित्रित सिंहासनने विषे बेसे बेसीने। आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया। गमनथी ऊपनो श्रम टाळ्यो सक्षोभ टाळ्या सुखे आसन बरगई। बल राय ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी २ एववयासी। बलराजा प्रतें तेहवी इष्ट

॥ टीका ॥ न सुप्तवा, जाग्रता; आसनवरं गता या सा तथा ॥ धाराहयनीवसुरहिकुसुमचुंचुमालइयतणुत्ति ॥ धाराहतनीपसुरभिकुसुममिव ॥ चुंचुमालइयत्ति ॥ पुलकिता तनु शरीरं यस्यस तथा किमुक्तभवति ॥ ऊसवियरोमकूवेत्ति ॥ उच्छ्रितानि रोमाणि कूपेषु तद्रन्ध्रेषु यस्यस तथा ॥ मद्दपुढेण

॥ मूल ॥ सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव संलवमाणी २ एवं वयासी—एवंखलु अहं देवाणुप्पिया अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण तचेव जाव णियगवयणमतिवयंत सीहं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा। तंणं देवाणुप्पिया! एयस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स केमन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भवस्सइ ? तएणं से बले राया पभावईए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव

॥ अनुवाद ॥ न्ती संलपन्ती एवमवादीत्–एवंखलु अहं देवानुप्रिया । अद्य तस्मिंन्तादृशेऽशयनीये सालिङ्गन (प्रभृति) तचैव यावन्निजकवदनमुपप्रजन्तं तं सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा तद्देवानुप्रिया । एतस्योदारस्य यावन्महास्वप्नस्य किं मन्ये कल्याण (कल्याणकारक) फलवृत्तिविशेषो भविष्यति ? तदा स बलो राजा प्रभावत्या देव्या अन्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टो याव हृदयो धाराहतनीपसुरभिकुसुमचच्चुकिततनुक उच्छ्रितरोम

॥ भाषा ॥ मनोहर यावत् वाणिये बोलतीथकी २ इम कहे। एवखलु अहदेवाणुप्पिया । इम निश्चे हे महादेवानुप्रियाजी। अज्जतंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि। आज तेह तेहवेरूपे तेहनेविषे शयनीय शय्यानेविषे। सालिंगण तचेव जाव णियगवयण। शरीरप्रमाण ओसीकानेविषे पूर्वे सर्वकह्यो तिमहीज कहवो यावत् पोताना वदननेविषे। अइवयंत सीह सुविण पासित्ताणं पडिबुद्धा। अवतरतो एहवोसीह ते सीह स्वप्नमे देखीने जागी। तणं देवाणुप्पिया एयस्सउरालस्स जाव महासुमिणस्स। तेह णं वाक्यालंकारे, अहो देवानुप्रिया। एहनो उदार मोटानो यावत् महास्वप्ननो। केमण्णेकल्लाणे फलवित्तिविसेसेभविस्सइ। कोइवो कल्याणकारी फल वृत्तिविशेष हुस्ये। तएणंसे बलेराया। तिवारे ते बलराजा। पभावतीदेवीए अंतिए। प्रभावती राणीना समीपथको। एयमट्ठंसोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए। एहवा अर्थप्रते सांभलीने हृदयधारीने हर्ष संतोष यावत् हृदयथयो। धारा हयणीवसुर

ति ॥ आभिनिबोधिकप्रभवेन ॥ बुद्धिविणाणेणंति ॥ मतिविशेषभूतौत्पत्तिक्यादिबुद्धिरूपपरिच्छेदेन ॥ अत्थोग्गहणंति ॥ फलनिश्चयं ॥ आरोग्गतु

हियए धाराहयणीवसुरभिकुसुमचुंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं उगिण्हइ, उगिण्हइत्ता ईहं पविसइ, पविसइत्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविणाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, करेइत्ता पभावतिं देविं ताहिं इठ्ठाहिं जाव मंगल्लाहिं मिउमहुरसस्सिरीयाहिं संलवमाणे सं २ एवंवयासी—उरालेणं तुम्मे देवी! सुविणे दिठे कल्लाणेणं तुम्मे देवी! सुविणेदिठे जाव सस्सिरीएणं तुम्हे देवी! सुविणे

कूपस्त स्वप्नमवगृह्णाति, अवगृह्येहां प्रविशति, प्रविश्यात्मना स्वाभाविकेन मतिपूर्वकेण बुद्धिविज्ञानेन तस्य स्वप्नस्यार्थावग्रहणं करोति' अर्थावग्रहणं कृत्वा प्रभावती देवी ताभिरिष्टाभिर्याव न्माङ्गल्याभिर्मृदुमधुरसश्रीकाभि (र्वाग्भिरितिशेष.) रसलपन् सलपन्नेवमवादीत्–उदारस्त्व या देवि। स्वप्नो दृष्ट कल्याणस्त्वया देवि। स्वप्नो दृष्टो याव त्सश्रीकस्त्वया देवि। स्वप्नो दृष्ट आरोग्यतुष्टिदीर्घायु कल्याणमङ्गलकारकस्त्व

या देवि। स्वप्नो दृष्ट कल्याणस्त्वया देवि। स्वप्नो दृष्टो याव त्सश्रीकस्त्वया देवि। स्वप्नो दृष्ट आरोग्यतुष्टिदीर्घायु कल्याणमङ्गलकारकस्त्व तेहनो परे पुलकिततनु शरीर जेहनो तेह ऊसराछै निकसूरूचुचुमालतीयतणुय ऊसवियरोमकूवे। मेघधारायें आहण्यो नीप कदम्बवृक्ष सुगन्धफूल तेहनो परे पुलकिततनु शरीर जेहनो तेह ऊसराछै रोमकूप जेहना। तसुमिण उगिण्हइ २ त्ता। ते स्वप्नप्रते ग्रहै ग्रहीने। ईहपविसइ २ त्ता। ईहाप्रतें पैसे पैसीने। अप्पणोसाभाविएण मइपुव्वएण बुद्धिवि णाणेण। आत्माने स्वभावेंकरी आभिनिबोधिकज्ञान प्रभावेंकरी उत्पातिकी आदिबुद्धरूप परिच्छेदेंकरो। तस्ससुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ २ त्ता। ते स्वप्ननो फल निश्चयकरै तेह स्वप्ननो अर्थावग्रह करीने। पभावतिदेवि ताहिं इट्ठाहि जाव मगल्लाहि। प्रभावतीदेवी प्रतें तिणें इष्ट यावत् मंगलीक। मि उमहुरसस्सिरीयाहि सलवमाणे २ एववयासी। मृदुमधुर सश्रीक वाणोयें बोलतोथको बोलतोथको इमकहै। उरालेण तुम्मेदेवीसुविणेदिठे। उदार सो टो तुम्हे देवी स्वप्नदीठो। कल्लाणेण तुम्मेदेवी सुविणेदिठे। कल्याणकारी तुम्हे देवी स्वप्नदीठो। जाव सस्सिरीएण तुम्मेदेवी सुविणेदिठे। यावत् सश्रीक तुम्हेदेवी स्वप्नदीठो। आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणमंगलकारएण। आरोग्य तुष्टि दीर्घ आउ कल्याण मंगलकारक। तुम्मेदेवी सुविणेदिठे। तुम्हेदेवी स्वप्न

ठिदीहाउकल्लाणमंगल्लकारएणाति ॥ इह कल्याणा न्यर्थप्राप्तयो मङ्गलान्यनर्थप्रतिघाता ॥ अत्थलाभोदेवाणुप्पिय ॥ भविष्यतीतिशेष ॥ कुलकेउत्ति॥ केतु चिह्न ध्वज इत्यनर्थान्तर केतुरिव केतु रद्भुतत्वात्, कुलस्य केतु कुलकेतु स्त एव मन्यत्रापि ॥ कुलदीवत्ति ॥ दीपइव दीप प्रकाशकत्वात् कुलपव्वयत्ति ॥ पर्वतोऽनभिभवनीयः स्थिराश्रयतासाधर्म्यात् ॥ कुलवडेंसयति ॥ कुलावतसक कुलस्यावतसक शेखर उत्तमत्वात् ॥ कुलतिलय ॥

दिठे आरोग्गतुठिदीहाउकल्लाणमंगलकारएणं तुम्हे देवी! सुविणे दिठे अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवंखलु तुम्हे देवाणुप्पिए! णवराहं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धठराइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडिंसयं कुलतिलयं

या देवि। स्वप्नो दृष्टो ऽर्थलाभो देवानुप्रिये। भोगलाभो देवानुप्रिये। पुत्रलाभो देवानुप्रिये। राज्यलाभो देवानुप्रिये। (भविष्यतीतिशेष) एव खलु त्व देवानुप्रिये! नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेष्वर्द्धाष्टरात्रिदिवेषु (सार्द्धसप्ताहोरात्रेषु) व्यतिक्रान्तेषु अस्मत्कुलकेतु कुलद्वीप कुलपर्वत कुलावतसक कुलतिलक कुलकीर्तिकर कुलनन्दिकर कुलयशस्कर कुलाधार कुलपादप कुलविवर्द्धनकर सुकुमारपाणिपादमहीनप्रतिपूर्णप

दीठो। अत्थलाभो देवाणुप्पिए भोगलाभोदेवाणुप्पिए। अर्थलाभ हेदेवानुप्रिया हुस्ये भोगलाभ हेदेवानुप्रिया हुस्ये। पुत्तलाभो देवाणुप्पिए। पुत्रलाभ हेदे वानुप्रिया हुस्ये। रज्जलाभो देवाणुप्पिए। राज्यलाभ हेदेवानुप्रिया हुस्ये। एवखलु तुम्हे देवाणुप्पिए। इम निश्चे तुम्हे हेदेवानुप्रिया। णवण्ह मासाण बहु पडिपुण्णाण अद्धठराइंदियाण वीइक्कताण। नवमास घणु प्रतिपूर्ण साढासातदिन ऊपर व्यतिक्रान्त थये। अम्हकुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडिंस य कुलतिलय। अम्हारा कुलनेविषे ध्वजासमान कुलनोवर्षप्रकाशक कुलनेविषे पर्वतसमान कुलनेविषे शेखर कुलनेविषे तिलकसमान। कुलकित्तिकर कुलनंदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमाल पाणिपाये। कुलने कीर्त्तिनो करणहार कुलनेविषे समृद्धिनोकारक कुलनेविषे जसनोकारक कुलने आधारभूत कुलने वृक्षसमान कुल विविधप्रकारे वधवा ते करणशील सुकुमाल हाथ पग जेहना तेहप्रते। अहीणपडिपुण्णपंचि

॥ टीका ॥

इह तिलको विशेषको भूषकत्वात् ॥ कुलकित्तिकरति ॥ इह कीर्त्तिरेकदिग्गामिनी प्रसिद्धि ॥ कुलनंदिकरति ॥ तत्समृद्धिहेतुत्वात् ॥ कुलजसकरति ॥ इह यश सर्वदिग्गामिप्रसिद्धिविशेष ॥ कुलपायवति ॥ पादपश्चा श्रयणीयच्छायत्वात् ॥ कुलविवद्धणकरति ॥ विविधै. प्रका.रै वर्द्धन विवर्द्धन तत्करणशील ॥ अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरति ॥ अहीनानि स्वरूपत पूर्णानि सङ्ख्या पुण्यानिवा, पूतानि पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्तथा तदेव विध शरीर यस्य स तथा त यावत्करणात् ॥ लक्खणवंजणगुणोववेयमित्यादिदृश्य ॥ तत्र लक्षणानि स्वस्तिकादीनि व्यञ्जनानि मषतिलकादीनि तेषा योगुण: -प्रशस्तता तेनोपपेतो युक्तो य स तथा त ॥ ससिसोमाकार कत पियदसण ॥ शशिवत्सौम्याकार कान्तञ्च कमनीय मतएव प्रिय द्रष्टृणा दर्शन रूप यस्य

॥ मूल ॥

कुलकित्तिकरं कुलनंदिकर कुलजसकर कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपायं अहीणपडि पुण्णपंचिंदियसरीर जाव ससिसोमाकार कत पियदसणं सुरूव देवकुमारसमप्पभ दारगं पयाहिसि, सेविय णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे

अनुवाद

प्रजनयिष्यसि, सोपिच दारक उन्मुक्तबालभावो वि दारक पञ्चेन्द्रियशरीर यावच्छशिसौम्याकार कान्त प्रियदर्शन सुरूप देवकुमारसमप्रभ ज्ञकपरिणतमात्रो यौवनकमनुप्राप्त सूरो वीरो विक्रान्तो विस्तीर्णविपुलबलवाहनो राज्यपती राजा भविष्यति, तस्मादुदारस्त्वया देवि । स्व

। भाषा ॥

दियसरीर जाव ससिसोमाकार । स्वरूपथकी पूर्ण अथवा सख्यायें पूर्ण पचेन्द्रिय जिहा एहवो शरीरछे जेहनो तेहप्रतें यावत चन्द्रमानीपरे सौम्यआकार तेहप्रते । कतपियदसण सुरूव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि । कात मनोहर एतलामाटे प्रीतकारी दर्शन सुरूपप्रतें देव कुमारसरीखो प्रभा छे जेहनो बालकप्रतें जनमोस । सेवियणंदारए उमुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमेत्त । ते पणि बालक मूक्योछे बालभाव जेणे विशेषे जाण ते विज्ञान कहिये तेहोज परिणतमात्र कलादिकनेविषे दृसो कहिये एतले ७२ कला जाण । जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते । यौवनपणो पाम्याथका दानसूर स्थामितुभट परभूमि लेनहार । विच्छिन्न विपुलवाहणे । विस्तीर्ण विपुलवलवाहन सैन्यगवादिक जेहने ते । रज्जवईराया भविस्सइ । राज्यनोस्वामी रा

श तथा त ॥ विणयपदिणयमेत्तेत्ति ॥ विज्ञएव विज्ञक सचासौ परिणातमात्रश्च कलादिग्रहितिगम्यते, विज्ञकपरिणतमात्र ॥ सूरेत्ति ॥ दानतो ऽ भ्युपेतनिर्वाहणतोवा, ॥ वीरेत्ति ॥ सङ्ग्रामत. ॥ विक्कतेत्ति ॥ विक्रान्त. परकीयभूमयकलाक्रमणत ॥ विच्छिन्नविउलबलवाहणेत्ति ॥ विस्तीर्णविपुले

रज्जवई राया भविस्सइ, त उरालेणं तुम्हे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्गतुट्ठि जाव मगलकारएणं तुम्हे देवी ! सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु पभावतीं देवीं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं जाव दोच्चंपि तच्चंपि अणुवूहइ, तएणं सा पभावई देवी बलस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणु

प्नो दृष्टो यावदारोग्यतुष्टि (प्रभृति) यावन्मङ्गलकारकस्त्वया देवि ! स्वप्नो दृष्ट इतिकृत्वा प्रभावती देवी ताभि रिष्टाभिर्यावद्वाग्भिर्यावद्द्वितीयवारमपि तृतीयवारमप्यनुवृंहति' तदा सा प्रभावती देवी बलस्य राज्ञोन्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट (प्रभृति) करतल (प्रभृति) या वदेवमवादीत्–एवमेव देवानुप्रिया' । तथ्यमेतद्देवानुप्रिया । अवितथमेतद्देवानुप्रिया । असंदिग्धमेतद्देवानुप्रिया । इच्छितमेतत्प्रतीच्छित

जाइस्यें । त उरालेण तुम्हदेवी सुविणेदिट्ठे । तेहभणी उदार तुम्ह देवी स्वप्नदीठो । जाव आरोग्गतुट्ठि जावमगलकारए । यावत् आरोग्य तुष्टि यावत् मंगलकारक स्व.कल्याणकारी, । तुम्हदेवी सुविणे दिट्ठेत्तिकट्टु । तुम्हे देवी स्वप्नदीठो इम करीने । पभावतींदेवीं ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहि । प्रभावतीदेवी प्रते तवे इष्ट यावत् वचन । जाव दोच्चपि तच्चपि अणुवूहइ । यावत् वेवार त्रिणिवार पसंसइ । तएण सापभावईदेवी बलस्सरण्णो अं तेए । तिवारे तिका प्रभावतीदेवी बलराजाने समीपे । एयमट्ठ सोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठ करयल जाव एववयासी । एह अर्थ सांभलीने हृदयधरीने हर्षे सतोप पामी हाथजोडी यावत् इमकहे । एवमेयदेवाणुप्पिया तहमेयदेवाणुप्पि ा । इमहीज एह देवानुप्रिया तिमहीज एह देवानुप्रिया । अवितहमेय देवाणुप्पिया असंदिद्धमेय देवाणुप्पिया । अवितथ साचू एह देवानुप्रिय सन्देहरहित एह देवानुप्रिया । इच्छियमेय पडिच्छियमेय । इच्छ्यो एह प्रतीच्छित एह । इच्छियपडि

॥ टीका ॥ अतिविस्तीर्णे वलवाहने सैन्यगवादिके यस्य स तथा ॥ रज्जवइत्ति ॥ स्वतन्त्रइत्यर्थ ॥ मामेसेत्ति ॥ या ममाशी स्वप्न इत्यर्थ. ॥ उत्तमेति ॥ खरू

॥ मूल ॥ प्पिया ! इच्छियमेय पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! सेजहेय तुम्हे वदहत्तिकट्टु तं सुमिण सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छइत्ता वलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिरयणभत्तिचित्ताउ भद्दासणाउ अब्भुट्ठेइ २ त्ता अतुरियमचवल जाव गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि णिसीयति २ त्ता एव वयासी—मामेसे उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइत्तिकट्टु देव गुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजाग

॥ अनुवाद ॥ तथा यद्यूय वदथ इतिकृत्वा त स्वप्न सम्यक् प्रतीच्छति, प्रतीच्छ्य बलेन राज्ञा ऽभ्यनुज्ञाता सती एतदीप्सितप्रतीप्सितमेतद्देवानुप्रिया । नानामणिरत्नभक्तिचित्राद्भद्रासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायात्वरिताचपल (मगति) यावद्गत्वा यत्रैव स्वक शयनीय तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य शयनीये निषीदति, निषीद्य एवमवादीत्—ममासौ उत्तम प्रधानो माङ्गल्य स्वप्नो ऽन्यैः पापस्वप्नै प्रतिहनिष्यतीतिकृत्वा देवगुरुजनस

॥ भाषा ॥ तथेति तुम्हे कहो छो इम कराने । तसुमिणसम्म पडिच्छइ २ च्छियमेय देवाणुप्पिया । इच्छित प्रतिच्छित एह देवानुप्रिया । सेजहेय तुम्भेवदहत्तिकट्टु । ते जिम तुम्हे कहाछो इम कराने । तसुमिणसम्म पडिच्छइ २ त्ता बलेणरण्णा । तेह स्वप्नाते रुडा अंगीकारकरे करीने बलराजायें । अब्भणुणाया समाणी । आज्ञादीधा थका । णाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दा सणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता । नानाप्रकारना मणि चन्द्रकान्तादिक रत्नकर्केतनादिक तिणिभाति विचित्र भद्रासनथकी उठै उठीने । अतुरियमचवल जा वगईए । अत्वरित अचपल यावत् राजहंसगतियें । जेणेवसएसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवंवयासी । जिहा पोतानी शय्या तिहा आवे तिहा आवीने इमकहे । मामेसे उत्तमेपहाणे मगले सुमिणे । मना माहरो तेह उत्तम प्रधान मगलीक स्वप्न । अन्नहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिसइत्तिकट्टु । अनेरा पापस्वप्न तिणेकरी हणास्यें इम । देवगुरुजणसबद्धाहिं । देव गुरुजनसम्बन्धी । पसत्थाहिं मंगलाहिं धम्मियाहिं कहाहिं । प्रशस्त भली मगलीक

पत ॥ पसत्थेत्ति ॥ अर्थप्राप्तिरूपप्रधानफलत ॥ मंगल्लेत्ति ॥ अनर्थप्रतिघातरूपफलायेत्ययेति ॥ सुमिणजागरियति ॥ स्वप्नसंरक्षणाय जागरिका निद्रानिषेध स्वप्नजागरिका ता ॥ पडिजागरमाणीति ॥ प्रतिजाग्रती कुर्वती आभीक्ष्ण्ये च द्विवचन ॥ गंधोदयसित्तसुइयसमज्जिउवलित्तति ॥ गन्धोदकेनसिक्तासुचिकापवित्रासमार्जितकचवरापनयनेनोपलिप्ता छगणादिना या सा तथा ता इह च विशेषण गन्धोदकसिक्तसमार्जितोपलिप्तशुचिका

रिय पडिजागरमाणी २ विहरइ । तएणं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवंवयासी— खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेस बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्तसुइयसंमज्जिउवलित्त सुगंधपवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं करेह कारवेह करित्ता कार

स्वप्नाभि प्रशस्तानि मांगल्यानि धार्मिकानि कथानि स्वप्नजागरिका प्रतिजाग्रती प्रतिजाग्रती विहरति । तदा स बलो राजा कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दत, शब्दयित्वा एवं मवादीत्–क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया । अद्य सविशेषा बाह्यामुपस्थानशाला गन्धोदकसिक्तसमार्जितोपलिप्तशुचिका सुगन्धप्रवरपञ्चवर्णपुष्पोपचारकलिता कालागरुप्रवरकुन्दुरुक्क (प्रभृति) यावद्गन्धवर्त्तिभूता कुरुत कारयत, कृत्वा कारयित्वाद सि

कारिणी धर्मनय कथा तिणकरी । सुविणजागरिय पडिजागरमाणी २ विहरइ । स्वप्न रात्रियानिकाले जागरिका निद्रानो निषेध करतीथकी २ वि चरे । तएण से बलेराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । तिवारे ते बलराजा आज्ञाकारी सेवकपुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे । खिप्पा मेव भोदेवाणुप्पिया अज्जसविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल । उतावलाथायो अहोदेवानुप्रिया । आज सविशेषे बाहिरला दीवानखाना प्रते । गंधोदय सित्तसुइय समज्जिओवलित्त । गन्धोदकेकरी सीचो सूचिका पवित्र सम्मार्जन कचराने टालवेकरी छगणादिके करी लीपो । सुगंधपवरपंचवण्णपुप्फो वयारकलिय । सुगन्ध प्रधान पचवर्ण फूल उपचार सहित करो । कालागरुपवरकुंदरुक्क जाव गंधवट्टिभूय करेह कारवेह करित्ता कारविसाय । कृष्णा गर प्रधान कुन्दरु यावत् तेणेकरी गन्धवर्त्तिभूत करो करावो करीने करावीने । सीहासणरयावेह रोहा २ त्ता । सिंघासन रचावो सिंघासन रचावी

॥ टीका ॥ मित्येवदृश्य सिक्ताद्यनंतरभावित्वा च्छुचिकत्वस्येति॥ अट्टणसालत्ति॥ व्यायामशाला॥ जहाउववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरेत्ति॥ यथौप

॥ सूत्र ॥ विन्नाय सीहासणं रयावेह, सीहा २ त्ता तमेतं जाव पच्चप्पिणह। तएणं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पडिसुणे त्ता खिप्पामेव सविसेसं वाहिरियं उवठ्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति। तएणं से वले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ२ त्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छि इत्ता अट्टणसाल अणुप्पविसइ जहाउववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव ससिव्वपियदसणे

अनुवाद ह्यासन रचापयत, रचापयित्वा तमेन यावत्प्रत्यर्प्पयत, तदानी ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत्प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव सविशेषा बाह्यामुपस्थानशाला यावत्प्रत्यर्प्पयन्ति। तदानी सबलो राजा प्रत्यूषकालसमये शयनीयादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय पादपीठात्प्रत्यारोहति, प्रत्यारुह्य यत्रैवाट्टनशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्याट्टनशालामनुप्रविशति यथौपपातिके तथैवाट्टनशाला तथैव मज्जनगृह यावच्छशिवत्प्रियदर्शनो नरपति मंज्जनगृ

॥ भाषा ॥ ने। तमेत जाव पच्चप्पिणह। ए मारुरा आज्ञाकारी मुझने पाछो आपो। तएण ते कोडुंवियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता। तिवारे ते आज्ञाकारी पुरुष यावत सांभलीने एहवो वचन। खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणंति। उतावलाहीज सविशेषे बाहिरली उपस्थानशाला प्रते सर्व कृत्यकारी यावत् आज्ञा पाछी सूंपे अर्हे सर्वकार्य कीधू। तएण से बलिराया। तिवारे ते बलिराजा। पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ। प्रभातना समयनेविषे शय्याथकी। अब्भुठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता। उठे उठीने पादपीठथकी उतरे पादपीठथकी उतरीने। जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। व्यायाम शाला तिहा आवे तिहा आवीने। अट्टणसाल अणुपविसइ जहा उववाइए। व्यायामशालामाहे प्रवेशकरे जिम उववाईउपागमाहे कह्यु। तहेव अट्टणसाल तहेव मज्जणघरे। तिमहीज व्यायामशालाथकी नासरे तिमहीज मज्जणघरनी वक्तव्यता कहवी। जाव ससिव्व पियदसणे नरवई। यावत् चद्रमानीपरे प्रीतिकारी दर्शन जेहनो एहवो राजा। मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता। मज्जनघरथकी नीसरे मज्जनघ

॥ टीका ॥

पातिके अट्टनशालाव्यतिकरो मज्जनगृहव्यतिकर श्चा धीत स्तथै हाप्यध्येतव्य इत्यर्थ सचाय–अणेगवायामजोग्गवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिंसते इत्यादि ॥ तत्र चानेकानि व्यायामार्थ यानि योग्यादीनि तानि तथा तै स्तत्र योग्यागुणनिका वल्गनमुल्ललन व्यामर्द्दन परस्परेणा गमोटनमिति, मज्ज नगृहव्यतिकर स्तु–जेणेवमज्जणघरेतेणेवउवागच्छति ते २ मज्जणघर अणुपविसइ समतजालाभिरामे ॥ समततो जालकाभिरमणीये ॥ विचित्तम णिरयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमडवंसि नाणामणिरयणभत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसन्ने इत्यादिरिति ॥ महग्घवरपट्टणुग्गयति ॥ महा

॥ मूल ॥

नरवई मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ, णिसीयइत्ता अप्पणो उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए अट्ठभद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेइत्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जमहग्घवरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं ईहामियउसभ

अनुवाद

ष्टात्प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखो निषीदति, निषीद्य आत्मन उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अष्टौ भद्रासनानि श्वेतवस्त्राच्छादितानि सिद्धार्थकृतमंगलोपचाराणि रचापयति, रचापयित्वा आत्मनो ऽदूरसामन्ते नानामणिरत्नमण्डित अधिकप्रेक्षणीयमहार्घवरपत्तनोद्गत श्लक्ष्णपट्टभक्तिशतचित्रत्राण ईहामृगवृषभ (प्रभृति) यावद्भक्तिचित्रमभ्यन्त

॥ भाष

रथकी नीसराने। जेणव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा बाहिरली उपस्थानशालाछै तिहा आवै तिहा आवीने। सीहास णवरंसि पुरत्थाभिमुहे णिसीयइ २ त्ता। सिंहासन प्रधाननेविषे पूर्वदिशि सामू मुखकरी बैसे बैसीने। अप्पणो उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए अट्ठभद्दा सणाइं। आपने ईशानकूणिने विषे आठ भद्रासन। सेयवत्थ पच्चुत्थयाइं। श्वेत वस्त्रे ढांक्या। सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ २ त्ता। सरसवें करी कीधा मंगलीकना उपचार एहवा रचावे मंडावे इत्यर्थ रचावीने। अप्पणोअदूरसामंते। आपथकी दूरनही समीपे पणिनही। णाणामणि

॥ टीका ॥

सण्हपट्ट घांच सा वरपत्तनोद्गता च वरवस्त्रोत्पत्तिस्थानसम्भवेति समासो ऽत स्ता वरपट्टना द्वा प्रधानवेष्टनका दुद्गता निर्गता या सा तथा ता ॥ यावत्करणादेव दृश्य-ईहामिगत्तिसयचित्तत्ताण ॥ सण्हपट्टत्ति ॥ सूक्ष्मपट्टसूत्रमयीभक्तिशतचित्रस्तानस्तानकां यस्या सा तथा ता ईहामिगत्यादि ॥ यावत्करणादेव दृश्य-ईहामिगउसभतुरगमकरविहगवालगकिनररुरुसरभकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तति ॥ तत्र ईहामृगा वृका ऋषभा वृषभा स्तुरगा आटव्या महाकाया पशव परसरातिपर्याया चमरा आटव्यागाव कुंजरा गजा वनलता अशोकादिलता पद्मलता पद्मिन्य एतासा यका भक्तयो विच्छित्तय स्ताभिश्चित्रा या सा तथा ता ॥ अभिंतरियंति ॥ अभ्यन्तर ॥ जवणियंति ॥ जवनिका ॥ अछावेइत्ति ॥ आकर्षयति ॥ अच्छरयमउयमसूरगोच्छयति ॥ आस्तरकेण प्रतीतेन मृदुमसूरकेण वा ऽथवा ऽस्तरजसा निर्मलेन मृदुमसूरकेण अवस्तृत माच्छादित य त्त तथा ॥ अंगसुहफासयंति ॥ छागसुखो देहस्य शर्महेतु

॥ मूल ॥

भत्तिचित्त अभिंतरियं जवणिय अंछावेइ, अंछावेइत्ता णाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरयमिउमसूरगोच्छ ग सेयवत्थपच्चुत्थं अंगसुहफासियं सुमउयं पभावईए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेइत्ता कोडुंबियपुरिसे

अनुवाद

र जवनिका माकर्षयति, आरुण्य नानामणिरत्नभक्तिचित्र आस्तरकमृदुमसूरकावस्तृत श्वेतवस्त्रप्रत्यवस्त्रित सुमृदुक मङ्गसुखस्पर्शं विशिष्ट प्रभावत्या देव्या भद्रासन रचापयति (प्रस्थापयति) रचापयित्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रि

॥ भावार्थ ॥

रत्नमंडित । अनेकप्रकारना मणि चन्द्रकान्तादिक रत्नकर्केतनादिक तेणे मंडितछे । अहिय पेच्छणिज्ज महग्घवरपट्टणुग्गय । घणु देखवायोग्य नहर्घ प्रधान पट्ट सूत्रमय वस्त्र । सण्हपट्ट भत्तिसयचित्तताण । भांति शत चित्रित ते चारचक । ईहामियउसभ जाव भत्तिचित्त । ईहा मृग मृग वृषभ यावत् भांति चित्रितछे । अभिंतरिय जवणिय अछावेइ २ त्ता । अभ्यन्तरअस्थान मण्डपने मध्यभागे परादछ खचावे परादछ खचावीने । णाणामणिरयणभत्तिचित्त । नानाप्रकारना मणि रत्न भांति चित्रित । अत्थरयमिउमसूरगोच्छग सेयवत्थ पच्चुत्थ । आस्तरक मृदु मसूर अथवा निर्मल मृदुमसूरके करी आच्छाद्या जे ते सेतवस्त्र ढाक्या । अंगसुहफासिय सुमउय । शरीरने सुखहेतु एहवा स्पर्श जेहना भलो मृदु एहवो । पभावईए देवी

॥ टीका ॥

स्पर्शो यस्य तदङ्गसुखस्पर्शकम् ॥ अट्ठगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए त्ति ॥ अष्टाङ्ग महावयव यन्महानिमित्त परोक्षार्थप्रतिपत्तिकारणव्युत्पादक महाशास्त्रं तस्य यौ सूत्रार्थौ तौ धारयन्ति ये ते तथा तान्, निमित्ताङ्गानिचाष्टाविमानि–अट्ठनिमित्तगाइ दिव्वु १ प्पात २ ऽतलिक्ख ३ भोमच ४ अग ५ सर ६ लक्खण ७ व जणच ८ तिविहपुणेक्केक्क ॥ १ ॥ सिग्घमित्यादीन्येकार्थानि पदानि औत्सुक्योत्कर्षप्रतिपादनपराणि ॥ सिद्धत्थगहरियालिया

॥ मूल ॥

सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एववयासी–खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया! अट्ठगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थ कुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता वलस्स रन्नो अंतियाओ पडिणिक्खमंति २ त्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छंति, णिग्ग

॥ अनुवाद ॥

या । अष्टाङ्गमहानिमित्तसूत्रार्थधारणान् विविधशास्त्रकुशलान् स्वप्नलक्षणपाठकान् शब्दयत ' तत स्ते कौटुम्बिकपुरुषा एव प्रतिश्रुत्य बलस्य राज्ञोन्तिकात्प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य शीघ्र त्वरित चपल चण्ड वेगतो हस्तिनागपुर नगर मध्य मध्येन निगच्छन्ति ' निर्गत्य यत्रैव तेषा

॥ भाषा ॥

ए भद्दासण रयावेइ २ त्ता । प्रभावती देवीने वेसिवाने भद्रासन रचावे भद्रासन रचावीने । कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी । आज्ञाकारी पुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे । खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया । अट्ठग महानिमित्तसुतत्थधारए । उतावलाथाओ अहोदेवानुप्रियाओ आठ अवयव जे मोटा निमित्त परोक्ष अर्थनाकरणहार महाशास्त्र तेहना जे सूत्र अर्थ ते वेजणप्रते धारे ते आठ निमित्ताग एह—अट्ठनिमित्तगाइ दिव्वु १ प्पाय २ तलिक्ख ३ भोमच ४ । अग ५ सर ६ लक्खण ७ वजणच ८ तिविहपुणेक्केक्क ॥ १ ॥ तेहोंप्रते । विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह । अनेक शास्त्र नेविषे डाहा तेहांप्रते स्वप्नलक्षण पाठकाप्रते तेडावो । तएण ते कोडुंवियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता । तिवारे ते सेवकपुरुष यावत् साभलीने । वलस्सर णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । वलनामा राजाना समीपथकी नीकले नीकलीने । सिग्घं तुरियं चवलं चंड वेइय । उतावला त्वरित गते चपल गतें चण्डगतें वेगवन्तगते । हत्थिणापुर णयर मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ २ त्ता । हस्तिनापुरनामा नगरने मध्ये मध्यें थई नीकले नीकलीने । जत्थेव तेसि

॥ टीका ॥

कयमगलमङ्गलाणति ॥ सिद्धार्थका सर्षपा हरितालिका दूर्वा लक्षणानि कृतानि मङ्गलानि मूर्द्धनि यै स्ते तथा ॥ सचालिलिति ॥ संचारयति ॥

॥ मूल ॥

कयमगलमुद्धाणति ॥ सिद्धार्थका सर्षपा हरितालिका दूर्वा लक्षणानि कृतानि मङ्गलानि सूर्द्धनि यै स्ते तथा ॥ सचालिलिति ॥ संचारयति ॥ उवागच्छइत्ता ते सुविणलक्खण

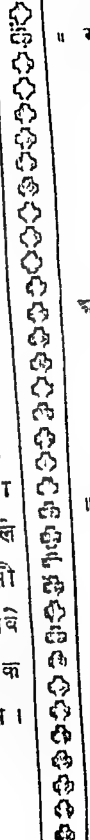
च्छइत्ता जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छइत्ता ते सुविणलक्खण पाढए सद्दावेंति । तएणं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा हट्ठ तुट्ठा राहाया कयवलिकम्मा जावसरीरा सिद्धत्थगहरियालिया कयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गेहेहिंतो णिग्ग च्छति २ त्ता हत्थिणापुरं णयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रन्नो भवणवरवडिंसए तेणेव उवागच्छति,

॥ अनुवाद ॥

स्वप्नलक्षणपाठकान् शब्दयन्ते, तदा ते स्वप्नलक्षणपाठका बलस्य राज्ञ कौटु स्विकपुरुषै शब्दिता सन्तो हृष्टतुष्टाः स्नाता कृत (प्रभृति) यावच्छरीरा सिद्धार्थकहरितालिकाकृतमङ्गलमूर्द्धाना स्वकेभ्य स्वकेभ्य गृहेभ्यो निर्गच्छन्ति, निर्गत्य हस्तिनागपुरान्नगरान्मध्येन मध्येन (कृत्वा) निर्गच्छन्ति, निर्गत्य यत्रैव बलस्य राज्ञो भवनवरावतंसकद्वारं तत्रैवोपाग

॥ भाषा ॥

स्वप्नलक्षणपाठकाना गृहाणि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् ... सुविणलक्खणपाढगाण गिहाइं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा तेहना आठ स्वप्नलक्षण पाठकना घरछे तिहा आवे तिहा आवीने । ते सुविणलक्खण पाढए सद्दावेति । ते आठ स्वप्नलक्षण पाठकाप्रतें तेडे । तएणं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो । तिवारे आठेइं स्वप्नलक्षण पाठके बलराजाना । कोडुंबियपरिसेहि सद्दावियासमाणा हट्ठतुट्ठा । सेवकपुरुषें तेडीयाथका हर्ष संतोष पाम्या । राहाया कयवलिकम्मा जावसरीरा सिद्धत्थगहरियालिया । स्नानकीधा कीधा घरना देवताने वलिकर्म यावत् शरीर एतलालगें कहवो सरसव द्रोब ते लक्षण । कयमगलमुद्धाणा सएहि २ गेहेहिंतो णिग्गच्छति २ त्ता । आपणा २ घरथकी नीकले नीकलीने । हत्थिणापुरणयर मज्झंमज्झेणं । हस्तिनापुरनगरने मध्येमध्यें थई । जेणेवबलस्सरन्नो भवणवरवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहां बलराजानो भवनप्रधान अवतंसक मुख्य आवास तिहां आवे तिहां आवीने । भवणवरवडिंसए पडिदुवारंसि एगओ मिलति २ त्ता । भवन प्रधान अवतंसकना प्रति द्वार मूलगाबारणानें विषे एकठा मिले मिलीने । जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला । जिहा बाहिरली उ



उवागच्छइत्ता भवणवरवडिंसए पडिदुवारंसि एगतो मेलंति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता करयल बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तएणं ते सुविणलक्खण पाढगा बलेणं रन्ना वंदियपूइयसक्कारियसम्माणिया समाणा पत्तेयं २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति। तए णं से बले राया पभावइं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेइत्ता पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे परेण विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवंवयासी—एवंखलु देवाणुप्पिया! पभावई देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव

च्छन्ति, उपागत्य भवनवरावतंसकप्रतिद्वारे एकतो मिलन्ति, एकतो मिलित्वा यत्रैव बाह्योपस्थानशाला यत्रैव बलो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य करतल (प्रभृति) यावद्बलं राजानं जयेन विजयेन वर्द्धापयन्ति। ततस्ते स्वप्नलक्षणपाठका बलेन राज्ञा वन्दितपूजितसत्कारितसम्मानिता सन्तः प्रत्येकं प्रत्येकं पूर्वन्यस्तेषु भद्रासनेषु निषीदन्ति। तदा बलो राजा प्रभावतीं देवीं जवनिकान्तरं स्थापयति, स्थापयित्वा पुष्पफलप्रतिपूर्णहस्तः परेण विनयेन तान् स्वप्नलक्षणपाठकानेवमवादीत्—एवंखलु देवानुप्रियाः! प्रभावती देवी अद्य तस्मिंस्तादृशके वासगृहे

पस्थानशाला। जेणेव बलेराया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता। जिहां बलराजा तिहां आवे तिहां आवीने। करयलबलराय जएणं विजएणं वद्धावेंति। हाथ जोडीने बलराजाप्रतें जय विजय इत्यादि वचनेंकरी बधावे आशीर्वचन बोले। तएणं ते सुविणलक्खण पाढगा। तिवारे ते स्वप्नलक्षण पाठका प्रते। बलेणं रन्ना वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिया समाणा। बलराजाये वांद्या पूज्या सत्कार दीधा सन्मान दीधा थका। पत्तेय २ पुव्व णत्थेसु भद्दासणेसु णिसीयंति। प्रत्येके २ पूर्वे ठाव्या जे भद्रासन तेहनेंविषे बेसे। तएणं से बलेराया पभावइं देविं। तिवारे ते बलराजा प्रभावती देवी प्रतें। जवणियंतरियं ठावेइ २ त्ता। परीयछने अन्तरे स्थापे बेसाणे स्थापीने। पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे परेणविणएणं। फूले फलेकरी प्रतिपूर्ण भरयाछे हाथ जेहना उत्कृष्ट विनयेकरी। ते सुविणलक्खण पाढए एवंवयासी। ते स्वप्नलक्षण पाठका प्रते इमकहे। एवंखलुदेवाणुप्पिया पभावतीदेवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि।

॥ टीका ॥ प्रश्नानन्तर अतएवाऽभिगतार्थां इति लद्धट्ठत्ति ॥ स्वत ॥ गहियट्ठत्ति ॥ परस्मात् ॥ पुच्छियट्ठत्ति ॥ संशये सति परस्परत ॥ विणिच्छियट्ठत्ति ॥

॥ मूल ॥ जाव के मणे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? तएणं से सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो अंतिए एयमठ्ठ सोच्चा णिसम्म हठ्ठतुठ्ठा तं सुविणं उग्गिण्हति, त ईहं पविसति २ त्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति, करेंतित्ता त अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति २ त्ता तस्स सुविणस्स लद्धठ्ठा गहियठ्ठा पुच्छियठ्ठा विणिच्छियठ्ठा अभिगयठ्ठा सीहे सुविणं सुविणे पासित्ताणं पडिबुद्धा । तणं देवाणुप्पिया ! एयस्स उरालस्स

॥ अनुवाद ॥ यावत्सिंह स्वप्न स्वप्ने दृष्ट्वा प्रतिबुद्धा तद्देवानुप्रिया । एतस्योदारस्य यावत्कि मन्ये कल्याण (प्रकृति) फलवृत्तिविशेषो भविष्यति । तदा नी ते स्वप्नलक्षणपाठका बलस्य राज्ञोन्तिके एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा स्त स्वप्नमुद्गृह्णन्ति, उद्गृह्येहा प्रविशन्ति, प्रविश्य तस्य स्वप्नस्या र्थावग्रहण कुर्वन्ति, कृत्वाऽन्योन्येन सह सञ्चालयन्ति (पर्यालोचयन्तीत्यर्थ) तस्य स्वप्नस्य लब्धार्था गृहीतार्था स्पृष्टार्था विनिश्चितार्था अ

॥ भाषा ॥ यावत् सींह स्वप्नप्रतें स्व प्ननिविषे देखाने जागी । तए देवाणुप्पिया एयस्स उरालस्स । तेहनां हेदेवानुप्रियाओ । एहनां उदार मोटानां । जाव के मणे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ । यावत् केहवां कल्याणकारी फलवृत्ति विशेष हुस्ये । तएण से सविणलक्खणपाढगा । तिवारे ते स्वप्नलक्षण पाठक । बलस्सरन्नो अंतिए एयमठ्ठ सोच्चा णिसम्म हठ्ठतुठ्ठा । वलराजाना समीप मुखथकी एहवां वचन सांभली हृदयधारीने हर्ष संतोष पाम्या । त सुविण उग्गिण्हति २ त्ता । ते स्वप्नप्रतें अ र्थें ग्रहीने । त ईह पविसति २ त्ता । ते विचारणाप्रतें पेंस पेसीने । तस्ससुविणस्स अत्थोग्गहण करेंति २ त्ता । ते स्वप्नना अर्थावग्रह करे अर्थावग्रह करीने । ते अन्नमन्नेण सद्धि सचालेंति २ त्ता । ते माहोमाहि साथे सचारे विचारे विचारीने । तस्ससुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगय ट्ठा । तेह स्वप्ननेविषे लाधा अर्थ पोतायकी ग्रह्याअर्थ परथकी पूछ्याअर्थ संशय छता माहोमाहियकी निश्चय विशेष कीधाअर्थ एतलामाटे जाण्याअर्थ ।

सुविणात्ति ॥ सामान्यफलत्वात् ॥ महासुविणात्ति ॥ महाफलत्वात् ॥ वावत्तरिंत्ति ॥ त्रिंशतो द्विचत्वारिंशतश्च मीलनादिति ॥ गब्भवक्कममाणंसि त्ति ॥ गर्भव्युत्क्रामति प्रविशति सतीत्यर्थ ॥ गयउसभेत्यादि ॥ इरच ॥ अभिसेयत्ति ॥ लक्ष्म्यभिषेक ॥ दामंत्ति ॥ पुष्पमाला ॥ विमाणभवणत्ति ॥

बलस्स रन्नो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे उ २ एववयासी—एवंखलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीस सुविणा तीसं महासुविणा वावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा, तत्थणं देवाणुप्पिया! तित्थगरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा तित्थगरंसिवा चक्कवट्टिंसिवा गब्भंवक्कममाणंसि एतेसिं तीसाए महासुविणाणं इमेचउद्दस महासुमिणे पासित्ताण पडिबुज्झंति, तं०—गयउसभसीहअभिसे यदामससीदिणयरझयकुंभं। पउमसरसा

निगतार्थो बलस्य राज्ञ पुरत स्वप्नशास्त्राण्युच्चारयन्त उच्चारयन्त एवमवादिषु –एवखलु देवानुप्रिया । अस्माकं स्वप्नशास्त्रे द्वात्रिंशत्स्वप्नास्त्रिंश न्महास्वप्ना द्वासप्तति सर्वस्वप्ना दृष्टास्तत्र देवानुप्रिया । तीर्थंकरमातरोवा चक्रवर्तिमातरोवा तीर्थंकरे वा चक्रवर्तिनि वा गर्भे व्युत्क्रामति (सति) एतेषा त्रिंशन्महास्वप्नाना (मध्ये) एतान् चतुर्दश महास्वप्नान्दृष्ट्वा प्रतिबुध्यन्ते, तद्यथा–गजवृषभसिंहाभिषेकदामशशिदिनकरध्वजकुम्भप

बलराजानी पासे सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणे २ एववयासी । बलराजाने आगे स्वप्न शास्त्रने उच्चारण करताथका इमकहे । एवखलु देवाणुप्पिया । इम निश्चे हेदेवानुप्रिया । अम्ह सुविणसत्थंसि बायालीस सुविणा । अमारा स्वप्नशास्त्रनेविषे बायालीस स्वप्न सामान्यफल पणायकी । तीसमहासुविणा । तीस मोटास्वप्न महाफल पणायकी बयालीस तीस मेलिया सर्व बहुत्तर स्वप्न दीठाछे । तत्थणं देवाणुप्पिया तित्थगरमायरोवा । तिहा ण वाक्यालंकारे, अहोदेवानुप्रिय । तीर्थंकरनी माता । चक्कवट्टिमायरोवा तित्थगरंसिवा चक्कवट्टिंसिवा । चक्रवर्त्तनी माता तीर्थंकर अथवा चक्रवर्त्ति । गब्भवक्कममाणंसि एतेसिं तीसाए महासुविणाणं । गर्भनेविषे ऊपजताना समयनेविषे एह चौस महास्वप्न माहिला । इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ताण पडिबुज्झति तं० । एह चउदे महास्वप्न देखीने जागे ते कहेछे—गय १ उसभ २ सीह ३ अभिसेय ४ दाम ५ ससी ६ दिणयर ७ । गज वृषभ सीह लक्ष्मी फूलमाला चन्द्र

॥ टीका ॥ एकमेव तत्र विमानाकारं भवनं विमानभवनमथवा देवलोकाद्यो वतरति, तन्माताविमानं पश्यति, यस्तु नरका त्तन्माता भवनमिति, इहच

॥ मूलं ॥ गर विमाणभवणरयणच्चुयसिहिंच ॥१॥ वासुदेवमायरोवा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्ह महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताणं पडिवुज्झंति। बलदेवमायरोवा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिवुज्झंति। मंडलियमायरोवा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासि

अनुवाद व्रसर सागरविमानभवनरत्नोच्चयाग्निशिखाच। वासुदेवमातरोवा वासुदेवे गर्भं व्युत्क्रामति एतेषां चतुर्दशानां महास्वप्नानां मन्यतरान्सप्तमहास्वप्नान्दृष्ट्वा प्रतिबुध्यन्ते। बलदेवमातरोवा बलदेवे गर्भं व्युत्क्रामति एतेषां चतुर्दशानां महास्वप्नानामन्यतरान् चतुरो महास्वप्नान्दृष्ट्वा प्रतिबुध्यन्ते। मण्डलीकमातरोवा मण्डलीके गर्भं व्युत्क्रामति एतेषां चतुर्दशानां महास्वप्नानां मन्यतरमेकं महास्वप्नं दृष्ट्वा प्रतिबुध्यन्ते। एवमेव

॥ भाषा ॥ ध्वजा कुंभ पदमसर सागर विमान तथा भवन रतनराशि अग्निशिखा एव १४। वासुदेव मायरोवा वासुदेवंसि गब्भ वक्कममाणंसि। वासुदेवनीमाता वासुदेव गर्भनेविषे ऊपजवानी वेलाय। एएसिं चउद्दसण्ह महासुविणाण। एहने विषे चउदे महास्वप्ननेविषे। अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ताण पडिवुज्झंति। अनेरा सात महास्वप्न देखीने जागे। बलदेवमायरोवा बलदेवंसि गब्भवक्कममाणंसि। बलदेवनी माता बलदेव गर्भनेविषे ऊपजवाने समये। एएसिं चउदसण्ह महासुविणाण। एह चउदे स्वप्न महास्वप्ननेविषे। अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताण पडिवुज्झंति। अनेरा चार महास्वप्न देखीने जागे। मंडलियमायरोवा। मंडलीकनी माता। मंडलियंसि गब्भवक्कममाणंसि। मंडलीक गर्भनेविषे ऊपजवाने समये। एएसिंचउदसण्ह महासुविणाण अन्नयरं। ए एहनेविषे चउदे महास्वप्न माहे अनेरा कोइएक। एगमहासुविण पासित्ताण पडिवुज्झंति। एक महास्वप्नप्रते देखीने जागे। इमचण देवाणुप्पिया। एह स्वप्न मा वाचनाऊ

मा दिनकर सूर्य। झय ८ कुंभ ९ पउमसर १० सागर ११ विमाण १२ भवण १२ रयणच्चुय १३ सिहिंच १४।

॥ टीका ॥

गाथाया वेपुचित्यदेघनुस्वारसाभक्ष्या गाथानुलोम्यादृयमिति ॥ जीवियारिहति ॥ जीविकोचित ॥ उत्तमगमाणलुहेहिति ॥ वतो २ मुज्यमानानि यानि सुखानि सुखहेतव शुजानि वा तानि तथा तै ॥ हियति ॥ तमेव गर्भमपेत्य ॥ मियति ॥ परिमित नाधिकमूनवा; ॥ पत्यति ॥ सामा

॥ मूल ॥

त्ताण पडिवुज्झति, इमंचण देवाणुप्पिया ! पत्नावईए देवीए एगे महासुविणे दिठे तं उरालाणं देवाणुप्पिया ! पत्नावईए देवीए सुविणे दिठे जाव आरोग्गतुठिदीहाउकल्लाणमगलकारएणं देवाणुप्पिया ! पत्नावईए देवीए सुविणे दिठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगपुत्तरज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवखलु देवाणुप्पिया ! पत्नावई देवी णवराह मासाण बहुपडिपुन्नाण जाव वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव दारगं पया

॥ अनुवाद ॥

देवानुप्रिया । प्रभावत्या देव्या एकोमहास्वप्नोदृष्ट उदारो देवानुप्रिया । प्रभावत्या देव्या स्वप्नो दृष्टो, यावदारोग्यतुष्टिदीर्घायु कल्याण मङ्गलकारको देवानुप्रिया । प्रभावत्या देव्या स्वप्नो दृष्ट, अर्थलाभोदेवानुप्रिया । भोगपुत्रराज्यलाभो देवानुप्रिया । एवखलु देवानुप्रिया । प्रभावती देवी नवसु मासेपु बहुप्रतिपूर्णेपु यावद्यतिक्रान्तेपु युष्मत्कुलकेतु यावद्दारक प्रजनयिष्यति । सोपि च दारक उन्मुक्तबालभावो या

॥ भाषा ॥

रे, अहोदेवानुप्रिया । पभावतीदेवी एक महासुपिन दिठ । प्रभावती देवी एक महास्वप्न दीठो । तमोरालाण देवाणुप्पिया पभावतीए देवीए सुविणे दिठे । तिमाट उदार मोटो छेदेवानुप्रिया । प्रभावती राणीये स्वप्न दीठो । जाव आरोग्गतुठिदीहाउकल्लाणमगलकारएण । यावत् आरोग्य तुष्टि दीर्घायु कल्याणमगल कारक । देवाणुप्पिया पभावतीए देवीए सुविणेदिठे । देवानुप्रिया । प्रभावती राणीये स्वप्न दीठो । अत्थलाभोदेवाणुप्पिया । अर्थनाभ हर्से अहो देवानुप्रिया तुम्हने । भोगपुत्तरज्जलाभो देवाणुप्पिया । तथा भोगलाभ पुत्रलाभ राज्यलाभ हुस्ये तुम्हने अहोदेवानुप्रिया । एवखलुदेवाणुप्पिया पभावतीदेवी । इम निश्चे अहोदेवानुप्रिया प्रभावती देवी । णवण्हमासाण बहुपडिपुन्नाण । नवमास घणु प्रतिपूर्ण थया । जाव वीइक्कंताण तुम्हकुलकेउ । यावत् व्यतिक्रान्त थया तुम्हारे कुले पताका समान । दारग पयाहिसि । यावत् पुत्र जन्मस्ये । सेवियणदारए उम्मुक्कबालभावे जाव

अणगारेवा भाविअप्पा । तं हिसि । सेवियणं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई राया भविस्सइ । अणगारेवा भावियप्पा । तं उरालेण देवाणुप्पिया ! पभावईए देवीए सुविणेदिठे जाव आरोग्गतुठिदीहाउकल्लाण जाव दिठे । तएणं से बलेराया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमठ सोच्चा णिसम्म हठकरयल जाव कहु ते सुविणलक्खण पाढगे एववयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव सेजहेय तुब्भे वदहत्तिकहु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ २ त्ता

यावदारोग्यतुष्टिदीर्घा वद्राज्यपती राजा भविष्यति । अनगारोवा भावितात्मा । तस्मा दुदारो देवानुप्रिया । प्रभावत्या देव्या स्वप्नो दृष्टो' यावदारोग्यतुष्टिदीर्घायु कल्याण (प्रभृति) यावद्दृष्ट' स्तदा स बलो राजा स्वप्नलक्षणपाठकाना मन्तिका देतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टकरतल (प्रभृति) यावत्कृत्वा तान्स्वप्नलक्षणपाठकानेव मवादीत्—एवमेतद्देवानुप्रिया । यावत्स यथैतत् यूय वदथ इतिकृत्वा त स्वप्न सम्यक्प्रतीच्छति, प्रतीच्छ स्वप्नलक्षणपाठकान् विपुलेनाशनपानखादिमस्वादिमपुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कारयति, सन्मानयति, सत्कृत्य सन्मान्य विपुल जीविकार्ह

यावत् राज्यपती राजा हुस्ये । अणगारेवा भाविअप्पा । अथवा सा रज्जवई रायाभविस्सइ । ते पणि ण वाक्यालकारे, बालक बालकभाव मूकाणा थका यावत् राज्यपती राजा हुस्ये । अथवा साधु भावितात्मा हुस्ये । त उरालेण देवाणुप्पिया पभावतीएदेवीए सुविणेदिठे । तेमाटे उदार ण वाक्यालकारे, देवानुप्रिया प्रभावती राणी स्वप्न दीठो । जाव आरोगतुठिदीहाउ कल्लाण जावदिठे । यावत् आरोग्य तुष्टि दीर्घआऊखो कल्याण यावत् दीठो । तएण से बलेराया सुविणलक्खण पाढगाण । तिवारे ते बलराजा स्वप्नलक्षण पाठकना समीपथकी । एयमठ सोच्चा णिसम्म हठकरयल जाव कहु । एह अर्थ साम्भली हीय धरी हर्षवन्त हाथजोडी यावत् करीने । ते सुविणलक्खणपाढगे एववयासी । ते स्वप्नलक्षण पाठक इमकहे । एवमेय देवाणुप्पिया । इमहीज छेदेवानुप्रिया । जाव सेजहेय तुब्भे वयहत्ति कट्टु । यावत् ते जिम एह तुम्हे कहीछो इम करीने । त सुविण सम्म पडिच्छइ २ त्ता । ते स्वप्नते भलीरीते पीछे ग्रहे ग्रहीने । सुविणलक्खणपाठ

सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असणपाणखाइमसाइमपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सम्मा णेइत्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयइत्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेइत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव पभावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव संलवमाणे २ एववयासी—एवखलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा तीसमहासुविणा बाव त्तरि सव्वसुविणा। तत्थणं देवाणुप्पिए! तित्थयरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा तचेव जाव अन्नयरं एग

प्रीतिदान ददाति' दत्वा प्रतिविसर्जयति, विसर्जयित्वा सिंहासनादभ्युत्तिष्ठति' अभ्युत्थाय यत्रैव प्रभावती देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य प्रभावती देवीं ताभिरिष्टाभिर्यावत्संलपन्संलपन्नेवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रिये। स्वप्नशास्त्रे द्विचत्वारिंशत्स्वप्नास्त्रिंशन्महास्वप्ना द्विसप्तति: सर्वस्वप्नास्तत्र देवानुप्रिये। तीर्थंकरमातरोवा चक्रवर्त्तिमातरोवा तथैव यावदन्यतरमेकं महास्वप्नं दृष्ट्वा प्रतिबुध्यन्ते' तत् त्वया देवानुप्रिये।

ए विउलेण। स्वप्नलक्षण पाठकप्रते विपुलेकरी। असण पाण खाइम साइम। अशन पान खादिम स्वादिम। पुप्फ वत्थ गंध मल्लालंकारेण सक्कारेइ सम्मा णेइ २ त्ता। पुष्प वस्त्र गन्ध माल्य अलङ्कारेकरी सत्कारे सन्माने सत्कारीने सन्मानीने। विपुलजीवियारिह पीतिदाणदलयति २ त्ता। जिवितां सुधी निर्वाहयोग्य आजन्मलगे पहुचे प्रीतिकारी दान देवे देइने। पडिविसज्जइ २ त्ता। प्रति विसर्जें विसर्जीने। सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता। सीहासणथी उठे सीहासनथकी उठीने। जेणेवपभावतीदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां प्रभावतीदेवी तिहां आवे तिहां आवीने। पभावतिदेवि ताहिं इट्ठाहिं जाव संलवमाणे २ एववयासी। प्रभावतीदेवीप्रतें तेह इष्टवाणी यावत् बोलतोथको २ इमकहे। एव खलु देवाणुप्पिया। इम निश्चे देवानुप्रिया। सुवि णसत्थंसि बायालीस सुविणा। स्वप्न शास्त्रनेविषे बायालीसस्वप्न सामान्य। तीसमहासुविणा।बावत्तरिसव्वसुविणा। त्रीस महास्वप्न बहुत्तरि सर्व स्वप्नछे। तत्थणदेवाणुप्पिए। तिहां देवानुप्रिय। तित्थयरमायरोवा चक्कवट्टिमायरोवा। तीर्थंकरनी माता चक्रवर्त्तीनी माता। तचेव जाव अण्णयर एगमहासुविण

महासुविणदिठे जाव रज्जवई राया महासुविणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति । इमेणं तुम्हे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिठे जाव रज्जवई राया अणगारेवा भाविअप्पा । तं उरालेणं तुम्हे देवी ! सुविणे दिठेत्ति कट्टु पभावति देवीं ताहिं इठाहिं दोच्चपि तच्चपि अणुबूहइ । तएणं सा पभावई देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमठ सोच्चा णिसम्म हठतुठ करयल जाव एवं वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! जाव तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छइत्ता बलेणं रण्णा अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिरयणभत्ति जाव अब्भुठेइ । अतुरियमचवल जाव गईए जेणेव

एको महास्वप्नो दृष्टो यावद्राज्यपती राजा भविष्यति, अनगारोवा भावितात्मा' तस्मादुदारस्त्वया देवि । स्वप्नो दृष्ट इतिकृत्वा प्रभावती देवी ताभिरिष्टाभि द्विर्वा त्रिर्वा ऽनुवृहति । तदा सा प्रभावती देवी बलस्य राज्ञोन्तिके एतदर्थ श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टकरतल (प्रभृति) यावत् स्वप्न सम्यक् प्रतीच्छति, प्रतीच्छ बलेन राज्ञा अभ्यनुज्ञाता सती नानामणिरत्नभक्ति (प्रभृति) वदेवमवादीत्—एवमेतद्देवानुप्रिया ।

पासित्ताण पडिबुज्झति । तिमहीज यावत् अन्यतर एक महास्वप्न प्रते देखीने जागे । इसेण तुम्हे देवाणुप्पिए एगे महासुविणे दिठे । एह तुम्हे हेदेवानुप्रिया ! एक महास्वप्न दीठो । जाव रज्जवई राया भविस्सइ अणगारेवा भाविअप्पा । यावत् राज्यपती राजाहुस्ये अथवा अणगार भावितात्मा हुस्ये । तउरालेण तुम्हेदेवीसु.विणेदिठेत्तिकट्टु । ते माटे उदार मोटो तुम्हेदेवी स्वप्नदीठो । पभावईदेवी ताहिं इठाहि दोच्चपि तच्चपि अणुबूहइ । प्रभावतीदेवी प्रते तेह इष्टवाणी बीजीवार पणि त्रीजीवार पणि कहे । तएण सा पभावतीदेवी बलस्सरण्णो अतिय । तिवारे ते प्रभावतीदेवी बलराजा प्रते समीपे । ए यमठसोच्चाणिसम्म हठतुठकरयल जाव एवंवयासी । एहवो अर्थ सांभली हृदयधारी हर्ष संतोष पाम्यो हाथजोडी यावत् इम कहे । एवमेय देवाणुप्पिया जाव त सुविण । इमहीज हेदेवानुप्रिया यावत् ते स्वप्नप्रते । सम्मपडीच्छइ २ त्ता बलेणरण्णा । सम्यक् प्रतीछे ते प्रधाने बल राजाये । अब्भणुण्णाए समाणी । आज्ञा दीधा थका । णाणामणिरयणभत्ति जाव अब्भुठेइ । अनेक मणिरत्न भाति सिंहासनथको यावत् उठे । अतुरियमचवल जाव गतीए ।

॥ टीका ॥

न्येन पथ्य, किमुक्तं भवति-गब्भपोसणंति ॥ गर्भपोषकमिति ॥ देसेयत्ति ॥ उचितप्रदेशे ॥ कालेयत्ति ॥ तथाविधावसरे ॥ विवित्तमउएहिंति ॥

॥ मूल ॥

सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता सयं भवणं अणुप्पविट्ठा, तएणं सा पभावई देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं णाइसीतेहिं णाइउण्हेहिं णाइतित्तेहिं णाइकडुएहिं णाइकसाएहिं णाइअंबिलेहिं णाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोयणच्छायणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्क

अनुवाद

यावदस्युत्तिष्ठति, अत्वरिताचपल (प्रभृति) यावद्गत्या यत्रैव स्वकं भवनं तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य स्वकं भवनं अनुप्रविष्टा। तदानीं सा प्रभावती देवी स्नाता कृतबलिकर्मा यावत्सर्वालङ्कारविभूषिता तं गर्भ नातिशीतैर्नात्युष्णैर्नातितिक्तै र्नातिकटुकै र्नातिकषायै र्नात्यम्लैर्ना तिमधुरैर्ऋतुभुज्यमानसुखैर्भोजनाच्छादनगन्धमाल्यैर्यत् तस्य गर्भस्य हितं पथ्यं मितं गर्भपोषणं तद्देशेच कालेचाहारमाहारयती विविक्तमृदुकै

॥ भाषा ॥

कायाये अत्वरित अचपल यावत् राजहंस समान गते। जेणेवसएभवणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां पोतानो भवन घर तिहां आवे तिहां आवा ने। सयंभवणंअणुप्पविट्ठा। पोताना भवनमांहे पेठी। तएणं सापभावतीदेवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया। तिवारे ते प्रभावती देवी स्नानकीधो कीधो बलिकर्म यावत् सर्व अलङ्कार विभूषित थई। त गब्भणातिसीतेहिं णातिउण्हेहिं णाति तित्तेहिं। तेगर्भप्रतें अतिशीत अशना दि सेवेनहो अति उष्ण नही तिणेकरी अति तिक्तनही। णाइकडुएहिं णाइकसाएहिं णाइ अंबिलेहिं णाइमहुरेहिं। कटुक नही तिणेकरी अति कषा ले नही तिणेकरी अति अम्बिलो नही अतिमधुर नही। उउभयमाण सुहेहिं। जिणे ऋतुये जे योग्य सुख तेणेकरी। भोअणच्छायणगंधमल्लेहिं। भोज न आच्छादन गन्ध माला तिणेकरी। जं तस्स गब्भस्सहित मित पत्थ गब्भ पोसणं तं देसेय कालेय आहार माहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणासणेहिं पतिरिक्कसुहाए। जे तेह गर्भने तेहीज गर्भप्रतें अपेक्षाने हित मित कहिये परिमित अधिक पणि नही ,पत्थांत, सामान्येकरी पथ्य स्यू कह्यु गर्भ पा

॥ टीका ॥

प्रतिरिक्तत्वेन तथाविपज विविक्तानि दोषवियुक्तानि लोकान्तरासङ्कीर्णानिवा; मृदुकानिच कोमलानि यानि तानि तथा तै ॥ पइरिक्कसुहाएत्ति ॥ प्रतिरिक्तत्वेन तथाविपज नापेक्षया विजनत्वेन सुखा शुभावा, या सा तथा तया ॥ पसत्थदोहलत्ति ॥ अनिन्द्यमनोरथा ॥ संपुन्नदोहला ॥ अभिलषितार्थपूरणात् ॥ सम्माणि यदोहला ॥ प्राप्तस्याभिलषितार्थस्य भोगात् ॥ अवमाणियदोहलत्ति ॥ क्षणमपि लेशेनापिच नापूर्णमनोरथेत्यर्थं, अतएव-वोच्छिन्नदोहलत्ति ॥ त्रुटितवाञ्छेत्यर्थः, दोहदव्यवच्छेदस्यैव प्रकर्षाभिधानायाह-विणीयदोहलत्ति ॥ विनीतदोहदा ॥ ववगयत्यादि ॥ इहच मोहो मूढता भयजीति गर्भा साम परित्रासो ऽकस्माद्भय इहस्थाने वाचनान्तरे " सुहसुहेणं आसयइ सयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइत्ति दृश्यते ,, तत्रच सुहसुहेणत्ति ॥ गर्भा नाबाधया ॥ आसयइत्ति ॥ आश्रयत्याश्रयणीय वस्तु ॥ सयइत्ति ॥ शेते ॥ चिट्ठइत्ति ॥ ऊर्द्धस्थानेन तिष्ठति उपविशति ॥ तुयट्टइत्ति ॥ शय्यायां

॥ मूल ॥

सुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अवमाणियदोहला विच्छि न्नदोहला विणीयदोहला ववगयरोगसोगमोहभयपरित्तासा तं गब्भं सुहसुहेणं परिवहइ । तएणं सा पभा

अनुवाद

शयनासने प्रतिरिक्त (सुखया) शुभया मनोनुकूलया विहारभूम्या (तिष्ठतीतिसम्बन्ध) प्रशस्तदोहदा सम्पूर्णदोहदा सम्मानितदोहदा ऽव मानितदोहदा व्युच्छिन्नदोहदा विनीतदोहदा व्यपगतरोगशोकमोहभयपरित्रासा त गर्भं सुख सुखेन परिवहति, तदा सा प्रभावती देवी न

॥ भाषा ॥

दक्षमते तेह उचितभूमि प्रदेशनेविषे यथाविध अवसरे आहार करतीयको दोषरहित मृदु सुकुमाल एहवा शयनासन तिणेकरी सकललोकनो अपेक्षा ये एकान्तता सुखने ते दुःख काई न कहे । मणाणुकूलाए विहारभूमीए । मनने अनुकूल विहारभूमिनेविषे । पसत्थदोहला संपुण्णदोहला सम्माणियदोह ला अवमाणियदोहला विच्छिन्नदोहला विणीयदोहला । भला दोहला अभिलषितार्थ पूरणथको पाम्या वांछितअर्थना भोगथका ते ऊपना मनोरथ क्षणमात्र पणि अणपहुंचा न रह्या तूटी वाञ्छा इत्यर्थ दोहले रहित थईने । ववगय रोग सोग मोह भय परित्तासा । व्यपगत रहित रोगशरीर पीडा शोकमानसी पीडा मोह मूर्छापणो सघलोतमाष पणि अकस्मात भय ए सर्वगया । त गब्भं सुह सुहेणं परिवहइ । ते गर्भ रूडो सुख अनाबाधाये करे ।

वई देवी णवरहं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण पडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाता तएणं तीसे पभावईए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतीं देविं पसूयं जाणित्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता करयल बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवंवयासी–एवंखलु देवाणु

बहुमासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्धाष्टमरात्रिदिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सुकुमारपाणिपादं अहीनप्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरं लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतं यावच्छ शिसौम्याकारं कान्तं प्रियदर्शनं सुरूपं दारकं प्रासूत (सुषुवे) तदानीं तस्याः प्रभावत्या देव्या अङ्गप्रतिचारिकाः प्रभावतीं देवीं प्रसूतां ज्ञा त्वा यत्रैव बलो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागम्य करतल (प्रभृति) बलं राजानं जयेन विजयेन वर्द्धापयन्ति' वर्द्धापयित्वा एवमवादिषु –

तएणं सा पभावतीदेवी । तिवारे ते प्रभावती देवी । णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं । नवमास घणूं प्रतिपूर्ण । अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीइक्कंताणं । सा ढामातदिन ऊपर पतले सवा नवमास व्यतिक्रान्त थया । सुकुमालपाणि पाय । सुकोमल हाथ पग जेहना । अहीण पडिपुण्ण पंचिंदियसरीर । हीन नहीं प्रतिपूर्ण पंचेंद्रियशरीर जेहना । लक्खणवंजणगुणोववेयं जाव ससिसोमाकार । लक्षणेंकरी व्यंजनेंकरी गुणेंकरी उपपेत यावत् चन्द्रमानी परें सौ म्याकार । कंतपियदंसणं सुरूवं दारगं पयाता । कान्त प्रिय दर्शन सुरूप बालकप्रतें प्रसव्यो । तएणं तीसेय पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ । ति वारे तेह प्रभावतीनी अंग प्रतिचारिका अंग सेवानी करणहारी दासी । पभावतिं देवीं पसूयं जाणित्ता । प्रभावतीदेवी प्रतें प्रसूतावई जाणी । जेणेव बलराया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहां बलराजा तिहां आवें तिहां आवीने । करयलजावराय जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवंवयासी । हाथ जोडी बलराजा प्रतें जयें विजयेंकरी वधावे वधावीने इमकहे । एवंखलुदेवाणुप्पियापभावतीदेवी । इम निश्चे अहो देवानुप्रिया । प्रभावतीदेवी । णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाता । नव महीने घणूं प्रतिपूर्ण यावत् दारकप्रतें प्रसूता जनम्यो । तं एयणं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियाणि

॥ टीका ॥ वर्त्तत इति ॥ पियट्ठयाएत्ति ॥ प्रियार्थतायै प्रीत्यर्थमित्यर्थः ॥ पियनिवेएमोत्ति ॥ प्रियमिष्टं वस्तु पुत्रजन्मलक्षणं निवेदयामः ॥ पियभेभवउत्ति ॥ एतच्च प्रियनिवेदनं प्रियं भवतां भवतु, तदन्यद्वा; प्रियं भवत्विति ॥ मउडवज्जंति ॥ मुकुटस्य राजचिह्नत्वा त्स्त्रीणामनुचितत्वा द्दासीति तद्वर्जनं ॥ जहामालियंति ॥ यथा मालितं यथाधारितं यथापरिहितमित्यर्थः ॥ उमोयति ॥ अवमुच्यते परिधीयते य सोऽवमोकः आभरण

॥ मूल ॥ प्पिया ! पभावई देवी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव दारगं पयाता तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमो पियं भे भवउ तएणं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव कूवे तेसिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहा मालियउमोयं

अनुवाद — एवं खलु देवानुप्रिया ! प्रभावती देवी नवसुमासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु यावद्दारकं प्रसूता, तदेतद्देवानुप्रियाणां प्रियार्थतायै प्रियं निवेदयामः, प्रियं भवतां भवतु, तदा स बलो राजा अङ्गप्रतिचारिकाणामन्तिकादेतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट (प्रभृति) यावद्धाराहतनीपवत्कूप स्तासामङ्गप्रतिचारिकाणां मुकुटवर्जं यथामालितावमोकं ददाति, दत्वा श्वेतं रजतमयं विमलसलिलपूर्णभृङ्गारं प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य

॥ भाषा ॥ देहमो । तेहभणी एह वाक्यालंकारे, हेदेवानुप्रिया ! तुम्हने प्रीतिने अर्थे प्रिय इष्टवस्तु पुत्र जन्मलक्षणप्रकट करुछू एतले वधामणी पुत्रजन्मनी द्यूछू । पियभे भवउ तुम्हने ते वलेराया । कल्याणथाश्रो तुम्हने प्रियथाश्रो अनेरो पणि मंगलीकथाश्रो तिवारे ते बलराजा । अंगपडियारियाण अंतिए । अंग प्रतिचारिका दासी तेहना मुखथकी । एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयणीव जाव कूवे । एहवो अर्थ सांभली होंयेधारी हर्ष संतोष पाम्यो या वत् धाराये आहण्यो नीप कदम्ब यावत् जेहना रोमकूप । ते सिं अंगपडियारियाण मउडवज्जं । तेह अंग प्रतिचारिका दासीने मस्तकनो मउड वर्जी ने । जहा मालियउमोयं दलयइ २ त्ता । जिम आभूषण पहरया हता ते आभरण ते प्रते आपै दासीने आपीने । सेत्त रययामय विमलसलिल पुण्णभिंगा रं पडिगिण्हइ २ त्ता । उजलो रुपामय निर्मल जलसो भर्यो भृङ्गार तेहप्रतें ग्रहे भृङ्गारप्रतें ग्रहीने अंगप्रतिचारकानो । मत्थए धोवइ २ त्ता । मस्तक धोवे

त ॥ मत्यएणं धोवइत्ति ॥ अङ्गप्रतिचारिकाणा मस्तकानि क्षालयति दासत्वापनयनार्थं, स्वामिनाधौतमस्तकस्यहि दासत्वमपगच्छतीति लोक व्यवहार ॥ चारगसोहणंति ॥ बंदिविमोचनमित्यर्थ ॥ माणुम्माणवद्धणकरेहत्ति ॥ इह मान रस धान्यविषय उन्मान तुलारूप ॥ उस्सुक्कंति ॥

दलयइ, दलयइत्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णंभिंगार पडिगिण्हइ, पडिगिण्हइत्ता मत्थए धोवइ, धोवइत्ता विउलंजीवियारिहं पीइदाण दलयइ, दलयइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सम्माणेइत्ता पडिविसज्जेइ। तएण से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवंवयासी—खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे णयरे चारगसोहणं करेह चा २ माणुम्माणप्पमाणवद्धणं करेह मा २ त्ता हत्थिणाउरं णयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसम्मज्जिओवलित्तं जाव करेहिय कारवेहिय करेत्ताय कारवेत्ताय जूवसह

मस्तकानि क्षालयति, क्षाल्य विपुलजीविकार्हं प्रीतिदान ददाति, दत्वा सत्कारयति सन्मानयति सन्मान्य प्रतिविसर्जयति, तदा स बलो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भोदेवानुप्रिया। हस्तिनागपुरे नगरे चारकशोधनं कुरुत, कारयत मानोन्मानप्रमाणवर्द्धनं कुरुत, कारयत हस्तिनागपुरं नगरं सभ्यन्तरबाह्यं आसिक्तसम्मार्जितोपलिप्तं यावत्कुरुत कारयत कृत्वा

ते स्वा भणी तेहनो दासपणो टालवाभणी मस्तकधोइने। विउलजीवियारिह पातिदाण दलयइ २ त्ता। विस्तीर्ण जीविकायोग्य प्रीतिदान द देने। सक्कारेइ सम्माणेइ २ त्ता पडिविसज्जेइ। सत्कारदे सन्मान दे देइने प्रति विसर्जे सीख दे। तएण से बलेराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एववयासी। तिवारे ते बल राजा कौटुंबिक पुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे। खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया। उतावला थाओ अहो देवानुप्रिया। हत्थिणापुरेणयरे चारगसोहण करेह चा २। बन्दीमोचन करो बन्दीवान छोडो। माणुम्माणप्पमाण वद्धण करेहमा २ त्ता। मान माप उन्मान तोल एतले मान रस धान्यविषय उन्मान तुलारूप प्रमाण गजप्रमुखनो वधारवो करो। हत्थिणापुर णयर सब्भिंतर बाहिरिय। हस्तिनापुर नगरमाहि तथा बाहिर। आसिय सम्मज्जिओ

॥ टीका ॥

उक्करांति ॥ उन्मुक्तकर करस्तु गवादीन् प्रति प्र उच्छुल्कां मुक्तशुल्कां स्थितिपतितां कारयतीति सम्बन्धः, शुल्कतु विक्रेयभाण्ड प्रतिराजदेय द्रव्यं ॥ अमेज्जंति ॥ क्रयविक्रय तिवर्य राजदेय द्रव्य ॥ उक्किठंति ॥ उत्कृष्टा प्रधाना कर्षणनिषेधाद्वा ॥ अदेज्जंति ॥ विक्रयनिषेधेनाविद्यमानदातव्य ॥

॥ मूल ॥

स्सवा चक्कसहस्सवा पूयामहामहिमसक्कारंवा ऊसवेह, ऊसवेइत्ता ममेयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। तएणं से कोडुंवियपुरिसा बलेण रन्ना एवं वुत्ता समाणा जाव पच्चप्पिणंति। तएणं से बले राया जेणेव उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता तंचेव जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता उ स्सुक्कं उक्करं उक्किठं अदिज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोदंडिम अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं

॥ अनुवाद ॥

कारयित्वाच यूपसहस्रं वा मुशलसहस्रं वा पूजामहामहिमसत्कारं वोर्द्ध्वं कुरुत कृत्वा ममैतदाज्ञापितं प्रत्यर्प्पयत। तदा ते कौटुम्बिकपुरुषा बलेन राज्ञा एवमुक्ता सन्तो यावत्प्रत्यर्प्पयन्ति। तदा स बलो राजा यत्रैवोपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति उपागत्य तचैव यावन्मज्जनगृ हात्प्रतिनिष्क्रमते, प्रतिनिष्क्रम्योन्मुक्तामुत्करामुत्कृष्टामदेयाममेयामभटप्रवेशामदण्डकोदण्डिमामधरिमा गणिकावरनाटकीयकलितामनेक

॥ भाषा ॥

वलित्त जाव करेहिय कारवेहिय करेत्ताय कारवेत्ताय। गन्धवासित पाणासीं सींचो कचरो टालो गोवरप्रमुखे लीपो यावत् एतला वाना करो करावो। भूसरा सहस्र चक्रसहस्र पूजाविशेष महामहिम सत्कार करीने करावीने। जूवसहस्सवा चक्कसहस्सवा पूयामहामहिमसक्कारवा उसवेह ज २ त्ता। माहरो एह आज्ञाकरी मुझने पाछो सूपो। तएण से कोडुंवियपुरिसा। तिवारे ते कौटुम्बिकपुरुष से उत्सवकरो करीने। ममेयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। बलराजायें इम कह्याथका यावत् सर्व बानाकरी आज्ञा पाछो सूपे। तएण से बलेराया। वकपुरुष। बलेणरन्ना एववुत्तासमाणा जाव पच्चप्पिणंति। तिवारे ते बलराजा। जेणेव उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहा उपस्थानशाला तिहा आवे तिहा आवीने। तंचेव जाव मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता। तिमहीज यावत् मज्जनघरथकी नीसरे नीसरीने। उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदिज्ज अमेज्ज। दान मूक्यो गवादिक नो करन लेवो कर

प्रतिषेधादेवा विद्यमानमातव्य अविद्यमानमाप्यावा ॥ अभडप्पवेसति ॥ अविद्यमानो भटाना राजाज्ञादायिनां पुरुषाणां प्रवेश कुटुम्बिगेहेषु यस्या सा तथा ता ॥ अदण्डकोदण्डिमति ॥ दण्डलभ्य द्रव्य दण्डएव कुदण्डेन निर्वृत्त द्रव्य कुदण्डिम तन्नास्ति यस्या सा अदण्डकुदण्डिमा ता' त त्र दण्डो ऽपराधानुसारेण राजग्राह्य द्रव्य, कुदण्डस्तु-कारणिकाना प्रजापराधा न्महत्यप्यपराधिनो ऽपराधे ऽल्प राजग्राह्य द्रव्यमिति ॥ अध रिमति ॥ अविद्यमानधारणीयद्रव्यमृणमुत्कलनात् ॥ गणियावरनाडइज्जकलित ॥ गणिकावरै र्वेश्याप्रधानै र्नाटकीयै र्नाटकसम्बन्धिभि र्पात्रै क लिता या सा तथा ता ॥ अणेगतालाचराणुचरिय ॥ नानाविधप्रेक्षाकारिसेवितामित्यर्थ ॥ अणुद्धयमुइंगत्ति ॥ अनुद्धूता वादनार्थं वादकै रविमुक्ता मृदङ्गा यस्या सा तथा ता ॥ अमिलायमल्लदाम ॥ अम्लानपुष्पमाला ॥ पमुइयपक्कीलियंति ॥ प्रमुदितजनयोगा त्प्रमुदिता प्रक्रीडितजनयोगा त्प्र क्रीडिता तत कर्म्मधारयो त स्ता ॥ सपुरजणजाणवत ॥ सहपुरजनेन जानपदेनच जनपदसम्बन्धिजनेन या वर्त्तते सा तथा ता, वाचनान्तरे विजयवेजयतिदृश्यते तत्रचातिशयेन विजया विजयः २ सप्रयोजन यस्या सा विजयवैजयिकी ता ॥ ठिइवडियंति ॥ स्थितौ कुलस्य लोकस्यवा :

अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुयंगं अमिलायमल्लदामं पमुदियपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे

तालाचरानुचरितामनुद्धूतमृदङ्गामम्लानमाल्यदाम प्रमुदितप्रक्रीडिता सपुरजनजानपदा दशदिवस यावत्स्थितिपतिका करोति । तदा सब

सणनो करनलिनो देणो मतदेहु अणमिणो देहु । अभडप्पवेस अदड कोदडिम अधरिम । जिणहीने घरे मत जाहु दण्ड लेणोनहीं अपराध विना न लेणो जिणही धरणो न देणो । गणियावरनाडइज्जकलिय । गणिका प्रधान एहवा नाटकसम्बन्धी पात्र तेणे कलित जिका ते । अणेगतालाचराणुचरिय । नानाविध प्रेक्षाकारी सेवित जिका । अणुद्धुयमुयंग अमिलाय मल्लदाम । बजावणहार मृदङ्ग बजावता एकक्षणमात्र रहता नथी अम्लानफूलना फूल नी मालाधरी । पमुदिय पक्कीलिय सपुरजण जाणवय । प्रमुदितजन योगथकी प्रक्रीडित क्रीडासहित पुरजनसहित जनपद देशसम्बन्धी जन । दस दिवसे ठिइवडिय करेति । दश दिवसलगें कुलनी तथा लोकनो मर्यादा पुत्रजन्मोत्सव करणो तेहप्रतें करे । तएण से बलेराया दसदिसाएठिइवडियाए

॥ टीका ॥

मर्यादाया पतिता गता या पुत्रजन्ममहप्रक्रिया सा स्थितिपतिता अत स्ता ॥ दसाहियाएत्ति ॥ दशाह्निकाया दशदिवसप्रमाणाया ॥ जायएत्ति ॥

॥ मूल ॥

तएणं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सतएय साहस्सिएय सयसाहस्सिएय जाएय दाएय भाएय दलमाणेय दवावेमाणेय सतिएय साहस्सिएय सयसाहस्सिएय लंभे पडिच्छमाणेय पडिच्छावेमाणेय एव विहरइ, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइ वडिय करेंति, तइए दिवसे चंदसूरदंसावणियं करेंति, छठे दिवसे जागरियं करेंति, एक्कारसमे दिवसे वीइ

॥ अनुवाद ॥

ततः स बलो राजा दशाह्निकायां स्थितिपतितायां वर्त्तमानायां शतिकान् साहस्रिकान् शतसाहस्रिकान् यागान् दायांश्च भागांश्च ददद्दापयंश्च शतिकांश्च साहस्रांश्च शतसहस्रांश्च लभन् (वर्द्धापनिकाया) प्रतीच्छंश्च दापयंश्चैव विहरति। तदा तस्य दारकस्याम्बापितरौ प्रथमे दिवसे स्थितिपतिकां कुरुत, तृतीये दिवसे चन्द्रसूरदर्शापनिकां कुरुत, षष्ठे दिवसे जागरिकां कुरुत, एकादशमे दिवसे व्यतिक्रान्ते निर्वृत्ते अशु

॥ भाषा ॥

सतएय साहस्सिएय सतसाहस्सिएय। जिवं शतद्रव्य लागे सहस्र वट्टमाणीए। तिवारे ते बलराजा दश दिवसप्रमाण पुत्रजन्म उत्सव वर्त्ततायका। याग पूजा विशेष दानप्रते विवर्चित द्रव्यना भागप्रते देतायका। द्रव्यनाग शतसहस्र कहता लचलागे एहनो। जाएय भाएय दाएय भावेय दलमाणेय। लंभेपडिच्छमाणेय पडिच्छावेमाणेय एवंविहर दवावेमाणेय सतिए साहस्सिएय सयसाहस्सिएय। देवरावतायका जिवे सो लागे सहस्रनागे लचलागे। पढमंदिवसे ठिइवडिय करेति। पहिलेदि इसहे आपे शिरावे इम विचरे। तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो। तिवारे तेहने बालकना माता पिता। तीजे दिने चन्द्र सूर्य दर्शन एमे अभिधान इसे नामे महोत्सव करे। छठे दिन पुत्रजन्म महोत्सवादि स्थितिकार। तइएदिवसे चंद सूरदसावणिय करे। इग्यारमे दिवसनेविषे व्यतिक्रान्त थया अतिक्रान्त। असुइ स जागरिय करे। छठे दिने रात्रि जागरणरूप उत्सवप्रते करे। एक्कारसमदिवसे निवत्तिए। बारसेदिवसेविउल असणपाणखाइम जातक आश्रित सपत बारसादिवसे। अशुचिना जातिकर्मकारी कारण ते अशुचि जातकर्म कारण करे सर्वापथया।

यागान् पूजाविशेषान् ॥ दायपत्ति ॥ दायांश्च दानानि ॥ भागपत्ति ॥ भागांश्च विवक्षितद्रव्यांशान् ॥ चन्दसूरदंसावणियंति ॥ चन्द्रसूर्यदर्शनाभिधानमुत्सवं ॥ जागरियंति ॥ रात्रिजागरणरूपमुत्सवविशेषं ॥ निव्वत्ते असुइजाइकम्मकरणंमि ॥ निवृत्ते अतिक्रान्ते अशुच्यादीनां जातकर्मणां करणे अशुचिजातकर्मकरणं तत्र ॥ संपत्ते बारसाहदिवसेत्ति ॥ सम्प्राप्ते द्वादशाख्यदिवसे अथवा, द्वादशानां पूरणः द्वादशः स एव द्वादशकः तस्य दिवसो द्वादशाहदिवसो येन स पूर्यते तत्र ॥ कुलाणुरूवंति ॥ कुलोचितं कल्याणदेवमित्याद्य-कुलसरिसंति ॥ कुलसदृशं तत्कुलस्य बलवत्पुरुषकुलत्वा न्नायवाइति नामस्य बलवद्योगाभिधायकत्वात् एकुलस्य महाबल इति नामस्य सादृश्यमिति ॥ कुलसंताणतंतुवद्धणकरंति ॥ कुलरूपस्य संतानः सन्तत

छंति णिव्वत्ते असुइजाइकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेंति २ त्ता जहा सिवो जाव खत्तिए आमंतेइ, आमंतेइत्ता तओ पच्छा ण्हाया कय तंचेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता तस्सेव मित्तणाइजावखत्तियाणयपुरओ अज्जयपज्जयपिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कु

यिजातकर्मकरणे सम्प्राप्ते द्वादशाहदिवसे विपुलमशनपानखादिमस्वादिममुपस्कारयतः, कारयित्वा यथा शिवो यावत् क्षत्रियानामन्त्रयत, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नाताः कृत (प्रभृति) तथैव यावत् सत्कारयतः सन्मानयतः, सन्मान्य तथैव मित्रज्ञाति (प्रभृति) यावत् क्षत्रियाणाञ्च पुरतः आर्यकप्रार्यकपितृप्रार्यकागत बहुपुरुषपरम्परा प्ररूढं कुलानुरूपं कुलसदृशं कुलसन्तानतन्तुविवर्द्धनकरमिदमेतद्रूपं गौण

खाइम उपकरावेंति २ त्ता। विस्तार्यो असनपान खादिम स्वादिम रंधावे रंधावीने। जहासिवो जाव क्षत्रिय आमंतेइ २ त्ता। जिम शिव तिम यावत् क्षत्रिय आमंत्रे आमंत्रीने। तओपच्छा ण्हाया कय तचेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति २ त्ता। तिवारपछी स्नानकीधो बलिकर्म तिमहीज यावत् सत्कारे सन्माने सत्कारीने सन्मानीने। तस्सेवमित्तणाति जाव खत्तियाणयपुरओ। तिमहीज मित्र ज्ञाति यावत् क्षत्रियने आगे। अज्जयपज्जयपिउ पज्जयागयं। दादो पडदादो पितामो दादो मेहलो आयो। बहुपुरिसपरंपरप्परूढं। घणा पुरुषनी परम्परा अनुक्रमेपरम्परागत प्ररूढ वध्यो। कुलाणुरूवं कुलसरिखं कुलसंताण तंतुविव

॥ टीका ॥

गौण तथा मुख्यमप्युच्यत इत्यतआह-गुणनिष्पन्नमिति तु दीर्घत्वा तद्वर्द्धनकर मङ्गल्यत्वा च त तथा ॥ अयमेयारूवंति ॥ इदमेतद्रूप ॥ गोण्णंति ॥ गौण तथा मुख्यमप्युच्यत इत्यतआह-गुणनिष्पन्नमिति तु दीर्घत्वा तद्वर्द्धनकर मङ्गल्यत्वा च त तथा ॥ अस्माकमय दारक प्रभावती देव्यात्मजो यस्मा द्वलस्य राज्ञ पुत्र स्तस्मा त्पितु र्नामानुसारिनामास्य दारकस्यास्तुमहा जम्हाण अम्ह इत्यादि ॥ अस्माकमय दारक प्रभावती देव्यात्मजो यस्मा द्वलस्य राज्ञ पुत्र स्तस्मा त्पितु र्नामानुसारिनामास्य दारकस्यास्तुमहा बल इति ॥ जहादढपइस्सेत्ति ॥ यथौपपातिके दृढप्रतिज्ञो धीत स्तथाय वक्तव्य स्तत्रैव-मज्जणधाइए मंडणधाइए कीलावणधाइए अंकधाइए इत्यादि'

॥ मूल ॥

लाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुविवद्धणकरं अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति, जम्हाणं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए तं होउण अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति महब्बल इति, तएणं से महब्बले दारए पंच धाई परीग्गहिए तं०—खीरधाई एवं जहा दढप्पइस्से जाव णिवायणिव्वाघायंसि, सुहंसुहेणं परिवड्ढइ । तएणं

अनुवाद

गुणनिष्पन्न नामधेय कुरुत, यस्मादस्माकमय दारको बलस्य राज्ञ पुत्र प्रभावत्या देव्या आत्मजस्तस्माद्भवतु अस्मत्पुत्रस्यास्य नामधेय म हाबल । तदा तस्य दारकस्याम्बापितरौ नामधेय कुरुतो महाबल इति । तदानी स महाबलो दारक पञ्चधात्रीपरिगृहीतस्तद्यथा-क्षीरधा त्री एव यथादृढप्रतिज्ञो यावन्निर्वातनिर्व्याघातइति सुख सुखेन परिवर्द्धते । तदा तस्य महाबलस्य दारकस्याम्बापितरौ आनुपूर्व्या स्थितिपति

॥ भाषा ॥

गुणकर अयमेयारूव । कुलयोग्य स्वामाटे तेहीज कहेछे—कुलसरीखो बलवन्त कुलरूप जे सतान तेहीज तन्तु दीर्घपणा थकी तेहने वधारणहार माटे गौण नाम करे । जम्हाण अम्हंइमेदारए बलस्सरण्णो पुत्ते पभावईदेवीए अ त्तए एहवे रूपे । गोणगुणनिष्फण्ण नामधेज्ज करेंति । गौण प्रमुख्यगुणे नीपनो नामध्येय करे । जम्हाण अम्हंइमेदारए बलस्सरण्णो पुत्ते पभावईदेवीए अ त्तए । जेकारणथी अम्ह रे एह बालक बलराजानो पुत्र प्रभावतीदेवीनो आत्मज । तहोउणअम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महब्बले । तेमाटे पिता ना नामने अनुसारे नाम तेमाटे थाओ अम्हारा एह बालकनो नामधेय महाबल इसो स्थापनाकरी इमकही । तएण तस्स दारगस्स अम्मापियरो ना मधेज्ज करेंति महब्बलइति । तिवारे तह बालकनो माता पिता नामध्येय करे महाबल इसो । तएणं से महब्बलेदारए पचधाई परिग्गहिए तं० । ति

॥ टीका ॥

निवायनिव्वायसीत्यादिच वाक्य मिदैव सम्बन्धनीय गिरिकन्दरमल्लीणेव्व चपगपायवे निवायनिव्वायंसि सुहसुहेण परिवड्ढइत्ति ॥ पर गाम णति ॥ भूमौ सर्प्पण ॥ पयचक्कामणति ॥ पादाभ्यां सञ्चारण ॥ जेमामणति ॥ भोजनकारण ॥ पिंडवद्धणति ॥ कवलवृद्धिकारण ॥ पजपणाणति ॥ प्रजल्पनकारण ॥ कण्णवेहणति ॥ प्रतीत ॥ संवच्छरपडिलेहणति ॥ वर्षग्रन्थिकरण ॥ चोलायणगति ॥ चूडाधरण ॥ उवणयणति ॥ कलाग्रहण ॥

॥ मूल ॥

तरस महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण ठिइपडियच चंदसूरदंसणावणियवा जागरियंवा नाम करणवा परगामणवा पयचंकमाणंवा जेमावणवा पिंडवद्धणवा पजपावणंवा कण्णवेहणंवा संवच्छरपडि लेहणंवा चोलोवणगंवा उवणयणंवा अण्णाणि बहूणि गब्भाढाणजम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति। तएणं तं महब्बल कुमार अम्मापियरो साइरेगठ्ठवासग जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि एवं जहा दढप्पइण्णो

अनुवाद

तच चन्द्रसूर्यदर्शनापनिका वा जागरिका वा नामकरण वा परगमण वा पदचङ्क्रमण वा जेमापनवा पिण्डवर्द्धन वा प्रजल्पापन कर्णवेधवा संवत्सरप्रतिलेखनवा चौलोपनक वोपनयनवा ऽन्यानि बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि कौतुकानि कुरुत तदा त महाबल कुमार मातृपित

॥ भाषा ॥

वारे ते महाबल बालक पद्मराइ सहित त वइछे—धाराइ पञ्च अंग्रा टदपरम आर विश्रा निव्वाघातिमह सुखेण परिवड्ढइ । धारधाति पंचराधेति इम जिन ठवाई उपागनेविपे टढप्रतिज्ञ कह्या तिम ए पणि कहवा तरन—मज्जणधाईए मंडणधाईए कोलावणधाईए अंकधाई इत्यादि, पिछाइ विछा घावमि इत्यादि वाक्य इहां इम सबंध करवो गिरि कंदरमाहि व चपगपायवं निव्वाघाए सुहसुहेण परिवड्ढइ, यावत् निर्वात निर्व्याघातविषे जि म चम्पकलता वाधे तिम सुखे सुखकरी महाबल कुमार वधे । तएणंतस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो । तिवारे तेह महाबल बालकने मातापिता । अणुपुव्वेणठिइवडिय च । अनुक्रमे जन्म दिवसथको स्थिति पतिवायनो । चंदसूरदंसणावणियंवा । चन्द्र सूर्य दर्शनानिधान महोत्सव । जागरियंवा नाम करणवा परगामणवा पयचंकमाणवा जेमावणवा । वली धम जागरण नामकरण भूमिका ऊपर आपण आपहि चला रांधिणो पग पग चालो पान

॥ टीका ॥

गर्भाधानादिषु यानि कौतुकानि रक्षाविधानादीनि तानि गर्भाधानादीन्येवोच्यन्त इति गर्भाधा न जन्मादिकानि कौतुकानीत्येव समानाधिकरणतया निर्देश कृत ॥ एव जहा दढप्पइण्णो इत्यनेन यत्सूचितं तदेवं दृश्य–सोहणंसि तिहिकरण गब्भादाणजम्मणमाइयाइ कोउगाइ करेंतित्ति ॥

॥ मूल ॥

जाव अलंभोगसमत्थे जागरेयावि होत्था । तएणं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं अलंभोगसमत्थावि जाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडिंसए कारेंति, अब्भुग्गयमूसियपहसिएइव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे तेसिणं पासायवडिंसगाणं बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महेगं भवणं कारेंति । अणेगखंभसय सन्निविट्ठ वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव पडिरूवे, तएणं त महब्बलं कुमारं अम्मा पियरो अण्णयाकयाइ सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगल

॥ अनुवाद ॥

रं सातिरेकाष्टवार्षिकं ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणमुहूर्त्ते एव यथा दृढप्रतिज्ञो यावदलं भोगसमर्थो जागर श्चाप्यभवत् । तदा त महाबल कुमार उन्मुक्तबालभावमलं भोगसमर्थमपि ज्ञात्वा ऽम्बापितरौ अष्ट प्रासादावतंसकान् कारयत । अत्युद्गतोच्छ्रितान् प्रहसितानिव वर्णको

॥ भाषा ॥

वरसगाठ वा भोजन जीमाडवा । पिडवद्दणना पजपावणवा कणवेहणवा । ते कवलनो ववारवा बालाविवो काननो वान्धवो । संवच्छरपडिलेहणवा । गब्भादाणजम्मणमा नो करवो । चोलोवणगवा उवणयणवा अप्पाणिवहणि । चांटी राखवी कलानो ग्रहाविवो भणाविवो इत्यर्थ अनेग पिण घणा । तएण त मह टियाइ कोउयाइ करेति । गर्भाधानादिकने विषे जिके कौतुक रक्षाभिधानादिक ते पणि गर्भाधानादिक कहिये कौतुकादिक करे । सां ब्बल कुमार अम्मापियरो । तिवारे ते महाबल कुमारप्रतें माता पिता । साइरेगट्ठवासगजाणित्ता । काइएक अधिक आठवरसनो थयो जाणीने । सोहणंसि तिहिकरण मुहुत्तंसि एव जहा दढपइण्णे । शोभन तिथिकरण मुहूर्त्तने विषे इम जिम दृढप्रतिज्ञनो उवाईउपागमाहे अधिकार कह्यो तिम इहां पणि कहवो । जाव अलभोगसमत्थे जागरे यावि होत्था । यावत् अलपर्याप्तभोग समर्थ जात प्रगटथयो जुवानथयो इत्यर्थ । तएण त महब्बल कुमार

नक्खत्तमुहुत्तंसि पहाय कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं महयाइड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेन्तीत्यादीति ॥ अब्भुग्गयमूसियपहसियेइव ॥ अभ्युद्गतोच्छ्रिता नत्पुद्गानिरर्थेव-व्याख्यात द्वितीयायद्वचनलोपदर्शनात् ॥ पहसितेइवत्ति ॥ प्रहसितानिव श्वेतप्रभापटलप्रबलतया हसत इवेत्यर्थः ॥ वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे ॥ इत्यनेन यत्सूचितं तदिदं-मणिकणगरयणभत्तिचित्तवाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे इत्यादि ॥ एतच्च प्रतीतार्थमेव नवरं मणिकनकरत्नानां भक्तिभिर्विच्छित्तिभिश्चित्रा ये ते तथा वातोद्धूता या विजयसूचिका वैजयन्त्यभिधाना. पताका छत्रा.ि.छत्राणि च तैः कलिता ये ते तथा तत कर्मधारय स्तत स्तान् ॥ अणेगखंभस

पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणं णगहाणं गीयवाइयंपसोहणठगतिलगकंकणअविहयवक्कउवणीयं

यथा राजप्रश्नीये यावत्प्रतिरूप । तेषां प्रासादावतंसकानां बहुमध्यदेशभागे ऽत्र महदेकं भवनं कारयत । अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टं वर्णको यथा राजप्रश्नीये प्रेक्षागृहमण्डपे यावत्प्रतिरूपं । तदा तं महाबलं कुमारं मातापितरौ अन्यदाकदाचिच्छोभने तिथिकरणदिवसनक्षत्रमुहूर्ते

उन्मुक्तबालभावं । तिवारे ते महाबल कुमारप्रते मूक्यो बालभाव प्रते । यावन्भोगसमर्थं जाणिने अम्मापियरो । अलपर्याप्त भोगसमर्थ थयो जाणी ने माता पिता । अट्ठपासायवडेंसए कारेंति । आठ प्रासादनेविषे मुकुटसमान प्रासाद करावें । अब्भुग्गयमूसियपहसियेइव । वेदिकासहित रूपा सेत पटल जाणे अति हसेछे । वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव पडिरूवे । एहनो वर्णक जिम राजप्रश्नउपांग माहि कह्यु तिम इहां कहवो यावत् प्रतिरूप स्वरूपवान्य । तेसिण पासायवडिंसगाणं बहुमज्झदेसभाए तेह प्रासादावतंसक प्रासाद मुकुटने घणु मध्य भूमिभागने विषे । एत्थण महेगं भवणकारेंति । इहां ए वाक्यालंकारे, मोटो एक भवनघर करावे । अणेगखंभसय सन्निविट्ठं वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे । अनेक थांभाना सेकडा तिणेकरी सहितछे वर्णक जिम राजप्रश्न उपांगे । पेच्छाघर मण्डवंसि जाव पडिरूवे । प्रेक्षा घर मण्डपविशेषनो वर्णक कह्यो तिम इहां पणि कहवो, यावत् प्रतिरूप एत लागे कहवो । तएण तं महब्बलकुमारं अम्मापियरो । तिवारे ते महाबल कुमारप्रते माता पिता । अण्णयाकयाइ सोभणंसि तिहिकरणदिवसणक्ख

॥ टीका ॥ वखउे जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमण्डवसशिविष्ठति ॥ अनेकेषु स्तम्भशतेषु सन्निविष्टं यदनेकानिवा स्तम्भशतानि सन्निविष्टानि यत्र तत्तथा ॥ वखउे जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमण्डवसिति ॥ यथाराजप्रश्नकृते प्रेक्षागृहमण्डपविषयो वर्णक उक्त स्तथास्यवाच्य इत्यर्थ स च–लीलट्ठियसालिभञ्जियागमित्यादिरिति,,पमक्खणगण्हाणगीयवाइयपसाहणट्ठंगतिलगककणअविहवबहुउवणीयेति ॥ प्रम्रक्षणकमभ्यञ्जन स्नानगीतवादितानि प्रतीतानि प्रसाधन मण्डन अष्टस्वङ्गेषु तिलकाः पुण्ड्राणि अष्टाङ्गतिलका कङ्कणच रक्तदवररूप एतानि अविधववधूभि र्जीवत्पतिकनारीभि रुपनीतानि यस्य स तथा त ॥ मंगलसुजंपिएहि

॥ मूल ॥ मंगलंसुजंपिएहिय वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्म सरिसियाण सरित्तयाणं सरिव्वयाण सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाण विणीयाणं कयकोउयमंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहि रायकुलेहि आणिल्लियाणं अट्ठण्हं

अनुवाद स्नात कृतबलिकर्माण कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्त सर्वालङ्कारविभूषित प्रम्रक्षणक स्नान गीतवादित प्रसाधनमष्टाङ्गतिलककङ्कणाविधववधूपनीत मङ्गलसुजल्पितैर्वरकौतुकमङ्गलोपचारकृतशान्तिकर्माणा सदृशीना सदृक्त्वचा सदृग्वयसा सदृशलावण्यरूपयौवनगुणोपपेताना विनीताना कृ

॥ भाषा ॥ सव्वालंकारविभूसिय। त्तमुहुत्तसि । अन्यदा किवारेकौ शोभन तिथिकरण दिवस नक्षत्र मुहूर्त्तनेविषे। एहाय कयबलिकम्म कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालंकारविभूसिय। पमक्खणगण्हाण गीयवाइयपसाहणट्ठंगस्नानकीधा प्रते कीधा बलिकर्म कीधा कौतुक मङ्गलीक निमित्त प्रायश्चित्त प्रते सर्वअलङ्कारे विभूषित प्रते । पमक्खणगण्हाण गीयवाइयपसाहणट्ठंग तिलगकङ्कण अविहवबहु उवणीय। मरदन उगटणू प्रथमकरीने स्नान गीत वादित्र वजावी मण्डनविशेष आठथानक तिलककरण कङ्कण कसूम्भ डोरड ना बाधवो सुहागण स्त्री एतला बाना कीधा । मंगलसुजंपिएहिय। मङ्गलीक भलावचन कहवो। वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्म। प्रधान कौतुक मङ्गल ते रूप जे उपचार तिणे कीधा शान्तिकर्म दुरित उपशमरूप क्रिया जेहने तेहप्रते। सरिसयाण सरित्तयाण सरिव्वयाण। सरीखो वलनो त्वचा सरीखा सरीखो वर्ण सरीखो वय। सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाण विणीयाण। सरीखो लावण्य रूप यौवनगुणे उपेत सहितने विनयवन्त ने। कयकोउय मंगलपायच्छित्ताण। कीधा कौतुक मङ्गल प्रायश्चित्त तेहने। सरिसएहि रायकुलेहि आणिल्लियाण अट्ठ रायवरकन्याण। सरीखा राज

॥ टीका ॥

यति ॥ मङ्गलानि दध्यक्षतादीनि गानविशेषावा; सुजल्पितानिचाशीर्वचनानीति द्वन्द्व स्ते कारणभूते ॥ पाणिगिराहाविंसु ॥ सम्बन्ध , किंभूत तमित्याह-वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्म ॥ वराणि यानि कौतुकानि प्रतिसरादीनि मङ्गलानिच सिद्धार्थकादीनि तद्रूपो यउपचार पूजा ते न कृत शांतिकर्म दुरितोपशमक्रिया यस्य स तथा त ॥ सरिसियाणति ॥ सदृशीना परस्परतो महावलापेक्षयावा ॥ सरित्तयाणति ॥ सदृक्त्वचा सदृशच्छवीना ॥ सरिव्वयाणति ॥ सदृग्वयसा ॥ सरिसलावन्नेत्यादि ॥ इह लावण्य मनोज्ञता रूप माकृति यौवन युवतीगुणा प्रियभाषित्वादय

॥ मूल ॥

रायवरकन्नाणं एगदिवसेण पाणिं गिराहाविंसु । तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीतिदाणं दलयति तंजहा—अट्ठ हिरन्नकोडीउ अट्ठ सुवन्नकोडीउ अट्ठ मउडे मउडप्पवरे अट्ठ कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे अट्ठ हारे हारप्पवरे अट्ठ अद्धहारे अट्ठ हारप्पवरे अट्ठ एगावलीउ एगावलि

॥ अनुवाद ॥

तकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताना सदृशे राजकुले रानीतानामष्टाष्टौराजवरकन्यकाना मेकदिवसेपाणिमग्राहयिषाम् । तदा तस्य महाबलस्य कुमारस्याम्बापितरौ इदमेतद्रूप प्रीतिदान दत्त , तद्यथा-अष्टौ हिरण्यकोटी अष्टौसुवर्णकोटी अष्टौ मुकुटानि मुकुटप्रवराणि अष्टौकुण्डलयुगलानि कुण्डलयुगलप्रवराणि अष्टौहारान् हारप्रवरान् अष्टावर्द्धहारानर्द्धहारप्रवरानष्टावेकावली एकावलीप्रवरान् एवमुक्तावली एवकनकावली

॥ भाषा ॥

कुलरकी आणीके तेहने आठआठ राजवर कन्याने । एगदिवसेण पाणिगिराहाविंसु । एक दिवसनेविषे पाणिग्रहण करावे एतले आठकन्या परणावी । तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स अम्मा पियरा । तिवारे ते महाबल कुमारने माता पिता । अयमेयारूवे पीतिदाणं दलयइ तं० । एह एहवे रूपे प्रीतिदान दे ते कहेछे—अट्ठहिरन्नकोडीओ अट्ठसुवन्नकोडीओ अट्ठमउडे मउडप्पवरे । आठ हिरण्य रूपानी कोडि आठ सुवर्णकोडि आठमुकुट मुकुटनेविषे प्रधान अट्ठकुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे । आठ कुंडलना जोडा कुण्डल युगलनेविषे प्रधान । अट्ठहारे हारप्पवरे । आठहार हारमाहे प्रधान । अट्ठअद्धहारे अद्धहारप्पवरे । आठ अर्द्धहार अर्द्धहारमाहे प्रधान । अट्ठएगावलीओ एगावलिप्पवराओ । आठ एकावलीहार एकावलीमाहे प्रधान । एव मुत्तावलीओ एव

॥ टीका ॥

॥ कुम्भलजोएत्ति ॥ कुण्डलयुगानि ॥ कडगजोएत्ति ॥ कलाचिकाभरणयुगानि ॥ तुडियत्ति ॥ बाह्वाभरण ॥ खोमेत्ति ॥ कार्पासिक अतसीमयवा; वस्त्र ॥ वडगत्ति ॥ त्रसरीय ॥ पट्टत्ति ॥ पट्टसूत्रमय ॥ दुगुल्लत्ति ॥ दुकूलाभिधानवृक्षत्वग्निष्पन्न श्रीप्रभृतय षट् देवताप्रतिमा नन्दादीनि मङ्गलव स्तूनि अन्येत्वाहु –नद वृत्त लोहासन भद्र शरासन मूढक इति यत्प्रसिद्ध ॥ तलेत्ति ॥ तालवृक्षान् ॥ वयत्ति ॥ व्रजान् गोकुलानि ॥ सिरिघरपडिरू

॥ मूल ॥

प्पवराओ एव मुत्तावलीओ एव कणगावलीओ एवं रयणावलीओ अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे एवं तुडि यजोए अट्ठ खोमजुवलाइ खोमजुवलप्पवराइं एवं वडगजुवलाइं एव पट्टजुवलाइं एवं दुगुल्लजुवलाइं अट्ठ सिरीओ अट्ठ हिरीओ एव धिईओ कित्तीओ बुद्धीओ लच्छीओ अट्ठ नंदाइं अट्ठ भद्दाइं अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए णियगवरभवणकेऊ अट्ठज्झए ज्झयप्पवरे अट्ठवए वयप्पवरे (दसगोसाहस्सिएण वएण)

अनुवाद

एवरत्नावली· अष्टौकटकयुगानि कटकयुगप्रवराणि । एवन्त्रुटितयुगानि अष्टौक्षौमयुगलानि क्षौमयुगलप्रवराणि एव त्रसरीययुगलानि एवपट्टयु गलानि एवदुकूलयुगलानि अष्टौश्री योऽष्टौह्री एवमष्टौधृती कीर्त्ती यो बुद्धी लक्ष्मीः अष्टौनन्दान्यष्टौभद्राणि अष्टौतालवृक्षान् तालप्रवरान् सर्वरत्नमयान् निजकवरभवनकेतून् अष्टौध्वजान् ध्वजवरान् अष्टौव्रजान् व्रजप्रवरान् (दशगोसाहस्रिकेन एकोव्रज) अष्टौनाटकानि नाटक

॥ भाषा ॥

अट्ठकडगजोए कडगजोयप्पवरेएव तुडिय जोए । आ कणगावलीओ एव रयणावलीओ । इम आठ मुक्तावली इम आठ कनकावली इम आठ रत्नावली । अट्ठखोमजुवलाइ खोमजुवलप्पवराइ । आठ कर्पासवस्त्र अथवा अतसीमय वस्त्र युगल ते व ठ कडानाजोडा कडा युगल प्रधान इम बाजुबन्ध युगल । इम टसरिया वस्त्र विशेष तेहना युगल इम पट्टसूत्रमय तेहना युगल हचनी छालना नीपनो वस्त्र युगल । अट्ठसिरीओ अट्ठहिरीओ एवधिईओ किईओ बुद्धीओ लच्छीओ । छ देवाङ्गनानी आठ प्रतिमा ते कहेछे –श्री १ आठ ह्री २ इम धृति ३ आठ कीर्त्ति ४ आठ बुद्धि ५ आठलक्ष्मी ६ । अट्ठणंदाइ अट्ठभद्दाइं अट्ठतले तलप्पवरे । आठ नन्दादिक वस्तु मङ्गलीक आठ सुण्डाभद्रासन

॥ टीका ॥

वएत्ति ॥ आयतागारतुल्यान् रत्नमयत्वात् ॥ जाणाइति ॥ शकटादीनि ॥ जुग्गाइति ॥ गोल्लविषयप्रसिद्धानि जम्पानानि ॥ सिवियाउत्ति ॥ शिबिका· कूटाकाराच्छादितजम्पानरूपा ॥ सन्दमाणियाउत्ति ॥ स्यन्दमानिका पुरुषप्रमाणा जम्पानविशेषा एव ॥ गिल्लीउत्ति ॥ हस्तिनउपरि कोल्लराकारा ॥ थिल्लीउत्ति ॥ लाटाना यानि अश्वपल्ल्यानानि तानि अन्यविषयेषु थिल्लीउ अभिधीयन्ते अत स्ता ॥ वियडजाणाइति ॥ विवृतयानानि तल्लरकवर्ज्जितशकटानि ॥ पारिजाणिएत्ति ॥ परियानप्रयोजना पारियानिका स्तान् ॥ संगामिएत्ति ॥ सङ्ग्रामप्रयोजना साङ्ग्रामिका स्तान् तेषाच

॥ मूल ॥

अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवरे बत्तीसं बद्धेणं नाडएणं अट्ठआसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं अट्ठ जुग्गाइं जुग्गप्पवराइं एव सिवियाउ स्सन्दमाणीउ एवं गिल्लीउ थिल्लीउ अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं अट्ठरहे पारिजाणीए अट्ठ रहे संगामिए अट्ठ आसे आसप्पवरे अट्ठहत्थी हत्थिप्पवरे अट्ठगामे गामप्पवरे (दस

अनुवाद

प्रवराणि द्वात्रिंशद्बद्धेन नाटकेन सहितानि अष्टावश्वान् अश्वप्रवरान् सर्वरत्नमयान् श्रीगृहप्रतिरूपकान् अष्टौहस्तिनो हस्तिप्रवरान् सर्वरत्नमयान् अष्टौयानानि यानप्रवराणि अष्टौयुग्यानि युग्यप्रवराणि, एवमष्टौशिविका स्यन्दमानिका एवमष्टौ गिल्लय थिल्लय अष्टौविवृतयानानि विवृतयानप्रवराणि अष्टौरथान् पारियानिकान् अष्टौरथान्साङ्ग्रामिकान् अष्टावश्वा नश्वप्रवरान् अष्टौहस्तिनो हस्तिप्रवरान् अष्टौग्रामान्

॥ भाषा ॥

आठ तालवृक्ष विशेष ताल प्रधान। सव्वरयणामए णियगवरभवणकेउ । सर्व रतनजडित रत्नमय आपणा प्रधान घर केतुध्वजा प्राय। अट्ठझए झयप्पवरे। आठ ध्वज ध्वजा प्रधान। अट्ठवए वयप्पवरे। आठ व्रज गोकुल व्रजमाहे प्रधान। दसगोसाहस्सिएण वएण। दससहस्र गाय एक व्रजथाय। अट्ठनाडगाइं नाडगप्पवरे। आठ नाटक नाटकमाहे प्रधान। बत्तीस बद्धण नाडएणं। एकेक बत्तीसबद्ध नाटकसहित तेहप्रते। अट्ठआसे आसप्पवरे। आठ घोडा घोडामाहे प्रधान। सव्वरयणामए। सर्व रत्नमय जडावरा। सिरिघरपडिरूवए। श्रीलक्ष्मीना घरने सरीखा अथवा रत्नमय पदार्थकी भंडा

॥ टीका ॥

कटीप्रमाणा फलकवेदिका भवति ॥ किंकरेत्ति ॥ प्रतिकर्मपृच्छाकारिणः ॥ कञ्चुइज्जेत्ति ॥ प्रतीहारान् ॥ वरसधरेत्ति ॥ वर्षधरान् वर्द्धितकमहत्तरकान् ॥ महत्तरगत्ति ॥ महत्तरा नन्तःपुरकार्यचिंतकान् ॥ उलवणदीवेत्ति ॥ शृङ्खलाबद्धदीपान् ॥ उक्कंचणदीवेत्ति ॥ उत्कञ्चनदीपान् ऊर्द्धदण्डकान् ॥

॥ मूल ॥

कुलसाहस्सिएणं गामेणं) अट्ठ दासे दासप्पवरे एव दासीओ एव किंकरे एवं कंचुइज्जे एवं वरिसहरे एवं महत्तरए अट्ठ सोवण्णिए उलंवणदीवे अट्ठ रुप्पमए उलंवणदीवे अट्ठ सुवण्णरुप्पमए उलंवणदीवे अट्ठ

॥ अनुवाद ॥

ग्रामप्रवरान् दशकुलसाहस्रिकेण एकोग्रामो (भवतीतिशेषः) अष्टौदासान् दासप्रवरान् एवदासी एवकिंकरान् कञ्चुकीयान् एव वर्षधरान् एव महत्तरानष्टौ सौवर्णिका नौपलम्बनदीपानष्टरूप्यमयोपलम्बनदीपानष्टसुवर्णरूप्यमयोपलम्बनदीपान् अष्टसौवर्णिकानुत्काञ्चनदीपान् एव र

॥ भाषा ॥

र सरीखा। अट्ठहत्थी हत्थिप्पवर सव्वरयणामए । आठ हाथी हाथीमाहे प्रधान ए पणि सर्व रत्नमय। सिरिघरपडिरूवए । रत्नमय पणाथर्को भंडार सरीखा। अट्ठजुगाइं जुगप्पवराइं । आठ युग गोलदेश प्रसिद्ध झम्पान ते सरीखा। अट्ठजाणाइं जाणप्पवराइं । आठ यान शकटादिक यानमाहे प्रधान मुख्य। इम शिविकाप्रते स्यन्दमाणी झम्पान विशेष प्रते। एव गिल्लीओ थिल्लीओ। इम हाथीनो अस्या झम्पान माहे प्रधान। एव सिवियाओ स्नदमाणीओ। आठ विकटयान घोडा वलदविना चाले विज्ञानना वशथकी एहवा प्रते ते पणि विकट डो घोडानो वलाण। अट्ठवियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं। आठ रथ क्रीडार्थे तेहप्रते। अट्ठरहे संगामिए। आठ रथ संग्रामने अर्थे। अट्ठआसे आसप्पवरे। आठ यान माहे प्रधान मुख्य। अट्ठरहे पारिजाणिए। आठ हाथी हाथीमाहे मुख्य। अट्ठगामे गामप्पवरे। आठ ग्राम ग्राममाहे मुख्य। दसकुलसाह घोडा घोडामाहे प्रवर मुख्य। अट्ठहत्थी हत्थिप्पवरे। आठ दास दासमाहे मुख्य। एव दासीओ एव किंकरे एव कंचुइज्जे एव स्सिएणं गामेणं। दससहस्र कुले एक ग्रामहुवे तिणेकरी। अट्ठदासे दासप्पवरे। अट्ठसोवण्णिए ओलंवणदीवे वरिसहरे एव महत्तरए। इम दासी इम किंकर पूछी करे तेहप्रते इम पोलिया इम खोजा इम अंतःपुर कार्यचिन्तक। अट्ठ सुवण्ण रुप्पमए ओलंवणदीवे। आठ सोना रूपाना अट्ठरूप्पमए ओलंवणदीवे। आठ सोनाना सांकली बद्धदीवा आठ रूपाना सांकलीबद्ध दीवा।

॥ टीका ॥

वत ॥ एवचेव तिण्णिवित्ति ॥ सुवर्णरूप्य २ भेदात् ॥ पजरदीवेत्ति ॥ अत्रपटलादिपञ्जरयुक्तान् ॥ थासगाइति ॥ आदर्शकाकारान् ॥ तलियाउ

॥ मूल ॥

सोवण्णए उकंचणदीवे एवं चेव तिण्णिवि, अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे एवचेव तिण्णिवि, अट्ठ सोवण्णए थाले अट्ठ रुप्पमए थाले अट्ठ सोवण्णरुप्पमए थाले अट्ठ सोवण्णियाउ पत्तीउ ३ अट्ठ सोवण्णियाइं घोस याइ अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं ३ अट्ठ सोवण्णियाउ तलियाउ ३ अट्ठ सोवण्णियाउ कवचियाउ ३ अट्ठ सोवण्णमए अपवडए अट्ठ सोवण्णियाउ अववक्काउ ३ अट्ठ सोवण्णियाए पायपीढए ३ अट्ठ सोवण्णियाउ

अनुवाद

योपि' अष्टसौवर्णिकपञ्जरदीपानेवचैव त्रयोपि, अष्ट सौवर्णिकान्स्थालानष्टरूप्यमयान् स्थालान् अष्टस्वर्णरूप्यमयान् स्थालान् अष्टसौवर्णिका पात्री अष्टसौवर्णिकान् घोपस्थालान् अष्टसौवर्णिकान्मल्लकान् अष्टसौवर्णिकास्तलिका अष्टौसौवर्णिका कलाचिका अष्टसौवर्णमयानपवटका न् (तापिकाहस्तकान्) अष्टावपाक्यास्तापिका अष्टौपादपीठान् अष्टसौवर्णिकानिभिसिकानि आसनविशेषान् अष्टसौवर्णिकान् लोष्टकान् अ

॥ भाषा ॥

साकलाबद्ध दीवा। अट्ठ सोवणए उकचणदीवे। आठ सोनाना ऊचा दण्डगत दीवा। एवचेव तिणिवि। इम तीनेई कहवा। अट्ठ सोवणिए पजरदीव एवचेव तिणिवि। आठ सोनाना भोगडलसहित दीवा इमज तीनेभेदे कहवा। अट्ठ सोवणएथाले अट्ठरुप्पमए थाले। आठ सोनाना थाल आठ रूपाना थाल। अट्ठसोवणरुप्पमए थाले अट्ठ सोवणियाओ पत्तीओ ३। आठ सोनारूपाना थाल आठ सोनानी परात भाजनविशेष ए तीनेभेदे रूपो सोनो रूपे कहवो। अट्ठसोवणियाइं घोसयाइ। आठ सोनाना आरसीने आकारे ए पणि तीनेभेदे। अट्ठसोवणियाइं मल्लगाइ ३। आठ सोनाना मल्लकभाजन विशेष ए पणि तीन्भेदे। अट्ठसोवणियाओ तलियाओ ३ अट्ठसोवणियाओ कवचियाओ ३। आठ सोनानी पात्रीविशेष रकेबी ए पणि तीनेभेदे आठ सोनानी कडछी चम्चा लोकप्रसिद्ध ए त्रिणिभेदे अथवा कलाचिका। अट्ठसोवणमए अपवडए अट्ठसोवणियाओ अववक्काओ ३। आठ सोनाना रोटली पचावणना उपगरण तवा इत्यर्थ आठ सोनानी तापिकाविशेष तवी इत्यर्थ पणि तीनेभेदे। अट्ठसोवणियाए पायपीढए ३ अट्ठसोवणियाओ भिसिया

॥ टीका ॥ प्रवपाक्या स्तापिका इति सम्भाव्य ॥ अवयक्काउत्ति ॥ तापिकाहस्तकान् ॥ अवएडएत्ति ॥ कलाचिका ॥ कवचियाउत्ति ॥ पात्रीविशेषान् ॥ त्ति ॥ उन्नताद्याकारोपलक्षितानि च हसाद्याकारोपलक्षितानि हसासनादीनि उत्तरशय्या ॥ पडिसेज्जाउत्ति ॥ आसनविशेषान् ॥ त्रिसियाउत्ति ॥ ते ॥ पत्तवायगरएलहरियालहिंगुलयमणोसिलअंजणसमु एव अट्ठकुठसमुग्गे तदिद- यत्सूचित इत्यनेन जहा रायप्पसेणइज्जेइ ॥ शब्दतो ऽवगन्तव्यानि ॥

॥ मूल ॥ अट्ठ सोवण्णियाउ पडिसेज्जाउ ३ अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके ३ अट्ठ सोवण्णियाउ करोडियाउ ३ भिसियाउ ३ अट्ठ हंसासणाइं कोंचासणाइं एवं गरुडासणाइं उन्नतासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं अट्ठ पक्खासणाइं मकरासणाइं अट्ठ पउमासणाइं अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं अट्ठ तेल्लसमुग्गे जहा रायप्पसे

अनुवाद — दीर्घास प्रणतासनानि उन्नतासनानि एवगरुडासनानि क्रौञ्चासनानि अष्टौ हंसासनानि अष्टसौवर्णिका:प्रतिशय्या पल्यङ्कान् अष्टौसौवर्णिकान् या यथाराजप्रश्नीयोपाङ्गे अष्टौतैलसमुद्गकान् अष्टौदिक् सौवस्तिकान् अष्टपद्मासनानि अष्टमकरासनानि अष्टपक्षासनानि भद्रासनानि नानि

॥ भाषा ॥ अट्ठसोवणियाओ करोडियाओ २। आठ सोनाना आसनविशेष ए पणि त्रिणिभेद कहवा। अट्ठसोवणि ओ २। आठ सोनाना बाजोट ए पणि त्रिणिभेदे कहवा आठ सोनाना पल्यंक ए पणि तीनभेदे २। अट्ठसोवणिए पल्लंके २। आठ सोनानो करवडो लोकभाषा कलसीया लोटा अथवा कचोला २। अट्ठहंसासणाइं कोंचासणाइं एवगरुडासणाइं उन्नतासणाइं पण याओ पडिसेज्जाओ २। आठ सोनानी प्रतिशय्या ढोलणीप्रमुख ए पणि तीनभेदे। अट्ठहंसासणाइं आठ हंसादिक आकारे आसनविशेष तेहप्रते क्रौंचनेआकारे आसनविशेष एम गरुडासन प्रते उन्नतासन प्रते पतकासन प्रते यासणाइं दीहासणाइं। आठ हंसादिक आकारे आसनविशेष तेहप्रते भद्रासनप्रते आठ पक्ष सन प्रते मकरासन प्र दीर्घासन प्रत। भद्दासणाइं अट्ठपक्खासणाइं मकरासणाइं अट्ठपउमासणाइं अट्ठदिसासोवत्थियासणाइं। आठ तेलना डाबडा तेहप्रते इम जिन राजप्रश्नीउपागमा ते आठ पद्मासन प्रत आठ दिशासोवस्तिकासन प्रतें। अट्ठ तेल्लसमुग्गे जहा रायप्पसेणइज्जा। यावत् आठ सरिसवना डाबडा प्रतें आठ कूबडीदासी एजिम ते कह्यु तिम इहा पणि कहवा। जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे अट्ठखुज्जाओ जहा उववाइए।

णेत्ति जहा उववाइए इत्यनेन यत्सूचितं तदिदं च देवानन्दाव्यतिकरे ऽभिहितमिति तत एव दृश्यं ॥ करोडियाधारीउत्ति ॥ स्थगिकाधारिणीः । अट्ठ अंगम द्दियाउ अट्ठउम्मद्दियाउत्ति ॥ इहाङ्गमर्दिकानामुन्मर्दिकानां चाल्पबहुमर्दनकृतो विशेषः ॥ पसाहियाउत्ति ॥ मण्डनकारिणीः ॥ वण्णगपेसीउ त्ति ॥ चन्दनपेषणकारिका हरितालादिपेषिकावा ॥ चुण्णगपेसीउत्ति ॥ इह चूर्णः ताम्बूलचूर्णो गन्धद्रव्यचूर्णोवा ॥ दवकारीउत्ति ॥ परिहासकारि

णाउ जाव अट्ठ सरिसवसमुग्गे अट्ठ खुज्जाउ जहा उववाइए जाव अट्ठ पारिसीउ अट्ठ छत्ते अट्ठ छत्त धारीउ चेडीउ अट्ठ चामराउ अट्ठ चामरधारीउ चेडीउ अट्ठ तालियंटे अट्ठ तालियंटधारीउ चेडीउ अट्ठ करोडियधारीउ चेडीउ अट्ठ खीरधाईउ जाव अट्ठ अंकधाईउ अट्ठ अंगमद्दियाउ अट्ठ उम्मद्दियाउ अट्ठ ण्हावियाउ अट्ठ पसाहियाउ अट्ठ वण्णगपेसीउ अट्ठ चुण्णगपेसीउ अट्ठ कीडाकारीउ अट्ठ दवकारीउ अट्ठ

वदष्टौ सर्षपसमुद्गकान् अष्टौ कुब्जा यथौपपातिके यावदष्टौ पारसीका अष्टौ छत्रान् अष्टौ छत्रधारिणी चेटिका अष्टौ क्षीरधात्री यावदष्टावङ्क धात्री अष्टावङ्गमर्दिका अष्टावुन्मर्दिका अष्टौ स्नापिका अष्टौ प्रसाधिका अष्टचन्दनपेषिका अष्टौ चूर्णपेषिका अष्टौ क्रीडाकारिणी अष्टौ द्रव

उववाईउपांगनेविषे कह्या तिम कहवो। जाव अट्ठपारिसीओ । यावत् आठ पारसीदासी । अट्ठछत्ते अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ । आठ छत्र आठ छत्रनो धरण हारी दासीओ । अट्ठ चामराओ अट्ठचामरधारीओ। आठ चामर आठ चामरनो धरणहारी दासीओ । अट्ठ तालियंटे अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ। आ ठ वीञ्जणा आठ वीञ्जणानो धरणहारी दासीओ । अट्ठ करोडियधारीओ चेडीओ अट्ठखीरधाईओ । आठ ताम्बूलधारिणी दासीओ आठ खीरधाई दूधपावे तेहप्रते। जाव अट्ठ अंकधाईओ अट्ठ अंगमद्दियाओ । यावत् आठ खोले रमावे ते धायप्रते आठ अंगमर्दिका अल्पमर्दनकारिका। अट्ठउम्मद्दिया अट्ठण्हावियाओ अट्ठपसाहियाओ । आठ उन्मर्दिका घणू मर्दन करावे आठ स्नाननी करावणहारी आठ मण्डननी करावणहारी। अट्ठ वण्णपेसीओ अट्ठचुण्णपेसीओ। आठ चन्दनादिकनो पीसणहारी आठ गन्ध द्रव्यचूर्णनो पीसणहारी। अट्ठकीडाकारीओ अट्ठ दवकारीओ अट्ठ उवत्थाणियाओ अट्ठ

॥ टीका ॥ ॥ नाडइज्जाउत्ति ॥ नाटकसम्बन्धिनी ॥ कुटुंबिणीउत्ति ॥ पदातिरूपा ॥ महाण सी ॥ उवत्थाणियाउत्ति ॥ या आस्थानगताना समीपे वर्त्तन्ते ॥ नाडइज्जाउत्ति ॥ नाटकसम्बन्धिनी ॥ कुटुंबिणीउत्ति ॥ पदातिरूपा ॥ महाण सिणीउत्ति ॥ रसवतीकारिका शेषपदानि रूढिगम्यानि ॥ विमलस्सत्ति ॥ अस्या मवसर्प्पिण्यां त्रयोदशजिनेंद्रस्य ॥ पउप्पएत्ति ॥ प्रपौत्रिक प्र

॥ मूल ॥ उवत्थाणियाउ अठ नाडइज्जाउ अठ कोडुंबिणीउ अठ महाणिसिणीउ अठ भंडागारिणीउ अठ अज्झाधा रिणीउ अठ पुप्फधारिणीउ अठ पाणधारिणीउ अठ बलिकारियाउ अठ सेज्जाकारिउ अठ अभ्भितरि याउ पडिहारीउ अठ वाहिरियाउ पडिहारीउ अठ मालाकारीउ अठ पेसणकारीउ अन्नेच सुवहुं हिरन्नं वा सुवन्नंवा कंसवा दूसंवा विउलधणकणगजाव संतसावदेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाउ कुलवंसाउ प

॥ अनुवाद ॥ अष्टौ उपस्थानिका अष्टौ नाटकसम्बन्धिनी अष्टौ कौटुम्बिनी अष्टौ महानसनिका (रसवतीकारिका) अष्टौ भाण्डागारिका अष्टौ वा कारिणी अष्टौ पुष्पधारिणी अष्टौ पानीयधारिका अष्ट बलिकर्मकारिका अष्ट शय्याकारिका अष्टाभ्यन्तरप्रतिचारिका अष्टौ बाह्यप्रतिचारि का अष्टौ मालाकारिणी अष्ट प्रेषणकारिणी अन्यच्च बहु हिरण्य सुवर्ण कांस्य दूष्य वा विपुलधनकनक यावत्सत स्वापतेय अलाहि (अव्यय

॥ भाषा ॥ अठ उपस्थानिका । अठ नाटक सम्बन्धिनी । अठ कौडुंबिणीओ अठ महाणिसिणीओ अठ भंडागारिणीओ अठ अठभाधारिणीओ । आठ सेवकरूप आज्ञाकारिणी आठ रसोईनी करणहारी आठ भण्डारनी रखवाली आ ठ बासणनी धरणहारी । अठ पुप्फाधारिणीओ अठ पाणधारिणीओ अठ बलिकारियाओ अठ सेज्जाकारिओ । आठ फूलघरनी धरणहारी आठ पाणीघरनी र खवाली आठ बलनी करणहारी आठ शय्यानी कारिका । अठ अभितरियाओ पडिहारीओ अठ बाहिरियाओ पडिहारीओ अठ मालाकारीओ अठ पेसण कारीओ । आठ आभ्यतर प्रतिचारिका तेहमते आठ बाहिरली प्रतिचारिका आठ मालानी करणहारी आठ प्रेषण करणहारी । अन्येच सुवहु हिरण्णवा सुव न्नवा कंसवा दूसवा । अनेरो पणि घणु रूपो सोनो कांस्य दूष्यवस्त्र । विउलधणकणग जाव सतसावदेज्ज अलाहि । विस्तीर्ण धन कनक यावत् विद्यमान खा

॥ टीका ॥ शिष्य अथवा प्रपौत्रिके शिष्यसंताने ॥ जहा केसिसामिस्सत्ति ॥ यथा केसिनाम्न आचार्यस्य राजप्रश्नकृताधीतस्ववर्णक उक्त स्तथास्य वाच्य स

॥ सूत्र ॥ कामं दाउ पकामं परिभोत्तु पकाम परिभाएउ तएणं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्ण कोडिं दलयइ एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ । एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ । एवं तचेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ । अन्नंच सुबहुं हिरण्णंवा सुवण्णंवा जाव परिभाएउं । तएणं से महब्बले कु

॥ अनुवाद ॥ मलमर्थे) याव दासप्तमात् कुलवंश्यात् प्रकाम दातु प्रकाम परिभोक्तु प्रकाम परिभाजयितु । तदानीं स महाबल कुमार एकैकायै भार्यायै एकैकां हिरण्यकोटिं ददाति एकैकां सुवर्णकोटिं ददाति एकैकं मुकुटं मुकुटप्रवरं ददाति एवतचैव सर्वं यावदेकैका प्रेक्षणकारिका ददाति अन्यच्च सुबहु हिरण्यंवा सुवर्णंवा यावत् परिभाजयितु ततः स महाबल कुमार उपरि प्रासादवरगतो यथाजमालि विहरते तथैव' तस्मि

॥ भाषा ॥ पतर ते धन आपे । जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ पकाम परिभोत्तु पकाम परिभाएउं । यावत् ज्यालगे सातमा कुलवंश सुधी एतलालगे घणू अतिशय देतायका अतिशय भोगवतायका खुटेनही एतलो आपे । तएणं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए । तिवारे ते महाबल कुमार एक एक भार्याने । एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ । एक एक हिरण्य रूपाना कोडीप्रते आपे । एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ । एक एक सोनानी कोडी आपे । एगमेग मउडं मउडप्पवरं दलयइ । एक एक मउड मउडप्रवर आपे । एवं तचेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ । इम तेहीज सर्वेवाना यावत् एकएक पेचणनी करणहारी प्रते आपे । अन्नंच सुबहु हिरण्णंवा सुवण्णंवा जाव परिभाएउं । अनेरो पणि घणू रूपो तथा सोनो यावत् भोगववाने वांटी आपे । तएणं से महब्बले कुमारे उप्पिंपासायवरगए । तिवारे ते महाबलकुमार ऊपर प्रासादावतंसकनेविषे बेठोथको । जहा जमाली जाव विहरइ । जिम जमालीना अधिकार कह्या तिम इहां पणि कहवो यावत् विचरे । तेणंकालेणं तेणंसमएणं । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । विमलस्सअरहओपउप्पए धम्मघोसे णामअणगारे जाइसंपण्णे वण्णओ । आहीज अवसर्पिणीनेविषे विमलनामा तेरमा तीर्थंकरनो पउपौत्रा अथवा शिष्य संतान धर्मघोषनामे अ

मारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे णाम अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसि सामिस्स जाव पंचहि अणगारसएहिं सद्धिं संप रिवुडे। पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणाउरे णयरे जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हइ, उगिण्हइत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं

न्काले तस्मिन्समये विमलस्यार्हत प्रपौत्रिक प्रशिष्यो धर्मघोषनामानगारो जातिसम्पन्न वर्णको यथा केसिनाम्न आचार्यस्य यावत् पञ्चभि रनगारशतैस्सार्द्ध सम्परिवृत । पूर्वानुपूर्व्या विहरन् ग्रामानुग्राम व्यतिव्रजन् यत्रैव हस्तिनागपुरनगर यत्रैव सहस्राम्रवनमुद्यान तत्रैवोपाग च्छति, उपागत्य यथाप्रतिरूपमवग्रह मुद्गृह्णाति, उद्गृह्य संयमेनतपसा ऽऽत्मान भावयन् यावद्विहरति, तदानी हस्तिनागपुरे नगरे शृङ्गाट

णगार साधु जातिवन्त इत्यादि वर्णक कहवो । जहा केसिसामिस्स। जिम केशीनामा अणगारनो वर्णक राजप्रश्नीउपांग कह्यो तिम इहा पणि कह वो। जाव पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडे। यावत् पञ्चसय अणगार साधुसघाते परिवरयाथका। पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमा णे। पूर्वानुपूर्वे चालताथका ग्रामानुग्रामे उल्लघताथका। जेणेव हत्थिणाउरेणयरे जेणेवसहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां हस्तिनापु र नगरे जिहा सहस्राम्र नाम वन उद्यान तिहा आवे तिहा आवीने। अहापडिरूव उग्गह उगिण्हइ २ त्ता। यथा प्रतिरूप अभिग्रहप्रते ग्रहे ग्रहीने। संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे जाव विहरइ। संयमेकरी आवताकर्म वारीये तपेकरी पूर्वनाकर्म छेदीये इम आत्माने भावताथका विचरे। तएण हत्थिणाउरेणयरे सिघाडगतिय जाव परिसापज्जुवासइ। तिवारे हस्तिनापुर नगरनेविषे शृङ्गाटक त्रिक इत्यादि यावत् पर्षदा आवी सेवाकरे। तए ण तस्समहव्वलस्स कुमारस्स। तिवारे ते महाबलकुमारने। तमहया जणसद्दवा जणवूहवा एव जहेव जमाली तहेव चिंता। तेह घणा मनुष्यनो श व्द सांभलो अथवा जनसमूह देखी इम जिम जमालीने अधिकारे कह्यु तिमज जाणीने। तहेव कंचुइज्जपुरिसे सद्दावेइ। तिमज पासवान पोलिया

॥ मूल ॥

आवेमाणे जाव विहरइ । तएणं हत्थिणापुरे णयरे सिंघाडगतिय जाव परिसा पज्जुवासइ । तएणं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महया जणसद्दंवा जणवूहवा एव जहेव जमाली तहेव चिंता तहेव कंचुइज्जपुरिसे सद्दावेइ । कचुइज्जपुरिसो तहेव अक्खाइ, णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव णिग्गच्छइ । एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे णामं अणगारे सेसं तचेव जाव सोवि तहेव, रहवरेण णिग्गच्छइ । धम्मकहा जहा केसिसामिस्स सोवि तहेव अम्मा

अनुवाद

कत्रिक यावत् पर्षत् पर्युपास्ते तत स्तस्यमहाबलकुमारस्य तन्महता जनशब्द वा जनव्यूहवा एवयथैवजमालि तथैवविदित्वा तथैवकञ्चुकीय पुरुष शब्दयत कञ्चुकीयपुरुष स्तथैवाख्याति नवर धर्मघोषस्या नगारस्यागमनगृहीतविनिश्चय करपलप्रभृतियावन्निर्गच्छति एवखलु देवा नुप्रिया । विमलस्यार्हत. प्रपौत्रक (प्रशिष्यांधर्मघोषनामानगार) शेष तचैव यावत्सोपि तथैव रथवरेण निर्गच्छति धर्मकथा यथा के शीकुमारस्य तथैवा स्वापितरौ आपृच्छति नवर धर्मघोषस्यानगारस्यान्तिके मुण्डो भूत्वा आगारादनगारता प्रव्राजित तथैवोक्त प्रत्युक्तिका

॥ भाषा ॥

प्रतें तेडावे । कचुइज्ज पुरिसो तहेव अक्खाइ । ते पुरुष पणि तिमहीज कहे । णवरंधम्मघोसस्स अणगारस्स । एतलोविशेष धर्मघोष साधुनो । आगमथ गहिय विणिच्छए करयल जाव णिग्गच्छइ । आगमनरूप अर्थनो निश्चयकीधो अर्थ जिणे हाथजोडी यावत् मनुष्य वादवा नीकलेछे । एवखलु देवाणुप्पि या । इम निश्चे अहोदेवानुप्रिया । विमलस्सअरहओ पउप्पए धम्मघोसेणाम अणगारे सेसतचेव जाव सोवितहेव । विमलनामा तेरमा तीर्थंकरनो पड पौत्रो धर्मघोषनामा साधु पञ्चसयसाधुसघाते इहां आव्याछे इत्यादि शेष तिमहीज यावत् ते महाबल पणि तिमहीज । रहवरेण णिग्गच्छइ २ । रथ प्रधाने बेसी नीकले साधु वादी बेठे । धम्मकहा जहा केसिसामिस्स सोवितहेव । धर्मकथा जिम केशीकुमार कही तिम इहा पणि जाणवी महाबल पणि तिमहीज । अम्मापियर आपुच्छइ । माता पिता प्रतें पूछे । णवरधम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए मुण्डेभवित्ता । एतलोविशेष धर्मघोष साधुने स

॥ टीका ॥

च ॥ कुलसपणे बलसपणे रूवसपणे विणियसपणे ॥ इत्यादिरिति ॥ वुत्तपडिवुत्तयत्ति ॥ उक्तप्रत्युक्तिका भणितानि ॥ मातु प्रतिभणितानिच न
ायलस्ये त्यर्थ ॥ नवर मित्यादि जमालिचरितेहि विपुलकुलबालिका इत्यधीत मिहतु विपुलराजकुलबालिका इत्येतदध्येतव्य, कलाइत्यनेनच इद
मूचित-कलाकुशलसव्वकाललालियसुहोइयाउत्ति ॥ सिवभद्दस्सत्ति ॥ एकादशशतनवमोद्देशकाभिहितस्य शिवराजपिपुत्रस्य ॥ जहाश्रम्मन्नोत्ति ॥

॥ मूल ॥

पियर आपुच्छइ। णवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइत्तए, तहेव वुत्तपडिवुत्तयाउ णवरं इमाउय ते जाया! विपुलराजकुलबालियाउ कला सेसं तंचेव जाव ताहे। अकामाइ चेव महब्बलं कुमारं एवं वयासी–तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासेमि। तएण से महब्बले कुमारे अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। तएण से बले राया कोडुंबिय

अनुवाद

नवरमिहतु विपुलराजकुलबालिका (इत्येतदध्येतव्य) कलाप्रभृति शेष तचैव यावत्तस्मति अकामानिचैव महाबल कुमार मेवमवादीत् तस्मा
दिच्छामि तवजातएकदिवसमपि राज्यश्रिय पश्यामि तदानी स महाबलकुमारो मातृपित्रो वंचन मनुवर्त्तमानो (अनुल्लंघयन्) तूष्णीक सन्ति

॥ भाषा ॥

मांपे समुदाइने । आगाराथी अणगारिय पव्वइत्तए । गृहवास छाडी साधुपणो आदरवो इमकह्यो । तहेववुत्तपडिवुत्तयाओ । तिमहीज उत्तर
प्रत्युत्तर माता अने महाबलना जाणवा । णवर इमाओय ते जाया विपुलराजकुलबालियाओ कला सेत तचेव । एतलोविशेष जमाली चरित्रनेविषे वि
पुला कुलबालिका इसा कह्यु हुं तो विपुल राजकुल बालिका इसा कहवो तेह कला कुशलछे शेष तिमहीज कहवो । जाव ताहे अकामाइ चेव ।
यावत तहने कहाने आल्यवा थाका इत्यर्थ । महब्बलकुमार एवयासी । तिवारे महाबलकुमार प्रते इमकहे । तइच्छामो ते जाया । तेह भणी वांछू
छु अमे तुमने हे जाया । एगदिवसमवि रज्जसिरिपासेमि । एकदिन पणि राज्यलक्ष्मी प्रते सेवतो देखा । तएण स महब्बले कुमारे । तिवारे तेह महाब
लकुमार । अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे । माता पितानो वचन उलघी न सकतो थको । तुसिणीए संचिट्ठइ तएण से बलेराया । सेवकनो रह्या तिवारे

यथौपपातिके अभ्यधीयत तथा यमिहवाच्य: तत्रव यावत्करणा देतत् सूत्र मेव दृश्यं—गहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहुइं जोयणाइं बहुइं जोयण सयाइं बहुइं जोयणसहस्साइं बहुइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदे कप्पे वीईवइत्ता त्ति ॥ इहच किल च

पुरिसे सद्दावेइ । एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव अभिसिंचइ, अभिसिंचइत्ता करयल परिग्गहियं महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी—भण जाया! किं देमो किं पय च्छामो! सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव तएणं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए सामाइयमाइयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जइत्ता बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं

इति तदानीं स बलोराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति। एवयथा शिवभद्रस्य तथैवराज्याभिषेको भणितव्यो यावदभिषिञ्चति अभिषिच्य करतलप्रभृति महाबलं कुमारं जयेन विजयेन वर्द्धापयति वर्द्धापयित्वैवमवादीत् कथयदेजात किं वयदद्म किम्प्रतीच्छाम शेष यथा जमालेः त थैव यावत् तदानीं स महाबलोनगार धर्मघोषस्यानगारस्यान्तिके सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीते अधीत्य बहुभि श्चतुर्थषष्ठप्रभृति

ते बलराजा । कौटुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता । सेवक पुरुष तेडावे तेडावीने । एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो । इम जिम शिवरा जायें शिवभद्रकुमारने राजनो अभिषेककीधो तिमज इहा पणि राज्याभिषेक जाणवो । जाव अभिसिंचइ २ त्ता । यावत् राज्याभिषेक करे करीने । करयल परिग्गहियं महब्बलं कुमारं । हाथजोडीने महाबलकुमार प्रते । जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवंवयासी भण जाया । जये विजये वधावे जय वि जये वधावीने इम कहे कहो हेपुत्र । किंदेमो किं पयच्छामो सेसं जहा जमालिस्स तहेव । तुझप्रते स्यूं प्रतीछा थाकतो जिम जमालीने कह्यु तिमहीज कहवो । जाव तएणं से महब्बले अणगारे । यावत् तिवारे ते महाबल साधु । धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतिए । धर्मघोष साधुने समीपे । सामाइयमा इयाइं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ २ त्ता । सामायिक आदिदेई चउदे पूर्वप्रते भणे भणीने । बहूहिं चउत्थ जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणंभावेमाणे ।

॥ टीका ॥

तुर्दश पूर्वधरस्य जघन्यतोपि लान्तके उपपात उच्यते ॥ जावतिलतगाउ चोद्दसपुव्वीजहण्णउववाउत्ति ॥ यथना देतस्यच चतुर्दशपूर्वधरस्यावि मह्न लोके उपपात उक्त स्तत्केनापि मनाग्विस्मरणादिना प्रकारेण चतुर्दश पूर्वाणा मुपरि पूर्णत्वादिति सम्भावयन्तीति ॥ सणीपुव्वजाईसरणेत्ति ॥

॥ मूल ॥

अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणइत्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठि भत्ताइं अणसणाए आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढ चंदिमसूरिय जहा अम्मडो जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णे, तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं महब्बलस्सवि देवस्स दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, सेणं तुम्मं सुदंसणा ! बंभलोए

अनुवाद

नि र्यविद्धिचित्रे स्तप कर्मभिरात्मान भावयन् बहुप्रतिपूर्णानि द्वादशवर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति पालयित्वा मासिक्या संलेखनया षष्ठि भक्तान्यनशनानि छेदयित्वा आलोचित प्रतिक्रान्त समाधिप्राप्त कालमासे काल कृत्वा ऊर्ध्व चंद्रमा सूर्य यथाऽम्बडो यावद्ब्रह्मलोकक ल्पे देवतयोत्पन्न तत्रघास्ति केषाचिद्देवाना दशसागरोपमास्थिति प्रज्ञप्ता तत्र महाबलस्यापिदेवस्य दशसागरोपमास्थिति प्रज्ञप्ता तस्मा त्त्व

॥ भाषा ॥

घणा चउथ छट्ठ यावत् अनेकप्रकारना तपकर्मे ते सघाते आत्माने भावतोथको । बहुपडिपुणाइ दुवालसवासाइ । घणां प्रतिपूर्ण बारे वरसलगे । सा मण्य परियाग पाउणइ २ त्ता । अणगार पर्यायपर्ते पाले पालीने । मासियाए संलेहणाए सट्ठिभत्ताइ अणसणाए । मासनी संलेखणायें साठ भात अनशने करी छेदे व्रतना अतिचार सर्व । आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासेकालकिच्चा । आलोइ पडिक्कमी समाधि पाम्यो काल समय नेविषे कालकरीने । उड्ढ चंदिम सूरिय जहा अम्मडो । ऊंचो चन्द्रमा सूर्य इत्यादि जिम अम्बडनो अधिकार उवाईमाहे कह्यो तिम कहवो । जाव बम्भलोएकप्पे देवत्ताए उववण्णे । यावत् ब्रह्मलोकनामे देवलोकनेविषे देवपणे ऊपनो कोईइहा पूछस्ये चउद पूर्वधरनो उपपात जघन्यथी पणि इहाज छठा देवलोकनेविषे कह्योछे, तो एह पचमे देवलोकें किम उपनो तिहा उत्तर एहने मरणकाले काईएक पूर्व विस्मरण थया अथवा चउदे पूर्व थकी एक

॥ मूल ॥

कप्पे दससागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए। तऍचेव देवलोगाओ आउक्खएणं आणंतर चयं चइत्ता इहेव वाणियगामे णयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए। तएणं तुमं सुदंसणा! उम्मुक्क बालभावेण विण्णायपरिणयमेत्तेण जोव्वणगमणुप्पत्तेण तहा रूवाण थेराण अंतियं केवलिपन्नत्ते धम्मे निसंते, सेविय से धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं सुट्ठुणं तुमं सुदंसणा! इदाणि विकरेति, सेतं

॥ अनुवाद ॥

सुदर्शन ब्रह्मलोके कल्पे दशसागरोपमाणि दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहृत्य तस्माच्चैव देवलोका दायु क्षयेनानन्तर देहत्यक्त्वा इहैव वाणिज्यग्रामे नगरे श्रेष्ठिकुले पुत्रतया प्रत्यायात तदानीं त्वं हेसुदर्शन उन्मुक्तबालभावेन विज्ञातपरिणतमात्रेण यौवनकमनुप्राप्तेन तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके (त्वया) धर्मोऽश्रावि सोपिच धर्मो इंप्सित प्रतीप्सितो ऽभिरुचित तस्मात्सुष्टु (शोभन) सुदर्शन इदानीम

॥ भाषा ॥

ऊपणा हता तेमांटे ब्रह्मदेवलोके ऊपनो। तत्थण अत्थेगइयाण देवाण दससागरोवमाइं ठिई प०। तिहा ण वाक्यालंकारे, केतलाएक देवानी। दशसागरोपमनी स्थिति कही। तत्थणमहव्वलस्सवि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई प०। तिहा ण वाक्यालंकारे, महाबलनो पणि देवनी दश सागरोपमनी स्थितिकही। सेण तुमं सुदंसणा बंभलोए कप्पे दससागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए। तेह ण वाक्यालंकारे, तुम्हे हेसुदर्शन ब्रह्मनामा देवलोकनेविषे दश सागरोपमनी स्थितिये देवसबन्धी भोग भोगविवा योग्य भोगवतो थको विचरीने। तओचेव देवलोगाओ आउक्खएण। ते होज निश्चये देवलोकथकी आउखो क्षयथका। अणंतर चयंचइत्ता। अन्तररहित शरीरप्रते छांडी। इहेव वाणियगामे णयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए। इहाज वाणिजगाम नगरनेविषे श्रेष्टि कुलनेविषे पुत्रपणे ऊपनो। तएण तुमं सुदंसणा उमुक्कबालभावेण। तिवारे तुम्हे हेसुदर्शन। मूक्यो बालभाव तिणेकरी। विणाय परिणयमेत्तेण। विज्ञात ७२ कलानविषे निपुण। जोव्वणगमणुप्पत्तेण। यौवन पाम्याथका तहा रूवाण थेराण अंतिय। तथा रूप जे श्रुतवृद्ध साधुने समीपे। केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते। केवलीप्रणीत धर्म आत्माऽप साभल्यो। सेवियसेधम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभि रुइए।

॥ टीका ॥ ॥ पूर्वकालापेक्षया द्विगुणा ॥ दुगुणाणियसड्ढसंवेगेति ॥ अधिगच्छतीत्यर्थः ॥ अहिसमेइत्ति ॥ सञ्ज्ञिरूपाया पूर्वा जाति स्तस्या स्मरण य त्त तथा ॥

॥ मूल ॥ खएइवा अवचएइवा तएण तस्स सुदंसणस्स सेठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमठं सोच्चा णिसम्म सुभेणं अज्झवसाणेण सुभेणं परिणामेणं लेस्साविसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्नी पुव्वजाईसरणे समुप्पण्णे । एयमठं सम्मं अभिसमेति । तएण ते सुदंसणे सेठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे ... एतेसिं पलिओवमसागरोवमाइं सुदंसणा एवं वुच्चइ अत्थिण एतेसिं पलिओवमसागरोवमाइं

॥ अनुवाद ॥ पिकरोति (धर्ममितिशेषः) तत्तेनार्थेन सुदर्शन एव मुच्यते अस्ति एतेषा पल्योपमसागरोपमाणा क्षय इति अपचयइतिवा तदानी तस्यसुदर्शनस्य श्रेष्ठिन श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके एनमर्थ श्रुत्वा निशम्य शुभेना ध्यवसायेन शुभेन परिणामेन लेश्याविशुध्यमानाभिः तदावरणीयाना कर्मणा क्षयोपशमेन ईहा पोहमार्गण गवेषण क्रियमाणस्य सञ्ज्ञी पूर्वा जातिस्तस्या स्मरण समुत्पन्न एतदर्थं सम्यगभिजानाति

॥ भाषा ॥ पणि ते धर्मप्रते करे ते पणि धर्म इच्छा विशेषे वाध्यो घणू रूच्यो । तसुठ्ठण तुम्ह सुदसणा इदाणिवि करेइ । तिहभणी भलो तुम्हे सुदर्शन इदानी हवडा । एवं वुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेसुदर्शन । इम कहिये । अत्थिण एतेसि पलिओवमसागरोवमाइ । छै ण वाकालंकारे, एह पल्योपम सागरोपमनो । खएइवा अवचएइवा । क्षय सर्वथा विनाश देशथकी विनाश । तएणतस्ससुदसणस्स सेठिस्स । तिवारे तेह सुदर्शन श्रेष्ठिने श्रावकने । समणस्सभगवओ महावीरस्स अंतिए । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे । एयमठंसोच्चाणिसम्म सुभेण अज्झवसाणेण सुभेण परिणामेणं । एह अर्थप्रते सांभली हृदयधारी भले अध्यवसायें करी उत्तमपरिणामें करी । लेस्साविसुज्झमाणीहि । लेश्या विशुद्धमान तिणेकरी । तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण । तेह आवरणरूप कर्मने क्षयोपशमे करी । ईहापोहमग्गणगवेसण करेमाणस्स । ईहा विचारणा अपोह मार्गणा गवेषणा करता थका सण्णी पुव्वजाईसरणे समुप्पणे । सञ्ज्ञीरूप जिका पूर्वजाति तेहनो स्मरण ऊपनो । एयमठं सम्मं अभिसमेइ । एह अर्थं सम्यक्प्रकारे सर्व सम्बन्ध जा

वानीतो श्रद्धावेगो यस्य स तथा तत्र श्रद्धा तत्त्वश्रद्धानं तदनुष्ठानचिकीर्षा वा संवेगो भवभय मोक्षाभिलाषो वेति ॥ उसभदत्तस्सेत्ति ॥ नवमशते

वया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणियसड्ढसंवेगे आणंदसंपुण्णणयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आ २ वदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी—एवमेतं भंते! जाव सेजहेयं तुज्झे वदह त्तिकट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ। सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ। बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ सेसं तंचेव सेवं भंते भंतेत्ति ॥ महब्बलो

अधिगच्छतीत्यर्थः तदानीं स सुदर्शन श्रेष्ठी श्रमणेन भगवता महावीरेण सम्भावित पूर्वभव. द्विगुणानीत श्रद्धासंवेग आनन्दसम्पूर्णनयन श्रमण भगवन्त महावीरं त्रि कृत्वा आदक्षिण प्रदक्षिण वन्दते नमस्कुरुते वन्दित्वा नमस्कृत्वा एवमवादीत् एवमेतद्भदन्त यावत्तद्यथा यूय वदथ इतिकृत्वा उत्तरपौरस्त्या दिग्भाग मपक्रामति शेष यथा ऋषभदत्तस्य यावत्सर्व दुःख प्रक्षीण नवर चतुर्दशपूर्वाण्यधीत्य बहुप्रतिपूर्णानि

वें। तएणं से सुदंसणसेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे। तिवारे ते सुदर्शन श्रेष्ठि श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीयें संभार्यो पूर्वभव जिणे तिणें करी। दुगुणाणियसड्ढसंवेगे। पूर्वकालीन अपेक्षायें बेगुणी आणी श्रद्धा अने संवेग जेहने ते। आणंदसंपुण्णणयणे। आनन्देकरी पूर्ण नेत्र छे जेहना ते। समणंभगवंमहावीरं तिक्खुत्तो आ २ वदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें तीनवार जीमणापासा थकी प्रदक्षिणा दे वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने इमकहे। एवमेतंभंते। इमहीज एह हे भगवन्! जाव सेजहेयं तुम्भे वयह त्ति कट्टु। यावत् तेजिम एह तुम्हे कहोछो इम करीने। उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमइ। उत्तर पूर्व विचलो दिशिभाग एतले ईशानकूणिनेविषे जाय। सेसं जहाउसभदत्तस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। बाकतो सर्व जिम ऋषभदत्तनो अधिकार कह्यो तिम कहवो यावत् सर्वदुःख प्रक्षीणथया जेहना। णवरं चउद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ। एतलोविशेष चउदे पूर्वप्रतें भण्या। बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं। घणू प्रतिपूर्ण बारे वरसलगे। सामण्णपरियागं पाउ

॥ टीका ॥

॥ एकादशोद्देशकेकाल उक्तो द्वादशेपि सएव उच्य
त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशके अभिहितस्येति ॥ एकादशशतस्य एकादश ॥११॥ ११

॥ मूल ॥

एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो ११ ॥ ११ ॥ तेण कालेणं
सम्मत्तो ॥ एगारस सयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो तेण समएणं आलभियाए णयरीए
तेण समएण आलभियाणाम णयरी होत्था वण्णओ संखवणे चेइए वण्णओ तत्थण आलभियाए णयरीए
बहवे इसिभद्दपुत्तप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढे जाव अपरिभूए अभिगयजीवाजीवा जाव
विहरंति। तएण तेसिं समणोवासयाण अन्नया कयायि एगयओ समुवागयाणं सहियाण समुविट्ठाणं सन्नि

अनुवाद

॥ तस्मिन्काले
द्वादशवर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति शेष तथैव तदेव भदन्त । २ इति ॥ एकादशशते एकादश ॥ ११
तस्मिन्समय आलभिकानाम्नी नगर्य भवत् वर्णक (वाच्य) शखवनचैत्य वर्णक तत्रा लभिकाया नगर्या बहवो ऋषिभद्रपुत्रप्रमुखा श्रमणोपा
सका परिवसन्ति ऋद्धिमन्तो यावदपरिभूता अभिगतजीवाजीवा यावद्विहरन्ति । तदानी तेषा श्रमणोपासकाना मन्यदाकदाचि देकत्र समा

॥ भाषा ॥

गइ ससतवत । श्रामण्यपर्याय एतले टोत्तापाले शेष सर्व तिमहीज । सेव भंते भंतेत्ति । कहति हेभगवन् । तुम्ह कह्यु ते सर्व सत्यछे। महब्बलो सम्मत्तो एत।
ले महाबलनो अधिकार पूरोथयो । एगारससयस्सय एगारसमो उद्देसो सम्मत्तो । ए इग्यारमा शतकनो इग्यारमोउद्देशो पूरोथयो ११ ॥ ११ ॥
तालभि
पाछिलउद्देशे कालकह्यो इहा भगान्तर कहेछे—तेण कालेण तेण समएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। आलभियाणामणयरी होत्था वण्णओ। तत्थण आलभियाए णयरीए। ति
का इसिनामे नगरी हुई तेहनो वर्णक चम्पानीपरे कहवो । सखवणेचेइए वण्णओ । शखवननामा चैत्य वर्णक योग्यछे। तत्थण आलभियाए णयरीए। ति
हा आलभिकानाम नगरीनेविषे । बहवेइसिभद्दपुत्तप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसति । घणा ऋषिभद्रपुत्र प्रमुख श्रमणोपासक श्रावक वसछे। ते
जाव अपरिभूए अभिगयजीवाजीवा जाव विहरति । ऋद्धिवन्त यावत् कोई पराभवी सकेनहीं जाणछे जीव अजीवना स्वरूप जेणे यावत् विचरेछे। त
एणतेसि समणोवासयाण अन्नयाकयाइ । तिवारे तेह श्रमणोपासकोने एकदा किवारेके प्रस्तावे। एगयओ समुवागयाण सहियाण समुविट्ठाण सन्निस

न्तरेऽभिहित इत्येव सम्बन्धस्यास्येद मादिसूत्रम्-तेणमित्यादि ॥ प्रमादिति ॥ नकत्र ॥ समवायमयाणति ॥ समायातानां ॥ सहितानामिति ॥ मिलितानां

सखाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, देवलोएसुणं अज्जो! देवाणं केवइयं कालं ठिई पणत्ता ? तएणं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवठिईगहियट्ठे ते समणोवासए एववयासी—देवलोएसुणं अज्जो ! देवाणं जहणेणं दसवाससहस्साइं ठिई पणत्ता, तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमठिई पणत्ता, तेण

यातानां मिलितानां आसनग्रहणेन सन्निहिततया निषण्णानां अयमेतद्रूपो मिथः कथासमुल्लापो व्यचित. समुत्पन्न—देवलोकेषु आर्या ! देवानां कतिकालं स्थिति प्रज्ञप्ता ? तदा स ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासको देवस्थितिगृहीतार्थस्तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत्—देवलोकेषु आर्या ! देवानां जघन्येन दशवर्षसहस्राणि स्थिति प्रज्ञप्ता तेन परं समयाधिका द्विसमयाधिका यावद्दशसमयाधिका संख्येयसमयाधिका असंख्येयसमयाधि

णाण अयमेयारूवे । एकठा आव्याने निषयाने आसन ग्रहण धकाने स्थानबेठाने एह एरूवे कथे । मिथोकहासमुल्लावे । माहोमाहि कथानो आलाप । अत्थिए समुप्पज्जित्था देवलोएसुणं अज्जो देवाण । आलोचमाथयी अध्यवसाय ऊपनो चित्तमे देवलोकनेविषे ग वायालकारे, आर्यो देवनो । केतलुककाल ठिई पणत्ता । केतलाकालनो स्थिति कही, स्थिति कहिये आऊखो । तएण से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए । तिवारे ते ऋषिभद्र पुत्रनामे श्रमणोपासक तिणे । देवट्ठिइ गहियट्ठे ते समणोवासए एवंवयासी । देवस्थितिनो अर्थाछे ग्रहणकीधे अर्थ तेणे श्रमणोपासकाने इमकहे । देवलोएसुणं अर्ज्यादेवाण जहणेणं दस वाससहस्साइं ठिई पणत्ता । देवलोकनेविषे अहोआर्यो देवनो जघन्य थकी दशसहस्र वर्षनी स्थितिकही । तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव दससमयाहिया संखेज्जसमयाहिया असंखेज्जसमयाहिया । तेहथी उपरान्त एकसमे करी अधिको बेसमयेकरी अधिको यावत् दशसमये करी अधिको संख्यातसमयेकरी अधिको असंख्यातसमये करी अधिको । उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमठिई प० । । उत्कृष्टथकी तेत्रीससागरोपमनी स्थितिकही ।

॥ टीका ॥

ना ॥ समुविहाणाति ॥ आसनग्रहणेन ॥ सन्निसण्णाणाति ॥ सन्निहिततया निषण्णाना ॥ मिहोत्ति ॥ परस्परं ॥ देवठितिगहियट्ठेत्ति ॥ देवस्थितिविषये

॥ मूल ॥

पर वोच्छिन्ना देवाय देवलोगाय । तएणं ते समणोवासगा इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्ख माणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं णोसद्दहंति णोपत्तियंति णोरोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अप त्तियमाणा अरोएमाणा जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ । तएणं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा

अनुवाद

का' उत्कृष्टतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा स्थिति प्रज्ञप्ता तेन परं व्युच्छिन्ना देवाश्च देवलोकाश्च । तदा ते श्रमणोपासका ऋषिभद्रपुत्रस्य श्रमणो पासकस्यैवमाख्यातवतो यावदेवं प्ररूपयत एतमर्थं नैव श्रद्दधति नो प्रतीयन्ति नोरोचन्ति, एतमर्थमश्रद्दधन्तो ऽप्रत्ययन्तो ऽरोचयन्तो यस्यामेव दिश प्रादुर्भूता तामेवदिशिमतिगता । तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रमणो भगवान्महावीरो यावत्समवसृतो यावत्परिषत्पर्युपास्ते । तदा ते

॥ भाषा ॥

तेणपरंवोच्छिन्ना देवाय देवलोगाय । तिवारउपरान्त विच्छेद गया देव तथा देवलोक इसो कह्यो । तएणं ते समणोवासगा इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासग स्स । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक ऋषिभद्र पुत्रने श्रमणोपासक श्रावकने । एवमाइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स । इम अर्थ कहता थकाने याव त इम प्ररूपता थकाने । एयमट्ठं णोसद्दहंति णोपत्तियंति णोरोयंति । एह अर्थ श्रद्धानाणें सर्दहे नही तेह अर्थनेविषे प्रतीत न आणे तेह अर्थ रुचे न ही । एयमट्ठं असद्दहमाणा । एह अर्थ असर्दहता थका । अपत्तियमाणा अरोएमाणा । अप्रीतिमानता थका अरोचता थका । जामेवदिसिं पाउब्भू याता मेवदिसिंपडिगया । जे दिशिथकीज आव्याहता ते दिशिनेविषेज पाछागया । तेणकालेणं तेणसमएणं । ते कालने विषे ते समयने विषे । समणेभग व महावीरे जावसमोसढे जाव परिसापज्जुवासइ । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी यावत् समोसर्या यावत् पर्षदा आवी सेवाकरे । तएणं ते स मणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रीमहावीरस्वामी समोसर्या । इमीकहाए लद्धट्ठासमाणे हट्ठतुट्ठा । एहवी कथा अर्थ पाम्याथका हर्ष सन्तोष पा

समणा हट्ठतुट्ठा एवं जहा तुंगियोद्देसए जाव पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महइ धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ । तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति, णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ

श्रमणोपासका अस्याः कथाया लब्धायाः सन्तो हृष्टतुष्टा एवं यथा तुङ्गिकोद्देशके यावत् पर्युपासते । तदा श्रमणो भगवान् महावीरस्तेषां श्रमणोपासकानां तस्यै च महातिमहत्यै धर्मकथा यावदाज्ञाया आराधको भवति । तदा ते श्रमणोपासकाः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा उत्थयोत्तिष्ठन्ति, उत्थाय श्रमणं भगवन्तं महावीरं नमस्यन्ति वन्दन्ते, वन्दित्वा एवमवादिषुः —एवं खलु भदन्त ! ऋषिभद्रपुत्रः श्रमणोपासकोऽस्माकमेवमाख्याति यावदेवं प्ररूपयति-देवलोकेषु [illegible] देवानां जघन्येन दश वर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञ

स्या । एवं जहा तुंगियोद्देशक जाव पमंसति । इस लिये तुंगियानगरी [illegible] जिम श्रावक [illegible] जिम [illegible] यावत् [illegible] करे नमस्कार करे । तएणं समणे भगवं महावीरे । तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी । तेसिं समणोवासगाणं [illegible] । ते श्रमणोपासकने तेहवी मोटी धर्मकथा कही । जाव आणाए आराहए भवइ । यावत् आज्ञाना आराधक थई [illegible] । तएणं ते समणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक । समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी [illegible] । धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति ३ त्ता । धर्म सांभळीने हृदयधारीने [illegible] उठीने । समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने इम कहे । एवं खलु भंते इसिभद्दपुत्ते समणोवासए । इम निश्चे हे भगवन् ! ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासक । अम्हं एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ । अमने इम कहे सामान्यथकी यावत् इम प्ररूपे विशेष

जाव एवं परूवेइ देवलोएसुणं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेणपरं समया हिया जाव तेणपरं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य ! से कहमेयं भंते ! एवं ? अज्जोत्ति ! समणे भगवं महा वीरे ते समणोवासए एववयासी–जंणं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ देवलोगेसुणं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तंचेव समयाहिया जाव तेणपरं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य सच्चेणं एसमट्ठे, अहं पुण अज्जो ! एव माइक्खामि जाव परूवेमि, देवलो

सा तेन परं समयाधिका यावत्तेनपरं व्युच्छिन्ना देवाश्च देवलोकाश्च तत्कथमेतद्भदन्त । एवं ? आर्या ! इति श्रमणो भगवान्महावीर स्तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत् यदार्या ! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासको युष्माकमेवमाख्याति यावत्प्ररूपयति-देवलोकेषु आर्या ! देवानां जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता तच्चैव समयाधिका यावत्तेनपरं व्युच्छिन्ना देवाश्च देवलोकाश्च सत्योयमर्थः, अहं पुनरार्या ! एवमाख्या

यका। देवलोएसुण अज्जो देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई प०। देवलोकनेविषे ण वाक्यालंकारे, अहो आर्यो ! देवाने जघन्यथकी दशसहस्रवर्षनी स्थितिकही । तेणपरंसमयाहिया तेणपरंवोच्छिन्ना । तिवारपछी समयाधिक यावत् तिवार उपरान्त विच्छेद गया । देवाय देवलोगाय । देव तथा देव तथा देवलोक । सेकहमेयं भंतेएवं अज्जोत्ति । ते किम एह हेभगवन् ! इम अहो आर्यो इसे आमंत्रणे । समणेभगवंमहावीरे ते समणोवासए एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी ते श्रमणोपासक प्रते इमकहे । जंणं अज्जो इसिभद्दपुत्ते समणोवासए । जेहभणी ण वाक्यालंकारे, अहोआर्यो ! ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासकं । तुज्झेएवमाइक्खइ जाव परूवेइ । तुम्हप्रतें इम कहे यावत् प्ररूपे । देवलोगेसुणं अज्जो देवाणं । देवलोकने विषे अहोआर्यो ! देवनी । जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० । जघन्यथकी दशसहस्रवर्षनी स्थितिकही । तंचेव समयाहिया जाव तेणपरंवोच्छिन्ना देवाय देवलोगाय । तिमहीज समय अधिक यावत् तिवार उपरान्त विच्छेद गया देव तथा देवलोक । सच्चेणएसमट्ठे अहंपुणअज्जोएवमाइक्खामि जाव परूवेमि । साचू एह

॥ मूल ॥

गेसुणं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तंचेव जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय सच्चेणं एसमठे । तएण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ एयमठं सोच्चा णिसम्म समण भगवं महावीर वदंति णमसंति वंदित्ता २ जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छ इत्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति णमसंति , एयमठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति । तएणं

॥ अनुवाद ॥

मि यावदप्रकृपयामि-देवलोकेषु आर्या । देवाना जघन्येन दशवर्षसहस्राणि तथैव यावत्तेनपरं व्युच्छिन्ना देवाश्च देवलोकाश्च सत्योयमर्थः । तदा ते श्रमणोपासका श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिकादेनमर्थं श्रुत्वा निशम्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दन्ति नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्कृत्य यत्रैव ऋषिभद्रपुत्रः श्रमणोपासकस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य ऋषिभद्रपुत्रं श्रमणोपासकं वन्दन्ति नमस्यन्ति एनमर्थं सम्यग्विनये

॥ भाषा ॥

अर्थ कथुं छे पणि महो आर्यो । दसकह यावत् प्ररूपू । देवलोगनुं मतं देवाण जहण्णेणं दसवाससहस्साइं । देवलोकने विषे ण वाक्यालंकारे, आर्यो दे वने जघन्यथकी दशसहस्रवर्ष इत्यादि । तचेव जाव तेणपरं वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय । तिमहीज यावत् तिवारे उपरान्त विच्छेद गया देव तथा देव लोक । सच्चेण एसमठे । साचो एह अर्थ एहमांहि अन्यथा नथी । तएण ते समणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक । समणस्स भगवओ महावीरस्स अ तियाओ । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपथकी सुणीने इत्यर्थं । एयमठं सोच्चा णिसम्म । एह अर्थ सांभली हृदयधरी । समण भगवं महावीर वदंति णमसंति वंदित्ता णमसित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे वांदी नमस्कार करीने । जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवास ए तेणे । उवागच्छइ २ त्ता । जिहां ऋषिभद्र पुत्र नामे श्रमणोपासक तिहां आवे तिहां आवीने । इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वदंति णमसंति । ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासक प्रते वांदे नमस्कार करे । एयमठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेति । एहवो अर्थ सम्यक्‌प्रकारे वारंवार विनयकरी खमावे । तएण ते स

॥ मूल ॥

ते समणोवासगा पसिणाइं पुच्छंति २, त्ता अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति व २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगया भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ २ एवंवयासी—पभूणं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठेसमट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्तेणं समणोवासए

अनुवाद

न भूयोभूय क्षमयन्ति । तदा ते श्रमणोपासका प्रश्नानि पृच्छन्ति' पृच्छ्यार्थानि पर्याददति' पर्यादाय श्रमण भगवन्त महावीर वन्दति नमस्यन्ति, वन्दित्वा २ यस्या दिश प्रादुर्भूता तस्यामेवदिशि प्रतिगता । भदन्त । इति भगवान् गौतम श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते न मस्यति २ एवमवादीत्–प्रभुर्भदन्त ! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासको देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डो भूत्वा ऽऽगारादनगारता प्रव्रजितुम् ? गौत म । नायमर्थ समर्थ, गौतम । ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासको बहुभि शीलव्रतगुणव्रतविरमणप्रत्याख्यानपौषधोपवासैर्यथापरिगृहीतै स्तप क

॥ भाषा ॥

मणोवासगा पसिणाइ पुच्छति २ त्ता । तिवारे ते श्रमणोपासक प्रश्नप्रते पूछे पूछीने । अट्ठाइ परियादियति २ त्ता । अर्थप्रते ग्रहे ग्रहीने । समणभगव महावीर वदति णमसति वदित्ता णमसित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वादे नमस्कारकरे वादी नमस्कारकरी । जामेवदिसि पाउब्भूया तामेवदिसिपडिगया । जे दिशियकी आव्याहता तेहीज दिशिनेविषे पाछागया । भंतेत्तिभगवगोयमे । हेभगवन् । इसे आमन्त्रणे भगवन्त गौतम । समणभगव महावीर वदइ णमसइ एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वादे नमस्कार करे वादी नमस्कार करी इमकहे । पभूणभंते इसिभद्दपुत्ते समणोवासए । समर्थ ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक श्रावक । देवाणुप्पियाण अतिए मुडेभवित्ता । स्वामी तुम्हारे समीप मुण्डथइने । आगाराओअणगारियं पव्वइत्तए । गृहवास छाडी टालीने साधुपणो प्रवर्त्तवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोइणट्ठे समट्ठे । हेगौतम ए अर्थ समर्थ नथी भगवन्त कहे गोयमा इसिभद्दपुत्तेण समणोवासए । हेगौतम ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासक । बहुहिसीलव्वयगुणव्वयवेरमणप

वहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे वहूहिं वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणिहिति २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं ज्झूसेहिति २ त्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेइत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिउवमाइं ठिई

मंजिरात्मान भावयन् वहूनि वर्षाणि श्रमणोपासकपर्याय पालयति' पालयित्वा मासिक्या संलेखनयात्मान झूषयति २ षष्टिभक्तान्यनशनतया च्छेदयति' छेदयित्वा ऽऽलोचितप्रतिक्रान्त समाधिप्राप्त कालमासे कालकृत्वा सौधर्मे कल्पे अरुणाभे विमाने देवतयोपपत्स्यति। तत्र एकेषां चिद्देवानां चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्रार्षिभद्रपुत्रस्य देवस्य चत्वारि पल्योपमानि स्थिति र्भविष्यति। स भदन्त। ऋषिभद्रपुत्रो

च्चक्खाणपोसहोववासेहिं। घणा शीलव्रत गुणव्रत विरमण प्रत्याख्यान पोषध उपवासेंकरी एतले व्रत नियम प्रमुख गुणेंकरी। अहापरिग्गहिएहिं। जिम पहिला आदर्या तिमहीज। तवोकम्मेहिं। तपकर्म क्रियायें करी। अप्पाण भावेमाणे वहूहि वासाइं। आत्माप्रते भावतोथको स्वच्छचित्त थको घणा वरसलगे। समणोवासगपरियाग पाउणिहिइ २ त्ता। श्रमणोपासक पर्यायप्रते पाले घणा वरस श्रमणोपासक पर्याय पालीने। मासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेहिइ २ त्ता। मह्नोनानी संलेखणायें आत्माने सेवस्ये सेवीने। सट्ठिभत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता। साठ भात अणसणें करी छेदस्ये छेदीने। आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासेकालकिच्चा। वतना अतिचार आलोई पडिक्कमीने समाधि पाम्या काल समयनेविषे कालकरी नेमरीण पामीने। सोहम्मेकप्पे अरुणाभेविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। सौधर्मनाम पहिला देवलोकनेविषे अरुणाभनामा विमाननेविषे देवपणे उपजस्ये। तत्थण अत्थेगइयाण देवाण। तिहा ण वाक्यालंकारे, केतलाएक देवनो। चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प०। चार पल्योपमनी स्थिति कही। तत्थण इसिभद्दपुत्तस्स देवस्स। तिहा ण वाक्यालंकारे, ऋषिभद्र पुत्र श्रमणोपासक देवनो। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई भविस्सइ। चार पल्योपमनी स्थिति

॥ मूल ॥

पसत्ता, तत्थण इसिभद्दपुत्तस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई भविस्सइ । सेणं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति सेवं भंते भंतेत्ति । भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ , तएण समणे भगवं महावीरे अन्नया कयायि आलंभियाओ णयरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ , पडिणिक्खमइत्ता वाहिरिया जणवयविहारं विहरइ । तेण कालेण तेण समएणं आलंभियाणाम णयरी होत्था वण्णओ ,

अनुवाद

देवत्वतो देवलोकादायु क्षयेण यावत् कुत्रोत्पत्स्यति ? गौतम । महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावदन्त करिष्यति तदेव भदन्त । भदन्त । इति भगवान् गौतमो यावदात्मान भावयन् विहरति । तदा श्रमणो भगवान् महावीरो न्यदाकदाचिदालम्भिकाया नगर्या शङ्खवनाच्चैत्यात्प्रतिनिष्क्रामति , निष्क्रम्य बहिस्ताज्जनपदविहार विहरति । तस्मिन्काले तस्मिन्समये आलम्भिका नाम्नी नगर्यभवत् , वर्णक , शङ्खवनचैत्य ' वर्णक ,

॥ भाषा ॥

हुस्ये आऊखा क्षय इत्यर्थ । सेणभते इसिभद्दपुत्ते देवताओ देवलोगाओ आउक्खएण जाव कहि उववज्जिहिति । तेह ण वाक्यालङ्कारे, हेभगवन् ! ऋषिभद्र पुत्र देवपणे थको देवलोकथको आऊखाने क्षयेकरी भवक्षयेकरी यावत् किहा जास्ये किहा उपजस्ये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा महाविदेहेवास सिज्झिहिइ जाव अंतकाहिइ । हेगौतम महाविदेहक्षेत्रनेविषे अवतरी सीझस्ये यावत् सर्वदुखनो अंत करस्ये । सेवंभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् तुम्हे कह्यु त सर्व सत्यछै । भगवंगोयमे जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ । भगवन्त गौतम यावत् आत्माप्रते संयमे तपेकरी भावताथका विचरै । तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णयाकयावि आलभियाओ णयरीओ । तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी अन्यदा किवारेक आलभिका नाम नगरीथकी । सखवणाओचेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । शङ्खवननामा चैत्यथकी नीकलै नीकलीने । वाहिरिया जणवयविहार विहरइ । वाहिर जनपद देशने विषै विहारकरी विचरै । तेण कालेण तेण समएण । ते कालने विषे ते समयनेविषे । आलभियाणाम णयरीहोत्था वण्णओ सखवणे चेइए वण्णओ । आ

संखवणे चेइए वस्रत, तत्थणं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गलेणामं परिव्वाए परिवसइ । रिउ वेय जउव्वेय जाव नएसु सुपरिनिठिए छठं छठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उढं बाहाउ जाव आयावे माणे विहरइ । तएणं तस्स पोग्गलस्स छठ छठेणं जाव आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जहा सिवस्स जाव विभंगेणामं अन्नाणे समुप्पन्ने, सेणं तेण विभंगे णामं अन्नाणेणं समुप्पन्नेणं बम्भलोए कप्पे देवाणं

तत्र शङ्खवनस्य चैत्यस्यादूरसामन्ते पुद्गलानामा परिव्राजक परिवसति । ऋग्वेदयजुर्वेद (प्रभृति) यावन्नयेषु सुपरिनिष्ठित. षष्ठ षष्ठेन निक्षिप्तेन तप कर्मणा ऊर्द्ध बाहू यावदातापयन् विहरति । तदा तस्य पुद्गलस्य षष्ठषष्ठेन यावदातापयत प्रकृतिभद्रतया यथा शिवस्य यावद्विभङ्ग ना माज्ञान समुत्पन्न । स तेन विभङ्गनाज्ञानेन समुत्पन्नेन ब्रह्मलोके कल्पे देवाना स्थिति जानाति पश्यति । तदा तस्य पुद्गलस्य परिव्राजकस्या

लभिका इसे नामे नगरीछे, वर्णक करवायोग्य शङ्खनामा चैत्यछे वर्णक । तत्थण सखवणस्सचेइयस्स । तिहा शङ्खवननामे चैत्यने । अदूरसामते पोग्गले णामपरिव्वाए परिवसइ । अतिदूरनही अति ढूकडा पणिनही तिहा पोग्गल इसेनामे परिव्राजक तापस वसेछे । रिउव्वेय जउव्वेय । ऋगवेद यजुर्वेद यावत् नागनेविषे घणू स्थिरछे । छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उढंबाहाओ जाव आयावेमाण विहरइ । छठछठे ट । जाव नएसु सुपरिनिठिए । यावत् नागनेविषे घणू स्थिरछे । छठछठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण छठछठेण जाव अन्तराररहित तपकर्म क्रियायेकरी यावत् कचीवेला बाहा कहिये भुजाओ यावत् आतापना करतोथको विचरे । तएण तस्स पोग्गलस्स छठछठेण जाव आयावेमाणस्स । तिवारे तेहने पुद्गलने छठछठ पारणे यावत् आतापना करताथका । पगइभद्दयाए जहा सिवस्स जाव विभंगेणाम अणाणेण समुप्पणेण बम्भलोए कप्पे । तेह पगाणा अ प्रकृतिभद्रकपणे करी जिम शिवने यावत् विभङ्गनामे अज्ञान उपनो । सेण तेण विभंगेणाम अणाणेण समुप्पणेण बम्भलोए कप्पे । देवनीस्थिति जाणे देखे । तएण तस्स पोग्गलस्स तेह विभंगनामे अज्ञान उपनाथका तिणेकरी ब्रह्मनाम देवलोकनेविषे । देवानीस्थिति जाणइ पासइ । अभथिए जाव समुप्पज्जित्था । चित्त चिंतवन यावत् उपनो । प परिव्वायगस्स अयमेयारूवे । तिवारे तेहने पुद्गलपरिव्राजक तापसने एह एहवो रूप । अभथिए जाव समुप्पज्जित्था ।

अणगारस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
ठिइं जाणइ पासइ । तएणं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था। अत्थिणं मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने देवलोएसुण देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता तेणपरं वोच्छिन्ना देवाय लोगाय एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता आयावणभूमीउ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता तिदंडकुंडिया जाव धाउरत्ताउय गेण्हति २ त्ता जेणेव आलंभिया णयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव

यमेतद्रूपो ऽभ्यर्थितो यावत्समुत्पन्नवान्-अस्ति ममातिशेषे ज्ञानदर्शने समुत्पन्ने, देवलोकेषु देवाना जघन्येन दश वर्षसहस्राणि स्थिति प्र ज्ञप्ता तेन परं समयाधिका द्विसमयाधिका यावदसङ्ख्येयसमयाधिका, उत्कृष्टतो दशसागरोपमाणि स्थिति प्रज्ञप्ता तेन परं व्युच्छिन्ना देवाश्च दवलोकाश्चैव सम्प्रेक्षत, सम्प्रेक्ष्यातापनभूम्या प्रत्यारोहति' प्रत्यारुह्य त्रिदण्डकुण्डिका (प्रभृति) यावद्धातुरक्तानिच (वस्त्राणीतिशेष) गृह्णा

त्थिण मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पणे। णं ए वाक्यालंकारे, मुझने समस्त ज्ञानदर्शन ऊपनां। देवलोएसुण देवाण जहन्नेण दसवाससहस्साइं ठिई प०। देवलोकनेविषे ए वाक्यालंकारे, देवनी जघन्यथकी दशसहस्रवर्षनी स्थिति कही। तेणपर समयाहिया दुसमयाहिया जाव असंखेज्ज समयाहि या। तिण उपरान्त समयेकरो अधिको बेसमयेकरी अधिको यावत् असख्यात समयेकरो अधिको। उक्कोसेण दससागरोवमाइं ठिई प०। उत्कृष्टथको द श सागरोपमनो स्थिति कही स्थितिकहिये आऊखो। तेणपरंवोच्छिन्ना देवाय लोगाय एव सपेहेइ २ त्ता। तिण उपरात विच्छेदगया देव तथा देव लोक इम चिन्तवे इम चिन्तवीने। आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ २ त्ता। आतापनानी भूमिकाथको पाछो ओसरे आतापनानी भूमिकाथकी [illegible]। तिदंड कुंडिया जाव धाउरत्ताउय गेण्हति २ त्ता। त्रिदण्डकुण्डिका यावत् धातुवानीये रंग्यावस्त्र ते प्रतें ग्रहे ग्रहीने। जेणेव आलभियाणयरी जेणे वपरिव्वायगावसहे तेणेव उवागए। जिहां आलभिका नगरीछे जिहां परिव्राजकना मठछे तिहां आव्यो। भंडगणिक्खेवकरेति २ त्ता। भाण्डानो नि

गृहीतार्थो गृहीतपरमार्थो य स तथा ॥ तुगिउद्देशएत्ति ॥ द्वितीयशतस्य पञ्चमे ॥ एकादशशते द्वादश ॥ ॥ ११ ॥ १२ ॥ एकादशशत समाप्त

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

उवागए जंडगणिक्खेव करेइ, करेइत्ता आलंभियाए णयरीए सिंगाडग जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइ क्खइ जाव परूवेइ। अत्थिणं देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने देवलोएसुण देवाण ज हण्णेणं दसवाससहस्स तहेव जाव वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय तएणं आलभियाएणयरीए एव एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स तचेव जाव सेकहमेय मन्ने एवं ? सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया,

॥ अनुवाद ॥

ति, गृहीत्वा यत्रैवालम्भिकानगरी यत्रैव परिव्राजकावसथ स्तत्रैवोगच्छति' उपागत्य भाण्डकनिक्षेप करोति, कृत्वा आलम्भिकाया नगर्यां शृङ्गाटक (प्रभृति) यावत् पथिषु अन्योन्यस्यैव माख्याति यावत्प्ररूपयति-अस्तिदेवानुप्रिया ? ममातिशेषे ज्ञानदर्शने समुत्पन्ने, देवलोकेषु देवाना जघन्येन दशवर्षसहस्र (प्रभृति) तथैव यावद्विच्छिन्ना देवाय देवलोकाश्च। तदानी मालम्भिकाया नगर्या एव मेतेना भिलापेन यथा शिवस्य तचैव यावत्तत्कथमेतन् मन्ये एव ? स्वामी समवसृतो यावत्परिषत् प्रतिगता, भगवान् गौतम स्तथैव भिक्षाचर्याये तथैव बहुजनश

॥ भाषा ॥

चेप करें मूके करोने। आलभियाएणयरीए सिघाडग जाव पहेसु। आलभिकानगरीने शृङ्गाटक यावत् पथनेविषे। अणमणस्स एवमाइक्खइ जाय पक वेइ। माहोमाहि जनने इमकहे यावत् प्ररूपे। अत्थिण देवाणुप्पिया ममअतिसेसेणाणदंसणे समुप्पन्ने। णं वाक्यालंकारे, अहोदेवानुप्रिया मुझने समस्त ज्ञानदर्शन ऊपनो। देवलोएसुण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्सातहेव। देवलोकनेविषे ण वाक्यालंकारे,, देवनो जघन्यथको दशसहस्रवर्षनी स्थिति इत्या टिक तिमहीज। जाव वोच्छिण्णा देवाय देवलोगाय। यावत् विच्छेद पाम्या देव तथा देवलोक। तएणआलभियाएणयरीए। तिवारेआलभिका नगरीनेवि षे घणामनुष्य इत्यादि। एव एएण अभिलावेण जहा सिवस्स तचेव। इम इणे आलावेकरी जिम शिवनो अधिकारकह्यो तिमहीज कहवो। जाव सेक हमेयमन्ने एव सामीसमोसढे जाव परिसापडिगया। यावत् तेह किम एह मानिये एतलो कहनो इम श्रीमहावीरस्वामी समोसर्या यावत् पर्षदा पा

॥ मूल ॥

भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि एवं भासामि जाव परूवेमि देवलोएसुणं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेणपरं समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तेणपरं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। अत्थिणं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि तहेव जाव हंता अत्थि। एवं ईसाणेवि एवं जाव अच्चुएवि एवं गेविज्जविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसुवि ईसिप्पब्भाराएवि

अनुवाद

च्च निशामयति, तथैव सर्वं भणितव्यं, यावदहं पुनर्गौतम! एवमाख्यामि एवं भाषे यावदेव प्ररूपयामि–देवलोकेषु देवानां जघन्यतो द शवर्षसहस्राणि स्थितिः प्रज्ञप्ता तेनपरं समयाधिका द्विसमयाधिका यावदुत्कृष्टतः त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता ततःपरं विच्छि न्ना देवाश्च देवलोकाश्च। अस्ति भदन्त! सौधर्मे कल्पे द्रव्याणि सवर्णान्यप्यवर्णान्यपि तथैव यावत् हंत अस्ति। एवं मीशानेपि एवं यावद

॥ भाषा ॥

को वलो। भगव गोयमे। तिवारे भगवंत गौतम। तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द णिसामेइ तहेव सव्वं भाणियव्वं। तिमहीज भिक्षाने अर्थे गो चरीगया तिमहीज घणा मनुष्यनो शब्द साम्भले इत्यादि तिमज सर्व जाणवो। जाव अहपुण गोयमा एवमाइक्ख मि एवभासामि जाव परूवेमि। याव त् हूं पणि हेगौतम इम कहूछू सामान्यप्रकारे इम भाषूछू यावत् प्ररूपूछू। देवलोएसुणं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिइपन्नत्ता। देवलाकनेवि षे देवनो जघन्यथकी दशसहस्रवर्षनी स्थितिकही। तेणपर समयाहिया दुसमयाहिया जाव उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं ठिइं पन्नत्ता। तिण उपरा न्त एकसमय अधिको बे समय अधिको यावत् उत्कृष्टथकी तेत्रीस सागरोपम स्थितिकही। तेणपरंवोच्छिन्ना देवाय देवलोगाय। तिण उपरान्त विच्छे दगया देव तथा देवलोक। अत्थिणं भंते सोहम्मेकप्पे दव्वाइं सवन्नाइंपि अवन्नाइंपि तहेव जाव हंताअत्थि। छे हेभगवन्! सौधर्मनामा देवलोकनेविषे द्रव्य सवर्ण वर्णसहित पिण वर्णरहित पणि इत्यादि तिमहीज यावत् उत्तर हा गौतम छै। एवं ईसाणेवि एवं जाव अच्चुएवि। इम ईशान

॥ मूल ॥

जाव हंता अत्थि। तएणं सा महइमहालिया जाव पडिगया। तएणं आलंभियाए ! णयरीए सिंघाडगतिग अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, णवर तिदंडकुंडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे, आलंभिय णयरं मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ, जाव उत्तरपुरच्छिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमइत्ता तिदंडं कुंडियंच जहा खंदउ जाव पव्वइउ सेसं जहा सिवस्स जाव अव्वाबाहंसोक्खं मणुभवंति सासयंसिद्धा।

॥ अनुवाद ॥

च्युतेपि ग्रैवेयकविमानेष्वपि अनुत्तरविमानेष्वपि ईषत्प्राग्भारायां नपि यावत् एत अस्ति। तदा सामहातिमहती यावत् प्रतिगता, तदा आलम्भिकाया नगर्यां शृङ्गाटकत्रिक (प्रभृति) अवशेष यथा शिवस्य यावत्सर्वदु खप्रक्षीणो नवर त्रिदण्डकुण्डिका यावद्धातुरक्तवस्त्रपरिहित॰ प्रतिपतितविभङ्ग आलम्भिकाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, यावदुत्तरपौरस्त्य दिग्भाग मपक्रामति' अपक्रम्य त्रिदण्ड कुण्डिकाच यथा

॥ भाषा ॥

देवलोकने विषे पणि इम यावत् अच्युतलगे पणि कहवो। एव गेविज्जणविमाणेसु अणुत्तरविमाणेसुवि ईसिप्पभाराएवि जाव हंताअत्थि। इमहीज ग्रवेयक विमाननेविषे पणि इमहीज अनुत्तरविमाननेविषे पणि इमहीज ईषत्प्राग्भारानेविषे पणि यावत् छाजैतम छै। तएण सा महइमहालिया जाव पडिगया। तिवारे तिका मोटी महाजन आश्रयभूत यावत् पर्षदा पाछीवली। तएण आलभियाए णयरीए। तिवारे आलभिका नगरीये। सिघाडगतिग अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। शृङ्गाटक त्रिकइत्यादिक अवशेष समस्त जिम शिवनोअधिकार कह्यो तिम पोग्गल तापसनो पणि अधिकार कहवो यावत् टापाले केवल ज्ञान पामी सर्व दुःखथकी मूकाणो। णवर तिदंडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थ परिहिए परिवडियविभंगे। एतलोविशेष त्रिदण्डकुडिका यावत् धातुरक्तवस्त्र पहिरीने विभगअज्ञान पतितथका एतले स्वामीनावचन ऊपर सद्दहणा ऊपना थका। आलभि यणयर मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ। आलभिका नगर मध्यमध्येकरी नीकले नीकलीने। जाव उत्तरपुरच्छिमदिसिभाग अवक्कमइ २ त्ता। यावत् ईशान कूणिनेविषे ते दिशिभागप्रतें जाय जाईने। तिदण्डकुडियच जहा खंदउ जाव पव्वइउ सेस जहा सिवस्स। त्रिदण्डकुण्डिका जिम खन्दक तिम यावत्

॥ टीका ॥

शकादशशतमेव व्याख्यातमशुद्धिनापिपन्मयका । ऐतल्लग्रहिता श्रीवाग्देवीप्रसादोवा ॥ १ ॥ व्याख्यात विविपार्थमेकादशं शतमथ तथाविधमेव द्वादशमारभ्यते तस्य चोद्देशकार्यां गाथे य ॥ सखेइत्यादि ॥ शखश्रमणोपासकविषय प्रथम उद्देशक ॥ जयतित्ति ॥ जयन्त्यभिधानश्राविकाविषयो द्वितीय ॥ पुढविति ॥ रत्नप्रभादिपृथिवीविषयस्तृतीय ॥ पुग्गलत्ति ॥ पुद्गलविषयश्चतुर्थ ॥ अइवाएत्ति ॥ प्राणातिपातादिविषय पचम ॥ राहुत्ति ॥

॥ मूल ॥

सेव भंते २ त्ति ॥ एगारससयस्स दुवालसमो ११ ॥ १२ ॥ एगारसमं सयं सम्मत्तं ॥ ११ ॥
संखजयतिपुढवी पोग्गलअइवायराहुलोगेय । नागेयदेवआता बारसमसएदसुद्देसा ॥ १ ॥ तेणं कालेणं

अनुवाद

स्कन्दकी यावत्प्रव्रजित शेष यथा शिवस्य यावदव्याबाधसौख्य मनुभवन्तिशाश्वतसिद्धा । तदेव भदन्त । २ इति ॥ एकादशशतस्य द्वादशो द्देश ॥ ११ ॥ १२ ॥ समाप्तमेकादशम शतम् ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीपूज्यामृतचन्द्रसूरिनिकपादिष्टेनलोकाधिपे मरुस्थापरदेशबङ्गवतीसूरस्यशब्दाभिधा ।
रत्नालीवधरामचन्द्रगणिनाकुर्वेवस्फुर्वता प्राप्येकादशकशतघनपते पृथ्वीपते प्रार्थने. ॥ १ ॥

शङ्खजयतीपृथ्वी पुद्गलातिपातराहुलोकाश्च । नागोदेयथात्मा द्वादशमशतेदशोद्देशा ॥ १ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये श्रावस्ती नाम्नी नगर्यंत

॥ भाषा ॥

दीधालोपा घाकर्ता सर्व सम्यम शिवना परे कहवो । जाव अव्याबाहसोक्ख मणुभवतिसासयसिद्धा । यावत् आबाधारहित मोक्ष सुखप्रते अनुभवे श्रां गते एहवा शाश्वतासिद्ध । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे अन्यथानथी । एगारससयस्स दुवालसमो उद्देसो सम्मत्तो । ए इग्या रमाशतकनो बारमो उद्देशो पूरोथयो ११ ॥ १२ ॥ एगारसम सयसम्मत्त । एतले इग्यारमोशतक पूरोथयो ॥ ११ ॥ ८ इग्यारमे शतके विविध अर्थकह्या, हिवे बारमे पणि तेहीज कहेछे, संग्रहार्थगाथा—सखेजयतिपुढवीपोग्गलअइवायराहुलोगेय । नागेयदेवआया बार समसएदसुद्देसा ॥ १ ॥ शङ्खश्रमणोपासक विषय पहिलोउद्देशो १ जयती श्राविकानो २ रत्नप्रभापृथिवीनो ३ पुद्गलविचार ४ प्राणातिपात ५ राहुवक्तव्य

राहुवक्तव्यतार्थः षष्ठः ॥ लोगेयत्ति ॥ लोकविषय स्सप्तम ॥ नागेयत्ति ॥ सर्प्पवक्तव्यतार्थोऽष्टम ॥ देवत्ति ॥ देवभेदविषयो नवम ॥ छायत्ति ॥ आत्म भेदनिरूपणार्थो दशम इति, तत्र प्रथमोद्देशके किंचि ल्लिख्यते ॥ अस्साएमाणत्ति ॥ ईषत्स्वादयन्तो बहु च त्यजन्त इक्षुखण्डादे रिव ॥ विस्साएमाणा

तेणं समएणं सावत्थीणामं णयरी होत्था, वण्णओ कोठए चेइए वण्णओ, तत्थण सावत्थीए णयरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति। अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरति। तस्सणं संखस्स समणोवासगस्स उप्पलाणामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अ

यत्' वर्णक., कोष्ठकचैत्यो वर्णक, तत्र श्रावस्त्यां नगर्य्यां बहव शङ्खप्रमुखा श्रमणोपासका परिवसन्ति, आढ्या यावदपरिभूता अभिगत जीवाजीवा यावद्विहरन्ति। तस्य शङ्खस्य श्रमणोपासकस्योत्पला नाम्नी भार्या ऽभवत्, सुकुमार (प्रभृति) यावत्सुरूपा श्रमणोपासिकाऽभिग तजीवाजीवा यावद्विहरति। तत्र श्रावस्त्यां नगर्य्यां पुष्कली नाम्ना श्रमणोपासक. परिवसति' आढ्यो ऽभिगत (प्रभृति) यावद्विहरति। त

ता ६ लोकवक्तव्यता ७ नागवक्तव्यता ८ देवभेद वक्तव्यता ९ आत्मभेदनिरूपणार्थं १० ए बारमा शतकनेविषे दश उद्देशक कहस्ये ॥ १ ॥ तेणकालेण ते णसमएण। तेकालनेविषे तेसमयनेविषे। सावत्थीणामंणयरीहोत्थावण्णओ। श्रावस्ती इसेनाम नगरीहुते वर्णक कहवा। कोठए चेइए वण्णओ। कोष्टक इसेनाम चैत्य तेहनो वर्णक उवाईउपागथी जाणवो। तत्थण सावत्थीएणयरीए। तिहां श्रावस्ती नगरीनेविषे। बहवेसंखप्पामोक्खा समणोवासग.परि[illegible] ति। घणा शङ्ख प्रमुख श्रमणोपासक वसेछे। अड्ढा जाव अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरति। ऋद्धिवन्त यावत् तेहोने को[illegible] वा सनयनहा जाण्याछे जीव अजीवादिकना स्वरूप जेणे यावत् विचरेछे। तस्मण संखस्समणोवासगस्स उप्पलाण भारि[illegible] कारे, शङ्खश्रमणोपासकने उत्पलानामे स्त्री हुइ। सुकुमाल जाव सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरइ। सुकुमाल हाथ पग जेहना यावत् सुरूप त पणि श्रमणोपासिकाछे जाण्याछे जीव अजीवना स्वरूप जेणे यावत् विचरे। तत्थणसावत्थीए णयरीए पोक्खलीणामं समणोवासए अड्ढे

॥ मूल ॥

भिगयजीवाजीवा जाव विहरइ। तत्थणं सावत्थीए णयरीए पोक्खलीणामं समणोवासए परिवसइ । अड्ढे अभिगय जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसा पज्जुवासइ । तएणं ते समणोवासगा इमीसे कहाए जहा आलंभियाए जाव पज्जुवासंति । तएण समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय महइ धम्मकहा जाव परिसा पडिगया । तएण ते समणोवासगा समणस्स भग वओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हठतुठ समणं भगवं महावीरं वंदंति णमसंति पसिणाइं

॥ अनुवाद ॥

स्मिन्काले तस्मिन्समये स्वामी समवसृतो यावत्परिषत्पर्युपास्ते । तदा ते श्रमणोपासका अस्या कथाया यथाऽऽलम्भिकाया यावत्पर्युपासते । तदा श्रमणो भगवान्महावीर स्तेषां श्रमणोपासकानां तस्यै महातिमहत्यै धर्मकथा यावत्परिषत्प्रतिगता । तदा ते श्रमणोपासका श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दन्ते नमस्यन्ति' प्रश्नानि पृच्छन्ति, पृच्छ्यार्थानि पर्याद

॥ भाषा ॥

अभिगय जाव विहरइ। तिहां ण वाक्यालंकारे, श्रावस्ती नगरीनेविषे पोखली इसेनामे श्रमणोपासक वसेछ ऋद्धिवन्त जाणयाछे जीवाजीवादिकना स्वरूप जेणें यावत् विचरे । तेणकालेण तेणसमएण। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। सामीसमोसढे जाव परिसापज्जुवासइ। स्वामी समोसर्या याव त् पर्षदा वांदी सेवाकरे। तएण ते समणोवासगा इमी से कहाए। तिवारे सर्व श्रमणोपासक , स्वामी आगमनरूप कथा साम्भली। जहा आलभियाए जाव पज्जुवासंति । जिम आलम्भिका नगरीना श्रमणोपासक कह्या तिम ए पणि यावत् सेवाकरे। तएण समणेभगवमहावीरे। तिवारे श्रमण भग वन्त श्रीमहावीरस्वामी। तेसिंसमणोवासगाण । तेह श्रमणोपासक प्रतें। तीसेयमहइधम्मकहा जाव परिसापडिगया। तेह मोटी धर्मकथा यावत् आज्ञा नो आराधकहुवे ते साम्भली पर्षदा पाछीवली । तएण ते समणोवासगा। तिवारे ते श्रमणोपासक। समणस्सभगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चा णिसम्म हठतुठ। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे धर्म साम्भलीने हृदयें धरीने हर्ष संतोष पाम्या। समणभगव महावीर वदंति णमसंति प

त्ति ॥ विशेषेण स्वादयन्तो ऽल्पमेवत्यजन्त खर्जूरादे रिव ॥ परिभाएमाणात्ति ॥ ददतः ॥ परिभुंजेमाणत्ति ॥ सर्व्वमुपभुंजाना अल्प मप्य परित्यजन्त ए तेषां च पदानां वार्त्तमानिकप्रत्ययान्तत्वे प्यतीतप्रत्ययान्तता द्रष्टव्या ततश्च तद्विपुलमशनाद्यास्वादितवन्त सन्त ॥ पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा वि

पुच्छंति २ त्ता अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमंति २ त्ता जेणेव सावत्थी णयरी तेणेव पहारेत्थगमणाए तएणं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवंवयासी—तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह। तएणं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा

इति, पर्यादायोत्थयोत्तिष्ठन्ति, उत्थाय श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिकात् कोष्ठकाच्चैत्यात्प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव श्रावस्ती नगरी तत्रैव प्रधारितवान् गमनाय। तदा स शङ्खः श्रमणोपासकस्तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत् यूयं देवानुप्रिया। विपुलमशनं पानं खादिमं स्वादिमं मुपस्कारयत। तदा वयं तं विपुलमशनं पानं खादिमं स्वादिममास्वादयन्तो विस्वादयन्तः परिभाजयन्तः परिभुञ्जानाः पाक्षि

सिणाइं पुच्छंति २ त्ता। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कार करे प्रश्नप्रतें पूछे मनप्रतें पूछीने। अट्ठाइं परियादियंति २ त्ता। अर्थप्रतें ग्रहे अर्थप्रतें ग्रहीने। उट्ठाएउट्ठेंति २ त्ता। उठी ऊभाथाय उठी ऊभाथईने। समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणि क्खमंति २ त्ता। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी कोष्टकनामा चैत्यथकी पाछानीकलें पाछा नीकलीने। जेणेवसावत्थीणयरी तेणेवपहा रेत्थ गमणाए। जिहां श्रावस्तीनामे नगरी तिहां जाइवा उद्यमवन्त थया। तएणं से संखे समणोवासए। तिवारें ते शङ्खनामे श्रमणोपासक। ते समणो वासए एववयासी। तेह अनेरा श्रमणोपासका प्रतें इमकहे। तुब्भेणदेवाणुप्पिया। तुम्हे ण वाक्यालंकारे, अहो देवानुप्रियाओ। विउलं असणपाणखाइ मसाइम उवक्खडावेह। विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम प्रतें ए चार आहार प्रतें रन्धावरसोई करावज्यो इत्यर्थः। तएणं अम्हे तं विउलं असण

॥ टीका ॥

हरिस्सामोत्ति ॥ पक्षे अर्द्धमासिनव पाक्षिकं ॥ पौषधमव्यापारपौषध प्रतिजाग्रतो ऽनुपालयंतो विहरिष्याम· स्थास्याम·, य चेहातीतकालीनप्रत्य
यान्तत्वेपि वार्त्तमानिकप्रत्ययोपादान तद्भोजनानन्तर मेवाक्षेपेण पौषधाभ्युपगमप्रदर्शनार्थमेवमुत्तरत्रापि गमनिका कार्येत्येके, अन्ये तु व्याचक्षते
इह किल पौषध पर्वदिनानुष्ठान तच्च द्वेधा इष्टजनभोजनदानादिरूपमाहारादिपौषधरूप च, तत्र शङ्ख इष्टजनभोजनदानरूप पौषध कर्तुकाम

॥ मूल ॥

परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो । तएणं ते समणोवासगा संखस्स समणो
वासगस्स एयमठ्ठं विणएणं पडिसुणेंति । तएणं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए
जाव समुप्पज्जित्था, णोखलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव साइमं अस्साएमाणस्स पक्खियपोसहं पडि

अनुवाद

क पौषध प्रतिजाग्रतो विहरिष्याम । तदा ते श्रमणोपासका शङ्खस्य श्रमणोपासकस्यैनमर्थं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति । तदा तस्य शङ्खस्य श्रम
णोपासकस्यायमेतद्रूपोऽभ्यर्थितो यावत्समुत्पन्नवान्–नोखलु मे श्रेयस्तद्विपुलमशनपानखादिमस्वादिममास्वादयतश्च पाक्षिकपौषध प्रतिजाग

॥ भाषा ॥

पाण खाइमसाइम आस्वादेमाणा । तिवारे अम्हे तेह विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहारप्रते थोडो खाइवो घणो नाखवो इक्षुखण्डा
दिक ते आस्वादन करताथका । विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खिय पोसह पडि जागरमाणा विहरिस्सामो । घणो खाइवो थोडो ना
खवो खजूरादिक सर्वभोजन करताथका बाटदेताथका आधेमासे नीपनो ते पाक्षिक पोषध अव्यापाररूप तिणेंकरी जागरिकायें जागताथका विचर
स्या इसो कह्यो । तएण ते समणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक । संखस्ससमणोवासगस्स एयमठ्ठंविणएणं पडिसुणेंति । शङ्ख श्रमणोपासकनो एहवो
वचनविनयेंकरी साम्भले । तएण तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । तिवारे ते शङ्ख श्रमणोपासकने आवकने एह
एहवे रूपे आत्माआश्रयीने अध्यवसाय चित्तपरिणाम यावत् ऊपनो । णोखलुमसेयं तंविउलं असणं जाव साइमं । नहीं निश्चे मुझने तेह श्रेयभलू तेह
विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम आहारप्रते । अस्साएमाणस्स पक्खियपोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए । आस्वादन करताने इम चार

॥ टीका ॥

सन् यदुक्तवा स्तद्दर्शयतेदमुक्त ॥ तएणं अम्हे त विउल असणपाणखाइमसाइम अस्साएमाणाइत्यादि ॥ पुनश्च शङ्ख एव संवेगविशेषवशादा द्यपौषधविनिवृत्तमना द्वितीयपौषध चिकीर्षु र्यच्चिन्तितवा स्तद्दर्शयतेदमुक्त ॥ णो खलु मे सेयतमित्यादि ॥ एगस्सअविइयस्सत्ति ॥ एकस्य

॥ मूल ॥

जागरमाणस्स विहरित्तए। सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स णिक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियपोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ, संपेहेइत्ता जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव सए गिहे जेणेव उप्पला समणोवासिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छइत्ता

॥ अनुवाद ॥

रन् विहर्तुम्। श्रेय खलु मे पौषधशालायां पौषधिकस्य ब्रह्मचारिण उन्मुक्तमणिसुवर्णस्य व्यपगतमालावर्णकविलेपनस्य निक्षिप्तशस्त्रमुशल स्यैकस्याद्वितीयस्य दर्भसंस्तारकोपगतस्य पाक्षिकपौषधप्रतिजाग्रतो विहर्तुमितिकृत्वा एवं सम्प्रेक्षते सम्प्रेक्ष्य यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव स्वक गृह यत्रैवोत्पला श्रमणोपासिका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्योत्पला श्रमणोपासिका मापृच्छति, आपृच्छ्य यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपाग

॥ भाषा ॥

ग्रहं करवा पाक्षिक पोषधव्रतें अनुपालताथका विचरवो। सेयखलुमे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स। तो श्रेय निश्चे मुझने पोषधशालाने विषे पोषधयुक्तने ब्रह्मचर्यसहितने। उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स णिक्खित्तसत्थमुसलस्स। मूक्याछे मणि सुवर्ण जेणे एहवाने अलगा की धाछे फूलमाला वर्णक चन्दनादि विलेपन जेणे तेहने वेगला कीधा शस्त्र मुशलादि जेणे तेहने। एगस्स अविइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स। एकलाने बी जा सहायीविना एतले बीजो कोइनथी डाभना संथारानें विषे बेठाने। पाक्खियपोसहपडिजागरमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता। पाक्षिक पोषध तेहव्रतें प्रति जागर अनुपालना करतोथको विचरवूं इम करीने इम चिन्तवे इम चिन्तवीने। जेणेव सावत्थीणयरी जेणेवसएगिहे। जिहां श्रावस्ती नगरी जिहां पोतानो घरछे। जेणेव उप्पलासमणोवासिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। जिहां उत्पलानाम श्रमणोपासिकाछे तिहां आ

॥ मूल ॥

जेणेव पोसहसालाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता पोसहसालं अणुप्पविसइ२ त्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जइत्ता उच्चारपासवणभूमीउ पडिलेहेइ, पडिलेहेइत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरइत्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, दुरूहइत्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारीउ जाव पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ। तएण ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव साइं साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता

॥ अनुवाद ॥

प्रतिलेख्य दर्भ च्छति, उपागत्य पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य पौषधशाला प्रमार्जयति, प्रमार्ज्योच्चारप्रश्रवणभूमि प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्भ संस्तारक संस्तृणोति, संस्तार्य्य दर्भसंस्तारक दुरोहति, दुरुह्य पौषधशालायां पौषधिको ब्रह्मचारी यावत्पाक्षिक पौषध प्रतिजागरन् वि हरति। तदा ते श्रमणोपासका यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव स्वकीयानि स्वकीयानि गृहाणि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य विपुलमशन पान

॥ भाषा ॥

उप्पलसमणोवासिय आपुच्छइ २ त्ता। उत्पला श्रमणोपासिकाप्रतें पूछे श्रमणोपासिका प्रतें पूछीने। जेणेव पोसहसालाए तेणेव उ वागच्छइ २ त्ता। जिहा पौषधशालाछे तिहाआवे तिहा आवीने। पोसहसाल अणुप्पविसइ २ त्ता। पौषधशाला माहि प्रवेशकरे पौषधशाला माहि प्रवेश करीने। पोसहसाल पमज्जइ २ त्ता। पौषधशाला प्रतें पूंजे पौषधशालाप्रतें पूंजीने। उच्चारपासवणभूमीओ पडिलेहेइ २ त्ता। बडीनीति लघुनीति भूमिप्रतें पडिलेहे बडीनीति छोटीनीतिनी भूमि पडिलेहीने। दब्भसंथारग संथरइ २ त्ता। डाभनो संथारो संथरेकरे इत्यर्थ डाभनो संथारो करीने। दब्भसंथारग दुरूहइ २ त्ता। डाभने संथारे बेसे डाभने संथारे बेसीने। पोसहसालाए पोसहिए बंभचारीओ। पौषधशालानेविषे पौषधयुक्त ब्रह्मचर्य सहित। जाव पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे विहरइ। यावत् पाक्षिक पौषधप्रतें अनुपालतोथको विचरे। तएण ते समणोवासगा। तिवारे ते श्रमणोपासक। जेणेवसावत्थीणयरी जेणेव साइ २ गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता। जिहा श्रावस्ती नगरीछे जिहा आपणा आपणा घरछे तिहा आवे तिहा आवीने। विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेंति २ त्ता। विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम आहारप्रतें रन्धावे रन्धावीने। अस

विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति २ त्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवंवयासी—एवं खलु देवा णुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असणपाणखाइमसाइमे उवक्खडाविए, तं संखे समणोवासए णोहव्व माग च्छइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सख समणोवासगं सद्दावेत्तए ? तएणं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एववयासी—अत्यहण तुझे देवाणुप्पिया! सुनिव्वुया वीसत्था अहंणं सखं समणोवासगं

शब्दापयन्ति, शब्दापयित्वा एवमवादिषु—एव खलु देवानुप्रिया. । अस्माभिस्तद्वि खादिम स्वादिममुपस्कारयन्ति, उपस्कारर्य्या ऽन्योन्य शब्दापयन्ति, शब्दापयित्वा एवमवादिषु—एव खलु देवानुप्रिया. । अस्माभिस्तद्वि पुलमशनपानखादिमस्वादिममुपस्कारितस्तच्छङ्ख श्रमणोपासको नो शीघ्रमागच्छति, तच्छ्रेय खलु देवानुप्रिया । वय शङ्ख श्रमणोपासक शब्दापयितुम्, तदा स पुष्कली श्रमणोपासकस्तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत्—आस्व यूय देवानुप्रिया ! सुससमाधियुक्ता विश्वस्ता , अह

मग सद्दावेंति २ त्ता एववयासो । माहोमाहि तेडावे माहोमाहि तेडावीने इमकहे । एवखलु देवाणुप्पिया । इम निश्चे अहो देवानुप्रिया । अम्हेहि से विउले असण पाण खाइम साइमे उवक्खडाविए । अम्हे एह विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहार रन्धाव्याछे । त संखे समणोवास ए णो हव्वमागच्छइ । तेह भणी शङ्ख श्रमणोपासक नही उतावला इहा आवे । त सेयखलु देवाणुप्पिया अम्ह सख समणोवासग सद्दावित्तए । तेजाटे श्रयभलू निश्चे अहो देवानुप्रियाओ अम्हे शङ्ख श्रमणोपासक प्रते तेडो आवीये । तएण से पोक्खलो समणोवासए । तिवारे ते पोखली श्रमणोपासक । ते समणोवासए एववयासो । तेह श्रमणोपासक प्रते इमकहे । अत्यहण तुभेदेवाणुप्पिया सुनिव्वुया वीसत्था । बेसो ण वाक्यालकारे, तुम्हे अहो देवान प्रियाओ । सुखे समाधे थका विश्रामल्यो । अहण सखसमणोवासग सद्दामित्तिकट्टु । ह्र ण वाक्यालकारे, शङ्खश्रमणोपासक प्रते तेडो आज इम करीने तेसि समणोवासगाण अतियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । तेह श्रमणोपासकाना समीपथकी नीसरे नीसरीने । सावत्थीणयरी मज्झमज्झेण । न रीने मध्ये मध्ये थईने । जेणेव सखस्स समणोवासगस्सगिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा शङ्ख श्रमणोपासकनो घरछे तिहा आवे तिहा आवीने।

सद्दामित्तिकट्टु तेसिं समणोवासगाणं ऋंतियाउ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता सावत्थीं णयरी मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं ऋणुप्पविठे, तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासगं एज्जमाणं पासइ, पासइत्ता हठतुठा ऋासणाउ ऋब्भुठेइ २ त्ता सत्तठपयाहिं ऋणुगच्छइ, ऋणुगच्छइत्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदइ णमंसइ, णमंसइत्ता ऋासणेणं उवनिमंतेइ २ त्ता एवंवयासी—सदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप

प्रतिनिष्क्रमते' प्रतिनिष्क्रम्य श्रावस्त्यानगर्या मध्य मध्येन यत्रैव शङ्खस्य शङ्ख श्रमणोपासक शब्दे इति कृत्वा तेषा श्रमणोपासकानामन्तिकात्प्रतिनिष्क्रमते' प्रतिनिष्क्रम्य श्रावस्त्यानगर्या मध्य मध्येन यत्रैव शङ्खस्य श्रमणोपासकस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शङ्खस्य श्रमणोपासकस्य गृहे ऽनुप्रविष्ट, तदा सोत्पला श्रमणोपासिका पुष्कलिन श्रमणोपास कमागच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाऽऽसनादभ्युत्तिष्ठति' अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदै रनुगच्छति २। पुष्कलिनं श्रमणोपासक वन्दते नमस्यति, नम स्कृत्य सनेनोपनिमन्त्रयति, उपनिमन्त्र्यैवमवादीत्–सन्दिसन्तु देवानुप्रिया । किमागमनप्रयोजन ? तदा पुष्कली श्रमणोपासक उत्पला श्रम

॥ भाषा ॥

संखस्ससमणोवासयस्सगिह अणुप्पविठे। शङ्ख श्रमणोपासकना घरप्रते पैठो प्रवेशकीधो। तएण साउप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासग एज्ज माणं पासइ २ त्ता। तिवारे तिका उत्पलानाम श्रमणोपासिका पोक्खली श्रमणोपासक प्रते आवतोथको देखे आवतोथको देखीने। हठतुठ आस णाओ अब्भुठेइ २ त्ता। हर्ष संतोष पामी थकी आसनथकी ऊठे आसनथकी ऊठीने। सत्तठपयाहि अणुगच्छइ २ त्ता। सात आठ पगला सामुही जा य जाईने। पोक्खलिसमणोवासग वंदइ णमसइ २ त्ता। पोक्खली श्रमणोपासक प्रते वांदे नमस्कार करे वांदी नमस्कार करीने। आसणेण उवनिम तेइ २ त्ता एवयवासी। आसनेकरी उपनिमंत्रणा करे आसने बेसो इमकहीने इमकहे। सदिसतुणदेवाणुप्पिया किमागमणपओयण। आज्ञा द्यो ण वा क्यालंकारे, अहोदेवानुप्रिया। स्यू आववानो प्रयोजन एतले स्यें कार्ये आव्या। तएण से पोक्खली समणोवासए उप्पल समणोवासिय एवंवयासी।

हेयणं ? तएणं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवंवयासी—कहिणं देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए तएणं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासयं एववयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बम्भचारी जाव विहरइ । तएण से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसालाए जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ , उवागच्छइत्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ , पडिक्कमइत्ता संख समणोवासगं वंदइ णमंसइ वं २ त्ता एववयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हेहिं से

णोपासिकामेवमवादीत्–क्व देवानुप्रिया. । शङ्ख श्रमणोपासक ? तदा सोत्पला श्रमणोपासिका पुष्कलिन श्रमणोपासकमेवमवादीत्–एव खलु देवानुप्रिया । शङ्ख श्रमणोपासक पौषधशालाया पौषधिको ब्रह्मचारी यावद्विहरति । तदा सपुष्कली श्रमणोपासको यत्रैव पौषधशाला यत्रैवश्रमणोपासकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य गमनागमनायै प्रतिक्रामति, प्रतिक्रम्य शङ्ख श्रमणोपासक वन्दते नमस्यति, नमस्कृत्यैवमवादीत्–

तिवारे ते पोक्खलो श्रमणोपासक उत्पला श्रमणोपासिका प्रते इमकहै । कहिण देवाणुप्पिया सखेसमणोवासए । किहा ण वाक्यालकारे, अहो देवानुप्रिया । शङ्ख श्रमणोपासक । तएण सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिसमणोवासय एववयासी । तिवारे तिका उत्पला श्रमणोपासिका पोक्खली श्रमणोपासक प्रतें इमकहै । एवखलु देवाणुप्पिया । इम निश्चै देवानुप्रियाश्रो । सखेसमणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बभचारी जाव विहरइ । शङ्ख श्रमणोपासक पौषधशालावें पौषधसहित ब्रह्मचर्यसहित यावत् विचरै । तएण से पोक्खली समणोवासए । तिवारे ते पोक्खली श्रमणोपासक । जेणेव पोसहसालाए जेणेव सखेसमणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता । जिहा पौषधशालाछै जिहा शङ्ख श्रमणोपासकछै तिहा श्राव तिहा श्रावीने । गमणागमणाए पडिक्कमइ २ त्ता । इरियावही पडिक्कमे गमणागमणे इत्यादि कहै कहीने । सख समणोवासग वदइ णमसइ व २ त्ता एववयासी । शङ्ख श्रमणोपासक प्रतें वादे नमस्कारकरै वादी नमस्कार करी इमकहै । एवखलुदेवाणुप्पिया । इम निश्चै देवानुप्रिया । तुम्हेहि से विउले असण जा

॥ टीका ॥ बाह्यसहायापेक्षया केवलस्य ऽद्वितीयस्य तथाविधक्रोधादिसहायापेक्षया केवलस्यैव न चैकस्येतिप्रज्ञाना देकाकिन एव पौषधशालाया पौष

॥ मूल ॥ विउले असण जाव साइमे उवक्खडाविते त गच्छामोण देवाणुप्पिया ! तं विउलं असण जाव साइम आस्सादेमाणा जाव पडिजागरमाणा विहरामो, तएण से सखे समणोवासए पोक्खलि समणोवासग एवं वयासी—णोखलु कप्पइ मे देवाणुप्पिया ! त विउल असणं ४ आस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए ? कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए त छदेणं देवाणुप्पिया ! तुम्हे विउलं

अनुवाद एव खलु देवानुप्रिया । अस्माभिस्तद्विपुलमशन (प्रभृति) यावत्स्वादिममुपस्कारितस्तद्गच्छामो देवानुप्रिया । तद्विपुलमशन (प्रभृति) या वत्स्वादिममास्वादयन्तो यावत्प्रतिजाग्रतो विहराम , तदा स शङ्ख श्रमणोपासक पुष्कलिन श्रमणोपासकमेवमवादीत्—नोखलु कल्पते मम देवानुप्रिया । तद्विपुलमशनमास्वादयतो यावत्प्रतिजाग्रतो विहर्त्तुम्, कल्पते मम पौषधशालाया पौषधिकस्य यावद्विहर्त्तुम्' तत च्छन्दे

॥ भाषा ॥ व साइम उवरखडाविए । अम्हे ते विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम रन्धाव्याछे । तगच्छामाण देवाणुप्पिया । ते भणी आवा जाइये अहो देवा नुप्रिया । तविउल असण जाव साइम आस्सादेमाणा जाव पडिजागरमाणाविहरामो । ते विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहारप्रते ईषत्स्वादताथका यावत् अनुपालताथका विचरिवे । तएण से सख समणोवासए पोक्खलि समणोवासग एववयासी । तिवारे ते शङ्ख श्रमणोपासक पुष्कलो श्रमणोपासक प्रत इमकहे । णोखलुकप्पइमेदेवाणुप्पिया । नहो निश्चे कल्पे मुझने अहो देवानुप्रिया । तविउल असण ४ आस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स विहरित्तए । ते विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहारप्रतें ईषत्स्वादवो इत्यादि यावत् पाक्षिक पौषध [illegible] ल । विचरवो तेमाटे । कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव विहरित्तए । कल्पे मुझने अहोदेवानुप्रिया । पौषधशालानेविषे पौषधसहितने याव त् विचरवो । त छदेण देवाणुप्पिया तुम्हे विउल असण ४ आस्सादेमाणा जाव विहरह । तेहभणी पोतानी इच्छावें पण माहरी आज्ञानथी देवानुप्रि

प कर्तुं कल्पत इत्यवधारणीय, एतस्य चरितानुवादरूपत्वात् तथा ग्रन्थान्तरे बहूनां श्रावकाणां पौषधशालायां मिलनश्रवणात्पौषधाभावात्

असणं ४ आसादेमाणा जाव विहरइ, तएणं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता सावत्थिं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता ते समणोवासए एवंवयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ जाव विहरइ, संखे

न देवानुप्रिया! यूयं विपुलमशनं (प्रभृति) आस्वादयन्तो यावद्विहरथ, तदा स पुष्कली श्रमणोपासकः शङ्खस्य श्रमणोपासकस्यान्तिकात्पौषधशालातः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य श्रावस्त्या नगर्या मध्येन मध्येन यत्रैव ते श्रमणोपासकास्तत्रैवोपागच्छति। उपागत्य तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत्-एवं खलु देवानुप्रिया! शङ्खः श्रमणोपासकः पौषधशालायां पौषधिकोयावद्विहरति, तस्माच्छन्देन देवानुप्रिया!

या तुम्हे ते विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम आस्वादताथका यावत् पाक्षिकपौषध अनुपालताथका विचरो। तएणं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता। तिवारे ते पोक्खली श्रमणोपासक शंखश्रमणोपासकनो वचन सांभली शंख श्रमणोपासकना समीपथकी पोषधशालाथकी नीकले नीकलीने। सावत्थि णयरि मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता। श्रावस्तीनगरीनेविषे मध्येमध्य थई जिहां ते श्रमणोपासकछे तिहां आवे तिहां आवीने। ते समणोवासए एवंवयासी। ते श्रमणोपासक प्रते इमकहे। एवंखलुदेवाणुप्पिया संखेसमणोवासए। इम निश्चे अहो देवानुप्रियाओ। शंख श्रमणोपासक। पोसहसाए पोसहिए जाव विहरइ। पोषधशालाने विषे पौषधसहित यावत् विचरे। तं छंदेणं देवाणुप्पिया तुब्भे विउलं असणं ४ जाव विहरइ संखेणं समणोवासए णो हव्वमागच्छइ। तेहभणी पोताने अभिप्राये करो पणि नही माहरो आग्रहेकरी अहो देवानुप्रिया। तुम्हे विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम प्रते आस्वादताथका यावत् पौषध अनु

॥ टीका ॥ स्वरेण स्वारगादिविशिष्टगुणसन्नवाचेति ॥ गमणागमणाए पडिक्कमइत्ति ॥ ईर्यापथिकीं प्रतिक्रामतीत्यर्थः ॥ छंदेणंति ॥ स्वाभिप्रायेण नतु म दीयाग्रहेणेति ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्ति ॥ पूर्वरात्र श्च रात्रेः पूर्वो भागो ऽपगतारात्रि रपरात्र स च पूर्वरात्राऽपरात्र स्तल्लक्षण कालः समयो य स तथा तत्र॥ धम्मजागरियंति ॥ धर्माय धर्मचिंतया वा जागरिका जागरणं धर्मजागरिका ता ॥ पारित्तएत्तिकट्टु एवसंपेहेइत्ति ॥ पार

॥ मूल ॥ ण समणोवासए णो हव्व मागच्छइ । तएणं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आस्साएमाणा जाव विहरंति । तएणं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था, सेयं खलु मे कल्लं पाउ जाव जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता णमंसित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेइत्ता कल्लं जाव जलंते

॥ अनुवाद ॥ शङ्ख श्रमणोपासको नोऽभ्याजगाम(?) । तदा ते श्रमणोपासका स्तद्विपुलमशन (प्रभृति) आस्वादयन्तो यावद्विहरन्ति। तदा शङ्खस्य श्रमणोपासकस्य पूर्वरात्रापरात्रकालसमये धर्मजागरिका जाग्रतो ऽयमेतद्रूपो यावत्समुत्पन्नवान्–श्रेय खलु मे कल्यप्रभातायां यावज्ज्वलन्ते श्रमण भगवन्त महावीर वन्दित्वा नमस्कृत्य ततः प्रतिनिवृत्तस्य पाक्षिक पौषध पारयितुमिति कृत्वा एव समीक्षते।

॥ भाषा ॥ पालताथका विचरो इमकह्यो तेहभणी शङ्ख श्रमणोपासक उतावला नहीआवे। तएण ते समणोवासगा। तिवारे ते श्रमणोपासक। त विउल असण ४ आस्साएमाणा जाव विहरति। ते विस्तीर्ण अशन पान खादिम स्वादिम ए चार आहार आस्वादताथका विचरे। तएण तस्स सखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्त कालसमयसि। तिवारे ते शङ्ख श्रमणोपासकने पौषधशालानेविषे पोषधसहितने आधीरात्रिनो समयनेविषे। धम्मजागरिय जागरमागस्स। धर्म जागरिकाये जागताथकाने। अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था। एह एहवेरूपे यावत् चित्तमें मनोरथ ऊपनो। सेय खलु मे कल्ल पाउ जाव जलते। श्रेय भलू निश्चयें मुझने कालहे प्रभातथया यावत् तेजवन्त सूर्य ऊगाथका। समण भगव महावीर वदित्ता णमसित्ता। श्रमण भगवन्त श्री

॥ टीका ॥

यितु पार मेतु एव सम्प्रेक्षते इत्यालोचयति किमित्याह ॥ इतिकर्तुमेतस्यैवार्थस्य करणायेति ॥ आभिगमोणत्थित्ति ॥ पंचप्रकार पूर्वोक्तो ऽभिगमो नास्त्य ऽस्य सचित्तादिद्रव्याणा विमोचनीयानामभावादिति ॥ जहापढमति ॥ यथा तेषा मेव प्रथमनिगम स्तथा द्वितीयनिगमो ऽपि वाच्य इ

॥ मूल ॥

पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता पायविहारचारेण सावत्थिं णयरिं मज्झमज्झेण जाव पज्जुवासइ । अभि गमो नत्थि । तएण ते समणोवासगा कल्लं पाउ जाव जलते राहाया कय जाव सरीरा सएहिं सएहिं गि हेहिंतो पडिणिक्खमति २ त्ता एगयओमिलायति २ त्ता सेस जहा पढमं जाव पज्जुवासइ । तएणं समणे

सम्प्रेत्य कल्य (प्रभृति) यावज्ज्वलन्ते पौषधशालात प्रतिनिष्क्रमति प्रतिनिष्क्रम्य शुद्धप्रावेश्यानि मङ्गलानि वस्त्राणि प्रवरपरिहित स्व कीयाद्गृहात्प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य पादविहारचारेण श्रावस्त्यानगर्या मध्यमध्येन यावत्पर्युपास्ते, अभिगमोनास्ति । तदा ते श्रमणोपा

भाषा

महावीरस्वामी प्रते वांदी नमस्कार करी । तओपडिनिग्गतस्स परिखय पासइ पारित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ २ त्ता । तिहांथकी पाछा आव्याने पाखि पोषधव्रत पार पहुचवा इम करीने इम आलोचे इसो आलोचीने । कल्ल जाव जलते पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । कालह यावत् सूर्य ऊ । पोषधशालाथकी नीकले पोषधशा लाथकी नीकलीने । सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए । निर्मल पहिरवायोग्य मङ्गलीक वस्त्र प्रधा भले पहिरी । साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता । पोताना घरथकी नीकले पोताना घरथकी नीकलीने । पायविहारचारेण । पगे चलवाणे चालतो थको । सावत्थि णयरि मज्झमज्झेण जाव पज्जुवासइ अभिगमोनत्थि । श्रावस्ती नगरीने मध्येमध्येकरी नीकले यावत् स्वामीप्रते सेवे पूर्वोक्त पंच अभि गम नथी पोषध भणी । तएण ते समणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक अनेरा । कल्ल पाउ जलते राहाया कय जाव सरीरा । कालह [illegible] यावत् सूर्य ऊगा स्नानकीधा कृत यावत् शरीरथका । सएहिं २ गिहेहिंतो पडिणिक्खमति २ त्ता एगयओ मिलायति २ त्ता । आप आपणा घरथकी

सुदक्खुजागरियं जागरियत्ति "सुष्ठु दरिसणं जस्स सो सुदक्खू तस्स जागरिया" प्रमादनिद्राव्यपोहेन जा
त्यर्थ ॥ रिज्झोत्ति ॥ ह्य ह्यस्तनदिने ॥

भगव महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसेय धम्मकहा जाव आणाए आराहए भवइ। तएणं ते समणोवा
सगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता समणं भ
गवं महावीरं वंदति णमंसंति वंदित्ता ण २ त्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइ
त्ता संख समणोवासग एवंवयासी–तुम्हेणं देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणाचेव एवंवयासी–तुम्हेण

सक्रा कल्यप्रभात (प्रभृति) यावज्ज्वलन्ते स्नाता कृत यावच्छरीरा स्वकेभ्य २ गृहेभ्य प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य एकत्र मिलन्ति शेष
यथा प्रथम यावत्पर्युपासते। तदा श्रमणो भगवान्महावीर स्तेषा श्रमणोपासकाना तस्यैव धर्मकथा यावदाज्ञाया आराधका भवन्ति। तदा
ते श्रमणोपासका. श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा उत्थयोत्तिष्ठन्ति, उत्थाय श्रमण भगवन्त महावीर वन्द
न्ते नमस्यन्ति' वन्दित्वा नमस्कृत्य यत्रैव शङ्ख श्रमणोपासकस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शङ्ख श्रमणोपासकमेवमवादिषु –यूय देवानुप्रिया।

...सेसजहापढम जाव पज्जुवासइ। थाकतां जिम पहिलोवार कह्यो तिम कह
नोकले आपणाआपणा घरथकी नीकलीने एकठा मिले एकठा मिलीने। सेसजहापढम जाव पज्जुवासइ। थाकतां जिम पहिलोवार कह्यो तिम कह
वो यावत् सेवाकरे। तएण समणभगवमहावीरे। तिवारे ते श्रमण भगवन्तश्रीमहावीरस्वामी। तेह समणोवासगाण तीसेय धम्मकहा। तेह श्रमणो
पासकाप्रतें तेह धर्मकथा कहे। जाव आणाए आराहए भवइ। यावत् आज्ञाना आराधक हुवे एतलालगेकहवो। तएण से समणोवासगा समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति २ त्ता। तिवारे तेह श्रमणोपासक श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीप
धर्मो धर्म साम्भली हृदयधरीने हर्ष संतोष पाम्या ऊठे ऊभाथाय ऊठो ऊभाथईने। समण भगवमहावीर वदति णमसति वंदित्ता णमंसित्ता। तिवार
भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने। जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता। जिहा शंख श्रमणो

॥ मूल ॥

देवाणुप्पिया ! विउलं असणं जाव विहरिस्सामो, तएणं तुम्मं पोसहसालाए जाव विहरिए, त सुट्ठुणं तुम्मं देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलेसि । अज्जोत्ति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवंवयासी—माणं अज्जो ! तुम्हे संख समणोवासगं हीलह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह, संखेणं समणोवासए पियधम्मे चेव दढधम्मेचेव सुदक्खुजागरियं जागरिए । भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ

॥ अनुवाद ॥

त्व आत्मना चैवास्माकमेवमादिष्ट-वय देवानुप्रिया । विपुलमशन (प्रभृति) यावद्विहरिष्याम , तदा त्व पौषधशालाया विहरित स्तत्सुष्ठु देवानुप्रिया । त्व अस्माक हीलयसि । आर्या । इति श्रमणो भगवान्महावीरस्तान् श्रमणोपासकानेवमवादीत्—मा आर्या यूय शङ्ख श्रमणोपासक हीलयथ निन्दथ खिसथ गर्हथ अवमन्यथ । शङ्ख श्रमणोपासक प्रियधर्माचैव दृढधर्माचैव सुदर्शनजागरिका जागरित , भदन्त ! इति भग

॥ भाषा ॥

पासकछे तिहा आवे तिहा आवीने । संखसमणोवासग एववयासो । शङ्ख श्रमणोपासक प्रते इमकहे । तुम्भेण देवाणुप्पिया छिज्जा अम्हे अप्पणाचव एववयासी । तुम्हे ण वाक्यालकारे, हेदेवानुप्रिय पाछिले दिने अम्हने आपणपेज निश्चे एम कह्यु । तुम्भे ण देवाणुप्पिया विउल असण जाव विहरिस्सामो । तम्हेण वाक्यालकारे, अहोदेवानुप्रियाओ । विस्तीर्ण असन यावत् आस्वादतायका विचरस्या आपण । तएण तुम्म पोसहसालाए जाव विहरिए । तिवारे तुम्हे अम्हने विप्रतारीने पौषधशालानेविषे यावत् पौषधकरीने विचरया । त सुट्ठुण तुम्म देवाणुप्पिया अम्हे हीलेसि अज्जोत्ति । ते भलूकरयो इसो उपालम्भ देई कहे तुम्हने अहो देवानुप्रिया अम्हे हीलस्यो हीलया ते गुरु साखे आर्यो इसो आमत्रण वचने । समणेभगवमहावीरे ते समणोवासए एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी ते श्रमणोपासकाप्रते इमकहे । माणअज्जो । मामता ण वाक्यालकारे, अहो आर्यो । तुम्भे संखसमणोवासग हीलह निंदह खिंसह गरहह अवमन्नह । तुम्हे शङ्खश्रमणोपासक प्रते हीलोमता निन्दोमता खिंसोमता गरहोमता अवज्ञामता करो । संखेण समणोवासए पियधम्मेचेव दढधम्मेचेव सुदक्खुजागरियं जागरिए । शङ्ख ण वाक्यालकारे, श्रमणोपासक वल्लभ धर्मछे जेहने विषे दृढछे धर्मनेविषे जेह निश्चे

॥ मूल ॥

तिविहा जागरिया पन्नत्ता, तं०
वं २ त्ता एवंवयासी—कइविहाणं भंते ! जागरिया पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पन्नत्ता,
वुद्धजागरिया अवुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया। सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तिविहा जागरिया पन्नत्ता,
तंजहा—वुद्धजागरिया अवुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंता उप्पन्नणाण
दंसणधरा जहा खंदए जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी एएणं वुद्धा वुद्धजागरियं जागरंति । जे इमे अणगारा भ

अनुवाद

वान् गौतम श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्यैवमवादीत्—कतिविधा भदन्त । जागरिका प्रज्ञप्ता ? गौ० । त्रिवि
धा जागरिका प्रज्ञप्ता तद्यथा—बुद्धजागरिका अवुद्धजागरिका सुदर्शनजागरिका । अथकेनार्थेन भ० । एवमुच्यते तच्चैव यावत्सुदर्शनजागरिका
गौतम । य इमे अर्हन्तो भगवन्त उत्पन्नज्ञानदर्शनधरा यथा स्कन्दको याव त्सर्वज्ञ सर्वदर्शी, एते बुद्धाबुद्धजागरिका जाग्रति । यइमे अनगा

॥ भाषा ॥

। हेभगवन् । इसे आमन्त्रणे भग
प्रमाद निद्रारहित जागरिकावे जाग्या । भगत्ति भगवगौतम समणभगवं महावीर वंदइ णमंसइ वं २ त्ता एवंवयासी
वन्तगौतम श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कारकरे वांदी नमस्कार करी इमकहे । कइविहाणं भंते जागरिया पन्नत्ता । केतलेभेदे हेभ
गवन् । जागरित कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिविहा जागरिया प० तं० । हेगौतम । तीनभेदे जागरित कह्या ते कहेछे—बुद्धजागरिया अबुद्ध
जागरिया सुदक्खुजागरिया । केवल ज्ञानोंधिकरी जागे ते बुद्धजागरिका कहिये केवलज्ञान अभावेकरी यथासम्भव शेषज्ञान सद्भावथकी बुद्धसरीखा ते
छद्मस्थजागरिका कहिये २ प्रमाद निद्रा परिहरण ते सुदक्खुजागरिका कहिये ३ वलीगौतम पूछेछे—सेकेणट्ठेणं एववुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम
कह्या । तिविहा जागरिया प० तं० । तीनप्रकारना जागरिका कह्या ते कहेछे—बुद्धजागरिया अबुद्धजागरिया सुदक्खुजागरिया । बुद्धजागरिका अबु
द्धजागरिका सुदर्शन जागरिका ३ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जे इमे अरहंता भगवंता उप्पन्नणाणदंसणधरा जहा खंदए जाव सव्वन्नू सव्वदरिसी । हेगौ
तम । जे एह अरिहंत भगवन्त उपना ज्ञानदर्शनना धरणहार जिम खन्दकने अधिकारे कह्यु तिम यावत् सर्व पदार्थना जाण सर्वपदार्थना देखण

यहा सुदक्खुजागरियं ता जागरति सुदर्शनजागरिकामित्यर्थः ॥ बुद्धावुद्धजागरियं जागरतित्ति ॥ बुद्धा केवलावबोधेन तेच बुद्धाना व्यपोढा ज्ञाननिद्रा या जागरिका प्रबोधो बुद्धजागरिका ता जाग्रति कुर्वंति ॥ अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरतित्ति ॥ अबुद्धा केवलज्ञानाभावेन यथासम्भव शेषज्ञानस द्भावा च्च बुधसदृशा स्तेच अबुद्धाना छद्मस्थज्ञानवता या जागरिका सा तथा ता जागति ॥ अथ भगवन्तं शङ्खः स्तेषां मनाक्परिकुपितश्रमणोपास

गवतो इरियासमिया भासासमिया जाव गुत्तबंभयारि एएणं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरति । जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरति एएणं सुदक्खुजागरियं जागरति । सेतेणठेणं गोयमा! एव वुच्चइ तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया । तएण से संखे समणोवासए समण भगवं महावीरं

रा भगवन्त इर्यासमिता भाषासमिता यावद्गुप्तब्रह्मचारिण एते अबुद्धाबुद्धजागरिका जाग्रति, यइमे श्रमणोपासका अभिगतजीवाजीवा याव द्विहरति एते सुदर्शनजागरिका जाग्रति, तत्तेनार्थेन गौतम! एवमुच्यते त्रिविधा जागरिका यावत्सुदर्शनजागरिका। तदा स शङ्ख श्रमणोपासक

कार । एएण बुद्धाबुद्ध जागरिय जागरति । एह बुद्धकहिये ते केवल अवबोधेकरी गई अज्ञान निद्रा तेणे जाग्या ते बुद्धजागरिक कहिये तथा । जेइमे अणगारा भगवता इरियासमिया भासासमिया । जे एह साधु भगवन्त इर्यासमितवन्त भाषासमितवन्त । जाव गुत्तबंभयारि एएण अबुद्धा अबुद्धजागरिय जागरति । यावत् गुप्त ब्रह्मचारी एह केवलज्ञान अभावेकरी शेष यथायोग्य ज्ञानने सद्भावेकरी छद्मस्थपणा ज्ञानवन्त जे जागरिकाप्रते जागेछे ते अबुद्धजागरिक कहिये । जेइमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति । जे एह श्रमणोपासकजाण्याछे जीव अजीव स्वरूपयो जेणे इम यावत् विचरेछे । एएण सुदक्खुजागरिय जागरति । एह निद्रा प्रमादरहित शुद्ध सम्यग्दर्शनेकरी जागे ते सुदर्शनजागरिका कहिये । सेत एठेण गो एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हे गौतम । इम कहिये । तिविहा जागरिया जाव सुदक्खुजागरिया । तीनभेदे जागरिक यावत् सुदर्शनजागरिक एतलालगि कहवो । तएण ते संखे समणोवासए । तिवारे ते शङ्ख श्रमणोपासक । समण भगवमहावीर वदइ णमसइ व २ ता एववयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी

॥ मूल ॥

वंदइ णमंसइ वं २ त्ता एवंवयासी—कोहवसट्टेणं भंते ! जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उव चिणाइ ? संखा ! कोहवसट्टेण जीवा आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ एवं जहा पढमेसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ । माणवसट्टेणं भंते ! एवचेव, एवं मायावसट्टेवि, एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ । तएणं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एय

॥ अनुवाद ॥

श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्य एवमवादीत्-क्रोधवशार्त्तो भदन्त । जीवः किं बध्नाति किं प्रकरोति किं चिनोति किमुपचिनोति ? शङ्ख ! क्रोधवशार्त्ताजीवा आयुर्वर्ज्जाः सप्त कर्मप्रकृतयः शिथिलबन्धनबद्धा एव यथा प्रथमे शते ऽसंवृतस्यानगारस्य यावदनुपर्यटति । मानवशार्त्तो भदन्त ! एवचैव, एवं मायावशार्त्तोपि, एवंलोभवशार्त्तोपि यावदनुपर्यटति । तदाते श्रमणोपासकाः श्रमणस्य भगवतो महा

॥ भाषा ॥

प्रते वांदे नमस्कार करे वांदी नमस्कार करी इम कहे । कोहवसट्टेण भंते जीवे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ । क्रोधने वशे पीडित हेभगवन् । जीव स्यूं बांधे स्यूं पइकरे स्यूं चिणे स्यूं उपचय करे इतिप्रश्न उत्तर । संखा कोहवसट्टेण जीवा आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ सिढिल बंधणबद्धाओ । हे शङ्ख । क्रोधवशे पीडितजीव आयुष्कर्म वर्जीने सात कर्मप्रकृति शिथिलबन्धने बांधी हती ते दृढबन्धने करे कठोर बांधे । इत्यर्थः । एवं जहा पढमेसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ माणवसट्टेण भंते एवंचेव । इम जिम पहिला शतकनेविषे असंवुड अणगारने अधिकारे कह्यो तिम इहां कहवो यावत् संसारमांहि भमे मानवशे पीडित हेभगवन् । इत्यादि प्रश्न उत्तर इमहीज कहवो । एवं मायावसट्टेवि एवं लोभवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ । इम मायावशे पीडित पणि कहवो इम लोभवशे पीडित पणि कहवो यावत् संसार परिभ्रमण करे । तएणं ते समणोवासगा । तिवारे ते श्रमणोपासक । समणस्सभगवओ महावीरस्स अंतिए । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीना समीपथकी । एयमट्ठं सोच्चाणिसम्म । एह अर्थ सांभ ली हृदयधरी । भीया तत्था तसिया संसारभयुव्विग्गा । भयपाम्या त्राठा मनमें उद्वेग मनमें संसारना भयथकी उद्विग्नथया । समणं भगवमहावीरं वंदइ

॥ मूल ॥

मठं सोच्चा णिसम्म भीया तत्था तसिया संसारभयुव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वदित्ता णमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता संखं समणोवासगं वदंति णमंसति एयमठं सम्मं विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेंति । तएणं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव पडिगया । भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वदइ णमंसइ वदित्ता णमंसित्ता एवंवयासी—पभूणं भंते !

अनुवाद

वीरस्यान्तिक । एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य भीतास्त्रस्तास्त्रसिता संसारभयोद्विग्ना श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दन्ते नमस्यन्ति । वन्दित्वा नमस्कृत्य यत्रैव शङ्खः श्रमणोपासकस्तत्रैवोपागच्छन्ति, शङ्खं श्रमणोपासकं वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्कृत्य एतमर्थं भूयोभूयः क्षाम्यन्ति, तदा त श्रमणोपासका शेष यथा आलभिकाया यावत्प्रतिगता, भदन्त । इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति । व न्दित्वा नमस्कृत्यैवमवादीत्–प्रभुर्भदन्त । शङ्खः श्रमणोपासको देवानुप्रियाणामन्तिके शेष यथा ऋषिभद्रपुत्रस्य यावदन्तं करिष्यति, तदेव

भाषा ॥

णमनः वदित्ता णमंसित्ता । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवा गच्छंति २ त्ता । जिहां शङ्खनामे श्रमणोपासक छे तिहां आवे तिहां आवीने । संखं समणोवासगं वदंति णमंसति । शङ्ख श्रमणोपासक प्रते वांदे नम स्कार करे । एयमठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेंति । एह अर्थ पूर्वोक्त अविनयरूप अर्थ सम्यक् भलीभांते विनयेकरी वार वार खमावे । तएणं ते स मणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव पडिगया । तिवारे ते श्रमणोपासक इत्यादि, शेषथाकतो सर्व जिम आलंभिकानगरी वास्तव्य श्रावकनो पर कह्यो यावत् पाछा घरेगया । भंतेत्ति भगवंगोयमे । हे भगवन् । एम गोतमगोत्रे भगवन्त गोतम । समणंभगवं महावीरं वदइ णमंसइ वद २ त्ता एवंवयासी । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे वांदी नमस्कार करी इमकहे । पभूणंभंते संखेसमणोवासए । समर्थ हे भगवन् । शङ्ख श्रमणो पासक । देवाणुप्पियाणं अंतिए सेसजहा ऋषिभद्रपुत्रनी जाव अंत करिसे । देवानुप्रिया तुम्हारे समीपे दीक्षा लेवाने इत्यादि, शेष जिम ऋषिभद्र

॥ टीका ॥

कानां कोपोपशमनाय क्रोधादिविपाक पृच्छ नार-कोहवसट्टेणमित्यादि ॥ इसिभद्दपुत्तस्सत्ति ॥ अनन्तरशतोक्तस्येति ॥ द्वादशशते प्रथम ॥
१ ॥ अनन्तरोद्देशके श्रमणोपासकविशेषप्रश्नितार्थनिर्णयो महावीरकृतो दर्शित इह तु श्रमणोपासिकाविशेषप्रश्नितार्थनिर्णय

॥ मूल ॥

सव्वे समणोवासए देवाणुप्पियाण अंतिए सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अंतं काहिति सेवं भंते भंतेत्ति
जाव विहरइ ॥ दुवालसमसयस्सय पढमो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं
समएणं कोसंबीणामं णयरी होत्था, वण्णओ, चंदोत्तरायणे चेइए वण्णओ, तत्थणं कोसंबीए णयरीए सह
स्साणीयस्स रण्णो पोत्ते सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते चेडगस्स रण्णो नत्तुए मिगावतीए देवीए अत्तए जयंतीए

अनुवाद

भदन्त २। इति यावद्विहरति॥ द्वादशमशते प्रथम ॥१२॥ १ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये कौशाम्बी नाम्नी नगर्य्यभवत्,
वर्णक, चन्द्रोत्तरायणश्चैत्यो वर्णक, तत्र कौशाम्ब्या नगर्य्यां सहस्रानीकस्य राज्ञ पौत्र शतानीकस्य राज्ञः पुत्र चेटकस्य राज्ञो नप्ता मृगा
वत्या देव्या आत्मजो जयन्त्या श्रमणोपासिकाया भ्रातृज उदायन इति नाम्ना राजा ऽभवत्' वर्णक, तत्र कौशाम्ब्या नगर्य्यां सहस्रानीक

॥ भाषा ॥

पुत्रनो अधिकार कह्यो तिम शङ्खश्रावकनो अधिकार कहवो यावत् अन्त करसे। सेवंभंते २ त्ति जाव विहरइ। तहत्ति हे भगवन्! तुम्हेकह्यु ते सर्वसत्य
छे अन्यथा नहीं यावत् गौतम विचरे। दुवालसमसयस्सय पढमो उद्देसोसम्मत्तो। ए बारमा शतकनो पहिलो उद्देशो अर्थथको पूरोथयो १२ ॥ १
प.हिलि उद्देशे श्रमणोपासक कह्या, हवे श्रमणोपासिका प्रश्न विचार कहेछे—तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबीणामं णयरीहोत्था वण्णओ। ते कालने
विषे ते समयनेविषे कोसम्बीनाम नगरी हुई वर्णक उवाईउपांगनी परे कहवो। चंदोत्तरायणे चेइए वण्णओ। चन्द्रोत्तरायण इसेनामे चैत्यहुयो वर्णक
कहवो। तत्थणंकोसंबीए णयरीए। तिहां कोसम्बी इसेनामे नगरीनेविषे। सहस्साणीयस्सरण्णो पोत्ते। सहस्रानीकनामे राजानो पोतरो एतले पुत्रनो
पुत्र। सयाणीयस्सरण्णोपुत्ते चेडगस्सरण्णो नत्तुए। शतानीक राजानो पुत्र बेटो चेडा राजानो दोहीतरो। मिगावतीए देवीए अत्तए जयंतीए समणोवासि

॥ टीका ॥ स्तत्कृत एव दर्शयंत इत्येव संबद्धस्याऽस्येदमादिसूत्र—तेणंकालेणमित्यादि ॥ पोत्तेत्ति ॥ पौत्र पुत्रस्यापत्य ॥ चेडगस्सत्ति ॥ वैशालीराजस्य ॥ नत्तुएत्ति ॥ नप्ता दौहित्र ॥ भाउज्जत्ति ॥ भ्रातृजाया ॥ वेशालीसावगाण अरहताण पुव्वसेज्जायरीति ॥ वैशालिको भगवान् महावीर स्तस्य वच

॥ मूल ॥ समणोवासियाए ज्ञत्तिज्जए उदायणे णामं राया होत्था, वण्णओ, तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा सयाणीयस्स रण्णो भज्जा चेडगस्स रण्णो धूया उदायणस्स रण्णो माया जयतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावती णाम देवी होत्था, वण्णओ तं०—जाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ। तत्थणं कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया सयाणीयस्स रण्णो भगणी उदायणस्स रण्णो पिउत्था,

अनुवाद स्य राज्ञ स्नुषा शतानीकस्य राज्ञो भार्या चेटकस्य राज्ञ पुत्री उदायनस्य राज्ञो माता जयन्त्या श्रमणोपासिकाया भ्रातृजाया मृगावती नाम्नी देव्यभवत्, वर्णकस्तद्यावत्सुरूपा श्रमणोपासिका यावद्विहरति । तत्र कौशाम्ब्या नगर्यां सहस्रानीकस्य राज्ञ पुत्री शतानीकस्य राज्ञो भगिनी उदायनस्य राज्ञ पितृष्वसा मृगावत्या देव्या ननान्दा वैशालीश्रावकाणामर्हतां पूर्वशय्यातरा जयन्ती श्रमणोपासिकाऽभवत्, सुकु

॥ भाषा ॥ याए भत्तिज्जए। मृगावती राणीनो आत्मज पुत्र जयती श्रमणोपासिकानो भतीजा। उदायणेणाम रायाहोत्था वण्णओ। उदायन इसेनामेराजाहूंतो त इनो वर्णक उवाई उपागथी जाणवो। तत्थण कोसंबीए णयरीए। तिहां कोसम्बीनामे नगरीनेविषे। सहस्साणीयस्सरण्णो सुण्हा सयाणीयस्सरण्णोभज्जा। सहस्रानीक राजाना पुत्रनी स्त्री शतानीक राजानी भार्या। चेडगस्सरण्णोधूया उदायणस्सरण्णो माया। चेडा राजानी बेटो उदायन राजानी माता। जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मियावतीणाम देवीहोत्था वण्णओ। जयती श्रमणोपासिकानी भोजाई मृगावतीनामे राणीहूई वर्णक। तजाव सुरूवा समणोवासिया जाव विहरइ। ते यावत् सुरूप श्रमणोपासिका यावत् विचरे। तत्थण कोसंबीए णयरीए सहस्साणीयस्सरण्णो धूया। तिहां कोसम्बीनामे नगरीनेविषे सहस्रानीक राजानी बेटी। सयाणीयस्सरण्णो भगिणी उदायणस्सरण्णोपिउत्था। शतानीकराजानो बहिन उदायीराजा

॥ टीका ॥

न श्रावयन्ति श्रावयन्तिवा तदसिकत्वादिति वैशालिकश्रावका स्तेषा आर्हताना अर्हद्देवतानां साधूनामितिगम्यं, पूर्वशय्यातरा प्रथमस्थानदात्री
साधवास्त्वपूर्वं समायाता स्तद्गृहएव प्रथम वसति यावन्ते तस्या स्थानदात्रीत्वेन प्रसिद्धत्वादिति, सा पूर्वशय्यातरा ॥ समोवर्सत्ति ॥ स्वामावत

॥ मूल ॥

मिगावतीए देवीए णणदा वेसालीसावयाण अरहंताणं पुव्वसिज्जातरी जयती समणोवासिया होत्था, सुकु
माल जाव सुरूवा अभिगय जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव परिसापज्जु
वासइ, तएण से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धठे समाणे हठतुठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता

अनुवाद

मार (प्रभृति) यावत्सुरूपा अभिगत (प्रभृति) यावद्विहरति । तस्मिन्काले तस्मिन्समये स्वामी समवसृतो यावत्परिषत्पर्युपास्ते, तदा स
उदायनो राजा अस्या कथाया लब्धार्थ सन् हृष्टतुष्ट कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति शब्दापयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ।

॥ भाषा ॥

नी भूआ । मिगावईए देवीए णणदा वेसाली सावयाण अरहताण । मृगावती राणीनीवहिन वैशालिक भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी तेहोना वचन साम्भ
ले श्रथवा सम्भलावे तेहना रसिकपणाथकी तेह वैशालीश्रावक ते साधु वलीकहवा अरहत भगवत जेहने देवछे एहवासाधु तेहोने । पुव्वसिज्जातरी ज
यती समणोवासिया होत्था । पूर्व शय्यातरा प्रथम स्थानकनो देणहारी अपूर्व साधुआवा तेहनाज घरनेविषे आवी पहिलो वस्तीमते वाचे जयतीने
स्थान दानी पणे प्रसिद्धपणा थको एहवी जयतीनामे श्रमणोपासिका श्राविका हुई पणि जेहनी । सुकुमाल जाव सुरूवा अभिगय जाव विहरइ । सुकु
माल हाथ पग जेहना यावत् सुरूप जाणछे जीव अजीवस्वरूपथी जेणे यावत् विचरै । तेण कालेण तेण समएण । ते कालने विषे ते समयने विषे ।
सामीसमोसढे जाव परिसापज्जुवासइ । श्रमण भगवन्त श्री महावीरस्वामी समोसर्या यावत् पर्षदा आवी वादी सेवाकरै । तएण से उदायणे राया इ
मीसे कहाए लद्धठे समाणे हठतुठे । तिवारे ते उदायन राजा एहवी कथाये स्वामी समोसर्या एहवे अर्थ लाधाथका हर्ष सन्तोष पाम्यो । कोडुंबियपुरि
से सद्दावेइ २ त्ता एवमवासी । आज्ञाकारी सेवकपुरुष प्रते तेडावै ते सेवक तेडावीने इमकहै । खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । उतावलाथाओ अहो देवा

॥ मूल ॥

एवंवयासी–खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया ! कोसंबि णयरिं सब्भितरबाहिरियं एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव पज्जुवासइ । तएणं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धठा समाणी हठतुठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ , उवागच्छइत्ता एवंवयासी–एव जहा णवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ । तएणं सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ । तएणं सा

अनुवाद

कौशाम्बी नगरी साभ्यन्तरबाह्या एव यथा कूणिकस्तथैव सर्व याव त्पर्युपास्ते' तदा सा जयन्ती श्रमणोपासिका अस्या कथाया लब्धार्था सती हृष्टतुष्टा यत्रैव मृगावती देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यैवमवादीत्–एव यथा नवमशते ऋषभदत्तो यावद्भविष्यति । तदा सा मृगावती देवी जयन्त्या श्रमणोपासिकाया यथा देवानन्दा यावत्प्रतिशृणोति, तदा सा मृगावती देवी कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दापयति, शब्दा

॥ भाषा ॥

नुप्रियाओ । कोसविणयरि सभितरबाहिरिय एव जहा कूणिओ । कासम्बो नगरीप्रते माहे सहित बाहिर इम जिम उवाईउपाङ्गनेविषे कूणिकनो अधिकार कह्यो । तहेवसव्व जाव पज्जुवासइ । तिमज इहा पणि सगलो कहवो यावत् सेवाकरे । तएण सा जयती समणोवासिया इमो से कहाए लद्धठा समाणो हठतुठा । तिवारे तिका जयती श्रमणोपासिका स्वामी समोसरया एहवो कथानो लाधार्थका हर्ष संतोष पामो । जेणेव मियावईदेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवंवयासो । जिहा मृगावती राणीछै तिहा आवे तिहा आवीने इमकहे । एव जहा णवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ । इम जिम नवमा शतकनेविषे ३३ मा उद्देशानेविषे ऋषभदत्त देवानन्दाने कह्यो यावत् , आणुगामियत्ताए भविस्सइ, एतलालगे इहा पणि जयती श्रमणोपासिका मृगावती देवीने कहे । तएण सा मियावतो देवी जयतोए समणोवासियाए जहा देवाणदा । तिवारे मृगावती देवी जयती श्रमणोपासिकायें कह्या वचन ते अङ्गीकारकरे जिम देवानन्दायें ऋषभदत्तना वचन । जाव पडिसुणेइ । यावत् सुख्या तिम सुणे । तएण सा मियावतीदेवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवंवयासी । तिवारे ते मृगावती राणी आज्ञाकारी सेवकपुरुष तेडावे तेडावीने इमकहे । खिप्पामेवभोदेवाणुप्पिया । उतावलाथाओ अहो देवानु

॥ मूल ॥

मियावई देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेइत्ता एवंवयासी—खिप्पामेव भोदेवाणुप्पिया ! लहुकरण जुत्ता रोहिया जाव धम्मियं जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठावेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति । तएणं सा मियावई देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव अंतेउराओ णिग्गच्छंति २ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव

॥ अनुवाद ॥

पयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! लघुकरणयोक्त (प्रभृति) यावद्धार्मिकं यानप्रवरं युक्तमेवोपस्थापयत' यावदुपस्थापयन्ति' यावत्प्रत्यर्पयन्ति । तदा सा मृगावती देवी जयन्त्या श्रमणोपासिकया सार्द्धं स्नाता कृतबलिकर्मा यावच्छरीरा बह्वीभिः कुब्जाभिर्यावदन्त पुरान्निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव बाह्योपस्थानशाला यत्रैव धार्मिकं यानप्रवरं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य यावदारूढा । तदा सा मृगावती देवी

॥ भाषा ॥

प्रियाओ । लहुकरणजुत्ता रोहिया जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठावेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति । लघुकरणशीघ्रगमन ते क्रियायुक्त जव इत्यादि, यावत् धर्मने अर्थे यानप्रवर बहिलप्रधान जोतरीने लेईआवो यावत् ते सेवक रथआणी यावत् आज्ञा पाछो सूंपे । तएण सामियावईदेवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धि ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सरीरा । तिवारे ते मृगावती देवी जयंतीनाम श्रमणोपासिका सघाते स्नानकीधो कीधो बलिकर्म यावत् शरीर शृङ्गारसहित थयो । बहूहि खुज्जाहि जाव अंतेउराओ णिग्गच्छति २ त्ता । घणी कूबडीदासो यावत् अंत:पुरथकी नीकलीने । जणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेवधम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जाव दुरूढा । जिहा बाहिरलो उपस्थानशालाछे जिहा धार्मिक यानप्रवरछे तिहा आवें तिहा आवीने रथनेविषे यावत् बेठी । तएण सामियावतीदेवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढासमाणी । तिवारे तेह मृगावती देवी जयतीनाम श्रमणोपासिका सघाते धार्मिक यानप्रवर रथ तेहप्रते बेठीथकी । णियगपरियाल जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ । पोताने परिवारसहित जिम ऋषभदत्त ब्राह्मण, तिम यावत् धार्मिक यान प्रधान रथथको उतरे । तएण सा मि

॥ मूल ॥

उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता जाव दुरूढा। तएणं सा मिगावती देवी-जयतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मि य जाणप्पवर दुरूढा समाणी णियगपरियाल जहा उसभदत्तो जाव धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ। तएण सा मियावई देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहि खुज्जाहि जहा देवाणदा जाव वदइ णमसइ, उदायण राय पुरओ कट्टु ठिइयाचेव पज्जुवासइ। तएण समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रन्नो मियावईए देवीए जयतीए समणोवासियाए तीसेय महइ जाव धम्म परिकहेइ जाव परिसा पडिगया।

अनुवाद

जयन्त्या श्रमणोपासिकया सार्द्धं धार्मिक यानप्रवर दुरूढा सती निजकपरिवार (प्रभृति) यथार्षभदत्तो यावद्धार्मिकाद्यानप्रवरात्प्रत्यारोहति, तदा सा मृगावती देवी जयन्त्या श्रमणोपासिकया सार्द्धं बह्वीभि कुब्जाभिर्यथा देवानन्दा यावद्वन्दते नमस्यति, उदायन राजान पुरत कृत्वा स्थिताचैव पर्युपास्ते। तदा श्रमणो भगवान् महावीर उदायनस्य राज्ञो मृगावत्या देव्या जयन्त्या श्रमणोपासिकाया स्तस्मै महातिमह

॥ भाषा ॥

यावतीदेवी जयतीसमणोवासियाए सद्धि। तिवारे तिका मृगावती राणी जयन्तीनामे श्रमणोपासिका सघाते। बहूहि खुज्जाहि जहा देवाणदा जाव वदइ णमसइ। घणी कूबडीदासी आदिदेई जिम देवानन्दा ब्राह्मणी तिम यावत् वादे नमस्कार करे। उदायण राय पुरओकटु ठिइयाचेव पज्जुवासइ। उदायनराजा प्रते आगेकरी बैठाथका निश्चये श्रीमहावीरस्वामी प्रते सेवे। तएण समणे भगवमहावीरे उदायणस्सरणो। तिवारे श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी उदायनराजाने। मियावतीए देवीए जयतीए समणोवासियाए। मृगावती राणीने जयती श्रमणोपासिकाने। तीसेयमहइ जाव धम्मपरिकहेइ। तेह मोटी जे पर्षदा ते यावत् धर्मकथा कहे सांभली। जाव परिसा पडिगया उदायणेपडिगए मियावती पडिगया। यावत् पर्षदा पाछी वली उदायनराजा स्वस्थाने गया मृगावती पणि पोताने स्थानके गई। तएण साजयती समणोवासिया। तिवारे तेह जयती श्रमणोपासिका। समणस्सभगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामीने समीपे धर्म साभलीने हृदयधारीने हर्ष सन्तोष पा

॥ मूल ॥

उदायणे पडिगए मियावईवि पडिगया। तएणं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी— कहण्णं भंते! जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति? जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवंखलु जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति एवं जहा पढमसए जाव वीईवयति। भवसिद्धियत्तणं भंते! जीवाण किं

॥ अनुवाद ॥

त्वं यावदृम परिकथयति यावत्परिषत्प्रतिगता। उदायन प्रतिगत। मृगावत्यपिप्रतिगता। तदा सा जयन्ती श्रमणोपासिका श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्कृत्यैवमवादीत्—कथं भदन्त! जीवा गुरुकत्वं शीघ्रमागच्छन्ति? जयन्ती! प्राणातिपातेन यावन्मिथ्यादर्शनशल्येनैव खलु जीवाः गुरुकत्वं शीघ्रमागच्छन्ति, एवं यथा प्रथमशते यावद्व्यतिव्रजन्ति। भवसिद्धिकत्वं भदन्त! जीवानां किं स्वभावतश्च परिणामतश्च? जयन्ती! स्वभावतश्च नोपरिणामतश्च। सर्वेपि भव

॥ भाषा ॥

मा। समणंभगवमहावीर वंदइ णमसइ वं२ त्ता एववयासी। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रति वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने इमकहे कहणभंते जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति। किसेप्रकारे हेभगवन्! जीव भारीपणो उतावलो पामे इतिप्रश्न उत्तर। जयंती पाणाइवाएण जाव मिच्छा दंसणसल्लेण। हे जयंती! प्राणी जीवने अतिपात हणवेकरी यावत् मिथ्यादर्शन शल्येकरी इहा अठारेपापस्थानक कहवा। एवखलु जीवा गुरुयत्त हव्व मागच्छंति। इम निश्चे जीव कर्मेकरी गुरुपणो उतावलो पामे। एवंजहापढमसए जाव वीईवयति। इम जिम पहिला शतकनेविषे कह्यु यावत् संसा र थकी व्यतिव्रजे मोक्षजाय इत्यर्थ वली जयती पूछे। भवसिद्धियत्तण भंते जीवाण किं सभावओ परिणामओ। भवसिद्धिकपणो हेभगवन्! जीव ने स्यू स्वभावेकरी पुद्गलने मूर्त्तपणानी परे थकतो परिणामें जिम बालकने तरुणपणो तरुणने वृद्धपणो इतिप्रश्न उत्तर। जयंती सभावओ णो परि णामओ। हेजयंती! जीवने भवसिद्धिकपणो स्वभावथकीछे पणि परिणामथकी नही वली जयती पूछे—सव्वेविणंभंते भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्स

[illegible]

सत्ताबहुत्वं परिणामबहुत्वं ? जयंती ! सत्ताबहुत्वं णो परिणामबहुत्वं । सव्वेविणं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ? हंता जयंती ! सव्वेविणं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति । जइणं भंते ! सव्वेवि भवसिद्धिया

[illegible]

[illegible]

॥ टीका ॥

ग्रेणि ॥ परित्तत्ति ॥ एकप्रदेशिकत्वेन विष्कम्भाभावेन परिमिता ॥ परिवुडत्ति ॥ अेण्यन्तरै परिकरिता स्वरूप मेततस्या , अत्रार्थे वृद्धोक्ताभाव ना गाथा भवति-तो भणइकिणसिज्झति अहवकिमभवुसावसेसत्ती । निल्लेवणानजुज्जइ तेसितोकारण भन्न ॥ १ ॥ अयमर्थ -यदि भवसिद्धिका से तस्यन्तीत्यभ्युपगम्यत , ततो भणति शिष्य कस्मा न्न त सर्वेपि सिध्यन्ति अन्यथा भवसिद्धिकत्वस्यैवाभावात् , अथवा ऽपर दूपण कस्मादभव्यसा वशपत्वादभव्यावशपत्वेन अभव्या त्विमुच्येत्यर्थ , तेपा भव्याना निर्लेपन नयुज्यते युज्यतएवेतिभाव , यस्मादेव तत कारण सिद्धे हेतु रन्यद्भव्य त्वातिरिक्त वाच्य तत्रसति सवभव्यनिर्लेपनप्रसङ्गादिति , भण्णइतेसिमभव्वे विपइअनिल्लेवणाउविरोहो । ननसव्वभव्वसिद्धी सिद्धासिद्धतसिद्धीउ ॥१॥ अयमर्थो भण्यते अत्रोत्तर-भव्यत्वमेव सिद्धिगमनकारण नत्वन्यत्किचि तत्रच सत्यपिभव्यत्वे सिद्धिगमनकारणं तेपा भव्यानामभव्यानपि प्रति अ

॥ मूल ॥

भविस्सइ ? गोइणठे समठे । सेकेणं खाइस्सं जीवा सिज्झिस्सति तम्हाणं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? गोइणठे समठे । सेकेणं खाइस्सं जीवा सिज्झिस्सति णोचेवण भवसिद्धियविरहिए लोए अट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ सव्वेविण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति णोचेवण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? जयती ! से जहाणामए सव्वागाससेढी सिया अणादिया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा साण

अनुवाद

एवमुच्यते सर्वेपि भवसिद्धिका जीवा भविष्यति ? नायमर्थ समर्थ । अथ केनप्रसिद्धेनार्थेन भदन्त । त्ति तस्माद्भवसिद्धिकविरहितो लोको भविष्यति ? नायमर्थ समर्थ । अथ केनप्रसिद्धेनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते सर्वेपि भवसिद्धिका जीवा सत्स्यन्ति , नेवच भवसिद्धिकविरहिता लोको भविष्यति ? जयन्ती । स यथानाम सर्वाकाशश्रेणि स्यादनादिकानवदग्रा परिमिता परिवृता

॥ भाषा ॥

सत्स्यन्ति , नेवच भवसिद्धिकविरहिता लोको भविष्यति ? जयन्ती । स यथानाम सर्वाकाशश्रेणि स्यादनादिकानवदग्रा परिमिता परिवृता ते कारणथकी भवसिद्धिक भव्यविरहित लोक हुस्ये सर्व भव्यमोक्ष जास्ये अभव्य ग्रेप लोकनेविषे रहस्ये इतिप्रश्न उत्तर । णोइणठेसमठे । ए अर्थ समर्थ न ते कारणथकी भवसिद्धिक भव्यविरहित लोक हुस्ये सर्व भव्यमोक्ष जास्ये अभव्य ग्रेप लोकनेविषे रहस्ये इतिप्रश्न उत्तर । णोइणठेसमठे । ए अर्थ समर्थ न थी । सेकेण खाइण अहेणभते एवंवुचइ । तो ते किसे ख्याति प्रसिद्धअर्थे करी हेभगवन् । इमकह्यु । सव्वेविण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति । सगला ई पणि भवसिद्धिकजीव मोक्षजास्ये । णो चेवण भवसिद्धिय विरहिएलोए भविस्सइ । नही निश्चे भवसिद्धिक विरहित लोकहस्ये इतिप्रश्न उत र । जयतीसे जहाणामए सव्वागाससेढीसिया । हेजयती । ते यथानामे यथादृष्टान्ते सर्व आकाशनी श्रेणि हुवे । अणादिया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा ।

भव्यानप्याश्रित्य अनिर्लेपन मव्यवच्छेद , अभव्यानवशिष्यतद्व्यानां निर्लेपन मुक्त तदपि नेत्यर्थ', नतु नपुनरिहार्थे विरोधो बाधास्ति सिद्धान्त सिद्धत्वा दतदेवाह–ननइत्यादि (नहि सर्वभव्यसिद्धि' सिद्धा सिद्धान्तसिद्धरिति) किंपुणजबुवुत्ता सव्वागासप्पएसदिट्ठता। नविसिज्जिहिति तो भवाइकितुभवत्तणातेसि ॥ ३ ॥ जइएोऊणाभव्वा विकेइसिद्धिनचेवगच्छति। एवलेविअभव्वा काविसेसोभवंतेसि ॥ ४ ॥ भण्णइभव्वोजोगो दारुदलि यतिवाविपज्जाया। जोगोविपुणनसिज्झइ कोईरुक्खाइदिट्ठता ॥ ५ ॥ पडिमाईणजोग्गा बहवोगोसीसचदणदुमाइ। सतियजागाविइह अणेएरद्द भराई ॥ ६ ॥ नयपुणापडिमुप्पायणा सपत्तीएोउसव्वजोग्गाण। जेसिपिअसपत्ती नयतमिउजोग्गयाएोइ ॥ ७ ॥ किंपुणजासपत्ती सानियमारोइजोग्गद व्वाण। नयरोइअजोग्गाण नमेवयनवुसिज्झणया ॥ ८ ॥ सिज्झिस्सतियभव्वा नव्वेविहिजणियचजपरुणा। तवियमयागच्चिय दिट्ठीएजयतिपुच्छा ए ॥ ९ ॥ (भव्यानामव सिद्धिरित्येतया दृष्ट्या मतेनेति) अव्वापकुणकाल नमवुनव्वाणरोइवोच्छित्ती। जतीतणागयाउ अद्धाउदोवितुल्लाउ ॥ १० ॥ तत्यातीतद्धाए सिद्धागच्चागगतजागोसि। कामतावइउच्चिय मिज्झिहिइ अणागयद्धाए ॥ ११ ॥ तेदोयणतजागा एंउसोच्चियअणागतजागोसि। एवपि सव्वभव्वा णमिद्धिगमणाचयाद्दिट्ठ ॥ १२ ॥ तो द्वावप्यनन्तभागो मीलितो सर्वजीवाना मनन्तएव भागइति, यत्पुन रिदमुच्यते ऽतीताद्धातोऽनाग ताद्धानन्तगुणाति तन्मतान्तर' तस्यचद बीज यदि द्वेअपि ते समान स्याता तदा मुहूर्त्तादावतिक्रान्ते अतीताद्धासमधिका अनागताद्धाच हीनेति एत समत्व, एवच मुहूर्त्तादिभि प्रतिक्षण क्षीयमाणाप्यऽनागताद्धा यतो नक्षीयते ततो ऽवसित तत साऽनतगुणेति, यच्चोभयो समत्व तदेव–यथा नागताद्धाया अन्तोनास्ति एवमतीताद्धाया आदिरिति समताति, जीवाद्य नसुप्ता सिध्यन्ति किंतर्हि जागराएवेति सुप्तजागरसूत्र-तत्रच ॥ सुत्तत्त

सा परमाणुपुद्गलमात्रे खण्डे समये समये ऽपहियमाणापहियमाणा नन्ताभिरुत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिणीभि रपह्रियते नैवचापहृता स्यात् तत्तेना

अनादि आदिरहित छेहडो पणि नथी जेहनो एहवी विस्तरणी परिवृतछे अंशन्तरें करी परिवृतछे। साणपरमाणुपोग्गलमेत्तेहि खंडेहि समए २ अवहीर माणी २। तेहयकी परमाणूपुद्गलमात्र खण्डेकरी छेदेकरी समय समयनेविषे नापहरता थका। अणताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरइ। अनन्ती

॥ टीका ॥ ति ॥ निद्रावशत्व ॥ जागरियत्तति ॥ जागरण जागर सो स्यास्तीति जागरिक स्तद्भावो जागरिकत्व ॥ अहम्मियत्ति ॥ धर्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरन्तीति धार्मिका स्तन्निषेधा दधार्मिका कुत एतदेव मित्यत आह-अहम्माणुया ॥ धर्म्म श्रुतरूप मनुगच्छन्तीति धर्मानुगा स्तन्निषेधा दधर्म्मा

॥ मूल ॥ परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए समए अवहीरमाणी २ अणताहिं उरसप्पिणीउसप्पिणीहिं अवहीरइ णोचेवणं अवहिरियासिया, सेतेणठेण जयती ! एवंवुच्चइ सव्वेविणं जाव नविस्सइ । सुत्तत्तं भंते ! साहू जागरियत्तं साहू ? जयती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू अत्थेगइयाण जीवाण जागरियत्तं साहू सेकेणठेण भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइयाण जाव साहू ? जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया

अनुवाद — र्थेन जयन्ती। एवमुच्यते सर्वेपि यावद्भविष्यन्ति। सुप्तत्व भदन्त। साधु जागरिकत्व साधु ? जयन्ती। केचन जीवाना सुप्तत्व साधु केचन जीवाना जागरिकत्व साधु। अथ केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते केचन जीवाना सुप्तत्व यावत्साधु ? जयन्ती। यइमे जीवा अधार्मिका अधर्मानुगा

॥ भाषा ॥ सेतेणठेण जयती एववुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेजयती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीकाल अपहरे। णोचेवण अवहिरियासिया। नही निश्चे तेह अपहर हुवे। सुत्तत्त भंते साहूजागरि इम कहिये। सव्वेविण जाव भविस्सइ। सर्व भव्यजीव मोक्षजास्ये अने भवसिद्धिक विरहित लोक नही हुवे वलीजयती पूछेछे। सुत्तत्त भंते साहूजागरि यत्त साहू। निद्रा वसिपणू हेभगवन्। भलो अथवा निद्राने अभावे जागवा ते भलो इतिप्रश्न उत्तर। जयती अत्थेगइयाण जीवाण सुत्तत्त साहू अत्थे गइयाण जीवान जागरियत्त साहू। हेजयती केतलाएक जीवने निद्रावसिपणू भलो एतलो सूता भला, केतलाएक जीवने निद्राने अभावे जागवो ते भलो एतले केतलाएक जागताभला। सेकेणठेण भते एववुच्चइ। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इम कहिये। अत्थेगइयाण जाव साहू। केतलाएक जीवने सोवयो भलो अने केतलाएक जोवने जागवो भलो इतिप्रश्न उत्तर। जयतीजे इमेजीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा। जे एहजीव श्रुत चारित्ररूप धर्मेर हित अधार्मिक किहा धर्मी एहीज कहेछे—श्रुतचारित्ररूप धर्म तेहथो विरुद्ध ते अधर्म तेहमार्गे चाले ते अधर्मानुग अधर्महीज इष्टवल्लभछे जेहने ते

नुगा कुत एतदेव मित्यत आह–अहम्मिठा ॥ धर्म्म. श्रुतरूपश्चेष्टो वल्लभ पूजितोवा, येषा ते धर्म्मेष्टा धर्म्मिणा वेष्टा धर्म्मीष्टा ' अतिशयेनवा; ध र्म्मिणो धर्म्मिष्टा स्तन्निषेधादधर्म्मेष्टा , अधर्म्मीष्टा अधर्म्मिष्टावा अतएव ॥ अहम्मक्खाई ॥ नधर्म्ममारव्यान्तीत्येव शीला अधर्म्माख्यायिन , अथवा नधर्मात् ख्याति येषा ते अधर्म्मख्यातय ॥ अहम्मपलोइत्ति ॥ नधर्म्ममुपादेयतया प्रलोकयति ये ते ऽधर्म्मप्रलोकिन ॥ अहम्मपलज्जणत्ति ॥ न धर्म्मे प्ररज्यन्ते आसजन्ति ये ते ऽधर्म्मप्ररञ्जना एवच ॥ अहम्मसमुदाचारत्ति ॥ नधर्म्मरूप श्चारित्रात्मक समुदाचार समाचार स्सप्रमोदोवा चारो यषा ते तथा अतएव ॥ अहम्मेणचवेत्यादि ॥ अधर्म्मेण चारित्रश्रुतविरुद्धरूपेण वृत्ति जीविका कल्पयन्त कुर्वाणा इति, अनन्तर सुप्तजाग्र

अहम्मिठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणचेव वित्तिं कप्पेमा णाविहरंति, एएसिणं सुत्तत्त साहू एएणं जीवा सुत्तासमाणा णोवहूणं पाणभूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खाण याए सोयणयाए जाव परियावणयाए वहंति। एएण जीवा सुत्तासमाणा अप्पाणवा परवा तदुभयवा णो

अधर्म्मेष्टा अधर्म्माख्यायिन अधर्मप्रलोकिन अधर्मप्ररञ्जना अधर्मसमुदाचारा अधर्मेणैवच वृत्ति कल्पयन्तो विहरन्ति, एतेषा सुप्तत्व साधु, एते जीवा सुप्ता सन्तो नैव बहूना प्राणभूताना जीवाना सत्वाना दु खनतायै शोचनतायै यावत्परितापनतायै वर्त्तन्ते' एते जीवा सुप्ता

अधर्मिष्ट । अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा । अधर्म प्रते होज कहे एहवो शील आचारछे जेहनो अधर्महीज उपादेय पणेकरी देखे ते अधर्मप्रलोकी अधर्मनेविषे होज रजे ते अधर्म प्ररजन कहिये अधर्म समुदायनोज आचारछे जेहने ते अधर्म समुदाचार कहिये। अहम्मे णचेव वित्तिकप्पेमाणाविहरंति । अधर्मे करीज वृत्तिणाजीविका कल्पताथका एतले करताथका विचरे। एएसिणसुत्तत्तसाहू एएणजीवा सुत्तासमाणा। एहजीवोने सूतापणो भलोकह्यो ए एह वा वाक्यालकारे, जोव सूताथका । णो बहूण पाणभूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए जाव परिया वणयाए वहंति । नहो घणा प्राणी भूत जोव सत्त्व दुःखने अर्थे शोकने अर्थे यावत् परितापने अर्थे वर्त्ते एतावता घणा जोवाने दुःखआदिकना हेतु न हु

वहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति एएणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू। जयंती! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुगा जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसिणं जीवाणं जागरियत्तं साहू एएणं जीवा जागरमाणा वहूणं पाणाणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वहंति, तेणं जीवा जागरा समाणा अप्पाणंवा परवा तदुभयवा वहूहिं धम्मियाहिं सजोयणाहि संजोएत्तारो भवंति, एएणं जीवा

सन्त आत्मान वा पर वा तदुभय वा नैव वह्वीभिरधार्मिकाभि सयोजनाभि सयोजयितारो भवन्ति, एतेषा जीवाना सुप्तत्व साधु । जय न्ती ! य इमे जीवा धर्मार्थिनो धर्मानुगा यावद्धर्मेण चैव वृत्ति कल्पयन्तो विहरन्ति' एतेषा जीवाना जागरिकत्व साधु, एते जीवा जागरा सन्तो वहूना प्राणानामदु खनतायै याव दपरितापनतायै वर्त्तन्ते । ते जीवा जागरा सन्तो धर्मजागरिकयाऽऽत्मान जागरयितारो भवन्ति,

वे। एण जीवा सूता समाणा। घणी एहजीव सूताथका। अप्पाणवा परवा तदुभयवा। आपने अथवा परने ते वेहने। घणी वहूहि अहम्मियाहि सजो वणाहि सजोएत्तारो भवति। नहीं धर्मी अधर्मनो जे सयोजना तेहना जोडणहारा हुवे एतले अधर्मसयोगे करी जुडे। एएण जीवाण सुत्तत्त साहू। ए एहने जावने सूतो भलो एतावता सूता भला वलीभगवन्त कहे। जयती जे इमे जीवा धम्मत्थिया धम्माणुया। हेजयती धर्म श्रुतचारित्रहप तेहना अ र्थी धर्मश्रुत चारित्ररूपना अनुयायी त मार्गं चाले। जाव धम्मेण चेव वित्तिकप्पेमाणाविहरति। इमयावत् धर्मकरी निर्वेकरी वृत्तिआजीविका प्रते क रताथका विचरे एएसिण जीवाण जागरियत्त साहू। एएण जीवा जागरासमाणा। एह जावने जागवो भलो एतले एहजीव जागताथका भला इत्यर्थ एए ण वाक्यालकारे, जीव जागताथका। वहूण पाणाण अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति तेण जीवा जागरा समाणा। घणा प्राणीने वा वत् अदुक्खने अर्थे अशोकने अर्थे यावत् अपरितापनाने अर्थे वर्ते एतावता घणा जीवने अदुक्खादिकनो हेतुहुवे तेह ण वाक्यालकारे, जीव जागताथका। अप्पाणवा परवा तदुभयवा वहूहि धम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति। आपने अथवा परने अथवा वेहने घणी धार्मिकनी जे सयोजना स

॥ टीका ॥

ता साधुत्व प्ररूपित मथ दुर्बलादीना तथैव तदेव प्ररूपयन् सूत्रद्वयमाह-बलियत्तन्नतेइत्यादि ॥ बलियत्तति ॥ बल मस्यासीति बलिक स्तद्भावो बलिकत्व ॥ दुब्बलियत्तति ॥ दुष्टु बल मस्यास्तीति दुर्बलिक स्तद्भावो दुर्बलिकत्व, दक्षत्वच तेषा साधु येनेन्द्रियवशाना यद्भवति' तदाह-सोइंदि

॥ मूल ॥

जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाण जागरियत्तं साहू सेतणठे णं जयती ! एव वुच्चइ अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्त साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू । बलियत्तं भंते ! साहू दुब्बलियत्तं साहू ? जयती ! अत्थेगइयाण जीवाणं बलियत्तं साहू अत्थेगइयाण

अनुवाद

एतेषा जीवाना जागरिकत्व साधु तत्तेनार्थेन जयन्ती ! एवमुच्यते केचन जीवाना सुप्तत्व साधु केषन जीवाना जागरिकत्व साधु । बलिकत्व भदन्त ! साधु दुर्बलिकत्व भदन्त ! साधु ? जयन्ती । कचन जीवाना बलिकत्व साधु केचन जीवाना दुर्बलिकत्व साधु । अथ केनार्थेन भ

॥ भाषा ॥

योग तणे संयोजनहार हुवे । एणा जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाण जागरइत्तारो भवति । एह जीव जागतायका धर्म जागरिकाये क रीने आपने जगाडणहार हुवे । एएसिण जीवाण जागरियत्त साहु । ० एह जीवाने जागवो ते भलो एतले ए जीव जागताभला । सेतेणठेण जयती ए ववुच्चइ । ते तेणे अर्थ हेजयती इम कहिये । अत्थेगइयाण जीवाण सुत्तत्त साहु । केतलाएक जीवाने सूवो भलो एतले केतलाएक जीव सूता भला इ त्यर्थ । अत्थेगइयाण जागरियत्त साहु । केतलाएक जीवाने जागवो भलो एतले ते जीव जागता भला इत्यर्थ अनन्तरे सूता जागतानेभलूपणू कह्यु, हि वे दुर्बलादिकने तिमहीज तेहीज कहतो कहेछै—बलियत्तं भंते साहु दुब्बलियत्त साहु । बलवन्तपणो हेभगवन् ! भलो अथवा बल नहीं ते दुर्बलिकपणो भलो एतले दूबलापणो साहु कहिये भलो इतिप्रश्न उत्तर । जयती अत्थेगइयाण जीवाण बलियत्त साहु । हेजयती केतलाएक जीवाने सबलपणो भलो एतले सबला भला । अत्थेगइयाण जीवाण दुब्बलियत्त साहु । केतलाएक जीवाने बल रहितपणो भलो एतले केतलाएक जीव निबला भला । सेकेणठेण भंते एवंवुच्चइ जाव साहु । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कहिये केतलाएक सबल भला केतलाएक निर्बल भला इतिप्रश्न उत्तर जयती जे इमेजीवा अहम्मि

॥ मूल ॥

जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू। सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जाव साहू? जयती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति, एएसिणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू एएणं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, वलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाण वलियत्तं साहू सेतेणट्ठेणं जयती! एव वुच्चइ तचेव जाव साहू। दक्खत्तं भंते! साहू आलसियत्तं साहू? जयती! अत्थेगइयाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू अत्थेगइयाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू। सेकेण

अनुवाद

दन्त। एवमुच्यते यावत्साधु? जयन्ती। यइमे जीवा अधार्मिका यावद्विहरन्ति, एतेषां जीवानां दुर्बलिकत्वं साधु एते जीवा एवं यथा सुप्तस्य तथा दुर्बलिकस्य वक्तव्यता भणितव्या, बलिकस्य यथा जाग्रतस्तथा भणितव्यम्, याव त्संयोजयितारो भवन्ति, एतेषां जीवानां बलिकत्वं साधु तत्तेनार्थेन जयन्ती। एवमुच्यते तच्चैव यावत्साधु। दक्षत्वं भदन्त। साधु आलसिकत्वं साधु? जयन्ती। केषांचिज्जीवानां दक्षत्वं साधु केषांचिज्जीवानामालसिकत्वं साधु। अथ केनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते तच्चैव यावत्साधु? जयन्ती। यइमे जीवा अधार्मिका याव

॥ भाषा ॥

या जाव विहरंति। हेजयंती। जे एह जीव अधार्मिक इत्यादि पूर्वोक्त सगलाई बोल कहवा यावत् विचरे। एएसिणं जीवाणं दुर्बलियत्तं साहू एएण जीवा एव जहा सुत्तस्स। ए एहने हेभगवन्। जीवने दुर्बलपणो भलो एतले दूबला भला इत्यर्थ ए एहजीव इत्यादि इम जिम सूतानो वक्तव्यता कही। तेहा दुब्बलियत्तस्स वत्तव्वया भाणियव्वा। तिम दुर्बलनो पणि वक्तव्यता कहवी एतले तेहसरीखो एह पण कहवो। बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं। बलवन्तनो वक्तव्यता जिम जागतानी वक्तव्यता तिम कहवी सबलजागतानी परे कहवा इत्यर्थ। जाव संजोएत्तारो भवंति। यावत् जोडणहार हुवे। एएसिणं जीवाणं बलियत्तंसाहू। एह जीवाने बलवन्तपणो साहू कहिये भलो। सेतेणट्ठेणं जयंती एव वुच्चइ तचेव जाव साहू। ते तेणेअर्थे हेजयंती। इम कहिये इत्यादि तिमहीज यावत् भला इति वली जयंती पूछे—दक्खत्तंभंतेसाहू आलसियत्तंसाहू। दक्षपणो डाहापणो अथवा उद्यम

॥ मूल ॥

ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तंचेव जाव साहू ? जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति । एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू एएसिणं जीवा अलसाउमाणा णोबहूणं जहा सुत्ता तहा अलसा भाणियव्वा जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो भवंति । एएणं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहिं तवस्सीवेयावच्चेहिं गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं

॥ अनुवाद ॥

द्विहरन्ति' एतेषां जीवानामालसिकत्वं साधु, एते जीवा अलसाः सन्तो नैव बहूनां यथा सुप्तास्तथाऽलसा भणितव्या, यथा जागरा स्तथा दक्षा भणितव्या यावत्संयोजयितारो भवन्ति, एते जीवा दक्षाः सन्तो बहूनामाचार्याणां वैयावृत्तिभिरुपाध्यायानां वैयावृत्तिभि स्थविराणां वैयावृत्तिभि तपस्वीनां वैयावृत्तिभि ग्लानवैयावृत्तिभि शिष्यवैयावृत्तिभि कुलवैयावृत्तिभि गणवैयावृत्तिभि संघवैयावृत्तिभि'

॥ भाषा ॥

पणो हेभगवन् । भलो अथवा आलसपणो भलो इतिप्रश्न उत्तर । जयंती अत्थेगइयाणं जीवाणं दक्खत्तंसाहू । हेजयंती । केतलाएक जीवाने दक्षपणो भलो उद्यमवन्त भला इत्यर्थ । अत्थेगइयाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू केतलाएक जीवाने आलसपणो भलो एतले आलसू भला । सेकेणट्ठेणंभंते एवंवुच्चइ तंचेव जाव साहू । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कहिये इत्यादि तिमहीज यावत् भलो एतलालगे पूछवो इ०प्र उत्तर । जयंती जेइमे जीवा अहम्मिया जाव विहरंति । हे जयंती । जे एह जीव अधार्मिक अधमानुग इत्यादि यावत् करतायका विचरे । एएसिणं जीवाणं आलसियत्तं साहू । एह जीवाने आलसपणो भलो एतावता० आलसू भला । एएसिणंजीवा अलसाउमाणा णो बहूणं । एह णवाक्यालंकारे, जीव आलसूथया थका नही घणा प्राणीने इत्यादि । जहा सुत्ता तहा अलसा भाणियव्वा जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा । जिम सूताने वक्तव्यता कही तिम आलसूनो पणि वक्तव्यता कहवी तथा जिम जागरनी वक्तव्यता कही तिम दक्षनो वक्तव्यता कहवी । जाव संजोएत्तारो भवंति । यावत् संजोडणहार हुवे एतलालगे कहवो । एएणं जीवा दक्खा समाणा । एह ण वाक्यालंकारे, जीव दक्षथया थका । बहूहिं आयरिय वेयावच्चेहिं । घणा आचार्यनी वैयावृत्त्येकरी । उवज्झाय वेयाव

॥ टीका ॥ श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ते ॥

इत्यादि ॥ सोइंदियवसट्टेत्ति ॥ श्रोत्रेन्द्रियवशेन तत्पारतन्त्र्येण ऋत पीडित श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्त श्रोत्रेन्द्रियवशंवा; ऋतो गत श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्त ॥

॥ मूल ॥

कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसिणं जीवाणं दक्खत्तं साहू सेतणट्ठेणं तंचेव जाव साहू। सोइंदियवसट्टेणं भंते! जीवे किं बधइ एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ। एवं चक्खिंदियवसट्टेवि, जाव फासिंदियवसट्टेवि, जाव अणुपरि

॥ अनुवाद ॥

साधर्मिकाणां वैयावृत्तिभिरात्मान संयोजयितारो भवन्ति, एतेषां जीवानां दक्षत्व साधु तत्तेनार्थेन तथैव यावत्साधु ॥ श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्तो भदन्त। जीव किंबध्नाति? एव यथा क्रोधवशार्त्तस्तथैव यावदनुपर्यटति, एव चक्षुरिन्द्रियवशार्त्तोपि यावत्स्पर्शनेन्द्रियवशार्त्तोपि यावद

॥ भाषा ॥

वेयावच्चेहि थेरवेयावच्चेहि। उपाध्यायने वैयावृत्त्यंकरी श्रुतहहने वैयावृत्त्य करी। तवस्सीवेयावच्चेहि गिलाण वेयावच्चेहि। तपस्वीने वैयावृत्त्य करी ग्लानने वैया वृत्त्य करी। सेह वेयावच्चेहि कुलवेयावच्चेहि गणवेयावच्चेहि। शिष्यने वैयावृत्त्यंकरी कुलने वैयावृत्त्य करी गणने वैयावृत्त्य करी। संघ वेयावच्चेहि साहम्मि य वेयावच्चेहि। संघने वैयावृत्त्य करी साधर्मिकने वैयावृत्त्य करी। अत्ताण संजोएत्तारो भवति। आत्माने सम्यक्प्रकारे जोडणहार हुवे। एएसिण जीवाण दक्खत्त साहू। ए ण वाक्यालकारे, जीवाने दक्षपणो भलो। सेतेणट्ठेण तचेव जाव साहू। ते तेणे अर्थे हेजयती। इत्यादि, तिमहीज केतलाएकने आलसपणो भलो केतलाएकने दक्षपणो भलो वली जयती पूछे—सोइदिय वसट्टेणभते जीवे कि बधइ एव जहा कोहवसट्टेण। श्रोत्रेन्द्रिय वशेकरी ते हने परतत्र पणेकरी ऋत कहिये पीड्यो ते श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्त कहिये एतले श्रोत्रेन्द्रिय वशिपड्यो हेभगवन्। जीव स्यू बाधे इतिप्रश्न उत्तर। इम जिम पूर्वे क्रोधवशार्त्त कह्या तिम कहवा ते इम, सत्तकम्मप० इत्यादि। तहेव जाव अणुपरियट्टइ। तिमहीज यावत् ससार परिभ्रमण करे। एव चक्खिदिय व सट्टेवि जाव फासिदियवसट्टेवि जाव अणुपरियट्टइ। इम चक्षुरिन्द्रिय वशार्त्त पणि कहवो यावत् स्पर्शनेन्द्रिय वशार्त्त पणि कहवो यावत् ससारनेविषे प रिभ्रमण करे। तएण साजयती समणोवासिया। तिवारे ते जयती श्रमणोपासिका। समणस्सभगवओमहावीरस्स अतिय। श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर

 ॥ अनन्तर श्रोत्रादीन्द्रियवशार्त्ता अष्टकर्म्मप्रकृती र्बध्नन्तीत्युक्तं त द्बन्धनाच्च नरकपृथिवीषू प्युत्पद्यन्तइति

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

यहइ । तएण सा जयती समणोवासीया समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिय एयमठं सोच्चा णिसम्म हठतुठा सेसं जहा देवाणदा तहेव पव्वइए जाव सव्वदुक्खप्पहीणा सेव भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्सय वितीउ उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ १२ ॥ रायगिहे जाव एवंवयासी–कइण भंते ! पुढवीउ पणत्ताउ ? गोयमा ! सत्त पुढवीउ पणत्ताउ तंजहा–पढमा दोच्चा जाव सत्तमा । पढमाणं भंते ! पुढवी

अनुवाद

नुपपद्यते । तदा सा जयन्ती श्रमणोपासिका श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिकं एनमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टा शेष यथा देवानन्दा तथैव प्रव्रजिता यावत्सर्वदु खप्रक्षीणा तदेव भदन्त । भदन्त । इति ॥ द्वादशमशतस्यच द्वितीयोद्देश ॥ १२ ॥ २ ॥ राज गृहे यावदेवमवादीत्–कति भदन्त । पृथिव्य प्रज्ञप्ता ? गोतम । सप्त पृथिव्य प्रज्ञप्तास्तद्यथा–प्रथमा द्वितीया यावत्सप्तमा । प्रथमा भदन्त ।

॥ भाषा ॥

स्वामीने समीपे । एयमट्ठ सोच्चाणिसम्म हट्ठतुट्ठा । एहवो अर्थ सांभलीने हृदयधरीने हर्षसंतोष पामी । सेसजहा देवाणदा तहेवपव्वइए जाव सव्वदुक्ख प्पहीणा । बाकी सर्व सम्बन्ध देवानन्दानीपरे कहवो तिमहीज दीक्षालीधी यावत् सर्व दुःखथकी मूकाणी मोक्षगई इत्यर्थ । सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्यु ते सर्व सत्यछे । दुवालसमसयस्सयवितीओ उद्देसोसम्मत्तो । ए बारमा शतकनो बीजा उद्देशो पूरोथयो १२ ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे श्रोत्रादि इन्द्रियवशार्त्त आठ कर्मप्रकृति प्रते बांधे इमकह्यो ते बन्धनथकी नरकपृथिवी स्वरूप प्रतिपादन आगलउद्देशो करेछे—रायगिहे जाव एववयासी । राजगृहनेविषे यावत् गोतम इमकहे । कइणभंते पुढवीओ पणत्ताओ । केतलो हेभगवन् । पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तपुढवीओ पणत्ताओ तं० । हेगोतम सात पृथिवी कही ते कहेछे—पढमा दोच्चा जाव सत्तमा । पहिली दूजा यावत् सातमी । पढमाणभंते पुढवी किं णामा किं गोत्ता पणत्ता । पहिली हेभगवन् । पृथिवीना स्यूं नाम स्यूं गोत्र कह्यो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा घम्माणामेण रयणप्पभागोत्तेण एव ज

॥ टीका ॥

नकरूपृथिवीस्वरूपप्रतिपादनाय तृतीयोद्देशकमाह–तस्यचेदमादिसूत्र–रायगिहेइत्यादि ॥ किंनामा किंगोयत्ति ॥ तत्र नाम यादृच्छिकमभिधान' गोत्रचा न्वर्थिकमिति ॥ एव जहा जीवाभिगमे इत्यादिना यत्सूचित तदिद–दोचाण भंते । पुढवी किंनामा किंगोया पन्नत्ता ? गोयमा । वशा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण मित्यादीति ॥ द्वादशशते तृतीय ॥ ३ ॥ अनन्तर पृथिव्य उक्ता स्ताश्च पुद्गलात्मिका इति पुद्गला श्चि न्तय श्चतुर्थोद्देशकमाह–तस्यचेदमादिसूत्र–रायगिहेइत्यादि ॥ एगओत्ति ॥ एकत्वत एकतयेत्यर्थ ॥ साहन्नतित्ति ॥ सहन्यते सहतो भवत इत्यर्थः,

॥ मूल ॥

किं णामा किं गोत्ता पन्नत्ता, गोयमा! घम्मा णामेण रयणप्पभा गोत्तेणं एव जहा जीवाभिगमे पढमो णेरइयउद्देसओ सो णिरवसेसो भाणियव्वो जाव अप्पाबहुगंत्ति सेवं भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्स तइओ उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ३ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी–दोभंते परमाणुपोग्गला

अनुवाद

पृथिवी किं नामा किं गोत्रा ? गौतम । घर्मा नाम्ना, गोत्रेण रत्नप्रभा' एव यथा जीवाभिगमे प्रथमो नैरयिकोद्देशक सो निरवशेषो भणि तव्यो यावदल्पाबहुत्वमिति' तदेव भदन्त । भदन्त । इति ॥ द्वादशमशतस्य तृतीय ॥ १२ ॥ ३ ॥ राजगृहे यावदेवम

॥ भावार्थ ॥

हा जीवाभिगम पढमो णेरइयउद्देसओसो णिरवसेसो भाणियव्वो । हेगौतम । घम्मा इसेनामे रत्नप्रभा इसे गोत्र पहिलो पृथिवी जाणवी, इम जिम जीवाभिगम उपांगनेविषे नारकीने पहिलेउद्देशे अधिकार कह्यो तिम निरवशेष जाणवो ते इम ,दोचाएणभंतेपुढवी किं नामा किं गोत्ता वशानामेण सक्करप्पभागोत्तेण इत्यादि ! जाव अप्पाबहुगंत्ति । यावत् अल्प बहुत्व ते इम सगलाथी थोडा सातमीपृथिवी नारकी तेहथी छट्ठीना घणा यावत् पहिली लगे घणा कहवा । सेवं भंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु ते सर्व सत्यछे । दुवालसमसयस्स तइओउद्देसो सम्मत्तो । ए बारमा शतकनो त्रीजोउ द्देशो परोपूर्यो १२ ॥ ३ ॥ पाछिले उद्देशे पृथिवी कही ते पुद्गलात्मकछे तेमाटे चौथेउद्देशे पुद्गलप्रते चिन्तवतो कहेछे । रायगिहे जाव एववयासी । राजगृहे यावत् इम कहे । दोभंतेपरमाणु पोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ साहणित्ता किं भवइ । दोय हेभगवन् ! परमाणु

॥ टीका ॥

द्विप्रदेशिकस्कन्धस्य भेदे एको विकल्पः, त्रिप्रदेशिकस्य द्वौ, चतुःप्रदेशिकस्य चत्वारः, पञ्चप्रदेशिकस्य ॥ पट्, षट्प्रदेशिकस्य दश, सप्तप्रदेशिकस्य चतुर्दश, अष्टप्रदेशिकस्यैकविंशतिः, नवप्रदेशिकस्याष्टाविंशतिः, दशप्रदेशिकस्य चत्वारिंशत्, सङ्ख्यातप्रदेशिकस्य द्विधाभेदे ११, त्रिधाभेदे २१, चतुर्धा भेदे ३१, पञ्चधा भेदे ४१, षोढात्वे ५१, सप्तधात्वे ६१, अष्टधात्वे ७१, नवधात्वे ८१, दशधात्वे ९१, सङ्ख्यात भेदत्वे त्वेकएव विकल्पमेवाह–सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा परमाणुपोग्गला भवतित्ति ॥ असङ्ख्यातप्रदेशिकस्य तु द्विधाभावे १२, त्रिधात्वे २३, चतुर्धात्वे ३४, पञ्चधात्वे ४५, षोढात्वे ५६, सप्तधात्वे ६७, अष्टधात्वे ७८, नवधात्वे ८९, दशभेदत्वे १००, सङ्ख्यातभेदत्वे द्वादश १२, सङ्ख्यातभेदकरणे त्वेकएव तमेवाह–असखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति त्ति ॥ अनन्तप्रदेशिकस्यतु द्विधात्वे १३, त्रिधात्वे २५, चतुर्धात्वे ३७, पञ्चधात्वे ४९, षड्विधत्वे ६१, सप्तधात्वे ८५, नवधात्वे ९७, दशभेदत्वे १०९, सख्यातत्वे १२, असख्यातत्वे १३, अनन्तभेदकरणे त्वेकएव विकल्प स्तमेवाह–अणतहा कज्जमाणे इत्यादि ॥ दोभंते ! परमाणुपोग्गला साहणती त्यादिना पुद्गलानां प्राक्भणितमुक्त ॥ भेजिज्जमाणे दुहा कज्जइ त्यादिना तेषां भेद उक्तो ७४

॥ मूल ॥

एगयत्त साहणति एगयत्त साहणित्ता कि भवइ ? गोयमा ! दुपदेसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयत्त परमाणुपोग्गले एगयत्त परमाणुपोग्गले भवइ । तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयत्त सा

अनुवाद

वादीत–द्वौ भदन्त ! परमाणुपुद्गलौ एकत्वत सहन्येते, एकत्वत सहत्य (सम्मिलितत्वार्थ.) किं भवति ? गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कन्धो

॥ भाषा ॥

पुद्गल एकठा मिलें एकठा मिल्यापछी स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुपएसिए खंधे भवइ सेभिज्जमाणे दुहाकज्जइ । हेगौतम बेप्रदेशिक खन्ध हुवे ते भेदितो थको बेभागे कीजे ता । एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओपरमाणु पोग्गलेभवइ । एकपखे परमाणुपुद्गल हुवे वली एकपासे पणि परमाणु पुद्गल हुवे तियारे बेप्रदेशिक खन्धनो एकहीज भंगो हुवे । तिन्निभंते परमाणुपोग्गला एगयओ साहणित्तए किं भवइ । तीन हेभगवन् परमाणू पुद्गल एकपणे एकठा मिल्यापछी स्यू थाय इतिप्रश्न उत्तर गोयमा तिपएसिए खंधेभवइ सेभिज्जमाणे दुएवि तिहावि कज्जइ दुहाकज्जमाणा । हेगौतम त्रिप्र

॥ सूत्र ॥

हणित्तए किं भवइ ? गोयमा ! तिपदेसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि कज्जइ , दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खधे भवइ , तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति । चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा , गोयमा ! चउपदेसिए खंधे भवइ , से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि कज्जइ , दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिए खधे भवइ , अहवा दो दुपदेसिया खधा भवंति , तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ ,

॥ अनुवाद ॥

भवति ' स भिद्यमानो द्विधा क्रियते एकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वत परमाणुपुद्गलो भवति । त्रयो भदन्त । परमाणुपुद्गला एकत्वत सह त्वा कि भवति ? गौतम । त्रिप्रदेशिक स्कन्धोभवति , सभिद्यमानो द्विधापि त्रिधापि क्रियते , द्विधा क्रियमाण एकत परमाणुपुद्गल एक तो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति , त्रिधा क्रियमाणास्त्रय परमाणुपुद्गला भवन्ति । चत्वारो भ० । परमाणुपुद्गला पृच्छा , गौतम । चतुःप्रदेशि क स्कन्धो भवति , स भिद्यमानो द्विधापि त्रिधापि चतुर्धापि क्रियते ' द्विधाक्रियमाण एकत परमाणुपुद्गल एकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भव

॥ भाषा ॥

कीजे तिहा बेहूभाग करतायका । एगयओ परमाणुपोग्गल एगयओ दु देशिकखन्ध हुवे स्थापना १ २ ते भेदाता थका बेभेदे पणि तथा तीनभेदे पणि कीजे तिहा बेहूभाग करतायका । एकपासे परमाणुपुद्गल हुवे एकपासे बेप्रदेशिकखन्ध हुवे स्थापना १ २ तीनभागे करतायका । तिणि परमाणुपो गला भवति चत्तारि भते परमाणुपोग्गला पुच्छा । तीनेइ परमाणूपुद्गल हुवे स्थापना १ १ १ चार हेभगवन् परमाणूपुद्गल एकठा मिल्या स्यू हुवे इति प्रश्न उत्तर । गोयमा चउपएसिए खधे भवइ सेभिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे । हेगौतम चारप्रदेशिक खन्धहुवे , ते भेदी तायका बेहूभागे पणि त्रिहूभागे पणि चिहूभागे पणि कीजे तिहा बेहूभाग करतायका । एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसिए खध भवइ । एकपासे परमाणूपुद्गल हुवे एकपासे त्रिप्रदेशिकखन्ध हुवे १ ३ । अहवा दो दुपएसियाखधाभवंति तिहा कज्जमाणे एगयओ । अथवा बेज बेप्रदेशिया

॥ मूल ॥

चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति । पंच भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा , गोयमा ! पंच पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि पचहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयत्त परमाणुपोग्गले एगयत्त चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्त दुपदेसिए खंधे एगयत्त तिपदेसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे एगयत्त दो परमाणुपोग्गला एगयत्त तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्त पर

॥ अनुवाद ॥

ति, अथवा द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत । त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, चतुर्धा क्रियमाणः चत्वार परमाणुपुद्गला भवन्ति । पञ्च भदन्त ! परमाणुपुद्गला पृच्छा, गौतम ! पञ्च प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि त्रिधापि चतुर्धापि पञ्चधापि क्रियते, द्विधा क्रियमाणः एकतः परमाणुपुद्गल एकतश्चतु प्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवा एकतो द्विप्रदेशिकः स्कन्ध एकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति, त्रिधा क्रियमाणः एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतस्त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो भवति, अथवैकत पर

॥ भाषा ॥

खन्ध हुवे २ २ तीनभागे करताथका एकपासे । दोपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधेभवइ । दोय परमाणुपुद्गल हुवे एकपासे बेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ २ । चउहाकज्जमाणे चत्तारिपरमाणुपोग्गलाभवति पचभंते परमाणुपोग्गला पुच्छा । चारभागे करताथका चारेई परमाणू पुद्गलहुवे १ १ १ १ पञ्च हेभगवन् । परमाणुपुद्गल एकठा मिल्या स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचपएसिए खंधेभवइ । हेगौतम । पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे । सेभिज्जमाणे दुहावि तिहावि चउहावि पचहाविकज्जइ । ते भेदताथका बेभागे पणि तीनभागे पणि चारभागे पणि पचभागे पणि कीजे । दुहाकज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ चउप्पएसिए खंधेभवइ । तिहां बेभागे करताथका एकपासे परमाणुपुद्गल हुवे एकपासे चारप्रदेशिक खन्ध हुवे स्थापना १ ४ । अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ तिपएसिए खंधेभवइ तिहाकज्जमाणे । अथवा एकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे एकपासे त्रिप्रदेशिक खन्ध हुवे २ ३ तीनभागे करताथका । एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधेभवइ । एकपासे दोयपरमाणू पुद्गल हुवे एकपासे त्रिप्रदेशिक ख

माणुपोग्गले एगयत्र दो दुपदेसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयत्र तिन्नि परमाणुपोग्गला एग यत्र दुपदेसिए खंधे भवइ, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति । छब्भंते ! परमाणु पुच्छा, गोयमा ! छप्पदेसिए खंधे भवइ से भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छव्विहावि कज्जइ, दुहाकज्जमाणे एगयत्र परमाणुपोग्गले एगयत्र पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्र दुपदेसिए खंधे एगयत्र चउप्प देसिए खंधे भवइ, अहवा दो तिपदेसिया खंधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयत्र दो परमाणुपोग्गला

माणुपुद्गल एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत, चतुर्धा क्रियमाण एकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति, पञ्चधा क्रियमाण पञ्च परमाणुपुद्गला भवन्ति । षड् भदन्त । परमाणुपुद्गला पृच्छा, गौतम । षट् प्रदेशिक स्कन्धो भवति स भिद्यमानो द्विधा पि त्रिधापि यावत्षड्धापि भवति, द्विधा क्रियमाण एकत परमाणुपुद्गल एकत पञ्चप्रदेशिक स्कन्धो भवति, अथवैकतो द्विप्रदेशिक

न्धहुवे १ १ ३ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपएसिया खंधाभवति चउहाकज्जमाणे । अथवा एकपासे परमाणू पुद्गलहुवे एकपासे दो य बेप्रदेशिया खन्ध हुवे स्थापना १ २ २ चारभागे करतायका । एगयओ तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधेभवइ पचहा कज्जमाणे । एक पासे तीन परमाणूपुद्गल हुवे एकपासे बेपदेशिकखन्ध हुवे स्थापना १ १ १ २ पञ्चभागे करतायका । पचपरमाणुपोग्गलाभवति । पाच परमाणुपुद्गल हु वे । छब्भते परमाणु पुच्छा । छ हेभगवन् । परमाणुपुद्गल एकठा मिल्या स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा छप्पएसिए खंधे भवइ । छप्रदेशीयो खन्धहुवे । सेभिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव छव्विहावि कज्जइ दुहा कज्जमाणे । ते भेदतायका बेभागे पणि तीनभागे पणि चारभागे पणि पाचभागे पणि छव भागे पणि कोजे बेहूभागे करतायका । एगयओपरमाणुपोग्गले एगयओ पचपएसिए खंधे भवइ । एकपासे परमाणुपुद्गल हुवे एकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्ध हुवे १ ५ । अहवा एगयओ दुपएसिएखंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधेभवइ । अथवा एकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे एकपासे चार प्रदेशिक खन्धहुवे २ ४ ।

एगयत्ते चउप्पदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते दुपदेसिए खंधे भवइ, एगयत्ते तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा तिन्नि दुपदेसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयत्ते तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्ते तिपदेसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्ते दो परमाणुपोग्गला एगयत्ते दो दुपदेसिया खंधा भवंति, पंचहा कज्जमाणे एगयत्ते चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयत्ते दुपदेसिए खंधे भवइ, छहा

स्कन्ध एकतश्चतु प्रदेशिक स्कन्धो भवति' अथवा द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत, त्रिधा क्रियमाण एकतो द्वौपरमाणुपुद्गलौ एकतश्चतु प्रदेशिक स्कन्धो भवति, अथवैकत परमाणुपुद्गल एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति एकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति। अथवा त्रयो द्विप्रदेशिका स्कन्धा भवन्ति, चतुर्धा क्रियमाण एकत त्रय परमाणुपुद्गला एकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति, अथवैकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत ८, पञ्चधा क्रियमाण एकत चत्वार परमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति ९, षड्धा क्रि

अहवा दो तिपएसिया खंधाभवति तिहा कज्जमाणे। अथवा दोय त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे तीनभागे करताथका। एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खंधेभवइ। एकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे एकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ ४। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओदुपएसिए खंधेभवइ एगयओ तिपएसिए खंधेभवइ। अथवा येकपास परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्ध हुवे स्थापना १ २ ३। अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधाभवंति चउहा कज्जमाणे। अथवा तीन बेप्रदेशिकखन्ध हुवे स्थापना १ २ १ चारेभागे करताथका। एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधेभवइ ७। येकपासे तीन परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ ३। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिया खंधा भवंतिपंचहाकज्जमाणे। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल येकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ २ पंचे भागे करताथका ८। एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खंधेभवइ ९। येकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिकखन्ध

सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भ
कज्जमाणे छपरमाणुपोग्गला भवंति । सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भ... एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ
वइ, से भिज्जमाणे दुहावि जाव सत्तविहावि कज्जइ । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ १। अहवा एग
छप्पएसिए खंधे भवइ, अथवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंच पएसिए खंधे भवइ २। अहवा एग
यओ तिपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ ३ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला
एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ४ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ चउप्प

सप्तप्रादेशिक स्कन्धो भवति, सभिद्यमानो द्विधापि यावत्सप्तधापि क्रियते, द्विधाक्रियमाण एकतः परमाणुपुद्गल एकतः षट् प्रादेशिक स्कन्धो भवति १, अथवैकतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकतः पञ्चप्रदेशिक स्कन्धो भवति २, अथवैकतः स्त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एकतश्चतुः प्रादेशिक स्कन्धो भवति ३, त्रिधा क्रियमाण एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतः पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो भवति ४, अथवैकतः परमाणुपुद्गल एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकतश्चतुः प्रादेशिक स्कन्धो भव
यमाणा षट्परमाणुपुद्गला भवन्ति । सप्त भदन्त ! परमाणुपुद्गला पृच्छा, गौतम !

हुवे २ १ १ १ १ २ । छहा कज्जमाणे छपरमाणुपोग्गला भवति १० । छभेभाग करताथका छ परमाणू पुद्गल हुवे १ १ १ १ १ १ । सत्तभते परमाणुपोग्ग
ला पुच्छा । सात हेभगवन् । परमाणूपुद्गल एकठा मिल्या स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तपएसिए खधे भवइ सेभिज्जमाणे । हेगौतम । सात
प्रदेशिकखन्ध हुवे ते भेदताथका । दुहावि जाव सत्तहावि कज्जइ दुहाकज्जमाणे । बेभेदे पणि इम यावत् सातिभागे पणि कीजे बेहु भागे करता थ
का । एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ छप्पएसिएखधेभवइ । येकपासे परमाणू पुद्गल येकपासे छप्रदेशिक खन्ध १ ६ । अहवा एगयओ दुपएसिए
खधे एगयओ पचपएसिए खधेभवइ । अथवा एकपासे बेप्रदेशिक खन्ध हुवे येकपासे पचप्रदेशिक खन्धहुवे २ ५ । अहवा एगयओ तिपएसिए खधे एग
यओ चउप्पएसिए खधेभवइ तिहाकज्जमाणे । अथवा येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्ध हुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्ध हुवे ३ ४ तीनभागे करताथका । एग

देसिए खधे भवइ ५। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ ७। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ ८। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ तिपदेसिए खधे भवइ ९। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खधा

ति ५, अथैकत परमाणुपुद्गल एकतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत ६, अथवैकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ एतक त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति ७, चतुर्द्धा क्रियमाणा एकत त्रय परमाणुपुद्गला एकत चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति ८, अथवैकतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति ९' अथवैकत परमाणुपुद्गल एकत त्रयो द्विप्रदेशिका स्कन्धा भवन्ति १०, पञ्चधा

यओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ पचपएसिए खधे भवइ ४। येकपासे दोयपरमाणू पुद्गल येकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे १ ५। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खधे एगयओ चउप्पएसिए खधेभवइ ५। अथवा येकपासे परमाणूपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ ४। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो तिपएसियाखधा भवति ६। अथवा येकपासे परमाणूपुद्गल हुवे येकपासे दोय त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ ३ ३ अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा एगयओ तिपएसिए खधे भवइ ७ चउहाकज्जमाणे। अथवा येकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे चारिभागे करताथका। एगयओ तिन्निपरमाणु पोग्गला एगयओ चउप्पएसिए खधेभवइ ८। येकपासे तीन परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ १ ४। अहवा एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपएसिए खधे एगयओ तिपएसिए खधे भवइ ८। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ ३। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुपएसिया खधाभवति १०। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीन बेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ २ २ २। पचहा

॥ मूल ॥

हवइ ११ । तिपदेसिए खंधे हवइ ११ ।
हवति १० । पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे हवइ ११ । छहा कज्जमाणे एग
अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा हवंति १२ । छहा कज्जमाणे एंग
यओ पचपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे हवइ १३ । सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला
हवंति १४ । अट्ठ परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! अट्ठपदेसिए खंधे हवइ जाव दुहा कज्जमाणे एग
यओ परमाणुपोग्गले एगयओ सत्तपदेसिए खंधे हवइ १ । अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे हवइ एगयओ

अनुवाद

क्रियमाण एकत श्चत्वार परमाणुपुद्गला एकत स्त्रिप्रदेशिक स्कन्धो भवति ११, अथवैकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ भवत १२, षड्धा क्रियमाण एकत पञ्च परमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति १३, सप्तधा क्रियमाण सप्तपरमाणुपुद्गला भवन्ति १४, अष्टौ परमाणुपुद्गला पृच्छा गौतम ! अष्टप्रादेशिक स्कन्धो भवति, यावद्द्विधाक्रियमाण एकत्वत. परमाणुपुद्गल एकत्वत सप्तप्रा

॥ भाषा ॥

एगयश्रो चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयश्रो तिपएसिए खधेभवइ ११ । येकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीनप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ ३, अहवा एगयश्रो तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयश्रो दोदुपएसिया खधाभवति १२ । अथवा येकपासे तीनपरमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय वेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ १ २ २ । छहाकज्जमाणे । छएभागे करतायका । एगयश्रो पचपरमाणुपोग्गला एगयश्रो दुपएसिए खधेभवइ । येकपासे पञ्च परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे वेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ १ १ १ २, १३ । सत्तहाकज्जमाणे । सातिभागे करतायका । सत्तपरमाणुपोग्गला भवति १४ । सात परमाणुपुद्गल हुवे १ १ १ १ १ १ १ । अट्ठ परमाणुपोग्गला पुच्छा । आठ हेभगवन् । परमाणुपुद्गल येकठा मिल्या स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अट्ठपएसिए खधेभवइ । हेगोतम । आठ प्रदेशिक खन्धहुवे । जाव दुहाकज्जमाणे । यावत् वेहभागे करतायका । एगयश्रो परमाणुपोग्गल एगयश्रो सत्तपएसिए खधभवइ १ । येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे सातप्रदेशिक खन्धहुवे १ ७ । अहवा एगयश्रो दुपएसिए ख॰

छप्पएसिए खंधे भवइ २ । अहवा एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ३ । अहवा दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति ४ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ ५ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ६ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ ७ । अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ ८ । अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे

देशिक स्कन्धो भवति १' अथवैकतो द्विप्रदेशिक स्कन्धो भवति एकत षट्प्रदेशिक स्कन्धो भवति २, अथवैकत्वत स्त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एकत्वत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो भवति ३' अथवा द्वौ चतु प्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत ४, त्रिधा क्रियमाण एकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ भवत एकत्वत षट्प्रादेशिक स्कन्धो भवति ५' अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकत्वत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो भवति ६, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वत स्त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एकत्वत चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति ७, अथवैकत्वतो द्वौ द्विप्रदे

भवइ एगयओ छप्पएसिए खंधेभवइ २। अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे एकपासे छ प्रदेशिक खन्धहुवे २ ६। अहवा एगयओ तिपएसिए खंधेभवइ एगयओपंचपएसि० खंधेभवइ ३। अथवा येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे ३ ५। अहवा एगयओ दोचउप्पएसिया खंधा भवंति ४। अथवा दोय चार प्रदेशिक खन्ध हुवे ४ ४। तिहाकज्जमाणे। तीनभागे करतांथका। एगयओ दोपरमाणु पोग्गला भवंति। येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे। एगयओ छपएसिए खंधेभवइ ५। येकपासे छप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ ६। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधेभवइ ६। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ ५। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपएसि० खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधेभवइ ७। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे

जवइ, एगयत्रे दो तिपदेसियाइं खंधाइं जवंति ९। चउहा कज्जमाणे एगयत्रे तिन्नि परमाणुपोग्गला जवइ, एगयत्रे दो तिपदेसियाइं खंधाइं जवंति ९। चउहा कज्जमाणे एगयत्रे तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्रे पचपदेसिए खंधे जवइ १०। अहवा एगयत्रे दोन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्रे दुपदेसिए खंधे जवइ एगयत्रे चउप्पदेसिए खंधे जवइ ११। अहवा एगयत्रे दोपरमाणुपोग्गला एगयत्रे दो तिपदेसिया खंधा जवंति १२। अहवा एगयत्रे परमाणुपोग्गले एगयत्रे दो दुपदेसिया खंधा जवंति एगयत्रे तिपदे

शिकौ एकत्वत श्चतु प्रादेशिक स्कन्धो जवति ८, अथवैकत्वतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकत्वतो द्वौ त्रिप्रदेशिकौ स्कन्धौ जवत ए, चतुर्द्वा क्रियमाण एकत्वत स्त्रय परमाणुपुद्गला एकत्वत. पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो जवति १०, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकत्वतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकत्वत श्चतु प्रादेशिक स्कन्धो जवति ११' अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकत्वतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ जवत १२, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ जवत एकत्वतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो जवति १३, अथवा चत्वारो द्विप्रादेशिका·

चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ ३ ४। अहवा एगयश्री दो दुपएसिया खधा एगयश्री चउप्पएसिए खधे भवइ ८। अथवा येकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे २ २ ४। अहवा एगयश्री दपएसिए खधेभवइ एगयश्री दो तिपएसियाइ खधाइ भवति ८। अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दो तिप्रदेशिक खन्धहुवे २ ३ ३। चउहाकज्जमाणे। चारभागे करताथका। एगयश्री तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयश्री पचपएसिए खधेभवइ १०। येकपासे तीन परमाणुपुद्‌गल हुवे येकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ ५। अहवा एगयश्री दोन्नि परमाणुपोग्गला एगयश्री दुपएसिए खधेभवइ एगयश्री चउप्पदेसिए खधेभवइ ११। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्‌गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ ४। अहवा एगयश्री दो परमाणुपोग्गला एगयश्री दो तिपदेसिया खधाभवति १२। अथवा येकपासे दोयपरमाणुपुद्‌गल हुवे येकपासे दो त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ ३ ३। अहवा एगयश्री परमाणुपोग्गले एगयश्री दो दुपदेसिया खधाभवति एगयश्री तिपदेसिए खधेभवइ १३। अथवा ये

सिए खंधे भवइ १३ । अहवा चत्तारि दुपदेसिया खंधा भवंति १४ । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवति १५ । अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ १६ । अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खंधा भवंति १७ । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति १८ । अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवति १९ सत्तहा

स्कन्धा भवन्ति १४, पञ्चधा क्रियमाणे एकत्वतश्चत्वार परमाणुपुद्गला एकत्वतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति १५, अथवैकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति १६' अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकतस्त्रयो द्विप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति १७' षड्धा क्रियमाण एकत पञ्च परमाणुपुद्गला एकतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति १८, अथवैकत्वतश्चत्वार परमाणुपुद्गला एकतो

कपासे परमाणुपद्गल हुवे येकपासे दो बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ २ ३ । अहवा चत्तारि दुपदेसिया खधा भवति १४ । अथवा चारेई बेप्रदेशिया खन्धहुवे २ २ २ २ । पचहा कज्जमाणे । पचेभाग करतायका । एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला । येकपासे चार परमाणु पद्गल हुवे । एगयओ चउप्पदेसिए खधेभवइ १५ । येकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ ४ । अहवा एगयओ तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयओ दुप देसिए खधे एगयओ तिपदेसिए खधेभवइ १६ । अथवा येकपासे तीन परमाणुपद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ २ ३ । अहवा एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपएसिया खधा भवति १७ । अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीन बेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ २ २ २ । छहा कज्जमाणे । छएभागे करतायका । एगयओ पचपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खधे भवइ १८ । येकपासे पचपरमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ ३ । अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपएसिया खधा भव

॥ मूल ॥

एगयत्र दुपदेसिए खंधे नवति २० । अठहा कज्जमाणे अठ परमाणुपोग्गला नवंति २१ । णव नंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! जाव णवहा कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयत्र परमाणुपोग्गले एगयत्र अठपएसिए खधे नवइ, एवं एक्केक्कसंचारिएहिं जाव अहवा एगयत्र चउप्पदेसिए खधे एगयत्र पंचपदेसिए खंधे नवति ४ । तिहा कज्जमाणे एगयत्र दो परमाणुपोग्गला कज्जमाणे एगयत्र छपरमाणुपोग्गला एगयत्र दुपदेसिए खंधे नवति २० । अठहा कज्जमाणे अठ परमा

अनुवाद

द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ नवत १९, सप्तधा क्रियमाण एकत षट्परमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रादेशिक स्कन्धो नवति २०' अष्टधा क्रियमाणे अष्टौ परमाणुपुद्गला भवन्ति २१ । नव नदन्त । परमाणुपुद्गला पृच्छा, गौतम । यावन्नवधा क्रियते, द्विधा क्रियमाण एकत परमाणुपुद्गल एकतो अष्टप्रादेशिक स्कन्धो नवति, एवमेकैकसञ्चारितै यावदथवा एकतश्चतु प्रादेशिक स्कन्ध एकत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो नवति ४, त्रिधा क्रियमाण एकतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत सप्तप्रादेशिक स्कन्धो नवति ५' अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध

॥ भाषा ॥

ति १९ । अथवा वेकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे वेकपासे दोय वेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ २ २ । सत्तहाकज्जमाणे । सातेभागे करतायका । एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खधे भवइ २० । वेकपासे छ परमाणु पुद्गल हुवे वेकपासे वेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ १ २ । अठहा कज्जमाणे । आठभागे करतायका । अठपरमाणुपोग्गलाभवति २१ । आठ परमाणुपुद्गल हुवे २१ भाङ्गाहुवे १ १ १ १ १ १ १ १ । णवभंते परमाणुपोग्गला पुच्छा । नव हेभगवन् । परमाणुपुद्गल एकठानिल्या स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जाव णवहा कज्जइ । हेगौतम । यावत् नवभागे कीजे । दुहा कज्जमाणे । तिहा बेहभागे करतायका । एगयओ परमाणुपोग्गले । वेकपासे परमाणुपुद्गल हुवे । एगयओ अठपदेसिए खधे भवइ । वेकपासे आठ प्रदेशिक खन्धहुवे १ ८ । एव एक्केक सचारितेहि । इम वेकेक सचारण कीजे इम । जाव अहवा एगयओ चउप्पदेसिए खधे भवइ । यावत् अथवा वेकपासे चार प्रदेशिक खन्ध हुवे । एगयओ पचपदेसिए खधेभवइ ४ । वेकपासे पचप्रदेशिकस्कन्ध हुवे ४ ५ ते इम । तिहाकज्जमाणे । तीनेभागे करतायका । एग

एगयत्ते सत्तपएसिए खंधे जवइ ५ । ऋहवा एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते दुपदेसिए खंधे एगयत्ते छप्प
देसिए खंधे जवइ ६ । ऋहवा एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते तिपदेसिए खंधे एगयत्ते पचपदेसिए खंधे
जवइ ७ । ऋहवा एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते दो चउप्पदेसिया खंधा जवंति ८ । ऋहवा एगयत्ते
दुपदेसिए एगयत्ते तिपदेसिए एगयत्ते चउप्पएसिए खंधे जवइ ९ । ऋहवा तिन्नि तिपदेसिया खंधा जव
ति १० । चउहा कज्जमाणे एगयत्ते तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्ते छप्पएसिए खंधे जवंति ११ । ऋहवा

एकत षट्प्रदेशिक स्कन्धो जवति ६, अथवैकत परमाणुपुद्गल एकतो त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एकत पञ्चप्रदेशिक स्कन्धो जवति ७, अथवैक
त्वत परमाणुपुद्गल एकतो द्वौ चतुःप्रदेशिकौ स्कन्धौ जवत ८, अथवैकतो द्विप्रादेशिक एकतस्त्रिप्रादेशिक एकतश्चतुःप्रादेशिक स्कन्धो
भवति ९, अथवैकतस्त्रयस्त्रिप्रादेशिका स्कन्धा जवन्ति १०, चतुर्धा क्रियमाण एकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकत. षट्प्रादेशिक स्कन्धो जवति

वर्षी दो परमाणुपोग्गला एगयश्री सत्तपएसिए खंधे भवइ ५ । येकपासे बेपरमाणु पुद्गलहुवे येकेपासे सातप्रदेशिक खान्ध हुवे ११७ । अहवा एगय
श्री परमाणुपोग्गले एगयश्री दुपदेसिए खंधे एगयश्री छप्पदेसिए खंधे भवइ ६ । अथवा येकेपासे येक परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे ये
कपासे छप्रदेशिक खन्धहुवे १२६ । अहवा एगयश्री परमाणुपोग्गले एगयश्री तिपदेसिएखंधे एगयश्री पचपदेसिए खंधे भवइ७।अथवा येकपासे परमा
णु पुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पचप्रदेशिक खन्ध हुवे १२५। अहवा एगयश्री परमाणुपोग्गल एगयश्री दो चउप्पदेसिया खंधा
भवति ८। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दो चारप्रदेशिक खन्धहुवे १४४। अहवा एगयश्री दुपदेसिए एगयश्री तिपदेसिए एगयश्री चउ
प्पएसिए खंधेभवइ ९। अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे २३४। अहवा तिन्निपदे
सिया खंधाभवंति १०। अथवा तीनेई त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे चउहाकज्जमाणे। चारभागे करतायका। एगयश्री तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयश्री छप्पदे

॥ मूल ॥

एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ १२। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ १३। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खंधा भवंति एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ १४। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति १५। अहवा एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवति १६। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्ग

॥ अनुवाद ॥

११, अथवैकतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेकतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो भवति १२, अथवैकतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेकतस्त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एकतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति १३, अथवैकत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत एकत्वत श्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति १४, अथवैकत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रदेशिक स्कन्ध एकतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ भव

॥ भाषा ॥

सिए खधभवइ ११। येकपास तीनपरमाणु पुद्गल वे येकपासे छप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ ६। अहवा एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ पचपदेसिए खधे भवइ १२। अथवा येकपासे वेज परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे वेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पचप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ ५। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खधे एगयओ चउप्पदेसिए खधे भवइ १३। येकपासे दो परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशी खन्ध अने येकपासे चार प्रदेशिक खन्धहुवे १ १ ३ ४। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो दुपदेसिया खधा भवति। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दो वेप्रदेशिक खन्धहुवे। एगयओ चउप्पदेसिए खधे भवइ येकपासे चार प्रदेशिक खन्धहुवे १ २ २ ४। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ दो तिपदेसिया खधा भवति १५। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे वेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ ३ ३। अहवा एगयओ तिण्णदुपदेसिया खधा एगयओतिपदे

॥ सूल ॥

कज्जमाणे णवपरमाणुपोग्गला भवंति २८। दस भंते ! परमाणुपोग्गला पुच्छा, गोयमा ! जाव दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ णवपदेसिए खधे भवइ १। अहवा एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ अठपएसिए खधे भवइ २। एव एक्केक्को सचारेति जाव अहवा दो पच पदेसिया खधा भवति ५। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अठपदेसिए खधे भवइ ६। अहवा एगयओ परमा

अनुवाद

शिको स्कन्धो भवत २६' अष्टधा क्रियमाण एकत सप्तपरमाणुपुद्गला एकतो द्विप्रादेशिक स्कन्धो भवति २७, नवधा क्रियमाणा नव परमाणुपुद्गला भवन्ति २८, दश भदन्त ! परमाणुपुद्गला पृच्छा, गौतम ! यावद्द्विधा क्रियमाणा एकत परमाणुपुद्गल एकतो नवप्रादेशिक स्कन्धो भवति १, अथवैकतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकतो ऽष्टप्रादेशिक स्कन्धा भवति २, एवमेकैक सचारयितव्य यावदथवा द्वौ पञ्चप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत ५, त्रिधा क्रियमाणा एकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकत्वताष्टप्रादेशिक स्कन्धो भवति ६, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल

॥ भाषा ॥

गे करतायका। एगयओ सत्तपरमाणु पोग्गला एगयओ दुपदेसिए खधे भवइ २७। येकपासे सात परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ १ १ १ १ १ २। णवहा कज्जमाणे। नवेभागे करतायका। णव परमाणुपोग्गला भवति २८। नवेइ परमाणुपुद्गल हुवे, ए २८ भागायया १ १ १ १ १ १ १ १ १। दसभंते परमाणुपोग्गलापुच्छा। दश हेभगवन् ! परमाणुपुद्गल एकठामिल्या स्यूं हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जाव दुहाकज्जमाणे। हेगौतम ! यावत् बेभागे करतायका। एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ णवपदेसिए खधे भवइ १। येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे नवप्रदेशिक खन्धहुवे १ ९। अहवा एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ अठपदेसिए खधेभवइ २। अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे आठ प्रदेशिक खन्ध हुवे २ ८। एव एक्केक्क सचारेति। इम येकेको सचारणा कीजे। जाव अहवा पचपदेसिया खधा भवति ५। यावत् अथवा दोय पचप्रदेशिक खन्धहुवे। तिहाकज्जमाणे। तीनेभागे करतायका। एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ अठपदेसिएखधे भवइ। ६ येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपा

पोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ सत्तपदेसिए खंधे भवइ ७। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ एगयओ छप्पदेसिए खंधे भवइ ८। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ९। अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ५। अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति ६। अहवा एगयओ दो तिपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ ७। चउहा कज्ज

एकतो द्विप्रादेशिकः स्कन्ध एकतः सप्तप्रादेशिकः स्कन्धो भवति ७, अथवैकतः परमाणुपुद्गल एकतस्त्रिप्रादेशिकः स्कन्धो भवत्ये[illegible] षट्प्रादेशिकः स्कन्धो भवति ८, अथवैकतः परमाणुपुद्गल एकतश्चतुःप्रादेशिकः स्कन्ध एकतः पञ्चप्रादेशिकः स्कन्धो भवति ९, अथवैकतो द्विप्रादेशिकः स्कन्ध एकतस्त्रिप्रादेशिकः स्कन्ध एकतः पञ्चप्रादेशिकः स्कन्धो भवति १०, अथवैकतो द्विप्रादेशिकः स्कन्ध

[illegible] अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ [illegible] खंधे भवइ [illegible] अथवा एकभागमें पर[illegible] एकभागमें [illegible] स्कन्ध [illegible] अहवा एगयओ परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे [illegible] एगयओ छप्पदेसिए [illegible] अथवा एकभागमें परमाणुपुद्गल [illegible] एकभागमें [illegible] स्कन्ध [illegible] एगयओ परमाणुपोग्गला एगयओ चउप्पदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ ९। अथवा एकभागमें परमाणुपुद्गल [illegible] एकभागमें [illegible] स्कन्ध [illegible] अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ पंचपदेसिए खंधे भवइ १०। [illegible] एकभागमें [illegible] स्कन्ध [illegible] एकभागमें [illegible] एकभागमें पंचप्रादेशिक [illegible] अथवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ [illegible] एकभागमें [illegible] स्कन्ध [illegible] एकभागमें दो [illegible] स्कन्ध [illegible] अहवा एगयओ दो तिपदेसिया [illegible]

॥ मूल ॥

माणे एगयत्रो तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्रो सत्तपदेसिए खंधे १। अहवा एगयत्रो दो परमाणुपोग्गला एगयत्रो दुपदेसिए खंधे एगयत्रो छप्पएसिए खंधे भवइ २। अहवा एगयत्रो दो परमाणुपोग्गला एगयत्रो तिपदेए खंधे एगयत्रो पंचपदेसिए खंधे भवइ ३। अहवा एगयत्रो दो परमाणुपोग्गला एगयत्रो दो चउप्पदेसिया खंधा भवंति ४। अहवा एगयत्रो परमाणुपोग्गले एगयत्रो दुपदेसिए खंधे एगयत्रो तिपदेसिए खंधे

अनुवाद

एकतो द्वौ चतु प्रादेशिको स्कन्धो भवत ११, अथवैकत्वतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ एकतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति १२, चतुर्द्धा क्रियमाण एकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकत्वत सप्तप्रादेशिक स्कन्धो भवति १३, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलौ एकतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वत षट्प्रादेशिक स्कन्धो भवति १४, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेकतस्त्रिप्रादेशिकस्कन्ध एकत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो भवति १५, अथ वैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेकतो द्वौ चतु प्रादेशिकौ स्कन्धो भवत १६' अथवैकत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकत

॥ भाषा ॥

एगयश्रो चउप्पदेसिएखधे भवइ १२। अथवा येकपासे दो त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चारप्रदेशिक खन्ध २ ३ ४। चउहाकज्जमाणे। चारेभागे करता थका। एगयश्रो तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयश्रो सत्तपदेसिए खधे भवइ १३। येकपासे तीन परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे सात प्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ ७। अहवा एगयश्रो दो परमाणुपोग्गला एगयश्रो दुपदेसिएखधे एगयश्रो छप्पएसिएखधे भवइ १४। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल येकपासे वेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपास छप्रदेशिकखन्ध हुवे १ १ २ ६। अहवा एगयश्रो दो परमाणुपोग्गला एगयश्रोतिपदेसिएखधे एगयश्रोपचपदेसिए खधे भवइ १५। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पञ्चप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ ३ ५। अहवा एगयश्रो दो परमाणुपोग्गला एगयश्रो दो चउप्पदेसिया खधा भवति १६। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय चारप्रदेशिक खन्ध हुवे १ १ ४ ४। अहवा एगयश्रो परमाणुपोग्गले एगयश्रो दुपएसिए खधे एगयश्रो तिपदेसिए एगयश्रो चउप्पएसिए खधे भवइ १७। अथवा येकपासेप रमाणुपुद्गलहुवे येकपासे वे

॥ मूल ॥

एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ५ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि तिपदेसिया खंधा भवंति ६ । अहवा एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ ७ । अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति ८ । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ ९ । अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ १० । अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदे

अनुवाद

त्रिप्रादेशिकः स्कन्धः एकत्वतश्चतुःप्रादेशिकः स्कन्धो भवति १७, अथवैकत्वतः परमाणुपुद्गल एकतस्त्रयस्त्रिप्रादेशिकाः स्कन्धा भवन्ति १८, अथवैकत्वतस्त्रयो द्विप्रादेशिकाः स्कन्धा एकत्वतश्चतुःप्रादेशिकः स्कन्धो भवति १९, अथवैकत्वतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ एकतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः २०। पञ्चधा क्रियमाणे एकत्वतश्चत्वारः परमाणुपुद्गला एकत्वतः षट्प्रादेशिकः स्कन्धो भवति २१, अथवैकत्वतस्त्रयः परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्विप्रादेशिकः स्कन्धः एकत्वतः पञ्चप्रादेशिकः स्कन्धो भवति २२, अथवैकत्वतस्त्रयः परमाणुपुद्गला एकत्वत

॥ भाषा ॥

अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि तिपदेसि प्रदेशिक खन्धहुवे यकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ ३ ४ । अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा एया खधा भवति १८ । अथवा यकपासे परमाणुपुद्गल हुवे वेकपासे तीन त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ ३ ३ ३ । अहवा एगयओ दो दुपदे गयओ चउप्पदेसिए खंध भवइ १९ । अथवा वेकपासे तीन बेप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे । २ २ २ ४ । अहवा एगयओ दो दुपदेसिया खधा एगयओ दो तिपदेसिया खधा भवति २० । अथवा वेकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे दोय त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे २ २ ३ ३ । पंचहा कज्जमाणे । पंचभागे करताथका । एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ छपदेसिए खंधेभवइ २१ । वेकपासे चारेई परमाणुपुद्गल हुवे वेकपासे छप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ ६ । अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंध भवइ एगयओ पंचपदेसिए खंधेभवइ

॥ मूल ॥

सिए खंधे एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ३ । अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ४ । अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति ५ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ ६ । अहवा पंचदुपदेसिया खंधा भवंति ७ । जहा कज्जमाणे एगयओ पंच

॥ अनुवाद ॥

त्रिप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतश्चतु प्रादेशिकस्कन्धो भवति २३, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ एकत्वतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति २४, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकत्वतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत २५, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतस्त्रयो द्विप्रादेशिका स्कन्धा एकत्वतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति २६, अथवा पञ्च द्विप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति २७। प

॥ भाषा ॥

२२। अथवा येकपासे तीन परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे पंचप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ २ ५ । अथवा एगयओ तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ चउप्पदेसिए खंधे भवइ २३। अथवा येकपासे तीनेई परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चार प्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ ३ ४ । अहवा एगयओ दोपरमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खंधा एगयओ चउप्पदेसिए खंधेभवइ २४। येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे चार प्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ २ ४। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो तिपदेसिया खंधा भवंति २५। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ ३ ३। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्निदुपदेसिया खंधा एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ २६। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीन बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ २ २ २ ३। अहवा पंच दुपदेसिया खंधा भवंति २७। अथवा पचेई बेप्रदेशिक खन्धहुवे २ २ २ २ २। छेदाजमाणे । छ्रभागे करताथका। एगयओ पचपरमाणुपोग्गला एगयओ पचप

॥ मूल ॥

परमाणुपोग्गला एगयत्र पचपएसिए खंधे ज्ञवइ १ । ञ्जहवा एगयत्र चत्तारिपरमाणुपोग्गला एगयत्र दुपदेसिए खधे एगयत्र चउप्पएसिए खधे ज्ञवइ २ । ञ्जहवा एगयत्र चत्तारिपरमाणुपोग्गला एगयत्र दो तिपदेसिया खधा ज्ञवइ ३ । ञ्जहवा एगयत्र तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्र दो दुपदेसिया खंधा एगयत्र तिपदेसिए खधे ज्ञवइ ४ । ञ्जहवा एगयत्र दो परमाणुपोग्गला एगयत्र चत्तारिदुपदेसिया खधा ज्ञवंति ५ । सत्तहाकज्जमाणे एगयत्र छप्परमाणुपोग्गला एगयत्र चउप्पएसिए खंधे ज्ञवइ १ । ञ्जहवा एगयत्र पचपर

अनुवाद

धा क्रियमाण एकत्वत पञ्चपरमाणुपुद्गला एकत्वत पञ्चप्रादेशिक स्कन्धो जवति २८, अथवैकत्वतश्चत्वार परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्वौ द्विप्रदेशिकौ स्कन्धौ एकतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो जवति २९। अथवेकतश्चत्वार परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्वौ त्रिप्रादेशिकौ स्कन्धौ जवत ३०, अथवैकत्वतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ एकतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति ३१। अथवैकतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतश्चत्वा

॥ भाषा ॥

देसिए खध भवइ २८। येकपासे पचपरमाणु पुद्गल हुवे येकपासे पचप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ ५। अहवा एगयश्रो चत्तारिपरमाणुपोग्गला एगयश्रो दुपदेसिए खधे एगयश्रो चउप्पदेसिए खधे भवइ २९। अथवा येकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खधहुवे येकपासे चार प्रदेशिक खधहो १ १ १ १ २ ४। अहवा एगयश्रो चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयश्रो दो तिपदेसिया खधाभवति ३०। अथवा येकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय त्रिप्रदेशिक खधहुवे १ १ १ १ ३ ३। अहवा एगयश्रो तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयश्रो दो दुपदेसिया खधा एगयश्रो तिपदेसिए खधे भवइ। ३१। अथवा येकपासे तीनेई परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय बेप्रदेशिक खधहुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खधहुवे १ १ १ २ २ ३। अहवा एगयश्रो दो परमाणुपोग्गला एगयश्रो चत्तारि दुपदेसिया खधा भवति ३२। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे चार बेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ २ २ २ २। सत्तहा कज्जमाणे। सातभागे करताथका। एगयश्रो छपरमाणपोग्गला एगयश्रो चउप्पदेसिए खधे भवइ ३३। येकपासे छ परमाणुपुद्ग

माणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ तिपदेसिए खंधे भवइ २ । अहवा एगयओ चत्तारिपरमाणुपोग्गला एगयओ तिन्नि दुपदेसिया खधा भवंति ३ । अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खधे भवइ ४ । अहवा एगयओ छपरमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खधा भवंति ५ । णवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे भवइ ६ । दसहा कज्जमाणे दसपरमाणुपो

रौ द्विप्रादेशिका स्कन्धा भवंति ३२ । सप्तधा क्रियमाणे एकत्वत षट्परमाणुपुद्गला एकत्वतश्चतु प्रादेशिक स्कन्धो भवति ३३, अथवैकत्वत पञ्चपरमाणुपुद्गला एकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति ३४, अथवैकत्वतश्चत्वार परमाणुपुद्गला एकत्वतस्त्रयो द्विप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति ३५ । अष्टधा क्रियमाणे एकत्वत सप्त परमाणुपुद्गला एकत्वतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्धो भवति ३६, अथवैकत्वत षट् परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्वौ द्विप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत ३७ । नवधा क्रियमाणे एकत्वतो अष्टौ परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्विप्रादेशिक स्कन्धो

ल हुवे येकैपासे चारप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ १ ४ । अहवा एगयओ पचपरमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखधे एगयओ तिपदेसिए खधे भवइ ३४ । अथवा येकपासे पचेक परमाणुपुद्गल हुवे येकैपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकैपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ २ ३ । अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ तिण्णि दुपदेसिया खधा भवति ३५ । अथवा येकपासे चार परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीन बेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ २ २ २ । अट्ठहा कज्जमाणे । आठभागे करतायका । एगयओ सत्तपरमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिएखधे भवइ ३६ । येकपासे सात परमाणुपुद्गल हुवे यकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ १ १ ३ । अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला एगयओ दो दुपदेसिया खधा भवति ३७ । अथवा येकपासे छह परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय बेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ १ २ २ । णवहा कज्जमाणे । नवेभागे करतायका । एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खधे भवइ ३८ । येकपास आठ परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे १ १ १ १ १ १ १ १ २ । दसहा कज्जमा

॥ मूल ॥

ग्गला भवंति संखेज्जाणं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति एएकिंभवंति ? गोयमा! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, सेभिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि संखेज्जहावि कज्जइ, दुहाकज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ सज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे ३ एवं जाव अहवा एगयओ दसपदेसिए खंधे

अनुवाद

भवति ३८। दशधा क्रियमाणा दशपरमाणुपुद्गला भवन्ति ३९॥ सङ्ख्या भदन्त। परमाणुपुद्गला एकत्वत संहन्यन्ते एते किं भवन्ति ? गौ०। सङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति, सभिद्यमाना द्विधापि यावद्दशधापि सङ्ख्येयधापि क्रियते, द्विधा क्रियमाणा एकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति १, अथवैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति २, अथवैकत्वतस्त्रिप्रादेशिक स्कन्ध एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति ३, एव यावदथवैकत्वतो दशप्रदेशिक स्कन्धो भवत्येकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति,

॥ भाषा ॥

णे। दशभागे करतायका। दसपरमाणुपोग्गला भवंति ३९। दशेई परमाणुपुद्गल हुवे १ १ १ १ १ १ १ १ १ १। सखेज्जाण भंते परमाणुपोग्गला एगय श्रो साहणंति। सख्याता ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्। परमाणुपुद्गल येकपासे येकठा मिल्या। एए किं भवंति। एह स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सखेज्जपदेसिए खंधे भवति। हेगौतम। सख्यातप्रदेशिक खन्ध हुवे। सेभिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि सखेज्जहावि कज्जइ। ते भेदतायका बेभागे पणि इमयावत् दशभागे पणि सख्यातभागे कीजे। दुहाकज्जमाणे। तिहां बेह्र भागे करतायका। एगयश्रो परमाणुपोग्गले। येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे। एगयश्रो सखेज्जपदेसिए खंधेभवइ। येकपासे संख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयश्रो दुपदेसिएखंधे एगयश्रो सखेज्जपदेसिए खंधभवइ। अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयश्रो तिपदेसिए खंधे एगयश्रो सखेज्जपदेसिए खंध ३। अथवा एकंपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। एव जाव अहवा एगयश्रो दसपदेसिए खंधे भवइ। इम येकेक सचारण करता यावत् अ

हवइ एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति ११। तिहा कज्जमा णे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ १, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एग यओ दुपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे भवइ २। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिप देसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ ३ एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दस पएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ १०, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्ज

अथवा द्वौ संख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः ११। त्रिधाक्रियमाणे एकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतः संख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति १, अथवैकत्वतः परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रादेशिकः स्कन्ध एकत्वतः संख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २, अथवैकत्वतः परमाणुपुद्गल एकत्वतस्त्रि प्रादेशिकः स्कन्ध एकत्वतः संख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति ३, एवं यावदथवैकत्वतः परमाणुपुद्गल एकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतः संख्ये

थवा वेकपासे दसप्रदेशिक खन्धहुवे। एगयओ संखेज्जपदेसिएखंधभवइ। वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा दो संखेज्जपदेसिया खंधाभवंति ११। तिहा कज्जमाणे। तीनभाग करतायका। एगयओ दो परमाणुपोग्गला। वेकपासे दोय परमाणुपुद्गलहुवे। एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे भवइ १। वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ २। अथवा वेकपासे परमाणुपुद्गलहुवे वेकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे भवइ ३। अथवा वेकपासे परमाणु पुद्गलहुवे वेकपासे तिनप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। एम जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपदेसिएखंधे एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे भवइ १०। इम यावत् अथवा वेकपासे परमाणुपुद्गल हुवे वेकपासे दशप्रदेशिक खन्धहुवे वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे १०। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा ११। अथवा वेकपासे परमाणुपुद्गलहुवे वेकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे १०।

पएसिया खंधा ११, अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति १२, एवं जाव अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति २०। अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खधा भवंति २१। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ ३। उ २, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ ३।

यप्रादेशिकस्कन्धो भवति १०, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्वौ सङ्ख्यातप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत ११, अथवैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वौ सङ्ख्यातप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १२' एव यावदथवैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वौ सङ्ख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत २०, अथवा त्रय सङ्ख्यातप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति २१। चतुर्धा क्रियमाण एकत्वतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकत्वत. सङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २२।१, अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेक अथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतो द्विप्रादशिकस्कन्ध एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २३।२,

अथवा येकपासे बेप्रदे खधा भवति १२। हुवे येकपासे दोय सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ दो सखेज्जपदेसिया खधा भवति २०। एव जाव अहवा एगयओ दुपदेसिए खधे एगयओ दो सखेज्जपदेसिया खधा भवति २१। अथवा शिक खन्धहुवे येकपासे दोय सख्यात प्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा तिन्नि सखेज्जपएसिया खधा भवति २१। अथवा इम यावत् अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय सख्यात प्रदेशिक खन्धहुवे। तीन सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। चउहा कज्जमाणे। चारभागे करतायका। एगयओ तिन्निपरमाणुपोग्गला। येकैपासे तीनेई परमाणुपुद्गल हुवे। ए गयओ सखेज्जपएसिए खधे भवति। येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिएखधे एगयओ सख ज्ज पएसिए खधे भवइ २। अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एग

एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भव इ १०, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति ११ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति १२ । एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति २० ।

त्वतस्त्रिप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वत सख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २३ । ३, एव यावदथवैकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गला वेकत्वता दशप्रादेशिकस्कन्धो भवत्येकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्धो भवति एकत्वत सख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २४ । १०, अथवैकत्वता द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतो द्वौ सङ्ख्यातप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत ११' अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वौ सख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १२, एव यावदथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वौ सङ्ख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत २०, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल

यओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपदेसिए खंधे एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ ३ । अथवा वेकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे त्रिप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एव जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दस पएसिएखंधे एगयओ सखेज्जपदेसिए खंधेभवइ १० । इम यावत् अथवा येकपासे दोय परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दश प्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यात प्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ दो सखेज्जपएसिया खंधा भवति ११ । अथवा येकपासे दो परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ दो सखेज्जपदेसिया खंधा भवति । अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपदेसिए खंधे एगयओ दो सखेज्जपदेसिया खंधाभवति २० । इम यावत् अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दशप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय सख्यातप्रदेशिक खन्ध

॥ मूल ॥

अहवा एगयउ परमाणुपोग्गले एगयउ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति २१ । अहवा एगयउ दुपदेसिए खंधे एगयउ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एव जाव अहवा एगयउ दसपएसिए खंधे एगयउ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति एवं एएण कमेण पंचसंजोगोविभाणियव्वो जाव णवसंजोगा । दसहा

अनुवाद

एकत्वतस्त्रय सङ्ख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति २१, अथवैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतस्त्रय सङ्ख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति २२, एव यावदथवैकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतस्त्रय सङ्ख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति, एवमेतेन क्रमेण पञ्चकसंयोगोपि भणितव्यो यावन्नवसंयोग, दशधा क्रियमाणा एकत्वतो नव परमाणुपुद्गला एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति १, अथवैकत्वतोऽष्टौ परमाणुपुद्गला एकत्वतो द्विप्रादेशिक स्कन्ध एकत्वत सङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति २, एवमेतेन क्रमेणैकैक पूरितव्यो यावदथवैकत्वतो दशप्रादेशिक स्कन्धो भवति एकत्वतो नव

॥ भाषा ॥

थई । अथवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ तिन्नि संखेज्जपदेसिया खधा भवति २१ । अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे तीनेई सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ दुपदेसिएखंधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपदेसिया खधा भवति । अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे तीन सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एव जाव अहवा एगयओ दसपदेसिए खधे एगयओ तिन्नि संखेज्जपदेसिया खधा भवति । इम यावत् अथवा येकपासे दशप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे तीन सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एव एएण कमेण पंचसंयोगोवि भाणियव्वो जाव णव संजोगा । इम इणे अनुक्रमेकरी पंचसंयोगीयाँ भांगा ४१ जाणवा छम छ संयोगे ५१ सातसंयोगे ६१ आठसंयोगे ७१ नवसंयोगे ८१ जाणवा । दसहा कज्जमाणे । दशभागे करतायका । एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ । येकपासे नव परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ २ । अथवा येकपासे आठ परमाणुपुद्गलहुवे येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एव एएण कमेण एक्केक्को पूरेयव्वो । इम इणे अनुक्रमेकरी एकेक अधिको पूरवो संचारवो । जाव अहवा एगयओ दस

कज्जमाणे एगयओ णवपरमाणुपोग्गला एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ ९, अहवा एगयओ अट्ठपरमाणुपो
ग्गला एगयओ दुपदेसिए एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ २। एव एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो जाव
अहवा एगयओ दसपएसिए खधे भवइ एगयओ णवसखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा दससंखेज्जपए
सिया खधा भवंति ९१। सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति, असंखेज्जहाणं भंते! परमा
णुपोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ साहणित्ता कि भवंति? गोयमा! असखेज्जपएसिए खंधे भवइ,
से भिज्जमाणे दुहावि जाव दसहावि सखेज्जहावि असखेज्जहावि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपो

सङ्ख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति, अथवा दश सङ्ख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति ९१, सङ्ख्येयधाक्रियमाणा सङ्ख्या परमाणुपुद्गला भवन्ति॥ असङ्ख्ये
या भदन्त! परमाणुपुद्गला एकत्वत संहन्यन्ते एकत्वत संहत्य कि भवन्ति? गौतम! असङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि
त्रिधापि यावद्दशधापि सङ्ख्येयधापि असङ्ख्येयधापि क्रियते, द्विधाक्रियमाण एकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतोऽसङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति,

पदेसिए खध भवइ। यावत् अथवा येकपासे दश प्रदेशिक खन्धहुवे। एगयओ णवसंखेज्जपदेसिया खधा भवंति। येकपास नव सख्यातप्रदेशिक खन्ध
हुवे। अहवा दस सखेज्जपदेसिया खधा भवंति ९१। अथवा दश सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। सखेज्जहा कज्जमाणे। सख्यातभागे करतायका। सखेज्जा
परमाणुपोग्गला भवंति। सख्याता परमाणुपुद्गल हुवे। असखेज्जहाणंभते परमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति एगयओ साहणित्ता। असख्याता हेभग
वन् परमाणुपुद्गल एकठा मिल्या एकठा मिलोने। कि भवंति? स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असखेज्जपएसिए खधे भवइ। हेगौतम असख्यात
प्रदेशिक खन्धहुवे। से भिज्जमाणे। ते भेदतायका। दुहावि जाव दसहावि सखेज्जहावि असखेज्जहावि कज्जइ। वेहभागे पणि यावत् दशभागे पणि
सख्यातभागे पणि असख्यातभागे पणिकीजे। दुहा कज्जमाणे। तिहा बेजभागे करतायका। एगयओ परमाणुपोग्गले। येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे।

॥ मूल ॥

एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ एगयओ असं-
खेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ ११ ।
अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति १२ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ
असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति १ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्ज-
पएसिए खंधे भवति एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ असंखे-

॥ अनुवाद ॥

एव यावदथवैकत्वतो दशप्रादेशिक स्कन्धो भवत्येकत्वतो संख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति १०, अथवैकत्वत संख्येयप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतोऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति ११, अथवा द्वौ असंख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १२। त्रिधाक्रियमाण एकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतोऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति १, अथवैकत्वत. परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो ऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति, एव यावदथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो ऽसंख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति १०, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वत संख्येय-

॥ भाषा ॥

एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ । येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खंधहुवे । एव जाव अहवा एगयओ दस पदेसिए खधे भवइ । इम यावत् अथवा येकपासे दश प्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधेभवइ । येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ संखेज्जपदेसिए खधे भवइ । अथवा येकपासे संख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधे भवइ ११ । येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा दो असंखेज्जपदेसिया खधा भवति १२ । अथवा दोनो असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । तिहा कज्जमाणे । तीनभाग करताथका । एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपदेसिया खधाभवति १ । येकपासे दोनो परमाणुपुद्गलहुवे येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधे भवइ । अथवा येकपासे परमाणुपुद्गलहुवे येकपासे बेप्रदेशिक येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे ।

ज्जपएसिए खंधे भवइ १० । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ असंखे ज्जपएसिए खंधे भवइ ११ । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भव ति १२ । अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति १३ । एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्जपदेसिया खंधा भवंति २२ । अहवा तिन्नि अ संखेज्जपएसिया खंधा भवंति २३ । चउहाकज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्ज

प्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतोऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति ११, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्वावसंख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १२, अथ वैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावसंख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १३, एव यावदथवैकत्वत संख्येयप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावस ख्येयप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत २२, अथवा त्रयासंख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति २३। चतुर्धा क्रियमाणा एकतस्त्रय परमाणुपुद्गला एकत्वतो

एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपदेसिए खंधे भवइ १० । इम यावत् अथवा येकपासे परमाणुपु द्गल हुवे येकपासे दश प्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे एगयओ असंखेज्जपदेसिए खंधे भवइ ११ । अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे संख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो असंखेज्जपदेसिया खंधाभवंति १२ । अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय असंख्यात प्रदेशिक खन्धहु वे । अहवा एगयओ दुपदेसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्ज पएसिया खंधा भवंति १३ । अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकापासे दोय असंख्यात प्र देशिक खन्धहुवे । एव जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे एगयओ दो असंखेज्जपदेसिया खंधा भवंति २२ । इम यावत् अथवा येकपासे संख्या त प्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा तिण्णि असंखेज्ज पदेसिया खंधा भवंति २३ । अथवा तीन असंख्यातप्रदेशिक

॥ मूल ॥

ज्ञसंखेज्जपएसियस्स णवरं ज्ञसंखे पएसिए खंधे भवइ एवं चउक्कसंजोगो जाव दसकसंजोगो एवं जहेव ज्ञसंखेज्जपएसियस्स णवरं ज्ञसंखे पएसिए खंधे भवइ एवं ... संखेज्जहा कज्जमाणे ज्ञयं एगं ज्ञब्भहिय जाणियव्व जाव ज्ञहवा दस ज्ञसखेज्जपएसिया खंधा भवंति । संखेज्जहा कज्जमाणे एगयज सखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयज ज्ञसखेज्जपएसिए खंधे भवइ । ज्ञहवा एगयज सखेज्जा दुपए सिया खधा एगयज ज्ञसखेज्जपएसिए खधे भवइ, एवं जाव ज्ञहवा एगयज सखेज्जा दसपएसिया खधा

॥ अनुवाद ॥

ऽसंख्येयप्रादेशिकः स्कन्धो भवति, एव चतुष्कसंयोगो यावद्दशकसंयोग एव यथैवासंख्येयप्रादेशिकस्य नवरमसंख्येयमेकमभ्यधिकं ज्ञातव्य यावदथवा दशासंख्येयप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति। संख्येयधा क्रियमाण एकत्वत संख्येया परमाणुपुद्गला एकत्वतोऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वत सङ्ख्येया द्विप्रादेशिका स्कन्धा एकत्वतोऽसङ्ख्येयप्रादेशिक स्कन्धो भवति, एव यावदथवैकत्वत सङ्ख्येया दशप्रादेशिका

॥ भाषा ॥

खन्धहुवे इम असंख्यातप्रदेशिकना त्रिकभांगा । चउहाकज्जमाणे । चारिभागे विहचता भागा ३४ देखाडिके—एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ। वेकपासे तीन परमाणुपुद्गल हुवे वेकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। एव चउक्कसंजोगो जाव दसक संजोगो। इम चतुष्कसंयोगे ३४ पंचकसंयोगे ४५ छ संयोगे ५६ सातसंयोगे ६७ आठसंयोगे ७८ नवसंयोगे ८९ दशसंयोगे १००। एव जहेव असंखेज्जपदेसियस्स। इम जिम असंख्यातप्रदेशी संख्यातप्रदेशीना कह्या तिम कहवा। णवरं असंखेज्जय। एतलोविशेष असंख्यातो। एग अब्भहिय जाणियव्व। एकपद अधिको जाणवो। जाव अहवा दस असंखेज्जपएसिया खधा भवति। यावत् अथवा दश असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। संखेज्जहा कज्जमाणे। संख्यातिभागे क रतायका। एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधेभवइ। येकपासे संख्याता परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ संखेज्जा दुपदेसिया खधा एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधे भवइ। अथवा येकपासे संख्याता बेप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। एव जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपदेसियाखधा एगयओ असंखेज्जपदेसिए खधे भवइ। इम यावत् अथवा येकपासे

एगयत्रे असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयत्रे संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा एगयत्रे असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति। अणंताणं भंते ! परमाणुपोग्गला जाव किं भवंति ? गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे भवइ, भिज्जमाणे दुहावि तिहावि जाव दसहावि संखेज्जहा असंखेज्जहा अणंतहावि कज्जइ, दुहा

स्कन्धा एकत्वतोऽसङ्ख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वतः सङ्ख्याः सङ्ख्येयप्रादेशिकाः स्कन्धा एकत्वतोऽसङ्ख्येयप्रादेशिकः स्कन्धो भवति, अथ वा सङ्ख्या असङ्ख्येयप्रादेशिकाः स्कन्धा भवन्ति। असङ्ख्येयधा क्रियमाणा ऽसङ्ख्याः परमाणुपुद्गला भवन्ति। अनन्ता भदन्त ! परमाणुपुद्गला या वत्किं भवन्ति ? गौतम ! अनन्तप्रादेशिकः स्कन्धो भवति, स भिद्यमानो द्विधापि त्रिधापि यावद्दशधापि सङ्ख्येयधाप्यसङ्ख्येयधाप्यनन्तधापि क्रि

सख्याता दशप्रदेशिक खन्धहवे येकपासे असख्यातप्रदेशिक खन्धहवे। अहवा एगयश्रो सखेज्जा सखेज्जपदेसिया खधा एगयश्रो असखेज्जपदेसिए खधे भवइ। अथवा येकपासे सख्याता सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे असख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा सखेज्जा असखेज्जपदेसिया खधा भवति। अथवा सख्याता असख्यातप्रदेशिक खन्धहवे। असखेज्जहा कज्जमाणे। असख्यातभागे करताथका। असखेज्जा परमाणुपोगला भवति। असख्याता परमाणुपुद्गल हुवे। अणताणभते परमाणुपोगला जाव कि भवति। अनन्ता ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। परमाणुपुद्गल येकठामिल्याथका यावत् स्यू हुवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अणतपदेसिए खधेभवइ। हेगौतम। अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। सेभिज्जमाणे। ते भेदताथका। दुहावि तिहावि जाव दस हावि सखेज्जहा असखेज्जहावि अणतहावि कज्जइ। वेहुभागे तीनभागे यावत् दशभागे पणि सख्यातभागे पणि असख्यातभागे पणि अनन्तभागे पणि कीजे। दुहाकज्जमाणे। तिहा बेहुभागे करताथका। एगयश्रो परमाणुपोगले एगयश्रो अणतपदेसिए खधेभवइ। येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। एव जाव अहवा दो अणतपदेसिया खधा भवति। इम यावत् अथवा दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे इम बेहु भागे करता

॥ मूल ॥

कज्जमाणे एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते अणंतपदेसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा दो अणंतपदेसि
या खधा भवंति, तिहा कज्जमाणे एगयत्ते दो परमाणुपोग्गला एगयत्ते अणतपएसिए खधे भवइ, जाव अहवा एगयत्ते
वा एगयत्ते परमाणुपोग्गले एगयत्ते दुपदेसिए एगयत्ते अणतपदेसिए खधे भवइ, अहवा एगयत्ते परमा
परमाणुपोग्गले एगयत्ते असखेज्जपएसिए खंधे एगयत्ते अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयत्ते परमा
णुपोग्गले एगयत्ते दो अणतपएसिया खधा भवंति, अहवा एगयत्ते दुपदेसिए खधे एगयत्ते दो अणतप

अनुवाद

यते, द्विधा क्रियमाण एकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतोनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, एव यावदथवा द्वौ अनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत १२।
त्रिधा क्रियमाण एकत्वतो द्वौ परमाणुपुद्गलावेकत्वतोऽनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्विप्रादेशिक एक
त्वतोऽनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, यावदथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतोऽसख्येयप्रादेशिकस्कन्धो भवति एकत्वतोऽनन्तप्रादेशिकस्कन्धो
भवति, अथवैकत्वत परमाणुपुद्गल एकत्वतो द्वौ अनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवत , अथवैकत्वतो द्विप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावनन्तप्रादे

॥ भाषा ॥

भागा १२ हुवे। तिहाकज्जमाणे। त्रिहुभागे करताथका । एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ। येकपासे दोय परमाणुपुद्गल
हुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपदेसिए एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ। अथवा येकपासे परमा
णुपुद्गल हुवे येकपासे बेप्रदेशिकखन्ध हुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ असखेज्जपएसिए खधे एग
यओ अणतपदेसिए खधे भवइ। इम यावत् अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे असख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहु
वे। अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दो अणतपदेसिया खधा भवंति। अथवा येकपासे परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्ध
हुवे अथवा येकपासे बेप्रदेशिक खन्धहुवे। एगयओ दो अणतपदेसिया खधा भवंति। येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। एव जाव एगयओ दस

एसिया खंधा भवंति, एवं जाव एगयत्रो दसपएसिए खंधे एगयत्रो दो अणंतपदेसिया खंधा भवंति, अहवा एगयत्रो संखेज्जपएसिए खंधे एगयत्रो दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयत्रो असंखेज्जपएसिए खंधे एगयत्रो दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयत्रो असंखेज्जपएसिए खंधे एगयत्रो दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति २५। चउहा कज्जमाणे एगयत्रो तिन्नि परमाणुपोग्गला एगयत्रो अणंतपएसिए खंधे भवइ, एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जसं

शिकौ स्कन्धौ भवतः, एवं यावदेकत्वतो दशप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवैकत्वतः संख्येयप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवैकत्वतोऽसंख्येयप्रदेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः, अथवैकत्वतोऽसंख्येयप्रादेशिकस्कन्ध एकत्वतो द्वावनन्तप्रादेशिकौ स्कन्धौ भवतः २४, अथवा त्रयोऽनन्तप्रादेशिकाः स्कन्धा भवन्ति २५। चतुर्धा क्रियमाणे एकत्वतस्त्रयः परमाणुपुद्गला एकत्वतोऽनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, एवं चतुष्कसंयोगो यावदसंख्येयसंयोगः, एते सर्वे यथैवासंख्ये

पदेसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवति। इम यावत् येकपासे दशप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवति। अथवा येकपासे संख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ असंखेज्जपदेसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवति। अथवा येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा एगयओ असंखेज्जपदेसिए खंधे एगयओ दो अणंतपदेसिया खंधा भवति। अथवा येकपासे असंख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे दोय अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे। अहवा तिन्नि अणंतपदेसिया खंधा भवति २५। अथवा तीन अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे एवं त्रिहु भागी करता २५ विकल्प हुवे। चउहा कज्जमाणे। चारिभागी करतांथकां। एगयओ तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपदेसिए खंधे भवइ। येकपासे तीन

॥ मूल ॥

जोगो, एए सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव जाव अणंताणवि भाणियव्वं, णवरं एक्कं अणंतगं अब्भ
हिय भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ ,
अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा संखेज्जा अणं
तपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला एगयओ अणंतपएसिए
खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, जाव अहवा

अनुवाद

याना भणितास्तथैव यावदनन्तानामपि भणितव्यम्, नवरमनन्तमेकमभ्यधिक भणितव्यम्, यावदथवैकत्वत सख्येया सख्येयप्रादेशिका
स्कन्धा एकत्वतो नन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वत. सख्येया असख्येयप्रादेशिका. स्कन्धा एकत्वतो नन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति,
अथवैकत्वत सख्येया अनन्तप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति । असख्येयधा क्रियमाण एकत्वतो ऽसख्येया परमाणुपुद्गला एकत्वतोऽनन्तप्रादेशि

॥ भावार्थ ॥

परमाणुपुद्गल हुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । एव चउक्कसजोगी जाव असखेज्ज सजोगी । इम चउकसयोग पचकसयोग यावत् असख्यातसयो
गी कहवा । एए सव्वे जहेव असखेज्जाण भणिया । एह सगला जिम असख्याताने कह्यो । तहेव जाव अणताणवि भाणियव्व । तिम यावत् अनन्तप्रदेशि
कने पणि कहवो । णवर एक्क अणतग अब्भहिय भाणियव्व । एतलोविशेष अनन्तपद एक अधिको कहवो । जाव अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपदे
सिया खधा एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ । यावत् अथवा येकपासे सख्याता सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । अह
वा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपदेसिया खधा । अथवा येकपासे सख्याता सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ । येकपासे अन
न्तप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा संखेज्जा अणतपदेसिया खधा भवति । अथवा सख्याता अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखे
ज्जापरमाणुपोगला । असख्यातिभागे करताथका, येकपासे असख्याता परमाणुपुद्गल हुवे । एगयओ अणतपदेसिए खधेभवइ । येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्ध

॥ मूल ॥

एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खधा एगयओ अणंतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा अणंतपएसिया खधा भवंति । अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवंति ५७५ । एएसिणं भंते ! परमाणुपोग्गलाण साहणणाभेदाणुवाएणं अणताणं पोग्गलपरियट्टाणं अणताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति

॥ अनुवाद ॥

कस्कन्धो भवति, अथवैकत्वतोऽसंख्येया द्विप्रादेशिका स्कन्धा एकत्वतो नन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति यावदथवैकत्वतोऽसंख्येया संख्येयप्रादेशिका स्कन्धा एकत्वतोऽनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वतो ऽसंख्येया असंख्येयप्रादेशिका स्कन्धा एकत्वतोनन्तप्रादेशिकस्कन्धो भवति, अथवैकत्वतोऽसंख्येया अनन्तप्रादेशिका स्कन्धा भवन्ति ॥ अनन्तधा क्रियमाणो ऽनन्ता परमाणुपुद्गला भवन्ति ५७५ । एतेषां भदन्त ! परमाणुपुद्गलानां सहननभेदानुपातेनानन्तानां पुद्गलपरिवर्त्तानामनन्तानन्ता पुद्गलपरिवर्त्ता समनुगन्तव्या भवन्तीति आख्याता (भगवद्भि)

॥ भाषा ॥

हुवे । अहवा एगयओ असखेज्जा दुपदेसिया खधा । अथवा येकपासे असख्याता बेप्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ । येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । जाव अहवा एगयओ असखेज्जा सखिज्जपएसिया खधा । यावत् अथवा येकपासे असख्याता सख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ । येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ असखेज्जा असखेज्जपदेसिया खधा । अथवा येकपासे असख्याता असख्यातप्रदेशिक खन्धहुवे । एगयओ अणतपदेसिए खधे भवइ । येकपासे अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । अहवा एगयओ असखेज्जा अणतपदेसिया खधाभवंति । अथवा येकपासे असख्याता अनन्तप्रदेशिक खन्धहुवे । अणतहा कज्जमाणे । अनन्तभाग करताथका । अणता परमाणुपोग्गला भवंति ५७५ । अनन्ता परमाणुपुद्गल हुवे अनन्तप्रदेशीना सर्वभागा ५७५ हुवे ते कह्या, हिमतेपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, इत्यादिके करी पुद्गलानो पहिला सहनन एकठो मिलवो कह्यो 'संभिज्जमाणे दुहाकज्जइ, इत्यादिकें करी तेहनो भेद कह्यो, हिवे ते बेउ आश्रयीने कहेछे—एएसिणंभंते परमाणुपोग्गला

॥ टीका ॥ एतेषा मनन्तरोक्तस्वरूपाणां परमाणुपुद्गलाना परमाणूनामित्यर्थः ॥ साहणणाभेदाणुवाएणति ॥ साहणणंति ॥ तावेवाश्रित्याह–एएसिणमित्यादि ॥ एतेषा मनन्तरोक्तस्वरूपाणां परमाणुपुद्गलाना परमाणूना सयोगेन वियोगेनचे प्राकृतत्वा त्संहनन सङ्घातो भेदश्च वियोजन तयो रनुपातो योग. संहननभेदानुपात स्तेन सर्वपुद्गलद्रव्यैः सह परमाणूना संयुज्यमानो ऽनन्ता त्यर्थ ॥ अणताणतति ॥ अनन्तेन गुणिता अनन्ता अनन्तानन्ता एकोपिहि परमाणु र्द्व्यणुकादिभि रनन्ताणुकान्तै र्द्रव्यै सह संयुज्यमानो ऽनन्ता न्परिवर्त्ता ल्लभते, प्रतिद्रव्य परिवर्त्तभावात् अनन्तत्वाच्च परमाणूना प्रतिपरमाणुचा नन्तत्वात्परिवर्त्ताना परमाणुपुद्गलपरिवर्त्ताना मनन्तान न्तत्व द्रष्टव्यमिति ॥ पुग्गलपरियट्टत्ति ॥ पुद्गलैः पुद्गलद्रव्यै. सह परिवर्त्ता परमाणूना मीलनानि पुद्गलपरिवर्त्ता समनुगन्तव्या ह्यवगन्तव्या भवन्ति

॥ मूल ॥ समक्खाया । कइविहेणं भंते ! मक्खाया ? हंता गोयमा ! एएसिण परमाणुपोग्गलाणं साहणणाभेदाणु जाव मक्खाया । कइविहेणं भंते !

अनुवाद प्रज्ञप्त २ गौतम ! सप्त हन्त गौतम । एतेषा परमाणुपुद्गलाना संहननभेदानु (प्रभृति) यावदाख्याता । कतिविधो भदन्त ! पुद्गलपरावर्त्त प्रज्ञप्त २ गौतम ! सप्त

॥ भाषा ॥ ए साहणणा भेदाणुवाएण अणतापोग्गलपरियट्टा । एह अनन्तरोक्त स्वरूप परमाणूपुद्गलनो परमाणु इत्यर्थः, साहणणा, संहनन कहता संघात भेद कहता वियोजन ते बेहुनो अनुपात कहता योग तेणे करी सर्व पुद्गल द्रव्यसघाते परमाणूने संयोगे करी वली वियोगेकरी । अणताणता पोग्गलपरि यट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया । अनन्तसघाते गुण्या अनन्तानन्ता येक पणि द्व्यणुकादिक अनन्ताणुक पर्यन्त द्रव्यसघाते संयुज्यमान अनन्त परिवर्त्त प्रतेलाभे प्रतिद्रव्य परिवर्त्तभाव थकी अनन्तपणा थकी परमाणूने प्रतिपरमाणूने अनन्तपणाथकी परमाणुपुद्गल परिवर्त्तने अनन्तानन्तपणो दे खवो ,पोग्गल परियट्टति, पुद्गल द्रव्यसघाते परिवर्त्त कहता परमाणूने मिलन ते पुद्गलपरावर्त्त अनुगन्तव्य हुवे, आख्याता कहता प्ररूप्या भगव न्ते एतावता ए जे पूर्वे कह्या परमाणुआ तेहने, संहनना कहता एकठा मेलिया, भेद कहता वियोग, एतावता तेहनो संयोग वियोग तेहने अनुपाति योगेकरी अनन्तानन्त पुद्गलपरावर्त्त, अणुगतव्वा कहता जाणवा हुवे इणि कारणे भगवन्ते प्ररूप्या इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा एएसिण परमाणु पोग्गलाण साहणणा भेदाणु जाव मक्खाया । हागोतम । एहने परमाणुपुद्गलने संघातने इत्यादि यावत् प्ररूप्या भगवन्ते एतलालगे कहवो, हिवे पुद्गल

॥ टीका ॥

इति एतौ आख्याता प्रज्ञपिता भगवद्भिः इति गम्यते मकार श प्राकृतशैलीप्रभव ॥ अथ पुद्गलपरावर्त्तस्य व भेदाभिधानायाह—कइविहेण मित्यादि ॥ उरालियपोग्गलपरियट्टेत्ति ॥ औदारिकशरीरे वर्त्तमानेन जीवेन यदौदारिकशरीरप्रायोग्यद्रव्याणा औदारिकशरीरतया सामस्त्येन ग्रहण सता औदारिकपुद्गलपरिवर्त्त एव मन्येपि ॥ नेरइयाणंति ॥ नारकजीवाना अनादौ ससारे ससरता सप्तविध पुद्गलपरावर्त्त प्रज्ञप्त ॥

॥ मूल ॥

पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा—उरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे तेयापोग्गलपरियट्टे कम्मापोग्गलपरियट्टे मणपोग्गलपरियट्टे वइपोग्गलपरियट्टे आणापाणुपोग्गलपरियट्टे । णेरइयाणं भंते ! कइविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पोग्गल

विध पुद्गलपरावर्त्त प्रज्ञप्त तद्यथा—औदारिकपुद्गलपरावर्त्तो वैक्रियपुद्गलपरावर्त्तस्तैजसपुद्गलपरावर्त्त कार्मणपुद्गलपरावर्त्तो मन पुद्गलपरावर्त्तो

॥ अनुवाद ॥ ॥ भाषा ॥

परावर्त्तनोज भेद कहेछे—कइविहेणभंते पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते । केतलेभेदे प वायजाकारे, हेभगवन् । पुद्गलपरावर्त्त कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तंजहा । हेगौतम । सातभेदे पुद्गलपरावर्त्त कह्या ते कहछे । ओरालिय पोग्गलपरियट्टे । औदारिक शरीरनेविषे वर्त्तमान जीव जे औदारिकशरीर प्रायोग्यद्रव्याने औदारिकशरीरपणे सामस्त्ये करी ग्रहणकारवो ते औदारिक पुद्गलपरावर्त्त कहिये १ । वेउव्विय पोग्गलपरियट्टे । वैक्रियशरीरनेविषे वर्त्तमान जीवे वैक्रियशरीर प्रायोग्यद्रव्याने वैक्रियशरीरपणे ग्रहणकरवो ते वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त कहिये २ । तेयापोग्गलपरियट्टे । तेजसशरीरनेविषे वर्त्तमानजीवे तैजसशरीर प्रायोग्यद्रव्याने तैजसशरीरपणे ग्रहणकरवो ते तैजस पुद्गलपरावर्त्त कहिये ३ । कम्मापोग्गलपरियट्टे । इम कार्मण पुद्गलपरावर्त्त कहवो ४ । मणपोग्गलपरियट्टे । मननेविषे वर्त्तमानजीवे मनप्रायोग्य द्रव्याने मनपणे सामस्त्ये ग्रहण करवो ते मन पुद्गलपरावर्त्त ५ । वइपोग्गल परियट्टे । वचननेविषे वर्त्तमानजीवे वचन प्रायोग्यद्रव्याने वचनपणे ग्रहण करवो ते वचन पुद्गलपरावर्त्त ६ । आणापाणपोग्गल परियट्टे । आन प्राणनेविषे वर्त्तमान जीवे आन प्राण प्रायोग्यद्रव्याने आन प्राणपणे ग्रहण करवो ते आन प्राण पुद्गलपरावर्त्त कहिये ७ । इ

॥ टीका ॥

एगमेगस्सेत्यादि ॥ अतीता अनन्ता अनादित्वात् अतीतकालस्य जीवस्य चा नादित्वात् अपरापरपुद्गलग्रहणस्वरूपत्वा चेति ॥ पुरखडेत्ति ॥ पुरस्कृता भविष्यति ॥ कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थित्ति ॥ कस्यापि जीवस्य दूरभव्याऽभव्यस्य वा ते सति कस्यापि न सन्ति उद्धृत्य यो मानुषत्वमा

॥ मूल ॥

परियट्टे पन्नत्ते, तंजहा–उरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे एवं जाव वेमाणियाणं। एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स केवइया उरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? गोयमा ! अणंता। केवइया पुरक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि जहन्नेणं एक्को

अनुवाद

वाक्पुद्गलपरावर्त्त आनप्राणपुद्गलपरावर्त्तः। नैरयिकाणां भदन्त। कतिविध पुद्गलपरावर्त्त प्रज्ञप्त ? गौतम ! सप्तविध पुद्गलपरावर्त्तों प्रज्ञप्तस्तद्यथा–औदारिकपुद्गलपरावर्त्तो वैक्रियपुद्गलपरावर्त्तो यावदानप्राणपुद्गलपरावर्त्त एवं यावद्वैमानिकाना। एकैकस्य भदन्त। नैरयिकस्य केवतिका औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता अतीता ? गौतम ! अनन्ता, केवतिका पुरस्कृता ? गौतम ! कस्य सन्ति, कस्य नसन्ति, यस्य सन्ति

॥ भाषा ॥

ये दंडकआश्रयीने पुद्गलपरावर्त्तनो प्रश्न करेछे। णेरइयाणं भंते कइविहे पोग्गलपरियट्टे। नारकीने वाक्यालंकारे, हेभगवन्। केतलेभेदे पुद्गलपरावर्त्त कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे प० त०। हेगौतम। सातभेदे पुद्गलपरावर्त्त कह्या ते कहेछे–ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे एवं जाव वेमाणियाणं। औदारिक पुद्गलपरावर्त्त १ वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त २ तैजस पुद्गलपरावर्त्त ३ कार्मण पुद्गलपरावर्त्त ४ मन पुद्गलपरावर्त्त ५ वचन पुद्गलपरावर्त्त ६ आन प्राण पुद्गलपरावर्त्त ७ ए सातेई पुद्गलपरावर्त्त हुवे इम यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस दण्डकने विषे सातेई प्रकारे पुद्गलपरावर्त्त हुवे ते कहवा वलीगौतम पूछेछे–एगमेगस्सणभंते णेरइयस्स केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता। एक एकने हेभगवन्। नारकीने केतला औदारिक पुद्गलपरावर्त्त अतीतकाले थया इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अणंता केवइया पुरक्खडा। हेगौतम। ततीतकालना अनादिपणाथकी अने जीवना पणि अनादिपणा थकी वलो अनेरा अनेरा पुद्गल ग्रहण स्वरूपपणा थ

साद्य सिद्धिं यास्यति सख्येयै रसख्येयै र्वा भवै र्यास्यति य सिद्धिं तस्या पि परिवर्त्तो नास्त्यनन्तकालपूर्वत्वा त्तस्येति ॥ एगत्तियत्ति ॥ एकत्विका

वा दोवा तिन्निवा, उक्कोसेणं सखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा। एगमेगस्सणं भंते ! असुरकुंमारस्स केवइया उरालियपोग्गलपरियट्टा एवंचेव एव जाव वेमाणियस्स। एगमेगस्सण भंते ! णेरइयस्स केवइ या वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? गोयमा ! अणंता एव जहेव उरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वि

जघन्येनैको वा द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षत सङ्ख्यावा ऽसङ्ख्यावाऽनन्तावा। एकैकस्य भदन्त । असुरकुमारस्य कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता एव चैव, एव यावद्वैमानिकस्य। एकैकस्य भदन्त। नैरयिकस्य कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरावर्त्ता अतीता ? गौतम। अनन्ता, एव यथैवौदा

को तेह भयो अनन्ता पुद्गलपरावर्त्त अतीतथया, आगे पुद्गलपरावर्त्त केतला करस्ये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्स अत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा। हेगौतम। कोइएक जीवने एतले दूरभव्यने अथवा अभव्यने पुद्गलपरावर्त्तछे कोइएक जीवने पुद्गलपरावर्त्त नथी जे नारकीथकी नीकली मनुष्यपणो पामी सिद्धस्ये अथवा सख्यातिभवे अथवा असख्यातिभवे जे जीव सीझस्ये तेहने पुद्गलपरावर्त्त नही पुद्गलपरा वर्त्तने अनन्तकाल पूर्वकपणा थकी जेहने पुद्गलपरावर्त्तछे तेहने जघन्यथकी एक अथवा दोय अथवा तीन। उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा अणता वा एगमेगस्सणभते असुरकुमारस्स केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा एवचेव एव जाव वेमाणियस्स। उत्कृष्टथो सख्याता अथवा असख्याता अथवा अण न्ता पुद्गलपरावर्त्तछे वलीगौतम पृछेछे, एक एकने ण वाक्यालकारे, हेभगवन्। असुरकुमारने केतला ओदारिक पुद्गलपरावर्त्त अतीतथया इतिप्रश्न उत्तर, एवचेवत्ति, पूर्वजेम तिम एतले अनन्ता केतला आगले करस्ये तिहा कोइएकनेछे कोइएकने नथी जेहनेछे तेहने जघन्यथको एक दोय तीन उ त्कृष्टथो अनन्ता अनन्तलगे कहवा इम यावत् वैमानिक लगे कहवा वलीगौतम पृछेछे। एगमेगस्सणभते णेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अ तीता। एक एकने हेभगवन्। नारकीने केतला वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त अतीतथया इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अणता। हेगौतम। अनन्तथया। एव जहे

॥ टीका ॥
एकत्वपृथक्त्वदण्डकाना घा य वि एकनारकाद्याश्रिता ॥ सत्तत्ति ॥ औदारिकादिसप्तविधपुद्गलविषयत्वा त्सप्तदण्डका श्चतुर्विंशतिदण्डका भवंति

॥ मूल ॥
एए एगइया यपोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, सत्तदंडगा भवंति । णेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया पुरक्खडा ? अणंता एवं जाव वेमाणियाण, एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि, एवं जाव आणा

अनुवाद
एते एकत्विका सप्त दण्डका भवन्ति । नैरयिकाणां भदन्त । कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता अतीता ? गौतम । अनन्ता , कियन्त. पुरस्कृता ? अनन्ता , एव यारिकपुद्गलपरावर्त्तास्तथैव वैक्रियपुद्गलपरावर्त्ता भणितव्या , एव यावद्वैमानिकस्यैव यावदानप्राणपुद्गलपरावर्त्ता

॥ भाषा ॥
तिमहीज वैक्रिय पुद्गलपरावर्त पणि कहवा । तहेव वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा । इम यावत् वैमानिकलगे चउवीस दण्डक कहवा इम याव व ओरालिय पोग्गल परियट्टा । इम जिमहीज औदारिक पुद्गलपरावर्त कह्या । एव जाव वेमाणियस्स एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा । इम यावत् वैमानिकलगे चउवीस दण्डक कहवा ७ । एतले १ औदारिक पुद्गलपरावर्त २ वैक्रिय पुद्गलपरावर्त ३ तैजस पुद्गलपरावर्त ४ कार्मण पुद्गलपरावर्त ५ मन पुद्गलपरावर्त ६ वचन पुद्गलपरावर्त ७ आनप्राण पुद्गलपरावर्त लगे कहवा । एतले औदारिकादि सप्तविध पुद्गल विषयपणाथकी सप्तविध दण्डक हुवे, इम चउवीसे दण्डक कहवा इम वली सात दण्डक पृथक्त्वे कहवा तिहा एकल पृथक्त्व दण्डकानो ए विशेष एकत्वदण्डकनेविषे तो आगलि पुद्गलपरावर्त करसे ते कोइएक जीवने नही पणिछै अने पृथक्त्व दण्डकनेविषे तो पुरस्कृत पुद्गलपरावर्तछैज जीवना सामान्य आश्रयपणाथकी ते पृथक्त्व दण्डक कहेछै । णे रइयाणंभते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता । नारकीने हेभगवन् । केतला औदारिक पुद्गलपरावर्त अतीतथया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणता केवइया पुरक्खडा । हेगौतम । अनन्ताथया केतला आगलि करसें इतिप्रश्न उत्तर । अणता एव जाव वेमाणियाण । अनन्ता करसें, इम यावत् वैमानिकलगे चउवीस दण्डक कहवा । एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि । इम औदारिकनीपरे वैक्रिय पुद्गलपरावर्त पणि कहवा । एव जाव आ

शेष एकत्वदण्डकेषु पुरस्कृतपुद्गलपरावर्त्ता कस्या पि न सन्त्य पि बहुत्वदण्डकेषु तु ते सन्ति जीवसामान्याश्रयणादिति ॥ एगमेगस्सेत्यादि ॥ नत्थिएक्कोविति ॥ नारकत्वे वर्त्तमानस्यौदारिकपुद्गलग्रहणाभावादिति ॥ एगमेगस्सण भंते । नेरइयस्स असुरकुमारत्तेइत्यादि ॥ इह च नैरयि

पाणुपोग्गलपरियट्टावि जाव वेमाणियाण एव एए पोहत्तिया सत्तचउव्वीसदंडगा । एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया उरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? णत्थि एक्कोवि , केवइयापुरक्खडा ? नत्थि एक्कोवि । एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया उरालियपोग्गलपरियट्टा एवचेव ,

वद्वैमानिकाना , एव वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्ता अपि , एव यावदानप्राणपुद्गलपरिवर्त्ता अपि यावद्वैमानिकानामेवमेतेप्राथक्त्विका सप्त चतुर्विंशति दण्डकाः । एकैकस्य भदन्त । नैरयिकस्य नैरयिकत्वे कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता अतीता ? नास्त्येकोपि , कियन्त पुरस्कृता ? नास्त्येको पि । एकैकस्य भ० । नैरयिकस्यासुरकुमारत्वे कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता एवचेव' एव यावत्स्तनितकुमारत्वे यथासुरकुमारत्वे । एवं

आणापाणु पोग्गल परियट्टावि जाव वेमाणियाणं । इम यावत् आनप्राण पुद्गलपरावर्त लगे कहवा यावत् वेमानिक लगे कहवा । एव एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसदंडगा । इम पृथक्त्व कहता बहुवचने औदारिकादिक सप्तविध पुद्गलपरावर्त सात दण्डके चउवीसे दण्डके कहवा वलीगौतम पूछेछे । एगमेगस्सणभंते णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता । एक एकने हेभगवन् । नारकीने नारकीपणें केतला औदारिक पुद्गल परावर्त अतीतकाले थया इतिप्रश्न उत्तर । णत्थिएक्कोवि । एकहो पणि नही हुवो नारकपणें वर्त्तमानने औदारिक पुद्गलग्रहणना अभावथको । केवइया पुरक्खडा नत्थि एक्कोवि । केतला आगलि करसें उत्तर एकही पणि नहीं आगलि पणि नारकपणें वर्त्तमानने औदारिक पुद्गलनो ग्रहण नथी । एगमेगस्सण भंते णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा एवचेव । एक एकने हेभगवन् । नारकीने असुरकुमारपणें केतला औदारिक पुद्गलपरावर्त अतीतकाले थया इतिप्रश्न उत्तर , एवचेवत्ति , इहा नारकपणें वर्त्तमानकालानने असुरकुमारपणे अतीतपणे अतीतअनागतकाल सम्बन्ध

॥ मूल ॥

एवं जाव थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते । एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? अणंता, केवइया पुरक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण सखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा एव जाव मणुस्सत्ते, वा णमतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते । एगमेगस्सण भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवइया

अनुवाद

कस्य भदन्त । नैरयिकस्य पृथिवीकायिकत्वे कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता अतीता ? अनन्ता., कियन्त पुरस्कृता ? कस्यापि सन्ति कस्यापि नसन्ति, यस्य सन्ति जघन्येनैका वा द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षत सङ्ख्येया वा असङ्ख्येया वा अनन्ता वा, एव यावन्मनुष्यत्वे । वानव्यन्तरज्योतिषवैमानिकत्वे यथासुरकुमारत्वे । एकैकस्य भदन्त । असुरकुमारस्य नैरयिकत्वे कियन्त औदारिकपुद्गलपरावर्त्ता एव यथैव नैरयि

॥ भावा ॥

नविषे नथी एकही पणि जेमाटे असुरकुमारपणे पणि वर्त्तमानने औदारिक पुद्गलग्रहणना अभावछै तेमाटे । एव जाव थणियकुमारत्ते । इम यावत् स्तनितकुमारपणे नारकीने । जहा असुरकुमारत्ते । जिम असुरकुमारपणे कह्यो तिम कहवो वलीगौतम पूछेछे । एगमेगस्सणभंते णेरइयस्स पुढविकाइयत्ते । एक एकने हेभगवन् । नारकीने पृथिवी कायपणे । केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता । केतला औदारिक पुद्गलपरावर्त्त अतीतथया इति प्रश्न उत्तर । अणता केवइया पुरक्खडा । अनन्ता पृथिवीकायनेविषे औदारिकपुद्गलग्रहणनो भावछे तेमाटे केतला आगलि करस्ये इतिप्रश्न उत्तर । कस्सइ अत्थि कस्सइणत्थि जस्सत्थि । कोइयेकने छे पूठिलो परे कोइएकने नथी पूठिलो परे जेहने छे तेहने । जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा । जघन्यथकी वेक अथवा दोय अथवा तीन । उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा अणतावा । उत्कृष्टथकी सख्याता अथवा असख्याता अथवा अनन्ता पुद्गलपरावर्त करस्ये । एव जाव मणुस्सत्ते । इम यावत् मनुष्यलगे कहवो । वाणमतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकपणे पणि । जिम असुरकुमारपणे कह्यु तिम कहवो । एगमेगस्सणभंते असुरकुमारस्स णेरइयत्ते । एक एकने हेभगवन् । असुरकुमारने नारकीपणे । केवइया ओरा

॥ टीका ॥

कस्य वर्त्तमानकालीनस्य असुरकुमारत्वे वा तीतानागतकालद्वयेपिनि ॥ एगुत्तरियाजावअणंतावत्ति ॥ अनेने द सूचित–कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सत्थि तस्स जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंतावत्ति ॥ एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं तत्थ एगुत्तरिउत्ति ॥ यत्र वायु

॥ मूल ॥

उरालियपोग्गलपरियट्टा एवं जहा णेरइयस्स वत्तव्वया भणिया तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते एवं जाव थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्सवि, एवं जाव वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमओ। एगमेगस्सणं भंते! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता? अणंता, केवइया पुरक्खडा? एगुत्तरिया जाव अणंतावा, एवं जाव थणियकुमारत्ते। पुढवीकाइयत्ते पुच्छा, णत्थि

अनुवाद

कस्य वक्तव्यता भणिता तथासुरकुमारस्यापि भणितव्या यावद्वैमानिकत्वे, एवं यावत्स्तनितकुमारस्य, एवं पृथिवीकायिकस्यापि, एवं यावद्वैमानिकस्य, सर्वेषामेकोगमक। एकैकस्य भदन्त! नैरयिकस्य नैरयिकत्वे कियन्तो वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्ता अतीता? अनन्ता, कियन्त

॥ भाषा ॥

लियपोग्गलपरियट्टा। केतला नारकीने औदारिक पुद्गलपरावर्त कह्या इतिप्रश्न उत्तर। एवं जहा णेरइयस्सवक्तव्वया भणिया। इम जिम नारकीनी वक्तव्यता कही। तहा असुरकुमारस्सवि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते। तिम असुरकुमारनी पणि वक्तव्यता कहवी यावत् वैमानिकपणे एतलालगे कहवी। एवं जाव थणियकुमारस्स एवं पुढविकाइयस्सवि एवं जाव वेमाणियस्स। इम यावत् स्तनितकुमारने इम पृथिवीकायने पणि जाणवो इम यावत् वैमानिकने। सव्वेसिं एक्कोगमओ। ए सर्वनो आलावो एक सरीखो कहवो। एगमेगस्सणंभंते णेरइयस्स णेरइयत्ते। एकोअनेक वाक्यालंकारे, हे भगवन् नारकीने नारकीपणे। केवइया वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा अतीता। केतला वैक्रिय पुद्गलपरावर्त अतीतथया इतिप्रश्न उत्तर। अणंता केवइया पुरक्खडा एगुत्तरिया जाव अणंतावा। अणंताथया केतला आगलिके एक उत्तरके जेहने एतले एकादि यावत् अनन्तालगे कहवो इणे इम कह्यु, कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सत्थि तस्स जहण्णेण एक्कोवा इत्यादि, यावत् अनन्ता। एवं जाव थणियकुमारत्ते पुढवी काइयत्ते पुच्छा। इम यावत् स्तनितकुमारपणा लगे कहवो

॥ टीका ॥

काये मनुष्यपञ्चेन्द्रियतिर्यक्षु व्यन्तरादिषु य वैक्रियशरीर तत्रै को वे त्यादि वाच्यमित्यर्थ , जत्थ नत्थी त्यादि यत्रा ऽप्कायादौ नास्ति वैक्रिय तत्र यथा पृथिवीकायिकत्वे तथा वाच्य न सन्ति वैक्रियपुद्गलपरावर्त्ता इति वाच्य मित्यर्थ ॥ तेयापोग्गलेत्यादि ॥ तैजसकार्म्मणपुद्गलपरावर्त्ता अविष्यत एकादय सर्वेषु नारकादिजीवपदेषु पूर्ववद्वाच्या ॥ तैजसकार्म्मणयो सर्वेषु आवा दिति ॥ मणपोग्गलेत्यादि ॥ मन पुद्गलपरावर्त्ता पञ्चेन्द्रियेष्वेव सति

॥ मूल ॥

एगुत्तरियाउ जत्थ एक्कोवि, केवइया पुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि, एव जत्थ वेउव्वियसरीर अत्थि तत्थ एगुत्तरियाउ जत्थ णत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विग

अनुवाद

नास्त्येकोपि, कियन्त पुरस्कृता ? नास्त्यै पुरस्कृता ? एकोत्तरिका यावदनन्ता वा, एव यावत्स्तनितकुमारत्वे। पृथिवीकायिकत्वे पृच्छा' नास्त्येकोपि, कियन्त पुरस्कृता ? नास्त्येकोपि' एव यत्र वैक्रियशरीरमस्ति तत्रैकोत्तरिका ' यत्र नास्ति तत्र यथा पृथिवीकायिकत्वे तथा भणितव्यम्' यावद्वैमानिकस्य वैमानिकत्वे । तेज पुद्गलपरिवर्त्ता कार्मणपुद्गलपरिवर्त्ता. सर्वत्रैकोत्तरिका भणितव्या , मन.पुद्गलपरिवर्त्ता सर्वेषु पञ्चेन्द्रियेष्वेकोत्तरिका , द्वित्रिचतु

॥ भाषा ॥

स्तनितकुमार लगे वैक्रिय शरीरछे तेमाटे पृथिवीकायपणें प्रश्नकीधां उत्तर। णत्थिएक्कोवि केवइया पुरक्खडा। एकही नहीं पृथिवीकायने विषे वैक्रिय पुद्गलग्रहण नहीछे तिम, केतला आगलि करस्यें उत्तर। णत्थिएक्कोवि एव जत्थवेउव्वियसरीर अत्थि। एकही नहीतेहना अभावथको इम जेदण्डकनेविषे वैक्रियशरीरछे।तत्थ एगुत्तरियाओ जत्थ णत्थि।तिहा एकादि अनन्तापर्यन्त कहवा ते वायु मनुष्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च व्यन्तरादिकें तथा जिहा नहीं छे। तत्थ जहा पुढविकाइयत्ततहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते । तिहा जिम पृथिवीकायपणें कह्यु तिम जाणवो इम यावत् वैमानिकने वेमानिका पणें नारकने कहवो। तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गल परियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया भाणियव्वा। तैजस कार्मण पुद्गलपरावर्त ते अतीत तो अनन्ता थया अने आगलि करस्यें ते जेहनेछे तेहने एकादि अनन्तापर्यन्त कहवा ए सर्व नारकादि पदनेविषे पूछिली परे कहवा तैजसकार्मण सगलेछे तेमा

॥ टीका ॥

भविष्यन्त श्च ते एकोत्तरिका पूर्ववद्वाच्या ॥ विगलिन्दिएसु नत्थित्ति ॥ विकलेन्द्रियग्रहणेन चैकेन्द्रिया अपि ग्राह्या स्तेषा मपीन्द्रियाणामसपूर्णत्वा न्मनोवृत्ते श्च ऽभावा दतस्तेष्वपि मन पुद्गलपरावर्त्ता न सति ॥ वइपुग्गलपरियट्टा एव चेवत्ति ॥ तेजसादिपरिवर्त्तवत्सर्वनारकादिजीवपदेषु वाच्या नवरमेकेन्द्रियेषु वचनाभावा न्न सतीति वाच्या ॥ नेरइयाणमित्यादिना पृथक्दण्डकानाह ॥ जाव वेमाणियाणमित्यादिना पर्यन्तिमदण्डको

॥ मूल ॥

लिंदिएसु णत्थि, वइपोग्गलपरियट्टा एवंचेव णवर एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया एव जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। णेरइयाण भंते! णेरइयत्ते केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? णत्थि, केवइयापुरक्खडा ? णत्थि एक्कोवि, एव जाव थणियकुमारत्ते । पुढवीका

अनुवाद

रिन्द्रियेषु नसन्ति, वाक्पुद्गलपरिवर्त्ता एवचेव नवरमेकेन्द्रियेषु नसन्ति भणितव्यम्। आनप्राणपुद्गलपरिवर्त्ता सर्वत्रैकोत्तरिका एव याव द्वैमानिकस्य वैमानिकत्वे। नैरयिकाणा भदन्त। नैरयिकत्वे कियन्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त्ता अतीता ? नसन्ति, कियन्त पुरस्कृता ?

॥ भाषा ॥

टे। मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसुपंचिंदिएसु एगुत्तरिया विगलिंदिएसु णत्थि। मनपुद्गलपरावर्त पंचेन्द्रियने विषे छे तेमाटे तिहा अनन्ता अने आगलि धारस्ये ते जहनेछे ते येकादि पूर्वलोपरे कहवो विगलेन्द्रीने ग्रहणे एकेंद्री पणि ग्रहवा तेहने पणि मनना अभावछे तेमाटे मनपुद्गल परावर्त नथी। वइपोग्गलपरियट्टा एवंचेव णवर एगिंदिएसु णत्थि भाणियव्वा। वचन पुद्गलपरावर्त पणि एमहीज तेजसादिकनीपरे सर्व नारकादि पदनेविषे कहवा एतलोविशेष एकेन्द्रीनेविषे वचनना अभावथको वचन पुद्गलपरावर्त न कहवो। आणापाणु पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एगुत्तरिया। सासोश्वास पुद्गलपरावर्त अतीत नारकादिक चोवीस दण्डकनेविषे अनन्ता जाणवा पुरस्कृत जेहनेछे तेहने एकादि अनन्ता लगे कहवा। एव जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। इम यावत् वैमानिकने वमानिकपणा लगे कहवो ए एकवचने दण्डक कह्या, हिवे बहुवचन दण्डक कहेछे। णेरइयाण भते णेरइयत्ते केवइया ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अतीता। नारकोयोने हेभगवन्! नारकोपणे केतला औदारिक पुद्गलपरावर्त अतीत पूर्वे कह्या उत्तर। णत्थि केवइया पु

इयत्ते पुच्छा ऋणंता, केवइया पुरक्खडा ? ऋणंता, एवं जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतरजोइसियवेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते, एवं सत्तवि पोग्गलपरियट्टा ऋाणियव्वा जत्थ ऋत्थि तत्थ ऋतीतावि पुरक्खडावि ऋणंता ऋाणियव्वा, जस्स णत्थि तस्स दोवि णत्थि ऋाणियव्वा, जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते, केवइया ऋाणा

नास्त्येकोपि, एव यावत्स्तनितकुमारत्वे । पृथिवीकायिकत्वे पृच्छा, अनन्ता, कियन्त पुरस्कृता ? अनन्ता, एव यावन्मनुष्यत्वे, वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकत्वे यथा नैरयिकत्वे, एव सप्तापि पुद्गलपरिवर्त्ता भणितव्या, यत्र सन्ति तत्रातीता अपि पुरस्कृता अपि अनन्ता भणितव्या, यस्य नसन्ति तस्य द्वावपि नस्त इति भणितव्यम्' यावद्वैमानिकाना वैमानिकत्वे । कियन्त आनप्राणपुद्गलपरिवर्त्ता अतीता ? अ

रक्खडा णत्थि एक्कोवि । केतला आगलि करस्ये उत्तर नही एकही नारकपणें आगलि पणि औदारिकपद्गल ग्रहण नथी तेमाटे । एवं जाव थणियकुमारत्ते पुढवीकाइयत्ते पुच्छा । इम यावत् स्तनितकुमार पणालगे कहवो नारकीने पृथिवी कायपणे प्रश्नकीधो उत्तर । अणता केवइया पुरक्खडा अणता । अनन्ता कीधा केतला आगलि करस्ये उत्तर अनन्ता आगलि करस्यें । एव जाव मणुस्सत्ते वाणमतर जोइसिय वेमाणियत्ते जहा णेरइयत्ते । इम यावत् मनुष्यपणालगे कहवो वानव्यन्तरपणे ज्योतिषीपणे तथा वैमानिकपणे जिम नारकीने नारकीपणें कह्यु तिम कहवो । एवं सत्तविपोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा । इम सातेइ पुद्गलपरावर्त जाणवा । जत्थ अत्थि तत्थ अतीतावि पुरक्खडावि अणता भाणियव्वा । जिहाछे तिहा अतीत पणि तथा पुरस्कृत पणि अनन्ता जाणवा जेहने नही तेहने बेऊ नही इहा ए भावार्थ, नारकीने नारकपणें वैक्रियशरीरछे तो वैक्रिय पुद्गलपरावर्त नारकपणे अतीत अनागत बेऊ पृथक्त्व दंडक माटे अनन्ता कहवा सामान्यपणें नारकना आश्रयपणाथकी तथा नारकपणे औदारिक पद्गलग्रहणना अभावथकी औदारिक पद्गलपरावर्त अतीत नथी, अनागत एहोनो नही इम सगलै भावना करवी । जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते । यावत् वैमानिकने वैमानिकपणें । केवइया आणापाणु पोग्गलपरियट्टा अतीता । केतला सासोसास पुद्गलपरावर्त अतीतथया इतिप्रश्न उत्तर । अणता केवइया पुर

॥ टीका ॥

दर्शित ॥ अथौदारिकादिपुद्गलपरावर्त्तानां स्वरूपमुपदर्शयितुमाह–सेकेणमित्यादि ॥ गहियाइति ॥ स्वीकृतानि ॥ वद्धाइति ॥ जीवप्रदेशैरा त्मीकरणात् कुत इत्याह ॥ पुठाइति ॥ यत पूर्वं स्पृष्टानि तनौ रेणुवत् अथवा पुष्टानि पोषितान्य परापरग्रहणत ॥ कडाइति ॥ पूर्वपरिणामापे क्षया परिणामान्तरेण कृतानि ॥ पठवियाइति ॥ प्रस्थापितानि स्थिरीकृतानि जीवेन ॥ निविठाइति ॥ यत स्थापितानि ततोनिविष्टानि जीवे स्वयं

॥ मूल ॥

पाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ? अणंता, केवइया पुरक्खडा ? अणंता। सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– उरालियपोग्गलपरियट्टे उरा२ ? गोयमा ! जंणं जीवेणं उरालियसरीरे वट्टमाणेणं उरालियसरीरपाउग्गाइं दव्वाइं उरालियसरीरत्ताए गहियाइं वद्धाइं पुठाइं कडाइं पठवियाइं निविठाइं अभिनिविठाइं अभिसम

॥ अनुवाद ॥

नन्ता, कियन्त पुरस्कृता ? अनन्ता। अथकेनार्थेन भदन्त। एवमुच्यते औदारिकपुद्गलपरिवर्त्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त्त ? गौतम। यज्जीवेनौदारिकशरीरे वर्त्तमानेनौदारिकशरीरप्रायोग्यानि द्रव्याण्यौदारिकशरीरतया गृहीतानि वद्धानि स्पृष्टानि कृतानि प्रस्थापितानि

॥ भाषा ॥

वउडा। पूर्वे अनन्ता थया केतला आगलि करस्यें उत्तर। अणता सेकेणठ्ठेणंभंते एव वुचइ। अनन्ता करस्यें ते स्यें अर्थे हेभगवन्। इमकह्य। ओरालि य पोग्गलपरियट्टे ओरा २। औदारिक पुद्गलपरावर्त्त इतिप्रश्न उत्तर औदारिक पुद्गलपरावर्त्त। गोयमा जणं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेण। हेगौतम। जेहभणी णं वाक्यालंकारे, जीव ण वाक्यालंकारे, औदारिकशरीरें वर्त्तते थके रहतेथके। ओरालियसरीर पाउग्गाइं दव्वाइं। औदारिकशरी र प्रायोग्य द्रव्यप्रते। ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं वद्धाइं पुठाइं कडाइं पठवियाइं णिविठाइं। औदारिक शरीरपणें ग्रह्या आत्माने आयत्तकीधा अङ्गीकार कीधा जीवप्रदेश सहित येकमेक कीधा, जेमाटे पहिला फरस्या शरीरनेविषे रेणुनी परें अथवा पुष्ट करता पोख्या अपर अपरनाम ग्रहण थकी पूर्वपरिणामनी अपेक्षायें परिणामान्तरने करिवे कीधा ए चारपद औदारिकपुद्गल ग्रहणविषय जाणवा, जीव स्थिरकीधा जेहभणी स्थाप्या तेहभणी जीवनेविषे पोते गाढा ठहरा। अभिणिविठाइं अभिसमण्णागयाइं परियागयाइं परिणामियाइं। सगलाइं पणि जीवनेविषे लागा सगला

॥ टीका ॥

अभिनिविट्ठाइति ॥ अभिविधिना निविष्टानि सर्वाण्य पि जीवे लग्नानीत्यर्थ ॥ अभिसमन्नागयाइति ॥ अभिविधिना सर्वाणीत्यर्थ , समन्वागता नि सम्प्राप्तानि जीवेन रसानुभूति समाश्रित्य ॥ परियाइयाइति ॥ पर्यात्तानि जीवेन सर्वावयवै रात्तानि तद्रसादानद्वारेण ॥ परिणामियाइति ॥ र सानुभूतित एव परिणामान्तरमापादितानि ॥ निज्जिणाइति ॥ क्षीणरसीकृतानि ॥ निसिरियाइति ॥ जीवप्रदेशेभ्यो नि सृतानि कथ ॥ निसिट्ठा इति ॥ जीवेन निसृष्टानि स्वप्रदेशा स्त्याजितानि ॥ इहा द्यानि चत्वारि पदानि औदारिकपुद्गलाना ग्रहणविषयाणि तदुत्तराणितु पञ्चस्थितिवि

॥ मूल ॥

णागयाइं परियागयाइ परिणामियाइं णिज्जिणाइं णिसिरियाइ निसिठाइं भवति सेतेणठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—उरालियपोग्गलपरियट्टे उरा २, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि , णवर वेउव्वियसरीरे वट्टमा णेणं वेउव्वियसरीरपाउग्गाइ सेस तंचेव । एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि , णवरं आणापाणुपाउ

अनुवाद

निविष्टानि अभिनिविष्टान्यभिसमन्वागतानि पर्यात्तानि परिणामितानि निर्जीर्णानि नि सृतानि निसृष्टानि भवन्ति तत्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते औदारिकपुद्गलपरिवर्त्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त्त । एव वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्तेपि नवर वैक्रियशरीरे वर्त्तमानेन वैक्रियशरीरप्रायो ग्यानि शेष तच्चैव, एव यावदानप्राणपुद्गलपरिवर्त्तेपि नवरमानप्राणप्रायोग्यानि सर्वद्रव्याणि आनप्राणतया शेष तच्चैव औदारिकपुद्गलप

॥ भाषा ॥

द जावें रसनो अनुभव आश्रयीने पाम्या जीवें सर्व अवयवें करी तेहने रसग्रहणें रस ग्रह्या, ए पञ्चपद स्थितिविषय जाणवा तथा रसने भोगविवे करी परिणामान्तर पहुचाव्या । णिज्जिणाइं णिसिरियाइं णिसिट्ठाइं भवंति । जीव प्रदेशथकी क्षीणरस कीधा जीवप्रदेश थकी नीसरया जीवें आपणा प्रदे शथकी तज्या जीवें आपणा प्रदेशथकी छडाव्या ए चारपद विगमविषय जाणवा इम तेरपद औदारिक पुद्गलआश्रयीने वखाण्या । सेतेणट्ठेणं एवं वुच्च इ । ते तेणे अर्थे हेगौतम इम कह्यो । ओरालिय पोग्गलपरियट्ट ओरा २ । औदारिक पुद्गलपरावर्त औदारिक पुद्गलपरावर्त । एव वेउव्विय पोग्गलप रियट्टवि । इम वैक्रिय पुद्गलपरावर्तनेविषे पणि तेरपद कहवा । णवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीर पाउग्गाइं । एतलोविशेष जीवें वैक्रि

पर्याणि तदुत्तराणितु चत्वारि विगमविषयाणीति, अथ पुद्गलपरावर्त्तानां निर्वर्त्तनकाल तदल्पबहुत्वंच दर्शयन्नाह-उरालियेत्यादि ॥ केवइयकाला स्सत्ति ॥ कियता कालेन निर्वर्त्यते ॥ अणताहिं उसप्पिणीओसप्पिणीहिंति ॥ एकस्य जीवस्य ग्राहकत्वा त्पुद्गलानां चानन्तत्वात् पूर्वगृहीतानांच

एगाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तचेव। उरालियपोग्गलपरियट्टेणं भंते! केवइयं कालं णिव्वत्तिज्जइ? गोयमा! अणताहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं एवइयकालस्स णिव्वत्तिज्जइ। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि। एयस्सणं भंते! उरालियपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकालस्स वेउव्वि

रिवर्त्तो भदन्त। कियन्त कालं (कियताकालेनेत्यर्थं, विभक्तिविपरिणामश्चात्र प्राकृतत्वात्) निर्वर्त्यते? गौतम। अनन्ताभिरुत्सर्प्पिण्यव सर्प्पिणीभि रियता कालेन निर्वर्त्यते। एवं वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्तोपि' एवं यावदानप्राणपुद्गलपरिवर्त्तोपि, एतस्य भदन्त! औदारिकपुद्गलप

शरीरनेविषे वर्त्तमानथको वैक्रियशरीर प्रायोग्य द्रव्यप्रते वैक्रियशरीरपणे ग्रहियाइं इत्यादि। सेसतंचेव। शेष सर्व तिमहीज कहवो। एवं जाव आणा पाणु पोग्गलपरियट्टेवि। इम यावत् सासोश्वास पुद्गलपरावर्त लगे कहवो। णवरं आणापाणुपाउग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणत्ताए। एतलोविशेष जीवे आनप्राणनेविषे वर्त्तते थके आनप्राण प्रायोग्य सर्वद्रव्य आनप्राण पणे ग्रहियाइं इत्यादि। सेसतचेव। बाकतो सर्व तिमज कहवो, हिवे औ दारिक पुद्गलपरावर्त्तनकाल निर्वर्त्तनकाल तथा अल्प बहुत्वप्रते कहेछे—उरालिय पोग्गलपरियट्टेणं भंते केवइयंकालं णिव्वत्तिज्जइ। औदारिक पुद्ग लपरावर्त्त ण वाक्यालंकारे, हेभगवन्! केतलेकाले करी निवर्त्ते एतले केतलेकाले पूरो करिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अणंताहिं उस्सप्पिणीहिं एवइ कालस्स णिव्वत्तिज्जइ। हेगौतम। एकजीव ग्रहण अने पुद्गलना अनन्तपणानाटे पूर्वे ग्रह्या अने गृह्या तेहना अग्रहमान पणाथकी अनन्ताजे तेनाटे अनन्ती उत्सर्प्पिणीए अवसर्प्पिणीए करी एतलेकाले औदारिक पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्ते पूरो करिये। एवं वेउव्विय पोग्गलपरियट्टेवि। इम वैक्रिय पुद्गलप रावर्त्त पणि कहवो। एवं जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टेवि। इम यावत् आनप्राण पुद्गलपरावर्त्त लगे सर्व इमज कहवा। एयस्सणंभंते उरालिय पो

॥ टीका ॥ सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलेत्यादि ॥ सर्वस्तोक कार्म्मणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकाल , तेहि सूक्ष्मा बहुतमपरमाणुनिष्पन्नाश्च भवन्ति , तत स्ते सकृदपि बहवो गृह्यन्ते , सर्वेषुच नारकादिपदेषु वर्त्तमानस्य जीवस्य ते ऽनुसमय ग्रहण ग्रहणास्या गण्यमानत्वा दनन्ता अवसर्प्पिण्य इत्यादि सुष्ठूक्तमिति ॥ मायातीति स्वल्पकालेनापि तत्सकलपुद्गलग्रहण भवतीति, तत स्तैजसपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो ऽनन्तगुणो यतः स्थूलत्वेन तैजसपुद्गला

॥ सूत्र ॥ यपोग्गल जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकालस्स कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोय मा ! सव्वत्थोवे कम्मपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, उराल

अनुवाद रिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालस्य वैक्रियपुद्गल (प्रभृति) यावदानप्राणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालस्य कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! स र्वस्तोक कार्मणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकाल , तेज पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालोऽनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालोऽनन्तगुण आ

॥ भाषा ॥ ग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकालस्स वेउव्वियपोग्गल जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकालस्स कयरे २ हिंती जाव विसेसाहियावा । एहने यं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । औदारिक पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तना कालने वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने तैजस पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने का र्मण पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने मन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने वचन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने आनप्राण पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकालने कुण २ थकी थोडोहुवे घणोहुवे सरीखोहुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवे कम्मपोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले । हेगौतम । सर्वस्तो क कार्मण पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल ते किम ते कार्मण पुद्गल सूक्ष्म घणे परमाणू ए नीपना हुवे तिवारे ते एकवार पणि घणा गृहाये अने सगला ई नारकादिक पदनेविषे वर्त्तमान जीवने ते समय समय प्रतें गृहणपणो पामेछे तेमाटे ते थोडेकाले करोने पणि ते सगलाई पुद्गलना गृहणहुवे तेमा टे तेहनो काल थोडो तेहथी । तेयापोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे । तैजस पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल अनन्तगुणो जेमाटे ते स्थूलपणो क री तेजस पुद्गल थोडानो एकवार गृहणहुवे एक गृहण अल्पप्रदेश निष्पन्नपणे करी तेह थोडानोज तेहना अणूनो गृहण हुवे एतलामाटे एहनोकाल

॥ टीका ॥

ना मऽल्पाना मेकदा ग्रहणं, एकदाग्रहणे चाल्पप्रदेशनिष्पन्नत्वेन तेषा मल्पानामेव तदणूना ग्रहणं भवत्यतो ऽनन्तगुणोसावित्ति, तत औदारिकपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो ऽनन्तगुणो यत औदारिकपुद्गला अतिस्थूरा स्थूराणां चाल्पानामेवैकदा ग्रहणं भवति, अल्पतरप्रदेशाश्च ते तत स्तद्ग्रहणेप्येकदाऽल्पा एवाणवो गृह्यन्ते, नच कार्म्मणतैजसपुद्गलवत् तेषां सर्वपदेषु ग्रहणमस्त्यौदारिकशरीरिणामेव तद्ग्रहणात् ततो वृहत्तैव कालेन तेषां ग्रहणमिति, तत आनप्राणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो ऽनन्तगुणो यद्यपि हि औदारिकपुद्गलेभ्य आनप्राणपुद्गला सूक्ष्मा बहुप्रदेशिकाश्चेति तेषामल्पकालेन ग्रहणं सम्भवति तथाप्यऽपर्याप्तकावस्थाया तेषामग्रहणात् पर्याप्तकावस्थायामप्यौदारिकशरीरपुद्गलापेक्षया तेषामल्पी

॥ मूल ॥

यपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टणिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपो

अनुवाद

नप्राणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालोऽनन्तगुणो मन पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालोऽनन्तगुणो वाक्पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो ऽनन्तगुणो वैक्रियपु

॥ भाषा ॥

ओरालिय पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे । औदारिक पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल अनन्तगुणो जेमाटे औदारिक पुद्गल अति स्थूलछे, अति स्थूलनो अल्पनोज एकदा ग्रहणहुवे तेहना प्रदेश पणि अल्पतर तिवारे तेहनो ग्रहणे पणि एकदा अल्पहीज अणुग्रहाय वली न ही कार्मण तैजस पुद्गलनी परे तेहनो सर्व नारकादिक पदनेविषे ग्रहण औदारिकशरीरीनेज तेहना ग्रहणथकी एतलामाटे घणेकाले तेहनो ग्रहण हुवे तेहथी । आणापाणु पोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे । आनप्राण पुद्गलपरिवर्त्त निवर्त्तनकाल अनन्तगुणो ते किम यद्यपि औदारिक पुद्गल थकी आनप्राण पुद्गल सूक्ष्मछे बहुप्रदेशिका पणिछे तेहने अल्पकाले करी ग्रहणसम्भवे तथापि अपर्याप्तिका अवस्थानेविषे ते आनप्राण पुद्गल नो ग्रहण नथी तेमाटे तथा पर्याप्तक अवस्थाये पणि औदारिकशरीर पुद्गलनी अपेक्षाये तेहना थोडानोज ग्रहणछे तेहनो उतावलो ग्रहण न हुवे ते माटे अनन्तगुणो जाणवो तेहथी । मणपोग्गल परियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे । मन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल अनन्तगुणो ते किम यद्यपि आनप्राण पुद्गल थको मनपुद्गल सूक्ष्मछे प्रदेश पणि घणाछे तेमाटे अल्पकाले करी तेहनो ग्रहणहुवे, तथापि एकेन्द्रियादि कायस्थिति वरयथकी मन

॥ टीका ॥

ततो मन. यसामेव ग्रहणात् न शीघ्रं तद्ग्रहण मित्यौदारिकपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकाला दनन्तगुणाता न प्राणपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालस्येति,
तथा पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो ऽनन्तगुण कथ यद्यप्यानप्राणपुद्गलेभ्यो मन पुद्गला सूक्ष्मा बहुप्रदेशाश्चेत्यल्पकालेन तेषा ग्रहण भवति
तथा प्येकेन्द्रियादिकायस्थितिवशा न्मनसश्चिरेण लाभा न्मानसपुद्गलपरिवर्त्तो बहुकालसाध्य इत्यनन्तगुण उक्त, ततोपि वाक्पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्त
नाकालो नन्तगुण कथ यद्यपि मनस सकाशा द्भाषा शीघ्रतर लभ्यते द्वीन्द्रियाद्यवस्यायाच भवति तथापि मनोद्रव्येभ्यो भाषाद्रव्याणामतिस्थूल
तया स्तोकानामेवैकदा ग्रहणा त्ततो ऽनन्तगुणो वाक्पुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकाल इति, ततोपि वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालो नन्तगुणो
वैक्रियशरीरस्यातिवहुकाललभ्यत्वादिति, पुद्गलपरिवर्त्तानामेवाल्पबहुत्व दर्शयन्नाह–एएसिणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्ता बहु

॥ मूल ॥

ग्गलपरियट्टणिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टणिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरि
यट्टणिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे। एएसिणं भंते! उरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरिय

अनुवाद

द्गलपरिवर्त्तनिर्वर्त्तनाकालोऽनन्तगुण। एतेषा भदन्त। औदारिकपुद्गलपरिवर्त्तानां यावदानप्राणपुद्गलपरिवर्त्तानां च कतरे कतरेभ्यो यावद्वि

॥ भाषा ॥

वइपोग्गलपरियट्ट णिव्वट्टणाकाले अणंतगुणे। अनन्तगुणो तेहथी पणि।
नो घणेकालें लाभहुवे तेमाटे मानस पुद्गलपरावर्त्त बहुकाल साध्य इति, तेहथी पणिहुवे त
वचन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल अनन्तगुणो ते किम यद्यपि मनपुद्गलथकी भाषा अतिशीघ्र पामीयछे बेइन्द्रियादिक अवस्थानेविषे निवर्त्तनाकाल
थापि मनोद्रव्य थकी भाषाद्रव्यने अतिस्थूलपणें करी थोडानोज एकदा ग्रहणहुवे तेहभणी तेहथी अनन्तगुणो वाक् पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल थ
जाणवो ते वचन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल थकी। वेउव्वियपोग्गलपरियट्ट णिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे। वचन पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल थ
की वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल अनन्तगुणो ते किम वैक्रियशरीर अति बहुकाले लाभे तेमाटे। एएसिणं भंते ओरालिय पोग्गलपरियट्टाणं।
एहने हेभगवन्। औदारिक पुद्गलपरिवर्त्तने वैक्रिय पुद्गलपरिवर्त्तने तैजस पुद्गलपरावर्त्तने आनप्राण पुद्गलपरावर्त्तने मन पुद्गलपरावर्त्त

॥ टीका ॥ तमकालनिर्वर्त्तनीयत्वा स्तेषा, ततोनन्तगुणा वाग्विषया अल्पतरकालनिर्वर्त्त्यत्वा देवं पूर्वोक्तयुक्त्या बहुबहुतरा क्रमेणान्येपि वाच्या इति ॥

॥ मूल ॥ हाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, उरालियपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। सेवं भंते

अनुवाद शेपाधिकावा? गौतम। सर्वस्तोका वैक्रियपुद्गलपरिवर्त्ता वाक्पुद्गलपरिवर्त्ता अनन्तगुणा मन पुद्गलपरिवर्त्ता अनन्तगुणा यावदानप्राणपुद्गल

॥ भाषा ॥ ते वचनपुद्गलपरावर्त्त ने। जाव आणापाणुपोग्गलपरिट्टाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा। यावत् आनप्राण पुद्गलपरावर्त्त ने माहोमांहि कुणकुणथकी घणाहुवे थोडाथाय सरीखाथाय विशेषाधिक एवे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सव्वत्थोवा वेउव्विय पोग्गलपरियट्टा। हेगौतम। सर्वस्तोक वैक्रिय पुद्गलपरावर्त्त अति बहुकाल निवर्त्तनीय पणाथको तेहने तेहथकी। वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। वचन पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणा वचनविषय अति अल्पकाल निवर्त्तनीय पणाथकी २ तेहथी। मण पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। मन पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणानो विषय अल्पकाल निवर्त्तनीय पणाथकी ३ तेहथी। जाव आणापाणु पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। यावत् आनप्राण पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणा आनप्राण विषय अति अल्पकाल निवर्त्तनीय पणाथकी ४ तेहथी। ओरालिय पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। औदारिक पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणा औदारिक विषय अति अल्पकाल निवर्त्तनीय पणाथकी ५ तेहथी। तेयापोग्गलपरियट्टा कम्मापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा। तैजस पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणा ६ तेहथी कार्मण पुद्गलपरावर्त्त अनन्तगुणा ७ इम पूर्वोक्त युक्तिकरी बहुतर अनुक्रमे कहवा इहां ए भावना जेहनो निवर्त्तन थोडेकाले हुवे तेहना पुद्गलपरावर्त्त घणाहुवे जिम कार्मण पुद्गलपरावर्त्त निवर्त्तनाकाल सबंधी थोडा एतले थोडेकाले पूरोहुवे तो ते कार्मण पुद्गलपरावर्त्त सगलाथकी घणाहुवे, अने वैक्रियपु द्गलपरावर्त्त निवर्त्तन सबंधी घणेकाले हुवे तो तेहना पुद्गलपरावर्त्त सबंधी थोडा कह्या इम भावना करवी। सेवंभंतेभंतेत्ति भगवं जा

॥ टीका ॥

॥ ग्र० स० १२००० ॥ अनन्तरोद्देशके पुद्गला उक्ता स्तत्प्रस्तावा त्कर्मपुद्गलस्वरूपाभिधानाय पञ्च
द्वादशशते चतुर्थ ॥१२॥ ४ ॥ पाणाइवाएत्ति ॥ प्राणातिपातजनित तज्जनकवा; चारित्रमोहनीय कर्मो पचारा त्प्राणातिपात एव, एवमुत्तर
मोद्देशक माह-रायगिहे इत्यादि ॥ आह च-पंचरसपंचवन्ने हिपरिणयदुविहगंधचउफास । दवियमणात
त्रापि, तस्य च पुद्गलरूपत्वा द्वर्णादयो भवन्तीत्यत उक्त-पंचवन्ने इत्यादि ॥

॥ मूल ॥

॥ दुवालसमसयस्स चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ४ ॥
भंतेत्ति ! भगवं जाव विहरइ ॥ रायगिहे जाव एववयासी-अह भंत ! पाणाइवाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे एसणं कइवन्ने
कइगंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवन्ने दुगंधे पंचरसे चउफासे पन्नत्ते । अह भंते ! कोहे

अनुवाद

कार्मणपुद्गलपरिवर्त्ता अनन्तगुणा स्तदेव भदन्त । भदन्त ।
परिवर्त्ता अनन्तगुणा औदारिकपुद्गलपरिवर्त्ता अनन्तगुणा स्तेज पुद्गलपरिवर्त्ता ॥ राजगृहे यावदेवमवादीत्-अथ भदन्त । प्राणातिपातो मृ
इति भगवान् यावद्विहरते ॥ द्वादशमशते चतुर्थ ॥ १२ ॥ ४ गौतम । पञ्चवर्णा द्विगन्धा पञ्चरसा
षावादा ऽदत्तादानो मैथुन परिग्रह एते कतिवर्णा कतिरसा कतिगन्धा कतिस्पर्शा प्रज्ञप्ता ?

॥ भाषा ॥

दुवालसमसयस्स चउत्थो । ए बारमा शतकनो चोथोउद्देशो पूरोथ
व विहरइ । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हेकह्युं ते सर्वसत्यछे इम कहो यावत् विचरे । रायगिहे जाव एववयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत्
यो १२ ॥ ४ ॥ पाछिलउद्देशे पुद्गलकह्या तेहना प्रस्तावथी इहां कर्मपुद्गल कहेछे । अथ हेभगवन् । प्राणातिपातनो कारणहार ते चारित्रमोहनीय
भगवन्तगोतम इम कहे । अहभंते पाणाइवाए मुसावाए अदिन्नादाणे मेहुणे परिग्गहे । एसण कइवन्ने कइ
कर्म उपचारथको प्राणातिपात जाण कहिये इम आगल पणि कहवो, इम मृषावाद इम अदत्तादान मैथुन परिग्रह ए पच कहवा । गोयमा पंचवन्ने दुग
गंधे कइरसे कइफासे पन्नत्ते । एहवा वाक्यालंकारे, केतला वर्णहुवे केतला गन्धहुवे केतला रसहुवे केतला फासहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचवन्ने दुग
धे पंचरसे चउफासे पन्नत्ते । हेगौतम । ते कर्मने पुद्गलरूप पणाथकी एतले पुद्गलात्मकछे तेमाटे वर्णादिक हुवे एतलामाटे कह्युं पञ्चवर्ण दोय गन्ध प

॥ टीका ॥

परस सिद्धेरिअगतगुणत्वादिति ॥ १ ॥ चउफासेत्ति ॥ स्निग्धरूक्षशीतोष्णाख्या श्चत्वारः स्पर्शाः सूक्ष्मपरिणामपरिणतपुद्गलाना भवन्ति, सूक्ष्मपरि णामच कर्मेति ॥ कोवेत्ति ॥ क्रोधपरिणामजनकं कर्म तत्र क्रोध इति सामान्य नाम कोपादयस्तु तद्विशेषा स्तत्र कोपः क्रोधोदयात् स्वभावा ज्वलनमात्र' रोषः क्रोधस्यैवानुबन्धो, दोषः आत्मनः परस्य वा, दूषणं मतच्च कोपकार्यं' द्वेषो वा अप्रीतिमात्र' अक्षमा परकृतापराधस्यासहन' सञ्ज्वलनो मुहुर्मुहुः क्रोधाग्निना ज्वलनं, कलहो महता शब्देनान्योन्य मसमञ्जसभाषणं मेतच्च क्रोधकार्यं, चाण्डिक्यं रौद्राकारकरणं एतदपि क्रोधका र्यमेव, भण्डनं दण्डादिभि र्युद्ध मेतदपि क्रोधकार्यमेव, विवादो विप्रतिपत्तिसमुत्थवचनानि इदमपि तत्कार्यमेवेति, कोपैकार्थाः चैते शब्दाः ॥

॥ मूल ॥

कोवे रोसे दोसे अक्खमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे १० एसणं कइवण्णे जाव कइफासे प० ? गोयमा ! पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे चउफासे पण्णत्ते। अह भंते ! माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अणुक्कोसे पर

॥ अनुवाद ॥

चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ता । अथ भदन्त ! क्रोधः कोपो रोषो दोषोऽक्षमा सञ्ज्वलनः कलहः चाण्डिक्यं भण्डनं विवादः १०, एते कतिवर्णाः (प्रभृति) यावत्कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चवर्णाः पञ्चरसा द्विगन्धाश्चतुःस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः । अथ भदन्त ! मानो मदो दर्पः स्तम्भो गर्वोऽनुक्रोश

॥ भाषा ॥

ण रस चार स्पर्श छवे ते चार फरस स्निग्ध १ रूक्ष २ शीत ३ उष्ण ४ नामे चार फरस सूक्ष्म परिणामपुद्गलने हुवे अने कर्म सूक्ष्मपरिणामछे तेमाटे। अ हभते कोहे कोवे रोसे दोसे अक्खमा सजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे १०। अथ हिवे, हे भगवन् ! क्रोधपरिणाम उपार्जनहार कर्म तिहां क्रोध ते सामान्य नाम अने कोपादिक ते विशेषनाम क्रोध उदयस्वभावथको ज्वलनमात्र क्रोधनो अनुबन्ध आप परने दूषे, अक्षमापराधो अपराध न सहे वारम्वार क्रोध मोटा शब्दकरी भूण्डावचन बोले कोपकरी रौद्र आकार करे दण्डादिके करी युद्धकरे अविनय वचन बोले इहां कलहादिक क्रोधना कार्यछे। एसण कइवणे जाव कइफासे प०। एस ण वाक्यालंकारे, केतला वर्ण केतला गन्ध केतला रस केतला स्पर्श कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा प चवणे पचरसे दुगंधे चउफासे प०। हे गौतम पञ्चवर्ण दोय गन्ध पञ्च रस चार स्पर्श कह्या सूक्ष्म परिणामछे तेमाटे। अहभंते माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अ

॥ टीका ॥

मारणंत्ति ॥ मानपरिणामजनकं कर्म तत्र मान इति सामान्यं नाम, मदादयस्तु तद्विशेषा स्तत्र मदो हर्षमात्रं, दर्प्पो दृप्तता, स्तम्भो ऽनम्रता, गर्वमाणंत्ति ॥ मानपरिणामजनकं कर्म तत्र मान इति सामान्यं नाम, परपरिवाद परेषा मपवदनं परिपातोवा, गुणेभ्य परि भ्रंशनीयं ॥ अणुक्कोसेत्ति ॥ आत्मनः परेभ्य सकाशा दुत्कर्षणमुत्कृष्टताभिधानं परपरिवाद परेषा मपवदनं परिपातोवा, गुणेभ्य परिभ्रंशनीयं ॥ अव पातनमिति ॥ उक्कोसेत्ति ॥ उत्कर्षणमात्मनः परस्यवा; माना त्क्रियोत्कृष्टता करणं उत्कासनवा, प्रकाशनमभिमाना त्स्वकीयसमृद्धादे ॥ अव पातनमिति ॥ अवक्कोसंत्ति ॥ अपकर्षणमवकर्षणंवा, अभिमाना दात्मनः परस्यवा, क्रियारम्भा त्कुतोपि व्यावर्तनमिति, अप्रकाशोवा; अभिमानादेवेति ॥ उन्नए त्ति ॥ उच्छिन्न नत पूर्वप्रवृत्त नमनमभिमाना दुन्नत उच्छिन्नोवा; नयो नीतिरभिमानादेवोन्नयोनयाभावइत्यर्थ ॥ उन्नामेत्ति ॥ प्रणतस्य मदानुप्रवेशादुन्नमनमुन्नाम ॥ दुन्नामेत्ति ॥ मदाद्दुष्ट नमनं दुर्नामइति, इहच स्तम्भादीनि मानकार्याणि मानवाचकाश्चैते ध्वनय इति ॥ मायत्ति ॥ सामान्यमुपध्यादय स्तद्भेदा स्तत्र ॥ उवहित्ति ॥ उपधीयते येनासा वुपधि, वचनीयसमीपगमनहेतुर्भाव ॥ नियडित्ति ॥ नितरा करणं निकृतिरादर

॥ मूल ॥

परिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे दुन्नामे १२। एसणं कइवन्ने ४ पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचवन्ने

॥ अनुवाद ॥

परपरिवाद उत्कर्षणमपकर्षणमुन्नतमुन्नाम दुर्नाम १२ एते कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता ? गौतम ! पञ्चवर्णा यथा क्रोधस्तथैव। अथ भदन्त ! मा

॥ भाषा ॥

णंसे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे दुन्नामे १२। अथ हिवे, हेभगवन् मान परिणाम उपार्जणहार कर्म तिहा मान इसो सामान्य नाम मदादिक तेहना विशेषनाम—मद हर्षमात्र दर्प आटोप थंभे नमे नही गर्व्व निहसगपणो अनेरापासे गुण कीर्त्ति करावे पराया अवर्णवाद बोले आप आपणी ऋद्धि उपार्ज्जीनद अभिमाने करी आत्माने तथा परने कषायें प्रवर्त्तावे उन्नए जपोभाव उन्नामे जे आदर्नेनमे तेहने गर्वे प्रवर्त्ते दुष्टपणेनमे १२ इहां स्तम्भादिक मानना कार्य छे ए सर्व मानवाचक छे। एसणं कइवणे ४ प०। ण वाक्यालंकारे, केतलावर्ण केतला गन्ध केतला रस केतला स्पर्श कह्या इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचवणे जहा कोहे तहेव। हेगौतम पंचवर्ण इत्यादि जिम क्रोधने कह्या तिम कहवा। अहभते माया उव ही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए जिम्मे किव्विसे। अथ हिवे, हेभगवन्। सामान्यपणे नाम उपधि इत्यादि तेहना भेद वचननिमित्त समीपे

॥ टीका ॥

करणेन परवञ्चनं पूर्वकृतमायाप्रच्छादनार्थवा, मायान्तरकरणं ॥ वलयेत्ति ॥ येन भावेन वलयमिव वक्रं वचनं चेष्टावा; प्रवर्त्तते स भावो वलयं ॥ गहणेत्ति ॥ परव्यामोहनाय यद्वचनजालं तद्गहनमिव गहनं ॥ णूमेत्ति ॥ परवञ्चनाय यन्निम्नताया निम्नस्थानस्यवा, आश्रयणं तन्नूममिति ॥ कक्केत्ति ॥ कल्कं हिंसादिरूपं पापं तन्निमित्तो यो वञ्चनाभिप्रायः स कल्कमेवोच्यते ॥ कुरुएत्ति ॥ कुत्सितं यथाभवत्येवं रूपयति विमोहयति यत्तत्कुरूपं भाण्डादिकर्म मायाविशेषएव ॥ जिम्हेत्ति ॥ येन परवञ्चनाभिप्रायेण जैह्म्यं क्रियासु मान्द्यमालंवते स भावो जैह्म्यमेवेति ॥ किव्विसेत्ति ॥ यतो मायाविशेषात् जन्मान्तरे अत्रैव वा; भवे किल्बिषः किल्बिषिको भवति स किल्बिष एवेति ॥ आयरणयात्ति ॥ यतो मायाविशेषादादरणमभ्युपगमः कस्यापि वस्तुनः करोत्यसौ आदरणं, ताप्रत्ययस्य च स्वार्थिकत्वात् आयरणया आचरणया, परप्रतारणाय विविधक्रियाणामाचरणं, गूहणया गूहनं गोपायनं स्वरूपस्य, वञ्चणया वञ्चनं परस्य प्रतारणं ॥ पलिउंचणया ॥ प्रतिकुञ्चनं सरलतया प्रवृत्तस्य वचनस्य खण्डनं ॥ साइजोगेत्ति ॥

॥ मूल ॥

जहा कोहे तहेव । अह भंते ! माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए जिम्हे किव्विसे आयरणया गूहणया वंचणया पलिउंचणया सातिजोगेय एसणं कइवण्णे ५ पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचवण्णे जहेव

अनुवाद

योपधिर्निकृतिवलय गहन नूम कल्क कुरूप जैह्म्य किल्विष आदरणता गूहनता वञ्चनता प्रतिकुञ्चनता सातियोग एते कतिवर्णाः प्रज्ञप्ताः ?

॥ भाषा ॥

जाय घणो आदर करी परने वंचे अथवा पहिलो मायाकीधी ते ढाकवाने अर्थे मायाओं अतिहि आदरकारी परने वंचे जिणें भावे वांकी चेष्टा वाके वचने वोले अगिलान वचन अर्थे वचन जाल करे परवंचन अर्थे नीचो प्रवर्त्ते मायाकरी अनेरानें मारे भण्डचेष्टा माया विशेष परवंचन निमित्तक्रिया अनलवे, मायाकरी भवान्तरे किल्विषी थाय अथवा इणिहीज भवने विषे किल्विषी समानथाय । आयरणया गूहणया वंचणया पलिउंचणया साइजोगेय एसणं कइवण्णे ४ प० । मायाकरी काइवस्तु आदरे आपणो स्वरूप गोपवें अगिलाने वंचे सरलपणो करी दिखावे वचनअर्थे कुडाद्रव्यने भाडुवा द्रव्यनो जोडवो १५ ए सर्व मायार्थो एकार्थछे, एसणं वाक्यालंकारे, केतला वर्ण केतला गन्ध केतला रस केतला स्पर्श काह्या प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंच

॥ टीका ॥

अविश्रम्भसम्बन्ध , सातिशयेनवा , द्रव्येण निरतिशयस्य योग स्तत्प्रतिरूपकरणमित्यर्थ , मायैकार्थायैते ध्वनय इति ॥ लोभेत्ति ॥ सामान्य इच्छा द्य स्तद्विशेषा , तत्रेच्छा अभिलापमात्र मूर्च्छा संरक्षणानुबन्ध काङ्क्षा अप्राप्तार्थाशसा ॥ गेहित्ति ॥ गृद्धि प्राप्तार्थंषु शक्ति ॥ तण्हत्ति ॥ तृष्णा प्राप्तार्थानामव्ययेच्छा ॥ भिज्झत्ति ॥ अभिव्याप्त्या विषयाणा ध्यान तदेकाग्रत्वमभिध्यापिधानादिव दरकारलोपाद्भिध्या ॥ अभिज्झत्ति ॥ नभिध्या अभिध्याभिध्या सदृश भावान्तर तत्र दृढाभिनिवेशो भिध्याध्यानलक्षणत्वा त्तस्या अदृढाभिनिवेशस्तु अभिध्याचित्तलक्षणत्वा त्तस्या ध्यानचित्तयो स्त्वय विशेष –जयिरमज्झवसाण तज्झाणजचलतयचित्तंति ॥ आसासणयत्ति ॥ आशासन मम पुत्रस्य शिष्यस्य वेदमिदच भूयादित्यादिरूपाशी ॥ पत्थणयत्ति ॥ प्रार्थन पर प्रति इष्टार्थयाचूजा ॥ लालप्पणयत्ति ॥ प्रार्थनमेव भृश लपनत ॥ कामासत्तित्ति ॥ शब्दरूपप्राप्तिसम्भावना ॥ भोगासत्ति ॥

॥ मूल ॥

कोहे । अह भंते ! लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पत्थासणया लाल प्पणया कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे १६ एसणं कइवन्ने ४ पन्नत्ते ? गोयमा ! जहेव

अनुवाद

गौतम । पञ्चवर्णा यथैव क्रोध । अथ भदन्त ! लोभो इच्छा मूर्च्छा काङ्क्षा गृद्धिस्तृष्णा भिध्याऽभिध्याऽऽशासनता प्रार्थनता लालपनता कामाशक्ति र्भोगाशक्तिर्जीविताशा मरणाशा नन्दिराग १६ एते कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता ? गौतम । यथैव क्रोध । अथ भदन्त ! प्रेम द्वेष

॥ भाषा ॥

अहभते लोभे इच्छा मुच्छा कखा गेही तण्हा भिज्झा अभिज्झा आसासणया पत्थासणया लालप्पणया । हिवे हेभगवन् । लोभ इति सामान्य नाम इच्छादि तेहना विशेष नाम इच्छा अभिलाषमा त्र, मुच्छा रक्षण अनुबन्ध अप्राप्तनी वाछा, गेही प्राप्तअर्थनेविषे आसक्त, तण्हा पाम्या अर्थनेविषे तृष्णा न जाय, विषयनो ध्यान दृढ अभिनिवेश विषयचि त्त म्हरे पुत्र तथा शिष्यने इम हुयो इत्यादि आसीस प्रार्थनाकरै परप्रते इष्ट अर्थनी याचना करै लालपाल करीने बारम्बार याचे । कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे १६ । शब्दरूपनो आसाकरै भोगनो आसा करै जीवितव्यनी आसा करै किणही अवस्थाये मरण वाछै समृद्धियका रा वन्ने जहेव कोहे । हेगौतम । पचवर्ण इत्यादि जिम क्रोधनेविषै कह्या तिम मायानेविषे पणि कहवा ।

॥ टीका ॥

गन्धादिप्राप्तिसम्भावना ॥ जीविताशत्ति ॥ जीवितव्यप्राप्तिसम्भावना ॥ मरणासत्ति ॥ कस्याचिदवस्थाया मरणप्राप्तिसम्भावना, इदंच क्वचि न्न दृश्यते ॥ नदिरागेत्ति ॥ समृद्धौ सत्या रागो हर्षो नन्दिराग ॥ पेज्जेत्ति ॥ प्रेम पुत्रादिविषये स्नेह ॥ दोसेति ॥ अप्रीति , कलह इह प्रेमहासादिप्र भव युद्ध यावत् करणात्-अब्भक्खाणे पेसुन्ने अरइ रइ परपरिवाए मायामोसेत्ति दृश्य, अथोक्तानामेवा ष्टादशाना प्राणातिपातादिकाना पाप स्थानाना ये विपर्यया स्तेपा स्वरूपाभिधानायाह-अहेत्यादि ॥ अवणेत्ति ॥ वधादिविरमणानि जीवोपयोगस्वरूपाणि जीवोपयोगश्चा मूर्त्तोऽमूर्त्त

॥ मूल ॥

कोहे । अह भंते ! पेज्जे दोसे कलहे जाव मिच्छादंसणसल्ले एसण कइवण्णे ४ ? जहेव कोहे तहेव चउ फासे। अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे एसणं

अनुवाद

कलहो यावत् (करणादभ्याख्यानपैशुन्यमरत्यरतिपरपरिवादमायामृषापरिग्रह) मिथ्यादर्शनशल्य एते कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता ? यथैवक्रो धस्तथैव चतु स्पर्शा. । अथ भदन्त । प्राणातिपातविरण यावत् (करणान्मृषावादविरमणादिग्रहणम्) परिग्रहविरमण क्रोधविवेको यावन्मि

॥ भाषा ॥

ग हर्ष ते नन्दिराग १६ ए सर्व लोभ वाचकछे । एसण कइवणे ४ पणत्ते । एह हेभगवन् । केतला वर्ण इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा जहेव कोहे । हे गौतम । पचवर्ण इत्यादि जिम क्रोधनेविषे कह्या तिम कहवा । अहभते पेज्जे दोसे कलहे जाव मिच्छादसणसल्ले । हिवे हेभगवन् । पुत्रादि विप य स्नेह अप्रीति प्रेमहास्य ते कलह यावत् शब्दथको अभक्खाणे पेसुणेअरइरइ परपरिवाए मायामोस ए शब्द कहवा मिथ्यादर्शन शल्य । एसण क इवणे ४ जहेव कोहे तहेव चउफासे । एह या वाक्यासकारि, केतला वर्ण इत्यादि प्रश्न उत्तर पचवर्ण इत्यादि जिम क्रोधने कह्या तिमज कहवा चार स्पर्श कहवा ते जांणवा हिवे, कह्या जे प्राणातिपात आदिदेई आठारे पापस्थानक तेहना जे विपर्यय तेहनो स्वरूप कहवाने अर्थे कहेछे—अहभते पाणाइवाय वेरमणे जाव परिग्गह वेरमणे कोहविवेगे जाव मिच्छादसण सल्लविवेगे । हिवे हेभगवन् । प्राणातिपातथी वेरमण निवर्त्तवो इम यावत् परिग्रहथको निवर्त्तवो क्रोधनो विवेक एतले वरजवो यावत् मिथ्यादर्शन शल्यनो विवेक एतलालगे करनो । एसण कइवणे जाव कइफासे प० । एह

॥ टीका ॥

त्वाच्च तस्य वधादिविरमणाना ममूर्त्तत्व तस्माच्चा वर्णादित्वमिति, जीवस्वरूपविशेषमेवा धिकृत्याह–उप्पत्तियत्ति ॥ उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्या सा औत्पत्तिकी, ननु क्षयोपशम प्रयोजनमस्या स्सत्य सखल्वन्तरङ्गत्वा त्सवबुद्धिसाधारण इति न विवक्ष्यते, नचान्यच्छास्त्रकर्माभ्यासादिक मपे क्षत इति ॥ वेणइयत्ति ॥ विनयो गुरुशुश्रूषा सा कारणमस्या स्तत्प्रधानावा, वैनयिकी ॥ कम्मयत्ति ॥ अनाचार्यक कर्म्म साचार्यक शिल्प कादाचि त्कवा, कर्म्म शिल्पतु नित्यव्यापार स्ततश्च कर्म्मणो जाता कर्म्मजा ॥ पारिणामियत्ति ॥ परि समन्ता न्नमन परिणाम सुदीर्घकालपूर्वापरार्थाव लोकनादिजन्य आत्मधर्म्म स कारण यस्या सा पारिणामिकी बुद्धि रिति वाक्यशेष , इयमपि वर्णादिरहिता जीवधर्मत्वेनामूर्त्तत्वात्, जीवध

॥ मूल ॥

कइवण्णे ? जाव कइफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे पण्णत्ते । अह भंते ! उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया परिणामिया एसणं कइवण्णा ४ पण्णत्ता ? तचेव जाव अफासा पण्णत्ता । अह भंते !

अनुवाद

ध्यादर्शनशल्यविवेक एत कतिवर्णा यावत् कतिस्पर्शा प्रज्ञप्ता ? गौतम । अवर्णा अगन्धा अरसा अस्पर्शा प्रज्ञप्ता । अथ भदन्त । औत्प त्तिकी वैनयिकी कर्मजा पारिणामिकी एता कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता ? गौतम । तच्चैव यावदस्पर्शा प्रज्ञप्ता । अथ भदन्त । अवग्रह ईहा

॥ भाषा ॥

ण वाक्यालकारे, केतला वर्ण केतलागन्ध केतला रस केतला स्पर्श कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अवण्णे अगंधे अरसे अफासे पण्णत्ते । हेगौतम । वर्ण न वधादि विरमण ते जीव उपयोग स्वरूपछे अने जीवोपयोगने अमूर्त्तपणाथकी वधादि विरमणने अमूर्त्तपणो कह्यो तेमाटे अवर्ण एतलामाटेज गन्ध रहित रसरहित स्पर्शरहित कहवा । अहभंते उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया परिणामिया । हिवे हेभगवन् । उत्पत्तिहीज प्रयोजनछे जेहने तिका औत्पा तिकी कहिये नही अनेरा शास्त्रपाठो अभ्यासादिकनी अपेक्षा करे १ विनय गुरुसेवा प्रयोजनछे जेहने ते वैनयिकी २ आचार्यरहित ते कर्म आचार्य सहित ते शिल्प अथवा कादाचित्क ते कर्म नित्यव्यापार ते शिल्प तिवारे कर्मथी उपनी ते कर्मजा ३ समस्तथकी हुवे ते परिणाम सुदीर्घकाल पूर्वापर ना अवलोकनादिकथी उपनो आत्मधर्म ते कारण जहनो ते पारिणामिकी बुद्धि इति वाक्यशेष । एसण कइवण्णा ४ तचेव जाव अफासा पण्णत्ता । एह ण वा

र्माधिकारा दवग्रादिसूत्र कर्मादिसूत्र च, अमूर्त्ताधिकारा दवकाशान्तरसूत्र गमूर्त्तत्वविपर्यया तनुवातादिसूत्राणिचार-तत्रच सत्तमेण भंते।

उग्गहे ईहा अवाए धारणा एसणं कइवत्रा पन्नत्ता ? एवंचेव जाव अफासा पन्नत्ता। अह भंते! उठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कम्मे एसणं कइवन्ने ४ पन्नत्ते ? तचेव जाव अफासे पन्नत्ते। सत्तमेणं भंते! उवासंतरे कइवन्ने ४ पन्नत्ते ? एवचेव जाव अफासे पन्नत्ते। सत्तमेणं भंते! तणुवाए कइवन्ने ?

उपायो धारणा एत कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता० ? एव चैव यावदस्पर्शा प्रज्ञप्ता। अथ भदन्त। उत्थान कर्म बलो वीर्य पुरुषात्कारपराक्रम एते कतिवर्णा ४ प्रज्ञप्ता० ? तच्चैव यावदस्पर्शा प्रज्ञप्ता। सप्तमो भदन्त! अवकाशान्तर कतिवर्ण ४ प्रज्ञप्त ? एवचैव यावदस्पर्श। प्रज्ञप्त। सप्तमो भदन्त! तनुवात कतिवर्ण ४ प्रज्ञप्त ? यथा प्राणातिपातो नवरमष्टस्पर्श प्रज्ञप्त एव यथा सप्तमस्तनुवातस्तथा सप्तमो

कालकारे, केतला वर्ण कह्या इत्यादि उत्तर एहनो जीवपरिणाम धर्मथी अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कहवा। अहभंते उग्गहेईहा अवायधारणा। हिवे हेभगवन्! सामान्यपणाथको ग्रहे एतले अव्यक्तज्ञान ते अवग्रह १ ईहा छता अर्थने विशेषे आलोचे एतले विचारणा २ छता अर्थनो विशेषे निश्चय करिवो ३ धारणा ते वीसरे नही ४ एह केतला वर्णादि प्रकर्या इतिप्रश्न उत्तर। एवचेव जाव अफासा प०। ए पणि जीव धर्मपणे करी अमूर्त्तछे तेनाटे अवर्ण ५ अगन्ध २ अरस ५ अफरस ८ कहवा। अहभंते उठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे। हिवे हेभगवन्! उत्थान ऊभोथाइवो कर्म ते गमनादि क्रिया शरीरनो समर्थाई जीवनो उत्साह पुरुषकार अभिमान विशेष एहनो साधना कामपूरो कीधो ते। एसण कइवणे ४ प०। एह ए वारुयालकारे, केतला वर्ण इत्यादि चार प्रश्न। तचेव जाव अफासे प०। तिमहीज यावत् एहोने पणि आत्मधर्मपणे करी अवर्णादि कह्या, पहिलो तथा बीजो पृथिवी ते बेजने विचाले आकाशखण्ड ते पहिलो अवकाशान्तर कहिये तेहनो अपेचाये सातमो अवकाशान्तर सातमी पृथिवी नीचेछे ते अवकाशान्तरने ऊपर सातमो तनुवात २ ते ऊपर सातमो घनवात २ ते ऊपर सातमो घनोदधि ४ ते ऊपर सातमी पृथिवी ५ इम ऊपरिलो पृथिवीने प

जहा पाणाइवाए, णवरं अट्ठफासे पण्णत्ते, एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदही पुढवी। छट्ठे उवासंतरे अवण्णे तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी एयाइं अट्ठफासाइं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं । जंबुद्दीवे दीवे जाव सयम्भुरमणे समुद्दे सोहम्मे कप्पे जाव

घनवातो घनोदधि पृथिवी । षष्ठ अवकाशान्तरो ऽवर्ण स्तनुवातो यावत्षष्ठी पृथिवी एतान्यष्टस्पर्शानि यथासप्तमाया पृथिव्या वक्तव्यता भणिता तथा यावत्प्रथमाया पृथिव्या भणितव्यम् । जंबुद्वीपे द्वीपे यावत् (कराणलवणसमुद्रादिपरिग्रह) स्वयम्भुरमणे समुद्रे सौधर्मे कल्पे

णि अनुक्रम जाणवो। सत्तमेणं भंते उवासंतरे कइवण्णे ४ प। सातमो हेभगवन् । अवकाशांतर ,कइवर्ण इत्यादि, प्रश्न उत्तर एवचव जाव अफासे पण्णत्ते। अवकाशने अमूर्त्तपणाथकी वर्णादि ४ नही फरसताई नही । सत्तमेणं भंते तणुवाए कइवण्णे। सातमो हेभगवन् । तनुवात कइवण्णे इत्यादि, प्रश्न उत्तर । जहा पाणाइवाए णवरं अट्ठफासे पण्णत्ते। जिम प्राणातिपातनेविषे वर्णादि कह्या तिम इहा पणि तनुवातादिकने पुद्गलपणे करी मूर्त्तिपणाथकी पचवर्ण दोय गन्ध पचरस एतलोविशेष इहा बादर परिणाम पणाथकी आठ स्पर्श कहवा, स्पर्श—शीत १ उष्ण २ स्निग्ध ३ रूक्ष ४ मृदु ५ कठिन ६ लघु ७ गुरु ८ । एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए घणोदही पुढवी छट्ठे उवासंतरे अवण्णे । इम जिम सातमो तनुवात कह्यो तिम सातमो घनवात १ सातमो घनोदधि २ सातमोपृथिवी ३ कहवी एतले एहोनेविषे वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ फरस ८ कहवा बादर परिणाम थकी छट्ठो अवकाशान्तर अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कहवो अमूर्त्तपणाथकी । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवीएयाइं अट्ठफासाइं। छठो तनुवात १ घनवात २ घनोदधि ३ छठी पृथिवी ४, ए वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ फरस ८ सहित कहवो मूर्त्तपणाथकी। जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं। जिम सातमी पृथिवीनी वक्तव्यता कही तिम यावत् पहिली पृथिवी लगे वक्तव्यता कहवी, तिहा सातेई अवकाशान्तर अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कहवा अमूर्त्तपणाथकी, तथा सात तनुवात १ सात घनवात २ सात घनोदधि ३ सात पृथिवी ४ ए सगलानेविषे वर्ण ५ ग

॥ टीका ॥

उवासतरेत्ति ॥ प्रथमद्वितीयपृथिव्यो यदन्तराले आकाशखण्डं तत्प्रथमं तदपेक्षया सप्तमं सप्तम्या अधस्तात्तस्योपरिष्टात्सप्तमस्तनुवातस्तस्योपरि सप्तमो घनवातस्तस्याप्युपरि सप्तमो घनोदधिस्तस्याप्युपरि सप्तमी पृथिवी तनुवातादीनाञ्च पञ्चवर्णादित्वं पौद्गलिकत्वेन मूर्तत्वात् बादरपरिणामत्वात् दृष्टौ च स्पर्शौ शीतोष्णस्निग्धरूक्षमृदुकठिनलघुगुरुभेदादिति ॥ जंबुद्दीवे ॥ इत्यत्र यावत्करणात् लवणसमुद्रादीनि पदानि वाच्यानि ॥ जाव वेमाणियावासा ॥ इह यावत्करणात् असुरकुमारावासादिपरिग्रहस्तेच भवनानि नगराणि विमानानि च तिर्यग्लोके तन्नगर्य

॥ मूल ॥

ईसिप्पब्भारा पुढवी, णेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि। णेरइयाणं भंते! कइवण्णा जाव कइफासा पण्णत्ता ? गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा

अनुवाद

यावत् (करणाच्छेपदेवलोकग्रैवेयकपरिग्रहः) ईषत्प्राग्भारा पृथिवी नैरयिकावासा यावत् (करणादसुरकुमाराद्यावासाना ग्रहणं) वैमानिकावासा एतानि सर्वाण्यष्टस्पर्शानि । नैरयिका भदन्त । कतिवर्णा (प्रज्ञप्ता) यावत् कतिस्पर्शाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । वैक्रियतैजस प्रतीत्य पञ्च

॥ भाषा ॥

न्ध २ रस ५ फरस ८ कहवा । जंबूद्वीप ठावे जाव सयंभुरमणसमुद्र सोहम्मकप्प जाव ईसिप्पभारापुढवी । जम्बूद्वीपनामाद्वीप इहां यावत् शब्दथकी लवण समुद्रादिक पद कहवा ते यावत् स्वयम्भुरमण समुद्र तथा सौधर्म देवलोक इहां यावत् शब्दथकी ईशानादि देवलोकादिक पद कहवा, यावत् ईषत्प्राग्भारा सिद्धशिलानाम पृथिवी तथा । णेरइयावासा जाव वेमाणियावासा एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि । नारकना नरकावासा इहां यावत् शब्दथकी असुरकुमारना आवासादिकनो परिग्रहकरवो ते भवन नगर विमान तिर्यग्लोकनेविषे तेहोनो नगरी ए सर्व, वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कहवा । णेरइयाणभंते कइवण्णा जाव कइफासा पण्णत्ता । नारकाने ण वायवाराकारे, हेभगवन् । केतलावर्ण केतला गन्ध केतला रस यावत् केतला फरस कह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा वेउव्विय तेयाइ पडुच्च पचवण्णा दुगंधा पंचरसा अट्ठफासा प० । हेगौतम । वैक्रिय तैजस ए बेहु शरीर बादरपरिणाम पुद्गलरूपछे तेमाटे ते बेहुने बादर पणाथकी ते आश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ आठ स्पर्शपणो कहवो तथा । कम्मग पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा

॥ टीका ॥ कस्मग पडुच्च ॥ वैक्रियतैजसशरीरे हि बादरपरिणामपुद्गलरूपे ततो बादरत्वा तयो नारकाणा मष्टस्पर्शत्वं ॥ कम्मग पडुच्च श्चेति ॥ वेउव्वियतेययाइंपडुच्चत्ति ॥

॥ मूल ॥ जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा दुगंधा पंचरसा चउफासा पण्णत्ता, जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एवं जाव थणियकुमारा। पुढवीकाइयाण पुच्छा, उरालियतेयगाइ पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा णेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव चउरिंदिया, णवर वाउकाइया उरालियवेउव्वियतेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता सेसं जहा णेरइयाणं, पंचिंदियति

अनुवाद प्रज्ञप्ता, कार्मण प्रतीत्य पञ्चवर्णा द्विगन्धा पञ्चरसाश्चतु स्पर्शा प्रज्ञप्ता, जीव प्रतीत्या वर्णा (प्रभृति) यावदस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एव (असुरकुमारप्रभृति) यावत्स्तनितकुमारा। पृथिवीकायिकाना पृच्छा, औदारिकतैजस प्रतीत्य पञ्च वर्णा द्विगन्धा पञ्चरसा अष्टस्पर्शा प्रज्ञप्ता, कार्मण प्रतीत्य यथा नैरयिका, जीव प्रतीत्य तथैव, एव यावच्चतुरिन्द्रिया नवर वायुकायिका वर्णा (प्रभृति) यावदष्टस्पर्शा प्रज्ञप्ता,

॥ भावार्थ ॥ ते शीत उष्ण २ स्निग्ध रूक्ष ४ ए ... पचरसा चउफासा प०। कार्मण ते सूक्ष्मपरिणाम पुद्गल रूपछे तेमाटे ते आश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ फरस ४ ते शीत उष्ण २ स्निग्ध रूक्ष ४ ए व थणियकुमारा पुढवीकाइयाण पुच्छा। इम असुरकुमार आदिदेई यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहवा नारकी परे, पृथिवीकायिकनो प्रश्नबोध नारकने कहवा। जीव पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पं०। तथा जीवआश्रयीने अवर्ण ५ अगन्ध २ अरस ५ अस्पर्श ८ नारकीने कहवा। एवं ज उत्तर। गोयमा ओरालिय तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पं०। हेगौतम। औदारिक तैजस ए बेशरीर बादर पुद्गलपरिणामछे तेमाटे ते आश्रयीने पचवर्ण दोय गन्ध पच रस तथा आठ स्पर्श कह्या तथा। कम्मगं पडुच्च जहाणेरइयाणं। कार्मणआश्रयीने जिम नारकीने कह्यु तिम कह वो यावत् ४ फरस लगे। जीवं पडुच्च तहेव एव जाव चउरिंदिया। जीव आश्रयीने पणि तिमज नारकीनो परे कहवो एतले अवर्णादि कहवो, इस यावत् चउरिन्द्री लगे पृथिवीकायनी परे कहवो। णवरं वाउकाइया ओरालिय वेउव्विय तेयगाइं पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठ फासा पण्णत्ता, सेस ज

रिक्खजोणिया जहा वाउकाइया । मणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मग जीवं पडुच्च जहा णेरइयाणं, वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा णेरइया । धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए, एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा, णवरं पोग्गलत्थिकाए

औदारिकवैक्रियतैजस प्रतीत्य पञ्चवर्णा यावदष्टस्पर्शा प्रज्ञप्ता शेष यथा नैरयिकाणा, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका यथा वायुकायिका । मनुष्याणा पृच्छा, गौतम । औदारिकवैक्रियाहारकतेजस प्रतीत्य पञ्चवर्णा यावदष्टस्पर्शा प्रज्ञप्ता, कार्मण जीव प्रतीत्य यथा नैरयिकाणाम्, वानव्यन्तरज्योतिकवैमानिका यथा नैरयिका । अधर्मास्तिकायो यावत् (करणादधर्मास्तिकायादय) पुद्गलास्तिकाय एते सर्वे ऽवर्णा याव

हा णेरइयाण । एतलेविशेष वाउकायने औदारिक वैक्रियने तैजस ए त्रीणशरीर बादर पुद्गलपरिणाम रूपछे तेमाटे ते आश्रयीने पञ्च वर्ण यावत् आठ स्पर्श कहवा, शेष थाकता जिम नारकीने कह्यू तिम कहवो एतले कार्मणआश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ४ जीवआश्रयीने अवर्णादि कहवा । पंचिदिय तिरिक्खजोणिया जहा वाउकाइया मणुस्साणंपुच्छा । पञ्चेन्द्री तिर्यचयोनिक वाउकायनी परे कहवा, एतले औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३, आश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८, कार्मण आश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ४, जीव आश्रयीने अवर्णादि कहवा मनुष्यनो प्रश्न कीधो उत्तर । गोयमा ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा । हेगौतम । औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण ए ४ शरीर आश्रयीने पाच वर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कह्या, ए चार शरीरने बादर पुद्गलपरिणामरूपपणाथकी । कम्मग जीव पडुच्च जहा णेरइयाणं । कार्मणशरीर तथा जीव ए आश्रयीने जिम नारकी कह्या तिम कहवा एतले कार्मणआश्रयीने वर्णादिफरस ४ जीव आश्रयीने अवर्णादि कहवा । वाणमतर जोइसिय वेमाणिया जहा णेरइया । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक ए नारकीनी परे कहवा, एतले वैक्रिय तैजस आश्रयीने वर्णादिक ५ स्पर्श ८, कार्मणआश्रयीने वर्णादि ५ स्पर्श ४, जीवआश्रयीने अवर्णादि कहवा । धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए एए सव्वे अवण्णा जाव अफासा । धर्मास्ति

॥ टीका ॥ इह यावत्करणा देवं दृश्य–अधम्मत्थिकाए त्ति ॥ कार्मणं हि सूक्ष्मपरिणामपुद्गलरूपमतश्चतुःस्पर्शं तेच शीतोष्णस्निग्धरूक्षा ॥ धम्मत्थिकाए ॥ इह द्रव्यलेश्या वर्णं ॥ जावलेसं पडुच्चत्ति ॥ जाव आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धा समए आवलिया मुहुत्ते इत्यादि ॥ दव्वलेस पडुच्चत्ति ॥

॥ मूल ॥ णाणावरणिज्जे जाव अंतराइए एयाणि जाव चउफासाणि । पचवन्ने दुगंधे पंचरसे अठफासे पन्नत्ते, दव्वलेस्स पडुच्च पचवन्ना जाव अठफासा पन्नत्ता, जाव कण्हलेस्साणं भंते ! कइवन्ना पुच्छा, गोयमा! दव्वलेस्स पडुच्च पचवन्ना जाव अठफासा पन्नत्ता, जाव लेस्सं पडुच्च अवन्ना एवं जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठि ३ चक्खुदंसणे ४ आभिणिबोहियणाणे ५ जाव

॥ अनुवाद ॥ अन्तराय एतानि यावच्चतु स्पर्शानि । कृष्णलेश्या भदन्त ! कतिवर्णा पृच्छा, गौतम । द्रव्यलेश्या प्रतीत्य पञ्चवर्णा यावदष्टस्पर्शा. प्रज्ञप्ता । भाव लेश्या प्रतीत्यावर्णा एव यावच्छुक्ललेश्या (इह यावत् करणान्नीललेश्यादिपरिग्रहावसानानायग्रहणम्) सम्यग्दृष्टिर्मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि ३ ... दसस्पर्शा नवर पुद्गलास्तिकाय पञ्चवर्णो द्विगन्ध पञ्चरसो ऽष्टस्पर्शो प्रज्ञप्त । ज्ञानावरणीय यावत् (करणाद्दर्शनावरणीयादिपरिग्रह) अन्त

॥ भाषा ॥ इहां यावत् शब्दथकी, अहमत्थिकाए आगासत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमए आवलियामुहुत्ते इत्यादि, पुद्गलपरावर्त्त लगे ए सगलाइने अमूर्त्तपणाथकी अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कहवा । णवर पोग्गलत्थिकाए पचवन्ने दुगंधे पचरसे अठफासे पण्णत्ते । एतलोविशेष पुद्गलास्तिकाय पचवर्ण बेगन्ध पचरस आठ स्पर्श कह्या, अमूर्त्तपणा थकी । णाणावरणिज्जे जाव अतराइए एयाणि जाव चउफासाणि । ज्ञानावरणीकर्म १ दर्शनावरणीय कर्म २ यावत् अन्तरायकर्म ए आठेई वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ फरस ४ कहवा सूक्ष्मपुद्गल परिणाम थकी । कण्हलेस्साणं भते कइवन्ना पुच्छा । कृष्णलेश्या णा वाक्य.लकारे, हेभगवन् ! केतला वर्ण इत्यादि प्रश्न उत्तर । गोयमा दव्वलेस्स पडुच्च पचवन्ना जाव अठफासा प० । हेगौतम । द्रव्यलेश्या मूर्त्तद्रव्यछे तेमा टे ते आश्रयीने वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ फरस ८ कहवा । भावलेस्स पडुच्च अवन्ना एव जाव सुक्कलेस्सा । भावलेश्या ते जीव अन्तरपरिणाम ते आश्रयीने अ वर्ण अगन्ध ५ अरस स्पर्श कहवा, इम नोल कापोत तेजू पद्म शुक्लेश्या पणि कहवी । सम्मदिट्ठी २ चक्खुदसणे ४ आभिणिबोहियणाणे ५ जाव विभगणाणे ।

॥ टीका ॥

लेश्या आन्तर परिणाम', इह च कृष्णलेश्यादीनि परिग्रहसञ्ज्ञावसानानि अवर्णादीनि जीवपरिणामत्वात्' औदारिकादीनिच चत्वारिशरीराणि पञ्चवर्णादिविशेषणानि अष्टस्पर्शानिच वादरपरिणामपुद्गलरूपत्वात्, सर्वत्रच चतु स्पर्शत्वे सूक्ष्मपरिणाम कारण, अष्टस्पर्शत्वेच वादरपरिणाम

॥ मूल ॥

विभंगणाणे, आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना एयाणि अवन्नाणि ४, उरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे एयाणि अट्ठफासाणि, कम्मगसरीरे चउफासे, मणजोगेय वइजोगेय चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे, सा

॥ अनुवाद ॥

चक्षुदर्शनमचक्षुदर्शनमवधिदर्शन केवलदर्शन ४ आभिनिबोधकज्ञान यावत् (करणात् श्रुतज्ञानमवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान केवलज्ञान ५ मत्यज्ञान श्रुताज्ञान) विभङ्गज्ञान ८ आहारसञ्ज्ञा यावत् (कथनाद्भयसञ्ज्ञादिग्रहणम्) परिग्रहसञ्ज्ञा ४ एतानि (सर्वाणि) अवर्णानि ४। औदारिकशरीर यावत् (करणाद्वैक्रियशरीरमाहारकशरीरञ्च) तैजसशरीरमेतानि अष्टस्पर्शानि' कार्मणशरीर चतु स्पर्शम्, मनोयोगश्च वाग्योगश्च चतु स्पर्श.,

॥ भाषा ॥

सम्यग्दृष्टि १ मिथ्यादृष्टी २ सम्यग्मिथ्यादृष्टी ३, एव ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ केवल ४ ए चार दर्शन आभिनिबोधिकज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ मतिअज्ञान ६ श्रुतअज्ञान ७ विभगज्ञान ८ एव ८। आहारसन्ना जाव परिग्गहसन्ना एयाणि अवन्नाणि ४। आहारसन्ना १ भयसन्ना २ मैथुनसन्ना ३ परिग्रहसन्ना ४, ए कृष्णलेश्यादिक परिग्रहसंज्ञा पर्यन्त सर्व अवर्णादिक कहवा एहोने जीवपरिणाम थकी। ओरालियसरीरे जाव तेयगसरोरे एयाणि अट्ठफासाणि। औदारिकशरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारकशरीर ३ तैजसशरीर ४ ए चारशरीर पचवर्ण दोय गन्ध पच रस आठ स्पर्श कह्या एहने, बादरपरिणाम पुद्गलरूप पणाथकी। कम्मगसरीरे चउफासे। कार्मणशरीरे वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ४ एहने सूक्ष्मपरिणाम पुद्गलरूप पणाथकी। मणजोगे वइजोगेय चउफासे। मनोयोग वचनयोगे पच वर्ण दोय गन्ध पच रस चार फरस हुवे सूक्ष्मपरिणाम पुद्गल थकी। कायजोगे अट्ठफासे। काययोगे आठ स्पर्श कहवा, बादरपरिणाम पुद्गलरूप पणाथकी। सागारोवओगेय अणागारोवओगेय अवन्ना। साकारोपयोग तथा अनाकारोपयोग ए दोनोने आत्मधर्म पणाथको अवर्णादिक कहवा, इहा सगले चार स्पर्श सूक्ष्मपरिणाम कारण जाणवो आठस्प

॥ टीका ॥

कारण वाच्यमिति ॥ सव्वदव्वत्ति ॥ सर्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि ॥ अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवणेत्यादि ॥ बादरपुद्गलद्रव्याणि प्रतीत्योक्त सर्वद्रव्या णा मध्ये कानिचित्पञ्चवर्णादीनीति भावार्थ. ॥ चउफासा इत्येतच्च पुद्गलद्रव्याण्येव सूक्ष्माणि प्रतीत्योक्त ॥ एगगधेत्यादिच ॥ परमाण्वादिद्रव्याणि प्रतीत्योक्त यदाहपरमाणुद्रव्यमाश्रित्य–कारणमेवतदन्त्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणु ॥ एकरसवर्णगधो द्विस्पर्श कार्यलिङ्गश्चेति ॥ १ ॥ स्पर्शद्व यञ्च सूक्ष्मसम्बन्धिना चतुर्णां स्पर्शाना मन्यतरदविरुद्ध भवति तथाहि–स्निग्धोष्णलक्षण स्निग्धशीतलक्षणवा, रूक्षशीतलक्षण रूक्षोष्णलक्षणञ्चेति,

॥ मूल ॥

गारोवउगेय अणागारोवउगेय अवण्णा। सव्वदव्वाणं भंते ! कइवण्णा ? गोयमा ! अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता, अत्थेगइया

अनुवाद

कायजोगोऽष्टस्पर्श, साकारोपयोगश्चानाकारोपयोगश्चावर्ण। सर्वद्रव्याणि भदन्त। कतिवर्णानि ? गौतम ! कानिचित्सर्वद्रव्याणि पञ्चवर्णानि यावदस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि, कानिचित्सर्वद्रव्याणि पञ्चवर्णानि यावच्चतु स्पर्शानि, कानिचित्सर्वद्रव्याण्येकवर्णानि एकगन्धान्येकरसानि द्विस्प

॥ भाषा ॥

र्ण बादरपरिणाम कारण जाणवो। सव्वदव्वाण भंते कइवण्णा। सर्वद्रव्य धर्मास्तिकायादिकने हेभगवन्। केतला वर्णादि इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अ त्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा प०। हेगौतम। केतलाएक सर्वद्रव्य पंचवर्ण यावत् आठ स्पर्श, ए बादर पुद्गल द्रव्यआश्रयीने कह्यु, सर्वद्र व्य केतलाएक पचवर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ सहितहुवे। अत्थेगइया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता। केतलायेक सर्वद्रव्य पचवर्ण गन्ध २ रस ५ स्पर्श ४ कह्या, एह पुद्गल द्रव्यहीजने सूक्ष्मपरिणाम आश्रीने कह्यु। अत्थेगइया सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा पण्णत्ता। केतला एक सर्वद्रव्य एक वर्ण एक गन्ध एक रस दोय स्पर्शवन्त कह्या, ए परमाणू द्रव्यप्रते आश्रयीने कह्यं, ते बे स्पर्श सूक्ष्मसंबंधी चार स्पर्शमाहिला अनेरा अविरुद्ध दोयहुवे ते देखाडेछे–स्निग्ध उष्णलक्षण १ तथा स्निग्ध शीतलक्षण १ तथा रूक्ष शीतलक्षण १ तथा रूक्ष उष्णलक्षण १ इमहुवे। अत्थेगइया स व्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पं० एवं सव्वपएसावि सव्व पज्जवावि। केतलाएक सर्वद्रव्य अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कह्या, एतले धर्मास्तिकाय १

अवणेत्यादिच धर्मास्तिकायादिद्रव्याण्याश्रित्योक्त, द्रव्याश्रितत्वा त्प्रदेशपर्यवाणा द्रव्यसूत्रानन्तर तत्सूत्र तत्रच प्रदेशा द्रव्यस्य निर्विभागा ग्रंशा पयवास्तु धर्मा स्तेचैवकरणादेववाच्या –सव्वपएसाण भंते । कइवण्णा पुच्छा, गोयमा । अत्थेगइया सव्वपएसा पचवण्णा जाव अठफासा इत्यादि, एव पर्यवसूत्रमपि इहच मूर्त्तद्रव्याणा प्रदेशा पर्यवाश्च मूर्त्तत्वा द्वर्णादिक वर्णाद्यधिकारादेवेदमाह–जीवेणमित्यादि ॥ परिणाम परिणमइत्ति ॥ स्वरूप गच्छति कतिवर्णादिना रूपेण परिणमतीत्यर्थ. ॥ पचवण्णति ॥ गर्भव्युत्क्रमणकाले जीवशरीरस्य पञ्चवर्णादित्वात्' गर्भव्युत्क्रमणकाले जी

सव्वदव्वा एगवण्णा एगगंधा एगरसा दुफासा प०, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता, एव सव्वपएसावि, सव्वपज्जवावि, तीयद्धा अवण्णा.जाव अफासा पण्णत्ता, एवं अणागयद्धावि सव्वद्धावि जीवेण भंते ! गब्भ वक्कममाणे कइवण्ण कइगंध कइरस कइफासं परिणाम परिणमइ ? गो० ! पचवण्णं

र्शानि प्रज्ञप्तानि, कानिचित्सर्वद्रव्याण्यवर्णानि यावदस्पर्शानि प्रज्ञप्तानि । सर्वप्रदेशाअपि, सर्वपर्यवा अपि' अतीताद्धाऽवर्णा यावदस्पर्शा प्रज्ञप्ता, एवमनागताद्धापि सर्वाद्धापि । जीवो भदन्त ! गर्भ व्युत्क्रामन्कतिवर्ण कतिगन्ध कतिरस कतिस्पर्श परिणाम परिणमति ? गौतम ।

अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय३ जीवास्तिकाय ४ काल ५ ए आश्रयीने कह्यु, एहने अमूर्त्तपणाथकी द्रव्याश्रित पणाथकी प्रदेशने तथा पर्यायने तेमाटे द्रव्यसूत्र अनन्तर सूत्र कहेछे—तिहा द्रव्यना निर्विभाग अश ते प्रदेश कहिये अने पर्याय ते धर्म ते इम कहवा ,सव्वपएसाणंभंते कइवण्णा पुच्छा, गोयमा अत्थगइया सव्वपएसा पचवण्णा जाव अट्ठफासा इत्यादि, इम पर्यवसूत्र पणि कहवो इहा मूर्त्तद्रव्यना प्रदेशपर्यायने मूर्त्तद्रव्यपणा थकी वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ कह्या अमूर्त्त द्रव्यनाप्रदेश पर्यायने अमूर्त्तद्रव्यनी परे अवर्णादि कहवा । तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा पं० । अतीतकाल ते अवर्ण अगन्ध अरस अस्पर्श कहवो अमूर्त्तपणाथकी । एवं अणागयद्धावि सव्वद्धावि । इम अनागतकाल पणि कहवो इम सर्वकाल पणि कहवो वर्णादिकना अधिकारथीज कहेछे—जीवेण भंते गब्भ वक्कममाणे कइ वण्ण कइ गधं कइ रसं कइफास परिणामं परिणमइ । जीव णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! गर्भने

॥ टीका ॥

वपरिणामस्य पञ्चवर्णादित्वमवसेयमिति, अनन्तरं गर्भे व्युत्क्रामन्जीवो वर्णादिभिर्विचित्रं परिणाममेव जीवस्य यतो भवति तद्दर्शयितुमाह— कम्मत्तणमित्यादि ॥ कर्मत सकाशात् नो अकर्मत न कर्माणि विना जीवो विभक्तिभाव विभागरूप नारकतिर्यग्मनुष्यामरभवेषु नानारूप परिणाममित्यर्थ , परिणमति गच्छति तथा ॥ कम्मत्तणजएत्ति ॥ गच्छति ता स्ता न्नारकादिभावानिति जगत् जीवसमूहो जीवद्रव्यस्यैववा ; विशेषो

॥ मूल ॥

दुगंधं पचरसं अठफासं परिणामं परिणमइ । कम्मत्तणं भंते ! जीवे णोअकम्मत्त विभत्तिभाव परिणमइ , कम्मत्तणं जए णोअकम्मत्त विभत्तिभावं परिणमइ ? हंता गो० ! कम्मत्तणं तंचेव जाव परिणमइ , णोअक

॥ अनुवाद ॥

पञ्चवर्ण द्विगन्ध पञ्चरस अष्टस्पर्शपरिणाम परिणमते । कर्मतो भदन्त । जीवो नो अकर्मतोविभक्तिभाव परिणमति, कर्मतो जगत् नो अक मंतो विभक्तिभाव परिणमति ? हन्त गौतम । कर्मतस्तच्चैव यावत्परिणमति, नो अकर्मतो विभक्तिभाव परिणमति । तदेव भदन्त भदन्त ।

॥ भाषा ॥

विषे ऊपजतो थको केतला वर्ण केतला गंध केतला रस केतला स्पर्श परिणाम स्वरूपप्रतें जाव केतल वर्णादि रूपेकरी परिणमे इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पंचवर्ण दुगंधं पचरस अठफास परिणामं परिणमइ । हेगौतम । गर्भ ऊपजवाने काले जीव शरीरने पच वर्णादि पणाथको गर्भ ऊपजण कालनेविषे जीव परिणामने पचवर्णादि पणो जाणवो, तेमाटे पञ्चवर्ण दोय गन्ध पञ्च रस आठ स्पर्श परिणामे परिणमे पूर्वें गर्भप्रतें ऊपजतो जीव व र्णादिके करी विचित्रपणें परिणमे इसो कह्यो, हिवे विचित्र परिणामहीज जीवने जे कारणथकी हुवे ते देखाडतो कहेछे—कम्मओणभते जीवे णो अकम्म ओ विभत्तिभाव परिणमइ कम्मओण जए णो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ । कर्मथकी जाय पणि अकर्मथकी नही एतले कर्म विना नही जो व विभत्तिभाव ते विभागरूप जीव नारकी तिर्यञ्च मनुष्य देव भवनेविषे नानारूप परिणाम इत्यर्थ, तेहने तथाकर्मथकीज ,एत्तिजाइ, ते ते नारका दि भावाप्रतें ते जगत कहता सर्व जीवनो समूह नही कर्मविना ते नारकादि गति परिणामे परिणमे इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा कम्मओण तचेव जाव परिणमइ णो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ । हेगौतम । कर्मथकी इत्यादिक पूर्वें कह्यु तिमहीज यावत् परिणमें नही अकर्मथकी विभत्तिभा

जङ्गमाभिधानो जगति जङ्गमान्याहुरिति वचनादिति ॥ द्वादशशते पञ्चम १२ ॥ ५ ॥ जगतो विभक्तिभाव कर्मत इति पञ्च मोद्देशकान्ते उक्त सच राहुग्रसने चन्द्रस्यापि स्यादिति शङ्कानिरासाय षष्ठोद्देशकमाह-तस्य चेद मादिसूत्र-रायगिहे इत्यादि ॥ मिच्छ ते एव माहंसुत्ति ॥ इह तद्वचनमिथ्यात्व मप्रामाणिकत्वा त्कुप्रवचनसस्कारोपनीतत्वाच्च, ग्रहण हि राहुचन्द्रयो र्विमानापेक्ष नच विमानयो र्ग्रासकग्रस

म्मतं विभत्तिभावं परिणमइ सेवं भंते२ त्ति॥ दुवालसमसयरसय पंचमो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ५ ॥ रायगिहे जाव एवं वयासी—बहुजणेण भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ एवं खलु राहू चदं गेण्हइ एवं २, से कहमेयं भंते ! एव ? गोयमा ! जण्णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स जाव मिच्छं ते

इति ॥ द्वादशशतेपञ्चम ॥ १२ ॥ ५ ॥ राजगृहे यावदेवमवादीत्-बहुजनो भदन्त । अन्योन्यस्यैवमाख्याति यावदेव प्ररूप यति-एव खलु राहुश्चन्द्र गृह्णाति, एव खलु राहुश्चन्द्र गृह्णाति, तत्कथमेतन्मन्य एव ? गौतम ! यत्स बहुजनो न्योन्यस्यैवमाख्याति यावत्प्र

व नारकादि गतिपरिणामे परिणमे इत्यादि सर्व पूठलापरे कहवो । सेवभंते भंतेत्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्युं ते सर्व सत्यछे अन्यथा नही । दुवा लसमसयस्सयपंचमो उद्देसो सम्मत्तो । ए बारमा शतकनो पांचमो उद्देशो पूरोथयो १२ ॥ ५ ॥ पाछिले उद्देशे कर्मथी जीवने विभ क्तिभाव कह्यो ते राहुग्रसने पणिथाय ए आशङ्का टालवा भणी छट्ठा उद्देशो कहेछे—रायगिहे जाव एवंवयासी । राजगृह नगरनेविषे यावत् भगवन्त गौतम इमकहे । बहुजणेणं भंते अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ । घणा मनुष्य णं वाक्यालंकारे, माहोमाहि इमकहे । जाव एवंपरूवेइ । यावत् इम प्ररूपे । एव खलुराहू चंदं गेण्हइ एव २ । इम निश्चयें राहु चन्द्रप्रतें ग्रहे । सेकहमेयंभंते एव । ते किम एह हेभगवन् । इम इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जण्णं से बहुजणे अ ण्णमण्णस्स जाव मिच्छंते एवमाहंसु । हेगौतम । जेह भणी तेह घणामनुष्य माहोमाहि यावत् इमकहे, ते वचन मिथ्यात्व अप्रमाण वली कुत्सित प्रवचन सस्कार उपनीतपणा थकी ग्रहण ते राहु चन्द्रनी विमाननी अपेक्षायें हुवे पणि नही बेउं विद्यमानने ग्रासक ग्रसनीय सम्भवछे आश्रयनाश पणाथ

॥ टीका ॥

नीयसम्भवोस्ति ग्रासमात्रत्वा न्नरभवनानामिव, अथेद गृह मनेन ग्रस्त मितिदृष्ट स्तद्व्यवहार, सत्य सराहत्वाच्छाद्याच्छादकभावे सति नान्यथा, आच्छादनभावेनच ग्रासविवक्षाया मिहापि नविरोधइति, अथ यदत्र सम्यक् तद्दर्शयितुमाह-अहपुणेत्यादि ॥ खजणवण्णाभेत्ति ॥ खञ्जन दीपस

॥ मूल ॥

एव माहंसु, अह पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव महेसक्खे वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी, राहुस्सणं देवस्स णव णामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा—सिंघाडए जडिलए खत्तए खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे कण्हसप्पे। राहुस्स णं देवस्स पंच विमाणा

अनुवाद

रूपयतितत् मिथ्या त एव माख्यातवन्त, अह पुनर्गौतम। एव माख्यामि यावत्प्ररूपयामि-एव खलु राहुदेवो महर्द्धिको यावन्महासख्यो वरवस्त्रधरो वरमाल्यधरो वरगन्धधरो वराभरणधारी (अस्तीति क्रियाध्याहार) राहोर्देवस्य नव नामधेयानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शृङ्गाटको जटिलक क्षत्रक खरको दर्दुरो मकरो मत्स्य कच्छप कृष्णसर्प्प ए। राहोर्देवस्य पञ्चवर्णानि विमानानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-कृष्णानि नीलानि

॥ भाषा ॥

आच्छादकभावथका हुवे अन्यथा नही आच्छाद कनें भावे ग्रासनी विवक्षाने विषे इहा पणि विरोध नही, हिवे इहा जेतलो ते देखाडेछे—अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि जाव परूवेमि एव खलु राहुदेवे महिड्ढीए। ह वली हेगौतम इमकहु यावत् इम परूपोछो, इम निश्चये राहुदेव महाऋद्धिनो धणी। जाव महेसक्खे। यावत् महा ईश्वर आचरवन्त। वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी। प्रधान वस्त्रनो धरणहार प्रधान माल्यनो धरणहार प्रधान गन्धनो धरणहार प्रधान आभरणनो धरणहार। र हुस्सण देवस्स णवणामधेज्जा प० तं०। राहु देवना नव नामधेय कह्या ते कहेछे—सिंघाडए जडिलए खत्तए खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे कण्हसप्पे राहुस्सण देवस्स पंचविमाणा प० तं०। शृङ्गाटक ए पहिलो नाम १ जटिल २ चत्रक ए त्रीजो ३ खरक ४ दर्दुर ५ मकर ६ मच्छ ७ कच्छप ८ कृष्णसर्प ९ राहुदेवने पाच विमान कह्या ते कहेछे—किण्हा नीला लोहिया हलि‍द्दा सुक्किल्ला। कृष्णवर्ण १ नीलवर्ण २ लोहित व

सत्य ते निश्चे आच्छाद्य

को मनुष्य भवनो परे जिम कोई कहे एह घर इणे ग्रस्यो एहवो दृष्टव्यवहार

॥ टीका ॥

ह्लिकामल स्तस्य यो वर्णः स्तदाभा यस्य तत्तथा ॥ लाउयवरणाभेत्ति ॥ लाउयति ॥ तुम्बक तद्येहापक्कावस्थं ग्राह्यमिति ॥ भासरासिवरणाभेत्ति ॥ भस्मराशिवर्णाभं ततश्च किमित्याह-जयाणमित्यादि ॥ आगच्छमाणेवत्ति ॥ गत्वा ऽतिचारेण तत प्रतिनिवर्त्तमानः कृष्णवर्णादिना विमानेनेति शेष ॥ गच्छमाणेवत्ति ॥ स्वभावचारेण चरन्, एतेनच पदद्वयेन स्वाभाविकी गति रुक्ता ॥ विउव्वमाणेवत्ति ॥ विकुर्वणा कुर्वन् ॥ परियारेमाणेवत्ति ॥

॥ मूल ॥

पणत्ता, तंजहा—किरहा नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किल्ला, अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे प०, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवरणाभे पणत्ते, अत्थिणं लोहिए राहुविमाणे मंजिठवरणाभे पणत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवरणाभे पणत्ते, अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासिवरणाभे पणत्ते। जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चंदलेस्सं पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणं

॥ अनुवाद ॥

लोहितानि हारिद्राणि शुक्लानि ५। अस्ति कालकं राहुविमानं खञ्जनवर्णाभं प्रज्ञप्तम्' नीलकं राहुविमानमलाबुवर्णाभमस्तीति प्रज्ञप्तम्' लोहितं राहुविमानं मञ्जिष्ठवर्णाभमस्तीति प्रज्ञप्तम्, पीतकं राहुविमानं हारिद्रवर्णाभमस्तीति प्रज्ञप्तम्' शुक्लं राहुविमानं भस्मराशिवर्णाभमस्तीति प्रज्ञप्तम्। यदा राहुरागच्छन्वा गच्छन्वा विकुर्वन्वा परिचारयन्वा चन्द्रलेश्यां पुरस्तादावृत्य (चन्द्रापेक्षया) पाश्चात्येन व्यतिव्रजति

॥ भाषा ॥

र्ण ३ हालिद्दवर्ण ४ शुक्लवर्ण ५। अत्थिकालए राहुविमाणे खंजणवणाभे पं०। छे कालो कालिवर्णे राहुविमान खञ्जनकहता दीपमलिकामल तेहनो वर्ण तेहनी परे आभाकान्तिछे जेहनो ते खञ्जनवर्णाभ कहिये। अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवणाभे पं०। छे नीलवर्णे राहुनो विमान लाउय कहता तुम्बक तेहा अपक्वअवस्थाये यहनी ते काचा तुम्बाने वर्णे कहिये। अत्थिणं लोहिए राहुविमाणे मंजिठ्ठवणाभे प०। छे लोहित कहिये राते वर्णे राहुनो विमान मजीठवर्णे सरीखीवर्णछे जेहनो। अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवणाभे प०। छे पीलेवर्णे राहुनोविमान हलदवर्ण सरीखी कान्तिछे जेहनो एहवो कह्यो। अत्थि सुक्किल्लए राहुविमाणे भासरासि वणाभे प०। छे धवलो राहुनो विमान भस्मराशि जिसो छारनी राश जल

॥ टीका ॥

परिचारयन् कामक्रीडा कुर्वन्, एतस्मिन् द्वये ऽतित्वरया प्रवर्त्तमानो विसस्थुलचेष्टया स्वविमानमसमञ्जस चलयति' एतच्च द्वयमस्वाभाविकवि

॥ मूल ॥

पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पच्चच्छिमेण राहू, जदाणं राहू आगच्छमा
पच्चच्छिमेण वीईवयति, तदाणं पुरच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पच्चच्छिमेण राहू, जदाणं राहू आगच्छमा
णेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चंदलेस्सं पच्चच्छिमेणं आवरेत्ताणं पुरच्छिमेणं वीईवयइ
तदाणं पच्चच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पुरच्छिमेण राहू, एवं जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा

अनुवाद

(पश्चिमेन परेण यातीत्यर्थ) तदा पूर्वस्या (दिशि) चन्द्र (आत्मान) उपदर्शयति, पाश्चात्येन (पश्चिमाया दिशि) राहु (आत्मानमुप
दर्शयतीतियोग । यदा राहुरागच्छन्वा गच्छन्वा विकुर्वन्वा परिचारयन्वा चन्द्रलेश्या पश्चिमत आवृत्य पुरस्ताद्व्यतिव्रजति तदा पाश्चात्येन

॥ भाषा ॥

र्ला तेहवी काति कह्या । जदाण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा । जिवारे ण वाक्यालकारे, राहु जाइने अतिचा
रै करी तिहाथी पाछो निवर्त्ततो थको कृष्णवर्णादि विमाने करी इतिशेष स्वभावचारे करी चालतोथको इणे वेहु पदे स्वाभाविकीगति कही तथा
विकुर्वणा करतो परिचारणा काम क्रीडाप्रतें करतो ए वेहुपदे अति उतावलो प्रवर्त्तमान विसस्थुल चेष्टायें करी पोतानो विमान असमञ्जस चला
वे एतले ए वेपद अस्वाभाविकविमान गतिग्रहणनेकाजे कह्या । चदलेस्स पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणं पच्चच्छिमेण वीईवयइ । राहु पोताने विमानेकरी
चन्द्रलेश्याप्रते पूर्वदिशि थकी आवरीने पश्चिमदिशे जाय तिवारे राहुनो अपेक्षायें पूर्वदिशिनेविषे चन्द्र पोताना आत्माने देखाडे चन्द्रनी अपेक्षायें प
श्चिमदिशनेविषे राहु पोताना आत्माने देखाडे एतले जिवारे राहु चन्द्रविमानने पूर्वदिशे आवरी पश्चिमे जाय तिवारे पूर्वथी चन्द्रमा दीसे पश्चिम
थी राहु दीसे इत्यर्थ ए एक आलावो इम सगलीदिशि जाणवो । जदाणराहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा ।
जिवारे राहु अतिचारेकरी जाइने तिहाथी पाछो आवतोथको स्वाभावचारे करी चालतोथको विकुर्वणा करतोथको परिचारणा कामक्रीडा प्रतें क
रतोथको । चदलेस्सं पच्चच्छिमेण आवरेत्ताण पुरच्छिमेण वीईवयइ । चन्द्रनी लेश्या दीप्ति पश्चिमदिशे आवरीने ढाकीने पूर्वदिशिने विषे जावे । त

॥ टीका ॥ मानगतिग्रहणायोक्तमिति ॥ चंदलेसं पुरच्छिमेणं आवरेत्ताणंति ॥ स्वविमानेन चन्द्रविमानावरणे चन्द्रदीप्ते रावृतत्वा चन्द्रलेश्यां पुरस्ता दावृत्य पच्चच्छिमेणं वीइवयइति ॥ चन्द्रापेक्षया परेण यातीत्यर्थ ॥ पुरच्छिमेणं चंदे उवदंसेइ पच्चच्छिमेणं राहुत्ति ॥ राहूपेक्षया पूर्वस्यां दिशि चन्द्र आत्मान मुपदर्शयति, चन्द्रापेक्षयाच पश्चिमायां राहुरात्मान मुपदर्शयतीत्यर्थः एवंविधस्वरूपतायाच राहो चन्द्रस्य यद्भवति तदाह–जयाणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥ भणिया तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा, एवंचेव जाव तदाणं उत्तरपच्चच्छिमेण चंदे उवदंसेति दाहिणपुरच्छिमेण राहू। जदाणं राहू आगच्छमाणेवा गच्छ

अनुवाद चन्द्र उपदर्शयति पुरस्ताद्राहु , एवं यथा पौरस्त्येन पाश्चात्येनच द्वौ आलापकौ भणितौ तथा दक्षिणेनोत्तरतश्च द्वावालापकौ भणितव्यौ, एवमुत्तरपौरस्त्येन दक्षिणपाश्चात्येनच द्वावालापकौ भणितव्यौ, एवं दक्षिणपूर्वत उत्तरपश्चिमतश्च द्वावालापकौ भणितव्यौ एवं चैव यावत्तदा

॥ भाषा ॥ दाण पच्चच्छिमेण चंदे उवदंसेइ । तिवारे पश्चिमदिश चन्द्र आपणु आत्माप्रते दिखावे। पुरच्छिमेण राहु एम जहा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भणिया। पूर्वदिशें राहु दीसे ए बीजो आलावो १ जिम पूर्व पश्चिमे पहिलो आलावो तथा पश्चिम पूर्वे करी बीजोआलावो कर्यो २ जिम ए पूर्व पश्चिमे बे आलावा कह्या। तहा दाहिणेणय उत्तरेणय दो आलावगा भाणियव्वा। तिम दक्षिण उत्तरनपाते पणि बे आलावा कहवा दक्षिण उत्तर सघाते उत्तर दक्षिण सघाते बीजो आलावो ३ एवं ४। एव उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा। इम ईशान कूणि अने दाहिण नैऋतिकूणि ते सघाते दो आलावा कहवा, ते ईशानकूणि नैऋतिकूणि सघाते तथा नैऋतिकूणि ईशानकूणि सघाते बीजो एम ६। एव दाहिण पुरच्छिमेण। इम दाहिण कहता आग्नेयकूणि। उत्तर पच्चच्छिमेणय दो आलावगा भाणियव्वा। वायव्यकूणि ए सघाते पणि दोय आलावा कहवा। एवचेव जाव तदाण उत्तर पच्चच्छिमेण चंदे उवदसेइ। इमहाज पूर्वेकयो तिम करवो, यावत् तिवारे वायव्यकूणि राहु चन्द्रलेश्या

॥ टीका ॥

आवरेमाणे इत्यत्र द्विर्वचन तिष्ठतीति क्रियाविशेषणत्वात् ॥ चदेण राहुस्स कुच्छी भिणत्ति ॥ राहो रशस्य मध्येन चन्द्रोगत इति वाच्ये चन्द्रेण

॥ मूल ॥

माणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा चदलेस्सं आवरेमाणे२ चिट्ठइ, तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सा वदति एवं खलु राहू चद गिण्हइ । एव जदाण राहू आगच्छमाणेवा ४ चंदलेस्स आवरेत्ताणं पासेणं वीईवयइ तयाण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति–एव खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिणाए, एवं जदाण राहू आगच्छ

अनुवाद

त्तरपश्चिमेन चन्द्र उपदर्शयति दक्षिणपूर्वतश्च राहु । यदा राहुरागच्छन्वा गच्छन्वा विकुर्वन्वा परिचारयन्वा चन्द्रलेश्यामावृण्वन्२ तिष्ठति तदा मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति–एव खलु राहुश्चन्द्र गृह्णाति । एव यदा राहुरागच्छन्वा ४ । चन्द्रलेश्यामावृत्य पार्श्वतो व्यतिव्रजति तदा मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति–एव खलु चन्द्रेण राहो कुक्षिर्भिन्न , एव यदा राहुरागच्छन्वा ४ चन्द्रलेश्यामावृत्य प्रत्यवसर्पति तदा मनुष्य

॥ भाषा ॥

प्रतें आवरीने अग्निकूणि राहुजाय तिवारे उत्तर वायव्यकूणि चन्द्र दीसै। दक्षिण पूर्वदिक्षमेण राहु । अग्निकूण राहु दीसै इम इहा आठआलावा कह वा इण विध स्वभावपणें राहुने तथा चन्द्रनेज हुवे ते कहैछे–जदाण राहू आगच्छमाणेवा गच्छमाणेवा विउव्वमाणेवा परियारेमाणेवा । जिवारे राहु आवतोथको तथा जातोथको विकुर्वणा करतोथको परिचारणा कामक्रीडा करतोथको । चदलेस्स आवरेमाणे चिट्ठइ । चन्द्रलेश्याप्रते एतले चन्द्र ज्यो त्स्ना प्रते आच्छादतो थको रहै । तदाण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति । तिवारे ण वाक्यालकारे, मनुष्यलोकने विषे मनुष्यकहै। एव खलुराहू चद गिण्ह इ । इम निश्चै राहु महाग्रह चन्द्रप्रतें ग्रहेछे–एवं जदाण राहू आगच्छमाणेवा ४ । इम जिवारे राहु आवतोथको जातोथको विकुर्वणा करतो थको परिचारणा करतोथको । चंदलेस्स आवरेत्ताण पासेण वीईवयइ । चन्द्रलेश्या प्रते आच्छादाने पासे व्यतिव्रजे जाय । तदाणं मणुस्सलोए मणुस्सावद ति । तिवारे मनुष्यलोकने विषे मनुष्य कहै। एवं खलुचदेण राहुस्स कुच्छी भिणाए। इम निश्चै चन्द्रमा राहुनो कुक्षि भेदी राहुग्रमने माहे चन्द्र गयो इ सो कह्यु, जोई जे पणि चंद्रें राहुनी कुची भेदी इसो कह्यो । एव जदाणं राहू आगच्छमाणेवा ४ चदलेस्सं आवरेत्ताण पच्चोसक्कइ । इम जिवारे राहु आ

राहो कुक्षिं भिनत्तीति व्यपदिशतीति ॥ पच्चोसक्कइत्ति ॥ प्रत्यवसर्पति व्यावर्तते ॥ वतेत्ति ॥ वान्त परित्यक्त ॥ सपक्खि सपडिदिसति ॥ सपक्ष समानदिक् यथाभवति सप्रतिदिक् यथाभवतीत्येव चन्द्रलेश्या मावृत्या वष्टभ्य तिष्ठतीत्येव योग , अत आवरणमात्रमेवेद वैस्रसिक चन्द्रस्य राहुणाग्रसन नतु कार्म्मणमिति' अथ राहो र्भेदमाह–कइविहेणमित्यादि ॥ य श्चन्द्रस्य सदैव सन्निहित. सञ्चरति स ध्रुवराहु , आह च–कि

माणेवा ४ चदलेस्सं आवरेत्ताण पच्चोसक्कइ तदाण मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–एवं खलु राहुस्सण चदे वते, एव जयाण राहू आगच्छमाणेवा ४ जाव परियारेमाणेवा चदलेस्सं अहे सपक्खि सपडिदिसि आवरेत्ताणं चिठ्ठइ तयाण मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–एव खलु राहुणा चदे घत्थे, एवं २ । कतिविहेणं

लोके मनुष्या वदन्ति–एव खलु राहुणा चन्द्रो वान्त , एव यदा राहुरागच्छन्वा ४ । यावत्परिचारयन्वा चन्द्रलेश्यामध सपक्ष सप्रतिदिग् (क्रियाविशेषण पदद्वितयम्) आवृत्य तिष्ठति तदा मनुष्यलोके मनुष्या वदन्ति–एव खलु राहुणा चन्द्रो ग्रस्त', एव खलु राहुणा चन्द्रो ग्रस्त । कतिविधो भदन्त ! राहु. प्रज्ञप्त. ? गौतम ! द्विविधो राहु प्रज्ञप्तस्तद्यथा–ध्रुवराहुश्च पर्वराहुश्च । तत्र यो ध्रुवराहुः (अत्र से

वताथको तथा जातोथको विकुर्वणा करतोथको परिचारणा करतोथको चन्द्रलेश्या प्रतें आवरीने पाछो ओसरे पाछो वले इत्यर्थ । तदाण मणुस्सलो० मणुस्सावदति । तिवारे मनुष्यलोकने विषे सर्व मनुष्य कहे । एव खलु राहुस्सण चदे वते । एम निश्चे राहुयें चन्द्रमतें वम्योछे छोड्यो इत्यर्थ । एव जयाण राहू आगच्छमाणेवा ४ जाव परियारेमाणेवा । एम जिवारे राहु आवतोथको जातोथको विकुर्वणा करतोथको परिचारणा करतोथको । चदलेस्स अहेसपक्खि सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठइ । चन्द्रलेश्याप्रतें नीचे चारेदिशि चारेविदिशि आवरीने आच्छादीने ढांकीने इत्यर्थ रहे । तदाण मणुस्सलोए मणुस्सावदति । तिवारे मनुष्यलोकने विषे मनुष्य इम कहे । एव खलु राहुणा चदेघत्थे एव २ । इम निश्चे राहु चन्द्रमाप्रतें ग्रस्यो ग्रह्यो इत्यर्थ इम २, हिवे राहुनोज भेद कहेछे । कइविहेणभते राहू पणत्ते । केतलेप्रकारे हेभगवन् । राहु कह्यो । तिवारे उत्तर । गोयमा दुविहे राहू प० त० । हे

॥ टीका ॥

यदराहुविमाण निच्चचंदेणहोइअविरहियं ॥ चउरंगुलमप्पत्तं हेठाचंदस्सतचरइत्ति ॥ १ ॥ यस्तु पर्वणि पौर्णमास्यमावस्ययो श्चन्द्रादित्ययो रुपराग करोति स पर्वराहुरिति ॥ तत्यण जे से धुवराहु इत्यादि ॥ पाडिवएत्ति ॥ प्रतिपद आरभ्येतिशेष , पञ्चदशभागेन स्वकीयेन करणभूतेन पञ्चद शभाग ॥ चंदस्सलेस्सति ॥ विभक्तिव्यत्यया चन्द्रस्य लेश्याया श्चन्द्रबिम्बसम्बन्धिन मित्यर्थ , आवृणवन् २ प्रत्यह तिष्ठति ॥ पढमाएत्ति ॥ प्रथमतिथौ ॥ पण्णरसेसुत्ति ॥ पञ्चदशसु दिनेषु अमावास्याया मित्यर्थ ॥ पणरसम भाग आवरित्ताण चिठइत्ति ॥ वाक्यशेष „ एवच यद्भवति तदाह-चरिमे

॥ मूल ॥

भंते ! राहू पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे राहू प०, तंजहा—धुवराहूय पव्वराहूय । तत्यणं जे से धुवराहू सेणं वहुलस्स पक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसभागं चंदलेस्सं आवरेमाणे २ चिठइ, तंजहा पढमाए पढमं भागं, वितियाए वितिय भागं, जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं, चरमसमए चंदे रत्ते भवइ

अनुवाद

शब्दो मागधदेशीप्रसिद्ध) स वहुलस्य (कृष्णस्य) पक्षस्य प्रतिपद (आरभ्येति शेष) पञ्चदशभागेन पञ्चदशभागान् चन्द्रलेश्याया (विभक्तिव्यत्ययश्चात्र देशीत्वात्) आवृणवन्नावृणवन् तिष्ठति तद्यथा-प्रथमाया प्रथम भाग , द्वितीयाया द्वितीय भाग यावत्पञ्चदशसु

॥ भाषा ॥

गौतम । वेहूभेदे राहु कह्या ते कहेछे । धुवराहूय पव्वराहूय । जे चन्द्रने समीपे सदैव संचरे ते धुवराहु कहिये तथा जेह पर्वदिनने विषे पौर्णमासी तथा अमावास्याने विषे चन्द्रमा तथा सूर्यनो ग्रहण करे ते पर्वराहु कहिये । तत्यणं जेसे धुवराहू सेण बहुलस्स पक्खस्स पडिवाए । तिहां णं वाक्यालंका रे, जेह धुवराहु अन्धारा पखनी पडवाथकी आरम्भीने इतिशेष उत्तर । पणरसइ भागेण पणरसभाग चंदलेस्स आवरेमाणे २ चिठइ त० । पञ्चदश प नरेभागे स्वकीयकरण भूतेंकरी करे करीने चन्द्रनीलेश्याने चन्द्रबिम्ब सम्बन्धी प्रते इत्यर्थ, आवरतो थको २ दिनदिन प्रते रहे ते कहेछे—पढमा ओ पढम भाग निइयाए विइयंभाग । पहिलो तिथिनेविषे पहिलाभाग प्रते बीजी तिथिनेविषे बीजोभाग इम चोजार्गविषे चोजोभाग । जाव पणरसे सु पणरसम भाग चरमसमए चंदेरत्ते भवइ । इम यावत् पन्नर पन्नरमादिननेविषे एतले अमावस्याने विषे इत्यर्थ ,पणरसमआवरेत्ताण चिठइत्ति, वाक्य

॥ टीका ॥ त्यादि ॥ चरमसमये पञ्चदशभागोपेतस्य कृष्णपक्षस्यांतिमे काले कालविशेषेवा ; चन्द्रो रक्तो भवति, राहुणोपरक्तोभवति, सर्वथा प्याच्छादित इत्यर्थ , अवशेषे समये प्रतिपदादिकाले चन्द्रो रक्तोवा, विरक्तोवा, भवति, अंशेन राहुणोपरक्तो ऽशान्तरेणचानुपरक्त आच्छादितानाच्छादित इत्यर्थ ॥ तामेवत्ति ॥ तमेव चन्द्रलेश्यापञ्चदशभाग शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषुइति गम्यते, उपदर्शयन् २ पञ्चदशभागेन स्वयमपसरणात प्रकटयन् प्रकटय इत्यर्थ ॥ तामेवत्ति ॥ तमेव चन्द्रलेश्यापञ्चदशभाग शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषुइति गम्यते ... सर्वथाऽनाच्छादितत्वादिति, इहचाय भावार्थ –पोन स्तिष्ठति ॥ चरिमसमयेत्ति ॥ पौर्णमास्या चन्द्रो विरक्तो भवति, सर्वथैव शुक्लीभवतीत्यर्थ

॥ मूल ॥ तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसे माणे २ चिठइ , तं–पढमाए अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ । पढमंभाग जाव पण्णरसेसु पण्णरसम भागं चरमसमए चंदे रत्ते भवइ अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा

॥ अनुवाद ॥ (दिनेषु शेष) पञ्चदशम भाग (आवृत्य तिष्ठतीतिशेष) चरमसमये चन्द्रो रक्तो भवति, अवशेषे समये चन्द्रो रक्तोवा विरक्तोवा भव ति । तमेव (चन्द्रलेश्यापञ्चदशभाग) शुक्लपक्षस्य (प्रतिपदादिषु) उपदर्शयन्नुपदर्शयं स्तिष्ठति तद्यथा–प्रथमाया प्रथम भाग यावत्पञ्चद शसु (पौर्णिमाया) पञ्चदशम भाग (प्रकटयन् प्रकटय स्तिष्ठति) चरमसमये चन्द्रो रक्तो भवति । अवशेषे समये चन्द्रो रक्तो वा भवति

॥ भाषा ॥ शेष, पनरमोभाग आवरीने रहे इम जे हुवे ते कहेछे, पनरम भाग ते कृष्णपक्षने अतिमकाल विशेषने विषे सर्वथा पणि आच्छादित हुवे इत्यार्थ । अव सेसे समए चदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ । अवशेषथाकता समयनेविषे एतले प्रतिपदादि कालनेविषे चन्द्र रक्त अथवा विरक्तहुवे एतले अंशेकरी आच्छा दित अशान्तरे करी अनाच्छादित इत्यर्थ । तामेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिठ्ठइ त० । तामेवत्ति, तेहीज चन्द्रलेश्या पंचदश भाग शुक्लपक्षनी प्रतिप दाने विषे इति गम्यते देखाडतो थको २ पचदशभागे करी पोते, पाछै ओसरणथकी प्रगट करता रहे ते कहेछे—पढमाए पढम भाग जाव पण्णरसेसु पण्णरसमभाग चरमसमए चदे विरत्ते भवइ । पहिली तिथिनेविषे पहिलोभाग बीजीनेविषे बीजोभाग इम यावत् पनरमादिनने विषे पौर्णमासीने विषे इत्यर्थं पनरमो भाग इम करता जे हुवे ते कहेछे, शुक्लपक्षना अन्तिमकाल विशेषने विषे पूनिमने विषे इत्यर्थं चन्द्र विरक्त हुये एतले सर्वथा उघाडो हुवे

॥ टीका ॥

शनागीकृतस्य चन्द्रस्य षोडशोभागो ऽवस्थितएवास्ते' येचान्ये भागा स्तत्रराहु प्रतितिथ्येकैक भाग कृष्णपक्षे आवृणोति शुक्लेतु विमुञ्चतीति' उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके–सोलसभागेकाऊंण उडुवईहायएत्थपख्खस्स ॥ तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढईजोण्हत्ति ॥ १ ॥ इहतु षोडशभागकल्पना नकृता व्यवहारिणा षोडशभागस्या वस्थितस्या नुपलक्षणादिति सम्भावयामइति, ननु चन्द्रविमानस्यपञ्चैकषष्टिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात्, राहुविमानस्यच ग्रहविमानत्वेनार्द्धयोजनप्रमाणत्वा त्कथं पञ्चदशे दिने चन्द्रविमानस्य महत्त्वेनेतरस्यच लघुत्वेन सर्वावरण स्यादित्यत्रोच्यते, यदिद ग्रहविमानाना मर्द्धयोजनमिति प्रमाण तत्प्रायिक, ततश्च राहो र्ग्रहस्योक्ताधिकप्रमाणमपि विमान सम्भाव्यते, अन्ये पुनराहु –लघीयसोपि राहुविमा नस्य महता तमिस्ररश्मिजालेन तदाव्रियतइति, ननु कतिपयान् दिवसान् यावद्ध्रुवराहुविमान वृत्त मुपलभ्यते ग्रहणाइवकतिपयाश्च न तथेति किमत्र कारणम् ? अत्रोच्यते येषु दिवसेषु अत्यर्थ तमसा भिभूयते शशी तेषु तद्विमान वृत्तमाभाति, येषु पुन र्नाभिभूयते सोविशुध्यमानत्वा त्तेषु नवृत्त माभाति, तथाचोक्त विशेषणवत्याम्–वट्टच्छेउकइवय दिवसेधुवराहुणोविमाणस्स । दीसइपरनदीसइ जहगहणेपव्वराहुस्स ॥ १ ॥ आचार्यआह–अव्वत्थनहितमसा भिभूयतेजससीविसुज्झतो तेणनवट्टच्छेउं गहणेउतमोतमोबहुलोत्ति ॥ १ ॥ तत्थण जेसे पव्वेत्यादि ॥ वायलीसाए

॥ मूल ॥

भवइ । तत्थणं जे से पव्वराहू से जहन्नेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं वायालीसाए मासाणं चंदस्स, अड

॥ अनुवाद ॥

विरक्तोवा भवति । तत्र य पर्वराहु स जघन्येन षड्भिर्मासैरुत्कर्षतोद्विचत्वारिंशता मासाना चन्द्रस्य, अष्टचत्वारिंशता सवत्सराणा सूरस्य

॥ भाषा ॥

इहा ए भावार्थ चन्द्रमण्डलना सोलैभाग कीजे एहवो सोलमोभाग नित्य उघाडो रहै पणि इहा अल्पपणाथकी विवक्षा न कीधी इसी सम्भावना कीजै । अवसेसे समए चंदे रत्तेवा विरत्तेवा भवइ । अवशेष थाकता समयनेविषे चन्द्र रक्तहुवे अथवा विरक्तहुवे । तत्थण जेसेपव्वराहू से जहन्नेण छण्ह मासाण उक्कोसेण वायालीसाए मासाण । तिहा ण वाक्यालंकारे, जे पर्व राहुछे ते जघन्यथको छठे महीने चन्द्रमण्डलने आच्छादीने रहै उत्कृष्टथको वयालीस मास एतले साढातीन वरस पछे । चंदस्स अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स । चन्द्रनो लेश्याने आवरीने रहै इति गम्यं, सूर्यने पणि इमज कहवो जघ

मासाश ॥ सार्द्धस्य वर्षत्रयस्योपरि चन्द्रस्य लेश्या मावृत्य तिष्ठतीतिगम्यं, सूरस्याप्येव उत्कृष्टतया ऽष्टचत्वारिंशता संवत्सराणामिति, अथ चन्द्रस्यैव "शशित्ति„ यदभिधान तस्यान्वर्थाभिधानायाह-सेकेणमित्यादि ॥ मियकेत्ति ॥ मृगचिह्नत्वा न्मृगाङ्के विमाने धिकरणभूते ॥ सोमेत्ति ॥ सोम्यो रौद्राकारो नीरोगोवा ॥ कतेत्ति ॥ कान्तियोगात् ॥ सुभगत्ति ॥ सुभग सौभाग्ययुक्तत्वा द्वल्लभो जनस्य ॥ पियदसणेत्ति ॥ प्रेमकारिदर्शन, कस्मादेवमतआह-सेतेणेत्यादि ॥ सुरूपो ऽथ तेन कारणेनोच्यते ॥ ससीति ॥ सह श्रिया वर्त्ततइति सश्री, तदीयदेवानां स्वस्यच कान्त्यादियुक्त

यालीसाए संवच्छराणं सूरस्स । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ चंदे ससी ? गोयमा ! चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसिरस्रो मियंके विमाणे कंता देवा कंताउ देवीउ कताइं आसणसयणखंभंभंडमत्तोवगरणाइ अप्पणा वियणं चंदे जोइसिंदे जोइसिराया सोमे कंते सुभगे पियदसणे सुरूवे सेतेणठेणं जाव ससी । सेकेणठेणं

(लेश्यामावृत्यतिष्ठतीतिगम्यम्) अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-चन्द्र शशी ? गौतम ! चन्द्रस्य ज्योतिषेन्द्रस्य ज्योतिषराज्ञो मृगाङ्के विमाने, कान्ता देवा, कान्ता देव्य, कान्तान्यासनशयनस्तम्भभाण्डमात्रोपकरणानि, आत्मनापिच चन्द्रो ज्योतिषेन्द्रो ज्योतिषराजा सौम्य कान्त सुभग प्रियदर्शन सुरूपस्तत्तेनार्थेन यावत् (शशकान्ता विवितधातुरदन्तशौरादिकोस्ति' ततो णिगन्तस्य तस्य शशन शश

न्य मास एतलोविशेष उत्कृष्टथको अडतालीसे वरसे आवरे इसो कह्यो । सेकेणठेणं भंते एव वुचइ चंदेससी । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम काह्यु चन्द्रमाने शसि एहवे नामे किम कहिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा चंदस्सण जोइसिंदस्स जोइसरणो । हेगौतम । चन्द्रने ज्योतिषीना इन्द्रने ज्योतिषीना राजाने । मियके विमाणे कतादेवा कताओ देवीओ । मृगाङ्कनामे विमान मृगचिन्ह तेहनेविषेछे तेमाटे मनोहर देवछे मनोहर देवीओछे । कताइ आसण सयण खंभ भंडमत्तो वगरणाइ । मनोहर आसन शयन थम्भा भण्डमात्र उपगरण ते पिण मनोहरछे । अप्पणाविय चंदे जोइसिंदे जोइसिराया । आपणपे पणि चन्द्रदेव ज्योतिषीनो इन्द्र ज्योतिषीनो राजा । सोमेकंते सुभगे पियदसणे सुरूवे । सौम्य रौद्राकार नहो अथवा निरोग कांतियोग थको

॥ टीका ॥ त्वादिति, प्राकृतभाषापेक्षयाच ससीतिसिद्धम्, अथ आदित्यशब्दस्या न्वर्थाभिधानायाह-सेकेणमित्यादि ॥ सूराइयत्ति ॥ सूर आदि प्रथमो येषा ते सूरादिका, केइत्याह-समयाइवत्ति ॥ समया अहोरात्रादिकालभेदाना निर्विभागा अंशा स्तथाहि-सूर्योदय मवधि कृत्वा ऽहोरात्रार म्भक समयो गण्यते, आवलिकामुहूर्त्तादयश्चैति ॥ सेतेणेत्यादि ॥ अथ तेनार्थेन सूर आदित्य इत्युच्यते, आदौ अहोरात्रसमयादीना भव आदित्य

॥ मूल ॥ भंते ! एवं वुच्चइ—सूरे आइच्चे सूरे २ ? गोयमा ! सूरादियाणं समयाइवा आवलियाइवा जाव उस्सप्पि णीइवा अवसप्पिणीइवा सेतेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आइच्चे । चंदस्सणं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कइ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? जहा दसमसए जाव णोचेवणं मेहुणवत्तियं । सूरस्सवि तहेव । चंदिम

अनुवाद इति घञ् प्रत्यये शश इति भवति, ततश्च सोस्यास्तीति) शशी । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते, सूर आदित्य. सूर आदित्य. ? गौतम ! सूरादिका समया इति वा आवलिका इति वा यावदुत्सर्प्पिणीतिवा अवसर्पिणीतिवा तत्तेनार्थेन गौतम ! यावदादित्य । चन्द्रस्य भदन्त ! ज्योतिषेन्द्रस्य ज्योतिकराज्ञ कति अग्रमहिष्य. प्रज्ञप्ता ? यथा दशमशते यावन्नैवच मैथुनप्रत्ययम् । सूरस्यापि तथैव । चन्द्रमस सूर्यांश्च

॥ भाषा ॥ सुभग सौभाग्य युक्तपणा थको जनने वल्लभ प्रेमकारी दर्शनछे स्यामाटे ते कहिछे, सुरूपछे । सेतेणट्ठेणं जाव ससी । ते तेणे अर्थे इम कहिये यावत् ससी । सेकेणट्ठेणं भंते एव वुच्चइ सूरे आइच्चे सूरे २ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कहिये सूर्य अने अपरनामे आदित्य इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सूरादियाणं स मयाइवा आवलियाइवा जाव उस्सप्पिणीइवा अवसप्पिणीइवा । हेगौतम ! सूर्यछे आदि जेहने ते सूर्यादिक कुण ते कहेछे—समय अहोरात्रादि काल भेदनो निर्विभाग अंश तथाहि सूर्योदय अवधिकरी, अहोरात्रिनो आरम्भक समय गिणिये आवलियामुहूर्त्तादि यावत् उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी । सेतेण ट्ठेण गोयमा जाव आदिच्चे । ते तेणे अर्थे हेगौतम ! सूर्य आदित्य कहिये, हिवे चन्द्र सूर्यनेज अग्र महिस्यादि देखाडतो कहेछे—चंदस्सणभंते जोइसिंद स्स जोइसिरण्णो कइ अमग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ । चन्द्रने हेभगवन् ! ज्योतिषी इन्द्रने ज्योतिषी राजाने केतली अग्रमहिषी कही । जहा दसमसए जाव

॥ टीका ॥

इति व्युत्पत्ते' ' त्यप्रत्ययश्चेहार्यत्वादिति, अथ तयोरेवाग्रमहिष्यादिदर्शनायाह–पढमयौवनोत्थाने प्रथमयौबनोद्गमे यद्बल प्राण स्तत्र यस्तिष्ठति स तथा ॥ अचिरवत्तविवाहकज्जे ॥ अचिरवृत्तविवाहकार्य. ॥ वण्णे–महव्वलेत्ति ॥ महावलोद्देशके वासगृहवर्णको दृश्य इत्यर्थं ॥ अणुरत्ताएत्ति ॥ अनुरागवत्या ॥ अविरत्ताएत्ति ॥ विप्रियकरणेप्यऽविरक्तया ॥ मणाणुकूलाएत्ति ॥ पतिमनसोनुकूलवृत्तिकया ॥ विउसमणकालसमयसित्ति ॥ व्यवश

॥ मूल ॥

सूरियस्सणं भंते ! जोइसिंदा जोइसिरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ? गोयमा ! से जहाणामए केइपुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवासविप्पवासिए सेणं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमए पुणरवि णियगं गिहं

अनुवाद

भदन्त । ज्योतिरिन्द्रा ज्योतिषराजान कीदृशान्कामभोगान्प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति ? गौतम । स यथानाम कश्चित्पुरुष प्रथमयौवनोत्थान बलस्य प्रथमयौवनोत्थानबलस्यया भार्यया सार्द्धं मचिरवृत्तविवाहकार्यो ऽर्थगवेषणतया (अर्थगवेषणनिमित्तम्) षोडशवर्षविप्रवासित (षोडश वर्षाणि यावत् विशेषतो देशान्तरे प्रवास कृतवानित्यर्थं) स ततो लब्धार्थ कृतकार्यो ऽनघसमये (अणहसमग्गत्ति क्वचित्, अनघ, अत

॥ भाषा ॥

यं। चेवणं मेहुणवत्तियं । जिम दशमा शतकनेविषे कह्यु तिम कहवो यावत् नहो निश्चे मैथुनप्रत्यय एतलालगे कहवा । सूरस्सवि तहेव । सूर्यने पणि तिमहीज कहवो । चंदिम सूरयस्सण भते जोइसिंदा जोइसिरायाणो । चन्द्र सूर्य णं वाक्यालंकारे, हेभगवन् । ज्योतिषीना इन्द्र ज्योतिषीना राजा ते । केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणाविहरति । केहवा एक कामभोग भोगवताथका विचरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहाणामएकेइपुरिसे । हेगौतम ते यथानामे यथा दृष्टांते कोईएक पुरुष । पढमजोव्वणट्ठाणबलत्थे पढम जोव्वणट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरत्त विवाहकज्जे अत्थगवेसणत्ताए सोलसवास विप्पवासिए । पहिला यौवनने उदयथया जे बल कहिये प्राण तेहने विषे रहे तत्काल हुयोछे वीवाह एहवी भार्यासंघाते वीवाह कीधा थोडोकाल हुयो तेह वीवाह करीने अर्थनो गवेसणाने अर्थे सोले वरस लगे परदेशे गयो । सेणतओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमए । तेह तिहां अर्थप्रते पा

॥ टीका ॥ मन पुवेदयिकारोपशम स्तस्य य कालसमय स तथा तत्र रतावसाने इत्यर्थं , इति भगवता पृष्टो गौतम आह–उराल समणाउसोत्ति । तस्सण

॥ मूल ॥ हव्वमागए राहाए कयवलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुण्णं थालीपाकसिद्धं अठा रसवंजणाउलं भोयणं भुंजेसमाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि वण्णओ–महब्बले जाव सयणोवयारकलिए ताए तारिसयाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए

अनुवाद रथ समग्र, द्रव्य यस्य, तथा सन्) पुनरपि निजक गृह शीघ्रमागत. स्नात कृतवलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्त सर्वालङ्कारविभूषितो मनोज्ञ स्थालीपाकसिद्धमष्टादशव्यञ्जनाकुल भोजन भुक्त सन् तस्मिन् तादृशके वासगृहे वर्णको महावलो (महावलवासगृहवत्, अन्त सधि प्रक्रमंगीत्यादि) यावच्छयनोपचारकलिते तया तादृशया भार्यया शृङ्गारागारचारुवेपया कलितयाऽनुरक्तयाऽविरक्तया मनोनुकूलतया सार्द्धं

॥ भाषा ॥ थयां कीधा समला कार्य, कार्यकरवा समर्थ समस्त विषे निर्विघ्नपणेकिणही चित्ते लूण्या नही ते । पुणरवि णियग गिह हव्वमागए राहाए । वली पोता ना घरनेविषे उतावलो आव्यो आवीने स्नान कीधो । कयवलिकम्मे कयकोउय मंगलपायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए । बलिकर्म कीधा कीधा कौतुक भणी मंगल प्रायश्चित सर्व अलंकारे, करी विभूषित थयो । मणुण्णं थालीपाकसिद्धं अट्ठारसवंजणाउलभोयणभुत्ते समाणे । ते मनोज्ञ थालीपाके रंधो पर पक्व अढारप्रकारना व्यञ्जन तिणेकरी सहित तेह भोजन भोगव्या थका कीधायका । तंसि तारिसगंसि वासघरंसि वण्णओ । तेह तेहवे रूपने वि षे वासघरनेविषे वर्णक । महब्बले जाव सयणोवयारकलिए । महाबलने उद्देशे वासघरवर्णाव्यो तेहवो वासघर यावत् शयनीय पूजोपचार सहित तेहने विषे । ताए तारिसयाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए । तेह तेहवे रूपसहित भार्या स्त्री शृङ्गारनो वर मनोहर वेसछे जेहनो । जाव क लियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धि । यावत् ६४ कलाने सहित अनुरागवन्त, विप्रिय करणे पणि विरक्त नही एतले रातीछे तिणेवारी पतिना मनने अनुकूल वर्तेछे जेहनो एहवी सघाते । इट्ठे सद्दे फरिसे जाव पचविहे माणुस्सए । इष्टवल्लभ शब्द स्पर्श यावत् शब्दनो रूप रस गन्ध ए

॥ टीका ॥

गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो ॥ इत्यादि "एत्तोत्ति" शब्दो योज्यते, तत एतेभ्य उक्तस्वरूपेभ्यो व्यन्तराणां देवानां अनन्तगुणविशिष्टताश्चैव

॥ मूल ॥

सद्धिं इठे सद्दे फरिसे जाव पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । तासेणं गोयमा ! पु
रिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसय सातसोक्ख पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? उरालं समणाउसो ! तस्सणं
गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिठतराचेव कामभोगा, वाण
मंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिठतराचेव

अनुवाद

इष्टान् शब्दान् यावत् (करणाद्रूपादीनि) स्पर्शान् पञ्चविधान् मानुषान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरति (विहरेत्) तावद्गौतम । स पुरुषो
व्यवशमनकालसमये कीदृशं सातसौख्य प्रत्यनुभवन्विहरति ? उदारं श्रमण ! आयुष्मन् ! एतेभ्यस्तस्य पुरुषस्य कामभोगेभ्यो वानव्यन्तराणां
देवानामनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगा (भवन्तीतिशेषः) एतेभ्यो वानव्यन्तराणां देवानां कामभोगेभ्यो असुरेन्द्रवर्जितानां भवनवा

॥ भाषा ॥

पञ्चप्रकारे मनुष्यसंबंधी । कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । कामभोग भोगवतोथको विचरे । तासेणं गोयमा पुरिसे । तथी ते व्यवशमनकाले, पे
गौतम । तेह पुरुष । विउसमणकालसमयंसि केरिसय सातसोक्ख पच्चणुब्भवमाणे विहरइ । व्यवशमन कहिये पदपदिटना विकारनो जे उपशम तेहनो
जे काल समय तिहां प्रवर्त्तमान छेहडे पतने वीर्य धरण रति समवर्त्तेपि केहवो साताभूत भोगवतोथको विचरे एहवो भगवन्ते गौतमने पूछ्यो तिवारे
गौतम कहे । उराल समणाउसो । मोटो साताभूत भोगवतो थको विचरे हेश्रमण । आयुष्मन् । तस्सणं गोयमा पुरिसस्स कामभोगेहिंतो । तेहने हे गौतम
स । पुरुषना कामभोगथको । वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिठतराचेव कामभोगा । वानव्यन्तर देवना एहथको अनन्तगुण अतिविशिष्टतरप
णे निश्चे कामभोग छे जिणकोपना पुस्तके एत्तो, शब्द नथी पछिछे । वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो । एवा वानव्यन्तर जे पातालवासी देव तेह
ना कामभोग थकी । असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो । असुरेन्द्र वर्जीने भवनपति देवना एहथको । अणंतगुणविसिठतराचेव कामभो

॥ मूल ॥

याण एत्तो अणंतगुणविसिठतराचेव कामभोगा, गहगणणक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोइ
सियाणं जोइसिरायाणं एत्तो अणतगुणविसिठतराचेव कामभोगा, चंदिमसूरियाणं गोयमा ! जोइसिदा
तगुणविसिठतराचेव कामभोगा, असुरकुमाराण देवाणं कामभोगेहिंतो गहगणणक्खत्ततारारूवाणं जोइसि
कामभोगा, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणं

अनुवाद

सिना देवानामनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगा । असुरेन्द्रवर्ज्जिताना भवनवासिना देवाना कामभोगेभ्यो ऽसुरकुमाराणा देवाना एतेभ्यो
ऽनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव कामभोगा , असुरकुमाराणा देवाना कामभोगेभ्यो ग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणा ज्योतिष्काणामेतेभ्योऽनन्तगुणविशिष्टत
राश्चैवकामभोगा , ग्रहगणनक्षत्र (प्रभृति) यावत्कामभोगेभ्यश्चन्द्रसूर्याणा ज्योतिष्काणा ज्योतिष्कराजानामेतेभ्यो ऽनन्तगुणविशिष्टतराश्चैव काम
भोगा (भवन्तीति सर्वत्रयोज्यम्) चन्द्रमस सूर्याश्च गौतम। ज्योतिषेन्द्रा ज्योतिष्कराजान ईदृशान्कामभोगान्प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति। तदेव

॥ भाषा ॥

गा। अनन्तगुण अतिविशिष्टतर निश्चे कामभोग हुवे। असुरिंदवज्जियाण भवणवासियाण देवाण कामभोगेहिंतो। असुरेंद्र वर्ज्जीने भवनवासी देवाना
कामभोग थकी। असुरकुमाराणदेवाण एत्तो। असुरकुमार देवना एहथकी। अणतगुणविसिठतराचेव कामभोगा। अनन्तगुण विशिष्टतर निश्चे काम
भोग कह्या। असुरकुमाराणं देवाणंकामभोगेहिंतो। असुरकुमार देवना कामभोग थकी। गहगण णक्खत्त ताराख्वाणं जोइसियाणं एत्तो। ग्रहगण न
क्षत्र तारा रूप ज्योतिषीना एहथकी। अणंतगुणविसिठतराचेव कामभोगा। अनन्तगुण अतिविशिष्ट तर निश्चे कामभोग कह्या। गहगणणक्खत्त जाव
कामभोगेहिंतो। ग्रह गण नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषीना कामभोग थकी। चंदिम सूरियाण जोइसियाणं जोइसि रायाणं। चन्द्रमा सूर्यना ज्योतिषीना
ज्योतिषी राजाना। एत्तो अणंतगुण विसिठतराचेव कामभोगा। एहथकी अनन्तगुण अतिविशिष्ट तर निश्चे कामभोग कह्या। चंदिम सूरियाणं गोय
मा जोइसिंदा जोइसिरायाणो। चन्द्रमा सूर्य ण वाक्यालकारे, हेगौतम । ज्योतिषीना इन्द्र ज्योतिषीना राजा। एरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा

॥ टीका ॥ परमाणुपोग्गलमेत्तेविवित्ति ॥ ॥ इत्ता पि सम्भावनायां ॥ अयासयस्सत्ति ॥ षष्ठ्या श्चतुर्थ्यर्थत्वा दजाशताय ॥ अयावयंति ॥ अजाव्रज अजावाटकमि त्यर्थं ॥ उक्कोसेण अयासहस्स पक्खिवेज्जत्ति ॥ यदिहाजाशतप्रायोग्ये वाटके उत्कर्षेणाजासहस्रप्रक्षेपणमभिहितं तत्तासामतिसङ्कीर्णतया वस्थान स्थापनार्थमिति ॥ पउरगोयराउ पउरपाणीयाउत्ति ॥ प्रचुरचरणभूमयः प्रचुरपानीयाश्च ऽनेनच तासां प्रचुरमूत्रपुरीषसम्भवो बुभुक्षापिपासावि

॥ मूल ॥ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, सेणं तत्थ जहन्नेण एगंवा दोवा तिन्निवा, उक्कोसेणं अया सहस्सं पक्खिवेज्जा, ताउणं तत्थ पउरगोयराउ पउरपाणीयाउ जहन्नेणं एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थिणं गोयमा ! तस्स अयावयस्स केइपरमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे

अनुवाद तिस्रोवा, उत्कर्षतो ऽजासहस्रं प्रक्षिपेत्, ताश्च तत्र प्रचुरगोचरा प्रचुरपानीया जघन्येनैकाहं वा द्व्यहं वा त्र्यहंवा, उत्कर्षत षण्मासान् (यावत्) परिवसेयु, अस्ति गौतम ! तस्याजाव्रजस्य कश्चित्परमाणुपुद्गलमात्रोपि प्रदेशो यस्तासामजानामुच्चारेवा प्रश्रवणेनवा श्लेष्मणावा

॥ भाषा ॥ जाछाली तेहना ग्रहणकडाने अर्थे । एगमहं अयावयं करेज्जा । एक मोटो अजाव्रज कहिये छालनो वाडो करे । सेण तत्थ जहण्णेण एगवा दोवातिण्णिवा । तेह पुरुष तिहां वाडामाहें जघन्यथकी एक अथवा दोय अथवा तीन । उक्कोसेण अयासहस्स पक्खिवेज्जा । उत्कृष्टथकी अजासहस्र प्रक्षेपकरे जे इहां अजाशत योग्य वाडानेविषे उत्कृष्टथकी अजासहस्रनो प्रक्षेप कह्यो ते तेहने अति सङ्कीर्णपणे अवस्थानप्रते कहवाने । ताओ ण तत्थ पउरगोयराओ प उरपाणीयाओ जहण्णेण एगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा, उक्कोसेण छम्मासे परिवसेज्जा । तेह ते वाडानेविषे घणी चरवानी भूमिकाओ घणो पाणी ए तले तेहने घणामूत्र पुरिषनो सम्भव कह्यो, अने भूख तृषाने सुख पणि चिरञ्जीवित पणो पणि कह्यो ते जघन्ये एकदिन अथवा दोयदिन अथवा तीन दिन उत्कृष्टथकी छमास ते अजा ते वाडामाहें रहे । अत्थिण गोयमा तस्सअयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे । छे हेगौतम ! तेह अजाछा लीना वाडाना कोई परमाणु पुद्गलमात्र पणि प्रदेश । जेणं तासिं अयाणं । जेह णं वाक्यालंकारे, तेह अजाने । उच्चारेणवा पासवणेणवा खेलेणवा सि

॥ टीका ॥ रहेण सुस्थतया चिरजीवित्वचोक्त ॥ नहेहिंवत्ति ॥ नखा खुराग्रभागा स्तै ॥ नोचेवणं एयसि ए महालयंसि लोगंसि इत्यस्य अत्थि केइ परमा

॥ मूल ॥ जेणं तासि ऋयाणं उच्चारेणवा पासवणेणवा खेलेणवा सिंघाणेणवा वंतेणवा पित्तेणवा पूएणवा सुक्केणवा सोणिएणवा चम्मेहिवा रोमेहिवा सिंगेहिवा खुरेहिवा णहेहिंवा ऋणिक्कंतपुव्वे भवइ ? णोइणट्ठे समट्ठे होज्जाइणं गोयमा ! तस्स ऋयावयस्स केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जेणं तासिं ऋयाणं उच्चारेणवा जाव णहेणवा ऋणिक्कंतपुव्वे णोचेवणं एयसि एमहालयंसि, लोगस्स सासयं भाव ससारस्स ऋणादिभावं

अनुवाद सिंघाणेनवा वान्तेनवा पित्तेन वा पूयेन वा शुक्रेणवा शोणितेनवा चर्मभिर्वा रोमभिर्वा शृङ्गैर्वा खुरैर्वा नखैर्वाऽनतिक्रान्तपूर्वो भवति ? गौतम । नायमर्थं समर्थं । भवेद्गौतम । तस्याजाव्रजस्य कश्चित्परमाणुपुद्गलमात्रोपि प्रदेशो यस्तासामजानामुच्चारेणवा यावन्नखैर्वा ऽनतिक्रान्त पूर्वो नैवचैतस्मिन्महालये, लोकस्य शाश्वत भाव ससारस्यानादिभाव जीवस्य चनित्यभाव कर्मबहुत्व जन्ममरणबाहुल्यच प्रतीत्य नास्ति कश्चि

॥ भाषा ॥ घाणेणवा । बडानाति तिणे करीने लघुनीति तिणें करीने श्लेष्माये करीने नाक मले करी । वंतेणवा पित्तेणवा पूएणवा सुक्केणवा सोणिएणवा । वमने करीने पित्तें करीने पितये करीने शुक्रें करीने रुधिरें करीने । चम्मेहिवा रोमेहिवा सिंगेहिवा खुरेहिवा णहेहिवा अणिक्कत पुव्वे भवइ । चामडीयें करीने । रोमे करीने शृङ्गे करीने खुरें करीने नख ते खुरना अग्रभाग तिणें करीने अणआक्रम्यो एतावता विण फरस्यो पूर्वेहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो इ णट्ठे समट्ठे । गौतम ए अर्थ युक्त नथी, वली भगवन्त कहे । होज्जाइण गोयमा तस्स अयावयस्स । हुवे पणि हेगौतम । तेह अजा छालीना वाडाना । केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे । कोइ एक परमाणुमात्र पणि पुद्गल प्रदेश । जेणं तासि अयाणं उच्चारेणवा जाव णहेणवा अणिक्कत पुव्वे । तेह प्रदेश तेह अजाने वडीनीति करी इत्यादि यावत् खुरने अग्रे करी विण फरस्या पूर्वक हुवे । णो चेवणं एयंसि ए महालयंसि लोगस्स सासयभाव ससारस्स अ णादिभाव जीवस्स निच्चभाव । पणि नही निश्चे एहने विषे एवडा महालय लोकनविषे छे कोइ परमाणुपोग्गलमेत्तेविपएसे इत्यादि, पूर्वोक्त अभिलापे

॥ टीका ॥

णुपोग्गलमेत्तेवि पएसे इत्यादिना पूर्वोक्ताभिलापेन सम्बन्धः, भण्त्वा लोकस्य' कथमिदमितिचेदत आह-लोगस्सेत्यादि ॥ इयियोह्येवं न सम्भ वतीत्यत उक्तं लोकस्य शाश्वतभावमतीत्येतियोग, शाश्वतत्वेपि लोकस्य संसारस्य सादित्वेनैव स्यादित्यनादित्वं तस्योक्तं, नानाजीवापेक्षया संसारस्यानादित्वेपि विवक्षितजीवस्यानित्यत्वेनोक्तोर्थ स्यादतो जीवस्य नित्यत्वमुक्तं, नित्यत्वेपि जीवस्य कर्माल्पत्वे तथाविधसंसरणाभावा न्नोक्त वस्तु स्यादतः कर्मबाहुल्य मुक्तं, कर्मबाहुल्येपि जन्मादे रल्पत्वेनोक्तोर्थ स्यादिति जन्मादिबाहुल्यमुक्तमिति ॥ एतदेव प्रपञ्चय न्नाह-क

॥ मूल ॥

जीवस्सय णिच्चभावं कम्मबहुत्तं जम्मणमरणबाहुल्लंच पडुच्च णत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्तेवि पएसे जत्थणं अयं जीवे णजाएवा णमएवावि सेतेणट्ठेणं तंचेव जाव णमएवावि। कइणं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! जहा पढमसए पंचमोद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव अणुत्तरविमाणेत्ति जाव अपराजिए

अनुवाद

त्परमाणुपुद्गलमात्रोपि प्रदेशो यत्राऽयं जीवो नजातोवा नमृतोवापि तत्तेनार्थेन तच्चैव यावन्नमृतोवापि। कति भदन्त! पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः? गौतम! यथा प्रथमशते पञ्चमोद्देशके तथैवावासाः स्थापयितव्या यावदनुत्तरविमानानीति, यावदपराजितं सर्वार्थसिद्धं। अथ भदन्त!

॥ भाषा ॥

करो सर्व महत्वपणायको लोकने किम एह इसो आशय। टालतो कहेछे, लोकना शाश्वतभाव प्रते आश्रयीने वली संसारना अनादिभाव प्रते आश्रयीने जीवना नित्यभाव प्रते आश्रयीने। कम्मबहुत्त जम्मणमरणबाहुल्लंच। कर्मना बहुलपणा थकी, कर्मने बहुलपणे पणि जन्मादिकने अल्पपणे उक्तार्थ न हुवे एतला माटे कह्यो वली जन्ममरण बाहुल्य आश्रयीने नथी कोइ परमाणु पुद्गलमात्र पणि प्रदेश। जत्थणं अयजीवे णजाएवा णमएवावि। जे प्रदेशनेविषे एह जीव जनम्यो नथी मरण पणि नथी पाम्यो। सेतेणट्ठेणं तचेव जाव णमएवावि। तेणे अर्थे णं वाक्यालंकारे, तिमहीज यावत् मरण पणि नथी पाम्यो एतला लगे कहवो पूर्वोक्तार्थहीज विस्तारतो कहेछे—कइणभंते पुढवीओ पण्णत्ताओ। केतली हेभगवन्! पृथिवी कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहा पढमस पंचमोद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा। हेगौतम! जिम पहिला शतकना पांचमाउद्देशानेविषे कह्या तिमहीज आवास स्थापवा जिम रत्नप्रभाने वि

॥ टीका ॥

इणमित्यादि ॥ नरगत्ताएत्ति ॥ नरकावासपृथिवीकायिकतयेत्यर्थ ॥ असइति ॥ असकृदनेकश ॥ अदुवत्ति ॥ अथवा ॥ अणतखुत्तोत्ति ॥ अनन्त

॥ मूल ॥

सव्वठसिद्धे । अयस्स भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि णिरयावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए णरगत्ताए णेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणतखुत्तो । सव्वजीवाविणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया तंचेव

अनुवाद

नैर जीवा ऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्यास्त्रिंशन्नरकावासशतसहस्रेष्वेकैकस्मिन्नरकावासे पृथिवीकायिकतया यावद्वनस्पतिकायिकतया नरकतया नैरयिकतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम ! असकृदथवाऽनन्तकृत्व । सर्वजीवा अपि भदन्त ! अस्या रत्नप्रभाया पृथिव्यास्त्रिंशन्नरकावासशतसहस्र (प्रभृति) एव यथा रत्नप्र (प्रभृति) तच्चैव यावदनन्तकृत्व । अथ भदन्त । जीव शर्कराप्रभाया पृथिव्या पचविंशतिनरकावासशतसहस्र (प्रभृति) एव यथा रत्नप्र

॥ भाषा ॥

यावत् अनुत्तरविमान एतला लगे कहवा यावत् अपराजित सर्वार्थ सिद्ध विमान लगे कहवो । अयस्स भंते जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरयावाससयसहस्सेसु । एह ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! जीव एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस नरकावास शतसहस्र कहिये लाखनेविषे । एगमेगंसि णिरयावासंसि । एक एक नरकावासाने विषे । पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए णरगत्ताए णेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे । पृथिवीकाय पणे अप्काय पणे तेउकाय पणे वाउकाय पणे यावत् वनस्पतीकाय पणे नरकावास पृथिवीकायिक पणे इत्यर्थ नारकीपणे ऊपनो पूर्वं इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा । असइ अदुवा अणंतखुत्तो । हा गौतम । अनेक बार वारवार इत्यर्थ, अथवा अनन्तीवार इत्यर्थं । सव्वजीवाविणं भंते इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया । सर्वजीव पणि ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस नरकावास शतसहस्रने इत्यादि प्रश्न उत्तर । तचेव जाव अणतखुत्तो । तिमहीज अनन्तीवार ऊपना एतलालगे कहवो । अयणंभंते सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए । एह हेभगवन् ! जीव शर्करप्रभा पृथिवीना पचवीस लाख नरकावासाने विषे इत्यादि । एवं जहा रयणप्पभा

जाव अणंतखुत्तो । अयसं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसाए एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा एवं जाव धूमप्पभाए । अयसं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे णिरयावाससयसहस्से एगमेगंसि सेस तचेव । अयसं भंते ! जीवे अहे सत्तमाए पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाणिरएसु एगमेगंसि णिरयावासंसि सेस जहा रयणप्पभाए । अयसं भंते ! जीवे चउसठी असुरकुमारावास सयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए

भाया स्तथैव द्वावालापकौ भणितव्यौ, एव यावद्धूमप्रभाया । अथ भदन्त । जीव स्तमाया पृथिव्या पञ्चोने नरकावासशतसहस्रे एकैकस्मिन् शेष तच्चैव । अथ भदन्त । जीवोऽध सप्तमाया पृथिव्या पञ्चस्वनुत्तरेषु महातिमहालयेषु महानिरयेषु (महानरकावासेष्वित्यर्थं) एकैकस्मिन्निरयावासे शेष यथा रत्नप्रभायाम् । अथ भदन्त । जीवश्चतुष्षष्ट्यसुरकुमारावासशतसहस्रेष्वेकैकस्मिन्नसुरकुमारावासे पृथिवीकायिकतया

ए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा एव जाव धूमप्पभाए । इम जिम रत्नप्रभापृथिवीने विषे एकजीव अथवा सर्वजीव आश्रयीने बे आलावा कह्या तिम ज इहा पणि बे आलावा कहवा, इम यावत् धूमप्रभा लगे कहवो । अयणं भंते जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे णिरयावाससयसहस्से । एह य वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीव तमानाम छट्ठी पृथिवीना पञ्चऊणा नरकावास श०सहस्र कहिये लाखने विषे । एगमेगसि सेसतंचेव । एक एकनेविषे इत्यादि शेष तिमहीज कहवो । अयण भंते जावे । एह हेभगवन् । जीव । अहेसत्तमाए पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाणिरएसु । नीचे सातमी तमतमा पृथिवीनेविषे पञ्च अनुत्तर सर्वोत्कृष्ट मोटा महालयने विषे मोटा नरकावासाने विषे । एगमेगसि णिरयावाससि । एक एकनेविषे नरकावासाने विषे इत्यादि । सेस जहा रयणप्पभाए । शेष थाकतो सर्व रत्नप्रभापृथिवीनी परे कहवो । अयणभंते जीवे चउसठी असुरकुमारावाससयसहस्सेसु । एह हेभगवन् । जीव चउसठ असुरकुमार आवास शतसहस्र कहिये लाखने विषे । एगमेगसि असुरकुमारावाससि । एक एक असुरकुमारना आवास

॥ टीका ॥

कृत्वो नन्तवारान्॥ असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसुत्ति ॥ इहा सख्यातेषु पृथिवीकायिकावासेष्वेतावतैव सिद्धे यच्छतसहस्रग्रहण तत्तेषा

॥ मूल ॥

भ्यासणसयणभंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो । सव्वजीवावि णं भंते ! एवचेव एवं जाव थणियकुमारेसु, णाणत्तं आवासेसु आवासा पुव्वभणिया । अयन्नं भंते ! जीवे असखेज्जेसु पुढवीकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढवीकाइयावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो, एव सव्वजीवावि । एव जाव वणस्सइकाइएसु । अयन्नं भंते !

अनुवाद

यावद्वनस्पतिकायिकतया देवतया देवितयाऽऽसनशयनभाण्डमात्रोपकरणतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम । यावदनन्तकृत्व । सर्वजीवा अपि भदन्त । एव चैव, एव यावत्स्तनितकुमारेषु नानात्वमावासेष्वावासा पूर्वभणिता । अय भदन्त । जीवोऽसङ्ख्येयेषु पृथ्वीकायिकावासशतसहस्रेष्वेकैकस्मि न्पृथिवीकायिकावासे पृथिवीकायिकतया यावद्वनस्पतिकायिकतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त । गौतम । यावदनन्तकृत्व , एव सर्वजीवा अपि, एव

॥ भाषा ॥

नेविषे । पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए । पृथिवीकायपणे इम यावत् वनस्पतीकायपणे देवपणे देवीपणे । आसणसयण भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे । आसन शयन भण्डमात्र उपगरणपणे ऊपनो पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा जाव खुत्तो । हा गौतम । अनेकवार अथवा अनन्तवार । सव्वजीवावि णंभंते एवचेव । सर्वजीव पणि हेभगवन् इत्यादि प्रश्न उत्तर, इमहीज अनन्तवार कहवो । एव जाव थणियकुमारेसु । इम यावत् स्तनितकुमारने विषे एतलालगे कहवो । णाणत्तं आवासेसु आवासा पुव्वभणिया । इहा भेद आवासने विषे छे ते आवास पूर्वे कह्याज छे चउसट्ठि असुराणं नागाणं चुलसीइ इत्यादि । अयन्नं भंते जीवे असखेज्जेसु पुढवीकाइयावाससयसहस्सेसु । एह ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । जीव असख्याता पृथिवीकायिक आवास शतसहस्र कहिये लाखनेविषे । एगमेगंसि पुढवीकाइयावासंसि । एक एक पृथिवीकायिक आवासनेविषे । पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे । पृथिवीकायिक पणें यावत् वनस्पतीकायिक पणें ऊपनो पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जाव

मतिबहुत्वख्यापनार्थं नवर ॥ तेइंदिएसुइत्यादि ॥ त्रीन्द्रियादिसूत्रेषु द्वीन्द्रियादिसूत्रात् त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियेत्यादिनैव विशेष इत्यर्थ ॥ नोचेवण

जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेइंदियावासंसि पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो, सव्वजीवाविणं एवचेव, एवं जाव मणुस्सेसु, णवर तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए एवं पंचि

यावद्वनस्पतिकायिकेषु। अथ भदन्त! जीवोऽसङ्ख्येयेषु द्वीन्द्रियावासशतसहस्रेषु एकैकस्मिन्द्वीन्द्रियावासे पृथिवीकायिकतया यावद्वनस्पतिकायिकतया द्वीन्द्रियतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम । यावदनन्तकृत्व । सर्वजीवा अप्येवचैव, एव यावन्मनुष्येषु नवर त्रीन्द्रियेषु (त्रीन्द्रियावासलक्षेषु) यावद्वनस्पतिकायिकतया त्रीन्द्रियतया, चतुरिन्द्रियेषु (चतुरिन्द्रियावासलक्षेषु) चतुरिन्द्रियतया, पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषु पञ्चे

क्खुत्तो एव सव्व जीवावि । हा गौतम । यावत् अनन्तवार एतलालगे कहवो इम सर्वजीव पणि कहवा । एव जाव वणस्सइकाइएसु । इम यावत् वनसतीकायिकने विषे पणि बे आलावा कहवा । अयण भंते जीवे असखज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु । एह ण वाक्यालकारे, हे भगवन् । जीव असख्याता बेइन्द्रिय आवास शतसहस्र कहिये लक्षनेविषे । एगमेगंसि बेइंदियावाससि । एक एक बेइन्द्रियना आवासनेविषे । पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए बेइंदियत्ताए उववन्न पुव्वे । पृथिवीकायिकपणे इम यावत् वनस्पतीकायिकपणे करी तथा बेइन्द्रियपणे करी ऊपनो इतिप्रश्न उत्तर हता गोयमा जाव अणतक्खुत्तो । हा गौतम । यावत् अनन्तीवार ऊपनो । सव्वजीवाविण एवचेव एव जाव मणुस्सेसु । सर्वजीव पणि इमहीज कहवा यावत् अनन्तीवार ऊपना, इम यावत् मनुष्यपणाने विषे एतलालगे कहवो । णवर तेइंदिएसु जाव वणस्सइकाइयत्ताए ते इंदियत्ताए । एतलोविशेष ते इन्द्रीना आलावानेविषे पृथिवी आदिदेई वनस्पती पर्यंत कही पछे तेइन्द्रीपणे ऊपना । चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए । चउरिन्द्रीना आलावानेविषे वनसती पछे चउरिन्द्रीपणे ऊपना इम कहवा । एव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए । इम पञ्चेंद्री तिर्यंचयोनिना आलावानेविषे

॥ टीका ॥ देवित्ताएत्ति ॥ ईशानान्तेष्वेव देवस्थानेषु देव्य उत्पद्यन्ते, सनत्कुमारादिषु पुन नैति कृत्वा "नोचेवण देवित्ताए इत्युक्त," नोचेवणं देवत्ताए देवि

॥ मूल ॥ दियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं जहा बेइंदियाणं, वाणमं तरजोइसियसोहम्मीसाणाणय जहा असुरकुमाराणं । अयस्स भंते ! जीवे सणंकुमारकप्पे बारसेसु विमाणा वाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढवीकाइया सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो णोचेवणं देवित्ताए, एवं सव्वजीवावि, एवं जाव आणयपाणएसु एवं आरणच्चुएसुवि । अयस्स भंते !

अनुवाद न्द्रियतिर्यग्योनिकतया, मनुष्येषु मनुष्यतया शेष यथा द्वीन्द्रियाणा, वानव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानेच यथासुरकुमाराणाम् । अय भदन्त ! जीव सनत्कुमारे कल्पे द्वादशसु विमानावासशतसहस्रेष्वेकैकस्मिन्वैमानिकावासे पृथिवीकायिक (प्रभृति) शेष यथासुरकुमाराणाम् याव दनन्तकृत्व, नैव च देवीतया, एव सर्वजीवा अपि, एव यावदानतप्राणतयो., एवमारणाच्युतयोरपि । अय भदन्त । जीव स्त्रिशप्य

॥ भाषा ॥ पृथिवी आदि वनस्पती पर्यंत कही पचेंद्री तिर्यंचपणे ऊपना पूर्वे इम कहवो । मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए सेसं जहा बेइंदियाणं । मनुष्यना आलावानेविषे मनुष्यपणे ऊपना पूर्वे इम कहवो थाकतो सर्व जिम बेइन्द्रियने कह्यो तिम कहवो । वाणमतर जोइसिय सोहम्मीसाणाणय जहा असुरकुमाराण । वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक माहे सौधर्म ईशानलगे एहनेविषे जिम असुरकुमारनेविषे कह्यो तिम कहवो । अयण्णभते जीवे । एह हेभगवन् जीव । सणकुमारकप्पे बारसेसु विमाणावाससयसहस्सेसु । सनत्कुमार कल्पनेविषे बारे विमानावास शतसहस्र कहिये लाखनेविषे । एगमेगंसि वेमाणियावाससि पुढवीकाइया सेसजहा असुरकुमाराण जाव अणतखुत्तो णो चेवणं देवित्ताए । एक एक वैमानिकावासनेविषे पृथिवीकायिकपणे इत्यादि, शेष जिम असुरकुमारने कह्यो तिम कहवो, यावत् अनन्तीवार पूर्वे ऊपनो एतला लगे कहवो नही निश्चे देवीपणे ऊपनो ईशान देवलोक लगेज देवी ऊपजेते माटे । एवसव्वजीवावि एव जाव आणय पाणएसु एव आरणच्चुएसुवि । इम सर्वजीव पणि कहवा इम यावत् आनत प्राणत देवलोकने विषे कहवो इ

जाव वत्ति ॥ अनन्तरविमानेष्वनन्तकृत्वो देवा नोत्पन्नाः, देवत्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

जीवे तिसुवि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जगविमाणावाससएसु एवं चेव। अयन्नं भंते! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि० तहेव जाव अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए देवित्ताए वा नवरं [illegible] अयन्नं भंते! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए पियत्ताए भाइत्ताए भगिणित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए

द्वादशोत्तरेषु ग्रैवेयकविमानावासशतेषु एवं चैव। अयं भदन्त! जीवः पञ्चस्वनुत्तरविमानेषु एकैकस्मिन्ननुत्तरविमाने पृथिवी (प्रमुख) तथैव यावदनन्तकृत्वः, नैव च देवतया देवीतया वा, [illegible] अयं भदन्त! जीवः सर्वजीवानां मातृतया पितृतया भ्रातृतया भगिनीतया भार्यातया पुत्रतया पुत्रीतया [illegible] हन्त गौतम! असकृदथवानन्तकृत्वः। अयं जीवो भदन्त! सर्वजीवानां मातृतया

[illegible]

॥ टीका ॥ प्रत्यनीकतया कार्योपघातकतया ॥ पच्चामित्तत्ताएत्ति ॥ अमित्रसहायतया ॥ दासत्ताएत्ति ॥ गृहदासीपुत्रतया ॥ पेसत्ताएत्ति ॥ प्रेष्यतया आदेश्य

॥ मूल ॥ धूयत्ताए सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो । सव्वजीवाविणं भंते ! एवचेव । अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाण रायत्ताए जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! असतिं जाव अणंतखुत्तो । सव्वजीवाणं एवंचेव । अयन्नं भंते !

अनुवाद यावदुत्पन्नपूर्वो ? हन्त गौतम । यावदनन्तकृत्व । अय भदन्त । जीव सर्वजीवानामरितया वैरिकतया घातकतया व्यधकतया प्रत्यनीकतया प्रत्यमित्रतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम । यावदनन्तकृत्व । सर्वजीवा अप्येव चैव । अय भदन्त । जीव सर्वजीवाना राजतया युवराजतया याव त्सार्थवाहतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम । असकृद्यावदनन्तकृत्व । सर्वजीवा एवचैव । अय भदन्त । जीव सर्वजीवाना दासतया प्रेष्यतया भृतकतया

॥ भाषा ॥ जाव अणतखुत्तो । हागौतम । यावत् अनन्तीवार उपनो इम कहवो । अयणभते जीवे सव्वजीवाणं । एह हेभगवन् जीव सर्वजीवनो । अरित्ताए वेरियत्ताए घायगत्ताए वहगत्ताए पडिणीयत्ताए पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे । सामान्य वैरीपणे करी दीर्घकाल वैरीपणे करी घातकपणे करी ताडकपणे करी कार्य घातकपणे करी अमित्र सहायीपणे करी उपनो पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जाव अणतखुत्तो । हागौतम यावत् अनन्तवार उपनो । सव्वजीवाविणभते एवंचेव । सर्वजीव पणि हेभगवन् इत्यादिप्रश्न उत्तर इमहीज । अयणंभते जीवे सव्वजीवाण । एह हेभगवन् । जीव सर्वजीवनो । रायत्ताए जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे । राजापणे युवराजापणे इत्यादि, यावत् सार्थवाह पणे एतलालगे उपनो पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा असइं जाव अणतखुत्तो सव्वजीवाण एवचेव । हागौतम । अनेकवार यावत् अनन्तीवार उपनो सर्वजीव पणि इमहीज कहवा । अयणभते जीवे सव्वजीवाण । एह हेभगवन् । जीव सर्वजीवने । दासत्ताए पेसत्ताए भुयगत्ताए भाइल्लगत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उवव

॥ टीका ॥

तया ॥ भयगत्ताएत्ति ॥ भृतकतया दु कालादौ पोषिततया ॥ भाइल्लगत्ताएत्ति ॥ कृष्यादिभागस्य भागग्राहकत्वेन ॥ भोगपुरिसत्ताएत्ति ॥ अन्यै रुपार्ज्जितार्थाना भोगकारिनरतया ॥ सीसत्ताएत्ति ॥ शिष्यणीयतया ॥ वेसत्ताएत्ति ॥ द्वेष्यतयेति ॥ द्वादशशते सप्तम ॥ १२ ॥ ७ ॥
सप्तमे जीवानामुत्पत्ति श्चितिता अष्टमेपि सैव भग्यन्तरेण चिन्त्यते, इत्येव सम्बद्धस्यास्येदमादिसूत्र–तेणमित्यादि ॥ विसरीरेसुत्ति ॥ द्वे शरीरे येषा

॥ मूल ॥

जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए पेसत्ताए भुयगत्ताए भाइल्लगत्ताए भोगपुरिसत्ताए सीसत्ताए वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ? हंता गोयमा ! जाव अणंतखुत्तो । एवं सव्वजीवावि जाव अणंतखुत्तो। सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ । दुवालसमसयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ७ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वयासी–देवेणं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे अणंतरं चयंचइत्ता विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?

॥ अनुवाद ॥

भागग्राहकतया भोगपुरुषतया शिष्यणीयतया द्वेष्यतयोत्पन्नपूर्व ? हन्त गौतम ! यावदनन्तकृत्व । एव सर्वजीवाअपि यावदनन्तकृत्वस्तदेव भदन्त । भदन्त ! इति यावद्विहरति ॥ द्वादशमशतस्य च सप्तम ॥ १२ ॥ ७ ॥ तस्मिन्काले तस्मिन्समये यावदेवमवादीत्–

॥ भाषा ॥

णपुर्व्वे । घरनोदासोने पुत्रपणें, आदेशकारी पणें, भृतकपणें, दुकाले आवो वस्यो तेहने पोषितपणे, करसणादि लाभने भाग ग्राहिकपणें, अनेरे उपार्ज्या अर्थने भोगकरो नरपणें, कलाग्रहण निमित्ते आवे ते पणे, द्वेष्यपणें ऊपनो पूर्वे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा जाव अणंत खुत्तो । हा गौतम यावत् अनन्तवार ऊपनो एतलालगे कहयो । एवं सव्वजीवावि जाव अणंतखुत्तो । इम सर्वजीव पणि कहवा यावत् अनन्तवार ऊपना । सेवभंते २ त्ति जाव विहरइ । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्युं, ते सर्व सत्यछै यावत् विचरे ॥ दुवालसमसयस्सय सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ एबारमा शतकनो सातमो उद्देशो पूरो थयो १२ ॥ ७ ॥ सातमे उद्देशे जीवनी उत्पत्ति चिन्तवी, आठमे तेहीज भगन्तरे चिन्तवेछे । तेण कालेण तेण समएण जा । एव व यासी । ते कालनेविषे ते समयनेविषे यावत् इम कहै । देवेण भंते महिड्ढीए जाव महेसक्खे अणंतर चय चइत्ता । देव च बाधालकारे, हेभगवन् । म

॥ टीका ॥

ते द्विशरीरा स्तेषु, येहि नागशरीरं त्यक्त्वा मनुष्यशरीरमवाप्य स्येत्स्यन्ति ते द्विशरीरा इति ॥ नागेसुत्ति ॥ सर्प्पेषु हस्तिषुवा ॥ तत्थत्ति ॥ नागज न्मनि यत्रवा, क्षेत्रे जात ॥ अच्चियेत्यादि ॥ इहार्चितादिपदाना पञ्चाना कर्मधारय स्तत्रार्चित चन्दनादिना, वन्दित स्तुत्या, पूजित पुष्पा

॥ मूल ॥

हंता गोयमा! उववज्जेज्जा, सेणं तत्थ अच्चियवंदियपूइयसक्कारियसम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्नि हियपाडिहेरेयावि भवेज्जा? हंता भवेज्जा। सेणं भंते! तर्ओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अंत करेज्जा? हंता सिज्झेज्जा जाव अंतं करेज्जा। देवेण भंते! महिड्ढीए एवचेव जाव विसरीरेसु

अनुवाद

देवो भदन्त। महर्द्धिको यावन्महेशाख्यो ऽनन्तर च्यव श्च्युत्वा द्विशरीरेषु नागेषू त्पद्येत? हन्त गौतम। उत्पद्येत। स तत्रार्चितवन्दित पूजितसत्कारितसन्मानितो दिव्य सत्य सत्यावपात सन्निहितप्रातिहार्य श्चापि भवेत्? हन्त भवेत्। स भदन्त। ततो नन्तरमुद्वृत्य सि ध्येत्? बुध्येत यावदन्त कुर्यात्? हन्त सिध्येत् यावदन्त कुर्यात्। देवो भदन्त। महर्द्धिक एव चैव यावद्द्विशरीरेषु मणिषू त्पद्येत एव चैव

॥ भाषा ॥

हर्द्धिक यावत् महाईश्वर ते अनन्तरे शरीर छाडी चवीने। विसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा। जेहने बेज शरीरछे, एतले स्यो भाव जे नाग कहिये सर्प अथवा हाथी ते नागनो शरीर छाडी मनुष्यशरीर पामी मुक्तिजाय ते बिशरीरी जाणवा ते नागनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा उवव ज्जेज्जा। हागौतम। ऊपजे। सेणं तत्थ अच्चिय वंदिय पूइय सक्कारिय सम्माणिय दिव्वे सच्चे सच्चोवाए। तेह तिहा नागजन्मनेविषे अथ जिणे क्षेत्रे ऊप नो तिहा चन्दनादि करी अर्च्यो स्तुतिकरी वन्द्यो पुष्पादि करी सत्कारित सेवा विशेषे करी सन्मानित प्रधान स्वप्नादि करी सत्य जणावे जेहनी सेवा सफल थाय कि हाथी ते कहेछे—सन्निहिय पाडिहेरेयावि भवेज्जा। सन्निहित कहिये ढूकडो प्रातिहार्य, पूर्वसगति देवनो कीधो प्रतिहार कर्म जेह ने एतावता देवाधिष्टित इत्यर्थ ते हुवे इतिप्रश्न उत्तर। हंता भवेज्जा। हा गौतम। हुवे। सेणंभंते तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता। तेह ना वाध्यालका रे, हेभगवन्। तिहाथकी अनन्तरे अनन्तररहित नीकलीने। सिज्झेज्जा बुज्झेज्जा जाव अतकरेज्जा। सीझे बुझे यावत् सर्वदुक्खनो अतकरे इतिप्रश्न उ

दिना, सत्कारितो वस्त्रादिना' सन्मानित प्रतिपत्तिविशेषेण ॥ दिव्वेत्ति ॥ प्रधान ॥ सच्चेत्ति ॥ स्वप्नादिप्रकारेण तदुपदिष्टस्यावितथत्वात् ॥ सच्चोवाएत्ति ॥ सत्यावपात सफलसेव इत्यर्थ ,कुतएतदित्याह–सन्निहियपाडिहेरेत्ति ॥ सन्निहितमदूरवर्ति प्रातिहार्यं पूर्वसंगतिकादिदेवताकृत प्रतिहारकर्म यस्य स तथा ॥ मणीसुत्ति ॥ पृथिवीकायविकारेषु ॥ लाउल्लोइयमहियत्ति ॥ लाइयति ॥ छगणादिना भूमिकाया· सम्रष्टीकरण ॥ उल्लोइयति ॥ सेढिकादिना कुड्याना धवलन एतेनैव द्वयेन महितो य स तथा' एतच्च विशेषण वृक्षस्य पीठापेक्षया, विशिष्टवृक्षाहि बद्धपीठा भवन्ती

मणीसु उववज्जेज्जा एवंचेव जहा नागाणं । देवेणं भंते ! महिड्ढिए जाव विसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा एवचेव , णवर इमं णाणत्तं जाव सण्णिहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहइयाविभवेज्जा सेसं तचेव जाव अंत

यथा नागानाम् । देवो भदन्त । महर्द्धिको यावद्विशरीरेषु वृक्षेषु उत्पद्येत एवचैव नवरमिद नानात्व यावत्सन्निहितप्रातिहार्यो लाउल्लोइय महित· (सम्मार्जनधवलनेन पूजितो युक्तइत्यर्थ·, लाउल्लोइय शब्दोचात्र सामयिको नतु प्रकृतिजन्या विति) चापि भवेत् ? हन्त भवेत् ,

कर । हता सिज्झेज्जा जाव अंत करेज्जा । हागोतम । सीझे यावत् अतकरे मुक्तिजाय इत्यर्थं । देवेण भते महिड्ढीए एवचेव जाव विसरीरेसु । देव हे भगवन् महर्द्धिक इत्यादिक इमहीज एतले यावत् विशरीरीने विषे । मणीसु उववज्जेज्जा एवचेव जहा नागाण । मणिरत्ननेविषे पृथिवीकायना विकारने विषे उपजे इमहीज जिम नागने कह्यो तिम कहवो । देवेण भते महिड्ढिए जाव विसरीरीसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा एवचेव । देव ए वाक्यालकारे, हेभगवन् महर्द्धिक इत्यादि, यावत् विशरीरी वृक्ष हक्षनेविषे उपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर इमज पूठिलीपरे कहवो । णवरं इम णाणत्त जाव सणिहिय पाडिहेरे लाउल्लोइयमहइयावि भवेज्जा सेस तचेव जाव अतकरेज्जा । एतलोविशेष एहभेद यावत् ढूकडो पूर्व सगति देवतानो कीधो प्रतिहारकर्म जेहनेछे एतावता देवाधिष्ठित ते लाउ कहता छगणादिके करी भूमिकाने सुहाली करवी खडीप्रमुखे करी भित्तिनो धवलवो ए बेउकरी महित पूज्यो जिको एह विशेषण वृक्षना पीठनी अपेक्षायें कह्यो विशिष्ट वृक्ष जे हुवे ते पीठबद्ध हुवे इत्यादि, शेष तिमहीज कहवो यावत् अत करे । अहभते

॥ टीका ॥

ति ॥ गोणगुलवसभेत्ति ॥ गोलांगूलाना वानराणां मध्ये महान् सएववा; विदग्धो विदग्धपर्यायत्वा वृषभशब्दस्य, एवं कुक्कुटवृषभोपि एवमण्डूकवृषभोपीति ॥ निस्सीलत्ति ॥ समाधानरहिता ॥ निव्वयत्ति ॥ अणुव्रतरहिता ॥ निग्गुणत्ति ॥ गुणव्रतैः क्षमादिभिर्वा, रहिता ॥ नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा इतिप्रश्न, इहच उववज्जेज्जा इत्येतदुत्तरं तस्यचा सम्भवमासङ्कमान स्तत्परिहारमाह–समणेइत्यादि ॥ असम्भवश्चैव–यत्र समये गोलांगूलादयो न तत्र समये नारका स्ते ध्रुत कथं ते नारकतयो त्पद्यन्तइति वक्तव्य स्यात् ? अत्रोच्यते, श्रमणोभगवान् महावीरो ननु जमाल्यादिरेव

॥ मूल ॥

करेज्जा । अह भंते ! गोणंगुलवसभे कुक्कुडवसभे मण्डुक्कवसभे एएणं णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस सागरोवमठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए, उववज्जेज्जा, समणे भगवं महावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववन्नेत्ति वत्तव्वंसिया।

अनुवाद

शेष तथैव याव दन्त कुर्यात् । अथ भदन्त । गोलांगूलवृषभ कुक्कुटवृषभो मण्डूकवृषभ, एते निःशीला निर्व्रता निर्गुणा निर्मर्यादा निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा कालमासे काल कृत्वा अस्या रत्नप्रभाया पृथिव्यामुत्कर्षत सागरोपमस्थितिके नरके नैरयिकतया, उत्पद्येरन्

॥ भाषा ॥

गोणगुलवसभे कुक्कुडवसभे मडुक्कवसभे एतेण निस्सीला । अथ हिवे हेभगवन् वानरमाहें मोटो तेहोज वृषभकहिये विदग्ध इम कुर्कुटवृषभ मण्डूकवृषभ एह समाधान रहित । णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिपच्चक्खाण पोसहोववासा । व्रतरहित गुणरहित मर्यादारहित पच्चक्खाण पौषधोपवास रहित । कालमासे कालंकिच्चा । काल अवसरने विषे काल करीने । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए । एह रत्नप्रभा पृथिवीये । उक्कोस सागरोवमठिइयंसि णरगंसि णेरइयत्ताए उववज्जेज्जा । उत्कृष्ट सागरोपम स्थितिनेविषे नरकनेविषे नारकीपणे उपजे इतिप्रश्न इहा उववज्जेज्जा, एहवो उत्तर जोई जे पर तेहनो असम्भव तेहना निर्णय भणी कहेछे–असम्भव ते स्यू जिणे समयें गोलागूलादिक तिणे समये नारकी नथी इणे कारणे नारकीपणे किम कहवा तिहा निर्णय वचन करे । समणभगवमहावीरे वागरेइ उववज्जमाणे उववन्नेत्ति वत्तव्वंसिया । श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी इमकहे जे वानरादिकना एक

व्याकरोति यदुत उत्पद्यमान मुत्पन्नमिति वक्तव्यं स्या त्क्रियाकालनिष्ठाकालयो रभेदात्, अत स्ते गोलाङ्गूलप्रभृतयो नारकतयोत्पत्तुकामा नारका नवेति कृत्वा मुच्यते–नेरइयत्ताएउववज्जेज्जत्ति ॥ उस्सप्पिणि उद्देसएत्ति ॥ सप्तमशतस्य षष्ठे इति ॥ द्वादशशते ऽष्टम ॥ ८ ॥ अष्टमोद्देशके देवस्य नागादिषूत्पत्तिरुक्ता नवमेतु देवाएव प्ररूप्यन्त इत्येव सम्बद्धस्यास्येदमादिसूत्र–कइविहाणमित्यादि ॥ दीव्यन्ति क्रीडा कुर्वन्ति

अह भंते! सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे एएणंसि णिस्सीला एवचेव जाव वत्तव्वं सिया अह भंते! ढंके कंके पिलए मद्गुए सिखीए एएणं णिस्सीला सेसं तचेव जाव वत्तव्वं सिया। सेव भंते भंतेत्ति! जाव विहरइ ॥ दुवालसमसयस्सय अठमो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ८ ॥ कइविहेणं

(उत्तरम्) श्रमणोभगवान्महावीरो व्याकरोति उत्पद्यमान उत्पन्न इति वक्तव्य स्यात्। अथ भदन्त। सिंहो व्याघ्रो यथोत्सर्पिण्युद्देशके यावत् पराशर, एते नि शीला एवचैव यावद्वक्तव्य स्यात्। अथ भगवान्! ढङ्क (काक) कङ्क (गृध्र) पिलक (कीटविशेष) मद्गु शिखी एते नि शीला शेष तथैव यावद्वक्तव्य स्यात्, तदेव भदन्त। भदन्त। इति यावद्विहरति ॥ द्वादशशते ऽष्टमोद्देश ॥ १२ ॥ ८ ॥

पणे उपजनाराछे ते नरके जपनार कहिये क्रियाकाल निष्ठाकालना अभेदथकी इसी वक्तव्यता हुवे, तेमाटे उववज्जेज्जा ए सत्य। अहभते सीहे वग्घे जहा उस्सप्पिणी उद्देस० जाव परस्सरे। हिवे हेभगवन् सिंह वाघ इत्यादि, जिम सातमा शतकना छठा उद्देशाने विषे कह्या तिम इहां कहवो याव त् जीव विशेष। एएसि णिस्सीला एवचेव जाव वत्तव्वसिया। एह शीलरहित इत्यादि, इमहीज यावत् वक्तव्यता हुवे। अहभते ढंके कंके पिल० मद्गु ए सिखीए एएणं णिस्सीला। अथ, हिवे हेभगवन् ढङ्क कङ्क पीलक मद्गुक मोर एह शीलगुणरहित इत्यादि। सेसतचेव जाव वत्तव्वसिया। शेष तिम हीज यावत् इसो वक्तव्यता हुवे। सेवंभते २ त्ति जाव विहरइ। तहत्ति हेभगवन् तुम्हेकहो ते सर्व सत्यछे अन्यथा नथी इम कही यावत् विचरे। दुवाल समसयस्सय अट्ठमो उद्देसो समत्तो। ए बारमा शतकनो आठमो उद्देशो पूरोथयो १२ ॥ ८ ॥ आठमे उद्देशे देवने नागादिकने विषे

॥ टीका ॥

दीव्यन्तेवा; स्तूयन्ते आराध्यतयेति देवा ॥ भवियदव्वदेवत्ति ॥ द्रव्यभूता देवा द्रव्यदेवा द्रव्यताचाप्राधान्या द्भूतभावत्वाद्वा; भाविभावत्वाद्वा, तत्राप्राधान्या द्देवगुणशून्या देवा द्रव्यदेवा यथा साध्याभासा द्रव्यसाधव. ' भूतभावपक्षेतु-भूतस्य देवत्वपर्यायस्य प्रपन्नकारणभावदेवस्वा च्च्युता द्रव्यदेवा , भाविभावपक्षेतु-भाविनो देवत्वपर्यायस्य योग्या देवतयोत्पत्स्यमाना द्रव्यदेवा स्तत्र भाविभावपक्षपरिग्रहार्थमाह-भव्याश्च ते द्रव्यदेवाश्चेति, नरदेवा ॥ धम्मदेवत्ति ॥ धर्मेण श्रुतादिना देवा धर्मप्रधानावा, देवा धर्मदेवा ॥ देवाइदेवत्ति ॥ देवान् अपानतिक्रान्ता पारमार्थिकदेवत्वयोगा द्देवा देवातिदेवा. " देवाहिदेवत्ति „ क्वचिद्दृश्यते तत्रच देवाना मधिका पारमार्थिकदेवत्वयोगा द्देवा देवाधिदेवा. ॥ भावदेवत्ति ॥ भावेन देवगत्यादिकर्मोदयजातपर्यायेण देवा भावदेवा. ॥ जेभविएइत्यादि ॥ इह जातावेकवचनमतो बहुवचनार्थं व्याख्येय, ततश्च ये भव्या योग्या पञ्चे

॥ मूल ॥

भंते ! देवा पणत्ता ? पंचविहा देवा पणत्ता , तंजहा—भवियदव्वदेवा नरदेवा धम्मदेवा देवाधिदेवा भावदेवा । सेकेणठेणं भंते ! एव वुच्चइ—भवियदव्वदेवा भवियदव्वदेवा ? गोयमा ! जे भविय पचिंदिय

अनुवाद

कतिविधा भदन्त ! देवा प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पञ्चविधा देवा प्रज्ञप्तास्तद्यथा—भविकद्रव्यदेवा नरदेवा धर्मदेवा देवाधिदेवा ' देवातिदेवा इति पाठान्तरम् „ भावदेवा ५ । अथ केनार्थेन भगवन् ! एवमुच्यते—भविकद्रव्यदेवा भविकद्रव्यदेवा ? गौतम ! ये भविका (योग्या)

॥ भाषा ॥

उत्पत्ति कही नवमे तो देवद्योज करेछे—कइविहेणभंते देवा पणत्ता । केतलेप्रकारे हेभगवन् देवकह्या इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पचविहा देवा प० त० । हेगोतम पचप्रकारे देव कह्या ते कहेछे । भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवाधिदेवा, भावदेवा, । द्रव्यभूत जे देव अथवा द्रव्यप्रधान पणाथकी, भूतभाव पणाथकी, भविकद्रव्य देवकहिये १ मनुष्यमाहे आराध्य २ ते धर्म श्रुत चारित्ररूप ते सहित ३ तथा देवाना अधिक पारमार्थिक देवत्व योगथकी देवाधिदेव ४ देवगत्यादिकर्मोदय जातपर्याये करी ते देव ते भाव ते देव । सेकेणठेणं भंते एवंवुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् ! इम कह्यो । भवियदव्वदेवा भवि २ । भविकद्रव्यदेव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जे भविय पंचिदिय तिरिक्खजोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए । हेगोतम ! जे भव्यद्रव्य पचेंद्रि

न्द्रियतिर्यग्योनिकावा; मनुष्यावा; देवेपूत्पत्तु ते यस्मा द्भाविदेवज्ञावा इतिगम्य, अथ तेनार्थेन तेन कारणेन हेगौतम । तान् प्रत्येवमुच्यते-भव्य द्रव्यदेवा इति ॥ जेइमेइत्यादि ॥ चाउरंतचक्कवट्टित्ति ॥ चतुरन्ताया भरतादिपृथिव्या भते स्वामिन इति चातुरन्तास्चक्रेण वर्त्तनशीलत्वाच्च चक्रव र्त्तिन स्तत कर्मधारय, चतुरन्तग्रहणेनच वासुदेवादीना व्युदास, ते यस्मादिति वाक्यशेष ॥ उप्पणसमत्तचक्करयणप्पहाणत्ति ॥ आर्षत्वान्निर्दे शास्योत्पन्न समस्तरत्नप्रधान चक्र येषा ते तथा ॥ सागरवरमेहलाहिवइणोत्ति ॥ सागर एव वरा मेखला काञ्ची यस्या सागरवरमेखला पृथ्वी

तिरिक्खजोणिएवा मणुस्सेवा देवेसु उववज्जित्तए सेते णठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा २ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नरदेवा २ ? गोयमा ! जेइमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा णवणिहिपइणो समिद्धकोसा वत्तीसं रायवरसहस्साणुयातमग्गा सागरवरमेहिलाहिपतिणो मणु

पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकावा मनुष्यावा देवेपूत्पत्तुम्, तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते भविकद्रव्यदेवा भविकद्रव्यदेवा । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नरदेवा नरदेवा ? गौतम ! य एते राजानश्चातुरन्तचक्रवर्त्तिन उत्पन्नसमस्तरत्नप्रधानचक्रा नवनिधिपतय समृद्धकोशा द्वात्रिंश

य तिर्यञ्चयोनिक अथवा मनुष्य देवनेविषे ऊपजस्ये ते भव्यद्रव्य देव कहिये । सेतेणठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम । इम कह्यो । भवियदव्व देवा, सेकेणठेणं भंते एव वुच्चइ नरदेवा २ । भव्य द्रव्यदेव, ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कहिये नरदेव प्रतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जे इमे रायाणो चाउरंत चक्कवट्टी । हेगौतम । जे एह राजा न भरतादि पृथिवी चाउरन्तना ए स्वामी तथा चक्रेकरी वर्त्तन शीलपणाथकी चक्रवर्त्ती चाउरंत ग्रहणेकरी वासुदेवादिक टाल्या । उप्पण समत्त चक्करयणप्पहाणा णवणिहिपइणो समिद्धकोसा । ऊपनो समस्त रत्न प्रधानचक्र जेहोने ते उत्पन्न समस्त चक्र रत्न प्रधान तथा नव निधानना अधिपति समृद्ध भण्डार जेहना । बत्तीस रायवरसहस्साणुयातमग्गा । बत्तीस राज प्रधान तेहना सहस्रने विषे अनुयात मार्ग छे एतले बत्तीससहस्र राजा सेवाकरे । सागरवरमेहिलाहिपतिणोमणुस्सिंदा । समुद्रहीज प्रधान मेखलापर्यंत पृथिवीना स्वामी, मनुष्यना इन्द्र ।

॥ टीका ॥

तस्या अधिपतयो ये ते तथा, सागरमेखलान्तपृथिव्यधिपतय इतिभावः॥ सेतेणठेणंति॥ अथ तेनार्थेन तेन कारणेन गौतम। तान् प्रत्येवमुच्यते–नरदेवा इति ॥ जे इमे इत्यादि ॥ य इमे नगारा भगवन्तस्ते यस्मादिति ॥ जेइमेत्यादि ॥ य इमे अर्हन्तो भगवन्त स्ते यस्मादुत्पन्नज्ञानदर्शनधरा इत्यादि ॥ सेतेणठेणंति ॥ अथ तेनार्थेन तान्प्रति गौतमैवमुच्यते–देवातिदेवा २ इति ॥ जेमेइत्यादि ॥ य इमे भवनपत्यादय स्ते यस्मा द्देवगति

॥ मूल ॥

सिंदा सेतेणठेणं जाव नरदेवा २ । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–धम्मदेवा धम्मदेवा ? गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो इरियासमिया जाव गुत्तबंभयारी सेतेणठेणं जाव धम्मदेवा २ । सेकेणठेणं भंते! एवं वुच्चइ–देवाधिदेवा २ ? गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पन्नणाणदंसणधरो जाव सव्वदरिसी सेते

अनुवाद

द्राजवरसहस्रानुयातमार्गा सागरवरमेखलाधिपतयो मनुष्येन्द्राः, तत्तेनार्थेन (गौतम । तान्प्रतीतिगम्यम्) एवमुच्यते नरदेवा नरदेवा । अथ केनार्थेन भगवन् । एव मुच्यते–धर्मदेवा धर्मदेवा ? य इमे ऽनगारा भगवन्त ईर्यासमिता यावद्गुप्तब्रह्मचारिण स्तत्तेनार्थेन गौतम । एव मुच्यते धर्मदेवा धर्मदेवा । अथ केनार्थेन भदन्त । एवमुच्यते–देवाधिदेवा देवाधिदेवा ? गौतम । य इमे ऽर्हन्तो भगवन्त उत्पन्नज्ञानदर्शनधरा यावत्सर्वदर्शि स्तत्तेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते देवाधिदेवा देवाधिदेवा । अथ केनार्थेन गौतम। एव मुच्यते–भावदेवा भावदेवा ?

॥ भाषा ॥

सेतेणठ्ठेणं जाव नरदेवा। तेणें अर्थे हेगौतम । यावत् नरदेव कहिये । सेकेणठ्ठेणभते एवंवुचइ धम्मदेवा २ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् इम कह्या धर्मदेव इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जे इमे अणगारा भगवंतो। हेगौतम। जे एह गृहवासरहित साधु ज्ञानवन्त। इरियासमिया जाव गुत्तबभचारी। ईर्यासमिति समिता यावत् गुप्तब्रह्मचारी । सेतेणठ्ठेण जाव धम्मदेवा। ते तेणें अर्थे यावत् धर्मदेव कह्या। सेकेणठ्ठेणभते एवंवुचइ देवाधिदेवा २ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् इम कहिये देवाधिदेव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जे इमे अरहंता भगवन्तो उप्पणणाणदसणधरो जाव सव्वदरिसी। हेगौतम। जे एह अरहन्त भगवन्त ऊपना ज्ञानदर्शनना धरणहार यावत् सर्वदर्शी । सेतेणठ्ठेण जाव देवाधिदेवा। ते तेणेंअर्थें यावत् देवाधिदेव कह्या। सेकेणठ्ठेणभते एवंवुचइ भावदेवा।

॥ टीका ॥
नामगोत्रे कर्म्मणी वेदयन्ति, अनेनार्थेन तान् प्रत्येवमुच्यते-भावदेवा २ इति, एव देवान्प्ररूप्य तेषामेवोत्पाद प्ररूपयन्नाह-भवियदव्वदेवाणं भंते ! इत्यादि भेदोत्ति ॥ जइ नेरइएहितो उववज्जंति किं रयणप्पभपुढविनेरइएहितो इत्यादि भेदो वाच्य ॥ जहा वक्कंतीएत्ति ॥ यथा प्रज्ञा

॥ मूल ॥
णट्ठेण जाव देवाधिदेवा २ । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भावदेवा ? गोयमा ! जे इमे भवणवइवाणमं तरजोइसियवेमाणिया देवा देवगइणामागोयाइं कम्माइं वेदेंति सेतेणट्ठेणं जाव भावदेवा २ । भवियदव्व देवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खमणुस्सदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिमणुदेवेहिंतो उववज्जंति, भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववातेयव्वा

॥ अनुवाद ॥
गौतम ! य इमे भवनपतिवानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका देवा देवगतिनामगोत्रे कर्मणी वेदयन्ति तत्तेनार्थेन (तान्प्रति) एवमुच्यते भावदेवा भावदेवा । भविकद्रव्यदेवा भगवन्कुत उत्पद्यन्ते, किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते, तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते, तिर्यङ्मनुष्यदेवेभ्योऽप्युत्पद्यन्ते (यदिनैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते तर्हि किं रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्य उत शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्य इत्यादिर्भेदो

॥ भाषा ॥
तेणे अर्थे हेभगवन् ! इमकह्यो भावदेव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जे इमे भवणवइ वाणमतर जोइसिय वेमाणियादेवा। हेगौतम। जे एह भवनपती वान व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकदेव । देवगइणामागोयाइं कम्माइं वेदंति । जे कारणथकी देवगति नाम गोत्र कर्मप्रते वेदेछे अनुभवेछे । सेतेणट्ठेणं जाव भा वदेवा २। ते तेणे अर्थे हेगौतम ! इमकहिये यावत् भावदेव, हिवे एहोनोज उत्पाद कहेछे,भवियदव्वदेवाणंभते कओहितो उववज्जंति किंणेरइएहितो उव वज्जंति । भविकद्रव्यदेव हेभगवन् ! किहाथकी ऊपजे स्यू नारकीथकी ऊपजे।तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेहिंतो उववज्जंति। तिर्यंचयोनिक थकी ऊपजे म नुष्यथकी ऊपजे देवथकी ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णेरइएहिंतो उववज्जंति । हेगौतम ! नारकीथकी ऊपजे।तिरिमणुदेवेहितो उववज्जंति। तिर्यंच थकी पणि ऊपजे मनुष्यथकी पणि ऊपजे देवथकी पणि ऊपजे इम चारेंथकी ऊपजे। भेदो जहा वक्कतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव अणुत्तरोववाइय

॥ टीका ॥

पनापदपदे ॥ नवर मित्यादि ॥ असंखेज्जवासाउत्ति ॥ असङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिजाः पञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्या असङ्ख्यातवर्षायुषामकर्मभूमिजादीना साक्षादेव गृहीतत्वा देतेभ्योद्धृत्ता भव्यद्रव्यदेवा नभवन्ति भावदेवेष्वेव तेषा मुत्पादात्, सर्वार्थसिद्धकास्तु भव्यद्रव्यसिद्धा एव भवन्तीत्यत एतेभ्यो

॥ मूल ॥

जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, णवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमिगअन्तरदीवसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपरा जियदेवेहिंतोवि उववज्जंति । णरदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइए पुच्छा ? गोयमा ! णेरइएहिंतो उववज्जंति णोतिरि णोमणुदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयण

अनुवाद

यथा व्युत्क्रान्तिके (प्रज्ञापनापदपद उक्त) तथा सर्वेपूत्पादयितव्या यावदनुत्तरोपपातिकइति, नवर मसङ्ख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिजपञ्चेन्द्रियति र्यङ्मनुष्याकर्मभूमिजपञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्यान्तरद्वीपपञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्यवर्ज्जा (सङ्ख्येयवर्षायुषामेव पञ्चेन्द्रियतिर्यङ्मनुष्याणा भविकद्रव्यदेवतयो त्पादात्) याव दपराजितदेवेभ्यो प्युत्पद्यन्ते । नरदेवा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्त, किंनैरयिकेभ्य (इत्यादि) पृच्छा, गौतम ! नैरयिकेभ्य

॥ भाषा ॥

त्ति । भेद तदमज णरइएहिंतो उववज्जति कि रयणप्पभापुढवी णेरइएहिंतो इत्यादिक भेद कहवो जिम पन्नवणाना छट्ठा पदनेविषे कह्यो तिम इहा कहवो स र्वथ का उपजावना यावत् अनुत्तरोपपातिक लगे। णवर असंखिज्जवासाउअ अकम्मभूमि अंतरदीव सव्वट्ठसिद्धवज्ज । एतलो विशेष असंख्यात वर्षायुष कर्मभूमि ज पचेन्द्रियतिर्यच मनुष्य तथा अकर्मभूमिज पचेन्द्रियतिर्यचमनुष्य तथा अन्तरद्वीप पचेन्द्रियतिर्यचमनुष्य एहथकी नीकलो भव्यद्रव्य देव न हुवे भाव देवनेवि षेज तेहना उत्पादथकी तथा सर्वार्थसिद्धक तो भव्यद्रव्य सिद्ध होज हुवे एतलामाटे एह वर्जीने बाकी सगलाई भव्यद्रव्य देवपणे उपजावया । जाव अपरा जिय देवेहिंतोवि उववज्जति । यावत् अपराजित देवथकी उपजे । णरदेवाणभते कओहिंतो उववज्जति कि णेरइए पुच्छा । नरदेव ए वाक्यालंकारे, हेभगवन् किहाथकी उपजे स्यू नारकीथकी उपजे इत्यादिक प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णेरइएहिंतो उववज्जति । हेगौतम नारकीथकी उपजे । णो तिरि णो मणुदेवे हिंतोवि उववज्जंति । तिर्यचथकी न उपजे मनुष्यथकी न उपजे देवथकी न उपजे । जइ णेरइएहिंतो उववज्जंति । जो नारकीथकी उपजे तो । कि रयणप्पभा

॥ मूल ॥

प्पभापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति जाव छट्ठे सत्तमाए पुढविए णेरइएहिंतोवि उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतोवि उववज्जंति णो सक्कर जाव णो छट्ठे सत्तमपुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति, जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासीदेवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतरजोइसियवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति वाणमंतर एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंतीभेदेणं

॥ अनुवाद ॥

उत्पद्यन्ते नैवतिर्यग्भ्य , नो मनुष्यदेवेभ्योप्युत्पद्यन्ते। यदि नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते (तर्हि) किं रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते (इत्यादि) यावदध सप्तम्या पृथिव्या नैरयिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते ? गौतम ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्योप्युत्पद्यन्ते नैव शर्करा (प्रभृति) यावन्नैवाध सप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते। यदि देवेभ्य उत्पद्यन्ते किं (तर्हि) भवनवासिदेवेभ्य उत्पद्यन्ते वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! भवनवासिदेवेभ्य उत्पद्यन्ते' वानव्यन्तर (प्रभृति) एव सर्वदेवेषु उत्पादयितव्या', व्युत्क्रान्तिभेदेन यावत्सर्वार्थसिद्ध इति। धर्मदे

॥ भाषा ॥

पुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति। स्यूं रत्नप्रभा नारकीथकी ऊपजे अथवा शर्करप्रभा नारकीथकी ऊपजे। जाव अहेसत्तमाए पुढविए णेरइएहिंतोवि उववज्जंति। इम यावत् नीचे सातमी तमतमा पृथिवीथकी ऊपजे इम सातेई पृथिवीनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा रयणप्पभापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति। हे गौतम रत्नप्रभापृथिवी नारकीथकी ऊपजे। णो सक्कर जाव णो अहेसत्तमापुढविणेरइएहिंतो उववज्जंति। नही शर्करप्रभा पृथिवीथकी ऊपजे इम यावत् नीचे सातमी तमतमा पृथिवीथकी ऊपजे नही एतले छ पृथिवीनो उपपात निषेध कर्यो। जइदेवेहिंतो उववज्जंति। जो देवथकी ऊपजे तो। किं भवणवासीदेवेहिंतो उववज्जंति। स्यूं भवनपती देवथकी ऊपजे अथवा। वाणमंतरजोइसिय वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति। वानव्यन्तर देवथकी ऊपजे अथवा ज्योतिषी देवथकी ऊपजे अथवा वैमानिकदेव थकी ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गो भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति। हेगौतम भवनपती देवथकी ऊपजे। वाणमंतर एव सव्वदेवेसु उववाएयव्वा। वानव्यन्तर देवथकी पणि ऊपजे ज्योतिषी देवथकी पणि ऊपजे वैमानिकदेवथकी प

॥ टीका ॥ ऽन्ये सर्वे भव्यद्रव्यदेवतयोत्पादनीया इति, धर्मदेवसूत्रे नवरमित्यादि ॥ तमत्ति ॥ षष्ठपृथिवी तत उद्वृत्तानां चारित्र नास्ति तथा अध' सप्तम्यास्ते जसो वायो रसङ्ख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिजेभ्यो ऽकर्मभूमिजेभ्यो ऽन्तरद्वीपजेभ्यश्चोद्वृताना मानुषत्वाभावा न्न चारित्र, ततश्च न धर्मदेवत्व मिति–

॥ मूल ॥ जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । धम्मदेवाण भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, णवरं तमा अहे सत्तमाए तेऊवाऊअसंखेज्जवासाउयअकम्मभूमिगअंतरदीवगवज्जेसु । देवाधिदेवाण भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा, गोयमा ! २

॥ अनुवाद ॥ वा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते एव व्युत्क्रान्तिभेदेन सर्वेषूत्पादयितव्या यावत्सर्वार्थसिद्ध इति नवरम् तमाया अध सप्तम्या पृथिव्या.' तेजस्कायवायुकायासङ्ख्येयवर्षायुष्काकर्मभूमिजान्तरद्वीपजवर्जेषु । देवाधिदेवा भदन्त । कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते पृच्छा, गौतम ! नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते नोतिर्यङ्मनुष्यदेवभ्य उत्पद्यन्ते, यदि नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते एव त्रिषु पृथिवीषु उत्पद्यन्ते, शेषा

॥ भाषा ॥ णि उपजे इम सर्व चारेइ निकायना देवथकी उपजाववा । वक्कंती भेदेणं जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । पन्नवणाने छट्ठेपदे कह्यो तिमभेदे करी यावत् सर्वार्थ सिद्धि पर्यंतलगे उपजाववा । धम्मदेवाणभंते कओहिंतो उववज्जंति । धर्मदेव हेभगवन् किहांथकी उपजे । किं णेरइएहिंतो । स्यू नारकीथकी उपजे । एववक्कंती भेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा । इम पन्नवणाने छट्ठे पदे कह्यो तिमभेदे करी सर्वनेविषे उपजाववा । जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । यावत् सर्वार्थसिद्ध पर्यंत उपजे इम कहवो । णवर तमा अहेसत्तमाए तेउ वाऊ । एतलोविशेष तमा छट्ठीपृथिवी थकी नीकल्या तेहने चारित्र नही अने नीचे सातमीपृथिवी तेउकाय वाउकाय । असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीवगवज्जेसु । असख्यात वर्षायुष कर्मभूमिज अन्तरद्वीपज एतलाथकी नीकल्या ते मनुष्य पणाना अभावथकी चारित्र न पामे तेमाटे एतला वर्जीने शेष उपजाववा । देवाधिदेवाणभंते कओहिंतो उववज्जंति । देवाधिदेव ण वाक्यालंकारे, हेभगवन् किहांथकी उपजे । किं णेरइएहिंतो उववज्जंति पुच्छा । स्यू नारकीथकी उपजे इत्यादि चारगति प्रश्नकीधो उत्तर । गोयमा णेरइएहिंतो

॥ टीका ॥ उद्वृत्ता देवातिदेवा उत्पद्यन्ते ॥ सेसाओ खोडेयव्वाओत्ति ॥ शेषा पृथिव्यो निषे देवातिदेवसूत्रे "तिसुपुढवीसुउववज्जतित्ति" तिसृभ्य पृथिवीभ्य उद्वृत्ता देवातिदेवा उत्पद्यन्ते ॥ सेसाओ खोडेयव्वाओत्ति ॥ शेषा पृथिव्यो निषे धयितव्या इत्यर्थः, ताभ्य उद्वृत्ताना देवातिदेवत्वस्याभावादिति॥ भावदेवाणमित्यादि॥ इहच वहुतरस्थानेभ्य उद्वृत्ता भवनवासितयोत्पद्यन्ते, अस ज्ञिनामपि तेषूत्पादा दतउक्त–जहावक्कंतीए भवणवासीण उववाओ इत्यादि, अथ तेषामेव स्थिति प्ररूपयन्नाह–भवियदव्वदेवाणमित्यादि॥ जहण्णे

॥ मूल ॥ णेरइएहिंतो उववज्जंति, णोतिरिणोमणुदेवेहिंतो उववज्जंति, जइ णेरइए एवंतिसु पुढविसु उववज्जंति सेसाओ खोडेयव्वाओ, जइ देवेहिंतो वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा। भावदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीण उववाओ तहाभाणियव्वो । भ

॥ अनुवाद ॥ शेषा निषेधयितव्या । भावदेवा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एव निषेधयितव्या । यदि देवेभ्य वैमानिकेषु सर्वेषूत्पद्यन्ते यावत्सर्वार्थसिद्ध इति । शेषा निषेधयितव्या । भावदेवा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? एव यथा व्युत्क्रान्तिके भवनवासिनामुत्पातस्तथा भणितव्यम् । भविकद्रव्यदेवाना भदन्त । कियन्त काल स्थिति. प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्त

॥ भाषा ॥ उववज्जंति । हे गौतम नारकीथकी उपजे । णो तिरि णो मणु देवेहिंतो उववज्जंति । तिर्यञ्चथकी न उपजे मनुष्यथकी न उपजे देवथकी न उपजे । जइ णे रइए एवतिसुपुढविसु उववज्जंति सेसाओ खोडेयव्वाओ । जो नारकीथकी उपजे इत्यादि, प्रश्न उत्तर इम तीन उपरलीपृथिवीथकी देवाधिदेव उपजे शेष चार हेठिलीपृथिवीने निषेध करवो तेथकी नीकल्या देवाधि देवपणो न पामे तेमाटे । जइदेवेहिंतो वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति । जो देवथकी उपजे इत्यादि प्रश्न वैमानिकदेव सगलाई देवाधि देवपणे उपजे । जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति सेसा खोडेयव्वा । यावत् सर्वार्थसिद्ध देवपर्यंत उपजावावा शेष तीन निकायना देवनो निषेध करवो । भावदेवाणंभते कओहिंतो उववज्जंति । भावदेव हेभगवन् । किहांथकी उपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर । एवंजहा वक्कंतीए भवणवासीण उववाओ तहा भाणियव्व । इम जिम पन्नवणाना छठापदनेविषे कह्यो भवनपतीनो उपपात तिम इहा पणि कहवो, हिवे तेहो नेज स्थिति प्ररूपता कहेछे—भवियदव्वदेवाणभंते केवइयकालठिई प० । भव्यद्रव्य देवनी हेभगवन् । केतला कालनी स्थिति प्ररूपी स्थिति कहिये आउ

॥ टीका ॥ उत्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइंति ॥ उत्तर
अंतोमुहुत्तंति॥ अन्तर्मुहूर्त्तायुषो पञ्चेन्द्रियतिरश्चो देवेषूत्पादाद्भव्यद्रव्यदेवस्य जघन्या ऽन्तर्मुहूर्त्तस्थिति ॥ उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइंति ॥ उत्तर कुर्वादिमनुजादीना देवेष्वेवोत्पादात्, ते नव्यद्रव्यदेवा स्तेषा चोत्कृष्टतो यथोक्ता स्थितिरिति ॥ सत्तवाससयाइति ॥ यथा ब्रह्मदत्तस्य ॥ चउरासीपुव्वस यसहस्साइति ॥ यथाऽभरतस्य, धम्मदेवाना ॥ जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तंति ॥ योऽन्तर्मुहूर्त्तावशेषायु श्चारित्रं प्रतिपद्यते तदपेक्षमिदं ॥ उक्कोसेणं देसूणा पुव्व कोडीति तु ॥ यो देशोनपूर्वकोट्यायु श्चारित्रं प्रतिपद्यते तदपेक्षमिति, ऊनता च पूर्वकोट्या अष्टासु वर्षे ष्वतेषस्यैव प्रव्रज्यार्हत्वात्, यच्च पद्वर्षस्त्रिवर्षा

॥ मूल ॥ वियदव्वदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओ वमाइं। णरदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं सत्तवाससयाइं उक्कोसेणं चउरासीतिपुव्वसयसहस्साइं । धम्म देवाणं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणाइं पुव्वकोडी। देवाहिदेवाणं पुच्छा,

अनुवाद: भदन्त । पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । नरदेवाना पृच्छा, गौतम । जघन्येन सप्तवर्षशतानि उत्कर्षतश्चतुरशीतिपूर्वशतसहस्राणि । धर्मदेवाना भदन्त । पृच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतोदेशोना पूर्वकोटी । देवाधिदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्यतो द्विसप्ततिवर्षाणि उत्क

॥ भाषा ॥ खो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ णरदेवाण पुच्छा । हेगौतम । जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त तेजिम अन्तर्मुहूर्त्त आउखानो धणी पचेंद्रिय तिर्यचथी देवनेविषे ऊपजे तेमाटे उत्कृष्टथकी तीन पल्योपमनो तेजिम उत्तरकुरु आदिदेइ युगलदेवने विषे उपजेछै तेमाटे, नरदेवनी स्थितिनो प्रश्नपूछ्यो उत्तर । गोयमा जहण्णेण सत्तवाससयाइ उक्कोसेण चउरासीइपुव्वसयसहस्साइं धम्मदेवाणभंते पुच्छा । हेगौतम । जघन्य थकी सातसे वरस जिम ब्रह्मदत्तनो स्थिति उत्कृष्टथकी चौरासीलाख पूर्ववरस भरत चक्रवर्त्तीपरे, धर्मदेवनी स्थितिनो प्रश्नपूछ्यो उत्तर । गोयमा जह ण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणाइ पुव्वकोडी । हेगौतम । जघन्यथकी अन्तर्मुहूर्त्त जे अन्तर्मुहूर्त्त शेष आउखे थका चारित्र पामे तेहनी अपेक्षाये कह्यो उत्कृष्टथकी आठवरसे ऊणो पूर्व कोडी वरसनी स्थिति कही । देवाहिदेवाण पुच्छा । देवाधि देवनीस्थितिनो प्रश्नपूछ्यो उत्तर । गोयमा जहण्णेण बाव

॥ टीका ॥

वा; प्रव्रजितोऽतिमुक्तको वैरस्वामीवा; तत्कादाचित्कमिति न सूत्रावतारीति' देवातिदेवानां॥ जहन्नेणं बावत्तरिं वासाइं ति॥ श्रीमन्महावीरस्येव॥ उक्कोसेणं चउरासीइंपुव्वसयसहस्साइं ति॥ ऋषभस्वामिनो यथा' भावदेवाना॥ जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ति॥ यथा व्यन्तराणां॥ उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ति॥ यथा सर्वार्थसिद्धदेवानां, अथ तेषामेव विकुर्वणां प्ररूपयन्नाह-भवियदव्वदेवाणमित्यादि॥ एगत्तं पभू विउव्वित्तए त्ति॥ भव्यद्रव्यदेवो मनुष्य पञ्चेन्द्रियतिर्यङ्वा, वैक्रियलब्धिसम्पन्न एकत्वमेकरूपं प्रभु. समर्थो विकुर्वयितुं॥ पुहुत्तं ति॥ नानारूपाणि देवातिदेवास्तु सर्वेऽपि तुल्यवज्जितत्वा

॥ मूल ॥

गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरि वासाइं उक्कोसेणं चउरासीइंपुव्वसयसहस्साइं । भावदेवाण पुच्छा , गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं । भवियदव्वदेवाण भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए , एगत्तं

अनुवाद

र्षं चतुरशीतिपूर्वशतसहस्राणि। भावदेवाना पृच्छा' गौतम! जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । भविकद्रव्यदेवो भदन्त । किमेकत्वं प्रभुर्विकुर्वयितुम् पृथक्त्वं प्रभुर्विकुर्वयितुम् ? गौतम ! एकत्वं अपि प्रभुर्विकुर्वयितुम् पृथक्त्वमपि प्रभुर्विकुर्वयितुम्। एकत्व

॥ भाषा ॥

सरिवासाइं। हे गौतम। जघन्यथकी बहुत्तर वरसना आ महावीरस्वामीना पेरे। उत्कृष्ट चउरासीपूर्वलाखवरसनो भावदेवाण पुच्छा। उत्कृष्ट धर्माचार्यनाथ पूर्व वरसना ते भो ऋषभदेवस्वामीनी पेरे, भावदेवनी स्थितिनो प्रश्नोत्तर कहे। गोयमा जहन्नेण दसवाससहस्साइं। हे गौतम। जघन्यथकी दशहजारवर्ष ते व्यन्तरनी अपेक्षायें। उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं। उत्कृष्टथकी तेत्रीससागरोपमनो ते सर्वार्थसिद्ध देवनी अपेक्षायें, हिवे तेहीज विकुर्वणा प्रते प्रश्न करे छे—भवियदव्वदेवाणं भंते किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए। भव्यद्रव्यदेव मनुष्य अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच ते वैक्रिय लब्धिसम्पन्न एकत्व कहेता एकरूप प्रते प्रभू समर्थ विकुर्वणा करवाने अनेकस्वरूपना रूपाने समर्थ विकुर्वणा करवाने इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए। हे गौतम। एकरूप विकुर्वणा करवाने पणि समर्थ। पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए एगत्त विउव्वमाणे। प

॥ टीका ॥

न विकुर्वते शक्तिसद्भावेपीत्यत उच्यते–नोचेवणमित्यादि ॥ सपत्तीएत्ति ॥ वैक्रियरूपसम्पादनेन विकुर्वणशक्तिस्तु विद्यते तल्लब्धिमात्रस्य विद्यमानत्वात्,

॥ मूल ॥

विउव्वमाणे एगिंदियरूवं जाव पंचिंदियरूवंवा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणिवा जाव पंचिंदिय रूवाणिवा, ताइं सखेज्जाणिवा असंखेज्जाणिवा संबद्धाणिवा असंबद्धाणिवा सरिसाणिवा असरिसाणिवा विउव्विता विउव्वित्ता तत्त पच्छा अप्पणो जहत्थियाइं कज्जा करेंति, एवं णरदेवावि, एवं धम्मदेवावि। देवाहिदेवाण पुच्छा, गोयमा! एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहत्तंपि पभू विउव्वित्तए, णोचेवणं सपत्तीए

अनुवाद

विकुर्वन्नेकेन्द्रियरूप यावत्पञ्चेन्द्रियरूपंवा, पृथक्त्वमपिविकुर्वन्नेकेन्द्रियरूपाणिवा यावत्पञ्चेन्द्रियरूपाणिवा तानि सङ्ख्येयानिवाऽसङ्ख्येयानिवा स म्बद्धानिवाऽसम्बद्धानिवा सदृशानिवाऽसदृशानिवा विकुर्वयितुम् विकुर्व्य तत पश्चादात्मनो यथास्थितानि कार्याणि कुर्वन्ति। एव नरदेवा अपि, एव धर्मदेवा अपि। देवाधिदेवाना पृच्छा, गौतम। एकत्वमपि प्रभुर्विकुर्वयितुम्, पृथक्त्वमपि प्रभुर्विकुर्वयितुम्, नैवच सम्पत्त्या विकुर्वितवन्तो

॥ भाषा ॥

एकेंद्रिय रूपप्रते इम यावत् पचेंद्रियरूपप्रते बहुरूप विकुर्वणा करवाने पणि समर्थ एकरूप पणे विकुर्वणा करतोथको। एगिंदियरूवं जाव पंचिंदिय रूवंवा। एकेंद्रिय रूप विकुर्वे यावत् पचेंद्रियरूप विकुर्वे। पुहुत्तविउव्वमाणे। घणारूप विकुर्वणा करतो पणि। एगिंदिय रूवाणिवा जाव पंचिंदिय रूवाणिवा। सबद्धाणिवा असंबद्धाणिवा। माहोमाहि मिल्याप्रते मा प्रते विकुर्वे। ताइं सखेज्जाणिवा असखेज्जाणिवा। तेह सख्याता प्रते अथवा असंख्याता प्रते। सरिसाणिवा असरिसाणिवा। सरीखा रूपा प्रते अणसरीखा रूपप्रते। विउव्वित्तए विउव्वित्ता तत्थोपच्छा। विकुर्वे विकुर्वी पोताधि कर्णमिव्या प्रवें। आपणा यथा इच्छाइं चिन्तव्या कार्य करे। एवं णरदेवावि एव धम्मदेवावि देवाहिदेवाण पुच्छा। ने तिथारप्छी। अप्पणो जहत्थियाइ कज्जा करेंति। हेगौतम। एक रूपपणे पणि इम नरदेव पणि अथवा इम धर्मदेव पणि कहवा, देवाधिदेवनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा एगत्तंपि पभू विउव्वित्तए। णो चेवणं सपत्तीए विउव्विसुवा विउव्विंतिवा वि समर्थ विकुर्वणा करवाने। पुहुत्तंपि पभू विउव्वित्तए। पृथक्रूपपणे पणि समर्थ विकुर्वणा करवाने।

॥ टीका ॥

अथ तेषामेवोद्वर्त्तना प्ररूपयन्नाह-भवियदव्वेत्यादि ॥ इह च भविकद्रव्यदेवाना भाविदेवभवस्यानन्तर्यान्नारकादिभवत्रयनिषेध , नरदेवसूत्रेतु-घोर

॥ मूल ॥

भवियदव्वदेवाणं भंते ! अण विउव्विसुवा विउव्वंतिवा विउव्विस्संतिवा । भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा । भवियदव्वदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति, किं णेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! णोणेरइएसु उववज्जंति , णोतिरिणोमणुदेवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । णरदेवाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, गोयमा ! णेरइएसु उववज्जंति

॥ अनुवाद ॥

वा विकुर्वन्तिवा विकुर्विष्यन्तिवा । भावदेवा यथा भविकद्रव्यदेवा । भविकद्रव्यदेवा भदन्त ! अनन्तरमुद्वृत्त्य कुत्र गच्छन्ति कुत्रोत्पद्यन्ते ? किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते यावद्देवेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते नो तिर्यक्षु नो मनुष्येषु, देवेषूत्पद्यन्ते । यदि देवेषूत्पद्यन्ते सर्वदेवेषूत्पद्यन्ते यावत्सर्वार्थसिद्ध इति । नरदेवा भदन्त अनन्तरमुद्वृत्त्य पृच्छा, गौतम ! नैरयिकेषूत्पद्यन्ते नोतिर्यक्षु नो मनुष्येषु नो देवेषूत्पद्यन्ते । यदि नैरयिके

॥ भाषा ॥

विकुर्वे उव्विस्संतिवा । देवाधिदेवने सर्वथा औत्सुक्य वर्जितपणा थकी शक्ति छता पणि विकुर्वणा करे एतलामाटे कह्यो , नहीं निश्चे संप्रदाये विकुर्व्यां विकुर्वे विकुर्वेसे । भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा । भावदेव जिम भविकद्रव्य देव कह्या तिम कहवा , हिवे तेहनोज उद्वर्त्तना प्रते कहे छे—भवियदव्वदेवाणं भंते अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति । भव्य द्रव्य देव हे भगवन् । अन्तररहित तिहांथी नीकलीने किसीगतें जाय किसे स्थानके ऊपजे । किं णेरइएसु उववज्जंति । स्यूं नारकीने विषे ऊपजे इम । जाव देवेसु उववज्जंति । यावत् देवनेविषे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णो णेरइएसु उववज्जंति । हे गौतम । नारकीने विषे न ऊपजे । णो तिरि णो मणु देवेसु उववज्जंति । तिर्यचनेविषे न ऊपजे मनुष्यनेविषे न ऊपजे देवनेविषे ऊपजे इहां भविकद्रव्यदेव देवने भावीदेव भवस्वभाव पणाथकी नारकादि तीनगतिनोनिषेध जाणवो । जइदेवेसु उववज्जंति । जो देवनेविषे ऊपजे इत्यादि प्रश्न । सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति । सर्वदेवने विषे ऊपजे यावत् सर्वार्थसिद्ध पर्यंत कहवा । णरदेवाणभंते अणंतर उव्वट्टित्ता पुच्छा । नरदेव हेभ

॥ टीका ॥

इएसु उववज्जंतित्ति ॥ अत्यक्तकामभोगा नरदेवा नैरयिकेषूत्पद्यन्ते, शेषत्रयेतु तन्निषेध स्तत्र च यद्यपि केचि चक्रवर्त्तिनो देवेषूत्पद्यन्ते तथापि ते

॥ मूल ॥

णोतिरिणोमणुणोदेवेसु उववज्जंति, जइ णेरइएसु उववज्जंति सत्तसुवि पुढवीसु उववज्जंति। धम्मदेवाणं
भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा, गोयमा! णोणेरइएसु उववज्जंति, णोतिरिणोमणुदेवेसु उववज्जंति,
जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासिपुच्छा, गोयमा! णोभवणवासीदेवेसु उववज्जंति, णोवाणमंतरजो
इसियवेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति, जाव सव्वट्ठसिद्धे उववज्जंति, अत्थेगइया

अनुवाद

पूत्पद्यन्ते सप्तस्वपि पृथिवीषु उत्पद्यन्ते। धर्मदेवा भदन्त! अनन्तरमुद्वृत्य पृच्छा, गौतम! नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते नो तिर्यक्षु नोमनुष्येषु देवे
षूत्पद्यन्ते, यदि देवेषूत्पद्यन्ते किं भवनवासि (प्रभृति) पृच्छा, गौतम। नो भवनवासिदेवेषूत्पद्यन्ते, नो वानव्यन्तरेषु नो ज्योतिष्केषु, वैमा

॥ भाषा ॥

ण्णेरइएसु उववज्जंति। हेगौतम। कामभोग छांड्या नहीं एहवा जे नरदेव जे ना
गवन्। अन्तररहित नोकलीने किहा ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णेरइएसु उववज्जंति। हेगौतम। कामभोग छांड्यानहीं एहवा जे नरदेव जे ना
रकीने विषे ऊपजे। णो तिरि णो मणु णो देवेसु उववज्जंति। शेष तीन गतिनेविषे ते न ऊपजे तिहां कोईएक नरदेव देवगतिने विषे ऊपजे तथापि
ते नरदेव पणाने त्यागे धर्मदेवपणानी प्राप्तिथवा ऊपजे एतलामाटे दोषनहीं नारकीनेविषे ऊपजे तो। सत्तसुविपुढवीसु उववज्जंति। साते पृथि
वीने विषे ऊपजे। धम्मदेवाण भंते अणंतर उवट्टित्ता पुच्छा। धर्मदेव हेभगवन्। अन्तररहित नीकलीने किहा जाय ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा
णो णेरइएसु उववज्जंति। हेगौतम। नारकीने विषे न ऊपजे। णो तिरि णो मणुदेवेसु उववज्जंति। तिर्यचनेविषे न ऊपजे मनुष्यने विषे न ऊपजे एक
देवगतिनेविषे ऊपजे। जइदेवेसु उववज्जंति किं भवणवासि पुच्छा। जो देवगतिनेविषे ऊपजे तो स्यूं भवनपतीदेवने विषे ऊपजे इत्यादि प्रश्न उत्तर।
गोयमा णो भवणवासीदेवेसु उववज्जंति। हेगौतम। भवनपतीदेवने विषे ऊपजे नहीं। णोवाणमतर णो जोइसिय वेमाणियदेवेसु उववज्जंति। वान
व्यन्तरने विषे न उपजे ज्योतिषीनेविषे न उपजे वैमानिकदेवने विषे उपजे। सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धे उववज्जंति। तिहां सर्व

नरदेवत्वत्यागेन धर्म्मदेवत्वप्राप्त्याविरतिनदोष ॥ जहावक्कतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वत्ति ॥ असुरकुमारा बहुपु जीवस्थानेषु गच्छ न्तीति कृत्वा ते रतिदेश: कृत , असुरादयोद्धीशानान्ता पृथिव्यादिष्वपि गच्छन्तीति, अथ तेपामेवानुवन्ध प्ररूपयन्नाह–भवियदव्वदेवेणमित्यादि ॥

सिज्झति जाव अतं करेंति । देवाहिदेवाण भंते ! अणतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! सिज्झति जाव अतं करेंति । भावदेवाणं भंते ! अणतरं उव्वट्टित्ता पुच्छा , जहा वक्कतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा । भवियदव्वदेवाण भंते ! भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवचिर होइ ?

निकदेवेषूत्पद्यन्ते , सर्वेषु वैमानिकेषूत्पद्यन्ते यावत्सर्वार्थसिद्ध उत्पद्यन्ते एके केचन सिध्यन्ति यावदन्त कुर्वंति। देवाधिदेवा भदन्त । अनन्तर मुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते ? गौतम। सिध्यन्ति यावदन्त कुर्वन्ति। भावदेवा भदन्त । अनन्तर मुद्वर्त्य पृच्छा, यथा व्युत्क्रान्तिके (प्रज्ञापनाषष्ठ पदे) असुरकुमाराणामुद्वर्त्तना (भणिता) तथा भणितव्या। भविकद्रव्यदेवा भदन्त। भविकद्रव्यदेवतया " भविकद्रव्यदेव इति वा „ कालत किय

वैमानिकने विषे ऊपजे इसो कहवो यावत् सर्वार्थसिद्धने विषे ऊपजे। अत्थेगइयासिज्झति जाव अतकरेइ। केतलाएक सीझे यावत् सर्वदुखनो अत करे मोक्षजाय इत्यर्थ । देवाहिदेवाणभंते अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छंति कहि उववज्जा ति । देवाधिदेव ण वाक्यालकारे, हेभगवन् । अनन्तरे नीकला ने किसीगति जाय किसे स्थानके ऊपजे प्रतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सिज्झति जाव अतंकरेंति । हेगौतम । सीझे यावत् सर्वदुखनो अतकरे मुक्तिजाय इत्य र्थ। भावदेवाणभंते अणतर उव्वट्टित्ता पुच्छा। भावदेव हेभगवन् । अन्तररहित नीकलीने किहा जाय प्रतिप्रश्न उत्तर। जहा वक्कतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा। जिम पन्नवणाना छट्ठापदने विषे असुरकुमारनी उद्वर्त्तना कही तिम इहा पणि कहवी असुरकुमार घणा जीवस्थानकने विषे जाय तेमाटे इहा कह्या, हिवे तेहनोज अनुबन्ध प्ररूपता कहेछे—भवियदव्वदेवाण भंते भवियदव्वदेवेत्ति कालओ केवचिरहोइ। भव्यद्रव्य देव हेभ गवन्। भव्यद्रव्य देव इसे पर्यायपणे कालथकी केतलो काल रहे प्रतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ एव जघे

॥ टीका ॥

भवियदव्वदेवेतित्ति ॥ भव्यद्रव्यदेव इत्यमुं पर्यायमत्यज न्नित्यर्थः ॥ जहन्नेणमंतोमुहुत्तमित्यादि ॥ पूर्ववदिति ॥ एवंजच्चेवतित्ती ॥ सच्चेवसचिट्ठणावि त्ति ॥ एव मनेन न्यायेन यैव स्थिति र्भवस्थितिः प्रागवर्णिता सैवैषा संस्थितिरपि तत्पर्यायानुवन्धोपीत्यर्थः, विशेषत्वाह—नवरमित्यादि ॥ धरमं देवस्य जघन्येनैक समय स्थितिरशुभभाव गत्वा ततो निवृत्तस्य शुभभावप्रतिपत्तिसमयानन्तरमेव मरणादिति, अथैतेषामेवान्तर प्ररूपयन्नाह— भवियदव्वदेवस्सणं भंते । इत्यादि ॥ जहन्नेण दसवाससहस्साइं अन्तोमुहुत्तमब्भहियाइंति ॥ भव्यद्रव्यदेवस्यान्तर जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहू

॥ मूल ॥

गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाइं एवं जच्चेव तित्ती सच्चेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवा, णवरं धम्मदेवस्स जहन्नेण एक्कं समय उक्कोसेण देसूणाइं पुव्वकोडी। भवियदव्वदेवस्सणं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं

॥ अनुवाद ॥

चिरं भवन्ति ? गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणिपल्योपमानि (यावत्) एव यैव स्थिति (भवस्थिति) सैव संस्थितिरपि (ताव द्वाच्या) यावद्भावदेवा, नवर धर्मदेवस्य जघन्येनैक समयमुत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटी (ऊनताचात्रापि वर्षैरष्टभि) भविकद्रव्यदेवस्य भदन्त ! कियत्कालमन्तर भवति ? गौतम । जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि, उत्कर्षतोऽनन्त काल वनस्पतिकाल । नरदेवाना पृच्छा,

॥ भाषा ॥

व छिइं सचेव संचिट्ठणावि जाव भावदेवा । हेगौतम । जघन्यथकी अंतर्मुहूर्त्त ए पृठिलीपरे उत्कृष्टथकी तीन पल्योपम युगलनी अपेक्षायें इम इणे न्याये करी जिकाहीज भवस्थिति पूर्वे कही तिकाहीज स्थितिपणि कहवी तेहनो पर्यायअनुबन्ध पणि यावत् भावदेवा लगे कहवो । णवर धम्मदेवस्स जहणे णं एक्कंसमयं उक्कोसेण देसूणाइं पुव्वकोडी । एतलोविशेष धर्मदेवनी जघन्य एकसमयनी स्थिति ते किम अशुभभावें जइने तिहाथी निवर्त्तने शुभपरिणाम पाम्या समय अन्तरहीज मरणथकी उत्कृष्टथकी देसून पूर्वकोडी, हिवे तेहोनाज अन्तरप्रतें प्ररूपतो कहेछे—भवियदव्वदेवस्सणंभंते केवइयं काल अंतरहोइ । भव्यद्रव्यनो हेभगवन् । केतलोकाल अन्तरहुवे एतले भव्यद्रव्य देव मरी वलो केतलेकाले भव्यद्रव्यदेवहुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जह

र्त्ताभ्यधिकानि कथं ? भव्यद्रव्यदेवो भूत्वा दशवर्षसहस्रस्थितिषु व्यन्तरादिषूत्पद्य च्युत्वा शुभपृथिव्यादौ गत्वा अन्तर्मुहूर्त्तं स्थित्वा पुन र्भव्यद्र व्यदेवत्वेनोपजायत इत्येवमेतच्च टीकामुपजीव्य व्याख्यातं, इह कश्चिदाह–ननु देवत्वा च्च्युतस्यानन्तरमेव भव्यद्रव्यदेवतयोत्पत्तिसम्भवात् दशवर्षसह स्राण्येव जघन्यत स्तस्यान्तरं भवत्यत कथं मन्त र्मुहूर्त्ताभ्यधिकानि तान्युक्तानीति ? अत्रोच्यते–सर्वजघन्यायु र्देव श्च्युत सन् शुभपृथिव्यादिषूत्प द्य भव्यद्रव्यदेवेषूत्पद्यत इति टीकाकारमतमवसीयते, तथाच यथोक्तमन्तरं भवतीति, अन्येपुन राहु रिह बद्धायुरेव भव्यद्रव्यदेवो विवक्षित स्तेन जघन्यस्थितिका द्देवत्वाच्च्युत्वान्तर्मुहूर्त्तस्थितिकभव्यद्रव्यदेवत्वेनोत्पन्नस्यान्तर्मुहूर्त्तस्योपरि देवायुषो बन्धना द्यथोक्तमन्तरं भवतीति, अथवा; भव्य द्रव्यदेवस्य जन्मनां मरणयोर्वान्तरस्य ग्रहणाद्यथोक्तमन्तरमिति ॥ नरदेवाणमित्यादि ॥ जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमंति ॥ कथं मपरित्यक्तसम्राजः चक्रवर्त्तिनो नरकपृथिवीषूत्पद्यन्ते तासुच यथास्वमुत्कृष्टस्थितयो भवन्ति ततश्च नरदेवो मृत प्रथमपृथिव्या मुत्पन्न स्तत्रचोत्कृष्टा स्थिति सागरोपम प्रमाणामनुभूय नरदेवो जात इत्येव सागरोपमं सातिरेकत्वञ्च नरदेवभवे चक्ररत्नोत्पत्ते रर्वाचीनकालेन द्रष्टव्य, उत्कृष्टतस्तु देशोन पुद्गलपराव

कालं वणस्सइकालो। णरदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहण्णेणं साइरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं

गौतम। जघन्येन सातिरेकं सागरोपम मुत्कर्षतोनन्त कालमपार्द्धं पुद्गलपरावर्त्तं देशोनम्। धर्मदेवस्य पृच्छा, गौतम। जघन्येन पल्योपमपृथक्त्वमु

सेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं उक्कोसेणं अणंतंकालं वणस्सइकालो। हे गौतम। जघन्यथकी दशसहस्रवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक ते किम देवमरी दशसहस्रवर्ष स्थितिव्यन्तरादिकनेविषे ऊपजी तिहांथी चवी शुभपृथिव्यादिकनेविषे आव अन्तर्मुहूर्त्त रही वली भव्यद्रव्यदेव थोअहुवे तेमाटे अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दशसहस्रवर्ष कह्या उत्कृष्टथकी अनन्तोकाल वनस्पतिकाल एतले भव्यद्रव्य मरी देव थई तिहांथी वनस्पत्यादिकने विषे अनन्तोका ल रही वली भव्यद्रव्यदेव थाय। नरदेवाण पृच्छा। नरदेवनो प्रश्नकीधो उत्तर। गोयमा जहण्णेणं साइरेगं सागरोवमं। हे गौतम। जघन्यथकी सागरो पम भाभेरो तेकिम अपरित्यक्त भोग चक्रवर्त्ति मरी नरकने नरकपृथिवीने विषे ऊपजे ते जिहां ऊपजे तिहां उत्कृष्ट स्थितिज ऊपजे ते कारणथी पहि

॥ टीका ॥ तांद्वं कथ ? चक्रवर्त्तित्वदि–सम्यग्दृष्टयएव निर्वर्त्तयन्ति तेषाच देशोनापार्द्धपुद्गलपरावर्त्तएव ससारो भवति तदत्यभवेच कश्चिन्नरदेवत्वं लभत इत्ये वमिति ॥ धम्मदेवस्सणमित्यादि ॥ जहखेण पलिउवमपुहत्तति ॥ कथ ? चारित्रवान् कश्चित्सौधर्म्मे पल्योपमपृथक्त्वायुष्के पूत्पद्य तत इच्युतो धर्म्मदेवत्व लभत इत्येवमिति, यच्च मनुजत्वे उत्पन्नश्चारित्र विना स्ते तदधिकमपिस तत्पल्योपमपृथक्त्वे ऽन्तर्जावितमिति ॥ भावदेवस्सणमित्या दि ॥ जहखेण अतोमुहुत्तति ॥ कथ ? भावदेव इच्युतो ऽन्तर्मुहूर्त्तं मन्यत्र स्थित्वा पुनरपि भावदेवो जात इत्येव जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमन्तरमिति,

॥ मूल ॥ अणंतं अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। धम्मदेवस्सणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं पलिउवमपुहत्तं उक्कोसेण अणंतं कालं जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं। देवाधिदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! णत्थि अंतरं। भावदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहसेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो। एएसिण भंते ! भवियद

अनुवाद उत्कर्षतोऽनन्त कालं यावदपार्द्धं पुद्गलपरावर्त्तं देशोनम्। देवाधिदेवाना पृच्छा, गौतम ! नास्त्यन्तरम्। भावदेवाना पृच्छा, गौतम ! जघन्ये

॥ भाषा ॥ ते चक्रवर्त्ति उपना पछी पहिलोकाल जाणवो। उ लो पृथिवीनेविषे उत्कृष्ट येक सागरोपम स्थिति भोगवीने वलो नरदेव थवो इम सागरोपम अने साधिक ते चक्रवर्त्त उपना पछी पहिलोकाल जाणवो। उ क्रमेण अणंतकाल अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण धम्मदेवस्सण पुच्छा। उत्कृष्टथको अनन्तकाल देशोन अर्द्ध पुद्गलपरावर्त्त ठीजसंसार हुवे, तेहने अन्त्यम व कोई एकनेविषे नरदेवपणो लाभे इम उत्कृष्ट अन्तर जाणवो नरदेवनो, धर्मदेवनो अन्तर पृछो उत्तर। गोयमा जहखेण पलिओवमपुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण देवाधिदेवाण पुच्छा। हेगौतम। जघन्यथको पल्योपम पृथक्त ते जिम चारित्रवन्त मरो कोई एक सौध र्मदेवलोके पल्योपम पृथक्त आउखानेविषे ऊपजे तिहाथी चवो वली देवपणो पामे इम थयोतो अन्तरहुवे, जे मनुष्यपणे ऊपना चारित्र विना कालके ते अधिक पणि पल्योपम पृथक्तनेविषे अतर्भावित जाणवो, उत्कृष्टथको अनन्तोकाल यावत् अपार्द्ध पुद्गलपरावर्त्त देसून, देवाधिदेवनो अन्तर पृछो उत्त र। गोयमा णत्थि अतर भावदेवाणं पुच्छा। हेगौतम। अन्तर नहीं एकवारहीज थाय, भावदेवनो अन्तर पृछो उत्तर। गोयमा जहखेणं अंतोमुहुत्तं उ

॥ टीका ॥

अथैतेषामेवाल्पबहुत्वं प्ररूपयन्नाह-एएसिणमित्यादि ॥ सव्वत्थोवा नरदेवत्ति ॥ भरतैरवतेषु प्रत्येकं द्वादशानामेव तेषामुत्पत्ते र्विजयेषुच वासुदेवसम्भवात् सर्वेष्वेकदा ऽनुत्पत्ते रिति ॥ देवाहदेवा संखेज्जगुणत्ति ॥ भरतादिषु प्रत्येकं तेषां चक्रवर्त्तिभ्यो द्विगुणतयोत्पत्ते र्विजयेषुच वासुदेवोपेतेष्वप्युत्पत्तेरिति ॥ धम्मदेवा संखेज्जगुणत्ति ॥ साधूनामेकदापि कोटीसहस्रपृथक्त्वसद्भावादिति ॥ भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणत्ति ॥ देशविरतादीनां देवगतिगामिनामसंख्यातत्वात् ॥ भावदेवा असंखेज्जगुणत्ति ॥ स्वरूपेणैव तेषामतिबहुत्वादिति, अथ भावदेवविशेषाणां भवनपत्यादी

॥ मूल ॥

यदेवाणं णरदेवाणं जाव भावदेवाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णरदेवा देवाहिदेवा संखेज्जगुणा धम्मदेवा संखेज्जगुणा भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा भावदेवा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं सोहम्मगाणं जाव

अनुवाद

न्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽनन्तं कालं वनस्पतिकालं । एतेषां भदन्त ! भविकद्रव्यदेवानां नरदेवानां यावद्भावदेवानां च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका नरदेवा , देवाधिदेवा सङ्ख्येयगुणा , धर्मदेवा सङ्ख्येयगुणा , भविकद्रव्यदेवा असङ्ख्येयगुणा , भावदेवा असङ्ख्येयगुणा ।

॥ भाषा ॥

कोसेणं अणंतकालं वणस्सइकालो । हे गौतम । जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त भावदेव मरी अन्तर्मुहूर्त्त अनेरे स्थानके रही वली भावदेवपणे उपजे, उत्कृष्ट थकी अनन्तो काल ते वनस्पतीकाल जाणवो, हिवे एहांनोज अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणं भंते भवियदव्वदेवाणं णरदेवाणं जाव भावदेवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा । एहने हे भगवन् भव्यद्रव्य देवने नरदेवने धर्मदेवने देवाधिदेवने भावदेवने माहोमाहि कुण २ थकी थोडाहुवे घणाहुवे बराबरहुवे यावत् विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवा णरदेवा देवाहिदेवा संखेज्जगुणा । हे गौतम । सर्वस्तोक नरदेव भरतऐरवतक्षेत्रनेविषे प्रत्येके बारेहीज ऊपजे विजयनेविषे पणि वासुदेवनो सम्भवछे तेमाटे तेहथी देवाधिदेव सख्यातगुणा भरत ऐरवतनेविषे प्रत्येके चउवीस हुवे, विजयनेविषे वासुदेव हुवे तिहा पणि तीर्थंकर हुवे तेमाटे तेहथा । धम्मदेवा संखेज्जगुणा । धर्मदेव सख्यातगुणा एकदा पणि कोटिसहस्र पृथक्त्व साधुनो

॥ टीका ॥ त्रिविधजीवाधिकार इत्यर्थ , देवपुरु नामल्पबहुत्वप्ररूपणायाह-एएसिणमित्यादि ॥ जहा जीवाभिगमे तिविहे इत्यादि ॥ इहच ॥ तिविहेत्ति ॥ षाणामल्पबहुत्वमुक्त तथेहापि वाच्य तच्चैव-सहस्सारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा , महासुक्के असखेज्जगुणा ' लते असखेज्जगुणा , बभलोए देवा असखेज्जगुणा ' माहिंदे देवा असखेज्जगुणा , सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा , ईसाणे देवा असखेज्जगुणा , सोहम्मे देवा सखेज्जगुणा , भव

॥ मूल ॥ अच्चुयगाण गेवेज्जगाणं अणुत्तरोववाइयाणय कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा , उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा , मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा , हेट्ठिम

॥ अनुवाद ॥ एतेषा भदन्त ! भावदेवाना भवनवासिना वानव्यन्तराणा ज्योतिष्काना वैमानिकाना सौधर्मकाणा यावदच्युताना ग्रैवेयकानामनुत्तरोपपातिकाना च कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोका अनुत्तरोपपातिका भावदेवा , उपरिमग्रैवेयका भावदेवा सङ्ख्येयगुणा , मध्यमग्रैवेयका सङ्ख्येयगुणा , अधस्तनग्रैवेयका सङ्ख्येयगुणा , अच्युतकल्पे देवा सङ्ख्येयगुणा यावदानतकल्पे भावदेवा (सङ्ख्येयगुणा) एव यथा

॥ भाषा ॥ सद्भावके तेमाटे । भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा । तेहथी भव्यद्रव्यदेव असख्यातगुणा देशविरतादिक देवगतिगामीना असख्यातपणा माटे । भावदेवा असखेज्जगुणा । तेहथी भावदेव असख्यातगुणा स्वरूपेज तेहोना अति बहुलपणा थकी, हिवे भावदेव विशेष भवनपत्यादिकनो अल्प बहुत्व निरूपण करेछे—एएसिणभंते भावदेवाण भवणवासीणं । एहने हेभगवन् ! भावदेवने भवनपतीने । वाणमंतराणं जोइसियाण वेमाणियाण सोहम्मगाणं । वानव्यन्तरने ज्योतिषीने वैमानिकने सौधर्मदेवने । जाव अच्चुयगाण गेवेज्जगाण । यावत् अच्युत देवने ग्रैवेयकने । अणुत्तरोववाइयाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा । अनुत्तरोपपातिकदेवने माहोमाहि कुण कुणथकी अल्पहुवे घणाहुवे सरीखाहुवे विशेषाधिक हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थो वा अणुत्तरोववाइया भावदेवा । हेगौतम सर्वथी थोडा अनुत्तरोपपातिकदेव भव्यहोज उपजे तेमाटे तेहथी । उवरिम गेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा । ऊपरला त्रिक ग्रैवेयकना भावदेव संख्यातगुणा तेहथी । मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा । मध्यम त्रिक ग्रैवेयकना देव सख्यातगुणा तेहथी । हेट्ठिमगेवेज्जा

णवासिदेवा असखेज्जगुणा, वाणमंतरा असखेज्जगुणात्ति ॥ द्वादशशते नवम ॥ १२ ॥ ९ ॥ नवमोद्देशके देवा उक्ता स्तेचात्मान इत्यात्मस्वरूपस्य भेदतो निरूपणाय दशमोद्देशकमाह–तस्यचेदमादिसूत्र–कइविहाणमित्यादि ॥ आयत्ति ॥ अतति सतत गच्छति अपरापरान् स्वपरपर्यायानित्यात्मा' अथवा, अतधातो र्गमनार्थत्वेन ज्ञानार्थत्वादतति सततमवगच्छत्युपयोगलक्षणत्वादित्यात्मा' प्राकृतत्वाच्च सूत्रे स्त्रीलिङ्ग

गेवेज्जा संखेज्जगुणा , अच्चुयकप्पे देवा सखेज्जगुणा , जाव आणतकप्पे भावदेवा एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसअप्पाबहुयं जाव जोइसिया भावदेवा असखेज्जगुणा ॥ १ ॥ सेव भंते भंतेत्ति ॥ दुवालसमसयस्सय णवमो उद्देसो सम्मत्तो १२ ॥ ९ ॥ कइविहाण भंते ! आता पण्णत्ता ?

जीवाभिगमे त्रिविधे (जीवाधिकारे) देवपुरुषाल्पा बहुत्वम् (उक्त तथेहापिवाच्यमिति) यावज्ज्योतिष्का भावदेवा असङ्ख्येयगुणास्तदेव भदन्त । भदन्त । इति ॥ द्वादशमशते नवमोद्देश ॥१२॥ ९ ॥ कतिविधो भगवन्नात्मा प्रज्ञप्त ? गौ० । द्रव्यात्मा (सर्वजीवानाम्) कषायात्मा (सकषायि

सखेज्जगुणा । नीचला त्रिक ग्रैवेयकना देव सख्यातगुणा तेहथी । अच्चुय कप्पदेवा सखेज्जगुणा जाव आणत कप्पे भावदेवा । अच्युत देवलोकना देव सख्यातगुणा इम यावत् आनत देवलोकना भावदेव संख्यातगुणा । एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिस अप्पा बहुयं जाव जोइसिया भाव देवा असंखेज्जगुणा । इम जिम जीवाभिगम उपाङ्गनेविषे कह्यो तिविहे इत्यादि, त्रिविध जीवने अधिकारे इत्यर्थ तिहा तीनप्रकारे पुरुष कह्या तिर्य च्चयोनिक पुरुष १ मनुष्यपुरुष २ देवपुरुष ३ तिहादेव पुरुषनो अल्प बहुत्व इहा जाणवो ते इम सहस्रारकप्पे देवा असखेज्जगुणा, भवणवासीदेवा अ सखेज्जगुणा, वाणमतरादेवा असखेज्जगुणा, यावत् ज्योतिषी भावदेवा असख्यातगुणा इति । सेवभते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन् । तुम्हे कह्यु, ते सत्यछे ॥ पाछिले उद्देशे देव अन्यथा नही । दुवालसमसयस्सय णवमो उद्देसोसम्मत्तो । ए बारमाशतकनो नवमो उद्देशो पूरोथयो १२ ॥ ९ ॥ पाछिले उद्देशे देव कह्या ते आत्मावन्तछे तेमाटे आत्मस्वरूप भेदथी निरूपणा करतो कहेछे—कइविहाणभंते आता पण्णत्ता । केतलेभेदे हेभगवन् । आत्माकह्यो इतिप्रश्न उ

॥ टीका ॥

निर्द्देश , तस्यचोपयोगलक्षणत्वा त्तसामान्येनैकविधत्वेप्युपाधिभेदादष्टधात्वं, तत्र॥ दवियायत्ति॥ द्रव्यं त्रिकालानुगाम्युपसर्जनीकृतकषायादिपर्याय
तद्रूप आत्मा द्रव्यात्मा, सर्वेषां जीवाना॥ कसायायत्ति॥ क्रोधादिकषायविशिष्ट आत्मा कषायात्मा, अक्षीणानुपशान्तकषायाणां॥ जोगायत्ति॥
योगा मन प्रभृतिव्यापारा स्तत्प्रधान आत्मा योगात्मा, योगवतामेव॥ उवओगायत्ति॥ उपयोग साकारानाकारभेद स्तत्प्रधान आत्मा उपयो
गात्मा, सिद्धससारिस्वरूप सर्वजीवानां॥ अथवा' विवक्षितवस्तूपयोगापेक्षयोपयोगात्मा॥ णाणायत्ति॥ ज्ञानविशेषत उपसर्जनीकृतदर्शनादि
रात्मा ज्ञानात्मा, सम्यग्दृष्टे , एवं दर्शनात्मादयोपि, नवर दर्शनात्मा सर्वजीवाना, चारित्रात्मा विरताना वीर्यमुत्थानादि तदात्मा सर्वससा
रिणामिति' उक्तञ्च-जीवानाद्रव्यात्मा ज्ञेय सकषायिणाकषायात्मा। योग सयोगिनापुन रुपयोग सर्वजीवाना॥ १॥ ज्ञानसम्यग्दृष्टे दर्शनमथन्न

॥ मूल ॥

गोयमा ! अठविहा आता पन्नत्ता , तंजहा—दवियाता कसायाता जोगायाता उवओगयाता णाणत्ता दंस
णाया चरित्ताया वीरियाता । जस्सणं भंते ! दवियाता तस्सणं कसायाता , जस्स कसायाता तस्स दवि

अनुवाद

याम्) योगात्मा (योगिनाम्) उपयोगात्मा (सर्वजीवानाम्) ज्ञानात्मा (सम्यग्दृष्टिनाम्) दर्शनात्मा (सर्वजीवानाम्) चारित्रात्मा (सर्ववि
रतीनाम्) वीर्यात्मा (सर्वससारिणाम्) ८। यस्य भदन्त! द्रव्यात्मा तस्य कषायात्मा यस्य कषायात्मा तस्य द्रव्यात्मा ? गौतम! यस्य द्रव्यात्मा

॥ भाषा ॥

त्तर। गोयमा अष्ठविहा आता पन्नत्ता त०। हे गौतम आठभेदे आत्मा कह्या ते कहेछे, उतावलो जाय अपर अपरपर्यायप्रते ते आत्मा कहिये। दविया
ता कसायाता जोगायाता उवओयाता। त्रिकालानुगामी उपर्जनीकृतकषायादि पर्यायरूप आत्मा ते द्रव्यात्मा कहिये १ सर्वजीवने हुवे क्रोधादि कषा
य विशिष्टआत्मा ते कषायात्मा ए अक्षीण अनुपशातकषायवन्तने हुवे २ योगात्मा योग ते मनप्रभृति व्यापार ते प्रधान आत्मा ते योगात्मा ए योगवन्तने
ज हुवे ३ उपयोग ते साकार अनाकार भेदे ते प्रधान आत्मा ते उपयोगआत्मा ए ससार सिद्धस्वरूप सर्व जीवने हुवे अथवा विवक्षितवस्तु उपयोग अपे
क्षाय उपयोगात्मा ४ णाणत्ता दसणाया चरित्ताया वीरियाता। ज्ञानात्मा ज्ञानविशेष उपसर्जनीकृत दर्शनादि आत्मा ते ज्ञानात्मा ए सम्यग्दृष्टीने हुवे

॥ टीका ॥ वतिसर्व्वजीवाना । चारित्रविरताना तुसर्वससारिणांवीर्यमिति ॥ २ ॥ एव मष्टधात्मान प्ररूप्याऽथ यस्यात्मभेदस्य यदन्यदात्मभेदान्तर युज्यते च न युज्यते च तस्य तद्दर्शयितुमाह-जस्सणमित्यादि ॥ इहाष्टौ पदानि स्थाप्यन्ते-तत्र प्रथमपद शेषै सप्तभि सह चिन्त्यते-तत्र यस्य जीवस्य द्रव्यात्मा द्रव्यात्मत्व जीवत्वमित्यर्थ. ' तस्य कषायात्मा स्यादस्ति कदाचिदस्ति सकषायावस्थाया, स्यान्नास्ति कदाचिन्नास्ति क्षीणोपशान्तकषाया वस्थाया, यस्य पुन कषायात्मास्ति तस्य द्रव्यात्मत्व जीवत्व नियमादस्ति जीवत्वविना कषायाणामभावादिति, तथा यस्य द्रव्यात्मा तस्य योगात्मास्ति योगवतामिव नास्तिचायोगिसिद्धानामिव, तथा यस्य योगात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमादस्ति जीवत्वविना योगानामभावादेतदेव पूर्वसूत्रोपमानेन दर्शयन्नाह-एव जहा दवियायेत्यादि ॥ तथा यस्य जीवस्य द्रव्यात्मा तस्य नियमादुपयोगात्मा यस्याप्युपयोगात्मा तस्य नियमा

॥ मूल ॥ याता ? गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स कसायाता सियअत्थि सियणत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाता णियम अत्थि । जस्सणं भंते ! दवियाता तस्स जोगाता एवं जहा दवियाता कसायाता भणि

॥ अनुवाद ॥ तस्य कषायात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, यस्य पुन कषायात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमादस्ति। यस्य भदन्त! द्रव्यात्मा तस्य योगात्मा ? (इत्यादि)

॥ भाषा ॥ ५ इम दर्शनात्मादिक पणि एतलोविशेष दर्शनात्मा सर्वजीवने ६ चारित्रात्मा विरतीने ७ उत्थानादि ते वीर्य ते रूप आत्मा ते वीर्यात्मा ए सर्व ससारीने हुवे ८ इम आठप्रकारे आत्मामते प्ररूपी तेहवे जे आत्मभेदने आत्मभेदान्तर सघाते योगहुवे ते देखाडेछे—जस्सण भते दवियाता तस्सण कसायाता जस्स कसायाता तस्स दवियाता । जेहने हेभगवन् ! द्रव्यात्मा हुवे तेहने कषायात्मा हुवे, तथा जेहने कषायात्मा हुवे तेहने द्रव्यात्मा हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्स दवियाता तस्स कसायाता सियअत्थि सियणत्थि । हेगौतम ! इहा आठेइ पद स्थापिये तिहा पहिलो पद शेष पद सातपद संघाते चिन्तविये ते इम, ज जीवने द्रव्यात्मा द्रव्यात्मपणो जीवपणो इत्यर्थ ते हुवे तेहने कषायात्मा ,सियअत्थि, किवारे कोहे ते सकषाय अवस्थायें हुवे तेमाटे ,सियणत्थि, कदाचित् नहो क्षीणउपशान्त कषाय अवस्थाये ते नहो तेमाटे अने वलो । जस्सपुण कसायाया तस्स दवियाता णियम अत्थि । जेहने क

॥ टीका ॥ दुपयोगलक्षणत्वा ज्जीवाना मेतदेवाह-जस्स द्रव्यात्मा एतयो परस्परेण अविनाभूतत्वाद्यथासिद्धस्य, तदन्यस्य च द्रव्यात्मास्त्युपयोगात्मा चो पयोगलक्षणत्वा ज्जीवाना मेतदेवाह-जस्स द्रव्यात्मा एतयो परस्परेण अविनाभूतत्वाद्यथासिद्धस्य, तदन्यस्य च द्रव्यात्मास्त्युपयोगात्मा दवियायेत्यादि ॥ तथा ॥ जस्स दवियाया तस्सनाणाया भयणाए, जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियम अत्थित्ति ॥ यस्य जीवस्य द्रव्यात्मा तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति यथा सम्यग्दृष्टीना, स्यान्नास्ति यथा मिथ्यादृष्टीना मित्येव भजना' यस्यतु ज्ञानात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमादस्ति यथा सिद्धस्येति, तथा ॥ जस्स दवियाया तस्स दसणाया नियम अत्थित्ति ॥ यथा सिद्धस्य केवलदर्शन ॥ जस्सवि दसणाया तस्स दवियाया नियम अ

॥ मूल ॥ या तहा दवियाता जोगायायावि भाणियव्वा । जस्सण भंते ! दवियाता तस्स उवओगाता एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा, गोयमा ! जस्स दवियाता तस्स उवओगाया णियम अत्थि , जस्सवि उवओगाता त

अनुवाद एव यथा द्रव्यात्मा कषायात्मा भणित स्तथा द्रव्यात्मा योगात्मापि भणितव्य । यस्य भदन्त ! द्रव्यात्मा तस्योपयोगात्मा एव सर्वत्र पृच्छा भणित व्या, गौतम! यस्य द्रव्यात्मा तस्योपयोगात्मा नियमादस्ति, यस्याप्युपयोगात्मा तस्यापि द्रव्यात्मा नियमादस्ति। यस्य द्रव्यात्मा तस्य ज्ञानात्मा

॥ भाषा ॥ जेहने हेभगवन् ! द्रव्या पायात्माछे तेहने द्रव्यात्मा जीवपणो नियमथकीछे जीव विना कषायना अभावथकी । जस्सण भंते दवियाता तस्स जोगाता। जेहने हेभगवन् ! द्रव्या त्मा हुवे तेहने योगात्मा हुवे तथा जेहने योगात्मा तेहने द्रव्यात्मा हुवे इतिप्रश्न उत्तर। एव जहा दवियाता कसायाता भणिया तहा दवियाता जो गायावि भाणियव्वा । इम जिम द्रव्यात्मा अने कषायात्मा कह्या तिम द्रव्यात्मा अने योगात्मा पणि कहवा, एतले जेहने द्रव्यात्मा तेहने योगात्मा ,सियअत्थि, ते सयोगी अवस्थायें हुवे ,सियणत्थि, ते अयोगी तथा सिद्ध ते अवस्थायें नही, तथा जेहने योगात्मा हुवे तेहनेद्रव्यात्मा निश्चयथकी हुवे जो वल विना योगना अभावथकी । जस्सण भंते दवियाता तस्स उवओगाता । जेहने हेभगवन् ! द्रव्यात्मा हुवे तेहने उपयोगात्मा हुवे तथा जेहने उपयो गात्मा हुवे तेहने द्रव्यात्मा हुवे इतिप्रश्न । एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। इम सगलेई पदे माहोमाहि पृच्छा जाणवी । गो जस्स दवियाता तस्स उवओ गाया णियम अत्थि । हेगौतम जेहने द्रव्यात्मा हुवे तेहने उपयोगात्मा नियमथकी हुवे उपयोगमय जीवछे तेमाटे तथा । जस्सवि उवओगाता तस्सवि

स्त्यिति ॥ यथा चक्षुर्दर्शनादिदर्शनवतां जीवत्वमिति, तथा ॥ जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाएत्ति ॥ यत सिद्धस्याविरतस्य वा ; द्रव्यात्मत्वे सत्यपि चारित्रात्मा नास्ति विरतानां चास्तीति भजनेति ॥ जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियम अत्थित्ति ॥ चारित्रीणां जीवत्वाव्यभिचा रित्वादिति ॥ एवं वीरियायाएवि समं ति ॥ यथा द्रव्यात्मन चारित्रात्मनाऽऽसह भजनोक्ता, नियमश्च एव वीर्यात्मनापि सहेति तथाहि-यस्य द्रव्या त्मा तस्य वीर्यात्मा नास्ति यथा सकरणवीर्यापेक्षया सिद्धस्य' तदन्यस्य त्वस्तीति भजना, वीर्यात्मनस्तु द्रव्यात्माऽस्त्येव यथा संसारिणामिति ७॥ अथ

स्सवि दवियाता णियमं अत्थि। जस्स दवियाता तस्स णाणाता भयणाए, जस्स पुण णाणाता तस्स दवि याता णियमं अत्थि। जस्स दवियाता तस्स दंसणाता णियमं अत्थि, जस्सवि दंसणाता तस्स दवियाता

भजनया, यस्य पुनर्ज्ञानात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमादस्ति। यस्य द्रव्यात्मा तस्य दर्शनात्मा नियमादस्ति' यस्यापि दर्शनात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमा

दवियाता णियम अत्थि । जेहने उपयोगात्मा हुवे तेहने पणि द्रव्यात्मा नियमे हुवे ० वेज्ञ माहोमाहि अविनाभूतछे तेमाटे जिम सिद्धने तथा संसा रोजावने द्रव्यात्मा तथा उपयोगात्मा ए बेऊं ,उपयोगलक्षणेय से जीवे इतिवचनात् २ तथा । जस्स दवियाता तस्स णाणा भयणाए। जेहने द्रव्या त्मा हुवे तेहने ज्ञानात्मा भजनायें हुवे ,किवारेक अत्थि, ते सम्यग्दृष्टि ने हुवे ,किवारेक नत्थि, किवारे नहीं जिम मिथ्यादृष्टी ते नथी इम भजना कहवी । ज स्स पुण णाणायाता तस्स दवियाता णियम अत्थि । जेहने वली ज्ञानात्मा हुवे तेहने द्रव्यात्मा निश्चयथकी हुवे ज्ञानलक्षण जीवनेछे तेमाटे। जस्स द वियाता तस्सदंसणाता णियम अत्थि। तथा जेहने द्रव्यात्मा हुवे तेहने दर्शनात्मा निश्चयथकी हुवे जिम सिद्धने पणि केवलदर्शन हुवे तेमाटे। जस्स वि दंसणाता तस्स दवियाता णियम अत्थि। जेहने पणि दर्शनात्मा हुवे तेहने द्रव्यात्मा णियम कहिये निश्चयथकी छे जिम चक्षुर्दर्शनादिकवंतने जीवप णो ५। जस्स दवियाता तस्स चरित्ताया भयणाए। तथा जेहने द्रव्यात्मा हुवे तेहने चारित्रात्मा भजनायें हुवे, एतले किवारे हुवे जिम विरतीने तथा किवारे के नहीं ते सिद्धने तथा अविरतो तथा। जस्स पुण चरित्ताता तस्स दवियाता णियम अत्थि। जेहने वली चारित्रात्मा हुवे तेहने द्रव्यात्मा नि

॥ टीका ॥

यसत्तु योगा
यस्य कषायात्मा तस्य योगात्मास्त्येव नहि सकषायोऽयोगी भवति
कषायात्मनाः सहान्यानि पदानि चिन्त्यन्ते ॥ जस्सणमित्यादि ॥ यस्य कषायात्मा तस्य योगात्मास्त्येव नहि सकषायोऽयोगी भवति यस्तु योगा
त्मा तस्य कषायात्मा स्याद्वा; नवा; सयोगानां सकषायाणामकषायाणां च भावादिति ॥ एवं उवओगायाएवीत्यादि ॥ अयमर्थ –यस्य कषायात्मा
तस्योपयोगात्मा वश्यं भवत्युपयोगरहितस्य कषायाणामभावात्, यस्य पुनरुपयोगात्मा तस्य कषायात्मा भजनया उपयोगात्मतया सत्यामपि
कषायिणामेव कषायात्मा भवति' नि.कषायाणातु नासाविति भजनेति, तथा ॥ कसायायाय नाणायाय परोप्पर दोवि भइयव्वाउत्ति ॥ कथं,

॥ सूत्र ॥

णियमं अत्थि । जस्स दवियाता तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताता तस्स दवियाता णियमं
अत्थि । एवं वीरियाताएवि समं । जस्सणं भंते ! कसायाता तस्स जोगाया पुच्छा, गोयमा ! जस्स कसा
याता तस्स जोगाता णियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाता सिय अत्थि सियणत्थि । एवं

॥ अनुवाद ॥

दस्ति । यस्य द्रव्यात्मा तस्य चरित्रात्मा भजनया, यस्य पुनश्चरित्रात्मा तस्य द्रव्यात्मा नियमादस्ति । एवं वीर्यात्मनापि समम् । यस्य भदन्त !
कषायात्मा तस्य योगात्मा पृच्छा, गौतम । यस्य कषायात्मा तस्य योगात्मा नियमादस्ति' यस्य पुनर्योगात्मा तस्य कषायात्मा स्यादस्ति स्या

॥ भाषा ॥

यमेछे चारित्रीने जीवपणा ना अव्यभिचार पणाथकी ६ । एवं वीरियाताएविसमं । इम वीर्यात्मा सघाते पणि कहवो, जेहने द्रव्यात्मा तेहने वीर्यात्मा
भजनायें जिम करणवीर्यनी अपेक्षायें सिद्धने वीर्य नही अनेरानेछे एतलामाटे भजना कही तथा जेहने वीर्यात्मा तेहने द्रव्यात्मा नियमेंछे जिम संसा
रीने ७ एतले द्रव्यात्मासघाते शेष सातपद चिन्तव्या, हिवे कषायात्मासघाते शेष छ पद चिन्तवेछे । जस्सणभंते कसायाता तस्स जोगायाता पुच्छा ।
जेहने हेभगवन् । कषायात्मा हुवे तेहने योगात्मा हुवे तथा जेहने योगात्मा तेहने कषायात्मा हुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जस्स कसायाता तस्स ज
गाता णियम अत्थि । हेगौतम जेहने कषायात्मा हुवे तेहने योगात्मा नियमथकी हुवे सकषाय अयोगी न हुवे तेमाटे । जस्स पुण जोगाया तस्स को
सायाता सियअत्थि सियणत्थि । तथा जेहने वली योगात्मा हुवे तेहने कषायात्मा 'सियअत्थि, किवारे हुवे ते अयोगी अनुपशान्त कषायवन्तने हुवे

यस्य कषायात्मा तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, यतः कषायिणः सम्यग्दृष्टेर्ज्ञानात्मास्ति मिथ्यादृष्टेस्तु तस्य नास्त्यसाविति भजना, तथा यस्य ज्ञानात्मास्ति तस्य कषायात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, ज्ञानिनां कषायभावात् तदभावाच्चेतिभजनेति ॥ जहा कसायाया उवओगाया तहा कसायायाय दसणायायत्ति–अतिदेश „तस्मादेव लब्ध–जस्स कसायाया तस्स दसणाया नियम अत्थि ॥ दर्शनरहितस्य घटादेः कषायात्मनोऽना

उवओगाएवि समं कसायाता णेयव्वा । कसायाता णाणाताय परोप्परं दोवि भइयव्वाओ, जहा कसायाय उवओगायाय तहा कसायाया दंसणाताय कसायाता चरित्ताताय दोवि परोप्पर भइयव्वाओ, जहा

स्ति । एवमुपयोगात्मनापि समं कषायात्मा ज्ञातव्य । कषायात्मा ज्ञानात्माच परस्पर द्वावपि भजनीयौ। यथा कषायात्माचोपयोगात्मा च (भणित) तथा कषायात्मा दर्शनात्मा कषायात्मा चारित्रात्मा च द्वावपि परस्पर भजनीयौ । यथा कषायात्मा योगात्मा तथा कषाया

सियणत्थि, किवारेकें न हुवे उपशांत क्षीणकषाय अवस्थायें न हुवे। एवं उवओगाए वि समं कसायाता णेवव्वा । इम उपयोगात्मा संघाते पणि कषायात्मा जाणवी ते इम जेहने कषायात्मा तेहने उपयोगात्मा नियमें हुवे उपयोगरहितने कषायना अभावथकी तथा जेहने उपयोगात्मा तेहने कषायात्मा भजनायें हुवे सकषायीने हुवे अकषायीने नहीं । कसायाता णाणाताताय परोप्परं दोवि भइयव्वाओ । कषायात्मा अने ज्ञानात्मा ए दोनों माहोमाहि भजनायें कहवा, ते इम जेहने कषायात्मा तेहने ज्ञानात्मा भजनायें कषायी सम्यग्दृष्टीने ज्ञानात्माछै मिथ्यादृष्टीने नहीं तथा जेहने ज्ञानात्माछै तेहने पणि कषायात्मा भजनायें हुवे किणही ज्ञानीने कषायछै किणहीने नथी तथा । जहा कसायाचाय उवओगाचाय तहा कसायाया दसणाताया कसायाव चरित्तायाय दोवि परोप्पर भइयव्वाओ । जिम कषायात्मा उपयोगात्मा कह्या तिम कषायात्मा दर्शनात्मा पणि कहवा, इम ते जेहने कषायात्मा तेहने दर्शनात्मा नियमें हुवे दर्शनरहित घटादिकने कषायात्मानो अभावछै तेमाटे तथा जेहने दर्शनात्मा तेहने कषायात्मा भजनायें दृष्टांत पूर्ववत् ४ तथा कषायात्मा दर्शनात्मा ए बेउ माहोमाहि भजनायें कहना ते इम जेहने कषायात्मा तेहने चारित्रात्मा किवारेकै

॥ टीका ॥

वात् ॥ जस्स पुण दंसणाया तस्स कसायाया सियअत्थि सियनत्थि ॥ दर्शनवतां कषायसद्भावा तदभावाच्चेति' दृष्टान्तार्थस्तु प्राक् प्रसिद्धएवेति ॥ कसायायाय चरित्तायाय दोवि परोप्पर-भइयव्वाउत्ति ॥ भजनाचैव-यस्य कषायात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, कथ कषायिणा चारित्रस्य सद्भावात् प्रमत्तयतीनामिव तदभावाच्चासयतानामिवेति, तथा यस्य चारित्रात्मा तस्य कषायात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, कथ सामायिकादि चारित्रिणा कषायाणा भावाद्यथाख्यातचारित्रिणा च तदभावादिति ॥ जहा कसायायाय जोगायाय तहा कसायाया वीरियाया य भाणियव्वाउत्ति ॥ दृष्टान्त प्राक्प्रसिद्धो दार्ष्टान्तिकस्त्वेव-यस्य कषायात्मा तस्य वीर्यात्मा नियमादस्ति, नहि कषायवान् वीर्यविकलोऽस्ति, यस्य पुन वीर्यात्मा तस्य कषायात्मा भजनया' यतो वीर्यवान् सकषायोपि स्याद्यथाऽसयत, अकषायोपि स्याद्यथा केवलीति ॥ अथ योगात्मा अग्रेतनपदै· पचभिस्त्मा वीर्यात्माच भणितव्यौ । एव यथा कषायात्मनो वक्तव्यता भणिता तथा योगात्मनोप्युपरिमै (पदै·) सम (वक्तव्यता) भणितव्या ।

॥ मूल ॥

कसायाता जोगाता तहा कसायाता वीरियाताय भाणियव्वाउ । एवं जहा कसायाता वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहिं सम भाणियव्वा । जहा दवियाताए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगाताएवि

॥ भाषा ॥

तेहने चारित्रात्मा तेहने कषायात्मा हुवे अथवा न हुवे ते किम सामायिकादिक चारित्रीने कषायना सद्भावथकी यथाख्यात चारित्राने तेहना अभावथकी ५ । जहा कसायाता जोगाता तहा कसायाता वीरियाताय भाणियव्वाओ । जिम कषायात्मा अने जोगात्मा कह्या तिम कषायात्मा अने वीर्यात्मा पणि कहवा ते इम जेहने कषायात्मा तेहने वीर्यात्मा नियमें हुवे कषायवन्त वीर्यरहित न हुवे तेमाटे वली जेहने वीर्यात्मा तेहने कषायात्मा भजनायें जेमाटे वीर्यवन्त सकषाय पणि हुवे जिम सयती तथा अकषाय पणि हुवे जिम केवली ६ एतले कषायात्मा शेष ६ पदसघाते चिन्तव्यो २, हिवे योगात्मा अग्रेतन पचपद संघाते चिन्तवतो कहेछे, तिहा संक्षेपने अर्थे अतिदेश करतो कहेछे—एवं जहा कसायाता वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहि सम। इम सकषायीने चारित्रना सद्भाव थकी प्रमत्तसयतीनी परे किवारे के नही असयतीनी परे तथा जेहने चारित्रात्मा

॥ टीका ॥

सह चिन्तनीय स्तत्र लाघवार्थमतिदिशन्नाह-एवं जहा कसायाया वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाएवि उवरिमाहिं समं भाणियव्वत्ति ॥ सा चैव-यस्य योगात्मा तस्योपयोगात्मा नियमाद्यथासयोगाना, यस्य पुनरुपयोगात्मा तस्य योगात्मा स्यादस्ति यथासयोगाना, स्यान्नास्ति यथायोगिनां सिद्धानाचेति, तथा यस्य योगात्मा तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति सम्यग्दृष्टीनामिव, स्यान्नास्ति मिथ्यादृष्टीनामिव, यस्य ज्ञानात्मा तस्यापि योगात्मा स्यादस्ति, योगिनामिव, स्यान्नास्ति अयोगिनामिवेति २। तथा यस्य योगात्मा तस्य दर्शनात्मास्त्येव योगिनामिव, यस्य च दर्शनात्मा तस्य योगात्मा स्यादस्ति योगवतामिव, स्यान्नास्त्ययोगिनामिव ३। तथा यस्य योगात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यादस्ति विरतानामिव, स्यान्नास्त्यविरतानामिव, यस्यापि चारित्रात्मा तस्य योगात्मा स्यादस्ति सयोगचारित्रवतामिव, स्यान्नास्त्ययोगिनामिवेति, वाचनान्तरे पुनरिदमेव दृश्यते-जस्स चरित्ताया तस्स जोगाया नियमति ॥ तत्र च चारित्रस्य प्रत्युपेक्षणादिव्यापाररूपस्य विवक्षितत्वात्तस्य च योगाविनाभावित्वाद्यस्य

॥ मूल ॥

उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा। जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स

॥ अनुवाद ॥

यथा द्रव्यात्मनो वक्तव्यता भणिता तथोपयोगात्मनोप्युपरिमैः सम भणितव्या। यस्य ज्ञानात्मा तस्य दर्शनात्मा नियमादस्ति, यस्य पुनर्द

॥ भाषा ॥

जिम कषायात्माने विषे वक्तव्यता कही तिम योगात्मासघाते पणि उपरलापद कहवा ते इम जेहने योगात्मा तेहने उपयोगात्मा नियमें हुवे जिम सयोगीने तथा जेहने उपयोगात्मा तेहने योगात्मा किवारे हुवे जिम सयोगीने किवारे के नथी जिम अयोगीने तथा जेहने योगात्मा तेहने ज्ञानात्मा कदाचित् हुवे सम्यग्दृष्टीनी परे कदाचित् न हुवे मिथ्यादृष्टीनी परे तथा जेहने ज्ञानात्मा तेहने पणि योगात्मा कदाचित् हुवे सयोगीनी परे कदाचित् न हुवे अयोगीनी परे २ तथा जेहने योगात्मा तेहने दर्शनात्माछेज सयोगीनी परे जेहने दर्शनात्मा तेहने योगात्मा किवारे हुवे योगवन्तनी परे किवारे नथी अयोगीनो परे तथा जेहने योगात्मा तेहने चारित्रात्मा कदाचित्छे विरतीनीपरे कदाचित् नथी अविरतीनी परे जेहने चारित्रात्मा तेहने योगात्मा किवारेछे सयोग चारित्रवन्तनी परे कदाचित्त नथी अयोगीनो परे तथा जेहने योगात्मा तेहने वीर्यात्माछेज योग सद्भावे वीर्य

॥ टीका ॥

चारित्रात्मा तस्य योगात्मा नियमादित्युच्यत इति ४ । तथा यस्य योगात्मा तस्य वीर्यात्मा स्त्येव योगसद्भावे वीर्यस्यावश्यं भावात्' यस्यतु वीर्यात्मा तस्य योगात्मा भजनया, यतो वीर्यविशेषवान् सयोग्यपि स्यात् यथा सयोगिकेवल्यादिरयोग्यपि स्याद्यथाऽयोगिकेवलीति ५ । अथोपयोगात्मना सहान्यानि चत्वारि चिंत्यन्ते तत्रातिदेशमाह–जहा दवियाए' इत्यादि ॥ एवं च भावना कार्या–यस्योपयोगात्मा तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति, यथा सम्यग्दृशा, स्यान्नास्ति, यथा मिथ्यादृशा, यस्य च ज्ञानात्मा तस्यावश्यमुपयोगात्मा सिद्धानामिवेति १ । तथा यस्योपयोगात्मा तस्य दर्शनात्मास्त्येव, यस्यापि दर्शनात्मा तस्योपयोगात्मास्त्येव यथासिद्धादीनामिति २ । तथा यस्योपयोगात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यादस्ति, यथा संयतानां, तथा यस्योपयोगात्मा तस्य वीर्यात्मा स्यान्नास्ति, यथा संयतानामसंयतानाच, यस्यतु चारित्रात्मा तस्योपयोगात्मा ऽस्त्येव यथा संयताना, तथा यस्योपयोगात्मा तस्य वीर्यात्मा स्यादस्ति संसारिणामिव, स्यान्नास्ति सिद्धानामिव' यस्य पुनर्वीर्यात्मा तस्योपयोगात्मास्त्येव संसारिणा मिवेति ४ । अथ ज्ञानात्मना सहान्या

॥ भाषा ॥

ना अवश्यभाव थकी तथा जेहने वीर्यात्मा तेहने योगात्मा भजनायें तेमाटे वीर्यविशेषवन्त सयोग पणिहुवे जिम सयोगीकेवली अयोगी पणि हुवे जिम अयोगीकेवली इम योगात्मा शेष पचआत्मासघाते चिन्तव्यो हिवे उपयोगात्मा सघाते अग्रेतन चारपद चितवेछे, तिहा दृष्टातथी कहेछे,। जहा दवियाताए वक्तव्यता भणिया तहा उवओगाताएवि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा । जिमद्रव्यात्माने विषे वक्तव्यता कही तिम उपयोगात्मानी पणि वक्तव्यता कहवी, इहा इम भावना करवी जेहने उपयोगात्मा तेहने ज्ञानात्मा कदाचित् हुवे जिम सम्यग्दृष्टीने कदाचित् नही जिम मिथ्यादृष्टीने जेहने ज्ञानात्मा तेहनेउपयोगात्मा अवश्य हुवेज सिद्धनी परे १ तथा जेहने उपयोगात्मा तेहने दर्शनात्मा छइज जेहने पणि दर्शनात्मा तेहने उपयोगात्मा छइज जिम सिद्धादिकने २ तथा जेहने उपयोगात्मा तेहने चारित्रात्मा किवारेके जिम सयतीने किवारे नही जिम असयतीने जेहने चारित्रात्मा तेहने उपयोगात्मा छइज जिम सयतीने ३ तथा जेहने उपयोगात्मा तेहने वीर्यात्मा किवारे हुवे ससारी नीपरे कदाचित् न हुवे सिद्धनीपरे तथा जेहने वीर्यात्मा तेहने उपयोगात्मा छइज ससारीनी परे एतले उपयोगात्मा शेष चारपद सघाते चिन्तव्यो ४, हिवे ज्ञानात्मा संघाते शेष तीनपद चिन्तवेछे।

॥ टीका ॥ नि त्रीणि चिन्त्यन्ते ॥ जस्स णाणेत्यादि ॥ तत्र यस्य ज्ञानात्मा तस्य दर्शनात्मा स्त्येव सम्यग्दृशामिव, यस्यच दर्शनात्मा तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति यथा सम्यग्दृशा' स्यान्नास्ति यथा मिथ्यादृशा मतएवोक्त–भयणाएत्ति „ तथा ॥ जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थित्ति ॥ संयतानामिव ॥ सिय नत्थित्ति ॥ असंयतानामिव ॥ जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया नियम अत्थित्ति ॥ ज्ञान विना चारित्रस्याभावादिति २। तथा ॥ णाणायेत्यादि ॥ अस्यार्थो–यस्य ज्ञानात्मा तस्य वीर्यात्मा स्यादस्ति केवल्यादीनामिव, स्यान्नास्ति सिद्धानामिव, यस्यापि वीर्यात्मा

॥ मूल ॥ णाणाया भयणाए। जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया णियमं अत्थि। णाणाता वीरियाता दोवि परोप्पर भयणाए, जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाउ

अनुवाद ज्ञानात्मा तस्य ज्ञानात्मा भजनया । यस्य ज्ञानात्मा तस्य चरित्रात्मा स्यादस्ति स्यान्नास्ति, यस्य पुनश्चरित्रात्मा तस्य ज्ञानात्मा नियमादस्ति। ज्ञानात्मा वीर्यात्मा द्वावपि परस्पर भजनया। यस्य दर्शनात्मा तस्योपरिमौ (उपयोगात्मज्ञानात्मानौ) द्वावपि भजनया, यस्य

॥ भाषा ॥ जस्स णाणाया तस्स दंसणाया णियम अत्थि। जेहने ज्ञानात्मा तेहने दर्शनात्मा नियमथकी हुवे सम्यग्दृष्टीनो परे। जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए। जेहने वली दर्शनात्मा तेहने ज्ञानात्मा कदाचित् हुवे जिम सम्यग्दृष्टीने किवारे नही जिम मिथ्यादृष्टीने एतलामाटे भजना कही तथा। जस्स णाणाया तस्स चरित्ताया सियअत्थि सियणत्थि। तथा जेहने ज्ञानात्मा तेहने चारित्रात्मा किवारेक संयतीनोपरे किवारे नही असयत सम्यग्दृष्टीनीपरे। जस्स पुण चरित्ताया तस्स णाणाया णियमं अत्थि। जेहने वली चारित्रात्मा तेहने ज्ञानात्मा निश्चयथकी हुवे ज्ञान विनाचारित्रना अभावथकी। णाणाता वीरियाता दोविपरोप्परं भयणाए। ज्ञानात्मा वीर्यात्मा ए बेहने माहोमाहे भजनाये कहवा ते इम, जेहने ज्ञानात्मा तेहने वीर्यात्मा कदाचित् हुवे जिम केवली आदिदेईने, कदाचित् नही जिम करणवीर्य आश्रयीने सिद्धने तथा जेहने वीर्यात्मा तेहने ज्ञानात्मा किवारेक सम्यग्दृष्टीनो परे किवारे नही मिथ्यादृष्टीनो परे २ ए ज्ञानात्मा शेष तीनपद संघाते चिन्तव्यो, हिवे दर्शनात्मा संघाते बे पद चिन्तवेछै। जस्स दंसणाया तस्स उवरि

॥ टीका ॥

तस्य ज्ञानात्मा स्यादस्ति सम्यग्दृष्टेरिव, स्यान्नास्ति मिथ्यादृश इवेति ३। अथ दर्शनात्मना सह द्वे चिन्त्येते ॥ जस्स दंसणायेत्यादि ॥ भावना चास्य-यस्य दर्शनात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यादस्ति संयतानामिव, स्यान्नास्त्यसंयतानामिव' यस्यच चारित्रात्मा तस्य दर्शनात्मास्त्येव साधूनामिवेति, तथा यस्य दर्शनात्मा तस्य वीर्यात्मा स्यादस्तिससारिणामिव' स्यान्नास्ति सिद्धानामिव, यस्यच वीर्यात्मा तस्य दर्शनात्मा स्त्येव संसारिणामिवेति २। अथान्तिमपदयो र्योजना-जस्स चरित्तेत्यादि ॥ यस्य चारित्रात्मा तस्य वीर्यात्मा स्त्येव वीर्यविना चारित्रस्याभावात्, यस्य पुनर्वीर्यात्मा तस्य चारित्रात्मा स्यादस्ति साधूनामिव, स्यान्नास्ति असंयतानामिवेति ॥ अधुनैषामेवात्मनामल्पबहुत्वमुच्यते तत्रच ॥ सव्वत्थोवाओ

॥ मूल ॥

दोवि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया णियमं अत्थि। जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाता णियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाता तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय णत्थि । एयासिण भंते ! दवियाताणं

अनुवाद

पुन स्तौ तस्य दर्शनात्मा नियमादस्ति। यस्य चरित्रात्मा तस्य वीर्यात्मा नियमादस्ति। यस्य पुनर्वीर्यात्मा तस्य चरित्रात्मा स्यादस्ति स्या

॥ भाषा ॥

माआ दोवि भयणाए जस्स पुणताओ तस्स दंसणाया णियम अत्थि। जेहने दर्शनात्मा तेहने उपरिला बेजपद भजनायें कहवा, ते इम जेहने दर्शनात्मा तेहने चारित्रात्मा किवारे हुवे संयतीनी परे किवारे नही असयतीनो परे जेहने चारित्रात्मा तेहने दर्शनात्मा छेईज साधुनी परे तथा जेहने दर्शनात्मा तेहने वीर्यात्मा किवारेछे संसारीनी परे किवारे नही सिद्धनी परे तथा वीर्यात्मा तेहने दर्शनात्मा छेज ससारीनी परे २ एतले दर्शनात्मा छेहला बे पदा सघाते चिन्तव्यो, हिवे छेहलापद दोयनी योजना कहेछे—जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाता णियम अत्थि। जेहने चारित्रात्मा तेहने वीर्यात्मा नियमथकी छे वीर्य विना चारित्रना अभावथकी। जस्स पुण वीरियाता तस्स चरित्ताया सियअत्थि सियणत्थि। जेहने वली वीर्यात्मा तेहने चारित्रात्मा कदाचित् हुवे, सयतीनी परे कदाचित् नही असयतीनी परे ८ एतले आठ आत्मानी माहोमाहि योजना कही, हिवे एहनेज अल्प बहुत्व कहेछे। एयासिणभंते दवियाताण कसायाताण। एहने हेभगवन् द्रव्यात्माने कषायात्माने। जाव वीरियायाण कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा। यावत् वी

॥ टीका ॥ चरित्तायाउत्ति ॥ चारित्रिणा सङ्ख्यातत्वात् ॥ नाणायाउ अणतगुणाउत्ति ॥ सिद्धादीनां सम्यग्दृशां चारित्रिभ्यो ऽनन्तगुणत्वात् ॥ कसायायाउ अणत गुणाउत्ति ॥ सिद्धेभ्य कषायोदयवतामनन्तगुणत्वात् ॥ जोगायाउ विसेसाहियाउत्ति ॥ अपगतकषायादयै र्योगवद्भिरधिका इत्यर्थ ॥ वीरियायाउ विसेसाहियाउत्ति ॥ अयोगिभिरधिका इत्यर्थ ' अयोगिना वीर्यवत्त्वादिति ॥ उवउगदवियदसणायाउ तिन्निवि तुल्लाउ विसेसाहियाउत्ति ॥ पर स्परापेक्षया तुल्या सर्वेषा सामान्यजीवरूपत्वात् वीर्यात्मभ्य सकाशादुपयोगद्रव्यदर्शनात्मानो विशेषाधिका , यतो वीर्यात्मान सिद्धाश्च मी

॥ मूल ॥ कसायाताणं जाव वीरियायाणं कयरे कयरेहितो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चरित्ताया, णाणायाउ अणतगुणाउ, कसायायाउ अणतगुणाउ , जोगायाउ विसेसाहियाउ , वीरियाताउ विसेसा हियाउ, उवउगदवियदसणाताउ तिन्निवि तुल्लाउ विसेसाहियाउ । आया भंते ! णाणे अन्ने णाणे ? गो

अनुवाद त्मास्ति । एतेषा भदन्त ! द्रव्यात्मना कषायात्मना यावद्वीर्यात्मना (मध्ये) कतरे कतरेभ्यो यावद्विशेषाधिकावा ? गौतम ! सर्वस्तोकाश्चरि त्रात्मान', ज्ञानात्मानोऽनन्तगुणा , कषायात्मानोऽनन्तगुणा , योगात्मानो विशेषाधिका ' वीर्यात्मानो विशेषाधिका , उपयोगद्रव्यदर्शना

॥ भाषा ॥ र्यात्माने माहोमाहि कुणकुणथकी अल्पछुवे घणाछुवे सरीखा छुवे विशेषाधिक छुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सव्वत्थोवा चरित्ताया । हे गौतम सर्व स्तोक चरित्रात्मा चारित्रियाना सख्यातपणामाटे तेहथी । णाणायाओ अणतगुणाओ । ज्ञानात्मा अनन्तगुणा सिद्धादिकने तथा सम्यग्दृष्टिने चारित्रीया थ की अनन्तगुणामाटे २ तेहथो । कसायायाओ अणतगुणाओ । कषायात्मा अनन्तगुणा सिद्ध सम्यग्दृष्टि चारित्रीया थकी कषायोदयवन्तना अणतगुणा माटे ३ तेहथो । जोगायाओ विसेसाहियाओ । योगात्मा विशेषाधिक अपगत कषायोदय योगवन्त तिणेकरी अधिका इत्यर्थ ४ तेहथी । वीरियाता ओ विसेसाहियाओ । वीर्यात्मा विशेषाधिक अयोग करीने अधिका इत्यर्थ अयोगीने वीर्यवन्तपणाथकी । उवओग दवियदसणाताओ तिन्नि वितुल्लाओ विसेसाहियाओ । उपयोगात्मा द्रव्यात्मा दर्शनात्मा ए तीनेई बरोबर माहोमाहिनी अपेक्षायें तुल्य सर्वनेसामान्यजीव रूपपणाथकी अने वीर्यात्मा थ

॥ टीका ॥

लिता उपयोगाद्यात्मानो भवन्ति। तेच वीर्यात्मन्य सिद्धराशिनाऽधिका भवन्तीति, भवन्ति चात्र गाथा—कोडीसहस्सपुहुत्त जईणतोथोविया उचरणाया। नाणायाणतगुणा पडुच्चसिद्धेयसिद्धाउ ॥१॥ होतिकसायायाउ णतगुणाजेणतेसरागाउ। जोगायाभणियाउ अजोगिवजाणतोअहिया ॥२॥ जसेलेसिगयाणवि लद्धीविरियतउसमहियाउ। उवउंगदवियदसण सव्वजियाणतउअहिया इति ॥ ३ ॥ अथात्मन एव स्वरूपनिरूपणायाह—आया भंते। नाणे इत्यादि॥ आत्मा ज्ञान योयमात्मा सौ ज्ञान न तयोर्भेद, अथात्मनोन्यद्ज्ञानमितिप्रश्न, उत्तरन्तु आत्मा स्यात् ज्ञान सम्यक्त्वेसति मत्यादिज्ञानस्वभावत्वात्तस्य, स्यादज्ञान मिथ्यात्वे सति तस्य मत्यज्ञानादिस्वभावत्वात्, ज्ञान पुनर्नियमादात्मा आत्मधर्मत्वात् ज्ञानस्य, नच सर्वथा धर्मो धर्म्मिणो भिद्यते, सर्वथा भेदेहि विप्रकृष्टगुणिनो गुणमात्रोपलब्धौ प्रतिनियतगुणिविषयएव संशयो न स्यात्तदन्येभ्योपि तस्य भेदाविशेषा दृश्यते च यदा कश्चिद्दूरिततरुतरुणशाखाविसररन्ध्रोदरान्तरत किमपि शुक्ल पश्यति तदा किमिय पताका किमिय बलाकेत्येव प्रतिनियतगुणिविषयो तो नापि धर्म्मिणो धर्म्म सर्वथैवाभिन्न सर्वथैवाभेदेहि संशयानुत्पत्तिरेव गुणग्रहणतएव गुणिनोपि गृहीतत्वादत. कथञ्चिद्भेदपक्षमाश्रित्य ज्ञान पुनर्नियमादात्मेत्युच्यत इति, इहचात्मा ज्ञान व्यभिचरति, ज्ञानत्वात्मान न व्यभिचरति, खदिरवनस्पतिवदिति सूत्र

॥ मूल ॥

यमा ! आया सिय णाणे सिय अन्नाणे। णाणे पुण णियमं आया। आयाणं भंते ! णेरइयाणं णाणे

॥ अनुवाद ॥

त्मानस्त्रयोप्येते तुल्या विशेषाधिका ॥ आत्मा भदन्त। ज्ञानमन्यज्ज्ञानम्? गौतम। आत्मा स्याज्ज्ञान स्यादज्ञानम्, ज्ञान पुनर्नियमादा

॥ भाषा ॥

त्मा उपयोगद्रव्य दर्शनात्माबन्न विशेषाधिक जेमाटे वीयात्मा सिद्धभिन्ना उपयोगादि आत्मावन्त हुवे ते वीर्यात्माथकी सिद्धिराशि करी अधिका हुवे, हिवे आत्मानोज स्वरूप निरूपण करतो कहेछे—आयाभंते णाणे अन्नाणे। आत्मा हेभगवन् एतले जे एह आत्मा एहीज ज्ञान नही तेहने भेद अथवा आत्माथकी अनेरो ज्ञान इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आया सियणाणे सियअन्नाणे। हेगौतम आत्मा किवारे ज्ञान ते सम्यक्त्व थका किवारे अज्ञान ते मिथ्यात्व थका। णाणेपुण णियम आया। ज्ञान वली नियमथकी आत्माहीज आत्मधर्म पणाथकी ज्ञानने नही सर्वथा धर्म धर्मीभेद पामे, ए

॥ टीका ॥ गम्यार्थ इति, अमुमेवार्थं दण्डके निरूपयन्नाह-आयेत्यादि ॥ नारकाणामात्मा ऽऽत्मस्वरूपं ज्ञानं उतान्यन्नारकाणां ज्ञानं तेभ्योऽतिरिक्तमित्यर्थं, इतिप्रश्नः, उत्तरन्तु आत्मा नारकाणां स्यात् ज्ञानं सम्यग्दर्शनभावात्, स्यादज्ञानं मिथ्यादर्शनभावात्, ज्ञानं पुनः ॥ सेत्ति ॥ तन्नारकसम्बन्धि आत्मा न तद्व्यतिरिक्त मित्यर्थं ॥ आया भंते ! पुढविकाइयाण मित्यादि ॥ आत्मा आत्मस्वरूपमज्ञानं उतान्य त्तेषां, उत्तरन्तु आत्मा तेषा

॥ मूल ॥ अण्णे णेरइयाणं णाणे ? गोयमा आया णेरइयाणं सिय णाणे सिय अण्णाणे, णाणे पुण से णियमं आया एवं जाव थणियकुमाराणं । आया भंते ! पुढवीकाइयाणं अण्णाणे अण्णे पुढवीकाइयाणं अण्णाणे ? गोयमा ! पुढवीकाइयाणं णियमं अण्णाणे, अण्णाणे णियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं वेइंदिया

अनुवाद न्यः । आत्मा भगवन् ! नैरयिकाणां ज्ञानं (उत) अन्यत् (आत्मातिरिक्तम्) नारकाणां ज्ञानम् ? गौतम ! आत्मा नैरयिकाणां स्याज्ज्ञानं स्यादज्ञानम्, ज्ञानं पुनस्तन्नियमादात्मा । एवं यावत्स्तनितकुमाराणां । आत्मा भगवन् ! पृथिवीकायिकानामज्ञानमन्यत्पृथ्वीकायिकानाम ज्ञानम् ? गौतम ! पृथिवीकायिकानां नियमादज्ञानम्, अज्ञानं पुनर्नियमादात्मा । एवं यावद्वनस्पतिकायिकानां द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय (प्रभृति)

॥ भाषा ॥ हीज अर्थ दण्डकें निरूपण करतां कहेछे—आयाभंते णेरइयाण णाणे अण्णे णेरइयाण णाणे । आत्मा हे भगवन् ! नारकोने ज्ञान अथवा अनेरो नारकोने ज्ञान तेहथकी व्यतिरिक्त इत्यर्थ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आया णेरइयाणं सियणाणे सिय अणाणे। हे गौतम ! आत्मा नारकने कदाचित् ज्ञान सम्यग्दर्शन भावथकी कदाचित् अज्ञान मिथ्यादर्शन भावथकी । णाणे पुण से णियम आया । ज्ञान वली ते निश्चे आत्मा नही तेहथी नारकोनो अनेरो आत्मा इत्यर्थ । एवं जाव थणियकुमाराणं । इम यावत् स्तनितकुमार लगे कहवो । आयाभंते पुढवीकाइयाणं अणाणे । आत्मा हे भगवन् ! पृथिवीकायिकने अज्ञान अथवा । अण्णे पुढवीकाइयाणं अणाणे । अनेरो कोई पृथिवीकायिकने अज्ञान इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आया पुढवीकाइयाण णियम अणाणे, अणाणे णियम आया । हे गौतम ! आत्माहीज पृथिवीकायिकने नियमें अज्ञानरूपछे नहीं अनेरो तेहथकी अज्ञान पणि निश्चे आत्मा जाणवो ।

॥ टीका ॥

दर्शनमप्यात्मैव सज्ञानरूपो नान्य स्ततेय्य इतिज्ञावार्थं, एवं दर्शनसूत्राण्यपि, नवरं सम्यग्दृष्टिमिथ्यादृष्टयो र्दर्शनस्याविशिष्टत्वादात्मा दर्शनं' यत्रतु विपर्ययोस्ति तत्र व्यभिचारो नियमश्च तिवाच्य, यत्रहि धर्म्मे विपर्ययोनास्ति तत्र नियम एवोपनीयते' न व्यभिचारो यथैव दर्शने,

॥ मूल ॥

तेइंदिया जाव वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं । आया भंते ! दंसणे अन्ने दंसणे ? गो० ! आया णियमं दसणे दंसणेवि णियमं आया । आया भंते ! णेरइयाणं दंसणे अन्ने णेरइयाण दसणे ? गोयमा ! आया णेरइयाणं णियमं दंसणे दसणेवि णियमं आया एव जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडऊ । आया भंते !

अनुवाद

यावद्वैमानिकाना यथा नैरयिकाणाम् । आत्मा भदन्त ! दर्शनमन्यद्दर्शनम् ? गौतम ! आत्मा (आत्मस्वरूप) नियमाद्दर्शनं, दर्शनमपिनियमा दात्मा । आत्मा भगवन् ! नैरयिकाणा दर्शनमन्यन्नैरयिकाणा दर्शनम् ? गौतम ! आत्मा नैरयिकाणा नियमाद्दर्शनं' दर्शनमपिच नियमा दात्मा । एव यावद्वैमानिकाना निरन्तर दण्डको (वाच्य) आत्मा (आत्मस्वरूपा) भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवी अन्या (आत्मातिरिक्तरूपा)

॥ भाषा ॥

एव जाव वणस्सइकाइयाण बेइंदिया तेइंदिया जाव वेमाणियाण जहा णेरइयाण । इम यावत् वनस्पतीकायिकलगे पृथिवीकायिकनी परे कहवो बेइन्द्री तेइन्द्री चतुरिन्द्रो पचेन्द्री तिर्यचमनुष्य वानव्यन्तरज्योतिषी वैमानिक ए सगलाई नारकीनी परे कहवा इम दर्शनसूत्र पणि कहवो पणि एतलोविशेष छै सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी बेहुने विषे दर्शननो विशेष कोईनहो ते कहेछै—आयाभते दसणे अणेदंसणे । आत्मा हेभगवन् ! दर्शन अथवा अनेरो दर्शन इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आया णियम दसणे, दसणेवि णियम आया । हेगौतम आत्मा ते नियमे दर्शन, दर्शन पणि नियमे आत्मा । आया णंभते णेरइयाण दंसणे अणेरइयाण दसणे । आत्मा हेभगवन् ! नारकीने दर्शन अथवा अनेरोकोई नारकीने दर्शनछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आया णेरइयाणं णियम दसणे दसणेवि णियम आया । हेगौतम ! आतमा ते नारकीने नियमे दर्शनछे नही अनेरो कोई दर्शन, दर्शन पणि नारकीने नियमे आत्मा छे । एवं जाव वेमाणियाण निरंतर दडओ । इम यावत् वैमानिकलगे निरंतर चउवीसेई दडक कहवा, एक सरीखो दर्शने विशेष नहो आत्माधिकार

॥ टीका ॥

यथा ज्ञाने, आत्मा ज्ञानरूपो ऽज्ञानरूपश्चेति व्यभिचार', ज्ञानत्वात्मैवेति नियम इति॥ आत्माधिकाराद्रत्नप्रभादिभावानात्मत्वादिभावेन चिन्त यन्नाह—आया भंते। इत्यादि॥ अतति सततं गच्छति तांस्तान्पर्यायानित्यात्मा ततश्चात्मा सद्रूपा रत्नप्रभा पृथिवी॥ अनात्मा॥ अनात्माऽसद्रूपे त्यर्थ ॥ सिय आया सिय नोआयत्ति॥ स्यात्सती स्यादसतीति॥ सिय अवत्तव्वंति॥ आत्मत्वेनानात्मत्वेन च व्यपदेष्टुमशक्य वस्त्वितिभाव, क

॥ मूल ॥

रयणप्पभापुढवी अस्मा रयणप्पभा पुढवी? गोयमा! रयणप्पभापुढवी सिय आया सिय णोआया सिय अवत्तव्वं आतातिय णोअतातिय ३। सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया सिय णो

अनुवाद

रत्नप्रभापृथ्वी ? गौतम। रत्नप्रभा पृथ्वी स्यादात्मा' स्यान्नोआत्मा, स्यादवक्तव्य आत्माइतिच नो आत्मेतिच ३। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते—रत्नप्रभापृथ्वी स्यादात्मा' स्यान्नोआत्मा, स्यादवक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच ? गौतम। आत्मन आदिष्टे सति आत्मा (रत्न

॥ भाषा ॥

थकी रत्नप्रभादिक भावप्रते आत्मत्वादि भावेंकरी चिंतवतो कहेछे—आया भंते रयणप्पभापुढवी अणा रयणप्पभा पुढवी। आत्मा हेभगवन्। रत्नप्र भापृथिवी अथवा अनेरी रत्नप्रभापृथिवी एतले सत्रूप विद्यमानरूप रत्नप्रभा पृथिवीछे अथवा, अणाति, अनात्मा असत्रूपछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा रयणप्पभापुढवी सियआया सिय णो आया। हेगौतम। रत्नप्रभापृथिवी कदाचित् आत्मा सद्रूपा इत्यर्थ १ कदाचित् नही आत्मा असद्रूपा इत्यर्थ। सियअवत्तव्व आतातिय णो आतातिय ३। सिय सद्रूप पणें तथा असद्रूप पणें कहवाने अप्रवक्तव्य इतिभाव आत्मा नही आत्मा एहवो कहीन सकि ये ३। सेकेणट्ठेणभंते एवंवुच्चइ। ते स्यें अर्थे हेभगवन्। इम कहिये। रयणप्पभा पुढवी सिय आया सिय णो आया। रत्नप्रभापृथिवी कदाचित् आत्मा, कदाचित् नही आत्मा। सिय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। कदाचित् अवक्तव्य आत्मा एहवो तथा अनात्मा एहवो कही न सकिये इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अप्पणो आदिट्ठे आया परस्सआदिट्ठे णो आया तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्व। हेगौतम। रत्नप्रभा पृथिवी आपणा वर्णादि पर्याय अपेक्षायें एतले स्वपर्याय अपेक्षायें आत्मा कहिये, शर्करादिपृथिवी वर्णादिना पर्यायनी अपेक्षायें आत्मा नही असद्रूपा इत्यर्थ बेहुना वर्णादि पर्यायनी अपे

॥ टीका ॥

श्रमवक्तव्यमित्याह-आत्मेतिच नोआत्मेतिच वक्तुमशक्यमित्यर्थः ॥ अप्पणो आइट्ठेत्ति ॥ आत्मन स्वस्य रत्नप्रभाया एव वर्णादिपर्यायैरादिष्टे आदेशे सति तै र्व्यपदिष्टा सतीत्यर्थ., आत्मा भवति स्वपर्यायापेक्षया सतीत्यर्थ ॥ परस्स आइट्ठे नोआयत्ति ॥ परस्य शर्करादिपृथिव्यन्तरस्य पर्यायैरादिष्टे आदेशे सति तै र्व्यपदिष्टा सतीत्यर्थ, नो आत्मा अनात्मा भवति, पररूपापेक्षयाऽसतीत्यर्थः ॥ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वंत्ति ॥ तयोः स्वपरयो रुभयं तदेववा; उभय तदुभय तस्य पर्यायैरादिष्टे आदेशे सति तदुभयपर्यायैर्व्यपदिष्टेत्यर्थ, अवक्तव्यमवाच्य वस्तु स्यात्' तथाहि-नह्यसौ आत्मेति वक्तु शक्या परपर्यायापेक्षया अनात्मत्वात्तस्या नाप्यनात्मेति वक्तु शक्या स्वपर्यायापेक्षया तस्या आत्मत्वादिति, अवक्तव्यत्वच आत्मानात्म शब्दापेक्षयैव नतु सर्वथा अवक्तव्यशब्देनैव तथा तस्या उच्यमानत्वादनभिलाप्यभावानामपि भावपदार्थवस्तुप्रभृतिशब्दैरनभिलाप्यशब्देनचा

॥ मूल ॥

आया सिय अवत्तव्वं आयातिय णोआयातिय ? गो० ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णो आया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं, रयणप्पभापुढवी आयातिय णो आयातिय सेतेणट्ठेणं तंचेव जाव णोआया

अनुवाद

(शर्करादिपृथिव्यन्तरपर्यायैर्व्यपदिष्टा परस्यादिष्टेसति नोआत्मा सद्रूपेत्यर्थ) प्रभायाएव वर्णादिपर्यायैरादिष्टा व्यपदिष्टा सात्मस्वरूपा नात्मस्वरूपा सापररूपेण तस्या असत्वात्) तदुभयादिष्टे सति अवक्तव्यम् (स्वपरपर्यायैर्व्यपदिष्टा सती सा ऽऽत्मेति वक्तुं न शक्या परपर्याया पेक्षयानात्मत्वान्नापि चानात्मेति वक्तु शक्या स्वपर्यायापेक्षयात्मत्वादित्यवक्तव्या भवतीत्यर्थ) रत्नप्रभा पृथिवी आत्मेतिच, नोआत्मेतिच

॥ भाषा ॥

अनात्मा पणि चार्ये अवक्तव्य कहता अवाच्यवस्तु हुवे तथाहि नही एह आत्मा इसो कहिसकिये, परपर्यायनी अपेचायें अनात्म पणायकी वली अनात्मा कहि न सकिये स्वपर्यायनी अपेचायें तेहने आत्मपणायकी अवक्तव्य आत्म अनात्मशब्द अपेचायेंजछे। रयणप्पभापुढवी आयातिय णो आयातिय। ए तले रत्नप्रभापृथिवी कदाचित् आत्मा कदाचित् नो आत्मा इम जाणवी। सेतेणट्ठेण तंचेव जाव णो आयातिय। ते तेणेंअर्थे इत्यादि, तेहीज पूर्वोक्त अर्थ कहवो यावत् नही आत्मा इतिच। आयाभंते सक्करप्पभा पुढवी। आतमा छेभगवन्। शर्करप्रभापृथिवी अथवा अनेरी शर्करप्रभापृथिवी। जहा र

॥ मूल ॥

तिय । आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि एवं जाव अहे सत्त माए । आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा, गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सियणोआया जाव णो आयातिय । सेकेणट्ठेणं भंते ! जाव णोआयातिय ? गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे णोआया, तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्वं आयातिय णोआयातिय, सेतेणट्ठेण गोयमा ! तंचेव जाव णोआया

अनुवाद

तत्तेनार्थेन तच्चैव यावन्नो आत्मेतिच । आत्मा भदन्त । शर्कराप्रभापृथिवी ? यथा रत्नप्रभापृथिवी तथा शर्कराप्रभापि । एव यावदध सप्त मा । आत्मा भदन्त ! सौधर्म कल्प पृच्छा, गौतम ! सौधर्म कल्प स्यादात्मा स्यान्नो आत्मा याव न्नो आत्मेतिच । अथ केनार्थेन भद न्त । यावन्नो आत्मेतिच ? गौतम । आत्मन (पर्यायै) आदिष्टे सत्यात्मा (आत्मस्वरूप) परस्य (पर्यायै) आदिष्टे सत्यनात्मा (असद्रू पइत्यर्थ) तदुभयादिष्टे भवत्यवक्तव्यमात्मेतिचानात्मेतिच तत्तेनार्थेन गौतम । तच्चैव यावन्नोआत्मेतिच । एव यावदच्युतकल्प । आत्मा

॥ भाषा ॥

यणप्पभापुढवी तहा सक्करप्पभावि । जिम रत्नप्रभापृथिवीनी वक्तव्यता कही तिम शर्कराप्रभापृथिवीनो पणि वक्तव्यता अविशेषे कहवी । एव जाव अहे सत्तमाए । इम यावत् नीचे सातमी तमतमापृथिवी लगे कहवी । आयाभते सोहम्मेकप्पे पुच्छा । आत्मा हेभगवन् । सौधर्मनामा देवलोक इत्यादि प्र श्न उत्तर । गोयमा सोहम्मेकप्पे सियआया सिय णो आया जाव णो आयातिय । हेगौतम । सौधर्मदेवलोक कदाचित् आत्मा कदाचित् नही आत्मा कदा चित् अवक्तव्य आत्मा अवक्तव्य अनात्मा आत्मा अनात्मा कहि न सकिये ३ । सेकेणट्ठेणं भंते जाव णो आयातिय । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इत्यादि यावत् नही आत्मा एहवो कहि न सकिये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अप्पणो आदिट्ठे आया परस्स आदिट्ठे णोआया तदुभय आदिट्ठे अवत्तव्व । हेगौतम । आपणा पर्यायनी अपेक्षायें आत्मा परपर्यायनी अपेक्षायें नही आत्मा बेउनी अपेक्षायें अवक्तव्य कहि न सकिये । आयातिय णो आयातिय । आत्मा एहवो अनात्मा एहवो । सेतेणट्ठेणं गोयमा तचेव जाव णो आयातिय । ते तेणेअर्थें हेगौतम । इत्यादि पूर्वोक्तहीज यावत् नही आत्मा इतिच एतला लगे क

॥ टीका ॥ स्तिलाप्यत्वादिति। एवं परमाणुसूत्रमपि। द्विप्रदेशिकसूत्रे षड्भङ्गाः तत्राद्यास्त्रयः सकलस्कन्धापेक्षाः पूर्वोक्ता एव, तदन्येतु त्रयो देशापेक्षा स्तत्रच

॥ मूल ॥ तिय एवं जाव अच्चुयकप्पे । आयाभंते ! गेविज्जगविमाणे अन्ने गेविज्जगविमाणे एवं जहा रयणप्पभा पुढवी तहेव एवं अणुत्तरविमाणावि, एवं ईसिप्पब्भारावि । आया भंते ! परमाणुपोग्गले अन्ने परमाणुपोग्गले ? एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गलेवि भाणियव्वे । आया भंते! दुपदेसिए खंधे अन्ने दुपदेसिए खंधे ? गोयमा ! दुपदेसिए खंधे सिय आया, सिय णोआया, सिय अवत्तव्वं, आयातिय

अनुवाद भदन्त । ग्रैवेयकविमान ? एवं यथा रत्नप्रभा पृथिवी तथैव, एवमनुत्तरविमानमपि । एवमीषत्प्राग्भारापि । आत्मा भदन्त ! परमाणुपुद्गलो ऽन्यद्वा परमाणुपुद्गल एवं यथा सौधर्म कल्पस्तथा परमाणुपुद्गलोऽपि भणितव्य । आत्मा भदन्त ! द्विप्रदेशिकस्कन्धो ऽन्यद्विप्रदेशिकस्कन्ध ? गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध स्यादात्मा स्यान्नोआत्मा स्यादवक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच ३ । स्यादात्माच स्यान्नोआत्माच ४ । स्यादा

॥ भाषा ॥ इर्वो । एवं जाव अच्चुयकप्पे । इम यावत् अच्युत बारमा देवलोक लगे कहवो । आयाभते गेविज्जगविमाणे अन्ने गेविज्जगविमाणे । आत्मा हेभगवन् ! ग्रैवेयकविमानछे अनेरो ग्रैवेयकविमान इतिप्रश्न उत्तर । एवं जहा रयणप्पभापुढवी तहेव । इम जिम रत्नप्रभा पृथिवी कही तिम एह पणि कहवा । एवं अणुत्तरविमाणावि एवं ईसिप्पब्भारावि । इमहीज अनुत्तरविमान पणि कहवा इमहीज ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पणि कहवी । आयाभते परमाणुपोग्गले अन्ने परमाणुपोग्गले । आत्मा हेभगवन् ! परमाणुपुद्गल अथवा अनेरोकोई परमाणुपुद्गलछे इतिप्रश्न उत्तर । एवं जहा सोहम्मेकप्पे तहा परमाणुपोग्गलेवि भाणियव्वे । इम जिम सौधर्मनामा देवलोकनी वक्तव्यता कही तिम परमाणुपुद्गलनेविषे पणि अविशेषे कहवी । आयाभते दुपएसिएखंधे अन्नेदुपएसिए खंधे । आत्मा हेभगवन् ! वेप्रदेशिकखन्धछे अथवा अनेरोकोई वेप्रदेशिक खन्धछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दुपएसिएखंधे सियआया सिय णोआया सिय अवत्तव्य आयातिय णो आयातिय सिय आयाय सिय णो आयाय ४ । हेगोतम । बे प्रदेशिकखन्धने विषे छ भङ्गा तिहां पहिला तीन

गोयमेत्यत आरभ्य व्याख्यायते ॥ अप्पणोत्ति ॥ स्वस्य पर्यायै ॥ आदिट्ठेत्ति ॥ आदिष्टे आदेशे सति आदिष्ट इत्यर्थ, द्विप्रदेशिकस्कन्ध आत्मा भवति १। एव परस्य पर्यायैरादिष्टो ऽनात्मा २। तदुभयस्य द्विप्रदेशिकस्कन्धतदन्यस्कन्धलक्षणस्य पर्यायैरादिष्टोसाववक्तव्य वस्तु स्यात्, कथं आ

णोआयातिय, सिय आयाय, सिय णोआयाय ४। सिय आयाय अवत्तव्वं, आयातिय णोआयातिय ५। सिय णो आयाय अवत्तव्व, आयातिय णोआयातिय ६। सेकेणठेणं भंते! एवंचेव जाव णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णोआयातिय? गोयमा! अप्पणो आदिठे आया१परस्स आदिठे णोआया२तदुभ

त्माचावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच ५। स्यान्नोआत्माचावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच ६। अथ केनार्थेन भगवन्! एव चेव याव नो आत्माचावक्तव्यमात्मेतिच नो आत्मेतिच? गौतम। आत्मन (स्वस्य पर्यायैः) आदिष्टे सति (आदिष्टो द्विप्रदेशिकस्कन्ध इत्यर्थ) आत्मा भवति (सद्रूपो भवतीत्यर्थ.)१। परस्या दिष्टेसति नोआत्मा (त्रिप्रदेशिकादिस्कन्धपर्यायैरादिष्टो द्विप्रदेशिकस्कन्धो ऽनात्मेति भवतीत्यर्थ.)२।

समस्त स्कन्धापेच पूर्वोक्तहीज जाणवा अगिला तीन देशापेच ६ ते देखाडेछे—कदाचित् आत्मा कदाचित् नही आत्मा २ कदाचित् अवक्तव्य आत्मा इतिच ए तीन पूठिलोपरे जाणवा, एकदेश आश्रयी सत्तागत पर्याय दूजा देशआश्रयी असत्तागत पर्याय करी, कदाचित् आत्मा कदाचित् नही आत्मा ४। सियआयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय। कदाचित् आत्मा अवक्तव्य इसो अवाच्यवस्तु आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच ५। सिय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय ६। कदाचित् नही आत्मा अवक्तव्य आत्मा इतिच नही आत्मा इतिच ६। सेकेणठेण भते एवचेव जाव णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय। ते स्ये अर्थे हेभगवन्। इम कहिये इत्यादि, इम पूर्वोक्तहीज यावत् नही आत्मा अवक्तव्य कहिये आत्मा इतिच; नही आत्मा इतिच एतला लगे कहवो ६० प्र० उत्तर। गोयमा अप्पणो आदिठे आया परस्स आदिठे णो आया। हेगौतम। पोताना पर्यायनी अपेचायें करी बेप्रदेशिक स्कन्धआत्मा १ परपर्यायनी अपेचायें बेप्रदेशिक स्कन्ध अनात्माहुवे २। तदुभयस्सआदिठे अवत्तव्व दुपएसिएखधे आयातिय

॥ टीका ॥

त्मेतिचाऽनात्मेतिचेति ३। तथा द्विप्रदेशत्वात्तस्य देश एक आदिष्ट , सद्भावप्रधाना· सत्तानुगताः पर्यवा यस्मिन् स सद्भावपर्यव , अथवा तृतीया बहुवचनमिदं स्वपर्यवै रित्यर्थः, द्वितीयस्तु देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यव परपर्यायैरित्यर्थं , परपर्यवाश्च तदीयद्वितीयदेशसम्बन्धिनो वस्त्वन्त रसम्बन्धिनोवेति, ततश्चासौ द्विप्रदेशिक स्कन्ध क्रमेणात्माच नोआत्माचेति ४। तथा तस्य देश आदिष्ट· सद्भावपर्यवो देशश्चोभयपर्यव स्ततोसा

॥ सूत्र ॥

यस्स आदिठ्ठे अवत्तव्वं दुपदेसिए खधे आयातिय णोआयातियअ। देसे आदिठ्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे असब्भावपज्जवे दुपदेसिए खधे आयातिय णोआयातिय;४ देसे आदिठ्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे उभय

॥ अनुवाद ॥

तदुभयस्यादिष्टे सति अवक्तव्य द्विप्रदेशिकस्कन्ध आत्मेतिच नो आत्मेतिच (द्विप्रदेशिकस्कन्धपर्यायै स्त्रिप्रदेशिकादिस्कन्धपर्यायैश्च युगपदा दिष्टोसौ द्विप्रदेशिकस्कन्धो ऽवक्तव्यं वस्तु स्यात्कथमात्मेतिचानात्मेतिचेति) ३। देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यव (त तश्चासौ) द्विप्रादेशिकस्कन्ध आत्मेतिच नोआत्माच (द्विप्रादेशिकस्कन्धस्यैको देश सद्भावप्रधान स्वपर्यवैरादिष्टो द्वितीयस्तु देशो ऽसद्भावप र्यवे परपर्यायै रादिष्ट स्ततो सौ क्रमेणात्माच नो आत्माच भवति) ४। देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देश आदिष्ट स्तदुभयपर्यवो द्विप्रदेशिक स्कन्ध आत्माच अवक्तव्य चात्मेतिच नोआत्मेतिच (तस्यैव चैको देशः स्वपर्यवैरादिष्टो न्यस्तु स्वपरपर्यवैरित्यात्माचावक्तव्य च स्यात्कथमसा

॥ भाषा ॥

णो आयातिय । बेप्रदेशियोखन्ध अनेराखन्धनी अपेचायें अवक्तव्य कहिये आत्मा इतिच, नही आत्मा इतिच, तथा द्विप्रदेशिक पणाथकी ते हनो एकदेश । देसे आदिठ्ठे सभावपज्जवे देसे आदिठ्ठे असभावपज्जवे दुपएसिएखधे आयातिय णो आयातिय । एकदेश आश्रयो स्वपर्यायें करी इत्यर्थ, बीजो देशआश्रयी परपर्यायें करी इत्यर्थ द्वितीय देशसबधी अथवा वस्त्वनर संबधी तिवारे ए द्विप्रदेशिक खन्ध अनुक्रमे आत्माच नो आत्माच एहवो कहिये ४ तथा तेहनो। देसे आदिठ्ठे सभावपज्जवे देसे आदिठ्ठे उभयोपज्जवे दुपएसिएखधे आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयाति य ५। देशआश्रो स्वपर्यायें करी, देशआश्रो स्वपरपर्यायें करी द्विप्रदेशिकखन्ध आत्माच अवक्तव्य आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच ५। देसे आदिठ्ठे अ

॥ टीका ॥

वात्माचावक्तव्यंचेति ५ । तथा तस्यैव देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यवो देशास्तूभयपर्यव स्ततोऽसौ नोग्रात्माचावक्तव्यंच स्यादिति, सप्तम' पुन रात्माच नोग्रात्माचावक्तव्य चेत्येवरूपो नभवति द्विप्रदेशिके द्यशत्वादस्य, त्रिप्रदेशिकादौतु स्यादिति सप्तभङ्गी' त्रिप्रदेशिकस्कन्धेतु त्रयोदश

॥ मूल ॥

पज्जवे दुपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ५ । देसे आदिठे असब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे दुपदेसिए खधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ६, सेतणठेणं तचेव जाव णोआयातिय । आया भंते ! तिपदेसिए खंधे अन्ने तिपदेसिए खधे ? गो० ! तिपदेसिए खधे सिय आया १, सिय णोआया २, सिय अवत्तव्वं, आयातिय णोआयातिय ३, सियआयाय णोआयाय ४,

अनुवाद

वात्मेतिचानात्मेतिचेत्यर्थः) ५ । देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यवो देश आदिष्ट स्तदुभयपर्यवो द्विप्रादेशिकस्कन्धो नोग्रात्माचावक्तव्यश्चात्मेतिच नो आत्मेतिच ६ । तत्तेनार्थेन तच्चैव यावन्नोआत्मेतिच ॥ आत्मा भदन्त ! त्रिप्रदेशिकस्कन्धो न्यद्वा त्रिप्रदेशिकस्कन्ध ? गौतम । त्रिप्रदेशिक स्कन्ध स्यादात्मा १ । स्यान्नोग्रात्मा २ । स्यादवक्तव्य मात्मेतिच नोग्रात्मेतिच ३ । स्यादात्माच नोग्रात्माच ४ । स्यादात्माच नोग्रात्मानश्च ५ ।

॥ भाषा ॥

सद्भावपज्जवे देसेआइट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ६ । तथा देश आश्री परपर्यायें करी, देश आश्री स्वपरपर्यायें करी द्विप्रदेशिकखन्ध नो आत्मा अवक्तव्य आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच ६ । सेतेणट्ठेणं तचेव जाव णो आयातिय । ते तेणे अर्थ इत्यादि तिमहीज यावत् नो आत्मा इतिच । आयाभंते तिपएसिएखंधे अन्ने तिपएसिए खंधे । आत्मा हेभगवन् । त्रिप्रदेशिकखंध अथवा अन्य त्रिप्रदेशिकखंध इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा तिपदेसिएखंधे सिय आया सिय णो आया सिय अवत्तव्व । हेगौतम । त्रिप्रदेशिकखंधने विषे तेरेभङ्गा हुवे ति हा पहिला तीनभङ्गा सकल आदेश ते जिम पूर्वे कह्या तिमज कहवा, तिम अनेरा तीननेंविषे तीन तीन एकवचन बहुवचन भेदथकी सातनो तो एक विध होज । आयातिय णो आयातिय ३ । सिय आयाय सिय णो आयाय ४ । त्रिप्रदेशिकखन्ध किवारे आत्मा किवारे नोआत्मा किवारे अवक्तव्य आत्मा

॥ टीका ॥

भङ्गा स्तत्र पूर्वोक्तेषु सप्तस्वाद्या: सकलादेशा स्त्रयस्तथैव तदन्येषुतु त्रिषु त्रयस्त्रय एकवचनबहुवचनभेदात्, सप्तमस्त्वेकविधएव, यद्येह प्रदेशद्वयेप्येक

॥ मूल ॥

सियआयाय णोआयाउय५, सियआयाउय णोआयायद्द, सिय आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयाति य७। सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय८। सिय आयाउय अवत्तव्वं आयातिय णो आया तिय ९। सिय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १०। सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं आया तिय णो आयातिय ११। सिय णो आयाउय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १२। सिय आयाय

अनुवाद

आत्मानश्च नोआत्माच ६। स्यादात्माचावक्तव्यमात्मेतिच नो आत्मेतिच ७। स्यादात्माचावक्तव्यानिचात्मेतिच नोआत्मेतिच ८। स्यादात्मानश्च वक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच ९। स्यान्नोआत्माचावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच१०। स्यान्नोआत्माचावक्तव्यानिचात्मेतिच नोआत्मेतिच ११। स्यान्नोआत्मानश्चावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच १२। स्यादात्माच नोआत्माचावक्तव्यचात्मेतिच नोआत्मेतिच १३। अथ केनार्थेन भदन्त!

॥ भाषा ॥

इतिच, नो आत्मा इतिच, ३ किवारे आत्मा एकवचने नो आत्मा एकवचने ४। सिय आयाय णो आयाओय। किवारे आत्मा एकवचने नो आत्मा पृथक्क वचने ५। सिय आयाओय णो आयाय ६ सिय आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय ७। किवारेके आत्मा पृथक्कवचने नो आत्मा एकवच ने ६ कदाचित् आत्मा एकवचने अवक्ताव्य एकवचने आत्मा इतिच, अनात्मा इतिच ७। सिय आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८। कदा कदाचित् आत्मा येकवचने, अवक्ताव्य बहुवचने आत्मा इतिच, णो आत्मा इतिच। सिय आयाओय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय ९। कदाचित् चित् आत्मा पृथक्कवचने अवक्ताव्य एकवचने आत्मा इतिच, नो आत्मा इतिच ८। सिय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १०। कदाचित् नो आत्मा एकवचने अवक्ताव्य एक वचने आत्मा इतिच, नो आत्मा इतिच१०। सिय णो आयाय अवत्तव्वाइं, आयाइय णो आयाइय ११। कदाचित् नो आत्मा एकवचने अवक्ताव्य बहुवचने, आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच ११। सिय णो आयाओय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १२।

॥ मूल ॥

णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३ । सेकेणठ्ठणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिपदेसिए खंधे सिय आया एवंचेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय ? गो० ! अप्पणो आदिठ्ठे आया १ । परस्स आदिठ्ठे णो आया २ । तदुभयस्स आदिठ्ठे अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय ३ । देसे आदिठ्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे असब्भावपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयातिय णोआ

अनुवाद

एव मुच्यते त्रिप्रदेशिकस्कन्ध स्यादात्मा एव चैव (यथा पूर्वं त्रयोदश भङ्गा उक्तास्तथैव) उच्चारयितव्या यावत्स्यादात्मा च, नोआत्माच, अवक्तव्यच आत्मा इतिच नोआत्माइतिच ? गौतम ! आत्मन आदिष्टे सति आत्मा (स्वस्यैव वर्णादि पर्याये रादिष्ट इत्यर्थ) १ । परस्या दिष्टे सति नोआत्मा (द्विचतु प्रदेशादिकस्कन्धपर्यायैरादिष्ट इत्यर्थ) २ । तदुभयादिष्टे सत्यवक्तव्य भवति (स्वस्य परस्यच पर्यायैर्युगपदा दिष्ट इत्यर्थ ' (तत्कथमसावितिशेष) आत्माच नोआत्माच ३ । देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देश आदिष्टो सद्भावपर्यव (ततोसौ) त्रिप्रदेशि कस्कन्ध आत्माच नोआत्माच (त्रिप्रदेशिकस्यैको देश स्वस्य पर्यवै रादिष्टो द्वितीयश्च द्विप्रदेशिकदेशतयावगाढो ऽसद्भावपर्यवै परपर्यायै क्रम

॥ भाषा ॥

कदाचित् नो आत्मा इहा बहुवचन अवक्तव्य एकवचन, आत्माइतिच नो आत्माइतिच १२ । सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आया तिय १३ । कदाचित् आत्मा एकवचने नो आत्मा एकवचने अवक्तव्य एकवचने, आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच १३ । सेकेणठ्ठेण भंते एवंवुच्चइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । इम कहिये । तिपएसिएखधे सिय आया । त्रिप्रदेशिकखन्ध कदाचित् आत्मा । एवचेव उच्चारियव्व जाव सिय आयाय णो आयाय अवत्तव्व । इम पूर्वे कह्या तेहीज तेरे भगा उच्चरवा यावत् कदाचित् आत्माच नो आत्माच अवक्तव्य । आयातिय णो आयातिय । आत्माइतिच नो आत्माइतिच इति १२ इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अप्पणो आदिठ्ठे आया १ परस्सआदिठ्ठे णो आया २ । हेगौतम । आपणा पर्यायआश्रयाने आत्मा पारका पर्यायआ श्रयीने नोआत्मा २ । तदुभयस्स आदिठ्ठे अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय ३ । ते बेउं आश्रयीने अवक्तव्य, आत्मा इतिच नोआत्मा इतिच । देसे आदिठ्ठे

॥ मूल ॥

ग्राय ४ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसा आदिठा असब्भावपज्जवा तिपदेसिए खंधे आयाय णोआया
यातिय ४ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसा आदिठा असब्भावपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाउय णो आ
उय ५, देसा आदिठा सब्भावपज्जवा, देसे आदिठे असब्भावपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आया
याय ६ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वं आया
तिय णो आयातिय ७ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसा आदिठा तदुभयपज्जवा तिपदेसिए खंधे

अनुवाद

त आदिष्टोसौ आत्माचानात्माच भवतीत्यर्थ) ४ । देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देशा आदिष्टा असद्भावपर्यवा स्त्रिप्रदेशिकस्कन्ध आत्माच नो
आत्मानश्च (त्रिप्रदेशात्मको देश· स्वपर्यवै रादिष्ट इत्यभेदविवक्षया देशा आदिष्टा परपर्यवै रिति भेदविवक्षया चासौ आत्माच नोआत्मा
नश्चेति क्रमत) ५ । देशा आदिष्टा· सद्भावपर्यवा देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यव (इत्यसौ) आत्मानश्च नोआत्माच (त्रिप्रदेशात्मकस्य भे
दाभेदविवक्षयैव क्रमतः) ६ । देश आदिष्ट स्वपर्यायो देश आदिष्टस्तदुभयपर्यव (ततोसौ क्रमत) आत्माच अवक्तव्यच आत्मेतिच नोआ
त्मेतिच (तस्यैवचैको देश· स्वपर्यवैरादिष्टो ऽन्यस्तु द्विप्रदेशात्मको देश उभयपर्यवै रितिचासौ तथा) ७ । देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो

॥ भाषा ॥

सभावपज्जवे, देसे आदिठे असब्भावपज्जवे तिपदेसिएखंधे आयातिय णो आयातिय ४ । देश आश्रयीने पोताना पर्याय देश आश्रयीने परपर्याय त्रिप्रदे
शिकखन्ध आत्माच नो आत्माच ४ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसा आदिठा असब्भाव पज्जवा तिपएसिए खंधे आयाय णो आयाओय५। देश आश्रयीने
पोताना पर्याय एकवचने देश आश्रयीने परपर्याय पृथकत्ववचने त्रिप्रदेशिकखन्ध आत्माच नो आत्मान च ५ । देसाआदिठा सब्भावपज्जवा देसे आ
दिठे असब्भावपज्जवे तिपएसिएखंधे आयाओय णो आयाय ६ । देश आश्रयीने पोतानापर्याय पृथकत्व वचने देशआश्रयीने परपर्याय एकवचने त्रिप्र
देशिकखन्धआत्मान नो आत्मा इतिच ६ । देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिएखंधे आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आया
तिय ७ । देश आश्रयीने पोतानापर्याय देशआश्रयीने ते बेऊ पर्याय त्रिप्रदेशिकखन्ध आत्माच एकवचने अवक्तव्य , एकवचने आत्मा इतिच नो आ

वचन क्वचि त्तत्स्यप्रदेशद्वयस्यैकप्रदेशावगाढत्वादिरतु नैकत्वविवक्षणात्, भेदविवक्षायां च बहुवचनमिति, चतुःप्रदेशिकेप्येवं नवरमेकोनविंशति

आयाय अवत्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ८। देसा आदिठा सब्भावपज्जवा देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय। एए तिण्णि भंगा ९। देसे आदिठे असब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १०। देसे आदिठे असब्भावपज्जवे देसे आदिठा तदुभयपज्जवा तिपदेसिए खंधे णो आयाय अव

देशा आदिष्टास्तदुभयपर्यवास्त्रिप्रदेशिकस्कन्ध आत्माचावक्तव्यानिच' आत्मेतिच नोआत्मेतिच ८। देशा आदिष्टा सद्भावपर्यवा देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकस्कन्ध आत्मानश्चावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच। एते त्रयो भङ्गा. ९। देश आदिष्टो सद्भावपर्यवो देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकस्कन्ध नोआत्माचावक्तव्यमात्मेति च नोआत्मेतिच १०। देश आदिष्टो ऽसद्भावपर्यवो देशा आदिष्टास्तदुभयपर्यवास्त्रि

त्मा इतिच ७। देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय अवत्तव्वाइ आयातिय० ८। देश आश्रयीने पोताना पर्याय एकवचने देशआश्रयीने ते बेउंना पर्याय पृथकत्ववचने त्रिपदेशिक खन्ध आत्मा च अवक्तव्य आत्मा इति नो आत्मा इति ८। देसा आदिठा सब्भावपज्जवा देसे आदिठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिएखधे आयाओय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय एए तिण्णिभंगा। देश आश्रयी पोतानापर्याय बहुवचने देश आश्रयी ते बेउंनापर्याय एकवचने त्रिप्रदेशिक खन्ध आत्मान च अवक्तव्य आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच एह तीनभङ्गा ९। देसे आइठे असब्भावपज्जवे देसेआदिठेतदुभयपज्जवेतिपदेसिएखंधे णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १०। देश आश्रयी परपर्याय एकवचने देशआश्रयीने ते बेउंना पर्याय एकवचने त्रिप्रदेशिकखन्ध नो आत्माच अवक्तव्य, आत्माच नो आत्माच १०। देसे आदिठे असब्भावपज्जवे देसा आदिठा तदुभयपज्जवा तिपदेसिएखधे णो आयाय अवत्तव्वाइ आयातिय णो आयातिय ११। देश आश्रयीने परपर्याय एकवचने देश आश्रयीने ते बेउंना पर्या

॥ मूल ॥

त्तव्वाइं आयातिय णो आयातिय ११ । देसा आदिठ्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिठ्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे णो आयाउय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १२ । देसे आदिठ्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिए खंधे आयाय णो आयाय अवत्तव्वं आयातिय णो आयातिय १३ । सेतेणठ्ठेणं गोयमा एव वुच्चइ—तिपदेसिए खधे सियआया तंचेव जाव णो

अनुवाद

प्रदेशिकस्कन्धो नो आत्माचावक्तव्यानि, आत्मेतिच नोआत्मेतिच ११ । देशा आदिष्टा असद्भावपर्यवा देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवस्त्रिप्रदेशिकस्कन्धो नो आत्मानश्चावक्तव्य मात्मेतिच नोआत्मेतिच १२ । देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देश आदिष्टोऽसद्भावपर्यवो देश आदिष्टस्तदुभयपर्यव (ततोसौ) त्रिप्रदेशिकस्कन्ध आत्माचनोआत्माचावक्तव्यञ्च' आत्मेतिच नोआत्मेतिच १३ । तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-त्रिप्रदेशिकस्कन्ध स्यादात्मा तच्चैव यावन्नोआत्मेतिच ॥ आत्मा भदन्त ! चतु प्रदेशिकस्कन्धोऽन्य पृच्छा' गौतम ! चतु प्रदेशिकस्कन्ध स्यादात्मा १ ।

॥ भाषा ॥

य बहुवचने त्रिप्रदेशिकखन्ध नो आत्मा च अवक्तव्यानि आत्मा इतिच नो आत्माच ११ । देसा आदिठ्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिठ्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिएखधे णो आयाओय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १२ । देश आश्रयीने परपर्याय पृथकत्ववचने देशआश्रयीन ते बेहना पर्याय एकवचने त्रिप्रदेशिकखन्ध नो आत्मान च अवक्तव्यं आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच १२ । देसे आइठ्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठ्ठे असभावपज्जवे देसे आदिठ्ठे तदुभयपज्जवे तिपदेसिएखधे आयाय णो आयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १३ । देश आश्रयी पोतानापर्याय देश आश्रयी परपर्याय देश आश्रयी बेहना पर्याय त्रिप्रदेशिक खन्ध आत्माच नो आत्माच अवक्तव्य आत्मा इतिच नो आत्मा इतिच १३ । सेतेणठ्ठेण गोयमा एववुच्चइ । ते तेणे अर्थे हेगौतम ! इम कह्यो । तिपदेसिएखधे सिय आया । त्रिप्रदेशिकखन्ध कदाचित् आत्मा । तचेव जाव णो आयातिय । तिमहीज यावत् नो आत्मा इतिच १३ ए तेरहभागा त्रिप्रदेशिकना कह्या । आयाभते चउप्पदेसिए खधे अणेपुच्छा । आत्मा हेभगवन् ! चतुष्प्रदेशिकखन्ध आयद्या अनेरो

भावेणं तदुभएणं चउभंगो। देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णोआयाय अवत्तव्व, आयातिय णोआतिय १६। देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसे आदिठे असब्भावपज्जवे देसा आदिठा तदुभयपज्जवा चउप्पदेसिए खंधे आयाय णोआयाय अवत्तव्वाइं आयाय णोआयाय १७। देसे आदिठे सब्भावपज्जवे देसा आदिठा असब्भावपज्जवा देसे आदिठे तदुभयपज्जवे चउप्पदेसिए खंधे आयाय णोआयाउय अवत्तव्वं, आयातिय णोआयातिय १८। देसा आदिठा सब्भा

आदिष्टोऽसद्भावपर्यवो देश आदिष्टस्तदुभयपर्यव स्तु प्रदेशिकस्कन्ध आत्मा च नोआत्मा चावक्तव्यमात्मेतिच नोआत्मेतिच १६। देश आ दिष्ट सद्भावपर्यवो देश आदिष्टोऽसद्भावपर्यवो देशा आदिष्टास्तदुभयपर्यवाश्चतु प्रदेशिकस्कन्ध आत्माच नोआत्मा चावक्तव्यानि, आ त्माच नोआत्माच १७। देश आदिष्ट सद्भावपर्यवो देशा आदिष्टा असद्भावपर्यवा देश आदिष्टस्तदुभयपर्यवश्चतु प्रदेशिकस्कन्ध आत्माच

तदुभयपज्जवे चउप्पएसिएखंधे आयाय णोआयाय अवत्तव्व आयातिय णो आयातिय १६। देश आश्रयी स्वपर्याय एकवचने देश आश्रयी परपर्याय ए कवचने देश आश्रयी तदुभयपर्याय एकवचने चतुष्प्रदेशिक खन्ध आत्माच नो आत्माच अवक्तव्य आत्मा इति अनात्मा इतिच १६। देसे आदिठे स भावपज्जवे देसे आदिठे असब्भाव पज्जवे, देसा आदिठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिएखंधे आयाय णोआयाय अवक्तव्वाइं आयातिय णोआयातिय १७। देश आश्रयी स्वपर्याय एकवचने देश आश्रयी परपर्याय एकवचने देश आश्रयी तदुभयपर्याय बहुवचने चतुष्प्रदेशिकखन्ध आत्मा इतिच नोआत्मा इ तिच अवक्तव्यानिच आत्मा नोआत्माच १७। देसे आदिठेसब्भावपज्जवे देसा आदिठा असब्भावपज्जवा देसे आदिठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिएखंधे आयाय णोआयायओय अवत्तव्व आयातिय णोआयातिय १८। देश आश्रयी स्वपर्याय एकवचने देश आश्रयी परपर्याय बहुवचने देश आश्रयी तदुभय पर्याय एकवचने चतुष्प्रदेशिकखन्ध आत्माच नोआत्मानच अवक्तव्य आत्मा इतिच नोआत्मा इतिच १८। देसा आदिठा सब्भावपज्जवा देसे आदिठे